किताबे-मुक़द्दस

तौरेत, तारीख़ी सहायफ़,
सहायफ़े-हिकमतो-ज़बूर,
सहायफ़े-अंबिया और इंजील

असल इबरानी, अरामी और यूनानी मतन से नया उर्दू तरजुमा

उर्दू जियो वरझ़न

The Old and New Testament in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew, Aramaic and Greek
Urdu Geo Version (Hindi script)

© 2021 Urdu Geo Version
www.urdugeoversion.com

This work is licensed under a Creative Commons Attribution
- NonCommercial - NoDerivatives 4.0 International Public License.
https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/legalcode

For permissions & requests regarding printing & further formats
contact info@urdugeoversion.com.

फ़हरिस्ते-कुतुब

तौरेत

पैदाइश	1	गिनती	155
ख़ुरूज	64	इस्तिसना	201
अहबार	118		

तारीख़ी सहायफ़

यशुअ	251	2 सलातीन	447
क़ुज़ात	283	1 तवारीख़	490
रूत	316	2 तवारीख़	528
1 समुएल	321	अज़रा	576
2 समुएल	365	नहमियाह	590
1 सलातीन	403	आस्तर	610

सहायफ़े-हिकमत और ज़बूर

अय्यूब	623	वाइज़	795
ज़बूर	660	ग़ज़लुल-ग़ज़लात	806
अमसाल	761		

सहायफ़े-अंबिया

यसायाह 815
यरमियाह 885
नोहा 962
हिज़क़ियेल 970
दानियाल 1038
होसेअ 1058
योएल 1069
आमूस 1073
अबदियाह 1082
यूनुस 1084
मीकाह 1087
नाहूम 1094
हबक़्क़ूक़ 1097
सफ़नियाह 1101
हज्जी 1105
ज़करियाह 1108
मलाकी 1120

इंजीले-मुक़द्दस

मत्ती 1127
मरक़ुस 1175
लूक़ा 1206
यूहन्ना 1258
आमाल 1296
रोमियों 1344
1 कुरिंथियों 1366
2 कुरिंथियों 1386
गलतियों 1400
इफ़िसियों 1408
फ़िलिप्पियों 1415
कुलुस्सियों 1421
1 थिस्सलुनीकियों 1426
2 थिस्सलुनीकियों 1431
1 तीमुथियुस 1434
2 तीमुथियुस 1440
तितुस 1445
फ़िलेमोन 1448
इबरानियों 1450
याक़ूब 1467
1 पतरस 1473
2 पतरस 1479
1 यूहन्ना 1483
2 यूहन्ना 1489
3 यूहन्ना 1490
यहूदाह 1492
मुकाशफ़ा 1494

हरफ़े-आग़ाज़

अज़ीज़ क़ारी! आपके हाथ में किताबे-मुक़द्दस का नया उर्दू तरजुमा है। यह इलाही किताब इनसान के लिए अल्लाह तआला का कलाम है। इसमें इनसान के साथ अल्लाह की मुहब्बत और उसके लिए उस की मरज़ी और मनशा का इज़हार है।

किताबे-मुक़द्दस पुराने और नए अहदनामे का मजमुआ है। पुराना अहदनामा तौरेत, तारीख़ी सहायफ़, हिकमत और ज़बूर के सहायफ़, और अंबिया के सहायफ़ पर मुश्तमिल है। नया अहदनामा इंजीले-मुक़द्दस का पाक कलाम है।

पुराने अहदनामे की असल ज़बान इबरानी और अरामी और नए अहदनामे की यूनानी है। ज़ेरे-नज़र मतन इन ज़बानों का बराहे-रास्त तरजुमा है। मुतरजिम ने हर मुमकिन कोशिश की है कि असल ज़बानों का सहीह सहीह मफ़हूम अदा करे।

पाक कलाम के तमाम मुतरजिमीन को दो सवालों का सामना है : पहला यह कि असल मतन का सहीह सहीह तरजुमा किया जाए। दूसरा यह कि जिस ज़बान में तरजुमा करना मक़सूद हो उस की ख़ूबसूरती और चाशनी भी बरक़रार रहे और पाक मतन के साथ वफ़ादारी भी मुतअस्सिर न हो। चुनाँचे हर मुतरजिम को फ़ैसला करना होता है कि कहाँतक वुह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ तरजुमा करे और कहाँतक उर्दू ज़बान की सेहत, ख़ूबसूरती और चाशनी को मद्दे-नज़र रखते हुए क़दरे आज़ादाना तरजुमा करे। मुख़्तलिफ़ तरजुमों में जो बाज़ औक़ात थोड़ा-बहत फ़रक़ नज़र आता है उसका यही सबब है कि एक मुतरजिम असल अलफ़ाज़ का ज़्यादा पाबंद रहा है जबकि दूसरे ने मफ़हूम को अदा करने में उर्दू ज़बान की रिआयत करके क़दरे आज़ाद तरीक़े से मतलब को अदा करने की कोशिश की है। इस तरजुमे में जहाँ तक हो सका असल ज़बान के क़रीब रहने की कोशिश की गई है। याद रहे कि सुर्ख़ियाँ और उनवानात मतन का हिस्सा नहीं हैं। उनको महज़ क़ारी की सहूलत की ख़ातिर दिया गया है।

चूँकि असल ज़बानों में अंबिया के लिए इज़्ज़त के वुह अलक़ाब इस्तेमाल नहीं किए गए जिनका आज-कल रिवाज है, इसलिए इलहामी मतन के एहतराम को मलहूज़े-ख़ातिर रखते हुए तरजुमे में अलक़ाब का इज़ाफ़ा करने से गुरेज़ किया गया है।

किताबे-मुक़द्दस में मज़कूर जवाहरात का तरजुमा जदीद साइंसी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ किया गया है।

चूँकि वक़्त के साथ साथ नाप-तोल की मिक़दारें क़दरे बदल गईं इसलिए तरजुमे में उनकी अदायगी में ख़ास मुश्किल पेश आई।

जहाँ रूह का लफ़्ज़ सीग़ाए-मुज़क्कर में अदा किया गया है वहाँउससे मुराद रूहुल-क़ुद्स यानी ख़ुदा का रूह है। जब वुह और मानों में मुस्तामल है तब मामूल के मुताबिक़ सीग़ाए-मुअन्नस इस्तेमाल हुआ है।

इंजीले-मुक़द्दस में बपतिस्मा देने का लुग़वी मतलब ग़ोता देना है। जिस शख़्स को बपतिस्मा दिया जाता है उसे पानी में ग़ोता दिया जाता है।

बारी तआला के फ़ज़ल से इंजीले-मुक़द्दस के कई उर्दू तरजुमे दस्तयाब हैं। इन सबका मक़सद यही है कि असल ज़बान का मफ़हूम अदा किया जाए। इनका आपस में मुक़ाबला नहीं है बल्कि मुख़्तलिफ़ तरजुमों का एक दूसरे के साथ मुवाज़ना करने से असली ज़बान के मफ़हूम की गहराई और वुसअत सामने आती है और यों मुख़्तलिफ़ तरजुमे मिलकर कलामे-मुक़द्दस की पूरी तफ़्हीम में मुअविन साबित होते हैं।

अल्लाह करे कि यह तरजुमा भी उसके ज़िंदा कलाम का मतलब और मक़सद और उस की वुसअत और गहराई को ज़्यादा सफ़ाई से समझने में मदद का बाइस बने।

नाशिरीन

तौरेत

असल इबरानी मतन से
नया उर्दू तरजुमा

पैदाइश

दुनिया की तख़लीक़ का पहला दिन : रौशनी

1 इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और
ज़मीन को बनाया। 2अभी तक ज़मीन
वीरान और ख़ाली थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई
थी जिसके ऊपर अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह
का रूह पानी के ऊपर मँडला रहा था।

3फिर अल्लाह ने कहा, "रौशनी हो जाए" तो
रौशनी पैदा हो गई। 4अल्लाह ने देखा कि रौशनी
अच्छी है, और उसने रौशनी को तारीकी से अलग
कर दिया। 5अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम
दिया और तारीकी को रात का। शाम हुई, फिर
सुबह। यों पहला दिन गुज़र गया।

दूसरा दिन : आसमान

6अल्लाह ने कहा, "पानी के दरमियान एक
ऐसा गुंबद पैदा हो जाए जिससे निचला पानी
ऊपर के पानी से अलग हो जाए।" 7ऐसा ही
हुआ। अल्लाह ने एक ऐसा गुंबद बनाया जिससे
निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो गया।
8अल्लाह ने गुंबद को आसमान का नाम दिया।
शाम हुई, फिर सुबह। यों दूसरा दिन गुज़र गया।

तीसरा दिन : ख़ुश्क ज़मीन और पौदे

9अल्लाह ने कहा, "जो पानी आसमान के
नीचे है वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी
तरफ़ ख़ुश्क जगह नज़र आए।" ऐसा ही हुआ।
10अल्लाह ने ख़ुश्क जगह को ज़मीन का नाम
दिया और जमाशुदा पानी को समुंदर का। और
अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। 11फिर उसने
कहा, "ज़मीन हरियावल पैदा करे, ऐसे पौदे जो
बीज रखते हों और ऐसे दरख़्त जिनके फल अपनी
अपनी क़िस्म के बीज रखते हों।" ऐसा ही हुआ।
12ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौदे जो
अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते और ऐसे
दरख़्त जिनके फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज
रखते थे। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।
13शाम हुई, फिर सुबह। यों तीसरा दिन गुज़र
गया।

चौथा दिन : सूरज, चाँद और सितारे

14अल्लाह ने कहा, "आसमान पर रौश-
नियाँ पैदा हो जाएँ ताकि दिन और रात में
इम्तियाज़ हो और इसी तरह मुख़्तलिफ़ मौसमों,
दिनों और सालों में भी। 15आसमान की यह
रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।" ऐसा ही हुआ।
16अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ बनाईं, सूरज जो
बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को और चाँद जो
छोटा था रात पर। इनके अलावा उसने सितारों
को भी बनाया। 17उसने उन्हें आसमान पर रखा
ताकि वह दुनिया को रौशन करें, 18दिन और
रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी
में इम्तियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह
अच्छा है। 19शाम हुई, फिर सुबह। यों चौथा दिन
गुज़र गया।

पाँचवाँ दिन : पानी और हवा के जानदार

20अल्लाह ने कहा, “पानी आबी जानदारों से भर जाए और फ़िज़ा में परिंदे उड़ते फिरें।”
21अल्लाह ने बड़े बड़े समुंदरी जानवर बनाए, पानी की तमाम दीगर मख़लूक़ात और हर क़िस्म के पर रखनेवाले जानदार भी बनाए। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। 22उसने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। समुंदर तुमसे भर जाए। इसी तरह परिंदे ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।” 23शाम हुई, फिर सुबह। यों पाँचवाँ दिन गुज़र गया।

छटा दिन : ज़मीन पर चलनेवाले जानवर और इनसान

24अल्लाह ने कहा, “ज़मीन हर क़िस्म के जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर।” ऐसा ही हुआ। 25अल्लाह ने हर क़िस्म के मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर बनाए। उसने देखा कि यह अच्छा है।

26अल्लाह ने कहा, “आओ अब हम इनसान को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हमसे मुशाबहत रखे। वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुंदर की मछलियों पर, हवा के परिंदों पर, मवेशियों पर, जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर।” 27यों अल्लाह ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर। उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया।
28अल्लाह ने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए और तुम उस पर इख़्तियार रखो। समुंदर की मछलियों, हवा के परिंदों और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर हुकूमत करो।”

29अल्लाह ने उनसे मज़ीद कहा, “तमाम बीजदार पौदे और फलदार दरख़्त तुम्हारे ही हैं। मैं उन्हें तुमको खाने के लिए देता हूँ। 30इस तरह मैं तमाम जानवरों को खाने के लिए हरियाली देता हूँ। जिसमें भी जान है वह यह खा सकता है, ख़ाह वह ज़मीन पर चलने-फिरनेवाला जानवर, हवा का परिंदा या ज़मीन पर रेंगनेवाला क्यों न हो।” ऐसा ही हुआ। 31अल्लाह ने सब पर नज़र की तो देखा कि वह बहुत अच्छा बन गया है। शाम हुई, फिर सुबह। छटा दिन गुज़र गया।

सातवाँ दिन : आराम

2 यों आसमानो-ज़मीन और उनकी तमाम चीज़ों की तख़लीक़ मुकम्मल हुई। 2सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तकमील को पहुँचा। इससे फ़ारिग़ होकर उसने आराम किया।
3अल्लाह ने सातवें दिन को बरकत दी और उसे मख़सूसो-मुक़द्दस किया। क्योंकि उस दिन उसने अपने तमाम तख़लीक़ी काम से फ़ारिग़ होकर आराम किया।

आदम और हव्वा

4यह आसमानो-ज़मीन की तख़लीक़ का बयान है। जब रब ख़ुदा ने आसमानो-ज़मीन को बनाया
5तो शुरू में झाड़ियाँ और पौदे नहीं उगते थे। वजह यह थी कि अल्लाह ने बारिश का इंतज़ाम नहीं किया था। और अभी इनसान भी पैदा नहीं हुआ था कि ज़मीन की खेतीबाड़ी करता। 6इसकी बजाए ज़मीन में से धुंध उठकर उस की पूरी सतह को तर करती थी। 7फिर रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी लेकर इनसान को तश्कील दिया और उसके नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

8रब ख़ुदा ने मशरिक़ में मुल्के-अदन में एक बाग़ लगाया। उसमें उसने उस आदमी को रखा जिसे उसने बनाया था। 9रब ख़ुदा के हुक्म पर ज़मीन में से तरह तरह के दरख़्त फूट निकले, ऐसे दरख़्त जो देखने में दिलकश और खाने के लिए अच्छे थे। बाग़ के बीच में दो दरख़्त थे। एक का फल ज़िंदगी बख़्शता था जबकि दूसरे का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था।
10अदन में से एक दरिया निकलकर बाग़ की आबपाशी करता था। वहाँ से बहकर वह चार शाख़ों में तक़सीम हुआ। 11-12पहली शाख़ का

नाम फ़ीसून है। वह मुल्के-हवीला को घेरे हुए
बहती है जहाँ ख़ालिस सोना, गूगल का गूँद और
अक़ीक़े-अहमर[a] पाए जाते हैं। 13दूसरी का नाम
जैहून है जो कूश को घेरे हुए बहती है। 14तीसरी
का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक़ को जाती
है और चौथी का नाम फ़ुरात है।

15रब ख़ुदा ने पहले आदमी को बाग़े-अदन में
रखा ताकि वह उस की बाग़बानी और हिफ़ाज़त
करे। 16लेकिन रब ख़ुदा ने उसे आगाह किया,
“तुझे हर दरख़्त का फल खाने की इजाज़त है।
17लेकिन जिस दरख़्त का फल अच्छे और बुरे
की पहचान दिलाता है उसका फल खाना मना
है। अगर उसे खाए तो यक़ीनन मरेगा।”

18रब ख़ुदा ने कहा, “अच्छा नहीं कि आदमी
अकेला रहे। मैं उसके लिए एक मुनासिब मददगार
बनाता हूँ।”

19रब ख़ुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने-
फिरनेवाले जानवर और हवा के परिंदे बनाए थे।
अब वह उन्हें आदमी के पास ले आया ताकि
मालूम हो जाए कि वह उनके क्या क्या नाम
रखेगा। यों हर जानवर को आदम की तरफ़ से
नाम मिल गया। 20आदमी ने तमाम मवेशियों,
परिंदों और ज़मीन पर फिरनेवाले जानदारों के
नाम रखे। लेकिन उसे अपने लिए कोई मुनासिब
मददगार न मिला।

21तब रब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह
गहरी नींद सो रहा था तो उसने उस की पसलियों
में से एक निकालकर उस की जगह गोश्त भर
दिया। 22पसली से उसने औरत बनाई और उसे
आदमी के पास ले आया। 23उसे देखकर वह
पुकार उठा, “वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी
हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है।
इसका नाम नारी रखा जाए क्योंकि वह नर से
निकाली गई है।” 24इसलिए मर्द अपने माँ-बाप
को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता
है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। 25दोनों, आदमी
और औरत नंगे थे, लेकिन यह उनके लिए शर्म का
बाइस नहीं था।

गुनाह का आग़ाज़

3 साँप ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले उन
तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था
जिनको रब ख़ुदा ने बनाया था। उसने औरत से
पूछा, “क्या अल्लाह ने वाक़ई कहा कि बाग़ के
किसी भी दरख़्त का फल न खाना?” 2औरत
ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं। हम बाग़ का हर
फल खा सकते हैं, 3सिर्फ़ उस दरख़्त के फल से
गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है। अल्लाह
ने कहा कि उसका फल न खाओ बल्कि उसे
छूना भी नहीं, वरना तुम यक़ीनन मर जाओगे।”
4साँप ने औरत से कहा, “तुम हरगिज़ न मरोगे,
5बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उसका
फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और
तुम अल्लाह की मानिंद हो जाओगे, तुम जो भी
अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।”

6औरत ने दरख़्त पर ग़ौर किया कि खाने के
लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सबसे
दिलफ़रेब बात यह कि उससे समझ हासिल हो
सकती है! यह सोचकर उसने उसका फल लेकर
उसे खाया। फिर उसने अपने शौहर को भी दे
दिया, क्योंकि वह उसके साथ था। उसने भी खा
लिया। 7लेकिन खाते ही उनकी आँखें खुल गईं
और उनको मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे
उन्होंने अंजीर के पत्ते सीकर लुंगियाँ बना लीं।

8शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो
उन्होंने रब ख़ुदा को बाग़ में चलते-फिरते सुना। वह
डर के मारे दरख़्तों के पीछे छुप गए। 9रब ख़ुदा ने
पुकारकर कहा, “आदम, तू कहाँ है?” 10आदम
ने जवाब दिया, “मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना
तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हूँ। इसलिए मैं छुप
गया।” 11उसने पूछा, “किसने तुझे बताया कि
तू नंगा है? क्या तूने उस दरख़्त का फल खाया है
जिसे खाने से मैंने मना किया था?” 12आदम ने

[a] carnelian

कहा, “जो औरत तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है
उसने मुझे फल दिया। इसलिए मैंने खा लिया।”
13अब रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ, “तूने
यह क्यों किया?” औरत ने जवाब दिया, “साँप
ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया।”

14रब ख़ुदा ने साँप से कहा, “चूँकि तूने
यह किया, इसलिए तू तमाम मवेशियों और
जंगली जानवरों में लानती है। तू उम्र-भर पेट
के बल रेंगेगा और ख़ाक चाटेगा। 15मैं तेरे और
औरत के दरमियान दुश्मनी पैदा करूँगा। उस की
औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह तेरे सर
को कुचल डालेगी जबकि तू उस की एड़ी पर
काटेगा।”

16फिर रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ और
कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तकलीफ़
को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद
दर्द का शिकार होगी। तू अपने शौहर की तमन्ना
करेगी लेकिन वह तुझ पर हुकूमत करेगा।”
17आदम से उसने कहा, “तूने अपनी बीवी की
बात मानी और उस दरख़्त का फल खाया जिसे
खाने से मैंने मना किया था। इसलिए तेरे सबब
से ज़मीन पर लानत है। उससे ख़ुराक हासिल
करने के लिए तुझे उम्र-भर मेहनत-मशक़्क़त
करनी पड़ेगी। 18तेरे लिए वह ख़ारदार पौदे और
ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उससे अपनी
ख़ुराक भी हासिल करेगा। 19पसीना बहा बहाकर
तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी।
और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू
मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा,
क्योंकि तू उसी से लिया गया है। तू ख़ाक है और
दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा।”

20आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी
ज़िंदगी रखा, क्योंकि बाद में वह तमाम ज़िंदों
की माँ बन गई। 21रब ख़ुदा ने आदम और उस
की बीवी के लिए खालों से लिबास बनाकर उन्हें
पहनाया। 22उसने कहा, “इनसान हमारी मानिंद
हो गया है, वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता
है। अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर ज़िंदगी
बख़्शनेवाले दरख़्त के फल से ले और उससे
खाकर हमेशा तक ज़िंदा रहे।” 23इसलिए रब
ख़ुदा ने उसे बाग़े-अदन से निकालकर उस ज़मीन
की खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मेदारी दी जिसमें से
उसे लिया गया था। 24इनसान को ख़ारिज करने
के बाद उसने बाग़े-अदन के मशरिक़ में करूबी
फ़रिश्ते खड़े किए और साथ साथ एक आतिशी
तलवार रखी जो इधर-उधर घूमती थी ताकि उस
रास्ते की हिफ़ाज़त करे जो ज़िंदगी बख़्शनेवाले
दरख़्त तक पहुँचाता था।

क़ाबील और हाबील

4 आदम हव्वा से हमबिसतर हुआ तो उनका
पहला बेटा क़ाबील पैदा हुआ। हव्वा ने
कहा, “रब की मदद से मैंने एक मर्द हासिल किया
है।” 2बाद में क़ाबील का भाई हाबील पैदा हुआ।
हाबील भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया जबकि
क़ाबील खेतीबाड़ी करने लगा।

पहला क़त्ल

3कुछ देर के बाद क़ाबील ने रब को अपनी
फ़सलों में से कुछ पेश किया। 4हाबील ने भी
नज़राना पेश किया, लेकिन उसने अपनी भेड़-
बकरियों के कुछ पहलौठे उनकी चरबी समेत
चढ़ाए। हाबील का नज़राना रब को पसंद आया,
5मगर क़ाबील का नज़राना मंज़ूर न हुआ। यह
देखकर क़ाबील बड़े ग़ुस्से में आ गया, और उसका
मुँह बिगड़ गया। 6रब ने पूछा, “तू ग़ुस्से में क्यों
आ गया है? तेरा मुँह क्यों लटका हुआ है? 7क्या
अगर तू अच्छी नीयत रखता है तो अपनी नज़र
उठाकर मेरी तरफ़ नहीं देख सकेगा? लेकिन
अगर अच्छी नीयत नहीं रखता तो ख़बरदार!
गुनाह दरवाज़े पर दबका बैठा है और तुझे चाहता
है। लेकिन तेरा फ़र्ज़ है कि उस पर ग़ालिब आए।”

8एक दिन क़ाबील ने अपने भाई से कहा,
“आओ, हम बाहर खुले मैदान में चलें।” और
जब वह खुले मैदान में थे तो क़ाबील ने अपने
भाई हाबील पर हमला करके उसे मार डाला।

9तब रब ने क़ाबील से पूछा, “तेरा भाई हाबील
कहाँ है?” क़ाबील ने जवाब दिया, “मुझे क्या
पता! क्या अपने भाई की देख-भाल करना मेरी
ज़िम्मेदारी है?” 10रब ने कहा, “तूने क्या किया
है? तेरे भाई का ख़ून ज़मीन में से पुकारकर मुझसे
फ़रियाद कर रहा है। 11इसलिए तुझ पर लानत
है और ज़मीन ने तुझे रद्द किया है, क्योंकि ज़मीन
को मुँह खोलकर तेरे हाथ से क़त्ल किए हुए भाई
का ख़ून पीना पड़ा। 12अब से जब तू खेतीबाड़ी
करेगा तो ज़मीन अपनी पैदावार देने से इनकार
करेगी। तू मफ़रूर होकर मारा मारा फिरेगा।”
13क़ाबील ने कहा, “मेरी सज़ा निहायत सख़्त
है। मैं इसे बरदाश्त नहीं कर पाऊँगा। 14आज तू
मुझे ज़मीन की सतह से भगा रहा है और मुझे तेरे
हुज़ूर से भी छुप जाना है। मैं मफ़रूर की हैसियत
से मारा मारा फिरता रहूँगा, इसलिए जिसको भी
पता चलेगा कि मैं कहाँ हूँ वह मुझे क़त्ल कर
डालेगा।” 15लेकिन रब ने उससे कहा, “हरगिज़
नहीं। जो क़ाबील को क़त्ल करे उससे सात गुना
बदला लिया जाएगा।” फिर रब ने उस पर एक
निशान लगाया ताकि जो भी क़ाबील को देखे वह
उसे क़त्ल न कर दे। 16इसके बाद क़ाबील रब
के हुज़ूर से चला गया और अदन के मशरिक़ की
तरफ़ नोद के इलाक़े में जा बसा।

क़ाबील का ख़ानदान

17क़ाबील की बीवी हामिला हुई। बेटा पैदा
हुआ जिसका नाम हनूक रखा गया। क़ाबील ने
एक शहर तामीर किया और अपने बेटे की ख़ुशी
में उसका नाम हनूक रखा। 18हनूक का बेटा ईराद
था, ईराद का बेटा महूयाएल, महूयाएल का बेटा
मतूसाएल और मतूसाएल का बेटा लमक था।
19लमक की दो बीवियाँ थीं, अदा और ज़िल्ला।
20अदा का बेटा याबल था। उस की नसल के लोग
ख़ैमों में रहते और मवेशी पालते थे। 21याबल का
भाई यूबल था। उस की नसल के लोग सरोद[a]
और बाँसरी बजाते थे। 22ज़िल्ला के भी बेटा पैदा
हुआ जिसका नाम तूबल-क़ाबील था। वह लोहार
था। उस की नसल के लोग पीतल और लोहे की
चीज़ें बनाते थे। तूबल-क़ाबील की बहन का नाम
नामा था। 23एक दिन लमक ने अपनी बीवियों
से कहा, “अदा और ज़िल्ला, मेरी बात सुनो!
लमक की बीवियो, मेरे अलफ़ाज़ पर ग़ौर करो!
24एक आदमी ने मुझे ज़ख़मी किया तो मैंने उसे
मार डाला। एक लड़के ने मेरे चोट लगाई तो मैंने
उसे क़त्ल कर दिया। जो क़ाबील को क़त्ल करे
उससे सात गुना बदला लिया जाएगा, लेकिन जो
लमक को क़त्ल करे उससे सतत्तर गुना बदला
लिया जाएगा।”

सेत और अनूस

25आदम और हव्वा का एक और बेटा पैदा
हुआ। हव्वा ने उसका नाम सेत रखकर कहा,
“अल्लाह ने मुझे हाबील की जगह जिसे क़ाबील
ने क़त्ल किया एक और बेटा बख़्शा है।” 26सेत
के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उसने उसका नाम अनूस
रखा।

उन दिनों में लोग रब का नाम लेकर इबादत
करने लगे।

आदम से नूह तक का नसबनामा

5 ज़ैल में आदम का नसबनामा दर्ज है।
जब अल्लाह ने इनसान को ख़लक़ किया
तो उसने उसे अपनी सूरत पर बनाया। 2उसने उन्हें
मर्द और औरत पैदा किया। और जिस दिन उसने
उन्हें ख़लक़ किया उसने उन्हें बरकत देकर उनका
नाम आदम यानी इनसान रखा।

3आदम की उम्र 130 साल थी जब उसका बेटा
सेत पैदा हुआ। सेत सूरत के लिहाज़ से अपने
बाप की मानिंद था, वह उससे मुशाबहत रखता

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : चंग। चूँकि यह साज़ बर्रे-सग़ीर में कम ही इस्तेमाल होता है, इसलिए मुतरजिम ने इसकी जगह लफ़्ज़ ‘सरोद’ इस्तेमाल किया है।

था। 4सेत की पैदाइश के बाद आदम मज़ीद 800
साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए। 5वह 930 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
6सेत 105 साल का था जब उसका बेटा अनूस
पैदा हुआ। 7इसके बाद वह मज़ीद 807 साल
ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
8वह 912 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
9अनूस 90 बरस का था जब उसका बेटा
क़ीनान पैदा हुआ। 10इसके बाद वह मज़ीद 815
साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए। 11वह 905 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
12क़ीनान 70 साल का था जब उसका बेटा
महललेल पैदा हुआ। 13इसके बाद वह मज़ीद
840 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी
पैदा हुए। 14वह 910 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
15महललेल 65 साल का था जब उसका बेटा
यारिद पैदा हुआ। 16इसके बाद वह मज़ीद 830
साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए। 17वह 895 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
18यारिद 162 साल का था जब उसका बेटा
हनूक पैदा हुआ। 19इसके बाद वह मज़ीद 800
साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए। 20वह 962 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
21हनूक 65 साल का था जब उसका बेटा
मतूसिलह पैदा हुआ। 22इसके बाद वह मज़ीद
300 साल अल्लाह के साथ चलता रहा। उसके
और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 23वह कुल 365
साल दुनिया में रहा। 24हनूक अल्लाह के साथ
साथ चलता था। 365 साल की उम्र में वह ग़ायब
हुआ, क्योंकि अल्लाह ने उसे उठा लिया।
25मतूसिलह 187 साल का था जब उसका
बेटा लमक पैदा हुआ। 26वह मज़ीद 782 साल
ज़िंदा रहा। उसके और बेटे और बेटियाँ भी पैदा
हुए। 27वह 969 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
28लमक 182 साल का था जब उसका
बेटा पैदा हुआ। 29उसने उसका नाम नूह या-
नी तसल्ली रखा, क्योंकि उसने उसके बारे
में कहा, “हमारा खेतीबाड़ी का काम निहायत
तकलीफ़देह है, इसलिए कि अल्लाह ने ज़मीन पर
लानत भेजी है। लेकिन अब हम बेटे की मारिफ़त
तसल्ली पाएँगे।” 30इसके बाद वह मज़ीद 595
साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए। 31वह 777 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
32नूह 500 साल का था जब उसके बेटे सिम,
हाम और याफ़त पैदा हुए।

लोगों की ज़्यादतियाँ

6 दुनिया में लोगों की तादाद बढ़ने लगी।
उनके हाँ बेटियाँ पैदा हुईं। 2तब आसमानी
हस्तियों ने देखा कि बनी नौ इनसान की बेटियाँ
ख़ूबसूरत हैं, और उन्होंने उनमें से कुछ चुनकर
उनसे शादी की। 3फिर रब ने कहा, “मेरी रूह
हमेशा के लिए इनसान में न रहे क्योंकि वह फ़ानी
मख़लूक़ है। अब से वह 120 साल से ज़्यादा
ज़िंदा नहीं रहेगा।” 4उन दिनों में और बाद में
भी दुनिया में देवक़ामत अफ़राद थे जो इनसानी
औरतों और उन आसमानी हस्तियों की शादियों से
पैदा हुए थे। यह देवक़ामत अफ़राद क़दीम ज़माने
के मशहूर सूरमा थे।
5रब ने देखा कि इनसान निहायत बिगड़ गया
है, कि उसके तमाम ख़यालात लगातार बुराई
की तरफ़ मायल रहते हैं। 6वह पछताया कि मैंने
इनसान को बनाकर दुनिया में रख दिया है, और
उसे सख़्त दुख हुआ। 7उसने कहा, “गो मैं ही ने
इनसान को ख़लक़ किया मैं उसे रूए-ज़मीन पर से
मिटा डालूँगा। मैं न सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन
पर चलने-फिरने और रेंगनेवाले जानवरों और हवा
के परिंदों को भी हलाक कर दूँगा, क्योंकि मैं
पछताता हूँ कि मैंने उनको बनाया।”

बड़े सैलाब के लिए नूह की तैयारियाँ

8सिर्फ़ नूह पर रब की नज़रे-करम थी। 9यह
उस की ज़िंदगी का बयान है।
नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़
वही बेक़ुसूर था। वह अल्लाह के साथ साथ चलता
था। 10नूह के तीन बेटे थे, सिम, हाम और याफ़त।

11लेकिन दुनिया अल्लाह की नज़र में बिगड़ी हुई
और ज़ुल्मो-तशद्दुद से भरी हुई थी। 12जहाँ भी
अल्लाह देखता दुनिया ख़राब थी, क्योंकि तमाम
जानदारों ने ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़
दिया था।

13तब अल्लाह ने नूह से कहा, “मैंने तमाम
जानदारों को ख़त्म करने का फ़ैसला किया है,
क्योंकि उनके सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्मो-तशद्दुद
से भर गई है। चुनाँचे मैं उनको ज़मीन समेत
तबाह कर दूँगा। 14अब अपने लिए सरो[a] की
लकड़ी की कश्ती बना ले। उसमें कमरे हों और
उसे अंदर और बाहर तारकोल लगा। 15उस की
लंबाई 450 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई
45 फ़ुट हो। 16कश्ती की छत को यों बनाना कि
उसके नीचे 18 इंच खुला रहे। एक तरफ़ दरवाज़ा
हो, और उस की तीन मनज़िलें हों। 17मैं पानी
का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह ज़मीन के
तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा। ज़मीन
पर सब कुछ फ़ना हो जाएगा। 18लेकिन तेरे साथ
मैं अहद बाँधूँगा जिसके तहत तू अपने बेटों, अपनी
बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में जाएगा। 19हर
क़िस्म के जानवर का एक नर और एक मादा भी
अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ
जीते बचें। 20हर क़िस्म के पर रखनेवाले जानवर
और हर क़िस्म के ज़मीन पर फिरने या रेंगनेवाले
जानवर दो दो होकर तेरे पास आएँगे ताकि जीते
बच जाएँ। 21जो भी ख़ुराक दरकार है उसे अपने
और उनके लिए जमा करके कश्ती में महफ़ूज़ कर
लेना।”

22नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह
ने उसे बताया।

सैलाब का अग़ाज़

7 फिर रब ने नूह से कहा, “अपने घराने
समेत कश्ती में दाख़िल हो जा, क्योंकि
इस दौर के लोगों में से मैंने सिर्फ़ तुझे रास्तबाज़
पाया है। 2हर क़िस्म के पाक जानवरों में से सात
सात नरो-मादा के जोड़े जबकि नापाक जानवरों
में से नरो-मादा का सिर्फ़ एक एक जोड़ा साथ ले
जाना। 3इसी तरह हर क़िस्म के पर रखनेवालों में
से सात सात नरो-मादा के जोड़े भी साथ ले जाना
ताकि उनकी नसलें बची रहें। 4एक हफ़ते के बाद
मैं चालीस दिन और चालीस रात मुतवातिर बारिश
बरसाऊँगा। इससे मैं तमाम जानदारों को रूए-
ज़मीन पर से मिटा डालूँगा, अगरचे मैं ही ने उन्हें
बनाया है।”

5नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया
था। 6वह 600 साल का था जब यह तूफ़ानी
सैलाब ज़मीन पर आया।

7तूफ़ानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने
बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती
में सवार हुआ। 8ज़मीन पर फिरनेवाले पाक
और नापाक जानवर, पर रखनेवाले और तमाम
रेंगनेवाले जानवर भी आए। 9नरो-मादा की सूरत
में दो दो होकर वह नूह के पास आकर कश्ती में
सवार हुए। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा अल्लाह
ने नूह को हुक्म दिया था। 10एक हफ़ते के बाद
तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आ गया।

11यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जब नूह 600
साल का था। दूसरे महीने के 17वें दिन ज़मीन
की गहराइयों में से तमाम चश्मे फूट निकले और
आसमान पर पानी के दरीचे खुल गए। 12चालीस
दिन और चालीस रात तक मूसलाधार बारिश
होती रही। 13जब बारिश शुरू हुई तो नूह, उसके
बेटे सिम, हाम और याफ़त, उस की बीवी और
बहुएँ कश्ती में सवार हो चुके थे। 14उनके साथ हर
क़िस्म के जंगली जानवर, मवेशी, रेंगने और पर
रखनेवाले जानवर थे। 15हर क़िस्म के जानदार
दो दो होकर नूह के पास आकर कश्ती में सवार
हो चुके थे। 16नरो-मादा आए थे। सब कुछ वैसा
ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया
था। फिर रब ने दरवाज़े को बंद कर दिया।

[a]इबरानी लफ़्ज़ मतरूक है। शायद इसका मतलब सरो
या देवदार की लकड़ी हो।

17चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी रहा।
पानी चढ़ा तो उसने कश्ती को ज़मीन पर से उठा
लिया। 18पानी ज़ोर पकड़कर बहुत बढ़ गया,
और कश्ती उस पर तैरने लगी। 19आख़िरकार
पानी इतना ज़्यादा हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड़
भी उसमें छुप गए, 20बल्कि सबसे ऊँची चोटी
पर पानी की गहराई 20 फ़ुट थी। 21ज़मीन
पर रहनेवाली हर मख़लूक़ हलाक हुई। परिंदे,
मवेशी, जंगली जानवर, तमाम जानदार जिनसे
ज़मीन भरी हुई थी और इनसान, सब कुछ मर
गया। 22ज़मीन पर हर जानदार मख़लूक़ हलाक
हुई। 23यों हर मख़लूक़ को रूए-ज़मीन पर से
मिटा दिया गया। इनसान, ज़मीन पर फिरने और
रेंगनेवाले जानवर और परिंदे, सब कुछ ख़त्म कर
दिया गया। सिर्फ़ नूह और कश्ती में सवार उसके
साथी बच गए।

24सैलाब डेढ़ सौ दिन तक ज़मीन पर ग़ालिब
रहा।

सैलाब का इख़्तिताम

8 लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम
जानवर याद रहे जो कश्ती में थे। उसने हवा
चला दी जिससे पानी कम होने लगा। 2ज़मीन के
चश्मे और आसमान पर के पानी के दरीचे बंद हो
गए, और बारिश रुक गई। 3पानी घटता गया।
150 दिन के बाद वह काफ़ी कम हो गया था।
4सातवें महीने के 17वें दिन कश्ती अरारात के
एक पहाड़ पर टिक गई। 5दसवें महीने के पहले
दिन पानी इतना कम हो गया था कि पहाड़ों की
चोटियाँ नज़र आने लगी थीं।

6-7चालीस दिन के बाद नूह ने कश्ती की
खिड़की खोलकर एक कौवा छोड़ दिया, और
वह उड़कर चला गया। लेकिन जब तक ज़मीन
पर पानी था वह आता जाता रहा। 8फिर नूह ने
एक कबूतर छोड़ दिया ताकि पता चले कि ज़मीन
पानी से निकल आई है या नहीं। 9लेकिन कबूतर
को कहीं भी बैठने की जगह न मिली, क्योंकि
अब तक पूरी ज़मीन पर पानी ही पानी था। वह
कश्ती और नूह के पास वापस आ गया, और नूह
ने अपना हाथ बढ़ाया और कबूतर को पकड़कर
अपने पास कश्ती में रख लिया।

10उसने एक हफ़्ता और इंतज़ार करके कबूतर
को दुबारा छोड़ दिया। 11शाम के वक़्त वह लौट
आया। इस दफ़ा उस की चोंच में ज़ैतून का ताज़ा
पत्ता था। तब नूह को मालूम हुआ कि ज़मीन पानी
से निकल आई है।

12उसने मज़ीद एक हफ़्ते के बाद कबूतर को
छोड़ दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।

13जब नूह 601 साल का था तो पहले महीने
के पहले दिन ज़मीन की सतह पर पानी ख़त्म हो
गया। तब नूह ने कश्ती की छत खोल दी और देखा
कि ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है। 14दूसरे
महीने के 27वें दिन ज़मीन बिलकुल ख़ुश्क हो
गई।

15फिर अल्लाह ने नूह से कहा, 16"अपनी
बीवी, बेटों और बहुओं के साथ कश्ती से निकल
आ। 17जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल
दे, ख़ाह परिंदे हों, ख़ाह ज़मीन पर फिरने या
रेंगनेवाले जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नसल
बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते जाएँ।" 18चुनाँचे नूह
अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं समेत निकल
आया। 19तमाम जानवर और परिंदे भी अपनी
अपनी क़िस्म के गुरोहों में कश्ती से निकले।

20उस वक़्त नूह ने रब के लिए क़ुरबानगाह
बनाई। उसने तमाम फिरने और उड़नेवाले पाक
जानवरों में से कुछ चुनकर उन्हें ज़बह किया
और क़ुरबानगाह पर पूरी तरह जला दिया। 21यह
क़ुरबानियाँ देखकर रब ख़ुश हुआ और अपने दिल
में कहा, "अब से मैं कभी ज़मीन पर इनसान की
वजह से लानत नहीं भेजूँगा, क्योंकि उसका दिल
बचपन ही से बुराई की तरफ़ मायल है। अब से मैं
कभी इस तरह तमाम जान रखनेवाली मख़लूक़ात
को रूए-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा। 22दुनिया
के मुक़र्ररा औक़ात जारी रहेंगे। बीज बोने और
फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश, गरमियों

और सर्दियों का मौसम, दिन और रात, यह सब
कुछ दुनिया के अख़ीर तक क़ायम रहेगा।”

अल्लाह का नूह के साथ अहद

9 फिर अल्लाह ने नूह और उसके बेटों को
बरकत देकर कहा, “फलो-फूलो और
तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए।
2ज़मीन पर फिरने और रेंगनेवाले जानवर, परिंदे
और मछलियाँ सब तुमसे डरेंगे। उन्हें तुम्हारे
इख़्तियार में कर दिया गया है। 3जिस तरह मैंने
तुम्हारे खाने के लिए पौदों की पैदावार मुक़र्रर की
है उसी तरह अब से तुम्हें हर क़िस्म के जानवर
खाने की इजाज़त भी है। 4लेकिन ख़बरदार! ऐसा
गोश्त न खाना जिसमें ख़ून है, क्योंकि ख़ून में उस
की जान है।

5किसी की जान लेना मना है। जो ऐसा करेगा
उसे अपनी जान देनी पड़ेगी, ख़ाह वह इनसान हो
या हैवान। मैं ख़ुद इसका मुतालबा करूँगा। 6जो
भी किसी का ख़ून बहाए उसका ख़ून भी बहाया
जाएगा। क्योंकि अल्लाह ने इनसान को अपनी
सूरत पर बनाया है।

7अब फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ।
दुनिया में फैल जाओ।”

8तब अल्लाह ने नूह और उसके बेटों से कहा,
9“अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ
अहद क़ायम करता हूँ। 10यह अहद उन तमाम
जानवरों के साथ भी होगा जो कश्ती में से निकले
हैं यानी परिंदों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम
जानवरों के साथ। 11मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधकर
वादा करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा
कि ज़मीन की तमाम ज़िंदगी सैलाब से ख़त्म
कर दी जाएगी। अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं
आएगा जो पूरी ज़मीन को तबाह कर दे। 12इस
अबदी अहद का निशान जो मैं तुम्हारे और तमाम
जानदारों के साथ क़ायम कर रहा हूँ यह है कि
13मैं अपनी कमान बादलों में रखता हूँ। वह मेरे
दुनिया के साथ अहद का निशान होगा। 14जब
कभी मेरे कहने पर आसमान पर बादल छा जाएंगे
और क़ौसे-क़ुज़ह उनमें से नज़र आएगी 15तो
मैं यह अहद याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम
जानदारों के साथ किया गया है। अब कभी भी
ऐसा सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िंदगी को
हलाक कर दे। 16क़ौसे-क़ुज़ह नज़र आएगी तो
मैं उसे देखकर उस दायमी अहद को याद करूँगा
जो मेरे और दुनिया की तमाम जानदार मख़लूक़ात
के दरमियान है। 17यह उस अहद का निशान है
जो मैंने दुनिया के तमाम जानदारों के साथ किया
है।”

नूह के बेटे

18नूह के जो बेटे उसके साथ कश्ती से निकले
सिम, हाम और याफ़त थे। हाम कनान का बाप
था। 19दुनिया-भर के तमाम लोग इन तीनों की
औलाद हैं।

20नूह किसान था। शुरू में उसने अंगूर का बाग़
लगाया। 21अंगूर से मै बनाकर उसने इतनी पी
ली कि वह नशे में धुत अपने डेरे में नंगा पड़ा रहा।
22कनान के बाप हाम ने उसे यों पड़ा हुआ देखा तो
बाहर जाकर अपने दोनों भाइयों को उसके बारे में
बताया। 23यह सुनकर सिम और याफ़त ने अपने
कंधों पर कपड़ा रखा। फिर वह उलटे चलते हुए
डेरे में दाख़िल हुए और कपड़ा अपने बाप पर डाल
दिया। उनके मुँह दूसरी तरफ़ मुड़े रहे ताकि बाप
की बरहनगी नज़र न आए।

24जब नूह होश में आया तो उसको पता चला
कि सबसे छोटे बेटे ने क्या किया है। 25उसने
कहा, “कनान पर लानत! वह अपने भाइयों का
ज़लीलतरीन ग़ुलाम होगा।

26मुबारक हो रब जो सिम का ख़ुदा है। कनान
सिम का ग़ुलाम हो। 27अल्लाह करे कि याफ़त
की हुदूद बढ़ जाएँ। याफ़त सिम के डेरों में रहे और
कनान उसका ग़ुलाम हो।”

28सैलाब के बाद नूह मज़ीद 350 साल ज़िंदा
रहा। 29वह 950 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

नूह की औलाद

10 यह नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त का नसबनामा है। उनके बेटे सैलाब के बाद पैदा हुए।

याफ़त की नसल

2याफ़त के बेटे जुमर, माजूज, मादी, यावान,
तूबल, मसक और तीरास थे। 3जुमर के बेटे
अश्कनाज़, रीफ़त और तुजरमा थे। 4यावान के
बेटे इलीसा और तरसीस थे। कित्ती और दोदानी
भी उस की औलाद हैं। 5वह उन क़ौमों के आबा-
ओ-अजदाद हैं जो साहिली इलाक़ों और जज़ीरों में फैल गईं। यह याफ़त की औलाद हैं जो अपने अपने क़बीले और मुल्क में रहते हुए अपनी अपनी ज़बान बोलते हैं।

हाम की नसल

6हाम के बेटे कूश, मिसर, फ़ूत और कनान थे।
7कूश के बेटे सिबा, हवीला, सबता, रामा और सब्तका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे।

8कूश का एक और बेटा बनाम नमरूद था।
वह दुनिया में पहला ज़बरदस्त हाकिम था। 9रब
के नज़दीक वह ज़बरदस्त शिकारी था। इसलिए आज भी किसी अच्छे शिकारी के बारे में कहा जाता है, "वह नमरूद की मानिंद है जो रब
के नज़दीक ज़बरदस्त शिकारी था।" 10उस
की सलतनत के पहले मरकज़ मुल्के-सिनार में बाबल, अरक, अक्काद और कलना के शहर थे।
11उस मुल्क से निकलकर वह असूर चला गया
जहाँ उसने नीनवा, रहोबोत-ईर, कलह 12और
रसन के शहर तामीर किए। बड़ा शहर रसन नीनवा और कलह के दरमियान वाक़े है।

13मिसर इन क़ौमों का बाप था : लूदी,
अनामी, लिहाबी, नफ़तूही, 14फ़तरूसी,
कसलूही (जिनसे फ़िलिस्ती निकले) और कफ़तूरी।

15कनान का पहलौठा सैदा था। कनान ज़ैल
की क़ौमों का बाप भी था : हित्ती 16यबूसी,
अमोरी, जिरजासी, 17हिव्वी, अरक़ी, सीनी,
18अरवादी, समारी और हमाती। बाद में कनानी
क़बीले इतने फैल गए 19कि उनकी हुदूद शिमाल
में सैदा से जुनूब की तरफ़ जिरार से होकर ग़ज़्ज़ा तक और वहाँ से मशरिक़ की तरफ़ सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम से होकर लसा तक थीं।

20यह सब हाम की औलाद हैं, जो उनके अपने
अपने क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने मुल्क और अपनी अपनी क़ौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।

सिम की नसल

21सिम याफ़त का बड़ा भाई था। उसके भी बेटे पैदा हुए। सिम तमाम बनी इबर का बाप है।

22सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अरफ़क्सद, लूद और अराम थे।

23अराम के बेटे ऊज़, हूल, जतर और मस थे।

24अरफ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का बेटा इबर था।

25इबर के हाँ दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम फ़लज यानी तक़सीम था, क्योंकि उन ऐयाम में दुनिया तक़सीम हुई। फ़लज के भाई का नाम युक़तान था।

26युक़तान के बेटे अलमूदाद, सलफ़,
हसरमावत, इराख़, 27हदूराम, ऊज़ाल, दिक़ला,
28ऊबाल, अबीमाएल, सबा, 29ओफ़ीर, हवीला
और यूबाब थे। यह सब युक़तान के बेटे थे। 30वह
मेसा से लेकर सफ़ार और मशरिक़ी पहाड़ी इलाक़े तक आबाद थे।

31यह सब सिम की औलाद हैं, जो अपने अपने
क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने मुल्क और अपनी अपनी क़ौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।

32यह सब नूह के बेटों के क़बीले हैं, जो अपनी
नसलों और क़ौमों के मुताबिक़ दर्ज किए गए हैं। सैलाब के बाद तमाम क़ौमें इन्हीं से निकलकर रूए-ज़मीन पर फैल गईं।

बाबल का बुर्ज

11 उस वक़्त तक पूरी दुनिया के लोग
एक ही ज़बान बोलते थे। 2मशरिक़
की तरफ़ बढ़ते बढ़ते वह सिनार के एक मैदान
में पहुँचकर वहाँ आबाद हुए। 3तब वह एक दूसरे
से कहने लगे, "आओ, हम मिट्टी से ईंटें बनाकर
उन्हें आग में ख़ूब पकाएँ।" उन्होंने तामीरी काम
के लिए पत्थर की जगह ईंटें और मसाले की जगह
तारकोल इस्तेमाल किया। 4फिर वह कहने लगे,
"आओ, हम अपने लिए शहर बना लें जिसमें ऐसा
बुर्ज हो जो आसमान तक पहुँच जाए फिर हमारा
नाम क़ायम रहेगा और हम रूए-ज़मीन पर बिखर
जाने से बच जाएंगे।"

5लेकिन रब उस शहर और बुर्ज को देखने के
लिए उतर आया जिसे लोग बना रहे थे। 6रब ने
कहा, "यह लोग एक ही क़ौम हैं और एक ही
ज़बान बोलते हैं। और यह सिर्फ़ उसका आग़ाज़
है जो वह करना चाहते हैं। अब से जो भी वह
मिलकर करना चाहेंगे उससे उन्हें रोका नहीं जा
सकेगा। 7इसलिए आओ, हम दुनिया में उतरकर
उनकी ज़बान को दरहम-बरहम कर दें ताकि वह
एक दूसरे की बात समझ न पाएँ।"

8इस तरीक़े से रब ने उन्हें तमाम रूए-ज़मीन
पर मुंतशिर कर दिया, और शहर की तामीर रुक
गई। 9इसलिए शहर का नाम बाबल यानी अबतरी
ठहरा, क्योंकि रब ने वहाँ तमाम लोगों की ज़बान
को दरहम-बरहम करके उन्हें तमाम रूए-ज़मीन
पर मुंतशिर कर दिया।

सिम से अब्राम तक का नसबनामा

10यह सिम का नसबनामा है :

सिम 100 साल का था जब उसका बेटा
अरफ़क्सद पैदा हुआ। यह सैलाब के दो साल बाद
हुआ। 11इसके बाद वह मज़ीद 500 साल ज़िंदा
रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

12अरफ़क्सद 35 साल का था जब सिलह पैदा
हुआ। 13इसके बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िंदा
रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

14सिलह 30 साल का था जब इबर पैदा हुआ।
15इसके बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

16इबर 34 साल का था जब फ़लज पैदा हुआ।
17इसके बाद वह मज़ीद 430 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

18फ़लज 30 साल का था जब रऊ पैदा हुआ।
19इसके बाद वह मज़ीद 209 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

20रऊ 32 साल का था जब सरूज पैदा हुआ।
21इसके बाद वह मज़ीद 207 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

22सरूज 30 साल का था जब नहूर पैदा हुआ।
23इसके बाद वह मज़ीद 200 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

24नहूर 29 साल का था जब तारह पैदा हुआ।
25इसके बाद वह मज़ीद 119 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

26तारह 70 साल का था जब उसके बेटे
अब्राम, नहूर और हारान पैदा हुए।

27यह तारह का नसबनामा है : अब्राम, नहूर
और हारान तारह के बेटे थे। लूत हारान का बेटा
था। 28अपने बाप तारह की ज़िंदगी में ही हारान
कसदियों के ऊर में इंतक़ाल कर गया जहाँ वह
पैदा भी हुआ था।

29बाक़ी दोनों बेटों की शादी हुई। अब्राम की
बीवी का नाम सारय था और नहूर की बीवी का
नाम मिलकाह। मिलकाह हारान की बेटी थी, और
उस की एक बहन बनाम इस्का थी। 30सारय
बाँझ थी, इसलिए उसके बच्चे नहीं थे।

31तारह कसदियों के ऊर से रवाना होकर
मुल्के-कनान की तरफ़ सफ़र करने लगा। उसके
साथ उसका बेटा अब्राम, उसका पोता लूत यानी
हारान का बेटा और उस की बहू सारय थे। जब
वह हारान पहुँचे तो वहाँ आबाद हो गए। 32तारह
205 साल का था जब उसने हारान में वफ़ात
पाई।

अब्राम की बुलाहट

12 रब ने अब्राम से कहा, “अपने
वतन, अपने रिश्तेदारों और अप-
ने बाप के घर को छोड़कर उस मुल्क में चला
जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। 2मैं तुझसे एक बड़ी
क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम
को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का
बाइस होगा। 3जो तुझे बरकत देंगे उन्हें मैं भी
बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं
भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तुझसे
बरकत पाएँगी।”

4अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना
हुआ। लूत उसके साथ था। उस वक़्त अब्राम 75
साल का था। 5उसके साथ उस की बीवी सारय
और उसका भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-
चाकरों समेत अपनी पूरी मिलकियत भी साथ ले
गया जो उसने हारान में हासिल की थी। चलते
चलते वह कनान पहुँचे। 6अब्राम उस मुल्क में से
गुज़रकर सिकम के मक़ाम पर ठहर गया जहाँ
मोरिह के बलूत का दरख़्त था। उस ज़माने में
मुल्क में कनानी क़ौमें आबाद थीं।

7वहाँ रब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और उससे
कहा, “मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।”
इसलिए उसने वहाँ रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह
बनाई जहाँ वह उस पर ज़ाहिर हुआ था। 8वहाँ से
वह उस पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ गया जो बैतेल
के मशरिक़ में है। वहाँ उसने अपना ख़ैमा लगाया।
मग़रिब में बैतेल था और मशरिक़ में अई। इस
जगह पर भी उसने रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह
बनाई और रब का नाम लेकर इबादत की।

9फिर अब्राम दुबारा रवाना होकर जुनूब के
दश्ते-नजब की तरफ़ चल पड़ा।

अब्राम मिसर में

10उन दिनों में मुल्के-कनान में काल पड़ा।
काल इतना सख़्त था कि अब्राम उससे बचने की
ख़ातिर कुछ देर के लिए मिसर में जा बसा, लेकिन
परदेसी की हैसियत से। 11जब वह मिसर की
सरहद के क़रीब आए तो उसने अपनी बीवी सारय
से कहा, “मैं जानता हूँ कि तू कितनी ख़ूबसूरत
है। 12मिसरी तुझे देखेंगे, फिर कहेंगे, ‘यह इसका
शौहर है।’ नतीजे में वह मुझे मार डालेंगे और तुझे
ज़िंदा छोड़ेंगे। 13इसलिए लोगों से यह कहते रहना
कि मैं अब्राम की बहन हूँ। फिर मेरे साथ अच्छा
सुलूक किया जाएगा और मेरी जान तेरे सबब से
बच जाएगी।”

14जब अब्राम मिसर पहुँचा तो वाक़ई
मिसरियों ने देखा कि सारय निहायत ही
ख़ूबसूरत है। 15और जब फ़िरौन के अफ़-
सरान ने उसे देखा तो उन्होंने फ़िरौन के सामने
सारय की तारीफ़ की। आख़िरकार उसे महल में
पहुँचाया गया। 16फ़िरौन ने सारय की ख़ातिर
अब्राम पर एहसान करके उसे भेड़-बकरियाँ,
गाय-बैल, गधे-गधियाँ, नौकर-चाकर और ऊँट
दिए।

17लेकिन रब ने सारय के सबब से फ़िरौन और
उसके घराने में सख़्त क़िस्म के अमराज़ फैलाए।
18आख़िरकार फ़िरौन ने अब्राम को बुलाकर
कहा, “तूने मेरे साथ क्या किया? तूने मुझे क्यों
नहीं बताया कि सारय तेरी बीवी है? 19तूने क्यों
कहा कि वह मेरी बहन है? इस धोके की बिना
पर मैंने उसे घर में रख लिया ताकि उससे शादी
करूँ। देख, तेरी बीवी हाज़िर है। इसे लेकर यहाँ से
निकल जा!” 20फिर फ़िरौन ने अपने सिपाहियों
को हुक्म दिया, और उन्होंने अब्राम, उस की बीवी
और पूरी मिलकियत को रुख़सत करके मुल्क से
रवाना कर दिया।

अब्राम और लूत अलग हो जाते हैं

13 अब्राम अपनी बीवी, लूत और तमाम
जायदाद को साथ लेकर मिसर से
निकला और कनान के जुनूबी इलाक़े दश्ते-नजब
में वापस आया।

2अब्राम निहायत दौलतमंद हो गया था। उसके
पास बहुत-से मवेशी और सोना-चाँदी थी। 3वहाँ
से जगह बजगह चलते हुए वह आख़िरकार बैतेल

से होकर उस मक़ाम तक पहुँच गया जहाँ उसने शुरू में अपना डेरा लगाया था और जो बैतेल और अई के दरमियान था। 4वहाँ जहाँ उसने क़ुरबानगाह बनाई थी उसने रब का नाम लेकर उस की इबादत की।

5लूत के पास भी बहुत-सी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और ख़ैमे थे। 6नतीजा यह निकला कि आख़िरकार वह मिलकर न रह सके, क्योंकि इतनी जगह नहीं थी कि दोनों के रेवड़ एक ही जगह पर चर सकें। 7अब्राम और लूत के चरवाहे आपस में झगड़ने लगे। (उस ज़माने में कनानी और फ़रिज़्ज़ी भी मुल्क में आबाद थे।) 8तब अब्राम ने लूत से बात की, "ऐसा नहीं होना चाहिए कि तेरे और मेरे दरमियान झगड़ा हो या तेरे चरवाहों और मेरे चरवाहों के दरमियान। हम तो भाई हैं। 9क्या ज़रूरत है कि हम मिलकर रहें जबकि तू आसानी से इस मुल्क की किसी और जगह रह सकता है। बेहतर है कि तू मुझसे अलग होकर कहीं और रहे। अगर तू बाएँ हाथ जाए तो मैं दाएँ हाथ जाऊँगा, और अगर तू दाएँ हाथ जाए तो मैं बाएँ हाथ जाऊँगा।"

10लूत ने अपनी नज़र उठाकर देखा कि दरियाए-यरदन के पूरे इलाक़े में ज़ुग़र तक पानी की कसरत है। वह रब के बाग़ या मुल्के-मिसर की मानिंद था, क्योंकि उस वक़्त रब ने सदूम और अमूरा को तबाह नहीं किया था। 11चुनाँचे लूत ने दरियाए-यरदन के पूरे इलाक़े को चुन लिया और मशरिक़ की तरफ़ जा बसा। यों दोनों रिश्तेदार एक दूसरे से जुदा हो गए। 12अब्राम मुल्के-कनान में रहा जबकि लूत यरदन के इलाक़े के शहरों के दरमियान आबाद हो गया। वहाँ उसने अपने ख़ैमे सदूम के क़रीब लगा दिए। 13लेकिन सदूम के बाशिंदे निहायत शरीर थे, और उनके रब के ख़िलाफ़ गुनाह निहायत मकरूह थे।

रब का अब्राम के साथ दुबारा वादा

14लूत अब्राम से जुदा हुआ तो रब ने अब्राम से कहा, "अपनी नज़र उठाकर चारों तरफ़ यानी शिमाल, जुनूब, मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ देख। 15जो भी ज़मीन तुझे नज़र आए उसे मैं तुझे और तेरी औलाद को हमेशा के लिए देता हूँ। 16मैं तेरी औलाद को ख़ाक की तरह बेशुमार होने दूँगा। जिस तरह ख़ाक के ज़र्रे गिने नहीं जा सकते उसी तरह तेरी औलाद भी गिनी नहीं जा सकेगी। 17चुनाँचे उठकर इस मुल्क की हर जगह चल-फिर, क्योंकि मैं इसे तुझे देता हूँ।"

18अब्राम रवाना हुआ। चलते चलते उसने अपने डेरे हबरून के क़रीब ममरे के दरख़्तों के पास लगाए। वहाँ उसने रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह बनाई।

अब्राम लूत को छुड़ाता है

14 कनान में जंग हुई। बैरूने-मुल्क के चार बादशाहों ने कनान के पाँच बादशाहों से जंग की। बैरूने-मुल्क के बादशाह यह थे : सिनार से अमराफ़िल, इल्लासर से अरयूक, ऐलाम से किदरलाउमर और जोयम से तिदाल। 2कनान के बादशाह यह थे : सदूम से बिरा, अमूरा से बिरशा, अदमा से सिनियाब, ज़बोईम से शिमेबर और बाला यानी ज़ुग़र का बादशाह।

3कनान के इन पाँच बादशाहों का इत्तहाद हुआ था और वह वादीए-सिद्दीम में जमा हुए थे। (अब सिद्दीम नहीं है, क्योंकि उस की जगह बहीराए-मुरदार आ गया है)। 4किदरलाउमर ने बारह साल तक उन पर हुकूमत की थी, लेकिन तेरहवें साल वह बाग़ी हो गए थे।

5अब एक साल के बाद किदरलाउमर और उसके इत्तहादी अपनी फ़ौजों के साथ आए। पहले उन्होंने अस्तारात-क़रनैम में रफ़ाइयों को, हाम में ज़ूज़ियों को, सवी-क़िरियतायम में ऐमियों को 6और होरियों को उनके पहाड़ी इलाक़े सईर में शिकस्त दी। यों वह एल-फ़ारान तक पहुँच गए जो रेगिस्तान के किनारे पर है। 7फिर वह वापस आए और ऐन-मिसफ़ात यानी क़ादिस पहुँचे। उन्होंने अमालीक़ियों के पूरे इलाक़े को तबाह कर दिया

और हससून-तमर में आबाद अमोरियों को भी
शिकस्त दी।
8उस वक़्त सदूम, अमूरा, अदमा, ज़बोईम और
बाला यानी ज़ुग़र के बादशाह उनसे लड़ने के लिए
सिद्दीम की वादी में जमा हुए। 9इन पाँच बादशाहों
ने ऐलाम के बादशाह किदरलाउमर, जोयम के
बादशाह तिदाल, सिनार के बादशाह अमराफ़िल
और इल्लासर के बादशाह अरयूक का मुक़ाबला
किया। 10इस वादी में तारकोल के मुतअद्दिद गढ़े
थे। जब बाग़ी बादशाह शिकस्त खाकर भागने लगे
तो सदूम और अमूरा के बादशाह इन गढ़ों में गिर
गए जबकि बाक़ी तीन बादशाह बचकर पहाड़ी
इलाक़े में फ़रार हुए। 11फ़तहमंद बादशाह सदूम
और अमूरा का तमाम माल तमाम खानेवाली
चीज़ों समेत लूटकर वापस चल दिए। 12अब्राम
का भतीजा लूत सदूम में रहता था, इसलिए वह
उसे भी उस की मिलकियत समेत छीनकर साथ
ले गए।
13लेकिन एक आदमी ने जो बच निकला था
इबरानी मर्द अब्राम के पास आकर उसे सब कुछ
बता दिया। उस वक़्त वह ममरे के दरख़्तों के पास
आबाद था। ममरे अमोरी था। वह और उसके
भाई इसकाल और आनेर अब्राम के इत्तहादी
थे। 14जब अब्राम को पता चला कि भतीजे को
गिरिफ़्तार कर लिया गया है तो उसने अपने घर
में पैदा हुए तमाम जंगआज़मूदा ग़ुलामों को जमा
करके दान तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया। उसके
साथ 318 अफ़राद थे। 15वहाँ उसने अपने बंदों
को गुरोहों में तक़सीम करके रात के वक़्त दुश्मन
पर हमला किया। दुश्मन शिकस्त खाकर भाग
गया और अब्राम ने दमिश्क़ के शिमाल में वाक़े
ख़ूबा तक उसका ताक़्क़ुब किया। 16वह उनसे
लूटा हुआ तमाम माल वापस ले आया। लूत, उस
की जायदाद, औरतें और बाक़ी क़ैदी भी दुश्मन
के क़ब्ज़े से बच निकले।

मलिके-सिद्क़, सालिम का बादशाह

17जब अब्राम किदरलाउमर और उसके
इत्तहादियों पर फ़तह पाने के बाद वापस पहुँचा तो
सदूम का बादशाह उससे मिलने के लिए वादीए-
सवी में आया। (इसे आजकल बादशाह की वादी
कहा जाता है।) 18सालिम का बादशाह मलिके-
सिद्क़ भी वहाँ पहुँचा। वह अपने साथ रोटी और
मै ले आया। मलिके-सिद्क़ अल्लाह तआला का
इमाम था। 19उसने अब्राम को बरकत देकर कहा,
“अब्राम पर अल्लाह तआला की बरकत हो,
जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है। 20अल्लाह
तआला मुबारक हो जिसने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ
में कर दिया है।” अब्राम ने उसे तमाम माल का
दसवाँ हिस्सा दिया।
21सदूम के बादशाह ने अब्राम से कहा, “मुझे
मेरे लोग वापस कर दें और बाक़ी चीज़ें अपने पास
रख लें।” 22लेकिन अब्राम ने उससे कहा, “मैंने
रब से क़सम खाई है, अल्लाह तआला से जो
आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है 23कि मैं उसमें
से कुछ नहीं लूँगा जो आपका है, चाहे वह धागा या
जूती का तसमा ही क्यों न हो। ऐसा न हो कि आप
कहें, ‘मैंने अब्राम को दौलतमंद बना दिया है।’
24सिवाए उस खाने के जो मेरे आदमियों ने रास्ते
में खाया है मैं कुछ क़बूल नहीं करूँगा। लेकिन मेरे
इत्तहादी आनेर, इसकाल और ममरे ज़रूर अपना
अपना हिस्सा लें।”

अब्राम के साथ रब का अहद

15 इसके बाद रब रोया में अब्राम से
हमकलाम हुआ, “अब्राम, मत डर।
मैं ही तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र
हूँ।”
2लेकिन अब्राम ने एतराज़ किया, “ऐ रब
क़ादिरे-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी
तक मेरे हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलियज़र
दमिश्क़ी मेरी मीरास पाएगा। 3तूने मुझे औलाद
नहीं बख़्शी, इसलिए मेरे घराने का नौकर मेरा
वारिस होगा।” 4तब अब्राम को अल्लाह से एक

और कलाम मिला। “यह आदमी इलियज़र तेरा
वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही बेटा तेरा
वारिस होगा।” 5रब ने उसे बाहर ले जाकर कहा,
“आसमान की तरफ़ देख और सितारों को गिनने
की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार
होगी।”

6अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर
अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

7फिर रब ने उससे कहा, “मैं रब हूँ जो तुझे
कसदियों के ऊर से यहाँ ले आया ताकि तुझे
यह मुल्क मीरास में दे दूँ।” 8अब्राम ने पूछा,
“ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मैं किस तरह जानूँ कि
इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करूँगा?” 9जवाब में रब
ने कहा, “मेरे हुज़ूर एक तीन-साला गाय, एक
तीन-साला बकरी और एक तीन-साला मेंढा ले
आ। एक क़ुम्री और एक कबूतर का बच्चा भी ले
आना।” 10अब्राम ने ऐसा ही किया और फिर हर
एक जानवर को दो हिस्सों में काटकर उनको एक
दूसरे के आमने-सामने रख दिया। लेकिन परिंदों
को उसने सालिम रहने दिया। 11शिकारी परिंदे
उन पर उतरने लगे, लेकिन अब्राम उन्हें भगाता
रहा।

12जब सूरज डूबने लगा तो अब्राम पर गहरी
नींद तारी हुई। उस पर दहशत और अंधेरा ही
अंधेरा छा गया। 13फिर रब ने उससे कहा, “जान
ले कि तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उसका
नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और ग़ुलाम होगी,
और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया
जाएगा। 14लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत
करूँगा जिसने उसे ग़ुलाम बनाया होगा। इसके
बाद वह बड़ी दौलत पाकर उस मुल्क से निकलेंगे।
15तू ख़ुद उम्ररसीदा होकर सलामती के साथ
इंतक़ाल करके अपने बापदादा से जा मिलेगा और
दफ़नाया जाएगा। 16तेरी औलाद की चौथी पुश्त
ग़ैरवतन से वापस आएगी, क्योंकि उस वक़्त
तक मैं अमोरियों को बरदाश्त करूँगा। लेकिन
आख़िरकार उनके गुनाह इतने संगीन हो जाएंगे
कि मैं उन्हें मुल्के-कनान से निकाल दूँगा।”

17सूरज ग़ुरूब हुआ। अंधेरा छा गया। अचानक
एक धुआँदार तनूर और एक भड़कती हुई मशाल
नज़र आई और जानवरों के दो दो टुकड़ों के बीच
में से गुज़रे।

18उस वक़्त रब ने अब्राम के साथ अहद किया।
उसने कहा, “मैं यह मुल्क मिसर की सरहद से
फ़ुरात तक तेरी औलाद को दूँगा, 19अगरचे अभी
तक इसमें क़ीनी, क़निज़्ज़ी, कदमूनी, 20हित्ती,
फ़रिज़्ज़ी, रफ़ाई, 21अमोरी, कनानी, जिरजासी
और यबूसी आबाद हैं।”

हाजिरा और इसमाईल

16 अब तक अब्राम की बीवी सारय के
कोई बच्चा नहीं हुआ था। लेकिन
उन्होंने एक मिसरी लौंडी रखी थी जिसका नाम
हाजिरा था, 2और एक दिन सारय ने अब्राम से
कहा, “रब ने मुझे बच्चे पैदा करने से महरूम रखा
है, इसलिए मेरी लौंडी के साथ हमबिसतर हों।
शायद मुझे उस की मारिफ़त बच्चा मिल जाए।”

अब्राम ने सारय की बात मान ली। 3चुनाँचे
सारय ने अपनी मिसरी लौंडी हाजिरा को अपने
शौहर अब्राम को दे दिया ताकि वह उस की
बीवी बन जाए उस वक़्त अब्राम को कनान में
बसते हुए दस साल हो गए थे। 4अब्राम हाजिरा
से हमबिसतर हुआ तो वह उम्मीद से हो गई।
जब हाजिरा को यह मालूम हुआ तो वह अपनी
मालिकन को हक़ीर जानने लगी। 5तब सारय ने
अब्राम से कहा, “जो ज़ुल्म मुझ पर किया जा
रहा है वह आप ही पर आए। मैंने ख़ुद इसे आपके
बाज़ुओं में दे दिया था। अब जब इसे मालूम हुआ
है कि उम्मीद से है तो मुझे हक़ीर जानने लगी
है। रब मेरे और आपके दरमियान फ़ैसला करे।”
6अब्राम ने जवाब दिया, “देखो, यह तुम्हारी लौंडी
है और तुम्हारे इख़्तियार में है। जो तुम्हारा जी चाहे
उसके साथ करो।”

इस पर सारय उससे इतना बुरा सुलूक करने
लगी कि हाजिरा फ़रार हो गई। 7रब के फ़रिश्ते
को हाजिरा रेगिस्तान के उस चश्मे के क़रीब मिली

जो शूर के रास्ते पर है। 8उसने कहा, “सारय की
लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आ रही है और कहाँ
जा रही है?” हाजिरा ने जवाब दिया, “मैं अपनी
मालिकन सारय से फ़रार हो रही हूँ।” 9रब के
फ़रिश्ते ने उससे कहा, “अपनी मालिकन के पास
वापस चली जा और उसके ताबे रह। 10मैं तेरी
औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि उसे गिना नहीं जा
सकेगा।” 11रब के फ़रिश्ते ने मज़ीद कहा, “तू
उम्मीद से है। एक बेटा पैदा होगा। उसका नाम
इसमाईल यानी ‘अल्लाह सुनता है’ रख, क्योंकि
रब ने मुसीबत में तेरी आवाज़ सुनी। 12वह जंगली
गधे की मानिंद होगा। उसका हाथ हर एक के
ख़िलाफ़ और हर एक का हाथ उसके ख़िलाफ़
होगा। तो भी वह अपने तमाम भाइयों के सामने
आबाद रहेगा।”

13रब के उसके साथ बात करने के बाद हाजिरा
ने उसका नाम अत्ताएल-रोई यानी ‘तू एक माबूद
है जो मुझे देखता है’ रखा। उसने कहा, “क्या मैंने
वाक़ई उसके पीछे देखा है जिसने मुझे देखा है?”
14इसलिए उस जगह के कुएँ का नाम ‘बैर-लही-
रोई’ यानी ‘उस ज़िंदा हस्ती का कुआँ जो मुझे
देखता है’ पड़ गया। वह क़ादिस और बरद के
दरमियान वाक़े है।

15हाजिरा वापस गई, और उसके बेटा पैदा
हुआ। अब्राम ने उसका नाम इसमाईल रखा।
16उस वक़्त अब्राम 86 साल का था।

अहद का निशान : ख़तना

17 जब अब्राम 99 साल का था तो रब
उस पर ज़ाहिर हुआ। उसने कहा, “मैं
अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ हूँ। मेरे हुज़ूर चलता रह
और बेइलज़ाम हो। 2मैं तेरे साथ अपना अहद
बाँधूँगा और तेरी औलाद को बहुत ही ज़्यादा बढ़ा
दूँगा।”

3अब्राम मुँह के बल गिर गया, और अल्लाह
ने उससे कहा, 4“मेरा तेरे साथ अहद है कि तू
बहुत क़ौमों का बाप होगा। 5अब से तू अब्राम
यानी ‘अज़ीम बाप’ नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा
नाम इब्राहीम यानी ‘बहुत क़ौमों का बाप’ होगा।
क्योंकि मैंने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना
दिया है। 6मैं तुझे बहुत ही ज़्यादा औलाद बख़्श
दूँगा, इतनी कि क़ौमें बनेंगी। तुझसे बादशाह भी
निकलेंगे। 7मैं अपना अहद तेरे और तेरी औलाद
के साथ नसल-दर-नसल क़ायम करूँगा, एक
अबदी अहद जिसके मुताबिक़ मैं तेरा और तेरी
औलाद का ख़ुदा हूँगा। 8तू इस वक़्त मुल्के-
कनान में परदेसी है, लेकिन मैं इस पूरे मुल्क को
तुझे और तेरी औलाद को देता हूँ। यह हमेशा तक
उनका ही रहेगा, और मैं उनका ख़ुदा हूँगा।”

9अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, “तुझे
और तेरी औलाद को नसल-दर-नसल मेरे अहद
की शरायत पूरी करनी हैं। 10इसकी एक शर्त
यह है कि हर एक मर्द का ख़तना किया जाए।
11अपना ख़तना कराओ। यह हमारे आपस के
अहद का ज़ाहिरी निशान होगा। 12लाज़िम है कि
तू और तेरी औलाद नसल-दर-नसल अपने हर
एक बेटे का आठवें दिन ख़तना करवाएँ। यह
उसूल उस पर भी लागू है जो तेरे घर में रहता
है लेकिन तुझसे रिश्ता नहीं रखता, चाहे वह घर
में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से ख़रीदा
गया हो। 13घर के हर एक मर्द का ख़तना करना
लाज़िम है, ख़ाह वह घर में पैदा हुआ हो या किसी
अजनबी से ख़रीदा गया हो। यह इस बात का
निशान होगा कि मेरा तेरे साथ अहद हमेशा तक
क़ायम रहेगा। 14जिस मर्द का ख़तना न किया
गया उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाएगा,
क्योंकि उसने मेरे अहद की शरायत पूरी न कीं।”

15अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, “अपनी
बीवी सारय का नाम भी बदल देना। अब से उसका
नाम सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा।
16मैं उसे बरकत बख़्शूँगा और तुझे उस की
मारिफ़त बेटा दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बरकत
दूँगा कि उससे क़ौमें बल्कि क़ौमों के बादशाह
निकलेंगे।”

17इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल
ही दिल में वह हँस पड़ा और सोचा, “यह किस

तरह हो सकता है? मैं तो 100 साल का हूँ। ऐसे आदमी के हाँ बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? और सारा जैसी उम्ररसीदा औरत के बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? उस की उम्र तो 90 साल है।” 18उसने अल्लाह से कहा, “हाँ, इसमाईल ही तेरे सामने जीता रहे।”

19अल्लाह ने कहा, “नहीं, तेरी बीवी सारा के हाँ बेटा पैदा होगा। तू उसका नाम इसहाक़ यानी ‘वह हँसता है’ रखना। मैं उसके और उस की औलाद के साथ अबदी अहद बाँधूँगा। 20मैं इसमाईल के सिलसिले में भी तेरी दरख़ास्त पूरी करूँगा। मैं उसे भी बरकत देकर फलने-फूलने दूँगा और उस की औलाद बहुत ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा। वह बारह रईसों का बाप होगा, और मैं उस की मारिफ़त एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा। 21लेकिन मेरा अहद इसहाक़ के साथ होगा, जो ऐन एक साल के बाद सारा के हाँ पैदा होगा।”

22अल्लाह की इब्राहीम के साथ बात ख़त्म हुई, और वह उसके पास से आसमान पर चला गया।

23उसी दिन इब्राहीम ने अल्लाह का हुक्म पूरा किया। उसने घर के हर एक मर्द का ख़तना करवाया, अपने बेटे इसमाईल का भी और उनका भी जो उसके घर में रहते लेकिन उससे रिश्ता नहीं रखते थे, चाहे वह उसके घर में पैदा हुए थे या ख़रीदे गए थे। 24इब्राहीम 99 साल का था जब उसका ख़तना हुआ, 25जबकि उसका बेटा इसमाईल 13 साल का था। 26दोनों का ख़तना उसी दिन हुआ। 27साथ साथ घराने के तमाम बाक़ी मर्दों का ख़तना भी हुआ, बशमूल उनके जिनका इब्राहीम के साथ रिश्ता नहीं था, चाहे वह घर में पैदा हुए या किसी अजनबी से ख़रीदे गए थे।

ममरे में इब्राहीम के तीन मेहमान

18 एक दिन रब ममरे के दरख़्तों के पास इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ। इब्राहीम अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर बैठा था। दिन की गरमी उरूज पर थी। 2अचानक उसने देखा कि तीन मर्द मेरे सामने खड़े हैं। उन्हें देखते ही वह ख़ैमे से उनसे मिलने के लिए दौड़ा और मुँह के बल गिरकर सिजदा किया। 3उसने कहा, “मेरे आक़ा, अगर मुझ पर आपके करम की नज़र है तो आगे न बढ़ें बल्कि कुछ देर अपने बंदे के घर ठहरें। 4अगर इजाज़त हो तो मैं कुछ पानी ले आऊँ ताकि आप अपने पाँव धोकर दरख़्त के साये में आराम कर सकें। 5साथ साथ मैं आपके लिए थोड़ा-बहुत खाना भी ले आऊँ ताकि आप तक़वियत पाकर आगे बढ़ सकें। मुझे यह करने दें, क्योंकि आप अपने ख़ादिम के घर आ गए हैं।” उन्होंने कहा, “ठीक है। जो कुछ तूने कहा है वह कर।”

6इब्राहीम ख़ैमे की तरफ़ दौड़कर सारा के पास आया और कहा, “जल्दी करो! 16 किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले और उसे गूँधकर रोटियाँ बना।” 7फिर वह भागकर बैलों के पास पहुँचा। उनमें से उसने एक मोटा-ताज़ा बछड़ा चुन लिया जिसका गोश्त नरम था और उसे अपने नौकर को दिया जिसने जल्दी से उसे तैयार किया। 8जब खाना तैयार था तो इब्राहीम ने उसे लेकर लस्सी और दूध के साथ अपने मेहमानों के आगे रख दिया। वह खाने लगे और इब्राहीम उनके सामने दरख़्त के साये में खड़ा रहा।

9उन्होंने पूछा, “तेरी बीवी सारा कहाँ है?” उसने जवाब दिया, “ख़ैमे में।” 10रब ने कहा, “ऐन एक साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।”

सारा यह बातें सुन रही थी, क्योंकि वह उसके पीछे ख़ैमे के दरवाज़े के पास थी। 11दोनों मियाँ-बीवी बूढ़े हो चुके थे और सारा उस उम्र से गुज़र चुकी थी जिसमें औरतों के बच्चे पैदा होते हैं। 12इसलिए सारा अंदर ही अंदर हँस पड़ी और सोचा, “यह कैसे हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे-फटे लिबास की मानिंद हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़ उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।”

13रब ने इब्राहीम से पूछा, “सारा क्यों हँस रही है? वह क्यों कह रही है, ‘क्या वाक़ई मेरे हाँ बच्चा

पैदा होगा जबकि मैं इतनी उम्ररसीदा हूँ?’ 14क्या
रब के लिए कोई काम नामुमकिन है? एक साल
के बाद मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो
सारा के बेटा होगा।” 15सारा डर गई। उसने झूट
बोलकर इनकार किया, “मैं नहीं हँस रही थी।”
रब ने कहा, “नहीं, तू ज़रूर हँस रही थी।”

इब्राहीम सदूम के लिए मिन्नत करता है

16फिर मेहमान उठकर रवाना हुए और नीचे
वादी में सदूम की तरफ़ देखने लगे। इब्राहीम उन्हें
रुख़सत करने के लिए साथ साथ चल रहा था।
17रब ने दिल में कहा, “मैं इब्राहीम से वह काम
क्यों छुपाए रखूँ जो मैं करने के लिए जा रहा
हूँ? 18इसी से तो एक बड़ी और ताक़तवर क़ौम
निकलेगी और इसी से मैं दुनिया की तमाम क़ौमों
को बरकत दूँगा। 19उसी को मैंने चुन लिया है
ताकि वह अपनी औलाद और अपने बाद के घराने
को हुक्म दे कि वह रब की राह पर चलकर रास्त
और मुंसिफ़ाना काम करें। क्योंकि अगर वह ऐसा
करें तो रब इब्राहीम के साथ अपना वादा पूरा
करेगा।”

20फिर रब ने कहा, “सदूम और अमूरा की बदी
के बाइस लोगों की आहें बुलंद हो रही हैं, क्योंकि
उनसे बहुत संगीन गुनाह सरज़द हो रहे हैं। 21मैं
उतरकर उनके पास जा रहा हूँ ताकि देखूँ कि यह
इलज़ाम वाक़ई सच हैं जो मुझ तक पहुँचे हैं। अगर
ऐसा नहीं है तो मैं यह जानना चाहता हूँ।”

22दूसरे दो आदमी सदूम की तरफ़ आगे निकले
जबकि रब कुछ देर के लिए वहाँ ठहरा रहा और
इब्राहीम उसके सामने खड़ा रहा। 23फिर उसने
क़रीब आकर उससे बात की, “क्या तू रास्तबाज़ों
को भी शरीरों के साथ तबाह कर देगा? 24हो
सकता है कि शहर में 50 रास्तबाज़ हों। क्या तू
फिर भी शहर को बरबाद कर देगा और उसे उन
50 के सबब से मुआफ़ नहीं करेगा? 25यह कैसे
हो सकता है कि तू बेक़ुसूरों को शरीरों के साथ
हलाक कर दे? यह तो नामुमकिन है कि तू नेक
और शरीर लोगों से एक जैसा सुलूक करे। क्या
लाज़िम नहीं कि पूरी दुनिया का मुंसिफ़ इनसाफ़
करे?”

26रब ने जवाब दिया, “अगर मुझे शहर में 50
रास्तबाज़ मिल जाएँ तो उनके सबब से तमाम को
मुआफ़ कर दूँगा।”

27इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि
मैंने रब से बात करने की जुर्रत की है अगरचे मैं
ख़ाक और राख ही हूँ। 28लेकिन हो सकता है कि
सिर्फ़ 45 रास्तबाज़ उसमें हों। क्या तू फिर भी
उन पाँच लोगों की कमी के सबब से पूरे शहर को
तबाह करेगा?” उसने कहा, “अगर मुझे 45 भी
मिल जाएँ तो उसे बरबाद नहीं करूँगा।”

29इब्राहीम ने अपनी बात जारी रखी, “और
अगर सिर्फ़ 40 नेक लोग हों तो?” रब ने कहा,
“मैं उन 40 के सबब से उन्हें छोड़ दूँगा।”

30इब्राहीम ने कहा, “रब ग़ुस्सा न करे कि मैं
एक दफ़ा और बात करूँ। शायद वहाँ सिर्फ़ 30
हों।” उसने जवाब दिया, “फिर भी उन्हें छोड़
दूँगा।”

31इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि
मैंने रब से बात करने की जुर्रत की है। अगर सिर्फ़
20 पाए जाएँ?” रब ने कहा, “मैं 20 के सबब
से शहर को बरबाद करने से बाज़ रहूँगा।”

32इब्राहीम ने एक आख़िरी दफ़ा बात की, “रब
ग़ुस्सा न करे अगर मैं एक और बार बात करूँ।
शायद उसमें सिर्फ़ 10 पाए जाएँ।” रब ने कहा,
“मैं उसे उन 10 लोगों के सबब से भी बरबाद नहीं
करूँगा।”

33इन बातों के बाद रब चला गया और इब्राहीम
अपने घर को लौट आया।

सदूम और अमूरा की तबाही

19 शाम के वक़्त यह दो फ़रिश्ते
सदूम पहुँचे। लूत शहर के दर-
वाज़े पर बैठा था। जब उसने उन्हें देखा तो खड़े
होकर उनसे मिलने गया और मुँह के बल गिरकर
सिजदा किया। 2उसने कहा, “साहबो, अपने बंदे
के घर तशरीफ़ लाएँ ताकि अपने पाँव धोकर रात

को ठहरें और फिर कल सुबह-सवेरे उठकर अपना
सफ़र जारी रखें।” उन्होंने कहा, “कोई बात नहीं,
हम चौक में रात गुज़ारेंगे।” 3लेकिन लूत ने उन्हें
बहुत मजबूर किया, और आख़िरकार वह उसके
साथ उसके घर आए। उसने उनके लिए खाना
पकाया और बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर उन्होंने
खाना खाया।
4वह अभी सोने के लिए लेटे नहीं थे कि शहर
के जवानों से लेकर बूढ़ों तक तमाम मर्दों ने लूत
के घर को घेर लिया। 5उन्होंने आवाज़ देकर लूत
से कहा, “वह आदमी कहाँ हैं जो रात के वक़्त
तेरे पास आए? उनको बाहर ले आ ताकि हम
उनके साथ हरामकारी करें।”
6लूत उनसे मिलने बाहर गया। उसने अपने
पीछे दरवाज़ा बंद कर लिया 7और कहा, “मेरे
भाइयो, ऐसा मत करो, ऐसी बदकारी न करो।
8देखो, मेरी दो कुँवारी बेटियाँ हैं। उन्हें मैं तुम्हारे
पास बाहर ले आता हूँ। फिर जो जी चाहे उनके
साथ करो। लेकिन इन आदमियों को छोड़ दो,
क्योंकि वह मेरे मेहमान हैं।”
9उन्होंने कहा, “रास्ते से हट जा! देखो, यह
शख़्स जब हमारे पास आया था तो अजनबी था,
और अब यह हम पर हाकिम बनना चाहता है।
अब तेरे साथ उनसे ज़्यादा बुरा सुलूक करेंगे।” वह
उसे मजबूर करते करते दरवाज़े को तोड़ने के लिए
आगे बढ़े। 10लेकिन ऐन वक़्त पर अंदर के आदमी
लूत को पकड़कर अंदर ले आए, फिर दरवाज़ा
दुबारा बंद कर दिया। 11उन्होंने छोटों से लेकर
बड़ों तक बाहर के तमाम आदमियों को अंधा कर
दिया, और वह दरवाज़े को ढूँडते ढूँडते थक गए।
12दोनों आदमियों ने लूत से कहा, “क्या तेरा
कोई और रिश्तेदार इस शहर में रहता है, मसलन
कोई दामाद या बेटा-बेटी? सबको साथ लेकर
यहाँ से चला जा, 13क्योंकि हम यह मक़ाम तबाह
करने को हैं। इसके बाशिंदों की बदी के बाइस
लोगों की आहें बुलंद होकर रब के हुज़ूर पहुँच गई
हैं, इसलिए उसने हमें इसको तबाह करने के लिए
भेजा है।”
14लूत घर से निकला और अपने दामादों से
बात की जिनका उस की बेटियों के साथ रिश्ता
हो चुका था। उसने कहा, “जल्दी करो, इस जगह
से निकलो, क्योंकि रब इस शहर को तबाह करने
को है।” लेकिन उसके दामादों ने इसे मज़ाक़ ही
समझा।
15जब पौ फटने लगी तो दोनों आदमियों ने
लूत को बहुत समझाया और कहा, “जल्दी कर!
अपनी बीवी और दोनों बेटियों को साथ लेकर
चला जा, वरना जब शहर को सज़ा दी जाएगी
तो तू भी हलाक हो जाएगा।” 16तो भी वह
झिजकता रहा। आख़िरकार दोनों ने लूत, उस की
बीवी और बेटियों के हाथ पकड़कर उन्हें शहर के
बाहर तक पहुँचा दिया, क्योंकि रब को लूत पर
तरस आता था।
17ज्योंही वह उन्हें बाहर ले आए उनमें से
एक ने कहा, “अपनी जान बचाकर चला जा।
पीछे मुड़कर न देखना। मैदान में कहीं न ठहरना
बल्कि पहाड़ों में पनाह लेना, वरना तू हलाक हो
जाएगा।”
18लेकिन लूत ने उनसे कहा, “नहीं मेरे आक़ा,
ऐसा न हो। 19तेरे बंदे को तेरी नज़रे-करम हासिल
हुई है और तूने मेरी जान बचाने में बहुत मेहरबानी
कर दिखाई है। लेकिन मैं पहाड़ों में पनाह नहीं ले
सकता। वहाँ पहुँचने से पहले यह मुसीबत मुझ पर
आन पड़ेगी और मैं हलाक हो जाऊँगा। 20देख,
क़रीब ही एक छोटा क़सबा है। वह इतना नज़दीक
है कि मैं उस तरफ़ हिजरत कर सकता हूँ। मुझे
वहाँ पनाह लेने दे। वह छोटा ही है, ना? फिर मेरी
जान बचेगी।”
21उसने कहा, “चलो, ठीक है। तेरी यह
दरख़ास्त भी मंज़ूर है। मैं यह क़सबा तबाह नहीं
करूँगा। 22लेकिन भागकर वहाँ पनाह ले, क्योंकि
जब तक तू वहाँ पहुँच न जाए मैं कुछ नहीं कर
सकता।” इसलिए क़सबे का नाम ज़ुग़र यानी
छोटा है।
23जब लूत ज़ुग़र पहुँचा तो सूरज निकला हुआ
था। 24तब रब ने आसमान से सदूम और अमूरा

पर गंधक और आग बरसाई। 25यों उसने उस
पूरे मैदान को उसके शहरों, बाशिंदों और तमाम
हरियाली समेत तबाह कर दिया। 26लेकिन फ़रार
होते वक़्त लूत की बीवी ने पीछे मुड़कर देखा तो
वह फ़ौरन नमक का सतून बन गई।

27इब्राहीम सुबह-सवेरे उठकर उस जगह
वापस आया जहाँ वह कल रब के सामने खड़ा
हुआ था। 28जब उसने नीचे सदूम, अमूरा और
पूरी वादी की तरफ़ नज़र की तो वहाँ से भट्टे का-
सा धुआँ उठ रहा था।

29यों अल्लाह ने इब्राहीम को याद किया जब
उसने उस मैदान के शहर तबाह किए। क्योंकि
वह उन्हें तबाह करने से पहले लूत को जो उनमें
आबाद था वहाँ से निकाल लाया।

लूत और उस की बेटियाँ

30लूत और उस की बेटियाँ ज़्यादा देर तक
ज़ुग़र में न ठहरे। वह रवाना होकर पहाड़ों में
आबाद हुए, क्योंकि लूत ज़ुग़र में रहने से डरता
था। वहाँ उन्होंने एक ग़ार को अपना घर बना
लिया।

31एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, "अब्बू
बूढ़ा है और यहाँ कोई मर्द है नहीं जिसके ज़रीए
हमारे बच्चे पैदा हो सकें। 32आओ, हम अब्बू को
मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो हम उसके
साथ हमबिसतर होकर अपने लिए औलाद पैदा
करें ताकि हमारी नसल क़ायम रहे।"

33उस रात उन्होंने अपने बाप को मै पिलाई।
जब वह नशे में था तो बड़ी बेटी अंदर जाकर उसके
साथ हमबिसतर हुई। चूँकि लूत होश में नहीं था
इसलिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ। 34अगले
दिन बड़ी बहन ने छोटी बहन से कहा, "पिछली
रात मैं अब्बू से हमबिसतर हुई। आओ, आज
रात को हम उसे दुबारा मै पिलाएँ। जब वह नशे
में धुत हो तो तुम उसके साथ हमबिसतर होकर
अपने लिए औलाद पैदा करना ताकि हमारी नसल
क़ायम रहे।" 35चुनाँचे उन्होंने उस रात भी अपने
बाप को मै पिलाई। जब वह नशे में था तो छोटी
बेटी उठकर उसके साथ हमबिसतर हुई। इस बार
भी वह होश में नहीं था, इसलिए उसे कुछ भी
मालूम न हुआ।

36यों लूत की बेटियाँ अपने बाप से उम्मीद
से हुईं। 37बड़ी बेटी के हाँ बेटा पैदा हुआ। उसने
उसका नाम मोआब रखा। उससे मोआबी निकले
हैं। 38छोटी बेटी के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उसने
उसका नाम बिन-अम्मी रखा। उससे अम्मोनी
निकले हैं।

इब्राहीम और अबीमलिक

20 इब्राहीम वहाँ से जुनूब की तरफ़ दश्ते-
नजब में चला गया और क़ादिस और
शूर के दरमियान जा बसा। कुछ देर के लिए वह
जिरार में ठहरा, लेकिन अजनबी की हैसियत से।
2वहाँ उसने लोगों को बताया, "सारा मेरी बहन
है।" इसलिए जिरार के बादशाह अबीमलिक ने
किसी को भिजवा दिया कि उसे महल में ले आए।

3लेकिन रात के वक़्त अल्लाह ख़ाब में
अबीमलिक पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "मौत तेरे
सर पर खड़ी है, क्योंकि जो औरत तू अपने घर
ले आया है वह शादीशुदा है।"

4असल में अबीमलिक अभी तक सारा के
क़रीब नहीं गया था। उसने कहा, "मेरे आक़ा,
क्या तू एक बेक़ुसूर क़ौम को भी हलाक करेगा?
5क्या इब्राहीम ने मुझसे नहीं कहा था कि सारा
मेरी बहन है? और सारा ने उस की हाँ में हाँ
मिलाई। मेरी नीयत अच्छी थी और मैंने ग़लत
काम नहीं किया।" 6अल्लाह ने कहा, "हाँ,
मैं जानता हूँ कि इसमें तेरी नीयत अच्छी थी।
इसलिए मैंने तुझे मेरा गुनाह करने और उसे छूने
से रोक दिया। 7अब उस औरत को उसके शौहर
को वापस कर दे, क्योंकि वह नबी है और तेरे लिए
दुआ करेगा। फिर तू नहीं मरेगा। लेकिन अगर तू
उसे वापस नहीं करेगा तो जान ले कि तेरी और
तेरे लोगों की मौत यक़ीनी है।"

8अबीमलिक ने सुबह-सवेरे उठकर अपने
तमाम कारिंदों को यह सब कुछ बताया। यह

सुनकर उन पर दहशत छा गई। 9फिर अबीमलिक
ने इब्राहीम को बुलाकर कहा, “आपने हमारे साथ
क्या किया है? मैंने आपके साथ क्या ग़लत काम
किया कि आपने मुझे और मेरी सलतनत को इतने
संगीन जुर्म में फँसा दिया है? जो सुलूक आपने
हमारे साथ कर दिखाया है वह किसी भी शख़्स
के साथ नहीं करना चाहिए। 10आपने यह क्यों
किया?”

11इब्राहीम ने जवाब दिया, “मैंने अपने दिल
में कहा कि यहाँ के लोग अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं
रखते होंगे, इसलिए वह मेरी बीवी को हासिल
करने के लिए मुझे क़त्ल कर देंगे। 12हक़ीक़त
में वह मेरी बहन भी है। वह मेरे बाप की बेटी है
अगरचे उस की और मेरी माँ फ़रक़ हैं। यों मैं उससे
शादी कर सका। 13फिर जब अल्लाह ने होने दिया
कि मैं अपने बाप के घराने से निकलकर इधर-
उधर फिरूँ तो मैंने अपनी बीवी से कहा, ‘मुझ पर
यह मेहरबानी कर कि जहाँ भी हम जाएँ मेरे बारे
में कह देना कि वह मेरा भाई है’।”

14फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को भेड़-
बकरियाँ, गाय-बैल, ग़ुलाम और लौंडियाँ देकर
उस की बीवी सारा को उसे वापस कर दिया।
15उसने कहा, “मेरा मुल्क आपके लिए खुला है।
जहाँ जी चाहे उसमें जा बसें।” 16सारा से उसने
कहा, “मैं आपके भाई को चाँदी के हज़ार सिक्के
देता हूँ। इससे आप और आपके लोगों के सामने
आपके साथ किए गए नारवा सुलूक का इज़ाला
हो और आपको बेक़ुसूर क़रार दिया जाए।”

17-18तब इब्राहीम ने अल्लाह से दुआ की
और अल्लाह ने अबीमलिक, उस की बीवी और
उस की लौंडियों को शफ़ा दी, क्योंकि रब ने
अबीमलिक के घराने की तमाम औरतों को सारा
के सबब से बाँझ बना दिया था। लेकिन अब उनके
हाँ दुबारा बच्चे पैदा होने लगे।

इसहाक़ की पैदाइश

21 तब रब ने सारा के साथ वैसा ही किया
जैसा उसने फ़रमाया था। जो वादा
उसने सारा के बारे में किया था उसे उसने पूरा
किया। 2वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। ऐन
उस वक़्त बूढ़े इब्राहीम के हाँ बेटा पैदा हुआ जो
अल्लाह ने मुक़र्रर करके उसे बताया था।

3इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इसहाक़
यानी ‘वह हँसता है’ रखा। 4जब इसहाक़ आठ
दिन का था तो इब्राहीम ने उसका ख़तना कराया,
जिस तरह अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। 5जब
इसहाक़ पैदा हुआ उस वक़्त इब्राहीम 100 साल
का था। 6सारा ने कहा, “अल्लाह ने मुझे हँसाया,
और हर कोई जो मेरे बारे में यह सुनेगा हँसेगा।
7इससे पहले कौन इब्राहीम से यह कहने की जुर्रत
कर सकता था कि सारा अपने बच्चों को दूध
पिलाएगी? और अब मेरे हाँ बेटा पैदा हुआ है,
अगरचे इब्राहीम बूढ़ा हो गया है।”

8इसहाक़ बड़ा होता गया। जब उसका दूध
छुड़ाया गया तो इब्राहीम ने उसके लिए बड़ी
ज़ियाफ़त की।

इब्राहीम हाजिरा और इसमाईल को निकाल देता है

9एक दिन सारा ने देखा कि मिसरी लौंडी
हाजिरा का बेटा इसमाईल इसहाक़ का मज़ाक़
उड़ा रहा है। 10उसने इब्राहीम से कहा, “इस
लौंडी और उसके बेटे को घर से निकाल दें,
क्योंकि वह मेरे बेटे इसहाक़ के साथ मीरास नहीं
पाएगा।”

11इब्राहीम को यह बात बहुत बुरी लगी।
आख़िर इसमाईल भी उसका बेटा था। 12लेकिन
अल्लाह ने उससे कहा, “जो बात सारा ने अपनी
लौंडी और उसके बेटे के बारे में कही है वह तुझे
बुरी न लगे। सारा की बात मान ले, क्योंकि तेरी
नसल इसहाक़ ही से क़ायम रहेगी। 13लेकिन मैं
इसमाईल से भी एक क़ौम बनाऊँगा, क्योंकि वह
तेरा बेटा है।”

14इब्राहीम सुबह-सवेरे उठा। उसने रोटी और
पानी की मशक हाजिरा के कंधों पर रखकर उसे
लड़के के साथ घर से निकाल दिया। हाजिरा

चलते चलते बैर-सबा के रेगिस्तान में इधर-उधर फिरने लगी। 15फिर पानी ख़त्म हो गया। हाजिरा लड़के को किसी झाड़ी के नीचे छोड़कर 16कोई 300 फ़ुट दूर बैठ गई। क्योंकि उसने दिल में कहा, "मैं उसे मरते नहीं देख सकती।" वह वहाँ बैठकर रोने लगी।

17लेकिन अल्लाह ने बेटे की रोती हुई आवाज़ सुन ली। अल्लाह के फ़रिश्ते ने आसमान पर से पुकारकर हाजिरा से बात की, "हाजिरा, क्या बात है? मत डर, क्योंकि अल्लाह ने लड़के का जो वहाँ पड़ा है रोना सुन लिया है। 18उठ, लड़के को उठाकर उसका हाथ थाम ले, क्योंकि मैं उससे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।"

19फिर अल्लाह ने हाजिरा की आँखें खोल दीं, और उस की नज़र एक कुएँ पर पड़ी। वह वहाँ गई और मशक को पानी से भरकर लड़के को पिलाया।

20अल्लाह लड़के के साथ था। वह जवान हुआ और तीरअंदाज़ बनकर बयाबान में रहने लगा। 21जब वह फ़ारान के रेगिस्तान में रहता था तो उस की माँ ने उसे एक मिसरी औरत से ब्याह दिया।

अबीमलिक के साथ अहद

22उन दिनों में अबीमलिक और उसके सिपाहसालार फ़ीकुल ने इब्राहीम से कहा, "जो कुछ भी आप करते हैं अल्लाह आपके साथ है। 23अब मुझसे अल्लाह की क़सम खाएँ कि आप मुझे और मेरी आलो-औलाद को धोका नहीं देंगे। मुझ पर और इस मुल्क पर जिसमें आप परदेसी हैं वही मेहरबानी करें जो मैंने आप पर की है।"

24इब्राहीम ने जवाब दिया, "मैं क़सम खाता हूँ।" 25फिर उसने अबीमलिक से शिकायत करते हुए कहा, "आपके बंदों ने हमारे एक कुएँ पर क़ब्ज़ा कर लिया है।" 26अबीमलिक ने कहा, "मुझे नहीं मालूम कि किसने ऐसा किया है। आपने भी मुझे नहीं बताया। आज मैं पहली दफ़ा यह बात सुन रहा हूँ।"

27तब इब्राहीम ने अबीमलिक को भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल दिए, और दोनों ने एक दूसरे के साथ अहद बाँधा। 28फिर इब्राहीम ने भेड़ के सात मादा बच्चों को अलग कर लिया। 29अबीमलिक ने पूछा, "आपने यह क्यों किया?" 30इब्राहीम ने जवाब दिया, "भेड़ के इन सात बच्चों को मुझसे ले लें। यह इसके गवाह हों कि मैंने इस कुएँ को खोदा है।" 31इसलिए उस जगह का नाम बैर-सबा यानी 'क़सम का कुआँ' रखा गया, क्योंकि वहाँ उन दोनों मर्दों ने क़सम खाई।

32यों उन्होंने बैर-सबा में एक दूसरे से अहद बाँधा। फिर अबीमलिक और फ़ीकुल फ़िलिस्तियों के मुल्क वापस चले गए। 33इसके बाद इब्राहीम ने बैर-सबा में झाऊ का दरख़्त लगाया। वहाँ उसने रब का नाम लेकर उस की इबादत की जो अबदी ख़ुदा है। 34इब्राहीम बहुत अरसे तक फ़िलिस्तियों के मुल्क में आबाद रहा, लेकिन अजनबी की हैसियत से।

इब्राहीम की आज़माइश

22 कुछ अरसे के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को आज़माया। उसने उससे कहा, "इब्राहीम!" उसने जवाब दिया, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" 2अल्लाह ने कहा, "अपने इकलौते बेटे इसहाक़ को जिसे तू प्यार करता है साथ लेकर मोरियाह के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को क़ुरबान कर दे। उसे ज़बह करके क़ुरबानगाह पर जला देना।"

3सुबह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर ज़ीन कसा। उसने अपने साथ दो नौकरों और अपने बेटे इसहाक़ को लिया। फिर वह क़ुरबानी को जलाने के लिए लकड़ी काटकर उस जगह की तरफ़ रवाना हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी। 4सफ़र करते करते तीसरे दिन क़ुरबानी की जगह इब्राहीम को दूर से नज़र आई। 5उसने नौकरों से कहा, "यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के

के साथ वहाँ जाकर परस्तिश करूँगा। फिर हम
तुम्हारे पास वापस आ जाएंगे।”
6इब्राहीम ने क़ुरबानी को जलाने के लिए
लकड़ियाँ इसहाक़ के कंधों पर रख दीं और
ख़ुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का
बरतन उठाया। दोनों चल दिए। 7इसहाक़ बोला,
“अब्बू!” इब्राहीम ने कहा, “जी बेटा।” “अब्बू,
आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास हैं, लेकिन
क़ुरबानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?”
8इब्राहीम ने जवाब दिया, “अल्लाह ख़ुद क़ुरबानी
के लिए जानवर मुहैया करेगा, बेटा।” वह आगे
बढ़ गए।
9चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे जो
अल्लाह ने उस पर ज़ाहिर किया था। इब्राहीम
ने वहाँ क़ुरबानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ
तरतीब से रख दीं। फिर उसने इसहाक़ को
बाँधकर लकड़ियों पर रख दिया 10और छुरी
पकड़ ली ताकि अपने बेटे को ज़बह करे। 11ऐन
उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से उसे
आवाज़ दी, “इब्राहीम, इब्राहीम!” इब्राहीम ने
कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 12फ़रिश्ते ने कहा,
“अपने बेटे पर हाथ न चला, न उसके साथ कुछ
कर। अब मैंने जान लिया है कि तू अल्लाह का
ख़ौफ़ रखता है, क्योंकि तू अपने इकलौते बेटे को
भी मुझे देने के लिए तैयार है।”
13अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया
जिसके सींग गुंजान झाड़ियों में फँसे हुए थे।
इब्राहीम ने उसे ज़बह करके अपने बेटे की जगह
क़ुरबानी के तौर पर जला दिया। 14उसने उस
मक़ाम का नाम “रब मुहैया करता है” रखा।
इसलिए आज तक कहा जाता है, “रब के पहाड़
पर मुहैया किया जाता है।”
15रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान पर
से पुकारकर उससे बात की। 16“रब का फ़रमान
है, मेरी ज़ात की क़सम, चूँकि तूने यह किया और
अपने इकलौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए
तैयार था 17इसलिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी
औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की
रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने
दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी।
18चूँकि तूने मेरी सुनी इसलिए तेरी औलाद से
दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।”
19इसके बाद इब्राहीम अपने नौकरों के पास
वापस आया, और वह मिलकर बैर-सबा लौटे।
वहाँ इब्राहीम आबाद रहा।
20इन वाक़ियात के बाद इब्राहीम को इत्तला
मिली, “आपके भाई नहूर की बीवी मिलकाह के
हाँ भी बेटे पैदा हुए हैं। 21उसके पहलौठे ऊज़ के
बाद बूज़, क़मुएल (अराम का बाप), 22कसद,
हज़ू, फ़िलदास, इदलाफ़ और बतुएल पैदा हुए
हैं।” 23मिलकाह और नहूर के हाँ यह आठ बेटे
पैदा हुए। (बतुएल रिबक़ा का बाप था)। 24नहूर
की हरम का नाम रूमा था। उसके हाँ भी बेटे पैदा
हुए जिनके नाम तिबख़, जाहम, तख़स और माका
हैं।

सारा की वफ़ात

23 सारा 127 साल की उम्र में हबरून
में इंतक़ाल कर गई। 2उस ज़माने
में हबरून का नाम क़िरियत-अरबा था, और
वह मुल्के-कनान में था। इब्राहीम ने उसके पास
आकर मातम किया। 3फिर वह जनाज़े के पास
से उठा और हित्तियों से बात की। उसने कहा,
4“मैं आपके दरमियान परदेसी और ग़ैरशहरी की
हैसियत से रहता हूँ। मुझे क़ब्र के लिए ज़मीन
बेचें ताकि अपनी बीवी को अपने घर से ले जाकर
दफ़न कर सकूँ।” 5-6हित्तियों ने जवाब दिया,
“हमारे आक़ा, हमारी बात सुनें! आप हमारे
दरमियान अल्लाह के रईस हैं। अपनी बीवी को
हमारी बेहतरीन क़ब्र में दफ़न करें। हममें से कोई
नहीं जो आपसे अपनी क़ब्र का इनकार करेगा।”
7इब्राहीम उठा और मुल्क के बाशिंदों यानी
हित्तियों के सामने ताज़ीमन झुक गया। 8उसने
कहा, “अगर आप इसके लिए तैयार हैं कि मैं
अपनी बीवी को अपने घर से ले जाकर दफ़न
करूँतो सुहर के बेटे इफ़रोन से मेरी सिफ़ारिश

करें 9कि वह मुझे मकफ़ीला का ग़ार बेच दे। वह उसका है और उसके खेत के किनारे पर है। मैं उस की पूरी क़ीमत देने के लिए तैयार हूँ ताकि आपके दरमियान रहते हुए मेरे पास क़ब्र भी हो।”

10इफ़रोन हित्तियों की जमात में मौजूद था। इब्राहीम की दरख़ास्त पर उसने उन तमाम हित्तियों के सामने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थे जवाब दिया, 11“नहीं, मेरे आक़ा! मेरी बात सुनें। मैं आपको यह खेत और उसमें मौजूद ग़ार दे देता हूँ। सब जो हाज़िर हैं मेरे गवाह हैं, मैं यह आपको देता हूँ। अपनी बीवी को वहाँ दफ़न कर दें।”

12इब्राहीम दुबारा मुल्क के बाशिंदों के सामने अदबन झुक गया। 13उसने सबके सामने इफ़रोन से कहा, “मेहरबानी करके मेरी बात पर ग़ौर करें। मैं खेत की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। उसे क़बूल करें ताकि वहाँ अपनी बीवी को दफ़न कर सकूँ।” 14-15इफ़रोन ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा, सुनें। इस ज़मीन की क़ीमत सिर्फ़ 400 चाँदी के सिक्के है।[a] आपके और मेरे दरमियान यह क्या है? अपनी बीवी को दफ़न कर दें।”

16इब्राहीम ने इफ़रोन की मतलूबा क़ीमत मान ली और सबके सामने चाँदी के 400 सिक्के तोलकर इफ़रोन को दे दिए। इसके लिए उसने उस वक़्त के रायज बाट इस्तेमाल किए। 17चुनाँचे मकफ़ीला में इफ़रोन की ज़मीन इब्राहीम की मिलकियत हो गई। यह ज़मीन ममरे के मशरिक़ में थी। उसमें खेत, खेत का ग़ार और खेत की हुदूद में मौजूद तमाम दरख़्त शामिल थे। 18हित्तियों की पूरी जमात ने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थी ज़मीन के इंतक़ाल की तसदीक़ की। 19फिर इब्राहीम ने अपनी बीवी सारा को मुल्के-कनान के उस ग़ार में दफ़न किया जो ममरे यानी हबरून के मशरिक़ में वाक़े मकफ़ीला के खेत में था। 20इस तरीक़े से यह खेत और उसका ग़ार हित्तियों से इब्राहीम के नाम पर मुंतक़िल कर दिया गया ताकि उसके पास क़ब्र हो।

इसहाक़ और रिबक़ा

24 इब्राहीम अब बहुत बूढ़ा हो गया था। रब ने उसे हर लिहाज़ से बरकत दी थी। 2एक दिन उसने अपने घर के सबसे बुज़ुर्ग नौकर से जो उस की जायदाद का पूरा इंतज़ाम चलाता था बात की। “क़सम के लिए अपना हाथ मेरी रान के नीचे रखो। 3रब की क़सम खाओ जो आसमानो-ज़मीन का ख़ुदा है कि तुम इन कनानियों में से जिनके दरमियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 4बल्कि मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के पास जाओगे और उन्हीं में से मेरे बेटे के लिए बीवी लाओगे।” 5उसके नौकर ने कहा, “शायद वह औरत मेरे साथ यहाँ आना न चाहे। क्या मैं इस सूरत में आपके बेटे को उस वतन में वापस ले जाऊँ जिससे आप निकले हैं?” 6इब्राहीम ने कहा, “ख़बरदार! उसे हरगिज़ वापस न ले जाना। 7रब जो आसमान का ख़ुदा है अपना फ़रिश्ता तुम्हारे आगे भेजेगा, इसलिए तुम वहाँ मेरे बेटे के लिए बीवी चुनने में ज़रूर कामयाब होगे। क्योंकि वही मुझे मेरे बाप के घर और मेरे वतन से यहाँ ले आया है, और उसी ने क़सम खाकर मुझसे वादा किया है कि मैं कनान का यह मुल्क तेरी औलाद को दूँगा। 8अगर वहाँ की औरत यहाँ आना न चाहे तो फिर तुम अपनी क़सम से आज़ाद होगे। लेकिन किसी सूरत में भी मेरे बेटे को वहाँ वापस न ले जाना।”

9इब्राहीम के नौकर ने अपना हाथ उस की रान के नीचे रखकर क़सम खाई कि मैं सब कुछ ऐसा ही करूँगा। 10फिर वह अपने आक़ा के दस ऊँटों पर क़ीमती तोह्फ़े लादकर मसोपुतामिया की तरफ़ रवाना हुआ। चलते चलते वह नहूर के शहर पहुँच गया।

11उसने ऊँटों को शहर के बाहर कुएँ के पास बिठाया। शाम का वक़्त था जब औरतें कुएँ के

[a]तक़रीबन साढ़े चार किलोग्राम चाँदी।

पास आकर पानी भरती थीं। 12फिर उसने दुआ
की, “ऐ रब मेरे आक़ा इब्राहीम के ख़ुदा, मुझे
आज कामयाबी बख़्श और मेरे आक़ा इब्राहीम
पर मेहरबानी कर। 13अब मैं इस चश्मे पर खड़ा
हूँ, और शहर की बेटियाँ पानी भरने के लिए आ
रही हैं। 14मैं उनमें से किसी से कहूँगा, ‘ज़रा
अपना घड़ा नीचे करके मुझे पानी पिलाएँ।’ अगर
वह जवाब दे, ‘पी लें, मैं आपके ऊँटों को भी
पानी पिला देती हूँ,’ तो वह वही होगी जिसे तूने
अपने ख़ादिम इसहाक़ के लिए चुन रखा है। अगर
ऐसा हुआ तो मैं जान लूँगा कि तूने मेरे आक़ा पर
मेहरबानी की है।”

15वह अभी दुआ कर ही रहा था कि रिबक़ा
शहर से निकल आई। उसके कंधे पर घड़ा था।
वह बतुएल की बेटी थी (बतुएल इब्राहीम के भाई
नहूर की बीवी मिलकाह का बेटा था)। 16रिबक़ा
निहायत ख़ूबसूरत जवान लड़की थी, और वह
कुँवारी भी थी। वह चश्मे तक उतरी, अपना घड़ा
भरा और फिर वापस ऊपर आई।

17इब्राहीम का नौकर दौड़कर उससे मिला।
उसने कहा, “ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा-सा
पानी पिलाएँ।” 18रिबक़ा ने कहा, “जनाब, पी
लें।” जल्दी से उसने अपने घड़े को कंधे पर
से उतारकर हाथ में पकड़ा ताकि वह पी सके।
19जब वह पीने से फ़ारिग़ हुआ तो रिबक़ा ने कहा,
“मैं आपके ऊँटों के लिए भी पानी ले आती हूँ। वह
भी पूरे तौर पर अपनी प्यास बुझाएँ।” 20जल्दी
से उसने अपने घड़े का पानी हौज़ में उंडेल दिया
और फिर भागकर कुएँ से इतना पानी लाती रही
कि तमाम ऊँटों की प्यास बुझ गई।

21इतने में इब्राहीम का आदमी ख़ामोशी से उसे
देखता रहा, क्योंकि वह जानना चाहता था कि
क्या रब मुझे सफ़र की कामयाबी बख़्शेगा या
नहीं। 22ऊँट पानी पीने से फ़ारिग़ हुए तो उसने
रिबक़ा को सोने की एक नथ और दो कंगन दिए।
नथ का वज़न तक़रीबन 6 ग्राम था और कंगनों
का 120 ग्राम।

23उसने पूछा, “आप किसकी बेटी हैं? क्या
उसके हाँ इतनी जगह है कि हम वहाँ रात गुज़ार
सकें?”

24रिबक़ा ने जवाब दिया, “मेरा बाप बतुएल
है। वह नहूर और मिलकाह का बेटा है। 25हमारे
पास भूसा और चारा है। रात गुज़ारने के लिए
भी काफ़ी जगह है।” 26यह सुनकर इब्राहीम के
नौकर ने रब को सिजदा किया। 27उसने कहा,
“मेरे आक़ा इब्राहीम के ख़ुदा की तमजीद हो
जिसके करम और वफ़ादारी ने मेरे आक़ा को नहीं
छोड़ा। रब ने मुझे सीधा मेरे मालिक के रिश्तेदारों
तक पहुँचाया है।”

28लड़की भागकर अपनी माँ के घर चली गई।
वहाँ उसने सब कुछ बता दिया जो हुआ था।
29-30जब रिबक़ा के भाई लाबन ने नथ और बहन
की कलाइयों में कंगनों को देखा और वह सब कुछ
सुना जो इब्राहीम के नौकर ने रिबक़ा को बताया
था तो वह फ़ौरन कुएँ की तरफ़ दौड़ा।

इब्राहीम का नौकर अब तक ऊँटों समेत वहाँ
खड़ा था। 31लाबन ने कहा, “रब के मुबारक बंदे,
मेरे साथ आएँ। आप यहाँ शहर के बाहर क्यों खड़े
हैं? मैंने अपने घर में आपके लिए सब कुछ तैयार
किया है। आपके ऊँटों के लिए भी काफ़ी जगह
है।” 32वह नौकर को लेकर घर पहुँचा। ऊँटों से
सामान उतारा गया, और उनको भूसा और चारा
दिया गया। पानी भी लाया गया ताकि इब्राहीम
का नौकर और उसके आदमी अपने पाँव धोएँ।

33लेकिन जब खाना आ गया तो इब्राहीम के
नौकर ने कहा, “इससे पहले कि मैं खाना खाऊँ
लाज़िम है कि अपना मामला पेश करूँ।” लाबन
ने कहा, “बताएँ अपनी बात।” 34उसने कहा,
“मैं इब्राहीम का नौकर हूँ। 35रब ने मेरे आक़ा
को बहुत बरकत दी है। वह बहुत अमीर बन गया
है। रब ने उसे कसरत से भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल,
सोना-चाँदी, ग़ुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे
दिए हैं। 36जब मेरे मालिक की बीवी बूढ़ी हो गई
थी तो उसके बेटा पैदा हुआ था। इब्राहीम ने उसे
अपनी पूरी मिलकियत दे दी है। 37लेकिन मेरे

आक़ा ने मुझसे कहा, 'क़सम खाओ कि तुम इन
कनानियों में से जिनके दरमियान मैं रहता हूँ मेरे
बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 38बल्कि मेरे बाप
के घराने और मेरे रिश्तेदारों के पास जाकर उसके
लिए बीवी लाओगे।' 39मैंने अपने मालिक से
कहा, 'शायद वह औरत मेरे साथ आना न चाहे।'
40उसने कहा, 'रब जिसके सामने मैं चलता रहा
हूँ अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे साथ भेजेगा और तुम्हें
कामयाबी बख़्शेगा। तुम्हें ज़रूर मेरे रिश्तेदारों और
मेरे बाप के घराने से मेरे बेटे के लिए बीवी मिलेगी।
41लेकिन अगर तुम मेरे रिश्तेदारों के पास जाओ
और वह इनकार करें तो फिर तुम अपनी क़सम
से आज़ाद होगे।' 42आज जब मैं कुएँ के पास
आया तो मैंने दुआ की, 'ऐ रब, मेरे आक़ा के
ख़ुदा, अगर तेरी मरज़ी हो तो मुझे इस मिशन में
कामयाबी बख़्श जिसके लिए मैं यहाँ आया हूँ।
43अब मैं इस कुएँ के पास खड़ा हूँ। जब कोई
जवान औरत शहर से निकलकर यहाँ आए तो
मैं उससे कहूँगा, "ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा-
सा पानी पिलाएँ।" 44अगर वह कहे, "पी लें, मैं
आपके ऊँटों के लिए भी पानी ले आऊँगी" तो
इसका मतलब यह हो कि तूने उसे मेरे आक़ा के
बेटे के लिए चुन लिया है कि उस की बीवी बन
जाए।'

45मैं अभी दिल में यह दुआ कर रहा था कि
रिबक़ा शहर से निकल आई। उसके कंधे पर घड़ा
था। वह चश्मे तक उतरी और अपना घड़ा भर
लिया। मैंने उससे कहा, 'ज़रा मुझे पानी पिलाएँ।'
46जवाब में उसने जल्दी से अपने घड़े को कंधे
पर से उतारकर कहा, 'पी लें, मैं आपके ऊँटों
को भी पानी पिलाती हूँ।' मैंने पानी पिया, और
उसने ऊँटों को भी पानी पिलाया। 47फिर मैंने
उससे पूछा, 'आप किसकी बेटी हैं?' उसने
जवाब दिया, 'मेरा बाप बतुएल है। वह नहूर और
मिलकाह का बेटा है।' फिर मैंने उस की नाक में
नथ और उस की कलाइयों में कंगन पहना दिए।
48तब मैंने रब को सिजदा करके अपने आक़ा
इब्राहीम के ख़ुदा की तमजीद की जिसने मुझे
सीधा मेरे मालिक की भतीजी तक पहुँचाया ताकि
वह इसहाक़ की बीवी बन जाए।

49अब मुझे बताएँ, क्या आप मेरे आक़ा पर
अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार करना
चाहते हैं? अगर ऐसा है तो रिबक़ा की इसहाक़
के साथ शादी क़बूल करें। अगर आप मुत्तफ़िक़
नहीं हैं तो मुझे बताएँ ताकि मैं कोई और क़दम
उठा सकूँ।"

50लाबन और बतुएल ने जवाब दिया, "यह
बात रब की तरफ़ से है, इसलिए हम किसी तरह
भी इनकार नहीं कर सकते। 51रिबक़ा आपके
सामने है। उसे ले जाएँ। वह आपके मालिक के
बेटे की बीवी बन जाए जिस तरह रब ने फ़रमाया
है।" 52यह सुनकर इब्राहीम के नौकर ने रब को
सिजदा किया। 53फिर उसने सोने और चाँदी के
ज़ेवरात और महँगे मलबूसात अपने सामान में से
निकालकर रिबक़ा को दिए। रिबक़ा के भाई और
माँ को भी क़ीमती तोह्फ़े मिले।

54इसके बाद उसने अपने हमसफ़रों के साथ
शाम का खाना खाया। वह रात को वहीं ठहरे।
अगले दिन जब उठे तो नौकर ने कहा, "अब
हमें इजाज़त दें ताकि अपने आक़ा के पास लौट
जाएँ।" 55रिबक़ा के भाई और माँ ने कहा,
"रिबक़ा कुछ दिन और हमारे हाँ ठहरे। फिर आप
जाएँ।" 56लेकिन उसने उनसे कहा, "अब देर न
करें, क्योंकि रब ने मुझे मेरे मिशन में कामयाबी
बख़्शी है। मुझे इजाज़त दें ताकि अपने मालिक के
पास वापस जाऊँ।" 57उन्होंने कहा, "चलें, हम
लड़की को बुलाकर उसी से पूछ लेते हैं।"

58उन्होंने रिबक़ा को बुलाकर उससे पूछा,
"क्या तू अभी इस आदमी के साथ जाना चाहती
है?" उसने कहा, "जी, मैं जाना चाहती हूँ।"
59चुनाँचे उन्होंने अपनी बहन रिबक़ा, उस की
दाया, इब्राहीम के नौकर और उसके हमसफ़रों
को रुख़सत कर दिया। 60पहले उन्होंने रिबक़ा
को बरकत देकर कहा, "हमारी बहन, अल्लाह
करे कि तू करोड़ों की माँ बने। तेरी औलाद अपने
दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करे।"

61फिर रिबक़ा और उस की नौकरानियाँ उठकर ऊँटों पर सवार हुईं और इब्राहीम के नौकर के पीछे हो लीं। चुनाँचे नौकर उन्हें साथ लेकर रवाना हो गया।

62उस वक़्त इसहाक़ मुल्क के जुनूबी हिस्से, दश्ते-नजब में रहता था। वह बैर-लही-रोई से आया था। 63एक शाम वह निकलकर खुले मैदान में अपनी सोचों में मगन टहल रहा था कि अचानक ऊँट उस की तरफ़ आते हुए नज़र आए। 64जब रिबक़ा ने अपनी नज़र उठाकर इसहाक़ को देखा तो उसने ऊँट से उतरकर 65नौकर से पूछा, “वह आदमी कौन है जो मैदान में हमसे मिलने आ रहा है?” नौकर ने कहा, “मेरा मालिक है।” यह सुनकर रिबक़ा ने चादर लेकर अपने चेहरे को ढाँप लिया।

66नौकर ने इसहाक़ को सब कुछ बता दिया जो उसने किया था। 67फिर इसहाक़ रिबक़ा को अपनी माँ सारा के डेरे में ले गया। उसने उससे शादी की, और वह उस की बीवी बन गई। इसहाक़ के दिल में उसके लिए बहुत मुहब्बत पैदा हुई। यों उसे अपनी माँ की मौत के बाद सुकून मिला।

इब्राहीम की मज़ीद औलाद

25 इब्राहीम ने एक और शादी की। नई बीवी का नाम क़तूरा था। 2क़तूरा के छः बेटे पैदा हुए, ज़िमरान, युक़सान, मिदान, मिदियान, इसबाक़ और सूख़। 3युक़सान के दो बेटे थे, सबा और ददान। असूरी, लतूसी और लूमी ददान की औलाद हैं। 4मिदियान के बेटे ऐफ़ा, इफ़र, हनूक, अबीदा और इल्दआ थे। यह सब क़तूरा की औलाद थे।

5इब्राहीम ने अपनी सारी मिलकियत इसहाक़ को दे दी। 6अपनी मौत से पहले उसने अपनी दूसरी बीवियों के बेटों को तोहफ़े देकर अपने बेटे से दूर मशरिक़ की तरफ़ भेज दिया।

इब्राहीम की वफ़ात

7-8इब्राहीम 175 साल की उम्र में फ़ौत हुआ। ग़रज़ वह बहुत उम्ररसीदा और ज़िंदगी से आसूदा होकर इंतक़ाल करके अपने बापदादा से जा मिला। 9-10उसके बेटों इसहाक़ और इसमाईल ने उसे मकफ़ीला के ग़ार में दफ़न किया जो ममरे के मशरिक़ में है। यह वही ग़ार था जिसे खेत समेत हित्ती आदमी इफ़रोन बिन सुहर से ख़रीदा गया था। इब्राहीम और उस की बीवी सारा दोनों को उसमें दफ़न किया गया।

11इब्राहीम की वफ़ात के बाद अल्लाह ने इसहाक़ को बरकत दी। उस वक़्त इसहाक़ बैर-लही-रोई के क़रीब आबाद था।

इसमाईल की औलाद

12इब्राहीम का बेटा इसमाईल जो सारा की मिसरी लौंडी हाजिरा के हाँ पैदा हुआ उसका नसबनामा यह है। 13इसमाईल के बेटे बड़े से लेकर छोटे तक यह हैं : नबायोत, क़ीदार, अदबियेल, मिबसाम, 14मिशमा, दूमा, मस्सा, 15हदद, तैमा, यतूर, नफ़ीस और क़िदमा।

16यह बेटे बारह क़बीलों के बानी बन गए, और जहाँ जहाँ वह आबाद हुए उन जगहों का वही नाम पड़ गया। 17इसमाईल 137 साल का था जब वह कूच करके अपने बापदादा से जा मिला। 18उस की औलाद उस इलाक़े में आबाद थी जो हवीला और शूर के दरमियान है और जो मिसर के मशरिक़ में असूर की तरफ़ है। यों इसमाईल अपने तमाम भाइयों के सामने ही आबाद हुआ।

एसौ और याक़ूब की पैदाइश

19यह इब्राहीम के बेटे इसहाक़ का बयान है।

20इसहाक़ 40 साल का था जब उस की रिबक़ा से शादी हुई। रिबक़ा लाबन की बहन और अरामी मर्द बतुएल की बेटी थी (बतुएल मसोपुतामिया का था)। 21रिबक़ा के बच्चे पैदा न हुए। लेकिन इसहाक़ ने अपनी बीवी के लिए दुआ की तो रब ने उस की सुनी, और रिबक़ा

उम्मीद से हुई। 22उसके पेट में बच्चे एक दूसरे
से ज़ोर-आज़माई करने लगे तो वह रब से पूछने
गई, “अगर यह मेरी हालत रहेगी तो फिर मैं
यहाँ तक क्यों पहुँच गई हूँ?” 23रब ने उससे
कहा, “तेरे अंदर दो क़ौमें हैं। वह तुझसे निकलकर
एक दूसरी से अलग अलग हो जाएँगी। उनमें से
एक ज़्यादा ताक़तवर होगी, और बड़ा छोटे की
ख़िदमत करेगा।”

24पैदाइश का वक़्त आ गया तो जुड़वाँ बेटे
पैदा हुए। 25पहला बच्चा निकला तो सुर्ख़-सा
था, और ऐसा लग रहा था कि वह घने बालों
का कोट ही पहने हुए है। इसलिए उसका नाम
एसौ यानी ‘बालोंवाला’ रखा गया। 26इसके बाद
दूसरा बच्चा पैदा हुआ। वह एसौ की एड़ी पकड़े
हुए निकला, इसलिए उसका नाम याक़ूब यानी
‘एड़ी पकड़नेवाला’ रखा गया। उस वक़्त इसहाक़
60 साल का था।

27लड़के जवान हुए। एसौ माहिर शिकारी बन
गया और खुले मैदान में ख़ुश रहता था। उसके
मुक़ाबले में याक़ूब शायस्ता था और डेरे में रहना
पसंद करता था। 28इसहाक़ एसौ को प्यार करता
था, क्योंकि वह शिकार का गोश्त पसंद करता
था। लेकिन रिबक़ा याक़ूब को प्यार करती थी।

29एक दिन याक़ूब सालन पका रहा था कि
एसौ थकाहारा जंगल से आया। 30उसने कहा,
“मुझे जल्दी से लाल सालन, हाँ इसी लाल सालन
से कुछ खाने को दो। मैं तो बेदम हो रहा हूँ।” (इसी
लिए बाद में उसका नाम अदोम यानी सुर्ख़ पड़
गया।) 31याक़ूब ने कहा, “पहले मुझे पहलौठे
का हक़ बेच दो।” 32एसौ ने कहा, “मैं तो भूक
से मर रहा हूँ, पहलौठे का हक़ मेरे किस काम
का?” 33याक़ूब ने कहा, “पहले क़सम खाकर
मुझे यह हक़ बेच दो।” एसौ ने क़सम खाकर उसे
पहलौठे का हक़ मुंतक़िल कर दिया।

34तब याक़ूब ने उसे कुछ रोटी और दाल दे दी,
और एसौ ने खाया और पिया। फिर वह उठकर
चला गया। यों उसने पहलौठे के हक़ को हक़ीर
जाना।

इसहाक़ और रिबक़ा जिरार में

26 उस मुल्क में दुबारा काल पड़ा, जिस
तरह इब्राहीम के दिनों में भी पड़
गया था। इसहाक़ जिरार शहर गया जिस पर
फ़िलिस्तियों के बादशाह अबीमलिक की हुकूमत
थी। 2रब ने इसहाक़ पर ज़ाहिर होकर कहा,
“मिसर न जा बल्कि उस मुल्क में बस जो मैं तुझे
दिखाता हूँ। 3उस मुल्क में अजनबी रह तो मैं तेरे
साथ हूँगा और तुझे बरकत दूँगा। क्योंकि मैं तुझे
और तेरी औलाद को यह तमाम इलाक़ा दूँगा और
वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने क़सम खाकर तेरे
बाप इब्राहीम से किया था। 4मैं तुझे इतनी औलाद
दूँगा जितने आसमान पर सितारे हैं। और मैं यह
तमाम मुल्क उन्हें दे दूँगा। तेरी औलाद से दुनिया
की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी। 5मैं तुझे इसलिए
बरकत दूँगा कि इब्राहीम मेरे ताबे रहा और मेरी
हिदायात और अहकाम पर चलता रहा।” 6चुनाँचे
इसहाक़ जिरार में आबाद हो गया।

7जब वहाँ के मर्दों ने रिबक़ा के बारे में पूछा तो
इसहाक़ ने कहा, “यह मेरी बहन है।” वह उन्हें यह
बताने से डरता था कि यह मेरी बीवी है, क्योंकि
उसने सोचा, “रिबक़ा निहायत ख़ूबसूरत है। अगर
उन्हें मालूम हो जाए कि रिबक़ा मेरी बीवी है तो
वह उसे हासिल करने की ख़ातिर मुझे क़त्ल कर
देंगे।”

8काफ़ी वक़्त गुज़र गया। एक दिन
फ़िलिस्तियों के बादशाह ने अपनी खिड़की में
से झाँककर देखा कि इसहाक़ अपनी बीवी को
प्यार कर रहा है। 9उसने इसहाक़ को बुलाकर
कहा, “वह तो आपकी बीवी है! आपने क्यों
कहा कि मेरी बहन है?” इसहाक़ ने जवाब दिया,
“मैंने सोचा कि अगर मैं बताऊँ कि यह मेरी बीवी
है तो लोग मुझे क़त्ल कर देंगे।”

10अबीमलिक ने कहा, “आपने हमारे साथ
कैसा सुलूक कर दिखाया! कितनी आसानी
से मेरे आदमियों में से कोई आपकी बीवी से
हमबिसतर हो जाता। इस तरह हम आपके सबब

से एक बड़े जुर्म के क़ुसूरवार ठहरते।” 11फिर अबीमलिक ने तमाम लोगों को हुक्म दिया, “जो भी इस मर्द या उस की बीवी को छेड़े उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

इसहाक़ का फ़िलिस्तियों के साथ झगड़ा

12इसहाक़ ने उस इलाक़े में काश्तकारी की, और उसी साल उसे सौ गुना फल मिला। यों रब ने उसे बरकत दी, 13और वह अमीर हो गया। उस की दौलत बढ़ती गई, और वह निहायत दौलतमंद हो गया। 14उसके पास इतनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और ग़ुलाम थे कि फ़िलिस्ती उससे हसद करने लगे। 15अब ऐसा हुआ कि उन्होंने उन तमाम कुओं को मिट्टी से भरकर बंद कर दिया जो उसके बाप के नौकरों ने खोदे थे।

16आख़िरकार अबीमलिक ने इसहाक़ से कहा, “कहीं और जाकर रहें, क्योंकि आप हमसे ज़्यादा ज़ोरावर हो गए हैं।”

17चुनाँचे इसहाक़ ने वहाँ से जाकर जिरार की वादी में अपने डेरे लगाए। 18वहाँ फ़िलिस्तियों ने इब्राहीम की मौत के बाद तमाम कुओं को मिट्टी से भर दिया था। इसहाक़ ने उनको दुबारा खुदवाया। उसने उनके वही नाम रखे जो उसके बाप ने रखे थे।

19इसहाक़ के नौकरों को वादी में खोदते खोदते ताज़ा पानी मिल गया। 20लेकिन जिरार के चरवाहे आकर इसहाक़ के चरवाहों से झगड़ने लगे। उन्होंने कहा, “यह हमारा कुआँ है!” इसलिए उसने उस कुएँ का नाम इसक यानी झगड़ा रखा। 21इसहाक़ के नौकरों ने एक और कुआँ खोद लिया। लेकिन उस पर भी झगड़ा हुआ, इसलिए उसने उसका नाम सितना यानी मुख़ालफ़त रखा। 22वहाँ से जाकर उसने एक तीसरा कुआँ खुदवाया। इस दफ़ा कोई झगड़ा न हुआ, इसलिए उसने उसका नाम रहोबोत यानी ‘खुली जगह’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “रब ने हमें खुली जगह दी है, और अब हम मुल्क में फलें-फूलेंगे।”

23वहाँ से वह बैर-सबा चला गया। 24उसी रात रब उस पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “मैं तेरे बाप इब्राहीम का ख़ुदा हूँ। मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं तुझे बरकत दूँगा और तुझे अपने ख़ादिम इब्राहीम की ख़ातिर बहुत औलाद दूँगा।”

25वहाँ इसहाक़ ने क़ुरबानगाह बनाई और रब का नाम लेकर इबादत की। वहाँ उसने अपने ख़ैमे लगाए और उसके नौकरों ने कुआँ खोद लिया।

अबीमलिक के साथ अहद

26एक दिन अबीमलिक, उसका साथी अख़ूज़त और उसका सिपहसालार फ़ीकुल जिरार से उसके पास आए। 27इसहाक़ ने पूछा, “आप क्यों मेरे पास आए हैं? आप तो मुझसे नफ़रत रखते हैं। क्या आपने मुझे अपने दरमियान से ख़ारिज नहीं किया था?” 28उन्होंने जवाब दिया, “हमने जान लिया है कि रब आपके साथ है। इसलिए हमने कहा कि हमारा आपके साथ अहद होना चाहिए। आइए हम क़सम खाकर एक दूसरे से अहद बाँधें 29कि आप हमें नुक़सान नहीं पहुँचाएँगे, क्योंकि हमने भी आपको नहीं छेड़ा बल्कि आपसे सिर्फ़ अच्छा सुलूक किया और आपको सलामती के साथ रुख़सत किया है। और अब ज़ाहिर है कि रब ने आपको बरकत दी है।”

30इसहाक़ ने उनकी ज़ियाफ़त की, और उन्होंने खाया और पिया। 31फिर सुबह-सवेरे उठकर उन्होंने एक दूसरे के सामने क़सम खाई। इसके बाद इसहाक़ ने उन्हें रुख़सत किया और वह सलामती से रवाना हुए।

32उसी दिन इसहाक़ के नौकर आए और उसे उस कुएँ के बारे में इत्तला दी जो उन्होंने खोदा था। उन्होंने कहा, “हमें पानी मिल गया है।” 33उसने कुएँ का नाम सबा यानी ‘क़सम’ रखा। आज तक साथवाले शहर का नाम बैर-सबा है।

एसौ की अजनबी बीवियाँ

34जब एसौ 40 साल का था तो उसने दो हित्ती औरतों से शादी की, बैरी की बेटी यहूदित से और

ऐलोन की बेटी बासमत से। 35यह औरतें इसहाक़
और रिबक़ा के लिए बड़े दुख का बाइस बनीं।

इसहाक़ याक़ूब को बरकत देता है

27 इसहाक़ बूढ़ा हो गया तो उस की
नज़र धुँधला गई। उसने अपने बड़े
बेटे को बुलाकर कहा, "बेटा।" एसौ ने जवाब
दिया, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" 2इसहाक़ ने कहा,
"मैं बूढ़ा हो गया हूँ और ख़ुदा जाने कब मर
जाऊँ। 3इसलिए अपना तीर कमान लेकर जंगल
में निकल जा और मेरे लिए किसी जानवर का
शिकार कर। 4उसे तैयार करके ऐसा लज़ीज़
खाना पका जो मुझे पसंद है। फिर उसे मेरे पास
ले आ। मरने से पहले मैं वह खाना खाकर तुझे
बरकत देना चाहता हूँ।"

5रिबक़ा ने इसहाक़ की एसौ के साथ बातचीत
सुन ली थी। जब एसौ शिकार करने के लिए चला
गया तो उसने याक़ूब से कहा, 6"अभी अभी मैंने
तुम्हारे अब्बू को एसौ से यह बात करते हुए सुना
कि 7'मेरे लिए किसी जानवर का शिकार करके
ले आ। उसे तैयार करके मेरे लिए लज़ीज़ खाना
पका। मरने से पहले मैं यह खाना खाकर तुझे रब
के सामने बरकत देना चाहता हूँ।' 8अब सुनो, मेरे
बेटे! जो कुछ मैं बताती हूँ वह करो। 9जाकर रेवड़
में से बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे चुन लो।
फिर मैं वही लज़ीज़ खाना पकाऊँगी जो तुम्हारे
अब्बू को पसंद है। 10तुम यह खाना उसके पास
ले जाओगे तो वह उसे खाकर मरने से पहले तुम्हें
बरकत देगा।"

11लेकिन याक़ूब ने एतराज़ किया, "आप
जानती हैं कि एसौ के जिस्म पर घने बाल हैं
जबकि मेरे बाल कम हैं। 12कहीं मुझे छूने से
मेरे बाप को पता न चल जाए कि मैं उसे फ़रेब
दे रहा हूँ। फिर मुझ पर बरकत नहीं बल्कि
लानत आएगी।" 13उस की माँ ने कहा, "तुम
पर आनेवाली लानत मुझ पर आए, बेटा। बस
मेरी बात मान लो। जाओ और बकरियों के वह
बच्चे ले आओ।"

14चुनाँचे वह गया और उन्हें अपनी माँ के पास
ले आया। रिबक़ा ने ऐसा लज़ीज़ खाना पकाया
जो याक़ूब के बाप को पसंद था। 15एसौ के ख़ास
मौक़ों के लिए अच्छे लिबास रिबक़ा के पास घर में
थे। उसने उनमें से बेहतरीन लिबास चुनकर अपने
छोटे बेटे को पहना दिया। 16साथ साथ उसने
बकरियों की खालें उसके हाथों और गरदन पर
जहाँ बाल न थे लपेट दीं। 17फिर उसने अपने बेटे
याक़ूब को रोटी और वह लज़ीज़ खाना दिया जो
उसने पकाया था।

18याक़ूब ने अपने बाप के पास जाकर कहा,
"अब्बू जी।" इसहाक़ ने कहा, "जी, बेटा। तू
कौन है?" 19उसने कहा, "मैं आपका पहलौठा
एसौ हूँ। मैंने वह किया है जो आपने मुझे कहा
था। अब ज़रा उठें और बैठकर मेरे शिकार का
खाना खाएँ ताकि आप बाद में मुझे बरकत दें।"
20इसहाक़ ने पूछा, "बेटा, तुझे यह शिकार इतनी
जल्दी किस तरह मिल गया?" उसने जवाब
दिया, "रब आपके ख़ुदा ने उसे मेरे सामने से
गुज़रने दिया।"

21इसहाक़ ने कहा, "बेटा, मेरे क़रीब आ ताकि
मैं तुझे छू लूँ कि तू वाक़ई मेरा बेटा एसौ है कि
नहीं।" 22याक़ूब अपने बाप के नज़दीक आया।
इसहाक़ ने उसे छूकर कहा, "तेरी आवाज़ तो
याक़ूब की है लेकिन तेरे हाथ एसौ के हैं।" 23यों
उसने फ़रेब खाया। चूँकि याक़ूब के हाथ एसौ के
हाथ की मानिंद थे इसलिए उसने उसे बरकत दी।
24तो भी उसने दुबारा पूछा, "क्या तू वाक़ई मेरा
बेटा एसौ है?" याक़ूब ने जवाब दिया, "जी,
मैं वही हूँ।" 25आख़िरकार इसहाक़ ने कहा,
"शिकार का खाना मेरे पास ले आ, बेटा। उसे
खाने के बाद मैं तुझे बरकत दूँगा।" याक़ूब खाना
और मै ले आया। इसहाक़ ने खाया और पिया,
26फिर कहा, "बेटा, मेरे पास आ और मुझे बोसा
दे।" 27याक़ूब ने पास आकर उसे बोसा दिया।
इसहाक़ ने उसके लिबास को सूँघकर उसे बरकत
दी। उसने कहा,

"मेरे बेटे की ख़ुशबू उस खुले मैदान की ख़ुशबू
की मानिंद है जिसे रब ने बरकत दी है। 28अल्लाह
तुझे आसमान की ओस और ज़मीन की ज़रख़ेज़ी
दे। वह तुझे कसरत का अनाज और अंगूर का
रस दे। 29क़ौमें तेरी ख़िदमत करें, और उम्मतें तेरे
सामने झुक जाएँ। अपने भाइयों का हुक्मरान बन,
और तेरी माँ की औलाद तेरे सामने घुटने टेके। जो
तुझ पर लानत करे वह ख़ुद लानती हो और जो
तुझे बरकत दे वह ख़ुद बरकत पाए।"

एसौ भी बरकत माँगता है

30इसहाक़ की बरकत के बाद याक़ूब अभी
रुख़सत ही हुआ था कि उसका भाई एसौ शिकार
करके वापस आया। 31वह भी लज़ीज़ खाना
पकाकर उसे अपने बाप के पास ले आया। उसने
कहा, "अब्बू जी, उठें और मेरे शिकार का खाना
खाएँ ताकि आप मुझे बरकत दें।" 32इसहाक़ ने
पूछा, "तू कौन है?" उसने जवाब दिया, "मैं
आपका बड़ा बेटा एसौ हूँ।"

33इसहाक़ घबराकर शिद्दत से काँपने लगा।
उसने पूछा, "फिर वह कौन था जो किसी जानवर
का शिकार करके मेरे पास ले आया? तेरे आने
से ज़रा पहले मैंने उस शिकार का खाना खाकर
उस शख़्स को बरकत दी। अब वह बरकत उसी
पर रहेगी।"

34यह सुनकर एसौ ज़ोरदार और तलख़ चीख़ें
मारने लगा। "अब्बू, मुझे भी बरकत दें," उसने
कहा। 35लेकिन इसहाक़ ने जवाब दिया, "तेरे
भाई ने आकर मुझे फ़रेब दिया। उसने तेरी बरकत
तुझसे छीन ली है।" 36एसौ ने कहा, "उसका
नाम याक़ूब ठीक ही रखा गया है, क्योंकि अब
उसने मुझे दूसरी बार धोका दिया है। पहले उसने
पहलौठे का हक़ मुझसे छीन लिया और अब मेरी
बरकत भी ज़बरदस्ती ले ली। क्या आपने मेरे लिए
कोई बरकत महफ़ूज़ नहीं रखी?" 37लेकिन
इसहाक़ ने कहा, "मैंने उसे तेरा हुक्मरान और
उसके तमाम भाइयों को उसके ख़ादिम बना दिया
है। मैंने उसे अनाज और अंगूर का रस मुहैया किया
है। अब मुझे बता बेटा, क्या कुछ रह गया है जो
मैं तुझे दूँ?" 38लेकिन एसौ ख़ामोश न हुआ
बल्कि कहा, "अब्बू, क्या आपके पास वाक़ई
सिर्फ़ यही बरकत थी? अब्बू, मुझे भी बरकत
दें।" वह ज़ारो-क़तार रोने लगा।

39फिर इसहाक़ ने कहा, "तू ज़मीन की
ज़रख़ेज़ी और आसमान की ओस से महरूम
रहेगा। 40तू सिर्फ़ अपनी तलवार के सहारे ज़िंदा
रहेगा और अपने भाई की ख़िदमत करेगा। लेकिन
एक दिन तू बेचैन होकर उसका जुआ अपनी
गरदन पर से उतार फेंकेगा।"

याक़ूब की हिजरत

41बाप की बरकत के सबब से एसौ याक़ूब का
दुश्मन बन गया। उसने दिल में कहा, "वह दिन
क़रीब आ गए हैं कि अब्बू इंतक़ाल कर जाएंगे
और हम उनका मातम करेंगे। फिर मैं अपने भाई
को मार डालूँगा।"

42रिबक़ा को अपने बड़े बेटे एसौ का यह इरादा
मालूम हुआ। उसने याक़ूब को बुलाकर कहा,
"तुम्हारा भाई बदला लेना चाहता है। वह तुम्हें
क़त्ल करने का इरादा रखता है। 43बेटा, अब मेरी
सुनो, यहाँ से हिजरत कर जाओ। हारान शहर
में मेरे भाई लाबन के पास चले जाओ। 44वहाँ
कुछ दिन ठहरे रहना जब तक तुम्हारे भाई का
ग़ुस्सा ठंडा न हो जाए। 45जब उसका ग़ुस्सा ठंडा
हो जाएगा और वह तुम्हारे उसके साथ किए गए
सुलूक को भूल जाएगा, तब मैं इत्तला दूँगी कि
तुम वहाँ से वापस आ सकते हो। मैं क्यों एक ही
दिन में तुम दोनों से महरूम हो जाऊँ?"

46फिर रिबक़ा ने इसहाक़ से बात की, "मैं
एसौ की बीवियों के सबब से अपनी ज़िंदगी से
तंग हूँ। अगर याक़ूब भी इस मुल्क की औरतों में
से किसी से शादी करे तो बेहतर है कि मैं पहले
ही मर जाऊँ।"

28 इसहाक़ ने याक़ूब को बुलाकर
उसे बरकत दी और कहा, "ला-
ज़िम है कि तू किसी कनानी औरत से शादी

न करे। 2अब सीधे मसोपुतामिया में अपने
नाना बतुएल के घर जा और वहाँ अपने मामूँ
लाबन की लड़कियों में से किसी एक से शादी
कर। 3अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ तुझे बरकत देकर
फलने-फूलने दे और तुझे इतनी औलाद दे कि तू
बहुत सारी क़ौमों का बाप बने। 4वह तुझे और तेरी
औलाद को इब्राहीम की बरकत दे जिसे उसने यह
मुल्क दिया जिसमें तू मेहमान के तौर पर रहता है।
यह मुल्क तुम्हारे क़ब्ज़े में आए।” 5यों इसहाक़ ने
याक़ूब को मसोपुतामिया में लाबन के घर भेजा।
लाबन अरामी मर्द बतुएल का बेटा और रिबक़ा
का भाई था।

एसौ एक और शादी करता है

6एसौ को पता चला कि इसहाक़ ने याक़ूब को
बरकत देकर मसोपुतामिया भेज दिया है ताकि
वहाँ शादी करे। उसे यह भी मालूम हुआ कि
इसहाक़ ने उसे कनानी औरत से शादी करने से
मना किया है 7और कि याक़ूब अपने माँ-बाप की
सुनकर मसोपुतामिया चला गया है। 8एसौ समझ
गया कि कनानी औरतें मेरे बाप को मंज़ूर नहीं
हैं। 9इसलिए वह इब्राहीम के बेटे इसमाईल के
पास गया और उस की बेटी महलत से शादी की।
वह नबायोत की बहन थी। यों उस की बीवियों में
इज़ाफ़ा हुआ।

बैतेल में याक़ूब का ख़ाब

10याक़ूब बैर-सबा से हारान की तरफ़ रवाना
हुआ। 11जब सूरज ग़ुरूब हुआ तो वह रात गुज़ारने
के लिए रुक गया और वहाँ के पत्थरों में से एक
को लेकर उसे अपने सिरहाने रखा और सो गया।
12जब वह सो रहा था तो ख़ाब में एक सीढ़ी
देखी जो ज़मीन से आसमान तक पहुँचती थी।
फ़रिश्ते उस पर चढ़ते और उतरते नज़र आते थे।
13रब उसके ऊपर खड़ा था। उसने कहा, “मैं
रब इब्राहीम और इसहाक़ का ख़ुदा हूँ। मैं तुझे
और तेरी औलाद को यह ज़मीन दूँगा जिस पर तू
लेटा है। 14तेरी औलाद ज़मीन पर ख़ाक की तरह
बेशुमार होगी, और तू चारों तरफ़ फैल जाएगा।
दुनिया की तमाम क़ौमें तेरे और तेरी औलाद के
वसीले से बरकत पाएँगी। 15मैं तेरे साथ हूँगा,
तुझे महफ़ूज़ रखूँगा और आख़िरकार तुझे इस
मुल्क में वापस लाऊँगा। मुमकिन ही नहीं कि मैं
तेरे साथ अपना वादा पूरा करने से पहले तुझे छोड़
दूँ।”

16तब याक़ूब जाग उठा। उसने कहा,
“यक़ीनन रब यहाँ हाज़िर है, और मुझे मालूम
नहीं था।” 17वह डर गया और कहा, “यह कितना
ख़ौफ़नाक मक़ाम है। यह तो अल्लाह ही का घर
और आसमान का दरवाज़ा है।”

18याक़ूब सुबह-सवेरे उठा। उसने वह पत्थर
लिया जो उसने अपने सिरहाने रखा था और उसे
सतून की तरह खड़ा किया। फिर उसने उस पर
ज़ैतून का तेल उंडेल दिया। 19उसने मक़ाम का
नाम बैतेल यानी ‘अल्लाह का घर’ रखा (पहले
साथवाले शहर का नाम लूज़ था)। 20उसने क़सम
खाकर कहा, “अगर रब मेरे साथ हो, सफ़र पर
मेरी हिफ़ाज़त करे, मुझे खाना और कपड़ा मुहैया
करे 21और मैं सलामती से अपने बाप के घर
वापस पहुँचूँ तो फिर वह मेरा ख़ुदा होगा। 22जहाँ
यह पत्थर सतून के तौर पर खड़ा है वहाँ अल्लाह
का घर होगा, और जो भी तू मुझे देगा उसका
दसवाँ हिस्सा तुझे दिया करूँगा।”

याक़ूब लाबन के घर पहुँचता है

29 याक़ूब ने अपना सफ़र जारी रखा और
चलते चलते मशरिक़ी क़ौमों के मुल्क
में पहुँच गया। 2वहाँ उसने खेत में कुआँ देखा
जिसके इर्दगिर्द भेड़-बकरियों के तीन रेवड़ जमा
थे। रेवड़ों को कुएँ का पानी पिलाया जाना था,
लेकिन उसके मुँह पर बड़ा पत्थर पड़ा था। 3वहाँ
पानी पिलाने का यह तरीक़ा था कि पहले चरवाहे
तमाम रेवड़ों का इंतज़ार करते और फिर पत्थर
को लुढ़काकर मुँह से हटा देते थे। पानी पिलाने
के बाद वह पत्थर को दुबारा मुँह पर रख देते थे।

4याक़ूब ने चरवाहों से पूछा, “मेरे भाइयो, आप
कहाँ के हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “हारान के।”
5उसने पूछा, “क्या आप नहूर के पोते लाबन
को जानते हैं?” उन्होंने कहा, “जी हाँ।” 6उसने
पूछा, “क्या वह ख़ैरियत से है?” उन्होंने कहा,
“जी, वह ख़ैरियत से है। देखो, उधर उस की
बेटी राख़िल रेवड़ लेकर आ रही है।” 7याक़ूब ने
कहा, “अभी तो शाम तक बहुत वक़्त बाक़ी है।
रेवड़ों को जमा करने का वक़्त तो नहीं है। आप
क्यों उन्हें पानी पिलाकर दुबारा चरने नहीं देते?”
8उन्होंने जवाब दिया, “पहले ज़रूरी है कि तमाम
रेवड़ यहाँ पहुँचें। तब ही पत्थर को लुढ़काकर
एक तरफ़ हटाया जाएगा और हम रेवड़ों को पानी
पिलाएँगे।”

9याक़ूब अभी उनसे बात कर ही रहा था कि
राख़िल अपने बाप का रेवड़ लेकर आ पहुँची,
क्योंकि भेड़-बकरियों को चराना उसका काम था।
10जब याक़ूब ने राख़िल को मामूँ लाबन के रेवड़
के साथ आते देखा तो उसने कुएँ के पास जाकर
पत्थर को लुढ़काकर मुँह से हटा दिया और भेड़-
बकरियों को पानी पिलाया। 11फिर उसने उसे
बोसा दिया और ख़ूब रोने लगा। 12उसने कहा,
“मैं आपके अब्बू की बहन रिबक़ा का बेटा हूँ।”
यह सुनकर राख़िल ने भागकर अपने अब्बू को
इत्तला दी।

13जब लाबन ने सुना कि मेरा भानजा याक़ूब
आया है तो वह दौड़कर उससे मिलने गया और
उसे गले लगाकर अपने घर ले आया। याक़ूब ने
उसे सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 14लाबन
ने कहा, “आप वाक़ई मेरे रिश्तेदार हैं।” याक़ूब
ने वहाँ एक पूरा महीना गुज़ारा।

अपनी बीवियों के लिए याक़ूब की मेहनत-मशक़्क़त

15फिर लाबन याक़ूब से कहने लगा, “बेशक
आप मेरे रिश्तेदार हैं, लेकिन आपको मेरे लिए
काम करने के बदले में कुछ मिलना चाहिए।
मैं आपको कितने पैसे दूँ?” 16लाबन की दो
बेटियाँ थीं। बड़ी का नाम लियाह था और छोटी
का राख़िल। 17लियाह की आँखें चुंधी थीं जबकि
राख़िल हर तरह से ख़ूबसूरत थी। 18याक़ूब को
राख़िल से मुहब्बत थी, इसलिए उसने कहा,
“अगर मुझे आपकी छोटी बेटी राख़िल मिल
जाए तो आपके लिए सात साल काम करूँगा।”
19लाबन ने कहा, “किसी और आदमी की
निसबत मुझे यह ज़्यादा पसंद है कि आप ही से
उस की शादी कराऊँ।”

20पस याक़ूब ने राख़िल को पाने के लिए सात
साल तक काम किया। लेकिन उसे ऐसा लगा
जैसा दो एक दिन ही गुज़रे हों क्योंकि वह राख़िल
को शिद्दत से प्यार करता था। 21इसके बाद उसने
लाबन से कहा, “मुद्दत पूरी हो गई है। अब मुझे
अपनी बेटी से शादी करने दें।” 22लाबन ने उस
मक़ाम के तमाम लोगों को दावत देकर शादी की
ज़ियाफ़त की। 23लेकिन उस रात वह राख़िल की
बजाए लियाह को याक़ूब के पास ले आया, और
याक़ूब उसी से हमबिसतर हुआ। 24(लाबन ने
लियाह को अपनी लौंडी ज़िलफ़ा दे दी थी ताकि
वह उस की ख़िदमत करे।)

25जब सुबह हुई तो याक़ूब ने देखा कि लियाह
ही मेरे पास है। उसने लाबन के पास जाकर कहा,
“यह आपने मेरे साथ क्या किया है? क्या मैंने
राख़िल के लिए काम नहीं किया? आपने मुझे
धोका क्यों दिया?” 26लाबन ने जवाब दिया,
“यहाँ दस्तूर नहीं है कि छोटी बेटी की शादी बड़ी
से पहले कर दी जाए। 27एक हफ़्ते के बाद शादी
की रसूमात पूरी हो जाएँगी। उस वक़्त तक सब्र
करें। फिर मैं आपको राख़िल भी दे दूँगा। शर्त
यह है कि आप मज़ीद सात साल मेरे लिए काम
करें।”

28याक़ूब मान गया। चुनाँचे जब एक हफ़्ते के
बाद शादी की रसूमात पूरी हुईं तो लाबन ने अपनी
बेटी राख़िल की शादी भी उसके साथ कर दी।
29(लाबन ने राख़िल को अपनी लौंडी बिलहाह
दे दी ताकि वह उस की ख़िदमत करे।) 30याक़ूब
राख़िल से भी हमबिसतर हुआ। वह लियाह की

निसबत उसे ज़्यादा प्यार करता था। फिर उसने राख़िल के एवज़ सात साल और लाबन की ख़िदमत की।

याक़ूब के बच्चे

31जब रब ने देखा कि लियाह से नफ़रत की जाती है तो उसने उसे औलाद दी जबकि राख़िल के हाँ बच्चे पैदा न हुए।

32लियाह हामिला हुई और उसके बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, "रब ने मेरी मुसीबत देखी है और अब मेरा शौहर मुझे प्यार करेगा।" उसने उसका नाम रूबिन यानी 'देखो एक बेटा' रखा।

33वह दुबारा हामिला हुई। एक और बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, "रब ने सुना कि मुझसे नफ़रत की जाती है, इसलिए उसने मुझे यह भी दिया है।" उसने उसका नाम शमाऊन यानी 'रब ने सुना है' रखा।

34वह एक और दफ़ा हामिला हुई। तीसरा बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, "अब आख़िरकार शौहर के साथ मेरा बंधन मज़बूत हो जाएगा, क्योंकि मैंने उसके लिए तीन बेटों को जन्म दिया है।" उसने उसका नाम लावी यानी बंधन रखा।

35वह एक बार फिर हामिला हुई। चौथा बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, "इस दफ़ा मैं रब की तमजीद करूँगी।" उसने उसका नाम यहूदाह यानी तमजीद रखा। इसके बाद उससे और बच्चे पैदा न हुए।

30 लेकिन राख़िल बेऔलाद ही रही, इसलिए वह अपनी बहन से हसद करने लगी। उसने याक़ूब से कहा, "मुझे भी औलाद दें वरना मैं मर जाऊँगी।" 2याक़ूब को ग़ुस्सा आया। उसने कहा, "क्या मैं अल्लाह हूँ जिसने तुझे औलाद से महरूम रखा है?"
3राख़िल ने कहा, "यहाँ मेरी लौंडी बिलहाह है। उसके साथ हमबिसतर हों ताकि वह मेरे लिए बच्चे को जन्म दे और मैं उस की मारिफ़त माँ बन जाऊँ।"

4यों उसने अपने शौहर को बिलहाह दी, और वह उससे हमबिसतर हुआ। 5बिलहाह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। 6राख़िल ने कहा, "अल्लाह ने मेरे हक़ में फ़ैसला दिया है। उसने मेरी दुआ सुनकर मुझे बेटा दे दिया है।" उसने उसका नाम दान यानी 'किसी के हक़ में फ़ैसला करनेवाला' रखा।

7बिलहाह दुबारा हामिला हुई और एक और बेटा पैदा हुआ। 8राख़िल ने कहा, "मैंने अपनी बहन से सख़्त कुश्ती लड़ी है, लेकिन जीत गई हूँ।" उसने उसका नाम नफ़ताली यानी 'कुश्ती में मुझसे जीता गया' रखा।

9जब लियाह ने देखा कि मेरे और बच्चे पैदा नहीं हो रहे तो उसने याक़ूब को अपनी लौंडी ज़िलफ़ा दे दी ताकि वह भी उस की बीवी हो। 10ज़िलफ़ा के भी एक बेटा पैदा हुआ। 11लियाह ने कहा, "मैं कितनी ख़ुशक़िसमत हूँ!" चुनाँचे उसने उसका नाम जद यानी ख़ुशक़िसमती रखा।

12फिर ज़िलफ़ा के दूसरा बेटा पैदा हुआ।
13लियाह ने कहा, "मैं कितनी मुबारक हूँ। अब ख़वातीन मुझे मुबारक कहेंगी।" उसने उसका नाम आशर यानी मुबारक रखा।

14एक दिन अनाज की फ़सल की कटाई हो रही थी कि रूबिन बाहर निकलकर खेतों में चला गया। वहाँ उसे मर्दुमगयाह[a] मिल गए। वह उन्हें अपनी माँ लियाह के पास ले आया। यह देखकर राख़िल ने लियाह से कहा, "मुझे ज़रा अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से कुछ दे दो।" 15लियाह ने जवाब दिया, "क्या यही काफ़ी नहीं कि तुमने मेरे शौहर को मुझसे छीन लिया है? अब मेरे बेटे के मर्दुमगयाह को भी छीनना चाहती हो।" राख़िल ने कहा, "अगर तुम मुझे अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से दो तो आज रात याक़ूब के साथ सो सकती हो।"

[a]एक पौदा जिसके बारे में ख़याल किया जाता था कि उसे खाकर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

16शाम को याक़ूब खेतों से वापस आ रहा था
कि लियाह आगे से उससे मिलने को गई और
कहा, “आज रात आपको मेरे साथ सोना है,
क्योंकि मैंने अपने बेटे के मर्दुमगयाह के एवज़
आपको उजरत पर लिया है।” चुनाँचे याक़ूब ने
लियाह के पास रात गुज़ारी।

17उस वक़्त अल्लाह ने लियाह की दुआ सुनी
और वह हामिला हुई। उसके पाँचवाँ बेटा पैदा
हुआ। 18लियाह ने कहा, “अल्लाह ने मुझे इसका
अज्र दिया है कि मैंने अपने शौहर को अपनी लौंडी
दी।” उसने उसका नाम इशकार यानी अज्र रखा।

19इसके बाद वह एक और दफ़ा हामिला
हुई। उसके छटा बेटा पैदा हुआ। 20उसने कहा,
“अल्लाह ने मुझे एक अच्छा-ख़ासा तोहफ़ा दिया
है। अब मेरा ख़ाविंद मेरे साथ रहेगा, क्योंकि
मुझसे उसके छः बेटे पैदा हुए हैं।” उसने उसका
नाम ज़बूलून यानी रिहाइश रखा।

21इसके बाद बेटी पैदा हुई। उसने उसका नाम
दीना रखा।

22फिर अल्लाह ने राख़िल को भी याद किया।
उसने उस की दुआ सुनकर उसे औलाद बख़्शी।
23वह हामिला हुई और एक बेटा पैदा हुआ। उसने
कहा, “मुझे बेटा अता करने से अल्लाह ने मेरी
इज़्ज़त बहाल कर दी है। 24रब मुझे एक और बेटा
दे।” उसने उसका नाम यूसुफ़ यानी ‘वह और दे’
रखा।

याक़ूब का लाबन के साथ सौदा

25यूसुफ़ की पैदाइश के बाद याक़ूब ने लाबन
से कहा, “अब मुझे इजाज़त दें कि मैं अपने वतन
और घर को वापस जाऊँ। 26मुझे मेरे बाल-बच्चे
दें जिनके एवज़ मैंने आपकी ख़िदमत की है। फिर
मैं चला जाऊँगा। आप तो ख़ुद जानते हैं कि मैंने
कितनी मेहनत के साथ आपके लिए काम किया
है।”

27लेकिन लाबन ने कहा, “मुझ पर मेहर-
बानी करें और यहीं रहें। मुझे ग़ैबदानी से पता चला
है कि रब ने मुझे आपके सबब से बरकत दी है।
28अपनी उजरत ख़ुद मुक़र्रर करें तो मैं वही दिया
करूँगा।”

29याक़ूब ने कहा, “आप जानते हैं कि मैंने
किस तरह आपके लिए काम किया, कि मेरे
वसीले से आपके मवेशी कितने बढ़ गए हैं। 30जो
थोड़ा-बहुत मेरे आने से पहले आपके पास था वह
अब बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। रब ने मेरे काम से
आपको बहुत बरकत दी है। अब वह वक़्त आ
गया है कि मैं अपने घर के लिए कुछ करूँ।”

31लाबन ने कहा, “मैं आपको क्या दूँ?”
याक़ूब ने कहा, “मुझे कुछ न दें। मैं इस शर्त पर
आपकी भेड़-बकरियों की देख-भाल जारी रखूँगा
कि 32आज मैं आपके रेवड़ में से गुज़रकर उन
तमाम भेड़ों को अलग कर लूँगा जिनके जिस्म
पर छोटे या बड़े धब्बे हों या जो सफ़ेद न हों।
इसी तरह मैं उन तमाम बकरियों को भी अलग
कर लूँगा जिनके जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे हों।
यही मेरी उजरत होगी। 33आइंदा जिन बकरियों
के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे होंगे या जिन भेड़ों
का रंग सफ़ेद नहीं होगा वह मेरा अज्र होंगी। जब
कभी आप उनका मुआयना करेंगे तो आप मालूम
कर सकेंगे कि मैं दियानतदार रहा हूँ। क्योंकि मेरे
जानवरों के रंग से ही ज़ाहिर होगा कि मैंने आपका
कुछ चुराया नहीं है।” 34लाबन ने कहा, “ठीक है।
ऐसा ही हो जैसा आपने कहा है।”

35उसी दिन लाबन ने उन बकरों को अलग कर
लिया जिनके जिस्म पर धारियाँ या धब्बे थे और
उन तमाम बकरियों को जिनके जिस्म पर छोटे या
बड़े धब्बे थे। जिसके भी जिस्म पर सफ़ेद निशान
था उसे उसने अलग कर लिया। इसी तरह उसने
उन तमाम भेड़ों को भी अलग कर लिया जो पूरे
तौर पर सफ़ेद न थे। फिर लाबन ने उन्हें अपने
बेटों के सुपुर्द कर दिया 36जो उनके साथ याक़ूब
से इतना दूर चले गए कि उनके दरमियान तीन
दिन का फ़ासला था। तब याक़ूब लाबन की बाक़ी
भेड़-बकरियों की देख-भाल करता गया।

37याक़ूब ने सफ़ेदा, बादाम और चनार की हरी
हरी शाख़ें लेकर उनसे कुछ छिलका यों उतार

दिया कि उस पर सफ़ेद धारियाँ नज़र आईं।
38उसने उन्हें भेड़-बकरियों के सामने उन हौज़ों
में गाड़ दिया जहाँ वह पानी पीते थे, क्योंकि वहाँ
यह जानवर मस्त होकर मिलाप करते थे। 39जब
वह इन शाख़ों के सामने मिलाप करते तो जो बच्चे
पैदा होते उनके जिस्म पर छोटे और बड़े धब्बे और
धारियाँ होती थीं। 40फिर याक़ूब ने भेड़ के बच्चों
को अलग करके अपने रेवड़ों को लाबन के उन
जानवरों के सामने चरने दिया जिनके जिस्म पर
धारियाँ थीं और जो सफ़ेद न थे। यों उसने अपने
ज़ाती रेवड़ों को अलग कर लिया और उन्हें लाबन
के रेवड़ के साथ चरने न दिया।

41लेकिन उसने यह शाख़ें सिर्फ़ उस वक़्त
हौज़ों में खड़ी कीं जब ताक़तवर जानवर मस्त
होकर मिलाप करते थे। 42कमज़ोर जानवरों के
साथ उसने ऐसा न किया। इसी तरह लाबन
को कमज़ोर जानवर और याक़ूब को ताक़तवर
जानवर मिल गए। 43यों याक़ूब बहुत अमीर बन
गया। उसके पास बहुत-से रेवड़, ग़ुलाम और
लौंडियाँ, ऊँट और गधे थे।

याक़ूब की हिजरत

31 एक दिन याक़ूब को पता चला कि
लाबन के बेटे मेरे बारे में कह रहे हैं,
“याक़ूब ने हमारे अब्बू से सब कुछ छीन लिया है।
उसने यह तमाम दौलत हमारे बाप की मिलकियत
से हासिल की है।” 2याक़ूब ने यह भी देखा कि
लाबन का मेरे साथ रवैया पहले की निसबत बिगड़
गया है। 3फिर रब ने उससे कहा, “अपने बाप के
मुल्क और अपने रिश्तेदारों के पास वापस चला
जा। मैं तेरे साथ हूँगा।”

4उस वक़्त याक़ूब खुले मैदान में अपने रेवड़ों
के पास था। उसने वहाँ से राख़िल और लियाह
को बुलाकर 5उनसे कहा, “मैंने देख लिया है कि
आपके बाप का मेरे साथ रवैया पहले की निसबत
बिगड़ गया है। लेकिन मेरे बाप का ख़ुदा मेरे साथ
रहा है। 6आप दोनों जानती हैं कि मैंने आपके
अब्बू के लिए कितनी जाँफ़िशानी से काम किया
है। 7लेकिन वह मुझे फ़रेब देता रहा और मेरी
उजरत दस बार बदली। ताहम अल्लाह ने उसे
मुझे नुक़सान पहुँचाने न दिया। 8जब मामूँ लाबन
कहते थे, ‘जिन जानवरों के जिस्म पर धब्बे हों
वही आपको उजरत के तौर पर मिलेंगे’ तो तमाम
भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिनके जिस्मों
पर धब्बे ही थे। जब उन्होंने कहा, ‘जिन जानवरों
के जिस्म पर धारियाँ होंगी वही आपको उजरत के
तौर पर मिलेंगे’ तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे
बच्चे पैदा हुए जिनके जिस्मों पर धारियाँ ही थीं।
9यों अल्लाह ने आपके अब्बू के मवेशी छीनकर
मुझे दे दिए हैं। 10अब ऐसा हुआ कि हैवानों की
मस्ती के मौसम में मैंने एक ख़ाब देखा। उसमें
जो मेंढे और बकरे भेड़-बकरियों से मिलाप कर
रहे थे उनके जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और
धारियाँ थीं। 11उस ख़ाब में अल्लाह के फ़रिश्ते
ने मुझसे बात की, ‘याक़ूब!’ मैंने कहा, ‘जी,
मैं हाज़िर हूँ।’ 12फ़रिश्ते ने कहा, ‘अपनी नज़र
उठाकर उस पर ग़ौर कर जो हो रहा है। वह तमाम
मेंढे और बकरे जो भेड़-बकरियों से मिलाप कर
रहे हैं उनके जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और
धारियाँ हैं। मैं यह ख़ुद करवा रहा हूँ, क्योंकि मैंने
वह सब कुछ देख लिया है जो लाबन ने तेरे साथ
किया है। 13मैं वह ख़ुदा हूँ जो बैतेल में तुझ पर
ज़ाहिर हुआ था, उस जगह जहाँ तूने सतून पर
तेल उंडेलकर उसे मेरे लिए मख़सूस किया और
मेरे हुज़ूर क़सम खाई थी। अब उठ और रवाना
होकर अपने वतन वापस चला जा’।”

14राख़िल और लियाह ने जवाब में याक़ूब से
कहा, “अब हमें अपने बाप की मीरास से कुछ
मिलने की उम्मीद नहीं रही। 15उसका हमारे साथ
अजनबी का-सा सुलूक है। पहले उसने हमें बेच
दिया, और अब उसने वह सारे पैसे खा भी लिए
हैं। 16चुनाँचे जो भी दौलत अल्लाह ने हमारे बाप
से छीन ली है वह हमारी और हमारे बच्चों की ही
है। अब जो कुछ भी अल्लाह ने आपको बताया है
वह करें।”

17तब याक़ूब ने उठकर अपने बाल-बच्चों को
ऊँटों पर बिठाया 18और अपने तमाम मवेशी
और मसोपुतामिया से हासिल किया हुआ तमाम
सामान लेकर मुल्के-कनान में अपने बाप के हाँ
जाने के लिए रवाना हुआ। 19उस वक़्त लाबन
अपनी भेड़-बकरियों की पशम कतरने को गया
हुआ था। उस की ग़ैरमौजूदगी में राख़िल ने अपने
बाप के बुत चुरा लिए।

20याक़ूब ने लाबन को फ़रेब देकर उसे इत्तला
न दी कि मैं जा रहा हूँ 21बल्कि अपनी सारी
मिलकियत समेटकर फ़रार हुआ। दरियाए-फ़ुरात
को पार करके वह जिलियाद के पहाड़ी इलाक़े
की तरफ़ सफ़र करने लगा।

लाबन याक़ूब का ताक़्क़ुब करता है

22तीन दिन गुज़र गए। फिर लाबन को बताया
गया कि याक़ूब भाग गया है। 23अपने रिश्तेदारों
को साथ लेकर उसने उसका ताक़्क़ुब किया।
सात दिन चलते चलते उसने याक़ूब को आ लिया
जब वह जिलियाद के पहाड़ी इलाक़े में पहुँच गया
था। 24लेकिन उस रात अल्लाह ने ख़ाब में लाबन
के पास आकर उससे कहा, “ख़बरदार! याक़ूब
को बुरा-भला न कहना।”

25जब लाबन उसके पास पहुँचा तो याक़ूब
ने जिलियाद के पहाड़ी इलाक़े में अपने ख़ैमे
लगाए हुए थे। लाबन ने भी अपने रिश्तेदारों के
साथ वहीं अपने ख़ैमे लगाए। 26उसने याक़ूब से
कहा, “यह आपने क्या किया है? आप मुझे
धोका देकर मेरी बेटियों को क्यों जंगी क़ैदियों
की तरह हाँक लाए हैं? 27आप क्यों मुझे फ़रेब
देकर ख़ामोशी से भाग आए हैं? अगर आप
मुझे इत्तला देते तो मैं आपको ख़ुशी ख़ुशी दफ़
और सरोद के साथ गाते बजाते रुख़सत करता।
28आपने मुझे अपने नवासे-नवासियों और बेटियों
को बोसा देने का मौक़ा भी न दिया। आपकी यह
हरकत बड़ी अहमक़ाना थी। 29मैं आपको बहुत
नुक़सान पहुँचा सकता हूँ। लेकिन पिछली रात
आपके अब्बू के ख़ुदा ने मुझसे कहा, ‘ख़बरदार!
याक़ूब को बुरा-भला न कहना।’ 30ठीक है, आप
इसलिए चले गए कि अपने बाप के घर वापस
जाने के बड़े आरज़ूमंद थे। लेकिन यह आपने क्या
किया है कि मेरे बुत चुरा लाए हैं?”

31याक़ूब ने जवाब दिया, “मुझे डर था कि आप
अपनी बेटियों को मुझसे छीन लेंगे। 32लेकिन
अगर आपको यहाँ किसी के पास अपने बुत मिल
जाएँ तो उसे सज़ाए-मौत दी जाए हमारे रिश्तेदारों
की मौजूदगी में मालूम करें कि मेरे पास आपकी
कोई चीज़ है कि नहीं। अगर है तो उसे ले लें।”
याक़ूब को मालूम नहीं था कि राख़िल ने बुतों को
चुराया है।

33लाबन याक़ूब के ख़ैमे में दाख़िल हुआ और
ढूँडने लगा। वहाँ से निकलकर वह लियाह के ख़ैमे
में और दोनों लौंडियों के ख़ैमे में गया। लेकिन
उसके बुत कहीं नज़र न आए। आख़िर में वह
राख़िल के ख़ैमे में दाख़िल हुआ। 34राख़िल बुतों
को ऊँटों की एक काठी के नीचे छुपाकर उस पर
बैठ गई थी। लाबन टटोल टटोलकर पूरे ख़ैमे में
से गुज़रा लेकिन बुत न मिले। 35राख़िल ने अपने
बाप से कहा, “अब्बू, मुझसे नाराज़ न होना कि
मैं आपके सामने खड़ी नहीं हो सकती। मैं ऐयामे-
माहवारी के सबब से उठ नहीं सकती।” लाबन
उसे छोड़कर ढूँडता रहा, लेकिन कुछ न मिला।

36फिर याक़ूब को ग़ुस्सा आया और वह लाबन
से झगड़ने लगा। उसने पूछा, “मुझसे क्या जुर्म
सरज़द हुआ है? मैंने क्या गुनाह किया है कि
आप इतनी तुंदी से मेरे ताक़्क़ुब के लिए निकले
हैं? 37आपने टटोल टटोलकर मेरे सारे सामान
की तलाशी ली है। तो आपका क्या निकला है?
उसे यहाँ अपने और मेरे रिश्तेदारों के सामने रखें।
फिर वह फ़ैसला करें कि हममें से कौन हक़ पर
है। 38मैं बीस साल तक आपके साथ रहा हूँ।
उस दौरान आपकी भेड़-बकरियाँ बच्चों से महरूम
नहीं रहीं बल्कि मैंने आपका एक मेंढा भी नहीं
खाया। 39जब भी कोई भेड़ या बकरी किसी
जंगली जानवर ने फाड़ डाली तो मैं उसे आपके
पास न लाया बल्कि मुझे ख़ुद उसका नुक़सान

भरना पड़ा। आपका तक़ाज़ा था कि मैं ख़ुद चोरी
हुए माल का एवज़ाना दूँ, ख़ाह वह दिन के वक़्त
चोरी हुआ या रात को। 40मैं दिन की शदीद गरमी
के बाइस पिघल गया और रात की शदीद सर्दी
के बाइस जम गया। काम इतना सख़्त था कि मैं
नींद से महरूम रहा। 41पूरे बीस साल इसी हालत
में गुज़र गए। चौदह साल मैंने आपकी बेटियों के
एवज़ काम किया और छः साल आपकी भेड़-
बकरियों के लिए। उस दौरान आपने दस बार मेरी
तनख़ाह बदल दी। 42अगर मेरे बाप इसहाक़ का
ख़ुदा और मेरे दादा इब्राहीम का माबूद[a] मेरे साथ
न होता तो आप मुझे ज़रूर ख़ाली हाथ रुख़सत
करते। लेकिन अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरी
सख़्त मेहनत-मशक़्क़त देखी है, इसलिए उसने
कल रात को मेरे हक़ में फ़ैसला दिया।”

याक़ूब और लाबन के दरमियान अहद

43तब लाबन ने याक़ूब से कहा, “यह बेटियाँ
तो मेरी बेटियाँ हैं, और इनके बच्चे मेरे बच्चे हैं।
यह भेड़-बकरियाँ भी मेरी ही हैं। लेकिन अब मैं
अपनी बेटियों और उनके बच्चों के लिए कुछ नहीं
कर सकता। 44इसलिए आओ, हम एक दूसरे के
साथ अहद बाँधें। इसके लिए हम यहाँ पत्थरों का
ढेर लगाएँ जो अहद की गवाही देता रहे।”

45चुनाँचे याक़ूब ने एक पत्थर लेकर उसे सतून
के तौर पर खड़ा किया। 46उसने अपने रिश्तेदारों
से कहा, “कुछ पत्थर जमा करें।” उन्होंने पत्थर
जमा करके ढेर लगा दिया। फिर उन्होंने उस ढेर
के पास बैठकर खाना खाया। 47लाबन ने उसका
नाम यजर-शाहदूथा रखा जबकि याक़ूब ने जल-
एद रखा। दोनों नामों का मतलब ‘गवाही का
ढेर’ है यानी वह ढेर जो गवाही देता है। 48लाबन
ने कहा, “आज हम दोनों के दरमियान यह ढेर
अहद की गवाही देता है।” इसलिए उसका नाम
जल-एद रखा गया। 49उसका एक और नाम
मिसफ़ाह यानी ‘पहरेदारों का मीनार’ भी रखा
गया। क्योंकि लाबन ने कहा, “रब हम पर पहरा
दे जब हम एक दूसरे से अलग हो जाएंगे। 50मेरी
बेटियों से बुरा सुलूक न करना, न उनके अलावा
किसी और से शादी करना। अगर मुझे पता भी न
चले लेकिन ज़रूर याद रखें कि अल्लाह मेरे और
आपके सामने गवाह है। 51यहाँ यह ढेर है जो मैंने
लगा दिया है और यहाँ यह सतून भी है। 52यह
ढेर और सतून दोनों इसके गवाह हैं कि न मैं यहाँ
से गुज़रकर आपको नुक़सान पहुँचाऊँगा और न
आप यहाँ से गुज़रकर मुझे नुक़सान पहुँचाएँगे।
53इब्राहीम, नहूर और उनके बाप का ख़ुदा हम
दोनों के दरमियान फ़ैसला करे अगर ऐसा कोई
मामला हो।” जवाब में याक़ूब ने इसहाक़ के
माबूद की क़सम खाई कि मैं यह अहद कभी नहीं
तोड़ूँगा। 54उसने पहाड़ पर एक जानवर क़ुरबानी
के तौर पर चढ़ाया और अपने रिश्तेदारों को खाना
खाने की दावत दी। उन्होंने खाना खाकर वहीं
पहाड़ पर रात गुज़ारी।

55अगले दिन सुबह-सवेरे लाबन ने अपने
नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा देकर उन्हें
बरकत दी। फिर वह अपने घर वापस चला गया।

याक़ूब एसौ से मिलने के लिए तैयार हो जाता है

32 याक़ूब ने भी अपना सफ़र जारी
रखा। रास्ते में अल्लाह के फ़-
रिश्ते उससे मिले। 2उन्हें देखकर उसने कहा,
“यह अल्लाह की लशकरगाह है।” उसने उस
मक़ाम का नाम महनायम यानी ‘दो लशकरगाहें’
रखा।

3याक़ूब ने अपने भाई एसौ के पास अपने
आगे आगे क़ासिद भेजे। एसौ सईर यानी अदोम
के मुल्क में आबाद था। 4उन्हें एसौ को बताना
था, “आपका ख़ादिम याक़ूब आपको इत्तला
देता है कि मैं परदेस में जाकर अब तक लाबन
का मेहमान रहा हूँ। 5वहाँ मुझे बैल, गधे, भेड़-

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : दहशत यानी इसहाक़ का वह ख़ुदा
जिससे इनसान दहशत खाता है।

बकरियाँ, ग़ुलाम और लौंडियाँ हासिल हुए हैं। अब
मैं अपने मालिक को इत्तला दे रहा हूँ कि वापस आ
गया हूँ और आपकी नज़रे-करम का ख़ाहिशमंद
हूँ।”
6जब क़ासिद वापस आए तो उन्होंने कहा,
“हम आपके भाई एसौ के पास गए, और वह
400 आदमी साथ लेकर आपसे मिलने आ रहा
है।”
7याक़ूब घबराकर बहुत परेशान हुआ। उसने
अपने साथ के तमाम लोगों, भेड़-बकरियों, गाय-
बैलों और ऊँटों को दो गुरोहों में तक़सीम किया।
8ख़याल यह था कि अगर एसौ आकर एक
गुरोह पर हमला करे तो बाक़ी गुरोह शायद बच
जाए। 9फिर याक़ूब ने दुआ की, “ऐ मेरे दादा
इब्राहीम और मेरे बाप इसहाक़ के ख़ुदा, मेरी दुआ
सुन! ऐ रब, तूने ख़ुद मुझे बताया, ‘अपने मुल्क
और रिश्तेदारों के पास वापस जा, और मैं तुझे
कामयाबी दूँगा।’ 10मैं उस तमाम मेहरबानी और
वफ़ादारी के लायक़ नहीं जो तूने अपने ख़ादिम
को दिखाई है। जब मैंने लाबन के पास जाते वक़्त
दरियाए-यरदन को पार किया तो मेरे पास सिर्फ़
यह लाठी थी, और अब मेरे पास यह दो गुरोह
हैं। 11मुझे अपने भाई एसौ से बचा, क्योंकि मुझे
डर है कि वह मुझ पर हमला करके बाल-बच्चों
समेत सब कुछ तबाह कर देगा। 12तूने ख़ुद कहा
था, ‘मैं तुझे कामयाबी दूँगा और तेरी औलाद
इतनी बढ़ाऊँगा कि वह समुंदर की रेत की मानिंद
बेशुमार होगी’।”
13याक़ूब ने वहाँ रात गुज़ारी। फिर उसने अपने
माल में से एसौ के लिए तोह्फ़े चुन लिए :
14200 बकरियाँ, 20 बकरे, 200 भेड़ें, 20
मेंढे, 1530 दूध देनेवाली ऊँटनियाँ बच्चों समेत,
40 गाएँ, 10 बैल, 20 गधियाँ और 10 गधे।
16उसने उन्हें मुख़्तलिफ़ रेवड़ों में तक़सीम करके
अपने मुख़्तलिफ़ नौकरों के सुपुर्द किया और
उनसे कहा, “मेरे आगे आगे चलो लेकिन हर रेवड़
के दरमियान फ़ासला रखो।”
17जो नौकर पहले रेवड़ लेकर आगे निकला
उससे याक़ूब ने कहा, “मेरा भाई एसौ तुमसे
मिलेगा और पूछेगा, ‘तुम्हारा मालिक कौन है?
तुम कहाँ जा रहे हो? तुम्हारे सामने के जानवर
किसके हैं?’ 18जवाब में तुम्हें कहना है, ‘यह
आपके ख़ादिम याक़ूब के हैं। यह तोह्फ़ा हैं जो
वह अपने मालिक एसौ को भेज रहे हैं। याक़ूब
हमारे पीछे पीछे आ रहे हैं’।”
19याक़ूब ने यही हुक्म हर एक नौकर को दिया
जिसे रेवड़ लेकर उसके आगे आगे जाना था।
उसने कहा, “जब तुम एसौ से मिलोगे तो उससे
यही कहना है। 20तुम्हें यह भी ज़रूर कहना है,
आपके ख़ादिम याक़ूब हमारे पीछे आ रहे हैं।”
क्योंकि याक़ूब ने सोचा, ‘मैं इन तोह्फ़ों से उसके
साथ सुलह करूँगा। फिर जब उससे मुलाक़ात
होगी तो शायद वह मुझे क़बूल कर ले।’ 21यों
उसने यह तोह्फ़े अपने आगे आगे भेज दिए।
लेकिन उसने ख़ुद ख़ैमागाह में रात गुज़ारी।

याक़ूब की कुश्ती

22उस रात वह उठा और अपनी दो बीवियों,
दो लौंडियों और ग्यारह बेटों को लेकर दरियाए-
यब्बोक़ को वहाँ से पार किया जहाँ कम गहराई
थी। 23फिर उसने अपना सारा सामान भी वहाँ
भेज दिया। 24लेकिन वह ख़ुद अकेला ही पीछे
रह गया।
उस वक़्त एक आदमी आया और पौ फटने
तक उससे कुश्ती लड़ता रहा। 25जब उसने देखा
कि मैं याक़ूब पर ग़ालिब नहीं आ रहा तो उसने
उसके कूल्हे को छुआ, और उसका जोड़ निकल
गया। 26आदमी ने कहा, “मुझे जाने दे, क्योंकि
पौ फटनेवाली है।”
याक़ूब ने कहा, “पहले मुझे बरकत दें, फिर
ही आपको जाने दूँगा।” 27आदमी ने पूछा, “तेरा
क्या नाम है?” उसने जवाब दिया, “याक़ूब।”
28आदमी ने कहा, “अब से तेरा नाम याक़ूब नहीं
बल्कि इसराईल यानी ‘वह अल्लाह से लड़ता है’

होगा। क्योंकि तू अल्लाह और आदमियों के साथ
लड़कर ग़ालिब आया है।”

29याक़ूब ने कहा, “मुझे अपना नाम बताएँ।”
उसने कहा, “तू क्यों मेरा नाम जानना चाहता
है?” फिर उसने याक़ूब को बरकत दी।

30याक़ूब ने कहा, “मैंने अल्लाह को रूबरू
देखा तो भी बच गया हूँ।” इसलिए उसने उस
मक़ाम का नाम फ़नियेल रखा। 31याक़ूब वहाँ से
चला तो सूरज तुलू हो रहा था। वह कूल्हे के सबब
से लँगड़ाता रहा।

32यही वजह है कि आज भी इसराईल की
औलाद कूल्हे के जोड़ पर की नस को नहीं खाते,
क्योंकि याक़ूब की इसी नस को छुआ गया था।

याक़ूब एसौ से मिलता है

33 फिर एसौ उनकी तरफ़ आता हुआ
नज़र आया। उसके साथ 400
आदमी थे। उन्हें देखकर याक़ूब ने बच्चों को
बाँटकर लियाह, राख़िल और दोनों लौंडियों के
हवाले कर दिया। 2उसने दोनों लौंडियों को उनके
बच्चों समेत आगे चलने दिया। फिर लियाह उसके
बच्चों समेत और आख़िर में राख़िल और यूसुफ़
आए। 3याक़ूब ख़ुद सबसे आगे एसौ से मिलने
गया। चलते चलते वह सात दफ़ा ज़मीन तक
झुका। 4लेकिन एसौ दौड़कर उससे मिलने आया
और उसे गले लगाकर बोसा दिया। दोनों रो पड़े।

5फिर एसौ ने औरतों और बच्चों को देखा।
उसने पूछा, “तुम्हारे साथ यह लोग कौन हैं?”
याक़ूब ने कहा, “यह आपके ख़ादिम के बच्चे हैं
जो अल्लाह ने अपने करम से नवाज़े हैं।”

6दोनों लौंडियाँ अपने बच्चों समेत आकर उसके
सामने झुक गईं। 7फिर लियाह अपने बच्चों के
साथ आई और आख़िर में यूसुफ़ और राख़िल
आकर झुक गए।

8एसौ ने पूछा, “जिस जानवरों के बड़े ग़ोल
से मेरी मुलाक़ात हुई उससे क्या मुराद है?”
याक़ूब ने जवाब दिया, “यह तोह्फ़ा है ताकि
आपका ख़ादिम आपकी नज़र में मक़बूल हो।”

9लेकिन एसौ ने कहा, “मेरे भाई, मेरे पास बहुत
कुछ है। यह अपने पास ही रखो।” 10याक़ूब ने
कहा, “नहीं जी, अगर मुझ पर आपके करम
की नज़र है तो मेरे इस तोह्फ़े को ज़रूर क़बूल
फ़रमाएँ। क्योंकि जब मैंने आपका चेहरा देखा
तो वह मेरे लिए अल्लाह के चेहरे की मानिंद था,
आपने मेरे साथ इस क़दर अच्छा सुलूक किया है।
11मेहरबानी करके यह तोह्फ़ा क़बूल करें जो मैं
आपके लिए लाया हूँ। क्योंकि अल्लाह ने मुझ पर
अपने करम का इज़हार किया है, और मेरे पास
बहुत कुछ है।”

याक़ूब इसरार करता रहा तो आख़िरकार एसौ
ने उसे क़बूल कर लिया। फिर एसौ कहने लगा,
12“आओ, हम रवाना हो जाएँ। मैं तुम्हारे आगे
आगे चलूँगा।” 13याक़ूब ने जवाब दिया, “मेरे
मालिक, आप जानते हैं कि मेरे बच्चे नाज़ुक हैं।
मेरे पास भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और उनके दूध
पीनेवाले बच्चे भी हैं। अगर मैं उन्हें एक दिन के
लिए भी हद से ज़्यादा हाँकूँ तो वह मर जाएंगे।
14मेरे मालिक, मेहरबानी करके मेरे आगे आगे
जाएँ। मैं आराम से उसी रफ़्तार से आपके पीछे
पीछे चलता रहूँगा जिस रफ़्तार से मेरे मवेशी और
मेरे बच्चे चल सकेंगे। यों हम आहिस्ता चलते
हुए आपके पास सईर पहुँचेंगे।” 15एसौ ने कहा,
“क्या मैं अपने आदमियों में से कुछ आपके पास
छोड़ दूँ?” लेकिन याक़ूब ने कहा, “क्या ज़रूरत
है? सबसे अहम बात यह है कि आपने मुझे क़बूल
कर लिया है।”

16उस दिन एसौ सईर के लिए और 17याक़ूब
सुक्कात के लिए रवाना हुआ। वहाँ उसने अपने
लिए मकान बना लिया और अपने मवेशियों के
लिए झोंपड़ियाँ। इसलिए उस मक़ाम का नाम
सुक्कात यानी झोंपड़ियाँ पड़ गया।

18फिर याक़ूब चलते चलते सलामती
से सिकम शहर पहुँचा। यों उसका मसो-
पुतामिया से मुल्के-कनान तक का सफ़र
इख़्तिताम तक पहुँच गया। उसने अपने ख़ैमे
शहर के सामने लगाए। 19उसके ख़ैमे हमोर

की औलाद की ज़मीन पर लगे थे। उसने यह
ज़मीन चाँदी के 100 सिक्कों के बदले ख़रीद
ली। 20वहाँ उसने क़ुरबानगाह बनाई जिसका
नाम उसने ‘एल ख़ुदाए-इसराईल’ रखा।

दीना की इसमतदरी

34 एक दिन याक़ूब और लियाह की
बेटी दीना कनानी औरतों से मिलने
के लिए घर से निकली। 2शहर में एक आदमी
बनाम सिकम रहता था। उसका वालिद हमोर
उस इलाक़े का हुक्मरान था और हिव्वी क़ौम से
ताल्लुक़ रखता था। जब सिकम ने दीना को देखा
तो उसने उसे पकड़कर उस की इसमतदरी की।
3लेकिन उसका दिल दीना से लग गया। वह उससे
मुहब्बत करने लगा और प्यार से उससे बातें करता
रहा। 4उसने अपने बाप से कहा, “इस लड़की के
साथ मेरी शादी करा दें।”

5जब याक़ूब ने अपनी बेटी की इसमतदरी की
ख़बर सुनी तो उसके बेटे मवेशियों के साथ खुले
मैदान में थे। इसलिए वह उनके वापस आने तक
ख़ामोश रहा।

6सिकम का बाप हमोर शहर से निकलकर
याक़ूब से बात करने के लिए आया। 7जब याक़ूब
के बेटों को दीना की इसमतदरी की ख़बर मिली
तो उनके दिल रंजिश और ग़ुस्से से भर गए
कि सिकम ने याक़ूब की बेटी की इसमतदरी से
इसराईल की इतनी बेइज़्ज़ती की है। वह सीधे
खुले मैदान से वापस आए। 8हमोर ने याक़ूब से
कहा, “मेरे बेटे का दिल आपकी बेटी से लग गया
है। मेहरबानी करके उस की शादी मेरे बेटे के साथ
कर दें। 9हमारे साथ रिश्ता बाँधें, हमारे बेटे-बेटियों
के साथ शादियाँ कराएँ। 10फिर आप हमारे साथ
इस मुल्क में रह सकेंगे और पूरा मुल्क आपके
लिए खुला होगा। आप जहाँ भी चाहें आबाद हो
सकेंगे, तिजारत कर सकेंगे और ज़मीन ख़रीद
सकेंगे।” 11सिकम ने ख़ुद भी दीना के बाप और
भाइयों से मिन्नत की, “अगर मेरी यह दरख़ास्त
मंज़ूर हो तो मैं जो कुछ आप कहेंगे अदा कर दूँगा।
12जितना भी महर और तोह्फ़े आप मुक़र्रर करें
मैं दे दूँगा। सिर्फ़ मेरी यह ख़ाहिश पूरी करें कि यह
लड़की मेरे अक़्द में आ जाए।”

13लेकिन दीना की इसमतदरी के सबब से
याक़ूब के बेटों ने सिकम और उसके बाप हमोर
से चालाकी करके 14कहा, “हम ऐसा नहीं कर
सकते। हम अपनी बहन की शादी किसी ऐसे
आदमी से नहीं करा सकते जिसका ख़तना नहीं
हुआ। इससे हमारी बेइज़्ज़ती होती है। 15हम
सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी होंगे कि आप अपने तमाम
लड़कों और मर्दों का ख़तना करवाने से हमारी
मानिंद हो जाएँ। 16फिर आपके बेटे-बेटियों के
साथ हमारी शादियाँ हो सकेंगी और हम आपके
साथ एक क़ौम बन जाएंगे। 17लेकिन अगर आप
ख़तना कराने के लिए तैयार नहीं हैं तो हम अपनी
बहन को लेकर चले जाएंगे।”

18यह बातें हमोर और उसके बेटे सिकम को
अच्छी लगीं। 19नौजवान सिकम ने फ़ौरन उन
पर अमल किया, क्योंकि वह दीना को बहुत
पसंद करता था। सिकम अपने ख़ानदान में सबसे
मुअज़्ज़ज़ था। 20हमोर अपने बेटे सिकम के साथ
शहर के दरवाज़े पर गया जहाँ शहर के फ़ैसले
किए जाते थे। वहाँ उन्होंने बाक़ी शहरियों से बात
की। 21“यह आदमी हमसे झगड़नेवाले नहीं हैं,
इसलिए क्यों न वह इस मुल्क में हमारे साथ रहें
और हमारे दरमियान तिजारत करें? हमारे मुल्क
में उनके लिए भी काफ़ी जगह है। आओ, हम
उनकी बेटियों और बेटों से शादियाँ करें। 22लेकिन
यह आदमी सिर्फ़ इस शर्त पर हमारे दरमियान
रहने और एक ही क़ौम बनने के लिए तैयार हैं कि
हम उनकी तरह अपने तमाम लड़कों और मर्दों का
ख़तना कराएँ। 23अगर हम ऐसा करें तो उनके
तमाम मवेशी और सारा माल हमारा ही होगा।
चुनाँचे आओ, हम मुत्तफ़िक़ होकर फ़ैसला कर
लें ताकि वह हमारे दरमियान रहें।”

24सिकम के शहरी हमोर और सिकम के
मशवरे पर राज़ी हुए। तमाम लड़कों और मर्दों
का ख़तना कराया गया। 25तीन दिन के बाद

जब ख़तने के सबब से लोगों की हालत बुरी थी
तो दीना के दो भाई शमाऊन और लावी अपनी
तलवारें लेकर शहर में दाख़िल हुए। किसी को
शक तक नहीं था कि क्या कुछ होगा। अंदर
जाकर उन्होंने बच्चों से लेकर बूढ़ों तक तमाम मर्दों
को क़त्ल कर दिया 26जिनमें हमोर और उसका
बेटा सिकम भी शामिल थे। फिर वह दीना को
सिकम के घर से लेकर चले गए।

27इस क़त्ले-आम के बाद याक़ूब के बाक़ी बेटे
शहर पर टूट पड़े और उसे लूट लिया। यों उन्होंने
अपनी बहन की इसमतदरी का बदला लिया।
28वह भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे और शहर के
अंदर और बाहर का सब कुछ लेकर चलते बने।
29उन्होंने सारे माल पर क़ब्ज़ा किया, औरतों और
बच्चों को क़ैदी बना लिया और तमाम घरों का
सामान भी ले गए।

30फिर याक़ूब ने शमाऊन और लावी से कहा,
“तुमने मुझे मुसीबत में डाल दिया है। अब
कनानी, फ़रिज़्ज़ी और मुल्क के बाक़ी बाशिंदों
में मेरी बदनामी हुई है। मेरे साथ कम आदमी
हैं। अगर दूसरे मिलकर हम पर हमला करें तो
हमारे पूरे ख़ानदान का सत्यानास हो जाएगा।”
31लेकिन उन्होंने कहा, “क्या यह ठीक था कि
उसने हमारी बहन के साथ कसबी का-सा सुलूक
किया?”

बैतेल में याक़ूब पर अल्लाह की बरकत

35 अल्लाह ने याक़ूब से कहा, “उठ,
बैतेल जाकर वहाँ आबाद हो। वहीं
अल्लाह के लिए जो तुझ पर ज़ाहिर हुआ जब
तू अपने भाई एसौ से भाग रहा था क़ुरबानगाह
बना।” 2चुनाँचे याक़ूब ने अपने घरवालों और
बाक़ी सारे साथियों से कहा, “जो भी अजनबी
बुत आपके पास हैं उन्हें फेंक दें। अपने आपको
पाक-साफ़ करके अपने कपड़े बदलें, 3क्योंकि
हमें यह जगह छोड़कर बैतेल जाना है। वहाँ मैं
उस ख़ुदा के लिए क़ुरबानगाह बनाऊँगा जिसने
मुसीबत के वक़्त मेरी दुआ सुनी। जहाँ भी मैं गया
वहाँ वह मेरे साथ रहा है।” 4यह सुनकर उन्होंने
याक़ूब को तमाम बुत दे दिए जो उनके पास थे
और तमाम बालियाँ जो उन्होंने तावीज़ के तौर
पर कानों में पहन रखी थीं। उसने सब कुछ सिकम
के क़रीब बलूत के दरख़्त के नीचे ज़मीन में दबा
दिया। 5फिर वह रवाना हुए। इर्दगिर्द के शहरों पर
अल्लाह की तरफ़ से इतना शदीद ख़ौफ़ छा गया
कि उन्होंने याक़ूब और उसके बेटों का ताक़्क़ुब न
किया।

6चलते चलते याक़ूब अपने लोगों समेत लूज़
पहुँच गया जो मुल्के-कनान में था। आज लूज़
का नाम बैतेल है। 7याक़ूब ने वहाँ क़ुरबानगाह
बनाकर मक़ाम का नाम बैतेल यानी ‘अल्लाह का
घर’ रखा। क्योंकि वहाँ अल्लाह ने अपने आपको
उस पर ज़ाहिर किया था जब वह अपने भाई से
फ़रार हो रहा था।

8वहाँ रिबक़ा की दाया दबोरा मर गई। वह बैतेल
के जुनूब में बलूत के दरख़्त के नीचे दफ़न हुई,
इसलिए उसका नाम अल्लोन-बकूत यानी ‘रोने
का बलूत का दरख़्त’ रखा गया।

9अल्लाह याक़ूब पर एक दफ़ा और ज़ाहिर
हुआ और उसे बरकत दी। यह मसोपुतामिया
से वापस आने पर दूसरी बार हुआ। 10अल्लाह
ने उससे कहा, “अब से तेरा नाम याक़ूब नहीं
बल्कि इसराईल होगा।” यों उसने उसका नया
नाम इसराईल रखा। 11अल्लाह ने यह भी उससे
कहा, “मैं अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ हूँ। फल-फूल
और तादाद में बढ़ता जा। एक क़ौम नहीं बल्कि
बहुत-सी क़ौमें तुझसे निकलेंगी। तेरी औलाद में
बादशाह भी शामिल होंगे। 12मैं तुझे वही मुल्क
दूँगा जो इब्राहीम और इसहाक़ को दिया है। और
तेरे बाद उसे तेरी औलाद को दूँगा।”

13फिर अल्लाह वहाँ से आसमान पर चला
गया। 14जहाँ अल्लाह याक़ूब से हमकलाम हुआ
था वहाँ उसने पत्थर का सतून खड़ा किया और
उस पर मै और तेल उंडेलकर उसे मख़सूस किया।
15उसने जगह का नाम बैतेल रखा।

राख़िल की मौत

16फिर याक़ूब अपने घरवालों के साथ बैतेल
को छोड़कर इफ़राता की तरफ़ चल पड़ा। राख़िल
उम्मीद से थी, और रास्ते में बच्चे की पैदाइश
का वक़्त आ गया। बच्चा बड़ी मुश्किल से पैदा
हुआ। 17जब दर्दे-ज़ह उरूज को पहुँच गया तो
दाई ने उससे कहा, “मत डरो, क्योंकि एक और
बेटा है।” 18लेकिन वह दम तोड़नेवाली थी, और
मरते मरते उसने उसका नाम बिन-ऊनी यानी
‘मेरी मुसीबत का बेटा’ रखा। लेकिन उसके बाप
ने उसका नाम बिनयमीन यानी ‘दहने हाथ या
ख़ुशक़िसमती का बेटा’ रखा। 19राख़िल फ़ौत
हुई, और वह इफ़राता के रास्ते में दफ़न हुई।
आजकल इफ़राता को बैत-लहम कहा जाता है।
20याक़ूब ने उस की क़ब्र पर पत्थर का सतून
खड़ा किया। वह आज तक राख़िल की क़ब्र की
निशानदेही करता है।

21वहाँ से याक़ूब ने अपना सफ़र जारी रखा
और मिजदल-इदर की परली तरफ़ अपने ख़ैमे
लगाए। 22जब वह वहाँ ठहरे थे तो रूबिन याक़ूब
की हरम बिलहाह से हमबिसतर हुआ। याक़ूब को
मालूम हो गया।

याक़ूब के बेटे

याक़ूब के बारह बेटे थे। 23लियाह के बेटे
यह थे : उसका सबसे बड़ा बेटा रूबिन, फिर
शमाऊन, लावी, यहूदाह, इशकार और ज़बूलून।
24राख़िल के दो बेटे थे, यूसुफ़ और बिनयमीन।
25राख़िल की लौंडी बिलहाह के दो बेटे थे, दान
और नफ़ताली। 26लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के
दो बेटे थे, जद और आशर। याक़ूब के यह बेटे
मसोपुतामिया में पैदा हुए।

इसहाक़ की मौत

27फिर याक़ूब अपने बाप इसहाक़ के पास
पहुँच गया जो हबरून के क़रीब ममरे में अजनबी
की हैसियत से रहता था (उस वक़्त हबरून का
नाम क़िरियत-अरबा था)। वहाँ इसहाक़ और
उससे पहले इब्राहीम रहा करते थे। 28-29इसहाक़
180 साल का था जब वह उम्ररसीदा और ज़िंदगी
से आसूदा होकर अपने बापदादा से जा मिला।
उसके बेटे एसौ और याक़ूब ने उसे दफ़न किया।

एसौ की औलाद

36 यह एसौ की औलाद का नसब-
नामा है (एसौ को अदोम भी कहा
जाता है) :

2एसौ ने तीन कनानी औरतों से शादी की :
हित्ती आदमी ऐलोन की बेटी अदा से, अना की
बेटी उहलीबामा से जो हिव्वी आदमी सिबोन की
नवासी थी 3और इसमाईल की बेटी बासमत से
जो नबायोत की बहन थी। 4अदा का एक बेटा
इलीफ़ज़ और बासमत का एक बेटा रऊएल पैदा
हुआ। 5उहलीबामा के तीन बेटे पैदा हुए, यऊस,
यालाम और क़ोरह। एसौ के यह तमाम बेटे मुल्के-
कनान में पैदा हुए।

6बाद में एसौ दूसरे मुल्क में चला गया। उसने
अपनी बीवियों, बेटे-बेटियों और घर के रहनेवालों
को अपने तमाम मवेशियों और मुल्के-कनान में
हासिल किए हुए माल समेत अपने साथ लिया।
7वह इस वजह से चला गया कि दोनों भाइयों के
पास इतने रेवड़ थे कि चराने की जगह कम पड़
गई। 8चुनाँचे एसौ पहाड़ी इलाक़े सईर में आबाद
हुआ। एसौ का दूसरा नाम अदोम है।

9यह एसौ यानी सईर के पहाड़ी इलाक़े में
आबाद अदोमियों का नसबनामा है : 10एसौ
की बीवी अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ था जबकि
उस की बीवी बासमत का एक बेटा रऊएल था।
11इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर, सफ़ो, जाताम,
क़नज़ 12और अमालीक़ थे। अमालीक़ इलीफ़ज़
की हरम तिमना का बेटा था। यह सब एसौ की
बीवी अदा की औलाद में शामिल थे। 13रऊएल के
बेटे नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा थे। यह सब
एसौ की बीवी बासमत की औलाद में शामिल थे।
14एसौ की बीवी उहलीबामा जो अना की बेटी

और सिबोन की नवासी थी के तीन बेटे यऊस,
यालाम और क़ोरह थे।
15एसौ से मुख़्तलिफ़ क़बीलों के सरदार
निकले। उसके पहलौठे इलीफ़ज़ से यह
क़बायली सरदार निकले : तेमान, ओमर,
सफ़ो, क़नज़, 16क़ोरह, जाताम और अमा-
लीक़। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद थे।
17एसौ के बेटे रऊएल से यह क़बायली सरदार
निकले : नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा।
यह सब एसौ की बीवी बासमत की औलाद
थे। 18एसौ की बीवी उहलीबामा यानी अना की
बेटी से यह क़बायली सरदार निकले : यऊस,
यालाम और क़ोरह। 19यह तमाम सरदार एसौ
की औलाद हैं।

सईर की औलाद

20मुल्के-अदोम के कुछ बाशिंदे होरी आदमी
सईर की औलाद थे। उनके नाम लोतान, सोबल,
सिबोन, अना, 21दीसोन, एसर और दीसान थे।
सईर के यह बेटे मुल्के-अदोम में होरी क़बीलों के
सरदार थे।
22लोतान होरी और हेमाम का बाप था।
(तिमना लोतान की बहन थी।) 23सोबल के बेटे
अलवान, मानहत, ऐबाल, सफ़ो और ओनाम थे।
24सिबोन के बेटे ऐयाह और अना थे। इसी अना
को गरम चश्मे मिले जब वह बयाबान में अपने
बाप के गधे चरा रहा था। 25अना का एक बेटा
दीसोन और एक बेटी उहलीबामा थी। 26दीसोन
के चार बेटे हमदान, इशबान, यितरान और किरान
थे। 27एसर के तीन बेटे बिलहान, ज़ावान और
अक़ान थे। 28दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान
थे।
29-30यही यानी लोतान, सोबल, सिब-
ओन, अना, दीसोन, एसर और दीसान सईर के
मुल्क में होरी क़बायल के सरदार थे।

अदोम के बादशाह

31इससे पहले कि इसराईलियों का कोई
बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे
मुल्के-अदोम में हुकूमत करते थे :
32बाला बिन बओर जो दिनहाबा शहर का था
मुल्के-अदोम का पहला बादशाह था।
33उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बुसरा
शहर का था।
34उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के
मुल्क का था।
35उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिसने
मुल्के-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी।
वह अवीत का था।
36उस की मौत पर समला जो मसरिक़ा का
था।
37उस की मौत पर साऊल जो दरियाए-फ़ुरात
पर रहोबोत शहर का था।
38उस की मौत पर बाल-हनान बिन अकबोर।
39उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का
था (बीवी का नाम महेतबेल बिंत मतरिद बिंत
मेज़ाहाब था)।
40-43एसौ से अदोमी क़बीलों के यह
सरदार निकले : तिमना, अलवह, यतेत,
उहलीबामा, ऐला, फ़ीनोन, क़नज़, तेमान,
मिबसार, मजदियेल और इराम। अदोम के
सरदारों की यह फ़हरिस्त उनकी मौरूसी ज़मीन
की आबादियों और क़बीलों के मुताबिक़ ही बयान
की गई है। एसौ उनका बाप है।

यूसुफ़ के ख़ाब

37 याक़ूब मुल्के-कनान में रहता था जहाँ
पहले उसका बाप भी परदेसी था।
2यह याक़ूब के ख़ानदान का बयान है।
उस वक़्त याक़ूब का बेटा यूसुफ़ 17 साल
का था। वह अपने भाइयों यानी बिलहाह और
ज़िलफ़ा के बेटों के साथ भेड़-बकरियों की देख-
भाल करता था। यूसुफ़ अपने बाप को अपने

भाइयों की बुरी हरकतों की इत्तला दिया करता
था।
3याक़ूब यूसुफ़ को अपने तमाम बेटों की
निसबत ज़्यादा प्यार करता था। वजह यह थी
कि वह तब पैदा हुआ जब बाप बूढ़ा था। इसलिए
याक़ूब ने उसके लिए एक ख़ास रंगदार लिबास
बनवाया। 4जब उसके भाइयों ने देखा कि हमारा
बाप यूसुफ़ को हमसे ज़्यादा प्यार करता है तो वह
उससे नफ़रत करने लगे और अदब से उससे बात
नहीं करते थे।
5एक रात यूसुफ़ ने ख़ाब देखा। जब उसने
अपने भाइयों को ख़ाब सुनाया तो वह उससे और
भी नफ़रत करने लगे। 6उसने कहा, "सुनो, मैंने
ख़ाब देखा। 7हम सब खेत में पूले बाँध रहे थे
कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आपके पूले मेरे पूले
के इर्दगिर्द जमा होकर उसके सामने झुक गए।"
8उसके भाइयों ने कहा, "अच्छा, तू बादशाह
बनकर हम पर हुकूमत करेगा?" उसके ख़ाबों
और उस की बातों के सबब से उनकी उससे
नफ़रत मज़ीद बढ़ गई।
9कुछ देर के बाद यूसुफ़ ने एक और ख़ाब देखा।
उसने अपने भाइयों से कहा, "मैंने एक और ख़ाब
देखा है। उसमें सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे
सामने झुक गए।" 10उसने यह ख़ाब अपने बाप
को भी सुनाया तो उसने उसे डाँटा। उसने कहा,
"यह कैसा ख़ाब है जो तूने देखा! यह कैसी बात
है कि मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आकर तेरे सामने
ज़मीन तक झुक जाएँ?" 11नतीजे में उसके भाई
उससे बहुत हसद करने लगे। लेकिन उसके बाप
ने दिल में यह बात महफ़ूज़ रखी।

यूसुफ़ को बेचा जाता है

12एक दिन जब यूसुफ़ के भाई अपने बाप के
रेवड़ चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे 13तो
याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, "तेरे भाई सिकम में
रेवड़ों को चरा रहे हैं। आ, मैं तुझे उनके पास
भेज देता हूँ।" यूसुफ़ ने जवाब दिया, "ठीक है।"
14याक़ूब ने कहा, "जाकर मालूम कर कि तेरे
भाई और उनके साथ के रेवड़ ख़ैरियत से हैं कि
नहीं। फिर वापस आकर मुझे बता देना।" चुनाँचे
उसके बाप ने उसे वादीए-हबरून से भेज दिया,
और यूसुफ़ सिकम पहुँच गया।
15वहाँ वह इधर-उधर फिरता रहा। आ-
ख़िरकार एक आदमी उससे मिला और पूछा,
"आप क्या ढूँड रहे हैं?" 16यूसुफ़ ने जवाब
दिया, "मैं अपने भाइयों को तलाश कर रहा हूँ।
मुझे बताएँ कि वह अपने जानवरों को कहाँ चरा
रहे हैं।" 17आदमी ने कहा, "वह यहाँ से चले गए
हैं। मैंने उन्हें यह कहते सुना कि आओ, हम दूतैन
जाएँ।" यह सुनकर यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे
दूतैन चला गया। वहाँ उसे वह मिल गए।
18जब यूसुफ़ अभी दूर से नज़र आया तो उसके
भाइयों ने उसके पहुँचने से पहले उसे क़त्ल करने
का मनसूबा बनाया। 19उन्होंने कहा, "देखो, ख़ाब
देखनेवाला आ रहा है। 20आओ, हम उसे मार
डालें और उस की लाश किसी गढ़े में फेंक दें।
हम कहेंगे कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़
खाया है। फिर पता चलेगा कि उसके ख़ाबों की
क्या हक़ीक़त है।"
21जब रूबिन ने उनकी बातें सुनीं तो उसने
यूसुफ़ को बचाने की कोशिश की। उसने कहा,
"नहीं, हम उसे क़त्ल न करें। 22उसका ख़ून न
करना। बेशक उसे इस गढ़े में फेंक दें जो रेगिस्तान
में है, लेकिन उसे हाथ न लगाएँ।" उसने यह
इसलिए कहा कि वह उसे बचाकर बाप के पास
वापस पहुँचाना चाहता था।
23ज्योंही यूसुफ़ अपने भाइयों के पास
पहुँचा उन्होंने उसका रंगदार लिबास उतार-
कर 24यूसुफ़ को गढ़े में फेंक दिया। गढ़ा ख़ाली
था, उसमें पानी नहीं था। 25फिर वह रोटी खाने
के लिए बैठ गए। अचानक इसमाईलियों का
एक क़ाफ़िला नज़र आया। वह जिलियाद से
मिसर जा रहे थे, और उनके ऊँट क़ीमती मसालों
यानी लादन, बलसान और मुर से लदे हुए थे।
26तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा, "हमें
क्या फ़ायदा है अगर अपने भाई को क़त्ल करके

उसके ख़ून को छुपा दें? 27आओ, हम उसे
इन इसमाईलियों के हाथ फ़रोख़्त कर दें। फिर
कोई ज़रूरत नहीं होगी कि हम उसे हाथ लगाएँ।
आख़िर वह हमारा भाई है।”

उसके भाई राज़ी हुए। 28चुनाँचे जब मिदियानी
ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ़ को
खींचकर गढ़े से निकाला और चाँदी के 20
सिक्कों के एवज़ बेच डाला। इसमाईली उसे
लेकर मिसर चले गए।

29उस वक़्त रूबिन मौजूद नहीं था। जब वह गढ़े
के पास वापस आया तो यूसुफ़ उसमें नहीं था।
यह देखकर उसने परेशानी में अपने कपड़े फाड़
डाले। 30वह अपने भाइयों के पास वापस गया
और कहा, “लड़का नहीं है। अब मैं किस तरह
अब्बू के पास जाऊँ?” 31तब उन्होंने बकरा ज़बह
करके यूसुफ़ का लिबास उसके ख़ून में डुबोया,
32फिर रंगदार लिबास इस ख़बर के साथ अपने
बाप को भिजवा दिया कि “हमें यह मिला है।
इसे ग़ौर से देखें। यह आपके बेटे का लिबास तो
नहीं?”

33याक़ूब ने उसे पहचान लिया और कहा,
“बेशक उसी का है। किसी वहशी जानवर ने
उसे फाड़ खाया है। यक़ीनन यूसुफ़ को फाड़
दिया गया है।” 34याक़ूब ने ग़म के मारे अपने
कपड़े फाड़े और अपनी कमर से टाट ओढ़कर
बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम करता
रहा। 35उसके तमाम बेटे-बेटियाँ उसे तसल्ली
देने आए, लेकिन उसने तसल्ली पाने से इनकार
किया और कहा, “मैं पाताल में उतरते हुए भी
अपने बेटे के लिए मातम करूँगा।” इस हालत में
वह अपने बेटे के लिए रोता रहा।

36इतने में मिदियानी मिसर पहुँचकर यूसुफ़
को बेच चुके थे। मिसर के बादशाह फ़िरौन के
एक आला अफ़सर फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया।
फ़ूतीफ़ार बादशाह के मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था।

यहूदाह और तमर

38 उन दिनों में यहूदाह अपने भाइयों को
छोड़कर एक आदमी के पास रहने
लगा जिसका नाम हीरा था और जो अदुल्लाम
शहर से था। 2वहाँ यहूदाह की मुलाक़ात एक
कनानी औरत से हुई जिसके बाप का नाम सुअ
था। उसने उससे शादी की। 3बेटा पैदा हुआ
जिसका नाम यहूदाह ने एर रखा। 4एक और बेटा
पैदा हुआ जिसका नाम बीवी ने ओनान रखा।
5उसके तीसरा बेटा भी पैदा हुआ। उसने उसका
नाम सेला रखा। यहूदाह क़ज़ीब में था जब वह
पैदा हुआ।

6यहूदाह ने अपने बड़े बेटे एर की शादी एक
लड़की से कराई जिसका नाम तमर था। 7रब के
नज़दीक एर शरीर था, इसलिए उसने उसे हलाक
कर दिया। 8इस पर यहूदाह ने एर के छोटे भाई
ओनान से कहा, “अपने बड़े भाई की बेवा के
पास जाओ और उससे शादी करो ताकि तुम्हारे
भाई की नसल क़ायम रहे।” 9ओनान ने ऐसा
किया, लेकिन वह जानता था कि जो भी बच्चे
पैदा होंगे वह क़ानून के मुताबिक़ मेरे बड़े भाई के
होंगे। इसलिए जब भी वह तमर से हमबिसतर
होता तो नुतफ़ा को ज़मीन पर गिरा देता, क्योंकि
वह नहीं चाहता था कि मेरी मारिफ़त मेरे भाई
के बच्चे पैदा हों। 10यह बात रब को बुरी लगी,
और उसने उसे भी सज़ाए-मौत दी। 11तब यहूदाह
ने अपनी बहू तमर से कहा, “अपने बाप के घर
वापस चली जाओ और उस वक़्त तक बेवा रहो
जब तक मेरा बेटा सेला बड़ा न हो जाए।” उसने
यह इसलिए कहा कि उसे डर था कि कहीं सेला
भी अपने भाइयों की तरह मर न जाए चुनाँचे तमर
अपने मैके चली गई।

12काफ़ी दिनों के बाद यहूदाह की बीवी जो
सुअ की बेटी थी मर गई। मातम का वक़्त गुज़र
गया तो यहूदाह अपने अदुल्लामी दोस्त हीरा के
साथ तिमनत गया जहाँ यहूदाह की भेड़ों की
पशम कतरी जा रही थी। 13तमर को बताया गया,

“आपका सुसर अपनी भेड़ों की पशम कतरने के
लिए तिमनत जा रहा है।” 14यह सुनकर तमर ने
बेवा के कपड़े उतारकर आम कपड़े पहन लिए।
फिर वह अपना मुँह चादर से लपेटकर ऐनीम शहर
के दरवाज़े पर बैठ गई जो तिमनत के रास्ते में था।
तमर ने यह हरकत इसलिए की कि यहूदाह का
बेटा सेला अब बालिग़ हो चुका था तो भी उस की
उसके साथ शादी नहीं की गई थी।

15जब यहूदाह वहाँ से गुज़रा तो उसने उसे
देखकर सोचा कि यह कसबी है, क्योंकि उसने
अपना मुँह छुपाया हुआ था। 16वह रास्ते से
हटकर उसके पास गया और कहा, “ज़रा मुझे
अपने हाँ आने दें।” (उसने नहीं पहचाना कि
यह मेरी बहू है)। तमर ने कहा, “आप मुझे
क्या देंगे?” 17उसने जवाब दिया, “मैं आपको
बकरी का बच्चा भेज दूँगा।” तमर ने कहा, “ठीक
है, लेकिन उसे भेजने तक मुझे ज़मानत दें।”
18उसने पूछा, “मैं आपको क्या दूँ?” तमर ने
कहा, “अपनी मुहर और उसे गले में लटकाने की
डोरी। वह लाठी भी दें जो आप पकड़े हुए हैं।”
चुनाँचे यहूदाह उसे यह चीज़ें देकर उसके साथ
हमबिसतर हुआ। नतीजे में तमर उम्मीद से हुई।
19फिर तमर उठकर अपने घर वापस चली गई।
उसने अपनी चादर उतारकर दुबारा बेवा के कपड़े
पहन लिए।

20यहूदाह ने अपने दोस्त हीरा अदुल्लामी के
हाथ बकरी का बच्चा भेज दिया ताकि वह चीज़ें
वापस मिल जाएँ जो उसने ज़मानत के तौर पर
दी थीं। लेकिन हीरा को पता न चला कि औरत
कहाँ है। 21उसने ऐनीम के बाशिंदों से पूछा, “वह
कसबी कहाँ है जो यहाँ सड़क पर बैठी थी?”
उन्होंने जवाब दिया, “यहाँ ऐसी कोई कसबी नहीं
थी।”

22उसने यहूदाह के पास वापस जाकर कहा,
“वह मुझे नहीं मिली बल्कि वहाँ के रहनेवालों
ने कहा कि यहाँ कोई ऐसी कसबी थी नहीं।”
23यहूदाह ने कहा, “फिर वह ज़मानत की चीज़ें
अपने पास ही रखे। उसे छोड़ दो वरना लोग हमारा
मज़ाक़ उड़ाएँगे। हमने तो पूरी कोशिश की कि उसे
बकरी का बच्चा मिल जाए, लेकिन खोज लगाने
के बावुजूद आपको पता न चला कि वह कहाँ है।”

24तीन माह के बाद यहूदाह को इत्तला दी गई,
“आपकी बहू तमर ने ज़िना किया है, और अब
वह हामिला है।” यहूदाह ने हुक्म दिया, “उसे
बाहर लाकर जला दो।” 25तमर को जलाने के
लिए बाहर लाया गया तो उसने अपने सुसर को
ख़बर भेज दी, “यह चीज़ें देखें। यह उस आदमी
की हैं जिसकी मारिफ़त मैं उम्मीद से हूँ। पता
करें कि यह मुहर, उस की डोरी और यह लाठी
किसकी हैं।” 26यहूदाह ने उन्हें पहचान लिया।
उसने कहा, “मैं नहीं बल्कि यह औरत हक़ पर है,
क्योंकि मैंने उस की अपने बेटे सेला से शादी नहीं
कराई।” लेकिन बाद में यहूदाह कभी भी तमर से
हमबिसतर न हुआ।

27जब जन्म देने का वक़्त आया तो मालूम
हुआ कि जुड़वाँ बच्चे हैं। 28एक बच्चे का हाथ
निकला तो दाई ने उसे पकड़कर उसमें सुर्ख़ धागा
बाँध दिया और कहा, “यह पहले पैदा हुआ।”
29लेकिन उसने अपना हाथ वापस खींच लिया,
और उसका भाई पहले पैदा हुआ। यह देखकर
दाई बोल उठी, “तू किस तरह फूट निकला है!”
उसने उसका नाम फ़ारस यानी फूट रखा। 30फिर
उसका भाई पैदा हुआ जिसके हाथ में सुर्ख़ धागा
बँधा हुआ था। उसका नाम ज़ारह यानी चमक
रखा गया।

यूसुफ़ और फ़ूतीफ़ार की बीवी

39 इसमाईलियों ने यूसुफ़ को मिसर
ले जाकर बेच दिया था। मिसर के
बादशाह के एक आला अफ़सर बनाम फ़ूतीफ़ार
ने उसे ख़रीद लिया। वह शाही मुहाफ़िज़ों का
कप्तान था। 2रब यूसुफ़ के साथ था। जो भी
काम वह करता उसमें कामयाब रहता। वह अपने
मिसरी मालिक के घर में रहता था 3जिसने देखा
कि रब यूसुफ़ के साथ है और उसे हर काम में
कामयाबी देता है। 4चुनाँचे यूसुफ़ को मालिक की

ख़ास मेहरबानी हासिल हुई, और फ़ूतीफ़ार ने उसे
अपना ज़ाती नौकर बना लिया। उसने उसे अपने
घराने के इंतज़ाम पर मुक़र्रर किया और अपनी
पूरी मिलकियत उसके सुपुर्द कर दी। 5जिस वक़्त
से फ़ूतीफ़ार ने अपने घराने का इंतज़ाम और पूरी
मिलकियत यूसुफ़ के सुपुर्द की उस वक़्त से रब ने
फ़ूतीफ़ार को यूसुफ़ के सबब से बरकत दी। उस
की बरकत फ़ूतीफ़ार की हर चीज़ पर थी, ख़ाह घर
में थी या खेत में। 6फ़ूतीफ़ार ने अपनी हर चीज़
यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दी। और चूँकि यूसुफ़ सब
कुछ अच्छी तरह चलाता था इसलिए फ़ूतीफ़ार
को खाना खाने के सिवा किसी भी मामले की
फ़िकर नहीं थी।

यूसुफ़ निहायत ख़ूबसूरत आदमी था। 7कुछ देर
के बाद उसके मालिक की बीवी की आँख उस पर
लगी। उसने उससे कहा, "मेरे साथ हमबिसतर
हो!" 8यूसुफ़ इनकार करके कहने लगा, "मेरे
मालिक को मेरे सबब से किसी मामले की फ़िकर
नहीं है। उन्होंने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया
है। 9घर के इंतज़ाम पर उनका इख़्तियार मेरे
इख़्तियार से ज़्यादा नहीं है। आपके सिवा उन्होंने
कोई भी चीज़ मुझसे बाज़ नहीं रखी। तो फिर मैं
किस तरह इतना ग़लत काम करूँ? मैं किस तरह
अल्लाह का गुनाह करूँ?"

10मालिक की बीवी रोज़ बरोज़ यूसुफ़ के पीछे
पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो। लेकिन वह
हमेशा इनकार करता रहा।

11एक दिन वह काम करने के लिए घर में गया।
घर में और कोई नौकर नहीं था। 12फ़ूतीफ़ार
की बीवी ने यूसुफ़ का लिबास पकड़कर कहा,
"मेरे साथ हमबिसतर हो!" यूसुफ़ भागकर बाहर
चला गया लेकिन उसका लिबास पीछे औरत के
हाथ में ही रह गया। 13जब मालिक की बीवी ने
देखा कि वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया है
14तो उसने घर के नौकरों को बुलाकर कहा, "यह
देखो! मेरे मालिक इस इबरानी को हमारे पास
ले आए हैं ताकि वह हमें ज़लील करे। वह मेरी
इसमतदरी करने के लिए मेरे कमरे में आ गया,
लेकिन मैं ऊँची आवाज़ से चीख़ने लगी। 15जब
मैं मदद के लिए ऊँची आवाज़ से चीख़ने लगी तो
वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।" 16उसने
मालिक के आने तक यूसुफ़ का लिबास अपने
पास रखा। 17जब वह घर वापस आया तो उसने
उसे यही कहानी सुनाई, "यह इबरानी ग़ुलाम जो
आप ले आए हैं मेरी तज़लील के लिए मेरे पास
आया। 18लेकिन जब मैं मदद के लिए चीख़ने
लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।"

यूसुफ़ क़ैदख़ाने में

19यह सुनकर फ़ूतीफ़ार बड़े ग़ुस्से में आ गया।
20उसने यूसुफ़ को गिरिफ़्तार करके उस जेल में
डाल दिया जहाँ बादशाह के क़ैदी रखे जाते थे।
वहीं वह रहा। 21लेकिन रब यूसुफ़ के साथ था।
उसने उस पर मेहरबानी की और उसे क़ैदख़ाने के
दारोग़े की नज़र में मक़बूल किया। 22यूसुफ़ यहाँ
तक मक़बूल हुआ कि दारोग़े ने तमाम क़ैदियों को
उसके सुपुर्द करके उसे पूरा इंतज़ाम चलाने की
ज़िम्मेदारी दी। 23दारोग़े को किसी भी मामले की
जिसे उसने यूसुफ़ के सुपुर्द किया था फ़िकर न
रही, क्योंकि रब यूसुफ़ के साथ था और उसे हर
काम में कामयाबी बख़्शी।

क़ैदियों के ख़ाब

40 कुछ देर के बाद यों हुआ कि मिसर के
बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी
के इंचार्ज ने अपने मालिक का गुनाह किया।
2फ़िरौन को दोनों अफ़सरों पर ग़ुस्सा आ गया।
3उसने उन्हें उस क़ैदख़ाने में डाल दिया जो शाही
मुहाफ़िज़ों के कप्तान के सुपुर्द था और जिसमें
यूसुफ़ था। 4मुहाफ़िज़ों के कप्तान ने उन्हें यूसुफ़
के हवाले किया ताकि वह उनकी ख़िदमत करे।
वहाँ वह काफ़ी देर तक रहे।

5एक रात बादशाह के सरदार साक़ी और
बेकरी के इंचार्ज ने ख़ाब देखा। दोनों का ख़ाब
फ़रक़ फ़रक़ था, और उनका मतलब भी फ़रक़
फ़रक़ था। 6जब यूसुफ़ सुबह के वक़्त उनके

पास आया तो वह दबे हुए नज़र आए। 7उसने
उनसे पूछा, “आज आप क्यों इतने परेशान हैं?”
8उन्होंने जवाब दिया, “हम दोनों ने ख़ाब देखा है,
और कोई नहीं जो हमें उनका मतलब बताए।”
यूसुफ़ ने कहा, “ख़ाबों की ताबीर तो अल्लाह
का काम है। ज़रा मुझे अपने ख़ाब तो सुनाएँ।”

9सरदार साक़ी ने शुरू किया, “मैंने ख़ाब में
अपने सामने अंगूर की बेल देखी। 10उस की तीन
शाख़ें थीं। उसके पत्ते लगे, कोंपलें फूट निकलीं
और अंगूर पक गए। 11मेरे हाथ में बादशाह का
प्याला था, और मैंने अंगूरों को तोड़कर यों भींच
दिया कि उनका रस बादशाह के प्याले में आ
गया। फिर मैंने प्याला बादशाह को पेश किया।”

12यूसुफ़ ने कहा, “तीन शाख़ों से मुराद तीन
दिन हैं। 13तीन दिन के बाद फ़िरौन आपको
बहाल कर लेगा। आपको पहली ज़िम्मेदारी वापस
मिल जाएगी। आप पहले की तरह सरदार साक़ी
की हैसियत से बादशाह का प्याला सँभालेंगे।
14लेकिन जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा
ख़याल करें। मेहरबानी करके बादशाह के सामने
मेरा ज़िक्र करें ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ।
15क्योंकि मुझे इबरानियों के मुल्क से इग़वा
करके यहाँ लाया गया है, और यहाँ भी मुझसे
कोई ऐसी ग़लती नहीं हुई कि मुझे इस गढ़े में
फेंका जाता।”

16जब शाही बेकरी के इंचार्ज ने देखा कि
सरदार साक़ी के ख़ाब का अच्छा मतलब निकला
तो उसने यूसुफ़ से कहा, “मेरा ख़ाब भी सुनें। मैंने
सर पर तीन टोकरियाँ उठा रखी थीं जो बेकरी की
चीज़ों से भरी हुई थीं। 17सबसे ऊपरवाली टोकरी
में वह तमाम चीज़ें थीं जो बादशाह की मेज़ के
लिए बनाई जाती हैं। लेकिन परिंदे आकर उन्हें
खा रहे थे।”

18यूसुफ़ ने कहा, “तीन टोकरियों से मुराद
तीन दिन हैं। 19तीन दिन के बाद ही फ़िरौन
आपको क़ैदख़ाने से निकालकर दरख़्त से लटका
देगा। परिंदे आपकी लाश को खा जाएंगे।”

20तीन दिन के बाद बादशाह की साल-
गिरह थी। उसने अपने तमाम अफ़सरों की
ज़ियाफ़त की। इस मौक़े पर उसने सरदार साक़ी
और बेकरी के इंचार्ज को जेल से निकालकर
अपने हुज़ूर लाने का हुक्म दिया। 21सरदार साक़ी
को पहलेवाली ज़िम्मेदारी सौंप दी गई, 22लेकिन
बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर दरख़्त से
लटका दिया गया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा
यूसुफ़ ने कहा था।

23लेकिन सरदार साक़ी ने यूसुफ़ का ख़याल
न किया बल्कि उसे भूल ही गया।

बादशाह के ख़ाब

41 दो साल गुज़र गए कि एक रात
बादशाह ने ख़ाब देखा। वह दरियाए-
नील के किनारे खड़ा था। 2अचानक दरिया में से
सात ख़ूबसूरत और मोटी गाएँ निकलकर सरकंडों
में चरने लगीं। 3उनके बाद सात और गाएँ निकल
आईं। लेकिन वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं।
वह दरिया के किनारे दूसरी गायों के पास खड़ी
होकर 4पहली सात ख़ूबसूरत और मोटी मोटी
गायों को खा गईं। इसके बाद मिसर का बादशाह
जाग उठा। 5फिर वह दुबारा सो गया। इस दफ़ा
उसने एक और ख़ाब देखा। अनाज के एक पौदे
पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी बालें लगी
थीं। 6फिर सात और बालें फूट निकलीं जो दुबली-
पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई थीं।
7अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात
मोटी और ख़ूबसूरत बालों को निगल लिया। फिर
फ़िरौन जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने ख़ाब ही
देखा है।

8सुबह हुई तो वह परेशान था, इसलिए उसने
मिसर के तमाम जादूगरों और आलिमों को
बुलाया। उसने उन्हें अपने ख़ाब सुनाए, लेकिन
कोई भी उनकी ताबीर न कर सका।

9फिर सरदार साक़ी ने फ़िरौन से कहा, “आज
मुझे अपनी ख़ताएँ याद आती हैं। 10एक दिन
फ़िरौन अपने ख़ादिमों से नाराज़ हुए। हुज़ूर ने मुझे

और बेकरी के इंचार्ज को क़ैदख़ाने में डलवा दिया
जिस पर शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान मुक़र्रर था।
11एक ही रात में हम दोनों ने मुख़्तलिफ़ ख़ाब
देखे जिनका मतलब फ़रक़ फ़रक़ था। 12वहाँ
जेल में एक इबरानी नौजवान था। वह मुहाफ़िज़ों
के कप्तान का ग़ुलाम था। हमने उसे अपने ख़ाब
सुनाए तो उसने हमें उनका मतलब बता दिया।
13और जो कुछ भी उसने बताया सब कुछ वैसा
ही हुआ। मुझे अपनी ज़िम्मेदारी वापस मिल गई
जबकि बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर
दरख़्त से लटका दिया गया।"

14यह सुनकर फ़िरौन ने यूसुफ़ को बुलाया,
और उसे जल्दी से क़ैदख़ाने से लाया गया।
उसने शेव करवाकर अपने कपड़े बदले और सीधे
बादशाह के हुज़ूर पहुँचा।

15बादशाह ने कहा, "मैंने ख़ाब देखा है, और
यहाँ कोई नहीं जो उस की ताबीर कर सके।
लेकिन सुना है कि तू ख़ाब को सुनकर उसका
मतलब बता सकता है।" 16यूसुफ़ ने जवाब
दिया, "यह मेरे इख़्तियार में नहीं है। लेकिन
अल्लाह ही बादशाह को सलामती का पैग़ाम
देगा।"

17फ़िरौन ने यूसुफ़ को अपने ख़ाब सुनाए,
"मैं ख़ाब में दरियाए-नील के किनारे खड़ा था।
18अचानक दरिया में से सात मोटी मोटी और
ख़ूबसूरत गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं।
19इसके बाद सात और गाएँ निकलीं। वह
निहायत बदसूरत और दुबली-पतली थीं। मैंने
इतनी बदसूरत गाएँ मिसर में कहीं भी नहीं देखीं।
20दुबली और बदसूरत गाएँ पहली मोटी गायों
को खा गईं। 21और निगलने के बाद भी मालूम
नहीं होता था कि उन्होंने मोटी गायों को खाया
है। वह पहले की तरह बदसूरत ही थीं। इसके
बाद मैं जाग उठा। 22फिर मैंने एक और ख़ाब
देखा। सात मोटी और अच्छी बालें एक ही पौदे पर
लगी थीं। 23इसके बाद सात और बालें निकलीं
जो ख़राब, दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से
झुलसी हुई थीं। 24सात दुबली-पतली बालें सात
अच्छी बालों को निगल गईं। मैंने यह सब कुछ
अपने जादूगरों को बताया, लेकिन वह इसकी
ताबीर न कर सके।"

25यूसुफ़ ने बादशाह से कहा, "दोनों ख़ाबों
का एक ही मतलब है। इनसे अल्लाह ने हुज़ूर
पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या कुछ करने को
है। 26सात अच्छी गायों से मुराद सात साल हैं।
इसी तरह सात अच्छी बालों से मुराद भी सात
साल हैं। दोनों ख़ाब एक ही बात बयान करते
हैं। 27जो सात दुबली और बदसूरत गाएँ बाद में
निकलें उनसे मुराद सात और साल हैं। यही सात
दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई
बालों का मतलब भी है। वह एक ही बात बयान
करती हैं कि सात साल तक काल पड़ेगा। 28यह
वही बात है जो मैंने हुज़ूर से कही कि अल्लाह
ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या करेगा।
29सात साल आएँगे जिनके दौरान मिसर के पूरे
मुल्क में कसरत से पैदावार होगी। 30उसके बाद
सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा
कि लोग भूल जाएंगे कि पहले इतनी कसरत
थी। क्योंकि काल मुल्क को तबाह कर देगा।
31काल की शिद्दत के बाइस अच्छे सालों की
कसरत याद ही नहीं रहेगी। 32हुज़ूर को इसलिए
एक ही पैग़ाम दो मुख़्तलिफ़ ख़ाबों की सूरत में
मिला कि अल्लाह इसका पक्का इरादा रखता है,
और वह जल्द ही इस पर अमल करेगा। 33अब
बादशाह किसी समझदार और दानिशमंद आदमी
को मुल्के-मिसर का इंतज़ाम सौंपें। 34इसके
अलावा वह ऐसे आदमी मुक़र्रर करें जो सात अच्छे
सालों के दौरान हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा लें।
35वह उन अच्छे सालों के दौरान ख़ुराक जमा
करें। बादशाह उन्हें इख़्तियार दें कि वह शहरों
में गोदाम बनाकर अनाज को महफ़ूज़ कर लें।
36यह ख़ुराक काल के उन सात सालों के लिए
मख़सूस की जाए जो मिसर में आनेवाले हैं। यों
मुल्क तबाह नहीं होगा।"

यूसुफ़ को मिसर पर हाकिम मुक़र्रर किया जाता है

37यह मनसूबा बादशाह और उसके अफ़-
सरान को अच्छा लगा। 38उसने उनसे कहा,
“हमें इस काम के लिए यूसुफ़ से ज़्यादा लायक़
आदमी नहीं मिलेगा। उसमें अल्लाह की रूह है।”
39बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “अल्लाह ने यह
सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर किया है, इसलिए कोई
भी तुझसे ज़्यादा समझदार और दानिशमंद नहीं
है। 40मैं तुझे अपने महल पर मुक़र्रर करता हूँ।
मेरी तमाम रिआया तेरे ताबे रहेगी। तेरा इख़्तियार
सिर्फ़ मेरे इख़्तियार से कम होगा। 41अब मैं तुझे
पूरे मुल्के-मिसर पर हाकिम मुक़र्रर करता हूँ।”

42बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी
उतारी जिससे मुहर लगाता था और उसे यूसुफ़
की उँगली में पहना दिया। उसने उसे कतान का
बारीक लिबास पहनाया और उसके गले में सोने
का गुलूबंद पहना दिया। 43फिर उसने उसे अपने
दूसरे रथ में सवार किया और लोग उसके आगे
आगे पुकारते रहे, “घुटने टेको! घुटने टेको!”

यों यूसुफ़ पूरे मिसर का हाकिम बना।
44फ़िरौन ने उससे कहा, “मैं तो बादशाह हूँ,
लेकिन तेरी इजाज़त के बग़ैर पूरे मुल्क में कोई भी
अपना हाथ या पाँव नहीं हिलाएगा।” 45-46उसने
यूसुफ़ का मिसरी नाम साफ़नत-फ़ानेह रखा और
ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा की बेटी आसनत के
साथ उस की शादी कराई।

यूसुफ़ 30 साल का था जब वह मिसर के
बादशाह फ़िरौन की ख़िदमत करने लगा। उसने
फ़िरौन के हुज़ूर से निकलकर मिसर का दौरा
किया।

47सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में
निहायत अच्छी फ़सलें उगीं। 48यूसुफ़ ने
तमाम ख़ुराक जमा करके शहरों में महफ़ूज़
कर ली। हर शहर में उसने इर्दगिर्द के
खेतों की पैदावार महफ़ूज़ रखी। 49जमाशुदा
अनाज समुंदर की रेत की मानिंद बकसरत
था। इतना अनाज था कि यूसुफ़ ने आख़िर-
कार उस की पैमाइश करना छोड़ दिया।

50काल से पहले यूसुफ़ और आसनत के दो
बेटे पैदा हुए। 51उसने पहले का नाम मनस्सी
यानी ‘जो भुला देता है’ रखा। क्योंकि उसने
कहा, “अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरे बाप
का घराना मेरी याददाश्त से निकाल दिया है।”
52दूसरे का नाम उसने इफ़राईम यानी ‘दुगना
फलदार’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “अल्लाह ने
मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फलने-फूलने दिया
है।”

53सात अच्छे साल जिनमें कसरत की फ़सलें
उगीं गुज़र गए। 54फिर काल के सात साल शुरू
हुए जिस तरह यूसुफ़ ने कहा था। तमाम दीगर
ममालिक में भी काल पड़ गया, लेकिन मिसर
में वाफ़िर ख़ुराक पाई जाती थी। 55जब काल
ने तमाम मिसर में ज़ोर पकड़ा तो लोग चीख़कर
खाने के लिए बादशाह से मिन्नत करने लगे। तब
फ़िरौन ने उनसे कहा, “यूसुफ़ के पास जाओ। जो
कुछ वह तुम्हें बताएगा वही करो।” 56जब काल
पूरी दुनिया में फैल गया तो यूसुफ़ ने अनाज के
गोदाम खोलकर मिसरियों को अनाज बेच दिया।
क्योंकि काल के बाइस मुल्क के हालात बहुत
ख़राब हो गए थे। 57तमाम ममालिक से भी लोग
अनाज ख़रीदने के लिए यूसुफ़ के पास आए,
क्योंकि पूरी दुनिया सख़्त काल की गिरिफ़्त में
थी।

यूसुफ़ के भाई मिसर में

42 जब याक़ूब को मालूम हुआ कि मिसर
में अनाज है तो उसने अपने बेटों से
कहा, “तुम क्यों एक दूसरे का मुँह तकते हो?
2सुना है कि मिसर में अनाज है। वहाँ जाकर हमारे
लिए कुछ ख़रीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।”

3तब यूसुफ़ के दस भाई अनाज ख़रीदने के
लिए मिसर गए। 4लेकिन याक़ूब ने यूसुफ़ के सगे
भाई बिनयमीन को साथ न भेजा, क्योंकि उसने
कहा, “ऐसा न हो कि उसे जानी नुक़सान पहुँचे।”

5यों याक़ूब के बेटे बहुत सारे और लोगों के साथ मिसर गए, क्योंकि मुल्के-कनान भी काल की गिरिफ़्त में था।

6यूसुफ़ मिसर के हाकिम की हैसियत से लोगों को अनाज बेचता था, इसलिए उसके भाई आकर उसके सामने मुँह के बल झुक गए। 7जब यूसुफ़
ने अपने भाइयों को देखा तो उसने उन्हें पहचान लिया लेकिन ऐसा किया जैसा उनसे नावाक़िफ़ हो और सख़्ती से उनसे बात की, "तुम कहाँ से आए हो?" उन्होंने जवाब दिया, "हम मुल्के-कनान से अनाज ख़रीदने के लिए आए हैं।" 8गो
यूसुफ़ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना। 9उसे वह ख़ाब याद आए
जो उसने उनके बारे में देखे थे। उसने कहा, "तुम जासूस हो। तुम यह देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।"

10उन्होंने कहा, "जनाब, हरगिज़ नहीं। आपके ग़ुलाम ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं। 11हम सब एक
ही मर्द के बेटे हैं। आपके ख़ादिम शरीफ़ लोग हैं, जासूस नहीं हैं।" 12लेकिन यूसुफ़ ने इसरार
किया, "नहीं, तुम देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।"

13उन्होंने अर्ज़ की, "आपके ख़ादिम कुल बारह भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे हैं जो कनान में रहता है। सबसे छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के पास है जबकि एक मर गया है।" 14लेकिन यूसुफ़
ने अपना इलज़ाम दोहराया, "ऐसा ही है जैसा मैंने कहा है कि तुम जासूस हो। 15मैं तुम्हारी बातें जाँच
लूँगा। फ़िरौन की हयात की क़सम, पहले तुम्हारा सबसे छोटा भाई आए, वरना तुम इस जगह से कभी नहीं जा सकोगे। 16एक भाई को उसे लाने
के लिए भेज दो। बाक़ी सब यहाँ गिरिफ़्तार रहेंगे। फिर पता चलेगा कि तुम्हारी बातें सच हैं कि नहीं। अगर नहीं तो फ़िरौन की हयात की क़सम, इसका मतलब यह होगा कि तुम जासूस हो।"

17यह कहकर यूसुफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए
क़ैदख़ाने में डाल दिया। 18तीसरे दिन उसने उनसे
कहा, "मैं अल्लाह का ख़ौफ़ मानता हूँ, इसलिए तुमको एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा। 19अगर तुम
वाक़ई शरीफ़ लोग हो तो ऐसा करो कि तुममें से एक यहाँ क़ैदख़ाने में रहे जबकि बाक़ी सब अनाज लेकर अपने भूके घरवालों के पास वापस जाएँ। 20लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सबसे
छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। सिर्फ़ इससे तुम्हारी बातें सच साबित होंगी और तुम मौत से बच जाओगे।"

यूसुफ़ के भाई राज़ी हो गए। 21वह आपस में
कहने लगे, "बेशक यह हमारे अपने भाई पर ज़ुल्म की सज़ा है। जब वह इल्तिजा कर रहा था कि मुझ पर रहम करें तो हमने उस की बड़ी मुसीबत देखकर भी उस की न सुनी। इसलिए यह मुसीबत हम पर आ गई है।" 22और रूबिन ने कहा, "क्या
मैंने नहीं कहा था कि लड़के पर ज़ुल्म मत करो, लेकिन तुमने मेरी एक न मानी। अब उस की मौत का हिसाब-किताब किया जा रहा है।"

23उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ़ हमारी बातें
समझ सकता है, क्योंकि वह मुतरजिम की मारिफ़त उनसे बात करता था। 24यह बातें
सुनकर वह उन्हें छोड़कर रोने लगा। फिर वह सँभलकर वापस आया। उसने शमाऊन को चुनकर उसे उनके सामने ही बाँध लिया।

यूसुफ़ के भाई कनान वापस जाते हैं

25यूसुफ़ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उनकी
बोरियाँ अनाज से भरकर हर एक भाई के पैसे उस की बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफ़र के लिए खाना भी दें। उन्होंने ऐसा ही किया। 26फिर
यूसुफ़ के भाई अपने गधों पर अनाज लादकर रवाना हो गए।

27जब वह रात के लिए किसी जगह पर ठहरे
तो एक भाई ने अपने गधे के लिए चारा निकालने की ग़रज़ से अपनी बोरी खोली तो देखा कि बोरी के मुँह में उसके पैसे पड़े हैं। 28उसने अपने भाइयों
से कहा, "मेरे पैसे वापस कर दिए गए हैं! वह मेरी बोरी में हैं।" यह देखकर उनके होश उड़ गए। काँपते हुए वह एक दूसरे को देखने और कहने

लगे, "यह क्या है जो अल्लाह ने हमारे साथ किया है?"

29मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचकर उन्होंने उसे सब कुछ सुनाया जो उनके साथ हुआ था। उन्होंने कहा, 30"उस मुल्क के मालिक ने बड़ी सख़्ती से हमारे साथ बात की। उसने हमें जासूस क़रार दिया। 31लेकिन हमने उससे कहा, 'हम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हैं। 32हम बारह भाई हैं, एक ही बाप के बेटे। एक तो मर गया जबकि सबसे छोटा भाई इस वक़्त कनान में बाप के पास है।' 33फिर उस मुल्क के मालिक ने हमसे कहा, 'इससे मुझे पता चलेगा कि तुम शरीफ़ लोग हो कि एक भाई को मेरे पास छोड़ दो और अपने भूके घरवालों के लिए ख़ुराक लेकर चले जाओ। 34लेकिन अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ ताकि मुझे मालूम हो जाए कि तुम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हो। फिर मैं तुमको तुम्हारा भाई वापस कर दूँगा और तुम इस मुल्क में आज़ादी से तिजारत कर सकोगे'।"

35उन्होंने अपनी बोरियों से अनाज निकाल दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उसके पैसों की थैली रखी हुई है। यह पैसे देखकर वह ख़ुद और उनका बाप डर गए। 36उनके बाप ने उनसे कहा, "तुमने मुझे मेरे बच्चों से महरूम कर दिया है। यूसुफ़ नहीं रहा, शमाऊन भी नहीं रहा और अब तुम बिनयमीन को भी मुझसे छीनना चाहते हो। सब कुछ मेरे ख़िलाफ़ है।" 37फिर रूबिन बोल उठा, "अगर मैं उसे सलामती से आपके पास वापस न पहुँचाऊँ तो आप मेरे दो बेटों को सज़ाए-मौत दे सकते हैं। उसे मेरे सुपुर्द करें तो मैं उसे वापस ले आऊँगा।" 38लेकिन याक़ूब ने कहा, "मेरा बेटा तुम्हारे साथ जाने का नहीं। क्योंकि उसका भाई मर गया है और वह अकेला ही रह गया है। अगर उसको रास्ते में जानी नुक़सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे।"

बिनयमीन के हमराह दूसरा सफ़र

43 काल ने ज़ोर पकड़ा। 2जब मिसर से लाया गया अनाज ख़त्म हो गया तो याक़ूब ने कहा, "अब वापस जाकर हमारे लिए कुछ और ग़ल्ला ख़रीद लाओ।" 3लेकिन यहूदाह ने कहा, "उस मर्द ने सख़्ती से कहा था, 'तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकते हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।' 4अगर आप हमारे भाई को साथ भेजें तो फिर हम जाकर आपके लिए ग़ल्ला ख़रीदेंगे 5वरना नहीं। क्योंकि उस आदमी ने कहा था कि हम सिर्फ़ इस सूरत में उसके पास आ सकते हैं कि हमारा भाई साथ हो।" 6याक़ूब ने कहा, "तुमने उसे क्यों बताया कि हमारा एक और भाई भी है? इससे तुमने मुझे बड़ी मुसीबत में डाल दिया है।" 7उन्होंने जवाब दिया, "वह आदमी हमारे और हमारे ख़ानदान के बारे में पूछता रहा, 'क्या तुम्हारा बाप अब तक ज़िंदा है? क्या तुम्हारा कोई और भाई है?' फिर हमें जवाब देना पड़ा। हमें क्या पता था कि वह हमें अपने भाई को साथ लाने को कहेगा।" 8फिर यहूदाह ने बाप से कहा, "लड़के को मेरे साथ भेज दें तो हम अभी रवाना हो जाएंगे। वरना आप, हमारे बच्चे बल्कि हम सब भूकों मर जाएंगे। 9मैं ख़ुद उसका ज़ामिन हूँगा। आप मुझे उस की जान का ज़िम्मेदार ठहरा सकते हैं। अगर मैं उसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िंदगी के आख़िर तक क़ुसूरवार ठहरूँगा। 10जितनी देर तक हम झिजकते रहे हैं उतनी देर में तो हम दो दफ़ा मिसर जाकर वापस आ सकते थे।"

11तब उनके बाप इसराईल ने कहा, "अगर और कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार में से कुछ तोहफ़े के तौर पर लेकर उस आदमी को दे दो यानी कुछ बलसान, शहद, लादन, मुर, पिस्ता और बादाम। 12अपने साथ दुगनी रक़म लेकर जाओ, क्योंकि तुम्हें वह पैसे वापस करने हैं जो तुम्हारी बोरियों में रखे गए थे। शायद किसी से ग़लती हुई हो। 13अपने भाई को

लेकर सीधे वापस पहुँचना। 14अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ करे कि यह आदमी तुम पर रहम करके बिनयमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को वापस भेजे। जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मुझे अपने बच्चों से महरूम होना है तो ऐसा ही हो।"

15चुनाँचे वह तोहफ़े, दुगनी रक़म और बिनयमीन को साथ लेकर चल पड़े। मिसर पहुँचकर वह यूसुफ़ के सामने हाज़िर हुए। 16जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, "इन आदमियों को मेरे घर ले जाओ ताकि वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ। जानवर को ज़बह करके खाना तैयार करो।"

17मुलाज़िम ने ऐसा ही किया और भाइयों को यूसुफ़ के घर ले गया। 18जब उन्हें उसके घर पहुँचाया जा रहा था तो वह डरकर सोचने लगे, "हमें उन पैसों के सबब से यहाँ लाया जा रहा है जो पहली दफ़ा हमारी बोरियों में वापस किए गए थे। वह हम पर अचानक हमला करके हमारे गधे छीन लेंगे और हमें ग़ुलाम बना लेंगे।"

19इसलिए घर के दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, 20"जनाबे-आली, हमारी बात सुन लीजिए। इससे पहले हम अनाज ख़रीदने के लिए यहाँ आए थे। 21लेकिन जब हम यहाँ से रवाना होकर रास्ते में रात के लिए ठहरे तो हमने अपनी बोरियाँ खोलकर देखा कि हर बोरी के मुँह में हमारे पैसों की पूरी रक़म पड़ी है। हम यह पैसे वापस ले आए हैं। 22नीज़, हम मज़ीद ख़ुराक ख़रीदने के लिए और पैसे ले आए हैं। ख़ुदा जाने किसने हमारे यह पैसे हमारी बोरियों में रख दिए।"

23मुलाज़िम ने कहा, "फ़िकर न करें। मत डरें। आपके और आपके बाप के ख़ुदा ने आपके लिए आपकी बोरियों में यह ख़ज़ाना रखा होगा। बहरहाल मुझे आपके पैसे मिल गए हैं।"

मुलाज़िम शमाऊन को उनके पास बाहर ले आया। 24फिर उसने भाइयों को यूसुफ़ के घर में ले जाकर उन्हें पाँव धोने के लिए पानी और गधों को चारा दिया। 25उन्होंने अपने तोहफ़े तैयार रखे, क्योंकि उन्हें बताया गया, "यूसुफ़ दोपहर का खाना आपके साथ ही खाएगा।"

26जब यूसुफ़ घर पहुँचा तो वह अपने तोहफ़े लेकर उसके सामने आए और मुँह के बल झुक गए। 27उसने उनसे ख़ैरियत दरियाफ़्त की और फिर कहा, "तुमने अपने बूढ़े बाप का ज़िक्र किया। क्या वह ठीक हैं? क्या वह अब तक ज़िंदा हैं?" 28उन्होंने जवाब दिया, "जी, आपके ख़ादिम हमारे बाप अब तक ज़िंदा हैं।" वह दुबारा मुँह के बल झुक गए।

29जब यूसुफ़ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को देखा तो उसने कहा, "क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है जिसका तुमने ज़िक्र किया था? बेटा, अल्लाह की नज़रे-करम तुम पर हो।" 30यूसुफ़ अपने भाई को देखकर इतना मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था, इसलिए वह जल्दी से वहाँ से निकलकर अपने सोने के कमरे में गया और रो पड़ा। 31फिर वह अपना मुँह धोकर वापस आया। अपने आप पर क़ाबू पाकर उसने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ।

32नौकरों ने यूसुफ़ के लिए खाने का अलग इंतज़ाम किया और भाइयों के लिए अलग। मिसरियों के लिए भी खाने का अलग इंतज़ाम था, क्योंकि इबरानियों के साथ खाना खाना उनकी नज़र में क़ाबिले-नफ़रत था। 33भाइयों को उनकी उम्र की तरतीब के मुताबिक़ यूसुफ़ के सामने बिठाया गया। यह देखकर भाई निहायत हैरान हुए। 34नौकरों ने उन्हें यूसुफ़ की मेज़ पर से खाना लेकर खिलाया। लेकिन बिनयमीन को दूसरों की निसबत पाँच गुना ज़्यादा मिला। यों उन्होंने यूसुफ़ के साथ जी भरकर खाया और पिया।

गुमशुदा प्याला

44 यूसुफ़ ने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम को हुक्म दिया, "उन मर्दों की बोरियाँ ख़ुराक से इतनी भर देना जितनी वह उठाकर ले जा सकें। हर एक के पैसे उस की अपनी बोरी के

मुँह में रख देना। 2सबसे छोटे भाई की बोरी में न
सिर्फ़ पैसे बल्कि मेरे चाँदी के प्याले को भी रख
देना।” मुलाज़िम ने ऐसा ही किया।
3अगली सुबह जब पौ फटने लगी तो भाइयों
को उनके गधों समेत रुख़सत कर दिया गया।
4वह अभी शहर से निकलकर दूर नहीं गए थे कि
यूसुफ़ ने अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा,
“जल्दी करो। उन आदमियों का ताक़्क़ुब करो।
उनके पास पहुँचकर यह पूछना, ‘आपने हमारी
भलाई के जवाब में ग़लत काम क्यों किया है?
5आपने मेरे मालिक का चाँदी का प्याला क्यों
चुराया है? उससे वह न सिर्फ़ पीते हैं बल्कि उसे
ग़ैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। आप एक
निहायत संगीन जुर्म के मुरतकिब हुए हैं’।”
6जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उसने
उनसे यही बातें कीं। 7जवाब में उन्होंने कहा,
“हमारे मालिक ऐसी बातें क्यों करते हैं? कभी
नहीं हो सकता कि आपके ख़ादिम ऐसा करें।
8आप तो जानते हैं कि हम मुल्के-कनान से वह
पैसे वापस ले आए जो हमारी बोरियों में थे। तो
फिर हम क्यों आपके मालिक के घर से चाँदी या
सोना चुराएँगे? 9अगर वह आपके ख़ादिमों में से
किसी के पास मिल जाए तो उसे मार डाला जाए
और बाक़ी सब आपके ग़ुलाम बनें।”
10मुलाज़िम ने कहा, “ठीक है ऐसा ही होगा।
लेकिन सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम बनेगा जिसने प्याला
चुराया है। बाक़ी सब आज़ाद हैं।” 11उन्होंने
जल्दी से अपनी बोरियाँ उतारकर ज़मीन पर रख
दीं। हर एक ने अपनी बोरी खोल दी। 12मुलाज़िम
बोरियों की तलाशी लेने लगा। वह बड़े भाई से
शुरू करके आख़िरकार सबसे छोटे भाई तक पहुँच
गया। और वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला
निकला। 13भाइयों ने यह देखकर परेशानी में
अपने लिबास फाड़ लिए। वह अपने गधों को
दुबारा लादकर शहर वापस आ गए।
14जब यहूदाह और उसके भाई यूसुफ़ के घर
पहुँचे तो वह अभी वहीं था। वह उसके सामने मुँह
के बल गिर गए। 15यूसुफ़ ने कहा, “यह तुमने
क्या किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ
जैसा आदमी ग़ैब का इल्म रखता है?” 16यहूदाह
ने कहा, “जनाबे-आली, हम क्या कहें? अब
हम अपने दिफ़ा में क्या कहें? अल्लाह ही ने
हमें क़ुसूरवार ठहराया है। अब हम सब आपके
ग़ुलाम हैं, न सिर्फ़ वह जिसके पास से प्याला मिल
गया।” 17यूसुफ़ ने कहा, “अल्लाह न करे कि
मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम होगा
जिसके पास प्याला था। बाक़ी सब सलामती से
अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।”

यहूदाह बिनयमीन की सिफ़ारिश करता है

18लेकिन यहूदाह ने यूसुफ़ के क़रीब आकर
कहा, “मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बंदे
को एक बात करने की इजाज़त दें। मुझ पर
ग़ुस्सा न करें अगरचे आप मिसर के बादशाह जैसे
हैं। 19जनाबे-आली, आपने हमसे पूछा, ‘क्या
तुम्हारा बाप या कोई और भाई है?’ 20हमने
जवाब दिया, ‘हमारा बाप है। वह बूढ़ा है। हमारा
एक छोटा भाई भी है जो उस वक़्त पैदा हुआ जब
हमारा बाप उम्ररसीदा था। उस लड़के का भाई
मर चुका है। उस की माँ के सिर्फ़ यह दो बेटे पैदा
हुए। अब वह अकेला ही रह गया है। उसका बाप
उसे शिद्दत से प्यार करता है।’ 21जनाबे-आली,
आपने हमें बताया, ‘उसे यहाँ ले आओ ताकि मैं
ख़ुद उसे देख सकूँ।’ 22हमने जवाब दिया, ‘यह
लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, वरना
उसका बाप मर जाएगा।’ 23फिर आपने कहा,
‘तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकोगे कि
तुम्हारा सबसे छोटा भाई तुम्हारे साथ हो।’ 24जब
हम अपने बाप के पास वापस पहुँचे तो हमने उन्हें
सब कुछ बताया जो आपने कहा था। 25फिर
उन्होंने हमसे कहा, ‘मिसर लौटकर कुछ ग़ल्ला
ख़रीद लाओ।’ 26हमने जवाब दिया, ‘हम जा नहीं
सकते। हम सिर्फ़ इस सूरत में उस मर्द के पास जा
सकते हैं कि हमारा सबसे छोटा भाई साथ हो। हम
तब ही जा सकते हैं जब वह भी हमारे साथ चले।’
27हमारे बाप ने हमसे कहा, ‘तुम जानते हो कि

मेरी बीवी राख़िल से मेरे दो बेटे पैदा हुए। 28पहला मुझे छोड़ चुका है। किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ खाया होगा, क्योंकि उसी वक़्त से मैंने उसे नहीं देखा। 29अगर इसको भी मुझसे ले जाने की वजह से जानी नुक़सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे'।"

30-31यहूदाह ने अपनी बात जारी रखी, "जनाबे-आली, अब अगर मैं अपने बाप के पास जाऊँ और वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़ देंगे। उनकी ज़िंदगी इस क़दर लड़के की ज़िंदगी पर मुनहसिर है और वह इतने बूढ़े हैं कि हम ऐसी हरकत से उन्हें क़ब्र तक पहुँचा देंगे। 32न सिर्फ़ यह बल्कि मैंने बाप से कहा, 'मैं ख़ुद इसका ज़ामिन हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िंदगी के आख़िर तक क़ुसूरवार ठहरूँगा।' 33अब अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रहकर इस लड़के की जगह ग़ुलाम बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए। 34अगर लड़का मेरे साथ न हुआ तो मैं किस तरह अपने बाप को मुँह दिखा सकता हूँ? मैं बरदाश्त नहीं कर सकूँगा कि वह इस मुसीबत में मुब्तला हो जाएँ।"

यूसुफ़ अपने आपको ज़ाहिर करता है

45 यह सुनकर यूसुफ़ अपने आप पर क़ाबू न रख सका। उसने ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई और शख़्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन है। 2वह इतने ज़ोर से रो पड़ा कि मिसरियों ने उस की आवाज़ सुनी और फ़िरौन के घराने को पता चल गया। 3यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं यूसुफ़ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िंदा है?"

लेकिन उसके भाई यह सुनकर इतने घबरा गए कि वह जवाब न दे सके।

4फिर यूसुफ़ ने कहा, "मेरे क़रीब आओ।" वह क़रीब आए तो उसने कहा, "मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ जिसे तुमने बेचकर मिसर भिजवाया। 5अब मेरी बात सुनो। न घबराओ और न अपने आपको इलज़ाम दो कि हमने यूसुफ़ को बेच दिया। असल में अल्लाह ने ख़ुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि हम सब बचे रहें। 6यह काल का दूसरा साल है। पाँच और साल के दौरान न हल चलेगा, न फ़सल कटेगी। 7अल्लाह ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा ताकि दुनिया में तुम्हारा एक बचा-खुचा हिस्सा महफ़ूज़ रहे और तुम्हारी जान एक बड़ी मख़लसी की मारिफ़त छूट जाए। 8चुनाँचे तुमने मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि अल्लाह ने। उसने मुझे फ़िरौन का बाप, उसके पूरे घराने का मालिक और मिसर का हाकिम बना दिया है। 9अब जल्दी से मेरे बाप के पास वापस जाकर उनसे कहो, 'आपका बेटा यूसुफ़ आपको इत्तला देता है कि अल्लाह ने मुझे मिसर का मालिक बना दिया है। मेरे पास आ जाएँ, देर न करें। 10आप जुशन के इलाक़े में रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे क़रीब होंगे, आप, आपकी आलो-औलाद, गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और जो कुछ भी आपका है। 11वहाँ मैं आपकी ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्योंकि काल को अभी पाँच साल और लगेंगे। वरना आप, आपके घरवाले और जो भी आपके हैं बदहाल हो जाएंगे।' 12तुम ख़ुद और मेरा भाई बिनयमीन देख सकते हो कि मैं यूसुफ़ ही हूँ जो तुम्हारे साथ बात कर रहा हूँ। 13मेरे बाप को मिसर में मेरे असरो-रसूख़ के बारे में इत्तला दो। उन्हें सब कुछ बताओ जो तुमने देखा है। फिर जल्द ही मेरे बाप को यहाँ ले आओ।"

14यह कहकर वह अपने भाई बिनयमीन को गले लगाकर रो पड़ा। बिनयमीन भी उसके गले लगकर रोने लगा। 15फिर यूसुफ़ ने रोते हुए अपने हर एक भाई को बोसा दिया। इसके बाद उसके भाई उसके साथ बातें करने लगे।

16जब यह ख़बर बादशाह के महल तक पहुँची कि यूसुफ़ के भाई आए हैं तो फ़िरौन और उसके तमाम अफ़सरान ख़ुश हुए। 17उसने यूसुफ़ से कहा, "अपने भाइयों को बता कि अपने जानवरों पर ग़ल्ला लादकर मुल्के-कनान वापस

चले जाओ। 18वहाँ अपने बाप और ख़ानदानों
को लेकर मेरे पास आ जाओ। मैं तुमको मिसर
की सबसे अच्छी ज़मीन दे दूँगा, और तुम इस
मुल्क की बेहतरीन पैदावार खा सकोगे। 19उन्हें
यह हिदायत भी दे कि अपने बाल-बच्चों के लिए
मिसर से गाड़ियाँ ले जाओ और अपने बाप को
भी बिठाकर यहाँ ले आओ। 20अपने माल की
ज़्यादा फ़िकर न करो, क्योंकि तुम्हें मुल्के-मिसर
का बेहतरीन माल मिलेगा।”

21यूसुफ़ के भाइयों ने ऐसा ही किया। यूसुफ़
ने उन्हें बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ गाड़ियाँ
और सफ़र के लिए ख़ुराक दी। 22उसने हर एक
भाई को कपड़ों का एक जोड़ा भी दिया। लेकिन
बिनयमीन को उसने चाँदी के 300 सिक्के और
पाँच जोड़े दिए। 23उसने अपने बाप को दस गधे
भिजवा दिए जो मिसर के बेहतरीन माल से लदे
हुए थे और दस गधियाँ जो अनाज, रोटी और बाप
के सफ़र के लिए खाने से लदी हुई थीं। 24यों
उसने अपने भाइयों को रुख़सत करके कहा,
“रास्ते में झगड़ा न करना।”

25वह मिसर से रवाना होकर मुल्के-कनान में
अपने बाप के पास पहुँचे। 26उन्होंने उससे कहा,
“यूसुफ़ ज़िंदा है! वह पूरे मिसर का हाकिम है।”
लेकिन याक़ूब हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि
उसे यक़ीन न आया। 27ताहम उन्होंने उसे सब
कुछ बताया जो यूसुफ़ ने उनसे कहा था, और
उसने ख़ुद वह गाड़ियाँ देखीं जो यूसुफ़ ने उसे
मिसर ले जाने के लिए भिजवा दी थीं। फिर याक़ूब
की जान में जान आ गई, 28और उसने कहा,
“मेरा बेटा यूसुफ़ ज़िंदा है! यही काफ़ी है। मरने
से पहले मैं जाकर उससे मिलूँगा।”

याक़ूब मिसर जाता है

46 याक़ूब सब कुछ लेकर रवाना हुआ
और बैर-सबा पहुँचा। वहाँ उसने अपने
बाप इसहाक़ के ख़ुदा के हुज़ूर क़ुरबानियाँ चढ़ाईं।
2रात को अल्लाह रोया में उससे हमकलाम हुआ।
उसने कहा, “याक़ूब, याक़ूब!” याक़ूब ने जवाब
दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 3अल्लाह ने कहा,
“मैं अल्लाह हूँ, तेरे बाप इसहाक़ का ख़ुदा। मिसर
जाने से मत डर, क्योंकि वहाँ मैं तुझसे एक बड़ी
क़ौम बनाऊँगा। 4मैं तेरे साथ मिसर जाऊँगा और
तुझे इस मुल्क में वापस भी ले आऊँगा। जब तू
मरेगा तो यूसुफ़ ख़ुद तेरी आँखें बंद करेगा।”

5इसके बाद याक़ूब बैर-सबा से रवाना हुआ।
उसके बेटों ने उसे और अपने बाल-बच्चों को उन
गाड़ियों में बिठा दिया जो मिसर के बादशाह ने
भिजवाई थीं। 6यों याक़ूब और उस की तमाम
औलाद अपने मवेशी और कनान में हासिल किया
हुआ माल लेकर मिसर चले गए। 7याक़ूब के
बेटे-बेटियाँ, पोते-पोतियाँ और बाक़ी औलाद सब
साथ गए।

8इसराईल की औलाद के नाम जो मिसर चली
गई यह हैं :

याक़ूब के पहलौठे रूबिन 9के बेटे हनूक,
फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे। 10शमाऊन के
बेटे यमुएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और
साऊल थे (साऊल कनानी औरत का बच्चा था)।
11लावी के बेटे जैरसोन, क़िहात और मिरारी
थे। 12यहूदाह के बेटे एर, ओनान, सेला, फ़ारस
और ज़ारह थे (एर और ओनान कनान में मर
चुके थे)। फ़ारस के दो बेटे हसरोन और हमूल
थे। 13इशकार के बेटे तोला, फ़ुव्वा, योब और
सिमरोन थे। 14ज़बूलून के बेटे सरद, ऐलोन और
यहलियेल थे। 15इन बेटों की माँ लियाह थी, और
वह मसोपुतामिया में पैदा हुए। इनके अलावा दीना
उस की बेटी थी। कुल 33 मर्द लियाह की औलाद
थे।

16जद के बेटे सिफ़ियान, हज्जी, सूनी,
इसबून, एरी, अरूदी और अरेली थे। 17आशर
के बेटे यिमना, इसवाह, इसवी और बरिया थे।
आशर की बेटी सिरह थी, और बरिया के दो बेटे
थे, हिबर और मलकियेल। 18कुल 16 अफ़राद
ज़िलफ़ा की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी बेटी
लियाह को दिया था।

19राख़िल के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन थे।
20यूसुफ़ के दो बेटे मनस्सी और इफ़राईम मिसर
में पैदा हुए। उनकी माँ ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा
की बेटी आसनत थी। 21बिनयमीन के बेटे बाला,
बकर, अशबेल, जीरा, नामान, इख़ी, रोस,
मुफ़्फ़ीम, हुफ़्फ़ीम और अर्द थे। 22कुल 14 मर्द
राख़िल की औलाद थे।

23दान का बेटा हुशीम था। 24नफ़ताली के
बेटे यहसियेल, जूनी, यिसर और सिल्लीम थे।
25कुल 7 मर्द बिलहाह की औलाद थे जिसे लाबन
ने अपनी बेटी राख़िल को दिया था।

26याक़ूब की औलाद के 66 अफ़राद उसके
साथ मिसर चले गए। इस तादाद में बेटों की
बीवियाँ शामिल नहीं थीं। 27जब हम याक़ूब,
यूसुफ़ और उसके दो बेटे इनमें शामिल करते हैं
तो याक़ूब के घराने के 70 अफ़राद मिसर गए।

याक़ूब और उसका ख़ानदान मिसर में

28याक़ूब ने यहूदाह को अपने आगे यूसुफ़ के
पास भेजा ताकि वह जुशन में उनसे मिले। जब
वह वहाँ पहुँचे 29तो यूसुफ़ अपने रथ पर सवार
होकर अपने बाप से मिलने के लिए जुशन गया।
उसे देखकर वह उसके गले लगकर काफ़ी देर
रोता रहा। 30याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, “अब मैं
मरने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मैंने ख़ुद देखा है
कि तू ज़िंदा है।”

31फिर यूसुफ़ ने अपने भाइयों और अपने बाप
के ख़ानदान के बाक़ी अफ़राद से कहा, “ज़रूरी
है कि मैं जाकर बादशाह को इत्तला दूँ कि मेरे
भाई और मेरे बाप का पूरा ख़ानदान जो कनान
के रहनेवाले हैं मेरे पास आ गए हैं। 32मैं उससे
कहूँगा, ‘यह आदमी भेड़-बकरियों के चरवाहे
हैं। वह मवेशी पालते हैं, इसलिए अपनी भेड़-
बकरियाँ, गाय-बैल और बाक़ी सारा माल अपने
साथ ले आए हैं।’ 33बादशाह तुम्हें बुलाकर पूछेगा
कि तुम क्या काम करते हो? 34फिर तुमको
जवाब देना है, ‘आपके ख़ादिम बचपन से मवेशी
पालते आए हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा
था और हमारा भी है।’ अगर तुम यह कहो तो
तुम्हें जुशन में रहने की इजाज़त मिलेगी। क्योंकि
भेड़-बकरियों के चरवाहे मिसरियों की नज़र में
क़ाबिले-नफ़रत हैं।”

47 यूसुफ़ फ़िरौन के पास गया और
उसे इत्तला देकर कहा, “मेरा बाप
और भाई अपनी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और
सारे माल समेत मुल्के-कनान से आकर जुशन
में ठहरे हुए हैं।” 2उसने अपने भाइयों में से
पाँच को चुनकर फ़िरौन के सामने पेश किया।
3फ़िरौन ने भाइयों से पूछा, “तुम क्या काम करते
हो?” उन्होंने जवाब दिया, “आपके ख़ादिम भेड़-
बकरियों के चरवाहे हैं। यह हमारे बापदादा का
पेशा था और हमारा भी है। 4हम यहाँ आए हैं
ताकि कुछ देर अजनबी की हैसियत से आपके
पास ठहरें, क्योंकि काल ने कनान में बहुत ज़ोर
पकड़ा है। वहाँ आपके ख़ादिमों के जानवरों के
लिए चरागाहें ख़त्म हो गई हैं। इसलिए हमें जुशन
में रहने की इजाज़त दें।”

5बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “तेरा बाप और
भाई तेरे पास आ गए हैं। 6मुल्के-मिसर तेरे सामने
खुला है। उन्हें बेहतरीन जगह पर आबाद कर।
वह जुशन में रहें। और अगर उनमें से कुछ हैं जो
ख़ास क़ाबिलियत रखते हैं तो उन्हें मेरे मवेशियों
की निगहदाशत पर रख।”

7फिर यूसुफ़ अपने बाप याक़ूब को ले आया
और फ़िरौन के सामने पेश किया। याक़ूब ने
बादशाह को बरकत दी। 8बादशाह ने उससे पूछा,
“तुम्हारी उम्र क्या है?” 9याक़ूब ने जवाब दिया,
“मैं 130 साल से इस दुनिया का मेहमान हूँ। मेरी
ज़िंदगी मुख़तसर और तकलीफ़देह थी, और मेरे
बापदादा मुझसे ज़्यादा उम्ररसीदा हुए थे जब वह
इस दुनिया के मेहमान थे।” 10यह कहकर याक़ूब
फ़िरौन को दुबारा बरकत देकर चला गया।

11फिर यूसुफ़ ने अपने बाप और भाइयों को
मिसर में आबाद किया। उसने उन्हें रामसीस के
इलाक़े में बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह
ने हुक्म दिया था। 12यूसुफ़ अपने बाप के पूरे

घराने को ख़ुराक मुहैया करता रहा। हर ख़ानदान
को उसके बच्चों की तादाद के मुताबिक़ ख़ुराक
मिलती रही।

काल का सख़्त असर

13काल इतना सख़्त था कि कहीं भी रोटी नहीं
मिलती थी। मिसर और कनान में लोग निढाल हो
गए।

14मिसर और कनान के तमाम पैसे अनाज
ख़रीदने के लिए सर्फ़ हो गए। यूसुफ़ उन्हें जमा
करके फ़िरौन के महल में ले आया। 15जब मिसर
और कनान के पैसे ख़त्म हो गए तो मिसरियों
ने यूसुफ़ के पास आकर कहा, "हमें रोटी दें!
हम आपके सामने क्यों मरें? हमारे पैसे ख़त्म हो
गए हैं।" 16यूसुफ़ ने जवाब दिया, "अगर आपके
पैसे ख़त्म हैं तो मुझे अपने मवेशी दें। मैं उनके
एवज़ रोटी देता हूँ।" 17चुनाँचे वह अपने घोड़े,
भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और गधे यूसुफ़ के पास
ले आए। इनके एवज़ उसने उन्हें ख़ुराक दी। उस
साल उसने उन्हें उनके तमाम मवेशियों के एवज़
ख़ुराक मुहैया की।

18अगले साल वह दुबारा उसके पास आए।
उन्होंने कहा, "जनाबे-आली, हम यह बात आपसे
नहीं छुपा सकते कि अब हम सिर्फ़ अपने आप
और अपनी ज़मीन को आपको दे सकते हैं। हमारे
पैसे तो ख़त्म हैं और आप हमारे मवेशी भी ले
चुके हैं। 19हम क्यों आपकी आँखों के सामने
मर जाएँ? हमारी ज़मीन क्यों तबाह हो जाए?
हमें रोटी दें तो हम और हमारी ज़मीन बादशाह
की होगी। हम फ़िरौन के ग़ुलाम होंगे। हमें बीज
दें ताकि हम जीते बचें और ज़मीन तबाह न हो
जाए।"

20चुनाँचे यूसुफ़ ने फ़िरौन के लिए मिसर की
पूरी ज़मीन ख़रीद ली। काल की सख़्ती के सबब
से तमाम मिसरियों ने अपने खेत बेच दिए। इस
तरीक़े से पूरा मुल्क फ़िरौन की मिलकियत में आ
गया। 21यूसुफ़ ने मिसर के एक सिरे से दूसरे
सिरे तक के लोगों को शहरों में मुंतक़िल कर
दिया। 22सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन आज़ाद रही।
उन्हें अपनी ज़मीन बेचने की ज़रूरत ही नहीं थी,
क्योंकि उन्हें फ़िरौन से इतना वज़ीफ़ा मिलता था
कि गुज़ारा हो जाता था।

23यूसुफ़ ने लोगों से कहा, "ग़ौर से सुनें। आज
मैंने आपको और आपकी ज़मीन को बादशाह के
लिए ख़रीद लिया है। अब यह बीज लेकर अपने
खेतों में बोना। 24आपको फ़िरौन को फ़सल का
पाँचवाँ हिस्सा देना है। बाक़ी पैदावार आपकी
होगी। आप इससे बीज बो सकते हैं, और यह
आपके और आपके घरानों और बच्चों के खाने के
लिए होगा।" 25उन्होंने जवाब दिया, "आपने हमें
बचाया है। हमारे मालिक हम पर मेहरबानी करें
तो हम फ़िरौन के ग़ुलाम बनेंगे।"

26इस तरह यूसुफ़ ने मिसर में यह क़ानून
नाफ़िज़ किया कि हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा
बादशाह का है। यह क़ानून आज तक जारी
है। सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन बादशाह की
मिलकियत में न आई।

याक़ूब की आख़िरी गुज़ारिश

27इसराईली मिसर में जुशन के इलाक़े में
आबाद हुए। वहाँ उन्हें ज़मीन मिली, और वह
फले-फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए।

28याक़ूब 17 साल मिसर में रहा। वह 147
साल का था जब फ़ौत हुआ। 29जब मरने का
वक़्त क़रीब आया तो उसने यूसुफ़ को बुलाकर
कहा, "मेहरबानी करके अपना हाथ मेरी रान के
नीचे रखकर क़सम खा कि तू मुझ पर शफ़क़त
और वफ़ादारी का इस तरह इज़हार करेगा कि
मुझे मिसर में दफ़न नहीं करेगा। 30जब मैं मरकर
अपने बापदादा से जा मिलूँगा तो मुझे मिसर से
ले जाकर मेरे बापदादा की क़ब्र में दफ़नाना।"
यूसुफ़ ने जवाब दिया, "ठीक है।" 31याक़ूब ने
कहा, "क़सम खा कि तू ऐसा ही करेगा।" यूसुफ़
ने क़सम खाई। तब इसराईल ने अपने बिस्तर के
सिरहाने पर अल्लाह को सिजदा किया।

याक़ूब इफ़राईम और मनस्सी को बरकत देता है

48 कुछ देर के बाद यूसुफ़ को इत्तला दी
गई कि आपका बाप बीमार है। वह
अपने दो बेटों मनस्सी और इफ़राईम को साथ
लेकर याक़ूब से मिलने गया।

2याक़ूब को बताया गया, "आपका बेटा आ
गया है" तो वह अपने आपको सँभालकर अपने
बिस्तर पर बैठ गया। 3उसने यूसुफ़ से कहा, "जब
मैं कनानी शहर लूज़ में था तो अल्लाह क़ादिरे-
मुतलक़ मुझ पर ज़ाहिर हुआ। उसने मुझे बरकत
देकर 4कहा, 'मैं तुझे फलने-फूलने दूँगा और तेरी
औलाद बढ़ा दूँगा बल्कि तुझसे बहुत-सी क़ौमें
निकलने दूँगा। और मैं तेरी औलाद को यह मुल्क
हमेशा के लिए दे दूँगा।' 5अब मेरी बात सुन। मैं
चाहता हूँ कि तेरे बेटे जो मेरे आने से पहले मिसर
में पैदा हुए मेरे बेटे हों। इफ़राईम और मनस्सी
रूबिन और शमाऊन के बराबर ही मेरे बेटे हों।
6अगर इनके बाद तेरे हाँ और बेटे पैदा हो जाएँ तो
वह मेरे बेटे नहीं बल्कि तेरे ठहरेंगे। जो मीरास वह
पाएँगे वह उन्हें इफ़राईम और मनस्सी की मीरास
में से मिलेगी। 7मैं यह तेरी माँ राख़िल के सबब से
कर रहा हूँ जो मसोपुतामिया से वापसी के वक़्त
कनान में इफ़राता के क़रीब मर गई। मैंने उसे वहीं
रास्ते में दफ़न किया" (आज इफ़राता को बैत-
लहम कहा जाता है)।

8फिर याक़ूब ने यूसुफ़ के बेटों पर नज़र
डालकर पूछा, "यह कौन हैं?" 9यूसुफ़ ने जवाब
दिया, "यह मेरे बेटे हैं जो अल्लाह ने मुझे यहाँ
मिसर में दिए।" याक़ूब ने कहा, "उन्हें मेरे क़रीब
ले आ ताकि मैं उन्हें बरकत दूँ।" 10बूढ़ा होने
के सबब से याक़ूब की आँखें कमज़ोर थीं। वह
अच्छी तरह देख नहीं सकता था। यूसुफ़ अपने
बेटों को याक़ूब के पास ले आया तो उसने उन्हें
बोसा देकर गले लगाया 11और यूसुफ़ से कहा,
"मुझे तवक़्क़ो ही नहीं थी कि मैं कभी तेरा चेहरा
देखूँगा, और अब अल्लाह ने मुझे तेरे बेटों को
देखने का मौक़ा भी दिया है।"

12फिर यूसुफ़ उन्हें याक़ूब की गोद में से लेकर
ख़ुद उसके सामने मुँह के बल झुक गया। 13यूसुफ़
ने इफ़राईम को याक़ूब के बाएँ हाथ रखा और
मनस्सी को उसके दाएँ हाथ। 14लेकिन याक़ूब
ने अपना दहना हाथ बाईं तरफ़ बढ़ाकर इफ़राईम
के सर पर रखा अगरचे वह छोटा था। इस तरह
उसने अपना बायाँ हाथ दाईं तरफ़ बढ़ाकर मनस्सी
के सर पर रखा जो बड़ा था। 15फिर उसने यूसुफ़
को उसके बेटों की मारिफ़त बरकत दी, "अल्लाह
जिसके हुज़ूर मेरे बापदादा इब्राहीम और इसहाक़
चलते रहे और जो शुरू से आज तक मेरा चरवाहा
रहा है इन्हें बरकत दे। 16जिस फ़रिश्ते ने एवज़ाना
देकर मुझे हर नुक़सान से बचाया है वह इन्हें
बरकत दे। अल्लाह करे कि इनमें मेरा नाम और
मेरे बापदादा इब्राहीम और इसहाक़ के नाम जीते
रहें। दुनिया में इनकी औलाद की तादाद बहुत बढ़
जाए।"

17जब यूसुफ़ ने देखा कि बाप ने अपना दहना
हाथ छोटे बेटे इफ़राईम के सर पर रखा है तो
यह उसे बुरा लगा, इसलिए उसने बाप का हाथ
पकड़ा ताकि उसे इफ़राईम के सर पर से उठाकर
मनस्सी के सर पर रखे। 18उसने कहा, "अब्बू,
ऐसे नहीं। दूसरा लड़का बड़ा है। उसी पर अपना
दहना हाथ रखें।" 19लेकिन बाप ने इनकार करके
कहा, "मुझे पता है बेटा, मुझे पता है। वह भी
एक बड़ी क़ौम बनेगा। फिर भी उसका छोटा भाई
उससे बड़ा होगा और उससे क़ौमों की बड़ी तादाद
निकलेगी।"

20उस दिन उसने दोनों बेटों को बरकत देकर
कहा, "इसराईली तुम्हारा नाम लेकर बरकत दिया
करेंगे। जब वह बरकत देंगे तो कहेंगे, 'अल्लाह
आपके साथ वैसा करे जैसा उसने इफ़राईम और
मनस्सी के साथ किया है'।" इस तरह याक़ूब
ने इफ़राईम को मनस्सी से बड़ा बना दिया।
21यूसुफ़ से उसने कहा, "मैं तो मरनेवाला हूँ,
लेकिन अल्लाह तुम्हारे साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे

बापदादा के मुल्क में वापस ले जाएगा। 22एक
बात में मैं तुझे तेरे भाइयों पर तरजीह देता हूँ, मैं
तुझे कनान में वह क़ितआ देता हूँ जो मैंने अपनी
तलवार और कमान से अमोरियों से छीना था।”

याक़ूब अपने बेटों को बरकत देता है

49 याक़ूब ने अपने बेटों को बुलाकर
कहा, “मेरे पास जमा हो जाओ ताकि
मैं तुम्हें बताऊँ कि मुस्तक़बिल में तुम्हारे साथ क्या
क्या होगा। 2ऐ याक़ूब के बेटो, इकट्ठे होकर सुनो,
अपने बाप इसराईल की बातों पर ग़ौर करो।

3रूबिन, तुम मेरे पहलौठे हो, मेरे ज़ोर और
मेरी ताक़त का पहला फल। तुम इज़्ज़त और
क़ुव्वत के लिहाज़ से बरतर हो। 4लेकिन चूँकि
तुम बेकाबू सैलाब की मानिंद हो इसलिए तुम्हारी
अव्वल हैसियत जाती रहे। क्योंकि तुमने मेरी हरम
से हमबिसतर होकर अपने बाप की बेहुरमती की
है।

5शमाऊन और लावी दोनों भाइयों की तलवारें
ज़ुल्मो-तशद्दुद के हथियार रहे हैं। 6मेरी जान न
उनकी मजलिस में शामिल और न उनकी जमात
में दाख़िल हो, क्योंकि उन्होंने ग़ुस्से में आकर
दूसरों को क़त्ल किया है, उन्होंने अपनी मरज़ी से
बैलों की कोंचें काटी हैं। 7उनके ग़ुस्से पर लानत
हो जो इतना ज़बरदस्त है और उनके तैश पर जो
इतना सख़्त है। मैं उन्हें याक़ूब के मुल्क में तित्तर-
बित्तर करूँगा, उन्हें इसराईल में मुंतशिर कर दूँगा।

8यहूदाह, तुम्हारे भाई तुम्हारी तारीफ़ करेंगे।
तुम अपने दुश्मनों की गरदन पकड़े रहोगे, और
तुम्हारे बाप के बेटे तुम्हारे सामने झुक जाएंगे।
9यहूदाह शेरबबर का बच्चा है। मेरे बेटे, तुम अभी
अभी शिकार मारकर वापस आए हो। यहूदाह
शेरबबर बल्कि शेरनी की तरह दबककर बैठ
जाता है। कौन उसे छेड़ने की जुर्रत करेगा?
10शाही असा यहूदाह से दूर नहीं होगा बल्कि
शाही इख़्तियार उस वक़्त तक उस की औलाद के
पास रहेगा जब तक वह हाकिम न आए जिसके
ताबे क़ौमें रहेंगी। 11वह अपना जवान गधा अंगूर
की बेल से और अपनी गधी का बच्चा बेहतरीन
अंगूर की बेल से बाँधेगा। वह अपना लिबास मै
में और अपना कपड़ा अंगूर के ख़ून में धोएगा।
12उस की आँखें मै से ज़्यादा गदली और उसके
दाँत दूध से ज़्यादा सफ़ेद होंगे।

13ज़बूलून साहिल पर आबाद होगा जहाँ बहरी
जहाज़ होंगे। उस की हद सैदा तक होगी।

14इशकार ताक़तवर गधा है जो अपने ज़ीन के
दो बोरों के दरमियान बैठा है। 15जब वह देखेगा
कि उस की आरामगाह अच्छी और उसका मुल्क
ख़ुशनुमा है तो वह बोझ उठाने के लिए तैयार हो
जाएगा और उजरत के बग़ैर काम करने के लिए
मजबूर किया जाएगा।

16दान अपनी क़ौम का इनसाफ़ करेगा अगरचे
वह इसराईल के क़बीलों में से एक ही है। 17दान
सड़क के साँप और रास्ते के अफ़ई की मानिंद
होगा। वह घोड़े की एड़ियों को काटेगा तो उसका
सवार पीछे गिर जाएगा।

18ऐ रब, मैं तेरी ही नजात के इंतज़ार में हूँ!

19जद पर डाकुओं का जत्था हमला करेगा,
लेकिन वह पलटकर उसी पर हमला कर देगा।

20आशर को ग़िज़ाइयतवाली ख़ुराक हा-
सिल होगी। वह लज़ीज़ शाही खाना मुहैया करेगा।

21नफ़ताली आज़ाद छोड़ी हुई हिरनी है। वह
ख़ूबसूरत बातें करता है।[a]

22यूसुफ़ फलदार बेल है। वह चश्मे पर लगी हुई
फलदार बेल है जिसकी शाख़ें दीवार पर चढ़ गई
हैं। 23तीरअंदाज़ों ने उस पर तीर चलाकर उसे तंग
किया और उसके पीछे पड़ गए, 24लेकिन उस
की कमान मज़बूत रही, और उसके बाज़ू याक़ूब
के ज़ोरावर ख़ुदा के सबब से ताक़तवर रहे, उस
चरवाहे के सबब से जो इसराईल का ज़बरदस्त
सूरमा है। 25क्योंकि तेरे बाप का ख़ुदा तेरी मदद
करता है, अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ तुझे आसमान
की बरकत, ज़मीन की गहराइयों की बरकत और

[a]या ख़ूबसूरत बच्चे पैदा करती है।

औलाद की बरकत देता है। 26तेरे बाप की बरकत
क़दीम पहाड़ों और अबदी पहाड़ियों की मरग़ूब
चीज़ों से ज़्यादा अज़ीम है। यह तमाम बरकत
यूसुफ़ के सर पर हो, उस शख़्स के चाँद पर जो
अपने भाइयों पर शहज़ादा है।

27बिनयमीन फाड़नेवाला भेड़िया है। सुबह वह
अपना शिकार खा जाता और रात को अपना लूटा
हुआ माल तक़सीम कर देता है।"

28यह इसराईल के कुल बारह क़बीले हैं। और
यह वह कुछ है जो उनके बाप ने उनसे बरकत
देते वक़्त कहा। उसने हर एक को उस की अपनी
बरकत दी।

याक़ूब का इंतक़ाल

29फिर याक़ूब ने अपने बेटों को हुक्म दिया,
"अब मैं कूच करके अपने बापदादा से जा
मिलूँगा। मुझे मेरे बापदादा के साथ उस ग़ार में
दफ़नाना जो हित्ती आदमी इफ़रोन के खेत में
है। 30यानी उस ग़ार में जो मुल्के-कनान में ममरे
के मशरिक़ में मकफ़ीला के खेत में है। इब्राहीम
ने उसे खेत समेत अपने लोगों को दफ़नाने के
लिए इफ़रोन हित्ती से ख़रीद लिया था। 31वहाँ
इब्राहीम और उस की बीवी सारा दफ़नाए गए,
वहाँ इसहाक़ और उस की बीवी रिबक़ा दफ़नाए
गए और वहाँ मैंने लियाह को दफ़न किया। 32वह
खेत और उसका ग़ार हित्तियों से ख़रीदा गया
था।"

33इन हिदायात के बाद याक़ूब ने अपने पाँव
बिस्तर पर समेट लिए और दम छोड़कर अपने
बापदादा से जा मिला।

याक़ूब को दफ़न किया जाता है

50 यूसुफ़ अपने बाप के चेहरे से लिपट
गया। उसने रोते हुए उसे बोसा दिया।
2उसके मुलाज़िमों में से कुछ डाक्टर थे। उसने
उन्हें हिदायत दी कि मेरे बाप इसराईल की लाश
को हनूत करें ताकि वह गल न जाए। उन्होंने
ऐसा ही किया। 3इसमें 40 दिन लग गए। आम
तौर पर हनूत करने के लिए इतने ही दिन लगते
हैं। मिसरियों ने 70 दिन तक याक़ूब का मातम
किया।

4जब मातम का वक़्त ख़त्म हुआ तो यूसुफ़ ने
बादशाह के दरबारियों से कहा, "मेहरबानी करके
यह ख़बर बादशाह तक पहुँचा दें 5कि मेरे बाप
ने मुझे क़सम दिलाकर कहा था, 'मैं मरनेवाला
हूँ। मुझे उस क़ब्र में दफ़न करना जो मैंने मुल्के-
कनान में अपने लिए बनवाई।' अब मुझे इजाज़त
दें कि मैं वहाँ जाऊँ और अपने बाप को दफ़न
करके वापस आऊँ।" 6फ़िरौन ने जवाब दिया,
"जा, अपने बाप को दफ़न कर जिस तरह उसने
तुझे क़सम दिलाई थी।"

7चुनाँचे यूसुफ़ अपने बाप को दफ़नाने के लिए
कनान रवाना हुआ। बादशाह के तमाम मुलाज़िम,
महल के बुज़ुर्ग और पूरे मिसर के बुज़ुर्ग उसके
साथ थे। 8यूसुफ़ के घराने के अफ़राद, उसके
भाई और उसके बाप के घराने के लोग भी साथ
गए। सिर्फ़ उनके बच्चे, उनकी भेड़-बकरियाँ और
गाय-बैल जुशन में रहे। 9रथ और घुड़सवार भी
साथ गए। सब मिलकर बड़ा लशकर बन गए।

10जब वह यरदन के क़रीब अतद के खलियान
पर पहुँचे तो उन्होंने निहायत दिलसोज़ नोहा
किया। वहाँ यूसुफ़ ने सात दिन तक अपने बाप
का मातम किया। 11जब मक़ामी कनानियों ने
अतद के खलियान पर मातम का यह नज़ारा देखा
तो उन्होंने कहा, "यह तो मातम का बहुत बड़ा
इंतज़ाम है जो मिसरी करवा रहे हैं।" इसलिए उस
जगह का नाम अबील-मिसरीम यानी 'मिसरियों
का मातम' पड़ गया। 12यों याक़ूब के बेटों ने
अपने बाप का हुक्म पूरा किया। 13उन्होंने उसे
मुल्के-कनान में ले जाकर मकफ़ीला के खेत के
ग़ार में दफ़न किया जो ममरे के मशरिक़ में है।
यह वही खेत है जो इब्राहीम ने इफ़रोन हित्ती से
अपने लोगों को दफ़नाने के लिए ख़रीदा था।

14इसके बाद यूसुफ़, उसके भाई और बाक़ी
तमाम लोग जो जनाज़े के लिए साथ गए थे मिसर
को लौट आए।

यूसुफ़ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

15जब याक़ूब इंतक़ाल कर गया तो यूसुफ़ के
भाई डर गए। उन्होंने कहा, "ख़तरा है कि अब
यूसुफ़ हमारा ताक़्क़ुब करके उस ग़लत काम का
बदला ले जो हमने उसके साथ किया था। फिर
क्या होगा?" 16यह सोचकर उन्होंने यूसुफ़ को
ख़बर भेजी, "आपके बाप ने मरने से पेशतर
हिदायत दी 17कि यूसुफ़ को बताना, 'अपने
भाइयों के उस ग़लत काम को मुआफ़ कर देना जो
उन्होंने तुम्हारे साथ किया।' अब हमें जो आपके
बाप के ख़ुदा के पैरोकार हैं मुआफ़ कर दें।"

यह ख़बर सुनकर यूसुफ़ रो पड़ा। 18फिर उसके
भाई ख़ुद आए और उसके सामने गिर गए। उन्होंने
कहा, "हम आपके ख़ादिम हैं।" 19लेकिन यूसुफ़
ने कहा, "मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ?
हरगिज़ नहीं! 20तुमने मुझे नुक़सान पहुँचाने का
इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई
पैदा की। और अब इसका मक़सद पूरा हो रहा है।
बहुत-से लोग मौत से बच रहे हैं। 21चुनाँचे अब
डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों
को ख़ुराक मुहैया करता रहूँगा।" यों यूसुफ़ ने उन्हें तसल्ली दी और उनसे नरमी
से बात की।

यूसुफ़ का इंतक़ाल

22यूसुफ़ अपने बाप के ख़ानदान समेत मिसर
में रहा। वह 110 साल ज़िंदा रहा। 23मौत से
पहले उसने न सिर्फ़ इफ़राईम के बच्चों को बल्कि
उसके पोतों को भी देखा। मनस्सी के बेटे मकीर
के बच्चे भी उस की मौजूदगी में पैदा होकर उस
की गोद में रखे गए।[a]

24फिर एक वक़्त आया कि यूसुफ़ ने अपने
भाइयों से कहा, "मैं मरनेवाला हूँ। लेकिन
अल्लाह ज़रूर आपकी देख-भाल करके आपको
इस मुल्क से उस मुल्क में ले जाएगा जिसका
उसने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से क़सम
खाकर वादा किया है।" 25फिर यूसुफ़ ने
इसराईलियों को क़सम दिलाकर कहा, "अल्लाह
यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा।
उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठाकर साथ ले
जाना।"

26फिर यूसुफ़ फ़ौत हो गया। वह 110 साल
का था। उसे हनूत करके मिसर में एक ताबूत में
रखा गया।

[a]ग़ालिबन इसका मतलब यह है कि उसने उन्हें लेपालक बनाया।

ख़ुरूज

याक़ूब का ख़ानदान मिसर में

1 ज़ैल में उन बेटों के नाम हैं जो अपने
बाप याक़ूब और अपने ख़ानदानों समेत
मिसर में आए थे : 2रूबिन, शमाऊन,
लावी, यहूदाह, 3इशकार, ज़बूलून, बिन-
यमीन, 4दान, नफ़ताली, जद और आशर। 5उस
वक़्त याक़ूब की औलाद की तादाद 70 थी।
यूसुफ़ तो पहले ही मिसर आ चुका था।

6मिसर में रहते हुए बहुत दिन गुज़र गए। इतने
में यूसुफ़, उसके तमाम भाई और उस नसल के
तमाम लोग मर गए। 7इसराईली फले-फूले और
तादाद में बहुत बढ़ गए। नतीजे में वह निहायत ही
ताक़तवर हो गए। पूरा मुल्क उनसे भर गया।

इसराईलियों को दबाया जाता है

8होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ
जो यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। 9उसने अपने लोगों
से कहा, “इसराईलियों को देखो। वह तादाद और
ताक़त में हमसे बढ़ गए हैं। 10आओ, हम हिकमत
से काम लें, वरना वह मज़ीद बढ़ जाएंगे। ऐसा न
हो कि वह किसी जंग के मौक़े पर दुश्मन का साथ
देकर हमसे लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।”

11चुनाँचे मिसरियों ने इसराईलियों पर निगरान
मुक़र्रर किए ताकि बेगार में उनसे काम करवाकर
उन्हें दबाते रहें। उस वक़्त उन्होंने पितोम और
रामसीस के शहर तामीर किए। इन शहरों
में फ़िरौन बादशाह के बड़े बड़े गोदाम थे।
12लेकिन जितना इसराईलियों को दबाया गया
उतना ही वह तादाद में बढ़ते और फैलते गए।
आख़िरकार मिसरी उनसे दहशत खाने लगे,
13और वह बड़ी बेरहमी से उनसे काम करवाते
रहे। 14इसराईलियों का गुज़ारा निहायत मुश्किल
हो गया। उन्हें गारा तैयार करके ईंटें बनाना और
खेतों में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काम करना पड़े।
इसमें मिसरी उनसे बड़ी बेरहमी से पेश आते रहे।

दाइयाँ अल्लाह की राह पर चलती हैं

15इसराईलियों की दो दाइयाँ थीं जिनके नाम
सिफ़रा और फ़ुआ थे। मिसर के बादशाह ने उनसे
कहा, 16“जब इबरानी औरतें तुम्हें मदद के लिए
बुलाएँ तो ख़बरदार रहो। अगर लड़का पैदा हो
तो उसे जान से मार दो, अगर लड़की हो तो उसे
जीता छोड़ दो।” 17लेकिन दाइयाँ अल्लाह का
ख़ौफ़ मानती थीं। उन्होंने मिसर के बादशाह का
हुक्म न माना बल्कि लड़कों को भी जीने दिया।

18तब मिसर के बादशाह ने उन्हें दुबारा बुलाकर
पूछा, “तुमने यह क्यों किया? तुम लड़कों को
क्यों जीता छोड़ देती हो?” 19उन्होंने जवाब
दिया, “इबरानी औरतें मिसरी औरतों से ज़्यादा
मज़बूत हैं। बच्चे हमारे पहुँचने से पहले ही पैदा हो
जाते हैं।”

20चुनाँचे अल्लाह ने दाइयों को बरकत दी, और
इसराईली क़ौम तादाद में बढ़कर बहुत ताक़तवर
हो गई। 21और चूँकि दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़

मानती थीं इसलिए उसने उन्हें औलाद देकर उनके ख़ानदानों को क़ायम रखा।

22आख़िरकार बादशाह ने अपने तमाम हमवतनों से बात की, “जब भी इबरानियों के लड़के पैदा हों तो उन्हें दरियाए-नील में फेंक देना। सिर्फ़ लड़कियों को ज़िंदा रहने दो।”

मूसा की पैदाइश और बचाव

2 उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने ही क़बीले की एक औरत से शादी की।
2औरत हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ
ने देखा कि लड़का ख़ूबसूरत है, इसलिए उसने
उसे तीन माह तक छुपाए रखा। 3जब वह उसे
और ज़्यादा न छुपा सकी तो उसने आबी नरसल
से टोकरी बनाकर उस पर तारकोल चढ़ाया।
फिर उसने बच्चे को टोकरी में रखकर टोकरी को
दरियाए-नील के किनारे पर उगे हुए सरकंडों में
रख दिया। 4बच्चे की बहन कुछ फ़ासले पर खड़ी
देखती रही कि उसका क्या बनेगा।

5उस वक़्त फ़िरौन की बेटी नहाने के लिए
दरिया पर आई। उस की नौकरानियाँ दरिया के
किनारे टहलने लगीं। तब उसने सरकंडों में टोकरी
देखी और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा। 6उसे
खोला तो छोटा लड़का दिखाई दिया जो रो रहा
था। फ़िरौन की बेटी को उस पर तरस आया।
उसने कहा, “यह कोई इबरानी बच्चा है।”

7अब बच्चे की बहन फ़िरौन की बेटी के पास
गई और पूछा, “क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के
लिए कोई इबरानी औरत ढूँड लाऊँ?” 8फ़िरौन
की बेटी ने कहा, “हाँ, जाओ।” लड़की चली गई
और बच्चे की सगी माँ को लेकर वापस आई।
9फ़िरौन की बेटी ने माँ से कहा, “बच्चे को ले
जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं
तुम्हें इसका मुआवज़ा दूँगी।” चुनाँचे बच्चे की माँ
ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।

10जब बच्चा बड़ा हुआ तो उस की माँ उसे
फ़िरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका
बेटा बन गया। फ़िरौन की बेटी ने उसका नाम मूसा
यानी ‘निकाला गया’ रखकर कहा, “मैं उसे पानी
से निकाल लाई हूँ।”

मूसा फ़रार होता है

11जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर
से निकलकर अपने लोगों के पास गया जो जबरी
काम में मसरूफ़ थे। मूसा ने देखा कि एक मिसरी
मेरे एक इबरानी भाई को मार रहा है। 12मूसा
ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि
कोई नहीं देख रहा तो उसने मिसरी को जान से
मार दिया और उसे रेत में छुपा दिया।

13अगले दिन भी मूसा घर से निकला। इस
दफ़ा दो इबरानी मर्द आपस में लड़ रहे थे। जो
ग़लती पर था उससे मूसा ने पूछा, “तुम अपने
भाई को क्यों मार रहे हो?” 14आदमी ने जवाब
दिया, “किसने आपको हम पर हुक्मरान और
क़ाज़ी मुक़र्रर किया है? क्या आप मुझे भी क़त्ल
करना चाहते हैं जिस तरह मिसरी को मार डाला
था?” तब मूसा डर गया। उसने सोचा, “हाय,
मेरा भेद खुल गया है!”

15बादशाह को भी पता लगा तो उसने मूसा को
मरवाने की कोशिश की। लेकिन मूसा मिदियान
के मुल्क को भाग गया। वहाँ वह एक कुएँ के
पास बैठ गया। 16मिदियान में एक इमाम था
जिसकी सात बेटियाँ थीं। यह लड़कियाँ अपनी
भेड़-बकरियों को पानी पिलाने के लिए कुएँ पर
आईं और पानी निकालकर हौज़ भरने लगीं।
17लेकिन कुछ चरवाहों ने आकर उन्हें भगा दिया।
यह देखकर मूसा उठा और लड़कियों को चरवाहों
से बचाकर उनके रेवड़ को पानी पिलाया।

18जब लड़कियाँ अपने बाप रऊएल के पास
वापस आईं तो बाप ने पूछा, “आज तुम इतनी
जल्दी से क्यों वापस आ गई हो?” 19लड़कियों
ने जवाब दिया, “एक मिसरी आदमी ने हमें
चरवाहों से बचाया। न सिर्फ़ यह बल्कि उसने
हमारे लिए पानी भी निकालकर रेवड़ को पिला
दिया।” 20रऊएल ने कहा, “वह आदमी कहाँ है?

तुम उसे क्यों छोड़कर आई हो? उसे बुलाओ
ताकि वह हमारे साथ खाना खाए।”

21मूसा रऊएल के घर में ठहरने के लिए राज़ी
हो गया। बाद में उस की शादी रऊएल की
बेटी सफ़्फ़ूरा से हुई। 22सफ़्फ़ूरा के बेटा पैदा
हुआ तो मूसा ने कहा, “इसका नाम जैरसोम
यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ हो, क्योंकि मैं
अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।”

23काफ़ी अरसा गुज़र गया। इतने में मिसर
का बादशाह इंतक़ाल कर गया। इसराईली अपनी
ग़ुलामी तले कराहते और मदद के लिए पुकारते
रहे, और उनकी चीख़ें अल्लाह तक पहुँच गईं।
24अल्लाह ने उनकी आहें सुनीं और उस अहद
को याद किया जो उसने इब्राहीम, इसहाक़ और
याक़ूब से बाँधा था। 25अल्लाह इसराईलियों की
हालत देखकर उनका ख़याल करने लगा।

जलती हुई झाड़ी

3 मूसा अपने सुसर यितरो की भेड़-बकरियों
की निगहबानी करता था (मिदियान का
इमाम रऊएल यितरो भी कहलाता था)। एक दिन
मूसा रेवड़ को रेगिस्तान की परली जानिब ले गया
और चलते चलते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी
सीना तक पहुँच गया। 2वहाँ रब का फ़रिश्ता आग
के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। यह शोला एक
झाड़ी में भड़क रहा था। मूसा ने देखा कि झाड़ी
जल रही है लेकिन भस्म नहीं हो रही। 3मूसा ने
सोचा, “यह तो अजीब बात है। क्या वजह है कि
जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं हो रही? मैं ज़रा वहाँ
जाकर यह हैरतअंगेज़ मंज़र देखूँ।”

4जब रब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ
रहा है तो उसने उसे झाड़ी में से पुकारा, “मूसा,
मूसा!” मूसा ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 5रब
ने कहा, “इससे ज़्यादा क़रीब न आना। अपनी
जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा
है। 6मैं तेरे बाप का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा,
इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।” यह
सुनकर मूसा ने अपना मुँह ढाँक लिया, क्योंकि
वह अल्लाह को देखने से डरा।

7रब ने कहा, “मैंने मिसर में अपनी क़ौम की
बुरी हालत देखी और ग़ुलामी में उनकी चीख़ें सुनी
हैं, और मैं उनके दुखों को ख़ूब जानता हूँ। 8अब
मैं उन्हें मिसरियों के क़ाबू से बचाने के लिए उतर
आया हूँ। मैं उन्हें मिसर से निकालकर एक अच्छे
वसी मुल्क में ले जाऊँगा, एक ऐसे मुल्क में
जहाँ दूध और शहद की कसरत है, गो इस वक़्त
कनानी, हित्ती, अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और
यबूसी उसमें रहते हैं। 9इसराईलियों की चीख़ें
मुझ तक पहुँची हैं। मैंने देखा है कि मिसरी उन
पर किस तरह का ज़ुल्म ढा रहे हैं। 10चुनाँचे अब
जा। मैं तुझे फ़िरौन के पास भेजता हूँ, क्योंकि
तुझे मेरी क़ौम इसराईल को मिसर से निकालकर
लाना है।”

11लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, “मैं कौन हूँ
कि फ़िरौन के पास जाकर इसराईलियों को मिसर
से निकाल लाऊँ?” 12अल्लाह ने कहा, “मैं तो
तेरे साथ हूँगा। और इसका सबूत कि मैं तुझे भेज
रहा हूँ यह होगा कि लोगों के मिसर से निकलने के
बाद तुम यहाँ आकर इस पहाड़ पर मेरी इबादत
करोगे।”

13लेकिन मूसा ने एतराज़ किया, “अगर मैं
इसराईलियों के पास जाकर उन्हें बताऊँ कि
तुम्हारे बापदादा के ख़ुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा
है तो वह पूछेंगे, ‘उसका नाम क्या है?’ फिर मैं
उनको क्या जवाब दूँ?”

14अल्लाह ने कहा, “मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उनसे
कहना, ‘मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 15रब
जो तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा,
इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा है उसी
ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’ यह अबद तक मेरा
नाम रहेगा। लोग यही नाम लेकर मुझे नसल-दर-
नसल याद करेंगे।

16अब जा और इसराईल के बुज़ुर्गों को जमा
करके उनको बता दे कि रब तुम्हारे बापदादा
इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब का ख़ुदा मुझ पर

ज़ाहिर हुआ है। वह फ़रमाता है, 'मैंने ख़ूब देख
लिया है कि मिसर में तुम्हारे साथ क्या सुलूक
हो रहा है। 17इसलिए मैंने फ़ैसला किया है कि
तुम्हें मिसर की मुसीबत से निकालकर कनानियों,
हित्तियों, अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और
यबूसियों के मुल्क में ले जाऊँ, ऐसे मुल्क में
जहाँ दूध और शहद की कसरत है।' 18बुज़ुर्ग तेरी
सुनेंगे। फिर उनके साथ मिसर के बादशाह के पास
जाकर उससे कहना, 'रब इबरानियों का ख़ुदा हम
पर ज़ाहिर हुआ है। इसलिए हमें इजाज़त दें कि
हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में रब
अपने ख़ुदा के लिए क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ।'

19लेकिन मुझे मालूम है कि मिसर का बादशाह
सिर्फ़ इस सूरत में तुम्हें जाने देगा कि कोई
ज़बरदस्ती तुम्हें ले जाए। 20इसलिए मैं अपनी
क़ुदरत ज़ाहिर करके अपने मोजिज़ों की मारिफ़त
मिसरियों को मारूँगा। फिर वह तुम्हें जाने देगा।
21उस वक़्त मैं मिसरियों के दिलों को तुम्हारे लिए
नरम कर दूँगा। तुम्हें ख़ाली हाथ नहीं जाना पड़ेगा।
22तमाम इबरानी औरतें अपनी मिसरी पड़ोसनों
और अपने घर में रहनेवाली मिसरी औरतों से
चाँदी और सोने के ज़ेवरात और नफ़ीस कपड़े
माँगकर अपने बच्चों को पहनाएँगी। यों मिसरियों
को लूट लिया जाएगा।"

4 मूसा ने एतराज़ किया, "लेकिन इसराईली
न मेरी बात का यक़ीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे।
वह तो कहेंगे, 'रब तुम पर ज़ाहिर नहीं हुआ'।"
2जवाब में रब ने मूसा से कहा, "तूने हाथ में क्या
पकड़ा हुआ है?" मूसा ने कहा, "लाठी।" 3रब
ने कहा, "उसे ज़मीन पर डाल दे।" मूसा ने ऐसा
किया तो लाठी साँप बन गई, और मूसा डरकर
भागा। 4रब ने कहा, "अब साँप की दुम को पकड़
ले।" मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन
गया।

5रब ने कहा, "यह देखकर लोगों को यक़ीन
आएगा कि रब जो उनके बापदादा का ख़ुदा,
इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब
का ख़ुदा है तुझ पर ज़ाहिर हुआ है। 6अब अपना
हाथ अपने लिबास में डाल दे।" मूसा ने ऐसा
किया। जब उसने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ़
की मानिंद सफ़ेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी
लग गई थी। 7तब रब ने कहा, "अब अपना
हाथ दुबारा अपने लिबास में डाल।" मूसा ने ऐसा
किया। जब उसने अपना हाथ दुबारा निकाला तो
वह फिर सेहतमंद था।

8रब ने कहा, "अगर लोगों को पहला मोजिज़ा
देखकर यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो
शायद उन्हें दूसरा मोजिज़ा देखकर यक़ीन आए।
9अगर उन्हें फिर भी यक़ीन न आए और वह तेरी
न सुनें तो दरियाए-नील से कुछ पानी निकालकर
उसे ख़ुश्क ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन
पर गिरते ही ख़ून बन जाएगा।"

10लेकिन मूसा ने कहा, "मेरे आक़ा, मैं
माज़रत चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर
सकता बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं
रखता था। इस वक़्त भी जब मैं तुझसे बात कर
रहा हूँ मेरी यही हालत है। मैं रुक रुककर बोलता
हूँ।" 11रब ने कहा, "किसने इनसान का मुँह
बनाया? कौन एक को गूँगा और दूसरे को बहरा
बना देता है? कौन एक को देखने की क़ाबिलियत
देता है और दूसरे को इससे महरूम रखता है?
क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ नहीं करता?
12अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं ख़ुद तेरे साथ हूँगा
और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे कहना है।"
13लेकिन मूसा ने इल्तिजा की, "मेरे आक़ा,
मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।"

14तब रब मूसा से सख़्त ख़फ़ा हुआ। उसने
कहा, "क्या तेरा लावी भाई हारून ऐसे काम के
लिए हाज़िर नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी
तरह बोल सकता है। देख, वह तुझसे मिलने के
लिए निकल चुका है। तुझे देखकर वह निहायत
ख़ुश होगा। 15उसे वह कुछ बता जो उसे कहना
है। तुम्हारे बोलते वक़्त मैं तेरे और उसके साथ
हूँगा और तुम्हें वह कुछ सिखाऊँगा जो तुम्हें करना
होगा। 16हारून तेरी जगह क़ौम से बात करेगा
जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ बताएगा जो उसे

कहना है। 17लेकिन यह लाठी भी साथ ले जाना,
क्योंकि इसी के ज़रीए तू यह मोजिज़े करेगा।"

मूसा मिसर को लौट जाता है

18फिर मूसा अपने सुसर यितरो के घर वापस
चला गया। उसने कहा, "मुझे ज़रा अपने अज़ीज़ों
के पास वापस जाने दें जो मिसर में हैं। मैं मालूम
करना चाहता हूँ कि वह अभी तक ज़िंदा हैं कि
नहीं।" यितरो ने जवाब दिया, "ठीक है, सलामती
से जाएँ।" 19मूसा अभी मिदियान में था कि रब ने
उससे कहा, "मिसर को वापस चला जा, क्योंकि
जो आदमी तुझे क़त्ल करना चाहते थे वह मर गए
हैं।" 20चुनाँचे मूसा अपनी बीवी और बेटों को गधे
पर सवार करके मिसर को लौटने लगा। अल्लाह
की लाठी उसके हाथ में थी।

21रब ने उससे यह भी कहा, "मिसर जाकर
फ़िरौन के सामने वह तमाम मोजिज़े दिखा
जिनका मैंने तुझे इख़्तियार दिया है। लेकिन मेरे
कहने पर वह अड़ा रहेगा। वह इसराईलियों को
जाने की इजाज़त नहीं देगा। 22उस वक़्त फ़िरौन
को बता देना, 'रब फ़रमाता है कि इसराईल मेरा
पहलौठा है। 23मैं तुझे बता चुका हूँ कि मेरे बेटे
को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे। अगर तू
मेरे बेटे को जाने से मना करे तो मैं तेरे पहलौठे
को जान से मार दूँगा'।"

24एक दिन जब मूसा अपने ख़ानदान के साथ
रास्ते में किसी सराय में ठहरा हुआ था तो रब ने
उस पर हमला करके उसे मार देने की कोशिश
की। 25यह देखकर सफ़्फ़ूरा ने एक तेज़ पत्थर से
अपने बेटे का ख़तना किया और काटे हुए हिस्से
से मूसा के पैर छुए। उसने कहा, "यक़ीनन तुम
मेरे ख़ूनी दूल्हा हो।" 26तब अल्लाह ने मूसा को
छोड़ दिया। सफ़्फ़ूरा ने उसे ख़तने के बाइस ही
'ख़ूनी दूल्हा' कहा था।

27रब ने हारून से भी बात की, "रेगिस्तान
में मूसा से मिलने जा।" हारून चल पड़ा और
अल्लाह के पहाड़ के पास मूसा से मिला। उसने
उसे बोसा दिया। 28मूसा ने हारून को सब कुछ
सुना दिया जो रब ने उसे कहने के लिए भेजा था।
उसने उसे उन मोजिज़ों के बारे में भी बताया जो
उसे दिखाने थे।

29फिर दोनों मिलकर मिसर गए। वहाँ पहुँचकर
उन्होंने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों को जमा किया।
30हारून ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाईं जो रब
ने मूसा को बताई थीं। उसने मज़कूरा मोजिज़े
भी लोगों के सामने दिखाए। 31फिर उन्हें यक़ीन
आया। और जब उन्होंने सुना कि रब को तुम्हारा
ख़याल है और वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है
तो उन्होंने रब को सिजदा किया।

मूसा और हारून फ़िरौन के दरबार में

5 फिर मूसा और हारून फ़िरौन के पास
गए। उन्होंने कहा, "रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है, 'मेरी क़ौम को रेगिस्तान में जाने
दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ'।" 2फ़िरौन ने
जवाब दिया, "यह रब कौन है? मैं क्यों उसका
हुक्म मानकर इसराईलियों को जाने दूँ? न मैं रब
को जानता हूँ, न इसराईलियों को जाने दूँगा।"

3हारून और मूसा ने कहा, "इबरानियों का
ख़ुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इसलिए मेहरबानी
करके हमें इजाज़त दें कि रेगिस्तान में तीन
दिन का सफ़र करके रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर
क़ुरबानियाँ पेश करें। कहीं वह हमें किसी बीमारी
या तलवार से न मारे।"

4लेकिन मिसर के बादशाह ने इनकार किया,
"मूसा और हारून, तुम लोगों को काम से क्यों
रोक रहे हो? जाओ, जो काम हमने तुमको दिया
है उस पर लग जाओ! 5इसराईली वैसे भी तादाद
में बहुत बढ़ गए हैं, और तुम उन्हें काम करने से
रोक रहे हो।"

जवाब में फ़िरौन का सख़्त दबाव

6उसी दिन फ़िरौन ने मिसरी निगरानों और
उनके तहत के इसराईली निगरानों को हुक्म दिया,
7"अब से इसराईलियों को ईंटें बनाने के लिए
भूसा मत देना, बल्कि वह ख़ुद जाकर भूसा जमा

करें। 8तो भी वह उतनी ही ईंटें बनाएँ जितनी
पहले बनाते थे। वह सुस्त हो गए हैं और इसी लिए
चीख़ रहे हैं कि हमें जाने दें ताकि अपने ख़ुदा को
क़ुरबानियाँ पेश करें। 9उनसे और ज़्यादा सख़्त
काम कराओ, उन्हें काम में लगाए रखो। उनके
पास इतना वक़्त ही न हो कि वह झूटी बातों पर
ध्यान दें।”

10मिसरी निगरान और उनके तहत के
इसराईली निगरानों ने लोगों के पास जाकर उनसे
कहा, “फ़िरौन का हुक्म है कि तुम्हें भूसा न
दिया जाए। 11इसलिए ख़ुद जाओ और भूसा
ढूँडकर जमा करो। लेकिन ख़बरदार! उतनी ही
ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

12यह सुनकर इसराईली भूसा जमा करने के
लिए पूरे मुल्क में फैल गए। 13मिसरी निगरान
यह कहकर उन पर दबाव डालते रहे कि उतनी ईंटें
बनाओ जितनी पहले बनाते थे। 14जो इसराईली
निगरान उन्होंने मुक़र्रर किए थे उन्हें वह पीटते और
कहते रहे, “तुमने कल और आज उतनी ईंटें क्यों
नहीं बनवाईं जितनी पहले बनवाते थे?”

15फिर इसराईली निगरान फ़िरौन के पास
गए। उन्होंने शिकायत करके कहा, “आप अपने
ख़ादिमों के साथ ऐसा सुलूक क्यों कर रहे हैं?
16हमें भूसा नहीं दिया जा रहा और साथ साथ
यह कहा गया है कि उतनी ईंटें बनाओ जितनी
पहले बनाते थे। नतीजे में हमें मारा-पीटा भी जा
रहा है हालाँकि ऐसा करने में आपके अपने लोग
ग़लती पर हैं।”

17फ़िरौन ने जवाब दिया, “तुम लोग सुस्त हो,
तुम काम करना नहीं चाहते। इसलिए तुम यह
जगह छोड़ना और रब को क़ुरबानियाँ पेश करना
चाहते हो। 18अब जाओ, काम करो। तुम्हें भूसा
नहीं दिया जाएगा, लेकिन ख़बरदार! उतनी ही
ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

19जब इसराईली निगरानों को बताया गया कि
ईंटों की मतलूबा तादाद कम न करो तो वह समझ
गए कि हम फँस गए हैं। 20फ़िरौन के महल
से निकलकर उनकी मुलाक़ात मूसा और हारून
से हुई जो उनके इंतज़ार में थे। 21उन्होंने मूसा
और हारून से कहा, “रब ख़ुद आपकी अदालत
करे। क्योंकि आपके सबब से फ़िरौन और उसके
मुलाज़िमों को हमसे घिन आती है। आपने उन्हें
हमें मार देने का मौक़ा दे दिया है।”

मूसा की शिकायत और रब का जवाब

22यह सुनकर मूसा रब के पास वापस आया
और कहा, “ऐ आक़ा, तूने इस क़ौम से ऐसा बुरा
सुलूक क्यों किया? क्या तूने इसी मक़सद से
मुझे यहाँ भेजा है? 23जब से मैंने फ़िरौन के पास
जाकर उसे तेरी मरज़ी बताई है वह इसराईली
क़ौम से बुरा सुलूक कर रहा है। और तूने अब
तक उन्हें बचाने का कोई क़दम नहीं उठाया।”

6 रब ने जवाब दिया, “अब तू देखेगा कि
मैं फ़िरौन के साथ क्या कुछ करता हूँ।
मेरी अज़ीम क़ुदरत का तजरबा करके वह मेरे
लोगों को जाने देगा बल्कि उन्हें जाने पर मजबूर
करेगा।”

2अल्लाह ने मूसा से यह भी कहा, “मैं रब
हूँ। 3मैं इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब पर ज़ाहिर
हुआ। वह मेरे नाम अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़[a] से
वाक़िफ़ हुए, लेकिन मैंने उन पर अपने नाम रब[b]
का इनकिशाफ़ नहीं किया। 4मैंने उनसे अहद
करके वादा किया कि उन्हें मुल्के-कनान दूँगा
जिसमें वह अजनबी के तौर पर रहते थे। 5अब
मैंने सुना है कि इसराईली किस तरह मिसरियों
की ग़ुलामी में कराह रहे हैं, और मैंने अपना
अहद याद किया है। 6चुनाँचे इसराईलियों को
बताना, ‘मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिसरियों के जुए से
आज़ाद करूँगा और उनकी ग़ुलामी से बचाऊँगा।
मैं बड़ी क़ुदरत के साथ तुम्हें छुड़ाऊँगा और उनकी
अदालत करूँगा। 7मैं तुम्हें अपनी क़ौम बनाऊँगा
और तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। तब तुम जान लोगे कि
मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जिसने तुम्हें मिसरियों के

[a]इबरानी में एल-शदई।

[b]इबरानी में यहवे।

जुए से आज़ाद कर दिया है। 8मैं तुम्हें उस मुल्क
में ले जाऊँगा जिसका वादा मैंने क़सम खाकर
इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया है। वह
मुल्क तुम्हारी अपनी मिलकियत होगा। मैं रब
हूँ'।"

9मूसा ने यह सब कुछ इसराईलियों को बता
दिया, लेकिन उन्होंने उस की बात न मानी,
क्योंकि वह सख़्त काम के बाइस हिम्मत हार गए
थे। 10तब रब ने मूसा से कहा, 11"जा, मिसर
के बादशाह फ़िरौन को बता देना कि इसराईलियों
को अपने मुल्क से जाने दे।" 12लेकिन मूसा ने
एतराज़ किया, "इसराईली मेरी बात सुनना नहीं
चाहते तो फ़िरौन क्यों मेरी बात माने जबकि मैं
रुक रुककर बोलता हूँ?"

13लेकिन रब ने मूसा और हारून को हुक्म
दिया, "इसराईलियों और मिसर के बादशाह
फ़िरौन से बात करके इसराईलियों को मिसर से
निकालो।"

मूसा और हारून के आबा-ओ-अजदाद

14इसराईल के आबाई घरानों के सरबराह यह
थे : इसराईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक,
फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे। इनसे रूबिन की
चार शाख़ें निकलीं।

15शमाऊन के पाँच बेटे यमुएल, यमीन, उहद,
यकीन, सुहर और साऊल थे। (साऊल कनानी
औरत का बच्चा था)। इनसे शमाऊन की पाँच
शाख़ें निकलीं।

16लावी के तीन बेटे जैरसोन, क़िहात और
मिरारी थे। (लावी 137 साल की उम्र में फ़ौत
हुआ)।

17जैरसोन के दो बेटे लिबनी और सिमई थे।
इनसे जैरसोन की दो शाख़ें निकलीं। 18क़िहात के
चार बेटे अमराम, इज़हार, हबरून और उज़्ज़ियेल
थे। (क़िहात 133 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।
19मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। इन
सबसे लावी की मुख़्तलिफ़ शाख़ें निकलीं।

20अमराम ने अपनी फूफी यूकबिद से शादी
की। उनके दो बेटे हारून और मूसा पैदा हुए।
(अमराम 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।
21इज़हार के तीन बेटे क़ोरह, नफ़ज और ज़िकरी
थे। 22उज़्ज़ियेल के तीन बेटे मीसाएल, इल्सफ़न
और सितरी थे।

23हारून ने इलीसिबा से शादी की। (इलीसिबा
अम्मीनदाब की बेटी और नहसोन की बहन
थी)। उनके चार बेटे नदब, अबीहू, इलियज़र
और इतमर थे। 24क़ोरह के तीन बेटे अस्सीर,
इलक़ाना और अबियासफ़ थे। उनसे क़ोरहियों की
तीन शाख़ें निकलीं। 25हारून के बेटे इलियज़र ने
फ़ूतियेल की एक बेटी से शादी की। उनका एक
बेटा फ़ीनहास था।

यह सब लावी के आबाई घरानों के सरबराह
थे।

26रब ने अमराम के दो बेटों हारून और मूसा को
हुक्म दिया कि मेरी क़ौम को उसके ख़ानदानों की
तरतीब के मुताबिक़ मिसर से निकालो। 27इन्हीं
दो आदमियों ने मिसर के बादशाह फ़िरौन से बात
की कि इसराईलियों को मिसर से जाने दे।

रब दुबारा मूसा से हमकलाम होता है

28मिसर में रब ने मूसा से कहा, 29"मैं रब हूँ।
मिसर के बादशाह को वह सब कुछ बता देना जो
मैं तुझे बताता हूँ।" 30मूसा ने एतराज़ किया, "मैं
तो रुक रुककर बोलता हूँ। फ़िरौन किस तरह मेरी
बात मानेगा?"

7 लेकिन रब ने कहा, "देख, मेरे कहने पर
तू फ़िरौन के लिए अल्लाह की हैसियत
रखेगा और तेरा भाई हारून तेरा पैग़ंबर होगा।
2जो भी हुक्म मैं तुझे दूँगा उसे तू हारून को बता
दे। फिर वह सब कुछ फ़िरौन को बताए ताकि
वह इसराईलियों को अपने मुल्क से जाने दे।
3लेकिन मैं फ़िरौन को अड़ जाने दूँगा। अगरचे
मैं मिसर में बहुत-से निशानों और मोजिज़ों से
अपनी क़ुदरत का मुज़ाहरा करूँगा 4तो भी फ़िरौन
तुम्हारी नहीं सुनेगा। तब मिसरियों पर मेरा हाथ

भारी हो जाएगा, और मैं उनको सख़्त सज़ा देकर
अपनी क़ौम इसराईल को ख़ानदानों की तरतीब
के मुताबिक़ मिसर से निकाल लाऊँगा। 5जब
मैं मिसर के ख़िलाफ़ अपनी क़ुदरत का इज़हार
करके इसराईलियों को वहाँ से निकालूँगा तो
मिसरी जान लेंगे कि मैं रब हूँ।"

6मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया
जैसा रब ने उन्हें हुक्म दिया। 7फ़िरौन से बात
करते वक़्त मूसा 80 साल का और हारून 83
साल का था।

मूसा की लाठी साँप बन जाती है

8रब ने मूसा और हारून से कहा, 9"जब फ़िरौन
तुम्हें मोजिज़ा दिखाने को कहेगा तो मूसा हारून
से कहे कि अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दे। इस
पर वह साँप बन जाएगी।"

10मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर
ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी फ़िरौन और
उसके ओहदेदारों के सामने डाल दी तो वह साँप
बन गई। 11यह देखकर फ़िरौन ने अपने आलिमों
और जादूगरों को बुलाया। जादूगरों ने भी अपने
जादू से ऐसा ही किया। 12हर एक ने अपनी लाठी
ज़मीन पर फेंकी तो वह साँप बन गई। लेकिन
हारून की लाठी ने उनकी लाठियों को निगल
लिया।

13ताहम फ़िरौन इससे मुतअस्सिर न हुआ।
उसने मूसा और हारून की बात सुनने से इनकार
किया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था।

पानी ख़ून में बदल जाता है

14फिर रब ने मूसा से कहा, "फ़िरौन अड़ गया
है। वह मेरी क़ौम को मिसर छोड़ने से रोकता
है। 15कल सुबह-सवेरे जब वह दरियाए-नील पर
आएगा तो उससे मिलने के लिए दरिया के किनारे
पर खड़े हो जाना। उस लाठी को थामे रखना
जो साँप बन गई थी। 16जब वह वहाँ पहुँचे तो
उससे कहना, 'रब इबरानियों के ख़ुदा ने मुझे
आपको यह बताने के लिए भेजा है कि मेरी क़ौम
को मेरी इबादत करने के लिए रेगिस्तान में जाने
दे। लेकिन आपने अभी तक उस की नहीं सुनी।
17चुनाँचे अब आप जान लेंगे कि वह रब है। मैं इस
लाठी को जो मेरे हाथ में है लेकर दरियाए-नील के
पानी को मारूँगा। फिर वह ख़ून में बदल जाएगा।
18दरियाए-नील की मछलियाँ मर जाएँगी, दरिया
से बदबू उठेगी और मिसरी दरिया का पानी नहीं
पी सकेंगे'।"

19रब ने मूसा से कहा, "हारून को बता देना
कि वह अपनी लाठी लेकर अपना हाथ उन तमाम
जगहों की तरफ़ बढ़ाए जहाँ पानी जमा होता
है। तब मिसर की तमाम नदियों, नहरों, जोहड़ों
और तालाबों का पानी ख़ून में बदल जाएगा। पूरे
मुल्क में ख़ून ही ख़ून होगा, यहाँ तक कि लकड़ी
और पत्थर के बरतनों का पानी भी ख़ून में बदल
जाएगा।"

20चुनाँचे मूसा और हारून ने फ़िरौन और
उसके ओहदेदारों के सामने अपनी लाठी उठाकर
दरियाए-नील के पानी पर मारी। इस पर दरिया
का सारा पानी ख़ून में बदल गया। 21दरिया की
मछलियाँ मर गईं, और उससे इतनी बदबू उठने
लगी कि मिसरी उसका पानी न पी सके। मिसर
में चारों तरफ़ ख़ून ही ख़ून था।

22लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू के ज़रीए
ऐसा ही किया। इसलिए फ़िरौन अड़ गया और
मूसा और हारून की बात न मानी। वैसा ही हुआ
जैसा रब ने कहा था। 23फ़िरौन पलटकर अपने
घर वापस चला गया। उसे उस की परवा नहीं
थी जो मूसा और हारून ने किया था। 24लेकिन
मिसरी दरिया से पानी न पी सके, और उन्होंने
पीने का पानी हासिल करने के लिए दरिया के
किनारे किनारे गढ़े खोदे। 25पानी के बदल जाने
के बाद सात दिन गुज़र गए।

मेंढक

8 फिर रब ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के
पास जाकर उसे बता देना कि रब फ़रमाता
है, 'मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने के लिए

जाने दे, 2वरना मैं पूरे मिसर को मेंढकों से सज़ा
दूँगा। 3दरियाए-नील मेंढकों से इतना भर जाएगा
कि वह दरिया से निकलकर तेरे महल, तेरे सोने
के कमरे और तेरे बिस्तर में जा घुसेंगे। वह तेरे
ओहदेदारों और तेरी रिआया के घरों में आएँगे
बल्कि तेरे तनूरों और आटा गूँधने के बरतनों में
भी फुदकते फिरेंगे। 4मेंढक तुझ पर, तेरी क़ौम
पर और तेरे ओहदेदारों पर चढ़ जाएंगे'।"

5रब ने मूसा से कहा, "हारून को बता देना कि
वह अपनी लाठी को हाथ में लेकर उसे दरियाओं,
नहरों और जोहड़ों के ऊपर उठाए ताकि मेंढक
बाहर निकलकर मिसर के मुल्क में फैल जाएँ।"
6हारून ने मुल्के-मिसर के पानी के ऊपर अपनी
लाठी उठाई तो मेंढकों के ग़ोल पानी से निकलकर
पूरे मुल्क पर छा गए। 7लेकिन जादूगरों ने भी
अपने जादू से ऐसा ही किया। वह भी दरिया से
मेंढक निकाल लाए।

8फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाकर कहा,
"रब से दुआ करो कि वह मुझसे और मेरी क़ौम से
मेंढकों को दूर करे। फिर मैं तुम्हारी क़ौम को जाने
दूँगा ताकि वह रब को क़ुरबानियाँ पेश करें।"

9मूसा ने जवाब दिया, "वह वक़्त मुक़र्रर करें
जब मैं आपके ओहदेदारों और आपकी क़ौम के
लिए दुआ करूँ। फिर जो मेंढक आपके पास और
आपके घरों में हैं उसी वक़्त ख़त्म हो जाएंगे।
मेंढक सिर्फ़ दरिया में पाए जाएंगे।"

10फ़िरौन ने कहा, "ठीक है, कल उन्हें ख़त्म
करो।" मूसा ने कहा, "जैसा आप कहते हैं वैसा
ही होगा। इस तरह आपको मालूम होगा कि हमारे
ख़ुदा की मानिंद कोई नहीं है। 11मेंढक आप,
आपके घरों, आपके ओहदेदारों और आपकी
क़ौम को छोड़कर सिर्फ़ दरिया में रह जाएंगे।"

12मूसा और हारून फ़िरौन के पास से चले गए,
और मूसा ने रब से मिन्नत की कि वह मेंढकों के
वह ग़ोल दूर करे जो उसने फ़िरौन के ख़िलाफ़
भेजे थे। 13रब ने उस की दुआ सुनी। घरों, सहनों
और खेतों में मेंढक मर गए। 14लोगों ने उन्हें जमा
करके उनके ढेर लगा दिए। उनकी बदबू पूरे मुल्क
में फैल गई।

15लेकिन जब फ़िरौन ने देखा कि मसला हल
हो गया है तो वह फिर अकड़ गया और उनकी न
सुनी। यों रब की बात दुरुस्त निकली।

जुएँ

16फिर रब ने मूसा से कहा, "हारून से कहना
कि वह अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारे।
जब वह ऐसा करेगा तो पूरे मिसर की गर्द जुओं
में बदल जाएगी।"

17उन्होंने ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी
से ज़मीन की गर्द को मारा तो पूरे मुल्क की
गर्द जुओं में बदल गई। उनके ग़ोल जानवरों और
आदमियों पर छा गए। 18जादूगरों ने भी अपने
जादू से ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन वह
गर्द से जुएँ न बना सके। जुएँ आदमियों और
जानवरों पर छा गईं। 19जादूगरों ने फ़िरौन से
कहा, "अल्लाह की क़ुदरत ने यह किया है।"
लेकिन फ़िरौन ने उनकी न सुनी। यों रब की बात
दुरुस्त निकली।

काटनेवाली मक्खियाँ

20फिर रब ने मूसा से कहा, "जब फ़िरौन
सुबह-सवेरे दरिया पर जाए तो तू उसके रास्ते में
खड़ा हो जाना। उसे कहना कि रब फ़रमाता है,
'मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर
सकें। 21वरना मैं तेरे और तेरे ओहदेदारों के पास,
तेरी क़ौम के पास और तेरे घरों में काटनेवाली
मक्खियाँ भेज दूँगा। मिसरियों के घर मक्खियों
से भर जाएंगे बल्कि जिस ज़मीन पर वह खड़े हैं
वह भी मक्खियों से ढाँकी जाएगी। 22लेकिन उस
वक़्त मैं अपनी क़ौम के साथ जो जुशन में रहती
है फ़रक़ सुलूक करूँगा। वहाँ एक भी काटनेवाली
मक्खी नहीं होगी। इस तरह तुझे पता लगेगा कि
इस मुल्क में मैं ही रब हूँ। 23मैं अपनी क़ौम
और तेरी क़ौम में इम्तियाज़ करूँगा। कल ही मेरी
क़ुदरत का इज़हार होगा'।"

24रब ने ऐसा ही किया। काटनेवाली मक्खियों के ग़ोल फ़िरौन के महल, उसके ओहदेदारों के घरों और पूरे मिसर में फैल गए। मुल्क का सत्यानास हो गया।

25फिर फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाकर कहा, "चलो, इसी मुल्क में अपने ख़ुदा को क़ुरबानियाँ पेश करो।" 26लेकिन मूसा ने कहा, "यह मुनासिब नहीं है। जो क़ुरबानियाँ हम रब अपने ख़ुदा को पेश करेंगे वह मिसरियों की नज़र में घिनौनी हैं। अगर हम यहाँ ऐसा करें तो क्या वह हमें संगसार नहीं करेंगे? 27इसलिए लाज़िम है कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में ही रब अपने ख़ुदा को क़ुरबानियाँ पेश करें जिस तरह उसने हमें हुक्म भी दिया है।"

28फ़िरौन ने जवाब दिया, "ठीक है, मैं तुम्हें जाने दूँगा ताकि तुम रेगिस्तान में रब अपने ख़ुदा को क़ुरबानियाँ पेश करो। लेकिन तुम्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना है। और मेरे लिए भी दुआ करना।"

29मूसा ने कहा, "ठीक, मैं जाते ही रब से दुआ करूँगा। कल ही मक्खियाँ फ़िरौन, उसके ओहदेदारों और उस की क़ौम से दूर हो जाएँगी। लेकिन हमें दुबारा फ़रेब न देना बल्कि हमें जाने देना ताकि हम रब को क़ुरबानियाँ पेश कर सकें।"

30फिर मूसा फ़िरौन के पास से चला गया और रब से दुआ की। 31रब ने मूसा की दुआ सुनी। काटनेवाली मक्खियाँ फ़िरौन, उसके ओहदेदारों और उस की क़ौम से दूर हो गईं। एक भी मक्खी न रही। 32लेकिन फ़िरौन फिर अकड़ गया। उसने इसराईलियों को जाने न दिया।

मवेशियों में वबा

9 फिर रब ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जाकर उसे बता कि रब इबरानियों का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।' 2अगर आप इनकार करें और उन्हें रोकते रहें 3तो रब अपनी क़ुदरत का इज़हार करके आपके मवेशियों में भयानक वबा फैला देगा जो आपके घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों और मेंढों में फैल जाएगी। 4लेकिन रब इसराईल और मिसर के मवेशियों में इम्तियाज़ करेगा। इसराईलियों का एक भी जानवर नहीं मरेगा। 5रब ने फ़ैसला कर लिया है कि वह कल ही ऐसा करेगा।"

6अगले दिन रब ने ऐसा ही किया। मिसर के तमाम मवेशी मर गए, लेकिन इसराईलियों का एक भी जानवर न मरा। 7फ़िरौन ने कुछ लोगों को उनके पास भेज दिया तो पता चला कि एक भी जानवर नहीं मरा। ताहम फ़िरौन अड़ा रहा। उसने इसराईलियों को जाने न दिया।

फोड़े-फुंसियाँ

8फिर रब ने मूसा और हारून से कहा, "अपनी मुट्ठियाँ किसी भट्टी की राख से भरकर फ़िरौन के पास जाओ। फिर मूसा फ़िरौन के सामने यह राख हवा में उड़ा दे। 9यह राख बारीक धूल का बादल बन जाएगी जो पूरे मुल्क पर छा जाएगा। उसके असर से लोगों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ फूट निकलेंगे।"

10मूसा और हारून ने ऐसा ही किया। वह किसी भट्टी से राख लेकर फ़िरौन के सामने खड़े हो गए। मूसा ने राख को हवा में उड़ा दिया तो इनसानों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ निकल आए। 11इस मरतबा जादूगर मूसा के सामने खड़े भी न हो सके क्योंकि उनके जिस्मों पर भी फोड़े निकल आए थे। तमाम मिसरियों का यही हाल था। 12लेकिन रब ने फ़िरौन को ज़िद्दी बनाए रखा, इसलिए उसने मूसा और हारून की न सुनी। यों वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा को बताया था।

ओले

13इसके बाद रब ने मूसा से कहा, "सुबह-सवेरे उठ और फ़िरौन के सामने खड़े होकर उसे बता कि रब इबरानियों का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें। 14वरना मैं अपनी तमाम आफ़तें तुझ पर, तेरे ओहदेदारों पर और तेरी क़ौम पर आने दूँगा। फिर तू जान

लेगा कि तमाम दुनिया में मुझ जैसा कोई नहीं
है। 15अगर मैं चाहता तो अपनी क़ुदरत से ऐसी
वबा फैला सकता कि तुझे और तेरी क़ौम को
दुनिया से मिटा दिया जाता। 16लेकिन मैंने तुझे
इसलिए बरपा किया है कि तुझ पर अपनी क़ुदरत
का इज़हार करूँ और यों तमाम दुनिया में मेरे
नाम का प्रचार किया जाए। 17तू अभी तक अपने
आपको सरफ़राज़ करके मेरी क़ौम के ख़िलाफ़ है
और उन्हें जाने नहीं देता। 18इसलिए कल मैं इसी
वक़्त भयानक क़िस्म के ओलों का तूफ़ान भेज
दूँगा। मिसरी क़ौम की इब्तिदा से लेकर आज तक
मिसर में ओलों का ऐसा तूफ़ान कभी नहीं आया
होगा। 19अपने बंदों को अभी भेजना ताकि वह
तेरे मवेशियों को और खेतों में पड़े तेरे माल को
लाकर महफ़ूज़ कर लें। क्योंकि जो भी खुले मैदान
में रहेगा वह ओलों से मर जाएगा, ख़ाह इनसान
हो या हैवान’।”

20फ़िरौन के कुछ ओहदेदार रब का पैग़ाम
सुनकर डर गए और भागकर अपने जानवरों और
ग़ुलामों को घरों में ले आए। 21लेकिन दूसरों ने
रब के पैग़ाम की परवा न की। उनके जानवर और
ग़ुलाम बाहर खुले मैदान में रहे।

22रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान
की तरफ़ बढ़ा दे। फिर मिसर के तमाम इनसानों,
जानवरों और खेतों के पौदों पर ओले पड़ेंगे।”
23मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ़ उठाई
तो रब ने एक ज़बरदस्त तूफ़ान भेज दिया। ओले
पड़े, बिजली गिरी और बादल गरजते रहे। 24ओले
पड़ते रहे और बिजली चमकती रही। मिसरी क़ौम
की इब्तिदा से लेकर अब तक ऐसे ख़तरनाक
ओले कभी नहीं पड़े थे। 25इनसानों से लेकर
हैवानों तक खेतों में सब कुछ बरबाद हो गया।
ओलों ने खेतों में तमाम पौदे और दरख़्त भी तोड़
दिए। 26वह सिर्फ़ जुशन के इलाक़े में न पड़े जहाँ
इसराईली आबाद थे।

27तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया।
उसने कहा, “इस मरतबा मैंने गुनाह किया है। रब
हक़ पर है। मुझसे और मेरी क़ौम से ग़लती हुई है।
28ओले और अल्लाह की गरजती आवाज़ें हद से
ज़्यादा हैं। रब से दुआ करो ताकि ओले रुक जाएँ।
अब मैं तुम्हें जाने दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं
पड़ेगा।”

29मूसा ने फ़िरौन से कहा, “मैं शहर से
निकलकर दोनों हाथ रब की तरफ़ उठाकर दुआ
करूँगा। फिर गरज और ओले रुक जाएंगे और
आप जान लेंगे कि पूरी दुनिया रब की है।
30लेकिन मैं जानता हूँ कि आप और आपके
ओहदेदार अभी तक रब ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं
मानते।”

31उस वक़्त सन के फूल निकल चुके थे और
जौ की बालें लग गई थीं। इसलिए यह फ़सलें
तबाह हो गईं। 32लेकिन गेहूँ और एक और क़िस्म
की गंदुम जो बाद में पकती है बरबाद न हुई।

33मूसा फ़िरौन को छोड़कर शहर से निकला।
उसने रब की तरफ़ अपने हाथ उठाए तो गरज,
ओले और बारिश का तूफ़ान रुक गया। 34जब
फ़िरौन ने देखा कि तूफ़ान ख़त्म हो गया है तो वह
और उसके ओहदेदार दुबारा गुनाह करके अकड़
गए। 35फ़िरौन अड़ा रहा और इसराईलियों को
जाने न दिया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा से
कहा था।

टिड्डियाँ

10 फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़ि-
रौन के पास जा, क्योंकि मैंने उसका
और उसके दरबारियों का दिल सख़्त कर दिया है
ताकि उनके दरमियान अपने मोजिज़ों और अपनी
क़ुदरत का इज़हार कर सकूँ 2और तुम अपने बेटे-
बेटियों और पोते-पोतियों को सुना सको कि मैंने
मिसरियों के साथ क्या सुलूक किया है और उनके
दरमियान किस तरह के मोजिज़े करके अपनी
क़ुदरत का इज़हार किया है। यों तुम जान लोगे
कि मैं रब हूँ।”

3मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने
उससे कहा, “रब इबरानियों के ख़ुदा का फ़रमान
है, ‘तू कब तक मेरे सामने हथियार डालने से

इनकार करेगा? मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने
के लिए जाने दे, 4वरना मैं कल तेरे मुल्क में
टिड्डियाँ लाऊँगा। 5उनके ग़ोल ज़मीन पर यों छा
जाएंगे कि ज़मीन नज़र ही नहीं आएगी। जो
कुछ ओलों ने तबाह नहीं किया उसे वह चट कर
जाएँगी। बचे हुए दरख़्तों के पत्ते भी ख़त्म हो
जाएंगे। 6तेरे महल, तेरे ओहदेदारों और बाक़ी
लोगों के घर उनसे भर जाएंगे। जब से मिसरी
इस मुल्क में आबाद हुए हैं तुमने कभी टिड्डियों का
ऐसा सख़्त हमला नहीं देखा होगा'।" यह कहकर
मूसा पलटकर वहाँ से चला गया।

7इस पर दरबारियों ने फ़िरौन से बात की,
"हम कब तक इस मर्द के जाल में फँसे रहें?
इसराईलियों को रब अपने ख़ुदा की इबादत करने
के लिए जाने दें। क्या आपको अभी तक मालूम
नहीं कि मिसर बरबाद हो गया है?"

8तब मूसा और हारून को फ़िरौन के पास
बुलाया गया। उसने उनसे कहा, "जाओ, अपने
ख़ुदा की इबादत करो। लेकिन यह बताओ कि
कौन कौन साथ जाएगा?" 9मूसा ने जवाब
दिया, "हमारे जवान और बूढ़े साथ जाएंगे। हम
अपने बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों और गाय-बैलों
को भी साथ लेकर जाएंगे। हम सबके सब जाएंगे,
क्योंकि हमें रब की ईद मनानी है।"

10फ़िरौन ने तंज़न कहा, "ठीक है, जाओ
और रब तुम्हारे साथ हो। नहीं, मैं किस तरह
तुम सबको बाल-बच्चों समेत जाने दे सकता हूँ?
तुमने कोई बुरा मनसूबा बनाया है। 11नहीं, सिर्फ़
मर्द जाकर रब की इबादत कर सकते हैं। तुमने तो
यही दरख़ास्त की थी।" तब मूसा और हारून को
फ़िरौन के सामने से निकाल दिया गया।

12फिर रब ने मूसा से कहा, "मिसर पर
अपना हाथ उठा ताकि टिड्डियाँ आकर मिसर की
सरज़मीन पर फैल जाएँ। जो कुछ भी खेतों में
ओलों से बच गया है उसे वह खा जाएँगी।"

13मूसा ने अपनी लाठी मिसर पर उठाई तो
रब ने मशरिक़ से आँधी चलाई जो सारा दिन
और सारी रात चलती रही और अगली सुबह तक
मिसर में टिड्डियाँ पहुँचाईं। 14बेशुमार टिड्डियाँ पूरे
मुल्क पर हमला करके हर जगह बैठ गईं। इससे
पहले या बाद में कभी भी टिड्डियों का इतना सख़्त
हमला न हुआ था। 15उन्होंने ज़मीन को यों ढाँक
लिया कि वह काली नज़र आने लगी। जो कुछ
भी ओलों से बच गया था चाहे खेतों के पौदे या
दरख़्तों के फल थे उन्होंने खा लिया। मिसर में एक
भी दरख़्त या पौदा न रहा जिसके पत्ते बच गए हों।

16तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को जल्दी से
बुलवाया। उसने कहा, "मैंने तुम्हारे ख़ुदा का और
तुम्हारा गुनाह किया है। 17अब एक और मरतबा
मेरा गुनाह मुआफ़ करो और रब अपने ख़ुदा से
दुआ करो ताकि मौत की यह हालत मुझसे दूर हो
जाए।"

18मूसा ने महल से निकलकर रब से दुआ की।
19जवाब में रब ने हवा का रुख़ बदल दिया। उसने
मग़रिब से तेज़ आँधी चलाई जिसने टिड्डियों को
उड़ाकर बहरे-क़ुलज़ुम में डाल दिया। मिसर में
एक भी टिड्डी न रही। 20लेकिन रब ने होने दिया
कि फ़िरौन फिर अड़ गया। उसने इसराईलियों को
जाने न दिया।

अंधेरा

21इसके बाद रब ने मूसा से कहा, "अपना
हाथ आसमान की तरफ़ उठा तो मिसर पर अंधेरा
छा जाएगा। इतना अंधेरा होगा कि बंदा उसे छू
सकेगा।" 22मूसा ने अपना हाथ आसमान की
तरफ़ उठाया तो तीन दिन तक मिसर पर गहरा
अंधेरा छाया रहा। 23तीन दिन तक लोग न एक
दूसरे को देख सके, न कहीं जा सके। लेकिन जहाँ
इसराईली रहते थे वहाँ रौशनी थी।

24तब फ़िरौन ने मूसा को फिर बुलवाया और
कहा, "जाओ, रब की इबादत करो! तुम अपने
साथ बाल-बच्चों को भी ले जा सकते हो। सिर्फ़
अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पीछे छोड़
देना।" 25मूसा ने जवाब दिया, "क्या आप ही
हमें क़ुरबानियों के लिए जानवर देंगे ताकि उन्हें
रब अपने ख़ुदा को पेश करें? 26यक़ीनन नहीं।

इसलिए लाज़िम है कि हम अपने जानवरों को साथ लेकर जाएँ। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि अभी तक हमें मालूम नहीं कि रब की इबादत के लिए किन किन जानवरों की ज़रूरत होगी। यह उस वक़्त ही पता चलेगा जब हम मनज़िले-मक़सूद पर पहुँचेंगे। इसलिए ज़रूरी है कि हम सबको अपने साथ लेकर जाएँ।”

27लेकिन रब की मरज़ी के मुताबिक़ फ़िरौन
अड़ गया। उसने उन्हें जाने न दिया। 28उसने
मूसा से कहा, “दफ़ा हो जा। ख़बरदार! फिर कभी अपनी शक्ल न दिखाना, वरना तुझे मौत
के हवाले कर दिया जाएगा।” 29मूसा ने कहा,
“ठीक है, आपकी मरज़ी। मैं फिर कभी आपके सामने नहीं आऊँगा।”

आख़िरी सज़ा का एलान

11 तब रब ने मूसा से कहा, “अब मैं फ़िरौन और मिसर पर आख़िरी आफ़त लाने को हूँ। इसके बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा।
2इसराईलियों को बता देना कि हर मर्द अपने पड़ोसी और हर औरत अपनी पड़ोसन से सोने-चाँदी की चीज़ें माँग ले।” 3(रब ने मिसरियों के
दिल इसराईलियों की तरफ़ मायल कर दिए थे। वह फ़िरौन के ओहदेदारों समेत ख़ासकर मूसा की बड़ी इज़्ज़त करते थे)।

4मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘आज
आधी रात के वक़्त मैं मिसर में से गु-ज़रूँगा। 5तब बादशाह के पहलौठे से लेकर
चक्की पीसनेवाली नौकरानी के पहलौठे तक मिसरियों का हर पहलौठा मर जाएगा। चौपाइयों के पहलौठे भी मर जाएंगे। 6मिसर की सरज़मीन
पर ऐसा रोना पीटना होगा कि न माज़ी में कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा। 7लेकिन
इसराईली और उनके जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी उन पर नहीं भौंकेगा। इस तरह तुम जान लोगे कि रब इसराईलियों की निसबत मिसरियों से फ़रक़ सुलूक करता है’।” 8मूसा ने यह कुछ
फ़िरौन को बताया फिर कहा, “उस वक़्त आपके तमाम ओहदेदार आकर मेरे सामने झुक जाएंगे और मिन्नत करेंगे, ‘अपने पैरोकारों के साथ चले जाएँ।’ तब मैं चला ही जाऊँगा।” यह कहकर मूसा फ़िरौन के पास से चला गया। वह बड़े ग़ुस्से में था।

9रब ने मूसा से कहा था, “फ़िरौन तुम्हारी
नहीं सुनेगा। क्योंकि लाज़िम है कि मैं मिसर में अपनी क़ुदरत का मज़ीद इज़हार करूँ।” 10गो
मूसा और हारून ने फ़िरौन के सामने यह तमाम मोजिज़े दिखाए, लेकिन रब ने फ़िरौन को ज़िद्दी बनाए रखा, इसलिए उसने इसराईलियों को मुल्क छोड़ने न दिया।

फ़सह की ईद

12 फिर रब ने मिसर में मूसा और हारून से कहा, 2“अब से यह महीना तुम्हारे
लिए साल का पहला महीना हो।” 3इसराईल की
पूरी जमात को बताना कि इस महीने के दसवें दिन हर ख़ानदान का सरपरस्त अपने घराने के लिए लेला यानी भेड़ या बकरी का बच्चा हासिल करे।
4अगर घराने के अफ़राद पूरा जानवर खाने के
लिए कम हों तो वह अपने सबसे क़रीबी पड़ोसी के साथ मिलकर लेला हासिल करें। इतने लोग उसमें से खाएँ कि सबके लिए काफ़ी हो और पूरा जानवर खाया जाए। 5इसके लिए एक साल का
नर बच्चा चुन लेना जिसमें नुक़्स न हो। वह भेड़ या बकरी का बच्चा हो सकता है।

6महीने के 14वें दिन तक उस की देख-भाल
करो। उस दिन तमाम इसराईली सूरज के ग़ुरूब होते वक़्त अपने लेले ज़बह करें। 7हर ख़ानदान
अपने जानवर का कुछ ख़ून जमा करके उसे उस घर के दरवाज़े की चौखट पर लगाए जहाँ लेला खाया जाएगा। यह ख़ून चौखट के ऊपरवाले हिस्से और 1दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगाया जाए। 8लाज़िम है कि लोग जानवर को भूनकर
उसी रात खाएँ। साथ ही वह कड़वा साग-पात और बेख़मीरी रोटियाँ भी खाएँ। 9लेले का गोश्त

कच्चा न खाना, न उसे पानी में उबालना बल्कि पूरे
जानवर को सर, पैरों और अंदरूनी हिस्सों समेत
आग पर भूनना। 10लाज़िम है कि पूरा गोश्त उसी
रात खाया जाए। अगर कुछ सुबह तक बच जाए
तो उसे जलाना है। 11खाना खाते वक़्त ऐसा
लिबास पहनना जैसे तुम सफ़र पर जा रहे हो।
अपने जूते पहने रखना और हाथ में सफ़र के लिए
लाठी लिए हुए तुम उसे जल्दी जल्दी खाना। रब
के फ़सह की ईद यों मनाना।

12मैं आज रात मिसर में से गुज़रूँगा और हर
पहलौठे को जान से मार दूँगा, ख़ाह इनसान का
हो या हैवान का। यों मैं जो रब हूँ मिसर के तमाम
देवताओं की अदालत करूँगा। 13लेकिन तुम्हारे
घरों पर लगा हुआ ख़ून तुम्हारा ख़ास निशान
होगा। जिस जिस घर के दरवाज़े पर मैं वह ख़ून
देखूँगा उसे छोड़ता जाऊँगा। जब मैं मिसर पर
हमला करूँगा तो मोहलक वबा तुम तक नहीं
पहुँचेगी। 14आज की रात को हमेशा याद रखना।
इसे नसल-दर-नसल और हर साल रब की ख़ास
ईद के तौर पर मनाना।

बेख़मीरी रोटी की ईद

15सात दिन तक बेख़मीरी रोटी खाना है। पहले
दिन अपने घरों से तमाम ख़मीर निकाल देना।
अगर कोई इन सात दिनों के दौरान ख़मीर खाए
तो उसे क़ौम में से मिटाया जाए। 16इस ईद
के पहले और आख़िरी दिन मुक़द्दस इजतिमा
मुनअक़िद करना। इन तमाम दिनों के दौरान काम
न करना। सिर्फ़ एक काम की इजाज़त है और वह
है अपना खाना तैयार करना। 17बेख़मीरी रोटी की
ईद मनाना लाज़िम है, क्योंकि उस दिन मैं तुम्हारे
मुतअद्दिद ख़ानदानों को मिसर से निकाल लाया।
इसलिए यह दिन नसल-दर-नसल हर साल याद
रखना। 18पहले महीने के 14वें दिन की शाम से
लेकर 21वें दिन की शाम तक सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी
खाना। 19सात दिन तक तुम्हारे घरों में ख़मीर न
पाया जाए। जो भी इस दौरान ख़मीर खाए उसे
इसराईल की जमात में से मिटाया जाए, ख़ाह वह
इसराईली शहरी हो या अजनबी। 20ग़रज़, इस
ईद के दौरान ख़मीर न खाना। जहाँ भी तुम रहते
हो वहाँ बेख़मीरी रोटी ही खाना है।

पहलौठों की हलाकत

21फिर मूसा ने तमाम इसराईली बुज़ुर्गों को
बुलाकर उनसे कहा, “जाओ, अपने ख़ानदानों के
लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुनकर उन्हें फ़सह की
ईद के लिए ज़बह करो। 22ज़ूफ़े का गुच्छा लेकर
उसे ख़ून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे
लेकर ख़ून को चौखट के ऊपरवाले हिस्से और
दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा देना। सुबह तक
कोई अपने घर से न निकले। 23जब रब मिसरियों
को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो
वह चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ
के बाज़ुओं पर लगा हुआ ख़ून देखकर उन घरों
को छोड़ देगा। वह हलाक करनेवाले फ़रिश्ते को
इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जाकर
तुम्हें हलाक करे।

24तुम अपनी औलाद समेत हमेशा इन
हिदायात पर अमल करना। 25यह रस्म उस वक़्त
भी अदा करना जब तुम उस मुल्क में पहुँचोगे जो
रब तुम्हें देगा। 26और जब तुम्हारे बच्चे तुमसे पूछें
कि हम यह ईद क्यों मनाते हैं 27तो उनसे कहो,
‘यह फ़सह की क़ुरबानी है जो हम रब को पेश
करते हैं। क्योंकि जब रब मिसरियों को हलाक
कर रहा था तो उसने हमारे घरों को छोड़ दिया
था’।”

यह सुनकर इसराईलियों ने अल्लाह को
सिजदा किया। 28फिर उन्होंने सब कुछ वैसा ही
किया जैसा रब ने मूसा और हारून को बताया था।

29आधी रात को रब ने बादशाह के पहलौठे से
लेकर जेल के क़ैदी के पहलौठे तक मिसरियों के
तमाम पहलौठों को जान से मार दिया। चौपाइयों
के पहलौठे भी मर गए। 30उस रात मिसर के
हर घर में कोई न कोई मर गया। फ़िरौन, उसके
ओहदेदार और मिसर के तमाम लोग जाग उठे
और ज़ोर ज़ोर से रोने और चीख़ने लगे।

इसराईलियों की हिजरत

31अभी रात थी कि फ़िरौन ने मूसा और
हारून को बुलाकर कहा, "अब तुम और बाक़ी
इसराईली मेरी क़ौम में से निकल जाओ। अपनी
दरख़ास्त के मुताबिक़ रब की इबादत करो।
32जिस तरह तुम चाहते हो अपनी भेड़-बकरियों
को भी अपने साथ ले जाओ। और मुझे भी बरकत
देना।" 33बाक़ी मिसरियों ने भी इसराईलियों पर
ज़ोर देकर कहा, "जल्दी जल्दी मुल्क से निकल
जाओ, वरना हम सब मर जाएंगे।"

34इसराईलियों के गूँधे हुए आटे में ख़मीर नहीं
था। उन्होंने उसे गूँधने के बरतनों में रखकर अपने
कपड़ों में लपेट लिया और सफ़र करते वक़्त
अपने कंधों पर रख लिया। 35इसराईली मूसा की
हिदायत पर अमल करके अपने मिसरी पड़ोसियों
के पास गए और उनसे कपड़े और सोने-चाँदी
की चीज़ें माँगीं। 36रब ने मिसरियों के दिलों
को इसराईलियों की तरफ़ मायल कर दिया था,
इसलिए उन्होंने उनकी हर दरख़ास्त पूरी की। यों
इसराईलियों ने मिसरियों को लूट लिया।

37इसराईली रामसीस से रवाना होकर
सुक्कात पहुँच गए। औरतों और बच्चों को
छोड़कर उनके 6 लाख मर्द थे। 38वह अपने
भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के बड़े बड़े रेवड़ भी
साथ ले गए। बहुत-से ऐसे लोग भी उनके साथ
निकले जो इसराईली नहीं थे। 39रास्ते में उन्होंने
उस बेख़मीरी आटे से रोटियाँ बनाईं जो वह साथ
लेकर निकले थे। आटे में इसलिए ख़मीर नहीं था
कि उन्हें इतनी जल्दी से मिसर से निकाल दिया
गया था कि खाना तैयार करने का वक़्त ही न
मिला था।

40इसराईली 430 साल तक मिसर में रहे थे।
41430 साल के ऐन बाद, उसी दिन रब के यह
तमाम ख़ानदान मिसर से निकले। 42उस ख़ास
रात रब ने ख़ुद पहरा दिया ताकि इसराईली मिसर
से निकल सकें। इसलिए तमाम इसराईलियों के
लिए लाज़िम है कि वह नसल-दर-नसल इस रात
रब की ताज़ीम में जागते रहें, वह भी और उनके
बाद की औलाद भी।

फ़सह की ईद की हिदायात

43रब ने मूसा और हारून से कहा, "फ़सह की
ईद के यह उसूल हैं :

किसी भी परदेसी को फ़सह की ईद का खाना
खाने की इजाज़त नहीं है। 44अगर तुमने किसी
ग़ुलाम को ख़रीदकर उसका ख़तना किया है तो
वह फ़सह का खाना खा सकता है। 45लेकिन
ग़ैरशहरी या मज़दूर को फ़सह का खाना खाने
की इजाज़त नहीं है। 46यह खाना एक ही घर
के अंदर खाना है। न गोश्त घर से बाहर ले जाना,
न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना। 47लाज़िम
है कि इसराईल की पूरी जमात यह ईद मनाए।
48अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ रहता है जो
फ़सह की ईद में शिरकत करना चाहे तो लाज़िम
है कि पहले उसके घराने के हर मर्द का ख़तना
किया जाए। तब वह इसराईली की तरह खाने में
शरीक हो सकता है। लेकिन जिसका ख़तना न
हुआ उसे फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं
है। 49यही उसूल हर एक पर लागू होगा, ख़ाह वह
इसराईली हो या परदेसी।"

50तमाम इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा
रब ने मूसा और हारून से कहा था। 51उसी दिन
रब तमाम इसराईलियों को ख़ानदानों की तरतीब
के मुताबिक़ मिसर से निकाल लाया।

यह ईद नजात की याद दिलाती है

13 रब ने मूसा से कहा, 2"इसराई-
लियों के हर पहलौठे को मेरे लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस करना है। हर पहला नर बच्चा
मेरा ही है, ख़ाह इनसान का हो या हैवान का।"
3फिर मूसा ने लोगों से कहा, "इस दिन को याद
रखो जब तुम रब की अज़ीम क़ुदरत के बाइस
मिसर की ग़ुलामी से निकले। इस दिन कोई चीज़

[a]मार्च ता अप्रैल।

न खाना जिसमें ख़मीर हो। 4आज ही अबीब के
महीने[a] में तुम मिसर से रवाना हो रहे हो। 5रब
ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खाकर वादा किया
है कि वह तुमको कनानी, हित्ती, अमोरी, हिव्वी
और यबूसी क़ौमों का मुल्क देगा, एक ऐसा मुल्क
जिसमें दूध और शहद की कसरत है। जब रब
तुम्हें उस मुल्क में पहुँचा देगा तो लाज़िम है कि
तुम इसी महीने में यह रस्म मनाओ। 6सात दिन
बेख़मीरी रोटी खाओ। सातवें दिन रब की ताज़ीम
में ईद मनाओ। 7सात दिन ख़मीरी रोटी न खाना।
कहीं भी ख़मीर न पाया जाए। पूरे मुल्क में ख़मीर
का नामो-निशान तक न हो।

8उस दिन अपने बेटे से यह कहो, 'मैं यह ईद
उस काम की ख़ुशी में मनाता हूँ जो रब ने मेरे लिए
किया जब मैं मिसर से निकला।' 9यह ईद तुम्हारे
हाथ या पेशानी पर निशान की मानिंद हो जो
तुम्हें याद दिलाए कि रब की शरीअत को तुम्हारे
होंटों पर रहना है। क्योंकि रब तुम्हें अपनी अज़ीम
क़ुदरत से मिसर से निकाल लाया। 10इस दिन
की याद हर साल ठीक वक़्त पर मनाना।

पहलौठों की मख़सूसियत

11रब तुम्हें कनानियों के उस मुल्क में ले
जाएगा जिसका वादा उसने क़सम खाकर तुम
और तुम्हारे बापदादा से किया है। 12लाज़िम है
कि वहाँ पहुँचकर तुम अपने तमाम पहलौठों को
रब के लिए मख़सूस करो। तुम्हारे मवेशियों के
तमाम पहलौठे भी रब की मिलकियत हैं। 13अगर
तुम अपना पहलौठा गधा ख़ुद रखना चाहो तो रब
को उसके बदले भेड़ या बकरी का बच्चा पेश
करो। लेकिन अगर तुम उसे रखना नहीं चाहते
तो उस की गरदन तोड़ डालो। लेकिन इनसान के
पहलौठों के लिए हर सूरत में एवज़ी देना है।

14आनेवाले दिनों में जब तुम्हारा बेटा पूछे कि
इसका क्या मतलब है तो उसे जवाब देना, 'रब
अपनी अज़ीम क़ुदरत से हमें मिसर की ग़ुलामी
से निकाल लाया। 15जब फ़िरौन ने अकड़कर हमें
जाने न दिया तो रब ने मिसर के तमाम इनसानों
और हैवानों के पहलौठों को मार डाला। इस वजह
से मैं अपने जानवरों का हर पहला बच्चा रब को
क़ुरबान करता और अपने हर पहलौठे के लिए
एवज़ी देता हूँ'। 16यह दस्तूर तुम्हारे हाथ और
पेशानी पर निशान की मानिंद हो जो तुम्हें याद
दिलाए कि रब हमें अपनी क़ुदरत से मिसर से
निकाल लाया।"

मिसर से निकलने का रास्ता

17जब फ़िरौन ने इसराईली क़ौम को जाने दिया
तो अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तियों के इलाक़े में से
गुज़रनेवाले रास्ते से लेकर न गया, अगरचे उस
पर चलते हुए वह जल्द ही मुल्के-कनान पहुँच
जाते। बल्कि रब ने कहा, "अगर उस रास्ते पर
चलेंगे तो उन्हें दूसरों से लड़ना पड़ेगा। ऐसा न
हो कि वह इस वजह से अपना इरादा बदलकर
मिसर लौट जाएँ।" 18इसलिए अल्लाह उन्हें
दूसरे रास्ते से लेकर गया, और वह रेगिस्तान के
रास्ते से बहरे-क़ुलज़ुम की तरफ़ बढ़े। मिसर से
निकलते वक़्त मर्द मुसल्लह थे। 19मूसा यूसुफ़
का ताबूत भी अपने साथ ले गया, क्योंकि यूसुफ़
ने इसराईलियों को क़सम दिलाकर कहा था,
"अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ
ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठाकर
साथ ले जाना।"

20इसराईलियों ने सुक्कात को छोड़कर एताम
में अपने ख़ैमे लगाए। एताम रेगिस्तान के किनारे
पर था। 21रब उनके आगे आगे चलता गया, दिन
के वक़्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का
पता लगे और रात के वक़्त आग के सतून में ताकि
उन्हें रौशनी मिले। यों वह दिन और रात सफ़र कर
सकते थे। 22दिन के वक़्त बादल का सतून और
रात के वक़्त आग का सतून उनके सामने रहा।
वह कभी भी अपनी जगह से न हटा।

इसराईल समुंदर में से गुज़रता है

14 तब रब ने मूसा से कहा, 2"इस-
राईलियों को कह देना कि वह

पीछे मुड़कर मिजदाल और समुंदर के बीच
यानी फ़ी-हख़ीरोत के नज़दीक रुक जाएँ।
वह बाल-सफ़ोन के मुक़ाबिल साहिल पर
अपने ख़ैमे लगाएँ। 3यह देखकर फ़िरौन
समझेगा कि इसराईली रास्ता भूलकर आ-
वारा फिर रहे हैं और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ़
उन्हें घेर रखा है। 4फिर मैं फ़िरौन को दुबारा अड़
जाने दूँगा, और वह इसराईलियों का पीछा करेगा।
लेकिन मैं फ़िरौन और उस की पूरी फ़ौज पर
अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। मिसरी जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ।" इसराईलियों ने ऐसा ही किया।

5जब मिसर के बादशाह को इत्तला दी गई
कि इसराईली हिजरत कर गए हैं तो उसने और
उसके दरबारियों ने अपना ख़याल बदलकर कहा,
"हमने क्या किया है? हमने उन्हें जाने दिया है,
और अब हम उनकी ख़िदमत से महरूम हो गए
हैं।" 6चुनाँचे बादशाह ने अपना जंगी रथ तैयार
करवाया और अपनी फ़ौज को लेकर निकला।
7वह 600 बेहतरीन क़िस्म के रथ और मिसर
के बाक़ी तमाम रथों को साथ ले गया। तमाम
रथों पर अफ़सरान मुक़र्रर थे। 8रब ने मिसर
के बादशाह फ़िरौन को दुबारा अड़ जाने दिया
था, इसलिए जब इसराईली बड़े इख़्तियार के
साथ निकल रहे थे तो वह उनका ताक़्क़ुब करने
लगा। 9इसराईलियों का पीछा करते करते फ़िरौन
के तमाम घोड़े, रथ, सवार और फ़ौजी उनके
क़रीब पहुँचे। इसराईली बहरे-क़ुलज़ुम के साहिल
पर बाल-सफ़ोन के मुक़ाबिल फ़ी-हख़ीरोत के
नज़दीक ख़ैमे लगा चुके थे।

10जब इसराईलियों ने फ़िरौन और उस की
फ़ौज को अपनी तरफ़ बढ़ते देखा तो वह सख़्त
घबरा गए और मदद के लिए रब के सामने चीख़ने-
चिल्लाने लगे। 11उन्होंने मूसा से कहा, "क्या
मिसर में क़ब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान
में ले आए हैं? हमें मिसर से निकालकर आपने
हमारे साथ क्या किया है? 12क्या हमने मिसर में
आपसे दरख़ास्त नहीं की थी कि मेहरबानी करके
हमें छोड़ दें, हमें मिसरियों की ख़िदमत करने दें?
यहाँ आकर रेगिस्तान में मर जाने की निसबत
बेहतर होता कि हम मिसरियों के ग़ुलाम रहते।"

13लेकिन मूसा ने जवाब दिया, "मत घबराओ।
आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें
आज किस तरह बचाएगा। आज के बाद तुम
इन मिसरियों को फिर कभी नहीं देखोगे। 14रब
तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।"

15फिर रब ने मूसा से कहा, "तू मेरे सामने
क्यों चीख़ रहा है? इसराईलियों को आगे बढ़ने
का हुक्म दे। 16अपनी लाठी को पकड़कर उसे
समुंदर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट
जाएगा। इसराईली ख़ुश्क ज़मीन पर समुंदर में
से गुज़रेंगे। 17मैं मिसरियों को अड़े रहने दूँगा
ताकि वह इसराईलियों का पीछा करें। फिर मैं
फ़िरौन, उस की सारी फ़ौज, उसके रथों और
उसके सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।
18जब मैं फ़िरौन, उसके रथों और उसके सवारों
पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा तो मिसरी जान
लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

19अल्लाह का फ़रिश्ता इसराईली लशकर के
आगे आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हटकर
उनके पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून
भी लोगों के आगे से हटकर उनके पीछे जा
खड़ा हुआ। 20इस तरह बादल मिसरियों और
इसराईलियों के लशकरों के दरमियान आ गया।
पूरी रात मिसरियों की तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा
था जबकि इसराईलियों की तरफ़ रौशनी थी।
इसलिए मिसरी पूरी रात के दौरान इसराईलियों
के क़रीब न आ सके।

21मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया
तो रब ने मशरिक़ से तेज़ आँधी चलाई। आँधी
तमाम रात चलती रही। उसने समुंदर को पीछे
हटाकर उस की तह ख़ुश्क कर दी। समुंदर दो
हिस्सों में बट गया 22तो इसराईली समुंदर में से
ख़ुश्क ज़मीन पर चलते हुए गुज़र गए। उनके दाईं
और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

23जब मिसरियों को पता चला तो फ़िरौन के
तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उनके पीछे

पीछे समुंदर में चले गए। 24सुबह-सवेरे ही रब
ने बादल और आग के सतून से मिसर की फ़ौज
पर निगाह की और उसमें अबतरी पैदा कर दी।
25उनके रथों के पहिये निकल गए तो उन पर
क़ाबू पाना मुश्किल हो गया। मिसरियों ने कहा,
“आओ, हम इसराईलियों से भाग जाएँ, क्योंकि
रब उनके साथ है। वही मिसर का मुक़ाबला कर
रहा है।”

26तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुंदर
के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आकर मिसरियों,
उनके रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।” 27मूसा
ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो दिन
निकलते वक़्त पानी मामूल के मुताबिक़ बहने
लगा, और जिस तरफ़ मिसरी भाग रहे थे वहाँ
पानी ही पानी था। यों रब ने उन्हें समुंदर में बहाकर
ग़रक़ कर दिया। 28पानी वापस आ गया। उसने
रथों और घुड़सवारों को ढाँक लिया। फ़िरौन की
पूरी फ़ौज जो इसराईलियों का ताक़्क़ुब कर रही
थी डूबकर तबाह हो गई। उनमें से एक भी न बचा।
29लेकिन इसराईली ख़ुश्क ज़मीन पर समुंदर में
से गुज़रे। उनके दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार
की तरह खड़ा रहा।

30उस दिन रब ने इसराईलियों को मिसरि-
यों से बचाया। मिसरियों की लाशें उन्हें साहिल
पर नज़र आईं। 31जब इसराईलियों ने रब की
यह अज़ीम क़ुदरत देखी जो उसने मिसरियों पर
ज़ाहिर की थी तो रब का ख़ौफ़ उन पर छा गया।
वह उस पर और उसके ख़ादिम मूसा पर एतमाद
करने लगे।

मूसा का गीत

15 तब मूसा और इसराईलियों ने रब के
लिए यह गीत गाया,

“मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि
वह निहायत अज़ीम है। घोड़े और उसके सवार
को उसने समुंदर में पटख़ दिया है।

2रब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी
नजात बन गया है। वही मेरा ख़ुदा है, और मैं उस
की तारीफ़ करूँगा। वही मेरे बाप का ख़ुदा है, और
मैं उस की ताज़ीम करूँगा।

3रब सूरमा है, रब उसका नाम है।

4फ़िरौन के रथों और फ़ौज को उसने समुंदर
में पटख़ दिया तो बादशाह के बेहतरीन अफ़सरान
बहरे-क़ुलज़ुम में डूब गए।

5गहरे पानी ने उन्हें ढाँक लिया, और वह पत्थर
की तरह समुंदर की तह तक उतर गए।

6ऐ रब, तेरे दहने हाथ का जलाल बड़ी क़ुदरत
से ज़ाहिर होता है। ऐ रब, तेरा दहना हाथ दुश्मन
को चकनाचूर कर देता है।

7जो तेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े होते हैं उन्हें तू अपनी
अज़मत का इज़हार करके ज़मीन पर पटख़ देता
है। तेरा ग़ज़ब उन पर आन पड़ता है तो वह आग
में भूसे की तरह जल जाते हैं।

8तूने ग़ुस्से में आकर फूँक मारी तो पानी ढेर की
सूरत में जमा हो गया। बहता पानी ठोस दीवार बन
गया, समुंदर गहराई तक जम गया।

9दुश्मन ने डींग मारकर कहा, ‘मैं उनका पीछा
करके उन्हें पकड़ लूँगा, मैं उनका लूटा हुआ माल
तक़सीम करूँगा। मेरी लालची जान उनसे सेर हो
जाएगी, मैं अपनी तलवार खींचकर उन्हें हलाक
करूँगा।’

10लेकिन तूने उन पर फूँक मारी तो समुंदर ने
उन्हें ढाँक लिया, और वह सीसे की तरह ज़ोरदार
मौजों में डूब गए।

11ऐ रब, कौन-सा माबूद तेरी मानिंद है? कौन
तेरी तरह जलाली और क़ुद्दूस है? कौन तेरी
तरह हैरतअंगेज़ काम करता और अज़ीम मोजिज़े
दिखाता है? कोई भी नहीं।

12तूने अपना दहना हाथ उठाया तो ज़मीन
हमारे दुश्मनों को निगल गई।

13अपनी शफ़क़त से तूने एवज़ाना देकर अपनी
क़ौम को छुटकारा दिया और उस की राहनुमाई

की है, अपनी क़ुदरत से तूने उसे अपनी मुक़द्दस
सुकूनतगाह तक पहुँचाया है।
14यह सुनकर दीगर क़ौमें काँप उठीं, फ़िलिस्ती
डर के मारे पेचो-ताब खाने लगे।
15अदोम के रईस सहम गए, मोआब के
राहनुमाओं पर कपकपी तारी हो गई, और कनान
के तमाम बाशिंदे हिम्मत हार गए।
16दहशत और ख़ौफ़ उन पर छा गया। तेरी
अज़ीम क़ुदरत के बाइस वह पत्थर की तरह जम
गए। ऐ रब, वह न हिले जब तक तेरी क़ौम गुज़र न
गई। वह बेहिसो-हरकत रहे जब तक तेरी ख़रीदी
हुई क़ौम गुज़र न गई।
17ऐ रब, तू अपने लोगों को लेकर पौदों की
तरह अपने मौरूसी पहाड़ पर लगाएगा, उस जगह
पर जो तूने अपनी सुकूनत के लिए चुन ली है,
जहाँ तूने अपने हाथों से अपना मक़दिस तैयार
किया है।
18रब अबद तक बादशाह है!”

19जब फ़िरौन के घोड़े, रथ और घुड़सवार
समुंदर में चले गए तो रब ने उन्हें समुंदर के पानी से
ढाँक लिया। लेकिन इसराईली ख़ुश्क ज़मीन पर
समुंदर में से गुज़र गए। 20तब हारून की बहन
मरियम जो नबिया थी ने दफ़ लिया, और बाक़ी
तमाम औरतें भी दफ़ लेकर उसके पीछे हो लीं।
सब गाने और नाचने लगीं। मरियम ने यह गाकर
उनकी राहनुमाई की,
21“रब की तमजीद में गीत गाओ, क्योंकि वह
निहायत अज़ीम है। घोड़े और उसके सवार को
उसने समुंदर में पटख़ दिया है।”

मारा और एलीम के चश्मे

22मूसा के कहने पर इसराईली बहरे-क़ुलज़ुम
से रवाना होकर दश्ते-शूर में चले गए। वहाँ
वह तीन दिन तक सफ़र करते रहे। इस दौरान
उन्हें पानी न मिला। 23आख़िरकार वह मारा
पहुँचे जहाँ पानी दस्तयाब था। लेकिन वह
कड़वा था, इसलिए मक़ाम का नाम मारा यानी
कड़वाहट पड़ गया। 24यह देखकर लोग मूसा
के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाकर कहने लगे, “हम क्या
पिएँ?” 25मूसा ने मदद के लिए रब से इल्तिजा
की तो उसने उसे लकड़ी का एक टुकड़ा दिखाया।
जब मूसा ने यह लकड़ी पानी में डाली तो पानी
की कड़वाहट ख़त्म हो गई।
मारा में रब ने अपनी क़ौम को क़वानीन दिए।
वहाँ उसने उन्हें आज़माया भी। 26उसने कहा,
“ग़ौर से रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनो! जो
कुछ उस की नज़र में दुरुस्त है वही करो।
उसके अहकाम पर ध्यान दो और उस की तमाम
हिदायात पर अमल करो। फिर मैं तुम पर वह
बीमारियाँ नहीं लाऊँगा जो मिसरियों पर लाया
था, क्योंकि मैं रब हूँ जो तुझे शफ़ा देता हूँ।”
27फिर इसराईली रवाना होकर एलीम पहुँचे जहाँ
12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ उन्होंने
पानी के क़रीब अपने ख़ैमे लगाए।

मन और बटेरें

16 इसके बाद इसराईल की पूरी जमात
एलीम से सफ़र करके सीन के
रेगिस्तान में पहुँची जो एलीम और सीना के
दरमियान है। वह मिसर से निकलने के बाद दूसरे
महीने के 15वें दिन पहुँचे। 2रेगिस्तान में तमाम
लोग फिर मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने
लगे। 3उन्होंने कहा, “काश रब हमें मिसर में ही
मार डालता! वहाँ हम कम अज़ कम जी भरकर
गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़
इसलिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके
मर जाएँ।”
4तब रब ने मूसा से कहा, “मैं आसमान से
तुम्हारे लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़ लोग बाहर
जाकर उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना
जमा करें। इससे मैं उन्हें आज़माकर देखूँगा कि
आया वह मेरी सुनते हैं कि नहीं। 5हर रोज़ वह
सिर्फ़ उतना खाना जमा करें जितना कि एक दिन
के लिए काफ़ी हो। लेकिन छटे दिन जब वह खाना

तैयार करेंगे तो वह अगले दिन के लिए भी काफ़ी होगा।”

6मूसा और हारून ने इसराईलियों से कहा, “आज शाम को तुम जान लोगे कि रब ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया है। 7और कल सुबह तुम रब का जलाल देखोगे। उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्योंकि असल में तुम हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ा रहे हो। 8फिर भी रब तुमको शाम के वक़्त गोश्त और सुबह के वक़्त वाफ़िर रोटी देगा, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब के ख़िलाफ़ हैं।”

9मूसा ने हारून से कहा, “इसराईलियों को बताना, ‘रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं’।” 10जब हारून पूरी जमात के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलटकर रेगिस्तान की तरफ़ देखा। वहाँ रब का जलाल बादल में ज़ाहिर हुआ। 11रब ने मूसा से कहा, 12“मैंने इसराईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज ग़ुरूब होने लगेगा तो तुम गोश्त खाओगे और कल सुबह पेट भरकर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ’।”

13उसी शाम बटेरों के ग़ोल आए जो पूरी ख़ैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह ख़ैमे के चारों तरफ़ ओस पड़ी थी। 14जब ओस सूख गई तो बर्फ़ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। 15जब इसराईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, “मन हू?” यानी “यह क्या है?” क्योंकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है। मूसा ने उनको समझाया, “यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। 16रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उसके ख़ानदान को ज़रूरत हो। अपने ख़ानदान के हर फ़रद के लिए दो लिटर जमा करो।”

17इसराईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़्यादा और बाज़ ने कम जमा किया। 18लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी था। जिसने ज़्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी था। 19मूसा ने हुक्म दिया, “अगले दिन के लिए खाना न बचाना।”

20लेकिन लोगों ने मूसा की बात न मानी बल्कि बाज़ ने खाना बचा लिया। लेकिन अगली सुबह मालूम हुआ कि बचे हुए खाने में कीड़े पड़ गए हैं और उससे बहुत बदबू आ रही है। यह सुनकर मूसा उनसे नाराज़ हुआ।

21हर सुबह हर कोई उतना जमा कर लेता जितनी उसे ज़रूरत होती थी। जब धूप तेज़ होती तो जो कुछ ज़मीन पर रह जाता वह पिघलकर ख़त्म हो जाता था।

22छटे दिन जब लोग यह ख़ुराक जमा करते तो वह मिक़दार में दुगनी होती थी यानी हर फ़रद के लिए चार लिटर। जब जमात के बुज़ुर्गों ने मूसा के पास आकर उसे इत्तला दी 23तो उसने उनसे कहा, “रब का फ़रमान है कि कल आराम का दिन है, मुक़द्दस सबत का दिन जो अल्लाह की ताज़ीम में मनाना है। आज तुम जो तनूर में पकाना चाहते हो पका लो और जो उबालना चाहते हो उबाल लो। जो बच जाए उसे कल के लिए महफ़ूज़ रखो।”

24लोगों ने मूसा के हुक्म के मुताबिक़ अगले दिन के लिए खाना महफ़ूज़ कर लिया तो न खाने से बदबू आई, न उसमें कीड़े पड़े। 25मूसा ने कहा, “आज यही बचा हुआ खाना खाओ, क्योंकि आज सबत का दिन है, रब की ताज़ीम में आराम का दिन। आज तुम्हें रेगिस्तान में कुछ नहीं मिलेगा। 26छः दिन के दौरान यह ख़ुराक जमा करना है, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। उस दिन ज़मीन पर खाने के लिए कुछ नहीं होगा।”

27तो भी कुछ लोग हफ़ते को खाना जमा करने के लिए निकले, लेकिन उन्हें कुछ न मिला। 28तब रब ने मूसा से कहा, “तुम लोग कब तक मेरे अहकाम और हिदायात पर अमल करने से इनकार करोगे? 29देखो, रब ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया है कि सबत का दिन आराम का

दिन है। इसलिए वह तुम्हें जुमे को दो दिन के लिए ख़ुराक देता है। हफ़्ते को सबको अपने ख़ैमों में रहना है। कोई भी अपने घर से बाहर न निकले।”
30चुनाँचे लोग सबत के दिन आराम करते थे।
31इसराईलियों ने इस ख़ुराक का नाम ‘मन’ रखा। उसके दाने धनिये की मानिंद सफ़ेद थे, और उसका ज़ायक़ा शहद से बने केक की मानिंद था।
32मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘दो लिटर मन एक मरतबान में रखकर उसे आनेवाली नसलों के लिए महफ़ूज़ रखना। फिर वह देख सकेंगे कि मैं तुम्हें क्या खाना खिलाता रहा जब
तुम्हें मिसर से निकाल लाया’।” 33मूसा ने हारून
से कहा, “एक मरतबान लो और उसे दो लिटर मन से भरकर रब के सामने रखो ताकि वह
आनेवाली नसलों के लिए महफ़ूज़ रहे।” 34हारून
ने ऐसा ही किया। उसने मन के इस मरतबान को अहद के संदूक़ के सामने रखा ताकि वह महफ़ूज़ रहे।
35इसराईलियों को 40 साल तक मन मिलता रहा। वह उस वक़्त तक मन खाते रहे जब तक रेगिस्तान से निकलकर कनान की सरहद पर
न पहुँचे। 36(जो पैमाना इसराईली मन के लिए
इस्तेमाल करते थे वह दो लिटर का एक बरतन था जिसका नाम ओमर था।)

चट्टान से पानी

17 फिर इसराईल की पूरी जमात सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुक्म देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफ़ीदीम में उन्होंने ख़ैमे लगाए। वहाँ
पीने के लिए पानी न मिला। 2इसलिए वह मूसा
के साथ यह कहकर झगड़ने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दो।” मूसा ने जवाब दिया, “तुम मुझसे क्यों झगड़ रहे हो? रब को क्यों आज़मा रहे
हो?” 3लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के
ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, “आप हमें मिसर से क्यों लाए हैं? क्या इसलिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत प्यासे मर जाएँ?”
4तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़रियाद की, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और
बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।” 5रब
ने मूसा से कहा, “कुछ बुज़ुर्ग साथ लेकर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिससे
तूने दरियाए-नील को मारा था। 6मैं होरिब यानी
सीना पहाड़ की एक चट्टान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चट्टान को मारना तो उससे पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”

मूसा ने इसराईल के बुज़ुर्गों के सामने ऐसा
ही किया। 7उसने उस जगह का नाम मस्सा
और मरीबा यानी ‘आज़माना और झगड़ना’ रखा, क्योंकि वहाँ इसराईली बुड़बुड़ाए और यह पूछकर रब को आज़माया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

अमालीक़ियों की शिकस्त

8रफ़ीदीम वह जगह भी थी जहाँ अमा-
लीक़ी इसराईलियों से लड़ने आए। 9मूसा ने
यशुअ से कहा, “लड़ने के क़ाबिल आदमियों को चुन लो और निकलकर अमालीक़ियों का मुक़ाबला करो। कल मैं अल्लाह की लाठी पकड़े हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो जाऊँगा।”
10यशुअ मूसा की हिदायत के मुताबिक़ अमालीक़ियों से लड़ने गया जबकि मूसा, हारून
और हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। 11और
यों हुआ कि जब मूसा के हाथ उठाए हुए थे तो इसराईली जीतते रहे, और जब वह नीचे थे तो
अमालीक़ी जीतते रहे। 12कुछ देर के बाद मूसा
के बाज़ू थक गए। इसलिए हारून और हूर एक चट्टान ले आए ताकि वह उस पर बैठ जाए। फिर उन्होंने उसके दाईं और बाईं तरफ़ खड़े होकर उसके बाज़ुओं को ऊपर उठाए रखा। सूरज के ग़ुरूब होने तक उन्होंने यों मूसा की मदद की।
13इस तरह यशुअ ने अमालीक़ियों से लड़ते लड़ते उन्हें शिकस्त दी।

14तब रब ने मूसा से कहा, “यह वाक़िया
यादगारी के लिए किताब में लिख ले। लाज़िम
है कि यह सब कुछ यशुअ की याद में रहे, क्योंकि
मैं दुनिया से अमालीक़ियों का नामो-निशान मिटा
दूँगा।” 15उस वक़्त मूसा ने क़ुरबानगाह बनाकर
उसका नाम ‘रब मेरा झंडा है’ रखा। 16उसने
कहा, “रब के तख़्त के ख़िलाफ़ हाथ उठाया गया
है, इसलिए रब की अमालीक़ियों से हमेशा तक
जंग रहेगी।”

यितरो से मुलाक़ात

18 मूसा का सुसर यितरो अब तक
मिदियान में इमाम था। जब उसने सब
कुछ सुना जो अल्लाह ने मूसा और अपनी क़ौम
के लिए किया है, कि वह उन्हें मिसर से निकाल
लाया है 2तो वह मूसा के पास आया। वह उस
की बीवी सफ़्फ़ूरा को अपने साथ लाया, क्योंकि
मूसा ने उसे अपने बेटों समेत मैके भेज दिया था।
3यितरो मूसा के दोनों बेटों को भी साथ लाया।
पहले बेटे का नाम जैरसोम यानी ‘अजनबी मुल्क
में परदेसी’ था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा
ने कहा था, “मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।”
4दूसरे बेटे का नाम इलियज़र यानी ‘मेरा ख़ुदा
मददगार है’ था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो
मूसा ने कहा था, “मेरे बाप के ख़ुदा ने मेरी मदद
करके मुझे फ़िरौन की तलवार से बचाया है।”

5यितरो मूसा की बीवी और बेटे साथ लेकर उस
वक़्त मूसा के पास पहुँचा जब उसने रेगिस्तान
में अल्लाह के पहाड़ यानी सीना के क़रीब ख़ैमा
लगाया हुआ था। 6उसने मूसा को पैग़ाम भेजा
था, “मैं, आपका सुसर यितरो आपकी बीवी और
दो बेटों को साथ लेकर आपके पास आ रहा हूँ।”

7मूसा अपने सुसर के इस्तक़बाल के लिए
बाहर निकला, उसके सामने झुका और उसे बोसा
दिया। दोनों ने एक दूसरे का हाल पूछा, फिर ख़ैमे
में चले गए। 8मूसा ने यितरो को तफ़सील से
बताया कि रब ने इसराईलियों की ख़ातिर फ़िरौन
और मिसरियों के साथ क्या कुछ किया है। उसने
रास्ते में पेश आई तमाम मुश्किलात का ज़िक्र भी
किया कि रब ने हमें किस तरह उनसे बचाया है।

9यितरो उन सारे अच्छे कामों के बारे में सुनकर
ख़ुश हुआ जो रब ने इसराईलियों के लिए किए
थे जब उसने उन्हें मिसरियों के हाथ से बचाया
था। 10उसने कहा, “रब की तमजीद हो जिसने
आपको मिसरियों और फ़िरौन के क़ब्ज़े से नजात
दिलाई है। उसी ने क़ौम को ग़ुलामी से छुड़ाया है!
11अब मैंने जान लिया है कि रब तमाम माबूदों से
अज़ीम है, क्योंकि उसने यह सब कुछ उन लोगों
के साथ किया जिन्होंने अपने ग़ुरूर में इसराईलियों
के साथ बुरा सुलूक किया था।” 12फिर यितरो ने
अल्लाह को भस्म होनेवाली क़ुरबानी और दीगर
कई क़ुरबानियाँ पेश कीं। तब हारून और तमाम
बुज़ुर्ग मूसा के सुसर यितरो के साथ अल्लाह के
हुज़ूर खाना खाने बैठे।

70 बुज़ुर्गों को मुक़र्रर किया जाता है

13अगले दिन मूसा लोगों का इनसाफ़ करने के
लिए बैठ गया। उनकी तादाद इतनी ज़्यादा थी कि
वह सुबह से लेकर शाम तक मूसा के सामने खड़े
रहे। 14जब यितरो ने यह सब कुछ देखा तो उसने
पूछा, “यह क्या है जो आप लोगों के साथ कर
रहे हैं? सारा दिन वह आपको घेरे रहते और आप
उनकी अदालत करते रहते हैं। आप यह सब कुछ
अकेले ही क्यों कर रहे हैं?”

15मूसा ने जवाब दिया, “लोग मेरे पास आकर
अल्लाह की मरज़ी मालूम करते हैं। 16जब कभी
कोई तनाज़ा या झगड़ा होता है तो दोनों पार्टियाँ
मेरे पास आती हैं। मैं फ़ैसला करके उन्हें अल्लाह
के अहकाम और हिदायात बताता हूँ।”

17मूसा के सुसर ने उससे कहा, “आपका
तरीक़ा अच्छा नहीं है। 18काम इतना वसी है कि
आप उसे अकेले नहीं सँभाल सकते। इससे आप
और वह लोग जो आपके पास आते हैं बुरी तरह
थक जाते हैं। 19मेरी बात सुनें! मैं आपको एक
मशवरा देता हूँ। अल्लाह उसमें आपकी मदद करे।
लाज़िम है कि आप अल्लाह के सामने क़ौम के

नुमाइंदे रहें और उनके मामलात उसके सामने पेश
करें। 20यह भी ज़रूरी है कि आप उन्हें अल्लाह
के अहकाम और हिदायात सिखाएँ, कि वह किस
तरह ज़िंदगी गुज़ारें और क्या क्या करें। 21लेकिन
साथ साथ क़ौम में से क़ाबिले-एतमाद आदमी
चुनें। वह ऐसे लोग हों जो अल्लाह का ख़ौफ़
मानते हों, रास्तदिल हों और रिश्वत से नफ़रत
करते हों। उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास
और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर करें। 22उन
आदमियों की ज़िम्मेदारी यह होगी कि वह हर
वक़्त लोगों का इनसाफ़ करें। अगर कोई बहुत ही
पेचीदा मामला हो तो वह फ़ैसले के लिए आपके
पास आएँ, लेकिन दीगर मामलों का फ़ैसला वह
ख़ुद करें। यों वह काम में आपका हाथ बटाएँगे
और आपका बोझ हलका हो जाएगा।

23अगर मेरा यह मशवरा अल्लाह की मरज़ी
के मुताबिक़ हो और आप ऐसा करें तो आप
अपनी ज़िम्मेदारी निभा सकेंगे और यह तमाम
लोग इनसाफ़ के मिलने पर सलामती के साथ
अपने अपने घर जा सकेंगे।"

24मूसा ने अपने सुसर का मशवरा मान
लिया और ऐसा ही किया। 25उसने इसराई-
लियों में से क़ाबिले-एतमाद आदमी चुने और उन्हें
हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस
आदमियों पर मुक़र्रर किया। 26यह मर्द क़ाज़ी
बनकर मुस्तक़िल तौर पर लोगों का इनसाफ़
करने लगे। आसान मसलों का फ़ैसला वह ख़ुद
करते और मुश्किल मामलों को मूसा के पास ले
आते थे।

27कुछ अरसे बाद मूसा ने अपने सुसर को
रुख़सत किया तो यितरो अपने वतन वापस चला
गया।

कोहे-सीना

19 इसराईलियों को मिसर से सफ़र करते
हुए दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने
के पहले ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे।
2उस दिन वह रफ़ीदीम को छोड़कर दश्ते-सीना
में आ पहुँचे। वहाँ उन्होंने रेगिस्तान में पहाड़ के
क़रीब डेरे डाले।

3तब मूसा पहाड़ पर चढ़कर अल्लाह के पास
गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकारकर
कहा, "याक़ूब के घराने बनी इसराईल को बता,
4'तुमने देखा है कि मैंने मिसरियों के साथ क्या
कुछ किया, और कि मैं तुमको उक़ाब के परों पर
उठाकर यहाँ अपने पास लाया हूँ। 5चुनाँचे अगर
तुम मेरी सुनो और मेरे अहद के मुताबिक़ चलो
तो फिर तमाम क़ौमों में से मेरी ख़ास मिलकियत
होगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, 6लेकिन तुम
मेरे लिए मख़सूस इमामों की बादशाही और
मुक़द्दस क़ौम होगे।' अब जाकर यह सारी बातें
इसराईलियों को बता।"

7मूसा ने पहाड़ से उतरकर और क़ौम के बुज़ुर्गों
को बुलाकर उन्हें वह तमाम बातें बताईं जो कहने
के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था। 8जवाब में पूरी
क़ौम ने मिलकर कहा, "हम रब की हर बात पूरी
करेंगे जो उसने फ़रमाई है।" मूसा ने पहाड़ पर
लौटकर रब को क़ौम का जवाब बताया। 9जब वह
पहुँचा तो रब ने मूसा से कहा, "मैं घने बादल में तेरे
पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझसे हमकलाम
होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा
रखेंगे।" तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें बताईं
जो लोगों ने की थीं।

10रब ने मूसा से कहा, "अब लोगों के पास
लौटकर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास धोकर 11तीसरे
दिन के लिए तैयार हो जाएँ, क्योंकि उस दिन
रब लोगों के देखते देखते कोहे-सीना पर उतरेगा।
12लोगों की हिफ़ाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़
की हद्दें मुक़र्रर कर। उन्हें ख़बरदार कर कि हुदूद
को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उसके दामन
को छुओ। जो भी उसे छुए वह ज़रूर मारा जाए।
13और उसे हाथ से छूकर नहीं मारना है बल्कि
पत्थरों या तीरों से। ख़ाह इनसान हो या हैवान,
वह ज़िंदा नहीं रह सकता। जब तक नरसिंगा देर

तक फूँका न जाए उस वक़्त तक लोगों को पहाड़
पर चढ़ने की इजाज़त नहीं है।”

14मूसा ने पहाड़ से उतरकर लोगों को अल्लाह
के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया। उन्होंने अपने
लिबास भी धोए। 15उसने उनसे कहा, “तीसरे
दिन के लिए तैयार हो जाओ। मर्द औरतों से
हमबिसतर न हों।”

16तीसरे दिन सुबह पहाड़ पर घना बादल छा
गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा
और नरसिंगे की निहायत ज़ोरदार आवाज़ सुनाई
दी। ख़ैमागाह में लोग लरज़ उठे। 17तब मूसा
लोगों को अल्लाह से मिलने के लिए ख़ैमागाह
से बाहर पहाड़ की तरफ़ ले गया, और वह पहाड़
के दामन में खड़े हुए। 18सीना पहाड़ धुएँ से ढका
हुआ था, क्योंकि रब आग में उस पर उतर आया।
पहाड़ से धुआँ इस तरह उठ रहा था जैसे किसी
भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़ शिद्दत से लरज़ने
लगा। 19नरसिंगे की आवाज़ तेज़ से तेज़तर होती
गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह उसे ऊँची
आवाज़ में जवाब देता रहा।

20रब सीना पहाड़ की चोटी पर उतरा और मूसा
को ऊपर आने के लिए कहा। मूसा ऊपर चढ़ा।
21रब ने मूसा से कहा, “फ़ौरन नीचे उतरकर
लोगों को ख़बरदार कर कि वह मुझे देखने के
लिए पहाड़ की हुदूद में ज़बरदस्ती दाख़िल न
हों। अगर वह ऐसा करें तो बहुत-से हलाक हो
जाएंगे। 22इमाम भी जो रब के हुज़ूर आते हैं अपने
आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करें, वरना मेरा ग़ज़ब
उन पर टूट पड़ेगा।”

23लेकिन मूसा ने रब से कहा, “लोग पहाड़ पर
नहीं आ सकते, क्योंकि तूने ख़ुद ही हमें ख़बरदार
किया कि हम पहाड़ की हद्दें मुक़र्रर करके उसे
मख़सूसो-मुक़द्दस करें।”

24रब ने जवाब दिया, “तो भी उतर जा और
हारून को साथ लेकर वापस आ। लेकिन इमामों
और लोगों को मत आने दे। अगर वह ज़बरदस्ती
मेरे पास आएँ तो मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

25मूसा ने लोगों के पास उतरकर उन्हें यह बातें
बता दीं।

दस अहकाम

20 तब अल्लाह ने यह तमाम बातें
फ़रमाईं, 2“मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे
मुल्के-मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया। 3मेरे
सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।
4अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की
मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर
या समुंदर में हो। 5न बुतों की परस्तिश, न उनकी
ख़िदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ।
जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और
चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। 6लेकिन जो मुझसे
मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन
पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

7रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत
मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा
करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

8सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे
इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो।
9हफ़ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर,
10लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का
दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना।
न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न
तेरी नौकरानी और न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे
दरमियान रहता है वह भी काम न करे। 11क्योंकि
रब ने पहले छः दिन में आसमानो-ज़मीन, समुंदर
और जो कुछ उनमें है बनाया लेकिन सातवें दिन
आराम किया। इसलिए रब ने सबत के दिन को
बरकत देकर मुक़र्रर किया कि वह मख़सूस और
मुक़द्दस हो।

12अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त
करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा
तुझे देनेवाला है देर तक जीता रहेगा।

13क़त्ल न करना।

14ज़िना न करना।

15चोरी न करना।

16अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।
17अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उस की बीवी का, न उसके नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।"

लोग घबरा जाते हैं

18जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर
खड़े हो गए। 19उन्होंने मूसा से कहा, "आप ही हमसे बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हमसे बात न करने दें वरना हम मर जाएंगे।"
20लेकिन मूसा ने उनसे कहा, "मत डरो, क्योंकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उसका ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम
गुनाह न करो।" 21लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के क़रीब गया जहाँ अल्लाह था।
22तब रब ने मूसा से कहा, "इसराईलियों को बता, 'तुमने ख़ुद देखा कि मैंने आसमान पर से
तुम्हारे साथ बातें की हैं। 23चुनाँचे मेरी परस्तिश के साथ साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बुत
न बनाओ। 24मेरे लिए मिट्टी की क़ुरबानगाह बनाकर उस पर अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे वह जगहें दिखाऊँगा जहाँ मेरे नाम की ताज़ीम में क़ुरबानियाँ पेश करनी हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं तेरे पास आकर तुझे बरकत दूँगा।
25अगर तू मेरे लिए क़ुरबानगाह बनाने की ख़ातिर पत्थर इस्तेमाल करना चाहे तो तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल न करना। क्योंकि तू तराशने के लिए इस्तेमाल होनेवाले औज़ार से उस की
बेहुरमती करेगा। 26क़ुरबानगाह को सीढ़ियों के बग़ैर बनाना है ताकि उस पर चढ़ने से तेरे लिबास के नीचे से तेरा नंगापन नज़र न आए।'

21 इसराईलियों को यह अहकाम बता,

इबरानी ग़ुलाम के हुक़ूक़

2'अगर तू इबरानी ग़ुलाम ख़रीदे तो वह छः साल तेरा ग़ुलाम रहे। इसके बाद लाज़िम है कि उसे आज़ाद कर दिया जाए। आज़ाद होने के लिए उसे पैसे देने की ज़रूरत नहीं होगी।
3अगर ग़ुलाम ग़ैरशादीशुदा हालत में मालिक के घर आया हो तो वह आज़ाद होकर अकेला ही चला जाए। अगर वह शादीशुदा हालत में आया हो तो लाज़िम है कि वह अपनी बीवी समेत आज़ाद
होकर जाए। 4अगर मालिक ने ग़ुलाम की शादी कराई और बच्चे पैदा हुए हैं तो उस की बीवी और बच्चे मालिक की मिलकियत होंगे। छः साल के बाद जब ग़ुलाम आज़ाद होकर जाए तो उस की बीवी और बच्चे मालिक ही के पास रहें।
5अगर ग़ुलाम कहे, "मैं अपने मालिक और अपने बीवी-बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद
नहीं होना चाहता" 6तो ग़ुलाम का मालिक उसे अल्लाह के सामने लाए। वह उसे दरवाज़े या उस की चौखट के पास ले जाए और सुताली यानी तेज़ औज़ार से उसके कान की लौ छेद दे। तब वह ज़िंदगी-भर उसका ग़ुलाम बना रहेगा।
7अगर कोई अपनी बेटी को ग़ुलामी में बेच डाले तो उसके लिए आज़ादी मिलने की शरायत मर्द से
फ़रक़ हैं। 8अगर उसके मालिक ने उसे मुंतख़ब किया कि वह उस की बीवी बन जाए, लेकिन बाद में वह उसे पसंद न आए तो लाज़िम है कि वह मुनासिब मुआवज़ा लेकर उसे उसके रिश्तेदारों को वापस कर दे। उसे औरत को ग़ैरमुल्कियों के हाथ बेचने का इख़्तियार नहीं है, क्योंकि उसने उसके साथ बेवफ़ा सुलूक किया है।
9अगर लौंडी का मालिक उस की अपने बेटे के साथ शादी कराए तो औरत को बेटी के हुक़ूक़ हासिल होंगे।

10अगर मालिक ने उससे शादी करके बाद में दूसरी औरत से भी शादी की तो लाज़िम है कि वह पहली को भी खाना और कपड़े देता रहे। इसके अलावा उसके साथ हमबिसतर होने का फ़र्ज़ भी अदा करना है। 11अगर वह यह तीन फ़रायज़ अदा न करे तो उसे औरत को आज़ाद करना पड़ेगा। इस सूरत में उसे मुफ़्त आज़ाद करना होगा।

ज़ख़मी करने की सज़ा

12जो किसी को जान-बूझकर इतना सख़्त मारता हो कि वह मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ाए-मौत देना है। 13लेकिन अगर उसने उसे जान-बूझकर न मारा बल्कि यह इत्तफ़ाक़ से हुआ और अल्लाह ने यह होने दिया, तो मारनेवाला एक ऐसी जगह पनाह ले सकता है जो मैं मुक़र्रर करूँगा। वहाँ उसे क़त्ल किए जाने की इजाज़त नहीं होगी। 14लेकिन जो दीदा-दानिस्ता और चालाकी से किसी को मार डालता है उसे मेरी क़ुरबानगाह से भी छीनकर सज़ाए-मौत देना है।

15जो अपने बाप या अपनी माँ को मारता-पीटता है उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

16जिसने किसी को इग़वा कर लिया है उसे सज़ाए-मौत दी जाए, चाहे वह उसे ग़ुलाम बनाकर बेच चुका हो या उसे अब तक अपने पास रखा हुआ हो।

17जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

18हो सकता है कि आदमी झगड़ें और एक शख़्स दूसरे को पत्थर या मुक्के से इतना ज़ख़मी कर दे कि गो वह बच जाए वह बिस्तर से उठ न सकता हो। 19अगर बाद में मरीज़ यहाँ तक शफ़ा पाए कि दुबारा उठकर लाठी के सहारे चल-फिर सके तो चोट पहुँचानेवाले को सज़ा नहीं मिलेगी। उसे सिर्फ़ उस वक़्त के लिए मुआवज़ा देना पड़ेगा जब तक मरीज़ पैसे न कमा सके। साथ ही उसे उसका पूरा इलाज करवाना है।

20जो अपने ग़ुलाम या लौंडी को लाठी से यों मारे कि वह मर जाए उसे सज़ा दी जाए। 21लेकिन अगर ग़ुलाम या लौंडी पिटाई के बाद एक या दो दिन ज़िंदा रहे तो मालिक को सज़ा न दी जाए। क्योंकि जो रक़म उसने उसके लिए दी थी उसका नुक़सान उसे ख़ुद उठाना पड़ेगा।

22हो सकता है कि लोग आपस में लड़ रहे हों और लड़ते लड़ते किसी हामिला औरत से यों टकरा जाएँ कि उसका बच्चा ज़ाया हो जाए। अगर कोई और नुक़सान न हुआ हो तो ज़रब पहुँचानेवाले को जुरमाना देना पड़ेगा। औरत का शौहर यह जुरमाना मुक़र्रर करे, और अदालत में इसकी तसदीक़ हो।

23लेकिन अगर उस औरत को और नुक़-सान भी पहुँचा हो तो फिर ज़रब पहुँचानेवाले को इस उसूल के मुताबिक़ सज़ा दी जाए कि जान के बदले जान, 24आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव, 25जलने के ज़ख़म के बदले जलने का ज़ख़म, मार के बदले मार, काट के बदले काट।

26अगर कोई मालिक अपने ग़ुलाम की आँख पर यों मारे कि वह ज़ाया हो जाए तो उसे ग़ुलाम को आँख के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे ग़ुलाम मर्द हो या औरत। 27अगर मालिक के पीटने से ग़ुलाम का दाँत टूट जाए तो उसे ग़ुलाम को दाँत के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे ग़ुलाम मर्द हो या औरत।

नुक़सान का मुआवज़ा

28अगर कोई बैल किसी मर्द या औरत को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो उस बैल को संगसार किया जाए। उसका गोश्त खाने की इजाज़त नहीं है। इस सूरत में बैल के मालिक को सज़ा न दी जाए। 29लेकिन हो सकता है कि मालिक को पहले आगाह किया गया था कि बैल लोगों को मारता है, तो भी उसने बैल को खुला छोड़ा था जिसके नतीजे में उसने किसी को मार डाला। ऐसी सूरत में न सिर्फ़ बैल को बल्कि उसके मालिक को भी संगसार करना है। 30लेकिन अगर फ़ैसला किया जाए कि वह अपनी जान का फ़िद्या

दे तो जितना मुआवज़ा भी मुक़र्रर किया जाए उसे
देना पड़ेगा।
31सज़ा में कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे बेटे को
मारा जाए या बेटी को। 32लेकिन अगर बैल किसी
ग़ुलाम या लौंडी को मार दे तो उसका मालिक
ग़ुलाम के मालिक को चाँदी के 30 सिक्के दे और
बैल को संगसार किया जाए।
33हो सकता है कि किसी ने अपने हौज़ को
खुला रहने दिया या हौज़ बनाने के लिए गढ़ा
खोदकर उसे खुला रहने दिया और कोई बैल या
गधा उसमें गिरकर मर गया। 34ऐसी सूरत में हौज़
का मालिक मुरदा जानवर के लिए पैसे दे। वह
जानवर के मालिक को उस की पूरी क़ीमत अदा
करे और मुरदा जानवर ख़ुद ले ले।
35अगर किसी का बैल किसी दूसरे के बैल
को ऐसे मारे कि वह मर जाए तो दोनों मालिक
ज़िंदा बैल को बेचकर उसके पैसे आपस में बराबर
बाँट लें। इसी तरह वह मुरदा बैल को भी बराबर
तक़सीम करें। 36लेकिन हो सकता है कि मालिक
को मालूम था कि मेरा बैल दूसरे जानवरों पर
हमला करता है, इसके बावुजूद उसने उसे आज़ाद
छोड़ दिया था। ऐसी सूरत में उसे मुरदा बैल के
एवज़ उसके मालिक को नया बैल देना पड़ेगा,
और वह मुरदा बैल ख़ुद ले ले।

मिलकियत की हिफ़ाज़त

22 जिसने कोई बैल या भेड़ चोरी करके
उसे ज़बह किया या बेच डाला है उसे
हर चोरी के बैल के एवज़ पाँच बैल और हर चोरी
की भेड़ के एवज़ चार भेड़ें वापस करना है।
2हो सकता है कि कोई चोर नक़ब लगा रहा हो
और लोग उसे पकड़कर यहाँ तक मारते-पीटते रहें
कि वह मर जाए। अगर रात के वक़्त ऐसा हुआ हो
तो वह उसके ख़ून के ज़िम्मेदार नहीं ठहर सकते।
3लेकिन अगर सूरज के तुलू होने के बाद ऐसा
हुआ हो तो जिसने उसे मारा वह क़ातिल ठहरेगा।
चोर को हर चुराई हुई चीज़ का एवज़ाना देना
है। अगर उसके पास देने के लिए कुछ न हो तो
उसे ग़ुलाम बनाकर बेचना है। जो पैसे उसे बेचने
के एवज़ मिलें वह चुराई हुई चीज़ों के बदले में
दिए जाएँ।
4अगर चोरी का जानवर चोर के पास ज़िंदा
पाया जाए तो उसे हर जानवर के एवज़ दो देने
पड़ेंगे, चाहे वह बैल, भेड़, बकरी या गधा हो।
5हो सकता है कि कोई अपने मवेशी को अपने
खेत या अंगूर के बाग़ में छोड़कर चरने दे और होते
होते वह किसी दूसरे के खेत या अंगूर के बाग़ में
जाकर चरने लगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि
मवेशी का मालिक नुक़सान के एवज़ अपने अंगूर
के बाग़ और खेत की बेहतरीन पैदावार में से दे।
6हो सकता है कि किसी ने आग जलाई हो
और वह काँटेदार झाड़ियों के ज़रीए पड़ोसी के
खेत तक फैलकर उसके अनाज के पूलों को, उस
की पकी हुई फ़सल को या खेत की किसी और
पैदावार को बरबाद कर दे। ऐसी सूरत में जिसने
आग जलाई हो उसे उस की पूरी क़ीमत अदा
करनी है।
7हो सकता है कि किसी ने कुछ पैसे या कोई
और माल अपने किसी वाक़िफ़कार के सुपुर्द कर
दिया हो ताकि वह उसे महफ़ूज़ रखे। अगर यह
चीज़ें उसके घर से चोरी हो जाएँ और बाद में चोर
को पकड़ा जाए तो चोर को उस की दुगनी क़ीमत
अदा करनी पड़ेगी। 8लेकिन अगर चोर पकड़ा
न जाए तो लाज़िम है कि उस घर का मालिक
जिसके सुपुर्द यह चीज़ें की गई थीं अल्लाह के
हुज़ूर खड़ा हो ताकि मालूम किया जाए कि उसने
ख़ुद यह माल चोरी किया है या नहीं।
9हो सकता है कि दो लोगों का आपस में झगड़ा
हो, और दोनों किसी चीज़ के बारे में दावा करते
हों कि यह मेरी है। अगर कोई क़ीमती चीज़ हो
मसलन बैल, गधा, भेड़, बकरी, कपड़े या कोई
खोई हुई चीज़ तो मामला अल्लाह के हुज़ूर लाया
जाए। जिसे अल्लाह क़ुसूरवार क़रार दे उसे दूसरे
को ज़ेरे-बहस चीज़ की दुगनी क़ीमत अदा करनी
है।

10हो सकता है कि किसी ने अपना कोई गधा, बैल, भेड़, बकरी या कोई और जानवर किसी वाक़िफ़कार के सुपुर्द कर दिया ताकि वह उसे महफ़ूज़ रखे। वहाँ जानवर मर जाए या ज़ख़मी हो जाए, या कोई उस पर क़ब्ज़ा करके उसे उस वक़्त ले जाए जब कोई न देख रहा हो। 11यह मामला यों हल किया जाए कि जिसके सुपुर्द जानवर किया गया था वह रब के हुज़ूर क़सम खाकर कहे कि मैंने अपने वाक़िफ़कार के जानवर के लालच में यह काम नहीं किया। जानवर के मालिक को यह क़बूल करना पड़ेगा, और दूसरे को इसके बदले कुछ नहीं देना होगा। 12लेकिन अगर वाक़ई जानवर को चोरी किया गया है तो जिसके सुपुर्द जानवर किया गया था उसे उस की क़ीमत अदा करनी पड़ेगी। 13अगर किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ डाला हो तो वह सबूत के तौर पर फाड़ी हुई लाश को ले आए। फिर उसे उस की क़ीमत अदा नहीं करनी पड़ेगी।

14हो सकता है कि कोई अपने वाक़िफ़कार से इजाज़त लेकर उसका जानवर इस्तेमाल करे। अगर जानवर को मालिक की ग़ैरमौजूदगी में चोट लगे या वह मर जाए तो उस शख़्स को जिसके पास जानवर उस वक़्त था उसका मुआवज़ा देना पड़ेगा। 15लेकिन अगर जानवर का मालिक उस वक़्त साथ था तो दूसरे को मुआवज़ा देने की ज़रूरत नहीं होगी। अगर उसने जानवर को किराए पर लिया हो तो उसका नुक़सान किराए से पूरा हो जाएगा।

लड़की को वरग़लाने का जुर्म

16अगर किसी कुँवारी की मँगनी नहीं हुई और कोई मर्द उसे वरग़लाकर उससे हमबिसतर हो जाए तो वह महर देकर उससे शादी करे। 17लेकिन अगर लड़की का बाप उस की उस मर्द के साथ शादी करने से इनकार करे, इस सूरत में भी मर्द को कुँवारी के लिए मुक़र्ररा रक़म देनी पड़ेगी।

सज़ाए-मौत के लायक़ जरायम

18जादूगरनी को जीने न देना।

19जो शख़्स किसी जानवर के साथ जिंसी ताल्लुक़ात रखता हो उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

20जो न सिर्फ़ रब को क़ुरबानियाँ पेश करे बल्कि दीगर माबूदों को भी उसे क़ौम से निकालकर हलाक किया जाए।

कमज़ोरों की हिफ़ाज़त के लिए अहकाम

21जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उसे न दबाना और न उससे बुरा सुलूक करना, क्योंकि तुम भी मिसर में परदेसी थे।

22किसी बेवा या यतीम से बुरा सुलूक न करना। 23अगर तू ऐसा करे और वह चिल्लाकर मुझसे फ़रियाद करें तो मैं ज़रूर उनकी सुनूँगा। 24मैं बड़े ग़ुस्से में आकर तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। फिर तुम्हारी बीवियाँ ख़ुद बेवाएँ और तुम्हारे बच्चे ख़ुद यतीम बन जाएंगे।

25अगर तूने मेरी क़ौम के किसी ग़रीब को क़र्ज़ दिया है तो उससे सूद न लेना।

26अगर तुझे किसी से उस की चादर गिरवी के तौर पर मिली हो तो उसे सूरज डूबने से पहले ही वापस कर देना है, 27क्योंकि इसी को वह सोने के लिए इस्तेमाल करता है। वरना वह क्या चीज़ ओढ़कर सोएगा? अगर तू चादर वापस न करे और वह शख़्स चिल्लाकर मुझसे फ़रियाद करे तो मैं उस की सुनूँगा, क्योंकि मैं मेहरबान हूँ।

अल्लाह से मुताल्लिक़ फ़रायज़

28अल्लाह को न कोसना, न अपनी क़ौम के किसी सरदार पर लानत करना।

29मुझे वक़्त पर अपने खेत और कोल्हुओं की पैदावार में से नज़राने पेश करना। अपने पहलौठे मुझे देना। 30अपने बैलों, भेड़ों और बकरियों के पहलौठों को भी मुझे देना। जानवर का पहलौठा पहले सात दिन अपनी माँ के साथ रहे। आठवें दिन वह मुझे दिया जाए।

31अपने आपको मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस रखना। इसलिए ऐसे जानवर का गोश्त मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाला है। ऐसे गोश्त को कुत्तों को खाने देना।

अदालत में इनसाफ़ और दूसरों से मुहब्बत

23 ग़लत अफ़वाहें न फैलाना। किसी शरीर आदमी का साथ देकर झूटी गवाही देना मना है। 2अगर अकसरियत ग़लत काम कर रही हो तो उसके पीछे न हो लेना। अदालत में गवाही देते वक़्त अकसरियत के साथ मिलकर ऐसी बात न करना जिससे ग़लत फ़ैसला किया जाए। 3लेकिन अदालत में किसी ग़रीब की तरफ़दारी भी न करना।

4अगर तुझे तेरे दुश्मन का बैल या गधा आवारा फिरता हुआ नज़र आए तो उसे हर सूरत में वापस कर देना। 5अगर तुझसे नफ़रत करनेवाले का गधा बोझ तले गिर गया हो और तुझे पता लगे तो उसे न छोड़ना बल्कि ज़रूर उस की मदद करना।

6अदालत में ग़रीब के हुक़ूक़ न मारना। 7ऐसे मामले से दूर रहना जिसमें लोग झूट बोलते हैं। जो बेगुनाह और हक़ पर है उसे सज़ाए-मौत न देना, क्योंकि मैं क़ुसूरवार को हक़-बजानिब नहीं ठहराऊँगा। 8रिश्वत न लेना, क्योंकि रिश्वत देखनेवाले को अंधा कर देती है और उस की बात बनने नहीं देती जो हक़ पर है।

9जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उस पर दबाव न डालना। तुम ऐसे लोगों की हालत से ख़ूब वाक़िफ़ हो, क्योंकि तुम ख़ुद मिसर में परदेसी रहे हो।

सबत का साल और सबत

10छः साल तक अपनी ज़मीन में बीज बोकर उस की पैदावार जमा करना। 11लेकिन सातवें साल ज़मीन को इस्तेमाल न करना बल्कि उसे पड़े रहने देना। जो कुछ भी उगे वह क़ौम के ग़रीब लोग खाएँ। जो उनसे बच जाए उसे जंगली जानवर खाएँ। अपने अंगूर और ज़ैतून के बाग़ों के साथ भी ऐसा ही करना है।

12छः दिन अपना काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। फिर तेरा बैल और तेरा गधा भी आराम कर सकेंगे, तेरी लौंडी का बेटा और तेरे साथ रहनेवाला परदेसी भी ताज़ादम हो जाएंगे।

13जो भी हिदायत मैंने दी है उस पर अमल कर। दीगर माबूदों की परस्तिश न करना। मैं तेरे मुँह से उनके नामों तक का ज़िक्र न सुनूँ।

तीन ख़ास ईदें

14साल में तीन दफ़ा मेरी ताज़ीम में ईद मनाना। 15पहले, बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने[a] में सात दिन तक तेरी रोटी में ख़मीर न हो जिस तरह मैंने हुक्म दिया है, क्योंकि इस महीने में तू मिसर से निकला। इन दिनों में कोई मेरे हुज़ूर ख़ाली हाथ न आए। 16दूसरे, फ़सलकटाई की ईद उस वक़्त मनाना जब तू अपने खेत में बोई हुई पहली फ़सल काटेगा। तीसरे, जमा करने की ईद फ़सल की कटाई के इख़्तिताम[b] पर मनाना है जब तूने अंगूर और बाक़ी बाग़ों के फल जमा किए होंगे। 17यों तेरे तमाम मर्द तीन मरतबा रब क़ादिरे-मुतलक़ के हुज़ूर हाज़िर हुआ करें।

18जब तू किसी जानवर को ज़बह करके क़ुरबानी के तौर पर पेश करे तो उसके ख़ून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिसमें ख़मीर हो। और जो जानवर तू मेरी ईदों पर चढ़ाए उनकी चरबी अगली सुबह तक बाक़ी न रहे।

19अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का बेहतरीन हिस्सा रब अपने ख़ुदा के घर में लाना।

भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।

[a]मार्च ता अप्रैल।

[b]सितंबर ता अक्तूबर।

रब का फ़रिश्ता राहनुमाई करेगा

20मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजता हूँ जो रास्ते में तेरी हिफ़ाज़त करेगा और तुझे उस जगह तक ले जाएगा जो मैंने तेरे लिए तैयार की है।
21उस की मौजूदगी में एहतियात बरतना। उस की सुनना, और उस की ख़िलाफ़वरज़ी न करना। अगर तू सरकश हो जाए तो वह तुझे मुआफ़ नहीं करेगा, क्योंकि मेरा नाम उसमें हाज़िर होगा।
22लेकिन अगर तू उस की सुने और सब कुछ करे जो मैं तुझे बताता हूँ तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुख़ालिफ़ों का मुख़ालिफ़ हूँगा।

23क्योंकि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा और तुझे मुल्के-कनान तक पहुँचा देगा जहाँ अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, कनानी, हिव्वी और यबूसी आबाद हैं। तब मैं उन्हें रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा।
24उनके माबूदों को सिजदा न करना, न उनकी ख़िदमत करना। उनके रस्मो-रिवाज भी न अपनाना बल्कि उनके बुतों को तबाह कर देना। जिन सतूनों के सामने वह इबादत करते हैं उनको भी टुकड़े टुकड़े कर डालना।
25रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत करना। फिर मैं तेरी ख़ुराक और पानी को बरकत देकर तमाम बीमारियाँ तुझसे दूर करूँगा।
26फिर तेरे मुल्क में न किसी का बच्चा ज़ाया होगा, न कोई बाँझ होगी। साथ ही मैं तुझे तवील ज़िंदगी अता करूँगा।

27मैं तेरे आगे आगे दहशत फैलाऊँगा। जहाँ भी तू जाएगा वहाँ मैं तमाम क़ौमों में अबतरी पैदा करूँगा। मेरे सबब से तेरे सारे दुश्मन पलटकर भाग जाएंगे।
28मैं तेरे आगे ज़ंबूर भेज दूँगा जो हिव्वी, कनानी और हित्ती को मुल्क छोड़ने पर मजबूर करेंगे।
29लेकिन जब तू वहाँ पहुँचेगा तो मैं उन्हें एक ही साल में मुल्क से नहीं निकालूँगा। वरना पूरा मुल्क वीरान हो जाएगा और जंगली जानवर फैलकर तेरे लिए नुक़सान का बाइस बन जाएंगे।
30इसलिए मैं तेरे पहुँचने पर मुल्क के बाशिंदों को थोड़ा थोड़ा करके निकालता जाऊँगा। इतने में तेरी तादाद बढ़ेगी और तू रफ़्ता रफ़्ता मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सकेगा।

31मैं तेरी सरहद्दें मुक़र्रर करूँगा। बहरे-क़ुलज़ुम एक हद होगी और फ़िलिस्तियों का समुंदर दूसरी, जुनूब का रेगिस्तान एक होगी और दरियाए-फ़ुरात दूसरी। मैं मुल्क के बाशिंदों को तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा, और तू उन्हें अपने आगे आगे मुल्क से दूर करता जाएगा।
32लाज़िम है कि तू उनके साथ या उनके माबूदों के साथ अहद न बाँधे।
33उनका तेरे मुल्क में रहना मना है, वरना तू उनके सबब से मेरा गुनाह करेगा। अगर तू उनके माबूदों की इबादत करेगा तो यह तेरे लिए फंदा बन जाएगा’।”

रब इसराईल से अहद बाँधता है

24 रब ने मूसा से कहा, “तू, हारून, नदब, अबीहू और इसराईल के 70 बुज़ुर्ग मेरे पास ऊपर आएँ। कुछ फ़ासले पर खड़े होकर मुझे सिजदा करो।
2सिर्फ़ तू अकेला ही मेरे क़रीब आ, दूसरे दूर रहें। और क़ौम के बाक़ी लोग तेरे साथ पहाड़ पर न चढ़ें।”

3तब मूसा ने क़ौम के पास जाकर रब की तमाम बातें और अहकाम पेश किए। जवाब में सबने मिलकर कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे।”

4तब मूसा ने रब की तमाम बातें लिख लीं। अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठा और पहाड़ के पास गया। उसके दामन में उसने क़ुरबानगाह बनाई। साथ ही उसने इसराईल के हर एक क़बीले के लिए एक एक पत्थर का सतून खड़ा किया।
5फिर उसने कुछ इसराईली नौजवानों को क़ुरबानी पेश करने के लिए बुलाया ताकि वह रब की ताज़ीम में भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ और जवान बैलों को सलामती की क़ुरबानी के तौर पर पेश करें।
6मूसा ने क़ुरबानियों का ख़ून जमा किया। उसका आधा हिस्सा उसने बासनों में डाल दिया और आधा हिस्सा क़ुरबानगाह पर छिड़क दिया।

7फिर उसने वह किताब ली जिसमें रब के साथ
अहद की तमाम शरायत दर्ज थीं और उसे क़ौम
को पढ़कर सुनाया। जवाब में उन्होंने कहा, “हम
रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उस
की सुनेंगे।” 8इस पर मूसा ने बासनों में से ख़ून
लेकर उसे लोगों पर छिड़का और कहा, “यह ख़ून
उस अहद की तसदीक़ करता है जो रब ने तुम्हारे
साथ किया है और जो उस की तमाम बातों पर
मबनी है।”

9इसके बाद मूसा, हारून, नदब, अबीहू और
इसराईल के 70 बुज़ुर्ग सीना पहाड़ पर चढ़े।
10वहाँ उन्होंने इसराईल के ख़ुदा को देखा। लगता
था कि उसके पाँवों के नीचे संगे-लाजवर्द का-
सा तख़्ता था। वह आसमान की मानिंद साफ़ो-
शफ़्फ़ाफ़ था। 11अगरचे इसराईल के राहनुमाओं
ने यह सब कुछ देखा तो भी रब ने उन्हें हलाक
न किया, बल्कि वह अल्लाह को देखते रहे और
उसके हुज़ूर अहद का खाना खाते और पीते रहे।

पत्थर की तख़्तियाँ

12पहाड़ से उतरने के बाद रब ने मूसा से कहा,
“मेरे पास पहाड़ पर आकर कुछ देर के लिए ठहरे
रहना। मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर
मैंने अपनी शरीअत और अहकाम लिखे हैं और जो
इसराईल की तालीमो-तरबियत के लिए ज़रूरी
हैं।”

13मूसा अपने मददगार यशुअ के साथ चल
पड़ा और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया। 14पहले
उसने बुज़ुर्गों से कहा, “हमारी वापसी के इंतज़ार
में यहाँ ठहरे रहो। हारून और हूर तुम्हारे पास
रहेंगे। कोई भी मामला हो तो लोग उन्हीं के पास
जाएँ।”

मूसा रब से मिलता है

15जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल
छा गया। 16रब का जलाल कोहे-सीना पर उतर
आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा।
सातवें दिन रब ने बादल में से मूसा को बुलाया।
17रब का जलाल इसराईलियों को भी नज़र आता
था। उन्हें यों लगा जैसा कि पहाड़ की चोटी पर
तेज़ आग भड़क रही हो। 18चढ़ते चढ़ते मूसा
बादल में दाख़िल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और
चालीस रात रहा।

मुलाक़ात का ख़ैमा बनाने के लिए हदिये

25 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बता कि वह हदिये लाकर
मुझे उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करें।
लेकिन सिर्फ़ उनसे हदिये क़बूल करो जो दिली
ख़ुशी से दें। 3उनसे यह चीज़ें हदिये के तौर
पर क़बूल करो : सोना, चाँदी, पीतल; 4नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा, बारीक
कतान, बकरी के बाल, 5मेंढों की सुर्ख़ रँगी हुई
खालें, तख़स[a] की खालें, कीकर की लकड़ी,
6शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह करने के
लिए तेल और ख़ुशबूदार बख़ूर के लिए मसाले,
7अक़ीक़े-अहमर और दीगर जवाहिर जो इमामे-
आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े
जाएंगे। 8इन चीज़ों से लोग मेरे लिए मक़दिस
बनाएँ ताकि मैं उनके दरमियान रहूँ। 9मैं तुझे
मक़दिस और उसके तमाम सामान का नमूना
दिखाऊँगा, क्योंकि तुम्हें सब कुछ ऐन उसी के
मुताबिक़ बनाना है।

अहद का संदूक़

10-12लोग कीकर की लकड़ी का संदूक़
बनाएँ। उस की लंबाई पौने चार फ़ुट हो जबकि
उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फ़ुट हो।
पूरे संदूक़ पर अंदर और बाहर से ख़ालिस सोना
चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की
झालर लगाना। संदूक़ को उठाने के लिए सोने
के चार कड़े ढालकर उन्हें संदूक़ के चारपाइयों

[a]ग़ालिबन इस मतरूक इबरानी लफ़्ज़ से मुराद कोई
समुंदरी जानवर है।

पर लगाना। दोनों तरफ़ दो दो कड़े हों। 13फिर
कीकर की दो लकड़ियाँ संदूक़ को उठाने के लिए
तैयार करना। उन पर सोना चढ़ाकर 14उनको
दोनों तरफ़ के कड़ों में डालना ताकि उनसे संदूक़
को उठाया जाए। 15यह लकड़ियाँ संदूक़ के इन
कड़ों में पड़ी रहें। उन्हें कभी भी दूर न किया जाए।
16संदूक़ में शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रखना जो
मैं तुझे दूँगा।

17संदूक़ का ढकना ख़ालिस सोने का बनाना।
उस की लंबाई पौने चार फ़ुट और चौड़ाई सवा
दो फ़ुट हो। उसका नाम कफ़्फ़ारे का ढकना है।
18-19सोने से घड़कर दो करूबी फ़रिश्ते बनाए
जाएँ जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े हों। यह दो
फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाने हैं।
20फ़रिश्तों के पर यों ऊपर की तरफ़ फैले हुए हों
कि वह ढकने को पनाह दें। उनके मुँह एक दूसरे
की तरफ़ किए हुए हों, और वह ढकने की तरफ़
देखें।

21ढकने को संदूक़ पर लगा, और संदूक़ में
शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रख जो मैं तुझे दूँगा।
22वहाँ ढकने के ऊपर दोनों फ़रिश्तों के दरमियान
से मैं अपने आपको तुझ पर ज़ाहिर करके तुझसे
हमकलाम हूँगा और तुझे इसराईलियों के लिए
तमाम अहकाम दूँगा।

मख़सूस रोटियों की मेज़

23कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाना। उस की
लंबाई तीन फ़ुट, चौड़ाई डेढ़ फ़ुट और ऊँचाई सवा
दो फ़ुट हो। 24उस पर ख़ालिस सोना चढ़ाना, और
उसके इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। 25मेज़
की ऊपर की सतह पर चौखटा लगाना जिसकी
ऊँचाई तीन इंच हो और जिस पर सोने की झालर
लगी हो। 26सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों
कोनों पर लगाना जहाँ मेज़ के पाए लगे हैं। 27यह
कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए
जाएँ। उनमें वह लकड़ियाँ डालनी हैं जिनसे मेज़
को उठाया जाएगा। 28यह लकड़ियाँ भी कीकर
की हों और उन पर सोना चढ़ाया जाए। उनसे मेज़
को उठाना है।

29उसके थाल, प्याले, मरतबान और मै की
नज़रें पेश करने के बरतन ख़ालिस सोने से बनाना
है। 30मेज़ पर वह रोटियाँ हर वक़्त मेरे हुज़ूर पड़ी
रहें जो मेरे लिए मख़सूस हैं।

शमादान

31ख़ालिस सोने का शमादान भी बनाना।
उसका पाया और डंडी घड़कर बनाना है। उस की
प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शक्ल की
होंगी पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा हों।
32डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाख़ें
निकलें। 33हर शाख़ पर तीन प्यालियाँ लगी हों
जो बादाम की कलियों और फूलों की शक्ल की
हों। 34शमादान की डंडी पर भी इस क़िस्म की
प्यालियाँ लगी हों, लेकिन तादाद में चार। 35इनमें
से तीन प्यालियाँ दाएँ-बाएँ की छः शाख़ों के नीचे
लगी हों। वह यों लगी हों कि हर प्याली से दो
शाख़ें निकलें। 36शाख़ें और प्यालियाँ बल्कि पूरा
शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़कर
बनाना है।

37शमादान के लिए सात चराग़ बनाकर उन्हें यों
शाख़ों पर रखना कि वह सामने की जगह रौशन
करें। 38बत्ती कतरने की क़ैंचियाँ और जलते
कोयले के लिए छोटे बरतन भी ख़ालिस सोने से
बनाए जाएँ। 39शमादान और उस सारे सामान के
लिए पूरे 34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल
किया जाए। 40ग़ौर कर कि सब कुछ ऐन उस
नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ
पहाड़ पर दिखाता हूँ।

मुलाक़ात का ख़ैमा

26 मुक़द्दस ख़ैमे के लिए दस परदे
बनाना। उनके लिए बारीक क-
तान और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग
का धागा इस्तेमाल करना। परदों में किसी माहिर
कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का

डिज़ायन बनवाना। 2हर परदे की लंबाई 42 फ़ुट
और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 3पाँच परदों के लंबे हाशिये
एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाक़ी
पाँच भी। यों दो बड़े टुकड़े बन जाएंगे। 4दोनों
टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए नीले
धागे के हलक़े बनाना। यह हलक़े हर टुकड़े के
42 फ़ुटवाले एक किनारे पर लगाए जाएँ, 5एक
टुकड़े के हाशिये पर 50 हलक़े और दूसरे पर भी
उतने ही हलक़े। इन दो हाशियों के हलक़े एक
दूसरे के आमने-सामने हों। 6फिर सोने की 50
हुकें बनाकर उनसे आमने-सामने के हलक़े एक
दूसरे के साथ मिलाना। यों दोनों टुकड़े जुड़कर
ख़ैमे का काम देंगे।

7बकरी के बालों से भी 11 परदे बनाना जिन्हें
कपड़ेवाले ख़ैमे के ऊपर रखा जाए। 8हर परदे
की लंबाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 9पाँच
परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ
और इसी तरह बाक़ी छः भी। इन छः परदों के छटे
परदे को एक दफ़ा तह करना। यह सामनेवाले
हिस्से से लटके।

10बकरी के बाल के इन दोनों टुकड़ों को
भी मिलाना है। इसके लिए हर टुकड़े के 45
फ़ुटवाले एक किनारे पर पचास पचास हलक़े
लगाना। 11फिर पीतल की 50 हुकें बनाकर उनसे
दोनों हिस्से मिलाना। 12जब बकरियों के बालों
का यह ख़ैमा कपड़े के ख़ैमे के ऊपर लगाया
जाएगा तो आधा परदा बाक़ी रहेगा। वह ख़ैमे की
पिछली तरफ़ लटका रहे। 13ख़ैमे के दाईं और
बाईं तरफ़ बकरी के बालों का ख़ैमा कपड़े के
ख़ैमे की निसबत डेढ़ डेढ़ फ़ुट लंबा होगा। यों वह
दोनों तरफ़ लटके हुए कपड़े के ख़ैमे को महफ़ूज़
रखेगा।

14एक दूसरे के ऊपर के इन दोनों ख़ैमों की
हिफ़ाज़त के लिए दो ग़िलाफ़ बनाने हैं। बकरी के
बालों के ख़ैमे पर मेंढों की सुर्ख़ रँगी हुई खालें
जोड़कर रखी जाएँ और उन पर तख़स की खालें
मिलाकर रखी जाएँ।

15कीकर की लकड़ी के तख़्ते बनाना जो खड़े
किए जाएँ ताकि ख़ैमे की दीवारों का काम दें।
16हर तख़्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट हो और चौड़ाई
सवा दो फ़ुट। 17हर तख़्ते के नीचे दो दो चूलें
हों। यह चूलें हर तख़्ते को उसके पाइयों के साथ
जोड़ेंगी ताकि तख़्ता खड़ा रहे। 18ख़ैमे की जुनूबी
दीवार के लिए 20 तख़्तों की ज़रूरत है 19और
साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। उन पर तख़्ते
खड़े किए जाएंगे। हर तख़्ते के नीचे दो पाए होंगे,
और हर पाए में एक चूल लगेगी। 20इसी तरह
ख़ैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़्तों
की ज़रूरत है 21और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों
की। वह भी तख़्तों को खड़ा करने के लिए हैं। हर
तख़्ते के नीचे दो पाए होंगे। 22ख़ैमे की पिछली
यानी मग़रिबी दीवार के लिए छः तख़्ते बनाना।
23इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के
साथ जोड़ने के लिए कोनेवाले दो तख़्ते बनाना।
24इन दो तख़्तों में नीचे से लेकर ऊपर तक कोना
हो ताकि एक से शिमाली दीवार मग़रिबी दीवार
के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार
मग़रिबी दीवार के साथ। इनके ऊपर के सिरे कड़ों
से मज़बूत किए जाएँ। 25यों पिछले यानी मग़रिबी
तख़्तों की पूरी तादाद 8 होगी और इनके लिए
चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख़्ते के नीचे
दो दो पाए होंगे।

26-27इसके अलावा कीकर की लकड़ी के
शहतीर बनाना, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच
शहतीर। वह हर दीवार के तख़्तों पर यों लगाए
जाएँ कि वह उन्हें एक दूसरे के साथ मिलाएँ।
28दरमियानी शहतीर दीवार की आधी ऊँचाई पर
दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगाया
जाए। 29शहतीरों को तख़्तों के साथ लगाने के
लिए सोने के कड़े बनाकर तख़्तों में लगाना।
तमाम तख़्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाना।

30पूरे मुक़द्दस ख़ैमे को उसी नमूने के मुताबिक़
बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ। 31अब
एक और परदा बनाना। इसके लिए भी बारीक
कतान और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग

का धागा इस्तेमाल करना। उस पर भी किसी
माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी
फ़रिश्तों का डिज़ायन बनवाना। 32इसे सोने की
हुकों से कीकर की लकड़ी के चार सतूनों से
लटकाना। इन सतूनों पर सोना चढ़ाया जाए और
वह चाँदी के पाइयों पर खड़े हों। 33यह परदा
मुक़द्दस कमरे को मुक़द्दसतरीन कमरे से अलग
करेगा जिसमें अहद का संदूक़ पड़ा रहेगा। परदे
को लटकाने के बाद उसके पीछे मुक़द्दसतरीन
कमरे में अहद का संदूक़ रखना। 34फिर अहद
के संदूक़ पर कफ़्फ़ारे का ढकना रखना।

35जिस मेज़ पर मेरे लिए मख़सूस की गई
रोटियाँ पड़ी रहती हैं वह परदे के बाहर मुक़द्दस
कमरे में शिमाल की तरफ़ रखी जाए। उसके
मुक़ाबिल जुनूब की तरफ़ शमादान रखा जाए।

36फिर ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी परदा
बनाया जाए। इसके लिए भी बारीक कतान और
नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा
इस्तेमाल किया जाए। इस पर कढ़ाई का काम
किया जाए। 37इस परदे को सोने की हुकों से
कीकर की लकड़ी के पाँच सतूनों से लटकाना।
इन सतूनों पर भी सोना चढ़ाया जाए, और वह
पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह

27 कीकर की लकड़ी की क़ुरबान-
गाह बनाना। उस की ऊँचाई साढ़े चार
फ़ुट हो जबकि उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े
सात सात फ़ुट हो। 2उसके ऊपर चारों कोनों में से
एक एक सींग निकले। सींग और क़ुरबानगाह एक
ही टुकड़े के हों। सब पर पीतल चढ़ाना। 3उसका
तमाम साज़ो-सामान और बरतन भी पीतल के
हों यानी राख को उठाकर ले जाने की बालटियाँ,
बेलचे, काँटे, जलते हुए कोयले के लिए बरतन
और छिड़काव के कटोरे।

4क़ुरबानगाह को उठाने के लिए पीतल का
जंगला बनाना जो ऊपर से खुला हो। जंगले के
चारों कोनों पर कड़े लगाए जाएँ। 5क़ुरबानगाह
की आधी ऊँचाई पर किनारा लगाना, और
क़ुरबानगाह को जंगले में इस किनारे तक रखा
जाए। 6उसे उठाने के लिए कीकर की दो
लकड़ियाँ बनाना जिन पर पीतल चढ़ाना है।
7उनको क़ुरबानगाह के दोनों तरफ़ के कड़ों में
डाल देना।

8पूरी क़ुरबानगाह लकड़ी की हो, लेकिन अंदर
से खोखली हो। उसे ऐन उस नमूने के मुताबिक़
बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

ख़ैमे का सहन

9मुक़द्दस ख़ैमे के लिए सहन बनाना। उस की
चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई जाए।
चारदीवारी की लंबाई जुनूब की तरफ़ 150 फ़ुट
हो। 10कपड़े को चाँदी की हुकों और पट्टियों से
लकड़ी के 20 खंबों के साथ लगाया जाए। हर
खंबा पीतल के पाए पर खड़ा हो। 11चारदीवारी
शिमाल की तरफ़ भी इसी की मानिंद हो। 12ख़ैमे
के पीछे मग़रिब की तरफ़ चारदीवारी की चौड़ाई
75 फ़ुट हो और कपड़ा लकड़ी के 10 खंबों के
साथ लगाया जाए। यह खंबे भी पीतल के पाइयों
पर खड़े हों।

13सामने, मशरिक़ की तरफ़ जहाँ से सूरज
तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फ़ुट
हो। 14-15यहाँ चारदीवारी का दरवाज़ा हो। कपड़ा
दरवाज़े के दाईं तरफ़ साढ़े 22 फ़ुट चौड़ा हो
और उसके बाईं तरफ़ भी उतना ही चौड़ा। उसे
दोनों तरफ़ तीन तीन लकड़ी के खंबों के साथ
लगाया जाए जो पीतल के पाइयों पर खड़े हों।
16दरवाज़े का परदा 30 फ़ुट चौड़ा बनाना। वह
नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और
बारीक कतान से बनाया जाए, और उस पर कढ़ाई
का काम हो। यह कपड़ा लकड़ी के चार खंबों के
साथ लगाया जाए। वह भी पीतल के पाइयों पर
खड़े हों।

17तमाम खंबे पीतल के पाइयों पर खड़े हों और
कपड़ा चाँदी की हुकों और पट्टियों से हर खंबे
के साथ लगाया जाए। 18चारदीवारी की लंबाई

150 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट हो। खंबों के तमाम पाए पीतल के हों।
19जो भी साज़ो-सामान मुक़द्दस ख़ैमे में इस्तेमाल किया जाता है वह सब पीतल का हो। ख़ैमे और चारदीवारी की मेख़ें भी पीतल की हों।

शमादान का तेल

20इसराईलियों को हुक्म देना कि वह तेरे पास कूटे हुए ज़ैतूनों का ख़ालिस तेल लाएँ ताकि मुक़द्दस कमरे के शमादान के चराग़ मुतवातिर जलते रहें।
21हारून और उसके बेटे शमादान को मुलाक़ात के ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में रखें, उस परदे के सामने जिसके पीछे अहद का संदूक़ है। उसमें वह तेल डालते रहें ताकि वह रब के सामने शाम से लेकर सुबह तक जलता रहे। इसराईलियों का यह उसूल अबद तक क़ायम रहे।

इमामों के लिबास

28 अपने भाई हारून और उसके बेटों नदब, अबीहू, इलियज़र और इतमर को बुला। मैंने उन्हें इसराईलियों में से चुन लिया है ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत करें।
2अपने भाई हारून के लिए मुक़द्दस लिबास बनवाना जो पुरवक़ार और शानदार हों।
3लिबास बनाने की ज़िम्मेदारी उन तमाम लोगों को देना जो ऐसे कामों में माहिर हैं और जिनको मैंने हिकमत की रूह से भर दिया है। क्योंकि जब हारून को मख़सूस किया जाएगा और वह मुक़द्दस ख़ैमे की ख़िदमत सरंजाम देगा तो उसे इन कपड़ों की ज़रूरत होगी।
4उसके लिए यह लिबास बनाने हैं : सीने का कीसा, बालापोश, चोग़ा, बुना हुआ ज़ेरजामा, पगड़ी और कमरबंद। यह कपड़े अपने भाई हारून और उसके बेटों के लिए बनवाने हैं ताकि वह इमाम के तौर पर ख़िदमत कर सकें।
5इन कपड़ों के लिए सोना और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

हारून का बालापोश

6बालापोश को भी सोने और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाना है। उस पर किसी माहिर कारीगर से कढ़ाई का काम करवाया जाए।
7उस की दो पट्टियाँ हों जो कंधों पर रखकर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगी हों।
8इसके अलावा एक पटका बुनना है जिससे बालापोश को बाँधा जाए और जो बालापोश के साथ एक टुकड़ा हो। उसके लिए भी सोना, नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

9फिर अक़ीक़े-अहमर के दो पत्थर चुनकर उन पर इसराईल के बारह बेटों के नाम कंदा करना।
10हर जौहर पर छः छः नाम उनकी पैदाइश की तरतीब के मुताबिक़ कंदा किए जाएँ।
11यह नाम उस तरह जौहरों पर कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर कंदा की जाती है। फिर दोनों जौहर सोने के ख़ानों में जड़कर
12बालापोश की दो पट्टियों पर ऐसे लगाना कि कंधों पर आ जाएँ। जब हारून मेरे हुज़ूर आएगा तो जौहरों पर के यह नाम उसके कंधों पर होंगे और मुझे इसराईलियों की याद दिलाएँगे।

13सोने के ख़ाने बनाना
14और ख़ालिस सोने की दो ज़ंजीरें जो डोरी की तरह गुँधी हुई हों। फिर इन दो ज़ंजीरों को सोने के ख़ानों के साथ लगाना।

सीने का कीसा

15सीने के लिए कीसा बनाना। उसमें वह क़ुरे पड़े रहें जिनकी मारिफ़त मेरी मरज़ी मालूम की जाएगी। माहिर कारीगर उसे उन्हीं चीज़ों से बनाए जिनसे हारून का बालापोश बनाया गया है यानी सोने और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से।
16जब कपड़े को एक दफ़ा तह किया गया हो तो कीसे की लंबाई और चौड़ाई नौ नौ इंच हो।

17उस पर चार क़तारों में जवाहिर जड़-ना। हर क़तार में तीन तीन जौहर हों। पहली

क़तार में लाल,[a] ज़बरजद[b] और ज़ुमुर्रद। 18दूसरी
में फ़ीरोज़ा, संगे-लाजवर्द[c] और हजरुल-क़मर।[d]
19तीसरी में ज़रक़ोन,[e] अक़ीक़[f] और याक़ूते-
अरग़वानी।[g] 20चौथी में पुखराज,[h] अक़ीक़े-
अहमर[i] और यशब।[j] हर जौहर सोने के ख़ाने में
जड़ा हुआ हो। 21यह बारह जवाहिर इसराईल के
बारह क़बीलों की नुमाइंदगी करते हैं। एक एक
जौहर पर एक क़बीले का नाम कंदा किया जाए।
यह नाम उस तरह कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर
कंदा की जाती है।

22सीने के कीसे पर ख़ालिस सोने की दो
ज़ंजीरें लगाना जो डोरी की तरह गुँधी हुई हों।
23उन्हें लगाने के लिए दो कड़े बनाकर कीसे
के ऊपर के दो कोनों पर लगाना। 24अब दोनों
ज़ंजीरें उन दो कड़ों से लगाना। 25उनके दूसरे सिरे
बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों के दो ख़ानों के
साथ जोड़ देना, फिर सामने की तरफ़ लगाना।
26कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो
कड़े लगाना। वह अंदर, बालापोश की तरफ़ लगे
हों। 27अब दो और कड़े बनाकर बालापोश की
कंधोंवाली पट्टियों पर लगाना। यह भी सामने की
तरफ़ लगे हों लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के
ऊपर ही। 28सीने के कीसे के निचले कड़े नीली
डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ
बाँधे जाएँ। यों कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह
सीने के साथ लगा रहेगा।

29जब भी हारून मक़दिस में दाख़िल होकर रब
के हुज़ूर आएगा वह इसराईली क़बीलों के नाम
अपने दिल पर सीने के कीसे की सूरत में साथ ले
जाएगा। यों वह क़ौम की याद दिलाता रहेगा।

30सीने के कीसे में दोनों क़ुरे बनाम ऊरीम और
तुम्मीम रखे जाएँ। वह भी मक़दिस में रब के
सामने आते वक़्त हारून के दिल पर हों। यों जब
हारून रब के हुज़ूर होगा तो रब की मरज़ी पूछने
का वसीला हमेशा उसके दिल पर होगा।

हारून का चोग़ा

31चोग़ा भी बुनना। वह पूरी तरह नीले धागे से
बनाया जाए। चोग़े को बालापोश से पहले पहना
जाए। 32उसके गरेबान को बुने हुए कालर से
मज़बूत किया जाए ताकि वह न फटे। 33नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे से अनार
बनाकर उन्हें चोग़े के दामन में लगा देना। उनके
दरमियान सोने की घंटियाँ लगाना। 34दामन में
अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाना।

35हारून ख़िदमत करते वक़्त हमेशा चोग़ा
पहने। जब वह मक़दिस में रब के हुज़ूर आएगा
और वहाँ से निकलेगा तो घंटियाँ सुनाई देंगी। फिर
वह नहीं मरेगा।

माथे पर छोटी तख़्ती, ज़ेरजामा और पगड़ी

36ख़ालिस सोने की तख़्ती बनाकर उस पर यह
अलफ़ाज़ कंदा करना, 'रब के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस।' यह अलफ़ाज़ यों कंदा किए जाएँ जिस
तरह मुहर कंदा की जाती है। 37उसे नीली डोरी
से पगड़ी के सामनेवाले हिस्से से लगाया जाए
38ताकि वह हारून के माथे पर पड़ी रहे। जब
भी वह मक़दिस में जाए तो यह तख़्ती साथ
हो। जब इसराईली अपने नज़राने लाकर रब
के लिए मख़सूस करें लेकिन किसी ग़लती के
बाइस क़ुसूरवार हों तो उनका यह क़ुसूर हारून
पर मुंतक़िल होगा। इसलिए यह तख़्ती हर वक़्त
उसके माथे पर हो ताकि रब इसराईलियों को
क़बूल कर ले।

[a]या एक क़िस्म का सुर्ख़ अक़ीक़। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अकसर जवाहिरात के नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरजुमा हो सकता है।
[b]peridot
[c]lapis lazuli
[d]moonstone
[e]hyacinth
[f]agate
[g]amethyst
[h]topas
[i]carnelian
[j]jasper

39ज़ेरजामे को बारीक कतान से बुनना और इस तरह पगड़ी भी। फिर कमरबंद बनाना। उस पर कढ़ाई का काम किया जाए।

बाक़ी लिबास

40हारून के बेटों के लिए भी ज़ेरजामे, कमरबंद और पगड़ियाँ बनाना ताकि वह पुरवक़ार और शानदार नज़र आएँ। 41यह सब अपने भाई हारून और उसके बेटों को पहनाना। उनके सरों पर तेल उंडेलकर उन्हें मसह करना। यों उन्हें उनके ओहदे पर मुक़र्रर करके मेरी ख़िदमत के लिए मख़सूस करना।

42उनके लिए कतान के पाजामे भी बनाना ताकि वह ज़ेरजामे के नीचे नंगे न हों। उनकी लंबाई कमर से रान तक हो। 43जब भी हारून और उसके बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हों तो उन्हें यह पाजामे पहनने हैं। इसी तरह जब उन्हें मुक़द्दस कमरे में ख़िदमत करने के लिए क़ुरबानगाह के पास आना होता है तो वह यह पहनें, वरना वह क़ुसूरवार ठहरकर मर जाएंगे। यह हारून और उस की औलाद के लिए एक अबदी उसूल है।

इमामों की मख़सूसियत

29 इमामों को मक़दिस में मेरी ख़िदमत के लिए मख़सूस करने का यह तरीक़ा है :

एक जवान बैल और दो बेऐब मेंढे चुन लेना। 2बेहतरीन मैदे से तीन क़िस्म की चीज़ें पकाना जिनमें ख़मीर न हो। पहले, सादा रोटी। दूसरे, रोटी जिसमें तेल डाला गया हो। तीसरे, रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो। 3यह चीज़ें टोकरी में रखकर जवान बैल और दो मेंढों के साथ रब को पेश करना। 4फिर हारून और उसके बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाकर ग़ुस्ल कराना। 5इसके बाद ज़ेरजामा, चोग़ा, बालापोश और सीने का कीसा लेकर हारून को पहनाना। बालापोश को उसके महारत से बुने हुए पटके के ज़रीए बाँधना। 6उसके सर पर पगड़ी बाँधकर उस पर सोने की मुक़द्दस तख़्ती लगाना। 7हारून के सर पर मसह का तेल उंडेलकर उसे मसह करना।

8फिर उसके बेटों को आगे लाकर ज़ेर-जामा पहनाना। 9उनके पगड़ियाँ और कमर-बंद बाँधना। यों तू हारून और उसके बेटों को उनके मंसब पर मुक़र्रर करना। सिर्फ़ वह और उनकी औलाद हमेशा तक मक़दिस में मेरी ख़िदमत करते रहें।

10बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने लाना। हारून और उसके बेटे उसके सर पर अपने हाथ रखें। 11उसे ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रब के हुज़ूर ज़बह करना। 12बैल के ख़ून में से कुछ लेकर अपनी उँगली से क़ुरबानगाह के सींगों पर लगाना और बाक़ी ख़ून क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेल देना। 13अंतड़ियों पर की तमाम चरबी, जोड़कलेजी और दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत लेकर क़ुरबानगाह पर जला देना। 14लेकिन बैल के गोश्त, खाल और अंतड़ियों के गोबर को ख़ैमागाह के बाहर जला देना। यह गुनाह की क़ुरबानी है।

15इसके बाद पहले मेंढे को ले आना। हारून और उसके बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 16उसे ज़बह करके उसका ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कना। 17मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके उस की अंतड़ियों और पिंडलियों को धोना। फिर उन्हें सर और बाक़ी टुकड़ों के साथ मिलाकर 18पूरे मेंढे को क़ुरबानगाह पर जला देना। जलनेवाली यह क़ुरबानी रब के लिए भस्म होनेवाली क़ुरबानी है, और उस की ख़ुशबू रब को पसंद है।

19अब दूसरे मेंढे को ले आना। हारून और उसके बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 20उसको ज़बह करना। उसके ख़ून में से कुछ लेकर हारून और उसके बेटों के दहने कान की लौ पर लगाना। इसी तरह ख़ून को उनके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर भी लगाना। बाक़ी ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कना।

21जो ख़ून क़ुरबानगाह पर पड़ा है उसमें से कुछ लेकर और मसह के तेल के साथ मिलाकर हारून और उसके कपड़ों पर छिड़कना। इसी तरह उसके बेटों और उनके कपड़ों पर भी छिड़कना। यों वह और उसके बेटे ख़िदमत के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएंगे।

22इस मेंढे का ख़ास मक़सद यह है कि हारून और उसके बेटों को मक़दिस में ख़िदमत करने का इख़्तियार और ओहदा दिया जाए। मेंढे की चरबी, दुम, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, जोड़कलेजी, दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत और दहनी रान अलग करनी है। 23उस टोकरी में से जो रब के हुज़ूर यानी ख़ैमे के दरवाज़े पर पड़ी है एक सादा रोटी, एक रोटी जिसमें तेल डाला गया हो और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो निकालना। 24मेंढे से अलग की गई चीज़ें और बेख़मीरी रोटी की टोकरी की यह चीज़ें लेकर हारून और उसके बेटों के हाथों में देना, और वह उन्हें हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाएँ। 25फिर यह चीज़ें उनसे वापस लेकर भस्म होनेवाली क़ुरबानी के साथ क़ुरबानगाह पर जला देना। यह रब के लिए जलनेवाली क़ुरबानी है, और उस की ख़ुशबू रब को पसंद है।

26अब उस मेंढे का सीना लेना जिसकी मारिफ़त हारून को इमामे-आज़म का इख़्तियार दिया जाता है। सीने को भी हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाना। यह सीना क़ुरबानी का तेरा हिस्सा होगा। 27यों तुझे हारून और उसके बेटों की मख़सूसियत के लिए मुस्तामल मेंढे के टुकड़े मख़सूसो-मुक़द्दस करने हैं। उसके सीने को रब के सामने हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर हिलाया जाए और उस की रान को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर उठाया जाए। 28हारून और उस की औलाद को इसराईलियों की तरफ़ से हमेशा तक यह मिलने का हक़ है। जब भी इसराईली रब को अपनी सलामती की क़ुरबानियाँ पेश करें तो इमामों को यह दो टुकड़े मिलेंगे।

29जब हारून फ़ौत हो जाएगा तो उसके मुक़द्दस लिबास उस की औलाद में से उस मर्द को देने हैं जिसे मसह करके हारून की जगह मुक़र्रर किया जाएगा। 30जो बेटा उस की जगह मुक़र्रर किया जाएगा और मक़दिस में ख़िदमत करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में आएगा वह यह लिबास सात दिन तक पहने रहे।

31जो मेंढा हारून और उसके बेटों की मख़सूसियत के लिए ज़बह किया गया है उसे मुक़द्दस जगह पर उबालना है। 32फिर हारून और उसके बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर मेंढे का गोश्त और टोकरी की बेख़मीरी रोटियाँ खाएँ। 33वह यह चीज़ें खाएँ जिनसे उन्हें गुनाहों का कफ़्फ़ारा और इमाम का ओहदा मिला है। लेकिन कोई और यह न खाए, क्योंकि यह मख़सूसो-मुक़द्दस हैं। 34और अगर अगली सुबह तक इस गोश्त या रोटी में से कुछ बच जाए तो उसे जलाया जाए। उसे खाना मना है, क्योंकि वह मुक़द्दस है।

35जब तू हारून और उसके बेटों को इमाम मुक़र्रर करेगा तो ऐन मेरी हिदायत पर अमल करना। यह तक़रीब सात दिन तक मनाई जाए। 36इसके दौरान गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर रोज़ाना एक जवान बैल ज़बह करना। इससे तू क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा देकर उसे हर तरह की नापाकी से पाक करेगा। इसके अलावा उस पर मसह का तेल उंडेलना। इससे वह मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएगा। 37सात दिन तक क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा देकर उसे पाक-साफ़ करना और उसे तेल से मख़सूसो-मुक़द्दस करना। फिर क़ुरबानगाह निहायत मुक़द्दस होगी। जो भी उसे छुएगा वह भी मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएगा।

रोज़मर्रा की क़ुरबानियाँ

38रोज़ाना एक एक साल के दो भेड़ के नर बच्चे क़ुरबानगाह पर जला देना, 39एक को सुबह के वक़्त, दूसरे को सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन

बाद। 40पहले जानवर के साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश किया जाए जो कूटे हुए ज़ैतूनों के एक लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। मै की नज़र के तौर पर एक लिटर मै भी क़ुरबानगाह पर उंडेलना। 41दूसरे जानवर के साथ भी ग़ल्ला और मै की यह दो नज़रें पेश की जाएँ। ऐसी क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है।

42लाज़िम है कि आनेवाली तमाम नसलें भस्म होनेवाली यह क़ुरबानी बाक़ायदगी से मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के हुज़ूर चढ़ाएँ। वहाँ मैं तुमसे मिला करूँगा और तुमसे हमकलाम हूँगा। 43वहाँ मैं इसराईलियों से भी मिला करूँगा, और वह जगह मेरे जलाल से मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएगी। 44यों मैं मुलाक़ात के ख़ैमे और क़ुरबानगाह को मख़सूस करूँगा और हारून और उसके बेटों को मख़सूस करूँगा ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत करें।

45तब मैं इसराईलियों के दरमियान रहूँगा और उनका ख़ुदा हूँगा। 46वह जान लेंगे कि मैं रब उनका ख़ुदा हूँ, कि मैं उन्हें मिसर से निकाल लाया ताकि उनके दरमियान सुकूनत करूँ। मैं रब उनका ख़ुदा हूँ।

बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह

30 कीकर की लकड़ी की क़ुरबानगाह बनाना जिस पर बख़ूर जलाया जाए। 2वह डेढ़ फ़ुट लंबी, इतनी ही चौड़ी और तीन फ़ुट ऊँची हो। उसके चारों कोनों में से सींग निकलें जो क़ुरबानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए हों। 3उस की ऊपर की सतह, उसके चार पहलुओं और उसके सींगों पर ख़ालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर हो। 4सोने के दो कड़े बनाकर इन्हें उस झालर के नीचे एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलुओं पर लगाना। इन कड़ों में क़ुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली जाएँगी। 5यह लकड़ियाँ कीकर की हों, और उन पर भी सोना चढ़ाना।

6इस क़ुरबानगाह को ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में उस परदे के सामने रखना जिसके पीछे अहद का संदूक़ और उसका ढकना होंगे, वह ढकना जहाँ मैं तुझसे मिला करूँगा। 7जब हारून हर सुबह शमादान के चराग़ तैयार करे उस वक़्त वह उस पर ख़ुशबूदार बख़ूर जलाए। 8सूरज के ग़ुरूब होने के बाद भी जब वह दुबारा चराग़ों की देख-भाल करेगा तो वह साथ साथ बख़ूर जलाए। यों रब के सामने बख़ूर मुतवातिर जलता रहे। लाज़िम है कि बाद की नसलें भी इस उसूल पर क़ायम रहें।

9इस क़ुरबानगाह पर सिर्फ़ जायज़ बख़ूर इस्तेमाल किया जाए। इस पर न तो जानवरों की क़ुरबानियाँ चढ़ाई जाएँ, न ग़ल्ला या मै की नज़रें पेश की जाएँ। 10हारून साल में एक दफ़ा उसका कफ़्फ़ारा देकर उसे पाक करे। इसके लिए वह कफ़्फ़ारे के दिन उस क़ुरबानी का कुछ ख़ून सींगों पर लगाए। यह उसूल भी अबद तक क़ायम रहे। यह क़ुरबानगाह रब के लिए निहायत मुक़द्दस है।”

मर्दुमशुमारी के पैसे

11रब ने मूसा से कहा, 12“जब भी तू इसराईलियों की मर्दुमशुमारी करे तो लाज़िम है कि जिनका शुमार किया गया हो वह रब को अपनी जान का फ़िद्या दें ताकि उनमें वबा न फैले। 13जिस जिसका शुमार किया गया हो वह चाँदी के आधे सिक्के के बराबर रक़म उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर दे। सिक्के का वज़न मक़दिस के सिक्कों के बराबर हो। यानी चाँदी के सिक्के का वज़न 11 ग्राम हो, इसलिए छः ग्राम चाँदी देनी है। 14जिसकी भी उम्र 20 साल या इससे ज़ायद हो वह रब को यह रक़म उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर दे। 15अमीर और ग़रीब दोनों इतना ही दें, क्योंकि यही नज़राना रब को पेश करने से तुम्हारी जान का कफ़्फ़ारा दिया जाता है। 16कफ़्फ़ारे की यह रक़म मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल करना। फिर यह नज़राना रब को याद दिलाता रहेगा कि तुम्हारी जानों का कफ़्फ़ारा दिया गया है।”

धोने का हौज़

[17]रब ने मूसा से कहा, [18]“पीतल का ढाँचा बनाना जिस पर पीतल का हौज़ बनाकर रखना है। यह हौज़ धोने के लिए है। उसे सहन में मुलाक़ात के ख़ैमे और जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह के दरमियान रखकर पानी से भर देना। [19]हारून और उसके बेटे अपने हाथ-पाँव धोने के लिए उसका पानी इस्तेमाल करें। [20]मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होने से पहले ही वह अपने आपको धोएँ वरना वह मर जाएंगे। इसी तरह जब भी वह ख़ैमे के बाहर की क़ुरबानगाह पर जानवरों की क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ [21]तो लाज़िम है कि पहले हाथ-पाँव धो लें, वरना वह मर जाएंगे। यह उसूल हारून और उस की औलाद के लिए हमेशा तक क़ायम रहे।”

मसह का तेल

[22]रब ने मूसा से कहा, [23]“मसह के तेल के लिए उम्दा क़िस्म के मसाले इस्तेमाल करना। 6 किलोग्राम आबे-मुर, 3 किलोग्राम ख़ुशबूदार दारचीनी, 3 किलोग्राम ख़ुशबूदार बेद [24]और 6 किलोग्राम तेजपात। यह चीज़ें मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोलकर चार लिटर ज़ैतून के तेल में डालना। [25]सब कुछ मिलाकर ख़ुशबूदार तेल तैयार करना। वह मुक़द्दस है और सिर्फ़ उस वक़्त इस्तेमाल किया जाए जब कोई चीज़ या शख़्स मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।

[26]यही तेल लेकर मुलाक़ात का ख़ैमा और उसका सारा सामान मसह करना यानी ख़ैमा, अहद का संदूक़, [27]मेज़ और उसका सामान, शमादान और उसका सामान, बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह, [28]जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह और उसका सामान, धोने का हौज़ और उसका ढाँचा। [29]यों तू यह तमाम चीज़ें मख़सूसो-मुक़द्दस करेगा। इससे वह निहायत मुक़द्दस हो जाएँगी। जो भी उन्हें छुएगा वह मुक़द्दस हो जाएगा।

[30]हारून और उसके बेटों को भी इस तेल से मसह करना ताकि वह मुक़द्दस होकर मेरे लिए इमाम का काम सरंजाम दे सकें। [31]इसराईलियों को कह दे कि यह तेल हमेशा तक मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। [32]इसलिए इसे अपने लिए इस्तेमाल न करना और न इस तरकीब से अपने लिए तेल बनाना। यह तेल मख़सूसो-मुक़द्दस है और तुम्हें भी इसे यों ठहराना है। [33]जो इस तरकीब से आम इस्तेमाल के लिए तेल बनाता है या किसी आम शख़्स पर लगाता है उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।”

बख़ूर की क़ुरबानी

[34]रब ने मूसा से कहा, “बख़ूर इस तरकीब से बनाना है : मस्तकी, ओनिका,[a] बिरीजा और ख़ालिस लुबान बराबर के हिस्सों में [35]मिलाकर ख़ुशबूदार बख़ूर बनाना। इत्रसाज़ का यह काम नमकीन, ख़ालिस और मुक़द्दस हो। [36]इसमें से कुछ पीसकर पाउडर बनाना और मुलाक़ात के ख़ैमे में अहद के संदूक़ के सामने डालना जहाँ मैं तुझसे मिला करूँगा।

इस बख़ूर को मुक़द्दसतरीन ठहराना। [37]इसी तरकीब के मुताबिक़ अपने लिए बख़ूर न बनाना। इसे रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस ठहराना है। [38]जो भी अपने ज़ाती इस्तेमाल के लिए इस क़िस्म का बख़ूर बनाए उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।”

बज़लियेल और उहलियाब

31 फिर रब ने मूसा से कहा, [2]“मैंने यहूदाह के क़बीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है ताकि वह मुक़द्दस ख़ैमे की तामीर में राहनुमाई करे। [3]मैंने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। [4]वह नक़्शे बनाकर उनके मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। [5]वह जवाहिर

[a]onycha (unguis odoratus)

को काटकर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह
लकड़ी को तराशकर उससे मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना
सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत
रखता है।

6साथ ही मैंने दान के क़बीले के उहलियाब बिन
अख़ी-समक को मुक़र्रर किया है ताकि वह हर
काम में उस की मदद करे। इसके अलावा मैंने
तमाम समझदार कारीगरों को महारत दी है ताकि
वह सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बना सकें
जो मैंने तुझे दी हैं। 7यानी मुलाक़ात का ख़ैमा,
कफ़्फ़ारे के ढकने समेत अहद का संदूक़ और
ख़ैमे का सारा दूसरा सामान, 8मेज़ और उसका
सामान, ख़ालिस सोने का शमादान और उसका
सामान, बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह, 9जानवरों
को चढ़ाने की क़ुरबानगाह और उसका सामान,
धोने का हौज़ उस ढाँचे समेत जिस पर वह रखा
जाता है, 10वह लिबास जो हारून और उसके
बेटे मक़दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं,
11मसह का तेल और मक़दिस के लिए ख़ुशबूदार
बख़ूर। यह सब कुछ वह वैसे ही बनाएँ जैसे मैंने
तुझे हुक्म दिया है।”

सबत यानी हफ़्ते का दिन

12रब ने मूसा से कहा, 13“इसराईलियों को
बता कि हर सबत का दिन ज़रूर मनाओ। क्योंकि
सबत का दिन एक नुमायाँ निशान है जिससे जान
लिया जाएगा कि मैं रब हूँ जो तुम्हें मख़सूसो-
मुक़द्दस करता हूँ। और यह निशान मेरे और
तुम्हारे दरमियान नसल-दर-नसल क़ायम रहेगा।
14सबत का दिन ज़रूर मनाना, क्योंकि वह
तुम्हारे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। जो भी उस की
बेहुरमती करे वह ज़रूर जान से मारा जाए। जो
भी इस दिन काम करे उसे उस की क़ौम में से
मिटाया जाए। 15छः दिन काम करना, लेकिन
सातवाँ दिन आराम का दिन है। वह रब के लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस है।

16इसराईलियों को हाल में और मुस्तक़-
बिल में सबत का दिन अबदी अहद समझकर
मनाना है। 17वह मेरे और इसराईलियों के
दरमियान अबदी निशान होगा। क्योंकि रब ने
छः दिन के दौरान आसमानो-ज़मीन को बनाया
जबकि सातवें दिन उसने आराम किया और
ताज़ादम हो गया।”

रब शरीअत की तख़्तियाँ देता है

18यह सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब ने
उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख़्तियाँ दीं।
अल्लाह ने ख़ुद पत्थर की इन तख़्तियों पर तमाम
बातें लिखी थीं।

सोने का बछड़ा

32 पहाड़ के दामन में लोग मूसा के
इंतज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो
गई। एक दिन वह हारून के गिर्द जमा होकर
कहने लगे, “आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो
हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें।
क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या
हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।”

2जवाब में हारून ने कहा, “आपकी बीवियाँ,
बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतारकर
मेरे पास ले आएँ।” 3सब लोग अपनी बालियाँ
उतार उतारकर हारून के पास ले आए 4तो उसने
यह ज़ेवरात लेकर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को
देखकर लोग बोल उठे, “ऐ इसराईल, यह तेरे
देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।”

5जब हारून ने यह देखा तो उसने बछड़े के
सामने क़ुरबानगाह बनाकर एलान किया, “कल
हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।” 6अगले
दिन लोग सुबह-सवेरे उठे और भस्म होनेवाली
क़ुरबानियाँ और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाईं।
वह खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर
रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।

मूसा अपनी क़ौम की शफ़ाअत करता है

7उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “पहाड़ से उतर
जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिसर से निकाल लाया

बड़ी शरारतें कर रहे हैं। 8वह कितनी जल्दी से
उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए
मैंने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने अपने लिए ढाला
हुआ बछड़ा बनाकर उसे सिजदा किया है। उन्होंने
उसे क़ुरबानियाँ पेश करके कहा है, 'ऐ इसराईल,
यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिसर से निकाल लाए
हैं'।" 9अल्लाह ने मूसा से कहा, "मैंने देखा है कि
यह क़ौम बड़ी हटधर्म है। 10अब मुझे रोकने की
कोशिश न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेलकर
उनको रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह
मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बना दूँगा।"

11लेकिन मूसा ने कहा, "ऐ रब, तू अपनी क़ौम
पर अपना ग़ुस्सा क्यों उतारना चाहता है? तू ख़ुद
अपनी अज़ीम क़ुदरत से उसे मिसर से निकाल
लाया है। 12मिसरी क्यों कहें, 'रब इसराईलियों
को सिर्फ़ इस बुरे मक़सद से हमारे मुल्क से
निकाल ले गया है कि उन्हें पहाड़ी इलाक़े में मार
डाले और यों उन्हें रूए-ज़मीन पर से मिटाए'?
अपना ग़ुस्सा ठंडा होने दे और अपनी क़ौम के
साथ बुरा सुलूक करने से बाज़ रह। 13याद रख
कि तूने अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इसहाक़ और
याक़ूब से अपनी ही क़सम खाकर कहा था, 'मैं
तुम्हारी औलाद की तादाद यों बढ़ाऊँगा कि वह
आसमान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें
वह मुल्क दूँगा जिसका वादा मैंने किया है, और
वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे'।"

14मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया
जिसका एलान उसने कर दिया था बल्कि वह
अपनी क़ौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

बुतपरस्ती के नतायज

15मूसा मुड़कर पहाड़ से उतरा। उसके हाथों में
शरीअत की दोनों तख़्तियाँ थीं। उन पर आगे पीछे
लिखा गया था। 16अल्लाह ने ख़ुद तख़्तियों को
बनाकर उन पर अपने अहकाम कंदा किए थे।

17उतरते उतरते यशुअ ने लोगों का शोर सुना
और मूसा से कहा, "ख़ैमागाह में जंग का शोर
मच रहा है!" 18मूसा ने जवाब दिया, "न तो यह
फ़तहमंदों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुओं की
चीख़-पुकार। मुझे गानेवालों की आवाज़ सुनाई दे
रही है।"

19जब वह ख़ैमागाह के नज़दीक पहुँचा तो
उसने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते
हुए देखा। बड़े ग़ुस्से में आकर उसने तख़्तियों
को ज़मीन पर पटख़ दिया, और वह टुकड़े टुकड़े
होकर पहाड़ के दामन में गिर गईं। 20मूसा ने
इसराईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया।
जो कुछ बच गया उसे उसने पीस पीसकर पाउडर
बना डाला और पाउडर पानी पर छिड़ककर
इसराईलियों को पिला दिया।

21उसने हारून से पूछा, "इन लोगों ने तुम्हारे
साथ क्या किया कि तुमने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में
फँसा दिया?" 22हारून ने कहा, "मेरे आक़ा।
ग़ुस्से न हों। आप ख़ुद जानते हैं कि यह लोग बदी
पर तुले रहते हैं। 23उन्होंने मुझसे कहा, 'हमारे
लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए
हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस
बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल
लाया।' 24इसलिए मैंने उनको बताया, 'जिसके
पास सोने के ज़ेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।' जो
कुछ उन्होंने मुझे दिया उसे मैंने आग में फेंक दिया
तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।"

25मूसा ने देखा कि लोग बेकाबू हो गए हैं।
क्योंकि हारून ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया था,
और यों वह इसराईल के दुश्मनों के लिए मज़ाक़
का निशाना बन गए थे। 26मूसा ख़ैमागाह के
दरवाज़े पर खड़े होकर बोला, "जो भी रब का
बंदा है वह मेरे पास आए।" जवाब में लावी के
क़बीले के तमाम लोग उसके पास जमा हो गए।
27फिर मूसा ने उनसे कहा, "रब इसराईल का
ख़ुदा फ़रमाता है, 'हर एक अपनी तलवार लेकर
ख़ैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे के दरवाज़े से शुरू
करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक चलते चलते हर
मिलनेवाले को जान से मार दो, चाहे वह तुम्हारा
भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यों न हो। फिर

मुड़कर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस आ जाओ’।”

28लावियों ने मूसा की हिदायत पर अमल किया तो उस दिन तक़रीबन 3,000 मर्द हलाक हुए। 29यह देखकर मूसा ने लावियों से कहा, “आज अपने आपको मक़दिस में रब की ख़िदमत करने के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करो, क्योंकि तुम अपने बेटों और भाइयों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए तैयार थे। इसलिए रब तुमको आज बरकत देगा।”

30अगले दिन मूसा ने इसराईलियों से बात की, “तुमने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा दे सकूँ।”

31चुनाँचे मूसा ने रब के पास वापस जाकर कहा, “हाय, इस क़ौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। उन्होंने अपने लिए सोने का देवता बना लिया। 32मेहरबानी करके उन्हें मुआफ़ कर। लेकिन अगर तू उन्हें मुआफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में से मिटा दे जिसमें तूने अपने लोगों के नाम दर्ज किए हैं।” 33रब ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़ उसको अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा गुनाह करता है। 34अब जा, लोगों को उस जगह ले चल जिसका ज़िक्र मैंने किया है। मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा। लेकिन जब सज़ा का मुक़र्ररा दिन आएगा तब मैं उन्हें सज़ा दूँगा।”

35फिर रब ने इसराईलियों के दरमियान वबा फैलने दी, इसलिए कि उन्होंने उस बछड़े की पूजा की थी जो हारून ने बनाया था।

33 रब ने मूसा से कहा, “इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को लेकर जिनको तू मिसर से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिसका वादा मैंने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया है। उन्हीं से मैंने क़सम खाकर कहा था, ‘मैं यह मुल्क तुम्हारी औलाद को दूँगा।’ 2मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजकर कनानी, अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी अक़वाम को उस मुल्क से निकाल दूँगा। 3उठ, उस मुल्क को जा जहाँ दूध और शहद की कसरत है। लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा। तुम इतने हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो ख़तरा है कि तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बरबाद कर दूँ।”

4जब इसराईलियों ने यह सख़्त अलफ़ाज़ सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने ज़ेवर न पहने, 5क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, “इसराईलियों को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लमहा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो ख़तरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ। अब अपने ज़ेवरात उतार डालो। फिर मैं फ़ैसला करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए।”

6इन अलफ़ाज़ पर इसराईलियों ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर अपने ज़ेवर उतार दिए।

मुलाक़ात का ख़ैमा

7उस वक़्त मूसा ने ख़ैमा लेकर उसे कुछ फ़ासले पर ख़ैमागाह के बाहर लगा दिया। उसने उसका नाम ‘मुलाक़ात का ख़ैमा’ रखा। जो भी रब की मरज़ी दरियाफ़्त करना चाहता वह ख़ैमागाह से निकलकर वहाँ जाता। 8जब भी मूसा ख़ैमागाह से निकलकर वहाँ जाता तो तमाम लोग अपने ख़ैमों के दरवाज़ों पर खड़े होकर मूसा के पीछे देखने लगते। उसके मुलाक़ात के ख़ैमे में ओझल होने तक वह उसे देखते रहते।

9मूसा के ख़ैमे में दाख़िल होने पर बादल का सतून उतरकर ख़ैमे के दरवाज़े पर ठहर जाता। जितनी देर तक रब मूसा से बातें करता उतनी देर तक वह वहाँ ठहरा रहता। 10जब इसराईली मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल का सतून देखते तो वह अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े होकर सिजदा करते। 11रब मूसा से रूबरू बातें करता था, ऐसे शख़्स की तरह जो अपने दोस्त से बातें करता है। इसके बाद मूसा निकलकर ख़ैमागाह को वापस चला जाता। लेकिन उसका

जवान मददगार यशुअ बिन नून ख़ैमे को नहीं
छोड़ता था।

मूसा रब का जलाल देखता है

12मूसा ने रब से कहा, "देख, तू मुझसे कहता
आया है कि इस क़ौम को कनान ले चल। लेकिन
तू मेरे साथ किस को भेजेगा? तूने अब तक यह
बात मुझे नहीं बताई हालाँकि तूने कहा है, 'मैं तुझे
बनाम जानता हूँ, तुझे मेरा करम हासिल हुआ है।'
13अगर मुझे वाक़ई तेरा करम हासिल है तो मुझे
अपने रास्ते दिखा ताकि मैं तुझे जान लूँ और तेरा
करम मुझे हासिल होता रहे। इस बात का ख़याल
रख कि यह क़ौम तेरी ही उम्मत है।"

14रब ने जवाब दिया, "मैं ख़ुद तेरे साथ चलूँगा
और तुझे आराम दूँगा।" 15मूसा ने कहा, "अगर
तू ख़ुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना
न करना। 16अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस
तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी क़ौम को तेरा
करम हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से
दुनिया की दीगर क़ौमों से अलग और मुमताज़
हैं।"

17रब ने मूसा से कहा, "मैं तेरी यह दरख़ास्त
भी पूरी करूँगा, क्योंकि तुझे मेरा करम हासिल
हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।"

18फिर मूसा बोला, "बराहे-करम मुझे अपना
जलाल दिखा।" 19रब ने जवाब दिया, "मैं अपनी
पूरी भलाई तेरे सामने से गुज़रने दूँगा और तेरे
सामने ही अपने नाम रब का एलान करूँगा। मैं
जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान
होता हूँ, और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर
रहम करता हूँ। 20लेकिन तू मेरा चेहरा नहीं देख
सकता, क्योंकि जो भी मेरा चेहरा देखे वह ज़िंदा
नहीं रह सकता।" 21फिर रब ने फ़रमाया, "देख,
मेरे पास एक जगह है। वहाँ की चट्टान पर खड़ा
हो जा। 22जब मेरा जलाल वहाँ से गुज़रेगा तो मैं
तुझे चट्टान के एक शिगाफ़ में रखूँगा और अपना
हाथ तेरे ऊपर फैलाऊँगा ताकि तू मेरे गुज़रने के
दौरान महफ़ूज़ रहे। 23इसके बाद मैं अपना हाथ
हटाऊँगा और तू मेरे पीछे देख सकेगा। लेकिन
मेरा चेहरा देखा नहीं जा सकता।"

पत्थर की नई तख़्तियाँ

34 रब ने मूसा से कहा, "अपने लिए
पत्थर की दो तख़्तियाँ तराश ले जो
पहली दो की मानिंद हों। फिर मैं उन पर वह
अलफ़ाज़ लिखूँगा जो पहली तख़्तियों पर लिखे
थे जिन्हें तूने पटख़ दिया था। 2सुबह तक तैयार
होकर सीना पहाड़ पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने
खड़ा हो जा। 3तेरे साथ कोई भी न आए बल्कि
पूरे पहाड़ पर कोई और शख़्स नज़र न आए, यहाँ
तक कि भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के
दामन में न चरें।"

4चुनाँचे मूसा ने दो तख़्तियाँ तराश लीं जो
पहली की मानिंद थीं। फिर वह सुबह-सवेरे उठकर
सीना पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह रब ने उसे
हुक्म दिया था। उसके हाथों में पत्थर की दोनों
तख़्तियाँ थीं। 5जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब
बादल में उतर आया और उसके पास खड़े होकर
अपने नाम रब का एलान किया। 6मूसा के सामने
से गुज़रते हुए उसने पुकारा, "रब, रब, रहीम और
मेहरबान ख़ुदा। तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से
भरपूर। 7वह हज़ारों पर अपनी शफ़क़त क़ायम
रखता और लोगों का क़ुसूर, नाफ़रमानी और
गुनाह मुआफ़ करता है। लेकिन वह हर एक को
उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन
गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और
चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेंगे।"

8मूसा ने जल्दी से झुककर सिजदा किया।
9उसने कहा, "ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा करम
हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह क़ौम हटधर्म
है, तो भी हमारा क़ुसूर और गुनाह मुआफ़ कर
और बख़्श दे कि हम दुबारा तेरे ही बन जाएँ।"

10तब रब ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ अहद
बाँधूँगा। तेरी क़ौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिज़े
करूँगा जो अब तक दुनिया-भर की किसी भी
क़ौम में नहीं किए गए। पूरी क़ौम जिसके

दरमियान तू रहता है रब का काम देखेगी और
उससे डर जाएगी जो मैं तेरे साथ करूँगा। 11जो
अहकाम मैं आज देता हूँ उन पर अमल करता
रह। मैं अमोरी, कनानी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी
और यबूसी अक़वाम को तेरे आगे आगे मुल्क से
निकाल दूँगा। 12ख़बरदार, जो उस मुल्क में रहते
हैं जहाँ तू जा रहा है उनसे अहद न बाँधना। वरना
वह तेरे दरमियान रहते हुए तुझे गुनाहों में फँसाते
रहेंगे। 13उनकी क़ुरबानगाहें ढा देना, उनके बुतों
के सतून टुकड़े टुकड़े कर देना और उनकी देवी
यसीरत के खंबे काट डालना।

14किसी और माबूद की परस्तिश न करना,
क्योंकि रब का नाम ग़यूर है, अल्लाह ग़ैरतमंद
है। 15ख़बरदार, उस मुल्क के बाशिंदों से अहद
न करना, क्योंकि तेरे दरमियान रहते हुए भी वह
अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगे और
उन्हें क़ुरबानियाँ चढ़ाएँगे। आख़िरकार वह तुझे
भी अपनी क़ुरबानियों में शिरकत की दावत देंगे।
16ख़तरा है कि तू उनकी बेटियों का अपने बेटों
के साथ रिश्ता बाँधे। फिर जब यह अपने माबूदों
की पैरवी करके ज़िना करेंगी तो उनके सबब से
तेरे बेटे भी उनकी पैरवी करने लगेंगे।

17अपने लिए देवता न ढालना।

सालाना ईदें

18बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के
महीने[a] में सात दिन तक तेरी रोटी में ख़मीर न हो
जिस तरह मैंने हुक्म दिया है। क्योंकि इस महीने
में तू मिसर से निकला।

19हर पहलौठा मेरा है। तेरे माल मवेशियों का
हर पहलौठा मेरा है, चाहे बछड़ा हो या लेला।
20लेकिन पहलौठे गधे के एवज़ भेड़ देना। अगर
यह मुमकिन न हो तो उस की गरदन तोड़ डालना।
अपने पहलौठे बेटों के लिए भी एवज़ी देना। कोई
मेरे पास ख़ाली हाथ न आए।

21छः दिन काम-काज करना, लेकिन सातवें
दिन आराम करना। ख़ाह हल चलाना हो या
फ़सल काटनी हो तो भी सातवें दिन आराम
करना।

22गंदुम की फ़सल की कटाई की ईद[b] उस
वक़्त मनाना जब तू गेहूँ की पहली फ़सल काटेगा।
अंगूर और फल जमा करने की ईद इसराईली
साल के इख़्तिताम पर मनानी है। 23लाज़िम
है कि तेरे तमाम मर्द साल में तीन मरतबा रब
क़ादिरे-मुतलक़ के सामने जो इसराईल का ख़ुदा
है हाज़िर हों। 24मैं तेरे आगे आगे क़ौमों को मुल्क
से निकाल दूँगा और तेरी सरहद्दें बढ़ाता जाऊँगा।
फिर जब तू साल में तीन मरतबा रब अपने ख़ुदा
के हुज़ूर आएगा तो कोई भी तेरे मुल्क का लालच
नहीं करेगा।

25जब तू किसी जानवर को ज़बह करके
क़ुरबानी के तौर पर पेश करता है तो उसके ख़ून
के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिसमें ख़मीर
हो। ईदे-फ़सह की क़ुरबानी से अगली सुबह तक
कुछ बाक़ी न रहे।

26अपनी ज़मीन की पहली पैदावार में से
बेहतरीन हिस्सा रब अपने ख़ुदा के घर में ले आना।

बकरी या भेड़ के बच्चे को उस की माँ के दूध
में न पकाना।”

मूसा के चेहरे पर चमक

27रब ने मूसा से कहा, “यह तमाम बातें लिख
ले, क्योंकि यह उस अहद की बुनियाद हैं जो मैंने
तेरे और इसराईल के साथ बाँधा है।”

28मूसा चालीस दिन और चालीस रात वहीं रब
के हुज़ूर रहा। इस दौरान न उसने कुछ खाया न
पिया। उसने पत्थर की तख़्तियों पर अहद के दस
अहकाम लिखे।

29इसके बाद मूसा शरीअत की दोनों तख़्तियों
को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। उसके
चेहरे की जिल्द चमक रही थी, क्योंकि उसने रब
से बात की थी। लेकिन उसे ख़ुद इसका इल्म
नहीं था। 30जब हारून और तमाम इसराईलियों
ने देखा कि मूसा का चेहरा चमक रहा है तो वह

[a]मार्च ता अप्रैल।

[b]सितंबर ता अक्तूबर।

उसके पास आने से डर गए। 31लेकिन उसने उन्हें
बुलाया तो हारून और जमात के तमाम सरदार
उसके पास आए, और उसने उनसे बात की।
32बाद में बाक़ी इसराईली भी आए, और मूसा ने
उन्हें तमाम अहकाम सुनाए जो रब ने उसे कोहे-
सीना पर दिए थे।

33यह सब कुछ कहने के बाद मूसा ने अपने
चेहरे पर निक़ाब डाल लिया। 34जब भी वह रब
से बात करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में जाता
तो निक़ाब को ख़ैमे से निकलते वक़्त तक उतार
लेता। और जब वह निकलकर इसराईलियों को
रब से मिले हुए अहकाम सुनाता 35तो वह देखते
कि उसके चेहरे की जिल्द चमक रही है। इसके
बाद मूसा दुबारा निक़ाब को अपने चेहरे पर डाल
लेता, और वह उस वक़्त तक चेहरे पर रहता जब
तक मूसा रब से बात करने के लिए मुलाक़ात के
ख़ैमे में न जाता था।

सबत का दिन

35 मूसा ने इसराईल की पूरी जमात को
इकट्ठा करके कहा, “रब ने तुमको यह
हुक्म दिए हैं : 2छः दिन काम-काज किया जाए,
लेकिन सातवाँ दिन मख़सूसो-मुक़द्दस हो। वह रब
के लिए आराम का सबत है। जो भी इस दिन
काम करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए। 3हफ़्ते के
दिन अपने तमाम घरों में आग तक न जलाना।”

मुलाक़ात के ख़ैमे के लिए सामान

4मूसा ने इसराईल की पूरी जमात से कहा,
“रब ने हिदायत दी है 5कि जो कुछ तुम्हारे पास है
उसमें से हदिये लाकर रब को उठानेवाली क़ुरबानी
के तौर पर पेश करो। जो भी दिली ख़ुशी से देना
चाहे वह इन चीज़ों में से कुछ दे : सोना, चाँदी,
पीतल; 6नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का
धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, 7मेंढों की
सुर्ख़ रँगी हुई खालें, तख़स की खालें, कीकर की
लकड़ी, 8शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह
करने के लिए तेल और ख़ुशबूदार बख़ूर के लिए
मसाले, 9अक़ीक़े-अहमर और दीगर जवाहिर जो
इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में
जड़े जाएंगे।

10तुममें से जितने माहिर कारीगर हैं वह आकर
वह कुछ बनाएँ जो रब ने फ़रमाया 11यानी ख़ैमा
और वह ग़िलाफ़ जो उसके ऊपर लगाए जाएंगे,
हुकें, दीवारों के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए,
12अहद का संदूक़, उसे उठाने की लकड़ियाँ,
उसके कफ़्फ़ारे का ढकना, मुक़द्दसतरीन कमरे के
दरवाज़े का परदा, 13मख़सूस रोटियों की मेज़,
उसे उठाने की लकड़ियाँ, उसका सारा सामान
और रोटियाँ, 14शमादान और उस पर रखने के
चराग़ उसके सामान समेत, शमादान के लिए
तेल, 15बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह, उसे उठाने
की लकड़ियाँ, मसह का तेल, ख़ुशबूदार बख़ूर,
मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े का परदा, 16जानवरों
को चढ़ाने की क़ुरबानगाह, उसका पीतल का
जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी सारा
सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर
हौज़ रखा जाता है, 17चारदीवारी के परदे उनके
खंबों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का
परदा, 18ख़ैमे और चारदीवारी की मेख़ें और रस्से,
19और वह मुक़द्दस लिबास जो हारून और उसके
बेटे मक़दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं।”

20यह सुनकर इसराईल की पूरी जमात मूसा
के पास से चली गई। 21और जो जो दिली ख़ुशी
से देना चाहता था वह मुलाक़ात के ख़ैमे, उसके
सामान या इमामों के कपड़ों के लिए कोई हदिया
लेकर वापस आया। 22रब के हदिये के लिए
मर्द और ख़वातीन दिली ख़ुशी से अपने सोने के
ज़ेवरात मसलन जड़ाऊ पिनें, बालियाँ और छल्ले
ले आए। 23जिस जिसके पास दरकार चीज़ों में
से कुछ था वह उसे मूसा के पास ले आया यानी
नीले, क़िरमिज़ी और अरग़वानी रंग का धागा,
बारीक कतान, बकरी के बाल, मेंढों की सुर्ख़
रँगी हुई खालें और तख़स की खालें। 24चाँदी,
पीतल और कीकर की लकड़ी भी हदिये के तौर
पर लाई गई। 25और जितनी औरतें कातने में

माहिर थीं वह अपनी काती हुई चीज़ें ले आईं यानी
नीले, क़िरमिज़ी और अरग़वानी रंग का धागा और
बारीक कतान। 26इसी तरह जो जो औरत बकरी
के बाल कातने में माहिर थी और दिली ख़ुशी
से मक़दिस के लिए काम करना चाहती थी वह
यह कातकर ले आई। 27सरदार अक़ीक़े-अहमर
और दीगर जवाहिर ले आए जो इमामे-आज़म के
बालापोश और सीने के कीसे के लिए दरकार
थे। 28वह शमादान, मसह के तेल और ख़ुशबूदार
बख़ूर के लिए मसाले और ज़ैतून का तेल भी ले
आए।

29यों इसराईल के तमाम मर्द और ख़वा-
तीन जो दिली ख़ुशी से रब को कुछ देना चाहते थे
उस सारे काम के लिए हदिये ले आए जो रब ने
मूसा की मारिफ़त करने को कहा था।

बज़लियेल और उहलियाब

30फिर मूसा ने इसराईलियों से कहा, “रब ने
यहूदाह के क़बीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन
हूर को चुन लिया है। 31उसने उसे इलाही रूह
से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के
हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 32वह
नक़्शे बनाकर उनके मुताबिक़ सोने, चाँदी और
पीतल की चीज़ें बना सकता है। 33वह जवाहिर
को काटकर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह
लकड़ी को तराशकर उससे मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना
सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत
रखता है। 34साथ ही रब ने उसे और दान के
क़बीले के उहलियाब बिन अख़ी-समक को दूसरों
को सिखाने की क़ाबिलियत भी दी है। 35उसने
उन्हें वह महारत और हिकमत दी है जो हर काम
के लिए दरकार है यानी कारीगरी के हर काम के
लिए, कढ़ाई के काम के लिए, नीले, अरग़वानी
और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान
से कपड़ा बनाने के लिए और बुनाई के काम के
लिए। वह माहिर कारीगर हैं और नक़्शे भी बना
सकते हैं।

36 लाज़िम है कि बज़लियेल, उहलियाब
और बाक़ी कारीगर जिनको रब ने
मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और समझ
दी है सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक़
बनाएँ जो रब ने दी हैं।”

इसराईली दिली ख़ुशी से देते हैं

2मूसा ने बज़लियेल और उहलियाब को
बुलाया। साथ ही उसने हर उस कारीगर को भी
बुलाया जिसे रब ने मक़दिस की तामीर के लिए
हिकमत और महारत दी थी और जो ख़ुशी से
आना और यह काम करना चाहता था। 3उन्हें मूसा
से तमाम हदिये मिले जो इसराईली मक़दिस की
तामीर के लिए लाए थे।द

इसके बाद भी लोग रोज़ बरोज़ सुबह के वक़्त
हदिये लाते रहे। 4आख़िरकार तमाम कारीगर जो
मक़दिस बनाने के काम में लगे थे अपना काम
छोड़कर मूसा के पास आए। 5उन्होंने कहा, “लोग
हद से ज़्यादा ला रहे हैं। जिस काम का हुक्म रब
ने दिया है उसके लिए इतने सामान की ज़रूरत
नहीं है।” 6तब मूसा ने पूरी ख़ैमागाह में एलान
करवा दिया कि कोई मर्द या औरत मक़दिस की
तामीर के लिए अब कुछ न लाए।

यों उन्हें मज़ीद चीज़ें लाने से रोका गया,
7क्योंकि काम के लिए सामान ज़रूरत से ज़्यादा
हो गया था।

मुलाक़ात का ख़ैमा

8जो कारीगर महारत रखते थे उन्होंने ख़ैमे
को बनाया। उन्होंने बारीक कतान और नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी धागे से दस परदे
बनाए। परदों पर किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई
के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ायन बनाया
गया। 9हर परदे की लंबाई 42 फ़ुट और चौड़ाई
6 फ़ुट थी। 10पाँच परदों के लंबे हाशिये एक
दूसरे के साथ जोड़े गए और इसी तरह बाक़ी पाँच

भी। यों दो बड़े टुकड़े बन गए। 11दोनों टुकड़ों को
एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए उन्होंने नीले
धागे के हलक़े बनाए। यह हलक़े हर टुकड़े के 42
फ़ुटवाले एक किनारे पर लगाए गए, 12एक टुकड़े
के हाशिये पर 50 हलक़े और दूसरे पर भी उतने
ही हलक़े। इन दो हाशियों के हलक़े एक दूसरे के
आमने-सामने थे। 13फिर बज़लियेल ने सोने की
50 हुकें बनाकर उनसे आमने-सामने के हलक़ों
को एक दूसरे के साथ मिलाया। यों दोनों टुकड़ों
के जोड़ने से ख़ैमा बन गया।

14उसने बकरी के बालों से भी 11 परदे बनाए
जिन्हें कपड़ेवाले ख़ैमे के ऊपर रखना था। 15हर
परदे की लंबाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी।
16पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ
जोड़े गए और इस तरह बाक़ी छः भी। 17इन दोनों
टुकड़ों को मिलाने के लिए उसने हर टुकड़े के
45 फ़ुटवाले एक किनारे पर पचास पचास हलक़े
लगाए। 18फिर पीतल की 50 हुकें बनाकर उसने
दोनों हिस्से मिलाए।

19एक दूसरे के ऊपर के दोनों ख़ैमों की
हिफ़ाज़त के लिए बज़लियेल ने दो और ग़िलाफ़
बनाए। बकरी के बालों के ख़ैमे पर रखने के
लिए उसने मेंढों की सुर्ख़ रँगी हुई खालें जोड़ दीं
और उसके ऊपर रखने के लिए तख़स की खालें
मिलाईं।

20इसके बाद उसने कीकर की लकड़ी के तख़्ते
बनाए जो ख़ैमे की दीवारों का काम देते थे। 21हर
तख़्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट थी और चौड़ाई सवा
दो फ़ुट। 22हर तख़्ते के नीचे दो दो चूलें थीं।
इन चूलों से हर तख़्ते को उसके पाइयों के साथ
जोड़ा जाता था ताकि तख़्ता खड़ा रहे। 23ख़ैमे
की जुनूबी दीवार के लिए 20 तख़्ते बनाए गए
24और साथ ही चाँदी के 40 पाए भी जिन पर
तख़्ते खड़े किए जाते थे। हर तख़्ते के नीचे दो
पाए थे, और हर पाए में एक चूल लगती थी।
25इसी तरह ख़ैमे की शिमाली दीवार के लिए भी
20 तख़्ते बनाए गए 26और साथ ही चाँदी के
40 पाए जो तख़्तों को खड़ा करने के लिए थे।
हर तख़्ते के नीचे दो पाए थे। 27ख़ैमे की पिछली
यानी मग़रिबी दीवार के लिए छः तख़्ते बनाए गए।
28इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के
साथ जोड़ने के लिए कोनेवाले दो तख़्ते बनाए
गए। 29इन दो तख़्तों में नीचे से लेकर ऊपर तक
कोना था ताकि एक से शिमाली दीवार मग़रिबी
दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी
दीवार मग़रिबी दीवार के साथ। इनके ऊपर के
सिरे कड़ों से मज़बूत किए गए। 30यों पिछले
यानी मग़रिबी तख़्तों की पूरी तादाद 8 थी और
इनके लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर
तख़्ते के नीचे दो पाए।

31-32फिर बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी के
शहतीर बनाए, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच
शहतीर। वह हर दीवार के तख़्तों पर यों लगाने के
लिए थे कि उनसे तख़्ते एक दूसरे के साथ मिलाए
जाएँ। 33दरमियानी शहतीर यों बनाया गया कि
वह दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे
से दूसरे सिरे तक लग सकता था। 34उसने तमाम
तख़्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाया। शहतीरों
को तख़्तों के साथ लगाने के लिए उसने सोने के
कड़े बनाए जो तख़्तों में लगाने थे।

मुक़द्दस ख़ैमे के परदे

35अब बज़लियेल ने एक और परदा बनाया।
उसके लिए भी बारीक कतान और नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल
हुआ। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई
के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ायन बनाया
गया। 36फिर उसने परदे को लटकाने के लिए
कीकर की लकड़ी के चार सतून, सोने की हुकें
और चाँदी के चार पाए बनाए। सतूनों पर सोना
चढ़ाया गया।

37बज़लियेल ने ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी
परदा बनाया। वह भी बारीक कतान और नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे से बनाया
गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया।
38इस परदे को लटकाने के लिए उसने सोने की

हुकें और कीकर की लकड़ी के पाँच सतून बनाए। सतूनों के ऊपर के सिरों और पट्टियों पर सोना चढ़ाया गया जबकि उनके पाए पीतल के थे।

अहद का संदूक़

37 बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी का संदूक़ बनाया। उस की लंबाई पौने चार फ़ुट थी जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फ़ुट थी। 2उसने पूरे संदूक़ पर अंदर और बाहर से ख़ालिस सोना चढ़ाया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द उसने सोने की झालर लगाई। 3संदूक़ को उठाने के लिए उसने सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें संदूक़ के चारपाइयों पर लगाया। दोनों तरफ़ दो दो कड़े थे। 4फिर उसने कीकर की दो लकड़ियाँ संदूक़ को उठाने के लिए तैयार कीं और उन पर सोना चढ़ाया। 5उसने इन लकड़ियों को दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल दिया ताकि उनसे संदूक़ को उठाया जा सके।

6बज़लियेल ने संदूक़ का ढकना ख़ालिस सोने का बनाया। उस की लंबाई पौने चार फ़ुट और चौड़ाई सवा दो फ़ुट थी। 7-8फिर उसने दो करूबी फ़रिश्ते सोने से घड़कर बनाए जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े थे। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाए गए। 9फ़रिश्तों के पर यों ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे कि वह ढकने को पनाह देते थे। उनके मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए थे, और वह ढकने की तरफ़ देखते थे।

मख़सूस रोटियों की मेज़

10इसके बाद बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाई। उस की लंबाई तीन फ़ुट, चौड़ाई डेढ़ फ़ुट और ऊँचाई सवा दो फ़ुट थी। 11उसने उस पर ख़ालिस सोना चढ़ाकर उसके इर्दगिर्द सोने की झालर लगाई। 12मेज़ की ऊपर की सतह पर उसने चौखटा भी लगाया जिसकी ऊँचाई तीन इंच थी और जिस पर सोने की झालर लगी थी। 13अब उसने सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों कोनों पर लगाया जहाँ मेज़ के पाए लगे थे। 14यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए गए। उनमें वह लकड़ियाँ डालनी थीं जिनसे मेज़ को उठाना था। 15बज़लियेल ने यह लकड़ियाँ भी कीकर से बनाईं और उन पर सोना चढ़ाया।

16आख़िरकार उसने ख़ालिस सोने के वह थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बरतन और मरतबान बनाए जो उस पर रखे जाते थे।

शमादान

17फिर बज़लियेल ने ख़ालिस सोने का शमादान बनाया। उसका पाया और डंडी घड़कर बनाए गए। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शक्ल की थीं पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा थीं। 18डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाख़ें निकलती थीं। 19हर शाख़ पर तीन प्यालियाँ लगी थीं जो बादाम की कलियों और फूलों की शक्ल की थीं। 20शमादान की डंडी पर भी इस क़िस्म की प्यालियाँ लगी थीं, लेकिन तादाद में चार। 21इनमें से तीन प्यालियाँ दाएँ-बाएँ की छः शाख़ों के नीचे लगी थीं। वह यों लगी थीं कि हर प्याली से दो शाख़ें निकलती थीं। 22शाख़ें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़कर बनाया गया।

23बज़लियेल ने शमादान के लिए ख़ालिस सोने के सात चराग़ बनाए। उसने बत्ती कतरने की क़ैंचियाँ और जलते कोयले के लिए छोटे बरतन भी ख़ालिस सोने से बनाए। 24शमादान और उसके तमाम सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल हुआ।

बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह

25बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की क़ुरबानगाह बनाई जो बख़ूर जलाने के लिए थी। वह डेढ़ फ़ुट लंबी, इतनी ही चौड़ी और तीन फ़ुट ऊँची थी। उसके चार कोनों में से सींग निकलते थे जो क़ुरबानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए थे। 26उस की ऊपर की सतह,

उसके चार पहलुओं और उसके सींगों पर ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द बज़लियेल ने सोने की झालर बनाई। 27सोने के दो कड़े बनाकर उसने उन्हें इस झालर के नीचे एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलुओं पर लगाया। इन कड़ों में क़ुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली गईं। 28यह लकड़ियाँ कीकर की थीं, और उन पर भी सोना चढ़ाया गया।

29बज़लियेल ने मसह करने का मुक़द्दस तेल और ख़ुशबूदार ख़ालिस बख़ूर भी बनाया। यह इत्रसाज़ का काम था।

जानवरों को पेश करने की क़ुरबानगाह

38 बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की एक और क़ुरबानगाह बनाई जो भस्म होनेवाली क़ुरबानियों के लिए थी। उस की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट, उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फ़ुट थी। 2उसके ऊपर चारों कोनों में से सींग निकलते थे। सींग और क़ुरबानगाह एक ही टुकड़े के थे, और उस पर पीतल चढ़ाया गया। 3उसका तमाम साज़ो-सामान और बरतन भी पीतल के थे यानी राख को उठाकर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोयले के लिए बरतन और छिड़काव के कटोरे।

4क़ुरबानगाह को उठाने के लिए उसने पीतल का जंगला बनाया। वह ऊपर से खुला था और यों बनाया गया कि जब क़ुरबानगाह उसमें रखी जाए तो वह उस किनारे तक पहुँचे जो क़ुरबानगाह की आधी ऊँचाई पर लगी थी। 5उसने क़ुरबानगाह को उठाने के लिए चार कड़े बनाकर उन्हें जंगले के चार कोनों पर लगाया। 6फिर उसने कीकर की दो लकड़ियाँ बनाकर उन पर पीतल चढ़ाया 7और क़ुरबानगाह के दोनों तरफ़ लगे इन कड़ों में डाल दीं। यों उसे उठाया जा सकता था। क़ुरबानगाह लकड़ी की थी लेकिन खोखली थी।

8बज़लियेल ने धोने का हौज़ और उसका ढाँचा भी पीतल से बनाया। उसका पीतल उन औरतों के आईनों से मिला था जो मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ख़िदमत करती थीं।

ख़ैमे का सहन

9फिर बज़लियेल ने सहन बनाया। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई गई। चारदीवारी की लंबाई जुनूब की तरफ़ 150 फ़ुट थी। 10कपड़े को लगाने के लिए चाँदी की हुकें, पट्टियाँ, लकड़ी के खंबे और उनके पाए बनाए गए। 11चारदीवारी शिमाल की तरफ़ भी इसी तरह बनाई गई। 12ख़ैमे के पीछे मग़रिब की तरफ़ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फ़ुट थी। कपड़े के अलावा उसके लिए 10 खंबे, 10 पाए और कपड़ा लगाने के लिए चाँदी की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं। 13सामने, मशरिक़ की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फ़ुट थी। 14-15कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ़ साढ़े 22 फ़ुट चौड़ा था और उसके बाईं तरफ़ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन खंबों के साथ लगाया गया जो पीतल के पाइयों पर खड़े थे। 16चारदीवारी के तमाम परदों के लिए बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। 17खंबे पीतल के पाइयों पर खड़े थे, और परदे चाँदी की हुकों और पट्टियों से खंबों के साथ लगे थे। खंबों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। सहन के तमाम खंबों पर चाँदी की पट्टियाँ लगी थीं।

18चारदीवारी के दरवाज़े का परदा नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। वह 30 फ़ुट चौड़ा और चारदीवारी के दूसरे परदों की तरह साढ़े सात फ़ुट ऊँचा था। 19उसके चार खंबे और पीतल के चार पाए थे। उस की हुकें और पट्टियाँ चाँदी की थीं, और खंबों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। 20ख़ैमे और चारदीवारी की तमाम मेख़ें पीतल की थीं।

ख़ैमे का तामीरी सामान

21ज़ैल में उस सामान की फ़हरिस्त है जो मक़दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ। मूसा के हुक्म पर इमामे-आज़म हारून के बेटे इतमर ने लावियों की मारिफ़त यह फ़हरिस्त तैयार की।
22(यहूदाह के क़बीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हूर ने वह सब कुछ बनाया जो रब ने मूसा को बताया था।
23उसके साथ दान के क़बीले का उहलियाब बिन अख़ी-समक था जो कारीगरी के हर काम और कढ़ाई के काम में माहिर था। वह नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने में भी माहिर था।)

24उस सोने का वज़न जो लोगों के हदियों से जमा हुआ और मक़दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ तक़रीबन 1,000 किलोग्राम था (उसे मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)।

25तामीर के लिए चाँदी जो मर्दुमशुमारी के हिसाब से वसूल हुई, उसका वज़न तक़रीबन 3,430 किलोग्राम था (उसे भी मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)।
26जिन मर्दों की उम्र 20 साल या इससे ज़ायद थी उन्हें चाँदी का आधा आधा सिक्का देना पड़ा। मर्दों की कुल तादाद 6,03,550 थी।
27चूँकि दीवारों के तख़्तों के पाए और मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सतूनों के पाए चाँदी के थे इसलिए तक़रीबन पूरी चाँदी इन 100 पाइयों के लिए सर्फ़ हुई।
28तक़रीबन 30 किलोग्राम चाँदी बच गई। इससे चारदीवारी के खंबों की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं, और यह खंबों के ऊपर के सिरों पर भी चढ़ाई गई।

29जो पीतल हदियों से जमा हुआ उसका वज़न तक़रीबन 2,425 किलोग्राम था।
30ख़ैमे के दरवाज़े के पाए, जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह, उसका जंगला, बरतन और साज़ो-सामान,
31चारदीवारी के पाए, सहन के दरवाज़े के पाए और ख़ैमे और चारदीवारी की तमाम मेख़ें इसी से बनाई गईं।

हारून का बालापोश

39 बज़लियेल की हिदायत पर कारीगरों ने नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा लेकर मक़दिस में ख़िदमत के लिए लिबास बनाए। उन्होंने हारून के मुक़द्दस कपड़े उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ बनाए जो रब ने मूसा को दी थीं।
2उन्होंने इमामे-आज़म का बालापोश बनाने के लिए सोना, नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया।
3उन्होंने सोने को कूट कूटकर वर्क़ बनाया और फिर उसे काटकर धागे बनाए। जब नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाया गया तो सोने का यह धागा महारत से कढ़ाई के काम में इस्तेमाल हुआ।
4उन्होंने बालापोश के लिए दो पट्टियाँ बनाईं और उन्हें बालापोश के कंधों पर रखकर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगाइं।
5पटका भी बनाया गया जिससे बालापोश को बाँधा जाता था। इसके लिए भी सोना, नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं।
6फिर उन्होंने अक़ीक़े-अहमर के दो पत्थर चुन लिए और उन्हें सोने के ख़ानों में जड़कर उन पर इसराईल के बारह बेटों के नाम कंदा किए। यह नाम जौहरों पर उस तरह कंदा किए गए जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।
7उन्होंने पत्थरों को बालापोश की दो पट्टियों पर यों लगाया कि वह हारून के कंधों पर रब को इसराईलियों की याद दिलाते रहें। यह सब कुछ रब की दी गई हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ।

सीने का कीसा

8इसके बाद उन्होंने सीने का कीसा बनाया। यह माहिर कारीगर का काम था और उन्हीं चीज़ों से बना जिनसे हारून का बालापोश भी बना था यानी सोने और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से।
9जब कपड़े

को एक दफ़ा तह किया गया तो कीसे की लंबाई
और चौड़ाई नौ नौ इंच थी। 10उन्होंने उस पर चार
क़तारों में जवाहिर जड़े। हर क़तार में तीन तीन
जौहर थे। पहली क़तार में लाल, ज़बरजद और
ज़ुमुर्रद। 11दूसरी में फ़ीरोज़ा, संगे-लाजवर्द और
हजरुल-क़मर। 12तीसरी में ज़रक़ोन, अक़ीक़
और याक़ूते-अरग़वानी। 13चौथी में पुखराज,
अक़ीक़े-अहमर और यशब। हर जौहर सोने के
ख़ाने में जड़ा हुआ था। 14यह बारह जवाहिर
इसराईल के बारह क़बीलों की नुमाइंदगी करते
थे। एक एक जौहर पर एक क़बीले का नाम कंदा
किया गया, और यह नाम उस तरह कंदा किए
गए जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।

15अब उन्होंने सीने के कीसे के लिए ख़ालिस
सोने की दो ज़ंजीरें बनाईं जो डोरी की तरह गुँधी
हुई थीं। 16साथ साथ उन्होंने सोने के दो ख़ाने
और दो कड़े भी बनाए। उन्होंने यह कड़े कीसे
के ऊपर के दो कोनों पर लगाए। 17फिर दोनों
ज़ंजीरें उन दो कड़ों के साथ लगाई गईं। 18उनके
दूसरे सिरे बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों के
दो ख़ानों के साथ जोड़ दिए गए, फिर सामने
की तरफ़ लगाए गए। 19उन्होंने कीसे के निचले
दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाए। वह
अंदर, बालापोश की तरफ़ लगे थे। 20अब उन्होंने
दो और कड़े बनाकर बालापोश की कंधोंवाली
पट्टियों पर लगाए। यह भी सामने की तरफ़ लगे
थे लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही।
21उन्होंने सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी
से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बाँधे।
यों कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ
लगा रहा। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ
जो रब ने मूसा को दी थीं।

हारून का चोग़ा

22फिर कारीगरों ने चोग़ा बुना। वह पूरी तरह
नीले धागे से बनाया गया। चोग़े को बालापोश
से पहले पहनना था। 23उसके गरेबान को बुने
हुए कालर से मज़बूत किया गया ताकि वह न
फटे। 24उन्होंने नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी
रंग के धागे से अनार बनाकर उन्हें चोग़े के दामन
में लगा दिया। 25उनके दरमियान ख़ालिस सोने
की घंटियाँ लगाई गईं। 26दामन में अनार और
घंटियाँ बारी बारी लगाई गईं। लाज़िम था कि
हारून ख़िदमत करने के लिए हमेशा यह चोग़ा
पहने। रब ने मूसा को यही हुक्म दिया था।

ख़िदमत के लिए दीगर लिबास

27कारीगरों ने हारून और उसके बेटों के लिए
बारीक कतान के ज़ेरजामे बनाए। यह बुननेवाले
का काम था। 28साथ साथ उन्होंने बारीक कतान
की पगड़ियाँ और बारीक कतान के पाजामे
बनाए। 29कमरबंद को बारीक कतान और नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे से बनाया
गया। कढ़ाई करनेवालों ने इस पर काम किया।
सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया
जो रब ने मूसा को दी थीं।

30उन्होंने मुक़द्दस ताज यानी ख़ालिस सोने की
तख़्ती बनाई और उस पर यह अलफ़ाज़ कंदा
किए, 'रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस।' 31फिर
उन्होंने इसे नीली डोरी से पगड़ी के सामनेवाले
हिस्से से लगा दिया। यह भी उन हिदायात के
मुताबिक़ बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

सारा सामान मूसा को दिखाया जाता है

32आख़िरकार मक़दिस का काम मुकम्मल
हुआ। इसराईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के
मुताबिक़ बनाया था जो रब ने मूसा को दी थीं।
33वह मक़दिस की तमाम चीज़ें मूसा के पास
ले आए यानी मुक़द्दस ख़ैमा और उसका सारा
सामान, उस की हुकें, दीवारों के तख़्ते, शहतीर,
सतून और पाए, 34ख़ैमे पर मेंढों की सुर्ख़ रँगी
हुई खालों का ग़िलाफ़ और तख़स की खालों
का ग़िलाफ़, मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े का
परदा, 35अहद का संदूक़ जिसमें शरीअत की
तख़्तियाँ रखनी थीं, उसे उठाने की लकड़ियाँ
और उसका ढकना, 36मख़सूस रोटियों की मेज़,

उसका सारा सामान और रोटियाँ, 37ख़ालिस
सोने का शमादान और उस पर रखने के चराग़
उसके सारे सामान समेत, शमादान के लिए तेल,
38बख़ूर जलाने की सोने की क़ुरबानगाह, मसह
का तेल, ख़ुशबूदार बख़ूर, मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े
का परदा, 39जानवरों को चढ़ाने की पीतल की
क़ुरबानगाह, उसका पीतल का जंगला, उसे उठाने
की लकड़ियाँ और बाक़ी सारा सामान, धोने का
हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखना था,
40चारदीवारी के परदे उनके खंबों और पाइयों
समेत, सहन के दरवाज़े का परदा, चारदीवारी
के रस्से और मेख़ें, मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत
करने का बाक़ी सारा सामान 41और मक़दिस में
ख़िदमत करने के वह मुक़द्दस लिबास जो हारून
और उसके बेटों को पहनने थे।

42सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया
गया था जो रब ने मूसा को दी थीं। 43मूसा ने
तमाम चीज़ों का मुआयना किया और मालूम
किया कि उन्होंने सब कुछ रब की हिदायात के
मुताबिक़ बनाया था। तब उसने उन्हें बरकत दी।

मक़दिस को खड़ा करने की हिदायात

40 फिर रब ने मूसा से कहा, 2"पहले
महीने की पहली तारीख़ को मुलाक़ात
का ख़ैमा खड़ा करना। 3अहद का संदूक़ जिसमें
शरीअत की तख़्तियाँ हैं मुक़द्दसतरीन कमरे में
रखकर उसके दरवाज़े का परदा लगाना। 4इसके
बाद मख़सूस रोटियों की मेज़ मुक़द्दस कमरे में
लाकर उस पर तमाम ज़रूरी सामान रखना।
उस कमरे में शमादान भी ले आना और उस
पर उसके चराग़ रखना। 5बख़ूर की सोने की
क़ुरबानगाह उस परदे के सामने रखना जिसके
पीछे अहद का संदूक़ है। फिर ख़ैमे में दाख़िल
होने के दरवाज़े पर परदा लगाना। 6जानवरों को
चढ़ाने की क़ुरबानगाह सहन में ख़ैमे के दरवाज़े
के सामने रखी जाए। 7ख़ैमे और इस क़ुरबानगाह
के दरमियान धोने का हौज़ रखकर उसमें पानी
डालना। 8सहन की चारदीवारी खड़ी करके उसके
दरवाज़े का परदा लगाना।

9फिर मसह का तेल लेकर उसे ख़ैमे और उसके
सारे सामान पर छिड़क देना। यों तू उसे मेरे लिए
मख़सूस करेगा और वह मुक़द्दस होगा। 10फिर
जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह और उसके
सामान पर मसह का तेल छिड़कना। यों तू उसे मेरे
लिए मख़सूस करेगा और वह निहायत मुक़द्दस
होगा। 11इसी तरह हौज़ और उस ढाँचे को भी
मख़सूस करना जिस पर हौज़ रखा गया है।

12हारून और उसके बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर लाकर ग़ुस्ल कराना। 13फिर हारून
को मुक़द्दस लिबास पहनाना और उसे मसह
करके मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करना ताकि
इमाम के तौर पर मेरी ख़िदमत करे। 14उसके
बेटों को लाकर उन्हें ज़ेरजामे पहना देना। 15उन्हें
उनके वालिद की तरह मसह करना ताकि वह भी
इमामों के तौर पर मेरी ख़िदमत करें। जब उन्हें
मसह किया जाएगा तो वह और बाद में उनकी
औलाद हमेशा तक मक़दिस में इस ख़िदमत के
लिए मख़सूस होंगे।"

मक़दिस को खड़ा किया जाता है

16मूसा ने सब कुछ रब की हिदायात के
मुताबिक़ किया। 17पहले महीने की पहली
तारीख़ को मुक़द्दस ख़ैमा खड़ा किया गया। उन्हें
मिसर से निकले पूरा एक साल हो गया था।
18मूसा ने दीवार के तख़्तों को उनके पाइयों पर
खड़ा करके उनके साथ शहतीर लगाए। इसी तरह
उसने सतूनों को भी खड़ा किया। 19उसने रब की
हिदायात के ऐन मुताबिक़ दीवारों पर कपड़े का
ख़ैमा लगाया और उस पर दूसरे ग़िलाफ़ रखे।

20उसने शरीअत की दोनों तख़्तियाँ लेकर
अहद के संदूक़ में रख दीं, उठाने के लिए
लकड़ियाँ संदूक़ के कड़ों में डाल दीं और कफ़्फ़ारे
का ढकना उस पर लगा दिया। 21फिर उसने
रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ संदूक़ को
मुक़द्दसतरीन कमरे में रखकर उसके दरवाज़े का

परदा लगा दिया। यों अहद के संदूक़ पर परदा पड़ा
रहा। 22मूसा ने मख़सूस रोटियों की मेज़ मुक़द्दस
कमरे के शिमाली हिस्से में उस परदे के सामने
रख दी जिसके पीछे अहद का संदूक़ था। 23उसने
रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ रब के लिए
मख़सूस की हुई रोटियाँ मेज़ पर रखीं। 24उसी
कमरे के जुनूबी हिस्से में उसने शमादान को मेज़
के मुक़ाबिल रख दिया। 25उस पर उसने रब की
हिदायत के ऐन मुताबिक़ रब के सामने चराग़ रख
दिए। 26उसने बख़ूर की सोने की क़ुरबानगाह भी
उसी कमरे में रखी, उस परदे के बिलकुल सामने
जिसके पीछे अहद का संदूक़ था। 27उसने उस
पर रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ ख़ुशबूदार
बख़ूर जलाया।

28फिर उसने ख़ैमे का दरवाज़ा लगा दिया।
29बाहर जाकर उसने जानवरों को चढ़ाने की
क़ुरबानगाह ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रख दी।
उस पर उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और ग़ल्ला की नज़रें
चढ़ाईं।

30उसने धोने के हौज़ को ख़ैमे और उस
क़ुरबानगाह के दरमियान रखकर उसमें पानी डाल
दिया। 31मूसा, हारून और उसके बेटे उसे अपने
हाथ-पाँव धोने के लिए इस्तेमाल करते थे। 32जब
भी वह मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होते या
जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह के पास आते
तो रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ पहले ग़ुस्ल
करते।

33आख़िर में मूसा ने ख़ैमा, क़ुरबानगाह और
चारदीवारी खड़ी करके सहन के दरवाज़े का
परदा लगा दिया। यों मूसा ने मक़दिस की तामीर
मुकम्मल की।

ख़ैमे में रब का जलाल

34फिर मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल छा गया
और मक़दिस रब के जलाल से भर गया। 35मूसा
ख़ैमे में दाख़िल न हो सका, क्योंकि बादल उस
पर ठहरा हुआ था और मक़दिस रब के जलाल से
भर गया था।

36तमाम सफ़र के दौरान जब भी मक़दिस के
ऊपर से बादल उठता तो इसराईली सफ़र के
लिए तैयार हो जाते। 37अगर वह न उठता तो
वह उस वक़्त तक ठहरे रहते जब तक बादल
उठ न जाता। 38दिन के वक़्त बादल मक़दिस के
ऊपर ठहरा रहता और रात के वक़्त वह तमाम
इसराईलियों को आग की सूरत में नज़र आता
था। यह सिलसिला पूरे सफ़र के दौरान जारी रहा।

अहबार

भस्म होनेवाली क़ुरबानी

1 रब ने मुलाक़ात के ख़ैमे में से मूसा को बुलाकर कहा 2कि इसराईलियों को इत्तला दे,

“अगर तुममें से कोई रब को क़ुरबानी पेश करना चाहे तो वह अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से जानवर चुन ले।

3अगर वह अपने गाय-बैलों में से भस्म होनेवाली क़ुरबानी चढ़ाना चाहे तो वह बेऐब बैल चुनकर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर पेश करे ताकि रब उसे क़बूल करे। 4क़ुरबानी पेश करनेवाला अपना हाथ जानवर के सर पर रखे तो यह क़ुरबानी मक़बूल होकर उसका कफ़्फ़ारा देगी। 5क़ुरबानी पेश करनेवाला बैल को वहाँ रब के सामने ज़बह करे। फिर हारून के बेटे जो इमाम हैं उसका ख़ून रब को पेश करके उसे दरवाज़े पर की क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 6इसके बाद क़ुरबानी पेश करनेवाला खाल उतारकर जानवर के टुकड़े टुकड़े करे। 7इमाम क़ुरबानगाह पर आग लगाकर उस पर तरतीब से लकड़ियाँ चुनें। 8उस पर वह जानवर के टुकड़े सर और चरबी समेत रखें। 9लाज़िम है कि क़ुरबानी पेश करनेवाला पहले जानवर की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को क़ुरबानगाह पर जला दे। इस जलनेवाली क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है।

10अगर भस्म होनेवाली क़ुरबानी भेड़-बकरियों में से चुनी जाए तो वह बेऐब नर हो। 11पेश करनेवाला उसे रब के सामने क़ुरबानगाह की शिमाली सिम्त में ज़बह करे। फिर हारून के बेटे जो इमाम हैं उसका ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 12इसके बाद पेश करनेवाला जानवर के टुकड़े टुकड़े करे और इमाम यह टुकड़े सर और चरबी समेत क़ुरबानगाह की जलती हुई लकड़ियों पर तरतीब से रखे। 13लाज़िम है कि क़ुरबानी पेश करनेवाला पहले जानवर की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को रब को पेश करके क़ुरबानगाह पर जला दे। इस जलनेवाली क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है।

14अगर भस्म होनेवाली क़ुरबानी परिंदा हो तो वह क़ुम्री या जवान कबूतर हो। 15इमाम उसे क़ुरबानगाह के पास ले आए और उसका सर मरोड़कर क़ुरबानगाह पर जला दे। वह उसका ख़ून यों निकलने दे कि वह क़ुरबानगाह की एक तरफ़ से नीचे टपके। 16वह उसका पोटा और जो उसमें है दूर करके क़ुरबानगाह की मशरिक़ी सिम्त में फेंक दे, वहाँ जहाँ राख फेंकी जाती है। 17उसे पेश करते वक़्त इमाम उसके पर पकड़कर परिंदे को फाड़ डाले, लेकिन यों कि वह बिलकुल टुकड़े टुकड़े न हो जाए। फिर इमाम उसे क़ुरबानगाह पर जलती हुई लकड़ियों पर जला दे। इस जलनेवाली क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है।

ग़ल्ला की नज़र

2 अगर कोई रब को ग़ल्ला की नज़र पेश करना चाहे तो वह इसके लिए बेहतरीन मैदा इस्तेमाल करे। उस पर वह ज़ैतून का तेल उंडेले और लुबान रखकर 2उसे हारून के बेटों के पास ले आए जो इमाम हैं। इमाम तेल से मिलाया गया मुट्ठी-भर मैदा और तमाम लुबान लेकर क़ुरबानगाह पर जला दे। यह यादगार का हिस्सा है, और उस की ख़ुशबू रब को पसंद है। 3बाक़ी मैदा और तेल हारून और उसके बेटों का हिस्सा है। वह रब की जलनेवाली क़ुरबानियों में से एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है।

4अगर यह क़ुरबानी तनूर में पकाई हुई रोटी हो तो उसमें ख़मीर न हो। इसकी दो क़िस्में हो सकती हैं, रोटियाँ जो बेहतरीन मैदे और तेल से बनी हुई हों और रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो।

5अगर यह क़ुरबानी तवे पर पकाई हुई रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो। उसमें ख़मीर न हो। 6चूँकि वह ग़ल्ला की नज़र है इसलिए रोटी को टुकड़े टुकड़े करना और उस पर तेल डालना।

7अगर यह क़ुरबानी कड़ाही में पकाई हुई रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो।

8अगर तू इन चीज़ों की बनी हुई ग़ल्ला की नज़र रब के हुज़ूर लाना चाहे तो उसे इमाम को पेश करना। वही उसे क़ुरबानगाह के पास ले आए। 9फिर इमाम यादगार का हिस्सा अलग करके उसे क़ुरबानगाह पर जला दे। ऐसी क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है। 10क़ुरबानी का बाक़ी हिस्सा हारून और उसके बेटों के लिए है। वह रब की जलनेवाली क़ुरबानियों में से एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है।

11ग़ल्ला की जितनी नज़रें तुम रब को पेश करते हो उनमें ख़मीर न हो, क्योंकि लाज़िम है कि तुम रब को जलनेवाली क़ुरबानी पेश करते वक़्त न ख़मीर, न शहद जलाओ। 12यह चीज़ें फ़सल के पहले फलों के साथ रब को पेश की जा सकती हैं, लेकिन उन्हें क़ुरबानगाह पर न जलाया जाए, क्योंकि वहाँ रब को उनकी ख़ुशबू पसंद नहीं है। 13ग़ल्ला की हर नज़र में नमक हो, क्योंकि नमक उस अहद की नुमाइंदगी करता है जो तेरे ख़ुदा ने तेरे साथ बाँधा है। तुझे हर क़ुरबानी में नमक डालना है।

14अगर तू ग़ल्ला की नज़र के लिए फ़सल के पहले फल पेश करना चाहे तो कुचली हुई कच्ची बालियाँ भूनकर पेश करना। 15चूँकि वह ग़ल्ला की नज़र है इसलिए उस पर तेल उंडेलना और लुबान रखना। 16कुचले हुए दानों और तेल का जो हिस्सा रब का है यानी यादगार का हिस्सा उसे इमाम तमाम लुबान के साथ जला दे। यह नज़र रब के लिए जलनेवाली क़ुरबानी है।

सलामती की क़ुरबानी

3 अगर कोई रब को सलामती की क़ुरबानी पेश करने के लिए गाय या बैल चढ़ाना चाहे तो वह जानवर बेऐब हो। 2वह अपना हाथ जानवर के सर पर रखकर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे। हारून के बेटे जो इमाम हैं उसका ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 3-4पेश करनेवाला अंतड़ियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 5फिर हारून के बेटे यह सब कुछ भस्म होनेवाली क़ुरबानी के साथ क़ुरबानगाह की लकड़ियों पर जला दें। यह जलनेवाली क़ुरबानी है, और इसकी ख़ुशबू रब को पसंद है।

6अगर सलामती की क़ुरबानी के लिए भेड़-बकरियों में से जानवर चुना जाए तो वह बेऐब नर या मादा हो।

7अगर वह भेड़ का बच्चा चढ़ाना चाहे तो वह उसे रब के सामने ले आए। 8वह अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हारून के बेटे उसका ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 9-10पेश

करनेवाला चरबी, पूरी दुम, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 11इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके क़ुरबानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलनेवाली क़ुरबानी है।

12अगर सलामती की क़ुरबानी बकरी की हो
13तो पेश करनेवाला उस पर हाथ रखकर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हारून के बेटे जानवर का ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 14-15पेश करनेवाला अंतड़ियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 16इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके क़ुरबानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलनेवाली क़ुरबानी है, और इसकी ख़ुशबू रब को पसंद है।

सारी चरबी रब की है। 17तुम्हारे लिए ख़ून या चरबी खाना मना है। यह न सिर्फ़ तुम्हारे लिए मना है बल्कि तुम्हारी औलाद के लिए भी, न सिर्फ़ यहाँ बल्कि हर जगह जहाँ तुम रहते हो।”

गुनाह की क़ुरबानी

4 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराईलियों को बताना कि जो भी ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म को तोड़े वह यह करे :

इमाम के लिए गुनाह की क़ुरबानी

3अगर इमामे-आज़म गुनाह करे और नतीजे में पूरी क़ौम क़ुसूरवार ठहरे तो फिर वह रब को एक बेऐब जवान बैल लेकर गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 4वह जवान बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े के पास ले आए और अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे रब के सामने ज़बह करे। 5फिर वह जानवर के ख़ून में से कुछ लेकर ख़ैमे में जाए। 6वहाँ वह अपनी उँगली उसमें डालकर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे पर छिड़के। 7फिर वह ख़ैमे के अंदर की उस क़ुरबानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर बख़ूर जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े पर की उस क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 8जवान बैल की सारी चरबी, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, 9गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 10यह बिलकुल उसी तरह किया जाए जिस तरह उस बैल के साथ किया गया जो सलामती की क़ुरबानी के लिए पेश किया जाता है। इमाम यह सब कुछ उस क़ुरबानगाह पर जला दे जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 11लेकिन वह उस की खाल, उसका सारा गोश्त, सर और पिंडलियाँ, अंतड़ियाँ और उनका गोबर 12ख़ैमागाह के बाहर ले जाए। यह चीज़ें उस पाक जगह पर जहाँ क़ुरबानियों की राख फेंकी जाती है लकड़ियों पर रखकर जला देनी हैं।

क़ौम के लिए गुनाह की क़ुरबानी

13अगर इसराईल की पूरी जमात ने ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ किया है और जमात को मालूम नहीं था तो भी वह क़ुसूरवार है। 14जब लोगों को पता लगे कि हमने गुनाह किया है तो जमात मुलाक़ात के ख़ैमे के पास एक जवान बैल ले आए और उसे गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 15जमात के बुज़ुर्ग रब के सामने अपने हाथ उसके सर पर रखें, और वह वहीं ज़बह किया जाए। 16फिर इमामे-आज़म जानवर के ख़ून में से कुछ लेकर मुलाक़ात के ख़ैमे में जाए। 17वहाँ वह अपनी उँगली उसमें डालकर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे पर छिड़के। 18फिर वह ख़ैमे के अंदर की उस क़ुरबानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर बख़ूर

जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे के
दरवाज़े की उस क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेले
जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 19इसके बाद
वह उस की तमाम चरबी निकालकर क़ुरबानगाह
पर जला दे। 20उस बैल के साथ वह सब कुछ
करे जो उसे अपने ज़ाती ग़ैरइरादी गुनाह के लिए
करना होता है। यों वह लोगों का कफ़्फ़ारा देगा
और उन्हें मुआफ़ी मिल जाएगी। 21आख़िर में वह
बैल को ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर उस तरह
जला दे जिस तरह उसे अपने लिए बैल को जला
देना होता है। यह जमात का गुनाह दूर करने की
क़ुरबानी है।

क़ौम के राहनुमा के लिए गुनाह की क़ुरबानी

22अगर कोई सरदार ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह
करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और
यों क़ुसूरवार ठहरे तो 23जब भी उसे पता लगे
कि मुझसे गुनाह हुआ है तो वह क़ुरबानी के लिए
एक बेऐब बकरा ले आए। 24वह अपना हाथ
बकरे के सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं।
यह गुनाह की क़ुरबानी है। 25इमाम अपनी उँगली
ख़ून में डालकर उसे उस क़ुरबानगाह के चारों
सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते
हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेले।
26फिर वह उस की सारी चरबी क़ुरबानगाह पर
उस तरह जला दे जिस तरह वह सलामती की
क़ुरबानियों की चरबी जला देता है। यों इमाम
उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी
हासिल हो जाएगी।

आम लोगों के लिए गुनाह की क़ुरबानी

27अगर कोई आम शख़्स ग़ैरइरादी तौर पर
गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे
और यों क़ुसूरवार ठहरे तो 28जब भी उसे पता
लगे कि मुझसे गुनाह हुआ है तो वह क़ुरबानी के
लिए एक बेऐब बकरी ले आए। 29वह अपना
हाथ बकरी के सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह
करे जहाँ भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ ज़बह की
जाती हैं। 30इमाम अपनी उँगली ख़ून में डालकर
उसे उस क़ुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए
जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह
क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेले। 31फिर वह उस
की सारी चरबी उस तरह निकाले जिस तरह वह
सलामती की क़ुरबानियों की चरबी निकालता है।
इसके बाद वह उसे क़ुरबानगाह पर जला दे। ऐसी
क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है। यों इमाम
उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी
हासिल हो जाएगी।

32अगर वह गुनाह की क़ुरबानी के लिए भेड़
का बच्चा लाना चाहे तो वह बेऐब मादा हो।
33वह अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे
वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ
ज़बह की जाती हैं। 34इमाम अपनी उँगली ख़ून
में डालकर उसे उस क़ुरबानगाह के चारों सींगों
पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं।
बाक़ी ख़ून वह क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेले।
35फिर वह उस की तमाम चरबी उस तरह निकाले
जिस तरह सलामती की क़ुरबानी के लिए ज़बह
किए गए जवान मेंढे की चरबी निकाली जाती है।
इसके बाद इमाम चरबी को क़ुरबानगाह पर उन
क़ुरबानियों समेत जला दे जो रब के लिए जलाई
जाती हैं। यों इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा
और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

गुनाह की क़ुरबानियों के बारे में ख़ास हिदायात

5 हो सकता है कि किसी ने यों गुनाह किया
कि उसने कोई जुर्म देखा या वह उसके बारे
में कुछ जानता है। तो भी जब गवाहों को क़सम
के लिए बुलाया जाता है तो वह गवाही देने के
लिए सामने नहीं आता। इस सूरत में वह क़ुसूरवार
ठहरता है।

2हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर
पर किसी नापाक चीज़ को छू लिया है, ख़ाह
वह किसी जंगली जानवर, मवेशी या रेंगनेवाले

जानवर की लाश क्यों न हो। इस सूरत में वह नापाक है और क़ुसूरवार ठहरता है।

3हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी शख़्स की नापाकी को छू लिया है यानी उस की कोई ऐसी चीज़ जिससे वह नापाक हो गया है। जब उसे मालूम हो जाता है तो वह क़ुसूरवार ठहरता है।

4हो सकता है कि किसी ने बेपरवाई से कुछ करने की क़सम खाई है, चाहे वह अच्छा काम था या ग़लत। जब वह जान लेता है कि उसने क्या किया है तो वह क़ुसूरवार ठहरता है।

5जो इस तरह के किसी गुनाह की बिना पर क़ुसूरवार हो, लाज़िम है कि वह अपना गुनाह
तसलीम करे। 6फिर वह गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर एक भेड़ या बकरी पेश करे। यों इमाम उसका कफ़्फ़ारा देगा।

7अगर क़ुसूरवार शख़्स ग़ुरबत के बाइस भेड़ या बकरी न दे सके तो वह रब को दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक गुनाह की क़ुरबानी के लिए और एक भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए।
8वह उन्हें इमाम के पास ले आए। इमाम पहले गुनाह की क़ुरबानी के लिए परिंदा पेश करे। वह उस की गरदन मरोड़ डाले लेकिन ऐसे कि सर
जुदा न हो जाए। 9फिर वह उसके ख़ून में से कुछ क़ुरबानगाह के एक पहलू पर छिड़के। बाक़ी ख़ून वह यों निकलने दे कि वह क़ुरबानगाह के पाए
पर टपके। यह गुनाह की क़ुरबानी है। 10फिर
इमाम दूसरे परिंदे को क़वायद के मुताबिक़ भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। यों इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

11अगर वह शख़्स ग़ुरबत के बाइस दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर भी न दे सके तो फिर वह गुनाह की क़ुरबानी के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करे। वह उस पर न तेल उंडेले, न लुबान रखे, क्योंकि यह ग़ल्ला की नज़र नहीं
बल्कि गुनाह की क़ुरबानी है। 12वह उसे इमाम के पास ले आए जो यादगार का हिस्सा यानी मुट्ठी-भर उन क़ुरबानियों के साथ जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यह गुनाह की क़ुरबानी है।
13यों इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। ग़ल्ला की नज़र की तरह बाक़ी मैदा इमाम का हिस्सा है।”

क़ुसूर की क़ुरबानी

14रब ने मूसा से कहा, 15“अगर किसी ने
बेईमानी करके ग़ैरइरादी तौर पर रब की मख़सूस और मुक़द्दस चीज़ों के सिलसिले में गुनाह किया हो, ऐसा शख़्स क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर रब को बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा या बकरा पेश करे। उस की क़ीमत मक़दिस
की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 16जितना
नुक़सान मक़दिस को हुआ है उतना ही वह दे। इसके अलावा वह मज़ीद 20 फ़ीसद अदा करे। वह उसे इमाम को दे दे और इमाम जानवर को क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर पेश करके उसका कफ़्फ़ारा दे। यों उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

17अगर कोई ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे तो वह क़ुसूरवार
है, और वह उसका ज़िम्मेदार ठहरेगा। 18वह
क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर इमाम के पास एक बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा ले आए। उस की क़ीमत मक़दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। फिर इमाम यह क़ुरबानी उस गुनाह के लिए चढ़ाए जो क़ुसूरवार शख़्स ने ग़ैरइरादी तौर पर किया है। यों उसे
मुआफ़ी मिल जाएगी। 19यह क़ुसूर की क़ुरबानी
है, क्योंकि वह रब का गुनाह करके क़ुसूरवार ठहरा है।”

6 रब ने मूसा से कहा, 2“हो सकता है किसी
ने गुनाह करके बेईमानी की है, मसलन उसने अपने पड़ोसी की कोई चीज़ वापस नहीं की जो उसके सुपुर्द की गई थी या जो उसे गिरवी के तौर पर मिली थी, या उसने उस की कोई चीज़ चोरी की, या उसने किसी से कोई चीज़ छीन ली,
3या उसने किसी की गुमशुदा चीज़ के बारे में झूट

बोला जब उसे मिल गई, या उसने क़सम खाकर
झूट बोला है, या इस तरह का कोई और गुनाह
किया है। 4अगर वह इस तरह का गुनाह करके
क़ुसूरवार ठहरे तो लाज़िम है कि वह वही चीज़
वापस करे जो उसने चोरी की या छीन ली या जो
उसके सुपुर्द की गई या जो गुमशुदा होकर उसके
पास आ गई है 5या जिसके बारे में उसने क़सम
खाकर झूट बोला है। वह उसका उतना ही वापस
करके 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। और वह यह सब
कुछ उस दिन वापस करे जब वह अपनी क़ुसूर
की क़ुरबानी पेश करता है। 6क़ुसूर की क़ुरबानी
के तौर पर वह एक बेऐब और क़ीमत के लिहाज़
से मुनासिब मेंढा इमाम के पास ले आए और रब
को पेश करे। उस की क़ीमत मक़दिस की शरह
के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 7फिर इमाम रब
के सामने उसका कफ़्फ़ारा देगा तो उसे मुआफ़ी
मिल जाएगी।”

भस्म होनेवाली क़ुरबानी

8रब ने मूसा से कहा, 9“हारून और उसके
बेटों को भस्म होनेवाली क़ुरबानियों के बारे में
ज़ैल की हिदायात देना : भस्म होनेवाली क़ुरबानी
पूरी रात सुबह तक क़ुरबानगाह की उस जगह पर
रहे जहाँ आग जलती है। आग को बुझने न देना।
10सुबह को इमाम कतान का लिबास और कतान
का पाजामा पहनकर क़ुरबानी से बची हुई राख
क़ुरबानगाह के पास ज़मीन पर डाले। 11फिर वह
अपने कपड़े बदलकर राख को ख़ैमागाह के बाहर
किसी पाक जगह पर छोड़ आए। 12क़ुरबानगाह
पर आग जलती रहे। वह कभी भी न बुझे।
हर सुबह इमाम लकड़ियाँ चुनकर उस पर भस्म
होनेवाली क़ुरबानी तरतीब से रखे और उस पर
सलामती की क़ुरबानी की चरबी जला दे। 13आग
हमेशा जलती रहे। वह कभी न बुझने पाए।

ग़ल्ला की नज़र

14ग़ल्ला की नज़र के बारे में हिदायात यह हैं :
हारून के बेटे उसे क़ुरबानगाह के सामने रब को
पेश करें। 15फिर इमाम यादगार का हिस्सा यानी
तेल से मिलाया गया मुट्ठी-भर बेहतरीन मैदा और
क़ुरबानी का तमाम लुबान लेकर क़ुरबानगाह पर
जला दे। इसकी ख़ुशबू रब को पसंद है। 16हारून
और उसके बेटे क़ुरबानी का बाक़ी हिस्सा खा लें।
लेकिन वह उसे मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाक़ात
के ख़ैमे की चारदीवारी के अंदर खाएँ, और उसमें
ख़मीर न हो। 17उसे पकाने के लिए उसमें ख़मीर
न डाला जाए। मैंने जलनेवाली क़ुरबानियों में
से यह हिस्सा उनके लिए मुक़र्रर किया है। यह
गुनाह की क़ुरबानी और क़ुसूर की क़ुरबानी की
तरह निहायत मुक़द्दस है। 18हारून की औलाद के
तमाम मर्द उसे खाएँ। यह उसूल अबद तक क़ायम
रहे। जो भी उसे छुएगा वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो
जाएगा।”

19रब ने मूसा से कहा, 20“जब हारून और
उसके बेटों को इमाम की ज़िम्मेदारी उठाने के
लिए मख़सूस करके तेल से मसह किया जाएगा
तो वह डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करें।
उसका आधा हिस्सा सुबह को और आधा हिस्सा
शाम के वक़्त पेश किया जाए। वह ग़ल्ला की
यह नज़र रोज़ाना पेश करें। 21उसे तेल के साथ
मिलाकर तवे पर पकाना है। फिर उसे टुकड़े टुकड़े
करके ग़ल्ला की नज़र के तौर पर पेश करना। उस
की ख़ुशबू रब को पसंद है। 22यह क़ुरबानी हमेशा
हारून की नसल का वह आदमी पेश करे जिसे
मसह करके इमामे-आज़म का ओहदा दिया गया
है, और वह उसे पूरे तौर पर रब के लिए जला दे।
23इमाम की ग़ल्ला की नज़र हमेशा पूरे तौर पर
जलाना। उसे न खाना।”

गुनाह की क़ुरबानी

24रब ने मूसा से कहा, 25“हारून और उसके
बेटों को गुनाह की क़ुरबानी के बारे में ज़ैल की
हिदायात देना : गुनाह की क़ुरबानी को रब के
सामने वहीं ज़बह करना है जहाँ भस्म होनेवाली
क़ुरबानी ज़बह की जाती है। वह निहायत मुक़द्दस
है। 26उसे पेश करनेवाला इमाम उसे मुक़द्दस

जगह पर यानी मुलाक़ात के ख़ैमे की चारदीवारी
के अंदर खाए। 27जो भी इस क़ुरबानी के गोश्त
को छू लेता है वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाता
है। अगर क़ुरबानी के ख़ून के छींटे किसी लिबास
पर पड़ जाएँ तो उसे मुक़द्दस जगह पर धोना है।
28अगर गोश्त को हंडिया में पकाया गया हो तो
उस बरतन को बाद में तोड़ देना है। अगर उसके
लिए पीतल का बरतन इस्तेमाल किया गया हो तो
उसे ख़ूब माँझकर पानी से साफ़ करना। 29इमामों
के ख़ानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं।
यह खाना निहायत मुक़द्दस है। 30लेकिन गुनाह
की हर वह क़ुरबानी खाई न जाए जिसका ख़ून
मुलाक़ात के ख़ैमे में इसलिए लाया गया है कि
मक़दिस में किसी का कफ़्फ़ारा दिया जाए। उसे
जलाना है।

क़ुसूर की क़ुरबानी

7 क़ुसूर की क़ुरबानी जो निहायत मुक़द्दस है
उसके बारे में हिदायात यह हैं :
2क़ुसूर की क़ुरबानी वहीं ज़बह करनी है जहाँ
भस्म होनेवाली क़ुरबानी ज़बह की जाती है।
उसका ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर
छिड़का जाए। 3उस की तमाम चरबी निकालकर
क़ुरबानगाह पर चढ़ानी है यानी उस की दुम,
अंतड़ियों पर की चरबी, 4गुरदे उस चरबी समेत
जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और
जोड़कलेजी। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही
अलग करना है। 5इमाम यह सब कुछ रब को
क़ुरबानगाह पर जलनेवाली क़ुरबानी के तौर पर
पेश करे। यह क़ुसूर की क़ुरबानी है। 6इमामों के
ख़ानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं।
लेकिन उसे मुक़द्दस जगह पर खाया जाए। यह
निहायत मुक़द्दस है।

7गुनाह और क़ुसूर की क़ुरबानी के लिए एक
ही उसूल है, जो इमाम क़ुरबानी को पेश करके
कफ़्फ़ारा देता है उसको उसका गोश्त मिलता है।
8इस तरह जो इमाम किसी जानवर को भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाता है उसी को
जानवर की खाल मिलती है। 9और इसी तरह
तनूर में, कड़ाही में या तवे पर पकाई गई ग़ल्ला
की हर नज़र उस इमाम को मिलती है जिसने उसे
पेश किया है। 10लेकिन हारून के तमाम बेटों को
ग़ल्ला की बाक़ी नज़रें बराबर बराबर मिलती रहें,
ख़ाह उनमें तेल मिलाया गया हो या वह ख़ुश्क हों।

सलामती की क़ुरबानी

11सलामती की क़ुरबानी जो रब को पेश की
जाती है उसके बारे में ज़ैल की हिदायात हैं :
12अगर कोई इस क़ुरबानी से अपनी
शुक्रगुज़ारी का इज़हार करना चाहे तो वह जानवर
के साथ बेख़मीरी रोटी जिसमें तेल डाला गया हो,
बेख़मीरी रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो और
रोटी जिसमें बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया
हो पेश करे। 13इसके अलावा वह ख़मीरी रोटी
भी पेश करे। 14पेश करनेवाला क़ुरबानी की हर
चीज़ का एक हिस्सा उठाकर रब के लिए मख़सूस
करे। यह उस इमाम का हिस्सा है जो जानवर का
ख़ून क़ुरबानगाह पर छिड़कता है। 15गोश्त उसी
दिन खाया जाए जब जानवर को ज़बह किया गया
हो। अगली सुबह तक कुछ नहीं बचना चाहिए।
16इस क़ुरबानी का गोश्त सिर्फ़ इस सूरत
में अगले दिन खाया जा सकता है जब किसी
ने मन्नत मानकर या अपनी ख़ुशी से उसे पेश
किया है। 17अगर कुछ गोश्त तीसरे दिन तक बच
जाए तो उसे जलाना है। 18अगर उसे तीसरे दिन
भी खाया जाए तो रब यह क़ुरबानी क़बूल नहीं
करेगा। उसका कोई फ़ायदा नहीं होगा बल्कि उसे
नापाक क़रार दिया जाएगा। जो भी उससे खाएगा
वह क़ुसूरवार ठहरेगा। 19अगर यह गोश्त किसी
नापाक चीज़ से लग जाए तो उसे नहीं खाना है
बल्कि उसे जलाया जाए। अगर गोश्त पाक है तो
हर शख़्स जो ख़ुद पाक है उसे खा सकता है।
20लेकिन अगर नापाक शख़्स रब को पेश की
गई सलामती की क़ुरबानी का यह गोश्त खाए तो
उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है। 21हो
सकता है कि किसी ने किसी नापाक चीज़ को छू

लिया है चाहे वह नापाक शख़्स, जानवर या कोई
और घिनौनी और नापाक चीज़ हो। अगर ऐसा
शख़्स रब को पेश की गई सलामती की क़ुरबानी
का गोश्त खाए तो उसे उस की क़ौम में से मिटा
डालना है।"

चरबी और ख़ून खाना मना है

22रब ने मूसा से कहा, 23"इसराईलियों को
बता देना कि गाय-बैल और भेड़-बकरियों की
चरबी खाना तुम्हारे लिए मना है। 24तुम फ़ितरी
तौर पर मरे हुए जानवरों और फाड़े हुए जानवरों
की चरबी दीगर कामों के लिए इस्तेमाल कर
सकते हो, लेकिन उसे खाना मना है। 25जो भी
उस चरबी में से खाए जो जलाकर रब को पेश
की जाती है उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना
है। 26जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ परिंदों या दीगर
जानवरों का ख़ून खाना मना है। 27जो भी ख़ून
खाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।"

क़ुरबानियों में से इमाम का हिस्सा

28रब ने मूसा से कहा, 29"इसराईलियों को
बताना कि जो रब को सलामती की क़ुरबानी
पेश करे वह रब के लिए एक हिस्सा मख़सूस
करे। 30वह जलनेवाली यह क़ुरबानी अपने हाथों
से रब को पेश करे। इसके लिए वह जानवर
की चरबी और सीना रब के सामने पेश करे।
सीना हिलानेवाली क़ुरबानी हो। 31इमाम चरबी
को क़ुरबानगाह पर जला दे जबकि सीना हारून
और उसके बेटों का हिस्सा है। 32क़ुरबानी की
दहनी रान इमाम को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर
पर दी जाए। 33वह उस इमाम का हिस्सा है जो
सलामती की क़ुरबानी का ख़ून और चरबी चढ़ाता
है।

34इसराईलियों की सलामती की क़ुर-
बानियों में से मैंने हिलानेवाला सीना और
उठानेवाली रान इमामों को दी है। यह चीज़ें हमेशा
के लिए इसराईलियों की तरफ़ से इमामों का हक़
हैं।"

35यह उस दिन जलनेवाली क़ुरबानियों में से
हारून और उसके बेटों का हिस्सा बन गईं जब उन्हें
मक़दिस में रब की ख़िदमत में पेश किया गया।
36रब ने उस दिन जब उन्हें तेल से मसह किया
गया हुक्म दिया था कि इसराईली यह हिस्सा
हमेशा इमामों को दिया करें।

37ग़रज़ यह हिदायात तमाम क़ुरबानियों के बारे
में हैं यानी भस्म होनेवाली क़ुरबानी, ग़ल्ला की
नज़र, गुनाह की क़ुरबानी, क़ुसूर की क़ुरबानी,
इमाम को मक़दिस में ख़िदमत के लिए मख़सूस
करने की क़ुरबानी और सलामती की क़ुरबानी
के बारे में। 38रब ने मूसा को यह हिदायात सीना
पहाड़ पर दीं, उस दिन जब उसने इसराईलियों को
हुक्म दिया कि वह दश्ते-सीना में रब को अपनी
क़ुरबानियाँ पेश करें।

हारून और उसके बेटों की मख़सूसियत

8 रब ने मूसा से कहा, 2"हारून और उसके
बेटों को मेरे हुज़ूर ले आना। नीज़ इमामों
के लिबास, मसह का तेल, गुनाह की क़ुरबानी के
लिए जवान बैल, दो मेंढे और बेख़मीरी रोटियों की
टोकरी ले आना। 3फिर पूरी जमात को ख़ैमे के
दरवाज़े पर जमा करना।"

4मूसा ने ऐसा ही किया। जब पूरी जमात
इकट्ठी हो गई तो 5उसने उनसे कहा, "अब मैं
वह कुछ करता हूँ जिसका हुक्म रब ने दिया
है।" 6मूसा ने हारून और उसके बेटों को सामने
लाकर ग़ुस्ल कराया। 7उसने हारून को कतान
का ज़ेरजामा पहनाकर कमरबंद लपेटा। फिर
उसने चोग़ा पहनाया जिस पर उसने बालापोश
को महारत से बुने हुए पटके से बाँधा। 8इसके
बाद उसने सीने का कीसा लगाकर उसमें दोनों क़ुरे
बनाम ऊरीम और तुम्मीम रखे। 9फिर उसने हारून
के सर पर पगड़ी रखी जिसके सामनेवाले हिस्से
पर उसने मुक़द्दस ताज यानी सोने की तख़्ती लगा
दी। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो
रब ने मूसा को दिया था।

10इसके बाद मूसा ने मसह के तेल से मक़दिस
को और जो कुछ उसमें था मसह करके उसे
मख़सूसो-मुक़द्दस किया। 11उसने यह तेल सात
बार जानवर चढ़ाने की क़ुरबानगाह और उसके
सामान पर छिड़क दिया। इसी तरह उसने सात
बार धोने के हौज़ और उस ढाँचे पर तेल छिड़क
दिया जिस पर हौज़ रखा हुआ था। यों यह चीज़ें
मख़सूसो-मुक़द्दस हुईं। 12उसने हारून के सर पर
मसह का तेल उंडेलकर उसे मसह किया। यों वह
मख़सूसो-मुक़द्दस हुआ।

13फिर मूसा ने हारून के बेटों को सामने लाकर
उन्हें ज़ेरजामे पहनाए, कमरबंद लपेटे और उनके
सरों पर पगड़ियाँ बाँधीं। सब कुछ उस हुक्म के
ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

14अब मूसा ने गुनाह की क़ुरबानी के लिए
जवान बैल को पेश किया। हारून और उसके
बेटों ने अपने हाथ उसके सर पर रखे। 15मूसा
ने उसे ज़बह करके उसके ख़ून में से कुछ लेकर
अपनी उँगली से क़ुरबानगाह के सींगों पर लगा
दिया ताकि वह गुनाहों से पाक हो जाए। बाक़ी
ख़ून उसने क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेल दिया।
यों उसने उसे मख़सूसो-मुक़द्दस करके उसका
कफ़्फ़ारा दिया। 16मूसा ने अंतड़ियों पर की
तमाम चरबी, जोड़कलेजी और दोनों गुरदे उनकी
चरबी समेत लेकर क़ुरबानगाह पर जला दिए।
17लेकिन बैल की खाल, गोश्त और अंतड़ियों के
गोबर को उसने ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर जला
दिया। सब कुछ उस हुक्म के मुताबिक़ हुआ जो
रब ने मूसा को दिया था।

18इसके बाद उसने भस्म होनेवाली क़ुर-
बानी के लिए पहला मेंढा पेश किया। हारून
और उसके बेटों ने अपने हाथ उसके सर पर
रख दिए। 19मूसा ने उसे ज़बह करके उसका
ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क
दिया। 20उसने मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके सर,
टुकड़े और चरबी जला दी। 21उसने अंतड़ियाँ
और पिंडलियाँ पानी से साफ़ करके पूरे मेंढे को
क़ुरबानगाह पर जला दिया। सब कुछ उस हुक्म
के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया
था। रब के लिए जलनेवाली यह क़ुरबानी भस्म
होनेवाली क़ुरबानी थी, और उस की ख़ुशबू रब
को पसंद थी।

22इसके बाद मूसा ने दूसरे मेंढे को पेश किया।
इस क़ुरबानी का मक़सद इमामों को मक़दिस में
ख़िदमत के लिए मख़सूस करना था। हारून और
उसके बेटों ने अपने हाथ मेंढे के सर पर रख दिए।
23मूसा ने उसे ज़बह करके उसके ख़ून में से कुछ
लेकर हारून के दहने कान की लौ पर और उसके
दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाया।
24यही उसने हारून के बेटों के साथ भी किया।
उसने उन्हें सामने लाकर उनके दहने कान की लौ
पर और उनके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों
पर ख़ून लगाया। बाक़ी ख़ून उसने क़ुरबानगाह
के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 25उसने मेंढे
की चरबी, दुम, अंतड़ियों पर की सारी चरबी,
जोड़कलेजी, दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत और
दहनी रान अलग की। 26फिर वह रब के सामने
पड़ी बेख़मीरी रोटियों की टोकरी में से एक सादा
रोटी, एक रोटी जिसमें तेल डाला गया था और
एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया था लेकर
चरबी और रान पर रख दी। 27उसने यह सब
कुछ हारून और उसके बेटों के हाथों पर रखकर
उसे हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब को
पेश किया। 28फिर उसने यह चीज़ें उनसे वापस
लेकर क़ुरबानगाह पर जला दीं जिस पर पहले
भस्म होनेवाली क़ुरबानी रखी गई थी। रब के
लिए जलनेवाली यह क़ुरबानी इमामों को मख़सूस
करने के लिए चढ़ाई गई, और उस की ख़ुशबू रब
को पसंद थी।

29मूसा ने सीना भी लिया और उसे
हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने
हिलाया। यह मख़सूसियत के मेंढे में से मूसा का
हिस्सा था। मूसा ने इसमें भी सब कुछ रब के हुक्म
के ऐन मुताबिक़ किया।

30फिर उसने मसह के तेल और क़ुरबान-
गाह पर के ख़ून में से कुछ लेकर हारून, उसके

बेटों और उनके कपड़ों पर छिड़क दिया। यों उसने उन्हें और उनके कपड़ों को मख़सूसो-मुक़द्दस किया।

31मूसा ने उनसे कहा, “गोश्त को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर उबालकर उसे उन रोटियों के साथ खाना जो मख़सूसियत की क़ुरबानियों की टोकरी में पड़ी हैं। क्योंकि रब ने मुझे यही हुक्म दिया है। 32गोश्त और रोटियों का बक़ाया जला देना। 33सात दिन तक मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े में से न निकलना, क्योंकि मक़दिस में ख़िदमत के लिए तुम्हारी मख़सूसियत के इतने ही दिन हैं। 34जो कुछ आज हुआ है वह रब के हुक्म के मुताबिक़ हुआ ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। 35तुम्हें सात रात और दिन तक ख़ैमे के दरवाज़े के अंदर रहना है। रब की इस हिदायत को मानो वरना तुम मर जाओगे, क्योंकि यह हुक्म मुझे रब की तरफ़ से दिया गया है।”

36हारून और उसके बेटों ने उन तमाम हिदायात पर अमल किया जो रब ने मूसा की मारिफ़त उन्हें दी थीं।

हारून क़ुरबानियाँ चढ़ाता है

9 मख़सूसियत के सात दिन के बाद मूसा ने आठवें दिन हारून, उसके बेटों और इसराईल के बुज़ुर्गों को बुलाया। 2उसने हारून से कहा, “एक बेऐब बछड़ा और एक बेऐब मेंढा चुनकर रब को पेश कर। बछड़ा गुनाह की क़ुरबानी के लिए और मेंढा भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए हो। 3फिर इसराईलियों को कह देना कि गुनाह की क़ुरबानी के लिए एक बकरा जबकि भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए एक बेऐब यकसाला बछड़ा और एक बेऐब यकसाला भेड़ का बच्चा पेश करो। 4साथ ही सलामती की क़ुरबानी के लिए एक बैल और एक मेंढा चुनो। तेल के साथ मिलाई हुई ग़ल्ला की नज़र भी लेकर सब कुछ रब को पेश करो। क्योंकि आज ही रब तुम पर ज़ाहिर होगा।”

5इसराईली मूसा की मतलूबा तमाम चीज़ें मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने ले आए। पूरी जमात क़रीब आकर रब के सामने खड़ी हो गई। 6मूसा ने उनसे कहा, “तुम्हें वही करना है जिसका हुक्म रब ने तुम्हें दिया है। क्योंकि आज ही रब का जलाल तुम पर ज़ाहिर होगा।”

7फिर उसने हारून से कहा, “क़ुरबानगाह के पास जाकर गुनाह की क़ुरबानी और भस्म होनेवाली क़ुरबानी चढ़ाकर अपना और अपनी क़ौम का कफ़्फ़ारा देना। रब के हुक्म के मुताबिक़ क़ौम के लिए भी क़ुरबानी पेश करना ताकि उसका कफ़्फ़ारा दिया जाए।”

8हारून क़ुरबानगाह के पास आया। उसने बछड़े को ज़बह किया। यह उसके लिए गुनाह की क़ुरबानी था। 9उसके बेटे बछड़े का ख़ून उसके पास ले आए। उसने अपनी उँगली ख़ून में डुबोकर उसे क़ुरबानगाह के सींगों पर लगाया। बाक़ी ख़ून को उसने क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेल दिया। 10फिर उसने उस की चरबी, गुरदों और जोड़कलेजी को क़ुरबानगाह पर जला दिया। जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया था वैसे ही हारून ने किया। 11बछड़े का गोश्त और खाल उसने ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर जला दी।

12इसके बाद हारून ने भस्म होनेवाली क़ुरबानी को ज़बह किया। उसके बेटों ने उसे उसका ख़ून दिया, और उसने उसे क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 13उन्होंने उसे क़ुरबानी के मुख़्तलिफ़ टुकड़े सर समेत दिए, और उसने उन्हें क़ुरबानगाह पर जला दिया। 14फिर उसने उस की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोकर भस्म होनेवाली क़ुरबानी की बाक़ी चीज़ों पर रखकर जला दीं।

15अब हारून ने क़ौम के लिए क़ुरबानी चढ़ाई। उसने गुनाह की क़ुरबानी के लिए बकरा ज़बह करके उसे पहली क़ुरबानी की तरह चढ़ाया। 16उसने भस्म होनेवाली क़ुरबानी भी क़वायद के मुताबिक़ चढ़ाई। 17उसने ग़ल्ला की नज़र पेश की और उसमें से मुट्ठी-भर क़ुरबानगाह पर जला दिया। यह ग़ल्ला की उस नज़र के अलावा थी जो

सुबह को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के साथ चढ़ाई
गई थी। 18फिर उसने सलामती की क़ुरबानी के
लिए बैल और मेंढे को ज़बह किया। यह भी
क़ौम के लिए थी। उसके बेटों ने उसे जानवरों
का ख़ून दिया, और उसने उसे क़ुरबानगाह के
चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 19लेकिन उन्होंने
बैल और मेंढे को चरबी, दुम, अंतड़ियों पर की
चरबी और जोड़कलेजी निकालकर 20सीने के
टुकड़ों पर रख दिया। हारून ने चरबी का हिस्सा
क़ुरबानगाह पर जला दिया। 21सीने के टुकड़े और
दहनी रानें उसने हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर
रब के सामने हिलाईं। उसने सब कुछ मूसा के
हुक्म के मुताबिक़ ही किया।

22तमाम क़ुरबानियाँ पेश करने के बाद हारून
ने अपने हाथ उठाकर क़ौम को बरकत दी। फिर
वह क़ुरबानगाह से उतरकर 23मूसा के साथ
मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हुआ। जब दोनों
बाहर आए तो उन्होंने क़ौम को बरकत दी। तब
रब का जलाल पूरी क़ौम पर ज़ाहिर हुआ। 24रब
के हुज़ूर से आग निकलकर क़ुरबानगाह पर उतरी
और भस्म होनेवाली क़ुरबानी और चरबी के टुकड़े
भस्म कर दिए। यह देखकर लोग ख़ुशी के नारे
मारने लगे और मुँह के बल गिर गए।

नदब और अबीहू का गुनाह

10 हारून के बेटे नदब और अबीहू ने
अपने अपने बख़ूरदान लेकर उनमें
जलते हुए कोयले डाले। उन पर बख़ूर डालकर
वह रब के सामने आए ताकि उसे पेश करें। लेकिन
यह आग नाजायज़ थी। रब ने यह पेश करने का
हुक्म नहीं दिया था। 2अचानक रब के हुज़ूर से
आग निकली जिसने उन्हें भस्म कर दिया। वहीं
रब के सामने वह मर गए।

3मूसा ने हारून से कहा, “अब वही हुआ है जो
रब ने फ़रमाया था कि जो मेरे क़रीब हैं उनसे मैं
अपनी क़ुद्दूसियत ज़ाहिर करूँगा, मैं तमाम क़ौम
के सामने ही अपने जलाल का इज़हार करूँगा।”
हारून ख़ामोश रहा। 4मूसा ने हारून के चचा
उज़्ज़ियेल के बेटों मीसाएल और इल्सफ़न को
बुलाकर कहा, “इधर आओ और अपने रिश्तेदारों
को मक़दिस के सामने से उठाकर ख़ैमागाह के
बाहर ले जाओ।” 5वह आए और मूसा के हुक्म के
ऐन मुताबिक़ उन्हें उनके ज़ेरजामों समेत उठाकर
ख़ैमागाह के बाहर ले गए।

6मूसा ने हारून और उसके दीगर बेटों इलियज़र
और इतमर से कहा, “मातम का इज़हार न करो।
न अपने बाल बिखरने दो, न अपने कपड़े फाड़ो।
वरना तुम मर जाओगे और रब पूरी जमात से
नाराज़ हो जाएगा। लेकिन तुम्हारे रिश्तेदार और
बाक़ी तमाम इसराईली ज़रूर इनका मातम करें
जिनको रब ने आग से हलाक कर दिया है।
7मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े के बाहर न निकलो
वरना तुम मर जाओगे, क्योंकि तुम्हें रब के तेल
से मसह किया गया है।” चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही
किया।

इमामों के लिए हिदायात

8रब ने हारून से कहा, 9“जब भी तुझे या
तेरे बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होना
है तो मै या कोई और नशा-आवर चीज़ पीना मना
है, वरना तुम मर जाओगे। यह उसूल आनेवाली
नसलों के लिए भी अबद तक अनमिट है। 10यह
भी लाज़िम है कि तुम मुक़द्दस और ग़ैरमुक़द्दस
चीज़ों में, पाक और नापाक चीज़ों में इम्तियाज़
करो। 11तुम्हें इसराईलियों को तमाम पाबंदियाँ
सिखानी हैं जो मैंने तुम्हें मूसा की मारिफ़त बताई
हैं।”

12मूसा ने हारून और उसके बचे हुए बेटों
इलियज़र और इतमर से कहा, “ग़ल्ला की नज़र
का जो हिस्सा रब के सामने जलाया नहीं जाता
उसे अपने लिए लेकर बेख़मीरी रोटी पकाना
और क़ुरबानगाह के पास ही खाना। क्योंकि वह
निहायत मुक़द्दस है। 13उसे मुक़द्दस जगह पर
खाना, क्योंकि वह रब की जलनेवाली क़ुरबानियों
में से तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा है। क्योंकि

मुझे इसका हुक्म दिया गया है। 14जो सीना
हिलानेवाली क़ुरबानी और दहनी रान उठानेवाली
क़ुरबानी के तौर पर पेश की गई है, वह तुम
और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ खा सकते हैं। उन्हें मुक़द्दस
जगह पर खाना है। इसराईलियों की सलामती
की क़ुरबानियों में से यह टुकड़े तुम्हारा हिस्सा
हैं। 15लेकिन पहले इमाम रान और सीने को
जलनेवाली क़ुरबानियों की चरबी के साथ पेश
करें। वह उन्हें हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब
के सामने हिलाएँ। रब फ़रमाता है कि यह टुकड़े
अबद तक तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा हैं।”

16मूसा ने दरियाफ़्त किया कि उस बकरे के
गोश्त का क्या हुआ जो गुनाह की क़ुरबानी के
तौर पर चढ़ाया गया था। उसे पता चला कि वह
भी जल गया था। यह सुनकर उसे हारून के बेटों
इलियज़र और इतमर पर ग़ुस्सा आया। उसने
पूछा, 17“तुमने गुनाह की क़ुरबानी का गोश्त क्यों
नहीं खाया? तुम्हें उसे मुक़द्दस जगह पर खाना
था। यह एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है जो रब ने
तुम्हें दिया ताकि तुम जमात का क़ुसूर दूर करके
रब के सामने लोगों का कफ़्फ़ारा दो। 18चूँकि इस
बकरे का ख़ून मक़दिस में न लाया गया इसलिए
तुम्हें उसका गोश्त मक़दिस में खाना था जिस तरह
मैंने तुम्हें हुक्म दिया था।”

19हारून ने मूसा को जवाब देकर कहा, “देखें,
आज लोगों ने अपने लिए गुनाह की क़ुरबानी और
भस्म होनेवाली क़ुरबानी रब को पेश की है जबकि
मुझ पर यह आफ़त गुज़री है। अगर मैं आज गुनाह
की क़ुरबानी से खाता तो क्या यह रब को अच्छा
लगता?” 20यह बात मूसा को अच्छी लगी।

पाक और नापाक जानवर

11 रब ने मूसा और हारून से कहा,
2“इसराईलियों को बताना कि तुम्हें
ज़मीन पर रहनेवाले जानवरों में से ज़ैल के
जानवरों को खाने की इजाज़त है : 3जिनके खुर
या पाँव बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली
करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है। 4-6ऊँट, बिज्जू
या ख़रगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक
हैं, क्योंकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उनके
खुर या पाँव चिरे हुए नहीं हैं। 7सुअर न खाना। वह
तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि उसके खुर तो चिरे
हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। 8न उनका
गोश्त खाना, न उनकी लाशों को छूना। वह तुम्हारे
लिए नापाक हैं।

9समुंदरी और दरियाई जानवर खाने के लिए
जायज़ हैं अगर उनके पर और छिलके हों।
10लेकिन जिनके पर या छिलके नहीं हैं वह सब
तुम्हारे लिए मकरूह हैं, ख़ाह वह बड़ी तादाद में
मिलकर रहते हैं या नहीं। 11इसलिए उनका गोश्त
खाना मना है, और उनकी लाशों से भी घिन खाना
है। 12पानी में रहनेवाले तमाम जानवर जिनके पर
या छिलके न हों तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

13ज़ैल के परिंदे तुम्हारे लिए क़ाबिले-घिन हों।
इन्हें खाना मना है, क्योंकि वह मकरूह हैं :
उक़ाब, दढ़ियल गिद्ध, काला गिद्ध, 14लाल चील,
हर क़िस्म की काली चील, 15हर क़िस्म का
कौवा, 16उक़ाबी उल्लू, छोटे कानवाला उल्लू,
बड़े कानवाला उल्लू, हर क़िस्म का बाज़, 17छोटा
उल्लू, क़ूक़, चिंघाड़नेवाला उल्लू, 18सफ़ेद उल्लू,
दश्ती उल्लू, मिसरी गिद्ध, 19लक़लक़, हर क़िस्म
का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़।[a]

20तमाम पर रखनेवाले कीड़े जो चार पाँवों पर
चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं, 21सिवाए उनके
जिनकी टाँगों के दो हिस्से हैं और जो फुदकते
हैं। उनको तुम खा सकते हो। 22इस नाते से तुम
मुख़्तलिफ़ क़िस्म के टिड्डे खा सकते हो। 23बाक़ी
सब पर रखनेवाले कीड़े जो चार पाँवों पर चलते
हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

[a]याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिंदों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरजुमा हो सकता है।

24-28जो भी ज़ैल के जानवरों की लाशें छुए वह शाम तक नापाक रहेगा : (अलिफ़) खुर रखनेवाले तमाम जानवर सिवाए उनके जिनके खुर या पाँव पूरे तौर पर चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं, (बे) तमाम जानवर जो अपने चार पंजों पर चलते हैं। यह जानवर तुम्हारे लिए नापाक हैं, और जो भी उनकी लाशें उठाए या छुए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े धो ले। इसके बावुजूद भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

29-30ज़मीन पर रेंगनेवाले जानवरों में से छछूँदर, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के चूहे और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की छिपकलियाँ तुम्हारे लिए नापाक हैं।
31जो भी उन्हें और उनकी लाशें छू लेता है वह शाम तक नापाक रहेगा। 32अगर उनमें से किसी
की लाश किसी चीज़ पर गिर पड़े तो वह भी नापाक हो जाएगी। इससे कोई फ़रक़ नहीं पड़ता कि वह लकड़ी, कपड़े, चमड़े या टाट की बनी हो, न इससे कोई फ़रक़ पड़ता है कि वह किस काम के लिए इस्तेमाल की जाती है। उसे हर सूरत में पानी में डुबोना है। तो भी वह शाम तक
नापाक रहेगी। 33अगर ऐसी लाश मिट्टी के बरतन
में गिर जाए तो जो कुछ भी उसमें है नापाक हो
जाएगा और तुम्हें उस बरतन को तोड़ना है। 34हर
खानेवाली चीज़ जिस पर ऐसे बरतन का पानी डाला गया है नापाक है। इसी तरह उस बरतन से निकली हुई हर पीनेवाली चीज़ नापाक है।
35जिस पर भी ऐसी लाश गिर पड़े वह नापाक
हो जाता है। अगर वह तनूर या चूल्हे पर गिर पड़े तो उनको तोड़ देना है। वह नापाक हैं और तुम्हारे
लिए नापाक रहेंगे। 36लेकिन जिस चश्मे या हौज़
में ऐसी लाश गिरे वह पाक रहता है। सिर्फ़ वह जो
लाश को छू लेता है नापाक हो जाता है। 37अगर
ऐसी लाश बीजों पर गिर पड़े जिनको अभी बोना
है तो वह पाक रहते हैं। 38लेकिन अगर बीजों पर
पानी डाला गया हो और फिर लाश उन पर गिर पड़े तो वह नापाक हैं।

39अगर ऐसा जानवर जिसे खाने की इजाज़त है मर जाए तो जो भी उस की लाश छुए शाम तक
नापाक रहेगा। 40जो उसमें से कुछ खाए या उसे
उठाकर ले जाए उसे अपने कपड़ों को धोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

41हर जानवर जो ज़मीन पर रेंगता है क़ाबिले-
घिन है। उसे खाना मना है, 42चाहे वह अपने पेट
पर चाहे चार या इससे ज़ायद पाँवों पर चलता हो।
43इन तमाम रेंगनेवालों से अपने आपको घिन
का बाइस और नापाक न बनाना, 44क्योंकि मैं
रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। लाज़िम है कि तुम अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस रखो, क्योंकि मैं क़ुद्दूस हूँ। अपने आपको ज़मीन पर रेंगनेवाले तमाम
जानवरों से नापाक न बनाना। 45मैं रब हूँ। मैं तुम्हें
मिसर से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा बनूँ। लिहाज़ा मुक़द्दस रहो, क्योंकि मैं क़ुद्दूस हूँ।

46ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों, परिंदों, आबी जानवरों और ज़मीन पर रेंगनेवाले जानवरों के बारे
में शरअ यही है। 47लाज़िम है कि तुम नापाक
और पाक में इम्तियाज़ करो, ऐसे जानवरों में जो खाने के लिए जायज़ हैं और ऐसों में जो नाजायज़ हैं।”

बच्चे की पैदाइश के बाद माँ पर पाबंदियाँ

12 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बता कि जब किसी औरत के लड़का पैदा हो तो वह माहवारी के ऐयाम की
तरह सात दिन तक नापाक रहेगी। 3आठवें दिन
लड़के का ख़तना करवाना है। 4फिर माँ मज़ीद
33 दिन इंतज़ार करे। इसके बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो ख़ून बहने से पैदा हुई है। इस दौरान वह कोई मख़सूस और मुक़द्दस चीज़ न छुए, न मक़दिस के पास जाए।

5अगर उसके लड़की पैदा हो जाए तो वह माहवारी के ऐयाम की तरह नापाक है। यह नापाकी 14 दिन तक रहेगी। फिर वह मज़ीद 66 दिन इंतज़ार करे। इसके बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो ख़ून बहने से पैदा हुई है।

6जब लड़के या लड़की के सिलसिले में यह दिन गुज़र जाएँ तो वह मुलाक़ात के ख़ैमे के

दरवाज़े पर इमाम को ज़ैल की चीज़ें दे : भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के लिए एक यकसाला भेड़
का बच्चा और गुनाह की क़ुरबानी के लिए एक
जवान कबूतर या क़ुम्री। 7इमाम यह जानवर रब
को पेश करके उसका कफ़्फ़ारा दे। फिर ख़ून बहने
के बाइस पैदा होनेवाली नापाकी दूर हो जाएगी।
उसूल एक ही है, चाहे लड़का हो या लड़की।
8अगर वह ग़ुरबत के बाइस भेड़ का बच्चा न दे
सके तो फिर वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर
ले आए, एक भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए
और दूसरा गुनाह की क़ुरबानी के लिए। यों इमाम
उसका कफ़्फ़ारा दे और वह पाक हो जाएगी।”

जिल्दी बीमारियाँ

13 रब ने मूसा और हारून से कहा,
2“अगर किसी की जिल्द में सूजन
या पपड़ी या सफ़ेद दाग़ हो और ख़तरा है कि
वबाई जिल्दी बीमारी हो तो उसे इमामों यानी
हारून या उसके बेटों के पास ले आना है। 3इमाम
उस जगह का मुआयना करे। अगर उसके बाल
सफ़ेद हो गए हों और वह जिल्द में धँसी हुई हो
तो वबाई बीमारी है। जब इमाम को यह मालूम
हो तो वह उसे नापाक क़रार दे। 4लेकिन हो
सकता है कि जिल्द की जगह सफ़ेद तो है लेकिन
जिल्द में धँसी हुई नहीं है, न उसके बाल सफ़ेद
हुए हैं। इस सूरत में इमाम उस शख़्स को सात
दिन के लिए अलहदगी में रखे। 5सातवें दिन
इमाम दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह
देखे कि मुतअस्सिरा जगह वैसी ही है और फैली
नहीं तो वह उसे मज़ीद सात दिन अलहदगी में
रखे। 6सातवें दिन वह एक और मरतबा उसका
मुआयना करे। अगर उस जगह का रंग दुबारा
सेहतमंद जिल्द के रंग की मानिंद हो रहा हो और
फैली न हो तो वह उसे पाक क़रार दे। इसका
मतलब है कि यह मरज़ आम पपड़ी से ज़्यादा
नहीं है। मरीज़ अपने कपड़े धो ले तो वह पाक हो
जाएगा। 7लेकिन अगर इसके बाद मुतअस्सिरा
जगह फैलने लगे तो वह दुबारा अपने आपको
इमाम को दिखाए। 8इमाम उसका मुआयना करे।
अगर जगह वाक़ई फैल गई हो तो इमाम उसे
नापाक क़रार दे, क्योंकि यह वबाई जिल्दी मरज़
है।
9अगर किसी के जिस्म पर वबाई जिल्दी मरज़
नज़र आए तो उसे इमाम के पास लाया जाए।
10इमाम उसका मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा
जिल्द में सफ़ेद सूजन हो, उसके बाल भी सफ़ेद
हो गए हों, और उसमें कच्चा गोश्त मौजूद हो
11तो इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी
पुरानी है। इमाम उस शख़्स को सात दिन के
लिए अलहदगी में रखकर इंतज़ार न करे बल्कि
उसे फ़ौरन नापाक क़रार दे, क्योंकि यह उस की
नापाकी का सबूत है। 12लेकिन अगर बीमारी
जल्दी से फैल गई हो, यहाँ तक कि सर से लेकर
पाँव तक पूरी जिल्द मुतअस्सिर हुई हो 13तो
इमाम यह देखकर मरीज़ को पाक क़रार दे। चूँकि
पूरी जिल्द सफ़ेद हो गई है इसलिए वह पाक
है। 14लेकिन जब भी कहीं कच्चा गोश्त नज़र
आए उस वक़्त वह नापाक हो जाता है। 15इमाम
यह देखकर मरीज़ को नापाक क़रार दे। कच्चा
गोश्त हर सूरत में नापाक है, क्योंकि इसका
मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है।
16अगर कच्चे गोश्त का यह ज़ख़म भर जाए और
मुतअस्सिरा जगह की जिल्द सफ़ेद हो जाए तो
मरीज़ इमाम के पास जाए। 17अगर इमाम देखे
कि वाक़ई ऐसा ही हुआ है और मुतअस्सिरा जिल्द
सफ़ेद हो गई है तो वह उसे पाक क़रार दे।
18अगर किसी की जिल्द पर फोड़ा हो लेकिन
वह ठीक हो जाए 19और उस की जगह सफ़ेद
सूजन या सुर्ख़ी-मायल सफ़ेद दाग़ नज़र आए तो
मरीज़ अपने आपको इमाम को दिखाए। 20अगर
वह उसका मुआयना करके देखे कि मुतअस्सिरा
जगह जिल्द के अंदर धँसी हुई है और उसके
बाल सफ़ेद हो गए हैं तो वह मरीज़ को नापाक
क़रार दे। क्योंकि इसका मतलब है कि जहाँ पहले
फोड़ा था वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी पैदा हो गई
है। 21लेकिन अगर इमाम देखे कि मुतअस्सिरा

जगह के बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह जिल्द में धँसी हुई
नज़र नहीं आती और उसका रंग दुबारा सेहतमंद
जिल्द की मानिंद हो रहा है तो वह उसे सात दिन
के लिए अलहदगी में रखे। 22अगर इस दौरान
बीमारी मज़ीद फैल जाए तो इमाम मरीज़ को
नापाक क़रार दे, क्योंकि इसका मतलब है कि
वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 23लेकिन अगर
दाग़ न फैले तो इसका मतलब है कि यह सिर्फ़
उस भरे हुए ज़ख़म का निशान है जो फोड़े से पैदा
हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक क़रार दे।

24अगर किसी की जिल्द पर जलने का ज़ख़म
लग जाए और मुतअस्सिरा जगह पर सुर्ख़ी-मायल
सफ़ेद दाग़ या सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाए 25तो
इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआयना करे। अगर
मालूम हो जाए कि मुतअस्सिरा जगह के बाल
सफ़ेद हो गए हैं और वह जिल्द में धँसी हुई है तो
इसका मतलब है कि चोट की जगह पर वबाई
जिल्दी मरज़ लग गया है। इमाम उसे नापाक
क़रार दे, क्योंकि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई
है। 26लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया है कि
दाग़ में बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह जिल्द में धँसा
हुआ नज़र नहीं आता और उसका रंग सेहतमंद
जिल्द की मानिंद हो रहा है तो वह मरीज़ को सात
दिन तक अलहदगी में रखे। 27अगर वह सातवें
दिन मालूम करे कि मुतअस्सिरा जगह फैल गई
है तो वह उसे नापाक क़रार दे। क्योंकि इसका
मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है।
28लेकिन अगर दाग़ फैला हुआ नज़र नहीं आता
और मुतअस्सिरा जिल्द का रंग सेहतमंद जिल्द
के रंग की मानिंद हो गया है तो इसका मतलब है
कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़म का निशान है
जो जलने से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक
क़रार दे।

29अगर किसी के सर या दाढ़ी की जिल्द में
निशान नज़र आए 30तो इमाम मुतअस्सिरा जगह
का मुआयना करे। अगर वह धँसी हुई नज़र आए
और उसके बाल रंग के लिहाज़ से चमकते हुए
सोने की मानिंद और बारीक हों तो इमाम मरीज़
को नापाक क़रार दे। इसका मतलब है कि ऐसी
वबाई जिल्दी बीमारी सर या दाढ़ी की जिल्द पर
लग गई है जो ख़ारिश पैदा करती है। 31लेकिन
अगर इमाम ने मालूम किया कि मुतअस्सिरा जगह
जिल्द में धँसी हुई नज़र नहीं आती अगरचे उसके
बालों का रंग बदल गया है तो वह उसे सात
दिन के लिए अलहदगी में रखे। 32सातवें दिन
इमाम जिल्द की मुतअस्सिरा जगह का मुआयना
करे। अगर वह फैली हुई नज़र नहीं आती और
उसके बालों का रंग चमकदार सोने की मानिंद
नहीं है, साथ ही वह जगह जिल्द में धँसी हुई
भी दिखाई नहीं देती, 33तो मरीज़ अपने बाल
मुँडवाए। सिर्फ़ वह बाल रह जाएँ जो मुतअस्सिरा
जगह से निकलते हैं। इमाम मरीज़ को मज़ीद सात
दिन अलहदगी में रखे। 34सातवें दिन वह उसका
मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा जगह नहीं फैली
और वह जिल्द में धँसी हुई नज़र नहीं आती
तो इमाम उसे पाक क़रार दे। वह अपने कपड़े
धो ले तो वह पाक हो जाएगा। 35लेकिन अगर
इसके बाद जिल्द की मुतअस्सिरा जगह फैलना
शुरू हो जाए 36तो इमाम दुबारा उसका मुआयना
करे। अगर वह जगह वाक़ई फैली हुई नज़र आए
तो मरीज़ नापाक है, चाहे मुतअस्सिरा जगह के
बालों का रंग चमकते सोने की मानिंद हो या न
हो। 37लेकिन अगर उसके ख़याल में मुतअस्सिरा
जगह फैली हुई नज़र नहीं आती बल्कि उसमें से
काले रंग के बाल निकल रहे हैं तो इसका मतलब
है कि मरीज़ की सेहत बहाल हो गई है। इमाम
उसे पाक क़रार दे।

38अगर किसी मर्द या औरत की जिल्द पर
सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाएँ 39तो इमाम उनका
मुआयना करे। अगर उनका सफ़ेद रंग हलका-
सा हो तो यह सिर्फ़ बेज़रर पपड़ी है। मरीज़ पाक
है।

40-41अगर किसी मर्द का सर माथे की तरफ़
या पीछे की तरफ़ गंजा है तो वह पाक है।
42लेकिन अगर उस जगह जहाँ वह गंजा है सुर्ख़ी-
मायल सफ़ेद दाग़ हो तो इसका मतलब है कि वहाँ

वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 43इमाम उसका
मुआयना करे। अगर गंजी जगह पर सुर्ख़ी-मायल
सफ़ेद सूजन हो जो वबाई जिल्दी बीमारी की
मानिंद नज़र आए 44तो मरीज़ को वबाई जिल्दी
बीमारी लग गई है। इमाम उसे नापाक क़रार दे।

नापाक मरीज़ का सुलूक

45वबाई जिल्दी बीमारी का मरीज़ फटे कपड़े
पहने। उसके बाल बिखरे रहें। वह अपनी मूँछों
को किसी कपड़े से छुपाए और पुकारता रहे,
'नापाक, नापाक।' 46जिस वक़्त तक वबाई
जिल्दी बीमारी लगी रहे वह नापाक है। वह इस
दौरान ख़ैमागाह के बाहर जाकर तनहाई में रहे।

फफूँदी से निपटने का तरीक़ा

47हो सकता है कि ऊन या कतान के किसी
लिबास पर फफूँदी लग गई है, 48या कि फफूँदी
ऊन या कतान के किसी कपड़े के टुकड़े या किसी
चमड़े या चमड़े की किसी चीज़ पर लग गई है।
49अगर फफूँदी का रंग हरा या लाल-सा हो तो
वह फैलनेवाली फफूँदी है, और लाज़िम है कि
उसे इमाम को दिखाया जाए। 50इमाम उसका
मुआयना करके उसे सात दिन के लिए अलहदगी
में रखे। 51सातवें दिन वह दुबारा उसका मुआयना
करे। अगर फफूँदी फैल गई हो तो इसका मतलब
है कि वह नुक़सानदेह है। मुतअस्सिरा चीज़
नापाक है। 52इमाम उसे जला दे, क्योंकि यह
फफूँदी नुक़सानदेह है। लाज़िम है कि उसे जला
दिया जाए। 53लेकिन अगर इन सात दिनों के बाद
फफूँदी फैली हुई नज़र नहीं आती 54तो इमाम
हुक्म दे कि मुतअस्सिरा चीज़ को धुलवाया जाए।
फिर वह उसे मज़ीद सात दिन के लिए अलहदगी
में रखे। 55इसके बाद वह दुबारा उसका मुआयना
करे। अगर वह मालूम करे कि फफूँदी तो फैली हुई
नज़र नहीं आती लेकिन उसका रंग वैसे का वैसा
है तो वह नापाक है। उसे जला देना, चाहे फफूँदी
मुतअस्सिरा चीज़ के सामनेवाले हिस्से या पिछले
हिस्से में लगी हो। 56लेकिन अगर मालूम हो जाए
कि फफूँदी का रंग माँद पड़ गया है तो इमाम कपड़े
या चमड़े में से मुतअस्सिरा जगह फाड़कर निकाल
दे। 57तो भी हो सकता है कि फफूँदी दुबारा उसी
कपड़े या चमड़े पर नज़र आए। इसका मतलब है
कि वह फैल रही है और उसे जला देना लाज़िम
है। 58लेकिन अगर फफूँदी धोने के बाद ग़ायब
हो जाए तो उसे एक और दफ़ा धोना है। फिर
मुतअस्सिरा चीज़ पाक होगी।
59इसी तरह फफूँदी से निपटना है, चाहे वह
ऊन या कतान के किसी लिबास को लग गई हो,
चाहे ऊन या कतान के किसी टुकड़े या चमड़े की
किसी चीज़ को लग गई हो। इन्हीं उसूलों के तहत
फ़ैसला करना है कि मुतअस्सिरा चीज़ पाक है या
नापाक।"

वबाई जिल्दी बीमारी के मरीज़ की शफ़ा पर क़ुरबानी

14 रब ने मूसा से कहा, 2"अगर कोई
शख़्स जिल्दी बीमारी से शफ़ा पाए
और उसे पाक-साफ़ कराना है तो उसे इमाम के
पास लाया जाए 3जो ख़ैमागाह के बाहर जाकर
उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि मरीज़
की सेहत वाक़ई बहाल हो गई है 4तो इमाम
उसके लिए दो ज़िंदा और पाक परिंदे, देवदार
की लकड़ी, क़िरमिज़ी रंग का धागा और ज़ूफ़ा
मँगवाए। 5इमाम के हुक्म पर परिंदों में से एक को
ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बरतन के ऊपर
ज़बह किया जाए। 6इमाम ज़िंदा परिंदे को देवदार
की लकड़ी, क़िरमिज़ी रंग के धागे और ज़ूफ़ा के
साथ ज़बह किए गए परिंदे के उस ख़ून में डुबो
दे जो मिट्टी के बरतन के पानी में आ गया है।
7वह पानी से मिलाया हुआ ख़ून सात बार पाक
होनेवाले शख़्स पर छिड़ककर उसे पाक क़रार दे,
फिर ज़िंदा परिंदे को खुले मैदान में छोड़ दे। 8जो
अपने आपको पाक-साफ़ करा रहा है वह अपने
कपड़े धोए, अपने तमाम बाल मुँडवाए और नहा
ले। इसके बाद वह पाक है। अब वह ख़ैमागाह
में दाख़िल हो सकता है अगरचे वह मज़ीद सात

दिन अपने डेरे में नहीं जा सकता। 9सातवें दिन
वह दुबारा अपने सर के बाल, अपनी दाढ़ी, अपने
अबरू और बाक़ी तमाम बाल मुँडवाए। वह अपने
कपड़े धोए और नहा ले। तब वह पाक है।

10आठवें दिन वह दो भेड़ के नर बच्चे और एक
यकसाला भेड़ चुन ले जो बेऐब हों। साथ ही वह
ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया
गया साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 300
मिलीलिटर तेल ले। 11फिर जिस इमाम ने उसे
पाक क़रार दिया वह उसे इन क़ुरबानियों समेत
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब को पेश करे।
12भेड़ का एक नर बच्चा और 300 मिलीलिटर
तेल क़ुसूर की क़ुरबानी के लिए है। इमाम उन्हें
हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने
हिलाए। 13फिर वह भेड़ के इस बच्चे को ख़ैमे के
दरवाज़े पर ज़बह करे जहाँ गुनाह की क़ुरबानियाँ
और भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ ज़बह की जाती
हैं। गुनाह की क़ुरबानियों की तरह क़ुसूर की
यह क़ुरबानी इमाम का हिस्सा है और निहायत
मुक़द्दस है। 14इमाम ख़ून में से कुछ लेकर पाक
होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने
हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाए। 15अब
वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ लेकर अपने
बाएँ हाथ की हथेली पर डाले। 16अपने दहने हाथ
के अंगूठे के साथवाली उँगली इस तेल में डुबोकर
वह उसे सात बार रब के सामने छिड़के। 17वह
अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और लेकर
पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके
दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगा दे
यानी उन जगहों पर जहाँ वह क़ुसूर की क़ुरबानी
का ख़ून लगा चुका है। 18इमाम अपनी हथेली पर
का बाक़ी तेल पाक होनेवाले के सर पर डालकर
रब के सामने उसका कफ़्फ़ारा दे।

19इसके बाद इमाम गुनाह की क़ुरबानी
चढ़ाकर पाक होनेवाले का कफ़्फ़ारा दे। आख़िर
में वह भस्म होनेवाली क़ुरबानी का जानवर
ज़बह करे। 20वह उसे ग़ल्ला की नज़र के साथ
क़ुरबानगाह पर चढ़ाकर उसका कफ़्फ़ारा दे। तब
वह पाक है।

21अगर शफ़ायाब शख़्स ग़ुरबत के बाइस यह
क़ुरबानियाँ नहीं चढ़ा सकता तो फिर वह क़ुसूर
की क़ुरबानी के लिए भेड़ का सिर्फ़ एक नर
बच्चा ले आए। काफ़ी है कि कफ़्फ़ारा देने के
लिए यही रब के सामने हिलाया जाए। साथ साथ
ग़ल्ला की नज़र के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन
मैदा तेल के साथ मिलाकर पेश किया जाए और
300 मिलीलिटर तेल। 22इसके अलावा वह दो
क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक को
गुनाह की क़ुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के लिए। 23आठवें दिन वह
उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम
के पास और रब के सामने ले आए ताकि वह
पाक-साफ़ हो जाए। 24इमाम भेड़ के बच्चे को
300 मिलीलिटर तेल समेत लेकर हिलानेवाली
क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। 25वह
क़ुसूर की क़ुरबानी के लिए भेड़ के बच्चे को
ज़बह करे और उसके ख़ून में से कुछ लेकर पाक
होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके
दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाए।
26अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ अपने
बाएँ हाथ की हथेली पर डाले 27और अपने दहने
हाथ के अंगूठे के साथवाली उँगली इस तेल में
डुबोकर उसे सात बार रब के सामने छिड़क दे।
28वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और
लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर
और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों
पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह क़ुसूर की
क़ुरबानी का ख़ून लगा चुका है। 29अपनी हथेली
पर का बाक़ी तेल वह पाक होनेवाले के सर पर
डाल दे ताकि रब के सामने उसका कफ़्फ़ारा दे।
30इसके बाद वह शफ़ायाब शख़्स की गुंजाइश के
मुताबिक़ दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर चढ़ाए,
31एक को गुनाह की क़ुरबानी के लिए और दूसरे
को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए। साथ ही वह
ग़ल्ला की नज़र पेश करे। यों इमाम रब के सामने

उसका कफ़्फ़ारा देता है। 32यह उसूल ऐसे शख़्स
के लिए है जो वबाई जिल्दी बीमारी से शफ़ा पा
गया है लेकिन अपनी ग़ुरबत के बाइस पाक हो
जाने के लिए पूरी क़ुरबानी पेश नहीं कर सकता।"

घरों में फफूँदी

33रब ने मूसा और हारून से कहा, 34"जब तुम
मुल्के-कनान में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो
वहाँ ऐसे मकान होंगे जिनमें मैंने फफूँदी फैलने दी
है। 35ऐसे घर का मालिक जाकर इमाम को बताए
कि मैंने अपने घर में फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी
है। 36तब इमाम हुक्म दे कि घर का मुआयना
करने से पहले घर का पूरा सामान निकाला जाए।
वरना अगर घर को नापाक क़रार दिया जाए तो
सामान को भी नापाक क़रार दिया जाएगा। इसके
बाद इमाम अंदर जाकर मकान का मुआयना
करे। 37वह दीवारों के साथ लगी हुई फफूँदी का
मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा जगहें हरी या
लाल-सी हों और दीवार के अंदर धँसी हुई नज़र
आएँ 38तो फिर इमाम घर से निकलकर सात
दिन के लिए ताला लगाए। 39सातवें दिन वह
वापस आकर मकान का मुआयना करे। अगर
फफूँदी फैली हुई नज़र आए 40तो वह हुक्म दे
कि मुतअस्सिरा पत्थरों को निकालकर आबादी
के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए।
41नीज़ वह हुक्म दे कि अंदर की दीवारों को
कुरेदा जाए और कुरेदी हुई मिट्टी को आबादी
के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए।
42फिर लोग नए पत्थर लगाकर घर को नए गारे
से पलस्तर करें। 43लेकिन अगर इसके बावुजूद
फफूँदी दुबारा पैदा हो जाए 44तो इमाम आकर
दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि
फफूँदी घर में फैल गई है तो इसका मतलब है
कि फफूँदी नुक़सानदेह है, इसलिए घर नापाक
है। 45लाज़िम है कि उसे पूरे तौर पर ढा दिया
जाए और सब कुछ यानी उसके पत्थर, लकड़ी
और पलस्तर को आबादी के बाहर किसी नापाक
जगह पर फेंका जाए।

46अगर इमाम ने किसी घर का मुआयना करके
ताला लगा दिया है और फिर भी कोई उस घर में
दाख़िल हो जाए तो वह शाम तक नापाक रहेगा।
47जो ऐसे घर में सोए या खाना खाए लाज़िम
है कि वह अपने कपड़े धो ले। 48लेकिन अगर
घर को नए सिरे से पलस्तर करने के बाद इमाम
आकर उसका दुबारा मुआयना करे और देखे कि
फफूँदी दुबारा नहीं निकली तो इसका मतलब है
कि फफूँदी ख़त्म हो गई है। वह उसे पाक क़रार
दे। 49उसे गुनाह से पाक-साफ़ कराने के लिए
वह दो परिंदे, देवदार की लकड़ी, क़िरमिज़ी रंग
का धागा और ज़ूफ़ा ले ले। 50वह परिंदों में से
एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बरतन
के ऊपर ज़बह करे। 51इसके बाद वह देवदार की
लकड़ी, ज़ूफ़ा, क़िरमिज़ी रंग का धागा और ज़िंदा
परिंदा लेकर उस ताज़ा पानी में डुबो दे जिसके
साथ ज़बह किए हुए परिंदे का ख़ून मिलाया गया
है और इस पानी को सात बार घर पर छिड़क
दे। 52इन चीज़ों से वह घर को गुनाह से पाक-
साफ़ करता है। 53आख़िर में वह ज़िंदा परिंदे को
आबादी के बाहर खुले मैदान में छोड़ दे। यों वह
घर का कफ़्फ़ारा देगा, और वह पाक-साफ़ हो
जाएगा।

54-56लाज़िम है कि हर क़िस्म की वबाई
बीमारी से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया
है, चाहे वह वबाई जिल्दी बीमारियाँ हों (मसलन
ख़ारिश, सूजन, पपड़ी या सफ़ेद दाग़), चाहे
कपड़ों या घरों में फफूँदी हो। 57इन उसूलों के
तहत फ़ैसला करना है कि कोई शख़्स या चीज़
पाक है या नापाक।"

मर्दों की नापाकी

15 रब ने मूसा और हारून से कहा,
2"इसराईलियों को बताना कि अगर
किसी मर्द को जरयान का मरज़ हो तो वह ख़ारिज
होनेवाले माए के सबब से नापाक है, 3चाहे माए
बहता रहता हो या रुक गया हो। 4जिस चीज़
पर भी मरीज़ लेटता या बैठता है वह नापाक है।

5-6जो भी उसके लेटने की जगह को छुए या
उसके बैठने की जगह पर बैठ जाए वह अपने
कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा।
7इसी तरह जो भी ऐसे मरीज़ को छुए वह अपने
कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा।
8अगर मरीज़ किसी पाक शख़्स पर थूके तो यही
कुछ करना है और वह शख़्स शाम तक नापाक
रहेगा। 9जब ऐसा मरीज़ किसी जानवर पर सवार
होता है तो हर चीज़ जिस पर वह बैठ जाता है
नापाक है। 10जो भी ऐसी चीज़ छुए या उसे
उठाकर ले जाए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले।
वह शाम तक नापाक रहेगा। 11जिस किसी को
भी मरीज़ अपने हाथ धोए बग़ैर छुए वह अपने
कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा।
12मिट्टी का जो बरतन ऐसा मरीज़ छुए उसे तोड़
दिया जाए। लकड़ी का जो बरतन वह छुए उसे
ख़ूब धोया जाए।

13जिसे इस मरज़ से शफ़ा मिली है वह सात
दिन इंतज़ार करे। इसके बाद वह ताज़ा पानी से
अपने कपड़े धोकर नहा ले। फिर वह पाक हो
जाएगा। 14आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो
जवान कबूतर लेकर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर रब के सामने इमाम को दे। 15इमाम उनमें से
एक को गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर और दूसरे
को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाए।
यों वह रब के सामने उसका कफ़्फ़ारा देगा।

16अगर किसी मर्द का नुतफ़ा ख़ारिज हो जाए
तो वह अपने पूरे जिस्म को धो ले। वह शाम तक
नापाक रहेगा। 17हर कपड़ा या चमड़ा जिससे
नुतफ़ा लग गया हो उसे धोना है। वह भी शाम
तक नापाक रहेगा। 18अगर मर्द और औरत के
हमबिसतर होने पर नुतफ़ा ख़ारिज हो जाए तो
लाज़िम है कि दोनों नहा लें। वह शाम तक नापाक
रहेंगे।

औरतों की नापाकी

19माहवारी के वक़्त औरत सात दिन तक
नापाक है। जो भी उसे छुए वह शाम तक नापाक
रहेगा। 20इस दौरान जिस चीज़ पर भी वह लेटती
या बैठती है वह नापाक है। 21-23जो भी उसके
लेटने की जगह को छुए या उसके बैठने की जगह
पर बैठ जाए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह
शाम तक नापाक रहेगा। 24अगर मर्द औरत से
हमबिसतर हो और उसी वक़्त माहवारी के दिन
शुरू हो जाएँ तो मर्द ख़ून लगने के बाइस सात
दिन तक नापाक रहेगा। जिस चीज़ पर भी वह
लेटता है वह नापाक हो जाएगी।

25अगर किसी औरत को माहवारी के दिन
छोड़कर किसी और वक़्त कई दिनों तक ख़ून
आए या ख़ून माहवारी के दिनों के बाद भी जारी
रहे तो वह माहवारी के दिनों की तरह उस वक़्त
तक नापाक रहेगी जब तक ख़ून रुक न जाए।
26जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है
वह नापाक है। 27जो भी ऐसी चीज़ को छुए
वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक
नापाक रहेगा। 28ख़ून के रुक जाने पर औरत
मज़ीद सात दिन इंतज़ार करे। फिर वह पाक
होगी। 29आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान
कबूतर लेकर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर
इमाम के पास आए। 30इमाम उनमें से एक को
गुनाह की क़ुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के लिए चढ़ाए। यों वह रब के
सामने उस की नापाकी का कफ़्फ़ारा देगा।

31लाज़िम है कि इसराईलियों को ऐसी चीज़ों
से दूर रखा जाए जिनसे वह नापाक हो जाएँ।
वरना मेरा वह मक़दिस जो उनके दरमियान है
उनसे नापाक हो जाएगा और वह हलाक हो
जाएंगे।

32लाज़िम है कि इस क़िस्म के मामलों से
ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है। इसमें वह
मर्द शामिल है जो जरयान का मरीज़ है और
वह जो नुतफ़ा ख़ारिज होने के बाइस नापाक है।
33इसमें वह औरत भी शामिल है जिसके माहवारी
के ऐयाम हैं और वह मर्द जो नापाक औरत से
हमबिसतर हो जाता है।”

यौमे-कफ़्फ़ारा

16 जब हारून के दो बेटे रब के क़रीब
आकर हलाक हुए तो इसके बाद रब
मूसा से हमकलाम हुआ। 2उसने कहा,
“अपने भाई हारून को बताना कि वह सिर्फ़
मुक़र्ररा वक़्त पर परदे के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे
में दाख़िल होकर अहद के संदूक़ के ढकने के
सामने खड़ा हो जाए, वरना वह मर जाएगा।
क्योंकि मैं ख़ुद उस ढकने के ऊपर बादल की
सूरत में ज़ाहिर होता हूँ। 3और जब भी वह
दाख़िल हो तो गुनाह की क़ुरबानी के लिए एक
जवान बैल और भस्म होनेवाली क़ुरबानी के
लिए एक मेंढा पेश करे। 4पहले वह नहाकर
इमाम के कतान के मुक़द्दस कपड़े पहन ले यानी
ज़ेरजामा, उसके नीचे पाजामा, फिर कमरबंद
और पगड़ी। 5इसराईल की जमात हारून को
गुनाह की क़ुरबानी के लिए दो बकरे और भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के लिए एक मेंढा दे।

6पहले हारून अपने और अपने घराने के लिए
जवान बैल को गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर
चढ़ाए। 7फिर वह दोनों बकरों को मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के सामने ले आए। 8वहाँ
वह क़ुरा डालकर एक को रब के लिए चुने और
दूसरे को अज़ाज़ेल के लिए। 9जो बकरा रब के
लिए है उसे वह गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश
करे। 10दूसरा बकरा जो क़ुरे के ज़रीए अज़ाज़ेल
के लिए चुना गया उसे ज़िंदा हालत में रब के
सामने खड़ा किया जाए ताकि वह जमात का
कफ़्फ़ारा दे। वहाँ से उसे रेगिस्तान में अज़ाज़ेल
के पास भेजा जाए।

11लेकिन पहले हारून जवान बैल को गुनाह
की क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाकर अपना और
अपने घराने का कफ़्फ़ारा दे। उसे ज़बह करने के
बाद 12वह बख़ूर की क़ुरबानगाह से जलते हुए
कोयलों से भरा हुआ बरतन लेकर अपनी दोनों
मुट्ठियाँ बारीक ख़ुशबूदार बख़ूर से भर ले और
मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हो जाए। 13वहाँ
वह रब के हुज़ूर बख़ूर को जलते हुए कोयलों
पर डाल दे। इससे पैदा होनेवाला धुआँ अहद
के संदूक़ का ढकना छुपा देगा ताकि हारून मर
न जाए। 14अब वह जवान बैल के ख़ून में से
कुछ लेकर अपनी उँगली से ढकने के सामनेवाले
हिस्से पर छिड़के, फिर कुछ अपनी उँगली से सात
बार उसके सामने ज़मीन पर छिड़के। 15इसके
बाद वह उस बकरे को ज़बह करे जो क़ौम के
लिए गुनाह की क़ुरबानी है। वह उसका ख़ून
मुक़द्दसतरीन कमरे में ले आए और उसे बैल के
ख़ून की तरह अहद के संदूक़ के ढकने पर और
सात बार उसके सामने ज़मीन पर छिड़के। 16यों
वह मुक़द्दसतरीन कमरे का कफ़्फ़ारा देगा जो
इसराईलियों की नापाकियों और तमाम गुनाहों से
मुतअस्सिर होता रहता है। इससे वह मुलाक़ात
के पूरे ख़ैमे का भी कफ़्फ़ारा देगा जो ख़ैमागाह
के दरमियान होने के बाइस इसराईलियों की
नापाकियों से मुतअस्सिर होता रहता है।

17जितना वक़्त हारून अपना, अपने घराने
का और इसराईल की पूरी जमात का कफ़्फ़ारा
देने के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में रहेगा इस
दौरान किसी दूसरे को मुलाक़ात के ख़ैमे में ठहरने
की इजाज़त नहीं है। 18फिर वह मुक़द्दसतरीन
कमरे से निकलकर ख़ैमे में रब के सामने पड़ी
क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा दे। वह बैल और बकरे
के ख़ून में से कुछ लेकर उसे क़ुरबानगाह के
चारों सींगों पर लगाए। 19कुछ ख़ून वह अपनी
उँगली से सात बार उस पर छिड़क दे। यों वह
उसे इसराईलियों की नापाकियों से पाक करके
मख़सूसो-मुक़द्दस करेगा।

20मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाक़ात के ख़ैमे और
क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा देने के बाद हारून ज़िंदा
बकरे को सामने लाए। 21वह अपने दोनों हाथ
उसके सर पर रखे और इसराईलियों के तमाम
क़ुसूर यानी उनके तमाम जरायम और गुनाहों का
इक़रार करके उन्हें बकरे के सर पर डाल दे। फिर
वह उसे रेगिस्तान में भेज दे। इसके लिए वह बकरे
को एक आदमी के सुपुर्द करे जिसे यह ज़िम्मेदारी

दी गई है। 22बकरा अपने आप पर उनका तमाम
क़ुसूर उठाकर किसी वीरान जगह में ले जाएगा।
वहाँ साथवाला आदमी उसे छोड़ आए।

23इसके बाद हारून मुलाक़ात के ख़ैमे में जाए
और कतान के वह कपड़े जो उसने मुक़द्दसतरीन
कमरे में दाख़िल होने से पेशतर पहन लिए थे
उतारकर वहीं छोड़ दे। 24वह मुक़द्दस जगह पर
नहाकर अपनी ख़िदमत के आम कपड़े पहन
ले। फिर वह बाहर आकर अपने और अपनी
क़ौम के लिए भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश करे
ताकि अपना और अपनी क़ौम का कफ़्फ़ारा दे।
25इसके अलावा वह गुनाह की क़ुरबानी की चरबी
क़ुरबानगाह पर जला दे।

26जो आदमी अज़ाज़ेल के लिए बकरे को
रेगिस्तान में छोड़ आया है वह अपने कपड़े धोकर
नहा ले। इसके बाद वह ख़ैमागाह में आ सकता
है।

27जिस बैल और बकरे को गुनाह की
क़ुरबानी के लिए पेश किया गया और
जिनका ख़ून कफ़्फ़ारा देने के लिए मुक़द्दस-
तरीन कमरे में लाया गया, लाज़िम है कि उनकी
खालें, गोश्त और गोबर ख़ैमागाह के बाहर जला
दिया जाए। 28यह चीज़ें जलानेवाला बाद में अपने
कपड़े धोकर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ
सकता है।

29लाज़िम है कि सातवें महीने के दसवें
दिन इसराईली और उनके दरमियान रहने-
वाले परदेसी अपनी जान को दुख दें और काम न
करें। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक क़ायम रहे।
30इस दिन तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाएगा ताकि
तुम्हें पाक किया जाए। तब तुम रब के सामने
अपने तमाम गुनाहों से पाक ठहरोगे। 31पूरा दिन
आराम करो और अपनी जान को दुख दो। यह
उसूल अबद तक क़ायम रहे।

32इस दिन इमामे-आज़म तुम्हारा कफ़्फ़ा-
रा दे, वह इमाम जिसे उसके बाप की जगह
मसह किया गया और इख़्तियार दिया गया है। वह
कतान के मुक़द्दस कपड़े पहनकर 33मुक़द्दसतरीन
कमरे, मुलाक़ात के ख़ैमे, क़ुरबानगाह, इमामों
और जमात के तमाम लोगों का कफ़्फ़ारा दे।
34लाज़िम है कि साल में एक दफ़ा इसराईलियों
के तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा दिया जाए। यह
उसूल तुम्हारे लिए अबद तक क़ायम रहे।”

सब कुछ वैसे ही किया गया जैसा रब ने मूसा
को हुक्म दिया था।

क़ुरबानी चढ़ाने का मक़ाम

17 रब ने मूसा से कहा, 2“हारून,
उसके बेटों और तमाम इस-
राईलियों को हिदायत देना 3-4कि जो भी
इसराईली अपनी गाय या भेड़-बकरी मुलाक़ात
के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब को क़ुरबानी के तौर
पर पेश न करे बल्कि ख़ैमागाह के अंदर या
बाहर किसी और जगह पर ज़बह करे वह ख़ून
बहाने का क़ुसूरवार ठहरेगा। उसने ख़ून बहाया
है, और लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में
से मिटाया जाए। 5इस हिदायत का मक़सद
यह है कि इसराईली अब से अपनी क़ुरबानियाँ
खुले मैदान में ज़बह न करें बल्कि रब को पेश
करें। वह अपने जानवरों को मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर इमाम के पास लाकर उन्हें रब
को सलामती की क़ुरबानी के तौर पर पेश करें।
6इमाम उनका ख़ून मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर की क़ुरबानगाह पर छिड़के और उनकी चरबी
उस पर जला दे। ऐसी क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को
पसंद है। 7अब से इसराईली अपनी क़ुरबानियाँ
उन बकरों के देवताओं को पेश न करें जिनकी
पैरवी करके उन्होंने ज़िना किया है। यह उनके
लिए और उनके बाद आनेवाली नसलों के लिए
एक दायमी उसूल है।

8लाज़िम है कि हर इसराईली और तुम्हारे
दरमियान रहनेवाला परदेसी अपनी भस्म
होनेवाली क़ुरबानी या कोई और क़ुरबानी
9मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाकर रब को
पेश करे। वरना उसे उस की क़ौम में से मिटाया
जाएगा।

ख़ून खाना मना है

10ख़ून खाना बिलकुल मना है। जो भी
इसराईली या तुम्हारे दरमियान रहनेवाला परदेसी
ख़ून खाए मैं उसके ख़िलाफ़ हो जाऊँगा और उसे
उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। 11क्योंकि हर
मख़लूक़ के ख़ून में उस की जान है। मैंने उसे
तुम्हें दे दिया है ताकि वह क़ुरबानगाह पर तुम्हारा
कफ़्फ़ारा दे। क्योंकि ख़ून ही उस जान के ज़रीए
जो उसमें है तुम्हारा कफ़्फ़ारा देता है। 12इसलिए
मैं कहता हूँ कि न कोई इसराईली न कोई परदेसी
ख़ून खाए।

13अगर कोई भी इसराईली या परदेसी किसी
जानवर या परिंदे का शिकार करके पकड़े जिसे
खाने की इजाज़त है तो वह उसे ज़बह करने के
बाद उसका पूरा ख़ून ज़मीन पर बहने दे और ख़ून
पर मिट्टी डाले। 14क्योंकि हर मख़लूक़ का ख़ून
उस की जान है। इसलिए मैंने इसराईलियों को
कहा है कि किसी भी मख़लूक़ का ख़ून न खाओ।
हर मख़लूक़ का ख़ून उस की जान है, और जो भी
उसे खाए उसे क़ौम में से मिटा देना है।

15अगर कोई भी इसराईली या परदेसी ऐसे
जानवर का गोश्त खाए जो फ़ितरी तौर पर मर
गया या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो
तो वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक
नापाक रहेगा। 16जो ऐसा नहीं करता उसे अपने
क़ुसूर की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।”

नाजायज़ जिंसी ताल्लुक़ात

18 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बताना कि मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ। 3मिसरियों की तरह ज़िंदगी न गुज़ारना
जिनमें तुम रहते थे। मुल्के-कनान के लोगों की
तरह भी ज़िंदगी न गुज़ारना जिनके पास मैं तुम्हें ले
जा रहा हूँ। उनके रस्मो-रिवाज न अपनाना। 4मेरे
ही अहकाम पर अमल करो और मेरी हिदायात
के मुताबिक़ चलो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 5मेरी
हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ चलना,
क्योंकि जो यों करेगा वह जीता रहेगा। मैं रब हूँ।

6तुममें से कोई भी अपनी क़रीबी रिश्तेदार से
हमबिसतर न हो। मैं रब हूँ।

7अपनी माँ से हमबिसतर न होना, वरना तेरे
बाप की बेहुरमती हो जाएगी। वह तेरी माँ है,
इसलिए उससे हमबिसतर न होना।

8अपने बाप की किसी भी बीवी से हमबिसतर
न होना, वरना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी।

9अपनी बहन से हमबिसतर न होना, चाहे वह
तेरे बाप या तेरी माँ की बेटी हो, चाहे वह तेरे ही
घर में या कहीं और पैदा हुई हो।

10अपनी पोती या नवासी से हमबिसतर न
होना, वरना तेरी अपनी बेहुरमती हो जाएगी।

11अपने बाप की बीवी की बेटी से हमबिसतर
न होना। वह तेरी बहन है।

12अपनी फूफी से हमबिसतर न होना। वह तेरे
बाप की क़रीबी रिश्तेदार है।

13अपनी ख़ाला से हमबिसतर न होना। वह तेरी
माँ की क़रीबी रिश्तेदार है।

14अपने बाप के भाई की बीवी से हम-
बिसतर न होना, वरना तेरे बाप के भाई की
बेहुरमती हो जाएगी। उस की बीवी तेरी चची है।

15अपनी बहू से हमबिसतर न होना। वह तेरे
बेटे की बीवी है।

16अपनी भाबी से हमबिसतर न होना, वरना
तेरे भाई की बेहुरमती हो जाएगी।

17अगर तेरा जिंसी ताल्लुक़ किसी औरत से हो
तो उस की बेटी, पोती या नवासी से हमबिसतर
होना मना है, क्योंकि वह उस की क़रीबी रिश्तेदार
हैं। ऐसा करना बड़ी शर्मनाक हरकत है।

18अपनी बीवी के जीते-जी उस की बहन से
शादी न करना।

19किसी औरत से उस की माहवारी के दिनों में
हमबिसतर न होना। इस दौरान वह नापाक है।

20किसी दूसरे मर्द की बीवी से हमबिसतर न
होना, वरना तू अपने आपको नापाक करेगा।

21अपने किसी भी बच्चे को मलिक देवता को
क़ुरबानी के तौर पर पेश करके जला देना मना है।

ऐसी हरकत से तू अपने ख़ुदा के नाम को दाग़
लगाएगा। मैं रब हूँ।
22मर्द दूसरे मर्द के साथ जिंसी ताल्लुक़ात न
रखे। ऐसी हरकत क़ाबिले-घिन है।
23किसी जानवर से जिंसी ताल्लुक़ात न
रखना, वरना तू नापाक हो जाएगा। औरतों के
लिए भी ऐसा करना मना है। यह बड़ी शर्मनाक
हरकत है।
24ऐसी हरकतों से अपने आपको नापाक न
करना। क्योंकि जो क़ौमें मैं तुम्हारे आगे मुल्क
से निकालूँगा वह इसी तरह नापाक होती रहीं।
25मुल्क ख़ुद भी नापाक हुआ। इसलिए मैंने उसे
उसके क़ुसूर के सबब से सज़ा दी, और नतीजे में
उसने अपने बाशिंदों को उगल दिया। 26लेकिन
तुम मेरी हिदायात और अहकाम के मुताबिक़
चलो। न देसी और न परदेसी ऐसी कोई घिनौनी
हरकत करें। 27क्योंकि यह तमाम क़ाबिले-घिन
बातें उनसे हुईं जो तुमसे पहले इस मुल्क में रहते
थे। यों मुल्क नापाक हुआ। 28लिहाज़ा अगर तुम
भी मुल्क को नापाक करोगे तो वह तुम्हें इसी
तरह उगल देगा जिस तरह उसने तुमसे पहले
मौजूद क़ौमों को उगल दिया। 29जो भी मज़कूरा
घिनौनी हरकतों में से एक करे उसे उस की क़ौम
में से मिटाया जाए। 30मेरे अहकाम के मुताबिक़
चलते रहो और ऐसे क़ाबिले-घिन रस्मो-रिवाज न
अपनाना जो तुम्हारे आने से पहले रायज थे। इनसे
अपने आपको नापाक न करना। मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ।”

मुक़द्दस क़ौम के लिए हिदायात

19 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों की पूरी जमात को बताना कि
मुक़द्दस रहो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा क़ुद्दूस
हूँ।
3तुममें से हर एक अपने माँ-बाप की इज़्ज़त
करे। हफ़्ते के दिन काम न करना। मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ। 4न बुतों की तरफ़ रुजू करना, न अपने
लिए देवता ढालना। मैं ही रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
5जब तुम रब को सलामती की क़ुरबानी पेश
करते हो तो उसे यों चढ़ाओ कि तुम मंज़ूर हो
जाओ। 6उसका गोश्त उसी दिन या अगले दिन
खाया जाए। जो भी तीसरे दिन तक बच जाता
है उसे जलाना है। 7अगर कोई उसे तीसरे दिन
खाए तो उसे इल्म होना चाहिए कि यह क़ुरबानी
नापाक है और रब को पसंद नहीं है। 8ऐसे शख़्स
को अपने क़ुसूर की सज़ा उठानी पड़ेगी, क्योंकि
उसने उस चीज़ की मुक़द्दस हालत ख़त्म की है
जो रब के लिए मख़सूस की गई थी। उसे उस की
क़ौम में से मिटाया जाए।
9कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न
काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना।
इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच
जाए उसे छोड़ना। 10अंगूर के बाग़ों में भी जो
कुछ अंगूर तोड़ते वक़्त बच जाए उसे छोड़ देना।
जो अंगूर ज़मीन पर गिर जाएँ उन्हें उठाकर न ले
जाना। उन्हें ग़रीबों और परदेसियों के लिए छोड़
देना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
11चोरी न करना, झूट न बोलना, एक दूसरे को
धोका न देना।
12मेरे नाम की क़सम खाकर धोका न देना,
वरना तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ।
13एक दूसरे को न दबाना और न लूटना। किसी
की मज़दूरी उसी दिन की शाम तक दे देना और
उसे अगली सुबह तक रोके न रखना।
14बहरे को न कोसना, न अंधे के रास्ते में कोई
चीज़ रखना जिससे वह ठोकर खाए। इसमें भी
अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। मैं रब हूँ।
15अदालत में किसी की हक़तलफ़ी न करना।
फ़ैसला करते वक़्त किसी की भी जानिबदारी न
करना, चाहे वह ग़रीब या असरो-रसूख़वाला हो।
इनसाफ़ से अपने पड़ोसी की अदालत कर।
16अपनी क़ौम में इधर-उधर फिरते हुए किसी
पर बुहतान न लगाना। कोई भी ऐसा काम न
करना जिससे किसी की जान ख़तरे में पड़ जाए।
मैं रब हूँ।

17दिल में अपने भाई से नफ़रत न करना। अगर किसी की सरज़निश करनी है तो रूबरू करना, वरना तू उसके सबब से क़ुसूरवार ठहरेगा।

18इंतक़ाम न लेना। अपनी क़ौम के किसी शख़्स पर देर तक तेरा ग़ुस्सा न रहे बल्कि अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है। मैं रब हूँ।

19मेरी हिदायात पर अमल करो। दो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानवरों को मिलाप न करने देना। अपने खेत में दो क़िस्म के बीज न बोना। ऐसा कपड़ा न पहनना जो दो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के धागों का बुना हुआ हो।

20अगर कोई आदमी किसी लौंडी से जिसकी मँगनी किसी और से हो चुकी हो हमबिसतर हो जाए और लौंडी को अब तक न पैसों से न वैसे ही आज़ाद किया गया हो तो मुनासिब सज़ा दी जाए। लेकिन उन्हें सज़ाए-मौत न दी जाए, क्योंकि उसे अब तक आज़ाद नहीं किया गया। 21क़ुसूरवार आदमी मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर एक मेंढा ले आए ताकि वह रब को क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर पेश किया जाए। 22इमाम इस क़ुरबानी से रब के सामने उसके गुनाह का कफ़्फ़ारा दे। यों उसका गुनाह मुआफ़ किया जाएगा। 23जब मुल्के-कनान में दाख़िल होने के बाद तुम फलदार दरख़्त लगाओगे तो पहले तीन साल उनका फल न खाना बल्कि उसे ममनू[a] समझना। 24चौथे साल उनका तमाम फल ख़ुशी के मुक़द्दस नज़राने के तौर पर रब के लिए मख़सूस किया जाए। 25पाँचवें साल तुम उनका फल खा सकते हो। यों तुम्हारी फ़सल बढ़ाई जाएगी। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

26ऐसा गोश्त न खाना जिसमें ख़ून हो। फ़ाल या शुगून न निकालना।

27अपने सर के बाल गोल शक्ल में न कटवाना, न अपनी दाढ़ी को तराशना। 28अपने आपको मुरदों के सबब से काटकर ज़ख़मी न करना, न अपनी जिल्द पर नुक़ूश गुदवाना। मैं रब हूँ।

29अपनी बेटी को कसबी न बनाना, वरना उस की मुक़द्दस हालत जाती रहेगी और मुल्क ज़िनाकारी के बाइस हरामकारी से भर जाएगा।

30हफ़ते के दिन आराम करना और मेरे मक़दिस का एहतराम करना। मैं रब हूँ।

31ऐसे लोगों के पास न जाना जो मुरदों से राबिता करते हैं, न ग़ैबदानों की तरफ़ रुजू करना, वरना तुम उनसे नापाक हो जाओगे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

32बूढ़े लोगों के सामने उठकर खड़ा हो जाना, बुज़ुर्गों की इज़्ज़त करना और अपने ख़ुदा का एहतराम करना। मैं रब हूँ।

33जो परदेसी तुम्हारे मुल्क में तुम्हारे दरमियान रहता है उसे न दबाना। 34उसके साथ ऐसा सुलूक कर जैसा अपने हमवतनों के साथ करता है। जिस तरह तू अपने आपसे मुहब्बत रखता है उसी तरह उससे भी मुहब्बत रखना। याद रहे कि तुम ख़ुद मिसर में परदेसी थे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

35नाइनसाफ़ी न करना। न अदालत में, न लंबाई नापते वक़्त, न तोलते वक़्त और न किसी चीज़ की मिक़दार नापते वक़्त। 36सहीह तराज़ू, सहीह बाट और सहीह पैमाना इस्तेमाल करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया हूँ।

37मेरी तमाम हिदायात और तमाम अहकाम मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ।”

जरायम की सज़ाएँ

20 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराईलियों को बताना कि तुममें से जो भी अपने बच्चे को मलिक देवता को क़ुरबानी के तौर पर पेश करे उसे सज़ाए-मौत देनी है। इसमें कोई फ़रक़ नहीं कि वह इसराईली है या परदेसी। जमात के लोग उसे संगसार करें। 3मैं ख़ुद ऐसे शख़्स के ख़िलाफ़ हो जाऊँगा और उसे उस की

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : नामख़तून।

क़ौम में से मिटा डालूँगा। क्योंकि अपने बच्चों को
मलिक को पेश करने से उसने मेरे मक़दिस को
नापाक किया और मेरे नाम को दाग़ लगाया है।
4अगर जमात के लोग अपनी आँखें बंद करके
ऐसे शख़्स की हरकतें नज़रंदाज़ करें और उसे
सज़ाए-मौत न दें 5तो फिर मैं ख़ुद ऐसे शख़्स
और उसके घराने के ख़िलाफ़ खड़ा हो जाऊँगा।
मैं उसे और उन तमाम लोगों को क़ौम में से मिटा
डालूँगा जिन्होंने उसके पीछे लगकर मलिक देवता
को सिजदा करने से ज़िना किया है।

6जो शख़्स मुरदों से राबिता करने और ग़ैबदानी
करनेवालों की तरफ़ रुजू करता है मैं उसके
ख़िलाफ़ हो जाऊँगा। उनकी पैरवी करने से वह
ज़िना करता है। मैं उसे उस की क़ौम में से
मिटा डालूँगा। 7अपने आपको मेरे लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस रखो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 8मेरी
हिदायात मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ
जो तुम्हें मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।

9जिसने भी अपने बाप या माँ पर लानत भेजी
है उसे सज़ाए-मौत दी जाए। इस हरकत से वह
अपनी मौत का ख़ुद ज़िम्मेदार है।

10अगर किसी मर्द ने किसी की बीवी के साथ
ज़िना किया है तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है।

11जो मर्द अपने बाप की बीवी से हम-
बिसतर हुआ है उसने अपने बाप की बेहुरमती की
है। दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। वह अपनी मौत
के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं।

12अगर कोई मर्द अपनी बहू से हमबिसतर
हुआ है तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। जो
कुछ उन्होंने किया है वह निहायत शर्मनाक है।
वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं।

13अगर कोई मर्द किसी दूसरे मर्द से जिंसी
ताल्लुक़ात रखे तो दोनों को इस घिनौनी हरकत
के बाइस सज़ाए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के
ख़ुद ज़िम्मेदार हैं।

14अगर कोई आदमी अपनी बीवी के अलावा
उस की माँ से भी शादी करे तो यह एक निहायत
शर्मनाक बात है। दोनों को जला देना है ताकि
तुम्हारे दरमियान कोई ऐसी ख़बीस बात न रहे।

15जो मर्द किसी जानवर से जिंसी ताल्लु-
क़ात रखे उसे सज़ाए-मौत देना है। उस जानवर
को भी मार दिया जाए। 16जो औरत किसी
जानवर से जिंसी ताल्लुक़ात रखे उसे सज़ाए-मौत
देनी है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। वह
अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं।

17जिस मर्द ने अपनी बहन से शादी की है उसने
शर्मनाक हरकत की है, चाहे वह बाप की बेटी
हो या माँ की। उन्हें इसराईली क़ौम की नज़रों
से मिटाया जाए। ऐसे शख़्स ने अपनी बहन की
बेहुरमती की है। इसलिए उसे ख़ुद अपने क़ुसूर के
नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।

18अगर कोई मर्द माहवारी के ऐयाम में किसी
औरत से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को उनकी
क़ौम में से मिटाना है। क्योंकि दोनों ने औरत के
ख़ून के मंबा से परदा उठाया है।

19अपनी ख़ाला या फूफी से हमबिसतर न
होना। क्योंकि जो ऐसा करता है वह अपनी
क़रीबी रिश्तेदार की बेहुरमती करता है। दोनों को
अपने क़ुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।

20जो अपनी चची या ताई से हमबिसतर हुआ
है उसने अपने चचा या ताया की बेहुरमती की है।
दोनों को अपने क़ुसूर के नतीजे बरदाश्त करने
पड़ेंगे। वह बेऔलाद मरेंगे।

21जिसने अपनी भाबी से शादी की है उसने
एक नजिस हरकत की है। उसने अपने भाई की
बेहुरमती की है। वह बेऔलाद रहेंगे।

22मेरी तमाम हिदायात और अहकाम को मानो
और उन पर अमल करो। वरना जिस मुल्क में मैं
तुम्हें ले जा रहा हूँ वह तुम्हें उगल देगा। 23उन
क़ौमों के रस्मो-रिवाज के मुताबिक़ ज़िंदगी न
गुज़ारना जिन्हें मैं तुम्हारे आगे से निकाल दूँगा।
मुझे इस सबब से उनसे घिन आने लगी कि वह
यह सब कुछ करते थे। 24लेकिन तुमसे मैंने कहा,
‘तुम ही उनकी ज़मीन पर क़ब्ज़ा करोगे। मैं ही
उसे तुम्हें दे दूँगा, ऐसा मुल्क जिसमें कसरत

का दूध और शहद है।’ मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ,
जिसने तुमको दीगर क़ौमों में से चुनकर अलग
कर दिया है। 25इसलिए लाज़िम है कि तुम
ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों और परिंदों में पाक
और नापाक का इम्तियाज़ करो। अपने आपको
नापाक जानवर खाने से क़ाबिले-घिन न बनाना,
चाहे वह ज़मीन पर चलते या रेंगते हैं, चाहे हवा में
उड़ते हैं। मैं ही ने उन्हें तुम्हारे लिए नापाक क़रार
दिया है। 26तुम्हें मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होना
है, क्योंकि मैं क़ुद्दूस हूँ, और मैंने तुम्हें दीगर क़ौमों
में से चुनकर अपने लिए अलग कर लिया है।

27तुममें से जो मुरदों से राबिता या ग़ैबदानी
करता है उसे सज़ाए-मौत देनी है, ख़ाह औरत हो
या मर्द। उन्हें संगसार करना। वह अपनी मौत के
ख़ुद ज़िम्मेदार हैं।”

इमामों के लिए हिदायात

21 रब ने मूसा से कहा, “हारून के बेटों
को जो इमाम हैं बता देना कि इमाम
अपने आपको किसी इसराईली की लाश के
क़रीब जाने से नापाक न करे 2सिवाए अपने
क़रीबी रिश्तेदारों के यानी माँ, बाप, बेटा, बेटी,
भाई 3और जो ग़ैरशादीशुदा बहन उसके घर में
रहती है। 4वह अपनी क़ौम में किसी और के
बाइस अपने आपको नापाक न करे, वरना उस
की मुक़द्दस हालत जाती रहेगी।

5इमाम अपने सर को न मुँडवाएँ। वह न अपनी
दाढ़ी को तराशें और न काटने से अपने आपको
ज़ख़्मी करें।

6वह अपने ख़ुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस रहें
और अपने ख़ुदा के नाम को दाग़ न लगाएँ। चूँकि
वह रब को जलनेवाली क़ुरबानियाँ यानी अपने
ख़ुदा की रोटी पेश करते हैं इसलिए लाज़िम है
कि वह मुक़द्दस रहें। 7इमाम ज़िनाकार औरत,
मंदिर की कसबी या तलाक़याफ़्ता औरत से शादी
न करें, क्योंकि वह अपने रब के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस हैं। 8इमाम को मुक़द्दस समझना, क्योंकि
वह तेरे ख़ुदा की रोटी को क़ुरबानगाह पर चढ़ाता
है। वह तेरे लिए मुक़द्दस ठहरे क्योंकि मैं रब क़ुद्दूस
हूँ। मैं ही तुम्हें मुक़द्दस करता हूँ।

9किसी इमाम की जो बेटी ज़िनाकारी से अपनी
मुक़द्दस हालत को ख़त्म कर देती है वह अपने बाप
की मुक़द्दस हालत को भी ख़त्म कर देती है। उसे
जला दिया जाए।

10इमामे-आज़म के सर पर मसह का तेल
उंडेला गया है और उसे इमामे-आज़म के मुक़द्दस
कपड़े पहनने का इख़्तियार दिया गया है। इसलिए
वह रंज के आलम में अपने बालों को बिखरने न
दे, न कभी अपने कपड़ों को फाड़े। 11वह किसी
लाश के क़रीब न जाए, चाहे वह उसके बाप या
माँ की लाश क्यों न हो, वरना वह नापाक हो
जाएगा। 12जब तक कोई लाश उसके घर में पड़ी
रहे वह मक़दिस को छोड़कर अपने घर न जाए,
वरना वह मक़दिस को नापाक करेगा। क्योंकि
उसे उसके ख़ुदा के तेल से मख़सूस किया गया
है। मैं रब हूँ। 13इमामे-आज़म को सिर्फ़ कुँवारी से
शादी की इजाज़त है। 14वह बेवा, तलाक़याफ़्ता
औरत, मंदिर की कसबी या ज़िनाकार औरत से
शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने क़बीले की कुँवारी
से, 15वरना उस की औलाद मख़सूसो-मुक़द्दस
नहीं होगी। क्योंकि मैं रब हूँ जो उसे अपने लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।”

16रब ने मूसा से यह भी कहा, 17“हारून को
बताना कि तेरी औलाद में से कोई भी जिसके
जिस्म में नुक़्स हो मेरे हुज़ूर आकर अपने ख़ुदा
की रोटी न चढ़ाए। यह उसूल आनेवाली नसलों के
लिए भी अटल है। 18क्योंकि कोई भी माज़ूर मेरे
हुज़ूर न आए, न अंधा, न लँगड़ा, न वह जिसकी
नाक चिरी हुई हो या जिसके किसी अज़ु में कमी
बेशी हो, 19न वह जिसका पाँव या हाथ टूटा हुआ
हो, 20न कुबड़ा, न बौना, न वह जिसकी आँख
में नुक़्स हो या जिसे वबाई जिल्दी बीमारी हो या
जिसके ख़ुसिये कुचले हुए हों। 21हारून इमाम
की कोई भी औलाद जिसके जिस्म में नुक़्स हो
मेरे हुज़ूर आकर रब को जलनेवाली क़ुरबानियाँ
पेश न करे। चूँकि उसमें नुक़्स है इसलिए वह

मेरे हुज़ूर आकर अपने ख़ुदा की रोटी न चढ़ाए। 22उसे अल्लाह की मुक़द्दस बल्कि मुक़द्दसतरीन क़ुरबानियों में से भी इमामों का हिस्सा खाने की इजाज़त है। 23लेकिन चूँकि उसमें नुक़्स है इसलिए वह मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के परदे के क़रीब न जाए, न क़ुरबानगाह के पास आए। वरना वह मेरी मुक़द्दस चीज़ों को नापाक करेगा। क्योंकि मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।”

24मूसा ने यह हिदायात हारून, उसके बेटों और तमाम इसराईलियों को दीं।

क़ुरबानी का गोश्त खाने की हिदायात

22 रब ने मूसा से कहा, 2“हारून और उसके बेटों को बताना कि इसराईलियों की उन क़ुरबानियों का एहतराम करो जो तुमने मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस की हैं, वरना तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ। 3जो इमाम नापाक होने के बावुजूद उन क़ुरबानियों के पास आ जाए जो इसराईलियों ने मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस की हैं उसे मेरे सामने से मिटाना है। यह उसूल आनेवाली नसलों के लिए भी अटल है। मैं रब हूँ।

4हारून की औलाद में से जो भी वबाई जिल्दी बीमारी या जरयान का मरीज़ हो उसे मुक़द्दस क़ुरबानियों में से अपना हिस्सा खाने की इजाज़त नहीं है। पहले वह पाक हो जाए। जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए जो लाश से नापाक हो गई हो या ऐसे आदमी को छुए जिसका नुतफ़ा निकला हो वह नापाक हो जाता है। 5वह नापाक रेंगनेवाले जानवर या नापाक शख़्स को छूने से भी नापाक हो जाता है, ख़ाह वह किसी भी सबब से नापाक क्यों न हुआ हो। 6जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। इसके अलावा लाज़िम है कि वह मुक़द्दस क़ुरबानियों में से अपना हिस्सा खाने से पहले नहा ले। 7सूरज के ग़ुरूब होने पर वह पाक होगा और मुक़द्दस क़ुरबानियों में से अपना हिस्सा खा सकेगा। क्योंकि वह उस की रोज़ी हैं। 8इमाम ऐसे जानवरों का गोश्त न खाए जो फ़ितरी तौर पर मर गए या जिन्हें जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो, वरना वह नापाक हो जाएगा। मैं रब हूँ।

9इमाम मेरी हिदायात के मुताबिक़ चलें, वरना वह क़ुसूरवार बन जाएंगे और मुक़द्दस चीज़ों की बेहुरमती करने के सबब से मर जाएंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।

10सिर्फ़ इमाम के ख़ानदान के अफ़राद मुक़द्दस क़ुरबानियों में से खा सकते हैं। ग़ैरशहरी या मज़दूर को इजाज़त नहीं है। 11लेकिन इमाम का ग़ुलाम या लौंडी उसमें से खा सकते हैं, चाहे उन्हें ख़रीदा गया हो या वह उसके घर में पैदा हुए हों। 12अगर इमाम की बेटी ने किसी ऐसे शख़्स से शादी की है जो इमाम नहीं है तो उसे मुक़द्दस क़ुरबानियों में से खाने की इजाज़त नहीं है। 13लेकिन हो सकता है कि वह बेवा या तलाक़याफ़्ता हो और उसके बच्चे न हों। जब वह अपने बाप के घर लौटकर वहाँ ऐसे रहेगी जैसे अपनी जवानी में तो वह अपने बाप के उस खाने में से खा सकती है जो क़ुरबानियों में से बाप का हिस्सा है। लेकिन जो इमाम के ख़ानदान का फ़रद नहीं है उसे खाने की इजाज़त नहीं है।

14जिस शख़्स ने नादानिस्ता तौर पर मुक़द्दस क़ुरबानियों में से इमाम के हिस्से से कुछ खाया है वह इमाम को सब कुछ वापस करने के अलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 15इमाम रब को पेश की हुई क़ुरबानियों की मुक़द्दस हालत यों ख़त्म न करें 16कि वह दूसरे इसराईलियों को यह मुक़द्दस चीज़ें खाने दें। ऐसी हरकत से वह उनको बड़ा क़ुसूरवार बना देंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।”

जानवरों की क़ुरबानियों के बारे में हिदायात

17रब ने मूसा से कहा, 18“हारून, उसके बेटों और इसराईलियों को बताना कि अगर तुममें से कोई इसराईली या परदेसी रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश करना चाहे तो तरीक़े-कार में कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मानकर या

वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। 19इसके लिए
लाज़िम है कि तुम एक बेऐब बैल, मेंढा या बकरा
पेश करो। फिर ही उसे क़बूल किया जाएगा।
20क़ुरबानी के लिए कभी भी ऐसा जानवर पेश न
करना जिसमें नुक़्स हो, वरना तुम उसके बाइस
मंज़ूर नहीं होगे। 21अगर कोई रब को सलामती
की क़ुरबानी पेश करना चाहे तो तरीक़े-कार में
कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मानकर
या वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। इसके लिए
लाज़िम है कि वह गाय-बैलों या भेड़-बकरियों
में से बेऐब जानवर चुने। फिर उसे क़बूल किया
जाएगा। 22रब को ऐसे जानवर पेश न करना जो
अंधे हों, जिनके आज़ा टूटे या कटे हुए हों, जिनको
रसौली हो या जिन्हें वबाई जिल्दी बीमारी लग गई
हो। रब को उन्हें जलनेवाली क़ुरबानी के तौर पर
क़ुरबानगाह पर पेश न करना। 23लेकिन जिस
गाय-बैल या भेड़-बकरी के किसी अज़ु में कमी
बेशी हो उसे पेश किया जा सकता है। शर्त यह
है कि पेश करनेवाला उसे वैसे ही दिली ख़ुशी से
चढ़ाए। अगर वह उसे अपनी मन्नत मानकर पेश
करे तो वह क़बूल नहीं किया जाएगा। 24रब को
ऐसा जानवर पेश न करना जिसके ख़ुसिये कुचले,
तोड़े या कटे हुए हों। अपने मुल्क में जानवरों को
इस तरह ख़सी न बनाना, 25न ऐसे जानवर किसी
ग़ैरमुल्की से ख़रीदकर अपने ख़ुदा की रोटी के तौर
पर पेश करना। तुम ऐसे जानवरों के बाइस मंज़ूर
नहीं होगे, क्योंकि उनमें ख़राबी और नुक़्स है।”

26रब ने मूसा से यह भी कहा, 27“जब किसी
गाय, भेड़ या बकरी का बच्चा पैदा होता है तो
लाज़िम है कि वह पहले सात दिन अपनी माँ के
पास रहे। आठवें दिन से पहले रब उसे जलनेवाली
क़ुरबानी के तौर पर क़बूल नहीं करेगा। 28किसी
गाय, भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ
समेत एक ही दिन ज़बह न करना। 29जब तुम
रब को सलामती की कोई क़ुरबानी चढ़ाना चाहते
हो तो उसे यों पेश करना कि तुम मंज़ूर हो जाओ।
30अगली सुबह तक कुछ बचा न रहे बल्कि उसे
उसी दिन खाना है। मैं रब हूँ।

31मेरे अहकाम मानो और उन पर अमल करो।
मैं रब हूँ। 32मेरे नाम को दाग़ न लगाना। लाज़िम
है कि मुझे इसराईलियों के दरमियान क़ुद्दूस माना
जाए। मैं रब हूँ जो तुम्हें अपने लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस करता हूँ। 33मैं तुम्हें मिसर से निकाल
लाया हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब हूँ।”

23 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बताना कि यह मेरी, रब की
ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को मुक़द्दस इजतिमा
के लिए जमा करना है।

सबत का दिन

3हफ़ते में छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ
दिन हर तरह से आराम का दिन है। उस दिन
मुक़द्दस इजतिमा हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ
काम न करना। यह दिन रब के लिए मख़सूस
सबत है।

फ़सह की ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद

4यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को
मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा करना है।

5फ़सह की ईद पहले महीने के चौधवें दिन शुरू
होती है। उस दिन सूरज के ग़ुरूब होने पर रब की
ख़ुशी मनाई जाए। 6अगले दिन रब की याद में
बेख़मीरी रोटी की ईद शुरू होती है। सात दिन तक
तुम्हारी रोटी में ख़मीर न हो। 7इन सात दिनों के
पहले दिन मुक़द्दस इजतिमा हो और लोग अपना
हर काम छोड़ें। 8इन सात दिनों में रोज़ाना रब को
जलनेवाली क़ुरबानी पेश करो। सातवें दिन भी
मुक़द्दस इजतिमा हो और लोग अपना हर काम
छोड़ें।”

पहले पूले की ईद

9रब ने मूसा से कहा, 10“इसराईलियों को
बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो
मैं तुम्हें दूँगा और वहाँ अनाज की फ़सल काटोगे
तो तुम्हें इमाम को पहला पूला देना है। 11इतवार
को इमाम यह पूला रब के सामने हिलाए ताकि

तुम मंज़ूर हो जाओ। 12उस दिन भेड़ का एक
यकसाला बेऐब बच्चा भी रब को पेश करना। उसे
क़ुरबानगाह पर भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर
पर चढ़ाना। 13साथ ही ग़ल्ला की नज़र के लिए
तेल से मिलाया गया 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा
भी पेश करना। जलनेवाली यह क़ुरबानी रब को
पसंद है। इसके अलावा मै की नज़र के लिए एक
लिटर मै भी पेश करना। 14पहले यह सब कुछ
करो, फिर ही तुम्हें नई फ़सल के अनाज से खाने
की इजाज़त होगी, ख़ाह वह भुना हुआ हो, ख़ाह
कच्चा या रोटी की सूरत में पकाया गया हो। जहाँ
भी तुम रहते हो वहाँ ऐसा ही करना है। यह उसूल
अबद तक क़ायम रहे।

हफ़्तों की ईद यानी पंतिकुस्त

15जिस दिन तुमने अनाज का पूला पेश किया
उस दिन से पूरे सात हफ़्ते गिनो। 16पचासवें दिन
यानी सातवें इतवार को रब को नए अनाज की
क़ुरबानी चढ़ाना। 17हर घराने की तरफ़ से रब
को हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर दो रोटियाँ
पेश की जाएँ। हर रोटी के लिए 3 किलोग्राम
बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। उनमें ख़मीर
डालकर पकाना है। यह फ़सल की पहली पैदावार
की क़ुरबानी हैं। 18इन रोटियों के साथ एक
जवान बैल, दो मेंढे और भेड़ के सात बेऐब और
यकसाला बच्चे पेश करो। उन्हें रब के हुज़ूर भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाना। इसके
अलावा ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र भी पेश
करनी है। जलनेवाली इस क़ुरबानी की ख़ुशबू रब
को पसंद है। 19फिर गुनाह की क़ुरबानी के लिए
एक बकरा और सलामती की क़ुरबानी के लिए दो
यकसाला भेड़ के बच्चे चढ़ाओ। 20इमाम भेड़ के
यह दो बच्चे मज़कूरा रोटियों समेत हिलानेवाली
क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह
रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हैं और क़ुरबानियों
में से इमाम का हिस्सा हैं। 21उसी दिन लोगों को
मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा करो। कोई भी
काम न करना। यह उसूल अबद तक क़ायम रहे,
और इसे हर जगह मानना है।

22कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न
काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना।
इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच
जाए उसे छोड़ना। बचा हुआ अनाज ग़रीबों और
परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा
हूँ।”

नए साल की ईद

23रब ने मूसा से कहा, 24“इसराईलियों को
बताना कि सातवें महीने का पहला दिन आराम
का दिन है। उस दिन मुक़द्दस इजतिमा हो जिस पर
याद दिलाने के लिए नरसिंगा फूँका जाए। 25कोई
भी काम न करना। रब को जलनेवाली क़ुरबानी
पेश करना।”

कफ़्फ़ारा का दिन

26रब ने मूसा से कहा, 27“सातवें महीने का
दसवाँ दिन कफ़्फ़ारा का दिन है। उस दिन मुक़द्दस
इजतिमा हो। अपनी जान को दुख देना और रब
को जलनेवाली क़ुरबानी पेश करना। 28उस दिन
काम न करना, क्योंकि यह कफ़्फ़ारा का दिन है,
जब रब तुम्हारे ख़ुदा के सामने तुम्हारा कफ़्फ़ारा
दिया जाता है। 29जो उस दिन अपनी जान को
दुख नहीं देता उसे उस की क़ौम में से मिटाया
जाए। 30जो उस दिन काम करता है उसे मैं उस
की क़ौम में से निकालकर हलाक करूँगा। 31कोई
भी काम न करना। यह उसूल अबद तक क़ायम
रहे, और इसे हर जगह मानना है। 32यह दिन
आराम का ख़ास दिन है जिसमें तुम्हें अपनी जान
को दुख देना है। इसे महीने के नवें दिन की शाम
से लेकर अगली शाम तक मनाना।”

झोंपड़ियों की ईद

33रब ने मूसा से कहा, 34“इसराईलियों को
बताना कि सातवें महीने के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों
की ईद शुरू होती है। इसका दौरानिया सात दिन

है। 35पहले दिन मुक़द्दस इजतिमा हो। इस दिन कोई काम न करना। 36इन सात दिनों के दौरान रब को जलनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करना। आठवें दिन मुक़द्दस इजतिमा हो। रब को जलनेवाली क़ुरबानी पेश करो। इस ख़ास इजतिमा के दिन भी काम नहीं करना है।

37यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें मुक़द्दस इजतिमा करना है ताकि रब को रोज़मर्रा की मतलूबा जलनेवाली क़ुरबानियाँ और मै की नज़रें पेश की जाएँ यानी भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें, ज़बह की क़ुरबानियाँ और मै की नज़रें। 38यह क़ुरबानियाँ उन क़ुरबानियों के अलावा हैं जो सबत के दिन चढ़ाई जाती हैं और जो तुमने हदिये के तौर पर या मन्नत मानकर या अपनी दिली ख़ुशी से पेश की हैं।

39चुनाँचे सातवें महीने के पंद्रहवें दिन फ़सल की कटाई के इख़्तिताम पर रब की यह ईद यानी झोंपड़ियों की ईद मनाओ। इसे सात दिन मनाना। पहला और आख़िरी दिन आराम के दिन हैं। 40पहले दिन अपने लिए दरख़्तों के बेहतरीन फल, खजूर की डालियाँ और घने दरख़्तों और सफ़ेदा की शाख़ें तोड़ना। सात दिन तक रब अपने ख़ुदा के सामने ख़ुशी मनाओ। 41हर साल सातवें महीने में रब की ख़ुशी में यह ईद मनाना। यह उसूल अबद तक क़ायम रहे। 42ईद के हफ़्ते के दौरान झोंपड़ियों में रहना। तमाम मुल्क में आबाद इसराईली ऐसा करें। 43फिर तुम्हारी औलाद जानेगी कि इसराईलियों को मिसर से निकालते वक़्त मैंने उन्हें झोंपड़ियों में बसाया। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"

44मूसा ने इसराईलियों को रब की ईदों के बारे में यह बातें बताईं।

रब के सामने शमादान और रोटियाँ

24 रब ने मूसा से कहा, 2"इसराई-
लियों को हुक्म दे कि वह तेरे पास
कूटे हुए ज़ैतूनों का ख़ालिस तेल ले आएँ ताकि
मुक़द्दस कमरे के शमादान के चराग़ मुतवातिर
जलते रहें। 3हारून उन्हें मुसलसल, शाम से लेकर
सुबह तक रब के हुज़ूर सँभाले यानी वहाँ जहाँ वह
मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे के सामने पड़े हैं, उस
परदे के सामने जिसके पीछे अहद का संदूक़ है।
यह उसूल अबद तक क़ायम रहे। 4वह ख़ालिस
सोने के शमादान पर लगे चराग़ों की देख-भाल
यों करे कि यह हमेशा रब के सामने जलते रहें।

5बारह रोटियाँ पकाना। हर रोटी के लिए 3
किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए।
6उन्हें दो क़तारों में रब के सामने ख़ालिस सोने की
मेज़ पर रखना। 7हर क़तार पर ख़ालिस लुबान
डालना। यह लुबान रोटी के लिए यादगारी की
क़ुरबानी है जिसे बाद में रब के लिए जलाना है।
8हर हफ़्ते को रब के सामने ताज़ा रोटियाँ इसी
तरतीब से मेज़ पर रखनी हैं। यह इसराईलियों
के लिए अबदी अहद की लाज़िमी शर्त है। 9मेज़
की रोटियाँ हारून और उसके बेटों का हिस्सा हैं,
और वह उन्हें मुक़द्दस जगह पर खाएँ, क्योंकि वह
जलनेवाली क़ुरबानियों का मुक़द्दसतरीन हिस्सा
हैं। यह अबद तक उनका हक़ रहेगा।"

अल्लाह की तौहीन, ख़ूनरेज़ी और ज़ख़मी करने की सज़ाएँ

10-11ख़ैमागाह में एक आदमी था जिसका
बाप मिसरी और माँ इसराईली थी। माँ का नाम
सलूमीत था। वह दिबरी की बेटी और दान के
क़बीले की थी। एक दिन यह आदमी ख़ैमागाह
में किसी इसराईली से झगड़ने लगा। लड़ते लड़ते
उसने रब के नाम पर कुफ़र बककर उस पर लानत
भेजी। यह सुनकर लोग उसे मूसा के पास ले
आए। 12वहाँ उन्होंने उसे पहरे में बिठाकर रब की
हिदायत का इंतज़ार किया।

13तब रब ने मूसा से कहा, 14"लानत
करनेवाले को ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ।
जिन्होंने उस की यह बातें सुनी हैं वह सब अपने
हाथ उसके सर पर रखें। फिर पूरी जमात उसे
संगसार करे। 15इसराईलियों से कहना कि जो
भी अपने ख़ुदा पर लानत भेजे उसे अपने क़ुसूर

के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे। 16जो भी रब के नाम पर कुफ़र बके उसे सज़ाए-मौत दी जाए। पूरी जमात उसे संगसार करे। जिसने रब के नाम पर कुफ़र बका हो उसे ज़रूर सज़ाए-मौत देनी है, ख़ाह देसी हो या परदेसी।

17जिसने किसी को मार डाला है उसे सज़ाए-मौत दी जाए। 18जिसने किसी के जानवर को मार डाला है वह उसका मुआवज़ा दे। जान के बदले जान दी जाए। 19अगर किसी ने किसी को ज़ख़मी कर दिया है तो वही कुछ उसके साथ किया जाए जो उसने दूसरे के साथ किया है। 20अगर दूसरे की कोई हड्डी टूट जाए तो उस की वही हड्डी तोड़ी जाए। अगर दूसरे की आँख ज़ाया हो जाए तो उस की आँख ज़ाया कर दी जाए। अगर दूसरे का दाँत टूट जाए तो उसका वही दाँत तोड़ा जाए। जो भी ज़ख़म उसने दूसरे को पहुँचाया वही ज़ख़म उसे पहुँचाया जाए। 21जिसने किसी जानवर को मार डाला है वह उसका मुआवज़ा दे, लेकिन जिसने किसी इनसान को मार दिया है उसे सज़ाए-मौत देनी है। 22देसी और परदेसी के लिए तुम्हारा एक ही क़ानून हो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

23फिर मूसा ने इसराईलियों से बात की, और उन्होंने रब पर लानत भेजनेवाले को ख़ैमागाह से बाहर ले जाकर उसे संगसार किया। उन्होंने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

ज़मीन के लिए सबत का साल

25 रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से कहा, 2“इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो लाज़िम है कि रब की ताज़ीम में ज़मीन एक साल आराम करे। 3छः साल के दौरान अपने खेतों में बीज बोना, अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट करना और उनकी फ़सलें जमा करना। 4लेकिन सातवाँ साल ज़मीन के लिए आराम का साल है, रब की ताज़ीम में सबत का साल। उस साल न अपने खेतों में बीज बोना, न अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट करना। 5जो अनाज ख़ुद बख़ुद उगता है उस की कटाई न करना और जो अंगूर उस साल लगते हैं उनको तोड़कर जमा न करना, क्योंकि ज़मीन को एक साल के लिए आराम करना है। 6अलबत्ता जो भी यह ज़मीन आराम के साल में पैदा करेगी उससे तुम अपनी रोज़ाना की ज़रूरियात पूरी कर सकते हो यानी तू, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ, तेरे मज़दूर, तेरे ग़ैरशहरी, तेरे साथ रहनेवाले परदेसी, 7तेरे मवेशी और तेरी ज़मीन पर रहनेवाले जंगली जानवर। जो कुछ भी यह ज़मीन पैदा करती है वह खाया जा सकता है।

बहाली का साल

8सात सबत के साल यानी 49 साल के बाद एक और काम करना है। 9पचासवें साल के सातवें महीने के दसवें दिन यानी कफ़्फ़ारा के दिन अपने मुल्क की हर जगह नरसिंगा बजाना। 10पचासवाँ साल मख़सूसो-मुक़द्दस करो और पूरे मुल्क में एलान करो कि तमाम बाशिंदों को आज़ाद कर दिया जाए। यह बहाली का साल हो जिसमें हर शख़्स को उस की मिलकियत वापस की जाए और हर ग़ुलाम को आज़ाद किया जाए ताकि वह अपने रिश्तेदारों के पास वापस जा सके। 11यह पचासवाँ साल बहाली का साल हो, इसलिए न अपने खेतों में बीज बोना, न ख़ुद बख़ुद उगनेवाले अनाज की कटाई करना, और न अंगूर तोड़कर जमा करना। 12क्योंकि यह बहाली का साल है जो तुम्हारे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। रोज़ाना उतनी ही पैदावार लेना कि एक दिन की ज़रूरियात पूरी हो जाएँ। 13बहाली के साल में हर शख़्स को उस की मिलकियत वापस की जाए।

14चुनाँचे जब कभी तुम अपने किसी हमवतन भाई को ज़मीन बेचते या उससे ख़रीदते हो तो उससे नाजायज़ फ़ायदा न उठाना। 15ज़मीन की क़ीमत इस हिसाब से मुक़र्रर की जाए कि वह अगले बहाली के साल तक कितने साल फ़सलें पैदा करेगी। 16अगर बहुत साल रह गए हों तो उस की क़ीमत ज़्यादा होगी, और अगर कम साल रह गए हों तो उस की क़ीमत कम होगी। क्योंकि उन

फ़सलों की तादाद बिक रही है जो ज़मीन अगले बहाली के साल तक पैदा कर सकती है।

17अपने हमवतन से नाजायज़ फ़ायदा न उठाना बल्कि रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना, क्योंकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

18मेरी हिदायात पर अमल करना और मेरे अहकाम को मानकर उनके मुताबिक़ चलना।
तब तुम अपने मुल्क में महफ़ूज़ रहोगे। 19ज़मीन
अपनी पूरी पैदावार देगी, तुम सेर हो जाओगे
और महफ़ूज़ रहोगे। 20हो सकता है कोई पूछे,
'हम सातवें साल में क्या खाएँगे जबकि हम बीज
नहीं बोएँगे और फ़सल नहीं काटेंगे?' 21जवाब
यह है कि मैं छटे साल में ज़मीन को इतनी बरकत दूँगा कि उस साल की पैदावार तीन साल
के लिए काफ़ी होगी। 22जब तुम आठवें साल
बीज बोओगे तो तुम्हारे पास छटे साल की इतनी पैदावार बाक़ी होगी कि तुम फ़सल की कटाई तक गुज़ारा कर सकोगे।

मौरूसी ज़मीन के हुक़ूक़

23कोई ज़मीन भी हमेशा के लिए न बेची जाए,
क्योंकि मुल्क की तमाम ज़मीन मेरी ही है। तुम
मेरे हुज़ूर सिर्फ़ परदेसी और ग़ैरशहरी हो। 24मुल्क
में जहाँ भी ज़मीन बिक जाए वहाँ मौरूसी मालिक का यह हक़ माना जाए कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है।

25अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब होकर अपनी कुछ ज़मीन बेचने पर मजबूर हो जाए तो लाज़िम है कि उसका सबसे क़रीबी रिश्तेदार
उसे वापस ख़रीद ले। 26हो सकता है कि ऐसे
शख़्स का कोई क़रीबी रिश्तेदार न हो जो उस की ज़मीन वापस ख़रीद सके, लेकिन वह ख़ुद कुछ देर के बाद इतने पैसे जमा करता है कि
वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है। 27इस
सूरत में वह हिसाब करे कि ख़रीदनेवाले के लिए अगले बहाली के साल तक कितने साल रह गए हैं। जितना नुक़सान ख़रीदनेवाले को ज़मीन को बहाली के साल से पहले वापस देने से पहुँचेगा
उतने ही पैसे उसे देने हैं। 28लेकिन अगर उसके
पास इतने पैसे न हों तो ज़मीन अगले बहाली के साल तक ख़रीदनेवाले के हाथ में रहेगी। फिर उसे मौरूसी मालिक को वापस दिया जाएगा।

29अगर किसी का घर फ़सीलदार शहर में है तो जब वह उसे बेचेगा तो अपना घर वापस ख़रीदने
का हक़ सिर्फ़ एक साल तक रहेगा। 30अगर
पहला मालिक उसे पहले साल के अंदर अंदर न ख़रीदे तो वह हमेशा के लिए ख़रीदनेवाले की मौरूसी मिलकियत बन जाएगा। वह बहाली के साल में भी वापस नहीं किया जाएगा।

31लेकिन जो घर ऐसी आबादी में है जिसकी फ़सील न हो वह देहात में शुमार किया जाता है। उसके मौरूसी मालिक को हक़ हासिल है कि हर वक़्त अपना घर वापस ख़रीद सके। बहाली के साल में इस घर को लाज़िमन वापस कर देना है।

32लेकिन लावियों को यह हक़ हासिल है कि वह अपने वह घर हर वक़्त ख़रीद सकते हैं जो
उनके लिए मुक़र्रर किए हुए शहरों में हैं। 33अगर
ऐसा घर किसी लावी के हाथ फ़रोख़्त किया जाए और वापस न ख़रीदा जाए तो उसे लाज़िमन बहाली के साल में वापस करना है। क्योंकि लावी के जो घर उनके मुक़र्ररा शहरों में होते हैं वह इसराईलियों में उनकी मौरूसी मिलकियत हैं।
34लेकिन जो ज़मीनें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने के लिए मुक़र्रर हैं उन्हें बेचने की इजाज़त नहीं है। वह उनकी दायमी मिलकियत हैं।

ग़रीबों के लिए क़र्ज़ा

35अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो जाए और गुज़ारा न कर सके तो उस की मदद कर। उस तरह उस की मदद करना जिस तरह परदेसी या ग़ैरशहरी की मदद करनी होती है ताकि वह
तेरे साथ रहते हुए ज़िंदगी गुज़ार सके। 36उससे
किसी तरह का सूद न लेना बल्कि अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना ताकि तेरा भाई तेरे साथ ज़िंदगी
गुज़ार सके। 37अगर वह तेरा क़र्ज़दार हो तो
उससे सूद न लेना। इसी तरह ख़ुराक बेचते वक़्त

उससे नफ़ा न लेना। 38मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
मैं तुम्हें इसलिए मिसर से निकाल लाया कि तुम्हें
मुल्के-कनान दूँ और तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

इसराईली ग़ुलामों के हुक़ूक़

39अगर तेरा कोई इसराईली भाई ग़रीब होकर
अपने आपको तेरे हाथ बेच डाले तो उससे ग़ुलाम
का-सा काम न कराना। 40उसके साथ मज़दूर
या ग़ैरशहरी का-सा सुलूक करना। वह तेरे लिए
बहाली के साल तक काम करे। 41फिर वह और
उसके बाल-बच्चे आज़ाद होकर अपने रिश्तेदारों
और मौरूसी ज़मीन के पास वापस जाएँ। 42चूँकि
इसराईली मेरे ख़ादिम हैं जिन्हें मैं मिसर से निकाल
लाया इसलिए उन्हें ग़ुलामी में न बेचा जाए।
43ऐसे लोगों पर सख़्ती से हुक्मरानी न करना
बल्कि अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना।

44तुम पड़ोसी ममालिक से अपने लिए ग़ुलाम
और लौंडियाँ हासिल कर सकते हो। 45जो
परदेसी ग़ैरशहरी के तौर पर तुम्हारे मुल्क में
आबाद हैं उन्हें भी तुम ख़रीद सकते हो। उनमें
वह भी शामिल हैं जो तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए
हैं। वही तुम्हारी मिलकियत बनकर 46तुम्हारे बेटों
की मीरास में आ जाएँ और वही हमेशा तुम्हारे
ग़ुलाम रहें। लेकिन अपने हमवतन भाइयों पर
सख़्त हुक्मरानी न करना।

47अगर तेरे मुल्क में रहनेवाला कोई परदेसी या
ग़ैरशहरी अमीर हो जाए जबकि तेरा कोई हमवतन
भाई ग़रीब होकर अपने आपको उस परदेसी या
ग़ैरशहरी या उसके ख़ानदान के किसी फ़रद को
बेच डाले 48तो बिक जाने के बाद उसे आज़ादी
ख़रीदने का हक़ हासिल है। कोई भाई, 49चचा,
ताया, चचा या ताया का बेटा या कोई और क़रीबी
रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद सकता है। वह ख़ुद
भी अपनी आज़ादी ख़रीद सकता है अगर उसके
पास पैसे काफ़ी हों। 50इस सूरत में वह अपने
मालिक से मिलकर वह साल गिने जो उसके
ख़रीदने से लेकर अगले बहाली के साल तक
बाक़ी हैं। उस की आज़ादी के पैसे उस क़ीमत
पर मबनी हों जो मज़दूर को इतने सालों के लिए
दिए जाते हैं। 51-52जितने साल बाक़ी रह गए
हैं उनके मुताबिक़ उस की बिक जाने की क़ीमत
में से पैसे वापस कर दिए जाएँ। 53उसके साथ
साल बसाल मज़दूर का-सा सुलूक किया जाए।
उसका मालिक उस पर सख़्त हुक्मरानी न करे।
54अगर वह इस तरह के किसी तरीक़े से आज़ाद
न हो जाए तो उसे और उसके बच्चों को हर हालत
में अगले बहाली के साल में आज़ाद कर देना है,
55क्योंकि इसराईली मेरे ही ख़ादिम हैं। वह मेरे
ही ख़ादिम हैं जिन्हें मैं मिसर से निकाल लाया। मैं
रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

फ़रमाँबरदारी का अज्र

26 अपने लिए बुत न बनाना। न अपने
लिए देवता के मुजस्समे या पत्थर के
मख़सूस किए हुए सतून खड़े करना, न सिजदा
करने के लिए अपने मुल्क में ऐसे पत्थर रखना
जिनमें देवता की तस्वीर कंदा की गई हो। मैं रब
तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 2सबत का दिन मनाना और मेरे
मक़दिस की ताज़ीम करना। मैं रब हूँ।

3अगर तुम मेरी हिदायात पर चलो और मेरे
अहकाम मानकर उन पर अमल करो 4तो मैं वक़्त
पर बारिश भेजूँगा, ज़मीन अपनी पैदावार देगी
और दरख़्त अपने अपने फल लाएँगे। 5कसरत के
बाइस अनाज की फ़सल की कटाई अंगूर तोड़ते
वक़्त तक जारी रहेगी और अंगूर की फ़सल उस
वक़्त तक तोड़ी जाएगी जब तक बीज बोने का
मौसम आएगा। इतनी ख़ुराक मिलेगी कि तुम
कभी भूके नहीं होगे। और तुम अपने मुल्क में
महफ़ूज़ रहोगे।

6मैं मुल्क को अमनो-अमान बख़्शूँगा। तुम
आराम से लेट जाओगे, क्योंकि किसी ख़तरे से
डरने की ज़रूरत नहीं होगी। मैं वहशी जानवर
मुल्क से दूर कर दूँगा, और वह तलवार की
क़त्लो-ग़ारत से बचा रहेगा। 7तुम अपने दुश्मनों
पर ग़ालिब आकर उनका ताक़्क़ुब करोगे, और
वह तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे। 8तुम्हारे पाँच

आदमी सौ दुश्मनों का पीछा करेंगे, और तुम्हारे
सौ आदमी उनके दस हज़ार आदमियों को भगा
देंगे। तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे।
9मेरी नज़रे-करम तुम पर होगी। मैं तुम्हारी
औलाद की तादाद बढ़ाऊँगा और तुम्हारे साथ
अपना अहद क़ायम रखूँगा। 10एक साल इतनी
फ़सल होगी कि जब अगली फ़सल की कटाई
होगी तो नए अनाज के लिए जगह बनाने की
ख़ातिर पुराने अनाज को फेंक देना पड़ेगा।
11मैं तुम्हारे दरमियान अपना मसकन क़ायम
करूँगा और तुमसे घिन नहीं खाऊँगा। 12मैं तुममें
फिरूँगा, और तुम मेरी क़ौम होगे।
13मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से
निकाल लाया ताकि तुम्हारी ग़ुलामी की हालत
ख़त्म हो जाए। मैंने तुम्हारे जुए को तोड़ डाला,
और अब तुम आज़ाद और सीधे होकर चल सकते
हो।

फ़रमाँबरदार न होने की सज़ा

14लेकिन अगर तुम मेरी नहीं सुनोगे और इन
तमाम अहकाम पर नहीं चलोगे, 15अगर तुम
मेरी हिदायात को रद्द करके मेरे अहकाम से
घिन खाओगे और उन पर अमल न करके मेरा
अहद तोड़ोगे 16तो मैं जवाब में तुम पर अचानक
दहशत तारी कर दूँगा। जिस्म को ख़त्म करनेवाली
बीमारियों और बुख़ार से तुम्हारी आँखें ज़ाया हो
जाएँगी और तुम्हारी जान छिन जाएगी। जब तुम
बीज बोओगे तो बेफ़ायदा, क्योंकि दुश्मन उस
की फ़सल खा जाएगा। 17मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ हो
जाऊँगा, इसलिए तुम अपने दुश्मनों के हाथ से
शिकस्त खाओगे। तुमसे नफ़रत रखनेवाले तुम
पर हुकूमत करेंगे। उस वक़्त भी जब कोई तुम्हारा
ताक़्क़ुब नहीं करेगा तुम भाग जाओगे।
18अगर तुम इसके बाद भी मेरी न सुनो तो मैं
तुम्हारे गुनाहों के सबब से तुम्हें सात गुना ज़्यादा
सज़ा दूँगा। 19मैं तुम्हारा सख़्त ग़ुरूर ख़ाक में
मिला दूँगा। तुम्हारे ऊपर आसमान लोहे जैसा और
तुम्हारे नीचे ज़मीन पीतल जैसी होगी। 20जितनी
भी मेहनत करोगे वह बेफ़ायदा होगी, क्योंकि
तुम्हारे खेतों में फ़सलें नहीं पकेंगी और तुम्हारे
दरख़्त फल नहीं लाएँगे।
21अगर तुम फिर भी मेरी मुख़ालफ़त करोगे
और मेरी नहीं सुनोगे तो मैं इन गुनाहों के जवाब
में तुम्हें इससे भी सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा।
22मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ जंगली जानवर भेज दूँगा
जो तुम्हारे बच्चों को फाड़ खाएँगे और तुम्हारे
मवेशी बरबाद कर देंगे। आख़िर में तुम्हारी तादाद
इतनी कम हो जाएगी कि तुम्हारी सड़कें वीरान हो
जाएँगी।
23अगर तुम फिर भी मेरी तरबियत क़बूल न
करो बल्कि मेरे मुख़ालिफ़ रहो 24तो मैं ख़ुद तुम्हारे
ख़िलाफ़ हो जाऊँगा। इन गुनाहों के जवाब में मैं
तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 25मैं तुम पर
तलवार चलाकर इसका बदला लूँगा कि तुमने मेरे
अहद को तोड़ा है। जब तुम अपनी हिफ़ाज़त के
लिए शहरों में भागकर जमा होगे तो मैं तुम्हारे
दरमियान वबाई बीमारियाँ फैलाऊँगा और तुम्हें
दुश्मनों के हाथ में दे दूँगा। 26अनाज की इतनी
कमी होगी कि दस औरतें तुम्हारी पूरी रोटी एक ही
तनूर में पका सकेंगी, और वह उसे बड़ी एहतियात
से तोल तोलकर तक़सीम करेंगी। तुम खाकर भी
भूके रहोगे।
27अगर तुम फिर भी मेरी नहीं सुनोगे बल्कि मेरे
मुख़ालिफ़ रहोगे 28तो मेरा ग़ुस्सा भड़केगा और मैं
तुम्हारे ख़िलाफ़ होकर तुम्हारे गुनाहों के जवाब में
तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 29तुम मुसीबत
के बाइस अपने बेटे-बेटियों का गोश्त खाओगे।
30मैं तुम्हारी ऊँची जगहों की क़ुरबानगाहें और
तुम्हारी बख़ूर की क़ुरबानगाहें बरबाद कर दूँगा।
मैं तुम्हारी लाशों के ढेर तुम्हारे बेजान बुतों पर
लगाऊँगा और तुमसे घिन खाऊँगा। 31मैं तुम्हारे
शहरों को खंडरात में बदलकर तुम्हारे मंदिरों को
बरबाद करूँगा। तुम्हारी क़ुरबानियों की ख़ुशबू
मुझे पसंद नहीं आएगी। 32मैं तुम्हारे मुल्क का
सत्यानास यों करूँगा कि जो दुश्मन उसमें आबाद
हो जाएंगे उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। 33मैं तुम्हें

मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा, लेकिन
वहाँ भी अपनी तलवार को हाथ में लिए तुम्हारा
पीछा करूँगा। तुम्हारी ज़मीन वीरान होगी और
तुम्हारे शहर खंडरात बन जाएंगे। 34उस वक़्त जब
तुम अपने दुश्मनों के मुल्क में रहोगे तुम्हारी ज़मीन
वीरान हालत में आराम के वह साल मना सकेगी
जिनसे वह महरूम रही है। 35उन तमाम दिनों में
जब वह बरबाद रहेगी उसे वह आराम मिलेगा जो
उसे न मिला जब तुम मुल्क में रहते थे।

36तुममें से जो बचकर अपने दुश्मनों के
ममालिक में रहेंगे उनके दिलों पर मैं दहशत तारी
करूँगा। वह हवा के झोंकों से गिरनेवाले पत्ते की
आवाज़ से चौंककर भाग जाएंगे। वह फ़रार होंगे
गोया कोई हाथ में तलवार लिए उनका ताक़्क़ुब
कर रहा हो। और वह गिरकर मर जाएंगे हालाँकि
कोई उनका पीछा नहीं कर रहा होगा। 37वह एक
दूसरे से टकराकर लड़खड़ाएँगे गोया कोई तलवार
लेकर उनके पीछे चल रहा हो हालाँकि कोई नहीं
है। चुनाँचे तुम अपने दुश्मनों का सामना नहीं
कर सकोगे। 38तुम दीगर क़ौमों में मुंतशिर होकर
हलाक हो जाओगे, और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन
तुम्हें हड़प कर लेगी।

39तुममें से बाक़ी लोग अपने और अपने
बापदादा के क़ुसूर के बाइस अपने दुश्मनों के
ममालिक में गल-सड़ जाएंगे। 40लेकिन एक
वक़्त आएगा कि वह अपने और अपने बापदादा
का क़ुसूर मान लेंगे। वह मेरे साथ अपनी बेवफ़ाई
और वह मुख़ालफ़त तसलीम करेंगे 41जिसके
सबब से मैं उनके ख़िलाफ़ हुआ और उन्हें उनके
दुश्मनों के मुल्क में धकेल दिया था। पहले उनका
ख़तना सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर हुआ था, लेकिन
अब उनका दिल आजिज़ हो जाएगा और वह
अपने क़ुसूर की क़ीमत अदा करेंगे। 42फिर मैं
इब्राहीम के साथ अपना अहद, इसहाक़ के साथ
अपना अहद और याक़ूब के साथ अपना अहद
याद करूँगा। मैं मुल्के-कनान भी याद करूँगा।
43लेकिन पहले वह ज़मीन को छोड़ेंगे ताकि वह
उनकी ग़ैरमौजूदगी में वीरान होकर आराम के
साल मनाए। यों इसराईली अपने क़ुसूर के नतीजे
भुगतेंगे, इस सबब से कि उन्होंने मेरे अहकाम रद्द
किए और मेरी हिदायात से घिन खाई। 44इसके
बावुजूद भी मैं उन्हें दुश्मनों के मुल्क में छोड़कर
रद्द नहीं करूँगा, न यहाँ तक उनसे घिन खाऊँगा
कि वह बिलकुल तबाह हो जाएँ। क्योंकि मैं उनके
साथ अपना अहद नहीं तोड़ने का। मैं रब उनका
ख़ुदा हूँ। 45मैं उनकी ख़ातिर उनके बापदादा के
साथ बँधा हुआ अहद याद करूँगा, उन लोगों के
साथ अहद जिन्हें मैं दूसरी क़ौमों के देखते देखते
मिसर से निकाल लाया ताकि उनका ख़ुदा हूँ। मैं
रब हूँ।”

46रब ने मूसा को इसराईलियों के लिए यह
तमाम हिदायात और अहकाम सीना पहाड़ पर
दिए।

मख़सूस की हुई चीज़ों की वापसी

27 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बताना कि अगर किसी ने
मन्नत मानकर किसी को रब के लिए मख़सूस
किया हो तो वह उसे ज़ैल की रक़म देकर आज़ाद
कर सकता है (मुस्तामल सिक्के मक़दिस के
सिक्कों के बराबर हों) : 3उस आदमी के लिए
जिसकी उम्र 20 और 60 साल के दरमियान है
चाँदी के 50 सिक्के, 4इसी उम्र की औरत के
लिए चाँदी के 30 सिक्के, 5उस लड़के के लिए
जिसकी उम्र 5 और 20 साल के दरमियान हो
चाँदी के 20 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए
चाँदी के 10 सिक्के, 6एक माह से लेकर 5 साल
तक के लड़के के लिए चाँदी के 5 सिक्के, इसी
उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 3 सिक्के, 7साठ
साल से बड़े आदमी के लिए चाँदी के 15 सिक्के
और इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 10
सिक्के।

8अगर मन्नत माननेवाला मुक़र्ररा रक़म अदा
न कर सके तो वह मख़सूस किए हुए शख़्स को
इमाम के पास ले आए। फिर इमाम ऐसी रक़म
मुक़र्रर करे जो मन्नत माननेवाला अदा कर सके।

9अगर किसी ने मन्नत मानकर ऐसा जानवर मख़सूस किया जो रब की क़ुरबानियों के लिए इस्तेमाल हो सकता है तो ऐसा जानवर मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाता है। 10वह उसे बदल नहीं सकता। न वह अच्छे जानवर की जगह नाक़िस, न नाक़िस जानवर की जगह अच्छा जानवर दे। अगर वह एक जानवर दूसरे की जगह दे तो दोनों मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाते हैं।

11अगर किसी ने मन्नत मानकर कोई नापाक जानवर मख़सूस किया जो रब की क़ुरबानियों के लिए इस्तेमाल नहीं हो सकता तो वह उसको इमाम के पास ले आए। 12इमाम उस की रक़म उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके मुक़र्रर करे। इस मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। 13अगर मन्नत माननेवाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

14अगर कोई अपना घर रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करे तो इमाम उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके उस की रक़म मुक़र्रर करे। इस मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। 15अगर घर को मख़सूस करनेवाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा रक़म जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

16अगर कोई अपनी मौरूसी ज़मीन में से कुछ रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करे तो उस की क़ीमत उस बीज की मिक़दार के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए जो उसमें बोना होता है। जिस खेत में 135 किलोग्राम जौ का बीज बोया जाए उस की क़ीमत चाँदी के 50 सिक्के होगी। 17शर्त यह है कि वह अपनी ज़मीन बहाली के साल के ऐन बाद मख़सूस करे। फिर उस की यही क़ीमत मुक़र्रर की जाए। 18अगर ज़मीन का मालिक उसे बहाली के साल के कुछ देर बाद मख़सूस करे तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहनेवाले सालों के मुताबिक़ ज़मीन की क़ीमत मुक़र्रर करे। जितने कम साल बाक़ी हैं उतनी कम उस की क़ीमत होगी। 19अगर मख़सूस करनेवाला अपनी ज़मीन वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे। 20अगर मख़सूस करनेवाला अपनी ज़मीन को रब से वापस ख़रीदे बग़ैर उसे किसी और को बेचे तो उसे वापस ख़रीदने का हक़ ख़त्म हो जाएगा। 21अगले बहाली के साल यह ज़मीन मख़सूसो-मुक़द्दस रहेगी और रब की दायमी मिलकियत हो जाएगी। चुनाँचे वह इमाम की मिलकियत होगी।

22अगर कोई अपना मौरूसी खेत नहीं बल्कि अपना ख़रीदा हुआ खेत रब के लिए मख़सूस करे 23तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहनेवाले सालों का लिहाज़ करके उस की क़ीमत मुक़र्रर करे। खेत का मालिक उसी दिन उसके पैसे अदा करे। यह पैसे रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होंगे। 24बहाली के साल में यह खेत उस शख़्स के पास वापस आएगा जिसने उसे बेचा था।

25वापस ख़रीदने के लिए मुस्तामल सिक्के मक़दिस के सिक्कों के बराबर हों। उसके चाँदी के सिक्कों का वज़न 11 ग्राम है।

26लेकिन कोई भी किसी मवेशी का पहलौठा रब के लिए मख़सूस नहीं कर सकता। वह तो पहले से रब के लिए मख़सूस है। इसमें कोई फ़रक़ नहीं कि वह गाय, बैल या भेड़ हो। 27अगर उसने कोई नापाक जानवर मख़सूस किया हो तो वह उसे मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद के लिए वापस ख़रीद सकता है। अगर वह उसे वापस न ख़रीदे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत के लिए बेचा जाए।

28लेकिन अगर किसी ने अपनी मिलकियत में से कुछ ग़ैरमशरूत तौर पर रब के लिए मख़सूस किया है तो उसे बेचा या वापस नहीं ख़रीदा जा सकता, ख़ाह वह इनसान, जानवर या ज़मीन हो। जो इस तरह मख़सूस किया गया हो वह रब के लिए निहायत मुक़द्दस है। 29इसी तरह जिस शख़्स को तबाही के लिए मख़सूस किया गया है उसका फ़िद्या नहीं दिया जा सकता। लाज़िम है कि उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

30हर फ़सल का दसवाँ हिस्सा रब का है, चाहे वह अनाज हो या फल। वह रब के लिए

मख़सूसो-मुक़द्दस है। 31अगर कोई अपनी फ़सल
का दसवाँ हिस्सा छुड़ाना चाहता है तो वह इसके
लिए उस की मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद
दे। 32इसी तरह गाय-बैलों और भेड़-बकरियों का
दसवाँ हिस्सा भी रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस
है, हर दसवाँ जानवर जो गल्लाबान के डंडे के नीचे
से गुज़रेगा। 33यह जानवर चुनने से पहले उनका
मुआयना न किया जाए कि कौन-से जानवर अच्छे
या कमज़ोर हैं। यह भी न करना कि दसवें हिस्से
के किसी जानवर के बदले कोई और जानवर दिया
जाए। अगर फिर भी उसे बदला जाए तो दोनों
जानवर रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होंगे। और
उन्हें वापस ख़रीदा नहीं जा सकता।”

34यह वह अहकाम हैं जो रब ने सीना पहाड़
पर मूसा को इसराईलियों के लिए दिए।

गिनती

इसराईलियों की पहली मर्दुमशुमारी

1 इसराईलियों को मिसर से निकले हुए एक साल से ज़्यादा अरसा गुज़र गया था। अब तक वह दश्ते-सीना में थे। दूसरे साल के दूसरे महीने के पहले दिन रब मुलाक़ात के ख़ैमे में मूसा से हमकलाम हुआ। उसने कहा,

2“तू और हारून तमाम इसराईलियों की मर्दुमशुमारी कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों की फ़हरिस्त बनाना 3जो कम अज़ कम बीस साल के और जंग लड़ने के क़ाबिल हों। 4इसमें हर क़बीले के एक ख़ानदान का सरपरस्त तुम्हारी मदद करे। 5यह उनके नाम हैं :

रूबिन के क़बीले से इलीसूर बिन शदियूर,

6शमाऊन के क़बीले से सलूमियेल बिन सूरीशद्दी,

7यहूदाह के क़बीले से नहसोन बिन अम्मीनदाब,

8इशकार के क़बीले से नतनियेल बिन ज़ुग़र,

9ज़बूलून के क़बीले से इलियाब बिन हेलोन,

10यूसुफ़ के बेटे इफ़राईम के क़बीले से इलीसमा बिन अम्मीहूद,

यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जमलियेल बिन फ़दाहसूर,

11बिनयमीन के क़बीले से अबिदान बिन जिदाऊनी,

12दान के क़बीले से अख़ियज़र बिन अम्मीशद्दी,

13आशर के क़बीले से फ़जियेल बिन अकरान,

14जद के क़बीले से इलियासफ़ बिन दऊएल,

15नफ़ताली के क़बीले से अख़ीरा बिन एनान।”

16यही मर्द जमात से इस काम के लिए बुलाए गए। वह अपने क़बीलों के राहनुमा और कुंबों के सरपरस्त थे। 17इनकी मदद से मूसा और हारून ने 18उसी दिन पूरी जमात को इकट्ठा किया। हर इसराईली मर्द जो कम अज़ कम 20 साल का था रजिस्टर में दर्ज किया गया। रजिस्टर की तरतीब उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ थी।

19सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने हुक्म दिया था। मूसा ने सीना के रेगिस्तान में लोगों की मर्दुमशुमारी की। नतीजा यह निकला :

20-21रूबिन के क़बीले के 46,500 मर्द,

22-23शमाऊन के क़बीले के 59,300 मर्द,

24-25जद के क़बीले के 45,650 मर्द,

26-27यहूदाह के क़बीले के 74,600 मर्द,

28-29इशकार के क़बीले के 54,400 मर्द,

30-31ज़बूलून के क़बीले के 57,400 मर्द,

32-33यूसुफ़ के बेटे इफ़राईम के क़बीले के 40,500 मर्द,

34-35यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले के 32,200 मर्द,

36-37बिनयमीन के क़बीले के 35,400 मर्द,

38-39दान के क़बीले के 62,700 मर्द,
40-41आशर के क़बीले के 41,500 मर्द,
42-43नफ़ताली के क़बीले के 53,400 मर्द।
44मूसा, हारून और क़बीलों के बारह
राहनुमाओं ने इन तमाम आदमियों को गिना।
45-46उनकी पूरी तादाद 6,03,550 थी।

47लेकिन लावियों की मर्दुमशुमारी न
हुई, 48क्योंकि रब ने मूसा से कहा था,
49“इसराईलियों की मर्दुमशुमारी में लावियों
को शामिल न करना। 50इसके बजाए उन्हें
शरीअत की सुकूनतगाह और उसका सारा
सामान सँभालने की ज़िम्मेदारी देना। वह सफ़र
करते वक़्त यह ख़ैमा और उसका सारा सामान
उठाकर ले जाएँ, उस की ख़िदमत के लिए हाज़िर
रहें और रुकते वक़्त उसे अपने ख़ैमों से घेरे
रखें। 51रवाना होते वक़्त वही ख़ैमे को समेटें
और रुकते वक़्त वही उसे लगाएँ। अगर कोई
और उसके क़रीब आए तो उसे सज़ाए-मौत दी
जाएगी। 52बाक़ी इसराईली ख़ैमागाह में अपने
अपने दस्ते के मुताबिक़ और अपने अपने अलम
के इर्दगिर्द अपने ख़ैमे लगाएँ। 53लेकिन लावी
अपने ख़ैमों से शरीअत की सुकूनतगाह को घेर लें
ताकि मेरा ग़ज़ब किसी ग़लत शख़्स के नज़दीक
आने से इसराईलियों की जमात पर नाज़िल न हो
जाए। यों लावियों को शरीअत की सुकूनतगाह
को सँभालना है।”

54इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने
मूसा को हुक्म दिया था।

ख़ैमागाह में क़बीलों की तरतीब

2 रब ने मूसा और हारून से कहा 2कि
इसराईली अपने ख़ैमे कुछ फ़ासले पर
मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द लगाएँ। हर एक
अपने अपने अलम और अपने अपने आबाई घराने
के निशान के साथ ख़ैमाज़न हो।

3इन हिदायात के मुताबिक़ मक़दिस के
मशरिक़ में यहूदाह का अलम था जिसके
इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, यहू-
दाह का क़बीला जिसका कमाँडर नहसोन
बिन अम्मीनदाब था, 4और जिसके लशकर
के 74,600 फ़ौजी थे। 5दूसरे, इशकार का
क़बीला जिसका कमाँडर नतनियेल बिन ज़ुग़र
था, 6और जिसके लशकर के 54,400 फ़ौजी
थे। 7तीसरे, ज़बूलून का क़बीला जिसका कमाँडर
इलियाब बिन हेलोन था 8और जिसके लशकर के
57,400 फ़ौजी थे। 9तीनों क़बीलों के फ़ौजियों
की कुल तादाद 1,86,400 थी। रवाना होते
वक़्त यह आगे चलते थे।

10मक़दिस के जुनूब में रूबिन का अलम था
जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले,
रूबिन का क़बीला जिसका कमाँडर इलीसूर बिन
शदियूर था, 11और जिसके 46,500 फ़ौजी थे।
12दूसरे, शमाऊन का क़बीला जिसका कमाँडर
सलूमियेल बिन सूरीशद्दी था, 13और जिसके
59,300 फ़ौजी थे। 14तीसरे, जद का क़बीला
जिसका कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था,
15और जिसके 45,650 फ़ौजी थे। 16तीनों
क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,51,450
थी। रवाना होते वक़्त यह मशरिक़ी क़बीलों के
पीछे चलते थे।

17इन जुनूबी क़बीलों के बाद लावी मुलाक़ात
का ख़ैमा उठाकर क़बीलों के ऐन बीच में चलते
थे। क़बीले उस तरतीब से रवाना होते थे जिस
तरतीब से वह अपने ख़ैमे लगाते थे। हर क़बीला
अपने अलम के पीछे चलता था।

18मक़दिस के मग़रिब में इफ़राईम का अलम
था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले,
इफ़राईम का क़बीला जिसका कमाँडर इलीसमा
बिन अम्मीहूद था, 19और जिसके 40,500
फ़ौजी थे। 20दूसरे, मनस्सी का क़बीला जिसका
कमाँडर जमलियेल बिन फ़दाहसूर था, 21और
जिसके 32,200 फ़ौजी थे। 22तीसरे, बिनयमीन
का क़बीला जिसका कमाँडर अबिदान बिन
जिदाऊनी था, 23और जिसके 35,400 फ़ौजी
थे। 24तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद

1,08,100 थी। रवाना होते वक़्त यह जुनूबी
क़बीलों के पीछे चलते थे।
25मक़दिस के शिमाल में दान का अलम था
जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले,
दान का क़बीला जिसका कमाँडर अख़ियज़र
बिन अम्मीशद्दी था, 26और जिसके 62,700
फ़ौजी थे। 27दूसरे, आशर का क़बीला जिसका
कमाँडर फ़जियेल बिन अकरान था, 28और
जिसके 41,500 फ़ौजी थे। 29तीसरे, नफ़ताली
का क़बीला जिसका कमाँडर अख़ीरा बिन एनान
था, 30और जिसके 53,400 फ़ौजी थे। 31तीनों
क़बीलों की कुल तादाद 1,57,600 थी। वह
आख़िर में अपना अलम उठाकर रवाना होते थे।
32पूरी ख़ैमागाह के फ़ौजियों की कुल तादाद
6,03,550 थी। 33सिर्फ़ लावी इस तादाद में
शामिल नहीं थे, क्योंकि रब ने मूसा को हुक्म दिया
था कि उनकी भरती न की जाए।
34यों इसराईलियों ने सब कुछ उन हिदा-
यात के मुताबिक़ किया जो रब ने मूसा को दी
थीं। उनके मुताबिक़ ही वह अपने झंडों के इर्दगिर्द
अपने ख़ैमे लगाते थे और उनके मुताबिक़ ही अपने
कुंबों और आबाई घरानों के साथ रवाना होते थे।

हारून के बेटे

3 यह हारून और मूसा के ख़ानदान का बयान
है। उस वक़्त का ज़िक्र है जब रब ने सीना
पहाड़ पर मूसा से बात की। 2हारून के चार बेटे थे।
बड़ा बेटा नदब था, फिर अबीहू, इलियज़र और
इतमर। 3यह इमाम थे जिनको मसह करके इस
ख़िदमत का इख़्तियार दिया गया था। 4लेकिन
नदब और अबीहू उस वक़्त मर गए जब उन्होंने
दश्ते-सीना में रब के हुज़ूर नाजायज़ आग पेश
की। चूँकि वह बेऔलाद थे इसलिए हारून के
जीते-जी सिर्फ़ इलियज़र और इतमर इमाम की
ख़िदमत सरंजाम देते थे।

लावियों की मक़दिस में ज़िम्मेदारी

5रब ने मूसा से कहा, 6"लावी के क़बीले को
लाकर हारून की ख़िदमत करने की ज़िम्मेदारी
दे। 7उन्हें उसके लिए और पूरी जमात के लिए
मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमात सँभालना है। 8वह
मुलाक़ात के ख़ैमे का सामान सँभालें और तमाम
इसराईलियों के लिए मक़दिस के फ़रायज़ अदा
करें। 9तमाम इसराईलियों में से सिर्फ़ लावियों को
हारून और उसके बेटों की ख़िदमत के लिए मुक़र्रर
कर। 10लेकिन सिर्फ़ हारून और उसके बेटों को
इमाम की हैसियत हासिल है। जो भी बाक़ियों में
से उनकी ज़िम्मेदारियाँ उठाने की कोशिश करेगा
उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।"
11रब ने मूसा से यह भी कहा, 12"मैंने
इसराईलियों में से लावियों को चुन लिया है।
वह तमाम इसराईली पहलौठों के एवज़ मेरे लिए
मख़सूस हैं, 13क्योंकि तमाम पहलौठे मेरे ही हैं।
जिस दिन मैंने मिसर में तमाम पहलौठों को मार
दिया उस दिन मैंने इसराईल के पहलौठों को अपने
लिए मख़सूस किया, ख़ाह वह इनसान के थे या
हैवान के। वह मेरे ही हैं। मैं रब हूँ।"

लावियों की मर्दुमशुमारी

14रब ने सीना के रेगिस्तान में मूसा से कहा,
15"लावियों को गिनकर उनके आबाई घरानों
और कुंबों के मुताबिक़ रजिस्टर में दर्ज करना। हर
बेटे को गिनना है जो एक माह या इससे ज़ायद
का है।" 16मूसा ने ऐसा ही किया।
17लावी के तीन बेटे जैरसोन, क़िहात और
मिरारी थे। 18जैरसोन के दो कुंबे उसके बेटों
लिबनी और सिमई के नाम रखते थे। 19क़िहात
के चार कुंबे उसके बेटों अमराम, इज़हार, हबरून
और उज़्ज़ियेल के नाम रखते थे। 20मिरारी के दो
कुंबे उसके बेटों महली और मूशी के नाम रखते
थे। ग़रज़ लावी के क़बीले के कुंबे उसके पोतों के
नाम रखते थे।
21जैरसोन के दो कुंबों बनाम लिबनी और
सिमई 22के 7,500 मर्द थे जो एक माह या

इससे ज़ायद के थे। 23उन्हें अपने ख़ैमे मग़रिब
में मक़दिस के पीछे लगाने थे। 24उनका राहनुमा
इलियासफ़ बिन लाएल था, 25और वह ख़ैमे
को सँभालते थे यानी उस की पोशिशें, ख़ैमे के
दरवाज़े का परदा, 26ख़ैमे और क़ुरबानगाह की
चारदीवारी के परदे, चारदीवारी के दरवाज़े का
परदा और तमाम रस्से। इन चीज़ों से मुताल्लिक़
सारी ख़िदमत उनकी ज़िम्मेदारी थी।

27क़िहात के चार कुंबों बनाम अमराम,
इज़हार, हबरून और उज़्ज़ियेल 28के 8,600
मर्द थे जो एक माह या इससे ज़ायद के थे
और जिनको मक़दिस की ख़िदमत करनी थी।
29उन्हें अपने डेरे मक़दिस के जुनूब में डालने थे।
30उनका राहनुमा इलीसफ़न बिन उज़्ज़ियेल था,
31और वह यह चीज़ें सँभालते थे : अहद का
संदूक़, मेज़, शमादान, क़ुरबानगाहें, वह बरतन
और साज़ो-सामान जो मक़दिस में इस्तेमाल होता
था और मुक़द्दसतरीन कमरे का परदा। इन चीज़ों
से मुताल्लिक़ सारी ख़िदमत उनकी ज़िम्मेदारी
थी। 32हारून इमाम का बेटा इलियज़र लावियों के
तमाम राहनुमाओं पर मुक़र्रर था। वह उन तमाम
लोगों का इंचार्ज था जो मक़दिस की देख-भाल
करते थे।

33मिरारी के दो कुंबों बनाम महली और मूशी
34के 6,200 मर्द थे जो एक माह या इससे ज़ायद
के थे। 35उनका राहनुमा सूरियेल बिन अबीख़ैल
था। उन्हें अपने डेरे मक़दिस के शिमाल में डालने
थे, 36और वह यह चीज़ें सँभालते थे : ख़ैमे के
तख़्ते, उसके शहतीर, खंबे, पाए और इस तरह
का सारा सामान। इन चीज़ों से मुताल्लिक़ सारी
ख़िदमत उनकी ज़िम्मेदारी थी। 37वह चारदीवारी
के खंबे, पाए, मेख़ें और रस्से भी सँभालते थे।

38मूसा, हारून और उनके बेटों को अपने
डेरे मशरिक़ में मक़दिस के सामने डालने थे।
उनकी ज़िम्मेदारी मक़दिस में बनी इसराईल के
लिए ख़िदमत करना थी। उनके अलावा जो भी
मक़दिस में दाख़िल होने की कोशिश करता उसे
सज़ाए-मौत देनी थी।

39उन लावी मर्दों की कुल तादाद जो एक माह
या इससे ज़ायद के थे 22,000 थी। रब के कहने
पर मूसा और हारून ने उन्हें कुंबों के मुताबिक़
गिनकर रजिस्टर में दर्ज किया।

लावी के क़बीले के मर्द पहलौठों के एवज़ी हैं

40रब ने मूसा से कहा, "तमाम इसराईली
पहलौठों को गिनना जो एक माह या इससे ज़ायद
के हैं और उनके नाम रजिस्टर में दर्ज करना।
41उन तमाम पहलौठों की जगह लावियों को मेरे
लिए मख़सूस करना। इसी तरह इसराईलियों के
मवेशियों के पहलौठों की जगह लावियों के मवेशी
मेरे लिए मख़सूस करना। मैं रब हूँ।" 42मूसा
ने ऐसा ही किया जैसा रब ने उसे हुक्म दिया।
उसने तमाम इसराईली पहलौठे 43जो एक माह
या इससे ज़ायद के थे गिन लिए। उनकी कुल
तादाद 22,273 थी।

44रब ने मूसा से कहा, 45"मुझे तमाम
इसराईली पहलौठों की जगह लावियों को पेश
करना। इसी तरह मुझे इसराईलियों के मवेशियों
की जगह लावियों के मवेशी पेश करना। लावी
मेरे ही हैं। मैं रब हूँ। 46लावियों की निसबत बाक़ी
इसराईलियों के 273 पहलौठे ज़्यादा हैं। उनमें
से 47हर एक के एवज़ चाँदी के पाँच सिक्के
ले जो मक़दिस के वज़न के मुताबिक़ हों (फ़ी
सिक्का तक़रीबन 11 ग्राम)। 48यह पैसे हारून
और उसके बेटों को देना।"

49मूसा ने ऐसा ही किया। 50यों उसने चाँदी के
1,365 सिक्के (तक़रीबन 16 किलोग्राम) जमा
करके 51हारून और उसके बेटों को दिए, जिस
तरह रब ने उसे हुक्म दिया था।

क़िहातियों की ज़िम्मेदारियाँ

4 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2"लावी
के क़बीले में से क़िहातियों की मर्दुमशुमारी
उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़
करना। 3उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज
करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और

मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने के लिए आ
सकते हैं। 4क़िहातियों की ख़िदमत मुक़द्दसतरीन
कमरे की देख-भाल है।
5जब ख़ैमे को सफ़र के लिए समेटना है तो
हारून और उसके बेटे दाख़िल होकर मुक़द्दसतरीन
कमरे का परदा उतारें और उसे शरीअत के संदूक़
पर डाल दें। 6इस पर वह तख़स की खालों का
ग़िलाफ़ और आख़िर में पूरी तरह नीले रंग का
कपड़ा बिछाएँ। इसके बाद वह संदूक़ को उठाने
की लकड़ियाँ लगाएँ।
7वह उस मेज़ पर भी नीले रंग का कपड़ा
बिछाएँ जिस पर रब को रोटी पेश की जाती है।
उस पर थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के
बरतन और मरतबान रखे जाएँ। जो रोटी हमेशा
मेज़ पर होती है वह भी उस पर रहे। 8हारून और
उसके बेटे इन तमाम चीज़ों पर क़िरमिज़ी रंग का
कपड़ा बिछाकर आख़िर में उनके ऊपर तख़स की
खालों का ग़िलाफ़ डालें। इसके बाद वह मेज़ को
उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।
9वह शमादान और उसके सामान पर यानी
उसके चराग़, बत्ती कतरने की क़ैंचियों, जलते
कोयले के छोटे बरतनों और तेल के बरतनों पर
नीले रंग का कपड़ा रखें। 10यह सब कुछ वह
तख़स की खालों के ग़िलाफ़ में लपेटें और उसे
उठाकर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।
11वह बख़ूर जलाने की सोने की क़ुरबान-
गाह पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाकर उस पर
तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें और फिर उसे
उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ। 12वह सारा सामान
जो मुक़द्दस कमरे में इस्तेमाल होता है लेकर नीले
रंग के कपड़े में लपेटें, उस पर तख़स की खालों
का ग़िलाफ़ डालें और उसे उठाकर ले जाने के
लिए एक चौखटे पर रखें।
13फिर वह जानवरों को जलाने की क़ुरबानगाह
को राख से साफ़ करके उस पर अरग़वानी रंग का
कपड़ा बिछाएँ। 14उस पर वह क़ुरबानगाह की
ख़िदमत के लिए सारा ज़रूरी सामान रखें यानी
छिड़काव के कटोरे, जलते हुए कोयले के बरतन,
बेलचे और काँटे। इस सामान पर वह तख़स की
खालों का ग़िलाफ़ डालकर क़ुरबानगाह को उठाने
की लकड़ियाँ लगाएँ।
15सफ़र के लिए रवाना होते वक़्त यह सब
कुछ उठाकर ले जाना क़िहातियों की ज़िम्मेदारी
है। लेकिन लाज़िम है कि पहले हारून और उसके
बेटे यह तमाम मुक़द्दस चीज़ें ढाँपें। क़िहाती इनमें
से कोई भी चीज़ न छुएँ वरना मर जाएंगे।
16हारून इमाम का बेटा इलियज़र पूरे मुक़द्दस
ख़ैमे और उसके सामान का इंचार्ज हो। इसमें
चराग़ों का तेल, बख़ूर, ग़ल्ला की रोज़ाना नज़र
और मसह का तेल भी शामिल है।”
17रब ने मूसा और हारून से कहा,
18“ख़बरदार रहो कि क़िहात के कुंबे लावी के
क़बीले में से मिटने न पाएँ। 19चुनाँचे जब वह
मुक़द्दसतरीन चीज़ों के पास आएँ तो हारून और
उसके बेटे हर एक को उस सामान के पास ले
जाएँ जो उसे उठाकर ले जाना है ताकि वह न मरें
बल्कि जीते रहें। 20क़िहाती एक लमहे के लिए
भी मुक़द्दस चीज़ें देखने के लिए अंदर न जाएँ,
वरना वह मर जाएंगे।”

जैरसोनियों की ज़िम्मेदारियाँ

21फिर रब ने मूसा से कहा, 22“जैरसोन की
औलाद की मर्दुमशुमारी भी उनके आबाई घरानों
और कुंबों के मुताबिक़ करना। 23उन तमाम मर्दों
को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50
साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत के
लिए आ सकते हैं। 24वह यह चीज़ें उठाकर ले
जाने के ज़िम्मेदार हैं : 25मुलाक़ात का ख़ैमा,
उस की छत, छत पर रखी हुई तख़स की खाल की
पोशिश, ख़ैमे के दरवाज़े का परदा, 26ख़ैमे और
क़ुरबानगाह की चारदीवारी के परदे, चारदीवारी के
दरवाज़े का परदा, उसके रस्से और उसे लगाने का
बाक़ी सामान। वह उन तमाम कामों के ज़िम्मेदार
हैं जो इन चीज़ों से मुंसलिक हैं। 27जैरसोनियों
की पूरी ख़िदमत हारून और उसके बेटों की
हिदायात के मुताबिक़ हो। ख़बरदार रहो कि वह

सब कुछ ऐन हिदायात के मुताबिक़ उठाकर ले जाएँ। 28यह सब मुलाक़ात के ख़ैमे में जैरसोनियों की ज़िम्मेदारियाँ हैं। इस काम में हारून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुक़र्रर है।"

मिरारियों की ज़िम्मेदारियाँ

29रब ने कहा, "मिरारी की औलाद की मर्दुमशुमारी भी उनके आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़ करना। 30उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत के लिए आ सकते हैं। 31वह मुलाक़ात के ख़ैमे की यह चीज़ें उठाकर ले जाने के ज़िम्मेदार हैं : दीवार के तख़्ते, शहतीर, खंबे और पाए, 32फिर ख़ैमे की चारदीवारी के खंबे, पाए, मेख़ें, रस्से और यह चीज़ें लगाने का सामान। हर एक को तफ़सील से बताना कि वह क्या क्या उठाकर ले जाए। 33यह सब कुछ मिरारियों की मुलाक़ात के ख़ैमे में ज़िम्मेदारियों में शामिल है। इस काम में हारून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुक़र्रर हो।"

लावियों की मर्दुमशुमारी

34मूसा, हारून और जमात के राहनुमाओं ने क़िहातियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ की। 35-37उन्होंने उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज किया जो 30 से लेकर 50 साल के थे और जो मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत कर सकते थे। उनकी कुल तादाद 2,750 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त फ़रमाया था। 38-41फिर जैरसोनियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। ख़िदमत के लायक़ मर्दों की कुल तादाद 2,630 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था। 42-45फिर मिरारियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। ख़िदमत के लायक़ मर्दों की कुल तादाद 3,200 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था। 46-48लावियों के उन मर्दों की कुल तादाद 8,580 थी जिन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करना और सफ़र करते वक़्त उसे उठाकर ले जाना था।

49मूसा ने रब के हुक्म के मुताबिक़ हर एक को उस की अपनी अपनी ज़िम्मेदारी सौंपी और उसे बताया कि उसे क्या क्या उठाकर ले जाना है। यों उनकी मर्दुमशुमारी रब के उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ की गई जो उसने मूसा की मारिफ़त दिया था।

नापाक लोग ख़ैमागाह में नहीं रह सकते

5 रब ने मूसा से कहा, 2"इसराईलियों को हुक्म दे कि हर उस शख़्स को ख़ैमागाह से बाहर कर दो जिसको वबाई जिल्दी बीमारी है, जिसके ज़ख़मों से माए निकलता रहता है या जो किसी लाश को छूने से नापाक है। 3ख़ाह मर्द हो या औरत, सबको ख़ैमागाह के बाहर भेज देना ताकि वह ख़ैमागाह को नापाक न करें जहाँ मैं तुम्हारे दरमियान सुकूनत करता हूँ।" 4इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को कहा था। उन्होंने रब के हुक्म के ऐन मुताबिक़ इस तरह के तमाम लोगों को ख़ैमागाह से बाहर कर दिया।

ग़लत काम का मुआवज़ा

5रब ने मूसा से कहा, 6"इसराईलियों को हिदायत देना कि जो भी किसी से ग़लत सुलूक करे वह मेरे साथ बेवफ़ाई करता है और क़ुसूरवार है, ख़ाह मर्द हो या औरत। 7लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तसलीम करे और उसका पूरा मुआवज़ा दे बल्कि मुतअस्सिरा शख़्स का नुक़सान पूरा करने के अलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 8लेकिन अगर वह शख़्स जिसका क़ुसूर किया गया था मर चुका हो और उसका कोई वारिस न हो जो यह मुआवज़ा वसूल कर सके तो फिर उसे

रब को देना है। इमाम को यह मुआवज़ा उस मेंढे
के अलावा मिलेगा जो क़ुसूरवार अपने कफ़्फ़ारा
के लिए देगा। 9-10नीज़ इमाम को इसराईलियों
की क़ुरबानियों में से वह कुछ मिलना है जो
उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर उसे दिया जाता
है। यह हिस्सा सिर्फ़ इमामों को ही मिलना है।”

ज़िना के शक पर अल्लाह का फ़ैसला

11रब ने मूसा से कहा, 12“इसराईलियों को
बताना, हो सकता है कि कोई शादीशुदा औरत
भटककर अपने शौहर से बेवफ़ा हो जाए और
13किसी और से हमबिसतर होकर नापाक हो
जाए। उसके शौहर ने उसे नहीं देखा, क्योंकि यह
पोशीदगी में हुआ है और न किसी ने उसे पकड़ा,
न इसका कोई गवाह है। 14अगर शौहर को अपनी
बीवी की वफ़ादारी पर शक हो और वह ग़ैरत खाने
लगे, लेकिन यक़ीन से नहीं कह सकता कि मेरी
बीवी क़ुसूरवार है कि नहीं 15तो वह अपनी बीवी
को इमाम के पास ले आए। साथ साथ वह अपनी
बीवी के लिए क़ुरबानी के तौर पर जौ का डेढ़
किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले आए। इस पर न तेल
उंडेला जाए, न बख़ूर डाला जाए, क्योंकि ग़ल्ला
की यह नज़र ग़ैरत की नज़र है जिसका मक़सद
है कि पोशीदा क़ुसूर ज़ाहिर हो जाए। 16इमाम
औरत को क़रीब आने दे और रब के सामने खड़ा
करे। 17वह मिट्टी का बरतन मुक़द्दस पानी से
भरकर उसमें मक़दिस के फ़र्श की कुछ ख़ाक
डाले। 18फिर वह औरत को रब को पेश करके
उसके बाल खुलवाए और उसके हाथों पर मैदे की
नज़र रखे। इमाम के अपने हाथ में कड़वे पानी का
वह बरतन हो जो लानत का बाइस है।

19फिर वह औरत को क़सम खिलाकर
कहे, ‘अगर कोई और आदमी आपसे हम-
बिसतर नहीं हुआ है और आप नापाक नहीं हुई
हैं तो इस कड़वे पानी की लानत का आप पर
कोई असर न हो। 20लेकिन अगर आप भटककर
अपने शौहर से बेवफ़ा हो गई हैं और किसी और
से हमबिसतर होकर नापाक हो गई हैं 21तो रब
आपको आपकी क़ौम के सामने लानती बनाए।
आप बाँझ हो जाएँ और आपका पेट फूल जाए।
22जब लानत का यह पानी आपके पेट में उतरे तो
आप बाँझ हो जाएँ और आपका पेट फूल जाए।’
इस पर औरत कहे, ‘आमीन, ऐसा ही हो।’

23फिर इमाम यह लानत लिखकर काग़ज़ को
बरतन के पानी में यों धो दे कि उस पर लिखी हुई
बातें पानी में घुल जाएँ। 24बाद में वह औरत को
यह पानी पिलाए ताकि वह उसके जिस्म में जाकर
उसे लानत पहुँचाए। 25लेकिन पहले इमाम उसके
हाथों में से ग़ैरत की क़ुरबानी लेकर उसे ग़ल्ला की
नज़र के तौर पर रब के सामने हिलाए और फिर
क़ुरबानगाह के पास ले आए। 26उस पर वह मुट्ठी-
भर यादगारी की क़ुरबानी के तौर पर जलाए।
इसके बाद वह औरत को पानी पिलाए। 27अगर
वह अपने शौहर से बेवफ़ा थी और नापाक हो गई
है तो वह बाँझ हो जाएगी, उसका पेट फूल जाएगा
और वह अपनी क़ौम के सामने लानती ठहरेगी।
28लेकिन अगर वह पाक-साफ़ है तो उसे सज़ा
नहीं दी जाएगी और वह बच्चे जन्म देने के क़ाबिल
रहेगी।

29-30चुनाँचे ऐसा ही करना है जब शौहर ग़ैरत
खाए और उसे अपनी बीवी पर ज़िना का शक हो।
बीवी को क़ुरबानगाह के सामने खड़ा किया जाए
और इमाम यह सब कुछ करे। 31इस सूरत में
शौहर बेक़ुसूर ठहरेगा, लेकिन अगर उस की बीवी
ने वाक़ई ज़िना किया हो तो उसे अपने गुनाह के
नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।”

जो अपने आपको मख़सूस करते हैं

6 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराईलियों को
हिदायत देना कि अगर कोई आदमी या
औरत मन्नत मानकर अपने आपको एक मुक़र्ररा
वक़्त के लिए रब के लिए मख़सूस करे 3तो वह
मै या कोई और नशा-आवर चीज़ न पिए। न वह
अंगूर या किसी और चीज़ का सिरका पिए, न
अंगूर का रस। वह अंगूर या किशमिश न खाए।
4जब तक वह मख़सूस है वह अंगूर की कोई भी

पैदावार न खाए, यहाँ तक कि अंगूर के बीज
या छिलके भी न खाए। 5जब तक वह अपनी
मन्नत के मुताबिक़ मख़सूस है वह अपने बाल न
कटवाए। जितनी देर के लिए उसने अपने आपको
रब के लिए मख़सूस किया है उतनी देर तक
वह मुक़द्दस है। इसलिए वह अपने बाल बढ़ने
दे। 6जब तक वह मख़सूस है वह किसी लाश
के क़रीब न जाए, 7चाहे वह उसके बाप, माँ,
भाई या बहन की लाश क्यों न हो। क्योंकि इससे
वह नापाक हो जाएगा जबकि अभी तक उस की
मख़सूसियत लंबे बालों की सूरत में नज़र आती
है। 8वह अपनी मख़सूसियत के दौरान रब के लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस है।

9अगर कोई अचानक मर जाए जब मख़सूस
शख़्स उसके क़रीब हो तो उसके मख़सूस बाल
नापाक हो जाएंगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि वह
अपने आपको पाक-साफ़ करके सातवें दिन अपने
सर को मुँडवाए। 10आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ
या दो जवान कबूतर लेकर मुलाक़ात के ख़ैमे के
दरवाज़े पर आए और इमाम को दे। 11इमाम इनमें
से एक को गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाए
और दूसरे को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर
पर। यों वह उसके लिए कफ़्फ़ारा देगा जो लाश
के क़रीब होने से नापाक हो गया है। उसी दिन वह
अपने सर को दुबारा मख़सूस करे 12और अपने
आपको मुक़र्ररा वक़्त के लिए दुबारा रब के लिए
मख़सूस करे। वह क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर
एक साल का भेड़ का बच्चा पेश करे। जितने
दिन उसने पहले मख़सूसियत की हालत में गुज़ारे
हैं वह शुमार नहीं किए जा सकते क्योंकि वह
मख़सूसियत की हालत में नापाक हो गया था।
वह दुबारा पहले दिन से शुरू करे।

13शरीअत के मुताबिक़ जब मख़सूस शख़्स
का मुक़र्ररा वक़्त गुज़र गया हो तो पहले उसे
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाया जाए।
14वहाँ वह रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के
लिए भेड़ का एक बेऐब यकसाला नर बच्चा,
गुनाह की क़ुरबानी के लिए एक बेऐब यकसाला
भेड़ और सलामती की क़ुरबानी के लिए एक
बेऐब मेंढा पेश करे। 15इसके अलावा वह एक
टोकरी में बेख़मीरी रोटियाँ जिनमें बेहतरीन मैदा
और तेल मिलाया गया हो और बेख़मीरी रोटियाँ
जिन पर तेल लगाया गया हो मुताल्लिक़ा ग़ल्ला
की नज़र और मै की नज़र के साथ 16रब को पेश
करे। पहले इमाम गुनाह की क़ुरबानी और भस्म
होनेवाली क़ुरबानी रब के हुज़ूर चढ़ाए। 17फिर
वह मेंढे को बेख़मीरी रोटियों के साथ सलामती
की क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। इमाम ग़ल्ला
की नज़र और मै की नज़र भी चढ़ाए। 18इस
दौरान मख़सूस शख़्स मुलाक़ात के ख़ैमे पर अपने
मख़सूस किए गए सर को मुँडवाकर तमाम बाल
सलामती की क़ुरबानी की आग में फेंके।

19फिर इमाम मेंढे का एक पका हुआ शाना
और टोकरी में से दोनों क़िस्मों की एक एक रोटी
लेकर मख़सूस शख़्स के हाथों पर रखे। 20इसके
बाद वह यह चीज़ें वापस लेकर उन्हें हिलाने की
क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह
एक मुक़द्दस क़ुरबानी है जो इमाम का हिस्सा है।
सलामती की क़ुरबानी का हिलाया हुआ सीना
और उठाई हुई रान भी इमाम का हिस्सा हैं।
क़ुरबानी के इख़्तिताम पर मख़सूस किए हुए
शख़्स को मै पीने की इजाज़त है।

21जो अपने आपको रब के लिए मख़सूस
करता है वह ऐसा ही करे। लाज़िम है कि वह इन
हिदायात के मुताबिक़ तमाम क़ुरबानियाँ पेश करे।
अगर गुंजाइश हो तो वह और भी पेश कर सकता
है। बहरहाल लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत और
यह हिदायात पूरी करे।”

इमाम की बरकत

22रब ने मूसा से कहा, 23“हारून और उसके
बेटों को बता देना कि वह इसराईलियों को यों
बरकत दें,

24‘रब तुझे बरकत दे और तेरी हिफ़ाज़त करे।
25रब अपने चेहरे का मेहरबान नूर तुझ पर
चमकाए और तुझ पर रहम करे।

26रब की नज़रे-करम तुझ पर हो, और वह तुझे
सलामती बख़्शे।’
27यों वह मेरा नाम लेकर इसराईलियों को
बरकत दें। फिर मैं उन्हें बरकत दूँगा।”

मक़दिस की मख़सूसियत के हदिये

7 जिस दिन मक़दिस मुकम्मल हुआ उसी
दिन मूसा ने उसे मख़सूसो-मुक़द्दस किया।
इसके लिए उसने ख़ैमे, उसके तमाम सामान,
क़ुरबानगाह और उसके तमाम सामान पर तेल
छिड़का। 2-3फिर क़बीलों के बारह सरदार
मक़दिस के लिए हदिये लेकर आए। यह वही
राहनुमा थे जिन्होंने मर्दुमशुमारी के वक़्त मूसा की
मदद की थी। उन्होंने छतवाली छः बैलगाड़ियाँ
और बारह बैल ख़ैमे के सामने रब को पेश किए,
दो दो सरदारों की तरफ़ से एक बैलगाड़ी और हर
एक सरदार की तरफ़ से एक बैल।
4रब ने मूसा से कहा, 5“यह तोह्फ़े क़बूल
करके मुलाक़ात के ख़ैमे के काम के लिए
इस्तेमाल कर। उन्हें लावियों में उनकी ख़िदमत की
ज़रूरत के मुताबिक़ तक़सीम करना।” 6चुनाँचे
मूसा ने बैलगाड़ियाँ और बैल लावियों को दे
दिए। 7उसने दो बैलगाड़ियाँ चार बैलों समेत
जैरसोनियों को 8और चार बैलगाड़ियाँ आठ बैलों
समेत मिरारियों को दीं। मिरारी हारून इमाम के
बेटे इतमर के तहत ख़िदमत करते थे। 9लेकिन
मूसा ने क़िहातियों को न बैलगाड़ियाँ और न बैल
दिए। वजह यह थी कि जो मुक़द्दस चीज़ें उनके
सुपुर्द थीं वह उनको कंधों पर उठाकर ले जानी
थीं।
10बारह सरदार क़ुरबानगाह की मख़-
सूसियत के मौक़े पर भी हदिये ले आए। उन्होंने
अपने हदिये क़ुरबानगाह के सामने पेश किए।
11रब ने मूसा से कहा, “सरदार बारह दिन के
दौरान बारी बारी अपने हदिये पेश करें।” 12पहले
दिन यहूदाह के सरदार नहसोन बिन अम्मीनदाब
की बारी थी। उसके हदिये यह थे : 13चाँदी
का थाल जिसका वज़न डेढ़ किलोग्राम था और
छिड़काव का चाँदी का कटोरा जिसका वज़न
800 ग्राम था। दोनों ग़ल्ला की नज़र के लिए
तेल के साथ मिलाए गए बेहतरीन मैदे से भरे
हुए थे। 14इनके अलावा नहसोन ने यह चीज़ें
पेश कीं : सोने का प्याला जिसका वज़न 110
ग्राम था और जो बख़ूर से भरा हुआ था, 15एक
जवान बैल, एक मेंढा, भस्म होनेवाली क़ुरबानी
के लिए भेड़ का एक यकसाला बच्चा, 16गुनाह
की क़ुरबानी के लिए एक बकरा 17और सलामती
की क़ुरबानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे
और भेड़ के पाँच यकसाला बच्चे।
18-23अगले ग्यारह दिन बाक़ी सरदार भी यही
हदिये मक़दिस के पास ले आए। दूसरे दिन
इशकार के सरदार नतनियेल बिन ज़ुग़र की बारी
थी, 24-29तीसरे दिन ज़बूलून के सरदार इलियाब
बिन हेलोन की, 30-47चौथे दिन रूबिन के सरदार
इलीसूर बिन शदियूर की, पाँचवें दिन शमाऊन
के सरदार सलूमियेल बिन सूरीशद्दी की, छटे
दिन जद के सरदार इलियासफ़ बिन दऊएल की,
48-53सातवें दिन इफ़राईम के सरदार इलीसमा
बिन अम्मीहूद की, 54-71आठवें दिन मनस्सी के
सरदार जमलियेल बिन फ़दाहसूर की, नवें दिन
बिनयमीन के सरदार अबिदान बिन जिदाऊनी
की, दसवें दिन दान के सरदार अख़ियज़र बिन
अम्मीशद्दी की, 72-83ग्यारहवें दिन आशर के
सरदार फ़जियेल बिन अकरान की और बारहवें
दिन नफ़ताली के सरदार अख़ीरा बिन एनान की
बारी थी।
84इसराईल के इन सरदारों ने मिलकर
क़ुरबानगाह की मख़सूसियत के लिए चाँदी के 12
थाल, छिड़काव के चाँदी के 12 कटोरे और सोने
के 12 प्याले पेश किए। 85हर थाल का वज़न डेढ़
किलोग्राम और छिड़काव के हर कटोरे का वज़न
800 ग्राम था। इन चीज़ों का कुल वज़न तक़रीबन
28 किलोग्राम था। 86बख़ूर से भरे हुए सोने के
प्यालों का कुल वज़न तक़रीबन डेढ़ किलोग्राम था
(फ़ी प्याला 110 ग्राम)। 87सरदारों ने मिलकर
भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए 12 जवान बैल,

12 मेंढे और भेड़ के 12 यकसाला बच्चे उनकी
ग़ल्ला की नज़रों समेत पेश किए। गुनाह की
क़ुरबानी के लिए उन्होंने 12 बकरे पेश किए
88और सलामती की क़ुरबानी के लिए 24 बैल,
60 मेंढे, 60 बकरे और भेड़ के 60 यकसाला
बच्चे। इन तमाम जानवरों को क़ुरबानगाह की
मख़सूसियत के मौक़े पर चढ़ाया गया।
89जब मूसा मुलाक़ात के ख़ैमे में रब के साथ
बात करने के लिए दाख़िल होता था तो वह रब
की आवाज़ अहद के संदूक़ के ढकने पर से यानी
दो करूबी फ़रिश्तों के दरमियान से सुनता था।

शमादान पर चराग़

8 रब ने मूसा से कहा, 2“हारून को बताना,
‘तुझे सात चराग़ों को शमादान पर यों
रखना है कि वह शमादान का सामनेवाला हिस्सा
रौशन करें’।”
3हारून ने ऐसा ही किया। जिस तरह रब ने
मूसा को हुक्म दिया था उसी तरह उसने चराग़ों
को रख दिया ताकि वह सामनेवाला हिस्सा रौशन
करें। 4शमादान पाए से लेकर ऊपर की कलियों
तक सोने के एक घड़े हुए टुकड़े का बना हुआ था।
मूसा ने उसे उस नमूने के ऐन मुताबिक़ बनवाया
जो रब ने उसे दिखाया था।

लावियों की मख़सूसियत

5रब ने मूसा से कहा, 6“लावियों को दीगर
इसराईलियों से अलग करके पाक-साफ़ करना।
7इसके लिए गुनाह से पाक करनेवाला पानी उन
पर छिड़ककर उन्हें हुक्म देना कि अपने जिस्म के
पूरे बाल मुँडवाओ और अपने कपड़े धोओ। यों वह
पाक-साफ़ हो जाएंगे। 8फिर वह एक जवान बैल
चुनें और साथ की ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल
के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा लें। तू ख़ुद
भी एक जवान बैल चुन। वह गुनाह की क़ुरबानी
के लिए होगा।
9इसके बाद लावियों को मुलाक़ात के ख़ैमे के
सामने खड़ा करके इसराईल की पूरी जमात को
वहाँ जमा करना। 10जब लावी रब के सामने खड़े
हों तो बाक़ी इसराईली उनके सरों पर अपने हाथ
रखें। 11फिर हारून लावियों को रब के सामने पेश
करे। उन्हें इसराईलियों की तरफ़ से हिलाई हुई
क़ुरबानी की हैसियत से पेश किया जाए ताकि वह
रब की ख़िदमत कर सकें। 12फिर लावी अपने
हाथ दोनों बैलों के सरों पर रखें। एक बैल को
गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर और दूसरे को
भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाओ ताकि
लावियों का कफ़्फ़ारा दिया जाए।
13लावियों को इस तरीक़े से हारून और उसके
बेटों के सामने खड़ा करके रब को हिलाई हुई
क़ुरबानी के तौर पर पेश करना है। 14उन्हें बाक़ी
इसराईलियों से अलग करने से वह मेरा हिस्सा
बनेंगे। 15इसके बाद ही वह मुलाक़ात के ख़ैमे में
आकर ख़िदमत करें, क्योंकि अब वह ख़िदमत
करने के लायक़ हैं। उन्हें पाक-साफ़ करके हिलाई
हुई क़ुरबानी के तौर पर पेश करने का सबब
यह है 16कि लावी इसराईलियों में से वह हैं
जो मुझे पूरे तौर पर दिए गए हैं। मैंने उन्हें
इसराईलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले
लिया है। 17क्योंकि इसराईल में हर पहलौठा मेरा
है, ख़ाह वह इनसान का हो या हैवान का। उस दिन
जब मैंने मिसरियों के पहलौठों को मार दिया मैंने
इसराईल के पहलौठों को अपने लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस किया। 18इस सिलसिले में मैंने लावियों
को इसराईलियों के तमाम पहलौठों की जगह
लेकर 19उन्हें हारून और उसके बेटों को दिया है।
वह मुलाक़ात के ख़ैमे में इसराईलियों की ख़िदमत
करें और उनके लिए कफ़्फ़ारा का इंतज़ाम क़ायम
रखें ताकि जब इसराईली मक़दिस के क़रीब आएँ
तो उनको वबा से मारा न जाए।”
20मूसा, हारून और इसराईलियों की पूरी
जमात ने एहतियात से रब की लावियों के बारे
में हिदायात पर अमल किया। 21लावियों ने अपने
आपको गुनाहों से पाक-साफ़ करके अपने कपड़ों
को धोया। फिर हारून ने उन्हें रब के सामने हिलाई
हुई क़ुरबानी के तौर पर पेश किया और उनका

कफ़्फ़ारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ। 22इसके
बाद लावी मुलाक़ात के ख़ैमे में आए ताकि हारून
और उसके बेटों के तहत ख़िदमत करें। यों सब
कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने मूसा को
हुक्म दिया था।

23रब ने मूसा से यह भी कहा, 24“लावी 25
साल की उम्र में मुलाक़ात के ख़ैमे में अपनी
ख़िदमत शुरू करें 25और 50 साल की उम्र में
रिटायर हो जाएँ। 26इसके बाद वह मुलाक़ात
के ख़ैमे में अपने भाइयों की मदद कर सकते
हैं, लेकिन ख़ुद ख़िदमत नहीं कर सकते। तुझे
लावियों को इन हिदायात के मुताबिक़ उनकी
अपनी अपनी ज़िम्मेदारियाँ देनी हैं।”

रेगिस्तान में ईदे-फ़सह

9 इसराईलियों को मिसर से निकले एक
साल हो गया था। दूसरे साल के पहले
महीने में रब ने दश्ते-सीना में मूसा से बात की।
2“लाज़िम है कि इसराईली ईदे-फ़सह को
मुक़र्ररा वक़्त पर मनाएँ, 3यानी इस महीने के
चौधवें दिन, सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद। उसे
तमाम क़वायद के मुताबिक़ मनाना।” 4चुनाँचे
मूसा ने इसराईलियों से कहा कि वह ईदे-फ़सह
मनाएँ, 5और उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने ईदे-
फ़सह को पहले महीने के चौधवें दिन सूरज के
ग़ुरूब होने के ऐन बाद मनाया। उन्होंने सब कुछ
वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया
था।

6लेकिन कुछ आदमी नापाक थे, क्योंकि
उन्होंने लाश छू ली थी। इस वजह से वह उस
दिन ईदे-फ़सह न मना सके। वह मूसा और हारून
के पास आकर 7कहने लगे, “हमने लाश छू ली
है, इसलिए नापाक हैं। लेकिन हमें इस सबब से
ईदे-फ़सह को मनाने से क्यों रोका जाए? हम
भी मुक़र्ररा वक़्त पर बाक़ी इसराईलियों के साथ
रब की क़ुरबानी पेश करना चाहते हैं।” 8मूसा ने
जवाब दिया, “यहाँ मेरे इंतज़ार में खड़े रहो। मैं
मालूम करता हूँ कि रब तुम्हारे बारे में क्या हुक्म
देता है।”

9रब ने मूसा से कहा, 10“इसराईलियों को बता
देना कि अगर तुम या तुम्हारी औलाद में से कोई
ईदे-फ़सह के दौरान लाश छूने से नापाक हो या
किसी दूर-दराज़ इलाक़े में सफ़र कर रहा हो, तो
भी वह ईद मना सकता है। 11ऐसा शख़्स उसे ऐन
एक माह के बाद मनाकर लेले के साथ बेख़मीरी
रोटी और कड़वा साग-पात खाए। 12खाने में से
कुछ भी अगली सुबह तक बाक़ी न रहे। जानवर
की कोई भी हड्डी न तोड़ना। मनानेवाला ईदे-फ़सह
के पूरे फ़रायज़ अदा करे। 13लेकिन जो पाक
होने और सफ़र न करने के बावुजूद भी ईदे-फ़सह
को न मनाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया
जाए, क्योंकि उसने मुक़र्ररा वक़्त पर रब को
क़ुरबानी पेश नहीं की। उस शख़्स को अपने गुनाह
का नतीजा भुगतना पड़ेगा। 14अगर कोई परदेसी
तुम्हारे दरमियान रहते हुए रब के सामने ईदे-फ़सह
मनाना चाहे तो उसे इजाज़त है। शर्त यह है कि
वह पूरे फ़रायज़ अदा करे। परदेसी और देसी के
लिए ईदे-फ़सह मनाने के फ़रायज़ एक जैसे हैं।”

मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल का सतून

15जिस दिन शरीअत के मुक़द्दस ख़ैमे को खड़ा
किया गया उस दिन बादल आकर उस पर छा
गया। रात के वक़्त बादल आग की सूरत में नज़र
आया। 16इसके बाद यही सूरते-हाल रही कि
बादल उस पर छाया रहता और रात के दौरान
आग की सूरत में नज़र आता। 17जब भी बादल
ख़ैमे पर से उठता इसराईली रवाना हो जाते।
जहाँ भी बादल उतर जाता वहाँ इसराईली अपने
डेरे डालते। 18इसराईली रब के हुक्म पर रवाना
होते और उसके हुक्म पर डेरे डालते। जब तक
बादल मक़दिस पर छाया रहता उस वक़्त तक
वह वहीं ठहरते। 19कभी कभी बादल बड़ी देर
तक ख़ैमे पर ठहरा रहता। तब इसराईली रब का
हुक्म मानकर रवाना न होते। 20कभी कभी बादल
सिर्फ़ दो-चार दिन के लिए ख़ैमे पर ठहरता। फिर

वह रब के हुक्म के मुताबिक़ ही ठहरते और रवाना होते थे। 21कभी कभी बादल सिर्फ़ शाम से लेकर सुबह तक ख़ैमे पर ठहरता। जब वह सुबह के वक़्त उठता तो इसराईली भी रवाना होते थे। जब भी बादल उठता वह भी रवाना हो जाते। 22जब तक बादल मुक़द्दस ख़ैमे पर छाया रहता उस वक़्त तक इसराईली रवाना न होते, चाहे वह दो दिन, एक माह, एक साल या इससे ज़्यादा अरसा मक़दिस पर छाया रहता। लेकिन जब वह उठता तो इसराईली भी रवाना हो जाते। 23वह रब के हुक्म पर ख़ैमे लगाते और उसके हुक्म पर रवाना होते थे। वह वैसा ही करते थे जैसा रब मूसा की मारिफ़त फ़रमाता था।

10 रब ने मूसा से कहा, 2“चाँदी के दो बिगुल घड़कर बनवा ले। उन्हें जमात को जमा करने और क़बीलों को रवाना करने के लिए इस्तेमाल कर। 3जब दोनों को देर तक बजाया जाए तो पूरी जमात मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आकर तेरे सामने जमा हो जाए। 4लेकिन अगर एक ही बजाया जाए तो सिर्फ़ कुंबों के बुज़ुर्ग तेरे सामने जमा हो जाएँ। 5अगर उनकी आवाज़ सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़दिस के मशरिक़ में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। 6फिर जब उनकी आवाज़ दूसरी बार थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़दिस के जुनूब में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। जब उनकी आवाज़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो यह रवाना होने का एलान होगा। 7इसके मुक़ाबले में जब उनकी आवाज़ देर तक सुनाई दे तो यह इस बात का एलान होगा कि जमात जमा हो जाए।

8बिगुल बजाने की ज़िम्मेदारी हारून के बेटों यानी इमामों को दी जाए। यह तुम्हारे और आनेवाली नसलों के लिए दायमी उसूल हो। 9उनकी आवाज़ उस वक़्त भी थोड़ी देर के लिए सुना दो जब तुम अपने मुल्क में किसी ज़ालिम दुश्मन से जंग लड़ने के लिए निकलोगे। तब रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करके दुश्मन से बचाएगा।

10इसी तरह उनकी आवाज़ मक़दिस में ख़ुशी के मौक़ों पर सुनाई दे यानी मुक़र्ररा ईदों और नए चाँद की ईदों पर। इन मौक़ों पर वह भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाते वक़्त बजाए जाएँ। फिर तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करेगा। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

सीना पहाड़ से रवानगी

11इसराईलियों को मिसर से निकले एक साल से ज़ायद अरसा हो चुका था। दूसरे महीने के बीसवें दिन बादल मुलाक़ात के ख़ैमे पर से उठा। 12फिर इसराईली मुक़र्ररा तरतीब के मुताबिक़ दश्ते-सीना से रवाना हुए। चलते चलते बादल फ़ारान के रेगिस्तान में उतर आया।

13उस वक़्त वह पहली दफ़ा उस तरतीब से रवाना हुए जो रब ने मूसा की मारिफ़त मुक़र्रर की थी। 14पहले यहूदाह के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल पड़े। तीनों का कमाँडर नहसोन बिन अम्मीनदाब था। 15साथ चलनेवाले क़बीले इशकार का कमाँडर नतनियेल बिन ज़ुग़र था। 16ज़बूलून का क़बीला भी साथ चला जिसका कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था। 17इसके बाद मुलाक़ात का ख़ैमा उतारा गया। जैरसोनी और मिरारी उसे उठाकर चल दिए। 18इन लावियों के बाद रूबिन के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चलने लगे। तीनों का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था। 19साथ चलनेवाले क़बीले शमाऊन का कमाँडर सलूमियेल बिन सूरीशद्दी था। 20जद का क़बीला भी साथ चला जिसका कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था। 21फिर लावियों में से क़िहाती मक़दिस का सामान उठाकर रवाना हुए। लाज़िम था कि उनके अगली मनज़िल पर पहुँचने तक मुलाक़ात का ख़ैमा लगा दिया गया हो। 22इसके बाद इफ़राईम के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल दिए। उनका कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहूद था। 23इफ़राईम के साथ चलनेवाले क़बीले मनस्सी का कमाँडर

जमलियेल बिन फ़दाहसूर था। 24बिनयमीन का
क़बीला भी साथ चला जिसका कमाँडर अबिदान
बिन जिदाऊनी था। 25आख़िर में दान के तीन
दस्ते अक़बी मुहाफ़िज़ के तौर पर अपने अलम के
तहत रवाना हुए। उनका कमाँडर अख़ियज़र बिन
अम्मीशद्दी था। 26दान के साथ चलनेवाले क़बीले
आशर का कमाँडर फ़जियेल बिन अकरान था।
27नफ़ताली का क़बीला भी साथ चला जिसका
कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था। 28इसराईली
इसी तरतीब से रवाना हुए।

मूसा होबाब को साथ चलने पर मजबूर करता है

29मूसा ने अपने मिदियानी सुसर रऊएल यानी
यितरो के बेटे होबाब से कहा, “हम उस जगह के
लिए रवाना हो रहे हैं जिसका वादा रब ने हमसे
किया है। हमारे साथ चलें! हम आप पर एहसान
करेंगे, क्योंकि रब ने इसराईल पर एहसान करने
का वादा किया है।” 30लेकिन होबाब ने जवाब
दिया, “मैं साथ नहीं जाऊँगा बल्कि अपने मुल्क
और रिश्तेदारों के पास वापस चला जाऊँगा।”
31मूसा ने कहा, “मेहरबानी करके हमें न छोड़ें।
क्योंकि आप ही जानते हैं कि हम रेगिस्तान
में कहाँ कहाँ अपने डेरे डाल सकते हैं। आप
रेगिस्तान में हमें रास्ता दिखा सकते हैं। 32अगर
आप हमारे साथ जाएँ तो हम आपको उस एहसान
में शरीक करेंगे जो रब हम पर करेगा।”

अहद के संदूक़ का सफ़र

33चुनाँचे उन्होंने रब के पहाड़ से रवाना होकर
तीन दिन सफ़र किया। इस दौरान रब का अहद
का संदूक़ उनके आगे आगे चला ताकि उनके लिए
आराम करने की जगह मालूम करे। 34जब कभी
वह रवाना होते तो रब का बादल दिन के वक़्त
उनके ऊपर रहता। 35संदूक़ के रवाना होते वक़्त
मूसा कहता, “ऐ रब, उठ। तेरे दुश्मन तित्तर-बित्तर
हो जाएँ। तुझसे नफ़रत करनेवाले तेरे सामने से
फ़रार हो जाएँ।” 36और जब भी वह रुक जाता
तो मूसा कहता, “ऐ रब, इसराईल के हज़ारों
ख़ानदानों के पास वापस आ।”

तबेरा में रब की आग

11 एक दिन लोग ख़ूब शिकायत करने
लगे। जब यह शिकायतें रब तक
पहुँचीं तो उसे ग़ुस्सा आया और उस की आग
उनके दरमियान भड़क उठी। जलते जलते उसने
ख़ैमागाह का एक किनारा भस्म कर दिया। 2लोग
मदद के लिए मूसा के पास आकर चिल्लाने लगे
तो उसने रब से दुआ की, और आग बुझ गई।
3उस मक़ाम का नाम तबेरा यानी जलना पड़
गया, क्योंकि रब की आग उनके दरमियान जल
उठी थी।

मूसा 70 राहनुमा चुनता है

4इसराईलियों के साथ जो अजनबी सफ़र कर
रहे थे वह गोश्त खाने की शदीद आरज़ू करने
लगे। तब इसराईली भी रो पड़े और कहने लगे,
“कौन हमें गोश्त खिलाएगा? 5मिसर में हम
मछली मुफ़्त खा सकते थे। हाय, वहाँ के खीरे,
तरबूज़, गंदने, प्याज़ और लहसन कितने अच्छे
थे! 6लेकिन अब तो हमारी जान सूख गई है।
यहाँ बस मन ही मन नज़र आता रहता है।”

7मन धनिये के दानों की मानिंद था, और
उसका रंग गूगल के गूँद की मानिंद था। 8-9रात
के वक़्त वह ख़ैमागाह में ओस के साथ ज़मीन पर
गिरता था। सुबह के वक़्त लोग इधर-उधर घुमते-
फिरते हुए उसे जमा करते थे। फिर वह उसे चक्की
में पीसकर या उखली में कूटकर उबालते या रोटी
बनाते थे। उसका ज़ायक़ा ऐसी रोटी का-सा था
जिसमें ज़ैतून का तेल डाला गया हो।

10तमाम ख़ानदान अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े
पर रोने लगे तो रब को शदीद ग़ुस्सा आया। उनका
शोर मूसा को भी बहुत बुरा लगा। 11उसने रब
से पूछा, “तूने अपने ख़ादिम के साथ इतना बुरा
सुलूक क्यों किया? मैंने किस काम से तुझे
इतना नाराज़ किया कि तूने इन तमाम लोगों का

बोझ मुझ पर डाल दिया? 12क्या मैंने हामिला
होकर इस पूरी क़ौम को जन्म दिया कि तू मुझसे
कहता है, 'इसे उस तरह उठाकर ले चलना जिस
तरह आया शीरख़ार बच्चे को उठाकर हर जगह
साथ लिए फिरती है। इसी तरह इसे उस मुल्क में
ले जाना जिसका वादा मैंने क़सम खाकर इनके
बापदादा से किया है।' 13ऐ अल्लाह, मैं इन
तमाम लोगों को कहाँ से गोश्त मुहैया करूँ? वह
मेरे सामने रोते रहते हैं कि हमें खाने के लिए गोश्त
दो। 14मैं अकेला इन तमाम लोगों की ज़िम्मेदारी
नहीं उठा सकता। यह बोझ मेरे लिए हद से ज़्यादा
भारी है। 15अगर तू इस पर इसरार करे तो फिर
बेहतर है कि अभी मुझे मार दे ताकि मैं अपनी
तबाही न देखूँ।"

16जवाब में रब ने मूसा से कहा, "मेरे पास
इसराईल के 70 बुज़ुर्ग जमा कर। सिर्फ़ ऐसे लोग
चुन जिनके बारे में तुझे मालूम है कि वह लोगों के
बुज़ुर्ग और निगहबान हैं। उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के
पास ले आ। वहाँ वह तेरे साथ खड़े हो जाएँ, 17तो
मैं उतरकर तेरे साथ हमकलाम हूँगा। उस वक़्त मैं
उस रूह में से कुछ लूँगा जो मैंने तुझ पर नाज़िल
किया था और उसे उन पर नाज़िल करूँगा। तब
वह क़ौम का बोझ उठाने में तेरी मदद करेंगे और
तू इसमें अकेला नहीं रहेगा। 18लोगों को बताना,
'अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करो, क्योंकि
कल तुम गोश्त खाओगे। रब ने तुम्हारी सुनी जब
तुम रो पड़े कि कौन हमें गोश्त खिलाएगा, मिसर
में हमारी हालत बेहतर थी। अब रब तुम्हें गोश्त
मुहैया करेगा और तुम उसे खाओगे। 19तुम उसे
न सिर्फ़ एक, दो या पाँच दिन खाओगे बल्कि 10
या 20 दिन से भी ज़्यादा अरसे तक। 20तुम एक
पूरा महीना ख़ूब गोश्त खाओगे, यहाँ तक कि वह
तुम्हारी नाक से निकलेगा और तुम्हें उससे घिन
आएगी। और यह इस सबब से होगा कि तुमने
रब को जो तुम्हारे दरमियान है रद्द किया और रोते
रोते उसके सामने कहा कि हम क्यों मिसर से
निकले'।"

21लेकिन मूसा ने एतराज़ किया, "अगर क़ौम
के पैदल चलनेवाले गिने जाएँ तो छः लाख हैं।
तू किस तरह हमें एक माह तक गोश्त मुहैया
करेगा? 22क्या गाय-बैलों या भेड़-बकरियों को
इतनी मिक़दार में ज़बह किया जा सकता है कि
काफ़ी हो? अगर समुंदर की तमाम मछलियाँ
उनके लिए पकड़ी जाएँ तो क्या काफ़ी होंगी?"

23रब ने कहा, "क्या रब का इख़्तियार कम है?
अब तू ख़ुद देख लेगा कि मेरी बातें दुरुस्त हैं कि
नहीं।"

24चुनाँचे मूसा ने वहाँ से निकलकर लोगों को
रब की यह बातें बताईं। उसने उनके बुज़ुर्गों में से
70 को चुनकर उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द
खड़ा कर दिया। 25तब रब बादल में उतरकर
मूसा से हमकलाम हुआ। जो रूह उसने मूसा पर
नाज़िल किया था उसमें से उसने कुछ लेकर उन
70 बुज़ुर्गों पर नाज़िल किया। जब रूह उन पर
आया तो वह नबुव्वत करने लगे। लेकिन ऐसा
फिर कभी न हुआ।

26अब ऐसा हुआ कि इन सत्तर बुज़ुर्गों में से
दो ख़ैमागाह में रह गए थे। उनके नाम इलदाद
और मेदाद थे। उन्हें चुना तो गया था लेकिन वह
मुलाक़ात के ख़ैमे के पास नहीं आए थे। इसके
बावुजूद रूह उन पर भी नाज़िल हुआ और वह
ख़ैमागाह में नबुव्वत करने लगे। 27एक नौजवान
भागकर मूसा के पास आया और कहा, "इलदाद
और मेदाद ख़ैमागाह में ही नबुव्वत कर रहे हैं।"

28यशुअ बिन नून जो जवानी से मूसा का
मददगार था बोल उठा, "मूसा मेरे आक़ा, उन्हें
रोक दें!" 29लेकिन मूसा ने जवाब दिया, "क्या
तू मेरी ख़ातिर ग़ैरत खा रहा है? काश रब के
तमाम लोग नबी होते और वह उन सब पर अपना
रूह नाज़िल करता!" 30फिर मूसा और इसराईल
के बुज़ुर्ग ख़ैमागाह में वापस आए।

31तब रब की तरफ़ से ज़ोरदार हवा चलने लगी
जिसने समुंदर को पार करनेवाले बटेरों के ग़ोल
धकेलकर ख़ैमागाह के इर्दगिर्द ज़मीन पर फेंक
दिए। उनके ग़ोल तीन फ़ुट ऊँचे और ख़ैमागाह

के चारों तरफ़ 30 किलोमीटर तक पड़े रहे। 32उस पूरे दिन और रात और अगले पूरे दिन लोग निकलकर बटेरें जमा करते रहे। हर एक ने कम अज़ कम दस बड़ी टोकरियाँ भर लीं। फिर उन्होंने उनका गोश्त ख़ैमे के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैला दिया ताकि वह ख़ुश्क हो जाए।

33लेकिन गोश्त के पहले टुकड़े अभी मुँह में थे कि रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उसने उनमें सख़्त वबा फैलने दी। 34चुनाँचे मक़ाम का नाम क़ब्रोत-हत्तावा यानी 'लालच की क़ब्रें' रखा गया, क्योंकि वहाँ उन्होंने उन लोगों को दफ़न किया जो गोश्त के लालच में आ गए थे।

35इसके बाद इसराईली क़ब्रोत-हत्तावा से रवाना होकर हसीरात पहुँच गए। वहाँ वह ख़ैमाज़न हुए।

मरियम और हारून की मुख़ालफ़त

12 एक दिन मरियम और हारून मूसा के ख़िलाफ़ बातें करने लगे। वजह यह थी कि उसने कूश की एक औरत से शादी की थी। 2उन्होंने पूछा, "क्या रब सिर्फ़ मूसा की मारिफ़त बात करता है? क्या उसने हमसे भी बात नहीं की?" रब ने उनकी यह बातें सुनीं।

3लेकिन मूसा निहायत हलीम था। दुनिया में उस जैसा हलीम कोई नहीं था। 4अचानक रब मूसा, हारून और मरियम से मुख़ातिब हुआ, "तुम तीनों बाहर निकलकर मुलाक़ात के ख़ैमे के पास आओ।"

तीनों वहाँ पहुँचे। 5तब रब बादल के सतून में उतरकर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा हुआ। उसने हारून और मरियम को बुलाया तो दोनों आए। 6उसने कहा, "मेरी बात सुनो। जब तुम्हारे दरमियान नबी होता है तो मैं अपने आपको रोया में उस पर ज़ाहिर करता हूँ या ख़ाब में उससे मुख़ातिब होता हूँ। 7लेकिन मेरे ख़ादिम मूसा की और बात है। उसे मैंने अपने पूरे घराने पर मुक़र्रर किया है। 8उससे मैं रूबरू हमकलाम होता हूँ। उससे मैं मुअम्मों के ज़रीए नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात करता हूँ। वह रब की सूरत देखता है। तो फिर तुम मेरे ख़ादिम के ख़िलाफ़ बातें करने से क्यों न डरे?"

9रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और वह चला गया। 10जब बादल का सतून ख़ैमे से दूर हुआ तो मरियम की जिल्द बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद थी। वह कोढ़ का शिकार हो गई थी। हारून उस की तरफ़ मुड़ा तो उस की हालत देखी 11और मूसा से कहा, "मेरे आक़ा, मेहरबानी करके हमें इस गुनाह की सज़ा न दें जो हमारी हमाक़त के बाइस सरज़द हुआ है। 12मरियम को इस हालत में न छोड़ें। वह तो ऐसे बच्चे की मानिंद है जो मुरदा पैदा हुआ हो, जिसके जिस्म का आधा हिस्सा गल चुका हो।"

13तब मूसा ने पुकारकर रब से कहा, "ऐ अल्लाह, मेहरबानी करके उसे शफ़ा दे।" 14रब ने जवाब में मूसा से कहा, "अगर मरियम का बाप उसके मुँह पर थूकता तो क्या वह पूरे हफ़्ते तक शर्म महसूस न करती? उसे एक हफ़्ते के लिए ख़ैमागाह के बाहर बंद रख। इसके बाद उसे वापस लाया जा सकता है।"

15चुनाँचे मरियम को एक हफ़्ते के लिए ख़ैमागाह के बाहर बंद रखा गया। लोग उस वक़्त तक सफ़र के लिए रवाना न हुए जब तक उसे वापस न लाया गया। 16जब वह वापस आई तो इसराईली हसीरात से रवाना होकर फ़ारान के रेगिस्तान में ख़ैमाज़न हुए।

मुल्के-कनान में इसराईली जासूस

13 फिर रब ने मूसा से कहा, 2"कुछ आदमी मुल्के-कनान का जायज़ा लेने के लिए भेज दे, क्योंकि मैं उसे इसराईलियों को देने को हूँ। हर क़बीले में से एक राहनुमा को चुनकर भेज दे।"

3मूसा ने रब के कहने पर उन्हें दश्ते-फ़ारान से भेजा। सब इसराईली राहनुमा थे। 4उनके नाम यह हैं :

रूबिन के क़बीले से सम्मुअ बिन ज़क्कूर,
5शमाऊन के क़बीले से साफ़त बिन होरी,

6यहूदाह के क़बीले से कालिब बिन यफ़ुन्ना,
7इशकार के क़बीले से इजाल बिन यूसुफ़,
8इफ़राईम के क़बीले से होसेअ बिन नून,
9बिनयमीन के क़बीले से फ़लती बिन रफ़ू,
10ज़बूलून के क़बीले से जद्दियेल बिन सोदी,
11यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जिद्दी बिन सूसी,
12दान के क़बीले से अम्मियेल बिन जमल्ली,
13आशर के क़बीले से सतूर बिन मीका-एल,
14नफ़ताली के क़बीले से नख़बी बिन वुफ़सी,
15जद के क़बीले से जियुएल बिन माकी।
16मूसा ने इन्हीं बारह आदमियों को मुल्क का जायज़ा लेने के लिए भेजा। उसने होसेअ का नाम यशुअ यानी 'रब नजात है' में बदल दिया।
17उन्हें रुख़सत करने से पहले उसने कहा, "दश्ते-नजब से गुज़रकर पहाड़ी इलाक़े तक पहुँचो।
18मालूम करो कि यह किस तरह का मुल्क है और उसके बाशिंदे कैसे हैं। क्या वह ताक़तवर हैं या कमज़ोर, तादाद में कम हैं या ज़्यादा?
19जिस मुल्क में वह बसते हैं क्या वह अच्छा है कि नहीं? वह किस क़िस्म के शहरों में रहते हैं? क्या उनकी चारदीवारियाँ हैं कि नहीं?
20मुल्क की ज़मीन ज़रख़ेज़ है या बंजर? उसमें दरख़्त हैं कि नहीं? और जुर्रत करके मुल्क का कुछ फल चुनकर ले आओ।" उस वक़्त पहले अंगूर पक गए थे।
21चुनाँचे इन आदमियों ने सफ़र करके दश्ते-सीन से रहोब तक मुल्क का जायज़ा लिया। रहोब लबो-हमात के क़रीब है।
22वह दश्ते-नजब से गुज़रकर हबरून पहुँचे जहाँ अनाक़ के बेटे अख़ीमान, सीसी और तलमी रहते थे। (हबरून को मिसर के शहर ज़ुअन से सात साल पहले तामीर किया गया था)।
23जब वह वादीए-इसकाल तक पहुँचे तो उन्होंने एक डाली काट ली जिस पर अंगूर का गुच्छा लगा हुआ था। दो आदमियों ने यह अंगूर, कुछ अनार और कुछ अंजीर लाठी पर लटकाए और उसे उठाकर चल पड़े।
24उस जगह का नाम उस गुच्छे के सबब से जो इसराईलियों ने वहाँ से काट लिया इसकाल यानी गुच्छा रखा गया।
25चालीस दिन तक मुल्क का खोज लगाते लगाते वह लौट आए।
26वह मूसा, हारून और इसराईल की पूरी जमात के पास आए जो दश्ते-फ़ारान में क़ादिस की जगह पर इंतज़ार कर रहे थे। वहाँ उन्होंने सब कुछ बताया जो उन्होंने मालूम किया था और उन्हें वह फल दिखाए जो लेकर आए थे।
27उन्होंने मूसा को रिपोर्ट दी, "हम उस मुल्क में गए जहाँ आपने हमें भेजा था। वाक़ई उस मुल्क में दूध और शहद की कसरत है। यहाँ हमारे पास उसके कुछ फल भी हैं।
28लेकिन उसके बाशिंदे ताक़तवर हैं। उनके शहरों की फ़सीलें हैं, और वह निहायत बड़े हैं। हमने वहाँ अनाक़ की औलाद भी देखी।
29अमालीक़ी दश्ते-नजब में रहते हैं जबकि हित्ती, यबूसी और अमोरी पहाड़ी इलाक़े में आबाद हैं। कनानी साहिली इलाक़े और दरियाए-यरदन के किनारे किनारे बसते हैं।"
30कालिब ने मूसा के सामने जमाशुदा लोगों को इशारा किया कि वह ख़ामोश हो जाएँ। फिर उसने कहा, "आएँ, हम मुल्क में दाख़िल हो जाएँ और उस पर क़ब्ज़ा कर लें, क्योंकि हम यक़ीनन यह करने के क़ाबिल हैं।"
31लेकिन दूसरे आदमियों ने जो उसके साथ मुल्क को देखने गए थे कहा, "हम उन लोगों पर हमला नहीं कर सकते, क्योंकि वह हमसे ताक़तवर हैं।"
32उन्होंने इसराईलियों के दरमियान उस मुल्क के बारे में ग़लत अफ़वाहें फैलाईं जिसकी तफ़तीश उन्होंने की थी। उन्होंने कहा, "जिस मुल्क में से हम गुज़रे ताकि उसका जायज़ा लें वह अपने बाशिंदों को हड़प कर लेता है। जो भी उसमें रहता है निहायत दराज़क़द है।
33हमने वहाँ देवक़ामत अफ़राद भी देखे। (अनाक़ के बेटे देवक़ामत के अफ़राद की औलाद थे)। उनके सामने हम अपने आपको टिड्डी जैसा महसूस कर रहे थे, और हम उनकी नज़र में ऐसे थे भी।"

लोग कनान में दाख़िल नहीं होना चाहते

14 उस रात तमाम लोग चीख़ें मार
मारकर रोते रहे। 2सब मूसा और
हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। पूरी जमात ने
उनसे कहा, "काश हम मिसर या इस रेगिस्तान
में मर गए होते! 3रब हमें क्यों उस मुल्क में
ले जा रहा है? क्या इसलिए कि दुश्मन हमें
तलवार से क़त्ल करे और हमारे बाल-बच्चों को
लूट ले? क्या बेहतर नहीं होगा कि हम मिसर
वापस जाएँ?" 4उन्होंने एक दूसरे से कहा,
"आओ, हम राहनुमा चुनकर मिसर वापस चले
जाएँ।"

5तब मूसा और हारून पूरी जमात के सामने
मुँह के बल गिरे। 6लेकिन यशुअ बिन नून और
कालिब बिन यफ़ुन्ना बाक़ी दस जासूसों से फ़रक़
थे। परेशानी के आलम में उन्होंने अपने कपड़े
फाड़कर 7पूरी जमात से कहा, "जिस मुल्क में
से हम गुज़रे और जिसकी तफ़तीश हमने की वह
निहायत ही अच्छा है। 8अगर रब हमसे ख़ुश है तो
वह ज़रूर हमें उस मुल्क में ले जाएगा जिसमें दूध
और शहद की कसरत है। वह हमें ज़रूर यह मुल्क
देगा। 9रब से बग़ावत मत करना। उस मुल्क के
रहनेवालों से न डरें। हम उन्हें हड़प कर जाएंगे।
उनकी पनाह उनसे जाती रही है जबकि रब हमारे
साथ है। चुनाँचे उनसे मत डरें।"

10यह सुनकर पूरी जमात उन्हें संगसार करने
के लिए तैयार हुई। लेकिन अचानक रब का
जलाल मुलाक़ात के ख़ैमे पर ज़ाहिर हुआ, और
तमाम इसराईलियों ने उसे देखा। 11रब ने मूसा
से कहा, "यह लोग मुझे कब तक हक़ीर जानेंगे?
वह कब तक मुझ पर ईमान रखने से इनकार करेंगे
अगरचे मैंने उनके दरमियान इतने मोजिज़े किए
हैं? 12मैं उन्हें वबा से मार डालूँगा और उन्हें रूए-
ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे
एक क़ौम बनाऊँगा जो उनसे बड़ी और ताक़तवर
होगी।"

13लेकिन मूसा ने रब से कहा, "फिर मिसरी
यह सुन लेंगे! क्योंकि तूने अपनी क़ुदरत से इन
लोगों को मिसर से निकालकर यहाँ तक पहुँचाया
है। 14मिसरी यह बात कनान के बाशिंदों को
बताएँगे। यह लोग पहले से सुन चुके हैं कि रब
इस क़ौम के साथ है, कि तुझे रूबरू देखा जाता
है, कि तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है, और
कि तू दिन के वक़्त बादल के सतून में और रात
को आग के सतून में इनके आगे आगे चलता है।
15अगर तू एकदम इस पूरी क़ौम को तबाह कर
डाले तो बाक़ी क़ौमें यह सुनकर कहेंगी, 16'रब
इन लोगों को उस मुल्क में ले जाने के क़ाबिल नहीं
था जिसका वादा उसने उनसे क़सम खाकर किया
था। इसी लिए उसने उन्हें रेगिस्तान में हलाक कर
दिया।' 17ऐ रब, अब अपनी क़ुदरत यों ज़ाहिर
कर जिस तरह तूने फ़रमाया है। क्योंकि तूने कहा,
18'रब तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है। वह
गुनाह और नाफ़रमानी मुआफ़ करता है, लेकिन
हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है।
जब वालिदैन गुनाह करें तो उनकी औलाद को
भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज
भुगतने पड़ेंगे।' 19इन लोगों का क़ुसूर अपनी
अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुआफ़ कर। उन्हें
उस तरह मुआफ़ कर जिस तरह तू उन्हें मिसर से
निकलते वक़्त अब तक मुआफ़ करता रहा है।"

20रब ने जवाब दिया, "तेरे कहने पर मैंने उन्हें
मुआफ़ कर दिया है। 21इसके बावुजूद मेरी हयात
की क़सम और मेरे जलाल की क़सम जो पूरी
दुनिया को मामूर करता है, 22इन लोगों में से कोई
भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। उन्होंने मेरा
जलाल और मेरे मोजिज़े देखे हैं जो मैंने मिसर और
रेगिस्तान में कर दिखाए हैं। तो भी उन्होंने दस
दफ़ा मुझे आज़माया और मेरी न सुनी। 23उनमें
से एक भी उस मुल्क को नहीं देखेगा जिसका
वादा मैंने क़सम खाकर उनके बापदादा से किया
था। जिसने भी मुझे हक़ीर जाना है वह कभी
उसे नहीं देखेगा। 24सिर्फ़ मेरा ख़ादिम कालिब
मुख़्तलिफ़ है। उस की रूह फ़रक़ है। वह पूरे

दिल से मेरी पैरवी करता है, इसलिए मैं उसे उस
मुल्क में ले जाऊँगा जिसमें उसने सफ़र किया
है। उस की औलाद मुल्क मीरास में पाएगी।
25लेकिन फ़िलहाल अमालीक़ी और कनानी उस
की वादियों में आबाद रहेंगे। चुनाँचे कल मुड़कर
वापस चलो। रेगिस्तान में बहरे-क़ुलज़ुम की तरफ़
रवाना हो जाओ।"

26रब ने मूसा और हारून से कहा, 27"यह
शरीर जमात कब तक मेरे ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाती
रहेगी? उनके गिले-शिकवे मुझ तक पहुँच गए
हैं। 28इसलिए उन्हें बताओ, 'रब फ़रमाता है कि
मेरी हयात की क़सम, मैं तुम्हारे साथ वही कुछ
करूँगा जो तुमने मेरे सामने कहा है। 29तुम इस
रेगिस्तान में मरकर यहीं पड़े रहोगे, हर एक जो
20 साल या इससे ज़ायद का है, जो मर्दुमशुमारी
में गिना गया और जो मेरे ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाया।
30गो मैंने हाथ उठाकर क़सम खाई थी कि मैं
तुझे उसमें बसाऊँगा तुममें से कोई भी उस मुल्क
में दाख़िल नहीं होगा। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना
और यशुअ बिन नून दाख़िल होंगे। 31तुमने कहा
था कि दुश्मन हमारे बच्चों को लूट लेंगे। लेकिन
उन्हीं को मैं उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तुमने
रद्द किया है। 32लेकिन तुम ख़ुद दाख़िल नहीं
होगे। तुम्हारी लाशें इस रेगिस्तान में पड़ी रहेंगी।
33तुम्हारे बच्चे 40 साल तक यहाँ रेगिस्तान में
गल्लाबान होंगे। उन्हें तुम्हारी बेवफ़ाई के सबब
से उस वक़्त तक तकलीफ़ उठानी पड़ेगी जब
तक तुममें से आख़िरी शख़्स मर न गया हो।
34तुमने चालीस दिन के दौरान उस मुल्क का
जायज़ा लिया। अब तुम्हें चालीस साल तक अपने
गुनाहों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। तब तुम्हें पता
चलेगा कि इसका क्या मतलब है कि मैं तुम्हारी
मुख़ालफ़त करता हूँ। 35मैं, रब ने यह बात
फ़रमाई है। मैं यक़ीनन यह सब कुछ उस सारी
शरीर जमात के साथ करूँगा जिसने मिलकर मेरी
मुख़ालफ़त की है। इसी रेगिस्तान में वह ख़त्म हो
जाएंगे, यहीं मर जाएंगे'।"

36-37जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का
जायज़ा लेने के लिए भेजा था, रब ने उन्हें फ़ौरन
मोहलक वबा से मार डाला, क्योंकि उनके ग़लत
अफ़वाहें फैलाने से पूरी जमात बुड़बुड़ाने लगी थी।
38सिर्फ़ यशुअ बिन नून और कालिब बिन यफ़ुन्ना
ज़िंदा रहे।

39जब मूसा ने रब की यह बातें इसराई-
लियों को बताईं तो वह ख़ूब मातम करने लगे।
40अगली सुबह-सवेरे वह उठे और यह कहते हुए
ऊँचे पहाड़ी इलाक़े के लिए रवाना हुए कि हमसे
ग़लती हुई है, लेकिन अब हम हाज़िर हैं और उस
जगह की तरफ़ जा रहे हैं जिसका ज़िक्र रब ने
किया है।

41लेकिन मूसा ने कहा, "तुम क्यों रब की
ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हो? तुम कामयाब नहीं
होगे। 42वहाँ न जाओ, क्योंकि रब तुम्हारे साथ
नहीं है। तुम दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे,
43क्योंकि वहाँ अमालीक़ी और कनानी तुम्हारा
सामना करेंगे। चूँकि तुमने अपना मुँह रब से फेर
लिया है इसलिए वह तुम्हारे साथ नहीं होगा, और
दुश्मन तुम्हें तलवार से मार डालेगा।"

44तो भी वह अपने ग़ुरूर में जुर्रत करके ऊँचे
पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े, हालाँकि न मूसा
और न अहद के संदूक़ ही ने ख़ैमागाह को छोड़ा।
45फिर उस पहाड़ी इलाक़े में रहनेवाले अमालीक़ी
और कनानी उन पर आन पड़े और उन्हें मारते
मारते हुरमा तक तित्तर-बित्तर कर दिया।

कनान में क़ुरबानियाँ पेश करने का तरीक़ा

15 रब ने मूसा से कहा, 2"इसराई-
लियों को बताना कि जब तुम उस
मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा 3-4तो
जलनेवाली क़ुरबानियाँ यों पेश करना :

अगर तुम अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में
से ऐसी क़ुरबानी पेश करना चाहो जिसकी ख़ुशबू
रब को पसंद हो तो साथ साथ डेढ़ किलोग्राम
बेहतरीन मैदा भी पेश करो जो एक लिटर ज़ैतून के
तेल के साथ मिलाया गया हो। इसमें कोई फ़रक़

नहीं कि यह भस्म होनेवाली क़ुरबानी, मन्नत की
क़ुरबानी, दिली ख़ुशी की क़ुरबानी या किसी ईद
की क़ुरबानी हो।
5हर भेड़ को पेश करते वक़्त एक लिटर मै भी
मै की नज़र के तौर पर पेश करना। 6जब मेंढा
क़ुरबान किया जाए तो 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा
भी साथ पेश करना जो सवा लिटर तेल के साथ
मिलाया गया हो। 7सवा लिटर मै भी मै की नज़र
के तौर पर पेश की जाए। ऐसी क़ुरबानी की ख़ुशबू
रब को पसंद आएगी।
8अगर तू रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी,
मन्नत की क़ुरबानी या सलामती की क़ुरबानी के
तौर पर जवान बैल पेश करना चाहे 9तो उसके
साथ साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश
करना जो दो लिटर तेल के साथ मिलाया गया
हो। 10दो लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर
पेश की जाए। ऐसी क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को
पसंद है। 11लाज़िम है कि जब भी किसी गाय,
बैल, भेड़, मेंढे, बकरी या बकरे को चढ़ाया जाए
तो ऐसा ही किया जाए।
12अगर एक से ज़ायद जानवरों को क़ुरबान
करना है तो हर एक के लिए मुक़र्ररा ग़ल्ला और
मै की नज़रें भी साथ ही पेश की जाएँ।
13लाज़िम है कि हर देसी इसराईली
जलनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करते वक़्त ऐसा
ही करे। फिर उनकी ख़ुशबू रब को पसंद आएगी।
14यह भी लाज़िम है कि इसराईल में आरिज़ी या
मुस्तक़िल तौर पर रहनेवाले परदेसी इन उसूलों के
मुताबिक़ अपनी क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ। फिर उनकी
ख़ुशबू रब को पसंद आएगी। 15मुल्के-कनान
में रहनेवाले तमाम लोगों के लिए पाबंदियाँ एक
जैसी हैं, ख़ाह वह देसी हों या परदेसी, क्योंकि रब
की नज़र में परदेसी तुम्हारे बराबर है। यह तुम्हारे
और तुम्हारी औलाद के लिए दायमी उसूल है।
16तुम्हारे और तुम्हारे साथ रहनेवाले परदेसी के
लिए एक ही शरीअत है।”

फ़सल के लिए शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी

17रब ने मूसा से कहा, 18“इसराईलियों को
बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे
जिसमें मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ 19और वहाँ की
पैदावार खाओगे तो पहले उसका एक हिस्सा
उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब को पेश
करना। 20फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से
मेरे लिए एक रोटी बनाकर उठानेवाली क़ुरबानी
के तौर पर पेश करो। वह गाहने की जगह की
तरफ़ से रब के लिए उठानेवाली क़ुरबानी होगी।
21अपनी फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से यह
क़ुरबानी पेश किया करो। यह उसूल हमेशा तक
लागू रहे।

नादानिस्ता गुनाहों के लिए क़ुरबानियाँ

22हो सकता है कि ग़ैरइरादी तौर पर तुमसे
ग़लती हुई है और तुमने उन अहकाम पर पूरे तौर
पर अमल नहीं किया जो रब मूसा को दे चुका है
23या जो वह आनेवाली नसलों को देगा। 24अगर
जमात इस बात से नावाक़िफ़ थी और ग़ैरइरादी
तौर पर उससे ग़लती हुई तो फिर पूरी जमात एक
जवान बैल भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर
पेश करे। साथ ही वह मुक़र्ररा ग़ल्ला और मै की
नज़रें भी पेश करे। इसकी ख़ुशबू रब को पसंद
होगी। इसके अलावा जमात गुनाह की क़ुरबानी
के लिए एक बकरा पेश करे। 25इमाम इसराईल
की पूरी जमात का कफ़्फ़ारा दे तो उन्हें मुआफ़ी
मिलेगी, क्योंकि उनका गुनाह ग़ैरइरादी था और
उन्होंने रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी और गुनाह
की क़ुरबानी पेश की है। 26इसराईलियों की
पूरी जमात को परदेसियों समेत मुआफ़ी मिलेगी,
क्योंकि गुनाह ग़ैरइरादी था।
27अगर सिर्फ़ एक शख़्स से ग़ैरइरादी तौर पर
गुनाह हुआ हो तो गुनाह की क़ुरबानी के लिए
वह एक यकसाला बकरी पेश करे। 28इमाम
रब के सामने उस शख़्स का कफ़्फ़ारा दे। जब
कफ़्फ़ारा दे दिया गया तो उसे मुआफ़ी हासिल
होगी। 29यही उसूल परदेसी पर भी लागू है। अगर

उससे ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो वह मुआफ़ी हासिल करने के लिए वही कुछ करे जो इसराईली को करना होता है।

दानिस्ता गुनाहों के लिए सज़ाए-मौत

30लेकिन अगर कोई देसी या परदेसी जान-
बूझकर गुनाह करता है तो ऐसा शख़्स रब की
इहानत करता है, इसलिए लाज़िम है कि उसे उस
की क़ौम में से मिटाया जाए। 31उसने रब का
कलाम हक़ीर जानकर उसके अहकाम तोड़ डाले
हैं, इसलिए उसे ज़रूर क़ौम में से मिटाया जाए।
वह अपने गुनाह का ज़िम्मेदार है।"

32जब इसराईली रेगिस्तान में से गुज़र रहे थे
तो एक आदमी को पकड़ा गया जो हफ़्ते के
दिन लकड़ियाँ जमा कर रहा था। 33जिन्होंने उसे
पकड़ा था वह उसे मूसा, हारून और पूरी जमात
के पास ले आए। 34चूँकि साफ़ मालूम नहीं था
कि उसके साथ क्या किया जाए इसलिए उन्होंने
उसे गिरिफ़्तार कर लिया।

35फिर रब ने मूसा से कहा, "इस आदमी
को ज़रूर सज़ाए-मौत दी जाए। पूरी जमात उसे
ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर संगसार करे।"
36चुनाँचे जमात ने उसे ख़ैमागाह के बाहर ले
जाकर संगसार किया, जिस तरह रब ने मूसा को
हुक्म दिया था।

अहकाम की याद दिलानेवाले फुँदने

37रब ने मूसा से कहा, 38"इसराईलियों को
बताना कि तुम और तुम्हारे बाद की नसलें अपने
लिबास के किनारों पर फुँदने लगाएँ। हर फुँदना
एक क़िरमिज़ी डोरी से लिबास के साथ लगा
हो। 39इन फुँदनों को देखकर तुम्हें रब के तमाम
अहकाम याद रहेंगे और तुम उन पर अमल करोगे।
फिर तुम अपने दिलों और आँखों की ग़लत
ख़ाहिशों के पीछे नहीं पड़ोगे बल्कि ज़िनाकारी
से दूर रहोगे। 40फिर तुम मेरे अहकाम को याद
करके उन पर अमल करोगे और अपने ख़ुदा के
सामने मख़सूसो-मुक़द्दस रहोगे। 41मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया ताकि
तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"

क़ोरह, दातन और अबीराम की सरकशी

16 1-2एक दिन क़ोरह बिन इज़हार मूसा
के ख़िलाफ़ उठा। वह लावी के क़बीले
का क़िहाती था। उसके साथ रूबिन के क़बीले
के तीन आदमी थे, इलियाब के बेटे दातन और
अबीराम और ओन बिन पलत। उनके साथ 250
और आदमी भी थे जो जमात के सरदार और
असरो-रसूख़वाले थे, और जो कौंसल के लिए
चुने गए थे। 3वह मिलकर मूसा और हारून के
पास आकर कहने लगे, "आप हमसे ज़्यादती कर
रहे हैं। पूरी जमात मख़सूसो-मुक़द्दस है, और रब
उसके दरमियान है। तो फिर आप अपने आपको
क्यों रब की जमात से बढ़कर समझते हैं?"

4यह सुनकर मूसा मुँह के बल गिरा। 5फिर
उसने क़ोरह और उसके तमाम साथियों से कहा,
"कल सुबह रब ज़ाहिर करेगा कि कौन उसका
बंदा और कौन मख़सूसो-मुक़द्दस है। उसी को
वह अपने पास आने देगा। 6ऐ क़ोरह, कल
अपने तमाम साथियों के साथ बख़ूरदान लेकर
7रब के सामने उनमें अंगारे और बख़ूर डालो।
जिस आदमी को रब चुनेगा वह मख़सूसो-मुक़द्दस
होगा। अब तुम लावी ख़ुद ज़्यादती कर रहे हो।"

8मूसा ने क़ोरह से बात जारी रखी, "ऐ लावी
की औलाद, सुनो! 9क्या तुम्हारी नज़र में यह
कोई छोटी बात है कि रब तुम्हें इसराईली जमात
के बाक़ी लोगों से अलग करके अपने क़रीब ले
आया ताकि तुम रब के मक़दिस में और जमात के
सामने खड़े होकर उनकी ख़िदमत करो? 10वह
तुझे और तेरे साथी लावियों को अपने क़रीब
लाया है। लेकिन अब तुम इमाम का ओहदा भी
अपनाना चाहते हो। 11अपने साथियों से मिलकर
तूने हारून की नहीं बल्कि रब की मुख़ालफ़त की
है। क्योंकि हारून कौन है कि तुम उसके ख़िलाफ़
बुड़बुड़ाओ?"

12फिर मूसा ने इलियाब के बेटों दातन और
अबीराम को बुलाया। लेकिन उन्होंने कहा, “हम
नहीं आएँगे। 13आप हमें एक ऐसे मुल्क से
निकाल लाए हैं जहाँ दूध और शहद की कसरत है
ताकि हम रेगिस्तान में हलाक हो जाएँ। क्या यह
काफ़ी नहीं है? क्या अब आप हम पर हुकूमत
भी करना चाहते हैं? 14न आपने हमें ऐसे मुल्क
में पहुँचाया जिसमें दूध और शहद की कसरत है,
न हमें खेतों और अंगूर के बाग़ों के वारिस बनाया
है। क्या आप इन आदमियों की आँखें निकाल
डालेंगे? नहीं, हम हरगिज़ नहीं आएँगे।”

15तब मूसा निहायत ग़ुस्से हुआ। उसने रब से
कहा, “उनकी क़ुरबानी को क़बूल न कर। मैंने
एक गधा तक उनसे नहीं लिया, न मैंने उनमें से
किसी से बुरा सुलूक किया है।”

16क़ोरह से उसने कहा, “कल तुम और तुम्हारे
साथी रब के सामने हाज़िर हो जाओ। हारून
भी आएगा। 17हर एक अपना बख़ूरदान लेकर
उसे रब को पेश करे।” 18चुनाँचे हर आदमी ने
अपना बख़ूरदान लेकर उसमें अंगारे और बख़ूर
डाल दिया। फिर सब मूसा और हारून के साथ
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हुए।
19क़ोरह ने पूरी जमात को दरवाज़े पर मूसा और
हारून के मुक़ाबले में जमा किया था।

अचानक पूरी जमात पर रब का जलाल ज़ाहिर
हुआ। 20रब ने मूसा और हारून से कहा, 21“इस
जमात से अलग हो जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन
हलाक कर दूँ।” 22मूसा और हारून मुँह के बल
गिरे और बोल उठे, “ऐ अल्लाह, तू तमाम जानों
का ख़ुदा है। क्या तेरा ग़ज़ब एक ही आदमी के
गुनाह के सबब से पूरी जमात पर आन पड़ेगा?”

23तब रब ने मूसा से कहा, 24“जमात को बता
दे कि क़ोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो
जाओ।” 25मूसा उठकर दातन और अबीराम के
पास गया, और इसराईल के बुज़ुर्ग उसके पीछे
चले। 26उसने जमात को आगाह किया, “इन
शरीरों के ख़ैमों से दूर हो जाओ! जो कुछ भी
उनके पास है उसे न छुओ, वरना तुम भी उनके
साथ तबाह हो जाओगे जब वह अपने गुनाहों के
बाइस हलाक होंगे।” 27तब बाक़ी लोग क़ोरह,
दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो गए।

दातन और अबीराम अपने बाल-बच्चों समेत
अपने ख़ैमों से निकलकर बाहर खड़े थे। 28मूसा
ने कहा, “अब तुम्हें पता चलेगा कि रब ने मुझे यह
सब कुछ करने के लिए भेजा है। मैं अपनी नहीं
बल्कि उस की मरज़ी पूरी कर रहा हूँ। 29अगर यह
लोग दूसरों की तरह तबई मौत मरें तो फिर रब ने
मुझे नहीं भेजा। 30लेकिन अगर रब ऐसा काम
करे जो पहले कभी नहीं हुआ और ज़मीन अपना
मुँह खोलकर उन्हें और उनका पूरा माल हड़प कर
ले और उन्हें जीते-जी दफ़ना दे तो इसका मतलब
होगा कि इन आदमियों ने रब को हक़ीर जाना
है।”

31यह बात कहते ही उनके नीचे की ज़मीन
फट गई। 32उसने अपना मुँह खोलकर उन्हें,
उनके ख़ानदानों को, क़ोरह के तमाम लोगों को
और उनका सारा सामान हड़प कर लिया। 33वह
अपनी पूरी मिलकियत समेत जीते-जी दफ़न हो
गए। ज़मीन उनके ऊपर वापस आ गई। यों उन्हें
जमात से निकाला गया और वह हलाक हो गए।
34उनकी चीख़ें सुनकर उनके इर्दगिर्द खड़े तमाम
इसराईली भाग उठे, क्योंकि उन्होंने सोचा, “ऐसा
न हो कि ज़मीन हमें भी निगल ले।”

35उसी लमहे रब की तरफ़ से आग उतर आई
और उन 250 आदमियों को भस्म कर दिया जो
बख़ूर पेश कर रहे थे। 36रब ने मूसा से कहा,
37“हारून इमाम के बेटे इलियज़र को इत्तला दे
कि वह बख़ूरदानों को राख में से निकालकर रखे।
उनके अंगारे वह दूर फेंके। बख़ूरदानों को रखने
का सबब यह है कि अब वह मख़सूसो-मुक़द्दस हैं।
38लोग उन आदमियों के यह बख़ूरदान ले लें जो
अपने गुनाह के बाइस जान-बहक़ हो गए। वह उन्हें
कूटकर उनसे चादरें बनाएँ और उन्हें जलनेवाली
क़ुरबानियों की क़ुरबानगाह पर चढ़ाएँ। क्योंकि
वह रब को पेश किए गए हैं, इसलिए वह

मख़सूसो-मुक़द्दस हैं। यों वह इसराईलियों के लिए एक निशान रहेंगे।”

39चुनाँचे इलियज़र इमाम ने पीतल के यह बख़ूरदान जमा किए जो भस्म किए हुए आदमियों ने रब को पेश किए थे। फिर लोगों ने उन्हें कूटकर उनसे चादरें बनाईं और उन्हें क़ुरबानगाह पर चढ़ा
दिया। 40हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त बताया था। मक़सद यह था कि बख़ूरदान इसराईलियों को याद दिलाते रहें कि सिर्फ़ हारून की औलाद ही को रब के सामने आकर बख़ूर जलाने की इजाज़त है। अगर कोई और ऐसा करे तो उसका हाल क़ोरह और उसके साथियों का-सा होगा।

41अगले दिन इसराईल की पूरी जमात मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगी। उन्होंने कहा, “आपने रब की क़ौम को मार डाला है।”
42लेकिन जब वह मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा हुए और मुलाक़ात के ख़ैमे का रुख़ किया तो अचानक उस पर बादल छा गया और रब का जलाल ज़ाहिर हुआ। 43फिर मूसा और हारून
मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने आए, 44और रब ने
मूसा से कहा, 45“इस जमात से निकल जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।” यह सुनकर दोनों मुँह के बल गिरे। 46मूसा ने हारून से कहा, “अपना बख़ूरदान लेकर उसमें क़ुरबानगाह के अंगारे और बख़ूर डालें। फिर भागकर जमात के पास चले जाएँ ताकि उनका कफ़्फ़ारा दें। जल्दी करें, क्योंकि रब का ग़ज़ब उन पर टूट पड़ा है। वबा फैलने लगी है।”

47हारून ने ऐसा ही किया। वह दौड़कर जमात के बीच में गया। लोगों में वबा शुरू हो चुकी थी, लेकिन हारून ने रब को बख़ूर पेश करके उनका कफ़्फ़ारा दिया। 48वह ज़िंदों और मुरदों के बीच में
खड़ा हुआ तो वबा रुक गई। 49तो भी 14,700 अफ़राद वबा से मर गए। इसमें वह शामिल नहीं हैं जो क़ोरह के सबब से मर गए थे।

50जब वबा रुक गई तो हारून मूसा के पास वापस आया जो अब तक मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा था।

हारून की लाठी से कोंपलें निकलती हैं

17 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों से बात करके उनसे 12 लाठियाँ मँगवा ले, हर क़बीले के सरदार से एक लाठी। हर लाठी पर उसके मालिक का नाम
लिखना। 3लावी की लाठी पर हारून का नाम
लिखना, क्योंकि हर क़बीले के सरदार के लिए
एक लाठी होगी। 4फिर उनको मुलाक़ात के ख़ैमे में अहद के संदूक़ के सामने रख जहाँ मेरी तुमसे
मुलाक़ात होती है। 5जिस आदमी को मैंने चुन लिया है उस की लाठी से कोंपलें फूट निकलेंगी। इस तरह मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ इसराईलियों की बुड़बुड़ाहट ख़त्म कर दूँगा।”

6चुनाँचे मूसा ने इसराईलियों से बात की, और क़बीलों के हर सरदार ने उसे अपनी लाठी दी। इन 12 लाठियों में हारून की लाठी भी शामिल थी।
7मूसा ने उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे में अहद के संदूक़ के सामने रखा। 8अगले दिन जब वह मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो उसने देखा कि लावी के क़बीले के सरदार हारून की लाठी से न सिर्फ़ कोंपलें फूट निकली हैं बल्कि फूल और पके हुए बादाम भी लगे हैं।

9मूसा तमाम लाठियाँ रब के सामने से बाहर लाकर इसराईलियों के पास ले आया, और उन्होंने उनका मुआयना किया। फिर हर एक ने अपनी
अपनी लाठी वापस ले ली। 10रब ने मूसा से कहा, “हारून की लाठी अहद के संदूक़ के सामने रख दे। यह बाग़ी इसराईलियों को याद दिलाएगी कि वह अपना बुड़बुड़ाना बंद करें, वरना हलाक हो जाएंगे।”

11मूसा ने ऐसा ही किया। 12लेकिन
इसराईलियों ने मूसा से कहा, “हाय, हम मर जाएंगे। हाय, हम हलाक हो जाएंगे, हम सब
हलाक हो जाएंगे। 13जो भी रब के मक़दिस के

क़रीब आए वह मर जाएगा। क्या हम सब ही हलाक हो जाएंगे?"

इमामों और लावियों की ज़िम्मेदारियाँ

18 रब ने हारून से कहा, "मक़दिस तेरी, तेरे बेटों और लावी के क़बीले की ज़िम्मेदारी है। अगर इसमें कोई ग़लती हो जाए तो तुम क़ुसूरवार ठहरोगे। इसी तरह इमामों की ख़िदमत सिर्फ़ तेरी और तेरे बेटों की ज़िम्मेदारी है। अगर इसमें कोई ग़लती हो जाए तो तू और
तेरे बेटे क़ुसूरवार ठहरेंगे। 2अपने क़बीले लावी
के बाक़ी आदमियों को भी मेरे क़रीब आने दे। वह तेरे साथ मिलकर यों हिस्सा लें कि वह तेरी और तेरे बेटों की ख़िदमत करें जब तुम ख़ैमे
के सामने अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाओगे। 3तेरी
ख़िदमत और ख़ैमे में ख़िदमत उनकी ज़िम्मेदारी है। लेकिन वह ख़ैमे के मख़सूसो-मुक़द्दस सामान और क़ुरबानगाह के क़रीब न जाएँ, वरना न सिर्फ़
वह बल्कि तू भी हलाक हो जाएगा। 4यों वह तेरे
साथ मिलकर मुलाक़ात के ख़ैमे के पूरे काम में हिस्सा लें। लेकिन किसी और को ऐसा करने की
इजाज़त नहीं है। 5सिर्फ़ तू और तेरे बेटे मक़दिस
और क़ुरबानगाह की देख-भाल करें ताकि मेरा
ग़ज़ब दुबारा इसराईलियों पर न भड़के। 6मैं ही
ने इसराईलियों में से तेरे भाइयों यानी लावियों को चुनकर तुझे तोह्फ़े के तौर पर दिया है। वह रब के लिए मख़सूस हैं ताकि ख़ैमे में ख़िदमत
करें। 7लेकिन सिर्फ़ तू और तेरे बेटे इमाम की
ख़िदमत सरंजाम दें। मैं तुम्हें इमाम का ओहदा तोह्फ़े के तौर पर देता हूँ। कोई और क़ुरबानगाह और मुक़द्दस चीज़ों के नज़दीक न आए, वरना उसे सज़ाए-मौत दी जाए।"

इमामों का हिस्सा

8रब ने हारून से कहा, "मैंने ख़ुद मुक़र्रर किया
है कि तमाम उठानेवाली क़ुरबानियाँ तेरा हिस्सा हों। यह हमेशा तक क़ुरबानियों में से तेरा और
तेरी औलाद का हिस्सा हैं। 9तुम्हें मुक़द्दसतरीन
क़ुरबानियों का वह हिस्सा मिलना है जो जलाया नहीं जाता। हाँ, तुझे और तेरे बेटों को वही हिस्सा मिलना है, ख़्वाह वह मुझे ग़ल्ला की नज़रें, गुनाह की क़ुरबानियाँ या क़ुसूर की क़ुरबानियाँ पेश करें।
10उसे मुक़द्दस जगह पर खाना। हर मर्द उसे खा सकता है। ख़याल रख कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस है।

11मैंने मुक़र्रर किया है कि तमाम हिलाने-
वाली क़ुरबानियों का उठाया हुआ हिस्सा तेरा है। यह हमेशा के लिए तेरे और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा है। तेरे घराने का हर फ़रद उसे खा सकता
है। शर्त यह है कि वह पाक हो। 12जब लोग रब
को अपनी फ़सलों का पहला फल पेश करेंगे तो वह तेरा ही हिस्सा होगा। मैं तुझे ज़ैतून के तेल, नई मै और अनाज का बेहतरीन हिस्सा देता हूँ।
13फ़सलों का जो भी पहला फल वह रब को पेश
करेंगे वह तेरा ही होगा। तेरे घराने का हर पाक
फ़रद उसे खा सकता है। 14इसराईल में जो भी
चीज़ रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस की गई है वह
तेरी होगी। 15हर इनसान और हर हैवान का जो
पहलौठा रब को पेश किया जाता है वह तेरा ही है। लेकिन लाज़िम है कि तू हर इनसान और हर नापाक जानवर के पहलौठे का फ़िद्या देकर उसे छुड़ाए।

16जब वह एक माह के हैं तो उनके एवज़
चाँदी के पाँच सिक्के देना। (हर सिक्के का वज़न मक़दिस के बाटों के मुताबिक़ 11 ग्राम हो)।
17लेकिन गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले
बच्चों का फ़िद्या यानी मुआवज़ा न देना। वह मख़सूसो-मुक़द्दस हैं। उनका ख़ून क़ुरबानगाह पर छिड़क देना और उनकी चरबी जला देना। ऐसी
क़ुरबानी रब को पसंद होगी। 18उनका गोश्त वैसे
ही तुम्हारे लिए हो, जैसे हिलानेवाली क़ुरबानी का सीना और दहनी रान भी तुम्हारे लिए हैं।

19मुक़द्दस क़ुरबानियों में से तमाम उठाने-
वाली क़ुरबानियाँ तेरा और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा हैं। मैंने उसे हमेशा के लिए तुझे दिया है।

यह नमक का दायमी अहद है जो मैंने तेरे और तेरी औलाद के साथ क़ायम किया है।”

लावियों का हिस्सा

20रब ने हारून से कहा, “तू मीरास में ज़मीन नहीं पाएगा। इसराईल में तुझे कोई हिस्सा नहीं दिया जाएगा, क्योंकि इसराईलियों के दरमियान मैं ही तेरा हिस्सा और तेरी मीरास हूँ। 21अपनी पैदावार का जो दसवाँ हिस्सा इसराईली मुझे देते हैं वह मैं लावियों को देता हूँ। यह उनकी विरासत है, जो उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने के बदले में मिलती है। 22अब से इसराईली मुलाक़ात के ख़ैमे के क़रीब न आएँ, वरना उन्हें अपनी ख़ता का नतीजा बरदाश्त करना पड़ेगा और वह हलाक हो जाएंगे। 23सिर्फ़ लावी मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करें। अगर इसमें कोई ग़लती हो जाए तो वही क़ुसूरवार ठहरेंगे। यह एक दायमी उसूल है। उन्हें इसराईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी। 24क्योंकि मैंने उन्हें वही दसवाँ हिस्सा मीरास के तौर पर दिया है जो इसराईली मुझे उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करते हैं। इस वजह से मैंने उनके बारे में कहा कि उन्हें बाक़ी इसराईलियों के साथ मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।”

लावियों का दसवाँ हिस्सा

25रब ने मूसा से कहा, 26“लावियों को बताना कि तुम्हें इसराईलियों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा मिलेगा। यह रब की तरफ़ से तुम्हारी विरासत होगी। लाज़िम है कि तुम इसका दसवाँ हिस्सा रब को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करो। 27तुम्हारी यह क़ुरबानी नए अनाज या नए अंगूर के रस की क़ुरबानी के बराबर क़रार दी जाएगी। 28इस तरह तुम भी रब को इसराईलियों की पैदावार के दसवें हिस्से में से उठानेवाली क़ुरबानी पेश करोगे। रब के लिए यह क़ुरबानी हारून इमाम को देना। 29जो भी तुम्हें मिला है उसमें से सबसे अच्छा और मुक़द्दस हिस्सा रब को देना। 30जब तुम इसका सबसे अच्छा हिस्सा पेश करोगे तो उसे नए अनाज या नए अंगूर के रस की क़ुरबानी के बराबर क़रार दिया जाएगा। 31तुम अपने घरानों समेत इसका बाक़ी हिस्सा कहीं भी खा सकते हो, क्योंकि यह मुलाक़ात के ख़ैमे में तुम्हारी ख़िदमत का अज्र है। 32अगर तुमने पहले इसका बेहतरीन हिस्सा पेश किया हो तो फिर इसे खाने में तुम्हारा कोई क़ुसूर नहीं होगा। फिर इसराईलियों की मख़सूसो-मुक़द्दस क़ुरबानियाँ तुमसे नापाक नहीं हो जाएँगी और तुम नहीं मरोगे।”

सुर्ख़ गाय की राख

19 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2“इसराईलियों को बताना कि वह तुम्हारे पास सुर्ख़ रंग की जवान गाय लेकर आएँ। उसमें नुक़्स न हो और उस पर कभी जुआ न रखा गया हो। 3तुम उसे इलियज़र इमाम को देना जो उसे ख़ैमे के बाहर ले जाए। वहाँ उसे उस की मौजूदगी में ज़बह किया जाए। 4फिर इलियज़र इमाम अपनी उँगली से उसके ख़ून से कुछ लेकर मुलाक़ात के ख़ैमे के सामनेवाले हिस्से की तरफ़ छिड़के। 5उस की मौजूदगी में पूरी की पूरी गाय को जलाया जाए। उस की खाल, गोश्त, ख़ून और अंतड़ियों का गोबर भी जलाया जाए। 6फिर वह देवदार की लकड़ी, ज़ूफ़ा और क़िरमिज़ी रंग का धागा लेकर उसे जलती हुई गाय पर फेंके। 7इसके बाद वह अपने कपड़ों को धोकर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है लेकिन शाम तक नापाक रहेगा।

8जिस आदमी ने गाय को जलाया वह भी अपने कपड़ों को धोकर नहा ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

9एक दूसरा आदमी जो पाक है गाय की राख इकट्ठी करके ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर डाल दे। वहाँ इसराईल की जमात उसे नापाकी दूर करने का पानी तैयार करने के लिए महफ़ूज़ रखे। यह गुनाह से पाक करने के लिए इस्तेमाल

होगा। 10जिस आदमी ने राख इकट्ठी की है वह भी अपने कपड़ों को धो ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। यह इसराईलियों और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसियों के लिए दायमी उसूल हो।

लाश छूने से पाक हो जाने का तरीक़ा

11जो भी लाश छुए वह सात दिन तक नापाक
रहेगा। 12तीसरे और सातवें दिन वह अपने आप
पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़ककर पाक-साफ़ हो जाए। इसके बाद ही वह पाक होगा। लेकिन अगर वह इन दोनों दिनों में अपने आपको
यों पाक न करे तो नापाक रहेगा। 13जो भी लाश
छूकर अपने आपको यों पाक नहीं करता वह रब के मक़दिस को नापाक करता है। लाज़िम है कि उसे इसराईल में से मिटाया जाए। चूँकि नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक रहेगा।

14अगर कोई डेरे में मर जाए तो जो भी उस
वक़्त उसमें मौजूद हो या दाख़िल हो जाए वह
सात दिन तक नापाक रहेगा। 15हर खुला बरतन
जो ढकने से बंद न किया गया हो वह भी नापाक
होगा। 16इसी तरह जो खुले मैदान में लाश छुए
वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा, ख़ाह वह तलवार से या तबई मौत मरा हो। जो इनसान की कोई हड्डी या क़ब्र छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा।

17नापाकी दूर करने के लिए उस सुर्ख़ रंग की
गाय की राख में से कुछ लेना जो गुनाह दूर करने के लिए जलाई गई थी। उसे बरतन में डालकर
ताज़ा पानी में मिलाना। 18फिर कोई पाक आदमी
कुछ ज़ूफ़ा ले और उसे उस पानी में डुबोकर मरे हुए शख़्स के ख़ैमे, उसके सामान और उन लोगों पर छिड़के जो उसके मरते वक़्त वहाँ थे। इसी तरह वह पानी उस शख़्स पर भी छिड़के जिसने तबई या ग़ैरतबई मौत मरे हुए शख़्स को, किसी
इनसान की हड्डी को या कोई क़ब्र छूई हो। 19पाक
आदमी यह पानी तीसरे और सातवें दिन नापाक शख़्स पर छिड़के। सातवें दिन वह उसे पाक करे। जिसे पाक किया जा रहा है वह अपने कपड़े धोकर नहा ले तो वह उसी शाम पाक होगा।

20लेकिन जो नापाक शख़्स अपने आपको
पाक नहीं करता उसे जमात में से मिटाना है, क्योंकि उसने रब का मक़दिस नापाक कर दिया है। नापाकी दूर करने का पानी उस पर नहीं
छिड़का गया, इसलिए वह नापाक रहा है। 21यह
उनके लिए दायमी उसूल है। जिस आदमी ने नापाकी दूर करने का पानी छिड़का है वह भी अपने कपड़े धोए। बल्कि जिसने भी यह पानी
छुआ है शाम तक नापाक रहेगा। 22और नापाक
शख़्स जो भी चीज़ छुए वह नापाक हो जाती है। न सिर्फ़ यह बल्कि जो बाद में यह नापाक चीज़ छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा।”

चट्टान से पानी

20 पहले महीने में इसराईल की पूरी जमात दश्ते-सीन में पहुँचकर क़ादिस में रहने लगी। वहाँ मरियम ने वफ़ात पाई और वहीं उसे दफ़नाया गया।

2क़ादिस में पानी दस्तयाब नहीं था, इसलिए
लोग मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा हुए।
3वह मूसा से यह कहकर झगड़ने लगे, “काश हम
अपने भाइयों के साथ रब के सामने मर गए होते!
4आप रब की जमात को क्यों इस रेगिस्तान में ले
आए? क्या इसलिए कि हम यहाँ अपने मवेशियों
समेत मर जाएँ? 5आप हमें मिसर से निकालकर
उस नाख़ुशगवार जगह पर क्यों ले आए हैं? यहाँ न तो अनाज, न अंजीर, अंगूर या अनार दस्तयाब हैं। पानी भी नहीं है!”

6मूसा और हारून लोगों को छोड़कर मुलाक़ात
के ख़ैमे के दरवाज़े पर गए और मुँह के बल गिरे।
तब रब का जलाल उन पर ज़ाहिर हुआ। 7रब
ने मूसा से कहा, 8“अहद के संदूक़ के सामने
पड़ी लाठी पकड़कर हारून के साथ जमात को इकट्ठा कर। उनके सामने चट्टान से बात करो तो वह अपना पानी देगी। यों तू चट्टान में से जमात के

लिए पानी निकालकर उन्हें उनके मवेशियों समेत पानी पिलाएगा।”

9मूसा ने ऐसा ही किया। उसने अहद के संदूक़ के सामने पड़ी लाठी उठाई 10और हारून के साथ जमात को चट्टान के सामने इकट्ठा किया। मूसा ने उनसे कहा, “ऐ बग़ावत करनेवालो, सुनो! क्या हम इस चट्टान में से तुम्हारे लिए पानी निकालें?” 11उसने लाठी को उठाकर चट्टान को दो मरतबा मारा तो बहुत-सा पानी फूट निकला। जमात और उनके मवेशियों ने ख़ूब पानी पिया।

12लेकिन रब ने मूसा और हारून से कहा, “तुम्हारा मुझ पर इतना ईमान नहीं था कि मेरी क़ुद्दूसियत को इसराईलियों के सामने क़ायम रखते। इसलिए तुम उस जमात को उस मुल्क में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें दूँगा।”

13यह वाक़िया मरीबा यानी ‘झगड़ना’ के पानी पर हुआ। वहाँ इसराईलियों ने रब से झगड़ा किया, और वहाँ उसने उन पर ज़ाहिर किया कि वह क़ुद्दूस है।

अदोम इसराईल को गुज़रने नहीं देता

14क़ादिस से मूसा ने अदोम के बादशाह को इत्तला भेजी, “आपके भाई इसराईल की तरफ़ से एक गुज़ारिश है। आपको उन तमाम मुसीबतों के बारे में इल्म है जो हम पर आन पड़ी हैं। 15हमारे बापदादा मिसर गए थे और वहाँ हम बहुत अरसे तक रहे। मिसरियों ने हमारे बापदादा और हमसे बुरा सुलूक किया। 16लेकिन जब हमने चिल्लाकर रब से मिन्नत की तो उसने हमारी सुनी और फ़रिश्ता भेजकर हमें मिसर से निकाल लाया। अब हम यहाँ क़ादिस शहर में हैं जो आपकी सरहद पर है। 17मेहरबानी करके हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम किसी खेत या अंगूर के बाग़ में नहीं जाएंगे, न किसी कुएँ का पानी पिएँगे। हम शाहराह पर ही रहेंगे। आपके मुल्क में से गुज़रते हुए हम उससे न दाईं और न बाईं तरफ़ हटेंगे।”

18लेकिन अदोमियों ने जवाब दिया, “यहाँ से न गुज़रना, वरना हम निकलकर आपसे लड़ेंगे।” 19इसराईल ने दुबारा ख़बर भेजी, “हम शाहराह पर रहते हुए गुज़रेंगे। अगर हमें या हमारे जानवरों को पानी की ज़रूरत हुई तो पैसे देकर ख़रीद लेंगे। हम पैदल ही गुज़रना चाहते हैं, और कुछ नहीं चाहते।”

20लेकिन अदोमियों ने दुबारा इनकार किया। साथ ही उन्होंने उनके साथ लड़ने के लिए एक बड़ी और ताक़तवर फ़ौज भेजी।

21चूँकि अदोम ने उन्हें गुज़रने की इजाज़त न दी इसलिए इसराईली मुड़कर दूसरे रास्ते से चले गए।

हारून की वफ़ात

22इसराईल की पूरी जमात क़ादिस से रवाना होकर होर पहाड़ के पास पहुँची। 23यह पहाड़ अदोम की सरहद पर वाक़े था। वहाँ रब ने मूसा और हारून से कहा, 24“हारून अब कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा। वह उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा जो मैं इसराईलियों को दूँगा, क्योंकि तुम दोनों ने मरीबा के पानी पर मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की। 25हारून और उसके बेटे इलियज़र को लेकर होर पहाड़ पर चढ़ जा। 26हारून के कपड़े उतारकर उसके बेटे इलियज़र को पहना देना। फिर हारून कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”

27मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने कहा। तीनों पूरी जमात के देखते देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए। 28मूसा ने हारून के कपड़े उतरवाकर उसके बेटे इलियज़र को पहना दिए। फिर हारून वहाँ पहाड़ की चोटी पर फ़ौत हुआ, और मूसा और इलियज़र नीचे उतर गए। 29जब पूरी जमात को मालूम हुआ कि हारून इंतक़ाल कर गया है तो सबने 30 दिन तक उसके लिए मातम किया।

कनानी मुल्के-अराद पर फ़तह

21 दश्ते-नजब के कनानी मुल्क अराद
के बादशाह को ख़बर मिली कि
इसराईली अथारिम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। उसने
उन पर हमला किया और कई एक को पकड़कर
क़ैद कर लिया। 2तब इसराईलियों ने रब के सामने
मन्नत मानकर कहा, “अगर तू हमें उन पर फ़तह
देगा तो हम उन्हें उनके शहरों समेत तबाह कर
देंगे।” 3रब ने उनकी सुनी और कनानियों पर
फ़तह बख़्शी। इसराईलियों ने उन्हें उनके शहरों
समेत पूरी तरह तबाह कर दिया। इसलिए उस
जगह का नाम हुरमा यानी तबाही पड़ गया।

पीतल का साँप

4होर पहाड़ से रवाना होकर वह बहरे-क़ुलज़ुम
की तरफ़ चल दिए ताकि अदोम के मुल्क में से
गुज़रना न पड़े। लेकिन चलते चलते लोग बेसबर
हो गए। 5वह रब और मूसा के ख़िलाफ़ बातें करने
लगे, “आप हमें मिसर से निकालकर रेगिस्तान
में मरने के लिए क्यों ले आए हैं? यहाँ न रोटी
दस्तयाब है न पानी। हमें इस घटिया क़िस्म की
ख़ुराक से घिन आती है।”
6तब रब ने उनके दरमियान ज़हरीले साँप भेज
दिए जिनके काटने से बहुत-से लोग मर गए।
7फिर लोग मूसा के पास आए। उन्होंने कहा,
“हमने रब और आपके ख़िलाफ़ बातें करते हुए
गुनाह किया। हमारी सिफ़ारिश करें कि रब हमसे
साँप दूर कर दे।”
मूसा ने उनके लिए दुआ की 8तो रब ने मूसा
से कहा, “एक साँप बनाकर उसे खंबे से लटका
दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देखकर बच
जाएगा।” 9चुनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप
बनाया और खंबा खड़ा करके साँप को उससे
लटका दिया। और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा
गया था वह पीतल के साँप पर नज़र करके बच
गया।

मोआब की तरफ़ सफ़र

10इसराईली रवाना हुए और ओबोत में अपने
ख़ैमे लगाए। 11फिर वहाँ से कूच करके ऐये-
अबारीम में डेरे डाले, उस रेगिस्तान में जो मशरिक़
की तरफ़ मोआब के सामने है। 12वहाँ से रवाना
होकर वह वादीए-ज़िरद में ख़ैमाज़न हुए। 13जब
वादीए-ज़िरद से रवाना हुए तो दरियाए-अरनोन के
परले यानी जुनूबी किनारे पर ख़ैमाज़न हुए। यह
दरिया रेगिस्तान में है और अमोरियों के इलाक़े
से निकलता है। यह अमोरियों और मोआबियों के
दरमियान की सरहद है। 14इसका ज़िक्र किताब
‘रब की जंगें’ में भी है,
“वाहेब जो सूफ़ा में है, दरियाए-अरनोन की
वादियाँ 15और वादियों का वह ढलान जो आर
शहर तक जाता है और मोआब की सरहद पर
वाक़े है।”
16वहाँ से वह बैर यानी ‘कुआँ’ पहुँचे। यह
वही बैर है जहाँ रब ने मूसा से कहा, “लोगों को
इकट्ठा कर तो मैं उन्हें पानी दूँगा।” 17उस वक़्त
इसराईलियों ने यह गीत गाया,
“ऐ कुएँ, फूट निकल! उसके बारे में गीत
गाओ,
18उस कुएँ के बारे में जिसे सरदारों ने खोदा,
जिसे क़ौम के राहनुमाओं ने असाए-शाही और
अपनी लाठियों से खोदा।”
फिर वह रेगिस्तान से मत्तना को गए, 19मत्तना
से नहलियेल को और नहलियेल से बामात को।
20बामात से वह मोआबियों के इलाक़े की उस
वादी में पहुँचे जो पिसगा पहाड़ के दामन में है।
इस पहाड़ की चोटी से वादीए-यरदन का जुनूबी
हिस्सा यशीमोन ख़ूब नज़र आता है।

सीहोन और ओज की शिकस्त

21इसराईल ने अमोरियों के बादशाह सीहोन
को इत्तला भेजी, 22“हमें अपने मुल्क में से
गुज़रने दें। हम सीधे सीधे गुज़र जाएंगे। न हम
कोई खेत या अंगूर का बाग़ छेड़ेंगे, न किसी
कुएँ का पानी पिएँगे। हम आपके मुल्क में से

सीधे गुज़रते हुए शाहराह पर ही रहेंगे।” 23लेकिन सीहोन ने उन्हें गुज़रने न दिया बल्कि अपनी फ़ौज जमा करके इसराईल से लड़ने के लिए रेगिस्तान में चल पड़ा। यहज़ पहुँचकर उसने इसराईलियों से जंग की। 24लेकिन इसराईलियों ने उसे क़त्ल किया और दरियाए-अरनोन से लेकर दरियाए-यब्बोक़ तक यानी अम्मोनियों की सरहद तक उसके मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया। वह इससे आगे न जा सके क्योंकि अम्मोनियों ने अपनी सरहद की हिसारबंदी कर रखी थी। 25इसराईली तमाम अमोरी शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें रहने लगे। उनमें हसबोन और उसके इर्दगिर्द की आबादियाँ शामिल थीं।

26हसबोन अमोरी बादशाह सीहोन का दारुल-हुकूमत था। उसने मोआब के पिछले बादशाह से लड़कर उससे यह इलाक़ा दरियाए-अरनोन तक छीन लिया था। 27उस वाक़िये का ज़िक्र शायरी में यों किया गया है,

“हसबोन के पास आकर उसे अज़ सरे-नौ तामीर करो, सीहोन के शहर को अज़ सरे-नौ क़ायम करो।

28हसबोन से आग निकली, सीहोन के शहर से शोला भड़का। उसने मोआब के शहर आर को जला दिया, अरनोन की बुलंदियों के मालिकों को भस्म किया।

29ऐ मोआब, तुझ पर अफ़सोस! ऐ कमोस देवता की क़ौम, तू हलाक हुई है। कमोस ने अपने बेटों को मफ़रूर और अपनी बेटियों को अमोरी बादशाह सीहोन की क़ैदी बना दिया है।

30लेकिन जब हमने अमोरियों पर तीर चलाए तो हसबोन का इलाक़ा दीबोन तक बरबाद हुआ। हमने नुफ़ह तक सब कुछ तबाह किया, वह नुफ़ह जिसका इलाक़ा मीदबा तक है।”

31यों इसराईल अमोरियों के मुल्क में आबाद हुआ। 32वहाँ से मूसा ने अपने जासूस याज़ेर शहर भेजे। वहाँ भी अमोरी रहते थे। इसराईलियों ने याज़ेर और उसके इर्दगिर्द के शहरों पर भी क़ब्ज़ा किया और वहाँ के अमोरियों को निकाल दिया।

33इसके बाद वह मुड़कर बसन की तरफ़ बढ़े। तब बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज लेकर उनसे लड़ने के लिए शहर इदरई आया। 34उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “ओज से न डरना। मैं उसे, उस की तमाम फ़ौज और उसका मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उसके साथ वही सुलूक कर जो तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन के साथ किया, जिसका दारुल-हुकूमत हसबोन था।” 35इसराईलियों ने ओज, उसके बेटों और तमाम फ़ौज को हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। फिर उन्होंने बसन के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया।

बलक़ बिलाम को इसराईल पर लानत भेजने के लिए बुलाता है

22 इसके बाद इसराईली मोआब के मैदानों में पहुँचकर दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के आमने-सामने ख़ैमाज़न हुए।

2मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर को मालूम हुआ कि इसराईलियों ने अमोरियों के साथ क्या कुछ किया है। 3मोआबियों ने यह भी देखा कि इसराईली बहुत ज़्यादा हैं, इसलिए उन पर दहशत छा गई। 4उन्होंने मिदियानियों के बुज़ुर्गों से बात की, “अब यह हुजूम उस तरह हमारे इर्दगिर्द का इलाक़ा चट कर जाएगा जिस तरह बैल मैदान की घास चट कर जाता है।”

5तब बलक़ ने अपने क़ासिद फ़तोर शहर को भेजे जो दरियाए-फ़ुरात पर वाक़े था और जहाँ बिलाम बिन बओर अपने वतन में रहता था। क़ासिद उसे बुलाने के लिए उसके पास पहुँचे और उसे बलक़ का पैग़ाम सुनाया, “एक क़ौम मिसर से निकल आई है जो रूए-ज़मीन पर छाकर मेरे क़रीब ही आबाद हुई है। 6इसलिए आएँ और इन लोगों पर लानत भेजें, क्योंकि वह मुझसे ज़्यादा ताक़तवर हैं। फिर शायद मैं उन्हें शिकस्त देकर मुल्क से भगा सकूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि जिन्हें आप बरकत देते हैं उन्हें बरकत मिलती है

और जिन पर आप लानत भेजते हैं उन पर लानत आती है।"

7यह पैग़ाम लेकर मोआब और मिदियान के बुज़ुर्ग रवाना हुए। उनके पास इनाम के पैसे थे। बिलाम के पास पहुँचकर उन्होंने उसे बलक़ का पैग़ाम सुनाया।
8बिलाम ने कहा, "रात यहाँ गुज़ारें। कल मैं आपको बता दूँगा कि रब इसके बारे में क्या फ़रमाता है।" चुनाँचे मोआबी सरदार उसके पास ठहर गए।

9रात के वक़्त अल्लाह बिलाम पर ज़ाहिर हुआ। उसने पूछा, "यह आदमी कौन हैं जो तेरे पास आए हैं?"
10बिलाम ने जवाब दिया, "मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर ने मुझे पैग़ाम भेजा है,
11'जो क़ौम मिसर से निकल आई है वह रूए-ज़मीन पर छा गई है। इसलिए आएँ और मेरे लिए उन पर लानत भेजें। फिर शायद मैं उनसे लड़कर उन्हें भगा देने में कामयाब हो जाऊँ'।"
12रब ने बिलाम से कहा, "उनके साथ न जाना। तुझे उन पर लानत भेजने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि उन पर मेरी बरकत है।"

13अगली सुबह बिलाम जाग उठा तो उसने बलक़ के सरदारों से कहा, "अपने वतन वापस चले जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे आपके साथ जाने की इजाज़त नहीं दी।"
14चुनाँचे मोआबी सरदार ख़ाली हाथ बलक़ के पास वापस आए। उन्होंने कहा, "बिलाम हमारे साथ आने से इनकार करता है।"
15तब बलक़ ने और सरदार भेजे जो पहलेवालों की निसबत तादाद और ओहदे के लिहाज़ से ज़्यादा थे।
16वह बिलाम के पास जाकर कहने लगे, "बलक़ बिन सफ़ोर कहते हैं कि कोई भी बात आपको मेरे पास आने से न रोके,
17क्योंकि मैं आपको बड़ा इनाम दूँगा। आप जो भी कहेंगे मैं करने के लिए तैयार हूँ। आएँ तो सही और मेरे लिए उन लोगों पर लानत भेजें।"

18लेकिन बिलाम ने जवाब दिया, "अगर बलक़ अपने महल को चाँदी और सोने से भरकर भी मुझे दे तो भी मैं रब अपने ख़ुदा के फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता, ख़ाह बात छोटी हो या बड़ी।
19आप दूसरे सरदारों की तरह रात यहाँ गुज़ारें। इतने में मैं मालूम करूँगा कि रब मुझे मज़ीद क्या कुछ बताता है।"

20उस रात अल्लाह बिलाम पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "चूँकि यह आदमी तुझे बुलाने आए हैं इसलिए उनके साथ चला जा। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ करना जो मैं तुझे बताऊँगा।"

बिलाम की गधी

21सुबह को बिलाम ने उठकर अपनी गधी पर ज़ीन कसा और मोआबी सरदारों के साथ चल पड़ा।
22लेकिन अल्लाह निहायत ग़ुस्से हुआ कि वह जा रहा है, इसलिए उसका फ़रिश्ता उसका मुक़ाबला करने के लिए रास्ते में खड़ा हो गया। बिलाम अपनी गधी पर सवार था और उसके दो नौकर उसके साथ चल रहे थे।
23जब गधी ने देखा कि रब का फ़रिश्ता अपने हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा है तो वह रास्ते से हटकर खेत में चलने लगी। बिलाम उसे मारते मारते रास्ते पर वापस ले आया।

24फिर वह अंगूर के दो बाग़ों के दरमियान से गुज़रने लगे। रास्ता तंग था, क्योंकि वह दोनों तरफ़ बाग़ों की चारदीवारी से बंद था। अब रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा हुआ।
25गधी यह देखकर चारदीवारी के साथ साथ चलने लगी, और बिलाम का पाँव कुचला गया। उसने उसे दुबारा मारा।

26रब का फ़रिश्ता आगे निकला और तीसरी मरतबा रास्ते में खड़ा हो गया। अब रास्ते से हट जाने की कोई गुंजाइश नहीं थी, न दाईं तरफ़ और न बाईं तरफ़।
27जब गधी ने रब का फ़रिश्ता देखा तो वह लेट गई। बिलाम को ग़ुस्सा आ गया, और उसने उसे अपनी लाठी से ख़ूब मारा।

28तब रब ने गधी को बोलने दिया, और उसने बिलाम से कहा, "मैंने आपसे क्या ग़लत सुलूक किया है कि आप मुझे अब तीसरी दफ़ा पीट रहे हैं?"
29बिलाम ने जवाब दिया, "तूने मुझे बेवुक़ूफ़ बनाया है! काश मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं अभी तुझे ज़बह कर देता!"
30गधी

ने बिलाम से कहा, “क्या मैं आपकी गधी नहीं हूँ जिस पर आप आज तक सवार होते रहे हैं? क्या मुझे कभी ऐसा करने की आदत थी?” उसने कहा, “नहीं।”

31फिर रब ने बिलाम की आँखें खोलीं और उसने रब के फ़रिश्ते को देखा जो अब तक हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा था। बिलाम ने मुँह के बल गिरकर सिजदा किया। 32रब के फ़रिश्ते ने पूछा, “तूने तीन बार अपनी गधी को क्यों पीटा? मैं तेरे मुक़ाबले में आया हूँ, क्योंकि जिस तरफ़ तू बढ़ रहा है उसका अंजाम बुरा है। 33गधी तीन मरतबा मुझे देखकर मेरी तरफ़ से हट गई। अगर वह न हटती तो तू उस वक़्त हलाक हो गया होता अगरचे मैं गधी को छोड़ देता।”

34बिलाम ने रब के फ़रिश्ते से कहा, “मैंने गुनाह किया है। मुझे मालूम नहीं था कि तू मेरे मुक़ाबले में रास्ते में खड़ा है। लेकिन अगर मेरा सफ़र तुझे बुरा लगे तो मैं अब वापस चला जाऊँगा।” 35रब के फ़रिश्ते ने कहा, “इन आदमियों के साथ अपना सफ़र जारी रख। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ कहना जो मैं तुझे बताऊँगा।” चुनाँचे बिलाम ने बलक़ के सरदारों के साथ अपना सफ़र जारी रखा।

36जब बलक़ को ख़बर मिली कि बिलाम आ रहा है तो वह उससे मिलने के लिए मोआब के उस शहर तक गया जो मोआब की सरहद दरियाए-अरनोन पर वाक़े है। 37उसने बिलाम से कहा, “क्या मैंने आपको इत्तला नहीं भेजी थी कि आप ज़रूर आएँ? आप क्यों नहीं आए? क्या आपने सोचा कि मैं आपको मुनासिब इनाम नहीं दे पाऊँगा?” 38बिलाम ने जवाब दिया, “बहरहाल अब मैं पहुँच गया हूँ। लेकिन मैं सिर्फ़ वही कुछ कह सकता हूँ जो अल्लाह ने पहले ही मेरे मुँह में डाल दिया है।”

39फिर बिलाम बलक़ के साथ क़िरियत-हुसात गया। 40वहाँ बलक़ ने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ क़ुरबान करके उनके गोश्त में से बिलाम और उसके साथवाले सरदारों को दे दिया। 41अगली सुबह बलक़ बिलाम को साथ लेकर एक ऊँची जगह पर चढ़ गया जिसका नाम बामोत-बाल था। वहाँ से इसराईली ख़ैमागाह का किनारा नज़र आता था।

बिलाम की पहली बरकत

23 बिलाम ने कहा, “यहाँ मेरे लिए सात क़ुरबानगाहें बनाएँ। साथ साथ मेरे लिए सात बैल और सात मेंढे तैयार कर रखें।” 2बलक़ ने ऐसा ही किया, और दोनों ने मिलकर हर क़ुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया। 3फिर बिलाम ने बलक़ से कहा, “यहाँ अपनी क़ुरबानी के पास खड़े रहें। मैं कुछ फ़ासले पर जाता हूँ, शायद रब मुझसे मिलने आए। जो कुछ वह मुझ पर ज़ाहिर करे मैं आपको बता दूँगा।”

यह कहकर वह एक ऊँचे मक़ाम पर चला गया जो हरियाली से बिलकुल महरूम था। 4वहाँ अल्लाह बिलाम से मिला। बिलाम ने कहा, “मैंने सात क़ुरबानगाहें तैयार करके हर क़ुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा क़ुरबान किया है।” 5तब रब ने उसे बलक़ के लिए पैग़ाम दिया और कहा, “बलक़ के पास वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना।” 6बिलाम बलक़ के पास वापस आया जो अब तक मोआबी सरदारों के साथ अपनी क़ुरबानी के पास खड़ा था। 7बिलाम बोल उठा,

“बलक़ मुझे अराम से यहाँ लाया है, मोआबी बादशाह ने मुझे मशरिक़ी पहाड़ों से बुलाकर कहा, ‘आओ, याक़ूब पर मेरे लिए लानत भेजो। आओ, इसराईल को बद्दुआ दो।’

8मैं किस तरह उन पर लानत भेजूँ जिन पर अल्लाह ने लानत नहीं भेजी? मैं किस तरह उन्हें बद्दुआ दूँ जिन्हें रब ने बद्दुआ नहीं दी?

9मैं उन्हें चट्टानों की चोटी से देखता हूँ, पहाड़ियों से उनका मुशाहदा करता हूँ। वाक़ई यह एक ऐसी क़ौम है जो दूसरों से अलग रहती है। यह अपने आपको दूसरी क़ौमों से मुमताज़ समझती है।

10कौन याक़ूब की औलाद को गिन सकता है
जो गर्द की मानिंद बेशुमार है। कौन इसराईलियों
का चौथा हिस्सा भी गिन सकता है? रब करे कि
मैं रास्तबाज़ों की मौत मरूँ, कि मेरा अंजाम उनके
अंजाम जैसा अच्छा हो।”
11बलक़ ने बिलाम से कहा, “आपने मेरे साथ
क्या किया है? मैं आपको अपने दुश्मनों पर
लानत भेजने के लिए लाया और आपने उन्हें
अच्छी-ख़ासी बरकत दी है।” 12बिलाम ने जवाब
दिया, “क्या लाज़िम नहीं कि मैं वही कुछ बोलूँ
जो रब ने बताने को कहा है?”

बिलाम की दूसरी बरकत

13फिर बलक़ ने उससे कहा, “आएँ, हम एक
और जगह जाएँ जहाँ से आप इसराईली क़ौम को
देख सकेंगे, गो उनकी ख़ैमागाह का सिर्फ़ किनारा
ही नज़र आएगा। आप सबको नहीं देख सकेंगे।
वहीं से उन पर मेरे लिए लानत भेजें।” 14यह
कहकर वह उसके साथ पिसगा की चोटी पर
चढ़कर पहरेदारों के मैदान तक पहुँच गया। वहाँ
भी उसने सात क़ुरबानगाहें बनाकर हर एक पर
एक बैल और एक मेंढा क़ुरबान किया। 15बिलाम
ने बलक़ से कहा, “यहाँ अपनी क़ुरबानगाह के
पास खड़े रहें। मैं कुछ फ़ासले पर जाकर रब से
मिलूँगा।”
16रब बिलाम से मिला। उसने उसे बलक़ के
लिए पैग़ाम दिया और कहा, “बलक़ के पास
वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना दे।” 17वह
वापस चला गया। बलक़ अब तक अपने सरदारों
के साथ अपनी क़ुरबानी के पास खड़ा था। उसने
उससे पूछा, “रब ने क्या कहा?” 18बिलाम ने
कहा, “ऐ बलक़, उठो और सुनो। ऐ सफ़ोर के
बेटे, मेरी बात पर ग़ौर करो।
19अल्लाह आदमी नहीं जो झूट बोलता है।
वह इनसान नहीं जो कोई फ़ैसला करके बाद में
पछताए। क्या वह कभी अपनी बात पर अमल
नहीं करता? क्या वह कभी अपनी बात पूरी नहीं
करता?
20मुझे बरकत देने को कहा गया है। उसने
बरकत दी है और मैं यह बरकत रोक नहीं सकता।
21याक़ूब के घराने में ख़राबी नज़र नहीं आती,
इसराईल में दुख दिखाई नहीं देता। रब उसका
ख़ुदा उसके साथ है, और क़ौम बादशाह की ख़ुशी
में नारे लगाती है।
22अल्लाह उन्हें मिसर से निकाल लाया, और
उन्हें जंगली बैल की ताक़त हासिल है।
23याक़ूब के घराने के ख़िलाफ़ जादूगरी
नाकाम है, इसराईल के ख़िलाफ़ ग़ैबदानी
बेफ़ायदा है। अब याक़ूब के घराने से कहा जाएगा,
‘अल्लाह ने कैसा काम किया है!’
24इसराईली क़ौम शेरनी की तरह उठती और
शेरबबर की तरह खड़ी हो जाती है। जब तक वह
अपना शिकार न खा ले वह आराम नहीं करता,
जब तक वह मारे हुए लोगों का ख़ून न पी ले वह
नहीं लेटता।”
25यह सुनकर बलक़ ने कहा, “अगर आप उन
पर लानत भेजने से इनकार करें, कम अज़ कम
उन्हें बरकत तो न दें।” 26बिलाम ने जवाब दिया,
“क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि जो कुछ
भी रब कहेगा मैं वही करूँगा?”

बिलाम की तीसरी बरकत

27तब बलक़ ने बिलाम से कहा, “आएँ, मैं
आपको एक और जगह ले जाऊँ। शायद अल्लाह
राज़ी हो जाए कि आप मेरे लिए वहाँ से उन पर
लानत भेजें।” 28वह उसके साथ फ़ग़ूर पहाड़ पर
चढ़ गया। उस की चोटी से यरदन की वादी का
जुनूबी हिस्सा यशीमोन दिखाई दिया। 29बिलाम
ने उससे कहा, “मेरे लिए यहाँ सात क़ुरबानगाहें
बनाकर सात बैल और सात मेंढे तैयार कर
रखें।” 30बलक़ ने ऐसा ही किया। उसने हर एक
क़ुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा क़ुरबान
किया।

24 अब बिलाम को उस बात का पूरा यक़ीन हो गया कि रब को पसंद है कि मैं इसराईलियों को बरकत दूँ। इसलिए उसने इस मरतबा पहले की तरह जादूगरी का तरीक़ा इस्तेमाल न किया बल्कि सीधा रेगिस्तान की
तरफ़ रुख़ किया 2जहाँ इसराईल अपने अपने क़बीलों की तरतीब से ख़ैमाज़न था। यह देखकर अल्लाह का रूह उस पर नाज़िल हुआ, 3और वह
बोल उठा,

"बिलाम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उसके पैग़ाम पर ग़ौर करो जो साफ़ साफ़ देखता है,

4उसका पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता है, क़ादिरे-मुतलक़ की रोया को देख लेता है और ज़मीन पर गिरकर पोशीदा बातें देखता है।

5ऐ याक़ूब, तेरे ख़ैमे कितने शानदार हैं! ऐ इसराईल, तेरे घर कितने अच्छे हैं!

6वह दूर तक फैली हुई वादियों की मानिंद, नहर के किनारे लगे बाग़ों की मानिंद, रब के लगाए हुए ऊद के दरख़्तों की मानिंद, पानी के किनारे लगे देवदार के दरख़्तों की मानिंद हैं।

7उनकी बालटियों से पानी छलकता रहेगा, उनके बीज को कसरत का पानी मिलेगा। उनका बादशाह अजाज से ज़्यादा ताक़तवर होगा, और उनकी सलतनत सरफ़राज़ होगी।

8अल्लाह उन्हें मिसर से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की-सी ताक़त हासिल है। वह मुख़ालिफ़ क़ौमों को हड़प करके उनकी हड्डियाँ चूर चूर कर देते हैं, वह अपने तीर चलाकर उन्हें मार डालते हैं।

9इसराईल शेरबबर या शेरनी की मानिंद है। जब वह दबककर बैठ जाए तो कोई भी उसे छेड़ने की जुर्रत नहीं करता। जो तुझे बरकत दे उसे बरकत मिले, और जो तुझ पर लानत भेजे उस पर लानत आए।"

10यह सुनकर बलक़ आपे से बाहर हुआ। उसने ताली बजाकर अपनी हिक़ारत का इज़हार किया और कहा, "मैंने तुझे इसलिए बुलाया था कि तू मेरे दुश्मनों पर लानत भेजे। अब तूने उन्हें तीनों
बार बरकत ही दी है। 11अब दफ़ा हो जा! अपने घर वापस भाग जा! मैंने कहा था कि बड़ा इनाम दूँगा। लेकिन रब ने तुझे इनाम पाने से रोक दिया है।"

12बिलाम ने जवाब दिया, "क्या मैंने उन लोगों को जिन्हें आपने मुझे बुलाने के लिए भेजा था
नहीं बताया था 13कि अगर बलक़ अपने महल को चाँदी और सोने से भरकर भी मुझे दे दे तो भी मैं रब की किसी बात की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता, ख़ाह मेरी नीयत अच्छी हो या बुरी। मैं सिर्फ़ वह कुछ कर सकता हूँ जो अल्लाह
फ़रमाता है। 14अब मैं अपने वतन वापस चला जाता हूँ। लेकिन पहले मैं आपको बता देता हूँ कि आख़िरकार यह क़ौम आपकी क़ौम के साथ क्या कुछ करेगी।"

बिलाम की चौथी बरकत

15वह बोल उठा,

"बिलाम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उसका पैग़ाम जो साफ़ साफ़ देखता है,

16उसका पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता और अल्लाह तआला की मरज़ी को जानता है, जो क़ादिरे-मुतलक़ की रोया को देख लेता और ज़मीन पर गिरकर पोशीदा बातें देखता है।

17जिसे मैं देख रहा हूँ वह इस वक़्त नहीं है। जो मुझे नज़र आ रहा है वह क़रीब नहीं है। याक़ूब के घराने से सितारा निकलेगा, और इसराईल से असाए-शाही उठेगा जो मोआब के माथों और सेत के तमाम बेटों की खोपड़ियों को पाश पाश करेगा।

18अदोम उसके क़ब्ज़े में आएगा, उसका दुश्मन सईर उस की मिलकियत बनेगा जबकि इसराईल की ताक़त बढ़ती जाएगी।

19याक़ूब के घराने से एक हुक्मरान निकलेगा जो शहर के बचे हुओं को हलाक कर देगा।"

बिलाम के आख़िरी पैग़ाम

20फिर बिलाम ने अमालीक़ को देखा और कहा,

“अमालीक़ क़ौमों में अव्वल था, लेकिन
आख़िरकार वह ख़त्म हो जाएगा।”
21फिर उसने क़ीनियों को देखा और कहा,
“तेरी सुकूनतगाह मुस्तहकम है, तेरा चट्टान में
बना घोंसला मज़बूत है।
22लेकिन तू तबाह हो जाएगा जब असूर तुझे
गिरिफ़्तार करेगा।”
23एक और दफ़ा उसने बात की,
“हाय, कौन ज़िंदा रह सकता है जब अल्लाह
यों करेगा?
24कित्तीम के साहिल से बहरी जहाज़ आएँगे
जो असूर और इबर को ज़लील करेंगे, लेकिन वह
ख़ुद भी हलाक हो जाएंगे।”
25फिर बिलाम उठकर अपने घर वापस चला
गया। बलक़ भी वहाँ से चला गया।

मोआब इसराईलियों की आज़माइश करता है

25 जब इसराईली शित्तीम में रह रहे थे
तो इसराईली मर्द मोआबी औरतों
से ज़िनाकारी करने लगे। 2यह ऐसा हुआ कि
मोआबी औरतें अपने देवताओं को क़ुरबानियाँ
पेश करते वक़्त इसराईलियों को शरीक होने की
दावत देने लगीं। इसराईली दावत क़बूल करके
क़ुरबानियों से खाने और देवताओं को सिजदा
करने लगे। 3इस तरीक़े से इसराईली मोआबी
देवता बनाम बाल-फ़ग़ूर की पूजा करने लगे, और
रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा। 4उसने मूसा
से कहा, “इस क़ौम के तमाम राहनुमाओं को
सज़ाए-मौत देकर सूरज की रौशनी में रब के
सामने लटका, वरना रब का इसराईलियों पर से
ग़ज़ब नहीं टलेगा।” 5चुनाँचे मूसा ने इसराईल के
क़ाज़ियों से कहा, “लाज़िम है कि तुममें से हर
एक अपने उन आदमियों को जान से मार दे जो
बाल-फ़ग़ूर देवता की पूजा में शरीक हुए हैं।”
6मूसा और इसराईल की पूरी जमात मुलाक़ात
के ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा होकर रोने लगे।
इत्तफ़ाक़ से उसी वक़्त एक आदमी वहाँ से गुज़रा
जो एक मिदियानी औरत को अपने घर ले जा रहा
था। 7यह देखकर हारून का पोता फ़ीनहास बिन
इलियज़र जमात से निकला और नेज़ा पकड़कर
8उस इसराईली के पीछे चल पड़ा। वह औरत
समेत अपने ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो फ़ीनहास ने
उनके पीछे पीछे जाकर नेज़ा इतने ज़ोर से मारा
कि वह दोनों में से गुज़र गया। उस वक़्त वबा
फैलने लगी थी, लेकिन फ़ीनहास के इस अमल
से वह रुक गई। 9तो भी 24,000 अफ़राद मर
चुके थे।
10रब ने मूसा से कहा, 11“हारून के पोते
फ़ीनहास बिन इलियज़र ने इसराईलियों पर मेरा
ग़ुस्सा ठंडा कर दिया है। मेरी ग़ैरत अपनाकर वह
इसराईल में दीगर माबूदों की पूजा को बरदाश्त
न कर सका। इसलिए मेरी ग़ैरत ने इसराईलियों
को नेस्तो-नाबूद नहीं किया। 12लिहाज़ा उसे बता
देना कि मैं उसके साथ सलामती का अहद क़ायम
करता हूँ। 13इस अहद के तहत उसे और उस की
औलाद को अबद तक इमाम का ओहदा हासिल
रहेगा, क्योंकि अपने ख़ुदा की ख़ातिर ग़ैरत खाकर
उसने इसराईलियों का कफ़्फ़ारा दिया।”
14जिस आदमी को मिदियानी औरत के साथ
मार दिया गया उसका नाम ज़िमरी बिन सलू
था, और वह शमाऊन के क़बीले के एक आबाई
घराने का सरपरस्त था। 15मिदियानी औरत का
नाम कज़बी था, और वह सूर की बेटी थी जो
मिदियानियों के एक आबाई घराने का सरपरस्त
था।
16रब ने मूसा से कहा, 17“मिदियानियों को
दुश्मन क़रार देकर उन्हें मार डालना। 18क्योंकि
उन्होंने अपनी चालाकियों से तुम्हारे साथ दुश्मन
का-सा सुलूक किया, उन्होंने तुम्हें बाल-फ़ग़ूर की
पूजा करने पर उकसाया और तुम्हें अपनी बहन
मिदियानी सरदार की बेटी कज़बी के ज़रीए जिसे
वबा फैलते वक़्त मार दिया गया बहकाया।”

दूसरी मर्दुमशुमारी

26 वबा के बाद रब ने मूसा और हारून के बेटे इलियज़र से कहा,
2 "पूरी इसराईली जमात की मर्दुमशुमारी उनके आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों को गिनना जो 20 साल या इससे ज़ायद के हैं और जो जंग लड़ने के क़ाबिल हैं।"

3-4 मूसा और इलियज़र ने इसराईलियों को बताया कि रब ने उन्हें क्या हुक्म दिया है। चुनाँचे उन्होंने मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू के सामने, लेकिन दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर मर्दुमशुमारी की। यह वह इसराईली आदमी थे जो मिसर से निकले थे।

5-7 इसराईल के पहलौठे रूबिन के क़बीले के 43,730 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे हनूकी, फ़ल्लुवी, हसरोनी और करमी रूबिन के बेटों हनूक, फ़ल्लू, हसरोन और करमी से निकले हुए
थे। 8 रूबिन का बेटा फ़ल्लू इलियाब का बाप था
9 जिसके बेटे नमुएल, दातन और अबीराम थे।

दातन और अबीराम वही लोग थे जिन्हें जमात ने चुना था और जिन्होंने क़ोरह के गुरोह समेत मूसा और हारून से झगड़ते हुए ख़ुद रब से झगड़ा
किया। 10 उस वक़्त ज़मीन ने अपना मुँह खोलकर उन्हें क़ोरह समेत हड़प कर लिया था। उसके 250 साथी भी मर गए थे जब आग ने उन्हें भस्म कर दिया। यों वह सब इसराईल के लिए इबरतअंगेज़
मिसाल बन गए थे। 11 लेकिन क़ोरह की पूरी नसल मिटाई नहीं गई थी।

12-14 शमाऊन के क़बीले के 22,200 मर्द थे। क़बीले के पाँच कुंबे नमुएली, यमीनी, यकीनी, ज़ारही और साऊली शमाऊन के बेटों नमुएल, यमीन, यकीन, ज़ारह और साऊल से निकले हुए थे।

15-18 जद के क़बीले के 40,500 मर्द थे। क़बीले के सात कुंबे सफ़ोनी, हज्जी, सूनी, उज़्नी, एरी, अरूदी और अरेली जद के बेटों सफ़ोन, हज्जी, सूनी, उज़्नी, एरी, अरूद और अरेली से निकले हुए थे।

19-22 यहूदाह के क़बीले के 76,500 मर्द थे। यहूदाह के दो बेटे एर और ओनान मिसर आने से पहले कनान में मर गए थे। क़बीले के तीन कुंबे सेलानी, फ़ारसी और ज़ारही यहूदाह के बेटों सेला, फ़ारस और ज़ारह से निकले हुए थे।

फ़ारस के दो बेटों हसरोन और हमूल से दो कुंबे हसरोनी और हमूली निकले हुए थे।
23-25 इशकार के क़बीले के 64,300 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे तोलई, फ़ुव्वी, यसूबी और सिमरोनी इशकार के बेटों तोला, फ़ुव्वा, यसूब और सिमरोन से निकले हुए थे।

26-27 ज़बूलून के क़बीले के 60,500 मर्द थे। क़बीले के तीन कुंबे सरदी, ऐलोनी और यहलियेली ज़बूलून के बेटों सरद, ऐलोन और यहलियेल से निकले हुए थे।

28 यूसुफ़ के दो बेटों मनस्सी और इफ़राईम के अलग अलग क़बीले बने।

29-34 मनस्सी के क़बीले के 52,700 मर्द थे। क़बीले के आठ कुंबे मकीरी, जिलियादी, इयज़री, ख़लक़ी, असरियेली, सिकमी, समीदाई और हिफ़री थे। मकीरी मनस्सी के बेटे मकीर से जबकि जिलियादी मकीर के बेटे जिलियाद से निकले हुए थे। बाक़ी कुंबे जिलियाद के छः बेटों इयज़र, ख़लक़, असरियेल, सिकम, समीदा और हिफ़र से निकले हुए थे।

हिफ़र सिलाफ़िहाद का बाप था। सिला-फ़िहाद का कोई बेटा नहीं बल्कि पाँच बेटियाँ महलाह, नुआह, हुजलाह, मिलकाह और तिरज़ा थीं।

35-37 इफ़राईम के क़बीले के 32,500 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे सूतलही, बकरी, तहनी और ईरानी थे। पहले तीन कुंबे इफ़राईम के बेटों सूतलह, बकर और तहन से जबकि ईरानी सूतलह के बेटे ईरान से निकले हुए थे।

38-41 बिनयमीन के क़बीले के 45,600 मर्द थे। क़बीले के सात कुंबे बालाई, अश-

बेली, अख़ीरामी, सूफ़ामी, हूफ़ामी, अरदी और
नामानी थे। पहले पाँच कुंबे बिनयमीन के बेटों
बाला, अशबेल, अख़ीराम, सूफ़ाम और हूफ़ाम
से जबकि अरदी और नामानी बाला के बेटों से
निकले हुए थे।
42-43दान के क़बीले के 64,400 मर्द थे। सब
दान के बेटे सूहाम से निकले हुए थे, इसलिए
सूहामी कहलाते थे।
44-47आशर के क़बीले के 53,400 मर्द थे।
क़बीले के पाँच कुंबे यिमनी, इसवी, बरीई, हिबरी
और मलकियेली थे। पहले तीन कुंबे आशर के
बेटों यिमना, इसवी और बरिया से जबकि बाक़ी
बरिया के बेटों हिबर और मलकियेल से निकले
हुए थे। आशर की एक बेटी बनाम सिरह भी थी।
48-50नफ़ताली के क़बीले के 45,400 मर्द
थे। क़बीले के चार कुंबे यहसियेली, जूनी, यिसरी
और सिल्लीमी नफ़ताली के बेटों यहसियेल,
जूनी, यिसर और सिल्लीम से निकले हुए थे।
51इसराईली मर्दों की कुल तादाद 6,01,730
थी।
52रब ने मूसा से कहा, 53"जब मुल्के-कनान
को तक़सीम किया जाएगा तो ज़मीन इनकी
तादाद के मुताबिक़ देना है। 54बड़े क़बीलों को
छोटे की निसबत ज़्यादा ज़मीन दी जाए। हर
क़बीले का इलाक़ा उस की तादाद से मुताबिक़त
रखे। 55-56क़ुरा डालने से फ़ैसला किया जाए कि
हर क़बीले को कहाँ ज़मीन मिलेगी। लेकिन हर
क़बीले के इलाक़े का रक़बा इस पर मबनी हो कि
क़बीले के कितने अफ़राद हैं।"
57लावी के क़बीले के तीन कुंबे जैरसोनी,
क़िहाती और मिरारी लावी के बेटों जैरसोन,
क़िहात और मिरारी से निकले हुए थे। 58इसके
अलावा लिबनी, हिब्रूनी, महली, मूशी और कोरही
भी लावी के कुंबे थे। क़िहात अमराम का बाप था।
59अमराम ने लावी औरत यूकबिद से शादी की
जो मिसर में पैदा हुई थी। उनके दो बेटे हारून और
मूसा और एक बेटी मरियम पैदा हुए। 60हारून
के बेटे नदब, अबीहू, इलियज़र और इतमर थे।
61लेकिन नदब और अबीहू रब को बख़ूर की
नाजायज़ क़ुरबानी पेश करने के बाइस मर गए।
62लावियों के मर्दों की कुल तादाद 23,000 थी।
इनमें वह सब शामिल थे जो एक माह या इससे
ज़ायद के थे। उन्हें दूसरे इसराईलियों से अलग
गिना गया, क्योंकि उन्हें इसराईल में मीरास में
ज़मीन नहीं मिलनी थी।
63यों मूसा और इलियज़र ने मोआब के मैदानी
इलाक़े में यरीहू के सामने लेकिन दरियाए-
यरदन के मशरिक़ी किनारे पर इसराईलियों की
मर्दुमशुमारी की। 64लोगों को गिनते गिनते उन्हें
मालूम हुआ कि जो लोग दश्ते-सीन में मूसा और
हारून की पहली मर्दुमशुमारी में गिने गए थे वह
सब मर चुके हैं। 65रब ने कहा था कि वह सबके
सब रेगिस्तान में मर जाएंगे, और ऐसा ही हुआ
था। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशुअ बिन
नून ज़िंदा रहे।

सिलाफ़िहाद की बेटियाँ

27 सिलाफ़िहाद की पाँच बेटियाँ
महलाह, नुआह, हुजलाह, मिल-
काह और तिरज़ा थीं। सिलाफ़िहाद यूसुफ़
के बेटे मनस्सी के कुंबे का था। उसका पूरा
नाम सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलियाद
बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ था।
2सिलाफ़िहाद की बेटियाँ मुलाक़ात के ख़ैमे के
दरवाज़े पर आकर मूसा, इलियज़र इमाम और
पूरी जमात के सामने खड़ी हुईं। उन्होंने कहा,
3"हमारा बाप रेगिस्तान में फ़ौत हुआ। लेकिन
वह क़ोरह के उन साथियों में से नहीं था जो रब
के ख़िलाफ़ मुत्तहिद हुए थे। वह इस सबब से न
मरा बल्कि अपने ज़ाती गुनाह के बाइस। जब
वह मर गया तो उसका कोई बेटा नहीं था। 4क्या
यह ठीक है कि हमारे ख़ानदान में बेटा न होने
के बाइस हमें ज़मीन न मिले और हमारे बाप का
नामो-निशान मिट जाए? हमें भी हमारे बाप के
दीगर रिश्तेदारों के साथ ज़मीन दें।"

5मूसा ने उनका मामला रब के सामने पेश किया 6तो रब ने उससे कहा, 7"जो बात सिलाफ़िहाद की बेटियाँ कर रही हैं वह दुरुस्त है। उन्हें ज़रूर उनके बाप के रिश्तेदारों के साथ ज़मीन मिलनी चाहिए। उन्हें बाप का विरसा मिल जाए। 8इसराईलियों को भी बताना कि जब भी कोई आदमी मर जाए जिसका बेटा न हो तो उस की बेटी को उस की मीरास मिल जाए। 9अगर उस की बेटी भी न हो तो उसके भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। 10अगर उसके भाई भी न हों तो उसके बाप के भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। 11अगर यह भी न हों तो उसके सबसे क़रीबी रिश्तेदार को उस की मीरास मिल जाए। वह उस की ज़ाती मिलकियत होगी। यह उसूल इसराईलियों के लिए क़ानूनी हैसियत रखता है। वह इसे वैसा मानें जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया है।"

यशुअ को मूसा का जा-नशीन मुक़र्रर किया जाता है

12फिर रब ने मूसा से कहा, "अबारीम के पहाड़ी सिलसिले के इस पहाड़ पर चढ़कर उस मुल्क पर निगाह डाल जो मैं इसराईलियों को दूँगा। 13उसे देखने के बाद तू भी अपने भाई हारून की तरह कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा, 14क्योंकि तुम दोनों ने दश्ते-सीन में मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की। उस वक़्त जब पूरी जमात ने मरीबा में मेरे ख़िलाफ़ गिला-शिकवा किया तो तूने चट्टान से पानी निकालते वक़्त लोगों के सामने मेरी क़ुद्दूसियत क़ायम न रखी।" (मरीबा दश्ते-सीन के क़ादिस में चश्मा है।)

15मूसा ने रब से कहा, 16"ऐ रब, तमाम जानों के ख़ुदा, जमात पर किसी आदमी को मुक़र्रर कर 17जो उनके आगे आगे जंग के लिए निकले और उनके आगे आगे वापस आ जाए, जो उन्हें बाहर ले जाए और वापस ले आए। वरना रब की जमात उन भेड़ों की मानिंद होगी जिनका कोई चरवाहा न हो।"

18जवाब में रब ने मूसा से कहा, "यशुअ बिन नून को चुन ले जिसमें मेरा रूह है, और अपना हाथ उस पर रख। 19उसे इलियज़र इमाम और पूरी जमात के सामने खड़ा करके उनके रूबरू ही उसे राहनुमाई की ज़िम्मेदारी दे। 20अपने इख़्तियार में से कुछ उसे दे ताकि इसराईल की पूरी जमात उस की इताअत करे। 21रब की मरज़ी जानने के लिए वह इलियज़र इमाम के सामने खड़ा होगा तो इलियज़र रब के सामने ऊरीम और तुम्मीम इस्तेमाल करके उस की मरज़ी दरियाफ़्त करेगा। उसी के हुक्म पर यशुअ और इसराईल की पूरी जमात ख़ैमागाह से निकलेंगे और वापस आएँगे।"

22मूसा ने ऐसा ही किया। उसने यशुअ को चुनकर इलियज़र और पूरी जमात के सामने खड़ा किया। 23फिर उसने उस पर अपने हाथ रखकर उसे राहनुमाई की ज़िम्मेदारी सौंपी जिस तरह रब ने उसे बताया था।

रोज़मर्रा की क़ुरबानियाँ

28 रब ने मूसा से कहा, 2"इसराईलियों को बताना, ख़याल रखो कि तुम मुक़र्ररा औक़ात पर मुझे जलनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करो। यह मेरी रोटी हैं और इनकी ख़ुशबू मुझे पसंद है। 3रब को जलनेवाली यह क़ुरबानी पेश करना :

रोज़ाना भेड़ के दो यकसाला बच्चे जो बेऐब हों पूरे तौर पर जला देना। 4एक को सुबह के वक़्त पेश करना और दूसरे को सूरज के डूबने के ऐन बाद। 5भेड़ के बच्चे के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश की जाए यानी डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा जो एक लिटर ज़ैतून के कूटकर निकाले हुए तेल के साथ मिलाया गया हो। 6यह रोज़मर्रा की क़ुरबानी है जो पूरे तौर पर जलाई जाती है और पहली दफ़ा सीना पहाड़ पर चढ़ाई गई। इस जलनेवाली क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है। 7-8साथ ही एक लिटर शराब भी नज़र के तौर

पर क़ुरबानगाह पर डाली जाए। सुबह और शाम
की यह क़ुरबानियाँ दोनों ही इस तरीक़े से पेश की
जाएँ।

सबत यानी हफ़्ते की क़ुरबानी

9सबत के दिन भेड़ के दो और बच्चे चढ़ाना। वह
भी बेऐब और एक साल के हों। साथ ही मै और
ग़ल्ला की नज़रें भी पेश की जाएँ। ग़ल्ला की नज़र
के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ
मिलाया जाए। 10भस्म होनेवाली यह क़ुरबानी
हर हफ़्ते के दिन पेश करनी है। यह रोज़मर्रा की
क़ुरबानियों के अलावा है।

हर माह के पहले दिन की क़ुरबानी

11हर माह के शुरू में रब को भस्म होनेवाली
क़ुरबानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा
और भेड़ के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब
बग़ैर नुक़्स के हों। 12हर जानवर के साथ ग़ल्ला
की नज़र पेश करना जिसके लिए तेल में मिलाया
गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल
के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3
किलोग्राम 13और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़
किलोग्राम मैदा पेश करना। भस्म होनेवाली यह
क़ुरबानियाँ रब को पसंद हैं। 14इन क़ुरबानियों के
साथ मै की नज़र भी क़ुरबानगाह पर डालना यानी
हर बैल के साथ दो लिटर, हर मेंढे के साथ सवा
लिटर और भेड़ के हर बच्चे के साथ एक लिटर
मै पेश करना। यह क़ुरबानी साल में हर महीने
के पहले दिन के मौक़े पर पेश करनी है। 15इस
क़ुरबानी और रोज़मर्रा की क़ुरबानियों के अलावा
रब को एक बकरा गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर
पेश करना।

फ़सह की क़ुरबानियाँ

16पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद
मनाई जाए। 17अगले दिन पूरे हफ़्ते की वह ईद
शुरू होती है जिसके दौरान तुम्हें सिर्फ़ बेख़मीरी
रोटी खानी है। 18पहले दिन काम न करना बल्कि
मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। 19रब के
हुज़ूर भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर दो
जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला
बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक़्स के हों। 20हर
जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करना
जिसके लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन
मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े
4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम
21और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम
मैदा पेश करना। 22गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर
एक बकरा भी पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा
दिया जाए। 23-24इन तमाम क़ुरबानियों को ईद
के दौरान हर रोज़ पेश करना। यह रोज़मर्रा की
भस्म होनेवाली क़ुरबानियों के अलावा हैं। इस
ख़ुराक की ख़ुशबू रब को पसंद है। 25सातवें दिन
काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए
इकट्ठे होना।

फ़सल की कटाई की ईद की क़ुरबानियाँ

26फ़सल की कटाई के पहले दिन की ईद पर
जब तुम रब को अपनी फ़सल की पहली पैदावार
पेश करते हो तो काम न करना बल्कि मुक़द्दस
इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। 27-29उस दिन दो
जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला
बच्चे क़ुरबानगाह पर पूरे तौर पर जला देना। इसके
साथ ग़ल्ला और मै की वही नज़रें पेश करना जो
फ़सह की ईद पर भी पेश की जाती हैं। 30इसके
अलावा रब को एक बकरा गुनाह की क़ुरबानी के
तौर पर चढ़ाना।

31यह तमाम क़ुरबानियाँ रोज़मर्रा की भस्म
होनेवाली क़ुरबानियों और उनके साथवाली ग़ल्ला
और मै की नज़रों के अलावा हैं। वह बेऐब हों।

नए साल की ईद की क़ुरबानियाँ

29 सातवें माह के पंद्रहवें दिन भी काम
न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के
लिए इकट्ठे होना। उस दिन नरसिंगे फूँके जाएँ।
2रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश की जाए

जिसकी ख़ुशबू उसे पसंद हो यानी एक जवान
बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे।
सब नुक़्स के बग़ैर हों। 3हर जानवर के साथ
ग़ल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल
के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल
किया जाए। बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम,
मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 4और भेड़ के हर बच्चे
के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। 5एक
बकरा भी गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश
करना ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। 6यह
क़ुरबानियाँ रोज़ाना और हर माह के पहले दिन की
क़ुरबानियों और उनके साथ की ग़ल्ला और मै की
नज़रों के अलावा हैं। इनकी ख़ुशबू रब को पसंद
है।

कफ़्फ़ारा के दिन की क़ुरबानियाँ

7सातवें महीने के दसवें दिन मुक़द्दस इजतिमा
के लिए इकट्ठे होना। उस दिन काम न करना
और अपनी जान को दुख देना। 8-11रब को वही
क़ुरबानियाँ पेश करना जो इसी महीने के पहले
दिन पेश की जाती हैं। सिर्फ़ एक फ़रक़ है, उस
दिन एक नहीं बल्कि दो बकरे गुनाह की क़ुरबानी
के तौर पर पेश किए जाएँ ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा
दिया जाए। ऐसी क़ुरबानियाँ रब को पसंद हैं।

झोंपड़ियों की ईद की क़ुरबानियाँ

12सातवें महीने के पंद्रहवें दिन भी काम न
करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे
होना। सात दिन तक रब की ताज़ीम में ईद
मनाना। 13ईद के पहले दिन रब को 13 जवान
बैल, 2 मेंढे और 14 भेड़ के यकसाला बच्चे भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करना। इनकी
ख़ुशबू उसे पसंद है। सब नुक़्स के बग़ैर हों। 14हर
जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करना
जिसके लिए तेल से मिलाया गया बेहतरीन मैदा
इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4
किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 15और
भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश
करना। 16इसके अलावा एक बकरा भी गुनाह की
क़ुरबानी के तौर पर पेश करना। यह क़ुरबानियाँ
रोज़ाना की भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और उनके
साथवाली ग़ल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं।
17-34ईद के बाक़ी छः दिन यही क़ुरबानियाँ पेश
करनी हैं। लेकिन हर दिन एक बैल कम हो यानी
दूसरे दिन 12, तीसरे दिन 11, चौथे दिन 10,
पाँचवें दिन 9, छटे दिन 8 और सातवें दिन 7
बैल। हर दिन गुनाह की क़ुरबानी के लिए बकरा
और मामूल की रोज़ाना की क़ुरबानियाँ भी पेश
करना। 35ईद के आठवें दिन काम न करना बल्कि
मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। 36रब को
एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात
यकसाला बच्चे भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर
पर पेश करना। इनकी ख़ुशबू रब को पसंद है।
सब नुक़्स के बग़ैर हों। 37-38साथ ही वह तमाम
क़ुरबानियाँ भी पेश करना जो पहले दिन पेश की
जाती हैं। 39यह सब वही क़ुरबानियाँ हैं जो तुम्हें
रब को अपनी ईदों पर पेश करनी हैं। यह उन
तमाम क़ुरबानियों के अलावा हैं जो तुम दिली
ख़ुशी से या मन्नत मानकर देते हो, चाहे वह भस्म
होनेवाली, ग़ल्ला की, मै की या सलामती की
क़ुरबानियाँ क्यों न हों।”

40मूसा ने रब की यह तमाम हिदायात
इसराईलियों को बता दीं।

मन्नत मानने के क़वायद

30 फिर मूसा ने क़बीलों के सरदारों से
कहा, “रब फ़रमाता है,

2अगर कोई आदमी रब को कुछ देने की मन्नत
माने या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम
खाए तो वह अपनी बात पर क़ायम रहकर उसे
पूरा करे।

3अगर कोई जवान औरत जो अब तक अपने
बाप के घर में रहती है रब को कुछ देने की मन्नत
माने या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम
खाए 4तो लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या
क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि

उसका बाप उसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे।
5लेकिन अगर उसका बाप यह सुनकर उसे ऐसा
करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम
मनसूख़ है, और वह उसे पूरा करने से बरी है।
रब उसे मुआफ़ करेगा, क्योंकि उसके बाप ने उसे
मना किया है।

6हो सकता है कि किसी ग़ैरशादीशुदा औरत
ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने
की क़सम खाई, चाहे उसने दानिस्ता तौर पर या
बेसोचे-समझे ऐसा किया। इसके बाद उस औरत
ने शादी कर ली। 7शादीशुदा हालत में भी लाज़िम
है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात
पूरी करे। शर्त यह है कि उसका शौहर इसके बारे
में सुनकर एतराज़ न करे। 8लेकिन अगर उसका
शौहर यह सुनकर उसे ऐसा करने से मना करे तो
उस की मन्नत या क़सम मनसूख़ है, और वह
उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा।
9अगर किसी बेवा या तलाक़शुदा औरत ने मन्नत
मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम
खाई तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी
करे।

10अगर किसी शादीशुदा औरत ने मन्नत मानी
या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई
11तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे।
शर्त यह है कि उसका शौहर उसके बारे में सुनकर
एतराज़ न करे। 12लेकिन अगर उसका शौहर उसे
ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या
क़सम मनसूख़ है। वह उसे पूरा करने से बरी है।
रब उसे मुआफ़ करेगा, क्योंकि उसके शौहर ने
उसे मना किया है। 13चाहे बीवी ने कुछ देने की
मन्नत मानी हो या किसी चीज़ से परहेज़ करने की
क़सम खाई हो, उसके शौहर को उस की तसदीक़
या उसे मनसूख़ करने का इख़्तियार है। 14अगर
उसने अपनी बीवी की मन्नत या क़सम के बारे में
सुन लिया और अगले दिन तक एतराज़ न किया
तो लाज़िम है कि उस की बीवी अपनी हर बात पूरी
करे। शौहर ने अगले दिन तक एतराज़ न करने से
अपनी बीवी की बात की तसदीक़ की है। 15अगर
वह इसके बाद यह मन्नत या क़सम मनसूख़ करे
तो उसे इस क़ुसूर के नतायज भुगतने पड़ेंगे।”

16रब ने मूसा को यह हिदायात दीं। यह ऐसी
औरतों की मन्नतों या क़समों के उसूल हैं जो
ग़ैरशादीशुदा हालत में अपने बाप के घर में रहती
हैं या जो शादीशुदा हैं।

मिदियानियों से जंग

31 रब ने मूसा से कहा, 2“मिदिया-
नियों से इसराईलियों का बदला ले।
इसके बाद तू कूच करके अपने बापदादा से जा
मिलेगा।”

3चुनाँचे मूसा ने इसराईलियों से कहा,
“हथियारों से अपने कुछ आदमियों को लैस करो
ताकि वह मिदियान से जंग करके रब का बदला
लें। 4हर क़बीले के 1,000 मर्द जंग लड़ने के
लिए भेजो।”

5चुनाँचे हर क़बीले के 1,000 मुसल्लह मर्द
यानी कुल 12,000 आदमी चुने गए। 6तब मूसा
ने उन्हें जंग लड़ने के लिए भेज दिया। उसने
इलियज़र इमाम के बेटे फ़ीनहास को भी उनके
साथ भेजा जिसके पास मक़दिस की कुछ चीज़ें
और एलान करने के बिगुल थे। 7उन्होंने रब के
हुक्म के मुताबिक़ मिदियानियों से जंग की और
तमाम आदमियों को मौत के घाट उतार दिया।
8इनमें मिदियानियों के पाँच बादशाह इवी, रक़म,
सूर, हूर और रबा थे। बिलाम बिन बओर को भी
जान से मार दिया गया।

9इसराईलियों ने मिदियानी औरतों और बच्चों
को गिरिफ़्तार करके उनके तमाम गाय-बैल, भेड़-
बकरियाँ और माल लूट लिया। 10उन्होंने उनकी
तमाम आबादियों को ख़ैमागाहों समेत जलाकर
राख कर दिया। 11-12फिर वह तमाम लूटा हुआ
माल क़ैदियों और जानवरों समेत मूसा, इलियज़र
इमाम और इसराईल की पूरी जमात के पास ले
आए जो ख़ैमागाह में इंतज़ार कर रहे थे। अभी
तक वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरियाए-
यरदन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने

ठहरे हुए थे। 13मूसा, इलियज़र और जमात के
तमाम सरदार उनका इस्तक़बाल करने के लिए
ख़ैमागाह से निकले।

14उन्हें देखकर मूसा को हज़ार हज़ार और
सौ सौ अफ़राद पर मुक़र्रर अफ़सरान पर ग़ुस्सा
आया। 15उसने कहा, "आपने तमाम औरतों को
क्यों बचाए रखा? 16उन्हीं ने बिलाम के मशवरे
पर फ़ग़ूर में इसराईलियों को रब से दूर कर दिया
था। उन्हीं के सबब से रब की वबा उसके लोगों
में फैल गई। 17चुनाँचे अब तमाम लड़कों को
जान से मार दो। उन तमाम औरतों को भी मौत
के घाट उतारना जो कुँवारियाँ नहीं हैं। 18लेकिन
तमाम कुँवारियों को बचाए रखना। 19जिसने भी
किसी को मार दिया या किसी लाश को छुआ है
वह सात दिन तक ख़ैमागाह के बाहर रहे। तीसरे
और सातवें दिन अपने आपको अपने क़ैदियों
समेत गुनाह से पाक-साफ़ करना। 20हर लिबास
और हर चीज़ को पाक-साफ़ करना जो चमड़े,
बकरियों के बालों या लकड़ी की हो।"

21फिर इलियज़र इमाम ने जंग से वापस
आनेवाले मर्दों से कहा, "जो शरीअत रब ने मूसा
को दी उसके मुताबिक़ 22-23जो भी चीज़ जल
नहीं जाती उसे आग में से गुज़ार देना ताकि पाक-
साफ़ हो जाए। उसमें सोना, चाँदी, पीतल, लोहा,
टीन और सीसा शामिल है। फिर उस पर नापाकी
दूर करने का पानी छिड़कना। बाक़ी तमाम चीज़ें
पानी में से गुज़ार देना ताकि वह पाक-साफ़ हो
जाएँ। 24सातवें दिन अपने लिबास को धोना तो
तुम पाक-साफ़ होकर ख़ैमागाह में दाख़िल हो
सकते हो।"

लूटे हुए माल की तक़सीम

25रब ने मूसा से कहा, 26"तमाम क़ैदियों और
लूटे हुए जानवरों को गिन। इसमें इलियज़र इमाम
और क़बायली कुंबों के सरपरस्त तेरी मदद करें।
27सारा माल दो बराबर के हिस्सों में तक़सीम
करना, एक हिस्सा फ़ौजियों के लिए और दूसरा
बाक़ी जमात के लिए हो। 28फ़ौजियों के हिस्से के
पाँच पाँच सौ क़ैदियों में से एक एक निकालकर
रब को देना। इसी तरह पाँच पाँच सौ बैलों, गधों,
भेड़ों और बकरियों में से एक एक निकालकर
रब को देना। 29उन्हें इलियज़र इमाम को देना
ताकि वह उन्हें रब को उठानेवाली क़ुरबानी के
तौर पर पेश करे। 30बाक़ी जमात के हिस्से के
पचास पचास क़ैदियों में से एक एक निकालकर
रब को देना, इसी तरह पचास पचास बैलों, गधों,
भेड़ों और बकरियों या दूसरे जानवरों में से भी एक
एक निकालकर रब को देना। उन्हें उन लावियों को
देना जो रब के मक़दिस को सँभालते हैं।"

31मूसा और इलियज़र ने ऐसा ही किया।
32-34उन्होंने 6,75,000 भेड़-बकरियाँ,
72,000 गाय-बैल और 61,000 गधे गिने।
35इनके अलावा 32,000 क़ैदी कुँवारियाँ
भी थीं। 36-40फ़ौजियों को तमाम चीज़ों का
आधा हिस्सा मिल गया यानी 3,37,500 भेड़-
बकरियाँ, 36,000 गाय-बैल, 30,500 गधे
और 16,000 क़ैदी कुँवारियाँ। इनमें से उन्होंने
675 भेड़-बकरियाँ, 72 गाय-बैल, 61 गधे और
32 लड़कियाँ रब को दीं। 41मूसा ने रब का यह
हिस्सा इलियज़र इमाम को उठानेवाली क़ुरबानी
के तौर पर दे दिया, जिस तरह रब ने हुक्म दिया
था। 42-47बाक़ी जमात को भी लूटे हुए माल का
आधा हिस्सा मिल गया। मूसा ने पचास पचास
क़ैदियों और जानवरों में से एक एक निकालकर
उन लावियों को दे दिया जो रब का मक़दिस
सँभालते थे। उसने वैसा ही किया जैसा रब ने
हुक्म दिया था।

48फिर वह अफ़सर मूसा के पास आए जो
लशकर के हज़ार हज़ार और सौ सौ आदमियों
पर मुक़र्रर थे। 49उन्होंने उससे कहा, "आपके
ख़ादिमों ने उन फ़ौजियों को गिन लिया है जिन
पर वह मुक़र्रर हैं, और हमें पता चल गया कि एक
भी कम नहीं हुआ। 50इसलिए हम रब को सोने
का तमाम ज़ेवर क़ुरबान करना चाहते हैं जो हमें
फ़तह पाने पर मिला था मसलन सोने के बाज़ूबंद,
कंगन, मुहर लगाने की अंगूठियाँ, बालियाँ और

हार। यह सब कुछ हम रब को पेश करना चाहते
हैं ताकि रब के सामने हमारा कफ़्फ़ारा हो जाए।”
51मूसा और इलियज़र इमाम ने सोने की तमाम
चीज़ें उनसे ले लीं। 52जो चीज़ें उन्होंने अफ़सरान
के लूटे हुए माल में से रब को उठानेवाली क़ुरबानी
के तौर पर पेश कीं उनका पूरा वज़न तक़रीबन
190 किलोग्राम था। 53सिर्फ़ अफ़सरान ने ऐसा
किया। बाक़ी फ़ौजियों ने अपना लूट का माल
अपने लिए रख लिया। 54मूसा और इलियज़र
अफ़सरान का यह सोना मुलाक़ात के ख़ैमे में ले
आए ताकि वह रब को उस की क़ौम की याद
दिलाता रहे।

दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर आबाद क़बीले

32 रूबिन और जद के क़बीलों के पास
बहुत-से मवेशी थे। जब उन्होंने देखा
कि याज़ेर और जिलियाद का इलाक़ा मवेशी
पालने के लिए अच्छा है 2तो उन्होंने मूसा,
इलियज़र इमाम और जमात के राहनुमाओं के
पास आकर कहा, 3-4“जिस इलाक़े को रब ने
इसराईल की जमात के आगे आगे शिकस्त दी है
वह मवेशी पालने के लिए अच्छा है। अतारात,
दीबोन, याज़ेर, निमरा, हसबोन, इलियाली,
सबाम, नबू और बऊन जो इसमें शामिल हैं हमारे
काम आएँगे, क्योंकि आपके ख़ादिमों के पास
मवेशी हैं। 5अगर आपकी नज़रे-करम हम पर
हो तो हमें यह इलाक़ा दिया जाए। यह हमारी
मिलकियत बन जाए और हमें दरियाए-यरदन को
पार करने पर मजबूर न किया जाए।”
6मूसा ने जद और रूबिन के अफ़राद से कहा,
“क्या तुम यहाँ पीछे रहकर अपने भाइयों को
छोड़ना चाहते हो जब वह जंग लड़ने के लिए आगे
निकलेंगे? 7इस वक़्त जब इसराईली दरियाए-
यरदन को पार करके उस मुल्क में दाख़िल
होनेवाले हैं जो रब ने उन्हें दिया है तो तुम क्यों
उनकी हौसलाशिकनी कर रहे हो? 8तुम्हारे
बापदादा ने भी यही कुछ किया जब मैंने उन्हें
क़ादिस-बरनीअ से मुल्क के बारे में मालूमात
हासिल करने के लिए भेजा। 9इसकाल की वादी
में पहुँचकर मुल्क की तफ़तीश करने के बाद
उन्होंने इसराईलियों की हौसलाशिकनी की ताकि
वह उस मुल्क में दाख़िल न हों जो रब ने उन्हें दिया
था। 10उस दिन रब ने ग़ुस्से में आकर क़सम खाई,
11‘उन आदमियों में से जो मिसर से निकल आए
हैं कोई उस मुल्क को नहीं देखेगा जिसका वादा
मैंने क़सम खाकर इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब
से किया था। क्योंकि उन्होंने पूरी वफ़ादारी से मेरी
पैरवी न की। सिर्फ़ वह जिनकी उम्र उस वक़्त 20
साल से कम है दाख़िल होंगे। 12बुज़ुर्गों में से सिर्फ़
कालिब बिन यफ़ुन्ना क़निज़्ज़ी और यशुअ बिन
नून मुल्क में दाख़िल होंगे, इसलिए कि उन्होंने
पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी की।’ 13उस वक़्त
रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उन्हें 40
साल तक रेगिस्तान में मारे मारे फिरना पड़ा, जब
तक कि वह तमाम नसल ख़त्म न हो गई जिसने
उसके नज़दीक ग़लत काम किया था। 14अब तुम
गुनाहगारों की औलाद अपने बापदादा की जगह
खड़े होकर रब का इसराईल पर ग़ुस्सा मज़ीद बढ़ा
रहे हो। 15अगर तुम उस की पैरवी से हटोगे तो
वह दुबारा इन लोगों को रेगिस्तान में रहने देगा,
और तुम इनकी हलाकत का बाइस बनोगे।”
16इसके बाद रूबिन और जद के अफ़राद
दुबारा मूसा के पास आए और कहा, “हम
यहाँ फ़िलहाल अपने मवेशी के लिए बाड़े और
अपने बाल-बच्चों के लिए शहर बनाना चाहते हैं।
17इसके बाद हम मुसल्लह होकर इसराईलियों
के आगे आगे चलेंगे और हर एक को उस की
अपनी जगह तक पहुँचाएँगे। इतने में हमारे बाल-
बच्चे हमारे शहरों की फ़सीलों के अंदर मुल्क के
मुख़ालिफ़ बाशिंदों से महफ़ूज़ रहेंगे। 18हम उस
वक़्त तक अपने घरों को नहीं लौटेंगे जब तक
हर इसराईली को उस की मौरूसी ज़मीन न मिल
जाए। 19दूसरे, हम ख़ुद उनके साथ दरियाए-
यरदन के मग़रिब में मीरास में कुछ नहीं पाएँगे,

क्योंकि हमें अपनी मौरूसी ज़मीन दरियाए-यरदन
के मशरिक़ी किनारे पर मिल चुकी है।”
20यह सुनकर मूसा ने कहा, “अगर तुम ऐसा
ही करोगे तो ठीक है। फिर रब के सामने जंग के
लिए तैयार हो जाओ 21और सब हथियार बाँधकर
रब के सामने दरियाए-यरदन को पार करो। उस
वक़्त तक न लौटो जब तक रब ने अपने तमाम
दुश्मनों को अपने आगे से निकाल न दिया हो।
22फिर जब मुल्क पर रब का क़ब्ज़ा हो गया
होगा तो तुम लौट सकोगे। तब तुमने रब और
अपने हमवतन भाइयों के लिए अपने फ़रायज़
अदा कर दिए होंगे, और यह इलाक़ा रब के सामने
तुम्हारा मौरूसी हक़ होगा। 23लेकिन अगर तुम
ऐसा न करो तो फिर तुम रब ही का गुनाह करोगे।
यक़ीन जानो तुम्हें अपने गुनाह की सज़ा मिलेगी।
24अब अपने बाल-बच्चों के लिए शहर और अपने
मवेशियों के लिए बाड़े बना लो। लेकिन अपने वादे
को ज़रूर पूरा करना।”
25जद और रूबिन के अफ़राद ने मूसा से कहा,
“हम आपके ख़ादिम हैं, हम अपने आक़ा के
हुक्म के मुताबिक़ ही करेंगे। 26हमारे बाल-बच्चे
और मवेशी यहीं जिलियाद के शहरों में रहेंगे।
27लेकिन आपके ख़ादिम मुसल्लह होकर दरिया
को पार करेंगे और रब के सामने जंग करेंगे। हम
सब कुछ वैसा ही करेंगे जैसा हमारे आक़ा ने हमें
हुक्म दिया है।”
28तब मूसा ने इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून
और क़बायली कुंबों के सरपरस्तों को हिदायत
दी, 29“लाज़िम है कि जद और रूबिन के मर्द
मुसल्लह होकर तुम्हारे साथ ही रब के सामने
दरियाए-यरदन को पार करें और मुल्क पर क़ब्ज़ा
करें। अगर वह ऐसा करें तो उन्हें मीरास में
जिलियाद का इलाक़ा दो। 30लेकिन अगर वह
ऐसा न करें तो फिर उन्हें मुल्के-कनान ही में तुम्हारे
साथ मौरूसी ज़मीन मिले।”
31जद और रूबिन के अफ़राद ने इसरार किया,
“आपके ख़ादिम सब कुछ करेंगे जो रब ने कहा
है। 32हम मुसल्लह होकर रब के सामने दरियाए-
यरदन को पार करेंगे और कनान के मुल्क में
दाख़िल होंगे, अगरचे हमारी मौरूसी ज़मीन यरदन
के मशरिक़ी किनारे पर होगी।”
33तब मूसा ने जद, रूबिन और मनस्सी के
आधे क़बीले को यह इलाक़ा दिया। उसमें वह
पूरा मुल्क शामिल था जिस पर पहले अमोरियों
का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज
हुकूमत करते थे। इन शिकस्तख़ुरदा ममालिक के
देहातों समेत तमाम शहर उनके हवाले किए गए।
34जद के क़बीले ने दीबोन, अतारात, अरोईर,
35अतरात-शोफ़ान, याज़ेर, युगबहा, 36बैत-
निमरा और बैत-हारान के शहरों को दुबारा तामीर
किया। उन्होंने उनकी फ़सीलें बनाईं और अपने
मवेशियों के लिए बाड़े भी। 37रूबिन के क़बीले ने
हसबोन, इलियाली, क़िरियतायम, 38नबू, बाल-
मऊन और सिबमाह दुबारा तामीर किए। नबू और
बाल-मऊन के नाम बदल गए, क्योंकि उन्होंने उन
शहरों को नए नाम दिए जो उन्होंने दुबारा तामीर
किए।
39मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद ने
जिलियाद जाकर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया और
उसके तमाम अमोरी बाशिंदों को निकाल दिया।
40चुनाँचे मूसा ने मकीरियों को जिलियाद की
सरज़मीन दे दी, और वह वहाँ आबाद हुए।
41मनस्सी के एक आदमी बनाम याईर ने उस
इलाक़े में कुछ बस्तियों पर क़ब्ज़ा करके उन्हें
हव्वोत-याईर यानी ‘याईर की बस्तियाँ’ का नाम
दिया। 42इसी तरह उस क़बीले के एक और
आदमी बनाम नूबह ने जाकर क़नात और उसके
देहातों पर क़ब्ज़ा कर लिया। उसने शहर का नाम
नूबह रखा।

इसराईल के सफ़र के मरहले

33 ज़ैल में उन जगहों के नाम हैं जहाँ
जहाँ इसराईली क़बीले अपने दस्तों के
मुताबिक़ मूसा और हारून की राहनुमाई में मिसर
से निकलकर ख़ैमाज़न हुए थे। 2रब के हुक्म पर
मूसा ने हर जगह का नाम क़लमबंद किया जहाँ

उन्होंने अपने ख़ैमे लगाए थे। उन जगहों के नाम
यह हैं :
3पहले महीने के पंद्रहवें दिन इसराईली
रामसीस से रवाना हुए। यानी फ़सह के दिन के
बाद के दिन वह बड़े इख़्तियार के साथ तमाम
मिसरियों के देखते देखते चले गए। 4मिसरी उस
वक़्त अपने पहलौठों को दफ़न कर रहे थे, क्योंकि
रब ने पहलौठों को मारकर उनके देवताओं की
अदालत की थी।
5रामसीस से इसराईली सुक्कात पहुँच गए
जहाँ उन्होंने पहली मरतबा अपने डेरे लगाए।
6वहाँ से वह एताम पहुँचे जो रेगिस्तान के
किनारे पर वाक़े है। 7एताम से वह वापस मुड़कर
फ़ी-हख़ीरोत की तरफ़ बढ़े जो बाल-सफ़ोन के
मशरिक़ में है। वह मिजदाल के क़रीब ख़ैमाज़न
हुए। 8फिर वह फ़ी-हख़ीरोत से कूच करके समुंदर
में से गुज़र गए। इसके बाद वह तीन दिन एताम
के रेगिस्तान में सफ़र करते करते मारा पहुँच गए
और वहाँ अपने ख़ैमे लगाए। 9मारा से वह एलीम
चले गए जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त
थे। वहाँ ठहरने के बाद 10वह बहरे-क़ुलज़ुम के
साहिल पर ख़ैमाज़न हुए, 11फिर दश्ते-सीन में
पहुँच गए।
12उनके अगले मरहले यह थे : दुफ़क़ा,
13-37अलूस, रफ़ीदीम जहाँ पीने का पानी
दस्तयाब न था, दश्ते-सीना, क़ब्रोत-हत्तावा,
हसीरात, रितमा, रिम्मोन-फ़ारस, लिबना,
रिस्सा, क़हीलाता, साफ़र पहाड़, हरादा,
मक़हीलोत, तहत, तारह, मितक़ा, हशमूना,
मौसीरोत, बनी-याक़ान, होर-हज्जिदजाद,
युतबाता, अबरूना, अस्यून-जाबर, दश्ते-सीन
में वाक़े क़ादिस और होर पहाड़ जो अदोम की
सरहद पर वाक़े है।
38वहाँ रब ने हारून इमाम को हुक्म दिया कि
वह होर पहाड़ पर चढ़ जाए। वहीं वह पाँचवें माह
के पहले दिन फ़ौत हुआ। इसराईलियों को मिसर
से निकले 40 साल गुज़र चुके थे। 39उस वक़्त
हारून 123 साल का था।
40उन दिनों में अराद के कनानी बादशाह ने
सुना कि इसराईली मेरे मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे
हैं। वह कनान के जुनूब में हुकूमत करता था।
41-47होर पहाड़ से रवाना होकर इसराईली
ज़ैल की जगहों पर ठहरे : ज़लमूना, फ़ूनोन,
ओबोत, ऐये-अबारीम जो मोआब के इलाक़े में
था, दीबोन-जद, अलमून-दिबलातायम और नबू
के क़रीब वाक़े अबारीम का पहाड़ी इलाक़ा।
48वहाँ से उन्होंने यरदन की वादी में उतरकर
मोआब के मैदानी इलाक़े में अपने डेरे लगाए। अब
वह दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू
शहर के सामने थे। 49उनके ख़ैमे बैत-यसीमोत से
लेकर अबील-शित्तीम तक लगे थे।

तमाम कनानी बाशिंदों को निकालने का हुक्म

50वहाँ रब ने मूसा से कहा, 51“इसराई-
लियों को बताना कि जब तुम दरियाए-यरदन को
पार करके मुल्के-कनान में दाख़िल होगे 52तो
लाज़िम है कि तुम तमाम बाशिंदों को निकाल
दो। उनके तराशे और ढाले हुए बुतों को तोड़ डालो
और उनकी ऊँची जगहों के मंदिरों को तबाह करो।
53मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उसमें आबाद हो जाओ,
क्योंकि मैंने यह मुल्क तुम्हें दे दिया है। यह मेरी
तरफ़ से तुम्हारी मौरूसी मिलकियत है। 54मुल्क
को मुख़्तलिफ़ क़बीलों और ख़ानदानों में क़ुरा
डालकर तक़सीम करना। हर ख़ानदान के अफ़राद
की तादाद का लिहाज़ रखना। बड़े ख़ानदान को
निसबतन ज़्यादा ज़मीन देना और छोटे ख़ानदान
को निसबतन कम ज़मीन। 55लेकिन अगर तुम
मुल्क के बाशिंदों को नहीं निकालोगे तो बचे हुए
तुम्हारी आँखों में ख़ार और तुम्हारे पहलुओं में
काँटे बनकर तुम्हें उस मुल्क में तंग करेंगे जिसमें
तुम आबाद होगे। 56फिर मैं तुम्हारे साथ वह कुछ
करूँगा जो उनके साथ करना चाहता हूँ।”

मुल्के-कनान की सरहद्दें

34 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बताना कि जब तुम उस
मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें मीरास में दूँगा
तो उस की सरहद्दें यह होंगी :
3उस की जुनूबी सरहद दश्ते-सीन में अदोम
की सरहद के साथ साथ चलेगी। मशरिक़ में
वह बहीराए-मुरदार के जुनूबी साहिल से शुरू
होगी, फिर इन जगहों से होकर मग़रिब की तरफ़
गुज़रेगी : 4दर्राए-अक़्रब्बीम के जुनूब में से,
दश्ते-सीन में से, क़ादिस-बरनीअ के जुनूब में से
हसर-अद्दार और अज़मून में से। 5वहाँ से वह
मुड़कर मिसर की सरहद पर वाक़े वादीए-मिसर
के साथ साथ बहीराए-रूम तक पहुँचेगी। 6उस की
मग़रिबी सरहद बहीराए-रूम का साहिल होगा।
7उस की शिमाली सरहद बहीराए-रूम से लेकर
इन जगहों से होकर मशरिक़ की तरफ़ गुज़रेगी :
होर पहाड़, 8लबो-हमात, सिदाद, 9ज़िफ़रून
और हसर-एनान। हसर-एनान शिमाली सरहद
का सबसे मशरिक़ी मक़ाम होगा। 10उस की
मशरिक़ी सरहद शिमाल में हसर-एनान से शुरू
होगी। फिर वह इन जगहों से होकर जुनूब की
तरफ़ गुज़रेगी : सिफ़ाम, 11रिबला जो ऐन के
मशरिक़ में है और किन्नरत यानी गलील की झील
के मशरिक़ में वाक़े पहाड़ी इलाक़ा। 12इसके बाद
वह दरियाए-यरदन के किनारे किनारे गुज़रती हुई
बहीराए-मुरदार तक पहुँचेगी। यह तुम्हारे मुल्क
की सरहद्दें होंगी।”
13मूसा ने इसराईलियों से कहा, “यह वही
मुल्क है जिसे तुम्हें क़ुरा डालकर तक़सीम करना
है। रब ने हुक्म दिया है कि उसे बाक़ी साढ़े नौ
क़बीलों को देना है। 14क्योंकि अढ़ाई क़बीलों के
ख़ानदानों को उनकी मीरास मिल चुकी है यानी
रूबिन और जद के पूरे क़बीले और मनस्सी के
आधे क़बीले को। 15उन्हें यहाँ, दरियाए-यरदन के
मशरिक़ में यरीहू के सामने ज़मीन मिल चुकी है।”

मुल्क तक़सीम करने के ज़िम्मेदार आदमी

16रब ने मूसा से कहा, 17“इलियज़र इमाम
और यशुअ बिन नून लोगों के लिए मुल्क तक़सीम
करें। 18हर क़बीले के एक एक राहनुमा को भी
चुनना ताकि वह तक़सीम करने में मदद करे।
जिनको तुम्हें चुनना है उनके नाम यह हैं :
19यहूदाह के क़बीले का कालिब बिन यफ़ुन्ना,
20शमाऊन के क़बीले का समुएल बिन
अम्मीहूद,
21बिनयमीन के क़बीले का इलीदाद बिन
किस्लोन,
22दान के क़बीले का बुक़्क़ी बिन युगली,
23मनस्सी के क़बीले का हन्नियेल बिन अफ़ूद,
24इफ़राईम के क़बीले का क़मुएल बिन
सिफ़तान,
25ज़बूलून के क़बीले का इलीसफ़न बिन
फ़रनाक,
26इशकार के क़बीले का फ़लतियेल बिन
अज़्ज़ान,
27आशर के क़बीले का अख़ीहूद बिन शलूमी,
28नफ़ताली के क़बीले का फ़िदाहेल बिन
अम्मीहूद।”
29रब ने इन्हीं आदमियों को मुल्क को
इसराईलियों में तक़सीम करने की ज़िम्मा-
दारी दी।

लावियों के लिए शहर

35 इसराईली अब तक मोआब के मैदानी
इलाक़े में दरियाए-यरदन के मशरिक़ी
किनारे पर यरीहू के सामने थे। वहाँ रब ने मूसा से
कहा,
2“इसराईलियों को बता दे कि वह लावियों को
अपनी मिली हुई ज़मीनों में से रहने के लिए शहर
दें। उन्हें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने की ज़मीन
भी मिले। 3फिर लावियों के पास रहने के लिए
शहर और अपने जानवर चराने के लिए ज़मीन
होगी। 4चराने के लिए ज़मीन शहर के इर्दगिर्द
होगी, और चारों तरफ़ का फ़ासला फ़सीलों से

1,500 फ़ुट हो। 5चराने की यह ज़मीन मुरब्बा
शक्ल की होगी जिसके हर पहलू का फ़ासला
3,000 फ़ुट हो। शहर इस मुरब्बा शक्ल के बीच
में हो। यह रक़बा शहर के बाशिंदों के लिए हो
ताकि वह अपने मवेशी चरा सकें।

ग़ैरइरादी ख़ूनरेज़ी के लिए पनाह के शहर

6-7लावियों को कुल 48 शहर देना। इनमें से
छः पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उनमें ऐसे लोग
पनाह ले सकेंगे जिनके हाथों ग़ैरइरादी तौर पर
कोई हलाक हुआ हो। 8हर क़बीला लावियों को
अपने इलाक़े के रक़बे के मुताबिक़ शहर दे। जिस
क़बीले का इलाक़ा बड़ा है उसे लावियों को ज़्यादा
शहर देने हैं जबकि जिस क़बीले का इलाक़ा छोटा
है वह लावियों को कम शहर दे।”

9फिर रब ने मूसा से कहा, 10“इसराईलियों
को बताना कि दरियाए-यरदन को पार करने के
बाद 11कुछ पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उनमें
वह शख़्स पनाह ले सकेगा जिसके हाथों ग़ैरइरादी
तौर पर कोई हलाक हुआ हो। 12वहाँ वह इंतक़ाम
लेनेवाले से पनाह ले सकेगा और जमात की
अदालत के सामने खड़े होने से पहले मारा नहीं
जा सकेगा। 13इसके लिए छः शहर चुन लो।
14तीन दरियाए-यरदन के मशरिक़ में और तीन
मुल्के-कनान में हों। 15यह छः शहर हर किसी
को पनाह देंगे, चाहे वह इसराईली, परदेसी या
उनके दरमियान रहनेवाला ग़ैरशहरी हो। जिससे
भी ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो वह
वहाँ पनाह ले सकता है।

16-18अगर किसी ने किसी को जान-बूझकर
लोहे, पत्थर या लकड़ी की किसी चीज़ से मार
डाला हो वह क़ातिल है और उसे सज़ाए-मौत देनी
है। 19मक़तूल का सबसे क़रीबी रिश्तेदार उसे
तलाश करके मार दे। 20-21क्योंकि जो नफ़रत
या दुश्मनी के बाइस जान-बूझकर किसी को यों
धक्का दे, उस पर कोई चीज़ फेंक दे या उसे
मुक्का मारे कि वह मर जाए वह क़ातिल है और
उसे सज़ाए-मौत देनी है।

22लेकिन वह क़ातिल नहीं है जिससे दुश्मनी के
बाइस नहीं बल्कि इत्तफ़ाक़ से और ग़ैरइरादी तौर
पर कोई हलाक हुआ हो, चाहे उसने उसे धक्का
दिया, कोई चीज़ उस पर फेंक दी 23या कोई
पत्थर उस पर गिरने दिया। 24अगर ऐसा हुआ तो
लाज़िम है कि जमात इन हिदायात के मुताबिक़
उसके और इंतक़ाम लेनेवाले के दरमियान फ़ैसला
करे। 25अगर मुलज़िम बेक़ुसूर है तो जमात उस
की हिफ़ाज़त करके उसे पनाह के उस शहर में
वापस ले जाए जिसमें उसने पनाह ली है। वहाँ वह
मुक़द्दस तेल से मसह किए गए इमामे-आज़म की
मौत तक रहे। 26लेकिन अगर यह शख़्स इससे
पहले पनाह के शहर से निकले तो वह महफ़ूज़
नहीं होगा। 27अगर उसका इंतक़ाम लेनेवाले से
सामना हो जाए तो इंतक़ाम लेनेवाले को उसे मार
डालने की इजाज़त होगी। अगर वह ऐसा करे तो
बेक़ुसूर रहेगा। 28पनाह लेनेवाला इमामे-आज़म
की वफ़ात तक पनाह के शहर में रहे। इसके बाद
ही वह अपने घर वापस जा सकता है। 29यह
उसूल दायमी हैं। जहाँ भी तुम रहते हो तुम्हें हमेशा
इन पर अमल करना है।

30जिस पर क़त्ल का इलज़ाम लगाया गया हो
उसे सिर्फ़ इस सूरत में सज़ाए-मौत दी जा सकती
है कि कम अज़ कम दो गवाह हों। एक गवाह
काफ़ी नहीं है।

31क़ातिल को ज़रूर सज़ाए-मौत देना। ख़ाह
वह इससे बचने के लिए कोई भी मुआवज़ा दे
उसे आज़ाद न छोड़ना बल्कि सज़ाए-मौत देना।
32उस शख़्स से भी पैसे क़बूल न करना जिससे
ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो और जो
इस सबब से पनाह के शहर में रह रहा है। उसे
इजाज़त नहीं कि वह पैसे देकर पनाह का शहर
छोड़े और अपने घर वापस चला जाए। लाज़िम है
कि वह इसके लिए इमामे-आज़म की वफ़ात का
इंतज़ार करे।

33जिस मुल्क में तुम रहते हो उस की मुक़द्दस
हालत को नापाक न करना। जब किसी को उसमें
क़त्ल किया जाए तो वह नापाक हो जाता है।

जब इस तरह ख़ून बहता है तो मुल्क की मुक़द्दस हालत सिर्फ़ उस शख़्स के ख़ून बहने से बहाल हो जाती है जिसने यह ख़ून बहाया है। यानी मुल्क का सिर्फ़ क़ातिल की मौत से ही कफ़्फ़ारा दिया
जा सकता है। 34उस मुल्क को नापाक न करना जिसमें तुम आबाद हो और जिसमें मैं सुकूनत करता हूँ। क्योंकि मैं रब हूँ जो इसराईलियों के दरमियान सुकूनत करता हूँ।”

एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन शादी से दूसरे क़बीले में मुंतक़िल नहीं हो सकती

36 एक दिन जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ के कुंबे से निकले हुए आबाई घरानों के सरपरस्त मूसा और उन सरदारों के पास आए जो दीगर आबाई घरानों
के सरपरस्त थे। 2उन्होंने कहा, “रब ने आपको हुक्म दिया था कि आप क़ुरा डालकर मुल्क को इसराईलियों में तक़सीम करें। उस वक़्त उसने यह भी कहा था कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की बेटियों को उस की मौरूसी ज़मीन मिलनी है।
3अगर वह इसराईल के किसी और क़बीले के मर्दों से शादी करें तो फिर यह ज़मीन जो हमारे क़बीले का मौरूसी हिस्सा है उस क़बीले का मौरूसी हिस्सा बनेगी और हम उससे महरूम हो जाएंगे। फिर हमारा क़बायली इलाक़ा छोटा हो जाएगा।
4और अगर हम यह ज़मीन वापस भी ख़रीदें तो भी वह अगले बहाली के साल में दूसरे क़बीले को वापस चली जाएगी जिसमें इन औरतों ने शादी की है। इस तरह वह हमेशा के लिए हमारे हाथ से निकल जाएगी।”

5मूसा ने रब के हुक्म पर इसराईलियों को बताया, “जिलियाद के मर्द हक़-बजानिब हैं।
6इसलिए रब की हिदायत यह है कि सिलाफ़िहाद की बेटियों को हर आदमी से शादी करने की इजाज़त है, लेकिन सिर्फ़ इस सूरत में कि वह उनके अपने क़बीले का हो। 7इस तरह एक
क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले में मुंतक़िल नहीं होगी। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा इलाक़ा उसी के पास रहे।

8जो भी बेटी मीरास में ज़मीन पाती है उसके लिए लाज़िम है कि वह अपने ही क़बीले के किसी मर्द से शादी करे ताकि उस की ज़मीन क़बीले के पास ही रहे। 9एक क़बीले की मौरूसी
ज़मीन किसी दूसरे क़बीले को मुंतक़िल करने की इजाज़त नहीं है। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा मौरूसी इलाक़ा उसी के पास रहे।”

10-11सिलाफ़िहाद की बेटियों महलाह, तिरज़ा, हुजलाह, मिलकाह और नुआह ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को बताया था। उन्होंने अपने चचाज़ाद भाइयों से शादी की। 12चूँकि वह
भी मनस्सी के क़बीले के थे इसलिए यह मौरूसी ज़मीन सिलाफ़िहाद के क़बीले के पास रही।

13रब ने यह अहकाम और हिदायात इसराईलियों को मूसा की मारिफ़त दीं जब वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने ख़ैमाज़न थे।

इस्तिसना

मूसा इसराईलियों से मुख़ातिब होता है

1 इस किताब में वह बातें दर्ज हैं जो मूसा ने तमाम इसराईलियों से कहीं जब वह दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर बयाबान में थे। वह यरदन की वादी में सूफ़ के क़रीब थे। एक तरफ़ फ़ारान शहर था और दूसरी तरफ़ तोफ़ल, लाबन, हसीरात और दीज़हब के शहर थे।
2अगर अदोम के पहाड़ी इलाक़े से होकर जाएँ तो होरिब यानी सीना पहाड़ से क़ादिस-बरनीअ तक का सफ़र 11 दिन में तय किया जा सकता है।

3इसराईलियों को मिसर से निकले 40 साल हो गए थे। इस साल के ग्यारहवें माह के पहले दिन मूसा ने उन्हें सब कुछ बताया जो रब ने उसे उन्हें बताने को कहा था।
4उस वक़्त वह अमोरियों के बादशाह सीहोन को शिकस्त दे चुका था जिसका दारुल-हुकूमत हसबोन था। बसन के बादशाह ओज पर भी फ़तह हासिल हो चुकी थी जिसकी हुकूमत के मरकज़ अस्तारात और इदरई थे।

5वहाँ, दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर जो मोआब के इलाक़े में था मूसा अल्लाह की शरीअत की तशरीह करने लगा। उसने कहा,

6जब तुम होरिब यानी सीना पहाड़ के पास थे तो रब हमारे ख़ुदा ने हमसे कहा, "तुम काफ़ी देर से यहाँ ठहरे हुए हो।
7अब इस जगह को छोड़कर आगे मुल्के-कनान की तरफ़ बढ़ो। अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े और उनके पड़ोस की क़ौमों के पास जाओ जो यरदन के मैदानी इलाक़े में आबाद हैं। पहाड़ी इलाक़े में, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में, जुनूब के दश्ते-नजब में, साहिली इलाक़े में, मुल्के-कनान में और लुबनान में दरियाए-फ़ुरात तक चले जाओ।
8मैंने तुम्हें यह मुल्क दे दिया है। अब जाकर उस पर क़ब्ज़ा कर लो। क्योंकि रब ने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से वादा किया था कि मैं यह मुल्क तुम्हें और तुम्हारी औलाद को दूँगा।"

राहनुमा मुक़र्रर किए गए

9उस वक़्त मैंने तुमसे कहा, "मैं अकेला तुम्हारी राहनुमाई करने की ज़िम्मेदारी नहीं उठा सकता।
10रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारी तादाद इतनी बढ़ा दी है कि आज तुम आसमान के सितारों की मानिंद बेशुमार हो।
11और रब तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा करे कि तुम्हारी तादाद मज़ीद हज़ार गुना बढ़ जाए। वह तुम्हें वह बरकत दे जिसका वादा उसने किया है।
12लेकिन मैं अकेला ही तुम्हारा बोझ उठाने और झगड़ों को निपटाने की ज़िम्मेदारी नहीं उठा सकता।
13इसलिए अपने हर क़बीले में से कुछ ऐसे दानिशमंद और समझदार आदमी चुन लो जिनकी लियाक़त को लोग मानते हैं। फिर मैं उन्हें तुम पर मुक़र्रर करूँगा।"

14यह बात तुम्हें पसंद आई। 15तुमने अपने में
से ऐसे राहनुमा चुन लिए जो दानिशमंद थे और
जिनकी लियाक़त को लोग मानते थे। फिर मैंने
उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ और पचास पचास मर्दों
पर मुक़र्रर किया। यों वह क़बीलों के निगहबान
बन गए। 16उस वक़्त मैंने उन क़ाज़ियों से कहा,
"अदालत करते वक़्त हर एक की बात ग़ौर
से सुनकर ग़ैरजानिबदार फ़ैसले करना, चाहे दो
इसराईली फ़रीक़ एक दूसरे से झगड़ा कर रहे
हों या मामला किसी इसराईली और परदेसी के
दरमियान हो। 17अदालत करते वक़्त जानिबदारी
न करना। छोटे और बड़े की बात सुनकर दोनों
के साथ एक जैसा सुलूक करना। किसी से
मत डरना, क्योंकि अल्लाह ही ने तुम्हें अदालत
करने की ज़िम्मेदारी दी है। अगर किसी मामले
में फ़ैसला करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो तो
उसे मुझे पेश करो। फिर मैं ही उसका फ़ैसला
करूँगा।" 18उस वक़्त मैंने तुम्हें सब कुछ बताया
जो तुम्हें करना था।

मुल्के-कनान में जासूस

19हमने वैसा ही किया जैसा रब ने हमें कहा
था। हम होरिब से रवाना होकर अमोरियों के
पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े। सफ़र करते करते
हम उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में से गुज़र
गए जिसे तुमने देख लिया है। आख़िरकार हम
क़ादिस-बरनीअ पहुँच गए। 20वहाँ मैंने तुमसे
कहा, "तुम अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े तक पहुँच
गए हो जो रब हमारा ख़ुदा हमें देनेवाला है।
21देख, रब तेरे ख़ुदा ने तुझे यह मुल्क दे दिया
है। अब जाकर उस पर क़ब्ज़ा कर ले जिस तरह
रब तेरे बापदादा के ख़ुदा ने तुझे बताया है। मत
डरना और बेदिल न हो जाना!"

22लेकिन तुम सब मेरे पास आए और कहा,
"क्यों न हम जाने से पहले कुछ आदमी भेजें
जो मुल्क के हालात दरियाफ़्त करें और वापस
आकर हमें उस रास्ते के बारे में बताएँ जिस पर
हमें जाना है और उन शहरों के बारे में इत्तला दें
जिनके पास हम पहुँचेंगे।" 23यह बात मुझे पसंद
आई। मैंने इस काम के लिए हर क़बीले के एक
आदमी को चुनकर भेज दिया। 24जब यह बारह
आदमी पहाड़ी इलाक़े में जाकर वादीए-इसकाल
में पहुँचे तो उस की तफ़तीश की। 25फिर वह
मुल्क का कुछ फल लेकर लौट आए और हमें
मुल्क के बारे में इत्तला देकर कहा, "जो मुल्क
रब हमारा ख़ुदा हमें देनेवाला है वह अच्छा है।"

26लेकिन तुम जाना नहीं चाहते थे बल्कि
सरकशी करके रब अपने ख़ुदा का हुक्म न माना।
27तुमने अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाते हुए कहा, "रब
हमसे नफ़रत रखता है। वह हमें मिसर से निकाल
लाया है ताकि हमें अमोरियों के हाथों हलाक
करवाए। 28हम कहाँ जाएँ? हमारे भाइयों ने हमें
बेदिल कर दिया है। वह कहते हैं, 'वहाँ के लोग
हमसे ताक़तवर और दराज़क़द हैं। उनके बड़े बड़े
शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। वहाँ
हमने अनाक़ की औलाद भी देखी जो देवक़ामत
हैं'।"

29मैंने कहा, "न घबराओ और न उनसे ख़ौफ़
खाओ। 30रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे आगे आगे
चलता हुआ तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम ख़ुद देख
चुके हो कि वह किस तरह मिसर 31और रेगिस्तान
में तुम्हारे लिए लड़ा। यहाँ भी वह ऐसा ही करेगा।
तू ख़ुद गवाह है कि बयाबान में पूरे सफ़र के दौरान
रब तुझे यों उठाए फिरा जिस तरह बाप अपने
बेटे को उठाए फिरता है। इस तरह चलते चलते
तुम यहाँ तक पहुँच गए।" 32इसके बावुजूद तुमने
रब अपने ख़ुदा पर भरोसा न रखा। 33तुमने यह
बात नज़रंदाज़ की कि वह सफ़र के दौरान रात के
वक़्त आग और दिन के वक़्त बादल की सूरत में
तुम्हारे आगे आगे चलता रहा ताकि तुम्हारे लिए
ख़ैमे लगाने की जगहें मालूम करे और तुम्हें रास्ता
दिखाए।

34जब रब ने तुम्हारी यह बातें सुनीं तो उसे
ग़ुस्सा आया और उसने क़सम खाकर कहा,
35"इस शरीर नसल का एक मर्द भी उस अच्छे
मुल्क को नहीं देखेगा अगरचे मैंने क़सम खाकर

तुम्हारे बापदादा से वादा किया था कि मैं उसे उन्हें
दूँगा। 36सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना उसे देखेगा।
मैं उसे और उस की औलाद को वह मुल्क दूँगा
जिसमें उसने सफ़र किया है, क्योंकि उसने पूरे
तौर पर रब की पैरवी की।”

37तुम्हारी वजह से रब मुझसे भी नाराज़ हुआ
और कहा, “तू भी उसमें दाख़िल नहीं होगा।
38लेकिन तेरा मददगार यशुअ बिन नून दाख़िल
होगा। उस की हौसलाअफ़्ज़ाई कर, क्योंकि वह
मुल्क पर क़ब्ज़ा करने में इसराईल की राहनुमाई
करेगा।” 39तुमसे रब ने कहा, “तुम्हारे बच्चे जो
अभी अच्छे और बुरे में इम्तियाज़ नहीं कर सकते,
वही मुल्क में दाख़िल होंगे, वही बच्चे जिनके बारे
में तुमने कहा कि दुश्मन उन्हें मुल्के-कनान में
छीन लेंगे। उन्हें मैं मुल्क दूँगा, और वह उस पर
क़ब्ज़ा करेंगे। 40लेकिन तुम ख़ुद आगे न बढ़ो।
पीछे मुड़कर दुबारा रेगिस्तान में बहरे-क़ुलज़ुम की
तरफ़ सफ़र करो।”

41तब तुमने कहा, “हमने रब का गुनाह किया
है। अब हम मुल्क में जाकर लड़ेंगे, जिस तरह
रब हमारे ख़ुदा ने हमें हुक्म दिया है।” चुनाँचे यह
सोचते हुए कि उस पहाड़ी इलाक़े पर हमला करना
आसान होगा, हर एक मुसल्लह हुआ। 42लेकिन
रब ने मुझसे कहा, “उन्हें बताना कि वहाँ जंग
करने के लिए न जाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ
नहीं हूँगा। तुम अपने दुश्मनों के हाथों शिकस्त
खाओगे।”

43मैंने तुम्हें यह बताया, लेकिन तुमने मेरी न
सुनी। तुमने सरकशी करके रब का हुक्म न माना
बल्कि मग़रूर होकर पहाड़ी इलाक़े में दाख़िल
हुए। 44वहाँ के अमोरी बाशिंदे तुम्हारा सामना
करने निकले। वह शहद की मक्खियों के ग़ोल
की तरह तुम पर टूट पड़े और तुम्हारा ताक़्क़ुब
करके तुम्हें सईर से हुरमा तक मारते गए।

45तब तुम वापस आकर रब के सामने
ज़ारो-क़तार रोने लगे। लेकिन उसने तव-
ज्जुह न दी बल्कि तुम्हें नज़रंदाज़ किया। 46इसके
बाद तुम बहुत दिनों तक क़ादिस-बरनीअ में रहे।

रेगिस्तान में दुबारा सफ़र

2 फिर जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया
था हम पीछे मुड़कर रेगिस्तान में बहरे-
क़ुलज़ुम की तरफ़ सफ़र करने लगे। काफ़ी देर
तक हम सईर यानी अदोम के पहाड़ी इलाक़े के
किनारे किनारे फिरते रहे।

2एक दिन रब ने मुझसे कहा, 3“तुम बहुत देर
से इस पहाड़ी इलाक़े के किनारे किनारे फिर रहे
हो। अब शिमाल की तरफ़ सफ़र करो। 4क़ौम
को बताना, अगले दिनों में तुम सईर के मुल्क
में से गुज़रोगे जहाँ तुम्हारे भाई एसौ की औलाद
आबाद है। वह तुमसे डरेंगे। तो भी बड़ी एहतियात
से गुज़रना। 5उनके साथ जंग न छेड़ना, क्योंकि
मैं तुम्हें उनके मुल्क का एक मुरब्बा फ़ुट भी नहीं
दूँगा। मैंने सईर का पहाड़ी इलाक़ा एसौ और उस
की औलाद को दिया है। 6लाज़िम है कि तुम
खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात पैसे देकर
ख़रीदो।”

7जो भी काम तूने किया है रब ने उस पर
बरकत दी है। इस वसी रेगिस्तान में पूरे सफ़र के
दौरान उसने तेरी निगहबानी की। इन 40 सालों
के दौरान रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ था, और तेरी
तमाम ज़रूरियात पूरी होती रहीं।

8चुनाँचे हम सईर को छोड़कर जहाँ हमारे भाई
एसौ की औलाद आबाद थी दूसरे रास्ते से आगे
निकले। हमने वह रास्ता छोड़ दिया जो ऐलात
और अस्यून-जाबर के शहरों से बहीराए-मुरदार
तक पहुँचाता है और मोआब के बयाबान की तरफ़
बढ़ने लगे। 9वहाँ रब ने मुझसे कहा, “मोआब के
बाशिंदों की मुख़ालफ़त न करना और न उनके
साथ जंग छेड़ना, क्योंकि मैं उनके मुल्क का कोई
भी हिस्सा तुझे नहीं दूँगा। मैंने आर शहर को लूत
की औलाद को दिया है।”

10पहले ऐमी वहाँ रहते थे जो अनाक़ की
औलाद की तरह ताक़तवर, दराज़क़द और तादाद
में ज़्यादा थे। 11अनाक़ की औलाद की तरह वह

रफ़ाइयों में शुमार किए जाते थे, लेकिन मोआबी
उन्हें ऐमी कहते थे।
12इसी तरह क़दीम ज़माने में होरी सईर में
आबाद थे, लेकिन एसौ की औलाद ने उन्हें वहाँ
से निकाल दिया था। जिस तरह इसराईलियों ने
बाद में उस मुल्क में किया जो रब ने उन्हें दिया
था उसी तरह एसौ की औलाद बढ़ते बढ़ते होरियों
को तबाह करके उनकी जगह आबाद हुए थे।
13रब ने कहा, "अब जाकर वादीए-ज़िरद को
उबूर करो।" हमने ऐसा ही किया। 14हमें क़ादिस-
बरनीअ से रवाना हुए 38 साल हो गए थे। अब
वह तमाम आदमी मर चुके थे जो उस वक़्त जंग
करने के क़ाबिल थे। वैसा ही हुआ था जैसा रब ने
क़सम खाकर कहा था। 15रब की मुख़ालफ़त के
बाइस आख़िरकार ख़ैमागाह में उस नसल का एक
मर्द भी न रहा। 16जब वह सब मर गए थे 17तब
रब ने मुझसे कहा, 18"आज तुम्हें आर शहर से
होकर मोआब के इलाक़े में से गुज़रना है। 19फिर
तुम अम्मोनियों के इलाक़े तक पहुँचोगे। उनकी
भी मुख़ालफ़त न करना, और न उनके साथ जंग
छेड़ना, क्योंकि मैं उनके मुल्क का कोई भी हिस्सा
तुम्हें नहीं दूँगा। मैंने यह मुल्क लूत की औलाद को
दिया है।"
20हक़ीक़त में अम्मोनियों का मुल्क भी
रफ़ाइयों का मुल्क समझा जाता था जो
क़दीम ज़माने में वहाँ आबाद थे। अम्मोनी
उन्हें ज़मज़ुमी कहते थे, 21और वह देव-
क़ामत थे, ताक़तवर और तादाद में ज़्यादा।
वह अनाक़ की औलाद जैसे दराज़क़द थे। जब
अम्मोनी मुल्क में आए तो रब ने रफ़ाइयों को
उनके आगे आगे तबाह कर दिया। चुनाँचे अम्मोनी
बढ़ते बढ़ते उन्हें निकालते गए और उनकी जगह
आबाद हुए, 22बिलकुल उसी तरह जिस तरह
रब ने एसौ की औलाद के आगे आगे होरियों को
तबाह कर दिया था जब वह सईर के मुल्क में आए
थे। वहाँ भी वह बढ़ते बढ़ते होरियों को निकालते
गए और उनकी जगह आबाद हुए। 23इसी तरह
एक और क़दीम क़ौम बनाम अव्वी को भी उसके
मुल्क से निकाला गया। अव्वी ग़ज़्ज़ा तक आबाद
थे, लेकिन जब कफ़तूरी कफ़तूर यानी क्रेते से
आए तो उन्होंने उन्हें तबाह कर दिया और उनकी
जगह आबाद हो गए।

सीहोन बादशाह से जंग

24रब ने मूसा से कहा, "अब जाकर वादीए-
अरनोन को उबूर करो। यों समझो कि मैं हसबोन
के अमोरी बादशाह सीहोन को उसके मुल्क समेत
तुम्हारे हवाले कर चुका हूँ। उस पर क़ब्ज़ा करना
शुरू करो और उसके साथ जंग करने का मौक़ा
ढूँडो। 25इसी दिन से मैं तमाम क़ौमों में तुम्हारे
बारे में दहशत और ख़ौफ़ पैदा करूँगा। वह तुम्हारी
ख़बर सुनकर ख़ौफ़ के मारे थरथराएँगी और
काँपेंगी।"
26मैंने दश्ते-क़दीमात से हसबोन के बाद-
शाह सीहोन के पास क़ासिद भेजे। मेरा पैग़ाम
नफ़रत और मुख़ालफ़त से ख़ाली था। वह यह
था, 27"हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम
शाहराह पर ही रहेंगे और उससे न बाईं, न दाईं
तरफ़ हटेंगे। 28हम खाने और पीने की तमाम
ज़रूरियात के लिए मुनासिब पैसे देंगे। हमें पैदल
अपने मुल्क में से गुज़रने दें, 29जिस तरह सईर के
बाशिंदों एसौ की औलाद और आर के रहनेवाले
मोआबियों ने हमें गुज़रने दिया। क्योंकि हमारी
मनज़िल दरियाए-यरदन के मग़रिब में है, वह
मुल्क जो रब हमारा ख़ुदा हमें देनेवाला है।"
30लेकिन हसबोन के बादशाह सीहोन ने हमें
गुज़रने न दिया, क्योंकि रब तुम्हारे ख़ुदा ने उसे
बे-लचक और हमारी बात से इनकार करने पर
आमादा कर दिया था ताकि सीहोन हमारे क़ाबू
में आ जाए। और बाद में ऐसा ही हुआ। 31रब ने
मुझसे कहा, "यों समझ ले कि मैं सीहोन और
उसके मुल्क को तेरे हवाले करने लगा हूँ। अब
निकलकर उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू करो।"
32जब सीहोन अपनी सारी फ़ौज लेकर हमारा
मुक़ाबला करने के लिए यहज़ आया 33तो रब
हमारे ख़ुदा ने हमें पूरी फ़तह बख़्शी। हमने सीहोन,

उसके बेटों और पूरी क़ौम को शिकस्त दी। 34उस वक़्त हमने उसके तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया और उनके तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को मार डाला। कोई भी न बचा। 35हमने सिर्फ़ मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

36वादीए-अरनोन के किनारे पर वाक़े अरोईर से लेकर जिलियाद तक हर शहर को शिकस्त माननी पड़ी। इसमें वह शहर भी शामिल था जो वादीए-अरनोन में था। रब हमारे ख़ुदा ने उन सबको हमारे हवाले कर दिया। 37लेकिन तुमने अम्मोनियों का मुल्क छोड़ दिया और न दरियाए-यब्बोक़ के इर्दगिर्द के इलाक़े, न उसके पहाड़ी इलाक़े के शहरों को छेड़ा, क्योंकि रब हमारे ख़ुदा ने ऐसा करने से तुम्हें मना किया था।

बसन के बादशाह ओज की शिकस्त

3 इसके बाद हम शिमाल में बसन की तरफ़ बढ़ गए। बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज के साथ निकलकर हमारा मुक़ाबला करने के लिए इदरई आया। 2रब ने मुझसे कहा, “उससे मत डर। मैं उसे, उस की पूरी फ़ौज और उसका मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उसके साथ वह कुछ कर जो तूने अमोरी बादशाह सीहोन के साथ किया जो हसबोन में हुकूमत करता था।”

3ऐसा ही हुआ। रब हमारे ख़ुदा की मदद से हमने बसन के बादशाह ओज और उस की तमाम क़ौम को शिकस्त दी। हमने सबको हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। 4उसी वक़्त हमने उसके तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया। हमने कुल 60 शहरों पर यानी अरजूब के सारे इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया जिस पर ओज की हुकूमत थी। 5इन तमाम शहरों की हिफ़ाज़त ऊँची ऊँची फ़सीलों और कुंडेवाले दरवाज़ों से की गई थी। देहात में बहुत-सी ऐसी आबादियाँ भी मिल गईं जिनकी फ़सीलें नहीं थीं। 6हमने उनके साथ वह कुछ किया जो हमने हसबोन के बादशाह सीहोन के इलाक़े के साथ किया था। हमने सब कुछ रब के हवाले करके हर शहर को और तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को हलाक कर डाला। 7हमने सिर्फ़ तमाम मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

8यों हमने उस वक़्त अमोरियों के इन दो बादशाहों से दरियाए-यरदन का मशरिक़ी इलाक़ा वादीए-अरनोन से लेकर हरमून पहाड़ तक छीन लिया। 9(सैदा के बाशिंदे हरमून को सिरयून कहते हैं जबकि अमोरियों ने उसका नाम सनीर रखा)। 10हमने ओज बादशाह के पूरे इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसमें मैदाने-मुरतफ़ा के तमाम शहर शामिल थे, नीज़ सलका और इदरई तक जिलियाद और बसन के पूरे इलाक़े।

11बादशाह ओज देवक़ामत क़बीले रफ़ाई का आख़िरी मर्द था। उसका लोहे का ताबूत 13 से ज़ायद फ़ुट लंबा और छः फ़ुट चौड़ा था और आज तक अम्मोनियों के शहर रब्बा में देखा जा सकता है।

यरदन के मशरिक़ में मुल्क की तक़सीम

12जब हमने दरियाए-यरदन के मशरिक़ी इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया तो मैंने रूबिन और जद के क़बीलों को उसका जुनूबी हिस्सा शहरों समेत दिया। इस इलाक़े की जुनूबी सरहद दरियाए-अरनोन पर वाक़े शहर अरोईर है जबकि शिमाल में इसमें जिलियाद के पहाड़ी इलाक़े का आधा हिस्सा भी शामिल है। 13जिलियाद का शिमाली हिस्सा और बसन का मुल्क मैंने मनस्सी के आधे क़बीले को दिया।

(बसन में अरजूब का इलाक़ा है जहाँ पहले ओज बादशाह की हुकूमत थी और जो रफ़ाइयों यानी देवक़ामत अफ़राद का मुल्क कहलाता था। 14मनस्सी के क़बीले के एक आदमी बनाम याईर ने अरजूब पर जसूरियों और माकातियों की सरहद तक क़ब्ज़ा कर लिया था। उसने इस इलाक़े की बस्तियों को अपना नाम दिया। आज तक यही नाम हव्वोत-याईर यानी याईर की बस्तियाँ चलता है।)

15मैंने जिलियाद का शिमाली हिस्सा मनस्सी
के कुंबे मकीर को दिया 16लेकिन जिलियाद
का जुनूबी हिस्सा रूबिन और जद के क़बीलों
को दिया। इस हिस्से की एक सरहद जुनूब में
वादीए-अरनोन के बीच में से गुज़रती है जबकि
दूसरी सरहद दरियाए-यब्बोक़ है जिसके पार
अम्मोनियों की हुकूमत है। 17उस की मग़रिबी
सरहद दरियाए-यरदन है यानी किन्नरत (गलील)
की झील से लेकर बहीराए-मुरदार तक जो पिसगा
के पहाड़ी सिलसिले के दामन में है।

18उस वक़्त मैंने रूबिन, जद और मनस्सी के
क़बीलों से कहा, "रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें मीरास
में यह मुल्क दे दिया है। लेकिन शर्त यह है कि
तुम्हारे तमाम जंग करने के क़ाबिल मर्द मुसल्लह
होकर तुम्हारे इसराईली भाइयों के आगे आगे
दरियाए-यरदन को पार करें। 19सिर्फ़ तुम्हारी
औरतें और बच्चे पीछे रहकर उन शहरों में इंतज़ार
कर सकते हैं जो मैंने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किए
हैं। तुम अपने मवेशियों को भी पीछे छोड़ सकते
हो, क्योंकि मुझे पता है कि तुम्हारे बहुत ज़्यादा
जानवर हैं। 20अपने भाइयों के साथ चलते हुए
उनकी मदद करते रहो। जब रब तुम्हारा ख़ुदा उन्हें
दरियाए-यरदन के मग़रिब में वाक़े मुल्क देगा और
वह तुम्हारी तरह आराम और सुकून से वहाँ आबाद
हो जाएंगे तब तुम अपने मुल्क में वापस जा सकते
हो।"

मूसा को यरदन पार करने की इजाज़त नहीं मिलती

21साथ साथ मैंने यशुअ से कहा, "तूने अपनी
आँखों से सब कुछ देख लिया है जो रब तुम्हारे
ख़ुदा ने इन दोनों बादशाहों सीहोन और ओज से
किया। वह यही कुछ हर उस बादशाह के साथ
करेगा जिसके मुल्क पर तू दरिया को पार करके
हमला करेगा। 22उनसे न डरो। तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद
तुम्हारे लिए जंग करेगा।"

23उस वक़्त मैंने रब से इल्तिजा करके कहा,
24"ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू अपने ख़ादिम को
अपनी अज़मत और क़ुदरत दिखाने लगा है। क्या
आसमान या ज़मीन पर कोई और ख़ुदा है जो तेरी
तरह के अज़ीम काम कर सकता है? हरगिज़
नहीं! 25मेहरबानी करके मुझे भी दरियाए-यरदन
को पार करके उस अच्छे मुल्क यानी उस बेहतरीन
पहाड़ी इलाक़े को लुबनान तक देखने की इजाज़त
दे।"

26लेकिन तुम्हारे सबब से रब मुझसे नाराज़
था। उसने मेरी न सुनी बल्कि कहा, "बस कर!
आइंदा मेरे साथ इसका ज़िक्र न करना। 27पिसगा
की चोटी पर चढ़कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ा। वहाँ
से ग़ौर से देख, क्योंकि तू ख़ुद दरियाए-यरदन
को उबूर नहीं करेगा। 28अपनी जगह यशुअ को
मुक़र्रर कर। उस की हौसलाअफ़ज़ाई कर और उसे
मज़बूत कर, क्योंकि वही इस क़ौम को दरियाए-
यरदन के मग़रिब में ले जाएगा और क़बीलों में
उस मुल्क को तक़सीम करेगा जिसे तू पहाड़ से
देखेगा।"

29चुनाँचे हम बैत-फ़ग़ूर के क़रीब वादी में ठहरे।

फ़रमाँबरदारी की अशद्द ज़रूरत

4 ऐ इसराईल, अब वह तमाम अहकाम
ध्यान से सुन ले जो मैं तुम्हें सिखाता हूँ। उन
पर अमल करो ताकि तुम ज़िंदा रहो और जाकर
उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करो जो रब तुम्हारे बापदादा
का ख़ुदा तुम्हें देनेवाला है। 2जो अहकाम मैं तुम्हें
सिखाता हूँ उनमें न किसी बात का इज़ाफ़ा करो
और न उनसे कोई बात निकालो। रब अपने ख़ुदा
के तमाम अहकाम पर अमल करो जो मैंने तुम्हें
दिए हैं। 3तुमने ख़ुद देखा है कि रब ने बाल-फ़ग़ूर
से क्या कुछ किया। वहाँ रब तेरे ख़ुदा ने हर एक
को हलाक कर डाला जिसने फ़ग़ूर के बाल देवता
की पूजा की। 4लेकिन तुममें से जितने रब अपने
ख़ुदा के साथ लिपटे रहे वह सब आज तक ज़िंदा
हैं।

5मैंने तुम्हें तमाम अहकाम यों सिखा दिए हैं
जिस तरह रब मेरे ख़ुदा ने मुझे बताया। क्योंकि
लाज़िम है कि तुम उस मुल्क में इनके ताबे रहो

जिस पर तुम क़ब्ज़ा करनेवाले हो। 6इन्हें मानो
और इन पर अमल करो तो दूसरी क़ौमों को
तुम्हारी दानिशमंदी और समझ नज़र आएगी।
फिर वह इन तमाम अहकाम के बारे में सुनकर
कहेंगी, "वाह, यह अज़ीम क़ौम कैसी दानिशमंद
और समझदार है!" 7कौन-सी अज़ीम क़ौम के
माबूद इतने क़रीब हैं जितना हमारा ख़ुदा हमारे
क़रीब है? जब भी हम मदद के लिए पुकारते
हैं तो रब हमारा ख़ुदा मौजूद होता है। 8कौन-
सी अज़ीम क़ौम के पास ऐसे मुंसिफ़ाना अहकाम
और हिदायात हैं जैसे मैं आज तुम्हें पूरी शरीअत
सुनाकर पेश कर रहा हूँ?

9लेकिन ख़बरदार, एहतियात करना और वह
तमाम बातें न भूलना जो तेरी आँखों ने देखी हैं।
वह उम्र-भर तेरे दिल में से मिट न जाएँ बल्कि
उन्हें अपने बच्चों और पोते-पोतियों को भी बताते
रहना। 10वह दिन याद कर जब तू होरिब यानी
सीना पहाड़ पर रब अपने ख़ुदा के सामने हाज़िर
था और उसने मुझे बताया, "क़ौम को यहाँ मेरे
पास जमा कर ताकि मैं उनसे बात करूँ और वह
उम्र-भर मेरा ख़ौफ़ मानें और अपने बच्चों को मेरी
बातें सिखाते रहें।"

11उस वक़्त तुम क़रीब आकर पहाड़ के दामन
में खड़े हुए। वह जल रहा था, और उस की आग
आसमान तक भड़क रही थी जबकि काले बादलों
और गहरे अंधेरे ने उसे नज़रों से छुपा दिया।
12फिर रब आग में से तुमसे हमकलाम हुआ।
तुमने उस की बातें सुनीं लेकिन उस की कोई
शक्ल न देखी। सिर्फ़ उस की आवाज़ सुनाई दी।
13उसने तुम्हारे लिए अपने अहद यानी उन 10
अहकाम का एलान किया और हुक्म दिया कि
इन पर अमल करो। फिर उसने उन्हें पत्थर की दो
तख़्तियों पर लिख दिया। 14रब ने मुझे हिदायत
की, "उन्हें वह तमाम अहकाम सिखा जिनके
मुताबिक़ उन्हें चलना होगा जब वह दरियाए-
यरदन को पार करके कनान पर क़ब्ज़ा करेंगे।"

बुतपरस्ती के बारे में आगाही

15जब रब होरिब यानी सीना पहाड़ पर तुमसे
हमकलाम हुआ तो तुमने उस की कोई शक्ल न
देखी। चुनाँचे ख़बरदार रहो 16कि तुम ग़लत काम
करके अपने लिए किसी भी शक्ल का बुत न
बनाओ। न मर्द, औरत, 17ज़मीन पर चलनेवाले
जानवर, परिंदे, 18रेंगनेवाले जानवर या मछली
का बुत बनाओ। 19जब तू आसमान की तरफ़
नज़र उठाकर आसमान का पूरा लशकर देखे
तो सूरज, चाँद और सितारों की परस्तिश और
ख़िदमत करने की आज़माइश में न पड़ना। रब तेरे
ख़ुदा ने इन चीज़ों को बाक़ी तमाम क़ौमों को अता
किया है, 20लेकिन तुम्हें उसने मिसर के भड़कते
भट्टे से निकाला है ताकि तुम उस की अपनी क़ौम
और उस की मीरास बन जाओ। और आज ऐसा
ही हुआ है।

21तुम्हारे सबब से रब ने मुझसे नाराज़ होकर
क़सम खाई कि तू दरियाए-यरदन को पार करके
उस अच्छे मुल्क में दाख़िल नहीं होगा जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे मीरास में देनेवाला है। 22मैं यहीं इसी
मुल्क में मर जाऊँगा और दरियाए-यरदन को पार
नहीं करूँगा। लेकिन तुम दरिया को पार करके उस
बेहतरीन मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे। 23हर सूरत में
वह अहद याद रखना जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारे
साथ बाँधा है। अपने लिए किसी भी चीज़ की
मूरत न बनाना। यह रब का हुक्म है, 24क्योंकि
रब तेरा ख़ुदा भस्म कर देनेवाली आग है, वह ग़यूर
ख़ुदा है।

25तुम मुल्क में जाकर वहाँ रहोगे। तुम्हारे बच्चे
और पोते-नवासे उसमें पैदा हो जाएंगे। जब इस
तरह बहुत वक़्त गुज़र जाएगा तो ख़तरा है कि तुम
ग़लत काम करके किसी चीज़ की मूरत बनाओ।
ऐसा कभी न करना। यह रब तुम्हारे ख़ुदा की
नज़र में बुरा है और उसे ग़ुस्सा दिलाएगा। 26आज
आसमान और ज़मीन मेरे गवाह हैं कि अगर तुम
ऐसा करो तो जल्दी से उस मुल्क में से मिट
जाओगे जिस पर तुम दरियाए-यरदन को पार

करके क़ब्ज़ा करोगे। तुम देर तक वहाँ जीते नहीं
रहोगे बल्कि पूरे तौर पर हलाक हो जाओगे। 27रब
तुम्हें मुल्क से निकालकर मुख़्तलिफ़ क़ौमों में
मुंतशिर कर देगा, और वहाँ सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद
बचे रहेंगे। 28वहाँ तुम इनसान के हाथों से बने हुए
लकड़ी और पत्थर के बुतों की ख़िदमत करोगे, जो
न देख सकते, न सुन सकते, न खा सकते और न
सूँघ सकते हैं।

29वहीं तू रब अपने ख़ुदा को तलाश करेगा,
और अगर उसे पूरे दिलो-जान से ढूँडे तो वह
तुझे मिल भी जाएगा। 30जब तू इस तकलीफ़
में मुब्तला होगा और यह सारा कुछ तुझ पर से
गुज़रेगा फिर आख़िरकार रब अपने ख़ुदा की तरफ़
रुजू करके उस की सुनेगा। 31क्योंकि रब तेरा
ख़ुदा रहीम ख़ुदा है। वह तुझे न तर्क करेगा और न
बरबाद करेगा। वह उस अहद को नहीं भूलेगा जो
उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा से बाँधा था।

रब ही हमारा ख़ुदा है

32दुनिया में इनसान की तख़लीक़ से लेकर
आज तक माज़ी की तफ़तीश कर। आसमान के
एक सिरे से दूसरे सिरे तक खोज लगा। क्या
इससे पहले कभी इस तरह का मोजिज़ाना काम
हुआ है? क्या किसी ने इससे पहले इस क़िस्म
के अज़ीम काम की ख़बर सुनी है? 33तूने आग
में से बोलती हुई अल्लाह की आवाज़ सुनी तो भी
जीता बचा! क्या किसी और क़ौम के साथ ऐसा
हुआ है? 34क्या किसी और माबूद ने कभी जुर्रत
की है कि रब की तरह पूरी क़ौम को एक मुल्क से
निकालकर अपनी मिलकियत बनाया हो? उसने
ऐसा ही तुम्हारे साथ किया। उसने तुम्हारे देखते
देखते मिसरियों को आज़माया, उन्हें बड़े मोजिज़े
दिखाए, उनके साथ जंग की, अपनी बड़ी क़ुदरत
और इख़्तियार का इज़हार किया और हौलनाक
कामों से उन पर ग़ालिब आ गया।

35तुझे यह सब कुछ दिखाया गया ताकि तू
जान ले कि रब ख़ुदा है। उसके सिवा कोई
और नहीं है। 36उसने तुझे नसीहत देने के लिए
आसमान से अपनी आवाज़ सुनाई। ज़मीन पर
उसने तुझे अपनी अज़ीम आग दिखाई जिसमें
से तूने उस की बातें सुनीं। 37उसे तेरे बापदादा
से प्यार था, और उसने तुझे जो उनकी औलाद
हैं चुन लिया। इसलिए वह ख़ुद हाज़िर होकर
अपनी अज़ीम क़ुदरत से तुझे मिसर से निकाल
लाया। 38उसने तेरे आगे से तुझसे ज़्यादा बड़ी
और ताक़तवर क़ौमें निकाल दीं ताकि तुझे उनका
मुल्क मीरास में मिल जाए। आज ऐसा ही हो रहा
है।

39चुनाँचे आज जान ले और ज़हन में रख कि
रब आसमान और ज़मीन का ख़ुदा है। कोई और
माबूद नहीं है। 40उसके अहकाम पर अमल कर
जो मैं तुझे आज सुना रहा हूँ। फिर तू और तेरी
औलाद कामयाब होंगे, और तू देर तक उस मुल्क
में जीता रहेगा जो रब तुझे हमेशा के लिए दे रहा
है।

यरदन के मशरिक़ में पनाह के शहर

41यह कहकर मूसा ने दरियाए-यरदन के
मशरिक़ में पनाह के तीन शहर चुन लिए। 42उनमें
वह शख़्स पनाह ले सकता था जिसने दुश्मनी
की बिना पर नहीं बल्कि ग़ैरइरादी तौर पर किसी
को जान से मार दिया था। ऐसे शहर में पनाह
लेने के सबब से उसे बदले में क़त्ल नहीं किया
जा सकता था। 43इसके लिए रूबिन के क़बीले
के लिए मैदाने-मुरतफ़ा का शहर बसर, जद के
क़बीले के लिए जिलियाद का शहर रामात और
मनस्सी के क़बीले के लिए बसन का शहर जौलान
चुना गया।

शरीअत का पेशलफ़्ज़

44दर्जे-ज़ैल वह शरीअत है जो मूसा ने
इसराईलियों को पेश की। 45मूसा ने यह अहकाम
और हिदायात उस वक़्त पेश कीं जब वह मिसर
से निकल कर 46दरियाए-यरदन के मशरिक़ी
किनारे पर थे। बैत-फ़ग़ूर उनके मुक़ाबिल था,
और वह अमोरी बादशाह सीहोन के मुल्क में

ख़ैमाज़न थे। सीहोन की रिहाइश हसबोन में थी
और उसे इसराईलियों से शिकस्त हुई थी जब
वह मूसा की राहनुमाई में मिसर से निकल आए
थे। 47उसके मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उन्होंने बसन
के मुल्क पर भी फ़तह पाई थी जिसका बादशाह
ओज था। इन दोनों अमोरी बादशाहों का यह पूरा
इलाक़ा उनके हाथ में आ गया था। यह इलाक़ा
दरियाए-यरदन के मशरिक़ में था। 48उस की
जुनूबी सरहद दरियाए-अरनोन के किनारे पर वाक़े
शहर अरोईर थी जबकि उस की शिमाली सरहद
सिरयून यानी हरमून पहाड़ थी। 49दरियाए-यरदन
का पूरा मशरिक़ी किनारा पिसगा के पहाड़ी
सिलसिले के दामन में वाक़े बहीराए-मुरदार तक
उसमें शामिल था।

दस अहकाम

5 मूसा ने तमाम इसराईलियों को जमा करके
कहा,

ऐ इसराईल, ध्यान से वह हिदायात और
अहकाम सुन जो मैं तुम्हें आज पेश कर रहा हूँ।
उन्हें सीखो और बड़ी एहतियात से उन पर अमल
करो। 2रब हमारे ख़ुदा ने होरिब यानी सीना पहाड़
पर हमारे साथ अहद बाँधा। 3उसने यह अहद
हमारे बापदादा के साथ नहीं बल्कि हमारे ही साथ
बाँधा है, जो आज इस जगह पर ज़िंदा हैं। 4रब
पहाड़ पर आग में से रूबरू होकर तुमसे हमकलाम
हुआ। 5उस वक़्त मैं तुम्हारे और रब के दरमियान
खड़ा हुआ ताकि तुम्हें रब की बातें सुनाऊँ। क्योंकि
तुम आग से डरते थे और इसलिए पहाड़ पर न
चढ़े। उस वक़्त रब ने कहा,

6"मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की
ग़ुलामी से निकाल लाया। 7मेरे सिवा किसी और
माबूद की परस्तिश न करना।

8अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की
मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर
या समुंदर में हो। 9न बुतों की परस्तिश, न उनकी
ख़िदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ।
जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और
चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। 10लेकिन जो मुझसे
मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन
पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

11रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत
मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा
करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

12सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस
तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो, उसी
तरह जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है।
13हफ़ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर,
14लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का
दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न
तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी
नौकरानी, न तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा कोई
और मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है
वह भी काम न करे। तेरे नौकर और तेरी नौकरानी
को तेरी तरह आराम का मौक़ा मिलना है। 15याद
रखना कि तू मिसर में ग़ुलाम था और कि रब तेरा
ख़ुदा ही तुझे बड़ी क़ुदरत और इख़्तियार से वहाँ
से निकाल लाया। इसलिए उसने तुझे हुक्म दिया
है कि सबत का दिन मनाना।

16अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना
जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। फिर
तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है
ख़ुशहाल होगा और देर तक जीता रहेगा।

17क़त्ल न करना।

18ज़िना न करना।

19चोरी न करना।

20अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

21अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना।
न उसके घर का, न उस की ज़मीन का, न उसके
नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उसके बैल
और न उसके गधे का बल्कि उस की किसी भी
चीज़ का लालच न करना।"

22रब ने तुम सबको यह अहकाम दिए जब
तुम सीना पहाड़ के दामन में जमा थे। वहाँ तुमने
आग, बादल और गहरे अंधेरे में से उस की
ज़ोरदार आवाज़ सुनी। यही कुछ उसने कहा और

बस। फिर उसने उन्हें पत्थर की दो तख़्तियों पर लिखकर मुझे दे दिया।

लोग रब से डरते हैं

23जब तुमने तारीकी से यह आवाज़ सुनी और
पहाड़ की जलती हुई हालत देखी तो तुम्हारे
क़बीलों के राहनुमा और बुज़ुर्ग मेरे पास आए।
24उन्होंने कहा, “रब हमारे ख़ुदा ने हम पर अपना
जलाल और अज़मत ज़ाहिर की है। आज हमने
आग में से उस की आवाज़ सुनी है। हमने देख
लिया है कि जब अल्लाह इनसान से हमकलाम
होता है तो ज़रूरी नहीं कि वह मर जाए। 25लेकिन
अब हम क्यों अपनी जान ख़तरे में डालें? अगर
हम मज़ीद रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनें तो यह
बड़ी आग हमें भस्म कर देगी और हम अपनी जान
से हाथ धो बैठेंगे। 26क्योंकि फ़ानी इनसानों में से
कौन हमारी तरह ज़िंदा ख़ुदा को आग में से बातें
करते हुए सुनकर ज़िंदा रहा है? कोई भी नहीं!
27आप ही क़रीब जाकर उन तमाम बातों को सुनें
जो रब हमारा ख़ुदा हमें बताना चाहता है। फिर
लौटकर हमें वह बातें सुनाएँ। हम उन्हें सुनेंगे और
उन पर अमल करेंगे।”

28जब रब ने यह सुना तो उसने मुझसे कहा,
“मैंने इन लोगों की यह बातें सुन ली हैं। वह ठीक
कहते हैं। 29काश उनकी सोच हमेशा ऐसी ही
हो! काश वह हमेशा इसी तरह मेरा ख़ौफ़ मानें
और मेरे अहकाम पर अमल करें! अगर वह ऐसा
करेंगे तो वह और उनकी औलाद हमेशा कामयाब
रहेंगे। 30जा, उन्हें बता दे कि अपने ख़ैमों में लौट
जाओ। 31लेकिन तू यहाँ मेरे पास रह ताकि मैं
तुझे तमाम क़वानीन और अहकाम दे दूँ। उनको
लोगों को सिखाना ताकि वह उस मुल्क में उनके
मुताबिक़ चलें जो मैं उन्हें दूँगा।”

32चुनाँचे एहतियात से उन अहकाम पर अमल
करो जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें दिए हैं। उनसे न
दाईं तरफ़ हटो न बाईं तरफ़। 33हमेशा उस राह
पर चलते रहो जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें बताई
है। फिर तुम कामयाब होगे और उस मुल्क में देर
तक जीते रहोगे जिस पर तुम क़ब्ज़ा करोगे।

सबसे बड़ा हुक्म

6 यह वह तमाम अहकाम हैं जो रब तुम्हारे
ख़ुदा ने मुझे तुम्हें सिखाने के लिए कहा।
उस मुल्क में इन पर अमल करना जिसमें तुम
जानेवाले हो ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो। 2उम्र-
भर तू, तेरे बच्चे और पोते-नवासे रब अपने ख़ुदा
का ख़ौफ़ मानें और उसके उन तमाम अहकाम पर
चलें जो मैं तुझे दे रहा हूँ। तब तू देर तक जीता
रहेगा। 3ऐ इसराईल, यह मेरी बातें सुन और बड़ी
एहतियात से इन पर अमल कर! फिर रब तेरे
ख़ुदा का वादा पूरा हो जाएगा कि तू कामयाब
रहेगा और तेरी तादाद उस मुल्क में ख़ूब बढ़ती
जाएगी जिसमें दूध और शहद की कसरत है।

4सुन ऐ इसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब
है। 5रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी
जान और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना। 6जो
अहकाम मैं तुझे आज बता रहा हूँ उन्हें अपने दिल
पर नक़्श कर। 7उन्हें अपने बच्चों के ज़हननशीन
करा। यही बातें हर वक़्त और हर जगह तेरे लबों
पर हों ख़ाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो,
लेटा हो या खड़ा हो। 8उन्हें निशान के तौर पर
और याददिहानी के लिए अपने बाज़ुओं और माथे
पर लगा। 9उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने
शहरों के दरवाज़ों पर लिख।

10रब तेरे ख़ुदा का वादा पूरा होगा जो उसने
क़सम खाकर तेरे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़
और याक़ूब के साथ किया कि मैं तुझे कनान में ले
जाऊँगा। जो बड़े और शानदार शहर उसमें हैं वह
तूने ख़ुद नहीं बनाए। 11जो मकान उसमें हैं वह
ऐसी अच्छी चीज़ों से भरे हुए हैं जो तूने उनमें नहीं
रखीं। जो कुएँ उसमें हैं उनको तूने नहीं खोदा।
जो अंगूर और ज़ैतून के बाग़ उसमें हैं उन्हें तूने
नहीं लगाया। यह हक़ीक़त याद रख। जब तू उस
मुल्क में कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा

12तो ख़बरदार! रब को न भूलना जो तुझे मिसर
की ग़ुलामी से निकाल लाया।
13रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। सिर्फ़ उसी
की इबादत करना और उसी का नाम लेकर क़सम
खाना। 14दीगर माबूदों की पैरवी न करना। इसमें
तमाम पड़ोसी अक़वाम के देवता भी शामिल हैं।
15वरना रब तेरे ख़ुदा का ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल
होकर तुझे मुल्क में से मिटा डालेगा। क्योंकि वह
ग़यूर ख़ुदा है और तेरे दरमियान ही रहता है।
16रब अपने ख़ुदा को उस तरह न आज़माना
जिस तरह तुमने मस्सा में किया था। 17ध्यान से
रब अपने ख़ुदा के अहकाम के मुताबिक़ चलो,
उन तमाम हिदायात और क़वानीन पर जो उसने
तुझे दिए हैं। 18जो कुछ रब की नज़र में दुरुस्त
और अच्छा है वह कर। फिर तू कामयाब रहेगा, तू
जाकर उस अच्छे मुल्क पर क़ब्ज़ा करेगा जिसका
वादा रब ने तेरे बापदादा से क़सम खाकर किया
था। 19तब रब की बात पूरी हो जाएगी कि तू
अपने दुश्मनों को अपने आगे आगे निकाल देगा।
20आनेवाले दिनों में तेरे बच्चे पूछेंगे, “रब हमारे
ख़ुदा ने आपको इन तमाम अहकाम पर अमल
करने को क्यों कहा?” 21फिर उन्हें जवाब देना,
“हम मिसर के बादशाह फ़िरौन के ग़ुलाम थे,
लेकिन रब हमें बड़ी क़ुदरत का इज़हार करके
मिसर से निकाल लाया। 22हमारे देखते देखते
उसने बड़े बड़े निशान और मोजिज़े किए और
मिसर, फ़िरौन और उसके पूरे घराने पर हौलनाक
मुसीबतें भेजीं। 23उस वक़्त वह हमें वहाँ से
निकाल लाया ताकि हमें लेकर वह मुल्क दे
जिसका वादा उसने क़सम खाकर हमारे बापदादा
के साथ किया था। 24रब हमारे ख़ुदा ही ने हमें
कहा कि इन तमाम अहकाम के मुताबिक़ चलो
और रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानो। क्योंकि
अगर हम ऐसा करें तो फिर हम हमेशा कामयाब
और ज़िंदा रहेंगे। और आज तक ऐसा ही रहा
है। 25अगर हम रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर रहकर
एहतियात से उन तमाम बातों पर अमल करेंगे जो
उसने हमें करने को कही हैं तो वह हमें रास्तबाज़
क़रार देगा।”

दूसरी कनानी क़ौमों को निकालना है

7 रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा
जिस पर तू जाकर क़ब्ज़ा करेगा। वह तेरे
सामने से बहुत-सी क़ौमें भगा देगा। गो यह सात
क़ौमें यानी हित्ती, जिरजासी, अमोरी, कनानी,
फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी तादाद और ताक़त
के लिहाज़ से तुझसे बड़ी होंगी 2तो भी रब तेरा
ख़ुदा उन्हें तेरे हवाले करेगा। जब तू उन्हें शिकस्त
देगा तो उन सबको उसके लिए मख़सूस करके
हलाक कर देना है। न उनके साथ अहद बाँधना
और न उन पर रहम करना। 3उनमें से किसी से
शादी न करना। न अपनी बेटियों का रिश्ता उनके
बेटों को देना, न अपने बेटों का रिश्ता उनकी
बेटियों से करना। 4वरना वह तुम्हारे बच्चों को मेरी
पैरवी से दूर करेंगे और वह मेरी नहीं बल्कि उनके
देवताओं की ख़िदमत करेंगे। तब रब का ग़ज़ब
तुम पर नाज़िल होकर जल्दी से तुम्हें हलाक कर
देगा। 5इसलिए उनकी क़ुरबानगाहें ढा देना। जिन
पत्थरों की वह पूजा करते हैं उन्हें चकनाचूर कर
देना, उनके यसीरत देवी के खंबे काट डालना और
उनके बुत जला देना।
6क्योंकि तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस है। उसने दुनिया की तमाम क़ौमों में से
तुझे चुनकर अपनी क़ौम और ख़ास मिलकियत
बनाया। 7रब ने क्यों तुम्हारे साथ ताल्लुक़ क़ायम
किया और तुम्हें चुन लिया? क्या इस वजह
से कि तुम तादाद में दीगर क़ौमों की निसबत
ज़्यादा थे? हरगिज़ नहीं! तुम तो बहुत कम
थे। 8बल्कि वजह यह थी कि रब ने तुम्हें प्यार
किया और वह वादा पूरा किया जो उसने क़सम
खाकर तुम्हारे बापदादा के साथ किया था। इसी
लिए वह फ़िद्या देकर तुम्हें बड़ी क़ुदरत से मिसर
की ग़ुलामी और उस मुल्क के बादशाह के हाथ
से बचा लाया। 9चुनाँचे जान ले कि सिर्फ़ रब तेरा
ख़ुदा ही ख़ुदा है। वह वफ़ादार ख़ुदा है। जो उससे

मुहब्बत रखते और उसके अहकाम पर अमल
करते हैं उनके साथ वह अपना अहद क़ायम रखेगा
और उन पर हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करेगा।
10लेकिन उससे नफ़रत करनेवालों को वह उनके
रूबरू मुनासिब सज़ा देकर बरबाद करेगा। हाँ, जो
उससे नफ़रत करते हैं, उनके रूबरू वह मुनासिब
सज़ा देगा और झिजकेगा नहीं।

11चुनाँचे ध्यान से उन तमाम अहकाम पर
अमल कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ ताकि तू
उनके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे। 12अगर तू उन पर
तवज्जुह दे और एहतियात से उन पर चले तो फिर
रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ अपना अहद क़ायम रखेगा
और तुझ पर मेहरबानी करेगा, बिलकुल उस वादे
के मुताबिक़ जो उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा
से किया था। 13वह तुझे प्यार करेगा और तुझे
उस मुल्क में बरकत देगा जो तुझे देने का वादा
उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा से किया था।
तुझे बहुत औलाद बख़्शने के अलावा वह तेरे खेतों
को बरकत देगा, और तुझे कसरत का अनाज,
अंगूर और ज़ैतून हासिल होगा। वह तेरे रेवड़ों को
भी बरकत देगा, और तेरे गाय-बैलों और भेड़-
बकरियों की तादाद बढ़ती जाएगी। 14तुझे दीगर
तमाम क़ौमों की निसबत कहीं ज़्यादा बरकत
मिलेगी। न तुझमें और न तेरे मवेशियों में बाँझपन
पाया जाएगा। 15रब हर बीमारी को तुझसे दूर
रखेगा। वह तुझमें वह ख़तरनाक वबाएँ फैलने
नहीं देगा जिनसे तू मिसर में वाक़िफ़ हुआ बल्कि
उन्हें उनमें फैलाएगा जो तुझसे नफ़रत रखते हैं।

16जो भी क़ौमें रब तेरा ख़ुदा तेरे हाथ में कर
देगा उन्हें तबाह करना लाज़िम है। उन पर रहम
की निगाह से न देखना, न उनके देवताओं की
ख़िदमत करना, वरना तू फँस जाएगा।

17गो तेरा दिल कहे, “यह क़ौमें हमसे
ताक़तवर हैं। हम किस तरह इन्हें निकाल सकते
हैं?” 18तो भी उनसे न डर। वही कुछ ज़हन में
रख जो रब तेरे ख़ुदा ने फ़िरौन और पूरे मिसर के
साथ किया। 19क्योंकि तूने अपनी आँखों से रब
अपने ख़ुदा की वह बड़ी आज़मानेवाली मुसीबतें
और मोजिज़े, उसका वह अज़ीम इख़्तियार और
क़ुदरत देखी जिससे वह तुझे वहाँ से निकाल
लाया। वही कुछ रब तेरा ख़ुदा उन क़ौमों के साथ
भी करेगा जिनसे तू इस वक़्त डरता है। 20न
सिर्फ़ यह बल्कि रब तेरा ख़ुदा उनके दरमियान
ज़ंबूर भी भेजेगा ताकि वह भी तबाह हो जाएँ
जो पहले हमलों से बचकर छुप गए हैं। 21उनसे
दहशत न खा, क्योंकि रब तेरा ख़ुदा तेरे दरमियान
है। वह अज़ीम ख़ुदा है जिससे सब ख़ौफ़ खाते
हैं। 22वह रफ़्ता रफ़्ता उन क़ौमों को तेरे आगे
से भगा देगा। तू उन्हें एकदम ख़त्म नहीं कर
सकेगा, वरना जंगली जानवर तेज़ी से बढ़कर तुझे
नुक़सान पहुचाएँगे।

23रब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे हवाले कर देगा। वह
उनमें इतनी सख़्त अफ़रा-तफ़री पैदा करेगा कि
वह बरबाद हो जाएंगे। 24वह उनके बादशाहों को
भी तेरे क़ाबू में कर देगा, और तू उनका नामो-
निशान मिटा देगा। कोई भी तेरा सामना नहीं कर
सकेगा बल्कि तू उन सबको बरबाद कर देगा।

25उनके देवताओं के मुजस्समे जला देना। जो
चाँदी और सोना उन पर चढ़ाया हुआ है उसका
लालच न करना। उसे न लेना वरना तू फँस
जाएगा। क्योंकि इन चीज़ों से रब तेरे ख़ुदा को
घिन आती है। 26इस तरह की मकरूह चीज़ अपने
घर में न लाना, वरना तुझे भी उसके साथ अलग
करके बरबाद किया जाएगा। तेरे दिल में उससे
शदीद नफ़रत और घिन हो, क्योंकि उसे पूरे तौर
पर बरबाद करने के लिए मख़सूस किया गया है।

रब को न भूलना

8 एहतियात से उन तमाम अहकाम पर
अमल करो जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ।
क्योंकि ऐसा करने से तुम जीते रहोगे, तादाद में
बढ़ोगे और जाकर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे
जिसका वादा रब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम
खाकर किया था।

2वह पूरा वक़्त याद रख जब रब तेरा ख़ुदा
रेगिस्तान में 40 साल तक तेरी राहनुमाई करता

रहा ताकि तुझे आजिज़ करके आज़माए और मालूम करे कि क्या तू उसके अहकाम पर चलेगा कि नहीं।
3उसने तुझे आजिज़ करके भूके होने दिया, फिर तुझे मन खिलाया जिससे न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। क्योंकि वह तुझे सिखाना चाहता था कि इनसान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।

4इन 40 सालों के दौरान तेरे कपड़े न घिसे न फटे, न तेरे पाँव सूजे।
5चुनाँचे दिल में जान ले कि जिस तरह बाप अपने बेटे की तरबियत करता है उसी तरह रब हमारा ख़ुदा हमारी तरबियत करता है।

6रब अपने ख़ुदा के अहकाम पर अमल करके उस की राहों पर चल और उसका ख़ौफ़ मान।
7क्योंकि वह तुझे एक बेहतरीन मुल्क में ले जा रहा है जिसमें नहरें और ऐसे चश्मे हैं जो पहाड़ियों और वादियों की ज़मीन से फूट निकलते हैं।
8उस की पैदावार अनाज, जौ, अंगूर, अंजीर, अनार, ज़ैतून और शहद है।
9उसमें रोटी की कमी नहीं होगी, और तू किसी चीज़ से महरूम नहीं रहेगा। उसके पत्थरों में लोहा पाया जाता है, और खुदाई से तू उस की पहाड़ियों से ताँबा हासिल कर सकेगा।

10जब तू कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा तो फिर रब अपने ख़ुदा की तमजीद करना जिसने तुझे यह शानदार मुल्क दिया है।
11ख़बरदार, रब अपने ख़ुदा को न भूल और उसके उन अहकाम पर अमल करने से गुरेज़ न कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ।
12क्योंकि जब तू कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा, तू शानदार घर बनाकर उनमें रहेगा
13और तेरे रेवड़, सोने-चाँदी और बाक़ी तमाम माल में इज़ाफ़ा होगा
14तो कहीं तू मग़रूर होकर रब अपने ख़ुदा को भूल न जाए जो तुझे मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया।
15जब तू उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में सफ़र कर रहा था जिसमें ज़हरीले साँप और बिच्छू थे तो वही तेरी राहनुमाई करता रहा। पानी से महरूम उस इलाक़े में वही सख़्त पत्थर में से पानी निकाल लाया।
16रेगिस्तान में वही तुझे मन खिलाता रहा, जिससे तेरे बापदादा वाक़िफ़ न थे। इन मुश्किलात से वह तुझे आजिज़ करके आज़माता रहा ताकि आख़िरकार तू कामयाब हो जाए।

17जब तुझे कामयाबी हासिल होगी तो यह न कहना कि मैंने अपनी ही क़ुव्वत और ताक़त से यह सब कुछ हासिल किया है।
18बल्कि रब अपने ख़ुदा को याद करना जिसने तुझे दौलत हासिल करने की क़ाबिलियत दी है। क्योंकि वह आज भी उसी अहद पर क़ायम है जो उसने तेरे बापदादा से किया था।

19रब अपने ख़ुदा को न भूलना, और न दीगर माबूदों के पीछे पड़कर उन्हें सिजदा और उनकी ख़िदमत करना। वरना मैं ख़ुद गवाह हूँ कि तुम यक़ीनन हलाक हो जाओगे।
20अगर तुम रब अपने ख़ुदा की इताअत नहीं करोगे तो फिर वह तुम्हें उन क़ौमों की तरह तबाह कर देगा जो तुमसे पहले इस मुल्क में रहती थीं।

मुल्क मिलने का सबब इसराईल की रास्ती नहीं है

9 सुन ऐ इसराईल! आज तू दरियाए-यरदन को पार करनेवाला है। दूसरी तरफ़ तू ऐसी क़ौमों को भगा देगा जो तुझसे बड़ी और ताक़तवर हैं और जिनके शानदार शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं।
2वहाँ अनाक़ी बसते हैं जो ताक़तवर और दराज़क़द हैं। तू ख़ुद जानता है कि उनके बारे में कहा जाता है, “कौन अनाक़ियों का सामना कर सकता है?”
3लेकिन आज जान ले कि रब तेरा ख़ुदा तेरे आगे आगे चलते हुए उन्हें भस्म कर देनेवाली आग की तरह हलाक करेगा। वह तेरे आगे आगे उन पर क़ाबू पाएगा, और तू उन्हें निकालकर जल्दी मिटा देगा, जिस तरह रब ने वादा किया है।

4जब रब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे सामने से निकाल देगा तो तू यह न कहना, “मैं रास्तबाज़ हूँ, इसी

लिए रब मुझे लायक़ समझकर यहाँ लाया और
यह मुल्क मीरास में दे दिया है।” यह बात हरगिज़
दुरुस्त नहीं है। रब उन क़ौमों को उनकी ग़लत
हरकतों की वजह से तेरे सामने से निकाल देगा।
5तू अपनी रास्तबाज़ी और दियानतदारी की बिना
पर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं करेगा बल्कि रब
उन्हें उनकी शरीर हरकतों के बाइस तेरे सामने से
निकाल देगा। दूसरे, जो वादा उसने तेरे बापदादा
इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के साथ क़सम
खाकर किया था उसे पूरा होना है।

6चुनाँचे जान ले कि रब तेरा ख़ुदा तुझे तेरी
रास्ती के बाइस यह अच्छा मुल्क नहीं दे रहा।
हक़ीक़त तो यह है कि तू हटधर्म क़ौम है।

सोने का बछड़ा

7याद रख और कभी न भूल कि तूने रेगिस्तान
में रब अपने ख़ुदा को किस तरह नाराज़ किया।
मिसर से निकलते वक़्त से लेकर यहाँ पहुँचने
तक तुम रब से सरकश रहे हो। 8ख़ासकर होरिब
यानी सीना के दामन में तुमने रब को इतना ग़ुस्सा
दिलाया कि वह तुम्हें हलाक करने को था। 9उस
वक़्त मैं पहाड़ पर चढ़ गया था ताकि पत्थर की
तख़्तियाँ यानी उस अहद की तख़्तियाँ मिल जाएँ
जो रब ने तुम्हारे साथ बाँधा था। कुछ खाए-पिए
बग़ैर मैं 40 दिन और रात वहाँ रहा।

10-11जो कुछ रब ने आग में से कहा था जब
तुम पहाड़ के दामन में जमा थे वही कुछ उसने
अपनी उँगली से दोनों तख़्तियों पर लिखकर मुझे
दिया। 12उसने मुझसे कहा, “फ़ौरन यहाँ से उतर
जा। तेरी क़ौम जिसे तू मिसर से निकाल लाया
बिगड़ गई है। वह कितनी जल्दी से मेरे अहकाम
से हट गए हैं। उन्होंने अपने लिए बुत ढाल लिया
है। 13मैंने जान लिया है कि यह क़ौम कितनी
ज़िद्दी है। 14अब मुझे छोड़ दे ताकि मैं उन्हें तबाह
करके उनका नामो-निशान दुनिया में से मिटा
डालूँ। उनकी जगह मैं तुझसे एक क़ौम बना लूँगा
जो उनसे बड़ी और ताक़तवर होगी।”

15मैं मुड़कर पहाड़ से उतरा जो अब तक भड़क
रहा था। मेरे हाथों में अहद की दोनों तख़्तियाँ थीं।
16तुम्हें देखते ही मुझे मालूम हुआ कि तुमने रब
अपने ख़ुदा का गुनाह किया है। तुमने अपने लिए
बछड़े का बुत ढाल लिया था। तुम कितनी जल्दी
से रब की मुक़र्ररा राह से हट गए थे।

17तब मैंने तुम्हारे देखते देखते दोनों तख़्तियों
को ज़मीन पर पटख़कर टुकड़े टुकड़े कर दिया।
18एक और बार मैं रब के सामने मुँह के बल गिरा।
मैंने न कुछ खाया, न कुछ पिया। 40 दिन और
रात मैं तुम्हारे तमाम गुनाहों के बाइस इसी हालत
में रहा। क्योंकि जो कुछ तुमने किया था वह रब
को निहायत बुरा लगा, इसलिए वह ग़ज़बनाक
हो गया था। 19वह तुमसे इतना नाराज़ था कि मैं
बहुत डर गया। यों लग रहा था कि वह तुम्हें हलाक
कर देगा। लेकिन इस बार भी उसने मेरी सुन ली।
20मैंने हारून के लिए भी दुआ की, क्योंकि रब
उससे भी निहायत नाराज़ था और उसे हलाक
कर देना चाहता था।

21जो बछड़ा तुमने गुनाह करके बनाया था उसे
मैंने जला दिया, फिर जो कुछ बाक़ी रह गया उसे
कुचल दिया और पीस पीसकर पाउडर बना दिया।
यह पाउडर मैंने उस चश्मे में फेंक दिया जो पहाड़
पर से बह रहा था।

22तुमने रब को तबेरा, मस्सा और क़ब्रोत-
हत्तावा में भी ग़ुस्सा दिलाया। 23क़ादिस-बरनीअ
में भी ऐसा ही हुआ। वहाँ से रब ने तुम्हें भेजकर
कहा था, “जाओ, उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करो जो
मैंने तुम्हें दे दिया है।” लेकिन तुमने सरकश होकर
रब अपने ख़ुदा के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की।
तुमने उस पर एतमाद न किया, न उस की सुनी।
24जब से मैं तुम्हें जानता हूँ तुम्हारा रब के साथ
रवैया बाग़ियाना ही रहा है।

25मैं 40 दिन और रात रब के सामने ज़मीन
पर मुँह के बल रहा, क्योंकि रब ने कहा था कि
वह तुम्हें हलाक कर देगा। 26मैंने उससे मिन्नत
करके कहा, “ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, अपनी क़ौम
को तबाह न कर। वह तो तेरी ही मिलकियत

है जिसे तूने फ़िद्या देकर अपनी अज़ीम क़ुदरत
से बचाया और बड़े इख़्तियार के साथ मिसर
से निकाल लाया। 27अपने ख़ादिमों इब्राहीम,
इसहाक़ और याक़ूब को याद कर, और इस क़ौम
की ज़िद, शरीर हरकतों और गुनाह पर तवज्जुह
न दे। 28वरना मिसरी कहेंगे, 'रब उन्हें उस मुल्क
में लाने के क़ाबिल नहीं था जिसका वादा उसने
किया था, बल्कि वह उनसे नफ़रत करता था।
हाँ, वह उन्हें हलाक करने के लिए रेगिस्तान में ले
आया।' 29वह तो तेरी क़ौम हैं, तेरी मिलकियत
जिसे तू अपनी अज़ीम क़ुदरत और इख़्तियार से
मिसर से निकाल लाया।"

मूसा को नई तख़्तियाँ मिलती हैं

10 उस वक़्त रब ने मुझसे कहा, "पत्थर
की दो और तख़्तियाँ तराशना जो
पहली तख़्तियों की मानिंद हों। उन्हें लेकर मेरे
पास पहाड़ पर चढ़ आ। लकड़ी का संदूक़ भी
बनाना। 2फिर मैं इन तख़्तियों पर दुबारा वही बातें
लिखूँगा जो मैं उन तख़्तियों पर लिख चुका था जो
तूने तोड़ डालीं। तुम्हें उन्हें संदूक़ में महफ़ूज़ रखना
है।"

3मैंने कीकर की लकड़ी का संदूक़ बन-
वाया और दो तख़्तियाँ तराशीं जो पहली तख़्तियों
की मानिंद थीं। फिर मैं दोनों तख़्तियाँ लेकर पहाड़
पर चढ़ गया। 4रब ने उन तख़्तियों पर दुबारा वह
दस अहकाम लिख दिए जो वह पहली तख़्तियों
पर लिख चुका था। (उन्हीं अहकाम का एलान
उसने पहाड़ पर आग में से किया था जब तुम
उसके दामन में जमा थे।) फिर उसने यह तख़्तियाँ
मेरे सुपुर्द कीं। 5मैं लौटकर उतरा और तख़्तियों
को उस संदूक़ में रखा जो मैंने बनाया था। वहाँ
वह अब तक हैं। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब
ने हुक्म दिया था।

इमामों और लावियों की ख़िदमत

6(इसके बाद इसराईली बनी-याक़ान के कुओं
से रवाना होकर मौसीरा पहुँचे। वहाँ हारून फ़ौत
हुआ। उसे दफ़न करने के बाद उसका बेटा
इलियज़र उस की जगह इमाम बना। 7फिर वह
आगे सफ़र करते करते जुदजूदा, फिर युतबाता
पहुँचे जहाँ नहरें हैं।

8उन दिनों में रब ने लावी के क़बीले को अलग
करके उसे रब के अहद के संदूक़ को उठाकर ले
जाने, रब के हुज़ूर ख़िदमत करने और उसके नाम
से बरकत देने की ज़िम्मेदारी दी। आज तक यह
उनकी ज़िम्मेदारी रही है। 9इस वजह से लावियों
को दीगर क़बीलों की तरह न हिस्सा न मीरास
मिली। रब तेरा ख़ुदा ख़ुद उनकी मीरास है। उसने
ख़ुद उन्हें यह फ़रमाया है।)

10जब मैंने दूसरी मरतबा 40 दिन और रात
पहाड़ पर गुज़ारे तो रब ने इस दफ़ा भी मेरी
सुनी और तुझे हलाक न करने पर आमादा हुआ।
11उसने कहा, "जा, क़ौम की राहनुमाई कर
ताकि वह जाकर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करें
जिसका वादा मैंने क़सम खाकर उनके बापदादा
से किया था।"

रब का ख़ौफ़

12ऐ इसराईल, अब मेरी बात सुन! रब तेरा
ख़ुदा तुझसे क्या तक़ाज़ा करता है? सिर्फ़ यह
कि तू उसका ख़ौफ़ माने, उस की तमाम राहों पर
चले, उसे प्यार करे, अपने पूरे दिलो-जान से उस
की ख़िदमत करे 13और उसके तमाम अहकाम
पर अमल करे। आज मैं उन्हें तुझे तेरी बेहतरी के
लिए दे रहा हूँ।

14पूरा आसमान, ज़मीन और जो कुछ उस पर
है, सबका मालिक रब तेरा ख़ुदा है। 15तो भी
उसने तेरे बापदादा पर ही अपनी ख़ास शफ़क़त
का इज़हार करके उनसे मुहब्बत की। और उसने
तुम्हें चुनकर दूसरी तमाम क़ौमों पर तरजीह दी
जैसा कि आज ज़ाहिर है। 16ख़तना उस की क़ौम
का निशान है, लेकिन ध्यान रखो कि वह न सिर्फ़
ज़ाहिरी बल्कि बातिनी भी हो। आइंदा अड़ न
जाओ।

17क्योंकि रब तुम्हारा ख़ुदा ख़ुदाओं का ख़ुदा और रब्बों का रब है। वह अज़ीम और ज़ोरावर ख़ुदा है जिससे सब ख़ौफ़ खाते हैं। वह जानिबदारी नहीं करता और रिश्वत नहीं लेता। 18वह यतीमों और बेवाओं का इनसाफ़ करता है। वह परदेसी से प्यार करता और उसे ख़ुराक और पोशाक मुहैया करता है। 19तुम भी उनके साथ मुहब्बत से पेश आओ, क्योंकि तुम भी मिसर में परदेसी थे।

20रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मान और उस की ख़िदमत कर। उससे लिपटा रह और उसी के नाम की क़सम खा। 21वही तेरा फ़ख़र है। वह तेरा ख़ुदा है जिसने वह तमाम अज़ीम और डरावने काम किए जो तूने ख़ुद देखे। 22जब तेरे बापदादा मिसर गए थे तो 70 अफ़राद थे। और अब रब तेरे ख़ुदा ने तुझे सितारों की मानिंद बेशुमार बना दिया है।

रब से मुहब्बत रख और उस की सुन

11 रब अपने ख़ुदा से प्यार कर और हमेशा उसके अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार। 2आज जान लो कि तुम्हारे बच्चों ने नहीं बल्कि तुम्हीं ने रब अपने ख़ुदा से तरबियत पाई। तुमने उस की अज़मत, बड़े इख़्तियार और क़ुदरत को देखा, 3और तुम उन मोजिज़ों के गवाह हो जो उसने मिसर के बादशाह फ़िरौन और उसके पूरे मुल्क के सामने किए। 4तुमने देखा कि रब ने किस तरह मिसरी फ़ौज को उसके घोड़ों और रथों समेत बहरे-क़ुलज़ुम में ग़रक़ कर दिया जब वह तुम्हारा ताक़्क़ुब कर रहे थे। उसने उन्हें यों तबाह किया कि वह आज तक बहाल नहीं हुए।

5तुम्हारे बच्चे नहीं बल्कि तुम ही गवाह हो कि यहाँ पहुँचने से पहले रब ने रेगिस्तान में तुम्हारी किस तरह देख-भाल की। 6तुमने उसका इलियाब के बेटों दातन और अबीराम के साथ सुलूक देखा जो रूबिन के क़बीले के थे। उस दिन ज़मीन ने ख़ैमागाह के अंदर मुँह खोलकर उन्हें उनके घरानों, डेरों और तमाम जानदारों समेत हड़प कर लिया।

7तुमने अपनी ही आँखों से रब के यह तमाम अज़ीम काम देखे हैं। 8चुनाँचे उन तमाम अहकाम पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ ताकि तुम्हें वह ताक़त हासिल हो जो दरकार होगी जब तुम दरियाए-यरदन को पार करके मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे। 9अगर तुम फ़रमाँबरदार रहो तो देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिसका वादा रब ने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था और जिसमें दूध और शहद की कसरत है।

10क्योंकि यह मुल्क मिसर की मानिंद नहीं है जहाँ से तुम निकल आए हो। वहाँ के खेतों में तुझे बीज बोकर बड़ी मेहनत से उस की आबपाशी करनी पड़ती थी 11जबकि जिस मुल्क पर तुम क़ब्ज़ा करोगे उसमें पहाड़ और वादियाँ हैं जिन्हें सिर्फ़ बारिश का पानी सेराब करता है। 12रब तेरा ख़ुदा ख़ुद उस मुल्क का ख़याल रखता है। रब तेरे ख़ुदा की आँखें साल के पहले दिन से लेकर आख़िर तक मुतवातिर उस पर लगी रहती हैं।

13चुनाँचे उन अहकाम के ताबे रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने ख़ुदा से प्यार करो और अपने पूरे दिलो-जान से उस की ख़िदमत करो। 14फिर वह ख़रीफ़ और बहार की सालाना बारिश वक़्त पर भेजेगा। अनाज, अंगूर और ज़ैतून की फ़सलें पकेंगी, और तू उन्हें जमा कर लेगा। 15नीज़, अल्लाह तेरी चरागाहों में तेरे रेवड़ों के लिए घास मुहैया करेगा, और तू खाकर सेर हो जाएगा।

16लेकिन ख़बरदार, कहीं तुम्हें वरग़लाया न जाए। ऐसा न हो कि तुम रब की राह से हट जाओ और दीगर माबूदों को सिजदा करके उनकी ख़िदमत करो। 17वरना रब का ग़ज़ब तुम पर आन पड़ेगा, और वह मुल्क में बारिश होने नहीं देगा। तुम्हारी फ़सलें नहीं पकेंगी, और तुम्हें जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से मिटा दिया जाएगा जो रब तुम्हें दे रहा है।

18चुनाँचे मेरी यह बातें अपने दिलों पर नक़्श कर लो। उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी के लिए अपने हाथों और माथों पर लगाओ।

19उन्हें अपने बच्चों को सिखाओ। हर जगह और
हमेशा उनके बारे में बात करो, ख़ाह तू घर में बैठा
या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो।
20उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों
के दरवाज़ों पर लिख 21ताकि जब तक ज़मीन
पर आसमान क़ायम है तुम और तुम्हारी औलाद
उस मुल्क में जीते रहें जिसका वादा रब ने क़सम
खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था।

22एहतियात से उन अहकाम की पैरवी करो
जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने ख़ुदा से प्यार
करो, उसके तमाम अहकाम पर अमल करो और
उसके साथ लिपटे रहो। 23फिर वह तुम्हारे आगे
आगे यह तमाम क़ौमें निकाल देगा और तुम ऐसी
क़ौमों की ज़मीनों पर क़ब्ज़ा करोगे जो तुमसे
बड़ी और ताक़तवर हैं। 24तुम जहाँ भी क़दम
रखोगे वह तुम्हारा ही होगा, जुनूबी रेगिस्तान से
लेकर लुबनान तक, दरियाए-फ़ुरात से बहीराए-
रूम तक। 25कोई भी तुम्हारा सामना नहीं कर
सकेगा। तुम उस मुल्क में जहाँ भी जाओगे वहाँ
रब तुम्हारा ख़ुदा अपने वादे के मुताबिक़ तुम्हारी
दहशत और ख़ौफ़ पैदा कर देगा। 26आज तुम
ख़ुद फ़ैसला करो। क्या तुम रब की बरकत या
उस की लानत पाना चाहते हो? 27अगर तुम रब
अपने ख़ुदा के उन अहकाम पर अमल करो जो
मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ तो वह तुम्हें बरकत देगा।
28लेकिन अगर तुम उनके ताबे न रहो बल्कि मेरी
पेशकरदा राह से हटकर दीगर माबूदों की पैरवी
करो तो वह तुम पर लानत भेजेगा।

29जब रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में ले
जाएगा जिस पर तू क़ब्ज़ा करेगा तो लाज़िम है कि
गरिज़ीम पहाड़ पर चढ़कर बरकत का एलान करे
और ऐबाल पहाड़ पर लानत का। 30यह दो पहाड़
दरियाए-यरदन के मग़रिब में उन कनानियों के
इलाक़े में वाक़े हैं जो वादीए-यरदन में आबाद हैं।
वह मग़रिब की तरफ़ जिलजाल शहर के सामने
मोरिह के बलूत के दरख़्तों के नज़दीक हैं। 31अब
तुम दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क पर
क़ब्ज़ा करनेवाले हो जो रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें दे
रहा है। जब तुम उसे अपनाकर उसमें आबाद हो
जाओगे 32तो एहतियात से उन तमाम अहकाम
पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।

मुल्क में रब के अहकाम

12 ज़ैल में वह अहकाम और क़वा-
नीन हैं जिन पर तुम्हें ध्यान से अमल
करना होगा जब तुम उस मुल्क में आबाद होगे जो
रब तेरे बापदादा का ख़ुदा तुझे दे रहा है ताकि तू
उस पर क़ब्ज़ा करे। मुल्क में रहते हुए उम्र-भर
उनके ताबे रहो।

मुल्क में एक ही जगह पर मक़दिस हो

2उन तमाम जगहों को बरबाद करो जहाँ वह
क़ौमें जिन्हें तुम्हें निकालना है अपने देवताओं की
पूजा करती हैं, ख़ाह वह ऊँचे पहाड़ों, पहाड़ियों
या घने दरख़्तों के साये में क्यों न हों। 3उनकी
क़ुरबानगाहों को ढा देना। जिन पत्थरों की पूजा
वह करते हैं उन्हें चकनाचूर कर देना। यसीरत देवी
के खंबे जला देना। उनके देवताओं के मुजस्समे
काट डालना। ग़रज़ इन जगहों से उनका नामो-
निशान मिट जाए।

4रब अपने ख़ुदा की परस्तिश करने के लिए
उनके तरीक़े न अपनाना। 5रब तुम्हारा ख़ुदा
क़बीलों में से अपने नाम की सुकूनत के लिए
एक जगह चुन लेगा। इबादत के लिए वहाँ जाया
करो, 6और वहाँ अपनी तमाम क़ुरबानियाँ लाकर
पेश करो, ख़ाह वह भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ,
ज़बह की क़ुरबानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा,
उठानेवाली क़ुरबानियाँ, मन्नत के हदिये, ख़ुशी से
पेश की गई क़ुरबानियाँ या मवेशियों के पहलौठे
क्यों न हों। 7वहाँ रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर अपने
घरानों समेत खाना खाकर उन कामयाबियों की
ख़ुशी मनाओ जो तुझे रब तेरे ख़ुदा की बरकत के
बाइस हासिल हुई हैं।

8उस वक़्त तुम्हें वह नहीं करना जो हम करते
आए हैं। आज तक हर कोई अपनी मरज़ी के
मुताबिक़ इबादत करता है, 9क्योंकि अब तक

तुम आराम की उस जगह नहीं पहुँचे जो तुझे रब तेरे ख़ुदा से मीरास में मिलनी है। 10लेकिन जल्द ही तुम दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क में आबाद हो जाओगे जो रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें मीरास में दे रहा है। उस वक़्त वह तुम्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचाए रखेगा, और तुम आराम और सुकून से ज़िंदगी गुज़ार सकोगे। 11तब रब तुम्हारा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए एक जगह चुन लेगा, और तुम्हें सब कुछ जो मैं बताऊँगा वहाँ लाकर पेश करना है, ख़ाह वह भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ, ज़बह की क़ुरबानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठानेवाली क़ुरबानियाँ या मन्नत के ख़ास हदिये क्यों न हों। 12वहाँ रब के सामने तुम, तुम्हारे बेटे-बेटियाँ, तुम्हारे ग़ुलाम और लौंडियाँ ख़ुशी मनाएँ। अपने शहरों में आबाद लावियों को भी अपनी ख़ुशी में शरीक करो, क्योंकि उनके पास मौरूसी ज़मीन नहीं होगी।

13ख़बरदार, अपनी भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ हर जगह पर पेश न करना 14बल्कि सिर्फ़ उस जगह पर जो रब क़बीलों में से चुनेगा। वहीं सब कुछ यों मना जिस तरह मैं तुझे बताता हूँ।

15लेकिन वह जानवर इसमें शामिल नहीं हैं जो तू क़ुरबानी के तौर पर पेश नहीं करना चाहता बल्कि सिर्फ़ खाना चाहता है। ऐसे जानवर तू आज़ादी से अपने तमाम शहरों में ज़बह करके उस बरकत के मुताबिक़ खा सकता है जो रब तेरे ख़ुदा ने तुझे दी है। ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिंद है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 16लेकिन ख़ून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेलकर ज़ाया कर देना।

17जो भी चीज़ें रब के लिए मख़सूस की गई हैं उन्हें अपने शहरों में न खाना मसलन अनाज, अंगूर के रस और ज़ैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा, मवेशियों के पहलौठे, मन्नत के हदिये, ख़ुशी से पेश की गई क़ुरबानियाँ और उठानेवाली क़ुरबानियाँ। 18यह चीज़ें सिर्फ़ रब के हुज़ूर खाना यानी उस जगह पर जिसे वह मक़दिस के लिए चुनेगा। वहीं तू अपने बेटे-बेटियों, ग़ुलामों, लौंडियों और अपने क़बायली इलाक़े के लावियों के साथ जमा होकर ख़ुशी मना कि रब ने हमारी मेहनत को बरकत दी है। 19अपने मुल्क में लावियों की ज़रूरियात उम्र-भर पूरी करने की फ़िकर रख।

20जब रब तेरा ख़ुदा अपने वादे के मुताबिक़ तेरी सरहद्दें बढ़ा देगा और तू गोश्त खाने की ख़ाहिश रखेगा तो जिस तरह जी चाहे गोश्त खा सकेगा। 21अगर तेरा घर उस मक़दिस से दूर हो जिसे रब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा तो तू जिस तरह जी चाहे अपने शहरों में रब से मिले हुए मवेशियों को ज़बह करके खा सकता है। लेकिन ऐसा ही करना जैसा मैंने हुक्म दिया है। 22ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिंद है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 23अलबत्ता गोश्त के साथ ख़ून न खाना, क्योंकि ख़ून जानदार की जान है। उस की जान गोश्त के साथ न खाना। 24ख़ून न खाना बल्कि उसे ज़मीन पर उंडेलकर ज़ाया कर देना। 25उसे न खाना ताकि तुझे और तेरी औलाद को कामयाबी हासिल हो, क्योंकि ऐसा करने से तू रब की नज़र में सहीह काम करेगा।

26लेकिन जो चीज़ें रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हैं या जो तूने मन्नत मानकर उसके लिए मख़सूस की हैं लाज़िम है कि तू उन्हें उस जगह ले जाए जिसे रब मक़दिस के लिए चुनेगा। 27वहीं, रब अपने ख़ुदा की क़ुरबानगाह पर अपनी भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ गोश्त और ख़ून समेत चढ़ा। ज़बह की क़ुरबानियों का ख़ून क़ुरबानगाह पर उंडेल देना, लेकिन उनका गोश्त तू खा सकता है।

28जो भी हिदायात मैं तुझे दे रहा हूँ उन्हें एहतियात से पूरा कर। फिर तू और तेरी औलाद ख़ुशहाल रहेंगे, क्योंकि तू वह कुछ करेगा जो रब तेरे ख़ुदा की नज़र में अच्छा और दुरुस्त है।

29रब तेरा ख़ुदा उन क़ौमों को मिटा देगा जिनकी तरफ़ तू बढ़ रहा है। तू उन्हें उनके मुल्क

से निकालता जाएगा और ख़ुद उसमें आबाद हो
जाएगा। 30लेकिन ख़बरदार, उनके ख़त्म होने
के बाद भी उनके देवताओं के बारे में मालूमात
हासिल न कर, वरना तू फँस जाएगा। मत कहना
कि यह क़ौमें किस तरीक़े से अपने देवताओं की
पूजा करती हैं? हम भी ऐसा ही करें। 31ऐसा मत
कर! यह क़ौमें ऐसे घिनौने तरीक़े से पूजा करती
हैं जिनसे रब नफ़रत करता है। वह अपने बच्चों
को भी जलाकर अपने देवताओं को पेश करते हैं।
32कलाम की जो भी बात मैं तुम्हें पेश करता हूँ
उसके ताबे रहकर उस पर अमल करो। न किसी
बात का इज़ाफ़ा करना, न कोई बात निकालना।

देवताओं की तरफ़ ले जानेवालों से सुलूक

13 तेरे दरमियान ऐसे लोग उठ खड़े
होंगे जो अपने आपको नबी या ख़ाब
देखनेवाले कहेंगे। हो सकता है कि वह किसी
इलाही निशान या मोजिज़े का एलान करें 2जो
वाक़ई वुजूद में आए। साथ साथ वह कहें, "आ,
हम दीगर माबूदों की पूजा करें, हम उनकी
ख़िदमत करें जिनसे तू अब तक वाक़िफ़ नहीं
है।" 3ऐसे लोगों की न सुन। इससे रब तुम्हारा
ख़ुदा तुम्हें आज़माकर मालूम कर रहा है कि क्या
तुम वाक़ई अपने पूरे दिलो-जान से उससे प्यार
करते हो। 4तुम्हें रब अपने ख़ुदा की पैरवी करना
और उसी का ख़ौफ़ मानना है। उसके अहकाम
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो, उस की सुनो, उस
की ख़िदमत करो, उसके साथ लिपटे रहो। 5ऐसे
नबियों या ख़ाब देखनेवालों को सज़ाए-मौत देना,
क्योंकि वह तुझे रब तुम्हारे ख़ुदा से बग़ावत करने
पर उकसाना चाहते हैं, उसी से जिसने फ़िद्या देकर
तुम्हें मिसर की ग़ुलामी से बचाया और वहाँ से
निकाल लाया। चूँकि वह तुझे उस राह से हटाना
चाहते हैं जिसे रब तेरे ख़ुदा ने तेरे लिए मुक़र्रर
किया है इसलिए लाज़िम है कि उन्हें सज़ाए-मौत
दी जाए। ऐसी बुराई अपने दरमियान से मिटा
देना।

6हो सकता है कि तेरा सगा भाई, तेरा बेटा
या बेटी, तेरी बीवी या तेरा क़रीबी दोस्त तुझे
चुपके से वरग़लाने की कोशिश करे कि आ, हम
जाकर दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे देवताओं
की जिनसे न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़
थे। 7ख़ाह इर्दगिर्द की या दूर-दराज़ की क़ौमों
के देवता हों, ख़ाह दुनिया के एक सिरे के या
दूसरे सिरे के माबूद हों, 8किसी सूरत में अपनी
रज़ामंदी का इज़हार न कर, न उस की सुन। उस
पर रहम न कर। न उसे बचाए रख, न उसे पनाह
दे 9बल्कि उसे सज़ाए-मौत दे। और उसे संगसार
करते वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पत्थर फेंके,
फिर ही बाक़ी तमाम लोग हिस्सा लें। 10उसे
ज़रूर पत्थरों से सज़ाए-मौत देना, क्योंकि उसने
तुझे रब तेरे ख़ुदा से दूर करने की कोशिश की,
उसी से जो तुझे मिसर की ग़ुलामी से निकाल
लाया। 11फिर तमाम इसराईल यह सुनकर डर
जाएगा और आइंदा तेरे दरमियान ऐसी शरीर
हरकत करने की जुर्रत नहीं करेगा।
12जब तू उन शहरों में रहने लगेगा जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे दे रहा है तो शायद तुझे ख़बर मिल जाए
13कि शरीर लोग तेरे दरमियान से उभर आए हैं
जो अपने शहर के बाशिंदों को यह कहकर ग़लत
राह पर लाए हैं कि आओ, हम दीगर माबूदों की
पूजा करें, ऐसे माबूदों की जिनसे तुम वाक़िफ़ नहीं
हो। 14लाज़िम है कि तू दरियाफ़्त करके इसकी
तफ़तीश करे और ख़ूब मालूम करे कि क्या हुआ
है। अगर साबित हो जाए कि यह घिनौनी बात
वाक़ई हुई है 15तो फिर लाज़िम है कि तू शहर
के तमाम बाशिंदों को हलाक करे। उसे रब के
सुपुर्द करके सरासर तबाह करना, न सिर्फ़ उसके
लोग बल्कि उसके मवेशी भी। 16शहर का पूरा
माले-ग़नीमत चौक में इकट्ठा कर। फिर पूरे शहर
को उसके माल समेत रब के लिए मख़सूस करके
जला देना। उसे दुबारा कभी न तामीर किया जाए
बल्कि उसके खंडरात हमेशा तक रहें।
17पूरा शहर रब के लिए मख़सूस किया गया
है, इसलिए उस की कोई भी चीज़ तेरे पास

न पाई जाए। सिर्फ़ इस सूरत में रब का ग़ज़ब ठंडा हो जाएगा, और वह तुझ पर रहम करके अपनी मेहरबानी का इज़हार करेगा और तेरी तादाद बढ़ाएगा, जिस तरह उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा से वादा किया है।
18लेकिन यह सब कुछ इस पर मबनी है कि तू रब अपने ख़ुदा की सुने और उसके उन तमाम अहकाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। वही कुछ कर जो उस की नज़र में दुरुस्त है।

पाक और नापाक जानवर

14 तुम रब अपने ख़ुदा के फ़रज़ंद हो। अपने आपको मुरदों के सबब से न ज़ख़मी करो, न अपने सर के सामनेवाले बाल मुँडवाओ।
2क्योंकि तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम है। दुनिया की तमाम क़ौमों में से रब ने तुझे ही चुनकर अपनी मिलकियत बना लिया है।

3कोई भी मकरूह चीज़ न खाना।

4तुम बैल, भेड़-बकरी,
5हिरन, ग़ज़ाल, मृग,[a] पहाड़ी बकरी, महात,[b] ग़ज़ाले-अफ़्रीक़ा[c] और पहाड़ी बकरी खा सकते हो।
6जिनके खुर या पाँव बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है।
7ऊँट, बिज्जू या ख़रगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्योंकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उनके खुर या पाँव चिरे हुए नहीं हैं।
8सुअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि उसके खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। न उनका गोश्त खाना, न उनकी लाशों को छूना।

9पानी में रहनेवाले जानवर खाने के लिए जायज़ हैं अगर उनके पर और छिलके हों।
10लेकिन जिनके पर या छिलके नहीं हैं वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

11तुम हर पाक परिंदा खा सकते हो।
12लेकिन ज़ैल के परिंदे खाना मना है : उक़ाब, दढ़ियल गिद्ध, काला गिद्ध,
13लाल चील, काली चील, हर क़िस्म का गिद्ध,
14हर क़िस्म का कौवा,
15उक़ाबी उल्लू, छोटे कानवाला उल्लू, बड़े कानवाला उल्लू, हर क़िस्म का बाज़,
16छोटा उल्लू, चिंघाड़नेवाला उल्लू, सफ़ेद उल्लू,
17दश्ती उल्लू, मिसरी गिद्ध, क़ूक़,
18लक़लक़, हर क़िस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़।[d]

19तमाम पर रखनेवाले कीड़े तुम्हारे लिए नापाक हैं। उन्हें खाना मना है।
20लेकिन तुम हर पाक परिंदा खा सकते हो।

21जो जानवर ख़ुद बख़ुद मर जाए उसे न खाना। तू उसे अपनी आबादी में रहनेवाले किसी परदेसी को दे या किसी अजनबी को बेच सकता है और वह उसे खा सकता है। लेकिन तू उसे मत खाना, क्योंकि तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम है।

बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में पकाना मना है।

अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा मख़सूस करना

22लाज़िम है कि तू हर साल अपने खेतों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के लिए अलग करे।
23इसके लिए अपना अनाज, अंगूर का रस,

[a]यह हिरन के मुशाबेह होता है लेकिन फ़ितरतन मुख़्तलिफ़ होता है। इसके सींग खोखले, बेशाख़ और अनझड़ होते हैं। antelope। याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन जानवरों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरजुमा हो सकता है।

[b]महात। दराज़क़द हिरनों की एक नौ जिसके सींग चक्करदार होते हैं। addax।

[c]ग़ज़ाले-अफ़्रीक़ा। चिकारों की तीन इक़साम में से कोई जो अपने लंबे और हलक़ादार सींगों की वजह से मुमताज़ है। oryx।

[d]याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिंदों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरजुमा हो सकता है।

ज़ैतून का तेल और मवेशी के पहलौठे रब अपने
ख़ुदा के हुज़ूर ले आना यानी उस जगह जो वह
अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ यह
चीज़ें क़ुरबान करके खा ताकि तू उम्र-भर रब
अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे।

24लेकिन हो सकता है कि जो जगह रब तेरा
ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा वह
तेरे घर से हद से ज़्यादा दूर हो और रब तेरे ख़ुदा
की बरकत के बाइस मज़कूरा दसवाँ हिस्सा इतना
ज़्यादा हो कि तू उसे मक़दिस तक नहीं पहुँचा
सकता। 25इस सूरत में उसे बेचकर उसके पैसे
उस जगह ले जा जो रब तेरा ख़ुदा अपने नाम
की सुकूनत के लिए चुनेगा। 26वहाँ पहुँचकर उन
पैसों से जो जी चाहे ख़रीदना, ख़ाह गाय-बैल,
भेड़-बकरी, मै या मै जैसी कोई और चीज़ क्यों न
हो। फिर अपने घराने के साथ मिलकर रब अपने
ख़ुदा के हुज़ूर यह चीज़ें खाना और ख़ुशी मनाना।
27ऐसे मौक़ों पर उन लावियों का ख़याल रखना
जो तेरे क़बायली इलाक़े में रहते हैं, क्योंकि उन्हें
मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।

28हर तीसरे साल अपनी पैदावार का दसवाँ
हिस्सा अपने शहरों में जमा करना। 29उसे
लावियों को देना जिनके पास मौरूसी ज़मीन नहीं
है, नीज़ अपने शहरों में आबाद परदेसियों, यतीमों
और बेवाओं को देना। वह आएँ और खाना खाकर
सेर हो जाएँ ताकि रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में
बरकत दे।

क़र्ज़दारों की बहाली का साल

15 हर सात साल के बाद एक दूसरे के
कर्ज़े मुआफ़ कर देना। 2उस वक़्त
जिसने भी किसी इसराईली भाई को क़र्ज़ दिया
है वह उसे मनसूख़ करे। वह अपने पड़ोसी या
भाई को पैसे वापस करने पर मजबूर न करे,
क्योंकि रब की ताज़ीम में क़र्ज़ मुआफ़ करने के
साल का एलान किया गया है। 3इस साल में तू
सिर्फ़ ग़ैरमुल्की क़र्ज़दारों को पैसे वापस करने पर
मजबूर कर सकता है। अपने इसराईली भाई के
तमाम क़र्ज़ मुआफ़ कर देना।

4तेरे दरमियान कोई भी ग़रीब नहीं होना
चाहिए, क्योंकि जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब
तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में देनेवाला है तो वह तुझे
बहुत बरकत देगा। 5लेकिन शर्त यह है कि तू पूरे
तौर पर उस की सुने और एहतियात से उसके उन
तमाम अहकाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज
दे रहा हूँ। 6फिर रब तुम्हारा ख़ुदा तुझे अपने वादे
के मुताबिक़ बरकत देगा। तू किसी भी क़ौम से
उधार नहीं लेगा बल्कि बहुत-सी क़ौमों को उधार
देगा। कोई भी क़ौम तुझ पर हुकूमत नहीं करेगी
बल्कि तू बहुत-सी क़ौमों पर हुकूमत करेगा।

7जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब
तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है तो अपने दरमियान
रहनेवाले ग़रीब भाई से सख़्त सुलूक न करना,
न कंजूस होना। 8खुले दिल से उस की मदद
कर। जितनी उसे ज़रूरत है उसे उधार के तौर पर
दे। 9ख़बरदार, ऐसा मत सोच कि क़र्ज़ मुआफ़
करने का साल क़रीब है, इसलिए मैं उसे कुछ
नहीं दूँगा। अगर तू ऐसी शरीर बात अपने दिल
में सोचते हुए ज़रूरतमंद भाई को क़र्ज़ देने से
इनकार करे और वह रब के सामने तेरी शिकायत
करे तो तू क़ुसूरवार ठहरेगा। 10उसे ज़रूर कुछ
दे बल्कि ख़ुशी से दे। फिर रब तेरा ख़ुदा तेरे हर
काम में बरकत देगा। 11मुल्क में हमेशा ग़रीब
और ज़रूरतमंद लोग पाए जाएंगे, इसलिए मैं तुझे
हुक्म देता हूँ कि खुले दिल से अपने ग़रीब और
ज़रूरतमंद भाइयों की मदद कर।

ग़ुलामों को आज़ाद करने का फ़र्ज़

12अगर कोई इसराईली भाई या बहन अपने
आपको बेचकर तेरा ग़ुलाम बन जाए तो वह
छः साल तेरी ख़िदमत करे। लेकिन लाज़िम है
कि सातवें साल उसे आज़ाद कर दिया जाए।
13आज़ाद करते वक़्त उसे ख़ाली हाथ फ़ारिग़
न करना 14बल्कि अपनी भेड़-बकरियों, अनाज,
तेल और मै से उसे फ़ैयाज़ी से कुछ दे, यानी उन

चीज़ों में से जिनसे रब तेरे ख़ुदा ने तुझे बरकत दी
है। 15याद रख कि तू भी मिसर में ग़ुलाम था और
कि रब तेरे ख़ुदा ने फ़िद्या देकर तुझे छुड़ाया। इसी
लिए मैं आज तुझे यह हुक्म देता हूँ।

16लेकिन मुमकिन है कि तेरा ग़ुलाम तुझे
छोड़ना न चाहे, क्योंकि वह तुझसे और तेरे
ख़ानदान से मुहब्बत रखता है, और वह तेरे पास
रहकर ख़ुशहाल है। 17इस सूरत में उसे दरवाज़े
के पास ले जा और उसके कान की लौ चौखट
के साथ लगाकर उसे सुताली यानी तेज़ औज़ार
से छेद दे। तब वह ज़िंदगी-भर तेरा ग़ुलाम बना
रहेगा। अपनी लौंडी के साथ भी ऐसा ही करना।

18अगर ग़ुलाम तुझे छः साल के बाद छोड़ना
चाहे तो बुरा न मानना। आख़िर अगर उस की
जगह कोई और वही काम तनख़ाह के लिए करता
तो तेरे अख़राजात दुगने होते। उसे आज़ाद करना
तो रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

जानवरों के पहलौठे मख़सूस हैं

19अपनी गायों और भेड़-बकरियों के नर
पहलौठे रब अपने ख़ुदा के लिए मख़सूस करना।
न गाय के पहलौठे को काम के लिए इस्तेमाल
करना, न भेड़ के पहलौठे के बाल कतरना। 20हर
साल ऐसे बच्चे उस जगह ले जा जो रब अपने
मक़दिस के लिए चुनेगा। वहाँ उन्हें रब अपने ख़ुदा
के हुज़ूर अपने पूरे ख़ानदान समेत खाना।

21अगर ऐसे जानवर में कोई ख़राबी हो, वह
अंधा या लँगड़ा हो या उसमें कोई और नुक़्स हो
तो उसे रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुरबान न करना।
22ऐसे जानवर तू घर में ज़बह करके खा सकता
है। वह हिरन और ग़ज़ाल की मानिंद हैं जिन्हें तू खा
तो सकता है लेकिन क़ुरबानी के तौर पर पेश नहीं
कर सकता। पाक और नापाक शख़्स दोनों उसे
खा सकते हैं। 23लेकिन ख़ून न खाना। उसे पानी
की तरह ज़मीन पर उंडेलकर ज़ाया कर देना।

फ़सह की ईद

16 अबीब के महीने[a] में रब अपने ख़ुदा
की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना,
क्योंकि इस महीने में वह तुझे रात के वक़्त मिसर
से निकाल लाया। 2उस जगह जमा हो जा जो
रब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। उसे
क़ुरबानी के लिए भेड़-बकरियाँ या गाय-बैल पेश
करना। 3गोश्त के साथ बेख़मीरी रोटी खाना।
सात दिन तक यही रोटी खा, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह तूने किया जब जल्दी जल्दी मिसर
से निकला। मुसीबत की यह रोटी इसलिए खा
ताकि वह दिन तेरे जीते-जी याद रहे जब तू मिसर
से रवाना हुआ। 4लाज़िम है कि ईद के हफ़्ते के
दौरान तेरे पूरे मुल्क में ख़मीर न पाया जाए।

जो क़ुरबानी तू ईद के पहले दिन की शाम को
पेश करे उसका गोश्त उसी वक़्त खा ले। अगली
सुबह तक कुछ बाक़ी न रह जाए। 5फ़सह की
क़ुरबानी किसी भी शहर में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे
देगा न चढ़ाना 6बल्कि सिर्फ़ उस जगह जो वह
अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। मिसर से
निकलते वक़्त की तरह क़ुरबानी के जानवर को
सूरज डूबते वक़्त ज़बह कर। 7फिर उसे भूनकर
उस जगह खाना जो रब तेरा ख़ुदा चुनेगा। अगली
सुबह अपने घर वापस चला जा। 8ईद के पहले छः
दिन बेख़मीरी रोटी खाता रह। सातवें दिन काम न
करना बल्कि रब अपने ख़ुदा की इबादत के लिए
जमा हो जाना।

फ़सल की कटाई की ईद

9जब अनाज की फ़सल की कटाई शुरू होगी तो
पहले दिन के सात हफ़्ते बाद 10फ़सल की कटाई
की ईद मनाना। रब अपने ख़ुदा को उतना पेश कर
जितना जी चाहे। वह उस बरकत के मुताबिक़ हो
जो उसने तुझे दी है। 11इसके लिए भी उस जगह
जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत के लिए
चुनेगा। वहाँ उसके हुज़ूर ख़ुशी मना। तेरे बाल-
बच्चे, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में

[a]मार्च ता अप्रैल।

रहनेवाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब
तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 12इन अहकाम पर ज़रूर
अमल करना और मत भूलना कि तू मिसर में
ग़ुलाम था।

झोंपड़ियों की ईद

13अनाज गाहने और अंगूर का रस निकालने के
बाद झोंपड़ियों की ईद मनाना जिसका दौरानिया
सात दिन हो। 14ईद के मौक़े पर ख़ुशी मनाना।
तेरे बाल-बच्चे, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ और तेरे
शहरों में बसनेवाले लावी, परदेसी, यतीम और
बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 15जो जगह
रब तेरा ख़ुदा मक़दिस के लिए चुनेगा वहाँ उस की
ताज़ीम में सात दिन तक यह ईद मनाना। क्योंकि
रब तेरा ख़ुदा तेरी तमाम फ़सलों और मेहनत को
बरकत देगा, इसलिए ख़ूब ख़ुशी मनाना।

16इसराईल के तमाम मर्द साल में तीन मरतबा
उस मक़दिस पर हाज़िर हो जाएँ जो रब तेरा ख़ुदा
चुनेगा यानी बेख़मीरी रोटी की ईद, फ़सल की
कटाई की ईद और झोंपड़ियों की ईद पर। कोई
भी रब के हुज़ूर ख़ाली हाथ न आए। 17हर कोई
उस बरकत के मुताबिक़ दे जो रब तेरे ख़ुदा ने उसे
दी है।

क़ाज़ी मुक़र्रर करना

18अपने अपने क़बायली इलाक़े में क़ाज़ी और
निगहबान मुक़र्रर कर। वह हर उस शहर में हों जो
रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा। वह इनसाफ़ से लोगों
की अदालत करें। 19न किसी के हुक़ूक़ मारना,
न जानिबदारी दिखाना। रिश्वत क़बूल न करना,
क्योंकि रिश्वत दानिशमंदों को अंधा कर देती और
रास्तबाज़ की बातें पलट देती है। 20सिर्फ़ और
सिर्फ़ इनसाफ़ के मुताबिक़ चल ताकि तू जीता
रहे और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करे जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे देगा।

बुतपरस्ती की सज़ा

21जहाँ तू रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुरबानगाह
बनाएगा वहाँ न यसीरत देवी की पूजा के लिए
लकड़ी का खंबा 22और न कोई ऐसा पत्थर खड़ा
करना जिसकी पूजा लोग करते हैं। रब तेरा ख़ुदा
इन चीज़ों से नफ़रत रखता है।

17 रब अपने ख़ुदा को नाक़िस गाय-बैल
या भेड़-बकरी पेश न करना, क्योंकि
वह ऐसी क़ुरबानी से नफ़रत रखता है।

2जब तू उन शहरों में आबाद हो जाएगा जो
रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा तो हो सकता है कि तेरे
दरमियान कोई मर्द या औरत रब तेरे ख़ुदा का
अहद तोड़कर वह कुछ करे जो उसे बुरा लगे।
3मसलन वह दीगर माबूदों को या सूरज, चाँद या
सितारों के पूरे लशकर को सिजदा करे, हालाँकि
मैंने यह मना किया है। 4जब भी तुझे इस क़िस्म
की ख़बर मिले तो इसका पूरा खोज लगा। अगर
बात दुरुस्त निकले और ऐसी घिनौनी हरकत
वाक़ई इसराईल में की गई हो 5तो क़ुसूरवार
को शहर के बाहर ले जाकर संगसार कर देना।
6लेकिन लाज़िम है कि पहले कम अज़ कम दो या
तीन लोग गवाही दें कि उसने ऐसा ही किया है।
उसे सज़ाए-मौत देने के लिए एक गवाह काफ़ी
नहीं। 7पहले गवाह उस पर पत्थर फेंकें, इसके
बाद बाक़ी तमाम लोग उसे संगसार करें। यों तू
अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

मक़दिस में आलातरीन अदालत

8अगर तेरे शहर के क़ाज़ियों के लिए किसी
मुक़दमे का फ़ैसला करना मुश्किल हो तो उस
मक़दिस में आकर अपना मामला पेश कर जो
रब तेरा ख़ुदा चुनेगा, ख़ाह किसी को क़त्ल किया
गया हो, उसे ज़ख़मी कर दिया गया हो या कोई
और मसला हो। 9लावी के क़बीले के इमामों और
मक़दिस में ख़िदमत करनेवाले क़ाज़ी को अपना
मुक़दमा पेश कर, और वह फ़ैसला करें। 10जो
फ़ैसला वह उस मक़दिस में करेंगे जो रब चुनेगा
उसे मानना पड़ेगा। जो भी हिदायत वह दें उस पर

एहतियात से अमल कर। 11शरीअत की जो भी
बात वह तुझे सिखाएँ और जो भी फ़ैसला वह दें
उस पर अमल कर। जो कुछ भी वह तुझे बताएँ
उससे न दाईं और न बाईं तरफ़ मुड़ना।
12जो मक़दिस में रब तेरे ख़ुदा की ख़िदमत
करनेवाले क़ाज़ी या इमाम को हक़ीर जानकर
उनकी नहीं सुनता उसे सज़ाए-मौत दी जाए। यों
तू इसराईल से बुराई मिटा देगा। 13फिर तमाम
लोग यह सुनकर डर जाएंगे और आइंदा ऐसी
गुस्ताख़ी करने की जुर्रत नहीं करेंगे।

बादशाह के बारे में उसूल

14तू जल्द ही उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब
तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है। जब तू उस पर क़ब्ज़ा
करके उसमें आबाद हो जाएगा तो हो सकता है
कि तू एक दिन कहे, "आओ हम इर्दगिर्द की
तमाम क़ौमों की तरह बादशाह मुक़र्रर करें जो हम
पर हुकूमत करे।" 15अगर तू ऐसा करे तो सिर्फ़
वह शख़्स मुक़र्रर कर जिसे रब तेरा ख़ुदा चुनेगा।
वह परदेसी न हो बल्कि तेरा अपना इसराईली
भाई हो। 16बादशाह बहुत ज़्यादा घोड़े न रखे, न
अपने लोगों को उन्हें ख़रीदने के लिए मिसर भेजे।
क्योंकि रब ने तुझसे कहा है कि कभी वहाँ वापस
न जाना। 17तेरा बादशाह ज़्यादा बीवियाँ भी न
रखे, वरना उसका दिल रब से दूर हो जाएगा।
और वह हद से ज़्यादा सोना-चाँदी जमा न करे।
18तख़्तनशीन होते वक़्त वह लावी के क़बीले
के इमामों के पास पड़ी इस शरीअत की नक़ल
लिखवाए। 19यह किताब उसके पास महफ़ूज़
रहे, और वह उम्र-भर रोज़ाना इसे पढ़ता रहे
ताकि रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे। तब
वह शरीअत की तमाम बातों की पैरवी करेगा,
20अपने आपको अपने इसराईली भाइयों से
ज़्यादा अहम नहीं समझेगा और किसी तरह भी
शरीअत से हटकर काम नहीं करेगा। नतीजे में वह
और उस की औलाद बहुत अरसे तक इसराईल
पर हुकूमत करेंगे।

इमामों और लावियों का हिस्सा

18 इसराईल के हर क़बीले को मीरास में
उसका अपना इलाक़ा मिलेगा सिवाए
लावी के क़बीले के जिसमें इमाम भी शामिल
हैं। वह जलनेवाली और दीगर क़ुरबानियों में से
अपना हिस्सा लेकर गुज़ारा करें। 2उनके पास
दूसरों की तरह मौरूसी ज़मीन नहीं होगी बल्कि
रब ख़ुद उनका मौरूसी हिस्सा होगा। यह उसने
वादा करके कहा है।
3जब भी किसी बैल या भेड़ को क़ुरबान किया
जाए तो इमामों को उसका शाना, जबड़े और
ओझड़ी मिलने का हक़ है। 4अपनी फ़सलों का
पहला फल भी उन्हें देना यानी अनाज, मै, ज़ैतून
का तेल और भेड़ों की पहली कतरी हुई ऊन।
5क्योंकि रब ने तेरे तमाम क़बीलों में से लावी के
क़बीले को ही मक़दिस में रब के नाम में ख़िदमत
करने के लिए चुना है। यह हमेशा के लिए उनकी
और उनकी औलाद की ज़िम्मेदारी रहेगी।
6कुछ लावी मक़दिस के पास नहीं बल्कि
इसराईल के मुख़्तलिफ़ शहरों में रहेंगे। अगर उनमें
से कोई उस जगह आना चाहे जो रब मक़दिस के
लिए चुनेगा 7तो वह वहाँ के ख़िदमत करनेवाले
लावियों की तरह मक़दिस में रब अपने ख़ुदा के
नाम में ख़िदमत कर सकता है। 8उसे क़ुरबानियों
में से दूसरों के बराबर लावियों का हिस्सा मिलना
है, ख़ाह उसे ख़ानदानी मिलकियत बेचने से पैसे
मिल गए हों या नहीं।

जादूगरी मना है

9जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ की रहनेवाली क़ौमों
के घिनौने दस्तूर न अपनाना। 10तेरे दरमियान
कोई भी अपने बेटे या बेटी को क़ुरबानी के तौर
पर न जलाए। न कोई ग़ैबदानी करे, न फ़ाल या
शुगून निकाले या जादूगरी करे। 11इसी तरह मंत्र
पढ़ना, हाज़िरात करना, क़िस्मत का हाल बताना
या मुरदों की रूहों से राबिता करना सख़्त मना है।
12जो भी ऐसा करे वह रब की नज़र में क़ाबिले-

घिन है। इन्हीं मकरूह दस्तूरों की वजह से रब तेरा ख़ुदा तेरे आगे से उन क़ौमों को निकाल देगा।
13इसलिए लाज़िम है कि तू रब अपने ख़ुदा के सामने बेक़ुसूर रहे।

नबी का वादा

14जिन क़ौमों को तू निकालनेवाला है वह उनकी सुनती हैं जो फ़ाल निकालते और ग़ैबदानी करते हैं। लेकिन रब तेरे ख़ुदा ने तुझे ऐसा करने की इजाज़त नहीं दी।

15रब तेरा ख़ुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। उस की सुनना।
16क्योंकि होरिब यानी सीना पहाड़ पर जमा होते वक़्त तूने ख़ुद रब अपने ख़ुदा से दरख़ास्त की, "न मैं मज़ीद रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनना चाहता, न यह भड़कती हुई आग देखना चाहता हूँ, वरना मर जाऊँगा।" 17तब रब ने मुझसे कहा,
"जो कुछ वह कहते हैं वह ठीक है। 18आइंदा मैं
उनमें से तुझ जैसा नबी खड़ा करूँगा। मैं अपने अलफ़ाज़ उसके मुँह में डाल दूँगा, और वह मेरी हर बात उन तक पहुँचाएगा। 19जब वह नबी मेरे
नाम में कुछ कहे तो लाज़िम है कि तू उस की सुन। जो नहीं सुनेगा उससे मैं ख़ुद जवाब तलब करूँगा। 20लेकिन अगर कोई नबी गुस्ताख़ होकर
मेरे नाम में कोई बात कहे जो मैंने उसे बताने को नहीं कहा था तो उसे सज़ाए-मौत देनी है। इसी तरह उस नबी को भी हलाक कर देना है जो दीगर माबूदों के नाम में बात करे।"

21शायद तेरे ज़हन में सवाल उभर आए कि हम किस तरह मालूम कर सकते हैं कि कोई कलाम वाक़ई रब की तरफ़ से है या नहीं। 22जवाब यह
है कि अगर नबी रब के नाम में कुछ कहे और वह पूरा न हो जाए तो मतलब है कि नबी की बात रब की तरफ़ से नहीं है बल्कि उसने गुस्ताख़ी करके बात की है। इस सूरत में उससे मत डरना।

पनाह के शहर

19 रब तेरा ख़ुदा उस मुल्क में आबाद क़ौमों को तबाह करेगा जो वह तुझे दे रहा है। जब तू उन्हें भगाकर उनके शहरों और घरों में आबाद हो जाएगा 2-3तो पूरे मुल्क को
तीन हिस्सों में तक़सीम कर। हर हिस्से में एक मरकज़ी शहर मुक़र्रर कर। उन तक पहुँचानेवाले रास्ते साफ़-सुथरे रखना। इन शहरों में हर वह शख़्स पनाह ले सकता है जिसके हाथ से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ है। 4वह ऐसे शहर
में जाकर इंतक़ाम लेनेवालों से महफ़ूज़ रहेगा। शर्त यह है कि उसने न क़सदन और न दुश्मनी के बाइस किसी को मार दिया हो।

5मसलन दो आदमी जंगल में दरख़्त काट रहे हैं। कुल्हाड़ी चलाते वक़्त एक की कुल्हाड़ी दस्ते से निकलकर उसके साथी को लग जाए और वह मर जाए। ऐसा शख़्स फ़रार होकर ऐसे शहर में पनाह ले सकता है ताकि बचा रहे। 6इसलिए
ज़रूरी है कि ऐसे शहरों का फ़ासला ज़्यादा न हो। क्योंकि जब इंतक़ाम लेनेवाला उसका ताक़्क़ुब करेगा तो ख़तरा है कि वह तैश में उसे पकड़कर मार डाले, अगरचे भागनेवाला बेक़ुसूर है। जो कुछ उसने किया वह दुश्मनी के सबब से नहीं बल्कि ग़ैरइरादी तौर पर हुआ। 7इसलिए लाज़िम है कि
तू पनाह के तीन शहर अलग कर ले।

8बाद में रब तेरा ख़ुदा तेरी सरहद्दें मज़ीद बढ़ा देगा, क्योंकि यही वादा उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा से किया है। अपने वादे के मुताबिक़ वह तुझे पूरा मुल्क देगा, 9अलबत्ता शर्त यह है कि तू
एहतियात से उन तमाम अहकाम की पैरवी करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। दूसरे अलफ़ाज़ में शर्त यह है कि तू रब अपने ख़ुदा को प्यार करे और हमेशा उस की राहों में चलता रहे। अगर तू ऐसा ही करे और नतीजतन रब का वादा पूरा हो जाए तो लाज़िम है कि तू पनाह के तीन और शहर अलग कर ले। 10वरना तेरे मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा

तुझे मीरास में दे रहा है बेक़ुसूर लोगों को जान से मारा जाएगा और तू ख़ुद ज़िम्मेदार ठहरेगा।

11लेकिन हो सकता है कोई दुश्मनी के बाइस किसी की ताक में बैठ जाए और उस पर हमला करके उसे मार डाले। अगर क़ातिल पनाह के किसी शहर में भागकर पनाह ले 12तो उसके शहर के बुज़ुर्ग इत्तला दें कि उसे वापस लाया जाए। उसे इंतक़ाम लेनेवाले के हवाले किया जाए ताकि उसे सज़ाए-मौत मिले। 13उस पर रहम मत करना। लाज़िम है कि तू इसराईल में से बेक़ुसूर की मौत का दाग़ मिटाए ताकि तू ख़ुशहाल रहे।

ज़मीनों की हद्दें

14जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में देगा ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो ज़मीन की वह हद्दें आगे पीछे न करना जो तेरे बापदादा ने मुक़र्रर कीं।

अदालत में गवाह

15तू किसी को एक ही गवाह के कहने पर क़ुसूरवार नहीं ठहरा सकता। जो भी जुर्म सरज़द हुआ है, कम अज़ कम दो या तीन गवाहों की ज़रूरत है। वरना तू उसे क़ुसूरवार नहीं ठहरा सकता।

16अगर जिस पर इलज़ाम लगाया गया है इनकार करके दावा करे कि गवाह झूट बोल रहा है 17तो दोनों मक़दिस में रब के हुज़ूर आकर ख़िदमत करनेवाले इमामों और क़ाज़ियों को अपना मामला पेश करें। 18क़ाज़ी इसका ख़ूब खोज लगाएँ। अगर बात दुरुस्त निकले कि गवाह ने झूट बोलकर अपने भाई पर ग़लत इलज़ाम लगाया है 19तो उसके साथ वह कुछ किया जाए जो वह अपने भाई के लिए चाह रहा था। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। 20फिर तमाम बाक़ी लोग यह सुनकर डर जाएंगे और आइंदा तेरे दरमियान ऐसी ग़लत हरकत करने की जुर्रत नहीं करेंगे। 21क़ुसूरवार पर रहम न करना। उसूल यह हो कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव।

जंग के उसूल

20 जब तू जंग के लिए निकलकर देखता है कि दुश्मन तादाद में ज़्यादा हैं और उनके पास घोड़े और रथ भी हैं तो मत डरना। रब तेरा ख़ुदा जो तुझे मिसर से निकाल लाया अब भी तेरे साथ है। 2जंग के लिए निकलने से पहले इमाम सामने आए और फ़ौज से मुख़ातिब होकर 3कहे, "सुन ऐ इसराईल! आज तुम अपने दुश्मन से लड़ने जा रहे हो। उनके सबब से परेशान न हो। उनसे न ख़ौफ़ खाओ, न घबराओ, 4क्योंकि रब तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद तुम्हारे साथ जाकर दुश्मन से लड़ेगा। वही तुम्हें फ़तह बख़्शेगा।"

5फिर निगहबान फ़ौज से मुख़ातिब हों, "क्या यहाँ कोई है जिसने हाल में अपना नया घर मुकम्मल किया लेकिन उसे मख़सूस करने का मौक़ा न मिला? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग के दौरान मारा जाए और कोई और घर को मख़सूस करके उसमें बसने लगे। 6क्या कोई है जिसने अंगूर का बाग़ लगाकर इस वक़्त उस की पहली फ़सल के इंतज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और बाग़ का फ़ायदा उठाए। 7क्या कोई है जिसकी मँगनी हुई है और जो इस वक़्त शादी के इंतज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और उस की मंगेतर से शादी करे।"

8निगहबान कहें, "क्या कोई ख़ौफ़ज़दा या परेशान है? वह अपने घर वापस चला जाए ताकि अपने साथियों को परेशान न करे।" 9इसके बाद फ़ौजियों पर अफ़सर मुक़र्रर किए जाएँ।

10किसी शहर पर हमला करने से पहले उसके बाशिंदों को हथियार डाल देने का मौक़ा देना। 11अगर वह मान जाएँ और अपने दरवाज़े खोल दें तो वह तेरे लिए बेगार में काम करके तेरी

ख़िदमत करें। 12लेकिन अगर वह हथियार डालने
से इनकार करें और जंग छिड़ जाए तो शहर का
मुहासरा कर। 13जब रब तेरा ख़ुदा तुझे शहर पर
फ़तह देगा तो उसके तमाम मर्दों को हलाक कर
देना। 14तू तमाम माले-ग़नीमत औरतों, बच्चों
और मवेशियों समेत रख सकता है। दुश्मन की
जो चीज़ें रब ने तेरे हवाले कर दी हैं उन सबको
तू इस्तेमाल कर सकता है। 15यों उन शहरों से
निपटना जो तेरे अपने मुल्क से बाहर हैं।

16लेकिन जो शहर उस मुल्क में वाक़े हैं जो रब
तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है, उनके तमाम
जानदारों को हलाक कर देना। 17उन्हें रब के सुपुर्द
करके मुकम्मल तौर पर हलाक करना, जिस तरह
रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। इसमें हित्ती,
अमोरी, कनानी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी
शामिल हैं। 18अगर तू ऐसा न करे तो वह तुम्हें
रब तुम्हारे ख़ुदा का गुनाह करने पर उकसाएँगे।
जो घिनौनी हरकतें वह अपने देवताओं की पूजा
करते वक़्त करते हैं उन्हें वह तुम्हें भी सिखाएँगे।

19शहर का मुहासरा करते वक़्त इर्दगिर्द के
फलदार दरख़्तों को काटकर तबाह न कर देना
ख़ाह बड़ी देर भी हो जाए, वरना तू उनका फल
नहीं खा सकेगा। उन्हें न काटना। क्या दरख़्त तेरे
दुश्मन हैं जिनका मुहासरा करना है? हरगिज़
नहीं! 20उन दरख़्तों की और बात है जो फल नहीं
लाते। उन्हें तू काटकर मुहासरे के लिए इस्तेमाल
कर सकता है जब तक शहर शिकस्त न खाए।

नामालूम क़त्ल का कफ़्फ़ारा

21 जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो
रब तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू
उस पर क़ब्ज़ा करे तो हो सकता है कि कोई लाश
खुले मैदान में कहीं पड़ी पाई जाए। अगर मालूम
न हो कि किसने उसे क़त्ल किया है 2तो पहले
इर्दगिर्द के शहरों के बुज़ुर्ग और क़ाज़ी आकर पता
करें कि कौन-सा शहर लाश के ज़्यादा क़रीब है।
3फिर उस शहर के बुज़ुर्ग एक जवान गाय चुन लें
जो कभी काम के लिए इस्तेमाल नहीं हुई। 4वह
उसे एक ऐसी वादी में ले जाएँ जिसमें न कभी
हल चलाया गया, न पौदे लगाए गए हों। वादी में
ऐसी नहर हो जो पूरा साल बहती रहे। वहीं बुज़ुर्ग
जवान गाय की गरदन तोड़ डालें।

5फिर लावी के क़बीले के इमाम क़रीब आएँ।
क्योंकि रब तुम्हारे ख़ुदा ने उन्हें चुन लिया है ताकि
वह ख़िदमत करें, रब के नाम से बरकत दें और
तमाम झगड़ों और हमलों का फ़ैसला करें। 6उनके
देखते देखते शहर के बुज़ुर्ग अपने हाथ गाय की
लाश के ऊपर धो लें। 7साथ साथ वह कहें, "हमने
इस शख़्स को क़त्ल नहीं किया, न हमने देखा कि
किसने यह किया। 8ऐ रब, अपनी क़ौम इसराईल
का यह कफ़्फ़ारा क़बूल फ़रमा जिसे तूने फ़िद्या
देकर छुड़ाया है। अपनी क़ौम इसराईल को इस
बेक़ुसूर के क़त्ल का क़ुसूरवार न ठहरा।" तब
मक़तूल का कफ़्फ़ारा दिया जाएगा।

9यों तू ऐसे बेक़ुसूर शख़्स के क़त्ल का दाग़
अपने दरमियान से मिटा देगा। क्योंकि तूने वही
कुछ किया होगा जो रब की नज़र में दुरुस्त है।

जंगी क़ैदी औरत से शादी

10हो सकता है कि तू अपने दुश्मन से जंग
करे और रब तुम्हारा ख़ुदा तुझे फ़तह बख़्शे। जंगी
क़ैदियों को जमा करते वक़्त 11तुझे उनमें से एक
ख़ूबसूरत औरत नज़र आती है जिसके साथ तेरा
दिल लग जाता है। तू उससे शादी कर सकता है।
12उसे अपने घर में ले आ। वहाँ वह अपने सर
के बालों को मुँडवाए, अपने नाख़ुन तराशे 13और
अपने वह कपड़े उतारे जो वह पहने हुए थी जब
उसे क़ैद किया गया। वह पूरे एक महीने तक अपने
वालिदैन के लिए मातम करे। फिर तू उसके पास
जाकर उसके साथ शादी कर सकता है।

14अगर वह तुझे किसी वक़्त पसंद न आए तो
उसे जाने दे। वह वहाँ जाए जहाँ उसका जी चाहे।
तुझे उसे बेचने या उससे लौंडी का-सा सुलूक
करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि तूने उसे मजबूर
करके उससे शादी की है।

पहलौठे के हुक़ूक़

15हो सकता है किसी मर्द की दो बीवियाँ हों। एक को वह प्यार करता है, दूसरी को नहीं। दोनों बीवियों के बेटे पैदा हुए हैं, लेकिन जिस बीवी से शौहर मुहब्बत नहीं करता उसका बेटा सबसे पहले पैदा हुआ। 16जब बाप अपनी मिलकियत वसियत में तक़सीम करता है तो लाज़िम है कि वह अपने सबसे बड़े बेटे का मौरूसी हक़ पूरा करे। उसे पहलौठे का यह हक़ उस बीवी के बेटे को मुंतक़िल करने की इजाज़त नहीं जिसे वह प्यार करता है। 17उसे तसलीम करना है कि उस बीवी का बेटा सबसे बड़ा है, जिससे वह मुहब्बत नहीं करता। नतीजतन उसे उस बेटे को दूसरे बेटों की निसबत दुगना हिस्सा देना पड़ेगा, क्योंकि वह अपने बाप की ताक़त का पहला इज़हार है। उसे पहलौठे का हक़ हासिल है।

सरकश बेटा

18हो सकता है कि किसी का बेटा हटधर्म और सरकश हो। वह अपने वालिदैन की इताअत नहीं करता और उनके तंबीह करने और सज़ा देने पर भी उनकी नहीं सुनता। 19इस सूरत में वालिदैन उसे पकड़कर शहर के दरवाज़े पर ले जाएँ जहाँ बुज़ुर्ग जमा होते हैं। 20वह बुज़ुर्गों से कहें, “हमारा बेटा हटधर्म और सरकश है। वह हमारी इताअत नहीं करता बल्कि ऐयाश और शराबी है।” 21यह सुनकर शहर के तमाम मर्द उसे संगसार करें। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। तमाम इसराईल यह सुनकर डर जाएगा।

सज़ाए-मौत पानेवाले को उसी दिन दफ़नाना है

22जब तू किसी को सज़ाए-मौत देकर उस की लाश किसी लकड़ी या दरख़्त से लटकाता है 23तो उसे अगली सुबह तक वहाँ न छोड़ना। हर सूरत में उसे उसी दिन दफ़ना देना, क्योंकि जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है उस पर अल्लाह की लानत है। अगर उसे उसी दिन दफ़नाया न जाए तो तू उस मुल्क को नापाक कर देगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

मदद करने के लिए तैयार रहना

22 अगर तुझे किसी हमवतन भाई का बैल या भेड़-बकरी भटकी हुई नज़र आए तो उसे नज़रंदाज़ न करना बल्कि मालिक के पास वापस ले जाना। 2अगर मालिक का घर क़रीब न हो या तुझे मालूम न हो कि मालिक कौन है तो जानवर को अपने घर लाकर उस वक़्त तक सँभाले रखना जब तक कि मालिक उसे ढूँडने न आए। फिर जानवर को उसे वापस कर देना। 3यही कुछ कर अगर तेरे हमवतन भाई का गधा भटका हुआ नज़र आए या उसका गुमशुदा कोट या कोई और चीज़ कहीं नज़र आए। उसे नज़रंदाज़ न करना।

4अगर तू देखे कि किसी हमवतन का गधा या बैल रास्ते में गिर गया है तो उसे नज़रंदाज़ न करना। जानवर को खड़ा करने में अपने भाई की मदद कर।

क़ुदरती इंतज़ाम के तहत रहना

5औरत के लिए मर्दों के कपड़े पहनना मना है। इसी तरह मर्द के लिए औरतों के कपड़े पहनना भी मना है। जो ऐसा करता है उससे रब तेरे ख़ुदा को घिन आती है।

6अगर तुझे कहीं रास्ते में, किसी दरख़्त में या ज़मीन पर घोंसला नज़र आए और परिंदा अपने बच्चों या अंडों पर बैठा हुआ हो तो माँ को बच्चों समेत न पकड़ना। 7तुझे बच्चे ले जाने की इजाज़त है लेकिन माँ को छोड़ देना ताकि तू ख़ुशहाल और देर तक जीता रहे।

8नया मकान तामीर करते वक़्त छत पर चारों तरफ़ दीवार बनाना। वरना तू उस शख़्स की मौत का ज़िम्मेदार ठहरेगा जो तेरी छत पर से गिर जाए।

9अपने अंगूर के बाग़ में दो क़िस्म के बीज न बोना। वरना सब कुछ मक़दिस के लिए मख़सूसो-

मुक़द्दस होगा, न सिर्फ़ वह फ़सल जो तुमने अंगूर
के अलावा लगाई बल्कि अंगूर भी।
10बैल और गधे को जोड़कर हल न चलाना।
11ऐसे कपड़े न पहनना जिनमें बनते वक़्त ऊन
और कतान मिलाए गए हैं।
12अपनी चादर के चारों कोनों पर फुँदने
लगाना।

इज़दिवाजी ज़िंदगी की हिफ़ाज़त

13अगर कोई आदमी शादी करने के थोड़ी देर
बाद अपनी बीवी को पसंद न करे 14और फिर
उस की बदनामी करके कहे, "इस औरत से शादी
करने के बाद मुझे पता चला कि वह कुँवारी नहीं
है" 15तो जवाब में बीवी के वालिदैन शहर के
दरवाज़े पर जमा होनेवाले बुज़ुर्गों के पास सबूत[a]
ले आएँ कि बेटी शादी से पहले कुँवारी थी।
16बीवी का बाप बुज़ुर्गों से कहे, "मैंने अपनी बेटी
की शादी इस आदमी से की है, लेकिन यह उससे
नफ़रत करता है। 17अब इसने उस की बदनामी
करके कहा है, 'मुझे पता चला कि तुम्हारी बेटी
कुँवारी नहीं है।' लेकिन यहाँ सबूत है कि मेरी
बेटी कुँवारी थी।" फिर वालिदैन शहर के बुज़ुर्गों
को मज़कूरा कपड़ा दिखाएँ।
18तब बुज़ुर्ग उस आदमी को पकड़कर सज़ा
दें, 19क्योंकि उसने एक इसराईली कुँवारी की
बदनामी की है। इसके अलावा उसे जुर्माने के
तौर पर बीवी के बाप को चाँदी के 100 सिक्के
देने पड़ेंगे। लाज़िम है कि वह शौहर के फ़रायज़
अदा करता रहे। वह उम्र-भर उसे तलाक़ नहीं दे
सकेगा।
20लेकिन अगर आदमी की बात दुरुस्त निकले
और साबित न हो सके कि बीवी शादी से पहले
कुँवारी थी 21तो उसे बाप के घर लाया जाए।
वहाँ शहर के आदमी उसे संगसार कर दें। क्योंकि
अपने बाप के घर में रहते हुए बदकारी करने से
उसने इसराईल में एक अहमक़ाना और बेदीन
हरकत की है। यों तू अपने दरमियान से बुराई
मिटा देगा। 22अगर कोई आदमी किसी की बीवी
के साथ ज़िना करे और वह पकड़े जाएँ तो दोनों
को सज़ाए-मौत देनी है। यों तू इसराईल से बुराई
मिटा देगा।
23अगर आबादी में किसी मर्द की मुला-
क़ात किसी ऐसी कुँवारी से हो जिसकी किसी
और के साथ मँगनी हुई है और वह उसके साथ
हमबिसतर हो जाए 24तो लाज़िम है कि तुम
दोनों को शहर के दरवाज़े के पास लाकर संगसार
करो। वजह यह है कि लड़की ने मदद के लिए न
पुकारा अगरचे उस जगह लोग आबाद थे। मर्द का
जुर्म यह था कि उसने किसी और की मंगेतर की
इसमतदरी की है। यों तू अपने दरमियान से बुराई
मिटा देगा।
25लेकिन अगर मर्द ग़ैरआबाद जगह में किसी
और की मंगेतर की इसमतदरी करे तो सिर्फ़
उसी को सज़ाए-मौत दी जाए। 26लड़की को
कोई सज़ा न देना, क्योंकि उसने कुछ नहीं किया
जो मौत के लायक़ हो। ज़्यादती करनेवाले की
हरकत उस शख़्स के बराबर है जिसने किसी पर
हमला करके उसे क़त्ल कर दिया है। 27चूँकि
उसने लड़की को वहाँ पाया जहाँ लोग नहीं रहते,
इसलिए अगरचे लड़की ने मदद के लिए पुकारा
तो भी उसे कोई न बचा सका।
28हो सकता है कोई आदमी किसी लड़की
की इसमतदरी करे जिसकी मँगनी नहीं हुई है।
अगर उन्हें पकड़ा जाए 29तो वह लड़की के बाप
को चाँदी के 50 सिक्के दे। लाज़िम है कि वह
उसी लड़की से शादी करे, क्योंकि उसने उस की
इसमतदरी की है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह उम्र-भर
उसे तलाक़ नहीं दे सकता।
30अपने बाप की बीवी से शादी करना मना
है। जो कोई यह करे वह अपने बाप की बेहुरमती
करता है।

[a]यानी वह कपड़ा जिस पर नया जोड़ा सोया हुआ था।

मुक़द्दस इजतिमा में शरीक होने की शरायत

23 जब इसराईली रब के मक़दिस के पास जमा होते हैं तो उसे हाज़िर होने की इजाज़त नहीं जो काटने या कुचलने से ख़ोजा बन गया है।
2इसी तरह वह भी मुक़द्दस इजतिमा से दूर रहे जो नाजायज़ ताल्लुक़ात के नतीजे में पैदा हुआ है। उस की औलाद भी दसवीं पुश्त तक उसमें नहीं आ सकती।

3कोई भी अम्मोनी या मोआबी मुक़द्दस इजतिमा में शरीक नहीं हो सकता। इन क़ौमों की औलाद दसवीं पुश्त तक भी इस जमात में हाज़िर नहीं हो सकती,
4क्योंकि जब तुम मिसर से निकल आए तो वह रोटी और पानी लेकर तुमसे मिलने न आए। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने मसोपुतामिया के शहर फ़तोर में जाकर बिलाम बिन बओर को पैसे दिए ताकि वह तुझ पर लानत भेजे।
5लेकिन रब तेरे ख़ुदा ने बिलाम की न सुनी बल्कि उस की लानत बरकत में बदल दी। क्योंकि रब तेरा ख़ुदा तुझसे प्यार करता है।
6उम्र-भर कुछ न करना जिससे इन क़ौमों की सलामती और ख़ुशहाली बढ़ जाए।

7लेकिन अदोमियों को मकरूह न समझना, क्योंकि वह तुम्हारे भाई हैं। इसी तरह मिसरियों को भी मकरूह न समझना, क्योंकि तू उनके मुल्क में परदेसी मेहमान था।
8उनकी तीसरी नसल के लोग रब के मुक़द्दस इजतिमा में शरीक हो सकते हैं।

ख़ैमागाह में नापाकी

9अपने दुश्मनों से जंग करते वक़्त अपनी लशकरगाह में हर नापाक चीज़ से दूर रहना।
10मसलन अगर कोई आदमी रात के वक़्त एहतलाम के बाइस नापाक हो जाए तो वह लशकरगाह के बाहर जाकर शाम तक वहाँ ठहरे।
11दिन ढलते वक़्त वह नहा ले तो सूरज डूबने पर लशकरगाह में वापस आ सकता है।

12अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए लशकरगाह से बाहर कोई जगह मुक़र्रर कर।
13जब किसी को हाजत के लिए बैठना हो तो वह इसके लिए गढ़ा खोदे और बाद में उसे मिट्टी से भर दे। इसलिए अपने सामान में खुदाई का कोई आला रखना ज़रूरी है।

14रब तेरा ख़ुदा तेरी लशकरगाह में तेरे दरमियान ही घुमता-फिरता है ताकि तू महफ़ूज़ रहे और दुश्मन तेरे सामने शिकस्त खाए। इसलिए लाज़िम है कि तेरी लशकरगाह उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हो। ऐसा न हो कि अल्लाह वहाँ कोई शर्मनाक बात देखकर तुझसे दूर हो जाए।

फ़रार हुए ग़ुलामों की मदद करना

15अगर कोई ग़ुलाम तेरे पास पनाह ले तो उसे मालिक को वापस न करना।
16वह तेरे साथ और तेरे दरमियान ही रहे, वहाँ जहाँ वह बसना चाहे, उस शहर में जो उसे पसंद आए। उसे न दबाना।

मंदिर में इसमतफ़रोशी मना है

17किसी देवता की ख़िदमत में इसमत-फ़रोशी करना हर इसराईली औरत और मर्द के लिए मना है।
18मन्नत मानते वक़्त न कसबी का अज्र, न कुत्ते के पैसे[a] रब के मक़दिस में लाना, क्योंकि रब तेरे ख़ुदा को दोनों चीज़ों से घिन है।

अपने हमवतनों से सूद न लेना

19अगर कोई इसराईली भाई तुझसे क़र्ज़ ले तो उससे सूद न लेना, ख़ाह तूने उसे पैसे, खाना या कोई और चीज़ दी हो।
20अपने इसराईली भाई से सूद न ले बल्कि सिर्फ़ परदेसी से। फिर जब तू मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उसमें रहेगा तो रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

[a]यक़ीन से नहीं कहा जा सकता कि 'कुत्ते के पैसे' से क्या मुराद है। ग़ालिबन इसके पीछे बुतपरस्ती का कोई दस्तूर है।

अपनी मन्नत पूरी करना

21जब तू रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत माने
तो उसे पूरा करने में देर न करना। रब तेरा ख़ुदा
यक़ीनन तुझसे इसका मुतालबा करेगा। अगर तू
उसे पूरा न करे तो क़ुसूरवार ठहरेगा। 22अगर
तू मन्नत मानने से बाज़ रहे तो क़ुसूरवार नहीं
ठहरेगा, 23लेकिन अगर तू अपनी दिली ख़ुशी से
रब के हुज़ूर मन्नत माने तो हर सूरत में उसे पूरा
कर।

दूसरे के बाग़ में से गुज़रने का रवैया

24किसी हमवतन के अंगूर के बाग़ में से गुज़रते
वक़्त तुझे जितना जी चाहे उसके अंगूर खाने की
इजाज़त है। लेकिन अपने किसी बरतन में फल
जमा न करना। 25इसी तरह किसी हमवतन के
अनाज के खेत में से गुज़रते वक़्त तुझे अपने
हाथों से अनाज की बालियाँ तोड़ने की इजाज़त
है। लेकिन दराँती इस्तेमाल न करना।

तलाक़ और दुबारा शादी

24 हो सकता है कोई आदमी किसी
औरत से शादी करे लेकिन बाद में
उसे पसंद न करे, क्योंकि उसे बीवी के बारे में
किसी शर्मनाक बात का पता चल गया है। वह
तलाक़नामा लिखकर उसे औरत को देता और
फिर उसे घर से वापस भेज देता है। 2इसके
बाद उस औरत की शादी किसी और मर्द से
हो जाती है, 3और वह भी बाद में उसे पसंद
नहीं करता। वह भी तलाक़नामा लिखकर उसे
औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज
देता है। ख़ाह दूसरा शौहर उसे वापस भेज दे या
शौहर मर जाए, 4औरत के पहले शौहर को उससे
दुबारा शादी करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि
वह औरत उसके लिए नापाक है। ऐसी हरकत
रब की नज़र में क़ाबिले-घिन है। उस मुल्क को
यों गुनाहआलूदा न करना जो रब तेरा ख़ुदा तुझे
मीरास में दे रहा है।

मज़ीद हिदायात

5अगर किसी आदमी ने अभी अभी शादी की
हो तो तू उसे भरती करके जंग करने के लिए नहीं
भेज सकता। तू उसे कोई भी ऐसी ज़िम्मेदारी नहीं
दे सकता, जिससे वह घर से दूर रहने पर मजबूर
हो जाए। एक साल तक वह ऐसी ज़िम्मेदारियों से
बरी रहे ताकि घर में रहकर अपनी बीवी को ख़ुश
कर सके।

6अगर कोई तुझसे उधार ले तो ज़मानत के तौर
पर उससे न उस की छोटी चक्की, न उस की बड़ी
चक्की का पाट लेना, क्योंकि ऐसा करने से तू
उस की जान लेगा यानी तू वह चीज़ लेगा जिससे
उसका गुज़ारा होता है।

7अगर किसी आदमी को पकड़ा जाए जिसने
अपने हमवतन को इग़वा करके ग़ुलाम बना लिया
या बेच दिया है तो उसे सज़ाए-मौत देना है। यों तू
अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

8अगर कोई वबाई जिल्दी बीमारी तुझे लग
जाए तो बड़ी एहतियात से लावी के क़बीले के
इमामों की तमाम हिदायात पर अमल करना। जो
भी हुक्म मैंने उन्हें दिया उसे पूरा करना। 9याद कर
कि रब तेरे ख़ुदा ने मरियम के साथ क्या किया
जब तुम मिसर से निकलकर सफ़र कर रहे थे।

ग़रीबों के हुक़ूक़

10अपने हमवतन को उधार देते वक़्त उसके
घर में न जाना ताकि ज़मानत की कोई चीज़
मिले 11बल्कि बाहर ठहरकर इंतज़ार कर कि वह
ख़ुद घर से ज़मानत की चीज़ निकालकर तुझे दे।
12अगर वह इतना ज़रूरतमंद हो कि सिर्फ़ अपनी
चादर दे सके तो रात के वक़्त ज़मानत तेरे पास न
रहे। 13उसे सूरज डूबने तक वापस करना ताकि
क़र्ज़दार उसमें लिपटकर सो सके। फिर वह तुझे
बरकत देगा और रब तेरा ख़ुदा तेरा यह क़दम रास्त
क़रार देगा।

14ज़रूरतमंद मज़दूर से ग़लत फ़ायदा न
उठाना, चाहे वह इसराईली हो या परदेसी। 15उसे
रोज़ाना सूरज डूबने से पहले पहले उस की

मज़दूरी दे देना, क्योंकि इससे उसका गुज़ारा होता है। कहीं वह रब के हुज़ूर तेरी शिकायत न करे और तू क़ुसूरवार ठहरे।

16वालिदैन को उनके बच्चों के जरायम के सबब से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिदैन के जरायम के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उसने ख़ुद किया है।

17परदेसियों और यतीमों के हुक़ूक़ क़ायम रखना। उधार देते वक़्त ज़मानत के तौर पर बेवा की चादर न लेना। 18याद रख कि तू भी मिसर में ग़ुलाम था और कि रब तेरे ख़ुदा ने फ़िद्या देकर तुझे वहाँ से छुड़ाया। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

19अगर तू फ़सल की कटाई के वक़्त एक पूला भूलकर खेत में छोड़ आए तो उसे लाने के लिए वापस न जाना। उसे परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए वहीं छोड़ देना ताकि रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत दे। 20जब ज़ैतून की फ़सल पक गई हो तो दरख़्तों को मार मारकर एक ही बार उनमें से फल उतार। इसके बाद उन्हें न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 21इसी तरह अपने अंगूर तोड़ने के लिए एक ही बार बाग़ में से गुज़रना। इसके बाद उसे न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 22याद रख कि तू ख़ुद मिसर में ग़ुलाम था। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

कोड़े लगाने की मुनासिब सज़ा

25 अगर लोग अपना एक दूसरे के साथ झगड़ा ख़ुद निपटा न सकें तो वह अपना मामला अदालत में पेश करें। क़ाज़ी फ़ैसला करे कि कौन बेक़ुसूर है और कौन मुजरिम। 2अगर मुजरिम को कोड़े लगाने की सज़ा देनी है तो उसे क़ाज़ी के सामने ही मुँह के बल ज़मीन पर लिटाना। फिर उसे इतने कोड़े लगाए जाएँ जितनों के वह लायक़ है। 3लेकिन उसको ज़्यादा से ज़्यादा 40 कोड़े लगाने हैं, वरना तेरे इसराईली भाई की सरे-आम बेइज़्ज़ती हो जाएगी।

बैल का मुँह न बाँधना

4जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।

मरहूम भाई की बीवी से शादी करने का हुक्म

5अगर कोई शादीशुदा मर्द बेऔलाद मर जाए और उसका सगा भाई साथ रहे तो उसका फ़र्ज़ है कि बेवा से शादी करे। बेवा शौहर के ख़ानदान से हटकर किसी और से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने देवर से। 6पहला बेटा जो इस रिश्ते से पैदा होगा पहले शौहर के बेटे की हैसियत रखेगा। यों उसका नाम क़ायम रहेगा।

7लेकिन अगर देवर भाबी से शादी करना न चाहे तो भाबी शहर के दरवाज़े पर जमा होनेवाले बुज़ुर्गों के पास जाए और उनसे कहे, "मेरा देवर मुझसे शादी करने से इनकार करता है। वह अपना फ़र्ज़ अदा करने को तैयार नहीं कि अपने भाई का नाम क़ायम रखे।" 8फिर शहर के बुज़ुर्ग देवर को बुलाकर उसे समझाएँ। अगर वह इसके बावुजूद भी उससे शादी करने से इनकार करे 9तो उस की भाबी बुज़ुर्गों की मौजूदगी में उसके पास जाकर उस की एक चप्पल उतार ले। फिर वह उसके मुँह पर थूककर कहे, "उस आदमी से ऐसा सुलूक किया जाता है जो अपने भाई की नसल क़ायम रखने को तैयार नहीं।" 10आइंदा इसराईल में देवर की नसल "नंगे पाँववाले की नसल" कहलाएगी।

झगड़े में नाज़ेबा हरकतें

11अगर दो आदमी लड़ रहे हों और एक की बीवी अपने शौहर को बचाने की ख़ातिर मुख़ालिफ़ के अज़ुए-तनासुल को पकड़ ले 12तो लाज़िम है कि तू औरत का हाथ काट डाले। उस पर रहम न करना।

धोका न देना

13तोलते वक़्त अपने थैले में सहीह वज़न के बाट रख, और धोका देने के लिए हलके बाट साथ न रखना। 14इसी तरह अपने घर में अनाज की पैमाइश करने का सहीह बरतन रख, और धोका देने के लिए छोटा बरतन साथ न रखना। 15सहीह वज़न के बाट और पैमाइश करने के सहीह बरतन इस्तेमाल करना ताकि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहे जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा। 16क्योंकि उसे हर धोकेबाज़ से घिन है।

अमालीक़ियों को सज़ा देना

17याद रहे कि अमालीक़ियों ने तुझसे क्या कुछ किया जब तुम मिसर से निकलकर सफ़र कर रहे थे। 18जब तू थकाहारा था तो वह तुझ पर हमला करके पीछे पीछे चलनेवाले तमाम कमज़ोरों को जान से मारते रहे। वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानते थे। 19चुनाँचे जब रब तेरा ख़ुदा तुझे इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से सुकून देगा और तू उस मुल्क में आबाद होगा जो वह तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो अमालीक़ियों को यों हलाक कर कि दुनिया में उनका नामो-निशान न रहे। यह बात मत भूलना।

ज़मीन की पहली पैदावार रब को पेश करना

26 जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है और तू उस पर क़ब्ज़ा करके उसमें आबाद हो जाएगा 2तो जो भी फ़सल तू काटेगा उसके पहले फल में से कुछ टोकरे में रखकर उस जगह ले जा जो रब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। 3वहाँ ख़िदमत करनेवाले इमाम से कह, “आज मैं रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर एलान करता हूँ कि उस मुल्क में पहुँच गया हूँ जिसका हमें देने का वादा रब ने क़सम खाकर हमारे बापदादा से किया था।”

4तब इमाम तेरा टोकरा लेकर उसे रब तेरे ख़ुदा की क़ुरबानगाह के सामने रख दे। 5फिर रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर कह, “मेरा बाप आवारा फिरनेवाला अरामी था जो अपने लोगों को लेकर मिसर में आबाद हुआ। वहाँ पहुँचते वक़्त उनकी तादाद कम थी, लेकिन होते होते वह बड़ी और ताक़तवर क़ौम बन गए। 6लेकिन मिसरियों ने हमारे साथ बुरा सुलूक किया और हमें दबाकर सख़्त ग़ुलामी में फँसा दिया। 7फिर हमने चिल्लाकर रब अपने बापदादा के ख़ुदा से फ़रियाद की, और रब ने हमारी सुनी। उसने हमारा दुख, हमारी मुसीबत और दबी हुई हालत देखी 8और बड़े इख़्तियार और क़ुदरत का इज़हार करके हमें मिसर से निकाल लाया। उस वक़्त उसने मिसरियों में दहशत फैलाकर बड़े मोजिज़े दिखाए। 9वह हमें यहाँ ले आया और यह मुल्क दिया जिसमें दूध और शहद की कसरत है। 10ऐ रब, अब मैं तुझे उस ज़मीन का पहला फल पेश करता हूँ जो तूने हमें बख़्शी है।”

अपनी पैदावार का टोकरा रब अपने ख़ुदा के सामने रखकर उसे सिजदा करना। 11ख़ुशी मनाना कि रब मेरे ख़ुदा ने मुझे और मेरे घराने को इतनी अच्छी चीज़ों से नवाज़ा है। इस ख़ुशी में अपने दरमियान रहनेवाले लावियों और परदेसियों को भी शामिल करना।

फ़सल का ज़रूरतमंदों के लिए हिस्सा

12हर तीसरे साल अपनी तमाम फ़सलों का दसवाँ हिस्सा लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना ताकि वह तेरे शहरों में खाना खाकर सेर हो जाएँ। 13फिर रब अपने ख़ुदा से कह, “मैंने वैसा ही किया है जैसा तूने मुझे हुक्म दिया। मैंने अपने घर से तेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हिस्सा निकालकर उसे लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को दिया है। मैंने सब कुछ तेरी हिदायात के ऐन मुताबिक़ किया है और कुछ नहीं भूला। 14मातम करते वक़्त मैंने इस मख़सूसो-मुक़द्दस हिस्से से कुछ नहीं खाया। मैं इसे उठाकर घर से बाहर लाते वक़्त नापाक नहीं था। मैंने इसमें से मुरदों को

भी कुछ पेश नहीं किया। मैंने रब अपने ख़ुदा की
इताअत करके वह सब कुछ किया है जो तूने
मुझे करने को फ़रमाया था। 15चुनाँचे आसमान
पर अपने मक़दिस से निगाह करके अपनी क़ौम
इसराईल को बरकत दे। उस मुल्क को भी बरकत
दे जिसका वादा तूने क़सम खाकर हमारे बापदादा
से किया और जो तूने हमें बख़्श भी दिया है, उस
मुल्क को जिसमें दूध और शहद की कसरत है।”

तुम रब की क़ौम हो

16आज रब तेरा ख़ुदा फ़रमाता है कि इन
अहकाम और हिदायात की पैरवी कर। पूरे दिलो-
जान से और बड़ी एहतियात से इन पर अमल
कर।

17आज तूने एलान किया है, “रब मेरा ख़ुदा है।
मैं उस की राहों पर चलता रहूँगा, उसके अहकाम
के ताबे रहूँगा और उस की सुनूँगा।” 18और आज
रब ने एलान किया है, “तू मेरी क़ौम और मेरी
अपनी मिलकियत है जिस तरह मैंने तुझसे वादा
किया है। अब मेरे तमाम अहकाम के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ार। 19जितनी भी क़ौमें मैंने ख़लक़
की हैं उन सब पर मैं तुझे सरफ़राज़ करूँगा और
तुझे तारीफ़, शोहरत और इज़्ज़त अता करूँगा।
तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम
होगा जिस तरह मैंने वादा किया है।”

ऐबाल पहाड़ पर क़ुरबानगाह बनाना है

27 फिर मूसा ने बुज़ुर्गों से मिलकर क़ौम
से कहा, “तमाम हिदायात के ताबे
रहो जो मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ। 2जब तुम दरियाए-
यरदन को पार करके उस मुल्क में दाख़िल होगे
जो रब तेरा ख़ुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ बड़े
पत्थर खड़े करके उन पर सफ़ेदी कर। 3उन पर
लफ़्ज़ बलफ़्ज़ पूरी शरीअत लिख। दरिया को पार
करने के बाद यही कुछ कर ताकि तू उस मुल्क
में दाख़िल हो जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा और
जिसमें दूध और शहद की कसरत है। क्योंकि रब
तेरे बापदादा के ख़ुदा ने यह देने का तुझसे वादा
किया है। 4चुनाँचे यरदन को पार करके पत्थरों को
ऐबाल पहाड़ पर खड़ा करो और उन पर सफ़ेदी
कर।

5वहाँ रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुरबानगाह
बनाना। जो पत्थर तू उसके लिए इस्तेमाल
करे उन्हें लोहे के किसी औज़ार से न
तराशना। 6सिर्फ़ सालिम पत्थर इस्तेमाल
कर। क़ुरबानगाह पर रब अपने ख़ुदा को
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश कर। 7सला-
मती की क़ुरबानियाँ भी उस पर चढ़ा। उन्हें वहाँ रब
अपने ख़ुदा के हुज़ूर खाकर ख़ुशी मना। 8वहाँ खड़े
किए गए पत्थरों पर शरीअत के तमाम अलफ़ाज़
साफ़ साफ़ लिखे जाएँ।”

ऐबाल पहाड़ पर से लानत

9फिर मूसा ने लावी के क़बीले के इमामों
से मिलकर तमाम इसराईलियों से कहा, “ऐ
इसराईल, ख़ामोशी से सुन। अब तू रब अपने
ख़ुदा की क़ौम बन गया है, 10इसलिए उसका
फ़रमाँबरदार रह और उसके उन अहकाम पर
अमल कर जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ।”

11उसी दिन मूसा ने इसराईलियों को हुक्म
देकर कहा, 12“दरियाए-यरदन को पार करने के
बाद शमाऊन, लावी, यहूदाह, इशकार, यूसुफ़
और बिनयमीन के क़बीले गरिज़ीम पहाड़ पर
खड़े हो जाएँ। वहाँ वह बरकत के अलफ़ाज़
बोलें। 13बाक़ी क़बीले यानी रूबिन, जद, आशर,
ज़बूलून, दान और नफ़ताली ऐबाल पहाड़ पर खड़े
होकर लानत के अलफ़ाज़ बोलें।

14फिर लावी तमाम लोगों से मुख़ातिब होकर
ऊँची आवाज़ से कहें,

15‘उस पर लानत जो बुत तराशकर या
ढालकर चुपके से खड़ा करे। रब को कारीगर के
हाथों से बनी हुई ऐसी चीज़ से घिन है।’

जवाब में सब लोग कहें, ‘आमीन!’

16फिर लावी कहें, ‘उस पर लानत जो अपने
बाप या माँ की तहक़ीर करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

17‘उस पर लानत जो अपने पड़ोसी की ज़मीन की हुदूद आगे पीछे करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

18‘उस पर लानत जो किसी अंधे की राहनुमाई करके उसे ग़लत रास्ते पर ले जाए।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

19‘उस पर लानत जो परदेसियों, यतीमों या बेवाओं के हुक़ूक़ क़ायम न रखे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

20‘उस पर लानत जो अपने बाप की बीवी से हमबिसतर हो जाए, क्योंकि वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

21‘उस पर लानत जो जानवर से जिंसी ताल्लुक़ रखे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

22‘उस पर लानत जो अपनी सगी बहन, अपने बाप की बेटी या अपनी माँ की बेटी से हमबिसतर हो जाए।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

23‘उस पर लानत जो अपनी सास से हमबिसतर हो जाए।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

24‘उस पर लानत जो चुपके से अपने हमवतन को क़त्ल कर दे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

25‘उस पर लानत जो पैसे लेकर किसी बेक़ुसूर शख़्स को क़त्ल करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

26‘उस पर लानत जो इस शरीअत की बातें क़ायम न रखे, न इन पर अमल करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

फ़रमाँबरदारी की बरकतें

28 रब तेरा ख़ुदा तुझे दुनिया की
तमाम क़ौमों पर सरफ़राज़ करे-
गा। शर्त यह है कि तू उस की सुने और एहतियात
से उसके उन तमाम अहकाम पर अमल करे जो
मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 2रब अपने ख़ुदा का
फ़रमाँबरदार रह तो तुझे हर तरह की बरकत
हासिल होगी। 3रब तुझे शहर और देहात में
बरकत देगा। 4तेरी औलाद फले-फूलेगी, तेरी
अच्छी-ख़ासी फ़सलें पकेंगी, तेरे गाय-बैलों और
भेड़-बकरियों के बच्चे तरक़्क़ी करेंगे। 5तेरा
टोकरा फल से भरा रहेगा, और आटा गूँधने का
तेरा बरतन आटे से ख़ाली नहीं होगा। 6रब तुझे
घर में आते और वहाँ से निकलते वक़्त बरकत
देगा।

7जब तेरे दुश्मन तुझ पर हमला करेंगे तो वह रब की मदद से शिकस्त खाएँगे। गो वह मिलकर तुझ पर हमला करें तो भी तू उन्हें चारों तरफ़ मुंतशिर कर देगा।

8अल्लाह तेरे हर काम में बरकत देगा। अनाज
की कसरत के सबब से तेरे गोदाम भरे रहेंगे।
रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा
जो वह तुझे देनेवाला है। 9रब अपनी क़सम
के मुताबिक़ तुझे अपनी मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम
बनाएगा अगर तू उसके अहकाम पर अमल करे
और उस की राहों पर चले। 10फिर दुनिया की
तमाम क़ौमें तुझसे ख़ौफ़ खाएँगी, क्योंकि वह
देखेंगी कि तू रब की क़ौम है और उसके नाम
से कहलाता है।

11रब तुझे बहुत औलाद देगा, तेरे रेवड़ बढ़ाएगा
और तुझे कसरत की फ़सलें देगा। यों वह तुझे उस
मुल्क में बरकत देगा जिसका वादा उसने क़सम
खाकर तेरे बापदादा से किया। 12रब आसमान
के ख़ज़ानों को खोलकर वक़्त पर तेरी ज़मीन
पर बारिश बरसाएगा। वह तेरे हर काम में बरकत
देगा। तू बहुत-सी क़ौमों को उधार देगा लेकिन
किसी का भी क़र्ज़दार नहीं होगा। 13रब तुझे
क़ौमों की दुम नहीं बल्कि उनका सर बनाएगा।
तू तरक़्क़ी करता जाएगा और ज़वाल का शिकार
नहीं होगा। लेकिन शर्त यह है कि तू रब अपने ख़ुदा
के वह अहकाम मानकर उन पर अमल करे जो मैं
तुझे आज दे रहा हूँ। 14जो कुछ भी मैंने तुझे करने
को कहा है उससे किसी तरह भी हटकर ज़िंदगी

न गुज़ारना। न दीगर माबूदों की पैरवी करना, न
उनकी ख़िदमत करना।

नाफ़रमानी की लानतें

15लेकिन अगर तू रब अपने ख़ुदा की न सुने
और उसके उन तमाम अहकाम पर अमल न करे
जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ तो हर तरह की लानत
तुझ पर आएगी। 16शहर और देहात में तुझ पर
लानत होगी। 17तेरे टोकरे और आटा गूँधने के तेरे
बरतन पर लानत होगी। 18तेरी औलाद पर, तेरे
गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के बच्चों पर और तेरे
खेतों पर लानत होगी। 19घर में आते और वहाँ से
निकलते वक़्त तुझ पर लानत होगी। 20अगर तू
ग़लत काम करके रब को छोड़े तो जो कुछ भी तू
करे वह तुझ पर लानतें, परेशानियाँ और मुसीबतें
आने देगा। तब तेरा जल्दी से सत्यानास होगा,
और तू हलाक हो जाएगा।

21रब तुझमें वबाई बीमारियाँ फैलाएगा जिनके
सबब से तुझमें से कोई उस मुल्क में ज़िंदा
नहीं रहेगा जिस पर तू अभी क़ब्ज़ा करनेवाला
है। 22रब तुझे मोहलक बीमारियों, बुख़ार और
सूजन से मारेगा। झुलसानेवाली गरमी, काल,
पतरोग और फफूँदी तेरी फ़सलें ख़त्म करेगी।
ऐसी मुसीबतों के बाइस तू तबाह हो जाएगा।
23तेरे ऊपर आसमान पीतल जैसा सख़्त होगा
जबकि तेरे नीचे ज़मीन लोहे की मानिंद होगी।
24बारिश की जगह रब तेरे मुल्क पर गर्द और रेत
बरसाएगा जो आसमान से तेरे मुल्क पर छाकर
तुझे बरबाद कर देगी।

25जब तू अपने दुश्मनों का सामना करे तो रब
तुझे शिकस्त दिलाएगा। गो तू मिलकर उनकी
तरफ़ बढ़ेगा तो भी उनसे भागकर चारों तरफ़
मुंतशिर हो जाएगा। दुनिया के तमाम ममालिक
में लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे जब वह तेरी
मुसीबतें देखेंगे। 26परिंदे और जंगली जानवर तेरी
लाशों को खा जाएंगे, और उन्हें भगानेवाला कोई
नहीं होगा। 27रब तुझे उन्हीं फोड़ों से मारेगा जो
मिसरियों को निकले थे। ऐसे जिल्दी अमराज़
फैलेंगे जिनका इलाज नहीं है। 28तू पागलपन का
शिकार हो जाएगा, रब तुझे अंधेपन और ज़हनी
अबतरी में मुब्तला कर देगा। 29दोपहर के वक़्त
भी तू अंधे की तरह टटोल टटोलकर फिरेगा।
जो कुछ भी तू करे उसमें नाकाम रहेगा। रोज़
बरोज़ लोग तुझे दबाते और लूटते रहेंगे, और तुझे
बचानेवाला कोई नहीं होगा।

30तेरी मँगनी किसी औरत से होगी तो कोई
और आकर उस की इसमतदरी करेगा। तू अपने
लिए घर बनाएगा लेकिन उसमें नहीं रहेगा। तू
अपने लिए अंगूर का बाग़ लगाएगा लेकिन उसका
फल नहीं खाएगा। 31तेरे देखते देखते तेरा बैल
ज़बह किया जाएगा, लेकिन तू उसका गोश्त
नहीं खाएगा। तेरा गधा तुझसे छीन लिया जाएगा
और वापस नहीं किया जाएगा। तेरी भेड़-बकरियाँ
दुश्मन को दी जाएँगी, और उन्हें छुड़ानेवाला कोई
नहीं होगा। 32तेरे बेटे-बेटियों को किसी दूसरी
क़ौम को दिया जाएगा, और तू कुछ नहीं कर
सकेगा। रोज़ बरोज़ तू अपने बच्चों के इंतज़ार में
उफ़क़ को तकता रहेगा, लेकिन देखते देखते तेरी
आँखें धुँधला जाएँगी।

33एक अजनबी क़ौम तेरी ज़मीन की पैदावार
और तेरी मेहनतो-मशक़्क़त की कमाई ले
जाएगी। तुझे उम्र-भर ज़ुल्म और दबाव बरदाश्त
करना पड़ेगा।

34जो हौलनाक बातें तेरी आँखें देखेंगी उनसे तू
पागल हो जाएगा। 35रब तुझे तकलीफ़देह और
लाइलाज फोड़ों से मारेगा जो तल्वे से लेकर चाँदी
तक पूरे जिस्म पर फैलकर तेरे घुटनों और टाँगों
को मुतअस्सिर करेंगे।

36रब तुझे और तेरे मुक़र्रर किए हुए बादशाह
को एक ऐसे मुल्क में ले जाएगा जिससे न तू और
न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। वहाँ तू दीगर माबूदों
यानी लकड़ी और पत्थर के बुतों की ख़िदमत
करेगा। 37जिस जिस क़ौम में रब तुझे हाँक देगा
वहाँ तुझे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे
और वह तेरा मज़ाक़ उड़ाएँगे। तू उनके लिए
इबरतअंगेज़ मिसाल होगा।

38तू अपने खेतों में बहुत बीज बोने के बावुजूद
कम ही फ़सल काटेगा, क्योंकि टिड्डे उसे खा
जाएंगे। 39तू अंगूर के बाग़ लगाकर उन पर ख़ूब
मेहनत करेगा लेकिन न उनके अंगूर तोड़ेगा, न
उनकी मै पिएगा, क्योंकि कीड़े उन्हें खा जाएंगे।
40गो तेरे पूरे मुल्क में ज़ैतून के दरख़्त होंगे तो भी
तू उनका तेल इस्तेमाल नहीं कर सकेगा, क्योंकि
ज़ैतून ख़राब होकर ज़मीन पर गिर जाएंगे।

41तेरे बेटे-बेटियाँ तो होंगे, लेकिन तू उनसे
महरूम हो जाएगा। क्योंकि उन्हें गिरिफ़्तार करके
किसी अजनबी मुल्क में ले जाया जाएगा।
42टिड्डियों के ग़ोल तेरे मुल्क के तमाम दरख़्तों
और फ़सलों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। 43तेरे दरमियान
रहनेवाला परदेसी तुझसे बढ़कर तरक़्क़ी करता
जाएगा जबकि तुझ पर ज़वाल आ जाएगा।
44उसके पास तुझे उधार देने के लिए पैसे होंगे
जबकि तेरे पास उसे उधार देने को कुछ नहीं होगा।
आख़िर में वह सर और तू दुम होगा।

45यह तमाम लानतें तुझ पर आन पड़ेंगी। जब
तक तू तबाह न हो जाए वह तेरा ताक़्क़ुब करती
रहेंगी, क्योंकि तूने रब अपने ख़ुदा की न सुनी
और उसके अहकाम पर अमल न किया। 46यों
यह हमेशा तक तेरे और तेरी औलाद के लिए
एक मोजिज़ाना और इबरतअंगेज़ इलाही निशान
रहेंगी।

47चूँकि तूने दिली ख़ुशी से उस वक़्त रब अपने
ख़ुदा की ख़िदमत न की जब तेरे पास सब कुछ
था 48इसलिए तू उन दुश्मनों की ख़िदमत करेगा
जिन्हें रब तेरे ख़िलाफ़ भेजेगा। तू भूका, प्यासा,
नंगा और हर चीज़ का हाजतमंद होगा, और
रब तेरी गरदन पर लोहे का जुआ रखकर तुझे
मुकम्मल तबाही तक ले जाएगा।

49रब तेरे ख़िलाफ़ एक क़ौम खड़ी करेगा जो
दूर से बल्कि दुनिया की इंतहा से आकर उक़ाब
की तरह तुझ पर झपट्टा मारेगी। वह ऐसी ज़बान
बोलेगी जिससे तू वाक़िफ़ नहीं होगा। 50वह सख़्त
क़ौम होगी जो न बुज़ुर्गों का लिहाज़ करेगी और
न बच्चों पर रहम करेगी। 51वह तेरे मवेशी और
फ़सलें खा जाएगी और तू भूके मर जाएगा। तू
हलाक हो जाएगा, क्योंकि तेरे लिए कुछ नहीं
बचेगा, न अनाज, न मै, न तेल, न गाय-बैलों
या भेड़-बकरियों के बच्चे। 52दुश्मन तेरे मुल्क
के तमाम शहरों का मुहासरा करेगा। आख़िरकार
जिन ऊँची और मज़बूत फ़सीलों पर तू एतमाद
करेगा वह भी सब गिर पड़ेंगी। दुश्मन उस मुल्क
का कोई भी शहर नहीं छोड़ेगा जो रब तेरा ख़ुदा
तुझे देनेवाला है।

53जब दुश्मन तेरे शहरों का मुहासरा करेगा
तो तू उनमें इतना शदीद भूका हो जाएगा कि
अपने बच्चों को खा लेगा जो रब तेरे ख़ुदा ने तुझे
दिए हैं। 54-55मुहासरे के दौरान तुममें से सबसे
शरीफ़ और शायस्ता आदमी भी अपने बच्चे को
ज़बह करके खाएगा, क्योंकि उसके पास कोई
और ख़ुराक नहीं होगी। उस की हालत इतनी बुरी
होगी कि वह उसे अपने सगे भाई, बीवी या बाक़ी
बच्चों के साथ तक़सीम करने के लिए तैयार नहीं
होगा। 56-57तुममें से सबसे शरीफ़ और शायस्ता
औरत भी ऐसा ही करेगी, अगरचे पहले वह इतनी
नाज़ुक थी कि फ़र्श को अपने तल्वे से छूने की
जुर्रत नहीं करती थी। मुहासरे के दौरान उसे इतनी
शदीद भूक होगी कि जब उसके बच्चा पैदा होगा
तो वह छुप छुपकर उसे खाएगी। न सिर्फ़ यह
बल्कि वह पैदाइश के वक़्त बच्चे के साथ ख़ारिज
हुई आलाइश भी खाएगी और उसे अपने शौहर
या अपने बाक़ी बच्चों में बाँटने के लिए तैयार नहीं
होगी। इतनी मुसीबत तुझ पर मुहासरे के दौरान
आएगी।

58ग़रज़ एहतियात से शरीअत की उन तमाम
बातों की पैरवी कर जो इस किताब में दर्ज हैं,
और रब अपने ख़ुदा के पुरजलाल और बारोब
नाम का ख़ौफ़ मानना। 59वरना वह तुझ और
तेरी औलाद में सख़्त और लाइलाज अमराज़ और
ऐसी दहशतनाक वबाएँ फैलाएगा जो रोकी नहीं
जा सकेंगी। 60जिन तमाम वबाओं से तू मिसर में
दहशत खाता था वह अब तेरे दरमियान फैलकर
तेरे साथ चिमटी रहेंगी। 61न सिर्फ़ शरीअत की

इस किताब में बयान की हुई बीमारियाँ और
मुसीबतें तुझ पर आएँगी बल्कि रब और भी तुझ
पर भेजेगा, जब तक कि तू हलाक न हो जाए।
62अगर तू रब अपने ख़ुदा की न सुने तो
आख़िरकार तुममें से बहुत कम बचे रहेंगे, गो तुम
पहले सितारों जैसे बेशुमार थे। 63जिस तरह पहले
रब ख़ुशी से तुम्हें कामयाबी देता और तुम्हारी
तादाद बढ़ाता था उसी तरह अब वह तुम्हें बरबाद
और तबाह करने में ख़ुशी महसूस करेगा। तुम्हें
ज़बरदस्ती उस मुल्क से निकाला जाएगा जिस
पर तू इस वक़्त दाख़िल होकर क़ब्ज़ा करनेवाला
है। 64तब रब तुझे दुनिया के एक सिरे से लेकर
दूसरे सिरे तक तमाम क़ौमों में मुंतशिर कर देगा।
वहाँ तू दीगर माबूदों की पूजा करेगा, ऐसे देवताओं
की जिनसे न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे।
65उन ममालिक में भी न तू आरामो-सुकून
पाएगा, न तेरे पाँव जम जाएंगे। रब होने देगा कि
तेरा दिल थरथराता रहेगा, तेरी आँखें परेशानी के
बाइस धुँधला जाएँगी और तेरी जान से उम्मीद
की हर किरण जाती रहेगी। 66तेरी जान हर वक़्त
ख़तरे में होगी और तू दिन-रात दहशत खाते
हुए मरने की तवक़्क़ो करेगा। 67सुबह उठकर तू
कहेगा, 'काश शाम हो!' और शाम के वक़्त,
'काश सुबह हो!' क्योंकि जो कुछ तू देखेगा
उससे तेरे दिल को दहशत घेर लेगी।
68रब तुझे जहाज़ों में बिठाकर मिसर वापस
ले जाएगा अगरचे मैंने कहा था कि तू उसे
दुबारा कभी नहीं देखेगा। वहाँ पहुँचकर तुम अपने
दुश्मनों से बात करके अपने आपको ग़ुलाम के
तौर पर बेचने की कोशिश करोगे, लेकिन कोई
भी तुम्हें ख़रीदना नहीं चाहेगा।"

मोआब में रब के साथ नया अहद

29 जब इसराईली मोआब में थे तो रब ने
मूसा को हुक्म दिया कि इसराईलियों
के साथ एक और अहद बाँधे। यह उस अहद के
अलावा था जो रब होरिब यानी सीना पर उनके
साथ बाँध चुका था। 2इस सिलसिले में मूसा ने
तमाम इसराईलियों को बुलाकर कहा, "तुमने
ख़ुद देखा कि रब ने मिसर के बादशाह फ़िरौन,
उसके मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के साथ क्या
कुछ किया। 3तुमने अपनी आँखों से वह बड़ी
आज़माइशें, इलाही निशान और मोजिज़े देखे
जिनके ज़रीए रब ने अपनी क़ुदरत का इज़हार
किया।
4मगर अफ़सोस, आज तक रब ने तुम्हें न
समझदार दिल अता किया, न आँखें जो देख सकें
या कान जो सुन सकें। 5रेगिस्तान में मैंने 40
साल तक तुम्हारी राहनुमाई की। इस दौरान न
तुम्हारे कपड़े फटे और न तुम्हारे जूते घिसे। 6न
तुम्हारे पास रोटी थी, न मै या मै जैसी कोई और
चीज़। तो भी रब ने तुम्हारी ज़रूरियात पूरी कीं
ताकि तुम सीख लो कि वही रब तुम्हारा ख़ुदा है।
7फिर हम यहाँ आए तो हसबोन का बादशाह
सीहोन और बसन का बादशाह ओज निकलकर
हमसे लड़ने आए। लेकिन हमने उन्हें शिकस्त दी।
8उनके मुल्क पर क़ब्ज़ा करके हमने उसे रूबिन,
जद और मनस्सी के आधे क़बीले को मीरास में
दिया। 9अब एहतियात से इस अहद की तमाम
शरायत पूरी करो ताकि तुम हर बात में कामयाब
हो।
10इस वक़्त तुम सब रब अपने ख़ुदा के
हुज़ूर खड़े हो, तुम्हारे क़बीलों के सरदार, तुम्हारे
बुज़ुर्ग, निगहबान, मर्द, 11औरतें और बच्चे। तेरे
दरमियान रहनेवाले परदेसी भी लकड़हारों से
लेकर पानी भरनेवालों तक तेरे साथ यहाँ हाज़िर
हैं। 12तू इसलिए यहाँ जमा हुआ है कि रब अपने
ख़ुदा का वह अहद तसलीम करे जो वह आज
क़सम खाकर तेरे साथ बाँध रहा है। 13इससे वह
आज इसकी तसदीक़ कर रहा है कि तू उस की
क़ौम और वह तेरा ख़ुदा है यानी वही बात जिसका
वादा उसने तुझसे और तेरे बापदादा इब्राहीम,
इसहाक़ और याक़ूब से किया था। 14-15लेकिन
मैं यह अहद क़सम खाकर न सिर्फ़ तुम्हारे साथ
जो हाज़िर हो बाँध रहा हूँ बल्कि तुम्हारी आनेवाली
नसलों के साथ भी।

बुतपरस्ती की सज़ा

16तुम ख़ुद जानते हो कि हम मिसर में किस तरह ज़िंदगी गुज़ारते थे। यह भी तुम्हें याद है कि हम किस तरह मुख़्तलिफ़ ममालिक में से गुज़रते हुए यहाँ तक पहुँचे। 17तुमने उनके नफ़रतअंगेज़ बुत देखे जो लकड़ी, पत्थर, चाँदी और सोने के थे। 18ध्यान दो कि यहाँ मौजूद कोई भी मर्द, औरत, कुंबा या क़बीला रब अपने ख़ुदा से हटकर दूसरी क़ौमों के देवताओं की पूजा न करे। ऐसा न हो कि तुम्हारे दरमियान कोई जड़ फूटकर ज़हरीला और कड़वा फल लाए।

19तुम सबने वह लानतें सुनी हैं जो रब नाफ़रमानों पर भेजेगा। तो भी हो सकता है कि कोई अपने आपको रब की बरकत का वारिस समझकर कहे, 'बेशक मैं अपनी ग़लत राहों से हटने के लिए तैयार नहीं हूँ, लेकिन कोई बात नहीं। मैं महफ़ूज़ रहूँगा।' ख़बरदार, ऐसी हरकत से वह न सिर्फ़ अपने ऊपर बल्कि पूरे मुल्क पर तबाही लाएगा।[a] 20रब कभी भी उसे मुआफ़ करने पर आमादा नहीं होगा बल्कि वह उसे अपने ग़ज़ब और ग़ैरत का निशाना बनाएगा। इस किताब में दर्ज तमाम लानतें उस पर आएँगी, और रब दुनिया से उसका नामो-निशान मिटा देगा। 21वह उसे पूरी जमात से अलग करके उस पर अहद की वह तमाम लानतें लाएगा जो शरीअत की इस किताब में लिखी हुई हैं।

22मुस्तक़बिल में तुम्हारी औलाद और दूर-दराज़ ममालिक से आनेवाले मुसाफ़िर उन मुसीबतों और अमराज़ का असर देखेंगे जिनसे रब ने मुल्क को तबाह किया होगा। 23चारों तरफ़ ज़मीन झुलसी हुई और गंधक और नमक से ढकी हुई नज़र आएगी। बीज उसमें बोया नहीं जाएगा, क्योंकि ख़ुदरौ पौदों तक कुछ नहीं उगेगा। तुम्हारा मुल्क सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम की मानिंद होगा जिनको रब ने अपने ग़ज़ब में तबाह किया। 24तमाम क़ौमें पूछेंगी, 'रब ने इस मुल्क के साथ ऐसा क्यों किया? उसके सख़्त ग़ज़ब की क्या वजह थी?' 25उन्हें जवाब मिलेगा, 'वजह यह है कि इस मुल्क के बाशिंदों ने रब अपने बापदादा के ख़ुदा का अहद तोड़ दिया जो उसने उन्हें मिसर से निकालते वक़्त उनसे बाँधा था। 26उन्होंने जाकर दीगर माबूदों की ख़िदमत की और उन्हें सिजदा किया जिनसे वह पहले वाक़िफ़ नहीं थे और जो रब ने उन्हें नहीं दिए थे। 27इसी लिए उसका ग़ज़ब इस मुल्क पर नाज़िल हुआ और वह उस पर वह तमाम लानतें लाया जिनका ज़िक्र इस किताब में है। 28वह इतना ग़ुस्से हुआ कि उसने उन्हें जड़ से उखाड़कर एक अजनबी मुल्क में फेंक दिया जहाँ वह आज तक आबाद हैं।'

29बहुत कुछ पोशीदा है, और सिर्फ़ रब हमारा ख़ुदा उसका इल्म रखता है। लेकिन उसने हम पर अपनी शरीअत का इनकिशाफ़ कर दिया है। लाज़िम है कि हम और हमारी औलाद उसके फ़रमाँबरदार रहें।

तौबा के मुसबत नतीजे

30 मैंने तुझे बताया है कि तेरे लिए क्या कुछ बरकत का और क्या कुछ लानत का बाइस है। जब रब तेरा ख़ुदा तुझे तेरी ग़लत हरकतों के सबब से मुख़्तलिफ़ क़ौमों में मुंतशिर कर देगा तो तू मेरी बातें मान जाएगा। 2तब तू और तेरी औलाद रब अपने ख़ुदा के पास वापस आएँगे और पूरे दिलो-जान से उस की सुनकर उन तमाम अहकाम पर अमल करेंगे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। 3फिर रब तेरा ख़ुदा तुझे बहाल करेगा और तुझ पर रहम करके तुझे उन तमाम क़ौमों से निकालकर जमा करेगा जिनमें उसने तुझे मुंतशिर कर दिया था। 4हाँ, रब तेरा ख़ुदा तुझे हर जगह से जमा करके वापस लाएगा, चाहे तू सबसे दूर मुल्क में क्यों न पड़ा हो। 5वह तुझे तेरे बापदादा के मुल्क में लाएगा, और तू उस पर क़ब्ज़ा करेगा।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : सेराब ज़मीन ख़ुश्क ज़मीन के साथ तबाह हो जाएगी।

फिर वह तुझे तेरे बापदादा से ज़्यादा कामयाबी
बख़्शेगा, और तेरी तादाद ज़्यादा बढ़ाएगा।
6ख़तना रब की क़ौम का ज़ाहिरी निशान है।
लेकिन उस वक़्त रब तेरा ख़ुदा तेरे और तेरी
औलाद का बातिनी ख़तना करेगा ताकि तू उसे
पूरे दिलो-जान से प्यार करे और जीता रहे। 7जो
लानतें रब तेरा ख़ुदा तुझ पर लाया था उन्हें
वह अब तेरे दुश्मनों पर आने देगा, उन पर जो
तुझसे नफ़रत रखते और तुझे ईज़ा पहुँचाते हैं।
8क्योंकि तू दुबारा रब की सुनेगा और उसके
तमाम अहकाम की पैरवी करेगा जो मैं तुझे आज
दे रहा हूँ। 9जो कुछ भी तू करेगा उसमें रब
तुझे बड़ी कामयाबी बख़्शेगा, और तुझे कसरत
की औलाद, मवेशी और फ़सलें हासिल होंगी।
क्योंकि जिस तरह वह तेरे बापदादा को कामयाबी
देने में ख़ुशी महसूस करता था उसी तरह वह तुझे
भी कामयाबी देने में ख़ुशी महसूस करेगा।

10शर्त सिर्फ़ यह है कि तू रब अपने ख़ुदा की
सुने, शरीअत में दर्ज उसके अहकाम पर अमल
करे और पूरे दिलो-जान से उस की तरफ़ रुजू
लाए।

11जो अहकाम मैं आज तुझे दे रहा हूँ न वह हद
से ज़्यादा मुश्किल हैं, न तेरी पहुँच से बाहर। 12वह
आसमान पर नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन आसमान
पर चढ़कर हमारे लिए यह अहकाम नीचे ले आए
ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर
सकें?' 13वह समुंदर के पार भी नहीं हैं कि तू
कहे, 'कौन समुंदर को पार करके हमारे लिए यह
अहकाम लाएगा ताकि हम उन्हें सुन सकें और
उन पर अमल कर सकें?' 14क्योंकि यह कलाम
तेरे निहायत क़रीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में
मौजूद है। चुनाँचे उस पर अमल करने में कोई भी
रुकावट नहीं है।

ज़िंदगी या मौत का चुनाव

15देख, आज मैं तुझे दो रास्ते पेश करता हूँ।
एक ज़िंदगी और ख़ुशहाली की तरफ़ ले जाता
है जबकि दूसरा मौत और हलाकत की तरफ़।
16आज मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि रब अपने ख़ुदा
को प्यार कर, उस की राहों पर चल और उसके
अहकाम के ताबे रह। फिर तू ज़िंदा रहकर तरक़्क़ी
करेगा, और रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में
बरकत देगा जिसमें तू दाख़िल होनेवाला है।

17लेकिन अगर तेरा दिल इस रास्ते से हटकर
नाफ़रमानी करे तो बरकत की तवक़्क़ो न कर।
अगर तू आज़माइश में पड़कर दीगर माबूदों को
सिजदा और उनकी ख़िदमत करे 18तो तुम ज़रूर
तबाह हो जाओगे। आज मैं एलान करता हूँ कि
इस सूरत में तुम ज़्यादा देर तक उस मुल्क में
आबाद नहीं रहोगे जिसमें तू दरियाए-यरदन को
पार करके दाख़िल होगा ताकि उस पर क़ब्ज़ा
करे।

19आज आसमान और ज़मीन तुम्हारे ख़िलाफ़
मेरे गवाह हैं कि मैंने तुम्हें ज़िंदगी और बरकतों का
रास्ता और मौत और लानतों का रास्ता पेश किया
है। अब ज़िंदगी का रास्ता इख़्तियार कर ताकि तू
और तेरी औलाद ज़िंदा रहे। 20रब अपने ख़ुदा
को प्यार कर, उस की सुन और उससे लिपटा
रह। क्योंकि वही तेरी ज़िंदगी है और वही करेगा
कि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जिसका
वादा उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा इब्राहीम,
इसहाक़ और याक़ूब से किया था।"

यशुअ को मूसा की जगह मुक़र्रर किया जाता है

31 मूसा ने जाकर तमाम इसराई-
लियों से मज़ीद कहा,
2"अब मैं 120 साल का हो चुका हूँ। मेरा
चलना-फिरना मुश्किल हो गया है। और वैसे भी
रब ने मुझे बताया है, 'तू दरियाए-यरदन को पार
नहीं करेगा।' 3रब तेरा ख़ुदा ख़ुद तेरे आगे आगे
जाकर यरदन को पार करेगा। वही तेरे आगे आगे
इन क़ौमों को तबाह करेगा ताकि तू उनके मुल्क
पर क़ब्ज़ा कर सके। दरिया को पार करते वक़्त
यशुअ तेरे आगे चलेगा जिस तरह रब ने फ़रमाया
है। 4रब वहाँ के लोगों को बिलकुल उसी तरह

तबाह करेगा जिस तरह वह अमोरियों को उनके
बादशाहों सीहोन और ओज समेत तबाह कर चुका
है। 5रब तुम्हें उन पर ग़ालिब आने देगा। उस वक़्त
तुम्हें उनके साथ वैसा सुलूक करना है जैसा मैंने
तुम्हें बताया है। 6मज़बूत और दिलेर हो। उनसे
ख़ौफ़ न खाओ, क्योंकि रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ
चलता है। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी
तर्क नहीं करेगा।”

7इसके बाद मूसा ने तमाम इसराईलियों के
सामने यशुअ को बुलाया और उससे कहा,
“मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इस क़ौम
को उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा रब
ने क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था।
लाज़िम है कि तू ही उसे तक़सीम करके हर क़बीले
को उसका मौरूसी इलाक़ा दे। 8रब ख़ुद तेरे आगे
आगे चलते हुए तेरे साथ होगा। वह तुझे कभी
नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी नहीं तर्क करेगा। ख़ौफ़ न
खाना, न घबराना।”

हर सात साल के बाद शरीअत की तिलावत

9मूसा ने यह पूरी शरीअत लिखकर इसराईल
के तमाम बुज़ुर्गों और लावी के क़बीले के उन
इमामों के सुपुर्द की जो सफ़र करते वक़्त अहद
का संदूक़ उठाकर ले चलते थे। उसने उनसे कहा,
10-11“हर सात साल के बाद इस शरीअत की
तिलावत करना, यानी बहाली के साल में जब
तमाम क़र्ज़ मनसूख़ किए जाते हैं। तिलावत उस
वक़्त करना है जब इसराईली झोंपड़ियों की ईद
के लिए रब अपने ख़ुदा के सामने उस जगह
हाज़िर होंगे जो वह मक़दिस के लिए चुनेगा।
12तमाम लोगों को मर्दों, औरतों, बच्चों और
परदेसियों समेत वहाँ जमा करना ताकि वह
सुनकर सीखें, रब तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें और
एहतियात से इस शरीअत की बातों पर अमल
करें। 13लाज़िम है कि उनकी औलाद जो इस
शरीअत से नावाक़िफ़ है इसे सुने और सीखे ताकि
उम्र-भर उस मुल्क में रब तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़
माने जिस पर तुम दरियाए-यरदन को पार करके
क़ब्ज़ा करोगे।”

रब मूसा को आख़िरी हिदायात देता है

14रब ने मूसा से कहा, “अब तेरी मौत क़रीब
है। यशुअ को बुलाकर उसके साथ मुलाक़ात
के ख़ैमे में हाज़िर हो जा। वहाँ मैं उसे उस की
ज़िम्मेदारियाँ सौंपूँगा।”

मूसा और यशुअ आकर ख़ैमे में हाज़िर हुए
15तो रब ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल के सतून में
ज़ाहिर हुआ। 16उसने मूसा से कहा, “तू जल्द ही
मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा। लेकिन यह
क़ौम मुल्क में दाख़िल होने पर ज़िना करके उसके
अजनबी देवताओं की पैरवी करने लग जाएगी।
वह मुझे तर्क करके वह अहद तोड़ देगी जो मैंने
उनके साथ बाँधा है। 17फिर मेरा ग़ज़ब उन पर
भड़केगा। मैं उन्हें छोड़कर अपना चेहरा उनसे छुपा
लूँगा। तब उन्हें कच्चा चबा लिया जाएगा और
बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें उन पर आएँगी।
उस वक़्त वह कहेंगे, ‘क्या यह मुसीबतें इस वजह
से हम पर नहीं आईं कि रब हमारे साथ नहीं है?’
18और ऐसा ही होगा। मैं ज़रूर अपना चेहरा उनसे
छुपाए रखूँगा, क्योंकि दीगर माबूदों के पीछे चलने
से उन्होंने एक निहायत शरीर क़दम उठाया होगा।

19अब ज़ैल का गीत लिखकर इसराईलियों को
यों सिखाओ कि वह ज़बानी याद रहे और मेरे लिए
उनके ख़िलाफ़ गवाही दिया करे। 20क्योंकि मैं
उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिसका वादा मैंने
क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था, उस
मुल्क में जिसमें दूध और शहद की कसरत है। वहाँ
इतनी ख़ुराक होगी कि उनकी भूक जाती रहेगी
और वह मोटे हो जाएंगे। लेकिन फिर वह दीगर
माबूदों के पीछे लग जाएंगे और उनकी ख़िदमत
करेंगे। वह मुझे रद्द करेंगे और मेरा अहद तोड़ेंगे।
21नतीजे में उन पर बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें
आएँगी। फिर यह गीत जो उनकी औलाद को याद
रहेगा उनके ख़िलाफ़ गवाही देगा। क्योंकि गो मैं
उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिसका वादा मैंने

क़सम खाकर उनसे किया था तो भी मैं जानता हूँ
कि वह अब तक किस तरह की सोच रखते हैं।”
22मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखकर
इसराईलियों को सिखाया।
23फिर रब ने यशुअ बिन नून से कहा,
“मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इसराई-
लियों को उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा
मैंने क़सम खाकर उनसे किया था। मैं ख़ुद तेरे
साथ हूँगा।”
24जब मूसा ने पूरी शरीअत को किताब में लिख
लिया 25तो वह उन लावियों से मुख़ातिब हुआ
जो सफ़र करते वक़्त अहद का संदूक़ उठाकर
ले जाते थे। 26“शरीअत की यह किताब लेकर
रब अपने ख़ुदा के अहद के संदूक़ के पास रखना।
वहाँ वह पड़ी रहे और तेरे ख़िलाफ़ गवाही देती रहे।
27क्योंकि मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू कितना सरकश
और हटधर्म है। मेरी मौजूदगी में भी तुमने कितनी
दफ़ा रब से सरकशी की। तो फिर मेरे मरने के
बाद तुम क्या कुछ नहीं करोगे! 28अब मेरे सामने
अपने क़बीलों के तमाम बुज़ुर्गों और निगहबानों
को जमा करो ताकि वह ख़ुद मेरी यह बातें सुनें
और आसमान और ज़मीन उनके ख़िलाफ़ गवाह
हों। 29क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरी मौत के बाद
तुम ज़रूर बिगड़ जाओगे और उस रास्ते से हट
जाओगे जिस पर चलने की मैंने तुम्हें ताकीद की
है। आख़िरकार तुम पर मुसीबत आएगी, क्योंकि
तुम वह कुछ करोगे जो रब को बुरा लगता है, तुम
अपने हाथों के काम से उसे ग़ुस्सा दिलाओगे।”
30फिर मूसा ने इसराईल की तमाम जमात के
सामने यह गीत शुरू से लेकर आख़िर तक पेश
किया,

मूसा का गीत

32 ऐ आसमान, मेरी बात पर ग़ौर कर!
ऐ ज़मीन, मेरा गीत सुन!
2मेरी तालीम बूँदा-बाँदी जैसी हो, मेरी बात
शबनम की तरह ज़मीन पर पड़ जाए। वह बारिश
की मानिंद हो जो हरियाली पर बरसती है।
3मैं रब का नाम पुकारूँगा। हमारे ख़ुदा की
अज़मत की तमजीद करो!
4वह चट्टान है, और उसका काम कामिल है।
उस की तमाम राहें रास्त हैं। वह वफ़ादार ख़ुदा
है जिसमें फ़रेब नहीं है बल्कि जो आदिल और
दियानतदार है।

5एक टेढ़ी और कजरौ नसल ने उसका गुनाह
किया। वह उसके फ़रज़ंद नहीं बल्कि दाग़ साबित
हुए हैं।
6ऐ मेरी अहमक़ और बेसमझ क़ौम, क्या
तुम्हारा रब से ऐसा रवैया ठीक है? वह तो तुम्हारा
बाप और ख़ालिक़ है, जिसने तुम्हें बनाया और
क़ायम किया।

7क़दीम ज़माने को याद करना, माज़ी की
नसलों पर तवज्जुह देना। अपने बाप से पूछना
तो वह तुझे बता देगा, अपने बुज़ुर्गों से पता करना
तो वह तुझे इत्तला देंगे।
8जब अल्लाह तआला ने हर क़ौम को उसका
अपना अपना मौरूसी इलाक़ा देकर तमाम
इनसानों को मुख़्तलिफ़ गुरोहों में अलग कर दिया
तो उसने क़ौमों की सरहद्दें इसराईलियों की तादाद
के मुताबिक़ मुक़र्रर कीं।
9क्योंकि रब का हिस्सा उस की क़ौम है, याक़ूब
को उसने मीरास में पाया है।
10यह क़ौम उसे रेगिस्तान में मिल गई, वीरानो-
सुनसान बयाबान में जहाँ चारों तरफ़ हौलनाक
आवाज़ें गूँजती थीं। उसने उसे घेरकर उस की
देख-भाल की, उसे अपनी आँख की पुतली की
तरह बचाए रखा।
11जब उक़ाब अपने बच्चों को उड़ना सिखाता
है तो वह उन्हें घोंसले से निकालकर उनके साथ
उड़ता है। अगर वह गिर भी जाएँ तो वह हाज़िर
है और उनके नीचे अपने परों को फैलाकर उन्हें
ज़मीन से टकरा जाने से बचाता है। रब का
इसराईल के साथ यही सुलूक था।

12रब ने अकेले ही उस की राहनुमाई की।
किसी अजनबी माबूद ने शिरकत न की।

13उसने उसे रथ पर सवार करके मुल्क की
बुलंदियों पर से गुज़रने दिया और उसे खेत का
फल खिलाकर उसे चट्टान से शहद और सख़्त
पत्थर से ज़ैतून का तेल मुहैया किया।[a]
14उसने उसे गाय की लस्सी और भेड़-बकरी
का दूध चीदा भेड़ के बच्चों समेत खिलाया और
उसे बसन के मोटे-ताज़े मेंढे, बकरे और बेहतरीन
अनाज अता किया। उस वक़्त तू आला अंगूर की
उम्दा मै से लुत्फ़अंदोज़ हुआ।

15लेकिन जब यसूरून[b] मोटा हो गया तो
वह दोलत्तियाँ झाड़ने लगा। जब वह हलक़ तक
भरकर तनोमंद और फ़रबा हुआ तो उसने अपने
ख़ुदा और ख़ालिक़ को रद्द किया, उसने अपनी
नजात की चट्टान को हक़ीर जाना।
16अपने अजनबी माबूदों से उन्होंने उस की
ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने घिनौने बुतों से उसे
ग़ुस्सा दिलाया।
17उन्होंने बदरूहों को क़ुरबानियाँ पेश कीं जो
ख़ुदा नहीं हैं, ऐसे माबूदों को जिनसे न वह और न
उनके बापदादा वाक़िफ़ थे, क्योंकि वह थोड़ी देर
पहले वुजूद में आए थे।

18तू वह चट्टान भूल गया जिसने तुझे पैदा
किया, वही ख़ुदा जिसने तुझे जन्म दिया।
19रब ने यह देखकर उन्हें रद्द किया, क्योंकि
वह अपने बेटे-बेटियों से नाराज़ था।
20उसने कहा, "मैं अपना चेहरा उनसे छुपा
लूँगा। फिर पता लगेगा कि मेरे बग़ैर उनका क्या
अंजाम होता है। क्योंकि वह सरासर बिगड़ गए
हैं, उनमें वफ़ादारी पाई नहीं जाती।
21उन्होंने उस की परस्तिश से जो ख़ुदा नहीं है
मेरी ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने बेकार बुतों से
मुझे ग़ुस्सा दिलाया है। चुनाँचे मैं ख़ुद ही उन्हें ग़ैरत
दिलाऊँगा, एक ऐसी क़ौम के ज़रीए जो हक़ीक़त
में क़ौम नहीं है। एक नादान क़ौम के ज़रीए मैं उन्हें
ग़ुस्सा दिलाऊँगा।
22क्योंकि मेरे ग़ुस्से से आग भड़क उठी है जो
पाताल की तह तक पहुँचेगी और ज़मीन और उस
की पैदावार हड़प करके पहाड़ों की बुनियादों को
जला देगी।

23मैं उन पर मुसीबत पर मुसीबत आने दूँगा
और अपने तमाम तीर उन पर चलाऊँगा।
24भूक के मारे उनकी ताक़त जाती रहेगी,
और वह बुख़ार और वबाई अमराज़ का लुक़मा
बनेंगे। मैं उनके ख़िलाफ़ फाड़नेवाले जानवर और
ज़हरीले साँप भेज दूँगा।
25बाहर तलवार उन्हें बेऔलाद कर देगी, और
घर में दहशत फैल जाएगी। शीरख़ार बच्चे,
नौजवान लड़के-लड़कियाँ और बुज़ुर्ग सब उस की
गिरिफ़्त में आ जाएंगे।

26मुझे कहना चाहिए था कि मैं उन्हें चकनाचूर
करके इनसानों में से उनका नामो-निशान मिटा
दूँगा।
27लेकिन अंदेशा था कि दुश्मन ग़लत मतलब
निकालकर कहे, 'हम ख़ुद उन पर ग़ालिब आए,
इसमें रब का हाथ नहीं है'।"
28क्योंकि यह क़ौम बेसमझ और हिकमत से
ख़ाली है।
29काश वह दानिशमंद होकर यह बात समझें!
काश वह जान लें कि उनका क्या अंजाम है।
30क्योंकि दुश्मन का एक आदमी किस तरह
हज़ार इसराईलियों का ताक़्क़ुब कर सकता है?
उसके दो मर्द किस तरह दस हज़ार इसराईलियों
को भगा सकते हैं? वजह सिर्फ़ यह है कि उनकी
चट्टान ने उन्हें दुश्मन के हाथ बेच दिया। रब ने ख़ुद
उन्हें दुश्मन के क़ब्ज़े में कर दिया।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : चूसने दिया।

[b]यानी इसराईल।

31हमारे दुश्मन ख़ुद मानते हैं कि इसराईल की
चट्टान हमारी चट्टान जैसी नहीं है।
32उनकी बेल तो सदूम की बेल और अमूरा के
बाग़ से है, उनके अंगूर ज़हरीले और उनके गुच्छे
कड़वे हैं।
33उनकी मै साँपों का मोहलक ज़हर है।

34रब फ़रमाता है, "क्या मैंने इन बातों पर मुहर
लगाकर उन्हें अपने ख़ज़ाने में महफ़ूज़ नहीं रखा?
35इंतक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही
बदला लूँगा। एक वक़्त आएगा कि उनका पाँव
फिसलेगा। क्योंकि उनकी तबाही का दिन क़रीब
है, उनका अंजाम जल्द ही आनेवाला है।"

36यक़ीनन रब अपनी क़ौम का इनसाफ़
करेगा। वह अपने ख़ादिमों पर तरस खाएगा जब
देखेगा कि उनकी ताक़त जाती रही है और कोई
नहीं बचा।
37उस वक़्त वह पूछेगा, "अब उनके देवता
कहाँ हैं, वह चट्टान जिसकी पनाह उन्होंने ली?
38वह देवता कहाँ हैं जिन्होंने उनके बेहतरीन
जानवर खाए और उनकी मै की नज़रें पी लीं। वह
तुम्हारी मदद के लिए उठें और तुम्हें पनाह दें।
39अब जान लो कि मैं और सिर्फ़ मैं ख़ुदा हूँ।
मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। मैं ही हलाक
करता और मैं ही ज़िंदा कर देता हूँ। मैं ही ज़ख़मी
करता और मैं ही शफ़ा देता हूँ। कोई मेरे हाथ से
नहीं बचा सकता।

40मैं अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर
एलान करता हूँ कि मेरी अबदी हयात की क़सम,
41जब मैं अपनी चमकती हुई तलवार को
तेज़ करके अदालत के लिए पकड़ लूँगा तो
अपने मुख़ालिफ़ों से इंतक़ाम और अपने नफ़रत
करनेवालों से बदला लूँगा।
42मेरे तीर ख़ून पी पीकर नशे में धुत हो जाएंगे,
मेरी तलवार मक़तूलों और क़ैदियों के ख़ून और
दुश्मन के सरदारों के सरों से सेर हो जाएगी।"

43ऐ दीगर क़ौमो, उस की उम्मत के साथ ख़ुशी
मनाओ! क्योंकि वह अपने ख़ादिमों के ख़ून का
इंतक़ाम लेगा। वह अपने मुख़ालिफ़ों से बदला
लेकर अपने मुल्क और क़ौम का कफ़्फ़ारा देगा।

44मूसा और यशुअ बिन नून ने आकर
इसराईलियों को यह पूरा गीत सुनाया।
45-46फिर मूसा ने उनसे कहा, "आज मैंने तुम्हें
इन तमाम बातों से आगाह किया है। लाज़िम है
कि वह तुम्हारे दिलों में बैठ जाएँ। अपनी औलाद
को भी हुक्म दो कि एहतियात से इस शरीअत
की तमाम बातों पर अमल करे। 47यह ख़ाली
बातें नहीं बल्कि तुम्हारी ज़िंदगी का सरचश्मा हैं।
इनके मुताबिक़ चलने के बाइस तुम देर तक उस
मुल्क में जीते रहोगे जिस पर तुम दरियाए-यरदन
को पार करके क़ब्ज़ा करनेवाले हो।"

मूसा का नबू पहाड़ पर इंतक़ाल

48उसी दिन रब ने मूसा से कहा, 49"पहा-
ड़ी सिलसिले अबारीम के पहाड़ नबू पर चढ़ जा
जो यरीहू के सामने लेकिन यरदन के मशरिक़ी
किनारे पर यानी मोआब के मुल्क में है। वहाँ
से कनान पर नज़र डाल, उस मुल्क पर जो
मैं इसराईलियों को दे रहा हूँ। 50इसके बाद
तू वहाँ मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह तेरा भाई हारून
होर पहाड़ पर मरकर अपने बापदादा से जा मिला
है। 51क्योंकि तुम दोनों इसराईलियों के रूबरू
बेवफ़ा हुए। जब तुम दश्ते-सीन में क़ादिस के
क़रीब थे और मरीबा के चश्मे पर इसराईलियों
के सामने खड़े थे तो तुमने मेरी क़ुद्दूसियत क़ायम
न रखी। 52इस सबब से तू वह मुल्क सिर्फ़ दूर से
देखेगा जो मैं इसराईलियों को दे रहा हूँ। तू ख़ुद
उसमें दाख़िल नहीं होगा।"

मूसा क़बीलों को बरकत देता है

33 मरने से पेशतर मर्दे-ख़ुदा मूसा ने
इसराईलियों को बरकत देकर 2कहा,

“रब सीना से आया, सईर[a] से उसका नूर उन पर तुलू हुआ। वह कोहे-फ़ारान से रौशनी फैलाकर रिबबोत-क़ादिस से आया, वह अपने जुनूबी इलाक़े से रवाना होकर उनकी ख़ातिर पहाड़ी ढलानों के पास आया।

3यक़ीनन वह क़ौमों से मुहब्बत करता है, तमाम मुक़द्दसीन तेरे हाथ में हैं। वह तेरे पाँवों के सामने झुककर तुझसे हिदायत पाते हैं।

4मूसा ने हमें शरीअत दी यानी वह चीज़ जो याक़ूब की जमात की मौरूसी मिलकियत है।

5इसराईल के राहनुमा अपने क़बीलों समेत जमा हुए तो रब यसूरून[b] का बादशाह बन गया।

6रूबिन की बरकत :

रूबिन मर न जाए बल्कि जीता रहे। वह तादाद में बढ़ जाए।

7यहूदाह की बरकत :

ऐ रब, यहूदाह की पुकार सुनकर उसे दुबारा उस की क़ौम में शामिल कर। उसके हाथ उसके लिए लड़ें। मुख़ालिफ़ों का सामना करते वक़्त उस की मदद कर।

8लावी की बरकत :

तेरी मरज़ी मालूम करने के क़ुरे बनाम ऊरीम और तुम्मीम तेरे वफ़ादार ख़ादिम लावी के पास होते हैं। तूने उसे मस्सा में आज़माया और मरीबा में उससे लड़ा।
9उसने तेरा कलाम सँभालकर तेरा अहद क़ायम रखा, यहाँ तक कि उसने न अपने माँ-बाप का, न अपने सगे भाइयों या बच्चों का लिहाज़ किया।

10वह याक़ूब को तेरी हिदायात और इसराईल को तेरी शरीअत सिखाकर तेरे सामने बख़ूर और तेरी क़ुरबानगाह पर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ चढ़ाता है।

11ऐ रब, उस की ताक़त को बढ़ाकर उसके हाथों का काम पसंद कर। उसके मुख़ालिफ़ों की कमर तोड़ और उससे नफ़रत रखनेवालों को ऐसा मार कि आइंदा कभी न उठें।

12बिनयमीन की बरकत :

बिनयमीन रब को प्यारा है। वह सलामती से उसके पास रहता है, क्योंकि रब दिन-रात उसे पनाह देता है। बिनयमीन उस की पहाड़ी ढलानों के दरमियान महफ़ूज़ रहता है।

13यूसुफ़ की बरकत :

रब उस की ज़मीन को बरकत दे। आसमान से क़ीमती ओस टपके और ज़मीन के नीचे से चश्मे फूट निकलें।

14यूसुफ़ को सूरज की बेहतरीन पैदावार और हर महीने का लज़ीज़तरीन फल हासिल हो।

15उसे क़दीम पहाड़ों और अबदी वादियों की बेहतरीन चीज़ों से नवाज़ा जाए।

16ज़मीन के तमाम ज़ख़ीरे उसके लिए खुल जाएँ। वह उसको पसंद हो जो जलती हुई झाड़ी में सुकूनत करता था। यह तमाम बरकतें यूसुफ़ के सर पर ठहरें, उसके सर पर जो अपने भाइयों में शहज़ादा है।

17यूसुफ़ साँड के पहलौठे जैसा अज़ीम है, और उसके सींग जंगली बैल के सींग हैं जिनसे वह दुनिया की इंतहा तक सब क़ौमों को मारेगा। इफ़राईम के बेशुमार अफ़राद ऐसे ही हैं, मनस्सी के हज़ारों अफ़राद ऐसे ही हैं।

[a]अदोम।

[b]इसराईल।

18ज़बूलून और इशकार की बरकत :

ऐ ज़बूलून, घर से निकलते वक़्त ख़ुशी मना। ऐ इशकार, अपने ख़ैमों में रहते हुए ख़ुश हो।

19वह दीगर क़ौमों को अपने पहाड़ पर आने की दावत देंगे और वहाँ रास्ती की क़ुरबानियाँ पेश करेंगे। वह समुंदर की कसरत और समुंदर की रेत में छुपे हुए ख़ज़ानों को जज़्ब कर लेंगे।

20जद की बरकत :

मुबारक है वह जो जद का इलाक़ा वसी कर दे। जद शेरबबर की तरह दबककर किसी का बाज़ू या सर फाड़ डालने के लिए तैयार रहता है।

21उसने अपने लिए सबसे अच्छी ज़मीन चुन ली, राहनुमा का हिस्सा उसी के लिए महफ़ूज़ रखा गया। जब क़ौम के राहनुमा जमा हुए तो उसने रब की रास्त मरज़ी पूरी की और इसराईल के बारे में उसके फ़ैसले अमल में लाया।

22दान की बरकत :

दान शेरबबर का बच्चा है जो बसन से निकलकर छलाँग लगाता है।

23नफ़ताली की बरकत :

नफ़ताली रब की मंज़ूरी से सेर है, उसे उस की पूरी बरकत हासिल है। वह गलील की झील और उसके जुनूब का इलाक़ा मीरास में पाएगा।

24आशर की बरकत :

आशर बेटों में सबसे मुबारक है। वह अपने भाइयों को पसंद हो। उसके पास ज़ैतून का इतना तेल हो कि वह अपने पाँव उसमें डुबो सके।

25तेरे शहरों के दरवाज़ों के कुंडे लोहे और पीतल के हों, तेरी ताक़त उम्र-भर क़ायम रहे।

26यसूरून[a] के ख़ुदा की मानिंद कोई नहीं है, जो आसमान पर सवार होकर, हाँ अपने जलाल में बादलों पर बैठकर तेरी मदद करने के लिए आता है।

27अज़ली ख़ुदा तेरी पनाहगाह है, वह अपने अज़ली बाज़ू तेरे नीचे फैलाए रखता है। वह दुश्मन को तेरे सामने से भगाकर उसे हलाक करने को कहता है।

28चुनाँचे इसराईल सलामती से ज़िंदगी गुज़ारेगा, याक़ूब का चश्मा अलग और महफ़ूज़ रहेगा। उस की ज़मीन अनाज और अंगूर की कसरत पैदा करेगी, और उसके ऊपर आसमान ज़मीन पर ओस पड़ने देगा।

29ऐ इसराईल, तू कितना मुबारक है। कौन तेरी मानिंद है, जिसे रब ने बचाया है। वह तेरी मदद की ढाल और तेरी शान की तलवार है। तेरे दुश्मन शिकस्त खाकर तेरी ख़ुशामद करेंगे, और तू उनकी कमरें पाँवों तले कुचलेगा।”

मूसा की वफ़ात

34 यह बरकत देकर मूसा मोआब
का मैदानी इलाक़ा छोड़कर यरी-
हू के मुक़ाबिल नबू पहाड़ पर चढ़ गया। नबू
पिसगा के पहाड़ी सिलसिले की एक चोटी था।
वहाँ से रब ने उसे वह पूरा मुल्क दिखाया जो
वह इसराईल को देनेवाला था यानी जिलियाद के
इलाक़े से लेकर दान के इलाक़े तक, 2नफ़ताली
का पूरा इलाक़ा, इफ़राईम और मनस्सी का
इलाक़ा, यहूदाह का इलाक़ा बहीराए-रूम तक,
3जुनूब में दश्ते-नजब और खजूर के शहर यरीहू
की वादी से लेकर ज़ुग़र तक। 4रब ने उससे कहा,
“यह वह मुल्क है जिसका वादा मैंने क़सम खाकर
इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया। मैंने
उनसे कहा था कि उनकी औलाद को यह मुल्क
मिलेगा। तू उसमें दाख़िल नहीं होगा, लेकिन मैं
तुझे यहाँ ले आया हूँ ताकि तू उसे अपनी आँखों
से देख सके।”
5इसके बाद रब का ख़ादिम मूसा वहीं मोआब
के मुल्क में फ़ौत हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस

[a]इसराईल।

तरह रब ने कहा था। 6रब ने उसे बैत-फ़ग़ूर की
किसी वादी में दफ़न किया, लेकिन आज तक
किसी को भी मालूम नहीं कि उस की क़ब्र कहाँ
है।

7अपनी वफ़ात के वक़्त मूसा 120 साल का
था। आख़िर तक न उस की आँखें धुँधलाईं, न
उस की ताक़त कम हुई। 8इसराईलियों ने मोआब
के मैदानी इलाक़े में 30 दिन तक उसका मातम
किया।

9फिर यशुअ बिन नून मूसा की जगह खड़ा
हुआ। वह हिकमत की रूह से मामूर था, क्योंकि
मूसा ने अपने हाथ उस पर रख दिए थे।
इसराईलियों ने उस की सुनी और वह कुछ किया
जो रब ने उन्हें मूसा की मारिफ़त बताया था।

10इसके बाद इसराईल में मूसा जैसा नबी कभी
न उठा जिससे रब रूबरू बात करता था। 11किसी
और नबी ने ऐसे इलाही निशान और मोजिज़े
नहीं किए जैसे मूसा ने फ़िरौन बादशाह, उसके
मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के सामने किए जब
रब ने उसे मिसर भेजा। 12किसी और नबी ने
इस क़िस्म का बड़ा इख़्तियार न दिखाया, न ऐसे
अज़ीम और हैबतनाक काम किए जैसे मूसा ने
इसराईलियों के सामने किए।

तारीख़ी सहायफ़

असल इबरानी और अरामी मतन से
नया उर्दू तरजुमा

यशुअ

रब यशुअ को राहनुमाई की ज़िम्मेदारी सौंपता है

1 रब के ख़ादिम मूसा की मौत के बाद
रब मूसा के मददगार यशुअ बिन नून से
हमकलाम हुआ। उसने कहा, 2“मेरा ख़ादिम मूसा
फ़ौत हो गया है। अब उठ, इस पूरी क़ौम के
साथ दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क
में दाख़िल हो जा जो मैं इसराईलियों को देने
को हूँ। 3जिस ज़मीन पर भी तू अपना पाँव
रखेगा उसे मैं मूसा के साथ किए गए वादे के
मुताबिक़ तुझे दूँगा। 4तुम्हारे मुल्क की सरहद्दें यह
होंगी : जुनूब में नजब का रेगिस्तान, शिमाल में
लुबनान, मशरिक़ में दरियाए-फ़ुरात और मग़रिब
में बहीराए-रूम। हित्ती क़ौम का पूरा इलाक़ा इसमें
शामिल होगा। 5तेरे जीते-जी कोई तेरा सामना
नहीं कर सकेगा। जिस तरह मैं मूसा के साथ था,
उसी तरह तेरे साथ भी हूँगा। मैं तुझे कभी नहीं
छोड़ूँगा, न तुझे तर्क करूँगा।
6मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू ही इस
क़ौम को मीरास में वह मुल्क देगा जिसका मैंने
उनके बापदादा से क़सम खाकर वादा किया था।
7लेकिन ख़बरदार, मज़बूत और बहुत दिलेर हो।
एहतियात से उस पूरी शरीअत पर अमल कर
जो मेरे ख़ादिम मूसा ने तुझे दी है। उससे न दाईं
और न बाईं तरफ़ हटना। फिर जहाँ कहीं भी तू
जाए कामयाब होगा। 8जो बातें इस शरीअत की
किताब में लिखी हैं वह तेरे मुँह से न हटें। दिन-रात
उन पर ग़ौर करता रह ताकि तू एहतियात से
इसकी हर बात पर अमल कर सके। फिर तू हर
काम में कामयाब और ख़ुशहाल होगा।
9मैं फिर कहता हूँ कि मज़बूत और दिलेर हो।
न घबरा और न हौसला हार, क्योंकि जहाँ भी तू
जाएगा वहाँ रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ रहेगा।”

मुल्क में दाख़िल होने की तैयारियाँ

10फिर यशुअ क़ौम के निगहबानों से मुख़ातिब
हुआ, 11“ख़ैमागाह में हर जगह जाकर लोगों को
इत्तला दें कि सफ़र के लिए खाने का बंदोबस्त
कर लें। क्योंकि तीन दिन के बाद आप दरियाए-
यरदन को पार करके उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करेंगे
जो रब आपका ख़ुदा आपको विरसे में दे रहा है।”
12फिर यशुअ रूबिन, जद और मनस्सी के
आधे क़बीले से मुख़ातिब हुआ, 13“यह बात
याद रखें जो रब के ख़ादिम मूसा ने आपसे कही
थी, ‘रब तुम्हारा ख़ुदा तुमको दरियाए-यरदन के
मशरिक़ी किनारे पर का यह इलाक़ा देता है
ताकि तुम यहाँ अमनो-अमान के साथ रह सको।’
14अब जब हम दरियाए-यरदन को पार कर रहे हैं
तो आपके बाल-बच्चे और मवेशी यहीं रह सकते
हैं। लेकिन लाज़िम है कि आपके तमाम जंग करने
के क़ाबिल मर्द मुसल्लह होकर अपने भाइयों के
आगे आगे दरिया को पार करें। आपको उस वक़्त
तक अपने भाइयों की मदद करना है 15जब तक
रब उन्हें वह आराम न दे जो आपको हासिल है

और वह उस मुल्क पर क़ब्ज़ा न कर लें जो रब आपका ख़ुदा उन्हें दे रहा है। इसके बाद ही आपको अपने उस इलाक़े में वापस जाकर आबाद होने की इजाज़त होगी जो रब के ख़ादिम मूसा ने आपको दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर दिया था।”

16उन्होंने जवाब में यशुअ से कहा, “जो भी
हुक्म आपने हमें दिया है वह हम मानेंगे और जहाँ
भी हमें भेजेंगे वहाँ जाएंगे। 17जिस तरह हम मूसा
की हर बात मानते थे उसी तरह आपकी भी हर
बात मानेंगे। लेकिन रब आपका ख़ुदा उसी तरह
आपके साथ हो जिस तरह वह मूसा के साथ था।
18जो भी आपके हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करके
आपकी वह तमाम बातें न माने जो आप फ़रमाएँगे
उसे सज़ाए-मौत दी जाए। लेकिन मज़बूत और
दिलेर हों!”

यरीहू शहर में इसराईली जासूस

2 फिर यशुअ ने चुपके से दो जासूसों को
शित्तीम से भेज दिया जहाँ इसराईली
ख़ैमागाह थी। उसने उनसे कहा, “जाकर मुल्क
का जायज़ा लें, ख़ासकर यरीहू शहर का।” वह
रवाना हुए और चलते चलते एक कसबी के घर
पहुँचे जिसका नाम राहब था। वहाँ वह रात के
लिए ठहर गए। 2लेकिन यरीहू के बादशाह को
इत्तला मिली कि आज शाम को कुछ इसराईली
मर्द यहाँ पहुँच गए हैं जो मुल्क की जासूसी करना
चाहते हैं। 3यह सुनकर बादशाह ने राहब को ख़बर
भेजी, “उन आदमियों को निकाल दो जो तुम्हारे
पास आकर ठहरे हुए हैं, क्योंकि यह पूरे मुल्क
की जासूसी करने के लिए आए हैं।”

4लेकिन राहब ने दोनों आदमियों को छुपा रखा
था। उसने कहा, “जी, यह आदमी मेरे पास आए
तो थे लेकिन मुझे मालूम नहीं था कि कहाँ से आए
हैं। 5जब दिन ढलने लगा और शहर के दरवाज़ों
को बंद करने का वक़्त आ गया तो वह चले गए।
मुझे मालूम नहीं कि किस तरफ़ गए। अब जल्दी
करके उनका पीछा करें। ऐन मुमकिन है कि आप
उन्हें पकड़ लें।” 6हक़ीक़त में राहब ने उन्हें छत पर
ले जाकर वहाँ पर पड़े सन के डंठलों के नीचे छुपा
दिया था। 7राहब की बात सुनकर बादशाह के
आदमी वहाँ से चले गए और शहर से निकलकर
जासूसों के ताक़्क़ुब में उस रास्ते पर चलने लगे
जो दरियाए-यरदन के उन कम-गहरे मक़ामों तक
ले जाता है जहाँ उसे पैदल उबूर किया जा सकता
था। और ज्योंही यह आदमी निकले, शहर का
दरवाज़ा उनके पीछे बंद कर दिया गया।

8जासूसों के सो जाने से पहले राहब ने छत
पर आकर 9उनसे कहा, “मैं जानती हूँ कि रब
ने यह मुल्क आपको दे दिया है। आपके बारे में
सुनकर हम पर दहशत छा गई है, और मुल्क के
तमाम बाशिंदे हिम्मत हार गए हैं। 10क्योंकि हमें
ख़बर मिली है कि आपके मिसर से निकलते वक़्त
रब ने बहरे-क़ुलज़ुम का पानी किस तरह आपके
आगे ख़ुश्क कर दिया। यह भी हमारे सुनने में
आया है कि आपने दरियाए-यरदन के मशरिक़ में
रहनेवाले दो बादशाहों सीहोन और ओज के साथ
क्या कुछ किया, कि आपने उन्हें पूरी तरह तबाह
कर दिया। 11यह सुनकर हमारी हिम्मत टूट गई।
आपके सामने हम सब हौसला हार गए हैं, क्योंकि
रब आपका ख़ुदा आसमानो-ज़मीन का ख़ुदा है।
12अब रब की क़सम खाकर मुझसे वादा करें कि
आप उसी तरह मेरे ख़ानदान पर मेहरबानी करेंगे
जिस तरह कि मैंने आप पर की है। और ज़मानत
के तौर पर मुझे कोई निशान दें 13कि आप मेरे
माँ-बाप, मेरे बहन-भाइयों और उनके घरवालों को
ज़िंदा छोड़कर हमें मौत से बचाए रखेंगे।”

14आदमियों ने कहा, “हम अपनी जानों को
ज़मानत के तौर पर पेश करते हैं कि आप महफ़ूज़
रहेंगे। अगर आप किसी को हमारे बारे में इत्तला
न दें तो हम आपसे ज़रूर मेहरबानी और वफ़ादारी
से पेश आएँगे जब रब हमें यह मुल्क अता
फ़रमाएगा।”

15तब राहब ने शहर से निकलने में उनकी
मदद की। चूँकि उसका घर शहर की चारदीवारी
से मुलहिक़ था इसलिए आदमी खिड़की से

निकलकर रस्से के ज़रीए बाहर की ज़मीन पर
उतर आए। 16उतरने से पहले राहब ने उन्हें
हिदायत की, "पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ चले जाएँ।
जो आपका ताक़्क़ुब कर रहे हैं वह वहाँ आपको
ढूँड नहीं सकेंगे। तीन दिन तक यानी जब तक
वह वापस न आ जाएँ वहाँ छुपे रहना। इसके बाद
जहाँ जाने का इरादा है चले जाना।"

17आदमियों ने उससे कहा, "जो क़सम आपने
हमें खिलाई है हम ज़रूर उसके पाबंद रहेंगे।
लेकिन शर्त यह है 18कि आप हमारे इस मुल्क
में आते वक़्त क़िरमिज़ी रंग का यह रस्सा उस
खिड़की के सामने बाँध दें जिसमें से आपने हमें
उतरने दिया है। यह भी लाज़िम है कि उस वक़्त
आपके माँ-बाप, भाई-बहनें और तमाम घरवाले
आपके घर में हों। 19अगर कोई आपके घर में से
निकले और मार दिया जाए तो यह हमारा क़ुसूर
नहीं होगा, हम ज़िम्मेदार नहीं ठहरेंगे। लेकिन
अगर किसी को हाथ लगाया जाए जो आपके घर
के अंदर हो तो हम ही उस की मौत के ज़िम्मेदार
ठहरेंगे। 20और किसी को हमारे मामले के बारे में
इत्तला न देना, वरना हम उस क़सम से आज़ाद हैं
जो आपने हमें खिलाई।"

21राहब ने जवाब दिया, "ठीक है, ऐसा ही
हो।" फिर उसने उन्हें रुख़सत किया और वह
रवाना हुए। और राहब ने अपनी खिड़की के साथ
मज़कूरा रस्सा बाँध दिया।

22जासूस चलते चलते पहाड़ी इलाक़े में आ
गए। वहाँ वह तीन दिन रहे। इतने में उनका
ताक़्क़ुब करनेवाले पूरे रास्ते का खोज लगाकर
ख़ाली हाथ लौटे। 23फिर दोनों जासूसों ने पहाड़ी
इलाक़े से उतरकर दरियाए-यरदन को पार किया
और यशुअ बिन नून के पास आकर सब कुछ
बयान किया जो उनके साथ हुआ था। 24उन्होंने
कहा, "यक़ीनन रब ने हमें पूरा मुल्क दे दिया है।
हमारे बारे में सुनकर मुल्क के तमाम बाशिंदों पर
दहशत तारी हो गई है।"

इसराईली दरियाए-यरदन को उबूर करते हैं

3 सुबह-सवेरे उठकर यशुअ और तमाम
इसराईली शित्तीम से रवाना हुए। जब वह
दरियाए-यरदन पर पहुँचे तो उसे उबूर न किया
बल्कि रात के लिए किनारे पर रुक गए। 2वह
तीन दिन वहाँ रहे। फिर निगहबानों ने ख़ैमागाह
में से गुज़रकर 3लोगों को हुक्म दिया, "जब आप
देखें कि लावी के क़बीले के इमाम रब आपके ख़ुदा
के अहद का संदूक़ उठाए हुए हैं तो अपने अपने
मक़ाम से रवाना होकर उसके पीछे हो लें। 4फिर
आपको पता चलेगा कि कहाँ जाना है, क्योंकि
आप पहले कभी वहाँ नहीं गए। लेकिन संदूक़ के
तक़रीबन एक किलोमीटर पीछे रहें और ज़्यादा
क़रीब न जाएँ।"

5यशुअ ने लोगों को बताया, "अपने आपको
मख़सूसो-मुक़द्दस करें, क्योंकि कल रब आपके
दरमियान हैरतअंगेज़ काम करेगा।"

6अगले दिन यशुअ ने इमामों से कहा, "अहद
का संदूक़ उठाकर लोगों के आगे आगे दरिया को
पार करें।" चुनाँचे इमाम संदूक़ को उठाकर आगे
आगे चल दिए। 7और रब ने यशुअ से फ़रमाया,
"मैं तुझे तमाम इसराईलियों के सामने सरफ़राज़
कर दूँगा, और आज ही मैं यह काम शुरू करूँगा
ताकि वह जान लें कि जिस तरह मैं मूसा के
साथ था उसी तरह तेरे साथ भी हूँ। 8अहद का
संदूक़ उठानेवाले इमामों को बता देना, 'जब आप
दरियाए-यरदन के किनारे पहुँचेंगे तो वहाँ पानी में
रुक जाएँ'।"

9यशुअ ने इसराईलियों से कहा, "मेरे पास
आएँ और रब अपने ख़ुदा के फ़रमान सुन लें।
10आज आप जान लेंगे कि ज़िंदा ख़ुदा आपके
दरमियान है और कि वह यक़ीनन आपके आगे
आगे जाकर दूसरी क़ौमों को निकाल देगा, ख़ाह
वह कनानी, हित्ती, हिव्वी, फ़रिज़्ज़ी, जिरजासी,
अमोरी या यबूसी हों। 11यह यों ज़ाहिर होगा
कि अहद का यह संदूक़ जो तमाम दुनिया के
मालिक का है आपके आगे आगे दरियाए-यरदन

में जाएगा। 12अब ऐसा करें कि हर क़बीले में से
एक एक आदमी को चुन लें ताकि बारह अफ़राद
जमा हो जाएँ। 13फिर इमाम तमाम दुनिया के
मालिक रब के अहद का संदूक़ उठाकर दरिया में
जाएंगे। और ज्योंही वह अपने पाँव पानी में रखेंगे
तो पानी का बहाव रुक जाएगा और आनेवाला
पानी ढेर बनकर खड़ा रहेगा।"

14चुनाँचे इसराईली अपने ख़ैमों को समेट-
कर रवाना हुए, और अहद का संदूक़ उठाने-
वाले इमाम उनके आगे आगे चल दिए। 15फ़सल
की कटाई का मौसम था, और दरिया का पानी
किनारों से बाहर आ गया था। लेकिन ज्योंही
संदूक़ को उठानेवाले इमामों ने दरिया के किनारे
पहुँचकर पानी में क़दम रखा 16तो आनेवाले पानी
का बहाव रुक गया। वह उनसे दूर एक शहर
के क़रीब ढेर बन गया जिसका नाम आदम था
और जो ज़रतान के नज़दीक है। जो पानी दूसरी
यानी बहीराए-मुरदार की तरफ़ बह रहा था वह
पूरी तरह उतर गया। तब इसराईलियों ने यरीहू
शहर के मुक़ाबिल दरिया को पार किया। 17रब
का अहद का संदूक़ उठानेवाले इमाम दरियाए-
यरदन के बीच में ख़ुश्क ज़मीन पर खड़े रहे जबकि
बाक़ी लोग ख़ुश्क ज़मीन पर से गुज़र गए। इमाम
उस वक़्त तक वहाँ खड़े रहे जब तक तमाम
इसराईलियों ने ख़ुश्क ज़मीन पर चलकर दरिया
को पार न कर लिया।

यादगार पत्थर

4 जब पूरी क़ौम ने दरियाए-यरदन को उबूर
कर लिया तो रब यशुअ से हमकलाम
हुआ, 2"हर क़बीले में से एक एक आदमी को
चुन ले। 3फिर इन बारह आदमियों को हुक्म दे
कि जहाँ इमाम दरियाए-यरदन के दरमियान खड़े
हैं वहाँ से बारह पत्थर उठाकर उन्हें उस जगह रख
दो जहाँ तुम आज रात ठहरोगे।"

4चुनाँचे यशुअ ने उन बारह आदमियों को
बुलाया जिन्हें उसने इसराईल के हर क़बीले से चुन
लिया था 5और उनसे कहा, "रब अपने ख़ुदा के
संदूक़ के आगे आगे चलकर दरिया के दरमियान
तक जाएँ। आपमें से हर आदमी एक एक पत्थर
उठाकर अपने कंधे पर रखे और बाहर ले जाए।
कुल बारह पत्थर होंगे, इसराईल के हर क़बीले
के लिए एक। 6यह पत्थर आपके दरमियान एक
यादगार निशान रहेंगे। आइंदा जब आपके बच्चे
आपसे पूछेंगे कि इन पत्थरों का क्या मतलब है
7तो उन्हें बताना, 'यह हमें याद दिलाते हैं कि
दरियाए-यरदन का बहाव रुक गया जब रब का
अहद का संदूक़ उसमें से गुज़रा।' यह पत्थर अबद
तक इसराईल को याद दिलाते रहेंगे कि यहाँ क्या
कुछ हुआ था।"

8इसराईलियों ने ऐसा ही किया। उन्होंने
दरियाए-यरदन के बीच में से अपने क़बीलों की
तादाद के मुताबिक़ बारह पत्थर उठाए, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह रब ने यशुअ को फ़रमाया
था। फिर उन्होंने यह पत्थर अपने साथ लेकर उस
जगह रख दिए जहाँ उन्हें रात के लिए ठहरना था।
9साथ साथ यशुअ ने उस जगह भी बारह पत्थर
खड़े किए जहाँ अहद का संदूक़ उठानेवाले इमाम
दरियाए-यरदन के दरमियान खड़े थे। यह पत्थर
आज तक वहाँ पड़े हैं। 10संदूक़ को उठानेवाले
इमाम दरिया के दरमियान खड़े रहे जब तक लोगों
ने तमाम अहकाम जो रब ने यशुअ को दिए थे पूरे
न कर लिए। यों सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा मूसा
ने यशुअ को फ़रमाया था।

लोग जल्दी जल्दी दरिया में से गुज़रे। 11जब
सब दूसरे किनारे पर थे तो इमाम भी रब का
संदूक़ लेकर किनारे पर पहुँचे और दुबारा क़ौम के
आगे आगे चलने लगे। 12और जिस तरह मूसा ने
फ़रमाया था, रूबिन, जद और मनस्सी के आधे
क़बीले के मर्द मुसल्लह होकर बाक़ी इसराईली
क़बीलों से पहले दरिया के दूसरे किनारे पर पहुँच
गए थे। 13तक़रीबन 40,000 मुसल्लह मर्द उस
वक़्त रब के सामने यरीहू के मैदान में पहुँच गए
ताकि वहाँ जंग करें। 14उस दिन रब ने यशुअ को
पूरी इसराईली क़ौम के सामने सरफ़राज़ किया।

उसके जीते-जी लोग उसका यों ख़ौफ़ मानते रहे
जिस तरह पहले मूसा का।
15फिर रब ने यशुअ से कहा, 16“अहद का
संदूक़ उठानेवाले इमामों को दरिया में से निकलने
का हुक्म दे।” 17यशुअ ने ऐसा ही किया 18तो
ज्योंही इमाम किनारे पर पहुँच गए पानी दुबारा
बहकर दरिया के किनारों से बाहर आने लगा।
19इसराईलियों ने पहले महीने के दसवें दिन[a]
दरियाए-यरदन को उबूर किया। उन्होंने अपने ख़ैमे
यरीहू के मशरिक़ में वाक़े जिलजाल में खड़े किए।
20वहाँ यशुअ ने दरिया में से चुने हुए बारह पत्थरों
को खड़ा किया। 21उसने इसराईलियों से कहा,
“आइंदा जब आपके बच्चे अपने अपने बाप से
पूछेंगे कि इन पत्थरों का क्या मतलब है 22तो
उन्हें बताना, ‘यह वह जगह है जहाँ इसराईली
क़ौम ने ख़ुश्क ज़मीन पर दरियाए-यरदन को पार
किया।’ 23क्योंकि रब आपके ख़ुदा ने उस वक़्त
तक आपके आगे आगे दरिया का पानी ख़ुश्क
कर दिया जब तक आप वहाँ से गुज़र न गए,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह बहरे-क़ुलज़ुम के
साथ किया था जब हम उसमें से गुज़रे। 24उसने
यह काम इसलिए किया ताकि ज़मीन की तमाम
क़ौमें अल्लाह की क़ुदरत को जान लें और आप
हमेशा रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें।”

5 यह ख़बर दरियाए-यरदन के मग़रिब में
आबाद तमाम अमोरी बादशाहों और
साहिली इलाक़े में आबाद तमाम कनानी
बादशाहों तक पहुँच गई कि रब ने इसराईलियों
के सामने दरिया को उस वक़्त तक ख़ुश्क कर
दिया जब तक सबने पार न कर लिया था। तब
उनकी हिम्मत टूट गई और उनमें इसराईलियों का
सामना करने की जुर्रत न रही।

जिलजाल में ख़तना

2उस वक़्त रब ने यशुअ से कहा, “पत्थर
की छुरियाँ बनाकर पहले की तरह इसराई-
लियों का ख़तना करवा दे।” 3चुनाँचे यशुअ
ने पत्थर की छुरियाँ बनाकर एक जगह पर
इसराईलियों का ख़तना करवाया जिसका नाम
बाद में ‘ख़तना पहाड़’ रखा गया। 4बात यह थी
कि जो मर्द मिसर से निकलते वक़्त जंग करने
के क़ाबिल थे वह रेगिस्तान में चलते चलते मर
चुके थे। 5मिसर से रवाना होनेवाले इन तमाम
मर्दों का ख़तना हुआ था, लेकिन जितने लड़कों
की पैदाइश रेगिस्तान में हुई थी उनका ख़तना
नहीं हुआ था। 6चूँकि इसराईली रब के ताबे नहीं
रहे थे इसलिए उसने क़सम खाई थी कि वह उस
मुल्क को नहीं देखेंगे जिसमें दूध और शहद की
कसरत है और जिसका वादा उसने क़सम खाकर
उनके बापदादा से किया था। नतीजे में इसराईली
फ़ौरन मुल्क में दाख़िल न हो सके बल्कि उन्हें उस
वक़्त तक रेगिस्तान में फिरना पड़ा जब तक वह
तमाम मर्द मर न गए जो मिसर से निकलते वक़्त
जंग करने के क़ाबिल थे। 7उनकी जगह रब ने
उनके बेटों को खड़ा किया था। यशुअ ने उन्हीं का
ख़तना करवाया। उनका ख़तना इसलिए हुआ कि
रेगिस्तान में सफ़र के दौरान उनका ख़तना नहीं
किया गया था।
8पूरी क़ौम के मर्दों का ख़तना होने के बाद वह
उस वक़्त तक ख़ैमागाह में रहे जब तक उनके
ज़ख़्म ठीक नहीं हो गए थे। 9और रब ने यशुअ
से कहा, “आज मैंने मिसर की रुसवाई तुमसे दूर
कर दी है।”[b] इसलिए उस जगह का नाम आज
तक जिलजाल यानी लुढ़काना रहा है।
10जब इसराईली यरीहू के मैदानी इलाक़े में
वाक़े जिलजाल में ख़ैमाज़न थे तो उन्होंने फ़सह
की ईद भी मनाई। महीने का चौधवाँ दिन था,
11और अगले ही दिन वह पहली दफ़ा उस मुल्क
की पैदावार में से बेख़मीरी रोटी और अनाज के
भुने हुए दाने खाने लगे। 12उसके बाद के दिन मन
का सिलसिला ख़त्म हुआ और इसराईलियों के
लिए यह सहूलत न रही। उस साल से वह कनान
की पैदावार से खाने लगे।

[a]यानी अप्रैल में।

[b]लफ़्ज़ी तरजुमा : लुढ़काकर दूर कर दी है।

फ़रिश्ते से यशुअ की मुलाक़ात

13एक दिन यशुअ यरीहू शहर के क़रीब था।
अचानक एक आदमी उसके सामने खड़ा नज़र
आया जिसके हाथ में नंगी तलवार थी। यशुअ ने
उसके पास जाकर पूछा, “क्या आप हमारे साथ
या हमारे दुश्मनों के साथ हैं?”

14आदमी ने कहा, “नहीं, मैं रब के लशकर का
सरदार हूँ और अभी अभी तेरे पास पहुँचा हूँ।”

यह सुनकर यशुअ ने गिरकर उसे सिजदा किया
और पूछा, “मेरे आक़ा अपने ख़ादिम को क्या
फ़रमाना चाहते हैं?”

15रब के लशकर के सरदार ने जवाब में कहा,
“अपने जूते उतार दे, क्योंकि जिस जगह पर तू
खड़ा है वह मुक़द्दस है।” यशुअ ने ऐसा ही किया।

यरीहू की तबाही

6 उन दिनों में इसराईलियों की वजह से
यरीहू के दरवाज़े बंद ही रहे। न कोई बाहर
निकला, न कोई अंदर गया। 2रब ने यशुअ से
कहा, “मैंने यरीहू को उसके बादशाह और फ़ौजी
अफ़सरों समेत तेरे हाथ में कर दिया है। 3जो
इसराईली जंग के लिए तेरे साथ निकलेंगे उनके
साथ शहर की फ़सील के साथ साथ चलकर एक
चक्कर लगाओ और फिर ख़ैमागाह में वापस आ
जाओ। छः दिन तक ऐसा ही करो। 4सात इमाम
एक एक नरसिंगा उठाए अहद के संदूक़ के आगे
आगे चलें। फिर सातवें दिन शहर के गिर्द सात
चक्कर लगाओ। साथ साथ इमाम नरसिंगे बजाते
रहें। 5जब वह नरसिंगों को बजाते बजाते लंबी-
सी फूँक मारेंगे तो फिर तमाम इसराईली बड़े ज़ोर
से जंग का नारा लगाएँ। इस पर शहर की फ़सील
गिर जाएगी और तेरे लोग हर जगह सीधे शहर में
दाख़िल हो सकेंगे।”

6यशुअ बिन नून ने इमामों को बुलाकर उनसे
कहा, “रब के अहद का संदूक़ उठाकर मेरे साथ
चलें। और सात इमाम एक एक नरसिंगा उठाए
संदूक़ के आगे आगे चलें।” 7फिर उसने बाक़ी
लोगों से कहा, “आएँ, शहर की फ़सील के
साथ साथ चलकर एक चक्कर लगाएँ। मुसल्लह
आदमी रब के संदूक़ के आगे आगे चलें।”

8सब कुछ यशुअ की हिदायात के मुता-
बिक़ हुआ। सात इमाम नरसिंगे बजाते हुए रब
के आगे आगे चले जबकि रब के अहद का संदूक़
उनके पीछे पीछे था। 9मुसल्लह आदमियों में से
कुछ बजानेवाले इमामों के आगे आगे और कुछ
संदूक़ के पीछे पीछे चलने लगे। इतने में इमाम
नरसिंगे बजाते रहे। 10लेकिन यशुअ ने बाक़ी
लोगों को हुक्म दिया था कि उस दिन जंग का
नारा न लगाएँ। उसने कहा, “जब तक मैं हुक्म न
दूँ उस वक़्त तक एक लफ़्ज़ भी न बोलना। जब
मैं इशारा दूँगा तो फिर ही ख़ूब नारा लगाना।”
11इसी तरह रब के संदूक़ ने शहर की फ़सील के
साथ साथ चलकर चक्कर लगाया। फिर लोगों ने
ख़ैमागाह में लौटकर वहाँ रात गुज़ारी।

12-13अगले दिन यशुअ सुबह-सवेरे उठा, और
इमामों और फ़ौजियों ने दूसरी मरतबा शहर
का चक्कर लगाया। उनकी वही तरतीब थी।
पहले कुछ मुसल्लह आदमी, फिर सात नरसिंगे
बजानेवाले इमाम, फिर रब के अहद का संदूक़
उठानेवाले इमाम और आख़िर में मज़ीद कुछ
मुसल्लह आदमी थे। चक्कर लगाने के दौरान
इमाम नरसिंगे बजाते रहे। 14इस दूसरे दिन भी
वह शहर का चक्कर लगाकर ख़ैमागाह में लौट
आए। उन्होंने छः दिन तक ऐसा ही किया।

15सातवें दिन उन्होंने सुबह-सवेरे उठकर शहर
का चक्कर यों लगाया जैसे पहले छः दिनों में,
लेकिन इस दफ़ा उन्होंने कुल सात चक्कर लगाए।
16सातवें चक्कर पर इमामों ने नरसिंगों को बजाते
हुए लंबी-सी फूँक मारी। तब यशुअ ने लोगों
से कहा, “जंग का नारा लगाएँ, क्योंकि रब ने
आपको यह शहर दे दिया है। 17शहर को और जो
कुछ उसमें है तबाह करके रब के लिए मख़सूस
करना है। सिर्फ़ राहब कसबी को उन लोगों समेत
बचाना है जो उसके घर में हैं। क्योंकि उसने हमारे
उन जासूसों को छुपा दिया जिनको हमने यहाँ
भेजा था। 18लेकिन अल्लाह के लिए मख़सूस

चीज़ों को हाथ न लगाना, क्योंकि अगर आप उनमें से कुछ ले लें तो अपने आपको तबाह करेंगे बल्कि इसराईली ख़ैमागाह पर भी तबाही और आफ़त लाएँगे। 19जो कुछ भी चाँदी, सोने, पीतल या लोहे से बना है वह रब के लिए मख़सूस है। उसे रब के ख़ज़ाने में डालना है।”

20जब इमामों ने लंबी फूँक मारी तो इसराईलियों ने जंग के ज़ोरदार नारे लगाए। अचानक यरीहू की फ़सील गिर गई, और हर शख़्स अपनी अपनी जगह पर सीधा शहर में दाख़िल हुआ। यों शहर इसराईल के क़ब्ज़े में आ गया। 21जो कुछ भी शहर में था उसे उन्होंने तलवार से मारकर रब के लिए मख़सूस किया, ख़ाह मर्द या औरत, जवान या बुज़ुर्ग, गाय-बैल, भेड़-बकरी या गधा था।

22जिन दो आदमियों ने मुल्क की जासूसी की थी उनसे यशुअ ने कहा, “अब अपनी क़सम का वादा पूरा करें। कसबी के घर में जाकर उसे और उसके तमाम घरवालों को निकाल लाएँ।” 23चुनाँचे यह जवान आदमी गए और राहब, उसके माँ-बाप, भाइयों और बाक़ी रिश्तेदारों को उस की मिलकियत समेत निकालकर ख़ैमागाह से बाहर कहीं बसा दिया। 24फिर उन्होंने पूरे शहर को और जो कुछ उसमें था भस्म कर दिया। लेकिन चाँदी, सोने, पीतल और लोहे का तमाम माल उन्होंने रब के घर के ख़ज़ाने में डाल दिया। 25यशुअ ने सिर्फ़ राहब कसबी और उसके घरवालों को बचाए रखा, क्योंकि उसने उन आदमियों को छुपा दिया था जिन्हें यशुअ ने यरीहू भेजा था। राहब आज तक इसराईलियों के दरमियान रहती है।

26उस वक़्त यशुअ ने क़सम खाई, “रब की लानत उस पर हो जो यरीहू का शहर नए सिरे से तामीर करने की कोशिश करे। शहर की बुनियाद रखते वक़्त वह अपने पहलौठे से महरूम हो जाएगा, और उसके दरवाज़ों को खड़ा करते वक़्त वह अपने सबसे छोटे बेटे से हाथ धो बैठेगा।”

27यों रब यशुअ के साथ था, और उस की शोहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

अकन का गुनाह

7 लेकिन जहाँ तक रब के लिए मख़सूस चीज़ों का ताल्लुक़ था इसराईलियों ने बेवफ़ाई की। यहूदाह के क़बीले के एक आदमी ने उनमें से कुछ अपने लिए ले लिया। उसका नाम अकन बिन करमी बिन ज़बदी बिन ज़ारह था। तब रब का ग़ज़ब इसराईलियों पर नाज़िल हुआ।

2यह यों ज़ाहिर हुआ कि यशुअ ने कुछ आदमियों को यरीहू से अई शहर को भेज दिया जो बैतेल के मशरिक़ में बैत-आवन के क़रीब है। उसने उनसे कहा, “उस इलाक़े में जाकर उस की जासूसी करें।” चुनाँचे वह जाकर ऐसा ही करने लगे। 3जब वापस आए तो उन्होंने यशुअ से कहा, “इसकी ज़रूरत नहीं कि तमाम लोग अई पर हमला करें। उसे शिकस्त देने के लिए दो या तीन हज़ार मर्द काफ़ी हैं। बाक़ी लोगों को न भेजें वरना वह ख़ाहमख़ाह थक जाएंगे, क्योंकि दुश्मन के लोग कम हैं।” 4चुनाँचे तक़रीबन तीन हज़ार आदमी अई से लड़ने गए। लेकिन वह अई के मर्दों से शिकस्त खाकर फ़रार हुए, 5और उनके 36 अफ़राद शहीद हुए। अई के आदमियों ने शहर के दरवाज़े से लेकर शबरीम तक उनका ताक़्क़ुब करके वहाँ की ढलान पर उन्हें मार डाला। तब इसराईली सख़्त घबरा गए, और उनकी हिम्मत जवाब दे गई।

6यशुअ ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़ों को फाड़ दिया और रब के संदूक़ के सामने मुँह के बल गिर गया। वहाँ वह शाम तक पड़ा रहा। इसराईल के बुज़ुर्गों ने भी ऐसा ही किया और अपने सर पर ख़ाक डाल ली। 7यशुअ ने कहा, “हाय, ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़! तूने इस क़ौम को दरियाए-यरदन में से गुज़रने क्यों दिया अगर तेरा मक़सद सिर्फ़ यह था कि हमें अमोरियों के हवाले करके हलाक करे? काश हम दरिया के मशरिक़ी किनारे पर रहने के लिए तैयार होते! 8ऐ रब,

अब मैं क्या कहूँ जब इसराईल अपने दुश्मनों के
सामने से भाग आया है? 9कनानी और मुल्क की
बाक़ी क़ौमें यह सुनकर हमें घेर लेंगी और हमारा
नामो-निशान मिटा देंगी। अगर ऐसा होगा तो फिर
तू ख़ुद अपना अज़ीम नाम क़ायम रखने के लिए
क्या करेगा?”

10जवाब में रब ने यशुअ से कहा, “उठकर
खड़ा हो जा! तू क्यों मुँह के बल पड़ा है?
11इसराईल ने गुनाह किया है। उन्होंने मेरे अहद
की ख़िलाफ़वरज़ी की है जो मैंने उनके साथ बाँधा
था। उन्होंने मख़सूसशुदा चीज़ों में से कुछ ले लिया
है, और चोरी करके चुपके से अपने सामान में
मिला लिया है। 12इसी लिए इसराईली अपने
दुश्मनों के सामने क़ायम नहीं रह सकते बल्कि
पीठ फेरकर भाग रहे हैं। क्योंकि इस हरकत
से इसराईल ने अपने आपको भी हलाकत के
लिए मख़सूस कर लिया है। जब तक तुम अपने
दरमियान से वह कुछ निकालकर तबाह न कर
लो जो तबाही के लिए मख़सूस है उस वक़्त
तक मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। 13अब उठ और
लोगों को मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर। उन्हें
बता देना, ‘अपने आपको कल के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस करना, क्योंकि रब जो इसराईल का ख़ुदा
है फ़रमाता है कि ऐ इसराईल, तेरे दरमियान ऐसा
माल है जो मेरे लिए मख़सूस है। जब तक तुम उसे
अपने दरमियान से निकाल न दो अपने दुश्मनों के
सामने क़ायम नहीं रह सकोगे।’

14कल सुबह को हर एक क़बीला अपने
आपको पेश करे। रब ज़ाहिर करेगा कि क़ुसूरवार
शख़्स कौन-से क़बीले का है। फिर उस क़बीले
के कुंबे बारी बारी सामने आएँ। जिस कुंबे
को रब क़ुसूरवार ठहराएगा उसके मुख़्तलिफ़
ख़ानदान सामने आएँ। और जिस ख़ानदान को
रब क़ुसूरवार ठराएगा उसके मुख़्तलिफ़ अफ़राद
सामने आएँ। 15जो रब के लिए मख़सूस माल
के साथ पकड़ा जाएगा उसे उस की मिलकियत
समेत जला देना है, क्योंकि उसने रब के अहद की
ख़िलाफ़वरज़ी करके इसराईल में शर्मनाक काम
किया है।”

16अगले दिन सुबह-सवेरे यशुअ ने क़बी-
लों को बारी बारी अपने पास आने दिया। जब
यहूदाह के क़बीले की बारी आई तो रब ने
उसे क़ुसूरवार ठहराया। 17जब उस क़बीले के
मुख़्तलिफ़ कुंबे सामने आए तो रब ने ज़ारह
के कुंबे को क़ुसूरवार ठहराया। जब ज़ारह के
मुख़्तलिफ़ ख़ानदान सामने आए तो रब ने ज़बदी
का ख़ानदान क़ुसूरवार ठहराया। 18आख़िरकार
यशुअ ने उस ख़ानदान को फ़रदन फ़रदन अपने
पास आने दिया, और अकन बिन करमी बिन
ज़बदी बिन ज़ारह पकड़ा गया। 19यशुअ ने उससे
कहा, “बेटा, रब इसराईल के ख़ुदा को जलाल दो
और उस की सताइश करो। मुझे बता दो कि तुमने
क्या किया। कोई भी बात मुझसे मत छुपाना।”

20अकन ने जवाब दिया, “वाक़ई मैंने रब
इसराईल के ख़ुदा का गुनाह किया है। 21मैंने लूटे
हुए माल में से बाबल का एक शानदार चोग़ा,
तक़रीबन सवा दो किलोग्राम चाँदी और आधे
किलोग्राम से ज़ायद सोने की ईंट ले ली थी। यह
चीज़ें देखकर मैंने उनका लालच किया और उन्हें
ले लिया। अब वह मेरे ख़ैमे की ज़मीन में दबी
हुई हैं। चाँदी को मैंने बाक़ी चीज़ों के नीचे छुपा
दिया।”

22यह सुनकर यशुअ ने अपने बंदों को अकन
के ख़ैमे के पास भेज दिया। वह दौड़कर वहाँ पहुँचे
तो देखा कि यह माल वाक़ई ख़ैमे की ज़मीन में
छुपाया हुआ है और कि चाँदी दूसरी चीज़ों के नीचे
पड़ी है। 23वह यह सब कुछ ख़ैमे से निकालकर
यशुअ और तमाम इसराईलियों के पास ले आए
और रब के सामने रख दिया। 24फिर यशुअ और
तमाम इसराईली अकन बिन ज़ारह को पकड़कर
वादीए-अकूर में ले गए। उन्होंने चाँदी, लिबास,
सोने की ईंट, अकन के बेटे-बेटियों, गाय-बैलों,
गधों, भेड़-बकरियों और उसके ख़ैमे ग़रज़ उस
की पूरी मिलकियत को उस वादी में पहुँचा दिया।

25यशुअ ने कहा, "तुम यह आफ़त हम
पर क्यों लाए हो? आज रब तुम पर ही
आफ़त लाएगा।" फिर पूरे इसराईल ने अकन को
उसके घरवालों समेत संगसार करके जला दिया।
26अकन के ऊपर उन्होंने पत्थरों का बड़ा ढेर लगा
दिया जो आज तक वहाँ मौजूद है। यही वजह
है कि आज तक उसका नाम वादीए-अकूर यानी
आफ़त की वादी रहा है।

इसके बाद रब का सख़्त ग़ज़ब ठंडा हो गया।

अई की शिकस्त

8 फिर रब ने यशुअ से कहा, "मत डर और
मत घबरा बल्कि तमाम फ़ौजी अपने साथ
लेकर अई शहर पर हमला कर। क्योंकि मैंने अई
के बादशाह, उस की क़ौम, उसके शहर और मुल्क
को तेरे हाथ में कर दिया है। 2लाज़िम है कि तू
अई और उसके बादशाह के साथ वह कुछ करे
जो तूने यरीहू और उसके बादशाह के साथ किया
था। लेकिन इस मरतबा तुम उसका माल और
मवेशी अपने पास रख सकते हो। हमला करते
वक़्त शहर के पीछे घात लगा।"

3चुनाँचे यशुअ पूरे लशकर के साथ अई पर
हमला करने के लिए निकला। उसने अपने सबसे
अच्छे फ़ौजियों में से 30,000 को चुन लिया
और उन्हें रात के वक़्त अई के ख़िलाफ़ भेजकर
4हुक्म दिया, "ध्यान दें कि आप शहर के पीछे
घात लगाएँ। सबके सब शहर के क़रीब ही तैयार
रहें। 5इतने में मैं बाक़ी मर्दों के साथ शहर के क़रीब
आ जाऊँगा। और जब शहर के लोग पहले की
तरह हमारे साथ लड़ने के लिए निकलेंगे तो हम
उनके आगे आगे भाग जाएंगे। 6वह हमारे पीछे
पड़ जाएंगे और यों हम उन्हें शहर से दूर ले जाएंगे,
क्योंकि वह समझेंगे कि हम इस दफ़ा भी पहले
की तरह उनसे भाग रहे हैं। 7फिर आप उस जगह
से निकलें जहाँ आप घात में बैठे होंगे और शहर
पर क़ब्ज़ा कर लें। रब आपका ख़ुदा उसे आपके
हाथ में कर देगा। 8जब शहर आपके क़ब्ज़े में होगा
तो उसे जला देना। वही करें जो रब ने फ़रमाया
है। मेरी इन हिदायात पर ध्यान दें।"

9यह कहकर यशुअ ने उन्हें अई की तरफ़ भेज
दिया। वह रवाना होकर अई के मग़रिब में घात में
बैठ गए। यह जगह बैतेल और अई के दरमियान
थी। लेकिन यशुअ ने यह रात बाक़ी लोगों के साथ
ख़ैमागाह में गुज़ारी। 10अगले दिन सुबह-सवेरे
यशुअ ने आदमियों को जमा करके उनका जायज़ा
लिया। फिर वह इसराईल के बुज़ुर्गों के साथ
उनके आगे आगे अई की तरफ़ चल दिया। 11जो
लशकर उसके साथ था वह चलते चलते अई के
सामने पहुँच गया। उन्होंने शहर के शिमाल में
अपने ख़ैमे लगाए। उनके और शहर के दरमियान
वादी थी।

12जो शहर के मग़रिब में अई और बैतेल
के दरमियान घात लगाए बैठे थे वह तक़रीबन
5,000 मर्द थे। 13यों शहर के मग़रिब और
शिमाल में आदमी लड़ने के लिए तैयार हुए। रात
के वक़्त यशुअ वादी में पहुँच गया।

14जब अई के बादशाह ने शिमाल में
इसराईलियों को देखा तो उसने जल्दी जल्दी
तैयारियाँ कीं। अगले दिन सुबह-सवेरे वह अपने
आदमियों के साथ शहर से निकला ताकि
इसराईलियों के साथ लड़े। यह जगह वादीए-
यरदन की तरफ़ थी। बादशाह को मालूम न हुआ
कि इसराईली शहर के पीछे घात में बैठे हैं। 15जब
अई के मर्द निकले तो यशुअ और उसका लशकर
शिकस्त का इज़हार करके रेगिस्तान की तरफ़
भागने लगे।

16तब अई के तमाम मर्दों को इसराईलियों का
ताक़्क़ुब करने के लिए बुलाया गया, और यशुअ
के पीछे भागते भागते वह शहर से दूर निकल गए।
17एक मर्द भी अई या बैतेल में न रहा बल्कि
सबके सब इसराईलियों के पीछे पड़ गए। न सिर्फ़
यह बल्कि उन्होंने शहर का दरवाज़ा खुला छोड़
दिया।

18फिर रब ने यशुअ से कहा, "जो शमशेर तेरे
हाथ में है उसे अई के ख़िलाफ़ उठाए रख, क्योंकि

मैं यह शहर तेरे हाथ में कर दूँगा।” यशुअ ने ऐसा
ही किया, 19और ज्योंही उसने अपनी शमशेर से
अई की तरफ़ इशारा किया घात में बैठे आदमी
जल्दी से अपनी जगह से निकल आए और दौड़
दौड़कर शहर पर झपट पड़े। उन्होंने उस पर क़ब्ज़ा
करके जल्दी से उसे जला दिया।

20जब अई के आदमियों ने मुड़कर नज़र डाली
तो देखा कि शहर से धुएँ के बादल उठ रहे
हैं। लेकिन अब उनके लिए भी बचने का कोई
रास्ता न रहा, क्योंकि जो इसराईली अब तक
उनके आगे आगे रेगिस्तान की तरफ़ भाग रहे थे
वह अचानक मुड़कर ताक़्क़ुब करनेवालों पर टूट
पड़े। 21क्योंकि जब यशुअ और उसके साथ के
आदमियों ने देखा कि घात में बैठे इसराईलियों
ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया है और कि शहर
से धुआँ उठ रहा है तो उन्होंने मुड़कर अई के
आदमियों पर हमला कर दिया। 22साथ साथ
शहर में दाख़िल हुए इसराईली शहर से निकलकर
पीछे से उनसे लड़ने लगे। चुनाँचे अई के आदमी
बीच में फँस गए। इसराईलियों ने सबको क़त्ल
कर दिया, और न कोई बचा, न कोई फ़रार हो
सका। 23सिर्फ़ अई के बादशाह को ज़िंदा पकड़ा
और यशुअ के पास लाया गया।

24अई के मर्दों का ताक़्क़ुब करते करते उन
सबको खुले मैदान और रेगिस्तान में तलवार से
मार देने के बाद इसराईलियों ने अई शहर में वापस
आकर तमाम बाशिंदों को हलाक कर दिया।
25उस दिन अई के तमाम मर्द और औरतें मारे गए,
कुल 12,000 अफ़राद। 26क्योंकि यशुअ ने उस
वक़्त तक अपनी शमशेर उठाए रखी जब तक अई
के तमाम बाशिंदों को हलाक न कर दिया गया।
27सिर्फ़ शहर के मवेशी और लूटा हुआ माल बच
गया, क्योंकि इस दफ़ा रब ने हिदायत की थी कि
इसराईली उसे ले जा सकते हैं।

28यशुअ ने अई को जलाकर उसे हमेशा के
लिए मलबे का ढेर बना दिया। यह मक़ाम आज
तक वीरान है। 29अई के बादशाह की लाश उसने
शाम तक दरख़्त से लटकाए रखी। फिर जब सूरज
डूबने लगा तो यशुअ ने अपने लोगों को हुक्म दिया
कि बादशाह की लाश को दरख़्त से उतार दें। तब
उन्होंने उसे शहर के दरवाज़े के पास फेंककर उस
पर पत्थर का बड़ा ढेर लगा दिया। यह ढेर आज
तक मौजूद है।

ऐबाल पहाड़ पर अहद की तजदीद

30उस वक़्त यशुअ ने रब इसराईल के ख़ुदा
की ताज़ीम में ऐबाल पहाड़ पर क़ुरबानगाह बनाई
31जिस तरह रब के ख़ादिम मूसा ने इसराईलियों
को हुक्म दिया था। उसने उसे मूसा की शरीअत
की किताब में दर्ज हिदायात के मुताबिक़ बनाया।
क़ुरबानगाह के पत्थर तराशे बग़ैर लगाए गए, और
उन पर लोहे का आला न चलाया गया। उस पर
उन्होंने रब को भस्म होनेवाली और सलामती की
क़ुरबानियाँ पेश कीं।

32वहाँ यशुअ ने इसराईलियों की मौजूदगी में
पत्थरों पर मूसा की शरीअत दुबारा लिख दी।
33फिर बुज़ुर्गों, निगहबानों और क़ाज़ियों के साथ
मिलकर तमाम इसराईली दो गुरोहों में तक़सीम
हुए। परदेसी भी उनमें शामिल थे। एक गुरोह
गरिज़ीम पहाड़ के सामने खड़ा हुआ और दूसरा
ऐबाल पहाड़ के सामने। दोनों गुरोह एक दूसरे
के मुक़ाबिल खड़े रहे जबकि लावी के क़बीले
के इमाम उनके दरमियान खड़े हुए। उन्होंने रब
के अहद का संदूक़ उठा रखा था। सब कुछ उन
हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब के ख़ादिम
मूसा ने इसराईलियों को बरकत देने के लिए दी
थीं।

34फिर यशुअ ने शरीअत की तमाम बातों की
तिलावत की, उस की बरकात भी और उस की
लानतें भी। सब कुछ उसने वैसा ही पढ़ा जैसा कि
शरीअत की किताब में दर्ज था। 35जो भी हुक्म
मूसा ने दिया था उसका एक भी लफ़्ज़ न रहा
जिसकी तिलावत यशुअ ने तमाम इसराईलियों
की पूरी जमात के सामने न की हो। और सबने
यह बातें सुनीं। इसमें औरतें, बच्चे और उनके
दरमियान रहनेवाले परदेसी सब शामिल थे।

जिबऊनी यशुअ को धोका देते हैं

9 इन बातों की ख़बर दरियाए-यरदन के
मग़रिब के तमाम बादशाहों तक पहुँची,
ख़ाह वह पहाड़ी इलाक़े, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े या साहिली इलाक़े में लुबनान तक रहते
थे। उनकी यह क़ौमें थीं : हित्ती, अमोरी, कनानी,
फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी। 2अब यह यशुअ
और इसराईलियों से लड़ने के लिए जमा हुए।

3लेकिन जब जिबऊन शहर के बाशिंदों को पता
चला कि यशुअ ने यरीहू और अई के साथ क्या
किया है 4तो उन्होंने एक चाल चली। अपने साथ
सफ़र के लिए खाना लेकर वह यशुअ के पास चल
पड़े। उनके गधों पर ख़स्ताहाल बोरियाँ और मै की
ऐसी पुरानी और घिसी-फटी मशकें लदी हुई थीं
जिनकी बार बार मरम्मत हुई थी। 5मर्दों ने ऐसे
पुराने जूते पहन रखे थे जिन पर जगह जगह पैवंद
लगे हुए थे। उनके कपड़े भी घिसे-फटे थे, और
सफ़र के लिए जो रोटी उनके पास थी वह ख़ुश्क
और टुकड़े टुकड़े हो गई थी। 6ऐसी हालत में वह
यशुअ के पास जिलजाल की ख़ैमागाह में पहुँच
गए। उन्होंने उससे और बाक़ी इसराईली मर्दों से
कहा, "हम एक दूर-दराज़ मुल्क से आए हैं। आएँ,
हमारे साथ मुआहदा करें।"

7लेकिन इसराईलियों ने हिव्वियों से कहा,
"शायद आप हमारे इलाक़े के बीच में कहीं बसते
हैं। अगर ऐसा है तो हम किस तरह आपसे
मुआहदा कर सकते हैं?"

8वह यशुअ से बोले, "हम आपकी ख़िदमत के
लिए हाज़िर हैं।"

यशुअ ने पूछा, "आप कौन हैं और कहाँ से आए
हैं?" 9उन्होंने जवाब दिया, "आपके ख़ादिम
आपके ख़ुदा के नाम के बाइस एक निहायत दूर-
दराज़ मुल्क से आए हैं। क्योंकि उस की ख़बर
हम तक पहुँच गई है, और हमने वह सब कुछ
सुन लिया है जो उसने मिसर में 10और दरियाए-
यरदन के मशरिक़ में रहनेवाले दो बादशाहों के
साथ किया यानी हसबोन के बादशाह सीहोन और
बसन के बादशाह ओज के साथ जो अस्तारात
में रहता था। 11तब हमारे बुज़ुर्गों बल्कि हमारे
मुल्क के तमाम बाशिंदों ने हमसे कहा, 'सफ़र
के लिए खाना लेकर उनसे मिलने जाएँ। उनसे
बात करें कि हम आपकी ख़िदमत के लिए हाज़िर
हैं। आएँ, हमारे साथ मुआहदा करें।' 12हमारी
यह रोटी अभी गरम थी जब हम इसे सफ़र के
लिए अपने साथ लेकर आपसे मिलने के लिए
अपने घरों से रवाना हुए। और अब आप ख़ुद देख
सकते हैं कि यह ख़ुश्क और टुकड़े टुकड़े हो गई है।
13और मै की इन मशकों की घिसी-फटी हालत
देखें। भरते वक़्त यह नई और लचकदार थीं। यही
हमारे कपड़ों और जूतों की हालत भी है। सफ़र
करते करते यह ख़त्म हो गए हैं।"

14इसराईलियों ने मुसाफ़िरों का कुछ खाना
लिया। अफ़सोस, उन्होंने रब से हिदायत न माँगी।
15फिर यशुअ ने उनके साथ सुलह का मुआहदा
किया और जमात के राहनुमाओं ने क़सम खाकर
उस की तसदीक़ की। मुआहदे में इसराईल ने वादा
किया कि जिबऊनियों को जीने देगा।

16तीन दिन गुज़रे तो इसराईलियों को
पता चला कि जिबऊनी हमारे क़रीब ही
और हमारे इलाक़े के ऐन बीच में रहते हैं।
17इसराईली रवाना हुए और तीसरे दिन
उनके शहरों के पास पहुँचे जिनके नाम
जिबऊन, कफ़ीरा, बैरोत और क़िरियत-
यारीम थे। 18लेकिन चूँकि जमात के राह-
नुमाओं ने रब इसराईल के ख़ुदा की क़सम खाकर
उनसे वादा किया था इसलिए उन्होंने जिबऊनियों
को हलाक न किया। पूरी जमात राहनुमाओं
पर बुड़बुड़ाने लगी, 19लेकिन उन्होंने जवाब में
कहा, "हमने रब इसराईल के ख़ुदा की क़सम
खाकर उनसे वादा किया, और अब हम उन्हें
छेड़ नहीं सकते। 20चुनाँचे हम उन्हें जीने देंगे
और वह क़सम न तोड़ेंगे जो हमने उनके साथ
खाई। ऐसा न हो कि अल्लाह का ग़ज़ब हम
पर नाज़िल हो जाए। 21उन्हें जीने दो।" फिर
फ़ैसला यह हुआ कि जिबऊनी लकड़हारे और

पानी भरनेवाले बनकर पूरी जमात की ख़िदमत
करें। यों इसराईली राहनुमाओं का उनके साथ
वादा क़ायम रहा।

22यशुअ ने जिबऊनियों को बुलाकर कहा,
“तुमने हमें धोका देकर क्यों कहा कि हम आपसे
निहायत दूर रहते हैं हालाँकि तुम हमारे इलाक़े
के बीच में ही रहते हो? 23चुनाँचे अब तुम पर
लानत हो। तुम लकड़हारे और पानी भरनेवाले
बनकर हमेशा के लिए मेरे ख़ुदा के घर की ख़िदमत
करोगे।”

24उन्होंने जवाब दिया, “आपके ख़ादिमों को
साफ़ बताया गया था कि रब आपके ख़ुदा ने अपने
ख़ादिम मूसा को क्या हुक्म दिया था, कि उसे
आपको पूरा मुल्क देना और आपके आगे आगे
तमाम बाशिंदों को हलाक करना है। यह सुनकर
हम बहुत डर गए कि हमारी जान नहीं बचेगी।
इसी लिए हमने यह सब कुछ किया। 25अब हम
आपके हाथ में हैं। हमारे साथ वह कुछ करें जो
आपको अच्छा और ठीक लगता है।”

26चुनाँचे यशुअ ने उन्हें इसराईलियों से
बचाया, और उन्होंने जिबऊनियों को हलाक
न किया। 27उसी दिन उसने जिबऊनियों को
लकड़हारे और पानी भरनेवाले बना दिया
ताकि वह जमात और रब की उस क़ुर-
बानगाह की ख़िदमत करें जिसका मक़ाम रब को
अभी चुनना था। और यह लोग आज तक यही
कुछ करते हैं।

अमोरियों की शिकस्त

10 यरूशलम के बादशाह अदूनी-सिद्क़
को ख़बर मिली कि यशुअ ने अई पर
यों क़ब्ज़ा करके उसे मुकम्मल तौर पर तबाह
कर दिया है जिस तरह उसने यरीहू और उसके
बादशाह के साथ भी किया था। उसे यह इत्तला
भी दी गई कि जिबऊन के बाशिंदे इसराईलियों के
साथ सुलह का मुआहदा करके उनके दरमियान
रह रहे हैं। 2यह सुनकर वह और उस की क़ौम
निहायत डर गए, क्योंकि जिबऊन बड़ा शहर था।
वह अहमियत के लिहाज़ से उन शहरों के बराबर
था जिनके बादशाह थे, बल्कि वह अई शहर से भी
बड़ा था, और उसके तमाम मर्द बेहतरीन फ़ौजी
थे।

3चुनाँचे यरूशलम के बादशाह अदूनी-सिद्क़ ने
अपने क़ासिद हबरून के बादशाह हूहाम, यरमूत
के बादशाह पीराम, लकीस के बादशाह यफ़ीअ
और इजलून के बादशाह दबीर के पास भेज दिए।
4पैग़ाम यह था, “आएँ और जिबऊन पर हमला
करने में मेरी मदद करें, क्योंकि उसने यशुअ और
इसराईलियों के साथ सुलह का मुआहदा कर
लिया है।” 5यरूशलम, हबरून, यरमूत, लकीस
और इजलून के यह पाँच अमोरी बादशाह मुत्तहिद
हुए। वह अपने तमाम फ़ौजियों को लेकर चल पड़े
और जिबऊन का मुहासरा करके उससे जंग करने
लगे।

6उस वक़्त यशुअ ने अपने ख़ैमे जिलजाल में
लगाए थे। जिबऊन के लोगों ने उसे पैग़ाम भेज
दिया, “अपने ख़ादिमों को तर्क न करें। जल्दी
से हमारे पास आकर हमें बचाएँ! हमारी मदद
कीजिए, क्योंकि पहाड़ी इलाक़े के तमाम अमोरी
बादशाह हमारे ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो गए हैं।”

7यह सुनकर यशुअ अपनी पूरी फ़ौज के साथ
जिलजाल से निकला और जिबऊन के लिए
रवाना हुआ। उसके बेहतरीन फ़ौजी भी सब उसके
साथ थे। 8रब ने यशुअ से कहा, “उनसे मत
डरना, क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में कर चुका
हूँ। उनमें से एक भी तेरा मुक़ाबला नहीं करने
पाएगा।” 9और यशुअ ने जिलजाल से सारी रात
सफ़र करते करते अचानक दुश्मन पर हमला
किया। 10उस वक़्त रब ने इसराईलियों के देखते
देखते दुश्मन में अबतरी पैदा कर दी, और उन्होंने
जिबऊन के क़रीब दुश्मन को ज़बरदस्त शिकस्त
दी। इसराईली बैत-हौरून तक पहुँचानेवाले रास्ते
पर अमोरियों का ताक़्क़ुब करते करते उन्हें
अज़ीक़ा और मक़्क़ेदा तक मौत के घाट उतारते
गए। 11और जब अमोरी इस रास्ते पर अज़ीक़ा
की तरफ़ भाग रहे थे तो रब ने आसमान से उन

पर बड़े बड़े ओले बरसाए जिन्होंने इसराईलियों
की निसबत ज़्यादा दुश्मनों को हलाक कर दिया।
12उस दिन जब रब ने अमोरियों को इसराईल
के हाथ में कर दिया तो यशुअ ने इसराईलियों की
मौजूदगी में रब से कहा,

"ऐ सूरज, जिबऊन के ऊपर रुक जा!
ऐ चाँद, वादीए-ऐयालोन पर ठहर जा!"

13तब सूरज रुक गया, और चाँद ने आगे
हरकत न की। जब तक कि इसराईल ने अपने
दुश्मनों से पूरा बदला न ले लिया उस वक़्त तक
वह रुके रहे। इस बात का ज़िक्र याशर की किताब
में किया गया है। सूरज आसमान के बीच में रुक
गया और तक़रीबन एक पूरे दिन के दौरान ग़ुरूब
न हुआ। 14यह दिन मुन्फ़रिद था। रब ने इनसान
की इस तरह की दुआ न कभी इससे पहले, न
कभी इसके बाद सुनी। क्योंकि रब ख़ुद इसराईल
के लिए लड़ रहा था। 15इसके बाद यशुअ पूरे
इसराईल समेत जिलजाल की ख़ैमागाह में लौट
आया।

पाँच अमोरी बादशाहों की गिरिफ़्तारी

16लेकिन पाँचों अमोरी बादशाह फ़रार होकर
मक़्क़ेदा के एक ग़ार में छुप गए थे। 17यशुअ को
इत्तला दी गई 18तो उसने कहा, "कुछ बड़े बड़े
पत्थर लुढ़काकर ग़ार का मुँह बंद करना, और
कुछ आदमी उस की पहरादारी करें। 19लेकिन
बाक़ी लोग न रुकें बल्कि दुश्मनों का ताक़्क़ुब
करके पीछे से उन्हें मारते जाएँ। उन्हें दुबारा अपने
शहरों में दाख़िल होने का मौक़ा मत देना, क्योंकि
रब आपके ख़ुदा ने उन्हें आपके हाथ में कर दिया
है।" 20चुनाँचे यशुअ और बाक़ी इसराईली उन्हें
हलाक करते रहे, और कम ही अपने शहरों की
फ़सील में दाख़िल हो सके। 21इसके बाद पूरी
फ़ौज सहीह-सलामत यशुअ के पास मक़्क़ेदा की
लशकरगाह में वापस पहुँच गई।

अब से किसी में भी इसराईलियों को धमकी
देने की जुर्रत न रही।

22फिर यशुअ ने कहा, "ग़ार के मुँह को
खोलकर यह पाँच बादशाह मेरे पास निकाल
लाएँ।" 23लोग ग़ार को खोलकर यरूशलम,
हबरून, यरमूत, लकीस और इजलून के बादशाहों
को यशुअ के पास निकाल लाए। 24यशुअ ने
इसराईल के मर्दों को बुलाकर अपने साथ खड़े
फ़ौजी अफ़सरों से कहा, "इधर आकर अपने पैरों
को बादशाहों की गरदनों पर रख दें।" अफ़सरों
ने ऐसा ही किया। 25फिर यशुअ ने उनसे कहा,
"न डरें और न हौसला हारें। मज़बूत और दिलेर
हों। रब यही कुछ उन तमाम दुश्मनों के साथ
करेगा जिनसे आप लड़ेंगे।" 26यह कहकर उसने
बादशाहों को हलाक करके उनकी लाशें पाँच
दरख़्तों से लटका दीं। वहाँ वह शाम तक लटकी
रहीं। 27जब सूरज डूबने लगा तो लोगों ने यशुअ
के हुक्म पर लाशें उतारकर उस ग़ार में फेंक दीं
जिसमें बादशाह छुप गए थे। फिर उन्होंने ग़ार के
मुँह को बड़े बड़े पत्थरों से बंद कर दिया। यह
पत्थर आज तक वहाँ पड़े हुए हैं।

मज़ीद अमोरी शहरों पर क़ब्ज़ा

28उस दिन मक़्क़ेदा यशुअ के क़ब्ज़े में आ
गया। उसने पूरे शहर को तलवार से रब के लिए
मख़सूस करके तबाह कर दिया। बादशाह समेत
सब हलाक हुए और एक भी न बचा। शहर के
बादशाह के साथ उसने वह सुलूक किया जो उसने
यरीहू के बादशाह के साथ किया था।

29फिर यशुअ ने तमाम इसराईलियों के साथ
वहाँ से आगे निकलकर लिबना पर हमला किया।
30रब ने उस शहर और उसके बादशाह को भी
इसराईल के हाथ में कर दिया। यशुअ ने तलवार
से शहर के तमाम बाशिंदों को हलाक किया, और
एक भी न बचा। बादशाह के साथ उसने वही
सुलूक किया जो उसने यरीहू के बादशाह के साथ
किया था।

31इसके बाद उसने तमाम इसराईलियों के
साथ लिबना से आगे बढ़कर लकीस का मुहासरा
किया। जब उसने उस पर हमला किया 32तो रब

ने यह शहर उसके बादशाह समेत इसराईल के
हाथ में कर दिया। दूसरे दिन वह यशुअ के क़ब्ज़े में
आ गया। शहर के सारे बाशिंदों को उसने तलवार
से हलाक किया, जिस तरह कि उसने लिबना
के साथ भी किया था। 33साथ साथ यशुअ ने
जज़र के बादशाह हूरम और उसके लोगों को भी
शिकस्त दी जो लकीस की मदद करने के लिए
आए थे। उनमें से एक भी न बचा।

34फिर यशुअ ने तमाम इसराईलियों के साथ
लकीस से आगे बढ़कर इजलून का मुहासरा कर
लिया। उसी दिन उन्होंने उस पर हमला करके
35उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। जिस तरह लकीस
के साथ हुआ उसी तरह इजलून के साथ भी
किया गया यानी शहर के तमाम बाशिंदे तलवार
से हलाक हुए।

36इसके बाद यशुअ ने तमाम इसराईलियों के
साथ इजलून से आगे बढ़कर हबरून पर हमला
किया। 37शहर पर क़ब्ज़ा करके उन्होंने बादशाह,
इर्दगिर्द की आबादियाँ और बाशिंदे सबके सब
तहे-तेग़ कर दिए। कोई न बचा। इजलून की तरह
उन्होंने उसे पूरे तौर पर तमाम बाशिंदों समेत रब
के लिए मख़सूस करके तबाह कर दिया।

38फिर यशुअ तमाम इसराईलियों के साथ
मुड़कर दबीर की तरफ़ बढ़ गया। उस पर हमला
करके 39उसने शहर, उसके बादशाह और इर्दगिर्द
की आबादियों पर क़ब्ज़ा कर लिया। सबको नेस्त
कर दिया गया, एक भी न बचा। यों दबीर के साथ
वह कुछ हुआ जो पहले हबरून और लिबना उसके
बादशाह समेत हुआ था।

40इस तरह यशुअ ने जुनूबी कनान के तमाम
बादशाहों को शिकस्त देकर उनके पूरे मुल्क पर
क़ब्ज़ा कर लिया यानी मुल्क के पहाड़ी इलाक़े
पर, जुनूब के दश्ते-नजब पर, मग़रिब के नशेबी
पहाड़ी इलाक़े पर और वादीए-यरदन के मग़रिब
में वाक़े पहाड़ी ढलानों पर। उसने किसी को भी
बचने न दिया बल्कि हर जानदार को रब के लिए
मख़सूस करके हलाक कर दिया। यह सब कुछ
वैसा ही हुआ जैसा रब इसराईल के ख़ुदा ने हुक्म
दिया था।

41यशुअ ने उन्हें क़ादिस-बरनीअ से लेकर
ग़ज़्ज़ा तक और जुशन के पूरे इलाक़े से लेकर
जिबऊन तक शिकस्त दी। 42इन तमाम बादशाहों
और उनके ममालिक पर यशुअ ने एक ही वक़्त
फ़तह पाई, क्योंकि इसराईल का ख़ुदा इसराईल
के लिए लड़ा।

43इसके बाद यशुअ तमाम इसराईलियों के
साथ जिलजाल की ख़ैमागाह में लौट आया।

शिमाली इत्तहादियों पर फ़तह

11 जब हसूर के बादशाह याबीन को
इन वाक़ियात की ख़बर मिली तो
उसने मदून के बादशाह यूबाब और सिमरोन और
अकशाफ़ के बादशाहों को पैग़ाम भेजे। 2इसके
अलावा उसने उन बादशाहों को पैग़ाम भेजे जो
शिमाल में थे यानी शिमाली पहाड़ी इलाक़े में,
वादीए-यरदन के उस हिस्से में जो किन्नरत यानी
गलील के जुनूब में है, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े में, मग़रिब में वाक़े नाफ़त-दोर में 3और
कनान के मशरिक़ और मग़रिब में। याबीन ने
अमोरियों, हित्तियों, फ़रिज़्ज़ियों, पहाड़ी इलाक़े
के यबूसियों और हरमून पहाड़ के दामन में वाक़े
मुल्के-मिसफ़ाह के हिव्वियों को भी पैग़ाम भेजे।

4चुनाँचे यह अपनी तमाम फ़ौजों को लेकर
जंग के लिए निकले। उनके आदमी समुंदर के
साहिल की रेत की मानिंद बेशुमार थे। उनके
पास मुतअद्दिद घोड़े और रथ भी थे। 5इन तमाम
बादशाहों ने इसराईल से लड़ने के लिए मुत्तहिद
होकर अपने ख़ैमे मरूम के चश्मे पर लगा दिए।

6रब ने यशुअ से कहा, "उनसे मत डरना,
क्योंकि कल इसी वक़्त तक मैंने उन सबको
हलाक करके इसराईल के हवाले कर दिया होगा।
तुझे उनके घोड़ों की कोंचों को काटना और उनके
रथों को जला देना है।"

7चुनाँचे यशुअ अपने तमाम फ़ौजियों को लेकर
मरूम के चश्मे पर आया और अचानक दुश्मन

पर हमला किया। 8और रब ने दुश्मनों को
इसराईलियों के हवाले कर दिया। इसराईलियों
ने उन्हें शिकस्त दी और उनका ताक़्क़ुब करते
करते शिमाल में बड़े शहर सैदा और मिस्रफ़ात-
मायम तक जा पहुँचे। इसी तरह उन्होंने मशरिक़ में
वादीए-मिसफ़ाह तक भी उनका ताक़्क़ुब किया।
आख़िर में एक भी न बचा। 9रब की हिदायत के
मुताबिक़ यशुअ ने दुश्मन के घोड़ों की कोंचों को
कटवाकर उसके रथों को जला दिया।

शिमाली कनान पर क़ब्ज़ा

10फिर यशुअ वापस आया और हसूर को अपने
क़ब्ज़े में ले लिया। हसूर उन तमाम बादशाहतों
का सदर मक़ाम था जिन्हें उन्होंने शिकस्त दी थी।
इसराईलियों ने शहर के बादशाह को मार दिया
11और शहर के हर जानदार को अल्लाह के हवाले
करके हलाक कर दिया। एक भी न बचा। फिर
यशुअ ने शहर को जला दिया।

12इसी तरह यशुअ ने उन बाक़ी बादशाहों के
शहरों पर भी क़ब्ज़ा कर लिया जो इसराईल के
ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो गए थे। हर शहर को उसने रब
के ख़ादिम मूसा के हुक्म के मुताबिक़ तबाह कर
दिया। बादशाहों समेत सब कुछ नेस्त कर दिया
गया। 13लेकिन यशुअ ने सिर्फ़ हसूर को जलाया।
पहाड़ियों पर के बाक़ी शहरों को उसने रहने दिया।
14लूट का जो भी माल जानवरों समेत उनमें पाया
गया उसे इसराईलियों ने अपने पास रख लिया।
लेकिन तमाम बाशिंदों को उन्होंने मार डाला और
एक भी न बचने दिया। 15क्योंकि रब ने अपने
ख़ादिम मूसा को यही हुक्म दिया था, और यशुअ
ने सब कुछ वैसे ही किया जैसे रब ने मूसा को
हुक्म दिया था।

16यों यशुअ ने पूरे कनान पर क़ब्ज़ा कर लिया।
इसमें पहाड़ी इलाक़ा, पूरा दश्ते-नजब, जुशन का
पूरा इलाक़ा, मग़रिब का नशेबी पहाड़ी इलाक़ा,
वादीए-यरदन और इसराईल के पहाड़ उनके
दामन की पहाड़ियों समेत शामिल थे। 17अब
यशुअ की पहुँच जुनूब में सईर की तरफ़ बढ़नेवाले
पहाड़ ख़लक़ से लेकर लुबनान के मैदानी इलाक़े
के शहर बाल-जद तक थी जो हरमून पहाड़ के
दामन में था। यशुअ ने इन इलाक़ों के तमाम
बादशाहों को पकड़कर मार डाला। 18लेकिन
इन बादशाहों से जंग करने में बहुत वक़्त लगा,
19क्योंकि जिबऊन में रहनेवाले हिव्वियों के
अलावा किसी भी शहर ने इसराईलियों से सुलह
न की। इसलिए इसराईल को उन सब पर जंग
करके ही क़ब्ज़ा करना पड़ा। 20रब ही ने उन्हें
अकड़ने दिया था ताकि वह इसराईल से जंग करें
और उन पर रहम न किया जाए बल्कि उन्हें पूरे
तौर पर रब के हवाले करके हलाक किया जाए।
लाज़िम था कि उन्हें यों नेस्तो-नाबूद किया जाए
जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

21उस वक़्त यशुअ ने उन तमाम अना-
क़ियों को हलाक कर दिया जो हबरून, दबीर,
अनाब और उन तमाम जगहों में रहते थे जो
यहूदाह और इसराईल के पहाड़ी इलाक़े में थीं।
उसने उन सबको उनके शहरों समेत अल्लाह के
हवाले करके तबाह कर दिया। 22इसराईल के पूरे
इलाक़े में अनाक़ियों में से एक भी न बचा। सिर्फ़
ग़ज़्ज़ा, जात और अशदूद में कुछ ज़िंदा रहे।

23ग़रज़ यशुअ ने पूरे मुल्क पर यों क़ब्ज़ा
किया जिस तरह रब ने मूसा को बताया था। फिर
उसने उसे क़बीलों में तक़सीम करके इसराईल
को मीरास में दे दिया। जंग ख़त्म हुई, और मुल्क
में अमनो-अमान क़ायम हो गया।

मूसा की फ़ुतूहात का ख़ुलासा

12 दर्जे-ज़ैल दरियाए-यरदन के मशरिक़
में उन बादशाहों की फ़हरिस्त है जिन्हें
इसराईलियों ने शिकस्त दी थी और जिनके इलाक़े
पर उन्होंने क़ब्ज़ा किया था। यह इलाक़ा जुनूब
में वादीए-अरनोन से लेकर शिमाल में हरमून
पहाड़ तक था, और उसमें वादीए-यरदन का पूरा
मशरिक़ी हिस्सा शामिल था।

2पहले का नाम सीहोन था। वह अमोरियों
का बादशाह था और उसका दारुल-हुकूमत

हसबोन था। अरोईर शहर यानी वादीए-अर-
नोन के दरमियान से लेकर अम्मोनियों की
सरहद दरियाए-यब्बोक़ तक सारा इलाक़ा उस
की गिरिफ़्त में था। इसमें जिलियाद का आधा
हिस्सा भी शामिल था। 3इसके अलावा सीहोन
का क़ब्ज़ा दरियाए-यरदन के पूरे मशरिक़ी किनारे
पर किन्नरत यानी गलील की झील से लेकर
बहीराए-मुरदार के पास शहर बैत-यसीमोत तक
बल्कि उसके जुनूब में पहाड़ी सिलसिले पिसगा
के दामन तक था।

4दूसरा बादशाह जिसने शिकस्त खाई थी बसन
का बादशाह ओज था। वह रफ़ाइयों के देवक़ामत
क़बीले में से बाक़ी रह गया था, और उस की
हुकूमत के मरकज़ अस्तारात और इदरई थे।
5शिमाल में उस की सलतनत की सरहद हरमून
पहाड़ थी और मशरिक़ में सलका शहर। बसन
का तमाम इलाक़ा जसूरियों और माकातियों की
सरहद तक उसके हाथ में था और इसी तरह
जिलियाद का शिमाली हिस्सा बादशाह सीहोन
की सरहद तक।

6इसराईल ने रब के ख़ादिम मूसा की राहनुमाई
में इन दो बादशाहों पर फ़तह पाई थी, और मूसा
ने यह इलाक़ा रूबिन, जद और मनस्सी के आधे
क़बीले के सुपुर्द किया था।

यशुअ की फ़ुतूहात का ख़ुलासा

7दर्जे-ज़ैल दरियाए-यरदन के मग़रिब के
उन बादशाहों की फ़हरिस्त है जिन्हें इसराई-
लियों ने यशुअ की राहनुमाई में शिकस्त
दी थी और जिनकी सलतनत वादीए-लुबनान
के शहर बाल-जद से लेकर सईर की तरफ़
बढ़नेवाले पहाड़ ख़लक़ तक थी। बाद में यशुअ
ने यह सारा मुल्क इसराईल के क़बीलों में
तक़सीम करके उन्हें मीरास में दे दिया 8यानी
पहाड़ी इलाक़ा, मग़रिब का नशेबी पहाड़ी
इलाक़ा, यरदन की वादी, उसके मग़रिब में
वाक़े पहाड़ी ढलानें, यहूदाह का रेगिस्तान
और दश्ते-नजब। पहले यह सब कुछ हित्तियों,
अमोरियों, कनानियों, फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और
यबूसियों के हाथ में था। ज़ैल के हर शहर का
अपना बादशाह था, और हर एक ने शिकस्त
खाई : 9यरीहू, अई नज़्द बैतेल, 10यरूशलम,
हबरून, 11यरमूत, लकीस, 12इजलून, जज़र,
13दबीर, जिदर, 14हुरमा, अराद, 15लिबना,
अदुल्लाम, 16मक़्क़ेदा, बैतेल, 17तफ़्फ़ुअह,
हिफ़र, 18अफ़ीक़, लश्शरून, 19मदून, हसूर,
20सिमरोन-मरोन, अकशाफ़, 21तानक, मजिद्दो,
22क़ादिस, करमिल का युक़नियाम, 23नाफ़त-
दोर में वाक़े दोर, जिलजाल का गोयम 24और
तिरज़ा। बादशाहों की कुल तादाद 31 थी।

कनान के बाक़ी इलाक़ों पर क़ब्ज़ा करने का हुक्म

13 जब यशुअ बूढ़ा था तो रब ने उससे
कहा, “तू बहुत बूढ़ा हो चुका है,
लेकिन अभी काफ़ी कुछ बाक़ी रह गया है
जिस पर क़ब्ज़ा करने की ज़रूरत है। 2-3इसमें
फ़िलिस्तियों के तमाम इलाक़े उनके शाही शहरों
ग़ज़्ज़ा, अशदूद, अस्क़लून, जात और अक़रून
समेत शामिल हैं और इसी तरह जसूर का इलाक़ा
जिसकी जुनूबी सरहद वादीए-सैहूर है जो मिसर
के मशरिक़ में है और जिसकी शिमाली सरहद
अक़रून है। उसे भी मुल्के-कनान का हिस्सा
क़रार दिया जाता है। अव्वियों का इलाक़ा भी
4जो जुनूब में है अब तक इसराईल के क़ब्ज़े में
नहीं आया। यही बात शिमाल पर भी सादिक़
आती है। सैदानियों के शहर मआरा से लेकर
अफ़ीक़ शहर और अमोरियों की सरहद तक सब
कुछ अब तक इसराईल की हुकूमत से बाहर है।
5इसके अलावा जबलियों का मुल्क और मशरिक़
में पूरा लुबनान हरमून पहाड़ के दामन में बाल-
जद से लेकर लबो-हमात तक बाक़ी रह गया
है। 6इसमें उन सैदानियों का तमाम इलाक़ा भी
शामिल है जो लुबनान के पहाड़ों और मिस्रफ़ात-
मायम के दरमियान के पहाड़ी इलाक़े में आबाद
हैं। इसराईलियों के बढ़ते बढ़ते मैं ख़ुद ही इन

लोगों को उनके सामने से निकाल दूँगा। लेकिन
लाज़िम है कि तू क़ुरा डालकर यह पूरा मुल्क
मेरे हुक्म के मुताबिक़ इसराईलियों में तक़सीम
करे। 7उसे नौ बाक़ी क़बीलों और मनस्सी के आधे
क़बीले को विरासत में दे दे।”

यरदन के मशरिक़ में मुल्क की तक़सीम

8रब का ख़ादिम मूसा रूबिन, जद और मनस्सी
के बाक़ी आधे क़बीले को दरियाए-यरदन का
मशरिक़ी इलाक़ा दे चुका था। 9-10यों हसबोन
के अमोरी बादशाह सीहोन के तमाम शहर उनके
क़ब्ज़े में आ गए थे यानी जुनूबी वादीए-अरनोन के
किनारे पर शहर अरोईर और उसी वादी के बीच के
शहर से लेकर शिमाल में अम्मोनियों की सरहद
तक। दीबोन और मीदबा के दरमियान का मैदाने-
मुरतफ़ा भी इसमें शामिल था 11और इसी तरह
जिलियाद, जसूरियों और माकातियों का इलाक़ा,
हरमून का पहाड़ी इलाक़ा और सलका शहर तक
बसन का सारा इलाक़ा भी।

12पहले यह सारा इलाक़ा बसन के बादशाह
ओज के क़ब्ज़े में था जिसकी हुकूमत के मरकज़
अस्तारात और इदरई थे। रफ़ाइयों के देवक़ामत
क़बीले से सिर्फ़ ओज बाक़ी रह गया था। मूसा
की राहनुमाई के तहत इसराईलियों ने उस इलाक़े
पर फ़तह पाकर तमाम बाशिंदों को निकाल दिया
था। 13सिर्फ़ जसूरी और माकाती बाक़ी रह गए
थे, और यह आज तक इसराईलियों के दरमियान
रहते हैं।

14सिर्फ़ लावी के क़बीले को कोई ज़मीन न
मिली, क्योंकि उनका मौरूसी हिस्सा जलनेवाली
वह क़ुरबानियाँ हैं जो रब इसराईल के ख़ुदा के
लिए चढ़ाई जाती हैं। रब ने यही कुछ मूसा को
बताया था।

रूबिन का क़बायली इलाक़ा

15मूसा ने रूबिन के क़बीले को उसके
कुंबों के मुताबिक़ ज़ैल का इलाक़ा दिया।
16वादीए-अरनोन के किनारे पर शहर अरोईर
और उसी वादी के बीच के शहर से लेकर
मीदबा 17और हसबोन तक। वहाँ के मैदाने-
मुरतफ़ा पर वाक़े तमाम शहर भी रूबिन
के सुपुर्द किए गए यानी दीबोन, बामात-
बाल, बैत-बाल-मऊन, 18यहज़, क़दीमात,
मिफ़ात, 19क़िरियतायम, सिबमाह, ज़िर-
तुस-सहर जो बहीराए-मुरदार के मशरिक़ में
वाक़े पहाड़ी इलाक़े में है, 20बैत-फ़ग़ूर, पिसगा
के पहाड़ी सिलसिले पर मौजूद आबादियाँ और
बैत-यसीमोत। 21मैदाने-मुरतफ़ा के तमाम शहर
रूबिन के क़बीले को दिए गए यानी अमोरियों
के बादशाह सीहोन की पूरी बादशाही जिसका
दारुल-हुकूमत हसबोन शहर था। मूसा ने सीहोन
को मार डाला था और उसके साथ पाँच मिदियानी
रईसों को भी जिन्हें सीहोन ने अपने मुल्क में
मुक़र्रर किया था। इन रईसों के नाम इवी, रक़म,
सूर, हूर और रबा थे। 22जिन लोगों को उस
वक़्त मारा गया उनमें से बिलाम बिन बओर
भी था जो ग़ैबदान था। 23रूबिन के क़बीले की
मग़रिबी सरहद दरियाए-यरदन थी। यही शहर
और आबादियाँ रूबिन के क़बीले को उसके कुंबों
के मुताबिक़ दी गईं, और वह उस की मीरास
ठहरीं।

जद के क़बीले का इलाक़ा

24मूसा ने जद के क़बीले को उसके कुंबों के
मुताबिक़ ज़ैल का इलाक़ा दिया। 25याज़ेर का
इलाक़ा, जिलियाद के तमाम शहर, अम्मोनियों
का आधा हिस्सा रब्बा के क़रीब शहर अरोईर
तक 26-27और हसबोन के बादशाह सीहोन
की बादशाही का बाक़ी शिमाली हिस्सा यानी
हसबोन, रामतुल-मिसफ़ाह और बतूनीम के
दरमियान का इलाक़ा और महनायम और दबीर
के दरमियान का इलाक़ा। इसके अलावा जद को
वादीए-यरदन का वह मशरिक़ी हिस्सा भी मिल
गया जो बैत-हारम, बैत-निमरा, सुक्कात और
सफ़ोन पर मुश्तमिल था। यों उस की शिमाली
सरहद किन्नरत यानी गलील की झील का जुनूबी

किनारा था। 28यही शहर और आबादियाँ जद के
क़बीले को उसके कुंबों के मुताबिक़ दी गईं, और
वह उस की मीरास ठहरीं।

मनस्सी के मशरिक़ी हिस्से का इलाक़ा

29जो इलाक़ा मूसा ने मनस्सी के आधे हिस्से
को उसके कुंबों के मुताबिक़ दिया था 30वह
महनायम से लेकर शिमाल में ओज बादशाह की
तमाम बादशाही पर मुश्तमिल था। उसमें मुल्के-
बसन और वह 60 आबादियाँ शामिल थीं जिन
पर याईर ने फ़तह पाई थी। 31जिलियाद का
आधा हिस्सा ओज की हुकूमत के दो मराकिज़
अस्तारात और इदरई समेत मकीर बिन मनस्सी
की औलाद को उसके कुंबों के मुताबिक़ दिया
गया। 32मूसा ने इन मौरूसी ज़मीनों की तक़सीम
उस वक़्त की थी जब वह दरियाए-यरदन के
मशरिक़ में मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू शहर
के मुक़ाबिल था।

33लेकिन लावी को मूसा से कोई मौरूसी
ज़मीन नहीं मिली थी, क्योंकि रब इसराईल का
ख़ुदा उनका मौरूसी हिस्सा है जिस तरह उसने
उनसे वादा किया था।

कनान की तक़सीम

14 इसराईल के बाक़ी साढ़े नौ क़बीलों
को दरियाए-यरदन के मग़रिब में यानी
मुल्के-कनान में ज़मीन मिल गई। इसके लिए
इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और क़बीलों
के आबाई घरानों के सरबराहों ने 2क़ुरा डालकर
मुक़र्रर किया कि हर क़बीले को कौन कौन-सा
इलाक़ा मिल जाए। यों वैसा ही हुआ जिस तरह
रब ने मूसा को हुक्म दिया था। 3-4मूसा अढ़ाई
क़बीलों को उनकी मौरूसी ज़मीन दरियाए-यरदन
के मशरिक़ में दे चुका था, क्योंकि यूसुफ़ की
औलाद के दो क़बीले मनस्सी और इफ़राईम वुजूद
में आए थे। लेकिन लावियों को उनके दरमियान
ज़मीन न मिली। इसराईलियों ने लावियों को
ज़मीन न दी बल्कि उन्हें सिर्फ़ रिहाइश के लिए
शहर और रेवड़ों के लिए चरागाहें दीं। 5यों उन्होंने
ज़मीन को उन्हीं हिदायात के मुताबिक़ तक़सीम
किया जो रब ने मूसा को दी थीं।

कालिब हबरून पाने की गुज़ारिश करता है

6जिलजाल में यहूदाह के क़बीले के मर्द यशुअ
के पास आए। यफ़ुन्ना क़निज़्ज़ी का बेटा कालिब
भी उनके साथ था। उसने यशुअ से कहा,
“आपको याद है कि रब ने मर्दे-ख़ुदा मूसा से
आपके और मेरे बारे में क्या कुछ कहा जब हम
क़ादिस-बरनीअ में थे। 7मैं 40 साल का था
जब रब के ख़ादिम मूसा ने मुझे मुल्के-कनान
का जायज़ा लेने के लिए क़ादिस-बरनीअ से
भेज दिया। जब वापस आया तो मैंने मूसा को
दियानतदारी से सब कुछ बताया जो देखा था।
8अफ़सोस कि जो भाई मेरे साथ गए थे उन्होंने
लोगों को डराया। लेकिन मैं रब अपने ख़ुदा का
वफ़ादार रहा। 9उस दिन मूसा ने क़सम खाकर
मुझसे वादा किया, ‘जिस ज़मीन पर तेरे पाँव
चले हैं वह हमेशा तक तेरी और तेरी औलाद की
विरासत में रहेगी। क्योंकि तू रब मेरे ख़ुदा का
वफ़ादार रहा है।’ 10और अब ऐसा ही हुआ है
जिस तरह रब ने वादा किया था। उसने मुझे अब
तक ज़िंदा रहने दिया है। रब को मूसा से यह बात
किए 45 साल गुज़र गए हैं। उस सारे अरसे में
हम रेगिस्तान में घुमते-फिरते रहे हैं। आज मैं 85
साल का हूँ, 11और अब तक उतना ही ताक़तवर
हूँ जितना कि उस वक़्त था जब मैं जासूस था।
अब तक मेरी बाहर निकलने और जंग करने की
वही क़ुव्वत क़ायम है। 12अब मुझे वह पहाड़ी
इलाक़ा दे दें जिसका वादा रब ने उस दिन मुझसे
किया था। आपने ख़ुद सुना है कि अनाक़ी वहाँ
बड़े क़िलाबंद शहरों में बसते हैं। लेकिन शायद
रब मेरे साथ हो और मैं उन्हें निकाल दूँ जिस तरह
उसने फ़रमाया है।”

13तब यशुअ ने कालिब बिन यफ़ुन्ना को
बरकत देकर उसे विरासत में हबरून दे दिया।
14-15पहले हबरून क़िरियत-अरबा यानी अरबा

का शहर कहलाता था। अरबा अनाक़ियों का
सबसे बड़ा आदमी था। आज तक यह शहर
कालिब की औलाद की मिलकियत रही है। वजह
यह है कि कालिब रब इसराईल के ख़ुदा का
वफ़ादार रहा। फिर जंग ख़त्म हुई, और मुल्क में
अमनो-अमान क़ायम हो गया।

यहूदाह की सरहदें

15 जब इसराईलियों ने क़ुरा डाल-
कर मुल्क को तक़सीम किया तो
यहूदाह के क़बीले को उसके कुंबों के मुताबिक़
कनान का जुनूबी हिस्सा मिल गया। इस इलाक़े
की सरहद मुल्के-अदोम और इंतहाई जुनूब में
सीन का रेगिस्तान था।

2यहूदाह की जुनूबी सरहद बहीराए-मुरदार के
जुनूबी सिरे से शुरू होकर 3जुनूब की तरफ़ चलती
चलती दर्राए-अक़्रब्बीम पहुँच गई। वहाँ से वह
सीन की तरफ़ जारी हुई और क़ादिस-बरनीअ के
जुनूब में से आगे निकलकर हसरोन तक पहुँच
गई। हसरोन से वह अद्दार की तरफ़ चढ़ गई
और फिर क़रक़ा की तरफ़ मुड़ी। 4इसके बाद
वह अज़्मून से होकर मिसर की सरहद पर वाक़े
वादीए-मिसर तक पहुँच गई जिसके साथ साथ
चलती हुई वह समुंदर पर ख़त्म हुई। यह यहूदाह
की जुनूबी सरहद थी।

5मशरिक़ में उस की सरहद बहीराए-मुरदार के
साथ साथ चलकर वहाँ ख़त्म हुई जहाँ दरियाए-
यरदन बहीराए-मुरदार में बहता है।

यहूदाह की शिमाली सरहद यहीं से शुरू होकर
6बैत-हुजलाह की तरफ़ चढ़ गई, फिर बैत-अराबा
के शिमाल में से गुज़रकर रूबिन के बेटे बोहन के
पत्थर तक पहुँच गई। 7वहाँ से सरहद वादीए-
अकूर में उतर गई और फिर दुबारा दबीर की तरफ़
चढ़ गई। दबीर से वह शिमाल यानी जिलजाल
की तरफ़ जो दर्राए-अदुम्मीम के मुक़ाबिल है मुड़
गई (यह दर्रा वादी के जुनूब में है)। यों वह चलती
चलती शिमाली सरहद ऐन-शम्स और ऐन-राजिल
तक पहुँच गई। 8वहाँ से वह वादीए-बिन-हिन्नूम
में से गुज़रती हुई यबूसियों के शहर यरूशलम के
जुनूब में से आगे निकल गई और फिर उस पहाड़
पर चढ़ गई जो वादीए-बिन-हिन्नूम के मग़रिब
और मैदाने-रफ़ाईम के शिमाली किनारे पर है।
9वहाँ सरहद मुड़कर चश्मा बनाम निफ़तूह की
तरफ़ बढ़ गई और फिर पहाड़ी इलाक़े इफ़रोन के
शहरों के पास से गुज़रकर बाला यानी क़िरियत-
यारीम तक पहुँच गई। 10बाला से मुड़कर यहूदाह
की यह सरहद मग़रिब में सईर के पहाड़ी इलाक़े
की तरफ़ बढ़ गई और यारीम पहाड़ यानी कसलून
के शिमाली दामन के साथ साथ चलकर बैत-शम्स
की तरफ़ उतरकर तिमनत पहुँच गई। 11वहाँ से
वह अक़रून के शिमाल में से गुज़र गई और फिर
मुड़कर सिक्करून और बाला पहाड़ की तरफ़
बढ़कर यबनियेल पहुँच गई। वहाँ यह शिमाली
सरहद समुंदर पर ख़त्म हुई।

12समुंदर मुल्के-यहूदाह की मग़रिबी सर-
हद थी। यही वह इलाक़ा था जो यहूदाह के क़बीले
को उसके ख़ानदानों के मुताबिक़ मिल गया।

हबरून और दबीर पर फ़तह

13रब के हुक्म के मुताबिक़ यशुअ ने कालिब
बिन यफ़ुन्ना को उसका हिस्सा यहूदाह में दे
दिया। वहाँ उसे हबरून शहर मिल गया। उस वक़्त
उसका नाम क़िरियत-अरबा था (अरबा अनाक़
का बाप था)। 14हबरून में तीन अनाक़ी बनाम
सीसी, अख़ीमान और तलमी अपने घरानों समेत
रहते थे। कालिब ने तीनों को हबरून से निकाल
दिया। 15फिर वह आगे दबीर के बाशिंदों से लड़ने
चला गया। दबीर का पुराना नाम क़िरियत-सिफ़र
था। 16कालिब ने कहा, "जो क़िरियत-सिफ़र पर
फ़तह पाकर क़ब्ज़ा करेगा उसके साथ मैं अपनी
बेटी अकसा का रिश्ता बाँधूँगा।" 17कालिब के
भाई ग़ुतनियेल बिन क़नज़ ने शहर पर क़ब्ज़ा कर
लिया। चुनाँचे कालिब ने उसके साथ अपनी बेटी
अकसा की शादी कर दी।

18जब अकसा ग़ुतनियेल के हाँ जा रही थी तो
उसने उसे उभारा कि वह कालिब से कोई खेत

पाने की दरख़ास्त करे। अचानक वह गधे से उतर
गई। कालिब ने पूछा, “क्या बात है?” 19अकसा
ने जवाब दिया, “जहेज़ के लिए मुझे एक चीज़ से
नवाज़ें। आपने मुझे दश्ते-नजब में ज़मीन दे दी है।
अब मुझे चश्मे भी दे दीजिए।” चुनाँचे कालिब ने
उसे अपनी मिलकियत में से ऊपर और नीचेवाले
चश्मे भी दे दिए।

यहूदाह के क़बीले के शहर

20जो मौरूसी ज़मीन यहूदाह के क़बीले को
उसके कुंबों के मुताबिक़ मिली 21उसमें ज़ैल
के शहर शामिल थे। जुनूब में मुल्के-अदोम की
सरहद की तरफ़ यह शहर थे : क़बज़ियेल,
इदर, यजूर, 22क़ीना, दीमूना, अदअदा,
23क़ादिस, हसूर, इतनान, 24ज़ीफ़, तलम,
बालोत, 25हसूर-हदत्ता, क़रियोत-हसरोन यानी
हसूर, 26अमाम, समा, मोलादा, 27हसार-जद्दा,
हिशमोन, बैत-फ़लत, 28हसार-सुआल, बैर-
सबा, बिज़योतियाह, 29बाला, इय्यीम, अज़म,
30इलतोलद, कसील, हुरमा, 31सिक़लाज,
मदमन्ना, सनसन्ना, 32लबाओत, सिलहीम, ऐन
और रिम्मोन। इन शहरों की तादाद 29 थी। हर
शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ
गिनी जाती थीं।

33मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में यह शहर
थे : इस्ताल, सुरआ, अस्ना, 34ज़नूह, ऐन-
जन्नीम, तफ़्फ़ुअह, ऐनाम, 35यरमूत, अदुल्लाम,
सोका, अज़ीक़ा, 36शारैम, अदितैम और जदीरा
यानी जदीरतैम। इन शहरों की तादाद 14 थी। हर
शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ
गिनी जाती थीं।

37इनके अलावा यह शहर भी थे : ज़नान,
हदाशा, मिजदल-जद, 38दिलान, मिसफ़ाह,
युक़तियेल, 39लकीस, बुसक़त, इजलून,
40कब्बून, लहमास, कितलीस, 41जदीरोत, बैत-
दजून, नामा और मक़्क़ेदा। इन शहरों की तादाद
16 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ
उसके साथ गिनी जाती थीं।

42इस इलाक़े में यह शहर भी थे : लिबना,
इतर, असन, 43यिफ़ताह, अस्ना, नसीब,
44क़ईला, अकज़ीब और मरेसा। इन शहरों की
तादाद 9 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की
आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

45इनके अलावा यह शहर भी थे : अक़-
रून उसके गिर्दो-नवाह की आबादियों और
देहातों समेत, 46फिर अक़रून से लेकर मग़रिब
की तरफ़ अशदूद तक तमाम क़सबे और
आबादियाँ। 47अशदूद ख़ुद भी उसके गिर्दो-नवाह
की आबादियों और देहातों समेत इसमें शामिल
था और इसी तरह ग़ज़्ज़ा उसके गिर्दो-नवाह
की आबादियों और देहातों समेत यानी तमाम
आबादियाँ मिसर की सरहद पर वाक़े वादीए-
मिसर और समुंदर के साहिल तक।

48पहाड़ी इलाक़े के यह शहर यहूदाह के
क़बीले के थे : समीर, यत्तीर, सोका, 49दन्ना,
क़िरियत-सन्ना यानी दबीर, 50अनाब, इस्त-
मोह, अनीम, 51जुशन, हौलून और जिलोह। इन
शहरों की तादाद 11 थी, और उनके गिर्दो-नवाह
की आबादियाँ भी उनके साथ गिनी जाती थीं।

52इनके अलावा यह शहर भी थे : अराब, दूमा,
इशआन, 53यनूम, बैत-तफ़्फ़ुअह, अफ़ीक़ा,
54हुमता, क़िरियत-अरबा यानी हबरून और
सीऊर। इन शहरों की तादाद 9 थी। हर शहर के
गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसमें गिनी जाती थीं।

55इनके अलावा यह शहर भी थे : मऊन,
करमिल, ज़ीफ़, यूत्ता, 56यज्र‍एल, युक़दियाम,
ज़नूह, 57क़ैन, जिबिया और तिमनत। इन शहरों
की तादाद 10 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की
आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

58इनके अलावा यह शहर भी थे : हलहूल,
बैत-सूर, जदूर, 59मारात, बैत-अनोत और
इल्तक़ोन। इन शहरों की तादाद 6 थी। हर शहर
के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी
जाती थीं।

60फिर क़िरियत-बाल यानी क़िरियत-यारीम
और रब्बा भी यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में शामिल

थे। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके
साथ गिनी जाती थीं।
61रेगिस्तान में यह शहर यहूदाह के क़बीले के
थे : बैत-अराबा, मिद्दीन, सकाका, 62निबसान,
नमक का शहर और ऐन-जदी। इन शहरों की
तादाद 6 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की
आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।
63लेकिन यहूदाह का क़बीला यबूसियों को
यरूशलम से निकालने में नाकाम रहा। इसलिए
उनकी औलाद आज तक यहूदाह के क़बीले के
दरमियान रहती है।

इफ़राईम और मनस्सी की जुनूबी सरहद

16 क़ुरा डालने से यूसुफ़ की औलाद का
इलाक़ा मुक़र्रर किया गया। उस की
सरहद यरीहू के क़रीब दरियाए-यरदन से शुरू हुई,
शहर के मशरिक़ में चश्मों के पास से गुज़री और
रेगिस्तान में से चलती चलती बैतेल के पहाड़ी
इलाक़े तक पहुँची। 2लूज़ यानी बैतेल से आगे
निकलकर वह अरकियों के इलाक़े में अतारात
पहुँची। 3वहाँ से वह मग़रिब की तरफ़ उतरती
उतरती यफ़लीतियों के इलाक़े में दाख़िल हुई जहाँ
वह नशेबी बैत-हौरून में से गुज़रकर जज़र के पीछे
समुंदर पर ख़त्म हुई। 4यह उस इलाक़े की जुनूबी
सरहद थी जो यूसुफ़ की औलाद इफ़राईम और
मनस्सी के क़बीलों को विरासत में दिया गया।

इफ़राईम का इलाक़ा

5इफ़राईम के क़बीले को उसके कुंबों के
मुताबिक़ यह इलाक़ा मिल गया : उस की
जुनूबी सरहद अतारात-अद्दार और बालाई बैत-
हौरून से होकर 6-8समुंदर पर ख़त्म हुई। उस
की शिमाली सरहद मग़रिब में समुंदर से शुरू हुई
और क़ाना नदी के साथ चलती चलती तफ़्फ़ुअह
तक पहुँची। वहाँ से वह शिमाल की तरफ़ मुड़ी
और मिक्मताह तक पहुँचकर दुबारा मशरिक़ की
तरफ़ चलने लगी। फिर वह तानत-सैला से होकर
यानूह पहुँची। मशरिक़ी सरहद शिमाल में यानूह
से शुरू हुई और अतारात से होकर दरियाए-यरदन
के मग़रिबी किनारे तक उतरी और फिर किनारे
के साथ जुनूब की तरफ़ चलती चलती नारा और
इसके बाद यरीहू पहुँची। वहाँ वह दरियाए-यरदन
पर ख़त्म हुई। यही इफ़राईम और उसके कुंबों की
सरहद्दें थीं।
9इसके अलावा कुछ शहर और उनके गिर्दो-
नवाह की आबादियाँ इफ़राईम के लिए मुक़र्रर की
गईं जो मनस्सी के इलाक़े में थीं। 10इफ़राईम के
मर्दों ने जज़र में आबाद कनानियों को न निकाला।
इसलिए उनकी औलाद आज तक वहाँ रहती है,
अलबत्ता उसे बेगार में काम करना पड़ता है।

मनस्सी का इलाक़ा

17 यूसुफ़ के पहलौठे मनस्सी की औलाद
को दो इलाक़े मिल गए। दरियाए-
यरदन के मशरिक़ में मकीर के घराने को
जिलियाद और बसन दिए गए। मकीर मनस्सी
का पहलौठा और जिलियाद का बाप था, और उस
की औलाद माहिर फ़ौजी थी। 2अब क़ुरा डालने से
दरियाए-यरदन के मग़रिब में वह इलाक़ा मुक़र्रर
किया गया जहाँ मनस्सी के बाक़ी बेटों की औलाद
को आबाद होना था। इनके छः कुंबे थे जिनके नाम
अबियज़र, ख़लक़, असरियेल, सिकम, हिफ़र
और समीदा थे।
3सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलियाद बिन
मकीर बिन मनस्सी के बेटे नहीं थे बल्कि सिर्फ़
बेटियाँ। उनके नाम महलाह, नुआह, हुजलाह,
मिलकाह और तिरज़ा थे। 4यह ख़वातीन
इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और क़ौम के
बुज़ुर्गों के पास आईं और कहने लगीं, "रब
ने मूसा को हुक्म दिया था कि वह हमें भी
क़बायली इलाक़े का कोई हिस्सा दे।" यशुअ
ने रब का हुक्म मानकर न सिर्फ़ मनस्सी की
नरीना औलाद को ज़मीन दी बल्कि उन्हें भी।
5नतीजे में मनस्सी के क़बीले को दरियाए-यरदन
के मग़रिब में ज़मीन के दस हिस्से मिल गए और
मशरिक़ में जिलियाद और बसन। 6मग़रिब में न

सिर्फ़ मनस्सी की नरीना औलाद के ख़ानदानों को ज़मीन मिली बल्कि बेटियों के ख़ानदानों को भी। इसके बरअक्स मशरिक़ में जिलियाद की ज़मीन सिर्फ़ नरीना औलाद में तक़सीम की गई।

7मनस्सी के क़बीले के इलाक़े की सरहद आशर से शुरू हुई और सिकम के मशरिक़ में वाक़े मिक्मताह से होकर जुनूब की तरफ़ चलती हुई ऐन-तफ़्फ़ुअह की आबादी तक पहुँची।
8तफ़्फ़ुअह के गिर्दो-नवाह की ज़मीन इफ़राईम की मिलकियत थी, लेकिन मनस्सी की सरहद पर के यह शहर मनस्सी की अपनी मिलकियत
थे। 9वहाँ से सरहद क़ाना नदी के जुनूबी किनारे तक उतरी। फिर नदी के साथ चलती चलती वह समुंदर पर ख़त्म हुई। नदी के जुनूबी किनारे पर कुछ शहर इफ़राईम की मिलकियत थे अगरचे वह
मनस्सी के इलाक़े में थे। 10लेकिन मजमूई तौर पर मनस्सी का क़बायली इलाक़ा क़ाना नदी के शिमाल में था और इफ़राईम का इलाक़ा उसके जुनूब में। दोनों क़बीलों का इलाक़ा मग़रिब में समुंदर पर ख़त्म हुआ। मनस्सी के इलाक़े के शिमाल में आशर का क़बायली इलाक़ा था और मशरिक़ में इशकार का।

11आशर और इशकार के इलाक़ों के दर्जे-ज़ैल शहर मनस्सी की मिलकियत थे : बैत-शान, इबलियाम, दोर यानी नाफ़त-दोर, ऐन-दोर, तानक और मजिद्दो उनके गिर्दो-नवाह की
आबादियों समेत। 12लेकिन मनस्सी का क़बीला वहाँ के कनानियों को निकाल न सका बल्कि वह
वहाँ बसते रहे। 13बाद में भी जब इसराईल की ताक़त बढ़ गई तो कनानियों को निकाला न गया बल्कि उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

इफ़राईम और मनस्सी मज़ीद ज़मीन का तक़ाज़ा करते हैं

14यूसुफ़ के क़बीले इफ़राईम और मनस्सी दरियाए-यरदन के मग़रिब में ज़मीन पाने के बाद यशुअ के पास आए और कहने लगे, “आपने हमारे लिए क़ुरा डालकर ज़मीन का सिर्फ़ एक हिस्सा क्यों मुक़र्रर किया? हम तो बहुत ज़्यादा लोग हैं, क्योंकि रब ने हमें बरकत देकर बड़ी क़ौम बनाया है।”

15यशुअ ने जवाब दिया, “अगर आप इतने ज़्यादा हैं और आपके लिए इफ़राईम का पहाड़ी इलाक़ा काफ़ी नहीं है तो फिर फ़रिज़्ज़ियों और रफ़ाइयों के पहाड़ी जंगलों में जाएँ और उन्हें काटकर काश्त के क़ाबिल बना लें।”

16यूसुफ़ के क़बीलों ने कहा, “पहाड़ी इलाक़ा हमारे लिए काफ़ी नहीं है, और मैदानी इलाक़े में आबाद कनानियों के पास लोहे के रथ हैं, उनके पास भी जो वादीए-यज्रएल में हैं और उनके पास भी जो बैत-शान और उसके गिर्दो-नवाह की आबादियों में रहते हैं।”

17लेकिन यशुअ ने जवाब में कहा, “आप इतनी बड़ी और ताक़तवर क़ौम हैं कि आपका इलाक़ा एक ही हिस्से पर महदूद नहीं रहेगा
18बल्कि जंगल का पहाड़ी इलाक़ा भी आपकी मिलकियत में आएगा। उसके जंगलों को काटकर काश्त के क़ाबिल बना लें तो यह तमाम इलाक़ा आप ही का होगा। आप बाक़ी इलाक़े पर भी क़ब्ज़ा करके कनानियों को निकाल देंगे अगरचे वह ताक़तवर हैं और उनके पास लोहे के रथ हैं।”

बाक़ी सात क़बीलों को ज़मीन मिलती है

18 कनान पर ग़ालिब आने के बाद इसराईल की पूरी जमात सैला शहर में जमा हुई। वहाँ उन्होंने मुलाक़ात का ख़ैमा खड़ा किया।

2अब तक सात क़बीलों को ज़मीन नहीं मिली
थी। 3यशुअ ने इसराईलियों को समझाकर कहा, “आप कितनी देर तक सुस्त रहेंगे? आप कब तक उस मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं करेंगे जो रब आपके बापदादा के ख़ुदा ने आपको दे दिया है?
4अब हर क़बीले के तीन तीन आदमियों को चुन लें। उन्हें मैं मुल्क का दौरा करने के लिए भेज दूँगा ताकि वह तमाम क़बायली इलाक़ों की फ़हरिस्त तैयार करें। इसके बाद वह मेरे पास वापस आकर

5मुल्क को सात इलाक़ों में तक़सीम करें। लेकिन
ध्यान रखें कि जुनूब में यहूदाह का इलाक़ा और
शिमाल में इफ़राईम और मनस्सी का इलाक़ा है।
उनकी सरहद्दें मत छेड़ना! 6वह आदमी लिख लें
कि सात नए क़बायली इलाक़ों की सरहद्दें कहाँ
कहाँ तक हैं और फिर इनकी फ़हरिस्तें पेश करें।
फिर मैं रब आपके ख़ुदा के हुज़ूर मुक़द्दस क़ुरा
डालकर हर एक की ज़मीन मुक़र्रर करूँगा। 7याद
रहे कि लावियों को कोई इलाक़ा नहीं मिलना है।
उनका हिस्सा यह है कि वह रब के इमाम हैं।
और जद, रूबिन और मनस्सी के आधे क़बीले
को भी मज़ीद कुछ नहीं मिलना है, क्योंकि उन्हें
रब के ख़ादिम मूसा से दरियाए-यरदन के मशरिक़
में उनका हिस्सा मिल चुका है।”

8तब वह आदमी रवाना होने के लिए तैयार हुए
जिन्हें मुल्क का दौरा करने के लिए चुना गया
था। यशुअ ने उन्हें हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से
गुज़रकर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बनाएँ। जब
फ़हरिस्त मुकम्मल हो जाए तो उसे मेरे पास ले
आएँ। फिर मैं सैला में रब के हुज़ूर आपके लिए
क़ुरा डाल दूँगा।” 9आदमी चले गए और पूरे मुल्क
में से गुज़रकर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बना ली।
उन्होंने मुल्क को सात हिस्सों में तक़सीम करके
तमाम तफ़सीलात किताब में दर्ज कीं और यह
किताब सैला की ख़ैमागाह में यशुअ को दे दी।
10फिर यशुअ ने रब के हुज़ूर क़ुरा डालकर यह
इलाक़े बाक़ी सात क़बीलों और उनके कुंबों में
तक़सीम कर दिए।

बिनयमीन का इलाक़ा

11जब क़ुरा डाला गया तो बिनयमीन के क़बीले
और उसके कुंबों को पहला हिस्सा मिल गया।
उस की ज़मीन यहूदाह और यूसुफ़ के क़बीलों
के दरमियान थी। 12उस की शिमाली सरहद
दरियाए-यरदन से शुरू हुई और यरीहू के शिमाल
में पहाड़ी ढलान पर चढ़कर पहाड़ी इलाक़े में से
मग़रिब की तरफ़ गुज़री। बैत-आवन के बयाबान
को पहुँचने पर 13वह लूज़ यानी बैतेल की तरफ़
बढ़कर शहर के जुनूब में पहाड़ी ढलान पर चलती
चलती आगे निकल गई। वहाँ से वह अतारात-
अद्दार और उस पहाड़ी तक पहुँची जो नशेबी बैत-
हौरून के जुनूब में है। 14फिर वह जुनूब की तरफ़
मुड़कर मग़रिबी सरहद के तौर पर क़िरियत-बाल
यानी क़िरियत-यारीम के पास आई जो यहूदाह
के क़बीले की मिलकियत थी। 15बिनयमीन की
जुनूबी सरहद क़िरियत-यारीम के मग़रिबी किनारे
से शुरू होकर निफ़तूह चश्मा तक पहुँची। 16फिर
वह उस पहाड़ के दामन पर उतर आई जो वादीए-
बिन-हिन्नूम के मग़रिब में और मैदाने-रफ़ाईम के
शिमाल में वाक़े है। इसके बाद सरहद यबूसियों
के शहर के जुनूब में से गुज़री और यों वादीए-
हिन्नूम को पार करके ऐन-राजिल के पास आई।
17फिर वह शिमाल की तरफ़ मुड़कर ऐन-शम्स के
पास से गुज़री और दर्राए-अदुम्मीम के मुक़ाबिल
शहर जलीलोत तक पहुँचकर रूबिन के बेटे बोहन
के पत्थर के पास उतर आई। 18वहाँ से वह उस
ढलान के शिमाली रुख़ पर से गुज़री जो वादीए-
यरदन के मग़रिबी किनारे पर है। फिर वह वादी
में उतरकर 19बैत-हुजलाह की शिमाली पहाड़ी
ढलान से गुज़री और बहीराए-मुरदार के शिमाली
किनारे पर ख़त्म हुई, वहाँ जहाँ दरियाए-यरदन
उसमें बहता है। यह थी बिनयमीन की जुनूबी
सरहद। 20उस की मशरिक़ी सरहद दरियाए-
यरदन थी। यही वह इलाक़ा था जो बिनयमीन के
क़बीले को उसके कुंबों के मुताबिक़ दिया गया।

21ज़ैल के शहर इस इलाक़े में शामिल
थे : यरीहू, बैत-हुजलाह, इमक़-क़सीस, 22बैत-
अराबा, समरैम, बैतेल, 23अव्वीम, फ़ारा, उफ़रा,
24कफ़रुल-अम्मोनी, उफ़नी और जिबा। यह
कुल 12 शहर थे। हर शहर के गिर्दो-नवाह की
आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। 25इनके
अलावा यह शहर भी थे : जिबऊन, रामा, बैरोत,
26मिसफ़ाह, कफ़ीरा, मौज़ा, 27रक़म, इर्फ़एल,
तराला, 28ज़िला, अलिफ़, यबूसियों का शहर
यरूशलम, जिबिया और क़िरियत-यारीम। इन
शहरों की तादाद 14 थी। हर शहर के गिर्दो-

नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। यह तमाम शहर बिनयमीन और उसके कुंबों की मिलकियत थे।

शमाऊन का इलाक़ा

19 जब क़ुरा डाला गया तो शमाऊन के क़बीले और उसके कुंबों को दूसरा हिस्सा मिल गया। उस की ज़मीन यहूदाह के क़बीले के इलाक़े के दरमियान
थी। 2उसे यह शहर मिल गए : बैर-सबा
(सबा), मोलादा, 3हसार-सुआल, बाला,
अज़म, 4इलतोलद, बतूल, हुरमा, 5सिक़-
लाज, बैत-मर्कबोत, हसार-सूसा, 6बैत-लबाओत
और सारूहन। इन शहरों की तादाद 13 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ
गिनी जाती थीं। 7इनके अलावा यह चार शहर भी
शमाऊन के थे : ऐन, रिम्मोन, इतर और असन। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके
साथ गिनी जाती थीं। 8इन शहरों के गिर्दो-नवाह
की तमाम आबादियाँ बालात-बैर यानी नजब के रामा तक उनके साथ गिनी जाती थीं। यह थी
शमाऊन और उसके कुंबों की मिलकियत। 9यह
जगहें इसलिए यहूदाह के क़बीले के इलाक़े से ली गईं कि यहूदाह का इलाक़ा उसके लिए बहुत ज़्यादा था। यही वजह है कि शमाऊन का इलाक़ा यहूदाह के बीच में है।

ज़बूलून का इलाक़ा

10-12जब क़ुरा डाला गया तो ज़बूलून के क़बीले और उसके कुंबों को तीसरा हिस्सा मिल गया। उस की जुनूबी सरहद युक़नियाम की नदी से शुरू हुई और फिर मशरिक़ की तरफ़ दबासत, मरअला और सारीद से होकर किसलोत-तबूर के इलाक़े तक पहुँची। इसके बाद वह मुड़कर मशरिक़ी सरहद के तौर पर दाबरत के पास
आई और चढ़ती चढ़ती यफ़ीअ पहुँची। 13वहाँ
से वह मज़ीद मशरिक़ की तरफ़ बढ़ती हुई जात-हिफ़र, एत-क़ाज़ीन और रिम्मोन से होकर नेआ
के पास आई। 14ज़बूलून की शिमाली और
मग़रिबी सरहद हन्नातोन में से गुज़रती गुज़रती
वादीए-इफ़ताहेल पर ख़त्म हुई। 15बारह शहर
उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत ज़बूलून की मिलकियत में आए जिनमें क़त्तात, नहलाल, सिमरोन, इदाला और बैत-लहम शामिल थे।
16ज़बूलून के क़बीले को यही कुछ उसके कुंबों
के मुताबिक़ मिल गया।

इशकार का इलाक़ा

17जब क़ुरा डाला गया तो इशकार के क़बीले
और उसके कुंबों को चौथा हिस्सा मिल गया।
18उसका इलाक़ा यज़्रएल से लेकर शिमाल की
तरफ़ फैल गया। यह शहर उसमें शामिल थे :
कसूलोत, शूनीम, 19हफ़ारैम, शियून, अनाख़रत,
20रब्बीत, क़िसियोन, इबज़, 21रैमत, ऐन-
जन्नीम, ऐन-हद्दा और बैत-फ़स्सीस। 22शिमाल
में यह सरहद तबूर पहाड़ से शुरू हुई और शख़सूमा और बैत-शम्स से होकर दरियाए-यरदन तक उतर आई। 16 शहर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों
समेत इशकार की मिलकियत में आए। 23उसे
यह पूरा इलाक़ा उसके कुंबों के मुताबिक़ मिल गया।

आशर का इलाक़ा

24जब क़ुरा डाला गया तो आशर के क़बीले
और उसके कुंबों को पाँचवाँ हिस्सा मिल
गया। 25उसके इलाक़े में यह शहर शामिल
थे : ख़िलक़त, हली, बतन, अकशाफ़,
26अलम्मलिक, अमआद और मिसाल। उस की
सरहद समुंदर के साथ साथ चलती हुई करमिल के पहाड़ी सिलसिले के दामन में से गुज़री और उतरती उतरती सैहूर-लिबनात तक पहुँची।
27वहाँ वह मशरिक़ में बैत-दजून की तरफ़ मुड़कर
ज़बूलून के इलाक़े तक पहुँची और उस की मग़रिबी सरहद के साथ चलती चलती शिमाल में वादीए-इफ़ताहेल तक पहुँची। आगे बढ़ती हुई वह बैत-इमक़ और नइयेल से होकर शिमाल की

तरफ़ मुड़ी जहाँ काबूल था। 28फिर वह इबरून,
रहोब, हम्मून और क़ाना से होकर बड़े शहर सैदा
तक पहुँची। 29इसके बाद आशर की सरहद रामा
की तरफ़ मुड़कर फ़सीलदार शहर सूर के पास
आई। वहाँ वह हूसा की तरफ़ मुड़ी और चलती
चलती अकज़ीब के क़रीब समुंदर पर ख़त्म हुई।
3022 शहर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों
समेत आशर की मिलकियत में आए। इनमें उम्मा,
अफ़ीक़ और रहोब शामिल थे। 31आशर को
उसके कुंबों के मुताबिक़ यही कुछ मिला।

नफ़ताली का इलाक़ा

32जब क़ुरा डाला गया तो नफ़ताली के
क़बीले और उसके कुंबों को छटा हिस्सा मिल
गया। 33-34जुनूब में उस की सरहद दरियाए-
यरदन पर लक़्क़ूम से शुरू हुई और मग़रिब
की तरफ़ चलती चलती यबनियेल, अदामी-
नक़ब, ऐलोन-ज़ाननीम और हलफ़ से होकर
अज़नूत-तबूर तक पहुँची। वहाँ से वह मग़रिबी
सरहद की हैसियत से हुक़्क़ोक़ के पास आई।
नफ़ताली की जुनूबी सरहद ज़बूलून की शिमाली
सरहद और मग़रिब में आशर की मशरिक़ी
सरहद थी। दरियाए-यरदन और यहूदाह[a] उस
की मशरिक़ी सरहद थी। 35ज़ैल के फ़सीलदार
शहर नफ़ताली की मिलकियत में आए : सद्दीम,
सैर, हम्मत, रक़्क़त, किन्नरत, 36अदामा, रामा,
हसूर, 37क़ादिस, इदरई, ऐन-हसूर, 38इरून,
मिजदलेल, हुरीम, बैत-अनात और बैत-शम्स।
ऐसे 19 शहर थे। हर शहर के गिर्दो-नवाह
की आबादियाँ भी उसके साथ गिनी जाती
थीं। 39नफ़ताली को यही कुछ उसके कुंबों के
मुताबिक़ मिला।

दान का इलाक़ा

40जब क़ुरा डाला गया तो दान के क़बी-
ले और उसके कुंबों को सातवाँ हिस्सा
मिला। 41उसके इलाक़े में यह शहर शा-
मिल थे : सुरआ, इस्ताल, ईर-शम्स,
42शालब्बीन, ऐयालोन, इतला, 43ऐलोन,
तिमनत, अक़रून, 44इल्तक़िह, जिब्बतून,
बालात, 45यहूद, बनी-बरक़, जात-रिम्मोन,
46मे-यरक़ून और रक़्क़ून उस इलाक़े समेत जो
याफ़ा के मुक़ाबिल है। 47अफ़सोस, दान का
क़बीला अपने इस इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने में
कामयाब न हुआ, इसलिए उसके मर्दों ने लशम
शहर पर हमला करके उस पर फ़तह पाई और
उसके बाशिंदों को तलवार से मार डाला। फिर वह
ख़ुद वहाँ आबाद हुए। उस वक़्त लशम शहर का
नाम दान में तबदील हुआ। (दान उनके क़बीले
का बाप था।) 48लेकिन यशुअ के ज़माने में दान
के क़बीले को उसके कुंबों के मुताबिक़ मज़कूरा
तमाम शहर और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ
मिल गईं।

यशुअ को भी ज़मीन मिलती है

49पूरे मुल्क को तक़सीम करने के बाद
इसराईलियों ने यशुअ बिन नून को भी अपने
दरमियान कुछ मौरूसी ज़मीन दे दी। 50रब के
हुक्म पर उन्होंने उसे इफ़राईम का शहर तिमनत-
सिरह दे दिया। यशुअ ने ख़ुद इसकी दरख़ास्त
की थी। वहाँ जाकर उसने शहर को अज़ सरे-नौ
तामीर किया और उसमें आबाद हुआ।

51ग़रज़ यह वह तमाम ज़मीनें हैं जो इलियज़र
इमाम, यशुअ बिन नून और क़बीलों के आबाई
घरानों के सरबराहों ने सैला में मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर क़ुरा डालकर तक़सीम की थीं। यों
तक़सीम करने का यह काम मुकम्मल हुआ।

[a]यहाँ यहूदाह का मतलब मुल्के-बसन हो सकता है जो मनस्सी के इलाक़े में था लेकिन जिस पर यहूदाह के क़बीले के मर्द याईर ने फ़तह पाई थी।

पनाह के छः शहर

20 रब ने यशुअ से कहा, 2“इसराई-
लियों को हुक्म दे कि उन हिदायात
के मुताबिक़ पनाह के शहर चुन लो जिन्हें मैं तुम्हें
मूसा की मारिफ़त दे चुका हूँ। 3इन शहरों में वह
लोग फ़रार हो सकते हैं जिनसे कोई इत्तफ़ाक़न
यानी ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ हो। यह उन्हें
मरे हुए शख़्स के उन रिश्तेदारों से पनाह देंगे
जो बदला लेना चाहेंगे। 4लाज़िम है कि ऐसा
शख़्स पनाह के शहर के पास पहुँचने पर शहर के
दरवाज़े के पास बैठे बुज़ुर्गों को अपना मामला पेश
करे। उस की बात सुनकर बुज़ुर्ग उसे अपने शहर
में दाख़िल होने की इजाज़त दें और उसे अपने
दरमियान रहने के लिए जगह दे दें। 5अब अगर
बदला लेनेवाला उसके पीछे पड़कर वहाँ पहुँचे तो
बुज़ुर्ग मुलज़िम को उसके हाथ में न दें, क्योंकि
यह मौत ग़ैरइरादी तौर पर और नफ़रत रखे बग़ैर
हुई है। 6वह उस वक़्त तक शहर में रहे जब तक
मक़ामी अदालत मामले का फ़ैसला न कर दे।
अगर अदालत उसे बेगुनाह क़रार दे तो वह उस
वक़्त के इमामे-आज़म की मौत तक उस शहर
में रहे। इसके बाद उसे अपने उस शहर और घर
को वापस जाने की इजाज़त है जिससे वह फ़रार
होकर आया है।”

7इसराईलियों ने पनाह के यह शहर चुन लिए :
नफ़ताली के पहाड़ी इलाक़े में गलील का क़ादिस,
इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में सिकम और यहूदाह
के पहाड़ी इलाक़े में क़िरियत-अरबा यानी हबरून।
8दरियाए-यरदन के मशरिक़ में उन्होंने बसर को
चुन लिया जो यरीहू से काफ़ी दूर मैदाने-मुरतफ़ा
में है और रूबिन के क़बीले की मिलकियत है।
मुल्के-जिलियाद में रामात जो जद के क़बीले का
है और बसन में जौलान जो मनस्सी के क़बीले का
है चुना गया।

9यह शहर तमाम इसराईलियों और इस-
राईल में रहनेवाले अजनबियों के लिए मुक़र्रर
किए गए। जिससे भी ग़ैरइरादी तौर पर कोई
हलाक हुआ उसे इनमें पनाह लेने की इजाज़त
थी। इनमें वह उस वक़्त तक बदला लेनेवालों
से महफ़ूज़ रहता था जब तक मक़ामी अदालत
फ़ैसला नहीं कर देती थी।

लावियों के शहर और चरागाहें

21 फिर लावी के क़बीले के आबाई
घरानों के सरबराह इलियज़र इमाम,
यशुअ बिन नून और इसराईल के बाक़ी क़बीलों
के आबाई घरानों के सरबराहों के पास आए 2जो
उस वक़्त सैला में जमा थे। लावियों ने कहा,
“रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया था कि हमें
बसने के लिए शहर और रेवड़ों को चराने के लिए
चरागाहें दी जाएँ।” 3चुनाँचे इसराईलियों ने रब
की यह बात मानकर अपने इलाक़ों में से शहर
और चरागाहें अलग करके लावियों को दे दीं।

4क़ुरा डाला गया तो लावी के घराने क़िहात
को उसके कुंबों के मुताबिक़ पहला हिस्सा मिल
गया। पहले हारून के कुंबे को यहूदाह, शमाऊन
और बिनयमीन के क़बीलों के 13 शहर दिए
गए। 5बाक़ी क़िहातियों को दान, इफ़राईम और
मग़रिबी मनस्सी के क़बीलों के 10 शहर मिल
गए।

6जैरसोन के घराने को इशकार, आशर,
नफ़ताली और मनस्सी के क़बीलों के 13 शहर
दिए गए। यह मनस्सी का वह इलाक़ा था जो
दरियाए-यरदन के मशरिक़ में मुल्के-बसन में था।
7मिरारी के घराने को उसके कुंबों के मुताबिक़
रूबिन, जद और ज़बूलून के क़बीलों के 12 शहर
मिल गए।

8यों इसराईलियों ने क़ुरा डालकर लावियों को
मज़कूरा शहर और उनके गिर्दो-नवाह की चरागाहें
दे दीं। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त
हुक्म दिया था।

क़िहात के घराने के शहर

9-10क़ुरा डालते वक़्त लावी के घराने क़िहात
में से हारून के कुंबे को पहला हिस्सा मिल गया।

उसे यहूदाह और शमाऊन के क़बीलों के यह शहर
दिए गए : 11पहला शहर अनाक़ियों के बाप का
शहर क़िरियत-अरबा था जो यहूदाह के पहाड़ी
इलाक़े में है और जिसका मौजूदा नाम हबरून
है। उस की चरागाहें भी दी गईं, 12लेकिन हबरून
के इर्दगिर्द की आबादियाँ और खेत कालिब बिन
यफ़ुन्ना की मिलकियत रहे। 13हारून के कुंबे का
यह शहर पनाह का शहर भी था जिसमें हर वह
शख़्स पनाह ले सकता था जिससे कोई ग़ैरइरादी
तौर पर हलाक हुआ था। इसके अलावा हारून के
कुंबे को लिबना, 14यत्तीर, इस्तिमुअ, 15हौलून,
दबीर, 16ऐन, यूत्ता और बैत-शम्स के शहर भी
मिल गए। उसे यहूदाह और शमाऊन के क़बीलों
के कुल 9 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए।
17-18इनके अलावा बिनयमीन के क़बीले के चार
शहर उस की मिलकियत में आए यानी जिबऊन,
जिबा, अनतोत और अलमोन। 19ग़रज़ हारून के
कुंबे को 13 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल
गए। 20लावी के क़बीले के घराने क़िहात के
बाक़ी कुंबों को क़ुरा डालते वक़्त इफ़राईम के
क़बीले के शहर मिल गए। 21इनमें इफ़राईम के
पहाड़ी इलाक़े का शहर सिकम शामिल था जिसमें
हर वह शख़्स पनाह ले सकता था जिससे कोई
ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर जज़र,
22क़िबज़ैम और बैत-हौरून। इन चार शहरों की
चरागाहें भी मिल गईं। 23-24दान के क़बीले ने
भी उन्हें चार शहर उनकी चरागाहों समेत दिए
यानी इल्तक़िह, जिब्बतून, ऐयालोन और जात-
रिम्मोन। 25मनस्सी के मग़रिबी हिस्से से उन्हें दो
शहर तानक और जात-रिम्मोन उनकी चरागाहों
समेत मिल गए। 26ग़रज़ क़िहात के बाक़ी कुंबों
को कुल 10 शहर उनकी चरागाहों समेत मिले।

जैरसोन के घराने के शहर

27लावी के क़बीले के घराने जैरसोन को
मनस्सी के मशरिक़ी हिस्से के दो शहर उनकी
चरागाहों समेत दिए गए : मुल्के-बसन में जौलान
जिसमें हर वह शख़्स पनाह ले सकता था जिससे
कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, और
बइस्तराह। 28-29इशकार के क़बीले ने उसे चार
शहर उनकी चरागाहों समेत दिए : क़िसियोन,
दाबरत, यरमूत और ऐन-जन्नीम। 30-31इसी
तरह उसे आशर के क़बीले के भी चार शहर उनकी
चरागाहों समेत दिए गए : मिसाल, अबदोन,
ख़िलक़त और रहोब। 32नफ़ताली के क़बीले ने
तीन शहर उनकी चरागाहों समेत दिए : गलील
का क़ादिस जिसमें हर वह शख़्स पनाह ले सकता
था जिससे कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था,
फिर हम्मात-दोर और क़रतान। 33ग़रज़ जैरसोन
के घराने को 13 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल
गए।

मिरारी के घराने के शहर

34-35अब रह गया लावी के क़बीले का घराना
मिरारी। उसे ज़बूलून के क़बीले के चार शहर
उनकी चरागाहों समेत मिल गए : युक़नियाम,
क़रता, दिम्ना और नहलाल। 36-37इसी तरह उसे
रूबिन के क़बीले के भी चार शहर उनकी चरागाहों
समेत मिल गए : बसर, यहज़, क़दीमात और
मिफ़ात। 38-39जद के क़बीले ने उसे चार शहर
उनकी चरागाहों समेत दिए : मुल्के-जिलियाद
का रामात जिसमें हर वह शख़्स पनाह ले सकता
था जिससे कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ
था, फिर महनायम, हसबोन और याज़ेर। 40ग़रज़
मिरारी के घराने को कुल 12 शहर उनकी
चरागाहों समेत मिल गए।

41इसराईल के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में जो
लावियों के शहर उनकी चरागाहों समेत थे उनकी
कुल तादाद 48 थी। 42हर शहर के इर्दगिर्द
चरागाहें थीं।

अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया

43यों रब ने इसराईलियों को वह पूरा मुल्क
दे दिया जिसका वादा उसने उनके बापदादा से
क़सम खाकर किया था। वह उस पर क़ब्ज़ा
करके उसमें रहने लगे। 44और रब ने चारों

तरफ़ अमनो-अमान मुहैया किया जिस तरह उसने
उनके बापदादा से क़सम खाकर वादा किया था।
उसी की मदद से इसराईली तमाम दुश्मनों पर
ग़ालिब आए थे। 45जो अच्छे वादे रब ने इसराईल
से किए थे उनमें से एक भी नामुकम्मल न रहा
बल्कि सबके सब पूरे हो गए।

मशरिक़ी क़बीलों को घर वापस जाने की इजाज़त

22 फिर यशुअ ने रूबिन, जद और
मनस्सी के आधे क़बीले के मर्दों को
अपने पास बुलाकर 2कहा, "जो भी हुक्म रब
के ख़ादिम मूसा ने आपको दिया था उसे आपने
पूरा किया। और आपने मेरी हर बात मानी है।
3आपने काफ़ी अरसे से आज तक अपने भाइयों
को तर्क नहीं किया बल्कि बिलकुल वही कुछ
किया है जो रब की मरज़ी थी। 4अब रब आपके
ख़ुदा ने आपके भाइयों को मौऊदा मुल्क दे दिया
है, और वह सलामती के साथ उसमें रह रहे हैं।
इसलिए अब वक़्त आ गया है कि आप अपने घर
वापस चले जाएँ, उस मुल्क में जो रब के ख़ादिम
मूसा ने आपको दरियाए-यरदन के पार दे दिया
है। 5लेकिन ख़बरदार, एहतियात से उन हिदायात
पर चलते रहें जो रब के ख़ादिम मूसा ने आपको
दे दीं। रब अपने ख़ुदा से प्यार करें, उस की तमाम
राहों पर चलें, उसके अहकाम मानें, उसके साथ
लिपटे रहें, और पूरे दिलो-जान से उस की ख़िदमत
करें।" 6यह कहकर यशुअ ने उन्हें बरकत देकर
रुख़सत कर दिया, और वह अपने घर चले गए।
7मनस्सी के आधे क़बीले को मूसा से मुल्के-
बसन में ज़मीन मिल गई थी। दूसरे हिस्से को
यशुअ से ज़मीन मिल गई थी, यानी दरियाए-
यरदन के मग़रिब में जहाँ बाक़ी क़बीले आबाद
हुए थे। मनस्सी के मर्दों को रुख़सत करते वक़्त
यशुअ ने उन्हें बरकत देकर 8कहा, "आप बड़ी
दौलत के साथ अपने घर लौट रहे हैं। आपको
बड़े रेवड़, सोना, चाँदी, लोहा और बहुत-से कपड़े
मिल गए हैं। जब आप अपने घर पहुँचेंगे तो माले-
ग़नीमत उनके साथ बाँटें जो घर में रह गए हैं।"
9फिर रूबिन, जद और मनस्सी के आधे
क़बीले के मर्द बाक़ी इसराईलियों को सैला में
छोड़कर मुल्के-जिलियाद की तरफ़ रवाना हुए जो
दरियाए-यरदन के मशरिक़ में है। वहाँ उनके अपने
इलाक़े थे जिनमें उनके क़बीले रब के उस हुक्म
के मुताबिक़ आबाद हुए थे जो उसने मूसा की
मारिफ़त दिया था।

मशरिक़ी क़बीले क़ुरबानगाह बना लेते हैं

10यह मर्द चलते चलते दरियाए-यरदन के
मग़रिब में एक जगह पहुँचे जिसका नाम गलीलोत
था। वहाँ यानी मुल्के-कनान में ही उन्होंने एक बड़ी
और शानदार क़ुरबानगाह बनाई। 11इसराईलियों
को ख़बर दी गई, "रूबिन, जद और मनस्सी के
आधे क़बीले ने कनान की सरहद पर गलीलोत में
क़ुरबानगाह बना ली है। यह क़ुरबानगाह दरियाए-
यरदन के मग़रिब में यानी हमारे ही इलाक़े में है!"
12तब इसराईल की पूरी जमात मशरिक़ी
क़बीलों से लड़ने के लिए सैला में जमा हुई।
13लेकिन पहले उन्होंने इलियज़र इमाम के बेटे
फ़ीनहास को मुल्के-जिलियाद को भेजा जहाँ
रूबिन, जद और मनस्सी का आधा क़बीला
आबाद थे। 14उसके साथ 10 आदमी यानी हर
मग़रिबी क़बीले का एक नुमाइंदा था। हर एक
अपने आबाई घराने और कुंबे का सरबराह था।
15जिलियाद में पहुँचकर उन्होंने मशरिक़ी क़बीलों
से बात की। 16"रब की पूरी जमात आपसे पूछती
है कि आप इसराईल के ख़ुदा से बेवफ़ा क्यों
हो गए हैं? आपने रब से अपना मुँह फेरकर
यह क़ुरबानगाह क्यों बनाई है? इससे आपने
रब से सरकशी की है। 17क्या यह काफ़ी नहीं
था कि हमसे फ़ग़ूर के बुत की पूजा करने का
गुनाह सरज़द हुआ? हम तो आज तक पूरे तौर
पर उस गुनाह से पाक-साफ़ नहीं हुए गो उस
वक़्त रब की जमात को वबा की सूरत में सज़ा
मिल गई थी। 18तो फिर आप क्या कर रहे हैं?

आप दुबारा रब से अपना मुँह फेरकर दूर हो
रहे हैं। देखें, अगर आप आज रब से सरकशी
करें तो कल वह इसराईल की पूरी जमात के
साथ नाराज़ होगा। 19अगर आप समझते हैं कि
आपका मुल्क नापाक है और आप इसलिए उसमें
रब की ख़िदमत नहीं कर सकते तो हमारे पास
रब के मुल्क में आएँ जहाँ रब की सुकूनतगाह है,
और हमारी ज़मीनों में शरीक हो जाएँ। लेकिन रब
से या हमसे सरकशी मत करना। रब हमारे ख़ुदा
की क़ुरबानगाह के अलावा अपने लिए कोई और
क़ुरबानगाह न बनाएँ! 20क्या इसराईल की पूरी
जमात पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल न हुआ जब
अकन बिन ज़ारह ने माले-ग़नीमत में से कुछ चोरी
किया जो रब के लिए मख़सूस था? उसके गुनाह
की सज़ा सिर्फ़ उस तक ही महदूद न रही बल्कि
और भी हलाक हुए।”

21रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले
के मर्दों ने इसराईली कुंबों के सरबराहों को
जवाब दिया, 22“रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा, हाँ
रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा हक़ीक़त जानता है, और
इसराईल भी यह बात जान ले! न हम सरकश
हुए हैं, न रब से बेवफ़ा। अगर हम झूट बोलें तो
आज ही हमें मार डालें! 23हमने यह क़ुरबानगाह
इसलिए नहीं बनाई कि रब से दूर हो जाएँ। हम
उस पर कोई भी क़ुरबानी चढ़ाना नहीं चाहते,
न भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ, न ग़ल्ला की
नज़रें और न ही सलामती की क़ुरबानियाँ। अगर
हम झूट बोलें तो रब ख़ुद हमारी अदालत करे।
24हक़ीक़त में हमने यह क़ुरबानगाह इसलिए
तामीर की कि हम डरते हैं कि मुस्तक़बिल में
किसी दिन आपकी औलाद हमारी औलाद से
कहे, ‘आपका रब इसराईल के ख़ुदा के साथ क्या
वास्ता है? 25आख़िर रब ने हमारे और आपके
दरमियान दरियाए-यरदन की सरहद मुक़र्रर की
है। चुनाँचे आपको रब की इबादत करने का कोई
हक़ नहीं!’ ऐसा करने से आपकी औलाद हमारी
औलाद को रब की ख़िदमत करने से रोकेगी।
26यही वजह है कि हमने यह क़ुरबानगाह बनाई,
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ या ज़बह की कोई और
क़ुरबानी चढ़ाने के लिए नहीं 27बल्कि आपको
और आनेवाली नसलों को इस बात की याद
दिलाने के लिए कि हमें भी रब के ख़ैमे में भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ, ज़बह की क़ुरबानियाँ और
सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाने का हक़ है। यह
क़ुरबानगाह हमारे और आपके दरमियान गवाह
रहेगी। अब आपकी औलाद कभी भी हमारी
औलाद से नहीं कह सकेगी, ‘आपको रब की
जमात के हुक़ूक़ हासिल नहीं।’ 28और अगर
वह किसी वक़्त यह बात करे तो हमारी औलाद
कह सकेगी, ‘यह क़ुरबानगाह देखें जो रब की
क़ुरबानगाह की हूबहू नक़ल है। हमारे बापदादा
ने इसे बनाया था, लेकिन इसलिए नहीं कि हम
इस पर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और ज़बह की
क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ बल्कि आपको और हमें गवाही
देने के लिए कि हमें मिलकर रब की इबादत करने
का हक़ है।’ 29हालात कभी भी यहाँ तक न
पहुँचें कि हम रब से सरकशी करके अपना मुँह
उससे फेर लें। नहीं, हमने यह क़ुरबानगाह भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें और ज़बह
की क़ुरबानियाँ चढ़ाने के लिए नहीं बनाई। हम
सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा की सुकूनतगाह के सामने
की क़ुरबानगाह पर ही अपनी क़ुरबानियाँ पेश
करना चाहते हैं।”

30जब फ़ीनहास और इसराईली जमात के
कुंबों के सरबराहों ने जिलियाद में रूबिन, जद और
मनस्सी के आधे क़बीले की यह बातें सुनीं तो वह
मुतमइन हुए। 31फ़ीनहास ने उनसे कहा, “अब
हम जानते हैं कि रब आइंदा भी हमारे दरमियान
रहेगा, क्योंकि आप उससे बेवफ़ा नहीं हुए हैं।
आपने इसराईलियों को रब की सज़ा से बचा
लिया है।”

32इसके बाद फ़ीनहास और बाक़ी इस-
राईली सरदार रूबिन, जद और मनस्सी के आधे
क़बीले को मुल्के-जिलियाद में छोड़कर मुल्के-
कनान में लौट आए। वहाँ उन्होंने सब कुछ बताया
जो हुआ था। 33बाक़ी इसराईलियों को यह बात

पसंद आई, और वह अल्लाह की तमजीद करके
रूबिन और जद से जंग करने और उनका इलाक़ा
तबाह करने के इरादे से बाज़ आए। 34रूबिन और
जद के क़बीलों ने नई क़ुरबानगाह का नाम गवाह
रखा, क्योंकि उन्होंने कहा, “यह क़ुरबानगाह
हमारे और दूसरे क़बीलों के दरमियान गवाह है
कि रब हमारा भी ख़ुदा है।”

यशुअ की आख़िरी नसीहतें

23 अब इसराईली काफ़ी देर से सलामती
से अपने मुल्क में रहते थे, क्योंकि रब
ने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हमलों से महफ़ूज़
रखा। जब यशुअ बहुत बूढ़ा हो गया था 2तो उसने
इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों, सरदारों, क़ाज़ियों
और निगहबानों को अपने पास बुलाकर कहा,
“अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। 3आपने अपनी आँखों
से देखा कि रब ने इस इलाक़े की तमाम क़ौमों के
साथ क्या कुछ किया है। रब आपके ख़ुदा ही ने
आपके लिए जंग की। 4याद रखें कि मैंने मशरिक़
में दरियाए-यरदन से लेकर मग़रिब में समुंदर तक
सारा मुल्क आपके क़बीलों में तक़सीम कर दिया
है। बहुत-सी क़ौमों पर मैंने फ़तह पाई, लेकिन
चंद एक अब तक बाक़ी रह गई हैं। 5लेकिन रब
आपका ख़ुदा आपके आगे आगे चलते हुए उन्हें
भी निकालकर भगा देगा। आप उनकी ज़मीनों
पर क़ब्ज़ा कर लेंगे जिस तरह रब आपके ख़ुदा ने
वादा किया है।

6अब पूरी हिम्मत से हर बात पर अमल करें
जो मूसा की शरीअत की किताब में लिखी हुई है।
न दाईं और न बाईं तरफ़ हटें। 7उन दीगर क़ौमों
से रिश्ता मत बाँधना जो अब तक मुल्क में बाक़ी
रह गई हैं। उनके बुतों के नाम अपनी ज़बान पर
न लाना, न उनके नाम लेकर क़सम खाना। न
उनकी ख़िदमत करना, न उन्हें सिजदा करना।
8रब अपने ख़ुदा के साथ यों लिपटे रहना जिस
तरह आज तक लिपटे रहे हैं।

9रब ने आपके आगे आगे चलकर बड़ी बड़ी
और ताक़तवर क़ौमें निकाल दी हैं। आज तक
आपके सामने कोई नहीं खड़ा रह सका। 10आपमें
से एक शख़्स हज़ार दुश्मनों को भगा देता है,
क्योंकि रब आपका ख़ुदा ख़ुद आपके लिए लड़ता
है जिस तरह उसने वादा किया था। 11चुनाँचे
संजीदगी से ध्यान दें कि आप रब अपने ख़ुदा
से प्यार करें, क्योंकि आपकी ज़िंदगी इसी पर
मुनहसिर है। 12अगर आप उससे दूर होकर उन
दीगर क़ौमों से लिपट जाएँ जो अब तक मुल्क
में बाक़ी हैं और उनके साथ रिश्ता बाँधें 13तो रब
आपका ख़ुदा यक़ीनन इन क़ौमों को आपके आगे
से नहीं निकालेगा। इसके बजाए यह आपको
फँसाने के लिए फंदा और जाल बनेंगे। यह
यक़ीनन आपकी पीठों के लिए कोड़े और आँखों
के लिए काँटे बन जाएंगे। आख़िर में आप उस
अच्छे मुल्क में से मिट जाएंगे जो रब आपके ख़ुदा
ने आपको दे दिया है।

14आज मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ किसी न किसी
दिन दुनिया के हर शख़्स को जाना होता है। लेकिन
आपने पूरे दिलो-जान से जान लिया है कि जो
भी वादा रब आपके ख़ुदा ने आपके साथ किया
वह पूरा हुआ है। एक भी अधूरा नहीं रह गया।
15लेकिन जिस तरह रब ने हर वादा पूरा किया
है बिलकुल उसी तरह वह तमाम आफ़तें आप
पर नाज़िल करेगा जिनके बारे में उसने आपको
ख़बरदार किया है अगर आप उसके ताबे न रहें।
फिर वह आपको उस अच्छे मुल्क में से मिटा देगा
जो उसने आपको दे दिया है। 16अगर आप उस
अहद को तोड़ें जो उसने आपके साथ बाँधा है और
दीगर माबूदों की पूजा करके उन्हें सिजदा करें तो
फिर रब का पूरा ग़ज़ब आप पर नाज़िल होगा और
आप जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से मिट जाएंगे
जो उसने आपको दे दिया है।”

अल्लाह और इसराईल के दरमियान अहद की तजदीद

24 फिर यशुअ ने इसराईल के तमाम
क़बीलों को सिकम शहर में जमा
किया। उसने इसराईल के बुज़ुर्गों, सरदारों,

क़ाज़ियों और निगहबानों को बुलाया, और वह
मिलकर अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हुए।

2फिर यशुअ इसराईली क़ौम से मुख़ातिब
हुआ। "रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है,
'क़दीम ज़माने में तुम्हारे बापदादा दरियाए-फ़ुरात
के पार बसते और दीगर माबूदों की पूजा करते थे।
इब्राहीम और नहूर का बाप तारह भी वहाँ आबाद
था। 3लेकिन मैं तुम्हारे बाप इब्राहीम को वहाँ से
लेकर यहाँ लाया और उसे पूरे मुल्के-कनान में
से गुज़रने दिया। मैंने उसे बहुत औलाद दी। मैंने
उसे इसहाक़ दिया 4और इसहाक़ को याक़ूब और
एसौ। एसौ को मैंने पहाड़ी इलाक़ा सईर अता
किया, लेकिन याक़ूब अपने बेटों के साथ मिसर
चला गया।

5बाद में मैंने मूसा और हारून को मिसर भेज
दिया और मुल्क पर बड़ी मुसीबतें नाज़िल करके
तुम्हें वहाँ से निकाल लाया। 6चलते चलते तुम्हारे
बापदादा बहरे-क़ुलज़ुम पहुँच गए। लेकिन मिसरी
अपने रथों और घुड़सवारों से उनका ताक़्क़ुब
करने लगे। 7तुम्हारे बापदादा ने मदद के लिए
रब को पुकारा, और मैंने उनके और मिसरियों
के दरमियान अंधेरा पैदा किया। मैं समुंदर उन
पर चढ़ा लाया, और वह उसमें ग़रक़ हो गए।
तुम्हारे बापदादा ने अपनी ही आँखों से देखा कि
मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया।

तुम बड़े अरसे तक रेगिस्तान में घूमते फिरे।
8आख़िरकार मैंने तुम्हें उन अमोरियों के मुल्क
में पहुँचाया जो दरियाए-यरदन के मशरिक़ में
आबाद थे। गो उन्होंने तुमसे जंग की, लेकिन मैंने
उन्हें तुम्हारे हाथ में कर दिया। तुम्हारे आगे आगे
चलकर मैंने उन्हें नेस्तो-नाबूद कर दिया, इसलिए
तुम उनके मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सके। 9मोआब
के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर ने भी इसराईल
के साथ जंग छेड़ी। इस मक़सद के तहत उसने
बिलाम बिन बओर को बुलाया ताकि वह तुम पर
लानत भेजे। 10लेकिन मैं बिलाम की बात मानने
के लिए तैयार नहीं था बल्कि वह तुम्हें बरकत
देने पर मजबूर हुआ। यों मैंने तुम्हें उसके हाथ से
महफ़ूज़ रखा।

11फिर तुम दरियाए-यरदन को पार करके
यरीहू के पास पहुँच गए। इस शहर के बाशिंदे और
अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, कनानी, हित्ती, जिरजासी,
हिव्वी और यबूसी तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ते रहे,
लेकिन मैंने उन्हें तुम्हारे क़ब्ज़े में कर दिया। 12मैंने
तुम्हारे आगे ज़ंबूर भेज दिए जिन्होंने अमोरियों के
दो बादशाहों को मुल्क से निकाल दिया।

यह सब कुछ तुम्हारी अपनी तलवार और
कमान से नहीं हुआ बल्कि मेरे ही हाथ से। 13मैंने
तुम्हें बीज बोने के लिए ज़मीन दी जिसे तैयार
करने के लिए तुम्हें मेहनत न करनी पड़ी। मैंने
तुम्हें शहर दिए जो तुम्हें तामीर करने न पड़े। उनमें
रहकर तुम अंगूर और ज़ैतून के ऐसे बाग़ों का फल
खाते हो जो तुमने नहीं लगाए थे'।"

14यशुअ ने बात जारी रखते हुए कहा, "चुनाँचे
रब का ख़ौफ़ मानें और पूरी वफ़ादारी के साथ
उस की ख़िदमत करें। उन बुतों को निकाल फेंकें
जिनकी पूजा आपके बापदादा दरियाए-फ़ुरात के
पार और मिसर में करते रहे। अब रब ही की
ख़िदमत करें! 15लेकिन अगर रब की ख़िदमत
करना आपको बुरा लगे तो आज ही फ़ैसला करें
कि किसकी ख़िदमत करेंगे, उन देवताओं की
जिनकी पूजा आपके बापदादा ने दरियाए-फ़ुरात
के पार की या अमोरियों के देवताओं की जिनके
मुल्क में आप रह रहे हैं। लेकिन जहाँ तक मेरा
और मेरे ख़ानदान का ताल्लुक़ है हम रब ही की
ख़िदमत करेंगे।"

16अवाम ने जवाब दिया, "ऐसा कभी न हो कि
हम रब को तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करें।
17रब हमारा ख़ुदा ही हमारे बापदादा को मिसर
की ग़ुलामी से निकाल लाया और हमारी आँखों
के सामने ऐसे अज़ीम निशान पेश किए। जब हमें
बहुत क़ौमों में से गुज़रना पड़ा तो उसी ने हर वक़्त
हमारी हिफ़ाज़त की। 18और रब ही ने हमारे आगे
आगे चलकर इस मुल्क में आबाद अमोरियों और

बाक़ी क़ौमों को निकाल दिया। हम भी उसी की
ख़िदमत करेंगे, क्योंकि वही हमारा ख़ुदा है!”
19यह सुनकर यशुअ ने कहा, “आप रब की
ख़िदमत कर ही नहीं सकते, क्योंकि वह क़ुद्दूस
और ग़यूर ख़ुदा है। वह आपकी सरकशी और
गुनाहों को मुआफ़ नहीं करेगा। 20बेशक वह आप
पर मेहरबानी करता रहा है, लेकिन अगर आप
रब को तर्क करके अजनबी माबूदों की पूजा करें
तो वह आपके ख़िलाफ़ होकर आप पर बलाएँ
लाएगा और आपको नेस्तो-नाबूद कर देगा।”
21लेकिन इसराईलियों ने इसरार किया, “जी
नहीं, हम रब की ख़िदमत करेंगे!” 22फिर यशुअ
ने कहा, “आप ख़ुद इसके गवाह हैं कि आपने
रब की ख़िदमत करने का फ़ैसला कर लिया है।”
उन्होंने जवाब दिया, “जी हाँ, हम इसके गवाह
हैं!” 23यशुअ ने कहा, “तो फिर अपने दरमियान
मौजूद बुतों को तबाह कर दें और अपने दिलों को
रब इसराईल के ख़ुदा के ताबे रखें।” 24अवाम ने
यशुअ से कहा, “हम रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत
करेंगे और उसी की सुनेंगे।”
25उस दिन यशुअ ने इसराईलियों के लिए रब
से अहद बाँधा। वहाँ सिकम में उसने उन्हें अहकाम
और क़वायद देकर 26अल्लाह की शरीअत की
किताब में दर्ज किए। फिर उसने एक बड़ा पत्थर
लेकर उसे उस बलूत के साये में खड़ा किया जो रब
के मक़दिस के पास था। 27उसने तमाम लोगों से
कहा, “इस पत्थर को देखें! यह गवाह है, क्योंकि
इसने सब कुछ सुन लिया है जो रब ने हमें बता
दिया है। अगर आप कभी अल्लाह का इनकार
करें तो यह आपके ख़िलाफ़ गवाही देगा।”
28फिर यशुअ ने इसराईलियों को फ़ारिग़ कर
दिया, और हर एक अपने अपने क़बायली इलाक़े
में चला गया।

यशुअ और इलियज़र का इंतक़ाल

29कुछ देर के बाद रब का ख़ादिम यशुअ बिन
नून फ़ौत हुआ। उस की उम्र 110 साल थी।
30उसे उस की मौरूसी ज़मीन में दफ़नाया गया,
यानी तिमनत-सिरह में जो इफ़राईम के पहाड़ी
इलाक़े में जास पहाड़ के शिमाल में है।
31जब तक यशुअ और वह बुज़ुर्ग ज़िंदा रहे
जिन्होंने अपनी आँखों से सब कुछ देखा था जो
रब ने इसराईल के लिए किया था उस वक़्त तक
इसराईल रब का वफ़ादार रहा।
32मिसर को छोड़ते वक़्त इसराईली यूसुफ़
की हड्डियाँ अपने साथ लाए थे। अब उन्होंने उन्हें
सिकम शहर की उस ज़मीन में दफ़न कर दिया
जो याक़ूब ने सिकम के बाप हमोर की औलाद से
चाँदी के सौ सिक्कों के बदले ख़रीद ली थी। यह
ज़मीन यूसुफ़ की औलाद की विरासत में आ गई
थी।
33इलियज़र बिन हारून भी फ़ौत हुआ। उसे
जिबिया में दफ़नाया गया। इफ़राईम के पहाड़ी
इलाक़े का यह शहर उसके बेटे फ़ीनहास को दिया
गया था।

क़ुज़ात

जुनूबी कनान पर मुकम्मल क़ाबू नहीं पाया जाता

1 यशुअ की मौत के बाद इसराईलियों ने
रब से पूछा, “कौन-सा क़बीला पहले
निकलकर कनानियों पर हमला करे?” 2रब ने
जवाब दिया, “यहूदाह का क़बीला शुरू करे। मैंने
मुल्क को उनके क़ब्ज़े में कर दिया है।”

3तब यहूदाह के क़बीले ने अपने भाइयों
शमाऊन के क़बीले से कहा, “आएँ, हमारे साथ
निकलें ताकि हम मिलकर कनानियों को उस
इलाक़े से निकाल दें जो क़ुरा ने यहूदाह के क़बीले
के लिए मुक़र्रर किया है। इसके बदले हम बाद में
आपकी मदद करेंगे जब आप अपने इलाक़े पर
क़ब्ज़ा करने के लिए निकलेंगे।” चुनाँचे शमाऊन
के मर्द यहूदाह के साथ निकले। 4जब यहूदाह ने
दुश्मन पर हमला किया तो रब ने कनानियों और
फ़रिज़्ज़ियों को उसके क़ाबू में कर दिया। बज़क़
के पास उन्होंने उन्हें शिकस्त दी, गो उनके कुल
10,000 आदमी थे।

5वहाँ उनका मुक़ाबला एक बादशाह से हुआ
जिसका नाम अदूनी-बज़क़ था। जब उसने देखा
कि कनानी और फ़रिज़्ज़ी हार गए हैं 6तो
वह फ़रार हुआ। लेकिन इसराईलियों ने उसका
ताक़्क़ुब करके उसे पकड़ लिया और उसके हाथों
और पैरों के अंगूठों को काट लिया। 7तब अदूनी-
बज़क़ ने कहा, “मैंने ख़ुद सत्तर बादशाहों के हाथों
और पैरों के अंगूठों को कटवाया, और उन्हें मेरी
मेज़ के नीचे गिरे हुए खाने के रद्दी टुकड़े जमा
करने पड़े। अब अल्लाह मुझे इसका बदला दे रहा
है।” उसे यरूशलम लाया गया जहाँ वह मर गया।

8यहूदाह के मर्दों ने यरूशलम पर भी हमला
किया। उस पर फ़तह पाकर उन्होंने उसके बाशिंदों
को तलवार से मार डाला और शहर को जला
दिया। 9इसके बाद वह आगे बढ़कर उन कनानियों
से लड़ने लगे जो पहाड़ी इलाक़े, दश्ते-नजब और
मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में रहते थे।
10उन्होंने हबरून शहर पर हमला किया जो पहले
क़िरियत-अरबा कहलाता था। वहाँ उन्होंने सीसी,
अख़ीमान और तलमी की फ़ौजों को शिकस्त दी।
11फिर वह आगे दबीर के बाशिंदों से लड़ने चले
गए। दबीर का पुराना नाम क़िरियत-सिफ़र था।

12कालिब ने कहा, “जो क़िरियत-सिफ़र पर
फ़तह पाकर क़ब्ज़ा करेगा उसके साथ मैं अपनी
बेटी अकसा का रिश्ता बाँधूँगा।” 13कालिब के
छोटे भाई ग़ुतनियेल बिन क़नज़ ने शहर पर क़ब्ज़ा
कर लिया। चुनाँचे कालिब ने उसके साथ अपनी
बेटी अकसा की शादी कर दी। 14जब अकसा
ग़ुतनियेल के हाँ जा रही थी तो उसने उसे उभारा
कि वह कालिब से कोई खेत पाने की दरख़ास्त
करे। अचानक वह गधे से उतर गई। कालिब ने
पूछा, “क्या बात है?” 15अकसा ने जवाब दिया,
“जहेज़ के लिए मुझे एक चीज़ से नवाज़ें। आपने
मुझे दश्ते-नजब में ज़मीन दे दी है। अब मुझे चश्मे
भी दे दीजिए।” चुनाँचे कालिब ने उसे अपनी

मिलकियत में से ऊपर और नीचेवाले चश्मे भी दे दिए।

16जब यहूदाह का क़बीला खजूरों के शहर से रवाना हुआ था तो क़ीनी भी उनके साथ यहूदाह के रेगिस्तान में आए थे। (क़ीनी मूसा के सुसर यितरो की औलाद थे)। वहाँ वह दश्ते-नजब में अराद शहर के क़रीब दूसरे लोगों के दरमियान ही आबाद हुए।

17यहूदाह का क़बीला अपने भाइयों शमाऊन के क़बीले के साथ आगे बढ़ा। उन्होंने कनानी शहर सफ़त पर हमला किया और उसे अल्लाह के लिए मख़सूस करके मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया। इसलिए उसका नाम हुरमा यानी अल्लाह
के लिए तबाही पड़ा। 18फिर यहूदाह के फ़ौजियों ने ग़ज़्ज़ा, अस्क़लून और अक़रून के शहरों पर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत फ़तह
पाई। 19रब उनके साथ था, इसलिए वह पहाड़ी इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर सके। लेकिन वह समुंदर के साथ के मैदानी इलाक़े में आबाद लोगों को निकाल न सके। वजह यह थी कि इन लोगों के
पास लोहे के रथ थे। 20मूसा के वादे के मुताबिक़ कालिब को हबरून शहर मिल गया। उसने उसमें से अनाक़ के तीन बेटों को उनके घरानों समेत निकाल दिया।

21लेकिन बिनयमीन का क़बीला यरूशलम के रहनेवाले यबूसियों को निकाल न सका। आज तक यबूसी वहाँ बिनयमीनियों के साथ आबाद हैं।

शिमाली कनान पर मुकम्मल क़ाबू नहीं पाया जाता

22-23इफ़राईम और मनस्सी के क़बीले बैतेल पर क़ब्ज़ा करने के लिए निकले (बैतेल का पुराना नाम लूज़ था)। जब उन्होंने अपने जासूसों को शहर की तफ़तीश करने के लिए भेजा तो रब
उनके साथ था। 24उनके जासूसों की मुलाक़ात एक आदमी से हुई जो शहर से निकल रहा था। उन्होंने उससे कहा, "हमें शहर में दाख़िल होने का रास्ता दिखाएँ तो हम आप पर रहम करेंगे।"
25उसने उन्हें अंदर जाने का रास्ता दिखाया, और उन्होंने उसमें घुसकर तमाम बाशिंदों को तलवार से मार डाला सिवाए मज़कूरा आदमी और उसके
ख़ानदान के। 26बाद में वह हित्तियों के मुल्क में गया जहाँ उसने एक शहर तामीर करके उसका नाम लूज़ रखा। यह नाम आज तक रायज है।

27लेकिन मनस्सी ने हर शहर के बाशिंदे न निकाले। बैत-शान, तानक, दोर, इबलियाम, मजिद्दो और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ रह गईं। कनानी पूरे अज़्म के साथ
उनमें टिके रहे। 28बाद में जब इसराईल की ताक़त बढ़ गई तो इन कनानियों को बेगार में काम करना पड़ा। लेकिन इसराईलियों ने उस वक़्त भी उन्हें मुल्क से न निकाला।

29इसी तरह इफ़राईम के क़बीले ने भी जज़र के बाशिंदों को न निकाला, और यह कनानी उनके दरमियान आबाद रहे।

30ज़बूलून के क़बीले ने भी क़ितरोन और नहलाल के बाशिंदों को न निकाला बल्कि यह उनके दरमियान आबाद रहे, अलबत्ता उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

31आशर के क़बीले ने न अक्को के बाशिंदों को निकाला, न सैदा, अहलाब, अकज़ीब, हिलबा,
अफ़ीक़ या रहोब के बाशिंदों को। 32इस वजह से आशर के लोग कनानी बाशिंदों के दरमियान रहने लगे।

33नफ़ताली के क़बीले ने बैत-शम्स और बैत-अनात के बाशिंदों को न निकाला बल्कि वह भी कनानियों के दरमियान रहने लगे। लेकिन बैत-शम्स और बैत-अनात के बाशिंदों को बेगार में काम करना पड़ा।

34दान के क़बीले ने मैदानी इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने की कोशिश तो की, लेकिन अमोरियों ने उन्हें आने न दिया बल्कि पहाड़ी इलाक़े तक महदूद
रखा। 35अमोरी पूरे अज़्म के साथ हरिस पहाड़, ऐयालोन और सालबीम में टिके रहे। लेकिन जब

इफ़राईम और मनस्सी की ताक़त बढ़ गई तो अमोरियों को बेगार में काम करना पड़ा।

36अमोरियों की सरहद दर्राए-अक़्रब्बीम से लेकर सिला से परे तक थी।

रब का फ़रिश्ता इसराईल को मलामत करता है

2 रब का फ़रिश्ता जिलजाल से चढ़कर बोकीम पहुँचा। वहाँ उसने इसराईलियों से कहा, "मैं तुम्हें मिसर से निकालकर उस मुल्क में लाया जिसका वादा मैंने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था। उस वक़्त मैंने कहा कि मैं तुम्हारे साथ अपना अहद कभी नहीं तोड़ूँगा। 2और मैंने हुक्म दिया, 'इस मुल्क की क़ौमों के साथ अहद मत बाँधना बल्कि उनकी क़ुरबानगाहों को गिरा देना।' लेकिन तुमने मेरी न सुनी। यह तुमने क्या किया? 3इसलिए अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे से नहीं निकालूँगा। वह तुम्हारे पहलुओं में काँटे बनेंगे, और उनके देवता तुम्हारे लिए फंदा बने रहेंगे।"

4रब के फ़रिश्ते की यह बात सुनकर इसराईली ख़ूब रोए। 5यही वजह है कि उस जगह का नाम बोकीम यानी रोनेवाले पड़ गया। फिर उन्होंने वहाँ रब के हुज़ूर क़ुरबानियाँ पेश कीं।

इसराईल बेवफ़ा हो जाता है

6यशुअ के क़ौम को रुख़सत करने के बाद हर एक क़बीला अपने इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ था। 7जब तक यशुअ और वह बुज़ुर्ग ज़िंदा रहे जिन्होंने वह अज़ीम काम देखे हुए थे जो रब ने इसराईलियों के लिए किए थे उस वक़्त तक इसराईली रब की वफ़ादारी से ख़िदमत करते रहे। 8फिर रब का ख़ादिम यशुअ बिन नून इंतक़ाल कर गया। उस की उम्र 110 साल थी। 9उसे तिमनत-हरिस में उस की अपनी मौरूसी ज़मीन में दफ़नाया गया। (यह शहर इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में जास पहाड़ के शिमाल में है।)

10जब हमअसर इसराईली सब मरकर अपने बापदादा से जा मिले तो नई नसल उभर आई जो न तो रब को जानती, न उन कामों से वाक़िफ़ थी जो रब ने इसराईल के लिए किए थे। 11उस वक़्त वह ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। उन्होंने बाल देवता के बुतों की पूजा करके 12रब अपने बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया जो उन्हें मिसर से निकाल लाया था। वह गिर्दो-नवाह की क़ौमों के दीगर माबूदों के पीछे लग गए और उनकी पूजा भी करने लगे। इससे रब का ग़ज़ब उन पर भड़का, 13क्योंकि उन्होंने उस की ख़िदमत छोड़कर बाल देवता और अस्तारात देवी की पूजा की। 14रब यह देखकर इसराईलियों से नाराज़ हुआ और उन्हें डाकुओं के हवाले कर दिया जिन्होंने उनका माल लूटा। उसने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हाथ बेच डाला, और वह उनका मुक़ाबला करने के क़ाबिल न रहे। 15जब भी इसराईली लड़ने के लिए निकले तो रब का हाथ उनके ख़िलाफ़ था। नतीजतन वह हारते गए जिस तरह उसने क़सम खाकर फ़रमाया था।

जब वह इस तरह बड़ी मुसीबत में थे 16तो रब उनके दरमियान क़ाज़ी बरपा करता जो उन्हें लूटनेवालों के हाथ से बचाते। 17लेकिन वह उनकी न सुनते बल्कि ज़िना करके दीगर माबूदों के पीछे लगे और उनकी पूजा करते रहते। गो उनके बापदादा रब के अहकाम के ताबे रहे थे, लेकिन वह ख़ुद बड़ी जल्दी से उस राह से हट जाते जिस पर उनके बापदादा चले थे। 18लेकिन जब भी वह दुश्मन के ज़ुल्म और दबाव तले कराहने लगते तो रब को उन पर तरस आ जाता, और वह किसी क़ाज़ी को बरपा करता और उस की मदद करके उन्हें बचाता।

जितने अरसे तक क़ाज़ी ज़िंदा रहता उतनी देर तक इसराईली दुश्मनों के हाथ से महफ़ूज़ रहते। 19लेकिन उसके मरने पर वह दुबारा अपनी पुरानी राहों पर चलने लगते, बल्कि जब वह मुड़कर दीगर माबूदों की पैरवी और पूजा करने लगते तो उनकी रविश बापदादा की रविश से भी

बुरी होती। वह अपनी शरीर हरकतों और हटधर्म
राहों से बाज़ आने के लिए तैयार ही न होते।
20इसलिए अल्लाह को इसराईल पर बड़ा ग़ुस्सा
आया। उसने कहा, "इस क़ौम ने वह अहद तोड़
दिया है जो मैंने इसके बापदादा से बाँधा था।
यह मेरी नहीं सुनती, 21इसलिए मैं उन क़ौमों
को नहीं निकालूँगा जो यशुअ की मौत से लेकर
आज तक मुल्क में रह गई हैं। यह क़ौमें इसमें
आबाद रहेंगी, 22और मैं उनसे इसराईलियों को
आज़माकर देखूँगा कि आया वह अपने बापदादा
की तरह रब की राह पर चलेंगे या नहीं।"
23चुनाँचे रब ने इन क़ौमों को न यशुअ के हवाले
किया, न फ़ौरन निकाला बल्कि उन्हें मुल्क में ही
रहने दिया।

अल्लाह इसराईल को कनानी क़ौमों से आज़माता है

3 रब ने कई एक क़ौमों को मुल्के-कनान में
रहने दिया ताकि उन तमाम इसराईलियों
को आज़माए जो ख़ुद कनान की जंगों में शरीक
नहीं हुए थे। 2नीज़, वह नई नसल को जंग करना
सिखाना चाहता था, क्योंकि वह जंग करने से
नावाक़िफ़ थी। ज़ैल की क़ौमें कनान में रह गई
थीं : 3फ़िलिस्ती उनके पाँच हुक्मरानों समेत,
तमाम कनानी, सैदानी और लुबनान के पहाड़ी
इलाक़े में रहनेवाले हिव्वी जो बाल-हरमून पहाड़
से लेकर लबो-हमात तक आबाद थे। 4उनसे
रब इसराईलियों को आज़माना चाहता था। वह
देखना चाहता था कि क्या यह मेरे उन अहकाम
पर अमल करते हैं या नहीं जो मैंने मूसा की
मारिफ़त उनके बापदादा को दिए थे।

ग़ुतनियेल क़ाज़ी

5चुनाँचे इसराईली कनानियों, हित्तियों,
अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और यबू-
सियों के दरमियान ही आबाद हो गए। 6न सिर्फ़
यह बल्कि वह इन क़ौमों से अपने बेटे-बेटियों का
रिश्ता बाँधकर उनके देवताओं की पूजा भी करने
लगे। 7इसराईलियों ने ऐसी हरकतें कीं जो रब
की नज़र में बुरी थीं। रब को भूलकर उन्होंने बाल
देवता और यसीरत देवी की ख़िदमत की।
8तब रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ,
और उसने उन्हें मसोपुतामिया के बादशाह कूशन-
रिसअतैम के हवाले कर दिया। इसराईली आठ
साल तक कूशन के ग़ुलाम रहे। 9लेकिन जब
उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा तो उसने
उनके लिए एक नजातदहिंदा बरपा किया।
कालिब के छोटे भाई ग़ुतनियेल बिन क़नज़ ने
उन्हें दुश्मन के हाथ से बचाया। 10उस वक़्त
ग़ुतनियेल पर रब का रूह नाज़िल हुआ, और
वह इसराईल का क़ाज़ी बन गया। जब वह जंग
करने के लिए निकला तो रब ने मसोपुतामिया के
बादशाह कूशन-रिसअतैम को उसके हवाले कर
दिया, और वह उस पर ग़ालिब आ गया।
11तब मुल्क में चालीस साल तक अमनो-
अमान क़ायम रहा। लेकिन जब ग़ुतनियेल बिन
क़नज़ फ़ौत हुआ 12तो इसराईली दुबारा वह कुछ
करने लगे जो रब की नज़र में बुरा था। इसलिए
उसने मोआब के बादशाह इजलून को इसराईल
पर ग़ालिब आने दिया। 13इजलून ने अम्मोनियों
और अमालीक़ियों के साथ मिलकर इसराईलियों
से जंग की और उन्हें शिकस्त दी। उसने खजूरों
के शहर पर क़ब्ज़ा किया, 14और इसराईल 18
साल तक उस की ग़ुलामी में रहा।

अहूद क़ाज़ी की चालाकी

15इसराईलियों ने दुबारा मदद के लिए रब को
पुकारा, और दुबारा उसने उन्हें नजातदहिंदा अता
किया यानी बिनयमीन के क़बीले का अहूद बिन
जीरा जो बाएँ हाथ से काम करने का आदी था।
इसी शख़्स को इसराईलियों ने इजलून बादशाह
के पास भेज दिया ताकि वह उसे ख़राज के पैसे
अदा करे। 16अहूद ने अपने लिए एक दोधारी
तलवार बना ली जो तक़रीबन डेढ़ फ़ुट लंबी थी।
जाते वक़्त उसने उसे अपनी कमर के दाईं तरफ़
बाँधकर अपने लिबास में छुपा लिया। 17जब वह

इजलून के दरबार में पहुँच गया तो उसने मोआब के बादशाह को ख़राज पेश किया। इजलून बहुत मोटा आदमी था।
18फिर अहूद ने उन आदमियों को रुख़सत कर दिया जिन्होंने उसके साथ ख़राज उठाकर उसे दरबार तक पहुँचाया था।
19-20अहूद भी वहाँ से रवाना हुआ, लेकिन जिलजाल के बुतों के क़रीब वह मुड़कर इजलून के पास वापस गया।

इजलून बालाख़ाने में बैठा था जो ज़्यादा ठंडा था और उसके ज़ाती इस्तेमाल के लिए मख़सूस था। अहूद ने अंदर जाकर बादशाह से कहा, "मेरी आपके लिए ख़ुफ़िया ख़बर है।" बादशाह ने कहा, "ख़ामोश!" बाक़ी तमाम हाज़िरीन कमरे से चले गए तो अहूद ने कहा, "जो ख़बर मेरे पास आपके लिए है वह अल्लाह की तरफ़ से है!" यह सुनकर इजलून खड़ा होने लगा,
21लेकिन अहूद ने उसी लमहे अपने बाएँ हाथ से कमर के दाईं तरफ़ बँधी हुई तलवार को पकड़कर उसे मियान से निकाला और इजलून के पेट में धँसा दिया।
22तलवार इतनी धँस गई कि उसका दस्ता भी चरबी में ग़ायब हो गया और उस की नोक टाँगों में से निकली। तलवार को उसमें छोड़कर
23अहूद ने कमरे के दरवाज़ों को बंद करके कुंडी लगाई और साथवाले कमरे में से निकलकर चला गया।

24थोड़ी देर के बाद बादशाह के नौकरों ने आकर देखा कि दरवाज़ों पर कुंडी लगी है। उन्होंने एक दूसरे से कहा, "वह हाजत रफ़ा कर रहे होंगे,"
25इसलिए कुछ देर के लिए ठहरे। लेकिन दरवाज़ा न खुला। इंतज़ार करते करते वह थक गए, लेकिन बेसूद, बादशाह ने दरवाज़ा न खोला। आख़िरकार उन्होंने चाबी ढूँडकर दरवाज़ों को खोल दिया और देखा कि मालिक की लाश फ़र्श पर पड़ी हुई है।

26नौकरों के झिजकने की वजह से अहूद बच निकला और जिलजाल के बुतों से गुज़रकर सईरा पहुँच गया जहाँ वह महफ़ूज़ था।
27वहाँ इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में उसने नरसिंगा फूँक दिया ताकि इसराईली लड़ने के लिए जमा हो जाएँ। वह इकट्ठे हुए और उस की राहनुमाई में वादीए-यरदन में उतर गए।
28अहूद बोला, "मेरे पीछे हो लें, क्योंकि अल्लाह ने आपके दुश्मन मोआब को आपके हवाले कर दिया है।" चुनाँचे वह उसके पीछे पीछे वादी में उतर गए। पहले उन्होंने दरियाए-यरदन के कम-गहरे मक़ामों पर क़ब्ज़ा करके किसी को दरिया पार करने न दिया।
29उस वक़्त उन्होंने मोआब के 10,000 ताक़तवर और जंग करने के क़ाबिल आदमियों को मार डाला। एक भी न बचा।

30उस दिन इसराईल ने मोआब को ज़ेर कर दिया, और 80 साल तक मुल्क में अमनो-अमान क़ायम रहा।

शमजर क़ाज़ी

31अहूद के दौर के बाद इसराईल का एक और नजातदहिंदा उभर आया, शमजर बिन अनात। उसने बैल के आँकुस से 600 फ़िलिस्तियों को मार डाला।

दबोरा नबिया और लशकर का सरदार बरक़

4 जब अहूद फ़ौत हुआ तो इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब के नज़दीक बुरी थीं।
2-3इसलिए रब ने उन्हें कनान के बादशाह याबीन के हवाले कर दिया। याबीन का दारुल-हुकूमत हसूर था, और उसके पास 900 लोहे के रथ थे। उसके लशकर का सरदार सीसरा था जो हरूसत-हगोयम में रहता था। याबीन ने 20 साल इसराईलियों पर बहुत ज़ुल्म किया, इसलिए उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा।

4उन दिनों में दबोरा नबिया इसराईल की क़ाज़ी थी। उसका शौहर लफ़ीदोत था,
5और वह 'दबोरा के खजूर' के पास रहती थी जो इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में रामा और बैतेल के दरमियान था। इस दरख़्त के साये में वह इसराईलियों के मामलात के फ़ैसले किया करती थी।
6एक दिन दबोरा ने बरक़ बिन अबीनुअम को बुलाया। बरक़ नफ़ताली के क़बायली इलाक़े के शहर क़ादिस में रहता था। दबोरा ने बरक़ से कहा, "रब इसराईल

का ख़ुदा आपको हुक्म देता है, 'नफ़ताली और
ज़बूलून के क़बीलों में से 10,000 मर्दों को जमा
करके उनके साथ तबूर पहाड़ पर चढ़ जा! 7मैं
याबीन के लशकर के सरदार सीसरा को उसके
रथों और फ़ौज समेत तेरे क़रीब की क़ैसोन नदी
के पास खींच लाऊँगा। वहाँ मैं उसे तेरे हाथ में कर
दूँगा'।"
8बरक़ ने जवाब दिया, "मैं सिर्फ़ इस सूरत में
जाऊँगा कि आप भी साथ जाएँ। आपके बग़ैर
मैं नहीं जाऊँगा।" 9दबोरा ने कहा, "ठीक है, मैं
ज़रूर आपके साथ जाऊँगी। लेकिन इस सूरत
में आपको सीसरा पर ग़ालिब आने की इज़्ज़त
हासिल नहीं होगी बल्कि एक औरत को। क्योंकि
रब सीसरा को एक औरत के हवाले कर देगा।"
चुनाँचे दबोरा बरक़ के साथ क़ादिस गई।
10वहाँ बरक़ ने ज़बूलून और नफ़ताली के क़बीलों
को अपने पास बुला लिया। 10,000 आदमी उस
की राहनुमाई में तबूर पहाड़ पर चले गए। दबोरा
भी साथ गई।
11उन दिनों में एक क़ीनी बनाम हिबर ने अपना
ख़ैमा क़ादिस के क़रीब ऐलोन-ज़ाननीम में लगाया
हुआ था। क़ीनी मूसा के साले होबाब की औलाद
में से था। लेकिन हिबर दूसरे क़ीनियों से अलग
रहता था।
12अब सीसरा को इत्तला दी गई कि बरक़ बिन
अबीनुअम फ़ौज लेकर पहाड़ तबूर पर चढ़ गया
है। 13यह सुनकर वह हरूसत-हगोयम से रवाना
होकर अपने 900 रथों और बाक़ी लशकर के
साथ क़ैसोन नदी पर पहुँच गया।
14तब दबोरा ने बरक़ से बात की, "हमला
के लिए तैयार हो जाएँ, क्योंकि रब ने आज
ही सीसरा को आपके क़ाबू में कर दिया है। रब
आपके आगे आगे चल रहा है।" चुनाँचे बरक़
अपने 10,000 आदमियों के साथ तबूर पहाड़
से उतर आया। 15जब उन्होंने दुश्मन पर हमला
किया तो रब ने कनानियों के पूरे लशकर में रथों
समेत अफ़रा-तफ़री पैदा कर दी। सीसरा अपने
रथ से उतरकर पैदल ही फ़रार हो गया।
16बरक़ के आदमियों ने भागनेवाले फ़ौ-
जियों और उनके रथों का ताक़्क़ुब करके उनको
हरूसत-हगोयम तक मारते गए। एक भी न बचा।

सीसरा का अंजाम

17इतने में सीसरा पैदल चलकर क़ीनी आदमी
हिबर की बीवी याएल के ख़ैमे के पास भाग आया
था। वजह यह थी कि हसूर के बादशाह याबीन
के हिबर के घराने के साथ अच्छे ताल्लुक़ात थे।
18याएल ख़ैमे से निकलकर सीसरा से मिलने
गई। उसने कहा, "आएँ मेरे आक़ा, अंदर आएँ
और न डरें।" चुनाँचे वह अंदर आकर लेट गया,
और याएल ने उस पर कम्बल डाल दिया।
19सीसरा ने कहा, "मुझे प्यास लगी है, कुछ
पानी पिला दो।" याएल ने दूध का मशकीज़ा
खोलकर उसे पिला दिया और उसे दुबारा छुपा
दिया। 20सीसरा ने दरख़ास्त की, "दरवाज़े में
खड़ी हो जाओ! अगर कोई आए और पूछे कि
क्या ख़ैमे में कोई है तो बोलो कि नहीं, कोई नहीं
है।"
21यह कहकर सीसरा गहरी नींद सो गया,
क्योंकि वह निहायत थका हुआ था। तब याएल
ने मेख़ और हथोड़ा पकड़ लिया और दबे पाँव
सीसरा के पास जाकर मेख़ को इतने ज़ोर से उस
की कनपटी में ठोंक दिया कि मेख़ ज़मीन में धँस
गई और वह मर गया।
22कुछ देर के बाद बरक़ सीसरा के ताक़्क़ुब में
वहाँ से गुज़रा। याएल ख़ैमे से निकलकर उससे
मिलने आई और बोली, "आएँ, मैं आपको वह
आदमी दिखाती हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं।" बरक़
उसके साथ ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो क्या देखा
कि सीसरा की लाश ज़मीन पर पड़ी है और मेख़
उस की कनपटी में से गुज़रकर ज़मीन में गड़ गई
है।
23उस दिन अल्लाह ने कनानी बादशाह याबीन
को इसराईलियों के सामने ज़ेर कर दिया।
24इसके बाद उनकी ताक़त बढ़ती गई जबकि

याबीन कमज़ोर होता गया और आख़िरकार इसराईलियों के हाथों तबाह हो गया।

दबोरा और बरक़ का गीत

5 फ़तह के दिन दबोरा ने बरक़ बिन अबीनुअम के साथ यह गीत गाया,

2 "अल्लाह की सताइश हो! क्योंकि इसराईल के सरदारों ने राहनुमाई की, और अवाम निकलने के लिए तैयार हुए।

3 ऐ बादशाहो, सुनो! ऐ हुक्मरानो, मेरी बात पर तवज्जुह दो! मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगी, रब इसराईल के ख़ुदा की मद्हसराई करूँगी।

4 ऐ रब, जब तू सईर से निकल आया और अदोम के खुले मैदान से रवाना हुआ तो ज़मीन काँप उठी और आसमान से पानी टपकने लगा, बादलों से बारिश बरसने लगी।

5 कोहे-सीना के रब के हुज़ूर पहाड़ हिलने लगे, रब इसराईल के ख़ुदा के सामने वह कपकपाने लगे।

6 शमजर बिन अनात और याएल के दिनों में सफ़र के पक्के और सीधे रास्ते ख़ाली रहे और मुसाफ़िर उनसे हटकर बल खाते हुए छोटे छोटे रास्तों पर चलकर अपनी मनज़िल तक पहुँचते थे।

7 देहात की ज़िंदगी सूनी हो गई। गाँव में रहना मुश्किल था जब तक मैं, दबोरा जो इसराईल की माँ हूँ खड़ी न हुई।

8 शहर के दरवाज़ों पर जंग छिड़ गई जब उन्होंने नए माबूदों को चुन लिया। उस वक़्त इसराईल के 40,000 मर्दों के पास एक भी ढाल या नेज़ा न था।

9 मेरा दिल इसराईल के सरदारों के साथ है और उनके साथ जो ख़ुशी से जंग के लिए निकले। रब की सताइश करो!

10 ऐ तुम जो सफ़ेद गधों पर कपड़े बिछाकर उन पर सवार हो, अल्लाह की तमजीद करो! ऐ तुम जो पैदल चल रहे हो, अल्लाह की तारीफ़ करो!

11 सुनो! जहाँ जानवरों को पानी पिलाया जाता है वहाँ लोग रब के नजातबख़्श कामों की तारीफ़ कर रहे हैं, उन नजातबख़्श कामों की जो उसने इसराईल के देहातियों की ख़ातिर किए। तब रब के लोग शहर के दरवाज़ों के पास उतर आए।

12 ऐ दबोरा, उठें, उठें! उठें, हाँ उठें और गीत गाएँ! ऐ बरक़, खड़े हो जाएँ! ऐ अबीनुअम के बेटे, अपने क़ैदियों को बाँधकर ले जाएँ!

13 फिर बचे हुए फ़ौजी पहाड़ी इलाक़े से उतरकर क़ौम के शुरफ़ा के पास आए, रब की क़ौम सूरमाओं के साथ मेरे पास उतर आई।

14 इफ़राईम से जिसकी जड़ें अमालीक़ में हैं वह उतर आए, और बिनयमीन के मर्द उनके पीछे हो लिए। मकीर से हुक्मरान और ज़बूलून से सिपहसालार उतर आए।

15 इशकार के रईस भी दबोरा के साथ थे, और उसके फ़ौजी बरक़ के पीछे होकर वादी में दौड़ आए। लेकिन रूबिन का क़बीला अपने इलाक़े में रहकर सोच-बिचार में उलझा रहा।

16 तू क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा रहा? क्या गल्लों के दरमियान चरवाहों की बाँसरियों की आवाज़ें सुनने के लिए? रूबिन का क़बीला अपने इलाक़े में रहकर सोच-बिचार में उलझा रहा।

17 जिलियाद के घराने दरियाए-यरदन के मशरिक़ में ठहरे रहे। और दान का क़बीला, वह क्यों बहरी जहाज़ों के पास रहा? आशर का क़बीला भी साहिल पर बैठा रहा, वह आराम से अपनी बंदरगाहों के पास ठहरा रहा,

18 जबकि ज़बूलून और नफ़ताली अपनी जान पर खेलकर मैदाने-जंग में आ गए।

19बादशाह आए और लड़े, कनान के बादशाह
मजिद्दो नदी पर तानक के पास इसराईल से लड़े।
लेकिन वहाँ से वह चाँदी का लूटा हुआ माल वापस
न लाए।
20आसमान से सितारों ने सीसरा पर हमला
किया, अपनी आसमानी राहों को छोड़कर वह
उससे और उस की क़ौम से लड़ने आए।
21क़ैसोन नदी उन्हें उड़ा ले गई, वह नदी जो
क़दीम ज़माने से बहती है। ऐ मेरी जान, मज़बूती
से आगे चलती जा!
22उस वक़्त टापों का बड़ा शोर सुनाई दिया।
दुश्मन के ज़बरदस्त घोड़े सरपट दौड़ रहे थे।

23रब के फ़रिश्ते ने कहा, 'मीरोज़ शहर पर
लानत करो, उसके बाशिंदों पर ख़ूब लानत करो!
क्योंकि वह रब की मदद करने न आए, वह
सूरमाओं के ख़िलाफ़ रब की मदद करने न आए।'

24हिबर क़ीनी की बीवी मुबारक है! ख़ैमों में
रहनेवाली औरतों में से वह सबसे मुबारक है!
25जब सीसरा ने पानी माँगा तो याएल ने उसे
दूध पिलाया। शानदार प्याले में लस्सी डालकर
वह उसे उसके पास लाई।
26लेकिन फिर उसने अपने हाथ से मेख़ और
अपने दहने हाथ से मज़दूरों का हथोड़ा पकड़कर
सीसरा का सर फोड़ दिया, उस की खोपड़ी टुकड़े
टुकड़े करके उस की कनपटी को छेद दिया।
27उसके पाँवों में वह तड़प उठा। वह गिरकर
वहीं पड़ा रहा। हाँ, वह उसके पाँवों में गिरकर
हलाक हुआ।
28सीसरा की माँ ने खिड़की में से झाँका और
दरीचे में से देखती देखती रोती रही, 'उसके रथ
के पहुँचने में इतनी देर क्यों हो रही है? रथों की
आवाज़ अब तक क्यों सुनाई नहीं दे रही?'
29उस की दानिशमंद ख़वातीन उसे तस-
ल्ली देती हैं और वह ख़ुद उनकी बात दोहराती है,
30'वह लूटा हुआ माल आपस में बाँट रहे होंगे।
हर मर्द के लिए एक दो लड़कियाँ और सीसरा के
लिए रंगदार लिबास होगा। हाँ, वह रंगदार लिबास
और मेरी गरदन को सजाने के लिए दो नफ़ीस
रंगदार कपड़े ला रहे होंगे।'

31ऐ रब, तेरे तमाम दुश्मन सीसरा की तरह
हलाक हो जाएँ! लेकिन जो तुझसे प्यार करते
हैं वह पूरे ज़ोर से तुलू होनेवाले सूरज की मानिंद
हों।"

बरक़ की इस फ़तह के बाद इसराईल में 40
साल अमनो-अमान क़ायम रहा।

मिदियानी इसराईलियों को दबाते हैं

6 फिर इसराईली दुबारा वह कुछ करने लगे
जो रब को बुरा लगा, और उसने उन्हें
सात साल तक मिदियानियों के हवाले कर दिया।
2मिदियानियों का दबाव इतना ज़्यादा बढ़ गया
कि इसराईलियों ने उनसे पनाह लेने के लिए
पहाड़ी इलाक़े में शिगाफ़, ग़ार और गढ़ियाँ बना
लीं। 3क्योंकि जब भी वह अपनी फ़सलें लगाते
तो मिदियानी, अमालीक़ी और मशरिक़ के दीगर
फ़ौजी उन पर हमला करके 4मुल्क को घेर लेते
और फ़सलों को ग़ज़्ज़ा शहर तक तबाह करते।
वह खानेवाली कोई भी चीज़ नहीं छोड़ते थे, न
कोई भेड़, न कोई बैल, और न कोई गधा। 5और
जब वह अपने मवेशियों और ख़ैमों के साथ पहुँचते
तो टिड्डियों के दलों की मानिंद थे। इतने मर्द और
ऊँट थे कि उनको गिना नहीं जा सकता था। यों
वह मुल्क पर चढ़ आते थे ताकि उसे तबाह करें।
6इसराईली मिदियान के सबब से इतने पस्तहाल
हुए कि आख़िरकार मदद के लिए रब को पुकारने
लगे।
7-8तब उसने उनमें एक नबी भेज दिया जिसने
कहा, "रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं
ही तुम्हें मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया। 9मैंने
तुम्हें मिसर के हाथ से और उन तमाम ज़ालिमों
के हाथ से बचा लिया जो तुम्हें दबा रहे थे। मैं
उन्हें तुम्हारे आगे आगे निकालता गया और उनकी

ज़मीन तुम्हें दे दी। 10उस वक़्त मैंने तुम्हें बताया, 'मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। जिन अमोरियों के मुल्क में तुम रह रहे हो उनके देवताओं का ख़ौफ़ मत मानना। लेकिन तुमने मेरी न सुनी'।"

रब जिदाऊन को बुलाता है

11एक दिन रब का फ़रिश्ता आया और उफ़रा में बलूत के एक दरख़्त के साये में बैठ गया। यह दरख़्त अबियज़र के ख़ानदान के एक आदमी का था जिसका नाम युआस था। वहाँ अंगूर का रस निकालने का हौज़ था, और उसमें युआस का बेटा जिदाऊन छुपकर गंदुम झाड़ रहा था, हौज़ में इसलिए कि गंदुम मिदियानियों से महफ़ूज़ रहे।
12रब का फ़रिश्ता जिदाऊन पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "ऐ ज़बरदस्त सूरमे, रब तेरे साथ है!"

13जिदाऊन ने जवाब दिया, "नहीं जनाब, अगर रब हमारे साथ हो तो यह सब कुछ हमारे साथ क्यों हो रहा है? उसके वह तमाम मोजिज़े आज कहाँ नज़र आते हैं जिनके बारे में हमारे बापदादा हमें बताते रहे हैं? क्या वह नहीं कहते थे कि रब हमें मिसर से निकाल लाया? नहीं, जनाब। अब ऐसा नहीं है। अब रब ने हमें तर्क करके मिदियान के हवाले कर दिया है।"

14रब ने उस की तरफ़ मुड़कर कहा, "अपनी इस ताक़त में जा और इसराईल को मिदियान के हाथ से बचा। मैं ही तुझे भेज रहा हूँ।"

15लेकिन जिदाऊन ने एतराज़ किया, "ऐ रब, मैं इसराईल को किस तरह बचाऊँ? मेरा ख़ानदान मनस्सी के क़बीले का सबसे कमज़ोर ख़ानदान है, और मैं अपने बाप के घर में सबसे छोटा हूँ।"

16रब ने जवाब दिया, "मैं तेरे साथ हूँगा, और तू मिदियानियों को यों मारेगा जैसे एक ही आदमी को।"

17तब जिदाऊन ने कहा, "अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र हो तो मुझे कोई इलाही निशान दिखा ताकि साबित हो जाए कि वाक़ई रब ही मेरे साथ बात कर रहा है। 18मैं अभी जाकर क़ुरबानी तैयार करता हूँ और फिर वापस आकर उसे तुझे पेश करूँगा। उस वक़्त तक रवाना न हो जाना।"

रब ने कहा, "ठीक है, मैं तेरी वापसी का इंतज़ार करके ही जाऊँगा।"

19जिदाऊन चला गया। उसने बकरी का बच्चा ज़बह करके तैयार किया और पूरे 16 किलोग्राम मैदे से बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर गोश्त को टोकरी में रखकर और उसका शोरबा अलग बरतन में डालकर वह सब कुछ रब के फ़रिश्ते के पास लाया और उसे बलूत के साये में पेश किया।

20रब के फ़रिश्ते ने कहा, "गोश्त और बेख़मीरी रोटी को लेकर इस पत्थर पर रख दे, फिर शोरबा उस पर उंडेल दे।" जिदाऊन ने ऐसा ही किया।
21रब के फ़रिश्ते के हाथ में लाठी थी। अब उसने लाठी के सिरे से गोश्त और बेख़मीरी रोटी को छू दिया। अचानक पत्थर से आग भड़क उठी और ख़ुराक भस्म हो गई। साथ साथ रब का फ़रिश्ता ओझल हो गया।

22फिर जिदाऊन को यक़ीन आया कि यह वाक़ई रब का फ़रिश्ता था, और वह बोल उठा, "हाय रब क़ादिरे-मुतलक़! मुझ पर अफ़सोस, क्योंकि मैंने रब के फ़रिश्ते को रूबरू देखा है।"

23लेकिन रब उससे हमकलाम हुआ और कहा, "तेरी सलामती हो। मत डर, तू नहीं मरेगा।"

24वहीं जिदाऊन ने रब के लिए क़ुरबान-गाह बनाई और उसका नाम 'रब सलामत है' रखा। यह आज तक अबियज़र के ख़ानदान के शहर उफ़रा में मौजूद है।

जिदाऊन बाल की क़ुरबानगाह गिरा देता है

25उसी रात रब जिदाऊन से हमकलाम हुआ, "अपने बाप के बैलों में से दूसरे बैल को जो सात साल का है चुन ले। फिर अपने बाप की वह क़ुरबानगाह गिरा दे जिस पर बाल देवता को क़ुरबानियाँ चढ़ाई जाती हैं, और यसीरत देवी का वह खंबा काट डाल जो साथ खड़ा है।
26इसके बाद उसी पहाड़ी क़िले की चोटी पर रब अपने ख़ुदा के लिए सहीह क़ुरबानगाह बना दे। यसीरत

के खंबे की कटी हुई लकड़ी और बैल को उस पर रखकर मुझे भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश कर।"

27चुनाँचे जिदाऊन ने अपने दस नौकरों को साथ लेकर वह कुछ किया जिसका हुक्म रब ने उसे दिया था। लेकिन वह अपने ख़ानदान और शहर के लोगों से डरता था, इसलिए उसने यह काम दिन के बजाए रात के वक़्त किया।

28सुबह के वक़्त जब शहर के लोग उठे तो देखा कि बाल की क़ुरबानगाह ढा दी गई है और यसीरत देवी का साथवाला खंबा काट दिया गया है। इनकी जगह एक नई क़ुरबानगाह बनाई गई है जिस पर बैल को चढ़ाया गया है। 29उन्होंने एक दूसरे से पूछा, "किसने यह किया?" जब वह इस बात की तफ़तीश करने लगे तो किसी ने उन्हें बताया कि जिदाऊन बिन युआस ने यह सब कुछ किया है।

30तब वह युआस के घर गए और तक़ाज़ा किया, "अपने बेटे को घर से निकाल लाएँ। लाज़िम है कि वह मर जाए, क्योंकि उसने बाल की क़ुरबानगाह को गिराकर साथवाला यसीरत देवी का खंबा भी काट डाला है।"

31लेकिन युआस ने उनसे जो उसके सामने खड़े थे कहा, "क्या आप बाल के दिफ़ा में लड़ना चाहते हैं? जो भी बाल के लिए लड़ेगा उसे कल सुबह तक मार दिया जाएगा। अगर बाल वाक़ई ख़ुदा है तो वह ख़ुद अपने दिफ़ा में लड़े जब कोई उस की क़ुरबानगाह को ढा दे।"

32चूँकि जिदाऊन ने बाल की क़ुरबानगाह गिरा दी थी इसलिए उसका नाम यरुब्बाल यानी 'बाल उससे लड़े' पड़ गया।

जिदाऊन अल्लाह से निशान माँगता है

33कुछ देर के बाद तमाम मिदियानी, अमालीक़ी और दूसरी मशरिक़ी क़ौमें जमा हुईं और दरियाए-यरदन को पार करके अपने डेरे मैदाने-यज़्रएल में लगाए। 34फिर रब का रूह जिदाऊन पर नाज़िल हुआ। उसने नरसिंगा फूँककर अबियज़र के ख़ानदान के मर्दों को अपने पीछे हो लेने के लिए बुलाया। 35साथ साथ उसने अपने क़ासिदों को मनस्सी के क़बीले और आशर, ज़बूलून और नफ़ताली के क़बीलों के पास भी भेज दिया। तब वह भी आए और जिदाऊन के मर्दों के साथ मिलकर उसके पीछे हो लिए।

36जिदाऊन ने अल्लाह से दुआ की, "अगर तू वाक़ई इसराईल को अपने वादे के मुताबिक़ मेरे ज़रीए बचाना चाहता है 37तो मुझे यक़ीन दिला। मैं रात को ताज़ा कतरी हुई ऊन गंदुम गाहने के फ़र्श पर रख दूँगा। कल सुबह अगर सिर्फ़ ऊन पर ओस पड़ी हो और इर्दगिर्द का सारा फ़र्श ख़ुश्क हो तो मैं जान लूँगा कि वाक़ई तू अपने वादे के मुताबिक़ इसराईल को मेरे ज़रीए बचाएगा।"

38वही कुछ हुआ जिसकी दरख़ास्त जिदाऊन ने की थी। अगले दिन जब वह सुबह-सवेरे उठा तो ऊन ओस से तर थी। जब उसने उसे निचोड़ा तो इतना पानी था कि बरतन भर गया।

39फिर जिदाऊन ने अल्लाह से कहा, "मुझसे ग़ुस्से न हो जाना अगर मैं तुझसे एक बार फिर दरख़ास्त करूँ। मुझे एक आख़िरी दफ़ा ऊन के ज़रीए तेरी मरज़ी जाँचने की इजाज़त दे। इस दफ़ा ऊन ख़ुश्क रहे और इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी हो।" 40उस रात अल्लाह ने ऐसा ही किया। सिर्फ़ ऊन ख़ुश्क रही जबकि इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी थी।

अल्लाह जिदाऊन के साथियों को चुन लेता है

7 सुबह-सवेरे यरुब्बाल यानी जिदाऊन अपने तमाम लोगों को साथ लेकर हरोद चश्मे के पास आया। वहाँ उन्होंने अपने डेरे लगाए। मिदियानियों ने अपनी ख़ैमागाह उनके शिमाल में मोरिह पहाड़ के दामन में लगाई हुई थी।

2रब ने जिदाऊन से कहा, "तेरे पास ज़्यादा लोग हैं! मैं इस क़िस्म के बड़े लशकर को मिदियानियों पर फ़तह नहीं दूँगा, वरना इसराईली मेरे सामने डींगें मारकर कहेंगे, 'हमने अपनी ही

ताक़त से अपने आपको बचाया है!’ 3इसलिए
लशकरगाह में एलान कर कि जो डर के मारे
परेशान हो वह अपने घर वापस चला जाए।”
जिदाऊन ने यों किया तो 22,000 मर्द वापस
चले गए जबकि 10,000 जिदाऊन के पास रहे।
4लेकिन रब ने दुबारा जिदाऊन से बात की,
“अभी तक ज़्यादा लोग हैं! इनके साथ उतरकर
चश्मे के पास जा। वहाँ मैं उन्हें जाँचकर उनको
मुक़र्रर करूँगा जिन्हें तेरे साथ जाना है।” 5चुनाँचे
जिदाऊन अपने आदमियों के साथ चश्मे के पास
उतर आया। रब ने उसे हुक्म दिया, “जो भी
अपना हाथ पानी से भरकर उसे कुत्ते की तरह
चाट ले उसे एक तरफ़ खड़ा कर। दूसरी तरफ़
उन्हें खड़ा कर जो घुटने टेककर पानी पीते हैं।”
6300 आदमियों ने अपना हाथ पानी से भरकर
उसे चाट लिया जबकि बाक़ी सब पीने के लिए
झुक गए।

7फिर रब ने जिदाऊन से फ़रमाया, “मैं इन
300 चाटनेवाले आदमियों के ज़रीए इसराईल
को बचाकर मिदियानियों को तेरे हवाले कर दूँगा।
बाक़ी तमाम मर्दों को फ़ारिग़ कर। वह सब अपने
अपने घर वापस चले जाएँ।” 8चुनाँचे जिदाऊन
ने बाक़ी तमाम आदमियों को फ़ारिग़ कर दिया।
सिर्फ़ मुक़र्ररा 300 मर्द रह गए। अब यह दूसरों
की ख़ुराक और नरसिंगे अपने पास रखकर जंग
के लिए तैयार हुए। उस वक़्त मिदियानी ख़ैमागाह
इसराईलियों के नीचे वादी में थी।

मिदियानियों पर जिदाऊन की फ़तह

9जब रात हुई तो रब जिदाऊन से हमकलाम
हुआ, “उठ, मिदियानी ख़ैमागाह के पास उतरकर
उस पर हमला कर, क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में दे
दूँगा। 10लेकिन अगर तू इससे डरता है तो पहले
अपने नौकर फ़ूराह के साथ उतरकर 11वह बातें
सुन ले जो वहाँ के लोग कह रहे हैं। तब उन पर
हमला करने की जुर्रत बढ़ जाएगी।”

जिदाऊन फ़ूराह के साथ ख़ैमागाह के किनारे
के पास उतर आया। 12मिदियानी, अमालीक़ी
और मशरिक़ के दीगर फ़ौजी टिड्डियों के दल की
तरह वादी में फैले हुए थे। उनके ऊँट साहिल
की रेत की तरह बेशुमार थे। 13जिदाऊन दबे
पाँव दुश्मन के इतने क़रीब पहुँच गया कि उनकी
बातें सुन सकता था। ऐन उस वक़्त एक फ़ौजी
दूसरे को अपना ख़ाब सुना रहा था, “मैंने ख़ाब
में देखा कि जौ की बड़ी रोटी लुढ़कती लुढ़कती
हमारी ख़ैमागाह में उतर आई। यहाँ वह इतनी
शिद्दत से ख़ैमे से टकरा गई कि ख़ैमा उलटकर
ज़मीनबोस हो गया।” 14दूसरे ने जवाब दिया,
“इसका सिर्फ़ यह मतलब हो सकता है कि
इसराईली मर्द जिदाऊन बिन युआस की तलवार
ग़ालिब आएगी! अल्लाह उसे मिदियानियों और
पूरी लशकरगाह पर फ़तह देगा।”

15ख़ाब और उस की ताबीर सुनकर जिदाऊन
ने अल्लाह को सिजदा किया। फिर उसने
इसराईली ख़ैमागाह में वापस आकर एलान
किया, “उठें! रब ने मिदियानी लशकरगाह को
तुम्हारे हवाले कर दिया है।” 16उसने अपने 300
मर्दों को सौ सौ के तीन गुरोहों में तक़सीम करके
हर एक को एक नरसिंगा और एक घड़ा दे दिया।
हर घड़े में मशाल थी। 17-18उसने हुक्म दिया,
“जो कुछ मैं करूँगा उस पर ग़ौर करके वही कुछ
करें। पूरी ख़ैमागाह को घेर लें और ऐन वही कुछ
करें जो मैं करूँगा। जब मैं अपने सौ लोगों के साथ
ख़ैमागाह के किनारे पहुँचूँगा तो हम अपने नरसिंगों
को बजा देंगे। यह सुनते ही आप भी यही कुछ करें
और साथ साथ नारा लगाएँ, ‘रब के लिए और
जिदाऊन के लिए’!”

19तक़रीबन आधी रात को जिदाऊन अपने
सौ मर्दों के साथ मिदियानी ख़ैमागाह के किनारे
पहुँच गया। थोड़ी देर पहले पहरेदार बदल गए
थे। अचानक इसराईलियों ने अपने नरसिंगों को
बजाया और अपने घड़ों को टुकड़े टुकड़े कर
दिया। 20फ़ौरन सौ सौ के दूसरे दो गुरोहों ने भी
ऐसा ही किया। अपने दहने हाथ में नरसिंगा और
बाएँ हाथ में भड़कती मशाल पकड़कर वह नारा
लगाते रहे, “रब के लिए और जिदाऊन के लिए!”

21लेकिन वह ख़ैमागाह में दाख़िल न हुए बल्कि
वहीं उसके इर्दगिर्द खड़े रहे। दुश्मन में बड़ी अफ़रा-
तफ़री मच गई। चीख़ते-चिल्लाते सब भाग जाने
की कोशिश करने लगे। 22जिदाऊन के 300
आदमी अपने नरसिंगे बजाते रहे जबकि रब ने
ख़ैमागाह में ऐसी गड़बड़ पैदा की कि लोग एक
दूसरे से लड़ने लगे। आख़िरकार पूरा लशकर बैत-
सित्ता, सरीरात और अबील-महूला की सरहद
तक फ़रार हुआ जो तब्बात के क़रीब है।

23फिर जिदाऊन ने नफ़ताली, आशर और
पूरे मनस्सी के मर्दों को बुला लिया, और
उन्होंने मिलकर मिदियानियों का ताक़्क़ुब किया।
24उसने अपने क़ासिदों के ज़रीए इफ़राईम के
पूरे पहाड़ी इलाक़े के बाशिंदों को भी पैग़ाम भेज
दिया, "उतर आएँ और मिदियानियों को भाग
जाने से रोकें! बैत-बारा तक उन तमाम जगहों
पर क़ब्ज़ा कर लें जहाँ दुश्मन दरियाए-यरदन को
पा-प्यादा पार कर सकता है।"

इफ़राईमी मान गए, 25और उन्होंने दो
मिदियानी सरदारों को पकड़कर उनके सर क़लम
कर दिए। सरदारों के नाम ओरेब और ज़एब थे,
और जहाँ उन्हें पकड़ा गया उन जगहों के नाम
'ओरेब की चट्टान' और 'ज़एब का अंगूर का
रस निकालनेवाला हौज़' पड़ गया। इसके बाद
वह दुबारा मिदियानियों का ताक़्क़ुब करने लगे।
दरियाए-यरदन को पार करने पर उनकी मुलाक़ात
जिदाऊन से हुई, और उन्होंने दोनों सरदारों के सर
उसके सुपुर्द कर दिए।

इफ़राईम नाराज़ हो जाता है

8 लेकिन इफ़राईम के मर्दों ने शिकायत
की, "आपने हमसे कैसा सुलूक किया?
आपने हमें क्यों नहीं बुलाया जब मिदियान से
लड़ने गए?" ऐसी बातें करते करते उन्होंने
जिदाऊन के साथ सख़्त बहस की। 2लेकिन
जिदाऊन ने जवाब दिया, "क्या आप मुझसे कहीं
ज़्यादा कामयाब न हुए? और जो अंगूर फ़सल
जमा करने के बाद इफ़राईम के बाग़ों में रह जाते
हैं क्या वह मेरे छोटे ख़ानदान अबियज़र की पूरी
फ़सल से ज़्यादा नहीं होते? 3अल्लाह ने तो
मिदियान के सरदारों ओरेब और ज़एब को आपके
हवाले कर दिया। इसकी निसबत मुझसे क्या
कामयाबी हासिल हुई है?" यह सुनकर इफ़राईम
के मर्दों का ग़ुस्सा ठंडा हो गया।

सुक्कात और फ़नुएल जिदाऊन की मदद नहीं करते

4जिदाऊन अपने 300 मर्दों समेत दरि-
याए-यरदन को पार कर चुका था। दुश्मन का
ताक़्क़ुब करते करते वह थक गए थे। 5इसलिए
जिदाऊन ने क़रीब के शहर सुक्कात के बाशिंदों
से गुज़ारिश की, "मेरे फ़ौजियों को कुछ रोटी दे
दें। वह थक गए हैं, क्योंकि हम मिदियानी सरदार
ज़िबह और ज़लमुन्ना का ताक़्क़ुब कर रहे हैं।"
6लेकिन सुक्कात के बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, "हम
आपके फ़ौजियों को रोटी क्यों दें? क्या आप
ज़िबह और ज़लमुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम
ऐसा करें?" 7यह सुनकर जिदाऊन ने कहा,
"ज्योंही रब इन दो सरदारों ज़िबह और ज़लमुन्ना
को मेरे हाथ में कर देगा मैं तुमको रेगिस्तान
की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों से गाहकर
तबाह कर दूँगा।"

8वह आगे निकलकर फ़नुएल शहर पहुँच गया।
वहाँ भी उसने रोटी माँगी, लेकिन फ़नुएल के
बाशिंदों ने सुक्कात का-सा जवाब दिया। 9यह
सुनकर उसने कहा, "जब मैं सलामती से वापस
आऊँगा तो तुम्हारा यह बुर्ज गिरा दूँगा!"

मिदियानियों पर पूरी फ़तह

10अब ज़िबह और ज़लमुन्ना क़रक़ूर पहुँच
गए थे। 15,000 अफ़राद उनके साथ रह गए
थे, क्योंकि मशरिक़ी इत्तहादियों के 1,20,000
तलवारों से लैस फ़ौजी हलाक हो गए थे।
11जिदाऊन ने मिदियानियों के पीछे चलते हुए
ख़ानाबदोशों का वह रास्ता इस्तेमाल किया जो
नूबह और युगबहा के मशरिक़ में है। इस तरीक़े

से उसने उनकी लशकरगाह पर उस वक़्त हमला किया जब वह अपने आपको महफ़ूज़ समझ रहे थे। 12दुश्मन में अफ़रा-तफ़री पैदा हुई और ज़िबह और ज़लमुन्ना फ़रार हो गए। लेकिन जिदाऊन ने उनका ताक़्क़ुब करते करते उन्हें पकड़ लिया।

13इसके बाद जिदाऊन लौटा। वह अभी हरिस के दर्रा से उतर रहा था 14कि सुक्कात के एक जवान आदमी से मिला। जिदाऊन ने उसे पकड़कर मजबूर किया कि वह शहर के राहनुमाओं और बुज़ुर्गों की फ़हरिस्त लिखकर दे। 77 बुज़ुर्ग थे। 15जिदाऊन उनके पास गया और कहा, "देखो, यह हैं ज़िबह और ज़लमुन्ना! तुमने इन्हीं की वजह से मेरा मज़ाक़ उड़ाकर कहा था कि हम आपके थकेहारे फ़ौजियों को रोटी क्यों दें? क्या आप ज़िबह और ज़लमुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?" 16फिर जिदाऊन ने शहर के बुज़ुर्गों को गिरिफ़्तार करके उन्हें काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों से गाहकर सबक़ सिखाया। 17फिर वह फ़नुएल गया और वहाँ का बुर्ज गिराकर शहर के मर्दों को मार डाला।

18इसके बाद जिदाऊन ज़िबह और ज़ल-मुन्ना से मुख़ातिब हुआ। उसने पूछा, "उन आदमियों का हुलिया कैसा था जिन्हें तुमने तबूर पहाड़ पर क़त्ल किया?"

उन्होंने जवाब दिया, "वह आप जैसे थे, हर एक शहज़ादा लग रहा था।"

19जिदाऊन बोला, "वह मेरे सगे भाई थे। रब की हयात की क़सम, अगर तुम उनको ज़िंदा छोड़ते तो मैं तुम्हें हलाक न करता।"

20फिर वह अपने पहलौठे यतर से मुख़ा-तिब होकर बोला, "इनको मार डालो!" लेकिन यतर अपनी तलवार मियान से निकालने से झिजका, क्योंकि वह अभी बच्चा था और डरता था। 21तब ज़िबह और ज़लमुन्ना ने कहा, "आप ही हमें मार दें! क्योंकि जैसा आदमी वैसी उस की ताक़त!" जिदाऊन ने खड़े होकर उन्हें तलवार से मार डाला और उनके ऊँटों की गरदनों पर लगे तावीज़ उतारकर अपने पास रखे।

जिदाऊन के सबब से इसराईल बुतपरस्ती में उलझ जाता है

22इसराईलियों ने जिदाऊन के पास आकर कहा, "आपने हमें मिदियानियों से बचा लिया है, इसलिए हम पर हुकूमत करें, आप, आपके बाद आपका बेटा और उसके बाद आपका पोता।"

23लेकिन जिदाऊन ने जवाब दिया, "न मैं आप पर हुकूमत करूँगा, न मेरा बेटा। रब ही आप पर हुकूमत करेगा। 24मेरी सिर्फ़ एक गुज़ारिश है। हर एक मुझे अपने लूटे हुए माल में से एक एक बाली दे दे।" बात यह थी कि दुश्मन के तमाम अफ़राद ने सोने की बालियाँ पहन रखी थीं, क्योंकि वह इसमाईली थे।

25इसराईलियों ने कहा, "हम ख़ुशी से बाली देंगे।" एक चादर ज़मीन पर बिछाकर हर एक ने एक एक बाली उस पर फेंक दी। 26सोने की इन बालियों का वज़न तक़रीबन 20 किलोग्राम था। इसके अलावा इसराईलियों ने मुख़्तलिफ़ तावीज़, कान के आवेज़े, अरग़वानी रंग के शाही लिबास और ऊँटों की गरदनों में लगी क़ीमती ज़ंजीरें भी दे दीं।

27इस सोने से जिदाऊन ने एक अफ़ोद[a] बनाकर उसे अपने आबाई शहर उफ़रा में खड़ा किया जहाँ वह उसके और तमाम ख़ानदान के लिए फंदा बन गया। न सिर्फ़ यह बल्कि पूरा इसराईल ज़िना करके बुत की पूजा करने लगा।

28उस वक़्त मिदियान ने ऐसी शिकस्त खाई कि बाद में इसराईल के लिए ख़तरे का बाइस न रहा। और जितनी देर जिदाऊन ज़िंदा रहा यानी 40 साल तक मुल्क में अमनो-अमान क़ायम रहा।

[a]आम तौर पर इबरानी में अफ़ोद का मतलब इमामे-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुरूज 28:4), लेकिन यहाँ इससे मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

29जंग के बाद जिदाऊन बिन युआस दुबारा उफ़रा में रहने लगा। 30उस की बहुत-सी बीवियाँ और 70 बेटे थे। 31उस की एक दाश्ता भी थी जो सिकम शहर में रिहाइशपज़ीर थी और जिसके एक बेटा पैदा हुआ। जिदाऊन ने बेटे का नाम अबीमलिक रखा। 32जिदाऊन उम्ररसीदा था जब फ़ौत हुआ। उसे अबियज़रियों के शहर उफ़रा में उसके बाप युआस की क़ब्र में दफ़नाया गया।

33जिदाऊन के मरते ही इसराईली दुबारा ज़िना करके बाल के बुतों की पूजा करने लगे। वह बाल-बरीत को अपना ख़ास देवता बनाकर 34रब अपने ख़ुदा को भूल गए जिसने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचा लिया था। 35उन्होंने यरुब्बाल यानी जिदाऊन के ख़ानदान को भी उस एहसान के लिए कोई मेहरबानी न दिखाई जो जिदाऊन ने उन पर किया था।

अबीमलिक बादशाह बन जाता है

9 एक दिन यरुब्बाल यानी जिदाऊन का बेटा अबीमलिक अपने मामुओं और माँ के बाक़ी रिश्तेदारों से मिलने के लिए सिकम गया। उसने उनसे कहा, 2"सिकम शहर के तमाम बाशिंदों से पूछें, क्या आप अपने आप पर जिदाऊन के 70 बेटों की हुकूमत ज़्यादा पसंद करेंगे या एक ही शख़्स की? याद रहे कि मैं आपका ख़ूनी रिश्तेदार हूँ!" 3अबीमलिक के मामुओं ने सिकम के तमाम बाशिंदों के सामने यह बातें दोहराईं। सिकम के लोगों ने सोचा, "अबीमलिक हमारा भाई है" इसलिए वह उसके पीछे लग गए। 4उन्होंने उसे बाल-बरीत देवता के मंदिर से चाँदी के 70 सिक्के भी दे दिए।

इन पैसों से अबीमलिक ने अपने इर्दगिर्द आवारा और बदमाश आदमियों का गुरोह जमा किया। 5उन्हें अपने साथ लेकर वह उफ़रा पहुँचा जहाँ बाप का ख़ानदान रहता था। वहाँ उसने अपने तमाम भाइयों यानी जिदाऊन के 70 बेटों को एक ही पत्थर पर क़त्ल कर दिया। सिर्फ़ यूताम जो जिदाऊन का सबसे छोटा बेटा था कहीं छुपकर बच निकला। 6इसके बाद सिकम और बैत-मिल्लो के तमाम लोग उस बलूत के साये में जमा हुए जो सिकम के सतून के पास था। वहाँ उन्होंने अबीमलिक को अपना बादशाह मुक़र्रर किया।

यूताम की अबीमलिक और सिकम पर लानत

7जब यूताम को इसकी इत्तला मिली तो वह गरिज़ीम पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और ऊँची आवाज़ से चिल्लाया, "ऐ सिकम के बाशिंदो, सुनें मेरी बात! सुनें अगर आप चाहते हैं कि अल्लाह आपकी भी सुने। 8एक दिन दरख़्तों ने फ़ैसला किया कि हम पर कोई बादशाह होना चाहिए। वह उसे चुनने और मसह करने के लिए निकले। पहले उन्होंने ज़ैतून के दरख़्त से बात की, 'हमारे बादशाह बन जाएँ!' 9लेकिन ज़ैतून के दरख़्त ने जवाब दिया, 'क्या मैं अपना तेल पैदा करने से बाज़ आऊँ जिसकी अल्लाह और इनसान इतनी क़दर करते हैं ताकि दरख़्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!' 10इसके बाद दरख़्तों ने अंजीर के दरख़्त से बात की, 'आएँ, हमारे बादशाह बन जाएँ!' 11लेकिन अंजीर के दरख़्त ने जवाब दिया, 'क्या मैं अपना मीठा और अच्छा फल लाने से बाज़ आऊँ ताकि दरख़्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!' 12फिर दरख़्तों ने अंगूर की बेल से बात की, 'आएँ, हमारे बादशाह बन जाएँ!' 13लेकिन अंगूर की बेल ने जवाब दिया, 'क्या मैं अपना रस पैदा करने से बाज़ आऊँ जिससे अल्लाह और इनसान ख़ुश हो जाते हैं ताकि दरख़्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!' 14आख़िरकार दरख़्त काँटेदार झाड़ी के पास आए और कहा, 'आएँ और हमारे बादशाह बन जाएँ!' 15काँटेदार झाड़ी ने जवाब दिया, 'अगर तुम वाक़ई मुझे मसह करके अपना बादशाह बनाना चाहते हो तो आओ और मेरे साये में पनाह लो। अगर तुम ऐसा नहीं

करना चाहते तो झाड़ी से आग निकलकर लुबनान के देवदार के दरख़्तों को भस्म कर दे'।"

16यूताम ने बात जारी रखकर कहा, "अब मुझे बताएँ, क्या आपने वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार किया जब आपने अबीमलिक को अपना बादशाह बना लिया? क्या आपने जिदाऊन और उसके ख़ानदान के साथ अच्छा सुलूक किया? क्या आपने उस पर शुक्रगुज़ारी का वह इज़हार किया जिसके लायक़ वह था? 17मेरे बाप ने आपकी ख़ातिर जंग की। आपको मिदियानियों से बचाने के लिए उसने अपनी जान ख़तरे में डाल दी। 18लेकिन आज आप जिदाऊन के घराने के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं। आपने उसके 70 बेटों को एक ही पत्थर पर ज़बह करके उस की लौंडी के बेटे अबीमलिक को सिकम का बादशाह बना लिया है, और यह सिर्फ़ इसलिए कि वह आपका रिश्तेदार है। 19अब सुनें! अगर आपने जिदाऊन और उसके ख़ानदान के साथ वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार किया है तो फिर अल्लाह करे कि अबीमलिक आपके लिए ख़ुशी का बाइस हो और आप उसके लिए। 20लेकिन अगर ऐसा नहीं था तो अल्लाह करे कि अबीमलिक से आग निकलकर आप सबको भस्म कर दे जो सिकम और बैत-मिल्लो में रहते हैं! और आग आपसे निकलकर अबीमलिक को भी भस्म कर दे!" 21यह कहकर यूताम ने भागकर बैर में पनाह ली, क्योंकि वह अपने भाई अबीमलिक से डरता था।

सिकम के बाशिंदे अबीमलिक के ख़िलाफ़ हो जाते हैं

22अबीमलिक की इसराईल पर हुकूमत तीन साल तक रही। 23लेकिन फिर अल्लाह ने एक बुरी रूह भेज दी जिसने अबीमलिक और सिकम के बाशिंदों में नाइत्तफ़ाक़ी पैदा कर दी। नतीजे में सिकम के लोगों ने बग़ावत की। 24यों अल्लाह ने उसे इसकी सज़ा दी कि उसने अपने भाइयों यानी जिदाऊन के 70 बेटों को क़त्ल किया था। सिकम के बाशिंदों को भी सज़ा मिली, क्योंकि उन्होंने इसमें अबीमलिक की मदद की थी।

25उस वक़्त सिकम के लोग इर्दगिर्द की चोटियों पर चढ़कर अबीमलिक की ताक में बैठ गए। जो भी वहाँ से गुज़रा उसे उन्होंने लूट लिया। इस बात की ख़बर अबीमलिक तक पहुँच गई।

26उन दिनों में एक आदमी अपने भाइयों के साथ सिकम आया जिसका नाम जाल बिन अबद था। सिकम के लोगों से उसका अच्छा-ख़ासा ताल्लुक़ बन गया, और वह उस पर एतबार करने लगे। 27अंगूर की फ़सल पक गई थी। लोग शहर से निकले और अपने बाग़ों में अंगूर तोड़कर उनसे रस निकालने लगे। फिर उन्होंने अपने देवता के मंदिर में जशन मनाया। जब वह ख़ूब खा-पी रहे थे तो अबीमलिक पर लानत करने लगे। 28जाल बिन अबद ने कहा, "सिकम का अबीमलिक के साथ क्या वास्ता कि हम उसके ताबे रहें? वह तो सिर्फ़ यरुब्बाल का बेटा है, जिसका नुमाइंदा ज़बूल है। उस की ख़िदमत मत करना बल्कि सिकम के बानी हमोर के लोगों की! हम अबीमलिक की ख़िदमत क्यों करें? 29काश शहर का इंतज़ाम मेरे हाथ में होता! फिर मैं अबीमलिक को जल्द ही निकाल देता। मैं उसे चैलेंज देता कि आओ, अपने फ़ौजियों को जमा करके हमसे लड़ो!"

अबीमलिक सिकम से लड़ता है

30जाल बिन अबद की बात सुनकर सिकम का सरदार ज़बूल बड़े ग़ुस्से में आ गया। 31अपने क़ासिदों की मारिफ़त उसने अबीमलिक को चुपके से इत्तला दी, "जाल बिन अबद अपने भाइयों के साथ सिकम आ गया है जहाँ वह पूरे शहर को आपके ख़िलाफ़ खड़े हो जाने के लिए उकसा रहा है। 32अब ऐसा करें कि रात के वक़्त अपने फ़ौजियों समेत इधर आएँ और खेतों में ताक में रहें। 33सुबह-सवेरे जब सूरज तुलू होगा तो शहर पर हमला करें। जब जाल अपने आदमियों के साथ आपके ख़िलाफ़ लड़ने आएगा

तो उसके साथ वह कुछ करें जो आप मुनासिब समझते हैं।” 34यह सुनकर अबीमलिक रात के वक़्त अपने फ़ौजियों समेत रवाना हुआ। उसने उन्हें चार गुरोहों में तक़सीम किया जो सिकम को घेरकर ताक में बैठ गए।

35सुबह के वक़्त जब जाल घर से निकलकर शहर के दरवाज़े में खड़ा हुआ तो अबीमलिक और उसके फ़ौजी अपनी छुपने की जगहों से निकल आए। 36उन्हें देखकर जाल ने ज़बूल से कहा, “देखो, लोग पहाड़ों की चोटियों से उतर रहे हैं!” ज़बूल ने जवाब दिया, “नहीं, नहीं, जो आपको आदमी लग रहे हैं वह सिर्फ़ पहाड़ों के साये हैं।” 37लेकिन जाल को तसल्ली न हुई। वह दुबारा बोल उठा, “देखो, लोग दुनिया की नाफ़[a] से उतर रहे हैं। और एक और गुरोह रम्मालों के बलूत से होकर आ रहा है।” 38फिर ज़बूल ने उससे कहा, “अब तेरी बड़ी बड़ी बातें कहाँ रहीं? क्या तूने नहीं कहा था, ‘अबीमलिक कौन है कि हम उसके ताबे रहें?’ अब यह लोग आ गए हैं जिनका मज़ाक़ तूने उड़ाया। जा, शहर से निकलकर उनसे लड़!”

39तब जाल सिकम के मर्दों के साथ शहर से निकला और अबीमलिक से लड़ने लगा। 40लेकिन वह हार गया, और अबीमलिक ने शहर के दरवाज़े तक उसका ताक़्क़ुब किया। भागते भागते सिकम के बहुत-से अफ़राद रास्ते में गिरकर हलाक हो गए। 41फिर अबीमलिक अरूमा चला गया जबकि ज़बूल ने पीछे रहकर जाल और उसके भाइयों को शहर से निकाल दिया।

42अगले दिन सिकम के लोग शहर से निकलकर मैदान में आना चाहते थे। जब अबीमलिक को यह ख़बर मिली 43-44तो उसने अपनी फ़ौज को तीन गुरोहों में तक़सीम किया। यह गुरोह दुबारा सिकम को घेरकर घात में बैठ गए। जब लोग शहर से निकले तो अबीमलिक अपने गुरोह के साथ छुपने की जगह से निकल आया और शहर के दरवाज़े में खड़ा हो गया। बाक़ी दो गुरोह मैदान में मौजूद अफ़राद पर टूट पड़े और सबको हलाक कर दिया। 45फिर अबीमलिक ने शहर पर हमला किया। लोग पूरा दिन लड़ते रहे, लेकिन आख़िरकार अबीमलिक ने शहर पर क़ब्ज़ा करके तमाम बाशिंदों को मौत के घाट उतार दिया। उसने शहर को तबाह किया और खंडरात पर नमक बिखेरकर उस की हतमी तबाही ज़ाहिर कर दी।

46जब सिकम के बुर्ज के रहनेवालों को यह इत्तला मिली तो वह एल-बरीत देवता के मंदिर के तहख़ाने में छुप गए। 47जब अबीमलिक को पता चला 48तो वह अपने फ़ौजियों समेत ज़लमोन पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसने कुल्हाड़ी से शाख़ काटकर अपने कंधों पर रख ली और अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया, “जल्दी करो! सब ऐसा ही करो।” 49फ़ौजियों ने भी शाख़ें काटीं और फिर अबीमलिक के पीछे लगकर मंदिर के पास वापस आए। वहाँ उन्होंने तमाम लकड़ी तहख़ाने की छत पर जमा करके उसे जला दिया। यों सिकम के बुर्ज के तक़रीबन 1,000 मर्दो-ख़वातीन सब भस्म हो गए।

अबीमलिक की मौत

50वहाँ से अबीमलिक तैबिज़ के ख़िलाफ़ बढ़ गया। उसने शहर का मुहासरा करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। 51लेकिन शहर के बीच में एक मज़बूत बुर्ज था। तमाम मर्दो-ख़वातीन उसमें फ़रार हुए और बुर्ज के दरवाज़ों पर कुंडी लगाकर छत पर चढ़ गए।

52अबीमलिक लड़ते लड़ते बुर्ज के दर-वाज़े के क़रीब पहुँच गया। वह उसे जलाने की कोशिश करने लगा 53तो एक औरत ने चक्की का ऊपर का पाट उसके सर पर फेंक दिया, और उस की खोपड़ी फट गई। 54जल्दी से अबीमलिक ने अपने सिलाहबरदार को बुलाया। उसने कहा, “अपनी तलवार खींचकर मुझे मार दो! वरना

[a]मतलब ग़ालिबन कोहे-गरिज़ीम है।

लोग कहेंगे कि एक औरत ने मुझे मार डाला।" चुनाँचे नौजवान ने अपनी तलवार उसके बदन में से गुज़ार दी और वह मर गया। 55जब फ़ौजियों ने देखा कि अबीमलिक मर गया है तो वह अपने अपने घर चले गए।

56यों अल्लाह ने अबीमलिक को उस बदी का बदला दिया जो उसने अपने 70 भाइयों को क़त्ल करके अपने बाप के ख़िलाफ़ की थी। 57और अल्लाह ने सिकम के बाशिंदों को भी उनकी शरीर हरकतों की मुनासिब सज़ा दी। यूताम बिन यरुब्बाल की लानत पूरी हुई।

तोला और याईर

10 अबीमलिक की मौत के बाद तोला बिन फ़ुव्वा बिन दोदो इसराईल को बचाने के लिए उठा। वह इशकार के क़बीले से था और इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के शहर समीर में रिहाइशपज़ीर था। 2तोला 23 साल इसराईल का क़ाज़ी रहा। फिर वह फ़ौत हुआ और समीर में दफ़नाया गया।

3उसके बाद जिलियाद का रहनेवाला याईर क़ाज़ी बन गया। उसने 22 साल इसराईल की राहनुमाई की। 4याईर के 30 बेटे थे। हर बेटे का एक एक गधा और जिलियाद में एक एक आबादी थी। आज तक इनका नाम 'हव्वोत-याईर' यानी याईर की बस्तियाँ है। 5जब याईर इंतक़ाल कर गया तो उसे क़ामोन में दफ़नाया गया।

इसराईल दुबारा रब से दूर हो जाता है

6याईर की मौत के बाद इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। वह कई देवताओं के पीछे लग गए जिनमें बाल देवता, अस्तारात देवी और शाम, सैदा, मोआब, अम्मोनियों और फ़िलिस्तियों के देवता शामिल थे। यों वह रब की परस्तिश और ख़िदमत करने से बाज़ आए। 7तब उसका ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उसने उन्हें फ़िलिस्तियों और अम्मोनियों के हवाले कर दिया। 8उसी साल के दौरान इन क़ौमों ने जिलियाद में इसराईलियों के उस इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया जिसमें पुराने ज़माने में अमोरी आबाद थे और जो दरियाए-यरदन के मशरिक़ में था। फ़िलिस्ती और अम्मोनी 18 साल तक इसराईलियों को कुचलते और दबाते रहे। 9न सिर्फ़ यह बल्कि अम्मोनियों ने दरियाए-यरदन को पार करके यहूदाह, बिनयमीन और इफ़राईम के क़बीलों पर भी हमला किया।

जब इसराईली बड़ी मुसीबत में थे 10तो आख़िरकार उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा और इक़रार किया, "हमने तेरा गुनाह किया है। अपने ख़ुदा को तर्क करके हमने बाल के बुतों की पूजा की है।" 11रब ने जवाब में कहा, "जब मिसरी, अमोरी, अम्मोनी, फ़िलिस्ती, 12सैदानी, अमालीक़ी और माओनी तुम पर ज़ुल्म करते थे और तुम मदद के लिए मुझे पुकारने लगे तो क्या मैंने तुम्हें न बचाया? 13इसके बावुजूद तुम बार बार मुझे तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करते रहे हो। इसलिए अब से मैं तुम्हारी मदद नहीं करूँगा। 14जाओ, उन देवताओं के सामने चीख़ते-चिल्लाते रहो जिन्हें तुमने चुन लिया है! वही तुम्हें मुसीबत से निकालें।"

15लेकिन इसराईलियों ने रब से फ़रियाद की, "हमसे ग़लती हुई है। जो कुछ भी तू मुनासिब समझता है वह हमारे साथ कर। लेकिन तू ही हमें आज बचा।" 16वह अजनबी माबूदों को अपने बीच में से निकालकर रब की दुबारा ख़िदमत करने लगे। तब वह इसराईल का दुख बरदाश्त न कर सका।

इफ़ताह क़ाज़ी बन जाता है

17उन दिनों में अम्मोनी अपने फ़ौजियों को जमा करके जिलियाद में ख़ैमाज़न हुए। जवाब में इसराईली भी जमा हुए और मिसफ़ाह में अपने ख़ैमे लगाए। 18जिलियाद के राहनुमाओं ने एलान किया, "हमें ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो हमारे आगे चलकर अम्मोनियों पर हमला करे। जो कोई

ऐसा करे वह जिलियाद के तमाम बाशिंदों का
सरदार बनेगा।”

11 उस वक़्त जिलियाद में एक ज़बरदस्त
सूरमा बनाम इफ़ताह था। बाप का
नाम जिलियाद था जबकि माँ कसबी थी।
2लेकिन बाप की बीवी के बेटे भी थे। जब बालिग़
हुए तो उन्होंने इफ़ताह से कहा, “हम मीरास तेरे
साथ नहीं बाँटेंगे, क्योंकि तू हमारा सगा भाई नहीं
है।” उन्होंने उसे भगा दिया, 3और वह वहाँ से
हिजरत करके मुल्के-तोब में जा बसा। वहाँ कुछ
आवारा लोग उसके पीछे हो लिए जो उसके साथ
इधर-उधर घुमते-फिरते रहे।

4जब कुछ देर के बाद अम्मोनी फ़ौज इसराईल
से लड़ने आई 5तो जिलियाद के बुज़ुर्ग इफ़ताह
को वापस लाने के लिए मुल्के-तोब में आए।
6उन्होंने गुज़ारिश की, “आएँ, अम्मोनियों से
लड़ने में हमारी राहनुमाई करें।” 7लेकिन इफ़ताह
ने एतराज़ किया, “आप इस वक़्त मेरे पास क्यों
आए हैं जब मुसीबत में हैं? आप ही ने मुझसे
नफ़रत करके मुझे बाप के घर से निकाल दिया
था।”

8बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, “हम इसलिए आपके
पास वापस आए हैं कि आप अम्मोनियों के साथ
जंग में हमारी मदद करें। अगर आप ऐसा करें
तो हम आपको पूरे जिलियाद का हुक्मरान बना
लेंगे।” 9इफ़ताह ने पूछा, “अगर मैं आपके साथ
अम्मोनियों के ख़िलाफ़ लड़ूँ और रब मुझे उन पर
फ़तह दे तो क्या आप वाक़ई मुझे अपना हुक्मरान
बना लेंगे?” 10उन्होंने जवाब दिया, “रब हमारा
गवाह है! वही हमें सज़ा दे अगर हम अपना वादा
पूरा न करें।”

11यह सुनकर इफ़ताह जिलियाद के बुज़ुर्गों
के साथ मिसफ़ाह गया। वहाँ लोगों ने उसे
अपना सरदार और फ़ौज का कमाँडर बना लिया।
मिसफ़ाह में उसने रब के हुज़ूर वह तमाम बातें
दोहराईं जिनका फ़ैसला उसने बुज़ुर्गों के साथ
किया था।

जंग से गुरेज़ करने की कोशिश

12फिर इफ़ताह ने अम्मोनी बादशाह के पास
अपने क़ासिदों को भेजकर पूछा, “हमारा आपसे
क्या वास्ता कि आप हमसे लड़ने आए हैं?”
13बादशाह ने जवाब दिया, “जब इसराईली
मिसर से निकले तो उन्होंने अरनोन, यब्बोक़ और
यरदन के दरियाओं के दरमियान का इलाक़ा
मुझसे छीन लिया। अब उसे झगड़ा किए बग़ैर
मुझे वापस कर दो।”

14फिर इफ़ताह ने अपने क़ासिदों को दुबारा
अम्मोनी बादशाह के पास भेजकर 15कहा,
“इसराईल ने न तो मोआबियों से और न
अम्मोनियों से ज़मीन छीनी। 16हक़ीक़त यह है
कि जब हमारी क़ौम मिसर से निकली तो वह
रेगिस्तान में से गुज़रकर बहरे-क़ुलज़ुम और वहाँ
से होकर क़ादिस पहुँच गई। 17क़ादिस से उन्होंने
अदोम के बादशाह के पास क़ासिद भेजकर
गुज़ारिश की, ‘हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें।’
लेकिन उसने इनकार किया। फिर इसराईलियों
ने मोआब के बादशाह से दरख़ास्त की, लेकिन
उसने भी अपने मुल्क में से गुज़रने की इजाज़त न
दी। इस पर हमारी क़ौम कुछ देर के लिए क़ादिस
में रही। 18आख़िरकार वह रेगिस्तान में वापस
जाकर अदोम और मोआब के जुनूब में चलते
चलते मोआब के मशरिक़ी किनारे पर पहुँची,
वहाँ जहाँ दरियाए-अरनोन उस की सरहद है।
लेकिन वह मोआब के इलाक़े में दाख़िल न हुए
बल्कि दरिया के मशरिक़ में ख़ैमाज़न हुए। 19वहाँ
से इसराईलियों ने हसबोन के रहनेवाले अमोरी
बादशाह सीहोन को पैग़ाम भिजवाया, ‘हमें अपने
मुल्क में से गुज़रने दें ताकि हम अपने मुल्क
में दाख़िल हो सकें।’ 20लेकिन सीहोन को शक
हुआ। उसे यक़ीन नहीं था कि वह मुल्क में से
गुज़रकर आगे बढ़ेंगे। उसने न सिर्फ़ इनकार किया
बल्कि अपने फ़ौजियों को जमा करके यहज़ शहर
में ख़ैमाज़न हुआ और इसराईलियों के साथ लड़ने
लगा।

21लेकिन रब इसराईल के ख़ुदा ने सीहोन और
उसके तमाम फ़ौजियों को इसराईल के हवाले कर
दिया। उन्होंने उन्हें शिकस्त देकर अमोरियों के पूरे
मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया। 22यह तमाम इलाक़ा
जुनूब में दरियाए-अरनोन से लेकर शिमाल में
दरियाए-यब्बोक़ तक और मशरिक़ के रेगिस्तान
से लेकर मग़रिब में दरियाए-यरदन तक हमारे
क़ब्ज़े में आ गया। 23देखें, रब इसराईल के
ख़ुदा ने अपनी क़ौम के आगे आगे अमोरियों को
निकाल दिया है। तो फिर आपका इस मुल्क
पर क़ब्ज़ा करने का क्या हक़ है? 24आप भी
समझते हैं कि जिसे आपके देवता कमोस ने
आपके आगे से निकाल दिया है उसके मुल्क
पर क़ब्ज़ा करने का आपका हक़ है। इसी तरह
जिसे रब हमारे ख़ुदा ने हमारे आगे आगे निकाल
दिया है उसके मुल्क पर क़ब्ज़ा करने का हक़
हमारा है। 25क्या आप अपने आपको मोआबी
बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर से बेहतर समझते हैं?
उसने तो इसराईल से लड़ने बल्कि झगड़ने तक
की हिम्मत न की। 26अब इसराईली 300 साल
से हसबोन और अरोईर के शहरों में उनके गिर्दो-
नवाह की आबादियों समेत आबाद हैं और इसी
तरह दरियाए-अरनोन के किनारे पर के शहरों में।
आपने इस दौरान इन जगहों पर क़ब्ज़ा क्यों न
किया? 27चुनाँचे मैंने आपसे ग़लत सुलूक नहीं
किया बल्कि आप ही मेरे साथ ग़लत सुलूक कर
रहे हैं। क्योंकि मुझसे जंग छेड़ना ग़लत है। रब
जो मुंसिफ़ है वही आज इसराईल और अम्मोन
के झगड़े का फ़ैसला करे!”
28लेकिन अम्मोनी बादशाह ने इफ़ताह के
पैग़ाम पर ध्यान न दिया।

इफ़ताह की फ़तह

29फिर रब का रूह इफ़ताह पर नाज़िल हुआ,
और वह जिलियाद और मनस्सी में से गुज़र
गया, फिर जिलियाद के मिसफ़ाह के पास वापस
आया। वहाँ से वह अपनी फ़ौज लेकर अम्मोनियों
से लड़ने निकला।
30पहले उसने रब के सामने क़सम खाई,
“अगर तू मुझे अम्मोनियों पर फ़तह दे 31और मैं
सहीह-सलामत लौटूँ तो जो कुछ भी पहले मेरे घर
के दरवाज़े से निकलकर मुझसे मिले वह तेरे लिए
मख़सूस किया जाएगा। मैं उसे भस्म होनेवाली
क़ुरबानी के तौर पर पेश करूँगा।”
32फिर इफ़ताह अम्मोनियों से लड़ने गया, और
रब ने उसे उन पर फ़तह दी। 33इफ़ताह ने अरोईर
में दुश्मन को शिकस्त दी और इसी तरह मिन्नीत
और अबील-करामीम तक मज़ीद बीस शहरों पर
क़ब्ज़ा कर लिया। यों इसराईल ने अम्मोन को ज़ेर
कर दिया।

इफ़ताह की वापसी

34इसके बाद इफ़ताह मिसफ़ाह वापस चला
गया। वह अभी घर के क़रीब था कि उस की
इकलौती बेटी दफ़ बजाती और नाचती हुई घर
से निकल आई। इफ़ताह का कोई और बेटा या
बेटी नहीं थी। 35अपनी बेटी को देखकर वह रंज
के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख़ उठा, “हाय
मेरी बेटी! तूने मुझे ख़ाक में दबाकर तबाह कर
दिया है, क्योंकि मैंने रब के सामने ऐसी क़सम
खाई है जो बदली नहीं जा सकती।”
36बेटी ने कहा, “अब्बू, आपने क़सम खाकर
रब से वादा किया है, इसलिए लाज़िम है कि मेरे
साथ वह कुछ करें जिसकी क़सम आपने खाई
है। आख़िर उसी ने आपको दुश्मन से बदला लेने
की कामयाबी बख़्श दी है। 37लेकिन मेरी एक
गुज़ारिश है। मुझे दो माह की मोहलत दें ताकि मैं
अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में जाकर अपनी
ग़ैरशादीशुदा हालत पर मातम करूँ।”
38इफ़ताह ने इजाज़त दी। फिर बेटी दो माह के
लिए अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में चली गई
और अपनी ग़ैरशादीशुदा हालत पर मातम किया।
39फिर वह अपने बाप के पास वापस आई, और
उसने अपनी क़सम का वादा पूरा किया। बेटी
ग़ैरशादीशुदा थी।

उस वक़्त से इसराईल में दस्तूर रायज है 40कि इसराईल की जवान औरतें सालाना चार दिन के लिए अपने घरों से निकलकर इफ़ताह की बेटी की याद में जशन मनाती हैं।

इफ़राईम का क़बीला इफ़ताह पर हमला करता है

12 अम्मोनियों पर फ़तह के बाद इफ़राईम के क़बीले के आदमी जमा हुए और दरियाए-यरदन को पार करके इफ़ताह के पास आए जो सफ़ोन में था। उन्होंने शिकायत की, "आप क्यों हमें बुलाए बग़ैर अम्मोनियों से लड़ने गए? अब हम आपको आपके घर समेत जला देंगे!"

2इफ़ताह ने एतराज़ किया, "जब मेरी और मेरी क़ौम का अम्मोनियों के साथ सख़्त झगड़ा छिड़ गया तो मैंने आपको बुलाया, लेकिन आपने मुझे उनके हाथ से न बचाया। 3जब मैंने देखा कि आप मदद नहीं करेंगे तो अपनी जान ख़तरे में डालकर आपके बग़ैर ही अम्मोनियों से लड़ने गया। और रब ने मुझे उन पर फ़तह बख़्शी। अब मुझे बताएँ कि आप क्यों मेरे पास आकर मुझ पर हमला करना चाहते हैं?"

4इफ़राईमियों ने जवाब दिया, "तुम जो जिलियाद में रहते हो बस इफ़राईम और मनस्सी के क़बीलों से निकले हुए भगोड़े हो।" तब इफ़ताह ने जिलियाद के मर्दों को जमा किया और इफ़राईमियों से लड़कर उन्हें शिकस्त दी।

5फिर जिलियादियों ने दरियाए-यरदन के कम-गहरे मक़ामों पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब कोई गुज़रना चाहता तो वह पूछते, "क्या आप इफ़राईमी हैं?" अगर वह इनकार करता 6तो जिलियाद के मर्द कहते, "तो फिर लफ़्ज़ 'शिब्बोलेत'[a] बोलें।" अगर वह इफ़राईमी होता तो इसके बजाए "सिब्बोलेत" कहता। फिर जिलियादी उसे पकड़कर वहीं मार डालते। उस वक़्त कुल 42,000 इफ़राईमी हलाक हुए।

7इफ़ताह ने छः साल इसराईल की राहनुमाई की। जब फ़ौत हुआ तो उसे जिलियाद के किसी शहर में दफ़नाया गया।

इबज़ान, ऐलोन और अबदोन

8इफ़ताह के बाद इबज़ान इसराईल का क़ाज़ी बना। वह बैत-लहम में आबाद था, 9और उसके 30 बेटे और 30 बेटियाँ थीं। उस की तमाम बेटियाँ शादीशुदा थीं और इस वजह से बाप के घर में नहीं रहती थीं। लेकिन उसे 30 बेटों के लिए बीवियाँ मिल गई थीं, और सब उसके घर में रहते थे। इबज़ान ने सात साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई की। 10फिर वह इंतक़ाल कर गया और बैत-लहम में दफ़नाया गया।

11उसके बाद ऐलोन क़ाज़ी बना। वह ज़बूलून के क़बीले से था और 10 साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई करता रहा। 12जब वह कूच कर गया तो उसे ज़बूलून के ऐयालोन में दफ़न किया गया।

13फिर अबदोन बिन हिल्लेल क़ाज़ी बना। वह शहर फ़िरआतोन का था। 14उसके 40 बेटे और 30 पोते थे जो 70 गधों पर सफ़र किया करते थे। अबदोन ने आठ साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई की। 15फिर वह भी जान-बहक़ हो गया, और उसे अमालीक़ियों के पहाड़ी इलाक़े के शहर फ़िरआतोन में दफ़नाया गया, जो उस वक़्त इफ़राईम का हिस्सा था।

समसून की पैदाइश की पेशगोई

13 फिर इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। इसलिए उसने उन्हें फ़िलिस्तियों के हवाले कर दिया जो उन्हें 40 साल दबाते रहे। 2उस वक़्त एक आदमी सुरआ शहर में रहता था जिसका

[a]यानी नदी।

नाम मनोहा था। दान के क़बीले का यह आदमी
बेऔलाद था, क्योंकि उस की बीवी बाँझ थी।
3एक दिन रब का फ़रिश्ता मनोहा की बीवी
पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "गो तुझसे बच्चे पैदा
नहीं हो सकते, अब तू हामिला होगी, और तेरे बेटा
पैदा होगा। 4मै या कोई और नशा-आवर चीज़ मत
पीना, न कोई नापाक चीज़ खाना। 5क्योंकि जो
बेटा पैदा होगा वह पैदाइश से ही अल्लाह के लिए
मख़सूस होगा। लाज़िम है कि उसके बाल कभी न
काटे जाएँ। यही बच्चा इसराईल को फ़िलिस्तियों
से बचाने लगेगा।"
6बीवी अपने शौहर मनोहा के पास गई और उसे
सब कुछ बताया, "अल्लाह का एक बंदा मेरे पास
आया। वह अल्लाह का फ़रिश्ता लग रहा था, यहाँ
तक कि मैं सख़्त घबरा गई। मैंने उससे न पूछा कि
वह कहाँ से है, और ख़ुद उसने मुझे अपना नाम न
बताया। 7लेकिन उसने मुझे बताया, 'तू हामिला
होगी, और तेरे बेटा पैदा होगा। अब मै या कोई
और नशा-आवर चीज़ मत पीना, न कोई नापाक
चीज़ खाना। क्योंकि बेटा पैदाइश से ही मौत तक
अल्लाह के लिए मख़सूस होगा'।"
8यह सुनकर मनोहा ने रब से दुआ की, "ऐ रब,
बराहे-करम मर्दे-ख़ुदा को दुबारा हमारे पास भेज
ताकि वह हमें सिखाए कि हम उस बेटे के साथ
क्या करें जो पैदा होनेवाला है।" 9अल्लाह ने उस
की सुनी और अपने फ़रिश्ते को दुबारा उस की
बीवी के पास भेज दिया। उस वक़्त वह शौहर के
बग़ैर खेत में थी। 10फ़रिश्ते को देखकर वह जल्दी
से मनोहा के पास आई और उसे इत्तला दी, "जो
आदमी पिछले दिनों में मेरे पास आया वह दुबारा
मुझ पर ज़ाहिर हुआ है!"
11मनोहा उठकर अपनी बीवी के पीछे पीछे
फ़रिश्ते के पास आया। उसने पूछा, "क्या आप
वही आदमी हैं जिसने पिछले दिनों में मेरी बीवी से
बात की थी?" फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "जी, मैं
ही था।" 12फिर मनोहा ने सवाल किया, "जब
आपकी पेशगोई पूरी हो जाएगी तो हमें बेटे के
तर्ज़े-ज़िंदगी और सुलूक के सिलसिले में किन
किन बातों का ख़याल करना है?"
13रब के फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "लाज़िम है
कि तेरी बीवी उन तमाम चीज़ों से परहेज़ करे
जिनका ज़िक्र मैंने किया। 14वह अंगूर की कोई
भी पैदावार न खाए। न वह मै, न कोई और
नशा-आवर चीज़ पिए। नापाक चीज़ें खाना भी
मना है। वह मेरी हर हिदायत पर अमल करे।"
15मनोहा ने रब के फ़रिश्ते से गुज़ारिश की,
"मेहरबानी करके थोड़ी देर हमारे पास ठहरें ताकि
हम बकरी का बच्चा ज़बह करके आपके लिए
खाना तैयार कर सकें।" 16अब तक मनोहा ने यह
बात नहीं पहचानी थी कि मेहमान असल में रब
का फ़रिश्ता है। फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "ख़ाह तू
मुझे रोके भी मैं कुछ नहीं खाऊँगा। लेकिन अगर
तू कुछ करना चाहे तो बकरी का बच्चा रब को
भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश कर।"
17मनोहा ने उससे पूछा, "आपका क्या नाम
है? क्योंकि जब आपकी यह बातें पूरी हो जाएँगी
तो हम आपकी इज़्ज़त करना चाहेंगे।" 18फ़रिश्ते
ने सवाल किया, "तू मेरा नाम क्यों जानना चाहता
है? वह तो तेरी समझ से बाहर है।" 19फिर
मनोहा ने एक बड़े पत्थर पर रब को बकरी का
बच्चा और ग़ल्ला की नज़र पेश की। तब रब ने
मनोहा और उस की बीवी के देखते देखते एक
हैरतअंगेज़ काम किया। 20जब आग के शोले
आसमान की तरफ़ बुलंद हुए तो रब का फ़रिश्ता
शोले में से ऊपर चढ़कर ओझल हो गया। मनोहा
और उस की बीवी मुँह के बल गिर गए।
21जब रब का फ़रिश्ता दुबारा मनोहा और
उस की बीवी पर ज़ाहिर न हुआ तो मनोहा को
समझ आई कि रब का फ़रिश्ता ही था। 22वह
पुकार उठा, "हाय, हम मर जाएंगे, क्योंकि हमने
अल्लाह को देखा है!" 23लेकिन उस की बीवी ने
एतराज़ किया, "अगर रब हमें मार डालना चाहता
तो वह हमारी क़ुरबानी क़बूल न करता। फिर न
वह हम पर यह सब कुछ ज़ाहिर करता, न हमें
ऐसी बातें बताता।"

24कुछ देर के बाद मनोहा के हाँ बेटा पैदा हुआ। बीवी ने उसका नाम समसून रखा। बच्चा बड़ा होता गया, और रब ने उसे बरकत दी। 25अल्लाह का रूह पहली बार महने-दान में जो सुरआ और इस्ताल के दरमियान है उस पर नाज़िल हुआ।

समसून की फ़िलिस्ती औरत से शादी

14 एक दिन समसून तिमनत में फ़िलिस्तियों के पास ठहरा हुआ था। वहाँ उसने एक फ़िलिस्ती औरत देखी जो उसे पसंद आई। 2अपने घर लौटकर उसने अपने वालिदैन को बताया, "मुझे तिमनत की एक फ़िलिस्ती औरत पसंद आई है। उसके साथ मेरा रिश्ता बाँधने की कोशिश करें।" 3उसके वालिदैन ने जवाब दिया, "क्या आपके रिश्तेदारों और क़ौम में कोई क़ाबिले-क़बूल औरत नहीं है? आपको नामख़तून और बेदीन फ़िलिस्तियों के पास जाकर उनमें से कोई औरत ढूँडने की क्या ज़रूरत थी?" लेकिन समसून बज़िद रहा, "उसी के साथ मेरी शादी कराएँ! वही मुझे ठीक लगती है।"

4उसके माँ-बाप को मालूम नहीं था कि यह सब कुछ रब की तरफ़ से है जो फ़िलिस्तियों से लड़ने का मौक़ा तलाश कर रहा था। क्योंकि उस वक़्त फ़िलिस्ती इसराईल पर हुकूमत कर रहे थे।

5चुनाँचे समसून अपने माँ-बाप समेत तिमनत के लिए रवाना हुआ। जब वह तिमनत के अंगूर के बाग़ों के क़रीब पहुँचे तो समसून अपने माँ-बाप से अलग हो गया। अचानक एक जवान शेरबबर दहाड़ता हुआ उस पर टूट पड़ा। 6तब अल्लाह का रूह इतने ज़ोर से समसून पर नाज़िल हुआ कि उसने अपने हाथों से शेर को यों फाड़ डाला, जिस तरह आम आदमी बकरी के छोटे बच्चे को फाड़ डालता है। लेकिन उसने अपने वालिदैन को इसके बारे में कुछ न बताया। 7आगे निकलकर वह तिमनत पहुँच गया। मज़कूरा फ़िलिस्ती औरत से बात हुई और वह उसे ठीक लगी।

8कुछ देर के बाद वह शादी करने के लिए दुबारा तिमनत गए। शहर पहुँचने से पहले समसून रास्ते से हटकर शेरबबर की लाश को देखने गया। वहाँ क्या देखता है कि शहद की मक्खियों ने शेर के पिंजर में अपना छत्ता बना लिया है। 9समसून ने उसमें हाथ डालकर शहद को निकाल लिया और उसे खाते हुए चला। जब वह अपने माँ-बाप के पास पहुँचा तो उसने उन्हें भी कुछ दिया, मगर यह न बताया कि कहाँ से मिल गया है।

10तिमनत पहुँचकर समसून का बाप दुलहन के ख़ानदान से मिला जबकि समसून ने दूल्हे की हैसियत से ऐसी ज़ियाफ़त की जिस तरह उस ज़माने में दस्तूर था।

फ़िलिस्ती समसून को धोका देते हैं

11जब दुलहन के घरवालों को पता चला कि समसून तिमनत पहुँच गया है तो उन्होंने उसके पास 30 जवान आदमी भेज दिए कि उसके साथ ख़ुशी मनाएँ। 12समसून ने उनसे कहा, "मैं आपसे पहेली पूछता हूँ। अगर आप ज़ियाफ़त के सात दिनों के दौरान इसका हल बता सकें तो मैं आपको कतान के 30 क़ीमती कुरते और 30 शानदार सूट दे दूँगा। 13लेकिन अगर आप मुझे इसका सहीह मतलब न बता सकें तो आपको मुझे 30 क़ीमती कुरते और 30 शानदार सूट देने पड़ेंगे।" उन्होंने जवाब दिया, "अपनी पहेली सुनाएँ।"

14समसून ने कहा, "खानेवाले में से खाना निकला और ज़ोरावर में से मिठास।"

तीन दिन गुज़र गए। जवान पहेली का मतलब न बता सके। 15चौथे दिन उन्होंने दुलहन के पास जाकर उसे धमकी दी, "अपने शौहर को हमें पहेली का मतलब बताने पर उकसाओ, वरना हम तुम्हें तुम्हारे ख़ानदान समेत जला देंगे। क्या तुम लोगों ने हमें सिर्फ़ इसलिए दावत दी कि हमें लूट लो?"

16दुलहन समसून के पास गई और आँसू बहा बहाकर कहने लगी, "तू मुझे प्यार नहीं करता! हक़ीक़त में तू मुझसे नफ़रत करता है। तूने मेरी क़ौम के लोगों से पहेली पूछी है लेकिन मुझे

इसका मतलब नहीं बताया।” समसून ने जवाब
दिया, “मैंने अपने माँ-बाप को भी इसका मतलब
नहीं बताया तो तुझे क्यों बताऊँ?” 17ज़ियाफ़त
के पूरे हफ़ते के दौरान दुलहन उसके सामने रोती
रही।

सातवें दिन समसून दुलहन की इल्तिजाओं से
इतना तंग आ गया कि उसने उसे पहेली का हल
बता दिया। तब दुलहन ने फुरती से सब कुछ
फ़िलिस्तियों को सुना दिया। 18सूरज के ग़ुरूब
होने से पहले पहले शहर के मर्दों ने समसून को
पहेली का मतलब बताया, “क्या कोई चीज़ शहद
से ज़्यादा मीठी और शेरबबर से ज़्यादा ज़ोरावर
होती है?” समसून ने यह सुनकर कहा, “आपने
मेरी जवान गाय लेकर हल चलाया है, वरना आप
कभी भी पहेली का हल न निकाल सकते।”
19फिर रब का रूह उस पर नाज़िल हुआ। उसने
अस्क़लून शहर में जाकर 30 फ़िलिस्तियों को
मार डाला और उनके लिबास लेकर उन आदमियों
को दे दिए जिन्होंने उसे पहेली का मतलब बता
दिया था।

इसके बाद वह बड़े ग़ुस्से में अपने माँ-बाप के
घर चला गया। 20लेकिन उस की बीवी की शादी
समसून के शहबाले से कराई गई जो 30 जवान
फ़िलिस्तियों में से एक था।

समसून फ़िलिस्तियों से बदला लेता है

15 कुछ दिन गुज़र गए। जब गंदुम की
कटाई होने लगी तो समसून बकरी का
बच्चा अपने साथ लेकर अपनी बीवी से मिलने
गया। सुसर के घर पहुँचकर उसने बीवी के कमरे
में जाने की दरख़ास्त की। लेकिन बाप ने इनकार
किया। 2उसने कहा, “यह नहीं हो सकता! मैंने
बेटी की शादी आपके शहबाले से करा दी है।
असल में मुझे यक़ीन हो गया था कि अब आप
उससे सख़्त नफ़रत करते हैं। लेकिन कोई बात
नहीं। उस की छोटी बहन से शादी कर लें। वह
ज़्यादा ख़ूबसूरत है।”

3समसून बोला, “इस दफ़ा मैं फ़िलिस्तियों से
ख़ूब बदला लूँगा, और कोई नहीं कह सकेगा कि
मैं हक़ पर नहीं हूँ।” 4वहाँ से निकलकर उसने
300 लोमड़ियों को पकड़ लिया। दो दो की दुमों
को बाँधकर उसने हर जोड़े की दुमों के साथ
मशाल लगा दी 5और फिर मशालों को जलाकर
लोमड़ियों को फ़िलिस्तियों के अनाज के खेतों में
भगा दिया। खेतों में पड़े पूले उस अनाज समेत
भस्म हुए जो अब तक काटा नहीं गया था। अंगूर
और ज़ैतून के बाग़ भी तबाह हो गए।

6फ़िलिस्तियों ने दरियाफ़्त किया कि यह
किसका काम है। पता चला कि समसून ने यह
सब कुछ किया है, और कि वजह यह है कि
तिमनत में उसके सुसर ने उस की बीवी को
उससे छीनकर उसके शहबाले को दे दिया है।
यह सुनकर फ़िलिस्ती तिमनत गए और समसून
के सुसर को उस की बेटी समेत पकड़कर जला
दिया। 7तब समसून ने उनसे कहा, “यह तुमने
क्या किया है! जब तक मैंने पूरा बदला न लिया
मैं नहीं रुकूँगा।” 8वह इतने ज़ोर से उन पर टूट
पड़ा कि बेशुमार फ़िलिस्ती हलाक हुए। फिर वह
उस जगह से उतरकर ऐताम की चट्टान के ग़ार में
रहने लगा।

लही में समसून फ़िलिस्तियों से लड़ता है

9जवाब में फ़िलिस्ती फ़ौज यहूदाह के
क़बायली इलाक़े में दाख़िल हुई। वहाँ वह लही
शहर के पास ख़ैमाज़न हुए। 10यहूदाह के बाशिंदों
ने पूछा, “क्या वजह है कि आप हमसे लड़ने आए
हैं?” फ़िलिस्तियों ने जवाब दिया, “हम समसून
को पकड़ने आए हैं ताकि उसके साथ वह कुछ
करें जो उसने हमारे साथ किया है।”

11तब यहूदाह के 3,000 मर्द ऐताम पहाड़ के
ग़ार के पास आए और समसून से कहा, “यह
आपने हमारे साथ क्या किया? आपको तो
पता है कि फ़िलिस्ती हम पर हुकूमत करते हैं।”
समसून ने जवाब दिया, “मैंने उनके साथ सिर्फ़
वह कुछ किया जो उन्होंने मेरे साथ किया था।”

12यहूदाह के मर्द बोले, “हम आपको बाँधकर फ़िलिस्तियों के हवाले करने आए हैं।” समसून ने कहा, “ठीक है, लेकिन क़सम खाएँ कि आप ख़ुद मुझे क़त्ल नहीं करेंगे।”

13उन्होंने जवाब दिया, “हम आपको हरगिज़ क़त्ल नहीं करेंगे बल्कि आपको सिर्फ़ बाँधकर उनके हवाले कर देंगे।” चुनाँचे वह उसे दो ताज़ा ताज़ा रस्सों से बाँधकर फ़िलिस्तियों के पास ले गए।

14समसून अभी लही से दूर था कि फ़िलिस्ती नारे लगाते हुए उस की तरफ़ दौड़े आए। तब रब का रूह बड़े ज़ोर से उस पर नाज़िल हुआ। उसके बाज़ुओं से बँधे हुए रस्से सन के जले हुए धागे जैसे कमज़ोर हो गए, और वह पिघलकर हाथों से गिर गए। 15कहीं से गधे का ताज़ा जबड़ा पकड़कर उसने उसके ज़रीए हज़ार अफ़राद को मार डाला।

16उस वक़्त उसने नारा लगाया, “गधे के जबड़े से मैंने उनके ढेर लगाए हैं! गधे के जबड़े से मैंने हज़ार मर्दों को मार डाला है!” 17इसके बाद उसने गधे का यह जबड़ा फेंक दिया। उस जगह का नाम रामत-लही यानी जबड़ा पहाड़ी पड़ गया।

18समसून को वहाँ बड़ी प्यास लगी। उसने रब को पुकारकर कहा, “तू ही ने अपने ख़ादिम के हाथ से इसराईल को यह बड़ी नजात दिलाई है। लेकिन अब मैं प्यास से मरकर नामख़तून दुश्मन के हाथ में आ जाऊँगा।” 19तब अल्लाह ने लही में ज़मीन को छेदा, और गढ़े से पानी फूट निकला। समसून उसका पानी पीकर दुबारा ताज़ादम हो गया। यों उस चश्मे का नाम ऐन-हक़्क़ोरे यानी पुकारनेवाले का चश्मा पड़ गया। आज भी वह लही में मौजूद है।

20फ़िलिस्तियों के दौर में समसून 20 साल तक इसराईल का क़ाज़ी रहा।

समसून ग़ज़्ज़ा का दरवाज़ा उठा ले जाता है

16 एक दिन समसून फ़िलिस्ती शहर ग़ज़्ज़ा में आया। वहाँ वह एक कसबी को देखकर उसके घर में दाख़िल हुआ। 2जब शहर के बाशिंदों को इत्तला मिली कि समसून शहर में है तो उन्होंने कसबी के घर को घेर लिया। साथ साथ वह रात के वक़्त शहर के दरवाज़े पर ताक में रहे। फ़ैसला यह हुआ, “रात के वक़्त हम कुछ नहीं करेंगे, जब पौ फटेगी तब उसे मार डालेंगे।”

3समसून अब तक कसबी के घर में सो रहा था। लेकिन आधी रात को वह उठकर शहर के दरवाज़े के पास गया और दोनों किवाड़ों को कुंडे और दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं समेत उखाड़कर अपने कंधों पर रख लिया। यों चलते चलते वह सब कुछ उस पहाड़ी की चोटी पर ले गया जो हबरून के मुक़ाबिल है।

समसून और दलीला

4कुछ देर के बाद समसून एक औरत की मुहब्बत में गिरिफ़्तार हो गया जो वादीए-सूरिक़ में रहती थी। उसका नाम दलीला था। 5यह सुनकर फ़िलिस्ती सरदार उसके पास आए और कहने लगे, “समसून को उकसाएँ कि वह आपको अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताए। हम जानना चाहते हैं कि हम किस तरह उस पर ग़ालिब आकर उसे यों बाँध सकें कि वह हमारे क़ब्ज़े में रहे। अगर आप यह मालूम कर सकें तो हममें से हर एक आपको चाँदी के 1,100 सिक्के देगा।”

6चुनाँचे दलीला ने समसून से सवाल किया, “मुझे अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताएँ। क्या आपको किसी ऐसी चीज़ से बाँधा जा सकता है जिसे आप तोड़ नहीं सकते?” 7समसून ने जवाब दिया, “अगर मुझे जानवरों की सात ताज़ा नसों से बाँधा जाए तो फिर मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 8फ़िलिस्ती सरदारों ने दलीला को सात ताज़ा नसें मुहैया कर दीं, और उसने समसून को उनसे बाँध लिया। 9कुछ फ़िलिस्ती आदमी साथवाले कमरे में छुप गए। फिर दलीला चिल्ला उठी, “समसून, फ़िलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” यह सुनकर समसून ने नसों को यों तोड़ दिया जिस तरह डोरी टूट

जाती है जब आग में से गुज़रती है। चुनाँचे उस की ताक़त का पोल न खुला।

10दलीला का मुँह लटक गया। "आपने झूट बोलकर मुझे बेवुक़ूफ़ बनाया है। अब आएँ, मेहरबानी करके मुझे बताएँ कि आपको किस तरह बाँधा जा सकता है।" 11समसून ने जवाब दिया, "अगर मुझे ग़ैरइस्तेमालशुदा रस्सों से बाँधा जाए तो फिर ही मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।" 12दलीला ने नए रस्से लेकर उसे उनसे बाँध लिया। इस मरतबा भी फ़िलिस्ती साथवाले कमरे में छुप गए थे। फिर दलीला चिल्ला उठी, "समसून, फ़िलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!" लेकिन इस बार भी समसून ने रस्सों को यों तोड़ लिया जिस तरह आम आदमी डोरी को तोड़ लेता है।

13दलीला ने शिकायत की, "आप बार बार झूट बोलकर मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। अब मुझे बताएँ कि आपको किस तरह बाँधा जा सकता है।" समसून ने जवाब दिया, "लाज़िम है कि आप मेरी सात ज़ुल्फ़ों को खड्डी के ताने के साथ बुनें। फिर ही आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।" 14जब समसून सो रहा था तो दलीला ने ऐसा ही किया। उस की सात ज़ुल्फ़ों को ताने के साथ बुनकर उसने उसे शटल के ज़रीए खड्डी के साथ लगाया। फिर वह चिल्ला उठी, "समसून, फ़िलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!" समसून जाग उठा और अपने बालों को शटल समेत खड्डी से निकाल लिया।

15यह देखकर दलीला ने मुँह फूलाकर मलामत की, "आप किस तरह दावा कर सकते हैं कि मुझसे मुहब्बत रखते हैं? अब आपने तीन मरतबा मेरा मज़ाक़ उड़ाकर मुझे अपनी बड़ी ताक़त का भेद नहीं बताया।" 16रोज़ बरोज़ वह अपनी बातों से उस की नाक में दम करती रही। आख़िरकार समसून इतना तंग आ गया कि उसका जीना दूभर हो गया। 17फिर उसने उसे खुलकर बात बताई, "मैं पैदाइश ही से अल्लाह के लिए मख़सूस हूँ, इसलिए मेरे बालों को कभी नहीं काटा गया। अगर सर को मुँडवाया जाए तो मेरी ताक़त जाती रहेगी और मैं हर दूसरे आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।"

18दलीला ने जान लिया कि अब समसून ने मुझे पूरी हक़ीक़त बताई है। उसने फ़िलिस्ती सरदारों को इत्तला दी, "आओ, क्योंकि इस मरतबा उसने मुझे अपने दिल की हर बात बताई है।" यह सुनकर वह मुक़र्ररा चाँदी अपने साथ लेकर दलीला के पास आए।

19दलीला ने समसून का सर अपनी गोद में रखकर उसे सुला दिया। फिर उसने एक आदमी को बुलाकर समसून की सात ज़ुल्फ़ों को मुँडवाया। यों वह उसे पस्त करने लगी, और उस की ताक़त जाती रही। 20फिर वह चिल्ला उठी, "समसून, फ़िलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!" समसून जाग उठा और सोचा, "मैं पहले की तरह अब भी अपने आपको बचाकर बंधन को तोड़ दूँगा।" अफ़सोस, उसे मालूम नहीं था कि रब ने उसे छोड़ दिया है। 21फ़िलिस्तियों ने उसे पकड़कर उस की आँखें निकाल दीं। फिर वह उसे ग़ज़्ज़ा ले गए जहाँ उसे पीतल की ज़ंजीरों से बाँधा गया। वहाँ वह क़ैदख़ाने की चक्की पीसा करता था।

22लेकिन होते होते उसके बाल दुबारा बढ़ने लगे।

समसून का आख़िरी इंतक़ाम

23एक दिन फ़िलिस्ती सरदार बड़ा जशन मनाने के लिए जमा हुए। उन्होंने अपने देवता दजून को जानवरों की बहुत-सी क़ुरबानियाँ पेश करके अपनी फ़तह की ख़ुशी मनाई। वह बोले, "हमारे देवता ने हमारे दुश्मन समसून को हमारे हवाले कर दिया है।" 24समसून को देखकर अवाम ने दजून की तमजीद करके कहा, "हमारे देवता ने हमारे दुश्मन को हमारे हवाले कर दिया है! जिसने हमारे मुल्क को तबाह किया और हममें से इतने लोगों को मार डाला वह अब हमारे क़ाबू में आ गया है!" 25इस क़िस्म की बातें करते करते

उनकी ख़ुशी की इंतहा न रही। तब वह चिल्लाने
लगे, “समसून को बुलाओ ताकि वह हमारे दिलों
को बहलाए।”
चुनाँचे उसे उनकी तफ़रीह के लिए जेल से
लाया गया और दो सतूनों के दरमियान खड़ा कर
दिया गया। 26समसून उस लड़के से मुख़ातिब
हुआ जो उसका हाथ पकड़कर उस की राहनुमाई
कर रहा था, “मुझे छत को उठानेवाले सतूनों
के पास ले जाओ ताकि मैं उनका सहारा लूँ।”
27इमारत मर्दों और औरतों से भरी थी। फ़िलिस्ती
सरदार भी सब आए हुए थे। सिर्फ़ छत पर समसून
का तमाशा देखनेवाले तक़रीबन 3,000 अफ़राद
थे।

28फिर समसून ने दुआ की, “ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, मुझे याद कर। बस एक दफ़ा और मुझे
पहले की तरह क़ुव्वत अता फ़रमा ताकि मैं एक ही
वार से फ़िलिस्तियों से अपनी आँखों का बदला ले
सकूँ।” 29यह कहकर समसून ने उन दो मरकज़ी
सतूनों को पकड़ लिया जिन पर छत का पूरा
वज़न था। उनके दरमियान खड़े होकर उसने पूरी
ताक़त से ज़ोर लगाया 30और दुआ की, “मुझे
फ़िलिस्तियों के साथ मरने दे!” अचानक सतून
हिल गए और छत धड़ाम से फ़िलिस्तियों के
तमाम सरदारों और बाक़ी लोगों पर गिर गई। इस
तरह समसून ने पहले की निसबत मरते वक़्त कहीं
ज़्यादा फ़िलिस्तियों को मार डाला।

31समसून के भाई और बाक़ी घरवाले आए
और उस की लाश को उठाकर उसके बाप मनोहा
की क़ब्र के पास ले गए। वहाँ यानी सुरआ
और इस्ताल के दरमियान उन्होंने उसे दफ़नाया।
समसून 20 साल इसराईल का क़ाज़ी रहा।

मीकाह का बुत

17 इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में एक
आदमी रहता था जिसका नाम
मीकाह था। 2एक दिन उसने अपनी माँ से बात
की, “आपके चाँदी के 1,100 सिक्के चोरी हो
गए थे, ना? उस वक़्त आपने मेरे सामने ही चोर
पर लानत भेजी थी। अब देखें, वह पैसे मेरे पास
हैं। मैं ही चोर हूँ।” यह सुनकर माँ ने जवाब दिया,
“मेरे बेटे, रब तुझे बरकत दे!” 3मीकाह ने उसे
तमाम पैसे वापस कर दिए, और माँ ने एलान
किया, “अब से यह चाँदी रब के लिए मख़सूस
हो! मैं आपके लिए तराशा और ढाला हुआ बुत
बनवाकर चाँदी आपको वापस कर देती हूँ।”

4चुनाँचे जब बेटे ने पैसे वापस कर दिए तो
माँ ने उसके 200 सिक्के सुनार के पास ले
जाकर लकड़ी का तराशा और ढाला हुआ बुत
बनवाया। मीकाह ने यह बुत अपने घर में खड़ा
किया, 5क्योंकि उसका अपना मक़दिस था।
उसने मज़ीद बुत और एक अफ़ोद[a] भी बनवाया
और फिर एक बेटे को अपना इमाम बना लिया।
6उस ज़माने में इसराईल का कोई बादशाह नहीं
था बल्कि हर कोई वही कुछ करता जो उसे दुरुस्त
लगता था।

7उन दिनों में लावी के क़बीले का एक जवान
आदमी यहूदाह के क़बीले के शहर बैत-लहम में
आबाद था। 8अब वह शहर को छोड़कर रिहाइश
की कोई और जगह तलाश करने लगा। इफ़राईम
के पहाड़ी इलाक़े में से सफ़र करते करते वह
मीकाह के घर पहुँच गया। 9मीकाह ने पूछा,
“आप कहाँ से आए हैं?” जवान ने जवाब दिया,
“मैं लावी हूँ। मैं यहूदाह के शहर बैत-लहम का
रहनेवाला हूँ लेकिन रिहाइश की किसी और जगह
की तलाश में हूँ।”

10मीकाह बोला, “यहाँ मेरे पास अपना घर
बनाकर मेरे बाप और इमाम बनें। तब आपको
साल में चाँदी के दस सिक्के और ज़रूरत के
मुताबिक़ कपड़े और ख़ुराक मिलेगी।”

[a]आम तौर पर इबरानी में अफ़ोद का मतलब इमामे-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुरूज 28:4), लेकिन यहाँ इससे मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

11लावी मुत्तफ़िक़ हुआ। वह वहाँ आबाद हुआ,
और मीकाह ने उसके साथ बेटों का-सा सुलूक
किया। 12उसने उसे इमाम मुक़र्रर करके सोचा,
13"अब रब मुझ पर मेहरबानी करेगा, क्योंकि
लावी मेरा इमाम बन गया है।"

दान का क़बीला ज़मीन की तलाश करता है

18 उन दिनों में इसराईल का बाद-
शाह नहीं था। और अब तक दान के
क़बीले को अपना कोई क़बायली इलाक़ा नहीं
मिला था, इसलिए उसके लोग कहीं आबाद होने
की तलाश में रहे। 2उन्होंने अपने ख़ानदानों में से
सुरआ और इस्ताल के पाँच तजरबाकार फ़ौजियों
को चुनकर उन्हें मुल्क की तफ़तीश करने के लिए
भेज दिया। यह मर्द इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में
से गुज़रकर मीकाह के घर के पास पहुँच गए। जब
वह वहाँ रात के लिए ठहरे हुए थे 3तो उन्होंने देखा
कि जवान लावी बैत-लहम की बोली बोलता है।
उसके पास जाकर उन्होंने पूछा, "कौन आपको
यहाँ लाया है? आप यहाँ क्या करते हैं? और
आपका इस घर में रहने का क्या मक़सद है?"
4लावी ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, "मीकाह ने
मुझे नौकरी देकर अपना इमाम बना लिया है।"
5फिर उन्होंने उससे गुज़ारिश की, "अल्लाह से
दरियाफ़्त करें कि क्या हमारे सफ़र का मक़सद
पूरा हो जाएगा या नहीं?" 6लावी ने उन्हें तसल्ली
दी, "सलामती से आगे बढ़ें। आपके सफ़र का
मक़सद रब को क़बूल है, और वह आपके साथ
है।"

7तब यह पाँच आदमी आगे निकले और सफ़र
करते करते लैस पहुँच गए। उन्होंने देखा कि
वहाँ के लोग सैदानियों की तरह पुरसुकून और
बेफ़िकर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। कोई नहीं था जो
उन्हें दबाता या उन पर ज़ुल्म करता। यह भी
मालूम हुआ कि अगर उन पर हमला किया जाए
तो उनका इत्तहादी शहर सैदा उनसे इतनी दूर है
कि उनकी मदद नहीं कर सकेगा, और क़रीब कोई
इत्तहादी नहीं है जो उनका साथ दे। 8वह पाँच
जासूस सुरआ और इस्ताल वापस चले गए। जब
वहाँ पहुँचे तो दूसरों ने पूछा, "सफ़र कैसा रहा?"
9जासूसों ने जवाब में कहा, "आएँ, हम जंग के
लिए निकलें! हमें एक बेहतरीन इलाक़ा मिल
गया है। आप क्यों झिजक रहे हैं? जल्दी करें,
हम निकलें और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लें!
10वहाँ के लोग बेफ़िकर हैं और हमले की तवक़्क़ो
ही नहीं करते। और ज़मीन वसी और ज़रख़ेज़ है,
उसमें किसी भी चीज़ की कमी नहीं है। अल्लाह
आपको वह मुल्क देने का इरादा रखता है।"

दान के मर्द मीकाह का बुत इमाम समेत छीन लेते हैं

11दान के क़बीले के 600 मुसल्लह आदमी
सुरआ और इस्ताल से रवाना हुए। 12रास्ते
में उन्होंने अपनी लशकरगाह यहूदाह के शहर
क़िरियत-यारीम के क़रीब लगाई। इसलिए यह
जगह आज तक महने-दान यानी दान की
ख़ैमागाह कहलाती है। 13वहाँ से वह इफ़राईम
के पहाड़ी इलाक़े में दाख़िल हुए और चलते चलते
मीकाह के घर पहुँच गए।

14जिन पाँच मर्दों ने लैस की तफ़तीश की थी
उन्होंने अपने साथियों से कहा, "क्या आपको
मालूम है कि इन घरों में एक अफ़ोद, एक तराशा
और ढाला हुआ बुत और दीगर कई बुत हैं? अब
सोच लें कि क्या किया जाए।"

15पाँचों ने मीकाह के घर में दाख़िल होकर
जवान लावी को सलाम किया 16जबकि बाक़ी
600 मुसल्लह मर्द गेट पर खड़े रहे। 17जब लावी
बाहर खड़े मर्दों के पास गया तो इन पाँचों ने अंदर
घुसकर तराशा और ढाला हुआ बुत, अफ़ोद और
बाक़ी बुत छीन लिए। 18यह देखकर लावी चीख़ने
लगा, "क्या कर रहे हो!"

19उन्होंने कहा, "चुप! कोई बात न करो
बल्कि हमारे साथ जाकर हमारे बाप और इमाम
बनो। हमारे साथ जाओगे तो पूरे क़बीले के इमाम
बनोगे। क्या यह एक ही ख़ानदान की ख़िदमत
करने से कहीं बेहतर नहीं होगा?" 20यह सुनकर

इमाम ख़ुश हुआ। वह अफ़ोद, तराशा हुआ बुत
और बाक़ी बुतों को लेकर मुसाफ़िरों में शरीक हो
गया। 21फिर दान के मर्द रवाना हुए। उनके बाल-
बच्चे, मवेशी और क़ीमती मालो-मता उनके आगे
आगे था।

22जब मीकाह को बात का पता चला तो वह
अपने पड़ोसियों को जमा करके उनके पीछे दौड़ा।
इतने में दान के लोग घर से दूर निकल चुके थे।
23जब वह सामने नज़र आए तो मीकाह और
उसके साथियों ने चीख़ते-चिल्लाते उन्हें रुकने
को कहा। दान के मर्दों ने पीछे देखकर मीकाह
से कहा, “क्या बात है? अपने इन लोगों को
बुलाकर क्यों ले आए हो?” 24मीकाह ने जवाब
दिया, “तुम लोगों ने मेरे बुतों को छीन लिया गो
मैंने उन्हें ख़ुद बनवाया है। मेरे इमाम को भी साथ
ले गए हो। मेरे पास कुछ नहीं रहा तो अब तुम
पूछते हो कि क्या बात है?”

25दान के अफ़राद बोले, “ख़ामोश! ख़बरदार,
हमारे कुछ लोग तेज़मिज़ाज हैं। ऐसा न हो कि
वह ग़ुस्से में आकर तुमको तुम्हारे ख़ानदान समेत
मार डालें।” 26यह कहकर उन्होंने अपना सफ़र
जारी रखा। मीकाह ने जान लिया कि मैं अपने
थोड़े आदमियों के साथ उनका मुक़ाबला नहीं कर
सकूँगा, इसलिए वह मुड़कर अपने घर वापस
चला गया। 27उसके बुत दान के क़ब्ज़े में रहे,
और इमाम भी उनमें टिक गया। फिर वह लैस के
इलाक़े में दाख़िल हुए जिसके बाशिंदे पुरसुकून
और बेफ़िकर ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। दान के फ़ौजी
उन पर टूट पड़े और सबको तलवार से क़त्ल
करके शहर को भस्म कर दिया। 28किसी ने भी
उनकी मदद न की, क्योंकि सैदा बहुत दूर था,
और क़रीब कोई इत्तहादी नहीं था जो उनका साथ
देता। यह शहर बैत-रहोब की वादी में था। दान
के अफ़राद शहर को अज़ सरे-नौ तामीर करके
उसमें आबाद हुए। 29और उन्होंने उसका नाम
अपने क़बीले के बानी के नाम पर दान रखा (दान
इसराईल का बेटा था)।

30वहाँ उन्होंने तराशा हुआ बुत रखकर पूजा के
इंतज़ाम पर यूनतन मुक़र्रर किया जो मूसा के बेटे
जैरसोम की औलाद में से था। जब यूनतन फ़ौत
हुआ तो उस की औलाद क़ौम की जिलावतनी
तक दान के क़बीले में यही ख़िदमत करती रही।
31मीकाह का बनवाया हुआ बुत तब तक दान
में रहा जब तक अल्लाह का घर सैला में था।

एक लावी की अपनी दाश्ता के साथ सुलह

19 उस ज़माने में जब इसराईल का कोई
बादशाह नहीं था एक लावी ने अपने
घर में दाश्ता रखी जो यहूदाह के शहर बैत-लहम
की रहनेवाली थी। आदमी इफ़राईम के पहाड़ी
इलाक़े के किसी दूर-दराज़ कोने में आबाद था।
2लेकिन एक दिन औरत मर्द से नाराज़ हुई और
मैके वापस चली गई। चार माह के बाद 3लावी दो
गधे और अपने नौकर को लेकर बैत-लहम के लिए
रवाना हुआ ताकि दाश्ता का ग़ुस्सा ठंडा करके
उसे वापस आने पर आमादा करे।

जब उस की मुलाक़ात दाश्ता से हुई तो वह
उसे अपने बाप के घर में ले गई। उसे देखकर
सुसर इतना ख़ुश हुआ 4कि उसने उसे जाने न
दिया। दामाद को तीन दिन वहाँ ठहरना पड़ा जिस
दौरान सुसर ने उस की ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की।
5चौथे दिन लावी सुबह-सवेरे उठकर अपनी दाश्ता
के साथ रवाना होने की तैयारियाँ करने लगा।
लेकिन सुसर उसे रोककर बोला, “पहले थोड़ा-
बहुत खाकर ताज़ादम हो जाएँ, फिर चले जाना।”
6दोनों दुबारा खाने-पीने के लिए बैठ गए।

सुसर ने कहा, “बराहे-करम एक और रात यहाँ
ठहरकर अपना दिल बहलाएँ।” 7मेहमान जाने
की तैयारियाँ करने तो लगा, लेकिन सुसर ने उसे
एक और रात ठहरने पर मजबूर किया। चुनाँचे वह
हार मानकर रुक गया।

8पाँचवें दिन आदमी सुबह-सवेरे उठा और जाने
के लिए तैयार हुआ। सुसर ने ज़ोर दिया, “पहले
कुछ खाना खाकर ताज़ादम हो जाएँ। आप दोपहर

के वक़्त भी जा सकते हैं।” चुनाँचे दोनों खाने के लिए बैठ गए।

9दोपहर के वक़्त लावी अपनी बीवी और नौकर के साथ जाने के लिए उठा। सुसर एतराज़ करने लगा, “अब देखें, दिन ढलनेवाला है। रात ठहरकर अपना दिल बहलाएँ। बेहतर है कि आप कल सुबह-सवेरे ही उठकर घर के लिए रवाना हो जाएँ।”
10-11लेकिन अब लावी किसी भी सूरत में एक और रात ठहरना नहीं चाहता था। वह अपने गधों पर ज़ीन कसकर अपनी बीवी और नौकर के साथ रवाना हुआ।

चलते चलते दिन ढलने लगा। वह यबूस यानी यरूशलम के क़रीब पहुँच गए थे। शहर को देखकर नौकर ने मालिक से कहा, “आएँ, हम यबूसियों के इस शहर में जाकर वहाँ रात गुज़ारें।”
12लेकिन लावी ने एतराज़ किया, “नहीं, यह अजनबियों का शहर है। हमें ऐसी जगह रात नहीं गुज़ारना चाहिए जो इसराईली नहीं है। बेहतर है कि हम आगे जाकर जिबिया की तरफ़ बढ़ें।
13अगर हम जल्दी करें तो हो सकता है कि जिबिया या उससे आगे रामा तक पहुँच सकें। वहाँ आराम से रात गुज़ार सकेंगे।”

14चुनाँचे वह आगे निकले। जब सूरज ग़ुरूब होने लगा तो वह बिनयमीन के क़बीले के शहर जिबिया के क़रीब पहुँच गए
15और रास्ते से हटकर शहर में दाख़िल हुए। लेकिन कोई उनकी मेहमान-नवाज़ी नहीं करना चाहता था, इसलिए वह शहर के चौक में रुक गए।

16फिर अंधेरे में एक बूढ़ा आदमी वहाँ से गुज़रा। असल में वह इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े का रहनेवाला था और जिबिया में अजनबी था, क्योंकि बाक़ी बाशिंदे बिन-यमीनी थे। अब वह खेत में अपने काम से फ़ारिग़ होकर शहर में वापस आया था।
17मुसाफ़िरों को चौक में देखकर उसने पूछा, “आप कहाँ से आए और कहाँ जा रहे हैं?”
18लावी ने जवाब दिया, “हम यहूदाह के बैत-लहम से आए हैं और इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के एक दूर-दराज़ कोने तक सफ़र कर रहे हैं। वहाँ मेरा घर है और वहीं से मैं रवाना होकर बैत-लहम चला गया था। इस वक़्त मैं रब के घर जा रहा हूँ। लेकिन यहाँ जिबिया में कोई नहीं जो हमारी मेहमान-नवाज़ी करने के लिए तैयार हो,
19हालाँकि हमारे पास खाने की तमाम चीज़ें मौजूद हैं। गधों के लिए भूसा और चारा है, और हमारे लिए भी काफ़ी रोटी और मै है। हमें किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है।”

20बूढ़े ने कहा, “फिर मैं आपको अपने घर में ख़ुशआमदीद कहता हूँ। अगर आपको कोई चीज़ दरकार हो तो मैं उसे मुहैया करूँगा। हर सूरत में चौक में रात मत गुज़ारना।”
21वह मुसाफ़िरों को अपने घर ले गया और गधों को चारा खिलाया। मेहमानों ने अपने पाँव धोकर खाना खाया और मै पी।

जिबिया के लोगों का जुर्म

22वह यों खाने की रिफ़ाक़त से लुत्फ़-अंदोज़ हो रहे थे कि जिबिया के कुछ शरीर मर्द घर को घेरकर दरवाज़े को ज़ोर से खटखटाने लगे। वह चिल्लाए, “उस आदमी को बाहर ला जो तेरे घर में ठहरा हुआ है ताकि हम उससे ज़्यादती करें!”
23बूढ़ा आदमी बाहर गया ताकि उन्हें समझाए, “नहीं, भाइयो, ऐसा शैतानी अमल मत करना। यह अजनबी मेरा मेहमान है। ऐसी शर्मनाक हरकत मत करना!
24इससे पहले मैं अपनी कुँवारी बेटी और मेहमान की दाश्ता को बाहर ले आता हूँ। उन्हीं से ज़्यादती करें। जो जी चाहे उनके साथ करें, लेकिन आदमी के साथ ऐसी शर्मनाक हरकत न करें।”

25लेकिन बाहर के मर्दों ने उस की न सुनी। तब लावी अपनी दाश्ता को पकड़कर बाहर ले गया और उसके पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया। शहर के आदमी पूरी रात उस की बेहुरमती करते रहे। जब पौ फटने लगी तो उन्होंने उसे फ़ारिग़ कर दिया।
26सूरज के तुलू होने से पहले औरत उस घर के पास वापस आई जिसमें शौहर ठहरा हुआ था।

दरवाज़े तक तो वह पहुँच गई लेकिन फिर गिरकर वहीं की वहीं पड़ी रही।

जब दिन चढ़ गया 27तो लावी जाग उठा और सफ़र करने की तैयारियाँ करने लगा। जब दरवाज़ा खोला तो क्या देखता है कि दाश्ता सामने ज़मीन पर पड़ी है और हाथ दहलीज़ पर रखे हैं। 28वह बोला, "उठो, हम चलते हैं।" लेकिन दाश्ता ने जवाब न दिया। यह देखकर आदमी ने उसे गधे पर लाद लिया और अपने घर चला गया।

29जब पहुँचा तो उसने छुरी लेकर औरत की लाश को 12 टुकड़ों में काट लिया, फिर उन्हें इसराईल की हर जगह भेज दिया। 30जिसने भी यह देखा उसने घबराकर कहा, "ऐसा जुर्म हमारे दरमियान कभी नहीं हुआ। जब से हम मिसर से निकलकर आए हैं ऐसी हरकत देखने में नहीं आई। अब लाज़िम है कि हम ग़ौर से सोचें और एक दूसरे से मशवरा करके अगले क़दम के बारे में फ़ैसला करें।"

जिबिया को सज़ा देने का फ़ैसला

20 तमाम इसराईली एक दिल होकर मिसफ़ाह में रब के हुज़ूर जमा हुए। शिमाल के दान से लेकर जुनूब के बैर-सबा तक सब आए। दरियाए-यरदन के पार जिलियाद से भी लोग आए। 2इसराईली क़बीलों के सरदार भी आए। उन्होंने मिलकर एक बड़ी फ़ौज तैयार की, तलवारों से लैस 4,00,000 मर्द जमा हुए। 3बिनयमीनियों को इस जमात के बारे में इत्तला मिली।

इसराईलियों ने पूछा, "हमें बताएँ कि यह हैबतनाक जुर्म किस तरह सरज़द हुआ?" 4मक़तूला के शौहर ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, "मैं अपनी दाश्ता के साथ जिबिया में आ ठहरा जो बिनयमीनियों के इलाक़े में है। हम वहाँ रात गुज़ारना चाहते थे। 5यह देखकर शहर के मर्दों ने मेरे मेज़बान के घर को घेर लिया ताकि मुझे क़त्ल करें। मैं तो बच गया, लेकिन मेरी दाश्ता से इतनी ज़्यादती हुई कि वह मर गई। 6यह देखकर मैंने उस की लाश को टुकड़े टुकड़े करके यह टुकड़े इसराईल की मीरास की हर जगह भेज दिए ताकि हर एक को मालूम हो जाए कि हमारे मुल्क में कितना घिनौना जुर्म सरज़द हुआ है। 7इस पर आप सब यहाँ जमा हुए हैं। इसराईल के मर्दो, अब लाज़िम है कि आप एक दूसरे से मशवरा करके फ़ैसला करें कि क्या करना चाहिए।"

8तमाम मर्द एक दिल होकर खड़े हुए। सबका फ़ैसला था, " हममें से कोई भी अपने घर वापस नहीं जाएगा 9जब तक जिबिया को मुनासिब सज़ा न दी जाए। लाज़िम है कि हम फ़ौरन शहर पर हमला करें और इसके लिए क़ुरा डालकर रब से हिदायत लें। 10हम यह फ़ैसला भी करें कि कौन कौन हमारी फ़ौज के लिए खाने-पीने का बंदोबस्त कराएगा। इस काम के लिए हममें से हर दसवाँ आदमी काफ़ी है। बाक़ी सब लोग सीधे जिबिया से लड़ने जाएँ ताकि उस शर्मनाक जुर्म का मुनासिब बदला लें जो इसराईल में हुआ है।"

11यों तमाम इसराईली मुत्तहिद होकर जिबिया से लड़ने के लिए गए। 12रास्ते में उन्होंने बिनयमीन के हर कुंबे को पैग़ाम भिजवाया, "आपके दरमियान घिनौना जुर्म हुआ है। 13अब जिबिया के इन शरीर आदमियों को हमारे हवाले करें ताकि हम उन्हें सज़ाए-मौत देकर इसराईल में से बुराई मिटा दें।"

लेकिन बिनयमीनी इसके लिए तैयार न हुए। 14वह पूरे क़बायली इलाक़े से आकर जिबिया में जमा हुए ताकि इसराईलियों से लड़ें। 15उसी दिन उन्होंने अपनी फ़ौज का बंदोबस्त किया। जिबिया के 700 तजरबाकार फ़ौजियों के अलावा तलवारों से लैस 26,000 अफ़राद थे। 16इन फ़ौजियों में से 700 ऐसे मर्द भी थे जो अपने बाएँ हाथ से फ़लाख़न चलाने की इतनी महारत रखते थे कि पत्थर बाल जैसे छोटे निशाने पर भी लग जाता था। 17दूसरी तरफ़ इसराईल के 4,00,000 फ़ौजी खड़े हुए, और हर एक के पास तलवार थी।

18पहले इसराईली बैतेल चले गए। वहाँ उन्होंने अल्लाह से दरियाफ़्त किया, "कौन-सा क़बीला हमारे आगे आगे चले जब हम बिनयमीनियों पर हमला करें?" रब ने जवाब दिया, "यहूदाह सबसे आगे चले।"

बिनयमीन के ख़िलाफ़ जंग

19अगले दिन इसराईली रवाना हुए और जिबिया के क़रीब पहुँचकर अपनी लश-
करगाह लगाई। 20फिर वह हमला के लिए निकले
और तरतीब से लड़ने के लिए खड़े हो गए। 21यह
देखकर बिनयमीनी शहर से निकले और उन पर टूट पड़े। नतीजे में 22,000 इसराईली शहीद हो गए।

22-23इसराईली बैतेल चले गए और शाम तक रब के हुज़ूर रोते रहे। उन्होंने रब से पूछा, "क्या हम दुबारा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने जाएँ?" रब ने जवाब दिया, "हाँ, उन पर हमला करो!" यह सुनकर इसराईलियों का हौसला बढ़ गया और वह अगले दिन वहीं खड़े हो गए जहाँ
पहले दिन खड़े हुए थे। 24लेकिन जब वह शहर के
क़रीब पहुँचे 25तो बिनयमीनी पहले की तरह शहर से निकलकर उन पर टूट पड़े। उस दिन तलवार से लैस 18,000 इसराईली शहीद हो गए।

26फिर इसराईल का पूरा लशकर बैतेल चला गया। वहाँ वह शाम तक रब के हुज़ूर रोते और रोज़ा रखते रहे। उन्होंने रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और सलामती की क़ुरबानियाँ पेश
करके 27उससे दरियाफ़्त किया कि हम क्या करें। (उस वक़्त अल्लाह के अहद का संदूक़ बैतेल में
था 28जहाँ फ़ीनहास बिन इलियज़र बिन हारून इमाम था।) इसराईलियों ने पूछा, "क्या हम एक और मरतबा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने जाएँ या इससे बाज़ आएँ?" रब ने जवाब दिया, "उन पर हमला करो, क्योंकि कल ही मैं उन्हें तुम्हारे हवाले कर दूँगा।"

बिनयमीन का सत्यानास

29इस दफ़ा कुछ इसराईली जिबिया के इर्दगिर्द
घात में बैठ गए। 30बाक़ी अफ़राद पहले दो दिनों की-सी तरतीब के मुताबिक़ लड़ने के लिए खड़े
हो गए। 31बिनयमीनी दुबारा शहर से निकलकर उन पर टूट पड़े। जो रास्ते बैतेल और जिबिया की तरफ़ ले जाते हैं उन पर और खुले मैदान में उन्होंने तक़रीबन 30 इसराईलियों को मार डाला।
यों लड़ते लड़ते वह शहर से दूर होते गए। 32वह
पुकारे, "अब हम उन्हें पहली दो मरतबा की तरह शिकस्त देंगे!"

लेकिन इसराईलियों ने मनसूबा बाँध लिया था, "हम उनके आगे आगे भागते हुए उन्हें शहर से दूर
रास्तों पर खींच लेंगे।" 33यों वह भागने लगे और
बिनयमीनी उनके पीछे पड़ गए। लेकिन बाल-तमर के क़रीब इसराईली रुककर मुड़ गए और उनका सामना करने लगे। अब बाक़ी इसराईली जो जिबा के इर्दगिर्द और खुले मैदान में घात में बैठे थे अपनी छुपने की जगहों से निकल
आए। 34अचानक जिबिया के बिनयमीनियों को
10,000 बेहतरीन फ़ौजियों का सामना करना पड़ा, उन मर्दों का जो पूरे इसराईल से चुने गए थे। बिनयमीनी उनसे ख़ूब लड़ने लगे, लेकिन उनकी आँखें अभी इस बात के लिए बंद थीं कि
उनका अंजाम क़रीब आ गया है। 35उस दिन
इसराईलियों ने रब की मदद से फ़तह पाकर तलवार से लैस 25,100 बिनयमीनी फ़ौजियों
को मौत के घाट उतार दिया। 36तब बिनयमीनियों
ने जान लिया कि दुश्मन हम पर ग़ालिब आ गए हैं। क्योंकि इसराईली फ़ौज ने अपने भाग जाने से उन्हें जिबिया से दूर खींच लिया था ताकि शहर के इर्दगिर्द घात में बैठे मर्दों को शहर पर हमला करने
का मौक़ा मुहैया करें। 37तब यह मर्द निकलकर
शहर पर टूट पड़े और तलवार से तमाम बाशिंदों
को मार डाला, 38-39फिर मनसूबे के मुताबिक़
आग लगाकर धुएँ का बड़ा बादल पैदा किया ताकि भागनेवाले इसराईलियों को इशारा मिल

जाए कि वह मुड़कर बिनयमीनियों का मुक़ाबला करें।

उस वक़्त तक बिनयमीनियों ने तक़रीबन 30 इसराईलियों को मार डाला था, और उनका ख़याल था कि हम उन्हें पहले की तरह शिकस्त दे रहे हैं। 40अचानक उनके पीछे धुएँ का बादल आसमान की तरफ़ उठने लगा। जब बिनयमीनियों ने मुड़कर देखा कि शहर के कोने कोने से धुआँ निकल रहा है 41तो इसराईल के मर्द रुक गए और पलटकर उनका सामना करने लगे।

बिनयमीनी सख़्त घबरा गए, क्योंकि उन्होंने जान लिया कि हम तबाह हो गए हैं। 42-43तब उन्होंने मशरिक़ के रेगिस्तान की तरफ़ फ़रार होने की कोशिश की। लेकिन अब वह मर्द भी उनका ताक़्क़ुब करने लगे जिन्होंने घात में बैठकर जिबिया पर हमला किया था। यों इसराईलियों ने मफ़रूरों को घेरकर मार डाला। 44उस वक़्त बिनयमीन के 18,000 तजरबाकार फ़ौजी हलाक हुए। 45जो बच गए वह रेगिस्तान की चट्टान रिम्मोन की तरफ़ भाग निकले। लेकिन इसराईलियों ने रास्ते में उनके 5,000 अफ़राद को मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद उन्होंने जिदओम तक उनका ताक़्क़ुब किया। मज़ीद 2,000 बिनयमीनी हलाक हुए। 46इस तरह बिनयमीन के कुल 25,000 तलवार से लैस और तजरबाकार फ़ौजी मारे गए।

47सिर्फ़ 600 मर्द बचकर रिम्मोन की चट्टान तक पहुँच गए। वहाँ वह चार महीने तक टिके रहे। 48तब इसराईली ताक़्क़ुब करने से बाज़ आकर बिनयमीन के क़बायली इलाक़े में वापस आए। वहाँ उन्होंने जगह बजगह जाकर सब कुछ मौत के घाट उतार दिया। जो भी उन्हें मिला वह तलवार की ज़द में आ गया, ख़ाह इनसान था या हैवान। साथ साथ उन्होंने तमाम शहरों को आग लगा दी।

बिनयमीनियों को औरतें मिलती हैं

21 जब इसराईली मिसफ़ाह में जमा हुए थे तो सबने क़सम खाकर कहा था, "हम कभी भी अपनी बेटियों का किसी बिनयमीनी मर्द के साथ रिश्ता नहीं बाँधेंगे।" 2अब वह बैतेल चले गए और शाम तक अल्लाह के हुज़ूर बैठे रहे। रो रोकर उन्होंने दुआ की, 3"ऐ रब, इसराईल के ख़ुदा, हमारी क़ौम का एक पूरा क़बीला मिट गया है! यह मुसीबत इसराईल पर क्यों आई?"

4अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठे और क़ुरबानगाह बनाकर उस पर भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। 5फिर वह एक दूसरे से पूछने लगे, "जब हम मिसफ़ाह में रब के हुज़ूर जमा हुए तो हमारी क़ौम में से कौन कौन इजतिमा में शरीक न हुआ?" क्योंकि उस वक़्त उन्होंने क़सम खाकर एलान किया था, "जिसने यहाँ रब के हुज़ूर आने से इनकार किया उसे ज़रूर सज़ाए-मौत दी जाएगी।" 6अब इसराईलियों को बिनयमीनियों पर अफ़सोस हुआ। उन्होंने कहा, "एक पूरा क़बीला मिट गया है। 7अब हम उन थोड़े बचे-खुचे आदमियों को बीवियाँ किस तरह मुहैया कर सकते हैं? हमने तो रब के हुज़ूर क़सम खाई है कि अपनी बेटियों का उनके साथ रिश्ता नहीं बाँधेंगे। 8लेकिन हो सकता है कोई ख़ानदान मिसफ़ाह के इजतिमा में न आया हो। आओ, हम पता करें।" मालूम हुआ कि यबीस-जिलियाद के बाशिंदे नहीं आए थे। 9यह बात फ़ौजियों को गिनने से पता चली, क्योंकि गिनते वक़्त यबीस-जिलियाद का कोई भी शख़्स फ़ौज में नहीं था।

10तब उन्होंने 12,000 फ़ौजियों को चुनकर उन्हें हुक्म दिया, "यबीस-जिलियाद पर हमला करके तमाम बाशिंदों को बाल-बच्चों समेत मार डालो। 11सिर्फ़ कुँवारियों को ज़िंदा रहने दो।"

12फ़ौजियों ने यबीस में 400 कुँवारियाँ पाईं। वह उन्हें सैला ले आए जहाँ इसराईलियों का लशकर ठहरा हुआ था। 13वहाँ से उन्होंने अपने क़ासिदों को रिम्मोन की चट्टान के पास भेजकर बिनयमीनियों के साथ सुलह कर ली। 14फिर बिनयमीन के 600 मर्द रेगिस्तान से वापस आए, और उनके साथ यबीस-जिलियाद

की कुँवारियों की शादी हुई। लेकिन यह सबके लिए काफ़ी नहीं थीं।

15इसराईलियों को बिनयमीन पर अफ़-
सोस हुआ, क्योंकि रब ने इसराईल के क़बीलों
में ख़ला डाल दिया था। 16जमात के बुज़ुर्गों ने
दुबारा पूछा, “हमें बिनयमीन के बाक़ी मर्दों के
लिए कहाँ से बीवियाँ मिलेंगी? उनकी तमाम
औरतें तो हलाक हो गई हैं। 17लाज़िम है कि
उन्हें उनका मौरूसी इलाक़ा वापस मिल जाए।
ऐसा न हो कि वह बिलकुल मिट जाएँ। 18लेकिन
हम अपनी बेटियों की उनके साथ शादी नहीं करा सकते, क्योंकि हमने क़सम खाकर एलान किया है, ‘जो अपनी बेटी का रिश्ता बिनयमीन के किसी मर्द से बाँधेगा उस पर अल्लाह की लानत हो’।”

19यों सोचते सोचते उन्हें आख़िरकार यह
तरकीब सूझी, “कुछ देर के बाद यहाँ सैला में रब की सालाना ईद मनाई जाएगी। सैला बैतेल के शिमाल में, लबूना के जुनूब में और उस रास्ते के मशरिक़ में है जो बैतेल से सिकम तक ले
जाता है। 20अब बिनयमीनी मर्दों के लिए हमारा
मशवरा है कि ईद के दिनों में अंगूर के बाग़ों
में छुपकर घात में बैठ जाएँ। 21जब लड़कियाँ
लोकनाच के लिए सैला से निकलेंगी तो फिर बाग़ों से निकलकर उन पर झपट पड़ना। हर आदमी एक लड़की को पकड़कर उसे अपने घर
ले जाए। 22जब उनके बाप और भाई हमारे पास
आकर आपकी शिकायत करेंगे तो हम उनसे कहेंगे, ‘बिनयमीनियों पर तरस खाएँ, क्योंकि जब हमने यबीस पर फ़तह पाई तो हम उनके लिए काफ़ी औरतें हासिल न कर सके। आप बेक़ुसूर हैं, क्योंकि आपने उन्हें अपनी बेटियों को इरादतन
तो नहीं दिया’।” 23बिनयमीनियों ने बुज़ुर्गों की
इस हिदायत पर अमल किया। ईद के दिनों में जब लड़कियाँ नाच रही थीं तो बिनयमीनियों ने उतनी पकड़ लीं कि उनकी कमी पूरी हो गई। फिर वह उन्हें अपने क़बायली इलाक़े में ले गए और शहरों को दुबारा तामीर करके उनमें बसने
लगे। 24बाक़ी इसराईली भी वहाँ से चले गए। हर
एक अपने क़बायली इलाक़े में वापस चला गया।
25उस ज़माने में इसराईल में कोई बादशाह नहीं
था। हर एक वही कुछ करता जो उसे मुनासिब लगता था।

रूत

इलीमलिक मोआब चला जाता है

1 [1-2]उन दिनों जब क़ाज़ी क़ौम की राहनुमाई किया करते थे तो इसराईल में काल पड़ा। यहूदाह के शहर बैत-लहम में एक इफ़राती आदमी रहता था जिसका नाम इलीमलिक था। काल की वजह से वह अपनी बीवी नओमी और अपने दो बेटों महलोन और किलियोन को लेकर मुल्के-मोआब में जा बसा।

3लेकिन कुछ देर के बाद इलीमलिक फ़ौत हो गया, और नओमी अपने दो बेटों के साथ अकेली रह गई। 4महलोन और किलियोन ने मोआब की दो औरतों से शादी कर ली। एक का नाम उरफ़ा था और दूसरी का रूत। लेकिन तक़रीबन दस साल के बाद 5दोनों बेटे भी जान-बहक़ हो गए। अब नओमी का न शौहर और न बेटे ही रहे थे।

नओमी रूत के साथ वापस चली जाती है

6-7एक दिन नओमी को मुल्के-मोआब में ख़बर मिली कि रब अपनी क़ौम पर रहम करके उसे दुबारा अच्छी फ़सलें दे रहा है। तब वह अपने वतन यहूदाह के लिए रवाना हुई। उरफ़ा और रूत भी साथ चलीं।

जब वह उस रास्ते पर आ गईं जो यहूदाह तक पहुँचाता है 8तो नओमी ने अपनी बहुओं से कहा, "अब अपने माँ-बाप के घर वापस चली जाएँ। रब आप पर उतना रहम करे जितना आपने मरहूमों और मुझ पर किया है। 9वह आपको नए घर और नए शौहर मुहैया करके सुकून दे।"

यह कहकर उसने उन्हें बोसा दिया। दोनों रो पड़ीं 10और एतराज़ किया, "हरगिज़ नहीं, हम आपके साथ आपकी क़ौम के पास जाएँगी।" 11लेकिन नओमी ने इसरार किया, "बेटियो, बस करें और अपने अपने घर वापस चली जाएँ। अब मेरे साथ जाने का क्या फ़ायदा? मुझसे तो मज़ीद कोई बेटा पैदा नहीं होगा जो आपका शौहर बन सके। 12नहीं बेटियो, वापस चली जाएँ। मैं तो इतनी बूढ़ी हो चुकी हूँ कि दुबारा शादी नहीं कर सकती। और अगर इसकी उम्मीद भी होती बल्कि मेरी शादी आज रात को होती और मेरे हाँ बेटे पैदा होते 13तो क्या आप उनके बालिग़ हो जाने तक इंतज़ार कर सकतीं? क्या आप उस वक़्त तक किसी और से शादी करने से इनकार करतीं? नहीं, बेटियो। रब ने अपना हाथ मेरे ख़िलाफ़ उठाया है, तो आप इस लानत की ज़द में क्यों आएँ?"

14तब उरफ़ा और रूत दुबारा रो पड़ीं। उरफ़ा ने अपनी सास को चूमकर अलविदा कहा, लेकिन रूत नओमी के साथ लिपटी रही। 15नओमी ने उसे समझाने की कोशिश की, "देखें, उरफ़ा अपनी क़ौम और अपने देवताओं के पास वापस चली गई है। अब आप भी ऐसा ही करें।"

16लेकिन रूत ने जवाब दिया, "मुझे आपको छोड़कर वापस जाने पर मजबूर न कीजिए। जहाँ

आप जाएँगी मैं जाऊँगी। जहाँ आप रहेंगी वहाँ मैं भी रहूँगी। आपकी क़ौम मेरी क़ौम और आपका ख़ुदा मेरा ख़ुदा है।
17जहाँ आप मरेंगी वहीं मैं मरूँगी और वहीं दफ़न हो जाऊँगी। सिर्फ़ मौत ही मुझे आपसे अलग कर सकती है। अगर मेरा यह वादा पूरा न हो तो अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे!”

18नओमी ने जान लिया कि रूत का साथ जाने का पक्का इरादा है, इसलिए वह ख़ामोश हो गई और उसे समझाने से बाज़ आई।
19वह चल पड़ीं और चलते चलते बैत-लहम पहुँच गईं। जब दाख़िल हुईं तो पूरे शहर में हलचल मच गई। औरतें कहने लगीं, “क्या यह नओमी नहीं है?”

20नओमी ने जवाब दिया, “अब मुझे नओमी[a] मत कहना बल्कि मारा,[b] क्योंकि क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे सख़्त मुसीबत में डाल दिया है।
21यहाँ से जाते वक़्त मेरे हाथ भरे हुए थे, लेकिन अब रब मुझे ख़ाली हाथ वापस ले आया है। चुनाँचे मुझे नओमी मत कहना। रब ने ख़ुद मेरे ख़िलाफ़ गवाही दी है, क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे इस मुसीबत में डाला है।”

22जब नओमी अपनी मोआबी बहू के साथ बैत-लहम पहुँची तो जौ की फ़सल की कटाई शुरू हो चुकी थी।

रूत की बोअज़ से मुलाक़ात

2 बैत-लहम में नओमी के मरहूम शौहर का रिश्तेदार रहता था जिसका नाम बोअज़ था। वह असरो-रसूख़ रखता था, और उस की ज़मीनें थीं।

2एक दिन रूत ने अपनी सास से कहा, “मैं खेतों में जाकर फ़सल की कटाई से बची हुई बालें चुन लूँ। कोई न कोई तो मुझे इसकी इजाज़त देगा।” नओमी ने जवाब दिया, “ठीक है बेटी, जाएँ।”
3रूत किसी खेत में गई और मज़दूरों के पीछे पीछे चलती हुई बची हुई बालें चुनने लगी। उसे मालूम न था कि खेत का मालिक सुसर का रिश्तेदार बोअज़ है।

4इतने में बोअज़ बैत-लहम से पहुँचा। उसने अपने मज़दूरों से कहा, “रब आपके साथ हो।” उन्होंने जवाब दिया, “और रब आपको भी बरकत दे!”
5फिर बोअज़ ने मज़दूरों के इंचार्ज से पूछा, “उस जवान औरत का मालिक कौन है?”
6आदमी ने जवाब दिया, “यह मोआबी औरत नओमी के साथ मुल्के-मोआब से आई है।
7इसने मुझसे मज़दूरों के पीछे चलकर बची हुई बालें चुनने की इजाज़त ली। यह थोड़ी देर झोंपड़ी के साये में आराम करने के सिवा सुबह से लेकर अब तक काम में लगी रही है।”

8यह सुनकर बोअज़ ने रूत से बात की, “बेटी, मेरी बात सुनें! किसी और खेत में बची हुई बालें चुनने के लिए न जाएँ बल्कि यहीं मेरी नौकरानियों के साथ रहें।
9खेत के उस हिस्से पर ध्यान दें जहाँ फ़सल की कटाई हो रही है और नौकरानियों के पीछे पीछे चलती रहें। मैंने आदमियों को आपको छेड़ने से मना किया है। जब भी आपको प्यास लगे तो उन बरतनों से पानी पीना जो आदमियों ने कुएँ से भर रखे हैं।”

10रूत मुँह के बल झुक गई और बोली, “मैं इस लायक़ नहीं कि आप मुझ पर इतनी मेहरबानी करें। मैं तो परदेसी हूँ। आप क्यों मेरी क़दर करते हैं?”
11बोअज़ ने जवाब दिया, “मुझे वह कुछ बताया गया है जो आपने अपने शौहर की वफ़ात से लेकर आज तक अपनी सास के लिए किया है। आप अपने माँ-बाप और अपने वतन को छोड़कर एक क़ौम में बसने आई हैं जिसे पहले से नहीं जानती थीं।
12आप रब इसराईल के ख़ुदा के परों तले पनाह लेने आई हैं। अब वह आपको आपकी नेकी का पूरा अज्र दे।”
13रूत ने कहा, “मेरे आक़ा, अल्लाह करे कि मैं आइंदा भी आपकी मंज़ूरे-नज़र रहूँ। गो मैं आपकी नौकरानियों की

[a] ख़ुशगवार, ख़ुशीवाली।
[b] कड़वी।

हैसियत भी नहीं रखती तो भी आपने मुझसे
शफ़क़त भरी बातें करके मुझे तसल्ली दी है।”
14खाने के वक़्त बोअज़ ने रूत को बुलाकर
कहा, “इधर आकर रोटी खाएँ और अपना नवाला
सिरके में डुबो दें।” रूत उसके मज़दूरों के साथ
बैठ गई, और बोअज़ ने उसे जौ के भुने हुए दाने
दे दिए। रूत ने जी भरकर खाना खाया। फिर भी
कुछ बच गया। 15जब वह काम जारी रखने के
लिए उठी तो बोअज़ ने हुक्म दिया, “उसे पूलों के
दरमियान भी बालें जमा करने दो, और अगर वह
ऐसा करे तो उस की बेइज़्ज़ती मत करना। 16न
सिर्फ़ यह बल्कि काम करते वक़्त इधर-उधर पूलों
की कुछ बालें ज़मीन पर गिरने दो। जब वह उन्हें
जमा करने आए तो उसे मत झिड़कना!”
17रूत ने खेत में शाम तक काम जारी रखा।
जब उसने बालों को कूट लिया तो दानों के
तक़रीबन 13 किलोग्राम निकले। 18फिर वह सब
कुछ उठाकर अपने घर वापस ले आई और सास
को दिखाया। साथ साथ उसने उसे वह भुने हुए
दाने भी दिए जो दोपहर के खाने से बच गए थे।
19नओमी ने पूछा, “आपने यह सब कुछ कहाँ
से जमा किया? बताएँ, आप कहाँ थीं? अल्लाह
उसे बरकत दे जिसने आपकी इतनी क़दर की है!”
रूत ने कहा, “जिस आदमी के खेत में मैंने आज
काम किया उसका नाम बोअज़ है।” 20नओमी
पुकार उठी, “रब उसे बरकत दे! वह तो हमारा
क़रीबी रिश्तेदार है, और शरीअत के मुताबिक़
उसका हक़ है कि वह हमारी मदद करे। अब मुझे
मालूम हुआ है कि अल्लाह हम पर और हमारे
मरहूम शौहरों पर रहम करने से बाज़ नहीं आया!”
21रूत बोली, “उसने मुझसे यह भी कहा कि
कहीं और न जाना बल्कि कटाई के इख़्तिताम तक
मेरे मज़दूरों के पीछे पीछे बालें जमा करना।”
22नओमी ने जवाब में कहा, “बहुत अच्छा।
बेटी, ऐसा ही करें। उस की नौकरानियों के साथ
रहने का यह फ़ायदा है कि आप महफ़ूज़ रहेंगी।
किसी और के खेत में जाएँ तो हो सकता है कि
कोई आपको तंग करे।”
23चुनाँचे रूत जौ और गंदुम की कटाई के पूरे
मौसम में बोअज़ की नौकरानियों के पास जाती
और बची हुई बालें चुनती। शाम को वह अपनी
सास के घर वापस चली जाती थी।

रूत की शादी की कोशिशें

3 एक दिन नओमी रूत से मुख़ातिब हुई,
“बेटी, मैं आपके लिए घर का बंदोबस्त
करना चाहती हूँ, ऐसी जगह जहाँ आपकी
ज़रूरियात आइंदा भी पूरी होती रहेंगी। 2अब देखें,
जिस आदमी की नौकरानियों के साथ आपने बालें
चुनी हैं वह हमारा क़रीबी रिश्तेदार है। आज शाम
को बोअज़ गाहने की जगह पर जौ फटकेगा।
3तो सुन लें, अच्छी तरह नहाकर ख़ुशबूदार तेल
लगा लें और अपना सबसे ख़ूबसूरत लिबास पहन
लें। फिर गाहने की जगह जाएँ। लेकिन उसे पता
न चले कि आप आई हैं। जब वह खाने-पीने से
फ़ारिग़ हो जाएँ 4तो देख लें कि बोअज़ सोने
के लिए कहाँ लेट जाता है। फिर जब वह सो
जाएगा तो वहाँ जाएँ और कम्बल को उसके पैरों
से उतारकर उनके पास लेट जाएँ। बाक़ी जो कुछ
करना है वह आपको उसी वक़्त बताएगा।”
5रूत ने जवाब दिया, “ठीक है। जो कुछ भी
आपने कहा है मैं करूँगी।” 6वह अपनी सास की
हिदायत के मुताबिक़ तैयार हुई और शाम के वक़्त
गाहने की जगह पर पहुँची। 7वहाँ बोअज़ खाने-
पीने और ख़ुशी मनाने के बाद जौ के ढेर के पास
लेटकर सो गया। फिर रूत चुपके से उसके पास
आई। उसके पैरों से कम्बल हटाकर वह उनके
पास लेट गई।
8आधी रात को बोअज़ घबरा गया। टटोल
टटोलकर उसे पता चला कि पैरों के पास औरत
पड़ी है। 9उसने पूछा, “कौन है?” रूत ने जवाब
दिया, “आपकी ख़ादिमा रूत। मेरी एक गुज़ारिश
है। चूँकि आप मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं इसलिए
आपका हक़ है कि मेरी ज़रूरियात पूरी करें।
मेहरबानी करके अपने लिबास का दामन मुझ पर
बिछाकर ज़ाहिर करें कि मेरे साथ शादी करेंगे।”

10बोअज़ बोला, “बेटी, रब आपको बरकत दे!
अब आपने अपने सुसराल से वफ़ादारी का पहले
की निसबत ज़्यादा इज़हार किया है, क्योंकि आप
जवान आदमियों के पीछे न लगीं, ख़ाह ग़रीब हों
या अमीर। 11बेटी, अब फ़िकर न करें। मैं ज़रूर
आपकी यह गुज़ारिश पूरी करूँगा। आख़िर तमाम
मक़ामी लोग जान गए हैं कि आप शरीफ़ औरत
हैं। 12आपकी बात सच है कि मैं आपका क़रीबी
रिश्तेदार हूँ और यह मेरा हक़ है कि आपकी
ज़रूरियात पूरी करूँ। लेकिन एक और आदमी है
जिसका आपसे ज़्यादा क़रीबी रिश्ता है। 13रात
के लिए यहाँ ठहरें! कल मैं उस आदमी से बात
करूँगा। अगर वह आपसे शादी करके रिश्तेदारी
का हक़ अदा करना चाहे तो ठीक है। अगर नहीं
तो रब की क़सम, मैं यह ज़रूर करूँगा। आप सुबह
के वक़्त तक यहीं लेटी रहें।”

14चुनाँचे रूत बोअज़ के पैरों के पास लेटी रही।
लेकिन वह सुबह मुँह अंधेरे उठकर चली गई ताकि
कोई उसे पहचान न सके, क्योंकि बोअज़ ने कहा
था, “किसी को पता न चले कि कोई औरत यहाँ
गाहने की जगह पर मेरे पास आई है।” 15रूत के
जाने से पहले बोअज़ बोला, “अपनी चादर बिछा
दें!” फिर उसने कोई बरतन छः दफ़ा जौ के दानों
से भरकर चादर में डाल दिया और उसे रूत के
सर पर रख दिया। फिर वह शहर में वापस चला
गया।

16जब रूत घर पहुँची तो सास ने पूछा, “बेटी,
वक़्त कैसा रहा?” रूत ने उसे सब कुछ सुनाया
जो बोअज़ ने जवाब में किया था। 17रूत बोली,
“जौ के यह दाने भी उस की तरफ़ से हैं। वह
नहीं चाहता था कि मैं ख़ाली हाथ आपके पास
वापस आऊँ।” 18यह सुनकर नओमी ने रूत
को तसल्ली दी, “बेटी, जब तक कोई नतीजा
न निकले यहाँ ठहर जाएँ। अब यह आदमी
आराम नहीं करेगा बल्कि आज ही मामले का हल
निकालेगा।”

4 बोअज़ शहर के दरवाज़े के पास जाकर
बैठ गया जहाँ बुज़ुर्ग फ़ैसले किया करते
थे। कुछ देर के बाद वह रिश्तेदार वहाँ से गुज़रा
जिसका ज़िक्र बोअज़ ने रूत से किया था। बोअज़
उससे मुख़ातिब हुआ, “दोस्त, इधर आएँ। मेरे
पास बैठ जाएँ।”

रिश्तेदार उसके पास बैठ गया 2तो बोअज़ ने
शहर के दस बुज़ुर्गों को भी साथ बिठाया। 3फिर
उसने रिश्तेदार से बात की, “नओमी मुल्के-
मोआब से वापस आकर अपने शौहर इलीमलिक
की ज़मीन फ़रोख़्त करना चाहती है। 4यह ज़मीन
हमारे ख़ानदान का मौरूसी हिस्सा है, इसलिए
मैंने मुनासिब समझा कि आपको इत्तला दूँ
ताकि आप यह ज़मीन ख़रीद लें। बैत-लहम के
बुज़ुर्ग और साथ बैठे राहनुमा इसके गवाह होंगे।
लाज़िम है कि यह ज़मीन हमारे ख़ानदान का
हिस्सा रहे, इसलिए बताएँ कि क्या आप इसे
ख़रीदकर छुड़ाएँगे? आपका सबसे क़रीबी रिश्ता
है, इसलिए यह आप ही का हक़ है। अगर
आप ज़मीन ख़रीदना न चाहें तो यह मेरा हक़
बनेगा।” रिश्तेदार ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं
इसे ख़रीदकर छुड़ाऊँगा।” 5फिर बोअज़ बोला,
“अगर आप नओमी से ज़मीन ख़रीदें तो आपको
उस की मोआबी बहू रूत से शादी करनी पड़ेगी
ताकि मरहूम शौहर की जगह औलाद पैदा करें
जो उसका नाम रखकर यह ज़मीन सँभालें।”

6यह सुनकर रिश्तेदार ने कहा, “फिर मैं इसे
ख़रीदना नहीं चाहता, क्योंकि ऐसा करने से मेरी
मौरूसी ज़मीन को नुक़सान पहुँचेगा। आप ही इसे
ख़रीदकर छुड़ाएँ।”

7उस ज़माने में अगर ऐसे किसी मामले में कोई
ज़मीन ख़रीदने का अपना हक़ किसी दूसरे को
मुंतक़िल करना चाहता था तो वह अपनी चप्पल
उतारकर उसे दे देता था। इस तरीक़े से फ़ैसला
क़ानूनी तौर पर तय हो जाता था। 8चुनाँचे रूत के
ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार ने अपनी चप्पल उतारकर
बोअज़ को दे दी और कहा, “आप ही ज़मीन को
ख़रीद लें।” 9तब बोअज़ ने बुज़ुर्गों और बाक़ी
लोगों के सामने एलान किया, “आज आप गवाह
हैं कि मैंने नओमी से सब कुछ ख़रीद लिया है

जो उसके मरहूम शौहर इलीमलिक और उसके
दो बेटों किलियोन और महलोन का था। 10साथ
ही मैंने महलोन की बेवा मोआबी औरत रूत से
शादी करने का वादा किया है ताकि महलोन
के नाम से बेटा पैदा हो। यों मरहूम की मौरूसी
ज़मीन ख़ानदान से छिन नहीं जाएगी, और उसका
नाम हमारे ख़ानदान और बैत-लहम के बाशिंदों में
क़ायम रहेगा। आज आप सब गवाह हैं!"

11बुज़ुर्गों और शहर के दरवाज़े पर बैठे दीगर
मर्दों ने इसकी तसदीक़ की, "हम गवाह हैं!
रब आपके घर में आनेवाली इस औरत को उन
बरकतों से नवाज़े जिनसे उसने राख़िल और
लियाह को नवाज़ा, जिनसे तमाम इसराईली
निकले। रब करे कि आपकी दौलत और इज़्ज़त
इफ़राता यानी बैत-लहम में बढ़ती जाए। 12वह
आप और आपकी बीवी को उतनी औलाद बख़्शे
जितनी तमर और यहूदाह के बेटे फ़ारस के
ख़ानदान को बख़्शी थी।"

13चुनाँचे रूत बोअज़ की बीवी बन गई। और
रब की मरज़ी से रूत शादी के बाद हामिला हुई।
जब उसके बेटा हुआ 14तो बैत-लहम की औरतों
ने नओमी से कहा, "रब की तमजीद हो! आपको
यह बच्चा अता करने से उसने ऐसा शख़्स मुहैया
किया है जो आपका ख़ानदान सँभालेगा। अल्लाह
करे कि उस की शोहरत पूरे इसराईल में फैल
जाए। 15उससे आप ताज़ादम हो जाएँगी, और
बुढ़ापे में वह आपको सहारा देगा। क्योंकि आपकी
बहू जो आपको प्यार करती है और जिसकी
क़दरो-क़ीमत सात बेटों से बढ़कर है उसी ने उसे
जन्म दिया है!"

16नओमी बच्चे को अपनी गोद में बिठाकर उसे
पालने लगी। 17पड़ोसी औरतों ने उसका नाम
ओबेद यानी ख़िदमत करनेवाला रखा। उन्होंने
कहा, "नओमी के हाँ बेटा पैदा हुआ है!"

ओबेद दाऊद बादशाह के बाप यस्सी का
बाप था। 18ज़ैल में फ़ारस का दाऊद तक
नसबनामा है : फ़ारस, हसरोन, 19राम,
अम्मीनदाब, 20नहसोन, सलमोन, 21बोअज़,
ओबेद, 22यस्सी और दाऊद।

1 समुएल

हन्ना अल्लाह से बच्चा माँगती है

1 इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के शहर
रामातायम-सोफ़ीम यानी रामा में एक
इफ़राईमी रहता था जिसका नाम इलक़ाना बिन
यरोहाम बिन इलीहू बिन तूख़ू बिन सूफ़ था।
2इलक़ाना की दो बीवियाँ थीं। एक का नाम हन्ना
था और दूसरी का फ़निन्ना। फ़निन्ना के बच्चे थे,
लेकिन हन्ना बेऔलाद थी।

3इलक़ाना हर साल अपने ख़ानदान समेत
सफ़र करके सैला के मक़दिस के पास जाता
ताकि वहाँ रब्बुल-अफ़वाज के हुज़ूर क़ुरबानी
गुज़राने और उस की परस्तिश करे। उन दिनों
में एली इमाम के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास
सैला में इमाम की ख़िदमत अंजाम देते थे। 4हर
साल इलक़ाना अपनी क़ुरबानी पेश करने के बाद
क़ुरबानी के गोश्त के टुकड़े फ़निन्ना और उसके
बेटे-बेटियों में तक़सीम करता। 5हन्ना को भी
गोश्त मिलता, लेकिन जहाँ दूसरों को एक हिस्सा
मिलता वहाँ उसे दो हिस्से मिलते थे। क्योंकि
इलक़ाना उससे बहुत मुहब्बत रखता था, अगरचे
अब तक रब की मरज़ी नहीं थी कि हन्ना के
बच्चे पैदा हों। 6फ़निन्ना की हन्ना से दुश्मनी थी,
इसलिए वह हर साल हन्ना के बाँझपन का मज़ाक़
उड़ाकर उसे तंग करती थी। 7साल बसाल ऐसा
ही हुआ करता था। जब भी वह रब के मक़दिस
के पास जाते तो फ़निन्ना हन्ना को इतना तंग
करती कि वह उस की बातें सुन सुनकर रो पड़ती
और खा-पी न सकती। 8फिर इलक़ाना पूछता,
"हन्ना, तू क्यों रो रही है? तू खाना क्यों नहीं
खा रही? उदास होने की क्या ज़रूरत? मैं तो हूँ।
क्या यह दस बेटों से कहीं बेहतर नहीं?"

9एक दिन जब वह सैला में थे तो हन्ना खाने-
पीने के बाद दुआ करने के लिए उठी। एली इमाम
रब के मक़दिस के दरवाज़े के पास कुरसी पर
बैठा था। 10हन्ना शदीद परेशानी के आलम में
फूट फूटकर रोने लगी। रब से दुआ करते करते
11उसने क़सम खाई, "ऐ रब्बुल-अफ़वाज, मेरी
बुरी हालत पर नज़र डालकर मुझे याद कर!
अपनी ख़ादिमा को मत भूलना बल्कि बेटा अता
फ़रमा! अगर तू ऐसा करे तो मैं उसे तुझे वापस
कर दूँगी। ऐ रब, उस की पूरी ज़िंदगी तेरे लिए
मख़सूस होगी! इसका निशान यह होगा कि
उसके बाल कभी नहीं कटवाए जाएंगे।"

12हन्ना बड़ी देर तक यों दुआ करती रही। एली
उसके मुँह पर ग़ौर करने लगा 13तो देखा कि हन्ना
के होंट तो हिल रहे हैं लेकिन आवाज़ सुनाई नहीं
दे रही, क्योंकि हन्ना दिल ही दिल में दुआ कर
रही थी। लेकिन एली को ऐसा लग रहा था कि
वह नशे में धुत है, 14इसलिए उसने उसे झिड़कते
हुए कहा, "तू कब तक नशे में धुत रहेगी? मै पीने
से बाज़ आ!"

15हन्ना ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा, ऐसी कोई
बात नहीं है। मैंने न मै, न कोई और नशा-आवर
चीज़ चखी है। बात यह है कि मैं बड़ी रंजीदा हूँ,
इसलिए रब के हुज़ूर अपने दिल की आहो-ज़ारी
उंडेल दी है।[a] 16यह न समझें कि मैं निकम्मी
औरत हूँ, बल्कि मैं बड़े ग़म और अज़ियत में दुआ
कर रही थी।”

17यह सुनकर एली ने जवाब दिया, “सलामती
से अपने घर चली जा! इसराईल का ख़ुदा तेरी
दरख़ास्त पूरी करे।” 18हन्ना ने कहा, “अपनी
ख़ादिमा पर आपकी नज़रे-करम हो।” फिर उसने
जाकर कुछ खाया, और उसका चेहरा उदास न
रहा।

समुएल की पैदाइश और बचपन

19अगले दिन पूरा ख़ानदान सुबह-सवेरे उठा।
उन्होंने मक़दिस में जाकर रब की परस्तिश की,
फिर रामा वापस चले गए जहाँ उनका घर था।
और रब ने हन्ना को याद करके उस की दुआ
सुनी। 20इलक़ाना और हन्ना के बेटा पैदा हुआ।
हन्ना ने उसका नाम समुएल यानी ‘उसका नाम
अल्लाह है’ रखा, क्योंकि उसने कहा, “मैंने उसे
रब से माँगा।”

21अगले साल इलक़ाना ख़ानदान के साथ
मामूल के मुताबिक़ सैला गया ताकि रब को
सालाना क़ुरबानी पेश करे और अपनी मन्नत पूरी
करे। 22लेकिन हन्ना न गई। उसने अपने शौहर
से कहा, “जब बच्चा दूध पीना छोड़ देगा तब ही
मैं उसे लेकर रब के हुज़ूर पेश करूँगी। उस वक़्त
से वह हमेशा वहीं रहेगा।” 23इलक़ाना ने जवाब
दिया, “वह कुछ कर जो तुझे मुनासिब लगे। बच्चे
का दूध छुड़ाने तक यहाँ रह। लेकिन रब अपना
कलाम क़ायम रखे।” चुनाँचे हन्ना बच्चे के दूध
छुड़ाने तक घर में रही।

24जब समुएल ने दूध पीना छोड़ दिया तो हन्ना
उसे सैला में रब के मक़दिस के पास ले गई, गो
बच्चा अभी छोटा था। क़ुरबानियों के लिए उसके
पास तीन बैल, मैदे के तक़रीबन 16 किलोग्राम
और मै की मशक थी। 25बैल को क़ुरबानगाह पर
चढ़ाने के बाद इलक़ाना और हन्ना बच्चे को एली
के पास ले गए। 26हन्ना ने कहा, “मेरे आक़ा,
आपकी हयात की क़सम, मैं वही औरत हूँ जो
कुछ साल पहले यहाँ आपकी मौजूदगी में खड़ी
दुआ कर रही थी। 27उस वक़्त मैंने इलतमास
की थी कि रब मुझे बेटा अता करे, और रब ने मेरी
सुनी है। 28चुनाँचे अब मैं अपना वादा पूरा करके
बेटे को रब को वापस कर देती हूँ। उम्र-भर वह रब
के लिए मख़सूस होगा।” तब उसने रब के हुज़ूर
सिजदा किया।

हन्ना का गीत

2 वहाँ हन्ना ने यह गीत गाया,
“मेरा दिल रब की ख़ुशी मनाता है, क्योंकि
उसने मुझे क़ुव्वत अता की है। मेरा मुँह दिलेरी से
अपने दुश्मनों के ख़िलाफ़ बात करता है, क्योंकि
मैं तेरी नजात के बाइस बाग़ बाग़ हूँ।

2रब जैसा क़ुद्दूस कोई नहीं है, तेरे सिवा कोई
नहीं है। हमारे ख़ुदा जैसी कोई चट्टान नहीं है।
3डींगें मारने से बाज़ आओ! गुस्ताख़ बातें
मत बको! क्योंकि रब ऐसा ख़ुदा है जो सब
कुछ जानता है, वह तमाम आमाल को तोलकर
परखता है। 4अब बड़ों की कमानें टूट गई हैं
जबकि गिरनेवाले क़ुव्वत से कमरबस्ता हो गए
हैं। 5जो पहले सेर थे वह रोटी मिलने के लिए
मज़दूरी करते हैं जबकि जो पहले भूके थे वह सेर
हो गए हैं। बेऔलाद औरत के सात बच्चे पैदा हुए
हैं जबकि वाफ़िर बच्चों की माँ मुरझा रही है।

6रब एक को मरने देता और दूसरे को ज़िंदा
होने देता है। वह एक को पाताल में उतरने देता
और दूसरे को वहाँ से निकल आने देता है। 7रब
ही ग़रीब और अमीर बना देता है, वही पस्त
करता और वही सरफ़राज़ करता है। 8वह ख़ाक

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अपनी जान उंडेल दी है।

में दबे आदमी को खड़ा करता है और राख में
लेटे ज़रूरतमंद को सरफ़राज़ करता है, फिर उन्हें
रईसों के साथ इज़्ज़त की कुरसी पर बिठा देता
है। क्योंकि दुनिया की बुनियादें रब की हैं, और
उसी ने उन पर ज़मीन रखी है।

9वह अपने वफ़ादार पैरोकारों के पाँव महफ़ूज़
रखेगा जबकि शरीर तारीकी में चुप हो जाएंगे।
क्योंकि इनसान अपनी ताक़त से कामयाब नहीं
होता। 10जो रब से लड़ने की जुर्रत करें वह पाश
पाश हो जाएंगे। रब आसमान से उनके ख़िलाफ़
गरजकर दुनिया की इंतहा तक सबकी अदालत
करेगा। वह अपने बादशाह को तक़वियत और
अपने मसह किए हुए ख़ादिम को क़ुव्वत अता
करेगा।”

11फिर इलक़ाना और हन्ना रामा में अपने घर
वापस चले गए। लेकिन उनका बेटा एली इमाम के
पास रहा और मक़दिस में रब की ख़िदमत करने
लगा।

एली के बेटों की बेदीन ज़िंदगी

12लेकिन एली के बेटे बदमाश थे। न वह
रब को जानते थे, 13न इमाम की हैसियत से
अपने फ़रायज़ सहीह तौर पर अदा करते थे।
क्योंकि जब भी कोई आदमी अपनी क़ुरबानी पेश
करके रिफ़ाक़ती खाने के लिए गोश्त उबालता
तो एली के बेटे अपने नौकर को वहाँ भेज देते।
यह नौकर सिहशाख़ा काँटा 14देग में डालकर
गोश्त का हर वह टुकड़ा अपने मालिकों के
पास ले जाता जो काँटे से लग जाता। यही
उनका तमाम इसराईलियों के साथ सुलूक था जो
सैला में क़ुरबानियाँ चढ़ाने आते थे। 15न सिर्फ़
यह बल्कि कई बार नौकर उस वक़्त भी आ
जाता जब जानवर की चरबी अभी क़ुरबानगाह
पर जलानी होती थी। फिर वह तक़ाज़ा करता,
“मुझे इमाम के लिए कच्चा गोश्त दे दो! उसे
उबला गोश्त मंज़ूर नहीं बल्कि सिर्फ़ कच्चा गोश्त,
क्योंकि वह उसे भूनना चाहता है।” 16क़ुरबानी
पेश करनेवाला एतराज़ करता, “पहले तो रब
के लिए चरबी जलाना है, इसके बाद ही जो
जी चाहे ले लें।” फिर नौकर बदतमीज़ी करता,
“नहीं, उसे अभी दे दो, वरना मैं ज़बरदस्ती ले
लूँगा।” 17इन जवान इमामों का यह गुनाह रब
की नज़र में निहायत संगीन था, क्योंकि वह रब
की क़ुरबानियाँ हक़ीर जानते थे।

माँ-बाप समुएल से मिलने आते हैं

18लेकिन छोटा समुएल रब के हुज़ूर ख़िदमत
करता रहा। उसे भी दूसरे इमामों की तरह कतान
का बालापोश दिया गया था। 19हर साल जब
उस की माँ ख़ाविंद के साथ क़ुरबानी पेश करने
के लिए सैला आती तो वह नया चोग़ा सीकर उसे
दे देती। 20और रवाना होने से पहले एली समुएल
के माँ-बाप को बरकत देकर इलक़ाना से कहता,
“हन्ना ने रब से बच्चा माँग लिया और जब मिला
तो उसे रब को वापस कर दिया। अब रब आपको
इस बच्चे की जगह मज़ीद बच्चे दे।” इसके बाद
वह अपने घर चले जाते। 21और वाक़ई, रब ने
हन्ना को मज़ीद तीन बेटे और दो बेटियाँ अता
कीं। यह बच्चे घर में रहे, लेकिन समुएल रब के
हुज़ूर ख़िदमत करते करते जवान हो गया।

एली के बेटे बाप की नहीं सुनते

22एली उस वक़्त बहुत बूढ़ा हो चुका था। बेटों
का तमाम इसराईल के साथ बुरा सुलूक उसके
कानों तक पहुँच गया था, बल्कि यह भी कि बेटे
उन औरतों से नाजायज़ ताल्लुक़ात रखते हैं जो
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ख़िदमत करती
हैं। 23उसने उन्हें समझाया भी था, “आप ऐसी
हरकतें क्यों कर रहे हैं? मुझे तमाम लोगों से
आपके शरीर कामों की ख़बरें मिलती रहती हैं।
24बेटो, ऐसा मत करना! जो बातें आपके बारे
में रब की क़ौम में फैल गई हैं वह अच्छी नहीं।
25देखें, अगर इनसान किसी दूसरे इनसान का
गुनाह करे तो हो सकता है अल्लाह दोनों का
दरमियानी बनकर क़ुसूरवार शख़्स पर रहम करे।

लेकिन अगर कोई रब का गुनाह करे तो फिर कौन
उसका दरमियानी बनकर उसे बचाएगा?”
लेकिन एली के बेटों ने बाप की न सुनी, क्योंकि
रब की मरज़ी थी कि उन्हें सज़ाए-मौत मिल जाए।
26लेकिन समुएल उनसे फ़रक़ था। जितना वह
बड़ा होता गया उतनी उस की रब और इनसान के
सामने क़बूलियत बढ़ती गई।

एली के घराने को सज़ा मिलने की पेशगोई

27एक दिन एक नबी एली के पास आया और
कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या जब तेरा बाप हारून
और उसका घराना मिसर के बादशाह के ग़ुलाम थे
तो मैंने अपने आपको उस पर ज़ाहिर न किया?
28गो इसराईल के बारह क़बीले थे लेकिन मैंने
मुक़र्रर किया कि उसी के घराने के मर्द मेरे इमाम
बनकर क़ुरबानगाह के सामने ख़िदमत करें, बख़ूर
जलाएँ और मेरे हुज़ूर इमाम का बालापोश पहनें।
साथ साथ मैंने उन्हें क़ुरबानगाह पर जलनेवाली
क़ुरबानियों का एक हिस्सा मिलने का हक़ दे
दिया। 29तो फिर तुम लोग ज़बह और ग़ल्ला की
वह क़ुरबानियाँ हक़ीर क्यों जानते हो जो मुझे ही
पेश की जाती हैं और जो मैंने अपनी सुकूनतगाह
के लिए मुक़र्रर की थीं? एली, तू अपने बेटों
का मुझसे ज़्यादा एहतराम करता है। तुम तो मेरी
क़ौम इसराईल की हर क़ुरबानी के बेहतरीन हिस्से
खा खाकर मोटे हो गए हो।’
30चुनाँचे रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता
है, वादा तो मैंने किया था कि लावी के क़बीले
का तेरा घराना हमेशा ही इमाम की ख़िदमत
सरंजाम देगा। लेकिन अब मैं एलान करता हूँ कि
ऐसा कभी नहीं होगा! क्योंकि जो मेरा एहतराम
करते हैं उनका मैं एहतराम करूँगा, लेकिन जो
मुझे हक़ीर जानते हैं उन्हें हक़ीर जाना जाएगा।
31इसलिए सुन! ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं तेरी
और तेरे घराने की ताक़त यों तोड़ डालूँगा कि घर
का कोई भी बुज़ुर्ग नहीं पाया जाएगा। 32और तू
मक़दिस में मुसीबत देखेगा हालाँकि मैं इसराईल
के साथ भलाई करता रहूँगा। तेरे घर में कभी
भी बुज़ुर्ग नहीं पाया जाएगा। 33मैं तुममें से हर
एक को तो अपनी ख़िदमत से निकालकर हलाक
नहीं करूँगा जब तेरी आँखें धुँधली-सी पड़ जाएँगी
और तेरी जान हलकान हो जाएगी। लेकिन तेरी
तमाम औलाद ग़ैरतबई मौत मरेगी। 34तेरे बेटे
हुफ़नी और फ़ीनहास दोनों एक ही दिन हलाक
हो जाएंगे। इस निशान से तुझे यक़ीन आएगा कि
जो कुछ मैंने फ़रमाया है वह सच है।
35तब मैं अपने लिए एक इमाम खड़ा करूँगा
जो वफ़ादार रहेगा। जो भी मेरा दिल और मेरी
जान चाहेगी वही वह करेगा। मैं उसके घर की
मज़बूत बुनियादें रखूँगा, और वह हमेशा तक मेरे
मसह किए हुए ख़ादिम के हुज़ूर आता जाता
रहेगा। 36उस वक़्त तेरे घर के बचे हुए तमाम
अफ़राद उस इमाम के सामने झुक जाएंगे और
पैसे और रोटी माँगकर इलतमास करेंगे, ‘मुझे
इमाम की कोई न कोई ज़िम्मेदारी दें ताकि रोटी
का टुकड़ा मिल जाए’।”

अल्लाह समुएल से हमकलाम होता है

3 छोटा समुएल एली के ज़ेरे-निगरानी रब के
हुज़ूर ख़िदमत करता था। उन दिनों में रब
की तरफ़ से बहुत कम पैग़ाम या रोयाएँ मिलती
थीं। 2एक रात एली जिसकी आँखें इतनी कमज़ोर
हो गई थीं कि देखना तक़रीबन नामुमकिन था
मामूल के मुताबिक़ सो गया था। 3समुएल भी लेट
गया था। वह रब के मक़दिस में सो रहा था जहाँ
अहद का संदूक़ पड़ा था। शमादान अब तक रब के
हुज़ूर जल रहा था 4-5कि अचानक रब ने आवाज़
दी, “समुएल!” समुएल ने जवाब दिया, “जी,
मैं अभी आता हूँ।” वह भागकर एली के पास
गया और कहा, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने
मुझे बुलाया?” एली बोला, “नहीं, मैंने तुम्हें नहीं
बुलाया। वापस जाकर दुबारा लेट जाओ।” चुनाँचे
समुएल दुबारा लेट गया।
6लेकिन रब ने एक बार फिर आवाज़ दी,
“समुएल!” लड़का दुबारा उठा और एली के पास
जाकर बोला, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने

मुझे बुलाया?” एली ने जवाब दिया, “नहीं बेटा,
मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। दुबारा सो जाओ।”
7उस वक़्त समुएल रब की आवाज़ नहीं
पहचान सकता था, क्योंकि अभी उसे रब का
कोई पैग़ाम नहीं मिला था। 8चुनाँचे रब ने तीसरी
बार आवाज़ दी, “समुएल!” एक और मरतबा
समुएल उठ खड़ा हुआ और एली के पास जाकर
बोला, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने मुझे
बुलाया?” यह सुनकर एली ने जान लिया कि
रब समुएल से हमकलाम हो रहा है। 9इसलिए
उसने लड़के को बताया, “अब दुबारा लेट जाओ,
लेकिन अगली दफ़ा जब आवाज़ सुनाई दे तो तुम्हें
कहना है, ‘ऐ रब, फ़रमा। तेरा ख़ादिम सुन रहा
है’।”
समुएल एक बार फिर अपने बिस्तर पर लेट
गया। 10रब आकर वहाँ खड़ा हुआ और पहले
की तरह पुकारा, “समुएल! समुएल!” लड़के
ने जवाब दिया, “ऐ रब, फ़रमा। तेरा ख़ादिम
सुन रहा है।” 11फिर रब समुएल से हमकलाम
हुआ, “देख, मैं इसराईल में इतना हौलनाक काम
करूँगा कि जिसे भी इसकी ख़बर मिलेगी उसके
कान बजने लगेंगे। 12उस वक़्त मैं शुरू से लेकर
आख़िर तक वह तमाम बातें पूरी करूँगा जो मैंने
एली और उसके घराने के बारे में की हैं। 13मैं
एली को आगाह कर चुका हूँ कि उसका घराना
हमेशा तक मेरी अदालत का निशाना बना रहेगा।
क्योंकि गो उसे साफ़ मालूम था कि उसके बेटे
अपनी ग़लत हरकतों से मेरा ग़ज़ब अपने आप
पर लाएँगे तो भी उसने उन्हें करने दिया और न
रोका। 14मैंने क़सम खाई है कि एली के घराने का
क़ुसूर न ज़बह और न ग़ल्ला की किसी क़ुरबानी
से दूर किया जा सकता है बल्कि इसका कफ़्फ़ारा
कभी भी नहीं दिया जा सकेगा!”
15इसके बाद समुएल सुबह तक अपने बिस्तर
पर लेटा रहा। फिर वह मामूल के मुताबिक़ उठा
और रब के घर के दरवाज़े खोल दिए। वह एली को
अपनी रोया बताने से डरता था, 16लेकिन एली ने
उसे बुलाकर कहा, “समुएल, मेरे बेटे!” समुएल
ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 17एली ने
पूछा, “रब ने तुम्हें क्या बताया है? कोई भी बात
मुझसे मत छुपाना! अल्लाह तुम्हें सख़्त सज़ा दे
अगर तुम एक लफ़्ज़ भी मुझसे पोशीदा रखो।”
18फिर समुएल ने उसे खुलकर सब कुछ बता
दिया और एक बात भी न छुपाई। एली ने कहा,
“वही रब है। जो कुछ उस की नज़र में ठीक है
उसे वह करे।”
19समुएल जवान होता गया, और रब उसके
साथ था। उसने समुएल की हर बात पूरी होने
दी। 20पूरे इसराईल ने दान से लेकर बैर-सबा
तक जान लिया कि रब ने अपने नबी समुएल की
तसदीक़ की है। 21अगले सालों में भी रब सैला
में अपने कलाम से समुएल पर ज़ाहिर होता रहा।
4 यों समुएल का कलाम सैला से निकलकर
पूरे इसराईल में फैल गया।

फ़िलिस्ती अहद का संदूक़ छीन लेते हैं

एक दिन इसराईल की फ़िलिस्तियों के
साथ जंग छिड़ गई। इसराईलियों ने लड़ने
के लिए निकलकर अबन-अज़र के पास
अपनी लशकरगाह लगाई जबकि फ़िलिस्तियों
ने अफ़ीक़ के पास अपने डेरे डाले। 2पहले
फ़िलिस्तियों ने इसराईलियों पर हमला किया।
लड़ते लड़ते उन्होंने इसराईल को शिकस्त
दी। तक़रीबन 4,000 इसराईली मैदाने-जंग में
हलाक हुए।
3फ़ौज लशकरगाह में वापस आई तो इसराईल
के बुज़ुर्ग सोचने लगे, “रब ने फ़िलिस्तियों को हम
पर क्यों फ़तह पाने दी? आओ, हम रब के अहद
का संदूक़ सैला से ले आएँ ताकि वह हमारे साथ
चलकर हमें दुश्मन से बचाए।”
4चुनाँचे अहद का संदूक़ जिसके ऊपर
रब्बुल-अफ़वाज करूबी फ़रिश्तों के दरमि-
यान तख़्तनशीन है सैला से लाया गया। एली
के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी साथ आए।
5जब अहद का संदूक़ लशकरगाह में पहुँचा तो
इसराईली निहायत ख़ुश होकर बुलंद आवाज़ से

नारे लगाने लगे। इतना शोर मच गया कि ज़मीन हिल गई।

6यह सुनकर फ़िलिस्ती चौंक उठे और एक दूसरे से पूछने लगे, “यह कैसा शोर है जो इसराईली लशकरगाह में हो रहा है?” जब पता चला कि रब के अहद का संदूक़ इसराईली लशकरगाह में आ गया है 7तो वह घबराकर चिल्लाए, “उनका देवता उनकी लशकरगाह में आ गया है। हाय, हमारा सत्यानास हो गया है! पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ है। 8हम पर अफ़सोस! कौन हमें इन ताक़तवर देवताओं से बचाएगा? क्योंकि इन्हीं ने रेगिस्तान में मिसरियों को हर क़िस्म की बला से मारकर हलाक कर दिया था। 9भाइयो, अब दिलेर हो और मरदानगी दिखाओ, वरना हम उसी तरह इबरानियों के ग़ुलाम बन जाएंगे जैसे वह अब तक हमारे ग़ुलाम थे। मरदानगी दिखाकर लड़ो!” 10आपस में ऐसी बातें करते करते फ़िलिस्ती लड़ने के लिए निकले और इसराईल को शिकस्त दी। हर तरफ़ क़त्ले-आम नज़र आया, और 30,000 प्यादे इसराईली काम आए। बाक़ी सब फ़रार होकर अपने अपने घरों में छुप गए। 11एली के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी उसी दिन हलाक हुए, और अल्लाह के अहद का संदूक़ फ़िलिस्तियों के क़ब्ज़े में आ गया।

एली की मौत

12उसी दिन बिनयमीन के क़बीले का एक आदमी मैदाने-जंग से भागकर सैला पहुँच गया। उसके कपड़े फटे हुए थे और सर पर ख़ाक थी। 13-15एली सड़क के किनारे अपनी कुरसी पर बैठा था। वह अब अंधा हो चुका था, क्योंकि उस की उम्र 98 साल थी। वह बड़ी बेचैनी से रास्ते पर ध्यान दे रहा था ताकि जंग की कोई ताज़ा ख़बर मिल जाए, क्योंकि उसे इस बात की बड़ी फ़िकर थी कि अल्लाह का संदूक़ लशकरगाह में है।

जब वह आदमी शहर में दाख़िल हुआ और लोगों को सारा माजरा सुनाया तो पूरा शहर चिल्लाने लगा। जब एली ने शोर सुना तो उसने पूछा, “यह क्या शोर है?” बिनयमीनी दौड़कर एली के पास आया और बोला, 16“मैं मैदाने-जंग से आया हूँ। आज ही मैं वहाँ से फ़रार हुआ।” एली ने पूछा, “बेटा, क्या हुआ?” 17क़ासिद ने जवाब दिया, “इसराईली फ़िलिस्तियों के सामने फ़रार हुए। फ़ौज को हर तरफ़ शिकस्त माननी पड़ी, और आपके दोनों बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी मारे गए हैं। अफ़सोस, अल्लाह का संदूक़ भी दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है।”

18अहद के संदूक़ का ज़िक्र सुनते ही एली अपनी कुरसी पर से पीछे की तरफ़ गिर गया। चूँकि वह बूढ़ा और भारी-भरकम था इसलिए उस की गरदन टूट गई और वह वहीं मक़दिस के दरवाज़े के पास ही मर गया। वह 40 साल इसराईल का क़ाज़ी रहा था।

फ़ीनहास की बेवा की मौत

19उस वक़्त एली की बहू यानी फ़ीनहास की बीवी का पाँव भारी था और बच्चा पैदा होनेवाला था। जब उसने सुना कि अल्लाह का संदूक़ दुश्मन के हाथ में आ गया है और कि सुसर और शौहर दोनों मर गए हैं तो उसे इतना सख़्त सदमा पहुँचा कि वह शदीद दर्दे-ज़ह में मुब्तला हो गई। वह झुक गई, और बच्चा पैदा हुआ। 20उस की जान निकलने लगी तो दाइयों ने उस की हौसलाअफ़्ज़ाई करके कहा, “डरो मत! तुम्हारे बेटा पैदा हुआ है।” लेकिन माँ ने न जवाब दिया, न बात पर ध्यान दिया। 21-22क्योंकि वह अल्लाह के संदूक़ के छिन जाने और सुसर और शौहर की मौत के बाइस निहायत बेदिल हो गई थी। उसने कहा, “बेटे का नाम यकबोद यानी ‘जलाल कहाँ रहा’ है, क्योंकि अल्लाह के संदूक़ के छिन जाने से अल्लाह का जलाल इसराईल से जाता रहा है।”

फ़िलिस्तियों में अहद का संदूक़

5 फ़िलिस्ती अल्लाह का संदूक़ अबन-अज़र
से अशदूद शहर में ले गए। 2वहाँ उन्होंने
उसे अपने देवता दजून के मंदिर में बुत के क़रीब
रख दिया। 3अगले दिन सुबह-सवेरे जब अशदूद
के बाशिंदे मंदिर में दाख़िल हुए तो क्या देखते हैं
कि दजून का मुजस्समा मुँह के बल रब के संदूक़
के सामने ही पड़ा है। उन्होंने दजून को उठाकर
दुबारा उस की जगह पर खड़ा किया। 4लेकिन
अगले दिन जब सुबह-सवेरे आए तो दजून दुबारा
मुँह के बल रब के संदूक़ के सामने पड़ा हुआ था।
लेकिन इस मरतबा बुत का सर और हाथ टूटकर
दहलीज़ पर पड़े थे। सिर्फ़ धड़ रह गया था। 5यही
वजह है कि आज तक दजून का कोई भी पुजारी
या मेहमान अशदूद के मंदिर की दहलीज़ पर क़दम
नहीं रखता।

6फिर रब ने अशदूद और गिर्दो-नवाह के देहातों
पर सख़्त दबाव डालकर बाशिंदों को परेशान कर
दिया। उनमें अचानक अज़ियतनाक फोड़ों की
वबा फैल गई। 7जब अशदूद के लोगों ने इसकी
वजह जान ली तो वह बोले, "लाज़िम है कि
इसराईल के ख़ुदा का संदूक़ हमारे पास न रहे।
क्योंकि उसका हम पर और हमारे देवता दजून
पर दबाव नाक़ाबिले-बरदाश्त है।"

8उन्होंने तमाम फ़िलिस्ती हुक्मरानों को इकट्ठा
करके पूछा, "हम इसराईल के ख़ुदा के संदूक़ के
साथ क्या करें?"

उन्होंने मशवरा दिया, "उसे जात शहर में ले
जाएँ।" 9लेकिन जब अहद का संदूक़ जात में
छोड़ा गया तो रब का दबाव उस शहर पर भी
आ गया। बड़ी अफ़रा-तफ़री पैदा हुई, क्योंकि
छोटों से लेकर बड़ों तक सबको अज़ियतनाक
फोड़े निकल आए। 10तब उन्होंने अहद का संदूक़
आगे अक़रून भेज दिया।

लेकिन संदूक़ अभी पहुँचनेवाला था कि
अक़रून के बाशिंदे चीख़ने लगे, "वह इसराईल
के ख़ुदा का संदूक़ हमारे पास लाए हैं ताकि हमें
हलाक कर दें!" 11तमाम फ़िलिस्ती हुक्मरानों
को दुबारा बुलाया गया, और अक़रूनियों ने
तक़ाज़ा किया कि संदूक़ को शहर से दूर किया
जाए। वह बोले, "इसे वहाँ वापस भेजा जाए जहाँ
से आया है, वरना यह हमें बल्कि पूरी क़ौम को
हलाक कर डालेगा।" क्योंकि शहर पर रब का
सख़्त दबाव हावी हो गया था। मोहलक वबा के
बाइस उसमें ख़ौफ़ो-हिरास की लहर दौड़ गई।
12जो मरने से बचा उसे कम अज़ कम फोड़े
निकल आए। चारों तरफ़ लोगों की चीख़-पुकार
फ़िज़ा में बुलंद हुई।

अहद का संदूक़ इसराईल वापस लाया जाता है

6 अल्लाह का संदूक़ अब सात महीने
फ़िलिस्तियों के पास रहा था। 2आ-
ख़िरकार उन्होंने अपने तमाम पुजारियों और
रम्मालों को बुलाकर उनसे मशवरा किया, "अब
हम रब के संदूक़ का क्या करें? हमें बताएँ कि इसे
किस तरह इसके अपने मुल्क में वापस भेजें।"

3पुजारियों और रम्मालों ने जवाब दिया, "अगर
आप उसे वापस भेजें तो वैसे मत भेजना बल्कि
क़ुसूर की क़ुरबानी साथ भेजना। तब आपको
शफ़ा मिलेगी, और आप जान लेंगे कि वह आपको
सज़ा देने से क्यों नहीं बाज़ आया।"

4फ़िलिस्तियों ने पूछा, "हम उसे किस क़िस्म
की क़ुसूर की क़ुरबानी भेजें?"

उन्होंने जवाब दिया, "फ़िलिस्तियों के पाँच
हुक्मरान हैं, इसलिए सोने के पाँच फोड़े और
पाँच चूहे बनवाएँ, क्योंकि आप सब इस एक ही
वबा की ज़द में आए हुए हैं, ख़ाह हुक्मरान हों,
ख़ाह रिआया। 5सोने के यह फोड़े और मुल्क
को तबाह करनेवाले चूहे बनाकर इसराईल के
देवता का एहतराम करें। शायद वह यह देखकर
आप, आपके देवताओं और मुल्क को सज़ा
देने से बाज़ आए। 6आप क्यों पुराने ज़माने के
मिसरियों और उनके बादशाह की तरह अड़ जाएँ?
क्योंकि उस वक़्त अल्लाह ने मिसरियों को इतनी

सख़्त मुसीबत में डाल दिया कि आख़िरकार उन्हें इसराईलियों को जाने देना पड़ा।

7अब बैलगाड़ी बनाकर उसके आगे दो गाएँ जोतें। ऐसी गाएँ हों जिनके दूध पीनेवाले बच्चे हों और जिन पर अब तक जुआ न रखा गया हो। गायों को बैलगाड़ी के आगे जोतें, लेकिन उनके बच्चों को साथ जाने न दें बल्कि उन्हें कहीं बंद रखें। 8फिर रब का संदूक़ बैलगाड़ी पर रखा जाए और उसके साथ एक थैला जिसमें सोने की वह चीज़ें हों जो आप क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर भेज रहे हैं। इसके बाद गायों को खुला छोड़ दें। 9ग़ौर करें कि वह कौन-सा रास्ता इख़्तियार करेंगी। अगर इसराईल के बैत-शम्स की तरफ़ चलें तो फिर मालूम होगा कि रब हम पर यह बड़ी मुसीबत लाया है। लेकिन अगर वह कहीं और चलें तो मतलब होगा कि इसराईल के देवता ने हमें सज़ा नहीं दी बल्कि सब कुछ इत्तफ़ाक़ से हुआ है।”

10फ़िलिस्तियों ने ऐसा ही किया। उन्होंने दो गाएँ नई बैलगाड़ी में जोतकर उनके छोटे बच्चों को कहीं बंद रखा। 11फिर उन्होंने अहद का संदूक़ उस थैले समेत जिसमें सोने के चूहे और फोड़े थे बैलगाड़ी पर रखा।

12जब गायों को छोड़ दिया गया तो वह डकराती डकराती सीधी बैत-शम्स के रास्ते पर आ गईं और न दाईं, न बाईं तरफ़ हटीं। फ़िलिस्तियों के सरदार बैत-शम्स की सरहद तक उनके पीछे चले।

13उस वक़्त बैत-शम्स के बाशिंदे नीचे वादी में गंदुम की फ़सल काट रहे थे। अहद का संदूक़ देखकर वह निहायत ख़ुश हुए। 14बैलगाड़ी एक खेत तक पहुँची जिसका मालिक बैत-शम्स का रहनेवाला यशुअ था। वहाँ वह एक बड़े पत्थर के पास रुक गई। लोगों ने बैलगाड़ी की लकड़ी टुकड़े टुकड़े करके उसे जला दिया और गायों को ज़बह करके रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश किया। 15लावी के क़बीले के कुछ मर्दों ने रब के संदूक़ को बैलगाड़ी से उठाकर सोने की चीज़ों के थैले समेत पत्थर पर रख दिया। उस दिन बैत-शम्स के लोगों ने रब को भस्म होनेवाली और ज़बह की क़ुरबानियाँ पेश कीं।

16यह सब कुछ देखने के बाद फ़िलिस्ती सरदार उसी दिन अक़रून वापस चले गए। 17फ़िलिस्तियों ने अपना क़ुसूर दूर करने के लिए हर एक शहर के लिए सोने का एक फोड़ा बना लिया था यानी अशदूद, ग़ज़्ज़ा, अस्क़लून, जात और अक़रून के लिए एक एक फोड़ा। 18इसके अलावा उन्होंने हर शहर और उसके गिर्दो-नवाह की आबादियों के लिए सोने का एक एक चूहा बना लिया था। जिस बड़े पत्थर पर अहद का संदूक़ रखा गया वह आज तक यशुअ बैत-शम्सी के खेत में इस बात की गवाही देता है।

अहद का संदूक़ क़िरियत-यारीम में

19लेकिन रब ने बैत-शम्स के बाशिंदों को सज़ा दी, क्योंकि उनमें से बाज़ ने अहद के संदूक़ में नज़र डाली थी। उस वक़्त 70 अफ़राद हलाक हुए। रब की यह सख़्त सज़ा देखकर बैत-शम्स के लोग मातम करने लगे। 20वह बोले, “कौन इस मुक़द्दस ख़ुदा के हुज़ूर क़ायम रह सकता है? यह हमारे बस की बात नहीं, लेकिन हम रब का संदूक़ किसके पास भेजें?” 21आख़िर में उन्होंने क़िरियत-यारीम के बाशिंदों को पैग़ाम भेजा, “फ़िलिस्तियों ने रब का संदूक़ वापस कर दिया है। अब आएँ और उसे अपने पास ले जाएँ!”

7 यह सुनकर क़िरियत-यारीम के मर्द आए और रब का संदूक़ अपने शहर में ले गए। वहाँ उन्होंने उसे अबीनदाब के घर में रख दिया जो पहाड़ी पर था। अबीनदाब के बेटे इलियज़र को मख़सूस किया गया ताकि वह अहद के संदूक़ की पहरादारी करे।

तौबा की वजह से इसराईली फ़िलिस्तियों पर फ़तह पाते हैं

2अहद का संदूक़ 20 साल के तवील अरसे तक क़िरियत-यारीम में पड़ा रहा। इस दौरान

तमाम इसराईल मातम करता रहा, क्योंकि लगता
था कि रब ने उन्हें तर्क कर दिया है। 3फिर
समुएल ने तमाम इसराईलियों से कहा, “अगर
आप वाक़ई रब के पास वापस आना चाहते हैं
तो अजनबी माबूदों और अस्तारात देवी के बुत
दूर कर दें। पूरे दिल के साथ रब के ताबे होकर
उसी की ख़िदमत करें। फिर ही वह आपको
फ़िलिस्तियों से बचाएगा।”

4इसराईलियों ने उस की बात मान ली। वह
बाल और अस्तारात के बुतों को फेंककर सिर्फ़ रब
की ख़िदमत करने लगे। 5तब समुएल ने एलान
किया, “पूरे इसराईल को मिसफ़ाह में जमा करें
तो मैं वहाँ रब से दुआ करके आपकी सिफ़ारिश
करूँगा।” 6चुनाँचे वह सब मिसफ़ाह में जमा हुए।
तौबा का इज़हार करके उन्होंने कुएँ से पानी
निकालकर रब के हुज़ूर उंडेल दिया। साथ साथ
उन्होंने पूरा दिन रोज़ा रखा और इक़रार किया,
“हमने रब का गुनाह किया है।” वहाँ मिसफ़ाह में
समुएल ने इसराईलियों के लिए कचहरी लगाई।

7फ़िलिस्ती हुक्मरानों को पता चला कि
इसराईली मिसफ़ाह में जमा हुए हैं तो वह उनसे
लड़ने के लिए आए। यह सुनकर इसराईली सख़्त
घबरा गए 8और समुएल से मिन्नत की, “दुआ
करते रहें! रब हमारे ख़ुदा से इलतमास करने से
न रुकें ताकि वह हमें फ़िलिस्तियों से बचाए।”
9तब समुएल ने भेड़ का दूध पीता बच्चा चुनकर
रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश
किया। साथ साथ वह रब से इलतमास करता
रहा।

और रब ने उस की सुनी। 10समुएल अभी
क़ुरबानी पेश कर रहा था कि फ़िलिस्ती वहाँ
पहुँचकर इसराईलियों पर हमला करने के लिए
तैयार हुए। लेकिन उस दिन रब ने ज़ोर से कड़कती
हुई आवाज़ से फ़िलिस्तियों को इतना दहशतज़दा
कर दिया कि वह दरहम-बरहम हो गए और
इसराईली आसानी से उन्हें शिकस्त दे सके।
11इसराईलियों ने मिसफ़ाह से निकलकर बैत-
कार के नीचे तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया। रास्ते
में बहुत-से फ़िलिस्ती हलाक हुए।

12इस फ़तह की याद में समुएल ने मिसफ़ाह
और शेन के दरमियान एक बड़ा पत्थर नसब
कर दिया। उसने पत्थर का नाम अबन-अज़र
यानी ‘मदद का पत्थर’ रखा। क्योंकि उसने कहा,
“यहाँ तक रब ने हमारी मदद की है।” 13इस
तरह फ़िलिस्तियों को मग़लूब किया गया, और
वह दुबारा इसराईल के इलाक़े में न घुसे। जब
तक समुएल जीता रहा फ़िलिस्तियों पर रब का
सख़्त दबाव रहा। 14और अक़रून से लेकर जात
तक जितनी इसराईली आबादियाँ फ़िलिस्तियों के
हाथ में आ गई थीं वह सब उनकी ज़मीनों समेत
दुबारा इसराईल के क़ब्ज़े में आ गईं। अमोरियों
के साथ भी सुलह हो गई।

15समुएल अपने जीते-जी इसराईल का क़ाज़ी
और राहनुमा रहा। 16हर साल वह बैतेल,
जिलजाल और मिसफ़ाह का दौरा करता, क्योंकि
इन तीन जगहों पर वह इसराईलियों के लिए
कचहरी लगाया करता था। 17इसके बाद वह
दुबारा रामा अपने घर वापस आ जाता जहाँ
मुस्तक़िल कचहरी थी। वहाँ उसने रब के लिए
क़ुरबानगाह भी बनाई थी।

इसराईल बादशाह का तक़ाज़ा करता है

8 जब समुएल बूढ़ा हुआ तो उसने अपने दो
बेटों को इसराईल के क़ाज़ी मुक़र्रर किया।
2बड़े का नाम योएल था और छोटे का अबियाह।
दोनों बैर-सबा में लोगों की कचहरी लगाते थे।
3लेकिन वह बाप के नमूने पर नहीं चलते बल्कि
रिश्वत खाकर ग़लत फ़ैसले करते थे।

4फिर इसराईल के बुज़ुर्ग मिलकर समुएल के
पास आए, जो रामा में था। 5उन्होंने कहा, “देखें,
आप बूढ़े हो गए हैं और आपके बेटे आपके नमूने
पर नहीं चलते। अब हम पर बादशाह मुक़र्रर करें
ताकि वह हमारी उस तरह राहनुमाई करे जिस
तरह दीगर अक़वाम में दस्तूर है।”

6जब बुज़ुर्गों ने राहनुमाई के लिए बादशाह का
तक़ाज़ा किया तो समुएल निहायत नाख़ुश हुआ।
चुनाँचे उसने रब से हिदायत माँगी। 7रब ने जवाब
दिया, "जो कुछ भी वह तुझसे माँगते हैं उन्हें दे
दे। इससे वह तुझे रद्द नहीं कर रहे बल्कि मुझे,
क्योंकि वह नहीं चाहते कि मैं उनका बादशाह रहूँ।
8जब से मैं उन्हें मिसर से निकाल लाया वह मुझे
छोड़कर दीगर माबूदों की ख़िदमत करते आए हैं।
और अब वह तुझसे भी यही सुलूक कर रहे हैं।
9उनकी बात मान ले, लेकिन संजीदगी से उन्हें
उन पर हुकूमत करनेवाले बादशाह के हुक़ूक़ से
आगाह कर।"

बादशाह के हुक़ूक़

10समुएल ने बादशाह का तक़ाज़ा करने-
वालों को सब कुछ कह सुनाया जो रब ने उसे
बताया था। 11वह बोला, "जो बादशाह आप
पर हुकूमत करेगा उसके यह हुक़ूक़ होंगे : वह
आपके बेटों की भरती करके उन्हें अपने रथों और
घोड़ों को सँभालने की ज़िम्मेदारी देगा। उन्हें उसके
रथों के आगे आगे दौड़ना पड़ेगा। 12कुछ उस
की फ़ौज के जनरल और कप्तान बनेंगे, कुछ
उसके खेतों में हल चलाने और फ़सलें काटने पर
मजबूर हो जाएंगे, और बाज़ को उसके हथियार
और रथ का सामान बनाना पड़ेगा। 13बादशाह
आपकी बेटियों को आपसे छीन लेगा ताकि वह
उसके लिए खाना पकाएँ, रोटी बनाएँ और ख़ुशबू
तैयार करें। 14वह आपके खेतों और आपके अंगूर
और ज़ैतून के बाग़ों का बेहतरीन हिस्सा चुनकर
अपने मुलाज़िमों को दे देगा। 15बादशाह आपके
अनाज और अंगूर का दसवाँ हिस्सा लेकर अपने
अफ़सरों और मुलाज़िमों को दे देगा। 16आपके
नौकर-नौकरानियाँ, आपके मोटे-ताज़े बैल और
गधे उसी के इस्तेमाल में आएँगे। 17वह आपकी
भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा तलब करेगा, और
आप ख़ुद उसके ग़ुलाम होंगे।

18तब आप पछताकर कहेंगे, 'हमने बाद-
शाह का तक़ाज़ा क्यों किया?' लेकिन जब आप
रब के हुज़ूर चीख़ते-चिल्लाते मदद चाहेंगे तो वह
आपकी नहीं सुनेगा।"

19लेकिन लोगों ने समुएल की बात न मानी
बल्कि कहा, "नहीं, तो भी हम बादशाह चाहते
हैं, 20क्योंकि फिर ही हम दीगर क़ौमों की मानिंद
होंगे। फिर हमारा बादशाह हमारी राहनुमाई करेगा
और जंग में हमारे आगे आगे चलकर दुश्मन से
लड़ेगा।" 21समुएल ने रब के हुज़ूर यह बातें
दोहराईं। 22रब ने जवाब दिया, "उनका तक़ाज़ा
पूरा कर, उन पर बादशाह मुक़र्रर कर!"

फिर समुएल ने इसराईल के मर्दों से कहा, "हर
एक अपने अपने शहर वापस चला जाए।"

साऊल बाप की गधियाँ तलाश करता है

9 बिनयमीन के क़बायली इलाक़े में एक
बिनयमीनी बनाम क़ीस रहता था जिसका
अच्छा-ख़ासा असरो-रसूख़ था। बाप का नाम
अबियेल बिन सरोर बिन बकोरत बिन अफ़ीख़
था। 2क़ीस का बेटा साऊल जवान और ख़ूबसूरत
था बल्कि इसराईल में कोई और इतना ख़ूबसूरत
नहीं था। साथ साथ वह इतना लंबा था कि बाक़ी
सब लोग सिर्फ़ उसके कंधों तक आते थे।

3एक दिन साऊल के बाप क़ीस की गधियाँ
गुम हो गईं। यह देखकर उसने अपने बेटे साऊल
को हुक्म दिया, "नौकर को अपने साथ लेकर
गधियों को ढूँड लाएँ।" 4दोनों आदमी इफ़राईम
के पहाड़ी इलाक़े और सलीसा के इलाक़े में से
गुज़रे, लेकिन बेसूद। फिर उन्होंने सालीम के
इलाक़े में खोज लगाया, लेकिन वहाँ भी गधियाँ
न मिलीं। इसके बाद वह बिनयमीन के इलाक़े में
घूमते फिरे, लेकिन बेफ़ायदा। 5चलते चलते वह
सूफ़ के क़रीब पहुँच गए। साऊल ने नौकर से
कहा, "आओ, हम घर वापस चलें, ऐसा न हो
कि वालिद गधियों की नहीं बल्कि हमारी फ़िकर
करें।"

6लेकिन नौकर ने कहा, "इस शहर में एक
मर्दे-ख़ुदा है। लोग उस की बड़ी इज़्ज़त करते हैं,
क्योंकि जो कुछ भी वह कहता है वह पूरा हो जाता

है। क्यों न हम उसके पास जाएँ? शायद वह हमें बताए कि गधियों को कहाँ ढूँडना चाहिए।”

7साऊल ने पूछा, “लेकिन हम उसे क्या दें? हमारा खाना ख़त्म हो गया है, और हमारे पास उसके लिए तोह्फ़ा नहीं है।”

8नौकर ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं, मेरे पास चाँदी का छोटा सिक्का[a] है। यह मैं मर्दे-ख़ुदा को दे दूँगा ताकि बताए कि हम किस तरफ़ ढूँडें।”

9-11साऊल ने कहा, “ठीक है, चलें।” वह शहर की तरफ़ चल पड़े ताकि मर्दे-ख़ुदा से बात करें। जब पहाड़ी ढलान पर शहर की तरफ़ चढ़ रहे थे तो कुछ लड़कियाँ पानी भरने के लिए निकलीं। आदमियों ने उनसे पूछा, “क्या ग़ैबबीन शहर में है?” (पुराने ज़माने में नबी ग़ैबबीन कहलाता था। अगर कोई अल्लाह से कुछ मालूम करना चाहता तो कहता, “आओ, हम ग़ैबबीन के पास चलें।”)

12-13लड़कियों ने जवाब दिया, “जी, वह अभी अभी पहुँचा है, क्योंकि शहर के लोग आज पहाड़ी पर क़ुरबानियाँ चढ़ाकर ईद मना रहे हैं। अगर जल्दी करें तो पहाड़ी पर चढ़ने से पहले उससे मुलाक़ात हो जाएगी। उस वक़्त तक ज़ियाफ़त शुरू नहीं होगी जब तक ग़ैबबीन पहुँच न जाए। क्योंकि उसे पहले खाने को बरकत देना है, फिर ही मेहमानों को खाना खाने की इजाज़त है। अब जाएँ, क्योंकि इसी वक़्त आप उससे बात कर सकते हैं।”

14चुनाँचे साऊल और नौकर शहर की तरफ़ बढ़े। शहर के दरवाज़े पर ही समुएल से मुलाक़ात हो गई जो वहाँ से निकलकर क़ुरबानगाह की पहाड़ी पर चढ़ने को था।

समुएल साऊल की मेहमान-नवाज़ी करता है

15रब समुएल को एक दिन पहले पैग़ाम दे
चुका था, 16“कल मैं इसी वक़्त मुल्के-बिनयमीन का एक आदमी तेरे पास भेज दूँगा। उसे मसह करके मेरी क़ौम इसराईल पर बादशाह मुक़र्रर कर। वह मेरी क़ौम को फ़िलिस्तियों से बचाएगा। क्योंकि मैंने अपनी क़ौम की मुसीबत पर ध्यान दिया है, और मदद के लिए उस की चीख़ें मुझ
तक पहुँच गई हैं।” 17अब जब समुएल ने शहर
के दरवाज़े से निकलते हुए साऊल को देखा तो रब समुएल से हमकलाम हुआ, “देख, यही वह आदमी है जिसका ज़िक्र मैंने कल किया था। यही मेरी क़ौम पर हुकूमत करेगा।”

18वहीं शहर के दरवाज़े पर साऊल समुएल से
मुख़ातिब हुआ, “मेहरबानी करके मुझे बताइए
कि ग़ैबबीन का घर कहाँ है?” 19समुएल ने
जवाब दिया, “मैं ही ग़ैबबीन हूँ। आएँ, उस पहाड़ी पर चलें जिस पर ज़ियाफ़त हो रही है, क्योंकि आज आप मेरे मेहमान हैं। कल मैं सुबह-सवेरे
आपको आपके दिल की बात बता दूँगा। 20जहाँ
तक तीन दिन से गुमशुदा गधियों का ताल्लुक़ है, उनकी फ़िकर न करें। वह तो मिल गई हैं। वैसे आप और आपके बाप के घराने को इसराईल
की हर क़ीमती चीज़ हासिल है।” 21साऊल ने
पूछा, “यह किस तरह? मैं तो इसराईल के सबसे छोटे क़बीले बिनयमीन का हूँ, और मेरा ख़ानदान क़बीले में सबसे छोटा है।”

22समुएल साऊल को नौकर समेत उस हाल में ले गया जिसमें ज़ियाफ़त हो रही थी। तक़रीबन 30 मेहमान थे, लेकिन समुएल ने दोनों आदमियों
को सबसे इज़्ज़त की जगह पर बिठा दिया।
23ख़ानसामे को उसने हुक्म दिया, “अब गोश्त का वह टुकड़ा ले आओ जो मैंने तुम्हें देकर कहा
था कि उसे अलग रखना है।” 24ख़ानसामे ने
क़ुरबानी की रान लाकर उसे साऊल के सामने रख दिया। समुएल बोला, “यह आपके लिए महफ़ूज़ रखा गया है। अब खाएँ, क्योंकि दूसरों को दावत देते वक़्त मैंने यह गोश्त आपके लिए और इस मौक़े के लिए अलग कर लिया था।” चुनाँचे साऊल ने उस दिन समुएल के साथ खाना खाया।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : चाँदी के सिक्के की एक चौथाई

25ज़ियाफ़त के बाद वह पहाड़ी से उतरकर
शहर वापस आए, और समुएल अपने घर की
छत पर साऊल से बातचीत करने लगा। 26अगले
दिन जब पौ फटने लगी तो समुएल ने नीचे से
साऊल को जो छत पर सो रहा था आवाज़ दी,
“उठें! मैं आपको रुख़सत करूँ।” साऊल जाग
उठा और वह मिलकर रवाना हुए। 27जब वह
शहर के किनारे पर पहुँचे तो समुएल ने साऊल से
कहा, “अपने नौकर को आगे भेजें।” जब नौकर
चला गया तो समुएल बोला, “ठहर जाएँ, क्योंकि
मुझे आपको अल्लाह का एक पैग़ाम सुनाना है।”

साऊल को मसह किया जाता है

10 फिर समुएल ने कुप्पी लेकर साऊल
के सर पर ज़ैतून का तेल उंडेल दिया
और उसे बोसा देकर कहा, “रब ने आपको
अपनी ख़ास मिलकियत पर राहनुमा मुक़र्रर किया
है। 2मेरे पास से चले जाने के बाद जब आप
बिनयमीन की सरहद के शहर ज़िलज़ख़ के क़रीब
राख़िल की क़ब्र के पास से गुज़रेंगे तो आपकी
मुलाक़ात दो आदमियों से होगी। वह आपसे
कहेंगे, ‘जो गधियाँ आप ढूँडने गए वह मिल गई
हैं। और अब आपके बाप गधियों की नहीं बल्कि
आपकी फ़िकर कर रहे हैं। वह कह रहे हैं कि मैं
किस तरह अपने बेटे का पता करूँ?’

3आप आगे जाकर तबूर के बलूत के दरख़्त के
पास पहुँचेंगे। वहाँ तीन आदमी आपसे मिलेंगे जो
अल्लाह की इबादत करने के लिए बैतेल जा रहे
होंगे। एक के पास तीन छोटी बकरियाँ, दूसरे के
पास तीन रोटियाँ और तीसरे के पास मै की मशक
होगी। 4वह आपको सलाम कहकर दो रोटियाँ
देंगे। उनकी यह रोटियाँ क़बूल करें।

5इसके बाद आप अल्लाह के जिबिया जाएंगे
जहाँ फ़िलिस्तियों की चौकी है। शहर में दाख़िल
होते वक़्त आपकी मुलाक़ात नबियों के एक
जुलूस से होगी जो उस वक़्त पहाड़ी की
क़ुरबानगाह से उतर रहा होगा। उनके आगे आगे
सितार, दफ़, बाँसरियाँ और सरोद बजानेवाले
चलेंगे, और वह नबुव्वत की हालत में होंगे। 6रब
का रूह आप पर भी नाज़िल होगा, और आप
उनके साथ नबुव्वत करेंगे। उस वक़्त आप फ़रक़
शख़्स में तबदील हो जाएंगे।

7जब यह तमाम निशान वुजूद में आएँगे तो वह
कुछ करें जो आपके ज़हन में आ जाए, क्योंकि
अल्लाह आपके साथ होगा। 8फिर मेरे आगे
जिलजाल चले जाएँ। मैं भी आऊँगा और वहाँ
भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ पेश
करूँगा। लेकिन आपको सात दिन मेरा इंतज़ार
करना है। फिर मैं आकर आपको बता दूँगा कि
आगे क्या करना है।”

9साऊल रवाना होने के लिए समुएल के पास
से मुड़ा तो अल्लाह ने उसका दिल तबदील कर
दिया। जिन निशानों की भी पेशगोई समुएल ने
की थी वह उसी दिन पूरी हुई। 10जब साऊल
और उसका नौकर जिबिया पहुँचे तो वहाँ उनकी
मुलाक़ात मज़कूरा नबियों के जुलूस से हुई।
अल्लाह का रूह साऊल पर नाज़िल हुआ, और
वह उनके दरमियान नबुव्वत करने लगा। 11कुछ
लोग वहाँ थे जो बचपन से उससे वाक़िफ़ थे।
साऊल को यों नबियों के दरमियान नबुव्वत करते
हुए देखकर वह आपस में कहने लगे, “क़ीस के
बेटे के साथ क्या हुआ? क्या साऊल को भी
नबियों में शुमार किया जाता है?” 12एक मक़ामी
आदमी ने जवाब दिया, “कौन इनका बाप है?”
बाद में यह मुहावरा बन गया, “क्या साऊल को
भी नबियों में शुमार किया जाता है?”

13नबुव्वत करने के इख़्तिताम पर साऊल
पहाड़ी पर चढ़ गया जहाँ क़ुरबानगाह थी। 14जब
साऊल नौकर समेत वहाँ पहुँचा तो उसके चचा ने
पूछा, “आप कहाँ थे?” साऊल ने जवाब दिया,
“हम गुमशुदा गधियों को ढूँडने के लिए निकले थे।
लेकिन जब वह न मिलीं तो हम समुएल के पास
गए।” 15चचा बोला, “अच्छा? उसने आपको
क्या बताया?” 16साऊल ने जवाब दिया, “ख़ैर,
उसने कहा कि गधियाँ मिल गई हैं।” लेकिन जो

कुछ समुएल ने बादशाह बनने के बारे में बताया
था उसका ज़िक्र उसने न किया।

साऊल बादशाह बन जाता है

17कुछ देर के बाद समुएल ने अवाम को
बुलाकर मिसफ़ाह में रब के हुज़ूर जमा किया।
18उसने कहा, "रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, 'मैं इसराईल को मिसर से निकाल लाया।
मैंने तुम्हें मिसरियों और उन तमाम सलतनतों से
बचाया जो तुम पर ज़ुल्म कर रही थीं। 19लेकिन
गो मैंने तुम्हें तुम्हारी तमाम मुसीबतों और तंगियों
से छुटकारा दिया तो भी तुमने अपने ख़ुदा को
मुस्तरद कर दिया। क्योंकि तुमने इसरार किया
कि हम पर बादशाह मुक़र्रर करो! अब अपने
अपने क़बीलों और ख़ानदानों की तरतीब के
मुताबिक़ रब के हुज़ूर खड़े हो जाओ'।"

20यह कहकर समुएल ने तमाम क़बीलों को रब
के हुज़ूर पेश किया। क़ुरा डाला गया तो बिनयमीन
के क़बीले को चुना गया। 21फिर समुएल ने
बिनयमीन के क़बीले के सारे ख़ानदानों को रब
के हुज़ूर पेश किया। मतरी के ख़ानदान को चुना
गया। यों क़ुरा डालते डालते साऊल बिन क़ीस
को चुना गया। लेकिन जब साऊल को ढूँडा गया
तो वह ग़ायब था।

22उन्होंने रब से दरियाफ़्त किया, "क्या
साऊल यहाँ पहुँच चुका है?" रब ने जवाब दिया,
"वह सामान के बीच में छुप गया है।" 23कुछ
लोग दौड़कर उसे सामान में से निकालकर अवाम
के पास ले आए। जब वह लोगों में खड़ा हुआ तो
इतना लंबा था कि बाक़ी सब लोग सिर्फ़ उसके
कंधों तक आते थे।

24समुएल ने कहा, "यह आदमी देखो जिसे
रब ने चुन लिया है। अवाम में उस जैसा कोई
नहीं है!" तमाम लोग ख़ुशी के मारे "बादशाह
ज़िंदाबाद!" का नारा लगाते रहे। 25समुएल ने
बादशाह के हुक़ूक़ तफ़सील से सुनाए। उसने
सब कुछ किताब में लिख दिया और उसे रब के
मक़दिस में महफ़ूज़ रखा। फिर उसने अवाम को
रुख़सत कर दिया।

26साऊल भी अपने घर चला गया जो जिबिया
में था। कुछ फ़ौजी उसके साथ चले जिनके दिलों
को अल्लाह ने छू दिया था। 27लेकिन ऐसे शरीर
लोग भी थे जिन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाकर पूछा,
"भला यह किस तरह हमें बचा सकता है?" वह
उसे हक़ीर जानते थे और उसे तोहफ़े पेश करने
के लिए भी तैयार न हुए। लेकिन साऊल उनकी
बातें नज़रंदाज़ करके ख़ामोश ही रहा।

साऊल अम्मोनियों पर फ़तह पाता है

11 कुछ देर के बाद अम्मोनी बाद-
शाह नाहस ने अपनी फ़ौज लेकर
यबीस-जिलियाद का मुहासरा किया। यबीस के
तमाम अफ़राद ने उससे गुज़ारिश की, "हमारे
साथ मुआहदा करें तो हम आइंदा आपके ताबे
रहेंगे।" 2नाहस ने जवाब दिया, "ठीक है,
लेकिन इस शर्त पर कि मैं हर एक की दहनी
आँख निकालकर तमाम इसराईल की बेइज़्ज़ती
करूँगा!" 3यबीस के बुज़ुर्गों ने दरख़ास्त की,
"हमें एक हफ़्ते की मोहलत दीजिए ताकि हम
अपने क़ासिदों को इसराईल की हर जगह भेजें।
अगर कोई हमें बचाने के लिए न आए तो हम
हथियार डालकर शहर को आपके हवाले कर
देंगे।"

4क़ासिद साऊल के शहर जिबिया भी पहुँच
गए। जब मक़ामी लोगों ने उनका पैग़ाम सुना
तो पूरा शहर फूट फूटकर रोने लगा। 5उस वक़्त
साऊल अपने बैलों को खेतों से वापस ला रहा
था। उसने पूछा, "क्या हुआ है? लोग क्यों रो रहे
हैं?" उसे क़ासिदों का पैग़ाम सुनाया गया। 6तब
साऊल पर अल्लाह का रूह नाज़िल हुआ, और
उसे सख़्त ग़ुस्सा आया। 7उसने बैलों का जोड़ा
लेकर उन्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया। फिर क़ासिदों
को यह टुकड़े पकड़ाकर उसने उन्हें यह पैग़ाम
देकर इसराईल की हर जगह भेज दिया, "जो
साऊल और समुएल के पीछे चलकर अम्मोनियों

से लड़ने नहीं जाएगा उसके बैल इसी तरह टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएंगे!”

यह ख़बर सुनकर लोगों पर रब की दहशत तारी हो गई, और सबके सब एक दिल होकर अम्मोनियों से लड़ने के लिए निकले। 8बज़क़ के क़रीब साऊल ने फ़ौज का जायज़ा लिया। यहूदाह के 30,000 अफ़राद थे और बाक़ी क़बीलों के 3,00,000।

9उन्होंने यबीस-जिलियाद के क़ासिदों को वापस भेजकर बताया, “कल दोपहर से पहले पहले आपको बचा लिया जाएगा।” वहाँ के बाशिंदे यह ख़बर सुनकर बहुत ख़ुश हुए। 10उन्होंने अम्मोनियों को इत्तला दी, “कल हम हथियार डालकर शहर के दरवाज़े खोल देंगे। फिर वह कुछ करें जो आपको ठीक लगे।”

11अगले दिन सुबह-सवेरे साऊल ने फ़ौज को तीन हिस्सों में तक़सीम किया। सूरज के तुलू होने से पहले पहले उन्होंने तीन सिम्तों से दुश्मन की लशकरगाह पर हमला किया। दोपहर तक उन्होंने अम्मोनियों को मार मारकर ख़त्म कर दिया। जो थोड़े-बहुत लोग बच गए वह यों तित्तर-बित्तर हो गए कि दो भी इकट्ठे न रहे।

साऊल की दुबारा तसदीक़

12फ़तह के बाद लोग समुएल के पास आकर कहने लगे, “वह लोग कहाँ हैं जिन्होंने एतराज़ किया कि साऊल हम पर हुकूमत करे? उन्हें ले आएँ ताकि हम उन्हें मार दें।” 13लेकिन साऊल ने उन्हें रोक दिया। उसने कहा, “नहीं, आज तो हम किसी भी भाई को सज़ाए-मौत नहीं देंगे, क्योंकि इस दिन रब ने इसराईल को रिहाई बख़्शी है!” 14फिर समुएल ने एलान किया, “आओ, हम जिलजाल जाकर दुबारा इसकी तसदीक़ करें कि साऊल हमारा बादशाह है।”

15चुनाँचे तमाम लोगों ने जिलजाल जाकर रब के हुज़ूर इसकी तसदीक़ की कि साऊल हमारा बादशाह है। इसके बाद उन्होंने रब के हुज़ूर सलामती की क़ुरबानियाँ पेश करके बड़ा जशन मनाया।

समुएल की अलविदाई तक़रीर

12 तब समुएल तमाम इसराईल से मुख़ातिब हुआ, “मैंने आपकी हर बात मानकर आप पर बादशाह मुक़र्रर किया है। 2अब यही आपके आगे आगे चलकर आपकी राहनुमाई करेगा। मैं ख़ुद बूढ़ा हूँ, और मेरे बाल सफ़ेद हो गए हैं जबकि मेरे बेटे आपके दरमियान ही रहते हैं। मैं जवानी से लेकर आज तक आपकी राहनुमाई करता आया हूँ। 3अब मैं हाज़िर हूँ। अगर मुझसे कोई ग़लती हुई है तो रब और उसके मसह किए हुए बादशाह के सामने इसकी गवाही दें। क्या मैंने किसी का बैल या गधा लूट लिया? क्या मैंने किसी से ग़लत फ़ायदा उठाया या किसी पर ज़ुल्म किया? क्या मैंने कभी किसी से रिश्वत लेकर ग़लत फ़ैसला किया है? अगर ऐसा हुआ तो मुझे बताएँ! फिर मैं सब कुछ वापस कर दूँगा।”

4इजतिमा ने जवाब दिया, “न आपने हमसे ग़लत फ़ायदा उठाया, न हम पर ज़ुल्म किया है। आपने कभी भी रिश्वत नहीं ली।” 5समुएल बोला, “आज रब और उसका मसह किया हुआ बादशाह गवाह हैं कि आपको मुझ पर इलज़ाम लगाने का कोई सबब न मिला।” अवाम ने कहा, “जी, ऐसा ही है।” 6समुएल ने बात जारी रखी, “रब ख़ुद मूसा और हारून को इसराईल के राहनुमा बनाकर आपके बापदादा को मिसर से निकाल लाया। 7अब यहाँ रब के तख़्ते-अदालत के सामने खड़े हो जाएँ तो मैं आपको उन तमाम भलाइयों की याद दिलाऊँगा जो रब ने आप और आपके बापदादा से की हैं।

8आपका बाप याक़ूब मिसर आया। जब मिसरी उस की औलाद को दबाने लगे तो उन्होंने चीख़ते-चिल्लाते रब से मदद माँगी। तब उसने मूसा और हारून को भेज दिया ताकि वह पूरी क़ौम को मिसर से निकालकर यहाँ इस मुल्क में लाएँ। 9लेकिन जल्द ही वह रब अपने ख़ुदा को भूल

गए, इसलिए उसने उन्हें दुश्मन के हवाले कर
दिया। कभी हसूर शहर के बादशाह का कमाँडर
सीसरा उनसे लड़ा, कभी फ़िलिस्ती और कभी
मोआब का बादशाह। 10हर दफ़ा आपके बापदादा
ने चीख़ते-चिल्लाते रब से मदद माँगी और इक़रार
किया, 'हमने गुनाह किया है, क्योंकि हमने रब
को तर्क करके बाल और अस्तारात के बुतों की
पूजा की है। लेकिन अब हमें दुश्मनों से बचा!
फिर हम सिर्फ़ तेरी ही ख़िदमत करेंगे।' 11और
हर बार रब ने किसी न किसी को भेज दिया, कभी
जिदाऊन, कभी बरक़, कभी इफ़ताह और कभी
समुएल को। उन आदमियों की मारिफ़त अल्लाह
ने आपको इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से बचाया,
और मुल्क में अमनो-अमान क़ायम हो गया।

12लेकिन जब अम्मोनी बादशाह नाहस आपसे
लड़ने आया तो आप मेरे पास आकर तक़ाज़ा
करने लगे कि हमारा अपना बादशाह हो जो हम
पर हुकूमत करे, हालाँकि आप जानते थे कि
रब हमारा ख़ुदा हमारा बादशाह है। 13अब वह
बादशाह देखें जिसे आप माँग रहे थे! रब ने
आपकी ख़ाहिश पूरी करके उसे आप पर मुक़र्रर
किया है। 14चुनाँचे रब का ख़ौफ़ मानें, उस की
ख़िदमत करें और उस की सुनें। सरकश होकर
उसके अहकाम की ख़िलाफ़वरज़ी मत करना।
अगर आप और आपका बादशाह रब से वफ़ादार
रहेंगे तो वह आपके साथ होगा। 15लेकिन अगर
आप उसके ताबे न रहें और सरकश होकर उसके
अहकाम की ख़िलाफ़वरज़ी करें तो वह आपकी
मुख़ालफ़त करेगा, जिस तरह उसने आपके
बापदादा की भी मुख़ालफ़त की।

16अब खड़े होकर देखें कि रब क्या करनेवाला
है। वह आपकी आँखों के सामने ही बड़ा मोजिज़ा
करेगा। 17इस वक़्त गंदुम की कटाई का मौसम
है। गो इन दिनों में बारिश नहीं होती, लेकिन मैं
दुआ करूँगा तो रब गरजते बादल और बारिश
भेजेगा। तब आप जान लेंगे कि आपने बादशाह
का तक़ाज़ा करते हुए रब के नज़दीक कितनी बुरी
बात की है।"

18समुएल ने पुकारकर रब से दुआ की, और
उस दिन रब ने गरजते बादल और बारिश भेज दी।
यह देखकर इजतिमा सख़्त घबराकर समुएल और
रब से डरने लगा। 19सबने समुएल से इलतमास
की, "रब अपने ख़ुदा से दुआ करके हमारी
सिफ़ारिश करें ताकि हम मर न जाएँ। क्योंकि
बादशाह का तक़ाज़ा करने से हमने अपने गुनाहों
में इज़ाफ़ा किया है।"

20समुएल ने लोगों को तसल्ली देकर कहा,
"मत डरें। बेशक आपसे ग़लती हुई है, लेकिन
आइंदा ख़याल रखें कि आप रब से दूर न हो
जाएँ बल्कि पूरे दिल से उस की ख़िदमत करें।
21बेमानी बुतों के पीछे मत पड़ना। न वह फ़ायदे
का बाइस हैं, न आपको बचा सकते हैं। उनकी
कोई हैसियत नहीं है। 22रब अपने अज़ीम नाम
की ख़ातिर अपनी क़ौम को नहीं छोड़ेगा, क्योंकि
उसने आपको अपनी क़ौम बनाने का फ़ैसला
किया है। 23जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, मैं इसमें
रब का गुनाह नहीं करूँगा कि आपकी सिफ़ारिश
करने से बाज़ आऊँ। और आइंदा भी मैं आपको
अच्छे और सहीह रास्ते की तालीम देता रहूँगा।
24लेकिन ध्यान से रब का ख़ौफ़ मानें और पूरे
दिल और वफ़ादारी से उस की ख़िदमत करें। याद
रहे कि उसने आपके लिए कितने अज़ीम काम
किए हैं। 25लेकिन अगर आप ग़लत काम करने
पर तुले रहें तो आप अपने बादशाह समेत दुनिया
में से मिट जाएंगे।"

फ़िलिस्तियों से जंग

13 साऊल 30 साल का था जब
तख़्तनशीन हुआ। दो साल हुकू-
मत करने के बाद 2उसने अपनी फ़ौज के लिए
3,000 इसराईली चुन लिए। जंग लड़ने के
क़ाबिल बाक़ी आदमियों को उसने फ़ारिग़ कर
दिया। 2,000 फ़ौजियों की ड्यूटी मिकमास और
बैतेल के पहाड़ी इलाक़े में लगाई गई जहाँ साऊल
ख़ुद था। बाक़ी 1,000 अफ़राद यूनतन के पास
बिनयमीन के शहर जिबिया में थे।

3एक दिन यूनतन ने जिबिया की फ़िलिस्ती
चौकी पर हमला करके उसे शिकस्त दी। जल्द
ही यह ख़बर दूसरे फ़िलिस्तियों तक पहुँच गई।
साऊल ने मुल्क के कोने कोने में क़ासिद भेज
दिए, और वह नरसिंगा बजाते बजाते लोगों को
यूनतन की फ़तह सुनाते गए। 4तमाम इसराईल
में ख़बर फैल गई, "साऊल ने जिबिया की
फ़िलिस्ती चौकी को तबाह कर दिया है, और
अब इसराईल फ़िलिस्तियों की ख़ास नफ़रत का
निशाना बन गया है।" साऊल ने तमाम मर्दों
को फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए जिलजाल में
बुलाया।
5फ़िलिस्ती भी इसराईलियों से लड़ने के
लिए जमा हुए। उनके 30,000 रथ, 6,000
घुड़सवार और साहिल की रेत जैसे बेशुमार
प्यादा फ़ौजी थे। उन्होंने बैत-आवन के मशरिक़
में मिकमास के क़रीब अपने ख़ैमे लगाए।
6इसराईलियों ने देखा कि हम बड़े ख़तरे में आ
गए हैं, और दुश्मन हम पर बहुत दबाव डाल रहा
है तो परेशानी के आलम में कुछ ग़ारों और दराड़ों
में और कुछ पत्थरों के दरमियान या क़ब्रों और
हौज़ों में छुप गए। 7कुछ इतने डर गए कि वह
दरियाए-यरदन को पार करके जद और जिलियाद
के इलाक़े में चले गए।

साऊल की बेसब्री

साऊल अब तक जिलजाल में था, लेकिन
जो आदमी उसके साथ रहे थे वह ख़ौफ़ के
मारे थरथरा रहे थे। 8समुएल ने साऊल को
हिदायत दी थी कि सात दिन मेरा इंतज़ार करें।
लेकिन सात दिन गुज़र गए, और समुएल न
आया। साऊल के फ़ौजी मुंतशिर होने लगे 9तो
साऊल ने हुक्म दिया, "भस्म होनेवाली और
सलामती की क़ुरबानियाँ ले आओ।" फिर उसने
ख़ुद क़ुरबानियाँ पेश कीं।
10वह अभी इस काम से फ़ारिग़ ही हुआ था
कि समुएल पहुँच गया। साऊल उसे ख़ुशआमदीद
कहने के लिए निकला। 11लेकिन समुएल ने
पूछा, "आपने क्या किया?"
साऊल ने जवाब दिया, "लोग मुंतशिर हो रहे
थे, और आप वक़्त पर न आए। जब मैंने देखा कि
फ़िलिस्ती मिकमास के क़रीब जमा हो रहे हैं 12तो
मैंने सोचा, 'फ़िलिस्ती यहाँ जिलजाल में आकर
मुझ पर हमला करने को हैं, हालाँकि मैंने अभी
रब से दुआ नहीं की कि वह हम पर मेहरबानी
करे।' इसलिए मैंने जुर्रत करके ख़ुद क़ुरबानियाँ
पेश कीं।"
13समुएल बोला, "यह कैसी अहमक़ाना
हरकत थी! आपने रब अपने ख़ुदा का हुक्म
न माना। रब तो आप और आपकी औलाद को
हमेशा के लिए इसराईल पर मुक़र्रर करना चाहता
था। 14लेकिन अब आपकी बादशाहत क़ायम
नहीं रहेगी। चूँकि आपने उस की न सुनी इसलिए
रब ने किसी और को चुनकर अपनी क़ौम का
राहनुमा मुक़र्रर किया है, एक ऐसे आदमी को जो
उस की सोच रखेगा।"
15फिर समुएल जिलजाल से चला गया।

जंग की तैयारियाँ

बचे हुए इसराईली साऊल के पीछे दुश्मन
से लड़ने गए। वह जिलजाल से रवाना होकर
जिबिया पहुँच गए। जब साऊल ने वहाँ फ़ौज का
जायज़ा लिया तो बस 600 अफ़राद रह गए थे।
16साऊल, यूनतन और उनकी फ़ौज बिनयमीन
के शहर जिबिया में टिक गए जबकि फ़िलिस्ती
मिकमास के पास ख़ैमाज़न थे। 17कुछ देर के
बाद फ़िलिस्तियों के तीन दस्ते मुल्क को लूटने
के लिए निकले। एक सुआल के इलाक़े के शहर
उफ़रा की तरफ़ चल पड़ा, 18दूसरा बैत-हौरून
की तरफ़ और तीसरा उस पहाड़ी सिलसिले की
तरफ़ जहाँ से वादीए-ज़बोईम और रेगिस्तान देखा
जा सकता है।
19उन दिनों में पूरे मुल्के-इसराईल में लोहार
नहीं था, क्योंकि फ़िलिस्ती नहीं चाहते थे कि
इसराईली तलवारें या नेज़े बनाएँ। 20अपने हलों,

कुदालों, कुल्हाड़ियों या दराँतियों को तेज़ करवाने
के लिए तमाम इसराईलियों को फ़िलिस्तियों
के पास जाना पड़ता था। 21फ़िलिस्ती हलों,
कुदालों, काँटों और कुल्हाड़ियों को तेज़ करने के
लिए और आँकुसों की नोक ठीक करने के लिए
चाँदी के सिक्के की दो तिहाई लेते थे। 22नतीजे
में उस दिन साऊल और यूनतन के सिवा किसी
भी इसराईली के पास तलवार या नेज़ा नहीं था।

यूनतन फ़िलिस्तियों पर हमला करता है

23फ़िलिस्तियों ने मिकमास के दर्रे पर क़ब्ज़ा
करके वहाँ चौकी क़ायम की थी।

14 एक दिन यूनतन ने अपने जवान
सिलाहबरदार से कहा, "आओ, हम
परली तरफ़ जाएँ जहाँ फ़िलिस्ती फ़ौज की चौकी
है।" लेकिन उसने अपने बाप को इत्तला न दी।
2साऊल उस वक़्त अनार के दरख़्त के साये में
बैठा था जो जिबिया के क़रीब के मिजरोन में था।
600 मर्द उसके पास थे। 3अख़ियाह इमाम भी
साथ था जो इमाम का बालापोश पहने हुए था।
अख़ियाह यकबोद के भाई अख़ीतूब का बेटा था।
उसका दादा फ़ीनहास और परदादा एली था, जो
पुराने ज़माने में सैला में रब का इमाम था। किसी
को भी मालूम न था कि यूनतन चला गया है।
4-5फ़िलिस्ती चौकी तक पहुँचने के लिए
यूनतन ने एक तंग रास्ता इख़्तियार किया जो दो
कड़ाड़ों के दरमियान से गुज़रता था। पहले का
नाम बोसीस था, और वह शिमाल में मिकमास
के मुक़ाबिल था। दूसरे का नाम सना था, और
वह जुनूब में जिबा के मुक़ाबिल था। 6यूनतन
ने अपने जवान सिलाहबरदार से कहा, "आओ,
हम परली तरफ़ जाएँ जहाँ इन नामख़तूनों की
चौकी है। शायद रब हमारी मदद करे, क्योंकि
उसके नज़दीक कोई फ़रक़ नहीं कि हम ज़्यादा
हों या कम।" 7उसका सिलाहबरदार बोला, "जो
कुछ आप ठीक समझते हैं, वही करें। ज़रूर जाएँ।
जो कुछ भी आप कहेंगे, मैं हाज़िर हूँ।" 8यूनतन
बोला, "ठीक है। फिर हम यों दुश्मनों की तरफ़
बढ़ते जाएंगे, कि हम उन्हें साफ़ नज़र आएँ।
9अगर वह हमें देखकर पुकारें, 'रुक जाओ, वरना
हम तुम्हें मार देंगे!' तो हम अपने मनसूबे से बाज़
आकर उनके पास नहीं जाएंगे। 10लेकिन अगर
वह पुकारें, 'आओ, हमारे पास आ जाओ!' तो
हम ज़रूर उनके पास चढ़ जाएंगे। क्योंकि यह
इसका निशान होगा कि रब उन्हें हमारे क़ब्ज़े में
कर देगा।"
11चुनाँचे वह चलते चलते फ़िलिस्ती चौकी को
नज़र आए। फ़िलिस्ती शोर मचाने लगे, "देखो,
इसराईली अपने छुपने के बिलों से निकल रहे
हैं!" 12चौकी के फ़ौजियों ने दोनों को चैलेंज
किया, "आओ, हमारे पास आओ तो हम तुम्हें
सबक़ सिखाएँगे।" यह सुनकर यूनतन ने अपने
सिलाहबरदार को आवाज़ दी, "आओ, मेरे पीछे
चलो! रब ने उन्हें इसराईल के हवाले कर दिया
है।" 13दोनों अपने हाथों और पैरों के बल चढ़ते
चढ़ते चौकी तक जा पहुँचे। जब यूनतन आगे आगे
चलकर फ़िलिस्तियों के पास पहुँच गया तो वह
उसके सामने गिरते गए। साथ साथ सिलाहबरदार
पीछे से लोगों को मारता गया।
14इस पहले हमले के दौरान उन्होंने तक़रीबन
20 आदमियों को मार डाला। उनकी लाशें आध
एकड़ ज़मीन पर बिखरी पड़ी थीं। 15अचानक पूरी
फ़ौज में दहशत फैल गई, न सिर्फ़ लशकरगाह
बल्कि खुले मैदान में भी। चौकी के मर्द और
लूटनेवाले दस्ते भी थरथराने लगे। साथ साथ
ज़लज़ला आया। रब ने तमाम फ़िलिस्ती फ़ौजियों
के दिलों में दहशत पैदा की।

रब फ़िलिस्तियों पर फ़तह देता है

16साऊल के जो पहरेदार जिबिया से दुश्मन की
हरकतों पर ग़ौर कर रहे थे उन्होंने अचानक देखा
कि फ़िलिस्ती फ़ौज में हलचल मच गई है, अफ़रा-
तफ़री कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ बढ़ रही
है। 17साऊल ने फ़ौरन हुक्म दिया, "फ़ौजियों
को गिनकर मालूम करो कि कौन चला गया है।"
मालूम हुआ कि यूनतन और उसका सिलाहबरदार

मौजूद नहीं हैं। 18साऊल ने अख़ियाह को हुक्म
दिया, "अहद का संदूक़ ले आएँ।" क्योंकि वह
उन दिनों में इसराईली कैंप में था। 19लेकिन
साऊल अभी अख़ियाह से बात कर रहा था कि
फ़िलिस्ती लशकरगाह में हंगामा और शोर बहुत
ज़्यादा बढ़ गया। साऊल ने इमाम से कहा, "कोई
बात नहीं, रहने दें।" 20वह अपने 600 अफ़राद
को लेकर फ़ौरन दुश्मन पर टूट पड़ा। जब उन
तक पहुँच गए तो मालूम हुआ कि फ़िलिस्ती एक
दूसरे को क़त्ल कर रहे हैं, और हर तरफ़ हंगामा
ही हंगामा है।

21फ़िलिस्तियों ने काफ़ी इसराईलियों को
अपनी फ़ौज में शामिल कर लिया था। अब
यह लोग फ़िलिस्तियों को छोड़कर साऊल और
यूनतन के पीछे हो लिए। 22इनके अलावा जो
इसराईली इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में इधर-
उधर छुप गए थे, जब उन्हें ख़बर मिली कि
फ़िलिस्ती भाग रहे हैं तो वह भी उनका ताक़्क़ुब
करने लगे। 23लड़ते लड़ते मैदाने-जंग बैत-आवन
तक फैल गया। इस तरह रब ने उस दिन
इसराईलियों को बचा लिया।

साऊल की बेसोचे-समझे लानत

24उस दिन इसराईली सख़्त लड़ाई के बाइस
बड़ी मुसीबत में थे। इसलिए साऊल ने क़सम
खाकर कहा, "उस पर लानत जो शाम से पहले
खाना खाए। पहले मैं अपने दुश्मन से इंतक़ाम
लूँगा, फिर ही सब खा-पी सकते हैं।" इस वजह
से किसी ने रोटी को हाथ तक न लगाया। 25पूरी
फ़ौज जंगल में दाख़िल हुई तो वहाँ ज़मीन पर
शहद के छत्ते थे। 26तमाम लोग जब उनके पास
से गुज़रे तो देखा कि उनसे शहद टपक रहा है।
लेकिन किसी ने थोड़ा भी लेकर खाने की जुर्रत न
की, क्योंकि सब साऊल की लानत से डरते थे।

27यूनतन को लानत का इल्म न था, इसलिए
उसने अपनी लाठी का सिरा किसी छत्ते में
डालकर उसे चाट लिया। उस की आँखें फ़ौरन
चमक उठीं, और वह ताज़ादम हो गया। 28किसी
ने देखकर यूनतन को बताया, "आपके बाप ने
फ़ौज से क़सम खिलाकर एलान किया है कि उस
पर लानत जो इस दिन कुछ खाए। इसी वजह से
हम सब इतने निढाल हो गए हैं।" 29यूनतन ने
जवाब दिया, "मेरे बाप ने मुल्क को मुसीबत में
डाल दिया है! देखो, इस थोड़े-से शहद को चखने
से मेरी आँखें कितनी चमक उठीं और मैं कितना
ताज़ादम हो गया। 30बेहतर होता कि हमारे लोग
दुश्मन से लूटे हुए माल में से कुछ न कुछ खा लेते।
लेकिन इस हालत में हम फ़िलिस्तियों को किस
तरह ज़्यादा नुक़सान पहुँचा सकते हैं?"

31उस दिन इसराईली फ़िलिस्तियों को
मिकमास से मार मारकर ऐयालोन तक पहुँच
गए। लेकिन शाम के वक़्त वह निहायत निढाल
हो गए थे। 32फिर वह लूटे हुए रेवड़ों पर टूट
पड़े। उन्होंने जल्दी जल्दी भेड़-बकरियों, गाय-
बैलों और बछड़ों को ज़बह किया। भूक की
शिद्दत की वजह से उन्होंने ख़ून को सहीह तौर
से निकलने न दिया बल्कि जानवरों को ज़मीन
पर छोड़कर गोश्त को ख़ून समेत खाने लगे।

33किसी ने साऊल को इत्तला दी, "देखें, लोग
रब का गुनाह कर रहे हैं, क्योंकि वह गोश्त खा
रहे हैं जिसमें अब तक ख़ून है।" यह सुनकर
साऊल पुकार उठा, "आप रब से वफ़ादार नहीं
रहे!" फिर उसने साथवाले आदमियों को हुक्म
दिया, "कोई बड़ा पत्थर लुढ़काकर इधर ले आएँ!
34फिर तमाम आदमियों के पास जाकर उन्हें बता
देना, 'अपने जानवरों को मेरे पास ले आएँ ताकि
उन्हें पत्थर पर ज़बह करके खाएँ। वरना आप
ख़ूनआलूदा गोश्त खाकर रब का गुनाह करेंगे'।"

सब मान गए। उस शाम वह साऊल के पास
आए और अपने जानवरों को पत्थर पर ज़बह
किया। 35वहाँ साऊल ने पहली दफ़ा रब की
ताज़ीम में क़ुरबानगाह बनाई।

36फिर उसने एलान किया, "आएँ, हम अभी
इसी रात फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब करके उनमें
लूट-मार का सिलसिला जारी रखें ताकि एक भी
न बचे।" फ़ौजियों ने जवाब दिया, "ठीक है, वह

कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे।” लेकिन इमाम बोला, “पहले हम अल्लाह से हिदायत लें।”
37चुनाँचे साऊल ने अल्लाह से पूछा, “क्या हम फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब जारी रखें? क्या तू उन्हें इसराईल के हवाले कर देगा?” लेकिन इस मरतबा अल्लाह ने जवाब न दिया।

38यह देखकर साऊल ने फ़ौज के तमाम राहनुमाओं को बुलाकर कहा, “किसी ने गुनाह किया है। मालूम करने की कोशिश करें कि कौन क़ुसूरवार है।
39रब की हयात की क़सम जो इसराईल का नजातदहिंदा है, क़ुसूरवार को फ़ौरन सज़ाए-मौत दी जाएगी, ख़ाह वह मेरा बेटा यूनतन क्यों न हो।” लेकिन सब ख़ामोश रहे।

40तब साऊल ने दुबारा एलान किया, “पूरी फ़ौज एक तरफ़ खड़ी हो जाए और यूनतन और मैं दूसरी तरफ़।” लोगों ने जवाब दिया, “जो आपको मुनासिब लगे वह करें।”
41फिर साऊल ने रब इसराईल के ख़ुदा से दुआ की, “ऐ रब, हमें दिखा कि कौन क़ुसूरवार है!”

जब क़ुरा डाला गया तो यूनतन और साऊल के गुरोह को क़ुसूरवार क़रार दिया गया और बाक़ी फ़ौज को बेक़ुसूर।
42फिर साऊल ने हुक्म दिया, “अब क़ुरा डालकर पता करें कि मैं क़ुसूरवार हूँ या यूनतन।” जब क़ुरा डाला गया तो यूनतन क़ुसूरवार ठहरा।
43साऊल ने पूछा, “बताएँ, आपने क्या किया?” यूनतन ने जवाब दिया, “मैंने सिर्फ़ थोड़ा-सा शहद चख लिया जो मेरी लाठी के सिरे पर लगा था। लेकिन मैं मरने के लिए तैयार हूँ।”
44साऊल ने कहा, “यूनतन, अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं आपको इसके लिए सज़ाए-मौत न दूँ।”
45लेकिन फ़ौजियों ने एतराज़ किया, “यह कैसी बात है? यूनतन ही ने अपने ज़बरदस्त हमले से इसराईल को आज बचा लिया है। उसे किस तरह सज़ाए-मौत दी जा सकती है? कभी नहीं! अल्लाह की हयात की क़सम, उसका एक बाल भी बीका नहीं होगा, क्योंकि आज उसने अल्लाह की मदद से फ़तह पाई है।” यों फ़ौजियों ने यूनतन को मौत से बचा लिया।

46तब साऊल ने फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब करना छोड़ दिया और अपने घर चला गया। फ़िलिस्ती भी अपने मुल्क में वापस चले गए।

साऊल की जंगें

47जब साऊल तख़्तनशीन हुआ तो वह मुल्क के इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से लड़ा। इनमें मोआब, अम्मोन, अदोम, ज़ोबाह के बादशाह और फ़िलिस्ती शामिल थे। और जहाँ भी जंग छिड़ी वहाँ उसने फ़तह पाई।
48वह निहायत बहादुर था। उसने अमालीक़ियों को भी शिकस्त दी और यों इसराईल को उन तमाम दुश्मनों से बचा लिया जो बार बार मुल्क की लूट-मार करते थे।

साऊल का ख़ानदान

49साऊल के तीन बेटे थे, यूनतन, इसवी और मलकीशुअ। उस की बड़ी बेटी मीरब और छोटी बेटी मीकल थी।
50बीवी का नाम अख़ीनुअम बिंत अख़ीमाज़ था। साऊल की फ़ौज का कमाँडर अबिनैर था, जो साऊल के चचा नैर का बेटा था।
51साऊल का बाप क़ीस और अबिनैर का बाप नैर सगे भाई थे जिनका बाप अबियेल था।

52साऊल के जीते-जी फ़िलिस्तियों से सख़्त जंग जारी रही। इसलिए जब भी कोई बहादुर और लड़ने के क़ाबिल आदमी नज़र आया तो साऊल ने उसे अपनी फ़ौज में भरती कर लिया।

तमाम अमालीक़ियों को हलाक करने का हुक्म

15 एक दिन समुएल ने साऊल के पास आकर उससे बात की, “रब ही ने मुझे आपको मसह करके इसराईल पर मुक़र्रर करने का हुक्म दिया था। अब रब का पैग़ाम सुन लें!
2रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘मैं अमालीक़ियों का मेरी क़ौम के साथ सुलूक नहीं भूल सकता। उस वक़्त जब इसराईली मिसर से निकलकर कनान की तरफ़ सफ़र कर रहे थे तो अमालीक़ियों ने रास्ता बंद कर दिया था।
3अब वक़्त आ गया है

कि तू उन पर हमला करे। सब कुछ तबाह करके
मेरे हवाले कर दे। कुछ भी बचने न दे, बल्कि
तमाम मर्दों, औरतों, बच्चों शीरख़ारों समेत, गाय-
बैलों, भेड़-बकरियों, ऊँटों और गधों को मौत के
घाट उतार दे।'"

4साऊल ने अपने फ़ौजियों को बुलाकर
तलायम में उनका जायज़ा लिया। कुल
2,00,000 प्यादे फ़ौजी थे, नीज़ यहूदाह के
10,000 अफ़राद। 5अमालीक़ियों के शहर के
पास पहुँचकर साऊल वादी में ताक में बैठ गया।
6लेकिन पहले उसने क़ीनियों को ख़बर भेजी,
"अमालीक़ियों से अलग होकर उनके पास से चले
जाएँ, वरना आप उनके साथ हलाक हो जाएंगे।
क्योंकि जब इसराईली मिसर से निकलकर
रेगिस्तान में सफ़र कर रहे थे तो आपने उन पर
मेहरबानी की थी।"

यह ख़बर मिलते ही क़ीनी अमालीक़ियों
से अलग होकर चले गए। 7तब साऊल ने
अमालीक़ियों पर हमला करके उन्हें हवीला से
लेकर मिसर की मशरिक़ी सरहद शूर तक
शिकस्त दी। 8पूरी क़ौम को तलवार से मारा
गया, सिर्फ़ उनका बादशाह अजाज ज़िंदा पकड़ा
गया। 9साऊल और उसके फ़ौजियों ने उसे ज़िंदा
छोड़ दिया। इसी तरह सबसे अच्छी भेड़-बकरियों,
गाय-बैलों, मोटे-ताज़े बछड़ों और चीदा भेड़ के
बच्चों को भी छोड़ दिया गया। जो भी अच्छा
था बच गया, क्योंकि इसराईलियों का दिल नहीं
करता था कि तनदुरुस्त और मोटे-ताज़े जानवरों
को हलाक करें। उन्होंने सिर्फ़ उन तमाम कमज़ोर
जानवरों को ख़त्म किया जिनकी क़दरो-क़ीमत न
थी।

फ़रमाँबरदारी क़ुरबानियों से अहम है

10फिर रब समुएल से हमकलाम हुआ,
11"मुझे दुख है कि मैंने साऊल को बादशाह बना
लिया है, क्योंकि उसने मुझसे दूर होकर मेरा हुक्म
नहीं माना।" समुएल को इतना ग़ुस्सा आया कि
वह पूरी रात बुलंद आवाज़ से रब से फ़रियाद
करता रहा। 12अगले दिन वह उठकर साऊल
से मिलने गया। किसी ने उसे बताया, "साऊल
करमिल चला गया। वहाँ अपने लिए यादगार
खड़ा करके वह आगे जिलजाल चला गया है।"
13जब समुएल जिलजाल पहुँचा तो साऊल ने
कहा, "मुबारक हो! मैंने रब का हुक्म पूरा कर
दिया है।" 14समुएल ने पूछा, "जानवरों का यह
शोर कहाँ से आ रहा है? भेड़-बकरियाँ ममया
रही और गाय-बैल डकरा रहे हैं।" 15साऊल ने
जवाब दिया, "यह अमालीक़ियों के हाँ से लाए
गए हैं। फ़ौजियों ने सबसे अच्छे गाय-बैलों और
भेड़-बकरियों को ज़िंदा छोड़ दिया ताकि उन्हें रब
आपके ख़ुदा के हुज़ूर क़ुरबान करें। लेकिन हमने
बाक़ी सबको रब के हवाले करके मार दिया।"

16समुएल बोला, "ख़ामोश! पहले वह बात
सुन लें जो रब ने मुझे पिछली रात फ़रमाई।"
साऊल ने जवाब दिया, "बताएँ।" 17समुएल ने
कहा, "जब आप तमाम क़ौम के राहनुमा बन गए
तो एहसासे-कमतरी का शिकार थे। तो भी रब ने
आपको मसह करके इसराईल का बादशाह बना
दिया। 18और उसने आपको भेजकर हुक्म दिया,
'जा और अमालीक़ियों को पूरे तौर पर हलाक
करके मेरे हवाले कर। उस वक़्त तक इन शरीर
लोगों से लड़ता रह जब तक वह सबके सब मिट
न जाएँ।' 19अब मुझे बताएँ कि आपने रब की
क्यों न सुनी? आप लूटे हुए माल पर क्यों टूट
पड़े? यह तो रब के नज़दीक गुनाह है।"

20साऊल ने एतराज़ किया, "लेकिन मैंने ज़रूर
रब की सुनी। जिस मक़सद के लिए रब ने
मुझे भेजा वह मैंने पूरा कर दिया है, क्योंकि
मैं अमालीक़ के बादशाह अजाज को गिरिफ़्तार
करके यहाँ ले आया और बाक़ी सबको मौत के
घाट उतारकर रब के हवाले कर दिया। 21मेरे
फ़ौजी लूटे हुए माल में से सिर्फ़ सबसे अच्छी भेड़-
बकरियाँ और गाय-बैल चुनकर ले आए, क्योंकि
वह उन्हें यहाँ जिलजाल में रब आपके ख़ुदा के
हुज़ूर क़ुरबान करना चाहते थे।"

22लेकिन समुएल ने जवाब दिया, “रब को क्या बात ज़्यादा पसंद है, आपकी भस्म होनेवाली और ज़बह की क़ुरबानियाँ या यह कि आप उस की सुनते हैं? सुनना क़ुरबानी से कहीं बेहतर और ध्यान देना मेंढे की चरबी से कहीं उम्दा है।
23सरकशी ग़ैबदानी के गुनाह के बराबर है और ग़ुरूर बुतपरस्ती के गुनाह से कम नहीं होता। आपने रब का हुक्म रद्द किया है, इसलिए उसने आपको रद्द करके बादशाह का ओहदा आपसे छीन लिया है।”

24तब साऊल ने इक़रार किया, “मुझसे गुनाह हुआ है। मैंने आपकी हिदायत और रब के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की है। मैंने लोगों से डरकर उनकी बात मान ली।
25लेकिन अब मेहरबानी करके मुझे मुआफ़ करें और मेरे साथ वापस आएँ ताकि मैं आपकी मौजूदगी में रब की परस्तिश कर सकूँ।”
26लेकिन समुएल ने जवाब दिया, “मैं आपके साथ वापस नहीं चलूँगा। आपने रब का कलाम रद्द किया है, इसलिए रब ने आपको रद्द करके बादशाह का ओहदा आपसे छीन लिया है।”

27समुएल मुड़कर वहाँ से चलने लगा, लेकिन साऊल ने उसके चोग़े का दामन इतने ज़ोर से पकड़ लिया कि वह फटकर उसके हाथ में रह गया।
28समुएल बोला, “जिस तरह कपड़ा फटकर आपके हाथ में रह गया बिलकुल उसी तरह रब ने आज ही इसराईल पर आपका इख़्तियार आपसे छीनकर किसी और को दे दिया है, ऐसे शख़्स को जो आपसे कहीं बेहतर है।
29जो इसराईल की शानो-शौकत है वह न झूट बोलता, न कभी अपनी सोच को बदलता है, क्योंकि वह इनसान नहीं कि एक बात कहकर बाद में उसे बदले।”

30साऊल ने दुबारा मिन्नत की, “बेशक मैंने गुनाह किया है। लेकिन बराहे-करम कम अज़ कम मेरी क़ौम के बुज़ुर्गों और इसराईल के सामने तो मेरी इज़्ज़त करें। मेरे साथ वापस आएँ ताकि मैं आपकी मौजूदगी में रब आपके ख़ुदा की परस्तिश कर सकूँ।”

31तब समुएल मान गया और साऊल के साथ दूसरों के पास वापस आया। साऊल ने रब की परस्तिश की,
32फिर समुएल ने एलान किया, “अमालीक़ के बादशाह अजाज को मेरे पास ले आओ!” अजाज इतमीनान से समुएल के पास आया, क्योंकि उसने सोचा, “बेशक मौत का ख़तरा टल गया है।”
33लेकिन समुएल बोला, “तेरी तलवार से बेशुमार माएँ अपने बच्चों से महरूम हो गई हैं। अब तेरी माँ भी बेऔलाद हो जाएगी।” यह कहकर समुएल ने वहीं जिलजाल में रब के हुज़ूर अजाज को तलवार से टुकड़े टुकड़े कर दिया।

34फिर वह रामा वापस चला गया, और साऊल अपने घर गया जो जिबिया में था।
35इसके बाद समुएल जीते-जी साऊल से कभी न मिला, क्योंकि वह साऊल का मातम करता रहा। लेकिन रब को दुख था कि मैंने साऊल को इसराईल पर क्यों मुक़र्रर किया।

नए बादशाह दाऊद को मुक़र्रर किया जाता है

16 एक दिन रब समुएल से हमकलाम हुआ, “तू कब तक साऊल का मातम करेगा? मैंने तो उसे रद्द करके बादशाह का ओहदा उससे ले लिया है। अब मेंढे का सींग ज़ैतून के तेल से भरकर बैत-लहम चला जा। वहाँ एक आदमी से मिल जिसका नाम यस्सी है। क्योंकि मैंने उसके बेटों में से एक को चुन लिया है कि वह नया बादशाह बन जाए।”
2लेकिन समुएल ने एतराज़ किया, “मैं किस तरह जा सकता हूँ? साऊल यह सुनकर मुझे मार डालेगा।” रब ने जवाब दिया, “एक जवान गाय अपने साथ लेकर लोगों को बता दे कि मैं इसे रब के हुज़ूर क़ुरबान करने के लिए आया हूँ।
3यस्सी को दावत दे कि वह क़ुरबानी की ज़ियाफ़त में शरीक हो जाए। आगे मैं तुझे बताऊँगा कि क्या

करना है। मैं तुझे दिखाऊँगा कि किस बेटे को मेरे
लिए मसह करके चुन लेना है।”
4समुएल मान गया। जब वह बैत-लहम पहुँच
गया तो लोग चौंक उठे। लरज़ते लरज़ते शहर के
बुज़ुर्ग उससे मिलने आए और पूछा, “ख़ैरियत तो
है कि आप हमारे पास आ गए हैं?” 5समुएल ने
उन्हें तसल्ली देकर कहा, “ख़ैरियत है। मैं रब के
हुज़ूर क़ुरबानी पेश करने के लिए आया हूँ। अपने
आपको रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करें और
फिर मेरे साथ क़ुरबानी की ज़ियाफ़त में शरीक
हो जाएँ।” समुएल ने यस्सी और उसके बेटों को
भी दावत दी और उन्हें अपने आपको मख़सूसो-
मुक़द्दस करने को कहा।
6जब यस्सी अपने बेटों समेत क़ुरबानी की
ज़ियाफ़त के लिए आया तो समुएल की नज़र
इलियाब पर पड़ी। उसने सोचा, “बेशक यह वह
है जिसे रब मसह करके बादशाह बनाना चाहता
है।” 7लेकिन रब ने फ़रमाया, “इसकी शक्लो-
सूरत और लंबे क़द से मुतअस्सिर न हो, क्योंकि
यह मुझे नामंज़ूर है। मैं इनसान की नज़र से नहीं
देखता। क्योंकि इनसान ज़ाहिरी सूरत पर ग़ौर
करके फ़ैसला करता है जबकि रब को हर एक
का दिल साफ़ साफ़ नज़र आता है।”
8फिर यस्सी ने अपने दूसरे बेटे अबीनदाब
को बुलाकर समुएल के सामने से गुज़रने दिया।
समुएल बोला, “नहीं, रब ने इसे भी नहीं चुना।”
9इसके बाद यस्सी ने तीसरे बेटे सम्मा को पेश
किया। लेकिन यह भी नहीं चुना गया था। 10यों
यस्सी ने अपने सात बेटों को एक एक करके
समुएल के सामने से गुज़रने दिया। इनमें से
कोई रब का चुना हुआ बादशाह न निकला।
11आख़िरकार समुएल ने पूछा, “इनके अलावा
कोई और बेटा तो नहीं है?” यस्सी ने जवाब
दिया, “सबसे छोटा बेटा अभी बाक़ी रह गया
है, लेकिन वह बाहर खेतों में भेड़-बकरियों की
निगरानी कर रहा है।” समुएल ने कहा, “उसे
फ़ौरन बुला लें। उसके आने तक हम खाने के लिए
नहीं बैठेंगे।”
12चुनाँचे यस्सी छोटे को बुलाकर अंदर ले
आया। यह बेटा गोरा था। उस की आँखें ख़ूबसूरत
और शक्लो-सूरत क़ाबिले-तारीफ़ थी। रब ने
समुएल को बताया, “यही है। उठकर इसे मसह
कर।” 13समुएल ने तेल से भरा हुआ मेंढे का
सींग लेकर उसे दाऊद के सर पर उंडेल दिया।
सब भाई मौजूद थे। उसी वक़्त रब का रूह दाऊद
पर नाज़िल हुआ और उस की सारी उम्र उस पर
ठहरा रहा। फिर समुएल रामा वापस चला गया।

दाऊद साऊल को बदरूह से आराम दिलाता है

14लेकिन रब के रूह ने साऊल को छोड़ दिया
था। इसके बजाए रब की तरफ़ से एक बुरी रूह
उसे दहशतज़दा करने लगी। 15एक दिन साऊल
के मुलाज़िमों ने उससे कहा, “अल्लाह की तरफ़
से एक बुरी रूह आपके दिल में दहशत पैदा कर
रही है। 16हमारा आक़ा अपने ख़ादिमों को हुक्म दे
कि वह किसी को ढूँड लाएँ जो सरोद बजा सके।
जब भी अल्लाह की तरफ़ से यह बुरी रूह आप पर
आए तो वह अपना साज़ बजाकर आपको सुकून
दिलाएगा।”
17साऊल ने जवाब दिया, “ठीक है, ऐसा ही
करो। किसी को बुला लाओ जो साज़ बजाने में
माहिर हो।” 18एक मुलाज़िम बोला, “मैंने एक
आदमी को देखा है जो ख़ूब बजा सकता है। वह
बैत-लहम के रहनेवाले यस्सी का बेटा है। वह न
सिर्फ़ महारत से सरोद बजा सकता है बल्कि बड़ा
जंगजू भी है। यह भी उस की एक ख़ूबी है कि वह
हर मौक़े पर समझदारी से बात कर सकता है।
और वह ख़ूबसूरत भी है। रब उसके साथ है।”
19साऊल ने फ़ौरन अपने क़ासिदों को यस्सी
के पास भेजकर उसे इत्तला दी, “अपने बेटे दाऊद
को जो भेड़-बकरियों को सँभालता है मेरे पास
भेज देना।” 20यह सुनकर यस्सी ने रोटी, मै का
मशकीज़ा और एक जवान बकरी गधे पर लादकर
दाऊद के हवाले कर दी और उसे साऊल के दरबार
में भेज दिया।

21इस तरह दाऊद साऊल की ख़िदमत में
हाज़िर हो गया। वह बादशाह को बहुत पसंद आया
बल्कि साऊल को इतना प्यारा लगा कि उसे
अपना सिलाहबरदार बना लिया। 22साऊल ने
यस्सी को इत्तला भेजी, "दाऊद मुझे बहुत पसंद
आया है, इसलिए उसे मुस्तक़िल तौर पर मेरी
ख़िदमत करने की इजाज़त दें।" 23और जब भी
बुरी रूह साऊल पर आती तो दाऊद अपना सरोद
बजाने लगता। तब साऊल को सुकून मिलता और
बुरी रूह उस पर से दूर हो जाती।

जाती जालूत

17 एक दिन फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौज
को यहूदाह के शहर सोका के क़रीब
जमा किया। वह इफ़स-दम्मीम में ख़ैमाज़न हुए
जो सोका और अज़ीक़ा के दरमियान है। 2जवाब
में साऊल ने अपनी फ़ौज को बुलाकर वादीए-
ऐला में जमा किया। वहाँ इसराईल के मर्द जंग
के लिए तरतीब से खड़े हुए। 3यों फ़िलिस्ती एक
पहाड़ी पर खड़े थे और इसराईली दूसरी पहाड़ी
पर। उनके बीच में वादी थी।

4फिर फ़िलिस्ती सफ़ों से जात शहर का
पहलवान निकलकर इसराईलियों के सामने खड़ा
हुआ। उसका नाम जालूत था और वह 9 फ़ुट से
ज़्यादा लंबा था। 5उसने हिफ़ाज़त के लिए पीतल
की कई चीज़ें पहन रखी थीं : सर पर ख़ोद, धड़
पर ज़िरा-बकतर जो 57 किलोग्राम वज़नी था
6और पिंडलियों पर बकतर। कंधों पर पीतल की
शमशेर लटकी हुई थी। 7जो नेज़ा वह पकड़कर
चल रहा था उसका दस्ता खड्डी के शहतीर जैसा
मोटा और लंबा था, और उसके लोहे की नोक
का वज़न 7 किलोग्राम से ज़्यादा था। जालूत के
आगे आगे एक आदमी उस की ढाल उठाए चल
रहा था।

8जालूत इसराईली सफ़ों के सामने रुककर
गरजा, "तुम सब क्यों लड़ने के लिए सफ़आरा
हो गए हो? क्या मैं फ़िलिस्ती नहीं हूँ जबकि तुम
सिर्फ़ साऊल के नौकर-चाकर हो? चलो, एक
आदमी को चुनकर उसे यहाँ नीचे मेरे पास भेज
दो। 9अगर वह मुझसे लड़ सके और मुझे मार दे
तो हम तुम्हारे ग़ुलाम बन जाएंगे। लेकिन अगर मैं
उस पर ग़ालिब आकर उसे मार डालूँ तो तुम हमारे
ग़ुलाम बन जाओगे। 10आज मैं इसराईली सफ़ों
की बदनामी करके उन्हें चैलेंज करता हूँ कि मुझे
एक आदमी दो जो मेरे साथ लड़े।" 11जालूत की
यह बातें सुनकर साऊल और तमाम इसराईली
घबरा गए, और उन पर दहशत तारी हो गई।

दाऊद भाइयों से मिलने के लिए फ़ौज के पास जाता है

12उस वक़्त दाऊद का बाप यस्सी काफ़ी बूढ़ा
हो चुका था। उसके कुल 8 बेटे थे, और वह
इफ़राता के इलाक़े के बैत-लहम में रहता था।
13लेकिन उसके तीन सबसे बड़े बेटे फ़िलिस्तियों
से लड़ने के लिए साऊल की फ़ौज में भरती हो
गए थे। सबसे बड़े का नाम इलियाब, दूसरे का
अबीनदाब और तीसरे का सम्मा था। 14-15दाऊद
तो सबसे छोटा भाई था। वह दूसरों की तरह पूरा
वक़्त साऊल के पास न गुज़ार सका, क्योंकि उसे
बाप की भेड़-बकरियों को सँभालने की ज़िम्मेदारी
दी गई थी। इसलिए वह आता जाता रहा। चुनाँचे
वह मौजूद नहीं था 16जब जालूत 40 दिन सुबहो-
शाम इसराईलियों की सफ़ों के सामने खड़े होकर
उन्हें चैलेंज करता रहा।

17एक दिन यस्सी ने दाऊद से कहा, "बेटा,
अपने भाइयों के पास कैंप में जाकर उनका पता
करो। भुने हुए अनाज के यह 16 किलोग्राम और
यह दस रोटियाँ अपने साथ लेकर जल्दी जल्दी
उधर पहुँच जाओ। 18पनीर की यह दस टिक्कियाँ
उनके कप्तान को दे देना। भाइयों का हाल मालूम
करके उनकी कोई चीज़ वापस ले आओ ताकि
मुझे तसल्ली हो जाए कि वह ठीक हैं। 19वह
वादीए-ऐला में साऊल और इसराईली फ़ौज के
साथ फ़िलिस्तियों से लड़ रहे हैं।" 20अगले दिन
सुबह-सवेरे दाऊद ने रेवड़ को किसी और के सुपुर्द
करके सामान उठाया और यस्सी की हिदायत

के मुताबिक़ चला गया। जब वह कैंप के पास
पहुँच गया तो इसराईली फ़ौजी नारे लगा लगाकर
मैदाने-जंग के लिए निकल रहे थे। 21वह लड़ने के
लिए तरतीब से खड़े हो गए, और दूसरी तरफ़
फ़िलिस्ती सफ़ें भी तैयार हुईं। 22यह देखकर
दाऊद ने अपनी चीज़ें उस आदमी के पास छोड़
दीं जो लशकर के सामान की निगरानी कर रहा
था, फिर भागकर मैदाने-जंग में भाइयों से मिलने
चला गया।

वह अभी उनका हाल पूछ ही रहा था
23कि जाती जालूत मामूल के मुताबिक़
फ़िलिस्तियों की सफ़ों से निकलकर इस-
राईलियों के सामने वही तंज़ की बातें बकने लगा।
दाऊद ने भी उस की बातें सुनीं। 24जालूत को
देखते ही इसराईलियों के रोंगटे खड़े हो गए,
और वह भागकर 25आपस में कहने लगे, "क्या
आपने इस आदमी को हमारी तरफ़ बढ़ते हुए
देखा? सुनें कि वह किस तरह हमारी बदनामी
करके हमें चैलेंज कर रहा है। बादशाह ने एलान
किया है कि जो शख़्स इसे मार दे उसे बड़ा अज्र
मिलेगा। शहज़ादी से उस की शादी होगी, और
आइंदा उसके बाप के ख़ानदान को टैक्स नहीं देना
पड़ेगा।"

26दाऊद ने साथवाले फ़ौजियों से पूछा, "क्या
कह रहे हैं? उस आदमी को क्या इनाम मिलेगा
जो इस फ़िलिस्ती को मारकर हमारी क़ौम की
रुसवाई दूर करेगा? यह नामख़तून फ़िलिस्ती
कौन है कि ज़िंदा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी
करके उसे चैलेंज करे!" 27लोगों ने दुबारा दाऊद
को बताया कि बादशाह उस आदमी को क्या देगा
जो जालूत को मार डालेगा।

28जब दाऊद के बड़े भाई इलियाब ने दाऊद
की बातें सुनीं तो उसे ग़ुस्सा आया और वह उसे
झिड़कने लगा, "तू क्यों आया है? बयाबान में
अपनी चंद एक भेड़-बकरियों को किसके पास
छोड़ आया है? मैं तेरी शोख़ी और दिल की शरारत
ख़ूब जानता हूँ। तू सिर्फ़ जंग का तमाशा देखने
आया है!" 29दाऊद ने पूछा, "अब मुझसे क्या
ग़लती हुई? मैंने तो सिर्फ़ सवाल पूछा।" 30वह
उससे मुड़कर किसी और के पास गया और वही
बात पूछने लगा। वही जवाब मिला।

हथियार का चुनाव

31दाऊद की यह बातें सुनकर किसी ने साऊल
को इत्तला दी। साऊल ने उसे फ़ौरन बुलाया।
32दाऊद ने बादशाह से कहा, "किसी को इस
फ़िलिस्ती की वजह से हिम्मत नहीं हारना चाहिए।
मैं उससे लड़ूँगा।" 33साऊल बोला, "आप?
आप जैसा लड़का किस तरह उसका मुक़ाबला
कर सकता है? आप तो अभी बच्चे से हो जबकि
वह तजरबाकार जंगजू है जो जवानी से हथियार
इस्तेमाल करता आया है।"

34लेकिन दाऊद ने इसरार किया, "मैं अपने
बाप की भेड़-बकरियों की निगरानी करता हूँ।
जब कभी कोई शेरबबर या रीछ रेवड़ का जानवर
छीनकर भाग जाता 35तो मैं उसके पीछे जाता
और उसे मार मारकर भेड़ को उसके मुँह से
छुड़ा लेता था। अगर शेर या रीछ जवाब में मुझ
पर हमला करता तो मैं उसके सर के बालों को
पकड़कर उसे मार देता था। 36इस तरह आपके
ख़ादिम ने कई शेरों और रीछों को मार डाला है।
यह नामख़तून भी उनकी तरह हलाक हो जाएगा,
क्योंकि उसने ज़िंदा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी
करके उसे चैलेंज किया है। 37जिस रब ने मुझे
शेर और रीछ के पंजे से बचा लिया है वह मुझे
इस फ़िलिस्ती के हाथ से भी बचाएगा।"

साऊल बोला, "ठीक है, जाएँ और रब आपके
साथ हो।" 38उसने दाऊद को अपना ज़िरा-
बकतर और पीतल का ख़ोद पहनाया। 39फिर
दाऊद ने साऊल की तलवार बाँधकर चलने की
कोशिश की। लेकिन उसे बहुत मुश्किल लग रहा
था। उसने साऊल से कहा, "मैं यह चीज़ें पहनकर
नहीं लड़ सकता, क्योंकि मैं इनका आदी नहीं
हूँ।" उन्हें उतारकर 40उसने नदी से पाँच चिकने
चिकने पत्थर चुनकर उन्हें अपनी चरवाहे की थैली
में डाल लिया। फिर चरवाहे की अपनी लाठी और

फ़लाख़न पकड़कर वह फ़िलिस्ती से लड़ने के
लिए इसराईली सफ़ों से निकला।

दाऊद की फ़तह

41जालूत दाऊद की जानिब बढ़ा। ढाल को
उठानेवाला उसके आगे आगे चल रहा था।
42उसने हिक़ारतआमेज़ नज़रों से दाऊद का
जायज़ा लिया, क्योंकि वह गोरा और ख़ूबसूरत
नौजवान था। 43वह गरजा, "क्या मैं कुत्ता हूँ कि
तू लाठी लेकर मेरा मुक़ाबला करने आया है?"
अपने देवताओं के नाम लेकर वह दाऊद पर लानत
भेजकर 44चिल्लाया, "इधर आ ताकि मैं तेरा
गोश्त परिंदों और जंगली जानवरों को खिलाऊँ।"

45दाऊद ने जवाब दिया, "आप तलवार, नेज़ा
और शमशेर लेकर मेरा मुक़ाबला करने आए हैं,
लेकिन मैं रब्बुल-अफ़वाज का नाम लेकर आता
हूँ, उसी का नाम जो इसराईली फ़ौज का ख़ुदा
है। क्योंकि आपने उसी को चैलेंज किया है।
46आज ही रब आपको मेरे हाथ में कर देगा,
और मैं आपका सर क़लम कर दूँगा। इसी दिन मैं
फ़िलिस्ती फ़ौजियों की लाशें परिंदों और जंगली
जानवरों को खिला दूँगा। तब तमाम दुनिया जान
लेगी कि इसराईल का ख़ुदा है। 47सब जो यहाँ
मौजूद हैं जान लेंगे कि रब को हमें बचाने के लिए
तलवार या नेज़े की ज़रूरत नहीं होती। वह ख़ुद
ही जंग कर रहा है, और वही आपको हमारे क़ब्ज़े
में कर देगा।"

48जालूत दाऊद पर हमला करने के लिए
आगे बढ़ा, और दाऊद भी उस की तरफ़ दौड़ा।
49चलते चलते उसने अपनी थैली से पत्थर
निकाला और उसे फ़लाख़न में रखकर ज़ोर से
चलाया। पत्थर उड़ता उड़ता फ़िलिस्ती के माथे
पर जा लगा। वह खोपड़ी में धँस गया, और
पहलवान मुँह के बल गिर गया। 50-51यों दाऊद
फ़लाख़न और पत्थर से फ़िलिस्ती पर ग़ालिब
आया। उसके हाथ में तलवार नहीं थी। तब उसने
जालूत की तरफ़ दौड़कर उसी की तलवार मियान
से खींचकर फ़िलिस्ती का सर काट डाला।

जब फ़िलिस्तियों ने देखा कि हमारा पहलवान
हलाक हो गया है तो वह भाग निकले।
52इसराईल और यहूदाह के मर्द फ़तह के नारे
लगा लगाकर फ़िलिस्तियों पर टूट पड़े। उनका
ताक़्क़ुब करते करते वह जात और अक़रून के
दरवाज़ों तक पहुँच गए। जो रास्ता शारैम से
जात और अक़रून तक जाता है उस पर हर
तरफ़ फ़िलिस्तियों की लाशें नज़र आईं। 53फिर
इसराईलियों ने वापस आकर फ़िलिस्तियों की
छोड़ी हुई लशकरगाह को लूट लिया।

54बाद में दाऊद जालूत का सर यरूशलम को
ले आया। फ़िलिस्ती के हथियार उसने अपने ख़ैमे
में रख लिए।

साऊल दाऊद के ख़ानदान का पता करता है

55जब दाऊद जालूत से लड़ने गया तो साऊल
ने फ़ौज के कमाँडर अबिनैर से पूछा, "इस जवान
आदमी का बाप कौन है?" अबिनैर ने जवाब
दिया, "आपकी हयात की क़सम, मुझे मालूम
नहीं।" 56बादशाह बोला, "फिर पता करें!"
57जब दाऊद फ़िलिस्ती का सर क़लम करके
वापस आया तो अबिनैर उसे बादशाह के पास
लाया। दाऊद अभी जालूत का सर उठाए फिर
रहा था। 58साऊल ने पूछा, "आपका बाप कौन
है?" दाऊद ने जवाब दिया, "मैं बैत-लहम के
रहनेवाले आपके ख़ादिम यस्सी का बेटा हूँ।"

दाऊद और यूनतन की दोस्ती

18 इस गुफ़्तगू के बाद दाऊद की
मुलाक़ात बादशाह के बेटे यूनतन से
हुई। उनमें फ़ौरन गहरी दोस्ती पैदा हो गई, और
यूनतन दाऊद को अपनी जान के बराबर अज़ीज़
रखने लगा। 2उस दिन से साऊल ने दाऊद को
अपने दरबार में रख लिया और उसे बाप के घर
वापस जाने न दिया। 3और यूनतन ने दाऊद से
अहद बाँधा, क्योंकि वह दाऊद को अपनी जान के
बराबर अज़ीज़ रखता था। 4अहद की तसदीक़ के
लिए यूनतन ने अपना चोग़ा उतारकर उसे अपने

ज़िरा-बकतर, तलवार, कमान और पेटी समेत
दाऊद को दे दिया।
5जहाँ भी साऊल ने दाऊद को लड़ने के लिए
भेजा वहाँ वह कामयाब हुआ। यह देखकर साऊल
ने उसे फ़ौज का बड़ा अफ़सर बना दिया। यह बात
अवाम और साऊल के अफ़सरों को पसंद आई।

साऊल दाऊद से हसद करता है

6जब दाऊद फ़िलिस्तियों को शिकस्त देने से
वापस आया तो तमाम शहरों से औरतें निकलकर
साऊल बादशाह से मिलने आईं। दफ़ और साज़
बजाते हुए वह ख़ुशी के गीत गा गाकर नाचने
लगीं। 7और नाचते नाचते वह गाती रहीं, "साऊल
ने तो हज़ार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस
हज़ार।"
8साऊल बड़े ग़ुस्से में आ गया, क्योंकि औरतों
का गीत उसे निहायत बुरा लगा। उसने सोचा,
"उनकी नज़र में दाऊद ने दस हज़ार हलाक किए
जबकि मैंने सिर्फ़ हज़ार। अब सिर्फ़ यह बात रह
गई है कि उसे बादशाह मुक़र्रर किया जाए।" 9उस
वक़्त से साऊल दाऊद को शक की नज़र से देखने
लगा। 10-11अगले दिन अल्लाह ने दुबारा साऊल
पर बुरी रूह आने दी, और वह घर के अंदर वज्द
की हालत में आ गया। दाऊद मामूल के मुताबिक़
साज़ बजाने लगा ताकि बादशाह को सुकून मिले।
साऊल के हाथ में नेज़ा था। अचानक उसने उसे
फेंककर दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की
कोशिश की। लेकिन दाऊद एक तरफ़ हटकर बच
निकला। एक और दफ़ा ऐसा हुआ, लेकिन दाऊद
फिर बच गया।
12यह देखकर साऊल दाऊद से डरने लगा,
क्योंकि उसने जान लिया कि रब मुझे छोड़कर
दाऊद का हामी बन गया है। 13आख़िरकार उसने
दाऊद को दरबार से दूर करके हज़ार फ़ौजियों पर
मुक़र्रर कर दिया। इन आदमियों के साथ दाऊद
मुख़्तलिफ़ जंगों के लिए निकलता रहा। 14और
जो कुछ भी वह करता उसमें कामयाब रहता,
क्योंकि रब उसके साथ था। 15जब साऊल ने
देखा कि दाऊद को कितनी ज़्यादा कामयाबी
हुई है तो वह उससे मज़ीद डर गया। 16लेकिन
इसराईल और यहूदाह के बाक़ी लोग दाऊद से
बहुत मुहब्बत रखते थे, क्योंकि वह हर जंग में
निकलते वक़्त से लेकर घर वापस आते वक़्त
तक उनके आगे आगे चलता था।

दाऊद साऊल का दामाद बन जाता है

17एक दिन साऊल ने दाऊद से बात की, "मैं
अपनी बड़ी बेटी मीरब का रिश्ता आपके साथ
बाँधना चाहता हूँ। लेकिन पहले साबित करें कि
आप अच्छे फ़ौजी हैं, जो रब की जंगों में ख़ूब
हिस्सा ले।" लेकिन दिल ही दिल में साऊल ने
सोचा, "ख़ुद तो मैं दाऊद पर हाथ नहीं उठाऊँगा,
बेहतर है कि वह फ़िलिस्तियों के हाथों मारा
जाए।" 18लेकिन दाऊद ने एतराज़ किया, "मैं
कौन हूँ कि बादशाह का दामाद बनूँ? इसराईल
में तो मेरे ख़ानदान और आबाई कुंबे की कोई
हैसियत नहीं।"
19तो भी शादी की तैयारियाँ की गईं। लेकिन
जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो साऊल ने मीरब की
शादी एक और आदमी बनाम अदरियेल महूलाती
से करवा दी।
20इतने में साऊल की छोटी बेटी मीकल दाऊद
से मुहब्बत करने लगी। जब साऊल को इसकी
ख़बर मिली तो वह ख़ुश हुआ। 21उसने सोचा,
"अब मैं बेटी का रिश्ता उसके साथ बाँधकर
उसे यों फँसा दूँगा कि वह फ़िलिस्तियों से
लड़ते लड़ते मर जाएगा।" दाऊद से उसने कहा,
"आज आपको मेरा दामाद बनने का दुबारा मौक़ा
मिलेगा।"
22फिर उसने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया
कि वह चुपके से दाऊद को बताएँ, "सुनें, आप
बादशाह को पसंद हैं, और उसके तमाम अफ़सर
भी आपको प्यार करते हैं। आप ज़रूर बादशाह
की पेशकश क़बूल करके उसका दामाद बन
जाएँ।" 23लेकिन दाऊद ने एतराज़ किया, "क्या
आपकी दानिस्त में बादशाह का दामाद बनना

छोटी-सी बात है? मैं तो ग़रीब आदमी हूँ, और
मेरी कोई हैसियत नहीं।”
24मुलाज़िमों ने बादशाह के पास वापस जाकर
उसे दाऊद के अलफ़ाज़ बताए। 25साऊल ने
उन्हें फिर दाऊद के पास भेजकर उसे इत्तला दी,
“बादशाह महर के लिए पैसे नहीं माँगता बल्कि
यह कि आप उनके दुश्मनों से बदला लेकर 100
फ़िलिस्तियों को क़त्ल कर दें। सबूत के तौर पर
आपको उनका ख़तना करके जिल्द का कटा हुआ
हिस्सा बादशाह के पास लाना पड़ेगा।” शर्त का
मक़सद यह था कि दाऊद फ़िलिस्तियों के हाथों
मारा जाए।
26जब दाऊद को यह ख़बर मिली तो उसे
साऊल की पेशकश पसंद आई। मुक़र्ररा वक़्त
से पहले 27उसने अपने आदमियों के साथ
निकलकर 200 फ़िलिस्तियों को मार दिया।
लाशों का ख़तना करके वह जिल्द के कुल 200
टुकड़े बादशाह के पास लाया ताकि बादशाह का
दामाद बने। यह देखकर साऊल ने उस की शादी
मीकल से करवा दी।
28साऊल को मानना पड़ा कि रब दाऊद के
साथ है और कि मेरी बेटी मीकल उसे बहुत प्यार
करती है। 29तब वह दाऊद से और भी डरने लगा।
इसके बाद वह जीते-जी दाऊद का दुश्मन बना
रहा। 30उन दिनों में फ़िलिस्ती सरदार इसराईल
से लड़ते रहे। लेकिन जब भी वह जंग के लिए
निकले तो दाऊद साऊल के बाक़ी अफ़सरों की
निसबत ज़्यादा कामयाब होता था। नतीजे में उस
की शोहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

यूनतन दाऊद की सिफ़ारिश करता है

19 अब साऊल ने अपने बेटे यूनतन और
तमाम मुलाज़िमों को साफ़ बताया
कि दाऊद को हलाक करना है। लेकिन दाऊद
यूनतन को बहुत प्यारा था, 2इसलिए उसने उसे
आगाह किया, “मेरा बाप आपको मार देने के
मवाक़े ढूँड रहा है। कल सुबह ख़बरदार रहें। कहीं
छुपकर मेरा इंतज़ार करें। 3फिर मैं अपने बाप
के साथ शहर से निकलकर आपके क़रीब से
गुज़रूँगा। वहाँ मैं उनसे आपका मामला छेड़कर
मालूम करूँगा कि वह क्या इरादा रखते हैं। जो
कुछ भी वह कहेंगे मैं आपको बता दूँगा।”
4अगली सुबह जब यूनतन ने अपने बाप से बात
की तो उसने दाऊद की सिफ़ारिश करके कहा,
“बादशाह अपने ख़ादिम दाऊद का गुनाह न करें,
क्योंकि उसने आपका गुनाह नहीं किया बल्कि
हमेशा आपके लिए फ़ायदामंद रहा है। 5उसी ने
अपनी जान को ख़तरे में डालकर फ़िलिस्ती को
मार डाला, और रब ने उसके वसीले से तमाम
इसराईल को बड़ी नजात बख़्शी। उस वक़्त आप
ख़ुद भी सब कुछ देखकर ख़ुश हुए। तो फिर आप
गुनाह करके उस जैसे बेक़ुसूर आदमी को क्यों
बिलावजह मरवाना चाहते हैं?”
6यूनतन की बातें सुनकर साऊल मान गया।
उसने वादा किया, “रब की हयात की क़सम,
दाऊद को मारा नहीं जाएगा।” 7बाद में यूनतन
ने दाऊद को बुलाकर उसे सब कुछ बताया, फिर
उसे साऊल के पास लाया। तब दाऊद पहले की
तरह बादशाह की ख़िदमत करने लगा।

साऊल का दाऊद पर दूसरा हमला

8एक बार फिर जंग छिड़ गई, और दाऊद
निकलकर फ़िलिस्तियों से लड़ा। इस दफ़ा भी
उसने उन्हें यों शिकस्त दी कि वह फ़रार हो गए।
9लेकिन एक दिन जब साऊल अपना नेज़ा पकड़े
घर में बैठा था तो अल्लाह की भेजी हुई बुरी रूह
उस पर ग़ालिब आई। उस वक़्त दाऊद सरोद बजा
रहा था। 10अचानक साऊल ने नेज़े को फेंककर
दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की कोशिश
की। लेकिन वह एक तरफ़ हट गया और नेज़ा
उसके क़रीब से गुज़रकर दीवार में धँस गया।
दाऊद भाग गया और उस रात साऊल के हाथ
से बच गया।
11साऊल ने फ़ौरन अपने आदमियों को दाऊद
के घर के पास भेज दिया ताकि वह मकान की
पहरादारी करके दाऊद को सुबह के वक़्त क़त्ल

कर दें। लेकिन दाऊद की बीवी मीकल ने उसको
आगाह कर दिया, “आज रात को ही यहाँ से चले
जाएँ, वरना आप नहीं बचेंगे बल्कि कल सुबह
ही मार दिए जाएंगे।” 12चुनाँचे दाऊद घर की
खिड़की में से निकला, और मीकल ने उतरने में
उस की मदद की। तब दाऊद भागकर बच गया।

13मीकल ने दाऊद की चारपाई पर बुत रखकर
उसके सर पर बकरियों के बाल लगा दिए और
बाक़ी हिस्से पर कम्बल बिछा दिया। 14जब
साऊल के आदमी दाऊद को पकड़ने के लिए आए
तो मीकल ने कहा, “वह बीमार है।” 15फ़ौजियों
ने साऊल को इत्तला दी तो उसने उन्हें हुक्म दिया,
“उसे चारपाई समेत ही मेरे पास ले आओ ताकि
उसे मार दूँ।”

16जब वह दाऊद को ले जाने के लिए आए
तो क्या देखते हैं कि उस की चारपाई पर बुत
पड़ा है जिसके सर पर बकरियों के बाल लगे हैं।
17साऊल ने अपनी बेटी को बहुत झिड़का, “तूने
मुझे इस तरह धोका देकर मेरे दुश्मन की फ़रार
होने में मदद क्यों की? तेरी ही वजह से वह
बच गया।” मीकल ने जवाब दिया, “उसने मुझे
धमकी दी कि मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा अगर तू फ़रार
होने में मेरी मदद न करे।”

दाऊद रामा में समुएल के पास

18इस तरह दाऊद बच निकला। वह रामा में
समुएल के पास फ़रार हुआ और उसे सब कुछ
सुनाया जो साऊल ने उसके साथ किया था। फिर
दोनों मिलकर नयोत चले गए। वहाँ वह ठहरे।
19साऊल को इत्तला दी गई, “दाऊद रामा के
नयोत में ठहरा हुआ है।” 20उसने फ़ौरन अपने
आदमियों को उसे पकड़ने के लिए भेज दिया।
जब वह पहुँचे तो देखा कि नबियों का पूरा गुरोह
वहाँ नबुव्वत कर रहा है, और समुएल ख़ुद उनकी
राहनुमाई कर रहा है। उन्हें देखते ही अल्लाह का
रूह साऊल के आदमियों पर नाज़िल हुआ, और
वह भी नबुव्वत करने लगे। 21साऊल को इस
बात की ख़बर मिली तो उसने मज़ीद आदमियों
को रामा भेज दिया। लेकिन वह भी वहाँ पहुँचते
ही नबुव्वत करने लगे। साऊल ने तीसरी बार
आदमियों को भेज दिया, लेकिन यही कुछ उनके
साथ भी हुआ।

22आख़िर में साऊल ख़ुद रामा के लिए रवाना
हुआ। चलते चलते वह सीकू के बड़े हौज़ पर
पहुँचा। वहाँ उसने लोगों से पूछा, “दाऊद और
समुएल कहाँ हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “रामा
की आबादी नयोत में।”

23साऊल अभी नयोत नहीं पहुँचा था कि
अल्लाह का रूह उस पर भी नाज़िल हुआ, और
वह नबुव्वत करते करते नयोत पहुँच गया। 24वहाँ
वह अपने कपड़ों को उतारकर समुएल के सामने
नबुव्वत करता रहा। नबुव्वत करते करते वह
ज़मीन पर लेट गया और वहाँ पूरे दिन और पूरी
रात पड़ा रहा। इसी वजह से यह क़ौल मशहूर
हुआ, “क्या साऊल को भी नबियों में शुमार
किया जाता है?”

दाऊद और यूनतन अहद बाँधते हैं

20 अब दाऊद रामा के नयोत से भी भाग
गया। चुपके से वह यूनतन के पास
आया और पूछा, “मुझसे क्या ग़लती हुई है? मेरा
क्या क़ुसूर है? मुझसे आपके बाप के ख़िलाफ़
क्या जुर्म सरज़द हुआ है कि वह मुझे क़त्ल करना
चाहते हैं?”

2यूनतन ने एतराज़ किया, “यह कभी नहीं
हो सकता! आप नहीं मरेंगे। मेरा बाप तो मुझे
हमेशा सब कुछ बता देता है, ख़ाह बात बड़ी हो
या छोटी। तो फिर वह ऐसा कोई मनसूबा मुझसे
क्यों छुपाए? आपकी यह बात सरासर ग़लत
है।”

3लेकिन दाऊद ने क़सम खाकर इसरार किया,
“ज़ाहिर है कि आपको इसके बारे में इल्म नहीं।
आपके बाप को साफ़ मालूम है कि मैं आपको
पसंद हूँ। ‘वह तो सोचते होंगे, यूनतन को इस बात
का इल्म न हो, वरना वह दुख महसूस करेगा।’
लेकिन रब की और आपकी जान की क़सम, मैं

बड़े ख़तरे में हूँ, और मौत से बचना मुश्किल ही
है।”
4यूनतन ने कहा, “मुझे बताएँ कि मैं क्या करूँ
तो मैं उसे करूँगा।” 5तब दाऊद ने अपना मनसूबा
पेश किया। “कल नए चाँद की ईद है, और
बादशाह तवक़्क़ो करेंगे कि मैं उनकी ज़ियाफ़त
में शरीक हूँ। लेकिन इस मरतबा मुझे परसों शाम
तक बाहर खुले मैदान में छुपा रहने की इजाज़त
दें। 6अगर आपके बाप मेरा पता करें तो उन्हें कह
देना, ‘दाऊद ने बड़े ज़ोर से मुझसे अपने शहर बैत-
लहम को जाने की इजाज़त माँगी। उसे बड़ी जल्दी
थी, क्योंकि उसका पूरा ख़ानदान अपनी सालाना
क़ुरबानी चढ़ाना चाहता है।’ 7अगर आपके बाप
जवाब दें कि ठीक है तो फिर मालूम होगा कि
ख़तरा टल गया है। लेकिन अगर वह बड़े ग़ुस्से में
आ जाएँ तो यक़ीन जानें कि वह मुझे नुक़सान
पहुँचाने का इरादा रखते हैं। 8बराहे-करम मुझ
पर मेहरबानी करके याद रखें कि आपने रब के
सामने अपने ख़ादिम से अहद बाँधा है। अगर
मैं वाक़ई क़ुसूरवार ठहरूँ तो आप ख़ुद मुझे मार
डालें। लेकिन किसी सूरत में भी मुझे अपने बाप
के हवाले न करें।”
9यूनतन ने जवाब दिया, “फ़िकर न करें, मैं
कभी ऐसा नहीं करूँगा। जब भी मुझे इशारा मिल
जाए कि मेरा बाप आपको क़त्ल करने का इरादा
रखता है तो मैं ज़रूर आपको फ़ौरन इत्तला दूँगा।”
10दाऊद ने पूछा, “अगर आपके बाप ग़ुस्से में
जवाब दें तो कौन मुझे ख़बर पहुँचाएगा?”
11यूनतन ने जवाब में कहा, “आएँ हम
निकलकर खुले मैदान में जाएँ।” दोनों निकले
12तो यूनतन ने दाऊद से कहा, “रब इसराईल के
ख़ुदा की क़सम, परसों इस वक़्त तक मैं अपने
बाप से बात मालूम कर लूँगा। अगर वह आपके
बारे में अच्छी सोच रखे और मैं आपको इत्तला न
दूँ 13तो रब मुझे सख़्त सज़ा दे। लेकिन अगर मुझे
पता चले कि मेरा बाप आपको मार देने पर तुला
हुआ है तो मैं आपको इसकी इत्तला भी दूँगा। इस
सूरत में मैं आपको नहीं रोकूँगा बल्कि आपको
सलामती से जाने दूँगा। रब उसी तरह आपके
साथ हो जिस तरह वह पहले मेरे बाप के साथ
था। 14लेकिन दरख़ास्त है कि मेरे जीते-जी मुझ
पर रब की-सी मेहरबानी करें ताकि मैं मर न जाऊँ।
15मेरे ख़ानदान पर भी हमेशा तक मेहरबानी करें।
वह कभी भी आपकी मेहरबानी से महरूम न हो
जाए, उस वक़्त भी नहीं जब रब ने आपके तमाम
दुश्मनों को रूए-ज़मीन पर से मिटा दिया होगा।”
16चुनाँचे यूनतन ने दाऊद से अहद बाँध-
कर कहा, “रब दाऊद के दुश्मनों से बदला ले।”
17वह बोला, “क़सम खाएँ कि आप यह अहद
उतने पुख़्ता इरादे से क़ायम रखेंगे जितनी आप
मुझसे मुहब्बत रखते हैं।” क्योंकि यूनतन दाऊद
को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखता था।
18फिर यूनतन ने अपना मनसूबा पेश किया।
“कल तो नए चाँद की ईद है। जल्दी से पता चलेगा
कि आप नहीं आए, क्योंकि आपकी कुरसी ख़ाली
रहेगी। 19इसलिए परसों शाम के वक़्त खुले
मैदान में वहाँ चले जाएँ जहाँ पहले छुप गए थे।
पत्थर के ढेर के क़रीब बैठ जाएँ। 20उस वक़्त
मैं घर से निकलकर तीन तीर पत्थर के ढेर की
तरफ़ चलाऊँगा गोया मैं किसी चीज़ को निशाना
बनाकर मशक़ कर रहा हूँ। 21फिर मैं लड़के को
तीरों को ले आने के लिए भेज दूँगा। अगर मैं उसे
बता दूँ, ‘तीर उरली तरफ़ पड़े हैं, उन्हें जाकर ले
आओ’ तो आप ख़ौफ़ खाए बग़ैर छुपने की जगह
से निकलकर मेरे पास आ सकेंगे। रब की हयात
की क़सम, इस सूरत में कोई ख़तरा नहीं होगा।
22लेकिन अगर मैं लड़के को बता दूँ, ‘तीर परली
तरफ़ पड़े हैं’ तो आपको फ़ौरन हिजरत करनी
पड़ेगी। इस सूरत में रब ख़ुद आपको यहाँ से भेज
रहा होगा। 23लेकिन जो बातें हमने आज आपस
में की हैं रब ख़ुद हमेशा तक इनका गवाह रहे।”

साऊल की दाऊद से अलानिया दुश्मनी

24चुनाँचे दाऊद खुले मैदान में छुप गया। नए
चाँद की ईद आई तो बादशाह ज़ियाफ़त के लिए
बैठ गया। 25मामूल के मुताबिक़ वह दीवार के

पास बैठ गया। अबिनैर उसके साथ बैठा था और
यूनतन उसके मुक़ाबिल। लेकिन दाऊद की जगह
ख़ाली रही।
26उस दिन साऊल ने बात न छेड़ी, क्योंकि
उसने सोचा, “दाऊद किसी वजह से नापाक हो
गया होगा, इसलिए नहीं आया।”
27लेकिन अगले दिन जब दाऊद की जगह
फिर ख़ाली रही तो साऊल ने यूनतन से पूछा,
“यस्सी का बेटा न तो कल, न आज ज़ियाफ़त
में शरीक हुआ है। क्या वजह है?” 28यूनतन ने
जवाब दिया, “दाऊद ने बड़े ज़ोर से मुझसे बैत-
लहम जाने की इजाज़त माँगी। 29उसने कहा,
‘मेहरबानी करके मुझे जाने दें, क्योंकि मेरा
ख़ानदान एक ख़ास क़ुरबानी चढ़ा रहा है, और मेरे
भाई ने मुझे आने का हुक्म दिया है। अगर आपको
मंज़ूर हो तो बराहे-करम मुझे अपने भाइयों के
पास जाने की इजाज़त दें।’ यही वजह है कि वह
बादशाह की ज़ियाफ़त में शरीक नहीं हुआ।”
30यह सुनकर साऊल आपे से बाहर हो गया।
वह गरजा, “हरामज़ादे! मुझे ख़ूब मालूम है कि
तूने दाऊद का साथ दिया है। शर्म की बात है, तेरे
लिए और तेरी माँ के लिए। 31जब तक यस्सी का
बेटा ज़िंदा है तब तक न तू और न तेरी बादशाहत
क़ायम रहेगी। अब जा, उसे ले आ, क्योंकि उसे
मरना ही है।”
32यूनतन ने कहा, “क्यों? उसने क्या किया
जो सज़ाए-मौत के लायक़ है?” 33जवाब में
साऊल ने अपना नेज़ा ज़ोर से यूनतन की तरफ़
फेंक दिया ताकि उसे मार डाले। यह देखकर
यूनतन ने जान लिया कि साऊल दाऊद को क़त्ल
करने का पुख़्ता इरादा रखता है। 34बड़े ग़ुस्से के
आलम में वह खड़ा हुआ और चला गया। उस दिन
उसने खाना खाने से इनकार किया। उसे बहुत दुख
था कि मेरा बाप दाऊद की इतनी बेइज़्ज़ती कर
रहा है।
35अगले दिन यूनतन सुबह के वक़्त घर से
निकलकर खुले मैदान में उस जगह आ गया जहाँ
दाऊद से मिलना था। एक लड़का उसके साथ था।
36उसने लड़के को हुक्म दिया, “चलो, उस तरफ़
भागना शुरू करो जिस तरफ़ मैं तीरों को चलाऊँगा
ताकि तुझे मालूम हो कि वह कहाँ हैं।” चुनाँचे
लड़का दौड़ने लगा, और यूनतन ने तीर इतने ज़ोर
से चलाया कि वह उससे आगे कहीं दूर जा गिरा।
37जब लड़का तीर के क़रीब पहुँच गया तो यूनतन
ने आवाज़ दी, “तीर परली तरफ़ है। 38जल्दी
करो, भागकर आगे निकलो और न रुको!” फिर
लड़का तीर को उठाकर अपने मालिक के पास
वापस आ गया। 39वह नहीं जानता था कि इसके
पीछे क्या मक़सद है। सिर्फ़ यूनतन और दाऊद
को इल्म था।
40फिर यूनतन ने कमान और तीरों को लड़के
के सुपुर्द करके उसे हुक्म दिया, “जाओ, सामान
लेकर शहर में वापस चले जाओ।” 41लड़का
चला गया तो दाऊद पत्थर के ढेर के जुनूब से
निकलकर यूनतन के पास आया। तीन मरतबा
वह यूनतन के सामने मुँह के बल झुक गया।
एक दूसरे को चूमकर दोनों ख़ूब रोए, ख़ासकर
दाऊद। 42फिर यूनतन बोला, “सलामती से
जाएँ! और कभी वह वादे न भूलें जो हमने रब
की क़सम खाकर एक दूसरे से किए हैं। यह अहद
आपके और मेरे और आपकी और मेरी औलाद के
दरमियान हमेशा क़ायम रहे। रब ख़ुद हमारा गवाह
है।”
फिर दाऊद रवाना हुआ, और यूनतन शहर को
वापस चला गया।

दाऊद नोब में अख़ीमलिक के पास ठहरता है

21 दाऊद नोब में अख़ीमलिक
इमाम के पास गया। अख़ी-
मलिक काँपते हुए उससे मिलने के लिए आया
और पूछा, “आप अकेले क्यों आए हैं? कोई
आपके साथ नहीं।” 2दाऊद ने जवाब दिया,
“बादशाह ने मुझे एक ख़ास ज़िम्मेदारी दी है
जिसका ज़िक्र तक करना मना है। किसी को
भी इसके बारे में जानना नहीं चाहिए। मैंने अपने
आदमियों को हुक्म दिया है कि फ़ुलाँ फ़ुलाँ जगह

पर मेरा इंतज़ार करें। 3अब मुझे ज़रा बताएँ कि
खाने के लिए क्या मिल सकता है? मुझे पाँच
रोटियाँ दे दें, या जो कुछ भी आपके पास है।”
4इमाम ने जवाब दिया, “मेरे पास आम रोटी
नहीं है। मैं आपको सिर्फ़ रब के लिए मख़सूसशुदा
रोटी दे सकता हूँ। शर्त यह है कि आपके आदमी
पिछले दिनों में औरतों से हमबिसतर न हुए हों।”
5दाऊद ने उसे तसल्ली देकर कहा, “फ़िकर न
करें। पहले की तरह हमें इस मुहिम के दौरान
भी औरतों से दूर रहना पड़ा है। मेरे फ़ौजी आम
मुहिमों के लिए भी अपने आपको पाक रखते हैं,
तो इस दफ़ा वह कहीं ज़्यादा पाक-साफ़ हैं।”
6फिर इमाम ने दाऊद को मख़सूसशुदा रोटियाँ
दीं यानी वह रोटियाँ जो मुलाक़ात के ख़ैमे में
रब के हुज़ूर रखी जाती थीं और उसी दिन ताज़ा
रोटियों से तबदील हुई थीं। 7उस वक़्त साऊल
के चरवाहों का अदोमी इंचार्ज दोएग वहाँ था। वह
किसी मजबूरी के बाइस रब के हुज़ूर ठहरा हुआ
था। उस की मौजूदगी में 8दाऊद ने अख़ीमलिक
से पूछा, “क्या आपके पास कोई नेज़ा या तलवार
है? मुझे बादशाह की मुहिम के लिए इतनी जल्दी
से निकलना पड़ा कि अपनी तलवार या कोई और
हथियार साथ लाने के लिए फ़ुरसत न मिली।”
9अख़ीमलिक ने जवाब दिया, “जी है। वादीए-
ऐला में आपके हाथों मारे गए फ़िलिस्ती मर्द
जालूत की तलवार मेरे पास है। वह एक कपड़े में
लिपटी मेरे बालापोश के पीछे पड़ी है। अगर आप
उसे अपने साथ ले जाना चाहें तो ले जाएँ। मेरे
पास कोई और हथियार नहीं है।” दाऊद ने कहा,
“इस क़िस्म की तलवार कहीं और नहीं मिलती।
मुझे दे दें।”

दाऊद फ़िलिस्ती बादशाह के पास

10उसी दिन दाऊद आगे निकला ताकि साऊल
से बच सके। इसराईल को छोड़कर वह फ़िलिस्ती
शहर जात के बादशाह अकीस के पास गया।
11लेकिन अकीस के मुलाज़िमों ने बादशाह को
आगाह किया, “क्या यह मुल्क का बादशाह
दाऊद नहीं है? इसी के बारे में इसराईली नाचकर
गीत गाते हैं, ‘साऊल ने हज़ार हलाक किए
जबकि दाऊद ने दस हज़ार’।”
12यह सुनकर दाऊद घबरा गया और जात के
बादशाह अकीस से बहुत डरने लगा। 13अचानक
वह पागल आदमी का रूप भरकर उनके दरमियान
अजीब अजीब हरकतें करने लगा। शहर के
दरवाज़े के पास जाकर उसने उस पर बेतुके-से
निशान लगाए और अपनी दाढ़ी पर राल टपकने
दी।
14यह देखकर अकीस ने अपने मुलाज़िमों को
झिड़का, “तुम इस आदमी को मेरे पास क्यों ले
आए हो? तुम ख़ुद देख सकते हो कि यह पागल
है। 15क्या मेरे पास पागलों की कमी है कि तुम
इसको मेरे सामने ले आए हो ताकि इस तरह की
हरकतें करे? क्या मुझे ऐसे मेहमान की ज़रूरत
है?”

अदुल्लाम के ग़ार और मोआब में

22 इस तरह दाऊद जात से बच निकला
और अदुल्लाम के ग़ार में छुप गया।
जब उसके भाइयों और बाप के घराने को इसकी
ख़बर मिली तो वह बैत-लहम से आकर वहाँ
उसके साथ जा मिले। 2और लोग भी जल्दी से
उसके गिर्द जमा हो गए, ऐसे जो किसी मुसीबत
में फँसे हुए थे या अपना क़र्ज़ अदा नहीं कर सकते
थे और ऐसे भी जिनका दिल तलख़ी से भरा हुआ
था। होते होते दाऊद तक़रीबन 400 अफ़राद का
राहनुमा बन गया।
3दाऊद अदुल्लाम से रवाना होकर मुल्के-
मोआब के शहर मिसफ़ाह चला गया। उसने
मोआबी बादशाह से गुज़ारिश की, “मेरे माँ-बाप
को उस वक़्त तक यहाँ पनाह दें जब तक मुझे
पता न हो कि अल्लाह मेरे लिए क्या इरादा रखता
है।” 4वह अपने माँ-बाप को बादशाह के पास ले
आया, और वह उतनी देर तक वहाँ ठहरे जितनी
देर दाऊद अपने पहाड़ी क़िले में रहा।

5एक दिन जाद नबी ने दाऊद से कहा, "यहाँ पहाड़ी क़िले में मत रहें बल्कि दुबारा यहूदाह के इलाक़े में वापस चले जाएँ।" दाऊद उस की सुनकर हारत के जंगल में जा बसा।

साऊल नोब के इमामों से बदला लेता है

6साऊल को इत्तला दी गई कि दाऊद और उसके आदमी दुबारा यहूदाह में पहुँच गए हैं। उस वक़्त साऊल अपना नेज़ा पकड़े झाऊ के उस दरख़्त के साये में बैठा था जो जिबिया की पहाड़ी पर था। साऊल के इर्दगिर्द उसके मुलाज़िम खड़े
थे। 7वह पुकार उठा, "बिनयमीन के मर्दो! सुनें, क्या यस्सी का बेटा आप सबको खेत और अंगूर के बाग़ देगा? क्या वह फ़ौज में आपको हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर मुक़र्रर करेगा?
8लगता है कि आप इसकी उम्मीद रखते हैं, वरना आप यों मेरे ख़िलाफ़ साज़िश न करते। क्योंकि आपमें से किसी ने भी मुझे यह नहीं बताया कि मेरे अपने बेटे ने इस आदमी के साथ अहद बाँधा है। आपको मेरी फ़िकर तक नहीं, वरना मुझे इत्तला देते कि यूनतन ने मेरे मुलाज़िम दाऊद को उभारा है कि वह मेरी ताक में बैठ जाए। क्योंकि आज तो ऐसा ही हो रहा है।"

9दोएग अदोमी साऊल के अफ़सरों के साथ वहाँ खड़ा था। अब वह बोल उठा, "मैंने यस्सी के बेटे को देखा है। उस वक़्त वह नोब में अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब से मिलने आया।
10अख़ीमलिक ने रब से दरियाफ़्त किया कि दाऊद का अगला क़दम क्या हो। साथ साथ उसने उसे सफ़र के लिए खाना और फ़िलिस्ती मर्द जालूत की तलवार भी दी।"

11बादशाह ने फ़ौरन अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब और उसके बाप के पूरे ख़ानदान को बुलाया। सब नोब में इमाम थे।
12जब पहुँचे तो साऊल बोला, "अख़ीतूब के बेटे, सुनें।" अख़ीमलिक ने जवाब दिया, "जी मेरे आक़ा, हुक्म।"
13साऊल ने इलज़ाम लगाकर कहा, "आपने यस्सी के बेटे दाऊद के साथ मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें क्यों की हैं? बताएँ, आपने उसे रोटी और तलवार क्यों दी? आपने अल्लाह से दरियाफ़्त क्यों किया कि दाऊद आगे क्या करे? आप ही की मदद से वह सरकश होकर मेरी ताक में बैठ गया है, क्योंकि आज तो ऐसा ही हो रहा है।"

14अख़ीमलिक बोला, "लेकिन मेरे आक़ा, क्या मुलाज़िमों में से कोई और आपके दामाद दाऊद जैसा वफ़ादार साबित हुआ है? वह तो आपके मुहाफ़िज़ दस्ते का कप्तान और आपके घराने का मुअज़्ज़ज़ मेंबर है।
15और यह पहली बार नहीं था कि मैंने उसके लिए अल्लाह से हिदायत माँगी। इस मामले में बादशाह मुझ और मेरे ख़ानदान पर इलज़ाम न लगाए। मैंने तो किसी साज़िश का ज़िक्र तक नहीं सुना।"

16लेकिन बादशाह बोला, "अख़ीमलिक, तुझे और तेरे बाप के पूरे ख़ानदान को मरना है।"
17उसने साथ खड़े अपने मुहाफ़िज़ों को हुक्म दिया, "जाकर इमामों को मार दो, क्योंकि यह भी दाऊद के इत्तहादी हैं। गो इनको मालूम था कि दाऊद मुझसे भाग रहा है तो भी इन्होंने मुझे इत्तला न दी।"

लेकिन मुहाफ़िज़ों ने रब के इमामों को मार डालने से इनकार किया।
18तब बादशाह ने दोएग अदोमी को हुक्म दिया, "फिर तुम ही इमामों को मार दो।" दोएग ने उनके पास जाकर उन सबको क़त्ल कर दिया। कतान का बालापोश पहननेवाले कुल 85 आदमी उस दिन मारे गए।
19फिर उसने जाकर इमामों के शहर नोब के तमाम बाशिंदों को मार डाला। शहर के मर्द, औरतें, बच्चे शीरख़ारों समेत, गाय-बैल, गधे और भेड़-बकरियाँ सब उस दिन हलाक हुए।

20सिर्फ़ एक ही शख़्स बच गया, अबियातर जो अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब का बेटा था। वह भागकर दाऊद के पास आया
21और उसे इत्तला दी कि साऊल ने रब के इमामों को क़त्ल कर दिया है।
22दाऊद ने कहा, "उस दिन जब मैंने दोएग अदोमी को वहाँ देखा तो मुझे मालूम था कि वह ज़रूर साऊल को ख़बर पहुँचाएगा। यह मेरा ही

क़ुसूर है कि आपके बाप का पूरा ख़ानदान हलाक हो गया है। 23अब मेरे साथ रहें और मत डरें। जो आदमी आपको क़त्ल करना चाहता है वह मुझे भी क़त्ल करना चाहता है। आप मेरे साथ रहकर महफ़ूज़ रहेंगे।"

दाऊद क़ईला को बचाता है

23 एक दिन दाऊद को ख़बर मिली कि फ़िलिस्ती क़ईला शहर पर हमला करके गाहने की जगहों से अनाज लूट रहे हैं।
2दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, "क्या मैं जाकर फ़िलिस्तियों पर हमला करूँ?" रब ने जवाब दिया, "जा, फ़िलिस्तियों पर हमला करके क़ईला को बचा।"

3लेकिन दाऊद के आदमी एतराज़ करने लगे, "हम पहले से यहाँ यहूदाह में लोगों की मुख़ालफ़त से डरते हैं। जब हम क़ईला जाकर फ़िलिस्तियों पर हमला करेंगे तो फिर हमारा क्या बनेगा?"
4तब दाऊद ने रब से दुबारा हिदायत माँगी, और दुबारा उसे यही जवाब मिला, "क़ईला को जा! मैं फ़िलिस्तियों को तेरे हवाले कर दूँगा।"
5चुनाँचे दाऊद अपने आदमियों के साथ क़ईला चला गया। उसने फ़िलिस्तियों पर हमला करके उन्हें बड़ी शिकस्त दी और उनकी भेड़-बकरियों को छीनकर क़ईला के बाशिंदों को बचाया।
6वहाँ क़ईला में अबियातर दाऊद के लोगों में शामिल हुआ। उसके पास इमाम का बालापोश था।

7जब साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद क़ईला शहर में ठहरा हुआ है तो उसने सोचा, "अल्लाह ने उसे मेरे हवाले कर दिया है, क्योंकि अब वह फ़सीलदार शहर में जाकर फँस गया है।"
8वह अपनी पूरी फ़ौज को जमा करके जंग के लिए तैयारियाँ करने लगा ताकि उतरकर क़ईला का मुहासरा करे जिसमें दाऊद अब तक ठहरा हुआ था।

9लेकिन दाऊद को पता चला कि साऊल उसके ख़िलाफ़ तैयारियाँ कर रहा है। उसने अबियातर इमाम से कहा, "इमाम का बालापोश ले आएँ ताकि हम रब से हिदायत माँगें।"
10फिर उसने दुआ की, "ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, मुझे ख़बर मिली है कि साऊल मेरी वजह से क़ईला पर हमला करके उसे बरबाद करना चाहता है।
11क्या शहर के बाशिंदे मुझे साऊल के हवाले कर देंगे? क्या साऊल वाक़ई आएगा? ऐ रब, इसराईल के ख़ुदा, अपने ख़ादिम को बता!" रब ने जवाब दिया, "हाँ, वह आएगा।"
12फिर दाऊद ने मज़ीद दरियाफ़्त किया, "क्या शहर के बुज़ुर्ग मुझे और मेरे लोगों को साऊल के हवाले कर देंगे?" रब ने कहा, "हाँ, वह कर देंगे।"

13लिहाज़ा दाऊद अपने तक़रीबन 600 आदमियों के साथ क़ईला से चला गया और इधर-उधर फिरने लगा। जब साऊल को इत्तला मिली कि दाऊद क़ईला से निकलकर बच गया है तो वहाँ जाने से बाज़ आया।

यूनतन दाऊद से मिलता है

14अब दाऊद बयाबान के पहाड़ी क़िलों और दश्ते-ज़ीफ़ के पहाड़ी इलाक़े में रहने लगा। साऊल तो मुसलसल उसका खोज लगाता रहा, लेकिन अल्लाह हमेशा दाऊद को साऊल के हाथ से बचाता रहा।
15एक दिन जब दाऊद होरिश के क़रीब था तो उसे इत्तला मिली कि साऊल आपको हलाक करने के लिए निकला है।
16उस वक़्त यूनतन ने दाऊद के पास आकर उस की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह अल्लाह पर भरोसा रखे।
17उसने कहा, "डरें मत। मेरे बाप का हाथ आप तक नहीं पहुँचेगा। एक दिन आप ज़रूर इसराईल के बादशाह बन जाएंगे, और मेरा रुतबा आपके बाद ही आएगा। मेरा बाप भी इस हक़ीक़त से ख़ूब वाक़िफ़ है।"
18दोनों ने रब के हुज़ूर अहद बाँधा। फिर यूनतन अपने घर चला गया जबकि दाऊद वहाँ होरिश में ठहरा रहा।

दाऊद ज़ीफ़ में बच जाता है

19दश्ते-ज़ीफ़ में आबाद कुछ लोग साऊल के पास आ गए जो उस वक़्त जिबिया में था। उन्होंने

कहा, “हम जानते हैं कि दाऊद कहाँ छुप गया
है। वह होरिश के पहाड़ी क़िलों में है, उस पहाड़ी
पर जिसका नाम हकीला है और जो यशीमोन के
जुनूब में है। 20ऐ बादशाह, जब भी आपका दिल
चाहे आएँ तो हम उसे पकड़कर आपके हवाले कर
देंगे।” 21साऊल ने जवाब दिया, “रब आपको
बरकत बख़्शे कि आपको मुझ पर तरस आया
है। 22अब वापस जाकर मज़ीद तैयारियाँ करें।
पता करें कि वह कहाँ आता जाता है और किसने
उसे वहाँ देखा है। क्योंकि मुझे बताया गया है
कि वह बहुत चालाक है। 23हर जगह का खोज
लगाएँ जहाँ वह छुप जाता है। जब आपको सारी
तफ़सीलात मालूम हों तो मेरे पास आएँ। फिर मैं
आपके साथ वहाँ पहुँचूँगा। अगर वह वाक़ई वहाँ
कहीं हो तो मैं उसे ज़रूर ढूँड निकालूँगा, ख़ाह मुझे
पूरे यहूदाह की छानबीन क्यों न करनी पड़े।”

24-25ज़ीफ़ के आदमी वापस चले गए। थोड़ी
देर के बाद साऊल भी अपनी फ़ौज समेत वहाँ के
लिए निकला। उस वक़्त दाऊद और उसके लोग
दश्ते-मऊन में यशीमोन के जुनूब में थे। जब दाऊद
को इत्तला मिली कि साऊल उसका ताक़्क़ुब कर
रहा है तो वह रेगिस्तान के मज़ीद जुनूब में चला
गया, वहाँ जहाँ बड़ी चट्टान नज़र आती है। लेकिन
साऊल को पता चला और वह फ़ौरन रेगिस्तान
में दाऊद के पीछे गया।

26चलते चलते साऊल दाऊद के क़रीब ही
पहुँच गया। आख़िरकार सिर्फ़ एक पहाड़ी उनके
दरमियान रह गई। साऊल पहाड़ी के एक दामन में
था जबकि दाऊद अपने लोगों समेत दूसरे दामन
में भागता हुआ बादशाह से बचने की कोशिश कर
रहा था। साऊल अभी उन्हें घेरकर पकड़ने को था
27कि अचानक क़ासिद साऊल के पास पहुँचा
जिसने कहा, “जल्दी आएँ! फ़िलिस्ती हमारे
मुल्क में घुस आए हैं।” 28साऊल को दाऊद
को छोड़ना पड़ा, और वह फ़िलिस्तियों से लड़ने
गया। उस वक़्त से पहाड़ी का नाम “अलहदगी
की चट्टान” पड़ गया।

29दाऊद वहाँ से चला गया और ऐन-जदी के
पहाड़ी क़िलों में रहने लगा।

दाऊद साऊल को क़त्ल करने से इनकार करता है

24 जब साऊल फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब
करने से वापस आया तो उसे ख़बर
मिली कि दाऊद ऐन-जदी के रेगिस्तान में है। 2वह
तमाम इसराईल के 3,000 चीदा फ़ौजियों को
लेकर पहाड़ी बकरियों की चट्टानों के लिए रवाना
हुआ ताकि दाऊद को पकड़ ले।

3चलते चलते वह भेड़ों के कुछ बाड़ों से गुज़रने
लगे। वहाँ एक ग़ार को देखकर साऊल अंदर गया
ताकि अपनी हाजत रफ़ा करे। इत्तफ़ाक़ से दाऊद
और उसके आदमी उसी ग़ार के पिछले हिस्से में
छुपे बैठे थे। 4दाऊद के आदमियों ने आहिस्ता से
उससे कहा, “रब ने तो आपसे वादा किया था, ‘मैं
तेरे दुश्मन को तेरे हवाले कर दूँगा, और तू जो जी
चाहे उसके साथ कर सकेगा।’ अब यह वक़्त आ
गया है!” दाऊद रेंगते रेंगते आगे साऊल के क़रीब
पहुँच गया। चुपके से उसने साऊल के लिबास के
किनारे का टुकड़ा काट लिया और फिर वापस
आ गया। 5लेकिन जब अपने लोगों के पास पहुँचा
तो उसका ज़मीर उसे मलामत करने लगा। 6उसने
अपने आदमियों से कहा, “रब न करे कि मैं अपने
आक़ा के साथ ऐसा सुलूक करके रब के मसह
किए हुए बादशाह को हाथ लगाऊँ। क्योंकि रब ने
ख़ुद उसे मसह करके चुन लिया है।” 7यह कहकर
दाऊद ने उनको समझाया और उन्हें साऊल पर
हमला करने से रोक दिया।

थोड़ी देर के बाद साऊल ग़ार से निकलकर
आगे चलने लगा। 8जब वह कुछ फ़ासले पर
था तो दाऊद भी निकला और पुकार उठा, “ऐ
बादशाह सलामत, ऐ मेरे आक़ा!” साऊल ने पीछे
देखा तो दाऊद मुँह के बल झुककर 9बोला, “जब
लोग आपको बताते हैं कि दाऊद आपको नुक़सान
पहुँचाने पर तुला हुआ है तो आप क्यों ध्यान देते
हैं? 10आज आप अपनी आँखों से देख सकते हैं

कि यह झूट ही झूट है। ग़ार में आप अल्लाह की
मरज़ी से मेरे क़ब्ज़े में आ गए थे। मेरे लोगों ने ज़ोर
दिया कि मैं आपको मार दूँ, लेकिन मैंने आपको न
छेड़ा। मैं बोला, 'मैं कभी भी बादशाह को नुक़सान
नहीं पहुँचाऊँगा, क्योंकि रब ने ख़ुद उसे मसह
करके चुन लिया है।' 11मेरे बाप, यह देखें जो मेरे
हाथ में है! आपके लिबास का यह टुकड़ा मैं काट
सका, और फिर भी मैंने आपको हलाक न किया।
अब जान लें कि न मैं आपको नुक़सान पहुँचाने का
इरादा रखता हूँ, न मैंने आपका गुनाह किया है।
फिर भी आप मेरा ताक़्क़ुब करते हुए मुझे मार
डालने के दरपै हैं। 12रब ख़ुद फ़ैसला करे कि
किससे ग़लती हो रही है, आपसे या मुझ से। वही
आपसे मेरा बदला ले। लेकिन ख़ुद मैं कभी आप
पर हाथ नहीं उठाऊँगा। 13क़दीम क़ौल यही बात
बयान करता है, 'बदकारों से बदकारी पैदा होती
है।' मेरी नीयत तो साफ़ है, इसलिए मैं कभी ऐसा
नहीं करूँगा। 14इसराईल का बादशाह किसके
ख़िलाफ़ निकल आया है? जिसका ताक़्क़ुब आप
कर रहे हैं उस की तो कोई हैसियत नहीं। वह मुरदा
कुत्ता या पिस्सू ही है। 15रब हमारा मुंसिफ़ हो।
वही हम दोनों का फ़ैसला करे। वह मेरे मामले पर
ध्यान दे, मेरे हक़ में बात करे और मुझे बेइलज़ाम
ठहराकर आपके हाथ से बचाए।"

16दाऊद ख़ामोश हुआ तो साऊल ने पूछा,
"दाऊद मेरे बेटे, क्या आपकी आवाज़ है?" और
वह फूट फूटकर रोने लगा। 17उसने कहा, "आप
मुझसे ज़्यादा रास्तबाज़ हैं। आपने मुझसे अच्छा
सुलूक किया जबकि मैं आपसे बुरा सुलूक करता
रहा हूँ। 18आज आपने मेरे साथ भलाई का सबूत
दिया, क्योंकि गो रब ने मुझे आपके हवाले कर
दिया था तो भी आपने मुझे हलाक न किया।
19जब किसी का दुश्मन उसके क़ब्ज़े में आ जाता
है तो वह उसे जाने नहीं देता। लेकिन आपने ऐसा
ही किया। रब आपको उस मेहरबानी का अज्र
दे जो आपने आज मुझ पर की है। 20अब मैं
जानता हूँ कि आप ज़रूर बादशाह बन जाएंगे,
और कि आपके ज़रीए इसराईल की बादशाही
क़ायम रहेगी। 21चुनाँचे रब की क़सम खाकर
मुझसे वादा करें कि न आप मेरी औलाद को
हलाक करेंगे, न मेरे आबाई घराने में से मेरा नाम
मिटा देंगे।"

22दाऊद ने क़सम खाकर साऊल से वादा
किया। फिर साऊल अपने घर चला गया जबकि
दाऊद ने अपने लोगों के साथ एक पहाड़ी क़िले
में पनाह ले ली।

समुएल की मौत

25 उन दिनों में समुएल फ़ौत हुआ।
तमाम इसराईल रामा में जनाज़े के
लिए जमा हुआ। उसका मातम करते हुए उन्होंने
उसे उस की ख़ानदानी क़ब्र में दफ़न किया।

नाबाल दाऊद की बेइज़्ज़ती करता है

उन दिनों में दाऊद दश्ते-फ़ारान में चला गया।
2-4मऊन में कालिब के ख़ानदान का एक
आदमी रहता था जिसका नाम नाबाल था।
वह निहायत अमीर था। करमिल के क़रीब उस
की 3,000 भेड़ें और 1,000 बकरियाँ थीं।
बीवी का नाम अबीजेल था। वह ज़हीन भी थी
और ख़ूबसूरत भी। उसके मुक़ाबले में नाबाल
सख़्तमिज़ाज और कमीना था। एक दिन नाबाल
अपनी भेड़ों के बाल कतरने के लिए करमिल
आया।

जब दाऊद को ख़बर मिली 5तो उसने 10
जवानों को भेजकर कहा, "करमिल जाकर
नाबाल से मिलें और उसे मेरा सलाम दें। 6उसे
बताना, 'अल्लाह आपको तवील ज़िंदगी अता
करे। आप की, आपके ख़ानदान की और आपकी
तमाम मिलकियत की सलामती हो। 7सुना है
कि भेड़ों के बाल कतरने का वक़्त आ गया है।
करमिल में आपके चरवाहे हमेशा हमारे साथ रहे।
उस पूरे अरसे में न उन्हें हमारी तरफ़ से कोई
नुक़सान पहुँचा, न कोई चीज़ चोरी हुई। 8अपने
लोगों से ख़ुद पूछ लें! वह इसकी तसदीक़ करेंगे।
आज आप ख़ुशी मना रहे हैं, इसलिए मेरे जवानों

पर मेहरबानी करें। जो कुछ आप ख़ुशी से दे सकते हैं वह उन्हें और अपने बेटे दाऊद को दे दें'।"
9दाऊद के आदमी नाबाल के पास गए। उसे
दाऊद का सलाम देकर उन्होंने उसका पैग़ाम दिया
और फिर जवाब का इंतज़ार किया। 10लेकिन
नाबाल ने करख़्त लहजे में कहा, "यह दाऊद कौन है? कौन है यस्सी का बेटा? आजकल बहुत-से ऐसे ग़ुलाम हैं जो अपने मालिक से भागे हुए हैं।
11मैं अपनी रोटी, अपना पानी और कतरनेवालों के लिए ज़बह किया गया गोश्त लेकर ऐसे आवारा फिरनेवालों को क्यों दे दूँ? क्या पता है कि यह कहाँ से आए हैं।"
12दाऊद के आदमी चले गए और दाऊद को
सब कुछ बता दिया। 13तब दाऊद ने हुक्म दिया,
"अपनी तलवारें बाँध लो!" सबने अपनी तलवारें बाँध लीं। उसने भी ऐसा किया और फिर 400 अफ़राद के साथ करमिल के लिए रवाना हुआ। बाक़ी 200 मर्द सामान के पास रहे।

अबीजेल दाऊद का ग़ुस्सा ठंडा करती है

14इतने में नाबाल के एक नौकर ने उस की
बीवी को इत्तला दी, "दाऊद ने रेगिस्तान में से अपने क़ासिदों को नाबाल के पास भेजा ताकि उसे मुबारकबाद दें। लेकिन उसने जवाब में गरजकर उन्हें गालियाँ दी हैं, 15हालाँकि उन
लोगों का हमारे साथ सुलूक हमेशा अच्छा रहा है। हम अकसर रेवड़ों को चराने के लिए उनके क़रीब फिरते रहे, तो भी उन्होंने हमें कभी नुक़सान न पहुँचाया, न कोई चीज़ चोरी की। 16जब भी
हम उनके क़रीब थे तो वह दिन-रात चारदीवारी की तरह हमारी हिफ़ाज़त करते रहे। 17अब सोच
लें कि क्या किया जाए! क्योंकि हमारा मालिक और उसके तमाम घरवाले बड़े ख़तरे में हैं। वह ख़ुद इतना शरीर है कि उससे बात करने का कोई फ़ायदा नहीं।"
18जितनी जल्दी हो सका अबीजेल ने कुछ
सामान इकट्ठा किया जिसमें 200 रोटियाँ, मै की दो मशकें, खाने के लिए तैयार की गई पाँच भेड़ें, भुने हुए अनाज के साढ़े 27 किलोग्राम, किशमिश की 100 और अंजीर की 200 टिक्कियाँ शामिल
थीं। सब कुछ गधों पर लादकर 19उसने अपने
नौकरों को हुक्म दिया, "मेरे आगे निकल जाओ, मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊँगी।" अपने शौहर को
उसने कुछ न बताया। 20जब अबीजेल पहाड़ की
आड़ में उतरने लगी तो दाऊद अपने आदमियों समेत उस की तरफ़ बढ़ते हुए नज़र आया। फिर
उनकी मुलाक़ात हुई। 21दाऊद तो अभी तक बड़े
ग़ुस्से में था, क्योंकि वह सोच रहा था, "इस आदमी की मदद करने का क्या फ़ायदा था! हम रेगिस्तान में उसके रेवड़ों की हिफ़ाज़त करते रहे और उस की कोई भी चीज़ गुम न होने दी। तो भी उसने हमारी नेकी के जवाब में हमारी बेइज़्ज़ती
की है। 22अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं
कल सुबह तक उसके एक आदमी को भी ज़िंदा छोड़ दूँ!"
23-24दाऊद को देखकर अबीजेल जल्दी से गधे
पर से उतरकर उसके सामने मुँह के बल झुक गई। उसने कहा, "मेरे आक़ा, मुझे ही क़ुसूरवार ठहराएँ। मेहरबानी करके अपनी ख़ादिमा को
बोलने दें और उस की बात सुनें। 25मेरे मालिक
उस शरीर आदमी नाबाल पर ज़्यादा ध्यान न दें। उसके नाम का मतलब अहमक़ है और वह है ही अहमक़। अफ़सोस, मेरी उन आदमियों से मुलाक़ात नहीं हुई जो आपने हमारे पास भेजे थे।
26लेकिन रब की और आपकी हयात की क़सम,
रब ने आपको अपने हाथों से बदला लेने और क़ातिल बनने से बचाया है। और अल्लाह करे कि जो भी आपसे दुश्मनी रखते और आपको नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं उन्हें नाबाल की-सी
सज़ा मिल जाए। 27अब गुज़ारिश है कि जो
बरकत हमें मिली है उसमें आप भी शरीक हों। जो चीज़ें आपकी ख़ादिमा लाई है उन्हें क़बूल करके उन जवानों में तक़सीम कर दें जो मेरे आक़ा के
पीछे हो लिए हैं। 28जो भी ग़लती हुई है अपनी
ख़ादिमा को मुआफ़ कीजिए। रब ज़रूर मेरे आक़ा का घराना हमेशा तक क़ायम रखेगा, क्योंकि

आप रब के दुश्मनों से लड़ते हैं। वह आपको जीते-जी ग़लतियाँ करने से बचाए रखे। 29जब कोई आपका ताक़्क़ुब करके आपको मार देने की कोशिश करे तो रब आपका ख़ुदा आपकी जान जानदारों की थैली में महफ़ूज़ रखेगा। लेकिन आपके दुश्मनों की जान वह फ़लाख़न के पत्थर की तरह दूर फेंककर हलाक कर देगा। 30जब रब अपने तमाम वादे पूरे करके आपको इसराईल का बादशाह बना देगा 31तो कोई ऐसी बात सामने नहीं आएगी जो ठोकर का बाइस हो। मेरे आक़ा का ज़मीर साफ़ होगा, क्योंकि आप बदला लेकर क़ातिल नहीं बने होंगे। गुज़ारिश है कि जब रब आपको कामयाबी दे तो अपनी ख़ादिमा को भी याद करें।"

32दाऊद बहुत ख़ुश हुआ। "रब इसराईल के ख़ुदा की तारीफ़ हो जिसने आज आपको मुझसे मिलने के लिए भेज दिया। 33आपकी बसीरत मुबारक है! आप मुबारक हैं, क्योंकि आपने मुझे इस दिन अपने हाथों से बदला लेकर क़ातिल बनने से रोक दिया है। 34रब इसराईल के ख़ुदा की क़सम जिसने मुझे आपको नुक़सान पहुँचाने से रोक दिया, कल सुबह नाबाल के तमाम आदमी हलाक होते अगर आप इतनी जल्दी से मुझसे मिलने न आतीं।"

35दाऊद ने अबीजेल की पेशकरदा चीज़ें क़बूल करके उसे रुख़सत किया और कहा, "सलामती से जाएँ। मैंने आपकी सुनी और आपकी बात मंज़ूर कर ली है।"

रब नाबाल को सज़ा देता है

36जब अबीजेल अपने घर पहुँची तो देखा कि बहुत रौनक़ है, क्योंकि नाबाल बादशाह की-सी ज़ियाफ़त करके ख़ुशियाँ मना रहा था। चूँकि वह नशे में धुत था इसलिए अबीजेल ने उसे उस वक़्त कुछ न बताया।

37अगली सुबह जब नाबाल होश में आ गया तो अबीजेल ने उसे सब कुछ कह सुनाया। यह सुनते ही नाबाल को दौरा पड़ गया, और वह पत्थर-सा बन गया। 38दस दिन के बाद रब ने उसे मरने दिया। 39जब दाऊद को नाबाल की मौत की ख़बर मिल गई तो वह पुकारा, "रब की तारीफ़ हो जिसने मेरे लिए नाबाल से लड़कर मेरी बेइज़्ज़ती का बदला लिया है। उस की मेहरबानी है कि मैं ग़लत काम करने से बच गया हूँ जबकि नाबाल की बुराई उसके अपने सर पर आ गई है।"

अबीजेल की दाऊद से शादी

कुछ देर के बाद दाऊद ने अपने लोगों को अबीजेल के पास भेजा ताकि वह दाऊद की उसके साथ शादी की दरख़ास्त पेश करें। 40चुनाँचे उसके मुलाज़िम करमिल में अबीजेल के पास जाकर बोले, "दाऊद ने हमें शादी का पैग़ाम देकर भेजा है।" 41अबीजेल खड़ी हुई, फिर मुँह के बल झुककर बोली, "मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ। मैं अपने मालिक के ख़ादिमों के पाँव धोने तक तैयार हूँ।"

42वह जल्दी से तैयार हुई और गधे पर बैठकर दाऊद के मुलाज़िमों के साथ रवाना हुई। पाँच नौकरानियाँ उसके साथ चली गईं। यों अबीजेल दाऊद की बीवी बन गई।

43अब दाऊद की दो बीवियाँ थीं, क्योंकि पहले उस की शादी अख़ीनुअम से हुई थी जो यज्रएल से थी। 44जहाँ तक साऊल की बेटी मीकल का ताल्लुक़ था साऊल ने उसे दाऊद से लेकर उस की दुबारा शादी फ़लतियेल बिन लैस से करवाई थी जो जल्लीम का रहनेवाला था।

दाऊद साऊल को दूसरी बार बचने देता है

26 एक दिन दश्ते-ज़ीफ़ के कुछ बाशिंदे दुबारा जिबिया में साऊल के पास आ गए। उन्होंने बादशाह को बताया, "हम जानते हैं कि दाऊद कहाँ छुप गया है। वह उस पहाड़ी पर है जो हकीला कहलाती है और यशीमोन के मुक़ाबिल है।" 2यह सुनकर साऊल इसराईल के 3,000 चीदा फ़ौजियों को लेकर दश्ते-ज़ीफ़ में गया ताकि दाऊद को ढूँड निकाले। 3हकीला

पहाड़ी पर यशीमोन के मुक़ाबिल वह रुक गए। जो
रास्ता पहाड़ पर से गुज़रता है उसके पास उन्होंने
अपना कैंप लगाया। दाऊद उस वक़्त रेगिस्तान
में छुप गया था। जब उसे ख़बर मिली कि साऊल
मेरा ताक़्क़ुब कर रहा है 4तो उसने अपने लोगों को
मालूम करने के लिए भेजा। उन्होंने वापस आकर
उसे इत्तला दी कि बादशाह वाक़ई अपनी फ़ौज
समेत रेगिस्तान में पहुँच गया है। 5यह सुनकर
दाऊद ख़ुद निकलकर चुपके से उस जगह गया
जहाँ साऊल का कैंप था। उसको मालूम हुआ
कि साऊल और उसका कमाँडर अबिनैर बिन नैर
कैंप के ऐन बीच में सो रहे हैं जबकि बाक़ी आदमी
दायरा बनाकर उनके इर्दगिर्द सो रहे हैं।

6दो मर्द दाऊद के साथ थे, अख़ीमलिक हित्ती
और अबीशै बिन ज़रूयाह। ज़रूयाह योआब का
भाई था। दाऊद ने पूछा, “कौन मेरे साथ कैंप
में घुसकर साऊल के पास जाएगा?” अबीशै ने
जवाब दिया, “मैं साथ जाऊँगा।” 7चुनाँचे दोनों
रात के वक़्त कैंप में घुस आए। सोए हुए फ़ौजियों
और अबिनैर से गुज़रकर वह साऊल तक पहुँच
गए जो ज़मीन पर लेटा सो रहा था। उसका नेज़ा
सर के क़रीब ज़मीन में गड़ा हुआ था। 8अबीशै
ने आहिस्ता से दाऊद से कहा, “आज अल्लाह ने
आपके दुश्मन को आपके क़ब्ज़े में कर दिया है।
अगर इजाज़त हो तो मैं उसे उसके अपने नेज़े से
ज़मीन के साथ छेद दूँ। मैं उसे एक ही वार में मार
दूँगा। दूसरे वार की ज़रूरत ही नहीं होगी।”

9दाऊद बोला, “न करो! उसे मत मारना,
क्योंकि जो रब के मसह किए हुए ख़ादिम को हाथ
लगाए वह क़ुसूरवार ठहरेगा। 10रब की हयात की
क़सम, रब ख़ुद साऊल की मौत मुक़र्रर करेगा,
ख़ाह वह बूढ़ा होकर मर जाए, ख़ाह जंग में लड़ते
हुए। 11रब मुझे इससे महफ़ूज़ रखे कि मैं उसके
मसह किए हुए ख़ादिम को नुक़सान पहुँचाऊँ।
नहीं, हम कुछ और करेंगे। उसका नेज़ा और पानी
की सुराही पकड़ लो। आओ, हम यह चीज़ें अपने
साथ लेकर यहाँ से निकल जाते हैं।” 12चुनाँचे
वह दोनों चीज़ें अपने साथ लेकर चुपके से चले
गए। कैंप में किसी को भी पता न चला, कोई न
जागा। सब सोए रहे, क्योंकि रब ने उन्हें गहरी
नींद सुला दिया था।

13दाऊद वादी को पार करके पहाड़ी पर चढ़
गया। जब साऊल से फ़ासला काफ़ी था 14तो
दाऊद ने फ़ौज और अबिनैर को ऊँची आवाज़
से पुकारकर कहा, “ऐ अबिनैर, क्या आप मुझे
जवाब नहीं देंगे?” अबिनैर पुकारा, “आप कौन
हैं कि बादशाह को इस तरह की ऊँची आवाज़
दें?” 15दाऊद ने तंज़न जवाब दिया, “क्या आप
मर्द नहीं हैं? और इसराईल में कौन आप जैसा
है? तो फिर आपने अपने बादशाह की सहीह
हिफ़ाज़त क्यों न की जब कोई उसे क़त्ल करने के
लिए कैंप में घुस आया? 16जो आपने किया वह
ठीक नहीं है। रब की हयात की क़सम, आप और
आपके आदमी सज़ाए-मौत के लायक़ हैं, क्योंकि
आपने अपने मालिक की हिफ़ाज़त न की, गो वह
रब का मसह किया हुआ बादशाह है। ख़ुद देख लें,
जो नेज़ा और पानी की सुराही बादशाह के सर के
पास थे वह कहाँ हैं?”

17तब साऊल ने दाऊद की आवाज़ पहचान
ली। वह पुकारा, “मेरे बेटे दाऊद, क्या आपकी
आवाज़ है?” 18दाऊद ने जवाब दिया, “जी,
बादशाह सलामत। मेरे आक़ा, आप मेरा ताक़्क़ुब
क्यों कर रहे हैं? मैं तो आपका ख़ादिम हूँ। मैंने
क्या किया? मुझसे क्या जुर्म सरज़द हुआ है?
19गुज़ारिश है कि मेरा आक़ा और बादशाह अपने
ख़ादिम की बात सुने। अगर रब ने आपको मेरे
ख़िलाफ़ उकसाया हो तो वह मेरी ग़ल्ला की नज़र
क़बूल करे। लेकिन अगर इनसान इसके पीछे हैं
तो रब के सामने उन पर लानत! अपनी हरकतों से
उन्होंने मुझे मेरी मौरूसी ज़मीन से निकाल दिया है
और नतीजे में मैं रब की क़ौम में नहीं रह सकता।
हक़ीक़त में वह कह रहे हैं, ‘जाओ, दीगर माबूदों
की पूजा करो!’ 20ऐसा न हो कि मैं वतन से
और रब के हुज़ूर से दूर मर जाऊँ। इसराईल का
बादशाह पिस्सू को ढूँड निकालने के लिए क्यों

निकल आया है? वह तो पहाड़ों में मेरा शिकार तीतर के शिकार की तरह कर रहे हैं।"

21तब साऊल ने इक़रार किया, "मैंने गुनाह किया है। दाऊद मेरे बेटे, वापस आएँ। अब से मैं आपको नुक़सान पहुँचाने की कोशिश नहीं करूँगा, क्योंकि आज मेरी जान आपकी नज़र में क़ीमती थी। मैं बड़ी बेवुक़ूफ़ी कर गया हूँ, और मुझसे बड़ी ग़लती हुई है।"

22दाऊद ने जवाब में कहा, "बादशाह का नेज़ा यहाँ मेरे पास है। आपका कोई जवान आकर उसे ले जाए। 23रब हर उस शख़्स को अज्र देता है जो इनसाफ़ करता और वफ़ादार रहता है। आज रब ने आपको मेरे हवाले कर दिया, लेकिन मैंने उसके मसह किए हुए बादशाह को हाथ लगाने से इनकार किया। 24और मेरी दुआ है कि जितनी क़ीमती आपकी जान आज मेरी नज़र में थी, उतनी क़ीमती मेरी जान भी रब की नज़र में हो। वही मुझे हर मुसीबत से बचाए रखे।" 25साऊल ने जवाब दिया, "मेरे बेटे दाऊद, रब आपको बरकत दे। आइंदा आपको बड़ी कामयाबी हासिल होगी।"

इसके बाद दाऊद ने अपनी राह ली और साऊल अपने घर चला गया।

दाऊद दुबारा अकीस के पास

27 इस तजरबे के बाद दाऊद सोचने लगा, "अगर मैं यहीं ठहर जाऊँ तो किसी दिन साऊल मुझे मार डालेगा। बेहतर है कि अपनी हिफ़ाज़त के लिए फ़िलिस्तियों के मुल्क में चला जाऊँ। तब साऊल पूरे इसराईल में मेरा खोज लगाने से बाज़ आएगा, और मैं महफ़ूज़ रहूँगा।" 2चुनाँचे वह अपने 600 आदमियों को लेकर जात के बादशाह अकीस बिन माओक के पास चला गया। 3उनके ख़ानदान साथ थे। दाऊद की दो बीवियाँ अख़ीनुअम यज़्रएली और नाबाल की बेवा अबीजेल करमिली भी साथ थीं। अकीस ने उन्हें जात शहर में रहने की इजाज़त दी। 4जब साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद ने जात में पनाह ली है तो वह उसका खोज लगाने से बाज़ आया।

5एक दिन दाऊद ने अकीस से बात की, "अगर आपकी नज़रे-करम मुझ पर है तो मुझे देहात की किसी आबादी में रहने की इजाज़त दें। क्या ज़रूरत है कि मैं यहाँ आपके साथ दारुल-हुकूमत में रहूँ?" 6अकीस मुत्तफ़िक़ हुआ। उस दिन उसने उसे सिक़लाज शहर दे दिया। यह शहर उस वक़्त से यहूदाह के बादशाहों की मिलकियत में रहा है। 7दाऊद एक साल और चार महीने फ़िलिस्ती मुल्क में ठहरा रहा।

8सिक़लाज से दाऊद अपने आदमियों के साथ मुख़्तलिफ़ जगहों पर हमला करने के लिए निकलता रहा। कभी वह जसूरियों पर धावा बोलते, कभी जिरज़ियों या अमालीक़ियों पर। यह क़बीले क़दीम ज़माने से यहूदाह के जुनूब में शूर और मिसर की सरहद तक रहते थे। 9जब भी कोई मक़ाम दाऊद के क़ब्ज़े में आ जाता तो वह किसी भी मर्द या औरत को ज़िंदा न रहने देता लेकिन भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, गधों, ऊँटों और कपड़ों को अपने साथ सिक़लाज ले जाता।

जब भी दाऊद किसी हमले से वापस आकर बादशाह अकीस से मिलता 10तो वह पूछता, "आज आपने किस पर छापा मारा?" फिर दाऊद जवाब देता, "यहूदाह के जुनूबी इलाक़े पर," या "यरहमियेलियों के जुनूबी इलाक़े पर," या "क़ीनियों के जुनूबी इलाक़े पर।" 11जब भी दाऊद किसी आबादी पर हमला करता तो वह तमाम बाशिंदों को मौत के घाट उतार देता और न मर्द, न औरत को ज़िंदा छोड़कर जात लाता। क्योंकि उसने सोचा, "ऐसा न हो कि फ़िलिस्तियों को पता चले कि मैं असल में इसराईली आबादियों पर हमला नहीं कर रहा।"

जितना वक़्त दाऊद ने फ़िलिस्ती मुल्क में गुज़ारा वह ऐसा ही करता रहा। 12अकीस ने दाऊद पर पूरा भरोसा किया, क्योंकि उसने सोचा, "अब दाऊद को हमेशा तक मेरी ख़िदमत

में रहना पड़ेगा, क्योंकि ऐसी हरकतों से उस की अपनी क़ौम उससे सख़्त मुतनफ़्फ़िर हो गई है।”

28 उन दिनों में फ़िलिस्ती इसराईल से लड़ने के लिए अपनी फ़ौजें जमा करने लगे। अकीस ने दाऊद से भी बात की, “तवक़्क़ो है कि आप अपने फ़ौजियों समेत मेरे साथ मिलकर जंग के लिए निकलेंगे।”

2दाऊद ने जवाब दिया, “ज़रूर। अब आप ख़ुद देखेंगे कि आपका ख़ादिम क्या करने के क़ाबिल है!” अकीस बोला, “ठीक है। पूरी जंग के दौरान आप मेरे मुहाफ़िज़ होंगे।”

साऊल जादूगरनी की तरफ़ रुजू करता है

3उस वक़्त समुएल इंतक़ाल कर चुका था, और पूरे इसराईल ने उसका मातम करके उसे उसके आबाई शहर रामा में दफ़नाया था।

उन दिनों में इसराईल में मुरदों से राबिता करनेवाले और ग़ैबदान नहीं थे, क्योंकि साऊल ने उन्हें पूरे मुल्क से निकाल दिया था।

4अब फ़िलिस्तियों ने अपनी लशकरगाह शूनीम के पास लगाई जबकि साऊल ने तमाम इसराईलियों को जमा करके जिलबुअ के पास
अपना कैंप लगाया। 5फ़िलिस्तियों की बड़ी फ़ौज
देखकर वह सख़्त दहशत खाने लगा। 6उसने
रब से हिदायत हासिल करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब न मिला, न ख़ाब, न मुक़द्दस क़ुरा डालने से और न नबियों की मारिफ़त।
7तब साऊल ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “मेरे लिए मुरदों से राबिता करनेवाली ढूँडो ताकि मैं जाकर उससे मालूमात हासिल कर लूँ।” मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “ऐन-दोर में ऐसी औरत है।”

8साऊल भेस बदलकर दो आदमियों के साथ ऐन-दोर के लिए रवाना हुआ।

रात के वक़्त वह जादूगरनी के पास पहुँच गया और बोला, “मुरदों से राबिता करके उस रूह को पाताल से बुला दें जिसका नाम मैं आपको
बताता हूँ।” 9जादूगरनी ने एतराज़ किया, “क्या
आप मुझे मरवाना चाहते हैं? आपको पता है कि साऊल ने तमाम ग़ैबदानों और मुरदों से राबिता करनेवालों को मुल्क में से मिटा दिया है। आप
मुझे क्यों फँसाना चाहते हैं?” 10तब साऊल ने
कहा, “रब की हयात की क़सम, आपको यह
करने के लिए सज़ा नहीं मिलेगी।” 11औरत ने
पूछा, “मैं किस को बुलाऊँ?” साऊल ने जवाब दिया, “समुएल को बुला दें।”

12जब समुएल औरत को नज़र आया तो वह चीख़ उठी, “आपने मुझे क्यों धोका दिया? आप
तो साऊल हैं!” 13साऊल ने उसे तसल्ली देकर
कहा, “डरें मत। बताएँ तो सही, क्या देख रही हैं?” औरत ने जवाब दिया, “मुझे एक रूह नज़र आ रही है जो चढ़ती चढ़ती ज़मीन में से निकलकर
आ रही है।” 14साऊल ने पूछा, “उस की शक्लो-
सूरत कैसी है?” जादूगरनी ने कहा, “चोगे में लिपटा हुआ बूढ़ा आदमी है।”

यह सुनकर साऊल ने जान लिया कि समुएल ही है। वह मुँह के बल ज़मीन पर झुक गया।
15समुएल बोला, “तूने मुझे पाताल से बुलवाकर
क्यों मुज़तरिब कर दिया है?” साऊल ने जवाब दिया, “मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। फ़िलिस्ती मुझसे लड़ रहे हैं, और अल्लाह ने मुझे तर्क कर दिया है। न वह नबियों की मारिफ़त मुझे हिदायत देता है, न ख़ाब के ज़रीए। इसलिए मैंने आपको बुलवाया है ताकि आप मुझे बताएँ कि मैं क्या करूँ।”

16लेकिन समुएल ने कहा, “रब ख़ुद ही तुझे छोड़कर तेरा दुश्मन बन गया है तो फिर मुझसे
दरियाफ़्त करने का क्या फ़ायदा है? 17रब
इस वक़्त तेरे साथ वह कुछ कर रहा है जिसकी पेशगोई उसने मेरी मारिफ़त की थी। उसने तेरे हाथ से बादशाही छीनकर किसी और यानी दाऊद
को दे दी है। 18जब रब ने तुझे अमालीक़ियों पर
उसका सख़्त ग़ज़ब नाज़िल करने का हुक्म दिया था तो तूने उस की न सुनी। अब तुझे इसकी
सज़ा भुगतनी पड़ेगी। 19रब तुझे इसराईल समेत
फ़िलिस्तियों के हवाले कर देगा। कल ही तू और

तेरे बेटे यहाँ मेरे पास पहुँचेंगे। रब तेरी पूरी फ़ौज
भी फ़िलिस्तियों के क़ब्ज़े में कर देगा।”

20यह सुनकर साऊल सख़्त घबरा गया, और
वह गिरकर ज़मीन पर दराज़ हो गया। जिस्म की
पूरी ताक़त ख़त्म हो गई थी, क्योंकि उसने पिछले
पूरे दिन और रात रोज़ा रखा था।

21जब जादूगरनी ने साऊल के पास जाकर
देखा कि उसके रोंगटे खड़े हो गए हैं तो उसने कहा,
“जनाब, मैंने आपका हुक्म मानकर अपनी जान
ख़तरे में डाल दी। 22अब ज़रा मेरी भी सुनें। मुझे
इजाज़त दें कि मैं आपको कुछ खाना खिलाऊँ
ताकि आप तक़वियत पाकर वापस जा सकें।”
23लेकिन साऊल ने इनकार किया, “मैं कुछ नहीं
खाऊँगा।” तब उसके आदमियों ने औरत के साथ
मिलकर उसे बहुत समझाया, और आख़िरकार
उसने उनकी सुनी। वह ज़मीन से उठकर चारपाई
पर बैठ गया। 24जादूगरनी के पास मोटा-ताज़ा
बछड़ा था। उसे उसने जल्दी से ज़बह करवाकर
तैयार किया। उसने कुछ आटा भी लेकर गूँधा
और उससे बेख़मीरी रोटी बनाई। 25फिर उसने
खाना साऊल और उसके मुलाज़िमों के सामने
रख दिया, और उन्होंने खाया। फिर वह उसी रात
दुबारा रवाना हो गए।

फ़िलिस्ती दाऊद पर शक करते हैं

29 फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौजों को
अफ़ीक़ के पास जमा किया, जबकि
इसराईलियों की लशकरगाह यज्रएल के चश्मे
के पास थी। 2फ़िलिस्ती सरदार जंग के लिए
निकलने लगे। उनके पीछे सौ सौ और हज़ार
हज़ार सिपाहियों के गुरोह हो लिए। आख़िर में
दाऊद और उसके आदमी भी अकीस के साथ
चलने लगे।

3यह देखकर फ़िलिस्ती कमाँडरों ने पूछा, “यह
इसराईली क्यों साथ जा रहे हैं?” अकीस ने
जवाब दिया, “यह दाऊद है, जो पहले इसराईली
बादशाह साऊल का फ़ौजी अफ़सर था और अब
काफ़ी देर से मेरे साथ है। जब से वह साऊल
को छोड़कर मेरे पास आया है मैंने उसमें ऐब नहीं
देखा।”

4लेकिन फ़िलिस्ती कमाँडर ग़ुस्से से बोले,
“उसे उस शहर वापस भेज दें जो आपने उसके
लिए मुक़र्रर किया है! कहीं ऐसा न हो कि वह
हमारे साथ निकलकर अचानक हम पर ही हमला
कर दे। क्या अपने मालिक से सुलह कराने का
कोई बेहतर तरीक़ा है कि वह अपने मालिक को
हमारे कटे हुए सर पेश करे? 5क्या यह वही
दाऊद नहीं जिसके बारे में इसराईली नाचते हुए
गाते थे, ‘साऊल ने हज़ार हलाक किए जबकि
दाऊद ने दस हज़ार’?”

6चुनाँचे अकीस ने दाऊद को बुलाकर कहा,
“रब की हयात की क़सम, आप दियानतदार हैं,
और मेरी ख़ाहिश थी कि आप इसराईल से लड़ने
के लिए मेरे साथ निकलें, क्योंकि जब से आप
मेरी ख़िदमत करने लगे हैं मैंने आपमें ऐब नहीं
देखा। लेकिन अफ़सोस, आप सरदारों को पसंद
नहीं हैं। 7इसलिए मेहरबानी करके सलामती से
लौट जाएँ और कुछ न करें जो उन्हें बुरा लगे।”

8दाऊद ने पूछा, “मुझसे क्या ग़लती हुई है?
क्या आपने उस दिन से मुझमें नुक़्स पाया है जब
से मैं आपकी ख़िदमत करने लगा हूँ? मैं अपने
मालिक और बादशाह के दुश्मनों से लड़ने के लिए
क्यों नहीं निकल सकता?”

9अकीस ने जवाब दिया, “मेरे नज़दीक तो
आप अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे अच्छे हैं। लेकिन
फ़िलिस्ती कमाँडर इस बात पर बज़िद हैं कि
आप इसराईल से लड़ने के लिए हमारे साथ न
निकलें। 10चुनाँचे कल सुबह-सवेरे उठकर अपने
आदमियों के साथ रवाना हो जाना। जब दिन चढ़े
तो देर न करना बल्कि जल्दी से अपने घर चले
जाना।”

11दाऊद और उसके आदमियों ने ऐसा ही
किया। अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठकर
फ़िलिस्ती मुल्क में वापस चले गए जबकि
फ़िलिस्ती यज्रएल के लिए रवाना हुए।

सिक़लाज की तबाही और दाऊद का बदला

30 तीसरे दिन जब दाऊद सिक़लाज
पहुँचा तो देखा कि शहर का
सत्यानास हो गया है। उनकी ग़ैरमौजूदगी में
अमालीक़ियों ने दश्ते-नजब में आकर सिक़लाज
पर भी हमला किया था। शहर को जलाकर
2वह
तमाम बाशिंदों को छोटों से लेकर बड़ों तक अपने
साथ ले गए थे। लेकिन कोई हलाक नहीं हुआ था
बल्कि वह सबको अपने साथ ले गए थे।
3चुनाँचे
जब दाऊद और उसके आदमी वापस आए तो
देखा कि शहर भस्म हो गया है और तमाम बाल-
बच्चे छिन गए हैं।
4वह फूट फूटकर रोने लगे,
इतने रोए कि आख़िरकार रोने की सकत ही न
रही।
5दाऊद की दो बीवियों अख़ीनुअम यज्रएली
और अबीजेल करमिली को भी असीर कर लिया
गया था।

6दाऊद की जान बड़े ख़तरे में आ गई, क्योंकि
उसके मर्द ग़म के मारे आपस में उसे संगसार करने
की बातें करने लगे। क्योंकि बेटे-बेटियों के छिन
जाने के बाइस सब सख़्त रंजीदा थे। लेकिन दाऊद
ने रब अपने ख़ुदा में पनाह लेकर तक़वियत पाई।
7उसने अबियातर बिन अख़ीमलिक को हुक्म
दिया, "क़ुरा डालने के लिए इमाम का बालापोश
ले आएँ।" जब इमाम बालापोश ले आया
8तो
दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, "क्या मैं लुटेरों
का ताक़्क़ुब करूँ? क्या मैं उनको जा लूँगा?"
रब ने जवाब दिया, "उनका ताक़्क़ुब कर! तू न
सिर्फ़ उन्हें जा लेगा बल्कि अपने लोगों को बचा
भी लेगा।"
9-10तब दाऊद अपने 600 मर्दों के
साथ रवाना हुआ। चलते चलते वह बसोर नदी के
पास पहुँच गए। 200 अफ़राद इतने निढाल हो
गए थे कि वह वहीं रुक गए। बाक़ी 400 मर्द नदी
को पार करके आगे बढ़े।

11रास्ते में उन्हें खुले मैदान में एक मिसरी
आदमी मिला और उसे दाऊद के पास लाकर
कुछ पानी पिलाया और कुछ रोटी,
12अंजीर
की टिक्की का टुकड़ा और किशमिश की दो
टिक्कियाँ खिलाईं। तब उस की जान में जान आ
गई। उसे तीन दिन और रात से न खाना, न पानी
मिला था।
13दाऊद ने पूछा, "तुम्हारा मालिक
कौन है, और तुम कहाँ के हो?" उसने जवाब
दिया, "मैं मिसरी ग़ुलाम हूँ, और एक अमालीक़ी
मेरा मालिक है। जब मैं सफ़र के दौरान बीमार हो
गया तो उसने मुझे यहाँ छोड़ दिया। अब मैं तीन
दिन से यहाँ पड़ा हूँ।
14पहले हमने करेतियों यानी
फ़िलिस्तियों के जुनूबी इलाक़े और फिर यहूदाह
के इलाक़े पर हमला किया था, ख़ासकर यहूदाह
के जुनूबी हिस्से पर जहाँ कालिब की औलाद
आबाद है। शहर सिक़लाज को हमने भस्म कर
दिया था।"

15दाऊद ने सवाल किया, "क्या तुम मुझे बता
सकते हो कि यह लुटेरे किस तरफ़ गए हैं?"
मिसरी ने जवाब दिया, "पहले अल्लाह की क़सम
खाकर वादा करें कि आप मुझे न हलाक करेंगे,
न मेरे मालिक के हवाले करेंगे। फिर मैं आपको
उनके पास ले जाऊँगा।"
16चुनाँचे वह दाऊद को
अमालीक़ी लुटेरों के पास ले गया। जब वहाँ पहुँचे
तो देखा कि अमालीक़ी इधर-उधर बिखरे हुए बड़ा
जशन मना रहे हैं। वह हर तरफ़ खाना खाते और मै
पीते हुए नज़र आ रहे थे, क्योंकि जो माल उन्होंने
फ़िलिस्तियों और यहूदाह के इलाक़े से लूट लिया
था वह बहुत ज़्यादा था।

17सुबह-सवेरे जब अभी थोड़ी रौशनी थी
दाऊद ने उन पर हमला किया। लड़ते लड़ते अगले
दिन की शाम हो गई। दुश्मन हार गया और सबके
सब हलाक हुए। सिर्फ़ 400 जवान बच गए जो
ऊँटों पर सवार होकर फ़रार हो गए।
18दाऊद
ने सब कुछ छुड़ा लिया जो अमालीक़ियों ने लूट
लिया था। उस की दो बीवियाँ भी सहीह-सलामत
मिल गईं।
19न बच्चा न बुज़ुर्ग, न बेटा न बेटी,
न माल या कोई और लूटी हुई चीज़ रही जो
दाऊद वापस न लाया।
20अमालीक़ियों के गाय-
बैल और भेड़-बकरियाँ दाऊद का हिस्सा बन गईं,
और उसके लोगों ने उन्हें अपने रेवड़ों के आगे आगे

हाँककर कहा, “यह लूटे हुए माल में से दाऊद का
हिस्सा है।”

माले-ग़नीमत की तक़सीम

21जब दाऊद अपने आदमियों के साथ वापस
आ रहा था तो जो 200 आदमी निढाल होने के
बाइस बसोर नदी से आगे न जा सके वह भी उनसे
आ मिले। दाऊद ने सलाम करके उनका हाल
पूछा। 22लेकिन बाक़ी आदमियों में कुछ शरारती
लोग बुड़बुड़ाने लगे, “यह हमारे साथ लड़ने के
लिए आगे न निकले, इसलिए इन्हें लूटे हुए माल
का हिस्सा पाने का हक़ नहीं। बस वह अपने बाल-
बच्चों को लेकर चले जाएँ।”
23लेकिन दाऊद ने इनकार किया। “नहीं, मेरे
भाइयो, ऐसा मत करना! यह सब कुछ रब
की तरफ़ से है। उसी ने हमें महफ़ूज़ रखकर
हमलाआवर लुटेरों पर फ़तह बख़्शी। 24तो फिर
हम आपकी बात किस तरह मानें? जो पीछे
रहकर सामान की हिफ़ाज़त कर रहा था उसे भी
उतना ही मिलेगा जितना कि उसे जो दुश्मन से
लड़ने गया था। हम यह सब कुछ बराबर बराबर
तक़सीम करेंगे।”
25उस वक़्त से यह उसूल बन गया। दाऊद ने
इसे इसराईली क़ानून का हिस्सा बना दिया जो
आज तक जारी है। 26सिक़लाज वापस पहुँचने
पर दाऊद ने लूटे हुए माल का एक हिस्सा यहूदाह
के बुज़ुर्गों के पास भेज दिया जो उसके दोस्त
थे। साथ साथ उसने पैग़ाम भेजा, “आपके लिए
यह तोहफ़ा रब के दुश्मनों से लूट लिया गया
है।” 27यह तोहफ़े उसने ज़ैल के शहरों में भेज
दिए : बैतेल, रामात-नजब, यत्तीर, 28अरोईर,
सिफ़मोत, इस्तिमुअ, 29-31रकल, हुरमा, बोर-
असान, अताक़ और हबरून। इसके अलावा उसने
तोहफ़े यरहमियेलियों, क़ीनियों और बाक़ी उन
तमाम शहरों को भेज दिए जिनमें वह कभी ठहरा
था।

साऊल और उसके बेटों का अंजाम

31 इतने में फ़िलिस्तियों और इस-
राईलियों के दरमियान जंग छिड़
गई थी। लड़ते लड़ते इसराईली फ़रार होने
लगे, लेकिन बहुत-से लोग जिलबुअ के पहाड़ी
सिलसिले पर शहीद हो गए।
2फिर फ़िलिस्ती साऊल और उसके बेटों
यूनतन, अबीनदाब और मलकीशुअ के पास जा
पहुँचे। तीनों बेटे हलाक हो गए 3जबकि लड़ाई
साऊल के इर्दगिर्द उरूज तक पहुँच गई। फिर
वह तीरअंदाज़ों का निशाना बनकर बुरी तरह
ज़ख़मी हो गया। 4उसने अपने सिलाहबरदार को
हुक्म दिया, “अपनी तलवार मियान से खींचकर
मुझे मार डाल, वरना यह नामख़तून मुझे छेदकर
बेइज़्ज़त करेंगे।” लेकिन सिलाहबरदार ने इनकार
किया, क्योंकि वह बहुत डरा हुआ था। आख़िर में
साऊल अपनी तलवार लेकर ख़ुद उस पर गिर
गया।
5जब सिलाहबरदार ने देखा कि मेरा मालिक
मर गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिरकर
मर गया। 6यों उस दिन साऊल, उसके तीन बेटे,
उसका सिलाहबरदार और उसके तमाम आदमी
हलाक हो गए।
7जब मैदाने-यज़्रएल के पार और दरियाए-
यरदन के पार रहनेवाले इसराईलियों को ख़बर
मिली कि इसराईली फ़ौज भाग गई और साऊल
अपने बेटों समेत मारा गया है तो वह अपने शहरों
को छोड़कर भाग निकले, और फ़िलिस्ती छोड़े
हुए शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें बसने लगे।
8अगले दिन फ़िलिस्ती लाशों को लूटने के
लिए दुबारा मैदाने-जंग में आ गए। जब उन्हें
जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और
उसके तीनों बेटे मुरदा मिले 9तो उन्होंने साऊल
का सर काटकर उसका ज़िरा-बकतर उतार लिया
और क़ासिदों को अपने पूरे मुल्क में भेजकर
अपने बुतों के मंदिर में और अपनी क़ौम को फ़तह
की इत्तला दी। 10साऊल का ज़िरा-बकतर उन्होंने

अस्तारात देवी के मंदिर में महफ़ूज़ कर लिया और
उस की लाश को बैत-शान की फ़सील से लटका
दिया।
11जब यबीस-जिलियाद के बाशिंदों को ख़बर
मिली कि फ़िलिस्तियों ने साऊल की लाश के
साथ क्या कुछ किया है 12तो शहर के तमाम
लड़ने के क़ाबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना
हुए। पूरी रात चलते हुए वह शहर के पास पहुँच
गए। साऊल और उसके बेटों की लाशों को
फ़सील से उतारकर वह उन्हें यबीस को ले गए।
वहाँ उन्होंने लाशों को भस्म कर दिया 13और बची
हुई हड्डियों को शहर में झाऊ के दरख़्त के साये
में दफ़नाया। उन्होंने रोज़ा रखकर पूरे हफ़्ते तक
उनका मातम किया।

2 समुएल

दाऊद को साऊल और यूनतन की मौत की ख़बर मिलती है

1 जब दाऊद अमालीक़ियों को शिकस्त देने
से वापस आया तो साऊल बादशाह मर
चुका था। वह अभी दो ही दिन सिक़लाज में ठहरा
था 2कि एक आदमी साऊल की लशकरगाह से
पहुँचा। दुख के इज़्हार के लिए उसने अपने कपड़ों
को फाड़कर अपने सर पर ख़ाक डाल रखी थी।
दाऊद के पास आकर वह बड़े एहतराम के साथ
उसके सामने झुक गया। 3दाऊद ने पूछा, "आप
कहाँ से आए हैं?" आदमी ने जवाब दिया, "मैं
बाल बाल बचकर इसराईली लशकरगाह से आया
हूँ।" 4दाऊद ने पूछा, "बताएँ, हालात कैसे हैं?"
उसने बताया, "हमारे बहुत-से आदमी मैदाने-जंग
में काम आए। बाक़ी भाग गए हैं। साऊल और
उसका बेटा यूनतन भी हलाक हो गए हैं।"
5दाऊद ने सवाल किया, "आपको कैसे मालूम
हुआ कि साऊल और यूनतन मर गए हैं?"
6जवान ने जवाब दिया, "इत्तफ़ाक़ से मैं जिलबुअ
के पहाड़ी सिलसिले पर से गुज़र रहा था। वहाँ
मुझे साऊल नज़र आया। वह नेज़े का सहारा
लेकर खड़ा था। दुश्मन के रथ और घुड़सवार
तक़रीबन उसे पकड़ने हीवाले थे 7कि उसने
मुड़कर मुझे देखा और अपने पास बुलाया। मैंने
कहा, 'जी, मैं हाज़िर हूँ।' 8उसने पूछा, 'तुम कौन
हो?' मैंने जवाब दिया, 'मैं अमालीक़ी हूँ।' 9फिर
उसने मुझे हुक्म दिया, 'आओ और मुझे मार
डालो! क्योंकि गो मैं ज़िंदा हूँ मेरी जान निकल
रही है।' 10चुनाँचे मैंने उसे मार दिया, क्योंकि मैं
जानता था कि बचने का कोई इमकान नहीं रहा
था। फिर मैं उसका ताज और बाज़ूबंद लेकर अपने
मालिक के पास यहाँ ले आया हूँ।"
11यह सब कुछ सुनकर दाऊद और उसके
तमाम लोगों ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़
लिए। 12शाम तक उन्होंने रो रोकर और रोज़ा
रखकर साऊल, उसके बेटे यूनतन और रब के
उन बाक़ी लोगों का मातम किया जो मारे गए थे।
13दाऊद ने उस जवान से जो उनकी मौत की
ख़बर लाया था पूछा, "आप कहाँ के हैं?" उसने
जवाब दिया, "मैं अमालीक़ी हूँ जो अजनबी के
तौर पर आपके मुल्क में रहता हूँ।" 14दाऊद
बोला, "आपने रब के मसह किए हुए बादशाह को
क़त्ल करने की जुर्रत कैसे की?" 15उसने अपने
किसी जवान को बुलाकर हुक्म दिया, "इसे मार
डालो!" उसी वक़्त जवान ने अमालीक़ी को मार
डाला। 16दाऊद ने कहा, "आपने अपने आपको
ख़ुद मुजरिम ठहराया है, क्योंकि आपने अपने मुँह
से इक़रार किया है कि मैंने रब के मसह किए हुए
बादशाह को मार दिया है।"

साऊल और यूनतन पर मातम का गीत

17फिर दाऊद ने साऊल और यूनतन पर मातम
का गीत गाया। 18उसने हिदायत दी कि यहूदाह

के तमाम बाशिंदे यह गीत याद करें। गीत का नाम 'कमान का गीत' है और 'याशर की किताब' में दर्ज है। गीत यह है,

19 "हाय, ऐ इसराईल! तेरी शानो-शौकत तेरी बुलंदियों पर मारी गई है। हाय, तेरे सूरमे किस तरह गिर गए हैं!

20 जात में जाकर यह ख़बर मत सुनाना। अस्क़लून की गलियों में इसका एलान मत करना, वरना फ़िलिस्तियों की बेटियाँ ख़ुशी मनाएँगी, नामख़तूनों की बेटियाँ फ़तह के नारे लगाएँगी।

21 ऐ जिलबुअ के पहाड़ो! ऐ पहाड़ी ढलानो! आइंदा तुम पर न ओस पड़े, न बारिश बरसे। क्योंकि सूरमाओं की ढाल नापाक हो गई है। अब से साऊल की ढाल तेल मलकर इस्तेमाल नहीं की जाएगी।

22 यूनतन की कमान ज़बरदस्त थी, साऊल की तलवार कभी ख़ाली हाथ न लौटी। उनके हथियारों से हमेशा दुश्मन का ख़ून टपकता रहा, वह सूरमाओं की चरबी से चमकते रहे।

23 साऊल और यूनतन कितने प्यारे और मेहरबान थे! जीते-जी वह एक दूसरे के क़रीब रहे, और अब मौत भी उन्हें अलग न कर सकी। वह उक़ाब से तेज़ और शेरबबर से ताक़तवर थे।

24 ऐ इसराईल की ख़वातीन! साऊल के लिए आँसू बहाएँ। क्योंकि उसी ने आपको क़िरमिज़ी रंग के शानदार कपड़ों से मुलब्बस किया, उसी ने आपको सोने के ज़ेवरात से आरास्ता किया।

25 हाय, हमारे सूरमे लड़ते लड़ते शहीद हो गए हैं। हाय ऐ इसराईल, यूनतन मुरदा हालत में तेरी बुलंदियों पर पड़ा है।

26 ऐ यूनतन मेरे भाई, मैं तेरे बारे में कितना दुखी हूँ। तू मुझे कितना अज़ीज़ था। तेरी मुझसे मुहब्बत अनोखी थी, वह औरतों की मुहब्बत से भी अनोखी थी।

27 हाय, हाय! हमारे सूरमे किस तरह गिरकर शहीद हो गए हैं। जंग के हथियार तबाह हो गए हैं।"

दाऊद यहूदाह का बादशाह बन जाता है

2 इसके बाद दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, "क्या मैं यहूदाह के किसी शहर
में वापस चला जाऊँ?" रब ने जवाब दिया, "हाँ,
वापस जा।" दाऊद ने सवाल किया, "मैं किस
शहर में जाऊँ?" रब ने जवाब दिया, "हबरून
में।" 2 चुनाँचे दाऊद अपनी दो बीवियों अख़ीनुअम
यज्रएली और नाबाल की बेवा अबीजेल करमिली
के साथ हबरून में जा बसा।

3 दाऊद ने अपने आदमियों को भी उनके
ख़ानदानों समेत हबरून और गिर्दो-नवाह की
आबादियों में मुंतक़िल कर दिया। 4 एक दिन
यहूदाह के आदमी हबरून में आए और दाऊद को
मसह करके अपना बादशाह बना लिया।

जब दाऊद को ख़बर मिल गई कि यबीस-
जिलियाद के मर्दों ने साऊल को दफ़ना दिया
है 5 तो उसने उन्हें पैग़ाम भेजा, "रब आपको
इसके लिए बरकत दे कि आपने अपने मालिक
साऊल को दफ़न करके उस पर मेहरबानी की
है। 6 जवाब में रब आप पर अपनी मेहरबानी और
वफ़ादारी का इज़हार करे। मैं भी इस नेक अमल
का अज्र दूँगा। 7 अब मज़बूत और दिलेर हों।
आपका आक़ा साऊल तो फ़ौत हुआ है, लेकिन
यहूदाह के क़बीले ने मुझे उस की जगह चुन लिया
है।"

इशबोसत इसराईल का बादशाह बन जाता है

8 इतने में साऊल की फ़ौज के कमाँडर अबिनैर
बिन नैर ने साऊल के बेटे इशबोसत को महनायम
शहर में ले जाकर 9 बादशाह मुक़र्रर कर दिया।
जिलियाद, यज्रएल, आशर, इफ़राईम, बिनयमीन
और तमाम इसराईल उसके क़ब्ज़े में रहे।
10 सिर्फ़ यहूदाह का क़बीला दाऊद के साथ रहा।
इशबोसत 40 साल की उम्र में बादशाह बना, और

उस की हुकूमत दो साल क़ायम रही। 11दाऊद
हबरून में यहूदाह पर साढ़े सात साल हुकूमत
करता रहा।

इसराईल और यहूदाह के दरमियान जंग

12एक दिन अबिनैर इशबोसत बिन साऊल
के मुलाज़िमों के साथ महनायम से निकलकर
जिबऊन आया। 13यह देखकर दाऊद की फ़ौज
योआब बिन ज़रूयाह की राहनुमाई में उनसे लड़ने
के लिए निकली। दोनों फ़ौजों की मुलाक़ात
जिबऊन के तालाब पर हुई। अबिनैर की फ़ौज
तालाब की उरली तरफ़ रुक गई और योआब की
फ़ौज परली तरफ़। 14अबिनैर ने योआब से कहा,
"आओ, हमारे चंद जवान हमारे सामने एक दूसरे
का मुक़ाबला करें।" योआब बोला, "ठीक है।"
15चुनाँचे हर फ़ौज ने बारह जवानों को चुनकर
मुक़ाबले के लिए पेश किया। इशबोसत और
बिनयमीन के क़बीले के बारह जवान दाऊद के
बारह जवानों के मुक़ाबले में खड़े हो गए। 16जब
मुक़ाबला शुरू हुआ तो हर एक ने एक हाथ से
अपने मुख़ालिफ़ के बालों को पकड़कर दूसरे हाथ
से अपनी तलवार उसके पेट में घोंप दी। सबके
सब एक साथ मर गए। बाद में जिबऊन की इस
जगह का नाम ख़िलक़त-हज़्ज़ूरीम पड़ गया।

17फिर दोनों फ़ौजों के दरमियान निहायत
सख़्त लड़ाई छिड़ गई। लड़ते लड़ते अबिनैर और
उसके मर्द हार गए। 18योआब के दो भाई अबीशै
और असाहेल भी लड़ाई में हिस्सा ले रहे थे।
असाहेल ग़ज़ाल की तरह तेज़ दौड़ सकता था।
19जब अबिनैर शिकस्त खाकर भागने लगा तो
असाहेल सीधा उसके पीछे पड़ गया और न दाईं,
न बाईं तरफ़ हटा। 20अबिनैर ने पीछे देखकर
पूछा, "क्या आप ही हैं, असाहेल?" उसने जवाब
दिया, "जी, मैं ही हूँ।" 21अबिनैर बोला, "दाईं या
बाईं तरफ़ हटकर किसी और को पकड़ें! जवानों
में से किसी से लड़कर उसके हथियार और ज़िरा-
बकतर उतारें।"

लेकिन असाहेल उसका ताक़्क़ुब करने से
बाज़ न आया। 22अबिनैर ने उसे आगाह किया,
"ख़बरदार। मेरे पीछे से हट जाएँ, वरना आपको
मार देने पर मजबूर हो जाऊँगा। फिर आपके
भाई योआब को किस तरह मुँह दिखाऊँगा?"
23तो भी असाहेल ने पीछा न छोड़ा। यह देखकर
अबिनैर ने अपने नेज़े का दस्ता इतने ज़ोर से उसके
पेट में घोंप दिया कि उसका सिरा दूसरी तरफ़
निकल गया। असाहेल वहीं गिरकर जान-बहक़
हो गया। जिसने भी वहाँ से गुज़रकर यह देखा
वह वहीं रुक गया।

24लेकिन योआब और अबीशै अबिनैर का
ताक़्क़ुब करते रहे। जब सूरज ग़ुरूब होने लगा तो
वह एक पहाड़ी के पास पहुँच गए जिसका नाम
अम्मा था। यह जियाह के मुक़ाबिल उस रास्ते के
पास है जो मुसाफ़िर को जिबऊन से रेगिस्तान
में पहुँचाता है। 25बिनयमीन के क़बीले के लोग
वहाँ पहाड़ी पर अबिनैर के पीछे जमा होकर दुबारा
लड़ने के लिए तैयार हो गए। 26अबिनैर ने योआब
को आवाज़ दी, "क्या यह ज़रूरी है कि हम हमेशा
तक एक दूसरे को मौत के घाट उतारते जाएँ?
क्या आपको समझ नहीं आई कि ऐसी हरकतें
सिर्फ़ तलख़ी पैदा करती हैं? आप कब अपने मर्दों
को हुक्म देंगे कि वह अपने इसराईली भाइयों का
ताक़्क़ुब करने से बाज़ आएँ?"

27योआब ने जवाब दिया, "रब की हयात की
क़सम, अगर आप लड़ने का हुक्म न देते तो मेरे
लोग आज सुबह ही अपने भाइयों का ताक़्क़ुब
करने से बाज़ आ जाते।" 28उसने नरसिंगा बजा
दिया, और उसके आदमी रुककर दूसरों का
ताक़्क़ुब करने से बाज़ आए। यों लड़ाई ख़त्म हो
गई।

29उस पूरी रात के दौरान अबिनैर और उसके
आदमी चलते गए। दरियाए-यरदन की वादी में से
गुज़रकर उन्होंने दरिया को पार किया और फिर
गहरी घाटी में से होकर महनायम पहुँच गए।

30योआब भी अबिनैर और उसके लोगों को
छोड़कर वापस चला गया। जब उसने अपने

आदमियों को जमा करके गिना तो मालूम हुआ
कि असाहेल के अलावा दाऊद के 19 आदमी
मारे गए हैं। 31इसके मुक़ाबले में अबिनैर के 360
आदमी हलाक हुए थे। सब बिनयमीन के क़बीले
के थे। 32योआब और उसके साथियों ने असाहेल
की लाश उठाकर उसे बैत-लहम में उसके बाप की
क़ब्र में दफ़न किया। फिर उसी रात अपना सफ़र
जारी रखकर वह पौ फटते वक़्त हबरून पहुँच गए।

3 साऊल के बेटे इशबोसत और दाऊद के
दरमियान यह जंग बड़ी देर तक जारी रही।
लेकिन आहिस्ता आहिस्ता दाऊद ज़ोर पकड़ता
गया जबकि इशबोसत की ताक़त कम होती गई।

दाऊद का ख़ानदान हबरून में

2हबरून में दाऊद के बाज़ बेटे पैदा हुए। पहले
का नाम अमनोन था। उस की माँ अख़ीनुअम
यज्रएली थी। 3फिर किलियाब पैदा हुआ जिसकी
माँ नाबाल की बेवा अबीजेल करमिली थी। तीसरा
बेटा अबीसलूम था। उस की माँ माका थी जो
जसूर के बादशाह तलमी की बेटी थी। 4चौथे
का नाम अदूनियाह था। उस की माँ हज्जीत थी।
पाँचवाँ बेटा सफ़तियाह था। उस की माँ अबीताल
थी। 5छटे का नाम इतरियाम था। उस की माँ
इजला थी। यह छः बेटे हबरून में पैदा हुए।

अबिनैर इशबोसत से झगड़ता है

6जितनी देर तक इशबोसत और दाऊद के
दरमियान जंग रही, उतनी देर तक अबिनैर साऊल
के घराने का वफ़ादार रहा।

7लेकिन एक दिन इशबोसत अबिनैर से नाराज़
हुआ, क्योंकि वह साऊल मरहूम की एक दाश्ता
से हमबिसतर हो गया था। औरत का नाम रिसफ़ा
बिंत ऐयाह था। इशबोसत ने शिकायत की,
"आपने मेरे बाप की दाश्ता से ऐसा सुलूक क्यों
किया?" 8अबिनैर बड़े ग़ुस्से में आकर गरजा,
"क्या मैं यहूदाह का कुत्ता[a] हूँ कि आप मुझे ऐसा
रवैया दिखाते हैं? आज तक मैं आपके बाप के
घराने और उसके रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए
लड़ता रहा हूँ। मेरी ही वजह से आप अब तक
दाऊद के हाथ से बचे रहे हैं। क्या यह इसका
मुआवज़ा है? क्या एक ऐसी औरत के सबब से
आप मुझे मुजरिम ठहरा रहे हैं? 9-10अल्लाह
मुझे सख़्त सज़ा दे अगर अब से हर मुमकिन
कोशिश न करूँ कि दाऊद पूरे इसराईल और
यहूदाह पर बादशाह बन जाए, शिमाल में दान
से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक। आख़िर रब ने
ख़ुद क़सम खाकर दाऊद से वादा किया है कि मैं
बादशाही साऊल के घराने से छीनकर तुझे दूँगा।"
11यह सुनकर इशबोसत अबिनैर से इतना डर
गया कि मज़ीद कुछ कहने की जुर्रत जाती रही।

अबिनैर के दाऊद से मुज़ाकरात

12अबिनैर ने दाऊद को पैग़ाम भेजा, "मुल्क
किसका है? मेरे साथ मुआहदा कर लें तो मैं पूरे
इसराईल को आपके साथ मिला दूँगा।"

13दाऊद ने जवाब दिया, "ठीक है, मैं आपके
साथ मुआहदा करता हूँ। लेकिन एक ही शर्त पर,
आप साऊल की बेटी मीकल को जो मेरी बीवी है
मेरे घर पहुँचाएँ, वरना मैं आपसे नहीं मिलूँगा।"
14दाऊद ने इशबोसत के पास भी क़ासिद
भेजकर तक़ाज़ा किया, "मुझे मेरी बीवी मीकल
जिससे शादी करने के लिए मैंने सौ फ़िलिस्तियों
को मारा वापस कर दें।" 15इशबोसत मान गया।
उसने हुक्म दिया कि मीकल को उसके मौजूदा
शौहर फ़लतियेल बिन लैस से लेकर दाऊद को
भेजा जाए। 16लेकिन फ़लतियेल उसे छोड़ना
नहीं चाहता था। वह रोते रोते बहूरीम तक अपनी
बीवी के पीछे चलता रहा। तब अबिनैर ने उससे
कहा, "अब जाओ! वापस चले जाओ!" तब वह
वापस चला।

17अबिनैर ने इसराईल के बुज़ुर्गों से भी बात
की, "आप तो काफ़ी देर से चाहते हैं कि दाऊद
आपका बादशाह बन जाए। 18अब क़दम उठाने
का वक़्त आ गया है! क्योंकि रब ने दाऊद

---

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : कुत्ते का सर

से वादा किया है, 'अपने ख़ादिम दाऊद से मैं
अपनी क़ौम इसराईल को फ़िलिस्तियों और बाक़ी
तमाम दुश्मनों के हाथ से बचाऊँगा'।" 19यही
बात अबिनैर ने बिनयमीन के बुज़ुर्गों के पास
जाकर भी की। इसके बाद वह हबरून में दाऊद
के पास आया ताकि उसके सामने इसराईल और
बिनयमीन के बुज़ुर्गों का फ़ैसला पेश करे।

20बीस आदमी अबिनैर के साथ हबरून पहुँच
गए। उनका इस्तक़बाल करके दाऊद ने ज़ियाफ़त
की। 21फिर अबिनैर ने दाऊद से कहा, "अब
मुझे इजाज़त दें। मैं अपने आक़ा और बादशाह के
लिए तमाम इसराईल को जमा कर लूँगा ताकि
वह आपके साथ अहद बाँधकर आपको अपना
बादशाह बना लें। फिर आप उस पूरे मुल्क पर
हुकूमत करेंगे जिस तरह आपका दिल चाहता
है।" फिर दाऊद ने अबिनैर को सलामती से
रुख़सत कर दिया।

अबिनैर को क़त्ल किया जाता है

22थोड़ी देर के बाद योआब दाऊद के आदमियों
के साथ किसी लड़ाई से वापस आया। उनके
पास बहुत-सा लूटा हुआ माल था। लेकिन अबिनैर
हबरून में दाऊद के पास नहीं था, क्योंकि दाऊद
ने उसे सलामती से रुख़सत कर दिया था। 23जब
योआब अपने आदमियों के साथ शहर में दाख़िल
हुआ तो उसे इत्तला दी गई, "अबिनैर बिन
नैर बादशाह के पास था, और बादशाह ने उसे
सलामती से रुख़सत कर दिया है।" 24योआब
फ़ौरन बादशाह के पास गया और बोला, "आपने
यह क्या किया है? जब अबिनैर आपके पास
आया तो आपने उसे क्यों सलामती से रुख़सत
किया? अब उसे पकड़ने का मौक़ा जाता रहा
है। 25आप तो उसे जानते हैं। हक़ीक़त में वह
इसलिए आया कि आपको मनवाकर आपके आने
जाने और बाक़ी कामों के बारे में मालूमात हासिल
करे।"

26योआब ने दरबार से निकलकर क़ासिदों को
अबिनैर के पीछे भेज दिया। वह अभी सफ़र करते
करते सीरा के हौज़ पर से गुज़र रहा था कि
क़ासिद उसके पास पहुँच गए। उनकी दावत पर
वह उनके साथ वापस गया। लेकिन बादशाह को
इसका इल्म न था। 27जब अबिनैर दुबारा हबरून
में दाख़िल होने लगा तो योआब शहर के दरवाज़े में
उसका इस्तक़बाल करके उसे एक तरफ़ ले गया
जैसे वह उसके साथ कोई ख़ुफ़िया बात करना
चाहता हो। लेकिन अचानक उसने अपनी तलवार
को मियान से खींचकर अबिनैर के पेट में घोंप
दिया। इस तरह योआब ने अपने भाई असाहेल
का बदला लेकर अबिनैर को मार डाला।

28जब दाऊद को इसकी इत्तला मिली तो उसने
एलान किया, "मैं रब के सामने क़सम खाता
हूँ कि बेक़ुसूर हूँ। मेरा अबिनैर की मौत में हाथ
नहीं था। इस नाते से मुझ पर और मेरी बादशाही
पर कभी भी इलज़ाम न लगाया जाए, 29क्योंकि
योआब और उसके बाप का घराना क़ुसूरवार हैं।
रब उसे और उसके बाप के घराने को मुनासिब
सज़ा दे। अब से अबद तक उस की हर नसल में
कोई न कोई हो जिसे ऐसे ज़ख़म लग जाएँ जो
भर न पाएँ, किसी को कोढ़ लग जाए, किसी
को बैसाखियों की मदद से चलना पड़े, कोई
ग़ैरतबई मौत मर जाए, या किसी को ख़ुराक की
मुसलसल कमी रहे।" 30यों योआब और उसके
भाई अबीशै ने अपने भाई असाहेल का बदला
लिया। उन्होंने अबिनैर को इसलिए क़त्ल किया
कि उसने असाहेल को जिबऊन के क़रीब लड़ते
वक़्त मौत के घाट उतार दिया था।

दाऊद अबिनैर का मातम करता है

31-32दाऊद ने योआब और उसके साथियों
को हुक्म दिया, "अपने कपड़े फाड़ दो और टाट
ओढ़कर अबिनैर का मातम करो!" जनाज़े का
बंदोबस्त हबरून में किया गया। दाऊद ख़ुद जनाज़े
के ऐन पीछे चला। क़ब्र पर बादशाह ऊँची आवाज़
से रो पड़ा, और बाक़ी सब लोग भी रोने लगे।
33फिर दाऊद ने अबिनैर के बारे में मातमी गीत
गाया,

34“हाय, अबिनैर क्यों बेदीन की तरह मारा
गया? तेरे हाथ बँधे हुए न थे, तेरे पाँव ज़ंजीरों में
जकड़े हुए न थे। जिस तरह कोई शरीरों के हाथ
में आकर मर जाता है उसी तरह तू हलाक हुआ।”
तब तमाम लोग मज़ीद रोए। 35दाऊद ने जनाज़े
के दिन रोज़ा रखा। सबने मिन्नत की कि वह
कुछ खाए, लेकिन उसने क़सम खाकर कहा,
“अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं सूरज के
ग़ुरूब होने से पहले रोटी का एक टुकड़ा भी खा
लूँ।” 36बादशाह का यह रवैया लोगों को बहुत
पसंद आया। वैसे भी दाऊद का हर अमल लोगों
को पसंद आता था। 37यों तमाम हाज़िरीन बल्कि
तमाम इसराईलियों ने जान लिया कि बादशाह का
अबिनैर को क़त्ल करने में हाथ न था। 38दाऊद
ने अपने दरबारियों से कहा, “क्या आपको समझ
नहीं आई कि आज इसराईल का बड़ा सूरमा फ़ौत
हुआ है? 39मुझे अभी अभी मसह करके बादशाह
बनाया गया है, इसलिए मेरी इतनी ताक़त नहीं
कि ज़रूयाह के इन दो बेटों योआब और अबीशै
को कंट्रोल करूँ। रब उन्हें उनकी इस शरीर हरकत
की मुनासिब सज़ा दे!”

इशबोसत को क़त्ल किया जाता है

4 जब साऊल के बेटे इशबोसत को इत्तला
मिली कि अबिनैर को हबरून में क़त्ल
किया गया है तो वह हिम्मत हार गया, और तमाम
इसराईल सख़्त घबरा गया। 2इशबोसत के दो
आदमी थे जिनके नाम बाना और रैकाब थे। जब
कभी इशबोसत के फ़ौजी छापा मारने के लिए
निकलते तो यह दो भाई उन पर मुक़र्रर थे। उनका
बाप रिम्मोन बिनयमीन के क़बायली इलाक़े के
शहर बैरोत का रहनेवाला था। बैरोत भी बिनयमीन
में शुमार किया जाता है, 3अगरचे उसके बाशिंदों
को हिजरत करके जित्तैम में बसना पड़ा जहाँ वह
आज तक परदेसी की हैसियत से रहते हैं।

4यूनतन का एक बेटा ज़िंदा रह गया था
जिसका नाम मिफ़ीबोसत था। पाँच साल की उम्र
में यज़्रएल से ख़बर आई थी कि साऊल और
यूनतन मारे गए हैं। तब उस की आया उसे लेकर
कहीं पनाह लेने के लिए भाग गई थी। लेकिन
जल्दी की वजह से मिफ़ीबोसत गिरकर लँगड़ा हो
गया था। उस वक़्त से उस की दोनों टाँगें मफ़लूज
थीं।

5एक दिन रिम्मोन बैरोती के बेटे रैकाब और
बाना दोपहर के वक़्त इशबोसत के घर गए। गरमी
उरूज पर थी, इसलिए इशबोसत आराम कर रहा
था। 6-7दोनों आदमी यह बहाना पेश करके घर के
अंदरूनी कमरे में गए कि हम कुछ अनाज ले जाने
के लिए आए हैं। जब इशबोसत के कमरे में पहुँचे
तो वह चारपाई पर लेटा सो रहा था। यह देखकर
उन्होंने उसके पेट में तलवार घोंप दी और फिर
उसका सर काटकर वहाँ से सलामती से निकल
आए।

पूरी रात सफ़र करते करते वह दरियाए-यरदन
की वादी में से गुज़रकर 8हबरून पहुँच गए। वहाँ
उन्होंने दाऊद को इशबोसत का सर दिखाकर
कहा, “यह देखें, साऊल के बेटे इशबोसत का
सर। आपका दुश्मन साऊल बार बार आपको मार
देने की कोशिश करता रहा, लेकिन आज रब ने
उससे और उस की औलाद से आपका बदला
लिया है।”

दाऊद क़ातिलों को सज़ा देता है

9लेकिन दाऊद ने जवाब दिया, “रब की हयात
की क़सम जिसने फ़िद्या देकर मुझे हर मुसीबत
से बचाया है, 10जिस आदमी ने मुझे उस वक़्त
सिक़लाज में साऊल की मौत की इत्तला दी वह
भी समझता था कि मैं दाऊद को अच्छी ख़बर
पहुँचा रहा हूँ। लेकिन मैंने उसे पकड़कर सज़ाए-
मौत दे दी। यही था वह अज्र जो उसे ऐसी ख़बर
पहुँचाने के एवज़ मिला! 11अब तुम शरीर लोगों
ने इससे बढ़कर किया। तुमने बेक़ुसूर आदमी को
उसके अपने घर में उस की अपनी चारपाई पर
क़त्ल कर दिया है। तो क्या मेरा फ़र्ज़ नहीं कि
तुमको इस क़त्ल की सज़ा देकर तुम्हें मुल्क में से
मिटा दूँ?”

12दाऊद ने दोनों को मार देने का हुक्म दिया। उसके मुलाज़िमों ने उन्हें मारकर उनके हाथों और पैरों को काट डाला और उनकी लाशों को हबरून के तालाब के क़रीब कहीं लटका दिया। इशबोसत के सर को उन्होंने अबिनैर की क़ब्र में दफ़नाया।

दाऊद पूरे इसराईल का बादशाह बन जाता है

5 उस वक़्त इसराईल के तमाम क़बीले हबरून में दाऊद के पास आए और कहा, “हम आप ही की क़ौम और आप ही के रिश्तेदार
हैं। 2माज़ी में भी जब साऊल बादशाह था तो आप ही फ़ौजी मुहिमों में इसराईल की क़ियादत करते रहे। और रब ने आपसे वादा भी किया है कि तू मेरी क़ौम इसराईल का चरवाहा बनकर उस पर
हुकूमत करेगा।” 3जब इसराईल के तमाम बुज़ुर्ग हबरून पहुँचे तो दाऊद बादशाह ने रब के हुज़ूर उनके साथ अहद बाँधा, और उन्होंने उसे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया।
4दाऊद 30 साल की उम्र में बादशाह बन गया।
उस की हुकूमत 40 साल तक जारी रही। 5पहले
साढ़े सात साल वह सिर्फ़ यहूदाह का बादशाह था और उसका दारुल-हुकूमत हबरून रहा। बाक़ी 33 साल वह यरूशलम में रहकर यहूदाह और इसराईल दोनों पर हुकूमत करता रहा।

दाऊद यरूशलम पर क़ब्ज़ा करता है

6बादशाह बनने के बाद दाऊद अपने फ़ौजियों के साथ यरूशलम गया ताकि उस पर हमला करे। वहाँ अब तक यबूसी आबाद थे। दाऊद को देखकर यबूसियों ने उसका मज़ाक़ उड़ाया, “आप हमारे शहर में कभी दाख़िल नहीं हो पाएँगे! आपको रोकने के लिए हमारे लँगड़े और अंधे काफ़ी हैं।” उन्हें पूरा यक़ीन था कि दाऊद शहर में किसी भी तरीक़े से नहीं आ सकेगा।
7तो भी दाऊद ने सिय्यून के क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया जो आजकल ‘दाऊद का शहर’
कहलाता है। 8जिस दिन उन्होंने शहर पर हमला किया उसने एलान किया, “जो भी यबूसियों पर फ़तह पाना चाहे उसे पानी की सुरंग में से गुज़रकर शहर में घुसना पड़ेगा ताकि उन लँगड़ों और अंधों को मारे जिनसे मेरी जान नफ़रत करती है।” इसलिए आज तक कहा जाता है, “लँगड़ों और अंधों को घर में जाने की इजाज़त नहीं।”
9यरूशलम पर फ़तह पाने के बाद दाऊद क़िले में रहने लगा। उसने उसे ‘दाऊद का शहर’ क़रार दिया और उसके इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। यह तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू हुआ और होते होते क़िले तक पहुँच गया।
10यों दाऊद ज़ोर पकड़ता गया, क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज उसके साथ था।

दाऊद की तरक़्क़ी

11एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद के पास वफ़द भेजा। बढ़ई और राज भी साथ थे। उनके पास देवदार की लकड़ी थी, और उन्होंने
दाऊद के लिए महल बना दिया। 12यों दाऊद ने जान लिया कि रब ने मुझे इसराईल का बादशाह बनाकर मेरी बादशाही अपनी क़ौम इसराईल की ख़ातिर सरफ़राज़ कर दी है।
13हबरून से यरूशलम में मुंतक़िल होने के बाद दाऊद ने मज़ीद बीवियों और दाश्ताओं से शादी की। नतीजे में यरूशलम में
उसके कई बेटे-बेटियाँ पैदा हुए। 14जो
बेटे वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मुअ,
सोबाब, नातन, सुलेमान, 15इबहार, इली-
सुअ, नफ़ज, यफ़ीअ, 16इलीसमा, इलियदा
और इलीफ़लत।

फ़िलिस्तियों पर फ़तह

17जब फ़िलिस्तियों को इत्तला मिली कि दाऊद को मसह करके इसराईल का बादशाह बनाया गया है तो उन्होंने अपने फ़ौजियों को इसराईल में भेज दिया ताकि उसे पकड़ लें। लेकिन दाऊद को पता चल गया, और उसने एक पहाड़ी क़िले में पनाह ले ली।

18जब फ़िलिस्ती इसराईल में पहुँचकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए 19तो दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, “क्या मैं फ़िलिस्तियों पर हमला करूँ? क्या तू मुझे उन पर फ़तह बख़्शेगा?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हमला कर! मैं उन्हें ज़रूर तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।” 20चुनाँचे दाऊद अपने फ़ौजियों को लेकर बाल-पराज़ीम गया। वहाँ उसने फ़िलिस्तियों को शिकस्त दी। बाद में उसने गवाही दी, “जितने ज़ोर से बंद के टूट जाने पर पानी उससे फूट निकलता है उतने ज़ोर से आज रब मेरे देखते देखते दुश्मन की सफ़ों में से फूट निकला है।” चुनाँचे उस जगह का नाम बाल-पराज़ीम यानी ‘फूट निकलने का मालिक’ पड़ गया। 21फ़िलिस्ती अपने बुत छोड़कर भाग गए, और वह दाऊद और उसके आदमियों के क़ब्ज़े में आ गए।

22एक बार फिर फ़िलिस्ती आकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए। 23जब दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया तो उसने जवाब दिया, “इस मरतबा उनका सामना मत करना बल्कि उनके पीछे जाकर बका के दरख़्तों के सामने उन पर हमला कर। 24जब उन दरख़्तों की चोटियों से क़दमों की चाप सुनाई दे तो ख़बरदार! यह इसका इशारा होगा कि रब ख़ुद तेरे आगे आगे चलकर फ़िलिस्तियों को मारने के लिए निकल आया है।”

25दाऊद ने ऐसा ही किया और नतीजे में फ़िलिस्तियों को शिकस्त देकर जिबऊन से लेकर जज़र तक उनका ताक़्क़ुब किया।

दाऊद अहद का संदूक़ यरूशलम में ले आता है

6 एक बार फिर दाऊद ने इसराईल के चुनीदा आदमियों को जमा किया। 30,000 अफ़राद थे। 2उनके साथ मिलकर वह यहूदाह के बाला पहुँच गया ताकि अल्लाह का संदूक़ उठाकर यरूशलम ले जाएँ, वही संदूक़ जिस पर रब्बुल-अफ़वाज के नाम का ठप्पा लगा है और जहाँ वह संदूक़ के ऊपर करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है। 3-4लोगों ने अल्लाह के संदूक़ को पहाड़ी पर वाक़े अबीनदाब के घर से निकालकर एक नई बैलगाड़ी पर रख दिया, और अबीनदाब के दो बेटे उज़्ज़ा और अख़ियो उसे यरूशलम की तरफ़ ले जाने लगे। अख़ियो गाड़ी के आगे आगे 5और दाऊद बाक़ी तमाम लोगों के साथ पीछे चल रहा था। सब रब के हुज़ूर पूरे ज़ोर से ख़ुशी मनाने और गीत गाने लगे। मुख़्तलिफ़ साज़ भी बजाए जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों, सरोदों, दफ़ों, ख़ंजरियों[a] और झाँझों की आवाज़ों से गूँज उठी।

6वह गंदुम गाहने की एक जगह पर पहुँच गए जिसके मालिक का नाम नकोन था। वहाँ बैल अचानक बेकाबू हो गए। उज़्ज़ा ने जल्दी से अल्लाह का संदूक़ पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए। 7उसी लमहे रब का ग़ज़ब उस पर नाज़िल हुआ, क्योंकि उसने अल्लाह के संदूक़ को छूने की जुर्रत की थी। वहीं अल्लाह के संदूक़ के पास ही उज़्ज़ा गिरकर हलाक हो गया। 8दाऊद को बड़ा रंज हुआ कि रब का ग़ज़ब उज़्ज़ा पर यों टूट पड़ा है। उस वक़्त से उस जगह का नाम परज़-उज़्ज़ा यानी ‘उज़्ज़ा पर टूट पड़ना’ है।

9उस दिन दाऊद को रब से ख़ौफ़ आया। उसने सोचा, “रब का संदूक़ किस तरह मेरे पास पहुँच सकेगा?” 10चुनाँचे उसने फ़ैसला किया कि हम रब का संदूक़ यरूशलम नहीं ले जाएंगे बल्कि उसे ओबेद-अदोम जाती के घर में महफ़ूज़ रखेंगे। 11वहाँ वह तीन माह तक पड़ा रहा।

इन तीन महीनों के दौरान रब ने ओबेद-अदोम और उसके पूरे घराने को बरकत दी। 12एक दिन दाऊद को इत्तला दी गई, “जब से अल्लाह का संदूक़ ओबेद-अदोम के घर में है उस वक़्त से रब ने उसके घराने और उस की पूरी मिलकियत को बरकत दी है।” यह सुनकर दाऊद ओबेद-अदोम के घर गया और ख़ुशी मनाते हुए अल्लाह के संदूक़ को दाऊद के शहर ले आया। 13छः क़दमों

[a]इबरानी में इससे मुराद झुनझुने जैसा कोई साज़ है।

के बाद दाऊद ने रब का संदूक़ उठानेवालों को
रोककर एक साँड और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा
क़ुरबान किया। 14जब जुलूस आगे निकला तो
दाऊद पूरे ज़ोर के साथ रब के हुज़ूर नाचने
लगा। वह कतान का बालापोश पहने हुए था।
15ख़ुशी के नारे लगा लगाकर और नरसिंगे फूँक
फूँककर दाऊद और तमाम इसराईली रब का
संदूक़ यरूशलम ले आए।

16रब का संदूक़ दाऊद के शहर में दाख़िल हुआ
तो दाऊद की बीवी मीकल बिंत साऊल खिड़की
में से जुलूस को देख रही थी। जब बादशाह रब
के हुज़ूर कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो
मीकल ने दिल में उसे हक़ीर जाना।

17रब का संदूक़ उस तंबू के दरमियान में रखा
गया जो दाऊद ने उसके लिए लगवाया था।
फिर दाऊद ने रब के हुज़ूर भस्म होनेवाली और
सलामती की क़ुरबानियाँ पेश कीं। 18इसके बाद
उसने क़ौम को रब्बुल-अफ़वाज के नाम से बरकत
देकर 19हर इसराईली मर्द और औरत को एक
रोटी, खजूर की एक टिक्की और किशमिश की
एक टिक्की दे दी। फिर तमाम लोग अपने अपने
घरों को वापस चले गए।

20दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने
ख़ानदान को बरकत देकर सलाम करे। वह
अभी महल के अंदर नहीं पहुँचा था कि मीकल
निकलकर उससे मिलने आई। उसने तंज़न कहा,
“वाह जी वाह। आज इसराईल का बादशाह
कितनी शान के साथ लोगों को नज़र आया है!
अपने लोगों की लौंडियों के सामने ही उसने अपने
कपड़े उतार दिए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
गँवार करते हैं।” 21दाऊद ने जवाब दिया, “मैं रब
ही के हुज़ूर नाच रहा था, जिसने आपके बाप और
उसके ख़ानदान को तर्क करके मुझे चुन लिया
और इसराईल का बादशाह बना दिया है। उसी
की ताज़ीम में मैं आइंदा भी नाचूँगा। 22हाँ, मैं
इससे भी ज़्यादा ज़लील होने के लिए तैयार हूँ।
जहाँ तक लौंडियों का ताल्लुक़ है, वह ज़रूर मेरी
इज़्ज़त करेंगी।”
23जीते-जी मीकल बेऔलाद रही।

रब दाऊद से अबदी बादशाही का वादा करता है

7 दाऊद बादशाह सुकून से अपने महल में
रहने लगा, क्योंकि रब ने इर्दगिर्द के दुश्मनों
को उस पर हमला करने से रोक दिया था। 2एक
दिन दाऊद ने नातन नबी से बात की, “देखें, मैं
यहाँ देवदार के महल में रहता हूँ जबकि अल्लाह
का संदूक़ अब तक तंबू में पड़ा है। यह मुनासिब
नहीं है!”

3नातन ने बादशाह की हौसलाअफ़्ज़ाई की,
“जो कुछ भी आप करना चाहते हैं वह करें। रब
आपके साथ है।”

4लेकिन उसी रात रब नातन से हमकलाम
हुआ, 5“मेरे ख़ादिम दाऊद के पास जाकर उसे
बता दे कि रब फ़रमाता है, ‘क्या तू मेरी रिहाइश
के लिए मकान तामीर करेगा? हरगिज़ नहीं!
6आज तक मैं किसी मकान में नहीं रहा। जब से
मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया उस
वक़्त से मैं ख़ैमे में रहकर जगह बजगह फिरता
रहा हूँ। 7जिस दौरान मैं तमाम इसराईलियों के
साथ इधर-उधर फिरता रहा क्या मैंने इसराईल
के उन राहनुमाओं से कभी इस नाते से शिकायत
की जिन्हें मैंने अपनी क़ौम की गल्लाबानी करने
का हुक्म दिया था? क्या मैंने उनमें से किसी से
कहा कि तुमने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं
बनाया?’

8चुनाँचे मेरे ख़ादिम दाऊद को बता दे, ‘रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में
भेड़ों की गल्लाबानी करने से फ़ारिग़ करके अपनी
क़ौम इसराईल का बादशाह बना दिया है। 9जहाँ
भी तूने क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे
देखते देखते मैंने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर
दिया है। अब मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह
दुनिया के सबसे अज़ीम आदमियों के नामों के
बराबर ही होगा। 10और मैं अपनी क़ौम इसराईल
के लिए एक वतन मुहैया करूँगा, पौदे की तरह

उन्हें यों लगा दूँगा कि वह जड़ पकड़कर महफ़ूज़
रहेंगे और कभी बेचैन नहीं होंगे। बेदीन क़ौमें उन्हें
उस तरह नहीं दबाएँगी जिस तरह माज़ी में किया
करती थीं, 11उस वक़्त से जब मैं क़ौम पर क़ाज़ी
मुक़र्रर करता था। मैं तेरे दुश्मनों को तुझसे दूर
रखकर तुझे अमनो-अमान अता करूँगा। आज रब
फ़रमाता है कि मैं ही तेरे लिए घर बनाऊँगा।

12जब तू बूढ़ा होकर कूच कर जाएगा और
अपने बापदादा के साथ आराम करेगा तो मैं तेरी
जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा।
उस की बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। 13वही
मेरे नाम के लिए घर तामीर करेगा, और मैं उस
की बादशाही का तख़्त अबद तक क़ायम रखूँगा।
14मैं उसका बाप हूँगा, और वह मेरा बेटा होगा।
जब कभी उससे ग़लती होगी तो मैं उसे यों छड़ी
से सज़ा दूँगा जिस तरह इनसानी बाप अपने बेटे
की तरबियत करता है। 15लेकिन मेरी नज़रे-करम
कभी उससे नहीं हटेगी। उसके साथ मैं वह सुलूक
नहीं करूँगा जो मैंने साऊल के साथ किया जब
उसे तेरे सामने से हटा दिया। 16तेरा घराना और
तेरी बादशाही हमेशा मेरे हुज़ूर क़ायम रहेगी, तेरा
तख़्त हमेशा मज़बूत रहेगा'।"

दाऊद की शुक्रगुज़ारी

17नातन ने दाऊद के पास जाकर उसे सब कुछ
सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 18तब
दाऊद अहद के संदूक़ के पास गया और रब के
हुज़ूर बैठकर दुआ करने लगा,

"ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मैं कौन हूँ और मेरा
ख़ानदान क्या हैसियत रखता है कि तूने मुझे यहाँ
तक पहुँचाया है? 19और अब ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, तू मुझे और भी ज़्यादा अता करने
को है, क्योंकि तूने अपने ख़ादिम के घराने के
मुस्तक़बिल के बारे में भी वादा किया है। क्या तू
आम तौर पर इनसान के साथ ऐसा सुलूक करता
है? हरगिज़ नहीं! 20लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ?
ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू तो अपने ख़ादिम को
जानता है। 21तूने अपने फ़रमान की ख़ातिर और
अपनी मरज़ी के मुताबिक़ यह अज़ीम काम करके
अपने ख़ादिम को इत्तला दी है।

22ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू कितना अज़ीम है!
तुझ जैसा कोई नहीं है। हमने अपने कानों से सुन
लिया है कि तेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है।
23दुनिया में कौन-सी क़ौम तेरी उम्मत इसराईल
की मानिंद है? तूने इसी एक क़ौम का फ़िद्या
देकर उसे ग़ुलामी से छुड़ाया और अपनी क़ौम बना
लिया। तूने इसराईल के वास्ते बड़े और हैबतनाक
काम करके अपने नाम की शोहरत फैला दी।
हमें मिसर से रिहा करके तूने क़ौमों और उनके
देवताओं को हमारे आगे से निकाल दिया। 24ऐ
रब, तू इसराईल को हमेशा के लिए अपनी क़ौम
बनाकर उनका ख़ुदा बन गया है। 25चुनाँचे ऐ रब
क़ादिरे-मुतलक़, जो बात तूने अपने ख़ादिम और
उसके घराने के बारे में की है उसे अबद तक क़ायम
रख और अपना वादा पूरा कर। 26तब तेरा नाम
अबद तक मशहूर रहेगा और लोग तसलीम करेंगे
कि रब्बुल-अफ़वाज इसराईल का ख़ुदा है। फिर
तेरे ख़ादिम दाऊद का घराना भी तेरे हुज़ूर क़ायम
रहेगा।

27ऐ रब्बुल-अफ़वाज, इसराईल के ख़ुदा, तूने
अपने ख़ादिम के कान को इस बात के लिए खोल
दिया है। तू ही ने फ़रमाया, 'मैं तेरे लिए घर तामीर
करूँगा।' सिर्फ़ इसी लिए तेरे ख़ादिम ने यों तुझसे
दुआ करने की जुर्रत की है। 28ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, तू ही ख़ुदा है, और तेरी ही बातों पर
एतमाद किया जा सकता है। तूने अपने ख़ादिम
से इन अच्छी चीज़ों का वादा किया है। 29अब
अपने ख़ादिम के घराने को बरकत देने पर राज़ी
हो ताकि वह हमेशा तक तेरे हुज़ूर क़ायम रहे।
क्योंकि तू ही ने यह फ़रमाया है, और चूँकि तू ऐ
रब क़ादिरे-मुतलक़ ने बरकत दी है इसलिए तेरे
ख़ादिम का घराना अबद तक मुबारक रहेगा।"

दाऊद की जंगें

8 फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने
फ़िलिस्तियों को शिकस्त देकर उन्हें अपने

ताबे कर लिया और हुकूमत की बागडोर उनके
हाथों से छीन ली।
2उसने मोआबियों पर भी फ़तह पाई। मोआबी
क़ैदियों की क़तार बनाकर उसने उन्हें ज़मीन पर
लिटा दिया। फिर रस्सी का टुकड़ा लेकर उसने
क़तार का नाप लिया। जितने लोग रस्सी की
लंबाई में आ गए वह एक गुरोह बन गए। यों दाऊद
ने लोगों को गुरोहों में तक़सीम किया। फिर उसने
गुरोहों के तीन हिस्से बनाकर दो हिस्सों के सर
क़लम किए और एक हिस्से को ज़िंदा छोड़ दिया।
लेकिन जितने क़ैदी छूट गए वह दाऊद के ताबे
रहकर उसे ख़राज देते रहे।
3दाऊद ने शिमाली शाम के शहर ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र बिन रहोब को भी हरा दिया
जब हददअज़र दरियाए-फ़ुरात पर दुबारा क़ाबू
पाने के लिए निकल आया था। 4दाऊद ने 1,700
घुड़सवारों और 20,000 प्यादा सिपाहियों को
गिरिफ़्तार कर लिया। रथों के 100 घोड़ों को
उसने अपने लिए महफ़ूज़ रखा, जबकि बाक़ियों
की उसने कोंचें काट दीं ताकि वह आइंदा जंग के
लिए इस्तेमाल न हो सकें।
5जब दमिश्क़ के अरामी बाशिंदे ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद
ने उनके 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए।
6फिर उसने दमिश्क़ के इलाक़े में अपनी फ़ौजी
चौकियाँ क़ायम कीं। अरामी उसके ताबे हो गए
और उसे ख़राज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया
वहाँ रब ने उसे कामयाबी बख़्शी। 7सोने की जो
ढालें हददअज़र के अफ़सरों के पास थीं उन्हें
दाऊद यरूशलम ले गया। 8हददअज़र के दो शहरों
बताह और बेरोती से उसने कसरत का पीतल छीन
लिया।
9जब हमात के बादशाह तूई को इत्तला मिली
कि दाऊद ने हददअज़र की पूरी फ़ौज पर फ़तह
पाई है 10तो उसने अपने बेटे यूराम को दाऊद के
पास भेजा ताकि उसे सलाम कहे। यूराम ने दाऊद
को हददअज़र पर फ़तह के लिए मुबारकबाद
दी, क्योंकि हददअज़र तूई का दुश्मन था, और
उनके दरमियान जंग रही थी। यूराम ने दाऊद को
सोने, चाँदी और पीतल के तोह्फ़े भी पेश किए।
11दाऊद ने यह चीज़ें रब के लिए मख़सूस कर दीं।
जहाँ भी वह दूसरी क़ौमों पर ग़ालिब आया वहाँ
की सोना-चाँदी उसने रब के लिए मख़सूस कर
दी। 12यों अदोम, मोआब, अम्मोन, फ़िलिस्तिया,
अमालीक़ और ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र
बिन रहोब की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।
13जब दाऊद ने नमक की वादी में अदोमियों
पर फ़तह पाई तो उस की शोहरत मज़ीद फैल गई।
उस जंग में दुश्मन के 18,000 अफ़राद हलाक
हुए। 14दाऊद ने अदोम के पूरे मुल्क में अपनी
फ़ौजी चौकियाँ क़ायम कीं, और तमाम अदोमी
दाऊद के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी जाता रब
उस की मदद करके उसे फ़तह बख़्शता।

दाऊद के आला अफ़सर

15जितनी देर दाऊद पूरे इसराईल पर हुकूमत
करता रहा उतनी देर तक उसने ध्यान दिया कि
क़ौम के हर एक शख़्स को इनसाफ़ मिल जाए।
16योआब बिन ज़रूयाह फ़ौज पर मुक़र्रर था।
यहूसफ़त बिन अख़ीलूद बादशाह का मुशीरे-ख़ास
था। 17सदोक़ बिन अख़ीतूब और अख़ीमलिक
बिन अबियातर इमाम थे। सिरायाह मीरमुंशी था।
18बिनायाह बिन यहोयदा दाऊद के ख़ास दस्ते
बनाम करेती-ओ-फ़लेती का कप्तान था। दाऊद
के बेटे इमाम थे।

दाऊद यूनतन के बेटे पर मेहरबानी करता है

9 एक दिन दाऊद पूछने लगा, “क्या साऊल
के ख़ानदान का कोई फ़रद बच गया है?
मैं यूनतन की ख़ातिर उस पर अपनी मेहरबानी का
इज़हार करना चाहता हूँ।”
2एक आदमी को बुलाया गया जो साऊल के
घराने का मुलाज़िम था। उसका नाम ज़ीबा था।
दाऊद ने सवाल किया, “क्या आप ज़ीबा हैं?”
ज़ीबा ने जवाब दिया, “जी, आपका ख़ादिम
हाज़िर है।” 3बादशाह ने दरियाफ़्त किया, “क्या

साऊल के ख़ानदान का कोई फ़रद ज़िंदा रह गया है? मैं उस पर अल्लाह की मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ।” ज़ीबा ने कहा, “यूनतन का एक बेटा अब तक ज़िंदा है। वह दोनों टाँगों से मफ़लूज है।”
4दाऊद ने पूछा, “वह कहाँ है?” ज़ीबा ने जवाब दिया, “वह लो-दिबार में मकीर बिन अम्मियेल के हाँ रहता है।”
5दाऊद ने उसे फ़ौरन दरबार में बुला लिया।

6यूनतन के जिस बेटे का ज़िक्र ज़ीबा ने किया वह मिफ़ीबोसत था। जब उसे दाऊद के सामने लाया गया तो उसने मुँह के बल झुककर उस की इज़्ज़त की। दाऊद ने कहा, “मिफ़ीबोसत!” उसने जवाब दिया, “जी, आपका ख़ादिम हाज़िर है।”
7दाऊद बोला, “डरें मत। आज मैं आपके बाप यूनतन के साथ किया हुआ वादा पूरा करके आप पर अपनी मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ। अब सुनें! मैं आपको आपके दादा साऊल की तमाम ज़मीनें वापस कर देता हूँ। इसके अलावा मैं चाहता हूँ कि आप रोज़ाना मेरे साथ खाना खाया करें।”

8मिफ़ीबोसत ने दुबारा झुककर बादशाह की ताज़ीम की, “मैं कौन हूँ कि आप मुझ जैसे मुरदा कुत्ते पर ध्यान देकर ऐसी मेहरबानी फ़रमाएँ!”
9दाऊद ने साऊल के पुराने मुलाज़िम ज़ीबा को बुलाकर उसे हिदायत दी, “मैंने आपके मालिक के पोते को साऊल और उसके ख़ानदान की तमाम मिलकियत दे दी है।
10अब आपकी ज़िम्मेदारी यह है कि आप अपने बेटों और नौकरों के साथ उसके खेतों को सँभालें ताकि उसका ख़ानदान ज़मीनों की पैदावार से गुज़ारा कर सके। लेकिन मिफ़ीबोसत ख़ुद यहाँ रहकर मेरे बेटों की तरह मेरे साथ खाना खाया करेगा।” (ज़ीबा के 15 बेटे और 20 नौकर थे)।

11ज़ीबा ने जवाब दिया, “मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ। जो भी हुक्म आप देंगे मैं करने के लिए तैयार हूँ।”
12-13उस दिन से ज़ीबा के घराने के तमाम अफ़राद मिफ़ीबोसत के मुलाज़िम हो गए। मिफ़ीबोसत ख़ुद जो दोनों टाँगों से मफ़लूज था यरूशलम में रिहाइशपज़ीर हुआ और रोज़ाना दाऊद बादशाह के साथ खाना खाता रहा। उसका एक छोटा बेटा था जिसका नाम मीका था।

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्ज़ती करते हैं

10 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का बादशाह फ़ौत हुआ, और उसका बेटा हनून तख़्तनशीन हुआ।
2दाऊद ने सोचा, “नाहस ने हमेशा मुझ पर मेहरबानी की थी, इसलिए अब मैं भी उसके बेटे हनून पर मेहरबानी करूँगा।” उसने बाप की वफ़ात का अफ़सोस करने के लिए हनून के पास वफ़द भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के दरबार में पहुँच गए
3तो उस मुल्क के बुज़ुर्ग हनून बादशाह के कान में मनफ़ी बातें भरने लगे, “क्या दाऊद ने इन आदमियों को वाक़ई सिर्फ़ इसलिए भेजा है कि वह अफ़सोस करके आपके बाप का एहतराम करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़ बहाना है। असल में यह जासूस हैं जो हमारे दारुल-हुकूमत के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं ताकि उस पर क़ब्ज़ा कर सकें।”
4चुनाँचे हनून ने दाऊद के आदमियों को पकड़वाकर उनकी दाढ़ियों का आधा हिस्सा मुँडवा दिया और उनके लिबास को कमर से लेकर पाँव तक काटकर उतरवाया। इसी हालत में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग़ कर दिया।

5जब दाऊद को इसकी ख़बर मिली तो उसने अपने क़ासिदों को उनसे मिलने के लिए भेजा ताकि उन्हें बताएँ, “यरीहू में उस वक़्त तक ठहरे रहें जब तक आपकी दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो जाएँ।” क्योंकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से बड़ी शरमिंदगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6अम्मोनियों को ख़ूब मालूम था कि इस हरकत से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इसलिए उन्होंने किराए पर कई जगहों से फ़ौजी तलब किए। बैत-रहोब और ज़ोबाह के 20,000 अरामी

प्यादा सिपाही, माका का बादशाह 1,000
फ़ौजियों समेत और मुल्के-तोब के 12,000
सिपाही उनकी मदद करने आए। 7जब दाऊद
को इसका इल्म हुआ तो उसने योआब को पूरी
फ़ौज के साथ उनका मुक़ाबला करने के लिए भेज
दिया। 8अम्मोनी अपने दारुल-हुकूमत रब्बा से
निकलकर शहर के दरवाज़े के सामने ही सफ़आरा
हुए जबकि उनके अरामी इत्तहादी ज़ोबाह और
रहोब मुल्के-तोब और माका के मर्दों समेत कुछ
फ़ासले पर खुले मैदान में खड़े हो गए।

9जब योआब ने जान लिया कि सामने और
पीछे दोनों तरफ़ से हमले का ख़तरा है तो उसने
अपनी फ़ौज को दो हिस्सों में तक़सीम कर दिया।
सबसे अच्छे फ़ौजियों के साथ वह ख़ुद शाम के
सिपाहियों से लड़ने के लिए तैयार हुआ। 10बाक़ी
आदमियों को उसने अपने भाई अबीशै के हवाले
कर दिया ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें। 11एक
दूसरे से अलग होने से पहले योआब ने अबीशै से
कहा, "अगर शाम के फ़ौजी मुझ पर ग़ालिब आने
लगें तो मेरे पास आकर मेरी मदद करना। लेकिन
अगर आप अम्मोनियों पर क़ाबू न पा सकें तो मैं
आकर आपकी मदद करूँगा। 12हौसला रखें! हम
दिलेरी से अपनी क़ौम और अपने ख़ुदा के शहरों
के लिए लड़ें। और रब वह कुछ होने दे जो उस की
नज़र में ठीक है।"

13योआब ने अपनी फ़ौज के साथ शाम के
फ़ौजियों पर हमला किया तो वह उसके सामने
से भागने लगे। 14यह देखकर अम्मोनी अबीशै से
फ़रार होकर शहर में दाख़िल हुए। फिर योआब
अम्मोनियों से लड़ने से बाज़ आया और यरूशलम
वापस चला गया।

शाम के ख़िलाफ़ जंग

15जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की
बेइज़्ज़ती का एहसास हुआ तो वह दुबारा जमा
हो गए। 16हददअज़र ने दरियाए-फ़ुरात के पार
मसोपुतामिया में आबाद अरामियों को बुलाया
ताकि वह उस की मदद करें। फिर सब हिलाम
पहुँच गए। हददअज़र की फ़ौज पर मुक़र्रर
अफ़सर सोबक उनकी राहनुमाई कर रहा था।
17जब दाऊद को ख़बर मिली तो उसने इसराईल
के तमाम लड़ने के क़ाबिल आदमियों को जमा
किया और दरियाए-यरदन को पार करके हिलाम
पहुँच गया। शाम के फ़ौजी सफ़आरा होकर
इसराईलियों का मुक़ाबला करने लगे। 18लेकिन
उन्हें दुबारा शिकस्त मानकर फ़रार होना पड़ा। इस
दफ़ा उनके 700 रथबानों के अलावा 40,000
प्यादा सिपाही हलाक हुए। दाऊद ने फ़ौज के
कमाँडर सोबक को इतना ज़ख़मी कर दिया कि
वह मैदाने-जंग में हलाक हो गया।

19जो अरामी बादशाह पहले हददअज़र के ताबे
थे उन्होंने अब हार मानकर इसराईलियों से सुलह
कर ली और उनके ताबे हो गए। उस वक़्त से
अरामियों ने अम्मोनियों की मदद करने की फिर
जुर्रत न की।

दाऊद और बत-सबा

11 बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त
जब बादशाह जंग के लिए निकलते
हैं। दाऊद बादशाह ने भी अपने फ़ौजियों को
लड़ने के लिए भेज दिया। योआब की राहनुमाई
में उसके अफ़सर और पूरी फ़ौज अम्मोनियों से
लड़ने के लिए रवाना हुए। वह दुश्मन को तबाह
करके दारुल-हुकूमत रब्बा का मुहासरा करने
लगे। दाऊद ख़ुद यरूशलम में रहा।

2एक दिन वह दोपहर के वक़्त सो गया। जब
शाम के वक़्त जाग उठा तो महल की छत पर
टहलने लगा। अचानक उस की नज़र एक औरत
पर पड़ी जो अपने सहन में नहा रही थी। औरत
निहायत ख़ूबसूरत थी। 3दाऊद ने किसी को
उसके बारे में मालूमात हासिल करने के लिए भेज
दिया। वापस आकर उसने इत्तला दी, "औरत
का नाम बत-सबा है। वह इलियाम की बेटी और
ऊरियाह हित्ती की बीवी है।" 4तब दाऊद ने
क़ासिदों को बत-सबा के पास भेजा ताकि उसे
महल में ले आएँ। औरत आई तो दाऊद उससे

हमबिसतर हुआ। फिर बत-सबा अपने घर वापस
चली गई। (थोड़ी देर पहले उसने वह रस्म अदा
की थी जिसका तक़ाज़ा शरीअत माहवारी के
बाद करती है ताकि औरत दुबारा पाक-साफ़ हो
जाए)।

5कुछ देर के बाद उसे मालूम हुआ कि मेरा
पाँव भारी हो गया है। उसने दाऊद को इत्तला
दी, "मेरा पाँव भारी हो गया है।" 6यह सुनते ही
दाऊद ने योआब को पैग़ाम भेजा, "ऊरियाह हित्ती
को मेरे पास भेज दें!" योआब ने उसे भेज दिया।
7जब ऊरियाह दरबार में पहुँचा तो दाऊद ने उससे
योआब और फ़ौज का हाल मालूम किया और
पूछा कि जंग किस तरह चल रही है?

8फिर उसने ऊरियाह को बताया, "अब अपने
घर जाएँ और पाँव धोकर आराम करें।" ऊरियाह
अभी महल से दूर नहीं गया था कि एक मुलाज़िम
ने उसके पीछे भागकर उसे बादशाह की तरफ़
से तोहफ़ा दिया। 9लेकिन ऊरियाह अपने घर न
गया बल्कि रात के लिए बादशाह के मुहाफ़िज़ों
के साथ ठहरा रहा जो महल के दरवाज़े के पास
सोते थे।

10दाऊद को इस बात का पता चला तो उसने
अगले दिन उसे दुबारा बुलाया। उसने पूछा, "क्या
बात है? आप तो बड़ी दूर से आए हैं। आप अपने
घर क्यों न गए?" 11ऊरियाह ने जवाब दिया,
"अहद का संदूक़ और इसराईल और यहूदाह
के फ़ौजी झोंपड़ियों में रह रहे हैं। योआब और
बादशाह के अफ़सर भी खुले मैदान में ठहरे हुए हैं
तो क्या मुनासिब है कि मैं अपने घर जाकर आराम
से खाऊँ पियूँ और अपनी बीवी से हमबिसतर हो
जाऊँ? हरगिज़ नहीं! आपकी हयात की क़सम,
मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा।"

12दाऊद ने उसे कहा, "एक और दिन यहाँ
ठहरें। कल मैं आपको वापस जाने दूँगा।" चुनाँचे
ऊरियाह एक और दिन यरूशलम में ठहरा रहा।

13शाम के वक़्त दाऊद ने उसे खाने की दावत
दी। उसने उसे इतनी मै पिलाई कि ऊरियाह नशे
में धुत हो गया, लेकिन इस मरतबा भी वह अपने
घर न गया बल्कि दुबारा महल में मुहाफ़िज़ों के
साथ सो गया।

दाऊद ऊरियाह को क़त्ल करवाता है

14अगले दिन सुबह दाऊद ने योआब को ख़त
लिखकर ऊरियाह के हाथ भेज दिया। 15उसमें
लिखा था, "ऊरियाह को सबसे अगली सफ़ में
खड़ा करें, जहाँ लड़ाई सबसे सख़्त होती है। फिर
अचानक पीछे की तरफ़ हटकर उसे छोड़ दें ताकि
दुश्मन उसे मार दे।"

16यह पढ़कर योआब ने ऊरियाह को एक ऐसी
जगह पर खड़ा किया जिसके बारे में उसे इल्म था
कि दुश्मन के सबसे ज़बरदस्त फ़ौजी वहाँ लड़ते
हैं। 17जब अम्मोनियों ने शहर से निकलकर उन
पर हमला किया तो कुछ इसराईली शहीद हुए।
ऊरियाह हित्ती भी उनमें शामिल था।

18योआब ने लड़ाई की पूरी रिपोर्ट भेज दी।
19दाऊद को यह पैग़ाम पहुँचानेवाले को उसने
बताया, "जब आप बादशाह को तफ़सील से
लड़ाई का सारा सिलसिला सुनाएँगे 20तो हो
सकता है वह ग़ुस्से होकर कहे, 'आप शहर के
इतने क़रीब क्यों गए? क्या आपको मालूम न
था कि दुश्मन फ़सील से तीर चलाएँगे? 21क्या
आपको याद नहीं कि क़दीम ज़माने में जिदाऊन
के बेटे अबीमलिक के साथ क्या हुआ? तैबिज़
शहर में एक औरत ही ने उसे मार डाला। और
वजह यह थी कि वह क़िले के इतने क़रीब आ
गया था कि औरत दीवार पर से चक्की का ऊपर
का पाट उस पर फेंक सकी। शहर की फ़सील
के इस क़दर क़रीब लड़ने की क्या ज़रूरत थी?'
अगर बादशाह आप पर ऐसे इलज़ामात लगाएँ तो
जवाब में बस इतना ही कह देना, 'ऊरियाह हित्ती
भी मारा गया है'।"

22क़ासिद रवाना हुआ। जब यरूशलम पहुँचा
तो उसने दाऊद को योआब का पूरा पैग़ाम सुना
दिया, 23"दुश्मन हमसे ज़्यादा ताक़तवर थे। वह
शहर से निकलकर खुले मैदान में हम पर टूट पड़े।
लेकिन हमने उनका सामना यों किया कि वह

पीछे हट गए, बल्कि हमने उनका ताक़्क़ुब शहर
के दरवाज़े तक किया। 24लेकिन अफ़सोस कि
फिर कुछ तीरअंदाज़ हम पर फ़सील पर से तीर
बरसाने लगे। आपके कुछ ख़ादिम खेत आए और
ऊरियाह हित्ती भी उनमें शामिल है।” 25दाऊद
ने जवाब दिया, “योआब को बता देना कि यह
मामला आपको हिम्मत हारने न दे। जंग तो ऐसी
ही होती है। कभी कोई यहाँ तलवार का लुक़्मा हो
जाता है, कभी वहाँ। पूरे अज़्म के साथ शहर से
जंग जारी रखकर उसे तबाह कर दें। यह कहकर
योआब की हौसलाअफ़्ज़ाई करें।”

26जब बत-सबा को इत्तला मिली कि ऊरियाह
नहीं रहा तो उसने उसका मातम किया। 27मातम
का वक़्त पूरा हुआ तो दाऊद ने उसे अपने घर
बुलाकर उससे शादी कर ली। फिर उसके बेटा
पैदा हुआ।

लेकिन दाऊद की यह हरकत रब को निहायत
बुरी लगी।

नातन दाऊद को मुजरिम ठहराता है

12 रब ने नातन नबी को दाऊद के पास
भेज दिया। बादशाह के पास पहुँचकर
वह कहने लगा, “किसी शहर में दो आदमी रहते
थे। एक अमीर था, दूसरा ग़रीब। 2अमीर की बहुत
भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, 3लेकिन ग़रीब के
पास कुछ नहीं था, सिर्फ़ भेड़ की नन्ही-सी बच्ची
जो उसने ख़रीद रखी थी। ग़रीब उस की परवरिश
करता रहा, और वह घर में उसके बच्चों के साथ
साथ बड़ी होती गई। वह उस की प्लेट से खाती,
उसके प्याले से पीती और रात को उसके बाज़ुओं
में सो जाती। ग़रज़ भेड़ ग़रीब के लिए बेटी की-
सी हैसियत रखती थी। 4एक दिन अमीर के हाँ
मेहमान आया। जब उसके लिए खाना पकाना था
तो अमीर का दिल नहीं करता था कि अपने रेवड़
में से किसी जानवर को ज़बह करे, इसलिए उसने
ग़रीब आदमी से उस की नन्ही-सी भेड़ लेकर उसे
मेहमान के लिए तैयार किया।”

5यह सुनकर दाऊद को बड़ा ग़ुस्सा आया।
वह पुकारा, “रब की हयात की क़सम, जिस
आदमी ने यह किया वह सज़ाए-मौत के लायक़
है। 6लाज़िम है कि वह भेड़ की बच्ची के एवज़
ग़रीब को भेड़ के चार बच्चे दे। यही उस की
मुनासिब सज़ा है, क्योंकि उसने ऐसी हरकत
करके ग़रीब पर तरस न खाया।”

7नातन ने दाऊद से कहा, “आप ही वह आदमी
हैं! रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैंने तुझे
मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया,
और मैं ही ने तुझे साऊल से महफ़ूज़ रखा।
8साऊल का घराना उस की बीवियों समेत मैंने
तुझे दे दिया। हाँ, पूरा इसराईल और यहूदाह
भी तेरे तहत आ गए हैं। और अगर यह तेरे
लिए कम होता तो मैं तुझे मज़ीद देने के लिए
भी तैयार होता। 9अब मुझे बता कि तूने मेरी
मरज़ी को हक़ीर जानकर ऐसी हरकत क्यों की
है जिससे मुझे नफ़रत है? तूने ऊरियाह हित्ती
को क़त्ल करवा के उस की बीवी को छीन लिया
है। हाँ, तू क़ातिल है, क्योंकि तूने हुक्म दिया कि
ऊरियाह को अम्मोनियों से लड़ते लड़ते मरवाना
है। 10चूँकि तूने मुझे हक़ीर जानकर ऊरियाह
हित्ती की बीवी को उससे छीन लिया इसलिए
आइंदा तलवार तेरे घराने से नहीं हटेगी।’

11रब फ़रमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तेरे अपने
ख़ानदान में से मुसीबत तुझ पर आएगी। तेरे देखते
देखते मैं तेरी बीवियों को तुझसे छीनकर तेरे क़रीब
के आदमी के हवाले कर दूँगा, और वह अलानिया
उनसे हमबिसतर होगा। 12तूने चुपके से गुनाह
किया, लेकिन जो कुछ मैं जवाब में होने दूँगा
वह अलानिया और पूरे इसराईल के देखते देखते
होगा’।”

13तब दाऊद ने इक़रार किया, “मैंने रब का
गुनाह किया है।” नातन ने जवाब दिया, “रब ने
आपको मुआफ़ कर दिया है और आप नहीं मरेंगे।
14लेकिन इस हरकत से आपने रब के दुश्मनों को
कुफ़र बकने का मौक़ा फ़राहम किया है, इसलिए
बत-सबा से होनेवाला बेटा मर जाएगा।”

15तब नातन अपने घर चला गया।

दाऊद का बेटा मर जाता है

फिर रब ने बत-सबा के बेटे को छू दिया, और
वह सख़्त बीमार हो गया। 16दाऊद ने अल्लाह से
इलतमास की कि बच्चे को बचने दे। रोज़ा रखकर
वह रात के वक़्त नंगे फ़र्श पर सोने लगा। 17घर
के बुज़ुर्ग उसके इर्दगिर्द खड़े कोशिश करते रहे कि
वह फ़र्श से उठ जाए, लेकिन बेफ़ायदा। वह उनके
साथ खाने के लिए भी तैयार नहीं था।

18सातवें दिन बेटा फ़ौत हो गया। दाऊद के
मुलाज़िमों ने उसे ख़बर पहुँचाने की जुर्रत न की,
क्योंकि उन्होंने सोचा, "जब बच्चा अभी ज़िंदा था
तो हमने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन
उसने हमारी एक भी न सुनी। अब अगर बच्चे
की मौत की ख़बर दें तो ख़तरा है कि वह कोई
नुक़सानदेह क़दम उठाए।"

19लेकिन दाऊद ने देखा कि मुलाज़िम धीमी
आवाज़ में एक दूसरे से बात कर रहे हैं। उसने
पूछा, "क्या बेटा मर गया है?" उन्होंने जवाब
दिया, "जी, वह मर गया है।"

20यह सुनकर दाऊद फ़र्श पर से उठ गया। वह
नहाया और जिस्म को ख़ुशबूदार तेल से मलकर
साफ़ कपड़े पहन लिए। फिर उसने रब के घर
में जाकर उस की परस्तिश की। इसके बाद वह
महल में वापस गया और खाना मँगवाकर खाया।
21उसके मुलाज़िम हैरान हुए और बोले, "जब
बच्चा ज़िंदा था तो आप रोज़ा रखकर रोते रहे।
अब बच्चा जान-बहक़ हो गया है तो आप उठकर
दुबारा खाना खा रहे हैं। क्या वजह है?" 22दाऊद
ने जवाब दिया, "जब तक बच्चा ज़िंदा था तो
मैं रोज़ा रखकर रोता रहा। ख़याल यह था कि
शायद रब मुझ पर रहम करके उसे ज़िंदा छोड़ दे।
23लेकिन जब वह कूच कर गया है तो अब रोज़ा
रखने का क्या फ़ायदा? क्या मैं इससे उसे वापस
ला सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! एक दिन मैं ख़ुद ही
उसके पास पहुँचूँगा। लेकिन उसका यहाँ मेरे पास
वापस आना नामुमकिन है।"

24फिर दाऊद ने अपनी बीवी बत-सबा के पास
जाकर उसे तसल्ली दी और उससे हमबिसतर
हुआ। तब उसके एक और बेटा पैदा हुआ। दाऊद
ने उसका नाम सुलेमान यानी अमनपसंद रखा।
यह बच्चा रब को प्यारा था, 25इसलिए उसने
नातन नबी की मारिफ़त इत्तला दी कि उसका नाम
यदीदियाह यानी 'रब को प्यारा' रखा जाए।

रब्बा शहर पर फ़तह

26अब तक योआब अम्मोनी दारुल-हुकूमत
रब्बा का मुहासरा किए हुए था। फिर वह शहर के
एक हिस्से बनाम 'शाही शहर' पर क़ब्ज़ा करने में
कामयाब हो गया। 27उसने दाऊद को इत्तला दी,
"मैंने रब्बा पर हमला करके उस जगह पर क़ब्ज़ा
कर लिया है जहाँ पानी दस्तयाब है। 28चुनाँचे अब
फ़ौज के बाक़ी अफ़राद को लाकर ख़ुद शहर पर
क़ब्ज़ा कर लें। वरना लोग समझेंगे कि मैं ही शहर
का फ़ातेह हूँ।"

29चुनाँचे दाऊद फ़ौज के बाक़ी अफ़राद को
लेकर रब्बा पहुँचा। जब शहर पर हमला किया तो
वह उसके क़ब्ज़े में आ गया। 30दाऊद ने हनून
बादशाह का ताज उसके सर से उतारकर अपने
सर पर रख लिया। सोने के इस ताज का वज़न
34 किलोग्राम था, और उसमें एक बेशक़ीमत
जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद ने शहर से बहुत-
सा लूटा हुआ माल लेकर 31उसके बाशिंदों को
ग़ुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने की आरियाँ,
लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी गईं ताकि
वह मज़दूरी करें और भट्टों पर काम करें। यही
सुलूक बाक़ी अम्मोनी शहरों के बाशिंदों के साथ
भी किया गया।

जंग के इख़्तिताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के साथ
यरूशलम लौट आया।

तमर की इसमतदरी

13 दाऊद के बेटे अबीसलूम की ख़ूबसूरत
बहन थी जिसका नाम तमर था।
उसका सौतेला भाई अमनोन तमर से शदीद

मुहब्बत करने लगा। 2वह तमर को इतनी शिद्दत
से चाहने लगा कि रंजिश के बाइस बीमार हो गया,
क्योंकि तमर कुँवारी थी, और अमनोन को उसके
क़रीब आने का कोई रास्ता नज़र न आया।

3अमनोन का एक दोस्त था जिसका नाम
यूनदब था। वह दाऊद के भाई सिमआ का बेटा
था और बड़ा ज़हीन था। 4उसने अमनोन से पूछा,
"बादशाह के बेटे, क्या मसला है? रोज़ बरोज़
आप ज़्यादा बुझे हुए नज़र आ रहे हैं। क्या आप
मुझे नहीं बताएँगे कि बात क्या है?" अमनोन
बोला, "मैं अबीसलूम की बहन तमर से शदीद
मुहब्बत करता हूँ।" 5यूनदब ने अपने दोस्त को
मशवरा दिया, "बिस्तर पर लेट जाएँ और ऐसा
ज़ाहिर करें गोया बीमार हैं। जब आपके वालिद
आपका हाल पूछने आएँगे तो उनसे दरख़ास्त
करना, 'मेरी बहन तमर आकर मुझे मरीज़ों
का खाना खिलाए। वह मेरे सामने खाना तैयार
करे ताकि मैं उसे देखकर उसके हाथ से खाना
खाऊँ'।"

6चुनाँचे अमनोन ने बिस्तर पर लेटकर बीमार
होने का बहाना किया। जब बादशाह उसका हाल
पूछने आया तो अमनोन ने गुज़ारिश की, "मेरी
बहन तमर मेरे पास आए और मेरे सामने मरीज़ों
का खाना बनाकर मुझे अपने हाथ से खिलाए।"

7दाऊद ने तमर को इत्तला दी, "आपका भाई
अमनोन बीमार है। उसके पास जाकर उसके लिए
मरीज़ों का खाना तैयार करें।" 8तमर ने अमनोन
के पास आकर उस की मौजूदगी में मैदा गूँधा और
खाना तैयार करके पकाया। अमनोन बिस्तर पर
लेटा उसे देखता रहा। 9जब खाना पक गया तो
तमर ने उसे अमनोन के पास लाकर पेश किया।
लेकिन उसने खाने से इनकार कर दिया। उसने
हुक्म दिया, "तमाम नौकर कमरे से बाहर निकल
जाएँ!" जब सब चले गए 10तो उसने तमर से
कहा, "खाने को मेरे सोने के कमरे में ले आएँ
ताकि मैं आपके हाथ से खा सकूँ।" तमर खाने
को लेकर सोने के कमरे में अपने भाई के पास
आई।

11जब वह उसे खाना खिलाने लगी तो अमनोन
ने उसे पकड़कर कहा, "आ मेरी बहन, मेरे साथ
हमबिसतर हो!" 12वह पुकारी, "नहीं, मेरे भाई!
मेरी इसमतदरी न करें। ऐसा अमल इसराईल में
मना है। ऐसी बेदीन हरकत मत करना! 13और
ऐसी बेहुरमती के बाद मैं कहाँ जाऊँ? जहाँ तक
आपका ताल्लुक़ है इसराईल में आपकी बुरी तरह
बदनामी हो जाएगी, और सब समझेंगे कि आप
निहायत शरीर आदमी हैं। आप बादशाह से बात
क्यों नहीं करते? यक़ीनन वह आपको मुझसे
शादी करने से नहीं रोकेंगे।" 14लेकिन अमनोन
ने उस की न सुनी बल्कि उसे पकड़कर उस की
इसमतदरी की।

15लेकिन फिर अचानक उस की मुहब्बत सख़्त
नफ़रत में बदल गई। पहले तो वह तमर से शदीद
मुहब्बत करता था, लेकिन अब वह इससे बढ़कर
उससे नफ़रत करने लगा। उसने हुक्म दिया,
"उठ, दफ़ा हो जा!" 16तमर ने इलतमास की,
"हाय, ऐसा मत करना। अगर आप मुझे निकालेंगे
तो यह पहले गुनाह से ज़्यादा संगीन जुर्म होगा।"
लेकिन अमनोन उस की सुनने के लिए तैयार
न था। 17उसने अपने नौकर को बुलाकर हुक्म
दिया, "इस औरत को यहाँ से निकाल दो और
इसके पीछे दरवाज़ा बंद करके कुंडी लगाओ!"
18नौकर तमर को बाहर ले गया और फिर उसके
पीछे दरवाज़ा बंद करके कुंडी लगा दी।

तमर एक लंबे बाज़ुओंवाला फ़्राक पहने हुए
थी। बादशाह की तमाम कुँवारी बेटियाँ यही
लिबास पहना करती थीं। 19बड़ी रंजिश के
आलम में उसने अपना यह लिबास फाड़कर अपने
सर पर राख डाल ली। फिर अपना हाथ सर पर
रखकर वह चीख़ती-चिल्लाती वहाँ से चली गई।
20जब घर पहुँच गई तो अबीसलूम ने उससे पूछा,
"मेरी बहन, क्या अमनोन ने आपसे ज़्यादती की
है? अब ख़ामोश हो जाएँ। वह तो आपका भाई
है। इस मामले को हद से ज़्यादा अहमियत मत
देना।" उस वक़्त से तमर अकेली ही अपने भाई
अबीसलूम के घर में रही।

21जब दाऊद को इस वाक़िये की ख़बर
मिली तो उसे सख़्त ग़ुस्सा आया। 22अबी-
सलूम ने अमनोन से एक भी बात न की। न उसने उस पर कोई इलज़ाम लगाया, न कोई अच्छी बात की, क्योंकि तमर की इसमतदरी की वजह से वह अपने भाई से सख़्त नफ़रत करने लगा था।

अबीसलूम का इंतक़ाम

23दो साल गुज़र गए। अबीसलूम की भेड़ें इफ़राईम के क़रीब के बाल-हसूर में लाई गईं ताकि उनके बाल कतरे जाएँ। इस मौक़े पर अबीसलूम ने बादशाह के तमाम बेटों को दावत दी
कि वह वहाँ ज़ियाफ़त में शरीक हों। 24वह दाऊद
बादशाह के पास भी गया और कहा, "इन दिनों में मैं अपनी भेड़ों के बाल कतरा रहा हूँ। बादशाह और उनके अफ़सरों को भी मेरे साथ ख़ुशी मनाने की दावत है।"

25लेकिन दाऊद ने इनकार किया, "नहीं, मेरे बेटे, हम सब तो नहीं आ सकते। इतने लोग आपके लिए बोझ का बाइस बन जाएंगे।" अबीसलूम बहुत इसरार करता रहा, लेकिन दाऊद ने दावत को क़बूल न किया बल्कि उसे बरकत देकर रुख़सत करना चाहता था।

26आख़िरकार अबीसलूम ने दरख़ास्त की, "अगर आप हमारे साथ जा न सकें तो फिर कम अज़ कम मेरे भाई अमनोन को आने दें।" बादशाह ने पूछा, "ख़ासकर अमनोन को क्यों?"
27लेकिन अबीसलूम इतना ज़ोर देता रहा कि
दाऊद ने अमनोन को बाक़ी बेटों समेत बाल-हसूर जाने की इजाज़त दे दी।

28ज़ियाफ़त से पहले अबीसलूम ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, "सुनें! जब अमनोन मै पी पीकर ख़ुश हो जाएगा तो मैं आपको अमनोन को मारने का हुक्म दूँगा। फिर आपको उसे मार डालना है। डरें मत, क्योंकि मैं ही ने आपको यह हुक्म दिया है। मज़बूत और दिलेर हों!"

29मुलाज़िमों ने ऐसा ही किया। उन्होंने अमनोन को मार डाला। यह देखकर बादशाह के दूसरे बेटे उठकर अपने ख़च्चरों पर सवार
हुए और भाग गए। 30वह अभी रास्ते में ही थे
कि अफ़वाह दाऊद तक पहुँची, "अबीसलूम ने आपके तमाम बेटों को क़त्ल कर दिया है। एक भी नहीं बचा।"

31बादशाह उठा और अपने कपड़े फाड़-
कर फ़र्श पर लेट गया। उसके दरबारी भी दुख में अपने कपड़े फाड़ फाड़कर उसके पास खड़े
रहे। 32फिर दाऊद का भतीजा यूनदब बोल उठा,
"मेरे आक़ा, आप न सोचें कि उन्होंने तमाम शहज़ादों को मार डाला है। सिर्फ़ अमनोन मर गया होगा, क्योंकि जब से उसने तमर की इसमतदरी की उस वक़्त से अबीसलूम का यही इरादा था।
33लिहाज़ा इस ख़बर को इतनी अहमियत न दें
कि तमाम बेटे हलाक हुए हैं। सिर्फ़ अमनोन मर गया होगा।"

34इतने में अबीसलूम फ़रार हो गया था।
फिर यरूशलम की फ़सील पर खड़े पहरेदार ने अचानक देखा कि मग़रिब से लोगों का बड़ा गुरोह शहर की तरफ़ बढ़ रहा है। वह पहाड़ी के दामन
में चले आ रहे थे। 35तब यूनदब ने बादशाह से
कहा, "लो, बादशाह के बेटे आ रहे हैं, जिस तरह
आपके ख़ादिम ने कहा था।" 36वह अभी अपनी
बात ख़त्म कर ही रहा था कि शहज़ादे अंदर आए और ख़ूब रो पड़े। बादशाह और उसके अफ़सर भी रोने लगे।

37दाऊद बड़ी देर तक अमनोन का मातम करता रहा। लेकिन अबीसलूम ने फ़रार होकर जसूर के बादशाह तलमी बिन अम्मी-
हूद के पास पनाह ली जो उसका नाना था। 38वहाँ
वह तीन साल तक रहा। 39फिर एक वक़्त आ
गया कि दाऊद का अमनोन के लिए दुख दूर हो गया, और उसका अबीसलूम पर ग़ुस्सा थम गया।

योआब अबीसलूम की सिफ़ारिश करता है

14 योआब बिन ज़रूयाह को मालूम हुआ कि बादशाह अपने बेटे अबीसलूम
को चाहता है, 2इसलिए उसने तक़ुअ से एक

दानिशमंद औरत को बुलाया। योआब ने उसे
हिदायत दी, “मातम का रूप भरें जैसे आप देर
से किसी का मातम कर रही हों। मातम के कपड़े
पहनकर ख़ुशबूदार तेल मत लगाना। 3बादशाह
के पास जाकर उससे बात करें।” फिर योआब ने
औरत को लफ़्ज़ बलफ़्ज़ वह कुछ सिखाया जो
उसे बादशाह को बताना था।

4दाऊद के दरबार में आकर औरत ने औंधे मुँह
झुककर इलतमास की, “ऐ बादशाह, मेरी मदद
करें!” 5दाऊद ने दरियाफ़्त किया, “क्या मसला
है?” औरत ने जवाब दिया, “मैं बेवा हूँ, मेरा
शौहर फ़ौत हो गया है। 6और मेरे दो बेटे थे। एक
दिन वह बाहर खेत में एक दूसरे से उलझ पड़े।
और चूँकि कोई मौजूद नहीं था जो दोनों को अलग
करता इसलिए एक ने दूसरे को मार डाला। 7उस
वक़्त से पूरा कुंबा मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है।
वह तक़ाज़ा करते हैं कि मैं अपने बेटे को उनके
हवाले करूँ। वह कहते हैं, ‘उसने अपने भाई को
मार दिया है, इसलिए हम बदले में उसे सज़ाए-
मौत देंगे। इस तरह वारिस भी नहीं रहेगा।’ यों वह
मेरी उम्मीद की आख़िरी किरण को ख़त्म करना
चाहते हैं। क्योंकि अगर मेरा यह बेटा भी मर जाए
तो मेरे शौहर का नाम क़ायम नहीं रहेगा, और
उसका ख़ानदान रूए-ज़मीन पर से मिट जाएगा।”
8बादशाह ने औरत से कहा, “अपने घर चली जाएँ
और फ़िकर न करें। मैं मामला हल कर दूँगा।”

9लेकिन औरत ने गुज़ारिश की, “ऐ बाद-
शाह, डर है कि लोग फिर भी मुझे मुजरिम
ठहराएँगे अगर मेरे बेटे को सज़ाए-मौत न दी
जाए। आप पर तो वह इलज़ाम नहीं लगाएँगे।”
10दाऊद ने इसरार किया, “अगर कोई आपको
तंग करे तो उसे मेरे पास ले आएँ। फिर वह आइंदा
आपको नहीं सताएगा!” 11औरत को तसल्ली
न हुई। उसने गुज़ारिश की, “ऐ बादशाह, बराहे-
करम रब अपने ख़ुदा की क़सम खाएँ कि आप
किसी को भी मौत का बदला नहीं लेने देंगे। वरना
नुक़सान में इज़ाफ़ा होगा और मेरा दूसरा बेटा भी
हलाक हो जाएगा।” दाऊद ने जवाब दिया, “रब
की हयात की क़सम, आपके बेटे का एक बाल
भी बीका नहीं होगा।”

12फिर औरत असल बात पर आ गई, “मेरे
आक़ा, बराहे-करम अपनी ख़ादिमा को एक और
बात करने की इजाज़त दें।” बादशाह बोला, “करें
बात।” 13तब औरत ने कहा, “आप ख़ुद क्यों
अल्लाह की क़ौम के ख़िलाफ़ ऐसा इरादा रखते
हैं जिसे आपने अभी अभी ग़लत क़रार दिया है?
आपने ख़ुद फ़रमाया है कि यह ठीक नहीं, और
यों आपने अपने आपको ही मुजरिम ठहराया है।
क्योंकि आपने अपने बेटे को रद्द करके उसे वापस
आने नहीं दिया। 14बेशक हम सबको किसी वक़्त
मरना है। हम सब ज़मीन पर उंडेले गए पानी की
मानिंद हैं जिसे ज़मीन जज़ब कर लेती है और
जो दुबारा जमा नहीं किया जा सकता। लेकिन
अल्लाह हमारी ज़िंदगी को बिलावजह मिटा नहीं
देता बल्कि ऐसे मनसूबे तैयार रखता है जिनके
ज़रीए मरदूद शख़्स भी उसके पास वापस आ सके
और उससे दूर न रहे। 15ऐ बादशाह मेरे आक़ा,
मैं इस वक़्त इसलिए आपके हुज़ूर आई हूँ कि मेरे
लोग मुझे डराने की कोशिश कर रहे हैं। मैंने सोचा,
मैं बादशाह से बात करने की जुर्रत करूँगी, शायद
वह मेरी सुनें 16और मुझे उस आदमी से बचाएँ
जो मुझे और मेरे बेटे को उस मौरूसी ज़मीन से
महरूम रखना चाहता है जो अल्लाह ने हमें दे दी
है। 17ख़याल यह था कि अगर बादशाह मामला
हल कर दें तो फिर मुझे दुबारा सुकून मिलेगा,
क्योंकि आप अच्छी और बुरी बातों का इम्तियाज़
करने में अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे हैं। रब आपका
ख़ुदा आपके साथ हो।”

18यह सब कुछ सुनकर दाऊद बोल उठा, “अब
मुझे एक बात बताएँ। इसका सहीह जवाब दें।”
औरत ने जवाब दिया, “जी मेरे आक़ा, बात
फ़रमाइए।” दाऊद ने पूछा, “क्या योआब ने
आपसे यह काम करवाया?” 19औरत पुकारी,
“बादशाह की हयात की क़सम, जो कुछ भी मेरे
आक़ा फ़रमाते हैं वह निशाने पर लग जाता है,
ख़ाह बंदा बाईं या दाईं तरफ़ हटने की कोशिश

क्यों न करे। जी हाँ, आपके ख़ादिम योआब ने मुझे आपके हुज़ूर भेज दिया। उसने मुझे लफ़्ज़ बलफ़्ज़ सब कुछ बताया जो मुझे आपको अर्ज़ करना था,
20क्योंकि वह आपको यह बात बराहे-रास्त नहीं पेश करना चाहता था। लेकिन मेरे आक़ा को अल्लाह के फ़रिश्ते की-सी हिकमत हासिल है। जो कुछ भी मुल्क में वुक़ू में आता है उसका आपको पता चल जाता है।"

अबीसलूम की वापसी

21दाऊद ने योआब को बुलाकर उससे कहा, "ठीक है, मैं आपकी दरख़ास्त पूरी करूँगा। जाएँ, मेरे बेटे अबीसलूम को वापस ले आएँ।"
22योआब औंधे मुँह झुक गया और बोला, "रब बादशाह को बरकत दे! मेरे आक़ा, आज मुझे मालूम हुआ है कि मैं आपको मंज़ूर हूँ, क्योंकि आपने अपने ख़ादिम की दरख़ास्त को पूरा किया है।"
23योआब रवाना होकर जसूर चला गया और वहाँ से अबीसलूम को वापस लाया।
24लेकिन जब वह यरूशलम पहुँचे तो बादशाह ने हुक्म दिया, "उसे अपने घर में रहने की इजाज़त है, लेकिन वह कभी मुझे नज़र न आए।" चुनाँचे अबीसलूम अपने घर में दुबारा रहने लगा, लेकिन बादशाह से कभी मुलाक़ात न हो सकी।

25पूरे इसराईल में अबीसलूम जैसा ख़ूबसूरत आदमी नहीं था। सब उस की ख़ास तारीफ़ करते थे, क्योंकि सर से लेकर पाँव तक उसमें कोई नुक़्स नज़र नहीं आता था।
26साल में वह एक ही मरतबा अपने बाल कटवाता था, क्योंकि इतने में उसके बाल हद से ज़्यादा वज़नी हो जाते थे। जब उन्हें तोला जाता तो उनका वज़न तक़रीबन सवा दो किलोग्राम होता था।
27अबीसलूम के तीन बेटे और एक बेटी थी। बेटी का नाम तमर था और वह निहायत ख़ूबसूरत थी।

28दो साल गुज़र गए, फिर भी अबीसलूम को बादशाह से मिलने की इजाज़त न मिली।
29फिर उसने योआब को इत्तला भेजी कि वह उस की सिफ़ारिश करे। लेकिन योआब ने आने से इनकार किया। अबीसलूम ने उसे दुबारा बुलाने की कोशिश की, लेकिन इस बार भी योआब उसके पास न आया।
30तब अबीसलूम ने अपने नौकरों को हुक्म दिया, "देखो, योआब का खेत मेरे खेत से मुलहिक़ है, और उसमें जौ की फ़सल पक रही है। जाओ, उसे आग लगा दो!" नौकर गए और ऐसा ही किया।

31जब खेत में आग लग गई तो योआब भागकर अबीसलूम के पास आया और शिकायत की, "आपके नौकरों ने मेरे खेत को आग क्यों लगाई है?"
32अबीसलूम ने जवाब दिया, "देखें, आप नहीं आए जब मैंने आपको बुलाया। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप बादशाह के पास जाकर उनसे पूछें कि मुझे जसूर से क्यों लाया गया। बेहतर होता कि मैं वहीं रहता। अब बादशाह मुझसे मिलें या अगर वह अब तक मुझे क़ुसूरवार ठहराते हैं तो मुझे सज़ाए-मौत दें।"

33योआब ने बादशाह के पास जाकर उसे यह पैग़ाम पहुँचाया। फिर दाऊद ने अपने बेटे को बुलाया। अबीसलूम अंदर आया और बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया। फिर बादशाह ने अबीसलूम को बोसा दिया।

अबीसलूम की साज़िश

15 कुछ देर के बाद अबीसलूम ने रथ और घोड़े ख़रीदे और साथ साथ 50 मुहाफ़िज़ भी रखे जो उसके आगे आगे दौड़ें।
2रोज़ाना वह सुबह-सवेरे उठकर शहर के दरवाज़े पर जाता। जब कभी कोई शख़्स इस मक़सद से शहर में दाख़िल होता कि बादशाह उसके किसी मुक़दमे का फ़ैसला करे तो अबीसलूम उससे मुख़ातिब होकर पूछता, "आप किस शहर से हैं?" अगर वह जवाब देता, "मैं इसराईल के फ़ुलाँ क़बीले से हूँ,"
3तो अबीसलूम कहता, "बेशक आप इस मुक़दमे को जीत सकते हैं, लेकिन अफ़सोस! बादशाह का कोई भी बंदा इस पर सहीह ध्यान नहीं देगा।"
4फिर वह बात जारी रखता, "काश मैं ही मुल्क पर आला क़ाज़ी

मुक़र्रर किया गया होता! फिर सब लोग अपने
मुक़दमे मुझे पेश कर सकते और मैं उनका सहीह
इनसाफ़ कर देता।” 5और अगर कोई क़रीब
आकर अबीसलूम के सामने झुकने लगता तो
वह उसे रोककर उसको गले लगाता और बोसा
देता। 6यह उसका उन तमाम इसराईलियों के
साथ सुलूक था जो अपने मुक़दमे बादशाह को
पेश करने के लिए आते थे। यों उसने इसराईलियों
के दिलों को अपनी तरफ़ मायल कर लिया।

7यह सिलसिला चार साल जारी रहा। एक दिन
अबीसलूम ने दाऊद से बात की, “मुझे हबरून
जाने की इजाज़त दीजिए, क्योंकि मैंने रब से
ऐसी मन्नत मानी है जिसके लिए ज़रूरी है कि
हबरून जाऊँ। 8क्योंकि जब मैं जसूर में था तो
मैंने क़सम खाकर वादा किया था, ‘ऐ रब, अगर
तू मुझे यरूशलम वापस लाए तो मैं हबरून में तेरी
परस्तिश करूँगा’।” 9बादशाह ने जवाब दिया,
“ठीक है। सलामती से जाएँ।”

10लेकिन हबरून पहुँचकर अबीसलूम ने
ख़ुफ़िया तौर पर अपने क़ासिदों को इसराईल के
तमाम क़बायली इलाक़ों में भेज दिया। जहाँ भी
वह गए उन्होंने एलान किया, “ज्योंही नरसिंगे
की आवाज़ सुनाई दे आप सबको कहना है,
‘अबीसलूम हबरून में बादशाह बन गया है’!”
11अबीसलूम के साथ 200 मेहमान यरूशलम से
हबरून आए थे। वह बेलौस थे, और उन्हें इसके
बारे में इल्म ही न था।

12जब हबरून में क़ुरबानियाँ चढ़ाई जा रही
थीं तो अबीसलूम ने दाऊद के एक मुशीर को
बुलाया जो जिलोह का रहनेवाला था। उसका
नाम अख़ीतुफ़ल जिलोनी था। वह आया और
अबीसलूम के साथ मिल गया। यों अबीसलूम
के पैरोकारों में इज़ाफ़ा होता गया और उस की
साज़िशें ज़ोर पकड़ने लगीं।

दाऊद यरूशलम से हिजरत करता है

13एक क़ासिद ने दाऊद के पास पहुँचकर उसे
इत्तला दी, “अबीसलूम आपके ख़िलाफ़ उठ खड़ा
हुआ है, और तमाम इसराईल उसके पीछे लग
गया है।” 14दाऊद ने अपने मुलाज़िमों से कहा,
“आओ, हम फ़ौरन हिजरत करें, वरना अबीसलूम
के क़ब्ज़े में आ जाएंगे। जल्दी करें ताकि हम
फ़ौरन रवाना हो सकें, क्योंकि वह कोशिश करेगा
कि जितनी जल्दी हो सके यहाँ पहुँचे। अगर हम
उस वक़्त शहर से निकले न हों तो वह हम पर
आफ़त लाकर शहर के बाशिंदों को मार डालेगा।”
15बादशाह के मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “जो भी
फ़ैसला हमारे आक़ा और बादशाह करें हम हाज़िर
हैं।”

16बादशाह अपने पूरे ख़ानदान के साथ रवाना
हुआ। सिर्फ़ दस दाश्ताएँ महल को सँभालने के
लिए पीछे रह गईं। 17जब दाऊद अपने तमाम
लोगों के साथ शहर के आख़िरी घर तक पहुँचा तो
वह रुक गया। 18उसने अपने तमाम पैरोकारों को
आगे निकलने दिया, पहले शाही दस्ते करेती-ओ-
फ़लेती को, फिर उन 600 जाती आदमियों को
जो उसके साथ जात से यहाँ आए थे और आख़िर
में बाक़ी तमाम लोगों को। 19जब फ़िलिस्ती शहर
जात का आदमी इत्ती दाऊद के सामने से गुज़रने
लगा तो बादशाह उससे मुख़ातिब हुआ, “आप
हमारे साथ क्यों जाएँ? नहीं, वापस चले जाएँ
और नए बादशाह के साथ रहें। आप तो ग़ैरमुल्की
हैं और इसलिए इसराईल में रहते हैं कि आपको
जिलावतन कर दिया गया है। 20आपको यहाँ
आए थोड़ी देर हुई है, तो क्या मुनासिब है कि
आपको दुबारा मेरी वजह से कभी इधर कभी
इधर घूमना पड़े? क्या पता है कि मुझे कहाँ कहाँ
जाना पड़े। इसलिए वापस चले जाएँ, और अपने
हमवतनों को भी अपने साथ ले जाएँ। रब आप
पर अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार
करे।”

21लेकिन इत्ती ने एतराज़ किया, “मेरे आक़ा,
रब और बादशाह की हयात की क़सम, मैं आपको
कभी नहीं छोड़ सकता, ख़ाह मुझे अपनी जान
भी क़ुरबान करनी पड़े।” 22तब दाऊद मान
गया। “चलो, फिर आगे निकलें!” चुनाँचे इत्ती

अपने लोगों और उनके ख़ानदानों के साथ आगे
निकला। 23आख़िर में दाऊद ने वादीए-क़िदरोन
को पार करके रेगिस्तान की तरफ़ रुख़ किया।
गिर्दो-नवाह के तमाम लोग बादशाह को उसके
पैरोकारों समेत रवाना होते हुए देखकर फूट
फूटकर रोने लगे।

24सदोक़ इमाम और तमाम लावी भी दाऊद
के साथ शहर से निकल आए थे। लावी अहद का
संदूक़ उठाए चल रहे थे। अब उन्होंने उसे शहर
से बाहर ज़मीन पर रख दिया, और अबियातर
वहाँ क़ुरबानियाँ चढ़ाने लगा। लोगों के शहर से
निकलने के पूरे अरसे के दौरान वह क़ुरबानियाँ
चढ़ाता रहा। 25फिर दाऊद सदोक़ से मुख़ातिब
हुआ, "अल्लाह का संदूक़ शहर में वापस ले
जाएँ। अगर रब की नज़रे-करम मुझ पर हुई तो
वह किसी दिन मुझे शहर में वापस लाकर अहद के
संदूक़ और उस की सुकूनतगाह को दुबारा देखने
की इजाज़त देगा। 26लेकिन अगर वह फ़रमाए
कि तू मुझे पसंद नहीं है, तो मैं यह भी बरदाश्त
करने के लिए तैयार हूँ। वह मेरे साथ वह कुछ करे
जो उसे मुनासिब लगे।

27जहाँ तक आपका ताल्लुक़ है, अपने बेटे
अख़ीमाज़ को साथ लेकर सहीह-सलामत शहर
में वापस चले जाएँ। अबियातर और उसका बेटा
यूनतन भी साथ जाएँ। 28मैं ख़ुद रेगिस्तान में
दरियाए-यरदन की उस जगह रुक जाऊँगा जहाँ
हम आसानी से दरिया को पार कर सकेंगे। वहाँ
आप मुझे यरूशलम के हालात के बारे में पैग़ाम
भेज सकते हैं। मैं आपके इंतज़ार में रहूँगा।"

29चुनाँचे सदोक़ और अबियातर अहद का
संदूक़ शहर में वापस ले जाकर वहीं रहे। 30दाऊद
रोते रोते ज़ैतून के पहाड़ पर चढ़ने लगा। उसका
सर ढाँपा हुआ था, और वह नंगे पाँव चल रहा
था। बाक़ी सबके सर भी ढाँपे हुए थे, सब रोते
रोते चढ़ने लगे। 31रास्ते में दाऊद को इत्तला दी
गई, "अख़ीतुफ़ल भी अबीसलूम के साथ मिल
गया है।" यह सुनकर दाऊद ने दुआ की, "ऐ
रब, बख़्श दे कि अख़ीतुफ़ल के मशवरे नाकाम
हो जाएँ।"

32चलते चलते दाऊद पहाड़ की चोटी पर पहुँच
गया जहाँ अल्लाह की परस्तिश की जाती थी।
वहाँ हूसी अरकी उससे मिलने आया। उसके
कपड़े फटे हुए थे, और सर पर ख़ाक थी। 33दाऊद
ने उससे कहा, "अगर आप मेरे साथ जाएँ तो आप
सिर्फ़ बोझ का बाइस बनेंगे। 34बेहतर है कि आप
लौटकर शहर में जाएँ और अबीसलूम से कहें,
'ऐ बादशाह, मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ।
पहले मैं आपके बाप की ख़िदमत करता था, और
अब आप ही की ख़िदमत करूँगा।' अगर आप
ऐसा करें तो आप अख़ीतुफ़ल के मशवरे नाकाम
बनाने में मेरी बड़ी मदद करेंगे। 35-36आप अकेले
नहीं होंगे। दोनों इमाम सदोक़ और अबियातर भी
यरूशलम में पीछे रह गए हैं। दरबार में जो भी
मनसूबे बाँधे जाएंगे वह उन्हें बताएँ। सदोक़ का
बेटा अख़ीमाज़ और अबियातर का बेटा यूनतन
मुझे हर ख़बर पहुँचाएँगे, क्योंकि वह भी शहर में
ठहरे हुए हैं।"

37तब दाऊद का दोस्त हूसी वापस चला
गया। वह उस वक़्त पहुँच गया जब अबीसलूम
यरूशलम में दाख़िल हो रहा था।

ज़ीबा मिफ़ीबोसत के बारे में झूट बोलता है

16 दाऊद अभी पहाड़ की चोटी से कुछ
आगे निकल गया था कि मिफ़ीबोसत
का मुलाज़िम ज़ीबा उससे मिलने आया। उसके
पास दो गधे थे जिन पर ज़ीनें कसी हुई थीं। उन
पर 200 रोटियाँ, किशमिश की 100 टिक्कियाँ,
100 ताज़ा फल और मै की एक मशक लदी हुई
थी। 2बादशाह ने पूछा, "आप इन चीज़ों के साथ
क्या करना चाहते हैं?" ज़ीबा ने जवाब दिया,
"गधे बादशाह के ख़ानदान के लिए हैं, वह इन
पर बैठकर सफ़र करें। रोटी और फल जवानों के
लिए हैं, और मै उनके लिए जो रेगिस्तान में चलते
चलते थक जाएँ।" 3बादशाह ने सवाल किया,
"आपके पुराने मालिक का पोता मिफ़ीबोसत

कहाँ है?” ज़ीबा ने कहा, “वह यरूशलम में
ठहरा हुआ है। वह सोचता है कि आज इसराईली
मुझे बादशाह बना देंगे, क्योंकि मैं साऊल का
पोता हूँ।” 4यह सुनकर दाऊद बोला, “आज ही
मिफ़ीबोसत की तमाम मिलकियत आपके नाम
मुंतक़िल की जाती है!” ज़ीबा ने कहा, “मैं
आपके सामने अपने घुटने टेकता हूँ। रब करे कि मैं
अपने आक़ा और बादशाह का मंज़ूरे-नज़र रहूँ।”

सिमई दाऊद को लान-तान करता है

5जब दाऊद बादशाह बहूरीम के क़रीब पहुँचा
तो एक आदमी वहाँ से निकलकर उस पर लानतें
भेजने लगा। आदमी का नाम सिमई बिन जीरा
था, और वह साऊल का रिश्तेदार था। 6वह
दाऊद और उसके अफ़सरों पर पत्थर भी फेंकने
लगा, अगरचे दाऊद के बाएँ और दाएँ हाथ
उसके मुहाफ़िज़ और बेहतरीन फ़ौजी चल रहे थे।
7लानत करते करते सिमई चीख़ रहा था, “चल,
दफ़ा हो जा! क़ातिल! बदमाश! 8यह तेरा
ही क़ुसूर था कि साऊल और उसका ख़ानदान
तबाह हुए। अब रब तुझे जो साऊल की जगह
तख़्तनशीन हो गया है इसकी मुनासिब सज़ा
दे रहा है। उसने तेरे बेटे अबीसलूम को तेरी
जगह तख़्तनशीन करके तुझे तबाह कर दिया है।
क़ातिल को सहीह मुआवज़ा मिल गया है!”

9अबीशै बिन ज़रूयाह बादशाह से कहने लगा,
“यह कैसा मुरदा कुत्ता है जो मेरे आक़ा बादशाह
पर लानत करे? मुझे इजाज़त दें, तो मैं जाकर
उसका सर क़लम कर दूँ।” 10लेकिन बादशाह
ने उसे रोक दिया, “मेरा आप और आपके भाई
योआब से क्या वास्ता? नहीं, उसे लानत करने
दें। हो सकता है रब ने उसे यह करने का हुक्म
दिया है। तो फिर हम कौन हैं कि उसे रोकें।”
11फिर दाऊद तमाम अफ़सरों से भी मुख़ातिब
हुआ, “जबकि मेरा अपना बेटा मुझे क़त्ल करने
की कोशिश कर रहा है तो साऊल का यह
रिश्तेदार ऐसा क्यों न करे? इसे छोड़ दो, क्योंकि
रब ने इसे यह करने का हुक्म दिया है। 12शायद
रब मेरी मुसीबत का लिहाज़ करके सिमई की
लानतें बरकत में बदल दे।”

13दाऊद और उसके लोगों ने सफ़र जारी
रखा। सिमई क़रीब की पहाड़ी ढलान पर उसके
बराबर चलते चलते उस पर लानतें भेजता और
पत्थर और मिट्टी के ढेले फेंकता रहा। 14सब
थकेमाँदे दरियाए-यरदन को पहुँच गए। वहाँ
दाऊद ताज़ादम हो गया।

अबीसलूम यरूशलम में

15इतने में अबीसलूम अपने पैरोकारों के साथ
यरूशलम में दाख़िल हुआ था। अख़ीतुफ़ल भी
उनके साथ मिल गया था। 16थोड़ी देर के बाद
दाऊद का दोस्त हूसी अरकी अबीसलूम के दरबार
में हाज़िर होकर पुकारा, “बादशाह ज़िंदाबाद!
बादशाह ज़िंदाबाद!” 17यह सुनकर अबीसलूम
ने उससे तंज़न कहा, “यह कैसी वफ़ादारी है जो
आप अपने दोस्त दाऊद को दिखा रहे हैं? आप
अपने दोस्त के साथ रवाना क्यों न हुए?” 18हूसी
ने जवाब दिया, “नहीं, जिस आदमी को रब और
तमाम इसराईलियों ने मुक़र्रर किया है, वही मेरा
मालिक है, और उसी की ख़िदमत में मैं हाज़िर
रहूँगा। 19दूसरे, अगर किसी की ख़िदमत करनी है
तो क्या दाऊद के बेटे की ख़िदमत करना मुनासिब
नहीं है? जिस तरह मैं आपके बाप की ख़िदमत
करता रहा हूँ उसी तरह अब आपकी ख़िदमत
करूँगा।”

20फिर अबीसलूम अख़ीतुफ़ल से मुख़ा-
तिब हुआ, “आगे क्या करना चाहिए? मुझे
अपना मशवरा पेश करें।” 21अख़ीतुफ़ल ने
जवाब दिया, “आपके बाप ने अपनी कुछ
दाश्ताओं को महल सँभालने के लिए यहाँ छोड़
दिया है। उनके साथ हमबिसतर हो जाएँ। फिर
तमाम इसराईल को मालूम हो जाएगा कि आपने
अपने बाप की ऐसी बेइज़्ज़ती की है कि सुलह का
रास्ता बंद हो गया है। यह देखकर सब जो आपके
साथ हैं मज़बूत हो जाएंगे।” 22अबीसलूम मान
गया, और महल की छत पर उसके लिए ख़ैमा

लगाया गया। उसमें वह पूरे इसराईल के देखते
देखते अपने बाप की दाश्ताओं से हमबिसतर
हुआ।
23उस वक़्त अख़ीतुफ़ल का हर मशवरा
अल्लाह के फ़रमान जैसा माना जाता था। दाऊद
और अबीसलूम दोनों यों ही उसके मशवरों की
क़दर करते थे।

हूसी और अख़ीतुफ़ल

17 अख़ीतुफ़ल ने अबीसलूम को एक
और मशवरा भी दिया। "मुझे
इजाज़त दें तो मैं 12,000 फ़ौजियों के साथ
इसी रात दाऊद का ताक़्क़ुब करूँ। 2मैं उस पर
हमला करूँगा जब वह थकामाँदा और बेदिल है।
तब वह घबरा जाएगा, और उसके तमाम फ़ौजी
भाग जाएंगे। नतीजतन मैं सिर्फ़ बादशाह ही को
मार दूँगा 3और बाक़ी तमाम लोगों को आपके
पास वापस लाऊँगा। जो आदमी आप पकड़ना
चाहते हैं उस की मौत पर सब वापस आ जाएंगे।
और क़ौम में अमनो-अमान क़ायम हो जाएगा।"
4यह मशवरा अबीसलूम और इसराईल के
तमाम बुज़ुर्गों को पसंद आया। 5ताहम अबीसलूम
ने कहा, "पहले हम हूसी अरकी से भी मशवरा
लें। कोई उसे बुला लाए।" 6हूसी आया तो
अबीसलूम ने उसके सामने अख़ीतुफ़ल का
मनसूबा बयान करके पूछा, "आपका क्या
ख़याल है? क्या हमें ऐसा करना चाहिए, या
आपकी कोई और राय है?"
7हूसी ने जवाब दिया, "जो मशवरा अख़ी-
तुफ़ल ने दिया है वह इस दफ़ा ठीक नहीं। 8आप
तो अपने वालिद और उनके आदमियों से वाक़िफ़
हैं। वह सब माहिर फ़ौजी हैं। वह उस रीछनी
की-सी शिद्दत से लड़ेंगे जिससे उसके बच्चे छीन
लिए गए हैं। यह भी ज़हन में रखना चाहिए कि
आपका बाप तजरबाकार फ़ौजी है। इमकान नहीं
कि वह रात को अपने फ़ौजियों के दरमियान
गुज़ारेगा। 9ग़ालिबन वह इस वक़्त भी गहरी खाई
या कहीं और छुप गया है। हो सकता है वह
वहाँ से निकलकर आपके दस्तों पर हमला करे
और इब्तिदा ही में आपके थोड़े-बहुत अफ़राद मर
जाएँ। फिर अफ़वाह फैल जाएगी कि अबीसलूम
के दस्तों में क़त्ले-आम शुरू हो गया है। 10यह
सुनकर आपके तमाम अफ़राद डर के मारे बेदिल
हो जाएंगे, ख़ाह वह शेरबबर जैसे बहादुर क्यों
न हों। क्योंकि तमाम इसराईल जानता है कि
आपका बाप बेहतरीन फ़ौजी है और कि उसके
साथी भी दिलेर हैं।
11यह पेशे-नज़र रखकर मैं आपको एक और
मशवरा देता हूँ। शिमाल में दान से लेकर
जुनूब में बैर-सबा तक लड़ने के क़ाबिल तमाम
इसराईलियों को बुलाएँ। इतने जमा करें कि
वह साहिल की रेत की मानिंद होंगे, और आप
ख़ुद उनके आगे चलकर लड़ने के लिए निकलें।
12फिर हम दाऊद का खोज लगाकर उस पर
हमला करेंगे। हम उस तरह उस पर टूट पड़ेंगे जिस
तरह ओस ज़मीन पर गिरती है। सबके सब हलाक
हो जाएंगे, और न वह और न उसके आदमी बच
पाएँगे। 13अगर दाऊद किसी शहर में पनाह ले तो
तमाम इसराईली फ़सील के साथ रस्से लगाकर
पूरे शहर को वादी में घसीट ले जाएंगे। पत्थर पर
पत्थर बाक़ी नहीं रहेगा!"
14अबीसलूम और तमाम इसराईलियों ने
कहा, "हूसी का मशवरा अख़ीतुफ़ल के
मशवरे से बेहतर है।" हक़ीक़त में अख़ी-
तुफ़ल का मशवरा कहीं बेहतर था, लेकिन
रब ने उसे नाकाम होने दिया ताकि अबी-
सलूम को मुसीबत में डाले।

दाऊद को अबीसलूम का मनसूबा बताया जाता है

15हूसी ने दोनों इमामों सदोक़ और अबियातर
को वह मनसूबा बताया जो अख़ीतुफ़ल ने
अबीसलूम और इसराईल के बुज़ुर्गों को पेश किया
था। साथ साथ उसने उन्हें अपने मशवरे के बारे
में भी आगाह किया। 16उसने कहा, "अब फ़ौरन
दाऊद को इत्तला दें कि किसी सूरत में भी इस

रात को दरियाए-यरदन की उस जगह पर न गुज़ारें
जहाँ लोग दरिया को पार करते हैं। लाज़िम है कि
आप आज ही दरिया को उबूर कर लें, वरना आप
तमाम साथियों समेत बरबाद हो जाएंगे।”

17यूनतन और अख़ीमाज़ यरूशलम से बाहर
के चशमे ऐन-राजिल के पास इंतज़ार कर रहे थे,
क्योंकि वह शहर में दाख़िल होकर किसी को
नज़र आने का ख़तरा मोल नहीं ले सकते थे।
एक नौकरानी शहर से निकल आई और उन्हें
हूसी का पैग़ाम दे दिया ताकि वह आगे निकलकर
उसे दाऊद तक पहुँचाएँ। 18लेकिन एक जवान
ने उन्हें देखा और भागकर अबीसलूम को इत्तला
दी। दोनों जल्दी जल्दी वहाँ से चले गए और एक
आदमी के घर में छुप गए जो बहूरीम में रहता
था। उसके सहन में कुआँ था। उसमें वह उतर
गए। 19आदमी की बीवी ने कुएँ के मुँह पर कपड़ा
बिछाकर उस पर अनाज के दाने बिखेर दिए ताकि
किसी को मालूम न हो कि वहाँ कुआँ है।

20अबीसलूम के सिपाही उस घर में पहुँचे और
औरत से पूछने लगे, “अख़ीमाज़ और यूनतन
कहाँ हैं?” औरत ने जवाब दिया, “वह आगे
निकल चुके हैं, क्योंकि वह नदी को पार करना
चाहते थे।” सिपाही दोनों आदमियों का खोज
लगाते लगाते थक गए। आख़िरकार वह ख़ाली
हाथ यरूशलम लौट गए।

21जब चले गए तो अख़ीमाज़ और यूनतन
कुएँ से निकलकर सीधे दाऊद बादशाह के पास
चले गए ताकि उसे पैग़ाम सुनाएँ। उन्होंने कहा,
“लाज़िम है कि आप दरिया को फ़ौरन पार
करें!” फिर उन्होंने दाऊद को अख़ीतुफ़ल का
पूरा मनसूबा बताया। 22दाऊद और उसके तमाम
साथी जल्द ही रवाना हुए और उसी रात दरियाए-
यरदन को उबूर किया। पौ फटते वक़्त एक भी
पीछे नहीं रह गया था।

23जब अख़ीतुफ़ल ने देखा कि मेरा मशवरा रद्द
किया गया है तो वह अपने गधे पर ज़ीन कसकर
अपने वतनी शहर वापस चला गया। वहाँ उसने
घर के तमाम मामलात का बंदोबस्त किया, फिर
जाकर फाँसी ले ली। उसे उसके बाप की क़ब्र में
दफ़नाया गया।

24जब दाऊद महनायम पहुँच गया तो
अबीसलूम इसराईली फ़ौज के साथ दरि-
याए-यरदन को पार करने लगा। 25उसने अमासा
को फ़ौज पर मुक़र्रर किया था, क्योंकि योआब
तो दाऊद के साथ था। अमासा एक इसमाईली
बनाम इतरा का बेटा था। उस की माँ अबीजेल
बिंत नाहस थी, और वह योआब की माँ ज़रूयाह
की बहन थी। 26अबीसलूम और उसके साथियों
ने मुल्के-जिलियाद में पड़ाव डाला।

27जब दाऊद महनायम पहुँचा तो तीन
आदमियों ने उसका इस्तक़बाल किया। सोबी
बिन नाहस अम्मोनियों के दारुल-हुकूमत रब्बा
से, मकीर बिन अम्मियेल लो-दिबार से और
बरज़िल्ली जिलियादी राजिलीम से आए।
28तीनों ने दाऊद और उसके लोगों को बिस्तर,
बासन, मिट्टी के बरतन, गंदुम, जौ, मैदा, अनाज
के भुने हुए दाने, लोबिया, मसूर, 29शहद,
दही, भेड़-बकरियाँ और गाय के दूध का पनीर
मुहैया किया। क्योंकि उन्होंने सोचा, “यह लोग
रेगिस्तान में चलते चलते ज़रूर भूके, प्यासे और
थकेमाँदे हो गए होंगे।”

जंग के लिए तैयारियाँ

18 दाऊद ने अपने फ़ौजियों का मुआयना
करके हज़ार हज़ार और सौ सौ
अफ़राद पर आदमी मुक़र्रर किए। 2फिर उसने
उन्हें तीन हिस्सों में तक़सीम करके एक हिस्से
पर योआब को, दूसरे पर उसके भाई अबीशै बिन
ज़रूयाह को और तीसरे पर इत्ती जाती को मुक़र्रर
किया।

उसने फ़ौजियों को बताया, “मैं ख़ुद भी आपके
साथ लड़ने के लिए निकलूँगा।” 3लेकिन उन्होंने
एतराज़ किया, “ऐसा न करें! अगर हमें भागना
भी पड़े या हमारा आधा हिस्सा मारा भी जाए तो
अबीसलूम के फ़ौजियों के लिए इतना कोई फ़रक़
नहीं पड़ेगा। वह आप ही को पकड़ना चाहते हैं,

क्योंकि आप उनके नज़दीक हममें से 10,000 अफ़राद से ज़्यादा अहम हैं। चुनाँचे बेहतर है कि आप शहर ही में रहें और वहाँ से हमारी हिमायत करें।”

4बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है, जो कुछ
आपको माक़ूल लगता है वही करूँगा।” वह शहर के दरवाज़े पर खड़ा हुआ, और तमाम मर्द सौ सौ और हज़ार हज़ार के गुरोहों में उसके सामने
से गुज़रकर बाहर निकले। 5योआब, अबीशै और
इत्ती को उसने हुक्म दिया, “मेरी ख़ातिर जवान अबीसलूम से नरमी से पेश आना!” तमाम फ़ौजियों ने तीनों कमाँडरों से यह बात सुनी।

अबीसलूम की शिकस्त

6दाऊद के लोग खुले मैदान में इसराई-
लियों से लड़ने गए। इफ़राईम के जंगल में उनकी टक्कर हुई,
7और दाऊद के फ़ौजियों ने मुख़ालिफ़ों को शिकस्ते-फ़ाश दी। उनके 20,000 अफ़राद हलाक हुए।
8लड़ाई पूरे जंगल में फैलती गई। यह जंगल इतना ख़तरनाक था कि उस दिन तलवार की निसबत ज़्यादा लोग उस की ज़द में आकर हलाक हो गए।

9अचानक दाऊद के कुछ फ़ौजियों को
अबीसलूम नज़र आया। वह ख़च्चर पर सवार बलूत के एक बड़े दरख़्त के साये में से गुज़रने लगा तो उसके बाल दरख़्त की शाख़ों में उलझ गए। उसका ख़च्चर आगे निकल गया जबकि अबीसलूम वहीं आसमानो-ज़मीन के दरमियान लटका रहा।
10जिन आदमियों ने यह देखा उनमें से एक योआब के पास गया और इत्तला दी, “मैंने अबीसलूम को देखा है। वह बलूत के एक दरख़्त में लटका हुआ है।”

11योआब पुकारा, “क्या आपने उसे देखा?
तो उसे वहीं क्यों न मार दिया? फिर मैं आपको इनाम के तौर पर चाँदी के दस सिक्के और एक कमरबंद दे देता।”
12लेकिन आदमी ने एतराज़ किया, “अगर आप मुझे चाँदी के हज़ार सिक्के भी देते तो भी मैं बादशाह के बेटे को हाथ न लगाता। हमारे सुनते सुनते बादशाह ने आप, अबीशै और इत्ती को हुक्म दिया, ‘मेरी ख़ातिर अबीसलूम को नुक़सान न पहुँचाएँ।’
13और अगर मैं चुपके से भी उसे क़त्ल करता तो भी इसकी ख़बर किसी न किसी वक़्त बादशाह के कानों तक पहुँचती। क्योंकि कोई भी बात बादशाह से पोशीदा नहीं रहती। अगर मुझे इस सूरत में पकड़ा जाता तो आप मेरी हिमायत न करते।”

14योआब बोला, “मेरा वक़्त मज़ीद ज़ाया
मत करो।” उसने तीन नेज़े लेकर अबीसलूम के दिल में घोंप दिए जब वह अभी ज़िंदा हालत में दरख़्त से लटका हुआ था।
15फिर योआब के दस सिलाहबरदारों ने अबीसलूम को घेरकर उसे हलाक कर दिया।

16तब योआब ने नरसिंगा बजा दिया, और
उसके फ़ौजी दूसरों का ताक़्क़ुब करने से बाज़ आकर वापस आ गए।
17बाक़ी इसराईली अपने अपने घर भाग गए। योआब के आदमियों ने अबीसलूम की लाश को एक गहरे गढ़े में फेंककर उस पर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया।

18कुछ देर पहले अबीसलूम इस ख़याल से
बादशाह की वादी में अपनी याद में एक सतून खड़ा कर चुका था कि मेरा कोई बेटा नहीं है जो मेरा नाम क़ायम रखे। आज तक यह ‘अबीसलूम की यादगार’ कहलाता है।

दाऊद को अबीसलूम की मौत की ख़बर मिलती है

19अख़ीमाज़ बिन सदोक़ ने योआब से
दरख़ास्त की, “मुझे दौड़कर बादशाह को ख़ुशख़बरी सुनाने दें कि रब ने उसे दुश्मनों से बचा लिया है।”
20लेकिन योआब ने इनकार किया, “जो पैग़ाम आपको बादशाह तक पहुँचाना है वह उसके लिए ख़ुशख़बरी नहीं है, क्योंकि उसका बेटा मर गया है। किसी और वक़्त मैं ज़रूर आपको उसके पास भेज दूँगा, लेकिन आज नहीं।”
21उसने एथोपिया के एक आदमी को

हुक्म दिया, "जाएँ और बादशाह को बताएँ।" आदमी योआब के सामने औंधे मुँह झुक गया और फिर दौड़कर चला गया।

22लेकिन अख़ीमाज़ ख़ुश नहीं था। वह इसरार करता रहा, "कुछ भी हो जाए, मेहरबानी करके मुझे उसके पीछे दौड़ने दें!" एक और बार योआब ने उसे रोकने की कोशिश की, "बेटे, आप जाने के लिए क्यों तड़पते हैं? जो ख़बर पहुँचानी है उसके लिए आपको इनाम नहीं मिलेगा।"
23अख़ीमाज़ ने जवाब दिया, "कोई बात नहीं। कुछ भी हो जाए, मैं हर सूरत में दौड़कर बादशाह के पास जाना चाहता हूँ।" तब योआब ने उसे जाने दिया। अख़ीमाज़ ने दरियाए-यरदन के खुले मैदान का रास्ता लिया, इसलिए वह एथोपिया के आदमी से पहले बादशाह के पास पहुँच गया।

24उस वक़्त दाऊद शहर के बाहर और अंदरवाले दरवाज़ों के दरमियान बैठा इंतज़ार कर रहा था। जब पहरेदार दरवाज़े के ऊपर की फ़सील पर चढ़ा तो उसे एक तनहा आदमी नज़र आया जो दौड़ता हुआ उनकी तरफ़ आ रहा था।
25पहरेदार ने आवाज़ देकर बादशाह को इत्तला दी। दाऊद बोला, "अगर अकेला हो तो ज़रूर ख़ुशख़बरी लेकर आ रहा होगा।" यह आदमी भागता भागता क़रीब आ गया,
26लेकिन इतने में पहरेदार को एक और आदमी नज़र आया जो शहर की तरफ़ दौड़ता हुआ आ रहा था। उसने शहर के दरवाज़े के दरबान को आवाज़ दी, "एक और आदमी दौड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। वह भी अकेला ही आ रहा है।" दाऊद ने कहा, "वह भी अच्छी ख़बर लेकर आ रहा है।"
27फिर पहरेदार पुकारा, "लगता है कि पहला आदमी अख़ीमाज़ बिन सदोक़ है, क्योंकि वही यों चलता है।" दाऊद को तसल्ली हुई, "अख़ीमाज़ अच्छा बंदा है। वह ज़रूर अच्छी ख़बर लेकर आ रहा होगा।"

28दूर से अख़ीमाज़ ने बादशाह को आवाज़ दी, "बादशाह की सलामती हो!" वह औंधे मुँह बादशाह के सामने झुककर बोला, "रब आपके ख़ुदा की तमजीद हो! उसने आपको उन लोगों से बचा लिया है जो मेरे आक़ा और बादशाह के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए थे।"
29दाऊद ने पूछा, "और मेरा बेटा अबीसलूम? क्या वह महफ़ूज़ है?" अख़ीमाज़ ने जवाब दिया, "जब योआब ने मुझे और बादशाह के दूसरे ख़ादिम को आपके पास रुख़सत किया तो उस वक़्त बड़ी अफ़रा-तफ़री थी। मुझे तफ़सील से मालूम न हुआ कि क्या हो रहा है।"
30बादशाह ने हुक्म दिया, "एक तरफ़ होकर मेरे पास खड़े हो जाएँ!" अख़ीमाज़ ने ऐसा ही किया।

31फिर एथोपिया का आदमी पहुँच गया। उसने कहा, "मेरे बादशाह, मेरी ख़ुशख़बरी सुनें! आज रब ने आपको उन सब लोगों से नजात दिलाई है जो आपके ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए थे।"
32बादशाह ने सवाल किया, "और मेरा बेटा अबीसलूम? क्या वह महफ़ूज़ है?" एथोपिया के आदमी ने जवाब दिया, "मेरे आक़ा, जिस तरह उसके साथ हुआ है, उस तरह आपके तमाम दुश्मनों के साथ हो जाए, उन सबके साथ जो आपको नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं!"

33यह सुनकर बादशाह लरज़ उठा। शहर के दरवाज़े के ऊपर की फ़सील पर एक कमरा था। अब बादशाह रोते रोते सीढ़ियों पर चढ़ने लगा और चीख़ते-चिल्लाते उस कमरे में चला गया, "हाय मेरे बेटे अबीसलूम! मेरे बेटे, मेरे बेटे अबीसलूम! काश मैं ही तेरी जगह मर जाता। हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!"

योआब दाऊद को समझाता है

19 योआब को इत्तला दी गई, "बादशाह रोते रोते अबीसलूम का मातम कर रहा है।"
2जब फ़ौजियों को ख़बर मिली कि बादशाह अपने बेटे का मातम कर रहा है तो फ़तह पाने पर उनकी सारी ख़ुशी काफ़ूर हो गई। हर तरफ़ मातम और ग़म का समाँ था।
3उस दिन दाऊद के आदमी चोरी चोरी शहर में घुस आए,

ऐसे लोगों की तरह जो मैदाने-जंग से फ़रार होने पर शरमाते हुए चुपके से शहर में आ जाते हैं।

4बादशाह अभी कमरे में बैठा था। अपने मुँह को
ढाँपकर वह चीख़ता-चिल्लाता रहा, "हाय मेरे बेटे
अबीसलूम! हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!"
5तब योआब उसके पास जाकर उसे समझाने
लगा, "आज आपके ख़ादिमों ने न सिर्फ़ आपकी
जान बचाई है बल्कि आपके बेटों, बेटियों, बीवियों
और दाश्ताओं की जान भी। तो भी आपने उनका
मुँह काला कर दिया है। 6जो आपसे नफ़रत
करते हैं उनसे आप मुहब्बत रखते हैं जबकि जो
आपसे प्यार करते हैं उनसे आप नफ़रत करते हैं।
आज आपने साफ़ ज़ाहिर कर दिया है कि आपके
कमाँडर और दस्ते आपकी नज़र में कोई हैसियत
नहीं रखते। हाँ, आज मैंने जान लिया है कि अगर
अबीसलूम ज़िंदा होता तो आप ख़ुश होते, ख़ाह
हम बाक़ी तमाम लोग हलाक क्यों न हो जाते।
7अब उठकर बाहर जाएँ और अपने ख़ादिमों की
हौसलाअफ़्ज़ाई करें। रब की क़सम, अगर आप
बाहर न निकलेंगे तो रात तक एक भी आपके
साथ नहीं रहेगा। फिर आप पर ऐसी मुसीबत
आएगी जो आपकी जवानी से लेकर आज तक
आप पर नहीं आई है।"

8तब दाऊद उठा और शहर के दरवाज़े के पास
उतर आया। जब फ़ौजियों को बताया गया कि
बादशाह शहर के दरवाज़े में बैठा है तो वह सब
उसके सामने जमा हुए।

दाऊद यरूशलम वापस आता है

इतने में इसराईली अपने घर भाग गए थे।
9इसराईल के तमाम क़बीलों में लोग आपस में
बहस-मुबाहसा करने लगे, "दाऊद बादशाह ने
हमें हमारे दुश्मनों से बचाया, और उसी ने हमें
फ़िलिस्तियों के हाथ से आज़ाद कर दिया। लेकिन
अबीसलूम की वजह से वह मुल्क से हिजरत कर
गया है। 10अब जब अबीसलूम जिसे हमने मसह
करके बादशाह बनाया था मर गया है तो आप
बादशाह को वापस लाने से क्यों झिजकते हैं?"

11दाऊद ने सदोक़ और अबियातर इमामों की
मारिफ़त यहूदाह के बुज़ुर्गों को इत्तला दी, "यह
बात मुझ तक पहुँच गई है कि तमाम इसराईल
अपने बादशाह का इस्तक़बाल करके उसे महल
में वापस लाना चाहता है। तो फिर आप क्यों देर
कर रहे हैं? क्या आप मुझे वापस लाने में सबसे
आख़िर में आना चाहते हैं? 12आप मेरे भाई,
मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं। तो फिर आप बादशाह
को वापस लाने में आख़िर में क्यों आ रहे हैं?"
13और अबीसलूम के कमाँडर अमासा को दोनों
इमामों ने दाऊद का यह पैग़ाम पहुँचाया, "सुनें,
आप मेरे भतीजे हैं, इसलिए अब से आप ही
योआब की जगह मेरी फ़ौज के कमाँडर होंगे।
अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं अपना यह
वादा पूरा न करूँ।"

14इस तरह दाऊद यहूदाह के तमाम दिलों को
जीत सका, और सबके सब उसके पीछे लग
गए। उन्होंने उसे पैग़ाम भेजा, "वापस आएँ, आप
भी और आपके तमाम लोग भी।" 15तब दाऊद
यरूशलम वापस चलने लगा। जब वह दरियाए-
यरदन तक पहुँचा तो यहूदाह के लोग जिलजाल
में आए ताकि उससे मिलें और उसे दरिया के दूसरे
किनारे तक पहुँचाएँ।

दाऊद सिमई को मुआफ़ कर देता है

16बिनयमीनी शहर बहूरीम का सिमई बिन
जीरा भी भागकर यहूदाह के आदमियों के साथ
दाऊद से मिलने आया। 17बिनयमीन के क़बीले
के हज़ार आदमी उसके साथ थे। साऊल का
पुराना नौकर ज़ीबा भी अपने 15 बेटों और 20
नौकरों समेत उनमें शामिल था। बादशाह के
यरदन के किनारे तक पहुँचने से पहले पहले 18वह
जल्दी से दरिया को उबूर करके उसके पास आए
ताकि बादशाह के घराने को दरिया के दूसरे किनारे
तक पहुँचाएँ और हर तरह से बादशाह को ख़ुश
रखें।

दाऊद दरिया को पार करने को था कि सिमई
औंधे मुँह उसके सामने गिर गया। 19उसने

इलतमास की, “मेरे आक़ा, मुझे मुआफ़ करें।
जो ज़्यादती मैंने उस दिन आपसे की जब आपको
यरूशलम को छोड़ना पड़ा वह याद न करें। बराहे-
करम यह बात अपने ज़हन से निकाल दें। 20मैंने
जान लिया है कि मुझसे बड़ा जुर्म सरज़द हुआ
है, इसलिए आज मैं यूसुफ़ के घराने के तमाम
अफ़राद से पहले ही अपने आक़ा और बादशाह
के हुज़ूर आ गया हूँ।”

21अबीशै बिन ज़रूयाह बोला, “सिमई सज़ाए-
मौत के लायक़ है! उसने रब के मसह किए हुए
बादशाह पर लानत की है।” 22लेकिन दाऊद ने
उसे डाँटा, “मेरा आप और आपके भाई योआब
के साथ क्या वास्ता? ऐसी बातों से आप इस दिन
मेरे मुख़ालिफ़ बन गए हैं! आज तो इसराईल में
किसी को सज़ाए-मौत देने का नहीं बल्कि ख़ुशी
का दिन है। देखें, इस दिन मैं दुबारा इसराईल का
बादशाह बन गया हूँ!” 23फिर बादशाह सिमई
से मुख़ातिब हुआ, “रब की क़सम, आप नहीं
मरेंगे।”

मिफ़ीबोसत दाऊद से मिलने आता है

24साऊल का पोता मिफ़ीबोसत भी बाद-
शाह से मिलने आया। उस दिन से जब दाऊद
को यरूशलम को छोड़ना पड़ा आज तक जब
वह सलामती से वापस पहुँचा मिफ़ीबोसत मातम
की हालत में रहा था। न उसने अपने पाँव न
अपने कपड़े धोए थे, न अपनी मूँछों की काँट-
छाँट की थी। 25जब वह बादशाह से मिलने के
लिए यरूशलम से निकला तो बादशाह ने उससे
सवाल किया, “मिफ़ीबोसत, आप मेरे साथ क्यों
नहीं गए थे?”

26उसने जवाब दिया, “मेरे आक़ा और
बादशाह, मैं जाने के लिए तैयार था, लेकिन मेरा
नौकर ज़ीबा मुझे धोका देकर अकेला ही चला
गया। मैंने तो उसे बताया था, ‘मेरे गधे पर ज़ीन
कसो ताकि मैं बादशाह के साथ रवाना हो सकूँ।’
और मेरा जाने का कोई और वसीला था नहीं,
क्योंकि मैं दोनों टाँगों से माज़ूर हूँ। 27ज़ीबा ने
मुझ पर तोहमत लगाई है। लेकिन मेरे आक़ा और
बादशाह अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे हैं। मेरे साथ
वही कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे। 28मेरे
दादा के पूरे घराने को आप हलाक कर सकते
थे, लेकिन फिर भी आपने मेरी इज़्ज़त करके उन
मेहमानों में शामिल कर लिया जो रोज़ाना आपकी
मेज़ पर खाना खाते हैं। चुनाँचे मेरा क्या हक़ है
कि मैं बादशाह से मज़ीद अपील करूँ।”

29बादशाह बोला, “अब बस करें। मैंने फ़ैसला
कर लिया है कि आपकी ज़मीनें आप और ज़ीबा
में बराबर तक़सीम की जाएँ।” 30मिफ़ीबोसत
ने जवाब दिया, “वह सब कुछ ले ले। मेरे लिए
यही काफ़ी है कि आज मेरे आक़ा और बादशाह
सलामती से अपने महल में वापस आ पहुँचे हैं।”

दाऊद और बरज़िल्ली

31बरज़िल्ली जिलियादी राजिलीम से आ-
या था ताकि बादशाह के साथ दरियाए-यरदन
को पार करके उसे रुख़सत करे। 32बरज़िल्ली
80 साल का था। महनायम में रहते वक़्त उसी
ने दाऊद की मेहमान-नवाज़ी की थी, क्योंकि वह
बहुत अमीर था। 33अब दाऊद ने बरज़िल्ली को
दावत दी, “मेरे साथ यरूशलम जाकर वहाँ रहें!
मैं आपका हर तरह से ख़याल रखूँगा।”

34लेकिन बरज़िल्ली ने इनकार किया, “मेरी
ज़िंदगी के थोड़े दिन बाक़ी हैं, मैं क्यों यरूशलम
में जा बसूँ? 35मेरी उम्र 80 साल है। न मैं
अच्छी और बुरी चीज़ों में इम्तियाज़ कर सकता,
न मुझे खाने-पीने की चीज़ों का मज़ा आता है।
गीत गानेवालों की आवाज़ें भी मुझसे सुनी नहीं
जातीं। नहीं मेरे आक़ा और बादशाह, अगर मैं
आपके साथ जाऊँ तो आपके लिए सिर्फ़ बोझ का
बाइस हूँगा। 36इसकी ज़रूरत नहीं कि आप मुझे
इस क़िस्म का मुआवज़ा दें। मैं बस आपके साथ
दरियाए-यरदन को पार करूँगा 37और फिर अगर
इजाज़त हो तो वापस चला जाऊँगा। मैं अपने ही
शहर में मरना चाहता हूँ, जहाँ मेरे माँ-बाप की क़ब्र
है। लेकिन मेरा बेटा किमहाम आप की ख़िदमत

में हाज़िर है। वह आपके साथ चला जाए तो आप
उसके लिए वह कुछ करें जो आपको मुनासिब
लगे।”
38दाऊद ने जवाब दिया, “ठीक है, किमहाम
मेरे साथ जाए। और जो कुछ भी आप चाहेंगे मैं
उसके लिए करूँगा। अगर कोई काम है जो मैं
आपके लिए कर सकता हूँ तो मैं हाज़िर हूँ।”
39फिर दाऊद ने अपने साथियों समेत दरिया
को उबूर किया। बरज़िल्ली को बोसा देकर उसने
उसे बरकत दी। बरज़िल्ली अपने शहर वापस चल
पड़ा 40जबकि दाऊद जिलजाल की तरफ़ बढ़
गया। किमहाम भी साथ गया। इसके अलावा
यहूदाह के सब और इसराईल के आधे लोग उसके
साथ चले।

इसराईल और यहूदाह आपस में झगड़ते हैं

41रास्ते में इसराईल के मर्द बादशाह के पास
आकर शिकायत करने लगे, “हमारे भाइयों
यहूदाह के लोगों ने आपको आपके घराने और
फ़ौजियों समेत चोरी चोरी क्यों दरियाए-यरदन
के मग़रिबी किनारे तक पहुँचाया? यह ठीक नहीं
है।”
42यहूदाह के मर्दों ने जवाब दिया, “बात यह है
कि हम बादशाह के क़रीबी रिश्तेदार हैं। आपको
यह देखकर ग़ुस्सा क्यों आ गया है? न हमने
बादशाह का खाना खाया, न उससे कोई तोहफ़ा
पाया है।”
43तो भी इसराईल के मर्दों ने एतराज़ किया,
“हमारे दस क़बीले हैं, इसलिए हमारा बादशाह
की ख़िदमत करने का दस गुना ज़्यादा हक़ है।
तो फिर आप हमें हक़ीर क्यों जानते हैं? हमने
तो पहले अपने बादशाह को वापस लाने की बात
की थी।” यों बहस-मुबाहसा जारी रहा, लेकिन
यहूदाह के मर्दों की बातें ज़्यादा सख़्त थीं।

सबा दाऊद के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होता है

20 झगड़नेवालों में से एक बदमाश था
जिसका नाम सबा बिन बिक्री था।
वह बिनयमीनी था। अब उसने नरसिंगा बजाकर
एलान किया, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ
मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की
उम्मीद है। ऐ इसराईल, हर एक अपने घर वापस
चला जाए!” 2तब तमाम इसराईली दाऊद को
छोड़कर सबा बिन बिक्री के पीछे लग गए। सिर्फ़
यहूदाह के मर्द अपने बादशाह के साथ लिपटे रहे
और उसे यरदन से लेकर यरूशलम तक पहुँचाया।
3जब दाऊद अपने महल में दाख़िल हुआ तो
उसने उन दस दाश्ताओं का बंदोबस्त कराया
जिनको उसने महल को सँभालने के लिए पीछे
छोड़ दिया था। वह उन्हें एक ख़ास घर में अलग
रखकर उनकी तमाम ज़रूरियात पूरी करता रहा
लेकिन उनसे कभी हमबिसतर न हुआ। वह कहीं
जा न सकीं, और उन्हें ज़िंदगी के आख़िरी लमहे
तक बेवा की-सी ज़िंदगी गुज़ारनी पड़ी।
4फिर दाऊद ने अमासा को हुक्म दिया,
“यहूदाह के तमाम फ़ौजियों को मेरे पास बुला
लाएँ। तीन दिन के अंदर अंदर उनके साथ हाज़िर
हो जाएँ।” 5अमासा रवाना हुआ। लेकिन जब
तीन दिन के बाद लौट न आया 6तो दाऊद
अबीशै से मुख़ातिब हुआ, “आख़िर में सबा बिन
बिक्री हमें अबीसलूम की निसबत ज़्यादा नुक़सान
पहुँचाएगा। जल्दी करें, मेरे दस्तों को लेकर
उसका ताक़्क़ुब करें। ऐसा न हो कि वह क़िलाबंद
शहरों को क़ब्ज़े में ले ले और यों हमारा बड़ा
नुक़सान हो जाए।” 7तब योआब के सिपाही,
बादशाह का दस्ता करेती-ओ-फ़लेती और तमाम
माहिर फ़ौजी यरूशलम से निकलकर सबा बिन
बिक्री का ताक़्क़ुब करने लगे।
8जब वह जिबऊन की बड़ी चट्टान के पास पहुँचे
तो उनकी मुलाक़ात अमासा से हुई जो थोड़ी देर
पहले वहाँ पहुँच गया था। योआब अपना फ़ौजी
लिबास पहने हुए था, और उस पर उसने कमर
में अपनी तलवार की पेटी बाँधी हुई थी। अब जब
वह अमासा से मिलने गया तो उसने अपने बाएँ
हाथ से तलवार को चोरी चोरी मियान से निकाल
लिया। 9उसने सलाम करके कहा, “भाई, क्या

सब ठीक है?" और फिर अपने दहने हाथ से
अमासा की दाढ़ी को यों पकड़ लिया जैसे उसे
बोसा देना चाहता हो। 10अमासा ने योआब के
दूसरे हाथ में तलवार पर ध्यान न दिया, और
अचानक योआब ने उसे इतने ज़ोर से पेट में घोंप
दिया कि उस की अंतड़ियाँ फूटकर ज़मीन पर
गिर गईं। तलवार को दुबारा इस्तेमाल करने की
ज़रूरत ही नहीं थी, क्योंकि अमासा फ़ौरन मर
गया।

फिर योआब और अबीशै सबा का ताक़्क़ुब
करने के लिए आगे बढ़े। 11योआब का एक
फ़ौजी अमासा की लाश के पास खड़ा रहा और
गुज़रनेवाले फ़ौजियों को आवाज़ देता रहा, "जो
योआब और दाऊद के साथ है वह योआब के
पीछे हो ले!" 12लेकिन जितने वहाँ से गुज़रे
वह अमासा का ख़ूनआलूदा और तड़पता हुआ
जिस्म देखकर रुक गए। जब आदमी ने देखा कि
लाश रुकावट का बाइस बन गई है तो उसने उसे
रास्ते से हटाकर खेत में घसीट लिया और उस पर
कपड़ा डाल दिया। 13लाश के ग़ायब हो जाने पर
सब लोग योआब के पीछे चले गए और सबा का
ताक़्क़ुब करने लगे।

14इतने में सबा पूरे इसराईल से गुज़रते गुज़रते
शिमाल के शहर अबील-बैत-माका तक पहुँच गया
था। बिक्री के ख़ानदान के तमाम मर्द भी उसके
पीछे लगकर वहाँ पहुँच गए थे। 15तब योआब
और उसके फ़ौजी वहाँ पहुँचकर शहर का मुहासरा
करने लगे। उन्होंने शहर की बाहरवाली दीवार के
साथ साथ मिट्टी का बड़ा तोदा लगाया और उस
पर से गुज़रकर अंदरवाली बड़ी दीवार तक पहुँच
गए। वहाँ वह दीवार की तोड़-फोड़ करने लगे
ताकि वह गिर जाए।

16तब शहर की एक दानिशमंद औरत ने
फ़सील से योआब के लोगों को आवाज़ दी,
"सुनें! योआब को यहाँ बुला लें ताकि मैं उससे
बात कर सकूँ।" 17जब योआब दीवार के पास
आया तो औरत ने सवाल किया, "क्या आप
योआब हैं?" योआब ने जवाब दिया, "मैं ही
हूँ।" औरत ने दरख़ास्त की, "ज़रा मेरी बातों
पर ध्यान दें।" योआब बोला, "ठीक है, मैं सुन
रहा हूँ।" 18फिर औरत ने अपनी बात पेश की,
"पुराने ज़माने में कहा जाता था कि अबील शहर
से मशवरा लो तो बात बनेगी। 19देखें, हमारा
शहर इसराईल का सबसे ज़्यादा अमनपसंद और
वफ़ादार शहर है। आप एक ऐसा शहर तबाह करने
की कोशिश कर रहे हैं जो 'इसराईल की माँ'
कहलाता है। आप रब की मीरास को क्यों हड़प
कर लेना चाहते हैं?"

20योआब ने जवाब दिया, "अल्लाह न करे
कि मैं आपके शहर को हड़प या तबाह करूँ।
21मेरे आने का एक और मक़सद है। इफ़राईम
के पहाड़ी इलाक़े का एक आदमी दाऊद बादशाह
के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है जिसका नाम सबा
बिन बिक्री है। उसे ढूँड रहे हैं। उसे हमारे हवाले
करें तो हम शहर को छोड़कर चले जाएंगे।"

औरत ने कहा, "ठीक है, हम दीवार पर से
उसका सर आपके पास फेंक देंगे।" 22उसने
अबील-बैत-माका के बाशिंदों से बात की और
अपनी हिकमत से उन्हें क़ायल किया कि ऐसा
ही करना चाहिए। उन्होंने सबा का सर क़लम
करके योआब के पास फेंक दिया। तब योआब ने
नरसिंगा बजाकर शहर को छोड़ने का हुक्म दिया,
और तमाम फ़ौजी अपने अपने घर वापस चले
गए। योआब ख़ुद यरूशलम में दाऊद बादशाह के
पास लौट गया।

दाऊद के आला अफ़सर

23योआब पूरी इसराईली फ़ौज पर, बिना-
याह बिन यहोयदा शाही दस्ते करेती-ओ-
फ़लेती पर 24और अदोराम बेगारियों पर
मुक़र्रर था। यहूसफ़त बिन अख़ीलूद बाद-
शाह का मुशीरे-ख़ास था। 25सिवा मीरमुंशी था
और सदोक़ और अबियातर इमाम थे। 26ईरा
याईरी दाऊद का ज़ाती इमाम था।

साऊल के जुर्म का कफ़्फ़ारा

21 दाऊद की हुकूमत के दौरान काल पड़ गया जो तीन साल तक जारी रहा। जब दाऊद ने इसकी वजह दरियाफ़्त की तो रब ने जवाब दिया, "काल इसलिए ख़त्म नहीं हो रहा कि साऊल ने जिबऊनियों को क़त्ल किया था।"
2तब बादशाह ने जिबऊनियों को बुला लिया ताकि उनसे बात करे। असल में वह इसराईली नहीं बल्कि अमोरियों का बचा-खुचा हिस्सा थे। मुल्के-कनान पर क़ब्ज़ा करते वक़्त इसराईलियों ने क़सम खाकर वादा किया था कि हम आपको हलाक नहीं करेंगे। लेकिन साऊल ने इसराईल और यहूदाह के लिए जोश में आकर उन्हें हलाक करने की कोशिश की थी।

3दाऊद ने जिबऊनियों से पूछा, "मैं उस ज़्यादती का कफ़्फ़ारा किस तरह दे सकता हूँ जो आपसे हुई है? मैं आपके लिए क्या करूँ ताकि आप दुबारा उस ज़मीन को बरकत दें जो रब ने हमें मीरास में दी है?"
4उन्होंने जवाब दिया, "जो साऊल ने हमारे और हमारे ख़ानदानों के साथ किया है उसका इज़ाला सोने-चाँदी से नहीं किया जा सकता। यह भी मुनासिब नहीं कि हम इसके एवज़ किसी इसराईली को मार दें।" दाऊद ने सवाल किया, "तो फिर मैं आपके लिए क्या करूँ?"
5जिबऊनियों ने कहा, "साऊल ही ने हमें हलाक करने का मनसूबा बनाया था, वही हमें तबाह करना चाहता था ताकि हम इसराईल की किसी भी जगह क़ायम न रह सकें।
6इसलिए साऊल की औलाद में से सात मर्दों को हमारे हवाले कर दें। हम उन्हें रब के चुने हुए बादशाह साऊल के वतनी शहर जिबिया में रब के पहाड़ पर मौत के घाट उतारकर उसके हुज़ूर लटका दें।"

बादशाह ने जवाब दिया, "मैं उन्हें आपके हवाले कर दूँगा।"
7यूनतन का बेटा मिफ़ीबोसत साऊल का पोता तो था, लेकिन बादशाह ने उसे न छेड़ा, क्योंकि उसने रब की क़सम खाकर यूनतन से वादा किया था कि मैं आपकी औलाद को कभी नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा।
8चुनाँचे उसने साऊल की दाश्ता रिसफ़ा बिंत ऐयाह के दो बेटों अरमोनी और मिफ़ीबोसत को और इसके अलावा साऊल की बेटी मीरब के पाँच बेटों को चुन लिया। मीरब बरज़िल्ली महूलाती के बेटे अदरियेल की बीवी थी।
9इन सात आदमियों को दाऊद ने जिबऊनियों के हवाले कर दिया।

सातों आदमियों को मज़कूरा पहाड़ पर लाया गया। वहाँ जिबऊनियों ने उन्हें क़त्ल करके रब के हुज़ूर लटका दिया। वह सब एक ही दिन मर गए। उस वक़्त जौ की फ़सल की कटाई शुरू हुई थी।
10तब रिसफ़ा बिंत ऐयाह सातों लाशों के पास गई और पत्थर पर अपने लिए टाट का कपड़ा बिछाकर लाशों की हिफ़ाज़त करने लगी। दिन के वक़्त वह परिंदों को भगाती और रात के वक़्त जंगली जानवरों को लाशों से दूर रखती रही। वह बहार के मौसम में फ़सल की कटाई के पहले दिनों से लेकर उस वक़्त तक वहाँ ठहरी रही जब तक बारिश न हुई।

11जब दाऊद को मालूम हुआ कि साऊल की दाश्ता रिसफ़ा ने क्या किया है
12-14तो वह यबीस-जिलियाद के बाशिंदों के पास गया और उनसे साऊल और उसके बेटे यूनतन की हड्डियों को लेकर साऊल के बाप क़ीस की क़ब्र में दफ़नाया। (जब फ़िलिस्तियों ने जिलबुअ के पहाड़ी इलाक़े में इसराईलियों को शिकस्त दी थी तो उन्होंने साऊल और यूनतन की लाशों को बैत-शान के चौक में लटका दिया था। तब यबीस-जिलियाद के आदमी चोरी चोरी वहाँ आकर लाशों को अपने पास ले गए थे।) दाऊद ने जिबिया में अब तक लटकी सात लाशों को भी उतारकर ज़िला में क़ीस की क़ब्र में दफ़नाया। ज़िला बिनयमीन के क़बीले की आबादी है।

जब सब कुछ दाऊद के हुक्म के मुताबिक़ किया गया था तो रब ने मुल्क के लिए दुआएँ सुन लीं।

फ़िलिस्तियों से जंगें

15एक और बार फ़िलिस्तियों और इसराई-
लियों के दरमियान जंग छिड़ गई। दाऊद अपनी
फ़ौज समेत फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए
निकला। जब वह लड़ता लड़ता निढाल हो गया
था 16तो एक फ़िलिस्ती ने उस पर हमला
किया जिसका नाम इशबी-बनोब था। यह आदमी
देवक़ामत मर्द रफ़ा की नसल से था। उसके पास
नई तलवार और इतना लंबा नेज़ा था कि सिर्फ़
उस की पीतल की नोक का वज़न तक़रीबन
साढ़े 3 किलोग्राम था। 17लेकिन अबीशै बिन
ज़रूयाह दौड़कर दाऊद की मदद करने आया और
फ़िलिस्ती को मार डाला। इसके बाद दाऊद के
फ़ौजियों ने क़सम खाई, "आइंदा आप लड़ने के
लिए हमारे साथ नहीं निकलेंगे। ऐसा न हो कि
इसराईल का चराग़ बुझ जाए।"

18इसके बाद इसराईलियों को जूब के क़रीब
भी फ़िलिस्तियों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्बकी
हूसाती ने देवक़ामत म्रद रफ़ा की औलाद में से
एक आदमी को मार डाला जिसका नाम सफ़ था।

19जूब के क़रीब एक और लड़ाई छिड़ गई।
इसके दौरान बैत-लहम के इल्हनान बिन यारे-
उरजीम ने जाती जालूत को मौत के घाट उतार
दिया। जालूत का नेज़ा खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा
था। 20एक और दफ़ा जात के पास लड़ाई हुई।
फ़िलिस्तियों का एक फ़ौजी जो रफ़ा की नसल
का था बहुत लंबा था। उसके हाथों और पैरों की
छः छः उँगलियाँ यानी मिलकर 24 उँगलियाँ थीं।
21जब वह इसराईलियों का मज़ाक़ उड़ाने लगा
तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे
मार डाला। 22जात के यह देवक़ामत मर्द रफ़ा की
औलाद थे, और वह दाऊद और उसके फ़ौजियों
के हाथों हलाक हुए।

दाऊद का गीत

22 जिस दिन रब ने दाऊद को तमाम
दुश्मनों और साऊल के हाथ से बचाया
उस दिन बादशाह ने गीत गाया,

2"रब मेरी चट्टान, मेरा क़िला और मेरा
नजातदहिंदा है।

3मेरा ख़ुदा मेरी चट्टान है जिसमें मैं पनाह लेता
हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलंद
हिसार और मेरी पनाहगाह है। तू मेरा नजातदहिंदा
है जो मुझे ज़ुल्मो-तशद्दुद से बचाता है।

4मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तमजीद हो!
तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

5मौत की मौजों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के
सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।

6पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने
मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।

7जब मैं मुसीबत में फँस गया तो मैंने रब को
पुकारा। मैंने मदद के लिए अपने ख़ुदा से फ़रियाद
की तो उसने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़
सुनी, मेरी चीख़ें उसके कान तक पहुँच गईं।

8तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी,
आसमान की बुनियादें रब के ग़ज़ब के सामने
काँपने और झूलने लगीं।

9उस की नाक से धुआँ निकल आया, उसके
मुँह से भस्म करनेवाले शोले और दहकते कोयले
भड़क उठे।

10आसमान को झुकाकर वह नाज़िल हुआ।
जब उतर आया तो उसके पाँवों के नीचे अंधेरा ही
अंधेरा था।

11वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और
उड़कर हवा के परों पर मँडलाने लगा।

12उसने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह
बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की
तरह अपने इर्दगिर्द लगाए।

13उसके हुज़ूर की तेज़ रौशनी से शोलाज़न
कोयले फूट निकले।

14रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह
तआला की आवाज़ गूँज उठी।

15उसने अपने तीर चला दिए तो दुश्मन तित्तर-
बित्तर हो गए। उस की बिजली इधर-उधर गिरती
गई तो उनमें हलचल मच गई।
16रब ने डाँटा तो समुंदर की वादियाँ ज़ाहिर हुईं,
जब वह ग़ुस्से में गरजा तो उसके दम के झोंकों से
ज़मीन की बुनियादें नज़र आईं।

17बुलंदियों पर से अपना हाथ बढ़ाकर उसने
मुझे पकड़ लिया, गहरे पानी में से खींचकर मुझे
निकाल लाया।
18उसने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया,
उनसे जो मुझसे नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं
ग़ालिब न आ सका।
19जिस दिन मैं मुसीबत में फँस गया उस दिन
उन्होंने मुझ पर हमला किया, लेकिन रब मेरा
सहारा बना रहा।
20उसने मुझे तंग जगह से निकालकर छुटकारा
दिया, क्योंकि वह मुझसे ख़ुश था।

21रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र देता है। मेरे
हाथ साफ़ हैं, इसलिए वह मुझे बरकत देता है।
22क्योंकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं
बदी करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।
23उसके तमाम अहकाम मेरे सामने रहे हैं, मैं
उसके फ़रमानों से नहीं हटा।
24उसके सामने ही मैं बेइलज़ाम रहा, गुनाह
करने से बाज़ रहा हूँ।
25इसलिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र
दिया, क्योंकि उस की आँखों के सामने ही मैं
पाक-साफ़ साबित हुआ।

26ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उसके साथ तेरा
सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइलज़ाम है उसके
साथ तेरा सुलूक बेइलज़ाम है।
27जो पाक है उसके साथ तेरा सुलूक पाक है।
लेकिन जो कजरौ है उसके साथ तेरा सुलूक भी
कजरवी का है।
28तू पस्तहालों को नजात देता है, और तेरी
आँखें मग़रूरों पर लगी रहती हैं ताकि उन्हें पस्त
करें।

29ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ है, रब ही मेरे अंधेरे
को रौशन करता है।
30क्योंकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हमला
कर सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को फलाँग
सकता हूँ।

31अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान
ख़ालिस है। जो भी उसमें पनाह ले उस की वह
ढाल है।
32क्योंकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे
ख़ुदा के सिवा कौन चट्टान है?
33अल्लाह मुझे क़ुव्वत से कमरबस्ता करता,
वह मेरी राह को कामिल कर देता है।
34वह मेरे पाँवों को हिरन की-सी फुरती अता
करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलंदियों पर खड़ा
करता है।
35वह मेरे हाथों को जंग करने की तरबियत
देता है। अब मेरे बाज़ू पीतल की कमान को भी
तान लेते हैं।

36ऐ रब, तूने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श
दी है, तेरी नरमी ने मुझे बड़ा बना दिया है।
37तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है,
इसलिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।
38मैंने अपने दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके उन्हें
कुचल दिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म
न हो गए।
39मैंने उन्हें तबाह करके यों पाश पाश कर दिया
कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिरकर मेरे पाँवों तले
पड़े रहे।
40क्योंकि तूने मुझे जंग करने के लिए क़ुव्वत
से कमरबस्ता कर दिया, तूने मेरे मुख़ालिफ़ों को
मेरे सामने झुका दिया।

41तूने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया, और मैंने नफ़रत करनेवालों को तबाह कर दिया।
42वह मदद के लिए चीख़ते-चिल्लाते रहे, लेकिन बचानेवाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे, लेकिन उसने जवाब न दिया।
43मैंने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में उड़ा दिया। मैंने उन्हें गली में मिट्टी की तरह पाँवों तले रौंदकर रेज़ा रेज़ा कर दिया।

44तूने मुझे मेरी क़ौम के झगड़ों से बचाकर अक़वाम पर मेरी हुकूमत क़ायम रखी है। जिस क़ौम से मैं नावाक़िफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती है।
45परदेसी दबककर मेरी ख़ुशामद करते हैं। ज्योंही मैं बात करता हूँ तो वह मेरी सुनते हैं।
46वह हिम्मत हारकर काँपते हुए अपने क़िलों से निकल आते हैं।

47रब ज़िंदा है! मेरी चट्टान की तमजीद हो! मेरे ख़ुदा की ताज़ीम हो जो मेरी नजात की चट्टान है।
48वही ख़ुदा है जो मेरा इंतक़ाम लेता, अक़वाम को मेरे ताबे कर देता
49और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है। यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता, मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।

50ऐ रब, इसलिए मैं अक़वाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
51क्योंकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।”

दाऊद के आख़िरी अलफ़ाज़

23 दर्जे-ज़ैल दाऊद के आख़िरी अलफ़ाज़ हैं :

“दाऊद बिन यस्सी का फ़रमान जिसे अल्लाह ने सरफ़राज़ किया, जिसे याक़ूब के ख़ुदा ने मसह करके बादशाह बना दिया था, और जिसकी तारीफ़ इसराईल के गीत करते हैं,
2रब के रूह ने मेरी मारिफ़त बात की, उसका फ़रमान मेरी ज़बान पर था।
3इसराईल के ख़ुदा ने फ़रमाया, इसराईल की चट्टान मुझसे हमकलाम हुई, ‘जो इनसाफ़ से हुकूमत करता है, जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानकर हुक्मरानी करता है,
4वह सुबह की रौशनी की मानिंद है, उस तुलूए-आफ़ताब की मानिंद जब बादल छाए नहीं होते। जब उस की किरणें बारिश के बाद ज़मीन पर पड़ती हैं तो पौदे फूट निकलते हैं।’
5यक़ीनन मेरा घराना मज़बूती से अल्लाह के साथ है, क्योंकि उसने मेरे साथ अबदी अहद बाँधा है, ऐसा अहद जिसका हर पहलू मुनज़्ज़म और महफ़ूज़ है। वह मेरी नजात तकमील तक पहुँचाएगा और मेरी हर आरज़ू पूरी करेगा।
6लेकिन बेदीन ख़ारदार झाड़ियों की मानिंद हैं जो हवा के झोंकों से इधर-उधर बिखर गई हैं। काँटों की वजह से कोई भी हाथ नहीं लगाता।
7लोग उन्हें लोहे के औज़ार या नेज़े के दस्ते से जमा करके वहीं के वहीं जला देते हैं।”

दाऊद के सूरमा

8दर्जे-ज़ैल दाऊद के सूरमाओं की फ़ह-
रिस्त है। जो तीन अफ़सर योआब के भाई
अबीशै के ऐन बाद आते थे उनमें योशेब-बशेबत
तह्‌कमूनी पहले नंबर पर आता था। एक बार
उसने अपने नेज़े से 800 आदमियों को मार
दिया।
9इन तीन अफ़सरों में से दूसरी जगह पर
इलियज़र बिन दोदो बिन अख़ूही आता था। एक
जंग में जब उन्होंने फ़िलिस्तियों को चैलेंज दिया
था और इसराईली बाद में पीछे हट गए तो
इलियज़र दाऊद के साथ 10फ़िलिस्तियों का
मुक़ाबला करता रहा। उस दिन वह फ़िलिस्तियों

को मारते मारते इतना थक गया कि आख़िरकार तलवार उठा न सका बल्कि हाथ तलवार के साथ जम गया। रब ने उस की मारिफ़त बड़ी फ़तह बख़्शी। बाक़ी दस्ते सिर्फ़ लाशों को लूटने के लिए लौट आए।

11उसके बाद तीसरी जगह पर सम्मा बिन
अजी-हरारी आता था। एक मरतबा फ़िलिस्ती
लही के क़रीब मसूर के खेत में इसराईल के
ख़िलाफ़ लड़ रहे थे। इसराईली फ़ौजी उनके
सामने भागने लगे, 12लेकिन सम्मा खेत के
दरमियान तक बढ़ गया और वहाँ लड़ते लड़ते
फ़िलिस्तियों को शिकस्त दी। रब ने उस की
मारिफ़त बड़ी फ़तह बख़्शी।

13-14एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम
के ग़ार के पहाड़ी क़िले में था जबकि फ़िलिस्ती
फ़ौज ने वादीए-रफ़ाईम में अपनी लशकरगाह
लगाई थी। उनके दस्तों ने बैत-लहम पर भी
क़ब्ज़ा कर लिया था। फ़सल का मौसम था।
दाऊद के तीस आला अफ़सरों में से तीन उससे
मिलने आए। 15दाऊद को शदीद प्यास लगी,
और वह कहने लगा, “कौन मेरे लिए बैत-लहम
के दरवाज़े पर के हौज़ से कुछ पानी लाएगा?”
16यह सुनकर तीनों अफ़सर फ़िलिस्तियों की
लशकरगाह पर हमला करके उसमें घुस गए और
लड़ते लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए।
उससे कुछ पानी भरकर वह उसे दाऊद के पास
ले आए। लेकिन उसने पीने से इनकार कर दिया
बल्कि उसे क़ुरबानी के तौर पर उंडेलकर रब को
पेश किया 17और बोला, “रब न करे कि मैं यह
पानी पियूँ। अगर ऐसा करता तो उन आदमियों
का ख़ून पीता जो अपनी जान पर खेलकर पानी
लाए हैं।” इसलिए वह उसे पीना नहीं चाहता था।
यह इन तीन सूरमाओं के ज़बरदस्त कामों की एक
मिसाल है।

18-19योआब बिन ज़रूयाह का भाई अबीशै
मज़कूरा तीन सूरमाओं पर मुक़र्रर था। एक दफ़ा
उसने अपने नेज़े से 300 आदमियों को मार
डाला। तीनों की निसबत उस की दुगनी इज़्ज़त
की जाती थी, लेकिन वह ख़ुद उनमें गिना नहीं
जाता था।

20बिनायाह बिन यहोयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी
था। वह क़बज़ियेल का रहनेवाला था, और उसने
बहुत दफ़ा अपनी मरदानगी दिखाई। मोआब के
दो बड़े सूरमा उसके हाथों हलाक हुए। एक बार
जब बहुत बर्फ़ पड़ गई तो उसने एक हौज़ में
उतरकर एक शेरबबर को मार डाला जो उसमें गिर
गया था। 21एक और मौक़े पर उसका वास्ता एक
देवक़ामत मिसरी से पड़ा। मिसरी के हाथ में नेज़ा
था जबकि उसके पास सिर्फ़ लाठी थी। लेकिन
बिनायाह ने उस पर हमला करके उसके हाथ से
नेज़ा छीन लिया और उसे उसके अपने हथियार से
मार डाला। 22ऐसी बहादुरी दिखाने की बिना पर
बिनायाह बिन यहोयदा मज़कूरा तीन आदमियों
के बराबर मशहूर हुआ। 23तीस अफ़सरों के दीगर
मर्दों की निसबत उस की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती
थी, लेकिन वह मज़कूरा तीन आदमियों में गिना
नहीं जाता था। दाऊद ने उसे अपने मुहाफ़िज़ों पर
मुक़र्रर किया।

24ज़ैल के आदमी बादशाह के 30 सूर-
माओं में शामिल थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम का
इल्हनान बिन दोदो, 25सम्मा हरोदी, इलीक़ा
हरोदी, 26ख़लिस फ़लती, तक़ुअ का ईरा
बिन अक़्क़ीस, 27अनतोत का अबियज़र,
मबून्नी हूसाती, 28ज़लमोन अख़ूही, महरी
नतूफ़ाती, 29हलिब बिन बाना नतूफ़ाती,
बिनयमीनी शहर जिबिया का इत्ती बिन रीबी,
30बिनायाह फ़िरआतोनी, नहले-जास का
हिद्दी, 31अबियलबोन अरबाती, अज़्मावत
बरहूमी, 32-33इलियहबा सालबूनी, बनी
यसीन, यूनतन बिन सम्मा हरारी, अख़ियाम
बिन सरार-हरारी, 34इलीफ़लत बिन अहस्बी
माकाती, इलियाम बिन अख़ीतुफ़ल जिलो-
नी, 35हसरो करमिली, फ़ारी अरबी, 36ज़ो-
बाह का इजाल बिन नातन, बानी जादी,
37सिलक़ अम्मोनी, योआब बिन ज़रूयाह का

सिलाहबरदार नहरी बैरोती, 38ईरा इतरी, जरीब इतरी 39और ऊरियाह हित्ती। आदमियों की कुल तादाद 37 थी।

दाऊद की मर्दुमशुमारी

24 एक बार फिर रब को इसराईल पर ग़ुस्सा आया, और उसने दाऊद को उन्हें मुसीबत में डालने पर उकसाकर उसके ज़हन में मर्दुमशुमारी करने का ख़याल डाल दिया।

2चुनाँचे दाऊद ने फ़ौज के कमाँडर योआब को हुक्म दिया, "दान से लेकर बैर-सबा तक इसराईल के तमाम क़बीलों में से गुज़रते हुए जंग करने के क़ाबिल मर्दों को गिन लें ताकि मालूम हो जाए कि उनकी कुल तादाद क्या है।"
3लेकिन योआब ने एतराज़ किया, "ऐ बादशाह मेरे आक़ा, काश रब आपका ख़ुदा आपके देखते देखते फ़ौजियों की तादाद सौ गुना बढ़ाए। लेकिन मेरे आक़ा और बादशाह उनकी मर्दुमशुमारी क्यों करना चाहते हैं?" 4लेकिन बादशाह योआब और फ़ौज के बड़े अफ़सरों के एतराज़ात के बावुजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनाँचे वह दरबार से रवाना होकर इसराईल के मर्दों की फ़हरिस्त तैयार करने लगे।

5दरियाए-यरदन को उबूर करके उन्होंने अरोईर और वादीए-अरनोन के बीच के शहर में शुरू किया। वहाँ से वह जद और याज़ेर से होकर
6जिलियाद और हित्तियों के मुल्क के शहर क़ादिस तक पहुँचे। फिर आगे बढ़ते बढ़ते वह दान और सैदा के गिर्दो-नवाह के इलाक़े 7और क़िलाबंद शहर सूर और हिव्वियों और कनानियों के तमाम शहरों तक पहुँच गए। आख़िरकार उन्होंने यहूदाह के जुनूब की मर्दुमशुमारी बैर-सबा तक की।

8यों पूरे मुल्क में सफ़र करते करते वह 9 महीनों और 20 दिनों के बाद यरूशलम वापस आए। 9योआब ने बादशाह को मर्दुमशुमारी की पूरी रिपोर्ट पेश की। इसराईल में तलवार चलाने के क़ाबिल 8 लाख अफ़राद थे जबकि यहूदाह के 5 लाख मर्द थे।

10लेकिन अब दाऊद का ज़मीर उसको मलामत करने लगा। उसने रब से दुआ की, "मुझसे संगीन गुनाह सरज़द हुआ है। ऐ रब, अब अपने ख़ादिम का क़ुसूर मुआफ़ कर। मुझसे बड़ी हमाक़त हुई है।"

11अगले दिन जब दाऊद सुबह के वक़्त उठा तो उसके ग़ैबबीन जाद नबी को रब की तरफ़ से पैग़ाम मिल गया, 12"दाऊद के पास जाकर उसे बता देना, 'रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश करता है। इनमें से एक चुन ले'।" 13जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का पैग़ाम सुना दिया। उसने सवाल किया, "आप किस सज़ा को तरजीह देते हैं? अपने मुल्क में सात साल के दौरान काल? या यह कि आपके दुश्मन आपको भगाकर तीन माह तक आपका ताक़्क़ुब करते रहें? या यह कि आपके मुल्क में तीन दिन तक वबा फैल जाए? ध्यान से इसके बारे में सोचें ताकि मैं उसे आपका जवाब पहुँचा सकूँ जिसने मुझे भेजा है।"

14दाऊद ने जवाब दिया, "हाय, मैं क्या कहूँ? मैं बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथ में पड़ने की निसबत बेहतर है कि मैं रब ही के हाथ में पड़ जाऊँ, क्योंकि उसका रहम अज़ीम है।"

15तब रब ने इसराईल में वबा फैलने दी। वह उसी सुबह शुरू हुई और तीन दिन तक लोगों को मौत के घाट उतारती गई। शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक कुल 70,000 अफ़राद हलाक हुए। 16लेकिन जब वबा का फ़रिश्ता चलते चलते यरूशलम तक पहुँच गया और उस पर हाथ उठाने लगा तो रब ने लोगों की मुसीबत को देखकर तरस खाया और तबाह करनेवाले फ़रिश्ते को हुक्म दिया, "बस कर! अब बाज़ आ।" उस वक़्त रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था।

17जब दाऊद ने फ़रिश्ते को लोगों को मारते हुए देखा तो उसने रब से इलतमास की, "मैं ही ने गुनाह किया है, यह मेरा ही क़ुसूर है। इन भेड़ों से

क्या ग़लती हुई है? बराहे-करम इनको छोड़कर
मुझे और मेरे ख़ानदान को सज़ा दे।”

18उसी दिन जाद दाऊद के पास आया और
उससे कहा, “अरौनाह यबूसी की गाहने की जगह
के पास जाकर उस पर रब की क़ुरबानगाह बना
ले।” 19चुनाँचे दाऊद चढ़कर गाहने की जगह के
पास आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त
फ़रमाया था।

20जब अरौनाह ने बादशाह और उसके
दरबारियों को अपनी तरफ़ चढ़ता हुआ देखा तो
वह निकलकर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक
गया। 21उसने पूछा, “मेरे आक़ा और बादशाह
मेरे पास क्यों आ गए?” दाऊद ने जवाब दिया,
“मैं आपकी गाहने की जगह ख़रीदना चाहता
हूँ ताकि रब के लिए क़ुरबानगाह तामीर करूँ।
क्योंकि यह करने से वबा रुक जाएगी।”

22अरौनाह ने कहा, “मेरे आक़ा और बादशाह,
जो कुछ आपको अच्छा लगे उसे लेकर चढ़ाएँ।
यह बैल भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए हाज़िर
हैं। और अनाज को गाहने और बैलों को जोतने
का सामान क़ुरबानगाह पर रखकर जला दें।
23बादशाह सलामत, मैं ख़ुशी से आपको यह सब
कुछ दे देता हूँ। दुआ है कि आप रब अपने ख़ुदा
को पसंद आएँ।”

24लेकिन बादशाह ने इनकार किया, “नहीं,
मैं ज़रूर हर चीज़ की पूरी क़ीमत अदा करूँगा।
मैं रब अपने ख़ुदा को ऐसी कोई भस्म होनेवाली
क़ुरबानी पेश नहीं करूँगा जो मुझे मुफ़्त में मिल
जाए।”

चुनाँचे दाऊद ने बैलों समेत गाहने की जगह
चाँदी के 50 सिक्कों के एवज़ ख़रीद ली।
25उसने वहाँ रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह तामीर
करके उस पर भस्म होनेवाली और सलामती की
क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। तब रब ने मुल्क के लिए दुआ
सुनकर वबा को रोक दिया।

1 सलातीन

अदूनियाह की साज़िश

1 दाऊद बादशाह बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसे
हमेशा सर्दी लगती थी, और उस पर मज़ीद
बिस्तर डालने से कोई फ़ायदा न होता था। 2यह
देखकर मुलाज़िमों ने बादशाह से कहा, “अगर
इजाज़त हो तो हम बादशाह के लिए एक नौजवान
कुँवारी ढूँड लें जो आपकी ख़िदमत में हाज़िर
रहे और आपकी देख-भाल करे। लड़की आपके
साथ लेटकर आपको गरम रखे।” 3चुनाँचे वह पूरे
मुल्क में किसी ख़ूबसूरत लड़की की तलाश करने
लगे। ढूँडते ढूँडते अबीशाग शूनीमी को चुनकर
बादशाह के पास लाया गया। 4अब से वह उस
की ख़िदमत में हाज़िर होती और उस की देख-
भाल करती रही। लड़की निहायत ख़ूबसूरत थी,
लेकिन बादशाह ने कभी उससे सोहबत न की।

5-6उन दिनों में अदूनियाह बादशाह बनने की
साज़िश करने लगा। वह दाऊद की बीवी हज्जीत
का बेटा था। यों वह अबीसलूम का सौतेला भाई
और उसके मरने पर दाऊद का सबसे बड़ा बेटा
था। शक्लो-सूरत के लिहाज़ से लोग उस की बड़ी
तारीफ़ किया करते थे, और बचपन से उसके बाप
ने उसे कभी नहीं डाँटा था कि तू क्या कर रहा
है। अब अदूनियाह अपने आपको लोगों के सामने
पेश करके एलान करने लगा, “मैं ही बादशाह
बनूँगा।” इस मक़सद के तहत उसने अपने लिए
रथ और घोड़े ख़रीदकर 50 आदमियों को रख
लिया ताकि वह जहाँ भी जाए उसके आगे आगे
चलते रहें। 7उसने योआब बिन ज़रूयाह और
अबियातर इमाम से बात की तो वह उसके साथी
बनकर उस की हिमायत करने के लिए तैयार हुए।
8लेकिन सदोक़ इमाम, बिनायाह बिन यहोयदा
और नातन नबी उसके साथ नहीं थे, न सिमई,
रेई या दाऊद के मुहाफ़िज़।

9एक दिन अदूनियाह ने ऐन-राजिल चश्मे के
क़रीब की चट्टान ज़ुहलत के पास ज़ियाफ़त की।
काफ़ी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और मोटे-ताज़े
बछड़े ज़बह किए गए। अदूनियाह ने बादशाह के
तमाम बेटों और यहूदाह के तमाम शाही अफ़सरों
को दावत दी थी। 10कुछ लोगों को जान-बूझकर
इसमें शामिल नहीं किया गया था। उनमें उसका
भाई सुलेमान, नातन नबी, बिनायाह और दाऊद
के मुहाफ़िज़ शामिल थे।

दाऊद सुलेमान को बादशाह क़रार देता है

11तब नातन सुलेमान की माँ बत-सबा से मिला
और बोला, “क्या यह ख़बर आप तक नहीं पहुँची
कि हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने अपने आपको
बादशाह बना लिया है? और हमारे आक़ा दाऊद
को इसका इल्म तक नहीं! 12आपकी और
आपके बेटे सुलेमान की ज़िंदगी बड़े ख़तरे में
है। इसलिए लाज़िम है कि आप मेरे मशवरे पर
फ़ौरन अमल करें। 13दाऊद बादशाह के पास
जाकर उसे बता देना, ‘ऐ मेरे आक़ा और बादशाह,
क्या आपने क़सम खाकर मुझसे वादा नहीं किया

था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद तख़्तनशीन
होगा? तो फिर अदूनियाह क्यों बादशाह बन गया
है?' 14आपकी बादशाह से गुफ़्तगू अभी ख़त्म
नहीं होगी कि मैं दाख़िल होकर आपकी बात की
तसदीक़ करूँगा।"

15बत-सबा फ़ौरन बादशाह के पास गई जो
सोने के कमरे में लेटा हुआ था। उस वक़्त तो वह
बहुत उम्ररसीदा हो चुका था, और अबीशाग उस
की देख-भाल कर रही थी। 16बत-सबा कमरे में
दाख़िल होकर बादशाह के सामने मुँह के बल झुक
गई। दाऊद ने पूछा, "क्या बात है?" 17बत-सबा
ने कहा, "मेरे आक़ा, आपने तो रब अपने ख़ुदा की
क़सम खाकर मुझसे वादा किया था कि तेरा बेटा
सुलेमान मेरे बाद तख़्तनशीन होगा। 18लेकिन
अब अदूनियाह बादशाह बन बैठा है और मेरे
आक़ा और बादशाह को इसका इल्म तक नहीं।
19उसने ज़ियाफ़त के लिए बहुत-से गाय-बैल,
मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-बकरियाँ ज़बह करके
तमाम शहज़ादों को दावत दी है। अबियातर इमाम
और फ़ौज का कमाँडर योआब भी इनमें शामिल
हैं, लेकिन आपके ख़ादिम सुलेमान को दावत नहीं
मिली। 20ऐ बादशाह मेरे आक़ा, इस वक़्त तमाम
इसराईल की आँखें आप पर लगी हैं। सब आपसे
यह जानने के लिए तड़पते हैं कि आपके बाद कौन
तख़्तनशीन होगा। 21अगर आपने जल्द ही क़दम
न उठाया तो आपके कूच कर जाने के फ़ौरन बाद
मैं और मेरा बेटा अदूनियाह का निशाना बनकर
मुजरिम ठहरेंगे।"

22-23बत-सबा अभी बादशाह से बात कर
ही रही थी कि दाऊद को इत्तला दी गई कि
नातन नबी आपसे मिलने आया है। नबी कमरे
में दाख़िल होकर बादशाह के सामने औंधे मुँह
झुक गया। 24फिर उसने कहा, "मेरे आक़ा,
लगता है कि आप इस हक़ में हैं कि अदूनियाह
आपके बाद तख़्तनशीन हो। 25क्योंकि आज
उसने ऐन-राजिल जाकर बहुत-से गाय-बैल, मोटे-
ताज़े बछड़े और भेड़-बकरियों को ज़बह किया
है। ज़ियाफ़त के लिए उसने तमाम शहज़ादों,
तमाम फ़ौजी अफ़सरों और अबियातर इमाम को
दावत दी है। इस वक़्त वह उसके साथ खाना
खा खाकर और मै पी पीकर नारा लगा रहे हैं,
'अदूनियाह बादशाह ज़िंदाबाद!' 26कुछ लोगों
को जान-बूझकर दावत नहीं दी। उनमें मैं आपका
ख़ादिम, सदोक़ इमाम, बिनायाह बिन यहोयदा
और आपका ख़ादिम सुलेमान भी शामिल हैं।
27मेरे आक़ा, क्या आपने वाक़ई इसका हुक्म
दिया है? क्या आपने अपने ख़ादिमों को इत्तला
दिए बग़ैर फ़ैसला किया है कि यह शख़्स बादशाह
बनेगा?"

28जवाब में दाऊद ने कहा, "बत-सबा को
बुलाएँ!" वह वापस आई और बादशाह के सामने
खड़ी हो गई। 29बादशाह बोला, "रब की हयात
की क़सम जिसने फ़िद्या देकर मुझे हर मुसीबत
से बचाया है, 30आपका बेटा सुलेमान मेरे बाद
बादशाह होगा बल्कि आज ही मेरे तख़्त पर बैठ
जाएगा। हाँ, आज ही मैं वह वादा पूरा करूँगा
जो मैंने रब इसराईल के ख़ुदा की क़सम खाकर
आपसे किया था।" 31यह सुनकर बत-सबा औंधे
मुँह झुक गई और कहा, "मेरा मालिक दाऊद
बादशाह ज़िंदाबाद!"

32फिर दाऊद ने हुक्म दिया, "सदोक़ इमाम,
नातन नबी और बिनायाह बिन यहोयदा को बुला
लाएँ।" तीनों आए 33तो बादशाह उनसे मुख़ातिब
हुआ, "मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ख़च्चर पर
बिठाएँ। फिर मेरे अफ़सरों को साथ लेकर उसे
जैहून चश्मे तक पहुँचा दें। 34वहाँ सदोक़ और
नातन उसे मसह करके इसराईल का बादशाह
बना दें। नरसिंगे को बजा बजाकर नारा लगाना,
'सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद!' 35इसके बाद मेरे
बेटे के साथ यहाँ वापस आ जाना। वह महल में
दाख़िल होकर मेरे तख़्त पर बैठ जाए और मेरी
जगह हुकूमत करे, क्योंकि मैंने उसे इसराईल और
यहूदाह का हुक्मरान मुक़र्रर किया है।"

36बिनायाह बिन यहोयदा ने जवाब दिया,
"आमीन, ऐसा ही हो! रब मेरे आक़ा का ख़ुदा
इस फ़ैसले पर अपनी बरकत दे। 37और जिस

तरह रब आपके साथ रहा उसी तरह वह सुलेमान
के साथ भी हो, बल्कि वह उसके तख़्त को
आपके तख़्त से कहीं ज़्यादा सरबुलंद करे!”
38फिर सदोक़ इमाम, नातन नबी, बिनायाह बिन
यहोयदा और बादशाह के मुहाफ़िज़ करेतियों और
फ़लेतियों ने सुलेमान को बादशाह के ख़च्चर
पर बिठाकर उसे जैहून चश्मे तक पहुँचा दिया।
39सदोक़ के पास तेल से भरा मेंढे का वह सींग
था जो मुक़द्दस ख़ैमे में पड़ा रहता था। अब
उसने यह तेल लेकर सुलेमान को मसह किया।
फिर नरसिंगा बजाया गया और लोग मिलकर
नारा लगाने लगे, “सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद!
सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद!” 40तमाम लोग
बाँसरी बजाते और ख़ुशी मनाते हुए सुलेमान के
पीछे चलने लगे। जब वह दुबारा यरूशलम में
दाख़िल हुआ तो इतना शोर था कि ज़मीन लरज़
उठी।

अदूनियाह की शिकस्त

41लोगों की यह आवाज़ें अदूनियाह और उसके
मेहमानों तक भी पहुँच गईं। थोड़ी देर पहले वह
खाने से फ़ारिग़ हुए थे। नरसिंगे की आवाज़
सुनकर योआब चौंक उठा और पूछा, “यह क्या
है? शहर से इतना शोर क्यों सुनाई दे रहा है?”
42वह अभी यह बात कर ही रहा था कि अबियातर
का बेटा यूनतन पहुँच गया। योआब बोला, “हमारे
पास आएँ। आप जैसे लायक़ आदमी अच्छी ख़बर
लेकर आ रहे होंगे।”

43यूनतन ने जवाब दिया, “अफ़सोस, ऐसा
नहीं है। हमारे आक़ा दाऊद बादशाह ने सुलेमान
को बादशाह बना दिया है। 44उसने उसे सदोक़
इमाम, नातन नबी, बिनायाह बिन यहोयदा और
बादशाह के मुहाफ़िज़ करेतियों और फ़लेतियों के
साथ जैहून चश्मे के पास भेज दिया है। सुलेमान
बादशाह के ख़च्चर पर सवार था। 45जैहून चश्मे
के पास सदोक़ इमाम और नातन नबी ने उसे
मसह करके बादशाह बना दिया। फिर वह ख़ुशी
मनाते हुए शहर में वापस चले गए। पूरे शहर में
हलचल मच गई। यही वह शोर है जो आपको
सुनाई दे रहा है। 46अब सुलेमान तख़्त पर बैठ
चुका है, 47और दरबारी हमारे आक़ा दाऊद
बादशाह को मुबारकबाद देने के लिए उसके पास
पहुँच गए हैं। वह कह रहे हैं, ‘आपका ख़ुदा
करे कि सुलेमान का नाम आपके नाम से भी
ज़्यादा मशहूर हो जाए। उसका तख़्त आपके तख़्त
से कहीं ज़्यादा सरबुलंद हो।’ बादशाह ने अपने
बिस्तर पर झुककर अल्लाह की परस्तिश की
48और कहा, ‘रब इसराईल के ख़ुदा की तमजीद
हो जिसने मेरे बेटों में से एक को मेरी जगह तख़्त
पर बिठा दिया है। उसका शुक्र है कि मैं अपनी
आँखों से यह देख सका’।”

49यूनतन के मुँह से यह ख़बर सुनकर
अदूनियाह के तमाम मेहमान घबरा गए। सब
उठकर चारों तरफ़ मुंतशिर हो गए। 50अदूनियाह
सुलेमान से ख़ौफ़ खाकर मुक़द्दस ख़ैमे के पास
गया और क़ुरबानगाह के सींगों से लिपट गया।
51किसी ने सुलेमान के पास जाकर उसे इत्तला
दी, “अदूनियाह को सुलेमान बादशाह से ख़ौफ़
है, इसलिए वह क़ुरबानगाह के सींगों से लिपटे
हुए कह रहा है, ‘सुलेमान बादशाह पहले क़सम
खाए कि वह मुझे मौत के घाट नहीं उतारेगा’।”
52सुलेमान ने वादा किया, “अगर वह लायक़
साबित हो तो उसका एक बाल भी बीका नहीं
होगा। लेकिन जब भी उसमें बदी पाई जाए वह
ज़रूर मरेगा।”

53सुलेमान ने अपने लोगों को अदूनियाह के
पास भेज दिया ताकि वह उसे बादशाह के
पास पहुँचाएँ। अदूनियाह आया और सुलेमान
के सामने औंधे मुँह झुक गया। सुलेमान बोला,
“अपने घर चले जाओ!”

दाऊद की आख़िरी हिदायात

2 जब दाऊद को महसूस हुआ कि कूच कर
जाने का वक़्त क़रीब है तो उसने अपने
बेटे सुलेमान को हिदायत की, 2“अब मैं वहाँ जा
रहा हूँ जहाँ दुनिया के हर शख़्स को जाना होता

है। चुनाँचे मज़बूत हों और मरदानगी दिखाएँ।
3जो कुछ रब आपका ख़ुदा आपसे चाहता है वह
करें और उस की राहों पर चलते रहें। अल्लाह
की शरीअत में दर्ज हर हुक्म और हिदायत पर
पूरे तौर पर अमल करें। फिर जो कुछ भी करेंगे
और जहाँ भी जाएंगे आपको कामयाबी नसीब
होगी। 4फिर रब मेरे साथ अपना वादा पूरा करेगा।
क्योंकि उसने फ़रमाया है, 'अगर तेरी औलाद
अपने चाल-चलन पर ध्यान देकर पूरे दिलो-जान
से मेरी वफ़ादार रहे तो इसराईल पर उस की
हुकूमत हमेशा तक क़ायम रहेगी।'

5दो एक और बातें भी हैं। आपको ख़ूब मालूम
है कि योआब बिन ज़रूयाह ने मेरे साथ कैसा
सुलूक किया है। इसराईल के दो कमाँडरों अबिनैर
बिन नैर और अमासा बिन यतर को उसने क़त्ल
किया। जब जंग नहीं थी उसने जंग का ख़ून
बहाकर अपनी पेटी और जूतों को बेक़ुसूर ख़ून
से आलूदा कर लिया है। 6उसके साथ वह कुछ
करें जो आपको मुनासिब लगे। योआब बूढ़ा
तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न
मरे। 7ताहम बरज़िल्ली जिलियादी के बेटों पर
मेहरबानी करें। वह आपकी मेज़ के मुस्तक़िल
मेहमान रहें, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ भी ऐसा
ही सुलूक किया जब मैंने आपके भाई अबीसलूम
की वजह से यरूशलम से हिजरत की। 8बहूरीम
के बिनयमीनी सिमई बिन जीरा पर भी ध्यान दें।
जिस दिन मैं हिजरत करते हुए महनायम से गुज़र
रहा था तो उसने मुझ पर लानतें भेजीं। लेकिन
मेरी वापसी पर वह दरियाए-यरदन पर मुझसे
मिलने आया और मैंने रब की क़सम खाकर उससे
वादा किया कि उसे मौत के घाट नहीं उतारूँगा।
9लेकिन आप उसका जुर्म नज़रंदाज़ न करें बल्कि
उस की मुनासिब सज़ा दें। आप दानिशमंद हैं,
इसलिए आप ज़रूर सज़ा देने का कोई न कोई
तरीक़ा ढूँड निकालेंगे। वह बूढ़ा तो है, लेकिन
ध्यान दें कि वह तबई मौत न मरे।"

10फिर दाऊद मरकर अपने बापदादा से जा
मिला। उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया
गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। 11वह
कुल 40 साल तक इसराईल का बादशाह रहा,
सात साल हबरून में और 33 साल यरूशलम में।
12सुलेमान अपने बाप दाऊद के बाद तख़्तनशीन
हुआ। उस की हुकूमत मज़बूती से क़ायम हुई।

अदूनियाह की मौत

13एक दिन दाऊद की बीवी हज्जीत का बेटा
अदूनियाह सुलेमान की माँ बत-सबा के पास
आया। बत-सबा ने पूछा, "क्या आप अमनपसंद
इरादा रखकर आए हैं?" अदूनियाह बोला, "जी,
14बल्कि मेरी आपसे गुज़ारिश है।"

बत-सबा ने जवाब दिया, "तो फिर बताएँ!"
15अदूनियाह ने कहा, "आप तो जानती हैं कि
असल में बादशाह बनने का हक़ मेरा था। और
यह तमाम इसराईल की तवक़्क़ो भी थी। लेकिन
अब तो हालात बदल गए हैं। मेरा भाई बादशाह
बन गया है, क्योंकि यही रब की मरज़ी थी। 16अब
मेरी आपसे दरख़ास्त है। इससे इनकार न करें।"
बत-सबा बोली, "बताएँ।" 17अदूनियाह ने कहा,
"मैं अबीशाग शूनीमी से शादी करना चाहता
हूँ। बराहे-करम सुलेमान बादशाह के सामने मेरी
सिफ़ारिश करें ताकि बात बन जाए। अगर आप
बात करें तो वह इनकार नहीं करेगा।" 18बत-
सबा राज़ी हुई, "चलें, ठीक है। मैं आपका यह
मामला बादशाह को पेश करूँगी।"

19चुनाँचे बत-सबा सुलेमान बादशाह के पास
गई ताकि उसे अदूनियाह का मामला पेश करे।
जब दरबार में पहुँची तो बादशाह उठकर उससे
मिलने आया और उसके सामने झुक गया। फिर
वह दुबारा तख़्त पर बैठ गया और हुक्म दिया
कि माँ के लिए भी तख़्त रखा जाए। बादशाह
के दहने हाथ बैठकर 20उसने अपना मामला
पेश किया, "मेरी आपसे एक छोटी-सी गुज़ारिश
है। इससे इनकार न करें।" बादशाह ने जवाब
दिया, "अम्मी, बताएँ अपनी बात, मैं इनकार
नहीं करूँगा।" 21बत-सबा बोली, "अपने भाई

अदूनियाह को अबीशाग शूनीमी से शादी करने दें।”

22यह सुनकर सुलेमान भड़क उठा, “अदू-
नियाह की अबीशाग से शादी!! यह कैसी बात है जो आप पेश कर रही हैं? अगर आप यह चाहती हैं तो क्यों न बराहे-रास्त तक़ाज़ा करें कि अदूनियाह मेरी जगह तख़्त पर बैठ जाए। आख़िर वह मेरा बड़ा भाई है, और अबियातर इमाम और योआब
बिन ज़रूयाह भी उसका साथ दे रहे हैं।” 23फिर
सुलेमान बादशाह ने रब की क़सम खाकर कहा, “इस दरख़ास्त से अदूनियाह ने अपनी मौत पर मुहर लगाई है। अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर
मैं उसे मौत के घाट न उतारूँ। 24रब की क़सम
जिसने मेरी तसदीक़ करके मुझे मेरे बाप दाऊद के तख़्त पर बिठा दिया और अपने वादे के मुताबिक़ मेरे लिए घर तामीर किया है, अदूनियाह को आज ही मरना है!”

25फिर सुलेमान बादशाह ने बिनायाह बिन
यहोयदा को हुक्म दिया कि वह अदूनियाह को मौत के घाट उतार दे। चुनाँचे वह निकला और उसे मार डाला।

योआब और अबियातर की सज़ा

26अबियातर इमाम से बादशाह ने कहा, “अब
यहाँ से चले जाएँ। अनतोत में अपने घर में रहें और वहाँ अपनी ज़मीनें सँभालें। गो आप सज़ाए-मौत के लायक़ हैं तो भी मैं इस वक़्त आपको नहीं मार दूँगा, क्योंकि आप मेरे बाप दाऊद के सामने रब क़ादिरे-मुतलक़ के अहद का संदूक़ उठाए हर जगह उनके साथ गए। आप मेरे बाप के तमाम तकलीफ़देह और मुश्किलतरीन लमहात में शरीक
रहे हैं।” 27यह कहकर सुलेमान ने अबियातर का
रब के हुज़ूर इमाम की ख़िदमत सरंजाम देने का हक़ मनसूख़ कर दिया। यों रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो उसने सैला में एली के घराने के बारे में की थी।

28योआब को जल्द ही पता चला कि
अदूनियाह और अबियातर से क्या कुछ हुआ है। वह अबीसलूम की साज़िशों में तो शरीक नहीं हुआ था लेकिन बाद में अदूनियाह का साथी बन गया था। इसलिए अब वह भागकर रब के मुक़द्दस ख़ैमे में दाख़िल हुआ और क़ुरबानगाह के सींगों को
पकड़ लिया। 29सुलेमान बादशाह को इत्तला दी
गई, “योआब भागकर रब के मुक़द्दस ख़ैमे में गया है। अब वह वहाँ क़ुरबानगाह के पास खड़ा है।” यह सुनकर सुलेमान ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया, “जाओ, योआब को मार दो!”

30बिनायाह रब के ख़ैमे में जाकर योआब से
मुख़ातिब हुआ, “बादशाह फ़रमाता है कि ख़ैमे से निकल आओ!” लेकिन योआब ने जवाब दिया, “नहीं, अगर मरना है तो यहीं मरूँगा।” बिनायाह बादशाह के पास वापस आया और उसे योआब
का जवाब सुनाया। 31तब बादशाह ने हुक्म दिया,
“चलो, उस की मरज़ी! उसे वहीं मारकर दफ़न कर दो ताकि मैं और मेरे बाप का घराना उन क़त्लों के जवाबदेह न ठहरें जो उसने बिलावजह किए हैं।
32रब उसे उन दो आदमियों के क़त्ल की सज़ा
दे जो उससे कहीं ज़्यादा शरीफ़ और अच्छे थे यानी इसराईली फ़ौज का कमाँडर अबिनैर बिन नैर और यहूदाह की फ़ौज का कमाँडर अमासा बिन यतर। योआब ने दोनों को तलवार से मार डाला, हालाँकि मेरे बाप को इसका इल्म नहीं
था। 33योआब और उस की औलाद हमेशा तक
इन क़त्लों के क़ुसूरवार ठहरें। लेकिन रब दाऊद, उस की औलाद, घराने और तख़्त को हमेशा तक सलामती अता करे।”

34तब बिनायाह ने मुक़द्दस ख़ैमे में जाकर
योआब को मार दिया। उसे यहूदाह के बयाबान में उस की अपनी ज़मीन में दफ़ना दिया गया।
35योआब की जगह बादशाह ने बिनायाह बिन
यहोयदा को फ़ौज का कमाँडर बना दिया। अबियातर का ओहदा उसने सदोक़ इमाम को दे दिया।

सिमई की मौत

36इसके बाद बादशाह ने सिमई को बुलाकर उसे हुक्म दिया, "यहाँ यरूशलम में अपना घर बनाकर रहना। आइंदा आपको शहर से निकलने की इजाज़त नहीं है, ख़ाह आप कहीं भी जाना चाहें। 37यक़ीन जानें कि ज्योंही आप शहर के दरवाज़े से निकलकर वादीए-क़िदरोन को पार करेंगे तो आपको मार दिया जाएगा। तब आप ख़ुद अपनी मौत के ज़िम्मेदार ठहरेंगे।" 38सिमई ने जवाब दिया, "ठीक है, जो कुछ मेरे आक़ा ने फ़रमाया है मैं करूँगा।"

सिमई देर तक बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ यरूशलम में रहा। 39तीन साल यों ही गुज़र गए। लेकिन एक दिन उसके दो ग़ुलाम भाग गए। चलते चलते वह जात के बादशाह अकीस बिन माका के पास पहुँच गए। किसी ने सिमई को इत्तला दी, "आपके ग़ुलाम जात में ठहरे हुए हैं।" 40वह फ़ौरन अपने गधे पर ज़ीन कसकर ग़ुलामों को ढूँडने के लिए जात में अकीस के पास चला गया। दोनों ग़ुलाम अब तक वहीं थे तो सिमई उन्हें पकड़कर यरूशलम वापस ले आया।

41सुलेमान को ख़बर मिली कि सिमई जात जाकर लौट आया है। 42तब उसने उसे बुलाकर पूछा, "क्या मैंने आपको आगाह करके नहीं कहा था कि यक़ीन जानें कि ज्योंही आप यरूशलम से निकलेंगे आपको मार दिया जाएगा, ख़ाह आप कहीं भी जाना चाहें। और क्या आपने जवाब में रब की क़सम खाकर नहीं कहा था, 'ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा?' 43लेकिन अब आपने अपनी क़सम तोड़कर मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की है। यह आपने क्यों किया है?" 44फिर बादशाह ने कहा, "आप ख़ूब जानते हैं कि आपने मेरे बाप दाऊद के साथ कितना बुरा सुलूक किया। अब रब आपको इसकी सज़ा देगा। 45लेकिन सुलेमान बादशाह को वह बरकत देता रहेगा, और दाऊद का तख़्त रब के हुज़ूर अबद तक क़ायम रहेगा।"

46फिर बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया कि वह सिमई को मार दे। बिनायाह ने उसे बाहर ले जाकर तलवार से मार दिया। यों सुलेमान की इसराईल पर हुकूमत मज़बूत हो गई।

सुलेमान रब से हिकमत माँगता है

3 सुलेमान फ़िरौन की बेटी से शादी करके मिसरी बादशाह का दामाद बन गया। शुरू में उस की बीवी शहर के उस हिस्से में रहती थी जो 'दाऊद का शहर' कहलाता था। क्योंकि उस वक़्त नया महल, रब का घर और शहर की फ़सील ज़ेरे-तामीर थे।

2उन दिनों में रब के नाम का घर तामीर नहीं हुआ था, इसलिए इसराईली अपनी क़ुरबानियाँ मुख़्तलिफ़ ऊँची जगहों पर चढ़ाते थे। 3सुलेमान रब से प्यार करता था और इसलिए अपने बाप दाऊद की तमाम हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता था। लेकिन वह भी जानवरों की अपनी क़ुरबानियाँ और बख़ूर ऐसे ही मक़ामों पर रब को पेश करता था।

4एक दिन बादशाह जिबऊन गया और वहाँ भस्म होनेवाली 1,000 क़ुरबानियाँ चढ़ाईं, क्योंकि उस शहर की ऊँची जगह क़ुरबानियाँ चढ़ाने का सबसे अहम मरकज़ थी। 5जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो रब ख़ाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, "तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे बता दे तो मैं तेरी ख़ाहिश पूरी करूँगा।"

6सुलेमान ने जवाब दिया, "तू मेरे बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी कर चुका है। वजह यह थी कि तेरा ख़ादिम वफ़ादारी, इनसाफ़ और ख़ुलूसदिली से तेरे हुज़ूर चलता रहा। तेरी उस पर मेहरबानी आज तक जारी रही है, क्योंकि तूने उसका बेटा उस की जगह तख़्तनशीन कर दिया है। 7ऐ रब मेरे ख़ुदा, तूने अपने ख़ादिम को मेरे बाप दाऊद की जगह तख़्त पर बिठा दिया है। लेकिन मैं अभी छोटा बच्चा हूँ जिसे अपनी ज़िम्मेदारियाँ सहीह तौर पर सँभालने का तजरबा नहीं हुआ। 8तो भी तेरे ख़ादिम को तेरी चुनी हुई क़ौम के बीच

में खड़ा किया गया है, इतनी अज़ीम क़ौम के
दरमियान कि उसे गिना नहीं जा सकता। 9चुनाँचे
मुझे सुननेवाला दिल अता फ़रमा ताकि मैं तेरी
क़ौम का इनसाफ़ करूँ और सहीह और ग़लत
बातों में इम्तियाज़ कर सकूँ। क्योंकि कौन तेरी
इस अज़ीम क़ौम का इनसाफ़ कर सकता है?”

10सुलेमान की यह दरख़ास्त रब को पसंद
आई, 11इसलिए उसने जवाब दिया, “मैं ख़ुश
हूँ कि तूने न उम्र की दराज़ी, न दौलत और न
अपने दुश्मनों की हलाकत बल्कि इम्तियाज़ करने
की सलाहियत माँगी है ताकि सुनकर इनसाफ़
कर सके। 12इसलिए मैं तेरी दरख़ास्त पूरी करके
तुझे इतना दानिशमंद और समझदार बना दूँगा
कि उतना न माज़ी में कोई था, न मुस्तक़बिल
में कभी कोई होगा। 13बल्कि तुझे वह कुछ भी दे
दूँगा जो तूने नहीं माँगा, यानी दौलत और इज़्ज़त।
तेरे जीते-जी कोई और बादशाह तेरे बराबर नहीं
पाया जाएगा। 14अगर तू मेरी राहों पर चलता रहे
और अपने बाप दाऊद की तरह मेरे अहकाम के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे तो फिर मैं तेरी उम्र दराज़
करूँगा।”

15सुलेमान जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने
ख़ाब देखा है। वह यरूशलम को वापस चला
गया और रब के अहद के संदूक़ के सामने खड़ा
हुआ। वहाँ उसने भस्म होनेवाली और सलामती
की क़ुरबानियाँ पेश कीं, फिर बड़ी ज़ियाफ़त की
जिसमें तमाम दरबारी शरीक हुए।

दो कसबियों के बच्चे के बारे में सुलेमान का फ़ैसला

16एक दिन दो कसबियाँ बादशाह के पास
आईं। 17एक बात करने लगी, “मेरे आक़ा, हम
दोनों एक ही घर में बसती हैं। कुछ देर पहले
इसकी मौजूदगी में घर में मेरे बच्चा पैदा हुआ।
18दो दिन के बाद इसके भी बचा हुआ। हम
अकेली ही थीं, हमारे सिवा घर में कोई और नहीं
था। 19एक रात को मेरी साथी का बच्चा मर गया।
माँ ने सोते में करवटें बदलते बदलते अपने बच्चे
को दबा दिया था। 20रातों रात इसे मालूम हुआ
कि बेटा मर गया है। मैं अभी गहरी नींद सो रही
थी। यह देखकर इसने मेरे बच्चे को उठाया और
अपने मुरदे बेटे को मेरी गोद में रख दिया। फिर
वह मेरे बेटे के साथ सो गई। 21सुबह के वक़्त
जब मैं अपने बेटे को दूध पिलाने के लिए उठी तो
देखा कि उससे जान निकल गई है। लेकिन जब
दिन मज़ीद चढ़ा और मैं ग़ौर से उसे देख सकी तो
क्या देखती हूँ कि यह वह बच्चा नहीं है जिसे मैंने
जन्म दिया है!”

22दूसरी औरत ने उस की बात काटकर कहा,
“हरगिज़ नहीं! यह झूट है। मेरा बेटा ज़िंदा है
और तेरा तो मर गया है।” पहली औरत चीख़
उठी, “कभी भी नहीं! ज़िंदा बच्चा मेरा और
मुरदा बच्चा तेरा है।” ऐसी बातें करते करते दोनों
बादशाह के सामने झगड़ती रहीं।

23फिर बादशाह बोला, “सीधी-सी बात यह है
कि दोनों ही दावा करती हैं कि ज़िंदा बच्चा मेरा
है और मुरदा बच्चा दूसरी का है। 24ठीक है, फिर
मेरे पास तलवार ले आएँ!” उसके पास तलवार
लाई गई। 25तब उसने हुक्म दिया, “ज़िंदा बच्चे
को बराबर के दो हिस्सों में काटकर हर औरत को
एक एक हिस्सा दे दें।” 26यह सुनकर बच्चे की
हक़ीक़ी माँ ने जिसका दिल अपने बेटे के लिए
तड़पता था बादशाह से इलतमास की, “नहीं मेरे
आक़ा, उसे मत मारें! बराहे-करम उसे इसी को
दे दीजिए।”

लेकिन दूसरी औरत बोली, “ठीक है, उसे काट
दें। अगर यह मेरा नहीं होगा तो कम अज़ कम तेरा
भी नहीं होगा।”

27यह देखकर बादशाह ने हुक्म दिया, “रुकें!
बच्चे पर तलवार मत चलाएँ बल्कि उसे पहली
औरत को दे दें जो चाहती है कि ज़िंदा रहे। वही
उस की माँ है।” 28जल्द ही सुलेमान के इस
फ़ैसले की ख़बर पूरे मुल्क में फैल गई, और लोगों
पर बादशाह का ख़ौफ़ छा गया, क्योंकि उन्होंने
जान लिया कि अल्लाह ने उसे इनसाफ़ करने की
ख़ास हिकमत अता की है।

सुलेमान के सरकारी अफ़सरों की फ़हरिस्त

4 अब सुलेमान पूरे इसराईल पर हुकूमत करता था। 2यह उसके आला अफ़सर थे :
इमामे-आज़म : अज़रियाह बिन सदोक़,
3मीरमुंशी : सीसा के बेटे इलीहूरिफ़ और अख़ियाह,
बादशाह का मुशीरे-ख़ास : यहूसफ़त बिन अख़ीलूद,
4फ़ौज का कमाँडर : बिनायाह बिन यहोयदा,
इमाम : सदोक़ और अबियातर,
5ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों का सरदार : अज़रियाह बिन नातन,
बादशाह का क़रीबी मुशीर : इमाम ज़बूद बिन नातन,
6महल का इंचार्ज : अख़ीसर,
बेगारियों का इंचार्ज : अदूनीराम बिन अबदा
7सुलेमान ने मुल्के-इसराईल को बारह ज़िलों में तक़सीम करके हर ज़िले पर एक अफ़सर मुक़र्रर किया था। इन अफ़सरों की एक ज़िम्मेदारी यह थी कि दरबार की ज़रूरियात पूरी करें। हर अफ़सर को साल में एक माह की ज़रूरियात पूरी करनी थीं। 8दर्जे-ज़ैल इन अफ़सरों और उनके इलाक़ों की फ़हरिस्त है। बिन-हूर : इफ़राईम का पहाड़ी इलाक़ा,
9बिन-दिक़र : मक़स, सालबीम, बैत-शम्स और ऐलोन-बैत-हनान,
10बिन-हसद : अरुब्बोत, सोका और हिफ़र का इलाक़ा,
11सुलेमान की बेटी ताफ़त का शौहर बिन-अबीनदाब : साहिली शहर दोर का पहाड़ी इलाक़ा,
12बाना बिन अख़ीलूद : तानक, मजिद्दो और उस बैत-शान का पूरा इलाक़ा जो ज़रतान के पड़ोस में यज्रएल के नीचे वाक़े है, नीज़ बैत-शान से लेकर अबील-महूला तक का पूरा इलाक़ा बशमूल युक़मियाम,
13बिन-जबर : जिलियाद में रामात का इलाक़ा बशमूल याईर बिन मनस्सी की बस्तियाँ, फिर बसन में अरजूब का इलाक़ा। इसमें 60 ऐसे फ़सीलदार शहर शामिल थे जिनके दरवाज़ों पर पीतल के कुंडे लगे थे,
14अख़ी-नदाब बिन इद्दू : महनायम,
15सुलेमान की बेटी बासमत का शौहर अख़ीमाज़ : नफ़ताली का क़बायली इलाक़ा,
16बाना बिन हूसी : आशर का क़बायली इलाक़ा और बालोत,
17यहूसफ़त बिन फ़रूह : इशकार का क़बायली इलाक़ा,
18सिमई बिन ऐला : बिनयमीन का क़बायली इलाक़ा,
19जबर बिन ऊरी जिलियाद का वह इलाक़ा जिस पर पहले अमोरी बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह ओज की हुकूमत थी। इस पूरे इलाक़े पर सिर्फ़ यही एक अफ़सर मुक़र्रर था।

सुलेमान की हुकूमत की अज़मत

20उस ज़माने में इसराईल और यहूदाह के लोग साहिल की रेत की मानिंद बेशुमार थे। लोगों को खाने और पीने की सब चीज़ें दस्तयाब थीं, और वह ख़ुश थे।
21सुलेमान दरियाए-फ़ुरात से लेकर फ़िलिस्तियों के इलाक़े और मिसरी सरहद तक तमाम ममालिक पर हुकूमत करता था। उसके जीते-जी यह ममालिक उसके ताबे रहे और उसे ख़राज देते थे।
22सुलेमान के दरबार की रोज़ाना ज़रूरियात यह थीं : तक़रीबन 5,000 किलोग्राम बारीक मैदा, तक़रीबन 10,000 किलोग्राम आम मैदा, 2310 मोटे-ताज़े बैल, चरागाहों में पले हुए 20 आम बैल, 100 भेड़-बकरियाँ, और इसके अलावा हिरन, ग़ज़ाल, मृग और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मोटे-ताज़े मुरग़।

24जितने ममालिक दरियाए-फ़ुरात के मग़रिब में थे उन सब पर सुलेमान की हुकूमत थी, यानी तिफ़सह से लेकर ग़ज़्ज़ा तक। किसी भी पड़ोसी मुल्क से उसका झगड़ा नहीं था, बल्कि सबके साथ सुलह थी। 25उसके जीते-जी पूरे यहूदाह और इसराईल में सुलह-सलामती रही। शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक हर एक सलामती से अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख़्त के साये में बैठ सकता था।

26अपने रथों के घोड़ों के लिए सुलेमान ने 4,000 थान बनवाए। उसके 12,000 घोड़े थे। 27बारह ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सर बाक़ायदगी से सुलेमान बादशाह और उसके दरबार की ज़रूरियात पूरी करते रहे। हर एक को साल में एक माह के लिए सब कुछ मुहैया करना था। उनकी मेहनत की वजह से दरबार में कोई कमी न हुई। 28बादशाह की हिदायत के मुताबिक़ वह रथों के घोड़ों और दूसरे घोड़ों के लिए दरकार जौ और भूसा बराहे-रास्त उनके थानों तक पहुँचाते थे।

29अल्लाह ने सुलेमान को बहुत ज़्यादा हिकमत और समझ अता की। उसे साहिल की रेत जैसा वसी इल्म हासिल हुआ। 30उस की हिकमत इसराईल के मशरिक़ में रहनेवाले और मिसर के आलिमों से कहीं ज़्यादा थी। 31इस लिहाज़ से कोई भी उसके बराबर नहीं था। वह ऐतान इज़राही और महोल के बेटों हैमान, कलकूल और दरदा पर भी सबक़त ले गया था। उस की शोहरत इर्दगिर्द के तमाम ममालिक में फैल गई। 32उसने 3,000 कहावतें और 1,005 गीत लिख दिए। 33वह तफ़सील से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पौदों के बारे में बात कर सकता था, लुबनान में देवदार के बड़े दरख़्त से लेकर छोटे पौदे ज़ूफ़ा तक जो दीवार की दराड़ों में उगता है। वह महारत से चौपाइयों, परिंदों, रेंगनेवाले जानवरों और मछलियों की तफ़सीलात भी बयान कर सकता था। 34चुनाँचे तमाम ममालिक के बादशाहों ने अपने सफ़ीरों को सुलेमान के पास भेज दिया ताकि उस की हिकमत सुनें।

हीराम बादशाह के साथ सुलेमान का मुआहदा

5 सूर का बादशाह हीराम हमेशा दाऊद का अच्छा दोस्त रहा था। जब उसे ख़बर मिली कि दाऊद के बाद सुलेमान को मसह करके बादशाह बनाया गया है तो उसने अपने सफ़ीरों को उसे मुबारकबाद देने के लिए भेज दिया।
2तब सुलेमान ने हीराम को पैग़ाम भेजा, 3“आप जानते हैं कि मेरे बाप दाऊद रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर तामीर करना चाहते थे। लेकिन यह उनके बस की बात नहीं थी, क्योंकि उनके जीते-जी इर्दगिर्द के ममालिक उनसे जंग करते रहे। गो रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों पर फ़तह बख़्शी थी, लेकिन लड़ते लड़ते वह रब का घर न
बना सके। 4अब हालात फ़रक़ हैं : रब मेरे ख़ुदा ने मुझे पूरा सुकून अता किया है। चारों तरफ़ न कोई मुख़ालिफ़ नज़र आता है, न कोई ख़तरा।
5इसलिए मैं रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर तामीर करना चाहता हूँ। क्योंकि मेरे बाप दाऊद के जीते-जी रब ने उनसे वादा किया था, ‘तेरे जिस बेटे को मैं तेरे बाद तख़्त पर बिठाऊँगा वही मेरे
नाम के लिए घर बनाएगा।’ 6अब गुज़ारिश है कि आपके लकड़हारे लुबनान में मेरे लिए देवदार के दरख़्त काट दें। मेरे लोग उनके साथ मिलकर काम करेंगे। आपके लोगों की मज़दूरी मैं ही अदा करूँगा। जो कुछ भी आप कहेंगे मैं उन्हें दूँगा। आप तो ख़ूब जानते हैं कि हमारे हाँ सैदा के लकड़हारों जैसे माहिर नहीं हैं।”

7जब हीराम को सुलेमान का पैग़ाम मिला तो वह बहुत ख़ुश होकर बोल उठा, “आज रब की हम्द हो जिसने दाऊद को इस बड़ी क़ौम पर हुकूमत करने के लिए इतना दानिशमंद बेटा अता
किया है!” 8सुलेमान को हीराम ने जवाब भेजा, “मुझे आपका पैग़ाम मिल गया है, और मैं आपकी ज़रूर मदद करूँगा। देवदार और जूनीपर की जितनी लकड़ी आपको चाहिए वह मैं आपके पास
पहुँचा दूँगा। 9मेरे लोग दरख़्तों के तने लुबनान के

पहाड़ी इलाक़े से नीचे साहिल तक लाएँगे जहाँ
हम उनके बेड़े बाँधकर समुंदर पर उस जगह पहुँचा
देंगे जो आप मुक़र्रर करेंगे। वहाँ हम तनों के रस्से
खोल देंगे, और आप उन्हें ले जा सकेंगे। मुआवज़े
में आप मुझे इतनी ख़ुराक मुहैया करें कि मेरे
दरबार की ज़रूरियात पूरी हो जाएँ।”

10चुनाँचे हीराम ने सुलेमान को देवदार
और जूनीपर की उतनी लकड़ी मुहैया
की जितनी उसे ज़रूरत थी। 11मुआवज़े
में सुलेमान उसे सालाना तक़रीबन
32,50,000 किलोग्राम गंदुम और तक़री-
बन 4,40,000 लिटर ज़ैतून का तेल भेजता
रहा। 12इसके अलावा सुलेमान और हीराम ने
आपस में सुलह का मुआहदा किया। यों रब ने
सुलेमान को हिकमत अता की जिस तरह उसने
उससे वादा किया था।

रब का घर बनाने की पहली तैयारियाँ

13-14सुलेमान बादशाह ने लुबनान में यह काम
करने के लिए इसराईल में से 30,000 आदमियों
की बेगार पर भरती की। उसने अदूनीराम को
उन पर मुक़र्रर किया। हर माह वह बारी बारी
10,000 अफ़राद को लुबनान में भेजता रहा।
यों हर मज़दूर एक माह लुबनान में और दो माह
घर में रहता। 15सुलेमान ने 80,000 आदमियों
को कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें।
70,000 अफ़राद यह पत्थर यरूशलम लाते थे।
16उन लोगों पर 3,300 निगरान मुक़र्रर थे।
17बादशाह के हुक्म पर वह कानों से बेहतरीन
पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े निकाल लाए और उन्हें
तराशकर रब के घर की बुनियाद के लिए तैयार
किया। 18जबल के कारीगरों ने सुलेमान और
हीराम के कारीगरों की मदद की। उन्होंने मिलकर
पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े और लकड़ी को तराशकर
रब के घर की तामीर के लिए तैयार किया।

रब के घर की तामीर

6 सुलेमान ने अपनी हुकूमत के चौथे साल के
दूसरे महीने ज़ीब में रब के घर की तामीर
शुरू की। इसराईल को मिसर से निकले 480
साल गुज़र चुके थे।

2इमारत की लंबाई 90 फ़ुट, चौड़ाई 30
फ़ुट और ऊँचाई 45 फ़ुट थी। 3सामने एक
बरामदा बनाया गया जो इमारत जितना चौड़ा
यानी 30 फ़ुट और आगे की तरफ़ 15 फ़ुट
लंबा था। 4इमारत की दीवारों में खिड़कियाँ थीं
जिन पर जंगले लगे थे। 5इमारत से बाहर आकर
सुलेमान ने दाएँ-बाएँ की दीवारों और पिछली
दीवार के साथ एक ढाँचा खड़ा किया जिसकी
तीन मनज़िलें थीं और जिसमें मुख़्तलिफ़ कमरे
थे। 6निचली मनज़िल की अंदर की चौड़ाई साढ़े
7 फ़ुट, दरमियानी मनज़िल की 9 फ़ुट और ऊपर
की मनज़िल की साढ़े 10 फ़ुट थी। वजह यह थी
कि रब के घर की बैरूनी दीवार की मोटाई मनज़िल
बमनज़िल कम होती गई। इस तरीक़े से बैरूनी
ढाँचे की दूसरी और तीसरी मनज़िल के शहतीरों
के लिए रब के घर की दीवार में सूराख़ बनाने
की ज़रूरत नहीं थी बल्कि उन्हें दीवार पर ही रखा
गया। यानी दरमियानी मनज़िल की इमारतवाली
दीवार निचली की दीवार की निसबत कम मोटी
और ऊपरवाली मनज़िल की इमारतवाली दीवार
दरमियानी मनज़िल की दीवार की निसबत कम
मोटी थी। यों इस ढाँचे की छतों के शहतीरों
को इमारत की दीवार तोड़कर उसमें लगाने की
ज़रूरत नहीं थी बल्कि उन्हें इमारत की दीवार पर
ही रखा गया।

7जो पत्थर रब के घर की तामीर के लिए
इस्तेमाल हुए उन्हें पत्थर की कान के अंदर ही
तराशकर तैयार किया गया। इसलिए जब उन्हें
ज़ेरे-तामीर इमारत के पास लाकर जोड़ा गया तो
न हथौड़ों, न छैनी न लोहे के किसी और औज़ार
की आवाज़ सुनाई दी।

8इस ढाँचे में दाख़िल होने के लिए इमारत
की दहनी दीवार में दरवाज़ा बनाया गया। वहाँ
से एक सीढ़ी परस्तार को दरमियानी और ऊपर
की मनज़िल तक पहुँचाती थी। 9यों सुलेमान
ने इमारत को तकमील तक पहुँचाया। छत को
देवदार के शहतीरों और तख़्तों से बनाया गया।
10जो ढाँचा इमारत के तीनों तरफ़ खड़ा किया
गया उसे देवदार के शहतीरों से इमारत की
बाहरवाली दीवार के साथ जोड़ा गया। उस की
तीनों मनज़िलों की ऊँचाई साढ़े सात सात फ़ुट
थी।

11एक दिन रब सुलेमान से हमकलाम हुआ,
12"जहाँ तक मेरी सुकूनतगाह का ताल्लुक़ है
जो तू मेरे लिए बना रहा है, अगर तू मेरे तमाम
अहकाम और हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारे तो मैं तेरे लिए वह कुछ करूँगा जिसका
वादा मैंने तेरे बाप दाऊद से किया है। 13तब मैं
इसराईल के दरमियान रहूँगा और अपनी क़ौम को
कभी तर्क नहीं करूँगा।"

रब के घर का अंदरूनी हिस्सा

14जब इमारत की दीवारें और छत मु-
कम्मल हुईं 15तो अंदरूनी दीवारों पर फ़र्श से
लेकर छत तक देवदार के तख़्ते लगाए गए।
फ़र्श पर जूनीपर के तख़्ते लगाए गए। 16अब
तक इमारत का एक ही कमरा था, लेकिन अब
उसने देवदार के तख़्तों से फ़र्श से लेकर छत
तक दीवार खड़ी करके पिछले हिस्से में अलग
कमरा बना दिया जिसकी लंबाई 30 फ़ुट थी।
यह मुक़द्दसतरीन कमरा बन गया। 17जो हिस्सा
सामने रह गया उसे मुक़द्दस कमरा मुक़र्रर किया
गया। उस की लंबाई 60 फ़ुट थी। 18इमारत की
तमाम अंदरूनी दीवारों पर देवदार के तख़्ते यों लगे
थे कि कहीं भी पत्थर नज़र न आया। तख़्तों पर
तूँबे और फूल कंदा किए गए थे।

19पिछले कमरे में रब के अहद का संदूक़ रखना
था। 20इस कमरे की लंबाई 30 फ़ुट, चौड़ाई
30 फ़ुट और ऊँचाई 30 फ़ुट थी। सुलेमान ने
इसकी तमाम दीवारों और फ़र्श पर ख़ालिस सोना
चढ़ाया। मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने देवदार
की क़ुरबानगाह थी। उस पर भी सोना मँढा
गया 21बल्कि इमारत के सामनेवाले कमरे की
दीवारों, छत और फ़र्श पर भी सोना मँढा गया।
मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े पर सोने की ज़ंजीरें
लगाई गईं। 22चुनाँचे इमारत की तमाम अंदरूनी
दीवारों, छत और फ़र्श पर सोना मँढा गया,
और इसी तरह मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने की
क़ुरबानगाह पर भी।

23फिर सुलेमान ने ज़ैतून की लकड़ी से दो
करूबी फ़रिश्ते बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे
में रखा गया। इन मुजस्समों का क़द 15 फ़ुट था।
24-25दोनों शक्लो-सूरत में एक जैसे थे। हर एक
के दो पर थे, और हर पर की लंबाई साढ़े सात
सात फ़ुट थी। चुनाँचे एक पर के सिरे से दूसरे पर
के सिरे तक का फ़ासला 15 फ़ुट था। 26हर एक
का क़द 15 फ़ुट था। 27उन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे
में यों एक दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि हर
फ़रिश्ते का एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि
दाईं और बाईं तरफ़ हर एक का दूसरा पर दीवार
के साथ लगता था। 28इन फ़रिश्तों पर भी सोना
मँढा गया।

29मुक़द्दस और मुक़द्दसतरीन कमरों की दीवारों
पर करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त और फूल
कंदा किए गए। 30दोनों कमरों के फ़र्श पर भी
सोना मँढा गया। 31सुलेमान ने मुक़द्दसतरीन
कमरे का दरवाज़ा ज़ैतून की लकड़ी से बनवाया।
उसके दो किवाड़ थे, और चौखट की लकड़ी के
पाँच कोने थे। 32दरवाज़े के किवाड़ों पर करूबी
फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त और फूल कंदा किए
गए। इन किवाड़ों पर भी फ़रिश्तों और खजूर
के दरख़्तों समेत सोना मँढा गया। 33सुलेमान ने
इमारत में दाख़िल होनेवाले दरवाज़े के लिए भी
ज़ैतून की लकड़ी से चौखट बनवाई, लेकिन उस
की लकड़ी के चार कोने थे। 34इस दरवाज़े के दो
किवाड़ जूनीपर की लकड़ी के बने हुए थे। दोनों
किवाड़ दीवार तक घूम सकते थे। 35इन किवाड़ों

पर भी करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त और फूल कंदा किए गए थे। फिर उन पर सोना यों मँढा गया कि वह अच्छी तरह इन बेल-बूटों के साथ लग गया।

36इमारत के सामने एक अंदरूनी सहन बनाया
गया जिसकी चारदीवारी यों तामीर हुई कि पत्थर के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा लगाया गया।

37रब के घर की बुनियाद सुलेमान की हुकूमत
के चौथे साल के दूसरे महीने ज़ीब[a] में डाली
गई, 38और उस की हुकूमत के ग्यारहवें साल
के आठवें महीने बूल[b] में इमारत मुकम्मल हुई। सब कुछ नक़्शे के ऐन मुताबिक़ बना। इस काम पर कुल सात साल लग गए।

सुलेमान का महल

7 जो महल सुलेमान ने बनवाया वह 13 साल के बाद मुकम्मल हुआ।

2-3उस की एक इमारत का नाम 'लुबनान
का जंगल' था। इमारत की लंबाई 150 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई 45 फ़ुट थी। निचली मनज़िल एक बड़ा हाल था जिसके देवदार की लकड़ी के 45 सतून थे। पंद्रह पंद्रह सतूनों को तीन क़तारों में खड़ा किया गया था। सतूनों पर शहतीर थे जिन पर दूसरी मनज़िल के फ़र्श के लिए देवदार के तख़्ते लगाए गए थे। दूसरी मनज़िल के मुख़्तलिफ़ कमरे थे, और छत भी
देवदार की लकड़ी से बनाई गई थी। 4हाल की
दोनों लंबी दीवारों में तीन तीन खिड़कियाँ थीं, और एक दीवार की खिड़कियाँ दूसरी दीवार
की खिड़कियों के बिलकुल मुक़ाबिल थीं। 5इन
दीवारों के तीन तीन दरवाज़े भी एक दूसरे के मुक़ाबिल थे। उनकी चौखटों की लकड़ी के चार चार कोने थे।

6इसके अलावा सुलेमान ने सतूनों का हाल
बनवाया जिसकी लंबाई 75 फ़ुट और चौड़ाई 45 फ़ुट थी। हाल के सामने सतूनों का बरामदा था।
7उसने दीवान भी तामीर किया जो दीवाने-अदल
कहलाता था। उसमें उसका तख़्त था, और वहाँ वह लोगों की अदालत करता था। दीवान की चारों दीवारों पर फ़र्श से लेकर छत तक देवदार के तख़्ते लगे हुए थे।

8दीवान के पीछे सहन था जिसमें बादशाह का
रिहाइशी महल था। महल का डिज़ायन दीवान जैसा था। उस की मिसरी बीवी फ़िरौन की बेटी का महल भी डिज़ायन में दीवान से मुताबिक़त रखता था।

9यह तमाम इमारतें बुनियादों से लेकर छत तक
और बाहर से लेकर बड़े सहन तक आला क़िस्म के पत्थरों से बनी हुई थीं, ऐसे पत्थरों से जो चारों तरफ़ आरी से नाप के ऐन मुताबिक़ काटे गए
थे। 10बुनियादों के लिए उम्दा क़िस्म के बड़े बड़े
पत्थर इस्तेमाल हुए। बाज़ की लंबाई 12 और
बाज़ की 15 फ़ुट थी। 11इन पर आला क़िस्म
के पत्थरों की दीवारें खड़ी की गईं। दीवारों में
देवदार के शहतीर भी लगाए गए। 12बड़े सहन
की चारदीवारी यों बनाई गई कि पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा लगाया गया था। जो अंदरूनी सहन रब के घर के इर्दगिर्द था उस की चारदीवारी भी इसी तरह ही बनाई गई, और इसी तरह रब के घर के बरामदे की दीवारें भी।

रब के घर के सामने के दो ख़ास सतून

13फिर सुलेमान बादशाह ने सूर के एक आदमी
को बुलाया जिसका नाम हीराम था। 14उस
की माँ इसराईली क़बीले नफ़ताली की बेवा थी जबकि उसका बाप सूर का रहनेवाला और पीतल का कारीगर था। हीराम बड़ी हिकमत, समझदारी और महारत से पीतल की हर चीज़ बना सकता था। इस क़िस्म का काम करने के लिए वह सुलेमान बादशाह के पास आया।

15पहले उसने पीतल के दो सतून ढाल दिए।
हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट और घेरा 18 फ़ुट

[a]अप्रैल ता मई।

[b]अक्तूबर ता नवंबर।

था। 16फिर उसने हर सतून के लिए पीतल का
बालाई हिस्सा ढाल दिया जिसकी ऊँचाई साढ़े
7 फ़ुट थी। 17हर बालाई हिस्से को एक दूसरे
के साथ ख़ूबसूरती से मिलाई गई सात ज़ंजीरों
से आरास्ता किया गया। 18-20इन ज़ंजीरों के
ऊपर हीराम ने हर बालाई हिस्से को पीतल के
200 अनारों से सजाया जो दो क़तारों में लगाए
गए। फिर बालाई हिस्से सतूनों पर लगाए गए।
बालाई हिस्सों की सोसन के फूल की-सी शक्ल
थी, और यह फूल 6 फ़ुट ऊँचे थे। 21हीराम ने
दोनों सतून रब के घर के बरामदे के सामने खड़े
किए। दहने हाथ के सतून का नाम उसने 'यकीन'
और बाएँ हाथ के सतून का नाम 'बोअज़' रखा।
22बालाई हिस्से सोसन-नुमा थे। चुनाँचे काम
मुकम्मल हुआ।

पीतल का हौज़

23इसके बाद हीराम ने पीतल का बड़ा गोल
हौज़ ढाल दिया जिसका नाम 'समुंदर' रखा गया।
उस की ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट, उसका मुँह 15 फ़ुट
चौड़ा और उसका घेरा तक़रीबन 45 फ़ुट था।
24हौज़ के किनारे के नीचे तूँबों की दो क़तारें
थीं। फ़ी फ़ुट तक़रीबन 6 तूँबे थे। तूँबे और हौज़
मिलकर ढाले गए थे। 25हौज़ को बैलों के 12
मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों का रुख़
शिमाल की तरफ़, तीन का रुख़ मग़रिब की तरफ़,
तीन का रुख़ जुनूब की तरफ़ और तीन का रुख़
मशरिक़ की तरफ़ था। उनके पिछले हिस्से हौज़
की तरफ़ थे, और हौज़ उनके कंधों पर पड़ा था।
26हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल
की तरह बाहर की तरफ़ मुड़ा हुआ था। उस की
दीवार तक़रीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में
पानी के तक़रीबन 44,000 लिटर समा जाते थे।

पानी के बासन उठाने की हथगाड़ियाँ

27फिर हीराम ने पानी के बासन उठाने के लिए
पीतल की हथगाड़ियाँ बनाईं। हर गाड़ी की लंबाई
6 फ़ुट, चौड़ाई 6 फ़ुट और ऊँचाई साढ़े 4 फ़ुट
थी। 28हर गाड़ी का ऊपर का हिस्सा सरियों से
मज़बूत किया गया फ़्रेम था। 29फ़्रेम के बैरूनी
पहलू शेरबबरों, बैलों और करूबी फ़रिश्तों से सजे
हुए थे। शेरों और बैलों के ऊपर और नीचे पीतल
के सेहरे लगे हुए थे। 30हर गाड़ी के चार पहिये
और दो धुरे थे। यह भी पीतल के थे। चारों कोनों
पर पीतल के ऐसे टुकड़े लगे थे जिन पर बासन
रखे जाते थे। यह टुकड़े भी सेहरों से सजे हुए थे।
31फ़्रेम के अंदर जिस जगह बासन को रखा जाता
था वह गोल थी। उस की ऊँचाई डेढ़ फ़ुट थी, और
उसका मुँह सवा दो फ़ुट चौड़ा था। उसके बैरूनी
पहलू पर चीज़ें कंदा की गई थीं। गाड़ी का फ़्रेम
गोल नहीं बल्कि चौरस था। 32गाड़ी के फ़्रेम के
नीचे मज़कूरा चार पहिये थे जो धुरों से जुड़े थे। धुरे
फ़्रेम के साथ ही ढल गए थे। हर पहिया सवा दो
फ़ुट चौड़ा था। 33पहिये रथों के पहियों की मानिंद
थे। उनके धुरे, किनारे, तार और नाभें सबके सब
पीतल से ढाले गए थे। 34गाड़ियों के चार कोनों
पर दस्ते लगे थे जो फ़्रेम के साथ मिलकर ढाले
गए थे। 35-36हर गाड़ी के ऊपर का किनारा नौ
इंच ऊँचा था। कोनों पर लगे दस्ते और फ़्रेम के
पहलू हर जगह करूबी फ़रिश्तों, शेरबबरों और
खजूर के दरख़्तों से सजे हुए थे। चारों तरफ़ सेहरे
भी कंदा किए गए। 37हीराम ने दसों गाड़ियों को
एक ही साँचे में ढाला, इसलिए सब एक जैसी
थीं।

38हीराम ने हर गाड़ी के लिए पीतल का बासन
ढाल दिया। हर बासन 6 फ़ुट चौड़ा था, और उसमें
880 लिटर पानी समा जाता था। 39उसने पाँच
गाड़ियाँ रब के घर के दाएँ हाथ और पाँच उसके
बाएँ हाथ खड़ी कीं। हौज़ बनाम समुंदर को उसने
रब के घर के जुनूब-मशरिक़ में रख दिया।

उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने बनाया

40हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काव के
कटोरे भी बनाए। यों उसने रब के घर में वह
सारा काम मुकम्मल किया जिसके लिए सुलेमान

बादशाह ने उसे बुलाया था। उसने ज़ैल की चीज़ें बनाईं :
41दो सतून,
सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,
बालाई हिस्सों पर लगी ज़ंजीरों का डिज़ायन,
42ज़ंजीरों के ऊपर लगे अनार (फ़ी बालाई हिस्सा 200 अदद),
4310 हथगाड़ियाँ,
इन पर के पानी के 10 बासन,
44हौज़ बनाम समुंदर,
इसे उठानेवाले बैल के 12 मुजस्समे,
45बालटियाँ, बेलचे और छिड़काव के कटोरे।
यह तमाम सामान जो हीराम ने सुलेमान के हुक्म पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढालकर पालिश किया गया था।
46बादशाह ने उसे वादीए-यरदन में सुक्कात और ज़रतान के दरमियान ढलवाया। वहाँ एक फ़ौंडरी थी जहाँ हीराम ने गारे के साँचे बनाकर हर चीज़ ढाल दी।
47इस सामान के लिए सुलेमान बादशाह ने इतना ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि उसका कुल वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अंदर सोने का सामान

48रब के घर के अंदर के लिए सुलेमान ने दर्जे-ज़ैल सामान बनवाया :
सोने की क़ुरबानगाह,
सोने की वह मेज़ जिस पर रब के लिए मख़सूस रोटियाँ पड़ी रहती थीं,
49ख़ालिस सोने के 10 शमादान जो मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने रखे गए, पाँच दरवाज़े के दहने हाथ और पाँच उसके बाएँ हाथ,
सोने के वह फूल जिनसे शमादान आरास्ता थे,
सोने के चराग़ और बत्ती को बुझाने के औज़ार,
50ख़ालिस सोने के बासन, चराग़ को कतरने के औज़ार, छिड़काव के कटोरे और प्याले,
जलते हुए कोयले के लिए ख़ालिस सोने के बरतन,
मुक़द्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़ों के क़ब्ज़े।
51रब के घर की तकमील पर सुलेमान बादशाह ने वह सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम क़ीमती चीज़ें रब के घर के ख़ज़ानों में रखवा दीं जो उसके बाप दाऊद ने रब के लिए मख़सूस की थीं।

अहद का संदूक़ रब के घर में लाया जाता है

8 फिर सुलेमान ने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों और क़बीलों और कुंबों के तमाम सरपरस्तों को अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्योंकि रब के अहद का संदूक़ अब तक यरूशलम के उस हिस्से में था जो 'दाऊद का शहर' या सिय्यून कहलाता है। सुलेमान चाहता था कि क़ौम के नुमाइंदे हाज़िर हों जब संदूक़ को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए।
2चुनाँचे इसराईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने इतानीम[a] में सुलेमान बादशाह के पास यरूशलम में जमा हुए। इसी महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती थी।
3जब सब जमा हुए तो इमाम रब के संदूक़ को उठाकर
4रब के घर में लाए। लावियों के साथ मिलकर उन्होंने मुलाक़ात के ख़ैमे को भी उसके तमाम मुक़द्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया।
5वहाँ संदूक़ के सामने सुलेमान बादशाह और बाक़ी तमाम जमा हुए इसराईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल क़ुरबान किए कि उनकी तादाद गिनी नहीं जा सकती थी।
6इमामों ने रब के अहद का संदूक़ पिछले यानी मुक़द्दसतरीन कमरे में लाकर करूबी फ़रिश्तों के परों के नीचे रख दिया।
7फ़रिश्तों के पर पूरे संदूक़ पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे।
8तो भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लंबी थीं कि उनके सिरे सामनेवाले यानी मुक़द्दस कमरे से नज़र आते थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज तक वह वहीं मौजूद हैं।
9संदूक़ में सिर्फ़ पत्थर की वह दो तख़्तियाँ थीं जिनको मूसा ने होरिब यानी कोहे-सीना के दामन में उसमें रख

[a]सितंबर ता अक्तूबर

दिया था, उस वक़्त जब रब ने मिसर से निकले
हुए इसराईलियों के साथ अहद बाँधा था।
10-11जब इमाम मुक़द्दस कमरे से निकल-
कर सहन में आए तो रब का घर एक बादल
से भर गया। इमाम अपनी ख़िदमत अंजाम न दे
सके, क्योंकि रब का घर उसके जलाल के बादल
से मामूर हो गया था। 12यह देखकर सुलेमान ने
दुआ की, "रब ने फ़रमाया है कि मैं घने बादल के
अंधेरे में रहूँगा। 13यक़ीनन मैंने तेरे लिए अज़ीम
सुकूनतगाह बनाई है, एक मक़ाम जो तेरी अबदी
सुकूनत के लायक़ है।"

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की तक़रीर

14फिर बादशाह ने मुड़कर रब के घर के सामने
खड़ी इसराईल की पूरी जमात की तरफ़ रुख़
किया। उसने उन्हें बरकत देकर कहा,
15"रब इसराईल के ख़ुदा की तारीफ़ हो जिसने
वह वादा पूरा किया है जो उसने मेरे बाप दाऊद से
किया था। क्योंकि उसने फ़रमाया, 16'जिस दिन
मैं अपनी क़ौम इसराईल को मिसर से निकाल
लाया उस दिन से लेकर आज तक मैंने कभी न
फ़रमाया कि इसराईली क़बीलों के किसी शहर में
मेरे नाम की ताज़ीम में घर बनाया जाए। लेकिन
मैंने दाऊद को अपनी क़ौम इसराईल का बादशाह
बनाया है।'
17मेरे बाप दाऊद की बड़ी ख़ाहिश थी कि रब
इसराईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर
बनाए। 18लेकिन रब ने एतराज़ किया, 'मैं ख़ुश
हूँ कि तू मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना
चाहता है, 19लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही
उसे बनाएगा।'
20और वाक़ई, रब ने अपना वादा पूरा किया है।
मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद
की जगह इसराईल का बादशाह बनकर तख़्त पर
बैठ गया हूँ। और अब मैंने रब इसराईल के ख़ुदा
के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 21उसमें
मैंने उस संदूक़ के लिए मक़ाम तैयार कर रखा है
जिसमें शरीअत की तख़्तियाँ पड़ी हैं, उस अहद
की तख़्तियाँ जो रब ने हमारे बापदादा से मिसर
से निकालते वक़्त बाँधा था।"

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की दुआ

22फिर सुलेमान इसराईल की पूरी जमात
के देखते देखते रब की क़ुरबानगाह के सामने
खड़ा हुआ। उसने अपने हाथ आसमान की तरफ़
उठाकर 23दुआ की,
"ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, तुझ जैसा कोई ख़ुदा
नहीं है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना
वह अहद क़ायम रखता है जिसे तूने अपनी क़ौम
के साथ बाँधा है और अपनी मेहरबानी उन सब पर
ज़ाहिर करता है जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते
हैं। 24तूने अपने ख़ादिम दाऊद से किया हुआ
वादा पूरा किया है। जो बात तूने अपने मुँह से मेरे
बाप से की वह तूने अपने हाथ से आज ही पूरी की
है। 25ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, अब अपनी दूसरी
बात भी पूरी कर जो तूने अपने ख़ादिम दाऊद से
की थी। क्योंकि तूने मेरे बाप से वादा किया था,
'अगर तेरी औलाद तेरी तरह अपने चाल-चलन
पर ध्यान देकर मेरे हुज़ूर चलती रहे तो इसराईल
पर उस की हुकूमत हमेशा तक क़ायम रहेगी।'
26ऐ इसराईल के ख़ुदा, अब बराहे-करम अपना
यह वादा पूरा कर जो तूने अपने ख़ादिम मेरे बाप
दाऊद से किया है।
27लेकिन क्या अल्लाह वाक़ई ज़मीन पर
सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो बुलंदतरीन आसमान
में भी समा नहीं सकता! तो फिर यह मकान
जो मैंने बनाया है किस तरह तेरी सुकूनतगाह
बन सकता है? 28ऐ रब मेरे ख़ुदा, तो भी अपने
ख़ादिम की दुआ और इल्तिजा सुन जब मैं आज
तेरे हुज़ूर पुकारते हुए इलतमास करता हूँ 29कि
बराहे-करम दिन-रात इस इमारत की निगरानी
कर! क्योंकि यह वह जगह है जिसके बारे में तूने
ख़ुद फ़रमाया, 'यहाँ मेरा नाम सुकूनत करेगा।'
चुनाँचे अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं इस

मक़ाम की तरफ़ रुख़ किए हुए करता हूँ। 30जब
हम इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें तो
अपने ख़ादिम और अपनी क़ौम की इल्तिजा सुन।
आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और जब
सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

31अगर किसी पर इलज़ाम लगाया जाए और
उसे यहाँ तेरी क़ुरबानगाह के सामने लाया जाए
ताकि हलफ़ उठाकर वादा करे कि मैं बेक़ुसूर हूँ
32तो बराहे-करम आसमान पर से सुनकर अपने
ख़ादिमों का इनसाफ़ कर। क़ुसूरवार को मुजरिम
ठहराकर उसके अपने सर पर वह कुछ आने दे जो
उससे सरज़द हुआ है, और बेक़ुसूर को बेइलज़ाम
क़रार देकर उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

33हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इसराईल
तेरा गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने
शिकस्त खाए। अगर इसराईली आख़िरकार तेरे
पास लौट आएँ और तेरे नाम की तमजीद करके
यहाँ इस घर में तुझसे दुआ और इलतमास करें
34तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना।
अपनी क़ौम इसराईल का गुनाह मुआफ़ करके
उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस लाना जो तूने
उनके बापदादा को दे दिया था।

35हो सकता है इसराईली तेरा इतना संगीन
गुनाह करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश
न बरसे। अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़
रुख़ करके तेरे नाम की तमजीद करें और तेरी
सज़ा के बाइस अपना गुनाह छोड़कर लौट आएँ
36तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना।
अपने ख़ादिमों और अपनी क़ौम इसराईल को
मुआफ़ कर, क्योंकि तू ही उन्हें अच्छी राह की
तालीम देता है। तब उस मुल्क पर दुबारा बारिश
बरसा दे जो तूने अपनी क़ौम को मीरास में दे दिया
है।

37हो सकता है इसराईल में काल पड़ जाए,
अनाज की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिड्डियों
या कीड़ों से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी
शहर का मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी
हो, 38अगर कोई इसराईली या तेरी पूरी क़ौम
उसका सबब जानकर अपने हाथों को इस घर
की तरफ़ बढ़ाए और तुझसे इलतमास करे 39तो
आसमान पर अपने तख़्त से उनकी फ़रियाद सुन
लेना। उन्हें मुआफ़ करके वह कुछ कर जो ज़रूरी
है। हर एक को उस की तमाम हरकतों का बदला
दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही हर इनसान के दिल को
जानता है। 40फिर जितनी देर वह उस मुल्क में
ज़िंदगी गुज़ारेंगे जो तूने हमारे बापदादा को दिया
था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़ मानेंगे।

41आइंदा परदेसी भी तेरे नाम के सबब से दूर-
दराज़ ममालिक से आएँगे। अगरचे वह तेरी क़ौम
इसराईल के नहीं होंगे 42तो भी वह तेरे अज़ीम
नाम, तेरी बड़ी क़ुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों
के बारे में सुनकर आएँगे और इस घर की तरफ़
रुख़ करके दुआ करेंगे। 43तब आसमान पर से
उनकी फ़रियाद सुन लेना। जो भी दरख़ास्त वह
पेश करें वह पूरी करना ताकि दुनिया की तमाम
अक़वाम तेरा नाम जानकर तेरी क़ौम इसराईल
की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान लें कि जो
इमारत मैंने तामीर की है उस पर तेरे ही नाम का
ठप्पा लगा है।

44हो सकता है तेरी क़ौम के मर्द तेरी हिदायत
के मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए
निकलें। अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस
इमारत की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें जो मैंने
तेरे नाम के लिए तामीर की है 45तो आसमान पर
से उनकी दुआ और इलतमास सुनकर उनके हक़
में इनसाफ़ क़ायम रखना।

46हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें
तो हम सबसे सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे
में तू नाराज़ होकर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो
उन्हें क़ैद करके अपने किसी दूर-दराज़ या क़रीबी
मुल्क में ले जाए। 47शायद वह जिलावतनी में
तौबा करके दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें और तुझसे
इलतमास करें, ‘हमने गुनाह किया है, हमसे
ग़लती हुई है, हमने बेदीन हरकतें की हैं।’ 48अगर
वह ऐसा करके दुश्मन के मुल्क में अपने पूरे
दिलो-जान से दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें और तेरी

तरफ़ से बापदादा को दिए गए मुल्क, तेरे चुने
हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ रुख़ करके
दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है
49तो आसमान पर अपने तख़्त से उनकी दुआ
और इलतमास सुन लेना। उनके हक़ में इनसाफ़
क़ायम करना, 50और अपनी क़ौम के गुनाहों को
मुआफ़ कर देना। जिस भी जुर्म से उन्होंने तेरा
गुनाह किया है वह मुआफ़ कर देना। बख़्श दे
कि उन्हें गिरिफ़्तार करनेवाले उन पर रहम करें।
51क्योंकि यह तेरी ही क़ौम के अफ़राद हैं, तेरी ही
मीरास जिसे तू मिसर के भड़कते भट्टे से निकाल
लाया।

52ऐ अल्लाह, तेरी आँखें मेरी इल्तिजाओं और
तेरी क़ौम इसराईल की फ़रियादों के लिए खुली
रहें। जब भी वह मदद के लिए तुझे पुकारें तो
उनकी सुन लेना! 53क्योंकि तू, ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़ ने इसराईल को दुनिया की तमाम क़ौमों
से अलग करके अपनी ख़ास मिलकियत बना
लिया है। हमारे बापदादा को मिसर से निकालते
वक़्त तूने मूसा की मारिफ़त इस हक़ीक़त का
एलान किया।"

आख़िरी दुआ और बरकत

54इस दुआ के बाद सुलेमान खड़ा हुआ,
क्योंकि दुआ के दौरान उसने रब की क़ुरबानगाह
के सामने अपने घुटने टेके और अपने हाथ
आसमान की तरफ़ उठाए हुए थे। 55अब वह
इसराईल की पूरी जमात के सामने खड़ा हुआ
और बुलंद आवाज़ से उसे बरकत दी,

56"रब की तमजीद हो जिसने अपने वादे के
ऐन मुताबिक़ अपनी क़ौम इसराईल को आरामो-
सुकून फ़राहम किया है। जितने भी ख़ूबसूरत वादे
उसने अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त किए हैं
वह सबके सब पूरे हो गए हैं। 57जिस तरह रब
हमारा ख़ुदा हमारे बापदादा के साथ था उसी तरह
वह हमारे साथ भी रहे। न वह हमें छोड़े, न तर्क
करे 58बल्कि हमारे दिलों को अपनी तरफ़ मायल
करे ताकि हम उस की तमाम राहों पर चलें और
उन तमाम अहकाम और हिदायात के ताबे रहें जो
उसने हमारे बापदादा को दी हैं।

59रब के हुज़ूर मेरी यह फ़रियाद दिन-रात रब
हमारे ख़ुदा के क़रीब रहे ताकि वह मेरा और अपनी
क़ौम का इनसाफ़ क़ायम रखे और हमारी रोज़ाना
ज़रूरियात पूरी करे। 60तब तमाम अक़वाम जान
लेंगी कि रब ही ख़ुदा है और कि उसके सिवा कोई
और माबूद नहीं है।

61लेकिन लाज़िम है कि आप रब हमारे ख़ुदा
के पूरे दिल से वफ़ादार रहें। हमेशा उस की
हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह आप आज
कर रहे हैं।"

रब के घर की मख़सूसियत पर जशन

62-63फिर बादशाह और तमाम इसराईल ने
रब के हुज़ूर क़ुरबानियाँ पेश करके रब के घर
को मख़सूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान
ने 22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-
बकरियों को सलामती की क़ुरबानियों के तौर
पर ज़बह किया। 64उसी दिन बादशाह ने सहन
का दरमियानी हिस्सा क़ुरबानियाँ चढ़ाने के लिए
मख़सूस किया। वजह यह थी कि पीतल की
क़ुरबानगाह इतनी क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए
छोटी थी, क्योंकि भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और
ग़ल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी।
इसके अलावा सलामती की बेशुमार क़ुरबानियों
की चरबी को भी जलाना था।

65ईद 14 दिन तक मनाई गई। पहले हफ़ते में
सुलेमान और तमाम इसराईल ने रब के घर की
मख़सूसियत मनाई और दूसरे हफ़ते में झोंपड़ियों
की ईद। बहुत ज़्यादा लोग शरीक हुए। वह दूर-
दराज़ इलाक़ों से यरूशलम आए थे, शिमाल में
लबो-हमात से लेकर जुनूब में उस वादी तक
जो मिसर की सरहद थी। 66दो हफ़तों के बाद
सुलेमान ने इसराईलियों को रुख़सत किया।
बादशाह को बरकत देकर वह अपने अपने घर चले
गए। सब शादमान और दिल से ख़ुश थे कि रब ने

अपने ख़ादिम दाऊद और अपनी क़ौम इसराईल पर इतनी मेहरबानी की है।

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

9 चुनाँचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल को तकमील तक पहुँचा-
या। जो कुछ भी उसने ठान लिया था वह पूरा
हुआ। 2उस वक़्त रब दुबारा उस पर ज़ाहिर हुआ,
उस तरह जिस तरह वह जिबऊन में उस पर ज़ाहिर
हुआ था। 3उसने सुलेमान से कहा,

"जो दुआ और इल्तिजा तूने मेरे हुज़ूर की उसे मैंने सुनकर इस इमारत को जो तूने बनाई है अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया है। उसमें मैं अपना नाम अबद तक क़ायम रखूँगा। मेरी आँखें और दिल अबद तक वहाँ हाज़िर रहेंगे।
4जहाँ
तक तेरा ताल्लुक़ है, अपने बाप दाऊद की तरह दियानतदारी और रास्ती से मेरे हुज़ूर चलता रह। क्योंकि अगर तू मेरे तमाम अहकाम और हिदायात
की पैरवी करता रहे 5तो मैं तेरी इसराईल पर
हुकूमत हमेशा तक क़ायम रखूँगा। फिर मेरा वह वादा क़ायम रहेगा जो मैंने तेरे बाप दाऊद से किया था कि इसराईल पर तेरी औलाद की हुकूमत हमेशा तक क़ायम रहेगी।

6लेकिन ख़बरदार! अगर तू या तेरी औलाद मुझसे दूर होकर मेरे दिए गए अहकाम और हिदायात के ताबे न रहे बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रुजू करके उनकी ख़िदमत और परस्तिश
करे 7तो मैं इसराईल को उस मुल्क में से मिटा
दूँगा जो मैंने उनको दे दिया था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस घर को भी रद्द कर दूँगा जो मैंने अपने नाम के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया है। उस वक़्त इसराईल तमाम अक़वाम में मज़ाक़ और लान-तान का निशाना बन जाएगा।
8इस शानदार घर
की बुरी हालत देखकर यहाँ से गुज़रनेवाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह अपनी हिक़ारत का इज़हार करके पूछेंगे, 'रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा सुलूक क्यों किया?'
9तब लोग जवाब देंगे, 'इसलिए कि गो रब उनका
ख़ुदा उनके बापदादा को मिसर से निकालकर यहाँ लाया तो भी यह लोग उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि वह उनकी परस्तिश और ख़िदमत करने से बाज़ न आए इसलिए रब ने उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल दिया है'।"

हीराम की मदद का सिला

10रब के घर और शाही महल को तामीर करने
में 20 साल सर्फ़ हुए थे। 11उस दौरान सूर का
बादशाह हीराम सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी लकड़ी और उतना सोना भेजता रहा जितना सुलेमान चाहता था। जब इमारतें तकमील तक पहुँच गईं तो सुलेमान ने हीराम को मुआवज़े
में गलील के 20 शहर दे दिए। 12लेकिन जब
हीराम उनका मुआयना करने के लिए सूर से
गलील आया तो वह उसे पसंद न आए। 13उसने
सवाल किया, "मेरे भाई, यह कैसे शहर हैं जो आपने मुझे दिए हैं?" और उसने उस इलाक़े का नाम काबूल यानी 'कुछ भी नहीं' रखा। यह नाम
आज तक रायज है। 14बात यह थी कि हीराम
ने इसराईल के बादशाह को तक़रीबन 4,000 किलोग्राम सोना भेजा था।

सुलेमान की मुख़्तलिफ़ मुहिमात

15सुलेमान ने अपने तामीरी काम के लिए
बेगारी लगाए। ऐसे ही लोगों की मदद से उसने न सिर्फ़ रब का घर, अपना महल, इर्दगिर्द के चबूतरे और यरूशलम की फ़सील बनवाई बल्कि तीनों शहर हसूर, मजिद्दो और जज़र को भी।

16जज़र शहर पर मिसर के बादशाह फ़िरौन ने
हमला करके क़ब्ज़ा कर लिया था। उसके कनानी बाशिंदों को क़त्ल करके उसने पूरे शहर को जला दिया था। जब सुलेमान की फ़िरौन की बेटी से शादी हुई तो मिसरी बादशाह ने जहेज़ के तौर
पर उसे यह इलाक़ा दे दिया। 17अब सुलेमान
ने जज़र का शहर दुबारा तामीर किया। इसके
अलावा उसने नशेबी बैत-हौरून, 18बालात और

रेगिस्तान के शहर तदमूर में बहुत-सा तामीरी काम कराया।

19सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और अपने रथों और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर बनवाए। जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी सलतनत की किसी और जगह बनवाना चाहता था वह उसने बनवाया।

20-21जिन आदमियों की सुलेमान ने बेगार पर भरती की वह इसराईली नहीं थे बल्कि अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी यानी कनान के पहले बाशिंदों की वह औलाद थे जो बाक़ी रह गए थे। मुल्क पर क़ब्ज़ा करते वक़्त इसराईली इन क़ौमों को पूरे तौर पर मिटा न सके, और आज तक इनकी औलाद को इसराईल के लिए बेगार में काम करना पड़ता है। 22लेकिन सुलेमान ने इसराईलियों में से किसी को भी ऐसे काम करने पर मजबूर न किया बल्कि वह उसके फ़ौजी, सरकारी अफ़सर, फ़ौज के अफ़सर और रथों के फ़ौजी बन गए, और उन्हें उसके रथों और घोड़ों पर मुक़र्रर किया गया। 23सुलेमान के तामीरी काम पर भी 550 इसराईली मुक़र्रर थे जो ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम करनेवालों की निगरानी करते थे।

24जब फ़िरौन की बेटी यरूशलम के पुराने हिस्से बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में मुंतक़िल हुई जो सुलेमान ने उसके लिए तामीर किया था तो वह इर्दगिर्द के चबूतरे बनवाने लगा। 25सुलेमान साल में तीन बार रब को भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ पेश करता था। वह उन्हें रब के घर की उस क़ुरबानगाह पर चढ़ाता था जो उसने रब के लिए बनवाई थी। साथ साथ वह बख़ूर भी जलाता था। यों उसने रब के घर को तकमील तक पहुँचाया।

26इसके अलावा सुलेमान बादशाह ने बह-री जहाज़ों का बेड़ा भी बनवाया। इस काम का मरकज़ ऐलात के क़रीब शहर अस्यून-जाबर था। यह बंदरगाह मुल्के-अदोम में बहरे-क़ुलज़ुम के साहिल पर है। 27हीराम बादशाह ने उसे तजरबाकार मल्लाह भेजे ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ मिलकर जहाज़ों को चलाएँ। 28उन्होंने ओ-फ़ीर तक सफ़र किया और वहाँ से तक़रीबन 14,000 किलोग्राम सोना सुलेमान के पास ले आए।

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

10 सुलेमान की शोहरत सबा की मलिका तक पहुँच गई। जब उसने उसके बारे में सुना और यह भी कि उसने रब के नाम के लिए क्या कुछ किया है तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना हुई ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की दानिशमंदी जाँच ले। 2वह निहायत बड़े क़ाफ़िले के साथ यरूशलम पहुँची जिसके ऊँट बलसान, कसरत के सोने और क़ीमती जवाहिर से लदे हुए थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाक़ात हुई तो उसने उससे वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उसके ज़हन में थे। 3सुलेमान उसके हर सवाल का जवाब दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा नहीं थी कि बादशाह उसका मतलब मलिका को बता न सकता। 4सबा की मलिका सुलेमान की वसी हिकमत और उसके नए महल से बहुत मुतअस्सिर हुई। 5उसने बादशाह की मेज़ों पर के मुख़्तलिफ़ खाने देखे और यह कि उसके अफ़सर किस तरतीब से उस पर बिठाए जाते थे। उसने बैरों की ख़िदमत, उनकी शानदार वरदियों और साक़ियों पर भी ग़ौर किया। जब उसने इन बातों के अलावा भस्म होनेवाली वह क़ुरबानियाँ भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता था तो मलिका हक्का-बक्का रह गई।

6वह बोल उठी, "वाक़ई, जो कुछ मैंने अपने मुल्क में आपके शाहकारों और हिकमत के बारे में सुना था वह दुरुस्त है। 7जब तक मैंने ख़ुद आकर यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा मुझे यक़ीन नहीं आता था। बल्कि हक़ीक़त में मुझे आपके बारे में आधा भी नहीं बताया गया

था। आपकी हिकमत और दौलत उन रिपोर्टों से
कहीं ज़्यादा है जो मुझ तक पहुँची थीं। 8आपके
लोग कितने मुबारक हैं! आपके अफ़सर कितने
मुबारक हैं जो मुसलसल आपके सामने खड़े
रहते और आपकी दानिश भरी बातें सुनते हैं!
9रब आपके ख़ुदा की तमजीद हो जिसने आपको
पसंद करके इसराईल के तख़्त पर बिठाया है।
रब इसराईल से अबदी मुहब्बत रखता है, इसी
लिए उसने आपको बादशाह बना दिया है ताकि
इनसाफ़ और रास्तबाज़ी क़ायम रखें।”

10फिर मलिका ने सुलेमान को तक़रीबन
4,000 किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बलसान
और जवाहिर दिए। बाद में कभी भी उतना
बलसान इसराईल में नहीं लाया गया जितना उस
वक़्त सबा की मलिका लाई।

11हीराम के जहाज़ ओफ़ीर से न सिर्फ़ सोना
लाए बल्कि उन्होंने क़ीमती लकड़ी और जवाहिर
भी बड़ी मिक़दार में इसराईल तक पहुँचाए।
12जितनी क़ीमती लकड़ी उन दिनों में दरामद हुई
उतनी आज तक कभी यहूदाह में नहीं लाई गई।
इस लकड़ी से बादशाह ने रब के घर और अपने
महल के लिए कटहरे बनवाए। यह मौसीक़ारों के
सरोद और सितार बनाने के लिए भी इस्तेमाल
हुई।

13सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा
की मलिका को बहुत-से तोह्फ़े दिए। नीज़, जो
कुछ भी मलिका चाहती थी या उसने माँगा वह
उसे दिया गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और
अफ़सरों के हमराह अपने वतन वापस चली गई।

सुलेमान की दौलत और शोहरत

14जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता
था उसका वज़न तक़रीबन 23,000 किलो-
ग्राम था। 15इसमें वह टैक्स शामिल नहीं थे
जो उसे सौदागरों, ताजिरों, अरब बादशाहों और
ज़िलों के अफ़सरों से मिलते थे।

16-17सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और
300 छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मँढा गया।
हर बड़ी ढाल के लिए तक़रीबन 7 किलोग्राम
सोना इस्तेमाल हुआ और हर छोटी ढाल के लिए
तक़रीबन साढ़े 3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें
‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में महफ़ूज़ रखा।

18इनके अलावा बादशाह ने हाथीदाँत से
आरास्ता एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर
ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। 19-20तख़्त की पुश्त
का ऊपर का हिस्सा गोल था, और उसके हर बाज़ू
के साथ शेरबबर का मुजस्समा था। तख़्त कुछ
ऊँचा था, और बादशाह छः पाएवाली सीढ़ी पर
चढ़कर उस पर बैठता था। दाईं और बाईं तरफ़
हर पाए पर शेरबबर का मुजस्समा था। इस क़िस्म
का तख़्त किसी और सलतनत में नहीं पाया जाता
था।

21सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि
‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में तमाम बरतन
ख़ालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की
नहीं थी, क्योंकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की
कोई क़दर नहीं थी। 22बादशाह के अपने बहरी
जहाज़ थे जो हीराम के जहाज़ों के साथ मिलकर
मुख़्तलिफ़ जगहों पर जाते थे। हर तीन साल के
बाद वह सोने-चाँदी, हाथीदाँत, बंदरों और मोरों से
लदे हुए वापस आते थे।

23सुलेमान की दौलत और हिकमत दुनिया के
तमाम बादशाहों से कहीं ज़्यादा थी। 24पूरी दुनिया
उससे मिलने की कोशिश करती रही ताकि वह
हिकमत सुन ले जो अल्लाह ने उसके दिल में डाल
दी थी। 25साल बसाल जो भी सुलेमान के दरबार
में आता वह कोई न कोई तोह्फ़ा लाता। यों उसे
सोने-चाँदी के बरतन, क़ीमती लिबास, हथियार,
बलसान, घोड़े और ख़च्चर मिलते रहे।

26सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000
घोड़े थे। कुछ उसने रथों के लिए मख़सूस किए
गए शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास
रखे। 27बादशाह की सरगरमियों के बाइस चाँदी
पत्थर जैसी आम हो गई और देवदार की क़ीमती
लकड़ी यहूदाह के मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े
की अंजीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम

हो गई। 28बादशाह अपने घोड़े मिसर और क़ुए
यानी किलिकिया से दरामद करता था। उसके
ताजिर इन जगहों पर जाकर उन्हें ख़रीद लाते थे।
29बादशाह के रथ मिसर से दरामद होते थे। हर
रथ की क़ीमत चाँदी के 600 सिक्के और हर घोड़े
की क़ीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान
के ताजिर यह घोड़े बरामद करते हुए तमाम हित्ती
और अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

सुलेमान रब से दूर हो जाता है

11 लेकिन सुलेमान बहुत-सी ग़ैर-
मुल्की ख़वातीन से मुहब्बत कर-
ता था। फ़िरौन की बेटी के अलावा उस की
शादी मोआबी, अम्मोनी, अदोमी, सैदानी और
हित्ती औरतों से हुई। 2इन क़ौमों के बारे में रब ने
इसराईलियों को हुक्म दिया था, "न तुम इनके
घरों में जाओ और न यह तुम्हारे घरों में आएँ,
वरना यह तुम्हारे दिल अपने देवताओं की तरफ़
मायल कर देंगे।" तो भी सुलेमान बड़े प्यार से
अपनी इन बीवियों से लिपटा रहा। 3उस की शाही
ख़ानदानों से ताल्लुक़ रखनेवाली 700 बीवियाँ
और 300 दाश्ताएँ थीं। इन औरतों ने आख़िरकार
उसका दिल रब से दूर कर दिया। 4जब वह बूढ़ा
हो गया तो उन्होंने उसका दिल दीगर माबूदों की
तरफ़ मायल कर दिया। यों वह बुढ़ापे में अपने
बाप दाऊद की तरह पूरे दिल से रब का वफ़ादार
न रहा 5बल्कि सैदानियों की देवी अस्तारात और
अम्मोनियों के देवता मिलकूम की पूजा करने
लगा। 6ग़रज़ उसने ऐसा काम किया जो रब को
नापसंद था। वह वफ़ादारी न रही जिससे उसके
बाप दाऊद ने रब की ख़िदमत की थी।

7यरूशलम के मशरिक़ में सुलेमान ने एक
पहाड़ी पर दो मंदिर बनाए, एक मोआब के घिनौने
देवता कमोस के लिए और एक अम्मोन के घिनौने
देवता मलिक यानी मिलकूम के लिए। 8ऐसे मंदिर
उसने अपनी तमाम ग़ैरमुल्की बीवियों के लिए
तामीर किए ताकि वह अपने देवताओं को बख़ूर
और ज़बह की क़ुरबानियाँ पेश कर सकें।

9रब को सुलेमान पर बड़ा ग़ुस्सा आया,
क्योंकि वह इसराईल के ख़ुदा से दूर हो गया था,
हालाँकि रब उस पर दो बार ज़ाहिर हुआ था। 10गो
उसने उसे दीगर माबूदों की पूजा करने से साफ़
मना किया था तो भी सुलेमान ने उसका हुक्म न
माना। 11इसलिए रब ने उससे कहा, "चूँकि तू
मेरे अहद और अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं
गुज़ारता, इसलिए मैं बादशाही को तुझसे छीनकर
तेरे किसी अफ़सर को दूँगा। यह बात यक़ीनी है।
12लेकिन तेरे बाप दाऊद की ख़ातिर मैं यह तेरे
जीते-जी नहीं करूँगा बल्कि बादशाही को तेरे बेटे
ही से छीनूँगा। 13और मैं पूरी ममलकत उसके
हाथ से नहीं लूँगा बल्कि अपने ख़ादिम दाऊद और
अपने चुने हुए शहर यरूशलम की ख़ातिर उसके
लिए एक क़बीला छोड़ दूँगा।"

सुलेमान के दुश्मन हदद और रज़ून

14फिर रब ने अदोम के शाही ख़ानदान में से
एक आदमी बनाम हदद को बरपा किया जो
सुलेमान का सख़्त मुख़ालिफ़ बन गया। 15वह यों
सुलेमान का दुश्मन बन गया कि चंद साल पहले
जब दाऊद ने अदोम को शिकस्त दी तो उसका
फ़ौजी कमाँडर योआब मैदाने-जंग में पड़ी तमाम
इसराईली लाशों को दफ़नाने के लिए अदोम
आया। जहाँ भी गया वहाँ उसने हर अदोमी मर्द
को मार डाला। 16वह छः माह तक अपने फ़ौजियों
के साथ हर जगह फिरा और तमाम अदोमी मर्दों
को मारता गया। 17हदद उस वक़्त बच गया और
अपने बाप के चंद एक सरकारी अफ़सरों के साथ
फ़रार होकर मिसर में पनाह ले सका।

18रास्ते में उन्हें दश्ते-फ़ारान के मुल्के-
मिदियान से गुज़रना पड़ा। वहाँ वह मज़ीद कुछ
आदमियों को जमा कर सके और सफ़र करते
करते मिसर पहुँच गए। हदद मिसर के बादशाह
फ़िरौन के पास गया तो उसने उसे घर, कुछ
ज़मीन और ख़ुराक मुहैया की। 19हदद फ़िरौन
को इतना पसंद आया कि उसने उस की शादी
अपनी बीवी मलिका तहफ़नीस की बहन के साथ

कराई। 20इस बहन के बेटा पैदा हुआ जिसका
नाम जनूबत रखा गया। तह्फ़नीस ने उसे शाही
महल में पाला जहाँ वह फ़िरौन के बेटों के साथ
परवान चढ़ा।

21एक दिन हदद को ख़बर मिली कि दाऊद
और उसका कमाँडर योआब फ़ौत हो गए हैं।
तब उसने फ़िरौन से इजाज़त माँगी, “मैं अपने
मुल्क लौट जाना चाहता हूँ, बराहे-करम मुझे
जाने दें।” 22फ़िरौन ने एतराज़ किया, “यहाँ क्या
कमी है कि तुम अपने मुल्क वापस जाना चाहते
हो?” हदद ने जवाब दिया, “मैं किसी भी चीज़
से महरूम नहीं रहा, लेकिन फिर भी मुझे जाने
दीजिए।”

23अल्लाह ने एक और आदमी को भी सुलेमान
के ख़िलाफ़ बरपा किया। उसका नाम रज़ून
बिन इलियदा था। पहले वह ज़ोबाह के बादशाह
हददअज़र की ख़िदमत अंजाम देता था, लेकिन
एक दिन उसने अपने मालिक से भागकर 24कुछ
आदमियों को अपने गिर्द जमा किया और डाकुओं
के जत्थे का सरग़ना बन गया। जब दाऊद
ने ज़ोबाह को शिकस्त दे दी तो रज़ून अपने
आदमियों के साथ दमिश्क़ गया और वहाँ आबाद
होकर अपनी हुकूमत क़ायम कर ली। 25होते
होते वह पूरे शाम का हुक्मरान बन गया। वह
इसराईलियों से नफ़रत करता था और सुलेमान
के जीते-जी इसराईल का ख़ास दुश्मन बना रहा।
हदद की तरह वह भी इसराईल को तंग करता
रहा।

यरुबियाम और अख़ियाह नबी

26सुलेमान का एक सरकारी अफ़सर भी
उसके ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ। उसका नाम
यरुबियाम बिन नबात था, और वह इफ़राईम के
शहर सरीदा का था। उस की माँ सरुआ बेवा
थी। 27जब यरुबियाम बाग़ी हुआ तो उन दिनों
में सुलेमान इर्दगिर्द के चबूतरे और फ़सील का
आख़िरी हिस्सा तामीर कर रहा था। 28उसने
देखा कि यरुबियाम माहिर और मेहनती जवान
है, इसलिए उसने उसे इफ़राईम और मनस्सी के
क़बीलों के तमाम बेगार में काम करनेवालों पर
मुक़र्रर किया।

29एक दिन यरुबियाम शहर से निकल रहा था
तो उस की मुलाक़ात सैला के नबी अख़ियाह
से हुई। अख़ियाह नई चादर ओढ़े फिर रहा था।
खुले मैदान में जहाँ कोई और नज़र न आया
30अख़ियाह ने अपनी चादर को पकड़कर बारह
टुकड़ों में फाड़ लिया 31और यरुबियाम से कहा,

“चादर के दस टुकड़े अपने पास रखें! क्योंकि
रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘इस वक़्त
मैं इसराईल की बादशाही को सुलेमान से
छीननेवाला हूँ। जब ऐसा होगा तो मैं उसके दस
क़बीले तेरे हवाले कर दूँगा। 32एक ही क़बीला
उसके पास रहेगा, और यह भी सिर्फ़ उसके
बाप दाऊद और उस शहर की ख़ातिर जिसे मैंने
तमाम क़बीलों में से चुन लिया है। 33इस तरह
मैं सुलेमान को सज़ा दूँगा, क्योंकि वह और
उसके लोग मुझे तर्क करके सैदानियों की देवी
अस्तारात की, मोआबियों के देवता कमोस की
और अम्मोनियों के देवता मिलकूम की पूजा करने
लगे हैं। वह मेरी राहों पर नहीं चलते बल्कि वही
कुछ करते हैं जो मुझे बिलकुल नापसंद है। जिस
तरह दाऊद मेरे अहकाम और हिदायात की पैरवी
करता था उस तरह उसका बेटा नहीं करता।

34लेकिन मैं इस वक़्त पूरी बादशाही सुलेमान
के हाथ से नहीं छीनूँगा। अपने ख़ादिम दाऊद की
ख़ातिर जिसे मैंने चुन लिया और जो मेरे अहकाम
और हिदायात के ताबे रहा मैं सुलेमान के जीते-
जी यह नहीं करूँगा। वह ख़ुद बादशाह रहेगा,
35लेकिन उसके बेटे से मैं बादशाही छीनकर दस
क़बीले तेरे हवाले कर दूँगा। 36सिर्फ़ एक क़बीला
सुलेमान के बेटे के सुपुर्द रहेगा ताकि मेरे ख़ादिम
दाऊद का चराग़ हमेशा मेरे हुज़ूर यरूशलम में
जलता रहे, उस शहर में जो मैंने अपने नाम की
सुकूनत के लिए चुन लिया है। 37लेकिन तुझे, ऐ
यरुबियाम, मैं इसराईल पर बादशाह बना दूँगा।
जो कुछ भी तेरा जी चाहता है उस पर तू हुकूमत

करेगा। 38उस वक़्त अगर तू मेरे ख़ादिम दाऊद
की तरह मेरी हर बात मानेगा, मेरी राहों पर चलेगा
और मेरे अहकाम और हिदायात के ताबे रहकर
वह कुछ करेगा जो मुझे पसंद है तो फिर मैं तेरे
साथ रहूँगा। फिर मैं तेरा शाही ख़ानदान उतना
ही क़ायमो-दायम कर दूँगा जितना मैंने दाऊद का
किया है, और इसराईल तेरे ही हवाले रहेगा।
39यों मैं सुलेमान के गुनाह के बाइस दाऊद की
औलाद को सज़ा दूँगा, अगरचे यह अबदी सज़ा
नहीं होगी'।"
40इसके बाद सुलेमान ने यरुबियाम को
मरवाने की कोशिश की, लेकिन यरुबियाम ने
फ़रार होकर मिसर के बादशाह सीसक़ के पास
पनाह ली। वहाँ वह सुलेमान की मौत तक रहा।

सुलेमान की मौत

41सुलेमान की ज़िंदगी और हिकमत के बारे
में मज़ीद बातें 'सुलेमान के आमाल' की किताब
में बयान की गई हैं। 42सुलेमान 40 साल पूरे
इसराईल पर हुकूमत करता रहा। उसका दारुल-
हुकूमत यरूशलम था। 43जब वह मरकर अपने
बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के
उस हिस्से में दफ़न किया गया जो 'दाऊद का
शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा रहुबियाम
तख़्तनशीन हुआ।

शिमाली क़बीले अलग हो जाते हैं

12 रहुबियाम सिकम गया, क्योंकि
वहाँ तमाम इसराईली उसे बाद-
शाह मुक़र्रर करने के लिए जमा हो गए थे।
2यरुबियाम बिन नबात यह ख़बर सुनते ही मिसर
से जहाँ उसने सुलेमान बादशाह से भागकर पनाह
ली थी इसराईल वापस आया। 3इसराईलियों ने
उसे बुलाया ताकि उसके साथ सिकम जाएँ। जब
पहुँचा तो इसराईल की पूरी जमात यरुबियाम के
साथ मिलकर रहुबियाम से मिलने गई। उन्होंने
बादशाह से कहा, 4"जो जुआ आपके बाप ने
हम पर डाल दिया था उसे उठाना मुश्किल था,
और जो वक़्त और पैसे हमें बादशाह की ख़िदमत
में सर्फ़ करने थे वह नाक़ाबिले-बरदाश्त थे। अब
दोनों को कम कर दें। फिर हम ख़ुशी से आपकी
ख़िदमत करेंगे।"
5रहुबियाम ने जवाब दिया, "मुझे तीन दिन की
मोहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।" चुनाँचे
लोग चले गए।
6फिर रहुबियाम बादशाह ने उन बुज़ुर्गों से
मशवरा किया जो सुलेमान के जीते-जी बादशाह
की ख़िदमत करते रहे थे। उसने पूछा, "आपका
क्या ख़याल है? मैं इन लोगों को क्या जवाब
दूँ?" 7बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, "हमारा मशवरा
है कि इस वक़्त उनका ख़ादिम बनकर उनकी
ख़िदमत करें और उन्हें नरम जवाब दें। अगर आप
ऐसा करें तो वह हमेशा आपके वफ़ादार ख़ादिम
बने रहेंगे।"
8लेकिन रहुबियाम ने बुज़ुर्गों का मशवरा रद्द
करके उस की ख़िदमत में हाज़िर उन जवानों से
मशवरा किया जो उसके साथ परवान चढ़े थे।
9उसने पूछा, "मैं इस क़ौम को क्या जवाब दूँ?
यह तक़ाज़ा कर रहे हैं कि मैं वह जुआ हलका
कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर डाल दिया।" 10जो
जवान उसके साथ परवान चढ़े थे उन्होंने कहा,
"अच्छा, यह लोग तक़ाज़ा कर रहे हैं कि आपके
बाप का जुआ हलका किया जाए? उन्हें बता
देना, 'मेरी छोटी उँगली मेरे बाप की कमर से
ज़्यादा मोटी है! 11बेशक जो जुआ उसने आप
पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन
मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने
आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से
तादीब करूँगा'!"
12तीन दिन के बाद जब यरुबियाम तमाम
इसराईलियों के साथ रहुबियाम का फ़ैसला सुनने
के लिए वापस आया 13तो बादशाह ने उन्हें
सख़्त जवाब दिया। बुज़ुर्गों का मशवरा रद्द करके
14उसने उन्हें जवानों का जवाब दिया, "बेशक जो
जुआ मेरे बाप ने आप पर डाल दिया उसे उठाना
मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी

होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!” 15यों रब की मरज़ी पूरी हुई कि रहुबियाम लोगों की बात नहीं मानेगा। क्योंकि अब रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो सैला के नबी अख़ियाह ने यरुबियाम बिन नबात को बताई थी।

16जब इसराईलियों ने देखा कि बादशाह हमारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है तो उन्होंने उससे कहा, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इसराईल, सब अपने अपने घर वापस चलें! ऐ दाऊद, अब अपना घर ख़ुद सँभाल लो!” यह कहकर वह सब चले गए।

17सिर्फ़ यहूदाह के क़बीले के शहरों में रहनेवाले इसराईली रहुबियाम के तहत रहे। 18फिर रहुबियाम बादशाह ने बेगारियों पर मुक़र्रर अफ़सर अदूनीराम को शिमाली क़बीलों के पास भेज दिया, लेकिन उसे देखकर तमाम लोगों ने उसे संगसार किया। तब रहुबियाम जल्दी से अपने रथ पर सवार हुआ और भागकर यरूशलम पहुँच गया। 19यों इसराईल के शिमाली क़बीले दाऊद के शाही घराने से अलग हो गए और आज तक उस की हुकूमत नहीं मानते।

20जब ख़बर शिमाली इसराईल में फैली कि यरुबियाम मिसर से वापस आ गया है तो लोगों ने क़ौमी इजलास मुनअक़िद करके उसे बुलाया और वहाँ उसे अपना बादशाह बना लिया। सिर्फ़ यहूदाह का क़बीला रहुबियाम और उसके घराने का वफ़ादार रहा।

रहुबियाम को इसराईल से जंग करने की इजाज़त नहीं मिलती

21जब रहुबियाम यरूशलम पहुँचा तो उसने यहूदाह और बिनयमीन के क़बीलों के चीदा चीदा फ़ौजियों को इसराईल से जंग करने के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि रहुबियाम बिन सुलेमान के लिए इसराईल पर दुबारा क़ाबू पाएँ। 22लेकिन ऐन उस वक़्त मर्दे-ख़ुदा समायाह को अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम मिला, 23“यहूदाह के बादशाह रहुबियाम बिन सुलेमान, यहूदाह और बिनयमीन के तमाम अफ़राद और बाक़ी लोगों को इत्तला दे, 24‘रब फ़रमाता है कि अपने इसराईली भाइयों से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर वापस चला जाए, क्योंकि जो कुछ हुआ है वह मेरे हुक्म पर हुआ है’।”

तब वह रब की सुनकर अपने अपने घर वापस चले गए।

यरुबियाम के सोने के बछड़े

25यरुबियाम इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के शहर सिकम को मज़बूत करके वहाँ आबाद हुआ। बाद में उसने फ़नुएल शहर की भी क़िलाबंदी की और वहाँ मुंतक़िल हुआ। 26लेकिन दिल में अंदेशा रहा कि कहीं इसराईल दुबारा दाऊद के घराने के हाथ में न आ जाए। 27उसने सोचा, “लोग बाक़ायदगी से यरूशलम आते-जाते हैं ताकि वहाँ रब के घर में अपनी क़ुरबानियाँ पेश करें। अगर यह सिलसिला तोड़ा न जाए तो आहिस्ता आहिस्ता उनके दिल दुबारा यहूदाह के बादशाह रहुबियाम की तरफ़ मायल हो जाएंगे। आख़िरकार वह मुझे क़त्ल करके रहुबियाम को अपना बादशाह बना लेंगे।”

28अपने अफ़सरों के मशवरे पर उसने सोने के दो बछड़े बनवाए। लोगों के सामने उसने एलान किया, “हर क़ुरबानी के लिए यरूशलम जाना मुश्किल है! ऐ इसराईल देख, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।” 29एक बुत उसने जुनूबी शहर बैतेल में खड़ा किया और दूसरा शिमाली शहर दान में। 30यों यरुबियाम ने इसराईलियों को गुनाह करने पर उकसाया। लोग दान तक सफ़र किया करते थे ताकि वहाँ के बुत की पूजा करें।

31इसके अलावा यरुबियाम ने बहुत-सी ऊँची जगहों पर मंदिर बनवाए। उन्हें सँभालने के लिए उसने ऐसे लोग मुक़र्रर किए जो लावी के क़बीले

के नहीं बल्कि आम लोग थे। 32उसने एक नई ईद
भी रायज की जो यहूदाह में मनानेवाली झोंपड़ियों
की ईद की मानिंद थी। यह ईद आठवें माह[a] के
पंद्रहवें दिन मनाई जाती थी। बैतेल में उसने ख़ुद
क़ुरबानगाह पर जाकर अपने बनवाए हुए बछड़ों
को क़ुरबानियाँ पेश कीं, और वहीं उसने अपने उन
मंदिरों के इमामों को मुक़र्रर किया जो उसने ऊँची
जगहों पर तामीर किए थे।

नबी यरुबियाम को बुरी ख़बर पहुँचाता है

33चुनाँचे यरुबियाम के मुक़र्ररकरदा दिन
यानी आठवें महीने के पंद्रहवें दिन इसराई-
लियों ने बैतेल में ईद मनाई। तमाम मेहमानों के
सामने यरुबियाम क़ुरबानगाह पर चढ़ गया ताकि
क़ुरबानियाँ पेश करे।

13 वह अभी क़ुरबानगाह के पास खड़ा
अपनी क़ुरबानियाँ पेश करना ही
चाहता था कि एक मर्दे-ख़ुदा आन पहुँचा। रब
ने उसे यहूदाह से बैतेल भेज दिया था। 2बुलंद
आवाज़ से वह क़ुरबानगाह से मुख़ातिब हुआ,
“ऐ क़ुरबानगाह! ऐ क़ुरबानगाह! रब फ़रमाता
है, ‘दाऊद के घराने से बेटा पैदा होगा जिसका
नाम यूसियाह होगा। तुझ पर वह उन इमामों को
क़ुरबान कर देगा जो ऊँची जगहों के मंदिरों में
ख़िदमत करते और यहाँ क़ुरबानियाँ पेश करने के
लिए आते हैं। तुझ पर इनसानों की हड्डियाँ जलाई
जाएँगी’।” 3फिर मर्दे-ख़ुदा ने इलाही निशान भी
पेश किया। उसने एलान किया, “एक निशान
साबित करेगा कि रब मेरी मारिफ़त बात कर
रहा है! यह क़ुरबानगाह फट जाएगी, और इस
पर मौजूद चरबी मिली राख ज़मीन पर बिखर
जाएगी।”

4यरुबियाम बादशाह अब तक क़ुरबान-
गाह के पास खड़ा था। जब उसने बैतेल की
क़ुरबानगाह के ख़िलाफ़ मर्दे-ख़ुदा की बात सुनी
तो वह हाथ से उस की तरफ़ इशारा करके गरजा,
“उसे पकड़ो!” लेकिन ज्योंही बादशाह ने अपना
हाथ बढ़ाया वह सूख गया, और वह उसे वापस
न खींच सका। 5उसी लमहे क़ुरबानगाह फट गई
और उस पर मौजूद राख ज़मीन पर बिखर गई।
बिलकुल वही कुछ हुआ जिसका एलान मर्दे-ख़ुदा
ने रब की तरफ़ से किया था।

6तब बादशाह इलतमास करने लगा, “रब
अपने ख़ुदा का ग़ुस्सा ठंडा करके मेरे लिए दुआ
करें ताकि मेरा हाथ बहाल हो जाए।” मर्दे-ख़ुदा
ने उस की शफ़ाअत की तो यरुबियाम का हाथ
फ़ौरन बहाल हो गया।

7तब यरुबियाम बादशाह ने मर्दे-ख़ुदा को दावत
दी, “आएँ, मेरे घर में खाना खाकर ताज़ादम
हो जाएँ। मैं आपको तोहफ़ा भी दूँगा।” 8लेकिन
उसने इनकार किया, “मैं आपके पास नहीं
आऊँगा, चाहे आप मुझे अपनी मिलकियत का
आधा हिस्सा क्यों न दें। मैं यहाँ न रोटी खाऊँगा,
न कुछ पियूँगा। 9क्योंकि रब ने मुझे हुक्म दिया
है, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और
वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू
बैतेल पहुँचा है’।”

10यह कहकर वह फ़रक़ रास्ता इख़्तियार
करके अपने घर के लिए रवाना हुआ।

नबी की नाफ़रमानी

11बैतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था। जब उसके
बेटे उस दिन घर वापस आए तो उन्होंने उसे सब
कुछ कह सुनाया जो मर्दे-ख़ुदा ने बैतेल में किया
और यरुबियाम बादशाह को बताया था। 12बाप
ने पूछा, “वह किस तरफ़ गया?” बेटों ने उसे वह
रास्ता बताया जो यहूदाह के मर्दे-ख़ुदा ने लिया
था। 13बाप ने हुक्म दिया, “मेरे गधे पर जल्दी से
ज़ीन कसो!” बेटों ने ऐसा किया तो वह उस पर
बैठकर 14मर्दे-ख़ुदा को ढूँडने गया।

चलते चलते मर्दे-ख़ुदा बलूत के दरख़्त के साये
में बैठा नज़र आया। बुज़ुर्ग ने पूछा, “क्या आप
वही मर्दे-ख़ुदा हैं जो यहूदाह से बैतेल आए थे?”
उसने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।” 15बुज़ुर्ग

[a]अक्तूबर ता नवंबर

नबी ने उसे दावत दी, “आएँ, मेरे साथ। मैं घर में आपको कुछ खाना खिलाता हूँ।”

16लेकिन मर्दे-ख़ुदा ने इनकार किया, “नहीं, न मैं आपके साथ वापस जा सकता हूँ, न मुझे यहाँ खाने-पीने की इजाज़त है। 17क्योंकि रब ने मुझे हुक्म दिया, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू बैतेल पहुँचा है’।”

18बुज़ुर्ग नबी ने एतराज़ किया, “मैं भी आप जैसा नबी हूँ! एक फ़रिश्ते ने मुझे रब का नया पैग़ाम पहुँचाकर कहा, ‘उसे अपने साथ घर ले जाकर रोटी खिला और पानी पिला’।” बुज़ुर्ग झूट बोल रहा था, 19लेकिन मर्दे-ख़ुदा उसके साथ वापस गया और उसके घर में कुछ खाया और पिया।

20वह अभी वहाँ बैठे खाना खा रहे थे कि बुज़ुर्ग पर रब का कलाम नाज़िल हुआ। 21उसने बुलंद आवाज़ से यहूदाह के मर्दे-ख़ुदा से कहा, “रब फ़रमाता है, ‘तूने रब के कलाम की ख़िलाफ़वरज़ी की है! जो हुक्म रब तेरे ख़ुदा ने तुझे दिया था वह तूने नज़रंदाज़ किया है। 22गो उसने फ़रमाया था कि यहाँ न कुछ खा और न कुछ पी तो भी तूने वापस आकर यहाँ रोटी खाई और पानी पिया है। इसलिए मरते वक़्त तुझे तेरे बापदादा की क़ब्र में दफ़नाया नहीं जाएगा’।”

23खाने के बाद बुज़ुर्ग के गधे पर ज़ीन कसा गया और मर्दे-ख़ुदा को उस पर बिठाया गया। 24वह दुबारा रवाना हुआ तो रास्ते में एक शेरबबर ने उस पर हमला करके उसे मार डाला। लेकिन उसने लाश को न छेड़ा बल्कि वह वहीं रास्ते में पड़ी रही जबकि गधा और शेर दोनों ही उसके पास खड़े रहे।

25कुछ लोग वहाँ से गुज़रे। जब उन्होंने लाश को रास्ते में पड़े और शेरबबर को उसके पास खड़े देखा तो उन्होंने बैतेल जहाँ बुज़ुर्ग नबी रहता था आकर लोगों को इत्तला दी। 26जब बुज़ुर्ग को ख़बर मिली तो उसने कहा, “वही मर्दे-ख़ुदा है जिसने रब के फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी की। अब वह कुछ हुआ है जो रब ने उसे फ़रमाया था यानी उसने उसे शेरबबर के हवाले कर दिया ताकि वह उसे फाड़कर मार डाले।” 27बुज़ुर्ग ने अपने बेटों को गधे पर ज़ीन कसने का हुक्म दिया, 28और वह उस पर बैठकर रवाना हुआ। जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि लाश अब तक रास्ते में पड़ी है और गधा और शेर दोनों ही उसके पास खड़े हैं। शेरबबर ने न लाश को छेड़ा और न गधे को फाड़ा था।

29बुज़ुर्ग नबी ने लाश को उठाकर अपने गधे पर रखा और उसे बैतेल लाया ताकि उसका मातम करके उसे वहाँ दफ़नाए। 30उसने लाश को अपनी ख़ानदानी क़ब्र में दफ़न किया, और लोगों ने “हाय, मेरे भाई” कहकर उसका मातम किया। 31जनाज़े के बाद बुज़ुर्ग नबी ने अपने बेटों से कहा, “जब मैं कूच कर जाऊँगा तो मुझे मर्दे-ख़ुदा की क़ब्र में दफ़नाना। मेरी हड्डियों को उस की हड्डियों के पास ही रखें। 32क्योंकि जो बातें उसने रब के हुक्म पर बैतेल की क़ुरबानगाह और सामरिया के शहरों की ऊँची जगहों के मंदिरों के बारे में की हैं वह यक़ीनन पूरी हो जाएँगी।”

यरुबियाम फिर भी नाफ़रमान रहता है

33इन वाक़ियात के बावुजूद यरुबियाम अपनी शरीर हरकतों से बाज़ न आया। आम लोगों को इमाम बनाने का सिलसिला जारी रहा। जो कोई भी इमाम बनना चाहता उसे वह ऊँची जगहों के मंदिरों में ख़िदमत करने के लिए मख़सूस करता था। 34यरुबियाम के घराने के इस संगीन गुनाह की वजह से वह आख़िरकार तबाह हुआ और रूए-ज़मीन पर से मिट गया।

यरुबियाम को इलाही सज़ा मिलती है

14 एक दिन यरुबियाम का बेटा अबियाह बहुत बीमार हुआ। 2तब यरुबियाम ने अपनी बीवी से कहा, “जाकर अपना भेस बदलें ताकि कोई न पहचाने कि आप मेरी बीवी हैं। फिर सैला जाएँ। वहाँ अख़ियाह नबी रहता है जिसने मुझे इत्तला दी थी कि मैं इस क़ौम का बादशाह बन

जाऊँगा। 3उसके पास दस रोटियाँ, कुछ बिस्कुट
और शहद का मरतबान ले जाएँ। वह आदमी
आपको ज़रूर बता देगा कि लड़के के साथ क्या
हो जाएगा।”

4चुनाँचे यरुबियाम की बीवी अपना भेस
बदलकर रवाना हुई और चलते चलते सैला में
अख़ियाह के घर पहुँच गई। अख़ियाह उम्ररसीदा
होने के बाइस देख नहीं सकता था। 5लेकिन
रब ने उसे आगाह कर दिया, “यरुबियाम की
बीवी तुझसे मिलने आ रही है ताकि अपने बीमार
बेटे के बारे में मालूमात हासिल करे। लेकिन वह
अपना भेस बदलकर आएगी ताकि उसे पहचाना
न जाए।” फिर रब ने नबी को बताया कि उसे
क्या जवाब देना है।

6जब अख़ियाह ने औरत के क़दमों की आहट
सुनी तो बोला, “यरुबियाम की बीवी, अंदर आएँ!
रूप भरने की क्या ज़रूरत? मुझे आपको बुरी
ख़बर पहुँचानी है। 7जाएँ, यरुबियाम को रब
इसराईल के ख़ुदा की तरफ़ से पैग़ाम दें, ‘मैंने
तुझे लोगों में से चुनकर खड़ा किया और अपनी
क़ौम इसराईल पर बादशाह बना दिया। 8मैंने
बादशाही को दाऊद के घराने से छीनकर तुझे
दे दिया। लेकिन अफ़सोस, तू मेरे ख़ादिम दाऊद
की तरह ज़िंदगी नहीं गुज़ारता जो मेरे अहकाम
के ताबे रहकर पूरे दिल से मेरी पैरवी करता रहा
और हमेशा वह कुछ करता था जो मुझे पसंद
था। 9जो तुझसे पहले थे उनकी निसबत तूने
कहीं ज़्यादा बदी की, क्योंकि तूने बुत ढालकर
अपने लिए दीगर माबूद बनाए हैं और यों मुझे तैश
दिलाया। चूँकि तूने अपना मुँह मुझसे फेर लिया
10इसलिए मैं तेरे ख़ानदान को मुसीबत में डाल
दूँगा। इसराईल में मैं यरुबियाम के तमाम मर्दों को
हलाक कर दूँगा, ख़ाह वह बच्चे हों या बालिग़।
जिस तरह गोबर को झाड़ू देकर दूर किया जाता
है उसी तरह यरुबियाम के घराने का नामो-निशान
मिट जाएगा। 11तुममें से जो शहर में मरेंगे उन्हें
कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें
परिंदे चट कर जाएंगे। क्योंकि यह रब का फ़रमान
है’।”

12फिर अख़ियाह ने यरुबियाम की बीवी से
कहा, “आप अपने घर वापस चली जाएँ। ज्योंही
आप शहर में दाख़िल होंगी लड़का फ़ौत हो
जाएगा। 13पूरा इसराईल उसका मातम करके
उसे दफ़न करेगा। वह आपके ख़ानदान का वाहिद
फ़रद होगा जिसे सहीह तौर से दफ़नाया जाएगा।
क्योंकि रब इसराईल के ख़ुदा ने सिर्फ़ उसी में कुछ
पाया जो उसे पसंद था। 14रब इसराईल पर एक
बादशाह मुक़र्रर करेगा जो यरुबियाम के ख़ानदान
को हलाक करेगा। आज ही से यह सिलसिला शुरू
हो जाएगा। 15रब इसराईल को भी सज़ा देगा,
क्योंकि वह यसीरत देवी के खंबे बनाकर उनकी
पूजा करते हैं। चूँकि वह रब को तैश दिलाते रहे हैं,
इसलिए वह उन्हें मारेगा, और वह पानी में सरकंडे
की तरह हिल जाएंगे। रब उन्हें इस अच्छे मुल्क
से उखाड़कर दरियाए-फ़ुरात के पार मुंतशिर कर
देगा। 16यों वह इसराईल को उन गुनाहों के बाइस
तर्क करेगा जो यरुबियाम ने किए और इसराईल
को करने पर उकसाया है।”

17यरुबियाम की बीवी तिरज़ा में अपने घर
वापस चली गई। और घर के दरवाज़े में दाख़िल
होते ही उसका बेटा मर गया। 18तमाम इसराईल
ने उसे दफ़नाकर उसका मातम किया। सब कुछ
वैसे हुआ जैसे रब ने अपने ख़ादिम अख़ियाह नबी
की मारिफ़त फ़रमाया था।

यरुबियाम की मौत

19बाक़ी जो कुछ यरुबियाम की ज़िंदगी के बारे
में लिखा है वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की
किताब में दर्ज है। उस किताब में पढ़ा जा सकता
है कि वह किस तरह हुकूमत करता था और उसने
कौन कौन-सी जंगें कीं। 20यरुबियाम 22 साल
बादशाह रहा। जब वह मरकर अपने बापदादा से
जा मिला तो उसका बेटा नदब तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह रहुबियाम

21यहूदाह में रहुबियाम बिन सुलेमान हुकूमत
करता था। उस की माँ नामा अम्मोनी थी।
41 साल की उम्र में वह तख़्तनशीन हुआ और
17 साल बादशाह रहा। उसका दारुल-हुकूमत
यरूशलम था, वह शहर जिसे रब ने तमाम
इसराईली क़बीलों में से चुन लिया ताकि उसमें
अपना नाम क़ायम करे।

22लेकिन यहूदाह के बाशिंदे भी ऐसी हरकतें
करते थे जो रब को नापसंद थीं। अपने गुनाहों से
वह उसे तैश दिलाते रहे, क्योंकि उनके यह गुनाह
उनके बापदादा के गुनाहों से कहीं ज़्यादा संगीन
थे। 23उन्होंने भी ऊँची जगहों पर मंदिर बनाए।
हर ऊँची पहाड़ी पर और हर घने दरख़्त के साये
में उन्होंने मख़सूस पत्थर या यसीरत देवी के खंबे
खड़े किए, 24यहाँ तक कि मंदिरों में जिस्मफ़रोश
मर्द और औरतें थे। ग़रज़, उन्होंने उन क़ौमों के
तमाम घिनौने रस्मो-रिवाज अपना लिए जिनको
रब ने इसराईलियों के आगे आगे निकाल दिया
था।

25रहुबियाम बादशाह की हुकूमत के पाँचवें
साल में मिसर के बादशाह सीसक़ ने यरूशलम
पर हमला करके 26रब के घर और शाही महल के
तमाम ख़ज़ाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी
छीन ली गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं। 27इनकी
जगह रहुबियाम ने पीतल की ढालें बनवाईं और
उन्हें उन मुहाफ़िज़ों के अफ़सरों के सुपुर्द किया
जो शाही महल के दरवाज़े की पहरादारी करते
थे। 28जब भी बादशाह रब के घर में जाता तब
मुहाफ़िज़ यह ढालें उठाकर साथ ले जाते। इसके
बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते
थे।

29बाक़ी जो कुछ रहुबियाम बादशाह की
हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया
वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब
में दर्ज है। 30दोनों बादशाहों रहुबियाम और
यरुबियाम के जीते-जी उनके दरमियान जंग जारी
रही। 31जब रहुबियाम मरकर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से
में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी
क़ब्र में दफ़नाया गया। उस की माँ नामा अम्मोनी
थी। फिर रहुबियाम का बेटा अबियाह तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह अबियाह

15 अबियाह इसराईल के बादशाह
यरुबियाम बिन नबात की हुकू-
मत के 18वें साल में यहूदाह का बादशाह बना।
2वह तीन साल बादशाह रहा, और उसका दारुल-
हुकूमत यरूशलम था। उस की माँ माका बिंत
अबीसलूम थी। 3अबियाह से वही गुनाह सरज़द
हुए जो उसके बाप ने किए थे, और वह पूरे दिल
से रब अपने ख़ुदा का वफ़ादार न रहा। गो वह
इसमें अपने परदादा दाऊद से फ़रक़ था 4तो
भी रब उसके ख़ुदा ने अबियाह का यरूशलम में
चराग़ जलने दिया। दाऊद की ख़ातिर उसने उसे
जा-नशीन अता किया और यरूशलम को क़ायम
रखा, 5क्योंकि दाऊद ने वह कुछ किया था जो
रब को पसंद था। जीते-जी वह रब के अहकाम के
ताबे रहा, सिवाए उस जुर्म के जब उसने ऊरियाह
हित्ती के सिलसिले में ग़लत क़दम उठाए थे।

6रहुबियाम और यरुबियाम के दरमियान की
जंग अबियाह की हुकूमत के दौरान भी जारी रही।
7बाक़ी जो कुछ अबियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-
यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 8जब
वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे
यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो
‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। फिर उसका बेटा
आसा तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह आसा

9आसा इसराईल के बादशाह यरुबियाम के
20वें साल में यहूदाह का बादशाह बन गया।
10उस की हुकूमत का दौरानिया 41 साल था,

और उसका दारुल-हुकूमत यरूशलम था। माँ का
नाम माका था, और वह अबीसलूम की बेटी थी।
11अपने परदादा दाऊद की तरह आसा भी वह
कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 12उसने उन
जिस्मफ़रोश मर्दों और औरतों को निकाल दिया
जो मंदिरों में नाम-निहाद ख़िदमत करते थे और
उन तमाम बुतों को तबाह कर दिया जो उसके
बापदादा ने बनाए थे। 13और गो उस की माँ
बादशाह की माँ होने के बाइस बहुत असरो-रसूख़
रखती थी, ताहम आसा ने यह ओहदा ख़त्म कर
दिया जब माँ ने यसीरत देवी का घिनौना खंबा
बनवा लिया। आसा ने यह बुत कटवाकर वादीए-
क़िदरोन में जला दिया। 14अफ़सोस कि उसने
ऊँची जगहों के मंदिरों को दूर न किया। तो भी
आसा जीते-जी पूरे दिल से रब का वफ़ादार रहा।
15सोना-चाँदी और बाक़ी जितनी चीज़ें उसके
बाप और उसने रब के लिए मख़सूस की थीं उन
सबको वह रब के घर में लाया।

16यहूदाह के बादशाह आसा और इस-
राईल के बादशाह बाशा के दरमियान ज़िंदगी-
भर जंग जारी रही। 17एक दिन बाशा बादशाह ने
यहूदाह पर हमला करके रामा शहर की क़िलाबंदी
की। मक़सद यह था कि न कोई यहूदाह के मुल्क
में दाख़िल हो सके, न कोई वहाँ से निकल सके।
18जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-
हदद के पास वफ़द भेजा। बिन-हदद का बाप
ताबरिम्मोन बिन हज़यून था, और उसका दारुल-
हुकूमत दमिश्क़ था। आसा ने रब के घर और शाही
महल के ख़ज़ानों का तमाम बचा हुआ सोना और
चाँदी वफ़द के सुपुर्द करके दमिश्क़ के बादशाह
को पैग़ाम भेजा, 19“मेरा आपके साथ अहद है
जिस तरह मेरे बाप का आपके बाप के साथ
अहद था। गुज़ारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह
तोहफ़ा क़बूल करके इसराईल के बादशाह बाशा
के साथ अपना अहद मनसूख़ कर दें ताकि वह
मेरे मुल्क से निकल जाए।”

20बिन-हदद मुत्तफ़िक़ हुआ। उसने अपने
फ़ौजी अफ़सरों को इसराईल के शहरों पर हमला
करने के लिए भेज दिया तो उन्होंने ऐय्यून,
दान, अबील-बैत-माका, तमाम किन्नरत और
नफ़ताली पर क़ब्ज़ा कर लिया। 21जब बाशा को
इसकी ख़बर मिली तो वह रामा की क़िलाबंदी
करने से बाज़ आया और तिरज़ा वापस चला
गया।

22फिर आसा बादशाह ने यहूदाह के तमाम मर्दों
की भरती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह
उन तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठाकर ले
जाएँ जिनसे बाशा बादशाह रामा की क़िलाबंदी
करना चाहता था। तमाम मर्दों को वहाँ जाना पड़ा,
एक को भी छुट्टी न मिली। इस सामान से आसा
ने बिनयमीन के शहर जिबा और मिसफ़ाह की
क़िलाबंदी की।

23बाक़ी जो कुछ आसा की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-
यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। उसमें
उस की कामयाबियों और उसके तामीर किए
गए शहरों का ज़िक्र है। बुढ़ापे में उसके पाँवों
को बीमारी लग गई। 24जब वह मरकर अपने
बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के
उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा
यहूसफ़त उस की जगह तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह नदब

25नदब बिन यरुबियाम यहूदाह के बाद-
शाह आसा की हुकूमत के दूसरे साल में इसराईल
का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया
दो साल था। 26उसका तर्ज़े-ज़िंदगी रब को पसंद
नहीं था, क्योंकि वह अपने बाप के नमूने पर
चलता रहा। जो बदी यरुबियाम ने इसराईल को
करने पर उकसाया था उससे नदब भी दूर न हुआ।

27-28एक दिन जब नदब इसराईली फ़ौज के
साथ फ़िलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा किए
हुए था तो इशकार के क़बीले के बाशा बिन
अख़ियाह ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे
मार डाला और ख़ुद इसराईल का बादशाह बन

गया। यह यहूदाह के बादशाह आसा की हुकूमत
के तीसरे साल में हुआ।
29तख़्त पर बैठते ही बाशा ने यरुबियाम के पूरे
ख़ानदान को मरवा दिया। उसने एक को भी ज़िंदा
न छोड़ा। यों वह बात पूरी हुई जो रब ने सैला के
रहनेवाले अपने ख़ादिम अख़ियाह की मारिफ़त
फ़रमाई थी। 30क्योंकि जो गुनाह यरुबियाम ने
किए और इसराईल को करने पर उकसाया था
उनसे उसने रब इसराईल के ख़ुदा को तैश दिलाया
था।
31बाक़ी जो कुछ नदब की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

इसराईल का बादशाह बाशा

32-33बाशा बिन अख़ियाह यहूदाह के बादशाह
आसा की हुकूमत के तीसरे साल में इसराईल
का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया
24 साल था, और उसका दारुल-हुकूमत तिरज़ा
रहा। उसके और यहूदाह के बादशाह आसा के
दरमियान ज़िंदगी-भर जंग जारी रही। 34लेकिन
वह भी ऐसा काम करता था जो रब को नापसंद
था, क्योंकि उसने यरुबियाम के नमूने पर चलकर
वह गुनाह जारी रखे जो करने पर यरुबियाम ने
इसराईल को उकसाया था।

16 एक दिन रब ने याहू बिन हना-
नी को बाशा के पास भेजकर
फ़रमाया, 2"पहले तू कुछ नहीं था, लेकिन मैंने
तुझे ख़ाक में से उठाकर अपनी क़ौम इसराईल
का हुक्मरान बना दिया। तो भी तूने यरुबियाम के
नमूने पर चलकर मेरी क़ौम इसराईल को गुनाह
करने पर उकसाया और मुझे तैश दिलाया है।
3इसलिए मैं तेरे घराने के साथ वही कुछ करूँगा
जो यरुबियाम बिन नबात के घराने के साथ किया
था। बाशा की पूरी नसल हलाक हो जाएगी।
4ख़ानदान के जो अफ़राद शहर में मरेंगे उन्हें कुत्ते
खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें परिंदे
चट कर जाएंगे।"
5बाक़ी जो कुछ बाशा की हुकूमत के दौरान
हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ
उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की
तारीख़' की किताब में दर्ज हैं। 6जब वह मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे तिरज़ा
में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा ऐला
तख़्तनशीन हुआ। 7रब की सज़ा का जो पैग़ाम
हनानी के बेटे याहू नबी ने बाशा और उसके
ख़ानदान को सुनाया उस की दो वुजूहात थीं।
पहले, बाशा ने यरुबियाम के ख़ानदान की तरह
वह कुछ किया जो रब को नापसंद था और
उसे तैश दिलाया। दूसरे, उसने यरुबियाम के पूरे
ख़ानदान को हलाक कर दिया था।

इसराईल का बादशाह ऐला

8ऐला बिन बाशा यहूदाह के बादशाह आसा की
हुकूमत के 26वें साल में इसराईल का बादशाह
बना। उस की हुकूमत के दो साल के दौरान
उसका दारुल-हुकूमत तिरज़ा रहा। 9ऐला का
एक अफ़सर बनाम ज़िमरी था। ज़िमरी रथों के
आधे हिस्से पर मुक़र्रर था। अब वह बादशाह
के ख़िलाफ़ साज़िशें करने लगा। एक दिन ऐला
तिरज़ा में महल के इंचार्ज अरज़ा के घर में बैठा मै
पी रहा था। जब नशे में धुत हुआ 10तो ज़िमरी ने
अंदर जाकर उसे मार डाला। फिर वह ख़ुद तख़्त
पर बैठ गया। यह यहूदाह के बादशाह आसा की
हुकूमत के 27वें साल में हुआ।
11तख़्त पर बैठते ही ज़िमरी ने बाशा के पूरे
ख़ानदान को हलाक कर दिया। उसने किसी भी
मर्द को ज़िंदा न छोड़ा, ख़ाह वह दूर का रिश्तेदार
था, ख़ाह दोस्त। 12यों वही कुछ हुआ जो रब ने
याहू नबी की मारिफ़त बाशा को फ़रमाया था।
13क्योंकि बाशा और उसके बेटे ऐला से संगीन
गुनाह सरज़द हुए थे, और साथ साथ उन्होंने
इसराईल को भी यह करने पर उकसाया था।
अपने बातिल देवताओं से उन्होंने रब इसराईल
के ख़ुदा को तैश दिलाया था।

14बाक़ी जो कुछ ऐला की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

इसराईल का बादशाह ज़िमरी

15ज़िमरी यहूदाह के बादशाह आसा की
हुकूमत के 27वें साल में इसराईल का बादशाह
बना। लेकिन तिरज़ा में उस की हुकूमत सिर्फ़ सात
दिन तक क़ायम रही। उस वक़्त इसराईली फ़ौज
फ़िलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा कर रही
थी। 16जब फ़ौज में ख़बर फैल गई कि ज़िमरी
ने बादशाह के ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे क़त्ल
किया है तो तमाम इसराईलियों ने लशकरगाह में
आकर उसी दिन अपने कमाँडर उमरी को बादशाह
बना दिया। 17तब उमरी तमाम फ़ौजियों के साथ
जिब्बतून को छोड़कर तिरज़ा का मुहासरा करने
लगा। 18जब ज़िमरी को पता चला कि शहर
दूसरों के क़ब्ज़े में आ गया है तो उसने महल के
बुर्ज में जाकर उसे आग लगाई। यों वह जलकर
मर गया।

19इस तरह उसे भी मुनासिब सज़ा मिल गई,
क्योंकि उसने भी वह कुछ किया था जो रब
को नापसंद था। यरुबियाम के नमूने पर चलकर
उसने वह तमाम गुनाह किए जो यरुबियाम ने
किए और इसराईल को करने पर उकसाया था।
20जो कुछ ज़िमरी की हुकूमत के दौरान हुआ और
जो साज़िशें उसने कीं वह 'शाहाने-इसराईल की
तारीख़' की किताब में दर्ज हैं।

इसराईल का बादशाह उमरी

21ज़िमरी की मौत के बाद इसराईली दो
फ़िरक़ों में बट गए। एक फ़िरक़ा तिबनी बिन
जीनत को बादशाह बनाना चाहता था, दूसरा
उमरी को। 22लेकिन उमरी का फ़िरक़ा तिबनी
के फ़िरक़े की निसबत ज़्यादा ताक़तवर निकला।
चुनाँचे तिबनी मर गया और उमरी पूरी क़ौम पर
बादशाह बन गया।

23उमरी यहूदाह के बादशाह आसा की हुकूमत
के 31वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस
की हुकूमत का दौरानिया 12 साल था। पहले
छः साल दारुल-हुकूमत तिरज़ा रहा। 24इसके
बाद उसने एक आदमी बनाम समर को चाँदी
के 6,000 सिक्के देकर उससे सामरिया पहाड़ी
ख़रीद ली और वहाँ अपना नया दारुल-हुकूमत
तामीर किया। पहले मालिक समर की याद में
उसने शहर का नाम सामरिया रखा।

25लेकिन उमरी ने भी वही कुछ किया जो रब
को नापसंद था, बल्कि उसने माज़ी के बादशाहों
की निसबत ज़्यादा बदी की। 26उसने यरुबियाम
बिन नबात के नमूने पर चलकर वह तमाम गुनाह
किए जो यरुबियाम ने किए और इसराईल को
करने पर उकसाया था। नतीजे में इसराईली
रब अपने ख़ुदा को अपने बातिल देवताओं से
तैश दिलाते रहे। 27बाक़ी जो कुछ उमरी की
हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और
जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-
इसराईल की तारीख़' की किताब में बयान की
गई हैं। 28जब उमरी मरकर अपने बापदादा से जा
मिला तो उसे सामरिया में दफ़नाया गया। फिर
उसका बेटा अख़ियब तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह अख़ियब

29अख़ियब बिन उमरी यहूदाह के बादशाह
आसा के 38वें साल में इसराईल का बादशाह
बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 22 साल
था, और उसका दारुल-हुकूमत सामरिया रहा।
30अख़ियब ने भी ऐसे काम किए जो रब को
नापसंद थे, बल्कि माज़ी के बादशाहों की निसबत
उसके गुनाह ज़्यादा संगीन थे। 31यरुबियाम के
नमूने पर चलना उसके लिए काफ़ी नहीं था बल्कि
उसने इससे बढ़कर सैदा के बादशाह इतबाल की
बेटी ईज़बिल से शादी भी की। नतीजे में वह उसके
देवता बाल के सामने झुककर उस की पूजा करने
लगा। 32सामरिया में उसने बाल का मंदिर तामीर
किया और देवता के लिए क़ुरबानगाह बनाकर

उसमें रख दिया। 33अख़ियब ने यसीरत देवी
का बुत भी बनवा दिया। यों उसने अपने घिनौने
कामों से माज़ी के तमाम इसराईली बादशाहों की
निसबत कहीं ज़्यादा रब इसराईल के ख़ुदा को
तैश दिलाया।

34अख़ियब की हुकूमत के दौरान बैतेल के
रहनेवाले हियेल ने यरीहू शहर को नए सिरे से
तामीर किया। जब उस की बुनियाद रखी गई तो
उसका सबसे बड़ा बेटा अबीराम मर गया, और
जब उसने शहर के दरवाज़े लगा दिए तो उसके
सबसे छोटे बेटे सजूब को अपनी जान देनी पड़ी।
यों रब की वह बात पूरी हुई जो उसने यशुअ बिन
नून की मारिफ़त फ़रमाई थी।

कौवे इलियास नबी को खाना खिलाते हैं

17 एक दिन इलियास नबी ने जो
जिलियाद के शहर तिशबी का
था अख़ियब बादशाह से कहा, "रब इस-
राईल के ख़ुदा की क़सम जिसकी ख़िदमत मैं
करता हूँ, आनेवाले सालों में न ओस, न बारिश
पड़ेगी जब तक मैं न कहूँ।"

2फिर रब ने इलियास से कहा, 3"यहाँ से चला
जा! मशरिक़ की तरफ़ सफ़र करके वादीए-
करीत में छुप जा जिसकी नदी दरियाए-यरदन में
बहती है। 4पानी तू नदी से पी सकता है, और मैंने
कौवों को तुझे वहाँ खाना खिलाने का हुक्म दिया
है।" 5इलियास रब की सुनकर रवाना हुआ और
वादीए-करीत में रहने लगा जिसकी नदी दरियाए-
यरदन में बहती है। 6सुबहो-शाम कौवे उसे रोटी
और गोश्त पहुँचाते रहे, और पानी वह नदी से
पीता था।

इलियास सारपत की बेवा के पास

7इस पूरे अरसे में बारिश न हुई, इसलिए नदी
आहिस्ता आहिस्ता सूख गई। जब उसका पानी
बिलकुल ख़त्म हो गया 8तो रब दुबारा इलियास
से हमकलाम हुआ, 9"यहाँ से रवाना होकर सैदा
के शहर सारपत में जा बस। मैंने वहाँ की एक
बेवा को तुझे खाना खिलाने का हुक्म दिया है।"
10चुनाँचे इलियास सारपत के लिए रवाना हुआ।

सफ़र करते करते वह शहर के दरवाज़े के
पास पहुँच गया। वहाँ एक बेवा जलाने के लिए
लकड़ियाँ चुनकर जमा कर रही थी। उसे बुलाकर
इलियास ने कहा, "ज़रा किसी बरतन में पानी
भरकर मुझे थोड़ा-सा पिलाएँ।"

11वह अभी पानी लाने जा रही थी कि इलियास
ने उसके पीछे आवाज़ देकर कहा, "मेरे लिए रोटी
का टुकड़ा भी लाना!" 12यह सुनकर बेवा रुक
गई और बोली, "रब आपके ख़ुदा की क़सम, मेरे
पास कुछ नहीं है। बस, एक बरतन में मुट्ठी-भर
मैदा और दूसरे में थोड़ा-सा तेल रह गया है। अब
मैं जलाने के लिए चंद एक लकड़ियाँ चुन रही
हूँ ताकि अपने और अपने बेटे के लिए आख़िरी
खाना पकाऊँ। इसके बाद हमारी मौत यक़ीनी
है।"

13इलियास ने उसे तसल्ली दी, "डरें मत!
बेशक वह कुछ करें जो आपने कहा है। लेकिन
पहले मेरे लिए छोटी-सी रोटी बनाकर मेरे पास
ले आएँ। फिर जो बाक़ी रह गया हो उससे अपने
और अपने बेटे के लिए रोटी बनाएँ। 14क्योंकि
रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'जब तक रब
बारिश बरसने न दे तब तक मैदे और तेल के बरतन
ख़ाली नहीं होंगे'।"

15-16औरत ने जाकर वैसा ही किया जैसा
इलियास ने उसे कहा था। वाक़ई मैदा और तेल
कभी ख़त्म न हुआ। रोज़ बरोज़ इलियास, बेवा
और उसके बेटे के लिए खाना दस्तयाब रहा।
सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने इलियास की
मारिफ़त फ़रमाया था।

17एक दिन बेवा का बेटा बीमार हो गया। उस
की तबियत बहुत ख़राब हुई, और होते होते उस
की जान निकल गई। 18तब बेवा इलियास से
शिकायत करने लगी, "मर्दे-ख़ुदा, मेरा आपके
साथ क्या वास्ता? आप तो सिर्फ़ इस मक़सद
से यहाँ आए हैं कि रब को मेरे गुनाह की याद
दिलाकर मेरे बेटे को मार डालें!"

19इलियास ने जवाब में कहा, “अपने बेटे को
मुझे दे दें।” वह लड़के को औरत की गोद में से
उठाकर छत पर अपने कमरे में ले गया और वहाँ
उसे चारपाई पर रखकर 20दुआ करने लगा, “ऐ
रब मेरे ख़ुदा, तूने इस बेवा को जिसका मेहमान मैं
हूँ ऐसी मुसीबत में क्यों डाल दिया है? तूने उसके
बेटे को मरने क्यों दिया?” 21वह तीन बार लाश
पर दराज़ हुआ और साथ साथ रब से इलतमास
करता रहा, “ऐ रब मेरे ख़ुदा, बराहे-करम बच्चे
की जान को उसमें वापस आने दे!”

22रब ने इलियास की सुनी, और लड़के की
जान उसमें वापस आई। 23इलियास उसे उठाकर
नीचे ले आया और उसे उस की माँ को वापस देकर
बोला, “देखें, आपका बेटा ज़िंदा है!” 24औरत
ने जवाब दिया, “अब मैंने जान लिया है कि आप
अल्लाह के पैग़ंबर हैं और कि जो कुछ आप रब
की तरफ़ से बोलते हैं वह सच है।”

इलियास इसराईल वापस जाता है

18 बहुत दिन गुज़र गए। फिर काल
के तीसरे साल में रब इलियास से
हमकलाम हुआ, “अब जाकर अपने आपको
अख़ियब के सामने पेश कर। मैं बारिश का
सिलसिला दुबारा शुरू कर दूँगा।”

2चुनाँचे इलियास अख़ियब से मिलने के लिए
इसराईल चला गया। उस वक़्त सामरिया काल
की सख़्त गिरिफ़्त में था, 3इसलिए अख़ियब
ने महल के इंचार्ज अबदियाह को बुलाया।
(अबदियाह रब का ख़ौफ़ मानता था। 4जब
ईज़बिल ने रब के तमाम नबियों को क़त्ल करने
की कोशिश की थी तो अबदियाह ने 100 नबियों
को दो ग़ारों में छुपा दिया था। हर ग़ार में 50 नबी
रहते थे, और अबदियाह उन्हें खाने-पीने की चीज़ें
पहुँचाता रहता था।) 5अब अख़ियब ने अबदियाह
को हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से गुज़रकर तमाम
चश्मों और वादियों का मुआयना करें। शायद कहीं
कुछ घास मिल जाए जो हम अपने घोड़ों और
ख़च्चरों को खिलाकर उन्हें बचा सकें। ऐसा न हो
कि हमें खाने की क़िल्लत के बाइस कुछ जानवरों
को ज़बह करना पड़े।”

6उन्होंने मुक़र्रर किया कि अख़ियब कहाँ
जाएगा और अबदियाह कहाँ, फिर दोनों एक दूसरे
से अलग हो गए। 7चलते चलते अबदियाह को
अचानक इलियास उस की तरफ़ आते हुए नज़र
आया। जब अबदियाह ने उसे पहचाना तो वह
मुँह के बल झुककर बोला, “मेरे आक़ा इलियास,
क्या आप ही हैं?”

8इलियास ने जवाब दिया, “जी, मैं ही हूँ।
जाएँ, अपने मालिक को इत्तला दें कि इलियास
आ गया है।”

9अबदियाह ने एतराज़ किया, “मुझसे क्या
ग़लती हुई है कि आप मुझे अख़ियब से मरवाना
चाहते हैं? 10रब आपके ख़ुदा की क़सम,
बादशाह ने अपने बंदों को हर क़ौम और मुल्क
में भेज दिया है ताकि आपको ढूँड निकालें। और
जहाँ जवाब मिला कि इलियास यहाँ नहीं है वहाँ
लोगों को क़सम खानी पड़ी कि हम इलियास का
खोज लगाने में नाकाम रहे हैं। 11और अब आप
चाहते हैं कि मैं बादशाह के पास जाकर उसे बताऊँ
कि इलियास यहाँ है? 12ऐन मुमकिन है कि जब
मैं आपको छोड़कर चला जाऊँ तो रब का रूह
आपको उठाकर किसी नामालूम जगह ले जाए।
अगर बादशाह मेरी यह इत्तला सुनकर यहाँ आए
और आपको न पाए तो मुझे मार डालेगा। याद रहे
कि मैं जवानी से लेकर आज तक रब का ख़ौफ़
मानता आया हूँ। 13क्या मेरे आक़ा तक यह ख़बर
नहीं पहुँची कि जब ईज़बिल रब के नबियों को
क़त्ल कर रही थी तो मैंने क्या किया? मैं दो
ग़ारों में पचास पचास नबियों को छुपाकर उन्हें
खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाता रहा। 14और अब
आप चाहते हैं कि मैं अख़ियब के पास जाकर उसे
इत्तला दूँ कि इलियास यहाँ आ गया है? वह मुझे
ज़रूर मार डालेगा।”

15इलियास ने कहा, “रब्बुल-अफ़वाज की
हयात की क़सम जिसकी ख़िदमत मैं करता हूँ,

आज मैं अपने आपको ज़रूर बादशाह को पेश करूँगा।”

16तब अबदियाह चला गया और बादशाह को इलियास की ख़बर पहुँचाई। यह सुनकर अख़ियब इलियास से मिलने के लिए आया।

क्या बाल हक़ीक़ी माबूद है या रब?

17इलियास को देखते ही अख़ियब बोला, “ऐ इसराईल को मुसीबत में डालनेवाले, क्या आप वापस आ गए हैं?”
18इलियास ने एतराज़ किया, “मैं तो इसराईल के लिए मुसीबत का बाइस नहीं बना बल्कि आप और आपके बाप का घराना। आप रब के अहकाम छोड़कर बाल के बुतों के पीछे लग गए हैं।
19अब मैं आपको चैलेंज देता हूँ, तमाम इसराईल को बुलाकर करमिल पहाड़ पर जमा करें। साथ साथ बाल देवता के 450 नबियों को और ईज़बिल की मेज़ पर शरीक होनेवाले यसीरत देवी के 400 नबियों को भी बुलाएँ।”

20अख़ियब मान गया। उसने तमाम इसराईलियों और नबियों को बुलाया। जब वह करमिल पहाड़ पर जमा हो गए
21तो इलियास उनके सामने जा खड़ा हुआ और कहा, “आप कब तक कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ लँगड़ाते रहेंगे?[a] अगर रब ख़ुदा है तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करें, लेकिन अगर बाल वाहिद ख़ुदा है तो उसी के पीछे लग जाएँ।”

लोग ख़ामोश रहे।
22इलियास ने बात जारी रखी, “रब के नबियों में से सिर्फ़ मैं ही बाक़ी रह गया हूँ। दूसरी तरफ़ बाल देवता के यह 450 नबी खड़े हैं।
23अब दो बैल ले आएँ। बाल के नबी एक को पसंद करें और फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके अपनी क़ुरबानगाह की लकड़ियों पर रख दें। लेकिन वह लकड़ियों को आग न लगाएँ। मैं दूसरे बैल को तैयार करके अपनी क़ुरबानगाह की लकड़ियों पर रख दूँगा। लेकिन मैं भी उन्हें आग नहीं लगाऊँगा।
24फिर आप अपने देवता का नाम पुकारें जबकि मैं रब का नाम पुकारूँगा। जो माबूद क़ुरबानी को जलाकर जवाब देगा वही ख़ुदा है।” तमाम लोग बोले, “आप ठीक कहते हैं।”

25फिर इलियास ने बाल के नबियों से कहा, “शुरू करें, क्योंकि आप बहुत हैं। एक बैल को चुनकर उसे तैयार करें। लेकिन उसे आग मत लगाना बल्कि अपने देवता का नाम पुकारें ताकि वह आग भेज दे।”
26उन्होंने बैलों में से एक को चुनकर उसे तैयार किया, फिर बाल का नाम पुकारने लगे। सुबह से लेकर दोपहर तक वह मुसलसल चीख़ते-चिल्लाते रहे, “ऐ बाल, हमारी सुन!” साथ साथ वह उस क़ुरबानगाह के इर्दगिर्द नाचते रहे[b] जो उन्होंने बनाई थी। लेकिन न कोई आवाज़ सुनाई दी, न किसी ने जवाब दिया।

27दोपहर के वक़्त इलियास उनका मज़ाक़ उड़ाने लगा, “ज़्यादा ऊँची आवाज़ से बोलें! शायद वह सोचों में ग़रक़ हो या अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए एक तरफ़ गया हो। यह भी हो सकता है कि वह कहीं सफ़र कर रहा हो। या शायद वह गहरी नींद सो गया हो और उसे जगाने की ज़रूरत है।”

28तब वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से चीख़ने-चिल्लाने लगे। मामूल के मुताबिक़ वह छुरियों और नेज़ों से अपने आपको ज़ख़मी करने लगे, यहाँ तक कि ख़ून बहने लगा।
29दोपहर गुज़र गई, और वह शाम के उस वक़्त तक वज्द में रहे जब ग़ल्ला की नज़र पेश की जाती है। लेकिन कोई आवाज़ न सुनाई दी। न किसी ने जवाब दिया, न उनके तमाशे पर तवज्जुह दी।

30फिर इलियास इसराईलियों से मुख़ातिब हुआ, “आएँ, सब यहाँ मेरे पास आएँ!” सब

[a]देखिए आयत 26।

[b]लफ़्ज़ी तरजुमा : लँगड़ाते हुए नाचते रहे। ग़ालिबन बाल की ताज़ीम में एक ख़ास क़िस्म का रक़्स। लिहाज़ा आयत 21 में इलियास का सवाल, “आप कब तक ...लँगड़ाते रहेंगे?”

क़रीब आए। वहाँ रब की एक क़ुरबानगाह थी जो
गिराई गई थी। अब इलियास ने वह दुबारा खड़ी
की। 31उसने याक़ूब से निकले हर क़बीले के लिए
एक एक पत्थर चुन लिया। (बाद में रब ने याक़ूब
का नाम इसराईल रखा था)। 32इन बारह पत्थरों
को लेकर इलियास ने रब के नाम की ताज़ीम
में क़ुरबानगाह बनाई। इसके इर्दगिर्द उसने इतना
चौड़ा गढ़ा खोदा कि उसमें तक़रीबन 15 लिटर
पानी समा सकता था। 33फिर उसने क़ुरबानगाह
पर लकड़ियों का ढेर लगाया और बैल को टुकड़े
टुकड़े करके लकड़ियों पर रख दिया। इसके बाद
उसने हुक्म दिया, "चार घड़े पानी से भरकर
क़ुरबानी और लकड़ियों पर उंडेल दें!" 34जब
उन्होंने ऐसा किया तो उसने दुबारा ऐसा करने
का हुक्म दिया, फिर तीसरी बार। 35आख़िरकार
इतना पानी था कि उसने चारों तरफ़ क़ुरबानगाह
से टपककर गढ़े को भर दिया।

36शाम के वक़्त जब ग़ल्ला की नज़र पेश की
जाती है इलियास ने क़ुरबानगाह के पास जाकर
बुलंद आवाज़ से दुआ की, "ऐ रब, ऐ इब्राहीम,
इसहाक़ और इसराईल के ख़ुदा, आज लोगों पर
ज़ाहिर कर कि इसराईल में तू ही ख़ुदा है और कि
मैं तेरा ख़ादिम हूँ। साबित कर कि मैंने यह सब
कुछ तेरे हुक्म के मुताबिक़ किया है। 37ऐ रब,
मेरी दुआ सुन! मेरी सुन ताकि यह लोग जान लें
कि तू, ऐ रब, ख़ुदा है और कि तू ही उनके दिलों
को दुबारा अपनी तरफ़ मायल कर रहा है।"

38अचानक आसमान से रब की आग नाज़िल
हुई। आग ने न सिर्फ़ क़ुरबानी और लकड़ी को
भस्म कर दिया बल्कि क़ुरबानगाह के पत्थरों और
उसके नीचे की मिट्टी को भी। गढ़े में पानी भी
एकदम सूख गया।

39यह देखकर इसराईली औंधे मुँह गिरकर
पुकारने लगे, "रब ही ख़ुदा है! रब ही ख़ुदा है!"
40फिर इलियास ने उन्हें हुक्म दिया, "बाल के
नबियों को पकड़ लें। एक भी बचने न पाए!"
लोगों ने उन्हें पकड़ लिया तो इलियास उन्हें नीचे
वादीए-क़ैसोन में ले गया और वहाँ सबको मौत
के घाट उतार दिया।

बारिश होती है

41फिर इलियास ने अख़ियब से कहा, "अब
जाकर कुछ खाएँ और पिएँ, क्योंकि मूसलाधार
बारिश का शोर सुनाई दे रहा है।" 42चुनाँचे
अख़ियब खाने-पीने के लिए चला गया जबकि
इलियास करमिल पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया।
वहाँ उसने झुककर अपने सर को दोनों घुटनों के
बीच में छुपा लिया। 43अपने नौकर को उसने
हुक्म दिया, "जाओ, समुंदर की तरफ़ देखो।"

नौकर गया और समुंदर की तरफ़ देखा, फिर
वापस आकर इलियास को इत्तला दी, "कुछ
भी नज़र नहीं आता।" लेकिन इलियास ने उसे
दुबारा देखने के लिए भेज दिया। इस दफ़ा भी
कुछ मालूम न हो सका। सात बार इलियास ने
नौकर को देखने के लिए भेजा। 44आख़िरकार
जब नौकर सातवीं दफ़ा गया तो उसने वापस
आकर इत्तला दी, "एक छोटा-सा बादल समुंदर
में से निकलकर ऊपर चढ़ रहा है। वह आदमी के
हाथ के बराबर है।"

तब इलियास ने हुक्म दिया, "जाओ, अख़ियब
को इत्तला दो, 'घोड़ों को फ़ौरन रथ में जोतकर
घर चले जाएँ, वरना बारिश आपको रोक लेगी'।"
45नौकर इत्तला देने चला गया तो जल्द ही आँधी
आई, आसमान पर काले काले बादल छा गए और
मूसलाधार बारिश बरसने लगी। अख़ियब जल्दी
से रथ पर सवार होकर यज़्रएल के लिए रवाना
हो गया। 46उस वक़्त रब ने इलियास को ख़ास
ताक़त दी। सफ़र के लिए कमरबस्ता होकर वह
अख़ियब के रथ के आगे आगे दौड़कर उससे पहले
यज़्रएल पहुँच गया।

इलियास भाग जाता है

19 अख़ियब ने ईज़बिल को सब कुछ
सुनाया जो इलियास ने कहा था, यह
भी कि उसने बाल के नबियों को किस तरह

तलवार से मार दिया था। 2तब ईज़बिल ने क़ासिद
को इलियास के पास भेजकर उसे इत्तला दी,
“देवता मुझे सख़्त सज़ा दें अगर मैं कल इस वक़्त
तक आपको उन नबियों की-सी सज़ा न दूँ।”

3इलियास सख़्त डर गया और अपनी जान
बचाने के लिए भाग गया। चलते चलते वह
यहूदाह के शहर बैर-सबा तक पहुँच गया। वहाँ
वह अपने नौकर को छोड़कर 4आगे रेगिस्तान में
जा निकला। एक दिन के सफ़र के बाद वह सींक
की झाड़ी के पास पहुँच गया और उसके साये
में बैठकर दुआ करने लगा, “ऐ रब, मुझे मरने
दे। बस अब काफ़ी है। मेरी जान ले ले, क्योंकि
मैं अपने बापदादा से बेहतर नहीं हूँ।” 5फिर वह
झाड़ी के साये में लेटकर सो गया।

अचानक एक फ़रिश्ते ने उसे छूकर कहा, “उठ,
खाना खा ले!” 6जब उसने अपनी आँखें खोलीं
तो देखा कि सिरहाने के क़रीब कोयलों पर बनाई
गई रोटी और पानी की सुराही पड़ी है। उसने रोटी
खाई, पानी पिया और दुबारा सो गया। 7लेकिन
रब का फ़रिश्ता एक बार फिर आया और उसे हाथ
लगाकर कहा, “उठ, खाना खा ले, वरना आगे का
लंबा सफ़र तेरे बस की बात नहीं होगी।”

8तब इलियास ने उठकर दुबारा खाना खाया
और पानी पिया। इस ख़ुराक ने उसे इतनी
तक़वियत दी कि वह चालीस दिन और चालीस
रात सफ़र करते करते अल्लाह के पहाड़ होरिब
यानी सीना तक पहुँच गया। 9वहाँ वह रात
गुज़ारने के लिए एक ग़ार में चला गया।

रब इलियास की हौसलाअफ़्ज़ाई करता है

ग़ार में रब उससे हमकलाम हुआ। उसने
पूछा, “इलियास, तू यहाँ क्या कर रहा है?”
10इलियास ने जवाब दिया, “मैंने रब, आसमानी
लशकरों के ख़ुदा की ख़िदमत करने की सिर-तोड़
कोशिश की है, क्योंकि इसराईलियों ने तेरे अहद
को तर्क कर दिया है। उन्होंने तेरी क़ुरबानगाहों को
गिराकर तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया
है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार
डालने के दरपै हैं।”

11जवाब में रब ने फ़रमाया, “ग़ार से
निकलकर पहाड़ पर रब के सामने खड़ा हो जा!”
फिर रब वहाँ से गुज़रा। उसके आगे आगे बड़ी और
ज़बरदस्त आँधी आई जिसने पहाड़ों को चीरकर
चट्टानों को टुकड़े टुकड़े कर दिया। लेकिन रब
आँधी में नहीं था। 12इसके बाद ज़लज़ला आया,
लेकिन रब ज़लज़ले में नहीं था। 13ज़लज़ले के
बाद भड़कती हुई आग वहाँ से गुज़री, लेकिन रब
आग में भी नहीं था। फिर नरम हवा की धीमी
धीमी आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ सुनकर
इलियास ने अपने चेहरे को चादर से ढाँप लिया
और निकलकर ग़ार के मुँह पर खड़ा हो गया।
एक आवाज़ उससे मुख़ातिब हुई, “इलियास, तू
यहाँ क्या कर रहा है?” 14इलियास ने जवाब
दिया, “मैंने रब, आसमानी लशकरों के ख़ुदा
की ख़िदमत करने की सिर-तोड़ कोशिश की है,
क्योंकि इसराईलियों ने तेरे अहद को तर्क कर
दिया है। उन्होंने तेरी क़ुरबानगाहों को गिराकर
तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया है। मैं
अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने
के दरपै हैं।”

15रब ने जवाब में कहा, “रेगिस्तान में उस
रास्ते से होकर वापस जा जिसने तुझे यहाँ
पहुँचाया है। फिर दमिश्क़ चला जा। वहाँ हज़ाएल
को तेल से मसह करके शाम का बादशाह क़रार
दे। 16इसी तरह याहू बिन निमसी को मसह करके
इसराईल का बादशाह क़रार दे और अबील-महूला
के रहनेवाले इलीशा बिन साफ़त को मसह करके
अपना जा-नशीन मुक़र्रर कर। 17जो हज़ाएल की
तलवार से बच जाएगा उसे याहू मार देगा, और
जो याहू की तलवार से बच जाएगा उसे इलीशा
मार देगा। 18लेकिन मैंने अपने लिए इसराईल में
7,000 अफ़राद को बचा लिया है, उन तमाम
लोगों को जो अब तक न बाल देवता के सामने
झुके, न उसके बुत को बोसा दिया है।”

इलियास इलीशा को अपना जा-नशीन मुक़र्रर करता है

19इलियास वहाँ से चला गया। इसराईल में
वापस आकर उसे इलीशा बिन साफ़त मिला जो
बैलों की बारह जोड़ियों की मदद से हल चला
रहा था। ख़ुद वह बारहवीं जोड़ी के साथ चल
रहा था। इलियास ने उसके पास आकर अपनी
चादर उसके कंधों पर डाल दी और रुके बग़ैर आगे
निकल गया।

20इलीशा फ़ौरन अपने बैलों को छोड़कर
इलियास के पीछे भागा। उसने कहा, "पहले
मुझे अपने माँ-बाप को बोसा देकर ख़ैरबाद कहने
दीजिए। फिर मैं आपके पीछे हो लूँगा।" इलियास
ने जवाब दिया, "चलें, वापस जाएँ। लेकिन वह
कुछ याद रहे जो मैंने आपके साथ किया है।"
21तब इलीशा वापस चला गया। बैलों की एक
जोड़ी को लेकर उसने दोनों को ज़बह किया। हल
चलाने का सामान उसने गोश्त पकाने के लिए
जला दिया। जब गोश्त तैयार था तो उसने उसे
लोगों में तक़सीम करके उन्हें खिला दिया। इसके
बाद इलीशा इलियास के पीछे होकर उस की
ख़िदमत करने लगा।

शाम की फ़ौज सामरिया का मुहासरा करती है

20 एक दिन शाम के बादशाह बिन-
हदद ने अपनी पूरी फ़ौज को जमा
किया। 32 इत्तहादी बादशाह भी अपने रथों
और घोड़ों को लेकर आए। इस बड़ी फ़ौज के
साथ बिन-हदद ने सामरिया का मुहासरा करके
इसराईल से जंग का एलान किया। 2उसने
अपने क़ासिदों को शहर में भेजकर इसराईल
के बादशाह अख़ियब को इत्तला दी, 3"अब से
आपका सोना, चाँदी, ख़वातीन और बेटे मेरे ही
हैं।" 4इसराईल के बादशाह ने जवाब दिया, "मेरे
आक़ा और बादशाह, आपकी मरज़ी। मैं और जो
कुछ मेरा है आपकी मिलकियत है।"

5थोड़ी देर के बाद क़ासिद बिन-हदद की नई
ख़बर लेकर आए, "मैंने आपसे सोने, चाँदी,
ख़वातीन और बेटों का तक़ाज़ा किया है। 6अब
ग़ौर करें! कल इस वक़्त मैं अपने मुलाज़िमों को
आपके पास भेज दूँगा, और वह आपके महल और
आपके अफ़सरों के घरों की तलाशी लेंगे। जो कुछ
भी आपको प्यारा है उसे वह ले जाएंगे।"

7तब अख़ियब बादशाह ने मुल्क के तमाम
बुज़ुर्गों को बुलाकर उनसे बात की, "देखें यह
आदमी कितना बुरा इरादा रखता है। जब उसने
मेरी ख़वातीन, बेटों, सोने और चाँदी का तक़ाज़ा
किया तो मैंने इनकार न किया।" 8बुज़ुर्गों और
बाक़ी लोगों ने मिलकर मशवरा दिया, "उस की
न सुनें, और जो कुछ वह माँगता है उस पर राज़ी न
हो जाएँ।" 9चुनाँचे बादशाह ने क़ासिदों से कहा,
"मेरे आक़ा बादशाह को जवाब देना, जो कुछ
आपने पहली मरतबा माँग लिया वह मैं आपको
देने के लिए तैयार हूँ, लेकिन यह आख़िरी तक़ाज़ा
मैं पूरा नहीं कर सकता।"

जब क़ासिदों ने बिन-हदद को यह ख़बर पहुँचाई
10तो उसने अख़ियब को फ़ौरन ख़बर भेज दी,
"देवता मुझे सख़्त सज़ा दें अगर मैं सामरिया
को नेस्तो-नाबूद न कर दूँ। इतना भी नहीं रहेगा
कि मेरा हर फ़ौजी मुट्ठी-भर ख़ाक अपने साथ
वापस ले जा सके!" 11इसराईल के बादशाह
ने क़ासिदों को जवाब दिया, "उसे बता देना कि
जो अभी जंग की तैयारियाँ कर रहा है वह फ़तह
के नारे न लगाए।"

12जब बिन-हदद को यह इत्तला मिली तो वह
लशकरगाह में अपने इत्तहादी बादशाहों के साथ मै
पी रहा था। उसने अपने अफ़सरों को हुक्म दिया,
"हमला करने के लिए तैयारियाँ करो!" चुनाँचे
वह शहर पर हमला करने की तैयारियाँ करने लगे।

शाम की फ़ौज से पहली जंग

13इस दौरान एक नबी अख़ियब बादशाह के
पास आया और कहा, "रब फ़रमाता है, 'क्या
तुझे दुश्मन की यह बड़ी फ़ौज नज़र आ रही है?

तो भी मैं इसे आज ही तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ'।"

14अख़ियब ने सवाल किया, "रब यह किसके वसीले से करेगा?" नबी ने जवाब दिया, "रब फ़रमाता है कि ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवान यह फ़तह पाएँगे।" बादशाह ने मज़ीद पूछा, "लड़ाई में कौन पहला क़दम उठाए?" नबी ने कहा, "तू ही।"

15चुनाँचे अख़ियब ने ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवानों को बुलाया। 232 अफ़राद थे। फिर उसने बाक़ी इसराईलियों को जमा किया। 7,000 अफ़राद थे। 16-17दोपहर को वह लड़ने के लिए निकले। ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवान सबसे आगे थे। बिन-हदद और 32 इत्तहादी बादशाह लशकरगाह में बैठे नशे में धुत मै पी रहे थे कि अचानक शहर का जायज़ा लेने के लिए बिन-हदद के भेजे गए सिपाही अंदर आए और कहने लगे, "सामरिया से आदमी निकल रहे हैं।" 18बिन-हदद ने हुक्म दिया, "हर सूरत में उन्हें ज़िंदा पकड़ें, ख़ाह वह अमनपसंद इरादा रखते हों या न।"

19लेकिन उन्हें यह करने का मौक़ा न मिला, क्योंकि इसराईल के ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों और बाक़ी फ़ौजियों ने शहर से निकल कर 20फ़ौरन उन पर हमला कर दिया। और जिस भी दुश्मन का मुक़ाबला हुआ उसे मारा गया। तब शाम की पूरी फ़ौज भाग गई। इसराईलियों ने उनका ताक़्क़ुब किया, लेकिन शाम का बादशाह बिन-हदद घोड़े पर सवार होकर चंद एक घुड़सवारों के साथ बच निकला। 21उस वक़्त इसराईल का बादशाह जंग के लिए निकला और घोड़ों और रथों को तबाह करके अरामियों को ज़बरदस्त शिकस्त दी।

शाम की फ़ौज से दूसरी जंग

22बाद में मज़कूरा नबी दुबारा इसराईल के बादशाह के पास आया। वह बोला, "अब मज़बूत होकर बड़े ध्यान से सोचें कि आनेवाले दिनों में क्या क्या तैयारियाँ करनी चाहिएँ, क्योंकि अगले बहार के मौसम में शाम का बादशाह दुबारा आप पर हमला करेगा।"

23शाम के बादशाह को भी मशवरा दिया गया। उसके बड़े अफ़सरों ने ख़याल पेश किया, "इसराईलियों के देवता पहाड़ी देवता हैं, इसलिए वह हम पर ग़ालिब आ गए हैं। लेकिन अगर हम मैदानी इलाक़े में उनसे लड़ें तो हर सूरत में जीतेंगे। 24लेकिन हमारा एक और मशवरा भी है। 32 बादशाहों को हटाकर उनकी जगह अपने अफ़सरों को मुक़र्रर करें। 25फिर एक नई फ़ौज तैयार करें जो तबाहशुदा पुरानी फ़ौज जैसी ताक़तवर हो। उसके उतने ही रथ और घोड़े हों जितने पहले थे। फिर जब हम मैदानी इलाक़े में उनसे लड़ेंगे तो उन पर ज़रूर ग़ालिब आएँगे।"

बादशाह उनकी बात मानकर तैयारियाँ करने लगा। 26जब बहार का मौसम आया तो वह शाम के फ़ौजियों को जमा करके इसराईल से लड़ने के लिए अफ़ीक़ शहर गया। 27इसराईली फ़ौज भी लड़ने के लिए जमा हुई। खाने-पीने की अशया का बंदोबस्त किया गया, और वह दुश्मन से लड़ने के लिए निकले। जब वहाँ पहुँचे तो उन्होंने अपने ख़ैमों को दो जगहों पर लगाया। यह दो गुरोह शाम की वसी फ़ौज के मुक़ाबले में बकरियों के दो छोटे रेवड़ों जैसे लग रहे थे, क्योंकि पूरा मैदान शाम के फ़ौजियों से भरा था।

28फिर मर्दे-ख़ुदा ने अख़ियब के पास आकर कहा, "रब फ़रमाता है, 'शाम के लोग ख़याल करते हैं कि रब पहाड़ी देवता है इसलिए मैदानी इलाक़े में नाकाम रहेगा। चुनाँचे मैं उनकी ज़बरदस्त फ़ौज को तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ'।"

29सात दिन तक दोनों फ़ौजें एक दूसरे के मुक़ाबिल सफ़आरा रहीं। सातवें दिन लड़ाई का आग़ाज़ हुआ। इसराईली इस मरतबा भी शाम की फ़ौज पर ग़ालिब आए। उस दिन उन्होंने उनके एक लाख प्यादा फ़ौजियों को मार दिया। 30बाक़ी फ़रार होकर अफ़ीक़ शहर में घुस गए। तक़रीबन

27,000 आदमी थे। लेकिन अचानक शहर की फ़सील उन पर गिर गई, तो वह भी हलाक हो गए।

अख़ियब शाम के बादशाह पर रहम करता है

बिन-हदद बादशाह भी अफ़ीक़ में फ़रार हुआ था। अब वह कभी इस कमरे में, कभी उसमें खिसककर छुपने की कोशिश कर रहा था।
31फिर उसके अफ़सरों ने उसे मशवरा दिया, "सुना है कि इसराईल के बादशाह नरमदिल होते हैं। क्यों न हम टाट ओढ़कर और अपनी गरदनों में रस्से डालकर इसराईल के बादशाह के पास जाएँ? शायद वह आपको ज़िंदा छोड़ दे।"

32चुनाँचे बिन-हदद के अफ़सर टाट ओढ़कर और अपनी गरदनों में रस्से डालकर इसराईल के बादशाह के पास आए। उन्होंने कहा, "आपका ख़ादिम बिन-हदद गुज़ारिश करता है कि मुझे ज़िंदा छोड़ दें।" अख़ियब ने सवाल किया, "क्या वह अब तक ज़िंदा है? वह तो मेरा भाई है!"
33जब बिन-हदद के अफ़सरों ने जान लिया कि अख़ियब का रुझान किस तरफ़ है तो उन्होंने जल्दी से इसकी तसदीक़ की, "जी, बिन-हदद आपका भाई है!" अख़ियब ने हुक्म दिया, "जाकर उसे बुला लाएँ।"

तब बिन-हदद निकल आया, और अख़ियब ने उसे अपने रथ पर सवार होने की दावत दी।
34बिन-हदद ने अख़ियब से कहा, "मैं आपको वह तमाम शहर वापस कर देता हूँ जो मेरे बाप ने आपके बाप से छीन लिए थे। आप हमारे दारुल-हुकूमत दमिश्क़ में तिजारती मराकिज़ भी क़ायम कर सकते हैं, जिस तरह मेरे बाप ने पहले सामरिया में किया था।" अख़ियब बोला, "ठीक है। इसके बदले में मैं आपको रिहा कर दूँगा।" उन्होंने मुआहदा किया, फिर अख़ियब ने शाम के बादशाह को रिहा कर दिया।

नबी अख़ियब को मलामत करता है

35उस वक़्त रब ने नबियों में से एक को हिदायत की, "जाकर अपने साथी को कह दे कि वह तुझे मारे।" नबी ने ऐसा किया, लेकिन साथी ने इनकार किया।
36फिर नबी बोला, "चूँकि आपने रब की नहीं सुनी, इसलिए ज्योंही आप मुझसे चले जाएंगे शेरबबर आपको फाड़ डालेगा।" और ऐसा ही हुआ। जब साथी वहाँ से निकला तो शेरबबर ने उस पर हमला करके उसे फाड़ डाला।

37नबी की मुलाक़ात किसी और से हुई तो उसने उससे भी कहा, "मेहरबानी करके मुझे मारें!" उस आदमी ने नबी को मार मारकर ज़ख़मी कर दिया।
38तब नबी ने अपनी आँखों पर पट्टी बाँधी ताकि उसे पहचाना न जाए, फिर रास्ते के किनारे पर अख़ियब बादशाह के इंतज़ार में खड़ा हो गया।

39जब बादशाह वहाँ से गुज़रा तो नबी चिल्लाकर उससे मुख़ातिब हुआ, "जनाब, मैं मैदाने-जंग में लड़ रहा था कि अचानक किसी आदमी ने मेरे पास आकर अपने क़ैदी को मेरे हवाले कर दिया। उसने कहा, 'इसकी निगरानी करना। अगर यह किसी भी वजह से भाग जाए तो आपको उस की जान के एवज़ अपनी जान देनी पड़ेगी या आपको एक मन चाँदी अदा करनी पड़ेगी।'
40लेकिन मैं इधर-उधर मसरूफ़ रहा, और इतने में क़ैदी ग़ायब हो गया।" अख़ियब बादशाह ने जवाब दिया, "आपने ख़ुद अपने बारे में फ़ैसला दिया है। अब आपको इसका नतीजा भुगतना पड़ेगा।"

41फिर नबी ने जल्दी से पट्टी को अपनी आँखों पर से उतार दिया, और बादशाह ने पहचान लिया कि यह नबियों में से एक है।
42नबी ने कहा, "रब फ़रमाता है, 'मैंने मुक़र्रर किया था कि बिन-हदद को मेरे लिए मख़सूस करके हलाक करना है, लेकिन तूने उसे रिहा कर दिया है। अब उस की

जगह तू ही मरेगा, और उस की क़ौम की जगह तेरी क़ौम को नुक़सान पहुँचेगा'।"

43इसराईल का बादशाह बड़े ग़ुस्से और बदमिज़ाजी के आलम में सामरिया में अपने महल में चला गया।

ईज़बिल के हाथों नबोत का क़त्ल

21 इसके बाद एक और क़ाबिले-
ज़िक्र बात हुई। यज्रएल में सा-
मरिया के बादशाह अख़ियब का एक महल था।
महल की ज़मीन के साथ साथ अंगूर का बाग़ था।
मालिक का नाम नबोत था। 2एक दिन अख़ियब
ने नबोत से बात की, "अंगूर का आपका बाग़ मेरे महल के क़रीब ही है। उसे मुझे दे दें, क्योंकि मैं उसमें सब्ज़ियाँ लगाना चाहता हूँ। मुआवज़े में मैं आपको उससे अच्छा अंगूर का बाग़ दे दूँगा। लेकिन अगर आप पैसे को तरजीह दें तो आपको उस की पूरी रक़म अदा कर दूँगा।"

3लेकिन नबोत ने जवाब दिया, "अल्लाह न करे कि मैं आपको वह मौरूसी ज़मीन दूँ जो मेरे बापदादा ने मेरे सुपुर्द की है!"

4अख़ियब बड़े ग़ुस्से में अपने घर वापस चला गया। वह बेज़ार था कि नबोत अपने बापदादा की मौरूसी ज़मीन बेचना नहीं चाहता। वह पलंग पर लेट गया और अपना मुँह दीवार की तरफ़ करके खाना खाने से इनकार किया।
5उस की बीवी
ईज़बिल उसके पास आई और पूछने लगी, "क्या बात है? आप क्यों इतने बेज़ार हैं कि खाना भी नहीं खाना चाहते?"
6अख़ियब ने जवाब दिया,
"यज्रएल का रहनेवाला नबोत मुझे अंगूर का बाग़ नहीं देना चाहता। गो मैं उसे पैसे देना चाहता था बल्कि उसे इसकी जगह कोई और बाग़ देने के लिए तैयार था तो भी वह बज़िद रहा।"

7ईज़बिल बोली, "क्या आप इसराईल के बादशाह हैं कि नहीं? अब उठें! खाएँ, पिएँ और अपना दिल बहलाएँ। मैं ही आपको नबोत यज्रएली का अंगूर का बाग़ दिला दूँगी।"
8उसने
अख़ियब के नाम से ख़ुतूत लिखकर उन पर बादशाह की मुहर लगाई और उन्हें नबोत के शहर के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा को भेज दिया।
9ख़तों में
ज़ैल की ख़बर लिखी थी,

"शहर में एलान करें कि एक दिन का रोज़ा रखा जाए। जब लोग उस दिन जमा हो जाएंगे तो नबोत को लोगों के सामने इज़्ज़त की कुरसी पर बिठा दें।
10लेकिन उसके मुक़ाबिल दो बदमाशों को
बिठा देना। इजतिमा के दौरान यह आदमी सबके सामने नबोत पर इलज़ाम लगाएँ, 'इस शख़्स ने अल्लाह और बादशाह पर लानत भेजी है! हम इसके गवाह हैं।' फिर उसे शहर से बाहर ले जाकर संगसार करें।"

11यज्रएल के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा ने ऐसा ही
किया।
12उन्होंने रोज़े के दिन का एलान किया।
जब लोग मुक़र्ररा दिन जमा हुए तो नबोत को लोगों के सामने इज़्ज़त की कुरसी पर बिठा दिया गया।
13फिर दो बदमाश आए और उसके
मुक़ाबिल बैठ गए। इजतिमा के दौरान यह आदमी सबके सामने नबोत पर इलज़ाम लगाने लगे, "इस शख़्स ने अल्लाह और बादशाह पर लानत भेजी है! हम इसके गवाह हैं।" तब नबोत को शहर से बाहर ले जाकर संगसार कर दिया गया।
14फिर शहर के बुज़ुर्गों ने ईज़बिल को इत्तला दी,
"नबोत मर गया है, उसे संगसार किया गया है।"

15यह ख़बर मिलते ही ईज़बिल ने अख़ि-
यब से बात की, "जाएँ, नबोत यज्रएली के उस बाग़ पर क़ब्ज़ा करें जो वह आपको बेचने से इनकार कर रहा था। अब वह आदमी ज़िंदा नहीं रहा बल्कि मर गया है।"

16यह सुनकर अख़ियब फ़ौरन नबोत के अंगूर
के बाग़ पर क़ब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ।

इलियास अख़ियब को सज़ा सुनाता है

17तब रब इलियास तिशबी से हमकलाम
हुआ,
18"इसराईल के बादशाह अख़ियब से जो
सामरिया में रहता है मिलने जा। इस वक़्त वह नबोत के अंगूर के बाग़ में है, क्योंकि वह उस पर क़ब्ज़ा करने के लिए वहाँ पहुँचा है।
19उसे

बता देना, 'रब फ़रमाता है कि तूने एक आदमी
को बिलावजह क़त्ल करके उस की मिलकियत
पर क़ब्ज़ा कर लिया है। रब फ़रमाता है कि जहाँ
कुत्तों ने नबोत का ख़ून चाटा है वहाँ वह तेरा ख़ून
भी चाटेंगे'।"
20जब इलियास अख़ियब के पास पहुँचा तो
बादशाह बोला, "मेरे दुश्मन, क्या आपने मुझे ढूँड
निकाला है?" इलियास ने जवाब दिया, "जी,
मैंने आपको ढूँड निकाला है, क्योंकि आपने अपने
आपको बदी के हाथ में बेचकर ऐसा काम किया
है जो रब को नापसंद है। 21अब सुनें रब का
फ़रमान, 'मैं तुझे यों मुसीबत में डाल दूँगा कि
तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। मैं इसराईल में
से तेरे ख़ानदान के हर मर्द को मिटा दूँगा, ख़ाह वह
बालिग़ हो या बच्चा। 22तूने मुझे बड़ा तैश दिलाया
और इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया है।
इसलिए मेरा तेरे घराने के साथ वही सुलूक होगा
जो मैंने यरुबियाम बिन नबात और बाशा बिन
अख़ियाह के साथ किया है।' 23ईज़बिल पर भी
रब की सज़ा आएगी। रब फ़रमाता है, 'कुत्ते
यज्रएल की फ़सील के पास ईज़बिल को खा
जाएंगे। 24अख़ियब के ख़ानदान में से जो शहर
में मरेंगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान
में मरेंगे उन्हें परिंदे चट कर जाएंगे'।"
25और यह हक़ीक़त है कि अख़ियब जैसा
ख़राब शख़्स कोई नहीं था। क्योंकि ईज़बिल के
उकसाने पर उसने अपने आपको बदी के हाथ में
बेचकर ऐसा काम किया जो रब को नापसंद था।
26सबसे घिनौनी बात यह थी कि वह बुतों के पीछे
लगा रहा, बिलकुल उन अमोरियों की तरह जिन्हें
रब ने इसराईल से निकाल दिया था।
27जब अख़ियब ने इलियास की यह बातें
सुनीं तो उसने अपने कपड़े फाड़कर टाट ओढ़
लिया। रोज़ा रखकर वह ग़मगीन हालत में फिरता
रहा। टाट उसने सोते वक़्त भी न उतारा। 28तब
रब दुबारा इलियास तिशबी से हमकलाम हुआ,
29"क्या तूने ग़ौर किया है कि अख़ियब ने अपने
आपको मेरे सामने कितना पस्त कर दिया है?
चूँकि उसने अपनी आजिज़ी का इज़हार किया है
इसलिए मैं उसके जीते-जी उसके ख़ानदान को
मज़कूरा मुसीबत में नहीं डालूँगा बल्कि उस वक़्त
जब उसका बेटा तख़्त पर बैठेगा।"

झूटे नबियों और मीकायाह का मुक़ाबला

22 तीन साल तक शाम और इस-
राईल के दरमियान सुलह रही।
2तीसरे साल यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त
इसराईल के बादशाह अख़ियब से मिलने गया।
3उस वक़्त इसराईल के बादशाह ने अपने
अफ़सरों से बात की, "देखें, रामात-जिलियाद
हमारा ही शहर है। तो फिर हम क्यों कुछ नहीं
कर रहे? हमें उसे शाम के बादशाह के क़ब्ज़े से
छुड़वाना चाहिए।" 4उसने यहूसफ़त से सवाल
किया, "क्या आप मेरे साथ रामात-जिलियाद
जाएंगे ताकि उस पर क़ब्ज़ा करें?" यहूसफ़त
ने जवाब दिया, "जी ज़रूर। हम तो भाई हैं। मेरी
क़ौम को अपनी क़ौम और मेरे घोड़ों को अपने
घोड़े समझें! 5लेकिन मेहरबानी करके पहले रब
की मरज़ी मालूम कर लें।"
6इसराईल के बादशाह ने तक़रीबन 400
नबियों को बुलाकर उनसे पूछा, "क्या मैं रामात-
जिलियाद पर हमला करूँ या इस इरादे से बाज़
रहूँ?" नबियों ने जवाब दिया, "जी करें, क्योंकि
रब उसे बादशाह के हवाले कर देगा।"
7लेकिन यहूसफ़त मुतमइन न हुआ। उसने
पूछा, "क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिससे
हम दरियाफ़्त कर सकें?" 8इसराईल का
बादशाह बोला, "हाँ, एक तो है जिसके ज़रीए
हम रब की मरज़ी मालूम कर सकते हैं। लेकिन
मैं उससे नफ़रत करता हूँ, क्योंकि वह मेरे बारे में
कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं करता। वह हमेशा
बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उसका नाम मीकायाह
बिन इमला है।" यहूसफ़त ने एतराज़ किया,
"बादशाह ऐसी बात न कहे!" 9तब इसराईल
के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुलाकर हुक्म

दिया, “मीकायाह बिन इमला को फ़ौरन हमारे
पास पहुँचा देना!”
10अख़ियब और यहूसफ़त अपने शाही लिबास
पहने हुए सामरिया के दरवाज़े के क़रीब अपने
अपने तख़्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह
थी जहाँ अनाज गाहा जाता था। तमाम 400
नबी वहाँ उनके सामने अपनी पेशगोइयाँ पेश
कर रहे थे। 11एक नबी बनाम सिदक़ियाह बिन
कनाना ने अपने लिए लोहे के सींग बनाकर एलान
किया, “रब फ़रमाता है कि इन सींगों से तू शाम
के फ़ौजियों को मार मारकर हलाक कर देगा।”
12दूसरे नबी भी इस क़िस्म की पेशगोइयाँ कर रहे
थे, “रामात-जिलियाद पर हमला करें, क्योंकि
आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को
आपके हवाले कर देगा।”
13जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के
लिए भेजा गया था उसने रास्ते में उसे समझाया,
“देखें, बाक़ी तमाम नबी मिलकर कह रहे हैं कि
बादशाह को कामयाबी हासिल होगी। आप भी
ऐसी ही बातें करें, आप भी फ़तह की पेशगोई
करें!” 14लेकिन मीकायाह ने एतराज़ किया,
“रब की हयात की क़सम, मैं बादशाह को सिर्फ़
वही कुछ बताऊँगा जो रब मुझे फ़रमाएगा।”
15जब मीकायाह अख़ियब के सामने खड़ा
हुआ तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम
रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस इरादे
से बाज़ रहूँ?” मीकायाह ने जवाब दिया, “उस
पर हमला करें, क्योंकि रब शहर को आपके
हवाले करके आपको कामयाबी बख़्शेगा।”
16बादशाह नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफ़ा
आपको समझाना पड़ेगा कि आप क़सम खाकर
मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो
हक़ीक़त है।”
17तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे
तमाम इसराईल गल्लाबान से महरूम भेड़-
बकरियों की तरह पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र
आया। फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘इनका
कोई मालिक नहीं है। हर एक सलामती से अपने
घर वापस चला जाए’।”
18इसराईल के बादशाह ने यहूसफ़त से कहा,
“लो, क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि यह
शख़्स हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता
है?”
19लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी,
“रब का फ़रमान सुनें! मैंने रब को उसके तख़्त
पर बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उसके
दाएँ और बाएँ हाथ खड़ी थी। 20रब ने पूछा,
‘कौन अख़ियब को रामात-जिलियाद पर हमला
करने पर उकसाएगा ताकि वह वहाँ जाकर मर
जाए?’ एक ने यह मशवरा दिया, दूसरे ने वह।
21आख़िरकार एक रूह रब के सामने खड़ी हुई
और कहने लगी, ‘मैं उसे उकसाऊँगी।’ 22रब ने
सवाल किया, ‘किस तरह?’ रूह ने जवाब दिया,
‘मैं निकलकर उसके तमाम नबियों पर यों क़ाबू
पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।’ रब ने फ़रमाया,
‘तू कामयाब होगी। जा और यों ही कर!’ 23ऐ
बादशाह, रब ने आप पर आफ़त लाने का फ़ैसला
कर लिया है, इसलिए उसने झूटी रूह को आपके
इन तमाम नबियों के मुँह में डाल दिया है।”
24तब सिदक़ियाह बिन कनाना ने आगे बढ़कर
मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला,
“रब का रूह किस तरह मुझसे निकल गया ताकि
तुझसे बात करे?” 25मीकायाह ने जवाब दिया,
“जिस दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उसमें
खिसककर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन
आपको पता चलेगा।”
26तब अख़ियब बादशाह ने हुक्म दिया,
“मीकायाह को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून
और मेरे बेटे युआस के पास वापस भेज दो!
27उन्हें बता देना, ‘इस आदमी को जेल में
डालकर मेरे सहीह-सलामत वापस आने तक कम
से कम रोटी और पानी दिया करें’।” 28मीकायाह
बोला, “अगर आप सहीह-सलामत वापस आएँ
तो मतलब होगा कि रब ने मेरी मारिफ़त बात नहीं

की।” फिर वह साथ खड़े लोगों से मुख़ातिब हुआ, “तमाम लोग ध्यान दें!”

अख़ियब रामात के क़रीब मर जाता है

29इसके बाद इसराईल का बादशाह
अख़ियब और यहूदाह का बादशाह यहू-
सफ़त मिलकर रामात-जिलियाद पर हमला करने
के लिए रवाना हुए। 30जंग से पहले अख़ियब ने
यहूसफ़त से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर
मैदाने-जंग में जाऊँगा। लेकिन आप अपना
शाही लिबास न उतारें।” चुनाँचे इसराईल का
बादशाह अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में
आया। 31शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर
अपने 32 अफ़सरों को हुक्म दिया था, “सिर्फ़
और सिर्फ़ बादशाह पर हमला करें। किसी और
से मत लड़ना, ख़ाह वह छोटा हो या बड़ा।”

32जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर
यहूसफ़त पर टूट पड़े, क्योंकि उन्होंने कहा,
“यक़ीनन यही इसराईल का बादशाह है!”
लेकिन जब यहूसफ़त मदद के लिए चिल्ला उठा
33तो दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह अख़ियब
बादशाह नहीं है, और वह उसका ताक़्क़ुब करने
से बाज़ आए। 34लेकिन किसी ने ख़ास निशाना
बाँधे बग़ैर अपना तीर चलाया तो वह अख़ियब को
ऐसी जगह जा लगा जहाँ ज़िरा-बकतर का जोड़
था। बादशाह ने अपने रथबान को हुक्म दिया,
“रथ को मोड़कर मुझे मैदाने-जंग से बाहर ले
जाओ! मुझे चोट लग गई है।” 35लेकिन चूँकि
उस पूरे दिन शदीद क़िस्म की लड़ाई जारी रही,
इसलिए बादशाह अपने रथ में टेक लगाकर दुश्मन
के मुक़ाबिल खड़ा रहा। ख़ून ज़ख़्म से रथ के फ़र्श
पर टपकता रहा, और शाम के वक़्त अख़ियब मर
गया। 36जब सूरज ग़ुरूब होने लगा तो इसराईली
फ़ौज में बुलंद आवाज़ से एलान किया गया, “हर
एक अपने शहर और अपने इलाक़े में वापस चला
जाए!”

37बादशाह की मौत के बाद उस की लाश को
सामरिया लाकर दफ़नाया गया। 38शाही रथ को
सामरिया के एक तालाब के पास लाया गया जहाँ
कसबियों की नहाने की जगह थी। वहाँ उसे धोया
गया। कुत्ते भी आकर ख़ून को चाटने लगे। यों रब
का फ़रमान पूरा हुआ।

39बाक़ी जो कुछ अख़ियब की हुकूमत के
दौरान हुआ वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की
किताब में दर्ज है। उसमें बादशाह का तामीरकरदा
हाथीदाँत का महल और वह शहर बयान किए
गए हैं जिनकी क़िलाबंदी उसने की। 40जब वह
मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा
अख़ज़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त

41आसा का बेटा यहूसफ़त इसराईल के
बादशाह अख़ियब की हुकूमत के चौथे साल
में यहूदाह का बादशाह बना। 42उस वक़्त उस
की उम्र 35 साल थी। उसका दारुल-हुकूमत
यरूशलम रहा, और उस की हुकूमत का दौरानिया
25 साल था। माँ का नाम अज़ूबा बिंत सिलही
था। 43वह हर काम में अपने बाप आसा के नमूने
पर चलता और वह कुछ करता रहा जो रब को
पसंद था। लेकिन उसने भी ऊँचे मक़ामों के मंदिरों
को ख़त्म न किया। ऐसी जगहों पर जानवरों को
क़ुरबान करने और बख़ूर जलाने का इंतज़ाम जारी
रहा। 44यहूसफ़त और इसराईल के बादशाह के
दरमियान सुलह क़ायम रही।

45बाक़ी जो कुछ यहूसफ़त की हुकूमत के
दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की
किताब में दर्ज है। उस की कामयाबियाँ और जंगें
सब उसमें बयान की गई हैं। 46जो जिस्मफ़रोश
मर्द और औरतें आसा के ज़माने में बच गए थे उन्हें
यहूसफ़त ने मुल्क में से मिटा दिया। 47उस वक़्त
मुल्के-अदोम का बादशाह न था बल्कि यहूदाह
का एक अफ़सर उस पर हुक्मरानी करता था।

48यहूसफ़त ने बहरी जहाज़ों का बेड़ा बनवाया
ताकि वह तिजारत करके ओफ़ीर से सोना लाएँ।
लेकिन वह कभी इस्तेमाल न हुए बल्कि अपनी ही
बंदरगाह अस्यून-जाबर में तबाह हो गए। 49तबाह

होने से पहले इसराईल के बादशाह अख़ज़ियाह
बिन अख़ियब ने यहूसफ़त से दरख़ास्त की थी
कि इसराईल के कुछ लोग जहाज़ों पर साथ चलें।
लेकिन यहूसफ़त ने इनकार किया था।
50जब यहूसफ़त मरकर अपने बापदादा से जा
मिला तो उसे यरूशलम के हिस्से में जो 'दाऊद
का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया
गया। फिर उसका बेटा यहूराम तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह अख़ज़ियाह

51अख़ियब का बेटा अख़ज़ियाह यहूदाह के
बादशाह यहूसफ़त की हुकूमत के 17वें साल में
इसराईल का बादशाह बना। वह दो साल तक
इसराईल पर हुक्मरान रहा। सामरिया उसका
दारुल-हुकूमत था। **52**जो कुछ उसने किया वह
रब को नापसंद था, क्योंकि वह अपने माँ-
बाप और यरुबियाम बिन नबात के नमूने पर
चलता रहा, उसी यरुबियाम के नमूने पर जिसने
इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया था।
53अपने बाप की तरह बाल देवता की ख़िदमत
और पूजा करने से उसने रब, इसराईल के ख़ुदा
को तैश दिलाया।

2 सलातीन

अख़ज़ियाह के लिए इलियास का पैग़ाम

1 अख़ियब की मौत के बाद मोआब का
मुल्क बाग़ी होकर इसराईल के ताबे न
रहा।
2सामरिया के शाही महल के बालाख़ाने की
एक दीवार में जंगला लगा था। एक दिन
अख़ज़ियाह बादशाह जंगले के साथ लग गया तो
वह टूट गया और बादशाह ज़मीन पर गिरकर बहुत
ज़ख़मी हुआ। उसने क़ासिदों को फ़िलिस्ती शहर
अक़रून भेजकर कहा, “जाकर अक़रून के देवता
बाल-ज़बूब से पता करें कि मेरी सेहत बहाल
हो जाएगी कि नहीं।” 3तब रब के फ़रिश्ते ने
इलियास तिशबी को हुक्म दिया, “उठ, सामरिया
के बादशाह के क़ासिदों से मिलने जा। उनसे
पूछ, ‘आप दरियाफ़्त करने के लिए अक़रून के
देवता बाल-ज़बूब के पास क्यों जा रहे हैं? क्या
इसराईल में कोई ख़ुदा नहीं है? 4चुनाँचे रब
फ़रमाता है कि ऐ अख़ज़ियाह, जिस बिस्तर पर तू
पड़ा है उससे तू कभी नहीं उठने का। तू यक़ीनन
मर जाएगा’।”
इलियास जाकर क़ासिदों से मिला। 5उस-
का पैग़ाम सुनकर क़ासिद बादशाह के पास वापस
गए। उसने पूछा, “आप इतनी जल्दी वापस क्यों
आए?” 6उन्होंने जवाब दिया, “एक आदमी
हमसे मिलने आया जिसने हमें आपके पास वापस
भेजकर आपको यह ख़बर पहुँचाने को कहा, ‘रब
फ़रमाता है कि तू अपने बारे में दरियाफ़्त करने के
लिए अपने बंदों को अक़रून के देवता बाल-ज़बूब
के पास क्यों भेज रहा है? क्या इसराईल में कोई
ख़ुदा नहीं है? चूँकि तूने यह किया है इसलिए
जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उससे तू कभी नहीं
उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा’।”
7अख़ज़ियाह ने पूछा, “यह किस क़िस्म का
आदमी था जिसने आपसे मिलकर आपको यह
बात बताई?” 8उन्होंने जवाब दिया, “उसके
लंबे बाल थे, और कमर में चमड़े की पेटी बँधी
हुई थी।” बादशाह बोल उठा, “यह तो इलियास
तिशबी था!”

आसमान से आग

9फ़ौरन उसने एक अफ़सर को 50 फ़ौजियों
समेत इलियास के पास भेज दिया। जब फ़ौजी
इलियास के पास पहुँचे तो वह एक पहाड़ी की
चोटी पर बैठा था। अफ़सर बोला, “ऐ मर्दे-
ख़ुदा, बादशाह कहते हैं कि नीचे उतर आएँ!”
10इलियास ने जवाब दिया, “अगर मैं मर्दे-ख़ुदा
हूँ तो आसमान से आग नाज़िल होकर आप और
आपके 50 फ़ौजियों को भस्म कर दे।” फ़ौरन
आसमान से आग नाज़िल हुई और अफ़सर को
उसके लोगों समेत भस्म कर दिया। 11बादशाह
ने एक और अफ़सर को इलियास के पास भेज
दिया। उसके साथ भी 50 फ़ौजी थे। उसके पास
पहुँचकर अफ़सर बोला, “ऐ मर्दे-ख़ुदा, बादशाह
कहते हैं कि फ़ौरन उतर आएँ।” 12इलियास ने

दुबारा पुकारा, “अगर मैं मर्दे-ख़ुदा हूँ तो आसमान
से आग नाज़िल होकर आप और आपके 50
फ़ौजियों को भस्म कर दे।” फ़ौरन आसमान से
अल्लाह की आग नाज़िल हुई और अफ़सर को
उसके 50 फ़ौजियों समेत भस्म कर दिया।
13फिर बादशाह ने तीसरी बार एक अफ़सर
को 50 फ़ौजियों के साथ इलियास के पास भेज
दिया। लेकिन यह अफ़सर इलियास के पास
ऊपर चढ़ आया और उसके सामने घुटने टेककर
इलतमास करने लगा, “ऐ मर्दे-ख़ुदा, मेरी और
अपने इन 50 ख़ादिमों की जानों की क़दर करें।
14देखें, आग ने आसमान से नाज़िल होकर पहले
दो अफ़सरों को उनके आदमियों समेत भस्म कर
दिया है। लेकिन बराहे-करम हमारे साथ ऐसा न
करें। मेरी जान की क़दर करें।”
15तब रब के फ़रिश्ते ने इलियास से कहा,
“इससे मत डरना बल्कि इसके साथ उतर जा!”
चुनाँचे इलियास उठा और अफ़सर के साथ
उतरकर बादशाह के पास गया। 16उसने बादशाह
से कहा, “रब फ़रमाता है, ‘तूने अपने क़ासिदों को
अक़रून के देवता बाल-ज़बूब से दरियाफ़्त करने
के लिए क्यों भेजा? क्या इसराईल में कोई ख़ुदा
नहीं है? चूँकि तूने यह किया है इसलिए जिस
बिस्तर पर तू पड़ा है उससे तू कभी नहीं उठने
का। तू यक़ीनन मर जाएगा’।”

अख़ज़ियाह की मौत

17वैसा ही हुआ जैसा रब ने इलियास की
मारिफ़त फ़रमाया था, अख़ज़ियाह मर गया।
चूँकि उसका बेटा नहीं था इसलिए उसका भाई
यहूराम यहूदाह के बादशाह यूराम बिन यहूसफ़त
की हुकूमत के दूसरे साल में तख़्तनशीन हुआ।
18बाक़ी जो कुछ अख़ज़ियाह की हुकूमत के
दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह
‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में
बयान किया गया है।

इलियास को आसमान पर उठा लिया जाता है

2 फिर वह दिन आया जब रब ने इलियास
को आँधी में आसमान पर उठा लिया। उस
दिन इलियास और इलीशा जिलजाल शहर से
रवाना होकर सफ़र कर रहे थे। 2रास्ते में इलियास
इलीशा से कहने लगा, “यहीं ठहर जाएँ, क्योंकि
रब ने मुझे बैतेल भेजा है।” लेकिन इलीशा ने
इनकार किया, “रब और आपकी हयात की
क़सम, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।”
चुनाँचे दोनों चलते चलते बैतेल पहुँच गए।
3नबियों का जो गुरोह वहाँ रहता था वह शहर
से निकलकर उनसे मिलने आया। इलीशा से
मुख़ातिब होकर उन्होंने पूछा, “क्या आपको
मालूम है कि आज रब आपके आक़ा को आपके
पास से उठा ले जाएगा?” इलीशा ने जवाब
दिया, “जी, मुझे पता है। ख़ामोश!” 4दुबारा
इलियास अपने साथी से कहने लगा, “इलीशा,
यहीं ठहर जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे यरीहू भेजा
है।” इलीशा ने जवाब दिया, “रब और आपकी
हयात की क़सम, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।”
चुनाँचे दोनों चलते चलते यरीहू पहुँच गए।
5नबियों का जो गुरोह वहाँ रहता था उसने
भी इलीशा के पास आकर उससे पूछा, “क्या
आपको मालूम है कि आज रब आपके आक़ा को
आपके पास से उठा ले जाएगा?” इलीशा ने
जवाब दिया, “जी, मुझे पता है। ख़ामोश!”
6इलियास तीसरी बार इलीशा से कहने लगा,
“यहीं ठहर जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे दरियाए-
यरदन के पास भेजा है।” इलीशा ने जवाब दिया,
“रब और आपकी हयात की क़सम, मैं आपको
नहीं छोड़ूँगा।”
चुनाँचे दोनों आगे बढ़े। 7पचास नबी भी उनके
साथ चल पड़े। जब इलियास और इलीशा
दरियाए-यरदन के किनारे पर पहुँचे तो दूसरे उनसे
कुछ दूर खड़े हो गए। 8इलियास ने अपनी चादर
उतारकर उसे लपेट लिया और उसके साथ पानी

पर मारा। पानी तक़सीम हुआ, और दोनों आदमी
ख़ुश्क ज़मीन पर चलते हुए दरिया में से गुज़र गए।
9दूसरे किनारे पर पहुँचकर इलियास ने इलीशा
से कहा, "मेरे आपके पास से उठा लिए जाने से
पहले मुझे बताएँ कि आपके लिए क्या करूँ?"
इलीशा ने जवाब दिया, "मुझे आपकी रूह का
दुगना हिस्सा मीरास में मिले।"[a] 10इलियास
बोला, "जो दरख़ास्त आपने की है उसे पूरा करना
मुश्किल है। अगर आप मुझे उस वक़्त देख सकेंगे
जब मुझे आपके पास से उठा लिया जाएगा तो
मतलब होगा कि आपकी दरख़ास्त पूरी हो गई
है, वरना नहीं।" 11दोनों आपस में बातें करते हुए
चल रहे थे कि अचानक एक आतिशीं रथ नज़र
आया जिसे आतिशीं घोड़े खींच रहे थे। रथ ने दोनों
को अलग कर दिया, और इलियास को आँधी
में आसमान पर उठा लिया गया। 12यह देखकर
इलीशा चिल्ला उठा, "हाय मेरे बाप, मेरे बाप!
इसराईल के रथ और उसके घोड़े!"

इलियास इलीशा की नज़रों से ओझल हुआ
तो इलीशा ने ग़म के मारे अपने कपड़ों को फाड़
डाला। 13इलियास की चादर ज़मीन पर गिर गई
थी। इलीशा उसे उठाकर दरियाए-यरदन के पास
वापस चला। 14चादर को पानी पर मारकर वह
बोला, "रब और इलियास का ख़ुदा कहाँ है?"
पानी तक़सीम हुआ और वह बीच में से गुज़र
गया।

15यरीहू से आए नबी अब तक दरिया के
मग़रिबी किनारे पर खड़े थे। जब उन्होंने इलीशा
को अपने पास आते हुए देखा तो पुकार उठे,
"इलियास की रूह इलीशा पर ठहरी हुई है!" वह
उससे मिलने गए और औंधे मुँह उसके सामने
झुककर 16बोले, "हमारे 50 ताक़तवर आदमी
ख़िदमत के लिए हाज़िर हैं। अगर इजाज़त हो तो
हम उन्हें भेज देंगे ताकि वह आपके आक़ा को
तलाश करें। हो सकता है रब के रूह ने उसे उठाकर
किसी पहाड़ या वादी में रख छोड़ा हो।"

इलीशा ने मना करने की कोशिश की, "नहीं,
उन्हें मत भेजना।" 17लेकिन उन्होंने यहाँ तक
इसरार किया कि आख़िरकार वह मान गया और
कहा, "चलो, उन्हें भेज दें।" उन्होंने 50 आदमियों
को भेज दिया जो तीन दिन तक इलियास का
खोज लगाते रहे। लेकिन वह कहीं नज़र न आया।
18हिम्मत हारकर वह यरीहू वापस आए जहाँ
इलीशा ठहरा हुआ था। उसने कहा, "क्या मैंने
नहीं कहा था कि न जाएँ?"

इलीशा के मोजिज़े

19एक दिन यरीहू के आदमी इलीशा के पास
आकर शिकायत करने लगे, "हमारे आक़ा, आप
ख़ुद देख सकते हैं कि इस शहर में अच्छा गुज़ारा
होता है। लेकिन पानी ख़राब है, और नतीजे में
बहुत दफ़ा बच्चे माँ के पेट में ही मर जाते हैं।"
20इलीशा ने हुक्म दिया, "एक ग़ैरइस्ते-
मालशुदा बरतन में नमक डालकर उसे मेरे पास ले
आएँ।" जब बरतन उसके पास लाया गया 21तो
वह उसे लेकर शहर से निकला और चश्मे के पास
गया। वहाँ उसने नमक को पानी में डाल दिया
और साथ साथ कहा, "रब फ़रमाता है कि मैंने
इस पानी को बहाल कर दिया है। अब से यह
कभी मौत या बच्चों के ज़ाया होने का बाइस नहीं
बनेगा।"

22उसी लमहे पानी बहाल हो गया। इलीशा के
कहने के मुताबिक़ यह आज तक ठीक रहा है।

23यरीहू से इलीशा बैतेल को वापस चला गया।
जब वह रास्ते पर चलते हुए शहर से गुज़र रहा था
तो कुछ लड़के शहर से निकल आए और उसका
मज़ाक़ उड़ाकर चिल्लाने लगे, "ओए गंजे, इधर
आ! ओए गंजे, इधर आ!" 24इलीशा मुड़
गया और उन पर नज़र डालकर रब के नाम में
उन पर लानत भेजी। तब दो रीछनियाँ जंगल से
निकलकर लड़कों पर टूट पड़ीं और कुल 42
लड़कों को फाड़ डाला।

---

[a]इलीशा पहलौठे का हिस्सा माँग रहा है जो दूसरे वारिसों
की निसबत दुगना होता है।

25इलियास आगे निकला और चलते चलते करमिल पहाड़ के पास आया। वहाँ से वापस आकर सामरिया पहुँच गया।

इसराईल का बादशाह यूराम

3 अख़ियब का बेटा यूराम यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त के 18वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 12 साल था और उसका दारुल-हुकूमत सामरिया रहा।
2उस-का चाल-चलन रब को नापसंद था, अगरचे वह अपने माँ-बाप की निसबत कुछ बेहतर था। क्योंकि उसने बाल देवता का वह सतून दूर कर दिया जो उसके बाप ने बनवाया था।
3तो भी वह यरुबियाम बिन नबात के उन गुनाहों के साथ लिपटा रहा जो करने पर यरुबियाम ने इसराईल को उकसाया था। वह कभी उनसे दूर न हुआ।

मोआब के ख़िलाफ़ जंग

4मोआब का बादशाह मेसा भेड़ें रखता था, और सालाना उसे भेड़ के एक लाख बच्चे और एक लाख मेंढे उनकी ऊन समेत इसराईल के बादशाह को ख़राज के तौर पर अदा करने पड़ते थे।
5लेकिन जब अख़ियब फ़ौत हुआ तो मोआब का बादशाह ताबे न रहा।

6तब यूराम बादशाह ने सामरिया से निकलकर तमाम इसराईलियों की भरती की।
7साथ साथ उसने यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त को इत्तला दी, "मोआब का बादशाह सरकश हो गया है। क्या आप मेरे साथ उससे लड़ने जाएंगे?" यहूसफ़त ने जवाब भेजा, "जी, मैं आपके साथ जाऊँगा। हम तो भाई हैं। मेरी क़ौम को अपनी क़ौम और मेरे घोड़ों को अपने घोड़े समझें।
8हम किस रास्ते से जाएँ?" यूराम ने जवाब दिया, "हम अदोम के रेगिस्तान से होकर जाएंगे।"

9चुनाँचे इसराईल का बादशाह यहूदाह के बादशाह के साथ मिलकर रवाना हुआ। मुल्के-अदोम का बादशाह भी साथ था। अपने मनसूबे के मुताबिक़ उन्होंने रेगिस्तान का रास्ता इख़्तियार किया। लेकिन चूँकि वह सीधे नहीं बल्कि मुतबादिल रास्ते से होकर गए इसलिए सात दिन के सफ़र के बाद उनके पास पानी न रहा, न उनके लिए, न जानवरों के लिए।

10इसराईल का बादशाह बोला, "हाय, रब हमें इसलिए यहाँ बुला लाया है कि हम तीनों बादशाहों को मोआब के हवाले करे।"

11लेकिन यहूसफ़त ने सवाल किया, "क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं है जिसकी मारिफ़त हम रब की मरज़ी जान सकें?" इसराईल के बादशाह के किसी अफ़सर ने जवाब दिया, "एक तो है, इलीशा बिन साफ़त जो इलियास का क़रीबी शागिर्द था, वह उसके हाथों पर पानी डालने की ख़िदमत अंजाम दिया करता था।"
12यहूसफ़त बोला, "रब का कलाम उसके पास है।" तीनों बादशाह इलीशा के पास गए।

13लेकिन इलीशा ने इसराईल के बादशाह से कहा, "मेरा आपके साथ क्या वास्ता? अगर कोई बात हो तो अपने माँ-बाप के नबियों के पास जाएँ।" इसराईल के बादशाह ने जवाब दिया, "नहीं, हम इसलिए यहाँ आए हैं कि रब ही हम तीनों को यहाँ बुला लाया है ताकि हमें मोआब के हवाले करे।"
14इलीशा ने कहा, "रब्बुल-अफ़वाज की हयात की क़सम जिसकी ख़िदमत मैं करता हूँ, अगर यहूदाह का बादशाह यहाँ मौजूद न होता तो फिर मैं आपका लिहाज़ न करता बल्कि आपकी तरफ़ देखता भी न। लेकिन मैं यहूसफ़त का ख़याल करता हूँ,
15इसलिए किसी को बुलाएँ जो सरोद बजा सके।"

कोई सरोद बजाने लगा तो रब का हाथ इलीशा पर आ ठहरा,
16और उसने एलान किया, "रब फ़रमाता है कि इस वादी में हर तरफ़ गढ़ों की खुदाई करो।
17गो तुम न हवा और न बारिश देखोगे तो भी वादी पानी से भर जाएगी। पानी इतना होगा कि तुम, तुम्हारे रेवड़ और बाक़ी तमाम जानवर पी सकेंगे।
18लेकिन यह रब के नज़दीक कुछ नहीं है, वह मोआब को भी तुम्हारे हवाले

कर देगा। 19तुम तमाम क़िलाबंद और मरकज़ी शहरों पर फ़तह पाओगे। तुम मुल्क के तमाम अच्छे दरख़्तों को काटकर तमाम चश्मों को बंद करोगे और तमाम अच्छे खेतों को पत्थरों से ख़राब करोगे।"

20अगली सुबह तक़रीबन उस वक़्त जब ग़ल्ला की नज़र पेश की जाती है मुल्के-अदोम की तरफ़ से सैलाब आया, और नतीजे में वादी के तमाम गढ़े पानी से भर गए।

मोआब पर फ़तह

21इतने में तमाम मोआबियों को पता चल गया था कि तीनों बादशाह हमसे लड़ने आ रहे हैं। छोटों से लेकर बड़ों तक जो भी अपनी तलवार चला सकता था उसे बुलाकर सरहद की तरफ़ भेजा गया। 22सुबह-सवेरे जब मोआबी लड़ने के लिए तैयार हुए तो तुलूए-आफ़ताब की सुर्ख़ रौशनी में वादी का पानी ख़ून की तरह सुर्ख़ नज़र आया। 23मोआबी चिल्लाने लगे, "यह तो ख़ून है! तीनों बादशाहों ने आपस में लड़कर एक दूसरे को मार दिया होगा। आओ, हम उनको लूट लें!"

24लेकिन जब वह इसराईली लशकरगाह के क़रीब पहुँचे तो इसराईली उन पर टूट पड़े और उन्हें मारकर भगा दिया। फिर उन्होंने उनके मुल्क में दाख़िल होकर मोआब को शिकस्त दी। 25चलते चलते उन्होंने तमाम शहरों को बरबाद किया। जब भी वह किसी अच्छे खेत से गुज़रे तो हर सिपाही ने एक पत्थर उस पर फेंक दिया। यों तमाम खेत पत्थरों से भर गए। इसराईलियों ने तमाम चश्मों को भी बंद कर दिया और हर अच्छे दरख़्त को काट डाला।

आख़िर में सिर्फ़ क़ीर-हरासत क़ायम रहा। लेकिन फ़लाख़न चलानेवाले उसका मुहासरा करके उस पर हमला करने लगे। 26जब मोआब के बादशाह ने जान लिया कि मैं शिकस्त खा रहा हूँ तो उसने तलवारों से लैस 700 आदमियों को अपने साथ लिया और अदोम के बादशाह के क़रीब दुश्मन का मुहासरा तोड़कर निकलने की कोशिश की, लेकिन बेफ़ायदा। 27फिर उसने अपने पहलौठे को जिसे उसके बाद बादशाह बनना था लेकर फ़सील पर अपने देवता के लिए क़ुरबान करके जला दिया। तब इसराईलियों पर बड़ा ग़ज़ब नाज़िल हुआ, और वह शहर को छोड़कर अपने मुल्क वापस चले गए।

इलीशा और बेवा का तेल

4 एक दिन एक बेवा इलीशा के पास आई जिसका शौहर जब ज़िंदा था नबियों के गुरोह में शामिल था। बेवा चीख़ती-चिल्लाती इलीशा से मुख़ातिब हुई, "आप जानते हैं कि मेरा शौहर जो आपकी ख़िदमत करता था अल्लाह का ख़ौफ़ मानता था। अब जब वह फ़ौत हो गया है तो उसका एक साहूकार आकर धमकी दे रहा है कि अगर क़र्ज़ अदा न किया गया तो मैं तेरे दो बेटों को ग़ुलाम बनाकर ले जाऊँगा।"

2इलीशा ने पूछा, "मैं किस तरह आपकी मदद करूँ? बताएँ, घर में आपके पास क्या है?" बेवा ने जवाब दिया, "कुछ नहीं, सिर्फ़ ज़ैतून के तेल का छोटा-सा बरतन।" 3इलीशा बोला, "जाएँ, अपनी तमाम पड़ोसनों से ख़ाली बरतन माँगें। लेकिन ध्यान रखें कि थोड़े बरतन न हों! 4फिर अपने बेटों के साथ घर में जाकर दरवाज़े पर कुंडी लगाएँ। तेल का अपना बरतन लेकर तमाम ख़ाली बरतनों में तेल उंडेलती जाएँ। जब एक भर जाए तो उसे एक तरफ़ रखकर दूसरे को भरना शुरू करें।"

5बेवा ने जाकर ऐसा ही किया। वह अपने बेटों के साथ घर में गई और दरवाज़े पर कुंडी लगाई। बेटे उसे ख़ाली बरतन देते गए और माँ उनमें तेल उंडेलती गई। 6बरतनों में तेल डलते डलते सब लबालब भर गए। माँ बोली, "मुझे एक और बरतन दे दो" तो एक लड़के ने जवाब दिया, "और कोई नहीं है।" तब तेल का सिलसिला रुक गया।

7जब बेवा ने मर्दे-ख़ुदा के पास जाकर उसे इत्तला दी तो इलीशा ने कहा, "अब जाकर तेल को बेच दें और क़र्ज़े के पैसे अदा करें। जो बच

जाए उसे आप और आपके बेटे अपनी ज़रूरियात
पूरी करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

इलीशा शूनीम में लड़के को ज़िंदा कर देता है

8एक दिन इलीशा शूनीम गया। वहाँ एक अमीर
औरत रहती थी जिसने ज़बरदस्ती उसे अपने
घर बिठाकर खाना खिलाया। बाद में जब कभी
इलीशा वहाँ से गुज़रता तो वह खाने के लिए उस
औरत के घर ठहर जाता। 9एक दिन औरत ने
अपने शौहर से बात की, "मैंने जान लिया है कि
जो आदमी हमारे हाँ आता रहता है वह अल्लाह
का मुक़द्दस पैग़ंबर है। 10क्यों न हम उसके लिए
छत पर छोटा-सा कमरा बनाकर उसमें चारपाई,
मेज़, कुरसी और शमादान रखें। फिर जब भी वह
हमारे पास आए तो वह उसमें ठहर सकता है।"

11एक दिन जब इलीशा आया तो वह अपने
कमरे में जाकर बिस्तर पर लेट गया। 12उसने
अपने नौकर जैहाज़ी से कहा, "शूनीमी मेज़बान
को बुला लाओ।" जब वह आकर उसके सामने
खड़ी हुई 13तो इलीशा ने जैहाज़ी से कहा, "उसे
बता देना कि आपने हमारे लिए बहुत तकलीफ़
उठाई है। अब हम आपके लिए क्या कुछ करें?
क्या हम बादशाह या फ़ौज के कमाँडर से बात
करके आपकी सिफ़ारिश करें?" औरत ने जवाब
दिया, "नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं। मैं अपने ही
लोगों के दरमियान रहती हूँ।"

14बाद में इलीशा ने जैहाज़ी से बात की, "हम
उसके लिए क्या करें?" जैहाज़ी ने जवाब दिया,
"एक बात तो है। उसका कोई बेटा नहीं, और
उसका शौहर काफ़ी बूढ़ा है।" 15इलीशा बोला,
"उसे वापस बुलाओ।" औरत वापस आकर
दरवाज़े में खड़ी हो गई। इलीशा ने उससे कहा,
16"अगले साल इसी वक़्त आपका अपना बेटा
आपकी गोद में होगा।" शूनीमी औरत ने एतराज़
किया, "नहीं नहीं, मेरे आक़ा। मर्दे-ख़ुदा ऐसी बातें
करके अपनी ख़ादिमा को झूटी तसल्ली मत दें।"

17लेकिन ऐसा ही हुआ। कुछ देर के बाद औरत
का पाँव भारी हो गया, और ऐन एक साल के बाद
उसके हाँ बेटा पैदा हुआ। सब कुछ वैसा ही हुआ
जैसा इलीशा ने कहा था। 18बच्चा परवान चढ़ा,
और एक दिन वह घर से निकलकर खेत में अपने
बाप के पास गया जो फ़सल की कटाई करनेवालों
के साथ काम कर रहा था। 19अचानक लड़का
चीख़ने लगा, "हाय मेरा सर, हाय मेरा सर!"
बाप ने किसी मुलाज़िम को बताया, "लड़के को
उठाकर माँ के पास ले जाओ।" 20नौकर उसे
उठाकर ले गया, और वह अपनी माँ की गोद में
बैठा रहा। लेकिन दोपहर को वह मर गया।

21माँ लड़के की लाश को लेकर छत पर चढ़
गई। मर्दे-ख़ुदा के कमरे में जाकर उसने उसे
उसके बिस्तर पर लिटा दिया। फिर दरवाज़े को
बंद करके वह बाहर निकली 22और अपने शौहर
को बुलवाकर कहा, "ज़रा एक नौकर और एक
गधी मेरे पास भेज दें। मुझे फ़ौरन मर्दे-ख़ुदा के
पास जाना है। मैं जल्द ही वापस आ जाऊँगी।"
23शौहर ने हैरान होकर पूछा, "आज उसके पास
क्यों जाना है? न तो नए चाँद की ईद है, न
सबत का दिन।" बीवी ने कहा, "सब ख़ैरियत
है।" 24गधी पर ज़ीन कसकर उसने नौकर को
हुक्म दिया, "गधी को तेज़ चला ताकि हम जल्दी
पहुँच जाएँ। जब मैं कहूँगी तब ही रुकना है, वरना
नहीं।"

25चलते चलते वह करमिल पहाड़ के पास
पहुँच गए जहाँ मर्दे-ख़ुदा इलीशा था। उसे दूर से
देखकर इलीशा जैहाज़ी से कहने लगा, "देखो,
शूनीम की औरत आ रही है! 26भागकर उसके
पास जाओ और पूछो कि क्या आप, आपका
शौहर और बच्चा ठीक हैं?" जैहाज़ी ने जाकर
उसका हाल पूछा तो औरत ने जवाब दिया, "जी,
सब ठीक है।" 27लेकिन ज्योंही वह पहाड़ के पास
पहुँच गई तो इलीशा के सामने गिरकर उसके पाँवों
से चिमट गई। यह देखकर जैहाज़ी उसे हटाने के
लिए क़रीब आया, लेकिन मर्दे-ख़ुदा बोला, "छोड़
दो! कोई बात इसे बहुत तकलीफ़ दे रही है,
लेकिन रब ने वजह मुझसे छुपाए रखी है। उसने
मुझे इसके बारे में कुछ नहीं बताया।"

28फिर शूनीमी औरत बोल उठी, “मेरे आक़ा, क्या मैंने आपसे बेटे की दरख़ास्त की थी? क्या मैंने नहीं कहा था कि मुझे ग़लत उम्मीद न दिलाएँ?” 29तब इलीशा ने नौकर को हुक्म दिया, “जैहाज़ी, सफ़र के लिए कमरबस्ता होकर मेरी लाठी को ले लो और भागकर शूनीम पहुँचो। अगर रास्ते में किसी से मिलो तो उसे सलाम तक न करना, और अगर कोई सलाम कहे तो उसे जवाब मत देना। जब वहाँ पहुँचोगे तो मेरी लाठी लड़के के चेहरे पर रख देना।” 30लेकिन माँ ने एतराज़ किया, “रब की और आपकी हयात की क़सम, आपके बग़ैर मैं घर वापस नहीं जाऊँगी।”

चुनाँचे इलीशा भी उठा और औरत के पीछे पीछे चल पड़ा। 31जैहाज़ी भाग भागकर उनसे पहले पहुँच गया और लाठी को लड़के के चेहरे पर रख दिया। लेकिन कुछ न हुआ। न कोई आवाज़ सुनाई दी, न कोई हरकत हुई। वह इलीशा के पास वापस आया और बोला, “लड़का अभी तक मुरदा ही है।”

32जब इलीशा पहुँच गया तो लड़का अब तक मुरदा हालत में उसके बिस्तर पर पड़ा था। 33वह अकेला ही अंदर गया और दरवाज़े पर कुंडी लगाकर रब से दुआ करने लगा। 34फिर वह लड़के पर लेट गया, यों कि उसका मुँह बच्चे के मुँह से, उस की आँखें बच्चे की आँखों से और उसके हाथ बच्चे के हाथों से लग गए। और ज्योंही वह लड़के पर झुक गया तो उसका जिस्म गरम होने लगा। 35इलीशा खड़ा हुआ और घर में इधर-उधर फिरने लगा। फिर वह एक और मरतबा लड़के पर लेट गया। इस दफ़ा लड़के ने सात बार छींकें मारकर अपनी आँखें खोल दीं।

36इलीशा ने जैहाज़ी को आवाज़ देकर कहा, “शूनीमी औरत को बुला लाओ।” वह कमरे में दाख़िल हुई तो इलीशा बोला, “आएँ, अपने बेटे को उठाकर ले जाएँ।” 37वह आई और इलीशा के सामने औंधे मुँह झुक गई, फिर अपने बेटे को उठाकर कमरे से बाहर चली गई।

इलीशा ज़हरीले सालन को खाने के क़ाबिल बना देता है

38इलीशा जिलजाल को लौट आया। उन दिनों में मुल्क काल की गिरिफ़्त में था। एक दिन जब नबियों का गुरोह उसके सामने बैठा था तो उसने अपने नौकर को हुक्म दिया, “बड़ी देग लेकर नबियों के लिए कुछ पका लो।”

39एक आदमी बाहर निकलकर खुले मैदान में कद्दू ढूँडने गया। कहीं एक बेल नज़र आई जिस पर कद्दू जैसी कोई सब्ज़ी लगी थी। इन कद्दुओं से अपनी चादर भरकर वह वापस आया और उन्हें काट काटकर देग में डाल दिया, हालाँकि किसी को भी मालूम नहीं था कि क्या चीज़ है।

40सालन पककर नबियों में तक़सीम हुआ। लेकिन उसे चखते ही वह चीख़ने लगे, “मर्दे-ख़ुदा, सालन में ज़हर है! इसे खाकर बंदा मर जाएगा।” वह उसे बिलकुल न खा सके। 41इलीशा ने हुक्म दिया, “मुझे कुछ मैदा लाकर दें।” फिर उसे देग में डालकर बोला, “अब इसे लोगों को खिला दें।” अब खाना खाने के क़ाबिल था और उन्हें नुक़सान न पहुँचा सका।

100 आदमियों के लिए खाना

42एक और मौक़े पर किसी आदमी ने बाल-सलीसा से आकर मर्दे-ख़ुदा को नई फ़सल के जौ की 20 रोटियाँ और कुछ अनाज दे दिया। इलीशा ने जैहाज़ी को हुक्म दिया, “इसे लोगों को खिला दो।”

43जैहाज़ी हैरान होकर बोला, “यह कैसे मुमकिन है? यह तो 100 आदमियों के लिए काफ़ी नहीं है।” लेकिन इलीशा ने इसरार किया, “इसे लोगों में तक़सीम कर दो, क्योंकि रब फ़रमाता है कि वह जी भरकर खाएँगे बल्कि कुछ बच भी जाएगा।”

44और ऐसा ही हुआ। जब नौकर ने आदमियों में खाना तक़सीम किया तो उन्होंने जी भरकर खाया, बल्कि कुछ खाना बच भी गया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने फ़रमाया था।

नामान की शफ़ा

5 उस वक़्त शाम की फ़ौज का कमाँडर
नामान था। बादशाह उस की बहुत क़दर
करता था, और दूसरे भी उस की ख़ास इज़्ज़त
करते थे, क्योंकि रब ने उस की मारिफ़त शाम
के दुश्मनों पर फ़तह बख़्शी थी। लेकिन ज़बरदस्त
फ़ौजी होने के बावुजूद वह संगीन जिल्दी बीमारी
का मरीज़ था। 2नामान के घर में एक इसराईली
लड़की रहती थी। किसी वक़्त जब शाम के
फ़ौजियों ने इसराईल पर छापा मारा था तो वह
उसे गिरिफ़्तार करके यहाँ ले आए थे। अब लड़की
नामान की बीवी की ख़िदमत करती थी। 3एक
दिन उसने अपनी मालिकन से बात की, “काश
मेरा आक़ा उस नबी से मिलने जाता जो सामरिया
में रहता है। वह उसे ज़रूर शफ़ा देता।”

4यह सुनकर नामान ने बादशाह के पास जाकर
लड़की की बात दोहराई। 5बादशाह बोला, “ज़रूर
जाएँ और उस नबी से मिलें। मैं आपके हाथ
इसराईल के बादशाह को सिफ़ारिशी ख़त भेज
दूँगा।” चुनाँचे नामान रवाना हुआ। उसके पास
तक़रीबन 340 किलोग्राम चाँदी, 68 किलोग्राम
सोना और 10 क़ीमती सूट थे। 6जो ख़त वह साथ
लेकर गया उसमें लिखा था, “जो आदमी आपको
यह ख़त पहुँचा रहा है वह मेरा ख़ादिम नामान है।
मैंने उसे आपके पास भेजा है ताकि आप उसे उस
की जिल्दी बीमारी से शफ़ा दें।”

7ख़त पढ़कर यूराम ने रंजिश के मारे अपने
कपड़े फाड़े और पुकारा, “इस आदमी ने मरीज़
को मेरे पास भेज दिया है ताकि मैं उसे शफ़ा दूँ!
क्या मैं अल्लाह हूँ कि किसी को जान से मारूँ या
उसे ज़िंदा करूँ? अब ग़ौर करें और देखें कि वह
किस तरह मेरे साथ झगड़ने का मौक़ा ढूँड रहा
है।”

8जब इलीशा को ख़बर मिली कि बादशाह ने
घबराकर अपने कपड़े फाड़ लिए हैं तो उसने यूराम
को पैग़ाम भेजा, “आपने अपने कपड़े क्यों फाड़
लिए? आदमी को मेरे पास भेज दें तो वह जान
लेगा कि इसराईल में नबी है।”

9तब नामान अपने रथ पर सवार इलीशा के
घर के दरवाज़े पर पहुँच गया। 10इलीशा ख़ुद न
निकला बल्कि किसी को बाहर भेजकर इत्तला
दी, “जाकर सात बार दरियाए-यरदन में नहा लें।
फिर आपके जिस्म को शफ़ा मिलेगी और आप
पाक-साफ़ हो जाएंगे।”

11यह सुनकर नामान को ग़ुस्सा आया और वह
यह कहकर चला गया, “मैंने सोचा कि वह कम
अज़ कम बाहर आकर मुझसे मिलेगा। होना यह
चाहिए था कि वह मेरे सामने खड़े होकर रब अपने
ख़ुदा का नाम पुकारता और अपना हाथ बीमार
जगह के ऊपर हिला हिलाकर मुझे शफ़ा देता।
12क्या दमिश्क़ के दरिया अबाना और फ़रफ़र
तमाम इसराईली दरियाओं से बेहतर नहीं हैं?
अगर नहाने की ज़रूरत है तो मैं क्यों न उनमें
नहाकर पाक-साफ़ हो जाऊँ?”

यों बुड़बुड़ाते हुए वह बड़े ग़ुस्से में चला गया।
13लेकिन उसके मुलाज़िमों ने उसे समझाने की
कोशिश की। “हमारे आक़ा, अगर नबी आपसे
किसी मुश्किल काम का तक़ाज़ा करता तो क्या
आप वह करने के लिए तैयार न होते? अब जबकि
उसने सिर्फ़ यह कहा है कि नहाकर पाक-साफ़
हो जाएँ तो आपको यह ज़रूर करना चाहिए।”
14आख़िरकार नामान मान गया और यरदन की
वादी में उतर गया। दरिया पर पहुँचकर उसने सात
बार उसमें डुबकी लगाई और वाक़ई उसका जिस्म
लड़के के जिस्म जैसा सेहतमंद और पाक-साफ़
हो गया।

15तब नामान अपने तमाम मुलाज़िमों के साथ
मर्दे-ख़ुदा के पास वापस गया। उसके सामने खड़े
होकर उसने कहा, “अब मैं जान गया हूँ कि
इसराईल के ख़ुदा के सिवा पूरी दुनिया में ख़ुदा
नहीं है। ज़रा अपने ख़ादिम से तोह्फ़ा क़बूल
करें।” 16लेकिन इलीशा ने इनकार किया, “रब
की हयात की क़सम जिसकी ख़िदमत मैं करता

हूँ, मैं कुछ नहीं लूँगा।” नामान इसरार करता रहा, तो भी वह कुछ लेने के लिए तैयार न हुआ।

17आख़िरकार नामान मान गया। उसने कहा, “ठीक है, लेकिन मुझे ज़रा एक काम करने की इजाज़त दें। मैं यहाँ से इतनी मिट्टी अपने घर ले जाना चाहता हूँ जितनी दो ख़च्चर उठाकर ले जा सकते हैं। क्योंकि आइंदा मैं उस पर रब को भस्म होनेवाली और ज़बह की क़ुरबानियाँ चढ़ाना चाहता हूँ। अब से मैं किसी और माबूद को क़ुरबानियाँ पेश नहीं करूँगा। 18लेकिन रब मुझे एक बात के लिए मुआफ़ करे। जब मेरा बादशाह पूजा करने के लिए रिम्मोन के मंदिर में जाता है तो मेरे बाज़ू का सहारा लेता है। यों मुझे भी उसके साथ झुक जाना पड़ता है जब वह बुत के सामने औंधे मुँह झुक जाता है। रब मेरी यह हरकत मुआफ़ कर दे।”

19इलीशा ने जवाब दिया, “सलामती से जाएँ।”

जैहाज़ी का लालच

नामान रवाना हुआ 20तो कुछ देर के बाद इलीशा का नौकर जैहाज़ी सोचने लगा, “मेरे आक़ा ने शाम के इस बंदे नामान पर हद से ज़्यादा नरमदिली का इज़हार किया है। चाहिए तो था कि वह उसके तोहफ़े क़बूल कर लेता। रब की हयात की क़सम, मैं उसके पीछे दौड़कर कुछ न कुछ उससे ले लूँगा।”

21चुनाँचे जैहाज़ी नामान के पीछे भागा। जब नामान ने उसे देखा तो वह रथ से उतरकर जैहाज़ी से मिलने गया और पूछा, “क्या सब ख़ैरियत है?” 22जैहाज़ी ने जवाब दिया, “जी, सब ख़ैरियत है। मेरे आक़ा ने मुझे आपको इत्तला देने भेजा है कि अभी अभी नबियों के गुरोह के दो जवान इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े से मेरे पास आए हैं। मेहरबानी करके उन्हें 34 किलोग्राम चाँदी और दो क़ीमती सूट दे दें।” 23नामान बोला, “ज़रूर, बल्कि 68 किलोग्राम चाँदी ले लें।” इस बात पर वह बज़िद रहा। उसने 68 किलोग्राम चाँदी बोरियों में लपेट ली, दो सूट चुन लिए और सब कुछ अपने दो नौकरों को दे दिया ताकि वह सामान जैहाज़ी के आगे आगे ले चलें।

24जब वह उस पहाड़ के दामन में पहुँचे जहाँ इलीशा रहता था तो जैहाज़ी ने सामान नौकरों से लेकर अपने घर में रख छोड़ा, फिर दोनों को रुख़सत कर दिया। 25फिर वह जाकर इलीशा के सामने खड़ा हो गया। इलीशा ने पूछा, “जैहाज़ी, तुम कहाँ से आए हो?” उसने जवाब दिया, “मैं कहीं नहीं गया था।”

26लेकिन इलीशा ने एतराज़ किया, “क्या मेरी रूह तुम्हारे साथ नहीं थी जब नामान अपने रथ से उतरकर तुमसे मिलने आया? क्या आज चाँदी, कपड़े, ज़ैतून और अंगूर के बाग़, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, नौकर और नौकरानियाँ हासिल करने का वक़्त था? 27अब नामान की जिल्दी बीमारी हमेशा तक तुम्हें और तुम्हारी औलाद को लगी रहेगी।”

जब जैहाज़ी कमरे से निकला तो जिल्दी बीमारी उसे लग चुकी थी। वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो गया था।

कुल्हाड़ी का लोहा पानी की सतह पर तैरता है

6 एक दिन कुछ नबी इलीशा के पास आकर शिकायत करने लगे, “जिस तंग जगह पर हम आपके पास आकर ठहरे हैं उसमें हमारे लिए रहना मुश्किल है। 2क्यों न हम दरियाए-यरदन पर जाएँ और हर आदमी वहाँ से शहतीर ले आए ताकि हम रहने की नई जगह बना सकें।” इलीशा बोला, “ठीक है, जाएँ।” 3किसी ने गुज़ारिश की, “बराहे-करम हमारे साथ चलें।” नबी राज़ी होकर 4उनके साथ रवाना हुआ।

दरियाए-यरदन के पास पहुँचते ही वह दरख़्त काटने लगे। 5काटते काटते अचानक किसी की कुल्हाड़ी का लोहा पानी में गिर गया। वह चिल्ला उठा, “हाय मेरे आक़ा! यह मेरा नहीं था, मैंने तो उसे किसी से उधार लिया था।”

6इलीशा ने सवाल किया, “लोहा कहाँ पानी में
गिरा?” आदमी ने उसे जगह दिखाई तो नबी ने
किसी दरख़्त से शाख़ काटकर पानी में फेंक दी।
अचानक लोहा पानी की सतह पर आकर तैरने
लगा। 7इलीशा बोला, “इसे पानी से निकाल
लो!” आदमी ने अपना हाथ बढ़ाकर लोहे को
पकड़ लिया।

शाम के जंगी मनसूबे इलीशा के बाइस नाकाम रहते हैं

8शाम और इसराईल के दरमियान जंग थी।
जब कभी बादशाह अपने अफ़सरों से मशवरा
करके कहता, “हम फ़ुलाँ फ़ुलाँ जगह अपनी
लशकरगाह लगा लेंगे” 9तो फ़ौरन मर्दे-ख़ुदा
इसराईल के बादशाह को आगाह करता, “फ़ुलाँ
जगह से मत गुज़रना, क्योंकि शाम के फ़ौजी वहाँ
घात में बैठे हैं।” 10तब इसराईल का बादशाह
अपने लोगों को मज़कूरा जगह पर भेजता और
वहाँ से गुज़रने से मुहतात रहता था। ऐसा न सिर्फ़
एक या दो दफ़ा बल्कि कई मरतबा हुआ।

11आख़िरकार शाम के बादशाह ने बहुत रंजीदा
होकर अपने अफ़सरों को बुलाया और पूछा,
“क्या कोई मुझे बता सकता है कि हममें से
कौन इसराईल के बादशाह का साथ देता है?”
12किसी अफ़सर ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा
और बादशाह, हममें से कोई नहीं है। मसला
यह है कि इसराईल का नबी इलीशा इसराईल
के बादशाह को वह बातें भी बता देता है जो
आप अपने सोने के कमरे में बयान करते हैं।”
13बादशाह ने हुक्म दिया, “जाएँ, उसका पता
करें ताकि हम अपने फ़ौजियों को भेजकर उसे
पकड़ लें।”

बादशाह को इत्तला दी गई कि इलीशा दूतैन
नामी शहर में है। 14उसने फ़ौरन एक बड़ी फ़ौज
रथों और घोड़ों समेत वहाँ भेज दी। उन्होंने रात
के वक़्त पहुँचकर शहर को घेर लिया। 15जब
इलीशा का नौकर सुबह-सवेरे जाग उठा और घर
से निकला तो क्या देखता है कि पूरा शहर एक
बड़ी फ़ौज से घिरा हुआ है जिसमें रथ और घोड़े
भी शामिल हैं। उसने इलीशा से कहा, “हाय मेरे
आक़ा, हम क्या करें?” 16लेकिन इलीशा ने उसे
तसल्ली दी, “डरो मत! जो हमारे साथ हैं वह
उनकी निसबत कहीं ज़्यादा हैं जो दुश्मन के साथ
हैं।” 17फिर उसने दुआ की, “ऐ रब, नौकर की
आँखें खोल ताकि वह देख सके।” रब ने इलीशा
के नौकर की आँखें खोल दीं तो उसने देखा कि
पहाड़ पर इलीशा के इर्दगिर्द आतिशीं घोड़े और
रथ फैले हुए हैं।

18जब दुश्मन इलीशा की तरफ़ बढ़ने लगा तो
उसने दुआ की, “ऐ रब, इनको अंधा कर दे!”
रब ने इलीशा की सुनी और उन्हें अंधा कर दिया।
19फिर इलीशा उनके पास गया और कहा, “यह
रास्ता सहीह नहीं। आप ग़लत शहर के पास पहुँच
गए हैं। मेरे पीछे हो लें तो मैं आपको उस आदमी
के पास पहुँचा दूँगा जिसे आप ढूँड रहे हैं।” यह
कहकर वह उन्हें सामरिया ले गया।

20जब वह शहर में दाख़िल हुए तो इलीशा ने
दुआ की, “ऐ रब, फ़ौजियों की आँखें खोल दे
ताकि वह देख सकें।” तब रब ने उनकी आँखें
खोल दीं, और उन्हें मालूम हुआ कि हम सामरिया
में फँस गए हैं।

21जब इसराईल के बादशाह ने अपने दुश्मनों
को देखा तो उसने इलीशा से पूछा, “मेरे बाप,
क्या मैं उन्हें मार दूँ? क्या मैं उन्हें मार दूँ?”
22लेकिन इलीशा ने मना किया, “ऐसा मत करें।
क्या आप अपने जंगी क़ैदियों को मार देते हैं?
नहीं, उन्हें खाना खिलाएँ, पानी पिलाएँ और फिर
उनके मालिक के पास वापस भेज दें।”

23चुनाँचे बादशाह ने उनके लिए बड़ी ज़ियाफ़त
का एहतमाम किया और खाने-पीने से फ़ारिग़ होने
पर उन्हें उनके मालिक के पास वापस भेज दिया।
इसके बाद इसराईल पर शाम की तरफ़ से लूट-
मार के छापे बंद हो गए।

सामरिया का मुहासरा

24कुछ देर के बाद शाम का बादशाह बिन-
हदद अपनी पूरी फ़ौज जमा करके इसराईल पर
चढ़ आया और सामरिया का मुहासरा किया।
25नतीजे में शहर में शदीद काल पड़ा। आख़िर में
गधे का सर चाँदी के 80 सिक्कों में और कबूतर
की मुट्ठी-भर बीट चाँदी के 5 सिक्कों में मिलती
थी।

26एक दिन इसराईल का बादशाह यूराम शहर
की फ़सील पर सैर कर रहा था तो एक औरत
ने उससे इलतमास की, "ऐ मेरे आक़ा और
बादशाह, मेरी मदद कीजिए।" 27बादशाह ने
जवाब दिया, "अगर रब आपकी मदद नहीं करता
तो मैं किस तरह आपकी मदद करूँ? न मैं गाहने
की जगह जाकर आपको अनाज दे सकता हूँ, न
अंगूर का रस निकालने की जगह जाकर आपको
रस पहुँचा सकता हूँ। 28फिर भी मुझे बताएँ,
मसला क्या है?" औरत बोली, "इस औरत ने
मुझसे कहा था, 'आएँ, आज आप अपने बेटे को
क़ुरबान करें ताकि हम उसे खा लें, तो फिर कल
हम मेरे बेटे को खा लेंगे।' 29चुनाँचे हमने मेरे बेटे
को पकाकर खा लिया। अगले दिन मैंने उससे
कहा, 'अब अपने बेटे को दे दें ताकि उसे भी खा
लें।' लेकिन उसने उसे छुपाए रखा।"

30यह सुनकर बादशाह ने रंजिश के मारे अपने
कपड़े फाड़ डाले। चूँकि वह अभी तक फ़सील पर
खड़ा था इसलिए सब लोगों को नज़र आया कि
कपड़ों के नीचे वह टाट पहने हुए था। 31उसने
पुकारा, "अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं
इलीशा बिन साफ़त का आज ही सर क़लम न
करूँ!"

32उसने एक आदमी को इलीशा के पास भेजा
और ख़ुद भी उसके पीछे चल पड़ा। इलीशा उस
वक़्त घर में था, और शहर के बुज़ुर्ग उसके पास
बैठे थे। बादशाह का क़ासिद अभी रास्ते में था कि
इलीशा बुज़ुर्गों से कहने लगा, "अब ध्यान करें,
इस क़ातिल बादशाह ने किसी को मेरा सर क़लम
करने के लिए भेज दिया है। उसे अंदर आने न दें
बल्कि दरवाज़े पर कुंडी लगाएँ। उसके पीछे पीछे
उसके मालिक के क़दमों की आहट भी सुनाई दे
रही है।"

33इलीशा अभी बात कर ही रहा था कि क़ासिद
पहुँच गया और उसके पीछे बादशाह भी। बादशाह
बोला, "रब ही ने हमें इस मुसीबत में फँसा दिया
है। मैं मज़ीद उस की मदद के इंतज़ार में क्यों
रहूँ?"

7 तब इलीशा बोला, "रब का फ़रमान सुनें!
रब फ़रमाता है कि कल इसी वक़्त शहर के
दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और
11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए
बिकेगा।" 2जिस अफ़सर के बाज़ू का सहारा
बादशाह लेता था वह मर्दे-ख़ुदा की बात सुनकर
बोल उठा, "यह नामुमकिन है, ख़ाह रब आसमान
के दरीचे क्यों न खोल दे।" इलीशा ने जवाब
दिया, "आप अपनी आँखों से इसका मुशाहदा
करेंगे, लेकिन ख़ुद उसमें से कुछ न खाएँगे।"

शाम के फ़ौजी फ़रार हो जाते हैं

3शहर से बाहर दरवाज़े के क़रीब कोढ़ के चार
मरीज़ बैठे थे। अब यह आदमी एक दूसरे से कहने
लगे, "हम यहाँ बैठकर मौत का इंतज़ार क्यों
करें? 4शहर में काल है। अगर उसमें जाएँ तो भूके
मर जाएंगे, लेकिन यहाँ रहने से भी कोई फ़रक़
नहीं पड़ता। तो क्यों न हम शाम की लशकरगाह में
जाकर अपने आपको उनके हवाले करें। अगर वह
हमें ज़िंदा रहने दें तो अच्छा रहेगा, और अगर वह
हमें क़त्ल भी कर दें तो कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा।
यहाँ रहकर भी हमें मरना ही है।"

5शाम के धुँधलके में वह रवाना हुए। लेकिन
जब लशकरगाह के किनारे तक पहुँचे तो एक
भी आदमी नज़र न आया। 6क्योंकि रब ने शाम
के फ़ौजियों को रथों, घोड़ों और एक बड़ी फ़ौज
का शोर सुना दिया था। वह एक दूसरे से कहने
लगे, "इसराईल के बादशाह ने हित्ती और मिसरी
बादशाहों को उजरत पर बुलाया ताकि वह हम पर

हमला करें!” 7डर के मारे वह शाम के धुँधलके में
फ़रार हो गए थे। उनके ख़ैमे, घोड़े, गधे बल्कि पूरी
लशकरगाह पीछे रह गई थी जबकि वह अपनी
जान बचाने के लिए भाग गए थे।

8जब कोढ़ी लशकरगाह में दाख़िल हुए तो
उन्होंने एक ख़ैमे में जाकर जी भरकर खाना खाया
और मै पी। फिर उन्होंने सोना, चाँदी और कपड़े
उठाकर कहीं छुपा दिए। वह वापस आकर किसी
और ख़ैमे में गए और उसका सामान जमा करके
उसे भी छुपा दिया। 9लेकिन फिर वह आपस में
कहने लगे, “जो कुछ हम कर रहे हैं ठीक नहीं।
आज ख़ुशी का दिन है, और हम यह ख़ुशख़बरी
दूसरों तक नहीं पहुँचा रहे। अगर हम सुबह तक
इंतज़ार करें तो क़ुसूरवार ठहरेंगे। आएँ, हम फ़ौरन
वापस जाकर बादशाह के घराने को इत्तला दें।”

10चुनाँचे वह शहर के दरवाज़े के पास गए और
पहरेदारों को आवाज़ देकर उन्हें सब कुछ सुनाया,
“हम शाम की लशकरगाह में गए तो वहाँ न कोई
दिखाई दिया, न किसी की आवाज़ सुनाई दी।
घोड़े और गधे बँधे हुए थे और ख़ैमे तरतीब से
खड़े थे, लेकिन आदमी एक भी मौजूद नहीं था!”

11दरवाज़े के पहरेदारों ने आवाज़ देकर दूसरों
को ख़बर पहुँचाई तो शहर के अंदर बादशाह के
घराने को इत्तला दी गई। 12गो रात का वक़्त
था तो भी बादशाह ने उठकर अपने अफ़सरों को
बुलाया और कहा, “मैं आपको बताता हूँ कि शाम
के फ़ौजी क्या कर रहे हैं। वह तो ख़ूब जानते हैं कि
हम भूके मर रहे हैं। अब वह अपनी लशकरगाह
को छोड़कर खुले मैदान में छुप गए हैं, क्योंकि वह
समझते हैं कि इसराईली ख़ाली लशकरगाह को
देखकर शहर से ज़रूर निकलेंगे और फिर हम उन्हें
ज़िंदा पकड़कर शहर में दाख़िल हो जाएंगे।”

13लेकिन एक अफ़सर ने मशवरा दिया,
“बेहतर है कि हम चंद एक आदमियों को पाँच
बचे हुए घोड़ों के साथ लशकरगाह में भेजें। अगर
वह पकड़े जाएँ तो कोई बात नहीं। क्योंकि अगर
वह यहाँ रहें तो फिर भी उन्हें हमारे साथ मरना ही
है।”

14चुनाँचे दो रथों को घोड़ों समेत तैयार किया
गया, और बादशाह ने उन्हें शाम की लशकरगाह में
भेज दिया। रथबानों को उसने हुक्म दिया, “जाएँ
और पता करें कि क्या हुआ है।” 15वह रवाना
हुए और शाम के फ़ौजियों के पीछे पीछे चलने
लगे। रास्ते में हर तरफ़ कपड़े और सामान बिखरा
पड़ा था, क्योंकि फ़ौजियों ने भागते भागते सब
कुछ फेंककर रास्ते में छोड़ दिया था। इसराईली
रथसवार दरियाए-यरदन तक पहुँचे और फिर
बादशाह के पास वापस आकर सब कुछ कह
सुनाया।

16तब सामरिया के बाशिंदे शहर से निकल
आए और शाम की लशकरगाह में जाकर सब
कुछ लूट लिया। यों वह कुछ पूरा हुआ जो रब
ने फ़रमाया था कि साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन
मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के
के लिए बिकेगा।

17जिस अफ़सर के बाज़ू का सहारा बादशाह
लेता था उसे उसने दरवाज़े की निगरानी करने
के लिए भेज दिया था। लेकिन जब लोग बाहर
निकले तो अफ़सर उनकी ज़द में आकर उनके
पैरों तले कुचला गया। यों वैसा ही हुआ जैसा मर्दे-
ख़ुदा ने उस वक़्त कहा था जब बादशाह उसके
घर आया था। 18क्योंकि इलीशा ने बादशाह को
बताया था, “कल इसी वक़्त शहर के दरवाज़े
पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11
किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए
बिकेगा।” 19अफ़सर ने एतराज़ किया था, “यह
नामुमकिन है, ख़ाह रब आसमान के दरीचे क्यों
न खोल दे।” और मर्दे-ख़ुदा ने जवाब दिया था,
“आप अपनी आँखों से इसका मुशाहदा करेंगे,
लेकिन ख़ुद उसमें से कुछ नहीं खाएँगे।”

20अब यह पेशगोई पूरी हुई, क्योंकि बेकाबू
लोगों ने उसे शहर के दरवाज़े पर पाँवों तले कुचल
दिया, और वह मर गया।

यूराम बादशाह शूनीमी औरत की ज़मीन वापस कर देता है

8 एक दिन इलीशा ने उस औरत को जिसका बेटा उसने ज़िंदा किया था मशवरा दिया, "अपने ख़ानदान को लेकर आरिज़ी तौर पर बैरूने-मुल्क चली जाएँ, क्योंकि रब ने हुक्म दिया है कि मुल्क में सात साल तक काल होगा।"
2शूनीम की औरत ने मर्दे-ख़ुदा की बात मान ली। अपने ख़ानदान को लेकर वह चली गई और सात साल फ़िलिस्ती मुल्क में रही। 3सात साल गुज़र गए तो वह उस मुल्क से वापस आई। लेकिन किसी और ने उसके घर और ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर रखा था, इसलिए वह मदद के लिए बादशाह के पास गई।

4ऐन उस वक़्त जब वह दरबार में पहुँची तो बादशाह मर्दे-ख़ुदा इलीशा के नौकर जैहाज़ी से गुफ़्तगू कर रहा था। बादशाह ने उससे दरख़ास्त की थी, "मुझे वह तमाम बड़े काम सुना दो जो इलीशा ने किए हैं।" 5और अब जब जैहाज़ी सुना रहा था कि इलीशा ने मुरदा लड़के को किस तरह ज़िंदा कर दिया तो उस की माँ अंदर आकर बादशाह से इलतमास करने लगी, "घर और ज़मीन वापस मिलने में मेरी मदद कीजिए।" उसे देखकर जैहाज़ी ने बादशाह से कहा, "मेरे आक़ा और बादशाह, यह वही औरत है और यह उसका वही बेटा है जिसे इलीशा ने ज़िंदा कर दिया था।" 6बादशाह ने औरत से सवाल किया, "क्या यह सहीह है?" औरत ने तसदीक़ में उसे दुबारा सब कुछ सुनाया। तब उसने औरत का मामला किसी दरबारी अफ़सर के सुपुर्द करके हुक्म दिया, "ध्यान दें कि इसे पूरी मिलकियत वापस मिल जाए! और जितने पैसे क़ब्ज़ा करनेवाला औरत की ग़ैरमौजूदगी में ज़मीन की फ़सलों से कमा सका वह भी औरत को दे दिए जाएँ।"

बिन-हदद की मौत की पेशगोई

7एक दिन इलीशा दमिश्क़ आया। उस वक़्त शाम का बादशाह बिन-हदद बीमार था। जब उसे इत्तला मिली कि मर्दे-ख़ुदा आया है 8तो उसने अपने अफ़सर हज़ाएल को हुक्म दिया, "मर्दे-ख़ुदा के लिए तोहफ़ा लेकर उसे मिलने जाएँ। वह रब से दरियाफ़्त करे कि क्या मैं बीमारी से शफ़ा पाऊँगा या नहीं?"

9हज़ाएल 40 ऊँटों पर दमिश्क़ की बेहतरीन पैदावार लादकर इलीशा से मिलने गया। उसके पास पहुँचकर वह उसके सामने खड़ा हुआ और कहा, "आपके बेटे शाम के बादशाह बिन-हदद ने मुझे आपके पास भेजा है। वह यह जानना चाहता है कि क्या मैं अपनी बीमारी से शफ़ा पाऊँगा या नहीं?"

10इलीशा ने जवाब दिया, "जाएँ और उसे इत्तला दें, 'आप ज़रूर शफ़ा पाएँगे।' लेकिन रब ने मुझ पर ज़ाहिर किया है कि वह हक़ीक़त में मर जाएगा।" 11इलीशा ख़ामोश हो गया और टिकटिकी बाँधकर बड़ी देर तक उसे घूरता रहा, फिर रोने लगा। 12हज़ाएल ने पूछा, "मेरे आक़ा, आप क्यों रो रहे हैं?" इलीशा ने जवाब दिया, "मुझे मालूम है कि आप इसराईलियों को कितना नुक़सान पहुँचाएँगे। आप उनकी क़िलाबंद आबादियों को आग लगाकर उनके जवानों को तलवार से क़त्ल कर देंगे, उनके छोटे बच्चों को ज़मीन पर पटख़ देंगे और उनकी हामिला औरतों के पेट चीर डालेंगे।" 13हज़ाएल बोला, "मुझ जैसे कुत्ते की क्या हैसियत है कि इतना बड़ा काम करूँ?" इलीशा ने कहा, "रब ने मुझे दिखा दिया है कि आप शाम के बादशाह बन जाएंगे।"

14इसके बाद हज़ाएल चला गया और अपने मालिक के पास वापस आया। बादशाह ने पूछा, "इलीशा ने आपको क्या बताया?" हज़ाएल ने जवाब दिया, "उसने मुझे यक़ीन दिलाया कि आप शफ़ा पाएँगे।" 15लेकिन अगले दिन हज़ाएल ने कम्बल लेकर पानी में भिगो दिया और उसे बादशाह के मुँह पर रख दिया। बादशाह का साँस रुक गया और वह मर गया। फिर हज़ाएल तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूराम

16यहूराम बिन यहूसफ़त इसराईल के बादशाह
यूराम की हुकूमत के पाँचवें साल में यहूदाह का
बादशाह बना। शुरू में वह अपने बाप के साथ
हुकूमत करता था। 17यहूराम 32 साल की उम्र
में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 8
साल तक हुकूमत करता रहा। 18उस की शादी
इसराईल के बादशाह अख़ियब की बेटी से हुई
थी, और वह इसराईल के बादशाहों और ख़ासकर
अख़ियब के ख़ानदान के बुरे नमूने पर चलता रहा।
उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। 19तो भी
वह अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर यहूदाह को
तबाह नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसने दाऊद
से वादा किया था कि तेरा और तेरी औलाद का
चराग़ हमेशा तक जलता रहेगा।

20यहूराम की हुकूमत के दौरान अदोमियों ने
बग़ावत की और यहूदाह की हुकूमत को रद्द करके
अपना बादशाह मुक़र्रर किया। 21तब यहूराम
अपने तमाम रथों को लेकर सईर के क़रीब आया।
जब जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और
उसके रथों पर मुक़र्रर अफ़सरों को घेर लिया।
रात को बादशाह घेरनेवालों की सफ़ों को तोड़ने
में कामयाब हो गया, लेकिन उसके फ़ौजी उसे
छोड़कर अपने अपने घर भाग गए। 22इस वजह
से मुल्के-अदोम आज तक दुबारा यहूदाह की
हुकूमत के तहत नहीं आया। उसी वक़्त लिबना
शहर भी सरकश होकर ख़ुदमुख़तार हो गया।

23बाक़ी जो कुछ यहूराम की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहूदा
की तारीख़' की किताब में बयान किया गया है।
24जब यहूराम मरकर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद
का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया
गया। फिर उसका बेटा अख़ज़ियाह तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह

25अख़ज़ियाह बिन यहूराम इसराईल के
बादशाह यूराम बिन अख़ियब की हुकूमत के 12वें
साल में यहूदाह का बादशाह बना। 26वह 22
साल की उम्र में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम
में रहकर एक साल बादशाह रहा। उस की माँ
अतलियाह इसराईल के बादशाह उमरी की पोती
थी। 27अख़ज़ियाह भी अख़ियब के ख़ानदान के
बुरे नमूने पर चल पड़ा। अख़ियब के घराने की
तरह उसका चाल-चलन रब को नापसंद था।
वजह यह थी कि उसका रिश्ता अख़ियब के
ख़ानदान के साथ बँध गया था।

28एक दिन अख़ज़ियाह बादशाह यूराम बिन
अख़ियब के साथ मिलकर रामात-जिलियाद गया
ताकि शाम के बादशाह हज़ाएल से लड़े। जब
जंग छिड़ गई तो यूराम शाम के फ़ौजियों के
हाथों ज़ख़मी हुआ 29और मैदाने-जंग को छोड़कर
यज़्रएल वापस आया ताकि ज़ख़म भर जाएँ। जब
वह वहाँ ठहरा हुआ था तो यहूदाह का बादशाह
अख़ज़ियाह बिन यहूराम उसका हाल पूछने के
लिए यज़्रएल आया।

इलीशा याहू को मसह करता है

9 एक दिन इलीशा नबी ने नबियों के गुरोह
में से एक को बुलाकर कहा, "सफ़र के
लिए कमरबस्ता होकर रामात-जिलियाद के लिए
रवाना हो जाएँ। ज़ैतून के तेल की यह कुप्पी अपने
साथ ले जाएँ। 2वहाँ पहुँचकर याहू बिन यहूसफ़त
बिन निमसी को तलाश करें। जब उससे मुलाक़ात
हो तो उसे उसके साथियों से अलग करके किसी
अंदरूनी कमरे में ले जाएँ। 3वहाँ कुप्पी लेकर याहू
के सर पर तेल उंडेल दें और कहें, 'रब फ़रमाता
है कि मैं तुझे तेल से मसह करके इसराईल का
बादशाह बना देता हूँ।' इसके बाद देर न करें बल्कि
फ़ौरन दरवाज़े को खोलकर भाग जाएँ!"

4चुनाँचे जवान नबी रामात-जिलियाद के लिए
रवाना हुआ। 5जब वहाँ पहुँचा तो फ़ौजी अफ़सर
मिलकर बैठे हुए थे। वह उनके क़रीब गया और

बोला, “मेरे पास कमाँडर के लिए पैग़ाम है।”
याहू ने सवाल किया, “हममें से किसके लिए?”
नबी ने जवाब दिया, “आप ही के लिए।”

6याहू खड़ा हुआ और उसके साथ घर में गया।
वहाँ नबी ने याहू के सर पर तेल उंडेलकर कहा,
“रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैंने तुझे
मसह करके अपनी क़ौम का बादशाह बना दिया
है। 7तुझे अपने मालिक अख़ियब के पूरे ख़ानदान
को हलाक करना है। यों मैं उन नबियों का इंतक़ाम
लूँगा जो मेरी ख़िदमत करते हुए शहीद हो गए हैं।
हाँ, मैं रब के उन तमाम ख़ादिमों का बदला लूँगा
जिन्हें ईज़बिल ने क़त्ल किया है। 8अख़ियब का
पूरा घराना तबाह हो जाएगा। मैं उसके ख़ानदान
के हर मर्द को हलाक कर दूँगा, ख़ाह वह बालिग़
हो या बच्चा। 9मेरा अख़ियब के ख़ानदान के साथ
वही सुलूक होगा जो मैंने यरुबियाम बिन नबात
और बाशा बिन अख़ियाह के ख़ानदानों के साथ
किया। 10जहाँ तक ईज़बिल का ताल्लुक़ है उसे
दफ़नाया नहीं जाएगा बल्कि कुत्ते उसे यज्रएल
की ज़मीन पर खा जाएंगे’।” यह कहकर नबी
दरवाज़ा खोलकर भाग गया।

11जब याहू निकलकर अपने साथी अफ़-
सरों के पास वापस आया तो उन्होंने पूछा, “क्या
सब ख़ैरियत है? यह दीवाना आपसे क्या चाहता
था?” याहू बोला, “ख़ैर, आप तो इस क़िस्म
के लोगों को जानते हैं कि किस तरह की गप्पें
हाँकते हैं।” 12लेकिन उसके साथी इस जवाब
से मुतमइन न हुए, “झूट! सहीह बात बताएँ।”
फिर याहू ने उन्हें खुलकर बात बताई, “आदमी ने
कहा, ‘रब फ़रमाता है कि मैंने तुझे मसह करके
इसराईल का बादशाह बना दिया है’।”

13यह सुनकर अफ़सरों ने जल्दी जल्दी अपनी
चादरों को उतारकर उसके सामने सीढ़ियों पर
बिछा दिया। फिर वह नरसिंगा बजा बजाकर नारा
लगाने लगे, “याहू बादशाह ज़िंदाबाद!”

यूराम और अख़ज़ियाह का अंजाम

14याहू बिन यहूसफ़त बिन निमसी फ़ौरन
यूराम बादशाह को तख़्त से उतारने के मनसूबे
बाँधने लगा। यूराम उस वक़्त पूरी इसराईली फ़ौज
समेत रामात-जिलियाद के क़रीब दमिश्क़ के
बादशाह हज़ाएल से लड़ रहा था। लेकिन शहर का
दिफ़ा करते करते 15बादशाह शाम के फ़ौजियों
के हाथों ज़ख़मी हो गया था और मैदाने-जंग को
छोड़कर यज्रएल वापस आया था ताकि ज़ख़म
भर जाएँ। अब याहू ने अपने साथी अफ़सरों से
कहा, “अगर आप वाक़ई मेरे साथ हैं तो किसी
को भी शहर से निकलने न दें, वरना ख़तरा है कि
कोई यज्रएल जाकर बादशाह को इत्तला दे दे।”
16फिर वह रथ पर सवार होकर यज्रएल चला गया
जहाँ यूराम आराम कर रहा था। उस वक़्त यहूदाह
का बादशाह अख़ज़ियाह भी यूराम से मिलने के
लिए यज्रएल आया हुआ था।

17जब यज्रएल के बुर्ज पर खड़े पहरेदार ने
याहू के ग़ोल को शहर की तरफ़ आते हुए देखा
तो उसने बादशाह को इत्तला दी। यूराम ने हुक्म
दिया, “एक घुड़सवार को उनकी तरफ़ भेजकर
उनसे मालूम करें कि सब ख़ैरियत है या नहीं।”
18घुड़सवार शहर से निकला और याहू के पास
आकर कहा, “बादशाह पूछते हैं कि क्या सब
ख़ैरियत है?” याहू ने जवाब दिया, “इससे
आपका क्या वास्ता? आएँ, मेरे पीछे हो लें।”
बुर्ज पर के पहरेदार ने बादशाह को इत्तला दी,
“क़ासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन वह वापस
नहीं आ रहा।”

19तब बादशाह ने एक और घुड़सवार को
भेज दिया। याहू के पास पहुँचकर उसने भी
कहा, “बादशाह पूछते हैं कि क्या सब ख़ैरियत
है?” याहू ने जवाब दिया, “इससे आपका क्या
वास्ता? मेरे पीछे हो लें।” 20बुर्ज पर के पहरेदार
ने यह देखकर बादशाह को इत्तला दी, “हमारा
क़ासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन यह भी
वापस नहीं आ रहा। ऐसा लगता है कि उनका

राहनुमा याहू बिन निमसी है, क्योंकि वह अपने रथ को दीवाने की तरह चला रहा है।”

21यूराम ने हुक्म दिया, “मेरे रथ को तैयार करो!” फिर वह और यहूदाह का बादशाह अपने अपने रथ में सवार होकर याहू से मिलने के लिए शहर से निकले। उनकी मुलाक़ात उस बाग़ के पास हुई जो नबोत यज्रएली से छीन लिया गया
था। 22याहू को पहचानकर यूराम ने पूछा, “याहू, क्या सब ख़ैरियत है?” याहू बोला, “ख़ैरियत कैसे हो सकती है जब तेरी माँ ईज़बिल की बुतपरस्ती और जादूगरी हर तरफ़ फैली हुई है?”
23यूराम बादशाह चिल्ला उठा, “ऐ अख़ज़ियाह, ग़द्दारी!” और मुड़कर भागने लगा।

24याहू ने फ़ौरन अपनी कमान खींचकर तीर चलाया जो सीधा यूराम के कंधों के दरमियान यों लगा कि दिल में से गुज़र गया। बादशाह एकदम
अपने रथ में गिर पड़ा। 25याहू ने अपने साथवाले अफ़सर बिदक़र से कहा, “इसकी लाश उठाकर उस बाग़ में फेंक दें जो नबोत यज्रएली से छीन लिया गया था। क्योंकि वह दिन याद करें जब हम दोनों अपने रथों को इसके बाप अख़ियब के पीछे चला रहे थे और रब ने अख़ियब के बारे में
एलान किया, 26‘यक़ीन जान कि कल नबोत और उसके बेटों का क़त्ल मुझसे छुपा न रहा। इसका मुआवज़ा मैं तुझे नबोत की इसी ज़मीन पर दूँगा।’ चुनाँचे अब यूराम को उठाकर उस ज़मीन पर फेंक दें ताकि रब की बात पूरी हो जाए।”

27जब यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह ने यह देखा तो वह बैत-गान का रास्ता लेकर फ़रार हो गया। याहू उसका ताक़्क़ुब करते हुए चिल्लाया, “उसे भी मार दो!” इबलियाम के क़रीब जहाँ रास्ता जूर की तरफ़ चढ़ता है अख़ज़ियाह अपने रथ में चलते चलते ज़ख़मी हुआ। वह बच तो निकला लेकिन मजिद्दो पहुँचकर मर गया।
28उसके मुलाज़िम लाश को रथ पर रखकर यरूशलम लाए। वहाँ उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया।
29अख़ज़ियाह यूराम बिन अख़ियब की हुकूमत के 11वें साल में यहूदाह का बादशाह बन गया था।

ईज़बिल का अंजाम

30इसके बाद याहू यज्रएल चला गया। जब ईज़बिल को इत्तला मिली तो उसने अपनी आँखों में सुरमा लगाकर अपने बालों को ख़ूबसूरती से सँवारा और फिर खिड़की से बाहर झाँकने
लगी। 31जब याहू महल के गेट में दाख़िल हुआ तो ईज़बिल चिल्लाई, “ऐ ज़िमरी जिसने अपने मालिक को क़त्ल कर दिया है, क्या सब ख़ैरियत
है?” 32याहू ने ऊपर देखकर आवाज़ दी, “कौन मेरे साथ है, कौन?” दो या तीन ख़्वाजासराओं ने खिड़की से बाहर देखकर उस पर नज़र डाली
33तो याहू ने उन्हें हुक्म दिया, “उसे नीचे फेंक दो!”

तब उन्होंने मलिका को नीचे फेंक दिया। वह इतने ज़ोर से ज़मीन पर गिरी कि ख़ून के छींटे दीवार और घोड़ों पर पड़ गए। याहू और उसके लोगों ने अपने रथों को उसके ऊपर से गुज़रने
दिया। 34फिर याहू महल में दाख़िल हुआ और खाया और पिया। इसके बाद उसने हुक्म दिया, “कोई जाए और उस लानती औरत को दफ़न करे, क्योंकि वह बादशाह की बेटी थी।”

35लेकिन जब मुलाज़िम उसे दफ़न करने के लिए बाहर निकले तो देखा कि सिर्फ़ उस की
खोपड़ी, हाथ और पाँव बाक़ी रह गए हैं। 36याहू के पास वापस जाकर उन्होंने उसे आगाह किया। तब उसने कहा, “अब सब कुछ पूरा हुआ है जो रब ने अपने ख़ादिम इलियास तिशबी की मारिफ़त फ़रमाया था, ‘यज्रएल की ज़मीन पर
कुत्ते ईज़बिल की लाश खा जाएंगे। 37उस की लाश यज्रएल की ज़मीन पर गोबर की तरह पड़ी रहेगी ताकि कोई यक़ीन से न कह सके कि वह कहाँ है’।”

याहू अख़ियब की औलाद को हलाक करता है

10 सामरिया में अख़ियब के 70 बेटे थे।
अब याहू ने ख़त लिखकर सामरिया
भेज दिए। यज़्रएल के अफ़सरों, शहर के बुज़ुर्गों
और अख़ियब के बेटों के सरपरस्तों को यह ख़त
मिल गए, और उनमें ज़ैल की ख़बर लिखी थी,
2“आपके मालिक के बेटे आपके पास हैं।
आप क़िलाबंद शहर में रहते हैं, और आपके
पास हथियार, रथ और घोड़े भी हैं। इसलिए
मैं आपको चैलेंज देता हूँ कि यह ख़त पढ़ते ही
3अपने मालिक के सबसे अच्छे और लायक़ बेटे
को चुनकर उसे उसके बाप के तख़्त पर बिठा दें।
फिर अपने मालिक के ख़ानदान के लिए लड़ें!”
4लेकिन सामरिया के बुज़ुर्ग बेहद सहम गए
और आपस में कहने लगे, “अगर दो बादशाह
उसका मुक़ाबला न कर सके तो हम क्या कर
सकते हैं?” 5इसलिए महल के इंचार्ज, सामरिया
पर मुक़र्रर अफ़सर, शहर के बुज़ुर्गों और अख़ियब
के बेटों के सरपरस्तों ने याहू को पैग़ाम भेजा,
“हम आपके ख़ादिम हैं और जो कुछ आप
कहेंगे हम करने के लिए तैयार हैं। हम किसी
को बादशाह मुक़र्रर नहीं करेंगे। जो कुछ आप
मुनासिब समझते हैं वह करें।”
6यह पढ़कर याहू ने एक और ख़त लिख-
कर सामरिया भेजा। उसमें लिखा था, “अगर
आप वाक़ई मेरे साथ हैं और मेरे ताबे रहना चाहते
हैं तो अपने मालिक के बेटों के सरों को काटकर
कल इस वक़्त तक यज़्रएल में मेरे पास ले आएँ।”
क्योंकि अख़ियब के 70 बेटे सामरिया के बड़ों के
पास रहकर परवरिश पा रहे थे। 7जब ख़त उनके
पास पहुँच गया तो इन आदमियों ने 70 के 70
शहज़ादों को ज़बह कर दिया और उनके सरों को
टोकरों में रखकर यज़्रएल में याहू के पास भेज
दिया।
8एक क़ासिद ने याहू के पास आकर इत्तला
दी, “वह बादशाह के बेटों के सर लेकर आए
हैं।” तब याहू ने हुक्म दिया, “शहर के दरवाज़े
पर उनके दो ढेर लगा दो और उन्हें सुबह तक
वहीं रहने दो।” 9अगले दिन याहू सुबह के वक़्त
निकला और दरवाज़े के पास खड़े होकर लोगों
से मुख़ातिब हुआ, “यूराम की मौत के नाते से
आप बेइलज़ाम हैं। मैं ही ने अपने मालिक के
ख़िलाफ़ मनसूबे बाँधकर उसे मार डाला। लेकिन
किसने इन तमाम बेटों का सर क़लम कर दिया?
10चुनाँचे आज जान लें कि जो कुछ भी रब ने
अख़ियब और उसके ख़ानदान के बारे में फ़रमाया
है वह पूरा हो जाएगा। जिसका एलान रब ने अपने
ख़ादिम इलियास की मारिफ़त किया है वह उसने
कर लिया है।” 11इसके बाद याहू ने यज़्रएल में
रहनेवाले अख़ियब के बाक़ी तमाम रिश्तेदारों, बड़े
अफ़सरों, क़रीबी दोस्तों और पुजारियों को हलाक
कर दिया। एक भी न बचा।
12फिर वह सामरिया के लिए रवाना हुआ।
रास्ते में जब बैत-इक़्द-रोईम के क़रीब पहुँच
गया 13तो उस की मुलाक़ात यहूदाह के बादशाह
अख़ज़ियाह के चंद एक रिश्तेदारों से हुई। याहू
ने पूछा, “आप कौन हैं?” उन्होंने जवाब दिया,
“हम अख़ज़ियाह के रिश्तेदार हैं और सामरिया
का सफ़र कर रहे हैं। वहाँ हम बादशाह और
मलिका के बेटों से मिलना चाहते हैं।” 14तब याहू
ने हुक्म दिया, “उन्हें ज़िंदा पकड़ो!” उन्होंने उन्हें
ज़िंदा पकड़कर बैत-इक़्द के हौज़ के पास मार
डाला। 42 आदमियों में से एक भी न बचा।
15उस जगह को छोड़कर याहू आगे निकला।
चलते चलते उस की मुलाक़ात यूनदब बिन रैकाब
से हुई जो उससे मिलने आ रहा था। याहू ने
सलाम करके कहा, “क्या आपका दिल मेरे बारे
में मुख़लिस है जैसा कि मेरा दिल आपके बारे
में है?” यूनदब ने जवाब दिया, “जी हाँ।” याहू
बोला, “अगर ऐसा है, तो मेरे साथ हाथ मिलाएँ।”
यूनदब ने उसके साथ हाथ मिलाया तो याहू ने
उसे अपने रथ पर सवार होने दिया। 16फिर याहू
ने कहा, “आएँ मेरे साथ और मेरी रब के लिए

जिद्दो-जहद देखें।" चुनाँचे यूनदब याहू के साथ सामरिया चला गया।

17सामरिया पहुँचकर याहू ने अख़ियब के ख़ानदान के जितने अफ़राद अब तक बच गए थे हलाक कर दिए। जिस तरह रब ने इलियास को फ़रमाया था उसी तरह अख़ियब का पूरा घराना मिट गया।

याहू बाल के तमाम पुजारियों को क़त्ल करता है

18इसके बाद याहू ने तमाम लोगों को जमा
करके एलान किया, "अख़ियब ने बाल देवता
की परस्तिश थोड़ी की है। मैं कहीं ज़्यादा उस
की पूजा करूँगा! 19अब जाकर बाल के तमाम
नबियों, ख़िदमतगुज़ारों और पुजारियों को बुला लाएँ। ख़याल करें कि एक भी दूर न रहे, क्योंकि मैं बाल को बड़ी क़ुरबानी पेश करूँगा। जो भी आने से इनकार करे उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।"

इस तरह याहू ने बाल के ख़िदमतगुज़ारों के लिए जाल बिछा दिया ताकि वह उसमें फँसकर
हलाक हो जाएँ। 20-21उसने पूरे इसराईल में
क़ासिद भेजकर एलान किया, "बाल देवता के लिए मुक़द्दस ईद मनाएँ!" चुनाँचे बाल के तमाम पुजारी आए, और एक भी इजतिमा से दूर न रहा। इतने जमा हुए कि बाल का मंदिर एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया।

22याहू ने ईद के कपड़ों के इंचार्ज को हुक्म
दिया, "बाल के तमाम पुजारियों को ईद के लिबास दे देना।" चुनाँचे सबको लिबास दिए
गए। 23फिर याहू और यूनदब बिन रैकाब बाल
के मंदिर में दाख़िल हुए, और याहू ने बाल के ख़िदमतगुज़ारों से कहा, "ध्यान दें कि यहाँ आपके साथ रब का कोई ख़ादिम मौजूद न हो। सिर्फ़ बाल के पुजारी होने चाहिएँ।"

24दोनों आदमी सामने गए ताकि ज़बह की और
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करें। इतने में याहू के 80 आदमी बाहर मंदिर के इर्दगिर्द खड़े हो गए। याहू ने उन्हें हुक्म देकर कहा था, "ख़बरदार! जो पूजा करनेवालों में से किसी को बचने दे उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।"

25ज्योंही याहू भस्म होनेवाली क़ुरबानी को
चढ़ाने से फ़ारिग़ हुआ तो उसने अपने मुहाफ़िज़ों और अफ़सरों को हुक्म दिया, "अंदर जाकर सबको मार देना। एक भी बचने न पाए।" वह दाख़िल हुए और अपनी तलवारों को खींचकर सबको मार डाला। लाशों को उन्होंने बाहर फेंक दिया। फिर वह मंदिर के सबसे अंदरवाले कमरे में
गए 26जहाँ बुत था। उसे उन्होंने निकालकर जला
दिया 27और बाल का सतून भी टुकड़े टुकड़े कर
दिया। बाल का पूरा मंदिर ढा दिया गया, और वह जगह बैतुल-ख़ला बन गई। आज तक वह इसके लिए इस्तेमाल होता है।

याहू की हुकूमत

28इस तरह याहू ने इसराईल में बाल देवता की
पूजा ख़त्म कर दी। 29तो भी वह यरुबियाम बिन
नबात के उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुबियाम ने इसराईल को उकसाया था। बैतेल और दान में क़ायम सोने के बछड़ों की पूजा ख़त्म न हुई।

30एक दिन रब ने याहू से कहा, "जो कुछ मुझे
पसंद है उसे तूने अच्छी तरह सरंजाम दिया है, क्योंकि तूने अख़ियब के घराने के साथ सब कुछ किया है जो मेरी मरज़ी थी। इस वजह से तेरी औलाद चौथी पुश्त तक इसराईल पर हुकूमत
करती रहेगी।" 31लेकिन याहू ने पूरे दिल से
रब इसराईल के ख़ुदा की शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारी। वह उन गुनाहों से बाज़ आने के लिए तैयार नहीं था जो करने पर यरुबियाम ने इसराईल को उकसाया था।

32याहू की हुकूमत के दौरान रब इसराईल
का इलाक़ा छोटा करने लगा। शाम के बादशाह हज़ाएल ने इसराईल के उस पूरे इलाक़े पर क़ब्ज़ा
कर लिया 33जो दरियाए-यरदन के मशरिक़
में था। जद, रूबिन और मनस्सी का इलाक़ा जिलियाद बसन से लेकर दरियाए-अरनोन पर

वाक़े अरोईर तक शाम के बादशाह के हाथ में आ गया।

34बाक़ी जो कुछ याहू की हुकूमत के दौरान हुआ, जो उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में बयान किया गया है। 35-36वह 28 साल सामरिया में बादशाह रहा। वहाँ वह दफ़न भी हुआ। जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा यहुआख़ज़ तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह में अतलियाह की ज़ालिमाना हुकूमत

11 जब अख़ज़ियाह की माँ अतलियाह को मालूम हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो वह अख़ज़ियाह की तमाम औलाद को क़त्ल करने लगी। 2लेकिन अख़ज़ियाह की सगी बहन यहूसबा ने अख़ज़ियाह के छोटे बेटे युआस को चुपके से उन शहज़ादों में से निकाल लिया जिन्हें क़त्ल करना था और उसे उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा दिया जिसमें बिस्तर वग़ैरा महफ़ूज़ रखे जाते थे। इस तरह वह बच गया। 3बाद में युआस को रब के घर में मुंतक़िल किया गया जहाँ वह उसके साथ उन छः सालों के दौरान छुपा रहा जब अतलियाह मलिका थी।

अतलियाह का अंजाम और युआस बादशाह बन जाता है

4अतलियाह की हुकूमत के सातवें साल में यहोयदा इमाम ने सौ सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सरों, कारी नामी दस्तों और शाही मुहाफ़िज़ों को रब के घर में बुला लिया। वहाँ उसने क़सम खिलाकर उनसे अहद बाँधा। फिर उसने बादशाह के बेटे युआस को पेश करके 5उन्हें हिदायत की, "अगले सबत के दिन आपमें से जितने ड्यूटी पर आएँगे वह तीन हिस्सों में तक़सीम हो जाएँ। एक हिस्सा शाही महल पर पहरा दे, 6दूसरा सूर नामी दरवाज़े पर और तीसरा शाही मुहाफ़िज़ों के पीछे के दरवाज़े पर। यों आप रब के घर की हिफ़ाज़त करेंगे। 7दूसरे दो गुरोह जो सबत के दिन ड्यूटी नहीं करते उन्हें रब के घर में आकर युआस बादशाह की पहरादारी करनी है। 8वह उसके इर्दगिर्द दायरा बनाकर अपने हथियारों को पकड़े रखें और जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें। जो भी इस दायरे में घुसने की कोशिश करे उसे मार डालना।"

9सौ सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सरों ने ऐसा ही किया। अगले सबत के दिन वह सब अपने फ़ौजियों समेत यहोयदा इमाम के पास आए। वह भी आए जो ड्यूटी पर थे और वह भी जिनकी अब छुट्टी थी। 10इमाम ने अफ़सरों को दाऊद बादशाह के वह नेज़े और ढालें दीं जो अब तक रब के घर में महफ़ूज़ रखी हुई थीं। 11फिर मुहाफ़िज़ हथियारों को हाथ में पकड़े बादशाह के गिर्द खड़े हो गए। क़ुरबानगाह और रब के घर के दरमियान उनका दायरा रब के घर की जुनूबी दीवार से लेकर उस की शिमाली दीवार तक फैला हुआ था। 12फिर यहोयदा बादशाह के बेटे युआस को बाहर लाया और उसके सर पर ताज रखकर उसे क़वानीन की किताब दे दी। यों युआस को बादशाह बना दिया गया। उन्होंने उसे मसह करके तालियाँ बजाईं और बुलंद आवाज़ से नारा लगाने लगे, "बादशाह ज़िंदाबाद!"

13जब मुहाफ़िज़ों और बाक़ी लोगों का शोर अतलियाह तक पहुँचा तो वह रब के घर के सहन में उनके पास आई। 14वहाँ पहुँचकर वह क्या देखती है कि नया बादशाह उस सतून के पास खड़ा है जहाँ बादशाह रिवाज के मुताबिक़ खड़ा होता है, और वह अफ़सरों और तुरम बजानेवालों से घिरा हुआ है। तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजाकर ख़ुशी मना रही है। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख़ उठी, "ग़द्दारी, ग़द्दारी!"

15यहोयदा इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर उन अफ़सरों को बुलाया जिनके सुपुर्द फ़ौज की गई थी और उन्हें हुक्म दिया, "उसे बाहर ले जाएँ, क्योंकि मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास

मारा जाए। और जो भी उसके पीछे आए उसे
तलवार से मार देना।”
16वह अतलियाह को पकड़कर उस रास्ते पर
ले गए जिस पर चलते हुए घोड़े महल के पास
पहुँचते हैं। वहाँ उसे मार दिया गया। 17फिर
यहोयदा ने बादशाह और क़ौम के साथ मिलकर
रब से अहद बाँधकर वादा किया कि हम रब की
क़ौम रहेंगे। इसके अलावा बादशाह ने यहोयदा
की मारिफ़त क़ौम से भी अहद बाँधा। 18इसके
बाद उम्मत के तमाम लोग बाल के मंदिर पर टूट
पड़े और उसे ढा दिया। उस की क़ुरबानगाहों और
बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्होंने बाल के पुजारी
मत्तान को क़ुरबानगाहों के सामने ही मार डाला।
रब के घर पर पहरेदार खड़े करने के बाद
19यहोयदा सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों,
कारी नामी दस्तों, महल के मुहाफ़िज़ों और बाक़ी
पूरी उम्मत के हमराह जुलूस निकालकर बादशाह
को रब के घर से महल में ले गया। वह मुहाफ़िज़ों
के दरवाज़े से होकर दाख़िल हुए। बादशाह शाही
तख़्त पर बैठ गया, 20और तमाम उम्मत ख़ुशी
मनाती रही। यों यरूशलम शहर को सुकून मिला,
क्योंकि अतलियाह को महल के पास तलवार से
मार दिया गया था।

यहूदाह का बादशाह युआस

21युआस सात साल का था जब तख़्त-
12 नशीन हुआ। 1वह इसराईल के
बादशाह याहू की हुकूमत के सातवें
साल में यहूदाह का बादशाह बना, और यरूशलम
में उस की हुकूमत का दौरानिया 40 साल था।
उस की माँ ज़िबियाह बैर-सबा की रहनेवाली थी।
2जब तक यहोयदा उस की राहनुमाई करता था
युआस वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था।
3तो भी ऊँची जगहों के मंदिर दूर न किए गए।
अवाम मामूल के मुताबिक़ वहाँ अपनी क़ुरबानियाँ
पेश करते और बख़ूर जलाते रहे।

युआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

4एक दिन युआस ने इमामों को हुक्म दिया,
“रब के लिए मख़सूस जितने भी पैसे रब के घर
में लाए जाते हैं उन सबको जमा करें, चाहे वह
मर्दुमशुमारी के टैक्स[a] या किसी मन्नत के ज़िम्न
में दिए गए हों, चाहे रज़ाकाराना तौर पर अदा
किए गए हों। 5यह तमाम पैसे इमामों के सुपुर्द
किए जाएँ। इनसे आपको जहाँ भी ज़रूरत है
रब के घर की दराड़ों की मरम्मत करवानी है।”
6लेकिन युआस की हुकूमत के 23वें साल में
उसने देखा कि अब तक रब के घर की दराड़ों
की मरम्मत नहीं हुई। 7तब उसने यहोयदा और
बाक़ी इमामों को बुलाकर पूछा, “आप रब के घर
की मरम्मत क्यों नहीं करा रहे? अब से आपको
इन पैसों से आपकी अपनी ज़रूरियात पूरी करने
की इजाज़त नहीं बल्कि तमाम पैसे रब के घर की
मरम्मत के लिए इस्तेमाल करने हैं।”
8इमाम मान गए कि अब से हम लोगों से हदिया
नहीं लेंगे और कि इसके बदले हमें रब के घर
की मरम्मत नहीं करवानी पड़ेगी। 9फिर यहोयदा
इमाम ने एक संदूक़ लेकर उसके ढकने में सूराख़
बना दिया। इस संदूक़ को उसने क़ुरबानगाह के
पास रख दिया, उस दरवाज़े के दहनी तरफ़
जिसमें से परस्तार रब के घर के सहन में दाख़िल
होते थे। जब लोग अपने हदियाजात रब के घर
में पेश करते तो दरवाज़े की पहरादारी करनेवाले
इमाम तमाम पैसों को संदूक़ में डाल देते। 10जब
कभी पता चलता कि संदूक़ भर गया है तो
बादशाह का मीरमुंशी और इमामे-आज़म आते
और तमाम पैसे गिनकर थैलियों में डाल देते थे।
11फिर यह गिने हुए पैसे उन ठेकेदारों को दिए
जाते जिनके सुपुर्द रब के घर की मरम्मत का काम
किया गया था। इन पैसों से वह मरम्मत करनेवाले
कारीगरों की उजरत अदा करते थे। इनमें बढ़ई,
इमारत पर काम करनेवाले, 12राज और पत्थर
तराशनेवाले शामिल थे। इसके अलावा उन्होंने यह

[a]देखिए ख़ुरूज 30:11-16

पैसे दराड़ों की मरम्मत के लिए दरकार लकड़ी और तराशे हुए पत्थरों के लिए भी इस्तेमाल किए। बाक़ी जितने अख़राजात रब के घर को बहाल करने के लिए ज़रूरी थे वह सब इन पैसों से पूरे किए गए। 13लेकिन इन हदियाजात से सोने या चाँदी की चीज़ें न बनवाई गईं, न चाँदी के बासन, बत्ती कतरने के औज़ार, छिड़काव के कटोरे या तुरम। 14यह सिर्फ़ और सिर्फ़ ठेकेदारों को दिए गए ताकि वह रब के घर की मरम्मत कर सकें। 15ठेकेदारों से हिसाब न लिया गया जब उन्हें कारीगरों को पैसे देने थे, क्योंकि वह क़ाबिले-एतमाद थे।

16महज़ वह पैसे जो क़ुसूर और गुनाह की क़ुरबानियों के लिए मिलते थे रब के घर की मरम्मत के लिए इस्तेमाल न हुए। वह इमामों का हिस्सा रहे।

ख़राज मिलने पर हज़ाएल यरूशलम को छोड़ता है

17उन दिनों में शाम के बादशाह हज़ाएल ने जात पर हमला करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसके बाद वह मुड़कर यरूशलम की तरफ़ बढ़ने लगा ताकि उस पर भी हमला करे। 18यह देखकर यहूदाह के बादशाह युआस ने उन तमाम हदियाजात को इकट्ठा किया जो उसके बापदादा यहूसफ़त, यहूराम और अख़ज़ियाह ने रब के घर के लिए मख़सूस किए थे। उसने वह भी जमा किए जो उसने ख़ुद रब के घर के लिए मख़सूस किए थे। यह चीज़ें उस सारे सोने के साथ मिलाकर जो रब के घर और शाही महल के ख़ज़ानों में था उसने सब कुछ हज़ाएल को भेज दिया। तब हज़ाएल यरूशलम को छोड़कर चला गया।

युआस की मौत

19बाक़ी जो कुछ युआस की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया उसका ज़िक्र 'शाहाने-यहूदाह' की किताब में किया गया है। 20एक दिन उसके अफ़सरों ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे क़त्ल कर दिया जब वह बैत-मिल्लो के पास उस रास्ते पर था जो सिल्ला की तरफ़ उतर जाता था। 21क़ातिलों के नाम यूज़बद बिन सिमआत और यहूज़बद बिन शूमीर थे। युआस को यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा अमसियाह तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह यहुआख़ज़

13 यहुआख़ज़ बिन याहू यहूदाह के बादशाह युआस बिन अख़ज़ियाह की हुकूमत के 23वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 17 साल था, और उसका दारुल-हुकूमत सामरिया रहा। 2उसका चाल-चलन रब को नापसंद था, क्योंकि वह भी यरुबियाम बिन नबात के बुरे नमूने पर चलता रहा। उसने वह गुनाह जारी रखे जो करने पर यरुबियाम ने इसराईल को उकसाया था। उस बुतपरस्ती से वह कभी बाज़ न आया। 3इस वजह से रब इसराईल से बहुत नाराज़ हुआ, और वह शाम के बादशाह हज़ाएल और उसके बेटे बिन-हदद के वसीले से उन्हें बार बार दबाता रहा।

4लेकिन फिर यहुआख़ज़ ने रब का ग़ज़ब ठंडा किया, और रब ने उस की मिन्नतें सुनीं, क्योंकि उसे मालूम था कि शाम का बादशाह इसराईल पर कितना ज़ुल्म कर रहा है। 5रब ने किसी को भेज दिया जिसने उन्हें शाम के ज़ुल्म से आज़ाद करवाया। इसके बाद वह पहले की तरह सुकून के साथ अपने घरों में रह सकते थे। 6तो भी वह उन गुनाहों से बाज़ न आए जो करने पर यरुबियाम ने उन्हें उकसाया था बल्कि उनकी यह बुतपरस्ती जारी रही। यसीरत देवी का बुत भी सामरिया से हटाया न गया।

7आख़िर में यहुआख़ज़ के सिर्फ़ 50 घुड़सवार, 10 रथ और 10,000 प्यादा सिपाही रह गए। फ़ौज का बाक़ी हिस्सा शाम के बादशाह ने तबाह

कर दिया था। उसने इसराईली फ़ौजियों को कुचलकर यों उड़ा दिया था जिस तरह धूल अनाज को गाहते वक़्त उड़ जाती है।

8बाक़ी जो कुछ यहुआख़ज़ की हुकूमत के
दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में बयान की
गई हैं। 9जब वह मरकर अपने बापदादा से जा
मिला तो उसे सामरिया में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा यहुआस तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह यहुआस

10यहुआस बिन यहुआख़ज़ यहूदाह के बादशाह युआस की हुकूमत के 37वें साल में
इसराईल का बादशाह बना। 11यहुआस का
चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था बल्कि यह
बुतपरस्ती जारी रही। 12बाक़ी जो कुछ यहुआस
की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज हैं। उसमें उस की यहूदाह के बादशाह अमसियाह के साथ जंग का ज़िक्र भी है।

13जब यहुआस मरकर अपने बापदादा से जा
मिला तो उसे सामरिया में शाही क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर यरुबियाम दुवुम तख़्त पर बैठ गया।

बिस्तरे-मर्ग पर यहुआस की इलीशा से मुलाक़ात

14यहुआस के दौरे-हुकूमत में इलीशा शदीद
बीमार हो गया। जब वह मरने को था तो इसराईल का बादशाह यहुआस उससे मिलने गया। उसके ऊपर झुककर वह ख़ूब रो पड़ा और चिल्लाया, "हाय, मेरे बाप, मेरे बाप। इसराईल के रथ और
उसके घोड़े!" 15इलीशा ने उसे हुक्म दिया,
"एक कमान और कुछ तीर ले आएँ।" बादशाह
कमान और तीर इलीशा के पास ले आया। 16फिर
इलीशा बोला, "कमान को पकड़ें।" जब बादशाह ने कमान को पकड़ लिया तो इलीशा ने अपने
हाथ उसके हाथों पर रख दिए। 17फिर उसने
हुक्म दिया, "मशरिक़ी खिड़की को खोल दें।" बादशाह ने उसे खोल दिया। इलीशा ने कहा, "तीर चलाएँ!" बादशाह ने तीर चलाया। इलीशा पुकारा, "यह रब का फ़तह दिलानेवाला तीर है, शाम पर फ़तह का तीर! आप अफ़ीक़ के पास शाम की फ़ौज को मुकम्मल तौर पर तबाह कर देंगे।"

18फिर उसने बादशाह को हुक्म दिया, "अब
बाक़ी तीरों को पकड़ें।" बादशाह ने उन्हें पकड़ लिया। फिर इलीशा बोला, "इनको ज़मीन पर पटख़ दें।" बादशाह ने तीन मरतबा तीरों को ज़मीन पर पटख़ दिया और फिर रुक गया।
19यह देखकर मर्दे-ख़ुदा ग़ुस्से हो गया और बोला,
"आपको तीरों को पाँच या छ: मरतबा ज़मीन पर पटख़ना चाहिए था। अगर ऐसा करते तो शाम की फ़ौज को शिकस्त देकर मुकम्मल तौर पर तबाह कर देते। लेकिन अब आप उसे सिर्फ़ तीन मरतबा शिकस्त देंगे।"

20थोड़ी देर के बाद इलीशा फ़ौत हुआ और उसे
दफ़न किया गया। उन दिनों में मोआबी लुटेरे हर साल मौसमे-बहार के दौरान मुल्क में घुस आते
थे। 21एक दिन किसी का जनाज़ा हो रहा था तो
अचानक यह लुटेरे नज़र आए। मातम करनेवाले लाश को क़रीब की इलीशा की क़ब्र में फेंककर भाग गए। लेकिन ज्योंही लाश इलीशा की हड्डियों से टकराई उसमें जान आ गई और वह आदमी खड़ा हो गया।

इलीशा के आख़िरी अलफ़ाज़ पूरे हो जाते हैं

22यहुआख़ज़ के जीते-जी शाम का बाद-
शाह हज़ाएल इसराईल को दबाता रहा। 23तो भी
रब को अपनी क़ौम पर तरस आया। उसने उन पर रहम किया, क्योंकि उसे वह अहद याद रहा जो उसने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से बाँधा था।

आज तक वह उन्हें तबाह करने या अपने हुज़ूर से ख़ारिज करने के लिए तैयार नहीं हुआ।

24जब शाम का बादशाह हज़ाएल फ़ौत हुआ
तो उसका बेटा बिन-हदद तख़्तनशीन हुआ।
25तब यहुआस बिन यहुआख़ज़ ने बिन-हदद से
वह इसराईली शहर दुबारा छीन लिए जिन पर बिन-हदद के बाप हज़ाएल ने क़ब्ज़ा कर लिया था। तीन बार यहुआस ने बिन-हदद को शिकस्त देकर इसराईली शहर वापस ले लिए।

यहूदाह का बादशाह अमसियाह

14 अमसियाह बिन युआस इसराईल के बादशाह यहुआस बिन
यहुआख़ज़ के दूसरे साल में यहूदाह का बादशाह
बना। 2उस वक़्त वह 25 साल का था। वह
यरूशलम में रहकर 29 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यहुअद्दान यरूशलम की रहनेवाली
थी। 3जो कुछ अमसियाह ने किया वह रब को
पसंद था, अगरचे वह उतनी वफ़ादारी से रब की पैरवी नहीं करता था जितनी उसके बाप दाऊद ने की थी। हर काम में वह अपने बाप युआस के
नमूने पर चला, 4लेकिन उसने भी ऊँची जगहों
के मंदिरों को दूर न किया। आम लोग अब तक वहाँ क़ुरबानियाँ चढ़ाते और बख़ूर जलाते रहे।

5ज्योंही अमसियाह के पाँव मज़बूती से जम गए उसने उन अफ़सरों को सज़ाए-मौत दी जिन्होंने बाप को क़त्ल कर दिया था। 6लेकिन
उनके बेटों को उसने ज़िंदा रहने दिया और यों मूसवी शरीअत के ताबे रहा जिसमें रब फ़रमाता है, “वालिदैन को उनके बच्चों के जरायम के सबब से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिदैन के जरायम के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उसने ख़ुद किया है।”

7अमसियाह ने अदोमियों को नमक की वादी में शिकस्त दी। उस वक़्त उनके 10,000 फ़ौजी उससे लड़ने आए थे। जंग के दौरान उसने सिला शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसका नाम युक़तियेल रखा। यह नाम आज तक रायज है।

अमसियाह इसराईल के बादशाह यहुआस से लड़ता है

8इस फ़तह के बाद अमसियाह ने इसराईल
के बादशाह यहुआस बिन यहुआख़ज़ को पैग़ाम भेजा, “आएँ, हम एक दूसरे का मुक़ाबला करें!”
9लेकिन इसराईल के बादशाह यहुआस ने जवाब
दिया, “लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार के एक दरख़्त से बात की, ‘मेरे बेटे के साथ अपनी बेटी का रिश्ता बान्धो।’ लेकिन उसी वक़्त लुबनान के जंगली जानवरों ने उसके ऊपर से गुज़रकर उसे पाँवों तले कुचल डाला। 10मुल्के-अदोम पर
फ़तह पाने के सबब से आपका दिल मग़रूर हो गया है। लेकिन मेरा मशवरा है कि आप अपने घर में रहकर फ़तह में हासिल हुई शोहरत का मज़ा लेने पर इकतिफ़ा करें। आप ऐसी मुसीबत को क्यों दावत देते हैं जो आप और यहूदाह की तबाही का बाइस बन जाए?”

11लेकिन अमसियाह मानने के लिए तैयार
नहीं था, इसलिए यहुआस अपनी फ़ौज लेकर यहूदाह पर चढ़ आया। बैत-शम्स के पास उसका यहूदाह के बादशाह के साथ मुक़ाबला हुआ।
12इसराईल की फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को
शिकस्त दी, और हर एक अपने अपने घर भाग गया। 13इसराईल के बादशाह यहुआस ने
यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस बिन अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्स में गिरिफ़्तार कर लिया। फिर वह यरूशलम गया और शहर की फ़सील इफ़राईम नामी दरवाज़े से कोने के दरवाज़े तक गिरा दी। इस हिस्से की लंबाई तक़रीबन 600 फ़ुट थी। 14जितना भी सोना, चाँदी और
क़ीमती सामान रब के घर और शाही महल के ख़ज़ानों में था उसे उसने पूरे का पूरा छीन लिया। लूटा हुआ माल और बाज़ यरग़मालों को लेकर वह सामरिया वापस चला गया।

इसराईल के बादशाह यहुआस की मौत

15बाक़ी जो कुछ यहुआस की हुकूमत के
दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो
कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-
इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज हैं। उसमें
उस की यहूदाह के बादशाह अमसियाह के साथ
जंग का ज़िक्र भी है। 16जब यहुआस मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में
इसराईल के बादशाहों की क़ब्र में दफ़नाया गया।
फिर उसका बेटा यरुबियाम दुवुम तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह के बादशाह अमसियाह की मौत

17इसराईल के बादशाह यहुआस बिन
यहुआख़ज़ की मौत के बाद यहूदाह का बादशाह
अमसियाह बिन युआस मज़ीद 15 साल जीता
रहा। 18बाक़ी जो कुछ अमसियाह की हुकूमत के
दौरान हुआ वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख़' की
किताब में दर्ज है। 19एक दिन लोग यरूशलम में
उसके ख़िलाफ़ साज़िश करने लगे। आख़िरकार
उसने फ़रार होकर लकीस में पनाह ली, लेकिन
साज़िश करनेवालों ने अपने लोगों को उसके
पीछे भेजा, और वह वहाँ उसे क़त्ल करने में
कामयाब हो गए। 20उस की लाश घोड़े पर
उठाकर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे शहर के
उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया।

21यहूदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह के बेटे
उज़्ज़ियाह[a] को बाप के तख़्त पर बिठा दिया। उस
की उम्र 16 साल थी 22जब उसका बाप मरकर
अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह बनने के
बाद उज़्ज़ियाह ने ऐलात शहर पर क़ब्ज़ा करके
उसे दुबारा यहूदाह का हिस्सा बना लिया। उसने
शहर में बहुत तामीरी काम करवाया।

इसराईल का बादशाह यरुबियाम दुवुम

23यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस
के 15वें साल में यरुबियाम बिन यहुआस
इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत
का दौरानिया 41 साल था, और उसका दारुल-
हुकूमत सामरिया रहा। 24उसका चाल-चलन रब
को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया
जो करने पर नबात के बेटे यरुबियाम अव्वल ने
इसराईल को उकसाया था। 25यरुबियाम दुवुम
लबो-हमात से लेकर बहीराए-मुरदार तक उन
तमाम इलाक़ों पर दुबारा क़ब्ज़ा कर सका जो
पहले इसराईल के थे। यों वह वादा पूरा हुआ जो
रब इसराईल के ख़ुदा ने अपने ख़ादिम जात-हिफ़र
के रहनेवाले नबी यूनुस बिन अमित्ती की मारिफ़त
किया था। 26क्योंकि रब ने इसराईल की निहायत
बुरी हालत पर ध्यान दिया था। उसे मालूम था
कि छोटे बड़े सब हलाक होनेवाले हैं और कि उन्हें
छुड़ानेवाला कोई नहीं है। 27रब ने कभी नहीं कहा
था कि मैं इसराईल क़ौम का नामो-निशान मिटा
दूँगा, इसलिए उसने उन्हें यरुबियाम बिन यहुआस
के वसीले से नजात दिलाई।

28बाक़ी जो कुछ यरुबियाम दुवुम की हुकूमत
के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो
जंगी कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं उनका ज़िक्र
'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में
हुआ है। उसमें यह भी बयान किया गया है कि
उसने किस तरह दमिश्क़ और हमात पर दुबारा
क़ब्ज़ा कर लिया। 29जब यरुबियाम मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में
बादशाहों की क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका
बेटा ज़करियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह उज़्ज़ियाह

15 उज़्ज़ियाह बिन अमसियाह इस-
राईल के बादशाह यरुबियाम दुवुम
की हुकूमत के 27वें साल में यहूदाह का बादशाह

[a]यहाँ कई जगहों पर इबरानी में उज़्ज़ियाह का दूसरा नाम अज़रियाह मुस्तामल है।

बना। 2उस वक़्त उस की उम्र 16 साल थी, और वह यरूशलम में रहकर 52 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यकूलियाह यरूशलम की रहनेवाली थी। 3अपने बाप अमसियाह की तरह उसका चाल-चलन रब को पसंद था, 4लेकिन ऊँची जगहों को दूर न किया गया, और आम लोग वहाँ अपनी क़ुरबानियाँ चढ़ाते और बख़ूर जलाते रहे।

5एक दिन रब ने बादशाह को सज़ा दी कि उसे कोढ़ लग गया। उज़्ज़ियाह जीते-जी इस बीमारी से शफ़ा न पा सका, और उसे अलहदा घर में रहना पड़ा। उसके बेटे यूताम को महल पर मुक़र्रर किया गया, और वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।

6बाक़ी जो कुछ उज़्ज़ियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 7जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा यूताम तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह ज़करियाह

8ज़करियाह बिन यरुबियाम यहूदाह के बादशाह उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 38वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उसका दारुल-हुकूमत भी सामरिया था, लेकिन छः माह के बाद उस की हुकूमत ख़त्म हो गई। 9अपने बापदादा की तरह ज़करियाह का चाल-चलन भी रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था। 10सल्लूम बिन यबीस ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे सबके सामने क़त्ल किया। फिर वह उस की जगह बादशाह बन गया।

11बाक़ी जो कुछ ज़करियाह की हुकूमत के दौरान हुआ उसका ज़िक्र 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में किया गया है।

12यों रब का वह वादा पूरा हुआ जो उसने याहू से किया था, "तेरी औलाद चौथी पुश्त तक इसराईल पर हुकूमत करती रहेगी।"

इसराईल का बादशाह सल्लूम

13सल्लूम बिन यबीस यहूदाह के बादशाह उज़्ज़ियाह के 39वें साल में इसराईल का बादशाह बना। वह सामरिया में रहकर सिर्फ़ एक माह तक तख़्त पर बैठ सका। 14फिर मनाहिम बिन जादी ने तिरज़ा से आकर सल्लूम को सामरिया में क़त्ल कर दिया। इसके बाद वह ख़ुद तख़्त पर बैठ गया।

15बाक़ी जो कुछ सल्लूम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो साज़िशें उसने कीं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में बयान किया गया है।

16उस वक़्त मनाहिम ने तिरज़ा से आकर शहर तिफ़सह को उसके तमाम बाशिंदों और गिर्दो-नवाह के इलाक़े समेत तबाह किया। वजह यह थी कि उसके बाशिंदे अपने दरवाज़ों को खोलकर उसके ताबे हो जाने के लिए तैयार नहीं थे। जवाब में मनाहिम ने उनको मारा और तमाम हामिला औरतों के पेट चीर डाले।

इसराईल का बादशाह मनाहिम

17मनाहिम बिन जादी यहूदाह के बादशाह उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 39वें साल में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया उसका दारुल-हुकूमत था, और उस की हुकूमत का दौरानिया 10 साल था। 18उसका चाल-चलन रब को नापसंद था, और वह ज़िंदगी-भर उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था।

19-20मनाहिम के दौरे-हुकूमत में असूर का बादशाह पूल यानी तिग्लत-पिलेसर मुल्क से लड़ने आया। मनाहिम ने उसे 34,000 किलोग्राम चाँदी दे दी ताकि वह उस की हुकूमत मज़बूत करने में मदद करे। तब असूर का बादशाह

इसराईल को छोड़कर अपने मुल्क वापस चला
गया। चाँदी के यह पैसे मनाहिम ने अमीर
इसराईलियों से जमा किए। हर एक को चाँदी के
50 सिक्के अदा करने पड़े।
21बाक़ी जो कुछ मनाहिम की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।
22जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसका बेटा फ़िक़हियाह तख़्त पर बैठ गया।

इसराईल का बादशाह फ़िक़हियाह

23फ़िक़हियाह बिन मनाहिम यहूदाह के
बादशाह उज़्ज़ियाह के 50वें साल में इस-
राईल का बादशाह बना। सामरिया में रहकर
उस की हुकूमत का दौरानिया दो साल था।
24फ़िक़हियाह का चाल-चलन रब को नापसंद
था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर
यरुबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया
था।
25एक दिन फ़ौज के आला अफ़सर फ़िक़ह
बिन रमलियाह ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की।
जिलियाद के 50 आदमियों को अपने साथ लेकर
उसने फ़िक़हियाह को सामरिया के महल के बुर्ज
में मार डाला। उस वक़्त दो और अफ़सर बनाम
अरजूब और अरिया भी उस की ज़द में आकर मर
गए। इसके बाद फ़िक़ह तख़्त पर बैठ गया।
26बाक़ी जो कुछ फ़िक़हियाह की हुकूमत
के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह
'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में
बयान किया गया है।

इसराईल का बादशाह फ़िक़ह

27फ़िक़ह बिन रमलियाह यहूदाह के बाद-
शाह उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 52वें साल में
इसराईल का बादशाह बना। सामरिया में रहकर
वह 20 साल तक हुकूमत करता रहा।
28फ़िक़ह
का चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन
गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुबियाम
बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था।
29फ़िक़ह के दौरे-हुकूमत में असूर के बादशाह
तिग्लत-पिलेसर ने इसराईल पर हमला किया।
ज़ैल के तमाम शहर उसके क़ब्ज़े में आ गए :
ऐय्यून, अबील-बैत-माका, यानूह, क़ादिस और
हसूर। जिलियाद और गलील के इलाक़े भी
नफ़ताली के पूरे क़बायली इलाक़े समेत उस की
गिरिफ़्त में आ गए। असूर का बादशाह इन तमाम
जगहों में आबाद लोगों को गिरिफ़्तार करके अपने
मुल्क असूर ले गया।
30एक दिन होसेअ बिन ऐला ने फ़िक़ह के
ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे मौत के घाट उतार
दिया। फिर वह ख़ुद तख़्त पर बैठ गया। यह
यहूदाह के बादशाह यूताम बिन उज़्ज़ियाह की
हुकूमत के 20वें साल में हुआ।
31बाक़ी जो कुछ फ़िक़ह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

यहूदाह का बादशाह यूताम

32उज़्ज़ियाह का बेटा यूताम इसराईल के
बादशाह फ़िक़ह की हुकूमत के दूसरे साल में
यहूदाह का बादशाह बना।
33वह 25 साल की
उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 16
साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यरूसा बिंत
सदोक़ थी।
34वह अपने बाप उज़्ज़ियाह की तरह
वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था।
35तो
भी ऊँची जगहों के मंदिर हटाए न गए। लोग वहाँ
अपनी क़ुरबानियाँ चढ़ाने और बख़ूर जलाने से
बाज़ न आए। यूताम ने रब के घर का बालाई
दरवाज़ा तामीर किया।
36बाक़ी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
यहूदाह की तारीख़' की किताब में क़लमबंद है।
37उन दिनों में रब शाम के बादशाह रज़ीन और
फ़िक़ह बिन रमलियाह को यहूदाह के ख़िलाफ़
भेजने लगा ताकि उससे लड़ें।
38जब यूताम

मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे
यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर'
कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर
उसका बेटा आख़ज़ तख़्त पर बैठ गया।

यहूदाह का बादशाह आख़ज़

16 आख़ज़ बिन यूताम इसराईल के
बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह की
हुकूमत के 17वें साल में यहूदाह का बादशाह
बना। 2उस वक़्त आख़ज़ 20 साल का था, और
वह यरूशलम में रहकर 16 साल हुकूमत करता
रहा। वह अपने बाप दाऊद के नमूने पर न चला
बल्कि वह कुछ करता रहा जो रब को नापसंद था।
3क्योंकि उसने इसराईल के बादशाहों का चाल-
चलन अपनाया, यहाँ तक कि उसने अपने बेटे को
क़ुरबानी के तौर पर जला दिया। यों वह उन क़ौमों
के घिनौने रस्मो-रिवाज अदा करने लगा जिन्हें रब
ने इसराईलियों के आगे मुल्क से निकाल दिया
था। 4आख़ज़ बख़ूर जलाकर अपनी क़ुरबानियाँ
ऊँचे मक़ामों, पहाड़ियों की चोटियों और हर घने
दरख़्त के साये में चढ़ाता था।

आख़ज़ असूर के बादशाह से मदद लेता है

5एक दिन शाम का बादशाह रज़ीन और
इसराईल का बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह
यरूशलम पर हमला करने के लिए यहूदाह में घुस
आए। उन्होंने शहर का मुहासरा तो किया लेकिन
उस पर क़ब्ज़ा करने में नाकाम रहे। 6उन्हीं दिनों में
रज़ीन ने ऐलात पर दुबारा क़ब्ज़ा करके शाम का
हिस्सा बना लिया। यहूदाह के लोगों को वहाँ से
निकालकर उसने वहाँ अदोमियों को बसा दिया।
यह अदोमी आज तक वहाँ आबाद हैं।

7आख़ज़ ने अपने क़ासिदों को असूर के
बादशाह तिग्लत-पिलेसर के पास भेजकर उसे
इत्तला दी, "मैं आपका ख़ादिम और बेटा हूँ।
मेहरबानी करके आएँ और मुझे शाम और
इसराईल के बादशाहों से बचाएँ जो मुझ पर
हमला कर रहे हैं।" 8साथ साथ आख़ज़ ने वह
चाँदी और सोना जमा किया जो रब के घर और
शाही महल के ख़ज़ानों में था और उसे तोह्फ़े
के तौर पर असूर के बादशाह को भेज दिया।
9तिग्लत-पिलेसर राज़ी हो गया। उसने दमिश्क़
पर हमला करके शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया और
उसके बाशिंदों को गिरिफ़्तार करके क़ीर को ले
गया। रज़ीन को उसने क़त्ल कर दिया।

आख़ज़ रब के घर की बेहुरमती करता है

10आख़ज़ बादशाह असूर के बादशाह तिग्लत-
पिलेसर से मिलने के लिए दमिश्क़ गया। वहाँ
एक क़ुरबानगाह थी जिसका नमूना आख़ज़ ने
बनाकर ऊरियाह इमाम को भेज दिया। साथ
साथ उसने डिज़ायन की तमाम तफ़सीलात भी
यरूशलम भेज दीं। 11जब ऊरियाह को हिदायात
मिलीं तो उसने उन्हीं के मुताबिक़ यरूशलम में
एक क़ुरबानगाह बनाई। आख़ज़ के दमिश्क़ से
वापस आने से पहले पहले उसे तैयार कर लिया
गया।

12जब बादशाह वापस आया तो उसने नई
क़ुरबानगाह का मुआयना किया। फिर उस की
सीढ़ी पर चढ़कर 13उसने ख़ुद क़ुरबानियाँ उस
पर पेश कीं। भस्म होनेवाली क़ुरबानी और ग़ल्ला
की नज़र जलाकर उसने मै की नज़र क़ुरबानगाह
पर उंडेल दी और सलामती की क़ुरबानियों का
ख़ून उस पर छिड़क दिया।

14रब के घर और नई क़ुरबानगाह के
दरमियान अब तक पीतल की पुरानी क़ुर-
बानगाह थी। अब आख़ज़ ने उसे उठाकर रब के
घर के सामने से मुंतक़िल करके नई क़ुरबानगाह
के पीछे यानी शिमाल की तरफ़ रखवा दिया।
15ऊरियाह इमाम को उसने हुक्म दिया, "अब
से आपको तमाम क़ुरबानियों को नई क़ुरबानगाह
पर पेश करना है। इनमें सुबहो-शाम की रोज़ाना
क़ुरबानियाँ भी शामिल हैं और बादशाह और
उम्मत की मुख़्तलिफ़ क़ुरबानियाँ भी, मसलन
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और ग़ल्ला और मै की
नज़रें। क़ुरबानियों के तमाम ख़ून को भी सिर्फ़

नई क़ुरबानगाह पर छिड़कना है। आइंदा पीतल
की पुरानी क़ुरबानगाह सिर्फ़ मेरे ज़ाती इस्तेमाल
के लिए होगी जब मुझे अल्लाह से कुछ दरियाफ़्त
करना होगा।" 16ऊरियाह इमाम ने वैसा ही किया
जैसा बादशाह ने उसे हुक्म दिया।

17लेकिन आख़ज़ बादशाह रब के घर में मज़ीद
तबदीलियाँ भी लाया। हथगाड़ियों के जिन फ़्रेमों
पर बासन रखे जाते थे उन्हें तोड़कर उसने बासनों
को दूर कर दिया। इसके अलावा उसने 'समुंदर'
नामी बड़े हौज़ को पीतल के उन बैलों से उतार
दिया जिन पर वह शुरू से पड़ा था और उसे पत्थर
के एक चबूतरे पर रखवा दिया। 18उसने असूर के
बादशाह को ख़ुश रखने के लिए एक और काम
भी किया। उसने रब के घर से वह चबूतरा दूर कर
दिया जिस पर बादशाह का तख़्त रखा जाता था
और वह दरवाज़ा बंद कर दिया जो बादशाह रब
के घर में दाख़िल होने के लिए इस्तेमाल करता
था।

19बाक़ी जो कुछ आख़ज़ की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 20जब
वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे
यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर'
कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर
उसका बेटा हिज़क़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का आख़िरी बादशाह होसेअ

17 होसेअ बिन ऐला यहूदाह के बादशाह
आख़ज़ की हुकूमत के 12वें साल
में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया उसका
दारुल-हुकूमत रहा, और उस की हुकूमत का
दौरानिया 9 साल था। 2होसेअ का चाल-चलन
रब को नापसंद था, लेकिन इसराईल के उन
बादशाहों की निसबत जो उससे पहले थे वह कुछ
बेहतर था।

3एक दिन असूर के बादशाह सल्मनसर ने
इसराईल पर हमला किया। तब होसेअ शिकस्त
मानकर उसके ताबे हो गया। उसे असूर को ख़राज
अदा करना पड़ा। 4लेकिन चंद साल के बाद
वह सरकश हो गया। उसने ख़राज का सालाना
सिलसिला बंद करके अपने सफ़ीरों को मिसर
के बादशाह सो के पास भेजा ताकि उससे मदद
हासिल करे। जब असूर के बादशाह को पता चला
तो उसने उसे पकड़कर जेल में डाल दिया।

सामरिया का अंजाम

5सल्मनसर पूरे मुल्क में से गुज़रकर सामरिया
तक पहुँच गया। तीन साल तक उसे शहर का
मुहासरा करना पड़ा, 6लेकिन आख़िरकार वह
होसेअ की हुकूमत के नवें साल में कामयाब
हुआ और शहर पर क़ब्ज़ा करके इसराईलियों
को जिलावतन कर दिया। उन्हें असूर लाकर
उसने कुछ ख़लह के इलाक़े में, कुछ जौज़ान के
दरियाए-ख़ाबूर के किनारे पर और कुछ मादियों
के शहरों में बसाए।

7यह सब कुछ इसलिए हुआ कि इसराई-
लियों ने रब अपने ख़ुदा का गुनाह किया था,
हालाँकि वह उन्हें मिसरी बादशाह फ़िरौन के क़ब्ज़े
से रिहा करके मिसर से निकाल लाया था। वह
दीगर माबूदों की पूजा करते 8और उन क़ौमों के
रस्मो-रिवाज की पैरवी करते जिनको रब ने उनके
आगे से निकाल दिया था। साथ साथ वह उन
रस्मों से भी लिपटे रहे जो इसराईल के बादशाहों
ने शुरू की थीं। 9इसराईलियों को रब अपने ख़ुदा
के ख़िलाफ़ बहुत तरकीबें सूझीं जो ठीक नहीं थीं।
सबसे छोटी चौकी से लेकर बड़े से बड़े क़िलाबंद
शहर तक उन्होंने अपने तमाम शहरों की ऊँची
जगहों पर मंदिर बनाए। 10हर पहाड़ी की चोटी
पर और हर घने दरख़्त के साये में उन्होंने पत्थर
के अपने देवताओं के सतून और यसीरत देवी के
खंबे खड़े किए। 11हर ऊँची जगह पर वह बख़ूर
जला देते थे, बिलकुल उन अक़वाम की तरह
जिन्हें रब ने उनके आगे से निकाल दिया था।
ग़रज़ इसराईलियों से बहुत-सी ऐसी शरीर हरकतें
सरज़द हुईं जिनको देखकर रब को ग़ुस्सा आया।

12वह बुतों की परस्तिश करते रहे अगरचे रब ने इससे मना किया था।

13बार बार रब ने अपने नबियों और ग़ैबबीनों को इसराईल और यहूदाह के पास भेजा था ताकि उन्हें आगाह करें, "अपनी शरीर राहों से बाज़ आओ। मेरे अहकाम और क़वायद के ताबे रहो। उस पूरी शरीअत की पैरवी करो जो मैंने तुम्हारे बापदादा को अपने ख़ादिमों यानी नबियों के वसीले से दे दी थी।"

14लेकिन वह सुनने के लिए तैयार नहीं थे
बल्कि अपने बापदादा की तरह अड़ गए, क्योंकि
वह भी रब अपने ख़ुदा पर भरोसा नहीं करते थे।
15उन्होंने उसके अहकाम और उस अहद को रद्द
किया जो उसने उनके बापदादा से बाँधा था। जब
भी उसने उन्हें किसी बात से आगाह किया तो
उन्होंने उसे हक़ीर जाना। बेकार बुतों की पैरवी
करते करते वह ख़ुद बेकार हो गए। वह गिर्दो-
नवाह की क़ौमों के नमूने पर चल पड़े हालाँकि
रब ने इससे मना किया था। 16रब अपने ख़ुदा
के तमाम अहकाम को मुस्तरद करके उन्होंने
अपने लिए बछड़ों के दो मुजस्समे ढाल लिए और
यसीरत देवी का खंबा खड़ा कर दिया। वह सूरज,
चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर के सामने
झुक गए और बाल देवता की परस्तिश करने लगे।
17अपने बेटे-बेटियों को उन्होंने अपने बुतों के लिए
क़ुरबान करके जला दिया। नुजूमियों से मशवरा
लेना और जादूगरी करना आम हो गया। ग़रज़
उन्होंने अपने आपको बदी के हाथ में बेचकर ऐसा
काम किया जो रब को नापसंद था और जो उसे
ग़ुस्सा दिलाता रहा।

18तब रब का ग़ज़ब इसराईल पर नाज़िल हुआ, और उसने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया। सिर्फ़ यहूदाह का क़बीला मुल्क में बाक़ी रह गया।

19लेकिन यहूदाह के अफ़राद भी रब अपने
ख़ुदा के अहकाम के ताबे रहने के लिए तैयार नहीं
थे। वह भी उन बुरे रस्मो-रिवाज की पैरवी करते
रहे जो इसराईल ने शुरू किए थे। 20फिर रब ने
पूरी की पूरी क़ौम को रद्द कर दिया। उन्हें तंग
करके वह उन्हें लुटेरों के हवाले करता रहा, और
एक दिन उसने उन्हें भी अपने हुज़ूर से ख़ारिज
कर दिया।

21रब ने ख़ुद इसराईल के शिमाली क़बीलों
को दाऊद के घराने से अलग कर दिया था, और
उन्होंने यरुबियाम बिन नबात को अपना बादशाह
बना लिया था। लेकिन यरुबियाम ने इसराईल
को एक संगीन गुनाह करने पर उकसाकर रब
की पैरवी करने से दूर किए रखा। 22इसराईली
यरुबियाम के बुरे नमूने पर चलते रहे और कभी
इससे बाज़ न आए।

23यही वजह है कि जो कुछ रब ने अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था वह पूरा हुआ। उसने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया, और दुश्मन उन्हें क़ैदी बनाकर असूर ले गया जहाँ वह आज तक ज़िंदगी गुज़ारते हैं।

सामरिया में अजनबी क़ौमों को आबाद किया जाता है

24असूर के बादशाह ने बाबल, कूता, अव्वा,
हमात और सिफ़रवायम से लोगों को इसराईल
में लाकर सामरिया के इसराईलियों से ख़ाली
किए गए शहरों में बसा दिया। यह लोग सामरिया
पर क़ब्ज़ा करके उसके शहरों में बसने लगे।
25लेकिन आते वक़्त वह रब की परस्तिश नहीं
करते थे, इसलिए रब ने उनके दरमियान शेरबबर
भेज दिए जिन्होंने कई एक को फाड़ डाला।

26असूर के बादशाह को इत्तला दी गई, "जिन
लोगों को आपने जिलावतन करके सामरिया के
शहरों में बसा दिया है वह नहीं जानते कि उस
मुल्क का देवता किन किन बातों का तक़ाज़ा
करता है। नतीजे में उसने उनके दरमियान शेरबबर
भेज दिए हैं जो उन्हें फाड़ रहे हैं। और वजह यही
है कि वह उस की सहीह पूजा करने से वाक़िफ़
नहीं हैं।" 27यह सुनकर असूर के बादशाह ने हुक्म
दिया, "सामरिया से यहाँ लाए गए इमामों में से
एक को चुन लो जो अपने वतन लौटकर वहाँ
दुबारा आबाद हो जाए और लोगों को सिखाए कि

उस मुल्क का देवता अपनी पूजा के लिए किन किन बातों का तक़ाज़ा करता है।”
28तब एक इमाम जिलावतनी से वापस आया।
बैतेल में आबाद होकर उसने नए बाशिंदों को
सिखाया कि रब की मुनासिब इबादत किस तरह
की जाती है। 29लेकिन साथ साथ वह अपने
ज़ाती देवताओं की पूजा भी करते रहे। शहर
बशहर हर क़ौम ने अपने अपने बुत बनाकर उन
तमाम ऊँची जगहों के मंदिरों में खड़े किए जो
सामरिया के लोगों ने बना छोड़े थे। 30बाबल
के बाशिंदों ने सुक्कात-बनात के बुत, कूता
के लोगों ने नैरगल के मुजस्समे, हमातवालों
ने असीमा के बुत 31और अव्वा के लोगों ने
निबहाज़ और तरताक़ के मुजस्समे खड़े किए।
सिफ़रवायम के बाशिंदे अपने बच्चों को अपने
देवताओं अद्रम्मलिक और अनम्मलिक के लिए
क़ुरबान करके जला देते थे। 32ग़रज़ सब रब की
परस्तिश के साथ साथ अपने देवताओं की पूजा
भी करते और अपने लोगों में से मुख़्तलिफ़ क़िस्म
के अफ़राद को चुनकर पुजारी मुक़र्रर करते थे
ताकि वह ऊँची जगहों के मंदिरों को सँभालें।
33वह रब की इबादत भी करते और साथ साथ
अपने देवताओं की उन क़ौमों के रिवाजों के
मुताबिक़ इबादत भी करते थे जिनमें से उन्हें यहाँ
लाया गया था।

34यह सिलसिला आज तक जारी है। सामरिया
के बाशिंदे अपने उन पुराने रिवाजों के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारते हैं और सिर्फ़ रब की परस्तिश
करने के लिए तैयार नहीं होते। वह उस की
हिदायात और अहकाम की परवा नहीं करते और
उस शरीअत की पैरवी नहीं करते जो रब ने याक़ूब
की औलाद को दी थी। (रब ने याक़ूब का नाम
इसराईल में बदल दिया था।) 35क्योंकि रब ने
इसराईल की क़ौम के साथ अहद बाँधकर उसे
हुक्म दिया था,

“दूसरे किसी भी माबूद की इबादत मत करना!
उनके सामने झुककर उनकी ख़िदमत मत करना,
न उन्हें क़ुरबानियाँ पेश करना। 36सिर्फ़ रब की
परस्तिश करो जो बड़ी क़ुदरत और अज़ीम काम
दिखाकर तुम्हें मिसर से निकाल लाया। सिर्फ़
उसी के सामने झुक जाओ, सिर्फ़ उसी को अपनी
क़ुरबानियाँ पेश करो। 37लाज़िम है कि तुम ध्यान
से उन तमाम हिदायात, अहकाम और क़वायद
की पैरवी करो जो मैंने तुम्हारे लिए क़लमबंद कर
दिए हैं। किसी और देवता की पूजा मत करना।
38वह अहद मत भूलना जो मैंने तुम्हारे साथ बाँध
लिया है, और दीगर माबूदों की परस्तिश न करो।
39सिर्फ़ और सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा की इबादत
करो। वही तुम्हें तुम्हारे तमाम दुश्मनों के हाथ से
बचा लेगा।”

40लेकिन लोग यह सुनने के लिए तैयार नहीं
थे बल्कि अपने पुराने रस्मो-रिवाज के साथ लिपटे
रहे। 41चुनाँचे रब की इबादत के साथ ही सामरिया
के नए बाशिंदे अपने बुतों की पूजा करते रहे।
आज तक उनकी औलाद यही कुछ करती आई
है।

यहूदाह का बादशाह हिज़क़ियाह

18 इसराईल के बादशाह होसेअ बिन
ऐला की हुकूमत के तीसरे साल में
हिज़क़ियाह बिन आख़ज़ यहूदाह का बादशाह
बना। 2उस वक़्त उस की उम्र 25 साल थी, और
वह यरूशलम में रहकर 29 साल हुकूमत करता
रहा। उस की माँ अबी बिंत ज़करियाह थी। 3अपने
बाप दाऊद की तरह उसने ऐसा काम किया जो
रब को पसंद था। 4उसने ऊँची जगहों के मंदिरों
को गिरा दिया, पत्थर के उन सतूनों को टुकड़े
टुकड़े कर दिया जिनकी पूजा की जाती थी और
यसीरत देवी के खंबों को काट डाला। पीतल का
जो साँप मूसा ने बनाया था उसे भी बादशाह ने
टुकड़े टुकड़े कर दिया, क्योंकि इसराईली उन
ऐयाम तक उसके सामने बख़ूर जलाने आते थे।
(साँप नख़ुश्तान कहलाता था।)

5हिज़क़ियाह रब इसराईल के ख़ुदा पर भरोसा
रखता था। यहूदाह में न इससे पहले और न इसके
बाद ऐसा बादशाह हुआ। 6वह रब के साथ लिपटा

रहा और उस की पैरवी करने से कभी भी बाज़ न
आया। वह उन अहकाम पर अमल करता रहा जो
रब ने मूसा को दिए थे। 7इसलिए रब उसके साथ
रहा। जब भी वह किसी मक़सद के लिए निकला
तो उसे कामयाबी हासिल हुई।

चुनाँचे वह असूर की हुकूमत से आज़ाद हो
गया और उसके ताबे न रहा। 8फ़िलिस्तियों को
उसने सबसे छोटी चौकी से लेकर बड़े से बड़े
क़िलाबंद शहर तक शिकस्त दी और उन्हें मारते
मारते ग़ज़्ज़ा शहर और उसके इलाक़े तक पहुँच
गया।

असूरी इसराईल पर क़ब्ज़ा करते हैं

9हिज़क़ियाह की हुकूमत के चौथे साल में
और इसराईल के बादशाह होसेअ की हुकूमत के
सातवें साल में असूर के बादशाह सल्मनसर ने
इसराईल पर हमला किया। सामरिया शहर का
मुहासरा करके 10वह तीन साल के बाद उस पर
क़ब्ज़ा करने में कामयाब हुआ। यह हिज़क़ियाह
की हुकूमत के छटे साल और इसराईल के
बादशाह होसेअ की हुकूमत के नवें साल में
हुआ। 11असूर के बादशाह ने इसराईलियों को
जिलावतन करके कुछ ख़लह के इलाक़े में, कुछ
जौज़ान के दरियाए-ख़ाबूर के किनारे पर और कुछ
मादियों के शहरों में बसाए।

12यह सब कुछ इसलिए हुआ कि वह रब अपने
ख़ुदा के ताबे न रहे बल्कि उसके उनके साथ बँधे
हुए अहद को तोड़कर उन तमाम अहकाम के
फ़रमाँबरदार न रहे जो रब के ख़ादिम मूसा ने उन्हें
दिए थे। न वह उनकी सुनते और न उन पर अमल
करते थे।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

13हिज़क़ियाह बादशाह की हुकूमत के 14वें
साल में असूर के बादशाह सनहेरिब ने यहूदाह
के तमाम क़िलाबंद शहरों पर धावा बोलकर
उन पर क़ब्ज़ा कर लिया। 14जब असूर का
बादशाह लकीस के आस-पास पहुँचा तो यहूदाह
के बादशाह हिज़क़ियाह ने उसे इत्तला दी, “मुझसे
ग़लती हुई है। मुझे छोड़ दें तो जो कुछ भी आप
मुझसे तलब करेंगे मैं आपको अदा करूँगा।”

तब सनहेरिब ने हिज़क़ियाह से चाँदी के
तक़रीबन 10,000 किलोग्राम और सोने के
तक़रीबन 1,000 किलोग्राम माँग लिया।
15हिज़क़ियाह ने उसे वह तमाम चाँदी दे दी जो
रब के घर और शाही महल के ख़ज़ानों में पड़ी
थी। 16सोने का तक़ाज़ा पूरा करने के लिए उसने
रब के घर के दरवाज़ों और चौखटों पर लगा सोना
उतरवाकर उसे असूर के बादशाह को भेज दिया।
यह सोना उसने ख़ुद दरवाज़ों और चौखटों पर
चढ़वाया था।

17फिर भी असूर का बादशाह मुतमइन न
हुआ। उसने अपने सबसे आला अफ़सरों को बड़ी
फ़ौज के साथ लकीस से यरूशलम को भेजा
(उनकी अपनी ज़बान में अफ़सरों के ओहदों
के नाम तरतान, रब-सारिस और रबशाक़ी थे)।
यरूशलम पहुँचकर वह उस नाले के पास रुक
गए जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक पहुँचाता
है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों
के घाट तक ले जाता है)। 18इन तीन असूरी
अफ़सरों ने इत्तला दी कि बादशाह हमसे मिलने
आए, लेकिन हिज़क़ियाह ने महल के इंचार्ज
इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह, मीरमुंशी शिबनाह
और मुशीरे-ख़ास युआख़ बिन आसफ़ को उनके
पास भेजा। 19रबशाक़ी ने उनके हाथ हिज़क़ियाह
को पैग़ाम भेजा,

“असूर के अज़ीम बादशाह फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है? 20तुम समझते हो
कि ख़ाली बातें करना फ़ौजी हिकमते-अमली और
ताक़त के बराबर है। यह कैसी बात है? तुम
किस पर एतमाद कर रहे हो कि मुझसे सरकश
हो गए हो? 21क्या तुम मिसर पर भरोसा करते
हो? वह तो टूटा हुआ सरकंडा ही है। जो भी उस
पर टेक लगाए उसका हाथ वह चीरकर ज़ख़मी
कर देगा। यही कुछ उन सबके साथ हो जाएगा
जो मिसर के बादशाह फ़िरौन पर भरोसा करें!

22शायद तुम कहो, ‘हम रब अपने ख़ुदा पर तवक्कुल करते हैं।’ लेकिन यह किस तरह हो सकता है? हिज़क़ियाह ने तो उस की बेहुरमती की है। क्योंकि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों और क़ुरबानगाहों को ढाकर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि सिर्फ़ यरूशलम की क़ुरबानगाह के सामने परस्तिश करें।

23आओ, मेरे आक़ा असूर के बादशाह से सौदा करो। मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा बशर्तेकि तुम उनके लिए सवार मुहैया कर सको। लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे पास इतने घुड़सवार हैं ही नहीं!
24तुम मेरे आक़ा असूर के बादशाह के सबसे छोटे अफ़सर का भी मुक़ाबला नहीं कर सकते। लिहाज़ा मिसर के रथों पर भरोसा रखने का क्या फ़ायदा?
25शायद तुम समझते हो कि मैं रब की मरज़ी के बग़ैर ही इस जगह पर हमला करने आया हूँ ताकि सब कुछ बरबाद करूँ। लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! रब ने ख़ुद मुझे कहा कि इस मुल्क पर धावा बोलकर इसे तबाह कर दे।”

26यह सुनकर इलियाक़ीम बिन ख़िल-क़ियाह, शिबनाह और युआख़ ने रबशाक़ी की तक़रीर में दख़ल देकर कहा, “बराहे-करम अरामी ज़बान में अपने ख़ादिमों के साथ गुफ़्तगू कीजिए, क्योंकि हम यह अच्छी तरह बोल लेते हैं। इबरानी ज़बान इस्तेमाल न करें, वरना शहर की फ़सील पर खड़े लोग आपकी बातें सुन लेंगे।”
27लेकिन रबशाक़ी ने जवाब दिया, “क्या तुम समझते हो कि मेरे मालिक ने यह पैग़ाम सिर्फ़ तुम्हें और तुम्हारे मालिक को भेजा है? हरगिज़ नहीं! वह चाहते हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें। क्योंकि वह भी तुम्हारी तरह अपना फ़ुज़्ला खाने और अपना पेशाब पीने पर मजबूर हो जाएंगे।”

28फिर वह फ़सील की तरफ़ मुड़कर बुलंद आवाज़ से इबरानी ज़बान में अवाम से मुख़ातिब हुआ, “सुनो, शहनशाह, असूर के बादशाह के फ़रमान पर ध्यान दो!
29बादशाह फ़रमाते हैं कि हिज़क़ियाह तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा नहीं सकता।
30बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने की कोशिश करके कहता है, ‘रब हमें ज़रूर छुटकारा देगा, यह शहर कभी भी असूरी बादशाह के क़ब्ज़े में नहीं आएगा।’ लेकिन इस क़िस्म की बातों से तसल्ली पाकर रब पर भरोसा मत करना।
31हिज़क़ियाह की बातें न मानो बल्कि असूर के बादशाह की। क्योंकि वह फ़रमाते हैं, मेरे साथ सुलह करो और शहर से निकलकर मेरे पास आ जाओ। फिर तुममें से हर एक अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख़्त का फल खाएगा और अपने हौज़ का पानी पिएगा।
32फिर कुछ देर के बाद मैं तुम्हें एक ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जो तुम्हारे अपने मुल्क की मानिंद होगा। उसमें भी अनाज, नई मै, रोटी और अंगूर के बाग़, ज़ैतून के दरख़्त और शहद है। ग़रज़, मौत की राह इख़्तियार न करना बल्कि ज़िंदगी की राह। हिज़क़ियाह की मत सुनना। जब वह कहता है, ‘रब हमें बचाएगा’ तो वह तुम्हें धोका दे रहा है।
33क्या दीगर अक़वाम के देवता अपने मुल्कों को शाहे-असूर से बचाने के क़ाबिल रहे हैं?
34हमात और अरफ़ाद के देवता कहाँ रह गए हैं? सिफ़रवायम, हेना और इव्वा के देवता क्या कर सके? और क्या किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त से बचाया?
35नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क मुझसे बचा न सका। तो फिर रब यरूशलम को किस तरह मुझसे बचाएगा?”

36फ़सील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्होंने कोई जवाब न दिया, क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि जवाब में एक लफ़्ज़ भी न कहें।
37फिर महल का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशीरे-ख़ास युआख़ बिन आसफ़ रंजिश के मारे अपने लिबास फाड़कर हिज़क़ियाह के पास वापस गए। दरबार में पहुँचकर उन्होंने बादशाह को सब कुछ कह सुनाया जो रबशाक़ी ने उन्हें कहा था।

रब हिज़क़ियाह को तसल्ली देता है

19 यह बातें सुनकर हिज़क़ियाह ने अपने
कपड़े फाड़े और टाट का मातमी
लिबास पहनकर रब के घर में गया। 2साथ
साथ उसने महल के इंचार्ज इलियाक़ीम, मीरमुंशी
शिबनाह और इमामों के बुज़ुर्गों को आमूस के बेटे
यसायाह नबी के पास भेजा। सब टाट के मातमी
लिबास पहने हुए थे। 3नबी के पास पहुँचकर
उन्होंने हिज़क़ियाह का पैग़ाम सुनाया, "आज हम
बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा के इस दिन असूरियों ने
हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती की है। हमारा हाल दर्दे-
ज़ह में मुब्तला उस औरत का-सा है जिसके पेट
से बच्चा निकलने को है, लेकिन जो इसलिए नहीं
निकल सकता कि माँ की ताक़त जाती रही है।
4लेकिन शायद रब आपके ख़ुदा ने रबशाक़ी की
वह तमाम बातें सुनी हों जो उसके आक़ा असूर के
बादशाह ने ज़िंदा ख़ुदा की तौहीन में भेजी हैं। हो
सकता है रब आपका ख़ुदा उस की बातें सुनकर
उसे सज़ा दे। बराहे-करम हमारे लिए जो अब तक
बचे हुए हैं दुआ करें।"

5जब हिज़क़ियाह के अफ़सरों ने यसायाह
को बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया 6तो नबी ने
जवाब दिया, "अपने आक़ा को बता देना कि
रब फ़रमाता है, 'उन धमकियों से ख़ौफ़ मत खा
जो असूरी बादशाह के मुलाज़िमों ने मेरी इहानत
करके दी हैं। 7देख, मैं उसका इरादा बदल दूँगा।
वह अफ़वाह सुनकर इतना मुज़तरिब हो जाएगा
कि अपने ही मुल्क वापस चला जाएगा। वहाँ मैं
उसे तलवार से मरवा दूँगा'।"

सनहेरिब की धमकियाँ और हिज़क़ियाह की दुआ

8रबशाक़ी यरूशलम को छोड़कर असूर के
बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त
लकीस से रवाना होकर लिबना पर चढ़ाई कर रहा
था।

9फिर सनहेरिब को इत्तला मिली, "एथो-
पिया का बादशाह तिरहाक़ा आपसे लड़ने आ
रहा है।" तब उसने अपने क़ासिदों को दुबारा
यरूशलम भेज दिया ताकि हिज़क़ियाह को पैग़ाम
पहुँचाएँ, 10"जिस देवता पर तुम भरोसा रखते
हो उससे फ़रेब न खाओ जब वह कहता है कि
यरूशलम कभी असूरी बादशाह के क़ब्ज़े में नहीं
आएगा। 11तुम तो सुन चुके हो कि असूर के
बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या कुछ किया है।
हर मुल्क को उन्होंने मुकम्मल तौर पर तबाह कर
दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच जाओगे?
12क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता
उनकी हिफ़ाज़त कर पाए? क्या मुल्के-अदन में
तिलस्सार के बाशिंदे बच सके? नहीं, कोई भी
देवता उनकी मदद न कर सका जब मेरे बापदादा
ने उन्हें तबाह किया। 13ध्यान दो, अब हमात,
अरफ़ाद, सिफ़रवायम शहर, हेना और इव्वा के
बादशाह कहाँ हैं?"

14ख़त मिलने पर हिज़क़ियाह ने उसे पढ़ लिया
और फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को
रब के सामने बिछाकर 15उसने रब से दुआ की,

"ऐ रब इसराईल के ख़ुदा जो करूबी फ़रिश्तों
के दरमियान तख़्तनशीन है, तू अकेला ही दुनिया
के तमाम ममालिक का ख़ुदा है। तू ही ने
आसमानो-ज़मीन को ख़लक़ किया है। 16ऐ रब,
मेरी सुन! अपनी आँखें खोलकर देख! सनहेरिब
की उन बातों पर ध्यान दे जो उसने इस मक़सद
से हम तक पहुँचाई हैं कि ज़िंदा ख़ुदा की इहानत
करे। 17ऐ रब, यह बात सच है कि असूरी
बादशाहों ने इन क़ौमों को उनके मुल्कों समेत
तबाह कर दिया है। 18वह तो उनके बुतों को आग
में फेंककर भस्म कर सकते थे, क्योंकि वह ज़िंदा
नहीं बल्कि सिर्फ़ इनसान के हाथों से बने हुए
लकड़ी और पत्थर के बुत थे। 19ऐ रब हमारे ख़ुदा,
अब मैं तुझसे इलतमास करता हूँ कि हमें असूरी
बादशाह के हाथ से बचा ताकि दुनिया के तमाम
ममालिक जान लें कि तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा है।"

असूरी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

20फिर यसायाह बिन आमूस ने हिज़-
क़ियाह को पैग़ाम भेजा, "रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है कि मैंने असूरी बादशाह सनहेरिब के
बारे में तेरी दुआ सुनी है। 21अब रब का उसके
ख़िलाफ़ फ़रमान सुन,

कुँवारी सिय्यून बेटी तुझे हक़ीर जानती है,
हाँ यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिलाकर
हिक़ारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है।
22क्या तू नहीं जानता कि किस को गालियाँ दीं
और किसकी इहानत की है? क्या तुझे नहीं
मालूम कि तूने किसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद
की है? जिसकी तरफ़ तू ग़ुरूर की नज़र से देख
रहा है वह इसराईल का क़ुद्दूस है!

23अपने क़ासिदों के ज़रीए तूने रब की इहानत
की है। तू डींगें मारकर कहता है, 'मैं अपने बेशुमार
रथों से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की
इंतहा तक चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े
और जूनीपर के बेहतरीन दरख़्तों को काटकर
लुबनान के दूरतरीन कोनों तक, उसके सबसे घने
जंगल तक पहुँच गया हूँ। 24मैंने ग़ैरमुल्कों में कुएँ
खुदवाकर उनका पानी पी लिया है। मेरे तल्वों तले
मिसर की तमाम नदियाँ ख़ुश्क हो गईं।'

25ऐ असूरी बादशाह, क्या तूने नहीं सुना कि
बड़ी देर से मैंने यह सब कुछ मुक़र्रर किया?
क़दीम ज़माने में ही मैंने इसका मनसूबा बाँध
लिया, और अब मैं इसे वुजूद में लाया। मेरी मरज़ी
थी कि तू क़िलाबंद शहरों को ख़ाक में मिलाकर
पत्थर के ढेरों में बदल दे। 26इसी लिए उनके
बाशिंदों की ताक़त जाती रही, वह घबराए और
शरमिंदा हुए। वह घास की तरह कमज़ोर थे, छत
पर उगनेवाली उस हरियाली की मानिंद जो थोड़ी
देर के लिए फलती-फूलती तो है, लेकिन लू चलते
वक़्त एकदम मुरझा जाती है। 27मैं तो तुझसे
ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि तू कहाँ ठहरा
हुआ है, और तेरा आना जाना मुझसे पोशीदा नहीं
रहता। मुझे पता है कि तू मेरे ख़िलाफ़ कितने तैश
में आ गया है। 28तेरा तैश और ग़ुरूर देखकर मैं
तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगाम डालकर
तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा
जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

29ऐ हिज़क़ियाह, मैं इस निशान से तुझे
तसल्ली दिलाऊँगा कि इस साल और आने-
वाले साल तुम वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद
बख़ुद उगेगा। लेकिन तीसरे साल तुम बीज बोकर
फ़सलें काटोगे और अंगूर के बाग़ लगाकर उनका
फल खाओगे। 30यहूदाह के बचे हुए बाशिंदे एक
बार फिर जड़ पकड़कर फल लाएँगे। 31क्योंकि
यरूशलम से क़ौम का बक़िया निकल आएगा,
और कोहे-सिय्यून का बचा-खुचा हिस्सा दुबारा
मुल्क में फैल जाएगा। रब्बुल-अफ़वाज की ग़ैरत
यह कुछ सरंजाम देगी।

32जहाँ तक असूरी बादशाह का ताल्लुक़ है रब
फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा।
वह एक तीर तक उसमें नहीं चलाएगा। न वह ढाल
लेकर उस पर हमला करेगा, न शहर की फ़सील
के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 33जिस रास्ते से
बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने
मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने
नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 34क्योंकि मैं
अपनी और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर इस
शहर का दिफ़ा करके इसे बचाऊँगा।"

35उसी रात रब का फ़रिश्ता निकल आया और
असूरी लशकरगाह में से गुज़रकर 1,85,000
फ़ौजियों को मार डाला। जब लोग सुबह-सवेरे
उठे तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।

36यह देखकर सनहेरिब अपने ख़ैमे उ-
खाड़कर अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा
शहर पहुँचकर वह वहाँ ठहर गया। 37एक दिन
जब वह अपने देवता निसरूक के मंदिर में पूजा
कर रहा था तो उसके बेटों अद्रम्मलिक और
शराज़र ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया और
फ़रार होकर मुल्के-अरारात में पनाह ली। फिर
उसका बेटा असर्हद्दून तख़्तनशीन हुआ।

अल्लाह हिज़क़ियाह को शफ़ा देता है

20 उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस का बेटा यसायाह नबी उससे मिलने आया और कहा, "रब फ़रमाता है कि अपने घर का बंदोबस्त कर ले, क्योंकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से शफ़ा नहीं पाएगा।"

2यह सुनकर हिज़क़ियाह ने अपना मुँह दीवार
की तरफ़ फेरकर दुआ की, 3"ऐ रब, याद कर
कि मैं वफ़ादारी और ख़ुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसंद है।" फिर वह फूट फूटकर रोने लगा।

4इतने में यसायाह चला गया था। लेकिन वह
अभी अंदरूनी सहन से निकला नहीं था कि उसे
रब का कलाम मिला, 5"मेरी क़ौम के राहनुमा
हिज़क़ियाह के पास वापस जाकर उसे बता देना कि रब तेरे बाप दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मैंने तेरी दुआ सुन ली और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तुझे शफ़ा दूँगा। परसों तू दुबारा रब के घर में
जाएगा। 6मैं तेरी ज़िंदगी में 15 साल का इज़ाफ़ा
करूँगा। साथ साथ मैं तुझे और इस शहर को असूर के बादशाह से बचा लूँगा। मैं अपनी और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर शहर का दिफ़ा करूँगा'।"

7फिर यसायाह ने हुक्म दिया, "अंजीर की
टिक्की लाकर बादशाह के नासूर पर बाँध दो!" जब ऐसा किया गया तो हिज़क़ियाह को शफ़ा
मिली। 8पहले हिज़क़ियाह ने यसायाह से पूछा
था, "रब मुझे कौन-सा निशान देगा जिससे मुझे यक़ीन आए कि वह मुझे शफ़ा देगा और कि मैं परसों दुबारा रब के घर की इबादत में शरीक
हूँगा?" 9यसायाह ने जवाब दिया, "रब धूपघड़ी
का साया दस दर्जे आगे करेगा या दस दर्जे पीछे। इससे आप जान लेंगे कि वह अपना वादा पूरा करेगा। आप क्या चाहते हैं, क्या साया दस दर्जे
आगे चले या दस दर्जे पीछे?" 10हिज़क़ियाह
ने जवाब दिया, "यह करवाना कि साया दस दर्जे आगे चले आसान काम है। नहीं, वह दस दर्जे पीछे जाए।"

11तब यसायाह नबी ने रब से दुआ की, और
रब ने आख़ज़ की बनाई हुई धूपघड़ी का साया दस दर्जे पीछे कर दिया।

हिज़क़ियाह से संगीन ग़लती होती है

12थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह
मरूदक-बलदान बिन बलदान ने हिज़क़ियाह की बीमारी की ख़बर सुनकर वफ़द के हाथ
ख़त और तोह्फ़े भेजे। 13हिज़क़ियाह ने वफ़द का
इस्तक़बाल करके उसे वह तमाम ख़ज़ाने दिखाए जो ज़ख़ीराख़ाने में महफ़ूज़ रखे गए थे यानी तमाम सोना-चाँदी, बलसान का तेल और बाक़ी क़ीमती तेल। उसने असलिहाख़ाना और बाक़ी सब कुछ भी दिखाया जो उसके ख़ज़ानों में था। पूरे महल और पूरे मुल्क में कोई ख़ास चीज़ न रही
जो उसने उन्हें न दिखाई। 14तब यसायाह नबी
हिज़क़ियाह बादशाह के पास आया और पूछा, "इन आदमियों ने क्या कहा? कहाँ से आए हैं?" हिज़क़ियाह ने जवाब दिया, "दूर-दराज़
मुल्क बाबल से आए हैं।" 15यसायाह बोला,
"उन्होंने महल में क्या कुछ देखा?" हिज़क़ियाह ने कहा, "उन्होंने महल में सब कुछ देख लिया है। मेरे ख़ज़ानों में कोई चीज़ न रही जो मैंने उन्हें नहीं दिखाई।"

16तब यसायाह ने कहा, "रब का फ़रमान सुनें!
17एक दिन आनेवाला है कि तेरे महल का तमाम
माल छीन लिया जाएगा। जितने भी ख़ज़ाने तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा किए हैं उन सबको दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब फ़रमाता है
कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी। 18तेरे बेटों में
से भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे जो अब तक पैदा नहीं हुए। तब वह ख़्वाजासरा बनकर शाहे-बाबल के महल में ख़िदमत करेंगे।"

19हिज़क़ियाह बोला, "रब का जो पैग़ाम
आपने मुझे दिया है वह ठीक है।" क्योंकि उसने

सोचा, “बड़ी बात यह है कि मेरे जीते-जी अमनो-
अमान होगा।”

हिज़क़ियाह की मौत

20बाक़ी जो कुछ हिज़क़ियाह की हुकूमत के
दौरान हुआ और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं
वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में
दर्ज हैं। वहाँ यह भी बयान किया गया है कि उसने
किस तरह तालाब बनवाकर वह सुरंग खुदवाई
जिसके ज़रीए चश्मे का पानी शहर तक पहुँचता
है। 21जब हिज़क़ियाह मरकर अपने बापदादा से
जा मिला तो उसका बेटा मनस्सी तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह मनस्सी

21 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की
हुकूमत का दौरानिया 55 साल था। उस की
माँ हिफ़सीबाह थी। 2मनस्सी का चाल-चलन रब
को नापसंद था। उसने उन क़ौमों के क़ाबिले-
घिन रस्मो-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने
इसराईलियों के आगे से निकाल दिया था।
3ऊँची जगहों के जिन मंदिरों को उसके बाप
हिज़क़ियाह ने ढा दिया था उन्हें उसने नए सिरे से
तामीर किया। उसने बाल देवता की क़ुरबानगाहें
बनवाईं और यसीरत देवी का खंबा खड़ा किया,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह इसराईल के
बादशाह अख़ियब ने किया था। इनके अलावा वह
सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर को
सिजदा करके उनकी ख़िदमत करता था। 4उसने
रब के घर में भी अपनी क़ुरबानगाहें खड़ी कीं,
हालाँकि रब ने इस मक़ाम के बारे में फ़रमाया
था, “मैं यरूशलम में अपना नाम क़ायम करूँगा।”
5लेकिन मनस्सी ने परवा न की बल्कि रब के घर
के दोनों सहनों में आसमान के पूरे लशकर के लिए
क़ुरबानगाहें बनवाईं। 6यहाँ तक कि उसने अपने
बेटे को भी क़ुरबान करके जला दिया। जादूगरी
और ग़ैबदानी करने के अलावा वह मुरदों की रूहों
से राबिता करनेवालों और रम्मालों से भी मशवरा
करता था।

ग़रज़ उसने बहुत कुछ किया जो रब को नापसंद
था और उसे तैश दिलाया। 7यसीरत देवी का खंबा
बनवाकर उसने उसे रब के घर में खड़ा किया,
हालाँकि रब ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से
कहा था, “इस घर और इस शहर यरूशलम में जो
मैंने तमाम इसराईली क़बीलों में से चुन लिया है
मैं अपना नाम अबद तक क़ायम रखूँगा। 8अगर
इसराईली एहतियात से मेरे उन तमाम अहकाम
की पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो
मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इसराईलियों को उस
मुल्क से जिलावतन कर दिया जाए जो मैंने उनके
बापदादा को अता किया था।” 9लेकिन लोग रब
के ताबे न रहे, और मनस्सी ने उन्हें ऐसे ग़लत काम
करने पर उकसाया जो उन क़ौमों से भी सरज़द
नहीं हुए थे जिन्हें रब ने मुल्क में दाख़िल होते वक़्त
उनके आगे से तबाह कर दिया था।

10आख़िरकार रब ने अपने ख़ादिमों यानी
नबियों की मारिफ़त एलान किया, 11“यहू-
दाह के बादशाह मनस्सी से क़ाबिले-घिन गुनाह
सरज़द हुए हैं। उस की हरकतें मुल्क में इसराईल
से पहले रहनेवाले अमोरियों की निसबत कहीं
ज़्यादा शरीर हैं। अपने बुतों से उसने यहूदाह
के बाशिंदों को गुनाह करने पर उकसाया है।
12चुनाँचे रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैं
यरूशलम और यहूदाह पर ऐसी आफ़त नाज़िल
करूँगा कि जिसे भी इसकी ख़बर मिलेगी उसके
कान बजने लगेंगे। 13मैं यरूशलम को उसी नाप
से नापूँगा जिससे सामरिया को नाप चुका हूँ। मैं
उसे उस तराज़ू में रखकर तोलूँगा जिसमें अख़ियब
का घराना तोल चुका हूँ। जिस तरह बरतन सफ़ाई
करते वक़्त पोंछकर उलटे रखे जाते हैं उसी तरह
मैं यरूशलम का सफ़ाया कर दूँगा। 14उस वक़्त
मैं अपनी मीरास का बचा-खुचा हिस्सा भी तर्क
कर दूँगा। मैं उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर
दूँगा जो उनकी लूट-मार करेंगे। 15और वजह यही
होगी कि उनसे ऐसी हरकतें सरज़द हुई हैं जो मुझे

नापसंद हैं। उस दिन से लेकर जब उनके बापदादा
मिसर से निकल आए आज तक वह मुझे तैश
दिलाते रहे हैं'।"
16लेकिन मनस्सी ने न सिर्फ़ यहूदाह के
बाशिंदों को बुतपरस्ती और ऐसे काम करने पर
उकसाया जो रब को नापसंद थे बल्कि उसने
बेशुमार बेक़ुसूर लोगों को क़त्ल भी किया। उनके
ख़ून से यरूशलम एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर
गया।
17बाक़ी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। उसमें
उसके गुनाहों का ज़िक्र भी किया गया है। 18जब
वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे
उसके महल के बाग़ में दफ़नाया गया जो उज़्ज़ा
का बाग़ कहलाता है। फिर उसका बेटा अमून
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमून

19अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना
और दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता
रहा। उस की माँ मसुल्लिमत बिंत हरूस युतबा
की रहनेवाली थी। 20अपने बाप मनस्सी की तरह
अमून ऐसा ग़लत काम करता रहा जो रब को
नापसंद था। 21वह हर तरह से अपने बाप के बुरे
नमूने पर चलकर उन बुतों की ख़िदमत और पूजा
करता रहा जिनकी पूजा उसका बाप करता आया
था। 22रब अपने बापदादा के ख़ुदा को उसने तर्क
किया, और वह उस की राहों पर नहीं चलता था।
23एक दिन अमून के कुछ अफ़सरों ने उसके
ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल
कर दिया। 24लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश
करनेवालों को मार डाला और अमून के बेटे
यूसियाह को बादशाह बना दिया।
25बाक़ी जो कुछ अमून की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
यहूदाह की तारीख़' की किताब में बयान किया
गया है। 26उसे उज़्ज़ा के बाग़ में उस की अपनी
क़ब्र में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा
यूसियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यूसियाह

22 यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में रहकर उस की
हुकूमत का दौरानिया 31 साल था। उस की माँ
यदीदा बिंत अदायाह बुसक़त की रहनेवाली थी।
2यूसियाह वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद
था। वह हर बात में अपने बाप दाऊद के अच्छे
नमूने पर चलता रहा और उससे न दाईं, न बाईं
तरफ़ हटा।
3अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह
बादशाह ने अपने मीरमुंशी साफ़न बिन
असलियाह बिन मसुल्लाम को रब के घर के पास
भेजकर कहा, 4"इमामे-आज़म ख़िलक़ियाह के
पास जाकर उसे बता देना कि उन तमाम पैसों
को गिन लें जो दरबानों ने लोगों से जमा किए
हैं। 5-6फिर पैसे उन ठेकेदारों को दे दें जो रब के
घर की मरम्मत करवा रहे हैं ताकि वह कारीगरों,
तामीर करनेवालों और राजों की उजरत अदा कर
सकें। इन पैसों से वह दराड़ों को ठीक करने के
लिए दरकार लकड़ी और तराशे हुए पत्थर भी
ख़रीदें। 7ठेकेदारों को अख़राजात का हिसाब-
किताब देने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वह
क़ाबिले-एतमाद हैं।"

रब के घर से शरीअत की किताब मिल जाती है

8जब मीरमुंशी साफ़न ख़िलक़ियाह के पास
पहुँचा तो इमामे-आज़म ने उसे एक किताब
दिखाकर कहा, "मुझे रब के घर में शरीअत की
किताब मिली है।" उसने उसे साफ़न को दे दिया
जिसने उसे पढ़ लिया। 9तब साफ़न बादशाह के
पास गया और उसे इत्तला दी, "हमने रब के घर
में जमाशुदा पैसे मरम्मत पर मुक़र्रर ठेकेदारों और
बाक़ी काम करनेवालों को दे दिए हैं।" 10फिर
साफ़न ने बादशाह को बताया, "ख़िलक़ियाह ने

मुझे एक किताब दी है।” किताब को खोलकर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

11किताब की बातें सुनकर बादशाह ने
रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए। 12उसने
ख़िलक़ियाह इमाम, अख़ीक़ाम बिन साफ़न, अकबोर बिन मीकायाह, मीरमुंशी साफ़न और अपने ख़ास ख़ादिम असायाह को बुलाकर उन्हें हुक्म दिया, 13“जाकर मेरी और क़ौम बल्कि
तमाम यहूदाह की ख़ातिर रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में दरियाफ़्त करें। रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होनेवाला है वह निहायत सख़्त है, क्योंकि हमारे बापदादा न किताब के फ़रमानों के ताबे रहे, न उन हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है जो उसमें हमारे लिए दर्ज की गई हैं।”

14चुनाँचे ख़िलक़ियाह इमाम, अख़ीक़ाम, अकबोर, साफ़न और असायाह ख़ुलदा नबिया को मिलने गए। ख़ुलदा का शौहर सल्लूम बिन तिक़्वा बिन ख़र्ख़स रब के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए इलाक़े में रहते थे।
15-16ख़ुलदा ने उन्हें जवाब दिया,

“रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस आदमी ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर और उसके बाशिंदों पर आफ़त नाज़िल करूँगा। वह तमाम बातें पूरी हो जाएँगी जो यहूदाह के बादशाह ने किताब में पढ़ी
हैं। 17क्योंकि मेरी क़ौम ने मुझे तर्क करके दीगर
माबूदों को क़ुरबानियाँ पेश की हैं और अपने हाथों से बुत बनाकर मुझे तैश दिलाया है। मेरा ग़ज़ब इस मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा और कभी ख़त्म नहीं होगा।’

18लेकिन यहूदाह के बादशाह के पास जाएँ
जिसने आपको रब से दरियाफ़्त करने के लिए भेजा है और उसे बता दें कि रब इसराईल का
ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी बातें सुनकर 19तेरा दिल
नरम हो गया है। जब तुझे पता चला कि मैंने इस मक़ाम और इसके बाशिंदों के बारे में फ़रमाया है कि वह लानती और तबाह हो जाएंगे तो तूने अपने आपको रब के सामने पस्त कर दिया। तूने रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए और मेरे हुज़ूर फूट फूटकर रोया। रब फ़रमाता है कि यह देखकर मैंने
तेरी सुनी है। 20जब तू मेरे कहने पर मरकर अपने
बापदादा से जा मिलेगा तो सलामती से दफ़न होगा। जो आफ़त मैं शहर पर नाज़िल करूँगा वह तू ख़ुद नहीं देखेगा’।”

अफ़सर बादशाह के पास वापस गए और उसे ख़ुलदा का जवाब सुना दिया।

यूसियाह रब से अहद बाँधता है

23 तब बादशाह यहूदाह और यरूशलम के तमाम बुज़ुर्गों को बुलाकर
2रब के घर में गया। सब लोग छोटे से लेकर बड़े
तक उसके साथ गए यानी यहूदाह के आदमी, यरूशलम के बाशिंदे, इमाम और नबी। वहाँ पहुँचकर जमात के सामने अहद की उस पूरी किताब की तिलावत की गई जो रब के घर में मिली थी।

3फिर बादशाह ने सतून के पास खड़े होकर
रब के हुज़ूर अहद बाँधा और वादा किया, “हम रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिलो-जान से उसके अहकाम और हिदायात पूरी करके इस किताब में दर्ज अहद की बातें क़ायम रखेंगे।” पूरी क़ौम अहद में शरीक हुई।

यूसियाह बुतपरस्ती को ख़त्म करता है

4अब बादशाह ने इमामे-आज़म ख़िलक़ियाह, दूसरे दर्जे पर मुक़र्रर इमामों और दरबानों को हुक्म दिया, “रब के घर में से वह तमाम चीज़ें निकाल दें जो बाल देवता, यसीरत देवी और आसमान के पूरे लशकर की पूजा के लिए इस्तेमाल हुई हैं।” फिर उसने यह सारा सामान यरूशलम के बाहर वादीए-क़िदरोन के खुले मैदान में जला दिया और उस की राख उठाकर बैतेल
ले गया। 5उसने उन बुतपरस्त पुजारियों को भी
हटा दिया जिन्हें यहूदाह के बादशाहों ने यहूदाह के

शहरों और यरूशलम के गिर्दो-नवाह के मंदिरों में
क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए मुक़र्रर किया था।
यह पुजारी न सिर्फ़ बाल देवता को अपने नज़राने
पेश करते थे बल्कि सूरज, चाँद, झुरमुटों और
आसमान के पूरे लशकर को भी। 6यसीरत देवी
का खंबा यूसियाह ने रब के घर से निकालकर
शहर के बाहर वादीए-क़िदरोन में जला दिया।
फिर उसने उसे पीसकर उस की राख ग़रीब लोगों
की क़ब्रों पर बिखेर दी। 7रब के घर के पास ऐसे
मकान थे जो जिस्मफ़रोश मर्दों और औरतों के
लिए बनाए गए थे। उनमें औरतें यसीरत देवी के
लिए कपड़े भी बुनती थीं। अब बादशाह ने उनको
भी गिरा दिया।

8फिर यूसियाह तमाम इमामों को यरू-
शलम वापस लाया। साथ साथ उसने यहूदाह के
शिमाल में जिबा से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक
ऊँची जगहों के उन तमाम मंदिरों की बेहुरमती
की जहाँ इमाम पहले क़ुरबानियाँ पेश करते थे।
यरूशलम के उस दरवाज़े के पास भी दो मंदिर
थे जो शहर के सरदार यशुअ के नाम से मशहूर
था। इनको भी यूसियाह ने ढा दिया। (शहर में
दाख़िल होते वक़्त यह मंदिर बाईं तरफ़ नज़र आते
थे।) 9जिन इमामों ने ऊँची जगहों पर ख़िदमत
की थी उन्हें यरूशलम में रब के हुज़ूर क़ुरबानियाँ
पेश करने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन वह बाक़ी
इमामों की तरह बेख़मीरी रोटी के लिए मख़सूस
रोटी खा सकते थे। 10बिन-हिन्नूम की वादी की
क़ुरबानगाह बनाम तूफ़त को भी बादशाह ने ढा
दिया ताकि आइंदा कोई भी अपने बेटे या बेटी को
जलाकर मलिक देवता को क़ुरबान न कर सके।
11घोड़े के जो मुजस्समे यहूदाह के बादशाहों ने
सूरज देवता की ताज़ीम में खड़े किए थे उन्हें भी
यूसियाह ने गिरा दिया और उनके रथों को जला
दिया। यह घोड़े रब के घर के सहन में दरवाज़े के
साथ खड़े थे, वहाँ जहाँ दरबारी अफ़सर बनाम
नातन-मलिक का कमरा था। 12आख़ज़ बादशाह
ने अपनी छत पर एक कमरा बनाया था जिसकी
छत पर भी मुख़्तलिफ़ बादशाहों की बनी हुई
क़ुरबानगाहें थीं। अब यूसियाह ने इनको भी ढा
दिया और उन दो क़ुरबानगाहों को भी जो मनस्सी
ने रब के घर के दो सहनों में खड़ी की थीं। इनको
टुकड़े टुकड़े करके उसने मलबा वादीए-क़िदरोन
में फेंक दिया। 13नीज़, बादशाह ने यरूशलम के
मशरिक़ में ऊँची जगहों के मंदिरों की बेहुरमती
की। यह मंदिर हलाकत के पहाड़ के जुनूब में
थे, और सुलेमान बादशाह ने उन्हें तामीर किया
था। उसने उन्हें सैदा की शर्मनाक देवी अस्तारात,
मोआब के मकरूह देवता कमोस और अम्मोन के
क़ाबिले-घिन देवता मिलकूम के लिए बनाया था।
14यूसियाह ने देवताओं के लिए मख़सूस किए
गए सतूनों को टुकड़े टुकड़े करके यसीरत देवी
के खंबे कटवा दिए और मक़ामात पर इनसानी
हड्डियाँ बिखेरकर उनकी बेहुरमती की।

यूसियाह बैतेल और सामरिया के मंदिरों को गिरा देता है

15-16बैतेल में अब तक ऊँची जगह पर वह
मंदिर और क़ुरबानगाह पड़ी थी जो यरुबियाम
बिन नबात ने तामीर की थी। यरुबियाम ही ने
इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया था। जब
यूसियाह ने देखा कि जिस पहाड़ पर क़ुरबानगाह
है उस की ढलानों पर बहुत-सी क़ब्रें हैं तो
उसने हुक्म दिया कि उनकी हड्डियाँ निकालकर
क़ुरबानगाह पर जला दी जाएँ। यों क़ुरबानगाह की
बेहुरमती बिलकुल उसी तरह हुई जिस तरह रब ने
मर्दे-ख़ुदा की मारिफ़त फ़रमाया था। इसके बाद
यूसियाह ने मंदिर और क़ुरबानगाह को गिरा दिया।
उसने यसीरत देवी का मुजस्समा कूट कूटकर
आख़िर में सब कुछ जला दिया।

17फिर यूसियाह को एक और क़ब्र नज़र आई।
उसने शहर के बाशिंदों से पूछा, “यह किसकी क़ब्र
है?” उन्होंने जवाब दिया, “यह यहूदाह के उस
मर्दे-ख़ुदा की क़ब्र है जिसने बैतेल की क़ुरबानगाह
के बारे में ऐन वह पेशगोई की थी जो आज आपके
वसीले से पूरी हुई है।” 18यह सुनकर बादशाह
ने हुक्म दिया, “इसे छोड़ दो! कोई भी इसकी

हड्डियों को न छेड़े।” चुनाँचे उस की और उस नबी की हड्डियाँ बच गईं जो सामरिया से उससे मिलने आया और बाद में उस की क़ब्र में दफ़नाया गया था।

19जिस तरह यूसियाह ने बैतेल के मंदिर को तबाह किया उसी तरह उसने सामरिया के तमाम शहरों के मंदिरों के साथ किया। उन्हें ऊँची जगहों पर बनाकर इसराईल के बादशाहों ने रब को तैश दिलाया था। 20इन मंदिरों के पुजारियों को उसने उनकी अपनी अपनी क़ुरबानगाहों पर सज़ाए-मौत दी और फिर इनसानी हड्डियाँ उन पर जलाकर उनकी बेहुरमती की। इसके बाद वह यरूशलम लौट गया।

फ़सह की ईद मनाई जाती है

21यरूशलम में आकर बादशाह ने हुक्म दिया, “पूरी क़ौम रब अपने ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाए, जिस तरह अहद की किताब में फ़रमाया गया है।” 22उस ज़माने से लेकर जब क़ाज़ी इसराईल की राहनुमाई करते थे यूसियाह के दिनों तक फ़सह की ईद इस तरह नहीं मनाई गई थी। इसराईल और यहूदाह के बादशाहों के ऐयाम में भी ऐसी ईद नहीं मनाई गई थी। 23यूसियाह की हुकूमत के 18वें साल में पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद यरूशलम में मनाई गई।

यूसियाह की फ़रमाँबरदारी

24यूसियाह उन तमाम हिदायात के ताबे रहा जो शरीअत की उस किताब में दर्ज थीं जो ख़िलक़ियाह इमाम को रब के घर में मिली थी। चुनाँचे उसने मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों, रम्मालों, घरेलू बुतों, दूसरे बुतों और बाक़ी तमाम मकरूह चीज़ों को ख़त्म कर दिया। 25न यूसियाह से पहले, न उसके बाद उस जैसा कोई बादशाह हुआ जिसने उस तरह पूरे दिल, पूरी जान और पूरी ताक़त के साथ रब के पास वापस आकर मूसवी शरीअत के हर फ़रमान के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी हो। 26तो भी रब यहूदाह पर अपने ग़ुस्से से बाज़ न आया, क्योंकि मनस्सी ने अपनी ग़लत हरकतों से उसे हद से ज़्यादा तैश दिलाया था। 27इसी लिए रब ने फ़रमाया, “जो कुछ मैंने इसराईल के साथ किया वही कुछ यहूदाह के साथ भी करूँगा। मैं उसे अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दूँगा। अपने चुने हुए शहर यरूशलम को मैं रद्द करूँगा और साथ साथ उस घर को भी जिसके बारे में मैंने कहा, ‘वहाँ मेरा नाम होगा’।”

28बाक़ी जो कुछ यूसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है।

29यूसियाह की हुकूमत के दौरान मिसर का बादशाह निकोह फ़िरौन दरियाए-फ़ुरात के लिए रवाना हुआ ताकि असूर के बादशाह से लड़े। रास्ते में यूसियाह उससे लड़ने के लिए निकला। लेकिन जब मजिद्दो के क़रीब उनका एक दूसरे के साथ मुक़ाबला हुआ तो निकोह ने उसे मार दिया। 30यूसियाह के मुलाज़िम उस की लाश रथ पर रखकर मजिद्दो से यरूशलम ले आए जहाँ उसे उस की अपनी क़ब्र में दफ़न किया गया। फिर उम्मत ने उसके बेटे यहुआख़ज़ को मसह करके बाप के तख़्त पर बिठा दिया।

यहूदाह का बादशाह यहुआख़ज़

31यहुआख़ज़ 23 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह था। उस की माँ हमूतल बिंत यरमियाह लिबना की रहनेवाली थी। 32अपने बापदादा की तरह वह भी ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था। 33निकोह फ़िरौन ने मुल्के-हमात के शहर रिबला में उसे गिरिफ़्तार कर लिया, और उस की हुकूमत ख़त्म हुई। मुल्के-यहूदाह को ख़राज के तौर पर तक़रीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी और 34 किलोग्राम सोना अदा करना पड़ा। 34यहुआख़ज़ की जगह फ़िरौन ने यूसियाह के एक और बेटे को तख़्त पर बिठाया।

उसके नाम इलियाक़ीम को उसने यहूयक़ीम में
बदल दिया। यहुआख़ज़ को वह अपने साथ मिसर
ले गया जहाँ वह बाद में मरा भी।

35मतलूबा चाँदी और सोने की रक़म अदा करने
के लिए यहूयक़ीम ने लोगों से ख़ास टैक्स लिया।
उम्मत को अपनी दौलत के मुताबिक़ पैसे देने पड़े।
इस तरीक़े से यहूयक़ीम फ़िरौन को ख़राज अदा
कर सका।

यहूदाह का बादशाह यहूयक़ीम

36यहूयक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह
बना, और वह यरूशलम में रहकर 11 साल
हुकूमत करता रहा। उस की माँ ज़बूदा बिंत
फ़िदायाह रूमाह की रहनेवाली थी। 37बापदादा
की तरह उसका चाल-चलन भी रब को नापसंद
था।

24 यहूयक़ीम की हुकूमत के दौरान
बाबल के बादशाह नबूकद-
नज़्ज़र ने यहूदाह पर हमला किया। नतीजे में
यहूयक़ीम उसके ताबे हो गया। लेकिन तीन साल
के बाद वह सरकश हो गया। 2तब रब ने बाबल,
शाम, मोआब और अम्मोन से डाकुओं के जत्थे
भेज दिए ताकि उसे तबाह करें। वैसा ही हुआ
जिस तरह रब ने अपने ख़ादिमों यानी नबियों
की मारिफ़त फ़रमाया था। 3यह आफ़तें इसलिए
यहूदाह पर आईं कि रब ने इनका हुक्म दिया था।
वह मनस्सी के संगीन गुनाहों की वजह से यहूदाह
को अपने हुज़ूर से ख़ारिज करना चाहता था।
4वह यह हक़ीक़त भी नज़रंदाज़ न कर सका कि
मनस्सी ने यरूशलम को बेक़ुसूर लोगों के ख़ून
से भर दिया था। रब यह मुआफ़ करने के लिए
तैयार नहीं था।

5बाक़ी जो कुछ यहूयक़ीम की हुकूमत के
दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह
‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज
है। 6जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसका बेटा यहूयाकीन तख़्तनशीन हुआ।
7उस वक़्त मिसर का बादशाह दुबारा अपने मुल्क
से निकल न सका, क्योंकि बाबल के बादशाह ने
मिसर की सरहद बनाम वादीए-मिसर से लेकर
दरियाए-फ़ुरात तक का सारा इलाक़ा मिसर के
क़ब्ज़े से छीन लिया था।

यहूयाकीन की हुकूमत और यरूशलम पर बाबल का क़ब्ज़ा

8यहूयाकीन 18 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया
तीन माह था। उस की माँ नहुश्ता बिंत इलनातन
यरूशलम की रहनेवाली थी। 9अपने बाप की तरह
यहूयाकीन भी ऐसा काम करता रहा जो रब को
नापसंद था।

10उस की हुकूमत के दौरान बाबल के बादशाह
नबूकदनज़्ज़र की फ़ौज यरूशलम तक बढ़कर
उसका मुहासरा करने लगी। 11नबूकदनज़्ज़र ख़ुद
शहर के मुहासरे के दौरान पहुँच गया। 12तब
यहूयाकीन ने शिकस्त मानकर अपने आपको
अपनी माँ, मुलाज़िमों, अफ़सरों और दरबारियों
समेत बाबल के बादशाह के हवाले कर दिया।
बादशाह ने उसे गिरिफ़्तार कर लिया।

यह नबूकदनज़्ज़र की हुकूमत के आठवें
साल में हुआ। 13जिसका एलान रब ने पहले
किया था वह अब पूरा हुआ, नबूकदनज़्ज़र
ने रब के घर और शाही महल के तमाम
ख़ज़ाने छीन लिए। उसने सोने का वह
सारा सामान भी लूट लिया जो सुलेमान ने
रब के घर के लिए बनवाया था। 14और
जितने खाते-पीते लोग यरूशलम में थे उन
सबको बादशाह ने जिलावतन कर दिया।
उनमें तमाम अफ़सर, फ़ौजी, दस्तकार और
धातों का काम करनेवाले शामिल थे, कुल
10,000 अफ़राद। उम्मत के सिर्फ़ ग़रीब
लोग पीछे रह गए। 15नबूकदनज़्ज़र यहू-
याकीन को भी क़ैदी बनाकर बाबल ले गया और
उस की माँ, बीवियों, दरबारियों और मुल्क के
तमाम असरो-रसूख़ रखनेवालों को भी। 16उसने
फ़ौजियों के 7,000 अफ़राद और 1,000

दस्तकारों और धातों का काम करनेवालों को
जिलावतन करके बाबल में बसा दिया। यह सब
माहिर और जंग करने के क़ाबिल आदमी थे।
17यरूशलम में बाबल के बादशाह ने यहूयाकीन
की जगह उसके चचा मत्तनियाह को तख़्त पर
बिठाकर उसका नाम सिदक़ियाह में बदल दिया।

यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह

18सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में बाद-
शाह बना, और यरूशलम में उस की हुकू-
मत का दौरानिया 11 साल था। उस की माँ
हमूतल बिंत यरमियाह लिबना शहर की रहनेवाली
थी। 19यहूयक़ीम की तरह सिदक़ियाह ऐसा
काम करता रहा जो रब को नापसंद था। 20रब
यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों से इतना नाराज़
हुआ कि आख़िर में उसने उन्हें अपने हुज़ूर से
ख़ारिज कर दिया।

सिदक़ियाह का फ़रार और गिरिफ़्तारी

एक दिन सिदक़ियाह बाबल के बादशाह
25 से सरकश हुआ, 1इसलिए शाहे-
बाबल नबूकदनज़्ज़र तमाम फ़ौज को
अपने साथ लेकर दुबारा यरूशलम पहुँचा ताकि
उस पर हमला करे।

सिदक़ियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल
की फ़ौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी।
यह काम दसवें महीने के दसवें दिन[a] शुरू हुआ।
पूरे शहर के इर्दगिर्द बादशाह ने पुश्ते बनवाए।
2सिदक़ियाह की हुकूमत के 11वें साल तक
यरूशलम क़ायम रहा। 3लेकिन फिर काल ने
शहर में ज़ोर पकड़ा, और अवाम के लिए खाने
की चीज़ें न रहीं।

चौथे महीने के नवें दिन[b] 4बाबल के फ़ौजियों
ने फ़सील में रख़ना डाल दिया। उसी रात
सिदक़ियाह अपने तमाम फ़ौजियों समेत फ़रार
होने में कामयाब हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से
घिरा हुआ था। वह फ़सील के उस दरवाज़े से
निकले जो शाही बाग़ के साथ मुलहिक़ दो दीवारों
के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ़ भागने
लगे, 5लेकिन बाबल की फ़ौज ने बादशाह का
ताक़्क़ुब करके उसे यरीहू के मैदान में पकड़
लिया। उसके फ़ौजी उससे अलग होकर चारों
तरफ़ मुंतशिर हो गए, 6और वह ख़ुद गिरिफ़्तार
हो गया।

फिर उसे रिबला में शाहे-बाबल के पास लाया
गया, और वहीं सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर
किया गया। 7सिदक़ियाह के देखते देखते उसके
बेटों को क़त्ल किया गया। इसके बाद फ़ौजियों ने
उस की आँखें निकालकर उसे पीतल की ज़ंजीरों
में जकड़ लिया और बाबल ले गए।

यरूशलम और रब के घर की तबाही

8शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र की हुकूमत के
19वें साल में बादशाह का ख़ास अफ़सर
नबूज़रादान यरूशलम पहुँचा। वह शाही
मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था। पाँचवें महीने के सातवें
दिन[c] उसने आकर 9रब के घर, शाही महल और
यरूशलम के तमाम मकानों को जला दिया। हर
बड़ी इमारत भस्म हो गई। 10उसने अपने तमाम
फ़ौजियों से शहर की फ़सील को भी गिरा दिया।
11फिर नबूज़रादान ने सबको जिलावतन कर
दिया जो यरूशलम और यहूदाह में पीछे रह गए
थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान
ग़द्दारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे।
12लेकिन नबूज़रादान ने सबसे निचले तबक़े के
बाज़ लोगों को मुल्के-यहूदाह में छोड़ दिया ताकि
वह अंगूर के बाग़ों और खेतों को सँभालें।

13बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जा-
कर पीतल के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को
उठानेवाली हथगाड़ियों और समुंदर नामी पीतल
के हौज़ को तोड़ दिया और सारा पीतल उठाकर
बाबल ले गए। 14वह रब के घर की ख़िदमत

[a]यानी 15 जनवरी
[b]यानी 18 जुलाई
[c]यानी 14 अगस्त

सरंजाम देने के लिए दरकार सामान भी ले गए यानी बालटियाँ, बेलचे, बत्ती कतरने के औज़ार, बरतन और पीतल का बाक़ी सारा सामान। 15ख़ालिस सोने और चाँदी के बरतन भी इसमें शामिल थे यानी जलते हुए कोयले के बरतन और छिड़काव के कटोरे। शाही मुहाफ़िज़ों का अफ़सर सारा सामान उठाकर बाबल ले गया। 16जब दोनों सतूनों, समुंदर नामी हौज़ और बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों का पीतल तुड़वाया गया तो वह इतना वज़नी था कि उसे तोला न जा सका। सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब के घर के लिए बनवाई थीं। 17हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट थी। उनके बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट थी, और वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे।

18शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रा-दान ने ज़ैल के क़ैदियों को अलग कर दिया : इमामे-आज़म सिरायाह, उसके बाद आनेवाला इमाम सफ़नियाह, रब के घर के तीन दरबानों, 19शहर के बचे हुओं में से उस अफ़सर को जो शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर था, सिदक़ियाह बादशाह के पाँच मुशीरों, उम्मत की भरती करनेवाले अफ़सर और शहर में मौजूद उसके 60 मर्दों को। 20नबूज़रादान इन सबको अलग करके सूबा हमात के शहर रिबला ले गया जहाँ बाबल का बादशाह था। 21वहाँ नबूकदनज़्ज़र ने उन्हें सज़ाए-मौत दी।

यों यहूदाह के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया गया।

जिदलियाह की हुकूमत

22जिन लोगों को बाबल के बादशाह नबूकदनज़्ज़र ने यहूदाह में पीछे छोड़ दिया था, उन पर उसने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न मुक़र्रर किया। 23जब फ़ौज के बचे हुए अफ़सरों और उनके दस्तों को ख़बर मिली कि जिदलियाह को गवर्नर मुक़र्रर किया गया है तो वह मिसफ़ाह में उसके पास आए। अफ़सरों के नाम इसमाईल बिन नतनियाह, यूहनान बिन क़रीह, सिरायाह बिन तनहूमत नतूफ़ाती और याज़नियाह बिन माकाती थे। उनके फ़ौजी भी साथ आए।

24जिदलियाह ने क़सम खाकर उनसे वादा किया, "बाबल के अफ़सरों से मत डरना! मुल्क में रहकर बाबल के बादशाह की ख़िदमत करें तो आपकी सलामती होगी।"

25लेकिन उस साल के सातवें महीने में इसमाईल बिन नतनियाह बिन इलीसमा ने दस साथियों के साथ मिसफ़ाह आकर धोके से जिदलियाह को क़त्ल किया। इसमाईल शाही नसल का था। जिदलियाह के अलावा उन्होंने उसके साथ रहनेवाले यहूदाह और बाबल के तमाम लोगों को भी क़त्ल किया। 26यह देखकर यहूदाह के तमाम बाशिंदे छोटे से लेकर बड़े तक फ़ौजी अफ़सरों समेत हिजरत करके मिसर चले गए, क्योंकि वह बाबल के इंतक़ाम से डरते थे।

यहूयाकीन को आज़ाद किया जाता है

27यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की जिलावतनी के 37वें साल में अवील-मरूदक बाबल का बादशाह बना। उसी साल के 12वें महीने के 27वें दिन उसने यहूयाकीन को क़ैदख़ाने से आज़ाद कर दिया। 28उसने उससे नरम बातें करके उसे इज़्ज़त की ऐसी कुरसी पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए गए बाक़ी बादशाहों की निसबत ज़्यादा अहम थी। 29यहूयाकीन को क़ैदियों के कपड़े उतारने की इजाज़त मिली, और उसे ज़िंदगी-भर बादशाह की मेज़ पर बाक़ायदगी से शरीक होने का शरफ़ हासिल रहा। 30बादशाह ने मुक़र्रर किया कि यहूयाकीन को उम्र-भर इतना वज़ीफ़ा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा ज़रूरियात पूरी होती रहें।

1 तवारीख़

आदम से इब्राहीम तक का नसबनामा

1 नूह तक आदम की औलाद सेत, अनूस,
2क़ीनान, महललेल, यारिद, 3हनूक,
मतूसिलह, लमक, 4और नूह थी।

नूह के तीन बेटे सिम, हाम और याफ़त थे।

5याफ़त के बेटे जुमर, माजूज, मादी, यावान,
तूबल, मसक और तीरास थे। 6जुमर के बेटे
अश्कनाज़, रीफ़त और तुजरमा थे। 7यावान के
बेटे इलीसा और तरसीस थे। कित्ती और रोदानी
भी उस की औलाद हैं।

8हाम के बेटे कूश, मिसर, फ़ूत और
कनान थे। 9कूश के बेटे सिबा, हवीला,
सबता, रामा और सब्तका थे। रामा के बेटे
सबा और ददान थे। 10नमरूद भी कूश का
बेटा था। वह ज़मीन पर पहला सूरमा था।
11मिसर ज़ैल की क़ौमों का बाप था :
लूदी, अनामी, लिहाबी, नफ़तूही, 12फ़तरूसी,
कसलूही (जिनसे फ़िलिस्ती निकले) और
कफ़तूरी। 13कनान का पहलौठा सैदा था। कनान
इन क़ौमों का बाप भी था : हित्ती 14यबूसी,
अमोरी, जिरजासी, 15हिव्वी, अरक़ी, सीनी,
16अरवादी, समारी और हमाती।

17सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अरफ़क्सद,
लूद और अराम थे। अराम के बेटे ऊज़, हूल,
जतर और मसक थे। 18अरफ़क्सद का बेटा
सिलह और सिलह का बेटा इबर था। 19इबर
के दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम फ़लज
यानी तक़सीम था, क्योंकि उन ऐयाम में दुनिया
तक़सीम हुई। फ़लज के भाई का नाम युक़तान
था। 20युक़तान के बेटे अलमूदाद, सलफ़,
हसरमावत, इराख़, 21हदूराम, ऊज़ाल, दिक़ला,
22ऊबाल, अबीमाएल, सबा, 23ओफ़ीर, हवीला
और यूबाब थे। यह सब उसके बेटे थे।

24सिम का यह नसबनामा है : सिम,
अरफ़क्सद, सिलह, 25इबर, फ़लज, रऊ,
26सरूज, नहूर, तारह 27और अब्राम यानी
इब्राहीम।

इब्राहीम का नसबनामा

28इब्राहीम के बेटे इसहाक़ और इसमाईल थे।
29उनकी दर्जे-ज़ैल औलाद थी :

इसमाईल का पहलौठा नबायोत था।
उसके बाक़ी बेटे क़ीदार, अदबियेल, मिब-
साम, 30मिशमा, दूमा, मस्सा, हदद, तैमा,
31यतूर, नफ़ीस और क़िदमा थे। सब इसमाईल
के हाँ पैदा हुए।

32इब्राहीम की दाश्ता क़तूरा के बेटे ज़िम-
रान, युक़सान, मिदान, मिदियान, इसबाक़ और
सूख़ थे। युक़सान के दो बेटे सबा और ददान
पैदा हुए 33जबकि मिदियान के बेटे ऐफ़ा, इफ़र,
हनूक, अबीदा और इल्दआ थे। सब क़तूरा की
औलाद थे।

34इब्राहीम के बेटे इसहाक़ के दो बेटे पैदा
हुए, एसौ और इसराईल। 35एसौ के बेटे
इलीफ़ज़, रऊएल, यऊस, यालाम और क़ोरह
थे। 36इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर, सफ़ी,
जाताम, क़नज़ और अमालीक़ थे। अमालीक़ की
माँ तिमना थी। 37रऊएल के बेटे नहत, ज़ारह,
सम्मा और मिज़्ज़ा थे।

सईर यानी अदोम का नसबनामा

38सईर के बेटे लोतान, सोबल, सिबोन,
अना, दीसोन, एसर और दीसान थे। 39लो-
तान के दो बेटे होरी और होमाम थे। (तिमना
लोतान की बहन थी।) 40सोबल के बेटे
अलियान, मानहत, ऐबाल, सफ़ी और ओनाम थे।
सिबोन के बेटे ऐयाह और अना थे। 41अना के एक
बेटा दीसोन पैदा हुआ। दीसोन के चार बेटे हमरान,
इशबान, यितरान और किरान थे। 42एसर के तीन
बेटे बिलहान, ज़ावान और अक़ान थे। दीसान के
दो बेटे ऊज़ और अरान थे।

अदोम के बादशाह

43इससे पहले कि इसराईलियों का कोई
बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे
मुल्के-अदोम में हुकूमत करते थे :

बाला बिन बओर जो दिनहाबा शहर का था।

44उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बुसरा
शहर का था।

45उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के
मुल्क का था।

46उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिसने
मुल्के-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी।
वह अवीत शहर का था।

47उस की मौत पर समला जो मसरिक़ा शहर
का था।

48उस की मौत पर साऊल जो दरियाए-फ़ुरात
पर रहोबोत शहर का था।

49उस की मौत पर बाल-हनान बिन अकबोर।

50उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का
था। (बीवी का नाम महेतबेल बिंत मतरिद बिंत
मेज़ाहाब था।) 51फिर हदद मर गया।

अदोमी क़बीलों के सरदार तिमना, अलि-
या, यतेत, 52उहलीबामा, ऐला, फ़ीनोन,
53क़नज़, तेमान, मिबसार, 54मज्दियेल और
इराम थे। यही अदोम के सरदार थे।

याक़ूब यानी इसराईल के बेटे

2 इसराईल के बारह बेटे रूबिन,
शमाऊन, लावी, यहूदाह, इशकार,
ज़बूलून, 2दान, यूसुफ़, बिनयमीन, नफ़-
ताली, जद और आशर थे।

यहूदाह का नसबनामा

3यहूदाह की शादी कनानी औरत से हुई जो
सुअ की बेटी थी। उनके तीन बेटे एर, ओनान
और सेला पैदा हुए। यहूदाह का पहलौठा एर रब
के नज़दीक शरीर था, इसलिए उसने उसे मरने
दिया। 4यहूदाह के मज़ीद दो बेटे उस की बहू तमर
से पैदा हुए। उनके नाम फ़ारस और ज़ारह थे। यों
यहूदाह के कुल पाँच बेटे थे।

5फ़ारस के दो बेटे हसरोन और हमूल थे।

6ज़ारह के पाँच बेटे ज़िमरी, ऐतान, हैमान,
कलकूल और दारा थे। 7करमी बिन ज़िमरी का
बेटा वही अकर यानी अकन था जिसने उस लूटे
हुए माल में से कुछ लिया जो रब के लिए मख़सूस
था। 8ऐतान के बेटे का नाम अज़रियाह था।

9हसरोन के तीन बेटे यरहमियेल, राम और
कलूबी यानी कालिब थे।

राम की औलाद

10राम के हाँ अम्मीनदाब और अम्मीनदाब
के हाँ यहूदाह के क़बीले का सरदार नहसोन
पैदा हुआ। 11नहसोन सलमोन का और सलमोन
बोअज़ का बाप था। 12बोअज़ ओबेद का और
ओबेद यस्सी का बाप था। 13बड़े से लेकर छोटे
तक यस्सी के बेटे इलियाब, अबीनदाब, सिमआ,

14नतनियेल, रद्दी, 15ओज़म और दाऊद थे।
कुल सात भाई थे। 16उनकी दो बहनें ज़रूयाह
और अबीजेल थीं। ज़रूयाह के तीन बेटे अबीशै,
योआब और असाहेल थे। 17अबीजेल के एक
बेटा अमासा पैदा हुआ। बाप यतर इसमाईली था।

कालिब की औलाद

18कालिब बिन हसरोन की बीवी अज़ूबा के
हाँ बेटी बनाम यरीओत पैदा हुई। यरीओत के
बेटे यशर, सोबाब और अरदून थे। 19अज़ूबा के
वफ़ात पाने पर कालिब ने इफ़रात से शादी की।
उनके बेटा हूर पैदा हुआ। 20हूर ऊरी का और ऊरी
बज़लियेल का बाप था।

2160 साल की उम्र में कालिब के बाप हसरोन
ने दुबारा शादी की। बीवी जिलियाद के बाप
मकीर की बेटी थी। इस रिश्ते से बेटा सजूब
पैदा हुआ। 22-23सजूब का बेटा वह याईर था
जिसकी जिलियाद के इलाक़े में 23 बस्तियाँ
बनाम 'याईर की बस्तियाँ' थीं। लेकिन बाद में
जसूर और शाम के फ़ौजियों ने उन पर क़ब्ज़ा
कर लिया। उस वक़्त उन्हें क़नात भी गिर्दो-नवाह
के इलाक़े समेत हासिल हुआ। उन दिनों में कुल
60 आबादियाँ उनके हाथ में आ गईं। इनके तमाम
बाशिंदे जिलियाद के बाप मकीर की औलाद थे।
24हसरोन जिसकी बीवी अबियाह थी फ़ौत हुआ
तो कालिब और इफ़राता के हाँ बेटा अशहूर पैदा
हुआ। बाद में अशहूर तक़ुअ शहर का बानी बन
गया।

यरहमियेल की औलाद

25हसरोन के पहलौठे यरहमियेल के बेटे बड़े
से लेकर छोटे तक राम, बूना, ओरन, ओज़म
और अख़ियाह थे। 26यरहमियेल की दूसरी बीवी
अतारा का एक बेटा ओनाम था।

27यरहमियेल के पहलौठे राम के बेटे माज़,
यमीन और एक़र थे। 28ओनाम के दो बेटे
सम्मी और यदा थे। सम्मी के दो बेटे नदब और
अबीसूर थे। 29अबीसूर की बीवी अबीख़ैल के
दो बेटे अख़बान और मोलिद पैदा हुए। 30नदब
के दो बेटे सिलद और अफ़्फ़ायम थे। सिलद
बेऔलाद मर गया, 31लेकिन अफ़्फ़ायम के हाँ
बेटा यिसई पैदा हुआ। यिसई सीसान का और
सीसान अख़ली का बाप था। 32सम्मी के भाई
यदा के दो बेटे यतर और यूनतन थे। यतर
बेऔलाद मर गया, 33लेकिन यूनतन के दो बेटे
फ़लत और ज़ाज़ा पैदा हुए। सब यरहमियेल की
औलाद थे। 34-35सीसान के बेटे नहीं थे बल्कि
बेटियाँ। एक बेटी की शादी उसने अपने मिसरी
ग़ुलाम यरख़ा से करवाई। उनके बेटा अत्ती पैदा
हुआ। 36अत्ती के हाँ नातन पैदा हुआ और नातन
के ज़बद, 37ज़बद के इफ़लाल, इफ़लाल के
ओबेद, 38ओबेद के याहू, याहू के अज़रियाह,
39अज़रियाह के ख़लिस, ख़लिस के इलियासा,
40इलियासा के सिसमी, सिसमी के सल्लूम,
41सल्लूम के यक़मियाह और यक़मियाह के
इलीसमा।

कालिब की औलाद का एक और नसबनामा

42ज़ैल में यरहमियेल के भाई कालिब की
औलाद है : उसका पहलौठा मेसा ज़ीफ़ का
बाप था और दूसरा बेटा मरेसा हबरून का बाप।
43हबरून के चार बेटे क़ोरह, तफ़्फ़ुअह, रक़म
और समा थे। 44समा के बेटे रख़म के हाँ
युरक़ियाम पैदा हुआ। रक़म सम्मी का बाप था,
45सम्मी मऊन का और मऊन बैत-सूर का।

46कालिब की दाश्ता ऐफ़ा के बेटे हारान,
मौज़ा और जाज़िज़ पैदा हुए। हारान के बेटे का
नाम जाज़िज़ था। 47यहदी के बेटे रजम, यूताम,
जेसान, फ़लत, ऐफ़ा और शाफ़ थे।

48कालिब की दूसरी दाश्ता माका के बेटे
शिबर, तिर्हना, 49शाफ़ (मदमन्ना का बाप) और
सिवा (मकबेना और जिबिया का बाप) पैदा हुए।
कालिब की एक बेटी भी थी जिसका नाम अकसा
था। 50सब कालिब की औलाद थे।

इफ़राता के पहलौठे हूर के बेटे क़िरियत-यारीम
का बाप सोबल, 51बैत-लहम का बाप सलमा

और बैत-जादिर का बाप ख़ारिफ़ थे। 52क़िरियत-
यारीम के बाप सोबल से यह घराने निकले :
हराई, मानहत का आधा हिस्सा 53और क़िरियत-
यारीम के ख़ानदान उत्तरी, फ़ूती, सुमाती और
मिसराई। इनसे सुरआती और इस्ताली निकले हैं।
54सलमा से ज़ैल के घराने निकले : बैत-
लहम के बाशिंदे, नतूफ़ाती, अतरात-बैत-योआब,
मानहत का आधा हिस्सा, सुरई 55और याबीज़
में आबाद मुन्शियों के ख़ानदान तिरआती,
सिमआती और सूकाती। यह सब क़ीनी थे जो
रैकाबियों के बाप हम्मत से निकले थे।

दाऊद बादशाह की औलाद

3 हबरून में दाऊद बादशाह के दर्जे-ज़ैल बेटे
पैदा हुए :
पहलौठा अमनोन था जिसकी माँ अख़ी-
नुअम यज्रएली थी। दूसरा दानियाल था जिसकी
माँ अबीजेल करमिली थी। 2तीसरा अबीसलूम
था। उस की माँ माका थी जो जसूर के बादशाह
तलमी की बेटी थी। चौथा अदूनियाह था जिसकी
माँ हज्जीत थी। 3पाँचवाँ सफ़तियाह था जिसकी
माँ अबीताल थी। छटा इतरियाम था जिसकी
माँ इजला थी। 4दाऊद के यह छः बेटे उन साढ़े
सात सालों के दौरान पैदा हुए जब हबरून उसका
दारुल-हुकूमत था।
इसके बाद वह यरूशलम में मुंतक़िल हुआ और
वहाँ मज़ीद 33 साल हुकूमत करता रहा। 5उस
दौरान उस की बीवी बत-सबा बिंत अम्मियेल के
चार बेटे सिमआ, सोबाब, नातन और सुलेमान
पैदा हुए। 6मज़ीद बेटे भी पैदा हुए, इबहार,
इलीसुअ, इलीफ़लत, 7नौजा, नफ़ज, यफ़ीअ,
8इलीसमा, इलियदा और इलीफ़लत। कुल नौ
बेटे थे। 9तमर उनकी बहन थी। इनके अलावा
दाऊद की दाश्ताओं के बेटे भी थे।
10सुलेमान के हाँ रहुबियाम पैदा हुआ, रहु-
बियाम के अबियाह, अबियाह के आसा,
आसा के यहूसफ़त, 11यहूसफ़त के यहूराम,
यहूराम के अख़ज़ियाह, अख़ज़ियाह के
युआस, 12युआस के अमसियाह, अमसि-
याह के अज़रियाह यानी उज़्ज़ियाह, उज़्ज़ि-
याह के यूताम, 13यूताम के आख़ज़, आख़ज़ के
हिज़क़ियाह, हिज़क़ियाह के मनस्सी, 14मनस्सी
के अमून और अमून के यूसियाह।
15यूसियाह के चार बेटे बड़े से लेकर छोटे तक
यूहनान, यहूयक़ीम, सिदक़ियाह और सल्लूम थे।
16यहूयक़ीम यहूयाकीन[a] का और यहू-
याकीन सिदक़ियाह का बाप था। 17यहू-
याकीन को बाबल में जिलावतन कर दिया
गया। उसके सात बेटे सियालतियेल, 18मल-
किराम, फ़िदायाह, शेनाज़्ज़र, यक़मियाह, हूसमा
और नदबियाह थे। 19फ़िदायाह के दो बेटे
ज़रुब्बाबल और सिमई थे।
ज़रुब्बाबल के दो बेटे मसुल्लाम और हननियाह
थे। एक बेटी बनाम सलूमीत भी पैदा हुई।
20बाक़ी पाँच बेटों के नाम हसूबा, ओहल,
बरकियाह, हसदियाह और यूसब-हसद थे।
21हननियाह के दो बेटे फ़लतियाह और
यसायाह थे। यसायाह रिफ़ायाह का बाप था,
रिफ़ायाह अरनान का, अरनान अबदियाह का
और अबदियाह सकनियाह का।
22सकनियाह के बेटे का नाम समायाह
था। समायाह के छः बेटे हत्तूश, इजाल,
बरीह, नअरियाह और साफ़त थे। 23नअरि-
याह के तीन बेटे इलियूऐनी, हिज़क़ियाह और
अज़रीक़ाम पैदा हुए।
24इलियूऐनी के सात बेटे हूदावियाह,
इलियासिब, फ़िलायाह, अक़्क़ूब, यूहनान,
दिलायाह और अनानी थे।

यहूदाह की औलाद

4 फ़ारस, हसरोन, करमी, हूर और सोबल
यहूदाह की औलाद थे।

[a]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

2रियायाह बिन सोबल के हाँ यहत, यहत के
अख़ूमी और अख़ूमी के लाहद पैदा हुआ। यह
सुरआती ख़ानदानों के बापदादा थे।
3ऐताम के तीन बेटे यज्रएल, इसमा और
इदबास थे। उनकी बहन का नाम हज़्ज़लिलफ़ोनी
था।
4इफ़राता का पहलौठा हूर बैत-लहम का बाप
था। उसके दो बेटे जदूर का बाप फ़नुएल और हूसा
का बाप अज़र थे।
5तक़ुअ के बाप अशहूर की दो बीवियाँ हीलाह
और नारा थीं।
6नारा के बेटे अख़ूज़्ज़ाम, हिफ़र, तेमनी और
हख़सतरी थे।
7हीलाह के बेटे ज़रत, सुहर और इतनान थे।
8कूज़ के बेटे अनूब और हज़्ज़ोबीबा थे। उससे
अख़रख़ैल बिन हरूम के ख़ानदान भी निकले।
9याबीज़ की अपने भाइयों की निसबत ज़्यादा
इज़्ज़त थी। उस की माँ ने उसका नाम याबीज़
यानी 'वह तकलीफ़ देता है' रखा, क्योंकि उसने
कहा, "पैदा होते वक़्त मुझे बड़ी तकलीफ़ हुई।"
10याबीज़ ने बुलंद आवाज़ से इसराईल के ख़ुदा
से इलतमास की, "काश तू मुझे बरकत देकर
मेरा इलाक़ा वसी कर दे। तेरा हाथ मेरे साथ हो,
और मुझे नुक़सान से बचा ताकि मुझे तकलीफ़
न पहुँचे।" और अल्लाह ने उस की सुनी।
11सूख़ा के भाई कलूब महीर का और महीर
इस्तून का बाप था।
12इस्तून के बेटे बैत-रफ़ा, फ़ासह और
तख़िन्ना थे।
तख़िन्ना नाहस शहर का बाप था जिसकी
औलाद रैका में आबाद है। 13क़नज़ के बेटे
ग़ुतनियेल और सिरायाह थे। ग़ुतनियेल के बेटों
के नाम हतत और मऊनाती थे।
14मऊनाती उफ़रा का बाप था।
सिरायाह योआब का बाप था जो 'वादीए-
कारीगर' का बानी था। आबादी का यह नाम
इसलिए पड़ गया कि उसके बाशिंदे कारीगर थे।
15कालिब बिन यफ़ुन्ना के बेटे ईरू, ऐला और
नाम थे। ऐला का बेटा क़नज़ था।
16यहल्ललेल के चार बेटे ज़ीफ़, ज़ीफ़ा,
तीरियाह और असरेल थे।
17-18अज़रा के चार बेटे यतर, मरद, इफ़र
और यलून थे। मरद की शादी मिसरी बादशाह
फ़िरौन की बेटी बितियाह से हुई। उसके तीन बच्चे
मरियम, सम्मी और इसबाह पैदा हुए। इसबाह
इस्तिमुअ का बाप था। मरद की दूसरी बीवी
यहूदाह की थी, और उसके तीन बेटे जदूर का
बाप यरद, सोका का बाप हिबर और ज़नूह का
बाप यक़ूतियेल थे।
19हूदियाह की बीवी नहम की बहन थी। उसका
एक बेटा क़ईला जरमी का बाप और दूसरा
इस्तिमुअ माकाती था।
20सीमून के बेटे अमनोन, रिन्ना, बिन-हनान
और तीलोन थे। यिसई के बेटे ज़ोहित और बिन-
ज़ोहित थे।
21सेला बिन यहूदाह की दर्जे-ज़ैल औलाद
थी : लेका का बाप एर, मरेसा का बाप
लादा, बैत-अशबीअ में आबाद बारीक कतान
का काम करनेवालों के ख़ानदान, 22योक़ीम,
कोज़ीबा के बाशिंदे, और युआस और साराफ़ जो
क़दीम रिवायत के मुताबिक़ मोआब पर हुक्मरानी
करते थे लेकिन बाद में बैत-लहम वापस आए।
23वह नताईम और जदीरा में रहकर कुम्हार और
बादशाह के मुलाज़िम थे।

शमाऊन की औलाद

24शमाऊन के बेटे यमुएल, यमीन, यरीब,
ज़ारह और साऊल थे। 25साऊल के हाँ सल्लूम
पैदा हुआ, सल्लूम के मिबसाम, मिबसाम के
मिशमा, 26मिशमा के हम्मुएल, हम्मुएल के
ज़क्कूर और ज़क्कूर के सिमई। 27सिमई के 16
बेटे और छः बेटियाँ थीं, लेकिन उसके भाइयों के
कम बच्चे पैदा हुए। नतीजे में शमाऊन का क़बीला
यहूदाह के क़बीले की निसबत छोटा रहा।

28ज़ैल के शहर उनके गिर्दो-नवाह की
आबादियों समेत शमाऊन का क़बायली
इलाक़ा था : बैर-सबा, मोलादा, हसार-
सुआल, 29बिलहाह, अज़म, तोलद, 30बतु-
एल, हुरमा, सिक़लाज, 31बैत-मर्कबोत, हसार-
सूसीम, बैत-बिरी और शारैम। दाऊद की हुकूमत
तक यह क़बीला इन जगहों में आबाद था, 32नीज़
ऐताम, ऐन, रिम्मोन, तोकन और असन में भी।
33इन पाँच आबादियों के गिर्दो-नवाह के देहात
भी बाल तक शामिल थे। हर मक़ाम के अपने
अपने तहरीरी नसबनामे थे।

34शमाऊन के ख़ानदानों के दर्जे-ज़ैल सरपरस्त
थे : मिसोबाब, यमलीक, यूशा बिन अमसियाह,
35योएल, याहू बिन यूसिबियाह बिन सिरायाह
बिन असियेल, 36इलियूऐनी, याक़ूबा, यशूख़ाया,
असायाह, अदियेल, यसीमियेल, बिनायाह,
37ज़ीज़ा बिन शिफ़ई बिन अल्लोन बिन यदायाह
बिन सिमरी बिन समायाह।

38दर्जे-बाला आदमी अपने ख़ानदानों के
सरपरस्त थे। उनके ख़ानदान बहुत बढ़ गए,
39इसलिए वह अपने रेवड़ों को चराने की जगहें
ढूँडते ढूँडते वादी के मशरिक़ में जदूर तक फैल
गए। 40वहाँ उन्हें अच्छी और शादाब चरागाहें मिल
गईं। इलाक़ा खुला, पुरसुकून और आरामदेह भी
था। पहले हाम की कुछ औलाद वहाँ आबाद
थी, 41लेकिन हिज़क़ियाह बादशाह के ऐयाम
में शमाऊन के मज़कूरा सरपरस्तों ने वहाँ के
रहनेवाले हामियों और मऊनियों पर हमला किया
और उनके तंबुओं को तबाह करके सबको मार
दिया। एक भी न बचा। फिर वह ख़ुद वहाँ आबाद
हुए। अब उनके रेवड़ों के लिए काफ़ी चरागाहें थीं।
आज तक वह इसी इलाक़े में रहते हैं।

42एक दिन शमाऊन के 500 आदमी यिसई के
चार बेटों फ़लतियाह, नअरियाह, रिफ़ायाह और
उज़्ज़ियेल की राहनुमाई में सईर के पहाड़ी इलाक़े
में घुस गए। 43वहाँ उन्होंने उन अमालीक़ियों को
हलाक कर दिया जिन्होंने बचकर वहाँ पनाह ली
थी। फिर वह ख़ुद वहाँ रहने लगे। आज तक वह
वहीं आबाद हैं।

रूबिन की औलाद

5 इसराईल का पहलौठा रूबिन था। लेकिन
चूँकि उसने अपने बाप की दाश्ता से
हमबिसतर होने से बाप की बेहुरमती की थी
इसलिए पहलौठे का मौरूसी हक़ उसके भाई
यूसुफ़ के बेटों को दिया गया। इसी वजह से
नसबनामे में रूबिन को पहलौठे की हैसियत से
बयान नहीं किया गया। 2यहूदाह दीगर भाइयों की
निसबत ज़्यादा ताक़तवर था, और उससे क़ौम का
बादशाह निकला। तो भी यूसुफ़ को पहलौठे का
मौरूसी हक़ हासिल था।

3इसराईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक,
फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे।

4योएल के हाँ समायाह पैदा हुआ, समा-
याह के जूज, जूज के सिमई, 5सिमई के मीकाह,
मीकाह के रियायाह, रियायाह के बाल और 6बाल
के बईरा। बईरा को असूर के बादशाह तिग्लत-
पिलेसर ने जिलावतन कर दिया। बईरा रूबिन
के क़बीले का सरपरस्त था। 7उनके नसबनामे
में उसके भाई उनके ख़ानदानों के मुताबिक़
दर्ज किए गए हैं, सरे-फ़हरिस्त यइयेल, फिर
ज़करियाह 8और बाला बिन अज़ज़ बिन समा बिन
योएल।

रूबिन का क़बीला अरोईर से लेकर नबू और
बाल-मऊन तक के इलाक़े में आबाद हुआ।
9मशरिक़ की तरफ़ वह उस रेगिस्तान के किनारे
तक फैल गए जो दरियाए-फ़ुरात से शुरू होता है।
क्योंकि जिलियाद में उनके रेवड़ों की तादाद बहुत
बढ़ गई थी।

10साऊल के ऐयाम में उन्होंने हाजिरियों से
लड़कर उन्हें हलाक कर दिया और ख़ुद उनकी
आबादियों में रहने लगे। यों जिलियाद के मशरिक़
का पूरा इलाक़ा रूबिन के क़बीले की मिलकियत
में आ गया।

जद की औलाद

11जद का क़बीला रूबिन के क़बीले के
पड़ोसी मुल्क बसन में सलका तक आबाद था।
12उसका सरबराह योएल था, फिर साफ़म,
यानी और साफ़त। वह सब बसन में आबाद थे।
13उनके भाई उनके ख़ानदानों समेत मीकाएल,
मसुल्लाम, सबा, यूरी, याकान, ज़ीअ और इबर
थे। 14यह सात आदमी अबीख़ैल बिन हूरी बिन
यारूह बिन जिलियाद बिन मीकाएल बिन यसीसी
बिन यहदू बिन बूज़ के बेटे थे। 15अख़ी बिन
अबदियेल बिन जूनी इन ख़ानदानों का सरपरस्त
था।

16जद का क़बीला जिलियाद और बसन के
इलाक़ों की आबादियों में आबाद था। शारून से
लेकर सरहद तक की पूरी चरागाहें भी उनके
क़ब्ज़े में थीं। 17यह तमाम ख़ानदान यहूदाह
के बादशाह यूताम और इसराईल के बादशाह
यरुबियाम के ज़माने में नसबनामे में दर्ज किए
गए।

दरियाए-यरदन के मशरिक़ में क़बीलों की जंग

18रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले
के 44,760 फ़ौजी थे। सब लड़ने के क़ाबिल
और तजरबाकार आदमी थे, ऐसे लोग जो तीर
चला सकते और ढाल और तलवार से लैस थे।
19उन्होंने हाजिरियों, यतूर, नफ़ीस और नोदब
से जंग की। 20लड़ते वक़्त उन्होंने अल्लाह से
मदद के लिए फ़रियाद की, तो उसने उनकी
सुनकर हाजिरियों को उनके इत्तहादियों समेत
उनके हवाले कर दिया। 21उन्होंने उनसे बहुत
कुछ लूट लिया : 50,000 ऊँट, 2,50,000
भेड़-बकरियाँ और 2,000 गधे। साथ साथ
उन्होंने 1,00,000 लोगों को क़ैद भी कर लिया।
22मैदाने-जंग में बेशुमार दुश्मन मारे गए, क्योंकि
जंग अल्लाह की थी। जब तक इसराईलियों को
असूर में जिलावतन न कर दिया गया वह इस
इलाक़े में आबाद रहे।

मनस्सी का आधा क़बीला

23मनस्सी का आधा क़बीला बहुत बड़ा था।
उसके लोग बसन से लेकर बाल-हरमून और
सनीर यानी हरमून के पहाड़ी सिलसिले तक फैल
गए। 24उनके ख़ानदानी सरपरस्त इफ़र, यिसई,
इलियेल, अज़रियेल, यरमियाह, हूदावियाह और
यहदियेल थे। सब माहिर फ़ौजी, मशहूर आदमी
और ख़ानदानी सरबराह थे।

मशरिक़ी क़बीलों की जिलावतनी

25लेकिन यह मशरिक़ी क़बीले अपने बापदादा
के ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए। वह ज़िना करके मुल्क
के उन अक़वाम के देवताओं के पीछे लग गए
जिनको अल्लाह ने उनके आगे से मिटा दिया
था। 26यह देखकर इसराईल के ख़ुदा ने असूर
के बादशाह तिग्लत-पिलेसर को उनके ख़िलाफ़
बरपा किया जिसने रूबिन, जद और मनस्सी
के आधे क़बीले को जिलावतन कर दिया। वह
उन्हें ख़लह, दरियाए-ख़ाबूर, हारा और दरियाए-
जौज़ान को ले गया जहाँ वह आज तक आबाद
हैं।

इमामे-आज़म की नसल (लावी का क़बीला)

6 लावी के बेटे जैरसोन, क़िहात और मिरारी
थे। 2क़िहात के बेटे अमराम, इज़हार,
हबरून और उज़्ज़ियेल थे।

3अमराम के बेटे हारून और मूसा थे। बेटी का
नाम मरियम था। हारून के बेटे नदब, अबीहू,
इलियज़र और इतमर थे।

4इलियज़र के हाँ फ़ीनहास पैदा हुआ,
फ़ीनहास के अबीसुअ, 5अबीसुअ के बुक़्क़ी,
बुक़्क़ी के उज़्ज़ी, 6उज़्ज़ी के ज़रख़ियाह,
ज़रख़ियाह के मिरायोत, 7मिरायोत के
अमरियाह, अमरियाह के अख़ीतूब, 8अख़ी-
तूब के सदोक़, सदोक़ के अख़ीमाज़, 9अख़ीमाज़
के अज़रियाह, अज़रियाह के यूहनान 10और
यूहनान के अज़रियाह। यही अज़रियाह रब के उस
घर का पहला इमामे-आज़म था जो सुलेमान ने

यरूशलम में बनवाया था। 11उसके हाँ अमरियाह
पैदा हुआ, अमरियाह के अख़ीतूब, 12अख़ीतूब
के सदोक़, सदोक़ के सल्लूम, 13सल्लूम
के ख़िलक़ियाह, ख़िलक़ियाह के अज़रियाह,
14अज़रियाह के सिरायाह और सिरायाह के
यहूसदक़। 15जब रब ने नबूकदनज़्ज़र के हाथ
से यरूशलम और पूरे यहूदाह के बाशिंदों को
जिलावतन कर दिया तो यहूसदक़ भी उनमें
शामिल था।

लावी की औलाद

16लावी के तीन बेटे जैरसोम, क़िहात और
मिरारी थे। 17जैरसोम के दो बेटे लिबनी और
सिमई थे। 18क़िहात के चार बेटे अमराम,
इज़्हार, हबरून और उज़्ज़ियेल थे। 19मिरारी के
दो बेटे महली और मूशी थे।

ज़ैल में लावी के ख़ानदानों की फ़हरिस्त उनके बानियों के मुताबिक़ दर्ज है।

20जैरसोम के हाँ लिबनी पैदा हुआ, लिबनी
के यहत, यहत के ज़िम्मा, 21ज़िम्मा के युआख़,
युआख़ के इद्दू, इद्दू के ज़ारह और ज़ारह के यतरी।
22क़िहात के हाँ अम्मीनदाब पैदा हुआ,
अम्मीनदाब के क़ोरह, क़ोरह के अस्सीर,
23अस्सीर के इलक़ाना, इलक़ाना के अबि-
यासफ़, अबियासफ़ के अस्सीर, 24अस्सीर के
तहत, तहत के ऊरियेल, ऊरियेल के उज़्ज़ियाह
और उज़्ज़ियाह के साऊल। 25इलक़ाना के
बेटे अमासी, अख़ीमोत 26और इलक़ाना थे।
इलक़ाना के हाँ ज़ूफ़ी पैदा हुआ, ज़ूफ़ी के
नहत, 27नहत के इलियाब, इलियाब के यरोहाम,
यरोहाम के इलक़ाना और इलक़ाना के समुएल।
28समुएल का पहला बेटा योएल और दूसरा
अबियाह था।
29मिरारी के हाँ महली पैदा हुआ, महली के
लिबनी, लिबनी के सिमई, सिमई के उज़्ज़ा,
30उज़्ज़ा के सिमआ, सिमआ के हज्जियाह और
हजयाह के असायाह।

लावी की ज़िम्मेदारियाँ

31जब अहद का संदूक़ यरूशलम में लाया गया
ताकि आइंदा वहाँ रहे तो दाऊद बादशाह ने कुछ
लावियों को रब के घर में गीत गाने की ज़िम्मेदारी
दी। 32इससे पहले कि सुलेमान ने रब का घर
बनवाया यह लोग अपनी ख़िदमत मुलाक़ात के
ख़ैमे के सामने सरंजाम देते थे। वह सब कुछ
मुक़र्ररा हिदायात के मुताबिक़ अदा करते थे।
33ज़ैल में उनके नाम उनके बेटों के नामों समेत
दर्ज हैं।

क़िहात के ख़ानदान का हैमान पहला गुलूकार
था। उसका पूरा नाम यह था : हैमान बिन योएल
बिन समुएल 34बिन इलक़ाना बिन यरोहाम बिन
इलियेल बिन तूख़ 35बिन सूफ़ बिन इलक़ाना बिन
महत बिन अमासी 36बिन इलक़ाना बिन योएल
बिन अज़रियाह बिन सफ़नियाह 37बिन तहत
बिन अस्सीर बिन अबियासफ़ बिन क़ोरह 38बिन
इज़्हार बिन क़िहात बिन लावी बिन इसराईल।
39हैमान के दहने हाथ आसफ़ खड़ा होता था।
उसका पूरा नाम यह था : आसफ़ बिन बरकियाह
बिन सिमआ 40बिन मीकाएल बिन बासियाह
बिन मलकियाह 41बिन अत्नी बिन ज़ारह बिन
अदायाह 42बिन ऐतान बिन ज़िम्मा बिन सिमई
43बिन यहत बिन जैरसोम बिन लावी।
44हैमान के बाएँ हाथ ऐतान खड़ा होता था।
वह मिरारी के ख़ानदान का फ़रद था। उसका पूरा
नाम यह था : ऐतान बिन क़ीसी बिन अबदी बिन
मल्लूक 45बिन हसबियाह बिन अमसियाह बिन
ख़िलक़ियाह 46बिन अमसी बिन बानी बिन समर
47बिन महली बिन मूशी बिन मिरारी बिन लावी।
48दूसरे लावियों को अल्लाह की सुकू-
नतगाह में बाक़ीमाँदा ज़िम्मेदारियाँ दी गई थीं।
49लेकिन सिर्फ़ हारून और उस की औलाद
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करते और
बख़ूर की क़ुरबानगाह पर बख़ूर जलाते थे।
वही मुक़द्दसतरीन कमरे में हर ख़िदमत सरंजाम
देते थे। इसराईल का कफ़्फ़ारा देना उन्हीं की

ज़िम्मेदारी थी। वह सब कुछ ऐन उन हिदायात के
मुताबिक़ अदा करते थे जो अल्लाह के ख़ादिम
मूसा ने उन्हें दी थीं।
50हारून के हाँ इलियज़र पैदा हुआ, इलि-
यज़र के फ़ीनहास, फ़ीनहास के अबीसुअ,
51अबीसुअ के बुक़्क़ी, बुक़्क़ी के उज़्ज़ी,
उज़्ज़ी के ज़रख़ियाह, 52ज़रख़ियाह के मिरा-
योत, मिरायोत के अमरियाह, अमरियाह के
अख़ीतूब, 53अख़ीतूब के सदोक़, सदोक़ के
अख़ीमाज़।

लावियों की आबादियाँ

54ज़ैल में वह आबादियाँ और चरागाहें दर्ज हैं
जो लावियों को क़ुरा डालकर दी गईं।
क़ुरा डालते वक़्त पहले हारून के बेटे क़िहात
की औलाद को जगहें मिल गईं। 55उसे यहूदाह
के क़बीले से हबरून शहर उस की चरागाहों
समेत मिल गया। 56लेकिन गिर्दो-नवाह के खेत
और देहात कालिब बिन यफ़ुन्ना को दिए गए।
57हबरून उन शहरों में शामिल था जिनमें हर
वह पनाह ले सकता था जिसके हाथों ग़ैरइरादी
तौर पर कोई हलाक हुआ हो। हबरून के अलावा
हारून की औलाद को ज़ैल के मक़ाम उनकी
चरागाहों समेत दिए गए : लिबना, यत्तीर,
इस्तिमुअ, 58हौलून, दबीर, 59असन, और बैत-
शम्स। 60बिनयमीन के क़बीले से उन्हें जिबऊन,
जिबा, अलमत और अनतोत उनकी चरागाहों
समेत दिए गए। इस तरह हारून के ख़ानदान को
13 शहर मिल गए।
61क़िहात के बाक़ी ख़ानदानों को मनस्सी के
मग़रिबी हिस्से के दस शहर मिल गए।
62जैरसोम की औलाद को इशकार, आ-
शर, नफ़ताली और मनस्सी के क़बीलों के 13
शहर दिए गए। यह मनस्सी का वह इलाक़ा था
जो दरियाए-यरदन के मशरिक़ में मुल्के-बसन में
था।
63मिरारी की औलाद को रूबिन, जद और
ज़बूलून के क़बीलों के 12 शहर मिल गए।
64-65यों इसराईलियों ने क़ुरा डालकर ला-
वियों को मज़कूरा शहर दे दिए। सब यहूदाह,
शमाऊन और बिनयमीन के क़बायली इला-
क़ों में थे।
66क़िहात के चंद एक ख़ानदानों को इफ़राईम
के क़बीले से शहर उनकी चरागाहों समेत मिल
गए। 67इनमें इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े का
शहर सिकम शामिल था जिसमें हर वह पनाह ले
सकता था जिससे कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक
हुआ होता था, फिर जज़र, 68युक़मियाम, बैत-
हौरून, 69ऐयालोन और जात-रिम्मोन। 70क़िहात
के बाक़ी कुंबों को मनस्सी के मग़रिबी हिस्से के
दो शहर आनेर और बिलाम उनकी चरागाहों समेत
मिल गए।
71जैरसोम की औलाद को ज़ैल के शहर भी
उनकी चरागाहों समेत मिल गए : मनस्सी के
मशरिक़ी हिस्से से जौलान जो बसन में है और
अस्तारात। 72इशकार के क़बीले से क़ादिस,
दाबरत, 73रामात और आनीम। 74आशर के
क़बीले से मिसाल, अब्दोन, 75हुक़ूक़ और रहोब।
76और नफ़ताली के क़बीले से गलील का
क़ादिस, हम्मून और क़िरियतायम।
77मिरारी के बाक़ी ख़ानदानों को ज़ैल के शहर
उनकी चरागाहों समेत मिल गए : ज़बूलून के
क़बीले से रिम्मोन और तबूर। 78-79रूबिन के
क़बीले से रेगिस्तान का बसर, यहज़, क़दीमात
और मिफ़ात (यह शहर दरियाए-यरदन के
मशरिक़ में यरीहू के मुक़ाबिल वाक़े हैं)। 80जद
के क़बीले से जिलियाद का रामात, महनायम,
81हसबोन और याज़ेर।

इशकार की औलाद

7 इशकार के चार बेटे तोला, फ़ुव्वा, यसूब
और सिमरोन थे।
2तोला के पाँच बेटे उज़्ज़ी, रिफ़ायाह, यरियेल,
यहमी, इबसाम और समुएल थे। सब अपने
ख़ानदानों के सरपरस्त थे। नसबनामे के मुताबिक़

दाऊद के ज़माने में तोला के ख़ानदान के
22,600 अफ़राद जंग करने के क़ाबिल थे।
3उज़्ज़ी का बेटा इज़्रख़ियाह था जो अपने
चार भाइयों मीकाएल, अबदियाह, योएल और
यिस्सियाह के साथ ख़ानदानी सरपरस्त था।
4नसबनामे के मुताबिक़ उनके 36,000 अफ़राद
जंग करने के क़ाबिल थे। इनकी तादाद इसलिए
ज़्यादा थी कि उज़्ज़ी की औलाद के बहुत बाल-
बच्चे थे। 5इशकार के क़बीले के ख़ानदानों के
कुल 87,000 आदमी जंग करने के क़ाबिल थे।
सब नसबनामे में दर्ज थे।

बिनयमीन और नफ़ताली की औलाद

6बिनयमीन के तीन बेटे बाला, बकर और
यदियएल थे। 7बाला के पाँच बेटे इसबून, उज़्ज़ी,
उज़्ज़ियेल, यरीमोत और ईरी थे। सब अपने
ख़ानदानों के सरपरस्त थे। उनके नसबनामे के
मुताबिक़ उनके 22,034 मर्द जंग करने के
क़ाबिल थे।
8बकर के 9 बेटे ज़मीरा, युआस, इलि-
यज़र, इलियूऐनी, उमरी, यरीमोत, अबियाह,
अनतोत और अलमत थे। 9उनके नसबनामे में
उनके सरपरस्त और 20,200 जंग करने के
क़ाबिल मर्द बयान किए गए हैं।
10बिलहान बिन यदियएल के सात बेटे यऊस,
बिनयमीन, अहूद, कनाना, ज़ैतान, तरसीस
और अख़ी-सहर थे। 11सब अपने ख़ानदानों के
सरपरस्त थे। उनके 17,200 जंग करने के
क़ाबिल मर्द थे।
12सुफ़्फ़ी और हुफ़्फ़ी ईर की और हुशी अख़ीर
की औलाद थे।
13नफ़ताली के चार बेटे यहसियेल, जूनी,
यिसर और सल्लूम थे। सब बिलहाह की औलाद
थे।

मनस्सी की औलाद

14मनस्सी की अरामी दाश्ता के दो बेटे
असरियेल और जिलियाद का बाप मकीर
पैदा हुए। 15मकीर ने हुफ़्फ़ियों और सुफ़्फ़ि-
यों की एक औरत से शादी की। बहन का
नाम माका था। मकीर के दूसरे बेटे का नाम
सिलाफ़िहाद था जिसके हाँ सिर्फ़ बेटियाँ पैदा हुईं।
16मकीर की बीवी माका के मज़ीद दो बेटे
फ़रस और शरस पैदा हुए। शरस के दो बेटे
औलाम और रक़म थे। 17औलाम के बेटे का
नाम बिदान था। यही जिलियाद बिन मकीर बिन
मनस्सी की औलाद थे।
18जिलियाद की बहन मूलिकत के तीन बेटे
इशहूद, अबियज़र और महलाह थे। 19समीदा
के चार बेटे अख़ियान, सिकम, लिक़ही और
अनियाम थे।

इफ़राईम की औलाद

20इफ़राईम के हाँ सूतलह पैदा हुआ, सूतलह
के बरद, बरद के तहत, तहत के इलियदा,
इलियदा के तहत, 21तहत के ज़बद और ज़बद
के सूतलह।
इफ़राईम के मज़ीद दो बेटे अज़र और इलियद
थे। यह दो मर्द एक दिन जात गए ताकि वहाँ
के रेवड़ लूट लें। लेकिन मक़ामी लोगों ने उन्हें
पकड़कर मार डाला। 22उनका बाप इफ़राईम
काफ़ी अरसे तक उनका मातम करता रहा, और
उसके रिश्तेदार उससे मिलने आए ताकि उसे
तसल्ली दें। 23जब इसके बाद उस की बीवी
के बेटा पैदा हुआ तो उसने उसका नाम बरिया
यानी मुसीबत रखा, क्योंकि उस वक़्त ख़ानदान
मुसीबत में आ गया था। 24इफ़राईम की बेटी सैरा
ने बालाई और नशेबी बैत-हौरून और उज़्ज़न-सैरा
को बनवाया।
25इफ़राईम के मज़ीद दो बेटे रफ़ह और रसफ़
थे। रसफ़ के हाँ तिलह पैदा हुआ, तिलह के तहन,
26तहन के लादान, लादान के अम्मीहूद, अम्मीहूद
के इलीसमा, 27इलीसमा के नून, नून के यशुअ।
28इफ़राईम की औलाद के इलाक़े में ज़ैल
के मक़ाम शामिल थे : बैतेल गिर्दो-नवाह की
आबादियों समेत, मशरिक़ में नारान तक, मग़रिब

में जज़र तक गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत,
शिमाल में सिकम और ऐयाह तक गिर्दो-नवाह की
आबादियों समेत। 29बैत-शान, तानक, मजिद्दो
और दोर गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत मनस्सी
की औलाद की मिलकियत बन गए। इन तमाम
मक़ामों में यूसुफ़ बिन इसराईल की औलाद रहती
थी।

आशर की औलाद

30आशर के चार बेटे यिमना, इसवाह, इसवी
और बरिया थे। उनकी बहन सिरह थी।

31बरिया के बेटे हिबर और बिरज़ायत का बाप
मलकियेल थे।

32हिबर के तीन बेटे यफ़लीत, शूमीर और
ख़ूताम थे। उनकी बहन सुअ थी।

33यफ़लीत के तीन बेटे फ़ासक, बिमहाल और
असवात थे। 34शूमीर के चार बेटे अख़ी, रूहजा,
हुब्बा और अराम थे। 35उसके भाई हीलम के चार
बेटे सूफ़ह, इमना, सलस और अमल थे।

36सूफ़ह के 11 बेटे सूह, हर्नफ़र, सुआल, बैरी,
इमराह,

37बसर, हूद, सम्मा, सिलसा, यितरान और
बईरा थे।

38यतर के तीन बेटे यफ़ुन्ना, फ़िसफ़ाह और
अरा थे।

39उल्ला के तीन बेटे अरख़, हन्नियेल और
रिज़ियाह थे।

40आशर के दर्जे-बाला तमाम अफ़राद अपने
अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे। सब चीदा
मर्द, माहिर फ़ौजी और सरदारों के सरबराह थे।
नसबनामे में 26,000 जंग करने के क़ाबिल मर्द
दर्ज हैं।

बिनयमीन की औलाद

8 बिनयमीन के पाँच बेटे बड़े से लेकर छोटे
तक बाला, अशबेल, अख़्रख़, 2नूहा और
रफ़ा थे।

3बाला के बेटे अद्दार, जीरा, अबीहूद,
4अबीसुअ, नामान, अख़ूह, 5जीरा, सफ़ू-
फ़ान और हूराम थे।

6-7अहूद के तीन बेटे नामान, अख़ियाह और
जीरा थे। यह उन ख़ानदानों के सरपरस्त थे जो
पहले जिबा में रहते थे लेकिन जिन्हें बाद में
जिलावतन करके मानहत में बसाया गया। उज़्ज़ा
और अख़ीहूद का बाप जीरा उन्हें वहाँ लेकर गया
था।

8-9सहरैम अपनी दो बीवियों हुशीम और बारा
को तलाक़ देकर मोआब चला गया। वहाँ उस की
बीवी हूदस के सात बेटे यूबाब, ज़िबिया, मेसा,
मलकाम, 10यऊज़, सकियाह और मिरमा पैदा
हुए। सब बाद में अपने ख़ानदानों के सरपरस्त बन
गए। 11पहली बीवी हुशीम के दो बेटे अबीतूब और
इलफ़ाल पैदा हुए।

12-14इलफ़ाल के आठ बेटे इबर, मिशाम,
समद, बरिया, समा, अख़ियो, शाशक़ और
यरीमोत थे। समद ओनू, लूद और गिर्दो-नवाह
की आबादियों का बानी था। बरिया और समा
ऐयालोन के बाशिंदों के सरबराह थे। उन्हीं ने जात
के बाशिंदों को निकाल दिया।

15-16बरिया के बेटे ज़बदियाह, अराद, इदर,
मीकाएल, इसफ़ाह और यूख़ा थे।

17इलफ़ाल के मज़ीद बेटे ज़बदियाह,
मसुल्लाम, हिज़क़ी, हिबर, 18यिस्मरी, यिज़-
लियाह और यूबाब थे।

19-21सिमई के बेटे यक़ीम, ज़िकरी, ज़ब-
दी, इलियैनी, ज़िल्लती, इलियेल, अदायाह,
बिरायाह और सिमरात थे।

22-25शाशक़ के बेटे इसफ़ान, इबर, इलि-
येल, अब्दोन, ज़िकरी, हनान, हननि-
याह, ऐलाम, अनतोतियाह, यफ़दियाह और
फ़नुएल थे।

26-27यरोहाम के बेटे सम्सरी, शहारियाह,
अतलियाह, यारसियाह, इलियास और ज़िकरी
थे। 28यह तमाम ख़ानदानी सरपरस्त नसबनामे
में दर्ज थे और यरूशलम में रहते थे।

जिबऊन में साऊल का ख़ानदान

29जिबऊन का बाप यइयेल जिबऊन में रहता
था। उस की बीवी का नाम माका था। 30बड़े से
लेकर छोटे तक उनके बेटे अब्दोन, सूर, क़ीस,
बाल, नदब, 31जदूर, अख़ियो, ज़कर 32और
मिक़लोत थे। मिक़लोत का बेटा सिमाह था। वह
भी अपने रिश्तेदारों के साथ यरूशलम में रहते थे।
33नैर क़ीस का बाप था और क़ीस साऊल
का। साऊल के चार बेटे यूनतन, मलकीशुअ,
अबीनदाब और इशबाल थे।
34यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल
मीकाह का।
35मीकाह के चार बेटे फ़ीतून, मलिक, तारीअ
और आख़ज़ थे।
36आख़ज़ का बेटा यहुअद्दा था जिसके तीन बेटे
अलमत, अज़मावत और ज़िमरी थे। ज़िमरी के
हाँ मौज़ा पैदा हुआ, 37मौज़ा के बिनआ, बिनआ
के राफ़ा, राफ़ा के इलियासा और इलियासा के
असील।
38असील के छः बेटे अज़रीक़ाम, बोकिरू,
इसमाईल, सअरियाह, अबदियाह और ह-
नान थे। 39असील के भाई ईशक़ के तीन बेटे
बड़े से लेकर छोटे तक औलाम, यऊस और
इलीफ़लत थे।
40औलाम के बेटे तजरबाकार फ़ौजी थे जो
महारत से तीर चला सकते थे। उनके बहुत-से
बेटे और पोते थे, कुल 150 अफ़राद। तमाम
मज़कूरा आदमी उनके ख़ानदानों समेत बिनयमीन
की औलाद थे।

जिलावतनी के बाद यरूशलम के बाशिंदे

9 तमाम इसराईल शाहाने-इसराईल की
किताब के नसबनामों में दर्ज है।
फिर यहूदाह के बाशिंदों को बेवफ़ाई के बाइस
बाबल में जिलावतन कर दिया गया। 2जो लोग
पहले वापस आकर दुबारा शहरों में अपनी मौरूसी
ज़मीन पर रहने लगे वह इमाम, लावी, रब के घर
के ख़िदमतगार और बाक़ी चंद एक इसराईली थे।
3यहूदाह, बिनयमीन, इफ़राईम और मनस्सी के
क़बीलों के कुछ लोग यरूशलम में जा बसे।
4यहूदाह के क़बीले के दर्जे-ज़ैल ख़ानदानी
सरपरस्त वहाँ आबाद हुए :
ऊती बिन अम्मीहूद बिन उमरी बिन इमरी बिन
बानी। बानी फ़ारस बिन यहूदाह की औलाद में से
था।
5सैला के ख़ानदान का पहलौठा असायाह और
उसके बेटे।
6ज़ारह के ख़ानदान का यऊएल। यहूदाह के
इन ख़ानदानों की कुल तादाद 690 थी।
7-8बिनयमीन के क़बीले के दर्जे-ज़ैल ख़ानदानी
सरपरस्त यरूशलम में आबाद हुए :
सल्लू बिन मसुल्लाम बिन हूदावियाह बिन
सनुआह।
इबनियाह बिन यरोहाम।
ऐला बिन उज़्ज़ी बिन मिक़री।
मसुल्लाम बिन सफ़तियाह बिन रऊएल बिन
इबनियाह।
9नसबनामे के मुताबिक़ बिनयमीन के इन
ख़ानदानों की कुल तादाद 956 थी।
10जो इमाम जिलावतनी से वापस आकर
यरूशलम में आबाद हुए वह ज़ैल में दर्ज हैं :
यदायाह, यहूयरीब, यकीन, 11अल्लाह के
घर का इंचार्ज अज़रियाह बिन ख़िलक़ियाह
बिन मसुल्लाम बिन सदोक़ बिन मिरायोत बिन
अख़ीतूब, 12अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़शहूर
बिन मलकियाह और मासी बिन अदियेल बिन
यहज़ीराह बिन मसुल्लाम बिन मसिल्लिमित बिन
इम्मेर। 13इमामों के इन ख़ानदानों की कुल तादाद
1,760 थी। उनके मर्द रब के घर में ख़िदमत
सरंजाम देने के क़ाबिल थे।
14जो लावी जिलावतनी से वापस आकर
यरूशलम में आबाद हुए वह दर्जे-ज़ैल हैं :
मिरारी के ख़ानदान का समायाह बिन हस्सूब
बिन अज़रीक़ाम बिन हसबियाह, 15बक़बक़्क़र,
हरस, जलाल, मत्तनियाह बिन मीका बिन
ज़िकरी बिन आसफ़, 16अबदियाह बिन समायाह

बिन जलाल बिन यदूतून और बरकियाह बिन आसा बिन इलक़ाना। बरकियाह नतूफ़ातियों की आबादियों का रहनेवाला था।

17ज़ैल के दरबान भी वापस आए : सल्लूम, अक़्क़ूब, तलमून, अख़ीमान और उनके भाई। सल्लूम उनका इंचार्ज था। 18आज तक उसका ख़ानदान रब के घर के मशरिक़ में शाही दरवाज़े की पहरादारी करता है। यह दरबान लावियों के ख़ैमों के अफ़राद थे। 19सल्लूम बिन क़ोरे बिन अबियासफ़ बिन क़ोरह अपने भाइयों के साथ क़ोरह के ख़ानदान का था। जिस तरह उनके बापदादा की ज़िम्मेदारी रब की ख़ैमागाह में मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े की पहरादारी करनी थी उसी तरह उनकी ज़िम्मेदारी मक़दिस के दरवाज़े की पहरादारी करनी थी। 20क़दीम ज़माने में फ़ीनहास बिन इलियज़र उन पर मुक़र्रर था, और रब उसके साथ था। 21बाद में ज़करियाह बिन मसलमियाह मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े का दरबान था।

22कुल 212 मर्दों को दरबान की ज़िम्मादारी दी गई थी। उनके नाम उनकी मक़ामी जगहों के नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और समुएल ग़ैबबीन ने उनके बापदादा को यह ज़िम्मेदारी दी थी। 23वह और उनकी औलाद पहले रब के घर यानी मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़ों पर पहरादारी करते थे। 24यह दरबान रब के घर के चारों तरफ़ के दरवाज़ों की पहरादारी करते थे।

25लावी के अकसर लोग यरूशलम में नहीं रहते थे बल्कि बारी बारी एक हफ़ते के लिए देहात से यरूशलम आते थे ताकि वहाँ अपनी ख़िदमत सरंजाम दें। 26सिर्फ़ दरबानों के चार इंचार्ज मुसलसल यरूशलम में रहते थे। यह चार लावी अल्लाह के घर के कमरों और ख़ज़ानों को भी सँभालते 27और रात को भी अल्लाह के घर के इर्दगिर्द गुज़ारते थे, क्योंकि उन्हीं को उस की हिफ़ाज़त करना और सुबह के वक़्त उसके दरवाज़ों को खोलना था।

28बाज़ दरबान इबादत का सामान सँभालते थे। जब भी उसे इस्तेमाल के लिए अंदर और बाद में दुबारा बाहर लाया जाता तो वह हर चीज़ को गिनकर चैक करते थे। 29बाज़ बाक़ी सामान और मक़दिस में मौजूद चीज़ों को सँभालते थे। रब के घर में मुस्तामल बारीक मैदा, मै, ज़ैतून का तेल, बख़ूर और बलसान के मुख़्तलिफ़ तेल भी इनमें शामिल थे। 30लेकिन बलसान के तेलों को तैयार करना इमामों की ज़िम्मेदारी थी। 31क़ोरह के ख़ानदान का लावी मत्तितियाह जो सल्लूम का पहलौठा था क़ुरबानी के लिए मुस्तामल रोटी बनाने का इंतज़ाम चलाता था। 32क़िहात के ख़ानदान के बाज़ लावियों के हाथ में वह रोटियाँ बनाने का इंतज़ाम था जो हर हफ़ते के दिन को रब के लिए मख़सूस करके रब के घर के मुक़द्दस कमरे की मेज़ पर रखी जाती थीं।

33मौसीक़ार भी लावी थे। उनके सरबराह बाक़ी तमाम ख़िदमत में हिस्सा नहीं लेते थे, क्योंकि उन्हें हर वक़्त अपनी ही ख़िदमत सरंजाम देने के लिए तैयार रहना पड़ता था। इसलिए वह रब के घर के कमरों में रहते थे।

34लावियों के यह तमाम ख़ानदानी सरपरस्त नसबनामे में दर्ज थे और यरूशलम में रहते थे।

जिबऊन में साऊल के ख़ानदान

35जिबऊन का बाप यइयेल जिबऊन में रहता था। उस की बीवी का नाम माका था। 36बड़े से लेकर छोटे तक उनके बेटे अब्दोन, सूर, क़ीस, बाल, नैर, नदब, 37जदूर, अख़ियो, ज़करियाह और मिक़लोत थे। 38मिक़लोत का बेटा सिमाह था। वह भी अपने भाइयों के मुक़ाबिल यरूशलम में रहते थे।

39नैर क़ीस का बाप था और क़ीस साऊल का। साऊल के चार बेटे यूनतन, मलकीशुअ, अबीनदाब और इशबाल थे।

40यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल मीकाह का। 41मीकाह के चार बेटे फ़ीतून,

मलिक, तहरेअ और आख़ज़ थे। 42आख़ज़
का बेटा यारा था। यारा के तीन बेटे अलमत,
अज़मावत और ज़िमरी थे। ज़िमरी के हाँ
मौज़ा पैदा हुआ, 43मौज़ा के बिनआ, बना के
रिफ़ायाह, रिफ़ायाह के इलियासा और इलियासा
के असील।

44असील के छः बेटे अज़रीक़ाम, बोकिरू,
इसमाईल, सअरियाह, अबदियाह और ह-
नान थे।

साऊल और उसके बेटों की मौत

10 जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले
पर फ़िलिस्तियों और इसराई-
लियों के दरमियान जंग छिड़ गई। लड़ते लड़ते
इसराईली फ़रार होने लगे, लेकिन बहुत लोग वहीं
शहीद हो गए।

2फिर फ़िलिस्ती साऊल और उसके बेटों
यूनतन, अबीनदाब और मलकीशुअ के पास जा
पहुँचे। तीनों बेटे हलाक हो गए, 3जबकि लड़ाई
साऊल के इर्दगिर्द उरूज तक पहुँच गई। फिर
वह तीरअंदाज़ों का निशाना बनकर ज़ख़मी हो
गया। 4उसने अपने सिलाहबरदार को हुक्म दिया,
"अपनी तलवार मियान से खींचकर मुझे मार
डाल! वरना यह नामख़तून मुझे बेइज़्ज़त करेंगे।"
लेकिन सिलाहबरदार ने इनकार किया, क्योंकि
वह बहुत डरा हुआ था। आख़िर में साऊल अपनी
तलवार लेकर ख़ुद उस पर गिर गया।

5जब सिलाहबरदार ने देखा कि मेरा मालिक
मर गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिरकर
मर गया। 6यों उस दिन साऊल, उसके तीन बेटे
और उसका तमाम घराना हलाक हो गए। 7जब
मैदाने-यज्रएल के इसराईलियों को ख़बर मिली
कि इसराईली फ़ौज भाग गई और साऊल अपने
बेटों समेत मारा गया है तो वह अपने शहरों को
छोड़कर भाग निकले, और फ़िलिस्ती छोड़े हुए
शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें बसने लगे।

8अगले दिन फ़िलिस्ती लाशों को लूटने के
लिए दुबारा मैदाने-जंग में आ गए। जब उन्हें
जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और
उसके तीनों बेटे मुरदा मिले 9तो उन्होंने साऊल
का सर काटकर उसका ज़िरा-बकतर उतार लिया
और क़ासिदों को अपने पूरे मुल्क में भेजकर
अपने बुतों और अपनी क़ौम को फ़तह की इत्तला
दी। 10साऊल का ज़िरा-बकतर उन्होंने अपने
देवताओं के मंदिर में महफ़ूज़ कर लिया और
उसके सर को दजून देवता के मंदिर में लटका
दिया।

11जब यबीस-जिलियाद के बाशिंदों को ख़बर
मिली कि फ़िलिस्तियों ने साऊल की लाश के
साथ क्या कुछ किया है 12तो शहर के तमाम
लड़ने के क़ाबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना
हुए। वहाँ पहुँचकर वह साऊल और उसके बेटों
की लाशों को उतारकर यबीस ले गए जहाँ उन्होंने
उनकी हड्डियों को यबीस के बड़े दरख़्त के साये
में दफ़नाया। उन्होंने रोज़ा रखकर पूरे हफ़्ते तक
उनका मातम किया।

13साऊल को इसलिए मारा गया कि वह रब
का वफ़ादार न रहा। उसने उस की हिदायात पर
अमल न किया, यहाँ तक कि उसने मुरदों की रूह
से राबिता करनेवाली जादूगरनी से मशवरा किया,
14हालाँकि उसे रब से दरियाफ़्त करना चाहिए
था। यही वजह है कि रब ने उसे सज़ाए-मौत देकर
सलतनत को दाऊद बिन यस्सी के हवाले कर
दिया।

दाऊद पूरे इसराईल का बादशाह बन जाता है

11 उस वक़्त तमाम इसराईल हब-
रून में दाऊद के पास आया और
कहा, "हम आप ही की क़ौम और आप ही के
रिश्तेदार हैं। 2माज़ी में भी जब साऊल बादशाह
था तो आप ही फ़ौजी मुहिमों में इसराईल की
क़ियादत करते रहे। और रब आपके ख़ुदा ने
आपसे वादा भी किया है कि तू मेरी क़ौम
इसराईल का चरवाहा बनकर उस पर हुकूमत
करेगा।"

3जब इसराईल के तमाम बुज़ुर्ग हबरून पहुँचे तो
दाऊद बादशाह ने रब के हुज़ूर उनके साथ अहद
बाँधा, और उन्होंने उसे मसह करके इसराईल
का बादशाह बना दिया। यों रब का समुएल की
मारिफ़त किया हुआ वादा पूरा हुआ।

दाऊद यरूशलम पर क़ब्ज़ा करता है

4बादशाह बनने के बाद दाऊद तमाम
इसराईलियों के साथ यरूशलम गया ताकि उस
पर हमला करे। उस ज़माने में उसका नाम यबूस
था, और यबूसी उसमें बसते थे। 5दाऊद को
देखकर यबूसियों ने उससे कहा, “आप हमारे
शहर में कभी दाख़िल नहीं हो पाएँगे!”

तो भी दाऊद ने सिय्यून के क़िले पर क़ब्ज़ा कर
लिया जो आजकल ‘दाऊद का शहर’ कहलाता
है। 6यबूस पर हमला करने से पहले दाऊद ने
कहा था, “जो भी यबूसियों पर हमला करने में
राहनुमाई करे वह फ़ौज का कमाँडर बनेगा।” तब
योआब बिन ज़रूयाह ने पहले शहर पर चढ़ाई की।
चुनाँचे उसे कमाँडर मुक़र्रर किया गया।

7यरूशलम पर फ़तह पाने के बाद दाऊद क़िले
में रहने लगा। उसने उसे ‘दाऊद का शहर’ क़रार
दिया 8और उसके इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा।
दाऊद का यह तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों
से शुरू हुआ और चारों तरफ़ फैलता गया जबकि
योआब ने शहर का बाक़ी हिस्सा बहाल कर दिया।
9यों दाऊद ज़ोर पकड़ता गया, क्योंकि रब्बुल-
अफ़वाज उसके साथ था।

दाऊद के मशहूर फ़ौजी

10दर्जे-ज़ैल दाऊद के सूरमाओं की फ़ह-
रिस्त है। पूरे इसराईल के साथ उन्होंने मज़बूती
से उस की बादशाही की हिमायत करके दाऊद
को रब के फ़रमान के मुताबिक़ अपना बादशाह
बना दिया।

11जो तीन अफ़सर योआब के भाई अबीशै के
ऐन बाद आते थे उनमें यसूबियाम हकमूनी पहले
नंबर पर आता था। एक बार उसने अपने नेज़े
से 300 आदमियों को मार दिया। 12इन तीन
अफ़सरों में से दूसरी जगह पर इलियज़र बिन
दोदो बिन अख़ूही आता था। 13यह फ़स-दम्मीम
में दाऊद के साथ था जब फ़िलिस्ती वहाँ लड़ने के
लिए जमा हो गए थे। मैदाने-जंग में जौ का खेत
था, और लड़ते लड़ते इसराईली फ़िलिस्तियों के
सामने भागने लगे। 14लेकिन इलियज़र दाऊद के
साथ खेत के बीच में फ़िलिस्तियों का मुक़ाबला
करता रहा। फ़िलिस्तियों को मारते मारते उन्होंने
खेत का दिफ़ा करके रब की मदद से बड़ी फ़तह
पाई।

15-16एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम
के ग़ार के पहाड़ी क़िले में था जबकि फ़िलिस्ती
फ़ौज ने वादीए-रफ़ाईम में अपनी लशकरगाह
लगाई थी। उनके दस्तों ने बैत-लहम पर भी क़ब्ज़ा
कर लिया था। दाऊद के तीस आला अफ़सरों में
से तीन उससे मिलने आए। 17दाऊद को शदीद
प्यास लगी, और वह कहने लगा, “कौन मेरे लिए
बैत-लहम के दरवाज़े पर के हौज़ से कुछ पानी
लाएगा?”

18यह सुनकर तीनों अफ़सर फ़िलिस्तियों की
लशकरगाह पर हमला करके उसमें घुस गए और
लड़ते लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए।
उससे कुछ पानी भरकर वह उसे दाऊद के पास
ले आए। लेकिन उसने पीने से इनकार कर दिया
बल्कि उसे क़ुरबानी के तौर पर उंडेलकर रब
को पेश किया 19और बोला, “अल्लाह न करे
कि मैं यह पानी पियूँ। अगर ऐसा करता तो
उन आदमियों का ख़ून पीता जो अपनी जान
पर खेलकर पानी लाए हैं।” इसलिए वह उसे
पीना नहीं चाहता था। यह इन तीन सूरमाओं के
ज़बरदस्त कामों की एक मिसाल है।

20-21योआब का भाई अबीशै मज़कूरा तीन
सूरमाओं पर मुक़र्रर था। एक दफ़ा उसने अपने
नेज़े से 300 आदमियों को मार डाला। तीनों की
निसबत उस की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी,
लेकिन वह ख़ुद इनमें गिना नहीं जाता था।

22बिनायाह बिन यहोयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी
था। वह क़बज़ियेल का रहनेवाला था, और उसने
बहुत दफ़ा अपनी मरदानगी दिखाई। मोआब के
दो बड़े सूरमा उसके हाथों हलाक हुए। एक बार
जब बहुत बर्फ़ पड़ गई तो उसने एक हौज़ में
उतरकर एक शेरबबर को मार डाला जो उसमें गिर
गया था। 23एक और मौक़े पर उसका वास्ता एक
मिसरी से पड़ा जिसका क़द साढ़े सात फ़ुट था।
मिसरी के हाथ में खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा नेज़ा
था जबकि उसके अपने पास सिर्फ़ लाठी थी।
लेकिन बिनायाह ने उस पर हमला करके उसके
हाथ से नेज़ा छीन लिया और उसे उसके अपने
हथियार से मार डाला। 24ऐसी बहादुरी दिखाने
की बिना पर बिनायाह बिन यहोयदा मज़कूरा
तीन आदमियों के बराबर मशहूर हुआ। 25तीस
अफ़सरों के दीगर मर्दों की निसबत उस की ज़्यादा
इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह मज़कूरा तीन
आदमियों में गिना नहीं जाता था। दाऊद ने उसे
अपने मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर किया।

26ज़ैल के आदमी बादशाह के सूरमाओं में
शामिल थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम
का इल्हनान बिन दोदो, 27सम्मोत हरोरी,
ख़लिस फ़लूनी, 28तक़ुअ का ईरा बिन
अक़्क़ीस, अनतोत का अबियज़र, 29सिब्ब-
की हूसाती, ईली अख़ूही, 30महरी नतूफ़ाती,
हलिद बिन बाना नतूफ़ाती, 31बिनयमीनी
शहर जिबिया का इत्ती बिन रीबी, बिनायाह
फ़िरआतोनी 32नहले-जास का हूरी, अबि-
येल अरबाती, 33अज़मावत बहरूमी, इलि-
यहबा सालबूनी, 34हशीम जिज़ूनी के बेटे,
यूनतन बिन शजी हरारी, 35अख़ियाम बिन
सकार हरारी, इलीफ़ल बिन ऊर, 36हिफ़र
मकीराती, अख़ियाह फ़लूनी, 37हसरो कर-
मिली, नारी बिन अज़बी, 38नातन का भाई
योएल, मिबख़ार बिन हाजिरी, 39सिलक़
अम्मोनी, योआब बिन ज़रूयाह का सिलाह-
बरदार नहरी बैरोती, 40ईरा इतरी, जरीब इतरी,
41ऊरियाह हित्ती, ज़बद बिन अख़ली, 42अदीना
बिन सीज़ा (रूबिन के क़बीले का यह सरदार 30
फ़ौजियों पर मुक़र्रर था), 43हनान बिन माका,
यूसफ़त मितनी, 44उज़्ज़ियाह अस्तराती, ख़ूताम
अरोईरी के बेटे समा और यइयेल, 45यदियएल
बिन सिमरी, उसका भाई यूख़ा तीसी, 46इलियेल
महावी, इलनाम के बेटे यरीबी और यूसा-
वियाह, यितमा मोआबी, 47इलियेल, ओबेद और
यासियेल मज़ोबाई।

साऊल के दौरे-हुकूमत में दाऊद के पैरोकार

12 ज़ैल के आदमी सिक़लाज में दाऊद
के साथ मिल गए, उस वक़्त जब
वह साऊल बिन क़ीस से छुपा रहता था। यह
उन फ़ौजियों में से थे जो जंग में दाऊद के साथ
मिलकर लड़ते थे 2और बेहतरीन तीरअंदाज़ थे,
क्योंकि यह न सिर्फ़ दहने बल्कि बाएँ हाथ से
भी महारत से तीर और फ़लाख़न का पत्थर चला
सकते थे। इन आदमियों में से दर्जे-ज़ैल बिनयमीन
के क़बीले और साऊल के ख़ानदान से थे।

3उनका राहनुमा अख़ियज़र, फिर युआस
(दोनों समाआह जिबियाती के बेटे थे),
यज़ियेल और फ़लत (दोनों अज़मावत के
बेटे थे), बराका, याहू अनतोती, 4इसमायाह
जिबऊनी जो दाऊद के 30 अफ़सरों का एक
सूरमा और लीडर था, यरमियाह, यहज़ि-
येल, यूहनान, यूज़बद जदीराती, 5इलिऊज़ी,
यरीमोत, बालियाह, समरियाह और सफ़-
तियाह ख़रूफ़ी।

6क़ोरह के ख़ानदान में से इलक़ाना,
यिस्सियाह, अज़रेल, युअज़र और यसू-
बियाम दाऊद के साथ थे।

7इनके अलावा यरोहाम जदूरी के बेटे यूईला
और ज़बदियाह भी थे।

8जद के क़बीले से भी कुछ बहादुर और
तजरबाकार फ़ौजी साऊल से अलग होकर दाऊद
के साथ मिल गए जब वह रेगिस्तान के क़िले में
था। यह मर्द महारत से ढाल और नेज़ा इस्तेमाल

कर सकते थे। उनके चेहरे शेरबबर के चेहरों की
मानिंद थे, और वह पहाड़ी इलाक़े में ग़ज़ालों की
तरह तेज़ चल सकते थे।

9उनका लीडर अज़र ज़ैल के दस आद-
मियों पर मुक़र्रर था : अबदियाह, इलियाब,
10मिस्मन्ना, यरमियाह, 11अत्ती, इलियेल,
12यूहनान, इल्ज़बद, 13यरमियाह और मक-
बन्नी।

14जद के यह मर्द सब आला फ़ौजी अफ़सर
बन गए। उनमें से सबसे कमज़ोर आदमी सौ आम
फ़ौजियों का मुक़ाबला कर सकता था जबकि
सबसे ताक़तवर आदमी हज़ार का मुक़ाबला कर
सकता था। 15इन्हीं ने बहार के मौसम में दरियाए-
यरदन को पार किया, जब वह किनारों से बाहर
आ गया था, और मशरिक़ और मग़रिब की
वादियों को बंद कर रखा।

16बिनयमीन और यहूदाह के क़बीलों के कुछ
मर्द दाऊद के पहाड़ी क़िले में आए। 17दाऊद
बाहर निकलकर उनसे मिलने गया और पूछा,
“क्या आप सलामती से मेरे पास आए हैं? क्या
आप मेरी मदद करना चाहते हैं? अगर ऐसा है
तो मैं आपका अच्छा साथी रहूँगा। लेकिन अगर
आप मुझे दुश्मनों के हवाले करने के लिए आए
हैं हालाँकि मुझसे कोई भी ज़ुल्म नहीं हुआ है
तो हमारे बापदादा का ख़ुदा इसे देखकर आपको
सज़ा दे।”

18फिर रूहुल-क़ुद्स 30 अफ़सरों के राहनुमा
अमासी पर नाज़िल हुआ, और उसने कहा, “ऐ
दाऊद, हम तेरे ही लोग हैं। ऐ यस्सी के बेटे, हम
तेरे साथ हैं। सलामती, सलामती तुझे हासिल
हो, और सलामती उन्हें हासिल हो जो तेरी मदद
करते हैं। क्योंकि तेरा ख़ुदा तेरी मदद करेगा।”
यह सुनकर दाऊद ने उन्हें क़बूल करके अपने
छापामार दस्तों पर मुक़र्रर किया।

19मनस्सी के क़बीले के कुछ मर्द भी साऊल से
अलग होकर दाऊद के पास आए। उस वक़्त वह
फ़िलिस्तियों के साथ मिलकर साऊल से लड़ने
जा रहा था, लेकिन बाद में उसे मैदाने-जंग में आने
की इजाज़त न मिली। क्योंकि फ़िलिस्ती सरदारों
ने आपस में मशवरा करने के बाद उसे यह कहकर
वापस भेज दिया कि ख़तरा है कि यह हमें मैदाने-
जंग में छोड़कर अपने पुराने मालिक साऊल से
दुबारा मिल जाए। फिर हम तबाह हो जाएंगे।

20जब दाऊद सिक़लाज वापस जा रहा था
तो मनस्सी के क़बीले के दर्जे-ज़ैल अफ़सर
साऊल से अलग होकर उसके साथ हो लिए :
अदना, यूज़बद, यदियएल, मीकाएल, यूज़बद,
इलीहू और ज़िल्लती। मनस्सी में हर एक को
हज़ार हज़ार फ़ौजियों पर मुक़र्रर किया गया था।
21उन्होंने लूटनेवाले अमालीक़ी दस्तों को पकड़ने
में दाऊद की मदद की, क्योंकि वह सब दिलेर और
क़ाबिल फ़ौजी थे। सब उस की फ़ौज में अफ़सर
बन गए।

22रोज़ बरोज़ लोग दाऊद की मदद करने के
लिए आते रहे, और होते होते उस की फ़ौज
अल्लाह की फ़ौज जैसी बड़ी हो गई।

हबरून में दाऊद की फ़ौज

23दर्जे-ज़ैल उन तमाम फ़ौजियों की फ़ह-
रिस्त है जो हबरून में दाऊद के पास आए ताकि
उसे साऊल की जगह बादशाह बनाएँ, जिस तरह
रब ने हुक्म दिया था।

24यहूदाह के क़बीले के ढाल और नेज़े से लैस
6,800 मर्द थे।

25शमाऊन के क़बीले के 7,100 तजर-
बाकार फ़ौजी थे।

26लावी के क़बीले के 4,600 मर्द थे। 27उनमें
हारून के ख़ानदान का सरपरस्त यहोयदा भी
शामिल था जिसके साथ 3,700 आदमी थे।
28सदोक़ नामी एक दिलेर और जवान फ़ौजी भी
शामिल था। उसके साथ उसके अपने ख़ानदान
के 22 अफ़सर थे।

29साऊल के क़बीले बिनयमीन के भी 3,000
मर्द थे, लेकिन इस क़बीले के अकसर फ़ौजी अब
तक साऊल के ख़ानदान के साथ लिपटे रहे।

30इफ़राईम के क़बीले के 20,800 फ़ौजी थे।
सब अपने ख़ानदानों में असरो-रसूख़ रखनेवाले
थे।
31मनस्सी के आधे क़बीले के 18,000 मर्द
थे। उन्हें दाऊद को बादशाह बनाने के लिए चुन
लिया गया था।
32इशकार के क़बीले के 200 अफ़सर अपने
दस्तों के साथ थे। यह लोग वक़्त की ज़रूरत
समझकर जानते थे कि इसराईल को क्या करना
है।
33ज़बूलून के क़बीले के 50,000 तजर-
बाकार फ़ौजी थे। वह हर हथियार से लैस और
पूरी वफ़ादारी से दाऊद के लिए लड़ने के लिए
तैयार थे।
34नफ़ताली के क़बीले के 1,000 अफ़सर थे।
उनके तहत ढाल और नेज़े से मुसल्लह 37,000
आदमी थे।
35दान के क़बीले के 28,600 मर्द थे जो सब
लड़ने के लिए मुस्तैद थे।
36आशर के क़बीले के 40,000 मर्द थे जो
सब लड़ने के लिए तैयार थे।
37दरियाए-यरदन के मशरिक़ में आबाद
क़बीलों रूबिन, जद और मनस्सी के आधे हिस्से
के 1,20,000 मर्द थे। हर एक हर क़िस्म के
हथियार से लैस था।
38सब तरतीब से हबरून आए ताकि पूरे अज़्म
के साथ दाऊद को पूरे इसराईल का बादशाह
बनाएँ। बाक़ी तमाम इसराईली भी मुत्तफ़िक़ थे
कि दाऊद हमारा बादशाह बन जाए। 39यह फ़ौजी
तीन दिन तक दाऊद के पास रहे जिस दौरान
उनके क़बायली भाई उन्हें खाने-पीने की चीज़ें
मुहैया करते रहे। 40क़रीब के रहनेवालों ने भी
इसमें उनकी मदद की। इशकार, ज़बूलून और
नफ़ताली तक के लोग अपने गधों, ऊँटों, ख़च्चरों
और बैलों पर खाने की चीज़ें लादकर वहाँ पहुँचे।
मैदा, अंजीर और किशमिश की टिक्कियाँ, मै,
तेल, बैल और भेड़-बकरियाँ बड़ी मिक़दार में
हबरून लाई गईं, क्योंकि तमाम इसराईली ख़ुशी
मना रहे थे।

दाऊद अहद का संदूक़ यरूशलम में लाना चाहता है

13 दाऊद ने तमाम अफ़सरों से मश-
वरा किया। उनमें हज़ार हज़ार और
सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सर शामिल थे।
2फिर उसने इसराईल की पूरी जमात से कहा,
“अगर आपको मंज़ूर हो और रब हमारे ख़ुदा की
मरज़ी हो तो आएँ हम पूरे मुल्क के इसराईली
भाइयों को दावत दें कि आकर हमारे साथ जमा
हो जाएँ। वह इमाम और लावी भी शरीक हों
जो अपने अपने शहरों और चरागाहों में बसते हैं।
3फिर हम अपने ख़ुदा के अहद का संदूक़ दुबारा
अपने पास वापस लाएँ, क्योंकि साऊल के दौरे-
हुकूमत में हम उस की फ़िकर नहीं करते थे।”
4पूरी जमात मुत्तफ़िक़ हुई, क्योंकि यह
मनसूबा सबको दुरुस्त लगा। 5चुनाँचे दाऊद ने
पूरे इसराईल को जुनूब में मिसर के सैहूर से लेकर
शिमाल में लबो-हमात तक बुलाया ताकि सब
मिलकर अल्लाह के अहद का संदूक़ क़िरियत-
यारीम से यरूशलम ले जाएँ। 6फिर वह उनके
साथ यहूदाह के बाला यानी क़िरियत-यारीम गया
ताकि रब ख़ुदा का संदूक़ उठाकर यरूशलम ले
जाएँ, वही संदूक़ जिस पर रब के नाम का ठप्पा
लगा है और जहाँ वह संदूक़ के ऊपर करूबी
फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है। 7क़िरियत-
यारीम पहुँचकर लोगों ने अल्लाह के संदूक़ को
अबीनदाब के घर से निकालकर एक नई बैलगाड़ी
पर रख दिया, और उज़्ज़ा और अख़ियो उसे
यरूशलम की तरफ़ ले जाने लगे। 8दाऊद और
तमाम इसराईली गाड़ी के पीछे चल पड़े। सब
अल्लाह के हुज़ूर पूरे ज़ोर से ख़ुशी मनाने लगे।
जूनीपर की लकड़ी के मुख़्तलिफ़ साज़ भी बजाए
जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों, सरोदों, दफ़ों, झाँझों
और तुरमों की आवाज़ों से गूँज उठी।

9वह गंदुम गाहने की एक जगह पर पहुँच गए
जिसके मालिक का नाम कैदून था। वहाँ बैल
अचानक बेकाबू हो गए। उज़्ज़ा ने जल्दी से अहद
का संदूक़ पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए।
10उसी लमहे रब का ग़ज़ब उस पर नाज़िल हुआ,
क्योंकि उसने अहद के संदूक़ को छूने की जुर्रत
की थी। वहीं अल्लाह के हुज़ूर उज़्ज़ा गिरकर
हलाक हुआ। 11दाऊद को बड़ा रंज हुआ कि रब
का ग़ज़ब उज़्ज़ा पर यों टूट पड़ा है। उस वक़्त से
उस जगह का नाम परज़-उज़्ज़ा यानी 'उज़्ज़ा पर
टूट पड़ना' है।

12उस दिन दाऊद को अल्लाह से ख़ौफ़ आया।
उसने सोचा, "मैं किस तरह अल्लाह का संदूक़
अपने पास पहुँचा सकूँगा?" 13चुनाँचे उसने
फ़ैसला किया कि हम अहद का संदूक़ यरूशलम
नहीं ले जाएंगे बल्कि उसे ओबेद-अदोम जाती के
घर में महफ़ूज़ रखेंगे। 14वहाँ वह तीन माह तक
पड़ा रहा। इन तीन महीनों के दौरान रब ने ओबेद-
अदोम के घराने और उस की पूरी मिलकियत को
बरकत दी।

दाऊद की तरक़्क़ी

14 एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने
दाऊद के पास वफ़द भेजा। राज और
बढ़ई भी साथ थे। उनके पास देवदार की लकड़ी
थी ताकि दाऊद के लिए महल बनाएँ। 2यों दाऊद
ने जान लिया कि रब ने मुझे इसराईल का बादशाह
बनाकर मेरी बादशाही अपनी क़ौम इसराईल की
ख़ातिर बहुत सरफ़राज़ कर दी है।

3यरूशलम में जा बसने के बाद दाऊद
ने मज़ीद शादियाँ कीं। नतीजे में यरूशलम
में उसके कई बेटे-बेटियाँ पैदा हुए। 4जो
बेटे वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मुअ, सो-
बाब, नातन, सुलेमान, 5इबहार, इलीसुअ,
इल्फ़लत, 6नौजा, नफ़ज, यफ़ीअ, 7इली-
समा, बाल-यदा और इलीफ़लत।

फ़िलिस्तियों पर फ़तह

8जब फ़िलिस्तियों को इत्तला मिली कि
दाऊद को मसह करके इसराईल का बाद-
शाह बनाया गया है तो उन्होंने अपने फ़ौजियों
को इसराईल में भेज दिया ताकि उसे पकड़ लें।
जब दाऊद को पता चल गया तो वह उनका
मुक़ाबला करने के लिए गया। 9जब फ़िलिस्ती
इसराईल में पहुँचकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए
10तो दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, "क्या मैं
फ़िलिस्तियों पर हमला करूँ? क्या तू मुझे उन
पर फ़तह बख़्शेगा?" रब ने जवाब दिया, "हाँ,
उन पर हमला कर! मैं उन्हें तेरे क़ब्ज़े में कर
दूँगा।" 11चुनाँचे दाऊद अपने फ़ौजियों को लेकर
बाल-पराज़ीम गया। वहाँ उसने फ़िलिस्तियों को
शिकस्त दी। बाद में उसने गवाही दी, "जितने ज़ोर
से बंद के टूट जाने पर पानी उससे फूट निकलता
है उतने ज़ोर से आज अल्लाह मेरे वसीले से दुश्मन
की सफ़ों में से फूट निकला है।" चुनाँचे उस जगह
का नाम बाल-पराज़ीम यानी 'फूट निकलने का
मालिक' पड़ गया। 12फ़िलिस्ती अपने देवताओं
को छोड़कर भाग गए, और दाऊद ने उन्हें जला
देने का हुक्म दिया।

13एक बार फिर फ़िलिस्ती आकर वादीए-
रफ़ाईम में फैल गए। 14इस दफ़ा जब दाऊद
ने अल्लाह से दरियाफ़्त किया तो उसने जवाब
दिया, "इस मरतबा उनका सामना मत करना
बल्कि उनके पीछे जाकर बका के दरख़्तों के
सामने उन पर हमला कर। 15जब उन दरख़्तों की
चोटियों से क़दमों की चाप सुनाई दे तो ख़बरदार!
यह इसका इशारा होगा कि अल्लाह ख़ुद तेरे
आगे आगे चलकर फ़िलिस्तियों को मारने के लिए
निकल आया है।" 16दाऊद ने ऐसा ही किया और
नतीजे में फ़िलिस्तियों को शिकस्त देकर जिबऊन
से लेकर जज़र तक उनका ताक़्क़ुब किया।

17दाऊद की शोहरत तमाम ममालिक में फैल
गई। रब ने तमाम क़ौमों के दिलों में दाऊद का
ख़ौफ़ डाल दिया।

यरूशलम में अहद के संदूक़ के लिए तैयारियाँ

15 यरूशलम के उस हिस्से में जिस-
का नाम ‘दाऊद का शहर’ पड़ गया
था दाऊद ने अपने लिए चंद इमारतें बनवाईं। उसने
अल्लाह के संदूक़ के लिए भी एक जगह तैयार
करके वहाँ ख़ैमा लगा दिया। 2फिर उसने हुक्म
दिया, “सिवाए लावियों के किसी को भी अल्लाह
का संदूक़ उठाने की इजाज़त नहीं। क्योंकि रब ने
इन्हीं को रब का संदूक़ उठाने और हमेशा के लिए
उस की ख़िदमत करने के लिए चुन लिया है।”

3इसके बाद दाऊद ने तमाम इसराईल को
यरूशलम बुलाया ताकि वह मिलकर रब का
संदूक़ उस जगह ले जाएँ जो उसने उसके लिए
तैयार कर रखी थी। 4बादशाह ने हारून और बाक़ी
लावियों की औलाद को भी बुलाया। 5दर्जे-ज़ैल
उन लावी सरपरस्तों की फ़हरिस्त है जो अपने
रिश्तेदारों को लेकर आए।

क़िहात के ख़ानदान से ऊरियेल 120 मर्दों
समेत,

6मिरारी के ख़ानदान से असायाह 220 मर्दों
समेत,

7जैरसोम के ख़ानदान से योएल 130 मर्दों
समेत,

8इलीसफ़न के ख़ानदान से समायाह 200
मर्दों समेत,

9हबरून के ख़ानदान से इलियेल 80 मर्दों
समेत,

10उज़्ज़ियेल के ख़ानदान से अम्मीनदाब 112
मर्दों समेत।

11दाऊद ने दोनों इमामों सदोक़ और अबियातर
को मज़कूरा छः लावी सरपरस्तों समेत अपने
पास बुलाकर 12उनसे कहा, “आप लावियों के
सरबराह हैं। लाज़िम है कि आप अपने क़बायली
भाइयों के साथ अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस
करके रब इसराईल के ख़ुदा के संदूक़ को उस
जगह ले जाएँ जो मैंने उसके लिए तैयार कर रखी
है। 13पहली मरतबा जब हमने उसे यहाँ लाने की
कोशिश की तो यह आप लावियों के ज़रीए न
हुआ, इसलिए रब हमारे ख़ुदा का क़हर हम पर टूट
पड़ा। उस वक़्त हमने उससे दरियाफ़्त नहीं किया
था कि उसे उठाकर ले जाने का क्या मुनासिब
तरीक़ा है।” 14तब इमामों और लावियों ने अपने
आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करके रब इसराईल के
ख़ुदा के संदूक़ को यरूशलम लाने के लिए तैयार
किया। 15फिर लावी अल्लाह के संदूक़ को उठाने
की लकड़ियों से अपने कंधों पर यों ही रखकर चल
पड़े जिस तरह मूसा ने रब के कलाम के मुताबिक़
फ़रमाया था।

16दाऊद ने लावी सरबराहों को यह हुक्म
भी दिया, “अपने क़बीले में से ऐसे आदमियों
को चुन लें जो साज़, सितार, सरोद और झाँझ
बजाते हुए ख़ुशी के गीत गाएँ।” 17इस ज़िम्मेदारी
के लिए लावियों ने ज़ैल के आदमियों को
मुक़र्रर किया : हैमान बिन योएल, उसका भाई
आसफ़ बिन बरकियाह और मिरारी के ख़ानदान
का ऐतान बिन कौसायाह। 18दूसरे मक़ाम पर
उनके यह भाई आए : ज़करियाह, याज़ि-
येल, समीरामोत, यहियेल, उन्नी, इलि-
याब, बिनायाह, मासियाह, मत्तितियाह,
इलीफ़लेहू, मिक़नियाह, ओबेद-अदोम और
यइयेल। यह दरबान थे। 19हैमान, आसफ़
और ऐतान गुलूकार थे, और उन्हें पीतल
के झाँझ बजाने की ज़िम्मेदारी दी गई।
20ज़करियाह, अज़ियेल, समीरामोत, यहि-
येल, उन्नी, इलियाब, मासियाह और बिना-
याह को अलामूत के तर्ज़ पर सितार बजाना था।
21मत्तितियाह, इलीफ़लेहू, मिक़नियाह, ओबेद-
अदोम, यइयेल और अज़ज़ियाह को शमीनीत के
तर्ज़ पर सरोद बजाने के लिए चुना गया।

22कननियाह ने लावियों की कवाइर की
राहनुमाई की, क्योंकि वह इसमें माहिर था।

23-24बरकियाह, इलक़ाना, ओबेद-अदोम
और यहियाह अहद के संदूक़ के दरबान
थे। सबनियाह, यूसफ़त, नतनियेल, अमासी,

ज़करियाह, बिनायाह और इलियज़र को तुरम
बजाकर अल्लाह के संदूक़ के आगे आगे चलने
की ज़िम्मेदारी दी गई। सातों इमाम थे।

दाऊद अहद का संदूक़ यरूशलम में ले आता है

25फिर दाऊद, इसराईल के बुज़ुर्ग और हज़ार
हज़ार फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सर ख़ुशी मनाते
हुए निकलकर ओबेद-अदोम के घर गए ताकि
रब के अहद का संदूक़ वहाँ से लेकर यरूशलम
पहुँचाएँ। 26जब ज़ाहिर हुआ कि अल्लाह अहद
के संदूक़ को उठानेवाले लावियों की मदद कर
रहा है तो सात जवान साँडों और सात मेंढों को
क़ुरबान किया गया। 27दाऊद बारीक कतान का
लिबास पहने हुए था, और इस तरह अहद का
संदूक़ उठानेवाले लावी, गुलूकार और कवाइर
का लीडर कननियाह भी। इसके अलावा दाऊद
कतान का बालापोश पहने हुए था। 28तमाम
इसराईली ख़ुशी के नारे लगा लगाकर, नरसिंगे
और तुरम फूँक फूँककर और झाँझ, सितार और
सरोद बजा बजाकर रब के अहद का संदूक़
यरूशलम लाए।

29रब का अहद का संदूक़ दाऊद के शहर में
दाख़िल हुआ तो दाऊद की बीवी मीकल बिंत
साऊल खिड़की में से जुलूस को देख रही थी। जब
बादशाह कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो
मीकल ने उसे हक़ीर जाना।

16 अल्लाह का संदूक़ उस तंबू के
दरमियान में रखा गया जो दाऊद ने
उसके लिए लगवाया था। फिर उन्होंने अल्लाह
के हुज़ूर भस्म होनेवाली और सलामती की
क़ुरबानियाँ पेश कीं। 2इसके बाद दाऊद ने
क़ौम को रब के नाम से बरकत देकर 3हर
इसराईली मर्द और औरत को एक रोटी, खजूर
की एक टिक्की और किशमिश की एक टिक्की
दे दी। 4उसने कुछ लावियों को रब के संदूक़
के सामने ख़िदमत करने की ज़िम्मेदारी दी।
उन्हें रब इसराईल के ख़ुदा की तमजीद और
हम्दो-सना करनी थी। 5उनका सरबराह आसफ़
झाँझ बजाता था। उसका नायब ज़करियाह था।
फिर यइयेल, समीरामोत, यहियेल, मत्तितियाह,
इलियाब, बिनायाह, ओबेद-अदोम और यइयेल
थे जो सितार और सरोद बजाते थे। 6बिनायाह
और यहज़ियेल इमामों की ज़िम्मेदारी अल्लाह के
अहद के संदूक़ के सामने तुरम बजाना थी।

शुक्र का गीत

7उस दिन दाऊद ने पहली दफ़ा आसफ़ और
उसके साथी लावियों के हवाले ज़ैल का गीत
करके उन्हें रब की सताइश करने की ज़िम्मेदारी
दी।

8"रब का शुक्र करो और उसका नाम पुकारो!
अक़वाम में उसके कामों का एलान करो।
9साज़ बजाकर उस की मद्हसराई करो। उसके
तमाम अजायब के बारे में लोगों को बताओ।
10उसके मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के
तालिब दिल से ख़ुश हों।
11रब और उस की क़ुदरत की दरियाफ़्त करो,
हर वक़्त उसके चेहरे के तालिब रहो।
12जो मोजिज़े उसने किए उन्हें याद करो।
उसके इलाही निशान और उसके मुँह के फ़ैसले
दोहराते रहो।
13तुम जो उसके ख़ादिम इसराईल की औलाद
और याक़ूब के फ़रज़ंद हो, जो उसके बरगुज़ीदा
लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!

14वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया की
अदालत करता है।
15वह हमेशा अपने अहद का ख़याल रखता है,
उस कलाम का जो उसने हज़ार पुश्तों के लिए
फ़रमाया था।
16यह वह अहद है जो उसने इब्राहीम से बाँधा,
वह वादा जो उसने क़सम खाकर इसहाक़ से
किया था।

17उसने उसे याक़ूब के लिए क़ायम किया
ताकि वह उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे, उसने
तसदीक़ की कि यह मेरा इसराईल से अबदी अहद
है।
18साथ साथ उसने फ़रमाया, 'मैं तुझे मुल्के-
कनान दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।'
19उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे
बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।

20अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और
सलतनतों में घुमते-फिरते थे।
21लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म
करने न दिया, और उनकी ख़ातिर उसने बादशाहों
को डाँटा,
22'मेरे मसह किए हुए ख़ादिमों को मत छेड़ना,
मेरे नबियों को नुक़सान मत पहुँचाना।'

23ऐ पूरी दुनिया, रब की तमजीद में गीत गा!
रोज़ बरोज़ उस की नजात की ख़ुशख़बरी सुना।
24क़ौमों में उसका जलाल और तमाम उम्मतों
में उसके अजायब बयान करो।
25क्योंकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत
लायक़ है। वह तमाम माबूदों से महीब है।
26क्योंकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही
हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।
27उसके हुज़ूर शानो-शौकत, उस की
सुकूनतगाह में क़ुदरत और जलाल है।
28ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तमजीद करो,
रब के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो।
29रब के नाम को जलाल दो। क़ुरबानी लेकर
उसके हुज़ूर आओ। मुक़द्दस लिबास से आरास्ता
होकर रब को सिजदा करो।
30पूरी दुनिया उसके सामने लरज़ उठे।
यक़ीनन दुनिया मज़बूती से क़ायम है और नहीं
डगमगाएगी।
31आसमान शादमान हो, और ज़मीन जशन
मनाए। क़ौमों में कहा जाए कि रब बादशाह है।
32समुंदर और जो कुछ उसमें है ख़ुशी से गरज
उठे, मैदान और जो कुछ उसमें है बाग़ बाग़ हो।
33फिर जंगल के दरख़्त रब के सामने
शादियाना बजाएंगे, क्योंकि वह आ रहा है, वह
ज़मीन की अदालत करने आ रहा है।

34रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और
उस की शफ़क़त अबदी है।
35उससे इलतमास करो, 'ऐ हमारी नजात के
ख़ुदा, हमें बचा! हमें जमा करके दीगर क़ौमों के
हाथ से छुड़ा। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम की
सताइश करेंगे और तेरे क़ाबिले-तारीफ़ कामों पर
फ़ख़र करेंगे।'
36अज़ल से अबद तक रब, इसराईल के ख़ुदा
की हम्द हो!"
तब पूरी क़ौम ने "आमीन" और "रब की हम्द
हो" कहा।

लावियों की ज़िम्मेदारियाँ

37दाऊद ने आसफ़ और उसके साथी लावियों
को रब के अहद के संदूक़ के सामने छोड़कर कहा,
"आइंदा यहाँ बाक़ायदगी से रोज़ाना की ज़रूरी
ख़िदमत करते जाएँ।"
38इस गुरोह में ओबेद-अदोम और मज़ीद 68
लावी शामिल थे। ओबेद-अदोम बिन यदूतून और
हूसा दरबान बन गए।
39लेकिन सदोक़ इमाम और उसके साथी
इमामों को दाऊद ने रब की उस सुकूनतगाह के
पास छोड़ दिया जो जिबऊन की पहाड़ी पर थी।
40क्योंकि लाज़िम था कि वह वहाँ हर सुबह और
शाम को भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करें और
बाक़ी तमाम हिदायात पर अमल करें जो रब की
तरफ़ से इसराईल के लिए शरीअत में बयान की
गई हैं। 41दाऊद ने हैमान, यदूतून और मज़ीद कुछ
चीदा लावियों को भी जिबऊन में उनके पास छोड़
दिया। वहाँ उनकी ख़ास ज़िम्मेदारी रब की हम्दो-
सना करना थी, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है। 42उनके पास तुरम, झाँझ और बाक़ी ऐसे

साज़ थे जो अल्लाह की तारीफ़ में गाए जानेवाले
गीतों के साथ बजाए जाते थे। यदूतून के बेटों को
दरबान बनाया गया।
43जशन के बाद सब लोग अपने अपने घर
चले गए। दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने
ख़ानदान को बरकत देकर सलाम करे।

रब दाऊद के लिए अबदी बादशाही का वादा करता है

17 दाऊद बादशाह सलामती से अपने
महल में रहने लगा। एक दिन उसने
नातन नबी से बात की, “देखें, मैं यहाँ देवदार के
महल में रहता हूँ जबकि रब के अहद का संदूक़
अब तक तंबू में पड़ा है। यह मुनासिब नहीं!”
2नातन ने बादशाह की हौसलाअफ़्ज़ाई की, “जो
कुछ भी आप करना चाहते हैं वह करें। अल्लाह
आपके साथ है।”
3लेकिन उसी रात अल्लाह नातन से हमकलाम
हुआ, 4“मेरे ख़ादिम दाऊद के पास जाकर उसे
बता दे कि रब फ़रमाता है, ‘तू मेरी रिहाइश के
लिए मकान तामीर नहीं करेगा। 5आज तक मैं
किसी मकान में नहीं रहा। जब से मैं इसराईलियों
को मिसर से निकाल लाया उस वक़्त से मैं ख़ैमे में
रहकर जगह बजगह फिरता रहा हूँ। 6जिस दौरान
मैं तमाम इसराईलियों के साथ इधर-उधर फिरता
रहा क्या मैंने इसराईल के उन राहनुमाओं से कभी
इस नाते से शिकायत की जिन्हें मैंने अपनी क़ौम
की गल्लाबानी करने का हुक्म दिया था? क्या
मैंने उनमें से किसी से कहा कि तुमने मेरे लिए
देवदार का घर क्यों नहीं बनाया?’
7चुनाँचे मेरे ख़ादिम दाऊद को बता दे, ‘रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में
भेड़ों की गल्लाबानी करने से फ़ारिग़ करके अपनी
क़ौम इसराईल का बादशाह बना दिया है। 8जहाँ
भी तूने क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे
देखते देखते मैंने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर
दिया है। अब मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह
दुनिया के सबसे अज़ीम आदमियों के नामों के
बराबर ही होगा। 9और मैं अपनी क़ौम इसराईल
के लिए एक वतन मुहैया करूँगा, पौदे की तरह
उन्हें यों लगा दूँगा कि वह जड़ पकड़कर महफ़ूज़
रहेंगे और कभी बेचैन नहीं होंगे। बेदीन क़ौमें उन्हें
उस तरह नहीं दबाएँगी जिस तरह माज़ी में किया
करती थीं, 10उस वक़्त से जब मैं क़ौम पर क़ाज़ी
मुक़र्रर करता था। मैं तेरे दुश्मनों को ख़ाक में मिला
दूँगा। आज मैं फ़रमाता हूँ कि रब ही तेरे लिए घर
बनाएगा। 11जब तू बूढ़ा होकर कूच कर जाएगा
और अपने बापदादा से जा मिलेगा तो मैं तेरी जगह
तेरे बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा। उस
की बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। 12वही मेरे
लिए घर तामीर करेगा, और मैं उसका तख़्त अबद
तक क़ायम रखूँगा। 13मैं उसका बाप हूँगा और
वह मेरा बेटा होगा। मेरी नज़रे-करम साऊल पर न
रही, लेकिन मैं उसे तेरे बेटे से कभी नहीं हटाऊँगा।
14मैं उसे अपने घराने और अपनी बादशाही पर
हमेशा क़ायम रखूँगा, उसका तख़्त हमेशा मज़बूत
रहेगा’।”

दाऊद की शुक्रगुज़ारी

15नातन ने दाऊद के पास जाकर उसे सब कुछ
सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 16तब
दाऊद अहद के संदूक़ के पास गया और रब के
हुज़ूर बैठकर दुआ करने लगा,
“ऐ रब ख़ुदा, मैं कौन हूँ और मेरा ख़ानदान
क्या हैसियत रखता है कि तूने मुझे यहाँ तक
पहुँचाया है? 17और अब ऐ अल्लाह, तू मुझे
और भी ज़्यादा अता करने को है, क्योंकि तूने
अपने ख़ादिम के घराने के मुस्तक़बिल के बारे में
भी वादा किया है। ऐ रब ख़ुदा, तूने यों मुझ पर
निगाह डाली है गोया कि मैं कोई बहुत अहम बंदा
हूँ। 18-19लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ जब तूने यों
अपने ख़ादिम की इज़्ज़त की है? ऐ रब, तू तो
अपने ख़ादिम को जानता है। तूने अपने ख़ादिम
की ख़ातिर और अपनी मरज़ी के मुताबिक़ यह
अज़ीम काम करके इन अज़ीम वादों की इत्तला
दी है।

20ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है। हमने अपने
कानों से सुन लिया है कि तेरे सिवा कोई और ख़ुदा
नहीं है। 21दुनिया में कौन-सी क़ौम तेरी उम्मत
इसराईल की मानिंद है? तूने इसी एक क़ौम का
फ़िद्या देकर उसे ग़ुलामी से छुड़ाया और अपनी
क़ौम बना लिया। तूने इसराईल के वास्ते बड़े
और हैबतनाक काम करके अपने नाम की शोहरत
फैला दी। हमें मिसर से रिहा करके तूने क़ौमों
को हमारे आगे से निकाल दिया। 22ऐ रब, तू
इसराईल को हमेशा के लिए अपनी क़ौम बनाकर
उनका ख़ुदा बन गया है।

23चुनाँचे ऐ रब, जो बात तूने अपने ख़ादिम
और उसके घराने के बारे में की है उसे अबद तक
क़ायम रख और अपना वादा पूरा कर। 24तब वह
मज़बूत रहेगा और तेरा नाम अबद तक मशहूर
रहेगा। फिर लोग तसलीम करेंगे कि इसराईल का
ख़ुदा रब्बुल-अफ़वाज वाक़ई इसराईल का ख़ुदा
है, और तेरे ख़ादिम दाऊद का घराना भी अबद
तक तेरे हुज़ूर क़ायम रहेगा। 25ऐ मेरे ख़ुदा, तूने
अपने ख़ादिम के कान को इस बात के लिए खोल
दिया है। तू ही ने फ़रमाया, 'मैं तेरे लिए घर तामीर
करूँगा।' सिर्फ़ इसी लिए तेरे ख़ादिम ने यों तुझसे
दुआ करने की जुर्रत की है। 26ऐ रब, तू ही ख़ुदा
है। तूने अपने ख़ादिम से इन अच्छी चीज़ों का वादा
किया है। 27अब तू अपने ख़ादिम के घराने को
बरकत देने पर राज़ी हो गया है ताकि वह हमेशा
तक तेरे सामने क़ायम रहे। क्योंकि तू ही ने उसे
बरकत दी है, इसलिए वह अबद तक मुबारक
रहेगा।"

दाऊद की जंगें

18 फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने
फ़िलिस्तियों को शिकस्त देकर उन्हें
अपने ताबे कर लिया और जात शहर पर गिर्दो-
नवाह की आबादियों समेत क़ब्ज़ा कर लिया।
2उसने मोआबियों पर भी फ़तह पाई, और वह
उसके ताबे होकर उसे ख़राज देने लगे।

3दाऊद ने शिमाली शाम के शहर ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र को भी हमात के क़रीब हरा
दिया जब हददअज़र दरियाए-फ़ुरात पर क़ाबू पाने
के लिए निकल आया था। 4दाऊद ने 1,000
रथों, 7,000 घुड़सवारों और 20,000 प्यादा
सिपाहियों को गिरिफ़्तार कर लिया। रथों के 100
घोड़ों को उसने अपने लिए महफ़ूज़ रखा जबकि
बाक़ियों की उसने कोंचें काट दीं ताकि वह आइंदा
जंग के लिए इस्तेमाल न हो सकें।

5जब दमिश्क़ के अरामी बाशिंदे ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद
ने उनके 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए।
6फिर उसने दमिश्क़ के इलाक़े में अपनी फ़ौजी
चौकियाँ क़ायम कीं। अरामी उसके ताबे हो गए
और उसे ख़राज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया वहाँ
रब ने उसे कामयाबी बख़्शी। 7सोने की जो ढालें
हददअज़र के अफ़सरों के पास थीं उन्हें दाऊद
यरूशलम ले गया। 8हददअज़र के दो शहरों कून
और तिबख़त से उसने कसरत का पीतल छीन
लिया। बाद में सुलेमान ने यह पीतल रब के घर में
'समुंदर' नामी पीतल का हौज़, सतून और पीतल
का मुख़्तलिफ़ सामान बनाने के लिए इस्तेमाल
किया।

9जब हमात के बादशाह तूई को इत्तला मिली
कि दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र की
पूरी फ़ौज पर फ़तह पाई है 10तो उसने अपने
बेटे हदूराम को दाऊद के पास भेजा ताकि उसे
सलाम कहे। हदूराम ने दाऊद को हददअज़र पर
फ़तह के लिए मुबारकबाद दी, क्योंकि हददअज़र
तूई का दुश्मन था, और उनके दरमियान जंग
रही थी। हदूराम ने दाऊद को सोने, चाँदी और
पीतल के बहुत-से तोह्फ़े भी पेश किए। 11दाऊद
ने यह चीज़ें रब के लिए मख़सूस कर दीं। जहाँ
भी वह दूसरी क़ौमों पर ग़ालिब आया वहाँ की
सोना-चाँदी उसने रब के लिए मख़सूस कर दी।
यों अदोम, मोआब, अम्मोन, फ़िलिस्तिया और
अमालीक़ की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।

12अबीशै बिन ज़रूयाह ने नमक की वादी में
अदोमियों पर फ़तह पाकर 18,000 अफ़राद
हलाक कर दिए। 13उसने अदोम के पूरे मुल्क
में अपनी फ़ौजी चौकियाँ क़ायम कीं, और तमाम
अदोमी दाऊद के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी
जाता रब उस की मदद करके उसे फ़तह बख़्शता।

दाऊद के आला अफ़सर

14जितनी देर दाऊद पूरे इसराईल पर हुकूमत
करता रहा उतनी देर तक उसने ध्यान दिया कि
क़ौम के हर एक शख़्स को इनसाफ़ मिल जाए।
15योआब बिन ज़रूयाह फ़ौज पर मुक़र्रर था।
यहूसफ़त बिन अख़ीलूद बादशाह का मुशीरे-ख़ास
था। 16सदोक़ बिन अख़ीतूब और अबीमलिक
बिन अबियातर इमाम थे। शौशा मीरमुंशी था।
17बिनायाह बिन यहोयदा दाऊद के ख़ास दस्ते
बनाम करेती और फ़लेती का कप्तान मुक़र्रर था।
दाऊद के बेटे आला अफ़सर थे।

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्ज़ती करते हैं

19 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का
बादशाह नाहस फ़ौत हुआ, और
उसका बेटा तख़्तनशीन हुआ। 2दाऊद ने सोचा,
“नाहस ने हमेशा मुझ पर मेहरबानी की थी,
इसलिए अब मैं भी उसके बेटे हनून पर मेहरबानी
करूँगा।” उसने बाप की वफ़ात का अफ़सोस
करने के लिए हनून के पास वफ़्द भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के
दरबार में पहुँच गए ताकि हनून के सामने
अफ़सोस का इज़हार करें 3तो उस मुल्क के बुज़ुर्ग
हनून बादशाह के कान में मनफ़ी बातें भरने लगे,
“क्या दाऊद ने इन आदमियों को वाक़ई सिर्फ़
इसलिए भेजा है कि वह अफ़सोस करके आपके
बाप का एहतराम करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़
बहाना है। असल में यह जासूस हैं जो हमारे
मुल्क के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते
हैं ताकि उस पर क़ब्ज़ा कर सकें।” 4चुनाँचे हनून
ने दाऊद के आदमियों को पकड़वाकर उनकी
दाढ़ियाँ मुँडवा दीं और उनके लिबास को कमर से
लेकर पाँव तक काटकर उतरवाया। इसी हालत
में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग़ कर दिया।

5जब दाऊद को इसकी ख़बर मिली तो उसने
अपने क़ासिदों को उनसे मिलने के लिए भेजा
ताकि उन्हें बताएँ, “यरीहू में उस वक़्त तक ठहरे
रहें जब तक आपकी दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो
जाएँ।” क्योंकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से
बड़ी शरमिंदगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6अम्मोनियों को ख़ूब मालूम था कि इस हरकत
से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इसलिए हनून
और अम्मोनियों ने मसोपुतामिया, अराम-माका
और ज़ोबाह को चाँदी के 34,000 किलोग्राम
भेजकर किराए पर रथ और रथसवार मँगवाए।
7यों उन्हें 32,000 रथ उनके सवारों समेत मिल
गए। माका का बादशाह भी अपने दस्तों के साथ
उनसे मुत्तहिद हुआ। मीदबा के क़रीब उन्होंने
अपनी लशकरगाह लगाई। अम्मोनी भी अपने
शहरों से निकलकर जंग के लिए जमा हुए। 8जब
दाऊद को इसका इल्म हुआ तो उसने योआब
को पूरी फ़ौज के साथ उनका मुक़ाबला करने के
लिए भेज दिया। 9अम्मोनी अपने दारुल-हुकूमत
रब्बा से निकलकर शहर के दरवाज़े के सामने ही
सफ़आरा हुए जबकि दूसरे ममालिक से आए हुए
बादशाह कुछ फ़ासले पर खुले मैदान में खड़े हो
गए।

10जब योआब ने जान लिया कि सामने और
पीछे दोनों तरफ़ से हमले का ख़तरा है तो उसने
अपनी फ़ौज को दो हिस्सों में तक़सीम कर दिया।
सबसे अच्छे फ़ौजियों के साथ वह ख़ुद शाम के
सिपाहियों से लड़ने के लिए तैयार हुआ। 11बाक़ी
आदमियों को उसने अपने भाई अबीशै के हवाले
कर दिया ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें। 12एक
दूसरे से अलग होने से पहले योआब ने अबीशै से
कहा, “अगर शाम के फ़ौजी मुझ पर ग़ालिब आने
लगें तो मेरे पास आकर मेरी मदद करना। लेकिन

अगर आप अम्मोनियों पर क़ाबू न पा सकें तो मैं आकर आपकी मदद करूँगा। 13हौसला रखें! हम दिलेरी से अपनी क़ौम और अपने ख़ुदा के शहरों के लिए लड़ें। और रब वह कुछ होने दे जो उस की नज़र में ठीक है।”

14योआब ने अपनी फ़ौज के साथ शाम के फ़ौजियों पर हमला किया तो वह उसके सामने से भागने लगे। 15यह देखकर अम्मोनी भी उसके भाई अबीशै से फ़रार होकर शहर में दाख़िल हुए। तब योआब यरूशलम वापस चला गया।

शाम के ख़िलाफ़ जंग

16जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की बेइज़्ज़ती का एहसास हुआ तो उन्होंने दरियाए-फ़ुरात के पार मसोपुतामिया में आबाद अरामियों के पास क़ासिद भेजे ताकि वह भी लड़ने में मदद करें। हददअज़र का कमाँडर सोफ़क उन पर मुक़र्रर हुआ। 17जब दाऊद को ख़बर मिली तो उसने इसराईल के तमाम लड़ने के क़ाबिल आदमियों को जमा किया और दरियाए-यरदन को पार करके उनके मुक़ाबिल सफ़आरा हुआ। जब वह यों उनसे लड़ने के लिए तैयार हुआ तो अरामी उसका मुक़ाबला करने लगे। 18लेकिन उन्हें दुबारा शिकस्त मानकर फ़रार होना पड़ा। इस दफ़ा उनके 7,000 रथबानों के अलावा 40,000 प्यादा सिपाही हलाक हुए। दाऊद ने फ़ौज के कमाँडर सोफ़क को भी मार डाला।

19जो अरामी पहले हददअज़र के ताबे थे उन्होंने अब हार मानकर इसराईलियों से सुलह कर ली और उनके ताबे हो गए। उस वक़्त से अरामियों ने अम्मोनियों की मदद करने की फिर जुर्रत न की।

रब्बा शहर पर फ़तह

20 बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। तब योआब ने फ़ौज लेकर अम्मोनियों का मुल्क तबाह कर दिया। लड़ते लड़ते वह रब्बा तक पहुँच गया और उसका मुहासरा करने लगा। लेकिन दाऊद ख़ुद यरूशलम में रहा। फिर योआब ने रब्बा को भी शिकस्त देकर ख़ाक में मिला दिया। 2दाऊद ने हनून बादशाह का ताज उसके सर से उतारकर अपने सर पर रख लिया। सोने के इस ताज का वज़न 34 किलोग्राम था, और उसमें एक बेशक़ीमत जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद ने शहर से बहुत-सा लूटा हुआ माल लेकर 3उसके बाशिंदों को ग़ुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने की आरियाँ, लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी गईं ताकि वह मज़दूरी करें। यही सुलूक बाक़ी अम्मोनी शहरों के बाशिंदों के साथ भी किया गया। जंग के इख़्तिताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के साथ यरूशलम लौट आया।

फ़िलिस्तियों से जंग

4इसके बाद इसराईलियों को जज़र के क़रीब फ़िलिस्तियों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्बकी हूसाती ने देवक़ामत मर्द रफ़ा की औलाद में से एक आदमी को मार डाला जिसका नाम सफ़्फ़ी था। यों फ़िलिस्तियों को ताबे कर लिया गया। 5उनसे एक और लड़ाई के दौरान इल्हनान बिन याईर ने जाती जालूत के भाई लहमी को मौत के घाट उतार दिया। उसका नेज़ा खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा था। 6एक और दफ़ा जात के पास लड़ाई हुई। फ़िलिस्तियों का एक फ़ौजी जो रफ़ा की नसल का था बहुत लंबा था। उसके हाथों और पैरों की छः छः उँगलियाँ यानी मिलकर 24 उँगलियाँ थीं। 7जब वह इसराईलियों का मज़ाक़ उड़ाने लगा तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे मार डाला। 8जात के यह देवक़ामत मर्द रफ़ा की औलाद थे, और वह दाऊद और उसके फ़ौजियों के हाथों हलाक हुए।

दाऊद की मर्दुमशुमारी

21 एक दिन इबलीस इसराईल के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ और दाऊद को इसराईल की मर्दुमशुमारी करने पर उकसाया।

2दाऊद ने योआब और क़ौम के बुज़ुर्गों को हुक्म
दिया, “दान से लेकर बैर-सबा तक इसराईल के
तमाम क़बीलों में से गुज़रते हुए जंग करने के
क़ाबिल मर्दों को गिन लें। फिर वापस आकर मुझे
इत्तला दें ताकि मालूम हो जाए कि उनकी कुल
तादाद क्या है।”

3लेकिन योआब ने एतराज़ किया, “ऐ बादशाह
मेरे आक़ा, काश रब अपने फ़ौजियों की तादाद सौ
गुना बढ़ा दे। क्योंकि यह तो सब आपके ख़ादिम
हैं। लेकिन मेरे आक़ा उनकी मर्दुमशुमारी क्यों
करना चाहते हैं? इसराईल आपके सबब से क्यों
क़ुसूरवार ठहरे?”

4लेकिन बादशाह योआब के एतराज़ात के
बावुजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनाँचे योआब
दरबार से रवाना हुआ और पूरे इसराईल में से
गुज़रकर उस की मर्दुमशुमारी की। इसके बाद वह
यरूशलम वापस आ गया। 5वहाँ उसने दाऊद को
मर्दुमशुमारी की पूरी रिपोर्ट पेश की। इसराईल
में 11,00,000 तलवार चलाने के क़ाबिल
अफ़राद थे जबकि यहूदाह के 4,70,000 मर्द
थे। 6हालाँकि योआब ने लावी और बिनयमीन के
क़बीलों को मर्दुमशुमारी में शामिल नहीं किया था,
क्योंकि उसे यह काम करने से घिन आती थी।

7अल्लाह को दाऊद की यह हरकत बुरी लगी,
इसलिए उसने इसराईल को सज़ा दी। 8तब दाऊद
ने अल्लाह से दुआ की, “मुझसे संगीन गुनाह
सरज़द हुआ है। अब अपने ख़ादिम का क़ुसूर
मुआफ़ कर। मुझसे बड़ी हमाक़त हुई है।” 9तब
रब दाऊद के ग़ैबबीन जाद नबी से हमकलाम
हुआ, 10“दाऊद के पास जाकर उसे बता देना,
‘रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश करता है। इनमें से एक
चुन ले’।”

11जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का
पैग़ाम सुना दिया। उसने सवाल किया, “आप
किस सज़ा को तरजीह देते हैं? 12सात साल
के दौरान काल? या यह कि आपके दुश्मन तीन
माह तक आपको तलवार से मार मारकर आपका
ताक़्क़ुब करते रहें? या यह कि रब की तलवार
इसराईल में से गुज़रे? इस सूरत में रब का
फ़रिश्ता मुल्क में वबा फैलाकर पूरे इसराईल का
सत्यानास कर देगा।”

13दाऊद ने जवाब दिया, “हाय मैं क्या कहूँ?
मैं बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथों में
पड़ जाने की निसबत बेहतर है कि हम रब ही के
हाथों में पड़ जाएँ, क्योंकि उसका रहम निहायत
अज़ीम है।”

14तब रब ने इसराईल में वबा फैलने दी। मुल्क
में 70,000 अफ़राद हलाक हुए। 15अल्लाह ने
अपने फ़रिश्ते को यरूशलम को तबाह करने के
लिए भी भेजा। लेकिन फ़रिश्ता अभी इसके लिए
तैयार हो रहा था कि रब ने लोगों की मुसीबत को
देखकर तरस खाया और तबाह करनेवाले फ़रिश्ते
को हुक्म दिया, “बस कर! अब बाज़ आ।” उस
वक़्त रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ उरनान
यानी अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था।
16दाऊद ने अपनी निगाह उठाकर रब के फ़रिश्ते
को आसमानो-ज़मीन के दरमियान खड़े देखा।
अपनी तलवार मियान से खींचकर उसने उसे
यरूशलम की तरफ़ बढ़ाया था कि दाऊद बुज़ुर्गों
समेत मुँह के बल गिर गया। सब टाट का लिबास
ओढ़े हुए थे। 17दाऊद ने अल्लाह से इलतमास
की, “मैं ही ने हुक्म दिया कि लड़ने के क़ाबिल
मर्दों को गिना जाए। मैं ही ने गुनाह किया है, यह
मेरा ही क़ुसूर है। इन भेड़ों से क्या ग़लती हुई है?
ऐ रब मेरे ख़ुदा, बराहे-करम इनको छोड़कर मुझे
और मेरे ख़ानदान को सज़ा दे। अपनी क़ौम से
वबा दूर कर!”

18फिर रब के फ़रिश्ते ने जाद की मारिफ़त
दाऊद को पैग़ाम भेजा, “अरौनाह यबूसी की
गाहने की जगह के पास जाकर उस पर रब की
क़ुरबानगाह बना ले।”

19चुनाँचे दाऊद चढ़कर गाहने की जगह के
पास आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त
फ़रमाया था। 20उस वक़्त अरौनाह अपने चार
बेटों के साथ गंदुम गाह रहा था। जब उसने
पीछे देखा तो फ़रिश्ता नज़र आया। अरौनाह

के बेटे भागकर छुप गए। 21इतने में दाऊद आ
पहुँचा। उसे देखते ही अरौनाह गाहने की जगह
को छोड़कर उससे मिलने गया और उसके सामने
औंधे मुँह झुक गया। 22दाऊद ने उससे कहा,
“मुझे अपनी गाहने की जगह दे दें ताकि मैं यहाँ
रब के लिए क़ुरबानगाह तामीर करूँ। क्योंकि
यह करने से वबा रुक जाएगी। मुझे इसकी पूरी
क़ीमत बताएँ।”
23अरौनाह ने दाऊद से कहा, “मेरे आक़ा और
बादशाह, इसे लेकर वह कुछ करें जो आपको
अच्छा लगे। देखें, मैं आपको अपने बैलों को भस्म
होनेवाली क़ुरबानियों के लिए दे देता हूँ। अनाज
को गाहने का सामान क़ुरबानगाह पर रखकर
जला दें। मेरा अनाज ग़ल्ला की नज़र के लिए
हाज़िर है। मैं ख़ुशी से आपको यह सब कुछ दे
देता हूँ।” 24लेकिन दाऊद बादशाह ने इनकार
किया, “नहीं, मैं ज़रूर हर चीज़ की पूरी क़ीमत
अदा करूँगा। जो आपकी है उसे मैं लेकर रब को
पेश नहीं करूँगा, न मैं ऐसी कोई भस्म होनेवाली
क़ुरबानी चढ़ाऊँगा जो मुझे मुफ़्त में मिल जाए।”
25चुनाँचे दाऊद ने अरौनाह को उस जगह के
लिए सोने के 600 सिक्के दे दिए। 26उसने वहाँ
रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह तामीर करके उस
पर भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ
चढ़ाईं। जब उसने रब से इलतमास की तो रब ने
उस की सुनी और जवाब में आसमान से भस्म
होनेवाली क़ुरबानी पर आग भेज दी। 27फिर रब
ने मौत के फ़रिश्ते को हुक्म दिया, और उसने
अपनी तलवार को दुबारा मियान में डाल दिया।
28यों दाऊद ने जान लिया कि रब ने अरौनाह
यबूसी की गहने की जगह पर मेरी सुनी जब
मैंने यहाँ क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। 29उस वक़्त रब
का वह मुक़द्दस ख़ैमा जो मूसा ने रेगिस्तान
में बनवाया था जिबऊन की पहाड़ी पर था।
क़ुरबानियों को जलाने की क़ुरबानगाह भी वहीं
थी। 30लेकिन अब दाऊद में वहाँ जाकर रब के
हुज़ूर उस की मरज़ी दरियाफ़्त करने की जुर्रत
न रही, क्योंकि रब के फ़रिश्ते की तलवार को
देखकर उस पर इतनी शदीद दहशत तारी हुई
कि वह जा ही नहीं सकता था।

22

1इसलिए दाऊद ने फ़ैसला किया,
“रब हमारे ख़ुदा का घर गाहने की इस जगह पर
होगा, और यहाँ वह क़ुरबानगाह भी होगी जिस
पर इसराईल के लिए भस्म होनेवाली क़ुरबानी
जलाई जाती है।”

दाऊद रब का घर बनाने की तैयारियाँ करता है

2चुनाँचे उसने इसराईल में रहनेवाले पर-
देसियों को बुलाकर उन्हें अल्लाह के घर के
लिए दरकार तराशे हुए पत्थर तैयार करने की
ज़िम्मेदारी दी। 3इसके अलावा दाऊद ने दरवाज़ों
के किवाड़ों की कीलों और कड़ों के लिए लोहे के
बड़े ढेर लगाए। साथ साथ इतना पीतल इकट्ठा
किया गया कि आख़िरकार उसे तोला न जा
सका। 4इसी तरह देवदार की बहुत ज़्यादा लकड़ी
यरूशलम लाई गई। सैदा और सूर के बाशिंदों
ने उसे दाऊद तक पहुँचाया। 5यह सामान जमा
करने के पीछे दाऊद का यह ख़याल था, “मेरा
बेटा सुलेमान जवान है, और उसका अभी इतना
तजरबा नहीं है, हालाँकि जो घर रब के लिए
बनवाना है उसे इतना बड़ा और शानदार होने की
ज़रूरत है कि तमाम दुनिया हक्का-बक्का रहकर
उस की तारीफ़ करे। इसलिए मैं ख़ुद जहाँ तक
हो सके उसे बनवाने की तैयारियाँ करूँगा।” यही
वजह थी कि दाऊद ने अपनी मौत से पहले इतना
सामान जमा कराया।

दाऊद सुलेमान को रब का घर बनवाने की ज़िम्मेदारी देता है

6फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को बुलाकर
उसे रब इसराईल के ख़ुदा के लिए सुकूनतगाह
बनवाने की ज़िम्मेदारी देकर 7कहा, “मेरे बेटे, मैं
ख़ुद रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर बनाना
चाहता था। 8लेकिन मुझे इजाज़त नहीं मिली,
क्योंकि रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘तूने शदीद

क़िस्म की जंगें लड़कर बेशुमार लोगों को मार
दिया है। नहीं, तू मेरे नाम के लिए घर तामीर नहीं
करेगा, क्योंकि मेरे देखते देखते तू बहुत ख़ूनरेज़ी
का सबब बना है। 9लेकिन तेरे एक बेटा पैदा
होगा जो अमनपसंद होगा। उसे मैं अमनो-अमान
मुहैया करूँगा, उसे चारों तरफ़ के दुश्मनों से लड़ना
नहीं पड़ेगा। उसका नाम सुलेमान होगा, और उस
की हुकूमत के दौरान मैं इसराईल को अमनो-
अमान अता करूँगा। 10वही मेरे नाम के लिए घर
बनाएगा। वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप
हूँगा। और मैं इसराईल पर उस की बादशाही का
तख़्त हमेशा तक क़ायम रखूँगा'।"

11दाऊद ने बात जारी रखकर कहा, "मेरे बेटे,
रब आपके साथ हो ताकि आपको कामयाबी
हासिल हो और आप रब अपने ख़ुदा का घर उसके
वादे के मुताबिक़ तामीर कर सकें। 12आपको
इसराईल पर मुक़र्रर करते वक़्त रब आपको
हिकमत और समझ अता करे ताकि आप रब
अपने ख़ुदा की शरीअत पर अमल कर सकें।
13अगर आप एहतियात से उन हिदायात और
अहकाम पर अमल करें जो रब ने मूसा की
मारिफ़त इसराईल को दे दिए तो आपको ज़रूर
कामयाबी हासिल होगी। मज़बूत और दिलेर
हों। डरें मत और हिम्मत न हारें। 14देखें, मैंने
बड़ी जिद्दो-जहद के साथ रब के घर के लिए
सोने के 34,00,000 किलोग्राम और चाँदी के
3,40,00,000 किलोग्राम तैयार कर रखे हैं।
इसके अलावा मैंने इतना पीतल और लोहा इकट्ठा
किया कि उसे तोला नहीं जा सकता, नीज़ लकड़ी
और पत्थर का ढेर लगाया, अगरचे आप और भी
जमा करेंगे। 15आपकी मदद करनेवाले कारीगर
बहुत हैं। उनमें पत्थर को तराशनेवाले, राज, बढ़ई
और ऐसे कारीगर शामिल हैं जो महारत से हर
क़िस्म की चीज़ बना सकते हैं, 16ख़ाह वह सोने,
चाँदी, पीतल या लोहे की क्यों न हो। बेशुमार ऐसे
लोग तैयार खड़े हैं। अब काम शुरू करें, और रब
आपके साथ हो!"

17फिर दाऊद ने इसराईल के तमाम राहनुमाओं
को अपने बेटे सुलेमान की मदद करने का हुक्म
दिया। 18उसने उनसे कहा, "रब आपका ख़ुदा
आपके साथ है। उसने आपको पड़ोसी क़ौमों से
महफ़ूज़ रखकर अमनो-अमान अता किया है।
मुल्क के बाशिंदों को उसने मेरे हवाले कर दिया,
और अब यह मुल्क रब और उस की क़ौम के ताबे
हो गया है। 19अब दिलो-जान से रब अपने ख़ुदा
के तालिब रहें। रब अपने ख़ुदा के मक़दिस की
तामीर शुरू करें ताकि आप जल्दी से अहद का
संदूक़ और मुक़द्दस ख़ैमे के सामान को उस घर
में ला सकें जो रब के नाम की ताज़ीम में तामीर
होगा।"

23 जब दाऊद उम्ररसीदा था तो उसने
अपने बेटे सुलेमान को इसराईल का
बादशाह बना दिया।

ख़िदमत के लिए लावियों के गुरोह

2दाऊद ने इसराईल के तमाम राहनुमाओं को
इमामों और लावियों समेत अपने पास बुला
लिया। 3तमाम उन लावियों को गिना गया
जिनकी उम्र तीस साल या इससे ज़ायद थी।
उनकी कुल तादाद 38,000 थी। 4इन्हें दाऊद
ने मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियाँ सौंपीं। 24,000
अफ़राद रब के घर की तामीर के निगरान,
6,000 अफ़सर और क़ाज़ी, 54,000 दरबान
और 4,000 ऐसे मौसीक़ार बन गए जिन्हें दाऊद
के बनवाए हुए साज़ों को बजाकर रब की हम्दो-
सना करनी थी।

6दाऊद ने लावियों को लावी के तीन बेटों
जैरसोन, क़िहात और मिरारी के मुताबिक़ तीन
गुरोहों में तक़सीम किया।

7जैरसोन के दो बेटे लादान और सिमई थे।
8लादान के तीन बेटे यहियेल, ज़ैताम और योएल
थे। 9सिमई के तीन बेटे सलूमीत, हज़ियेल और
हारान थे। यह लादान के घरानों के सरबराह थे।
10-11सिमई के चार बेटे बड़े से लेकर छोटे तक
यहत, ज़ीज़ा, यऊस और बरिया थे। चूँकि यऊस

और बरिया के कम बेटे थे इसलिए उनकी औलाद
मिलकर ख़िदमत के लिहाज़ से एक ही ख़ानदान
और गुरोह की हैसियत रखती थी।

12क़िहात के चार बेटे अमराम, इज़हार, हबरून
और उज़्ज़ियेल थे। 13अमराम के दो बेटे हारून
और मूसा थे। हारून और उस की औलाद
को अलग किया गया ताकि वह हमेशा तक
मुक़द्दसतरीन चीज़ों को मख़सूसो-मुक़द्दस रखें,
रब के हुज़ूर क़ुरबानियाँ पेश करें, उस की ख़िदमत
करें और उसके नाम से लोगों को बरकत दें।
14मर्दे-ख़ुदा मूसा के बेटों को बाक़ी लावियों में
शुमार किया जाता था। 15मूसा के दो बेटे जैरसोम
और इलियज़र थे। 16जैरसोम के पहलौठे का
नाम सबुएल था। 17इलियज़र का सिर्फ़ एक
बेटा रहबियाह था। लेकिन रहबियाह की बेशुमार
औलाद थी। 18इज़हार के पहलौठे का नाम
सलूमीत था। 19हबरून के चार बेटे बड़े से लेकर
छोटे तक यरियाह, अमरियाह, यहज़ियेल और
यक़मियाम थे। 20उज़्ज़ियेल का पहलौठा मीकाह
था। दूसरे का नाम यिस्सियाह था।

21मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे।
महली के दो बेटे इलियज़र और क़ीस थे। 22जब
इलियज़र फ़ौत हुआ तो उस की सिर्फ़ बेटियाँ थीं।
इन बेटियों की शादी क़ीस के बेटों यानी चचाज़ाद
भाइयों से हुई। 23मूशी के तीन बेटे महली, इदर
और यरीमोत थे।

24ग़रज़ यह लावी के क़बीले के ख़ानदान और
सरपरस्त थे। हर एक को ख़ानदानी रजिस्टर में
दर्ज किया गया था। इनमें से जो रब के घर में
ख़िदमत करते थे हर एक की उम्र कम अज़ कम
20 साल थी।

25-27क्योंकि दाऊद ने मरने से पहले पहले
हुक्म दिया था कि जितने लावियों की उम्र कम
अज़ कम 20 साल है, वह ख़िदमत के लिए
रजिस्टर में दर्ज किए जाएँ। इस नाते से उसने
कहा था,

“रब इसराईल के ख़ुदा ने अपनी क़ौम को
अमनो-अमान अता किया है, और अब वह हमेशा
के लिए यरूशलम में सुकूनत करेगा। अब से
लावियों को मुलाक़ात का ख़ैमा और उसका
सामान उठाकर जगह बजगह ले जाने की ज़रूरत
नहीं रही। 28अब से वह इमामों की मदद करें
जब यह रब के घर में ख़िदमत करते हैं। वह
सहनों और छोटे कमरों को सँभालें और ध्यान
दें कि रब के घर के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस की
गई चीज़ें पाक-साफ़ रहें। उन्हें अल्लाह के घर में
कई और ज़िम्मेदारियाँ भी सौंपी जाएँ। 29ज़ैल
की चीज़ें सँभालना सिर्फ़ उन्हीं की ज़िम्मेदारी
है : मख़सूसो-मुक़द्दस की गई रोटियाँ, ग़ल्ला की
नज़रों के लिए मुस्तामल मैदा, बेख़मीरी रोटियाँ
पकाने और गूँधने का इंतज़ाम। लाज़िम है कि
वही तमाम लवाज़िमात को अच्छी तरह तोलें और
नापें। 30हर सुबह और शाम को उनके गुलूकार
रब की हम्दो-सना करें। 31जब भी रब को भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश की जाएँ तो लावी मदद
करें, ख़ाह सबत को, ख़ाह नए चाँद की ईद या
किसी और ईद के मौक़े पर हो। लाज़िम है कि वह
रोज़ाना मुक़र्ररा तादाद के मुताबिक़ ख़िदमत के
लिए हाज़िर हो जाएँ।”

32इस तरह लावी पहले मुलाक़ात के ख़ैमे में
और बाद में रब के घर में अपनी ख़िदमत सरंजाम
देते रहे। वह रब के घर की ख़िदमत में अपने
क़बायली भाइयों यानी इमामों की मदद करते थे।

ख़िदमत के लिए इमामों के गुरोह

24 हारून की औलाद को भी मुख़्तलिफ़
गुरोहों में तक़सीम किया गया। हारून
के चार बेटे नदब, अबीहू, इलियज़र और इतमर
थे। 2नदब और अबीहू अपने बाप से पहले मर
गए, और उनके बेटे नहीं थे। इलियज़र और
इतमर इमाम बन गए। 3दाऊद ने इमामों को
ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों में तक़सीम किया।
सदोक़ और अख़ीमलिक ने इसमें दाऊद की
मदद की (सदोक़ इलियज़र की औलाद में से
और अख़ीमलिक इतमर की औलाद में से था)।
4इलियज़र की औलाद को 16 गुरोहों में और

इतमर की औलाद को 8 गुरोहों में तक़सीम
किया गया, क्योंकि इलियज़र की औलाद के
इतने ही ज़्यादा ख़ानदानी सरपरस्त थे। 5तमाम
ज़िम्मेदारियाँ क़ुरा डालकर इन मुख़्तलिफ़ गुरोहों
में तक़सीम की गईं, क्योंकि इलियज़र और इतमर
दोनों ख़ानदानों के बहुत सारे ऐसे अफ़सर थे जो
पहले से मक़दिस में रब की ख़िदमत करते थे।

6यह ज़िम्मेदारियाँ तक़सीम करने के लिए
इलियज़र और इतमर की औलाद बारी बारी
क़ुरा डालते रहे। क़ुरा डालते वक़्त बादशाह,
इसराईल के बुज़ुर्ग, सदोक़ इमाम, अख़ीमलिक
बिन अबियातर और इमामों और लावियों के
ख़ानदानी सरपरस्त हाज़िर थे। मीरमुंशी समायाह
बिन नतनियेल ने जो ख़ुद लावी था ख़िदमत के
इन गुरोहों की फ़हरिस्त ज़ैल की तरतीब से लिख
ली जिस तरह वह क़ुरा डालने से मुक़र्रर किए गए,

71. यहूयरीब, 2. यदायाह,

83. हारिम, 4. सऊरीम,

95. मलकियाह, 6. मियामीन,

107. हक़्क़ूज़, 8. अबियाह,

119. यशुअ, 10. सकनियाह,

1211. इलियासिब, 12. यक़ीम,

1313. ख़ुफ़्फ़ाह, 14. यसबियाब,

1415. बिलजा, 16. इम्मेर,

1517. ख़ज़ीर, 18. फ़िज़्ज़ीज़,

1619. फ़तहियाह, 20. यहिज़केल,

1721. यकीन, 22. जमूल,

1823. दिलायाह, 24. माज़ियाह।

19इमामों को इसी तरतीब के मुताबिक़ रब के
घर में आकर अपनी ख़िदमत सरंजाम देनी थी,
उन हिदायात के मुताबिक़ जो रब इसराईल के
ख़ुदा ने उन्हें उनके बाप हारून की मारिफ़त दी
थीं।

ख़िदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20ज़ैल के लावियों के मज़ीद ख़ानदानी
सरपरस्त हैं :

अमराम की औलाद में से सूबाएल,

सूबाएल की औलाद में से यहदियाह

21रहबियाह की औलाद में से यिस्सियाह
सरपरस्त था,

22इज़हार की औलाद में से सलूमीत,

सलूमीत की औलाद में से यहत,

23हबरून की औलाद में से बड़े से लेकर
छोटे तक यरियाह, अमरियाह, यहज़ियेल और
यक़मियाम,

24उज़्ज़ियेल की औलाद में से मीकाह,

मीकाह की औलाद में से समीर,

25मीकाह का भाई यिस्सियाह,

यिस्सियाह की औलाद में से ज़करियाह,

26मिरारी की औलाद में से महली और मूशी,

उसके बेटे याज़ियाह की औलाद,

27मिरारी के बेटे याज़ियाह की औलाद में से
सूहम, ज़क्कूर और इबरी,

28-29महली की औलाद में से इलियज़र और
क़ीस। इलियज़र बेऔलाद था जबकि क़ीस के हाँ
यरहमियेल पैदा हुआ।

30मूशी की औलाद में से महली, इदर और
यरीमोत भी लावियों के इन मज़ीद ख़ानदानी
सरपरस्तों में शामिल थे।

31इमामों की तरह उनकी ज़िम्मेदारियाँ
भी क़ुरा-अंदाज़ी से मुक़र्रर की गईं। इस
सिलसिले में सबसे छोटे भाई के ख़ानदान
के साथ और सबसे बड़े भाई के ख़ानदान
के साथ सुलूक बराबर था। इस काररवाई
के लिए भी दाऊद बादशाह, सदोक़, अख़ी-
मलिक और इमामों और लावियों के ख़ान-
दानी सरपरस्त हाज़िर थे।

रब के घर में मौसीक़ारों के गुरोह

25 दाऊद ने फ़ौज के आला अफ़-
सरों के साथ आसफ़, हैमान और
यदूतून की औलाद को एक ख़ास ख़िदमत के लिए
अलग कर दिया। उन्हें नबुव्वत की रूह में सरोद,
सितार और झाँझ बजाना था। ज़ैल के आदमियों
को मुक़र्रर किया गया :

2आसफ़ के ख़ानदान से आसफ़ के बेटे ज़क्कूर, यूसुफ़, नतनियाह और असरेलाह। उनका बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह बादशाह की हिदायात के मुताबिक़ नबुव्वत की रूह में साज़ बजाता था।

3यदूतून के ख़ानदान से यदूतून के बेटे जिदलियाह, ज़री, यसायाह, सिमई, हसबियाह, और मत्तितियाह। उनका बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह नबुव्वत की रूह में रब की हम्दो-सना करते हुए सितार बजाता था।

4हैमान के ख़ानदान से हैमान के बेटे बुक़्क़ियाह, मत्तनियाह, उज़्ज़ियेल, सबुएल, यरीमोत, हननियाह, हनानी, इलियाता, जिद्दालती, रूमम्ती-अज़र, यसबिक़ाशा, मल्लूती, हौतीर और महाज़ियोत।
5इन सबका बाप हैमान दाऊद बादशाह का ग़ैबबीन था। अल्लाह ने हैमान से वादा किया था कि मैं तेरी ताक़त बढ़ा दूँगा, इसलिए उसने उसे 14 बेटे और तीन बेटियाँ अता की थीं।

6यह सब अपने अपने बाप यानी आसफ़, यदूतून और हैमान की राहनुमाई में साज़ बजाते थे। जब कभी रब के घर में गीत गाए जाते थे तो यह मौसीक़ार साथ साथ झाँझ, सितार और सरोद बजाते थे। वह अपनी ख़िदमत बादशाह की हिदायात के मुताबिक़ सरंजाम देते थे।
7अपने भाइयों समेत जो रब की ताज़ीम में गीत गाते थे उनकी कुल तादाद 288 थी। सबके सब माहिर थे।
8उनकी मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियाँ भी क़ुरा के ज़रीए मुक़र्रर की गईं। इसमें सबके साथ सुलूक एक जैसा था, ख़ाह जवान थे या बूढ़े, ख़ाह उस्ताद थे या शागिर्द।

9क़ुरा डालकर 24 गुरोहों को मुक़र्रर किया गया। हर गुरोह के बारह बारह आदमी थे। यों ज़ैल के आदमियों के गुरोहों ने तश्कील पाई :

1. आसफ़ के ख़ानदान का यूसुफ़,
2. जिदलियाह,
10 3. ज़क्कूर,
11 4. ज़री,
12 5. नतनियाह,
13 6. बुक़्क़ियाह,
14 7. यसरेलाह,
15 8. यसायाह,
16 9. मत्तनियाह,
17 10. सिमई,
18 11. अज़रेल,
19 12. हसबियाह,
20 13. सूबाएल,
21 14. मत्तितियाह,
22 15. यरीमोत,
23 16. हननियाह,
24 17. यसबिक़ाशा,
25 18. हनानी,
26 19. मल्लूती,
27 20. इलियाता,
28 21. हौतीर,
29 22. जिद्दालती,
30 23. महाज़ियोत,
31 24. रूमम्ती-अज़र।

हर गुरोह में राहनुमा के बेटे और कुछ रिश्तेदार शामिल थे।

रब के घर के दरबान

26 रब के घर के सहन के दरवाज़ों पर पहरादारी करने के गुरोह भी मुक़र्रर किए गए। उनमें ज़ैल के आदमी शामिल थे :

क़ोरह के ख़ानदान का फ़रद मसलमियाह बिन क़ोरे जो आसफ़ की औलाद में से था।
2मसलमियाह के सात बेटे बड़े से लेकर छोटे तक ज़करियाह, यदियएल, ज़बदियाह, यत्नियेल,
3ऐलाम, यूहनान और इलीहूऐनी थे।

4-5ओबेद-अदोम भी दरबान था। अल्लाह ने उसे बरकत देकर आठ बेटे दिए थे। बड़े से लेकर छोटे तक उनके नाम समायाह, यहूज़बद, युआख़, सकार, नतनियेल, अम्मियेल, इशकार और फ़ऊल्लती थे।
6समायाह बिन ओबेद-अदोम के बेटे ख़ानदानी सर-

बराह थे, क्योंकि वह काफ़ी असरो-रसूख़ रखते
थे। 7उनके नाम उतनी, रफ़ाएल, ओबेद और
इल्ज़बद थे। समायाह के रिश्तेदार इलीहू और
समकियाह भी गुरोह में शामिल थे, क्योंकि वह
भी ख़ास हैसियत रखते थे। 8ओबेद-अदोम से
निकले यह तमाम आदमी लायक़ थे। वह अपने
बेटों और रिश्तेदारों समेत कुल 62 अफ़राद थे
और सब महारत से अपनी ख़िदमत सरंजाम देते
थे।

9मसलमियाह के बेटे और रिश्तेदार कुल 18
आदमी थे। सब लायक़ थे।

10मिरारी के ख़ानदान का फ़रद हूसा के
चार बेटे सिमरी, ख़िलक़ियाह, तबलियाह और
ज़करियाह थे। हूसा ने सिमरी को ख़िदमत के
गुरोह का सरबराह बना दिया था अगरचे वह
पहलौठा नहीं था। 11दूसरे बेटे बड़े से लेकर छोटे
तक ख़िलक़ियाह, तबलियाह और ज़करियाह थे।
हूसा के कुल 13 बेटे और रिश्तेदार थे।

12दरबानों के इन गुरोहों में ख़ानदानी सरपरस्त
और तमाम आदमी शामिल थे। बाक़ी लावियों
की तरह यह भी रब के घर में अपनी ख़िदमत
सरंजाम देते थे। 13क़ुरा-अंदाज़ी से मुक़र्रर किया
गया कि कौन-सा गुरोह सहन के किस दरवाज़े
की पहरादारी करे। इस सिलसिले में बड़े और
छोटे ख़ानदानों में इम्तियाज़ न किया गया। 14यों
जब क़ुरा डाला गया तो मसलमियाह के ख़ानदान
का नाम मशरिक़ी दरवाज़े की पहरादारी करने के
लिए निकला। ज़करियाह बिन मसलमियाह के
ख़ानदान का नाम शिमाली दरवाज़े की पहरादारी
करने के लिए निकला। ज़करियाह अपने दाना
मशवरों के लिए मशहूर था। 15जब क़ुरा जुनूबी
दरवाज़े की पहरादारी के लिए डाला गया तो
ओबेद-अदोम का नाम निकला। उसके बेटों को
गोदाम की पहरादारी करने की ज़िम्मेदारी दी गई।
16जब मग़रिबी दरवाज़े और सल्कत दरवाज़े के
लिए क़ुरा डाला गया तो सुफ़्फ़ीम और हूसा के
नाम निकले। सल्कत दरवाज़ा चढ़नेवाले रास्ते पर
है।
पहरादारी की ख़िदमत यों बाँटी गई :

17रोज़ाना मशरिक़ी दरवाज़े पर छः लावी पहरा
देते थे, शिमाली और जुनूबी दरवाज़ों पर चार चार
अफ़राद और गोदाम पर दो। 18रब के घर के सहन
के मग़रिबी दरवाज़े पर छः लावी पहरा देते थे, चार
रास्ते पर और दो सहन में।

19यह सब दरबानों के गुरोह थे। सब क़ोरह और
मिरारी के ख़ानदानों की औलाद थे।

ख़िदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20दूसरे कुछ लावी अल्लाह के घर के ख़ज़ानों
और रब के लिए मख़सूस की गई चीज़ें सँभालते
थे।

21-22दो भाई ज़ैताम और योएल रब के घर के
ख़ज़ानों की पहरादारी करते थे। वह यहियेल के
ख़ानदान के सरपरस्त थे और यों लादान जैरसोनी
की औलाद थे। 23अमराम, इज़हार, हबरून और
उज़्ज़ियेल के ख़ानदानों की यह ज़िम्मेदारियाँ थीं :

24सबुएल बिन जैरसोम बिन मूसा ख़ज़ानों
का निगरान था। 25जैरसोम के भाई इलि-
यज़र का बेटा रहबियाह था। रहबियाह का बेटा
यसायाह, यसायाह का बेटा यूराम, यूराम का
बेटा ज़िकरी और ज़िकरी का बेटा सलूमीत था।
26सलूमीत अपने भाइयों के साथ उन मुक़द्दस
चीज़ों को सँभालता था जो दाऊद बादशाह,
ख़ानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ
फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों और दूसरे आला
अफ़सरों ने रब के लिए मख़सूस की थीं। 27यह
चीज़ें जंगों में लूटे हुए माल में से लेकर रब के घर
को मज़बूत करने के लिए मख़सूस की गई थीं।
28इनमें वह सामान भी शामिल था जो समुएल
ग़ैबबीन, साऊल बिन क़ीस, अबिनैर बिन नैर और
योआब बिन ज़रूयाह ने मक़दिस के लिए मख़सूस
किया था। सलूमीत और उसके भाई इन तमाम
चीज़ों को सँभालते थे।

29इज़हार के ख़ानदान के अफ़राद यानी
कननियाह और उसके बेटों को रब के घर से
बाहर की ज़िम्मेदारियाँ दी गईं। उन्हें निगरानों

और क़ाज़ियों की हैसियत से इसराईल पर मुक़र्रर किया गया। 30हबरून के ख़ानदान के अफ़राद यानी हसबियाह और उसके भाइयों को दरियाए-यरदन के मग़रिब के इलाक़े को सँभालने की ज़िम्मेदारी दी गई। वहाँ वह रब के घर से मुताल्लिक़ कामों के अलावा बादशाह की ख़िदमत भी सरंजाम देते थे। इन लायक़ आदमियों की कुल तादाद 1,700 थी।

31दाऊद बादशाह की हुकूमत के 40वें साल में नसबनामे की तहक़ीक़ की गई ताकि हबरून के ख़ानदान के बारे में मालूमात हासिल हो जाएँ। पता चला कि उसके कई लायक़ रुकन जिलियाद के इलाक़े के शहर याज़ेर में आबाद हैं। यरियाह उनका सरपरस्त था। 32दाऊद बादशाह ने उसे रूबिन, जद और मनस्सी के मशरिक़ी इलाक़े को सँभालने की ज़िम्मेदारी दी। यरियाह की इस ख़िदमत में उसके ख़ानदान के मज़ीद 2,700 अफ़राद भी शामिल थे। सब लायक़ और अपने अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे। उस इलाक़े में वह रब के घर से मुताल्लिक़ कामों के अलावा बादशाह की ख़िदमत भी सरंजाम देते थे।

फ़ौज के गुरोह

27 दर्जे-ज़ैल उन ख़ानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों और सरकारी अफ़सरों की फ़हरिस्त है जो बादशाह के मुलाज़िम थे।

फ़ौज 12 गुरोहों पर मुश्तमिल थी, और हर गुरोह के 24,000 अफ़राद थे। हर गुरोह की ड्यूटी साल में एक माह के लिए लगती थी। 2जो अफ़सर इन गुरोहों पर मुक़र्रर थे वह यह थे :

पहला माह : यसूबियाम बिन ज़बदियेल। 3वह फ़ारस के ख़ानदान का था और उस गुरोह पर मुक़र्रर था जिसकी ड्यूटी पहले महीने में होती थी।

4दूसरा माह : दोदी अख़ूही। उसके गुरोह के आला अफ़सर का नाम मिक़लोत था।

5तीसरा माह : यहोयदा इमाम का बेटा बिनायाह। 6यह दाऊद के बेहतरीन दस्ते बनाम 'तीस' पर मुक़र्रर था और ख़ुद ज़बरदस्त फ़ौजी था। उसके गुरोह का आला अफ़सर उसका बेटा अम्मीज़बद था।

7चौथा माह : योआब का भाई असाहेल। उस की मौत के बाद असाहेल का बेटा ज़बदियाह उस की जगह मुक़र्रर हुआ।

8पाँचवाँ माह : समहूत इज़राख़ी।

9छटा माह : ईरा बिन अक़्क़ीस तक़ूई।

10सातवाँ माह : ख़लिस फ़लूनी इफ़राईमी।

11आठवाँ माह : ज़ारह के ख़ानदान का सिब्बकी हूसाती।

12नवाँ माह : बिनयमीन के क़बीले का अबियज़र अनतोती।

13दसवाँ माह : ज़ारह के ख़ानदान का महरी नतूफ़ाती।

14ग्यारहवाँ माह : इफ़राईम के क़बीले का बिनायाह फ़िरआतोनी।

15बारहवाँ माह : ग़ुतनियेल के ख़ानदान का ख़लदी नतूफ़ाती।

क़बीलों के सरपरस्त

16ज़ैल के आदमी इसराईली क़बीलों के सरपरस्त थे :

रूबिन का क़बीला : इलियज़र बिन ज़िकरी।

शमाऊन का क़बीला : सफ़तियाह बिन माका।

17लावी का क़बीला : हसबियाह बिन क़मुएल। हारून के ख़ानदान का सरपरस्त सदोक़ था।

18यहूदाह का क़बीला : दाऊद का भाई इलीहू।

इशकार का क़बीला : उमरी बिन मीकाएल।

19ज़बूलून का क़बीला : इसमायाह बिन अबदियाह।

नफ़ताली का क़बीला : यरीमोत बिन अज़रियेल।

20इफ़राईम का क़बीला : होसेअ बिन
अज़ज़ियाह।

मग़रिबी मनस्सी का क़बीला : योएल बिन
फ़िदायाह।

21मशरिक़ी मनस्सी का क़बीला जो जि-
लियाद में था : यिद्दू बिन ज़करियाह।

बिनयमीन का क़बीला : यासियेल बिन
अबिनैर।

22दान का क़बीला : अज़रेल बिन यरो-
हाम।

यह बारह लोग इसराईली क़बीलों के सरबराह
थे।

23जितने इसराईली मर्दों की उम्र 20 साल
या इससे कम थी उन्हें दाऊद ने शुमार नहीं
किया, क्योंकि रब ने उससे वादा किया था कि मैं
इसराईलियों को आसमान पर के सितारों जैसा
बेशुमार बना दूँगा। 24नीज़, योआब बिन ज़रूयाह
ने मर्दुमशुमारी को शुरू तो किया लेकिन उसे
इख़्तिताम तक नहीं पहुँचाया था, क्योंकि अल्लाह
का ग़ज़ब मर्दुमशुमारी के बाइस इसराईल पर
नाज़िल हुआ था। नतीजे में दाऊद बादशाह की
तारीख़ी किताब में इसराईलियों की कुल तादाद
कभी नहीं दर्ज हुई।

शाही मिलकियत के इंचार्ज

25अज़मावत बिन अदियेल यरूशलम के शाही
गोदामों का इंचार्ज था।

जो गोदाम देही इलाक़े, बाक़ी शहरों, गाँवों
और क़िलों में थे उनको यूनतन बिन उज़्ज़ियाह
सँभालता था।

26अज़री बिन कलूब शाही ज़मीनों की
काश्तकारी करनेवालों पर मुक़र्रर था।

27सिमई रामाती अंगूर के बाग़ों की निगरानी
करता जबकि ज़बदी शिफ़मी इन बाग़ों की मै के
गोदामों का इंचार्ज था।

28बाल-हनान जदीरी ज़ैतून और अंजीर-तूत के
उन बाग़ों पर मुक़र्रर था जो मग़रिब के नशेबी
पहाड़ी इलाक़े में थे। युआस ज़ैतून के तेल के
गोदामों की निगरानी करता था।

29शारून के मैदान में चरनेवाले गाय-बैल
सितरी शारूनी के ज़ेरे-निगरानी थे जबकि साफ़त
बिन अदली वादियों में चरनेवाले गाय-बैलों को
सँभालता था। 30ओबिल इसमाईली ऊँटों पर
मुक़र्रर था, यहदियाह मरूनोती गधियों पर 31और
याज़ीज़ हाजिरी भेड़-बकरियों पर।

यह सब शाही मिलकियत के निगरान थे।

बादशाह के क़रीबी मुशीर

32दाऊद का समझदार और आलिम चचा
यूनतन बादशाह का मुशीर था। यहियेल बिन
हकमूनी बादशाह के बेटों की तरबियत के
लिए ज़िम्मेदार था। 33अख़ीतुफ़ल दाऊद का
मुशीर जबकि हूसी अरकी दाऊद का दोस्त था।
34अख़ीतुफ़ल के बाद यहोयदा बिन बिनायाह
और अबियातर बादशाह के मुशीर बन गए।
योआब शाही फ़ौज का कमाँडर था।

इसराईल के बुज़ुर्गों के सामने दाऊद की तक़रीर

28 दाऊद ने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों
को यरूशलम बुलाया। इनमें क़बीलों
के सरपरस्त, फ़ौजी डिवीझ़नों पर मुक़र्रर
अफ़सर, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़सर, शाही मिलकियत और रेवड़ों के
इंचार्ज, बादशाह के बेटों की तरबियत करनेवाले
अफ़सर, दरबारी, मुल्क के सूरमा और बाक़ी
तमाम साहबे-हैसियत शामिल थे।

2दाऊद बादशाह उनके सामने खड़े होकर उनसे
मुख़ातिब हुआ,

“मेरे भाइयो और मेरी क़ौम, मेरी बात पर ध्यान
दें! काफ़ी देर से मैं एक ऐसा मकान तामीर
करना चाहता था जिसमें रब के अहद का संदूक़
मुस्तक़िल तौर पर रखा जा सके। आख़िर यह
तो हमारे ख़ुदा की चौकी है। इस मक़सद से
मैं तैयारियाँ करने लगा। 3लेकिन फिर अल्लाह

मुझसे हमकलाम हुआ, ‘मेरे नाम के लिए मकान
बनाना तेरा काम नहीं है, क्योंकि तूने जंगजू होते
हुए बहुत ख़ून बहाया है।’
4रब इसराईल के ख़ुदा ने मेरे पूरे ख़ानदान में से
मुझे चुनकर हमेशा के लिए इसराईल का बादशाह
बना दिया, क्योंकि उस की मरज़ी थी कि यहूदाह
का क़बीला हुकूमत करे। यहूदाह के ख़ानदानों में
से उसने मेरे बाप के ख़ानदान को चुन लिया, और
इसी ख़ानदान में से उसने मुझे पसंद करके पूरे
इसराईल का बादशाह बना दिया। 5रब ने मुझे
बहुत बेटे अता किए हैं। उनमें से उसने मुक़र्रर
किया कि सुलेमान मेरे बाद तख़्त पर बैठकर रब
की उम्मत पर हुकूमत करे। 6रब ने मुझे बताया,
‘तेरा बेटा सुलेमान ही मेरा घर और उसके सहन
तामीर करेगा। क्योंकि मैंने उसे चुनकर फ़रमाया
है कि वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप हूँगा।
7अगर वह आज की तरह आइंदा भी मेरे अहकाम
और हिदायात पर अमल करता रहे तो मैं उस की
बादशाही अबद तक क़ायम रखूँगा।’
8अब मेरी हिदायत पर ध्यान दें, पूरा इसराईल
यानी रब की जमात और हमारा ख़ुदा इसके गवाह
हैं। रब अपने ख़ुदा के तमाम अहकाम के ताबे
रहें! फिर आइंदा भी यह अच्छा मुल्क आपकी
मिलकियत और हमेशा तक आपकी औलाद की
मौरूसी ज़मीन रहेगा। 9ऐ सुलेमान मेरे बेटे, अपने
बाप के ख़ुदा को तसलीम करके पूरे दिलो-जान
और ख़ुशी से उस की ख़िदमत करें। क्योंकि
रब तमाम दिलों की तहक़ीक़ कर लेता है, और
वह हमारे ख़यालों के तमाम मनसूबों से वाक़िफ़
है। उसके तालिब रहें तो आप उसे पा लेंगे।
लेकिन अगर आप उसे तर्क करें तो वह आपको
हमेशा के लिए रद्द कर देगा। 10याद रहे, रब ने
आपको इसलिए चुन लिया है कि आप उसके
लिए मुक़द्दस घर तामीर करें। मज़बूत रहकर इस
काम में लगे रहें!”

रब के घर का नक़्शा

11फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को रब के
घर का नक़्शा दे दिया जिसमें तमाम तफ़सीलात
दर्ज थीं यानी उसके बरामदे, ख़ज़ानों के कमरे,
बालाख़ाने, अंदरूनी कमरे, वह मुक़द्दसतरीन
कमरा जिसमें अहद के संदूक़ को उसके कफ़्फ़ारे
के ढकने समेत रखना था, 12रब के घर के सहन,
उसके इर्दगिर्द के कमरे और वह कमरे जिनमें रब
के लिए मख़सूस किए गए सामान को महफ़ूज़
रखना था।

दाऊद ने रूह की हिदायत से यह पूरा नक़्शा
तैयार किया था। 13उसने रब के घर की ख़िदमत
के लिए दरकार इमामों और लावियों के गुरोहों
को भी मुक़र्रर किया, और साथ साथ रब के
घर में बाक़ी तमाम ज़िम्मेदारियाँ भी। इसके
अलावा उसने रब के घर की ख़िदमत के लिए
दरकार तमाम सामान की फ़हरिस्त भी तैयार
की थी। 14उसने मुक़र्रर किया कि मुख़्तलिफ़
चीज़ों के लिए कितना सोना और कितनी चाँदी
इस्तेमाल करनी है। इनमें ज़ैल की चीज़ें शामिल
थीं : 15सोने और चाँदी के चराग़दान और उनके
चराग़ (मुख़्तलिफ़ चराग़दानों के वज़न फ़रक़ थे,
क्योंकि हर एक का वज़न उसके मक़सद पर
मुनहसिर था), 16सोने की वह मेज़ें जिन पर रब
के लिए मख़सूस रोटियाँ रखनी थीं, चाँदी की मेज़ें,
17ख़ालिस सोने के काँटे, छिड़काव के कटोरे और
सुराही, सोने-चाँदी के प्याले 18और बख़ूर जलाने
की क़ुरबानगाह पर मँढा हुआ ख़ालिस सोना।
दाऊद ने रब के रथ का नक़्शा भी सुलेमान के
हवाले कर दिया, यानी उन करूबी फ़रिश्तों का
नक़्शा जो अपने परों को फैलाकर रब के अहद
के संदूक़ को ढाँप देते हैं।
19दाऊद ने कहा, “मैंने यह तमाम तफ़-
सीलात वैसे ही क़लमबंद कर दी हैं जैसे रब ने
मुझे हिकमत और समझ अता की है।”
20फिर वह अपने बेटे सुलेमान से मुख़ातिब
हुआ, “मज़बूत और दिलेर हों! डरें मत और

हिम्मत मत हारना, क्योंकि रब ख़ुदा मेरा ख़ुदा
आपके साथ है। न वह आपको छोड़ेगा, न तर्क
करेगा बल्कि रब के घर की तकमील तक आपकी
मदद करता रहेगा। 21ख़िदमत के लिए मुक़र्रर
इमामों और लावियों के गुरोह भी आपका सहारा
बनकर रब के घर में अपनी ख़िदमत सरंजाम देंगे।
तामीर के लिए जितने भी माहिर कारीगरों की
ज़रूरत है वह ख़िदमत के लिए तैयार खड़े हैं।
बुज़ुर्गों से लेकर आम लोगों तक सब आपकी हर
हिदायत की तामील करने के लिए मुस्तैद हैं।”

रब के घर की तामीर के लिए नज़राने

29 फिर दाऊद दुबारा पूरी जमात से
मुख़ातिब हुआ, “अल्लाह ने मेरे बेटे
सुलेमान को चुनकर मुक़र्रर किया है कि वह
अगला बादशाह बने। लेकिन वह अभी जवान और
नातजरबाकार है, और यह तामीरी काम बहुत
वसी है। उसे तो यह महल इनसान के लिए नहीं
बनाना है बल्कि रब हमारे ख़ुदा के लिए। 2मैं
पूरी जाँफ़िशानी से अपने ख़ुदा के घर की तामीर
के लिए सामान जमा कर चुका हूँ। इसमें सोना-
चाँदी, पीतल, लोहा, लकड़ी, अक़ीक़े-अहमर,[a]
मुख़्तलिफ़ जड़े हुए जवाहिर और पच्चीकारी के
मुख़्तलिफ़ पत्थर बड़ी मिक़दार में शामिल हैं।
3और चूँकि मुझमें अपने ख़ुदा का घर बनाने के
लिए बोझ है इसलिए मैंने इन चीज़ों के अलावा
अपने ज़ाती ख़ज़ानों से भी सोना और चाँदी दी है
4यानी तक़रीबन 1,00,000 किलोग्राम ख़ालिस
सोना और 2,35,000 किलोग्राम ख़ालिस
चाँदी। मैं चाहता हूँ कि यह कमरों की दीवारों पर
चढ़ाई जाए। 5कुछ कारीगरों के बाक़ी कामों के
लिए भी इस्तेमाल हो सकता है। अब मैं आपसे
पूछता हूँ, आज कौन मेरी तरह ख़ुशी से रब के
काम के लिए कुछ देने को तैयार है?”

6यह सुनकर वहाँ हाज़िर ख़ानदानी सर-
परस्तों, क़बीलों के बुज़ुर्गों, हज़ार हज़ार और
सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों और
बादशाह के आला सरकारी अफ़सरों ने ख़ुशी
से काम के लिए हदिये दिए। 7उस दिन रब के
घर के लिए तक़रीबन 1,70,000 किलोग्राम
सोना, सोने के 10,000 सिक्के, 3,40,000
किलोग्राम चाँदी, 6,10,000 किलोग्राम पीतल
और 34,00,000 किलोग्राम लोहा जमा हुआ।
8जिसके पास जवाहिर थे उसने उन्हें यहियेल
जैरसोनी के हवाले कर दिया जो ख़ज़ानची था
और जिसने उन्हें रब के घर के ख़ज़ाने में महफ़ूज़
कर लिया। 9पूरी क़ौम इस फ़राख़दिली को
देखकर ख़ुश हुई, क्योंकि सबने दिली ख़ुशी और
फ़ैयाज़ी से अपने हदिये रब को पेश किए। दाऊद
बादशाह भी निहायत ख़ुश हुआ।

दाऊद की दुआ

10इसके बाद दाऊद ने पूरी जमात के सामने
रब की तमजीद करके कहा,

“ऐ रब हमारे बाप इसराईल के ख़ुदा, अज़ल
से अबद तक तेरी हम्द हो। 11ऐ रब, अज़मत,
क़ुदरत, जलाल और शानो-शौकत तेरे ही हैं,
क्योंकि जो कुछ भी आसमान और ज़मीन में है
वह तेरा ही है। ऐ रब, सलतनत तेरे हाथ में है,
और तू तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ है। 12दौलत
और इज़्ज़त तुझसे मिलती है, और तू सब पर
हुक्मरान है। तेरे हाथ में ताक़त और क़ुदरत है,
और हर इनसान को तू ही ताक़तवर और मज़बूत
बना सकता है। 13ऐ हमारे ख़ुदा, यह देखकर हम
तेरी सताइश और तेरे जलाली नाम की तारीफ़
करते हैं।

14मेरी और मेरी क़ौम की क्या हैसियत है कि
हम इतनी फ़ैयाज़ी से यह चीज़ें दे सके? आख़िर
हमारी तमाम मिलकियत तेरी तरफ़ से है। जो कुछ
भी हमने तुझे दे दिया वह हमें तेरे हाथ से मिला है।
15अपने बापदादा की तरह हम भी तेरे नज़दीक
परदेसी और ग़ैरशहरी हैं। दुनिया में हमारी ज़िंदगी
साये की तरह आरिज़ी है, और मौत से बचने की
कोई उम्मीद नहीं। 16ऐ रब हमारे ख़ुदा, हमने यह

[a] carnelian

सारा तामीरी सामान इसलिए इकट्ठा किया है कि
तेरे मुक़द्दस नाम के लिए घर बनाया जाए। लेकिन
हक़ीक़त में यह सब कुछ पहले से तेरे हाथ से
हासिल हुआ है। यह पहले से तेरा ही है। 17ऐ
मेरे ख़ुदा, मैं जानता हूँ कि तू इनसान का दिल
जाँच लेता है, कि दियानतदारी तुझे पसंद है। जो
कुछ भी मैंने दिया है वह मैंने ख़ुशी से और अच्छी
नीयत से दिया है। अब मुझे यह देखकर ख़ुशी है
कि यहाँ हाज़िर तेरी क़ौम ने भी इतनी फ़ैयाज़ी से
तुझे हदिये दिए हैं।

18ऐ रब हमारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और
इसराईल के ख़ुदा, गुज़ारिश है कि तू हमेशा तक
अपनी क़ौम के दिलों में ऐसी ही तड़प क़ायम
रख। अता कर कि उनके दिल तेरे साथ लिपटे
रहें। 19मेरे बेटे सुलेमान की भी मदद कर ताकि
वह पूरे दिलो-जान से तेरे अहकाम और हिदायात
पर अमल करे और उस महल को तकमील तक
पहुँचा सके जिसके लिए मैंने तैयारियाँ की हैं।”

20फिर दाऊद ने पूरी जमात से कहा, “आएँ,
रब अपने ख़ुदा की सताइश करें!” चुनाँचे सब
रब अपने बापदादा के ख़ुदा की तमजीद करके
रब और बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गए।

21अगले दिन तमाम इसराईल के लिए भस्म
होनेवाली बहुत-सी क़ुरबानियाँ उनकी मै की
नज़रों समेत रब को पेश की गईं। इसके लिए
1,000 जवान बैलों, 1,000 मेंढों और 1,000
भेड़ के बच्चों को चढ़ाया गया। साथ साथ ज़बह
की बेशुमार क़ुरबानियाँ भी पेश की गईं। 22उस
दिन उन्होंने रब के हुज़ूर खाते-पीते हुए बड़ी ख़ुशी
मनाई। फिर उन्होंने दुबारा इसकी तसदीक़ की
कि दाऊद का बेटा सुलेमान हमारा बादशाह है।
तेल से उसे मसह करके उन्होंने उसे रब के हुज़ूर
बादशाह और सदोक़ को इमाम क़रार दिया।

सुलेमान की ज़बरदस्त हुकूमत

23यों सुलेमान अपने बाप दाऊद की जगह रब
के तख़्त पर बैठ गया। उसे कामयाबी हासिल
हुई, और तमाम इसराईल उसके ताबे रहा।
24तमाम आला अफ़सर, बड़े बड़े फ़ौजी और
दाऊद के बाक़ी बेटों ने भी अपनी ताबेदारी का
इज़हार किया। 25इसराईल के देखते देखते रब
ने सुलेमान को बहुत सरफ़राज़ किया। उसने उस
की सलतनत को ऐसी शानो-शौकत से नवाज़ा
जो माज़ी में इसराईल के किसी भी बादशाह को
हासिल नहीं हुई थी।

दाऊद की वफ़ात

26-27दाऊद बिन यस्सी कुल 40 साल तक
इसराईल का बादशाह रहा, 7 साल हबरून में और
33 साल यरूशलम में। 28वह बहुत उम्ररसीदा
और उम्र, दौलत और इज़्ज़त से आसूदा होकर
इंतक़ाल कर गया। फिर सुलेमान तख़्तनशीन
हुआ।

29बाक़ी जो कुछ दाऊद की हुकूमत के दौरान
हुआ वह तीनों किताबों ‘समुएल ग़ैबबीन की
तारीख़,’ ‘नातन नबी की तारीख़’ और ‘जाद
ग़ैबबीन की तारीख़’ में दर्ज है। 30इनमें उस
की हुकूमत और असरो-रसूख़ की तफ़सीलात
बयान की गई हैं, नीज़ वह कुछ जो उसके साथ,
इसराईल के साथ और गिर्दो-नवाह के ममालिक
के साथ हुआ।

2 तवारीख़

सुलेमान रब से हिकमत माँगता है

1 सुलेमान बिन दाऊद की हुकूमत मज़बूत
हो गई। रब उसका ख़ुदा उसके साथ था,
और वह उस की ताक़त बढ़ाता रहा।
2एक दिन सुलेमान ने तमाम इसराईल को
अपने पास बुलाया। उनमें हज़ार हज़ार और सौ
सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सर, क़ाज़ी, तमाम
बुज़ुर्ग और कुंबों के सरपरस्त शामिल थे। 3फिर
सुलेमान उनके साथ जिबऊन की उस पहाड़ी
पर गया जहाँ अल्लाह का मुलाक़ात का ख़ैमा
था, वही जो रब के ख़ादिम मूसा ने रेगिस्तान
में बनवाया था। 4अहद का संदूक़ उसमें नहीं
था, क्योंकि दाऊद ने उसे क़िरियत-यारीम से
यरूशलम लाकर एक ख़ैमे में रख दिया था जो
उसने वहाँ उसके लिए तैयार कर रखा था।
5लेकिन पीतल की जो क़ुरबानगाह बज़लियेल
बिन ऊरी बिन हूर ने बनाई थी वह अब तक
जिबऊन में रब के ख़ैमे के सामने थी। अब
सुलेमान और इसराईल उसके सामने जमा हुए
ताकि रब की मरज़ी दरियाफ़्त करें। 6वहाँ रब के
हुज़ूर सुलेमान ने पीतल की उस क़ुरबानगाह पर
भस्म होनेवाली 1,000 क़ुरबानियाँ चढ़ाईं।
7उसी रात रब सुलेमान पर ज़ाहिर हुआ और
फ़रमाया, “तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे बता
दे तो मैं तेरी ख़ाहिश पूरी करूँगा।” 8सुलेमान
ने जवाब दिया, “तू मेरे बाप दाऊद पर बड़ी
मेहरबानी कर चुका है, और अब तूने उस की
जगह मुझे तख़्त पर बिठा दिया है। 9तूने मुझे एक
ऐसी क़ौम पर बादशाह बना दिया है जो ज़मीन की
ख़ाक की तरह बेशुमार है। चुनाँचे ऐ रब ख़ुदा, वह
वादा पूरा कर जो तूने मेरे बाप दाऊद से किया है।
10मुझे हिकमत और समझ अता फ़रमा ताकि मैं
इस क़ौम की राहनुमाई कर सकूँ। क्योंकि कौन
तेरी इस अज़ीम क़ौम का इनसाफ़ कर सकता
है?”
11अल्लाह ने सुलेमान से कहा, “मैं ख़ुश हूँ
कि तू दिल से यही कुछ चाहता है। तूने न मालो-
दौलत, न इज़्ज़त, न अपने दुश्मनों की हलाकत
और न उम्र की दराज़ी बल्कि हिकमत और समझ
माँगी है ताकि मेरी उस क़ौम का इनसाफ़ कर
सके जिस पर मैंने तुझे बादशाह बना दिया है।
12इसलिए मैं तेरी यह दरख़ास्त पूरी करके तुझे
हिकमत और समझ अता करूँगा। साथ साथ मैं
तुझे उतना मालो-दौलत और उतनी इज़्ज़त दूँगा
जितनी न माज़ी में किसी बादशाह को हासिल थी,
न मुस्तक़बिल में कभी किसी को हासिल होगी।”
13इसके बाद सुलेमान जिबऊन की उस पहाड़ी
से उतरा जिस पर मुलाक़ात का ख़ैमा था और
यरूशलम वापस चला गया जहाँ वह इसराईल पर
हुकूमत करता था।

सुलेमान की दौलत

14सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े
थे। कुछ उसने रथों के लिए मख़सूस किए गए
शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे।
15बादशाह की सरगरमियों के बाइस चाँदी पत्थर
जैसी आम हो गई और देवदार की क़ीमती लकड़ी
मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अंजीर-तूत
की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई। 16बादशाह
अपने घोड़े मिसर और क़ुए यानी किलिकिया से
दरामद करता था। उसके ताजिर इन जगहों पर
जाकर उन्हें ख़रीद लाते थे। 17बादशाह के रथ
मिसर से दरामद होते थे। हर रथ की क़ीमत चाँदी
के 600 सिक्के और हर घोड़े की क़ीमत चाँदी
के 150 सिक्के थी। सुलेमान के ताजिर यह
घोड़े बरामद करते हुए तमाम हित्ती और अरामी
बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

रब के घर की तामीर की तैयारियाँ

2 फिर सुलेमान ने रब के लिए घर और अपने
लिए शाही महल बनाने का हुक्म दिया।
2इसके लिए उसने 1,50,000 आदमियों की
भरती की। 80,000 को उसने पहाड़ी कानों
में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें जबकि
70,000 अफ़राद की ज़िम्मेदारी यह पत्थर
यरूशलम लाना थी। इन सब पर सुलेमान ने
3,600 निगरान मुक़र्रर किए। 3उसने सूर के
बादशाह हीराम को इत्तला दी, "जिस तरह आप
मेरे बाप दाऊद को देवदार की लकड़ी भेजते रहे
जब वह अपने लिए महल बना रहे थे उसी तरह
मुझे भी देवदार की लकड़ी भेजें। 4मैं एक घर
तामीर करके उसे रब अपने ख़ुदा के नाम के
लिए मख़सूस करना चाहता हूँ। क्योंकि हमें ऐसी
जगह की ज़रूरत है जिसमें उसके हुज़ूर ख़ुशबूदार
बख़ूर जलाया जाए, रब के लिए मख़सूस रोटियाँ
बाक़ायदगी से मेज़ पर रखी जाएँ और ख़ास मौक़ों
पर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश की जाएँ यानी
हर सुबहो-शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईदों
और रब हमारे ख़ुदा की दीगर मुक़र्ररा ईदों पर।
यह इसराईल का दायमी फ़र्ज़ है।

5जिस घर को मैं बनाने को हूँ वह निहायत
अज़ीम होगा, क्योंकि हमारा ख़ुदा दीगर तमाम
माबूदों से कहीं अज़ीम है। 6लेकिन कौन उसके
लिए ऐसा घर बना सकता है जो उसके लायक़
हो? बुलंदतरीन आसमान भी उस की रिहाइश के
लिए छोटा है। तो फिर मेरी क्या हैसियत है कि
उसके लिए घर बनाऊँ? मैं सिर्फ़ ऐसी जगह बना
सकता हूँ जिसमें उसके लिए क़ुरबानियाँ चढ़ाई
जा सकें।

7चुनाँचे मेरे पास किसी ऐसे समझदार कारीगर
को भेज दें जो महारत से सोने-चाँदी, पीतल
और लोहे का काम जानता हो। वह नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का कपड़ा बनाने
और कंदाकारी का उस्ताद भी हो। ऐसा शख़्स
यरूशलम और यहूदाह में मेरे उन कारीगरों
का इंचार्ज बने जिन्हें मेरे बाप दाऊद ने काम
पर लगाया है। 8इसके अलावा मुझे लुबनान
से देवदार, जूनीपर और दीगर क़ीमती दरख़्तों
की लकड़ी भेज दें। क्योंकि मैं जानता हूँ कि
आपके लोग उम्दा क़िस्म के लकड़हारे हैं। मेरे
आदमी आपके लोगों के साथ मिलकर काम
करेंगे। 9हमें बहुत-सी लकड़ी की ज़रूरत होगी,
क्योंकि जो घर मैं बनाना चाहता हूँ वह बड़ा और
शानदार होगा। 10आपके लकड़हारों के काम के
मुआवज़े में मैं 32,75,000 किलोग्राम गंदुम,
27,00,000 किलोग्राम जौ, 4,40,000 लिटर
मै और 4,40,000 लिटर ज़ैतून का तेल दूँगा।"

11सूर के बादशाह हीराम ने ख़त लिखकर
सुलेमान को जवाब दिया, "रब अपनी क़ौम को
प्यार करता है, इसलिए उसने आपको उसका
बादशाह बनाया है। 12रब इसराईल के ख़ुदा
की हम्द हो जिसने आसमानो-ज़मीन को ख़लक़
किया है कि उसने दाऊद बादशाह को इतना
दानिशमंद बेटा अता किया है। उस की तमजीद हो
कि यह अक़्लमंद और समझदार बेटा रब के लिए
घर और अपने लिए महल तामीर करेगा। 13मैं

आपके पास एक माहिर और समझदार कारीगर
को भेज देता हूँ जिसका नाम हीराम-अबी है।
14उस की इसराईली माँ, दान के क़बीले की
है जबकि उसका बाप सूर का है। हीराम सोने-
चाँदी, पीतल, लोहे, पत्थर और लकड़ी की चीज़ें
बनाने में महारत रखता है। वह नीले, अरग़वानी
और क़िरमिज़ी रंग का कपड़ा और कतान का
बारीक कपड़ा बना सकता है। वह हर क़िस्म
की कंदाकारी में भी माहिर है। जो भी मनसूबा
उसे पेश किया जाए उसे वह पायाए-तकमील
तक पहुँचा सकता है। यह आदमी आपके और
आपके मुअज़्ज़ज़ बाप दाऊद के कारीगरों के साथ
मिलकर काम करेगा। 15चुनाँचे जिस गंदुम, जौ,
ज़ैतून के तेल और मै का ज़िक्र मेरे आक़ा ने
किया वह अपने ख़ादिमों को भेज दें। 16मुआवज़े
में हम आपके लिए दरकार दरख़्तों को लुबनान
में कटवाएँगे और उनके बेड़े बाँधकर समुंदर के
ज़रीए याफ़ा शहर तक पहुँचा देंगे। वहाँ से आप
उन्हें यरूशलम ले जा सकेंगे।”

17सुलेमान ने इसराईल में आबाद तमाम
ग़ैरमुल्कियों की मर्दुमशुमारी करवाई। (उस-
के बाप दाऊद ने भी उनकी मर्दुमशुमारी करवाई
थी।) मालूम हुआ कि इसराईल में 1,53,600
ग़ैरमुल्की रहते हैं। 18इनमें से उसने 80,000 को
पहाड़ी कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें
जबकि 70,000 अफ़राद की ज़िम्मेदारी यह
पत्थर यरूशलम लाना थी। इन सब पर सुलेमान
ने 3,600 निगरान मुक़र्रर किए।

रब के घर की तामीर

3 सुलेमान ने रब के घर को यरूशलम की
पहाड़ी मोरियाह पर तामीर किया। उसका
बाप दाऊद यह मक़ाम मुक़र्रर कर चुका था। यहीं
जहाँ पहले उरनान यानी अरौनाह यबूसी अपना
अनाज गाहता था रब दाऊद पर ज़ाहिर हुआ था।
2तामीर का यह काम सुलेमान की हुकूमत के
चौथे साल के दूसरे माह और उसके दूसरे दिन
शुरू हुआ।

3मकान की लंबाई 90 फ़ुट और चौड़ाई 30
फ़ुट थी। 4सामने एक बरामदा बनाया गया जो
इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फ़ुट और 30
फ़ुट ऊँचा था। उस की अंदरूनी दीवारों पर उसने
ख़ालिस सोना चढ़ाया। 5बड़े हाल की दीवारों
पर उसने ऊपर से लेकर नीचे तक जूनीपर की
लकड़ी के तख़्ते लगाए, फिर तख़्तों पर ख़ालिस
सोना मँढवाकर उन्हें खजूर के दरख़्तों और ज़ंजीरों
की तस्वीरों से आरास्ता किया। 6सुलेमान ने रब
के घर को जवाहिर से भी सजाया। जो सोना
इस्तेमाल हुआ वह परवायम से मँगवाया गया था।
7सोना मकान, तमाम शहतीरों, दहलीज़ों, दीवारों
और दरवाज़ों पर मँढा गया। दीवारों पर करूबी
फ़रिश्तों की तस्वीरें भी कंदा की गईं।

मुक़द्दसतरीन कमरा

8इमारत का सबसे अंदरूनी कमरा बनाम
मुक़द्दसतरीन कमरा इमारत जैसा चौड़ा यानी 30
फ़ुट था। उस की लंबाई भी 30 फ़ुट थी। इस
कमरे की तमाम दीवारों पर 20,000 किलोग्राम
से ज़ायद सोना मँढा गया। 9सोने की कीलों का
वज़न तक़रीबन 600 ग्राम था। बालाख़ानों की
दीवारों पर भी सोना मँढा गया।

10फिर सुलेमान ने करूबी फ़रिश्तों के दो
मुजस्समे बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में
रखा गया। उन पर भी सोना चढ़ाया गया।
11-13जब दोनों फ़रिश्तों को एक दूसरे के साथ
मुक़द्दसतरीन कमरे में खड़ा किया गया तो उनके
चार परों की मिलकर लंबाई 30 फ़ुट थी। हर एक
के दो पर थे, और हर पर की लंबाई साढ़े सात
सात फ़ुट थी। उन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में यों एक
दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि हर फ़रिश्ते का
एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और
बाईं तरफ़ हर एक का दूसरा पर दीवार के साथ
लगता था। वह अपने पाँवों पर खड़े बड़े हाल की
तरफ़ देखते थे। 14मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े
पर सुलेमान ने बारीक कतान से बुना हुआ परदा
लगवाया। वह नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग

के धागे से सजा हुआ था, और उस पर करूबी फ़रिश्तों की तस्वीरें थीं।

रब के घर के दरवाज़े पर दो सतून

15सुलेमान ने दो सतून ढलवाकर रब के घर के दरवाज़े के सामने खड़े किए। हर एक 27 फ़ुट लंबा था, और हर एक पर एक बालाई हिस्सा रखा गया जिसकी ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट थी।
16इन बालाई हिस्सों को ज़ंजीरों से सजाया गया जिनसे सौ अनार लटके हुए थे। 17दोनों सतूनों को सुलेमान ने रब के घर के दरवाज़े के दाईं और बाईं तरफ़ खड़ा किया। दहने हाथ के सतून का नाम उसने 'यकीन' और बाएँ हाथ के सतून का नाम 'बोअज़' रखा।

क़ुरबानगाह और समुंदर नामी हौज़

4 सुलेमान ने पीतल की एक क़ुरबानगाह भी बनवाई जिसकी लंबाई 30 फ़ुट, चौड़ाई 30 फ़ुट और ऊँचाई 15 फ़ुट थी।

2इसके बाद उसने पीतल का बड़ा गोल हौज़ ढलवाया जिसका नाम 'समुंदर' रखा गया। उस की ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट, उसका मुँह 15 फ़ुट चौड़ा और उसका घेरा तक़रीबन 45 फ़ुट था। 3हौज़ के
किनारे के नीचे बैलों की दो क़तारें थीं। फ़ी फ़ुट तक़रीबन 6 बैल थे। बैल और हौज़ मिलकर ढाले
गए थे। 4हौज़ को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों का रुख़ शिमाल की तरफ़, तीन का रुख़ मग़रिब की तरफ़, तीन का रुख़ जुनूब की तरफ़ और तीन का रुख़ मशरिक़ की तरफ़ था। उनके पिछले हिस्से हौज़ की तरफ़ थे, और
हौज़ उनके कंधों पर पड़ा था। 5हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल की तरह बाहर की तरफ़ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार तक़रीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के तक़रीबन 66,000 लिटर समा जाते थे।

6सुलेमान ने 10 बासन ढलवाए। पाँच को रब के घर के दाएँ हाथ और पाँच को उसके बाएँ हाथ खड़ा किया गया। इन बासनों में गोश्त के वह टुकड़े धोए जाते जिन्हें भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर जलाना था। लेकिन 'समुंदर' नामी हौज़ इमामों के इस्तेमाल के लिए था। उसमें वह नहाते थे।

सोने के शमादान और मेज़ें

7सुलेमान ने सोने के 10 शमादान मुक़र्ररा तफ़सीलात के मुताबिक़ बनवाकर रब के घर में रख दिए, पाँच को दाईं तरफ़ और पाँच को बाईं
तरफ़। 8दस मेज़ें भी बनाकर रब के घर में रखी गईं, पाँच को दाईं तरफ़ और पाँच को बाईं तरफ़। इन चीज़ों के अलावा सुलेमान ने छिड़काव के सोने के 100 कटोरे बनवाए।

सहन

9फिर सुलेमान ने वह अंदरूनी सहन बनवाया जिसमें सिर्फ़ इमामों को दाख़िल होने की इजाज़त थी। उसने बड़ा सहन भी उसके दरवाज़ों समेत बनवाया। दरवाज़ों के किवाड़ों पर पीतल चढ़ाया
गया। 10'समुंदर' नामी हौज़ को सहन के जुनूब-मशरिक़ में रखा गया।

उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने तैयार किया

11हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काव के कटोरे भी बनाए। यों उसने अल्लाह के घर में वह सारा काम मुकम्मल किया जिसके लिए सुलेमान बादशाह ने उसे बुलाया था। उसने ज़ैल की चीज़ें बनाईं :

12दो सतून,
सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,
बालाई हिस्सों पर लगी ज़ंजीरों का डिज़ायन,
13ज़ंजीरों के ऊपर लगे अनार (फ़ी बालाई हिस्सा 200 अदद),
14हथगाड़ियाँ,
इन पर के पानी के बासन,
15हौज़ बनाम समुंदर,
इसे उठानेवाले बैल के 12 मुजस्समे,

16बालटियाँ, बेलचे, गोश्त के काँटे।

तमाम सामान जो हीराम-अबी ने सुलेमान के हुक्म पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढालकर पालिश किया गया था। 17बादशाह ने उसे वादीए-यरदन में सुक्कात और ज़रतान के दरमियान ढलवाया। वहाँ एक फ़ौंडरी थी जहाँ हीराम ने गारे से साँचे बनाकर हर चीज़ ढाल दी। 18इस सामान के लिए सुलेमान बादशाह ने इतना ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि उसका कुल वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अंदर सोने का सामान

19अल्लाह के घर के अंदर के लिए सुलेमान ने दर्जे-ज़ैल सामान बनवाया :

सोने की क़ुरबानगाह,

सोने की वह मेज़ें जिन पर रब के लिए मख़सूस रोटियाँ पड़ी रहती थीं,

20ख़ालिस सोने के वह शमादान और चराग़ जिनको क़वायद के मुताबिक़ मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने जलना था,

21ख़ालिस सोने के वह फूल जिनसे शमादान आरास्ता थे,

ख़ालिस सोने के चराग़ और बत्ती को बुझाने के औज़ार,

22चराग़ को कतरने के ख़ालिस सोने के औज़ार, छिड़काव के ख़ालिस सोने के कटोरे और प्याले,

जलते हुए कोयले के लिए ख़ालिस सोने के बरतन,

मुक़द्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़े।

5 रब के घर की तकमील पर सुलेमान ने वह सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम क़ीमती चीज़ें रब के घर के ख़ज़ानों में रखवा दीं जो उसके बाप दाऊद ने अल्लाह के लिए मख़सूस की थीं।

अहद का संदूक़ रब के घर में लाया जाता है

2फिर सुलेमान ने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों और क़बीलों और कुंबों के तमाम सरपरस्तों को अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्योंकि रब के अहद का संदूक़ अब तक यरूशलम के उस हिस्से में था जो 'दाऊद का शहर' या सिय्यून कहलाता है। सुलेमान चाहता था कि क़ौम के नुमाइंदे हाज़िर हों जब संदूक़ को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए। 3चुनाँचे इसराईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने[a] में बादशाह के पास यरूशलम में जमा हुए। इसी महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती थी।

4जब सब जमा हुए तो लावी रब के संदूक़ को उठाकर 5रब के घर में लाए। इमामों के साथ मिलकर उन्होंने मुलाक़ात के ख़ैमे को भी उसके तमाम मुक़द्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया। 6वहाँ संदूक़ के सामने सुलेमान बादशाह और बाक़ी तमाम जमाशुदा इसराईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल क़ुरबान किए कि उनकी तादाद गिनी नहीं जा सकती थी।

7इमामों ने रब के अहद का संदूक़ पिछले यानी मुक़द्दसतरीन कमरे में लाकर करूबी फ़रिश्तों के परों के नीचे रख दिया। 8फ़रिश्तों के पर पूरे संदूक़ पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे। 9तो भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लंबी थीं कि उनके सिरे सामनेवाले यानी मुक़द्दस कमरे से नज़र आते थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज तक वह वहीं मौजूद हैं। 10संदूक़ में सिर्फ़ पत्थर की वह दो तख़्तियाँ थीं जिनको मूसा ने होरिब यानी कोहे-सीना के दामन में उसमें रख दिया था, उस वक़्त जब रब ने मिसर से निकले हुए इसराईलियों के साथ अहद बाँधा था। 11फिर इमाम मुक़द्दस कमरे से निकलकर सहन में आए।

जितने इमाम आए थे उन सबने अपने आपको पाक-साफ़ किया हुआ था, ख़ाह उस वक़्त उनके

[a]सितंबर ता अक्तूबर

गुरोह की रब के घर में ड्यूटी थी या नहीं।
12लावियों के तमाम गुलूकार भी हाज़िर थे।
उनके राहनुमा आसफ़, हैमान और यदूतून अपने बेटों और रिश्तेदारों समेत सब बारीक कतान के लिबास पहने हुए क़ुरबानगाह के मशरिक़ में खड़े थे। वह झाँझ, सितार और सरोद बजा रहे थे, जबकि उनके साथ 120 इमाम तुरम फूँक रहे
थे। 13गानेवाले और तुरम बजानेवाले मिलकर रब की सताइश कर रहे थे। तुरमों, झाँझों और बाक़ी साज़ों के साथ उन्होंने बुलंद आवाज़ से रब की तमजीद में गीत गाया, "वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।"

तब रब का घर एक बादल से भर गया।
14इमाम रब के घर में अपनी ख़िदमत अंजाम न दे सके, क्योंकि अल्लाह का घर उसके जलाल के बादल से मामूर हो गया था।

6 यह देखकर सुलेमान ने दुआ की, "रब ने फ़रमाया है कि मैं घने बादल के अंधेरे में
रहूँगा। 2मैंने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई है, एक मक़ाम जो तेरी अबदी सुकूनत के लायक़ है।"

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की तक़रीर

3फिर बादशाह ने मुड़कर रब के घर के सामने खड़ी इसराईल की पूरी जमात की तरफ़ रुख़ किया। उसने उन्हें बरकत देकर कहा,

4"रब इसराईल के ख़ुदा की तारीफ़ हो जिसने वह वादा पूरा किया है जो उसने मेरे बाप दाऊद से किया था। क्योंकि उसने फ़रमाया, 5'जिस दिन
मैं अपनी क़ौम को मिसर से निकाल लाया उस दिन से लेकर आज तक मैंने न कभी फ़रमाया कि इसराईली क़बीलों के किसी शहर में मेरे नाम की ताज़ीम में घर बनाया जाए, न किसी को मेरी क़ौम इसराईल पर हुकूमत करने के लिए मुक़र्रर किया।
6लेकिन अब मैंने यरूशलम को अपने नाम की सुकूनतगाह और दाऊद को अपनी क़ौम इसराईल का बादशाह बनाया है।'

7मेरे बाप दाऊद की बड़ी ख़ाहिश थी कि रब इसराईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर बनाए। 8लेकिन रब ने एतराज़ किया, 'मैं ख़ुश हूँ कि तू मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना चाहता है, 9लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे बनाएगा।'

10और वाक़ई, रब ने अपना वादा पूरा किया है।
मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद की जगह इसराईल का बादशाह बनकर तख़्त पर बैठ गया हूँ। और अब मैंने रब इसराईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 11उसमें
मैंने वह संदूक़ रख दिया है जिसमें शरीअत की तख़्तियाँ पड़ी हैं, उस अहद की तख़्तियाँ जो रब ने इसराईलियों से बाँधा था।"

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की दुआ

12फिर सुलेमान ने इसराईल की पूरी जमात के देखते देखते रब की क़ुरबानगाह के सामने खड़े होकर अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाए।
13उसने इस मौक़े के लिए पीतल का एक चबूतरा बनवाकर उसे बैरूनी सहन के बीच में रखवा दिया था। चबूतरा साढ़े 7 फ़ुट लंबा, साढ़े 7 फ़ुट चौड़ा और साढ़े 4 फ़ुट ऊँचा था। अब सुलेमान उस पर चढ़कर पूरी जमात के देखते देखते झुक गया। अपने हाथों को आसमान की तरफ़ उठाकर
14उसने दुआ की,

"ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, तुझ जैसा कोई ख़ुदा नहीं है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना वह अहद क़ायम रखता है जिसे तूने अपनी क़ौम के साथ बाँधा है और अपनी मेहरबानी उन सब पर ज़ाहिर करता है जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते
हैं। 15तूने अपने ख़ादिम दाऊद से किया हुआ वादा पूरा किया है। जो बात तूने अपने मुँह से मेरे बाप से की वह तूने अपने हाथ से आज ही पूरी की
है। 16ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, अब अपनी दूसरी बात भी पूरी कर जो तूने अपने ख़ादिम दाऊद से की थी। क्योंकि तूने मेरे बाप से वादा किया था,

‘अगर तेरी औलाद तेरी तरह अपने चाल-चलन
पर ध्यान देकर मेरी शरीअत के मुताबिक़ मेरे हुज़ूर
चलती रहे तो इसराईल पर उस की हुकूमत हमेशा
तक क़ायम रहेगी।’ 17ऐ रब इसराईल के ख़ुदा,
अब बराहे-करम अपना यह वादा पूरा कर जो तूने
अपने ख़ादिम दाऊद से किया है।

18लेकिन क्या अल्लाह वाक़ई ज़मीन पर
इनसान के दरमियान सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो
बुलंदतरीन आसमान में भी समा नहीं सकता! तो
फिर यह मकान जो मैंने बनाया है किस तरह तेरी
सुकूनतगाह बन सकता है? 19ऐ रब मेरे ख़ुदा, तो
भी अपने ख़ादिम की दुआ और इल्तिजा सुन जब
मैं तेरे हुज़ूर पुकारते हुए इलतमास करता हूँ 20कि
बराहे-करम दिन-रात इस इमारत की निगरानी
कर! क्योंकि यह वह जगह है जिसके बारे में तूने
ख़ुद फ़रमाया, ‘यहाँ मेरा नाम सुकूनत करेगा।’
चुनाँचे अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं इस
मक़ाम की तरफ़ रुख़ किए हुए करता हूँ। 21जब
हम इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें
तो अपने ख़ादिम और अपनी क़ौम की इल्तिजाएँ
सुन। आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन।
और जब सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

22अगर किसी पर इलज़ाम लगाया जाए और
उसे यहाँ तेरी क़ुरबानगाह के सामने लाया जाए
ताकि हलफ़ उठाकर वादा करे कि मैं बेक़ुसूर हूँ
23तो बराहे-करम आसमान पर से सुनकर अपने
ख़ादिमों का इनसाफ़ कर। क़ुसूरवार को सज़ा
देकर उसके अपने सर पर वह कुछ आने दे जो
उससे सरज़द हुआ है, और बेक़ुसूर को बेइलज़ाम
क़रार दे और उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

24हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इसराईल
तेरा गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने
शिकस्त खाए। अगर इसराईली आख़िरकार तेरे
पास लौट आएँ और तेरे नाम की तमजीद करके
यहाँ इस घर में तेरे हुज़ूर दुआ और इलतमास करें
25तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना।
अपनी क़ौम इसराईल का गुनाह मुआफ़ करके
उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस लाना जो तूने उन्हें
और उनके बापदादा को दे दिया था।

26हो सकता है इसराईली तेरा इतना संगीन
गुनाह करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश
न बरसे। अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़
रुख़ करके तेरे नाम की तमजीद करें और तेरी
सज़ा के बाइस अपना गुनाह छोड़कर लौट आएँ
27तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना।
अपने ख़ादिमों और अपनी क़ौम इसराईल को
मुआफ़ कर, क्योंकि तू ही उन्हें अच्छी राह की
तालीम देता है। तब उस मुल्क पर दुबारा बारिश
बरसा दे जो तूने अपनी क़ौम को मीरास में दे दिया
है।

28हो सकता है इसराईल में काल पड़ जाए,
अनाज की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिड्डियों
या कीड़ों से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी
शहर का मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी
हो, 29अगर कोई इसराईली या तेरी पूरी क़ौम
उसका सबब जानकर अपने हाथों को इस घर
की तरफ़ बढ़ाए और तुझसे इलतमास करे 30तो
आसमान पर अपने तख़्त से उनकी फ़रियाद सुन
लेना। उन्हें मुआफ़ करके हर एक को उस की
तमाम हरकतों का बदला दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही
हर इनसान के दिल को जानता है। 31फिर जितनी
देर वह उस मुल्क में ज़िंदगी गुज़ारेंगे जो तूने हमारे
बापदादा को दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़
मानकर तेरी राहों पर चलते रहेंगे।

32आइंदा परदेसी भी तेरे अज़ीम नाम, तेरी
बड़ी क़ुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के सबब
से आएँगे और इस घर की तरफ़ रुख़ करके दुआ
करेंगे। अगरचे वह तेरी क़ौम इसराईल के नहीं
होंगे 33तो भी आसमान पर से उनकी फ़रियाद
सुन लेना। जो भी दरख़ास्त वह पेश करें वह पूरी
करना ताकि दुनिया की तमाम अक़वाम तेरा नाम
जानकर तेरी क़ौम इसराईल की तरह ही तेरा
ख़ौफ़ मानें और जान लें कि जो इमारत मैंने तामीर
की है उस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।

34हो सकता है तेरी क़ौम के मर्द तेरी हिदायत
के मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए
निकलें। अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस
इमारत की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें जो मैंने
तेरे नाम के लिए तामीर की है 35तो आसमान पर
से उनकी दुआ और इलतमास सुनकर उनके हक़
में इनसाफ़ क़ायम रखना।

36हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें
तो हम सबसे सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे
में तू नाराज़ होकर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे
जो उन्हें क़ैद करके किसी दूर-दराज़ या क़रीबी
मुल्क में ले जाए। 37शायद वह जिलावतनी में
तौबा करके दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें और तुझसे
इलतमास करें, 'हमने गुनाह किया है, हमसे
ग़लती हुई है, हमने बेदीन हरकतें की हैं।'

38अगर वह ऐसा करके अपनी क़ैद के मुल्क में
अपने पूरे दिलो-जान से दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें
और तेरी तरफ़ से बापदादा को दिए गए मुल्क,
तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़
रुख़ करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए
तामीर की है 39तो आसमान पर अपने तख़्त से
उनकी दुआ और इलतमास सुन लेना। उनके हक़
में इनसाफ़ क़ायम करना, और अपनी क़ौम के
गुनाहों को मुआफ़ कर देना। 40ऐ मेरे ख़ुदा, तेरी
आँखें और तेरे कान उन दुआओं के लिए खुले रहें
जो इस जगह पर की जाती हैं।

41ऐ रब ख़ुदा, उठकर अपनी आरामगाह के
पास आ, तू और अहद का संदूक़ जो तेरी क़ुदरत
का इज़हार है। ऐ रब ख़ुदा, तेरे इमाम नजात से
मुलब्बस हो जाएँ, और तेरे ईमानदार तेरी भलाई
की ख़ुशी मनाएँ। 42ऐ रब ख़ुदा, अपने मसह किए
हुए ख़ादिम को रद्द न कर बल्कि उस शफ़क़त को
याद कर जो तूने अपने ख़ादिम दाऊद पर की है।"

रब के घर की मख़सूसियत पर जशन

7 सुलेमान की इस दुआ के इख़्तिताम पर
आग ने आसमान पर से नाज़िल होकर
भस्म होनेवाली और ज़बह की क़ुरबानियों को
भस्म कर दिया। साथ साथ रब का घर उसके
जलाल से यों मामूर हुआ 2कि इमाम उसमें
दाख़िल न हो सके। 3जब इसराईलियों ने देखा
कि आसमान पर से आग नाज़िल हुई है और घर
रब के जलाल से मामूर हो गया है तो वह मुँह के
बल झुककर रब की हम्दो-सना करके गीत गाने
लगे, "वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी
है।"

4-5फिर बादशाह और तमाम क़ौम ने रब के
हुज़ूर क़ुरबानियाँ पेश करके अल्लाह के घर
को मख़सूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान
ने 22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-
बकरियों को क़ुरबान किया। 6इमाम और लावी
अपनी अपनी ज़िम्मेदारियों के मुताबिक़ खड़े थे।
लावी उन साज़ों को बजा रहे थे जो दाऊद ने
रब की सताइश करने के लिए बनवाए थे। साथ
साथ वह हम्द का वह गीत गा रहे थे जो उन्होंने
दाऊद से सीखा था, "उस की शफ़क़त अबदी
है।" लावियों के मुक़ाबिल इमाम तुरम बजा रहे
थे जबकि बाक़ी तमाम लोग खड़े थे। 7सुलेमान ने
सहन का दरमियानी हिस्सा क़ुरबानियाँ चढ़ाने के
लिए मख़सूस किया। वजह यह थी कि पीतल की
क़ुरबानगाह इतनी क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए
छोटी थी, क्योंकि भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और
ग़ल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी।
इसके अलावा सलामती की बेशुमार क़ुरबानियों
की चरबी को भी जलाना था।

8-9ईद 14 दिनों तक मनाई गई। पहले हफ़्ते में
सुलेमान और तमाम इसराईल ने क़ुरबानगाह की
मख़सूसियत मनाई और दूसरे हफ़्ते में झोंपड़ियों
की ईद। इस ईद में बहुत ज़्यादा लोग शरीक
हुए। वह दूर-दराज़ इलाक़ों से यरूशलम आए थे,
शिमाल में लबो-हमात से लेकर जुनूब में उस वादी
तक जो मिसर की सरहद थी। आख़िरी दिन पूरी
जमात ने इख़्तितामी जशन मनाया। 10यह सातवें
माह के 23वें दिन वुक़ूपज़ीर हुआ। इसके बाद
सुलेमान ने इसराईलियों को रुख़सत किया। सब
शादमान और दिल से ख़ुश थे कि रब ने दाऊद,

सुलेमान और अपनी क़ौम इसराईल पर इतनी
मेहरबानी की है।

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

11चुनाँचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल
को तकमील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उसने
ठान लिया था वह पूरा हुआ। 12एक रात रब उस
पर ज़ाहिर हुआ और कहा,

"मैंने तेरी दुआ को सुनकर तय कर लिया
है कि यह घर वही जगह हो जहाँ तुम मुझे
क़ुरबानियाँ पेश कर सको। 13जब कभी मैं बारिश
का सिलसिला रोकूँ, या फ़सलें ख़राब करने के
लिए टिड्डियाँ भेजूँ या अपनी क़ौम में वबा फैलने
दूँ 14तो अगर मेरी क़ौम जो मेरे नाम से कहलाती
है अपने आपको पस्त करे और दुआ करके मेरे
चेहरे की तालिब हो और अपनी शरीर राहों से बाज़
आए तो फिर मैं आसमान पर से उस की सुनकर
उसके गुनाहों को मुआफ़ कर दूँगा और मुल्क को
बहाल करूँगा। 15अब से जब भी यहाँ दुआ माँगी
जाए तो मेरी आँखें खुली रहेंगी और मेरे कान
उस पर ध्यान देंगे। 16क्योंकि मैंने इस घर को
चुनकर मख़सूसो-मुक़द्दस कर रखा है ताकि मेरा
नाम हमेशा तक यहाँ क़ायम रहे। मेरी आँखें और
दिल हमेशा इसमें हाज़िर रहेंगे। 17जहाँ तक तेरा
ताल्लुक़ है, अपने बाप दाऊद की तरह मेरे हुज़ूर
चलता रह। क्योंकि अगर तू मेरे तमाम अहकाम
और हिदायात की पैरवी करता रहे 18तो मैं तेरी
इसराईल पर हुकूमत क़ायम रखूँगा। फिर मेरा वह
वादा क़ायम रहेगा जो मैंने तेरे बाप दाऊद से अहद
बाँधकर किया था कि इसराईल पर तेरी औलाद
की हुकूमत हमेशा तक क़ायम रहेगी।

19लेकिन ख़बरदार! अगर तू मुझसे दूर होकर
मेरे दिए गए अहकाम और हिदायात को तर्क करे
बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रुजू करके उनकी
ख़िदमत और परस्तिश करे 20तो मैं इसराईल को
जड़ से उखाड़कर उस मुल्क से निकाल दूँगा जो
मैंने उनको दे दिया है। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस
घर को भी रद्द कर दूँगा जो मैंने अपने नाम के
लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया है। उस वक़्त
मैं इसराईल को तमाम अक़वाम में मज़ाक़ और
लान-तान का निशाना बना दूँगा। 21इस शानदार
घर की बुरी हालत देखकर यहाँ से गुज़रनेवाले
तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह
पूछेंगे, 'रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा
सुलूक क्यों किया?' 22तब लोग जवाब देंगे,
'इसलिए कि गो रब उनके बापदादा का ख़ुदा
उन्हें मिसर से निकालकर यहाँ लाया तो भी यह
लोग उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए
हैं। चूँकि वह उनकी परस्तिश और ख़िदमत करने
से बाज़ न आए इसलिए उसने उन्हें इस सारी
मुसीबत में डाल दिया है'।"

सुलेमान की मुख़्तलिफ़ मुहिमात

8 रब के घर और शाही महल को तामीर
करने में 20 साल लग गए थे। 2इसके
बाद सुलेमान ने वह आबादियाँ नए सिरे से तामीर
कीं जो हीराम ने उसे दे दी थीं। इनमें उसने
इसराईलियों को बसा दिया।

3एक फ़ौजी मुहिम के दौरान उसने हमात-
ज़ोबाह पर हमला करके उस पर क़ब्ज़ा कर
लिया। 4इसके अलावा उसने हमात के इलाक़े में
गोदाम के शहर बनाए। रेगिस्तान के शहर तदमूर
में उसने बहुत-सा तामीरी काम कराया 5-6और
इसी तरह बालाई और नशेबी बैत-हौरून और
बालात में भी। इन शहरों के लिए उसने फ़सील
और कुंडेवाले दरवाज़े बनवाए। सुलेमान ने अपने
गोदामों के लिए और अपने रथों और घोड़ों को
रखने के लिए भी शहर बनवाए।

जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी
सलतनत की किसी और जगह बनवाना चाहता
था वह उसने बनवाया। 7-8जिन आदमियों की
सुलेमान ने बेगार पर भरती की वह इसराईली
नहीं थे बल्कि हित्ती, अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी
और यबूसी यानी कनान के पहले बाशिंदों की
वह औलाद थे जो बाक़ी रह गए थे। मुल्क पर
क़ब्ज़ा करते वक़्त इसराईली इन क़ौमों को पूरे

तौर पर मिटा न सके, और आज तक इनकी
औलाद को इसराईल के लिए बेगार में काम करना
पड़ता है। 9लेकिन सुलेमान ने इसराईलियों को
ऐसे काम करने पर मजबूर न किया बल्कि वह
उसके फ़ौजी और रथों के फ़ौजियों के अफ़सर
बन गए, और उन्हें रथों और घोड़ों पर मुक़र्रर किया
गया। 10सुलेमान के तामीरी काम पर भी 250
इसराईली मुक़र्रर थे जो ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों
के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम करनेवालों की
निगरानी करते थे।

11फ़िरौन की बेटी यरूशलम के पुराने हिस्से
बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में मुंतक़िल
हुई जो सुलेमान ने उसके लिए तामीर किया था,
क्योंकि सुलेमान ने कहा, "लाज़िम है कि मेरी
अहलिया इसराईल के बादशाह दाऊद के महल
में न रहे। चूँकि रब का संदूक़ यहाँ से गुज़रा है,
इसलिए यह जगह मुक़द्दस है।"

रब के घर में ख़िदमत की तरतीब

12उस वक़्त से सुलेमान रब को रब के घर
के बड़े हाल के सामने की क़ुरबानगाह पर भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करता था। 13जो कुछ
भी मूसा ने रोज़ाना की क़ुरबानियों के मुताल्लिक़
फ़रमाया था उसके मुताबिक़ बादशाह क़ुरबानियाँ
चढ़ाता था। इनमें वह क़ुरबानियाँ भी शामिल थीं
जो सबत के दिन, नए चाँद की ईद पर और
साल की तीन बड़ी ईदों पर यानी फ़सह की ईद,
हफ़्तों की ईद और झोंपड़ियों की ईद पर पेश की
जाती थीं। 14सुलेमान ने इमामों के मुख़्तलिफ़
गुरोहों को वह ज़िम्मेदारियाँ सौंपीं जो उसके बाप
दाऊद ने मुक़र्रर की थीं। लावियों की ज़िम्मेदारियाँ
भी मुक़र्रर की गईं। उनकी एक ज़िम्मेदारी रब
की हम्दो-सना करने में परस्तारों की राहनुमाई
करनी थी। नीज़, उन्हें रोज़ाना की ज़रूरियात
के मुताबिक़ इमामों की मदद करनी थी। रब के
घर के दरवाज़ों की पहरादारी भी लावियों की
एक ख़िदमत थी। हर दरवाज़े पर एक अलग
गुरोह की ड्यूटी लगाई गई। यह भी मर्दे-ख़ुदा
दाऊद की हिदायात के मुताबिक़ हुआ। 15जो भी
हुक्म दाऊद ने इमामों, लावियों और ख़ज़ानों के
मुताल्लिक़ दिया था वह उन्होंने पूरा किया।

16यों सुलेमान के तमाम मनसूबे रब के घर की
बुनियाद रखने से लेकर उस की तकमील तक पूरे
हुए।

17बाद में सुलेमान अस्यून-जाबर और ऐलात
गया। यह शहर अदोम के साहिल पर वाक़े थे।
18वहाँ हीराम बादशाह ने अपने जहाज़ और
तजरबाकार मल्लाह भेजे ताकि वह सुलेमान के
आदमियों के साथ मिलकर जहाज़ों को चलाएँ।
उन्होंने ओफ़ीर तक सफ़र किया और वहाँ से
सुलेमान के लिए तक़रीबन 15,000 किलोग्राम
सोना लेकर आए।

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

9 सुलेमान की शोहरत सबा की मलिका तक
पहुँच गई। जब उसने उसके बारे में सुना
तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना हुई
ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की
दानिशमंदी जाँच ले। वह निहायत बड़े क़ाफ़िले
के साथ यरूशलम पहुँची जिसके ऊँट बलसान,
कसरत के सोने और क़ीमती जवाहिर से लदे हुए
थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाक़ात हुई तो उसने
उससे वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उसके
ज़हन में थे। 2सुलेमान उसके हर सवाल का
जवाब दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा
नहीं थी कि वह उसका मतलब मलिका को
बता न सकता। 3सबा की मलिका सुलेमान की
हिकमत और उसके नए महल से बहुत मुतअस्सिर
हुई। 4उसने बादशाह की मेज़ों पर के मुख़्तलिफ़
खाने देखे और यह कि उसके अफ़सर किस
तरतीब से उस पर बिठाए जाते थे। उसने बैरों की
ख़िदमत, उनकी शानदार वरदियों और साक़ियों
की शानदार वरदियों पर भी ग़ौर किया। जब
उसने इन बातों के अलावा भस्म होनेवाली वह

क़ुरबानियाँ भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में
चढ़ाता था तो मलिका हक्का-बक्का रह गई।
5वह बोल उठी, "वाक़ई, जो कुछ मैंने अपने
मुल्क में आपके शाहकारों और हिकमत के बारे
में सुना था वह दुरुस्त है। 6जब तक मैंने ख़ुद
आकर यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा
मुझे यक़ीन नहीं आता था। लेकिन हक़ीक़त में
मुझे आपकी ज़बरदस्त हिकमत के बारे में आधा
भी नहीं बताया गया था। वह उन रिपोर्टों से
कहीं ज़्यादा है जो मुझ तक पहुँची थीं। 7आपके
लोग कितने मुबारक हैं! आपके अफ़सर कितने
मुबारक हैं जो मुसलसल आपके सामने खड़े
रहते और आपकी दानिश भरी बातें सुनते हैं!
8रब आपके ख़ुदा की तमजीद हो जिसने आपको
पसंद करके अपने तख़्त पर बिठाया ताकि रब
अपने ख़ुदा की ख़ातिर हुकूमत करें। आपका ख़ुदा
इसराईल से मुहब्बत रखता है, और वह उसे
अबद तक क़ायम रखना चाहता है, इसी लिए
उसने आपको उनका बादशाह बना दिया है ताकि
इनसाफ़ और रास्तबाज़ी क़ायम रखें।"
9फिर मलिका ने सुलेमान को तक़रीबन
4,000 किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बलसान
और जवाहिर दे दिए। पहले कभी भी उतना
बलसान इसराईल में नहीं लाया गया था जितना
उस वक़्त सबा की मलिका लाई।
10हीराम और सुलेमान के आदमी ओफ़ीर
से न सिर्फ़ सोना लाए बल्कि उन्होंने क़ीमती
लकड़ी और जवाहिर भी इसराईल तक पहुँचाए।
11जितनी क़ीमती लकड़ी उन दिनों में यहूदाह
में दरामद हुई उतनी पहले कभी वहाँ लाई नहीं
गई थी। इस लकड़ी से बादशाह ने रब के घर
और अपने महल के लिए सीढ़ियाँ बनवाईं। यह
मौसीक़ारों के सरोद और सितार बनाने के लिए
भी इस्तेमाल हुई।
12सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा
की मलिका को बहुत-से तोहफ़े दिए। यह उन
चीज़ों से ज़्यादा थे जो मलिका अपने मुल्क से
उसके पास लाई थी। जो भी मलिका चाहती
थी या उसने माँगा वह उसे दिया गया। फिर
वह अपने नौकर-चाकरों और अफ़सरों के हमराह
अपने वतन वापस चली गई।

सुलेमान की दौलत और शोहरत

13जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता
था उसका वज़न तक़रीबन 23,000 किलो-
ग्राम था। 14इसमें वह टैक्स शामिल नहीं थे
जो उसे सौदागरों, ताजिरों, अरब बादशाहों और
ज़िलों के अफ़सरों से मिलते थे। यह उसे सोना
और चाँदी देते थे।
15-16सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और
300 छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मँढा गया।
हर बड़ी ढाल के लिए तक़रीबन 7 किलोग्राम
सोना इस्तेमाल हुआ और हर छोटी ढाल के लिए
साढ़े 3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें 'लुबनान का
जंगल' नामी महल में महफ़ूज़ रखा।
17इनके अलावा बादशाह ने हाथीदाँत से
आरास्ता एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर
ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। 18-19उसके हर बाज़ू
के साथ शेरबबर का मुजस्समा था। तख़्त कुछ
ऊँचा था, और बादशाह छः पाएवाली सीढ़ी पर
चढ़कर उस पर बैठता था। दाईं और बाईं तरफ़
हर पाए पर शेरबबर का मुजस्समा था। पाँवों के
लिए सोने की चौकी बनाई गई थी। इस क़िस्म
का तख़्त किसी और सलतनत में नहीं पाया जाता
था।
20सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि
'लुबनान का जंगल' नामी महल में तमाम बरतन
ख़ालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं
थी, क्योंकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई
क़दर नहीं थी। 21बादशाह के अपने बहरी जहाज़
थे जो हीराम के बंदों के साथ मिलकर मुख़्तलिफ़
जगहों पर जाते थे। हर तीन साल के बाद वह
सोने-चाँदी, हाथीदाँत, बंदरों और मोरों से लदे हुए
वापस आते थे।
22सुलेमान की दौलत और हिकमत दुनिया के
तमाम बादशाहों से कहीं ज़्यादा थी। 23दुनिया

के तमाम बादशाह उससे मिलने की कोशिश
करते रहे ताकि वह हिकमत सुन लें जो अल्लाह
ने उसके दिल में डाल दी थी। 24साल बसाल
जो भी सुलेमान के दरबार में आता वह कोई न
कोई तोहफ़ा लाता। यों उसे सोने-चाँदी के बरतन,
क़ीमती लिबास, हथियार, बलसान, घोड़े और
ख़च्चर मिलते रहे।

25घोड़ों और रथों को रखने के लिए सुलेमान
के 4,000 थान थे। उसके 12,000 घोड़े थे।
कुछ उसने रथों के लिए मख़सूस किए गए
शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे।
26सुलेमान उन तमाम बादशाहों का हुक्मरान
था जो दरियाए-फ़ुरात से लेकर फ़िलिस्तियों के
मुल्क की मिसरी सरहद तक हुकूमत करते थे।
27बादशाह की सरगरमियों के बाइस चाँदी पत्थर
जैसी आम हो गई और देवदार की क़ीमती लकड़ी
मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अंजीर-तूत
की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई। 28बादशाह
के घोड़े मिसर और दीगर कई मुल्कों से दरामद
होते थे।

सुलेमान की मौत

29सुलेमान की ज़िंदगी के बारे में मज़ीद
बातें शुरू से लेकर आख़िर तक 'नातन नबी
की तारीख़,' सैला के रहनेवाले नबी अख़ि-
याह की किताब 'अख़ियाह की नबुव्वत' और
यरुबियाम बिन नबात से मुताल्लिक़ किताब 'इद्दू
ग़ैबबीन की रोयाएँ' में दर्ज हैं।

30सुलेमान 40 साल के दौरान पूरे इस-
राईल पर हुकूमत करता रहा। उसका दा-
रुल-हुकूमत यरूशलम था। 31जब वह मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम
के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो 'दाऊद का
शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा रहुबियाम
तख़्तनशीन हुआ।

शिमाली क़बीले अलग हो जाते हैं

10 रहुबियाम सिकम गया, क्योंकि
वहाँ तमाम इसराईली उसे बाद-
शाह मुक़र्रर करने के लिए जमा हो गए थे।
2यरुबियाम बिन नबात यह ख़बर सुनते ही मिसर
से जहाँ उसने सुलेमान बादशाह से भागकर पनाह
ली थी इसराईल वापस आया। 3इसराईलियों ने
उसे बुलाया ताकि उसके साथ सिकम जाएँ। जब
पहुँचा तो इसराईल की पूरी जमात यरुबियाम के
साथ मिलकर रहुबियाम से मिलने गई। उन्होंने
बादशाह से कहा, 4"जो जुआ आपके बाप ने
हम पर डाल दिया था उसे उठाना मुश्किल था,
और जो वक़्त और पैसे हमें बादशाह की ख़िदमत
में सर्फ़ करने थे वह नाक़ाबिले-बरदाश्त थे। अब
दोनों को कम कर दें। फिर हम ख़ुशी से आपकी
ख़िदमत करेंगे।"

5रहुबियाम ने जवाब दिया, "मुझे तीन दिन की
मोहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।" चुनाँचे
लोग चले गए। 6फिर रहुबियाम बादशाह ने उन
बुज़ुर्गों से मशवरा किया जो सुलेमान के जीते-जी
बादशाह की ख़िदमत करते रहे थे। उसने पूछा,
"आपका क्या ख़याल है? मैं इन लोगों को क्या
जवाब दूँ?" 7बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, "हमारा
मशवरा है कि इस वक़्त उनसे मेहरबानी से पेश
आकर उनसे अच्छा सुलूक करें और नरम जवाब
दें। अगर आप ऐसा करें तो वह हमेशा आपके
वफ़ादार ख़ादिम बने रहेंगे।"

8लेकिन रहुबियाम ने बुज़ुर्गों का मशवरा रद्द
करके उस की ख़िदमत में हाज़िर उन जवानों से
मशवरा किया जो उसके साथ परवान चढ़े थे।
9उसने पूछा, "मैं इस क़ौम को क्या जवाब दूँ?
यह तक़ाज़ा कर रहे हैं कि मैं वह जुआ हलका
कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर डाल दिया।" 10जो
जवान उसके साथ परवान चढ़े थे उन्होंने कहा,
"अच्छा, यह लोग तक़ाज़ा कर रहे हैं कि आपके
बाप का जुआ हलका किया जाए? उन्हें बता
देना, 'मेरी छोटी उँगली मेरे बाप की कमर से

ज़्यादा मोटी है! 11बेशक जो जुआ उसने आप
पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन
मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने
आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से
तादीब करूँगा'!"

12तीन दिन के बाद जब यरुबियाम तमाम
इसराईलियों के साथ रहुबियाम का फ़ैसला सुनने
के लिए वापस आया 13तो बादशाह ने उन्हें
सख़्त जवाब दिया। बुज़ुर्गों का मशवरा रद्द करके
14उसने उन्हें जवानों का जवाब दिया, "बेशक जो
जुआ मेरे बाप ने आप पर डाल दिया उसे उठाना
मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी
होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ
मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!" 15यों रब
की मरज़ी पूरी हुई कि रहुबियाम लोगों की बात
नहीं मानेगा। क्योंकि अब रब की वह पेशगोई पूरी
हुई जो सैला के नबी अख़ियाह ने यरुबियाम बिन
नबात को बताई थी।

16जब इसराईलियों ने देखा कि बादशाह हमारी
बात सुनने के लिए तैयार नहीं है तो उन्होंने उससे
कहा, "न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा,
न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ
इसराईल, सब अपने अपने घर वापस चलें! ऐ
दाऊद, अब अपना घर ख़ुद सँभाल लो!" यह
कहकर वह सब चले गए।

17सिर्फ़ यहूदाह के क़बीले के शहरों में
रहनेवाले इसराईली रहुबियाम के तहत रहे।
18फिर रहुबियाम बादशाह ने बेगारियों पर मुक़र्रर
अफ़सर अदूनीराम को शिमाली क़बीलों के पास
भेज दिया, लेकिन उसे देखकर लोगों ने उसे
संगसार किया। तब रहुबियाम जल्दी से अपने
रथ पर सवार हुआ और भागकर यरूशलम पहुँच
गया।

19यों इसराईल के शिमाली क़बीले दाऊद के
शाही घराने से अलग हो गए और आज तक उस
की हुकूमत नहीं मानते।

रहुबियाम को इसराईल से लड़ने की इजाज़त नहीं मिलती

11 जब रहुबियाम यरूशलम पहुँचा तो
उसने यहूदाह और बिनयमीन के
क़बीलों के चीदा चीदा फ़ौजियों को इसराईल
से जंग करने के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द
जमा हुए ताकि रहुबियाम के लिए इसराईल पर
दुबारा क़ाबू पाएँ। 2लेकिन ऐन उस वक़्त मर्दे-
ख़ुदा समायाह को रब की तरफ़ से पैग़ाम मिला,
3"यहूदाह के बादशाह रहुबियाम बिन सुलेमान
और यहूदाह और बिनयमीन के तमाम अफ़राद
को इत्तला दे, 4'रब फ़रमाता है कि अपने भाइयों
से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर वापस
चला जाए, क्योंकि जो कुछ हुआ है वह मेरे हुक्म
पर हुआ है'।"

तब वह रब की सुनकर यरुबियाम से लड़ने से
बाज़ आए।

रहुबियाम की क़िलाबंदी

5रहुबियाम का दारुल-हुकूमत यरूशलम रहा।
यहूदाह में उसने ज़ैल के शहरों की क़िलाबंदी की :
6बैत-लहम, ऐताम, तक़ुअ, 7बैत-सूर, सोका,
अदुल्लाम, 8जात, मरेसा, ज़ीफ़, 9अदूराईम,
लकीस, अज़ीक़ा, 10सुरआ, ऐयालोन और
हबरून। यहूदाह और बिनयमीन के इन क़िलाबंद
शहरों को 11मज़बूत करके रहुबियाम ने हर शहर
पर अफ़सर मुक़र्रर किए। उनमें उसने ख़ुराक,
ज़ैतून के तेल और मै का ज़ख़ीरा कर लिया
12और साथ साथ उनमें ढालें और नेज़े भी रखे।
इस तरह उसने उन्हें बहुत मज़बूत बनाकर यहूदाह
और बिनयमीन पर अपनी हुकूमत महफ़ूज़ कर
ली।

इमाम और लावी यहूदाह में मुंतक़िल हो जाते हैं

13गो इमाम और लावी तमाम इसराईल में
बिखरे रहते थे तो भी उन्होंने रहुबियाम का साथ
दिया। 14अपनी चरागाहों और मिलकियत को

छोड़कर वह यहूदाह और यरूशलम में आबाद
हुए, क्योंकि यरुबियाम और उसके बेटों ने उन्हें
इमाम की हैसियत से रब की ख़िदमत करने से
रोक दिया था। 15उनकी जगह उसने अपने ज़ाती
इमाम मुक़र्रर किए जो ऊँची जगहों पर के मंदिरों
को सँभालते हुए बकरे के देवताओं और बछड़े के
बुतों की ख़िदमत करते थे। 16लावियों की तरह
तमाम क़बीलों के बहुत-से ऐसे लोग यहूदाह में
मुंतक़िल हुए जो पूरे दिल से रब इसराईल के ख़ुदा
के तालिब रहे थे। वह यरूशलम आए ताकि रब
अपने बापदादा के ख़ुदा को क़ुरबानियाँ पेश कर
सकें। 17यहूदाह की सलतनत ने ऐसे लोगों से
तक़वियत पाई। वह रहुबियाम बिन सुलेमान के
लिए तीन साल तक मज़बूती का सबब थे, क्योंकि
तीन साल तक यहूदाह दाऊद और सुलेमान के
अच्छे नमूने पर चलता रहा।

रहुबियाम का ख़ानदान

18रहुबियाम की शादी महलत से हुई जो
यरीमोत और अबीख़ैल की बेटी थी। यरीमोत
दाऊद का बेटा और अबीख़ैल इलियाब बिन
यस्सी की बेटी थी। 19महलत के तीन बेटे
यऊस, समरियाह और ज़हम पैदा हुए। 20बाद में
रहुबियाम की माका बिंत अबीसलूम से शादी हुई।
इस रिश्ते से चार बेटे अबियाह, अत्ती, ज़ीज़ा और
सलूमीत पैदा हुए। 21रहुबियाम की 18 बीवियाँ
और 60 दाश्ताएँ थीं। इनके कुल 28 बेटे और 60
बेटियाँ पैदा हुईं। लेकिन माका बिंत अबीसलूम
रहुबियाम को सबसे ज़्यादा प्यारी थी। 22उसने
माका के पहलौठे अबियाह को उसके भाइयों
का सरबराह बना दिया और मुक़र्रर किया कि
यह बेटा मेरे बाद बादशाह बनेगा। 23रहुबियाम
ने अपने बेटों से बड़ी समझदारी के साथ सुलूक
किया, क्योंकि उसने उन्हें अलग अलग करके
यहूदाह और बिनयमीन के पूरे क़बायली इलाक़े
और तमाम क़िलाबंद शहरों में बसा दिया। साथ
साथ वह उन्हें कसरत की ख़ुराक और बीवियाँ
मुहैया करता रहा।

मिसर की यहूदाह पर फ़तह

12 जब रहुबियाम की सलतनत ज़ोर
पकड़कर मज़बूत हो गई तो उसने
तमाम इसराईल समेत रब की शरीअत को तर्क
कर दिया। 2उनकी रब से बेवफ़ाई का नतीजा
यह निकला कि रहुबियाम की हुकूमत के पाँचवें
साल में मिसर के बादशाह सीसक़ ने यरूशलम
पर हमला किया। 3उस की फ़ौज बहुत बड़ी
थी। 1,200 रथों के अलावा 60,000 घुड़सवार
और लिबिया, सुक्कियों के मुल्क और एथोपिया
के बेशुमार प्यादा सिपाही थे। 4यके बाद दीगरे
यहूदाह के क़िलाबंद शहरों पर क़ब्ज़ा करते करते
मिसरी बादशाह यरूशलम तक पहुँच गया।

5तब समायाह नबी रहुबियाम और यहूदाह के
उन बुज़ुर्गों के पास आया जिन्होंने सीसक़ के आगे
आगे भागकर यरूशलम में पनाह ली थी। उसने
उनसे कहा, "रब फ़रमाता है, 'तुमने मुझे तर्क
कर दिया है, इसलिए अब मैं तुम्हें तर्क करके
सीसक़ के हवाले कर दूँगा'।" 6यह पैग़ाम सुनकर
रहुबियाम और यहूदाह के बुज़ुर्गों ने बड़ी इंकिसारी
के साथ तसलीम किया कि रब ही आदिल है।
7उनकी यह आजिज़ी देखकर रब ने समायाह से
कहा, "चूँकि उन्होंने बड़ी ख़ाकसारी से अपना
ग़लत रवैया तसलीम कर लिया है इसलिए मैं
उन्हें तबाह नहीं करूँगा बल्कि जल्द ही उन्हें रिहा
करूँगा। मेरा ग़ज़ब सीसक़ के ज़रीए यरूशलम
पर नाज़िल नहीं होगा। 8लेकिन वह इस क़ौम को
ज़रूर अपने ताबे कर रखेगा। तब वह समझ लेंगे
कि मेरी ख़िदमत करने और दीगर ममालिक के
बादशाहों की ख़िदमत करने में क्या फ़रक़ है।"

9मिसर के बादशाह सीसक़ ने यरूशलम पर
हमला करते वक़्त रब के घर और शाही महल के
तमाम ख़ज़ाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी
छीन ली गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं। 10इनकी
जगह रहुबियाम ने पीतल की ढालें बनवाईं और
उन्हें उन मुहाफ़िज़ों के अफ़सरों के सुपुर्द किया
जो शाही महल के दरवाज़े की पहरादारी करते

थे। 11जब भी बादशाह रब के घर में जाता तब मुहाफ़िज़ यह ढालें उठाकर साथ ले जाते। इसके बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते थे।

12चूँकि रहुबियाम ने बड़ी इंकिसारी से अपना ग़लत रवैया तसलीम किया इसलिए रब का उस पर ग़ज़ब ठंडा हो गया, और वह पूरे तौर पर तबाह न हुआ। दर-हक़ीक़त यहूदाह में अब तक कुछ न कुछ पाया जाता था जो अच्छा था।

रहुबियाम की मौत

13रहुबियाम की सलतनत ने दुबारा तक़वियत पाई, और यरूशलम में रहकर वह अपनी हुकूमत जारी रख सका। 41 साल की उम्र में वह तख़्तनशीन हुआ था, और वह 17 साल बादशाह रहा। उसका दारुल-हुकूमत यरूशलम था, वह शहर जिसे रब ने तमाम इसराईली क़बीलों में से चुन लिया ताकि उसमें अपना नाम क़ायम करे। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। 14रहुबियाम ने अच्छी ज़िंदगी न गुज़ारी, क्योंकि वह पूरे दिल से रब का तालिब न रहा था।

15बाक़ी जो कुछ रहुबियाम की हुकूमत के दौरान शुरू से लेकर आख़िर तक हुआ उसका समायाह नबी और ग़ैबबीन इद्दू की तारीख़ी किताब में बयान है। वहाँ उसके नसबनामे का ज़िक्र भी है। दोनों बादशाहों रहुबियाम और यरुबियाम के जीते-जी उनके दरमियान जंग जारी रही। 16जब रहुबियाम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़नाया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा अबियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अबियाह

13 अबियाह इसराईल के बादशाह यरुबियाम अव्वल की हुकूमत के 18वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2वह तीन साल बादशाह रहा, और उसका दारुल-हुकूमत यरूशलम था। उस की माँ माका बिंत ऊरियेल जिबिया की रहनेवाली थी।

एक दिन अबियाह और यरुबियाम के दरमियान जंग छिड़ गई। 34,00,000 तजरबाकार फ़ौजियों को जमा करके अबियाह यरुबियाम से लड़ने के लिए निकला। यरुबियाम 8,00,000 तजरबाकार फ़ौजियों के साथ उसके मुक़ाबिल सफ़आरा हुआ। 4फिर अबियाह ने इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के पहाड़ समरैम पर चढ़कर बुलंद आवाज़ से पुकारा,

"यरुबियाम और तमाम इसराईलियो, मेरी बात सुनें! 5क्या आपको नहीं मालूम कि रब इसराईल के ख़ुदा ने दाऊद से नमक का अबदी अहद बाँधकर उसे और उस की औलाद को हमेशा के लिए इसराईल की सलतनत अता की है? 6तो भी सुलेमान बिन दाऊद का मुलाज़िम यरुबियाम बिन नबात अपने मालिक के ख़िलाफ़ उठकर बाग़ी हो गया। 7उसके इर्दगिर्द कुछ बदमाश जमा हुए और रहुबियाम बिन सुलेमान की मुख़ालफ़त करने लगे। उस वक़्त वह जवान और नातजरबाकार था, इसलिए उनका सहीह मुक़ाबला न कर सका।

8और अब आप वाक़ई समझते हैं कि हम रब की बादशाही पर फ़तह पा सकते हैं, उसी बादशाही पर जो दाऊद की औलाद के हाथ में है। आप समझते हैं कि आपकी फ़ौज बहुत ही बड़ी है, और कि सोने के बछड़े आपके साथ हैं, वही बुत जो यरुबियाम ने आपकी पूजा के लिए तैयार कर रखे हैं। 9लेकिन आपने रब के इमामों यानी हारून की औलाद को लावियों समेत मुल्क से निकालकर उनकी जगह ऐसे पुजारी ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किए जैसे बुतपरस्त क़ौमों में पाए जाते हैं। जो भी चाहता है कि उसे मख़सूस करके इमाम बनाया जाए उसे सिर्फ़ एक जवान बैल और सात मेंढे पेश करने की ज़रूरत है। यह इन नामनिहाद ख़ुदाओं का पुजारी बनने के लिए काफ़ी है।

10लेकिन जहाँ तक हमारा ताल्लुक़ है रब ही
हमारा ख़ुदा है। हमने उसे तर्क नहीं किया। सिर्फ़
हारून की औलाद ही हमारे इमाम हैं। सिर्फ़ यह
और लावी रब की ख़िदमत करते हैं। 11यही
सुबह-शाम उसे भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और
ख़ुशबूदार बख़ूर पेश करते हैं। पाक मेज़ पर रब
के लिए मख़सूस रोटियाँ रखना और सोने के
शमादान के चराग़ जलाना इन्हीं की ज़िम्मेदारी
रही है। ग़रज़, हम रब अपने ख़ुदा की हिदायात
पर अमल करते हैं जबकि आपने उसे तर्क कर
दिया है। 12चुनाँचे अल्लाह हमारे साथ है। वही
हमारा राहनुमा है, और उसके इमाम तुरम बजाकर
आपसे लड़ने का एलान करेंगे। इसराईल के मर्दो,
ख़बरदार! रब अपने बापदादा के ख़ुदा से मत
लड़ना। यह जंग आप जीत ही नहीं सकते!”

13इतने में यरुबियाम ने चुपके से कुछ दस्तों
को यहूदाह की फ़ौज के पीछे भेज दिया ताकि
वहाँ ताक में बैठ जाएँ। यों उस की फ़ौज का
एक हिस्सा यहूदाह की फ़ौज के सामने और
दूसरा हिस्सा उसके पीछे था। 14अचानक यहूदाह
के फ़ौजियों को पता चला कि दुश्मन सामने
और पीछे से हम पर हमला कर रहा है। चीख़ते-
चिल्लाते हुए उन्होंने रब से मदद माँगी। इमामों ने
अपने तुरम बजाए 15और यहूदाह के मर्दों ने जंग
का नारा लगाया। जब उनकी आवाज़ें बुलंद हुईं
तो अल्लाह ने यरुबियाम और तमाम इसराईलियों
को शिकस्त देकर अबियाह और यहूदाह की फ़ौज
के सामने से भगा दिया। 16इसराईली फ़रार हुए,
लेकिन अल्लाह ने उन्हें यहूदाह के हवाले कर
दिया। 17अबियाह और उसके लोग उन्हें बड़ा
नुक़सान पहुँचा सके। इसराईल के 5,00,000
तजरबाकार फ़ौजी मैदाने-जंग में मारे गए। 18उस
वक़्त इसराईल की बड़ी बेइज़्ज़ती हुई जबकि
यहूदाह को तक़वियत मिली। क्योंकि वह रब
अपने बापदादा के ख़ुदा पर भरोसा रखते थे।

19अबियाह ने यरुबियाम का ताक़्क़ुब करते
करते उससे तीन शहर गिर्दो-नवाह की आबादियों
समेत छीन लिए, बैतेल, यसाना और इफ़रोन।
20अबियाह के जीते-जी यरुबियाम दुबारा
तक़वियत न पा सका, और थोड़ी देर के बाद रब
ने उसे मार दिया। 21उसके मुक़ाबले में अबियाह
की ताक़त बढ़ती गई। उस की 14 बीवियों के
22 बेटे और 16 बेटियाँ पैदा हुईं।

22बाक़ी जो कुछ अबियाह की हुकूमत के
दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया और कहा,
वह इद्दू नबी की किताब में बयान किया गया है।

14 जब अबियाह मरकर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस
हिस्से में दफ़नाया गया जो ‘दाऊद का शहर’
कहलाता है। फिर उसका बेटा आसा तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह आसा

आसा की हुकूमत के तहत मुल्क में 10
साल तक अमनो-अमान क़ायम रहा। 2आसा वह
कुछ करता रहा जो रब उसके ख़ुदा के नज़दीक
अच्छा और ठीक था। 3उसने अजनबी माबूदों
की क़ुरबानगाहों को ऊँची जगहों के मंदिरों समेत
गिराकर देवताओं के लिए मख़सूस किए गए
सतूनों को टुकड़े टुकड़े कर दिया और यसीरत देवी
के खंबे काट डाले। 4साथ साथ उसने यहूदाह के
बाशिंदों को हिदायत दी कि वह रब अपने बापदादा
के ख़ुदा के तालिब हों और उसके अहकाम के ताबे
रहें। 5यहूदाह के तमाम शहरों से उसने बख़ूर की
क़ुरबानगाहें और ऊँची जगहों के मंदिर दूर कर
दिए। चुनाँचे उस की हुकूमत के दौरान बादशाही
में सुकून रहा।

6अमनो-अमान के इन सालों के दौरान आसा
यहूदाह में कई शहरों की क़िलाबंदी कर सका।
जंग का ख़तरा नहीं था, क्योंकि रब ने उसे सुकून
मुहैया किया। 7बादशाह ने यहूदाह के बाशिंदों
से कहा, “आएँ, हम इन शहरों की क़िलाबंदी
करें! हम इनके इर्दगिर्द फ़सीलें बनाकर उन्हें
बुर्जों, दरवाज़ों और कुंडों से मज़बूत करें। क्योंकि
अब तक मुल्क हमारे हाथ में है। चूँकि हम रब
अपने ख़ुदा के तालिब रहे हैं इसलिए उसने हमें

चारों तरफ़ सुलह-सलामती मुहैया की है।” चुनाँचे
क़िलाबंदी का काम शुरू हुआ बल्कि तकमील
तक पहुँच सका।

एथोपिया पर फ़तह

8आसा की फ़ौज में बड़ी ढालों और नेज़ों से
लैस यहूदाह के 3,00,000 अफ़राद थे। इसके
अलावा छोटी ढालों और कमानों से मुसल्लह
बिनयमीन के 2,80,000 अफ़राद थे। सब
तजरबाकार फ़ौजी थे।

9एक दिन एथोपिया के बादशाह ज़ारह ने
यहूदाह पर हमला किया। उसके बेशुमार फ़ौजी
और 300 रथ थे। बढ़ते बढ़ते वह मरेसा तक पहुँच
गया। 10आसा उसका मुक़ाबला करने के लिए
निकला। वादीए-सफ़ाता में दोनों फ़ौजें लड़ने के
लिए सफ़आरा हुईं। 11आसा ने रब अपने ख़ुदा
से इलतमास की, “ऐ रब, सिर्फ़ तू ही बेबसों को
ताक़तवरों के हमलों से महफ़ूज़ रख सकता है। ऐ
रब हमारे ख़ुदा, हमारी मदद कर! क्योंकि हम तुझ
पर भरोसा रखते हैं। तेरा ही नाम लेकर हम इस
बड़ी फ़ौज का मुक़ाबला करने के लिए निकले
हैं। ऐ रब, तू ही हमारा ख़ुदा है। ऐसा न होने दे
कि इनसान तेरी मरज़ी की ख़िलाफ़वरज़ी करने
में कामयाब हो जाए।”

12तब रब ने आसा और यहूदाह के देखते देखते
दुश्मन को शिकस्त दी। एथोपिया के फ़ौजी फ़रार
हुए, 13और आसा ने अपने फ़ौजियों के साथ
जिरार तक उनका ताक़्क़ुब किया। दुश्मन के इतने
अफ़राद हलाक हुए कि उस की फ़ौज बाद में
बहाल न हो सकी। रब ख़ुद और उस की फ़ौज ने
दुश्मन को तबाह कर दिया था। यहूदाह के मर्दों ने
बहुत-सा माल लूट लिया। 14वह जिरार के इर्दगिर्द
के शहरों पर भी क़ब्ज़ा करने में कामयाब हुए,
क्योंकि मक़ामी लोगों में रब की दहशत फैल गई
थी। नतीजे में इन शहरों से भी बहुत-सा माल
छीन लिया गया। 15इस मुहिम के दौरान उन्होंने
गल्लाबानों की ख़ैमागाहों पर भी हमला किया
और उनसे कसरत की भेड़-बकरियाँ और ऊँट
लूटकर अपने साथ यरूशलम ले आए।

आसा रब से अहद की तजदीद करता है

15 अल्लाह का रूह अज़रियाह बिन
ओदीद पर नाज़िल हुआ, 2और वह
आसा से मिलने के लिए निकला और कहा,
“ऐ आसा और यहूदाह और बिनयमीन के तमाम
बाशिंदो, मेरी बात सुनो! रब तुम्हारे साथ है अगर
तुम उसी के साथ रहो। अगर तुम उसके तालिब
रहो तो उसे पा लोगे। लेकिन जब भी तुम उसे तर्क
करो तो वह तुम्हीं को तर्क करेगा। 3लंबे अरसे तक
इसराईली हक़ीक़ी ख़ुदा के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारते
रहे। न कोई इमाम था जो उन्हें अल्लाह की राह
सिखाता, न शरीअत। 4लेकिन जब कभी वह
मुसीबत में फँस जाते तो दुबारा रब इसराईल के
ख़ुदा के पास लौट आते। वह उसे तलाश करते
और नतीजे में उसे पा लेते। 5उस ज़माने में सफ़र
करना ख़तरनाक होता था, क्योंकि अमनो-अमान
कहीं नहीं था। 6एक क़ौम दूसरी क़ौम के साथ
और एक शहर दूसरे के साथ लड़ता रहता था।
इसके पीछे अल्लाह का हाथ था। वही उन्हें हर
क़िस्म की मुसीबत में डालता रहा। 7लेकिन जहाँ
तक तुम्हारा ताल्लुक़ है, मज़बूत हो और हिम्मत
न हारो। अल्लाह ज़रूर तुम्हारी मेहनत का अज्र
देगा।”

8जब आसा ने ओदीद के बेटे अज़रियाह नबी
की पेशगोई सुनी तो उसका हौसला बढ़ गया, और
उसने अपने पूरे इलाक़े के घिनौने बुतों को दूर कर
दिया। इसमें यहूदाह और बिनयमीन के अलावा
इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के वह शहर शामिल
थे जिन पर उसने क़ब्ज़ा कर लिया था। साथ
साथ उसने उस क़ुरबानगाह की मरम्मत करवाई
जो रब के घर के दरवाज़े के सामने थी। 9फिर
उसने यहूदाह और बिनयमीन के तमाम लोगों को
यरूशलम बुलाया। उन इसराईलियों को भी दावत
मिली जो इफ़राईम, मनस्सी और शमाऊन के
क़बायली इलाक़ों से मुंतक़िल होकर यहूदाह में

आबाद हुए थे। क्योंकि बेशुमार लोग यह देखकर
कि रब आसा का ख़ुदा उसके साथ है इसराईल
से निकलकर यहूदाह में जा बसे थे।
10आसा बादशाह की हुकूमत के 15वें साल
और तीसरे महीने में सब यरूशलम में जमा हुए।
11वहाँ उन्होंने लूटे हुए माल में से रब को 700
बैल और 7,000 भेड़-बकरियाँ क़ुरबान कर दीं।
12उन्होंने अहद बाँधा, 'हम पूरे दिलो-जान से रब
अपने बापदादा के ख़ुदा के तालिब रहेंगे। 13और
जो रब इसराईल के ख़ुदा का तालिब नहीं रहेगा
उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी, ख़ाह वह छोटा हो
या बड़ा, मर्द हो या औरत।' 14बुलंद आवाज़ से
उन्होंने क़सम खाकर रब से अपनी वफ़ादारी का
एलान किया। साथ साथ तुरम और नरसिंगे बजते
रहे। 15यह अहद तमाम यहूदाह के लिए ख़ुशी
का बाइस था, क्योंकि उन्होंने पूरे दिल से क़सम
खाकर उसे बाँधा था। और चूँकि वह पूरे दिल से
ख़ुदा के तालिब थे इसलिए वह उसे पा भी सके।
नतीजे में रब ने उन्हें चारों तरफ़ अमनो-अमान
मुहैया किया।
16आसा की माँ माका बादशाह की माँ होने
के बाइस बहुत असरो-रसूख़ रखती थी। लेकिन
आसा ने यह ओहदा ख़त्म कर दिया जब माँ ने
यसीरत देवी का घिनौना खंबा बनवा लिया। आसा
ने यह बुत कटवाकर टुकड़े टुकड़े कर दिया और
वादीए-क़िदरोन में जला दिया। 17अफ़सोस कि
उसने इसराईल की ऊँची जगहों के मंदिरों को
दूर न किया। तो भी आसा अपने जीते-जी पूरे
दिल से रब का वफ़ादार रहा। 18सोना-चाँदी और
बाक़ी जितनी चीज़ें उसके बाप और उसने रब के
लिए मख़सूस की थीं उन सबको वह रब के घर में
लाया।
19आसा की हुकूमत के 35वें साल तक जंग
दुबारा न छिड़ी।

शाम के साथ आसा का मुआहदा

16 आसा की हुकूमत के 36वें साल में
इसराईल के बादशाह बाशा ने यहूदाह
पर हमला करके रामा शहर की क़िलाबंदी की।
मक़सद यह था कि न कोई यहूदाह के मुल्क में
दाख़िल हो सके, न कोई वहाँ से निकल सके।
2जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-
हदद के पास वफ़द भेजा जिसका दारुल-हुकूमत
दमिश्क़ था। उसने रब के घर और शाही महल
के ख़ज़ानों की सोना-चाँदी वफ़द के सुपुर्द करके
दमिश्क़ के बादशाह को पैग़ाम भेजा, 3"मेरा
आपके साथ अहद है जिस तरह मेरे बाप का
आपके बाप के साथ अहद था। गुज़ारिश है कि
आप सोने-चाँदी का यह तोहफ़ा क़बूल करके
इसराईल के बादशाह बाशा के साथ अपना अहद
मनसूख़ कर दें ताकि वह मेरे मुल्क से निकल
जाए।"
4बिन-हदद मुत्तफ़िक़ हुआ। उसने अपने फ़ौजी
अफ़सरों को इसराईल के शहरों पर हमला करने
के लिए भेज दिया तो उन्होंने ऐय्यून, दान,
अबील-मायम और नफ़ताली के उन तमाम शहरों
पर क़ब्ज़ा कर लिया जिनमें शाही गोदाम थे।
5जब बाशा को इसकी ख़बर मिली तो उसने रामा
की क़िलाबंदी करने से बाज़ आकर अपनी यह
मुहिम छोड़ दी।
6फिर आसा बादशाह ने यहूदाह के तमाम मर्दों
की भरती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह
उन तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठाकर ले
जाएँ जिनसे बाशा बादशाह रामा की क़िलाबंदी
करना चाहता था। इस सामान से आसा ने जिबा
और मिसफ़ाह शहरों की क़िलाबंदी की।

आसा के आख़िरी साल और मौत

7उस वक़्त हनानी ग़ैबबीन यहूदाह के बादशाह
आसा को मिलने आया। उसने कहा, "अफ़सोस
कि आपने रब अपने ख़ुदा पर एतमाद न किया
बल्कि अराम के बादशाह पर, क्योंकि इसका बुरा
नतीजा निकला है। रब शाम के बादशाह की फ़ौज
को आपके हवाले करने के लिए तैयार था, लेकिन
अब यह मौक़ा जाता रहा है। 8क्या आप भूल
गए हैं कि एथोपिया और लिबिया की कितनी

बड़ी फ़ौज आपसे लड़ने आई थी? उनके साथ
कसरत के रथ और घुड़सवार भी थे। लेकिन उस
वक़्त आपने रब पर एतमाद किया, और जवाब
में उसने उन्हें आपके हवाले कर दिया। 9रब तो
अपनी नज़र पूरी रूए-ज़मीन पर दौड़ाता रहता है
ताकि उनकी तक़वियत करे जो पूरी वफ़ादारी से
उससे लिपटे रहते हैं। आपकी अहमक़ाना हरकत
की वजह से आपको अब से मुतवातिर जंगें तंग
करती रहेंगी।” 10यह सुनकर आसा ग़ुस्से से
लाल-पीला हो गया। आपे से बाहर होकर उसने
हुक्म दिया कि नबी को गिरिफ़्तार करके उसके
पाँव काठ में ठोंको। उस वक़्त से आसा अपनी
क़ौम के कई लोगों पर ज़ुल्म करने लगा।

11बाक़ी जो कुछ शुरू से लेकर आख़िर तक
आसा की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-
यहूदाहो-इसराईल की तारीख़’ की किताब में
बयान किया गया है। 12हुकूमत के 39वें साल
में उसके पाँवों को बीमारी लग गई। गो उस की
बुरी हालत थी तो भी उसने रब को तलाश न किया
बल्कि सिर्फ़ डाक्टरों के पीछे पड़ गया। 13हुकूमत
के 41वें साल में आसा मरकर अपने बापदादा
से जा मिला। 14उसने यरूशलम के उस हिस्से
में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है अपने लिए
चट्टान में क़ब्र तराशी थी। अब उसे इसमें दफ़न
किया गया। जनाज़े के वक़्त लोगों ने लाश को
एक पलंग पर लिटा दिया जो बलसान के तेल
और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ख़ुशबूदार मरहमों से
ढाँपा गया था। फिर उसके एहतराम में लकड़ी
का ज़बरदस्त ढेर जलाया गया।

यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त

17 आसा के बाद उसका बेटा यहू-
सफ़त तख़्तनशीन हुआ। उसने
यहूदाह की ताक़त बढ़ाई ताकि वह इसराईल
का मुक़ाबला कर सके। 2यहूदाह के तमाम
क़िलाबंद शहरों में उसने दस्ते बिठाए। यहूदाह
के पूरे क़बायली इलाक़े में उसने चौकियाँ तैयार
कर रखीं और इसी तरह इफ़राईम के उन शहरों में
भी जो उसके बाप आसा ने इसराईल से छीन लिए
थे। 3रब यहूसफ़त के साथ था, क्योंकि वह दाऊद
के नमूने पर चलता था और बाल देवताओं के पीछे
न लगा। 4इसराईल के बादशाहों के बरअक्स वह
अपने बाप के ख़ुदा का तालिब रहा और उसके
अहकाम पर अमल करता रहा। 5इसी लिए रब
ने यहूदाह पर यहूसफ़त की हुकूमत को ताक़तवर
बना दिया। लोग तमाम यहूदाह से आकर उसे
तोह्फ़े देते रहे, और उसे बड़ी दौलत और इज़्ज़त
मिली। 6रब की राहों पर चलते चलते उसे बड़ा
हौसला हुआ और नतीजे में उसने ऊँची जगहों के
मंदिरों और यसीरत देवी के खंबों को यहूदाह से
दूर कर दिया।

7अपनी हुकूमत के तीसरे साल के दौरान
यहूसफ़त ने अपने मुलाज़िमों को यहूदाह के
तमाम शहरों में भेजा ताकि वह लोगों को
रब की शरीअत की तालीम दें। इन अफ़सरों
में बिन-ख़ैल, अबदियाह, ज़करियाह, नतनि-
येल और मीकायाह शामिल थे। 8उनके साथ
9 लावी बनाम समायाह, नतनियाह, ज़बदियाह,
असाहेल, समीरामोत, यहूनतन, अदूनियाह,
तूबियाह, और तूब-अदूनियाह थे। इमामों की
तरफ़ से इलीसमा और यहूराम साथ गए। 9रब
की शरीअत की किताब अपने साथ लेकर इन
आदमियों ने यहूदाह में शहर बशहर जाकर लोगों
को तालीम दी।

10उस वक़्त यहूदाह के पड़ोसी ममालिक पर
रब का ख़ौफ़ छा गया, और उन्होंने यहूसफ़त
से जंग करने की जुर्रत न की। 11ख़राज के
तौर पर उसे फ़िलिस्तियों से हदिये और चाँदी
मिलती थी, जबकि अरब उसे 7,700 मेंढे और
7,700 बकरे दिया करते थे। 12यों यहूसफ़त
की ताक़त बढ़ती गई। यहूदाह की कई जगहों
पर उसने क़िले और शाही गोदाम के शहर तामीर
किए। 13साथ साथ उसने यहूदाह के शहरों में
ज़रूरियाते-ज़िंदगी के बड़े ज़ख़ीरे जमा किए और
यरूशलम में तजरबाकार फ़ौजी रखे।

14यहूसफ़त की फ़ौज को कुंबों के मुता-
बिक़ तरतीब दिया गया था। यहूदाह के क़बीले
का कमाँडर अदना था। उसके तहत 3,00,000
तजरबाकार फ़ौजी थे। 15उसके अलावा यूहनान
था जिसके तहत 2,80,000 अफ़राद थे
16और अमसियाह बिन ज़िकरी जिसके तहत
2,00,000 अफ़राद थे। अमसियाह ने अपने
आपको रज़ाकाराना तौर पर रब की ख़िदमत
के लिए वक़्फ़ कर दिया था। 17बिनयमीन के
क़बीले का कमाँडर इलियदा था जो ज़बरदस्त
फ़ौजी था। उसके तहत कमान और ढालों से
लैस 2,00,000 फ़ौजी थे। 18उसके अलावा
यहूज़बद था जिसके 1,80,000 मुसल्लह
आदमी थे।

19सब फ़ौज में बादशाह की ख़िदमत सरंजाम
देते थे। उनमें वह फ़ौजी नहीं शुमार किए जाते थे
जिन्हें बादशाह ने पूरे यहूदाह के क़िलाबंद शहरों
में रखा हुआ था।

झूटे नबियों और मीकायाह का मुक़ाबला

18 ग़रज़ यहूसफ़त को बड़ी दौलत और
इज़्ज़त हासिल हुई। उसने अपने
पहलौठे की शादी इसराईल के बादशाह अख़ियब
की बेटी से कराई।

2कुछ साल के बाद वह अख़ियब से मिलने
के लिए सामरिया गया। इसराईल के बादशाह
ने यहूसफ़त और उसके साथियों के लिए बहुत-
सी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल ज़बह किए।
फिर उसने यहूसफ़त को अपने साथ रामात-
जिलियाद से जंग करने पर उकसाया। 3अख़ियब
ने यहूसफ़त से सवाल किया, “क्या आप मेरे
साथ रामात-जिलियाद जाएंगे ताकि उस पर
क़ब्ज़ा करें?” उसने जवाब दिया, “जी ज़रूर,
हम तो भाई हैं, मेरी क़ौम को अपनी क़ौम
समझें! हम आपके साथ मिलकर लड़ने के लिए
निकलेंगे। 4लेकिन मेहरबानी करके पहले रब की
मरज़ी मालूम कर लें।”

5इसराईल के बादशाह ने 400 नबियों को
बुलाकर उनसे पूछा, “क्या हम रामात-जिलियाद
पर हमला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?”
नबियों ने जवाब दिया, “जी, करें, क्योंकि
अल्लाह उसे बादशाह के हवाले कर देगा।”

6लेकिन यहूसफ़त मुतमइन न हुआ। उसने
पूछा, “क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिससे
हम दरियाफ़्त कर सकें?” 7इसराईल का
बादशाह बोला, “हाँ, एक तो है जिसके ज़रीए
हम रब की मरज़ी मालूम कर सकते हैं। लेकिन
मैं उससे नफ़रत करता हूँ, क्योंकि वह मेरे बारे में
कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं करता। वह हमेशा
बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उसका नाम मीकायाह
बिन इमला है।” यहूसफ़त ने एतराज़ किया,
“बादशाह ऐसी बात न कहे!” 8तब इसराईल
के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुलाकर हुक्म
दिया, “मीकायाह बिन इमला को फ़ौरन हमारे
पास पहुँचा देना!”

9अख़ियब और यहूसफ़त अपने शाही लिबास
पहने हुए सामरिया के दरवाज़े के क़रीब अपने
अपने तख़्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी
जहाँ अनाज गाहा जाता था। तमाम 400 नबी
वहाँ उनके सामने अपनी पेशगोइयाँ पेश कर रहे
थे। 10एक नबी बनाम सिदक़ियाह बिन कनाना
ने अपने लिए लोहे के सींग बनाकर एलान किया,
“रब फ़रमाता है कि इन सींगों से तू शाम के
फ़ौजियों को मार मारकर हलाक कर देगा।”

11दूसरे नबी भी इस क़िस्म की पेशगोइयाँ कर
रहे थे, “रामात-जिलियाद पर हमला करें, क्योंकि
आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को
आपके हवाले कर देगा।”

12जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के
लिए भेजा गया था उसने रास्ते में उसे समझाया,
“देखें, बाक़ी तमाम नबी मिलकर कह रहे हैं कि
बादशाह को कामयाबी हासिल होगी। आप भी
ऐसी ही बातें करें, आप भी फ़तह की पेशगोई
करें!” 13लेकिन मीकायाह ने एतराज़ किया,

“रब की हयात की क़सम, मैं बादशाह को सिर्फ़ वही कुछ बताऊँगा जो मेरा ख़ुदा फ़रमाएगा।”
14जब मीकायाह अख़ियब के सामने खड़ा हुआ तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?”

मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हमला करें, क्योंकि उन्हें आपके हवाले कर दिया जाएगा, और आपको कामयाबी हासिल होगी।”
15बादशाह नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफ़ा आपको समझाना पड़ेगा कि आप क़सम खाकर मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो हक़ीक़त है।”

16तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे तमाम इसराईल गल्लाबान से महरूम भेड़-बकरियों की तरह पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र आया। फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘इनका कोई मालिक नहीं है। हर एक सलामती से अपने घर वापस चला जाए’।”

17इसराईल के बादशाह ने यहूसफ़त से कहा, “लो, क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि यह शख़्स हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता है?”

18लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी, “रब का फ़रमान सुनें! मैंने रब को उसके तख़्त पर बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उसके दाएँ और बाएँ हाथ खड़ी थी।
19रब ने पूछा, ‘कौन इसराईल के बादशाह अख़ियब को रामात-जिलियाद पर हमला करने पर उकसाएगा ताकि वह वहाँ जाकर मर जाए?’ एक ने यह मशवरा दिया, दूसरे ने वह।
20आख़िरकार एक रूह रब के सामने खड़ी हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे उकसाऊँगी’। रब ने सवाल किया, ‘किस तरह?’
21रूह ने जवाब दिया, ‘मैं निकलकर उसके तमाम नबियों पर यों क़ाबू पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।’ रब ने फ़रमाया, ‘तू कामयाब होगी। जा और यों ही कर!’
22ऐ बादशाह, रब ने आप पर आफ़त लाने का फ़ैसला कर लिया है, इसलिए उसने झूटी रूह को आपके इन तमाम नबियों के मुँह में डाल दिया है।”

23तब सिदक़ियाह बिन कनाना ने आगे बढ़कर मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला, “रब का रूह किस तरह मुझसे निकल गया ताकि तुझसे बात करे?”
24मीकायाह ने जवाब दिया, “जिस दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उसमें खिसककर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन आपको पता चलेगा।”

25तब अख़ियब बादशाह ने हुक्म दिया, “मीकायाह को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून और मेरे बेटे युआस के पास वापस भेज दो!
26उन्हें बता देना, ‘इस आदमी को जेल में डालकर मेरे सहीह-सलामत वापस आने तक कम से कम रोटी और पानी दिया करें’।”
27मीकायाह बोला, “अगर आप सहीह-सलामत वापस आएँ तो मतलब होगा कि रब ने मेरी मारिफ़त बात नहीं की।” फिर वह साथ खड़े लोगों से मुख़ातिब हुआ, “तमाम लोग ध्यान दें!”

अख़ियब रामात के क़रीब मर जाता है

28इसके बाद इसराईल का बादशाह अख़ियब और यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त मिलकर रामात-जिलियाद पर हमला करने के लिए रवाना हुए।
29जंग से पहले अख़ियब ने यहूसफ़त से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में जाऊँगा। लेकिन आप अपना शाही लिबास न उतारें।” चुनाँचे इसराईल का बादशाह अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में आया।
30शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर अपने अफ़सरों को हुक्म दिया था, “सिर्फ़ और सिर्फ़ बादशाह पर हमला करें। किसी और से मत लड़ना, ख़ाह वह छोटा हो या बड़ा।”

31जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर यहूसफ़त पर टूट पड़े, क्योंकि उन्होंने कहा, “यही इसराईल का बादशाह है!” लेकिन जब यहूसफ़त मदद के लिए चिल्ला उठा तो रब ने उस की सुनी। उसने उनका ध्यान यहूसफ़त से खींच लिया,

32क्योंकि जब दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह
अख़ियब बादशाह नहीं है तो वह उसका ताक़्क़ुब
करने से बाज़ आए। 33लेकिन किसी ने ख़ास
निशाना बाँधे बग़ैर अपना तीर चलाया तो वह
अख़ियब को ऐसी जगह जा लगा जहाँ ज़िरा-
बकतर का जोड़ था। बादशाह ने अपने रथबान को
हुक्म दिया, "रथ को मोड़कर मुझे मैदाने-जंग से
बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।" 34लेकिन
चूँकि उस पूरे दिन शदीद क़िस्म की लड़ाई जारी
रही, इसलिए बादशाह अपने रथ में टेक लगाकर
दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ा रहा। जब सूरज ग़ुरूब
होने लगा तो वह मर गया।

19 लेकिन यहूदाह का बादशाह यहू-
सफ़त सहीह-सलामत यरूश-
लम और अपने महल में पहुँचा। 2उस वक़्त
याहू बिन हनानी जो ग़ैबबीन था उसे मिलने के
लिए निकला और बादशाह से कहा, "क्या यह
ठीक है कि आप शरीर की मदद करें? आप क्यों
उनको प्यार करते हैं जो रब से नफ़रत करते हैं?
यह देखकर रब का ग़ज़ब आप पर नाज़िल हुआ
है। 3तो भी आपमें अच्छी बातें भी पाई जाती
हैं। आपने यसीरत देवी के खंबों को मुल्क से दूर
करके अल्लाह के तालिब होने का पक्का इरादा
कर रखा है।"

यहूसफ़त क़ानूनी कारखाई की इसलाह करता है

4इसके बाद यहूसफ़त यरूशलम में रहा।
लेकिन एक दिन वह दुबारा निकला। इस बार
उसने जुनूब में बैर-सबा से लेकर शिमाल में
इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े तक पूरे यहूदाह का
दौरा किया। हर जगह वह लोगों को रब उनके
बापदादा के ख़ुदा के पास वापस लाया। 5उसने
यहूदाह के तमाम क़िलाबंद शहरों में क़ाज़ी भी
मुक़र्रर किए। 6उन्हें समझाते हुए उसने कहा,
"अपनी रविश पर ध्यान दें! याद रहे कि आप
इनसान के जवाबदेह नहीं हैं बल्कि रब के।
वही आपके साथ होगा जब आप फ़ैसले करेंगे।
7चुनाँचे अल्लाह का ख़ौफ़ मानकर एहतियात
से लोगों का इनसाफ़ करें। क्योंकि जहाँ रब
हमारा ख़ुदा है वहाँ बेइनसाफ़ी, जानिबदारी और
रिश्वतख़ोरी हो ही नहीं सकती।"
8यरूशलम में यहूसफ़त ने कुछ लावियों,
इमामों और ख़ानदानी सरपरस्तों को इन-
साफ़ करने की ज़िम्मेदारी दी। रब की शरीअत से
मुताल्लिक़ किसी मामले या यरूशलम के बाशिंदों
के दरमियान झगड़े की सूरत में उन्हें फ़ैसला करना
था। 9यहूसफ़त ने उन्हें समझाते हुए कहा, "रब
का ख़ौफ़ मानकर अपनी ख़िदमत को वफ़ादारी
और पूरे दिल से सरंजाम दें। 10आपके भाई
शहरों से आकर आपके सामने अपने झगड़े पेश
करेंगे ताकि आप उनका फ़ैसला करें। आपको
क़त्ल के मुक़दमों का फ़ैसला करना पड़ेगा। ऐसे
मामलात भी होंगे जो रब की शरीअत, किसी
हुक्म, हिदायत या उसूल से ताल्लुक़ रखेंगे। जो
भी हो, लाज़िम है कि आप उन्हें समझाएँ ताकि
वह रब का गुनाह न करें। वरना उसका ग़ज़ब आप
और आपके भाइयों पर नाज़िल होगा। अगर आप
यह करें तो आप बेक़ुसूर रहेंगे। 11इमामे-आज़म
अमरियाह रब की शरीअत से ताल्लुक़ रखनेवाले
मामलात का हतमी फ़ैसला करेगा। जो मुक़दमे
बादशाह से ताल्लुक़ रखते हैं उनका हतमी फ़ैसला
यहूदाह के क़बीले का सरबराह ज़बदियाह बिन
इसमाईल करेगा। अदालत का इंतज़ाम चलाने में
लावी आपकी मदद करेंगे। अब हौसला रखकर
अपनी ख़िदमत सरंजाम दें। जो भी सहीह काम
करेगा उसके साथ रब होगा।"

अम्मोनियों का यहूदाह पर हमला

20 कुछ देर के बाद मोआबी, अम्मो-
नी और कुछ मऊनी यहूसफ़त से जंग
करने के लिए निकले। 2एक क़ासिद ने आकर
बादशाह को इत्तला दी, "मुल्के-अदोम से एक
बड़ी फ़ौज आपसे लड़ने के लिए आ रही है। वह
बहीराए-मुरदार के दूसरे किनारे से बढ़ती बढ़ती

इस वक़्त हससून-तमर पहुँच चुकी है” (हससून
ऐन-जदी का दूसरा नाम है)।
3यह सुनकर यहूसफ़त घबरा गया। उसने रब
से राहनुमाई माँगने का फ़ैसला करके एलान
किया कि तमाम यहूदाह रोज़ा रखे। 4यहूदाह
के तमाम शहरों से लोग यरूशलम आए ताकि
मिलकर मदद के लिए रब से दुआ माँगें। 5वह रब
के घर के नए सहन में जमा हुए और यहूसफ़त ने
सामने आकर 6दुआ की,
“ऐ रब, हमारे बापदादा के ख़ुदा! तू ही
आसमान पर तख़्तनशीन ख़ुदा है, और तू ही
दुनिया के तमाम ममालिक पर हुकूमत करता
है। तेरे हाथ में क़ुदरत और ताक़त है। कोई भी
तेरा मुक़ाबला नहीं कर सकता। 7ऐ हमारे ख़ुदा,
तूने इस मुल्क के पुराने बाशिंदों को अपनी क़ौम
इसराईल के आगे से निकाल दिया। इब्राहीम तेरा
दोस्त था, और उस की औलाद को तूने यह मुल्क
हमेशा के लिए दे दिया। 8इसमें तेरी क़ौम आबाद
हुई। तेरे नाम की ताज़ीम में मक़दिस बनाकर
उन्होंने कहा, 9‘जब भी आफ़त हम पर आए तो
हम यहाँ तेरे हुज़ूर आ सकेंगे, चाहे जंग, वबा,
काल या कोई और सज़ा हो। अगर हम उस वक़्त
इस घर के सामने खड़े होकर मदद के लिए तुझे
पुकारें तो तू हमारी सुनकर हमें बचाएगा, क्योंकि
इस इमारत पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।’
10अब अम्मोन, मोआब और पहाड़ी मुल्क
सईर की हरकतों को देख! जब इसराईल मिसर
से निकला तो तूने उसे इन क़ौमों पर हमला करने
और इनके इलाक़े में से गुज़रने की इजाज़त न दी।
इसराईल को मुतबादिल रास्ता इख़्तियार करना
पड़ा, क्योंकि उसे इन्हें हलाक करने की इजाज़त
न मिली। 11अब ध्यान दे कि यह बदले में क्या कर
रहे हैं। यह हमें उस मौरूसी ज़मीन से निकालना
चाहते हैं जो तूने हमें दी थी। 12ऐ हमारे ख़ुदा,
क्या तू उनकी अदालत नहीं करेगा? हम तो इस
बड़ी फ़ौज के मुक़ाबले में बेबस हैं। इसके हमले
से बचने का रास्ता हमें नज़र नहीं आता, लेकिन
हमारी आँखें मदद के लिए तुझ पर लगी हैं।”
13यहूदाह के तमाम मर्द, औरतें और बच्चे वहाँ
रब के हुज़ूर खड़े रहे। 14तब रब का रूह एक
लावी बनाम यहज़ियेल पर नाज़िल हुआ जब
वह जमात के दरमियान खड़ा था। यह आदमी
आसफ़ के ख़ानदान का था, और उसका पूरा
नाम यहज़ियेल बिन ज़करियाह बिन बिनायाह
बिन यइयेल बिन मत्तनियाह था। 15उसने कहा,
“यहूदाह और यरूशलम के लोगो, मेरी बात
सुनें! ऐ बादशाह, आप भी इस पर ध्यान दें।
रब फ़रमाता है कि डरो मत, और इस बड़ी
फ़ौज को देखकर मत घबराना। क्योंकि यह जंग
तुम्हारा नहीं बल्कि मेरा मामला है। 16कल उनके
मुक़ाबले के लिए निकलो। उस वक़्त वह दर्राए-
सीस से होकर तुम्हारी तरफ़ बढ़ रहे होंगे। तुम्हारा
उनसे मुक़ाबला उस वादी के सिरे पर होगा जहाँ
यरुएल का रेगिस्तान शुरू होता है। 17लेकिन
तुम्हें लड़ने की ज़रूरत नहीं होगी। बस दुश्मन के
आमने-सामने खड़े होकर रुक जाओ और देखो
कि रब किस तरह तुम्हें छुटकारा देगा। लिहाज़ा
मत डरो, ऐ यहूदाह और यरूशलम, और दहशत
मत खाओ। कल उनका सामना करने के लिए
निकलो, क्योंकि रब तुम्हारे साथ होगा।”
18यह सुनकर यहूसफ़त मुँह के बल झुक गया।
यहूदाह और यरूशलम के तमाम लोगों ने भी औंधे
मुँह झुककर रब की परस्तिश की। 19फिर क़िहात
और क़ोरह के ख़ानदानों के कुछ लावी खड़े होकर
बुलंद आवाज़ से रब इसराईल के ख़ुदा की हम्दो-
सना करने लगे।

अम्मोनियों पर फ़तह

20अगले दिन सुबह-सवेरे यहूदाह की फ़ौज
तक़ुअ के रेगिस्तान के लिए रवाना हुई। निकलते
वक़्त यहूसफ़त ने उनके सामने खड़े होकर कहा,
“यहूदाह और यरूशलम के मर्दो, मेरी बात सुनें!
रब अपने ख़ुदा पर भरोसा रखें तो आप क़ायम
रहेंगे। उसके नबियों की बातों का यक़ीन करें
तो आपको कामयाबी हासिल होगी।” 21लोगों
से मशवरा करके यहूसफ़त ने कुछ मर्दों को रब

की ताज़ीम में गीत गाने के लिए मुक़र्रर किया। मुक़द्दस लिबास पहने हुए वह फ़ौज के आगे आगे चलकर हम्दो-सना का यह गीत गाते रहे, “रब की सताइश करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।”

22उस वक़्त रब हमलाआवर फ़ौज के
मुख़ालिफ़ों को खड़ा कर चुका था। अब जब यहूदाह के मर्द हम्द के गीत गाने लगे तो वह ताक में से निकलकर बढ़ती हुई फ़ौज पर टूट पड़े और उसे शिकस्त दी।
23फिर अम्मोनियों और मोआबियों ने मिलकर पहाड़ी मुल्क सईर के मर्दों पर हमला किया ताकि उन्हें मुकम्मल तौर पर ख़त्म कर दें। जब यह हलाक हुए तो अम्मोनी और मोआबी एक दूसरे को मौत के घाट उतारने लगे।
24यहूदाह के फ़ौजियों को इसका इल्म नहीं था। चलते चलते वह उस मक़ाम तक पहुँच गए जहाँ से रेगिस्तान नज़र आता है। वहाँ वह दुश्मन को तलाश करने लगे, लेकिन लाशें ही लाशें ज़मीन पर बिखरी नज़र आईं। एक भी दुश्मन नहीं बचा
था। 25यहूसफ़त और उसके लोगों के लिए सिर्फ़ दुश्मन को लूटने का काम बाक़ी रह गया था। कसरत के जानवर, क़िस्म क़िस्म का सामान, कपड़े और कई क़ीमती चीज़ें थीं। इतना सामान था कि वह उसे एक वक़्त में उठाकर अपने साथ ले जा नहीं सकते थे। सारा माल जमा करने में तीन दिन लगे।

26चौथे दिन वह क़रीब की एक वादी में जमा हुए ताकि रब की तारीफ़ करें। उस वक़्त से वादी का नाम ‘तारीफ़ की वादी’ पड़ गया।
27इसके बाद यहूदाह और यरूशलम के तमाम मर्द यहूसफ़त की राहनुमाई में ख़ुशी मनाते हुए यरूशलम वापस आए। क्योंकि रब ने उन्हें दुश्मन की शिकस्त से ख़ुशी का सुनहरा मौक़ा अता
किया था। 28सितार, सरोद और तुरम बजाते हुए वह यरूशलम में दाख़िल हुए और रब के घर के
पास जा पहुँचे। 29जब इर्दगिर्द के ममालिक ने सुना कि किस तरह रब इसराईल के दुश्मनों से लड़ा है तो उनमें अल्लाह की दहशत फैल गई।
30उस वक़्त से यहूसफ़त सुकून से हुकूमत कर सका, क्योंकि अल्लाह ने उसे चारों तरफ़ के ममालिक के हमलों से महफ़ूज़ रखा था।

यहूसफ़त के आख़िरी साल और मौत

31यहूसफ़त 35 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 25 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ अज़ूबा बिंत सिलही
थी। 32वह अपने बाप आसा के नमूने पर चलता और वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था।
33लेकिन उसने भी ऊँचे मक़ामों के मंदिरों को ख़त्म न किया, और लोगों के दिल अपने बापदादा के ख़ुदा की तरफ़ मायल न हुए।

34बाक़ी जो कुछ यहूसफ़त की हुकूमत के दौरान हुआ वह शुरू से लेकर आख़िर तक याहू बिन हनानी की तारीख़ में बयान किया गया है। बाद में सब कुछ ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज किया गया।

35बाद में यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त ने इसराईल के बादशाह अख़ज़ियाह से इत्तहाद
किया, गो उसका रवैया बेदीनी का था। 36दोनों ने मिलकर तिजारती जहाज़ों का ऐसा बेड़ा बनवाया जो तरसीस तक पहुँच सके। जब यह जहाज़
बंदरगाह अस्यून-जाबर में तैयार हुए 37तो मरेसा का रहनेवाला इलियज़र बिन दूदावाहू ने यहूसफ़त के ख़िलाफ़ पेशगोई की, “चूँकि आप अख़ज़ियाह के साथ मुत्तहिद हो गए हैं इसलिए रब आपका काम तबाह कर देगा!” और वाक़ई, यह जहाज़ कभी अपनी मनज़िले-मक़सूद तरसीस तक पहुँच न सके, क्योंकि वह पहले ही टुकड़े टुकड़े हो गए।

21 जब यहूसफ़त मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा यहूराम तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूराम

2यहूसफ़त के बाक़ी बेटे अज़रियाह,
यहियेल, ज़करियाह, अज़रियाहू, मीकाएल और
सफ़तियाह थे। 3यहूसफ़त ने उन्हें बहुत सोना-
चाँदी और दीगर क़ीमती चीज़ें देकर यहूदाह के
क़िलाबंद शहरों पर मुक़र्रर किया था। लेकिन
यहूराम को उसने पहलौठा होने के बाइस अपना
जा-नशीन बनाया था। 4बादशाह बनने के बाद
जब यहूदाह की हुकूमत मज़बूती से उसके हाथ में
थी तो यहूराम ने अपने तमाम भाइयों को यहूदाह
के कुछ राहनुमाओं समेत क़त्ल कर दिया।

5यहूराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना,
और वह यरूशलम में रहकर 8 साल तक हुकूमत
करता रहा। 6उस की शादी इसराईल के बादशाह
अख़ियब की बेटी से हुई थी, और वह इसराईल
के बादशाहों और ख़ासकर अख़ियब के ख़ानदान
के बुरे नमूने पर चलता रहा। उसका चाल-चलन
रब को नापसंद था। 7तो भी वह दाऊद के घराने
को तबाह नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसने
दाऊद से अहद बाँधकर वादा किया था कि तेरा
और तेरी औलाद का चराग़ हमेशा तक जलता
रहेगा।

8यहूराम की हुकूमत के दौरान अदोमियों ने
बग़ावत की और यहूदाह की हुकूमत को रद्द करके
अपना बादशाह मुक़र्रर किया। 9तब यहूराम अपने
अफ़सरों और तमाम रथों को लेकर उनके पास
पहुँचा। जब जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे
और उसके रथों पर मुक़र्रर अफ़सरों को घेर लिया,
लेकिन रात को बादशाह घेरनेवालों की सफ़ों को
तोड़ने में कामयाब हो गया। 10तो भी मुल्के-
अदोम आज तक दुबारा यहूदाह की हुकूमत के
तहत नहीं आया। उसी वक़्त लिबना शहर भी
सरकश होकर ख़ुदमुख़तार हो गया। यह सब कुछ
इसलिए हुआ कि यहूराम ने रब अपने बापदादा के
ख़ुदा को तर्क कर दिया था, 11यहाँ तक कि उसने
यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में कई ऊँची जगहों पर
मंदिर बनवाए और यरूशलम के बाशिंदों को रब
से बेवफ़ा हो जाने पर उकसाया। पूरे यहूदाह को
वह बुतपरस्ती की ग़लत राह पर ले आया।

12तब यहूराम को इलियास नबी से ख़त मिला
जिसमें लिखा था, “रब आपके बाप दाऊद का
ख़ुदा फ़रमाता है, ‘तू अपने बाप यहूसफ़त और
अपने दादा आसा बादशाह के अच्छे नमूने पर
नहीं चला 13बल्कि इसराईल के बादशाहों की
ग़लत राहों पर। बिलकुल अख़ियब के ख़ानदान
की तरह तू यरूशलम और पूरे यहूदाह के बाशिंदों
को बुतपरस्ती की राह पर लाया है। और यह
तेरे लिए काफ़ी नहीं था, बल्कि तूने अपने सगे
भाइयों को भी जो तुझसे बेहतर थे क़त्ल कर
दिया। 14इसलिए रब तेरी क़ौम, तेरे बेटों और
तेरी बीवियों को तेरी पूरी मिलकियत समेत बड़ी
मुसीबत में डालने को है। 15तू ख़ुद बीमार हो
जाएगा। लाइलाज मरज़ की ज़द में आकर तुझे
बड़ी देर तक तकलीफ़ होगी। आख़िरकार तेरी
अंतड़ियाँ जिस्म से निकलेंगी’।”

16उन दिनों में रब ने फ़िलिस्तियों और
एथोपिया के पड़ोस में रहनेवाले अरब क़बीलों
को यहूराम पर हमला करने की तहरीक दी।
17यहूदाह में घुसकर वह यरूशलम तक पहुँच गए
और बादशाह के महल को लूटने में कामयाब हुए।
तमाम मालो-असबाब के अलावा उन्होंने बादशाह
के बेटों और बीवियों को भी छीन लिया। सिर्फ़
सबसे छोटा बेटा यहुआख़ज़ यानी अख़ज़ियाह
बच निकला।

18इसके बाद रब का ग़ज़ब बादशाह पर
नाज़िल हुआ। उसे लाइलाज बीमारी लग गई
जिससे उस की अंतड़ियाँ मुतअस्सिर हुईं।
19बादशाह की हालत बहुत ख़राब होती गई। दो
साल के बाद अंतड़ियाँ जिस्म से निकल गईं।
यहूराम शदीद दर्द की हालत में कूच कर गया।
जनाज़े पर उस की क़ौम ने उसके एहतराम में
लकड़ी का बड़ा ढेर न जलाया, गो उन्होंने यह
उसके बापदादा के लिए किया था।

20यहूराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना
और यरूशलम में रहकर 8 साल तक हुकूमत

करता रहा था। जब फ़ौत हुआ तो किसी को भी अफ़सोस न हुआ। उसे यरूशलम शहर के उस हिस्से में दफ़न तो किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है, लेकिन शाही क़ब्रों में नहीं।

यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह

22 यरूशलम के बाशिंदों ने यहूराम के सबसे छोटे बेटे अख़ज़ियाह को तख़्त पर बिठा दिया। बाक़ी तमाम बेटों को उन लुटेरों ने क़त्ल किया था जो अरबों के साथ शाही लशकरगाह में घुस आए थे। यही वजह थी कि यहूदाह के बादशाह यहूराम का बेटा
अख़ज़ियाह बादशाह बना। 2वह 22 साल की उम्र में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम में रहकर एक साल बादशाह रहा। उस की माँ अतलियाह इसराईल के बादशाह उमरी की पोती थी।
3अख़ज़ियाह भी अख़ियब के ख़ानदान के ग़लत नमूने पर चल पड़ा, क्योंकि उस की माँ उसे बेदीन राहों पर चलने पर उभारती रही। 4बाप
की वफ़ात पर वह अख़ियब के घराने के मशवरे पर चलने लगा। नतीजे में उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। आख़िरकार यही लोग उस की हलाकत का सबब बन गए।

5इन्हीं के मशवरे पर वह इसराईल के बादशाह यूराम बिन अख़ियब के साथ मिलकर शाम के बादशाह हज़ाएल से लड़ने के लिए निकला। जब रामात-जिलियाद के क़रीब जंग छिड़ गई तो यूराम शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़मी हुआ
6और मैदाने-जंग को छोड़कर यज्रएल वापस आया ताकि ज़ख़म भर जाएँ। जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह बिन यहूराम उसका हाल पूछने के लिए यज्रएल
आया। 7लेकिन अल्लाह की मरज़ी थी कि यह मुलाक़ात अख़ज़ियाह की हलाकत का बाइस बने। वहाँ पहुँचकर वह यूराम के साथ याहू बिन निमसी से मिलने के लिए निकला, वही याहू जिसे रब ने मसह करके अख़ियब के ख़ानदान को नेस्तो-नाबूद करने के लिए मख़सूस किया
था। 8अख़ियब के ख़ानदान की अदालत करते करते याहू की मुलाक़ात यहूदाह के कुछ अफ़सरों और अख़ज़ियाह के बाज़ रिश्तेदारों से हुई जो अख़ज़ियाह की ख़िदमत में उसके साथ आए थे।
इन्हें क़त्ल करके 9याहू अख़ज़ियाह को ढूँडने लगा। पता चला कि वह सामरिया शहर में छुप गया है। उसे याहू के पास लाया गया जिसने उसे क़त्ल कर दिया। तो भी उसे इज़्ज़त के साथ दफ़न किया गया, क्योंकि लोगों ने कहा, "आख़िर वह यहूसफ़त का पोता है जो पूरे दिल से रब का तालिब रहा।" उस वक़्त अख़ज़ियाह के ख़ानदान में कोई न पाया गया जो बादशाह का काम सँभाल सकता।

अतलियाह की ज़ालिमाना हुकूमत

10जब अख़ज़ियाह की माँ अतलियाह को मालूम हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो वह यहूदाह के पूरे शाही ख़ानदान को क़त्ल करने लगी।
11लेकिन अख़ज़ियाह की सगी बहन यहूसबा ने अख़ज़ियाह के छोटे बेटे युआस को चुपके से उन शहज़ादों में से निकाल लिया जिन्हें क़त्ल करना था और उसे उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा दिया जिसमें बिस्तर वग़ैरा महफ़ूज़ रखे जाते थे। वहाँ वह अतलियाह की गिरिफ़्त से महफ़ूज़
रहा। यहूसबा यहोयदा इमाम की बीवी थी। 12बाद
में युआस को रब के घर में मुंतक़िल किया गया जहाँ वह उनके साथ उन छः सालों के दौरान छुपा रहा जब अतलियाह मलिका थी।

अतलियाह का अंजाम और युआस की हुकूमत

23 अतलियाह की हुकूमत के सातवें साल में यहोयदा ने जुर्रत करके सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर पाँच अफ़सरों से अहद बाँधा। उनके नाम अज़रियाह बिन यरोहाम, इसमाईल बिन यूहनान, अज़रियाह बिन ओबेद, मासियाह बिन अदायाह और इलीसाफ़त बिन ज़िकरी थे।
2इन आदमियों ने चुपके से यहूदाह के तमाम

शहरों में से गुज़रकर लावियों और इसराईली ख़ानदानों के सरपरस्तों को जमा किया और फिर उनके साथ मिलकर यरूशलम आए।
3अल्लाह के घर में पूरी जमात ने जवान बादशाह युआस के साथ अहद बाँधा।

यहोयदा उनसे मुख़ातिब हुआ, "हमारे बादशाह का बेटा ही हम पर हुकूमत करे, क्योंकि रब ने मुक़र्रर किया है कि दाऊद की औलाद यह ज़िम्मेदारी सँभाले।
4चुनाँचे अगले सबत के दिन आप इमामों और लावियों में से जितने ड्यूटी पर आएँगे वह तीन हिस्सों में तक़सीम हो जाएँ। एक हिस्सा रब के घर के दरवाज़ों पर पहरा दे,
5दूसरा शाही महल पर और तीसरा बुनियाद नामी दरवाज़े पर। बाक़ी सब आदमी रब के घर के सहनों में जमा हो जाएँ।
6ख़िदमत करनेवाले इमामों और लावियों के सिवा कोई और रब के घर में दाख़िल न हो। सिर्फ़ यही अंदर जा सकते हैं, क्योंकि रब ने उन्हें इस ख़िदमत के लिए मख़सूस किया है। लाज़िम है कि पूरी क़ौम रब की हिदायात पर अमल करे।
7बाक़ी लावी बादशाह के इर्दगिर्द दायरा बनाकर अपने हथियारों को पकड़े रखें और जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें। जो भी रब के घर में घुसने की कोशिश करे उसे मार डालना।"

8लावी और यहूदाह के इन तमाम मर्दों ने ऐसा ही किया। अगले सबत के दिन सब अपने बंदों समेत उसके पास आए, वह भी जिनकी ड्यूटी थी और वह भी जिनकी अब छुट्टी थी। क्योंकि यहोयदा ने ख़िदमत करनेवालों में से किसी को भी जाने की इजाज़त नहीं दी थी।
9इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों को दाऊद बादशाह के वह नेज़े और छोटी और बड़ी ढालें दीं जो अब तक रब के घर में महफ़ूज़ रखी हुई थीं।
10फिर उसने फ़ौजियों को बादशाह के इर्दगिर्द खड़ा किया। हर एक अपने हथियार पकड़े तैयार था। क़ुरबानगाह और रब के घर के दरमियान उनका दायरा रब के घर की जुनूबी दीवार से लेकर उस की शिमाली दीवार तक फैला हुआ था।
11फिर वह युआस को बाहर लाए और उसके सर पर ताज रखकर उसे क़वानीन की किताब दे दी। यों युआस को बादशाह बना दिया गया। उन्होंने उसे मसह किया और बुलंद आवाज़ से नारा लगाने लगे, "बादशाह ज़िंदाबाद!"

12लोगों का शोर अतलियाह तक पहुँचा, क्योंकि सब दौड़कर जमा हो रहे और बादशाह की ख़ुशी में नारे लगा रहे थे। वह रब के घर के सहन में उनके पास आई
13तो क्या देखती है कि नया बादशाह दरवाज़े के क़रीब उस सतून के पास खड़ा है जहाँ बादशाह रिवाज के मुताबिक़ खड़ा होता है, और वह अफ़सरों और तुरम बजानेवालों से घिरा हुआ है। तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजाकर ख़ुशी मना रही है। साथ साथ गुलूकार अपने साज़ बजाकर हम्द के गीत गाने में राहनुमाई कर रहे हैं। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख़ उठी, "ग़द्दारी, ग़द्दारी!"

14यहोयदा इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर उन अफ़सरों को बुलाया जिनके सुपुर्द फ़ौज की गई थी और उन्हें हुक्म दिया, "उसे बाहर ले जाएँ, क्योंकि मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास मारा जाए। और जो भी उसके पीछे आए उसे तलवार से मार देना।"
15वह अतलियाह को पकड़कर वहाँ से बाहर ले गए और उसे घोड़ों के दरवाज़े पर मार दिया जो शाही महल के पास था।

16फिर यहोयदा ने क़ौम और बादशाह के साथ मिलकर रब से अहद बाँधकर वादा किया कि हम रब की क़ौम रहेंगे।
17इसके बाद सब बाल के मंदिर पर टूट पड़े और उसे ढा दिया। उस की क़ुरबानगाहों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्होंने बाल के पुजारी मत्तान को क़ुरबानगाहों के सामने ही मार डाला।

18यहोयदा ने इमामों और लावियों को दुबारा रब के घर को सँभालने की ज़िम्मेदारी दी। दाऊद ने उन्हें ख़िदमत के लिए गुरोहों में तक़सीम किया था। उस की हिदायात के मुताबिक़ उन्हीं को ख़ुशी मनाते और गीत गाते हुए भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करनी थीं, जिस तरह मूसा की शरीअत में लिखा है।
19रब के घर के दरवाज़ों पर

यहोयदा ने दरबान खड़े किए ताकि ऐसे लोगों को
अंदर आने से रोका जाए जो किसी भी वजह से
नापाक हों।
20फिर वह सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर
अफ़सरों, असरो-रसूख़वालों, क़ौम के हुक्मरानों
और बाक़ी पूरी उम्मत के हमराह जुलूस
निकालकर बादशाह को बालाई दरवाज़े से होकर
शाही महल में ले गया। वहाँ उन्होंने बादशाह को
तख़्त पर बिठा दिया, 21और तमाम उम्मत ख़ुशी
मनाती रही। यों यरूशलम शहर को सुकून मिला,
क्योंकि अतलियाह को तलवार से मार दिया गया
था।

युआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

24 युआस 7 साल की उम्र में बाद-
शाह बना, और यरूशलम में उस की
हुकूमत का दौरानिया 40 साल था। उस की माँ
ज़िबियाह बैर-सबा की रहनेवाली थी। 2यहोयदा
के जीते-जी युआस वह कुछ करता रहा जो रब को
पसंद था। 3यहोयदा ने उस की शादी दो ख़वातीन
से कराई जिनके बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।
4कुछ देर के बाद युआस ने रब के घर की
मरम्मत कराने का फ़ैसला किया। 5इमामों और
लावियों को अपने पास बुलाकर उसने उन्हें हुक्म
दिया, "यहूदाह के शहरों में से गुज़रकर तमाम
लोगों से पैसे जमा करें ताकि आप साल बसाल
अपने ख़ुदा के घर की मरम्मत करवाएँ। अब
जाकर जल्दी करें।" लेकिन लावियों ने बड़ी देर
लगाई।
6तब बादशाह ने इमामे-आज़म यहोयदा को
बुलाकर पूछा, "आपने लावियों से मुतालबा क्यों
नहीं किया कि वह यहूदाह के शहरों और यरूशलम
से रब के घर की मरम्मत के पैसे जमा करें? यह
तो कोई नई बात नहीं है, क्योंकि रब का ख़ादिम
मूसा भी मुलाक़ात का ख़ैमा ठीक रखने के लिए
इसराईली जमात से टैक्स लेता रहा। 7आपको
ख़ुद मालूम है कि उस बेदीन औरत अतलियाह
ने अपने पैरोकारों के साथ रब के घर में नक़ब
लगाकर रब के लिए मख़सूस हदिये छीन लिए
और बाल के अपने बुतों की ख़िदमत के लिए
इस्तेमाल किए थे।"
8बादशाह के हुक्म पर एक संदूक़ बनवाया गया
जो बाहर, रब के घर के सहन के दरवाज़े पर
रखा गया। 9पूरे यहूदाह और यरूशलम में एलान
किया गया कि रब के लिए वह टैक्स अदा किया
जाए जिसका ख़ुदा के ख़ादिम मूसा ने रेगिस्तान
में इसराईलियों से मुतालबा किया था। 10यह
सुनकर तमाम राहनुमा बल्कि पूरी क़ौम ख़ुश हुई।
अपने हदिये रब के घर के पास लाकर वह उन्हें
संदूक़ में डालते रहे। जब कभी वह भर जाता
11तो लावी उसे उठाकर बादशाह के अफ़सरों के
पास ले जाते। अगर उसमें वाक़ई बहुत पैसे होते
तो बादशाह का मीरमुंशी और इमामे-आज़म का
एक अफ़सर आकर उसे ख़ाली कर देते। फिर
लावी उसे उस की जगह वापस रख देते थे। यह
सिलसिला रोज़ाना जारी रहा, और आख़िरकार
बहुत बड़ी रक़म इकट्ठी हो गई।
12बादशाह और यहोयदा यह पैसे उन ठेकेदारों
को दिया करते थे जो रब के घर की मरम्मत
करवाते थे। यह पैसे पत्थर तराशनेवालों, बढ़इयों
और उन कारीगरों की उजरत के लिए सर्फ़ हुए
जो लोहे और पीतल का काम करते थे। 13रब के
घर की मरम्मत के निगरानों ने मेहनत से काम
किया, और उनके ज़ेरे-निगरानी तरक़्क़ी होती
गई। आख़िर में रब के घर की हालत पहले की-सी
हो गई थी बल्कि उन्होंने उसे मज़ीद मज़बूत बना
दिया। 14काम के इख़्तिताम पर ठेकेदार बाक़ी
पैसे युआस बादशाह और यहोयदा के पास लाए।
इनसे उन्होंने रब के घर की ख़िदमत के लिए
दरकार प्याले, सोने और चाँदी के बरतन और
दीगर कई चीज़ें जो क़ुरबानियाँ चढ़ाने के लिए
इस्तेमाल होती थीं बनवाईं। यहोयदा के जीते-
जी रब के घर में बाक़ायदगी से भस्म होनेवाली
क़ुरबानियाँ पेश की जाती रहीं।
15यहोयदा निहायत बूढ़ा हो गया। 130 साल
की उम्र में वह फ़ौत हुआ। 16उसे यरूशलम के

उस हिस्से में शाही क़ब्रिस्तान में दफ़नाया गया
जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है, क्योंकि उसने
इसराईल में अल्लाह और उसके घर की अच्छी
ख़िदमत की थी।

युआस बादशाह रब को तर्क करता है

17यहोयदा की मौत के बाद यहूदाह के बुज़ुर्ग
युआस के पास आकर मुँह के बल झुक गए।
उस वक़्त से वह उनके मशवरों पर अमल करने
लगा। 18इसका एक नतीजा यह निकला कि
वह उनके साथ मिलकर रब अपने बाप के ख़ुदा
के घर को छोड़कर यसीरत देवी के खंबों और
बुतों की पूजा करने लगा। इस गुनाह की वजह
से अल्लाह का ग़ज़ब यहूदाह और यरूशलम पर
नाज़िल हुआ। 19उसने अपने नबियों को लोगों
के पास भेजा ताकि वह उन्हें समझाकर रब के
पास वापस लाएँ। लेकिन कोई भी उनकी बात
सुनने के लिए तैयार न हुआ। 20फिर अल्लाह का
रूह यहोयदा इमाम के बेटे ज़करियाह पर नाज़िल
हुआ, और उसने क़ौम के सामने खड़े होकर कहा,
"अल्लाह फ़रमाता है, 'तुम रब के अहकाम की
ख़िलाफ़वरज़ी क्यों करते हो? तुम्हें कामयाबी
हासिल नहीं होगी। चूँकि तुमने रब को तर्क कर
दिया है इसलिए उसने तुम्हें तर्क कर दिया है'!"
21जवाब में लोगों ने ज़करियाह के ख़ि-
लाफ़ साज़िश करके उसे बादशाह के हुक्म पर
रब के घर के सहन में संगसार कर दिया। 22यों
युआस बादशाह ने उस मेहरबानी का ख़याल न
किया जो यहोयदा ने उस पर की थी बल्कि उसे
नज़रंदाज़ करके उसके बेटे को क़त्ल किया। मरते
वक़्त ज़करियाह बोला, "रब ध्यान देकर मेरा
बदला ले!"
23अगले साल के आग़ाज़ में शाम की फ़ौज
युआस से लड़ने आई। यहूदाह में घुसकर उन्होंने
यरूशलम पर फ़तह पाई और क़ौम के तमाम
बुज़ुर्गों को मार डाला। सारा लूटा हुआ माल
दमिश्क़ को भेजा गया जहाँ बादशाह था।
24अगरचे शाम की फ़ौज यहूदाह की फ़ौज की
निसबत बहुत छोटी थी तो भी रब ने उसे फ़तह
बख़्शी। चूँकि यहूदाह ने रब अपने बापदादा के
ख़ुदा को तर्क कर दिया था इसलिए युआस को
शाम के हाथों सज़ा मिली। 25जंग के दौरान
यहूदाह का बादशाह शदीद ज़ख़मी हुआ। जब
दुश्मन ने मुल्क को छोड़ दिया तो युआस के
अफ़सरों ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की। यहोयदा
इमाम के बेटे के क़त्ल का इंतक़ाम लेकर उन्होंने
उसे मार डाला जब वह बीमार हालत में बिस्तर पर
पड़ा था। बादशाह को यरूशलम के उस हिस्से में
दफ़न किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता
है। लेकिन शाही क़ब्रिस्तान में नहीं दफ़नाया
गया। 26साज़िश करनेवालों के नाम ज़बद और
यहूज़बद थे। पहले की माँ सिमआत अम्मोनी थी
जबकि दूसरे की माँ सिमरीत मोआबी थी।
27युआस के बेटों, उसके ख़िलाफ़ नबियों के
फ़रमानों और अल्लाह के घर की मरम्मत के
बारे में मज़ीद मालूमात 'शाहान की किताब' में
दर्ज हैं। युआस के बाद उसका बेटा अमसियाह
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमसियाह

25 अमसियाह 25 साल की उम्र में
बादशाह बना और यरूशलम में उस
की हुकूमत का दौरानिया 29 साल था। उस की
माँ यहुअद्दान यरूशलम की रहनेवाली थी। 2जो
कुछ अमसियाह ने किया वह रब को पसंद था,
लेकिन वह पूरे दिल से रब की पैरवी नहीं करता
था। 3ज्योंही उसके पाँव मज़बूती से जम गए
उसने उन अफ़सरों को सज़ाए-मौत दी जिन्होंने
बाप को क़त्ल कर दिया था। 4लेकिन उनके बेटों
को उसने ज़िंदा रहने दिया और यों मूसवी शरीअत
के ताबे रहा जिसमें रब फ़रमाता है, "वालिदैन को
उनके बच्चों के जरायम के सबब से सज़ाए-मौत
न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिदैन के जरायम
के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो
तो उस गुनाह के सबब से जो उसने ख़ुद किया
है।"

अदोम से जंग

5अमसियाह ने यहूदाह और बिनयमीन के
क़बीलों के तमाम मर्दों को बुलाकर उन्हें ख़ानदानों
के मुताबिक़ तरतीब दिया। उसने हज़ार हज़ार
और सौ सौ फ़ौजियों पर अफ़सर मुक़र्रर किए।
जितने भी मर्द 20 या इससे ज़ायद साल के थे
उन सबकी भरती हुई। इस तरह 3,00,000
फ़ौजी जमा हुए। सब बड़ी ढालों और नेज़ों से
लैस थे। 6इसके अलावा अमसियाह ने इसराईल
के 1,00,000 तजरबाकार फ़ौजियों को उजरत
पर भरती किया ताकि वह जंग में मदद करें। उन्हें
उसने चाँदी के तक़रीबन 3,400 किलोग्राम दिए।
7लेकिन एक मर्दे-ख़ुदा ने अमसियाह के
पास आकर उसे समझाया, "बादशाह सलामत,
लाज़िम है कि यह इसराईली फ़ौजी आपके साथ
मिलकर लड़ने के लिए न निकलें। क्योंकि रब
उनके साथ नहीं है, वह इफ़राईम के किसी भी
रहनेवाले के साथ नहीं है। 8अगर आप उनके
साथ मिलकर निकलें ताकि मज़बूती से दुश्मन
से लड़ें तो अल्लाह आपको दुश्मन के सामने
गिरा देगा। क्योंकि अल्लाह को आपकी मदद
करने और आपको गिराने की क़ुदरत हासिल
है।" 9अमसियाह ने एतराज़ किया, "लेकिन
मैं इसराईलियों को चाँदी के 3,400 किलोग्राम
अदा कर चुका हूँ। इन पैसों का क्या बनेगा?"
मर्दे-ख़ुदा ने जवाब दिया, "रब आपको इससे
कहीं ज़्यादा अता कर सकता है।" 10चुनाँचे
अमसियाह ने इफ़राईम से आए हुए तमाम
फ़ौजियों को फ़ारिग़ करके वापस भेज दिया, और
वह यहूदाह से बहुत नाराज़ हुए। हर एक बड़े तैश
में अपने अपने घर चला गया।
11तो भी अमसियाह जुर्रत करके जंग के लिए
निकला। अपनी फ़ौज को नमक की वादी में ले
जाकर उसने अदोमियों पर फ़तह पाई। उनके
10,000 मर्द मैदाने-जंग में मारे गए। 12दुश्मन
के मज़ीद 10,000 आदमियों को गिरिफ़्तार कर
लिया गया। यहूदाह के फ़ौजियों ने क़ैदियों को
एक ऊँची चट्टान की चोटी पर ले जाकर नीचे गिरा
दिया। इस तरह सब पाश पाश होकर हलाक हुए।
13इतने में फ़ारिग़ किए गए इसराईली फ़ौजियों
ने सामरिया और बैत-हौरून के बीच में वाक़े
यहूदाह के शहरों पर हमला किया था। लड़ते
लड़ते उन्होंने 3,000 मर्दों को मौत के घाट उतार
दिया और बहुत-सा माल लूट लिया था।

अमसियाह की बुतपरस्ती

14अदोमियों को शिकस्त देने के बाद
अमसियाह सईर के बाशिंदों के बुतों को लूटकर
अपने घर वापस लाया। वहाँ उसने उन्हें खड़ा
किया और उनके सामने औंधे मुँह झुककर उन्हें
क़ुरबानियाँ पेश कीं। 15यह देखकर रब उससे
बहुत नाराज़ हुआ। उसने एक नबी को उसके
पास भेजा जिसने कहा, "तू इन देवताओं की
तरफ़ क्यों रुजू कर रहा है? यह तो अपनी क़ौम
को तुझसे नजात न दिला सके।" 16अमसियाह
ने नबी की बात काटकर कहा, "हमने कब से तुझे
बादशाह का मुशीर बना दिया है? ख़ामोश, वरना
तुझे मार दिया जाएगा।" नबी ने ख़ामोश होकर
इतना ही कहा, "मुझे मालूम है कि अल्लाह ने
आपको आपकी इन हरकतों की वजह से और
इसलिए कि आपने मेरा मशवरा क़बूल नहीं किया
तबाह करने का फ़ैसला कर लिया है।"

अमसियाह इसराईल के बादशाह युआस से लड़ता है

17एक दिन यहूदाह के बादशाह अमसि-
याह ने अपने मुशीरों से मशवरा करने के बाद
युआस बिन यहुआख़ज़ बिन याहू को पैग़ाम
भेजा, "आएँ, हम एक दूसरे का मुक़ाबला करें!"
18लेकिन इसराईल के बादशाह युआस ने जवाब
दिया, "लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार
के एक दरख़्त से बात की, 'मेरे बेटे के साथ
अपनी बेटी का रिश्ता बान्धो।' लेकिन उसी वक़्त
लुबनान के जंगली जानवरों ने उसके ऊपर से
गुज़रकर उसे पाँवों तले कुचल डाला। 19अदोम

पर फ़तह पाने के सबब से आपका दिल मग़रूर होकर मज़ीद शोहरत हासिल करना चाहता है। लेकिन मेरा मशवरा है कि आप अपने घर में रहें। आप ऐसी मुसीबत को क्यों दावत देते हैं जो आप और यहूदाह की तबाही का बाइस बन जाए?” 20लेकिन अमसियाह मानने के लिए तैयार नहीं था। अल्लाह उसे और उस की क़ौम को इसराईलियों के हवाले करना चाहता था, क्योंकि उन्होंने अदोमियों के देवताओं की तरफ़ रुजू किया था।

21तब इसराईल का बादशाह युआस अपनी फ़ौज लेकर यहूदाह पर चढ़ आया। बैत-शम्स के पास उसका यहूदाह के बादशाह अमसियाह के साथ मुक़ाबला हुआ। 22इसराईली फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को शिकस्त दी, और हर एक अपने अपने घर भाग गया। 23इसराईल के बादशाह युआस ने यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस बिन अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्स में गिरिफ़्तार कर लिया। फिर वह उसे यरूशलम लाया और शहर की फ़सील इफ़राईम नामी दरवाज़े से लेकर कोने के दरवाज़े तक गिरा दी। इस हिस्से की लंबाई तक़रीबन 600 फ़ुट थी। 24जितना भी सोना, चाँदी और क़ीमती सामान रब के घर और शाही महल के ख़ज़ानों में था उसे उसने पूरे का पूरा छीन लिया। उस वक़्त ओबेद-अदोम रब के घर के ख़ज़ाने सँभालता था। युआस लूटा हुआ माल और बाज़ यरग़मालों को लेकर सामरिया वापस चला गया।

अमसियाह की मौत

25इसराईल के बादशाह युआस बिन यहुआख़ज़ की मौत के बाद यहूदाह का बादशाह अमसियाह बिन युआस मज़ीद 15 साल जीता रहा। 26बाक़ी जो कुछ अमसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह शुरू से लेकर आख़िर तक ‘शाहाने-इसराईलो-यहूदाह’ की किताब में दर्ज है। 27जब से वह रब की पैरवी करने से बाज़ आया उस वक़्त से लोग यरूशलम में उसके ख़िलाफ़ साज़िश करने लगे। आख़िरकार उसने फ़रार होकर लकीस में पनाह ली, लेकिन साज़िश करनेवालों ने अपने लोगों को उसके पीछे भेजा, और वह वहाँ उसे क़त्ल करने में कामयाब हो गए। 28उस की लाश घोड़े पर उठाकर यहूदाह के शहर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया।

यहूदाह का बादशाह उज़्ज़ियाह

26 यहूदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह की जगह उसके बेटे उज़्ज़ियाह को तख़्त पर बिठा दिया। उस की उम्र 16 साल थी 2जब उसका बाप मरकर अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह बनने के बाद उज़्ज़ियाह ने ऐलात शहर पर क़ब्ज़ा करके उसे दुबारा यहूदाह का हिस्सा बना लिया। उसने शहर में बहुत तामीरी काम करवाया।

3उज़्ज़ियाह 16 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 52 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यकूलियाह यरूशलम की रहनेवाली थी। 4अपने बाप अमसियाह की तरह उसका चाल-चलन रब को पसंद था। 5इमामे-आज़म ज़करियाह के जीते-जी उज़्ज़ियाह रब का तालिब रहा, क्योंकि ज़करियाह उसे अल्लाह का ख़ौफ़ मानने की तालीम देता रहा। जब तक बादशाह रब का तालिब रहा उस वक़्त तक अल्लाह उसे कामयाबी बख़्शता रहा।

6उज़्ज़ियाह ने फ़िलिस्तियों से जंग करके जात, यबना और अशदूद की फ़सीलों को ढा दिया। दीगर कई शहरों को उसने नए सिरे से तामीर किया जो अशदूद के क़रीब और फ़िलिस्तियों के बाक़ी इलाक़े में थे। 7लेकिन अल्लाह ने न सिर्फ़ फ़िलिस्तियों से लड़ते वक़्त उज़्ज़ियाह की मदद की बल्कि उस वक़्त भी जब जूर-बाल में रहनेवाले अरबों और मऊनियों से जंग छिड़ गई। 8अम्मोनियों को उज़्ज़ियाह को ख़राज अदा

करना पड़ा, और वह इतना ताक़तवर बना कि उस की शोहरत मिसर तक फैल गई।

9यरूशलम में उज़्ज़ियाह ने कोने के दरवाज़े, वादी के दरवाज़े और फ़सील के मोड़ पर मज़बूत बुर्ज बनवाए। 10उसने बयाबान में भी बुर्ज तामीर किए और साथ साथ पत्थर के बेशुमार हौज़ तराशे, क्योंकि मग़रिबी यहूदाह के नशेबी पहाड़ी इलाक़े और मैदानी इलाक़े में उसके बड़े बड़े रेवड़ चरते थे। बादशाह को काश्तकारी का काम ख़ास पसंद था। बहुत लोग पहाड़ी इलाक़ों और ज़रख़ेज़ वादियों में उसके खेतों और अंगूर के बाग़ों की निगरानी करते थे।

11उज़्ज़ियाह की ताक़तवर फ़ौज थी। बादशाह के आला अफ़सर हननियाह की राहनुमाई में मीरमुंशी यइयेल ने अफ़सर मासियाह के साथ फ़ौज की भरती करके उसे तरतीब दिया था। 12इन दस्तों पर कुंबों के 2,600 सरपरस्त मुक़र्रर थे। 13फ़ौज 3,07,500 जंग लड़ने के क़ाबिल मर्दों पर मुश्तमिल थी। जंग में बादशाह उन पर पूरा भरोसा कर सकता था। 14उज़्ज़ियाह ने अपने तमाम फ़ौजियों को ढालों, नेज़ों, ख़ोदों, ज़िरा-बकतरों, कमानों और फ़लाख़न के सामान से मुसल्लह किया। 15और यरूशलम के बुर्जों और फ़सील के कोनों पर उसने ऐसी मशीनें लगाएँ जो तीर चला सकती और बड़े बड़े पत्थर फेंक सकती थीं।

उज़्ज़ियाह मग़रूर हो जाता है

ग़रज़, अल्लाह की मदद से उज़्ज़ियाह की शोहरत दूर दूर तक फैल गई, और उस की ताक़त बढ़ती गई।

16लेकिन इस ताक़त ने उसे मग़रूर कर दिया, और नतीजे में वह ग़लत राह पर आ गया। रब अपने ख़ुदा का बेवफ़ा होकर वह एक दिन रब के घर में घुस गया ताकि बख़ूर की क़ुरबानगाह पर बख़ूर जलाए। 17लेकिन इमामे-आज़म अज़रियाह रब के मज़ीद 80 बहादुर इमामों को अपने साथ लेकर उसके पीछे पीछे गया। 18उन्होंने बादशाह उज़्ज़ियाह का सामना करके कहा, "मुनासिब नहीं कि आप रब को बख़ूर की क़ुरबानी पेश करें। यह हारून की औलाद यानी इमामों की ज़िम्मेदारी है जिन्हें इसके लिए मख़सूस किया गया है। मक़दिस से निकल जाएँ, क्योंकि आप अल्लाह से बेवफ़ा हो गए हैं, और आपकी यह हरकत रब ख़ुदा के सामने इज़्ज़त का बाइस नहीं बनेगी।" 19उज़्ज़ियाह बख़ूरदान को पकड़े बख़ूर को पेश करने को था कि इमामों की बातें सुनकर आग-बगूला हो गया। लेकिन उसी लमहे उसके माथे पर कोढ़ फूट निकला। 20यह देखकर इमामे-आज़म अज़रियाह और दीगर इमामों ने उसे जल्दी से रब के घर से निकाल दिया। उज़्ज़ियाह ने ख़ुद भी वहाँ से निकलने की जल्दी की, क्योंकि रब ही ने उसे सज़ा दी थी।

21उज़्ज़ियाह जीते-जी इस बीमारी से शफ़ा न पा सका। उसे अलहदा घर में रहना पड़ा, और उसे रब के घर में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं थी। उसके बेटे यूताम को महल पर मुक़र्रर किया गया, और वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।

22बाक़ी जो कुछ उज़्ज़ियाह की हुकूमत के दौरान शुरू से लेकर आख़िर तक हुआ वह आमूस के बेटे यसायाह नबी ने क़लमबंद किया है। 23जब उज़्ज़ियाह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे कोढ़ की वजह से दूसरे बादशाहों के साथ नहीं दफ़नाया गया बल्कि क़रीब के एक खेत में जो शाही ख़ानदान का था। फिर उसका बेटा यूताम तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यूताम

27 यूताम 25 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 16 साल तक हुकूमत करता रहा। उस की माँ यरूसा बिंत सदोक़ थी। 2यूताम ने वह कुछ किया जो रब को पसंद था। वह अपने बाप उज़्ज़ियाह के नमूने पर चलता रहा, अगरचे उसने कभी भी बाप की

तरह रब के घर में घुस जाने की कोशिश न की।
लेकिन आम लोग अपनी ग़लत राहों से न हटे।
3यूताम ने रब के घर का बालाई दरवाज़ा
तामीर किया। ओफ़ल पहाड़ी जिस पर रब का
घर था उस की दीवार को उसने बहुत जगहों पर
मज़बूत बना दिया। 4यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में
उसने शहर तामीर किए और जंगली इलाक़ों में
क़िले और बुर्ज बनाए। 5जब अम्मोनी बादशाह
के साथ जंग छिड़ गई तो उसने अम्मोनियों
को शिकस्त दी। तीन साल तक उन्हें उसे
सालाना ख़राज के तौर पर तक़रीबन 3,400
किलोग्राम चाँदी, 16,00,000 किलोग्राम गंदुम
और 13,50,000 किलोग्राम जौ अदा करना
पड़ा। 6यों यूताम की ताक़त बढ़ती गई। और
वजह यह थी कि वह साबितक़दमी से रब अपने
ख़ुदा के हुज़ूर चलता रहा।
7बाक़ी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान
हुआ वह ‘शाहाने-इसराईलो-यहूदाह’ की किताब
में क़लमबंद है। उसमें उस की तमाम जंगों और
बाक़ी कामों का ज़िक्र है। 8वह 25 साल की
उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर
16 साल हुकूमत करता रहा। 9जब वह मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम
के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता
है दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा आख़ज़
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह आख़ज़

28 आख़ज़ 20 साल की उम्र में बादशाह
बना और यरूशलम में रहकर 16
साल हुकूमत करता रहा। वह अपने बाप दाऊद
के नमूने पर न चला बल्कि वह कुछ करता रहा जो
रब को नापसंद था। 2क्योंकि उसने इसराईल के
बादशाहों का चाल-चलन अपनाया। बाल के बुत
ढलवाकर 3उसने न सिर्फ़ वादीए-बिन-हिन्नूम में
बुतों को क़ुरबानियाँ पेश कीं बल्कि अपने बेटों
को भी क़ुरबानी के तौर पर जला दिया। यों वह
उन क़ौमों के घिनौने रस्मो-रिवाज अदा करने
लगा जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे मुल्क से
निकाल दिया था। 4आख़ज़ बख़ूर जलाकर अपनी
क़ुरबानियाँ ऊँचे मक़ामों, पहाड़ियों की चोटियों
और हर घने दरख़्त के साये में चढ़ाता था।
5इसी लिए रब उसके ख़ुदा ने उसे शाम के
बादशाह के हवाले कर दिया। शाम की फ़ौज ने
उसे शिकस्त दी और यहूदाह के बहुत-से लोगों
को क़ैदी बनाकर दमिश्क़ ले गई। आख़ज़ को
इसराईल के बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह के
हवाले भी कर दिया गया जिसने उसे शदीद
नुक़सान पहुँचाया। 6एक ही दिन में यहूदाह के
1,20,000 तजरबाकार फ़ौजी शहीद हुए। यह
सब कुछ इसलिए हुआ कि क़ौम ने रब अपने
बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया था। 7उस
वक़्त इफ़राईम के क़बीले के पहलवान ज़िकरी
ने आख़ज़ के बेटे मासियाह, महल के इंचार्ज
अज़रीक़ाम और बादशाह के बाद सबसे आला
अफ़सर इलक़ाना को मार डाला। 8इसराईलियों
ने यहूदाह की 2,00,000 औरतें और बच्चे छीन
लिए और कसरत का माल लूटकर सामरिया ले
गए।

इसराईल क़ैदियों को रिहा कर देता है

9सामरिया में रब का एक नबी बनाम ओदीद
रहता था। जब इसराईली फ़ौजी मैदाने-जंग से
वापस आए तो ओदीद उनसे मिलने के लिए
निकला। उसने उनसे कहा, “देखें, रब आपके
बापदादा का ख़ुदा यहूदाह से नाराज़ था, इसलिए
उसने उन्हें आपके हवाले कर दिया। लेकिन आप
लोग तैश में आकर उन पर यों टूट पड़े कि
उनका क़त्ले-आम आसमान तक पहुँच गया है।
10लेकिन यह काफ़ी नहीं था। अब आप यहूदाह
और यरूशलम के बचे हुओं को अपने ग़ुलाम
बनाना चाहते हैं। क्या आप समझते हैं कि हम
उनसे अच्छे हैं? नहीं, आपसे भी रब अपने ख़ुदा
के ख़िलाफ़ गुनाह सरज़द हुए हैं। 11चुनाँचे मेरी
बात सुनें! इन क़ैदियों को वापस करें जो आपने

अपने भाइयों से छीन लिए हैं। क्योंकि रब का
सख़्त ग़ज़ब आप पर नाज़िल होनेवाला है।”
12इफ़राईम के क़बीले के कुछ सरपरस्तों
ने भी फ़ौजियों का सामना किया। उनके
नाम अज़रियाह बिन यूहनान, बरकियाह बिन
मसिल्लमोत, यहिज़क़ियाह बिन सल्लूम और
अमासा बिन ख़दली थे। 13उन्होंने कहा, “इन
क़ैदियों को यहाँ मत ले आएँ, वरना हम रब के
सामने क़ुसूरवार ठहरेंगे। क्या आप चाहते हैं कि
हम अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करें? हमारा क़ुसूर
पहले ही बहुत बड़ा है। हाँ, रब इसराईल पर सख़्त
ग़ुस्से है।”
14तब फ़ौजियों ने अपने क़ैदियों को आज़ाद
करके उन्हें लूटे हुए माल के साथ बुज़ुर्गों और
पूरी जमात के हवाले कर दिया। 15मज़कूरा चार
आदमियों ने सामने आकर क़ैदियों को अपने
पास महफ़ूज़ रखा। लूटे हुए माल में से कपड़े
निकालकर उन्होंने उन्हें उनमें तक़सीम किया जो
बरहना थे। इसके बाद उन्होंने तमाम क़ैदियों को
कपड़े और जूते दे दिए, उन्हें खाना खिलाया, पानी
पिलाया और उनके ज़ख़मों की मरहम-पट्टी की।
जितने थकावट की वजह से चल न सकते थे उन्हें
उन्होंने गधों पर बिठाया, फिर चलते चलते सबको
खजूर के शहर यरीहू तक पहुँचाया जहाँ उनके
अपने लोग थे। फिर वह सामरिया लौट आए।

आख़ज़ असूर के बादशाह से मदद लेता है

16उस वक़्त आख़ज़ बादशाह ने असूर के
बादशाह से इलतमास की, “हमारी मदद करने
आएँ।” 17क्योंकि अदोमी यहूदाह में घुसकर कुछ
लोगों को गिरिफ़्तार करके अपने साथ ले गए
थे। 18साथ साथ फ़िलिस्ती मग़रिबी यहूदाह के
नशेबी पहाड़ी इलाक़े और जुनूबी इलाक़े में घुस
आए थे और ज़ैल के शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें
रहने लगे थे : बैत-शम्स, ऐयालोन, जदीरोत,
नीज़ सोका, तिमनत और जिमज़ू गिर्दो-नवाह
की आबादियों समेत। 19इस तरह रब ने यहूदाह
को आख़ज़ की वजह से ज़ेर कर दिया, क्योंकि
बादशाह ने यहूदाह में बेलगाम बेराहरवी फैलने
दी और रब से अपनी बेवफ़ाई का साफ़ इज़हार
किया था।
20असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर अपनी
फ़ौज लेकर मुल्क में आया, लेकिन आख़ज़ की
मदद करने के बजाए उसने उसे तंग किया।
21आख़ज़ ने रब के घर, शाही महल और अपने
आला अफ़सरों के ख़ज़ानों को लूटकर सारा
माल असूर के बादशाह को भेज दिया, लेकिन
बेफ़ायदा। इससे उसे सहीह मदद न मिली।
22गो वह उस वक़्त बड़ी मुसीबत में था तो भी
रब से और दूर हो गया। 23वह शाम के देवताओं
को क़ुरबानियाँ पेश करने लगा, क्योंकि उसका
ख़याल था कि इन्हीं ने मुझे शिकस्त दी है। उसने
सोचा, “शाम के देवता अपने बादशाहों की मदद
करते हैं! अब से मैं उन्हें क़ुरबानियाँ पेश करूँगा
ताकि वह मेरी भी मदद करें।” लेकिन यह देवता
बादशाह आख़ज़ और पूरी क़ौम के लिए तबाही
का बाइस बन गए। 24आख़ज़ ने हुक्म दिया कि
अल्लाह के घर का सारा सामान निकालकर टुकड़े
टुकड़े कर दिया जाए। फिर उसने रब के घर के
दरवाज़ों पर ताला लगा दिया। उस की जगह
उसने यरूशलम के कोने कोने में क़ुरबानगाहें खड़ी
कर दीं। 25साथ साथ उसने दीगर माबूदों को
क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए यहूदाह के हर शहर
की ऊँची जगहों पर मंदिर तामीर किए। ऐसी
हरकतों से वह रब अपने बापदादा के ख़ुदा को
तैश दिलाता रहा।
26बाक़ी जो कुछ उस की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह शुरू से
लेकर आख़िर तक ‘शाहाने-यहूदाहो-इसराईल’
की किताब में दर्ज है। 27जब आख़ज़ मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम
में दफ़न किया गया, लेकिन शाही क़ब्रिस्तान में
नहीं। फिर उसका बेटा हिज़क़ियाह तख़्तनशीन
हुआ।

हिज़क़ियाह बादशाह रब के घर को दुबारा खोल देता है

29 जब हिज़क़ियाह बादशाह बना तो उस
की उम्र 25 साल थी। यरूशलम में
रहकर वह 29 साल हुकूमत करता रहा। उस की
माँ अबियाह बिंत ज़करियाह थी।

2अपने बाप दाऊद की तरह उसने ऐसा काम
किया जो रब को पसंद था। 3अपनी हुकूमत के
पहले साल के पहले महीने में उसने रब के घर
के दरवाज़ों को खोलकर उनकी मरम्मत करवाई।
4लावियों और इमामों को बुलाकर उसने उन्हें रब
के घर के मशरिक़ी सहन में जमा किया 5और
कहा,

“ऐ लावियो, मेरी बात सुनें! अपने आपको
ख़िदमत के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करें, और रब
अपने बापदादा के ख़ुदा के घर को भी मख़सूसो-
मुक़द्दस करें। तमाम नापाक चीज़ें मक़दिस से
निकालें! 6हमारे बापदादा बेवफ़ा होकर वह कुछ
करते गए जो रब हमारे ख़ुदा को नापसंद था।
उन्होंने उसे छोड़ दिया, अपने मुँह को रब की
सुकूनतगाह से फेरकर दूसरी तरफ़ चल पड़े।
7रब के घर के सामनेवाले बरामदे के दरवाज़ों पर
उन्होंने ताला लगाकर चराग़ों को बुझा दिया। न
इसराईल के ख़ुदा के लिए बख़ूर जलाया जाता,
न भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ मक़दिस में पेश की
जाती थीं। 8इसी वजह से रब का ग़ज़ब यहूदाह
और यरूशलम पर नाज़िल हुआ है। हमारी हालत
को देखकर लोग घबरा गए, उनके रोंगटे खड़े हो
गए हैं। हम दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन
गए हैं। आप ख़ुद इसके गवाह हैं। 9हमारी बेवफ़ाई
की वजह से हमारे बाप तलवार की ज़द में आकर
मारे गए और हमारे बेटे-बेटियाँ और बीवियाँ हमसे
छीन ली गई हैं। 10लेकिन अब मैं रब इसराईल के
ख़ुदा के साथ अहद बाँधना चाहता हूँ ताकि उसका
सख़्त क़हर हमसे टल जाए। 11मेरे बेटो, अब
सुस्ती न दिखाएँ, क्योंकि रब ने आपको चुनकर
अपने ख़ादिम बनाया है। आपको उसके हुज़ूर खड़े
होकर उस की ख़िदमत करने और बख़ूर जलाने
की ज़िम्मेदारी दी गई है।”

12फिर ज़ैल के लावी ख़िदमत के लिए तैयार
हुए :

क़िहात के ख़ानदान का महत बिन अमासी और
योएल बिन अज़रियाह,

मिरारी के ख़ानदान का क़ीस बिन अबदी और
अज़रियाह बिन यहल्ललेल,

जैरसोन के ख़ानदान का युआख़ बिन ज़िम्मा
और अदन बिन युआख़,

13इलीसफ़न के ख़ानदान का सिमरी और
यइयेल,

आसफ़ के ख़ानदान का ज़करियाह और
मत्तनियाह,

14हैमान के ख़ानदान का यहियेल और सिमई,

यदूतून के ख़ानदान का समायाह और
उज़्ज़ियेल।

15बाक़ी लावियों को बुलाकर उन्होंने अपने
आपको रब की ख़िदमत के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस किया। फिर वह बादशाह के हुक्म के
मुताबिक़ रब के घर को पाक-साफ़ करने लगे।
काम करते करते उन्होंने इसका ख़याल किया कि
सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ हो रहा हो।
16इमाम रब के घर में दाख़िल हुए और उसमें से
हर नापाक चीज़ निकालकर उसे सहन में लाए।
वहाँ से लावियों ने सब कुछ उठाकर शहर से बाहर
वादीए-क़िदरोन में फेंक दिया। 17रब के घर की
क़ुद्दूसियत बहाल करने का काम पहले महीने के
पहले दिन शुरू हुआ, और एक हफ़्ते के बाद वह
सामनेवाले बरामदे तक पहुँच गए थे। एक और
हफ़्ता पूरे घर को मख़सूसो-मुक़द्दस करने में लग
गया।

पहले महीने के 16वें दिन काम मुकम्मल
हुआ। 18हिज़क़ियाह बादशाह के पास जाकर
उन्होंने कहा, “हमने रब के पूरे घर को पाक-
साफ़ कर दिया है। इसमें जानवरों को जलाने की
क़ुरबानगाह उसके सामान समेत और वह मेज़
जिस पर रब के लिए मख़सूस रोटियाँ रखी जाती

हैं उसके सामान समेत शामिल है। 19और जितनी चीज़ें आख़ज़ ने बेवफ़ा बनकर अपनी हुकूमत के दौरान रद्द कर दी थीं उन सबको हमने ठीक करके दुबारा मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया है। अब वह रब की क़ुरबानगाह के सामने पड़ी हैं।”

रब के घर की दुबारा मख़सूसियत

20अगले दिन हिज़क़ियाह बादशाह सुबह-सवेरे शहर के तमाम बुज़ुर्गों को बुलाकर उनके साथ रब के घर के पास गया। 21सात जवान बैल, सात मेंढे और भेड़ के सात बच्चे भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए सहन में लाए गए, नीज़ सात बकरे जिन्हें गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर शाही ख़ानदान, मक़दिस और यहूदाह के लिए पेश करना था। हिज़क़ियाह ने हारून की औलाद यानी इमामों को हुक्म दिया कि इन जानवरों को रब की क़ुरबानगाह पर चढ़ाएँ। 22पहले बैलों को ज़बह किया गया। इमामों ने उनका ख़ून जमा करके उसे क़ुरबानगाह पर छिड़का। इसके बाद मेंढों को ज़बह किया गया। इस बार भी इमामों ने उनका ख़ून क़ुरबानगाह पर छिड़का। भेड़ के बच्चों के ख़ून के साथ भी यही कुछ किया गया। 23आख़िर में गुनाह की क़ुरबानी के लिए मख़सूस बकरों को बादशाह और जमात के सामने लाया गया, और उन्होंने अपने हाथों को बकरों के सरों पर रख दिया। 24फिर इमामों ने उन्हें ज़बह करके उनका ख़ून गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर क़ुरबानगाह पर छिड़का ताकि इसराईल का कफ़्फ़ारा दिया जाए। क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि भस्म होनेवाली और गुनाह की क़ुरबानी तमाम इसराईल के लिए पेश की जाए।

25हिज़क़ियाह ने लावियों को झाँझ, सितार और सरोद थमाकर उन्हें रब के घर में खड़ा किया। सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ हुआ जो रब ने दाऊद बादशाह, उसके ग़ैबबीन जाद और नातन नबी की मारिफ़त दी थीं। 26लावी उन साज़ों के साथ खड़े हो गए जो दाऊद ने बनवाए थे, और इमाम अपने तुरमों को थामे उनके साथ खड़े हुए। 27फिर हिज़क़ियाह ने हुक्म दिया कि भस्म होनेवाली क़ुरबानी क़ुरबानगाह पर पेश की जाए। जब इमाम यह काम करने लगे तो लावी रब की तारीफ़ में गीत गाने लगे। साथ साथ तुरम और दाऊद बादशाह के बनवाए हुए साज़ बजने लगे। 28तमाम जमात औंधे मुँह झुक गई जबकि लावी गीत गाते और इमाम तुरम बजाते रहे। यह सिलसिला इस क़ुरबानी की तकमील तक जारी रहा। 29इसके बाद हिज़क़ियाह और तमाम हाज़िरीन दुबारा मुँह के बल झुक गए। 30बादशाह और बुज़ुर्गों ने लावियों को कहा, “दाऊद और आसफ़ ग़ैबबीन के ज़बूर गाकर रब की सताइश करें।” चुनाँचे लावियों ने बड़ी ख़ुशी से हम्दो-सना के गीत गाए। वह भी औंधे मुँह झुक गए।

31फिर हिज़क़ियाह लोगों से मुख़ातिब हुआ, “आज आपने अपने आपको रब के लिए वक़्फ़ कर दिया है। अब वह कुछ रब के घर के पास ले आएँ जो आप ज़बह और सलामती की क़ुरबानी के तौर पर पेश करना चाहते हैं।” तब लोग ज़बह और सलामती की अपनी क़ुरबानियाँ ले आए। नीज़, जिसका भी दिल चाहता था वह भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ लाया। 32इस तरह भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए 70 बैल, 100 मेंढे और भेड़ के 200 बच्चे जमा करके रब को पेश किए गए। 33उनके अलावा 600 बैल और 3,000 भेड़-बकरियाँ रब के घर के लिए मख़सूस की गईं। 34लेकिन इतने जानवरों की खालों को उतारने के लिए इमाम कम थे, इसलिए लावियों को उनकी मदद करनी पड़ी। इस काम के इख़्तिताम तक बल्कि जब तक मज़ीद इमाम ख़िदमत के लिए तैयार और पाक नहीं हो गए थे लावी मदद करते रहे। इमामों की निसबत ज़्यादा लावी पाक-साफ़ हो गए थे, क्योंकि उन्होंने ज़्यादा लग्न से अपने आपको रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया था। 35भस्म होनेवाली बेशुमार क़ुरबानियों के अलावा इमामों ने सलामती की क़ुरबानियों की चरबी भी जलाई। साथ साथ उन्होंने मै की नज़रें पेश कीं।

यों रब के घर में ख़िदमत का नए सिरे से आग़ाज़ हुआ। 36हिज़क़ियाह और पूरी क़ौम ने ख़ुशी मनाई कि अल्लाह ने यह सब कुछ इतनी जल्दी से हमें मुहैया किया है।

फ़सह की ईद के लिए दावत

30 हिज़क़ियाह ने इसराईल और यहूदाह की हर जगह अपने क़ासिदों को भेजकर लोगों को रब के घर में आने की दावत दी, क्योंकि वह उनके साथ रब इसराईल के ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना चाहता था। उसने इफ़राईम और मनस्सी के क़बीलों को भी दावतनामे भेजे। 2बादशाह ने अपने अफ़सरों और यरूशलम की पूरी जमात के साथ मिलकर फ़ैसला किया कि हम यह ईद दूसरे महीने में मनाएँगे। 3आम तौर पर यह पहले महीने में मनाई जाती थी, लेकिन उस वक़्त तक ख़िदमत के लिए तैयार इमाम काफ़ी नहीं थे। क्योंकि अब तक सब अपने आपको पाक-साफ़ न कर सके। दूसरी बात यह थी कि लोग इतनी जल्दी से यरूशलम में जमा न हो सके। 4इन बातों के पेशे-नज़र बादशाह और तमाम हाज़िरीन इस पर मुत्तफ़िक़ हुए कि फ़सह की ईद मुलतवी की जाए। 5उन्होंने फ़ैसला किया कि हम तमाम इसराईलियों को जुनूब में बैर-सबा से लेकर शिमाल में दान तक दावत देंगे। सब यरूशलम आएँ ताकि हम मिलकर रब इसराईल के ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाएँ। असल में यह ईद बड़ी देर से हिदायात के मुताबिक़ नहीं मनाई गई थी।

6बादशाह के हुक्म पर क़ासिद इसराईल और यहूदाह में से गुज़रे। हर जगह उन्होंने लोगों को बादशाह और उसके अफ़सरों के ख़त पहुँचा दिए। ख़त में लिखा था,

“ऐ इसराईलियो, रब इब्राहीम, इसहाक़ और इसराईल के ख़ुदा के पास वापस आएँ! फिर वह भी आपके पास जो असूरी बादशाहों के हाथ से बच निकले हैं वापस आएगा। 7अपने बापदादा और भाइयों की तरह न बनें जो रब अपने बापदादा के ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए थे। यही वजह है कि उसने उन्हें ऐसी हालत में छोड़ दिया कि जिसने भी उन्हें देखा उसके रोंगटे खड़े हो गए। आप ख़ुद इसके गवाह हैं। 8उनकी तरह अड़े न रहें बल्कि रब के ताबे हो जाएँ। उसके मक़दिस में आएँ, जो उसने हमेशा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया है। रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत करें ताकि आप उसके सख़्त ग़ज़ब का निशाना न रहें। 9अगर आप रब के पास लौट आएँ तो जिन्होंने आपके भाइयों और उनके बाल-बच्चों को क़ैद कर लिया है वह उन पर रहम करके उन्हें इस मुल्क में वापस आने देंगे। क्योंकि रब आपका ख़ुदा मेहरबान और रहीम है। अगर आप उसके पास वापस आएँ तो वह अपना मुँह आपसे नहीं फेरेगा।”

10क़ासिद इफ़राईम और मनस्सी के पूरे क़बायली इलाक़े में से गुज़रे और हर शहर को यह पैग़ाम पहुँचाया। फिर चलते चलते वह ज़बूलून तक पहुँच गए। लेकिन अकसर लोग उनकी बात सुनकर हँस पड़े और उनका मज़ाक़ उड़ाने लगे। 11सिर्फ़ आशर, मनस्सी और ज़बूलून के चंद एक आदमी फ़रोतनी का इज़हार करके मान गए और यरूशलम आए। 12यहूदाह में अल्लाह ने लोगों को तहरीक दी कि उन्होंने यकदिली से उस हुक्म पर अमल किया जो बादशाह और बुज़ुर्गों ने रब के फ़रमान के मुताबिक़ दिया था।

हिज़क़ियाह और क़ौम फ़सह की ईद मनाते हैं

13दूसरे महीने में बहुत ज़्यादा लोग बेख़मीरी रोटी की ईद मनाने के लिए यरूशलम पहुँचे। 14पहले उन्होंने शहर से बुतों की तमाम क़ुरबानगाहों को दूर कर दिया। बख़ूर जलाने की छोटी क़ुरबानगाहों को भी उन्होंने उठाकर वादीए-क़िदरोन में फेंक दिया। 15दूसरे महीने के 14वें दिन फ़सह के लेलों को ज़बह किया गया। इमामों और लावियों ने शरमिंदा होकर अपने आपको ख़िदमत के लिए पाक-साफ़ कर रखा था, और अब उन्होंने भस्म होनेवाली क़ुरबानियों को रब

के घर में पेश किया। 16वह ख़िदमत के लिए यों खड़े हो गए जिस तरह मर्दे-ख़ुदा मूसा की शरीअत में फ़रमाया गया है। लावी क़ुरबानियों का ख़ून इमामों के पास लाए जिन्होंने उसे क़ुरबानगाह पर छिड़का।

17लेकिन हाज़िरीन में से बहुत-से लोगों ने अपने आपको सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं किया था। उनके लिए लावियों ने फ़सह के लेलों को ज़बह किया ताकि उनकी क़ुरबानियों को भी रब के लिए मख़सूस किया जा सके। 18ख़ासकर इफ़राईम, मनस्सी, ज़बूलून और इशकार के अकसर लोगों ने अपने आपको सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं किया था। चुनाँचे वह फ़सह के खाने में उस हालत में शरीक न हुए जिसका तक़ाज़ा शरीअत करती है। लेकिन हिज़क़ियाह ने उनकी शफ़ाअत करके दुआ की, "रब जो मेहरबान है हर एक को मुआफ़ करे 19जो पूरे दिल से रब अपने बापदादा के ख़ुदा का तालिब रहने का इरादा रखता है, ख़ाह उसे मक़दिस के लिए दरकार पाकीज़गी हासिल न भी हो।" 20रब ने हिज़क़ियाह की दुआ सुनकर लोगों को बहाल कर दिया।

21यरूशलम में जमाशुदा इसराईलियों ने बड़ी ख़ुशी से सात दिन तक बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई। हर दिन लावी और इमाम अपने साज़ बजाकर बुलंद आवाज़ से रब की सताइश करते रहे। 22लावियों ने रब की ख़िदमत करते वक़्त बड़ी समझदारी दिखाई, और हिज़क़ियाह ने इसमें उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की।

पूरे हफ़्ते के दौरान इसराईली रब को सलामती की क़ुरबानियाँ पेश करके क़ुरबानी का अपना हिस्सा खाते और रब अपने बापदादा के ख़ुदा की तमजीद करते रहे।

23इस हफ़्ते के बाद पूरी जमात ने फ़ैसला किया कि ईद को मज़ीद सात दिन मनाया जाए। चुनाँचे उन्होंने ख़ुशी से एक और हफ़्ते के दौरान ईद मनाई। 24तब यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह ने जमात के लिए 1,000 बैल और 7,000 भेड़-बकरियाँ पेश कीं जबकि बुज़ुर्गों ने जमात के लिए 1,000 बैल और 10,000 भेड़-बकरियाँ चढ़ाईं। इतने में मज़ीद बहुत-से इमामों ने अपने आपको रब की ख़िदमत के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया था।

25जितने भी आए थे ख़ुशी मना रहे थे, ख़ाह वह यहूदाह के बाशिंदे थे, ख़ाह इमाम, लावी, इसराईली या इसराईल और यहूदाह में रहनेवाले परदेसी मेहमान। 26यरूशलम में बड़ी शादमानी थी, क्योंकि ऐसी ईद दाऊद बादशाह के बेटे सुलेमान के ज़माने से लेकर उस वक़्त तक यरूशलम में मनाई नहीं गई थी।

27ईद के इख़्तिताम पर इमामों और लावियों ने खड़े होकर क़ौम को बरकत दी। और अल्लाह ने उनकी सुनी, उनकी दुआ आसमान पर उस की मुक़द्दस सुकूनतगाह तक पहुँची।

पूरे यहूदाह में बुतपरस्ती का ख़ातमा

31 ईद के बाद जमात के तमाम इसराईलियों ने यहूदाह के शहरों में जाकर पत्थर के बुतों को टुकड़े टुकड़े कर दिया, यसीरत देवी के खंबों को काट डाला, ऊँची जगहों के मंदिरों को ढा दिया और ग़लत क़ुरबानगाहों को ख़त्म कर दिया। जब तक उन्होंने यह काम यहूदाह, बिनयमीन, इफ़राईम और मनस्सी के पूरे इलाक़ों में तकमील तक नहीं पहुँचाया था उन्होंने आराम न किया। इसके बाद वह सब अपने अपने शहरों और घरों को चले गए।

रब के घर में इंतज़ाम की इसलाह

2हिज़क़ियाह ने इमामों और लावियों को दुबारा ख़िदमत के वैसे ही गुरोहों में तक़सीम किया जैसे पहले थे। उनकी ज़िम्मेदारियाँ भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाना, रब के घर में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ख़िदमात अंजाम देना और हम्दो-सना के गीत गाना थीं।

3जो जानवर बादशाह अपनी मिलकियत से रब के घर को देता रहा वह भस्म होनेवाली उन

क़ुरबानियों के लिए मुक़र्रर थे जिनको रब की
शरीअत के मुताबिक़ हर सुबह-शाम, सबत के
दिन, नए चाँद की ईद और दीगर ईदों पर रब के
घर में पेश की जाती थीं।
4हिज़क़ियाह ने यरूशलम के बाशिंदों को हुक्म
दिया कि अपनी मिलकियत में से इमामों और
लावियों को कुछ दें ताकि वह अपना वक़्त रब की
शरीअत की तकमील के लिए वक़्फ़ कर सकें।
5बादशाह का यह एलान सुनते ही इसराईली
फ़राख़दिली से ग़ल्ला, अंगूर के रस, ज़ैतून के
तेल, शहद और खेतों की बाक़ी पैदावार का पहला
फल रब के घर में लाए। बहुत कुछ इकट्ठा हुआ,
क्योंकि लोगों ने अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ
हिस्सा वहाँ पहुँचाया। 6यहूदाह के बाक़ी शहरों
के बाशिंदे भी साथ रहनेवाले इसराईलियों समेत
अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के घर में
लाए। जो भी बैल, भेड़-बकरियाँ और बाक़ी चीज़ें
उन्होंने रब अपने ख़ुदा के लिए वक़्फ़ की थीं वह
रब के घर में पहुँचीं जहाँ लोगों ने उन्हें बड़े ढेर
लगाकर इकट्ठा किया। 7चीज़ें जमा करने का यह
सिलसिला तीसरे महीने में शुरू हुआ और सातवें
महीने में इख़्तिताम को पहुँचा। 8जब हिज़क़ियाह
और उसके अफ़सरों ने आकर देखा कि कितनी
चीज़ें इकट्ठी हो गई हैं तो उन्होंने रब और उस की
क़ौम इसराईल को मुबारक कहा।
9जब हिज़क़ियाह ने इमामों और लावियों से इन
ढेरों के बारे में पूछा 10तो सदोक़ के ख़ानदान का
इमामे-आज़म अज़रियाह ने जवाब दिया, "जब
से लोग अपने हदिये यहाँ ले आते हैं उस वक़्त से
हम जी भरकर खा सकते हैं बल्कि काफ़ी कुछ
बच भी जाता है। क्योंकि रब ने अपनी क़ौम को
इतनी बरकत दी है कि यह सब कुछ बाक़ी रह
गया है।"
11तब हिज़क़ियाह ने हुक्म दिया कि रब के घर
में गोदाम बनाए जाएँ। जब ऐसा किया गया 12तो
रज़ाकाराना हदिये, पैदावार का दसवाँ हिस्सा और
रब के लिए मख़सूस किए गए अतियात उनमें
रखे गए। कूननियाह लावी इन चीज़ों का इंचार्ज
बना जबकि उसका भाई सिमई उसका मददगार
मुक़र्रर हुआ। 13इमामे-आज़म अज़रियाह रब के
घर के पूरे इंतज़ाम का इंचार्ज था, इसलिए
हिज़क़ियाह बादशाह ने उसके साथ मिलकर दस
निगरान मुक़र्रर किए जो कूननियाह और सिमई
के तहत ख़िदमत अंजाम दें। उनके नाम यहियेल,
अज़ज़ियाह, नहत, असाहेल, यरीमोत, यूज़बद,
इलियेल, इसमाकियाह, महत और बिनायाह थे।
14जो लावी मशरिक़ी दरवाज़े का दरबान था
उसका नाम क़ोरे बिन यिमना था। अब उसे रब को
रज़ाकाराना तौर पर दिए गए हदिये और उसके
लिए मख़सूस किए गए अतीए तक़सीम करने
का निगरान बनाया गया। 15अदन, मिन्यमीन,
यशुअ, समायाह, अमरियाह और सकनियाह
उसके मददगार थे। उनकी ज़िम्मेदारी लावियों के
शहरों में रहनेवाले इमामों को उनका हिस्सा देना
थी। बड़ी वफ़ादारी से वह ख़याल रखते थे कि
ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों के तमाम इमामों को
वह हिस्सा मिल जाए जो उनका हक़ बनता था,
ख़ाह वह बड़े थे या छोटे। 16जो अपने गुरोह के
साथ रब के घर में ख़िदमत करता था उसे उसका
हिस्सा बराहे-रास्त मिलता था। इस सिलसिले
में लावी के क़बीले के जितने मर्दों और लड़कों
की उम्र तीन साल या इससे ज़ायद थी उनकी
फ़हरिस्त बनाई गई। 17इन फ़हरिस्तों में इमामों
को उनके कुंबों के मुताबिक़ दर्ज किया गया। इसी
तरह 20 साल या इससे ज़ायद के लावियों को
उन ज़िम्मेदारियों और ख़िदमत के मुताबिक़ जो
वह अपने गुरोहों में सँभालते थे फ़हरिस्तों में दर्ज
किया गया। 18ख़ानदानों की औरतें और बेटे-
बेटियाँ छोटे बच्चों समेत भी इन फ़हरिस्तों में दर्ज
थीं। चूँकि उनके मर्द वफ़ादारी से रब के घर में
ख़िदमत करते थे, इसलिए यह दीगर अफ़राद भी
मख़सूसो-मुक़द्दस समझे जाते थे। 19जो इमाम
शहरों से बाहर उन चरागाहों में रहते थे जो उन्हें
हारून की औलाद की हैसियत से मिली थीं उन्हें
भी हिस्सा मिलता था। हर शहर के लिए आदमी
चुने गए जो इमामों के ख़ानदानों के मर्दों और

फ़हरिस्त में दर्ज तमाम लावियों को वह हिस्सा
दिया करें जो उनका हक़ था।
20हिज़क़ियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि पूरे
यहूदाह में ऐसा ही किया जाए। उसका काम रब
के नज़दीक अच्छा, मुंसिफ़ाना और वफ़ादाराना
था। 21जो कुछ उसने अल्लाह के घर में इंतज़ाम
दुबारा चलाने और शरीअत को क़ायम करने के
सिलसिले में किया उसके लिए वह पूरे दिल
से अपने ख़ुदा का तालिब रहा। नतीजे में उसे
कामयाबी हासिल हुई।

असूरी यहूदाह में घुस आते हैं

32 हिज़क़ियाह ने वफ़ादारी से यह तमाम
मनसूबे तकमील तक पहुँचाए। फिर
एक दिन असूर का बादशाह सनहेरिब अपनी
फ़ौज के साथ यहूदाह में घुस आया और क़िलाबंद
शहरों का मुहासरा करने लगा ताकि उन पर
क़ब्ज़ा करे। 2जब हिज़क़ियाह को इत्तला मिली
कि सनहेरिब आकर यरूशलम पर हमला करने
की तैयारियाँ कर रहा है 3तो उसने अपने सरकारी
और फ़ौजी अफ़सरों से मशवरा किया। ख़याल
यह पेश किया गया कि यरूशलम शहर के बाहर
तमाम चश्मों को मलबे से बंद किया जाए। सब
मुत्तफ़िक़ हो गए, 4क्योंकि उन्होंने कहा, "असूर
के बादशाह को यहाँ आकर कसरत का पानी क्यों
मिले?" बहुत-से आदमी जमा हुए और मिलकर
चश्मों को मलबे से बंद कर दिया। उन्होंने उस
ज़मीनदोज़ नाले का मुँह भी बंद कर दिया जिसके
ज़रीए पानी शहर में पहुँचता था।
5इसके अलावा हिज़क़ियाह ने बड़ी मेह-
नत से फ़सील के टूटे-फूटे हिस्सों की मरम्मत
करवाकर उस पर बुर्ज बनवाए। फ़सील के बाहर
उसने एक और चारदीवारी तामीर की जबकि
यरूशलम के उस हिस्से के चबूतरे मज़ीद मज़बूत
करवाए जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। साथ
साथ उसने बड़ी मिक़दार में हथियार और ढालें
बनवाईं। 6हिज़क़ियाह ने लोगों पर फ़ौजी अफ़सर
मुक़र्रर किए।
फिर उसने सबको दरवाज़े के साथ-
वाले चौक पर इकट्ठा करके उनकी हौसला-
अफ़्ज़ाई की, 7"मज़बूत और दिलेर हों! असूर
के बादशाह और उस की बड़ी फ़ौज को देखकर
मत डरें, क्योंकि जो ताक़त हमारे साथ है वह उसे
हासिल नहीं है। 8असूर के बादशाह के लिए सिर्फ़
ख़ाकी आदमी लड़ रहे हैं जबकि रब हमारा ख़ुदा
हमारे साथ है। वही हमारी मदद करके हमारे लिए
लड़ेगा!" हिज़क़ियाह बादशाह के इन अलफ़ाज़
से लोगों की बड़ी हौसलाअफ़्ज़ाई हुई।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

9जब असूर का बादशाह सनहेरिब अपनी पूरी
फ़ौज के साथ लकीस का मुहासरा कर रहा था
तो उसने वहाँ से यरूशलम को वफ़्द भेजा ताकि
यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह और यहूदाह के
तमाम बाशिंदों को पैग़ाम पहुँचाए,
10"शाहे-असूर सनहेरिब फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है कि तुम मुहासरे के
वक़्त यरूशलम को छोड़ना नहीं चाहते? 11जब
हिज़क़ियाह कहता है, 'रब हमारा ख़ुदा हमें असूर
के बादशाह से बचाएगा' तो वह तुम्हें ग़लत राह पर
ला रहा है। इसका सिर्फ़ यह नतीजा निकलेगा कि
तुम भूके और प्यासे मर जाओगे। 12हिज़क़ियाह
ने तो इस ख़ुदा की बेहुरमती की है। क्योंकि उसने
उस की ऊँची जगहों के मंदिरों और क़ुरबानगाहों
को ढाकर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि
एक ही क़ुरबानगाह के सामने परस्तिश करें, एक
ही क़ुरबानगाह पर क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ। 13क्या
तुम्हें इल्म नहीं कि मैं और मेरे बापदादा ने दीगर
ममालिक की तमाम क़ौमों के साथ क्या कुछ
किया? क्या इन क़ौमों के देवता अपने मुल्कों
को मुझसे बचाने के क़ाबिल रहे हैं? हरगिज़
नहीं! 14मेरे बापदादा ने इन सबको तबाह कर
दिया, और कोई भी देवता अपनी क़ौम को मुझसे
बचा न सका। तो फिर तुम्हारा देवता तुम्हें किस
तरह मुझसे बचाएगा? 15हिज़क़ियाह से फ़रेब न
खाओ! वह इस तरह तुम्हें ग़लत राह पर न लाए।

उस की बात पर एतमाद मत करना, क्योंकि अब तक किसी भी क़ौम या सलतनत का देवता अपनी क़ौम को मेरे या मेरे बापदादा के क़ब्ज़े से छुटकारा न दिला सका। तो फिर तुम्हारा देवता तुम्हें मेरे क़ब्ज़े से किस तरह बचाएगा?”

16ऐसी बातें करते करते सनहेरिब के अफ़सर रब इसराईल के ख़ुदा और उसके ख़ादिम हिज़क़ियाह पर कुफ़र बकते गए।

17असूर के बादशाह ने वफ़द के हाथ ख़त भी भेजा जिसमें उसने रब इसराईल के ख़ुदा की इहानत की। ख़त में लिखा था, “जिस तरह दीगर ममालिक के देवता अपनी क़ौमों को मुझसे महफ़ूज़ न रख सके उसी तरह हिज़क़ियाह का देवता भी अपनी क़ौम को मेरे क़ब्ज़े से नहीं बचाएगा।”

18असूरी अफ़सरों ने बुलंद आवाज़ से इबरानी ज़बान में बादशाह का पैग़ाम फ़सील पर खड़े यरूशलम के बाशिंदों तक पहुँचाया ताकि उनमें ख़ौफ़ो-हिरास फैल जाए और यों शहर पर क़ब्ज़ा करने में आसानी हो जाए।
19इन अफ़सरों ने यरूशलम के ख़ुदा का यों तमस्ख़ुर उड़ाया जैसा वह दुनिया की दीगर क़ौमों के देवताओं का उड़ाया करते थे, हालाँकि दीगर माबूद सिर्फ़ इनसानी हाथों की पैदावार थे।

रब सनहेरिब को सज़ा देता है

20फिर हिज़क़ियाह बादशाह और आमूस के बेटे यसायाह नबी ने चिल्लाते हुए आसमान पर तख़्तनशीन ख़ुदा से इलतमास की।
21जवाब में रब ने असूरियों की लशकरगाह में एक फ़रिश्ता भेजा जिसने तमाम बेहतरीन फ़ौजियों को अफ़सरों और कमाँडरों समेत मौत के घाट उतार दिया। चुनाँचे सनहेरिब शरमिंदा होकर अपने मुल्क लौट गया। वहाँ एक दिन जब वह अपने देवता के मंदिर में दाख़िल हुआ तो उसके कुछ बेटों ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया।

22इस तरह रब ने हिज़क़ियाह और यरूशलम के बाशिंदों को शाहे-असूर सनहेरिब से छुटकारा दिलाया। उसने उन्हें दूसरी क़ौमों के हमलों से भी महफ़ूज़ रखा, और चारों तरफ़ अमनो-अमान फैल गया।
23बेशुमार लोग यरूशलम आए ताकि रब को क़ुरबानियाँ पेश करें और हिज़क़ियाह बादशाह को क़ीमती तोह्फ़े दें। उस वक़्त से तमाम क़ौमें उसका बड़ा एहतराम करने लगीं।

हिज़क़ियाह के आख़िरी साल

24उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। तब उसने रब से दुआ की, और रब ने उस की सुनकर एक इलाही निशान से इसकी तसदीक़ की।
25लेकिन हिज़क़ियाह मग़रूर हुआ, और उसने इस मेहरबानी का मुनासिब जवाब न दिया। नतीजे में रब उससे और यहूदाह और यरूशलम से नाराज़ हुआ।
26फिर हिज़क़ियाह और यरूशलम के बाशिंदों ने पछताकर अपना ग़ुरूर छोड़ दिया, इसलिए रब का ग़ज़ब हिज़क़ियाह के जीते-जी उन पर नाज़िल न हुआ।

27हिज़क़ियाह को बहुत दौलत और इज़्ज़त हासिल हुई, और उसने अपनी सोने-चाँदी, जवाहिर, बलसान के क़ीमती तेल, ढालों और बाक़ी क़ीमती चीज़ों के लिए ख़ास ख़ज़ाने बनवाए।
28उसने ग़ल्ला, अंगूर का रस और ज़ैतून का तेल महफ़ूज़ रखने के लिए गोदाम तामीर किए और अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों को रखने की बहुत-सी जगहें भी बनवा लीं।
29उसके गाय-बैलों और भेड़-बकरियों में इज़ाफ़ा होता गया, और उसने कई नए शहरों की बुनियाद रखी, क्योंकि अल्लाह ने उसे निहायत ही अमीर बना दिया था।
30हिज़क़ियाह ही ने जैहून चश्मे का मुँह बंद करके उसका पानी सुरंग के ज़रीए मग़रिब की तरफ़ यरूशलम के उस हिस्से में पहुँचाया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। जो भी काम उसने शुरू किया उसमें वह कामयाब रहा।
31एक दिन बाबल के हुक्मरानों ने उसके पास वफ़द भेजा ताकि उस इलाही निशान के बारे में मालूमात

हासिल करें जो यहूदाह में हुआ था। उस वक़्त अल्लाह ने उसे अकेला छोड़ दिया ताकि उसके दिल की हक़ीक़ी हालत जाँच ले।

32बाक़ी जो कुछ हिज़क़ियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो नेक काम उसने किया वह 'आमूस के बेटे यसायाह नबी की रोया' में क़लमबंद है जो 'शाहाने-यहूदाहो-इसराईल' की किताब में दर्ज है। 33जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे शाही क़ब्रिस्तान की एक ऊँची जगह पर दफ़नाया गया। जब जनाज़ा निकला तो यहूदाह और यरूशलम के तमाम बाशिंदों ने उसका एहतराम किया। फिर उसका बेटा मनस्सी तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह मनस्सी

33 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 55 साल था। 2मनस्सी का चाल-चलन रब को नापसंद था। उसने उन क़ौमों के क़ाबिले-घिन रस्मो-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे से निकाल दिया था। 3ऊँची जगहों के जिन मंदिरों को उसके बाप हिज़क़ियाह ने ढा दिया था उन्हें उसने नए सिरे से तामीर किया। उसने बाल देवताओं की क़ुरबानगाहें बनवाईं और यसीरत देवी के खंबे खड़े किए। इनके अलावा वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर को सिजदा करके उनकी ख़िदमत करता था। 4उसने रब के घर में भी अपनी क़ुरबानगाहें खड़ी कीं, हालाँकि रब ने इस मक़ाम के बारे में फ़रमाया था, "यरूशलम में मेरा नाम अबद तक क़ायम रहेगा।" 5लेकिन मनस्सी ने परवा न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान के पूरे लशकर के लिए क़ुरबानगाहें बनवाईं। 6यहाँ तक कि उसने वादीए-बिन-हिन्नूम में अपने बेटों को भी क़ुरबान करके जला दिया। जादूगरी, ग़ैबदानी और अफ़सूँगरी करने के अलावा वह मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों और रम्मालों से भी मशवरा करता था। ग़रज़ उसने बहुत कुछ किया जो रब को नापसंद था और उसे तैश दिलाया। 7देवी का बुत बनवाकर उसने उसे अल्लाह के घर में खड़ा किया, हालाँकि रब ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था, "इस घर और इस शहर यरूशलम में जो मैंने तमाम इसराईली क़बीलों में से चुन लिया है मैं अपना नाम अबद तक क़ायम रखूँगा। 8अगर इसराईली एहतियात से मेरे उन तमाम अहकाम और हिदायात की पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इसराईलियों को उस मुल्क से जिलावतन कर दिया जाए जो मैंने उनके बापदादा को अता किया था।" 9लेकिन मनस्सी ने यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों को ऐसे ग़लत काम करने पर उकसाया जो उन क़ौमों से भी सरज़द नहीं हुए थे जिन्हें रब ने मुल्क में दाख़िल होते वक़्त उनके आगे से तबाह कर दिया था।

10गो रब ने मनस्सी और अपनी क़ौम को समझाया, लेकिन उन्होंने परवा न की। 11तब रब ने असूरी बादशाह के कमाँडरों को यहूदाह पर हमला करने दिया। उन्होंने मनस्सी को पकड़कर उस की नाक में नकेल डाली और उसे पीतल की ज़ंजीरों में जकड़कर बाबल ले गए। 12जब वह यों मुसीबत में फँस गया तो मनस्सी रब अपने ख़ुदा का ग़ज़ब ठंडा करने की कोशिश करने लगा और अपने आपको अपने बापदादा के ख़ुदा के हुज़ूर पस्त कर दिया।

13और रब ने उस की इलतमास पर ध्यान देकर उस की सुनी। उसे यरूशलम वापस लाकर उसने उस की हुकूमत बहाल कर दी। तब मनस्सी ने जान लिया कि रब ही ख़ुदा है।

14इसके बाद उसने 'दाऊद के शहर' की बैरूनी फ़सील नए सिरे से बनवाई। यह फ़सील जैहून चश्मे के मग़रिब से शुरू हुई और वादीए-क़िदरोन में से गुज़रकर मछली के दरवाज़े तक पहुँच गई। इस दीवार ने रब के घर की पूरी पहाड़ी बनाम ओफ़ल का इहाता कर लिया और बहुत बुलंद थी। इसके अलावा बादशाह ने यहूदाह के तमाम

क़िलाबंद शहरों पर फ़ौजी अफ़सर मुक़र्रर किए।
15उसने अजनबी माबूदों को बुत समेत रब के घर
से निकाल दिया। जो क़ुरबानगाहें उसने रब के घर
की पहाड़ी और बाक़ी यरूशलम में खड़ी की थीं
उन्हें भी उसने ढाकर शहर से बाहर फेंक दिया।
16फिर उसने रब की क़ुरबानगाह को नए सिरे से
तामीर करके उस पर सलामती और शुक्रगुज़ारी
की क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। साथ साथ उसने यहूदाह
के बाशिंदों से कहा कि रब इसराईल के ख़ुदा की
ख़िदमत करें। 17गो लोग इसके बाद भी ऊँची
जगहों पर अपनी क़ुरबानियाँ पेश करते थे, लेकिन
अब से वह इन्हें सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा को पेश करते
थे।

18बाक़ी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के
दौरान हुआ वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़'
की किताब में दर्ज है। वहाँ उस की अपने ख़ुदा
से दुआ भी बयान की गई है और वह बातें भी जो
ग़ैबबीनों ने रब इसराईल के ख़ुदा के नाम में उसे
बताई थीं। 19ग़ैबबीनों की किताब में भी मनस्सी
की दुआ बयान की गई है और यह कि अल्लाह
ने किस तरह उस की सुनी। वहाँ उसके तमाम
गुनाहों और बेवफ़ाई का ज़िक्र है, नीज़ उन ऊँची
जगहों की फ़हरिस्त दर्ज है जहाँ उसने अल्लाह के
ताबे हो जाने से पहले मंदिर बनाकर यसीरत देवी
के खंबे और बुत खड़े किए थे। 20जब मनस्सी
मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे उसके
महल में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा अमून
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमून

21अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना
और दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता
रहा। 22अपने बाप मनस्सी की तरह वह ऐसा
ग़लत काम करता रहा जो रब को नापसंद था।
जो बुत उसके बाप ने बनवाए थे उन्हीं की पूजा
वह करता और उन्हीं को क़ुरबानियाँ पेश करता
था। 23लेकिन उसमें और मनस्सी में यह फ़रक़
था कि बेटे ने अपने आपको रब के सामने पस्त
न किया बल्कि उसका क़ुसूर मज़ीद संगीन होता
गया। 24एक दिन अमून के कुछ अफ़सरों ने
उसके ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल
कर दिया। 25लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश
करनेवालों को मार डाला और अमून की जगह
उसके बेटे यूसियाह को बादशाह बना दिया।

यूसियाह बादशाह बुतपरस्ती की मुख़ालफ़त करता है

34 यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में रहकर उस की
हुकूमत का दौरानिया 31 साल था। 2यूसियाह
वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। वह
अपने बाप दाऊद के अच्छे नमूने पर चलता रहा
और उससे न दाईं, न बाईं तरफ़ हटा।

3अपनी हुकूमत के आठवें साल में वह अपने
बाप दाऊद के ख़ुदा की मरज़ी तलाश करने लगा,
गो उस वक़्त वह जवान ही था। अपनी हुकूमत
के 12वें साल में वह ऊँची जगहों के मंदिरों,
यसीरत देवी के खंबों और तमाम तराशे और
ढाले हुए बुतों को पूरे मुल्क से दूर करने लगा।
यों तमाम यरूशलम और यहूदाह इन चीज़ों से
पाक-साफ़ हो गया। 4बादशाह के ज़ेरे-निगरानी
बाल देवताओं की क़ुरबानगाहों को ढा दिया गया।
बख़ूर की जो क़ुरबानगाहें उनके ऊपर थीं उन्हें
उसने टुकड़े टुकड़े कर दिया। यसीरत देवी के
खंबों और तराशे और ढाले हुए बुतों को ज़मीन
पर पटख़कर उसने उन्हें पीसकर उनकी क़ब्रों पर
बिखेर दिया जिन्होंने जीते-जी उनको क़ुरबानियाँ
पेश की थीं। 5बुतपरस्त पुजारियों की हड्डियों
को उनकी अपनी क़ुरबानगाहों पर जलाया गया।
इस तरह से यूसियाह ने यरूशलम और यहूदाह
को पाक-साफ़ कर दिया। 6-7यह उसने न सिर्फ़
यहूदाह बल्कि मनस्सी, इफ़राईम, शमाऊन और
नफ़ताली तक के शहरों में इर्दगिर्द के खंडरात
समेत भी किया। उसने क़ुरबानगाहों को गिराकर
यसीरत देवी के खंबों और बुतों को टुकड़े टुकड़े
करके चकनाचूर कर दिया। तमाम इसराईल की

बख़ूर की क़ुरबानगाहों को उसने ढा दिया। इसके
बाद वह यरूशलम वापस चला गया।

रब के घर की मरम्मत

8अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह ने
साफ़न बिन असलियाह, यरूशलम पर मुक़र्रर
अफ़सर मासियाह और बादशाह के मुशीरे-ख़ास
युआख़ बिन युआख़ज़ को रब अपने ख़ुदा के घर
के पास भेजा ताकि उस की मरम्मत करवाएँ। उस
वक़्त मुल्क और रब के घर को पाक-साफ़ करने
की मुहिम जारी थी। 9इमामे-आज़म ख़िलक़ियाह
के पास जाकर उन्होंने उसे वह पैसे दिए जो
लावी के दरबानों ने रब के घर में जमा किए
थे। यह हदिये मनस्सी और इफ़राईम के बाशिंदों,
इसराईल के तमाम बचे हुए लोगों और यहूदाह,
बिनयमीन और यरूशलम के रहनेवालों की तरफ़
से पेश किए गए थे।

10अब यह पैसे उन ठेकेदारों के हवाले कर दिए
गए जो रब के घर की मरम्मत करवा रहे थे। इन
पैसों से ठेकेदारों ने उन कारीगरों की उजरत अदा
की जो रब के घर की मरम्मत करके उसे मज़बूत
कर रहे थे। 11कारीगरों और तामीर करनेवालों
ने इन पैसों से तराशे हुए पत्थर और शहतीरों
की लकड़ी भी ख़रीदी। इमारतों में शहतीरों
को बदलने की ज़रूरत थी, क्योंकि यहूदाह के
बादशाहों ने उन पर ध्यान नहीं दिया था, लिहाज़ा
वह गल गए थे। 12इन आदमियों ने वफ़ादारी से
ख़िदमत सरंजाम दी। चार लावी इनकी निगरानी
करते थे जिनमें यहत और अबदियाह मिरारी के
ख़ानदान के थे जबकि ज़करियाह और मसुल्लाम
क़िहात के ख़ानदान के थे। जितने लावी साज़
बजाने में माहिर थे 13वह मज़दूरों और तमाम
दीगर कारीगरों पर मुक़र्रर थे। कुछ और लावी
मुंशी, निगरान और दरबान थे।

रब के घर में शरीअत की किताब मिल जाती है

14जब वह पैसे बाहर लाए गए जो रब के घर
में जमा हुए थे तो ख़िलक़ियाह को शरीअत की
वह किताब मिली जो रब ने मूसा की मारिफ़त दी
थी। 15उसे मीरमुंशी साफ़न को देकर उसने कहा,
“मुझे रब के घर में शरीअत की किताब मिली
है।” 16तब साफ़न किताब को लेकर बादशाह के
पास गया और उसे इत्तला दी, “जो भी ज़िम्मेदारी
आपके मुलाज़िमों को दी गई उन्हें वह अच्छी तरह
पूरा कर रहे हैं। 17उन्होंने रब के घर में जमाशुदा
पैसे मरम्मत पर मुक़र्रर ठेकेदारों और बाक़ी काम
करनेवालों को दे दिए हैं।” 18फिर साफ़न ने
बादशाह को बताया, “ख़िलक़ियाह ने मुझे एक
किताब दी है।” किताब को खोलकर वह बादशाह
की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

19किताब की बातें सुनकर बादशाह ने
रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए।
20उसने ख़िलक़ियाह, अख़ीक़ाम बिन सा-
फ़न, अब्दोन बिन मीकाह, मीरमुंशी साफ़न और
अपने ख़ास ख़ादिम असायाह को बुलाकर उन्हें
हुक्म दिया, 21“जाकर मेरी और इसराईल और
यहूदाह के बचे हुए अफ़राद की ख़ातिर रब से इस
किताब में दर्ज बातों के बारे में दरियाफ़्त करें।
रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होनेवाला है
वह निहायत सख़्त है, क्योंकि हमारे बापदादा न
रब के फ़रमान के ताबे रहे, न उन हिदायात के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है जो किताब में दर्ज की
गई हैं।”

22चुनाँचे ख़िलक़ियाह बादशाह के भेजे हुए
चंद आदमियों के साथ ख़ुलदा नबिया को मिलने
गया। ख़ुलदा का शौहर सल्लूम बिन तोक़हत बिन
ख़सरा रब के घर के कपड़े सँभालता था। वह
यरूशलम के नए इलाक़े में रहते थे। 23-24ख़ुलदा
ने उन्हें जवाब दिया,

“रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस
आदमी ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब

फ़रमाता है कि मैं इस शहर और इसके बाशिंदों
पर आफ़त नाज़िल करूँगा। वह तमाम लानतें पूरी
हो जाएँगी जो बादशाह के हुज़ूर पढ़ी गई किताब
में बयान की गई हैं। 25क्योंकि मेरी क़ौम ने मुझे
तर्क करके दीगर माबूदों को क़ुरबानियाँ पेश की हैं
और अपने हाथों से बुत बनाकर मुझे तैश दिलाया
है। मेरा ग़ज़ब इस मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा
और कभी ख़त्म नहीं होगा।' 26लेकिन यहूदाह
के बादशाह के पास जाएँ जिसने आपको रब से
दरियाफ़्त करने के लिए भेजा है और उसे बता दें
कि रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मेरी बातें
सुनकर 27तेरा दिल नरम हो गया है। जब तुझे
पता चला कि मैंने इस मक़ाम और इसके बाशिंदों
के ख़िलाफ़ बात की है तो तूने अपने आपको
अल्लाह के सामने पस्त कर दिया। तूने बड़ी
इंकिसारी से रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए
और मेरे हुज़ूर फूट फूटकर रोया। रब फ़रमाता है
कि यह देखकर मैंने तेरी सुनी है। 28जब तू मेरे
कहने पर मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा
तो सलामती से दफ़न होगा। जो आफ़त मैं शहर
और उसके बाशिंदों पर नाज़िल करूँगा वह तू ख़ुद
नहीं देखेगा'।"

अफ़सर बादशाह के पास वापस गए और उसे ख़ुलदा का जवाब सुना दिया।

यूसियाह रब से अहद बाँधता है

29तब बादशाह यहूदाह और यरूशलम के
तमाम बुज़ुर्गों को बुलाकर 30रब के घर में गया।
सब लोग छोटे से लेकर बड़े तक उसके साथ गए
यानी यहूदाह के आदमी, यरूशलम के बाशिंदे,
इमाम और लावी। वहाँ पहुँचकर जमात के सामने
अहद की उस पूरी किताब की तिलावत की गई
जो रब के घर में मिली थी।

31फिर बादशाह ने अपने सतून के पास खड़े
होकर रब के हुज़ूर अहद बाँधा और वादा किया,
"हम रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिलो-जान से
उसके अहकाम और हिदायात पूरी करके इस
किताब में दर्ज अहद की बातें क़ायम रखेंगे।"
32यूसियाह ने मुतालबा किया कि यरूशलम और
यहूदाह के तमाम बाशिंदे अहद में शरीक हो जाएँ।
उस वक़्त से यरूशलम के बाशिंदे अपने बापदादा
के ख़ुदा के अहद के साथ लिपटे रहे।

33यूसियाह ने इसराईल के पूरे मुल्क से तमाम
घिनौने बुतों को दूर कर दिया। इसराईल के तमाम
बाशिंदों को उसने ताकीद की, "रब अपने ख़ुदा
की ख़िदमत करें।" चुनाँचे यूसियाह के जीते-जी
वह रब अपने बापदादा की राह से दूर न हुए।

यूसियाह फ़सह की ईद मनाता है

35 फिर यूसियाह ने रब की ताज़ीम में
फ़सह की ईद मनाई। पहले महीने के
14वें दिन फ़सह का लेला ज़बह किया गया।
2बादशाह ने इमामों को काम पर लगाकर उनकी
हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह रब के घर में अपनी
ख़िदमत अच्छी तरह अंजाम दें। 3लावियों को
तमाम इसराईलियों को शरीअत की तालीम देने
की ज़िम्मेदारी दी गई थी, और साथ साथ उन्हें
रब की ख़िदमत के लिए मख़सूस किया गया था।
उनसे यूसियाह ने कहा,

"मुक़द्दस संदूक़ को उस इमारत में रखें जो
इसराईल के बादशाह दाऊद के बेटे सुलेमान ने
तामीर किया। उसे अपने कंधों पर उठाकर इधर-
उधर ले जाने की ज़रूरत नहीं है बल्कि अब
से अपना वक़्त रब अपने ख़ुदा और उस की
क़ौम इसराईल की ख़िदमत में सर्फ़ करें। 4उन
ख़ानदानी गुरोहों के मुताबिक़ ख़िदमत के लिए
तैयार रहें जिनकी तरतीब दाऊद बादशाह और
उसके बेटे सुलेमान ने लिखकर मुक़र्रर की थी।
5फिर मक़दिस में उस जगह खड़े हो जाएँ जो
आपके ख़ानदानी गुरोह के लिए मुक़र्रर है और
उन ख़ानदानों की मदद करें जो क़ुरबानियाँ चढ़ाने
के लिए आते हैं और जिनकी ख़िदमत करने की
ज़िम्मेदारी आपको दी गई है। 6अपने आपको
ख़िदमत के लिए मख़सूस करें और फ़सह के लेले
ज़बह करके अपने हमवतनों के लिए इस तरह

तैयार करें जिस तरह रब ने मूसा की मारिफ़त
हुक्म दिया था।”
7ईद की ख़ुशी में यूसियाह ने ईद मना-
नेवालों को अपनी मिलकियत में से 30,000
भेड़-बकरियों के बच्चे दिए। यह जानवर फ़सह की
क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाए गए जबकि बादशाह
की तरफ़ से 3,000 बैल दीगर क़ुरबानियों के
लिए इस्तेमाल हुए। 8इसके अलावा बादशाह के
अफ़सरों ने भी अपनी ख़ुशी से क़ौम, इमामों और
लावियों को जानवर दिए। अल्लाह के घर के
सबसे आला अफ़सरों ख़िलक़ियाह, ज़करियाह
और यहियेल ने दीगर इमामों को फ़सह की
क़ुरबानी के लिए 2,600 भेड़-बकरियों के बच्चे
दिए, नीज़ 300 बैल। 9इसी तरह लावियों
के राहनुमाओं ने दीगर लावियों को फ़सह की
क़ुरबानी के लिए 5,000 भेड़-बकरियों के बच्चे
दिए, नीज़ 500 बैल। उनमें से तीन भाई बनाम
कूननियाह, समायाह और नतनियेल थे जबकि
दूसरों के नाम हसबियाह, यइयेल और यूज़बद
थे। 10जब हर एक ख़िदमत के लिए तैयार था तो
इमाम अपनी अपनी जगह पर और लावी अपने
अपने गुरोहों के मुताबिक़ खड़े हो गए जिस तरह
बादशाह ने हिदायत दी थी। 11लावियों ने फ़सह
के लेलों को ज़बह करके उनकी खालें उतारीं
जबकि इमामों ने लावियों से जानवरों का ख़ून
लेकर क़ुरबानगाह पर छिड़का। 12जो कुछ भस्म
होनेवाली क़ुरबानियों के लिए मुक़र्रर था उसे क़ौम
के मुख़्तलिफ़ ख़ानदानों के लिए एक तरफ़ रख
दिया गया ताकि वह उसे बाद में रब को क़ुरबानी
के तौर पर पेश कर सकें, जिस तरह मूसा की
शरीअत में लिखा है। बैलों के साथ भी ऐसा
ही किया गया। 13फ़सह के लेलों को हिदायात
के मुताबिक़ आग पर भूना गया जबकि बाक़ी
गोश्त को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की देगों में उबाला
गया। ज्योंही गोश्त पक गया तो लावियों ने उसे
जल्दी से हाज़िरीन में तक़सीम किया। 14इसके
बाद उन्होंने अपने और इमामों के लिए फ़सह के
लेले तैयार किए, क्योंकि हारून की औलाद यानी
इमाम भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और चरबी को
चढ़ाने में रात तक मसरूफ़ रहे।
15ईद के पूरे दौरान आसफ़ के ख़ानदान के
गुलूकार अपनी अपनी जगह पर खड़े रहे, जिस
तरह दाऊद, आसफ़, हैमान और बादशाह के
ग़ैबबीन यदूतून ने हिदायत दी थी। दरबान भी
रब के घर के दरवाज़ों पर मुसलसल खड़े रहे।
उन्हें अपनी जगहों को छोड़ने की ज़रूरत भी नहीं
थी, क्योंकि बाक़ी लावियों ने उनके लिए भी
फ़सह के लेले तैयार कर रखे। 16यों उस दिन
यूसियाह के हुक्म पर क़ुरबानियों के पूरे इंतज़ाम
को तरतीब दिया गया ताकि आइंदा फ़सह की ईद
मनाई जाए और भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ रब
की क़ुरबानगाह पर पेश की जाएँ।
17यरूशलम में जमा हुए इसराईलियों ने फ़सह
की ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद एक हफ़्ते
के दौरान मनाई। 18फ़सह की ईद इसराईल में
समुएल नबी के ज़माने से लेकर उस वक़्त तक
इस तरह नहीं मनाई गई थी। इसराईल के किसी
भी बादशाह ने उसे यों नहीं मनाया था जिस
तरह यूसियाह ने उसे उस वक़्त इमामों, लावियों,
यरूशलम और तमाम यहूदाह और इसराईल
से आए हुए लोगों के साथ मिलकर मनाई।
19यूसियाह बादशाह की हुकूमत के 18वें साल
में पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद मनाई
गई।

यूसियाह की मौत

20रब के घर की बहाली की तकमील के
बाद एक दिन मिसर का बादशाह निकोह
दरियाए-फ़ुरात पर के शहर करकिमीस के लिए
रवाना हुआ ताकि वहाँ दुश्मन से लड़े। लेकिन
रास्ते में यूसियाह उसका मुक़ाबला करने के
लिए निकला। 21निकोह ने अपने क़ासिदों को
यूसियाह के पास भेजकर उसे इत्तला दी,
“ऐ यहूदाह के बादशाह, मेरा आपसे क्या
वास्ता? इस वक़्त मैं आप पर हमला करने के
लिए नहीं निकला बल्कि उस शाही ख़ानदान पर

जिसके साथ मेरा झगड़ा है। अल्लाह ने फ़रमाया
है कि मैं जल्दी करूँ। वह तो मेरे साथ है। चुनाँचे
उसका मुक़ाबला करने से बाज़ आएँ, वरना वह
आपको हलाक कर देगा।”
22लेकिन यूसियाह बाज़ न आया बल्कि लड़ने
के लिए तैयार हुआ। उसने निकोह की बात न
मानी गो अल्लाह ने उसे उस की मारिफ़त आगाह
किया था। चुनाँचे वह भेस बदलकर फ़िरौन से
लड़ने के लिए मजिद्दो के मैदान में पहुँचा। 23जब
लड़ाई छिड़ गई तो यूसियाह तीरों से ज़ख़मी हुआ,
और उसने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “मुझे
यहाँ से ले जाओ, क्योंकि मैं सख़्त ज़ख़मी हो
गया हूँ।” 24लोगों ने उसे उसके अपने रथ पर
से उठाकर उसके एक और रथ में रखा जो उसे
यरूशलम ले गया। लेकिन उसने वफ़ात पाई, और
उसे अपने बापदादा के ख़ानदानी क़ब्रिस्तान में
दफ़न किया गया। पूरे यहूदाह और यरूशलम ने
उसका मातम किया।
25यरमियाह ने यूसियाह की याद में मातमी
गीत लिखे, और आज तक गीत गानेवाले मर्दो-
ख़वातीन यूसियाह की याद में मातमी गीत गाते
हैं, यह पक्का दस्तूर बन गया है। यह गीत ‘नोहा
की किताब’ में दर्ज हैं।
26-27बाक़ी जो कुछ शुरू से लेकर आख़िर तक
यूसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-
यहूदाहो-इसराईल’ की किताब में बयान किया
गया है। वहाँ उसके नेक कामों का ज़िक्र है और
यह कि उसने किस तरह शरीअत के अहकाम पर
अमल किया।

यहूदाह का बादशाह यहुआख़ज़

36 उम्मत ने यूसियाह के बेटे यहु-
आख़ज़ को बाप के तख़्त पर बिठा
दिया। 2यहुआख़ज़ 23 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का
दौरानिया तीन माह था। 3फिर मिसर के बादशाह
ने उसे तख़्त से उतार दिया, और मुल्के-यहूदाह
को तक़रीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी और 34
किलोग्राम सोना ख़राज के तौर पर अदा करना
पड़ा। 4मिसर के बादशाह ने यहुआख़ज़ के सगे
भाई इलियाक़ीम को यहूदाह और यरूशलम का
नया बादशाह बनाकर उसका नाम यहूयक़ीम में
बदल दिया। यहुआख़ज़ को वह क़ैद करके अपने
साथ मिसर ले गया।

यहूदाह का बादशाह यहूयक़ीम

5यहूयक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में रहकर वह 11 साल
तक हुकूमत करता रहा। उसका चाल-चलन रब
उसके ख़ुदा को नापसंद था। 6एक दिन बाबल
के नबूकदनज़्ज़र ने यहूदाह पर हमला किया और
यहूयक़ीम को पीतल की ज़ंजीरों में जकड़कर
बाबल ले गया। 7नबूकदनज़्ज़र रब के घर की कई
क़ीमती चीज़ें भी छीनकर अपने साथ बाबल ले
गया और वहाँ अपने मंदिर में रख दीं।
8बाक़ी जो कुछ यहूयक़ीम की हुकूमत के
दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहूदाहो-इसराईल’ की
किताब में दर्ज है। वहाँ यह बयान किया गया है
कि उसने कैसी घिनौनी हरकतें कीं और कि क्या
कुछ उसके साथ हुआ। उसके बाद उसका बेटा
यहूयाकीन तख़्तनशीन हुआ।

यहूयाकीन की हुकूमत

9यहूयाकीन 18 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का
दौरानिया तीन माह और दस दिन था। उसका
चाल-चलन रब को नापसंद था। 10बहार के
मौसम में नबूकदनज़्ज़र बादशाह ने हुक्म दिया
कि उसे गिरिफ़्तार करके बाबल ले जाया जाए।
साथ साथ फ़ौजियों ने रब के घर की क़ीमती चीज़ें
भी छीनकर बाबल पहुँचाईं। यहूयाकीन की जगह
नबूकदनज़्ज़र ने यहूयाकीन के चचा सिदक़ियाह
को यहूदाह और यरूशलम का बादशाह बना
दिया।

सिदक़ियाह बादशाह और यरूशलम की तबाही

11सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में तख़्त-
नशीन हुआ, और यरूशलम में उस की
हुकूमत का दौरानिया 11 साल था। 12उस-
का चाल-चलन रब उसके ख़ुदा को नापसंद था।
जब यरमियाह नबी ने उसे रब की तरफ़ से आगाह
किया तो उसने अपने आपको नबी के सामने पस्त
न किया। 13सिदक़ियाह को अल्लाह की क़सम
खाकर नबूकदनज़्ज़र बादशाह का वफ़ादार रहने
का वादा करना पड़ा। तो भी वह कुछ देर के बाद
सरकश हो गया। वह अड़ गया, और उसका दिल
इतना सख़्त हो गया कि वह रब इसराईल के ख़ुदा
की तरफ़ दुबारा रुजू करने के लिए तैयार नहीं था।
14लेकिन यहूदाह के राहनुमाओं, इमामों
और क़ौम की बेवफ़ाई भी बढ़ती गई। पड़ो-
सी क़ौमों के घिनौने रस्मो-रिवाज अपनाकर
उन्होंने रब के घर को नापाक कर दिया, गो उसने
यरूशलम में यह इमारत अपने लिए मख़सूस की
थी।

15बार बार रब उनके बापदादा का ख़ुदा अपने
पैग़ंबरों को उनके पास भेजकर उन्हें समझाता
रहा, क्योंकि उसे अपनी क़ौम और सुकूनतगाह
पर तरस आता था। 16लेकिन लोगों ने अल्लाह
के पैग़ंबरों का मज़ाक़ उड़ाया, उनके पैग़ाम हक़ीर
जाने और नबियों को लान-तान की। आख़िरकार
रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और बचने का
कोई रास्ता न रहा। 17उसने बाबल के बादशाह
नबूकदनज़्ज़र को उनके ख़िलाफ़ भेजा तो दुश्मन
यहूदाह के जवानों को तलवार से क़त्ल करने
के लिए मक़दिस में घुसने से भी न झिजके।
किसी पर भी रहम न किया गया, ख़ाह जवान मर्द
या जवान ख़ातून, ख़ाह बुज़ुर्ग या उम्ररसीदा हो।
रब ने सबको नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दिया।
18नबूकदनज़्ज़र ने अल्लाह के घर की तमाम
चीज़ें छीन लीं, ख़ाह वह बड़ी थीं या छोटी। वह
रब के घर, बादशाह और उसके आला अफ़सरों
के तमाम ख़ज़ाने भी बाबल ले गया। 19फ़ौजियों
ने रब के घर और तमाम महलों को जलाकर
यरूशलम की फ़सील को गिरा दिया। जितनी भी
क़ीमती चीज़ें रह गई थीं वह तबाह हुईं। 20और
जो तलवार से बच गए थे उन्हें बाबल का बादशाह
क़ैद करके अपने साथ बाबल ले गया। वहाँ उन्हें
उस की और उस की औलाद की ख़िदमत करनी
पड़ी। उनकी यह हालत उस वक़्त तक जारी रही
जब तक फ़ारसी क़ौम की सलतनत शुरू न हुई।
21यों वह कुछ पूरा हुआ जिसकी पेशगोई रब
ने यरमियाह नबी की मारिफ़त की थी, क्योंकि
ज़मीन को आख़िरकार सबत का वह आराम मिल
गया जो बादशाहों ने उसे नहीं दिया था। जिस तरह
नबी ने कहा था, अब ज़मीन 70 साल तक तबाह
और वीरान रही।

जिलावतनी से वापसी

22फ़ारस के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के
पहले साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया
जिसकी पेशगोई उसने यरमियाह की मारिफ़त
की थी। उसने ख़ोरस को ज़ैल का एलान करने
की तहरीक दी। यह एलान ज़बानी और तहरीरी
तौर पर पूरी बादशाही में किया गया।
23“फ़ारस का बादशाह ख़ोरस फ़रमाता है, रब
आसमान के ख़ुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक
मेरे हवाले कर दिए हैं। उसने मुझे यहूदाह के शहर
यरूशलम में उसके लिए घर बनाने की ज़िम्मेदारी
दी है। आपमें से जितने उस की क़ौम के हैं
यरूशलम के लिए रवाना हो जाएँ। रब आपका
ख़ुदा आपके साथ हो।”

अज़रा

जिलावतनी से वापसी

1 फ़ारस के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के
पहले साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया
जिसकी पेशगोई उसने यरमियाह की मारिफ़त की
थी। उसने ख़ोरस को ज़ैल का एलान करने की
तहरीक दी। यह एलान ज़बानी और तहरीरी तौर
पर पूरी बादशाही में किया गया।
2 "फ़ारस का बादशाह ख़ोरस फ़रमाता है, रब
आसमान के ख़ुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक
मेरे हवाले कर दिए हैं। उसने मुझे यहूदाह के शहर
यरूशलम में उसके लिए घर बनाने की ज़िम्मेदारी
दी है। 3आपमें से जितने उस की क़ौम के हैं
यरूशलम के लिए रवाना हो जाएँ ताकि वहाँ रब
इसराईल के ख़ुदा के लिए घर बनाएँ, उस ख़ुदा के
लिए जो यरूशलम में सुकूनत करता है। आपका
ख़ुदा आपके साथ हो। 4जहाँ भी इसराईली क़ौम
के बचे हुए लोग रहते हैं, वहाँ उनके पड़ोसियों का
फ़र्ज़ है कि वह सोने-चाँदी और माल-मवेशी से
उनकी मदद करें। इसके अलावा वह अपनी ख़ुशी
से यरूशलम में अल्लाह के घर के लिए हदिये भी
दें।"
5तब कुछ इसराईली रवाना होकर यरू-
शलम में रब के घर को तामीर करने की तैयारियाँ
करने लगे। उनमें यहूदाह और बिनयमीन के
ख़ानदानी सरपरस्त, इमाम और लावी शामिल
थे यानी जितने लोगों को अल्लाह ने तहरीक दी
थी। 6उनके तमाम पड़ोसियों ने उन्हें सोना-चाँदी
और माल-मवेशी देकर उनकी मदद की। इसके
अलावा उन्होंने अपनी ख़ुशी से भी रब के घर के
लिए हदिये दिए।
7ख़ोरस बादशाह ने वह चीज़ें वापस कर दीं
जो नबूकदनज़्ज़र ने यरूशलम में रब के घर से
लूटकर अपने देवता के मंदिर में रख दी थीं।
8उन्हें निकालकर फ़ारस के बादशाह ने मित्रदात
ख़ज़ानची के हवाले कर दिया जिसने सब कुछ
गिनकर यहूदाह के बुज़ुर्ग शेसबज़्ज़र को दे दिया।
9जो फ़हरिस्त उसने लिखी उसमें ज़ैल की चीज़ें
थीं :

सोने के 30 बासन,
चाँदी के 1,000 बासन,
29 छुरियाँ,
10सोने के 30 प्याले,
चाँदी के 410 प्याले,
बाक़ी चीज़ें 1,000 अदद।

11सोने और चाँदी की कुल 5,400 चीज़ें थीं।
शेसबज़्ज़र यह सब कुछ अपने साथ ले गया जब
वह जिलावतनों के साथ बाबल से यरूशलम के
लिए रवाना हुआ।

वापस आए हुओं की फ़हरिस्त

2 ज़ैल में यहूदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त
है जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल
का बादशाह नबूकदनज़्ज़र उन्हें क़ैद करके बाबल
ले गया था, लेकिन अब वह यरूशलम और

यहूदाह के उन शहरों में फिर जा बसे जहाँ
उनके ख़ानदान पहले रहते थे। 2उनके राहनुमा
ज़रुब्बाबल, यशुअ, नहमियाह, सिरायाह,
रालायाह, मर्दकी, बिलशान, मिसफ़ार, बिगवई,
रहूम और बाना थे। ज़ैल की फ़हरिस्त में वापस
आए हुए ख़ानदानों के मर्द बयान किए गए हैं।
3परऊस का ख़ानदान : 2,172,
4सफ़तियाह का ख़ानदान : 372,
5अरख़ का ख़ानदान : 775,
6पख़त-मोआब का ख़ानदान यानी यशुअ और
योआब की औलाद : 2,812,
7ऐलाम का ख़ानदान : 1,254,
8ज़त्तू का ख़ानदान : 945,
9ज़क्की का ख़ानदान : 760,
10बानी का ख़ानदान : 642,
11बबी का ख़ानदान : 623,
12अज़जाद का ख़ानदान : 1,222,
13अदूनिक़ाम का ख़ानदान : 666,
14बिगवई का ख़ानदान : 2,056,
15अदीन का ख़ानदान : 454,
16अतीर का ख़ानदान यानी हिज़क़ियाह की
औलाद : 98,
17बज़ी का ख़ानदान : 323,
18यूरा का ख़ानदान : 112,
19हाशूम का ख़ानदान : 223,
20जिब्बार का ख़ानदान : 95,
21बैत-लहम के बाशिंदे : 123,
22नतूफ़ा के 56 बाशिंदे,
23अनतोत के बाशिंदे : 128,
24अज़मावत के बाशिंदे : 42,
25क़िरियत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के
बाशिंदे : 743,
26रामा और जिबा के बाशिंदे : 621,
27मिकमास के बाशिंदे : 122,
28बैतेल और अई के बाशिंदे : 223,
29नबू के बाशिंदे : 52,
30मजबीस के बाशिंदे : 156,
31दूसरे ऐलाम के बाशिंदे : 1,254,
32हारिम के बाशिंदे : 320,
33लूद, हादीद और ओनू के बाशिंदे : 725,
34यरीहू के बाशिंदे : 345,
35सनाआह के बाशिंदे : 3,630।
36ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।
यदायाह का ख़ानदान जो यशुअ की नसल का
था : 973,
37इम्मेर का ख़ानदान : 1,052,
38फ़शहूर का ख़ानदान : 1,247,
39हारिम का ख़ानदान : 1,017।
40ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए।
यशुअ और क़दमियेल का ख़ानदान यानी
हूदावियाह की औलाद : 74,
41गुलूकार : आसफ़ के ख़ानदान के 128
आदमी,
42रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर,
तलमून, अक़्क़ूब, ख़तीता और सोबी के
ख़ानदानों के 139 आदमी।
43रब के घर के ख़िदमतगारों के दर्जे-ज़ैल
ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।
ज़ीहा, हसूफ़ा, तब्बाओत, 44क़रूस, सि-
याहा, फ़दून, 45लिबाना, हजाबा, अक़्क़ूब,
46हजाब, शलमी, हनान, 47जिद्देल, जहर,
रियायाह, 48रज़ीन, नक़ूदा, जज़्ज़ाम,
49उज़्ज़ा, फ़ासिह, बसी, 50अस्ना, मऊनीम,
नफ़ूसीम, 51बक़बूक़, हक़ूफ़ा, हरहूर, 52बज़
लूत, महीदा, हरशा, 53बरक़ूस, सीसरा, तामह,
54नज़ियाह और ख़तीफ़ा।
55सुलेमान के ख़ादिमों के दर्जे-ज़ैल ख़ान-
दान जिलावतनी से वापस आए।
सूती, सूफ़िरत, फ़रूदा, 56याला, दरक़ून,
जिद्देल, 57सफ़तियाह, ख़त्तील, फ़ूकिरत-
ज़बायम और अमी।
58रब के घर के ख़िदमतगारों और सुलेमान के
ख़ादिमों के ख़ानदानों में से वापस आए हुए मर्दों
की तादाद 392 थी।
59-60वापस आए हुए ख़ानदानों दिलायाह,
तूबियाह और नक़ूदा के 652 मर्द साबित न कर

सके कि इसराईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हरशा, करूब, अद्दून और इम्मेर के रहनेवाले थे।

61-62हबायाह, हक़्क़ूज़ और बरज़िल्ली के ख़ानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन उन्हें रब के घर में ख़िदमत करने की इजाज़त न मिली। क्योंकि गो उन्होंने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए उनका कहीं ज़िक्र न मिला, इसलिए उन्हें नापाक क़रार दिया गया। (बरज़िल्ली के ख़ानदान के बानी ने बरज़िल्ली जिलियादी की बेटी से शादी करके अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) 63यहूदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन ख़ानदानों के इमाम फ़िलहाल क़ुरबानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुक़र्रर है। जब दुबारा इमामे-आज़म मुक़र्रर किया जाए तो वही ऊरीम और तुम्मीम नामी क़ुरा डालकर मामला हल करे।

64कुल 42,360 इसराईली अपने वतन लौट आए, 65नीज़ उनके 7,337 ग़ुलाम और लौंडियाँ और 200 गुलूकार जिनमें मर्दो-ख़वातीन शामिल थे।

66इसराईलियों के पास 736 घोड़े, 245 ख़च्चर, 67435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

68जब वह यरूशलम में रब के घर के पास पहुँचे तो कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने अपनी ख़ुशी से हदिये दिए ताकि अल्लाह का घर नए सिरे से उस जगह तामीर किया जा सके जहाँ पहले था। 69हर एक ने उतना दे दिया जितना दे सका। उस वक़्त सोने के कुल 61,000 सिक्के, चाँदी के 2,800 किलोग्राम और इमामों के 100 लिबास जमा हुए।

70इमाम, लावी, गुलूकार, रब के घर के दरबान और ख़िदमतगार, और अवाम के कुछ लोग अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यों तमाम इसराईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।

नई क़ुरबानगाह पर क़ुरबानियाँ

3 सातवें महीने की इब्तिदा में पूरी क़ौम यरूशलम में जमा हुई। उस वक़्त इसराईली अपनी आबादियों में दुबारा आबाद हो गए थे। 2जमा होने का मक़सद इसराईल के ख़ुदा की क़ुरबानगाह को नए सिरे से तामीर करना था ताकि मर्दे-ख़ुदा मूसा की शरीअत के मुताबिक़ उस पर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश की जा सकें। चुनाँचे यशुअ बिन यूसदक़ और ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल काम में लग गए। यशुअ के इमाम भाइयों और ज़रुब्बाबल के भाइयों ने उनकी मदद की। 3गो वह मुल्क में रहनेवाली दीगर क़ौमों से सहमे हुए थे ताहम उन्होंने क़ुरबानगाह को उस की पुरानी बुनियाद पर तामीर किया और सुबह-शाम उस पर रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करने लगे। 4झोंपड़ियों की ईद उन्होंने शरीअत की हिदायत के मुताबिक़ मनाई। उस हफ़्ते के हर दिन उन्होंने भस्म होनेवाली उतनी क़ुरबानियाँ चढ़ाईं जितनी ज़रूरी थीं।

5उस वक़्त से इमाम भस्म होनेवाली तमाम दरकार क़ुरबानियाँ बाक़ायदगी से पेश करने लगे, नीज़ नए चाँद की ईदों और रब की बाक़ी मख़सूसो-मुक़द्दस ईदों की क़ुरबानियाँ। क़ौम अपनी ख़ुशी से भी रब को क़ुरबानियाँ पेश करती थी। 6गो रब के घर की बुनियाद अभी डाली नहीं गई थी तो भी इसराईली सातवें महीने के पहले दिन से रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करने लगे। 7फिर उन्होंने राजों और कारीगरों को पैसे देकर काम पर लगाया और सूर और सैदा के बाशिंदों से देवदार की लकड़ी मँगवाई। यह लकड़ी लुबनान के पहाड़ी इलाक़े से समुंदर तक लाई गई और वहाँ से समुंदर के रास्ते याफ़ा पहुँचाई गई। इसराईलियों ने मुआवज़े में खाने-पीने की चीज़ें और ज़ैतून का तेल दे दिया। फ़ारस के बादशाह ख़ोरस ने उन्हें यह करवाने की इजाज़त दी थी।

रब के घर की तामीरे-नौ

8जिलावतनी से वापस आने के दूसरे साल
के दूसरे महीने में रब के घर की नए सिरे से
तामीर शुरू हुई। इस काम में ज़रुब्बाबल बिन
सियालतियेल, यशुअ बिन यूसदक़, दीगर इमाम
और लावी और वतन में वापस आए हुए बाक़ी
तमाम इसराईली शरीक हुए। तामीरी काम की
निगरानी उन लावियों के ज़िम्मे लगा दी गई
जिनकी उम्र 20 साल या इससे ज़ायद थी।

9ज़ैल के लोग मिलकर रब का घर बनानेवालों
की निगरानी करते थे : यशुअ अपने बेटों और
भाइयों समेत, क़दमियेल और उसके बेटे जो
हूदावियाह की औलाद थे और हनदाद के ख़ानदान
के लावी।

10रब के घर की बुनियाद रखते वक़्त इमाम
अपने मुक़द्दस लिबास पहने हुए साथ खड़े हो
गए और तुरम बजाने लगे। आसफ़ के ख़ानदान
के लावी साथ साथ झाँझ बजाने और रब की
सताइश करने लगे। सब कुछ इसराईल के
बादशाह दाऊद की हिदायात के मुताबिक़ हुआ।
11वह हम्दो-सना के गीत से रब की तारीफ़ करने
लगे, "वह भला है, और इसराईल पर उस की
शफ़क़त अबदी है!" जब हाज़िरीन ने देखा कि
रब के घर की बुनियाद रखी जा रही है तो सब रब
की ख़ुशी में ज़ोरदार नारे लगाने लगे।

12लेकिन बहुत-से इमाम, लावी और ख़ानदानी
सरपरस्त हाज़िर थे जिन्होंने रब का पहला घर
देखा हुआ था। जब उनके देखते देखते रब के नए
घर की बुनियाद रखी गई तो वह बुलंद आवाज़ से
रोने लगे जबकि बाक़ी बहुत सारे लोग ख़ुशी के
नारे लगा रहे थे। 13इतना शोर था कि ख़ुशी के
नारों और रोने की आवाज़ों में इम्तियाज़ न किया
जा सका। शोर दूर दूर तक सुनाई दिया।

रब के घर की तामीर की मुख़ालफ़त

4 यहूदाह और बिनयमीन के दुश्मनों को
पता चला कि वतन में वापस आए हुए
इसराईली रब इसराईल के ख़ुदा के लिए घर
तामीर कर रहे हैं। 2ज़रुब्बाबल और ख़ानदानी
सरपरस्तों के पास आकर उन्होंने दरख़ास्त की,
"हम भी आपके साथ मिलकर रब के घर को
तामीर करना चाहते हैं। क्योंकि जब से असूर
के बादशाह असरहद्दून ने हमें यहाँ लाकर बसाया
है उस वक़्त से हम आपके ख़ुदा के तालिब
रहे और उसे क़ुरबानियाँ पेश करते आए हैं।"
3लेकिन ज़रुब्बाबल, यशुअ और इसराईल के
बाक़ी ख़ानदानी सरपरस्तों ने इनकार किया,
"नहीं, इसमें आपका हमारे साथ कोई वास्ता
नहीं। हम अकेले ही रब इसराईल के ख़ुदा के लिए
घर बनाएँगे, जिस तरह फ़ारस के बादशाह ख़ोरस
ने हमें हुक्म दिया है।"

4यह सुनकर मुल्क की दूसरी क़ौमें यहूदाह
के लोगों की हौसलाशिकनी और उन्हें डराने की
कोशिश करने लगीं ताकि वह इमारत बनाने से
बाज़ आएँ। 5यहाँ तक कि वह फ़ारस के बादशाह
ख़ोरस के कुछ मुशीरों को रिश्वत देकर काम रोकने
में कामयाब हो गए। यों रब के घर की तामीर
ख़ोरस बादशाह के दौरे-हुकूमत से लेकर दारा
बादशाह की हुकूमत तक रुकी रही।

6बाद में जब अख़स्वेरुस बादशाह की हुकूमत
शुरू हुई तो इसराईल के दुश्मनों ने यहूदाह
और यरूशलम के बाशिंदों पर इलज़ाम लगाकर
शिकायती ख़त लिखा।

7फिर अर्तख़शस्ता बादशाह के दौरे-हुकूमत में
उसे यहूदाह के दुश्मनों की तरफ़ से शिकायती
ख़त भेजा गया। ख़त के पीछे ख़ासकर बिशलाम,
मित्रदात और ताबियेल थे। पहले उसे अरामी
ज़बान में लिखा गया, और बाद में उसका तरजुमा
हुआ। 8सामरिया के गवर्नर रहूम और उसके
मीरमुंशी शम्सी ने शहनशाह को ख़त लिख दिया
जिसमें उन्होंने यरूशलम पर इलज़ामात लगाए।
पते में लिखा था,

9अज़ : रहूम गवर्नर और मीरमुंशी शम्सी, नीज़
उनके हमख़िदमत क़ाज़ी, सफ़ीर और तरपल,
सिप्पर, अरक, बाबल और सोसन यानी ऐलाम के
मर्द, 10नीज़ बाक़ी तमाम क़ौमें जिनको अज़ीम

और अज़ीज़ बादशाह अशूरबनीपाल ने उठाकर सामरिया और दरियाए-फ़ुरात के बाक़ीमाँदा मग़रिबी इलाक़े में बसा दिया था।

11ख़त में लिखा था,

“शहनशाह अर्तख़शस्ता के नाम,

अज़ : आपके ख़ादिम जो दरियाए-फ़ुरात के मग़रिब में रहते हैं।

12शहनशाह को इल्म हो कि जो यहूदी आपके
हुज़ूर से हमारे पास यरूशलम पहुँचे हैं वह इस वक़्त उस बाग़ी और शरीर शहर को नए सिरे से तामीर कर रहे हैं। वह फ़सील को बहाल करके बुनियादों की मरम्मत कर रहे हैं।
13शहनशाह को इल्म हो कि अगर शहर नए सिरे से तामीर हो जाए और उस की फ़सील तकमील तक पहुँचे तो यह लोग टैक्स, ख़राज और महसूल अदा करने से इनकार कर देंगे। तब बादशाह को नुक़सान पहुँचेगा।
14हम तो नमकहराम नहीं हैं, न शहनशाह की तौहीन बरदाश्त कर सकते हैं। इसलिए हम गुज़ारिश करते हैं
15कि आप अपने बापदादा की तारीख़ी दस्तावेज़ात से यरूशलम के बारे में मालूमात हासिल करें, क्योंकि उनमें इस बात की तसदीक़ मिलेगी कि यह शहर माज़ी में सरकश रहा। हक़ीक़त में शहर को इसी लिए तबाह किया गया कि वह बादशाहों और सूबों को तंग करता रहा और क़दीम ज़माने से ही बग़ावत का मंबा रहा है।
16ग़रज़ हम शहनशाह को इत्तला देते हैं कि अगर यरूशलम को दुबारा तामीर किया जाए और उस की फ़सील तकमील तक पहुँचे तो दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े पर आपका क़ाबू जाता रहेगा।”

17शहनशाह ने जवाब में लिखा,

“मैं यह ख़त रहूम गवर्नर, शम्सी मीरमुंशी और सामरिया और दरियाए-फ़ुरात के मग़रिब में रहनेवाले उनके हमख़िदमत अफ़सरों को लिख रहा हूँ।

आपको सलाम!
18आपके ख़त का तरजुमा मेरी मौजूदगी में हुआ है और उसे मेरे सामने पढ़ा गया है।
19मेरे हुक्म पर यरूशलम के बारे में मालूमात हासिल की गई हैं। मालूम हुआ कि वाक़ई यह शहर क़दीम ज़माने से बादशाहों की मुख़ालफ़त करके सरकशी और बग़ावत का मंबा रहा है।
20नीज़, यरूशलम ताक़तवर बादशाहों का दारुल-हुकूमत रहा है। उनकी इतनी ताक़त थी कि दरियाए-फ़ुरात के पूरे मग़रिबी इलाक़े को उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के टैक्स और ख़राज अदा करना पड़ा।
21चुनाँचे अब हुक्म दें कि यह आदमी शहर की तामीर करने से बाज़ आएँ। जब तक मैं ख़ुद हुक्म न दूँ उस वक़्त तक शहर को नए सिरे से तामीर करने की इजाज़त नहीं है।
22ध्यान दें कि इस हुक्म की तकमील में सुस्ती न की जाए, ऐसा न हो कि शहनशाह को बड़ा नुक़सान पहुँचे।”

23ज्योंही ख़त की कापी रहूम, शम्सी और उनके हमख़िदमत अफ़सरों को पढ़कर सुनाई गई तो वह यरूशलम के लिए रवाना हुए और यहूदियों को ज़बरदस्ती काम जारी रखने से रोक दिया।

24चुनाँचे यरूशलम में अल्लाह के घर का तामीरी काम रुक गया, और वह फ़ारस के बादशाह दारा की हुकूमत के दूसरे साल तक रुका रहा।

रब के घर की तामीर दुबारा शुरू होती है

5 एक दिन दो नबी बनाम हज्जी और ज़करियाह बिन इद्दू उठकर इसराईल के ख़ुदा के नाम में जो उनके ऊपर था यहूदाह और यरूशलम के यहूदियों के सामने नबुव्वत करने लगे।
2उनके हौसला-अफ़्ज़ा अलफ़ाज़ सुनकर ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल और यशुअ बिन यूसदक़ ने फ़ैसला किया कि हम दुबारा यरूशलम में अल्लाह के घर की तामीर शुरू करेंगे। दोनों नबी इसमें उनके साथ थे और उनकी मदद करते रहे।

3लेकिन ज्योंही काम शुरू हुआ तो दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी और शतर-बोज़नी अपने हमख़िदमत अफ़सरों समेत यरूशलम पहुँचे। उन्होंने पूछा, “किसने आपको यह घर बनाने और इसका ढाँचा तकमील तक पहुँचाने की इजाज़त दी?
4इस काम के

लिए ज़िम्मेदार आदमियों के नाम हमें बताएँ!”
5लेकिन उनका ख़ुदा यहूदाह के बुज़ुर्गों की
निगरानी कर रहा था, इसलिए उन्हें रोका न गया।
क्योंकि लोगों ने सोचा कि पहले दारा बादशाह को
इत्तला दी जाए। जब तक वह फ़ैसला न करे उस
वक़्त तक काम रोका न जाए।

6फिर दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े
के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और उनके
हमख़िदमत अफ़सरों ने दारा बादशाह को ज़ैल
का ख़त भेजा,

7“दारा बादशाह को दिल की गहराइयों से
सलाम कहते हैं! 8शहनशाह को इल्म हो कि
सूबा यहूदाह में जाकर हमने देखा कि वहाँ अज़ीम
ख़ुदा का घर बनाया जा रहा है। उसके लिए बड़े
तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल हो रहे हैं और दीवारों में
शहतीर लगाए जा रहे हैं। लोग बड़ी जाँफ़िशानी
से काम कर रहे हैं, और मकान उनकी मेहनत
के बाइस तेज़ी से बन रहा है। 9हमने बुज़ुर्गों
से पूछा, ‘किसने आपको यह घर बनाने और
इसका ढाँचा तकमील तक पहुँचाने की इजाज़त
दी है?’ 10हमने उनके नाम भी मालूम किए ताकि
लिखकर आपको भेज सकें। 11उन्होंने हमें जवाब
दिया,

‘हम आसमानो-ज़मीन के ख़ुदा के ख़ादिम हैं,
और हम उस घर को अज़ सरे-नौ तामीर कर रहे
हैं जो बहुत साल पहले यहाँ क़ायम था। इसराईल
के एक अज़ीम बादशाह ने उसे क़दीम ज़माने में
बनाकर तकमील तक पहुँचाया था। 12लेकिन
हमारे बापदादा ने आसमान के ख़ुदा को तैश
दिलाया, और नतीजे में उसने उन्हें बाबल के
बादशाह नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दिया जिसने
रब के घर को तबाह कर दिया और क़ौम को क़ैद
करके बाबल में बसा दिया। 13लेकिन बाद में जब
ख़ोरस बादशाह बन गया तो उसने अपनी हुकूमत
के पहले साल में हुक्म दिया कि अल्लाह के इस
घर को दुबारा तामीर किया जाए। 14साथ साथ
उसने सोने-चाँदी की वह चीज़ें वापस कर दीं जो
नबूकदनज़्ज़र ने यरूशलम में अल्लाह के घर से
लूटकर बाबल के मंदिर में रख दी थीं। ख़ोरस ने
यह चीज़ें एक आदमी के सुपुर्द कर दीं जिसका
नाम शेसबज़्ज़र था और जिसे उसने यहूदाह का
गवर्नर मुक़र्रर किया था। 15उसने उसे हुक्म दिया
कि सामान को यरूशलम ले जाओ और रब के
घर को पुरानी जगह पर अज़ सरे-नौ तामीर करके
यह चीज़ें उसमें महफ़ूज़ रखो। 16तब शेसबज़्ज़र
ने यरूशलम आकर अल्लाह के घर की बुनियाद
रखी। उसी वक़्त से यह इमारत ज़ेरे-तामीर है,
अगरचे यह आज तक मुकम्मल नहीं हुई।’

17चुनाँचे अगर शहनशाह को मंज़ूर हो तो वह
तफ़तीश करें कि क्या बाबल के शाही दफ़्तर में
कोई ऐसी दस्तावेज़ मौजूद है जो इस बात की
तसदीक़ करे कि ख़ोरस बादशाह ने यरूशलम
में रब के घर को अज़ सरे-नौ तामीर करने का
हुक्म दिया। गुज़ारिश है कि शहनशाह हमें अपना
फ़ैसला पहुँचा दें।”

दारा बादशाह यहूदियों की मदद करता है

6 तब दारा बादशाह ने हुक्म दिया कि बाबल
के ख़ज़ाने के दफ़्तर में तफ़तीश की जाए।
इसका खोज लगाते लगाते 2आख़िरकार मादी
शहर इक्बताना के क़िले में तूमार मिल गया
जिसमें लिखा था,

3“ख़ोरस बादशाह की हुकूमत के पहले साल
में शहनशाह ने हुक्म दिया कि यरूशलम में
अल्लाह के घर को उस की पुरानी जगह पर
नए सिरे से तामीर किया जाए ताकि वहाँ दुबारा
क़ुरबानियाँ पेश की जा सकें। उस की बुनियाद
रखने के बाद उस की ऊँचाई 90 और चौड़ाई 90
फ़ुट हो। 4दीवारों को यों बनाया जाए कि तराशे
हुए पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के
शहतीरों का एक रद्दा लगाया जाए। अख़राजात
शाही ख़ज़ाने से पूरे किए जाएँ। 5नीज़ सोने-चाँदी
की जो चीज़ें नबूकदनज़्ज़र यरूशलम के इस घर
से निकालकर बाबल लाया वह वापस पहुँचाई
जाएँ। हर चीज़ अल्लाह के घर में उस की अपनी
जगह पर वापस रख दी जाए।”

6यह ख़बर पढ़कर दारा ने दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और उनके हमख़िदमत अफ़सरों को ज़ैल का जवाब भेज दिया,

“अल्लाह के इस घर की तामीर में मुदाख़लत मत करना! 7लोगों को काम जारी रखने दें। यहूदियों का गवर्नर और उनके बुज़ुर्ग अल्लाह का यह घर उस की पुरानी जगह पर तामीर करें।

8न सिर्फ़ यह बल्कि मैं हुक्म देता हूँ कि आप इस काम में बुज़ुर्गों की मदद करें। तामीर के तमाम अख़राजात वक़्त पर मुहैया करें ताकि काम न रुके। यह पैसे शाही ख़ज़ाने यानी दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े से जमा किए गए टैक्सों में से अदा किए जाएँ। 9रोज़ बरोज़ इमामों को भस्म होनेवाली क़ुरबानियों के लिए दरकार तमाम चीज़ें मुहैया करते रहें, ख़ाह वह जवान बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे, गंदुम, नमक, मै या ज़ैतून का तेल क्यों न माँगें। इसमें सुस्ती न करें 10ताकि वह आसमान के ख़ुदा को पसंदीदा क़ुरबानियाँ पेश करके शहनशाह और उसके बेटों की सलामती के लिए दुआ कर सकें।

11इसके अलावा मैं हुक्म देता हूँ कि जो भी इस फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी करे उसके घर से शहतीर निकालकर खड़ा किया जाए और उसे उस पर मसलूब किया जाए। साथ साथ उसके घर को मलबे का ढेर बनाया जाए। 12जिस ख़ुदा ने वहाँ अपना नाम बसाया है वह हर बादशाह और क़ौम को हलाक करे जो मेरे इस हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करके यरूशलम के घर को तबाह करने की जुर्रत करे। मैं, दारा ने यह हुक्म दिया है। इसे हर तरह से पूरा किया जाए।”

रब के घर की मख़सूसियत

13दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और उनके हम-ख़िदमत अफ़सरों ने हर तरह से दारा बाद-शाह के हुक्म की तामील की। 14चुनाँचे यहूदी बुज़ुर्ग रब के घर पर काम जारी रख सके। दोनों नबी हज्जी और ज़करियाह बिन इद्दू अपनी नबुव्वतों से उनकी हौसला-अफ़्ज़ाई करते रहे, और यों सारा काम इसराईल के ख़ुदा और फ़ारस के बादशाहों ख़ोरस, दारा और अर्तख़शस्ता के हुक्म के मुताबिक़ ही मुकम्मल हुआ।

15रब का घर दारा बादशाह की हुकूमत के छटे साल में तकमील तक पहुँचा। अदार के महीने का तीसरा दिन[a] था। 16इसराईलियों ने इमामों, लावियों और जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों समेत बड़ी ख़ुशी से रब के घर की मख़सूसियत की ईद मनाई। 17उन्होंने 100 बैल, 200 मेंढे और भेड़ के 400 बच्चे क़ुरबान किए। पूरे इसराईल के लिए गुनाह की क़ुरबानी भी पेश की गई, और इसके लिए फ़ी क़बीला एक बकरा यानी मिलकर 12 बकरे चढ़ाए गए। 18फिर इमामों और लावियों को रब के घर की ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों में तक़सीम किया गया, जिस तरह मूसा की शरीअत हिदायत देती है।

इसराईली फ़सह की ईद मनाते हैं

19पहले महीने के 14वें दिन[b] जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों ने फ़सह की ईद मनाई। 20तमाम इमामों और लावियों ने अपने आपको पाक-साफ़ कर रखा था। सबके सब पाक थे। लावियों ने फ़सह के लेले जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों, उनके भाइयों यानी इमामों और अपने लिए ज़बह किए। 21लेकिन न सिर्फ़ जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईली इस खाने में शरीक हुए बल्कि मुल्क के वह तमाम लोग भी जो ग़ैरयहूदी क़ौमों की नापाक राहों से अलग होकर उनके साथ रब इसराईल के ख़ुदा के तालिब हुए थे। 22उन्होंने सात दिन बड़ी ख़ुशी से बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई। रब ने उनके दिलों को ख़ुशी से भर दिया था, क्योंकि उसने फ़ारस के

[a]12 मार्च।

[b]21 अप्रैल।

बादशाह का दिल उनकी तरफ़ मायल कर दिया था ताकि उन्हें इसराईल के ख़ुदा के घर को तामीर करने में मदद मिले।

अज़रा इमाम को यरूशलम भेजा जाता है

7 इन वाक़ियात के काफ़ी अरसे बाद
एक आदमी बनाम अज़रा बाबल
को छोड़कर यरूशलम आया। उस वक़्त
फ़ारस के बादशाह अर्तख़शस्ता की हुकूमत
थी। आदमी का पूरा नाम अज़रा बिन
सिरायाह बिन अज़रियाह बिन ख़िलक़ियाह
2बिन सल्लूम बिन सदोक़ बिन अख़ीतूब
3बिन अमरियाह बिन अज़रियाह बिन मिरा-
योत 4बिन ज़रख़ियाह बिन उज़्ज़ी बिन बुक़्क़ी
5बिन अबीसुअ बिन फ़ीनहास बिन इलियज़र
बिन हारून था। (हारून इमामे-आज़म था)।
6अज़रा पाक नविश्तों का उस्ताद और उस
शरीअत का आलिम था जो रब इसराईल के ख़ुदा
ने मूसा की मारिफ़त दी थी। जब अज़रा बाबल से
यरूशलम के लिए रवाना हुआ तो शहनशाह ने उस
की हर ख़ाहिश पूरी की, क्योंकि रब उसके ख़ुदा
का शफ़ीक़ हाथ उस पर था। 7कई इसराईली
उसके साथ गए। इमाम, लावी, गुलूकार और
रब के घर के दरबान और ख़िदमतगार भी उनमें
शामिल थे। यह अर्तख़शस्ता बादशाह की हुकूमत
के सातवें साल में हुआ। 8-9क़ाफ़िला पहले महीने
के पहले दिन[a] बाबल से रवाना हुआ और पाँचवें
महीने के पहले दिन[b] सहीह-सलामत यरूशलम
पहुँचा, क्योंकि अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ अज़रा
पर था। 10वजह यह थी कि अज़रा ने अपने
आपको रब की शरीअत की तफ़तीश करने,
उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने और इसराईलियों
को उसके अहकाम और हिदायात की तालीम देने
के लिए वक़्फ़ किया था।

शहनशाह अज़रा को मुख़तारनामा देता है

11अर्तख़शस्ता बादशाह ने अज़रा इमाम को
ज़ैल का मुख़तारनामा दे दिया, उसी अज़रा को
जो पाक नविश्तों का उस्ताद और उन अहकाम
और हिदायात का आलिम था जो रब ने इसराईल
को दी थीं। मुख़तारनामे में लिखा था,
12“अज़ : शहनशाह अर्तख़शस्ता
अज़रा इमाम को जो आसमान के ख़ुदा की
शरीअत का आलिम है, सलाम! 13मैं हुक्म
देता हूँ कि अगर मेरी सलतनत में मौजूद कोई
भी इसराईली आपके साथ यरूशलम जाकर वहाँ
रहना चाहे तो वह जा सकता है। इसमें इमाम
और लावी भी शामिल हैं, 14शहनशाह और उसके
सात मुशीर आपको यहूदाह और यरूशलम भेज
रहे हैं ताकि आप अल्लाह की उस शरीअत की
रौशनी में जो आपके हाथ में है यहूदाह और
यरूशलम का हाल जाँच लें। 15जो सोना-चाँदी
शहनशाह और उसके मुशीरों ने अपनी ख़ुशी से
यरूशलम में सुकूनत करनेवाले इसराईल के ख़ुदा
के लिए क़ुरबान की है उसे अपने साथ ले जाएँ।
16नीज़, जितनी भी सोना-चाँदी आपको सूबा
बाबल से मिल जाएगी और जितने भी हदिये
क़ौम और इमाम अपनी ख़ुशी से अपने ख़ुदा के
घर के लिए जमा करें उन्हें अपने साथ ले जाएँ।
17उन पैसों से बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे और उनकी
क़ुरबानियों के लिए दरकार ग़ल्ला और मै की
नज़रें ख़रीद लें, और उन्हें यरूशलम में अपने ख़ुदा
के घर की क़ुरबानगाह पर क़ुरबान करें। 18जो पैसे
बच जाएँ उनको आप और आपके भाई वैसे ख़र्च
कर सकते हैं जैसे आपको मुनासिब लगे। शर्त यह
है कि आपके ख़ुदा की मरज़ी के मुताबिक़ हो।
19यरूशलम में अपने ख़ुदा को वह तमाम चीज़ें
पहुँचाएँ जो आपको रब के घर में ख़िदमत के लिए
दी जाएँगी। 20बाक़ी जो कुछ भी आपको अपने
ख़ुदा के घर के लिए ख़रीदना पड़े उसके पैसे शाही
ख़ज़ाना अदा करेगा।

[a]8 अप्रैल।

[b]4 अगस्त।

21मैं, अर्तख़शस्ता बादशाह दरियाए-फ़ुरात
के मग़रिब में रहनेवाले तमाम ख़ज़ान-
चियों को हुक्म देता हूँ कि हर तरह से अज़रा
इमाम की माली मदद करें। जो भी आसमान के
ख़ुदा की शरीअत का यह उस्ताद माँगे वह उसे
दिया जाए। 22उसे 3,400 किलोग्राम चाँदी,
16,000 किलोग्राम गंदुम, 2,200 लिटर मै
और 2,200 लिटर ज़ैतून का तेल तक देना।
नमक उसे उतना मिले जितना वह चाहे। 23ध्यान
से सब कुछ मुहैया करें जो आसमान का ख़ुदा
अपने घर के लिए माँगे। ऐसा न हो कि शहनशाह
और उसके बेटों की सलतनत उसके ग़ज़ब का
निशाना बन जाए। 24नीज़, आपको इल्म हो कि
आपको अल्लाह के इस घर में ख़िदमत करनेवाले
किसी शख़्स से भी ख़राज या किसी क़िस्म का
टैक्स लेने की इजाज़त नहीं है, ख़ाह वह इमाम,
लावी, गुलूकार, रब के घर का दरबान या उसका
ख़िदमतगार हो।

25ऐ अज़रा, जो हिकमत आपके ख़ुदा ने
आपको अता की है उसके मुताबिक़ मजिस्ट्रेट
और क़ाज़ी मुक़र्रर करें जो आपकी क़ौम के
उन लोगों का इनसाफ़ करें जो दरियाए-फ़ुरात
के मग़रिब में रहते हैं। जितने भी आपके ख़ुदा
के अहकाम जानते हैं वह इसमें शामिल हैं।
और जितने इन अहकाम से वाक़िफ़ नहीं हैं
उन्हें आपको तालीम देनी है। 26जो भी आपके
ख़ुदा की शरीअत और शहनशाह के क़ानून की
ख़िलाफ़वरज़ी करे उसे सख़्ती से सज़ा दी जाए।
जुर्म की संजीदगी का लिहाज़ करके उसे या तो
सज़ाए-मौत दी जाए या जिलावतन किया जाए,
उस की मिलकियत ज़ब्त की जाए या उसे जेल
में डाला जाए।”

अज़रा की सताइश

27रब हमारे बापदादा के ख़ुदा की तमजीद हो
जिसने शहनशाह के दिल को यरूशलम में रब के
घर को शानदार बनाने की तहरीक दी है। 28उसी
ने शहनशाह, उसके मुशीरों और तमाम असरो-
रसूख़ रखनेवाले अफ़सरों के दिलों को मेरी तरफ़
मायल कर दिया है। चूँकि रब मेरे ख़ुदा का शफ़ीक़
हाथ मुझ पर था इसलिए मेरा हौसला बढ़ गया,
और मैंने इसराईल के ख़ानदानी सरपरस्तों को
अपने साथ इसराईल वापस जाने के लिए जमा
किया।

अज़रा के साथ जिलावतनी से वापस आनेवालों की फ़हरिस्त

8 दर्जे-ज़ैल उन ख़ानदानी सरपरस्तों की
फ़हरिस्त है जो अर्तख़शस्ता बादशाह की
हुकूमत के दौरान मेरे साथ बाबल से यरूशलम के
लिए रवाना हुए। हर ख़ानदान के मर्दों की तादाद
भी दर्ज है :

2-3फ़ीनहास के ख़ानदान का जैरसोम,
इतमर के ख़ानदान का दानियाल,
दाऊद के ख़ानदान का हत्तूश बिन सक-
नियाह,
परऊस के ख़ानदान का ज़करियाह। 150 मर्द
उसके साथ नसबनामे में दर्ज थे।
4पख़त-मोआब के ख़ानदान का इली-
हूऐनी बिन ज़रख़ियाह 200 मर्दों के साथ,
5ज़त्तू के ख़ानदान का सकनियाह बिन
यहज़ियेल 300 मर्दों के साथ,
6अदीन के ख़ानदान का अबद बिन यूनतन 50
मर्दों के साथ,
7ऐलाम के ख़ानदान का यसायाह बिन
अतलियाह 70 मर्दों के साथ,
8सफ़तियाह के ख़ानदान का ज़बदियाह बिन
मीकाएल 80 मर्दों के साथ,
9योआब के ख़ानदान का अबदियाह बिन
यहियेल 218 मर्दों के साथ,
10बानी के ख़ानदान का सलूमीत बिन
यूसिफ़ियाह 160 मर्दों के साथ,
11बबी के ख़ानदान का ज़करियाह बिन बबी
28 मर्दों के साथ,
12अज़जाद के ख़ानदान का यूहनान बिन
हक़्क़ातान 110 मर्दों के साथ,

13अदूनिक़ाम के ख़ानदान के आख़िरी लोग इलीफ़लत, यइयेल और समायाह 60 मर्दों के साथ,

14बिगवई का ख़ानदान का ऊती और ज़बूद 70 मर्दों के साथ।

15मैं यानी अज़रा ने मज़कूरा लोगों को उस नहर के पास जमा किया जो अहावा की तरफ़ बहती है। वहाँ हम ख़ैमे लगाकर तीन दिन ठहरे रहे। इस दौरान मुझे पता चला कि गो आम लोग और इमाम आ गए हैं लेकिन एक भी
लावी हाज़िर नहीं है। 16चुनाँचे मैंने इलियज़र, अरियेल, समायाह, इलनातन, यरीब, इलनातन, नातन, ज़करियाह और मसुल्लाम को अपने पास बुला लिया। यह सब ख़ानदानी सरपरस्त थे जबकि शरीअत के दो उस्ताद बनाम यूयारीब
और इलनातन भी साथ थे। 17मैंने उन्हें लावियों की आबादी कासिफ़ियाह के बुज़ुर्ग इद्दू के पास भेजकर वह कुछ बताया जो उन्हें इद्दू, उसके भाइयों और रब के घर के ख़िदमतगारों को बताना था ताकि वह हमारे ख़ुदा के घर के लिए ख़िदमतगार भेजें।

18अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ हम पर था, इसलिए उन्होंने हमें महली बिन लावी बिन इसराईल के ख़ानदान का समझदार आदमी सरिबियाह भेज दिया। सरिबियाह अपने बेटों और
भाइयों के साथ पहुँचा। कुल 18 मर्द थे। 19इनके अलावा मिरारी के ख़ानदान के हसबियाह और यसायाह को भी उनके बेटों और भाइयों के साथ
हमारे पास भेजा गया। कुल 20 मर्द थे। 20उनके साथ रब के घर के 220 ख़िदमतगार थे। इनके तमाम नाम नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और उसके मुलाज़िमों ने उनके बापदादा को लावियों की ख़िदमत करने की ज़िम्मेदारी दी थी।

यरूशलम के लिए रवानगी की तैयारियाँ

21वहीं अहावा की नहर के पास ही मैंने एलान किया कि हम सब रोज़ा रखकर अपने आपको अपने ख़ुदा के सामने पस्त करें और दुआ करें कि वह हमें हमारे बाल-बच्चों और सामान के साथ
सलामती से यरूशलम पहुँचाए। 22क्योंकि हमारे साथ फ़ौजी और घुड़सवार नहीं थे जो हमें रास्ते में डाकुओं से महफ़ूज़ रखते। बात यह थी कि मैं शहनशाह से यह माँगने से शर्म महसूस कर रहा था, क्योंकि हमने उसे बताया था, “हमारे ख़ुदा का शफ़ीक़ हाथ हर एक पर ठहरता है जो उसका तालिब रहता है। लेकिन जो भी उसे तर्क करे उस पर उसका सख़्त ग़ज़ब नाज़िल होता
है।” 23चुनाँचे हमने रोज़ा रखकर अपने ख़ुदा से इलतमास की कि वह हमारी हिफ़ाज़त करे, और उसने हमारी सुनी।

24फिर मैंने इमामों के 12 राहनुमाओं को चुन लिया, नीज़ सरिबियाह, हसबियाह और मज़ीद
10 लावियों को। 25उनकी मौजूदगी में मैंने सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम सामान तोल लिया जो शहनशाह, उसके मुशीरों और अफ़सरों और वहाँ के तमाम इसराईलियों ने हमारे ख़ुदा के घर के लिए अता किया था।

26मैंने तोलकर ज़ैल का सामान उनके हवाले कर दिया : तक़रीबन 22,000 किलोग्राम चाँदी, चाँदी का कुछ सामान जिसका कुल वज़न तक़रीबन 3,400 किलोग्राम था, 3,400
किलोग्राम सोना, 27सोने के 20 प्याले जिनका कुल वज़न तक़रीबन साढ़े 8 किलोग्राम था, और पीतल के दो पालिश किए हुए प्याले जो सोने के प्यालों जैसे क़ीमती थे।

28मैंने आदमियों से कहा, “आप और यह तमाम चीज़ें रब के लिए मख़सूस हैं। लोगों ने अपनी ख़ुशी से यह सोना-चाँदी रब आपके बापदादा के ख़ुदा के लिए क़ुरबान की है।
29सब कुछ एहतियात से महफ़ूज़ रखें, और जब आप यरूशलम पहुँचेंगे तो इसे रब के घर के ख़ज़ाने तक पहुँचाकर राहनुमा इमामों, लावियों और ख़ानदानी सरपरस्तों की मौजूदगी में दुबारा तोलना।”

30फिर इमामों और लावियों ने सोना-चाँदी और
बाक़ी सामान लेकर उसे यरूशलम में हमारे ख़ुदा
के घर में पहुँचाने के लिए महफ़ूज़ रखा।

यरूशलम तक सफ़र

31हम पहले महीने के 12वें दिन[a] अहावा नहर
से यरूशलम के लिए रवाना हुए। अल्लाह का
शफ़ीक़ हाथ हम पर था, और उसने हमें रास्ते
में दुश्मनों और डाकुओं से महफ़ूज़ रखा। 32हम
यरूशलम पहुँचे तो पहले तीन दिन आराम किया।
33चौथे दिन हमने अपने ख़ुदा के घर में सोना-
चाँदी और बाक़ी मख़सूस सामान तोलकर इमाम
मरीमोत बिन ऊरियाह के हवाले कर दिया। उस
वक़्त इलियज़र बिन फ़ीनहास और दो लावी
बनाम यूज़बद बिन यशुअ और नौअदियाह बिन
बिन्नूई उसके साथ थे। 34हर चीज़ गिनी और
तोली गई, फिर उसका पूरा वज़न फ़हरिस्त में
दर्ज किया गया।

35इसके बाद जिलावतनी से वापस आए हुए
तमाम लोगों ने इसराईल के ख़ुदा को भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश कीं। इस नाते से उन्होंने
पूरे इसराईल के लिए 12 बैल, 96 मेंढे, भेड़ के
77 बच्चे और गुनाह की क़ुरबानी के 12 बकरे
क़ुरबान किए।

36मुसाफ़िरों ने दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी
इलाक़े के गवर्नरों और हाकिमों को शहन-
शाह की हिदायात पहुँचाईं। इनको पढ़कर उन्होंने
इसराईली क़ौम और अल्लाह के घर की हिमायत
की।

ग़ैरयहूदी बीवियों पर अफ़सोस

9 1-2कुछ देर बाद क़ौम के राहनुमा मेरे पास
आए और कहने लगे, "क़ौम के आम
लोगों, इमामों और लावियों ने अपने आपको
मुल्क की दीगर क़ौमों से अलग नहीं रखा, गो
यह घिनौने रस्मो-रिवाज के पैरोकार हैं। उनकी
औरतों से शादी करके उन्होंने अपने बेटों की भी
शादी उनकी बेटियों से कराई है। यों अल्लाह की
मुक़द्दस क़ौम कनानियों, हित्तियों, फ़रिज़्ज़ियों,
यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिसरियों और
अमोरियों से आलूदा हो गई है। और बुज़ुर्गों और
अफ़सरों ने इस बेवफ़ाई में पहल की है!"

3यह सुनकर मैंने रंजीदा होकर अपने कपड़ों
को फाड़ लिया और सर और दाढ़ी के बाल नोच
नोचकर नंगे फ़र्श पर बैठ गया। 4वहाँ मैं शाम
की क़ुरबानी तक बेहिसो-हरकत बैठा रहा। इतने
में बहुत-से लोग मेरे इर्दगिर्द जमा हो गए। वह
जिलावतनी से वापस आए हुए लोगों की बेवफ़ाई
के बाइस थरथरा रहे थे, क्योंकि वह इसराईल के
ख़ुदा के जवाब से निहायत ख़ौफ़ज़दा थे। 5शाम
की क़ुरबानी के वक़्त मैं वहाँ से उठ खड़ा हुआ
जहाँ मैं तौबा की हालत में बैठा हुआ था। वही फटे
हुए कपड़े पहने हुए मैं घुटने टेककर झुक गया और
अपने हाथों को आसमान की तरफ़ उठाए हुए रब
अपने ख़ुदा से दुआ करने लगा,

6"ऐ मेरे ख़ुदा, मैं निहायत शरमिंदा हूँ। अपना
मुँह तेरी तरफ़ उठाने की मुझमें जुर्रत नहीं रही।
क्योंकि हमारे गुनाहों का इतना बड़ा ढेर लग गया
है कि वह हमसे ऊँचा है, बल्कि हमारा क़ुसूर
आसमान तक पहुँच गया है। 7हमारे बापदादा के
ज़माने से लेकर आज तक हमारा क़ुसूर संजीदा
रहा है। इसी वजह से हम बार बार परदेसी
हुक्मरानों के क़ब्ज़े में आए हैं जिन्होंने हमें और
हमारे बादशाहों और इमामों को क़त्ल किया,
गिरिफ़्तार किया, लूट लिया और हमारी बेहुरमती
की। बल्कि आज तक हमारी हालत यही रही है।

8लेकिन इस वक़्त रब हमारे ख़ुदा ने थोड़ी देर
के लिए हम पर मेहरबानी की है। हमारी क़ौम
के बचे-खुचे हिस्से को उसने रिहाई देकर अपने
मुक़द्दस मक़ाम पर महफ़ूज़ रखा है। यों हमारे
ख़ुदा ने हमारी आँखों में दुबारा चमक पैदा की
और हमें कुछ सुकून मुहैया किया है, गो हम अब
तक ग़ुलामी में हैं। 9बेशक हम ग़ुलाम हैं, तो भी

[a]19 अप्रैल।

अल्लाह ने हमें तर्क नहीं किया बल्कि फ़ारस के बादशाह को हम पर मेहरबानी करने की तहरीक दी है। उसने हमें अज़ सरे-नौ ज़िंदगी अता की है ताकि हम अपने ख़ुदा का घर दुबारा तामीर और उसके खंडरात बहाल कर सकें। अल्लाह ने हमें यहूदाह और यरूशलम में एक महफ़ूज़ चारदीवारी से घेर रखा है।

10लेकिन ऐ हमारे ख़ुदा, अब हम क्या कहें? अपनी इन हरकतों के बाद हम क्या जवाब दें? हमने तेरे उन अहकाम को नज़रंदाज़ किया
है 11जो तूने अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त दिए थे।

तूने फ़रमाया, 'जिस मुल्क में तुम दाख़िल हो रहे हो ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो वह उसमें रहनेवाली क़ौमों के घिनौने रस्मो-रिवाज के सबब से नापाक है। मुल्क एक सिरे से दूसरे सिरे तक
उनकी नापाकी से भर गया है। 12लिहाज़ा अपनी
बेटियों की उनके बेटों के साथ शादी मत करवाना, न अपने बेटों का उनकी बेटियों के साथ रिश्ता बाँधना। कुछ न करो जिससे उनकी सलामती और कामयाबी बढ़ती जाए। तब ही तुम ताक़तवर होकर मुल्क की अच्छी पैदावार खाओगे, और तुम्हारी औलाद हमेशा तक मुल्क की अच्छी चीज़ें विरासत में पाती रहेगी।'

13अब हम अपनी शरीर हरकतों और बड़े क़ुसूर की सज़ा भुगत रहे हैं, गो ऐ अल्लाह, तूने हमें इतनी सख़्त सज़ा नहीं दी जितनी हमें मिलनी चाहिए थी। तूने हमारा यह बचा-खुचा हिस्सा
ज़िंदा छोड़ा है। 14तो क्या यह ठीक है कि हम
तेरे अहकाम की ख़िलाफ़वरज़ी करके ऐसी क़ौमों से रिश्ता बाँधें जो इस क़िस्म की घिनौनी हरकतें करती हैं? हरगिज़ नहीं! क्या इसका यह नतीजा नहीं निकलेगा कि तेरा ग़ज़ब हम पर नाज़िल होकर सब कुछ तबाह कर देगा और यह बचा-
खुचा हिस्सा भी ख़त्म हो जाएगा? 15ऐ रब
इसराईल के ख़ुदा, तू ही आदिल है। आज हम बचे हुए हिस्से की हैसियत से तेरे हुज़ूर खड़े हैं। हम क़ुसूरवार हैं और तेरे सामने क़ायम नहीं रह सकते।"

बुतपरस्त बीवियों को तलाक़

10 जब अज़रा इस तरह दुआ कर रहा और अल्लाह के घर के सामने पड़े हुए और रोते हुए क़ौम के क़ुसूर का इक़रार कर रहा था तो उसके इर्दगिर्द इसराईली मर्दों, औरतों और बच्चों का बड़ा हुजूम जमा हो गया। वह भी फूट फूटकर रोने लगे।

2फिर ऐलाम के ख़ानदान के सकनियाह बिन यहियेल ने अज़रा से कहा,

"वाक़ई हमने पड़ोसी क़ौमों की औरतों से शादी करके अपने ख़ुदा से बेवफ़ाई की है। तो भी अब तक इसराईल के लिए उम्मीद की किरण बाक़ी
है। 3आएँ, हम अपने ख़ुदा से अहद बाँधकर वादा
करें कि हम उन तमाम औरतों को उनके बच्चों समेत वापस भेज देंगे। जो भी मशवरा आप और अल्लाह के अहकाम का ख़ौफ़ माननेवाले दीगर लोग हमें देंगे वह हम करेंगे। सब कुछ शरीअत
के मुताबिक़ किया जाए। 4अब उठें! क्योंकि यह
मामला दुरुस्त करना आप ही का फ़र्ज़ है। हम आपके साथ हैं, इसलिए हौसला रखें और वह कुछ करें जो ज़रूरी है।"

5तब अज़रा उठा और राहनुमा इमामों, लावियों और तमाम क़ौम को क़सम खिलाई कि हम
सकनियाह के मशवरे पर अमल करेंगे। 6फिर
अज़रा अल्लाह के घर के सामने से चला गया और यूहनान बिन इलियासिब के कमरे में दाख़िल हुआ। वहाँ उसने पूरी रात कुछ खाए-पिए बग़ैर गुज़ारी। अब तक वह जिलावतनी से वापस आए हुए लोगों की बेवफ़ाई पर मातम कर रहा था।

7-8सरकारी अफ़सरों और बुज़ुर्गों ने फ़ैस-ला किया कि यरूशलम और पूरे यहूदाह में एलान किया जाए, "लाज़िम है कि जितने भी इसराईली जिलावतनी से वापस आए हैं वह सब तीन दिन के अंदर अंदर यरूशलम में जमा हो जाएँ। जो भी इस दौरान हाज़िर न हो उसे जिलावतनों की जमात

से ख़ारिज कर दिया जाएगा और उस की तमाम
मिलकियत ज़ब्त हो जाएगी।” 9तब यहूदाह और
बिनयमीन के क़बीलों के तमाम आदमी तीन दिन
के अंदर अंदर यरूशलम पहुँचे। नवें महीने के
बीसवें दिन[a] सब लोग अल्लाह के घर के सहन में
जमा हुए। सब मामले की संजीदगी और मौसम
के सबब से काँप रहे थे, क्योंकि बारिश हो रही
थी।

10अज़रा इमाम खड़े होकर कहने लगा, “आप
अल्लाह से बेवफ़ा हो गए हैं। ग़ैरयहूदी औरतों
से रिश्ता बाँधने से आपने इसराईल के क़ुसूर में
इज़ाफ़ा कर दिया है। 11अब रब अपने बापदादा
के ख़ुदा के हुज़ूर अपने गुनाहों का इक़रार करके
उस की मरज़ी पूरी करें। पड़ोसी क़ौमों और अपनी
परदेसी बीवियों से अलग हो जाएँ।”

12पूरी जमात ने बुलंद आवाज़ से जवाब दिया,
“आप ठीक कहते हैं! लाज़िम है कि हम आपकी
हिदायत पर अमल करें। 13लेकिन यह कोई ऐसा
मामला नहीं है जो एक या दो दिन में दुरुस्त किया
जा सके। क्योंकि हम बहुत लोग हैं और हमसे
संजीदा गुनाह सरज़द हुआ है। नीज़, इस वक़्त
बरसात का मौसम है, और हम ज़्यादा देर तक
बाहर नहीं ठहर सकते। 14बेहतर है कि हमारे
बुज़ुर्ग पूरी जमात की नुमाइंदगी करें। फिर जितने
भी आदमियों की ग़ैरयहूदी बीवियाँ हैं वह एक
मुक़र्ररा दिन मक़ामी बुज़ुर्गों और क़ाज़ियों को
साथ लेकर यहाँ आएँ और मामला दुरुस्त करें।
और लाज़िम है कि यह सिलसिला उस वक़्त तक
जारी रहे जब तक रब का ग़ज़ब ठंडा न हो जाए।”

15तमाम लोग मुत्तफ़िक़ हुए, सिर्फ़ यूनतन बिन
असाहेल और यहज़ियाह बिन तिक़वा ने फ़ैसले
की मुख़ालफ़त की जबकि मसुल्लाम और सब्बती
लावी उनके हक़ में थे। 16-17तो भी इसराईलियों
ने मनसूबे पर अमल किया। अज़रा इमाम ने चंद
एक ख़ानदानी सरपरस्तों के नाम लेकर उन्हें यह
ज़िम्मेदारी दी कि जहाँ भी किसी यहूदी मर्द की
ग़ैरयहूदी औरत से शादी हुई है वहाँ वह पूरे मामले
की तहक़ीक़ करें। उनका काम दसवें महीने के
पहले दिन[b] शुरू हुआ और पहले महीने के पहले
दिन[c] तकमील तक पहुँचा।

18-19दर्जे-ज़ैल उन आदमियों की फ़हरिस्त है
जिन्होंने ग़ैरयहूदी औरतों से शादी की थी। उन्होंने
क़सम खाकर वादा किया कि हम अपनी बीवियों
से अलग हो जाएंगे। साथ साथ हर एक ने क़ुसूर
की क़ुरबानी के तौर पर मेंढा क़ुरबान किया।

इमामों में से क़ुसूरवार :

यशुअ बिन यूसदक़ और उसके भाई
मासियाह, इलियज़र, यरीब और जिदलि-
याह,

20इम्मेर के ख़ानदान का हनानी और
ज़बदियाह,

21हारिम के ख़ानदान का मासियाह,
इलियास, समायाह, यहियेल और उज़्ज़ि-
याह,

22फ़शहूर के ख़ानदान का इलियूऐनी,
मासियाह, इसमाईल, नतनियेल, यूज़बद और
इलियासा।

23लावियों में से क़ुसूरवार :

यूज़बद, सिमई, क़िलायाह यानी क़लीता,
फ़तहियाह, यहूदाह और इलियज़र।

24गुलूकारों में से क़ुसूरवार :

इलियासिब।

रब के घर के दरबानों में से क़ुसूरवार :

सल्लूम, तलम और ऊरी।

25बाक़ी क़ुसूरवार इसराईली :

परऊस के ख़ानदान का रमियाह, यज़्ज़ि-
याह, मलकियाह, मियामीन, इलियज़र,
मलकियाह और बिनायाह।

26ऐलाम के ख़ानदान का मत्तनियाह,
ज़करियाह, यहियेल, अबदी, यरीमोत और
इलियास,

[a]19 सितंबर।
[b]29 दिसंबर।
[c]27 मार्च।

27ज़त्तू के ख़ानदान का इलियूऐनी, इलि-
यासिब, मत्तनियाह, यरीमोत, ज़बद और
अज़ीज़ा।

28बबी के ख़ानदान का यूहनान, हननि-
याह, ज़ब्बी और अतली।

29बानी के ख़ानदान का मसुल्लाम,
मल्लूक, अदायाह, यसूब, सियाल और यरी-
मोत।

30पख़त-मोआब के ख़ानदान का अदना,
किलाल, बिनायाह, मासियाह, मत्तनियाह,
बज़लियेल, बिन्नूई और मनस्सी।

31हारिम के ख़ानदान का इलियज़र,
यिस्सियाह, मलकियाह, समायाह, शमाऊन,
32बिनयमीन, मल्लूक और समरियाह।

33हाशूम के ख़ानदान का मत्तनी, मत्तत्ताह,
ज़बद, इलीफ़लत, यरेमी, मनस्सी और सिमई।

34बानी के ख़ानदान का मादी, अम-
राम, ऊएल, 35बिनायाह, बदियाह, कलूही,
36वनियाह, मरीमोत, इलियासिब, 37मत्त-
नियाह, मत्तनी और यासी।

38बिन्नूई के ख़ानदान का सिमई, 39सल-
मियाह, नातन, अदायाह, 40मक्नदबी, सा-
सी, सारी, 41अज़रेल, सलमियाह, सम-
रियाह, 42सल्लूम, अमरियाह और यूसुफ़।

43नबू के ख़ानदान का यइयेल, मत्तिति-
याह, ज़बद, ज़बीना, यद्दी, योएल और बिनायाह।

44इन तमाम आदमियों की ग़ैरयहूदी औरतों से
शादी हुई थी, और उनके हाँ बच्चे पैदा हुए थे।

नहमियाह

नहमियाह यरूशलम के लिए दुआ करता है

1 ज़ैल में नहमियाह बिन हकलियाह की रिपोर्ट दर्ज है।

मैं अर्तख़शस्ता बादशाह की हुकूमत के 20वें साल किसलेव के महीने में सोसन के क़िले
में था 2कि एक दिन मेरा भाई हनानी मुझसे मिलने आया। उसके साथ यहूदाह के चंद एक आदमी थे। मैंने उनसे पूछा, "जो यहूदी बचकर जिलावतनी से यहूदाह वापस गए हैं उनका क्या हाल है? और यरूशलम शहर का क्या हाल
है?" 3उन्होंने जवाब दिया, "जो यहूदी बचकर जिलावतनी से यहूदाह वापस गए हैं उनका बहुत बुरा और ज़िल्लतआमेज़ हाल है। यरूशलम की फ़सील अब तक ज़मीनबोस है, और उसके तमाम दरवाज़े राख हो गए हैं।"

4यह सुनकर मैं बैठकर रोने लगा। कई दिन मैं रोज़ा रखकर मातम करता और आसमान के ख़ुदा से दुआ करता रहा,

5"ऐ रब, आसमान के ख़ुदा, तू कितना अज़ीम और महीब ख़ुदा है! जो तुझे प्यार और तेरे अहकाम की पैरवी करते हैं उनके साथ तू अपना अहद क़ायम रखता और उन पर मेहरबानी करता
है। 6मेरी बात सुनकर ध्यान दे कि तेरा ख़ादिम किस तरह तुझसे इलतमास कर रहा है। दिन-रात मैं इसराईलियों के लिए जो तेरे ख़ादिम हैं दुआ करता हूँ। मैं इक़रार करता हूँ कि हमने तेरा गुनाह किया है। इसमें मैं और मेरे बाप का घराना
भी शामिल है। 7हमने तेरे ख़िलाफ़ निहायत शरीर क़दम उठाए हैं, क्योंकि जो अहकाम और हिदायात तूने अपने ख़ादिम मूसा को दी थीं हम
उनके ताबे न रहे। 8लेकिन अब वह कुछ याद कर जो तूने अपने ख़ादिम को फ़रमाया, 'अगर तुम बेवफ़ा हो जाओ तो मैं तुम्हें मुख़्तलिफ़ क़ौमों में
मुंतशिर कर दूँगा, 9लेकिन अगर तुम मेरे पास वापस आकर दुबारा मेरे अहकाम के ताबे हो जाओ तो मैं तुम्हें तुम्हारे वतन में वापस लाऊँगा, ख़ाह तुम ज़मीन की इंतहा तक क्यों न पहुँच गए हो। मैं तुम्हें उस जगह वापस लाऊँगा जिसे मैंने चुन लिया है ताकि मेरा नाम वहाँ सुकूनत
करे।' 10ऐ रब, यह लोग तो तेरे अपने ख़ादिम हैं, तेरी अपनी क़ौम जिसे तूने अपनी अज़ीम क़ुदरत
और क़वी हाथ से फ़िद्या देकर छुड़ाया है। 11ऐ रब, अपने ख़ादिम और उन तमाम ख़ादिमों की इलतमास सुन जो पूरे दिल से तेरे नाम का ख़ौफ़ मानते हैं। जब तेरा ख़ादिम आज शहनशाह के पास होगा तो उसे कामयाबी अता कर। बख़्श दे कि वह मुझ पर रहम करे।"

मैंने यह इसलिए कहा कि मैं शहनशाह का साक़ी था।

नहमियाह को यरूशलम जाने की इजाज़त मिलती है

2 चार महीने गुज़र गए। नीसान के महीने
के एक दिन जब मैं शहनशाह अर्तख़शस्ता
को मै पिला रहा था तो मेरी मायूसी उसे नज़र
आई। पहले उसने मुझे कभी उदास नहीं देखा
था, 2इसलिए उसने पूछा, “आप इतने ग़मगीन
क्यों दिखाई दे रहे हैं? आप बीमार तो नहीं लगते
बल्कि कोई बात आपके दिल को तंग कर रही
है।”

मैं सख़्त घबरा गया 3और कहा, “शहनशाह
अबद तक जीता रहे! मैं किस तरह ख़ुश हो
सकता हूँ? जिस शहर में मेरे बापदादा को
दफ़नाया गया है वह मलबे का ढेर है, और उसके
दरवाज़े राख हो गए हैं।”

4शहनशाह ने पूछा, “तो फिर मैं किस तरह
आपकी मदद करूँ?” ख़ामोशी से आसमान के
ख़ुदा से दुआ करके 5मैंने शहनशाह से कहा,
“अगर बात आपको मंज़ूर हो और आप अपने
ख़ादिम से ख़ुश हों तो फिर बराहे-करम मुझे
यहूदाह के उस शहर भेज दीजिए जिसमें मेरे
बापदादा दफ़न हुए हैं ताकि मैं उसे दुबारा तामीर
करूँ।”

6उस वक़्त मलिका भी साथ बैठी थी।
शहनशाह ने सवाल किया, “सफ़र के लिए
कितना वक़्त दरकार है? आप कब तक वापस
आ सकते हैं?” मैंने उसे बताया कि मैं कब
तक वापस आऊँगा तो वह मुत्तफ़िक़ हुआ। 7फिर
मैंने गुज़ारिश की, “अगर बात आपको मंज़ूर
हो तो मुझे दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े
के गवर्नरों के लिए ख़त दीजिए ताकि वह मुझे
अपने इलाक़ों में से गुज़रने दें और मैं सलामती
से यहूदाह तक पहुँच सकूँ। 8इसके अलावा
शाही जंगलात के निगरान आसफ़ के लिए ख़त
लिखवाएँ ताकि वह मुझे लकड़ी दे। जब मैं रब के
घर के साथवाले क़िले के दरवाज़े, फ़सील और
अपना घर बनाऊँगा तो मुझे शहतीरों की ज़रूरत
होगी।” अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ मुझ पर था,
इसलिए शहनशाह ने मुझे यह ख़त दे दिए।

9शहनशाह ने फ़ौजी अफ़सर और घुड़-
सवार भी मेरे साथ भेजे। यों रवाना होकर मैं
दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नरों के
पास पहुँचा और उन्हें शहनशाह के ख़त दिए।
10जब गवर्नर संबल्लत हौरूनी और अम्मोनी
अफ़सर तूबियाह को मालूम हुआ कि कोई
इसराईलियों की बहबूदी के लिए आ गया है तो
वह निहायत नाख़ुश हुए।

नहमियाह फ़सील का मुआयना करता है

11सफ़र करते करते मैं यरूशलम पहुँच गया।
तीन दिन के बाद 12मैं रात के वक़्त शहर से
निकला। मेरे साथ चंद एक आदमी थे, और हमारे
पास सिर्फ़ वही जानवर था जिस पर मैं सवार
था। अब तक मैंने किसी को भी उस बोझ के
बारे में नहीं बताया था जो मेरे ख़ुदा ने मेरे दिल
पर यरूशलम के लिए डाल दिया था। 13चुनाँचे
मैं अंधेरे में वादी के दरवाज़े से शहर से निकला
और जुनूब की तरफ़ अज़दहे के चश्मे से होकर
कचरे के दरवाज़े तक पहुँचा। हर जगह मैंने गिरी
हुई फ़सील और भस्म हुए दरवाज़ों का मुआयना
किया। 14फिर मैं शिमाल यानी चश्मे के दरवाज़े
और शाही तालाब की तरफ़ बढ़ा, लेकिन मलबे
की कसरत की वजह से मेरे जानवर को गुज़रने
का रास्ता न मिला, 15इसलिए मैं वादीए-क़िदरोन
में से गुज़रा। अब तक अंधेरा ही अंधेरा था। वहाँ
भी मैं फ़सील का मुआयना करता गया। फिर मैं
मुड़ा और वादी के दरवाज़े में से दुबारा शहर में
दाख़िल हुआ।

फ़सील को तामीर करने का फ़ैसला

16यरूशलम के अफ़सरों को मालूम नहीं था कि
मैं कहाँ गया और क्या कर रहा था। अब तक मैंने
न उन्हें और न इमामों या दीगर उन लोगों को अपने
मनसूबे से आगाह किया था जिन्हें तामीर का यह
काम करना था। 17लेकिन अब मैं उनसे मुख़ातिब

हुआ, “आपको ख़ुद हमारी मुसीबत नज़र आती है। यरूशलम मलबे का ढेर बन गया है, और उसके दरवाज़े राख हो गए हैं। आएँ, हम फ़सील को नए सिरे से तामीर करें ताकि हम दूसरों के मज़ाक़ का निशाना न बने रहें।”
18मैंने उन्हें बताया कि अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ किस तरह मुझ पर रहा था और कि शहनशाह ने मुझसे किस क़िस्म का वादा किया था। यह सुनकर उन्होंने जवाब दिया, “ठीक है, आएँ हम तामीर का काम शुरू करें!” चुनाँचे वह इस अच्छे काम में लग गए।

19जब संबल्लत हौरूनी, अम्मोनी अफ़सर तूबियाह और जशम अरबी को इसकी ख़बर मिली तो उन्होंने हमारा मज़ाक़ उड़ाकर हिक़ारतआमेज़ लहजे में कहा, “यह तुम लोग क्या कर रहे हो? क्या तुम शहनशाह से ग़द्दारी करना चाहते हो?”
20मैंने जवाब दिया, “आसमान का ख़ुदा हमें कामयाबी अता करेगा। हम जो उसके ख़ादिम हैं तामीर का काम शुरू करेंगे। जहाँ तक यरूशलम का ताल्लुक़ है, न आज और न माज़ी में आपका कभी कोई हिस्सा या हक़ था।”

फ़सील की तामीरे-नौ

3 इमामे-आज़म इलियासिब बाक़ी इमामों के साथ मिलकर तामीरी काम में लग गया। उन्होंने भेड़ के दरवाज़े को नए सिरे से बना दिया और उसे मख़सूस करके उसके किवाड़ लगा दिए। उन्होंने फ़सील के साथवाले हिस्से को भी मिया बुर्ज और हननेल के बुर्ज तक बनाकर मख़सूस किया।

2यरीहू के आदमियों ने फ़सील के अगले हिस्से को खड़ा किया जबकि ज़क्कूर बिन इमरी ने उनके हिस्से से मुलहिक़ हिस्से को तामीर किया।

3मछली का दरवाज़ा सनाआह के ख़ानदान की ज़िम्मेदारी थी। उसे शहतीरों से बनाकर उन्होंने किवाड़, चटख़नियाँ और कुंडे लगा दिए।

4अगले हिस्से की मरम्मत मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हक़्क़ूज़ ने की।

अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन बरकियाह बिन मशेज़बेल की ज़िम्मेदारी थी।

सदोक़ बिन बाना ने अगले हिस्से को तामीर किया।

5अगला हिस्सा तक़ुअ के बाशिंदों ने बनाया। लेकिन शहर के बड़े लोग अपने बुज़ुर्गों के तहत काम करने के लिए तैयार न थे।

6यसाना का दरवाज़ा योयदा बिन फ़ासिह और मसुल्लाम बिन बसूदियाह की ज़िम्मेदारी थी। उसे शहतीरों से बनाकर उन्होंने किवाड़, चटख़नियाँ और कुंडे लगा दिए।

7अगला हिस्सा मलतियाह जिबऊनी और यदून मरूनोती ने खड़ा किया। यह लोग जिबऊन और मिसफ़ाह के थे, वही मिसफ़ाह जहाँ दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर का दारुल-हुकूमत था।

8अगले हिस्से की मरम्मत एक सुनार बनाम उज़्ज़ियेल बिन हरहियाह के हाथ में थी।

अगले हिस्से पर एक इत्रसाज़ बनाम हननियाह मुक़र्रर था। इन लोगों ने फ़सील की मरम्मत ‘मोटी दीवार’ तक की।

9अगले हिस्से को रिफ़ायाह बिन हूर ने खड़ा किया। यह आदमी ज़िले यरूशलम के आधे हिस्से का अफ़सर था।

10यदायाह बिन हरूमफ़ ने अगले हिस्से की मरम्मत की जो उसके घर के मुक़ाबिल था।

अगले हिस्से को हत्तूश बिन हसब्नियाह ने तामीर किया।

11अगले हिस्से को तनूरों के बुर्ज तक मलकियाह बिन हारिम और हस्सूब बिन पख़त-मोआब ने खड़ा किया।

12अगला हिस्सा सल्लूम बिन हल्लूहेश की ज़िम्मेदारी थी। यह आदमी ज़िले यरूशलम के दूसरे आधे हिस्से का अफ़सर था। उस की बेटियों ने उस की मदद की।

13हनून ने ज़नूह के बाशिंदों समेत वादी के दरवाज़े को तामीर किया। शहतीरों से उसे बनाकर उन्होंने किवाड़, चटख़नियाँ और कुंडे लगाए।

इसके अलावा उन्होंने फ़सील को वहाँ से कचरे के
दरवाज़े तक खड़ा किया। इस हिस्से का फ़ासला
तक़रीबन 1,500 फ़ुट यानी आधा किलोमीटर
था।

14कचरे का दरवाज़ा मलकियाह बिन रैकाब
की ज़िम्मेदारी थी। यह आदमी ज़िले बैत-करम
का अफ़सर था। उसने उसे बनाकर किवाड़,
चटख़नियाँ और कुंडे लगाए।

15चश्मे के दरवाज़े की तामीर सल्लून बिन
कुलहोज़ा के हाथ में थी जो ज़िले मिसफ़ाह का
अफ़सर था। उसने दरवाज़े पर छत बनाकर उसके
किवाड़, चटख़नियाँ और कुंडे लगा दिए। साथ
साथ उसने फ़सील के उस हिस्से की मरम्मत की
जो शाही बाग़ के पासवाले तालाब से गुज़रता है।
यह वही तालाब है जिसमें पानी नाले के ज़रीए
पहुँचता है। सल्लून ने फ़सील को उस सीढ़ी
तक तामीर किया जो यरूशलम के उस हिस्से से
उतरती है जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है।

16अगला हिस्सा नहमियाह बिन अज़बुक़ की
ज़िम्मेदारी थी जो ज़िले बैत-सूर के आधे हिस्से
का अफ़सर था। फ़सील का यह हिस्सा दाऊद
बादशाह के क़ब्रिस्तान के मुक़ाबिल था और
मसनूई तालाब और सूरमाओं के कमरों पर ख़त्म
हुआ।

17ज़ैल के लावियों ने अगले हिस्सों को खड़ा
किया : पहले रहूम बिन बानी का हिस्सा था।

ज़िले क़ईला के आधे हिस्से के अफ़सर
हसबियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की।

18अगले हिस्से को लावियों ने बिन्नूई बिन
हनदाद के ज़ेरे-निगरानी खड़ा किया जो ज़िले
क़ईला के दूसरे आधे हिस्से पर मुक़र्रर था।

19अगला हिस्सा मिसफ़ाह के सरदार अज़र
बिन यशुअ की ज़िम्मेदारी थी। यह हिस्सा फ़सील
के उस मोड़ पर था जहाँ रास्ता असलाख़ाने की
तरफ़ चढ़ता है।

20अगले हिस्से को बारूक बिन ज़ब्बी ने बड़ी
मेहनत से तामीर किया। यह हिस्सा फ़सील के
मोड़ से शुरू होकर इमामे-आज़म इलियासिब के
घर के दरवाज़े पर ख़त्म हुआ।

21अगला हिस्सा मरीमोत बिन ऊरियाह बिन
हक़्क़ूज़ की ज़िम्मेदारी थी और इलियासिब के
घर के दरवाज़े से शुरू होकर उसके कोने पर ख़त्म
हुआ।

22ज़ैल के हिस्से उन इमामों ने तामीर किए जो
शहर के गिर्दो-नवाह में रहते थे।

23अगले हिस्से की तामीर बिनयमीन और
हस्सूब के ज़ेरे-निगरानी थी। यह हिस्सा उनके घरों
के सामने था।

अज़रियाह बिन मासियाह बिन अननियाह ने
अगले हिस्से की मरम्मत की। यह हिस्सा उसके
घर के पास ही था।

24अगला हिस्सा बिन्नूई बिन हनदाद की
ज़िम्मेदारी थी। यह अज़रियाह के घर से शुरू हुआ
और मुड़ते मुड़ते कोने पर ख़त्म हुआ।

25अगला हिस्सा फ़ालाल बिन ऊज़ी की
ज़िम्मेदारी थी। यह हिस्सा मोड़ से शुरू हुआ,
और ऊपर का जो बुर्ज शाही महल से उस जगह
निकलता है जहाँ मुहाफ़िज़ों का सहन है वह भी
इसमें शामिल था।

अगला हिस्सा फ़िदायाह बिन परऊस 26और
ओफ़ल पहाड़ी पर रहनेवाले रब के घर के
ख़िदमतगारों के ज़िम्मे था। यह हिस्सा पानी के
दरवाज़े और वहाँ से निकले हुए बुर्ज पर ख़त्म
हुआ।

27अगला हिस्सा इस बुर्ज से लेकर ओफ़ल
पहाड़ी की दीवार तक था। तक़ुअ के बाशिंदों ने
उसे तामीर किया।

28घोड़े के दरवाज़े से आगे इमामों ने फ़सील
की मरम्मत की। हर एक ने अपने घर के सामने
का हिस्सा खड़ा किया।

29उनके बाद सदोक़ बिन इम्मेर का हिस्सा
आया। यह भी उसके घर के मुक़ाबिल था।

अगला हिस्सा समायाह बिन सकनियाह ने
खड़ा किया। यह आदमी मशरिक़ी दरवाज़े का
पहरेदार था।

30अगला हिस्सा हननियाह बिन सलमि-
याह और सलफ़ के छटे बेटे हनून के ज़िम्मे था।
अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन बरकियाह ने
तामीर किया जो उसके घर के मुक़ाबिल था।
31एक सुनार बनाम मलकियाह ने अगले हिस्से
की मरम्मत की। यह हिस्सा रब के घर के
ख़िदमतगारों और ताजिरों के उस मकान पर ख़त्म
हुआ जो पहरे के दरवाज़े के सामने था। फ़सील
के कोने पर वाक़े बालाखाना भी इसमें शामिल
था।
32आख़िरी हिस्सा भेड़ के दरवाज़े पर ख़त्म
हुआ। सुनारों और ताजिरों ने उसे खड़ा किया।

संबल्लत यहूदियों का मज़ाक़ उड़ाता है

4 जब संबल्लत को पता चला कि हम
फ़सील को दुबारा तामीर कर रहे हैं तो वह
आग-बगूला हो गया। हमारा मज़ाक़ उड़ा उड़ाकर
2उसने अपने हमख़िदमत अफ़सरों और सामरिया
के फ़ौजियों की मौजूदगी में कहा, "यह ज़ईफ़
यहूदी क्या कर रहे हैं? क्या यह वाक़ई यरूशलम
की क़िलाबंदी करना चाहते हैं? क्या यह समझते
हैं कि चंद एक क़ुरबानियाँ पेश करके हम फ़सील
को आज ही खड़ा करेंगे? वह इन जले हुए पत्थरों
और मलबे के इस ढेर से किस तरह नई दीवार बना
सकते हैं?" 3अम्मोनी अफ़सर तूबियाह उसके
साथ खड़ा था। वह बोला, "उन्हें करने दो! दीवार
इतनी कमज़ोर होगी कि अगर लोमड़ी भी उस पर
छलाँग लगाए तो गिर जाएगी।"
4ऐ हमारे ख़ुदा, हमारी सुन, क्योंकि लोग हमें
हक़ीर जानते हैं। जिन बातों से उन्होंने हमें ज़लील
किया है वह उनकी ज़िल्लत का बाइस बन जाएँ।
बख़्श दे कि लोग उन्हें लूट लें और उन्हें क़ैद करके
जिलावतन कर दें। 5उनका क़ुसूर नज़रंदाज़ न कर
बल्कि उनके गुनाह तुझे याद रहें। क्योंकि उन्होंने
फ़सील को तामीर करनेवालों को ज़लील करने
से तुझे तैश दिलाया है।
6मुख़ालफ़त के बावुजूद हम फ़सील की
मरम्मत करते रहे, और होते होते पूरी दीवार की
आधी ऊँचाई खड़ी हुई, क्योंकि लोग पूरी लग्न से
काम कर रहे थे।

दुश्मन के हमलों की मुदाफ़अत

7जब संबल्लत, तूबियाह, अरबों, अम्मो-
नियों और अशदूद के बाशिंदों को इत्तला मिली
कि यरूशलम की फ़सील की तामीर में तरक़्क़ी
हो रही है बल्कि जो हिस्से अब तक खड़े न हो
सके थे वह भी बंद होने लगे हैं तो वह बड़े ग़ुस्से
में आ गए। 8सब मुत्तहिद होकर यरूशलम पर
हमला करने और उसमें गड़बड़ पैदा करने की
साज़िशें करने लगे। 9लेकिन हमने अपने ख़ुदा से
इलतमास करके पहरेदार लगाए जो हमें दिन-रात
उनसे बचाए रखें।
10उस वक़्त यहूदाह के लोग कराहने लगे,
"मज़दूरों की ताक़त ख़त्म हो रही है, और अभी
तक मलबे के बड़े ढेर बाक़ी हैं। फ़सील को बनाना
हमारे बस की बात नहीं है।"
11दूसरी तरफ़ दुश्मन कह रहे थे, "हम
अचानक उन पर टूट पड़ेंगे। उनको उस वक़्त पता
चलेगा जब हम उनके बीच में होंगे। तब हम उन्हें
मार देंगे और काम रुक जाएगा।"
12जो यहूदी उनके क़रीब रहते थे वह बार बार
हमारे पास आकर हमें इत्तला देते रहे, "दुश्मन
चारों तरफ़ से आप पर हमला करने के लिए तैयार
खड़ा है।"
13तब मैंने लोगों को फ़सील के पीछे एक जगह
खड़ा कर दिया जहाँ दीवार सबसे नीची थी, और
वह तलवारों, नेज़ों और कमानों से लैस अपने
ख़ानदानों के मुताबिक़ खुले मैदान में खड़े हो गए।
14लोगों का जायज़ा लेकर मैं खड़ा हुआ और
कहने लगा, "उनसे मत डरें! रब को याद करें
जो अज़ीम और महीब है। ज़हन में रखें कि हम
अपने भाइयों, बेटों बेटियों, बीवियों और घरों के
लिए लड़ रहे हैं।"
15जब हमारे दुश्मनों को मालूम हुआ कि उनकी
साज़िशों की ख़बर हम तक पहुँच गई है और
कि अल्लाह ने उनके मनसूबे को नाकाम होने

दिया तो हम सब अपनी अपनी जगह पर दुबारा
तामीर के काम में लग गए। 16लेकिन उस दिन से
मेरे जवानों का सिर्फ़ आधा हिस्सा तामीरी काम
में लगा रहा। बाक़ी लोग नेज़ों, ढालों, कमानों
और ज़िरा-बकतर से लैस पहरा देते रहे। अफ़सर
यहूदाह के उन तमाम लोगों के पीछे खड़े रहे 17जो
दीवार को तामीर कर रहे थे। सामान उठानेवाले
एक हाथ से हथियार पकड़े काम करते थे। 18और
जो भी दीवार को खड़ा कर रहा था उस की
तलवार कमर में बँधी रहती थी। जिस आदमी
को तुरम बजाकर ख़तरे का एलान करना था वह
हमेशा मेरे साथ रहा। 19मैंने शुरफ़ा, बुज़ुर्गों और
बाक़ी लोगों से कहा, "यह काम बहुत ही बड़ा और
वसी है, इसलिए हम एक दूसरे से दूर और बिखरे
हुए काम कर रहे हैं। 20ज्योंही आपको तुरम की
आवाज़ सुनाई दे तो भागकर आवाज़ की तरफ़
चले आएँ। हमारा ख़ुदा हमारे लिए लड़ेगा!"

21हम पौ फटने से लेकर उस वक़्त तक काम में
मसरूफ़ रहते जब तक सितारे नज़र न आते, और
हर वक़्त आदमियों का आधा हिस्सा नेज़े पकड़े
पहरा देता था। 22उस वक़्त मैंने सबको यह हुक्म
भी दिया, "हर आदमी अपने मददगारों के साथ
रात का वक़्त यरूशलम में गुज़ारे। फिर आप रात
के वक़्त पहरादारी में भी मदद करेंगे और दिन के
वक़्त तामीरी काम में भी।" 23उन तमाम दिनों
के दौरान न मैं, न मेरे भाइयों, न मेरे जवानों और
न मेरे पहरेदारों ने कभी अपने कपड़े उतारे। नीज़,
हर एक अपना हथियार पकड़े रहा।

ग़रीबों का क़र्ज़ा मनसूख़

5 कुछ देर बाद कुछ मर्दो-ख़वातीन मेरे पास
आकर अपने यहूदी भाइयों की शिकायत
करने लगे। 2बाज़ ने कहा, "हमारे बहुत ज़्यादा
बेटे-बेटियाँ हैं, इसलिए हमें मज़ीद अनाज मिलना
चाहिए, वरना हम ज़िंदा नहीं रहेंगे।" 3दूसरों ने
शिकायत की, "काल के दौरान हमें अपने खेतों,
अंगूर के बाग़ों और घरों को गिरवी रखना पड़ा
ताकि अनाज मिल जाए।" 4कुछ और बोले, "हमें
अपने खेतों और अंगूर के बाग़ों पर बादशाह का
टैक्स अदा करने के लिए उधार लेना पड़ा। 5हम
भी दूसरों की तरह यहूदी क़ौम के हैं, और हमारे
बच्चे उनसे कम हैसियत नहीं रखते। तो भी हमें
अपने बच्चों को ग़ुलामी में बेचना पड़ता है ताकि
गुज़ारा हो सके। हमारी कुछ बेटियाँ लौंडियाँ बन
चुकी हैं। लेकिन हम ख़ुद बेबस हैं, क्योंकि हमारे
खेत और अंगूर के बाग़ दूसरों के क़ब्ज़े में हैं।"

6उनका वावैला और शिकायतें सुनकर मुझे
बड़ा ग़ुस्सा आया। 7बहुत सोच-बिचार के बाद
मैंने शुरफ़ा और अफ़सरों पर इलज़ाम लगाया,
"आप अपने हमवतन भाइयों से ग़ैरमुनासिब सूद
ले रहे हैं!" मैंने उनसे निपटने के लिए एक
बड़ी जमात इकट्ठी करके 8कहा, "हमारे कई
हमवतन भाइयों को ग़ैरयहूदियों को बेचा गया था।
जहाँ तक मुमकिन था हमने उन्हें वापस ख़रीदकर
आज़ाद करने की कोशिश की। और अब आप
ख़ुद अपने हमवतन भाइयों को बेच रहे हैं। क्या
हम अब उन्हें दुबारा वापस ख़रीदें?" वह ख़ामोश
रहे और कोई जवाब न दे सके।

9मैंने बात जारी रखी, "आपका यह सुलूक
ठीक नहीं। आपको हमारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर
ज़िंदगी गुज़ारना चाहिए ताकि हम अपने ग़ैरयहूदी
दुश्मनों की लान-तान का निशाना न बनें। 10मैं,
मेरे भाइयों और मुलाज़िमों ने भी दूसरों को उधार
के तौर पर पैसे और अनाज दिया है। लेकिन आएँ,
हम उनसे सूद न लें! 11आज ही अपने क़र्ज़दारों
को उनके खेत, घर और अंगूर और ज़ैतून के
बाग़ वापस कर दें। जितना सूद आपने लगाया
था उसे भी वापस कर दें, ख़ाह उसे पैसों, अनाज,
ताज़ा मै या ज़ैतून के तेल की सूरत में अदा करना
हो।" 12उन्होंने जवाब दिया, "हम उसे वापस कर
देंगे और आइंदा उनसे कुछ नहीं माँगेंगे। जो कुछ
आपने कहा वह हम करेंगे।"

तब मैंने इमामों को अपने पास बुलाया ताकि
शुरफ़ा और बुज़ुर्ग उनकी मौजूदगी में क़सम खाएँ
कि हम ऐसा ही करेंगे। 13फिर मैंने अपने लिबास
की तहें झाड़ झाड़कर कहा, "जो भी अपनी

क़सम तोड़े उसे अल्लाह इसी तरह झाड़कर उसके
घर और मिलकियत से महरूम कर दे!”
तमाम जमाशुदा लोग बोले, “आमीन, ऐसा ही
हो!” और रब की तारीफ़ करने लगे। सबने अपने
वादे पूरे किए।

नहमियाह का अच्छा नमूना

14मैं कुल बारह साल सूबा यहूदाह का गवर्नर
रहा यानी अर्तख़शस्ता बादशाह की हुकूमत के
20वें साल से उसके 32वें साल तक। इस पूरे
अरसे में न मैंने और न मेरे भाइयों ने वह आमदनी
ली जो हमारे लिए मुक़र्रर की गई थी। 15असल
में माज़ी के गवर्नरों ने क़ौम पर बड़ा बोझ डाल
दिया था। उन्होंने रिआया से न सिर्फ़ रोटी और
मै बल्कि फ़ी दिन चाँदी के 40 सिक्के भी लिए
थे। उनके अफ़सरों ने भी आम लोगों से ग़लत
फ़ायदा उठाया था। लेकिन चूँकि मैं अल्लाह का
ख़ौफ़ मानता था, इसलिए मैंने उनसे ऐसा सुलूक
न किया। 16मेरी पूरी ताक़त फ़सील की तकमील
में सर्फ़ हुई, और मेरे तमाम मुलाज़िम भी इस
काम में शरीक रहे। हममें से किसी ने भी ज़मीन
न ख़रीदी। 17मैंने कुछ न माँगा हालाँकि मुझे
रोज़ाना यहूदाह के 150 अफ़सरों की मेहमान-
नवाज़ी करनी पड़ती थी। उनमें वह तमाम मेहमान
शामिल नहीं हैं जो गाहे बगाहे पड़ोसी ममालिक से
आते रहे। 18रोज़ाना एक बैल, छः बेहतरीन भेड़-
बकरियाँ और बहुत-से परिंदे मेरे लिए ज़बह करके
तैयार किए जाते, और दस दस दिन के बाद हमें
कई क़िस्म की बहुत-सी मै ख़रीदनी पड़ती थी।
इन अख़राजात के बावुजूद मैंने गवर्नर के लिए
मुक़र्ररा वज़ीफ़ा न माँगा, क्योंकि क़ौम पर बोझ
वैसे भी बहुत ज़्यादा था।
19ऐ मेरे ख़ुदा, जो कुछ मैंने इस क़ौम के लिए
किया है उसके बाइस मुझ पर मेहरबानी कर।

नहमियाह के ख़िलाफ़ साज़िश

6 संबल्लत, तूबियाह, जशम अरबी और
हमारे बाक़ी दुश्मनों को पता चला कि मैंने
फ़सील को तकमील तक पहुँचाया है और दीवार
में कहीं भी ख़ाली जगह नज़र नहीं आती। सिर्फ़
दरवाज़ों के किवाड़ अब तक लगाए नहीं गए थे।
2तब संबल्लत और जशम ने मुझे पैग़ाम भेजा,
“हम वादीए-ओनू के शहर कफ़ीरीम में आपसे
मिलना चाहते हैं।” लेकिन मुझे मालूम था कि वह
मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं। 3इसलिए मैंने
क़ासिदों के हाथ जवाब भेजा, “मैं इस वक़्त एक
बड़ा काम तकमील तक पहुँचा रहा हूँ, इसलिए मैं
आ नहीं सकता। अगर मैं आपसे मिलने आऊँ तो
पूरा काम रुक जाएगा।”
4चार दफ़ा उन्होंने मुझे यही पैग़ाम भेजा और
हर बार मैंने वही जवाब दिया। 5पाँचवें मरतबा जब
संबल्लत ने अपने मुलाज़िम को मेरे पास भेजा तो
उसके हाथ में एक खुला ख़त था। 6ख़त में लिखा
था, “पड़ोसी ममालिक में अफ़वाह फैल गई है
कि आप और बाक़ी यहूदी बग़ावत की तैयारियाँ
कर रहे हैं। जशम ने इस बात की तसदीक़ की
है। लोग कहते हैं कि इसी वजह से आप फ़सील
बना रहे हैं। इन रिपोर्टों के मुताबिक़ आप उनके
बादशाह बनेंगे। 7कहा जाता है कि आपने नबियों
को मुक़र्रर किया है जो यरूशलम में एलान करें कि
आप यहूदाह के बादशाह हैं। बेशक ऐसी अफ़वाहें
शहनशाह तक भी पहुँचेंगी। इसलिए आएँ, हम
मिलकर एक दूसरे से मशवरा करें कि क्या करना
चाहिए।”
8मैंने उसे जवाब भेजा, “जो कुछ आप कह रहे
हैं वह झूट ही झूट है। कुछ नहीं हो रहा, बल्कि
आपने फ़रज़ी कहानी घड़ ली है!” 9असल में
दुश्मन हमें डराना चाहते थे। उन्होंने सोचा, “अगर
हम ऐसी बातें कहें तो वह हिम्मत हारकर काम से
बाज़ आएँगे।” लेकिन अब मैंने ज़्यादा अज़म के
साथ काम जारी रखा।
10एक दिन मैं समायाह बिन दिलायाह बिन
महेतबेल से मिलने गया जो ताला लगाकर घर में
बैठा था। उसने मुझसे कहा, “आएँ, हम अल्लाह
के घर में जमा हो जाएँ और दरवाज़ों को अपने

पीछे बंद करके कुंडी लगाएँ। क्योंकि लोग इसी
रात आपको क़त्ल करने के लिए आएँगे।”
11मैंने एतराज़ किया, “क्या यह ठीक है कि
मुझ जैसा आदमी भाग जाए? या क्या मुझ जैसा
शख़्स जो इमाम नहीं है रब के घर में दाख़िल होकर
ज़िंदा रह सकता है? हरगिज़ नहीं! मैं ऐसा नहीं
करूँगा!” 12मैंने जान लिया कि समायाह की यह
बात अल्लाह की तरफ़ से नहीं है। संबल्लत और
तूबियाह ने उसे रिश्वत दी थी, इसी लिए उसने मेरे
बारे में ऐसी पेशगोई की थी। 13इससे वह मुझे
डराकर गुनाह करने पर उकसाना चाहते थे ताकि
वह मेरी बदनामी करके मुझे मज़ाक़ का निशाना
बना सकें।
14ऐ मेरे ख़ुदा, तूबियाह और संबल्लत की यह
बुरी हरकतें मत भूलना! नौअदियाह नबिया और
बाक़ी उन नबियों को याद रख जिन्होंने मुझे डराने
की कोशिश की है।

फ़सील की तकमील

15फ़सील इलूल के महीने के 25वें दिन[a] यानी
52 दिनों में मुकम्मल हुई। 16जब हमारे दुश्मनों
को यह ख़बर मिली तो पड़ोसी ममालिक सहम
गए, और वह एहसासे-कमतरी का शिकार हो
गए। उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने ख़ुद यह
काम तकमील तक पहुँचाया है।
17उन 52 दिनों के दौरान यहूदाह के शुरफ़ा
तूबियाह को ख़त भेजते रहे और उससे जवाब
मिलते रहे थे। 18असल में यहूदाह के बहुत-से
लोगों ने क़सम खाकर उस की मदद करने का
वादा किया था। वजह यह थी कि वह सकनियाह
बिन अरख़ का दामाद था, और उसके बेटे यूहनान
की शादी मसुल्लाम बिन बरकियाह की बेटी से हुई
थी। 19तूबियाह के यह मददगार मेरे सामने उसके
नेक कामों की तारीफ़ करते रहे और साथ साथ
मेरी हर बात उसे बताते रहे। फिर तूबियाह मुझे
ख़त भेजता ताकि मैं डरकर काम से बाज़ आऊँ।

7 फ़सील की तकमील पर मैंने दरवाज़ों
के किवाड़ लगवाए। फिर रब के घर के
दरबान, गुलूकार और ख़िदमतगुज़ार लावी मुक़र्रर
किए गए। 2मैंने दो आदमियों को यरूशलम के
हुक्मरान बनाया। एक मेरा भाई हनानी और दूसरा
क़िले का कमाँडर हननियाह था। हननियाह को
मैंने इसलिए चुन लिया कि वह वफ़ादार था और
अकसर लोगों की निसबत अल्लाह का ज़्यादा
ख़ौफ़ मानता था। 3मैंने दोनों से कहा, “यरूशलम
के दरवाज़े दोपहर के वक़्त जब धूप की शिद्दत है
खुले न रहें, और पहरा देते वक़्त भी उन्हें बंद करके
कुंडे लगाएँ। यरूशलम के आदमियों को पहरादारी
के लिए मुक़र्रर करें जिनमें से कुछ फ़सील पर
और कुछ अपने घरों के सामने ही पहरा दें।”

जिलावतनी से वापस आए हुओं की फ़हरिस्त

4गो यरूशलम शहर बड़ा और वसी था, लेकिन
उसमें आबादी थोड़ी थी। ढाए गए मकान अब तक
दुबारा तामीर नहीं हुए थे। 5चुनाँचे मेरे ख़ुदा ने मेरे
दिल को शुरफ़ा, अफ़सरों और अवाम को इकट्ठा
करने की तहरीक दी ताकि ख़ानदानों की रजिस्ट्री
तैयार करूँ। इस सिलसिले में मुझे एक किताब
मिल गई जिसमें उन लोगों की फ़हरिस्त दर्ज थी
जो हमसे पहले जिलावतनी से वापस आए थे।
उसमें लिखा था,
6“ज़ैल में यहूदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त
है जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का
बादशाह नबूकदनज़्ज़र उन्हें क़ैद करके बाबल ले
गया था, लेकिन अब वह यरूशलम और यहूदाह
के उन शहरों में फिर जा बसे जहाँ पहले रहते थे।
7उनके राहनुमा ज़रुब्बाबल, यशुअ, नह-
मियाह, अज़रियाह, रामियाह, नहमानी, मर्दकी,
बिलशान, मिस्फ़रत, बिगवई, नहूम और बाना थे।

[a] 2 अक्तूबर।

ज़ैल की फ़हरिस्त में वापस आए हुए ख़ानदानों के मर्द बयान किए गए हैं।

8परऊस का ख़ानदान : 2,172,

9सफ़तियाह का ख़ानदान : 372,

10अरख़ का ख़ानदान : 652,

11पख़त-मोआब का ख़ानदान यानी यशुअ और योआब की औलाद : 2,818,

12ऐलाम का ख़ानदान : 1,254,

13ज़त्तू का ख़ानदान : 845,

14ज़क्की का ख़ानदान : 760,

15बिन्नूई का ख़ानदान : 648,

16बबी का ख़ानदान : 628,

17अज़जाद का ख़ानदान : 2,322,

18अदूनिक़ाम का ख़ानदान : 667,

19बिगवई का ख़ानदान : 2,067,

20अदीन का ख़ानदान : 655,

21अतीर का ख़ानदान यानी हिज़क़ियाह की औलाद : 98,

22हाशूम का ख़ानदान : 328,

23बज़ी का ख़ानदान : 324,

24ख़ारिफ़ का ख़ानदान : 112,

25जिबऊन का ख़ानदान : 95,

26बैत-लहम और नतूफ़ा के बाशिंदे : 188,

27अनतोत के बाशिंदे : 128,

28बैत-अज़मावत के बाशिंदे : 42,

29क़िरियत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के बाशिंदे : 743,

30रामा और जिबा के बाशिंदे : 621,

31मिकमास के बाशिंदे : 122,

32बैतेल और अई के बाशिंदे : 123,

33दूसरे नबू के बाशिंदे : 52,

34दूसरे ऐलाम के बाशिंदे : 1,254,

35हारिम के बाशिंदे : 320,

36यरीहू के बाशिंदे : 345,

37लूद, हादीद और ओनू के बाशिंदे : 721,

38सनाआह के बाशिंदे : 3,930।

39ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।

यदायाह का ख़ानदान जो यशुअ की नसल का था : 973,

40इम्मेर का ख़ानदान : 1,052,

41फ़शहूर का ख़ानदान : 1,247,

42हारिम का ख़ानदान : 1,017।

43ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए।

यशुअ और क़दमियेल का ख़ानदान यानी हूदावियाह की औलाद : 74,

44गुलूकार : आसफ़ के ख़ानदान के 148 आदमी,

45रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर, तलमून, अक़्क़ूब, ख़तीता और सोबी के ख़ानदानों के 138 आदमी।

46रब के घर के ख़िदमतगारों के दर्जे-ज़ैल ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।

ज़ीहा, हसूफ़ा, तब्बाओत, 47क़रूस, सिया,
फ़दून, 48लिबाना, हजाबा, शलमी, 49हनान,
जिद्देल, जहर, 50रियायाह, रज़ीन, नक़ूदा,
51जज़्ज़ाम, उज़्ज़ा, फ़ासिह, 52बसी, मऊनीम,
नफ़ूसीम, 53बक़बूक़, हक़ूफ़ा, हरहूर, 54बज़लूत,
महीदा, हर्शा, 55बरक़ूस, सीसरा, तामह,
56नज़ियाह और ख़तीफ़ा।

57सुलेमान के ख़ादिमों के दर्जे-ज़ैल ख़ान-दान जिलावतनी से वापस आए।

सूती, सूफ़िरत, फ़रूदा, 58याला, दरक़ून,
जिद्देल, 59सफ़तियाह, ख़त्तील, फ़ूकिरत-ज़बायम और अमून।

60रब के घर के ख़िदमतगारों और सुलेमान के ख़ादिमों के ख़ानदानों में से वापस आए हुए मर्दों की तादाद 392 थी।

61-62वापस आए हुए ख़ानदानों में से दिलायाह, तूबियाह और नक़ूदा के 642 मर्द साबित न कर सके कि इसराईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हर्शा, करूब, अद्दून और इम्मेर के रहनेवाले थे।

63-64हबायाह, हक़्क़ूज़ और बरज़िल्ली के ख़ानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन

उन्हें रब के घर में ख़िदमत करने की इजाज़त न मिली। क्योंकि गो उन्होंने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए लेकिन उनका कहीं ज़िक्र न मिला, इसलिए उन्हें नापाक क़रार दिया गया। (बरज़िल्ली के ख़ानदान के बानी ने बरज़िल्ली जिलियादी की बेटी से शादी करके अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) 65यहूदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन ख़ानदानों के इमाम फ़िलहाल क़ुरबानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुक़र्रर है। जब दुबारा इमामे-आज़म मुक़र्रर किया जाए तो वही ऊरीम और तुम्मीम नामी क़ुरा डालकर मामला हल करे।

66कुल 42,360 इसराईली अपने वतन लौट आए, 67नीज़ उनके 7,337 ग़ुलाम और लौंडियाँ और 245 गुलूकार जिनमें मर्दो-ख़वातीन शामिल थे।

68इसराईलियों के पास 736 घोड़े, 245 ख़च्चर, 69435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

70कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने रब के घर की तामीरे-नौ के लिए अपनी ख़ुशी से हदिये दिए। गवर्नर ने सोने के 1,000 सिक्के, 50 कटोरे और इमामों के 530 लिबास दिए। 71कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने ख़ज़ाने में सोने के 20,000 सिक्के और चाँदी के 1,200 किलोग्राम डाल दिए। 72बाक़ी लोगों ने सोने के 20,000 सिक्के, चाँदी के 1,100 किलोग्राम और इमामों के 67 लिबास अता किए।

73इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और ख़िदमतगार, गुलूकार और अवाम के कुछ लोग अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यों तमाम इसराईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।”

अज़रा शरीअत की तिलावत करता है

सातवें महीने यानी अक्तूबर में जब इसराईली अपने अपने शहरों में दुबारा
8 आबाद हो गए थे 1तो सब लोग मिलकर पानी के दरवाज़े के चौक में जमा हो गए। उन्होंने शरीअत के आलिम अज़रा से दरख़ास्त की कि वह शरीअत ले आएँ जो रब ने मूसा की मारिफ़त इसराईली क़ौम को दे दी थी।
2चुनाँचे अज़रा ने हाज़िरीन के सामने शरीअत की तिलावत की। सातवें महीने का पहला दिन[a] था। न सिर्फ़ मर्द बल्कि औरतें और शरीअत की बातें समझने के क़ाबिल तमाम बच्चे भी जमा हुए थे।
3सुबह-सवेरे से लेकर दोपहर तक अज़रा पानी के दरवाज़े के चौक में पढ़ता रहा, और तमाम जमात ध्यान से शरीअत की बातें सुनती रही।

4अज़रा लकड़ी के एक चबूतरे पर खड़ा था जो ख़ासकर इस मौक़े के लिए बनाया गया था। उसके दाएँ हाथ मत्तितियाह, समा, अनायाह, ऊरियाह, ख़िलक़ियाह और मासियाह खड़े थे। उसके बाएँ हाथ फ़िदायाह, मीसाएल, मलकियाह, हाशूम, हस्बद्दाना, ज़करियाह और मसुल्लाम खड़े थे।

5चूँकि अज़रा ऊँची जगह पर खड़ा था इसलिए वह सबको नज़र आया। चुनाँचे जब उसने किताब को खोल दिया तो सब लोग खड़े हो गए।
6अज़रा ने रब अज़ीम ख़ुदा की सताइश की, और सबने अपने हाथ उठाकर जवाब में कहा, “आमीन, आमीन।” फिर उन्होंने झुककर रब को सिजदा किया।

7कुछ लावी हाज़िर थे जिन्होंने लोगों के लिए शरीअत की तशरीह की। उनके नाम यशुअ, बानी, सरिबियाह, यमीन, अक़्क़ूब, सब्बती, हूदियाह, मासियाह, क़लीता, अज़-रियाह, यूज़बद, हनान और फ़िलायाह थे। हाज़िरीन अब तक खड़े थे।
8शरीअत की तिलावत के साथ साथ मज़कूरा लावी क़दम

[a]8 अक्तूबर।

बक़दम उस की तशरीह यों करते गए कि लोग
उसे अच्छी तरह समझ सके।
9शरीअत की बातें सुन सुनकर वह रोने लगे।
लेकिन नहमियाह गवर्नर, शरीअत के आलिम
अज़रा इमाम और शरीअत की तशरीह करनेवाले
लावियों ने उन्हें तसल्ली देकर कहा, "उदास न
हों और मत रोएँ! आज रब आपके ख़ुदा के
लिए मख़सूसो-मुक़द्दस ईद है। 10अब जाएँ, उम्दा
खाना खाकर और पीने की मीठी चीज़ें पीकर
ख़ुशी मनाएँ। जो अपने लिए कुछ तैयार न कर
सकें उन्हें अपनी ख़ुशी में शरीक करें। यह दिन
हमारे रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। उदास न
हों, क्योंकि रब की ख़ुशी आपकी पनाहगाह है।"
11लावियों ने भी तमाम लोगों को सुकून
दिलाकर कहा, "उदास न हों, क्योंकि यह दिन
रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है।"
12फिर सब अपने अपने घर चले गए। वहाँ
उन्होंने बड़ी ख़ुशी से खा-पीकर जशन मनाया।
साथ साथ उन्होंने दूसरों को भी अपनी ख़ुशी में
शरीक किया। उनकी बड़ी ख़ुशी का सबब यह था
कि अब उन्हें उन बातों की समझ आई थी जो उन्हें
सुनाई गई थीं।

झोंपड़ियों की ईद

13अगले दिन[a] ख़ानदानी सरपरस्त, इमाम
और लावी दुबारा शरीअत के आलिम अज़रा के
पास जमा हुए ताकि शरीअत की मज़ीद तालीम
पाएँ। 14जब वह शरीअत का मुतालआ कर रहे
थे तो उन्हें पता चला कि रब ने मूसा की मारिफ़त
हुक्म दिया था कि इसराईली सातवें महीने की
ईद के दौरान झोंपड़ियों में रहें। 15चुनाँचे उन्होंने
यरूशलम और बाक़ी तमाम शहरों में एलान
किया, "पहाड़ों पर से ज़ैतून, आस,[b] खजूर और
बाक़ी सायादार दरख़्तों की शाख़ें तोड़कर अपने
घर ले जाएँ। वहाँ उनसे झोंपड़ियाँ बनाएँ, जिस
तरह शरीअत ने हिदायत दी है।"
16लोगों ने ऐसा ही किया। वह घरों से निकले
और दरख़्तों की शाख़ें तोड़कर ले आए। उनसे
उन्होंने अपने घरों की छतों पर और सहनों में
झोंपड़ियाँ बना लीं। बाज़ ने अपनी झोंपड़ियों को
रब के घर के सहनों, पानी के दरवाज़े के चौक
और इफ़राईम के दरवाज़े के चौक में भी बनाया।
17जितने भी जिलावतनी से वापस आए थे वह
सब झोंपड़ियाँ बनाकर उनमें रहने लगे। यशुअ
बिन नून के ज़माने से लेकर उस वक़्त तक यह
ईद इस तरह नहीं मनाई गई थी। सब निहायत ही
ख़ुश थे। 18ईद के हर दिन अज़रा ने अल्लाह की
शरीअत की तिलावत की। सात दिन इसराईलियों
ने ईद मनाई, और आठवें दिन सब लोग इजतिमा
के लिए इकट्ठे हुए, बिलकुल उन हिदायात के
मुताबिक़ जो शरीअत में दी गई हैं।

इसराईली अपने गुनाहों का इक़रार करते हैं

9 उसी महीने के 24वें दिन[c] इसराईली
रोज़ा रखने के लिए जमा हुए। टाट के
लिबास पहने हुए और सर पर ख़ाक डालकर
वह यरूशलम आए। 2अब वह तमाम ग़ैरयहूदियों
से अलग होकर उन गुनाहों का इक़रार करने के
लिए हाज़िर हुए जो उनसे और उनके बापदादा से
सरज़द हुए थे। 3तीन घंटे वह खड़े रहे, और उस
दौरान रब उनके ख़ुदा की शरीअत की तिलावत
की गई। फिर वह रब अपने ख़ुदा के सामने मुँह
के बल झुककर मज़ीद तीन घंटे अपने गुनाहों का
इक़रार करते रहे।
4यशुअ, बानी, क़दमियेल, सबनियाह, बुन्नी,
सरिबियाह, बानी और कनानी जो लावी थे एक
चबूतरे पर खड़े हुए और बुलंद आवाज़ से रब अपने
ख़ुदा से दुआ की।
5फिर यशुअ, क़दमियेल, बानी, हसब्नि-
याह, सरिबियाह, हूदियाह, सबनियाह और
फ़तहियाह जो लावी थे बोल उठे, "खड़े होकर

[a] 9 अक्तूबर।
[b] myrtle।
[c] 31 अक्तूबर।

रब अपने ख़ुदा की जो अज़ल से अबद तक है
सताइश करें!”
उन्होंने दुआ की,
“तेरे जलाली नाम की तमजीद हो, जो हर
मुबारकबादी और तारीफ़ से कहीं बढ़कर है। 6ऐ
रब, तू ही वाहिद ख़ुदा है! तूने आसमान को
एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसके लशकर समेत
ख़लक़ किया। ज़मीन और जो कुछ उस पर है,
समुंदर और जो कुछ उसमें है सब कुछ तू ही
ने बनाया है। तूने सबको ज़िंदगी बख़्शी है, और
आसमानी लशकर तुझे सिजदा करता है।

7तू ही रब और वह ख़ुदा है जिसने अब्राम
को चुन लिया और कसदियों के शहर ऊर से
बाहर लाकर इब्राहीम का नाम रखा। 8तूने उसका
दिल वफ़ादार पाया और उससे अहद बाँधकर
वादा किया, ‘मैं तेरी औलाद को कनानियों,
हित्तियों, अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों, यबूसियों और
जिरजासियों का मुल्क अता करूँगा।’ और तू
अपने वादे पर पूरा उतरा, क्योंकि तू क़ाबिले-
एतमाद और आदिल है।

9तूने हमारे बापदादा के मिसर में बुरे हाल
पर ध्यान दिया, और बहरे-क़ुलज़ुम के किनारे
पर मदद के लिए उनकी चीख़ें सुनीं। 10तूने
इलाही निशानों और मोजिज़ों से फ़िरौन, उसके
अफ़सरों और उसके मुल्क की क़ौम को सज़ा दी,
क्योंकि तू जानता था कि मिसरी हमारे बापदादा
से कैसा गुस्ताखाना सुलूक करते रहे हैं। यों तेरा
नाम मशहूर हुआ और आज तक याद रहा है।
11क़ौम के देखते देखते तूने समुंदर को दो हिस्सों
में तक़सीम कर दिया, और वह ख़ुश्क ज़मीन
पर चलकर उसमें से गुज़र सके। लेकिन उनका
ताक़्क़ुब करनेवालों को तूने मुतलातिम पानी में
फेंक दिया, और वह पत्थरों की तरह समुंदर की
गहराइयों में डूब गए।

12दिन के वक़्त तूने बादल के सतून से और
रात के वक़्त आग के सतून से अपनी क़ौम की
राहनुमाई की। यों वह रास्ता अंधेरे में भी रौशन
रहा जिस पर उन्हें चलना था। 13तू कोहे-सीना
पर उतर आया और आसमान से उनसे हमकलाम
हुआ। तूने उन्हें साफ़ हिदायात और क़ाबिले-
एतमाद अहकाम दिए, ऐसे क़वायद जो अच्छे
हैं। 14तूने उन्हें सबत के दिन के बारे में आगाह
किया, उस दिन के बारे में जो तेरे लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस है। अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त तूने
उन्हें अहकाम और हिदायात दीं। 15जब वह भूके
थे तो तूने उन्हें आसमान से रोटी खिलाई, और
जब प्यासे थे तो तूने उन्हें चट्टान से पानी पिलाया।
तूने हुक्म दिया, ‘जाओ, मुल्क में दाख़िल होकर
उस पर क़ब्ज़ा कर लो, क्योंकि मैंने हाथ उठाकर
क़सम खाई है कि तुम्हें यह मुल्क दूँगा।’

16अफ़सोस, हमारे बापदादा मग़रूर और ज़िद्दी
हो गए। वह तेरे अहकाम के ताबे न रहे। 17उन्होंने
तेरी सुनने से इनकार किया और वह मोजिज़ात
याद न रखे जो तूने उनके दरमियान किए थे। वह
यहाँ तक अड़ गए कि उन्होंने एक राहनुमा को
मुक़र्रर किया जो उन्हें मिसर की ग़ुलामी में वापस
ले जाए। लेकिन तू मुआफ़ करनेवाला ख़ुदा है जो
मेहरबान और रहीम, तहम्मुल और शफ़क़त से
भरपूर है। तूने उन्हें तर्क न किया, 18उस वक़्त
भी नहीं जब उन्होंने अपने लिए सोने का बछड़ा
ढालकर कहा, ‘यह तेरा ख़ुदा है जो तुझे मिसर
से निकाल लाया।’ इस क़िस्म का संजीदा कुफ़र
वह बकते रहे। 19लेकिन तू बहुत रहमदिल है,
इसलिए तूने उन्हें रेगिस्तान में न छोड़ा। दिन के
वक़्त बादल का सतून उनकी राहनुमाई करता
रहा, और रात के वक़्त आग का सतून वह रास्ता
रौशन करता रहा जिस पर उन्हें चलना था। 20न
सिर्फ़ यह बल्कि तूने उन्हें अपना नेक रूह अता
किया जो उन्हें तालीम दे। जब उन्हें भूक और
प्यास थी तो तू उन्हें मन खिलाने और पानी पिलाने
से बाज़ न आया। 21चालीस साल वह रेगिस्तान

में फिरते रहे, और उस पूरे अरसे में तू उनकी
ज़रूरियात को पूरा करता रहा। उन्हें कोई भी कमी
नहीं थी। न उनके कपड़े घिसकर फटे और न उनके
पाँव सूजे।

22तूने ममालिक और क़ौमें उनके हवाले कर
दीं, मुख़्तलिफ़ इलाक़े यके बाद दीगरे उनके क़ब्ज़े
में आए। यों वह सीहोन बादशाह के मुल्क हसबोन
और ओज बादशाह के मुल्क बसन पर फ़तह पा
सके। 23उनकी औलाद तेरी मरज़ी से आसमान
पर के सितारों जैसी बेशुमार हुई, और तू उन्हें उस
मुल्क में लाया जिसका वादा तूने उनके बापदादा
से किया था। 24वह मुल्क में दाख़िल होकर उसके
मालिक बन गए। तूने कनान के बाशिंदों को उनके
आगे आगे ज़ेर कर दिया। मुल्क के बादशाह और
क़ौमें उनके क़ब्ज़े में आ गईं, और वह अपनी
मरज़ी के मुताबिक़ उनसे निपट सके। 25क़िलाबंद
शहर और ज़रख़ेज़ ज़मीनें तेरी क़ौम के क़ाबू में आ
गईं, नीज़ हर क़िस्म की अच्छी चीज़ों से भरे घर,
तैयारशुदा हौज़, अंगूर के बाग़ और कसरत के
ज़ैतून और दीगर फलदार दरख़्त। वह जी भरकर
खाना खाकर मोटे हो गए और तेरी बरकतों से
लुत्फ़अंदोज़ होते रहे।

26इसके बावुजूद वह ताबे न रहे बल्कि सरकश
हुए। उन्होंने अपना मुँह तेरी शरीअत से फेर लिया।
और जब तेरे नबी उन्हें समझा समझाकर तेरे
पास वापस लाना चाहते थे तो उन्होंने बड़े कुफ़्र
बककर उन्हें क़त्ल कर दिया। 27यह देखकर तूने
उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दिया जो उन्हें
तंग करते रहे। जब वह मुसीबत में फँस गए
तो वह चीख़ें मार मारकर तुझसे फ़रियाद करने
लगे। और तूने आसमान पर से उनकी सुनी। बड़ा
तरस खाकर तूने उनके पास ऐसे लोगों को भेज
दिया जिन्होंने उन्हें दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया।
28लेकिन ज्योंही इसराईलियों को सुकून मिलता
वह दुबारा ऐसी हरकतें करने लगते जो तुझे
नापसंद थीं। नतीजे में तू उन्हें दुबारा उनके दुश्मनों
के हाथ में छोड़ देता। जब वह उनकी हुकूमत के
तहत पिसने लगते तो वह एक बार फिर चिल्ला
चिल्लाकर तुझसे इलतमास करने लगते। इस बार
भी तू आसमान पर से उनकी सुनता। हाँ, तू इतना
रहमदिल है कि तू उन्हें बार बार छुटकारा देता रहा!
29तू उन्हें समझाता रहा ताकि वह दुबारा तेरी
शरीअत की तरफ़ रुजू करें, लेकिन वह मग़रूर
थे और तेरे अहकाम के ताबे न हुए। उन्होंने तेरी
हिदायात की ख़िलाफ़वरज़ी की, हालाँकि इन्हीं
पर चलने से इनसान को ज़िंदगी हासिल होती
है। लेकिन उन्होंने परवा न की बल्कि अपना मुँह
तुझसे फेरकर अड़ गए और सुनने के लिए तैयार
न हुए।

30उनकी हरकतों के बावुजूद तू बहुत सालों
तक सब्र करता रहा। तेरा रूह उन्हें नबियों के
ज़रीए समझाता रहा, लेकिन उन्होंने ध्यान न
दिया। तब तूने उन्हें ग़ैरक़ौमों के हवाले कर दिया।
31ताहम तेरा रहम से भरा दिल उन्हें तर्क करके
तबाह नहीं करना चाहता था। तू कितना मेहरबान
और रहीम ख़ुदा है!

32ऐ हमारे ख़ुदा, ऐ अज़ीम, क़वी और महीब
ख़ुदा जो अपना अहद और अपनी शफ़क़त क़ायम
रखता है, इस वक़्त हमारी मुसीबत पर ध्यान दे
और उसे कम न समझ! क्योंकि हमारे बादशाह,
बुज़ुर्ग, इमाम और नबी बल्कि हमारे बापदादा और
पूरी क़ौम असूरी बादशाहों के पहले हमलों से
लेकर आज तक सख़्त मुसीबत बरदाश्त करते
रहे हैं। 33हक़ीक़त तो यह है कि जो भी मुसीबत
हम पर आई है उसमें तू रास्त साबित हुआ है।
तू वफ़ादार रहा है, गो हम क़ुसूरवार ठहरे हैं।
34हमारे बादशाह और बुज़ुर्ग, हमारे इमाम और
बापदादा, उन सबने तेरी शरीअत की पैरवी न
की। जो अहकाम और तंबीह तूने उन्हें दी उस
पर उन्होंने ध्यान ही न दिया। 35तूने उन्हें उनकी
अपनी बादशाही, कसरत की अच्छी चीज़ों और
एक वसी और ज़रख़ेज़ मुल्क से नवाज़ा था। तो

भी वह तेरी ख़िदमत करने के लिए तैयार न थे और अपनी ग़लत राहों से बाज़ न आए।

36इसका अंजाम यह हुआ है कि आज हम उस मुल्क में ग़ुलाम हैं जो तूने हमारे बापदादा को अता किया था ताकि वह उस की पैदावार और दौलत से लुत्फ़अंदोज़ हो जाएँ। 37मुल्क की वाफ़िर पैदावार उन बादशाहों तक पहुँचती है जिन्हें तूने हमारे गुनाहों की वजह से हम पर मुक़र्रर किया है। अब वही हम पर और हमारे मवेशियों पर हुकूमत करते हैं। उन्हीं की मरज़ी चलती है। चुनाँचे हम बड़ी मुसीबत में फँसे हैं।

क़ौम का अहदनामा

38यह तमाम बातें मद्दे-नज़र रखकर हम अहद बाँधकर उसे क़लमबंद कर रहे हैं। हमारे बुज़ुर्ग, लावी और इमाम दस्तख़त करके अहदनामे पर मुहर लगा रहे हैं।”

10 ज़ैल के लोगों ने दस्तख़त किए।
गवर्नर नहमियाह बिन हकलियाह, सिदक़ियाह, 2सिरायाह, अज़रियाह, यरमियाह, 3फ़शहूर, अमरियाह, मलकियाह, 4हत्तूश, सबनियाह, मल्लूक, 5हारिम, मरीमोत, अबदियाह, 6दानियाल, जिन्नतून, बारूक, 7मसुल्लाम, अबियाह, मियामीन, 8माज़ियाह, बिलजी और समायाह। सिरायाह से लेकर समायाह तक इमाम थे।

9फिर ज़ैल के लावियों ने दस्तख़त किए।

यशुअ बिन अज़नियाह, हनदाद के ख़ानदान का बिन्नूई, क़दमियेल, 10उनके भाई सबनियाह, हूदियाह, क़लीता, फ़िलायाह, हनान, 11मीका, रहोब, हसबियाह, 12ज़क्कूर, सरिबियाह, सबनियाह, 13हूदियाह, बानी और बनीनू।

14इनके बाद ज़ैल के क़ौमी बुज़ुर्गों ने दस्तख़त किए।

परऊस, पख़त-मोआब, ऐलाम, ज़त्तू, बानी 15बुन्नी, अज़जाद, बबी, 16अदूनियाह, बिगवई, अदीन, 17अतीर, हिज़क़ियाह, अज़्ज़ूर, 18हूदियाह, हाशूम, बज़ी, 19ख़ारिफ़, अनतोत, नेबी, 20मगफ़ियास, मसुल्लाम, हिज़ीर 21मशेज़बेल, सदोक़, यद्दू, 22फ़लतियाह, हनान, अनायाह, 23होसेअ, हननियाह, हस्सूब, 24हल्लूहेश, फ़िलहा, सोबेक़, 25रहूम, हसब्नाह, मासियाह, 26अख़ियाह, हनान, अनान, 27मल्लूक, हारिम और बाना।

28क़ौम के बाक़ी लोग भी अहद में शरीक हुए यानी बाक़ी इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और ख़िदमतगार, गुलूकार, नीज़ सब जो ग़ैरयहूदी क़ौमों से अलग हो गए थे ताकि रब की शरीअत की पैरवी करें। उनकी बीवियाँ और वह बेटे-बेटियाँ भी शरीक हुए जो अहद को समझ सकते थे। 29अपने बुज़ुर्ग भाइयों के साथ मिलकर उन्होंने क़सम खाकर वादा किया, “हम उस शरीअत की पैरवी करेंगे जो अल्लाह ने हमें अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त दी है। हम एहतियात से रब अपने आक़ा के तमाम अहकाम और हिदायात पर अमल करेंगे।”

30नीज़, उन्होंने क़सम खाकर वादा किया,

“हम अपने बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरयहूदियों से नहीं कराएँगे।

31जब ग़ैरयहूदी हमें सबत के दिन या रब के लिए मख़सूस किसी और दिन अनाज या कोई और माल बेचने की कोशिश करें तो हम कुछ नहीं ख़रीदेंगे।

हर सातवें साल हम ज़मीन की खेतीबाड़ी नहीं करेंगे और तमाम कर्ज़े मनसूख़ करेंगे।

32हम सालाना रब के घर की ख़िदमत के लिए चाँदी का छोटा सिक्का[a] देंगे। इस ख़िदमत में ज़ैल की चीज़ें शामिल हैं : 33अल्लाह के लिए मख़सूस रोटी, ग़ल्ला की नज़र और भस्म होनेवाली वह क़ुरबानियाँ जो रोज़ाना पेश की

[a]चाँदी के तक़रीबन 4 ग्राम।

जाती हैं, सबत के दिन, नए चाँद की ईद और बाक़ी ईदों पर पेश की जानेवाली क़ुरबानियाँ, ख़ास मुक़द्दस क़ुरबानियाँ, इसराईल का कफ़्फ़ारा देनेवाली गुनाह की क़ुरबानियाँ, और हमारे ख़ुदा के घर का हर काम।

34हमने क़ुरा डालकर मुक़र्रर किया है कि
इमामों, लावियों और बाक़ी क़ौम के कौन कौन-से ख़ानदान साल में किन किन मुक़र्ररा मौक़ों पर रब के घर में लकड़ी पहुँचाएँ। यह लकड़ी हमारे ख़ुदा की क़ुरबानगाह पर क़ुरबानियाँ जलाने के लिए इस्तेमाल की जाएगी, जिस तरह शरीअत में लिखा है।

35हम सालाना अपने खेतों और दरख़्तों का
पहला फल रब के घर में पहुँचाएँगे।

36जिस तरह शरीअत में दर्ज है, हम अपने
पहलौठों को रब के घर में लाकर अल्लाह के लिए मख़सूस करेंगे। गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चे हम ख़िदमतगुज़ार इमामों को क़ुरबान करने के लिए देंगे। 37उन्हें हम साल के पहले
ग़ल्ला से गूँधा हुआ आटा, अपने दरख़्तों का पहला फल, अपनी नई मै और ज़ैतून के नए तेल का पहला हिस्सा देकर रब के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे।

देहात में हम लावियों को अपनी फ़सलों का दसवाँ हिस्सा देंगे, क्योंकि वही देहात में यह हिस्सा जमा करते हैं। 38दसवाँ हिस्सा मिलते
वक़्त कोई इमाम यानी हारून के ख़ानदान का कोई मर्द लावियों के साथ होगा, और लावी माल का दसवाँ हिस्सा हमारे ख़ुदा के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे। 39आम लोग और लावी वहाँ ग़ल्ला,
नई मै और ज़ैतून का तेल लाएँगे। इन कमरों में मक़दिस की ख़िदमत के लिए दरकार तमाम सामान महफ़ूज़ रखा जाएगा। इसके अलावा वहाँ इमामों, दरबानों और गुलूकारों के कमरे होंगे।

हम अपने ख़ुदा के घर में तमाम फ़रायज़ सरंजाम देने में ग़फ़लत नहीं बरतेंगे।"

यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदे

11 क़ौम के बुज़ुर्ग यरूशलम में आबाद हुए थे। फ़ैसला किया गया कि बाक़ी लोगों के हर दसवें ख़ानदान को मुक़द्दस शहर यरूशलम में बसना है। यह ख़ानदान क़ुरा डालकर मुक़र्रर किए गए। बाक़ी ख़ानदानों को उनकी मक़ामी जगहों में रहने की इजाज़त थी। 2लेकिन
जितने लोग अपनी ख़ुशी से यरूशलम जा बसे उन्हें दूसरों ने मुबारकबाद दी।

3ज़ैल में सूबे के उन बुज़ुर्गों की फ़हरिस्त है जो
यरूशलम में आबाद हुए। (अकसर लोग यहूदाह के बाक़ी शहरों और देहात में अपनी मौरूसी ज़मीन पर बसते थे। इनमें आम इसराईली, इमाम, लावी, रब के घर के ख़िदमतगार और सुलेमान के ख़ादिमों की औलाद शामिल थे। 4लेकिन यहूदाह
और बिनयमीन के चंद एक लोग यरूशलम में जा बसे।)

यहूदाह का क़बीला :

फ़ारस के ख़ानदान का अतायाह बिन उज़्ज़ियाह बिन ज़करियाह बिन अमरियाह बिन सफ़तियाह बिन महललेल,

5सिलोनी के ख़ानदान का मासियाह बिन
बारूक बिन कुलहोज़ा बिन हज़ायाह बिन अदायाह बिन यूयारीब बिन ज़करियाह।

6फ़ारस के ख़ानदान के 468 असरो-
रसूख़ रखनेवाले आदमी अपने ख़ानदानों समेत यरूशलम में रिहाइशपज़ीर थे।

7बिनयमीन का क़बीला :

सल्लू बिन मसुल्लाम बिन योएद बिन फ़िदायाह बिन क़ौलायाह बिन मासियाह बिन ईतियेल बिन यसायाह।

8सल्लू के साथ जब्बी और सल्ली थे। कुल
928 आदमी थे। 9इन पर योएल बिन ज़िकरी
मुक़र्रर था जबकि यहूदाह बिन सनुआह शहर की इंतज़ामिया में दूसरे नंबर पर आता था।

10यरूशलम में ज़ैल के इमाम रहते थे।

यदायाह, यूयारीब, यकीन 11और सिरा-
याह बिन ख़िलक़ियाह बिन मसुल्लाम बिन
सदोक़ बिन मिरायोत बिन अख़ीतूब। सिरा-
याह अल्लाह के घर का मुन्तज़िम था।

12इन इमामों के 822 भाई रब के घर में
ख़िदमत करते थे।

नीज़, अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़िल-
लियाह बिन अमसी बिन ज़करियाह बिन फ़शहूर
बिन मलकियाह। 13उसके साथ 242 भाई थे जो
अपने अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे।

इनके अलावा अमश्सी बिन अज़रेल बिन
अख़ज़ी बिन मसिल्लमोत बिन इम्मेर। 14उसके
साथ 128 असरो-रसूख़ रखनेवाले भाई थे।
ज़बदियेल बिन हज्जदूलीम उनका इंचार्ज था।

15ज़ैल के लावी यरूशलम में रिहाइश-
पज़ीर थे। समायाह बिन हस्सूब बिन अज़-
रीक़ाम बिन हसबियाह बिन बुन्नी,

16नीज़ सब्बती और यूज़बद जो अल्लाह के
घर से बाहर के काम पर मुक़र्रर थे,

17नीज़ शुक्रगुज़ारी का राहनुमा मत्तनियाह बिन
मीका बिन ज़बदी बिन आसफ़ था जो दुआ करते
वक़्त हम्दो-सना की राहनुमाई करता था,

नीज़ उसका मददगार मत्तनियाह का भाई
बक़बूक़ियाह,

और आख़िर में अबदा बिन सम्मुअ बिन जलाल
बिन यदूतून।

18लावियों के कुल 284 मर्द मुक़द्दस शहर में
रहते थे।

19रब के घर के दरबानों के दर्जे-ज़ैल मर्द
यरूशलम में रहते थे।

अक़्क़ूब और तलमून अपने भाइयों समेत
दरवाज़ों के पहरेदार थे। कुल 172 मर्द थे।

20क़ौम के बाक़ी लोग, इमाम और लावी
यरूशलम से बाहर यहूदाह के दूसरे शहरों में
आबाद थे। हर एक अपनी आबाई ज़मीन पर रहता
था।

21रब के घर के ख़िदमतगार ओफ़ल पहाड़ी पर
बसते थे। ज़ीहा और जिसफ़ा उन पर मुक़र्रर थे।

22यरूशलम में रहनेवाले लावियों का निगरान
उज़्ज़ी बिन बानी बिन हसबियाह बिन मत्तनियाह
बिन मीका था। वह आसफ़ के ख़ानदान का था,
उस ख़ानदान का जिसके गुलूकार अल्लाह के
घर में ख़िदमत करते थे। 23बादशाह ने मुक़र्रर
किया था कि आसफ़ के ख़ानदान के किन किन
आदमियों को किस किस दिन रब के घर में गीत
गाने की ख़िदमत करनी है।

24फ़तहियाह बिन मशेज़बेल इसराईली
मामलों में फ़ारस के बादशाह की नुमाइंदगी करता
था। वह ज़ारह बिन यहूदाह के ख़ानदान का था।

25यहूदाह के क़बीले के अफ़राद ज़ैल के शहरों
में आबाद थे।

क़िरियत-अरबा, दीबोन और क़बज़ियेल गिर्दो-
नवाह की आबादियों समेत, 26यशुअ, मोलादा,
बैत-फ़लत, 27हसार-सुआल, बैर-सबा गिर्दो-
नवाह की आबादियों समेत, 28सिक़लाज,
मकूनाह गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत,
29ऐन-रिम्मोन, सुरआ, यरमूत, 30ज़नूह,
अदुल्लाम गिर्दो-नवाह की हवेलियों समेत,
लकीस गिर्दो-नवाह के खेतों समेत और अज़ीक़ा
गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत। ग़रज़, वह
जुनूब में बैर-सबा से लेकर शिमाल में वादीए-
हिन्नूम तक आबाद थे।

31बिनयमीन के क़बीले की रिहाइश ज़ैल के
मक़ामों में थी।

जिबा, मिकमास, ऐयाह, बैतेल गिर्दो-नवाह की
आबादियों समेत, 32अनतोत, नोब, अननियाह,
33हसूर, रामा, जित्तैम, 34हादीद, ज़बोईम,
नबल्लात, 35लूद, ओनू और कारीगरों की वादी।

36लावी क़बीले के कुछ ख़ानदान जो पहले
यहूदाह में रहते थे अब बिनयमीन के क़बायली
इलाक़े में आबाद हुए।

इमामों और लावियों की फ़हरिस्त

12 दर्जे-ज़ैल उन इमामों और लावि-
यों की फ़हरिस्त है जो ज़रुब्बा-
बल बिन सियालतियेल और यशुअ के साथ
जिलावतनी से वापस आए।

इमाम :

सिरायाह, यरमियाह, अज़रा, 2अमरियाह,
मल्लूक, हत्तूश, 3सकनियाह, रहूम, मरी-
मोत, 4इद्दू, जिन्नतून, अबियाह, 5मियामीन,
मुअदियाह, बिलजा, 6समायाह, यूयारीब,
यदायाह, 7सल्लू, अमूक़, ख़िलक़ियाह, और
यदायाह। यह यशुअ के ज़माने में इमामों और
उनके भाइयों के राहनुमा थे।

8लावी :

यशुअ, बिन्नूई, क़दमियेल, सरिबियाह,
यहूदाह और मत्तनियाह। मत्तनियाह अपने भाइयों
के साथ रब के घर में हम्दो-सना के गीत गाने में
राहनुमाई करता था। 9बक़बूक़ियाह और उन्नी
अपने भाइयों के साथ इबादत के दौरान उनके
मुक़ाबिल खड़े होते थे।

10इमामे-आज़म यशुअ की औलाद :

यशुअ यूयक़ीम का बाप था, यूयक़ीम
इलियासिब का, इलियासिब योयदा का,
11योयदा यूनतन का, यूनतन यद्दू का।

12जब यूयक़ीम इमामे-आज़म था तो ज़ैल के
इमाम अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे।

सिरायाह के ख़ानदान का मिरायाह,
यरमियाह के ख़ानदान का हननियाह,
13अज़रा के ख़ानदान का मसुल्लाम,
अमरियाह के ख़ानदान का यूहनान,
14मल्लूक के ख़ानदान का यूनतन,
सबनियाह के ख़ानदान का यूसुफ़,
15हारिम के ख़ानदान का अदना,
मिरायोत के ख़ानदान का ख़िलक़ी,
16इद्दू के ख़ानदान का ज़करियाह,
जिन्नतून के ख़ानदान का मसुल्लाम,
17अबियाह के ख़ानदान का ज़िकरी,
मिन्यमीन के ख़ानदान का एक आदमी,
मुअदियाह के ख़ानदान का फ़िलती,
18बिलजा के ख़ानदान का सम्मुअ,
समायाह के ख़ानदान का यहूनतन,
19यूयारीब के ख़ानदान का मत्तनी,
यदायाह के ख़ानदान का उज़्ज़ी,
20सल्ली के ख़ानदान का क़ल्ली,
अमूक़ के ख़ानदान का इबर,
21ख़िलक़ियाह के ख़ानदान का हसबि-
याह,
यदायाह के ख़ानदान का नतनियेल।

22जब इलियासिब, योयदा, यूहनान और यद्दू
इमामे-आज़म थे तो लावी के सरपरस्तों की
फ़हरिस्त तैयार की गई और इसी तरह फ़ारस के
बादशाह दारा के ज़माने में इमामों के ख़ानदानी
सरपरस्तों की फ़हरिस्त।

23लावी के ख़ानदानी सरपरस्तों के नाम
इमामे-आज़म यूहनान बिन इलियासिब के ज़माने
तक तारीख़ की किताब में दर्ज किए गए।

24-25लावी के ख़ानदानी सरपरस्त हस-
बियाह, सरिबियाह, यशुअ, बिन्नूई और क़द-
मियेल ख़िदमत के उन गुरोहों की राहनुमाई करते
थे जो रब के घर में हम्दो-सना के गीत गाते थे।
उनके मुक़ाबिल मत्तनियाह, बक़बूक़ियाह और
अबदियाह अपने गुरोहों के साथ खड़े होते थे।
गीत गाते वक़्त कभी यह गुरोह और कभी उसके
मुक़ाबिल का गुरोह गाता था। सब कुछ उस
तरतीब से हुआ जो मर्दे-ख़ुदा दाऊद ने मुक़र्रर की
थी।

मसुल्लाम, तलमून और अक़्क़ूब दरबान थे जो
रब के घर के दरवाज़ों के साथ वाक़े गोदामों की
पहरादारी करते थे।

26यह आदमी इमामे-आज़म यूयक़ीम बिन
यशुअ बिन यूसदक़, नहमियाह गवर्नर और
शरीअत के आलिम अज़रा इमाम के ज़माने में
अपनी ख़िदमत सरंजाम देते थे।

फ़सील की मख़सूसियत

27फ़सील की मख़सूसियत के लिए पूरे मुल्क
के लावियों को यरूशलम बुलाया गया ताकि
वह ख़ुशी मनाने में मदद करके हम्दो-सना
के गीत गाएँ और झाँझ, सितार और सरोद
बजाएँ। 28गुलूकार यरूशलम के गिर्दो-नवाह से,
नतूफ़ातियों के देहात, 29बैत-जिलजाल और
जिबा और अज़मावत के इलाक़े से आए। क्योंकि
गुलूकारों ने अपनी अपनी आबादियाँ यरूशलम के
इर्दगिर्द बनाई थीं। 30पहले इमामों और लावियों ने
अपने आपको जशन के लिए पाक-साफ़ किया,
फिर उन्होंने आम लोगों, दरवाज़ों और फ़सील को
भी पाक-साफ़ कर दिया।

31इसके बाद मैंने यहूदाह के क़बीले के
बुज़ुर्गों को फ़सील पर चढ़ने दिया और गुलूकारों
को शुक्रगुज़ारी के दो बड़े गुरोहों में तक़सीम
किया। पहला गुरोह फ़सील पर चलते चलते
जुनूब में वाक़े कचरे के दरवाज़े की तरफ़
बढ़ गया। 32इन गुलूकारों के पीछे हूसायाह
यहूदाह के आधे बुज़ुर्गों के साथ चला 33जबकि
इनके पीछे अज़रियाह, अज़रा, मसुल्लाम,
34यहूदाह, बिनयमीन, समायाह और यरमियाह
चले। 35आख़िरी गुरोह इमाम थे जो तुरम
बजाते रहे। इनके पीछे ज़ैल के मौसीक़ार
आए : ज़करियाह बिन यूनतन बिन समायाह
बिन मत्तनियाह बिन मीकायाह बिन ज़क्कूर बिन
आसफ़ 36और उसके भाई समायाह, अज़रेल,
मिलली, जिलली, माई, नतनियेल, यहूदाह और
हनानी। यह आदमी मर्दे-ख़ुदा दाऊद के साज़
बजाते रहे। शरीअत के आलिम अज़रा ने जुलूस
की राहनुमाई की। 37चश्मे के दरवाज़े के पास
आकर वह सीधे उस सीढ़ी पर चढ़ गए जो
यरूशलम के उस हिस्से तक पहुँचाती है जो
'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर दाऊद के
महल के पीछे से गुज़रकर वह शहर के मग़रिब में
वाक़े पानी के दरवाज़े तक पहुँच गए।

38शुक्रगुज़ारी का दूसरा गुरोह फ़सील पर
चलते चलते शिमाल में वाक़े तनूरों के बुर्ज और
'मोटी दीवार' की तरफ़ बढ़ गया, और मैं बाक़ी
लोगों के साथ उसके पीछे हो लिया। 39हम
इफ़राईम के दरवाज़े, यसाना के दरवाज़े, मछली
के दरवाज़े, हननेल के बुर्ज, मिया बुर्ज और भेड़
के दरवाज़े से होकर मुहाफ़िज़ों के दरवाज़े तक
पहुँच गए जहाँ हम रुक गए।

40फिर शुक्रगुज़ारी के दोनों गुरोह रब के घर
के पास खड़े हो गए। मैं भी बुज़ुर्गों के आधे
हिस्से 41और ज़ैल के तुरम बजानेवाले इमामों
के साथ रब के घर के सहन में खड़ा हुआ :
इलियाक़ीम, मासियाह, मिन्यमीन, मीकायाह,
इलियूऐनी, ज़करियाह और हननियाह।
42मासियाह, समायाह, इलियज़र, उज़्ज़ी,
यूहनान, मलकियाह, ऐलाम और अज़र भी हमारे
साथ थे। गुलूकार इज़्रख़ियाह की राहनुमाई में
हम्दो-सना के गीत गाते रहे।

43उस दिन ज़बह की बड़ी बड़ी क़ुरबानियाँ पेश
की गईं, क्योंकि अल्लाह ने हम सबको बाल-
बच्चों समेत बड़ी ख़ुशी दिलाई थी। ख़ुशियों का
इतना शोर मच गया कि उस की आवाज़ दूर-दराज़
इलाक़ों तक पहुँच गई।

रब के घर के गोदामों की ज़िम्मेदारी

44उस वक़्त कुछ आदमियों को उन गोदामों
के निगरान बनाया गया जिनमें हदिये, फ़सलों
का पहला फल और पैदावार का दसवाँ हिस्सा
महफ़ूज़ रखा जाता था। उनमें शहरों की फ़सलों
का वह हिस्सा जमा करना था जो शरीअत ने
इमामों और लावियों के लिए मुक़र्रर किया था।
क्योंकि यहूदाह के बाशिंदे ख़िदमत करनेवाले
इमामों और लावियों से ख़ुश थे 45जो अपने
ख़ुदा की ख़िदमत तहारत के रस्मो-रिवाज समेत
अच्छी तरह अंजाम देते थे। रब के घर के गुलूकार
और दरबान भी दाऊद और उसके बेटे सुलेमान
की हिदायात के मुताबिक़ ही ख़िदमत करते थे।
46क्योंकि दाऊद और आसफ़ के ज़माने से ही

गुलूकारों के लीडर अल्लाह की हम्दो-सना के गीतों में राहनुमाई करते थे।

47चुनाँचे ज़रुब्बाबल और नहमियाह के दिनों में तमाम इसराईल रब के घर के गुलूकारों और दरबानों की रोज़ाना ज़रूरियात पूरी करता था। लावियों को वह हिस्सा दिया जाता जो उनके लिए मख़सूस था, और लावी उसमें से इमामों को वह हिस्सा दिया करते थे जो उनके लिए मख़सूस था।

मोआबियों और अम्मोनियों से अलहदगी

13 उस दिन क़ौम के सामने मूसा की शरीअत की तिलावत की गई। पढ़ते पढ़ते मालूम हुआ कि अम्मोनियों और मोआबियों को कभी भी अल्लाह की क़ौम में शरीक होने की इजाज़त नहीं। 2वजह यह है कि इन क़ौमों ने मिसर से निकलते वक़्त इसराईलियों को खाना खिलाने और पानी पिलाने से इनकार किया था। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने बिलाम को पैसे दिए थे ताकि वह इसराईली क़ौम पर लानत भेजे, अगरचे हमारे ख़ुदा ने लानत को बरकत में तबदील किया। 3जब हाज़िरीन ने यह हुक्म सुना तो उन्होंने तमाम ग़ैरयहूदियों को जमात से ख़ारिज कर दिया।

रब के घर के इंतज़ाम की इसलाह

4इस वाक़िये से पहले रब के घर के गोदामों पर मुक़र्रर इमाम इलियासिब ने अपने रिश्तेदार तूबियाह 5के लिए एक बड़ा कमरा ख़ाली कर दिया था जिसमें पहले ग़ल्ला की नज़रें, बख़ूर और कुछ आलात रखे जाते थे। नीज़, ग़ल्ला, नई मै और ज़ैतून के तेल का जो दसवाँ हिस्सा लावियों, गुलूकारों और दरबानों के लिए मुक़र्रर था वह भी उस कमरे में रखा जाता था और साथ साथ इमामों के लिए मुक़र्रर हिस्सा भी। 6उस वक़्त मैं यरूशलम में नहीं था, क्योंकि बाबल के बादशाह अर्तख़शस्ता की हुकूमत के 32वें साल में मैं उसके दरबार में वापस आ गया था। कुछ देर बाद मैं शहनशाह से इजाज़त लेकर दुबारा यरूशलम के लिए रवाना हुआ। 7वहाँ पहुँचकर मुझे पता चला कि इलियासिब ने कितनी बुरी हरकत की है, कि उसने अपने रिश्तेदार तूबियाह के लिए रब के घर के सहन में कमरा ख़ाली कर दिया है। 8यह बात मुझे निहायत ही बुरी लगी, और मैंने तूबियाह का सारा सामान कमरे से निकालकर फेंक दिया। 9फिर मैंने हुक्म दिया कि कमरे नए सिरे से पाक-साफ़ कर दिए जाएँ। जब ऐसा हुआ तो मैंने रब के घर का सामान, ग़ल्ला की नज़रें और बख़ूर दुबारा वहाँ रख दिया।

10मुझे यह भी मालूम हुआ कि लावी और गुलूकार रब के घर में अपनी ख़िदमत को छोड़कर अपने खेतों में काम कर रहे हैं। वजह यह थी कि उन्हें वह हिस्सा नहीं मिल रहा था जो उनका हक़ था। 11तब मैंने ज़िम्मेदार अफ़सरों को झिड़ककर कहा, “आप अल्लाह के घर का इंतज़ाम इतनी बेपरवाई से क्यों चला रहे हैं?” मैंने लावियों और गुलूकारों को वापस बुलाकर दुबारा उनकी ज़िम्मेदारियों पर लगाया। 12यह देखकर तमाम यहूदाह ग़ल्ला, नई मै और ज़ैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा गोदामों में लाने लगा। 13गोदामों की निगरानी मैंने सलमियाह इमाम, सदोक़ मुंशी और फ़िदायाह लावी के सुपुर्द करके हनान बिन ज़क्कूर बिन मत्तनियाह को उनका मददगार मुक़र्रर किया, क्योंकि चारों को क़ाबिले-एतमाद समझा जाता था। उन्हीं को इमामों और लावियों में उनके मुक़र्ररा हिस्से तक़सीम करने की ज़िम्मेदारी दी गई।

14ऐ मेरे ख़ुदा, इस काम के बाइस मुझे याद कर! वह सब कुछ न भूल जो मैंने वफ़ादारी से अपने ख़ुदा के घर और उसके इंतज़ाम के लिए किया है।

सबत की बहाली

15उस वक़्त मैंने यहूदाह में कुछ लोगों को देखा जो सबत के दिन अंगूर का रस निचोड़कर मै बना रहे थे। दूसरे ग़ल्ला लाकर मै, अंगूर, अंजीर और दीगर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की पैदावार के साथ गधों

पर लाद रहे और यरूशलम पहुँचा रहे थे। यह सब
कुछ सबत के दिन हो रहा था। मैंने उन्हें तंबीह की
कि सबत के दिन ख़ुराक फ़रोख़्त न करना। 16सूर
के कुछ आदमी भी जो यरूशलम में रहते थे सबत
के दिन मछली और दीगर कई चीज़ें यरूशलम
में लाकर यहूदाह के लोगों को बेचते थे। 17यह
देखकर मैंने यहूदाह के शुरफ़ा को डाँटकर कहा,
“यह कितनी बुरी बात है! आप तो सबत के दिन
की बेहुरमती कर रहे हैं। 18जब आपके बापदादा
ने ऐसा किया तो अल्लाह यह सारी आफ़त हम
पर और इस शहर पर लाया। अब आप सबत के
दिन की बेहुरमती करने से अल्लाह का इसराईल
पर ग़ज़ब मज़ीद बढ़ा रहे हैं।”

19मैंने हुक्म दिया कि जुमे को यरूशलम के
दरवाज़े शाम के उस वक़्त बंद किए जाएँ जब
दरवाज़े सायों में डूब जाएँ, और कि वह सबत
के पूरे दिन बंद रहें। सबत के इख़्तिताम तक
उन्हें खोलने की इजाज़त नहीं थी। मैंने अपने
कुछ लोगों को दरवाज़ों पर खड़ा भी किया ताकि
कोई भी अपना सामान सबत के दिन शहर में
न लाए। 20यह देखकर ताजिरों और बेचनेवालों
ने कई मरतबा सबत की रात शहर से बाहर
गुज़ारी और वहाँ अपना माल बेचने की कोशिश
की। 21तब मैंने उन्हें तंबीह की, “आप सबत की
रात क्यों फ़सील के पास गुज़ारते हैं? अगर
आप दुबारा ऐसा करें तो आपको हवालाए-पुलिस
किया जाएगा।” उस वक़्त से वह सबत के दिन
आने से बाज़ आए। 22लावियों को मैंने हुक्म
दिया कि अपने आपको पाक-साफ़ करके शहर
के दरवाज़ों की पहरादारी करें ताकि अब से सबत
का दिन मख़सूसो-मुक़द्दस रहे।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे इस नेकी के बाइस याद
करके अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ
पर मेहरबानी कर।

ग़ैरयहूदियों से रिश्ता बाँधना मना है

23उस वक़्त मुझे यह भी मालूम हुआ कि
बहुत-से यहूदी मर्दों की शादी अशदूद, अम्मोन
और मोआब की औरतों से हुई है। 24उनके आधे
बच्चे सिर्फ़ अशदूद की ज़बान या कोई और
ग़ैरमुल्की ज़बान बोल लेते थे। हमारी ज़बान से
वह नावाक़िफ़ ही थे। 25तब मैंने उन्हें झिड़का
और उन पर लानत भेजी। बाज़ एक के बाल नोच
नोचकर मैंने उनकी पिटाई की। मैंने उन्हें अल्लाह
की क़सम खिलाने पर मजबूर किया कि हम अपने
बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरमुल्कियों से नहीं कराएँगे।
26मैंने कहा, “इसराईल के बादशाह सुलेमान को
याद करें। ऐसी ही शादियों ने उसे गुनाह करने पर
उकसाया। उस वक़्त उसके बराबर कोई बादशाह
नहीं था। अल्लाह उसे प्यार करता था और उसे
पूरे इसराईल का बादशाह बनाया। लेकिन उसे भी
ग़ैरमुल्की बीवियों की तरफ़ से गुनाह करने पर
उकसाया गया। 27अब आपके बारे में भी यही
कुछ सुनना पड़ता है! आपसे भी यही बड़ा गुनाह
सरज़द हो रहा है। ग़ैरमुल्की औरतों से शादी करने
से आप हमारे ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए हैं!”

28इमामे-आज़म इलियासिब के बेटे यो-
यदा के एक बेटे की शादी संबल्लत हौरूनी की
बेटी से हुई थी, इसलिए मैंने बेटे को यरूशलम से
भगा दिया।

29ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें याद कर, क्योंकि उन्होंने
इमाम के ओहदे और इमामों और लावियों के
अहद की बेहुरमती की है।

30चुनाँचे मैंने इमामों और लावियों को हर
ग़ैरमुल्की चीज़ से पाक-साफ़ करके उन्हें
उनकी ख़िदमत और मुख़्तलिफ़ ज़िम्मा-
दारियों के लिए हिदायात दीं।

31नीज़, मैंने ध्यान दिया कि फ़सल की पहली
पैदावार और क़ुरबानियों को जलाने की लकड़ी
वक़्त पर रब के घर में पहुँचाई जाए।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे याद करके मुझ पर मेहरबानी
कर!।

आस्तर

अख़स्वेरुस जशन मनाता है

1 अख़स्वेरुस बादशाह की सलतनत भारत
से लेकर एथोपिया तक 127 सूबों पर
मुश्तमिल थी। 2जिन वाक़ियात का ज़िक्र है वह
उस वक़्त हुए जब वह सोसन शहर के क़िले
से हुकूमत करता था। 3अपनी हुकूमत के तीसरे
साल में उसने अपने तमाम बुज़ुर्गों और अफ़सरों
की ज़ियाफ़त की। फ़ारस और मादी के फ़ौजी
अफ़सर और सूबों के शुरफ़ा और रईस सब शरीक
हुए। 4शहनशाह ने पूरे 180 दिन तक अपनी
सलतनत की ज़बरदस्त दौलत और अपनी क़ुव्वत
की शानो-शौकत का मुज़ाहरा किया।

5इसके बाद उसने सोसन के क़िले में रहनेवाले
तमाम लोगों की छोटे से लेकर बड़े तक ज़ियाफ़त
की। यह जशन सात दिन तक शाही बाग़ के
सहन में मनाया गया। 6मरमर[a] के सतूनों के
दरमियान कतान के सफ़ेद और क़िरमिज़ी रंग
के क़ीमती परदे लटकाए गए थे, और वह सफ़ेद
और अरग़वानी रंग की डोरियों के ज़रीए सतूनों में
लगे चाँदी के छल्लों के साथ बँधे हुए थे। मेहमानों
के लिए सोने और चाँदी के सोफ़े पच्चीकारी के
ऐसे फ़र्श पर रखे हुए थे जिसमें मरमर के अलावा
मज़ीद तीन क़ीमती पत्थर इस्तेमाल हुए थे। 7मै
सोने के प्यालों में पिलाई गई। हर प्याला फ़रक़
और लासानी था, और बादशाह की फ़ैयाज़ी के
मुताबिक़ शाही मै की कसरत थी। 8हर कोई
जितनी जी चाहे पी सकता था, क्योंकि बादशाह ने
हुक्म दिया था कि साक़ी मेहमानों की हर ख़ाहिश
पूरी करें।

वशती मलिका की बरतरफ़ी

9इस दौरान वशती मलिका ने महल के अंदर
ख़वातीन की ज़ियाफ़त की। 10सातवें दिन जब
बादशाह का दिल मै पी पीकर बहल गया था
तो उसने उन सात ख़्वाजासराओं को बुलाया
जो ख़ास उस की ख़िदमत करते थे। उनके नाम
महूमान, बिज़्ज़ता, ख़रबूना, बिगता, अबग्ता,
ज़ितार और कर्कस थे। 11उसने हुक्म दिया,
"वशती मलिका को शाही ताज पहनाकर मेरे
हुज़ूर ले आओ ताकि शुरफ़ा और बाक़ी मेहमानों
को उस की ख़ूबसूरती मालूम हो जाए।" क्योंकि
वशती निहायत ख़ूबसूरत थी। 12लेकिन जब
ख़्वाजासरा मलिका के पास गए तो उसने आने
से इनकार कर दिया।

यह सुनकर बादशाह आग-बगूला हो गया
13और दानाओं से बात की जो औक़ात के
आलिम थे, क्योंकि दस्तूर यह था कि बादशाह
क़ानूनी मामलों में उलमा से मशवरा करे।
14आलिमों के नाम कारशीना, सितार, अदमाता,
तरसीस, मरस, मरसिना और ममूकान थे। फ़ारस
और मादी के यह सात शुरफ़ा आज़ादी से बादशाह

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : संगे-जर्राहत, alabaster।

के हुज़ूर आ सकते थे और सलतनत में सबसे
आला ओहदा रखते थे।
15अख़स्वेरुस ने पूछा, “क़ानून के लिहाज़ से
वशती मलिका के साथ क्या सुलूक किया जाए?
क्योंकि उसने ख़्वाजासराओं के हाथ भेजे हुए
शाही हुक्म को नहीं माना।”
16ममूकान ने बादशाह और दीगर शुरफ़ा की
मौजूदगी में जवाब दिया, “वशती मलिका ने
इससे न सिर्फ़ बादशाह का बल्कि उसके तमाम
शुरफ़ा और सलतनत के तमाम सूबों में रहनेवाली
क़ौमों का भी गुनाह किया है। 17क्योंकि जो कुछ
उसने किया है वह तमाम ख़वातीन को मालूम हो
जाएगा। फिर वह अपने शौहरों को हक़ीर जानकर
कहेंगी, ‘गो बादशाह ने वशती मलिका को अपने
हुज़ूर आने का हुक्म दिया तो भी उसने उसके हुज़ूर
आने से इनकार किया।’ 18आज ही फ़ारस और
मादी के शुरफ़ा की बीवियाँ मलिका की यह बात
सुनकर अपने शौहरों से ऐसा ही सुलूक करेंगी।
तब हम ज़िल्लत और ग़ुस्से के जाल में उलझ
जाएंगे। 19अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो वह
एलान करें कि वशती मलिका को फिर कभी
अख़स्वेरुस बादशाह के हुज़ूर आने की इजाज़त
नहीं। और लाज़िम है कि यह एलान फ़ारस और
मादी के क़वानीन में दर्ज किया जाए ताकि उसे
मनसूख़ न किया जा सके। फिर बादशाह किसी
और को मलिका का ओहदा दें, ऐसी औरत को जो
ज़्यादा लायक़ हो। 20जब एलान पूरी सलतनत में
किया जाएगा तो तमाम औरतें अपने शौहरों की
इज़्ज़त करेंगी, ख़ाह वह छोटे हों या बड़े।”
21यह बात बादशाह और उसके शुरफ़ा को
पसंद आई। ममूकान के मशवरे के मुताबिक़
22अख़स्वेरुस ने सलतनत के तमाम सूबों में ख़त
भेजे। हर सूबे को उसके अपने तर्ज़े-तहरीर में और
हर क़ौम को उस की अपनी ज़बान में ख़त मिल
गया कि हर मर्द अपने घर का सरपरस्त है और
कि हर ख़ानदान में शौहर की ज़बान बोली जाए।

नई मलिका की तलाश

2 बाद में जब बादशाह का ग़ुस्सा ठंडा हो गया
तो मलिका उसे दुबारा याद आने लगी। जो
कुछ वशती ने किया था और जो फ़ैसला उसके
बारे में हुआ था वह भी उसके ज़हन में घूमता रहा।
2फिर उसके मुलाज़िमों ने ख़याल पेश किया,
“क्यों न पूरी सलतनत में शहनशाह के लिए
ख़ूबसूरत कुँवारियाँ तलाश की जाएँ? 3बादशाह
अपनी सलतनत के हर सूबे में अफ़सर मुक़र्रर
करें जो यह ख़ूबसूरत कुँवारियाँ चुनकर सोसन के
क़िले के ज़नानख़ाने में लाएँ। उन्हें ज़नानख़ाने के
इंचार्ज हैजा ख़्वाजासरा की निगरानी में दे दिया
जाए और उनकी ख़ूबसूरती बढ़ाने के लिए रंग
निखारने का हर ज़रूरी तरीक़ा इस्तेमाल किया
जाए। 4फिर जो लड़की बादशाह को सबसे ज़्यादा
पसंद आए वह वशती की जगह मलिका बन
जाए।”
यह मनसूबा बादशाह को अच्छा लगा, और
उसने ऐसा ही किया।
5उस वक़्त सोसन के क़िले में बिनयमीन
के क़बीले का एक यहूदी रहता था जिस-
का नाम मर्दकी बिन याईर बिन सिमई बिन
क़ीस था। 6मर्दकी का ख़ानदान उन इसराईलियों
में शामिल था जिनको बाबल का बादशाह
नबूकदनज़्ज़र यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन[a] के
साथ जिलावतन करके अपने साथ ले गया था।
7मर्दकी के चचा की एक निहायत ख़ूबसूरत बेटी
बनाम हदस्साह थी जो आस्तर भी कहलाती थी।
उसके वालिदैन के मरने पर मर्दकी ने उसे लेकर
अपनी बेटी की हैसियत से पाल लिया था।
8जब बादशाह का हुक्म सादिर हुआ तो बहुत-
सी लड़कियों को सोसन के क़िले में लाकर
ज़नानख़ाने के इंचार्ज हैजा के सुपुर्द कर दिया
गया। आस्तर भी उन लड़कियों में शामिल थी।
9वह हैजा को पसंद आई बल्कि उसे उस की
ख़ास मेहरबानी हासिल हुई। ख़्वाजासरा ने जल्दी

[a]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह
मुस्तामल है।

जल्दी बनाव-सिंगार का सिलसिला शुरू किया, खाने-पीने का मुनासिब इंतज़ाम करवाया और शाही महल की सात चुनीदा नौकरानियाँ आस्तर के हवाले कर दीं। रिहाइश के लिए आस्तर और उस की लड़कियों को ज़नानख़ाने के सबसे अच्छे कमरे दिए गए।

10आस्तर ने किसी को नहीं बताया था कि
मैं यहूदी औरत हूँ, क्योंकि मर्दकी ने उसे हुक्म
दिया था कि इसके बारे में ख़ामोश रहे। 11हर
दिन मर्दकी ज़नानख़ाने के सहन से गुज़रता ताकि आस्तर के हाल का पता करे और यह कि उसके साथ क्या क्या हो रहा है।

12-13अख़स्वेरुस बादशाह से मिलने से पहले हर कुँवारी को बारह महीनों का मुक़र्ररा बनाव-सिंगार करवाना था, छः माह मुर के तेल से और छः माह बलसान के तेल और रंग निखारने के दीगर तरीक़ों से। जब उसे बादशाह के महल में जाना था तो ज़नानख़ाने की जो भी चीज़ वह अपने साथ लेना चाहती उसे दी जाती।

14शाम के वक़्त वह महल में जाती और अगले दिन उसे सुबह के वक़्त दूसरे ज़नानख़ाने में लाया जाता जहाँ बादशाह की दाश्ताएँ शाशजज़ ख़्वाजासरा की निगरानी में रहती थीं। इसके बाद वह फिर कभी बादशाह के पास न आती। उसे सिर्फ़ इसी सूरत में वापस लाया जाता कि वह बादशाह को ख़ास पसंद आती और वह उसका नाम लेकर उसे बुलाता।

आस्तर मलिका बन जाती है

15होते होते आस्तर बिंत अबीख़ैल की बारी आई (अबीख़ैल मर्दकी का चचा था, और मर्दकी ने उस की बेटी को लेपालक बना लिया था)। जब आस्तर से पूछा गया कि आप ज़नानख़ाने की क्या चीज़ें अपने साथ ले जाना चाहती हैं तो उसने सिर्फ़ वह कुछ ले लिया जो हैजा ख़्वाजासरा ने उसके लिए चुना। और जिसने भी उसे देखा उसने
उसे सराहा। 16चुनाँचे उसे बादशाह की हुकूमत
के सातवें साल के दसवें महीने बनाम तेबत में अख़स्वेरुस के पास महल में लाया गया।

17बादशाह को आस्तर दूसरी लड़कियों की निसबत कहीं ज़्यादा प्यारी लगी। दीगर तमाम कुँवारियों की निसबत उसे उस की ख़ास क़बूलियत और मेहरबानी हासिल हुई। चुनाँचे बादशाह ने उसके सर पर ताज रखकर उसे वशती
की जगह मलिका बना दिया। 18इस मौक़े की
ख़ुशी में उसने आस्तर के एज़ाज़ में बड़ी ज़ियाफ़त की। तमाम शुरफ़ा और अफ़सरों को दावत दी गई। साथ साथ सूबों में कुछ टैक्सों की मुआफ़ी का एलान किया गया और फ़ैयाज़ी से तोहफ़े तक़सीम किए गए।

मर्दकी बादशाह को बचाता है

19जब कुँवारियों को एक बार फिर जमा किया
गया तो मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में बैठा
था।[a] 20आस्तर ने अब तक किसी को नहीं
बताया था कि मैं यहूदी हूँ, क्योंकि मर्दकी ने यह बताने से मना किया था। पहले की तरह जब वह उसके घर में रहती थी अब भी आस्तर उस की हर बात मानती थी।

21एक दिन जब मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में बैठा था तो दो ख़्वाजासरा बनाम बिगतान और तरश ग़ुस्से में आकर अख़स्वेरुस को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे। दोनों शाही कमरों के
पहरेदार थे। 22मर्दकी को पता चला तो उसने
आस्तर को ख़बर पहुँचाई जिसने मर्दकी का नाम
लेकर बादशाह को इत्तला दी। 23मामले की
तफ़तीश की गई तो दुरुस्त साबित हुआ, और दोनों मुलाज़िमों को फाँसी दे दी गई। यह वाक़िया बादशाह की मौजूदगी में उस किताब में दर्ज किया गया जिसमें रोज़ाना उस की हुकूमत के अहम वाक़ियात लिखे जाते थे।

[a]शाही सहन के दरवाज़े में शाही इंतज़ामिया थी, इसलिए ऐन मुमकिन है कि मर्दकी शाही मुलाज़िम हो।

हामान यहूदी क़ौम को हलाक करना चाहता है

3 कुछ देर के बाद बादशाह ने हामान बिन
हम्मदाता अजाजी को सरफ़राज़ करके
दरबार में सबसे आला ओहदा दिया। 2जब कभी
हामान आ मौजूद होता तो शाही सहन के दरवाज़े
के तमाम शाही अफ़सर मुँह के बल झुक जाते,
क्योंकि बादशाह ने ऐसा करने का हुक्म दिया था।
लेकिन मर्दकी ऐसा नहीं करता था।

3यह देखकर दीगर शाही मुलाज़िमों ने उससे
पूछा, "आप बादशाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी
क्यों कर रहे हैं?"

4उसने जवाब दिया, "मैं तो यहूदी हूँ।" रोज़
बरोज़ दूसरे उसे समझाते रहे, लेकिन वह न माना।
आख़िरकार उन्होंने हामान को इत्तला दी, क्योंकि
वह देखना चाहते थे कि क्या वह मर्दकी का जवाब
क़बूल करेगा या नहीं।

5जब हामान ने ख़ुद देखा कि मर्दकी मेरे सामने
मुँह के बल नहीं झुकता तो वह आग-बगूला
हो गया। 6वह फ़ौरन मर्दकी को क़त्ल करने
के मनसूबे बनाने लगा। लेकिन यह उसके लिए
काफ़ी नहीं था। चूँकि उसे बताया गया था कि
मर्दकी यहूदी है इसलिए वह फ़ारसी सलतनत
में रहनेवाले तमाम यहूदियों को हलाक करने का
रास्ता ढूँडने लगा।

7चुनाँचे अख़स्वेरुस बादशाह की हुकूमत के
12वें साल के पहले महीने नीसान[a] में हामान
की मौजूदगी में क़ुरा डाला गया। क़ुरा डालने से
हामान यहूदियों को क़त्ल करने की सबसे मुबारक
तारीख़ मालूम करना चाहता था। (क़ुरा के लिए
'पूर' कहा जाता था।) इस तरीक़े से 12वें महीने
अदार का 13वाँ दिन[b] निकला। 8तब हामान
ने बादशाह से बात की, "आपकी सलतनत के
तमाम सूबों में एक क़ौम बिखरी हुई है जो अपने
आपको दीगर क़ौमों से अलग रखती है। उसके
क़वानीन दूसरी तमाम क़ौमों से मुख़्तलिफ़ हैं,
और उसके अफ़राद बादशाह के क़वानीन को नहीं
मानते। मुनासिब नहीं कि बादशाह उन्हें बरदाश्त
करें!

9अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो एलान करें
कि इस क़ौम को हलाक कर दिया जाए। तब
मैं शाही ख़ज़ानों में 3,35,000 किलोग्राम चाँदी
जमा करा दूँगा।"

10बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी
उतारी जो शाही मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल
होती थी और उसे यहूदियों के दुश्मन हामान बिन
हम्मदाता अजाजी को देकर 11कहा, "चाँदी और
क़ौम आप ही की हैं, उसके साथ वह कुछ करें जो
आपको अच्छा लगे।"

12पहले महीने के 13वें दिन[c] हामान ने शाही
मुहर्रिरों को बुलाया ताकि वह उस की तमाम
हिदायात के मुताबिक़ ख़त लिखकर बादशाह के
गवर्नरों, सूबों के दीगर हाकिमों और तमाम क़ौमों
के बुज़ुर्गों को भेजें। यह ख़त हर क़ौम के अपने
तर्ज़े-तहरीर और अपनी ज़बान में क़लमबंद हुए।
उन्हें बादशाह का नाम लेकर लिखा गया, फिर
शाही अंगूठी की मुहर उन पर लगाई गई। उनमें
ज़ैल का एलान किया गया।

13"एक ही दिन में तमाम यहूदियों को हलाक
और पूरे तौर पर तबाह करना है, ख़ाह छोटे हों
या बड़े, बच्चे हों या औरतें। साथ साथ उनकी
मिलकियत भी ज़ब्त कर ली जाए।" इसके लिए
12वें महीने अदार का 13वाँ दिन[d] मुक़र्रर किया
गया।

यह एलान तेज़रौ क़ासिदों के ज़रीए सलतनत
के तमाम सूबों में पहुँचाया गया 14ताकि उस की
तसदीक़ क़ानूनी तौर पर की जाए और तमाम
क़ौमें मुक़र्ररा दिन के लिए तैयार हों।

15बादशाह के हुक्म पर क़ासिद चल निकले।
यह एलान सोसन के क़िले में भी किया गया।
फिर बादशाह और हामान खाने-पीने के लिए बैठ
गए। लेकिन पूरे शहर में हलचल मच गई।

[a]अप्रैल ता मई।
[b]7 मार्च, 473 क़ म।
[c]17 अप्रैल।
[d]7 मार्च।

मर्दकी आस्तर से मदद माँगता है

4 जब मर्दकी को मालूम हुआ कि क्या हुआ है तो उसने रंजिश से अपने कपड़ों को फाड़कर टाट का लिबास पहन लिया और सर पर राख डाल ली। फिर वह निकलकर बुलंद आवाज़ से गिर्याओ-ज़ारी करते करते शहर में से गुज़रा। 2वह शाही सहन के दरवाज़े तक पहुँच गया लेकिन दाख़िल न हुआ, क्योंकि मातमी कपड़े पहनकर दाख़िल होने की इजाज़त नहीं थी। 3सलतनत के तमाम सूबों में जहाँ जहाँ बादशाह का एलान पहुँचा वहाँ यहूदी ख़ूब मातम करने और रोज़ा रखकर रोने और गिर्याओ-ज़ारी करने लगे। बहुत-से लोग टाट का लिबास पहनकर राख में लेट गए।

4जब आस्तर की नौकरानियों और ख़्वाजासराओं ने आकर उसे इत्तला दी तो वह सख़्त घबरा गई। उसने मर्दकी को कपड़े भेज दिए जो वह अपने मातमी कपड़ों के बदले पहन ले, लेकिन उसने उन्हें क़बूल न किया। 5तब आस्तर ने हताक ख़्वाजासरा को मर्दकी के पास भेजा ताकि वह मालूम करे कि क्या हुआ है, मर्दकी ऐसी हरकतें क्यों कर रहा है। (बादशाह ने हताक को आस्तर की ख़िदमत करने की ज़िम्मेदारी दी थी।)

6हताक शाही सहन के दरवाज़े से निकलकर मर्दकी के पास आया जो अब तक साथवाले चौक में था। 7मर्दकी ने उसे हामान का पूरा मनसूबा सुनाकर यह भी बताया कि हामान ने यहूदियों को हलाक करने के लिए शाही ख़ज़ाने को कितने पैसे देने का वादा किया है। 8इसके अलावा मर्दकी ने ख़्वाजासरा को उस शाही फ़रमान की कापी दी जो सोसन में सादिर हुआ था और जिसमें यहूदियों को नेस्तो-नाबूद करने का एलान किया गया था। उसने गुज़ारिश की, “यह एलान आस्तर को दिखाकर उन्हें तमाम हालात से बा-ख़बर कर दें। उन्हें हिदायत दें कि बादशाह के हुज़ूर जाएँ और उससे इल्तिजा करके अपनी क़ौम की सिफ़ारिश करें।”

9हताक वापस आया और मर्दकी की बातों की ख़बर दी। 10यह सुनकर आस्तर ने उसे दुबारा मर्दकी के पास भेजा ताकि उसे बताए, 11“बादशाह के तमाम मुलाज़िम बल्कि सूबों के तमाम बाशिंदे जानते हैं कि जो भी बुलाए बग़ैर महल के अंदरूनी सहन में बादशाह के पास आए उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी, ख़ाह वह मर्द हो या औरत। वह सिर्फ़ इस सूरत में बच जाएगा कि बादशाह सोने का अपना असा उस की तरफ़ बढ़ाए। बात यह भी है कि बादशाह को मुझे बुलाए 30 दिन हो गए हैं।”

12आस्तर का पैग़ाम सुनकर 13मर्दकी ने जवाब वापस भेजा, “यह न सोचना कि मैं शाही महल में रहती हूँ, इसलिए गो दीगर तमाम यहूदी हलाक हो जाएँ मैं बच जाऊँगी। 14अगर आप इस वक़्त ख़ामोश रहेंगी तो यहूदी कहीं और से रिहाई और छुटकारा पा लेंगे जबकि आप और आपके बाप का घराना हलाक हो जाएंगे। क्या पता है, शायद आप इसी लिए मलिका बन गई हैं कि ऐसे मौक़े पर यहूदियों की मदद करें।”

15आस्तर ने मर्दकी को जवाब भेजा, 16“ठीक है, फिर जाएँ और सोसन में रहनेवाले तमाम यहूदियों को जमा करें। मेरे लिए रोज़ा रखकर तीन दिन और तीन रात न कुछ खाएँ, न पिएँ। मैं भी अपनी नौकरानियों के साथ मिलकर रोज़ा रखूँगी। इसके बाद बादशाह के पास जाऊँगी, गो यह क़ानून के ख़िलाफ़ है। अगर मरना है तो मर ही जाऊँगी।”

17तब मर्दकी चला गया और वैसा ही किया जैसा आस्तर ने उसे हिदायत की थी।

आस्तर बादशाह और हामान को दावत देती है

5 तीसरे दिन आस्तर मलिका अपना शाही लिबास पहने हुए महल के अंदरूनी सहन में दाख़िल हुई। यह सहन उस हाल के सामने था जिसमें तख़्त लगा था। उस वक़्त बादशाह दरवाज़े के मुक़ाबिल अपने तख़्त पर बैठा था।

2आस्तर को सहन में खड़ी देखकर वह ख़ुश हुआ
और सोने के शाही असा को उस की तरफ़ बढ़ा
दिया। तब आस्तर क़रीब आई और असा के सिरे
को छू दिया। 3बादशाह ने उससे पूछा, "आस्तर
मलिका, क्या बात है? आप क्या चाहती हैं?
मैं उसे देने के लिए तैयार हूँ, ख़ाह सलतनत का
आधा हिस्सा क्यों न हो!"

4आस्तर ने जवाब दिया, "मैंने आज के लिए
ज़ियाफ़त की तैयारियाँ की हैं। अगर बादशाह को
मंज़ूर हो तो वह हामान को अपने साथ लेकर
उसमें शिरकत करें।"

5बादशाह ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया,
"जल्दी करो! हामान को बुलाओ ताकि हम
आस्तर की ख़ाहिश पूरी कर सकें।" चुनाँचे
बादशाह और हामान आस्तर की तैयारशुदा
ज़ियाफ़त में शरीक हुए। 6मै पी पीकर बादशाह
ने आस्तर से पूछा, "अब मुझे बताएँ, आप क्या
चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी
दरख़ास्त पेश करें, क्योंकि मैं सलतनत के आधे
हिस्से तक आपको देने के लिए तैयार हूँ।"

7आस्तर ने जवाब दिया, "मेरी दरख़ास्त और
आरज़ू यह है, 8अगर बादशाह मुझसे ख़ुश हों और
उन्हें मेरी गुज़ारिश और दरख़ास्त पूरी करना मंज़ूर
हो तो वह कल एक बार फिर हामान के साथ
एक ज़ियाफ़त में शिरकत करें जो मैं आपके लिए
तैयार करूँ। फिर मैं बादशाह को जवाब दूँगी।"

मर्दकी को क़त्ल करने के लिए हामान की तैयारियाँ

9उस दिन जब हामान महल से निकला तो वह
बड़ा ख़ुश और ज़िंदादिल था। लेकिन फिर उस की
नज़र मर्दकी पर पड़ गई जो शाही सहन के दरवाज़े
के पास बैठा था। न वह खड़ा हुआ, न हामान को
देखकर काँप गया। हामान लाल-पीला हो गया,
10लेकिन अपने आप पर क़ाबू रखकर वह चला
गया।

घर पहुँचकर वह अपने दोस्तों और अपनी बीवी
ज़रिश को अपने पास बुलाकर 11उनके सामने
अपनी ज़बरदस्त दौलत और मुतअद्दिद बेटों पर
शेख़ी मारने लगा। उसने उन्हें उन सारे मौक़ों की
फ़हरिस्त सुनाई जिन पर बादशाह ने उस की
इज़्ज़त की थी और फ़ख़र किया कि बादशाह ने
मुझे तमाम बाक़ी शुरफ़ा और अफ़सरों से ज़्यादा
ऊँचा ओहदा दिया है। 12हामान ने कहा, "न
सिर्फ़ यह, बल्कि आज आस्तर मलिका ने ऐसी
ज़ियाफ़त की जिसमें बादशाह के अलावा सिर्फ़ मैं
ही शरीक था। और मुझे मलिका से कल के लिए
भी दावत मिली है कि बादशाह के साथ ज़ियाफ़त
में शिरकत करूँ। 13लेकिन जब तक मर्दकी यहूदी
शाही महल के सहन के दरवाज़े पर बैठा नज़र
आता है मैं चैन का साँस नहीं लूँगा।"

14उस की बीवी ज़रिश और बाक़ी अज़ी-
ज़ों ने मशवरा दिया, "सूली बनवाएँ जिसकी
ऊँचाई 75 फ़ुट हो। फिर कल सुबह-सवेरे
बादशाह के पास जाकर गुज़ारिश करें कि मर्दकी
को उससे लटकाया जाए। इसके बाद आप
तसल्ली से बादशाह के साथ जाकर ज़ियाफ़त के
मज़े ले सकते हैं।" यह मनसूबा हामान को अच्छा
लगा, और उसने सूली तैयार करवाई।

बादशाह मर्दकी की इज़्ज़त करता है

6 उस रात बादशाह को नींद न आई, इसलिए
उसने हुक्म दिया कि वह किताब लाई
जाए जिसमें रोज़ाना हुकूमत के अहम वाक़ियात
लिखे जाते हैं। उसमें से पढ़ा गया 2तो इसका
भी ज़िक्र हुआ कि मर्दकी ने किस तरह बादशाह
को दोनों ख़्वाजासराओं बिगताना और तरश के
हाथ से बचाया था, कि जब शाही कमरों के
इन पहरेदारों ने अख़स्वेरुस को क़त्ल करने की
साज़िश की तो मर्दकी ने बादशाह को इत्तला दी
थी। 3जब यह वाक़िया पढ़ा गया तो बादशाह ने
पूछा, "इसके एवज़ मर्दकी को क्या एज़ाज़ दिया
गया?" मुलाज़िमों ने जवाब दिया, "कुछ भी नहीं
दिया गया।"

4उसी लमहे हामान महल के बैरूनी सहन में
आ पहुँचा था ताकि बादशाह से मर्दकी को उस

सूली से लटकाने की इजाज़त माँगे जो उसने
उसके लिए बनवाई थी। बादशाह ने सवाल किया,
“बाहर सहन में कौन है?” 5मुलाज़िमों ने जवाब
दिया, “हामान है।” बादशाह ने हुक्म दिया, “उसे
अंदर आने दो।”

6हामान दाख़िल हुआ तो बादशाह ने उससे
पूछा, “उस आदमी के लिए क्या किया जाए
जिसकी बादशाह ख़ास इज़्ज़त करना चाहे?”
हामान ने सोचा, “वह मेरी ही बात कर रहा है!
क्योंकि मेरी निसबत कौन है जिसकी बादशाह
ज़्यादा इज़्ज़त करना चाहता है?” 7चुनाँचे उसने
जवाब दिया, “जिस आदमी की बादशाह ख़ास
इज़्ज़त करना चाहें 8उसके लिए शाही लिबास
चुना जाए जो बादशाह ख़ुद पहन चुके हों। एक
घोड़ा भी लाया जाए जिसका सर शाही सजावट
से सजा हुआ हो और जिस पर बादशाह ख़ुद सवार
हो चुके हों। 9यह लिबास और घोड़ा बादशाह के
आलातरीन अफ़सरों में से एक के सुपुर्द किया
जाए। वही उस शख़्स को जिसकी बादशाह ख़ास
इज़्ज़त करना चाहते हैं कपड़े पहनाए और उसे
घोड़े पर बिठाकर शहर के चौक में से गुज़ारे। साथ
साथ वह उसके आगे आगे चलकर एलान करे,
‘यही उसके साथ किया जाता है जिसकी इज़्ज़त
बादशाह करना चाहते हैं’।”

10अख़स्वेरुस ने हामान से कहा, “फिर जल्दी
करें, मर्दकी यहूदी शाही सहन के दरवाज़े के
पास बैठा है। शाही लिबास और घोड़ा मँगवाकर
उसके साथ ऐसा ही सुलूक करें। जो भी करने का
मशवरा आपने दिया वही कुछ करें, और ध्यान दें
कि इसमें किसी भी चीज़ की कमी न हो!”

11हामान को ऐसा ही करना पड़ा। शाही
लिबास को चुनकर उसने उसे मर्दकी को पहना
दिया। फिर उसे बादशाह के अपने घोड़े पर
बिठाकर उसने उसे शहर के चौक में से गुज़ारा।
साथ साथ वह उसके आगे आगे चलकर एलान
करता रहा, “यही उस शख़्स के साथ किया जाता
है जिसकी इज़्ज़त बादशाह करना चाहता है।”
12फिर मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े के पास
वापस आया।

लेकिन हामान उदास होकर जल्दी से अपने घर
चला गया। शर्म के मारे उसने मुँह पर कपड़ा डाल
लिया था। 13उसने अपनी बीवी ज़रिश और अपने
दोस्तों को सब कुछ सुनाया जो उसके साथ हुआ
था। तब उसके मुशीरों और बीवी ने उससे कहा,
“आपका बेड़ा ग़रक़ हो गया है, क्योंकि मर्दकी
यहूदी है और आप उसके सामने शिकस्त खाने
लगे हैं। आप उसका मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे।”

14वह अभी उससे बात कर ही रहे थे कि
बादशाह के ख़्वाजासरा पहुँच गए और उसे लेकर
जल्दी जल्दी आस्तर के पास पहुँचाया। ज़ियाफ़त
तैयार थी।

हामान का सत्यानास

7 चुनाँचे बादशाह और हामान आस्तर
मलिका की ज़ियाफ़त में शरीक हुए। 2मै
पीते वक़्त बादशाह ने पहले दिन की तरह अब भी
पूछा, “आस्तर मलिका, अब बताएँ, आप क्या
चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी
दरख़ास्त पेश करें, क्योंकि मैं सलतनत के आधे
हिस्से तक आपको देने के लिए तैयार हूँ।”

3मलिका ने जवाब दिया, “अगर बादशाह
मुझसे ख़ुश हों और उन्हें मेरी बात मंज़ूर हो तो
मेरी गुज़ारिश पूरी करें कि मेरी और मेरी क़ौम की
जान बची रहे। 4क्योंकि मुझे और मेरी क़ौम को
उनके हाथ बेच डाला गया है जो हमें तबाह और
हलाक करके नेस्तो-नाबूद करना चाहते हैं। अगर
हम बिककर ग़ुलाम और लौंडियाँ बन जाते तो मैं
ख़ामोश रहती। ऐसी कोई मुसीबत बादशाह को
तंग करने के लिए काफ़ी न होती।”

5यह सुनकर अख़स्वेरुस ने आस्तर से सवाल
किया, “कौन ऐसी हरकत करने की जुर्रत करता
है? वह कहाँ है?” 6आस्तर ने जवाब दिया,
“हमारा दुश्मन और मुख़ालिफ़ यह शरीर आदमी
हामान है!”

तब हामान बादशाह और मलिका से दहशत खाने लगा। 7बादशाह आग-बगूला होकर खड़ा हो गया और मै को छोड़कर महल के बाग़ में टहलने लगा। हामान पीछे रहकर आस्तर से इल्तिजा करने लगा, "मेरी जान बचाएँ" क्योंकि उसे अंदाज़ा हो गया था कि बादशाह ने मुझे सज़ाए-मौत देने का फ़ैसला कर लिया है।

8जब बादशाह वापस आया तो क्या देखता है कि हामान उस सोफ़े पर गिर गया है जिस पर आस्तर टेक लगाए बैठी है। बादशाह गरजा, "क्या यह आदमी यहीं महल में मेरे हुज़ूर मलिका की इसमतदरी करना चाहता है?" ज्योंही बादशाह ने यह अलफ़ाज़ कहे मुलाज़िमों ने हामान के मुँह पर कपड़ा डाल दिया। 9बादशाह का ख़्वाजासरा ख़रबूनाह बोल उठा, "हामान ने अपने घर के क़रीब सूली तैयार करवाई है जिसकी ऊँचाई 75 फ़ुट है। वह मर्दकी के लिए बनवाई गई है, उस शख़्स के लिए जिसने बादशाह की जान बचाई।" बादशाह ने हुक्म दिया, "हामान को उससे लटका दो।"

10चुनाँचे हामान को उसी सूली से लटका दिया गया जो उसने मर्दकी के लिए बनवाई थी। तब बादशाह का ग़ुस्सा ठंडा हो गया।

अख़स्वेरुस यहूदियों की मदद करता है

8 उसी दिन अख़स्वेरुस ने आस्तर मलिका को यहूदियों के दुश्मन हामान का घर दे दिया। फिर मर्दकी को बादशाह के सामने लाया गया, क्योंकि आस्तर ने उसे बता दिया था कि वह मेरा रिश्तेदार है। 2बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी उतारी जो मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल होती थी और जिसे उसने हामान से वापस ले लिया था। अब उसने उसे मर्दकी के हवाले कर दिया। उस वक़्त आस्तर ने उसे हामान की मिलकियत का निगरान भी बना दिया।

3एक बार फिर आस्तर बादशाह के सामने गिर गई और रो रोकर इलतमास करने लगी, "जो शरीर मनसूबा हामान अजाजी ने यहूदियों के ख़िलाफ़ बाँध लिया है उसे रोक दें।" 4बादशाह ने सोने का अपना असा आस्तर की तरफ़ बढ़ाया, तो वह उठकर उसके सामने खड़ी हो गई। 5उसने कहा, "अगर बादशाह को बात अच्छी और मुनासिब लगे, अगर मुझे उनकी मेहरबानी हासिल हो और वह मुझसे ख़ुश हों तो वह हामान बिन हम्मदाता अजाजी के उस फ़रमान को मनसूख़ करें जिसके मुताबिक़ सलतनत के तमाम सूबों में रहनेवाले यहूदियों को हलाक करना है। 6अगर मेरी क़ौम और नसल मुसीबत में फँसकर हलाक हो जाए तो मैं यह किस तरह बरदाश्त करूँगी?"

7तब अख़स्वेरुस ने आस्तर और मर्दकी यहूदी से कहा, "मैंने आस्तर को हामान का घर दे दिया। उसे ख़ुद मैंने यहूदियों पर हमला करने की वजह से फाँसी दी है। 8लेकिन जो भी फ़रमान बादशाह के नाम में सादिर हुआ है और जिस पर उस की अंगूठी की मुहर लगी है उसे मनसूख़ नहीं किया जा सकता। लेकिन आप एक और काम कर सकते हैं। मेरे नाम में एक और फ़रमान जारी करें जिस पर मेरी मुहर लगी हो। उसे अपनी तसल्ली के मुताबिक़ यों लिखें कि यहूदी महफ़ूज़ हो जाएँ।"

9उसी वक़्त बादशाह के मुहर्रिर बुलाए गए। तीसरे महीने सीवान का 23वाँ दिन[a] था। उन्होंने मर्दकी की तमाम हिदायात के मुताबिक़ फ़रमान लिख दिया जिसे यहूदियों और तमाम 127 सूबों के गवर्नरों, हाकिमों और रईसों को भेजना था। भारत से लेकर एथोपिया तक यह फ़रमान हर सूबे के अपने तर्ज़े-तहरीर और हर क़ौम की अपनी ज़बान में क़लमबंद था। यहूदी क़ौम को भी उसके अपने तर्ज़े-तहरीर और उस की अपनी ज़बान में फ़रमान मिल गया। 10मर्दकी ने यह फ़रमान बादशाह के नाम में लिखकर उस पर शाही मुहर

[a]25 जून।

लगाई। फिर उसने उसे शाही डाक के तेज़रफ़्तार
घोड़ों पर सवार क़ासिदों के हवाले कर दिया।
फ़रमान में लिखा था,
11“बादशाह हर शहर के यहूदियों को अपने
दिफ़ा के लिए जमा होने की इजाज़त देते हैं।
अगर मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सूबों के दुश्मन उन पर
हमला करें तो यहूदियों को उन्हें बाल-बच्चों समेत
तबाह करने और हलाक करके नेस्तो-नाबूद करने
की इजाज़त है। नीज़, वह उनकी मिलकियत पर
क़ब्ज़ा कर सकते हैं। 12एक ही दिन यानी 12वें
महीने अदार के 13वें दिन[a] यहूदियों को बादशाह
के तमाम सूबों में यह कुछ करने की इजाज़त है।”
13हर सूबे में फ़रमान की क़ानूनी तसदीक़
करनी थी और हर क़ौम को इसकी ख़बर पहुँचानी
थी ताकि मुक़र्ररा दिन यहूदी अपने दुश्मनों से
इंतक़ाम लेने के लिए तैयार हों। 14बादशाह के
हुक्म पर तेज़रौ क़ासिद शाही डाक के बेहतरीन
घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। फ़रमान का
एलान सोसन के क़िले में भी हुआ।
15मर्दकी क़िरमिज़ी और सफ़ेद रंग का शाही
लिबास, नफ़ीस कतान और अरग़वानी रंग की
चादर और सर पर सोने का बड़ा ताज पहने हुए
महल से निकला। तब सोसन के बाशिंदे नारे लगा
लगाकर ख़ुशी मनाने लगे। 16यहूदियों के लिए
आबो-ताब, ख़ुशी-ओ-शादमानी और इज़्ज़तो-
जलाल का ज़माना शुरू हुआ। 17हर सूबे और हर
शहर में जहाँ भी बादशाह का नया फ़रमान पहुँच
गया, वहाँ यहूदियों ने ख़ुशी के नारे लगा लगाकर
एक दूसरे की ज़ियाफ़त की और जशन मनाया।
उस वक़्त दूसरी क़ौमों के बहुत-से लोग यहूदी बन
गए, क्योंकि उन पर यहूदियों का ख़ौफ़ छा गया
था।

यहूदी बदला लेते हैं

9 फिर 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन[b]
आ गया जब बादशाह के फ़रमान पर
अमल करना था। दुश्मनों ने उस दिन यहूदियों
पर ग़ालिब आने की उम्मीद रखी थी, लेकिन अब
इसके उलट हुआ, यहूदी ख़ुद उन पर ग़ालिब आए
जो उनसे नफ़रत रखते थे। 2सलतनत के तमाम
सूबों में वह अपने अपने शहरों में जमा हुए ताकि
उन पर हमला करें जो उन्हें नुक़सान पहुँचाना
चाहते थे। कोई उनका मुक़ाबला न कर सका,
क्योंकि दीगर तमाम क़ौमों के लोग उनसे डर गए
थे। 3साथ साथ सूबों के शुरफ़ा, गवर्नरों, हाकिमों
और दीगर शाही अफ़सरों ने यहूदियों की मदद
की, क्योंकि मर्दकी का ख़ौफ़ उन पर तारी हो गया
था, 4और दरबार में उसके ऊँचे ओहदे और उसके
बढ़ते हुए असरो-रसूख़ की ख़बर तमाम सूबों में
फैल गई थी।
5उस दिन यहूदियों ने अपने दुश्मनों को
तलवार से मार डाला और हलाक करके नेस्तो-
नाबूद कर दिया। जो भी उनसे नफ़रत रखता
था उसके साथ उन्होंने जो जी चाहा सुलूक
किया। 6सोसन के क़िले में उन्होंने 500
आदमियों को मार डाला, 7-10नीज़ यहूदियों
के दुश्मन हामान के 10 बेटों को भी। उनके
नाम परशंदाता, दलफ़ून, असपाता, पोराता,
अदलियाह, अरीदाता, परमश्ता, अरीसी, अरिदी
और वैज़ाता थे। लेकिन यहूदियों ने उनका माल
न लूटा।
11उसी दिन बादशाह को इत्तला दी गई कि
सोसन के क़िले में कितने अफ़राद हलाक हुए
थे। 12तब उसने आस्तर मलिका से कहा, “सिर्फ़
यहाँ सोसन के क़िले में यहूदियों ने हामान के
10 बेटों के अलावा 500 आदमियों को मौत के
घाट उतार दिया है। तो फिर उन्होंने दीगर सूबों में
क्या कुछ न किया होगा! अब मुझे बताएँ, आप
मज़ीद क्या चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा।
अपनी दरख़ास्त पेश करें, क्योंकि वह पूरी की
जाएगी।” 13आस्तर ने जवाब दिया, “अगर
बादशाह को मंज़ूर हो तो सोसन के यहूदियों को
इजाज़त दी जाए कि वह आज की तरह कल भी

[a]7 मार्च।

[b]7 मार्च।

अपने दुश्मनों पर हमला करें। और हामान के 10 बेटों की लाशें सूली से लटकाई जाएँ।”

14बादशाह ने इजाज़त दी तो सोसन में इसका एलान किया गया। तब हामान के 10 बेटों को सूली से लटका दिया गया, 15और अगले दिन यानी महीने के 14वें दिन[a] शहर के यहूदी दुबारा जमा हुए। इस बार उन्होंने 300 आदमियों को क़त्ल किया। लेकिन उन्होंने किसी का माल न लूटा।

16-17सलतनत के सूबों के बाक़ी यहूदी भी महीने के 13वें दिन[b] अपने दिफ़ा के लिए जमा हुए थे। उन्होंने 75,000 दुश्मनों को क़त्ल किया लेकिन किसी का माल न लूटा था। अब वह दुबारा चैन का साँस लेकर आराम से ज़िंदगी गुज़ार सकते थे। अगले दिन उन्होंने एक दूसरे की ज़ियाफ़त करके ख़ुशी का बड़ा जशन मनाया। 18सोसन के यहूदियों ने महीने के 13वें और 14वें दिन जमा होकर अपने दुश्मनों पर हमला किया था, इसलिए उन्होंने 15वें दिन ख़ुशी का बड़ा जशन मनाया। 19यही वजह है कि देहात और खुले शहरों में रहनेवाले यहूदी आज तक 12वें महीने के 14वें दिन[c] जशन मनाते हुए एक दूसरे की ज़ियाफ़त करते और एक दूसरे को तोहफ़े देते हैं।

ईदे-पूरीम की इब्तिदा

20जो कुछ उस वक़्त हुआ था उसे मर्दकी ने क़लमबंद कर दिया। साथ साथ उसने फ़ारसी सलतनत के क़रीबी और दूर-दराज़ के तमाम सूबों में आबाद यहूदियों को ख़त लिख दिए 21जिनमें उसने एलान किया, “अब से सालाना अदार महीने के 14वें और 15वें दिन जशन मनाना है। 22ख़ुशी मनाते हुए एक दूसरे की ज़ियाफ़त करना, एक दूसरे को तोहफ़े देना और ग़रीबों में ख़ैरात तक़सीम करना, क्योंकि इन दिनों के दौरान आपको अपने दुश्मनों से सुकून हासिल हुआ है, आपका दुख सुख में और आपका मातम शादमानी में बदल गया।”

23मर्दकी की इन हिदायात के मुताबिक़ इन दो दिनों का जशन दस्तूर बन गया।

24-26ईद का नाम ‘पूरीम’ पड़ गया, क्योंकि जब यहूदियों का दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी उन सबको हलाक करने का मनसूबा बाँध रहा था तो उसने यहूदियों को मारने का सबसे मुबारक दिन मालूम करने के लिए क़ुरा बनाम पूर डाल दिया। जब अख़स्वेरुस को सब कुछ मालूम हुआ तो उसने हुक्म दिया कि हामान को वह सज़ा दी जाए जिसकी तैयारियाँ उसने यहूदियों के लिए की थीं। तब उसे उसके बेटों समेत फाँसी से लटकाया गया।

चूँकि यहूदी इस तजरबे से गुज़रे थे और मर्दकी ने हिदायत दी थी 27इसलिए वह मुत्तफ़िक़ हुए कि हम सालाना इसी वक़्त यह दो दिन ऐन हिदायात के मुताबिक़ मनाएँगे। यह दस्तूर न सिर्फ़ हमारा फ़र्ज़ है, बल्कि हमारी औलाद और उन ग़ैरयहूदियों का भी जो यहूदी मज़हब में शरीक हो जाएंगे। 28लाज़िम है कि जो कुछ हुआ है हर नसल और हर ख़ानदान उसे याद करके मनाता रहे, ख़ाह वह किसी भी सूबे या शहर में क्यों न हो। ज़रूरी है कि यहूदी पूरीम की ईद मनाने का दस्तूर कभी न भूलें, कि उस की याद उनकी औलाद में से कभी भी मिट न जाए।

29मलिका आस्तर बिंत अबीख़ैल और मर्दकी यहूदी ने पूरे इख़्तियार के साथ पूरीम की ईद के बारे में एक और ख़त लिख दिया ताकि उस की तसदीक़ हो जाए। 30यह ख़त फ़ारसी सलतनत के 127 सूबों में आबाद तमाम यहूदियों को भेजा गया। सलामती की दुआ और अपनी वफ़ादारी का इज़हार करने के बाद 31मलिका और मर्दकी ने उन्हें दुबारा हिदायत की, “जिस तरह हमने फ़रमाया है, यह ईद लाज़िमन मुतैयिन औक़ात के ऐन मुताबिक़ मनानी है। इसे मनाने के लिए

[a]8 मार्च।
[b]7 मार्च।
[c]फ़रवरी ता मार्च।

यों मुत्तफ़िक़ हो जाएँ जिस तरह आपने अपने और अपनी औलाद के लिए रोज़ा रखने और मातम करने के दिन मुक़र्रर किए हैं।”
32अपने इस फ़रमान से आस्तर ने पूरीम की ईद और उसे मनाने के क़वायद की तसदीक़ की, और यह तारीख़ी किताब में दर्ज किया गया।

मर्दकी अपनी क़ौम का सहारा बना रहता है

10 बादशाह ने पूरी सलतनत के तमाम ममालिक पर साहिली इलाक़ों तक टैक्स लगाया।
2उस की तमाम ज़बरदस्त कामयाबियों का बयान 'शाहाने-मादी-ओ-फ़ारस की तारीख़' की किताब में किया गया है। वहाँ इसका भी पूरा ज़िक्र है कि उसने मर्दकी को किस ऊँचे ओहदे पर फ़ायज़ किया था।
3मर्दकी बादशाह के बाद सलतनत का सबसे आला अफ़सर था। यहूदियों में वह मुअज़्ज़ज़ था, और वह उस की बड़ी क़दर करते थे, क्योंकि वह अपनी क़ौम की बहबूदी का तालिब रहता और तमाम यहूदियों के हक़ में बात करता था।

सहायफ़े-हिकमत

और ज़बूर

असल इबरानी मतन से
नया उर्दू तरजुमा

अय्यूब

अय्यूब की दीनदारी

1 मुल्के-ऊज़ में एक बेइलज़ाम आदमी रहता था जिसका नाम अय्यूब था। वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता था। 2उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं। 3साथ साथ उसके बहुत माल-मवेशी थे : 7,000 भेड़-बकरियाँ, 3,000 ऊँट, बैलों की 500 जोड़ियाँ और 500 गधियाँ। उसके बेशुमार नौकर-नौकरानियाँ भी थे। ग़रज़ मशरिक़ के तमाम बाशिंदों में इस आदमी की हैसियत सबसे बड़ी थी।

4उसके बेटों का दस्तूर था कि बारी बारी अपने घरों में ज़ियाफ़त करें। इसके लिए वह अपनी तीन बहनों को भी अपने साथ खाने और पीने की दावत देते थे। 5हर दफ़ा जब ज़ियाफ़त के दिन इख़्तिताम तक पहुँचते तो अय्यूब अपने बच्चों को बुलाकर उन्हें पाक-साफ़ कर देता और सुबह-सवेरे उठकर हर एक के लिए भस्म होनेवाली एक एक क़ुरबानी पेश करता। क्योंकि वह कहता था, "हो सकता है मेरे बच्चों ने गुनाह करके दिल में अल्लाह पर लानत की हो।" चुनाँचे अय्यूब हर ज़ियाफ़त के बाद ऐसा ही करता था।

अय्यूब के किरदार पर इलज़ाम

6एक दिन फ़रिश्ते[a] अपने आपको रब के हुज़ूर पेश करने आए। इबलीस भी उनके दरमियान मौजूद था। 7रब ने इबलीस से पूछा, "तू कहाँ से आया है?" इबलीस ने जवाब दिया, "मैं दुनिया में इधर-उधर घुमता-फिरता रहा।"

8रब बोला, "क्या तूने मेरे बंदे अय्यूब पर तवज्जुह दी? दुनिया में उस जैसा कोई और नहीं। क्योंकि वह बेइलज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता है।"

9इबलीस ने रब को जवाब दिया, "बेशक, लेकिन क्या अय्यूब यों ही अल्लाह का ख़ौफ़ मानता है? 10तूने तो उस के, उसके घराने के और उस की तमाम मिलकियत के इर्दगिर्द हिफ़ाज़ती बाड़ लगाई है। और जो कुछ उसके हाथ ने किया उस पर तूने बरकत दी, नतीजे में उस की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पूरे मुल्क में फैल गए हैं। 11लेकिन वह क्या करेगा अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ाकर सब कुछ तबाह करे जो उसे हासिल है। तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।"

12रब ने इबलीस से कहा, "ठीक है, जो कुछ भी उसका है वह तेरे हाथ में है। लेकिन उसके बदन को हाथ न लगाना।" इबलीस रब के हुज़ूर से चला गया।

13एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियाँ मामूल के मुताबिक़ ज़ियाफ़त कर रहे थे। वह बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे। 14अचानक एक क़ासिद अय्यूब के पास पहुँचकर

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अल्लाह के फ़रज़ंद।

कहने लगा, “बैल खेत में हल चला रहे थे और
गधियाँ साथवाली ज़मीन पर चर रही थीं 15कि
सबा के लोगों ने हम पर हमला करके सब कुछ
छीन लिया। उन्होंने तमाम मुलाज़िमों को तलवार
से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आपको यह बताने के
लिए बच निकला हूँ।”

16वह अभी बात कर ही रहा था कि
एक और क़ासिद पहुँचा जिसने इत्तला दी,
“अल्लाह की आग ने आसमान से गिर-
कर आपकी तमाम भेड़-बकरियों और मुलाज़िमों
को भस्म कर दिया। सिर्फ़ मैं ही आपको यह बताने
के लिए बच निकला हूँ।”

17वह अभी बात कर ही रहा था कि तीसरा
क़ासिद पहुँचा। वह बोला, “बाबल के कसदियों
ने तीन गुरोहों में तक़सीम होकर हमारे ऊँटों पर
हमला किया और सब कुछ छीन लिया। तमाम
मुलाज़िमों को उन्होंने तलवार से मार डाला, सिर्फ़
मैं ही आपको यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

18वह अभी बात कर ही रहा था कि चौथा
क़ासिद पहुँचा। उसने कहा, “आपके बेटे-बेटियाँ
अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै
पी रहे थे 19कि अचानक रेगिस्तान की जानिब से
एक ज़ोरदार आँधी आई जो घर के चारों कोनों से
यों टकराई कि वह जवानों पर गिर पड़ा। सबके
सब हलाक हो गए। सिर्फ़ मैं ही आपको यह बताने
के लिए बच निकला हूँ।”

20यह सब कुछ सुनकर अय्यूब उठा। अपना
लिबास फाड़कर उसने अपने सर के बाल
मुँडवाए। फिर उसने ज़मीन पर गिरकर औंधे मुँह
रब को सिजदा किया। 21वह बोला, “मैं नंगी
हालत में माँ के पेट से निकला और नंगी हालत में
कूच कर जाऊँगा। रब ने दिया, रब ने लिया, रब
का नाम मुबारक हो!”

22इस सारे मामले में अय्यूब ने न गुनाह किया,
न अल्लाह के बारे में कुफ़्र बका।

अय्यूब पर बीमारी का हमला

2 एक दिन फ़रिश्ते[a] दुबारा अपने आप-
को रब के हुज़ूर पेश करने आए। इबलीस
भी उनके दरमियान मौजूद था। 2रब ने इबलीस से
पूछा, “तू कहाँ से आया है?” इबलीस ने जवाब
दिया, “मैं दुनिया में इधर-उधर घुमता-फिरता
रहा।” 3रब बोला, “क्या तूने मेरे बंदे अय्यूब पर
तवज्जुह दी? ज़मीन पर उस जैसा कोई और
नहीं। वह बेइलज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता,
अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर
रहता है। अभी तक वह अपने बेइलज़ाम किरदार
पर क़ायम है हालाँकि तूने मुझे उसे बिलावजह
तबाह करने पर उकसाया।”

4इबलीस ने जवाब दिया, “खाल का बदला
खाल ही होता है! इनसान अपनी जान को बचाने
के लिए अपना सब कुछ दे देता है। 5लेकिन वह
क्या करेगा अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ाकर
उसका जिस्म[b] छू दे? तब वह तेरे मुँह पर ही
तुझ पर लानत करेगा।”

6रब ने इबलीस से कहा, “ठीक है, वह तेरे
हाथ में है। लेकिन उस की जान को मत छेड़ना।”
7इबलीस रब के हुज़ूर से चला गया और अय्यूब
को सताने लगा। चाँद से लेकर तल्वे तक अय्यूब
के पूरे जिस्म पर बदतरीन क़िस्म के फोड़े निकल
आए। 8तब अय्यूब राख में बैठ गया और ठीकरे
से अपनी जिल्द को खुरचने लगा।

9उस की बीवी बोली, “क्या तू अब तक अपने
बेइलज़ाम किरदार पर क़ायम है? अल्लाह पर
लानत करके दम छोड़ दे!” 10लेकिन उसने
जवाब दिया, “तू अहमक़ औरत की-सी बातें कर
रही है। अल्लाह की तरफ़ से भलाई तो हम क़बूल
करते हैं, तो क्या मुनासिब नहीं कि उसके हाथ से
मुसीबत भी क़बूल करें?” इस सारे मामले में
अय्यूब ने अपने मुँह से गुनाह न किया।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अल्लाह के फ़रज़ंद।

[b]लफ़्ज़ी तरजुमा : गोश्त-पोस्त और हड्डियाँ।

अय्यूब के तीन दोस्त

11अय्यूब के तीन दोस्त थे। उनके नाम
इलीफ़ज़ तेमानी, बिलदद सूख़ी और ज़ूफ़र
नामाती थे। जब उन्हें इत्तला मिली कि अय्यूब पर
यह तमाम आफ़त आ गई है तो हर एक अपने घर
से रवाना हुआ। उन्होंने मिलकर फ़ैसला किया कि
इकट्ठे अफ़सोस करने और अय्यूब को तसल्ली
देने जाएंगे। 12जब उन्होंने दूर से अपनी नज़र
उठाकर अय्यूब को देखा तो उस की इतनी बुरी
हालत थी कि वह पहचाना नहीं जाता था। तब
वह ज़ारो-क़तार रोने लगे। अपने कपड़े फाड़कर
उन्होंने अपने सरों पर ख़ाक डाली। 13फिर वह
उसके साथ ज़मीन पर बैठ गए। सात दिन और
सात रात वह इसी हालत में रहे। इस पूरे अरसे
में उन्होंने अय्यूब से एक भी बात न की, क्योंकि
उन्होंने देखा कि वह शदीद दर्द का शिकार है।

अय्यूब की आहो-ज़ारी

3 तब अय्यूब बोल उठा और अपने जन्म दिन
पर लानत करने लगा। 2उसने कहा,
3“वह दिन मिट जाए जब मैंने जन्म लिया,
वह रात जिसने कहा, ‘पेट में लड़का पैदा हुआ
है!’ 4वह दिन अंधेरा ही अंधेरा हो जाए, एक
किरण भी उसे रौशन न करे। अल्लाह भी जो
बुलंदियों पर है उसका ख़याल न करे। 5तारीकी
और घना अंधेरा उस पर क़ब्ज़ा करे, काले काले
बादल उस पर छाए रहें, हाँ वह रौशनी से महरूम
होकर सख़्त दहशतज़दा हो जाए। 6घना अंधेरा
उस रात को छीन ले जब मैं माँ के पेट में पैदा हुआ।
उसे न साल, न किसी महीने के दिनों में शुमार
किया जाए। 7वह रात बाँझ रहे, उसमें ख़ुशी का
नारा न लगाया जाए। 8जो दिनों पर लानत भेजते
और लिवियातान अज़दहे को तहरीक में लाने के
क़ाबिल होते हैं वही उस रात पर लानत करें।
9उस रात के धुँधलके में टिमटिमानेवाले सितारे
बुझ जाएँ, फ़जर का इंतज़ार करना बेफ़ायदा ही
रहे बल्कि वह रात तुलूए-सुबह की पलकें[a] भी न
देखे। 10क्योंकि उसने मेरी माँ को मुझे जन्म देने
से न रोका, वरना यह तमाम मुसीबत मेरी आँखों
से छुपी रहती।

11मैं पैदाइश के वक़्त क्यों मर न गया, माँ के
पेट से निकलते वक़्त जान क्यों न दे दी? 12माँ
के घुटनों ने मुझे ख़ुशआमदीद क्यों कहा, उस
की छातियों ने मुझे दूध क्यों पिलाया? 13अगर
यह न होता तो इस वक़्त मैं सुकून से लेटा
रहता, आराम से सोया होता। 14मैं उन्हीं के साथ
होता जो पहले बादशाह और दुनिया के मुशीर
थे, जिन्होंने खंडरात अज़ सरे-नौ तामीर किए।
15मैं उनके साथ होता जो पहले हुक्मरान थे और
अपने घरों को सोने-चाँदी से भर लेते थे। 16मुझे
ज़ाया हो जानेवाले बच्चे की तरह क्यों न ज़मीन
में दबा दिया गया? मुझे उस बच्चे की तरह क्यों
न दफ़नाया गया जिसने कभी रौशनी न देखी?
17उस जगह बेदीन अपनी बेलगाम हरकतों से
बाज़ आते और वह आराम करते हैं जो तगो-दौ
करते करते थक गए थे। 18वहाँ क़ैदी इतमीनान से
रहते हैं, उन्हें उस ज़ालिम की आवाज़ नहीं सुननी
पड़ती जो उन्हें जीते-जी हाँकता रहा। 19उस जगह
छोटे और बड़े सब बराबर होते हैं, ग़ुलाम अपने
मालिक से आज़ाद रहता है।

20अल्लाह मुसीबतज़दों को रौशनी और
शिकस्तादिलों को ज़िंदगी क्यों अता करता है?
21वह तो मौत के इंतज़ार में रहते हैं लेकिन
बेफ़ायदा। वह खोद खोदकर उसे यों तलाश करते
हैं जिस तरह किसी पोशीदा ख़ज़ाने को। 22अगर
उन्हें क़ब्र नसीब हो तो वह बाग़ बाग़ होकर
जशन मनाते हैं। 23अल्लाह उसको ज़िंदा क्यों
रखता जिसकी नज़रों से रास्ता ओझल हो गया
है और जिसके चारों तरफ़ उसने बाड़ लगाई है।
24क्योंकि जब मुझे रोटी खानी है तो हाय हाय
करता हूँ, मेरी आहें पानी की तरह मुँह से फूट
निकलती हैं। 25जिस चीज़ से मैं डरता था वह
मुझ पर आई, जिससे मैं ख़ौफ़ खाता था उससे

[a]पलकों से मुराद पहली किरणें है।

मेरा वास्ता पड़ा। 26न मुझे इतमीनान हुआ, न
सुकून या आराम बल्कि मुझ पर बेचैनी ग़ालिब
आई।”

इलीफ़ज़ का एतराज़ : इनसान अल्लाह के हुज़ूर रास्त नहीं ठहर सकता

4 यह कुछ सुनकर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब
दिया,
2“क्या तुझसे बात करने का कोई फ़ायदा है?
तू तो यह बरदाश्त नहीं कर सकता। लेकिन दूसरी
तरफ़ कौन अपने अलफ़ाज़ रोक सकता है?
3ज़रा सोच ले, तूने ख़ुद बहुतों को तरबियत दी,
कई लोगों के थकेमाँदे हाथों को तक़वियत दी है।
4तेरे अलफ़ाज़ ने ठोकर खानेवाले को दुबारा खड़ा
किया, डगमगाते हुए घुटने तूने मज़बूत किए।
5लेकिन अब जब मुसीबत तुझ पर आ गई तो
तू उसे बरदाश्त नहीं कर सकता, अब जब ख़ुद
उस की ज़द में आ गया तो तेरे रोंगटे खड़े हो गए
हैं। 6क्या तेरा एतमाद इस पर मुनहसिर नहीं है
कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ माने, तेरी उम्मीद इस
पर नहीं कि तू बेइलज़ाम राहों पर चले?
7सोच ले, क्या कभी कोई बेगुनाह हलाक हुआ
है? हरगिज़ नहीं! जो सीधी राह पर चलते हैं
वह कभी रूए-ज़मीन पर से मिट नहीं गए। 8जहाँ
तक मैंने देखा, जो नाइनसाफ़ी का हल चलाए
और नुक़सान का बीज बोए वह इसकी फ़सल
काटता है। 9ऐसे लोग अल्लाह की एक फूँक से
तबाह, उसके क़हर के एक झोंके से हलाक हो
जाते हैं। 10शेरबबर की दहाड़ें ख़ामोश हो गईं,
जवान शेर के दाँत झड़ गए हैं। 11शिकार न मिलने
की वजह से शेर हलाक हो जाता और शेरनी के
बच्चे परागंदा हो जाते हैं।
12एक बार एक बात चोरी-छुपे मेरे पास पहुँची,
उसके चंद अलफ़ाज़ मेरे कान तक पहुँच गए।
13रात को ऐसी रोयाएँ पेश आईं जो उस वक़्त
देखी जाती हैं जब इनसान गहरी नींद सोया होता
है। इनसे मैं परेशानकुन ख़यालात में मुब्तला
हुआ। 14मुझ पर दहशत और थरथराहट ग़ालिब
आई, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज़ उठीं। 15फिर
मेरे चेहरे के सामने से हवा का झोंका गुज़र
गया और मेरे तमाम रोंगटे खड़े हो गए। 16एक
हस्ती मेरे सामने खड़ी हुई जिसे मैं पहचान न
सका, एक शक्ल मेरी आँखों के सामने दिखाई
दी। ख़ामोशी थी, फिर एक आवाज़ ने फ़रमाया,
17‘क्या इनसान अल्लाह के हुज़ूर रास्तबाज़ ठहर
सकता है, क्या इनसान अपने ख़ालिक़ के सामने
पाक-साफ़ ठहर सकता है?’ 18देख, अल्लाह
अपने ख़ादिमों पर भरोसा नहीं करता, अपने
फ़रिश्तों को वह अहमक़ ठहराता है। 19तो फिर
वह इनसान पर क्यों भरोसा रखे जो मिट्टी के घर
में रहता, ऐसे मकान में जिसकी बुनियाद ख़ाक
पर ही रखी गई है। उसे पतंगे की तरह कुचला
जाता है। 20सुबह को वह ज़िंदा है लेकिन शाम
तक पाश पाश हो जाता, अबद तक हलाक हो
जाता है, और कोई भी ध्यान नहीं देता। 21उसके
ख़ैमे के रस्से ढीले करो तो वह हिकमत हासिल
किए बग़ैर इंतक़ाल कर जाता है।

अल्लाह की तादीब तसलीम कर

5 बेशक आवाज़ दे, लेकिन कौन जवाब
देगा? कोई नहीं! मुक़द्दसीन में से तू
किसकी तरफ़ रुजू कर सकता है? 2क्योंकि
अहमक़ की रंजीदगी उसे मार डालती, सादालौह
की सरगरमी उसे मौत के घाट उतार देती है। 3मैंने
ख़ुद एक अहमक़ को जड़ पकड़ते देखा, लेकिन
मैंने फ़ौरन ही उसके घर पर लानत भेजी। 4उसके
फ़रज़ंद नजात से दूर रहते। उन्हें शहर के दरवाज़े में
रौंदा जाता है, और बचानेवाला कोई नहीं। 5भूके
उस की फ़सल खा जाते, काँटेदार बाड़ों में महफ़ूज़
माल भी छीन लेते हैं। प्यासे अफ़राद हाँपते हुए
उस की दौलत के पीछे पड़ जाते हैं। 6क्योंकि
बुराई ख़ाक से नहीं निकलती और दुख-दर्द मिट्टी
से नहीं फूटता 7बल्कि इनसान ख़ुद इसका बाइस
है, दुख-दर्द उस की विरासत में ही पाया जाता है।
यह इतना यक़ीनी है जितना यह कि आग की
चिंगारियाँ ऊपर की तरफ़ उड़ती हैं।

8लेकिन अगर मैं तेरी जगह होता तो अल्लाह
से दरियाफ़्त करता, उसे ही अपना मामला
पेश करता। 9वही इतने अज़ीम काम करता है
कि कोई उनकी तह तक नहीं पहुँच सकता,
इतने मोजिज़े कि कोई उन्हें गिन नहीं सकता।
10वही रूए-ज़मीन को बारिश अता करता, खुले
मैदान पर पानी बरसा देता है। 11पस्तहालों को
वह सरफ़राज़ करता और मातम करनेवालों को
उठाकर महफ़ूज़ मक़ाम पर रख देता है। 12वह
चालाकों के मनसूबे तोड़ देता है ताकि उनके हाथ
नाकाम रहें। 13वह दानिशमंदों को उनकी अपनी
चालाकी के फंदे में फँसा देता है तो होशियारों
की साज़िशें अचानक ही ख़त्म हो जाती हैं।
14दिन के वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता, और
दोपहर के वक़्त भी वह टटोल टटोलकर फिरते हैं।
15अल्लाह ज़रूरतमंदों को उनके मुँह की तलवार
और ज़बरदस्त के क़ब्ज़े से बचा लेता है। 16यों
पस्तहालों को उम्मीद दी जाती और नाइनसाफ़ी
का मुँह बंद किया जाता है।

17मुबारक है वह इनसान जिसकी मलामत
अल्लाह करता है! चुनाँचे क़ादिरे-मुतलक़ की
तादीब को हक़ीर न जान। 18क्योंकि वह ज़ख़मी
करता लेकिन मरहम-पट्टी भी लगा देता है, वह
ज़रब लगाता लेकिन अपने हाथों से शफ़ा भी
बख़्शता है। 19वह तुझे छः मुसीबतों से छुड़ाएगा,
और अगर इसके बाद भी कोई आए तो तुझे
नुक़सान नहीं पहुँचेगा। 20अगर काल पड़े तो वह
फ़िद्या देकर तुझे मौत से बचाएगा, जंग में तुझे
तलवार की ज़द में आने नहीं देगा। 21तू ज़बान
के कोड़ों से महफ़ूज़ रहेगा, और जब तबाही आए
तो डरने की ज़रूरत नहीं होगी। 22तू तबाही और
काल की हँसी उड़ाएगा, ज़मीन के वहशी जानवरों
से ख़ौफ़ नहीं खाएगा। 23क्योंकि तेरा खुले मैदान
के पत्थरों के साथ अहद होगा, इसलिए उसके
जंगली जानवर तेरे साथ सलामती से ज़िंदगी
गुज़ारेंगे। 24तू जान लेगा कि तेरा ख़ैमा महफ़ूज़
है। जब तू अपने घर का मुआयना करे तो मालूम
होगा कि कुछ गुम नहीं हुआ। 25तू देखेगा कि
तेरी औलाद बढ़ती जाएगी, तेरे फ़रज़ंद ज़मीन
पर घास की तरह फैलते जाएंगे। 26तू वक़्त पर
जमाशुदा पूलों की तरह उम्ररसीदा होकर क़ब्र में
उतरेगा।

27हमने तहक़ीक़ करके मालूम किया है कि
ऐसा ही है। चुनाँचे हमारी बात सुनकर उसे अपना
ले!”

अय्यूब का जवाब : साबित करो कि मुझ से क्या ग़लती हुई है

6 तब अय्यूब ने जवाब देकर कहा,
2“काश मेरी रंजीदगी का वज़न किया जा
सके और मेरी मुसीबत तराज़ू में तोली जा सके!
3क्योंकि वह समुंदर की रेत से ज़्यादा भारी हो
गई है। इसी लिए मेरी बातें बेतुकी-सी लग रही हैं।
4क्योंकि क़ादिरे-मुतलक़ के तीर मुझमें गड़ गए
हैं, मेरी रूह उनका ज़हर पी रही है। हाँ, अल्लाह के
हौलनाक हमले मेरे ख़िलाफ़ सफ़आरा हैं। 5क्या
जंगली गधा ढीनचूँ ढीनचूँ करता है जब उसे घास
दस्तयाब हो? या क्या बैल डकराता है जब उसे
चारा हासिल हो? 6क्या फीका खाना नमक के
बग़ैर खाया जाता, या अंडे की सफेदी[a] में ज़ायक़ा
है? 7ऐसी चीज़ को मैं छूता भी नहीं, ऐसी ख़ुराक
से मुझे घिन ही आती है।

8काश मेरी गुज़ारिश पूरी हो जाए, अल्लाह मेरी
आरज़ू पूरी करे! 9काश वह मुझे कुचल देने के
लिए तैयार हो जाए, वह अपना हाथ बढ़ाकर मुझे
हलाक करे। 10फिर मुझे कम अज़ कम तसल्ली
होती बल्कि मैं मुस्तक़िल दर्द के मारे पेचो-ताब
खाने के बावुजूद ख़ुशी मनाता कि मैंने क़ुद्दूस ख़ुदा
के फ़रमानों का इनकार नहीं किया।

11मेरी इतनी ताक़त नहीं कि मज़ीद इंतज़ार
करूँ, मेरा क्या अच्छा अंजाम है कि सब्र करूँ?
12क्या मैं पत्थरों जैसा ताक़तवर हूँ? क्या मेरा
जिस्म पीतल जैसा मज़बूत है? 13नहीं, मुझसे हर

[a]या ख़त्मी का रस।

सहारा छीन लिया गया है, मेरे साथ ऐसा सुलूक
हुआ है कि कामयाबी का इमकान ही नहीं रहा।
14जो अपने दोस्त पर मेहरबानी करने से
इनकार करे वह अल्लाह का ख़ौफ़ तर्क करता
है। 15मेरे भाइयों ने वादी की उन नदियों जैसी
बेवफ़ाई की है जो बरसात के मौसम में अपने
किनारों से बाहर आ जाती हैं। 16उस वक़्त वह
बर्फ़ से भरकर गदली हो जाती हैं, 17लेकिन उरूज
तक पहुँचते ही वह सूख जाती, तपती गरमी में
ओझल हो जाती हैं। 18तब क़ाफ़िले अपनी राहों
से हट जाते हैं ताकि पानी मिल जाए, लेकिन
बेफ़ायदा। वह रेगिस्तान में पहुँचकर तबाह हो
जाते हैं। 19तैमा के क़ाफ़िले इस पानी की तलाश
में रहते, सबा के सफ़र करनेवाले ताजिर उस पर
उम्मीद रखते हैं, 20लेकिन बेसूद। जिस पर उन्होंने
एतमाद किया वह उन्हें मायूस कर देता है। जब
वहाँ पहुँचते हैं तो शरमिंदा हो जाते हैं।

21तुम भी इतने ही बेकार साबित हुए हो। तुम
हौलनाक बात देखकर दहशतज़दा हो गए हो।
22क्या मैंने कहा, 'मुझे तोहफ़ा दे दो, अपनी
दौलत में से मेरी ख़ातिर रिश्वत दो, 23मुझे दुश्मन
के हाथ से छुड़ाओ, फ़िद्या देकर ज़ालिम के क़ब्ज़े
से बचाओ'?

24मुझे साफ़ हिदायत दो तो मैं मानकर ख़ामोश
हो जाऊँगा। मुझे बताओ कि किस बात में मुझसे
ग़लती हुई है। 25सीधी राह की बातें कितनी
तकलीफ़देह हो सकती हैं! लेकिन तुम्हारी
मलामत से मुझे किस क़िस्म की तरबियत हासिल
होगी? 26क्या तुम समझते हो कि ख़ाली
अलफ़ाज़ मामले को हल करेंगे, गो तुम मायूसी
में मुब्तला आदमी की बात नज़रंदाज़ करते हो?
27क्या तुम यतीम के लिए भी क़ुरा डालते, अपने
दोस्त के लिए भी सौदाबाज़ी करते हो?

28लेकिन अब ख़ुद फ़ैसला करो, मुझ पर नज़र
डालकर सोच लो। अल्लाह की क़सम, मैं तुम्हारे
रूबरू झूट नहीं बोलता। 29अपनी ग़लती तसलीम
करो ताकि नाइनसाफ़ी न हो। अपनी ग़लती मान
लो, क्योंकि अब तक मैं हक़ पर हूँ। 30क्या मेरी
ज़बान झूट बोलती है? क्या मैं फ़रेबदेह बातें
पहचान नहीं सकता?

अल्लाह मुझे क्यों नहीं छोड़ता?

7 इनसान दुनिया में सख़्त ख़िदमत करने पर
मजबूर होता है, जीते-जी वह मज़दूर की-
सी ज़िंदगी गुज़ारता है। 2ग़ुलाम की तरह वह शाम
के साये का आरज़ूमंद होता, मज़दूर की तरह
मज़दूरी के इंतज़ार में रहता है। 3मुझे भी बेमानी
महीने और मुसीबत की रातें नसीब हुई हैं। 4जब
बिस्तर पर लेट जाता तो सोचता हूँ कि कब उठ
सकता हूँ? लेकिन लगता है कि रात कभी ख़त्म
नहीं होगी, और मैं फ़जर तक बेचैनी से करवटें
बदलता रहता हूँ। 5मेरे जिस्म की हर जगह कीड़े
और खुरंड फैल गए हैं, मेरी सुकड़ी हुई जिल्द
में पीप पड़ गई है। 6मेरे दिन जूलाहे की नाल[a]
से कहीं ज़्यादा तेज़ी से गुज़र गए हैं। वह अपने
अंजाम तक पहुँच गए हैं, धागा ख़त्म हो गया है।

7ऐ अल्लाह, ख़याल रख कि मेरी ज़िंदगी
दम-भर की ही है! मेरी आँखें आइंदा कभी
ख़ुशहाली नहीं देखेंगी। 8जो मुझे इस वक़्त देखे
वह आइंदा मुझे नहीं देखेगा। तू मेरी तरफ़ देखेगा,
लेकिन मैं हूँगा नहीं। 9जिस तरह बादल ओझल
होकर ख़त्म हो जाता है उसी तरह पाताल में
उतरनेवाला वापस नहीं आता। 10वह दुबारा
अपने घर वापस नहीं आएगा, और उसका मक़ाम
उसे नहीं जानता।

11चुनाँचे मैं वह कुछ रोक नहीं सकता जो मेरे
मुँह से निकलना चाहता है। मैं रंजीदा हालत में
बात करूँगा, अपने दिल की तलख़ी का इज़हार
करके आहो-ज़ारी करूँगा। 12ऐ अल्लाह, क्या
मैं समुंदर या समुंदरी अज़दहा हूँ कि तूने मुझे
नज़रबंद कर रखा है? 13जब मैं कहता हूँ, 'मेरा
बिस्तर मुझे तसल्ली दे, सोने से मेरा ग़म हलका
हो जाए' 14तो तू मुझे हौलनाक ख़ाबों से हिम्मत

[a]यानी शटल।

हारने देता, रोयाओं से मुझे दहशत खिलाता है।
15मेरी इतनी बुरी हालत हो गई है कि सोचता हूँ,
काश कोई मेरा गला घूँटकर मुझे मार डाले, काश
मैं ज़िंदा न रहूँ बल्कि दम छोड़ूँ। 16मैंने ज़िंदगी को
रद्द कर दिया है, अब मैं ज़्यादा देर तक ज़िंदा नहीं
रहूँगा। मुझे छोड़, क्योंकि मेरे दिन दम-भर के ही
हैं।

17इनसान क्या है कि तू उस की इतनी क़दर
करे, उस पर इतना ध्यान दे? 18वह इतना अहम
तो नहीं है कि तू हर सुबह उसका मुआयना करे,
हर लमहा उस की जाँच-पड़ताल करे। 19क्या तू
मुझे तकने से कभी नहीं बाज़ आएगा? क्या तू
मुझे इतना सुकून भी नहीं देगा कि पल-भर के
लिए थूक निगलूँ? 20ऐ इनसान के पहरेदार,
अगर मुझसे ग़लती हुई भी तो इससे मैंने तेरा
क्या नुक़सान किया? तूने मुझे अपने ग़ज़ब का
निशाना क्यों बनाया? मैं तेरे लिए बोझ क्यों बन
गया हूँ? 21तू मेरा जुर्म मुआफ़ क्यों नहीं करता,
मेरा क़ुसूर दरगुज़र क्यों नहीं करता? क्योंकि
जल्द ही मैं ख़ाक हो जाऊँगा। अगर तू मुझे तलाश
भी करे तो नहीं मिलूँगा, क्योंकि मैं हूँगा नहीं।”

बिलदद का जवाब : अपने गुनाह से तौबा कर!

8 तब बिलदद सूख़ी ने जवाब देकर कहा,
2“तू कब तक इस क़िस्म की बातें करेगा?
कब तक तेरे मुँह से आँधी के झोंके निकलेंगे?
3क्या अल्लाह इनसाफ़ का ख़ून कर सकता,
क्या क़ादिरे-मुतलक़ रास्ती को आगे पीछे कर
सकता है? 4तेरे बेटों ने उसका गुनाह किया
है, इसलिए उसने उन्हें उनके जुर्म के क़ब्ज़े में
छोड़ दिया। 5अब तेरे लिए लाज़िम है कि तू
अल्लाह का तालिब हो और क़ादिरे-मुतलक़ से
इल्तिजा करे, 6कि तू पाक हो और सीधी राह
पर चले। फिर वह अब भी तेरी ख़ातिर जोश में
आकर तेरी रास्तबाज़ी की सुकूनतगाह को बहाल
करेगा। 7तब तेरा मुस्तक़बिल निहायत अज़ीम
होगा, ख़ाह तेरी इब्तिदाई हालत कितनी पस्त
क्यों न हो।

8गुज़श्ता नसल से ज़रा पूछ ले, उस पर ध्यान
दे जो उनके बापदादा ने तहक़ीक़ात के बाद मालूम
किया। 9क्योंकि हम ख़ुद कल ही पैदा हुए और
कुछ नहीं जानते, ज़मीन पर हमारे दिन साये जैसे
आरिज़ी हैं। 10लेकिन यह तुझे तालीम देकर बात
बता सकते हैं, यह तुझे अपने दिल में जमाशुदा
इल्म पेश कर सकते हैं। 11क्या आबी नरसल वहाँ
उगता है जहाँ दलदल नहीं? क्या सरकंडा वहाँ
फलता-फूलता है जहाँ पानी नहीं? 12उस की
कोंपलें अभी निकल रही हैं और उसे तोड़ा नहीं
गया कि अगर पानी न मिले तो बाक़ी हरियाली
से पहले ही सूख जाता है। 13यह है उनका
अंजाम जो अल्लाह को भूल जाते हैं, इसी तरह
बेदीन की उम्मीद जाती रहती है। 14जिस पर वह
एतमाद करता है वह निहायत ही नाज़ुक है, जिस
पर उसका भरोसा है वह मकड़ी के जाले जैसा
कमज़ोर है। 15जब वह जाले पर टेक लगाए तो
खड़ा नहीं रहता, जब उसे पकड़ ले तो क़ायम नहीं
रहता।

16बेदीन धूप में शादाब बेल की मानिंद है। उस
की कोंपलें चारों तरफ़ फैल जाती, 17उस की
जड़ें पत्थर के ढेर पर छाकर उनमें टिक जाती
हैं। 18लेकिन अगर उसे उखाड़ा जाए तो जिस
जगह पहले उग रही थी वह उसका इनकार करके
कहेगी, ‘मैंने तुझे कभी देखा भी नहीं।’ 19यह है
उस की राह की नाम-निहाद ख़ुशी! जहाँ पहले
था वहाँ दीगर पौदे ज़मीन से फूट निकलेंगे।

20यक़ीनन अल्लाह बेइलज़ाम आदमी को
मुस्तरद नहीं करता, यक़ीनन वह शरीर आदमी
के हाथ मज़बूत नहीं करता। 21वह एक बार फिर
तुझे ऐसी ख़ुशी बख़्शेगा कि तू हँस उठेगा और
शादमानी के नारे लगाएगा। 22जो तुझसे नफ़रत
करते हैं वह शर्म से मुलब्बस हो जाएंगे, और
बेदीनों के ख़ैमे नेस्तो-नाबूद होंगे।”

अय्यूब का जवाब : सालिस के बग़ैर मैं रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

9 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,
2“मैं ख़ूब जानता हूँ कि तेरी बात दुरुस्त
है। लेकिन अल्लाह के हुज़ूर इनसान किस तरह
रास्तबाज़ ठहर सकता है? 3अगर वह अदालत
में अल्लाह के साथ लड़ना चाहे तो उसके हज़ार
सवालात पर एक का भी जवाब नहीं दे सकेगा।
4अल्लाह का दिल दानिशमंद और उस की क़ुदरत
अज़ीम है। कौन कभी उससे बहस-मुबाहसा
करके कामयाब रहा है?

5अल्लाह पहाड़ों को खिसका देता है, और उन्हें
पता ही नहीं चलता। वह ग़ुस्से में आकर उन्हें
उलटा देता है। 6वह ज़मीन को हिला देता है तो
वह लरज़कर अपनी जगह से हट जाती है, उसके
बुनियादी सतून काँप उठते हैं। 7वह सूरज को
हुक्म देता है तो तुलू नहीं होता, सितारों पर मुहर
लगाता है तो उनकी चमक-दमक बंद हो जाती है।

8अल्लाह ही आसमान को ख़ैमे की तरह तान
देता, वही समुंदरी अज़दहे की पीठ को पाँवों
तले कुचल देता है। 9वही दुब्बे-अकबर, जौज़े,
ख़ोशाए-परवीन और जुनूबी सितारों के झुरमुटों
का ख़ालिक़ है। 10वह इतने अज़ीम काम करता
है कि कोई उनकी तह तक नहीं पहुँच सकता,
इतने मोजिज़े करता है कि कोई उन्हें गिन नहीं
सकता। 11जब वह मेरे सामने से गुज़रे तो मैं उसे
नहीं देखता, जब वह मेरे क़रीब से फिरे तो मुझे
मालूम नहीं होता। 12अगर वह कुछ छीन ले तो
कौन उसे रोकेगा? कौन उससे कहेगा, ‘तू क्या
कर रहा है?’ 13अल्लाह तो अपना ग़ज़ब नाज़िल
करने से बाज़ नहीं आता। उसके रोब तले रहब
अज़दहे के मददगार भी दबक गए।

14तो फिर मैं किस तरह उसे जवाब दूँ, किस
तरह उससे बात करने के मुनासिब अलफ़ाज़ चुन
लूँ? 15अगर मैं हक़ पर होता भी तो अपना दिफ़ा
न कर सकता। इस मुख़ालिफ़ से मैं इल्तिजा करने
के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। 16अगर
वह मेरी चीख़ों का जवाब देता भी तो मुझे यक़ीन
न आता कि वह मेरी बात पर ध्यान देगा।

17थोड़ी-सी ग़लती के जवाब में वह मुझे पाश
पाश करता, बिलावजह मुझे बार बार ज़ख़मी
करता है। 18वह मुझे साँस भी नहीं लेने देता
बल्कि कड़वे ज़हर से सेर कर देता है। 19जहाँ
ताक़त की बात है तो वही क़वी है, जहाँ इनसाफ़
की बात है तो कौन उसे पेशी के लिए बुला सकता
है? 20गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी मेरा अपना मुँह मुझे
क़ुसूरवार ठहराएगा, गो बेइलज़ाम हूँ तो भी वह
मुझे मुजरिम क़रार देगा।

21जो कुछ भी हो, मैं बेइलज़ाम हूँ! मैं अपनी
जान की परवा ही नहीं करता, अपनी ज़िंदगी
हक़ीर जानता हूँ। 22ख़ैर, एक ही बात है, इसलिए
मैं कहता हूँ, ‘अल्लाह बेइलज़ाम और बेदीन दोनों
को ही हलाक कर देता है।’ 23जब कभी अचानक
कोई आफ़त इनसान को मौत के घाट उतारे
तो अल्लाह बेगुनाह की परेशानी पर हँसता है।
24अगर कोई मुल्क बेदीन के हवाले किया जाए
तो अल्लाह उसके क़ाज़ियों की आँखें बंद कर
देता है। अगर यह उस की तरफ़ से नहीं तो फिर
किसकी तरफ़ से है?

25मेरे दिन दौड़नेवाले आदमी से कहीं ज़्यादा
तेज़ी से बीत गए, ख़ुशी देखे बग़ैर भाग निकले
हैं। 26वह सरकंडे के बहरी जहाज़ों की तरह गुज़र
गए हैं, उस उक़ाब की तरह जो अपने शिकार
पर झपट्टा मारता है। 27अगर मैं कहूँ, ‘आओ मैं
अपनी आहें भूल जाऊँ, अपने चेहरे की उदासी दूर
करके ख़ुशी का इज़हार करूँ’ 28तो फिर भी मैं
उन तमाम तकालीफ़ से डरता हूँ जो मुझे बरदाश्त
करनी हैं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे बेगुनाह
नहीं ठहराता।

29जो कुछ भी हो मुझे क़ुसूरवार ही क़रार दिया
गया है, चुनाँचे इसका क्या फ़ायदा कि मैं बेमानी
तगो-दौ में मसरूफ़ रहूँ? 30गो मैं साबुन से नहा

[a]लफ़्ज़ी मतलब : क़लियाब, लाई (lye)।

लूँ और अपने हाथ सोडे[a] से धो लूँ 31ताहम तू
मुझे गढ़े की कीचड़ में यों धँसने देता है कि मुझे
अपने कपड़ों से घिन आती है।
32अल्लाह तो मुझ जैसा इनसान नहीं कि मैं
जवाब में उससे कहूँ, ‘आओ हम अदालत में
जाकर एक दूसरे का मुक़ाबला करें।’ 33काश
हमारे दरमियान सालिस हो जो हम दोनों पर हाथ
रखे, 34जो मेरी पीठ पर से अल्लाह का डंडा
हटाए ताकि उसका ख़ौफ़ मुझे दहशतज़दा न करे।
35तब मैं अल्लाह से ख़ौफ़ खाए बग़ैर बोलता,
क्योंकि फ़ितरी तौर पर मैं ऐसा नहीं हूँ।

मुझे अपनी जान से घिन आती है

10 मुझे अपनी जान से घिन आती है। मैं
आज़ादी से आहो-ज़ारी करूँगा, खुले
तौर पर अपना दिली ग़म बयान करूँगा। 2मैं
अल्लाह से कहूँगा कि मुझे मुजरिम न ठहरा बल्कि
बता कि तेरा मुझ पर क्या इलज़ाम है। 3क्या तू
ज़ुल्म करके मुझे रद्द करने में ख़ुशी महसूस करता
है हालाँकि तेरे अपने ही हाथों ने मुझे बनाया?
साथ साथ तू बेदीनों के मनसूबों पर अपनी मंज़ूरी
का नूर चमकाता है। क्या यह तुझे अच्छा लगता
है? 4क्या तेरी आँखें इनसानी हैं? क्या तू सिर्फ़
इनसान की-सी नज़र से देखता है? 5क्या तेरे
दिन और साल फ़ानी इनसान जैसे महदूद हैं?
हरगिज़ नहीं! 6तो फिर क्या ज़रूरत है कि तू
मेरे क़ुसूर की तलाश और मेरे गुनाह की तहक़ीक़
करता रहे? 7तू तो जानता है कि मैं बेक़ुसूर हूँ
और कि तेरे हाथ से कोई बचा नहीं सकता।
8तेरे अपने हाथों ने मुझे तश्कील देकर बनाया।
और अब तूने मुड़कर मुझे तबाह कर दिया है।
9ज़रा इसका ख़याल रख कि तूने मुझे मिट्टी से
बनाया। अब तू मुझे दुबारा ख़ाक में तबदील कर
रहा है। 10तूने ख़ुद मुझे दूध की तरह उंडेलकर
पनीर की तरह जमने दिया। 11तू ही ने मुझे जिल्द
और गोश्त-पोस्त से मुलब्बस किया, हड्डियों और
नसों से तैयार किया। 12तू ही ने मुझे ज़िंदगी और
अपनी मेहरबानी से नवाज़ा, और तेरी देख-भाल
ने मेरी रूह को महफ़ूज़ रखा।
13लेकिन एक बात तूने अपने दिल में छुपाए
रखी, हाँ मुझे तेरा इरादा मालूम हो गया है। 14वह
यह है कि ‘अगर अय्यूब गुनाह करे तो मैं उस की
पहरादारी करूँगा। मैं उसे उसके क़ुसूर से बरी नहीं
करूँगा।’
15अगर मैं क़ुसूरवार हूँ तो मुझ पर अफ़सोस!
और अगर मैं बेगुनाह भी हूँ ताहम मैं अपना सर
उठाने की जुर्रत नहीं करता, क्योंकि मैं शर्म खा
खाकर सेर हो गया हूँ। मुझे ख़ूब मुसीबत पिलाई
गई है। 16और अगर मैं खड़ा भी हो जाऊँ तो तू
शेरबबर की तरह मेरा शिकार करता और मुझ
पर दुबारा अपनी मोजिज़ाना क़ुदरत का इज़हार
करता है। 17तू मेरे ख़िलाफ़ नए गवाहों को खड़ा
करता और मुझ पर अपने ग़ज़ब में इज़ाफ़ा करता
है, तेरे लशकर सफ़-दर-सफ़ मुझ पर हमला करते
हैं। 18तू मुझे मेरी माँ के पेट से क्यों निकाल
लाया? बेहतर होता कि मैं उसी वक़्त मर जाता
और किसी को नज़र न आता। 19यों होता जैसा
मैं कभी ज़िंदा ही न था, मुझे सीधा माँ के पेट
से क़ब्र में पहुँचाया जाता। 20क्या मेरे दिन थोड़े
नहीं हैं? मुझे तनहा छोड़! मुझसे अपना मुँह
फेर ले ताकि मैं चंद एक लमहों के लिए ख़ुश
हो सकूँ, 21क्योंकि जल्द ही मुझे कूच करके वहाँ
जाना है जहाँ से कोई वापस नहीं आता, उस मुल्क
में जिसमें तारीकी और घने साये रहते हैं। 22वह
मुल्क अंधेरा ही अंधेरा और काला ही काला है,
उसमें घने साये और बेतरतीबी है। वहाँ रौशनी भी
अंधेरा ही है।”

ज़ूफ़र का जवाब : तौबा कर

11 फिर ज़ूफ़र नामाती ने जवाब देकर
कहा,
2“क्या इन तमाम बातों का जवाब नहीं देना
चाहिए? क्या यह आदमी अपनी ख़ाली बातों की
बिना पर ही रास्तबाज़ ठहरेगा? 3क्या तेरी बेमानी
बातें लोगों के मुँह यों बंद करेंगी कि तू आज़ादी से

लान-तान करता जाए और कोई तुझे शरमिंदा न
कर सके? 4अल्लाह से तू कहता है, 'मेरी तालीम
पाक है, और तेरी नज़र में मैं पाक-साफ़ हूँ।'
5काश अल्लाह ख़ुद तेरे साथ हमकलाम हो,
वह अपने होंटों को खोलकर तुझसे बात करे!
6काश वह तेरे लिए हिकमत के भेद खोले,
क्योंकि वह इनसान की समझ के नज़दीक
मोजिज़े से हैं। तब तू जान लेता कि अल्लाह तेरे
गुनाह का काफ़ी हिस्सा दरगुज़र कर रहा है।
7क्या तू अल्लाह का राज़ खोल सकता है?
क्या तू क़ादिरे-मुतलक़ के कामिल इल्म तक
पहुँच सकता है? 8वह तो आसमान से बुलंद है,
चुनाँचे तू क्या कर सकता है? वह पाताल से
गहरा है, चुनाँचे तू क्या जान सकता है? 9उस
की लंबाई ज़मीन से बड़ी और चौड़ाई समुंदर से
ज़्यादा है।
10अगर वह कहीं से गुज़रकर किसी को
गिरिफ़्तार करे या अदालत में उसका हिसाब करे
तो कौन उसे रोकेगा? 11क्योंकि वह फ़रेबदेह
आदमियों को जान लेता है, जब भी उसे बुराई
नज़र आए तो वह उस पर ख़ूब ध्यान देता है।
12अक़्ल से ख़ाली आदमी किस तरह समझ पा
सकता है? यह उतना ही नामुमकिन है जितना
यह कि जंगली गधे से इनसान पैदा हो।
13ऐ अय्यूब, अपना दिल पूरे ध्यान से अल्लाह
की तरफ़ मायल कर और अपने हाथ उस की
तरफ़ उठा! 14अगर तेरे हाथ गुनाह में मुलव्वस हों
तो उसे दूर कर और अपने ख़ैमे में बुराई बसने न दे!
15तब तू बेइलज़ाम हालत में अपना चेहरा उठा
सकेगा, तू मज़बूती से खड़ा रहेगा और डरेगा नहीं।
16तू अपना दुख-दर्द भूल जाएगा, और वह सिर्फ़
गुज़रे सैलाब की तरह याद रहेगा। 17तेरी ज़िंदगी
दोपहर की तरह चमकदार, तेरी तारीकी सुबह
की मानिंद रौशन हो जाएगी। 18चूँकि उम्मीद
होगी इसलिए तू महफ़ूज़ होगा और सलामती
से लेट जाएगा। 19तू आराम करेगा, और कोई
तुझे दहशतज़दा नहीं करेगा बल्कि बहुत लोग
तेरी नज़रे-इनायत हासिल करने की कोशिश
करेंगे। 20लेकिन बेदीनों की आँखें नाकाम हो
जाएँगी, और वह बच नहीं सकेंगे। उनकी उम्मीद
मायूसकुन होगी।"[a]

अय्यूब का जवाब : मैं मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ

12 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,
2"लगता है कि तुम ही वाहिद
दानिशमंद हो, कि हिकमत तुम्हारे साथ ही मर
जाएगी। 3लेकिन मुझे समझ है, इस नाते से मैं
तुमसे अदना नहीं हूँ। वैसे भी कौन ऐसी बातें नहीं
जानता? 4मैं तो अपने दोस्तों के लिए मज़ाक़ का
निशाना बन गया हूँ, मैं जिसकी दुआएँ अल्लाह
सुनता था। हाँ, मैं जो बेगुनाह और बेइलज़ाम हूँ
दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ!
5जो सुकून से ज़िंदगी गुज़ारता है वह मुसीबतज़दा
को हक़ीर जानता है। वह कहता है, 'आओ, हम
उसे ठोकर मारें जिसके पाँव डगमगाने लगे हैं।'
6ग़ारतगरों के ख़ैमों में आरामो-सुकून है, और
अल्लाह को तैश दिलानेवाले हिफ़ाज़त से रहते
हैं, गो वह अल्लाह के हाथ में हैं।
7ताहम तुम कहते हो कि जानवरों से पूछ ले
तो वह तुझे सहीह बात सिखाएँगे। परिंदों से पता
कर तो वह तुझे दुरुस्त जवाब देंगे। 8ज़मीन से
बात कर तो वह तुझे तालीम देगी, बल्कि समुंदर
की मछलियाँ भी तुझे इसका मफ़हूम सुनाएँगी।
9इनमें से एक भी नहीं जो न जानता हो कि रब के
हाथ ने यह सब कुछ किया है। 10उसी के हाथ में
हर जानदार की जान, तमाम इनसानों का दम है।
11कान तो अलफ़ाज़ की यों जाँच-पड़ताल करता
है जिस तरह ज़बान खानों में इम्तियाज़ करती है।
12और हिकमत उनमें पाई जाती है जो उम्ररसीदा
हैं, समझ मुतअद्दिद दिन गुज़रने के बाद ही आती
है।

[a]या उनकी वाहिद उम्मीद इसमें होगी कि दम छोड़ें।

13हिकमत और क़ुदरत अल्लाह की है, वही मसलहत और समझ का मालिक है। 14जो कुछ वह ढा दे वह दुबारा तामीर नहीं होगा, जिसे वह गिरिफ़्तार करे उसे आज़ाद नहीं किया जाएगा। 15जब वह पानी रोके तो काल पड़ता है, जब उसे खुला छोड़े तो वह मुल्क में तबाही मचा देता है।

16उसके पास क़ुव्वत और दानाई है। भटकने और भटकानेवाला दोनों ही उसके हाथ में हैं। 17मुशीरों को वह नंगे पाँव अपने साथ ले जाता है, क़ाज़ियों को अहमक़ साबित करता है। 18वह बादशाहों का पटका खोलकर उनकी कमरों में रस्सा बाँधता है। 19इमामों को वह नंगे पाँव अपने साथ ले जाता है, मज़बूती से खड़े आदमियों को तबाह करता है। 20क़ाबिले-एतमाद अफ़राद से वह बोलने की क़ाबिलियत और बुज़ुर्गों से इम्तियाज़ करने की लियाक़त छीन लेता है। 21वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत का इज़हार करके ज़ोरावरों का पटका खोल देता है।

22वह अंधेरे के पोशीदा भेद खोल देता है और गहरी तारीकी को रौशनी में लाता है। 23वह क़ौमों को बड़ा भी बनाता और तबाह भी करता है, उम्मतों को मुंतशिर भी करता और उनकी क़ियादत भी करता है। 24वह मुल्क के राहनुमाओं को अक़्ल से महरूम करके उन्हें ऐसे बयाबान में आवारा फिरने देता है जहाँ रास्ता ही नहीं। 25तब वह अंधेरे में रौशनी के बग़ैर टटोल टटोलकर घूमते हैं। अल्लाह ही उन्हें नशे में धुत शराबियों की तरह भटकने देता है।

13 यह सब कुछ मैंने अपनी आँखों से देखा, अपने कानों से सुनकर समझ लिया है। 2इल्म के लिहाज़ से मैं तुम्हारे बराबर हूँ। इस नाते से मैं तुमसे कम नहीं हूँ। 3लेकिन मैं क़ादिरे-मुतलक़ से ही बात करना चाहता हूँ, अल्लाह के साथ ही मुबाहसा करने की आरज़ू रखता हूँ।

4जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक़ है, तुम सब फ़रेबदेह लेप लगानेवाले और बेकार डाक्टर हो। 5काश तुम सरासर ख़ामोश रहते! ऐसा करने से तुम्हारी हिकमत कहीं ज़्यादा ज़ाहिर होती। 6मुबाहसे में ज़रा मेरा मौक़िफ़ सुनो, अदालत में मेरे बयानात पर ग़ौर करो!

7क्या तुम अल्लाह की ख़ातिर कजरौ बातें पेश करते हो, क्या उसी की ख़ातिर झूट बोलते हो? 8क्या तुम उस की जानिबदारी करना चाहते हो, अल्लाह के हक़ में लड़ना चाहते हो? 9सोच लो, अगर वह तुम्हारी जाँच करे तो क्या तुम्हारी बात बनेगी? क्या तुम उसे यों धोका दे सकते हो जिस तरह इनसान को धोका दिया जाता है?

10अगर तुम ख़ुफ़िया तौर पर भी जानिबदारी दिखाओ तो वह तुम्हें ज़रूर सख़्त सज़ा देगा। 11क्या उसका रोब तुम्हें ख़ौफ़ज़दा नहीं करेगा? क्या तुम उससे सख़्त दहशत नहीं खाओगे? 12फिर जिन कहावतों की याद तुम दिलाते रहते हो वह राख की अमसाल साबित होंगी, पता चलेगा कि तुम्हारी बातें मिट्टी के अलफ़ाज़ हैं।

13ख़ामोश होकर मुझसे बाज़ आओ! जो कुछ भी मेरे साथ हो जाए, मैं बात करना चाहता हूँ। 14मैं अपने आपको ख़तरे में डालने के लिए तैयार हूँ, मैं अपनी जान पर खेलूँगा। 15शायद वह मुझे मार डाले। कोई बात नहीं, क्योंकि मेरी उम्मीद जाती रही है। जो कुछ भी हो में उसी के सामने अपनी राहों का दिफ़ा करूँगा। 16और इसमें मैं पनाह लेता हूँ कि बेदीन उसके हुज़ूर आने की जुर्रत नहीं करता।

17ध्यान से मेरे अलफ़ाज़ सुनो, अपने कान मेरे बयानात पर धरो। 18तुम्हें पता चलेगा कि मैंने एहतियात और तरतीब से अपना मामला तैयार किया है। मुझे साफ़ मालूम है कि मैं हक़ पर हूँ! 19अगर कोई मुझे मुजरिम साबित कर सके तो मैं चुप हो जाऊँगा, दम छोड़ने तक ख़ामोश रहूँगा।

अय्यूब की मायूसी में दुआ

20ऐ अल्लाह, मेरी सिर्फ़ दो दरख़ास्तें मंज़ूर कर ताकि मुझे तुझसे छुप जाने की ज़रूरत न हो। 21पहले, अपना हाथ मुझसे दूर कर ताकि तेरा ख़ौफ़ मुझे दहशतज़दा न करे। 22दूसरे, इसके

बाद मुझे बुला ताकि मैं जवाब दूँ, या मुझे पहले बोलने दे और तू ही इसका जवाब दे।

23मुझसे कितने गुनाह और ग़लतियाँ हुई हैं? मुझ पर मेरा जुर्म और मेरा गुनाह ज़ाहिर कर!
24तू अपना चेहरा मुझसे छुपाए क्यों रखता है?
तू मुझे क्यों अपना दुश्मन समझता है? 25क्या
तू हवा के झोंकों के उड़ाए हुए पत्ते को दहशत खिलाना चाहता, ख़ुश्क भूसे का ताक़्क़ुब करना चाहता है?

26यह तेरा ही फ़ैसला है कि मैं तलख़ तजरबों से गुज़रूँ, तेरी ही मरज़ी है कि मैं अपनी जवानी के
गुनाहों की सज़ा पाऊँ।[a] 27तू मेरे पाँवों को काठ में ठोंककर मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है। तू मेरे हर एक नक़्शे-क़दम पर ध्यान देता है,
28गो मैं मै की घिसी-फटी मशक और कीड़ों का ख़राब किया हुआ लिबास हूँ।

14 औरत से पैदा हुआ इनसान चंद एक दिन ज़िंदा रहता है, और उस की
ज़िंदगी बेचैनी से भरी रहती है। 2फूल की तरह
वह चंद लमहों के लिए फूट निकलता, फिर मुरझा जाता है। साये की तरह वह थोड़ी देर के बाद
ओझल हो जाता और क़ायम नहीं रहता। 3क्या
तू वाक़ई एक ऐसी मख़लूक़ का इतने ग़ौर से मुआयना करना चाहता है? मैं कौन हूँ कि तू मुझे पेशी के लिए अपने हुज़ूर लाए?

4कौन नापाक चीज़ को पाक-साफ़ कर सकता
है? कोई नहीं! 5इनसान की उम्र तो मुक़र्रर हुई है,
उसके महीनों की तादाद तुझे मालूम है, क्योंकि तू ही ने उसके दिनों की वह हद बाँधी है जिससे
आगे वह बढ़ नहीं सकता। 6चुनाँचे अपनी निगाह
उससे फेर ले और उसे छोड़ दे ताकि वह मज़दूर की तरह अपने थोड़े दिनों से कुछ मज़ा ले सके।

7अगर दरख़्त को काटा जाए तो उसे थोड़ी-बहुत उम्मीद बाक़ी रहती है, क्योंकि ऐन मुमकिन है कि मुढ से कोंपलें फूट निकलें और उस की नई
शाख़ें उगती जाएँ। 8बेशक उस की जड़ें पुरानी
हो जाएँ और उसका मुढ मिट्टी में ख़त्म होने लगे,
9लेकिन पानी की ख़ुशबू सूँघते ही वह कोंपलें निकालने लगेगा, और पनीरी की-सी टहनियाँ उससे फूटने लगेंगी।

10लेकिन इनसान फ़रक़ है। मरते वक़्त उस की हर तरह की ताक़त जाती रहती है, दम छोड़ते
वक़्त उसका नामो-निशान तक नहीं रहता। 11वह
उस झील की मानिंद है जिसका पानी ओझल हो जाए, उस नदी की मानिंद जो सुकड़कर ख़ुश्क
हो जाए। 12वफ़ात पानेवाले का यही हाल है।
वह लेट जाता और कभी नहीं उठेगा। जब तक आसमान क़ायम है न वह जाग उठेगा, न उसे जगाया जाएगा।

13काश तू मुझे पाताल में छुपा देता, मुझे वहाँ उस वक़्त तक पोशीदा रखता जब तक तेरा क़हर ठंडा न हो जाता! काश तू एक वक़्त मुक़र्रर
करे जब तू मेरा दुबारा ख़याल करेगा। 14(क्योंकि
अगर इनसान मर जाए तो क्या वह दुबारा ज़िंदा हो जाएगा?) फिर मैं अपनी सख़्त ख़िदमत के तमाम दिन बरदाश्त करता, उस वक़्त तक इंतज़ार करता जब तक मेरी सबुकदोशी न हो
जाती। 15तब तू मुझे आवाज़ देता और मैं जवाब देता, तू अपने हाथों के काम का आरज़ूमंद होता।
16उस वक़्त भी तू मेरे हर क़दम का शुमार करता, लेकिन न सिर्फ़ इस मक़सद से कि मेरे गुनाहों पर
ध्यान दे। 17तू मेरे जरायम थैले में बाँधकर उस पर मुहर लगा देता, मेरी हर ग़लती को ढाँक देता।

18लेकिन अफ़सोस! जिस तरह पहाड़ गिरकर चूर चूर हो जाता और चट्टान खिसक जाती है,
19जिस तरह बहता पानी पत्थर को रगड़ रगड़कर ख़त्म करता और सैलाब मिट्टी को बहा ले जाता है उसी तरह तू इनसान की उम्मीद ख़ाक में मिला
देता है। 20तू मुकम्मल तौर पर उस पर ग़ालिब आ जाता तो वह कूच कर जाता है, तू उसका चेहरा
बिगाड़कर उसे फ़ारिग़ कर देता है। 21अगर उसके
बच्चों को सरफ़राज़ किया जाए तो उसे पता नहीं

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : मीरास में पाऊँ।

चलता, अगर उन्हें पस्त किया जाए तो यह भी
उसके इल्म में नहीं आता। 22वह सिर्फ़ अपने ही
जिस्म का दर्द महसूस करता और अपने लिए ही
मातम करता है।”

इलीफ़ज़ का जवाब : अय्यूब कुफ़र बक रहा है

15 तब इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब देकर
कहा,
2“क्या दानिशमंद को जवाब में बेहूदा
ख़यालात पेश करने चाहिएँ? क्या उसे अपना
पेट तपती मशरिक़ी हवा से भरना चाहिए? 3क्या
मुनासिब है कि वह फ़ज़ूल बहस-मुबाहसा करे,
ऐसी बातें करे जो बेफ़ायदा हैं? हरगिज़ नहीं!
4लेकिन तेरा रवैया इससे कहीं बुरा है। तू
अल्लाह का ख़ौफ़ छोड़कर उसके हुज़ूर ग़ौरो-
ख़ौज़ करने का फ़र्ज़ हक़ीर जानता है। 5तेरा क़ुसूर
ही तेरे मुँह को ऐसी बातें करने की तहरीक दे
रहा है, इसी लिए तूने चालाकों की ज़बान अपना
ली है। 6मुझे तुझे क़ुसूरवार ठहराने की ज़रूरत
ही नहीं, क्योंकि तेरा अपना ही मुँह तुझे मुजरिम
ठहराता है, तेरे अपने ही होंट तेरे ख़िलाफ़ गवाही
देते हैं।
7क्या तू सबसे पहले पैदा हुआ इनसान है?
क्या तूने पहाड़ों से पहले ही जन्म लिया? 8जब
अल्लाह की मजलिस मुनअक़िद हो जाए तो क्या
तू भी उनकी बातें सुनता है? क्या सिर्फ़ तुझे ही
हिकमत हासिल है? 9तू क्या जानता है जो हम
नहीं जानते? तुझे किस बात की समझ आई है
जिसका इल्म हम नहीं रखते? 10हमारे दरमियान
भी उम्ररसीदा बुज़ुर्ग हैं, ऐसे आदमी जो तेरे वालिद
से भी बूढ़े हैं।
11ऐ अय्यूब, क्या तेरी नज़र में अल्लाह की
तसल्ली देनेवाली बातों की कोई अहमियत नहीं?
क्या तू इसकी क़दर नहीं कर सकता कि नरमी
से तुझसे बात की जा रही है? 12तेरे दिल के
जज़बात तुझे यों उड़ाकर क्यों ले जाएँ, तेरी आँखें
क्यों इतनी चमक उठें 13कि आख़िरकार तू अपना
ग़ुस्सा अल्लाह पर उतारकर ऐसी बातें अपने मुँह
से उगल दे?
14भला इनसान क्या है कि पाक-साफ़ ठहरे?
औरत से पैदा हुई मख़लूक़ क्या है कि रास्तबाज़
साबित हो? कुछ भी नहीं! 15अल्लाह तो
अपने मुक़द्दस ख़ादिमों पर भी भरोसा नहीं रखता,
बल्कि आसमान भी उस की नज़र में पाक नहीं
है। 16तो फिर वह इनसान पर भरोसा क्यों रखे
जो क़ाबिले-घिन और बिगड़ा हुआ है, जो बुराई
को पानी की तरह पी लेता है।
17मेरी बात सुन, मैं तुझे कुछ सुनाना चाहता
हूँ। मैं तुझे वह कुछ बयान करूँगा जो मुझ पर
ज़ाहिर हुआ है, 18वह कुछ जो दानिशमंदों ने पेश
किया और जो उन्हें अपने बापदादा से मिला था।
उनसे कुछ छुपाया नहीं गया था। 19(बापदादा से
मुराद वह वाहिद लोग हैं जिन्हें उस वक़्त मुल्क
दिया गया जब कोई भी परदेसी उनमें नहीं फिरता
था)।
20वह कहते थे, बेदीन अपने तमाम दिन डर के
मारे तड़पता रहता, और जितने भी साल ज़ालिम
के लिए महफ़ूज़ रखे गए हैं उतने ही साल वह
पेचो-ताब खाता रहता है। 21दहशतनाक आवाज़ें
उसके कानों में गूँजती रहती हैं, और अमनो-
अमान के वक़्त ही तबाही मचानेवाला उस पर
टूट पड़ता है। 22उसे अंधेरे से बचने की उम्मीद
ही नहीं, क्योंकि उसे तलवार के लिए तैयार रखा
गया है।
23वह मारा मारा फिरता है, आख़िरकार वह
गिद्धों की ख़ोराक बनेगा। उसे ख़ुद इल्म है
कि तारीकी का दिन क़रीब ही है। 24तंगी
और मुसीबत उसे दहशत खिलाती, हमलाआवर
बादशाह की तरह उस पर ग़ालिब आती हैं।
25और वजह क्या है? यह कि उसने अपना हाथ
अल्लाह के ख़िलाफ़ उठाया, क़ादिरे-मुतलक़ के
सामने तकब्बुर दिखाया है। 26अपनी मोटी और
मज़बूत ढाल की पनाह में अकड़कर वह तेज़ी से
अल्लाह पर हमला करता है।

27गो इस वक़्त उसका चेहरा चरबी से चमकता
और उस की कमर मोटी है, 28लेकिन आइंदा वह
तबाहशुदा शहरों में बसेगा, ऐसे मकानों में जो
सबके छोड़े हुए हैं और जो जल्द ही पत्थर के
ढेर बन जाएंगे। 29वह अमीर नहीं होगा, उस की
दौलत क़ायम नहीं रहेगी, उस की जायदाद मुल्क
में फैली नहीं रहेगी।

30वह तारीकी से नहीं बचेगा। शोला उस की
कोंपलों को मुरझाने देगा, और अल्लाह उसे अपने
मुँह की एक फूँक से उड़ाकर तबाह कर देगा।
31वह धोके पर भरोसा न करे, वरना वह भटक
जाएगा और उसका अज्र धोका ही होगा। 32वक़्त
से पहले ही उसे इसका पूरा मुआवज़ा मिलेगा,
उस की कोंपल कभी नहीं फले-फूलेगी।

33वह अंगूर की उस बेल की मानिंद होगा
जिसका फल कच्ची हालत में ही गिर जाए, ज़ैतून
के उस दरख़्त की मानिंद जिसके तमाम फूल झड़
जाएँ। 34क्योंकि बेदीनों का जत्था बंजर रहेगा,
और आग रिश्वतख़ोरों के ख़ैमों को भस्म करेगी।
35उनके पाँव दुख-दर्द से भारी हो जाते, और वह
बुराई को जन्म देते हैं। उनका पेट धोका ही पैदा
करता है।”

अय्यूब का जवाब : मैं बेगुनाह हूँ

16 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,
2“इस तरह की मैंने बहुत-सी बातें
सुनी हैं, तुम्हारी तसल्ली सिर्फ़ दुख-दर्द का बाइस
है। 3क्या तुम्हारी लफ़्फ़ाज़ी कभी ख़त्म नहीं
होगी? तुझे क्या चीज़ बेचैन कर रही है कि तू मुझे
जवाब देने पर मजबूर है? 4अगर मैं तुम्हारी जगह
होता तो मैं भी तुम्हारी जैसी बातें कर सकता।
फिर मैं भी तुम्हारे ख़िलाफ़ पुरअलफ़ाज़ तक़रीरें
पेश करके तौबा तौबा कह सकता। 5लेकिन मैं
ऐसा न करता। मैं तुम्हें अपनी बातों से तक़वियत
देता, अफ़सोस के इज़हार से तुम्हें तसकीन देता।
6लेकिन मेरे साथ ऐसा सुलूक नहीं हो रहा। अगर
मैं बोलूँ तो मुझे सुकून नहीं मिलता, अगर चुप रहूँ
तो मेरा दर्द दूर नहीं होता।

7लेकिन अब अल्लाह ने मुझे थका दिया है,
उसने मेरे पूरे घराने को तबाह कर दिया है।
8उसने मुझे सुकड़ने दिया है, और यह बात मेरे
ख़िलाफ़ गवाह बन गई है। मेरी दुबली-पतली
हालत खड़ी होकर मेरे ख़िलाफ़ गवाही देती है।
9अल्लाह का ग़ज़ब मुझे फाड़ रहा है, वह मेरा
दुश्मन और मेरा मुख़ालिफ़ बन गया है जो मेरे
ख़िलाफ़ दाँत पीस पीसकर मुझे अपनी आँखों से
छेद रहा है।[a] 10लोग गला फाड़कर मेरा मज़ाक़
उड़ाते, मेरे गाल पर थप्पड़ मारकर मेरी बेइज़्ज़ती
करते हैं। सबके सब मेरे ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो
गए हैं। 11अल्लाह ने मुझे शरीरों के हवाले कर
दिया, मुझे बेदीनों के चंगुल में फँसा दिया है।
12मैं सुकून से ज़िंदगी गुज़ार रहा था कि उसने
मुझे पाश पाश कर दिया, मुझे गले से पकड़कर
ज़मीन पर पटख़ दिया। उसने मुझे अपना निशाना
बना लिया, 13फिर उसके तीरअंदाज़ों ने मुझे घेर
लिया। उसने बेरहमी से मेरे गुरदों को चीर डाला,
मेरा पित ज़मीन पर उंडेल दिया। 14बार बार वह
मेरी क़िलाबंदी में रख़ना डालता रहा, पहलवान
की तरह मुझ पर हमला करता रहा।

15मैंने टाँके लगाकर अपनी जिल्द के साथ टाट
का लिबास जोड़ लिया है, अपनी शानो-शौकत
ख़ाक में मिलाई है। 16रो रोकर मेरा चेहरा सूज
गया है, मेरी पलकों पर घना अंधेरा छा गया है।
17लेकिन वजह क्या है? मेरे हाथ तो ज़ुल्म से
बरी रहे, मेरी दुआ पाक-साफ़ रही है।

18ऐ ज़मीन, मेरे ख़ून को मत ढाँपना! मेरी
आहो-ज़ारी कभी आराम की जगह न पाए बल्कि
गूँजती रहे। 19अब भी मेरा गवाह आसमान पर
है, मेरे हक़ में गवाही देनेवाला बुलंदियों पर है।
20मेरी आहो-ज़ारी मेरा तरजुमान है, मैं बेख़ाबी
से अल्लाह के इंतज़ार में रहता हूँ। 21मेरी आहें
अल्लाह के सामने फ़ानी इनसान के हक़ में बात

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अपनी आँखें मेरे ख़िलाफ़ तेज़ करता है।

करेंगी, उस तरह जिस तरह कोई अपने दोस्त के हक़ में बात करे। 22क्योंकि थोड़े ही सालों के बाद मैं उस रास्ते पर रवाना हो जाऊँगा जिससे वापस नहीं आऊँगा।

अल्लाह से इल्तिजा

17 मेरी रूह शिकस्ता हो गई, मेरे दिन बुझ गए हैं। क़ब्रिस्तान ही मेरे इंतज़ार में है। 2मेरे चारों तरफ़ मज़ाक़ ही मज़ाक़ सुनाई देता, मेरी आँखें लोगों का हटधर्म रवैया देखते देखते थक गई हैं। 3ऐ अल्लाह, मेरी ज़मानत मेरे अपने हाथों से क़बूल फ़रमा, क्योंकि और कोई नहीं जो उसे दे। 4उनके ज़हनों को तूने बंद कर दिया, इसलिए तो उनसे इज़्ज़त नहीं पाएगा। 5वह उस आदमी की मानिंद हैं जो अपने दोस्तों को ज़ियाफ़त की दावत दे, हालाँकि उसके अपने बच्चे भूके मर रहे हों।

6अल्लाह ने मुझे मज़ाक़ का यों निशाना बनाया है कि मैं क़ौमों में इबरतअंगेज़ मिसाल बन गया हूँ। मुझे देखते ही लोग मेरे मुँह पर थूकते हैं। 7मेरी आँखें ग़म खा खाकर धुँधला गई हैं, मेरे आज़ा यहाँ तक सूख गए कि साया ही रह गया है। 8यह देखकर सीधी राह पर चलनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाते और बेगुनाह बेदीनों के ख़िलाफ़ मुश्तइल हो जाते हैं। 9रास्तबाज़ अपनी राह पर क़ायम रहते, और जिनके हाथ पाक हैं वह तक़वियत पाते हैं। 10लेकिन जहाँ तक तुम सबका ताल्लुक़ है, आओ दुबारा मुझ पर हमला करो! मुझे तुममें एक भी दाना आदमी नहीं मिलेगा।

11मेरे दिन गुज़र गए हैं। मेरे वह मनसूबे और दिल की आरज़ुएँ ख़ाक में मिल गई हैं 12जिनसे रात दिन में बदल गई और रौशनी अंधेरे को दूर करके क़रीब आई थी। 13अगर मैं सिर्फ़ इतनी ही उम्मीद रखूँ कि पाताल मेरा घर होगा तो यह कैसी उम्मीद होगी? अगर मैं अपना बिस्तर तारीकी में बिछाकर 14क़ब्र से कहूँ, 'तू मेरा बाप है' और कीड़े से, 'ऐ मेरी अम्मी, ऐ मेरी बहन' 15तो फिर यह कैसी उम्मीद होगी? कौन कहेगा, 'मुझे तेरे लिए उम्मीद नज़र आती है'? 16तब मेरी उम्मीद मेरे साथ पाताल में उतरेगी, और हम मिलकर ख़ाक में धँस जाएंगे।"

बिलदद : अल्लाह बेदीनों को सज़ा देता है

18 बिलदद सूख़ी ने जवाब देकर कहा, 2"तू कब तक ऐसी बातें करेगा? इनसे बाज़ आकर होश में आ! तब ही हम सहीह बात कर सकेंगे। 3तू हमें डंगर जैसे अहमक़ क्यों समझता है? 4गो तू आग-बगूला होकर अपने आपको फाड़ रहा है, लेकिन क्या तेरे बाइस ज़मीन को वीरान होना चाहिए और चट्टानों को अपनी जगह से खिसक्ना चाहिए? हरगिज़ नहीं!

5यक़ीनन बेदीन का चराग़ बुझ जाएगा, उस की आग का शोला आइंदा नहीं चमकेगा। 6उसके ख़ैमे में रौशनी अंधेरा हो जाएगी, उसके ऊपर की शमा बुझ जाएगी। 7उसके लंबे क़दम रुक रुककर आगे बढ़ेंगे, और उसका अपना मनसूबा उसे पटख़ देगा।

8उसके अपने पाँव उसे जाल में फँसा देते हैं, वह दाम पर ही चलता-फिरता है। 9फंदा उस की एड़ी पकड़ लेता, कमंद उसे जकड़ लेती है। 10उसे फँसाने का रस्सा ज़मीन में छुपा हुआ है, रास्ते में फंदा बिछा है।

11वह ऐसी चीज़ों से घिरा रहता है जो उसे क़दम बक़दम दहशत खिलाती और उस की नाक में दम करती हैं। 12आफ़त उसे हड़प कर लेना चाहती है, तबाही तैयार खड़ी है ताकि उसे गिरते वक़्त ही पकड़ ले। 13बीमारी उस की जिल्द को खा जाती, मौत का पहलौठा उसके आज़ा को निगल लेता है। 14उसे उसके ख़ैमे की हिफ़ाज़त से छीन लिया जाता और घसीटकर दहशतों के बादशाह के सामने लाया जाता है।

15उसके ख़ैमे में आग बसती, उसके घर पर गंधक बिखर जाती है। 16नीचे उस की जड़ें सूख जाती, ऊपर उस की शाख़ें मुरझा जाती हैं। 17ज़मीन पर से उस की याद मिट जाती है, कहीं भी उसका नामो-निशान नहीं रहता।

18उसे रौशनी से तारीकी में धकेला जाता,
दुनिया से भगाकर ख़ारिज किया जाता है।
19क़ौम में उस की न औलाद न नसल रहेगी, जहाँ
पहले रहता था वहाँ कोई नहीं बचेगा। 20उसका
अंजाम देखकर मग़रिब के बाशिंदों के रोंगटे खड़े
हो जाते और मशरिक़ के बाशिंदे दहशतज़दा हो
जाते हैं। 21यही है बेदीन के घर का अंजाम, उसी
के मक़ाम का जो अल्लाह को नहीं जानता।”

अय्यूब : मैं जानता हूँ कि मेरा नजातदहिंदा ज़िंदा है

19 तब अय्यूब ने जवाब में कहा,
2“तुम कब तक मुझ पर तशद्दुद
करना चाहते हो, कब तक मुझे अलफ़ाज़ से टुकड़े
टुकड़े करना चाहते हो? 3अब तुमने दस बार
मुझे मलामत की है, तुमने शर्म किए बग़ैर मेरे
साथ बदसुलूकी की है। 4अगर यह बात सहीह
भी हो कि मैं ग़लत राह पर आ गया हूँ तो मुझे
ही इसका नतीजा भुगतना है। 5लेकिन चूँकि तुम
मुझ पर अपनी सबक़त दिखाना चाहते और मेरी
रुसवाई मुझे डाँटने के लिए इस्तेमाल कर रहे हो
6तो फिर जान लो, अल्लाह ने ख़ुद मुझे ग़लत
राह पर लाकर अपने दाम से घेर लिया है।

7गो मैं चीख़कर कहूँ, ‘मुझ पर ज़ुल्म हो रहा है,’
लेकिन जवाब कोई नहीं मिलता। गो मैं मदद के
लिए पुकारूँ, लेकिन इनसाफ़ नहीं पाता। 8उसने
मेरे रास्ते में ऐसी दीवार खड़ी कर दी कि मैं गुज़र
नहीं सकता, उसने मेरी राहों पर अंधेरा ही छा
जाने दिया है। 9उसने मेरी इज़्ज़त मुझसे छीनकर
मेरे सर से ताज उतार दिया है। 10चारों तरफ़
से उसने मुझे ढा दिया तो मैं तबाह हुआ। उसने
मेरी उम्मीद को दरख़्त की तरह जड़ से उखाड़
दिया है। 11उसका क़हर मेरे ख़िलाफ़ भड़क उठा
है, और वह मुझे अपने दुश्मनों में शुमार करता
है। 12उसके दस्ते मिलकर मुझ पर हमला करने
आए हैं। उन्होंने मेरी फ़सील के साथ मिट्टी का ढेर
लगाया है ताकि उसमें रख़ना डालें। उन्होंने चारों
तरफ़ से मेरे ख़ैमे का मुहासरा किया है।

13मेरे भाइयों को उसने मुझसे दूर कर दिया,
और मेरे जाननेवालों ने मेरा हुक़्क़ा-पानी बंद
कर दिया है। 14मेरे रिश्तेदारों ने मुझे तर्क कर
दिया, मेरे क़रीबी दोस्त मुझे भूल गए हैं। 15मेरे
दामनगीर और नौकरानियाँ मुझे अजनबी समझते
हैं। उनकी नज़र में मैं अजनबी हूँ। 16मैं अपने
नौकर को बुलाता हूँ तो वह जवाब नहीं देता। गो
मैं अपने मुँह से उससे इल्तिजा करूँ तो भी वह
नहीं आता।

17मेरी बीवी मेरी जान से घिन खाती है, मेरे
सगे भाई मुझे मकरूह समझते हैं। 18यहाँ तक कि
छोटे बच्चे भी मुझे हक़ीर जानते हैं। अगर मैं उठने
की कोशिश करूँ तो वह अपना मुँह दूसरी तरफ़
फेर लेते हैं। 19मेरे दिली दोस्त मुझे कराहियत
की निगाह से देखते हैं, जो मुझे प्यारे थे वह मेरे
मुख़ालिफ़ हो गए हैं। 20मेरी जिल्द सुकड़कर मेरी
हड्डियों के साथ जा लगी है। मैं मौत से बाल बाल
बच गया हूँ।[a]

21मेरे दोस्तो, मुझ पर तरस खाओ, मुझ पर
तरस खाओ। क्योंकि अल्लाह ही के हाथ ने मुझे
मारा है। 22तुम क्यों अल्लाह की तरह मेरे पीछे
पड़ गए हो, क्यों मेरा गोश्त खा खाकर सेर नहीं
होते?

23काश मेरी बातें क़लमबंद हो जाएँ! काश वह
यादगार पर कंदा की जाएँ, 24लोहे की छैनी और
सीसे से हमेशा के लिए पत्थर में नक़्श की जाएँ!
25लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ानेवाला ज़िंदा
है और आख़िरकार मेरे हक़ में ज़मीन पर खड़ा
हो जाएगा, 26गो मेरी जिल्द यों उतारी भी गई
हो। लेकिन मेरी आरज़ू है कि जिस्म में होते हुए
अल्लाह को देखूँ, 27कि मैं ख़ुद ही उसे देखूँ, न
कि अजनबी बल्कि अपनी ही आँखों से उस पर
निगाह करूँ। इस आरज़ू की शिद्दत से मेरा दिल
तबाह हो रहा है।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : ‘मेरे दाँतों की जिल्द ही बच गई है।’ मतलब मुबहम-सा है।

28तुम कहते हो, ‘हम कितनी सख़्ती से अय्यूब
का ताक़्क़ुब करेंगे’ और ‘मसले की जड़ तो उसी
में पिनहाँ है।’ 29लेकिन तुम्हें ख़ुद तलवार से डरना
चाहिए, क्योंकि तुम्हारा ग़ुस्सा तलवार की सज़ा
के लायक़ है, तुम्हें जानना चाहिए कि अदालत
आनेवाली है।”

ज़ूफ़र : ग़लत काम की मुंसिफ़ाना सज़ा दी जाएगी

20 तब ज़ूफ़र नामाती ने जवाब देकर
कहा,
2“यक़ीनन मेरे मुज़तरिब ख़यालात और वह
एहसासात जो मेरे अंदर से उभर रहे हैं मुझे जवाब
देने पर मजबूर कर रहे हैं। 3मुझे ऐसी नसीहत
सुननी पड़ी जो मेरी बेइज़्ज़ती का बाइस थी,
लेकिन मेरी समझ मुझे जवाब देने की तहरीक
दे रही है।

4क्या तुझे मालूम नहीं कि क़दीम ज़माने से
यानी जब से इनसान को ज़मीन पर रखा गया
5शरीर का फ़तहमंद नारा आरिज़ी और बेदीन की
ख़ुशी पल-भर की साबित हुई है? 6गो उसका
क़दो-क़ामत आसमान तक पहुँचे और उसका सर
बादलों को छुए 7ताहम वह अपने फ़ुज़्ले की तरह
अबद तक तबाह हो जाएगा। जिन्होंने उसे पहले
देखा था वह पूछेंगे, ‘अब वह कहाँ है?’

8वह ख़ाब की तरह उड़ जाता और आइंदा कहीं
नहीं पाया जाएगा, उसे रात की रोया की तरह
भुला दिया जाता है। 9जिस आँख ने उसे देखा वह
उसे आइंदा कभी नहीं देखेगी। उसका घर दुबारा
उसका मुशाहदा नहीं करेगा। 10उस की औलाद
को ग़रीबों से भीक माँगनी पड़ेगी, उसके अपने
हाथों को दौलत वापस देनी पड़ेगी। 11जवानी की
जिस ताक़त से उस की हड्डियाँ भरी हैं वह उसके
साथ ही ख़ाक में मिल जाएगी।

12बुराई बेदीन के मुँह में मीठी है। वह उसे
अपनी ज़बान तले छुपाए रखता, 13उसे महफ़ूज़
रखकर जाने नहीं देता। 14लेकिन उस की ख़ुराक
पेट में आकर ख़राब हो जाती बल्कि साँप का
ज़हर बन जाती है। 15जो दौलत उसने निगल ली
उसे वह उगल देगा, अल्लाह ही यह चीज़ें उसके
पेट से ख़ारिज करेगा। 16उसने साँप का ज़हर
चूस लिया, और साँप ही की ज़बान उसे मार
डालेगी। 17वह नदियों से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होगा,
शहद और बालाई की नहरों से मज़ा नहीं लेगा।
18जो कुछ उसने हासिल किया उसे वह हज़म
नहीं करेगा बल्कि सब कुछ वापस करेगा। जो
दौलत उसने अपने कारोबार से कमाई उससे वह
लुत्फ़ नहीं उठाएगा। 19क्योंकि उसने पस्तहालों
पर ज़ुल्म करके उन्हें तर्क किया है, उसने ऐसे घरों
को छीन लिया है जिन्हें उसने तामीर नहीं किया
था। 20उसने पेट में कभी सुकून महसूस नहीं
किया बल्कि जो कुछ भी चाहता था उसे बचने
नहीं दिया। 21जब वह खाना खाता है तो कुछ नहीं
बचता, इसलिए उस की ख़ुशहाली क़ायम नहीं
रहेगी। 22ज्योंही उसे कसरत की चीज़ें हासिल
होंगी वह मुसीबत में फँस जाएगा। तब दुख-दर्द
का पूरा ज़ोर उस पर आएगा। 23काश अल्लाह
बेदीन का पेट भरकर अपना भड़कता क़हर उस
पर नाज़िल करे, काश वह अपना ग़ज़ब उस पर
बरसाए।

24गो वह लोहे के हथियार से भाग जाए,
लेकिन पीतल का तीर उसे चीर डालेगा। 25जब
वह उसे अपनी पीठ से निकाले तो तीर की नोक
उसके कलेजे में से निकलेगी। उसे दहशतनाक
वाक़ियात पेश आएँगे। 26गहरी तारीकी उसके
ख़ज़ानों की ताक में बैठी रहेगी। ऐसी आग
जो इनसानों ने नहीं लगाई उसे भस्म करेगी।
उसके ख़ैमे के जितने लोग बच निकले उन्हें वह
खा जाएगी। 27आसमान उसे मुजरिम ठहराएगा,
ज़मीन उसके ख़िलाफ़ गवाही देने के लिए खड़ी
हो जाएगी। 28सैलाब उसका घर उड़ा ले जाएगा,
ग़ज़ब के दिन शिद्दत से बहता हुआ पानी उस पर
से गुज़रेगा। 29यह है वह अज्र जो अल्लाह बेदीनों
को देगा, वह विरासत जिसे अल्लाह ने उनके लिए
मुक़र्रर की है।”

अय्यूब : बहुत दफ़ा बेदीनों को सज़ा नहीं मिलती

21 फिर अय्यूब ने जवाब में कहा,
2“ध्यान से मेरे अलफ़ाज़ सुनो! यही
करने से मुझे तसल्ली दो! 3जब तक मैं अपनी
बात पेश न करूँ मुझे बरदाश्त करो, इसके बाद
अगर चाहो तो मेरा मज़ाक़ उड़ाओ। 4क्या मैं
किसी इनसान से एहतजाज कर रहा हूँ? हरगिज़
नहीं! तो फिर क्या अजब कि मेरी रूह इतनी तंग
आ गई है। 5मुझ पर नज़र डालो तो तुम्हारे रोंगटे
खड़े हो जाएंगे और तुम हैरानी से अपना हाथ मुँह
पर रखोगे।

6जब कभी मुझे वह ख़याल याद आता है जो मैं
पेश करना चाहता हूँ तो मैं दहशतज़दा हो जाता
हूँ, मेरे जिस्म पर थरथराहट तारी हो जाती है।
7ख़याल यह है कि बेदीन क्यों जीते रहते हैं? न
सिर्फ़ वह उम्ररसीदा हो जाते बल्कि उनकी ताक़त
बढ़ती रहती है।

8उनके बच्चे उनके सामने क़ायम हो जाते,
उनकी औलाद उनकी आँखों के सामने मज़बूत हो
जाती है। 9उनके घर महफ़ूज़ हैं। न कोई चीज़ उन्हें
डराती, न अल्लाह की सज़ा उन पर नाज़िल होती
है। 10उनका साँड नसल बढ़ाने में कभी नाकाम
नहीं होता, उनकी गाय वक़्त पर जन्म देती, और
उसके बच्चे कभी ज़ाया नहीं होते।

11वह अपने बच्चों को बाहर खेलने के लिए
भेजते हैं तो वह भेड़-बकरियों के रेवड़ की
तरह घर से निकलते हैं। उनके लड़के कूदते
फाँदते नज़र आते हैं। 12वह दफ़ और सरोद
बजाकर गीत गाते और बाँसरी की सुरीली आवाज़
निकालकर अपना दिल बहलाते हैं। 13उनकी
ज़िंदगी ख़ुशहाल रहती है, वह हर दिन से पूरा
लुत्फ़ उठाते और आख़िरकार बड़े सुकून से
पाताल में उतर जाते हैं।

14और यह वह लोग हैं जो अल्लाह से कहते
हैं, ‘हमसे दूर हो जा, हम तेरी राहों को जानना
नहीं चाहते। 15क़ादिरे-मुतलक़ कौन है कि हम
उस की ख़िदमत करें? उससे दुआ करने से हमें
क्या फ़ायदा होगा?’ 16क्या उनकी ख़ुशहाली
उनके अपने हाथ में नहीं होती? क्या बेदीनों के
मनसूबे अल्लाह से दूर नहीं रहते?

17ऐसा लगता है कि बेदीनों का चराग़ कभी
नहीं बुझता। क्या उन पर कभी मुसीबत आती
है? क्या अल्लाह कभी क़हर में आकर उन पर
वह तबाही नाज़िल करता है जो उनका मुनासिब
हिस्सा है? 18क्या हवा के झोंके कभी उन्हें भूसे
की तरह और आँधी कभी उन्हें तूड़ी की तरह
उड़ा ले जाती है? अफ़सोस, ऐसा नहीं होता।
19शायद तुम कहो, ‘अल्लाह उन्हें सज़ा देने के
बजाए उनके बच्चों को सज़ा देगा।’ लेकिन मैं
कहता हूँ कि उसे बाप को ही सज़ा देनी चाहिए
ताकि वह अपने गुनाहों का नतीजा ख़ूब जान ले।
20उस की अपनी ही आँखें उस की तबाही देखें,
वह ख़ुद क़ादिरे-मुतलक़ के ग़ज़ब का प्याला पी
ले। 21क्योंकि जब उस की ज़िंदगी के मुक़र्ररा दिन
इख़्तिताम तक पहुँचें तो उसे क्या परवा होगी कि
मेरे बाद घरवालों के साथ क्या होगा।

22लेकिन कौन अल्लाह को इल्म सिखा सकता
है? वह तो बुलंदियों पर रहनेवालों की भी
अदालत करता है। 23एक शख़्स वफ़ात पाते
वक़्त ख़ूब तनदुरुस्त होता है। जीते-जी वह बड़े
सुकून और इतमीनान से ज़िंदगी गुज़ार सका।
24उसके बरतन दूध से भरे रहे, उस की हड्डियों
का गूदा तरो-ताज़ा रहा। 25दूसरा शख़्स शिकस्ता
हालत में मर जाता है और उसे कभी ख़ुशहाली
का लुत्फ़ नसीब नहीं हुआ। 26अब दोनों मिलकर
ख़ाक में पड़े रहते हैं, दोनों कीड़े-मकोड़ों से ढाँपे
रहते हैं।

27सुनो, मैं तुम्हारे ख़यालात और उन साज़िशों
से वाक़िफ़ हूँ जिनसे तुम मुझ पर ज़ुल्म करना
चाहते हो। 28क्योंकि तुम कहते हो, ‘रईस का
घर कहाँ है? वह ख़ैमा किधर गया जिसमें बेदीन
बसते थे? वह अपने गुनाहों के सबब से ही तबाह
हो गए हैं।’ 29लेकिन उनसे पूछ लो जो इधर-उधर
सफ़र करते रहते हैं। तुम्हें उनकी गवाही तसलीम

करनी चाहिए 30कि आफ़त के दिन शरीर को
सहीह-सलामत छोड़ा जाता है, कि ग़ज़ब के दिन
उसे रिहाई मिलती है।
31कौन उसके रूबरू उसके चाल-चलन की
मलामत करता, कौन उसे उसके ग़लत काम का
मुनासिब अज्र देता है? 32लोग उसके जनाज़े में
शरीक होकर उसे क़ब्र तक ले जाते हैं। उस की
क़ब्र पर चौकीदार लगाया जाता है। 33वादी की
मिट्टी के ढेले उसे मीठे लगते हैं। जनाज़े के पीछे
पीछे तमाम दुनिया, उसके आगे आगे अनगिनत
हुजूम चलता है। 34चुनाँचे तुम मुझे अबस बातों से
क्यों तसल्ली दे रहे हो? तुम्हारे जवाबों में तुम्हारी
बेवफ़ाई ही नज़र आती है।”

इलीफ़ज़ : अय्यूब शरीर है

22 फिर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब देकर
कहा,
2“क्या अल्लाह इनसान से फ़ायदा उठा
सकता है? हरगिज़ नहीं! उसके लिए दानिशमंद
भी फ़ायदे का बाइस नहीं। 3अगर तू रास्तबाज़
हो भी तो क्या वह इससे अपने लिए नफ़ा उठा
सकता है? हरगिज़ नहीं! अगर तू बेइलज़ाम
ज़िंदगी गुज़ारे तो क्या उसे कुछ हासिल होता है?
4अल्लाह तुझे तेरी ख़ुदातरस ज़िंदगी के सबब से
मलामत नहीं कर रहा। यह न सोच कि वह इसी
लिए अदालत में तुझसे जवाब तलब कर रहा है।
5नहीं, वजह तेरी बड़ी बदकारी, तेरे ला-महदूद
गुनाह हैं।
6जब तेरे भाइयों ने तुझसे क़र्ज़ लिया तो तूने
बिलावजह वह चीज़ें अपना ली होंगी जो उन्होंने
तुझे ज़मानत के तौर पर दी थीं, तूने उन्हें उनके
कपड़ों से महरूम कर दिया होगा। 7तूने थकेमाँदों
को पानी पिलाने से और भूके मरनेवालों को
खाना खिलाने से इनकार किया होगा। 8बेशक
तेरा रवैया इस ख़याल पर मबनी था कि पूरा मुल्क
ताक़तवरों की मिलकियत है, कि सिर्फ़ बड़े लोग
उसमें रह सकते हैं। 9तूने बेवाओं को ख़ाली हाथ
मोड़ दिया होगा, यतीमों की ताक़त पाश पाश
की होगी। 10इसी लिए तू फंदों से घिरा रहता है,
अचानक ही तुझे दहशतनाक वाक़ियात डराते हैं।
11यही वजह है कि तुझ पर ऐसा अंधेरा छा गया
है कि तू देख नहीं सकता, कि सैलाब ने तुझे डुबो
दिया है।
12क्या अल्लाह आसमान की बुलंदियों पर नहीं
होता? वह तो सितारों पर नज़र डालता है, ख़ाह
वह कितने ही ऊँचे क्यों न हों। 13तो भी तू कहता
है, ‘अल्लाह क्या जानता है? क्या वह काले
बादलों में से देखकर अदालत कर सकता है?
14वह घने बादलों में छुपा रहता है, इसलिए जब
वह आसमान के गुंबद पर चलता है तो उसे कुछ
नज़र नहीं आता।’ 15क्या तू उस क़दीम राह से
बाज़ नहीं आएगा जिस पर बदकार चलते रहे हैं?
16वह तो अपने मुक़र्ररा वक़्त से पहले ही सुकड़
गए, उनकी बुनियादें सैलाब से ही उड़ा ली गईं।
17उन्होंने अल्लाह से कहा, ‘हमसे दूर हो जा,’
और ‘क़ादिरे-मुतलक़ हमारे लिए क्या कुछ कर
सकता है?’ 18लेकिन अल्लाह ही ने उनके घरों
को भरपूर ख़ुशहाली से नवाज़ा, गो बेदीनों के बुरे
मनसूबे उससे दूर ही दूर रहते हैं। 19रास्तबाज़
उनकी तबाही देखकर ख़ुश हुए, बेक़ुसूरों ने उनकी
हँसी उड़ाकर कहा, 20‘लो, यह देखो, उनकी
जायदाद किस तरह मिट गई, उनकी दौलत किस
तरह भस्म हो गई है!’
21ऐ अय्यूब, अल्लाह से सुलह करके
सलामती हासिल कर, तब ही तू ख़ुशहाली
पाएगा। 22अल्लाह के मुँह की हिदायत अपना
ले, उसके फ़रमान अपने दिल में महफ़ूज़ रख।
23अगर तू क़ादिरे-मुतलक़ के पास वापस आए
तो बहाल हो जाएगा, और तेरे ख़ैमे से बदी दूर
ही रहेगी। 24सोने को ख़ाक के बराबर, ओफ़ीर
का ख़ालिस सोना वादी के पत्थर के बराबर
समझ ले 25तो क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुद तेरा सोना
होगा, वही तेरे लिए चाँदी का ढेर होगा। 26तब
तू क़ादिरे-मुतलक़ से लुत्फ़अंदोज़ होगा और
अल्लाह के हुज़ूर अपना सर उठा सकेगा। 27तू
उससे इल्तिजा करेगा तो वह तेरी सुनेगा और तू

अपनी मन्नतें बढ़ा सकेगा। 28जो कुछ भी तू करने का इरादा रखे उसमें तुझे कामयाबी होगी, तेरी राहों पर रौशनी चमकेगी। 29क्योंकि जो शेख़ी बघारता है उसे अल्लाह पस्त करता जबकि जो पस्तहाल है उसे वह नजात देता है। 30वह बेक़ुसूर को छुड़ाता है, चुनाँचे अगर तेरे हाथ पाक हों तो वह तुझे छुड़ाएगा।"

अय्यूब : काश मैं अल्लाह को कहीं पाता

23 अय्यूब ने जवाब में कहा,
2"बेशक आज मेरी शिकायत सरकशी का इज़हार है, हालाँकि मैं अपनी आहों पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रहा हूँ।

3काश मैं उसे पाने का इल्म रखूँ ताकि उस की सुकूनतगाह तक पहुँच सकूँ। 4फिर मैं अपना मामला तरतीबवार उसके सामने पेश करता, मैं अपना मुँह दलायल से भर लेता। 5तब मुझे उसके जवाबों का पता चलता, मैं उसके बयानात पर ग़ौर कर सकता। 6क्या वह अपनी अज़ीम क़ुव्वत मुझसे लड़ने पर सर्फ़ करता? हरगिज़ नहीं! वह यक़ीनन मुझ पर तवज्जुह देता। 7अगर मैं वहाँ उसके हुज़ूर आ सकता तो दियानतदार आदमी की तरह उसके साथ मुक़दमा लड़ता। तब मैं हमेशा के लिए अपने मुंसिफ़ से बच निकलता!

8लेकिन अफ़सोस, अगर मैं मशरिक़ की तरफ़ जाऊँ तो वह वहाँ नहीं होता, मग़रिब की जानिब बढ़ूँ तो वहाँ भी नहीं मिलता। 9शिमाल में उसे ढूँडूँ तो वह दिखाई नहीं देता, जुनूब की तरफ़ रुख़ करूँ तो वहाँ भी पोशीदा रहता है। 10क्योंकि वह मेरी राह को जानता है। अगर वह मेरी जाँच-पड़ताल करता तो मैं ख़ालिस सोना साबित होता। 11मेरे क़दम उस की राह में रहे हैं, मैं राह से न बाईं, न दाईं तरफ़ हटा बल्कि सीधा उस पर चलता रहा। 12मैं उसके होंटों के फ़रमान से बाज़ नहीं आया बल्कि अपने दिल में ही उसके मुँह की बातें महफ़ूज़ रखी हैं।

13अगर वह फ़ैसला करे तो कौन उसे रोक सकता है? जो कुछ भी वह करना चाहे उसे अमल में लाता है। 14जो भी मनसूबा उसने मेरे लिए बाँधा उसे वह ज़रूर पूरा करेगा। और उसके ज़हन में मज़ीद बहुत-से ऐसे मनसूबे हैं। 15इसी लिए मैं उसके हुज़ूर दहशतज़दा हूँ। जब भी मैं इन बातों पर ध्यान दूँ तो उससे डरता हूँ। 16अल्लाह ने ख़ुद मुझे शिकस्तादिल किया, क़ादिरे-मुतलक़ ही ने मुझे दहशत खिलाई है। 17क्योंकि न मैं तारीकी से तबाह हो रहा हूँ, न इसलिए कि घने अंधेरे ने मेरे चेहरे को ढाँप दिया है।

ज़मीन पर कितनी नाइनसाफ़ी पाई जाती है

24 क़ादिरे-मुतलक़ अदालत के औ-क़ात क्यों नहीं मुक़र्रर करता? जो उसे जानते हैं वह ऐसे दिन क्यों नहीं देखते? 2बेदीन अपनी ज़मीनों की हुदूद को आगे पीछे करते और दूसरों के रेवड़ लूटकर अपनी चरागाहों में ले जाते हैं। 3वह यतीमों का गधा हाँककर ले जाते और इस शर्त पर बेवा को क़र्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना बैल दे। 4वह ज़रूरतमंदों को रास्ते से हटाते हैं, चुनाँचे मुल्क के ग़रीबों को सरासर छुप जाना पड़ता है।

5ज़रूरतमंद बयाबान में जंगली गधों की तरह काम करने के लिए निकलते हैं। ख़ुराक का खोज लगा लगाकर वह इधर-उधर घुमते-फिरते हैं बल्कि रेगिस्तान ही उन्हें उनके बच्चों के लिए खाना मुहैया करता है। 6जो खेत उनके अपने नहीं हैं उनमें वह फ़सल काटते हैं, और बेदीनों के अंगूर के बाग़ों में जाकर वह दो-चार अंगूर चुन लेते हैं जो फ़सल चुनने के बाद बाक़ी रह गए थे। 7कपड़ों से महरूम रहकर वह रात को बरहना हालत में गुज़ारते हैं। सर्दी में उनके पास कम्बल तक नहीं होता। 8पहाड़ों की बारिश से वह भीग जाते और पनाहगाह न होने के बाइस पत्थरों के साथ लिपट जाते हैं।

9बेदीन बाप से महरूम बच्चे को माँ की गोद से छीन लेते हैं बल्कि इस शर्त पर मुसीबतज़दा को क़र्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना शीरख़ार बच्चा दे। 10ग़रीब बरहना हालत में और

कपड़े पहने बग़ैर फिरते हैं, वह भूके होते हुए पूले उठाए चलते हैं। 11ज़ैतून के जो दरख़्त बेदीनों ने सफ़-दर-सफ़ लगाए थे उनके दरमियान ग़रीब ज़ैतून का तेल निकालते हैं। प्यासी हालत में वह शरीरों के हौज़ों में अंगूर को पाँवों तले कुचलकर उसका रस निकालते हैं। 12शहर से मरनेवालों की आहें निकलती हैं और ज़ख़मी लोग मदद के लिए चीख़ते-चिल्लाते हैं। इसके बावुजूद अल्लाह किसी को भी मुजरिम नहीं ठहराता।

13यह बेदीन उनमें से हैं जो नूर से सरकश हो गए हैं। न वह उस की राहों से वाक़िफ़ हैं, न उनमें रहते हैं। 14सुबह-सवेरे क़ातिल उठता है ताकि मुसीबतज़दा और ज़रूरतमंद को क़त्ल करे। रात को चोर चक्कर काटता है। 15ज़िनाकार की आँखें शाम के धुँधलके के इंतज़ार में रहती हैं, यह सोचकर कि उस वक़्त मैं किसी को नज़र नहीं आऊँगा। निकलते वक़्त वह अपने मुँह को ढाँप लेता है। 16डाकू अंधेरे में घरों में नक़ब लगाते जबकि दिन के वक़्त वह छुपकर अपने पीछे कुंडी लगा लेते हैं। नूर को वह जानते ही नहीं। 17गहरी तारीकी ही उनकी सुबह होती है, क्योंकि उनकी घने अंधेरे की दहशतों से दोस्ती हो गई है।

18लेकिन बेदीन पानी की सतह पर झाग हैं, मुल्क में उनका हिस्सा मलऊन है और उनके अंगूर के बाग़ों की तरफ़ कोई रुजू नहीं करता। 19जिस तरह काल और झुलसती गरमी बर्फ़ का पानी छीन लेती हैं उसी तरह पाताल गुनाहगारों को छीन लेता है। 20माँ का रहम उन्हें भूल जाता, कीड़ा उन्हें चूस लेता और उनकी याद जाती रहती है। यक़ीनन बेदीनी लकड़ी की तरह टूट जाती है। 21बेदीन बाँझ औरत पर ज़ुल्म और बेवाओं से बदसुलूकी करते हैं, 22लेकिन अल्लाह ज़बरदस्तों को अपनी क़ुदरत से घसीटकर ले जाता है। वह मज़बूती से खड़े भी हों तो भी कोई यक़ीन नहीं कि ज़िंदा रहेंगे। 23अल्लाह उन्हें हिफ़ाज़त से आराम करने देता है, लेकिन उस की आँखें उनकी राहों की पहरादारी करती रहती हैं। 24लमहा-भर के लिए वह सरफ़राज़ होते, लेकिन फिर नेस्तो-नाबूद हो जाते हैं। उन्हें ख़ाक में मिलाकर सबकी तरह जमा किया जाता है, वह गंदुम की कटी हुई बालों की तरह मुरझा जाते हैं।

25क्या ऐसा नहीं है? अगर कोई मुत्तफ़िक़ नहीं तो वह साबित करे कि मैं ग़लती पर हूँ, वह दिखाए कि मेरे दलायल बातिल हैं।”

बिलदद : अल्लाह के सामने कोई रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

25 फिर बिलदद सूख़ी ने जवाब देकर कहा,

2“अल्लाह की हुकूमत दहशतनाक है। वही अपनी बुलंदियों पर सलामती क़ायम रखता है। 3क्या कोई उसके दस्तों की तादाद गिन सकता है? उसका नूर किस पर नहीं चमकता? 4तो फिर इनसान अल्लाह के सामने किस तरह रास्तबाज़ ठहर सकता है? जो औरत से पैदा हुआ वह किस तरह पाक-साफ़ साबित हो सकता है? 5उस की नज़र में न चाँद पुरनूर है, न सितारे पाक हैं। 6तो फिर इनसान किस तरह पाक ठहर सकता है जो कीड़ा ही है? आदमज़ाद तो मकोड़ा ही है।”

अय्यूब : तूने मुझे कितने अच्छे मशवरे दिए हैं!

26 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,

2“वाह जी वाह! तूने क्या ख़ूब उसे सहारा दिया जो बेबस है, क्या ख़ूब उस बाज़ू को मज़बूत कर दिया जो बेताक़त है! 3तूने उसे कितने अच्छे मशवरे दिए जो हिकमत से महरूम है, अपनी समझ की कितनी गहरी बातें उस पर ज़ाहिर की हैं। 4तूने किसकी मदद से यह कुछ पेश किया है? किसने तेरी रूह में वह बातें डालीं जो तेरे मुँह से निकल आई हैं?

कौन अल्लाह की अज़मत का अंदाज़ा लगा सकता है?

5अल्लाह के सामने वह तमाम मुरदा अरवाह जो पानी और उसमें रहनेवालों के नीचे बसती हैं

डर के मारे तड़प उठती हैं। 6हाँ, उसके सामने पाताल बरहना और उस की गहराइयाँ बेनिक़ाब हैं।

7अल्लाह ही ने शिमाल को वीरानो-सुनसान जगह के ऊपर तान लिया, उसी ने ज़मीन को यों लगा दिया कि वह किसी चीज़ से लटकी हुई नहीं है। 8उसने अपने बादलों में पानी लपेट लिया, लेकिन वह बोझ तले न फटे। 9उसने अपना तख़्त नज़रों से छुपाकर अपना बादल उस पर छा जाने दिया। 10उसने पानी की सतह पर दायरा बनाया जो रौशनी और अंधेरे के दरमियान हद बन गया।

11आसमान के सतून लरज़ उठे। उस की धमकी पर वह दहशतज़दा हुए। 12अपनी क़ुदरत से अल्लाह ने समुंदर को थमा दिया, अपनी हिकमत से रहब अज़दहे को टुकड़े टुकड़े कर दिया। 13उसके रूह ने आसमान को साफ़ किया, उसके हाथ ने फ़रार होनेवाले साँप को छेद डाला। 14लेकिन ऐसे काम उस की राहों के किनारे पर ही किए जाते हैं। जो कुछ हम उसके बारे में सुनते हैं वह धीमी धीमी आवाज़ से हमारे कान तक पहुँचता है। तो फिर कौन उस की क़ुदरत की कड़कती आवाज़ समझ सकता है?"

मैं बेक़ुसूर हूँ

27 फिर अय्यूब ने अपनी बात जारी रखी, 2"अल्लाह की हयात की क़सम जिसने मेरा इनसाफ़ करने से इनकार किया, क़ादिरे-मुतलक़ की क़सम जिसने मेरी ज़िंदगी तलख़ कर दी है, 3मेरे जीते-जी, हाँ जब तक अल्लाह का दम मेरी नाक में है 4मेरे होंट झूट नहीं बोलेंगे, मेरी ज़बान धोका बयान नहीं करेगी। 5मैं कभी तसलीम नहीं करूँगा कि तुम्हारी बात दुरुस्त है। मैं बेइलज़ाम हूँ और मरते दम तक इसके उलट नहीं कहूँगा। 6मैं इसरार करता हूँ कि रास्तबाज़ हूँ और इससे कभी बाज़ नहीं आऊँगा। मेरा दिल मेरे किसी भी दिन के बारे में मुझे मलामत नहीं करता।

7अल्लाह करे कि मेरे दुश्मन के साथ वही सुलूक किया जाए जो बेदीनों के साथ किया जाएगा, कि मेरे मुख़ालिफ़ का वह अंजाम हो जो बदकारों को पेश आएगा। 8क्योंकि उस वक़्त शरीर की क्या उम्मीद रहेगी जब उसे इस ज़िंदगी से मुंक़ते किया जाएगा, जब अल्लाह उस की जान उससे तलब करेगा? 9क्या अल्लाह उस की चीख़ें सुनेगा जब वह मुसीबत में फँसकर मदद के लिए पुकारेगा? 10या क्या वह क़ादिरे-मुतलक़ से लुत्फ़अंदोज़ होगा और हर वक़्त अल्लाह को पुकारेगा?

11अब मैं तुम्हें अल्लाह की क़ुदरत के बारे में तालीम दूँगा, क़ादिरे-मुतलक़ का इरादा तुमसे नहीं छुपाऊँगा। 12देखो, तुम सबने इसका मुशाहदा किया है। तो फिर इस क़िस्म की बातिल बातें क्यों करते हो?

बेदीन ज़िंदा नहीं रहेगा

13बेदीन अल्लाह से क्या अज्र पाएगा, ज़ालिम को क़ादिरे-मुतलक़ से मीरास में क्या मिलेगा? 14गो उसके बच्चे मुतअद्दिद हों, लेकिन आख़िरकार वह तलवार की ज़द में आएँगे। उस की औलाद भूकी रहेगी। 15जो बच जाएँ उन्हें मोहलक बीमारी से क़ब्र में पहुँचाया जाएगा, और उनकी बेवाएँ मातम नहीं कर पाएँगी। 16बेशक वह ख़ाक की तरह चाँदी का ढेर लगाए और मिट्टी की तरह नफ़ीस कपड़ों का तोदा इकट्ठा करे, 17लेकिन जो कपड़े वह जमा करे उन्हें रास्तबाज़ पहन लेगा, और जो चाँदी वह इकट्ठी करे उसे बेक़ुसूर तक़सीम करेगा। 18जो घर बेदीन बना ले वह घोंसले की मानिंद है, उस आरिज़ी झोंपड़ी की मानिंद जो चौकीदार अपने लिए बना लेता है। 19वह अमीर हालत में सो जाता है, लेकिन आख़िरी दफ़ा। जब अपनी आँखें खोल लेता तो तमाम दौलत जाती रही है। 20उस पर हौलनाक वाक़ियात का सैलाब टूट पड़ता, उसे रात के वक़्त आँधी छीन लेती है। 21मशरिक़ी लू उसे उड़ा ले जाती, उसे उठाकर उसके मक़ाम से दूर फेंक देती है। 22बेरहमी से वह उस पर यों झपट्टा मारती रहती है कि उसे बार बार भागना पड़ता

है। 23वह तालियाँ बजाकर अपनी हिक़ारत का इज़हार करती, अपनी जगह से आवाज़े कसती है।

हिक्मत कहाँ पाई जाती है?

28 यक़ीनन चाँदी की कानें होती हैं और ऐसी जगहें जहाँ सोना ख़ालिस किया जाता है। 2लोहा ज़मीन से निकाला जाता और लोग पत्थर पिघलाकर ताँबा बना लेते हैं। 3इनसान अंधेरे को ख़त्म करके ज़मीन की गहरी गहरी जगहों तक कच्ची धात का खोज लगाता है, ख़ाह वह कितने अंधेरे में क्यों न हो। 4एक अजनबी क़ौम सुरंग लगाती है। जब रस्सों से लटके हुए काम करते और इनसानों से दूर कान में झूमते हैं तो ज़मीन पर गुज़रनेवालों को उनकी याद ही नहीं रहती। 5ज़मीन की सतह पर ख़ुराक पैदा होती है जबकि उस की गहराइयाँ यों तबदील हो जाती हैं जैसे उसमें आग लगी हो। 6पत्थरों से संगे-लाजवर्द निकाला जाता है जिसमें सोने के ज़र्रे भी पाए जाते हैं।

7यह ऐसे रास्ते हैं जो कोई भी शिकारी परिंदा नहीं जानता, जो किसी भी बाज़ ने नहीं देखा। 8जंगल के रोबदार जानवरों में से कोई भी इन राहों पर नहीं चला, किसी भी शेरबबर ने इन पर क़दम नहीं रखा। 9इनसान संगे-चक़माक़ पर हाथ लगाकर पहाड़ों को जड़ से उलटा देता है। 10वह पत्थर में सुरंग लगाकर हर क़िस्म की क़ीमती चीज़ देख लेता 11और ज़मीनदोज़ नदियों को बंद करके पोशीदा चीज़ें रौशनी में लाता है।

12लेकिन हिकमत कहाँ पाई जाती है, समझ कहाँ से मिलती है? 13इनसान उस तक जानेवाली राह नहीं जानता, क्योंकि उसे मुल्के-हयात में पाया नहीं जाता। 14समुंदर कहता है, 'हिक्मत मेरे पास नहीं है,' और उस की गहराइयाँ बयान करती हैं, 'यहाँ भी नहीं है।'

15हिकमत को न ख़ालिस सोने, न चाँदी से ख़रीदा जा सकता है। 16उसे पाने के लिए न ओफ़ीर का सोना, न बेशक़ीमत अक़ीक़े-अहमर[a] या संगे-लाजवर्द[b] काफ़ी हैं। 17सोना और शीशा उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते, न वह सोने के ज़ेवरात के एवज़ मिल सकती है। 18उस की निसबत मूँगा और बिल्लौर की क्या क़दर है? हिकमत से भरी थैली मोतियों से कहीं ज़्यादा क़ीमती है। 19एथोपिया का ज़बरजद[c] उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता, उसे ख़ालिस सोने के लिए ख़रीदा नहीं जा सकता।

20हिकमत कहाँ से आती, समझ कहाँ से मिल सकती है? 21वह तमाम जानदारों से पोशीदा रहती बल्कि परिंदों से भी छुपी रहती है। 22पाताल और मौत उसके बारे में कहते हैं, 'हमने उसके बारे में सिर्फ़ अफ़वाहें सुनी हैं।'

23लेकिन अल्लाह उस तक जानेवाली राह को जानता है, उसे मालूम है कि कहाँ मिल सकती है। 24क्योंकि उसी ने ज़मीन की हुदूद तक देखा, आसमान तले सब कुछ पर नज़र डाली 25ताकि हवा का वज़न मुक़र्रर करे और पानी की पैमाइश करके उस की हुदूद मुतैयिन करे। 26उसी ने बारिश के लिए फ़रमान जारी किया और बादल की कड़कती बिजली के लिए रास्ता तैयार किया। 27उसी वक़्त उसने हिकमत को देखकर उस की जाँच-पड़ताल की। उसने उसे क़ायम भी किया और उस की तह तक तहक़ीक़ भी की। 28इनसान से उसने कहा, 'सुनो, अल्लाह का ख़ौफ़ मानना ही हिकमत और बुराई से दूर रहना ही समझ है'।"

काश मेरी ज़िंदगी पहले की तरह हो

29 अय्यूब ने अपनी बात जारी रखकर कहा,

2"काश मैं दुबारा माज़ी के वह दिन गुज़ार सकूँ जब अल्लाह मेरी देख-भाल करता था, 3जब उस की शमा मेरे सर के ऊपर चमकती रही और मैं उस

[a]carnelian
[b]lapis lazuli
[c]peridot

की रौशनी की मदद से अंधेरे में चलता था। 4उस वक़्त मेरी जवानी उरूज पर थी और मेरा ख़ैमा अल्लाह के साये में रहता था। 5क़ादिरे-मुतलक़ मेरे साथ था, और मैं अपने बेटों से घिरा रहता था। 6कसरत के बाइस मेरे क़दम दही से धोए रहते और चट्टान से तेल की नदियाँ फूटकर निकलती थीं।

7जब कभी मैं शहर के दरवाज़े से निकल-कर चौक में अपनी कुरसी पर बैठ जाता 8तो जवान आदमी मुझे देखकर पीछे हटकर छुप जाते, बुज़ुर्ग उठकर खड़े रहते, 9रईस बोलने से बाज़ आकर मुँह पर हाथ रखते, 10शुरफ़ा की आवाज़ दब जाती और उनकी ज़बान तालू से चिपक जाती थी।

11जिस कान ने मेरी बातें सुनीं उसने मुझे मुबारक कहा, जिस आँख ने मुझे देखा उसने मेरे हक़ में गवाही दी। 12क्योंकि जो मुसीबत में आकर आवाज़ देता उसे मैं बचाता, बेसहारा यतीम को छुटकारा देता था। 13तबाह होनेवाले मुझे बरकत देते थे। मेरे बाइस बेवाओं के दिलों से ख़ुशी के नारे उभर आते थे। 14मैं रास्तबाज़ी से मुलब्बस और रास्तबाज़ी मुझसे मुलब्बस रहती थी, इनसाफ़ मेरा चोग़ा और पगड़ी था।

15अंधों के लिए मैं आँखें, लँगड़ों के लिए पाँव बना रहता था। 16मैं ग़रीबों का बाप था, और जब कभी अजनबी को मुक़दमा लड़ना पड़ा तो मैं ग़ौर से उसके मामले का मुआयना करता था ताकि उसका हक़ मारा न जाए। 17मैंने बेदीन का जबड़ा तोड़कर उसके दाँतों में से शिकार छुड़ाया।

18उस वक़्त मेरा ख़याल था, 'मैं अपने ही घर में वफ़ात पाऊँगा, सीमुरग़ की तरह अपनी ज़िंदगी के दिनों में इज़ाफ़ा करूँगा। 19मेरी जड़ें पानी तक फैली और मेरी शाख़ें ओस से तर रहेंगी। 20मेरी इज़्ज़त हर वक़्त ताज़ा रहेगी, और मेरे हाथ की कमान को नई तक़वियत मिलती रहेगी।'

21लोग मेरी सुनकर ख़ामोशी से मेरे मशवरों के इंतज़ार में रहते थे। 22मेरे बात करने पर वह जवाब में कुछ न कहते बल्कि मेरे अलफ़ाज़ हलकी-सी बूँदा-बाँदी की तरह उन पर टपकते रहते। 23जिस तरह इनसान शिद्दत से बारिश के इंतज़ार में रहता है उसी तरह वह मेरे इंतज़ार में रहते थे। वह मुँह पसारकर बहार की बारिश की तरह मेरे अलफ़ाज़ को जज़्ब कर लेते थे। 24जब मैं उनसे बात करते वक़्त मुसकराता तो उन्हें यक़ीन नहीं आता था, मेरी उन पर मेहरबानी उनके नज़दीक निहायत क़ीमती थी। 25मैं उनकी राह उनके लिए चुनकर उनकी क़ियादत करता, उनके दरमियान यों बसता था जिस तरह बादशाह अपने दस्तों के दरमियान। मैं उस की मानिंद था जो मातम करनेवालों को तसल्ली देता है।

मुझे रद्द किया गया है

30 लेकिन अब वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, हालाँकि उनकी उम्र मुझसे कम है और मैं उनके बापों को अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल करनेवाले कुत्तों के साथ काम पर लगाने के भी लायक़ नहीं समझता था। 2मेरे लिए उनके हाथों की मदद का क्या फ़ायदा था? उनकी पूरी ताक़त तो जाती रही थी। 3ख़ुराक की कमी और शदीद भूक के मारे वह ख़ुश्क ज़मीन की थोड़ी-बहुत पैदावार कतर कतरकर खाते हैं। हर वक़्त वह तबाही और वीरानी के दामन में रहते हैं। 4वह झाड़ियों से ख़त्मी का फल तोड़कर खाते, झाड़ियों[a] की जड़ें आग तापने के लिए इकट्ठी करते हैं। 5उन्हें आबादियों से ख़ारिज किया गया है, और लोग 'चोर चोर' चिल्लाकर उन्हें भगा देते हैं। 6उन्हें घाटियों की ढलानों पर बसना पड़ता, वह ज़मीन के ग़ारों में और पत्थरों के दरमियान ही रहते हैं। 7झाड़ियों के दरमियान वह आवाज़ें देते और मिलकर ऊँटकटारों तले दबक जाते हैं।

[a]यानी झाड़ी बनाम broom, सींक क़िस्म की झाड़ी जिसके फूल ज़रद होते हैं।

8इन कमीने और बेनाम लोगों को मार मारकर
मुल्क से भगा दिया गया है।
9और अब मैं इन्हीं का निशाना बन गया हूँ।
अपने गीतों में वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, मेरी बुरी
हालत उनके लिए मज़हकाख़ेज़ मिसाल बन गई
है। 10वह घिन खाकर मुझसे दूर रहते और मेरे
मुँह पर थूकने से नहीं रुकते। 11चूँकि अल्लाह ने
मेरी कमान की ताँत खोलकर मेरी रुसवाई की
है, इसलिए वह मेरी मौजूदगी में बेलगाम हो गए
हैं। 12मेरे दहने हाथ हुजूम खड़े होकर मुझे ठोकर
खिलाते और मेरी फ़सील के साथ मिट्टी के ढेर
लगाते हैं ताकि उसमें रख़ना डालकर मुझे तबाह
करें। 13वह मेरी क़िलाबंदियाँ ढाकर मुझे ख़ाक
में मिलाने में कामयाब हो जाते हैं। किसी और
की मदद दरकार ही नहीं। 14वह रख़ने में दाख़िल
होते और जौक़-दर-जौक़ तबाहशुदा फ़सील में से
गुज़रकर आगे बढ़ते हैं। 15हौलनाक वाक़ियात
मेरे ख़िलाफ़ खड़े हो गए हैं, और वह तेज़ हवा
की तरह मेरे वक़ार को उड़ा ले जा रहे हैं। मेरी
सलामती बादल की तरह ओझल हो गई है।
16और अब मेरी जान निकल रही है, मैं मुसीबत
के दिनों के क़ाबू में आ गया हूँ। 17रात को मेरी
हड्डियों को छेदा जाता है, कतरनेवाला दर्द मुझे
कभी नहीं छोड़ता। 18अल्लाह बड़े ज़ोर से मेरा
कपड़ा पकड़कर गरेबान की तरह मुझे अपनी
सख़्त गिरिफ़्त में रखता है। 19उसने मुझे कीचड़
में फेंक दिया है, और देखने में मैं ख़ाक और मिट्टी
ही बन गया हूँ। 20मैं तुझे पुकारता, लेकिन तू
जवाब नहीं देता। मैं खड़ा हो जाता, लेकिन तू मुझे
घूरता ही रहता है। 21तू मेरे साथ अपना सुलूक
बदलकर मुझ पर ज़ुल्म करने लगा, अपने हाथ के
पूरे ज़ोर से मुझे सताने लगा है। 22तू मुझे उड़ाकर
हवा पर सवार होने देता, गरजते तूफ़ान में घुलने
देता है। 23हाँ, अब मैं जानता हूँ कि तू मुझे मौत
के हवाले करेगा, उस घर में पहुँचाएगा जहाँ एक
दिन तमाम जानदार जमा हो जाते हैं।
24यक़ीनन मैंने कभी भी अपना हाथ किसी
ज़रूरतमंद के ख़िलाफ़ नहीं उठाया जब उसने
अपनी मुसीबत में आवाज़ दी। 25बल्कि जब
किसी का बुरा हाल था तो मैं हमदर्दी से रोने
लगा, ग़रीबों की हालत देखकर मेरा दिल ग़म
खाने लगा। 26ताहम मुझ पर मुसीबत आई,
अगरचे मैं भलाई की उम्मीद रख सकता था।
मुझ पर घना अंधेरा छा गया, हालाँकि मैं रौशनी
की तवक़्क़ो कर सकता था। 27मेरे अंदर सब
कुछ मुज़तरिब है और कभी आराम नहीं कर
सकता, मेरा वास्ता तकलीफ़देह दिनों से पड़ता
है। 28मैं मातमी लिबास में फिरता हूँ और कोई
मुझे तसल्ली नहीं देता, हालाँकि मैं जमात में खड़े
होकर मदद के लिए आवाज़ देता हूँ। 29मैं गीदड़ों
का भाई और उक़ाबी उल्लुओं का साथी बन गया
हूँ। 30मेरी जिल्द काली हो गई, मेरी हड्डियाँ तपती
गरमी के सबब से झुलस गई हैं। 31अब मेरा सरोद
सिर्फ़ मातम करने और मेरी बाँसरी सिर्फ़ रोनेवालों
के लिए इस्तेमाल होती है।

मेरी आख़िरी बात : मैं बेगुनाह हूँ

31 मैंने अपनी आँखों से अहद बाँधा है।
तो फिर मैं किस तरह किसी कुँवारी
पर नज़र डाल सकता हूँ? 2क्योंकि इनसान को
आसमान पर रहनेवाले ख़ुदा की तरफ़ से क्या
नसीब है, उसे बुलंदियों पर बसनेवाले क़ादिरे-
मुतलक़ से क्या विरासत पाना है? 3क्या ऐसा
नहीं है कि नारास्त शख़्स के लिए आफ़त और
बदकार के लिए तबाही मुक़र्रर है? 4मेरी राहें तो
अल्लाह को नज़र आती हैं, वह मेरा हर क़दम गिन
लेता है।
5न मैं कभी धोके से चला, न मेरे पाँवों ने कभी
फ़रेब देने के लिए फुरती की। अगर इसमें ज़रा
भी शक हो 6तो अल्लाह मुझे इनसाफ़ के तराज़ू
में तोल ले, अल्लाह मेरी बेइलज़ाम हालत मालूम
करे। 7अगर मेरे क़दम सहीह राह से हट गए, मेरी
आँखें मेरे दिल को ग़लत राह पर ले गईं या मेरे
हाथ दाग़दार हुए 8तो फिर जो बीज मैंने बोया उस
की पैदावार कोई और खाए, जो फ़सलें मैंने लगाईं
उन्हें उखाड़ा जाए।

9अगर मेरा दिल किसी औरत से नाजायज़
ताल्लुक़ात रखने पर उकसाया गया और मैं इस
मक़सद से अपने पड़ोसी के दरवाज़े पर ताक
लगाए बैठा 10तो फिर अल्लाह करे कि मेरी
बीवी किसी और आदमी की गंदुम पीसे, कि कोई
और उस पर झुक जाए। 11क्योंकि ऐसी हरकत
शर्मनाक होती, ऐसा जुर्म सज़ा के लायक़ होता
है। 12ऐसे गुनाह की आग पाताल तक सब कुछ
भस्म कर देती है। अगर वह मुझसे सरज़द होता
तो मेरी तमाम फ़सल जड़ों तक राख कर देता।

13अगर मेरा नौकर-नौकरानियों के साथ
झगड़ा था और मैंने उनका हक़ मारा 14तो मैं क्या
करूँ जब अल्लाह अदालत में खड़ा हो जाए? जब
वह मेरी पूछ-गछ करे तो मैं उसे क्या जवाब दूँ?
15क्योंकि जिसने मुझे मेरी माँ के पेट में बनाया
उसने उन्हें भी बनाया। एक ही ने उन्हें भी और
मुझे भी रहम में तश्कील दिया।

16क्या मैंने पस्तहालों की ज़रूरियात पूरी करने
से इनकार किया या बेवा की आँखों को बुझने
दिया? हरगिज़ नहीं! 17क्या मैंने अपनी रोटी
अकेले ही खाई और यतीम को उसमें शरीक न
किया? 18हरगिज़ नहीं, बल्कि अपनी जवानी से
लेकर मैंने उसका बाप बनकर उस की परवरिश
की, अपनी पैदाइश से ही बेवा की राहनुमाई की।
19जब कभी मैंने देखा कि कोई कपड़ों की कमी
के बाइस हलाक हो रहा है, कि किसी ग़रीब के
पास कम्बल तक नहीं 20तो मैंने उसे अपनी भेड़ों
की कुछ ऊन दी ताकि वह गरम हो सके। ऐसे
लोग मुझे दुआ देते थे। 21मैंने कभी भी यतीमों
के ख़िलाफ़ हाथ नहीं उठाया, उस वक़्त भी नहीं
जब शहर के दरवाज़े में बैठे बुज़ुर्ग मेरे हक़ में थे।
22अगर ऐसा न था तो अल्लाह करे कि मेरा शाना
कंधे से निकलकर गिर जाए, कि मेरा बाज़ू जोड़ से
फाड़ा जाए! 23ऐसी हरकतें मेरे लिए नामुमकिन
थीं, क्योंकि अगर मैं ऐसा करता तो मैं अल्लाह से
दहशत खाता रहता, मैं उससे डर के मारे क़ायम
न रह सकता।

24क्या मैंने सोने पर अपना पूरा भरोसा रखा या
ख़ालिस सोने से कहा, 'तुझ पर ही मेरा एतमाद
है'? हरगिज़ नहीं! 25क्या मैं इसलिए ख़ुश था
कि मेरी दौलत ज़्यादा है और मेरे हाथ ने बहुत कुछ
हासिल किया है? हरगिज़ नहीं! 26क्या सूरज
की चमक-दमक और चाँद की पुरवक़ार रविश
देखकर 27मेरे दिल को कभी चुपके से ग़लत राह
पर लाया गया? क्या मैंने कभी उनका एहतराम
किया?[a] 28हरगिज़ नहीं, क्योंकि यह भी सज़ा
के लायक़ जुर्म है। अगर मैं ऐसा करता तो
बुलंदियों पर रहनेवाले ख़ुदा का इनकार करता।

29क्या मैं कभी ख़ुश हुआ जब मुझसे नफ़रत
करनेवाला तबाह हुआ? क्या मैं बाग़ बाग़ हुआ
जब उस पर मुसीबत आई? हरगिज़ नहीं! 30मैंने
अपने मुँह को इजाज़त न दी कि गुनाह करके
उस की जान पर लानत भेजे। 31बल्कि मेरे ख़ैमे
के आदमियों को तसलीम करना पड़ा, 'कोई
नहीं है जो अय्यूब के गोश्त से सेर न हुआ।'
32अजनबी को बाहर गली में रात गुज़ारनी नहीं
पड़ती थी बल्कि मेरा दरवाज़ा मुसाफ़िरों के लिए
खुला रहता था। 33क्या मैंने कभी आदम की
तरह अपना गुनाह छुपाकर अपना क़ुसूर दिल में
पोशीदा रखा, 34इसलिए कि हुजूम से डरता और
अपने रिश्तेदारों से दहशत खाता था? हरगिज़
नहीं! मैंने कभी भी ऐसा काम न किया जिसके
बाइस मुझे डर के मारे चुप रहना पड़ता और घर
से निकल नहीं सकता था।

35काश कोई मेरी सुने! देखो, यहाँ मेरी बात
पर मेरे दस्तख़त हैं, अब क़ादिरे-मुतलक़ मुझे
जवाब दे। काश मेरे मुख़ालिफ़ लिखकर मुझे वह
इलज़ामात बताएँ जो उन्होंने मुझ पर लगाए हैं!
36अगर इलज़ामात का काग़ज़ मिलता तो मैं उसे
उठाकर अपने कंधे पर रखता, उसे पगड़ी की
तरह अपने सर पर बाँध लेता। 37मैं अल्लाह को

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : हाथ से उन्हें बोसा दिया।

अपने क़दमों का पूरा हिसाब-किताब देकर रईस की तरह उसके क़रीब पहुँचता।

38क्या मेरी ज़मीन ने मदद के लिए पुकारकर मुझ पर इलज़ाम लगाया है? क्या उस की रेघारयाँ मेरे सबब से मिलकर रो पड़ी हैं? 39क्या मैंने उस की पैदावार अज्र दिए बग़ैर खाई, उस पर मेहनत-मशक़्क़त करनेवालों के लिए आहें भरने का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं! 40अगर मैं इसमें क़ुसूरवार ठहरूँ तो गंदुम के बजाए ख़ारदार झाड़ियाँ और जौ के बजाए धतूरा[a] उगे।" यों अय्यूब की बातें इख़्तिताम को पहुँच गईं।

चौथे साथी इलीहू की तक़रीर

32 तब मज़कूरा तीनों आदमी अय्यूब को जवाब देने से बाज़ आए, क्योंकि वह अब तक समझता था कि मैं रास्तबाज़ हूँ। 2यह देखकर इलीहू बिन बरकेल ग़ुस्से हो गया। बूज़ शहर के रहनेवाले इस आदमी का ख़ानदान राम था। एक तरफ़ तो वह अय्यूब से ख़फ़ा था, क्योंकि यह अपने आपको अल्लाह के सामने रास्तबाज़ ठहराता था। 3दूसरी तरफ़ वह तीनों दोस्तों से भी नाराज़ था, क्योंकि न वह अय्यूब को सहीह जवाब दे सके, न साबित कर सके कि मुजरिम है। 4इलीहू ने अब तक अय्यूब से बात नहीं की थी। जब तक दूसरों ने बात पूरी नहीं की थी वह ख़ामोश रहा, क्योंकि वह बुज़ुर्ग थे। 5लेकिन अब जब उसने देखा कि तीनों आदमी मज़ीद कोई जवाब नहीं दे सकते तो वह भड़क उठा 6और जवाब में कहा,

"मैं कमउम्र हूँ जबकि आप सब उम्ररसीदा हैं, इसलिए मैं कुछ शरमीला था, मैं आपको अपनी राय बताने से डरता था। 7मैंने सोचा, चलो वह बोलें जिनके ज़्यादा दिन गुज़रे हैं, वह तालीम दें जिन्हें मुतअद्दिद सालों का तजरबा हासिल है।

8लेकिन जो रूह इनसान में है यानी जो दम क़ादिरे-मुतलक़ ने उसमें फूँक दिया वही इनसान को समझ अता करता है। 9न सिर्फ़ बूढ़े लोग दानिशमंद हैं, न सिर्फ़ वह इनसाफ़ समझते हैं जिनके बाल सफ़ेद हैं। 10चुनाँचे मैं गुज़ारिश करता हूँ कि ज़रा मेरी बात सुनें, मुझे भी अपनी राय पेश करने दीजिए।

11मैं आपके अलफ़ाज़ के इंतज़ार में रहा। जब आप मौज़ूँ जवाब तलाश कर रहे थे तो मैं आपकी दानिशमंद बातों पर ग़ौर करता रहा। 12मैंने आप पर पूरी तवज्जुह दी, लेकिन आपमें से कोई अय्यूब को ग़लत साबित न कर सका, कोई उसके दलायल का मुनासिब जवाब न दे पाया। 13अब ऐसा न हो कि आप कहें, 'हमने अय्यूब में हिकमत पाई है, इनसान उसे शिकस्त देकर भगा नहीं सकता बल्कि सिर्फ़ अल्लाह ही।' 14क्योंकि अय्यूब ने अपने दलायल की तरतीब से मेरा मुक़ाबला नहीं किया, और जब मैं जवाब दूँगा तो आपकी बातें नहीं दोहराऊँगा।

15आप घबराकर जवाब देने से बाज़ आए हैं, अब आप कुछ नहीं कह सकते। 16क्या मैं मज़ीद इंतज़ार करूँ, गो आप ख़ामोश हो गए हैं, आप रुककर मज़ीद जवाब नहीं दे सकते? 17मैं भी जवाब देने में हिस्सा लेना चाहता हूँ, मैं भी अपनी राय पेश करूँगा। 18क्योंकि मेरे अंदर से अलफ़ाज़ छलक रहे हैं, मेरी रूह मेरे अंदर मुझे मजबूर कर रही है।

19हक़ीक़त में मैं अंदर से उस नई मै की मानिंद हूँ जो बंद रखी गई हो, मैं नई मै से भरी हुई नई मशकों की तरह फटने को हूँ। 20मुझे बोलना है ताकि आराम पाऊँ, लाज़िम ही है कि मैं अपने होंटों को खोलकर जवाब दूँ। 21यक़ीनन न मैं किसी की जानिबदारी, न किसी की चापलूसी करूँगा। 22क्योंकि मैं ख़ुशामद कर ही नहीं सकता, वरना मेरा ख़ालिक़ मुझे जल्द ही उड़ा ले जाएगा।

[a]एक बदबूदार पौदा।

अल्लाह कई तरीक़ों से इनसान से हमकलाम होता है

33 ऐ अय्यूब, मेरी तक़रीर सुनें, मेरी तमाम बातों पर कान धरें! 2अब मैं अपना मुँह खोल देता हूँ, मेरी ज़बान बोलती है। 3मेरे अलफ़ाज़ सीधी राह पर चलनेवाले दिल से उभर आते हैं, मेरे होंट दियानतदारी से वह कुछ बयान करते हैं जो मैं जानता हूँ। 4अल्लाह के रूह ने मुझे बनाया, क़ादिरे-मुतलक़ के दम ने मुझे ज़िंदगी बख़्शी।

5अगर आप इस क़ाबिल हों तो मुझे जवाब दें और अपनी बातें तरतीब से पेश करके मेरा मुक़ाबला करें। 6अल्लाह की नज़र में मैं तो आपके बराबर हूँ, मुझे भी मिट्टी से लेकर तश्कील दिया गया है। 7चुनाँचे मुझे आपके लिए दहशत का बाइस नहीं होना चाहिए, मेरी तरफ़ से आप पर भारी बोझ नहीं आएगा।

8आपने मेरे सुनते ही कहा बल्कि आपके अलफ़ाज़ अभी तक मेरे कानों में गूँज रहे हैं, 9‘मैं पाक हूँ, मुझसे जुर्म सरज़द नहीं हुआ, मैं बेगुनाह हूँ, मेरा कोई क़ुसूर नहीं। 10तो भी अल्लाह मुझसे झगड़ने के मवाक़े ढूँडता और मुझे अपना दुश्मन समझता है। 11वह मेरे पाँवों को काठ में डालकर मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है।’

12लेकिन आपकी यह बात दुरुस्त नहीं, क्योंकि अल्लाह इनसान से आला है। 13आप उससे झगड़कर क्यों कहते हैं, ‘वह मेरी किसी भी बात का जवाब नहीं देता’? 14शायद इनसान को अल्लाह नज़र न आए, लेकिन वह ज़रूर कभी इस तरीक़े, कभी उस तरीक़े से उससे हमकलाम होता है।

15कभी वह ख़ाब या रात की रोया में उससे बात करता है। जब लोग बिस्तर पर लेटकर गहरी नींद सो जाते हैं 16तो अल्लाह उनके कान खोलकर अपनी नसीहतों से उन्हें दहशतज़दा कर देता है। 17यों वह इनसान को ग़लत काम करने और मग़रूर होने से बाज़ रखकर 18उस की जान गढ़े में उतरने और दरियाए-मौत को उबूर करने से रोक देता है।

19कभी अल्लाह इनसान की बिस्तर पर दर्द के ज़रीए तरबियत करता है। तब उस की हड्डियों में लगातार जंग होती है। 20उस की जान को ख़ुराक से घिन आती बल्कि उसे लज़ीज़तरीन खाने से भी नफ़रत होती है। 21उसका गोश्त-पोस्त सुकड़कर ग़ायब हो जाता है जबकि जो हड्डियाँ पहले छुपी हुई थीं वह नुमायाँ तौर पर नज़र आती हैं। 22उस की जान गढ़े के क़रीब, उस की ज़िंदगी हलाक करनेवालों के नज़दीक पहुँचती है।

23लेकिन अगर कोई फ़रिश्ता, हज़ारों में से कोई सालिस उसके पास हो जो इनसान को सीधी राह दिखाए 24और उस पर तरस खाकर कहे, ‘उसे गढ़े में उतरने से छुड़ा, मुझे फ़िद्या मिल गया है, 25अब उसका जिस्म जवानी की निसबत ज़्यादा तरो-ताज़ा हो जाए और वह दुबारा जवानी की-सी ताक़त पाए’ 26तो फिर वह शख़्स अल्लाह से इल्तिजा करेगा, और अल्लाह उस पर मेहरबान होगा। तब वह बड़ी ख़ुशी से अल्लाह का चेहरा तकता रहेगा। इसी तरह अल्लाह इनसान की रास्तबाज़ी बहाल करता है।

27ऐसा शख़्स लोगों के सामने गाएगा और कहेगा, ‘मैंने गुनाह करके सीधी राह टेढ़ी-मेढ़ी कर दी, और मुझे कोई फ़ायदा न हुआ। 28लेकिन उसने फ़िद्या देकर मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से छुड़ाया। अब मेरी ज़िंदगी नूर से लुत्फ़अंदोज़ होगी।’

29अल्लाह इनसान के साथ यह सब कुछ दो-चार मरतबा करता है 30ताकि उस की जान गढ़े से वापस आए और वह ज़िंदगी के नूर से रौशन हो जाए।

31ऐ अय्यूब, ध्यान से मेरी बात सुनें, ख़ामोश हो जाएँ ताकि मैं बात करूँ। 32अगर आप जवाब में कुछ बताना चाहें तो बताएँ। बोलें, क्योंकि मैं आपको रास्तबाज़ ठहराने की आरज़ू रखता हूँ। 33लेकिन अगर आप कुछ बयान नहीं कर सकते

तो मेरी सुनें, चुप रहें ताकि मैं आपको हिकमत
की तालीम दूँ।”

अल्लाह हर एक को मुनासिब अज्र देता है

34 फिर इलीहू ने बात जारी रखकर कहा,
2ऐ दानिशमंदो, मेरे अलफ़ाज़ सुनें! ऐ
आलिमो, मुझ पर कान धरें! 3क्योंकि कान यों
अलफ़ाज़ की जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह
ज़बान ख़ुराक को चख लेती है। 4आएँ, हम अपने
लिए वह कुछ चुन लें जो दुरुस्त है, आपस में
जान लें कि क्या कुछ अच्छा है। 5अय्यूब ने कहा
है, ‘गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी अल्लाह ने मुझे मेरे
हुक़ूक़ से महरूम कर रखा है। 6जो फ़ैसला मेरे
बारे में किया गया है उसे मैं झूट क़रार देता हूँ। गो
मैं बेक़ुसूर हूँ तो भी तीर ने मुझे यों ज़ख़मी कर
दिया कि उसका इलाज मुमकिन ही नहीं।’ 7अब
मुझे बताएँ, क्या कोई अय्यूब जैसा बुरा है? वह
तो कुफ़र की बातें पानी की तरह पीते, 8बदकारों
की सोहबत में चलते और बेदीनों के साथ अपना
वक़्त गुज़ारते हैं। 9क्योंकि वह दावा करते हैं कि
अल्लाह से लुत्फ़अंदोज़ होना इनसान के लिए
बेफ़ायदा है।

10चुनाँचे ऐ समझदार मर्दो, मेरी बात सुनें!
यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह शरीर काम
करे? यह तो मुमकिन ही नहीं कि क़ादिरे-
मुतलक़ नाइनसाफ़ी करे। 11यक़ीनन वह इनसान
को उसके आमाल का मुनासिब अज्र देकर उस
पर वह कुछ लाता है जिसका तक़ाज़ा उसका
चाल-चलन करता है। 12यक़ीनन अल्लाह बेदीन
हरकतें नहीं करता, क़ादिरे-मुतलक़ इनसाफ़ का
ख़ून नहीं करता। 13किसने ज़मीन को अल्लाह
के हवाले किया? किसने उसे पूरी दुनिया पर
इख़्तियार दिया? कोई नहीं! 14अगर वह कभी
इरादा करे कि अपनी रूह और अपना दम इनसान
से वापस ले 15तो तमाम लोग दम छोड़कर दुबारा
ख़ाक हो जाएंगे।

16ऐ अय्यूब, अगर आपको समझ है तो सुनें,
मेरी बातों पर ध्यान दें। 17जो इनसाफ़ से नफ़रत
करे क्या वह हुकूमत कर सकता है? क्या आप
उसे मुजरिम ठहराना चाहते हैं जो रास्तबाज़ और
क़ादिरे-मुतलक़ है, 18जो बादशाह से कह सकता
है, ‘ऐ बदमाश!’ और शुरफ़ा से, ‘ऐ बेदीनो!’?
19वह तो न रईसों की जानिबदारी करता, न
ओहदेदारों को पस्तहालों पर तरजीह देता है,
क्योंकि सब ही को उसके हाथों ने बनाया है।
20वह पल-भर में, आधी रात ही मर जाते हैं।
शुरफ़ा को हिलाया जाता है तो वह कूच कर जाते
हैं, ताक़तवरों को बग़ैर किसी तगो-दौ के हटाया
जाता है।

21क्योंकि अल्लाह की आँखें इनसान की राहों
पर लगी रहती हैं, आदमज़ाद का हर क़दम उसे
नज़र आता है। 22कहीं इतनी तारीकी या घना
अंधेरा नहीं होता कि बदकार उसमें छुप सके।
23और अल्लाह किसी भी इनसान को उस वक़्त
से आगाह नहीं करता जब उसे इलाही तख़्ते-
अदालत के सामने आना है। 24उसे तहक़ीक़ात
की ज़रूरत ही नहीं बल्कि वह ज़ोरावरों को पाश
पाश करके दूसरों को उनकी जगह खड़ा कर देता
है। 25वह तो उनकी हरकतों से वाक़िफ़ है और
उन्हें रात के वक़्त यों तहो-बाला कर सकता है कि
चूर चूर हो जाएँ। 26उनकी बेदीनी के जवाब में वह
उन्हें सबकी नज़रों के सामने पटख़ देता है। 27उस
की पैरवी से हटने और उस की राहों का लिहाज़
न करने का यही नतीजा है। 28क्योंकि उनकी
हरकतों के बाइस पस्तहालों की चीख़ें अल्लाह
के सामने और मुसीबतज़दों की इल्तिजाएँ उसके
कान तक पहुँचीं। 29लेकिन अगर वह ख़ामोश
भी रहे तो कौन उसे मुजरिम क़रार दे सकता है?
अगर वह अपने चेहरे को छुपाए रखे तो कौन उसे
देख सकता है? वह तो क़ौम पर बल्कि हर फ़रद
पर हुकूमत करता है 30ताकि शरीर हुकूमत न करें
और क़ौम फँस न जाए।

31बेहतर है कि आप अल्लाह से कहें, ‘मुझे
ग़लत राह पर लाया गया है, आइंदा मैं दुबारा
बुरा काम नहीं करूँगा। 32जो कुछ मुझे नज़र नहीं
आता वह मुझे सिखा, अगर मुझसे नाइनसाफ़ी

हुई है तो आइंदा ऐसा नहीं करूँगा।’ 33क्या
अल्लाह को आपको वह अज्र देना चाहिए जो
आपकी नज़र में मुनासिब है, गो आपने उसे रद्द
कर दिया है? लाज़िम है कि आप ख़ुद ही फ़ैसला
करें, न कि मैं। लेकिन ज़रा वह कुछ पेश करें जो
कुछ आप सहीह समझते हैं। 34समझदार लोग
बल्कि हर दानिशमंद जो मेरी बात सुने फ़रमाएगा,
35‘अय्यूब इल्म के साथ बात नहीं कर रहा, उसके
अलफ़ाज़ फ़हम से ख़ाली हैं। 36काश अय्यूब की
पूरी जाँच-पड़ताल की जाए, क्योंकि वह शरीरों
के-से जवाब पेश करता, 37वह अपने गुनाह में
इज़ाफ़ा करके हमारे रूबरू अपने जुर्म पर शक
डालता और अल्लाह पर मुतअद्दिद इलज़ामात
लगाता है’।”

अपने आपको रास्तबाज़ मत ठहराना

35 फिर इलीहू ने अपनी बात जारी रखी,
2“आप कहते हैं, ‘मैं अल्लाह से ज़्यादा
रास्तबाज़ हूँ।’ क्या आप यह बात दुरुस्त समझते
हैं 3या यह कि ‘मुझे क्या फ़ायदा है, गुनाह न
करने से मुझे क्या नफ़ा होता है?’ 4मैं आपको
और साथी दोस्तों को इसका जवाब बताता हूँ।

5अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाएँ,
बुलंदियों के बादलों पर ग़ौर करें। 6अगर आपने
गुनाह किया तो अल्लाह को क्या नुक़सान पहुँचा
है? गो आपसे मुतअद्दिद जरायम भी सरज़द हुए
हों ताहम वह मुतअस्सिर नहीं होगा। 7रास्तबाज़
ज़िंदगी गुज़ारने से आप उसे क्या दे सकते हैं?
आपके हाथों से अल्लाह को क्या हासिल हो
सकता है? कुछ भी नहीं! 8आपके हमजिंस
इनसान ही आपकी बेदीनी से मुतअस्सिर होते हैं,
और आदमज़ाद ही आपकी रास्तबाज़ी से फ़ायदा
उठाते हैं।

9जब लोगों पर सख़्त ज़ुल्म होता है तो वह
चीख़ते-चिल्लाते और बड़ों की ज़्यादती के बाइस
मदद के लिए आवाज़ देते हैं। 10लेकिन कोई नहीं
कहता, ‘अल्लाह, मेरा ख़ालिक़ कहाँ है? वह
कहाँ है जो रात के दौरान नग़मे अता करता,
11जो हमें ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों की
निसबत ज़्यादा तालीम देता, हमें परिंदों से ज़्यादा
दानिशमंद बनाता है?’ 12उनकी चीख़ों के
बावुजूद अल्लाह जवाब नहीं देता, क्योंकि वह
घमंडी और बुरे हैं।

13यक़ीनन अल्लाह ऐसी बातिल फ़रियाद नहीं
सुनता, क़ादिरे-मुतलक़ उस पर ध्यान ही नहीं
देता। 14तो फिर वह आप पर क्यों तवज्जुह दे जब
आप दावा करते हैं, ‘मैं उसे नहीं देख सकता,’
और ‘मेरा मामला उसके सामने ही है, मैं अब
तक उसका इंतज़ार कर रहा हूँ’? 15वह आपकी
क्यों सुने जब आप कहते हैं, ‘अल्लाह का ग़ज़ब
कभी सज़ा नहीं देता, उसे बुराई की परवा ही
नहीं’? 16जब अय्यूब मुँह खोलता है तो बेमानी
बातें निकलती हैं। जो मुतअद्दिद अलफ़ाज़ वह पेश
करता है वह इल्म से ख़ाली हैं।”

अल्लाह कितना अज़ीम है

36 इलीहू ने अपनी बात जारी रखी,
2“थोड़ी देर के लिए सब्र करके मुझे
इसकी तशरीह करने दें, क्योंकि मज़ीद बहुत कुछ
है जो अल्लाह के हक़ में कहना है। 3मैं दूर दूर तक
फिरूँगा ताकि वह इल्म हासिल करूँ जिससे मेरे
ख़ालिक़ की रास्ती साबित हो जाए। 4यक़ीनन जो
कुछ मैं कहूँगा वह फ़रेबदेह नहीं होगा। एक ऐसा
आदमी आपके सामने खड़ा है जिसने ख़ुलूसदिली
से अपना इल्म हासिल किया है।

5गो अल्लाह अज़ीम क़ुदरत का मालिक है
ताहम वह ख़ुलूसदिलों को रद्द नहीं करता। 6वह
बेदीन को ज़्यादा देर तक जीने नहीं देता, लेकिन
मुसीबतज़दों का इनसाफ़ करता है। 7वह अपनी
आँखों को रास्तबाज़ों से नहीं फेरता बल्कि उन्हें
बादशाहों के साथ तख़्तनशीन करके बुलंदियों पर
सरफ़राज़ करता है।

8फिर अगर उन्हें ज़ंजीरों में जकड़ा जाए, उन्हें
मुसीबत के रस्सों में गिरिफ़्तार किया जाए 9तो
वह उन पर ज़ाहिर करता है कि उनसे क्या कुछ
सरज़द हुआ है, वह उन्हें उनके जरायम पेश करके

उन्हें दिखाता है कि उनका तकब्बुर का रवैया है।
10वह उनके कानों को तरबियत के लिए खोलकर
उन्हें हुक्म देता है कि अपनी नाइनसाफ़ी से बाज़
आकर वापस आओ। 11अगर वह मानकर उस
की ख़िदमत करने लगें तो फिर वह जीते-जी
अपने दिन ख़ुशहाली में और अपने साल सुकून से
गुज़ारेंगे। 12लेकिन अगर न मानें तो उन्हें दरियाए-
मौत को उबूर करना पड़ेगा, वह इल्म से महरूम
रहकर मर जाएंगे।

13बेदीन अपनी हरकतों से अपने आप पर
इलाही ग़ज़ब लाते हैं। अल्लाह उन्हें बाँध भी
ले, लेकिन वह मदद के लिए नहीं पुकारते।
14जवानी में ही उनकी जान निकल जाती, उनकी
ज़िंदगी मुक़द्दस फ़रिश्तों के हाथों ख़त्म हो जाती
है। 15लेकिन अल्लाह मुसीबतज़दा को उस की
मुसीबत के ज़रीए नजात देता, उस पर होनेवाले
ज़ुल्म की मारिफ़त उसका कान खोल देता है।

16वह आपको भी मुसीबत के मुँह से निकलने
की तरग़ीब दिलाकर एक ऐसी खुली जगह पर
लाना चाहता है जहाँ रुकावट नहीं है, जहाँ आपकी
मेज़ उम्दा खानों से भरी रहेगी। 17लेकिन इस
वक़्त आप अदालत का वह प्याला पीकर सेर
हो गए हैं जो बेदीनों के नसीब में है, इस वक़्त
अदालत और इनसाफ़ ने आपको अपनी सख़्त
गिरिफ़्त में ले लिया है। 18ख़बरदार कि यह बात
आपको कुफ़र बकने पर न उकसाए, ऐसा न हो
कि तावान की बड़ी रक़म आपको ग़लत राह पर
ले जाए। 19क्या आपकी दौलत आपका दिफ़ा
करके आपको मुसीबत से बचाएगी? या क्या
आपकी सिर-तोड़ कोशिशें यह सरंजाम दे सकती
हैं? हरगिज़ नहीं! 20रात की आरज़ू न करें,
उस वक़्त की जब क़ौमें जहाँ भी हों नेस्तो-नाबूद
हो जाती हैं। 21ख़बरदार रहें कि नाइनसाफ़ी की
तरफ़ रुजू न करें, क्योंकि आपको इसी लिए
मुसीबत से आज़माया जा रहा है।

22अल्लाह अपनी क़ुदरत में सरफ़राज़ है। कौन
उस जैसा उस्ताद है? 23किसने मुक़र्रर किया कि
उसे किस राह पर चलना है? कौन कह सकता है,
'तूने ग़लत काम किया'? कोई नहीं! 24उसके
काम की तमजीद करना न भूलें, उस सारे काम
की जिसकी लोगों ने अपने गीतों में हम्दो-सना की
है। 25हर शख़्स ने यह काम देख लिया, इनसान
ने दूर दूर से उसका मुलाहज़ा किया है।

26अल्लाह अज़ीम है और हम उसे नहीं जानते,
उसके सालों की तादाद मालूम नहीं कर सकते।
27क्योंकि वह पानी के क़तरे ऊपर खींचकर धुंध
से बारिश निकाल लेता है, 28वह बारिश जो
बादल ज़मीन पर बरसा देते और जिसकी बौछाड़ें
इनसान पर पड़ती हैं। 29कौन समझ सकता है
कि बादल किस तरह छा जाते, कि अल्लाह के
मसकन से बिजलियाँ किस तरह कड़कती हैं?
30वह अपने इर्दगिर्द रौशनी फैलाकर समुंदर की
जड़ों तक सब कुछ रौशन करता है। 31यों वह
बादलों से क़ौमों की परवरिश करता, उन्हें कसरत
की ख़ुराक मुहैया करता है। 32वह अपनी मुट्ठियों
को बादल की बिजलियों से भरकर हुक्म देता है
कि क्या चीज़ अपना निशाना बनाएँ। 33उसके
बादलों की गरजती आवाज़ उसके ग़ज़ब का
एलान करती, नाइनसाफ़ी पर उसके शदीद क़हर
को ज़ाहिर करती है।

37 यह सोचकर मेरा दिल लरज़कर
अपनी जगह से उछल पड़ता है। 2सुनें
और उस की ग़ज़बनाक आवाज़ पर ग़ौर करें, उस
ग़ुर्राती आवाज़ पर जो उसके मुँह से निकलती
है। 3आसमान तले हर मक़ाम पर बल्कि ज़मीन
की इंतहा तक वह अपनी बिजली चमकने देता
है। 4इसके बाद कड़कती आवाज़ सुनाई देती,
अल्लाह की रोबदार आवाज़ गरज उठती है।
और जब उस की आवाज़ सुनाई देती है तो वह
बिजलियों को नहीं रोकता।

5अल्लाह अनोखे तरीक़े से अपनी आवाज़
गरजने देता है। साथ साथ वह ऐसे अज़ीम काम
करता है जो हमारी समझ से बाहर हैं। 6क्योंकि
वह बर्फ़ को फ़रमाता है, 'ज़मीन पर पड़ जा' और
मूसलाधार बारिश को, 'अपना पूरा ज़ोर दिखा।'
7यों वह हर इनसान को उसके घर में रहने पर

मजबूर करता है ताकि सब जान लें कि अल्लाह
काम में मसरूफ़ है। 8तब जंगली जानवर भी
अपने भटों में छुप जाते, अपने घरों में पनाह लेते
हैं।

9तूफ़ान अपने कमरे से निकल आता, शिमाली
हवा मुल्क में ठंड फैला देती है। 10अल्लाह फूँक
मारता तो पानी जम जाता, उस की सतह दूर
दूर तक मुंजमिद हो जाती है। 11अल्लाह बादलों
को नमी से बोझल करके उनके ज़रीए दूर तक
अपनी बिजली चमकाता है। 12उस की हिदायत
पर वह मँडलाते हुए उसका हर हुक्म तकमील
तक पहुँचाते हैं। 13यों वह उन्हें लोगों की तरबियत
करने, अपनी ज़मीन को बरकत देने या अपनी
शफ़क़त दिखाने के लिए भेज देता है।

14ऐ अय्यूब, मेरी इस बात पर ध्यान दें,
रुककर अल्लाह के अज़ीम कामों पर ग़ौर करें।
15क्या आपको मालूम है कि अल्लाह अपने
कामों को कैसे तरतीब देता है, कि वह अपने
बादलों से बिजली किस तरह चमकने देता है?
16क्या आप बादलों की नक़्लो-हरकत जानते
हैं? क्या आपको उसके अनोखे कामों की समझ
आती है जो कामिल इल्म रखता है? 17जब
ज़मीन जुनूबी लू की ज़द में आकर चुप हो जाती
और आपके कपड़े तपने लगते हैं 18तो क्या आप
अल्लाह के साथ मिलकर आसमान को ठोंक
ठोंककर पीतल के आईने की मानिंद सख़्त बना
सकते हैं? हरगिज़ नहीं!

19हमें बताएँ कि अल्लाह से क्या कहें!
अफ़सोस, अंधेरे के बाइस हम अपने ख़यालात
को तरतीब नहीं दे सकते। 20अगर मैं अपनी बात
पेश करूँ तो क्या उसे कुछ मालूम हो जाएगा
जिसका पहले इल्म न था? क्या कोई भी कुछ
बयान कर सकता है जो उसे पहले मालूम न
हो? कभी नहीं! 21एक वक़्त धूप नज़र नहीं
आती और बादल ज़मीन पर साया डालते हैं, फिर
हवा चलने लगती और मौसम साफ़ हो जाता है।
22शिमाल से सुनहरी चमक क़रीब आती और
अल्लाह रोबदार शानो-शौकत से घिरा हुआ आ
पहुँचता है। 23हम तो क़ादिरे-मुतलक़ तक नहीं
पहुँच सकते। उस की क़ुदरत आला और रास्ती
ज़ोरावर है, वह कभी इनसाफ़ का ख़ून नहीं
करता। 24इसलिए आदमज़ाद उससे डरते और
दिल के दानिशमंद उसका ख़ौफ़ मानते हैं।”

अल्लाह का जवाब

38 फिर अल्लाह ख़ुद अय्यूब से
हमकलाम हुआ। तूफ़ान में से उसने
उसे जवाब दिया,

2“यह कौन है जो समझ से ख़ाली बातें करने
से मेरे मनसूबे के सहीह मतलब पर परदा डालता
है? 3मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझसे
सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम दे।

4तू कहाँ था जब मैंने ज़मीन की बुनियाद रखी?
अगर तुझे इसका इल्म हो तो मुझे बता! 5किसने
उस की लंबाई और चौड़ाई मुक़र्रर की? क्या तुझे
मालूम है? किसने नापकर उस की पैमाइश की?
6उसके सतून किस चीज़ पर लगाए गए? किसने
उसके कोने का बुनियादी पत्थर रखा, 7उस वक़्त
जब सुबह के सितारे मिलकर शादियाना बजा रहे,
तमाम फ़रिश्ते ख़ुशी के नारे लगा रहे थे?

8जब समुंदर रहम से फूट निकला तो किसने
दरवाज़े बंद करके उस पर क़ाबू पाया? 9उस
वक़्त मैंने बादलों को उसका लिबास बनाया और
उसे घने अंधेरे में यों लपेटा जिस तरह नौज़ाद को
पोतड़ों में लपेटा जाता है। 10उस की हुदूद मुक़र्रर
करके मैंने उसे रोकने के दरवाज़े और कुंडे लगाए।
11मैं बोला, ‘तुझे यहाँ तक आना है, इससे आगे
न बढ़ना, तेरी रोबदार लहरों को यहीं रुकना है।’

12क्या तूने कभी सुबह को हुक्म दिया या उसे
तुलू होने की जगह दिखाई 13ताकि वह ज़मीन के
किनारों को पकड़कर बेदीनों को उससे झाड़ दे?
14उस की रौशनी में ज़मीन यों तश्कील पाती है
जिस तरह मिट्टी जिस पर मुहर लगाई जाए। सब
कुछ रंगदार लिबास पहने नज़र आता है। 15तब
बेदीनों की रौशनी रोकी जाती, उनका उठाया हुआ
बाज़ू तोड़ा जाता है।

16क्या तू समुंदर के सरचश्मों तक पहुँच-
कर उस की गहराइयों में से गुज़रा है? 17क्या
मौत के दरवाज़े तुझ पर ज़ाहिर हुए, तुझे घने अंधेरे
के दरवाज़े नज़र आए हैं? 18क्या तुझे ज़मीन के
वसी मैदानों की पूरी समझ आई है? मुझे बता
अगर यह सब कुछ जानता है!

19रौशनी के मंबा तक ले जानेवाला रास्ता कहाँ
है? अंधेरे की रिहाइशगाह कहाँ है? 20क्या तू
उन्हें उनके मक़ामों तक पहुँचा सकता है? क्या
तू उनके घरों तक ले जानेवाली राहों से वाक़िफ़
है? 21बेशक तू इसका इल्म रखता है, क्योंकि तू
उस वक़्त जन्म ले चुका था जब यह पैदा हुए। तू
तो क़दीम ज़माने से ही ज़िंदा है!

22क्या तू वहाँ तक पहुँच गया है जहाँ बर्फ़ के
ज़ख़ीरे जमा होते हैं? क्या तूने ओलों के गोदामों
को देख लिया है? 23मैं उन्हें मुसीबत के वक़्त
के लिए महफ़ूज़ रखता हूँ, ऐसे दिनों के लिए
जब लड़ाई और जंग छिड़ जाए। 24मुझे बता,
उस जगह तक किस तरह पहुँचना है जहाँ रौशनी
तक़सीम होती है, या उस जगह जहाँ से मशरिक़ी
हवा निकलकर ज़मीन पर बिखर जाती है?

25किसने मूसलाधार बारिश के लिए रास्ता
और गरजते तूफ़ान के लिए राह बनाई 26ताकि
इनसान से ख़ाली ज़मीन और ग़ैरआबाद रेगिस्तान
की आबपाशी हो जाए, 27ताकि वीरानो-सुनसान
बयाबान की प्यास बुझ जाए और उससे हरियाली
फूट निकले? 28क्या बारिश का बाप है? कौन
शबनम के क़तरों का वालिद है?

29बर्फ़ किस माँ के पेट से पैदा हुई? जो पाला
आसमान से आकर ज़मीन पर पड़ता है किसने
उसे जन्म दिया? 30जब पानी पत्थर की तरह
सख़्त हो जाए बल्कि गहरे समुंदर की सतह भी
जम जाए तो कौन यह सरंजाम देता है? 31क्या
तू ख़ोशाए-परवीन को बाँध सकता या जौज़े की
ज़ंजीरों को खोल सकता है? 32क्या तू करवा
सकता है कि सितारों के मुख़्तलिफ़ झुरमुट उनके
मुक़र्ररा औक़ात के मुताबिक़ निकल आएँ? क्या
तू दुब्बे-अकबर की उसके बच्चों समेत क़ियादत
करने के क़ाबिल है? 33क्या तू आसमान के
क़वानीन जानता या उस की ज़मीन पर हुकूमत
मुतैयिन करता है?

34क्या जब तू बुलंद आवाज़ से बादलों को
हुक्म दे तो वह तुझ पर मूसलाधार बारिश बरसाते
हैं? 35क्या तू बादल की बिजली ज़मीन पर भेज
सकता है? क्या वह तेरे पास आकर कहती है, 'मैं
ख़िदमत के लिए हाज़िर हूँ'? 36किसने मिसर के
लक़लक़ को हिकमत दी, मुरग़ को समझ अता
की? 37किस को इतनी दानाई हासिल है कि
वह बादलों को गिन सके? कौन आसमान के इन
घड़ों को उस वक़्त उंडेल सकता है 38जब मिट्टी
ढाले हुए लोहे की तरह सख़्त हो जाए और ढेले
एक दूसरे के साथ चिपक जाएँ? कोई नहीं!

39क्या तू ही शेरनी के लिए शिकार करता या
शेरों को सेर करता है 40जब वह अपनी छुपने
की जगहों में दबक जाएँ या गुंजान जंगल में कहीं
ताक लगाए बैठे हों? 41कौन कौवे को ख़ुराक
मुहैया करता है जब उसके बच्चे भूक के बाइस
अल्लाह को आवाज़ दें और मारे मारे फिरें?

39 क्या तुझे मालूम है कि पहाड़ी
बकरियों के बच्चे कब पैदा होते हैं?
जब हिरनी अपना बच्चा जन्म देती है तो क्या तू
इसको मुलाहज़ा करता है? 2क्या तू वह महीने
गिनता रहता है जब बच्चे हिरनियों के पेट में हों?
क्या तू जानता है कि किस वक़्त बच्चे जन्म देती
हैं? 3उस दिन वह दबक जाती, बच्चे निकल
आते और दर्दे-ज़ह ख़त्म हो जाता है। 4उनके बच्चे
ताक़तवर होकर खुले मैदान में फलते-फूलते,
फिर एक दिन चले जाते हैं और अपनी माँ के
पास वापस नहीं आते।

5किसने जंगली गधे को खुला छोड़ दिया?
किसने उसके रस्से खोल दिए? 6मैं ही ने बयाबान
उसका घर बना दिया, मैं ही ने मुक़र्रर किया
कि बंजर ज़मीन उस की रिहाइशगाह हो। 7वह
शहर का शोर-शराबा देखकर हँस उठता, और उसे
हाँकनेवाले की आवाज़ सुननी नहीं पड़ती। 8वह

चरने के लिए पहाड़ी इलाक़े में इधर-उधर घूमता
और हरियाली का खोज लगाता रहता है।
9क्या जंगली बैल तेरी ख़िदमत करने के लिए
तैयार होगा? क्या वह कभी रात को तेरी चरनी
के पास गुज़ारेगा? 10क्या तू उसे बाँधकर हल
चला सकता है? क्या वह वादी में तेरे पीछे
चलकर सुहागा फेरेगा? 11क्या तू उस की बड़ी
ताक़त देखकर उस पर एतमाद करेगा? क्या तू
अपना सख़्त काम उसके सुपुर्द करेगा? 12क्या
तू भरोसा कर सकता है कि वह तेरा अनाज जमा
करके गाहने की जगह पर ले आए? हरगिज़ नहीं!
13शुतुरमुर्ग़ ख़ुशी से अपने परों को
फड़फड़ाता है। लेकिन क्या उसका शाहपर
लक़लक़ या बाज़ के शाहपर की मानिंद है?
14वह तो अपने अंडे ज़मीन पर अकेले छोड़ता है,
और वह मिट्टी ही पर पकते हैं। 15शुतुरमुर्ग़ को
ख़याल तक नहीं आता कि कोई उन्हें पाँवों तले
कुचल सकता या कोई जंगली जानवर उन्हें रौंद
सकता है। 16लगता नहीं कि उसके अपने बच्चे
हैं, क्योंकि उसका उनके साथ सुलूक इतना सख़्त
है। अगर उस की मेहनत नाकाम निकले तो उसे
परवा ही नहीं, 17क्योंकि अल्लाह ने उसे हिकमत
से महरूम रखकर उसे समझ से न नवाज़ा। 18तो
भी वह इतनी तेज़ी से उछलकर भाग जाता है कि
घोड़े और घुड़सवार की दौड़ देखकर हँसने लगता
है।

19क्या तू घोड़े को उस की ताक़त देकर उस
की गरदन को अयाल से आरास्ता करता है?
20क्या तू ही उसे टिड्डी की तरह फलाँगने देता
है? जब वह ज़ोर से अपने नथनों को फूलाकर
आवाज़ निकालता है तो कितना रोबदार लगता
है! 21वह वादी में सुम मार मारकर अपनी ताक़त
की ख़ुशी मनाता, फिर भागकर मैदाने-जंग में आ
जाता है। 22वह ख़ौफ़ का मज़ाक़ उड़ाता और
किसी से भी नहीं डरता, तलवार के रूबरू भी पीछे
नहीं हटता। 23उसके ऊपर तरकश खड़खड़ाता,
नेज़ा और शमशेर चमकती है। 24वह बड़ा शोर
मचाकर इतनी तेज़ी और जोशो-ख़ुरोश से दुश्मन
पर हमला करता है कि बिगुल बजते वक़्त भी
रोका नहीं जाता। 25जब भी बिगुल बजे वह ज़ोर
से हिनहिनाता और दूर ही से मैदाने-जंग, कमाँडरों
का शोर और जंग के नारे सूँघ लेता है।

26क्या बाज़ तेरी ही हिकमत के ज़रीए हवा
में उड़कर अपने परों को जुनूब की जानिब फैला
देता है? 27क्या उक़ाब तेरे ही हुक्म पर बुलंदियों
पर मँडलाता और ऊँची ऊँची जगहों पर अपना
घोंसला बना लेता है? 28वह चट्टान पर रहता,
उसके टूटे-फूटे किनारों और क़िलाबंद जगहों पर
बसेरा करता है। 29वहाँ से वह अपने शिकार का
खोज लगाता है, उस की आँखें दूर दूर तक देखती
हैं। 30उसके बच्चे ख़ून के लालच में रहते, और
जहाँ भी लाश हो वहाँ वह हाज़िर होता है।"

अय्यूब रब को जवाब नहीं दे सकता

40 रब ने अय्यूब से पूछा,
2"क्या मलामत करनेवाला
अदालत में क़ादिरे-मुतलक़ से झगड़ना
चाहता है? अल्लाह की सरज़निश करने-
वाला उसे जवाब दे!"
3तब अय्यूब ने जवाब देकर रब से कहा,
4"मैं तो नालायक़ हूँ, मैं किस तरह तुझे जवाब
दूँ? मैं अपने मुँह पर हाथ रखकर ख़ामोश रहूँगा।
5एक बार मैंने बात की और इसके बाद मज़ीद
एक दफ़ा, लेकिन अब से मैं जवाब में कुछ नहीं
कहूँगा।"

अल्लाह का जवाब : क्या तुझे मेरी जैसी क़ुदरत हासिल है?

6तब अल्लाह तूफ़ान में से अय्यूब से हमकलाम
हुआ,
7"मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझसे
सवाल करूँ और तू मुझे तालीम दे। 8क्या तू
वाक़ई मेरा इनसाफ़ मनसूख़ करके मुझे मुजरिम
ठहराना चाहता है ताकि ख़ुद रास्तबाज़ ठहरे?
9क्या तेरा बाज़ू अल्लाह के बाज़ू जैसा ज़ोरावर
है? क्या तेरी आवाज़ उस की आवाज़ की तरह

कड़कती है। 10आ, अपने आपको शानो-शौकत से आरास्ता कर, इज़्ज़तो-जलाल से मुलब्बस हो जा! 11बयकवक़्त अपना शदीद क़हर मुख़्तलिफ़ जगहों पर नाज़िल कर, हर मग़रूर को अपना निशाना बनाकर उसे ख़ाक में मिला दे। 12हर मुतकब्बिर पर ग़ौर करके उसे पस्त कर। जहाँ भी बेदीन हो वहीं उसे कुचल दे। 13उन सबको मिट्टी में छुपा दे, उन्हें रस्सों में जकड़कर किसी ख़ुफ़िया जगह गिरिफ़्तार कर। 14तब ही मैं तेरी तारीफ़ करके मान जाऊँगा कि तेरा दहना हाथ तुझे नजात दे सकता है।

अल्लाह की क़ुदरत और हिकमत की दो मिसालें

15बहेमोत[a] पर ग़ौर कर जिसे मैंने तुझे ख़लक़ करते वक़्त बनाया और जो बैल की तरह घास खाता है। 16उस की कमर में कितनी ताक़त, उसके पेट के पट्ठों में कितनी क़ुव्वत है। 17वह अपनी दुम को देवदार के दरख़्त की तरह लटकने देता है, उस की रानों की नसें मज़बूती से एक दूसरी से जुड़ी हुई हैं। 18उस की हड्डियाँ पीतल के-से पायप, लोहे के-से सरीए हैं। 19वह अल्लाह के कामों में से अव्वल है, उसके ख़ालिक़ ही ने उसे उस की तलवार दी। 20पहाड़ियाँ उसे अपनी पैदावार पेश करती, खुले मैदान के तमाम जानवर वहाँ खेलते कूदते हैं। 21वह काँटेदार झाड़ियों के नीचे आराम करता, सरकंडों और दलदल में छुपा रहता है। 22ख़ारदार झाड़ियाँ उस पर साया डालती और नदी के सफ़ेदा के दरख़्त उसे घेरे रखते हैं। 23जब दरिया सैलाब की सूरत इख़्तियार करे तो वह नहीं भागता। गो दरियाए-यरदन उसके मुँह पर फूट पड़े तो भी वह अपने आपको महफ़ूज़ समझता है। 24क्या कोई उस की आँखों में उँगलियाँ डालकर उसे पकड़ सकता है? अगर उसे फंदे में पकड़ा भी जाए तो क्या कोई उस की नाक को छेद सकता है? हरगिज़ नहीं!

41 क्या तू लिवियातान[b] अज़दहे को मछली के काँटे से पकड़ सकता या उस की ज़बान को रस्से से बाँध सकता है? 2क्या तू उस की नाक छेदकर उसमें से रस्सा गुज़ार सकता या उसके जबड़े को काँटे से चीर सकता है? 3क्या वह कभी तुझसे बार बार रहम माँगेगा या नरम नरम अलफ़ाज़ से तेरी ख़ुशामद करेगा? 4क्या वह कभी तेरे साथ अहद करेगा कि तू उसे अपना ग़ुलाम बनाए रखे? हरगिज़ नहीं! 5क्या तू परिंदे की तरह उसके साथ खेल सकता या उसे बाँधकर अपनी लड़कियों को दे सकता है ताकि वह उसके साथ खेलें? 6क्या सौदागर कभी उसका सौदा करेंगे या उसे ताजिरों में तक़सीम करेंगे? कभी नहीं! 7क्या तू उस की खाल को भालों से या उसके सर को हारपूनों से भर सकता है? 8एक दफ़ा उसे हाथ लगाया तो यह लड़ाई तुझे हमेशा याद रहेगी, और तू आइंदा ऐसी हरकत कभी नहीं करेगा!

9यक़ीनन उस पर क़ाबू पाने की हर उम्मीद फ़रेबदेह साबित होगी, क्योंकि उसे देखते ही इनसान गिर जाता है। 10कोई इतना बेधड़क नहीं है कि उसे मुश्तइल करे। तो फिर कौन मेरा सामना कर सकता है? 11किसने मुझे कुछ दिया है कि मैं उसका मुआवज़ा दूँ। आसमान तले हर चीज़ मेरी ही है!

12मैं तुझे उसके आज़ा के बयान से महरूम नहीं रखूँगा, कि वह कितना बड़ा, ताक़तवर और ख़ूबसूरत है। 13कौन उस की खाल[c] उतार सकता, कौन उसके ज़िरा-बकतर की दो तहों के अंदर तक पहुँच सकता है? 14कौन उसके मुँह का दरवाज़ा खोलने की जुर्रत करे? उसके हौलनाक दाँत देखकर इनसान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 15उस की पीठ पर एक दूसरी से ख़ूब जुड़ी हुई ढालों की क़तारें होती हैं। 16वह इतनी मज़बूती

[a]साइंसदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन-सा जानवर था।
[b]साइंसदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन-सा जानवर था।
[c]लफ़्ज़ी तरजुमा : बैरूनी लिबास।

से एक दूसरी से लगी होती हैं कि उनके दरमियान
से हवा भी नहीं गुज़र सकती, 17बल्कि यों एक
दूसरी से चिमटी और लिपटी रहती हैं कि उन्हें एक
दूसरी से अलग नहीं किया जा सकता।
18जब छींकें मारे तो बिजली चमक उठती है।
उस की आँखें तुलूए-सुबह की पलकों की मानिंद
हैं। 19उसके मुँह से मशालें और चिंगारियाँ ख़ारिज
होती हैं, 20उसके नथनों से धुआँ यों निकलता है
जिस तरह भड़कती और दहकती आग पर रखी
गई देग से। 21जब फूँक मारे तो कोयले दहक
उठते और उसके मुँह से शोले निकलते हैं।
22उस की गरदन में इतनी ताक़त है कि जहाँ
भी जाए वहाँ उसके आगे आगे मायूसी फैल
जाती है। 23उसके गोश्त-पोस्त की तहें एक दूसरी
से ख़ूब जुड़ी हुई हैं, वह ढाले हुए लोहे की
तरह मज़बूत और बे-लचक हैं। 24उसका दिल
पत्थर जैसा सख़्त, चक्की के निचले पाट जैसा
मुस्तहकम है।
25जब उठे तो ज़ोरावर डर जाते और दहशत
खाकर पीछे हट जाते हैं। 26हथियारों का उस पर
कोई असर नहीं होता, ख़ाह कोई तलवार, नेज़े,
बरछी या तीर से उस पर हमला क्यों न करे।
27वह लोहे को भूसा और पीतल को गली-सड़ी
लकड़ी समझता है। 28तीर उसे नहीं भगा सकते,
और अगर फ़लाख़न के पत्थर उस पर चलाओ
तो उनका असर भूसे के बराबर है। 29डंडा उसे
तिनका-सा लगता है, और वह शमशेर का शोर-
शराबा सुनकर हँस उठता है। 30उसके पेट पर
तेज़ ठीकरे से लगे हैं, और जिस तरह अनाज पर
गाहने का आला चलाया जाता है उसी तरह वह
कीचड़ पर चलता है। 31जब समुंदर की गहराइयों
में से गुज़रे तो पानी उबलती देग की तरह खौलने
लगता है। वह मरहम के मुख़्तलिफ़ अजज़ा को
मिला मिलाकर तैयार करनेवाले अत्तार की तरह
समुंदर को हरकत में लाता है। 32अपने पीछे वह
चमकता-दमकता रास्ता छोड़ता है। तब लगता
है कि समुंदर की गहराइयों के सफ़ेद बाल हैं।
33दुनिया में उस जैसा कोई मख़लूक़ नहीं, ऐसा
बनाया गया है कि कभी न डरे। 34जो भी आला
हो उस पर वह हिक़ारत की निगाह से देखता है,
वह तमाम रोबदार जानवरों का बादशाह है।”

अय्यूब की आख़िरी बात

42 तब अय्यूब ने जवाब में रब से कहा,
2“मैंने जान लिया है कि तू सब कुछ
कर पाता है, कि तेरा कोई भी मनसूबा रोका
नहीं जा सकता। 3तूने फ़रमाया, ‘यह कौन है
जो समझ से ख़ाली बातें करने से मेरे मनसूबे के
सहीह मतलब पर परदा डालता है?’ यक़ीनन
मैंने ऐसी बातें बयान कीं जो मेरी समझ से बाहर
हैं, ऐसी बातें जो इतनी अनोखी हैं कि मैं उनका
इल्म रख ही नहीं सकता। 4तूने फ़रमाया, ‘सुन
मेरी बात तो मैं बोलूँगा। मैं तुझसे सवाल करता
हूँ, और तू मुझे तालीम दे।’ 5पहले मैंने तेरे बारे
में सिर्फ़ सुना था, लेकिन अब मेरी अपनी आँखों
ने तुझे देखा है। 6इसलिए मैं अपनी बातें मुस्तरद
करता, अपने आप पर ख़ाक और राख डालकर
तौबा करता हूँ।”

अय्यूब अपने दोस्तों की शफ़ाअत करता है

7अय्यूब से यह तमाम बातें कहने के बाद रब
इलीफ़ज़ तेमानी से हमकलाम हुआ, “मैं तुझसे
और तेरे दो दोस्तों से ग़ुस्से हूँ, क्योंकि गो मेरे बंदे
अय्यूब ने मेरे बारे में दुरुस्त बातें कीं मगर तुमने
ऐसा नहीं किया। 8चुनाँचे अब सात जवान बैल
और सात मेंढे लेकर मेरे बंदे अय्यूब के पास जाओ
और अपनी ख़ातिर भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश
करो। लाज़िम है कि अय्यूब तुम्हारी शफ़ाअत
करे, वरना मैं तुम्हें तुम्हारी हमाक़त का पूरा अज्र
दूँगा। लेकिन उस की शफ़ाअत पर मैं तुम्हें मुआफ़
करूँगा, क्योंकि मेरे बंदे अय्यूब ने मेरे बारे में वह
कुछ बयान किया जो सहीह है जबकि तुमने ऐसा
नहीं किया।”
9इलीफ़ज़ तेमानी, बिलदद सूख़ी और ज़ूफ़र
नामाती ने वह कुछ किया जो रब ने उन्हें करने को
कहा था तो रब ने अय्यूब की सुनी।

10और जब अय्यूब ने दोस्तों की शफ़ाअत की
तो रब ने उसे इतनी बरकत दी कि आख़िरकार
उसे पहले की निसबत दुगनी दौलत हासिल
हुई। 11तब उसके तमाम भाई-बहनें और पुराने
जाननेवाले उसके पास आए और घर में उसके
साथ खाना खाकर उस आफ़त पर अफ़सोस
किया जो रब अय्यूब पर लाया था। हर एक ने
उसे तसल्ली देकर उसे एक सिक्का और सोने
का एक छल्ला दे दिया।

12अब से रब ने अय्यूब को पहले की निसबत
कहीं ज़्यादा बरकत दी। उसे 14,000 बकरियाँ,
6,000 ऊँट, बैलों की 1,000 जोड़ियाँ और
1,000 गधियाँ हासिल हुईं। 13नीज़, उसके
मज़ीद सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं।
14उसने बेटियों के यह नाम रखे : पहली का
नाम यमीमा, दूसरी का क़सियह और तीसरी
का क़रन-हप्पूक। 15तमाम मुल्क में अय्यूब की
बेटियों जैसी ख़ूबसूरत ख़वातीन पाई नहीं जाती
थीं। अय्यूब ने उन्हें भी मीरास में मिलकियत दी,
ऐसी मिलकियत जो उनके भाइयों के दरमियान
ही थी।

16अय्यूब मज़ीद 140 साल ज़िंदा रहा,
इसलिए वह अपनी औलाद को चौथी पुश्त तक
देख सका। 17फिर वह दराज़ ज़िंदगी से आसूदा
होकर इंतक़ाल कर गया।

ज़बूर

पहली किताब 1-41

दो राहें

1 मुबारक है वह जो न बेदीनों के मशवरे पर चलता, न गुनाहगारों की राह पर क़दम रखता, और न तानाज़नों के साथ बैठता है
2बल्कि रब की शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता और दिन-रात उसी पर ग़ौरो-ख़ौज़ करता रहता है।
3वह नहरों के किनारे पर लगे दरख़्त की मानिंद है। वक़्त पर वह फल लाता, और उसके पत्ते नहीं मुरझाते। जो कुछ भी करे उसमें वह कामयाब है।

4बेदीनों का यह हाल नहीं होता। वह भूसे की मानिंद हैं जिसे हवा उड़ा ले जाती है।
5इसलिए बेदीन अदालत में क़ायम नहीं रहेंगे, और गुनाहगार का रास्तबाज़ों की मजलिस में मक़ाम नहीं होगा।
6क्योंकि रब रास्तबाज़ों की राह की पहरादारी करता है जबकि बेदीनों की राह तबाह हो जाएगी।

अल्लाह का मसीह

2 अक़वाम क्यों तैश में आ गई हैं? उम्मतें क्यों बेकार साज़िशें कर रही हैं?
2दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए, हुक्मरान रब और उसके मसीह के ख़िलाफ़ जमा हो गए हैं।
3वह कहते हैं, "आओ, हम उनकी ज़ंजीरों को तोड़कर आज़ाद हो जाएँ, उनके रस्सों को दूर तक फेंक दें।"
4लेकिन जो आसमान पर तख़्तनशीन है वह हँसता है, रब उनका मज़ाक़ उड़ाता है।
5फिर वह ग़ुस्से से उन्हें डाँटता, अपना शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें डराता है।
6वह फ़रमाता है, "मैंने ख़ुद अपने बादशाह को अपने मुक़द्दस पहाड़ सिय्यून पर मुक़र्रर किया है!"

7आओ, मैं रब का फ़रमान सुनाऊँ। उसने मुझसे कहा, "तू मेरा बेटा है, आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।
8मुझसे माँग तो मैं तुझे मीरास में तमाम अक़वाम अता करूँगा, दुनिया की इंतहा तक सब कुछ बख़्श दूँगा।
9तू उन्हें लोहे के शाही असा से पाश पाश करेगा, उन्हें मिट्टी के बरतनों की तरह चकनाचूर करेगा।"
10चुनाँचे ऐ बादशाहो, समझ से काम लो! ऐ दुनिया के हुक्मरानो, तरबियत क़बूल करो!
11ख़ौफ़ करते हुए रब की ख़िदमत करो, लरज़ते हुए ख़ुशी मनाओ।
12बेटे को बोसा दो, ऐसा न हो कि वह ग़ुस्से हो जाए और तुम रास्ते में ही हलाक हो जाओ।

क्योंकि वह एकदम तैश में आ जाता है। मुबारक
हैं वह सब जो उसमें पनाह लेते हैं।

सुबह को मदद के लिए दुआ

3 दाऊद का ज़बूर। उस वक़्त जब उसे अपने बेटे
अबीसलूम से भागना पड़ा।

ऐ रब, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, कितने लोग
मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं!
2मेरे बारे में बहुतेरे कह रहे हैं, "अल्लाह इसे
छुटकारा नहीं देगा।" (सिलाह)[a]

3लेकिन तू ऐ रब, चारों तरफ़ मेरी हिफ़ा-
ज़त करनेवाली ढाल है। तू मेरी इज़्ज़त है जो मेरे
सर को उठाए रखता है।
4मैं बुलंद आवाज़ से रब को पुकारता हूँ,
और वह अपने मुक़द्दस पहाड़ से मेरी सुनता है।
(सिलाह)
5मैं आराम से लेटकर सो गया, फिर जाग उठा,
क्योंकि रब ख़ुद मुझे सँभाले रखता है।
6उन हज़ारों से मैं नहीं डरता जो मुझे घेरे रखते
हैं।
7ऐ रब, उठ! ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे रिहा कर!
क्योंकि तूने मेरे तमाम दुश्मनों के मुँह पर थप्पड़
मारा, तूने बेदीनों के दाँतों को तोड़ दिया है।
8रब के पास नजात है। तेरी बरकत तेरी क़ौम
पर आए। (सिलाह)

शाम को मदद के लिए दुआ

4 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ऐ मेरी रास्ती के ख़ुदा, मेरी सुन जब मैं तुझे
पुकारता हूँ। ऐ तू जो मुसीबत में मेरी मख़लसी
रहा है मुझ पर मेहरबानी करके मेरी इल्तिजा सुन!
2ऐ आदमज़ादो, मेरी इज़्ज़त कब तक ख़ाक
में मिलाई जाती रहेगी? तुम कब तक बातिल
चीज़ों से लिपटे रहोगे, कब तक झूट की तलाश
में रहोगे? (सिलाह)
3जान लो कि रब ने ईमानदार को अपने लिए
अलग कर रखा है। रब मेरी सुनेगा जब मैं उसे
पुकारूँगा।
4ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। अपने
बिस्तर पर लेटकर मामले पर सोच-बिचार करो,
लेकिन दिल में, ख़ामोशी से। (सिलाह)
5रास्ती की क़ुरबानियाँ पेश करो, और रब पर
भरोसा रखो।
6बहुतेरे शक कर रहे हैं, "कौन हमारे हालात
ठीक करेगा?" ऐ रब, अपने चेहरे का नूर हम पर
चमका!

7तूने मेरे दिल को ख़ुशी से भर दिया है, ऐसी
ख़ुशी से जो उनके पास भी नहीं होती जिनके पास
कसरत का अनाज और अंगूर है।
8मैं आराम से लेटकर सो जाता हूँ, क्योंकि तू
ही ऐ रब मुझे हिफ़ाज़त से बसने देता है।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

5 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। इसे
बाँसरी के साथ गाना है।

ऐ रब, मेरी बातें सुन, मेरी आहों पर ध्यान दे!
2ऐ मेरे बादशाह, मेरे ख़ुदा, मदद के लिए मेरी
चीख़ें सुन, क्योंकि मैं तुझी से दुआ करता हूँ।
3ऐ रब, सुबह को तू मेरी आवाज़ सुनता है,
सुबह को मैं तुझे सब कुछ तरतीब से पेश करके
जवाब का इंतज़ार करने लगता हूँ।

4क्योंकि तू ऐसा ख़ुदा नहीं है जो बेदीनी से ख़ुश
हो। जो बुरा है वह तेरे हुज़ूर नहीं ठहर सकता।

[a]सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इसके मतलब के बारे में इत्तफ़ाक़े-राय नहीं होती।

5मग़रूर तेरे हुज़ूर खड़े नहीं हो सकते, बदकार
से तू नफ़रत करता है।
6झूट बोलनेवालों को तू तबाह करता, ख़ूनख़ार
और धोकेबाज़ से रब घिन खाता है।

7लेकिन मुझ पर तूने बड़ी मेहरबानी की है,
इसलिए मैं तेरे घर में दाख़िल हो सकता, मैं तेरा
ख़ौफ़ मानकर तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह के सामने
सिजदा करता हूँ।
8ऐ रब, अपनी रास्त राह पर मेरी राहनुमाई कर
ताकि मेरे दुश्मन मुझ पर ग़ालिब न आएँ। अपनी
राह को मेरे आगे हमवार कर।

9क्योंकि उनके मुँह से एक भी क़ाबिले-एतमाद
बात नहीं निकलती। उनका दिल तबाही से भरा
रहता, उनका गला खुली क़ब्र है, और उनकी
ज़बान चिकनी-चुपड़ी बातें उगलती रहती है।
10ऐ रब, उन्हें उनके ग़लत काम का अज्र
दे। उनकी साज़िशें उनकी अपनी तबाही का
बाइस बनें। उन्हें उनके मुतअद्दिद गुनाहों के बाइस
निकालकर मुंतशिर कर दे, क्योंकि वह तुझसे
सरकश हो गए हैं।

11लेकिन जो तुझमें पनाह लेते हैं वह सब ख़ुश
हों, वह अबद तक शादियाना बजाएँ, क्योंकि
तू उन्हें महफ़ूज़ रखता है। तेरे नाम को प्यार
करनेवाले तेरा जशन मनाएँ।
12क्योंकि तू ऐ रब, रास्तबाज़ को बरकत देता
है, तू अपनी मेहरबानी की ढाल से उस की चारों
तरफ़ हिफ़ाज़त करता है।

मुसीबत में दुआ (तौबा का पहला ज़बूर)

6 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
तारदार साज़ों के साथ गाना है।
ऐ रब, ग़ुस्से में मुझे सज़ा न दे, तैश में मुझे
तंबीह न कर।
2ऐ रब, मुझ पर रहम कर, क्योंकि मैं निढाल
हूँ। ऐ रब, मुझे शफ़ा दे, क्योंकि मेरे आज़ा
दहशतज़दा हैं।
3मेरी जान निहायत ख़ौफ़ज़दा है। ऐ रब, तू
कब तक देर करेगा?
4ऐ रब, वापस आकर मेरी जान को बचा।
अपनी शफ़क़त की ख़ातिर मुझे छुटकारा दे।
5क्योंकि मुरदा तुझे याद नहीं करता। पाताल
में कौन तेरी सताइश करेगा?

6मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। पूरी रात रोने
से बिस्तर भीग गया है, मेरे आँसुओं से पलंग गल
गया है।
7ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरे
मुख़ालिफ़ों के हमलों से वह ज़ाया होती जा रही
हैं।
8ऐ बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि रब
ने मेरी आहो-बुका सुनी है।
9रब ने मेरी इल्तिजाओं को सुन लिया है, मेरी
दुआ रब को क़बूल है।
10मेरे तमाम दुश्मनों की रुसवाई हो जाएगी,
और वह सख़्त घबरा जाएंगे। वह मुड़कर अचानक
ही शरमिंदा हो जाएंगे।

इनसाफ़ के लिए दुआ

7 दाऊद का वह मातमी गीत जो उसने कूश
बिनयमीनी की बातों पर रब की तमजीद में गाया।
ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। मुझे
उन सबसे बचाकर छुटकारा दे जो मेरा ताक़्क़ुब
कर रहे हैं,
2वरना वह शेरबबर की तरह मुझे फाड़कर
टुकड़े टुकड़े कर देंगे, और बचानेवाला कोई नहीं
होगा।

3ऐ रब मेरे ख़ुदा, अगर मुझसे यह कुछ सरज़द
हुआ और मेरे हाथ क़ुसूरवार हों,

4अगर मैंने उससे बुरा सुलूक किया जिसका
मेरे साथ झगड़ा नहीं था या अपने दुश्मन को
ख़ाहमख़ाह लूट लिया हो
5तो फिर मेरा दुश्मन मेरे पीछे पड़कर मुझे
पकड़ ले। वह मेरी जान को मिट्टी में कुचल दे,
मेरी इज़्ज़त को ख़ाक में मिलाए। (सिलाह)

6ऐ रब, उठ और अपना ग़ज़ब दिखा! मेरे
दुश्मनों के तैश के ख़िलाफ़ खड़ा हो जा। मेरी मदद
करने के लिए जाग उठ! तूने ख़ुद अदालत का
हुक्म दिया है।
7अक़वाम तेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएँ जब तू
उनके ऊपर बुलंदियों पर तख़्तनशीन हो जाए।
8रब अक़वाम की अदालत करता है। ऐ रब,
मेरी रास्तबाज़ी और बेगुनाही का लिहाज़ करके
मेरा इनसाफ़ कर।
9ऐ रास्त ख़ुदा, जो दिल की गहराइयों को तह
तक जाँच लेता है, बेदीनों की शरारतें ख़त्म कर
और रास्तबाज़ को क़ायम रख।

10अल्लाह मेरी ढाल है। जो दिल से सीधी राह
पर चलते हैं उन्हें वह रिहाई देता है।
11अल्लाह आदिल मुंसिफ़ है, ऐसा ख़ुदा जो
रोज़ाना लोगों की सरज़निश करता है।

12यक़ीनन इस वक़्त भी दुश्मन अपनी तलवार
को तेज़ कर रहा, अपनी कमान को तानकर
निशाना बाँध रहा है।
13लेकिन जो मोहलक हथियार और जलते हुए
तीर उसने तैयार कर रखे हैं उनकी ज़द में वह ख़ुद
ही आ जाएगा।
14देख, बुराई का बीज उसमें उग आया है। अब
वह शरारत से हामिला होकर फिरता और झूट के
बच्चे जन्म देता है।
15लेकिन जो गढ़ा उसने दूसरों को फँसाने के
लिए खोद खोदकर तैयार किया उसमें ख़ुद गिर
पड़ा है।
16वह ख़ुद अपनी शरारत की ज़द में आएगा,
उसका ज़ुल्म उसके अपने सर पर नाज़िल होगा।

17मैं रब की सताइश करूँगा, क्योंकि वह रास्त
है। मैं रब तआला के नाम की तारीफ़ में गीत
गाऊँगा।

मख़लूक़ात का ताज

8 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
तर्ज़ : गित्तीत।
ऐ रब हमारे आक़ा, तेरा नाम पूरी दुनिया में
कितना शानदार है! तूने आसमान पर ही अपना
जलाल ज़ाहिर कर दिया है।
2अपने मुख़ालिफ़ों के जवाब में तूने छोटे बच्चों
और शीरख़ारों की ज़बान को तैयार किया है ताकि
वह तेरी क़ुव्वत से दुश्मन और कीनापरवर को
ख़त्म करें।

3जब मैं तेरे आसमान का मुलाहज़ा करता हूँ
जो तेरी उँगलियों का काम है, चाँद और सितारों
पर ग़ौर करता हूँ जिनको तूने अपनी अपनी जगह
पर क़ायम किया
4तो इनसान कौन है कि तू उसे याद करे या
आदमज़ाद कि तू उसका ख़याल रखे?
5तूने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम बनाया,[a] तूने
उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहनाया।
6तूने उसे अपने हाथों के कामों पर मुक़र्रर
किया, सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया,
7ख़ाह भेड़-बकरियाँ हों ख़ाह गाय-बैल, जंगली
जानवर,
8परिंदे, मछलियाँ या समुंदरी राहों पर
चलनेवाले बाक़ी तमाम जानवर।

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : तूने उसे थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम कर दिया (देखिए इबरानियों 2:7,9)।

9ऐ रब हमारे आक़ा, पूरी दुनिया में तेरा नाम
कितना शानदार है!

अल्लाह की क़ुदरत और इनसाफ़

9 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : अलामूत-लब्बीन।

ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, तेरे
तमाम मोजिज़ात का बयान करूँगा।
2मैं शादमान होकर तेरी ख़ुशी मनाऊँगा। ऐ
अल्लाह तआला, मैं तेरे नाम की तमजीद में गीत
गाऊँगा।
3जब मेरे दुश्मन पीछे हट जाएंगे तो वह ठोकर
खाकर तेरे हुज़ूर तबाह हो जाएंगे।
4क्योंकि तूने मेरा इनसाफ़ किया है, तू तख़्त
पर बैठकर रास्त मुंसिफ़ साबित हुआ है।
5तूने अक़वाम को मलामत करके बेदीनों को
हलाक कर दिया, उनका नामो-निशान हमेशा के
लिए मिटा दिया है।
6दुश्मन तबाह हो गया, अबद तक मलबे का ढेर
बन गया है। तूने शहरों को जड़ से उखाड़ दिया है,
और उनकी याद तक बाक़ी नहीं रहेगी।

7लेकिन रब हमेशा तक तख़्तनशीन रहेगा, और
उसने अपने तख़्त को अदालत करने के लिए खड़ा
किया है।
8वह रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा,
इनसाफ़ से उम्मतों का फ़ैसला करेगा।
9रब मज़लूमों की पनाहगाह है, एक क़िला
जिसमें वह मुसीबत के वक़्त महफ़ूज़ रहते हैं।

10ऐ रब, जो तेरा नाम जानते वह तुझ पर
भरोसा रखते हैं। क्योंकि जो तेरे तालिब हैं उन्हें
तूने कभी तर्क नहीं किया।
11रब की तमजीद में गीत गाओ जो सिय्यून
पहाड़ पर तख़्तनशीन है, उम्मतों में वह कुछ
सुनाओ जो उसने किया है।
12क्योंकि जो मक़तूलों का इंतक़ाम लेता है
वह मुसीबतज़दों की चीख़ें नज़रंदाज़ नहीं करता।
13ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मेरी उस तकलीफ़
पर ग़ौर कर जो नफ़रत करनेवाले मुझे पहुँचा रहे
हैं। मुझे मौत के दरवाज़ों में से निकालकर उठा ले
14ताकि मैं सिय्यून बेटी के दरवाज़ों में तेरी
सताइश करके वह कुछ सुनाऊँ जो तूने मेरे लिए
किया है, ताकि मैं तेरी नजात की ख़ुशी मनाऊँ।

15अक़वाम उस गढ़े में ख़ुद गिर गई हैं जो
उन्होंने दूसरों को पकड़ने के लिए खोदा था। उनके
अपने पाँव उस जाल में फँस गए हैं जो उन्होंने
दूसरों को फँसाने के लिए बिछा दिया था।
16रब ने इनसाफ़ करके अपना इज़हार किया
तो बेदीन अपने हाथ के फंदे में उलझ गया।
(हिग्गायून का तर्ज़। सिलाह)
17बेदीन पाताल में उतरेंगे, जो उम्मतें अल्लाह
को भूल गई हैं वह सब वहाँ जाएँगी।
18क्योंकि वह ज़रूरतमंदों को हमेशा तक नहीं
भूलेगा, मुसीबतज़दों की उम्मीद अबद तक जाती
नहीं रहेगी।

19ऐ रब, उठ खड़ा हो ताकि इनसान ग़ालिब न
आए। बख़्श दे कि तेरे हुज़ूर अक़वाम की अदालत
की जाए।
20ऐ रब, उन्हें दहशतज़दा कर ताकि अक़वाम
जान लें कि इनसान ही हैं। (सिलाह)

इनसाफ़ के लिए दुआ

10 ऐ रब, तू इतना दूर क्यों खड़ा है?
मुसीबत के वक़्त तू अपने आपको
पोशीदा क्यों रखता है?

2बेदीन तकब्बुर से मुसीबतज़दों के पीछे लग
गए हैं, और अब बेचारे उनके जालों में उलझने
लगे हैं।
3क्योंकि बेदीन अपनी दिली आरज़ुओं पर
शेख़ी मारता है, और नाजायज़ नफ़ा कमानेवाला
लानत करके रब को हक़ीर जानता है।

4बेदीन ग़ुरूर से फूलकर कहता है, "अल्लाह मुझसे जवाबतलबी नहीं करेगा।" उसके तमाम ख़यालात इस बात पर मबनी हैं कि कोई ख़ुदा नहीं है।

5जो कुछ भी करे उसमें वह कामयाब है। तेरी अदालतें उसे बुलंदियों में कहीं दूर लगती हैं जबकि वह अपने तमाम मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़ फुँकारता है।

6दिल में वह सोचता है, "मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा, नसल-दर-नसल मुसीबत के पंजों से बचा रहूँगा।"

7उसका मुँह लानतों, फ़रेब और ज़ुल्म से भरा रहता, उस की ज़बान नुक़सान और आफ़त पहुँचाने के लिए तैयार रहती है।

8वह आबादियों के क़रीब ताक में बैठकर चुपके से बेगुनाहों को मार डालता है, उस की आँखें बदक़िस्मतों की घात में रहती हैं।

9जंगल में बैठे शेरबबर की तरह ताक में रहकर वह मुसीबतज़दा पर हमला करने का मौक़ा ढूँडता है। जब उसे पकड़ ले तो उसे अपने जाल में घसीटकर ले जाता है।

10उसके शिकार पाश पाश होकर झुक जाते हैं, बेचारे उस की ज़बरदस्त ताक़त की ज़द में आकर गिर जाते हैं।

11तब वह दिल में कहता है, "अल्लाह भूल गया है, उसने अपना चेहरा छुपा लिया है, उसे यह कभी नज़र नहीं आएगा।"

12ऐ रब, उठ! ऐ अल्लाह, अपना हाथ उठाकर नाचारों की मदद कर और उन्हें न भूल।

13बेदीन अल्लाह की तहक़ीर क्यों करे, वह दिल में क्यों कहे, "अल्लाह मुझसे जवाब तलब नहीं करेगा"?

14ऐ अल्लाह, हक़ीक़त में तू यह सब कुछ देखता है। तू हमारी तकलीफ़ और परेशानी पर ध्यान देकर मुनासिब जवाब देगा। नाचार अपना मामला तुझ पर छोड़ देता है, क्योंकि तू यतीमों का मददगार है।

15शरीर और बेदीन आदमी का बाज़ू तोड़ दे! उससे उस की शरारतों की जवाबतलबी कर ताकि उसका पूरा असर मिट जाए।

16रब अबद तक बादशाह है। उसके मुल्क से दीगर अक़वाम ग़ायब हो गई हैं।

17ऐ रब, तूने नाचारों की आरज़ू सुन ली है। तू उनके दिलों को मज़बूत करेगा और उन पर ध्यान देकर

18यतीमों और मज़लूमों का इनसाफ़ करेगा ताकि आइंदा कोई भी इनसान मुल्क में दहशत न फैलाए।

रब पर भरोसा

11 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मैंने रब में पनाह ली है। तो फिर तुम किस तरह मुझसे कहते हो, "चल, परिंदे की तरह फड़फड़ाकर पहाड़ों में भाग जा"?

2क्योंकि देखो, बेदीन कमान तानकर तीर को ताँत पर लगा चुके हैं। अब वह अंधेरे में बैठकर इस इंतज़ार में हैं कि दिल से सीधी राह पर चलनेवालों पर चलाएँ।

3रास्तबाज़ क्या करे? उन्होंने तो बुनियाद को ही तबाह कर दिया है।

4लेकिन रब अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में है, रब का तख़्त आसमान पर है। वहाँ से वह देखता है, वहाँ से उस की आँखें आदमज़ादों को परखती हैं।

5रब रास्तबाज़ को परखता तो है, लेकिन बेदीन और ज़ालिम से नफ़रत ही करता है।

6बेदीनों पर वह जलते हुए कोयले और शोलाज़न गंधक बरसा देगा। झुलसनेवाली आँधी उनका हिस्सा होगी।

7क्योंकि रब रास्त है, और उसे इनसाफ़ प्यारा है। सिर्फ़ सीधी राह पर चलनेवाले उसका चेहरा देखेंगे।

मदद के लिए दुआ

12 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : शमीनीत।

ऐ रब, मदद फ़रमा! क्योंकि ईमानदार ख़त्म
हो गए हैं। दियानतदार इनसानों में से मिट गए हैं।
2आपस में सब झूट बोलते हैं। उनकी ज़बान
पर चिकनी-चुपड़ी बातें होती हैं जबकि दिल में
कुछ और ही होता है।
3रब तमाम चिकनी-चुपड़ी और शेख़ीबाज़
ज़बानों को काट डाले!
4वह उन सबको मिटा दे जो कहते हैं, "हम
अपनी लायक़ ज़बान के बाइस ताक़तवर हैं।
हमारे होंट हमें सहारा देते हैं तो कौन हमारा
मालिक होगा? कोई नहीं!"

5लेकिन रब फ़रमाता है, "नाचारों पर तुम्हारे
ज़ुल्म की ख़बर और ज़रूरतमंदों की कराहती
आवाज़ें मेरे सामने आई हैं। अब मैं उठकर उन्हें
उनसे छुटकारा दूँगा जो उनके ख़िलाफ़ फुँकारते
हैं।"

6रब के फ़रमान पाक हैं, वह भट्टी में सात बार
साफ़ की गई चाँदी की मानिंद ख़ालिस हैं।
7ऐ रब, तू ही उन्हें महफ़ूज़ रखेगा, तू ही उन्हें
अबद तक इस नसल से बचाए रखेगा,
8गो बेदीन आज़ादी से इधर-उधर फिरते हैं,
और इनसानों के दरमियान कमीनापन का राज
है।

मदद के लिए दुआ

13 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, कब तक? क्या तू मुझे अबद तक भूला
रहेगा? तू कब तक अपना चेहरा मुझसे छुपाए
रखेगा?
2मेरी जान कब तक परेशानियों में मुब्तला रहे,
मेरा दिल कब तक रोज़ बरोज़ दुख उठाता रहे?
मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर ग़ालिब रहेगा?
3ऐ रब मेरे ख़ुदा, मुझ पर नज़र डालकर मेरी
सुन! मेरी आँखों को रौशन कर, वरना मैं मौत की
नींद सो जाऊँगा।
4तब मेरा दुश्मन कहेगा, "मैं उस पर ग़ालिब
आ गया हूँ!" और मेरे मुख़ालिफ़ शादियाना
बजाएंगे कि मैं हिल गया हूँ।

5लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ,
मेरा दिल तेरी नजात देखकर ख़ुशी मनाएगा।
6मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि
उसने मुझ पर एहसान किया है।

बेदीन की हमाक़त

14 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

अहमक़ दिल में कहता है, "अल्लाह है ही
नहीं!" ऐसे लोग बदचलन हैं, उनकी हरकतें
क़ाबिले-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम
करे।
2रब ने आसमान से इनसान पर नज़र डाली
ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई
अल्लाह का तालिब है?
3अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए,
सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई
करता हो, एक भी नहीं।

4क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की
तरह खा लेते हैं उनमें से एक को भी समझ नहीं
आती? वह तो रब को पुकारते ही नहीं।

5तब उन पर सख़्त दहशत छा गई, क्योंकि
अल्लाह रास्तबाज़ की नसल के साथ है।
6तुम नाचार के मनसूबों को ख़ाक में मिलाना
चाहते हो, लेकिन रब ख़ुद उस की पनाहगाह है।

7काश कोहे-सिय्यून से इसराईल की नजात
निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा

तो याक़ूब ख़ुशी के नारे लगाएगा, इसराईल बाग़ बाग़ होगा।

कौन अल्लाह के हुज़ूर क़ायम रह सकता है?

15 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, कौन तेरे ख़ैमे में ठहर सकता है? किस को तेरे मुक़द्दस पहाड़ पर रहने की इजाज़त है?
2वह जिसका चाल-चलन बेगुनाह है, जो रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारकर दिल से सच बोलता है।
3ऐसा शख़्स अपनी ज़बान से किसी पर तोहमत नहीं लगाता। न वह अपने पड़ोसी पर ज़्यादती करता, न उस की बेइज़्ज़ती करता है।
4वह मरदूद को हक़ीर जानता लेकिन ख़ुदातरस की इज़्ज़त करता है। जो वादा उसने क़सम खाकर किया उसे पूरा करता है, ख़ाह उसे कितना ही नुक़सान क्यों न पहुँचे।
5वह सूद लिए बग़ैर उधार देता है और उस की रिश्वत क़बूल नहीं करता जो बेगुनाह का हक़ मारना चाहता है। ऐसा शख़्स कभी डाँवाँडोल नहीं होगा।

एतमाद की दुआ

16 दाऊद का एक सुनहरा ज़बूर।
ऐ अल्लाह, मुझे महफ़ूज़ रख, क्योंकि तुझमें मैं पनाह लेता हूँ।
2मैंने रब से कहा, "तू मेरा आक़ा है, तू ही मेरी ख़ुशहाली का वाहिद सरचश्मा है।"
3मुल्क में जो मुक़द्दसीन हैं वही मेरे सूरमे हैं, उन्हीं को मैं पसंद करता हूँ।
4लेकिन जो दीगर माबूदों के पीछे भागे रहते हैं उनकी तकलीफ़ बढ़ती जाएगी। न मैं उनकी ख़ून की क़ुरबानियों को पेश करूँगा, न उनके नामों का ज़िक्र तक करूँगा।

5ऐ रब, तू मेरी मीरास और मेरा हिस्सा है। मेरा नसीब तेरे हाथ में है।
6जब क़ुरा डाला गया तो मुझे ख़ुशगवार ज़मीन मिल गई। यक़ीनन मेरी मीरास मुझे बहुत पसंद है।
7मैं रब की सताइश करूँगा जिसने मुझे मशवरा दिया है। रात को भी मेरा दिल मेरी हिदायत करता है।
8रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहता है। वह मेरे दहने हाथ रहता है, इसलिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।
9इसलिए मेरा दिल शादमान है, मेरी जान ख़ुशी के नारे लगाती है। हाँ, मेरा बदन पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ारेगा।
10क्योंकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा, और न अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।
11तू मुझे ज़िंदगी की राह से आगाह करता है। तेरे हुज़ूर से भरपूर ख़ुशियाँ, तेरे दहने हाथ से अबदी मसर्रतें हासिल होती हैं।

बेगुनाह शख़्स की दुआ

17 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, इनसाफ़ के लिए मेरी फ़रियाद सुन, मेरी आहो-ज़ारी पर ध्यान दे। मेरी दुआ पर ग़ौर कर, क्योंकि वह फ़रेबदेह होंटों से नहीं निकलती।
2तेरे हुज़ूर मेरा इनसाफ़ किया जाए, तेरी आँखें उन बातों का मुशाहदा करें जो सच हैं।
3तूने मेरे दिल को जाँच लिया, रात को मेरा मुआयना किया है। तूने मुझे भट्टी में डाल दिया ताकि नापाक चीज़ें दूर करे, गो ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली। क्योंकि मैंने पूरा इरादा कर लिया है कि मेरे मुँह से बुरी बात नहीं निकलेगी।
4जो कुछ भी दूसरे करते हैं मैंने ख़ुद तेरे मुँह के फ़रमान के ताबे रहकर अपने आपको ज़ालिमों की राहों से दूर रखा है।
5मैं क़दम बक़दम तेरी राहों में रहा, मेरे पाँव कभी न डगमगाए।

6ऐ अल्लाह, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू
मेरी सुनेगा। कान लगाकर मेरी दुआ को सुन।
7तू जो अपने दहने हाथ से उन्हें रिहाई देता
है जो अपने मुख़ालिफ़ों से तुझमें पनाह लेते हैं,
मोजिज़ाना तौर पर अपनी शफ़क़त का इज़हार
कर।
8आँख की पुतली की तरह मेरी हिफ़ाज़त कर,
अपने परों के साये में मुझे छुपा ले।
9उन बेदीनों से मुझे महफ़ूज़ रख जो मुझ पर
तबाहकुन हमले कर रहे हैं, उन दुश्मनों से जो मुझे
घेरकर मार डालने की कोशिश कर रहे हैं।
10वह सरकश हो गए हैं, उनके मुँह घमंड की
बातें करते हैं।
11जिधर भी हम क़दम उठाएँ वहाँ वह भी पहुँच
जाते हैं। अब उन्होंने हमें घेर लिया है, वह घूर
घूरकर हमें ज़मीन पर पटख़ने का मौक़ा ढूँड रहे
हैं।
12वह उस शेरबबर की मानिंद हैं जो शिकार
को फाड़ने के लिए तड़पता है, उस जवान शेर की
मानिंद जो ताक में बैठा है।

13ऐ रब, उठ और उनका सामना कर, उन्हें
ज़मीन पर पटख़ दे! अपनी तलवार से मेरी जान
को बेदीनों से बचा।
14ऐ रब, अपने हाथ से मुझे इनसे छुटकारा दे।
उन्हें तो इस दुनिया में अपना हिस्सा मिल चुका
है। क्योंकि तूने उनके पेट को अपने माल से भर
दिया, बल्कि उनके बेटे भी सेर हो गए हैं और
इतना बाक़ी है कि वह अपनी औलाद के लिए भी
काफ़ी कुछ छोड़ जाएंगे।
15लेकिन मैं ख़ुद रास्तबाज़ साबित होकर तेरे
चेहरे का मुशाहदा करूँगा, मैं जागकर तेरी सूरत
से सेर हो जाऊँगा।

दाऊद का फ़तह का गीत

18 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। दाऊद ने रब के लिए यह
गीत गाया जब रब ने उसे तमाम दुश्मनों और साऊल से
बचाया। वह बोला,

ऐ रब मेरी क़ुव्वत, मैं तुझे प्यार करता हूँ।
2रब मेरी चट्टान, मेरा क़िला और मेरा
नजातदहिंदा है। मेरा ख़ुदा मेरी चट्टान है जिसमें
मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का
पहाड़, मेरा बुलंद हिसार है।
3मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तमजीद हो!
तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

4मौत के रस्सों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के
सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।
5पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने
मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।
6जब मैं मुसीबत में फँस गया तो मैंने रब को
पुकारा। मैंने मदद के लिए अपने ख़ुदा से फ़रियाद
की तो उसने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़
सुनी, मेरी चीख़ें उसके कान तक पहुँच गईं।

7तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी,
पहाड़ों की बुनियादें रब के ग़ज़ब के सामने काँपने
और झूलने लगीं।
8उस की नाक से धुआँ निकल आया, उसके
मुँह से भस्म करनेवाले शोले और दहकते कोयले
भड़क उठे।
9आसमान को झुकाकर वह नाज़िल हुआ। जब
उतर आया तो उसके पाँवों के नीचे अंधेरा ही
अंधेरा था।
10वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और
उड़कर हवा के परों पर मँडलाने लगा।
11उसने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह
बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की
तरह अपने गिर्दागिर्द लगाए।
12उसके हुज़ूर की तेज़ रौशनी से उसके बादल
ओले और शोलाज़न कोयले लेकर निकल आए।
13रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह
तआला की आवाज़ गूँज उठी। तब ओले और
शोलाज़न कोयले बरसने लगे।

14उसने अपने तीर चलाए तो दुश्मन तित्तर-
बित्तर हो गए। उस की तेज़ बिजली इधर-उधर
गिरती गई तो उनमें हलचल मच गई।
15ऐ रब, तूने डाँटा तो समुंदर की वादियाँ
ज़ाहिर हुईं, जब तू ग़ुस्से में गरजा तो तेरे दम के
झोंकों से ज़मीन की बुनियादें नज़र आईं।

16बुलंदियों पर से अपना हाथ बढ़ाकर उसने
मुझे पकड़ लिया, मुझे गहरे पानी में से खींचकर
निकाल लाया।
17उसने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया,
उनसे जो मुझसे नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं
ग़ालिब न आ सका।
18जिस दिन मैं मुसीबत में फँस गया उस दिन
उन्होंने मुझ पर हमला किया, लेकिन रब मेरा
सहारा बना रहा।
19उसने मुझे तंग जगह से निकालकर छुटकारा
दिया, क्योंकि वह मुझसे ख़ुश था।
20रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र देता है। मेरे
हाथ साफ़ हैं, इसलिए वह मुझे बरकत देता है।
21क्योंकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं
बदी करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।
22उसके तमाम अहकाम मेरे सामने रहे हैं, मैंने
उसके फ़रमानों को रद्द नहीं किया।
23उसके सामने ही मैं बेइलज़ाम रहा, गुनाह
करने से बाज़ रहा हूँ।
24इसलिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र
दिया, क्योंकि उस की आँखों के सामने ही में
पाक-साफ़ साबित हुआ।

25ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उसके साथ तेरा
सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइलज़ाम है उसके
साथ तेरा सुलूक बेइलज़ाम है।
26जो पाक है उसके साथ तेरा सुलूक पाक है।
लेकिन जो कजरौ है उसके साथ तेरा सुलूक भी
कजरवी का है।
27क्योंकि तू पस्तहालों को नजात देता और
मग़रूर आँखों को पस्त करता है।
28ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ जलाता, मेरा ख़ुदा
ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।
29क्योंकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हमला
कर सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को फलाँग
सकता हूँ।
30अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान
ख़ालिस है। जो भी उसमें पनाह ले उस की वह
ढाल है।
31क्योंकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे
ख़ुदा के सिवा कौन चट्टान है?
32अल्लाह मुझे क़ुव्वत से कमरबस्ता करता,
वह मेरी राह को कामिल कर देता है।
33वह मेरे पाँवों को हिरन की-सी फुरती अता
करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलंदियों पर खड़ा
करता है।
34वह मेरे हाथों को जंग करने की तरबियत
देता है। अब मेरे बाज़ू पीतल की कमान को भी
तान लेते हैं।

35ऐ रब, तूने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श
दी है। तेरे दहने हाथ ने मुझे क़ायम रखा, तेरी
नरमी ने मुझे बड़ा बना दिया है।
36तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है,
इसलिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।
37मैंने अपने दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके उन्हें
पकड़ लिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म
न हो गए।
38मैंने उन्हें यों पाश पाश कर दिया कि दुबारा
उठ न सके बल्कि गिरकर मेरे पाँवों तले पड़े रहे।
39क्योंकि तूने मुझे जंग करने के लिए क़ुव्वत
से कमरबस्ता कर दिया, तूने मेरे मुख़ालिफ़ों को
मेरे सामने झुका दिया।
40तूने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया,
और मैंने नफ़रत करनेवालों को तबाह कर दिया।
41वह मदद के लिए चीख़ते-चिल्लाते रहे,
लेकिन बचानेवाला कोई नहीं था। वह रब को
पुकारते रहे, लेकिन उसने जवाब न दिया।

42मैंने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में उड़ा दिया। मैंने उन्हें कचरे की तरह गली में फेंक दिया।

43तूने मुझे क़ौम के झगड़ों से बचाकर अक़वाम का सरदार बना दिया है। जिस क़ौम से मैं नावाक़िफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती है।
44ज्योंही मैं बात करता हूँ तो लोग मेरी सुनते हैं। परदेसी दबककर मेरी ख़ुशामद करते हैं।
45वह हिम्मत हारकर काँपते हुए अपने क़िलों से निकल आते हैं।

46रब ज़िंदा है! मेरी चट्टान की तमजीद हो! मेरी नजात के ख़ुदा की ताज़ीम हो!
47वही ख़ुदा है जो मेरा इंतक़ाम लेता, अक़वाम को मेरे ताबे कर देता
48और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है। यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता, मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।
49ऐ रब, इसलिए मैं अक़वाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
50क्योंकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।

मख़लूक़ात में अल्लाह का जलाल

19 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

आसमान अल्लाह के जलाल का एलान करते हैं, आसमानी गुंबद उसके हाथों का काम बयान करता है।
2एक दिन दूसरे को इत्तला देता, एक रात दूसरी को ख़बर पहुँचाती है,
3लेकिन ज़बान से नहीं। गो उनकी आवाज़ सुनाई नहीं देती,
4तो भी उनकी आवाज़ निकलकर पूरी दुनिया में सुनाई देती, उनके अलफ़ाज़ दुनिया की इंतहा तक पहुँच जाते हैं। वहाँ अल्लाह ने आफ़ताब के लिए ख़ैमा लगाया है।
5जिस तरह दूल्हा अपनी ख़ाबगाह से निकलता है उसी तरह सूरज निकलकर पहलवान की तरह अपनी दौड़ दौड़ने पर ख़ुशी मनाता है।
6आसमान के एक सिरे से चढ़कर उसका चक्कर दूसरे सिरे तक लगता है। उस की तपती गरमी से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं रहती।

7रब की शरीअत कामिल है, उससे जान में जान आ जाती है। रब के अहकाम क़ाबिले-एतमाद हैं, उनसे सादालौह दानिशमंद हो जाता है।
8रब की हिदायात बा-इनसाफ़ हैं, उनसे दिल बाग़ बाग़ हो जाता है। रब के अहकाम पाक हैं, उनसे आँखें चमक उठती हैं।
9रब का ख़ौफ़ पाक है और अबद तक क़ायम रहेगा। रब के फ़रमान सच्चे और सबके सब रास्त हैं।
10वह सोने बल्कि ख़ालिस सोने के ढेर से ज़्यादा मरग़ूब हैं। वह शहद बल्कि छत्ते के ताज़ा शहद से ज़्यादा मीठे हैं।

11उनसे तेरे ख़ादिम को आगाह किया जाता है, उन पर अमल करने से बड़ा अज्र मिलता है।
12जो ख़ताएँ बेख़बरी में सरज़द हुईं कौन उन्हें जानता है? मेरे पोशीदा गुनाहों को मुआफ़ कर!
13अपने ख़ादिम को गुस्ताखों से महफ़ूज़ रख ताकि वह मुझ पर हुकूमत न करें। तब मैं बेइलज़ाम होकर संगीन गुनाह से पाक रहूँगा।

14ऐ रब, बख़्श दे कि मेरे मुँह की बातें और मेरे दिल की सोच-बिचार तुझे पसंद आए। तू ही मेरी चट्टान और मेरा छुड़ानेवाला है।

फ़तह के लिए दुआ

20 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मुसीबत के दिन रब तेरी सुने, याक़ूब के ख़ुदा
का नाम तुझे महफ़ूज़ रखे।
2वह मक़दिस से तेरी मदद भेजे, वह सिय्यून
से तेरा सहारा बने।
3वह तेरी ग़ल्ला की नज़रें याद करे, तेरी भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ क़बूल फ़रमाए। (सिलाह)
4वह तेरे दिल की आरज़ू पूरी करे, तेरे तमाम
मनसूबों को कामयाबी बख़्शे।
5तब हम तेरी नजात की ख़ुशी मनाएँगे, हम
अपने ख़ुदा के नाम में फ़तह का झंडा गाड़ेंगे। रब
तेरी तमाम गुज़ारिशें पूरी करे।

6अब मैंने जान लिया है कि रब अपने मसह
किए हुए बादशाह की मदद करता है। वह अपने
मुक़द्दस आसमान से उस की सुनकर अपने दहने
हाथ की क़ुदरत से उसे छुटकारा देगा।
7बाज़ अपने रथों पर, बाज़ अपने घोड़ों पर
फ़ख़र करते हैं, लेकिन हम रब अपने ख़ुदा के
नाम पर फ़ख़र करेंगे।
8हमारे दुश्मन झुककर गिर जाएंगे, लेकिन हम
उठकर मज़बूती से खड़े रहेंगे।

9ऐ रब, हमारी मदद फ़रमा! बादशाह हमारी
सुने जब हम मदद के लिए पुकारें।

बादशाह के लिए अल्लाह की मदद

21 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
ऐ रब, बादशाह तेरी क़ुव्वत देखकर शादमान
है, वह तेरी नजात की कितनी बड़ी ख़ुशी मनाता
है।
2तूने उस की दिली ख़ाहिश पूरी की और
इनकार न किया जब उस की आरज़ू ने होंटों पर
अलफ़ाज़ का रूप धारा। (सिलाह)
3क्योंकि तू अच्छी अच्छी बरकतें अपने साथ
लेकर उससे मिलने आया, तूने उसे ख़ालिस सोने
का ताज पहनाया।
4उसने तुझसे ज़िंदगी पाने की आरज़ू की तो
तूने उसे उम्र की दराज़ी बख़्शी, मज़ीद इतने दिन
कि उनकी इंतहा नहीं।
5तेरी नजात से उसे बड़ी इज़्ज़त हासिल हुई,
तूने उसे शानो-शौकत से आरास्ता किया।
6क्योंकि तू उसे अबद तक बरकत देता, उसे
अपने चेहरे के हुज़ूर लाकर निहायत ख़ुश कर देता
है।
7क्योंकि बादशाह रब पर एतमाद करता है,
अल्लाह तआला की शफ़क़त उसे डगमगाने से
बचाएगी।

8तेरे दुश्मन तेरे क़ब्ज़े में आ जाएंगे, जो तुझसे
नफ़रत करते हैं उन्हें तेरा दहना हाथ पकड़ लेगा।
9जब तू उन पर ज़ाहिर होगा तो वह भड़कती
भट्टी की-सी मुसीबत में फँस जाएंगे। रब अपने
ग़ज़ब में उन्हें हड़प कर लेगा, और आग उन्हें खा
जाएगी।
10तू उनकी औलाद को रूए-ज़मीन पर से मिटा
डालेगा, इनसानों में उनका नामो-निशान तक नहीं
रहेगा।
11गो वह तेरे ख़िलाफ़ साज़िशें करते हैं तो भी
उनके बुरे मनसूबे नाकाम रहेंगे।
12क्योंकि तू उन्हें भगाकर उनके चेहरों को
अपने तीरों का निशाना बना देगा।
13ऐ रब, उठ और अपनी क़ुदरत का इज़हार
कर ताकि हम तेरी क़ुदरत की तमजीद में साज़
बजाकर गीत गाएँ।

रास्तबाज़ का दुख

22 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : तुलूए-सुबह की हिरनी।
ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क
कर दिया है? मैं चीख़ रहा हूँ, लेकिन मेरी नजात
नज़र नहीं आती।
2ऐ मेरे ख़ुदा, दिन को मैं चिल्लाता हूँ, लेकिन
तू जवाब नहीं देता। रात को पुकारता हूँ, लेकिन
आराम नहीं पाता।

3लेकिन तू क़ुद्दूस है, तू जो इसराईल की
मद्हसराई पर तख़्तनशीन होता है।
4तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा, और
जब भरोसा रखा तो तूने उन्हें रिहाई दी।
5जब उन्होंने मदद के लिए तुझे पुकारा तो बचने
का रास्ता खुल गया। जब उन्होंने तुझ पर एतमाद
किया तो शरमिंदा न हुए।

6लेकिन मैं कीड़ा हूँ, मुझे इनसान नहीं समझा
जाता। लोग मेरी बेइज़्ज़ती करते, मुझे हक़ीर
जानते हैं।
7सब मुझे देखकर मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं। वह
मुँह बनाकर तौबा तौबा करते और कहते हैं,
8"उसने अपना मामला रब के सुपुर्द किया है।
अब रब ही उसे बचाए। वही उसे छुटकारा दे,
क्योंकि वही उससे ख़ुश है।"

9यक़ीनन तू मुझे माँ के पेट से निकाल लाया।
मैं अभी माँ का दूध पीता था कि तूने मेरे दिल में
भरोसा पैदा किया।
10ज्योंही मैं पैदा हुआ मुझे तुझ पर छोड़ दिया
गया। माँ के पेट से ही तू मेरा ख़ुदा रहा है।
11मुझसे दूर न रह। क्योंकि मुसीबत ने मेरा
दामन पकड़ लिया है, और कोई नहीं जो मेरी मदद
करे।
12मुतअद्दिद बैलों ने मुझे घेर लिया, बसन के
ताक़तवर साँड चारों तरफ़ जमा हो गए हैं।
13मेरे ख़िलाफ़ उन्होंने अपने मुँह खोल दिए हैं,
उस दहाड़ते हुए शेरबबर की तरह जो शिकार को
फाड़ने के जोश में आ गया है।
14मुझे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेला गया है,
मेरी तमाम हड्डियाँ अलग अलग हो गई हैं, जिस्म
के अंदर मेरा दिल मोम की तरह पिघल गया है।
15मेरी ताक़त ठीकरे की तरह ख़ुश्क हो गई,
मेरी ज़बान तालू से चिपक गई है। हाँ, तूने मुझे
मौत की ख़ाक में लिटा दिया है।
16कुत्तों ने मुझे घेर रखा, शरीरों के जत्थे ने मेरा
इहाता किया है। उन्होंने मेरे हाथों और पाँवों को
छेद डाला है।
17मैं अपनी हड्डियों को गिन सकता हूँ। लोग
घूर घूरकर मेरी मुसीबत से ख़ुश होते हैं।
18वह आपस में मेरे कपड़े बाँट लेते और मेरे
लिबास पर क़ुरा डालते हैं।

19लेकिन तू ऐ रब, दूर न रह! ऐ मेरी क़ुव्वत,
मेरी मदद करने के लिए जल्दी कर!
20मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी ज़िंदगी
को कुत्ते के पंजे से छुड़ा।
21शेर के मुँह से मुझे मख़लसी दे, जंगली बैलों
के सींगों से रिहाई अता कर।

ऐ रब, तूने मेरी सुनी है!
22मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम
का एलान करूँगा, जमात के दरमियान तेरी
मद्हसराई करूँगा।
23तुम जो रब का ख़ौफ़ मानते हो, उस की
तमजीद करो! ऐ याक़ूब की तमाम औलाद,
उसका एहतराम करो! ऐ इसराईल के तमाम
फ़रज़ंदो, उससे ख़ौफ़ खाओ!
24क्योंकि न उसने मुसीबतज़दा का दुख हक़ीर
जाना, न उस की तकलीफ़ से घिन खाई। उसने
अपना मुँह उससे न छुपाया बल्कि उस की सुनी
जब वह मदद के लिए चीख़ने-चिल्लाने लगा।
25ऐ ख़ुदा, बड़े इजतिमा में मैं तेरी सताइश
करूँगा, ख़ुदातरसों के सामने अपनी मन्नत पूरी
करूँगा।
26नाचार जी भरकर खाएँगे, रब के तालिब उस
की हम्दो-सना करेंगे। तुम्हारे दिल अबद तक ज़िंदा
रहें!
27लोग दुनिया की इंतहा तक रब को याद
करके उस की तरफ़ रुजू करेंगे। ग़ैरअक़वाम के
तमाम ख़ानदान उसे सिजदा करेंगे।

28क्योंकि रब को ही बादशाही का इख़्ति-
यार हासिल है, वही अक़वाम पर हुकूमत करता
है।

29दुनिया के तमाम बड़े लोग उसके हुज़ूर
खाएँगे और सिजदा करेंगे। ख़ाक में उतरनेवाले
सब उसके सामने झुक जाएंगे, वह सब जो अपनी
ज़िंदगी को ख़ुद क़ायम नहीं रख सकते।
30उसके फ़रज़ंद उस की ख़िदमत करेंगे। एक
आनेवाली नसल को रब के बारे में सुनाया
जाएगा।
31हाँ, वह आकर उस की रास्ती एक क़ौम को
सुनाएँगे जो अभी पैदा नहीं हुई, क्योंकि उसने यह
कुछ किया है।

अच्छा चरवाहा

23 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरा चरवाहा है, मुझे कमी न
होगी।
2वह मुझे शादाब चरागाहों में चराता और
पुरसुकून चश्मों के पास ले जाता है।
3वह मेरी जान को ताज़ादम करता और अपने
नाम की ख़ातिर रास्ती की राहों पर मेरी क़ियादत
करता है।
4गो मैं तारीकतरीन वादी में से गुज़रूँ मैं मुसीबत
से नहीं डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है, तेरी लाठी
और तेरा असा मुझे तसल्ली देते हैं।

5तू मेरे दुश्मनों के रूबरू मेरे सामने मेज़
बिछाकर मेरे सर को तेल से तरो-ताज़ा करता है।
मेरा प्याला तेरी बरकत से छलक उठता है।
6यक़ीनन भलाई और शफ़क़त उम्र-भर मेरे
साथ साथ रहेंगी, और मैं जीते-जी रब के घर में
सुकूनत करूँगा।

बादशाह का इस्तक़बाल

24 दाऊद का ज़बूर।
ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का
है, दुनिया और उसके बाशिंदे उसी के हैं। 2क्योंकि
उसने ज़मीन की बुनियाद समुंदरों पर रखी और
उसे दरियाओं पर क़ायम किया।

3किस को रब के पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त
है? कौन उसके मुक़द्दस मक़ाम में खड़ा हो सकता
है?
4वह जिसके हाथ पाक और दिल साफ़ हैं, जो
न फ़रेब का इरादा रखता, न क़सम खाकर झूट
बोलता है।
5वह रब से बरकत पाएगा, उसे अपनी नजात
के ख़ुदा से रास्ती मिलेगी।
6यह होगा उन लोगों का हाल जो अल्लाह की
मरज़ी दरियाफ़्त करते, जो तेरे चेहरे के तालिब
होते हैं, ऐ याक़ूब के ख़ुदा। (सिलाह)

7ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम दरवाज़ो,
पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह
दाख़िल हो जाए।
8जलाल का बादशाह कौन है? रब जो क़वी
और क़ादिर है, रब जो जंग में ज़ोरावर है।
9ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम दरवाज़ो,
पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह
दाख़िल हो जाए।
10जलाल का बादशाह कौन है? रब्बुल-
अफ़वाज, वही जलाल का बादशाह है। (सिलाह)

मुआफ़ी और राहनुमाई के लिए दुआ

25 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तेरा आरज़ूमंद हूँ।
2ऐ मेरे ख़ुदा, तुझ पर मैं भरोसा रखता हूँ।
मुझे शरमिंदा न होने दे कि मेरे दुश्मन मुझ पर
शादियाना बजाएँ।
3क्योंकि जो भी तुझ पर उम्मीद रखे वह
शरमिंदा नहीं होगा जबकि जो बिलावजह बेवफ़ा
होते हैं वही शरमिंदा हो जाएंगे।

4ऐ रब, अपनी राहें मुझे दिखा, मुझे अपने
रास्तों की तालीम दे।
5अपनी सच्चाई के मुताबिक़ मेरी राह-
नुमाई कर, मुझे तालीम दे। क्योंकि तू मेरी नजात
का ख़ुदा है। दिन-भर मैं तेरे इंतज़ार में रहता हूँ।
6ऐ रब, अपना वह रहम और मेहरबानी याद
कर जो तू क़दीम ज़माने से करता आया है।
7ऐ रब, मेरी जवानी के गुनाहों और मेरी बेवफ़ा
हरकतों को याद न कर बल्कि अपनी भलाई की
ख़ातिर और अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरा
ख़याल रख।

8रब भला और आदिल है, इसलिए वह
गुनाहगारों को सहीह राह पर चलने की तलक़ीन
करता है।
9वह फ़रोतनों की इनसाफ़ की राह पर
राहनुमाई करता, हलीमों को अपनी राह की
तालीम देता है।
10जो रब के अहद और अहकाम के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारें उन्हें रब मेहरबानी और वफ़ादारी
की राहों पर ले चलता है।
11ऐ रब, मेरा क़ुसूर संगीन है, लेकिन अपने
नाम की ख़ातिर उसे मुआफ़ कर।
12रब का ख़ौफ़ माननेवाला कहाँ है? रब ख़ुद
उसे उस राह की तालीम देगा जो उसे चुनना है।
13तब वह ख़ुशहाल रहेगा, और उस की
औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी।
14जो रब का ख़ौफ़ मानें उन्हें वह अपने हमराज़
बनाकर अपने अहद की तालीम देता है।

15मेरी आँखें रब को तकती रहती हैं, क्योंकि
वही मेरे पाँवों को जाल से निकाल लेता है।
16मेरी तरफ़ मायल हो जा, मुझ पर मेहर-
बानी कर! क्योंकि मैं तनहा और मुसीबत-
ज़दा हूँ।
17मेरे दिल की परेशानियाँ दूर कर, मुझे मेरी
तकालीफ़ से रिहाई दे।
18मेरी मुसीबत और तंगी पर नज़र डालकर
मेरी ख़ताओं को मुआफ़ कर।
19देख, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, वह कितना
ज़ुल्म करके मुझसे नफ़रत करते हैं।
20मेरी जान को महफ़ूज़ रख, मुझे बचा! मुझे
शरमिंदा न होने दे, क्योंकि मैं तुझमें पनाह लेता
हूँ।
21बेगुनाही और दियानतदारी मेरी पहरा-
दारी करें, क्योंकि मैं तेरे इंतज़ार में रहता हूँ।
22ऐ अल्लाह, फ़िद्या देकर इसराईल को उस
की तमाम तकालीफ़ से आज़ाद कर!

बेगुनाह का इक़रार और इल्तिजा

26 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरा इनसाफ़ कर, क्योंकि मेरा
चाल-चलन बेक़ुसूर है। मैंने रब पर भरोसा रखा
है, और मैं डाँवाँडोल नहीं हो जाऊँगा।

2ऐ रब, मुझे जाँच ले, मुझे आज़माकर दिल
की तह तक मेरा मुआयना कर।
3क्योंकि तेरी शफ़क़त मेरी आँखों के सामने
रही है, मैं तेरी सच्ची राह पर चलता रहा हूँ।
4न मैं धोकेबाज़ों की मजलिस में बैठता, न
चालाक लोगों से रिफ़ाक़त रखता हूँ।
5मुझे शरीरों के इजतिमाओं से नफ़रत है,
बेदीनों के साथ मैं बैठता भी नहीं।
6ऐ रब, मैं अपने हाथ धोकर अपनी बेगुनाही
का इज़हार करता हूँ। मैं तेरी क़ुरबानगाह के गिर्द
फिरकर
7बुलंद आवाज़ से तेरी हम्दो-सना करता, तेरे
तमाम मोजिज़ात का एलान करता हूँ।
8ऐ रब, तेरी सुकूनतगाह मुझे प्यारी है, जिस
जगह तेरा जलाल ठहरता है वह मुझे अज़ीज़ है।

9मेरी जान को मुझसे छीनकर मुझे गुनाहगारों
में शामिल न कर! मेरी ज़िंदगी को मिटाकर मुझे
ख़ूनख़ारों में शुमार न कर,

10ऐसे लोगों में जिनके हाथ शर्मनाक हरकतों
से आलूदा हैं, जो हर वक़्त रिश्वत खाते हैं।
11क्योंकि मैं बेगुनाह ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। फ़िद्या
देकर मुझे छुटकारा दे! मुझ पर मेहरबानी कर!

12मेरे पाँव हमवार ज़मीन पर क़ायम हो गए हैं,
और मैं इजतिमाओं में रब की सताइश करूँगा।

अल्लाह से रिफ़ाक़त

27 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी रौशनी और मेरी नजात है, मैं
किससे डरूँ? रब मेरी जान की पनाहगाह है, मैं
किससे दहशत खाऊँ?
2जब शरीर मुझ पर हमला करें ताकि मुझे हड़प
कर लें, जब मेरे मुख़ालिफ़ और दुश्मन मुझ पर
टूट पड़ें तो वह ठोकर खाकर गिर जाएंगे।
3गो फ़ौज मुझे घेर ले मेरा दिल ख़ौफ़ नहीं
खाएगा, गो मेरे ख़िलाफ़ जंग छिड़ जाए मेरा
भरोसा क़ायम रहेगा।

4रब से मेरी एक गुज़ारिश है, मैं एक ही बात
चाहता हूँ। यह कि जीते-जी रब के घर में रहकर
उस की शफ़क़त से लुत्फ़अंदोज़ हो सकूँ, कि
उस की सुकूनतगाह में ठहरकर महवे-ख़याल रह
सकूँ।
5क्योंकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपनी
सुकूनतगाह में पनाह देगा, मुझे अपने ख़ैमे में छुपा
लेगा, मुझे उठाकर ऊँची चट्टान पर रखेगा।
6अब मैं अपने दुश्मनों पर सरबुलंद हूँगा,
अगरचे उन्होंने मुझे घेर रखा है। मैं उसके ख़ैमे
में ख़ुशी के नारे लगाकर क़ुरबानियाँ पेश करूँगा,
साज़ बजाकर रब की मद्हसराई करूँगा।

7ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन जब मैं तुझे पुकारूँ,
मुझ पर मेहरबानी करके मेरी सुन।
8मेरा दिल तुझे याद दिलाता है कि तूने ख़ुद
फ़रमाया, "मेरे चेहरे के तालिब रहो!" ऐ रब, मैं
तेरे ही चेहरे का तालिब रहा हूँ।
9अपने चेहरे को मुझसे छुपाए न रख, अपने
ख़ादिम को ग़ुस्से से अपने हुज़ूर से न निकाल।
क्योंकि तू ही मेरा सहारा रहा है। ऐ मेरी नजात के
ख़ुदा, मुझे न छोड़, मुझे तर्क न कर।
10क्योंकि मेरे माँ-बाप ने मुझे तर्क कर दिया है,
लेकिन रब मुझे क़बूल करके अपने घर में लाएगा।
11ऐ रब, मुझे अपनी राह की तरबियत दे,
हमवार रास्ते पर मेरी राहनुमाई कर ताकि अपने
दुश्मनों से महफ़ूज़ रहूँ।
12मुझे मुख़ालिफ़ों के लालच में न आने दे,
क्योंकि झूटे गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं
जो तशद्दुद करने के लिए तैयार हैं।
13लेकिन मेरा पूरा ईमान यह है कि मैं ज़िंदों के
मुल्क में रहकर रब की भलाई देखूँगा।

14रब के इंतज़ार में रह! मज़बूत और दिलेर
हो, और रब के इंतज़ार में रह!

मदद के लिए दुआ और जवाब के लिए शुक्रगुज़ारी

28 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ मेरी
चट्टान, ख़ामोशी से अपना मुँह मुझसे न फेर।
क्योंकि अगर तू चुप रहे तो मैं मौत के गढ़े में
उतरनेवालों की मानिंद हो जाऊँगा।
2मेरी इल्तिजाएँ सुन जब मैं चीख़ते-चिल्लाते
तुझसे मदद माँगता हूँ, जब मैं अपने हाथ तेरी
सुकूनतगाह के मुक़द्दसतरीन कमरे की तरफ़
उठाता हूँ।
3मुझे उन बेदीनों के साथ घसीटकर सज़ा न
दे जो ग़लत काम करते हैं, जो अपने पड़ोसियों
से बज़ाहिर दोस्ताना बातें करते, लेकिन दिल में
उनके ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधते हैं।
4उन्हें उनकी हरकतों और बुरे कामों का बदला
दे। जो कुछ उनके हाथों से सरज़द हुआ है उस
की पूरी सज़ा दे। उन्हें उतना ही नुक़सान पहुँचा दे
जितना उन्होंने दूसरों को पहुँचाया है।

5क्योंकि न वह रब के आमाल पर, न उसके हाथों के काम पर तवज्जुह देते हैं। अल्लाह उन्हें ढा देगा और दुबारा कभी तामीर नहीं करेगा।

6रब की तमजीद हो, क्योंकि उसने मेरी इल्तिजा सुन ली।
7रब मेरी क़ुव्वत और मेरी ढाल है। उस पर मेरे दिल ने भरोसा रखा, उससे मुझे मदद मिली है। मेरा दिल शादियाना बजाता है, मैं गीत गाकर उस की सताइश करता हूँ।
8रब अपनी क़ौम की क़ुव्वत और अपने मसह किए हुए ख़ादिम का नजातबख़्श क़िला है।
9ऐ रब, अपनी क़ौम को नजात दे! अपनी मीरास को बरकत दे! उनकी गल्लाबानी करके उन्हें हमेशा तक उठाए रख।

रब के जलाल की तमजीद

29 दाऊद का ज़बूर।
ऐ अल्लाह के फ़रज़ंदो, रब की तमजीद करो! रब के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो!
2रब के नाम को जलाल दो। मुक़द्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो।
3रब की आवाज़ समुंदर के ऊपर गूँजती है। जलाल का ख़ुदा गरजता है, रब गहरे पानी के ऊपर गरजता है।
4रब की आवाज़ ज़ोरदार है, रब की आवाज़ पुरजलाल है।
5रब की आवाज़ देवदार के दरख़्तों को तोड़ डालती है, रब लुबनान के देवदार के दरख़्तों को टुकड़े टुकड़े कर देता है।
6वह लुबनान को बछड़े और कोहे-सिरयून[a] को जंगली बैल के बच्चे की तरह कूदने फाँदने देता है।
7रब की आवाज़ आग के शोले भड़का देती है।
8रब की आवाज़ रेगिस्तान को हिला देती है, रब दश्ते-क़ादिस को काँपने देता है।
9रब की आवाज़ सुनकर हिरनी दर्दे-ज़ह में मुब्तला हो जाती और जंगलों के पत्ते झड़ जाते हैं। लेकिन उस की सुकूनतगाह में सब पुकारते हैं, “जलाल!”
10रब सैलाब के ऊपर तख़्तनशीन है, रब बादशाह की हैसियत से अबद तक तख़्तनशीन है।
11रब अपनी क़ौम को तक़वियत देगा, रब अपने लोगों को सलामती की बरकत देगा।

मौत से छुटकारे पर शुक्रगुज़ारी

30 दाऊद का ज़बूर। रब के घर की मख़सूसियत के मौक़े पर गीत।
ऐ रब, मैं तेरी सताइश करता हूँ, क्योंकि तूने मुझे गहराइयों में से खींच निकाला। तूने मेरे दुश्मनों को मुझ पर बग़लें बजाने का मौक़ा नहीं दिया।
2ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैंने चीख़ते-चिल्लाते हुए तुझसे मदद माँगी, और तूने मुझे शफ़ा दी।
3ऐ रब, तू मेरी जान को पाताल से निकाल लाया, तूने मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से बचाया है।
4ऐ ईमानदारो, साज़ बजाकर रब की तारीफ़ में गीत गाओ। उसके मुक़द्दस नाम की हम्दो-सना करो।
5क्योंकि वह लमहा-भर के लिए ग़ुस्से होता, लेकिन ज़िंदगी-भर के लिए मेहरबानी करता है। गो शाम को रोना पड़े, लेकिन सुबह को हम ख़ुशी मनाएँगे।

6जब हालात पुरसुकून थे तो मैं बोला, “मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा।”
7ऐ रब, जब तू मुझसे ख़ुश था तो तूने मुझे मज़बूत पहाड़ पर रख दिया। लेकिन जब तूने अपना चेहरा मुझसे छुपा लिया तो मैं सख़्त घबरा गया।

[a]सिरयून हरमून का दूसरा नाम है।

8ऐ रब, मैंने तुझे पुकारा, हाँ ख़ुदावंद से मैंने
इल्तिजा की,
9“क्या फ़ायदा है अगर मैं हलाक होकर मौत
के गढ़े में उतर जाऊँ? क्या ख़ाक तेरी सताइश
करेगी? क्या वह लोगों को तेरी वफ़ादारी के बारे
में बताएगी?
10ऐ रब, मेरी सुन, मुझ पर मेहरबानी कर। ऐ
रब, मेरी मदद करने के लिए आ!”

11तूने मेरा मातम ख़ुशी के नाच में बदल दिया,
तूने मेरे मातमी कपड़े उतारकर मुझे शादमानी से
मुलब्बस किया।
12क्योंकि तू चाहता है कि मेरी जान ख़ामोश न
हो बल्कि गीत गाकर तेरी तमजीद करती रहे। ऐ
रब मेरे ख़ुदा, मैं अबद तक तेरी हम्दो-सना करूँगा।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

31 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
ऐ रब, मैंने तुझमें पनाह ली है। मुझे कभी
शरमिंदा न होने दे बल्कि अपनी रास्ती के
मुताबिक़ मुझे बचा!
2अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जल्द ही मुझे
छुटकारा दे। चट्टान का मेरा बुर्ज हो, पहाड़ का
क़िला जिसमें मैं पनाह लेकर नजात पा सकूँ।

3क्योंकि तू मेरी चट्टान, मेरा क़िला है, अपने
नाम की ख़ातिर मेरी राहनुमाई, मेरी क़ियादत
कर।
4मुझे उस जाल से निकाल दे जो मुझे पकड़ने
के लिए चुपके से बिछाया गया है। क्योंकि तू ही
मेरी पनाहगाह है।
5मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ। ऐ रब,
ऐ वफ़ादार ख़ुदा, तूने फ़िद्या देकर मुझे छुड़ाया है!

6मैं उनसे नफ़रत रखता हूँ जो बेकार बुतों से
लिपटे रहते हैं। मैं तो रब पर भरोसा रखता हूँ।

7मैं बाग़ बाग़ हूँगा और तेरी शफ़क़त की ख़ुशी
मनाऊँगा, क्योंकि तूने मेरी मुसीबत देखकर मेरी
जान की परेशानी का ख़याल किया है।
8तूने मुझे दुश्मन के हवाले नहीं किया बल्कि
मेरे पाँवों को खुले मैदान में क़ायम कर दिया है।

9ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि मैं
मुसीबत में हूँ। ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई
हैं, मेरी जान और जिस्म गल रहे हैं।
10मेरी ज़िंदगी दुख की चक्की में पिस रही है,
मेरे साल आहें भरते भरते ज़ाया हो रहे हैं। मेरे
क़ुसूर की वजह से मेरी ताक़त जवाब दे गई, मेरी
हड्डियाँ गलने-सड़ने लगी हैं।
11मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना
बन गया हूँ बल्कि मेरे हमसाये भी मुझे लान-तान
करते, मेरे जाननेवाले मुझसे दहशत खाते हैं। गली
में जो भी मुझे देखे मुझसे भाग जाता है।
12मैं मुरदों की मानिंद उनकी याददाश्त से मिट
गया हूँ, मुझे ठीकरे की तरह फेंक दिया गया है।
13बहुतों की अफ़वाहें मुझ तक पहुँच गई हैं,
चारों तरफ़ से हौलनाक ख़बरें मिल रही हैं। वह
मिलकर मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे, मुझे क़त्ल
करने के मनसूबे बाँध रहे हैं।

14लेकिन मैं ऐ रब, तुझ पर भरोसा रखता हूँ।
मैं कहता हूँ, “तू मेरा ख़ुदा है!”
15मेरी तक़दीर[a] तेरे हाथ में है। मुझे मेरे दुश्मनों
के हाथ से बचा, उनसे जो मेरे पीछे पड़ गए हैं।
16अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका,
अपनी मेहरबानी से मुझे नजात दे।
17ऐ रब, मुझे शरमिंदा न होने दे, क्योंकि मैंने
तुझे पुकारा है। मेरे बजाए बेदीनों के मुँह काले हो
जाएँ, वह पाताल में उतरकर चुप हो जाएँ।
18उनके फ़रेबदेह होंट बंद हो जाएँ, क्योंकि वह
तकब्बुर और हिक़ारत से रास्तबाज़ के ख़िलाफ़
कुफ़र बकते हैं।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : मेरे औक़ात।

19तेरी भलाई कितनी अज़ीम है! तू उसे उनके
लिए तैयार रखता है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उसे
उन्हें दिखाता है जो इनसानों के सामने से तुझमें
पनाह लेते हैं।
20तू उन्हें अपने चेहरे की आड़ में लोगों
के हमलों से छुपा लेता, उन्हें ख़ैमे में लाकर
इलज़ामतराश ज़बानों से महफ़ूज़ रखता है।
21रब की तमजीद हो, क्योंकि जब शहर का
मुहासरा हो रहा था तो उसने मोजिज़ाना तौर पर
मुझ पर मेहरबानी की।
22उस वक़्त मैं घबराकर बोला, "हाय, मैं तेरे
हुज़ूर से मुंक़ते हो गया हूँ!" लेकिन जब मैंने
चीख़ते-चिल्लाते हुए तुझसे मदद माँगी तो तूने
मेरी इल्तिजा सुन ली।

23ऐ रब के तमाम ईमानदारो, उससे मुहब्बत
रखो! रब वफ़ादारों को महफ़ूज़ रखता, लेकिन
मग़रूरों को उनके रवय्ये का पूरा अज्र देगा।
24चुनाँचे मज़बूत और दिलेर हो, तुम सब जो
रब के इंतज़ार में हो।

मुआफ़ी की बरकत (तौबा का दूसरा ज़बूर)

32 दाऊद का ज़बूर। हिकमत का गीत।
मुबारक है वह जिसके जरायम
मुआफ़ किए गए, जिसके गुनाह ढाँपे गए हैं।
2मुबारक है वह जिसका गुनाह रब हिसाब में
नहीं लाएगा और जिसकी रूह में फ़रेब नहीं है।

3जब मैं चुप रहा तो दिन-भर आहें भरने से मेरी
हड्डियाँ गलने लगीं।
4क्योंकि दिन-रात मैं तेरे हाथ के बोझ तले
पिसता रहा, मेरी ताक़त गोया मौसमे-गरमा की
झुलसती तपिश में जाती रही। (सिलाह)
5तब मैंने तेरे सामने अपना गुनाह तसलीम
किया, मैं अपना गुनाह छुपाने से बाज़ आया।
मैं बोला, "मैं रब के सामने अपने जरायम का
इक़रार करूँगा।" तब तूने मेरे गुनाह को मुआफ़
कर दिया। (सिलाह)
6इसलिए तमाम ईमानदार उस वक़्त तुझसे
दुआ करें जब तू मिल सकता है। यक़ीनन जब
बड़ा सैलाब आए तो उन तक नहीं पहुँचेगा।

7तू मेरी छुपने की जगह है, तू मुझे परेशानी से
महफ़ूज़ रखता, मुझे नजात के नग़मों से घेर लेता
है। (सिलाह)
8"मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह दिखाऊँगा
जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे मशवरा देकर तेरी
देख-भाल करूँगा।
9नासमझ घोड़े या ख़च्चर की मानिंद न हो,
जिन पर क़ाबू पाने के लिए लगाम और दहाने की
ज़रूरत है, वरना वह तेरे पास नहीं आएँगे।"

10बेदीन की मुतअद्दिद परेशानियाँ होती हैं,
लेकिन जो रब पर भरोसा रखे उसे वह अपनी
शफ़क़त से घेरे रखता है।
11ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी में जशन
मनाओ! ऐ तमाम दियानतदारो, शादमानी के नारे
लगाओ!

अल्लाह की हुकूमत और मदद की तारीफ़

33 ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी मनाओ!
क्योंकि मुनासिब है कि सीधी राह पर
चलनेवाले उस की सताइश करें।
2सरोद बजाकर रब की हम्दो-सना करो। उस
की तमजीद में दस तारोंवाला साज़ बजाओ।
3उस की तमजीद में नया गीत गाओ, महारत
से साज़ बजाकर ख़ुशी के नारे लगाओ।
4क्योंकि रब का कलाम सच्चा है, और वह हर
काम वफ़ादारी से करता है।
5उसे रास्तबाज़ी और इनसाफ़ प्यारे हैं, दुनिया
रब की शफ़क़त से भरी हुई है।
6रब के कहने पर आसमान ख़लक़ हुआ, उसके
मुँह के दम से सितारों का पूरा लशकर वुजूद में
आया।

7वह समुंदर के पानी का बड़ा ढेर जमा करता, पानी की गहराइयों को गोदामों में महफ़ूज़ रखता है।

8कुल दुनिया रब का ख़ौफ़ माने, ज़मीन के तमाम बाशिंदे उससे दहशत खाएँ।

9क्योंकि उसने फ़रमाया तो फ़ौरन वुजूद में आया, उसने हुक्म दिया तो उसी वक़्त क़ायम हुआ।

10रब अक़वाम का मनसूबा नाकाम होने देता, वह उम्मतों के इरादों को शिकस्त देता है।

11लेकिन रब का मनसूबा हमेशा तक कामयाब रहता, उसके दिल के इरादे पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहते हैं।

12मुबारक है वह क़ौम जिसका ख़ुदा रब है, वह क़ौम जिसे उसने चुनकर अपनी मीरास बना लिया है।

13रब आसमान से नज़र डालकर तमाम इनसानों का मुलाहज़ा करता है।

14अपने तख़्त से वह ज़मीन के तमाम बाशिंदों का मुआयना करता है।

15जिसने उन सबके दिलों को तश्कील दिया वह उनके तमाम कामों पर ध्यान देता है।

16बादशाह की बड़ी फ़ौज उसे नहीं छुड़ाती, और सूरमे की बड़ी ताक़त उसे नहीं बचाती।

17घोड़ा भी मदद नहीं कर सकता। जो उस पर उम्मीद रखे वह धोका खाएगा। उस की बड़ी ताक़त छुटकारा नहीं देती।

18यक़ीनन रब की आँख उन पर लगी रहती है जो उसका ख़ौफ़ मानते और उस की मेहरबानी के इंतज़ार में रहते हैं,

19कि वह उनकी जान मौत से बचाए और काल में महफ़ूज़ रखे।

20हमारी जान रब के इंतज़ार में है। वही हमारा सहारा, हमारी ढाल है।

21हमारा दिल उसमें ख़ुश है, क्योंकि हम उसके मुक़द्दस नाम पर भरोसा रखते हैं।

22ऐ रब, तेरी मेहरबानी हम पर रहे, क्योंकि हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं।

अल्लाह की हिफ़ाज़त

34 दाऊद का यह ज़बूर उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब उसने फ़िलिस्ती बादशाह अबीमलिक के सामने पागल बनने का रूप भर लिया। यह देखकर बादशाह ने उसे भगा दिया। चले जाने के बाद दाऊद ने यह गीत गाया।

हर वक़्त मैं रब की तमजीद करूँगा, उस की हम्दो-सना हमेशा ही मेरे होंटों पर रहेगी।

2मेरी जान रब पर फ़ख़र करेगी। मुसीबतज़दा यह सुनकर ख़ुश हो जाएँ।

3आओ, मेरे साथ रब की ताज़ीम करो। आओ, हम मिलकर उसका नाम सरबुलंद करें।

4मैंने रब को तलाश किया तो उसने मेरी सुनी। जिन चीज़ों से मैं दहशत खा रहा था उन सबसे उसने मुझे रिहाई दी।

5जिनकी आँखें उस पर लगी रहें वह ख़ुशी से चमकेंगे, और उनके मुँह शरमिंदा नहीं होंगे।

6इस नाचार ने पुकारा तो रब ने उस की सुनी, उसने उसे उस की तमाम मुसीबतों से नजात दी।

7जो रब का ख़ौफ़ मानें उनके इर्दगिर्द उसका फ़रिश्ता ख़ैमाज़न होकर उनको बचाए रखता है।

8रब की भलाई का तजरबा करो। मुबारक है वह जो उसमें पनाह ले।

9ऐ रब के मुक़द्दसीन, उसका ख़ौफ़ मानो, क्योंकि जो उसका ख़ौफ़ मानें उन्हें कमी नहीं।

10जवान शेरबबर कभी ज़रूरतमंद और भूके होते हैं, लेकिन रब के तालिबों को किसी भी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होगी।

11ऐ बच्चो, आओ, मेरी बातें सुनो! मैं तुम्हें रब के ख़ौफ़ की तालीम दूँगा।

12कौन मज़े से ज़िंदगी गुज़ारना और अच्छे दिन
देखना चाहता है?
13वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से
रोके और अपने होंटों को झूट बोलने से।
14वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे,
सुलह-सलामती का तालिब होकर उसके पीछे
लगा रहे।
15रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं,
और उसके कान उनकी इल्तिजाओं की तरफ़
मायल हैं।
16लेकिन रब का चेहरा उनके ख़िलाफ़ है जो
ग़लत काम करते हैं। उनका ज़मीन पर नामो-
निशान तक नहीं रहेगा।
17जब रास्तबाज़ फ़रियाद करें तो रब उनकी
सुनता, वह उन्हें उनकी तमाम मुसीबत से
छुटकारा देता है।
18रब शिकस्तादिलों के क़रीब होता है, वह उन्हें
रिहाई देता है जिनकी रूह को ख़ाक में कुचला गया
हो।
19रास्तबाज़ की मुतअद्दिद तकालीफ़ हो-
ती हैं, लेकिन रब उसे उन सबसे बचा लेता है।
20वह उस की तमाम हड्डियों की हिफ़ाज़त
करता है, एक भी नहीं तोड़ी जाएगी।
21बुराई बेदीन को मार डालेगी, और जो
रास्तबाज़ से नफ़रत करे उसे मुनासिब अज्र
मिलेगा।
22लेकिन रब अपने ख़ादिमों की जान का फ़िद्या
देगा। जो भी उसमें पनाह ले उसे सज़ा नहीं
मिलेगी।

शरीरों के हमलों से रिहाई के लिए दुआ

35 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, उनसे झगड़ जो मेरे साथ
झगड़ते हैं, उनसे लड़ जो मेरे साथ लड़ते हैं।
2लंबी और छोटी ढाल पकड़ ले और उठ-
कर मेरी मदद करने आ।
3नेज़े और बरछी को निकालकर उन्हें रोक दे
जो मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं! मेरी जान से फ़रमा,
“मैं तेरी नजात हूँ!”
4जो मेरी जान के लिए कोशाँ हैं उनका मुँह
काला हो जाए, वह रुसवा हो जाएँ। जो मुझे
मुसीबत में डालने के मनसूबे बाँध रहे हैं वह पीछे
हटकर शरमिंदा हों।
5वह हवा में भूसे की तरह उड़ जाएँ जब रब का
फ़रिश्ता उन्हें भगा दे।
6उनका रास्ता तारीक और फिसलना हो जब
रब का फ़रिश्ता उनके पीछे पड़ जाए।
7क्योंकि उन्होंने बेसबब और चुपके से मेरे रास्ते
में जाल बिछाया, बिलावजह मुझे पकड़ने का गढ़ा
खोदा है।
8इसलिए तबाही अचानक ही उन पर आ पड़े,
पहले उन्हें पता ही न चले। जो जाल उन्होंने चुपके
से बिछाया उसमें वह ख़ुद उलझ जाएँ, जिस गढ़े
को उन्होंने खोदा उसमें वह ख़ुद गिरकर तबाह हो
जाएँ।

9तब मेरी जान रब की ख़ुशी मनाएगी और उस
की नजात के बाइस शादमान होगी।
10मेरे तमाम आज़ा कह उठेंगे, “ऐ रब, कौन
तेरी मानिंद है? कोई भी नहीं! क्योंकि तू ही
मुसीबतज़दा को ज़बरदस्त आदमी से छुटकारा
देता, तू ही नाचार और ग़रीब को लूटनेवाले के
हाथ से बचा लेता है।”

11ज़ालिम गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हो रहे
हैं। वह ऐसी बातों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर रहे
हैं जिनसे मैं वाक़िफ़ ही नहीं।
12वह मेरी नेकी के एवज़ मुझे नुक़सान पहुँचा
रहे हैं। अब मेरी जान तने-तनहा है।
13जब वह बीमार हुए तो मैंने टाट ओढ़कर और
रोज़ा रखकर अपनी जान को दुख दिया। काश
मेरी दुआ मेरी गोद में वापस आए!

14मैंने यों मातम किया जैसे मेरा कोई दोस्त या
भाई हो। मैं मातमी लिबास पहनकर यों ख़ाक में
झुक गया जैसे अपनी माँ का जनाज़ा हो।

15लेकिन जब मैं ख़ुद ठोकर खाने लगा तो वह
ख़ुश होकर मेरे ख़िलाफ़ जमा हुए। वह मुझ पर
हमला करने के लिए इकट्ठे हुए, और मुझे मालूम
ही नहीं था। वह मुझे फाड़ते रहे और बाज़ न आए।
16मुसलसल कुफ़र बक बककर वह मेरा
मज़ाक़ उड़ाते, मेरे ख़िलाफ़ दाँत पीसते थे।
17ऐ रब, तू कब तक ख़ामोशी से देखता रहेगा?
मेरी जान को उनकी तबाहकुन हरकतों से बचा,
मेरी ज़िंदगी को जवान शेरों से छुटकारा दे।
18तब मैं बड़ी जमात में तेरी सताइश और बड़े
हुजूम में तेरी तारीफ़ करूँगा।
19उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न दे जो बेसबब
मेरे दुश्मन हैं। उन्हें मुझ पर नाक-भौं चढ़ाने न दे
जो बिलावजह मुझसे कीना रखते हैं।
20क्योंकि वह ख़ैर और सलामती की बातें
नहीं करते बल्कि उनके ख़िलाफ़ फ़रेबदेह मनसूबे
बाँधते हैं जो अमन और सुकून से मुल्क में रहते
हैं।
21वह मुँह फाड़कर कहते हैं, "लो जी, हमने
अपनी आँखों से उस की हरकतें देखी हैं!"
22ऐ रब, तुझे सब कुछ नज़र आया है। ख़ामोश
न रह! ऐ रब, मुझसे दूर न हो।
23ऐ रब मेरे ख़ुदा, जाग उठ! मेरे दिफ़ा में
उठकर उनसे लड़!
24ऐ रब मेरे ख़ुदा, अपनी रास्ती के मुताबिक़
मेरा इनसाफ़ कर। उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न
दे।
25वह दिल में न सोचें, "लो जी, हमारा इरादा
पूरा हुआ है!" वह न बोलें, "हमने उसे हड़प कर
लिया है।"
26जो मेरा नुक़सान देखकर ख़ुश हुए उन
सबका मुँह काला हो जाए, वह शरमिंदा हो जाएँ।
जो मुझे दबाकर अपने आप पर फ़ख़र करते हैं
वह शरमिंदगी और रुसवाई से मुलब्बस हो जाएँ।
27लेकिन जो मेरे इनसाफ़ के आरज़ूमंद हैं वह
ख़ुश हों और शादियाना बजाएँ। वह कहें, "रब
की बड़ी तारीफ़ हो, जो अपने ख़ादिम की ख़ैरियत
चाहता है।"
28तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती बयान करेगी, वह
सारा दिन तेरी तमजीद करती रहेगी।

अल्लाह की मेहरबानी की तारीफ़

36 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
बदकारी बेदीन के दिल ही में उससे बात करती
है। उस की आँखों के सामने अल्लाह का ख़ौफ़
नहीं होता,
2क्योंकि उस की नज़र में यह बात फ़ख़र का
बाइस है कि उसे क़ुसूरवार पाया गया, कि वह
नफ़रत करता है।
3उसके मुँह से शरारत और फ़रेब निकलता है,
वह समझदार होने और नेक काम करने से बाज़
आया है।
4अपने बिस्तर पर भी वह शरारत के मनसूबे
बाँधता है। वह मज़बूती से बुरी राह पर खड़ा रहता
और बुराई को मुस्तरद नहीं करता।

5ऐ रब, तेरी शफ़क़त आसमान तक, तेरी
वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
6तेरी रास्ती बुलंदतरीन पहाड़ों की मानिंद, तेरा
इनसाफ़ समुंदर की गहराइयों जैसा है। ऐ रब, तू
इनसानो-हैवान की मदद करता है।
7ऐ अल्लाह, तेरी शफ़क़त कितनी बेश-
क़ीमत है! आदमज़ाद तेरे परों के साये में पनाह
लेते हैं।
8वह तेरे घर के उम्दा खाने से तरो-ताज़ा हो
जाते हैं, और तू उन्हें अपनी ख़ुशियों की नदी में
से पिलाता है।
9क्योंकि ज़िंदगी का सरचश्मा तेरे ही पास है,
और हम तेरे नूर में रहकर नूर का मुशाहदा करते
हैं।

10अपनी शफ़क़त उन पर फैलाए रख जो तुझे जानते हैं, अपनी रास्ती उन पर जो दिल से दियानतदार हैं।

11मग़रूरों का पाँव मुझ तक न पहुँचे, बेदीनों का हाथ मुझे बेघर न बनाए।

12देखो, बदकार गिर गए हैं! उन्हें ज़मीन पर पटख़ दिया गया है, और वह दुबारा कभी नहीं उठेंगे।

बेदीनों की बज़ाहिर ख़ुशहाली

37 दाऊद का ज़बूर।
शरीरों के बाइस बेचैन न हो जा, बदकारों पर रश्क न कर।

2क्योंकि वह घास की तरह जल्द ही मुरझा जाएंगे, हरियाली की तरह जल्द ही सूख जाएंगे।

3रब पर भरोसा रखकर भलाई कर, मुल्क में रहकर वफ़ादारी की परवरिश कर।

4रब से लुत्फ़अंदोज़ हो तो जो तेरा दिल चाहे वह तुझे देगा।

5अपनी राह रब के सुपुर्द कर। उस पर भरोसा रख तो वह तुझे कामयाबी बख़्शेगा।

6तब वह तेरी रास्तबाज़ी सूरज की तरह तुलू होने देगा और तेरा इनसाफ़ दोपहर की रौशनी की तरह चमकने देगा।

7रब के हुज़ूर चुप होकर सब्र से उसका इंतज़ार कर। बेक़रार न हो अगर साज़िशें करनेवाला कामयाब हो।

8ख़फ़ा होने से बाज़ आ, ग़ुस्से को छोड़ दे। रंजीदा न हो, वरना बुरा ही नतीजा निकलेगा।

9क्योंकि शरीर मिट जाएंगे जबकि रब से उम्मीद रखनेवाले मुल्क को मीरास में पाएँगे।

10मज़ीद थोड़ी देर सब्र कर तो बेदीन का नामो-निशान मिट जाएगा। तू उसका खोज लगाएगा, लेकिन कहीं नहीं पाएगा।

11लेकिन हलीम मुल्क को मीरास में पाकर बड़े अमन और सुकून से लुत्फ़अंदोज़ होंगे।

12बेशक बेदीन दाँत पीस पीसकर रास्तबाज़ के ख़िलाफ़ साज़िशें करता रहे।

13लेकिन रब उस पर हँसता है, क्योंकि वह जानता है कि उसका अंजाम क़रीब ही है।

14बेदीनों ने तलवार को खींचा और कमान को तान लिया है ताकि नाचारों और ज़रूरतमंदों को गिरा दें और सीधी राह पर चलनेवालों को क़त्ल करें।

15लेकिन उनकी तलवार उनके अपने दिल में घोंपी जाएगी, उनकी कमान टूट जाएगी।

16रास्तबाज़ को जो थोड़ा-बहुत हासिल है वह बहुत बेदीनों की दौलत से बेहतर है।

17क्योंकि बेदीनों का बाज़ू टूट जाएगा जबकि रब रास्तबाज़ों को सँभालता है।

18रब बेइलज़ामों के दिन जानता है, और उनकी मौरूसी मिलकियत हमेशा के लिए क़ायम रहेगी।

19मुसीबत के वक़्त वह शर्मसार नहीं होंगे, काल भी पड़े तो सेर होंगे।

20लेकिन बेदीन हलाक हो जाएंगे, और रब के दुश्मन चरागाहों की शान की तरह नेस्त हो जाएंगे, धुएँ की तरह ग़ायब हो जाएंगे।

21बेदीन क़र्ज़ लेता और उसे नहीं उतारता, लेकिन रास्तबाज़ मेहरबान है और फ़ैयाज़ी से देता है।

22क्योंकि जिन्हें रब बरकत दे वह मुल्क को मीरास में पाएँगे, लेकिन जिन पर वह लानत भेजे उनका नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

23अगर किसी के पाँव जम जाएँ तो यह रब की तरफ़ से है। ऐसे शख़्स की राह को वह पसंद करता है।

24अगर गिर भी जाए तो पड़ा नहीं रहेगा, क्योंकि रब उसके हाथ का सहारा बना रहेगा।

25मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ। लेकिन मैंने कभी नहीं देखा कि रास्तबाज़ को तर्क किया गया या उसके बच्चों को भीक माँगनी पड़ी।

26वह हमेशा मेहरबान और क़र्ज़ देने के लिए
तैयार है। उस की औलाद बरकत का बाइस होगी।

27बुराई से बाज़ आकर भलाई कर। तब तू
हमेशा के लिए मुल्क में आबाद रहेगा,
28क्योंकि रब को इनसाफ़ प्यारा है, और
वह अपने ईमानदारों को कभी तर्क नहीं करेगा।
वह अबद तक महफ़ूज़ रहेंगे जबकि बेदीनों की
औलाद का नामो-निशान तक नहीं रहेगा।
29रास्तबाज़ मुल्क को मीरास में पाकर उसमें
हमेशा बसेंगे।
30रास्तबाज़ का मुँह हिकमत बयान करता और
उस की ज़बान से इनसाफ़ निकलता है।
31अल्लाह की शरीअत उसके दिल में है, और
उसके क़दम कभी नहीं डगमगाएँगे।
32बेदीन रास्तबाज़ की ताक में बैठकर उसे मार
डालने का मौक़ा ढूँडता है।
33लेकिन रब रास्तबाज़ को उसके हाथ में नहीं
छोड़ेगा, वह उसे अदालत में मुजरिम नहीं ठहरने
देगा।
34रब के इंतज़ार में रह और उस की राह पर
चलता रह। तब वह तुझे सरफ़राज़ करके मुल्क
का वारिस बनाएगा, और तू बेदीनों की हलाकत
देखेगा।

35मैंने एक बेदीन और ज़ालिम आदमी को
देखा जो फलते-फूलते देवदार के दरख़्त की तरह
आसमान से बातें करने लगा।
36लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मैं दुबारा वहाँ से
गुज़रा तो वह था नहीं। मैंने उसका खोज लगाया,
लेकिन कहीं न मिला।
37बेइलज़ाम पर ध्यान दे और दियानतदार पर
ग़ौर कर, क्योंकि आख़िरकार उसे अमन और
सुकून हासिल होगा।
38लेकिन मुजरिम मिलकर तबाह हो जाएंगे,
और बेदीनों को आख़िरकार रूए-ज़मीन पर से
मिटाया जाएगा।
39रास्तबाज़ों की नजात रब की तरफ़ से है,
मुसीबत के वक़्त वही उनका क़िला है।
40रब ही उनकी मदद करके उन्हें छुटकारा देगा,
वही उन्हें बेदीनों से बचाकर नजात देगा। क्योंकि
उन्होंने उसमें पनाह ली है।

सज़ा से बचने की इल्तिजा
(तौबा का तीसरा ज़बूर)

38 दाऊद का ज़बूर। याददाश्त के लिए।
ऐ रब, अपने ग़ज़ब में मुझे सज़ा न दे,
क़हर में मुझे तंबीह न कर!
2क्योंकि तेरे तीर मेरे जिस्म में लग गए हैं, तेरा
हाथ मुझ पर भारी है।
3तेरी लानत के बाइस मेरा पूरा जिस्म बीमार
है, मेरे गुनाह के बाइस मेरी तमाम हड्डियाँ गलने
लगी हैं।
4क्योंकि मैं अपने गुनाहों के सैलाब में डूब गया
हूँ, वह नाक़ाबिले-बरदाश्त बोझ बन गए हैं।
5मेरी हमाक़त के बाइस मेरे ज़ख़मों से बदबू
आने लगी, वह गलने लगे हैं।
6मैं कुबड़ा बनकर ख़ाक में दब गया हूँ, पूरा
दिन मातमी लिबास पहने फिरता हूँ।
7मेरी कमर में शदीद सोज़िश है, पूरा जिस्म
बीमार है।
8मैं निढाल और पाश पाश हो गया हूँ। दिल के
अज़ाब के बाइस मैं चीख़ता-चिल्लाता हूँ।

9ऐ रब, मेरी तमाम आरज़ू तेरे सामने है, मेरी
आहें तुझसे पोशीदा नहीं रहतीं।
10मेरा दिल ज़ोर से धड़कता, मेरी ताक़त
जवाब दे गई बल्कि मेरी आँखों की रौशनी भी
जाती रही है।
11मेरे दोस्त और साथी मेरी मुसीबत देखकर
मुझसे गुरेज़ करते, मेरे क़रीब के रिश्तेदार दूर खड़े
रहते हैं।
12मेरे जानी दुश्मन फंदे बिछा रहे हैं, जो मुझे
नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं वह धमकियाँ दे रहे
और सारा सारा दिन फ़रेबदेह मनसूबे बाँध रहे हैं।

13और मैं? मैं तो गोया बहरा हूँ, मैं नहीं सुनता। मैं गूँगे की मानिंद हूँ जो अपना मुँह नहीं खोलता।
14मैं ऐसा शख़्स बन गया हूँ जो न सुनता, न जवाब में एतराज़ करता है।

15क्योंकि ऐ रब, मैं तेरे इंतज़ार में हूँ। ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू ही मेरी सुनेगा।
16मैं बोला, "ऐसा न हो कि वह मेरा नुक़सान देखकर बग़लें बजाएँ, वह मेरे पाँवों के डगमगाने पर मुझे दबाकर अपने आप पर फ़ख़र करें।"
17क्योंकि मैं लड़खड़ाने को हूँ, मेरी अज़ियत मुतवातिर मेरे सामने रहती है।
18चुनाँचे मैं अपना क़ुसूर तसलीम करता हूँ, मैं अपने गुनाह के बाइस ग़मगीन हूँ।
19मेरे दुश्मन ज़िंदा और ताक़तवर हैं, और जो बिलावजह मुझसे नफ़रत करते हैं वह बहुत हैं।
20वह नेकी के बदले बदी करते हैं। वह इसलिए मेरे दुश्मन हैं कि मैं भलाई के पीछे लगा रहता हूँ।

21ऐ रब, मुझे तर्क न कर! ऐ अल्लाह, मुझसे दूर न रह!
22ऐ रब मेरी नजात, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

इनसान के फ़ानी होने के पेशे-नज़र इल्तिजा

39 दाऊद का ज़बूर। यदूतून के लिए। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मैं बोला, "मैं अपनी राहों पर ध्यान दूँगा ताकि अपनी ज़बान से गुनाह न करूँ। जब तक बेदीन मेरे सामने रहे उस वक़्त तक अपने मुँह को लगाम दिए रहूँगा।"
2मैं चुप-चाप हो गया और अच्छी चीज़ों से दूर रहकर ख़ामोश रहा। तब मेरी अज़ियत बढ़ गई।
3मेरा दिल परेशानी से तपने लगा, मेरे कराहते कराहते मेरे अंदर बेचैनी की आग-सी भड़क उठी। तब बात ज़बान पर आ गई,
4"ऐ रब, मुझे मेरा अंजाम और मेरी उम्र की हद दिखा ताकि मैं जान लूँ कि कितना फ़ानी हूँ।
5देख, मेरी ज़िंदगी का दौरानिया तेरे सामने लमहा-भर का है। मेरी पूरी उम्र तेरे नज़दीक कुछ भी नहीं है। हर इनसान दम-भर का ही है, ख़ाह वह कितनी ही मज़बूती से खड़ा क्यों न हो। (सिलाह)
6जब वह इधर-उधर घूमे फिरे तो साया ही है। उसका शोर-शराबा बातिल है, और गो वह दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे तो भी उसे मालूम नहीं कि बाद में किसके क़ब्ज़े में आएगी।"

7चुनाँचे ऐ रब, मैं किसके इंतज़ार में रहूँ? तू ही मेरी वाहिद उम्मीद है!
8मेरे तमाम गुनाहों से मुझे छुटकारा दे। अहमक़ को मेरी रुसवाई करने न दे।
9मैं ख़ामोश हो गया हूँ और कभी अपना मुँह नहीं खोलता, क्योंकि यह सब कुछ तेरे ही हाथ से हुआ है।
10अपना अज़ाब मुझसे दूर कर! तेरे हाथ की ज़रबों से मैं हलाक हो रहा हूँ।
11जब तू इनसान को उसके क़ुसूर की मुनासिब सज़ा देकर उसको तंबीह करता है तो उस की ख़ूबसूरती कीड़ा लगे कपड़े की तरह जाती रहती है। हर इनसान दम-भर का ही है। (सिलाह)

12ऐ रब, मेरी दुआ सुन और मदद के लिए मेरी आहों पर तवज्जुह दे। मेरे आँसुओं को देखकर ख़ामोश न रह। क्योंकि मैं तेरे हुज़ूर रहनेवाला परदेसी, अपने तमाम बापदादा की तरह तेरे हुज़ूर बसनेवाला ग़ैरशहरी हूँ।
13मुझसे बाज़ आ ताकि मैं कूच करके नेस्त हो जाने से पहले एक बार फिर हश्शाश-बश्शाश हो जाऊँ।

शुक्र और दरख़ास्त

40 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मैं सब्र से रब के इंतज़ार में रहा तो वह मेरी तरफ़ मायल हुआ और मदद के लिए मेरी चीख़ों पर तवज्जुह दी।

2वह मुझे तबाही के गढ़े से खींच लाया, दलदल
और कीचड़ से निकाल लाया। उसने मेरे पाँवों को
चट्टान पर रख दिया, और अब मैं मज़बूती से चल-
फिर सकता हूँ।
3उसने मेरे मुँह में नया गीत डाल दिया, हमारे
ख़ुदा की हम्दो-सना का गीत उभरने दिया। बहुत-
से लोग यह देखेंगे और ख़ौफ़ खाकर रब पर
भरोसा रखेंगे।
4मुबारक है वह जो रब पर पूरा भरोसा रखता
है, जो तंग करनेवालों और फ़रेब में उलझे हुओं
की तरफ़ रुख़ नहीं करता।
5ऐ रब मेरे ख़ुदा, बार बार तूने हमें अपने
मोजिज़े दिखाए, जगह बजगह अपने मनसूबे
वुजूद में लाकर हमारी मदद की। तुझ जैसा कोई
नहीं है। तेरे अज़ीम काम बेशुमार हैं, मैं उनकी पूरी
फ़हरिस्त बता भी नहीं सकता।

6तू क़ुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था,
लेकिन तूने मेरे कानों को खोल दिया। तूने भस्म
होनेवाली क़ुरबानियों और गुनाह की क़ुरबानियों
का तक़ाज़ा न किया।
7फिर मैं बोल उठा, "मैं हाज़िर हूँ जिस तरह
मेरे बारे में कलामे-मुक़द्दस[a] में लिखा है।
8ऐ मेरे ख़ुदा, मैं ख़ुशी से तेरी मरज़ी पूरी करता
हूँ, तेरी शरीअत मेरे दिल में टिक गई है।"
9मैंने बड़े इजतिमा में रास्ती की ख़ुशख़बरी
सुनाई है। ऐ रब, यक़ीनन तू जानता है कि मैंने
अपने होंटों को बंद न रखा।
10मैंने तेरी रास्ती अपने दिल में छुपाए न रखी
बल्कि तेरी वफ़ादारी और नजात बयान की। मैंने
बड़े इजतिमा में तेरी शफ़क़त और सदाक़त की
एक बात भी पोशीदा न रखी।

11ऐ रब, तू मुझे अपने रहम से महरूम नहीं
रखेगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी मुसलसल
मेरी निगहबानी करेंगी।

12क्योंकि बेशुमार तकलीफ़ों ने मुझे घेर रखा
है, मेरे गुनाहों ने आख़िरकार मुझे आ पकड़ा है।
अब मैं नज़र भी नहीं उठा सकता। वह मेरे सर के
बालों से ज़्यादा हैं, इसलिए मैं हिम्मत हार गया
हूँ।

13ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा! ऐ रब,
मेरी मदद करने में जल्दी कर!
14मेरे जानी दुश्मन सब शरमिंदा हो जाएँ,
उनकी सख़्त रुसवाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत
देखने से लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उनका
मुँह काला हो जाए।
15जो मेरी मुसीबत देखकर क़हक़हा लगाते हैं
वह शर्म के मारे तबाह हो जाएँ।

16लेकिन तेरे तालिब शादमान होकर तेरी ख़ुशी
मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें,
"रब अज़ीम है!"
17मैं नाचार और ज़रूरतमंद हूँ, लेकिन रब मेरा
ख़याल रखता है। तू ही मेरा सहारा और मेरा
नजातदहिंदा है। ऐ मेरे ख़ुदा, देर न कर!

मरीज़ की दुआ

41 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
मुबारक है वह जो पस्तहाल का ख़याल रखता
है। मुसीबत के दिन रब उसे छुटकारा देगा।
2रब उस की हिफ़ाज़त करके उस की ज़िंदगी
को महफ़ूज़ रखेगा, वह मुल्क में उसे बरकत
देकर उसे उसके दुश्मनों के लालच के हवाले नहीं
करेगा।
3बीमारी के वक़्त रब उसको बिस्तर पर
सँभालेगा। तू उस की सेहत पूरी तरह बहाल
करेगा।

4मैं बोला, "ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मुझे
शफ़ा दे, क्योंकि मैंने तेरा ही गुनाह किया है।"

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : किताब के तूमार में।

5मेरे दुश्मन मेरे बारे में ग़लत बातें करके कहते हैं, “वह कब मरेगा? उसका नामो-निशान कब मिटेगा?”

6जब कभी कोई मुझसे मिलने आए तो उसका दिल झूट बोलता है। पसे-परदा वह ऐसी नुक़सानदेह मालूमात जमा करता है जिन्हें बाद में बाहर जाकर गलियों में फैला सके।

7मुझसे नफ़रत करनेवाले सब आपस में मेरे ख़िलाफ़ फुसफुसाते हैं। वह मेरे ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधकर कहते हैं,

8“उसे मोहलक मरज़ लग गया है। वह कभी अपने बिस्तर पर से दुबारा नहीं उठेगा।”

9मेरा दोस्त भी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है। जिस पर मैं एतमाद करता था और जो मेरी रोटी खाता था, उसने मुझ पर लात उठाई है।

10लेकिन तू ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर! मुझे दुबारा उठा खड़ा कर ताकि उन्हें उनके सुलूक का बदला दे सकूँ।

11इससे मैं जानता हूँ कि तू मुझसे ख़ुश है कि मेरा दुश्मन मुझ पर फ़तह के नारे नहीं लगाता।

12तूने मुझे मेरी दियानतदारी के बाइस क़ायम रखा और हमेशा के लिए अपने हुज़ूर खड़ा किया है।

13रब की हम्द हो जो इसराईल का ख़ुदा है। अज़ल से अबद तक उस की तमजीद हो। आमीन, फिर आमीन।

दूसरी किताब 42-72

परदेस में अल्लाह का आरज़ूमंद

42 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिकमत का गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, जिस तरह हिरनी नदियों के ताज़ा पानी के लिए तड़पती है उसी तरह मेरी जान तेरे लिए तड़पती है।

2मेरी जान ख़ुदा, हाँ ज़िंदा ख़ुदा की प्यासी है। मैं कब जाकर अल्लाह का चेहरा देखूँगा?

3दिन-रात मेरे आँसू मेरी ग़िज़ा रहे हैं। क्योंकि पूरा दिन मुझसे कहा जाता है, “तेरा ख़ुदा कहाँ है?”

4पहले हालात याद करके मैं अपने सामने अपने दिल की आहो-ज़ारी उंडेल देता हूँ।[a] कितना मज़ा आता था जब हमारा जुलूस निकलता था, जब मैं हुजूम के बीच में ख़ुशी और शुक्रगुज़ारी के नारे लगाते हुए अल्लाह की सुकूनतगाह की जानिब बढ़ता जाता था। कितना शोर मच जाता था जब हम जशन मनाते हुए घुमते-फिरते थे।

5ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

6मेरी जान ग़म के मारे पिघल रही है। इसलिए मैं तुझे यरदन के मुल्क, हरमून के पहाड़ी सिलसिले और कोहे-मिसआर से याद करता हूँ।

7जब से तेरे आबशारों की आवाज़ बुलंद हुई तो एक सैलाब दूसरे को पुकारने लगा है। तेरी तमाम मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गई हैं।

8दिन के वक़्त रब अपनी शफ़क़त भेजेगा, और रात के वक़्त उसका गीत मेरे साथ होगा, मैं अपनी हयात के ख़ुदा से दुआ करूँगा।

9मैं अल्लाह अपनी चट्टान से कहूँगा, “तू मुझे क्यों भूल गया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के बाइस क्यों मातमी लिबास पहने फिरूँ?”

10मेरे दुश्मनों की लान-तान से मेरी हड्डियाँ टूट रही हैं, क्योंकि पूरा दिन वह कहते हैं, “तेरा ख़ुदा कहाँ है?”

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अपनी जान उंडेल देता हूँ।

11ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी
से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह,
क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा
ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

43 ऐ अल्लाह, मेरा इनसाफ़ कर! मेरे
लिए ग़ैरईमानदार क़ौम से लड़, मुझे
धोकेबाज़ और शरीर आदमियों से बचा।

2क्योंकि तू मेरी पनाह का ख़ुदा है। तूने मुझे
क्यों रद्द किया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के
बाइस क्यों मातमी लिबास पहने फिरूँ?

3अपनी रौशनी और सच्चाई को भेज ताकि वह
मेरी राहनुमाई करके मुझे तेरे मुक़द्दस पहाड़ और
तेरी सुकूनतगाह के पास पहुँचाएँ।

4तब मैं अल्लाह की क़ुरबानगाह के पास
आऊँगा, उस ख़ुदा के पास जो मेरी ख़ुशी और
फ़रहत है। ऐ अल्लाह मेरे ख़ुदा, वहाँ मैं सरोद
बजाकर तेरी सताइश करूँगा।

5ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी
से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह,
क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा
ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

क्या अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया है?

44 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिकमत का
गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, जो कुछ तूने हमारे बापदादा के
ऐयाम में यानी क़दीम ज़माने में किया वह हमने
अपने कानों से उनसे सुना है।

2तूने ख़ुद अपने हाथ से दीगर क़ौमों को
निकालकर हमारे बापदादा को मुल्क में पौदे
की तरह लगा दिया। तूने ख़ुद दीगर उम्मतों को
शिकस्त देकर हमारे बापदादा को मुल्क में फलने-
फूलने दिया।

3उन्होंने अपनी ही तलवार के ज़रीए मुल्क पर
क़ब्ज़ा नहीं किया, अपने ही बाज़ू से फ़तह नहीं
पाई बल्कि तेरे दहने हाथ, तेरे बाज़ू और तेरे चेहरे
के नूर ने यह सब कुछ किया। क्योंकि वह तुझे
पसंद थे।

4तू मेरा बादशाह, मेरा ख़ुदा है। तेरे ही हुक्म पर
याक़ूब को मदद हासिल होती है।

5तेरी मदद से हम अपने दुश्मनों को ज़मीन पर
पटख़ देते, तेरा नाम लेकर अपने मुख़ालिफ़ों को
कुचल देते हैं।

6क्योंकि मैं अपनी कमान पर एतमाद नहीं
करता, और मेरी तलवार मुझे नहीं बचाएगी

7बल्कि तू ही हमें दुश्मन से बचाता, तू ही उन्हें
शरमिंदा होने देता है जो हमसे नफ़रत करते हैं।

8पूरा दिन हम अल्लाह पर फ़ख़र करते हैं,
और हम हमेशा तक तेरे नाम की तमजीद करेंगे।
(सिलाह)

9लेकिन अब तूने हमें रद्द कर दिया, हमें
शरमिंदा होने दिया है। जब हमारी फ़ौजें लड़ने के
लिए निकलती हैं तो तू उनका साथ नहीं देता।

10तूने हमें दुश्मन के सामने पसपा होने दिया,
और जो हमसे नफ़रत करते हैं उन्होंने हमें लूट
लिया है।

11तूने हमें भेड़-बकरियों की तरह क़स्साब
के हाथ में छोड़ दिया, हमें मुख़्तलिफ़ क़ौमों में
मुंतशिर कर दिया है।

12तूने अपनी क़ौम को ख़फ़ीफ़-सी रक़म के
लिए बेच डाला, उसे फ़रोख़्त करने से नफ़ा
हासिल न हुआ।

13यह तेरी तरफ़ से हुआ कि हमारे पड़ोसी हमें
रुसवा करते, गिर्दो-नवाह के लोग हमें लान-तान
करते हैं।

14हम अक़वाम में इबरतअंगेज़ मिसाल बन गए
हैं। लोग हमें देखकर तौबा तौबा कहते हैं।

15दिन-भर मेरी रुसवाई मेरी आँखों के सामने
रहती है। मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है,

16क्योंकि मुझे उनकी गालियाँ और कुफ़र
सुनना पड़ता है, दुश्मन और इंतक़ाम लेने पर तुले
हुए को बरदाश्त करना पड़ता है।

17यह सब कुछ हम पर आ गया है, हालाँकि न हम तुझे भूल गए और न तेरे अहद से बेवफ़ा हुए हैं।

18न हमारा दिल बाग़ी हो गया, न हमारे क़दम तेरी राह से भटक गए हैं।

19ताहम तूने हमें चूर चूर करके गीदड़ों के दरमियान छोड़ दिया, तूने हमें गहरी तारीकी में डूबने दिया है।

20अगर हम अपने ख़ुदा का नाम भूलकर अपने हाथ किसी और माबूद की तरफ़ उठाते

21तो क्या अल्लाह को यह बात मालूम न हो जाती? ज़रूर! वह तो दिल के राज़ों से वाक़िफ़ होता है।

22लेकिन तेरी ख़ातिर हमें दिन-भर मौत का सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होनेवाली भेड़ों के बराबर समझते हैं।

23ऐ रब, जाग उठ! तू क्यों सोया हुआ है? हमें हमेशा के लिए रद्द न कर बल्कि हमारी मदद करने के लिए खड़ा हो जा।

24तू अपना चेहरा हमसे पोशीदा क्यों रखता है, हमारी मुसीबत और हम पर होनेवाले ज़ुल्म को नज़रंदाज़ क्यों करता है?

25हमारी जान ख़ाक में दब गई, हमारा बदन मिट्टी से चिमट गया है।

26उठकर हमारी मदद कर! अपनी शफ़क़त की ख़ातिर फ़िद्या देकर हमें छुड़ा!

बादशाह की शादी

45 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिकमत और मुहब्बत का गीत। तर्ज़ : सोसन के फूल। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मेरे दिल से ख़ूबसूरत गीत छलक रहा है, मैं उसे बादशाह को पेश करूँगा। मेरी ज़बान माहिर कातिब के क़लम की मानिंद हो!

2तू आदमियों में सबसे ख़ूबसूरत है! तेरे होंट शफ़क़त से मसह किए हुए हैं, इसलिए अल्लाह ने तुझे अबदी बरकत दी है।

3ऐ सूरमे, अपनी तलवार से कमरबस्ता हो, अपनी शानो-शौकत से मुलब्बस हो जा!

4ग़लबा और कामयाबी हासिल कर। सच्चाई, इंकिसारी और रास्ती की ख़ातिर लड़ने के लिए निकल आ। तेरा दहना हाथ तुझे हैरतअंगेज़ काम दिखाए।

5तेरे तेज़ तीर बादशाह के दुश्मनों के दिलों को छेद डालें। क़ौमें तेरे पाँवों में गिर जाएँ।

6ऐ अल्लाह, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक क़ायमो-दायम रहेगा, और इनसाफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।

7तूने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बेदीनी से नफ़रत की, इसलिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे ख़ुशी के तेल से मसह करके तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ कर दिया।

8मुर, ऊद और अमलतास की बेशक़ीमत ख़ुशबू तेरे तमाम कपड़ों से फैलती है। हाथीदाँत के महलों में तारदार मौसीक़ी तेरा दिल बहलाती है।

9बादशाहों की बेटियाँ तेरे ज़ेवरात से सजी फिरती हैं। मलिका ओफ़ीर का सोना पहने हुए तेरे दहने हाथ खड़ी है।

10ऐ बेटी, सुन मेरी बात! ग़ौर कर और कान लगा। अपनी क़ौम और अपने बाप का घर भूल जा।

11बादशाह तेरे हुस्न का आरज़ूमंद है, क्योंकि वह तेरा आक़ा है। चुनाँचे झुककर उसका एहतराम कर।

12सूर की बेटी तोहफ़ा लेकर आएगी, क़ौम के अमीर तेरी नज़रे-करम हासिल करने की कोशिश करेंगे।

13बादशाह की बेटी कितनी शानदार चीज़ों से आरास्ता है। उसका लिबास सोने के धागों से बुना हुआ है।

14उसे नफ़ीस रंगदार कपड़े पहने बादशाह के
पास लाया जाता है। जो कुँवारी सहेलियाँ उसके
पीछे चलती हैं उन्हें भी तेरे सामने लाया जाता है।
15लोग शादमान होकर और ख़ुशी मनाते हुए
उन्हें वहाँ पहुँचाते हैं, और वह शाही महल में
दाख़िल होती हैं।

16ऐ बादशाह, तेरे बेटे तेरे बापदादा की जगह
खड़े हो जाएंगे, और तू उन्हें रईस बनाकर पूरी
दुनिया में ज़िम्मेदारियाँ देगा।
17पुश्त-दर-पुश्त मैं तेरे नाम की तमजीद
करूँगा, इसलिए क़ौमें हमेशा तक तेरी सताइश
करेंगी।

अल्लाह हमारी क़ुव्वत है

46 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। गीत का तर्ज़ : कुँवारियाँ।
अल्लाह हमारी पनाहगाह और क़ुव्वत है।
मुसीबत के वक़्त वह हमारा मज़बूत सहारा
साबित हुआ है।
2इसलिए हम ख़ौफ़ नहीं खाएँगे, गो ज़मीन
लरज़ उठे और पहाड़ झूमकर समुंदर की गहराइयों
में गिर जाएँ,
3गो समुंदर शोर मचाकर ठाठें मारे और पहाड़
उस की दहाड़ों से काँप उठें। (सिलाह)

4दरिया की शाख़ें अल्लाह के शहर को ख़ुश
करती हैं, उस शहर को जो अल्लाह तआला की
मुक़द्दस सुकूनतगाह है।
5अल्लाह उसके बीच में है, इसलिए शहर नहीं
डगमगाएगा। सुबह-सवेरे ही अल्लाह उस की
मदद करेगा।
6क़ौमें शोर मचाने, सलतनतें लड़खड़ाने लगीं।
अल्लाह ने आवाज़ दी तो ज़मीन लरज़ उठी।

7रब्बुल-अफ़वाज हमारे साथ है, याक़ूब का
ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

8आओ, रब के अज़ीम कामों पर नज़र डालो!
उसी ने ज़मीन पर हौलनाक तबाही नाज़िल की
है।
9वही दुनिया की इंतहा तक जंगें रोक देता, वही
कमान को तोड़ देता, नेज़े को टुकड़े टुकड़े करता
और ढाल को जला देता है।
10वह फ़रमाता है, "अपनी हरकतों से बाज़
आओ! जान लो कि मैं ख़ुदा हूँ। मैं अक़्वाम में
सरबुलंद और दुनिया में सरफ़राज़ हूँगा।"

11रब्बुल-अफ़वाज हमारे साथ है। याक़ूब का
ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

अल्लाह तमाम क़ौमों का बादशाह है

47 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, ताली बजाओ! ख़ुशी के नारे
लगाकर अल्लाह की मद्‌हसराई करो!
2क्योंकि रब तआला पुरजलाल है, वह पूरी
दुनिया का अज़ीम बादशाह है।
3उसने क़ौमों को हमारे तहत कर दिया, उम्मतों
को हमारे पाँवों तले रख दिया।
4उसने हमारे लिए हमारी मीरास को चुन लिया,
उसी को जो उसके प्यारे बंदे याक़ूब के लिए फ़ख़र
का बाइस था। (सिलाह)

5अल्लाह ने सऊद फ़रमाया तो साथ साथ
ख़ुशी का नारा बुलंद हुआ, रब बुलंदी पर चढ़ गया
तो साथ साथ नरसिंगा बजता रहा।
6मद्‌हसराई करो, अल्लाह की मद्‌हसराई
करो! मद्‌हसराई करो, हमारे बादशाह की
मद्‌हसराई करो!
7क्योंकि अल्लाह पूरी दुनिया का बादशाह है।
हिकमत का गीत गाकर उस की सताइश करो।
8अल्लाह क़ौमों पर हुकूमत करता है, अल्लाह
अपने मुक़द्दस तख़्त पर बैठा है।
9दीगर क़ौमों के शुरफ़ा इब्राहीम के ख़ुदा की
क़ौम के साथ जमा हो गए हैं, क्योंकि वह दुनिया

के हुक्मरानों का मालिक है। वह निहायत ही सरबुलंद है।

अल्लाह का शहर यरूशलम

48 गीत। क़ोरह की औलाद का ज़बूर।
रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के
लायक़ है। उसका मुक़द्दस पहाड़ हमारे ख़ुदा के
शहर में है।
2कोहे-सिय्यून की बुलंदी ख़ूबसूरत है, पूरी
दुनिया उससे ख़ुश होती है। कोहे-सिय्यून दूरतरीन
शिमाल का इलाही पहाड़ ही है, वह अज़ीम
बादशाह का शहर है।
3अल्लाह उसके महलों में है, वह उस की
पनाहगाह साबित हुआ है।
4क्योंकि देखो, बादशाह जमा होकर यरूशलम
से लड़ने आए।
5लेकिन उसे देखते ही वह हैरान हुए, वह
दहशत खाकर भाग गए।
6वहाँ उन पर कपकपी तारी हुई, और वह दर्दे-
ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाने
लगे।
7जिस तरह मशरिक़ी आँधी तरसीस के
शानदार जहाज़ों को टुकड़े टुकड़े कर देती है उसी
तरह तूने उन्हें तबाह कर दिया।

8जो कुछ हमने सुना है वह हमारे देखते देखते
रब्बुल-अफ़वाज हमारे ख़ुदा के शहर पर सादिक़
आया है, अल्लाह उसे अबद तक क़ायम रखेगा।
(सिलाह)
9ऐ अल्लाह, हमने तेरी सुकूनतगाह में तेरी
शफ़क़त पर ग़ौरो-ख़ौज़ किया है।
10ऐ अल्लाह, तेरा नाम इस लायक़ है कि तेरी
तारीफ़ दुनिया की इंतहा तक की जाए। तेरा दहना
हाथ रास्ती से भरा रहता है।
11कोहे-सिय्यून शादमान हो, यहूदाह की
बेटियाँ[a] तेरे मुंसिफ़ाना फ़ैसलों के बाइस ख़ुशी
मनाएँ।

12सिय्यून के इर्दगिर्द घूमो फिरो, उस की
फ़सील के साथ साथ चलकर उसके बुर्ज गिन
लो।
13उस की क़िलाबंदी पर ख़ूब ध्यान दो, उसके
महलों का मुआयना करो ताकि आनेवाली नसल
को सब कुछ सुना सको।
14यक़ीनन अल्लाह हमारा ख़ुदा हमेशा तक
ऐसा ही है। वह अबद तक हमारी राहनुमाई
करेगा।

अमीरों की शान सराब ही है

49 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, सुनो! दुनिया के तमाम
बाशिंदो, ध्यान दो!
2छोटे और बड़े, अमीर और ग़रीब सब तवज्जुह
दें।
3मेरा मुँह हिकमत बयान करेगा और मेरे दिल
का ग़ौरो-ख़ौज़ समझ अता करेगा।
4मैं अपना कान एक कहावत की तरफ़
झुकाऊँगा, सरोद बजाकर अपनी पहेली का हल
बताऊँगा।

5मैं ख़ौफ़ क्यों खाऊँ जब मुसीबत के दिन आएँ
और मक्कारों का बुरा काम मुझे घेर ले?
6ऐसे लोग अपनी मिलकियत पर एतमाद और
अपनी बड़ी दौलत पर फ़ख़र करते हैं।
7कोई भी फ़िद्या देकर अपने भाई की जान को
नहीं छुड़ा सकता। वह अल्लाह को इस क़िस्म का
तावान नहीं दे सकता।

[a]यहाँ यहूदाह की बेटियों से मुराद उसके शहर भी हो सकते हैं।

8क्योंकि इतनी बड़ी रक़म देना उसके बस की
बात नहीं। आख़िरकार उसे हमेशा के लिए ऐसी
कोशिशों से बाज़ आना पड़ेगा।
9चुनाँचे कोई भी हमेशा के लिए ज़िंदा नहीं
रह सकता, आख़िरकार हर एक मौत के गढ़े में
उतरेगा।
10क्योंकि हर एक देख सकता है कि दानिशमंद
भी वफ़ात पाते और अहमक़ और नासमझ भी
मिलकर हलाक हो जाते हैं। सबको अपनी दौलत
दूसरों के लिए छोड़नी पड़ती है।
11उनकी क़ब्रें अबद तक उनके घर बनी रहेंगी,
पुश्त-दर-पुश्त वह उनमें बसे रहेंगे, गो उन्हें ज़मीनें
हासिल थीं जो उनके नाम पर थीं।

12इनसान अपनी शानो-शौकत के बा-
वुजूद क़ायम नहीं रहता, उसे जानवरों की तरह
हलाक होना है।
13यह उन सबकी तक़दीर है जो अपने आप
पर एतमाद रखते हैं, और उन सबका अंजाम जो
उनकी बातें पसंद करते हैं। (सिलाह)
14उन्हें भेड़-बकरियों की तरह पाताल में लाया
जाएगा, और मौत उन्हें चराएगी। क्योंकि सुबह
के वक़्त दियानतदार उन पर हुकूमत करेंगे। तब
उनकी शक्लो-सूरत घिसे-फटे कपड़े की तरह
गल-सड़ जाएगी, पाताल ही उनकी रिहाइशगाह
होगा।
15लेकिन अल्लाह मेरी जान का फ़िद्या देगा,
वह मुझे पकड़कर पाताल की गिरिफ़्त से
छुड़ाएगा। (सिलाह)

16मत घबरा जब कोई अमीर हो जाए, जब
उसके घर की शानो-शौकत बढ़ती जाए।
17मरते वक़्त तो वह अपने साथ कुछ नहीं
ले जाएगा, उस की शानो-शौकत उसके साथ
पाताल में नहीं उतरेगी।
18बेशक वह जीते-जी अपने आपको मुबारक
कहेगा, और दूसरे भी खाते-पीते आदमी की
तारीफ़ करेंगे।
19फिर भी वह आख़िरकार अपने बाप-
दादा की नसल के पास उतरेगा, उनके पास जो
दुबारा कभी रौशनी नहीं देखेंगे।

20जो इनसान अपनी शानो-शौकत के बावुजूद
नासमझ है, उसे जानवरों की तरह हलाक होना
है।

सहीह इबादत

50 आसफ़ का ज़बूर।
रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा बोल उठा है,
उसने तुलूए-सुबह से लेकर ग़ुरूबे-आफ़ताब तक
पूरी दुनिया को बुलाया है।
2अल्लाह का नूर सिय्यून से चमक उठा है, उस
पहाड़ से जो कामिल हुस्न का इज़हार है।
3हमारा ख़ुदा आ रहा है, वह ख़ामोश नहीं
रहेगा। उसके आगे आगे सब कुछ भस्म हो रहा
है, उसके इर्दगिर्द तेज़ आँधी चल रही है।
4वह आसमानो-ज़मीन को आवाज़ देता है,
“अब मैं अपनी क़ौम की अदालत करूँगा।
5मेरे ईमानदारों को मेरे हुज़ूर जमा करो, उन्हें
जिन्होंने क़ुरबानियाँ पेश करके मेरे साथ अहद
बाँधा है।”
6आसमान उस की रास्ती का एलान करेंगे,
क्योंकि अल्लाह ख़ुद इनसाफ़ करनेवाला है।
(सिलाह)
7“ऐ मेरी क़ौम, सुन! मुझे बात करने दे। ऐ
इसराईल, मैं तेरे ख़िलाफ़ गवाही दूँगा। मैं अल्लाह
तेरा ख़ुदा हूँ।
8मैं तुझे तेरी ज़बह की क़ुरबानियों के बाइस
मलामत नहीं कर रहा। तेरी भस्म होनेवाली
क़ुरबानियाँ तो मुसलसल मेरे सामने हैं।
9न मैं तेरे घर से बैल लूँगा, न तेरे बाड़ों से बकरे।
10क्योंकि जंगल के तमाम जानदार मेरे ही हैं,
हज़ारों पहाड़ियों पर बसनेवाले जानवर मेरे ही हैं।
11मैं पहाड़ों के हर परिंदे को जानता हूँ, और
जो भी मैदानों में हरकत करता है वह मेरा है।

12अगर मुझे भूक लगती तो मैं तुझे न बताता, क्योंकि ज़मीन और जो कुछ उस पर है मेरा है।
13क्या तू समझता है कि मैं साँडों का गोश्त खाना या बकरों का ख़ून पीना चाहता हूँ?
14अल्लाह को शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी पेश कर, और वह मन्नत पूरी कर जो तूने अल्लाह तआला के हुज़ूर मानी है।
15मुसीबत के दिन मुझे पुकार। तब मैं तुझे नजात दूँगा और तू मेरी तमजीद करेगा।"

16लेकिन बेदीन से अल्लाह फ़रमाता है, "मेरे अहकाम सुनाने और मेरे अहद का ज़िक्र करने का तेरा क्या हक़ है?
17तू तो तरबियत से नफ़रत करता और मेरे फ़रमान कचरे की तरह अपने पीछे फेंक देता है।
18किसी चोर को देखते ही तू उसका साथ देता है, तू ज़िनाकारों से रिफ़ाक़त रखता है।
19तू अपने मुँह को बुरे काम के लिए इस्तेमाल करता, अपनी ज़बान को धोका देने के लिए तैयार रखता है।
20तू दूसरों के पास बैठकर अपने भाई के ख़िलाफ़ बोलता है, अपनी ही माँ के बेटे पर तोहमत लगाता है।

21यह कुछ तूने किया है, और मैं ख़ामोश रहा। तब तू समझा कि मैं बिलकुल तुझ जैसा हूँ। लेकिन मैं तुझे मलामत करूँगा, तेरे सामने ही मामला तरतीब से सुनाऊँगा।
22तुम जो अल्लाह को भूले हुए हो, बात समझ लो, वरना मैं तुम्हें फाड़ डालूँगा। उस वक़्त कोई नहीं होगा जो तुम्हें बचाए।

23जो शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी पेश करे वह मेरी ताज़ीम करता है। जो मुसम्मम इरादे से ऐसी राह पर चले उसे मैं अल्लाह की नजात दिखाऊँगा।"

मुझ जैसे गुनाहगार पर रहम कर!
(तौबा का चौथा ज़बूर)

51 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दाऊद के बत-सबा के साथ ज़िना करने के बाद नातन नबी उसके पास आया।

ऐ अल्लाह, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर, अपने बड़े रहम के मुताबिक़ मेरी सरकशी के दाग़ मिटा दे।
2मुझे धो दे ताकि मेरा क़ुसूर दूर हो जाए, जो गुनाह मुझसे सरज़द हुआ है उससे मुझे पाक कर।
3क्योंकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ, और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।
4मैंने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही ख़िलाफ़ गुनाह किया, मैंने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है। क्योंकि लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त रास्त ठहरे और अदालत करते वक़्त पाकीज़ा साबित हो जाए।

5यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ। ज्योंही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया तो गुनाहगार था।
6यक़ीनन तू बातिन की सच्चाई पसंद करता और पोशीदगी में मुझे हिकमत की तालीम देता है।
7ज़ूफ़ा लेकर मुझसे गुनाह दूर कर ताकि पाक-साफ़ हो जाऊँ। मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद हो जाऊँ।
8मुझे दुबारा ख़ुशी और शादमानी सुनने दे ताकि जिन हड्डियों को तूने कुचल दिया वह शादियाना बजाएँ।
9अपने चेहरे को मेरे गुनाहों से फेर ले, मेरा तमाम क़ुसूर मिटा दे।
10ऐ अल्लाह, मेरे अंदर पाक दिल पैदा कर, मुझमें नए सिरे से साबितक़दम रूह क़ायम कर।
11मुझे अपने हुज़ूर से ख़ारिज न कर, न अपने मुक़द्दस रूह को मुझसे दूर कर।

12मुझे दुबारा अपनी नजात की ख़ुशी दिला, मुझे मुस्तैद रूह अता करके सँभाले रख।
13तब मैं उन्हें तेरी राहों की तालीम दूँगा जो तुझसे बेवफ़ा हो गए हैं, और गुनाहगार तेरे पास वापस आएँगे।

14ऐ अल्लाह, मेरी नजात के ख़ुदा, क़त्ल का क़ुसूर मुझसे दूर करके मुझे बचा। तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती की हम्दो-सना करेगी।
15ऐ रब, मेरे होंटों को खोल ताकि मेरा मुँह तेरी सताइश करे।
16क्योंकि तू ज़बह की क़ुरबानी नहीं चाहता, वरना मैं वह पेश करता। भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ तुझे पसंद नहीं।
17अल्लाह को मंज़ूर क़ुरबानी शिकस्ता रूह है। ऐ अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए दिल को हक़ीर नहीं जानेगा।

18अपनी मेहरबानी का इज़हार करके सिय्यून को ख़ुशहाली बख़्श, यरूशलम की फ़सील तामीर कर।
19तब तुझे हमारी सहीह क़ुरबानियाँ, हमारी भस्म होनेवाली और मुकम्मल क़ुर-बानियाँ पसंद आएँगी। तब तेरी क़ुरबानगाह पर बैल चढ़ाए जाएंगे।

ज़ुल्म के बावुजूद तसल्ली

52 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिकमत का यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दोएग अदोमी साऊल बादशाह के पास गया और उसे बताया, "दाऊद अख़ीमलिक इमाम के घर में गया है।"

ऐ सूरमे, तू अपनी बदी पर क्यों फ़ख़र करता है? अल्लाह की शफ़क़त दिन-भर क़ायम रहती है।
2ऐ धोकेबाज़, तेरी ज़बान तेज़ उस्तरे की तरह चलती हुई तबाही के मनसूबे बाँधती है।
3तुझे भलाई की निसबत बुराई ज़्यादा प्यारी है, सच बोलने की निसबत झूट ज़्यादा पसंद है। (सिलाह)
4ऐ फ़रेबदेह ज़बान, तू हर तबाहकुन बात से प्यार करती है।
5लेकिन अल्लाह तुझे हमेशा के लिए ख़ाक में मिलाएगा। वह तुझे मार मारकर तेरे ख़ैमे से निकाल देगा, तुझे जड़ से उखाड़कर ज़िंदों के मुल्क से ख़ारिज कर देगा। (सिलाह)

6रास्तबाज़ यह देखकर ख़ौफ़ खाएँगे। वह उस पर हँसकर कहेंगे,
7"लो, यह वह आदमी है जिसने अल्लाह में पनाह न ली बल्कि अपनी बड़ी दौलत पर एतमाद किया, जो अपने तबाहकुन मनसूबों से ताक़तवर हो गया था।"

8लेकिन मैं अल्लाह के घर में ज़ैतून के फलते-फूलते दरख़्त की मानिंद हूँ। मैं हमेशा के लिए अल्लाह की शफ़क़त पर भरोसा रखूँगा।
9मैं अबद तक उसके लिए तेरी सताइश करूँगा जो तूने किया है। मैं तेरे ईमानदारों के सामने ही तेरे नाम के इंतज़ार में रहूँगा, क्योंकि वह भला है।

बेदीन की हमाक़त

53 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिकमत का गीत। तर्ज़ : महलत।

अहमक़ दिल में कहता है, "अल्लाह है ही नहीं!" ऐसे लोग बदचलन हैं, उनकी हरकतें क़ाबिले-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।
2अल्लाह ने आसमान से इनसान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है?
3अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।

4क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की
तरह खा लेते हैं उन्हें समझ नहीं आती? वह तो
अल्लाह को पुकारते ही नहीं।
5तब उन पर सख़्त दहशत वहाँ छा गई जहाँ
पहले दहशत का सबब नहीं था। जिन्होंने तुझे घेर
रखा था अल्लाह ने उनकी हड्डियाँ बिखेर दीं। तूने
उनको रुसवा किया, क्योंकि अल्लाह ने उन्हें रद्द
किया है।

6काश कोहे-सिय्यून से इसराईल की नजात
निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा
तो याक़ूब ख़ुशी के नारे लगाएगा, इसराईल बाग़
बाग़ होगा।

ख़तरे में फँसे हुए शख़्स की इल्तिजा

54 दाऊद का ज़बूर। हिकमत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है। यह उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब ज़ीफ़ के बाशिंदों ने साऊल के पास जाकर कहा, "दाऊद हमारे पास छुपा हुआ है।"

ऐ अल्लाह, अपने नाम के ज़रीए से मुझे
छुटकारा दे! अपनी क़ुदरत के ज़रीए से मेरा
इनसाफ़ कर!
2ऐ अल्लाह, मेरी इल्तिजा सुन, मेरे मुँह के
अलफ़ाज़ पर ध्यान दे।
3क्योंकि परदेसी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं,
ज़ालिम जो अल्लाह का लिहाज़ नहीं करते मेरी
जान लेने के दरपै हैं। (सिलाह)

4लेकिन अल्लाह मेरा सहारा है, रब मेरी ज़िंदगी
क़ायम रखता है।
5वह मेरे दुश्मनों की शरारत उन पर वापस
लाएगा। चुनाँचे अपनी वफ़ादारी दिखाकर उन्हें
तबाह कर दे!
6मैं तुझे रज़ाकाराना क़ुरबानी पेश करूँ-
गा। ऐ रब, मैं तेरे नाम की सताइश करूँगा,
क्योंकि वह भला है।
7क्योंकि उसने मुझे सारी मुसीबत से रिहाई दी,
और अब मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर
ख़ुश हूँगा।

झूटे भाइयों पर शिकायत

55 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिकमत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ऐ अल्लाह, मेरी दुआ पर ध्यान दे, अपने
आपको मेरी इल्तिजा से छुपाए न रख।
2मुझ पर ग़ौर कर, मेरी सुन। मैं बेचैनी से इधर-
उधर घूमते हुए आहें भर रहा हूँ।
3क्योंकि दुश्मन शोर मचा रहा, बेदीन मुझे तंग
कर रहा है। वह मुझ पर आफ़त लाने पर तुले हुए
हैं, ग़ुस्से में मेरी मुख़ालफ़त कर रहे हैं।
4मेरा दिल मेरे अंदर तड़प रहा है, मौत की
दहशत मुझ पर छा गई है।
5ख़ौफ़ और लरज़िश मुझ पर तारी हुई, हैबत
मुझ पर ग़ालिब आ गई है।

6मैं बोला, "काश मेरे कबूतर के-से पर हों
ताकि उड़कर आरामो-सुकून पा सकूँ!
7तब मैं दूर तक भागकर रेगिस्तान में बसेरा
करता,
8मैं जल्दी से कहीं पनाह लेता जहाँ तेज़ आँधी
और तूफ़ान से महफ़ूज़ रहता।" (सिलाह)

9ऐ रब, उनमें अबतरी पैदा कर, उनकी ज़बान
में इख़्तिलाफ़ डाल! क्योंकि मुझे शहर में हर
तरफ़ ज़ुल्म और झगड़े नज़र आते हैं।
10दिन-रात वह फ़सील पर चक्कर काटते हैं,
और शहर फ़साद और ख़राबी से भरा रहता है।
11उसके बीच में तबाही की हुकूमत है, और
ज़ुल्म और फ़रेब उसके चौक को नहीं छोड़ते।

12अगर कोई दुश्मन मेरी रुसवाई करता तो
क़ाबिले-बरदाश्त होता। अगर मुझसे नफ़रत

करनेवाला मुझे दबाकर अपने आपको सरफ़राज़ करता तो मैं उससे छुप जाता।

13लेकिन तू ही ने यह किया, तू जो मुझ जैसा है, जो मेरा क़रीबी दोस्त और हमराज़ है।

14मेरी तेरे साथ कितनी अच्छी रिफ़ाक़त थी जब हम हुजूम के साथ अल्लाह के घर की तरफ़ चलते गए!

15मौत अचानक ही उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले ले। ज़िंदा ही वह पाताल में उतर जाएँ, क्योंकि बुराई ने उनमें अपना घर बना लिया है।

16लेकिन मैं पुकारकर अल्लाह से मदद माँगता हूँ, और रब मुझे नजात देगा।

17मैं हर वक़्त आहो-ज़ारी करता और कराहता रहता हूँ, ख़ाह सुबह हो, ख़ाह दोपहर या शाम। और वह मेरी सुनेगा।

18वह फ़िद्या देकर मेरी जान को उनसे छुड़ाएगा जो मेरे ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। गो उनकी तादाद बड़ी है वह मुझे आरामो-सुकून देगा।

19अल्लाह जो अज़ल से तख़्तनशीन है मेरी सुनकर उन्हें मुनासिब जवाब देगा। (सिलाह) क्योंकि न वह तबदील हो जाएंगे, न कभी अल्लाह का ख़ौफ़ मानेंगे।

20उस शख़्स ने अपना हाथ अपने दोस्तों के ख़िलाफ़ उठाया, उसने अपना अहद तोड़ लिया है।

21उस की ज़बान पर मक्खन की-सी चिकनी-चुपड़ी बातें और दिल में जंग है। उसके तेल से ज़्यादा नरम अलफ़ाज़ हक़ीक़त में खींची हुई तलवारें हैं।

22अपना बोझ रब पर डाल तो वह तुझे सँभालेगा। वह रास्तबाज़ को कभी डगमगाने नहीं देगा।

23लेकिन ऐ अल्लाह, तू उन्हें तबाही के गढ़े में उतरने देगा। ख़ूनख़ार और धोकेबाज़ आधी उम्र भी नहीं पाएँगे बल्कि जल्दी मरेंगे। लेकिन मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ।

मुसीबत में भरोसा

56 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : दूर-दराज़ जज़ीरों का कबूतर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब फ़िलिस्तियों ने उसे जात में पकड़ लिया।

ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि लोग मुझे तंग कर रहे हैं, लड़नेवाला दिन-भर मुझे सता रहा है।

2दिन-भर मेरे दुश्मन मेरे पीछे लगे हैं, क्योंकि वह बहुत हैं और ग़ुरूर से मुझसे लड़ रहे हैं।

3लेकिन जब ख़ौफ़ मुझे अपनी गिरिफ़्त में ले ले तो मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ।

4अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इनसान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है?

5दिन-भर वह मेरे अलफ़ाज़ को तोड़-मरोड़कर ग़लत मानी निकालते, अपने तमाम मनसूबों से मुझे ज़रर पहुँचाना चाहते हैं।

6वह हमलाआवर होकर ताक में बैठ जाते और मेरे हर क़दम पर ग़ौर करते हैं। क्योंकि वह मुझे मार डालने पर तुले हुए हैं।

7जो ऐसी शरीर हरकतें करते हैं, क्या उन्हें बचना चाहिए? हरगिज़ नहीं! ऐ अल्लाह, अक़वाम को ग़ुस्से में ख़ाक में मिला दे।

8जितने भी दिन मैं बेघर फिरा हूँ उनका तूने पूरा हिसाब रखा है। ऐ अल्लाह, मेरे आँसू अपने मशकीज़े में डाल ले! क्या वह पहले से तेरी किताब में क़लमबंद नहीं हैं? ज़रूर!

9फिर जब मैं तुझे पुकारूँगा तो मेरे दुश्मन मुझसे बाज़ आएँगे। यह मैंने जान लिया है कि अल्लाह मेरे साथ है!

10अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, रब के कलाम पर मेरा फ़ख़र है।

11अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इनसान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है?

12ऐ अल्लाह, तेरे हुज़ूर मैंने मन्नतें मानी हैं, और अब मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानियाँ पेश करूँगा।
13क्योंकि तूने मेरी जान को मौत से बचाया और मेरे पाँवों को ठोकर खाने से महफ़ूज़ रखा ताकि ज़िंदगी की रौशनी में अल्लाह के हुज़ूर चलूँ।

आज़माइश में अल्लाह पर एतमाद

57 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब वह साऊल से भागकर ग़ार में छुप गया।

ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि मेरी जान तुझमें पनाह लेती है। जब तक आफ़त मुझ पर से गुज़र न जाए मैं तेरे परों के साये में पनाह लूँगा।
2मैं अल्लाह तआला को पुकारता हूँ, अल्लाह से जो मेरा मामला ठीक करेगा।
3वह आसमान से मदद भेजकर मुझे छुटकारा देगा और उनकी रुसवाई करेगा जो मुझे तंग कर रहे हैं। (सिलाह) अल्लाह अपना करम और वफ़ादारी भेजेगा।
4मैं इनसान को हड़प करनेवाले शेरबबरों के बीच में लेटा हुआ हूँ, उनके दरमियान जिनके दाँत नेज़े और तीर हैं और जिनकी ज़बान तेज़ तलवार है।

5ऐ अल्लाह, आसमान पर सरबुलंद हो जा! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए!

6उन्होंने मेरे क़दमों के आगे फंदा बिछा दिया, और मेरी जान ख़ाक में दब गई है। उन्होंने मेरे सामने गढ़ा खोद लिया, लेकिन वह ख़ुद उसमें गिर गए हैं। (सिलाह)

7ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत, मेरा दिल साबितक़दम है। मैं साज़ बजाकर तेरी मद्हसराई करूँगा।
8ऐ मेरी जान, जाग उठ! ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! आओ, मैं तुलूए-सुबह को जगाऊँ।
9ऐ रब, क़ौमों में मैं तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी मद्हसराई करूँगा।
10क्योंकि तेरी अज़ीम शफ़क़त आसमान जितनी बुलंद है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
11ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

इंतक़ाम की दुआ

58 दाऊद का सुनहरा गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।

ऐ हुक्मरानो, क्या तुम वाक़ई मुंसिफ़ाना फ़ैसला करते, क्या दियानतदारी से आदमज़ादों की अदालत करते हो?
2हरगिज़ नहीं, तुम दिल में बदी करते और मुल्क में अपने ज़ालिम हाथों के लिए रास्ता बनाते हो।
3बेदीन पैदाइश से ही सहीह राह से दूर हो गए हैं, झूट बोलनेवाले माँ के पेट से ही भटक गए हैं।
4वह साँप की तरह ज़हर उगलते हैं, उस बहरे नाग की तरह जो अपने कानों को बंद कर रखता है

5ताकि न जादूगर की आवाज़ सुने, न माहिर सपेरे के मंत्र।

6ऐ अल्लाह, उनके मुँह के दाँत तोड़ डाल! ऐ रब, जवान शेरबबरों के जबड़े को पाश पाश कर!
7वह उस पानी की तरह ज़ाया हो जाएँ जो बहकर ग़ायब हो जाता है। उनके चलाए हुए तीर बेअसर रहें।
8वह धूप में घोंगे की मानिंद हों जो चलता चलता पिघल जाता है। उनका अंजाम उस बच्चे

का-सा हो जो माँ के पेट में ज़ाया होकर कभी
सूरज नहीं देखेगा।
9इससे पहले कि तुम्हारी देगें काँटेदार टहनियों
की आग महसूस करें अल्लाह उन सबको आँधी
में उड़ाकर ले जाएगा।

10आख़िरकार दुश्मन को सज़ा मिलेगी। यह
देखकर रास्तबाज़ ख़ुश होगा, और वह अपने पाँवों
को बेदीनों के ख़ून में धो लेगा।
11तब लोग कहेंगे, "वाक़ई रास्तबाज़ को अज्र
मिलता है, वाक़ई अल्लाह है जो दुनिया में लोगों
की अदालत करता है!"

दुश्मन के दरमियान दुआ

59 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब साऊल ने अपने आदमियों को दाऊद के घर की पहरादारी करने के लिए भेजा ताकि जब मौक़ा मिले उसे क़त्ल करें।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे मेरे दुश्मनों से बचा। उनसे
मेरी हिफ़ाज़त कर जो मेरे ख़िलाफ़ उठे हैं।
2मुझे बदकारों से छुटकारा दे, ख़ूनख़ारों से रिहा
कर।
3देख, वह मेरी ताक में बैठे हैं। ऐ रब, ज़बरदस्त
आदमी मुझ पर हमलाआवर हैं, हालाँकि मुझसे
न ख़ता हुई न गुनाह।
4मैं बेक़ुसूर हूँ, ताहम वह दौड़ दौड़कर मुझसे
लड़ने की तैयारियाँ कर रहे हैं। चुनाँचे जाग उठ,
मेरी मदद करने आ, जो कुछ हो रहा है उस पर
नज़र डाल।
5ऐ रब, लशकरों और इसराईल के ख़ुदा, दीगर
तमाम क़ौमों को सज़ा देने के लिए जाग उठ! उन
सब पर करम न फ़रमा जो शरीर और ग़द्दार हैं।
(सिलाह)

6हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों
की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घुमते-
फिरते हैं।
7देख, उनके मुँह से राल टपक रही है, उनके
होंटों से तलवारें निकल रही हैं। क्योंकि वह
समझते हैं, "कौन सुनेगा?"

8लेकिन तू ऐ रब, उन पर हँसता है, तू तमाम
क़ौमों का मज़ाक़ उड़ाता है।
9ऐ मेरी क़ुव्वत, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहेंगी,
क्योंकि अल्लाह मेरा क़िला है।
10मेरा ख़ुदा अपनी मेहरबानी के साथ मुझसे
मिलने आएगा, अल्लाह बख़्श देगा कि मैं अपने
दुश्मनों की शिकस्त देखकर ख़ुश हूँगा।

11ऐ अल्लाह हमारी ढाल, उन्हें हलाक न कर,
वरना मेरी क़ौम तेरा काम भूल जाएगी। अपनी
क़ुदरत का इज़हार यों कर कि वह इधर-उधर
लड़खड़ाकर गिर जाएँ।
12जो कुछ भी उनके मुँह से निकलता है वह
गुनाह है, वह लानतें और झूट ही सुनाते हैं। चुनाँचे
उन्हें उनके तकब्बुर के जाल में फँसने दे।
13ग़ुस्से में उन्हें तबाह कर! उन्हें यों तबाह
कर कि उनका नामो-निशान तक न रहे। तब
लोग दुनिया की इंतहा तक जान लेंगे कि अल्लाह
याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करता है। (सिलाह)

14हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों
की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घुमते-
फिरते हैं।
15वह इधर-उधर गश्त लगाकर खाने की चीज़ें
ढूँडते हैं। अगर पेट न भरे तो ग़ुर्राते रहते हैं।

16लेकिन मैं तेरी क़ुदरत की मद्हसराई करूँगा,
सुबह को ख़ुशी के नारे लगाकर तेरी शफ़क़त
की सताइश करूँगा। क्योंकि तू मेरा क़िला और
मुसीबत के वक़्त मेरी पनाहगाह है।
17ऐ मेरी क़ुव्वत, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा,
क्योंकि अल्लाह मेरा क़िला और मेरा मेहरबान
ख़ुदा है।

मरदूद क़ौम की दुआ

60 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : अहद का सोसन। तालीम के लिए यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दाऊद ने मसोपुतामिया के अरामियों और ज़ोबाह के अरामियों से जंग की। वापसी पर योआब ने नमक की वादी में 12,000 अदोमियों को मार डाला।

ऐ अल्लाह, तूने हमें रद्द किया, हमारी क़िलाबंदी में रख़ना डाल दिया है। लेकिन अब अपने ग़ज़ब से बाज़ आकर हमें बहाल कर।

2तूने ज़मीन को ऐसे झटके दिए कि उसमें दराड़ें पड़ गईं। अब उसके शिगाफ़ों को शफ़ा दे, क्योंकि वह अभी तक थरथरा रही है।

3तूने अपनी क़ौम को तलख़ तजरबों से दोचार होने दिया, हमें ऐसी तेज़ मै पिला दी कि हम डगमगाने लगे हैं।

4लेकिन जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं उनके लिए तूने झंडा गाड़ दिया जिसके इर्दगिर्द वह जमा होकर तीरों से पनाह ले सकते हैं। (सिलाह)

5अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं वह नजात पाएँ।

6अल्लाह ने अपने मक़दिस में फ़रमाया है, "मैं फ़तह मनाते हुए सिकम को तक़सीम करूँगा और वादीए-सुक्कात को नापकर बाँट दूँगा।

7जिलियाद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा है।

8मोआब मेरा ग़ुस्ल का बरतन है, और अदोम पर मैं अपना जूता फेंक दूँगा। ऐ फ़िलिस्ती मुल्क, मुझे देखकर ज़ोरदार नारे लगा!"

9कौन मुझे क़िलाबंद शहर में लाएगा? कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?

10ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तूने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।

11मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक़्त इनसानी मदद बेकार है।

12अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे, क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

दूर से दरख़ास्त

61 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ के साथ गाना है।

ऐ अल्लाह, मेरी आहो-ज़ारी सुन, मेरी दुआ पर तवज्जुह दे।

2मैं तुझे दुनिया की इंतहा से पुकार रहा हूँ, क्योंकि मेरा दिल निढाल हो गया है। मेरी राहनुमाई करके मुझे उस चट्टान पर पहुँचा दे जो मुझसे बुलंद है।

3क्योंकि तू मेरी पनाहगाह रहा है, एक मज़बूत बुर्ज जिसमें मैं दुश्मन से महफ़ूज़ हूँ।

4मैं हमेशा के लिए तेरे ख़ैमे में रहना, तेरे परों तले पनाह लेना चाहता हूँ। (सिलाह)

5क्योंकि ऐ अल्लाह, तूने मेरी मन्नतों पर ध्यान दिया, तूने मुझे वह मीरास बख़्शी जो उन सबको मिलती है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं।

6बादशाह को उम्र की दराज़ी बख़्श दे। वह पुश्त-दर-पुश्त जीता रहे।

7वह हमेशा तक अल्लाह के हुज़ूर तख़्त-नशीन रहे। शफ़क़त और वफ़ादारी उस की हिफ़ाज़त करें।

8तब मैं हमेशा तक तेरे नाम की मदहसराई करूँगा, रोज़ बरोज़ अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

ख़ामोशी से अल्लाह का इंतज़ार कर

62 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। यदूतून के लिए।

मेरी जान ख़ामोशी से अल्लाह ही के इंतज़ार में है। उसी से मुझे मदद मिलती है।

2वही मेरी चट्टान, मेरी नजात और मेरा क़िला है, इसलिए मैं ज़्यादा नहीं डगमगाऊँगा।

3तुम कब तक उस पर हमला करोगे जो पहले
ही झुकी हुई दीवार की मानिंद है? तुम सब कब
तक उसे क़त्ल करने पर तुले रहोगे जो पहले ही
गिरनेवाली चारदीवारी जैसा है?
4उनके मनसूबों का एक ही मक़सद है, कि उसे
उसके ऊँचे ओहदे से उतारें। उन्हें झूट से मज़ा
आता है। मुँह से वह बरकत देते, लेकिन अंदर ही
अंदर लानत करते हैं। (सिलाह)

5लेकिन तू ऐ मेरी जान, ख़ामोशी से अल्लाह
ही के इंतज़ार में रह। क्योंकि उसी से मुझे उम्मीद
है।
6सिर्फ़ वही मेरी जान की चट्टान, मेरी नजात
और मेरा क़िला है, इसलिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

7मेरी नजात और इज़्ज़त अल्लाह पर मबनी है,
वही मेरी महफ़ूज़ चट्टान है। अल्लाह में मैं पनाह
लेता हूँ।
8ऐ उम्मत, हर वक़्त उस पर भरोसा रख!
उसके हुज़ूर अपने दिल का रंजो-अलम पानी की
तरह उंडेल दे। अल्लाह ही हमारी पनाहगाह है।
(सिलाह)

9इनसान दम-भर का ही है, और बड़े लोग फ़रेब
ही हैं। अगर उन्हें तराज़ू में तोला जाए तो मिलकर
उनका वज़न एक फूँक से भी कम है।
10ज़ुल्म पर एतमाद न करो, चोरी करने पर
फ़ज़ूल उम्मीद न रखो। और अगर दौलत बढ़ जाए
तो तुम्हारा दिल उससे लिपट न जाए।
11अल्लाह ने एक बात फ़रमाई बल्कि दो बार
मैंने सुनी है कि अल्लाह ही क़ादिर है।
12ऐ रब, यक़ीनन तू मेहरबान है, क्योंकि तू हर
एक को उसके आमाल का बदला देता है।

अल्लाह के लिए आरज़ू

63 दाऊद का ज़बूर। यह उस वक़्त से मुताल्लिक़
है जब वह यहूदाह के रेगिस्तान में था।

ऐ अल्लाह, तू मेरा ख़ुदा है जिसे मैं ढूँडता हूँ।
मेरी जान तेरी प्यासी है, मेरा पूरा जिस्म तेरे लिए
तरसता है। मैं उस ख़ुश्क और निढाल मुल्क की
मानिंद हूँ जिसमें पानी नहीं है।
2चुनाँचे मैं मक़दिस में तुझे देखने के इंतज़ार में
रहा ताकि तेरी क़ुदरत और जलाल का मुशाहदा
करूँ।
3क्योंकि तेरी शफ़क़त ज़िंदगी से कहीं बेहतर
है, मेरे होंट तेरी मद्‌हसराई करेंगे।
4चुनाँचे मैं जीते-जी तेरी सताइश करूँगा, तेरा
नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा।
5मेरी जान उम्दा ग़िज़ा से सेर हो जाएगी, मेरा
मुँह ख़ुशी के नारे लगाकर तेरी हम्दो-सना करेगा।
6बिस्तर पर मैं तुझे याद करता, पूरी रात के
दौरान तेरे बारे में सोचता रहता हूँ।
7क्योंकि तू मेरी मदद करने आया, और मैं तेरे
परों के साये में ख़ुशी के नारे लगाता हूँ।
8मेरी जान तेरे साथ लिपटी रहती, और तेरा
दहना हाथ मुझे सँभालता है।

9लेकिन जो मेरी जान लेने पर तुले हुए हैं वह
तबाह हो जाएंगे, वह ज़मीन की गहराइयों में उतर
जाएंगे।
10उन्हें तलवार के हवाले किया जाएगा, और
वह गीदड़ों की ख़ुराक बन जाएंगे।

11लेकिन बादशाह अल्लाह की ख़ुशी
मनाएगा। जो भी अल्लाह की क़सम खाता है
वह फ़ख़र करेगा, क्योंकि झूट बोलनेवालों के
मुँह बंद हो जाएंगे।

शरीअत के पोशीदा हमलों से हिफ़ाज़त की दुआ

64 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।

ऐ अल्लाह, सुन जब मैं अपनी आहो-ज़ारी
पेश करता हूँ। मेरी ज़िंदगी दुश्मन की दहशत से
महफ़ूज़ रख।

2मुझे बदमाशों की साज़िशों से छुपाए रख, उनकी हलचल से जो ग़लत काम करते हैं।

3वह अपनी ज़बान को तलवार की तरह तेज़ करते और अपने ज़हरीले अलफ़ाज़ को तीरों की तरह तैयार रखते हैं

4ताकि ताक में बैठकर उन्हें बेक़ुसूर पर चलाएँ। वह अचानक और बेबाकी से उन्हें उस पर बरसा देते हैं।

5वह बुरा काम करने में एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करते, एक दूसरे से मशवरा लेते हैं कि हम अपने फंदे किस तरह छुपाकर लगाएँ? वह कहते हैं, "यह किसी को भी नज़र नहीं आएँगे।"

6वह बड़ी बारीकी से बुरे मनसूबों की तैयारियाँ करते, फिर कहते हैं, "चलो, बात बन गई है, मनसूबा सोच-बिचार के बाद तैयार हुआ है।" यक़ीनन इनसान के बातिन और दिल की तह तक पहुँचना मुश्किल ही है।

7लेकिन अल्लाह उन पर तीर बरसाएगा, और अचानक ही वह ज़ख़मी हो जाएंगे।

8वह अपनी ही ज़बान से ठोकर खाकर गिर जाएंगे। जो भी उन्हें देखेगा वह "तौबा तौबा" कहेगा।

9तब तमाम लोग ख़ौफ़ खाकर कहेंगे, "अल्लाह ही ने यह किया!" उन्हें समझ आएगी कि यह उसी का काम है।

10रास्तबाज़ अल्लाह की ख़ुशी मनाकर उसमें पनाह लेगा, और जो दिल से दियानतदार हैं वह सब फ़ख़र करेंगे।

रूहानी और जिस्मानी बरकतों के लिए शुक्रगुज़ारी

65 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए गीत।

ऐ अल्लाह, तू ही इस लायक़ है कि इनसान कोहे-सिय्यून पर ख़ामोशी से तेरे इंतज़ार में रहे, तेरी तमजीद करे और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करे।

2तू दुआओं को सुनता है, इसलिए तमाम इनसान तेरे हुज़ूर आते हैं।

3गुनाह मुझ पर ग़ालिब आ गए हैं, तू ही हमारी सरकश हरकतों को मुआफ़ कर।

4मुबारक है वह जिसे तू चुनकर क़रीब आने देता है, जो तेरी बारगाहों में बस सकता है। बख़्श दे कि हम तेरे घर, तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की अच्छी चीज़ों से सेर हो जाएँ।

5ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हैबतनाक कामों से अपनी रास्ती क़ायम करके हमारी सुन! क्योंकि तू ज़मीन की तमाम हुदूद और दूर-दराज़ समुंदरों तक सबकी उम्मीद है।

6तू अपनी क़ुदरत से पहाड़ों की मज़बूत बुनियादें डालता और क़ुव्वत से कमरबस्ता रहता है।

7तू मुतलातिम समुंदरों को थमा देता है, तू उनकी गरजती लहरों और उम्मतों का शोर-शराबा ख़त्म कर देता है।

8दुनिया की इंतहा के बाशिंदे तेरे निशानात से ख़ौफ़ खाते हैं, और तू तुलूए-सुबह और ग़ुरूबे-आफ़ताब को ख़ुशी मनाने देता है।

9तू ज़मीन की देख-भाल करके उसे पानी की कसरत और ज़रख़ेज़ी से नवाज़ता है, चुनाँचे अल्लाह की नदी पानी से भरी रहती है। ज़मीन को यों तैयार करके तू इनसान को अनाज की अच्छी फ़सल मुहैया करता है।

10तू खेत की रेघारियों को शराबोर करके उसके ढेलों को हमवार करता है। तू बारिश की बौछाड़ों से ज़मीन को नरम करके उस की फ़सलों को बरकत देता है।

11तू साल को अपनी भलाई का ताज पहना देता है, और तेरे नक़्शे-क़दम तेल की फ़रावानी से टपकते हैं।

12बयाबान की चरागाहें तेल[a] की कसरत से टपकती हैं, और पहाड़ियाँ भरपूर ख़ुशी से मुलब्बस हो जाती हैं।

13सब्ज़ाज़ार भेड़-बकरियों से आरास्ता हैं, वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं। सब ख़ुशी के नारे लगा रहे हैं, सब गीत गा रहे हैं!

अल्लाह की मोजिज़ाना मदद की तारीफ़

66 मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। ज़बूर। गीत।

1ऐ सारी ज़मीन, ख़ुशी के नारे लगाकर अल्लाह की मद्हसराई कर!

2उसके नाम के जलाल की तमजीद करो, उस की सताइश उरूज तक ले जाओ!

3अल्लाह से कहो, "तेरे काम कितने पुरजलाल हैं। तेरी बड़ी क़ुदरत के सामने तेरे दुश्मन दबककर तेरी ख़ुशामद करने लगते हैं।

4तमाम दुनिया तुझे सिजदा करे! वह तेरी तारीफ़ में गीत गाए, तेरे नाम की सताइश करे।" (सिलाह)

5आओ, अल्लाह के काम देखो! आदमज़ाद की ख़ातिर उसने कितने पुरजलाल मोजिज़े किए हैं!

6उसने समुंदर को ख़ुश्क ज़मीन में बदल दिया। जहाँ पहले पानी का तेज़ बहाव था वहाँ से लोग पैदल ही गुज़रे। चुनाँचे आओ, हम उस की ख़ुशी मनाएँ।

7अपनी क़ुदरत से वह अबद तक हुकूमत करता है। उस की आँखें क़ौमों पर लगी रहती हैं ताकि सरकश उसके ख़िलाफ़ न उठें। (सिलाह)

8ऐ उम्मतो, हमारे ख़ुदा की हम्द करो। उस की सताइश दूर तक सुनाई दे।

9क्योंकि वह हमारी ज़िंदगी क़ायम रखता, हमारे पाँवों को डगमगाने नहीं देता।

10क्योंकि ऐ अल्लाह, तूने हमें आज़माया। जिस तरह चाँदी को पिघलाकर साफ़ किया जाता है उसी तरह तूने हमें पाक-साफ़ कर दिया है।

11तूने हमें जाल में फँसा दिया, हमारी कमर पर अज़ियतनाक बोझ डाल दिया।

12तूने लोगों के रथों को हमारे सरों पर से गुज़रने दिया, और हम आग और पानी की ज़द में आ गए। लेकिन फिर तूने हमें मुसीबत से निकालकर फ़रावानी की जगह पहुँचाया।

13मैं भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ लेकर तेरे घर में आऊँगा और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करूँगा,

14वह मन्नतें जो मेरे मुँह ने मुसीबत के वक़्त मानी थीं।

15भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर मैं तुझे मोटी-ताज़ी भेड़ें और मेंढों का धुआँ पेश करूँगा, साथ साथ बैल और बकरे भी चढ़ाऊँगा। (सिलाह)

16ऐ अल्लाह का ख़ौफ़ माननेवालो, आओ और सुनो! जो कुछ अल्लाह ने मेरी जान के लिए किया वह तुम्हें सुनाऊँगा।

17मैंने अपने मुँह से उसे पुकारा, लेकिन मेरी ज़बान उस की तारीफ़ करने के लिए तैयार थी।

18अगर मैं दिल में गुनाह की परवरिश करता तो रब मेरी न सुनता।

19लेकिन यक़ीनन रब ने मेरी सुनी, उसने मेरी इल्तिजा पर तवज्जुह दी।

20अल्लाह की हम्द हो, जिसने न मेरी दुआ रद्द की, न अपनी शफ़क़त मुझसे बाज़ रखी।

तमाम क़ौमें अल्लाह की तारीफ़ करें

67 ज़बूर। तारदार साज़ों के साथ गाना है। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे और हमें बरकत दे। वह अपने चेहरे का नूर हम पर चमकाए (सिलाह)

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : 'चरबी,' जो फ़रावानी का निशान था।

2ताकि ज़मीन पर तेरी राह और तमाम क़ौमों
में तेरी नजात मालूम हो जाए।

3ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम
क़ौमें तेरी सताइश करें।

4उम्मतें शादमान होकर ख़ुशी के नारे लगाएँ,
क्योंकि तू इनसाफ़ से क़ौमों की अदालत करेगा
और ज़मीन पर उम्मतों की क़ियादत करेगा।
(सिलाह)

5ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम
क़ौमें तेरी सताइश करें।

6ज़मीन अपनी फ़सलें देती है। अल्लाह हमारा
ख़ुदा हमें बरकत दे!
7अल्लाह हमें बरकत दे, और दुनिया की
इंतहाएँ सब उसका ख़ौफ़ मानें।

अल्लाह की फ़तह

68 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए
गीत।
अल्लाह उठे तो उसके दुश्मन तित्तर-बित्तर हो
जाएंगे, उससे नफ़रत करनेवाले उसके सामने से
भाग जाएंगे।
2वह धुएँ की तरह बिखर जाएंगे। जिस तरह
मोम आग के सामने पिघल जाता है उसी तरह
बेदीन अल्लाह के हुज़ूर हलाक हो जाएंगे।
3लेकिन रास्तबाज़ ख़ुशो-ख़ुर्रम होंगे, वह
अल्लाह के हुज़ूर जशन मनाकर फूले न समाएँगे।

4अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ, उसके नाम
की मद्हसराई करो! जो रथ पर सवार बयाबान
में से गुज़र रहा है उसके लिए रास्ता तैयार करो।
रब उसका नाम है, उसके हुज़ूर ख़ुशी मनाओ!
5अल्लाह अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में
यतीमों का बाप और बेवाओं का हामी है।
6अल्लाह बेघरों को घरों में बसा देता और
क़ैदियों को क़ैद से निकालकर ख़ुशहाली अता
करता है। लेकिन जो सरकश हैं वह झुलसे हुए
मुल्क में रहेंगे।

7ऐ अल्लाह, जब तू अपनी क़ौम के आगे आगे
निकला, जब तू रेगिस्तान में क़दम बक़दम आगे
बढ़ा (सिलाह)
8तो ज़मीन लरज़ उठी और आसमान से बारिश
टपकने लगी। हाँ, अल्लाह के हुज़ूर जो कोहे-
सीना और इसराईल का ख़ुदा है ऐसा ही हुआ।
9ऐ अल्लाह, तूने कसरत की बारिश बरसने दी।
जब कभी तेरा मौरूसी मुल्क निढाल हुआ तो तूने
उसे ताज़ादम किया।
10यों तेरी क़ौम उसमें आबाद हुई। ऐ
अल्लाह, अपनी भलाई से तूने उसे ज़रूरत-
मंदों के लिए तैयार किया।

11रब फ़रमान सादिर करता है तो ख़ुश-
ख़बरी सुनानेवाली औरतों का बड़ा लशकर
निकलता है,
12“फ़ौजों के बादशाह भाग रहे हैं। वह भाग
रहे हैं और औरतें लूट का माल तक़सीम कर रही
हैं।
13तुम क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान
बैठे रहते हो? देखो, कबूतर के परों पर चाँदी और
उसके शाहपरों पर पीला सोना चढ़ाया गया है।”
14जब क़ादिरे-मुतलक़ ने वहाँ के बाद-
शाहों को मुंतशिर कर दिया तो कोहे-ज़लमोन पर
बर्फ़ पड़ी।

15कोहे-बसन इलाही पहाड़ है, कोहे-बसन की
मुतअद्दिद चोटियाँ हैं।
16ऐ पहाड़ की मुतअद्दिद चोटियो, तुम उस
पहाड़ को क्यों रश्क की निगाह से देखती हो
जिसे अल्लाह ने अपनी सुकूनतगाह के लिए पसंद
किया है? यक़ीनन रब वहाँ हमेशा के लिए
सुकूनत करेगा।

17अल्लाह के बेशुमार रथ और अनगिनत फ़ौजी हैं। ख़ुदावंद उनके दरमियान है, सीना का ख़ुदा मक़दिस में है।

18तूने बुलंदी पर चढ़कर क़ैदियों का हुजूम गिरिफ़्तार कर लिया, तुझे इनसानों से तोह्फ़े मिले, उनसे भी जो सरकश हो गए थे। यों ही रब ख़ुदा वहाँ सुकूनतपज़ीर हुआ।

19रब की तमजीद हो जो रोज़ बरोज़ हमारा बोझ उठाए चलता है। अल्लाह हमारी नजात है। (सिलाह)

20हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो हमें बार बार नजात देता है, रब क़ादिरे-मुतलक़ हमें बार बार मौत से बचने के रास्ते मुहैया करता है।

21यक़ीनन अल्लाह अपने दुश्मनों के सरों को कुचल देगा। जो अपने गुनाहों से बाज़ नहीं आता उस की खोपड़ी वह पाश पाश करेगा।

22रब ने फ़रमाया, "मैं उन्हें बसन से वापस लाऊँगा, समुंदर की गहराइयों से वापस पहुँचाऊँगा।

23तब तू अपने पाँवों को दुश्मन के ख़ून में धो लेगा, और तेरे कुत्ते उसे चाट लेंगे।"

24ऐ अल्लाह, तेरे जुलूस नज़र आ गए हैं, मेरे ख़ुदा और बादशाह के जुलूस मक़दिस में दाख़िल होते हुए नज़र आ गए हैं।

25आगे गुलूकार, फिर साज़ बजानेवाले चल रहे हैं। उनके आस-पास कुँवारियाँ दफ़ बजाते हुए फिर रही हैं।

26"जमातों में अल्लाह की सताइश करो! जितने भी इसराईल के सरचश्मे से निकले हुए हो रब की तमजीद करो!"

27वहाँ सबसे छोटा भाई बिनयमीन आगे चल रहा है, फिर यहूदाह के बुज़ुर्गों का पुरशोर हुजूम ज़बूलून और नफ़ताली के बुज़ुर्गों के साथ चल रहा है।

28ऐ अल्लाह, अपनी क़ुदरत बरूएकार ला! ऐ अल्लाह, जो क़ुदरत तूने पहले भी हमारी ख़ातिर दिखाई उसे दुबारा दिखा!

29उसे यरूशलम के ऊपर अपनी सुकूनतगाह से दिखा। तब बादशाह तेरे हुज़ूर तोह्फ़े लाएँगे।

30सरकंडों में छुपे हुए दरिंदे को मलामत कर! साँडों का जो ग़ोल बछड़ों जैसी क़ौमों में रहता है उसे डाँट! उन्हें कुचल दे जो चाँदी को प्यार करते हैं। उन क़ौमों को मुंतशिर कर जो जंग करने से लुत्फ़अंदोज़ होती हैं।

31मिसर से सफ़ीर आएँगे, एथोपिया अपने हाथ अल्लाह की तरफ़ उठाएगा।

32ऐ दुनिया की सलतनतो, अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ! रब की मद्हसराई करो (सिलाह)

33जो अपने रथ पर सवार होकर क़दीम ज़माने के बुलंदतरीन आसमानों में से गुज़रता है। सुनो उस की आवाज़ जो ज़ोर से गरज रहा है।

34अल्लाह की क़ुदरत को तसलीम करो! उस की अज़मत इसराईल पर छाई रहती और उस की क़ुदरत आसमान पर है।

35ऐ अल्लाह, तू अपने मक़दिस से ज़ाहिर होते वक़्त कितना महीब है। इसराईल का ख़ुदा ही क़ौम को क़ुव्वत और ताक़त अता करता है। अल्लाह की तमजीद हो!

आज़माइश से नजात की दुआ

69 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : सोसन के फूल। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, मुझे बचा! क्योंकि पानी मेरे गले तक पहुँच गया है।

2मैं गहरी दलदल में धँस गया हूँ, कहीं पाँव जमाने की जगह नहीं मिलती। मैं पानी की गहराइयों में आ गया हूँ, सैलाब मुझ पर ग़ालिब आ गया है।

3मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया हूँ। मेरा गला
बैठ गया है। अपने ख़ुदा का इंतज़ार करते करते
मेरी आँखें धुँधला गईं।
4जो बिलावजह मुझसे कीना रखते हैं वह मेरे
सर के बालों से ज़्यादा हैं, जो बेसबब मेरे दुश्मन
हैं और मुझे तबाह करना चाहते हैं वह ताक़तवर
हैं। जो कुछ मैंने नहीं लूटा उसे मुझसे तलब किया
जाता है।

5ऐ अल्लाह, तू मेरी हमाक़त से वाक़िफ़ है,
मेरा क़ुसूर तुझसे पोशीदा नहीं है।
6ऐ क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज, जो तेरे
इंतज़ार में रहते हैं वह मेरे बाइस शरमिंदा न हों।
ऐ इसराईल के ख़ुदा, मेरे बाइस तेरे तालिब की
रुसवाई न हो।
7क्योंकि तेरी ख़ातिर मैं शरमिंदगी बर-
दाश्त कर रहा हूँ, तेरी ख़ातिर मेरा चेहरा शर्मसार
ही रहता है।
8मैं अपने सगे भाइयों के नज़दीक अज-
नबी और अपनी माँ के बेटों के नज़दीक परदेसी
बन गया हूँ।
9क्योंकि तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा गई है, जो
तुझे गालियाँ देते हैं उनकी गालियाँ मुझ पर आ
गई हैं।
10जब मैं रोज़ा रखकर रोता था तो लोग मेरा
मज़ाक़ उड़ाते थे।
11जब मातमी लिबास पहने फिरता था तो
उनके लिए इबरतअंगेज़ मिसाल बन गया।
12जो बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े पर बैठे हैं वह मेरे
बारे में गप्पें हाँकते हैं। शराबी मुझे अपने तंज़ भरे
गीतों का निशाना बनाते हैं।

13लेकिन ऐ रब, मेरी तुझसे दुआ है कि मैं तुझे
दुबारा मंज़ूर हो जाऊँ। ऐ अल्लाह, अपनी अज़ीम
शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी सुन, अपनी यक़ीनी
नजात के मुताबिक़ मुझे बचा।
14मुझे दलदल से निकाल ताकि ग़रक़ न हो
जाऊँ। मुझे उनसे छुटकारा दे जो मुझसे नफ़रत
करते हैं। पानी की गहराइयों से मुझे बचा।
15सैलाब मुझ पर ग़ालिब न आए, समुंदर की
गहराई मुझे हड़प न कर ले, गढ़ा मेरे ऊपर अपना
मुँह बंद न कर ले।
16ऐ रब, मेरी सुन, क्योंकि तेरी शफ़क़त भली
है। अपने अज़ीम रहम के मुताबिक़ मेरी तरफ़ रुजू
कर।
17अपना चेहरा अपने ख़ादिम से छुपाए न रख,
क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। जल्दी से मेरी सुन!
18क़रीब आकर मेरी जान का फ़िद्या दे, मेरे
दुश्मनों के सबब से एवज़ाना देकर मुझे छुड़ा।

19तू मेरी रुसवाई, मेरी शरमिंदगी और
तज़लील से वाक़िफ़ है। तेरी आँखें मेरे तमाम
दुश्मनों पर लगी रहती हैं।
20उनके तानों से मेरा दिल टूट गया है, मैं बीमार
पड़ गया हूँ। मैं हमदर्दी के इंतज़ार में रहा, लेकिन
बेफ़ायदा। मैंने तवक़्क़ो की कि कोई मुझे दिलासा
दे, लेकिन एक भी न मिला।
21उन्होंने मेरी ख़ुराक में कड़वा ज़हर मिलाया,
मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।

22उनकी मेज़ उनके लिए फंदा और उनके
साथियों के लिए जाल बन जाए।
23उनकी आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख
न सकें। उनकी कमर हमेशा तक डगमगाती रहे।
24अपना पूरा ग़ुस्सा उन पर उतार, तेरा सख़्त
ग़ज़ब उन पर आ पड़े।
25उनकी रिहाइशगाह सुनसान हो जाए और
कोई उनके ख़ैमों में आबाद न हो,
26क्योंकि जिसे तू ही ने सज़ा दी उसे वह सताते
हैं, जिसे तू ही ने ज़ख़मी किया उसका दुख दूसरों
को सुनाकर ख़ुश होते हैं।
27उनके क़ुसूर का सख़्ती से हिसाब-किताब
कर, वह तेरे सामने रास्तबाज़ न ठहरें।

28उन्हें किताबे-हयात से मिटाया जाए, उनका
नाम रास्तबाज़ों की फ़हरिस्त में दर्ज न हो।

29हाय, मैं मुसीबत में फँसा हुआ हूँ, मुझे बहुत
दर्द है। ऐ अल्लाह, तेरी नजात मुझे महफ़ूज़ रखे।
30मैं अल्लाह के नाम की मद्हसराई करूँगा,
शुक्रगुज़ारी से उस की ताज़ीम करूँगा।
31यह रब को बैल या सींग और खुर रखने-
वाले साँड से कहीं ज़्यादा पसंद आएगा।
32हलीम अल्लाह का काम देखकर ख़ुश हो
जाएंगे। ऐ अल्लाह के तालिबो, तसल्ली पाओ!
33क्योंकि रब मुहताजों की सुनता और अपने
क़ैदियों को हक़ीर नहीं जानता।

34आसमानो-ज़मीन उस की तमजीद करें,
समुंदर और जो कुछ उसमें हरकत करता है उस
की सताइश करे।
35क्योंकि अल्लाह सिय्यून को नजात देकर
यहूदाह के शहरों को तामीर करेगा, और उसके
ख़ादिम उन पर क़ब्ज़ा करके उनमें आबाद हो
जाएंगे।
36उनकी औलाद मुल्क को मीरास में
पाएगी, और उसके नाम से मुहब्बत रखने-
वाले उसमें बसे रहेंगे।

दुश्मन से नजात की दुआ

70 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। याददाश्त के लिए।
ऐ अल्लाह, जल्दी से आकर मुझे बचा! ऐ रब,
मेरी मदद करने में जल्दी कर!
2मेरे जानी दुश्मन शरमिंदा हो जाएँ, उनकी
सख़्त रुसवाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने
से लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उनका मुँह
काला हो जाए।
3जो मेरी मुसीबत देखकर क़हक़हा लगाते हैं
वह शर्म के मारे पुश्त दिखाएँ।
4लेकिन तेरे तालिब शादमान होकर तेरी ख़ुशी
मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें,
“अल्लाह अज़ीम है!”
5लेकिन मैं नाचार और मुहताज हूँ। ऐ अल्लाह,
जल्दी से मेरे पास आ! तू ही मेरा सहारा और मेरा
नजातदहिंदा है। ऐ रब, देर न कर!

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

71 ऐ रब, मैंने तुझमें पनाह ली है। मुझे
कभी शरमिंदा न होने दे।
2अपनी रास्ती से मुझे बचाकर छुटकारा दे।
अपना कान मेरी तरफ़ झुकाकर मुझे नजात दे।
3मेरे लिए चट्टान पर महफ़ूज़ घर हो जिसमें मैं
हर वक़्त पनाह ले सकूँ। तूने फ़रमाया है कि मुझे
नजात देगा, क्योंकि तू ही मेरी चट्टान और मेरा
क़िला है।

4ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे बेदीन के हाथ से बचा, उसके
क़ब्ज़े से जो बेइनसाफ़ और ज़ालिम है।

5क्योंकि तू ही मेरी उम्मीद है। ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, तू मेरी जवानी ही से मेरा भरोसा रहा है।
6पैदाइश से ही मैंने तुझ पर तकिया किया है,
माँ के पेट से तूने मुझे सँभाला है। मैं हमेशा तेरी
हम्दो-सना करूँगा।

7बहुतों के नज़दीक मैं बदशुगूनी हूँ, लेकिन तू
मेरी मज़बूत पनाहगाह है।
8दिन-भर मेरा मुँह तेरी तमजीद और ताज़ीम
से लबरेज़ रहता है।

9बुढ़ापे में मुझे रद्द न कर, ताक़त के ख़त्म होने
पर मुझे तर्क न कर।
10क्योंकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें कर रहे
हैं, जो मेरी जान की ताक लगाए बैठे हैं वह एक
दूसरे से सलाह-मशवरा कर रहे हैं।

11वह कहते हैं, “अल्लाह ने उसे तर्क कर दिया
है। उसके पीछे पड़कर उसे पकड़ो, क्योंकि कोई
नहीं जो उसे बचाए।”

12ऐ अल्लाह, मुझसे दूर न हो। ऐ मेरे ख़ुदा,
मेरी मदद करने में जल्दी कर।
13मेरे हरीफ़ शरमिंदा होकर फ़ना हो जाएँ, जो
मुझे नुक़सान पहुँचाने के दरपै हैं वह लान-तान
और रुसवाई तले दब जाएँ।
14लेकिन मैं हमेशा तेरे इंतज़ार में रहूँगा, हमेशा
तेरी सताइश करता रहूँगा।
15मेरा मुँह तेरी रास्ती सुनाता रहेगा, सारा दिन
तेरे नजातबख़्श कामों का ज़िक्र करता रहेगा, गो
मैं उनकी पूरी तादाद गिन भी नहीं सकता।
16मैं रब क़ादिरे-मुतलक़ के अज़ीम काम
सुनाते हुए आऊँगा, मैं तेरी, सिर्फ़ तेरी ही रास्ती
याद करूँगा।

17ऐ अल्लाह, तू मेरी जवानी से मुझे तालीम
देता रहा है, और आज तक मैं तेरे मोजिज़ात का
एलान करता आया हूँ।
18ऐ अल्लाह, ख़ाह मैं बूढ़ा हो जाऊँ और मेरे
बाल सफ़ेद हो जाएँ मुझे तर्क न कर जब तक मैं
आनेवाली पुश्त के तमाम लोगों को तेरी क़ुव्वत
और क़ुदरत के बारे में बता न लूँ।

19ऐ अल्लाह, तेरी रास्ती आसमान से बातें
करती है। ऐ अल्लाह, तुझ जैसा कौन है जिसने
इतने अज़ीम काम किए हैं?
20तूने मुझे मुतअद्दिद तलख़ तजरबों में से
गुज़रने दिया है, लेकिन तू मुझे दुबारा ज़िंदा भी
करेगा, तू मुझे ज़मीन की गहराइयों में से वापस
लाएगा।
21मेरा रुतबा बढ़ा दे, मुझे दुबारा तसल्ली दे।
22ऐ मेरे ख़ुदा, मैं सितार बजाकर तेरी सताइश
और तेरी वफ़ादारी की तमजीद करूँगा। ऐ
इसराईल के क़ुद्दूस, मैं सरोद बजाकर तेरी तारीफ़
में गीत गाऊँगा।
23जब मैं तेरी मद्‌हसराई करूँगा तो मेरे होंट
ख़ुशी के नारे लगाएँगे, और मेरी जान जिसे तूने
फ़िद्या देकर छुड़ाया है शादियाना बजाएगी।
24मेरी ज़बान भी दिन-भर तेरी रास्ती बयान
करेगी, क्योंकि जो मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते
थे वह शर्मसार और रुसवा हो गए हैं।

सलामती का बादशाह

72 सुलेमान का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, बादशाह को अपना
इनसाफ़ अता कर, बादशाह के बेटे को अपनी
रास्ती बख़्श दे
2ताकि वह रास्ती से तेरी क़ौम और इनसाफ़
से तेरे मुसीबतज़दों की अदालत करे।
3पहाड़ क़ौम को सलामती और पहाड़ियाँ
रास्ती पहुँचाएँ।
4वह क़ौम के मुसीबतज़दों का इनसाफ़ करे
और मुहताजों की मदद करके ज़ालिमों को कुचल
दे।
5तब लोग पुश्त-दर-पुश्त तेरा ख़ौफ़ मानेंगे जब
तक सूरज चमके और चाँद रौशनी दे।
6वह कटी हुई घास के खेत पर बरसने-
वाली बारिश की तरह उतर आए, ज़मीन को तर
करनेवाली बौछाड़ों की तरह नाज़िल हो जाए।
7उसके दौरे-हुकूमत में रास्तबाज़ फले-फूलेगा,
और जब तक चाँद नेस्त न हो जाए सलामती का
ग़लबा होगा।
8वह एक समुंदर से दूसरे समुंदर तक और
दरियाए-फ़ुरात से दुनिया की इंतहा तक हुकूमत
करे।
9रेगिस्तान के बाशिंदे उसके सामने झुक जाएँ,
उसके दुश्मन ख़ाक चाटें।
10तरसीस और साहिली इलाक़ों के बाद-
शाह उसे ख़राज पहुँचाएँ, सबा और सिबा उसे
बाज पेश करें।
11तमाम बादशाह उसे सिजदा करें, सब
अक़वाम उस की ख़िदमत करें।

12क्योंकि जो ज़रूरतमंद मदद के लिए पुकारे उसे वह छुटकारा देगा, जो मुसीबत में है और जिसकी मदद कोई नहीं करता उसे वह रिहाई देगा।

13वह पस्तहालों और ग़रीबों पर तरस खाएगा, मुहताजों की जान को बचाएगा।

14वह एवज़ाना देकर उन्हें ज़ुल्मो-तशद्दुद से छुड़ाएगा, क्योंकि उनका ख़ून उस की नज़र में क़ीमती है।

15बादशाह ज़िंदाबाद! सबा का सोना उसे दिया जाए। लोग हमेशा उसके लिए दुआ करें, दिन-भर उसके लिए बरकत चाहें।

16मुल्क में अनाज की कसरत हो, पहाड़ों की चोटियों पर भी उस की फ़सलें लहलहाएँ। उसका फल लुबनान के फल जैसा उम्दा हो, शहरों के बाशिंदे हरियाली की तरह फलें-फूलें।

17बादशाह का नाम अबद तक क़ायम रहे, जब तक सूरज चमके उसका नाम फले-फूले। तमाम अक़वाम उससे बरकत पाएँ, और वह उसे मुबारक कहें।

18रब ख़ुदा की तमजीद हो जो इसराईल का ख़ुदा है। सिर्फ़ वही मोजिज़े करता है!

19उसके जलाली नाम की अबद तक तमजीद हो, पूरी दुनिया उसके जलाल से भर जाए। आमीन, फिर आमीन।

20यहाँ दाऊद बिन यस्सी की दुआएँ ख़त्म होती हैं।

तीसरी किताब 73-89

बेदीनों की कामयाबी के बावुजूद तसल्ली

73 आसफ़ का ज़बूर।
यक़ीनन अल्लाह इसराईल पर मेहरबान है, उन पर जिनके दिल पाक हैं।

2लेकिन मैं फिसलने को था, मेरे क़दम लग़ज़िश खाने को थे।

3क्योंकि शेख़ीबाज़ों को देखकर मैं बेचैन हो गया, इसलिए कि बेदीन इतने ख़ुशहाल हैं।

4मरते वक़्त उनको कोई तकलीफ़ नहीं होती, और उनके जिस्म मोटे-ताज़े रहते हैं।

5आम लोगों के मसायल से उनका वास्ता नहीं पड़ता। जिस दर्दो-करब में दूसरे मुब्तला रहते हैं उससे वह आज़ाद होते हैं।

6इसलिए उनके गले में तकब्बुर का हार है, वह ज़ुल्म का लिबास पहने फिरते हैं।

7चरबी के बाइस उनकी आँखें उभर आई हैं। उनके दिल बेलगाम वहमों की गिरिफ़्त में रहते हैं।

8वह मज़ाक़ उड़ाकर बुरी बातें करते हैं, अपने ग़ुरूर में ज़ुल्म की धमकियाँ देते हैं।

9वह समझते हैं कि जो कुछ हमारे मुँह से निकलता है वह आसमान से है, जो बात हमारी ज़बान पर आ जाती है वह पूरी ज़मीन के लिए अहमियत रखती है।

10चुनाँचे अवाम उनकी तरफ़ रुजू होते हैं, क्योंकि उनके हाँ कसरत का पानी पिया जाता है।

11वह कहते हैं, "अल्लाह को क्या पता है? अल्लाह तआला को इल्म ही नहीं।"

12देखो, यही है बेदीनों का हाल। वह हमेशा सुकून से रहते, हमेशा अपनी दौलत में इज़ाफ़ा करते हैं।

13यक़ीनन मैंने बेफ़ायदा अपना दिल पाक रखा और अबस अपने हाथ ग़लत काम करने से बाज़ रखे।

14क्योंकि दिन-भर मैं दर्दो-करब में मुब्तला रहता हूँ, हर सुबह मुझे सज़ा दी जाती है।

15अगर मैं कहता, "मैं भी उनकी तरह बोलूँगा," तो तेरे फ़रज़ंदों की नसल से ग़द्दारी करता।

16मैं सोच-बिचार में पड़ गया ताकि बात समझूँ, लेकिन सोचते सोचते थक गया, अज़ियत में सिर्फ़ इज़ाफ़ा हुआ।

17तब मैं अल्लाह के मक़दिस में दाख़िल होकर
समझ गया कि उनका अंजाम क्या होगा।
18यक़ीनन तू उन्हें फिसलनी जगह पर रखेगा,
उन्हें फ़रेब में फँसाकर ज़मीन पर पटख़ देगा।
19अचानक ही वह तबाह हो जाएंगे,
दहशतनाक मुसीबत में फँसकर मुकम्मल तौर
पर फ़ना हो जाएंगे।
20ऐ रब, जिस तरह ख़ाब जाग उठते वक़्त
ग़ैरहक़ीक़ी साबित होता है उसी तरह तू उठते
वक़्त उन्हें वहम क़रार देकर हक़ीर जानेगा।

21जब मेरे दिल में तलख़ी पैदा हुई और मेरे
बातिन में सख़्त दर्द था
22तो मैं अहमक़ था। मैं कुछ नहीं समझता था
बल्कि तेरे सामने मवेशी की मानिंद था।
23तो भी मैं हमेशा तेरे साथ लिपटा रहूँगा,
क्योंकि तू मेरा दहना हाथ थामे रखता है।
24तू अपने मशवरे से मेरी क़ियादत करके
आख़िर में इज़्ज़त के साथ मेरा ख़ैरमक़्दम करेगा।
25जब तू मेरे साथ है तो मुझे आसमान पर क्या
कमी होगी? जब तू मेरे साथ है तो मैं ज़मीन की
कोई भी चीज़ नहीं चाहूँगा।
26ख़ाह मेरा जिस्म और मेरा दिल जवाब दे
जाएँ, लेकिन अल्लाह हमेशा तक मेरे दिल की
चट्टान और मेरी मीरास है।

27यक़ीनन जो तुझसे दूर हैं वह हलाक हो
जाएंगे, जो तुझसे बेवफ़ा हैं उन्हें तू तबाह कर
देगा।
28लेकिन मेरे लिए अल्लाह की क़ुरबत सब
कुछ है। मैंने रब क़ादिरे-मुतलक़ को अपनी
पनाहगाह बनाया है, और मैं लोगों को तेरे तमाम
काम सुनाऊँगा।

रब के घर की बेहुरमती पर अफ़सोस

74 आसफ़ का ज़बूर। हिकमत का गीत।
ऐ अल्लाह, तूने हमें हमेशा के लिए
क्यों रद्द किया है? अपनी चरागाह की भेड़ों पर
तेरा क़हर क्यों भड़कता रहता है?
2अपनी जमात को याद कर जिसे तूने क़दीम
ज़माने में ख़रीदा और एवज़ाना देकर छुड़ाया
ताकि तेरी मीरास का क़बीला हो। कोहे-सिय्यून
को याद कर जिस पर तू सुकूनतपज़ीर रहा है।
3अपने क़दम इन दायमी खंडरात की तरफ़
बढ़ा। दुश्मन ने मक़दिस में सब कुछ तबाह कर
दिया है।
4तेरे मुख़ालिफ़ों ने गरजते हुए तेरी जलसागाह
में अपने निशान गाड़ दिए हैं।
5उन्होंने गुंजान जंगल में लकड़हारों की तरह
अपने कुल्हाड़े चलाए,
6अपने कुल्हाड़ों और कुदालों से उस की तमाम
कंदाकारी को टुकड़े टुकड़े कर दिया है।
7उन्होंने तेरे मक़दिस को भस्म कर दिया, फ़र्श
तक तेरे नाम की सुकूनतगाह की बेहुरमती की है।
8अपने दिल में वह बोले, "आओ, हम उन
सबको ख़ाक में मिलाएँ!" उन्होंने मुल्क में
अल्लाह की हर इबादतगाह नज़रे-आतिश कर दी
है।
9अब हम पर कोई इलाही निशान ज़ाहिर नहीं
होता। न कोई नबी हमारे पास रह गया, न कोई
और मौजूद है जो जानता हो कि ऐसे हालात कब
तक रहेंगे।
10ऐ अल्लाह, हरीफ़ कब तक लान-तान
करेगा, दुश्मन कब तक तेरे नाम की तकफ़ीर
करेगा?
11तू अपना हाथ क्यों हटाता, अपना दहना
हाथ दूर क्यों रखता है? उसे अपनी चादर से
निकालकर उन्हें तबाह कर दे!

12अल्लाह क़दीम ज़माने से मेरा बादशाह है,
वही दुनिया में नजातबख़्श काम अंजाम देता है।
13तू ही ने अपनी क़ुदरत से समुंदर को चीरकर
पानी में अज़दहाओं के सरों को तोड़ डाला।
14तू ही ने लिवियातान के सरों को चूर चूर
करके उसे जंगली जानवरों को खिला दिया।

15एक जगह तूने चश्मे और नदियाँ फूटने दीं,
दूसरी जगह कभी न सूखनेवाले दरिया सूखने
दिए।
16दिन भी तेरा है, रात भी तेरी ही है। चाँद और
सूरज तेरे ही हाथ से क़ायम हुए।
17तू ही ने ज़मीन की हुदूद मुक़र्रर कीं, तू ही ने
गरमियों और सर्दियों के मौसम बनाए।

18ऐ रब, दुश्मन की लान-तान याद कर।
ख़याल कर कि अहमक़ क़ौम तेरे नाम पर कुफ़र
बकती है।
19अपने कबूतर की जान को वहशी जानवरों
के हवाले न कर, हमेशा तक अपने मुसीबतज़दों
की ज़िंदगी को न भूल।
20अपने अहद का लिहाज़ कर, क्योंकि मुल्क
के तारीक कोने ज़ुल्म के मैदानों से भर गए हैं।
21होने न दे कि मज़लूमों को शरमिंदा होकर
पीछे हटना पड़े बल्कि बख़्श दे कि मुसीबतज़दा
और ग़रीब तेरे नाम पर फ़ख़र कर सकें।
22ऐ अल्लाह, उठकर अदालत में अपने मामले
का दिफ़ा कर। याद रहे कि अहमक़ दिन-भर तुझे
लान-तान करता है।
23अपने दुश्मनों के नारे न भूल बल्कि अपने
मुख़ालिफ़ों का मुसलसल बढ़ता हुआ शोर-शराबा
याद कर।

अल्लाह मग़रूरों की अदालत करता है

75 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।

ऐ अल्लाह, तेरा शुक्र हो, तेरा शुक्र! तेरा नाम
उनके क़रीब है जो तेरे मोजिज़े बयान करते हैं।

2अल्लाह फ़रमाता है, "जब मेरा वक़्त आएगा
तो मैं इनसाफ़ से अदालत करूँगा।
3गो ज़मीन अपने बाशिंदों समेत डगमगाने लगे,
लेकिन मैं ही ने उसके सतूनों को मज़बूत कर दिया
है। (सिलाह)
4शेख़ीबाज़ों से मैंने कहा, 'डींगें मत मारो,' और
बेदीनों से, 'अपने आप पर फ़ख़र मत करो।[a]
5न अपनी ताक़त पर शेख़ी मारो,[b] न अकड़कर
कुफ़र बको'।"
6क्योंकि सरफ़राज़ी न मशरिक़ से, न मग़रिब
से और न बयाबान से आती है
7बल्कि अल्लाह से जो मुंसिफ़ है। वही एक
को पस्त कर देता है और दूसरे को सरफ़राज़।
8क्योंकि रब के हाथ में झागदार और
मसालेदार मै का प्याला है जिसे वह लोगों को
पिला देता है। यक़ीनन दुनिया के तमाम बेदीनों
को इसे आख़िरी क़तरे तक पीना है।

9लेकिन मैं हमेशा अल्लाह के अज़ीम काम
सुनाऊँगा, हमेशा याक़ूब के ख़ुदा की मद्हसराई
करूँगा।

10अल्लाह फ़रमाता है, "मैं तमाम बेदीनों
की कमर तोड़ दूँगा जबकि रास्तबाज़ सरफ़राज़
होगा।"[c]

अल्लाह मुंसिफ़ है

76 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

अल्लाह यहूदाह में मशहूर है, उसका नाम
इसराईल में अज़ीम है।
2उसने अपनी माँद सालिम[d] में और अपना भट
कोहे-सिय्यून पर बना लिया है।
3वहाँ उसने जलते हुए तीरों को तोड़ डाला और
ढाल, तलवार और जंग के हथियारों को चूर चूर
कर दिया है। (सिलाह)

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : सींग मत उठाओ।
[b]लफ़्ज़ी मतलब : न अपना सींग उठाओ।
[c]लफ़्ज़ी तरजुमा : बेदीनों के तमाम सींगों को काट डालूँगा जबकि रास्तबाज़ों का सींग सरफ़राज़ हो जाएगा।
[d]सालिम से मुराद यरूशलम है।

4ऐ अल्लाह, तू दरख़्शाँ है, तू शिकार के पहाड़ों
से आया हुआ अज़ीमुश-शान सूरमा है।

5बहादुरों को लूट लिया गया है, वह मौत की
नींद सो गए हैं। फ़ौजियों में से एक भी हाथ नहीं
उठा सकता।
6ऐ याक़ूब के ख़ुदा, तेरे डाँटने पर घोड़े और
रथबान बेहिसो-हरकत हो गए हैं।
7तू ही महीब है। जब तू झिड़के तो कौन तेरे
हुज़ूर क़ायम रहेगा?
8तूने आसमान से फ़ैसले का एलान किया।
ज़मीन सहमकर चुप हो गई
9जब अल्लाह अदालत करने के लिए उठा, जब
वह तमाम मुसीबतज़दों को नजात देने के लिए
आया। (सिलाह)
10क्योंकि इनसान का तैश भी तेरी तमजीद
का बाइस है। उसके तैश का आख़िरी नतीजा तेरा
जलाल ही है।[a]

11रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नतें मानकर
उन्हें पूरा करो। जितने भी उसके इर्दगिर्द हैं वह
पुरजलाल ख़ुदा के हुज़ूर हदिये लाएँ।
12वह हुक्मरानों को शिकस्ता रूह कर देता है,
उसी से दुनिया के बादशाह दहशत खाते हैं।

अल्लाह के अज़ीम कामों से तसल्ली मिलती है

77 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। यदूतून के लिए।
मैं अल्लाह से फ़रियाद करके मदद के लिए
चिल्लाता हूँ, मैं अल्लाह को पुकारता हूँ कि मुझ
पर ध्यान दे।
2अपनी मुसीबत में मैंने रब को तलाश किया।
रात के वक़्त मेरे हाथ बिलानाग़ा उस की तरफ़ उठे
रहे। मेरी जान ने तसल्ली पाने से इनकार किया।
3मैं अल्लाह को याद करता हूँ तो आहें भरने
लगता हूँ, मैं सोच-बिचार में पड़ जाता हूँ तो रूह
निढाल हो जाती है। (सिलाह)
4तू मेरी आँखों को बंद होने नहीं देता। मैं इतना
बेचैन हूँ कि बोल भी नहीं सकता।

5मैं क़दीम ज़माने पर ग़ौर करता हूँ, उन सालों
पर जो बड़ी देर हुए गुज़र गए हैं।
6रात को मैं अपना गीत याद करता हूँ। मेरा
दिल महवे-ख़याल रहता और मेरी रूह तफ़तीश
करती रहती है।
7"क्या रब हमेशा के लिए रद्द करेगा, क्या
आइंदा हमें कभी पसंद नहीं करेगा?
8क्या उस की शफ़क़त हमेशा के लिए जाती
रही है? क्या उसके वादे अब से जवाब दे गए हैं?
9क्या अल्लाह मेहरबानी करना भूल गया है?
क्या उसने ग़ुस्से में अपना रहम बाज़ रखा है?"
(सिलाह)
10मैं बोला, "इससे मुझे दुख है कि अल्लाह
तआला का दहना हाथ बदल गया है।"

11मैं रब के काम याद करूँगा, हाँ क़दीम ज़माने
के तेरे मोजिज़े याद करूँगा।
12जो कुछ तूने किया उसके हर पहलू पर ग़ौरो-
ख़ौज़ करूँगा, तेरे अज़ीम कामों में महवे-ख़याल
रहूँगा।
13ऐ अल्लाह, तेरी राह क़ुद्दूस है। कौन-सा
माबूद हमारे ख़ुदा जैसा अज़ीम है?
14तू ही मोजिज़े करनेवाला ख़ुदा है। अक़वाम
के दरमियान तूने अपनी क़ुदरत का इज़हार किया
है।
15बड़ी क़ुव्वत से तूने एवज़ाना देकर अपनी
क़ौम, याक़ूब और यूसुफ़ की औलाद को रिहा
कर दिया है। (सिलाह)

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : तू बचे हुए तैश से कमरबस्ता हो जाता है।

16ऐ अल्लाह, पानी ने तुझे देखा, पानी ने
तुझे देखा तो तड़पने लगा, गहराइयों तक लरज़ने
लगा।
17मूसलाधार बारिश बरसी, बादल गरज उठे
और तेरे तीर इधर-उधर चलने लगे।
18आँधी में तेरी आवाज़ कड़कती रही, दुनिया
बिजलियों से रौशन हुई, ज़मीन काँपती काँपती
उछल पड़ी।
19तेरी राह समुंदर में से, तेरा रास्ता गहरे पानी
में से गुज़रा, तो भी तेरे नक़्शे-क़दम किसी को
नज़र न आए।
20मूसा और हारून के हाथ से तूने रेवड़ की
तरह अपनी क़ौम की राहनुमाई की।

इसराईल की तारीख़ में इलाही सज़ा और रहम

78 आसफ़ का ज़बूर। हिकमत का गीत।
ऐ मेरी क़ौम, मेरी हिदायत पर ध्यान
दे, मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।
2मैं तमसीलों में बात करूँगा, क़दीम ज़माने के
मुअम्मे बयान करूँगा।
3जो कुछ हमने सुन लिया और हमें मालूम हुआ
है, जो कुछ हमारे बापदादा ने हमें सुनाया है
4उसे हम उनकी औलाद से नहीं छुपाएँगे। हम
आनेवाली पुश्त को रब के क़ाबिले-तारीफ़ काम
बताएँगे, उस की क़ुदरत और मोजिज़ात बयान
करेंगे।
5क्योंकि उसने याक़ूब की औलाद को शरीअत
दी, इसराईल में अहकाम क़ायम किए। उसने
फ़रमाया कि हमारे बापदादा यह अहकाम अपनी
औलाद को सिखाएँ
6ताकि आनेवाली पुश्त भी उन्हें अपनाए, वह
बच्चे जो अभी पैदा नहीं हुए थे। फिर उन्हें भी
अपने बच्चों को सुनाना था।
7क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि इस तरह हर
पुश्त अल्लाह पर एतमाद रखकर उसके अज़ीम
काम न भूले बल्कि उसके अहकाम पर अमल
करे।
8वह नहीं चाहता कि वह अपने बापदादा की
मानिंद हों जो ज़िद्दी और सरकश नसल थे, ऐसी
नसल जिसका दिल साबितक़दम नहीं था और
जिसकी रूह वफ़ादारी से अल्लाह से लिपटी न
रही।

9चुनाँचे इफ़राईम के मर्द गो कमानों से लैस थे
जंग के वक़्त फ़रार हुए।
10वह अल्लाह के अहद के वफ़ादार न रहे, उस
की शरीअत पर अमल करने के लिए तैयार नहीं
थे।
11जो कुछ उसने किया था, जो मोजिज़े उसने
उन्हें दिखाए थे, इफ़राईमी वह सब कुछ भूल गए।
12मुल्के-मिसर के इलाक़े ज़ुअन में उसने उनके
बापदादा के देखते देखते मोजिज़े किए थे।
13समुंदर को चीरकर उसने उन्हें उसमें से
गुज़रने दिया, और दोनों तरफ़ पानी मज़बूत दीवार
की तरह खड़ा रहा।
14दिन को उसने बादल के ज़रीए और रात-भर
चमकदार आग से उनकी क़ियादत की।
15रेगिस्तान में उसने पत्थरों को चाक करके
उन्हें समुंदर की-सी कसरत का पानी पिलाया।
16उसने होने दिया कि चट्टान से नदियाँ फूट
निकलें और पानी दरियाओं की तरह बहने लगे।

17लेकिन वह उसका गुनाह करने से बाज़ न
आए बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला से
सरकश रहे।
18जान-बूझकर उन्होंने अल्लाह को
आज़माकर वह ख़ुराक माँगी जिसका लालच
करते थे।
19अल्लाह के ख़िलाफ़ कुफ़र बककर वह
बोले, “क्या अल्लाह रेगिस्तान में हमारे लिए मेज़
बिछा सकता है?
20बेशक जब उसने चट्टान को मारा तो पानी
फूट निकला और नदियाँ बहने लगीं। लेकिन क्या
वह रोटी भी दे सकता है, अपनी क़ौम को गोश्त
भी मुहैया कर सकता है? यह तो नामुमकिन है।”

21यह सुनकर रब तैश में आ गया। याक़ूब
के ख़िलाफ़ आग भड़क उठी, और उसका ग़ज़ब
इसराईल पर नाज़िल हुआ।
22क्यों? इसलिए कि उन्हें अल्लाह पर यक़ीन
नहीं था, वह उस की नजात पर भरोसा नहीं रखते
थे।

23इसके बावुजूद अल्लाह ने उनके ऊपर
बादलों को हुक्म देकर आसमान के दरवाज़े खोल
दिए।
24उसने खाने के लिए उन पर मन बरसाया,
उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।
25हर एक ने फ़रिश्तों की यह रोटी खाई बल्कि
अल्लाह ने इतना खाना भेजा कि उनके पेट भर
गए।
26फिर उसने आसमान पर मशरिक़ी हवा
चलाई और अपनी क़ुदरत से जुनूबी हवा पहुँचाई।
27उसने गर्द की तरह उन पर गोश्त बरसाया,
समुंदर की रेत जैसे बेशुमार परिंदे उन पर गिरने
दिए।
28ख़ैमागाह के बीच में ही वह गिर पड़े, उनके
घरों के इर्दगिर्द ही ज़मीन पर आ गिरे।
29तब वह खा खाकर ख़ूब सेर हो गए, क्योंकि
जिसका लालच वह करते थे वह अल्लाह ने उन्हें
मुहैया किया था।
30लेकिन उनका लालच अभी पूरा नहीं हुआ
था और गोश्त अभी उनके मुँह में था
31कि अल्लाह का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ।
क़ौम के खाते-पीते लोग हलाक हुए, इसराईल के
जवान ख़ाक में मिल गए।

32इन तमाम बातों के बावुजूद वह अपने गुनाहों
में इज़ाफ़ा करते गए और उसके मोजिज़ात पर
ईमान न लाए।
33इसलिए उसने उनके दिन नाकामी में गुज़रने
दिए, और उनके साल दहशत की हालत में
इख़्तितामपज़ीर हुए।
34जब कभी अल्लाह ने उनमें क़त्लो-ग़ारत
होने दी तो वह उसे ढूँडने लगे, वह मुड़कर अल्लाह
को तलाश करने लगे।
35तब उन्हें याद आया कि अल्लाह हमारी
चट्टान, अल्लाह तआला हमारा छुड़ानेवाला है।
36लेकिन वह मुँह से उसे धोका देते, ज़बान से
उसे झूट पेश करते थे।
37न उनके दिल साबितक़दमी से उसके साथ
लिपटे रहे, न वह उसके अहद के वफ़ादार रहे।

38तो भी अल्लाह रहमदिल रहा। उसने उन्हें
तबाह न किया बल्कि उनका क़ुसूर मुआफ़ करता
रहा। बार बार वह अपने ग़ज़ब से बाज़ आया,
बार बार अपना पूरा क़हर उन पर उतारने से गुरेज़
किया।
39क्योंकि उसे याद रहा कि वह फ़ानी इनसान
हैं, हवा का एक झोंका जो गुज़रकर कभी वापस
नहीं आता।

40रेगिस्तान में वह कितनी दफ़ा उससे सरकश
हुए, कितनी मरतबा उसे दुख पहुँचाया।
41बार बार उन्होंने अल्लाह को आज़माया, बार
बार इसराईल के क़ुद्दूस को रंजीदा किया।
42उन्हें उस की क़ुदरत याद न रही, वह दिन
जब उसने फ़िद्या देकर उन्हें दुश्मन से छुड़ाया,

43वह दिन जब उसने मिसर में अपने इलाही
निशान दिखाए, ज़ुअन के इलाक़े में अपने मोजिज़े
किए।
44उसने उनकी नहरों का पानी ख़ून में बदल
दिया, और वह अपनी नदियों का पानी पी न सके।
45उसने उनके दरमियान जुओं के ग़ोल भेजे
जो उन्हें खा गईं, मेंढक जो उन पर तबाही लाए।
46उनकी पैदावार उसने जवान टिड्डियों के
हवाले की, उनकी मेहनत का फल बालिग़ टिड्डियों
के सुपुर्द किया।
47उनकी अंगूर की बेलें उसने ओलों से, उनके
अंजीर-तूत के दरख़्त सैलाब से तबाह कर दिए।

48उनके मवेशी उसने ओलों के हवाले किए,
उनके रेवड़ बिजली के सुपुर्द किए।
49उसने उन पर अपना शोलाज़न ग़ज़ब
नाज़िल किया। क़हर, ख़फ़गी और मुसीबत यानी
तबाही लानेवाले फ़रिश्तों का पूरा दस्ता उन पर
हमलाआवर हुआ।
50उसने अपने ग़ज़ब के लिए रास्ता तैयार
करके उन्हें मौत से न बचाया बल्कि मोहलक वबा
की ज़द में आने दिया।
51मिसर में उसने तमाम पहलौठों को मार
डाला और हाम के ख़ैमों में मरदानगी का पहला
फल तमाम कर दिया।
52फिर वह अपनी क़ौम को भेड़-बकरियों की
तरह मिसर से बाहर लाकर रेगिस्तान में रेवड़ की
तरह लिए फिरा।
53वह हिफ़ाज़त से उनकी क़ियादत करता
रहा। उन्हें कोई डर नहीं था जबकि उनके दुश्मन
समुंदर में डूब गए।
54यों अल्लाह ने उन्हें मुक़द्दस मुल्क तक
पहुँचाया, उस पहाड़ तक जिसे उसके दहने हाथ
ने हासिल किया था।
55उनके आगे आगे वह दीगर क़ौमें
निकालता गया। उनकी ज़मीन उसने तक़-
सीम करके इसराईलियों को मीरास में दी, और
उनके ख़ैमों में उसने इसराईली क़बीले बसाए।

56इसके बावुजूद वह अल्लाह तआला को
आज़माने से बाज़ न आए बल्कि उससे सरकश
हुए और उसके अहकाम के ताबे न रहे।
57अपने बापदादा की तरह वह ग़द्दार बनकर
बेवफ़ा हुए। वह ढीली कमान की तरह नाकाम हो
गए।
58उन्होंने ऊँची जगहों की ग़लत क़ुर-
बानगाहों से अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाया और
अपने बुतों से उसे रंजीदा किया।
59जब अल्लाह को ख़बर मिली तो वह
ग़ज़बनाक हुआ और इसराईल को मुकम्मल तौर
पर मुस्तरद कर दिया।
60उसने सैला में अपनी सुकूनतगाह छोड़
दी, वह ख़ैमा जिसमें वह इनसान के दर-
मियान सुकूनत करता था।
61अहद का संदूक़ उस की क़ुदरत और जलाल
का निशान था, लेकिन उसने उसे दुश्मन के हवाले
करके जिलावतनी में जाने दिया।
62अपनी क़ौम को उसने तलवार की ज़द
में आने दिया, क्योंकि वह अपनी मौरूसी
मिलकियत से निहायत नाराज़ था।
63क़ौम के जवान नज़रे-आतिश हुए, और उस
की कुँवारियों के लिए शादी के गीत गाए न गए।
64उसके इमाम तलवार से क़त्ल हुए, और उस
की बेवाओं ने मातम न किया।

65तब रब जाग उठा, उस आदमी की तरह
जिसकी नींद उचाट हो गई हो, उस सूरमे की
मानिंद जिससे नशे का असर उतर गया हो।
66उसने अपने दुश्मनों को मार मारकर भगा
दिया और उन्हें हमेशा के लिए शरमिंदा कर दिया।
67उस वक़्त उसने यूसुफ़ का ख़ैमा रद्द किया
और इफ़राईम के क़बीले को न चुना
68बल्कि यहूदाह के क़बीले और कोहे-सिय्यून
को चुन लिया जो उसे प्यारा था।
69उसने अपना मक़दिस बुलंदियों की मानिंद
बनाया, ज़मीन की मानिंद जिसे उसने हमेशा के
लिए क़ायम किया है।
70उसने अपने ख़ादिम दाऊद को चुनकर भेड़-
बकरियों के बाड़ों से बुलाया।
71हाँ, उसने उसे भेड़ों[a] की देख-भाल से
बुलाया ताकि वह उस की क़ौम याक़ूब, उस की
मीरास इसराईल की गल्लाबानी करे।

[a]इबरानी मतन से मुराद वह भेड़ है जो अभी अपने बच्चों को दूध पिलाती है।

72दाऊद ने ख़ुलूसदिली से उनकी गल्लाबानी की, बड़ी महारत से उसने उनकी राहनुमाई की।

जंग की मुसीबत में क़ौम की दुआ

79 आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, अजनबी क़ौमें तेरी मौरूसी ज़मीन में घुस आई हैं। उन्होंने तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की बेहुरमती करके यरूशलम को मलबे का ढेर बना दिया है।
2उन्होंने तेरे ख़ादिमों की लाशें परिंदों को और तेरे ईमानदारों का गोश्त जंगली जानवरों को खिला दिया है।
3यरूशलम के चारों तरफ़ उन्होंने ख़ून की नदियाँ बहाईं, और कोई बाक़ी न रहा जो मुरदों को दफ़नाता।
4हमारे पड़ोसियों ने हमें मज़ाक़ का निशाना बना लिया है, इर्दगिर्द की क़ौमें हमारी हँसी उड़ाती और लान-तान करती हैं।

5ऐ रब, कब तक? क्या तू हमेशा तक ग़ुस्से होगा? तेरी ग़ैरत कब तक आग की तरह भड़कती रहेगी?
6अपना ग़ज़ब उन अक़वाम पर नाज़िल कर जो तुझे तसलीम नहीं करतीं, उन सलतनतों पर जो तेरे नाम को नहीं पुकारतीं।
7क्योंकि उन्होंने याक़ूब को हड़प करके उस की रिहाइशगाह तबाह कर दी है।
8हमें उन गुनाहों के क़ुसूरवार न ठहरा जो हमारे बापदादा से सरज़द हुए। हम पर रहम करने में जल्दी कर, क्योंकि हम बहुत पस्तहाल हो गए हैं।
9ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमारी मदद कर ताकि तेरे नाम को जलाल मिले। हमें बचा, अपने नाम की ख़ातिर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।
10दीगर अक़वाम क्यों कहें, “उनका ख़ुदा कहाँ है?” हमारे देखते देखते उन्हें दिखा कि तू अपने ख़ादिमों के ख़ून का बदला लेता है।
11क़ैदियों की आहें तुझ तक पहुँचीं, जो मरने को हैं उन्हें अपनी अज़ीम क़ुदरत से महफ़ूज़ रख।
12ऐ रब, जो लान-तान हमारे पड़ोसियों ने तुझ पर बरसाई है उसे सात गुना उनके सरों पर वापस ला।
13तब हम जो तेरी क़ौम और तेरी चरागाह की भेड़ें हैं अबद तक तेरी सताइश करेंगे, पुश्त-दर-पुश्त तेरी हम्दो-सना करेंगे।

अंगूर की बेल की बहाली के लिए दुआ

80 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : अहद के सोसन।
ऐ इसराईल के गल्लाबान, हम पर ध्यान दे! तू जो यूसुफ़ की रेवड़ की तरह राहनुमाई करता है, हम पर तवज्जुह कर! तू जो करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, अपना नूर चमका!
2इफ़राईम, बिनयमीन और मनस्सी के सामने अपनी क़ुदरत को हरकत में ला। हमें बचाने आ!

3ऐ अल्लाह, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

4ऐ रब, लशकरों के ख़ुदा, तेरा ग़ज़ब कब तक भड़कता रहेगा, हालाँकि तेरी क़ौम तुझसे इल्तिजा कर रही है?
5तूने उन्हें आँसुओं की रोटी खिलाई और आँसुओं का प्याला ख़ूब पिलाया।
6तूने हमें पड़ोसियों के झगड़ों का निशाना बनाया। हमारे दुश्मन हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं।

7ऐ लशकरों के ख़ुदा, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

8अंगूर की जो बेल मिसर में उग रही थी उसे तू उखाड़कर मुल्के-कनान लाया। तूने वहाँ की अक़वाम को भगाकर यह बेल उनकी जगह लगाई।

9तूने उसके लिए ज़मीन तैयार की तो वह जड़
पकड़कर पूरे मुल्क में फैल गई।
10उसका साया पहाड़ों पर छा गया, और उस
की शाख़ों ने देवदार के अज़ीम दरख़्तों को ढाँक
लिया।
11उस की टहनियाँ मग़रिब में समुंदर तक फैल
गईं, उस की डालियाँ मशरिक़ में दरियाए-फ़ुरात
तक पहुँच गईं।
12तूने उस की चारदीवारी क्यों गिरा दी? अब
हर गुज़रनेवाला उसके अंगूर तोड़ लेता है।
13जंगल के सुअर उसे खा खाकर तबाह करते,
खुले मैदान के जानवर वहाँ चरते हैं।

14ऐ लशकरों के ख़ुदा, हमारी तरफ़ दुबारा रुजू
फ़रमा! आसमान से नज़र डालकर हालात पर
ध्यान दे। इस बेल की देख-भाल कर।

15उसे महफ़ूज़ रख जिसे तेरे दहने हाथ ने
ज़मीन में लगाया, उस बेटे को जिसे तूने अपने
लिए पाला है।
16इस वक़्त वह कटकर नज़रे-आतिश हुआ है।
तेरे चेहरे की डाँट-डपट से लोग हलाक हो जाते
हैं।
17तेरा हाथ अपने दहने हाथ के बंदे को पनाह
दे, उस आदमज़ाद को जिसे तूने अपने लिए पाला
था।
18तब हम तुझसे दूर नहीं हो जाएंगे। बख़्श दे
कि हमारी जान में जान आए तो हम तेरा नाम
पुकारेंगे।

19ऐ रब, लशकरों के ख़ुदा, हमें बहाल कर।
अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

हक़ीक़ी इबादत क्या है?

81

आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।

अल्लाह हमारी क़ुव्वत है। उस की ख़ुशी में
शादियाना बजाओ, याक़ूब के ख़ुदा की ताज़ीम
में ख़ुशी के नारे लगाओ।
2गीत गाना शुरू करो। दफ़ बजाओ, सरोद और
सितार की सुरीली आवाज़ निकालो।
3नए चाँद के दिन नरसिंगा फूँको, पूरे चाँद के
जिस दिन हमारी ईद होती है उसे फूँको।
4क्योंकि यह इसराईल का फ़र्ज़ है, यह याक़ूब
के ख़ुदा का फ़रमान है।
5जब यूसुफ़ मिसर के ख़िलाफ़ निकला तो
अल्लाह ने ख़ुद यह मुक़र्रर किया।

मैंने एक ज़बान सुनी, जो मैं अब तक नहीं
जानता था,
6"मैंने उसके कंधे पर से बोझ उतारा और
उसके हाथ भारी टोकरी उठाने से आज़ाद किए।
7मुसीबत में तूने आवाज़ दी तो मैंने तुझे
बचाया। गरजते बादल में से मैंने तुझे जवाब दिया
और तुझे मरीबा के पानी पर आज़माया। (सिलाह)
8ऐ मेरी क़ौम, सुन, तो मैं तुझे आगाह करूँगा।
ऐ इसराईल, काश तू मेरी सुने!
9तेरे दरमियान कोई और ख़ुदा न हो, किसी
अजनबी माबूद को सिजदा न कर।
10मैं ही रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर
से निकाल लाया। अपना मुँह ख़ूब खोल तो मैं उसे
भर दूँगा।

11लेकिन मेरी क़ौम ने मेरी न सुनी, इसराईल
मेरी बात मानने के लिए तैयार न था।
12चुनाँचे मैंने उन्हें उनके दिलों की ज़िद के
हवाले कर दिया, और वह अपने ज़ाती मशवरों
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने लगे।
13काश मेरी क़ौम सुने, इसराईल मेरी राहों पर
चले!
14तब मैं जल्दी से उसके दुश्मनों को ज़ेर
करता, अपना हाथ उसके मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़
उठाता।

15तब रब से नफ़रत करनेवाले दबककर उस
की ख़ुशामद करते, उनकी शिकस्त अबदी होती।
16लेकिन इसराईल को मैं बेहतरीन गंदुम
खिलाता, मैं चट्टान में से शहद निकालकर उसे
सेर करता।”

सबसे आला मुंसिफ़

82 आसफ़ का ज़बूर।
अल्लाह इलाही मजलिस में खड़ा है,
माबूदों के दरमियान वह अदालत करता है,
2“तुम कब तक अदालत में ग़लत फ़ैस-
ले करके बेदीनों की जानिबदारी करोगे? (सिलाह)
3पस्तहालों और यतीमों का इनसाफ़ करो,
मुसीबतज़दों और ज़रूरतमंदों के हुक़ूक़ क़ायम
रखो।
4पस्तहालों और ग़रीबों को बचाकर बे-
दीनों के हाथ से छुड़ाओ।”

5लेकिन वह कुछ नहीं जानते, उन्हें समझ ही
नहीं आती। वह तारीकी में टटोल टटोलकर घुमते-
फिरते हैं जबकि ज़मीन की तमाम बुनियादें झूमने
लगी हैं।
6बेशक मैंने कहा, “तुम ख़ुदा हो, सब अल्लाह
तआला के फ़रज़ंद हो।
7लेकिन तुम फ़ानी इनसान की तरह मर
जाओगे, तुम दीगर हुक्मरानों की तरह गिर
जाओगे।”

8ऐ अल्लाह, उठकर ज़मीन की अदालत
कर! क्योंकि तमाम अक़वाम तेरी ही मौरूसी
मिलकियत हैं।

क़ौम के दुश्मनों के ख़िलाफ़ दुआ

83 गीत। आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, ख़ामोश न रह! ऐ
अल्लाह, चुप न रह!
2देख, तेरे दुश्मन शोर मचा रहे हैं, तुझसे
नफ़रत करनेवाले अपना सर तेरे ख़िलाफ़ उठा
रहे हैं।
3तेरी क़ौम के ख़िलाफ़ वह चालाक मनसूबे
बाँध रहे हैं, जो तेरी आड़ में छुप गए हैं उनके
ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे हैं।
4वह कहते हैं, “आओ, हम उन्हें मिटा दें ताकि
क़ौम नेस्त हो जाए और इसराईल का नामो-
निशान बाक़ी न रहे।”
5क्योंकि वह आपस में सलाह-मशवरा करने
के बाद दिली तौर पर मुत्तहिद हो गए हैं, उन्होंने
तेरे ही ख़िलाफ़ अहद बाँधा है।
6उनमें अदोम के ख़ैमे, इसमाईली, मो-
आब, हाजिरी,
7जबाल, अम्मोन, अमालीक़, फ़िलिस्तिया
और सूर के बाशिंदे शामिल हो गए हैं।
8असूर भी उनमें शरीक होकर लूत की औलाद
को सहारा दे रहा है। (सिलाह)

9उनके साथ वही सुलूक कर जो तूने
मिदियानियों से यानी क़ैसोन नदी पर सीसरा और
याबीन से किया।
10क्योंकि वह ऐन-दोर के पास हलाक होकर
खेत में गोबर बन गए।
11उनके शुरफ़ा के साथ वही बरताव कर जो
तूने ओरेब और ज़एब से किया। उनके तमाम
सरदार ज़िबह और ज़लमुन्ना की मानिंद बन जाएँ,
12जिन्होंने कहा, “आओ, हम अल्लाह की
चरागाहों पर क़ब्ज़ा करें।”
13ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें लुढ़कबूटी और हवा में उड़ते
हुए भूसे की मानिंद बना दे।
14जिस तरह आग पूरे जंगल में फैल जाती और
एक ही शोला पहाड़ों को झुलसा देता है,
15उसी तरह अपनी आँधी से उनका ताक़्क़ुब
कर, अपने तूफ़ान से उनको दहशतज़दा कर दे।
16ऐ रब, उनका मुँह काला कर ताकि वह तेरा
नाम तलाश करें।

17वह हमेशा तक शरमिंदा और हवास-बाख़्ता रहें, वह शर्मसार होकर हलाक हो जाएँ।

18तब ही वह जान लेंगे कि तू ही जिसका नाम रब है अल्लाह तआला यानी पूरी दुनिया का मालिक है।

रब के घर पर ख़ुशी

84 क़ोरह ख़ानदान का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।

ऐ रब्बुल-अफ़वाज, तेरी सुकूनतगाह कितनी प्यारी है!

2मेरी जान रब की बारगाहों के लिए तड़पती हुई निढाल है। मेरा दिल बल्कि पूरा जिस्म ज़िंदा ख़ुदा को ज़ोर से पुकार रहा है।

3ऐ रब्बुल-अफ़वाज, ऐ मेरे बादशाह और ख़ुदा, तेरी क़ुरबानगाहों के पास परिंदे को भी घर मिल गया, अबाबील को भी अपने बच्चों को पालने का घोंसला मिल गया है।

4मुबारक हैं वह जो तेरे घर में बसते हैं, वह हमेशा ही तेरी सताइश करेंगे। (सिलाह)

5मुबारक हैं वह जो तुझमें अपनी ताक़त पाते, जो दिल से तेरी राहों में चलते हैं।

6वह बुका की ख़ुश्क वादी[a] में से गुज़रते हुए उसे शादाब जगह बना लेते हैं, और बारिशें उसे बरकतों से ढाँप देती हैं।

7वह क़दम बक़दम तक़वियत पाते हुए आगे बढ़ते, सब कोहे-सिय्यून पर अल्लाह के सामने हाज़िर हो जाते हैं।

8ऐ रब, ऐ लशकरों के ख़ुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ याक़ूब के ख़ुदा, ध्यान दे! (सिलाह)

9ऐ अल्लाह, हमारी ढाल पर करम की निगाह डाल। अपने मसह किए हुए ख़ादिम के चेहरे पर नज़र कर।

10तेरी बारगाहों में एक दिन किसी और जगह पर हज़ार दिनों से बेहतर है। मुझे अपने ख़ुदा के घर के दरवाज़े पर हाज़िर रहना बेदीनों के घरों में बसने से कहीं ज़्यादा पसंद है।

11क्योंकि रब ख़ुदा आफ़ताब और ढाल है, वही हमें फ़ज़ल और इज़्ज़त से नवाज़ता है। जो दियानतदारी से चलें उन्हें वह किसी भी अच्छी चीज़ से महरूम नहीं रखता।

12ऐ रब्बुल-अफ़वाज, मुबारक है वह जो तुझ पर भरोसा रखता है!

नए सिरे से बरकत पाने के लिए दुआ

85 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, पहले तूने अपने मुल्क को पसंद किया, पहले याक़ूब को बहाल किया।

2पहले तूने अपनी क़ौम का क़ुसूर मुआफ़ किया, उसका तमाम गुनाह ढाँप दिया। (सिलाह)

3जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो रहा था उसका सिलसिला तूने रोक दिया, जो क़हर हमारे ख़िलाफ़ भड़क रहा था उसे छोड़ दिया।

4ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमें दुबारा बहाल कर। हमसे नाराज़ होने से बाज़ आ।

5क्या तू हमेशा तक हमसे ग़ुस्से रहेगा? क्या तू अपना क़हर पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रखेगा?

6क्या तू दुबारा हमारी जान को ताज़ादम नहीं करेगा ताकि तेरी क़ौम तुझसे ख़ुश हो जाए?

7ऐ रब, अपनी शफ़क़त हम पर ज़ाहिर कर, अपनी नजात हमें अता फ़रमा।

8मैं वह कुछ सुनूँगा जो ख़ुदा रब फ़रमाएगा। क्योंकि वह अपनी क़ौम और अपने ईमानदारों से सलामती का वादा करेगा, अलबत्ता लाज़िम है कि वह दुबारा हमाक़त में उलझ न जाएँ।

9यक़ीनन उस की नजात उनके क़रीब है जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं ताकि जलाल हमारे मुल्क में सुकूनत करे।

[a]या रोनेवाली यानी आँसुओं की वादी।

10शफ़क़त और वफ़ादारी एक दूसरे के गले लग गए हैं, रास्ती और सलामती ने एक दूसरे को बोसा दिया है।
11सच्चाई ज़मीन से फूट निकलेगी और रास्ती आसमान से ज़मीन पर नज़र डालेगी।
12अल्लाह ज़रूर वह कुछ देगा जो अच्छा है, हमारी ज़मीन ज़रूर अपनी फ़सलें पैदा करेगी।
13रास्ती उसके आगे आगे चलकर उसके क़दमों के लिए रास्ता तैयार करेगी।

मुसीबत में दुआ

86 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, अपना कान झुकाकर मेरी सुन, क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और मुहताज हूँ।
2मेरी जान को महफ़ूज़ रख, क्योंकि मैं ईमानदार हूँ। अपने ख़ादिम को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है। तू ही मेरा ख़ुदा है!
3ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि दिन-भर मैं तुझे पुकारता हूँ।
4अपने ख़ादिम की जान को ख़ुश कर, क्योंकि मैं तेरा आरज़ूमंद हूँ।
5क्योंकि तू ऐ रब भला है, तू मुआफ़ करने के लिए तैयार है। जो भी तुझे पुकारते हैं उन पर तू बड़ी शफ़क़त करता है।
6ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर तवज्जुह कर।
7मुसीबत के दिन मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू मेरी सुनता है।

8ऐ रब, माबूदों में से कोई तेरी मानिंद नहीं है। जो कुछ तू करता है कोई और नहीं कर सकता।
9ऐ रब, जितनी भी क़ौमें तूने बनाईं वह आकर तेरे हुज़ूर सिजदा करेंगी और तेरे नाम को जलाल देंगी।
10क्योंकि तू ही अज़ीम है और मोजिज़े करता है। तू ही ख़ुदा है।
11ऐ रब, मुझे अपनी राह सिखा ताकि तेरी वफ़ादारी में चलूँ। बख़्श दे कि मैं पूरे दिल से तेरा ख़ौफ़ मानूँ।
12ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं पूरे दिल से तेरा शुक्र करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की ताज़ीम करूँगा।
13क्योंकि तेरी मुझ पर शफ़क़त अज़ीम है, तूने मेरी जान को पाताल की गहराइयों से छुड़ाया है।

14ऐ अल्लाह, मग़रूर मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं, ज़ालिमों का जत्था मेरी जान लेने के दरपै है। यह लोग तेरा लिहाज़ नहीं करते।
15लेकिन तू, ऐ रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा है। तू तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर है।
16मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा, मुझ पर मेहर-बानी कर! अपने ख़ादिम को अपनी क़ुव्वत अता कर, अपनी ख़ादिमा के बेटे को बचा।
17मुझे अपनी मेहरबानी का कोई निशान दिखा। मुझसे नफ़रत करनेवाले यह देखकर शरमिंदा हो जाएँ कि तू रब ने मेरी मदद करके मुझे तसल्ली दी है।

सिय्यून अक़वाम की माँ है

87 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। गीत।
उस की बुनियाद मुक़द्दस पहाड़ों पर रखी गई है।
2रब सिय्यून के दरवाज़ों को याक़ूब की दीगर आबादियों से कहीं ज़्यादा प्यार करता है।

3ऐ अल्लाह के शहर, तेरे बारे में शानदार बातें सुनाई जाती हैं। (सिलाह)
4रब फ़रमाता है, “मैं मिसर और बाबल को उन लोगों में शुमार करूँगा जो मुझे जानते हैं।” फ़िलिस्तिया, सूर और एथोपिया के बारे में भी कहा जाएगा, “इनकी पैदाइश यहीं हुई है।”

5लेकिन सिय्यून के बारे में कहा जाएगा, “हर एक बाशिंदा उसमें पैदा हुआ है। अल्लाह तआला ख़ुद उसे क़ायम रखेगा।”

6जब रब अक़वाम को किताब में दर्ज करेगा तो
वह साथ साथ यह भी लिखेगा, “यह सिय्यून में
पैदा हुई हैं।” (सिलाह)
7और लोग नाचते हुए गाएँगे, “मेरे तमाम चश्मे
तुझमें हैं।”

तर्क किए गए शख़्स के लिए दुआ

88 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। तर्ज़ : महलत लअन्नोत।
हैमान इज़राही का हिकमत का गीत।
ऐ रब, ऐ मेरी नजात के ख़ुदा, दिन-रात मैं तेरे
हुज़ूर चीख़ता-चिल्लाता हूँ।
2मेरी दुआ तेरे हुज़ूर पहुँचे, अपना कान मेरी
चीख़ों की तरफ़ झुका।
3क्योंकि मेरी जान दुख से भरी है, और मेरी
टाँगें क़ब्र में लटकी हुई हैं।
4मुझे उनमें शुमार किया जाता है जो पाताल
में उतर रहे हैं। मैं उस मर्द की मानिंद हूँ जिसकी
तमाम ताक़त जाती रही है।
5मुझे मुरदों में तनहा छोड़ा गया है, क़ब्र में उन
मक़तूलों की तरह जिनका तू अब ख़याल नहीं
रखता और जो तेरे हाथ के सहारे से मुंक़ते हो गए
हैं।
6तूने मुझे सबसे गहरे गढ़े में, तारीकतरीन
गहराइयों में डाल दिया है।
7तेरे ग़ज़ब का पूरा बोझ मुझ पर आ पड़ा है,
तूने मुझे अपनी तमाम मौजों के नीचे दबा दिया
है। (सिलाह)
8तूने मेरे क़रीबी दोस्तों को मुझसे दूर कर दिया
है, और अब वह मुझसे घिन खाते हैं। मैं फँसा हुआ
हूँ और निकल नहीं सकता।
9मेरी आँखें ग़म के मारे पज़मुरदा हो गई हैं।
ऐ रब, दिन-भर मैं तुझे पुकारता, अपने हाथ तेरी
तरफ़ उठाए रखता हूँ।

10क्या तू मुरदों के लिए मोजिज़े करेगा? क्या
पाताल के बाशिंदे उठकर तेरी तमजीद करेंगे?
(सिलाह)
11क्या लोग क़ब्र में तेरी शफ़क़त या पाताल
में तेरी वफ़ा बयान करेंगे?
12क्या तारीकी में तेरे मोजिज़े या मुल्के-
फ़रामोश में तेरी रास्ती मालूम हो जाएगी?

13लेकिन ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता
हूँ, मेरी दुआ सुबह-सवेरे तेरे सामने आ जाती है।
14ऐ रब, तू मेरी जान को क्यों रद्द करता, अपने
चेहरे को मुझसे पोशीदा क्यों रखता है?
15मैं मुसीबतज़दा और जवानी से मौत के
क़रीब रहा हूँ। तेरे दहशतनाक हमले बरदाश्त
करते करते मैं जान से हाथ धो बैठा हूँ।
16तेरा भड़कता क़हर मुझ पर से गुज़र गया,
तेरे हौलनाक कामों ने मुझे नाबूद कर दिया है।
17दिन-भर वह मुझे सैलाब की तरह घेरे रखते
हैं, हर तरफ़ से मुझ पर हमलाआवर होते हैं।
18तूने मेरे दोस्तों और पड़ोसियों को मुझसे दूर
कर रखा है। तारीकी ही मेरी क़रीबी दोस्त बन गई
है।

इसराईल की मुसीबत और दाऊद से वादा

89 ऐतान इज़राही का हिकमत का गीत।
मैं अबद तक रब की मेहरबानियों की
मद्हसराई करूँगा, पुश्त-दर-पुश्त मुँह से तेरी
वफ़ा का एलान करूँगा।
2क्योंकि मैं बोला, “तेरी शफ़क़त हमेशा तक
क़ायम है, तूने अपनी वफ़ा की मज़बूत बुनियाद
आसमान पर ही रखी है।”
3तूने फ़रमाया, “मैंने अपने चुने हुए बंदे से
अहद बाँधा, अपने ख़ादिम दाऊद से क़सम खाकर
वादा किया है,
4‘मैं तेरी नसल को हमेशा तक क़ायम रखूँगा,
तेरा तख़्त हमेशा तक मज़बूत रखूँगा’।” (सिलाह)

5ऐ रब, आसमान तेरे मोजिज़ों की सताइश
करेंगे, मुक़द्दसीन की जमात में ही तेरी वफ़ादारी
की तमजीद करेंगे।

6क्योंकि बादलों में कौन रब की मानिंद है?
इलाही हस्तियों में से कौन रब की मानिंद है?
7जो भी मुक़द्दसीन की मजलिस में शामिल
हैं वह अल्लाह से ख़ौफ़ खाते हैं। जो भी उसके
इर्दगिर्द होते हैं उन पर उस की अज़मत और रोब
छाया रहता है।
8ऐ रब, ऐ लशकरों के ख़ुदा, कौन तेरी मानिंद
है? ऐ रब, तू क़वी और अपनी वफ़ा से घिरा रहता
है।
9तू ठाठें मारते हुए समुंदर पर हुकूमत करता
है। जब वह मौजज़न हो तो तू उसे थमा देता है।
10तूने समुंदरी अज़दहे रहब को कुचल दिया,
और वह मक़तूल की मानिंद बन गया। अपने क़वी
बाज़ू से तूने अपने दुश्मनों को तित्तर-बित्तर कर
दिया।
11आसमानो-ज़मीन तेरे ही हैं। दुनिया और जो
कुछ उसमें है तूने क़ायम किया।
12तूने शिमालो-जुनूब को ख़लक़ किया। तबूर
और हरमून तेरे नाम की ख़ुशी में नारे लगाते हैं।
13तेरा बाज़ू क़वी और तेरा हाथ ताक़तवर है।
तेरा दहना हाथ अज़ीम काम करने के लिए तैयार
है।
14रास्ती और इनसाफ़ तेरे तख़्त की बुनियाद
हैं। शफ़क़त और वफ़ा तेरे आगे आगे चलती हैं।

15मुबारक है वह क़ौम जो तेरी ख़ुशी के नारे
लगा सके। ऐ रब, वह तेरे चेहरे के नूर में चलेंगे।
16रोज़ाना वह तेरे नाम की ख़ुशी मनाएँगे और
तेरी रास्ती से सरफ़राज़ होंगे।
17क्योंकि तू ही उनकी ताक़त की शान है, और
तू अपने करम से हमें सरफ़राज़ करेगा।
18क्योंकि हमारी ढाल रब ही की है, हमारा
बादशाह इसराईल के क़ुद्दूस ही का है।

19माज़ी में तू रोया में अपने ईमानदारों से
हमकलाम हुआ। उस वक़्त तूने फ़रमाया, "मैंने
एक सूरमे को ताक़त से नवाज़ा है, क़ौम में से
एक को चुनकर सरफ़राज़ किया है।
20मैंने अपने ख़ादिम दाऊद को पा लिया और
उसे अपने मुक़द्दस तेल से मसह किया है।
21मेरा हाथ उसे क़ायम रखेगा, मेरा बाज़ू उसे
तक़वियत देगा।
22दुश्मन उस पर ग़ालिब नहीं आएगा, शरीर
उसे ख़ाक में नहीं मिलाएँगे।
23उसके आगे आगे मैं उसके दुश्मनों को पाश
पाश करूँगा। जो उससे नफ़रत रखते हैं उन्हें
ज़मीन पर पटख़ दूँगा।
24मेरी वफ़ा और मेरी शफ़क़त उसके साथ
रहेंगी, मेरे नाम से वह सरफ़राज़ होगा।
25मैं उसके हाथ को समुंदर पर और उसके
दहने हाथ को दरियाओं पर हुकूमत करने दूँगा।
26वह मुझे पुकारकर कहेगा, 'तू मेरा बाप, मेरा
ख़ुदा और मेरी नजात की चट्टान है।'
27मैं उसे अपना पहलौठा और दुनिया का
सबसे आला बादशाह बनाऊँगा।
28मैं उसे हमेशा तक अपनी शफ़क़त से
नवाज़ता रहूँगा, मेरा उसके साथ अहद कभी
तमाम नहीं होगा।
29मैं उस की नसल हमेशा तक क़ायम रखूँगा,
जब तक आसमान क़ायम है उसका तख़्त क़ायम
रखूँगा।
30अगर उसके बेटे मेरी शरीअत तर्क करके मेरे
अहकाम पर अमल न करें,
31अगर वह मेरे फ़रमानों की बेहुरमती करके
मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारें
32तो मैं लाठी लेकर उनकी तादीब करूँगा और
मोहलक वबाओं से उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा।
33लेकिन मैं उसे अपनी शफ़क़त से महरूम
नहीं करूँगा, अपनी वफ़ा का इनकार नहीं करूँगा।
34न मैं अपने अहद की बेहुरमती करूँगा, न वह
कुछ तबदील करूँगा जो मैंने फ़रमाया है।
35मैंने एक बार सदा के लिए अपनी क़ुद्दूसियत
की क़सम खाकर वादा किया है, और मैं दाऊद
को कभी धोका नहीं दूँगा।

36उस की नसल अबद तक क़ायम रहेगी,
उसका तख़्त आफ़ताब की तरह मेरे सामने खड़ा
रहेगा।
37चाँद की तरह वह हमेशा तक बरक़रार रहेगा,
और जो गवाह बादलों में है वह वफ़ादार है।”
(सिलाह)

38लेकिन अब तूने अपने मसह किए हुए
ख़ादिम को ठुकराकर रद्द किया, तू उससे
ग़ज़बनाक हो गया है।
39तूने अपने ख़ादिम का अहद नामंज़ूर किया
और उसका ताज ख़ाक में मिलाकर उस की
बेहुरमती की है।
40तूने उस की तमाम फ़सीलें ढाकर उसके
क़िलों को मलबे के ढेर बना दिया है।
41जो भी वहाँ से गुज़रे वह उसे लूट लेता है।
वह अपने पड़ोसियों के लिए मज़ाक़ का निशाना
बन गया है।
42तूने उसके मुख़ालिफ़ों का दहना हाथ
सरफ़राज़ किया, उसके तमाम दुश्मनों को ख़ुश
कर दिया है।
43तूने उस की तलवार की तेज़ी बेअसर करके
उसे जंग में फ़तह पाने से रोक दिया है।
44तूने उस की शान ख़त्म करके उसका तख़्त
ज़मीन पर पटख़ दिया है।
45तूने उस की जवानी के दिन मुख़तसर करके
उसे रुसवाई की चादर में लपेटा है। (सिलाह)

46ऐ रब, कब तक? क्या तू अपने आपको
हमेशा तक छुपाए रखेगा? क्या तेरा क़हर अबद
तक आग की तरह भड़कता रहेगा?
47याद रहे कि मेरी ज़िंदगी कितनी मुख़-
तसर है, कि तूने तमाम इनसान कितने फ़ानी
ख़लक़ किए हैं।
48कौन है जिसका मौत से वास्ता न पड़े, कौन
है जो हमेशा ज़िंदा रहे? कौन अपनी जान को
मौत के क़ब्ज़े से बचाए रख सकता है? (सिलाह)

49ऐ रब, तेरी वह पुरानी मेहरबानियाँ कहाँ हैं
जिनका वादा तूने अपनी वफ़ा की क़सम खाकर
दाऊद से किया?
50ऐ रब, अपने ख़ादिमों की ख़जालत याद
कर। मेरा सीना मुतअद्दिद क़ौमों की लान-तान
से दुखता है,
51क्योंकि ऐ रब, तेरे दुश्मनों ने मुझे लान-तान
की, उन्होंने तेरे मसह किए हुए ख़ादिम को हर
क़दम पर लान-तान की है!

52अबद तक रब की हम्द हो! आमीन, फिर
आमीन।

चौथी किताब 90-106

फ़ानी इनसान अल्लाह में पनाह ले

90 मर्दे-ख़ुदा मूसा की दुआ।
ऐ रब, पुश्त-दर-पुश्त तू हमारी
पनाहगाह रहा है।
2इससे पहले कि पहाड़ पैदा हुए और तू ज़मीन
और दुनिया को वुजूद में लाया तू ही था। ऐ
अल्लाह, तू अज़ल से अबद तक है।
3तू इनसान को दुबारा ख़ाक होने देता है। तू
फ़रमाता है, ‘ऐ आदमज़ादो, दुबारा ख़ाक में मिल
जाओ!’
4क्योंकि तेरी नज़र में हज़ार साल कल के गुज़रे
हुए दिन के बराबर या रात के एक पहर की मानिंद
हैं।
5तू लोगों को सैलाब की तरह बहा ले जाता है,
वह नींद और उस घास की मानिंद हैं जो सुबह को
फूट निकलती है।
6वह सुबह को फूट निकलती और उगती है,
लेकिन शाम को मुरझाकर सूख जाती है।

7क्योंकि हम तेरे ग़ज़ब से फ़ना हो जाते और
तेरे क़हर से हवासबाख़्ता हो जाते हैं।
8तूने हमारी ख़ताओं को अपने सामने रखा,
हमारे पोशीदा गुनाहों को अपने चेहरे के नूर में
लाया है।

9चुनाँचे हमारे तमाम दिन तेरे क़हर के तहत
घटते घटते ख़त्म हो जाते हैं। जब हम अपने सालों
के इख़्तिताम पर पहुँचते हैं तो ज़िंदगी सर्द आह
के बराबर ही होती है।
10हमारी उम्र 70 साल या अगर ज़्यादा ताक़त
हो तो 80 साल तक पहुँचती है, और जो दिन
फ़ख़र का बाइस थे वह भी तकलीफ़देह और
बेकार हैं। जल्द ही वह गुज़र जाते हैं, और हम
परिंदों की तरह उड़कर चले जाते हैं।
11कौन तेरे ग़ज़ब की पूरी शिद्दत जानता है?
कौन समझता है कि तेरा क़हर हमारी ख़ुदातरसी
की कमी के मुताबिक़ ही है?
12चुनाँचे हमें हमारे दिनों का सहीह हिसाब
करना सिखा ताकि हमारे दिल दानिशमंद हो
जाएँ।

13ऐ रब, दुबारा हमारी तरफ़ रुजू फ़रमा! तू
कब तक दूर रहेगा? अपने ख़ादिमों पर तरस खा!
14सुबह को हमें अपनी शफ़क़त से सेर कर!
तब हम ज़िंदगी-भर बाग़ बाग़ होंगे और ख़ुशी
मनाएँगे।
15हमें उतने ही दिन ख़ुशी दिला जितने तूने
हमें पस्त किया है, उतने ही साल जितने हमें दुख
सहना पड़ा है।
16अपने ख़ादिमों पर अपने काम और उनकी
औलाद पर अपनी अज़मत ज़ाहिर कर।
17रब हमारा ख़ुदा हमें अपनी मेहरबानी
दिखाए। हमारे हाथों का काम मज़बूत कर, हाँ
हमारे हाथों का काम मज़बूत कर!

अल्लाह की पनाह में

91 जो अल्लाह तआला की पनाह में
रहे वह क़ादिरे-मुतलक़ के साये में
सुकूनत करेगा।
2मैं कहूँगा, "ऐ रब, तू मेरी पनाह और मेरा
क़िला है, मेरा ख़ुदा जिस पर मैं भरोसा रखता
हूँ।"
3क्योंकि वह तुझे चिड़ीमार के फंदे और
मोहलक मरज़ से छुड़ाएगा।
4वह तुझे अपने शाहपरों के नीचे ढाँप लेगा,
और तू उसके परों तले पनाह ले सकेगा। उस की
वफ़ादारी तेरी ढाल और पुश्ता रहेगी।
5रात की दहशतों से ख़ौफ़ मत खा, न उस तीर
से जो दिन के वक़्त चले।
6उस मोहलक मरज़ से दहशत मत खा जो
तारीकी में घूमे फिरे, न उस वबाई बीमारी से जो
दोपहर के वक़्त तबाही फैलाए।
7गो तेरे साथ खड़े हज़ार अफ़राद हलाक हो
जाएँ और तेरे दहने हाथ दस हज़ार मर जाएँ,
लेकिन तू उस की ज़द में नहीं आएगा।
8तू अपनी आँखों से इसका मुलाहज़ा करेगा,
तू ख़ुद बेदीनों की सज़ा देखेगा।
9क्योंकि तूने कहा है, "रब मेरी पनाहगाह है,"
तू अल्लाह तआला के साये में छुप गया है।
10इसलिए तेरा किसी बला से वास्ता नहीं
पड़ेगा, कोई आफ़त भी तेरे ख़ैमे के क़रीब फटकने
नहीं पाएगी।

11क्योंकि वह अपने फ़रिश्तों को हर राह पर
तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा,
12और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि
तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे।
13तू शेरबबरों और ज़हरीले साँपों पर क़दम
रखेगा, तू जवान शेरों और अज़दहाओं को कुचल
देगा।
14रब फ़रमाता है, "चूँकि वह मुझसे लिपटा
रहता है इसलिए मैं उसे बचाऊँगा। चूँकि वह मेरा
नाम जानता है इसलिए मैं उसे महफ़ूज़ रखूँगा।
15वह मुझे पुकारेगा तो मैं उस की सुनूँगा।
मुसीबत में मैं उसके साथ हूँगा। मैं उसे छुड़ाकर
उस की इज़्ज़त करूँगा।
16मैं उसे उम्र की दराज़ी बख़्शूँगा और उस पर
अपनी नजात ज़ाहिर करूँगा।"

अल्लाह की सताइश करने की ख़ुशी

92 ज़बूर। सबत के लिए गीत।
रब का शुक्र करना भला है। ऐ
अल्लाह तआला, तेरे नाम की मद्हसराई करना
भला है।
2सुबह को तेरी शफ़क़त और रात को तेरी वफ़ा
का एलान करना भला है,
3ख़ासकर जब साथ साथ दस तारोंवाला साज़,
सितार और सरोद बजते हैं।

4क्योंकि ऐ रब, तूने मुझे अपने कामों से ख़ुश
किया है, और तेरे हाथों के काम देखकर मैं ख़ुशी
के नारे लगाता हूँ।
5ऐ रब, तेरे काम कितने अज़ीम, तेरे ख़यालात
कितने गहरे हैं।
6नादान यह नहीं जानता, अहमक़ को इसकी
समझ नहीं आती।
7गो बेदीन घास की तरह फूट निकलते और
बदकार सब फलते-फूलते हैं, लेकिन आख़िरकार
वह हमेशा के लिए हलाक हो जाएंगे।
8मगर तू, ऐ रब, अबद तक सरबुलंद रहेगा।

9क्योंकि तेरे दुश्मन, ऐ रब, तेरे दुश्मन यक़ीनन
तबाह हो जाएंगे, बदकार सब तित्तर-बित्तर हो
जाएंगे।

10तूने मुझे जंगली बैल की-सी ताक़त देकर
ताज़ा तेल से मसह किया है।
11मेरी आँख अपने दुश्मनों की शिकस्त से और
मेरे कान उन शरीरों के अंजाम से लुत्फ़अंदोज़ हुए
हैं जो मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं।

12रास्तबाज़ खजूर के दरख़्त की तरह फले-
फूलेगा, वह लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह
बढ़ेगा।
13जो पौदे रब की सुकूनतगाह में लगाए गए हैं
वह हमारे ख़ुदा की बारगाहों में फलें-फूलेंगे।
14वह बुढ़ापे में भी फल लाएँगे और तरो-ताज़ा
और हरे-भरे रहेंगे।
15उस वक़्त भी वह एलान करेंगे, “रब रास्त
है। वह मेरी चट्टान है, और उसमें नारास्ती नहीं
होती।”

अल्लाह अबदी बादशाह है

93 रब बादशाह है, वह जलाल से
मुलब्बस है। रब जलाल से मुलब्बस
और क़ुदरत से कमरबस्ता है। यक़ीनन दुनिया
मज़बूत बुनियाद पर क़ायम है, और वह नहीं
डगमगाएगी।

2तेरा तख़्त क़दीम ज़माने से क़ायम है, तू
अज़ल से मौजूद है।
3ऐ रब, सैलाब गरज उठे, सैलाब शोर मचाकर
गरज उठे, सैलाब ठाठें मारकर गरज उठे।
4लेकिन एक है जो गहरे पानी के शोर से ज़्यादा
ज़ोरावर, जो समुंदर की ठाठों से ज़्यादा ताक़तवर
है। रब जो बुलंदियों पर रहता है कहीं ज़्यादा
अज़ीम है।

5ऐ रब, तेरे अहकाम हर तरह से क़ाबिले-
एतमाद हैं। तेरा घर हमेशा तक क़ुद्दूसियत से
आरास्ता रहेगा।

क़ौम पर ज़ुल्म करनेवालों से रिहाई के लिए दुआ

94 ऐ रब, ऐ इंतक़ाम लेनेवाले ख़ुदा! ऐ
इंतक़ाम लेनेवाले ख़ुदा, अपना नूर
चमका।
2ऐ दुनिया के मुंसिफ़, उठकर मग़रूरों को
उनके आमाल की मुनासिब सज़ा दे।
3ऐ रब, बेदीन कब तक, हाँ कब तक फ़तह के
नारे लगाएँगे?

4वह कुफ़र की बातें उगलते रहते, तमाम
बदकार शेख़ी मारते रहते हैं।

5ऐ रब, वह तेरी क़ौम को कुचल रहे, तेरी
मौरूसी मिलकियत पर ज़ुल्म कर रहे हैं।
6बेवाओं और अजनबियों को वह मौत के घाट
उतार रहे, यतीमों को क़त्ल कर रहे हैं।
7वह कहते हैं, "यह रब को नज़र नहीं आता,
याक़ूब का ख़ुदा ध्यान ही नहीं देता।"

8ऐ क़ौम के नादानो, ध्यान दो! ऐ अह-
मक़ो, तुम्हें कब समझ आएगी?
9जिसने कान बनाया, क्या वह नहीं सुनता?
जिसने आँख को तश्कील दिया क्या वह नहीं
देखता?
10जो अक़वाम को तंबीह करता और इनसान
को तालीम देता है क्या वह सज़ा नहीं देता?
11रब इनसान के ख़यालात जानता है, वह
जानता है कि वह दम-भर के ही हैं।

12ऐ रब, मुबारक है वह जिसे तू तरबियत देता
है, जिसे तू अपनी शरीअत की तालीम देता है
13ताकि वह मुसीबत के दिनों से आराम पाए
और उस वक़्त तक सुकून से ज़िंदगी गुज़ारे जब
तक बेदीनों के लिए गढ़ा तैयार न हो।
14क्योंकि रब अपनी क़ौम को रद्द नहीं करेगा,
वह अपनी मौरूसी मिलकियत को तर्क नहीं
करेगा।
15फ़ैसले दुबारा इनसाफ़ पर मबनी होंगे, और
तमाम दियानतदार दिल उस की पैरवी करेंगे।

16कौन शरीरों के सामने मेरा दिफ़ा करेगा?
कौन मेरे लिए बदकारों का सामना करेगा?
17अगर रब मेरा सहारा न होता तो मेरी जान
जल्द ही ख़ामोशी के मुल्क में जा बसती।
18ऐ रब, जब मैं बोला, "मेरा पाँव डगमगाने
लगा है" तो तेरी शफ़क़त ने मुझे सँभाला।
19जब तशवीशनाक ख़यालात मुझे बेचैन करने
लगे तो तेरी तसल्लियों ने मेरी जान को ताज़ादम
किया।
20ऐ अल्लाह, क्या तबाही की हुकूमत तेरे साथ
मुत्तहिद हो सकती है, ऐसी हुकूमत जो अपने
फ़रमानों से ज़ुल्म करती है? हरगिज़ नहीं!
21वह रास्तबाज़ की जान लेने के लिए आपस
में मिल जाते और बेक़ुसूरों को क़ातिल ठहराते हैं।
22लेकिन रब मेरा क़िला बन गया है, और मेरा
ख़ुदा मेरी पनाह की चट्टान साबित हुआ है।
23वह उनकी नाइनसाफ़ी उन पर वापस आने
देगा और उनकी शरीर हरकतों के जवाब में उन्हें
तबाह करेगा। रब हमारा ख़ुदा उन्हें नेस्त करेगा।

परस्तिश और फ़रमाँबरदारी की दावत

95 आओ, हम शादियाना बजाकर रब की
मद्‌हसराई करें, ख़ुशी के नारे लगाकर
अपनी नजात की चट्टान की तमजीद करें!
2आओ, हम शुक्रगुज़ारी के साथ उसके हुज़ूर
आएँ, गीत गाकर उस की सताइश करें।
3क्योंकि रब अज़ीम ख़ुदा और तमाम माबूदों
पर अज़ीम बादशाह है।
4उसके हाथ में ज़मीन की गहराइयाँ हैं, और
पहाड़ की बुलंदियाँ भी उसी की हैं।
5समुंदर उसका है, क्योंकि उसने उसे ख़लक़
किया। ख़ुश्की उस की है, क्योंकि उसके हाथों ने
उसे तश्कील दिया।
6आओ हम सिजदा करें और रब अपने ख़ालिक़
के सामने झुककर घुटने टेकें।
7क्योंकि वह हमारा ख़ुदा है और हम उस की
चरागाह की क़ौम और उसके हाथ की भेड़ें हैं।
अगर तुम आज उस की आवाज़ सुनो
8"तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह
मरीबा में हुआ, जिस तरह रेगिस्तान में मस्सा में
हुआ।
9वहाँ तुम्हारे बापदादा ने मुझे आज़माया और
जाँचा, हालाँकि उन्होंने मेरे काम देख लिए थे।
10चालीस साल मैं उस नसल से घिन खाता
रहा। मैं बोला, 'उनके दिल हमेशा सहीह राह से
हट जाते हैं, और वह मेरी राहें नहीं जानते।'

11अपने ग़ज़ब में मैंने क़सम खाई, ‘यह कभी
उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून
देता’।”

दुनिया का ख़ालिक़ और मुंसिफ़

96 रब की तमजीद में नया गीत गाओ, ऐ
पूरी दुनिया, रब की मद्हसराई करो।
2रब की तमजीद में गीत गाओ, उसके नाम
की सताइश करो, रोज़ बरोज़ उस की नजात की
ख़ुशख़बरी सुनाओ।
3क़ौमों में उसका जलाल और तमाम उम्मतों
में उसके अजायब बयान करो।
4क्योंकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत
लायक़ है। वह तमाम माबूदों से महीब है।
5क्योंकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही
हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।
6उसके हुज़ूर शानो-शौकत, उसके मक़-
दिस में क़ुदरत और जलाल है।
7ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तमजीद करो,
रब के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो।
8रब के नाम को जलाल दो। क़ुरबानी लेकर
उस की बारगाहों में दाख़िल हो जाओ।
9मुक़द्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को
सिजदा करो। पूरी दुनिया उसके सामने लरज़
उठे।
10क़ौमों में एलान करो, “रब ही बादशाह है!
यक़ीनन दुनिया मज़बूती से क़ायम है और नहीं
डगमगाएगी। वह इनसाफ़ से क़ौमों की अदालत
करेगा।”

11आसमान ख़ुश हो, ज़मीन जशन मनाए!
समुंदर और जो कुछ उसमें है ख़ुशी से गरज उठे।
12मैदान और जो कुछ उसमें है बाग़ बाग़ हो।
फिर जंगल के दरख़्त शादियाना बजाएंगे।
13वह रब के सामने शादियाना बजाएंगे,
क्योंकि वह आ रहा है, वह दुनिया की अदालत
करने आ रहा है। वह इनसाफ़ से दुनिया की
अदालत करेगा और अपनी सदाक़त से अक़वाम
का फ़ैसला करेगा।

अल्लाह की सलतनत पर ख़ुशी

97 रब बादशाह है! ज़मीन जशन मनाए,
साहिली इलाक़े दूर दूर तक ख़ुश हों।
2वह बादलों और गहरे अंधेरे से घिरा रहता है,
रास्ती और इनसाफ़ उसके तख़्त की बुनियाद हैं।
3आग उसके आगे आगे भड़ककर चारों तरफ़
उसके दुश्मनों को भस्म कर देती है।
4उस की कड़कती बिजलियों ने दुनिया को
रौशन कर दिया तो ज़मीन यह देखकर पेचो-ताब
खाने लगी।
5रब के आगे आगे, हाँ पूरी दुनिया के मालिक
के आगे आगे पहाड़ मोम की तरह पिघल गए।
6आसमानों ने उस की रास्ती का एलान किया,
और तमाम क़ौमों ने उसका जलाल देखा।

7तमाम बुतपरस्त, हाँ सब जो बुतों पर फ़ख़र
करते हैं शरमिंदा हों। ऐ तमाम माबूदो, उसे सिजदा
करो!
8कोहे-सिय्यून सुनकर ख़ुश हुआ। ऐ रब, तेरे
फ़ैसलों के बाइस यहूदाह की बेटियाँ[a] बाग़ बाग़
हुईं।
9क्योंकि तू ऐ रब, पूरी दुनिया पर सबसे आला
है, तू तमाम माबूदों से सरबुलंद है।

10तुम जो रब से मुहब्बत रखते हो, बुराई से
नफ़रत करो! रब अपने ईमानदारों की जान को
महफ़ूज़ रखता है, वह उन्हें बेदीनों के क़ब्ज़े से
छुड़ाता है।
11रास्तबाज़ के लिए नूर का और दिल के
दियानतदारों के लिए शादमानी का बीज बोया
गया है।
12ऐ रास्तबाज़ो, रब से ख़ुश हो, उसके मुक़द्दस
नाम की सताइश करो।

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : यहूदाह की आबादियाँ।

पूरी दुनिया का शाही मुंसिफ़

98 रब की तमजीद में नया गीत गाओ,
क्योंकि उसने मोजिज़े किए हैं। अपने
दहने हाथ और मुक़द्दस बाज़ू से उसने नजात दी
है।
2रब ने अपनी नजात का एलान किया और
अपनी रास्ती क़ौमों के रूबरू ज़ाहिर की है।
3उसने इसराईल के लिए अपनी शफ़क़त और
वफ़ा याद की है। दुनिया की इंतहाओं ने सब हमारे
ख़ुदा की नजात देखी है।
4ऐ पूरी दुनिया, नारे लगाकर रब की मद्हसराई
करो! आपे में न समाओ और जशन मनाकर हम्द
के गीत गाओ!
5सरोद बजाकर रब की मद्हसराई करो, सरोद
और गीत से उस की सताइश करो।
6तुरम और नरसिंगा फूँककर रब बादशाह के
हुज़ूर ख़ुशी के नारे लगाओ!
7समुंदर और जो कुछ उसमें है, दुनिया और
उसके बाशिंदे ख़ुशी से गरज उठें।
8दरिया तालियाँ बजाएँ, पहाड़ मिलकर ख़ुशी
मनाएँ,
9वह रब के सामने ख़ुशी मनाएँ। क्योंकि वह
ज़मीन की अदालत करने आ रहा है। वह इनसाफ़
से दुनिया की अदालत करेगा, रास्ती से क़ौमों का
फ़ैसला करेगा।

क़ुद्दूस ख़ुदा

99 रब बादशाह है, अक़वाम लरज़ उठें!
वह करूबी फ़रिश्तों के दरमियान
तख़्तनशीन है, दुनिया डगमगाए!
2कोहे-सिय्यून पर रब अज़ीम है, तमाम
अक़वाम पर सरबुलंद है।
3वह तेरे अज़ीम और पुरजलाल नाम की
सताइश करें, क्योंकि वह क़ुद्दूस है।

4वह बादशाह की क़ुदरत की तमजीद करें जो
इनसाफ़ से प्यार करता है। ऐ अल्लाह, तू ही ने
अदल क़ायम किया, तू ही ने याक़ूब में इनसाफ़
और रास्ती पैदा की है।
5रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो, उसके पाँवों
की चौकी के सामने सिजदा करो, क्योंकि वह
क़ुद्दूस है।

6मूसा और हारून उसके इमामों में से थे।
समुएल भी उनमें से था जो उसका नाम पुकारते
थे। उन्होंने रब को पुकारा, और उसने उनकी
सुनी।
7वह बादल के सतून में से उनसे हमकलाम
हुआ, और वह उन अहकाम और फ़रमानों के ताबे
रहे जो उसने उन्हें दिए थे।
8ऐ रब हमारे ख़ुदा, तूने उनकी सुनी। तू जो
अल्लाह है उन्हें मुआफ़ करता रहा, अलबत्ता उन्हें
उनकी बुरी हरकतों की सज़ा भी देता रहा।
9रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो और उसके
मुक़द्दस पहाड़ पर सिजदा करो, क्योंकि रब हमारा
ख़ुदा क़ुद्दूस है।

अल्लाह की सताइश करो!

100 शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी के लिए ज़बूर।
ऐ पूरी दुनिया, ख़ुशी के नारे
लगाकर रब की मद्हसराई करो!
2ख़ुशी से रब की इबादत करो, जशन मनाते
हुए उसके हुज़ूर आओ!
3जान लो कि रब ही ख़ुदा है। उसी ने हमें ख़लक़
किया, और हम उसके हैं, उस की क़ौम और उस
की चरागाह की भेड़ें।

4शुक्र करते हुए उसके दरवाज़ों में दाख़िल हो,
सताइश करते हुए उस की बारगाहों में हाज़िर हो।
उसका शुक्र करो, उसके नाम की तमजीद करो!
5क्योंकि रब भला है। उस की शफ़क़त अबदी
है, और उस की वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त क़ायम
है।

बादशाह की हुकूमत कैसी होनी चाहिए?

101 दाऊद का ज़बूर।
मैं शफ़क़त और इनसाफ़ का
गीत गाऊँगा। ऐ रब, मैं तेरी मद्‌हसराई करूँगा।
2मैं बड़ी एहतियात से बेइलज़ाम राह पर
चलूँगा। लेकिन तू कब मेरे पास आएगा? मैं
ख़ुलूसदिली से अपने घर में ज़िंदगी गुज़ारूँगा।
3मैं शरारत की बात अपने सामने नहीं रखता
और बुरी हरकतों से नफ़रत करता हूँ। ऐसी चीज़ें
मेरे साथ लिपट न जाएँ।
4झूटा दिल मुझसे दूर रहे। मैं बुराई को जानना
ही नहीं चाहता।
5जो चुपके से अपने पड़ोसी पर तोहमत लगाए
उसे मैं ख़ामोश कराऊँगा, जिसकी आँखें मग़रूर
और दिल मुतकब्बिर हो उसे बरदाश्त नहीं करूँगा।
6मेरी आँखें मुल्क के वफ़ादारों पर लगी रहती
हैं ताकि वह मेरे साथ रहें। जो बेइलज़ाम राह पर
चले वही मेरी ख़िदमत करे।
7धोकेबाज़ मेरे घर में न ठहरे, झूट बोलनेवाला
मेरी मौजूदगी में क़ायम न रहे।
8हर सुबह को मैं मुल्क के तमाम बेदीनों को
ख़ामोश कराऊँगा ताकि तमाम बदकारों को रब
के शहर में से मिटाया जाए।

सिय्यून की बहाली के लिए दुआ (तौबा का पाँचवाँ ज़बूर)

102 मुसीबतज़दा की दुआ, उस वक़्त जब
वह निढाल होकर रब के सामने अपनी
आहो-ज़ारी उंडेल देता है।
ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मदद के लिए मेरी आहें
तेरे हुज़ूर पहुँचें।
2जब मैं मुसीबत में हूँ तो अपना चेहरा मुझसे
छुपाए न रख बल्कि अपना कान मेरी तरफ़ झुका।
जब मैं पुकारूँ तो जल्द ही मेरी सुन।
3क्योंकि मेरे दिन धुएँ की तरह ग़ायब हो रहे हैं,
मेरी हड्डियाँ कोयलों की तरह दहक रही हैं।
4मेरा दिल घास की तरह झुलसकर सूख गया
है, और मैं रोटी खाना भी भूल गया हूँ।
5आहो-ज़ारी करते करते मेरा जिस्म सुकड़
गया है, जिल्द और हड्डियाँ ही रह गई हैं।
6मैं रेगिस्तान में दश्ती उल्लू और खंडरात में
छोटे उल्लू की मानिंद हूँ।
7मैं बिस्तर पर जागता रहता हूँ, छत पर तनहा
परिंदे की मानिंद हूँ।
8दिन-भर मेरे दुश्मन मुझे लान-तान करते हैं।
जो मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं वह मेरा नाम लेकर
लानत करते हैं।
9राख मेरी रोटी है, और जो कुछ पीता हूँ उसमें
मेरे आँसू मिले होते हैं।
10क्योंकि मुझ पर तेरी लानत और तेरा ग़ज़ब
नाज़िल हुआ है। तूने मुझे उठाकर ज़मीन पर पटख़
दिया है।
11मेरे दिन शाम के ढलनेवाले साये की मानिंद
हैं। मैं घास की तरह सूख रहा हूँ।

12लेकिन तू ऐ रब अबद तक तख़्तनशीन है,
तेरा नाम पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहता है।
13अब आ, कोहे-सिय्यून पर रहम कर। क्योंकि
उस पर मेहरबानी करने का वक़्त आ गया है,
मुक़र्ररा वक़्त आ गया है।
14क्योंकि तेरे ख़ादिमों को उसका एक एक
पत्थर प्यारा है, और वह उसके मलबे पर तरस
खाते हैं।
15तब ही क़ौमें रब के नाम से डरेंगी, और
दुनिया के तमाम बादशाह तेरे जलाल का ख़ौफ़
खाएँगे।
16क्योंकि रब सिय्यून को अज़ सरे-नौ तामीर
करेगा, वह अपने पूरे जलाल के साथ ज़ाहिर हो
जाएगा।
17मुफ़लिसों की दुआ पर वह ध्यान देगा और
उनकी फ़रियादों को हक़ीर नहीं जानेगा।

18आनेवाली नसल के लिए यह क़लमबंद हो
जाए ताकि जो क़ौम अभी पैदा नहीं हुई वह रब
की सताइश करे।

19क्योंकि रब ने अपने मक़दिस की बुलंदियों
से झाँका है, उसने आसमान से ज़मीन पर नज़र
डाली है
20ताकि क़ैदियों की आहो-ज़ारी सुने और
मरनेवालों की ज़ंजीरें खोले।
21क्योंकि उस की मरज़ी है कि वह कोहे-
सिय्यून पर रब के नाम का एलान करें और
यरूशलम में उस की सताइश करें,
22कि क़ौमें और सलतनतें मिलकर जमा हो
जाएँ और रब की इबादत करें।

23रास्ते में ही अल्लाह ने मेरी ताक़त तोड़कर
मेरे दिन मुख़तसर कर दिए हैं।
24मैं बोला, "ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे ज़िंदों के मुल्क
से दूर न कर, मेरी ज़िंदगी तो अधूरी रह गई है।
लेकिन तेरे साल पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहते हैं।
25तूने क़दीम ज़माने में ज़मीन की बुनियाद
रखी, और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।
26यह तो तबाह हो जाएंगे, लेकिन तू क़ायम
रहेगा। यह सब कपड़े की तरह घिस-फट जाएंगे।
तू उन्हें पुराने लिबास की तरह बदल देगा, और
वह जाते रहेंगे।
27लेकिन तू वही का वही रहता है, और तेरी
ज़िंदगी कभी ख़त्म नहीं होती।
28तेरे ख़ादिमों के फ़रज़ंद तेरे हुज़ूर बसते रहेंगे,
और उनकी औलाद तेरे सामने क़ायम रहेगी।"

रब की शफ़क़त की सताइश

103 दाऊद का ज़बूर।
ऐ मेरी जान, रब की सताइश
कर! मेरा रगो-रेशा उसके क़ुद्दूस नाम की हम्द
करे!
2ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर और जो
कुछ उसने तेरे लिए किया है उसे भूल न जा।
3क्योंकि वह तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़
करता, तुझे तमाम बीमारियों से शफ़ा देता है।
4वह एवज़ाना देकर तेरी जान को मौत के गढ़े
से छुड़ा लेता, तेरे सर को अपनी शफ़क़त और
रहमत के ताज से आरास्ता करता है।
5वह तेरी ज़िंदगी को अच्छी चीज़ों से सेर करता
है, और तू दुबारा जवान होकर उक़ाब की-सी
तक़वियत पाता है।

6रब तमाम मज़लूमों के लिए रास्ती और
इनसाफ़ क़ायम करता है।
7उसने अपनी राहें मूसा पर और अपने अज़ीम
काम इसराईलियों पर ज़ाहिर किए।
8रब रहीम और मेहरबान है, वह तहम्मुल और
शफ़क़त से भरपूर है।
9न वह हमेशा डाँटता रहेगा, न अबद तक
नाराज़ रहेगा।
10न वह हमारी ख़ताओं के मुताबिक़ सज़ा
देता, न हमारे गुनाहों का मुनासिब अज्र देता है।
11क्योंकि जितना बुलंद आसमान है, उतनी ही
अज़ीम उस की शफ़क़त उन पर है जो उसका
ख़ौफ़ मानते हैं।
12जितनी दूर मशरिक़ मग़रिब से है उतना ही
उसने हमारे क़ुसूर हमसे दूर कर दिए हैं।
13जिस तरह बाप अपने बच्चों पर तरस खाता
है उसी तरह रब उन पर तरस खाता है जो उसका
ख़ौफ़ मानते हैं।

14क्योंकि वह हमारी साख़्त जानता है, उसे
याद है कि हम ख़ाक ही हैं।
15इनसान के दिन घास की मानिंद हैं, और वह
जंगली फूल की तरह ही फलता-फूलता है।
16जब उस पर से हवा गुज़रे तो वह नहीं रहता,
और उसके नामो-निशान का भी पता नहीं चलता।

17लेकिन जो रब का ख़ौफ़ मानें उन पर वह
हमेशा तक मेहरबानी करेगा, वह अपनी रास्ती
उनके पोतों और नवासों पर भी ज़ाहिर करेगा।

18शर्त यह है कि वह उसके अहद के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारें और ध्यान से उसके अहकाम पर
अमल करें।

19रब ने आसमान पर अपना तख़्त क़ायम
किया है, और उस की बादशाही सब पर हुकूमत
करती है।
20ऐ रब के फ़रिश्तो, उसके ताक़तवर
सूरमाओ, जो उसके फ़रमान पूरे करते हो ताकि
उसका कलाम माना जाए, रब की सताइश करो!
21ऐ तमाम लशकरो, तुम सब जो उसके
ख़ादिम हो और उस की मरज़ी पूरी करते हो, रब
की सताइश करो!
22तुम सब जिन्हें उसने बनाया, रब की सताइश
करो! उस की सलतनत की हर जगह पर उस की
तमजीद करो। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर!

ख़ालिक़ की हम्दो-सना

104 ऐ मेरी जान, रब की सताइश
कर! ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू निहायत
ही अज़ीम है, तू जाहो-जलाल से आरास्ता है।
2तेरी चादर नूर है जिसे तू ओढ़े रहता है। तू
आसमान को ख़ैमे की तरह तानकर
3अपना बालाखाना उसके पानी के बीच में
तामीर करता है। बादल तेरा रथ है, और तू हवा
के परों पर सवार होता है।
4तू हवाओं को अपने क़ासिद और आग के
शोलों को अपने ख़ादिम बना देता है।

5तूने ज़मीन को मज़बूत बुनियाद पर रखा
ताकि वह कभी न डगमगाए।
6सैलाब ने उसे लिबास की तरह ढाँप दिया,
और पानी पहाड़ों के ऊपर ही खड़ा हुआ।
7लेकिन तेरे डाँटने पर पानी फ़रार हुआ, तेरी
गरजती आवाज़ सुनकर वह एकदम भाग गया।
8तब पहाड़ ऊँचे हुए और वादियाँ उन जगहों
पर उतर आईं जो तूने उनके लिए मुक़र्रर की थीं।
9तूने एक हद बाँधी जिससे पानी बढ़ नहीं
सकता। आइंदा वह कभी पूरी ज़मीन को नहीं
ढाँकने का।
10तू वादियों में चश्मे फूटने देता है, और वह
पहाड़ों में से बह निकलते हैं।
11बहते बहते वह खुले मैदान के तमाम जानवरों
को पानी पिलाते हैं। जंगली गधे आकर अपनी
प्यास बुझाते हैं।
12परिंदे उनके किनारों पर बसेरा करते, और
उनकी चहचहाती आवाज़ें घने बेल-बूटों में से
सुनाई देती हैं।
13तू अपने बालाख़ाने से पहाड़ों को तर करता
है, और ज़मीन तेरे हाथ से सेर होकर हर तरह का
फल लाती है।
14तू जानवरों के लिए घास फूटने और इनसान
के लिए पौदे उगने देता है ताकि वह ज़मीन की
काश्तकारी करके रोटी हासिल करे।
15तेरी मै इनसान का दिल ख़ुश करती, तेरा
तेल उसका चेहरा रौशन कर देता, तेरी रोटी
उसका दिल मज़बूत करती है।
16रब के दरख़्त यानी लुबनान में उसके लगाए
हुए देवदार के दरख़्त सेराब रहते हैं।
17परिंदे उनमें अपने घोंसले बना लेते हैं, और
लक़लक़ जूनीपर के दरख़्त में अपना आशियाना।
18पहाड़ों की बुलंदियों पर पहाड़ी बकरों का
राज है, चट्टानों में बिज्जू पनाह लेते हैं।
19तूने साल को महीनों में तक़सीम करने के
लिए चाँद बनाया, और सूरज को ग़ुरूब होने के
औक़ात मालूम हैं।
20तू अंधेरा फैलने देता है तो दिन ढल जाता है
और जंगली जानवर हरकत में आ जाते हैं।
21जवान शेरबबर दहाड़कर शिकार के पीछे पड़
जाते और अल्लाह से अपनी ख़ुराक का मुतालबा
करते हैं।
22फिर सूरज तुलू होने लगता है, और वह
खिसककर अपने भटों में छुप जाते हैं।

23उस वक़्त इनसान घर से निकलकर अपने
काम में लग जाता और शाम तक मसरूफ़ रहता
है।

24ऐ रब, तेरे अनगिनत काम कितने अज़ीम हैं!
तूने हर एक को हिकमत से बनाया, और ज़मीन
तेरी मख़लूक़ात से भरी पड़ी है।

25समुंदर को देखो, वह कितना बड़ा और वसी
है। उसमें बेशुमार जानदार हैं, बड़े भी और छोटे
भी।
26उस की सतह पर जहाज़ इधर-उधर सफ़र
करते हैं, उस की गहराइयों में लिवियातान फिरता
है, वह अज़दहा जिसे तूने उसमें उछलने कूदने के
लिए तश्कील दिया था।
27सब तेरे इंतज़ार में रहते हैं कि तू उन्हें वक़्त
पर खाना मुहैया करे।
28तू उनमें ख़ुराक तक़सीम करता है तो वह
उसे इकट्ठा करते हैं। तू अपनी मुट्ठी खोलता है तो
वह अच्छी चीज़ों से सेर हो जाते हैं।
29जब तू अपना चेहरा छुपा लेता है तो उनके
हवास गुम हो जाते हैं। जब तू उनका दम निकाल
लेता है तो वह नेस्त होकर दुबारा ख़ाक में मिल
जाते हैं।
30तू अपना दम भेज देता है तो वह पैदा हो
जाते हैं। तू ही रूए-ज़मीन को बहाल करता है।

31रब का जलाल अबद तक क़ायम रहे! रब
अपने काम की ख़ुशी मनाए!
32वह ज़मीन पर नज़र डालता है तो वह लरज़
उठती है। वह पहाड़ों को छू देता है तो वह धुआँ
छोड़ते हैं।
33मैं उम्र-भर रब की तमजीद में गीत गाऊँगा,
जब तक ज़िंदा हूँ अपने ख़ुदा की मद्हसराई
करूँगा।
34मेरी बात उसे पसंद आए! मैं रब से कितना
ख़ुश हूँ!
35गुनाहगार ज़मीन से मिट जाएँ और बेदीन
नेस्तो-नाबूद हो जाएँ। ऐ मेरी जान, रब की
सताइश कर! रब की हम्द हो!

माज़ी में रब की नजात की हम्द

105 रब का शुक्र करो और उस-
का नाम पुकारो! अक़्वाम में
उसके कामों का एलान करो।
2साज़ बजाकर उस की मद्हसराई करो। उसके
तमाम अजायब के बारे में लोगों को बताओ।
3उसके मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के
तालिब दिल से ख़ुश हों।
4रब और उस की क़ुदरत की दरियाफ़्त करो,
हर वक़्त उसके चेहरे के तालिब रहो।
5जो मोजिज़े उसने किए उन्हें याद करो। उसके
इलाही निशान और उसके मुँह के फ़ैसले दोहराते
रहो।
6तुम जो उसके ख़ादिम इब्राहीम की औलाद
और याक़ूब के फ़रज़ंद हो, जो उसके बरगुज़ीदा
लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!
7वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया की
अदालत करता है।
8वह हमेशा अपने अहद का ख़याल रखता है,
उस कलाम का जो उसने हज़ार पुश्तों के लिए
फ़रमाया था।
9यह वह अहद है जो उसने इब्राहीम से बाँधा,
वह वादा जो उसने क़सम खाकर इसहाक़ से
किया था।
10उसने उसे याक़ूब के लिए क़ायम किया
ताकि वह उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे, उसने
तसदीक़ की कि यह मेरा इसराईल से अबदी अहद
है।
11साथ साथ उसने फ़रमाया, "मैं तुझे मुल्के-
कनान दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।"

12उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे
बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।

13अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और
सलतनतों में घुमते-फिरते थे।
14लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म
करने न दिया, और उनकी ख़ातिर उसने बादशाहों
को डाँटा,
15“मेरे मसह किए हुए ख़ादिमों को मत छेड़ना,
मेरे नबियों को नुक़सान मत पहुँचाना।”

16फिर अल्लाह ने मुल्के-कनान में काल पड़ने
दिया और ख़ुराक का हर ज़ख़ीरा ख़त्म किया।
17लेकिन उसने उनके आगे आगे एक आदमी
को मिसर भेजा यानी यूसुफ़ को जो ग़ुलाम बनकर
फ़रोख़्त हुआ।
18उसके पाँव और गरदन ज़ंजीरों में जकड़े रहे
19जब तक वह कुछ पूरा न हुआ जिसकी
पेशगोई यूसुफ़ ने की थी, जब तक रब के फ़रमान
ने उस की तसदीक़ न की।
20तब मिसरी बादशाह ने अपने बंदों को
भेजकर उसे रिहाई दी, क़ौमों के हुक्मरान ने उसे
आज़ाद किया।
21उसने उसे अपने घराने पर निगरान और
अपनी तमाम मिलकियत पर हुक्मरान मुक़र्रर
किया।
22यूसुफ़ को फ़िरौन के रईसों को अपनी
मरज़ी के मुताबिक़ चलाने और मिसरी बुज़ुर्गों को
हिकमत की तालीम देने की ज़िम्मेदारी भी दी गई।

23फिर याक़ूब का ख़ानदान मिसर आया, और
इसराईल हाम के मुल्क में अजनबी की हैसियत
से बसने लगा।
24वहाँ अल्लाह ने अपनी क़ौम को बहुत
फलने-फूलने दिया, उसने उसे उसके दुश्मनों से
ज़्यादा ताक़तवर बना दिया।
25साथ साथ उसने मिसरियों का रवैया बदल
दिया, तो वह उस की क़ौम इसराईल से नफ़रत
करके रब के ख़ादिमों से चालाकियाँ करने लगे।
26तब अल्लाह ने अपने ख़ादिम मूसा और
अपने चुने हुए बंदे हारून को मिसर में भेजा।
27मुल्के-हाम में आकर उन्होंने उनके दरमियान
अल्लाह के इलाही निशान और मोजिज़े दिखाए।
28अल्लाह के हुक्म पर मिसर पर तारीकी छा
गई, मुल्क में अंधेरा हो गया। लेकिन उन्होंने उसके
फ़रमान न माने।
29उसने उनका पानी ख़ून में बदलकर उनकी
मछलियों को मरवा दिया।
30मिसर के मुल्क पर मेंढकों के ग़ोल छा गए
जो उनके हुक्मरानों के अंदरूनी कमरों तक पहुँच
गए।
31अल्लाह के हुक्म पर मिसर के पूरे इलाक़े में
मक्खियों और जुओं के ग़ोल फैल गए।
32बारिश की बजाए उसने उनके मुल्क पर
ओले और दहकते शोले बरसाए।
33उसने उनकी अंगूर की बेलें और अंजीर के
दरख़्त तबाह कर दिए, उनके इलाक़े के दरख़्त
तोड़ डाले।
34उसके हुक्म पर अनगिनत टिड्डियाँ अपने
बच्चों समेत मुल्क पर हमलाआवर हुईं।
35वह उनके मुल्क की तमाम हरियाली और
उनके खेतों की तमाम पैदावार चट कर गईं।
36फिर अल्लाह ने मिसर में तमाम पह-
लौठों को मार डाला, उनकी मरदानगी का पहला
फल तमाम हुआ।

37इसके बाद वह इसराईल को चाँदी और सोने
से नवाज़कर मिसर से निकाल लाया। उस वक़्त
उसके क़बीलों में ठोकर खानेवाला एक भी नहीं
था।
38मिसर ख़ुश था जब वह रवाना हुए, क्योंकि
उन पर इसराईल की दहशत छा गई थी।
39दिन को अल्लाह ने उनके ऊपर बादल
कम्बल की तरह बिछा दिया, रात को आग मुहैया
की ताकि रौशनी हो।
40जब उन्होंने ख़ुराक माँगी तो उसने उन्हें बटेर
पहुँचाकर आसमानी रोटी से सेर किया।

41उसने चट्टान को चाक किया तो पानी फूट
निकला, और रेगिस्तान में पानी की नदियाँ बहने
लगीं।

42क्योंकि उसने उस मुक़द्दस वादे का
ख़याल रखा जो उसने अपने ख़ादिम इब्रा-
हीम से किया था।
43चुनाँचे वह अपनी चुनी हुई क़ौम को मिसर
से निकाल लाया, और वह ख़ुशी और शादमानी
के नारे लगाकर निकल आए।
44उसने उन्हें दीगर अक़वाम के ममालिक दिए,
और उन्होंने दीगर उम्मतों की मेहनत के फल पर
क़ब्ज़ा किया।
45क्योंकि वह चाहता था कि वह उसके
अहकाम और हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें। रब की हम्द हो।

अल्लाह का फ़ज़ल और इसराईल की सरकशी

106 रब की हम्द हो! रब का शुक्र
करो, क्योंकि वह भला है, और
उस की शफ़क़त अबदी है।
2कौन रब के तमाम अज़ीम काम सुना सकता,
कौन उस की मुनासिब तमजीद कर सकता है?

3मुबारक हैं वह जो इनसाफ़ क़ायम रखते, जो
हर वक़्त रास्त काम करते हैं।
4ऐ रब, अपनी क़ौम पर मेहरबानी करते वक़्त
मेरा ख़याल रख, नजात देते वक़्त मेरी भी मदद
कर
5ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों की ख़ुशहाली देख
सकूँ और तेरी क़ौम की ख़ुशी में शरीक होकर तेरी
मीरास के साथ सताइश कर सकूँ।

6हमने अपने बापदादा की तरह गुनाह किया है,
हमसे नाइनसाफ़ी और बेदीनी सरज़द हुई है।
7जब हमारे बापदादा मिसर में थे तो उन्हें तेरे
मोजिज़ों की समझ न आई और तेरी मुतअद्दिद
मेहरबानियाँ याद न रहीं बल्कि वह समुंदर यानी
बहरे-क़ुलज़ुम पर सरकश हुए।

8तो भी उसने उन्हें अपने नाम की ख़ातिर
बचाया, क्योंकि वह अपनी क़ुदरत का इज़हार
करना चाहता था।
9उसने बहरे-क़ुलज़ुम को झिड़का तो वह ख़ुश्क
हो गया। उसने उन्हें समुंदर की गहराइयों में से यों
गुज़रने दिया जिस तरह रेगिस्तान में से।
10उसने उन्हें नफ़रत करनेवाले के हाथ से
छुड़ाया और एवज़ाना देकर दुश्मन के हाथ से रिहा
किया।
11उनके मुख़ालिफ़ पानी में डूब गए। एक भी
न बचा।
12तब उन्होंने अल्लाह के फ़रमानों पर ईमान
लाकर उस की मद्हसराई की।

13लेकिन जल्द ही वह उसके काम भूल गए।
वह उस की मरज़ी का इंतज़ार करने के लिए तैयार
न थे।
14रेगिस्तान में शदीद लालच में आकर
उन्होंने वहीं बयाबान में अल्लाह को आज़-
माया।
15तब उसने उनकी दरख़ास्त पूरी की, लेकिन
साथ साथ मोहलक वबा भी उनमें फैला दी।
16ख़ैमागाह में वह मूसा और रब के मुक़द्दस
इमाम हारून से हसद करने लगे।
17तब ज़मीन खुल गई, और उसने दातन को
हड़प कर लिया, अबीराम के जत्थे को अपने अंदर
दफ़न कर लिया।
18आग उनके जत्थे में भड़क उठी, और बेदीन
नज़रे-आतिश हुए।

19वह कोहे-होरिब यानी सीना के दामन में
बछड़े का बुत ढालकर उसके सामने औंधे मुँह हो
गए।
20उन्होंने अल्लाह को जलाल देने के बजाए
घास खानेवाले बैल की पूजा की।

21वह अल्लाह को भूल गए, हालाँकि उसी ने
उन्हें छुड़ाया था, उसी ने मिसर में अज़ीम काम
किए थे।
22जो मोजिज़े हाम के मुल्क में हुए और जो
जलाली वाक़ियात बहरे-क़ुलज़ुम पर पेश आए थे
वह सब अल्लाह के हाथ से हुए थे।
23चुनाँचे अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उन्हें
नेस्तो-नाबूद करूँगा। लेकिन उसका चुना हुआ
ख़ादिम मूसा रख़ने में खड़ा हो गया ताकि उसके
ग़ज़ब को इसराईलियों को मिटाने से रोके। सिर्फ़
इस वजह से अल्लाह अपने इरादे से बाज़ आया।

24फिर उन्होंने कनान के ख़ुशगवार मुल्क को
हक़ीर जाना। उन्हें यक़ीन नहीं था कि अल्लाह
अपना वादा पूरा करेगा।
25वह अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाने लगे और रब की
आवाज़ सुनने के लिए तैयार न हुए।
26तब उसने अपना हाथ उनके ख़िलाफ़ उठाया
ताकि उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक करे
27और उनकी औलाद को दीगर अक़वाम में
फेंककर मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दे।

28वह बाल-फ़ग़ूर देवता से लिपट गए और
मुरदों के लिए पेश की गई क़ुरबानियों का गोश्त
खाने लगे।
29उन्होंने अपनी हरकतों से रब को तैश
दिलाया तो उनमें मोहलक बीमारी फैल गई।
30लेकिन फ़ीनहास ने उठकर उनकी अदालत
की। तब वबा रुक गई।
31इसी बिना पर अल्लाह ने उसे पुश्त-दर-पुश्त
और अबद तक रास्तबाज़ क़रार दिया।

32मरीबा के चश्मे पर भी उन्होंने रब को ग़ुस्सा
दिलाया। उन्हीं के बाइस मूसा का बुरा हाल हुआ।
33क्योंकि उन्होंने उसके दिल में इतनी तलख़ी
पैदा की कि उसके मुँह से बेजा बातें निकलीं।

34जो दीगर क़ौमें मुल्क में थीं उन्हें उन्होंने नेस्त
न किया, हालाँकि रब ने उन्हें यह करने को कहा
था।
35न सिर्फ़ यह बल्कि वह ग़ैरक़ौमों से रिश्ता
बाँधकर उनमें घुल मिल गए और उनके रस्मो-
रिवाज अपना लिए।
36वह उनके बुतों की पूजा करने में लग गए,
और यह उनके लिए फंदे का बाइस बन गए।
37वह अपने बेटे-बेटियों को बदरूहों के हुज़ूर
क़ुरबान करने से भी न कतराए।
38हाँ, उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को कनान
के देवताओं के हुज़ूर पेश करके उनका
मासूम ख़ून बहाया। इससे मुल्क की बे-
हुरमती हुई।
39वह अपनी ग़लत हरकतों से नापाक और
अपने ज़िनाकाराना कामों से अल्लाह से बेवफ़ा
हुए।

40तब अल्लाह अपनी क़ौम से सख़्त नाराज़
हुआ, और उसे अपनी मौरूसी मिलकियत से घिन
आने लगी।
41उसने उन्हें दीगर क़ौमों के हवाले किया, और
जो उनसे नफ़रत करते थे वह उन पर हुकूमत करने
लगे।
42उनके दुश्मनों ने उन पर ज़ुल्म करके उनको
अपना मुती बना लिया।
43अल्लाह बार बार उन्हें छुड़ाता रहा, हालाँकि
वह अपने सरकश मनसूबों पर तुले रहे और अपने
क़ुसूर में डूबते गए।
44लेकिन उसने मदद के लिए उनकी आहें
सुनकर उनकी मुसीबत पर ध्यान दिया।
45उसने उनके साथ अपना अहद याद किया,
और वह अपनी बड़ी शफ़क़त के बाइस पछताया।
46उसने होने दिया कि जिसने भी उन्हें
गिरिफ़्तार किया उसने उन पर तरस खाया।

47ऐ रब हमारे ख़ुदा, हमें बचा! हमें दीगर क़ौमों
से निकालकर जमा कर। तब ही हम तेरे मुक़द्दस

नाम की सताइश करेंगे और तेरे क़ाबिले-तारीफ़ कामों पर फ़ख़र करेंगे।

48अज़ल से अबद तक रब, इसराईल के ख़ुदा की हम्द हो। तमाम क़ौम कहे, "आमीन! रब की हम्द हो!"

पाँचवीं किताब 107-150

नजातयाफ़्ता की शुक्रगुज़ारी

107 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।

2रब के नजातयाफ़्ता जिनको उसने एवज़ाना देकर दुश्मन के क़ब्ज़े से छुड़ाया है सब यह कहें।

3उसने उन्हें मशरिक़ से मग़रिब तक और शिमाल से जुनूब तक दीगर ममालिक से इकट्ठा किया है।

4बाज़ रेगिस्तान में सहीह रास्ता भूलकर वीरान रास्ते पर मारे मारे फिरे, और कहीं भी आबादी न मिली।

5भूक और प्यास के मारे उनकी जान निढाल हो गई।

6तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

7उसने उन्हें सहीह राह पर लाकर ऐसी आबादी तक पहुँचाया जहाँ रह सकते थे।

8वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

9क्योंकि वह प्यासी जान को आसूदा करता और भूकी जान को कसरत की अच्छी चीज़ों से सेर करता है।

10दूसरे ज़ंजीरों और मुसीबत में जकड़े हुए अंधेरे और गहरी तारीकी में बसते थे,

11क्योंकि वह अल्लाह के फ़रमानों से सरकश हुए थे, उन्होंने अल्लाह तआला का फ़ैसला हक़ीर जाना था।

12इसलिए अल्लाह ने उनके दिल को तकलीफ़ में मुब्तला करके पस्त कर दिया। जब वह ठोकर खाकर गिर गए और मदद करनेवाला कोई न रहा था

13तो उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

14वह उन्हें अंधेरे और गहरी तारीकी से निकाल लाया और उनकी ज़ंजीरें तोड़ डालीं।

15वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

16क्योंकि उसने पीतल के दरवाज़े तोड़ डाले, लोहे के कुंडे टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं।

17कुछ लोग अहमक़ थे, वह अपने सरकश चाल-चलन और गुनाहों के बाइस परेशानियों में मुब्तला हुए।

18उन्हें हर ख़ुराक से घिन आने लगी, और वह मौत के दरवाज़ों के क़रीब पहुँचे।

19तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

20उसने अपना कलाम भेजकर उन्हें शफ़ा दी और उन्हें मौत के गढ़े से बचाया।

21वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

22वह शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानियाँ पेश करें और ख़ुशी के नारे लगाकर उसके कामों का चर्चा करें।

23बाज़ बहरी जहाज़ में बैठ गए और तिजारत के सिलसिले में समुंदर पर सफ़र करते करते दूर-दराज़ इलाक़ों तक पहुँचे।

24उन्होंने रब के अज़ीम काम और समुंदर की गहराइयों में उसके मोजिज़े देखे हैं।

25क्योंकि रब ने हुक्म दिया तो आँधी चली जो समुंदर की मौजें बुलंदियों पर लाई।

26वह आसमान तक चढ़ीं और गहराइयों तक
उतरीं। परेशानी के बाइस मल्लाहों की हिम्मत
जवाब दे गई।
27वह शराब में धुत आदमी की तरह लड़खड़ाते
और डगमगाते रहे। उनकी तमाम हिकमत नाकाम
साबित हुई।
28तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा,
और उसने उन्हें तमाम परेशानियों से छुटकारा
दिया।
29उसने समुंदर को थमा दिया और ख़ामोशी
फैल गई, लहरें साकित हो गईं।
30मुसाफ़िर पुरसुकून हालात देखकर ख़ुश
हुए, और अल्लाह ने उन्हें मनज़िले-मक़सूद तक
पहुँचाया।
31वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी
शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर
किए हैं।
32वह क़ौम की जमात में उस की ताज़ीम करें,
बुज़ुर्गों की मजलिस में उस की हम्द करें।

33कई जगहों पर वह दरियाओं को रेगिस्तान
में और चश्मों को प्यासी ज़मीन में बदल देता है।
34बाशिंदों की बुराई देखकर वह ज़रख़ेज़
ज़मीन को कल्लर के बयाबान में बदल देता है।
35दूसरी जगहों पर वह रेगिस्तान को झील में
और प्यासी ज़मीन को चश्मों में बदल देता है।
36वहाँ वह भूकों को बसा देता है ताकि
आबादियाँ क़ायम करें।
37तब वह खेत और अंगूर के बाग़ लगाते हैं जो
ख़ूब फल लाते हैं।
38अल्लाह उन्हें बरकत देता है तो उनकी तादाद
बहुत बढ़ जाती है। वह उनके रेवड़ों को भी कम
होने नहीं देता।
39जब कभी उनकी तादाद कम हो जाती और
वह मुसीबत और दुख के बोझ तले ख़ाक में दब
जाते हैं
40तो वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत उंडेल देता
और उन्हें रेगिस्तान में भगाकर सहीह रास्ते से दूर
फिरने देता है।
41लेकिन मुहताज को वह मुसीबत की दलदल
से निकालकर सरफ़राज़ करता और उसके
ख़ानदानों को भेड़-बकरियों की तरह बढ़ा देता है।

42सीधी राह पर चलनेवाले यह देखकर ख़ुश
होंगे, लेकिन बेइनसाफ़ का मुँह बंद किया
जाएगा।
43कौन दानिशमंद है? वह इस पर ध्यान दे,
वह रब की मेहरबानियों पर ग़ौर करे।

जंग में रब पर उम्मीद

108 दाऊद का ज़बूर। गीत।
ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़-
बूत है। मैं साज़ बजाकर तेरी मद्हसराई करूँगा।
ऐ मेरी जान, जाग उठ!
2ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! मैं तुलूए-
सुबह को जगाऊँगा।
3ऐ रब, मैं क़ौमों में तेरी सताइश, उम्मतों में
तेरी मद्हसराई करूँगा।
4क्योंकि तेरी शफ़क़त आसमान से कहीं बुलंद
है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
5ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा
जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।
6अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि
जो तुझे प्यारे हैं नजात पाएँ।

7अल्लाह ने अपने मक़दिस में फ़रमाया है, “मैं
फ़तह मनाते हुए सिकम को तक़सीम करूँगा और
वादीए-सुक्कात को नापकर बाँट दूँगा।
8जिलियाद मेरा है और मनस्सी मेरा है।
इफ़राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा
है।
9मोआब मेरा ग़ुस्ल का बरतन है, और अदोम
पर मैं अपना जूता फेंक दूँगा। मैं फ़िलिस्ती मुल्क
पर ज़ोरदार नारे लगाऊँगा!”

10कौन मुझे क़िलाबंद शहर में लाएगा? कौन
मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?
11ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तूने
हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का
साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती
हैं।
12मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक़्त
इनसानी मदद बेकार है।
13अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे,
क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

बेरहम मुख़ालिफ़ के सामने अल्लाह से दुआ

109 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह मेरे फ़ख़र, ख़ामोश न रह!
2क्योंकि उन्होंने अपना बेदीन और फ़रेब-
देह मुँह मेरे ख़िलाफ़ खोलकर झूटी ज़बान से मेरे
साथ बात की है।
3वह मुझे नफ़रत के अलफ़ाज़ से घेरकर
बिलावजह मुझसे लड़े हैं।
4मेरी मुहब्बत के जवाब में वह मुझ पर अपनी
दुश्मनी का इज़हार करते हैं। लेकिन दुआ ही मेरा
सहारा है।
5मेरी नेकी के एवज़ वह मुझे नुक़सान पहुँचाते
और मेरे प्यार के बदले मुझसे नफ़रत करते हैं।

6ऐ अल्लाह, किसी बेदीन को मुक़र्रर कर जो
मेरे दुश्मन के ख़िलाफ़ गवाही दे, कोई मुख़ालिफ़
उसके दहने हाथ खड़ा हो जाए जो उस पर
इलज़ाम लगाए।
7मुक़दमे में उसे मुजरिम ठहराया जाए। उस
की दुआएँ भी उसके गुनाहों में शुमार की जाएँ।
8उस की ज़िंदगी मुख़तसर हो, कोई और उस
की ज़िम्मेदारी उठाए।
9उस की औलाद यतीम और उस की बीवी बेवा
बन जाए।
10उसके बच्चे आवारा फिरें और भीक माँगने
पर मजबूर हो जाएँ। उन्हें उनके तबाहशुदा घरों से
निकलकर इधर-उधर रोटी ढूँडनी पड़े।
11जिससे उसने क़र्ज़ा लिया था वह उसके
तमाम माल पर क़ब्ज़ा करे, और अजनबी उस
की मेहनत का फल लूट लें।
12कोई न हो जो उस पर मेहरबानी करे या
उसके यतीमों पर रहम करे।
13उस की औलाद को मिटाया जाए, अगली
पुश्त में उनका नामो-निशान तक न रहे।
14रब उसके बापदादा की नाइनसाफ़ी का
लिहाज़ करे, और वह उस की माँ की ख़ता भी
दरगुज़र न करे।
15उनका बुरा किरदार रब के सामने रहे, और
वह उनकी याद रूए-ज़मीन पर से मिटा डाले।
16क्योंकि उसको कभी मेहरबानी करने का
ख़याल न आया बल्कि वह मुसीबतज़दा, मुहताज
और शिकस्तादिल का ताक़्क़ुब करता रहा ताकि
उसे मार डाले।
17उसे लानत करने का शौक़ था, चुनाँचे लानत
उसी पर आए! उसे बरकत देना पसंद नहीं था,
चुनाँचे बरकत उससे दूर रहे।
18उसने लानत चादर की तरह ओढ़ ली, चुनाँचे
लानत पानी की तरह उसके जिस्म में और तेल की
तरह उस की हड्डियों में सरायत कर जाए।
19वह कपड़े की तरह उससे लिपटी रहे, पटके
की तरह हमेशा उससे कमरबस्ता रहे।

20रब मेरे मुख़ालिफ़ों को और उन्हें जो मेरे
ख़िलाफ़ बुरी बातें करते हैं यही सज़ा दे।
21लेकिन तू ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, अपने नाम
की ख़ातिर मेरे साथ मेहरबानी का सुलूक कर।
मुझे बचा, क्योंकि तेरी ही शफ़क़त तसल्लीबख़्श
है।
22क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और ज़रूरतमंद हूँ।
मेरा दिल मेरे अंदर मजरूह है।

23शाम के ढलते साये की तरह मैं ख़त्म
होनेवाला हूँ। मुझे टिड्डी की तरह झाड़कर दूर कर
दिया गया है।
24रोज़ा रखते रखते मेरे घुटने डगमगाने लगे
और मेरा जिस्म सूख गया है।
25मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना
बन गया हूँ। मुझे देखकर वह सर हिलाकर "तौबा
तौबा" कहते हैं।
26ऐ रब मेरे ख़ुदा, मेरी मदद कर! अपनी
शफ़क़त का इज़हार करके मुझे छुड़ा!
27उन्हें पता चले कि यह तेरे हाथ से पेश आया
है, कि तू रब ही ने यह सब कुछ किया है।
28जब वह लानत करें तो मुझे बरकत दे! जब
वह मेरे ख़िलाफ़ उठें तो बख़्श दे कि शरमिंदा हो
जाएँ जबकि तेरा ख़ादिम ख़ुश हो।
29मेरे मुख़ालिफ़ रुसवाई से मुलब्बस हो जाएँ,
उन्हें शरमिंदगी की चादर ओढ़नी पड़े।

30मैं ज़ोर से रब की सताइश करूँगा, बहुतों के
दरमियान उस की हम्द करूँगा।
31क्योंकि वह मुहताज के दहने हाथ खड़ा
रहता है ताकि उसे उनसे बचाए जो उसे मुजरिम
ठहराते हैं।

अबदी बादशाह और इमाम

110 दाऊद का ज़बूर।
रब ने मेरे रब से कहा, "मेरे दहने
हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों की
चौकी न बना दूँ।"
2रब सिय्यून से तेरी सलतनत की सरहद्दें
बढ़ाकर कहेगा, "आस-पास के दुश्मनों पर
हुकूमत कर!"
3जिस दिन तू अपनी फ़ौज को खड़ा करेगा तेरी
क़ौम ख़ुशी से तेरे पीछे हो लेगी। तू मुक़द्दस शानो-
शौकत से आरास्ता होकर तुलूए-सुबह के बातिन
से अपनी जवानी की ओस पाएगा।
4रब ने क़सम खाई है और इससे पछ-
ताएगा नहीं, "तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम
जैसा मलिके-सिद्क़ था।"
5रब तेरे दहने हाथ पर रहेगा और अपने ग़ज़ब
के दिन दीगर बादशाहों को चूर चूर करेगा।
6वह क़ौमों में अदालत करके मैदान को लाशों
से भर देगा और दूर तक सरों को पाश पाश
करेगा।
7रास्ते में वह नदी से पानी पी लेगा, इसलिए
अपना सर उठाए फिरेगा।

अल्लाह के फ़ज़ल की तमजीद

111 रब की हम्द हो! मैं पूरे दिल से
दियानतदारों की मजलिस और
जमात में रब का शुक्र करूँगा।
2रब के काम अज़ीम हैं। जो उनसे लुत्फ़-
अंदोज़ होते हैं वह उनका ख़ूब मुतालआ करते हैं।

3उसका काम शानदार और जलाली है, उस
की रास्ती अबद तक क़ायम रहती है।
4वह अपने मोजिज़े याद कराता है। रब
मेहरबान और रहीम है।
5जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं उन्हें उसने ख़ुराक
मुहैया की है। वह हमेशा तक अपने अहद का
ख़याल रखेगा।
6उसने अपनी क़ौम को अपने ज़बरदस्त कामों
का एलान करके कहा, "मैं तुम्हें ग़ैरक़ौमों की
मीरास अता करूँगा।"
7जो भी काम उसके हाथ करें वह सच्चे और
रास्त हैं। उसके तमाम अहकाम क़ाबिले-एतमाद
हैं।
8वह अज़ल से अबद तक क़ायम हैं, और उन
पर सच्चाई और दियानतदारी से अमल करना है।
9उसने अपनी क़ौम का फ़िद्या भेजकर उसे
छुड़ाया है। उसने फ़रमाया, "मेरा क़ौम के साथ
अहद अबद तक क़ायम रहे।" उसका नाम क़ुद्दूस
और पुरजलाल है।

10हिकमत इससे शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़ मानें। जो भी उसके अहकाम पर अमल करे उसे अच्छी समझ हासिल होगी। उस की हम्द हमेशा तक क़ायम रहेगी।

अल्लाह के ख़ौफ़ की तारीफ़

112 रब की हम्द हो! मुबारक है वह जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और उसके अहकाम से बहुत लुत्फ़-अंदोज़ होता है।

2उसके फ़रज़ंद मुल्क में ताक़तवर होंगे, और दियानतदार की नसल को बरकत मिलेगी।

3दौलत और ख़ुशहाली उसके घर में रहेगी, और उस की रास्तबाज़ी अबद तक क़ायम रहेगी।

4अंधेरे में चलते वक़्त दियानतदारों पर रौशनी चमकती है। वह रास्तबाज़, मेहरबान और रहीम है।

5मेहरबानी करना और क़र्ज़ देना बा-बरकत है। जो अपने मामलों को इनसाफ़ से हल करे वह अच्छा करेगा,

6क्योंकि वह अबद तक नहीं डगमगाएगा। रास्तबाज़ हमेशा ही याद रहेगा।

7वह बुरी ख़बर मिलने से नहीं डरता। उसका दिल मज़बूत है, और वह रब पर भरोसा रखता है।

8उसका दिल मुस्तहकम है। वह सहमा हुआ नहीं रहता, क्योंकि वह जानता है कि एक दिन मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर ख़ुश हूँगा।

9वह फ़ैयाज़ी से ज़रूरतमंदों में ख़ैरात बिखेर देता है। उस की रास्तबाज़ी हमेशा क़ायम रहेगी, और उसे इज़्ज़त के साथ सरफ़राज़ किया जाएगा।

10बेदीन यह देखकर नाराज़ हो जाएगा, वह दाँत पीस पीसकर नेस्त हो जाएगा। जो कुछ बेदीन चाहते हैं वह जाता रहेगा।

अल्लाह की अज़मत और मेहरबानी

113 रब की हम्द हो! ऐ रब के ख़ादिमो, रब के नाम की सताइश करो, रब के नाम की तारीफ़ करो।

2रब के नाम की अब से अबद तक तमजीद हो।

3तुलूए-सुबह से ग़ुरूबे-आफ़ताब तक रब के नाम की हम्द हो।

4रब तमाम अक़वाम से सरबुलंद है, उसका जलाल आसमान से अज़ीम है।

5कौन रब हमारे ख़ुदा की मानिंद है जो बुलंदियों पर तख़्तनशीन है

6और आसमानो-ज़मीन को देखने के लिए नीचे झुकता है?

7पस्तहाल को वह ख़ाक में से उठाकर पाँवों पर खड़ा करता, मुहताज को राख से निकालकर सरफ़राज़ करता है।

8वह उसे शुरफ़ा के साथ, अपनी क़ौम के शुरफ़ा के साथ बिठा देता है।

9बाँझ को वह औलाद अता करता है ताकि वह घर में ख़ुशी से ज़िंदगी गुज़ार सके। रब की हम्द हो!

मिसर में अल्लाह के मोजिज़ात

114 जब इसराईल मिसर से रवाना हुआ और याक़ूब का घराना अजनबी ज़बान बोलनेवाली क़ौम से निकल आया

2तो यहूदाह अल्लाह का मक़दिस बन गया और इसराईल उस की बादशाही।

3यह देखकर समुंदर भाग गया और दरियाए-यरदन पीछे हट गया।

4पहाड़ मेंढों की तरह कूदने और पहाड़ियाँ जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगीं।

5ऐ समुंदर, क्या हुआ कि तू भाग गया है? ऐ यरदन, क्या हुआ कि तू पीछे हट गया है?

6ऐ पहाड़ो, क्या हुआ कि तुम मेंढों की तरह कूदने लगे हो? ऐ पहाड़ियो, क्या हुआ कि तुम जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगी हो?

7ऐ ज़मीन, रब के हुज़ूर, याक़ूब के ख़ुदा के
हुज़ूर लरज़ उठ,
8उसके सामने थरथरा जिसने चट्टान को जोहड़
में और सख़्त पत्थर को चश्मे में बदल दिया।

अल्लाह ही की हम्द हो

115 ऐ रब, हमारी ही इज़्ज़त की
ख़ातिर काम न कर बल्कि
इसलिए कि तेरे नाम को जलाल मिले, इसलिए
कि तू मेहरबान और वफ़ादार ख़ुदा है।
2दीगर अक़वाम क्यों कहें, "उनका ख़ुदा कहाँ
है?"
3हमारा ख़ुदा तो आसमान पर है, और जो जी
चाहे करता है।

4उनके बुत सोने-चाँदी के हैं, इनसान के हाथ
ने उन्हें बनाया है।
5उनके मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते।
उनकी आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
6उनके कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते,
उनकी नाक है लेकिन वह सूँघ नहीं सकते।
7उनके हाथ हैं, लेकिन वह छू नहीं सकते।
उनके पाँव हैं, लेकिन वह चल नहीं सकते। उनके
गले से आवाज़ नहीं निकलती।
8जो बुत बनाते हैं वह उनकी मानिंद हो जाएँ,
जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिसो-
हरकत हो जाएँ।

9ऐ इसराईल, रब पर भरोसा रख! वही तेरा
सहारा और तेरी ढाल है।
10ऐ हारून के घराने, रब पर भरोसा रख! वही
तेरा सहारा और तेरी ढाल है।
11ऐ रब का ख़ौफ़ माननेवालो, रब पर भरोसा
रखो! वही तुम्हारा सहारा और तुम्हारी ढाल है।

12रब ने हमारा ख़याल किया है, और वह हमें
बरकत देगा। वह इसराईल के घराने को बरकत
देगा, वह हारून के घराने को बरकत देगा।
13वह रब का ख़ौफ़ माननेवालों को बरकत
देगा, ख़्वाह छोटे हों या बड़े।
14रब तुम्हारी तादाद में इज़ाफ़ा करे, तुम्हारी
भी और तुम्हारी औलाद की भी।
15रब जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है
तुम्हें बरकत से मालामाल करे।
16आसमान तो रब का है, लेकिन ज़मीन को
उसने आदमज़ादों को बख़्श दिया है।
17ऐ रब, मुरदे तेरी सताइश नहीं करते,
ख़ामोशी के मुल्क में उतरनेवालों में से कोई भी
तेरी तमजीद नहीं करता।
18लेकिन हम रब की सताइश अब से अबद
तक करेंगे। रब की हम्द हो!

मौत से नजात पर शुक्रगुज़ारी

116 मैं रब से मुहब्बत रखता हूँ,
क्योंकि उसने मेरी आवाज़ और
मेरी इल्तिजा सुनी है।
2उसने अपना कान मेरी तरफ़ झुकाया है,
इसलिए मैं उम्र-भर उसे पुकारूँगा।

3मौत ने मुझे अपनी ज़ंजीरों में जकड़ लिया,
और पाताल की परेशानियाँ मुझ पर ग़ालिब आईं।
मैं मुसीबत और दुख में फँस गया।
4तब मैंने रब का नाम पुकारा, "ऐ रब,
मेहरबानी करके मुझे बचा!"
5रब मेहरबान और रास्त है, हमारा ख़ुदा रहीम
है।
6रब सादा लोगों की हिफ़ाज़त करता है। जब
मैं पस्तहाल था तो उसने मुझे बचाया।
7ऐ मेरी जान, अपनी आरामगाह के पास
वापस आ, क्योंकि रब ने तेरे साथ भलाई की
है।
8क्योंकि ऐ रब, तूने मेरी जान को मौत से,
मेरी आँखों को आँसू बहाने से और मेरे पाँवों को
फिसलने से बचाया है।
9अब मैं ज़िंदों की ज़मीन में रहकर रब के हुज़ूर
चलूँगा।

10मैं ईमान लाया और इसलिए बोला, “मैं
शदीद मुसीबत में फँस गया हूँ।”
11मैं सख़्त घबरा गया और बोला, “तमाम
इनसान दरोग़गो हैं।”
12जो भलाइयाँ रब ने मेरे साथ की हैं उन सबके
एवज़ मैं क्या दूँ?
13मैं नजात का प्याला उठाकर रब का नाम
पुकारूँगा।
14मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने
ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

15रब की निगाह में उसके ईमानदारों की मौत
गिराँक़दर है।
16ऐ रब, यक़ीनन मैं तेरा ख़ादिम, हाँ तेरा
ख़ादिम और तेरी ख़ादिमा का बेटा हूँ। तूने मेरी
ज़ंजीरों को तोड़ डाला है।
17मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी पेश करके
तेरा नाम पुकारूँगा।
18मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने
ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।
19मैं रब के घर की बारगाहों में, ऐ यरूशलम
तेरे बीच में ही उन्हें पूरा करूँगा। रब की हम्द हो।

तमाम अक़वाम अल्लाह की हम्द करें

117 ऐ तमाम अक़वाम, रब की
तमजीद करो! ऐ तमाम उम्मतो,
उस की मद्हसराई करो!
2क्योंकि उस की हम पर शफ़क़त अज़ीम है,
और रब की वफ़ादारी अबदी है। रब की हम्द हो!

अल्लाह की मदद पर शुक्रगुज़ारी

118 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह
भला है, और उस की शफ़क़त
अबदी है।
2इसराईल कहे, “उस की शफ़क़त अबदी है।”
3हारून का घराना कहे, “उस की शफ़क़त
अबदी है।”
4रब का ख़ौफ़ माननेवाले कहें, “उस की
शफ़क़त अबदी है।”

5मुसीबत में मैंने रब को पुकारा तो रब ने मेरी
सुनकर मेरे पाँवों को खुले मैदान में क़ायम कर
दिया है।
6रब मेरे हक़ में है, इसलिए मैं नहीं डरूँगा।
इनसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?
7रब मेरे हक़ में है और मेरा सहारा है, इसलिए
मैं उनकी शिकस्त देखकर ख़ुश हूँगा जो मुझसे
नफ़रत करते हैं।

8रब में पनाह लेना इनसान पर एतमाद करने
से कहीं बेहतर है।
9रब में पनाह लेना शुरफ़ा पर एतमाद करने से
कहीं बेहतर है।

10तमाम अक़वाम ने मुझे घेर लिया, लेकिन
मैंने अल्लाह का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।
11उन्होंने मुझे घेर लिया, हाँ चारों तरफ़ से घेर
लिया, लेकिन मैंने अल्लाह का नाम लेकर उन्हें
भगा दिया।
12वह शहद की मक्खियों की तरह चारों तरफ़
से मुझ पर हमलाआवर हुए, लेकिन काँटेदार
झाड़ियों की आग की तरह जल्द ही बुझ गए।
मैंने रब का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।
13दुश्मन ने मुझे धक्का देकर गिराने की
कोशिश की, लेकिन रब ने मेरी मदद की।
14रब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी
नजात बन गया है।

15ख़ुशी और फ़तह के नारे रास्तबाज़ों के ख़ैमों
में गूँजते हैं, “रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम
करता है!
16रब का दहना हाथ सरफ़राज़ करता है, रब
का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!”
17मैं नहीं मरूँगा बल्कि ज़िंदा रहकर रब के
काम बयान करूँगा।

18गो रब ने मेरी सख़्त तादीब की है, उसने मुझे मौत के हवाले नहीं किया।

19रास्ती के दरवाज़े मेरे लिए खोल दो ताकि मैं उनमें दाख़िल होकर रब का शुक्र करूँ।

20यह रब का दरवाज़ा है, इसी में रास्त-बाज़ दाख़िल होते हैं।

21मैं तेरा शुक्र करता हूँ, क्योंकि तूने मेरी सुनकर मुझे बचाया है।

22जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।

23यह रब ने किया और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है।

24इसी दिन रब ने अपनी क़ुदरत दिखाई है। आओ, हम शादियाना बजाकर उस की ख़ुशी मनाएँ।

25ऐ रब, मेहरबानी करके हमें बचा! ऐ रब, मेहरबानी करके कामयाबी अता फ़रमा!

26मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। रब की सुकूनतगाह से हम तुम्हें बरकत देते हैं।

27रब ही ख़ुदा है, और उसने हमें रौशनी बख़्शी है। आओ, ईद की क़ुरबानी रस्सियों से क़ुरबानगाह के सींगों के साथ बान्धो।

28तू मेरा ख़ुदा है, और मैं तेरा शुक्र करता हूँ। ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करता हूँ।

29रब की सताइश करो, क्योंकि वह भला है और उस की शफ़क़त अबदी है।

अल्लाह के कलाम की शान

-1-

119 मुबारक हैं वह जिनका चाल-चलन बेइलज़ाम है, जो रब की शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं।

2मुबारक हैं वह जो उसके अहकाम पर अमल करते और पूरे दिल से उसके तालिब रहते हैं,

3जो बदी नहीं करते बल्कि उस की राहों पर चलते हैं।

4तूने हमें अपने अहकाम दिए हैं, और तू चाहता है कि हम हर लिहाज़ से उनके ताबे रहें।

5काश मेरी राहें इतनी पुख़्ता हों कि मैं साबितक़दमी से तेरे अहकाम पर अमल करूँ!

6तब मैं शरमिंदा नहीं हूँगा, क्योंकि मेरी आँखें तेरे तमाम अहकाम पर लगी रहेंगी।

7जितना मैं तेरे बा-इनसाफ़ फ़ैसलों के बारे में सीखूँगा उतना ही दियानतदार दिल से तेरी सताइश करूँगा।

8तेरे अहकाम पर मैं हर वक़्त अमल करूँगा। मुझे पूरी तरह तर्क न कर!

-2-

9नौजवान अपनी राह को किस तरह पाक रखे? इस तरह कि तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे।

10मैं पूरे दिल से तेरा तालिब रहा हूँ। मुझे अपने अहकाम से भटकने न दे।

11मैंने तेरा कलाम अपने दिल में महफ़ूज़ रखा है ताकि तेरा गुनाह न करूँ।

12ऐ रब, तेरी हम्द हो! मुझे अपने अहकाम सिखा।

13अपने होंटों से मैं दूसरों को तेरे मुँह की तमाम हिदायात सुनाता हूँ।

14मैं तेरे अहकाम की राह से उतना लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ जितना कि हर तरह की दौलत से।

15मैं तेरी हिदायात में महवे-ख़याल रहूँगा और तेरी राहों को तकता रहूँगा।

16मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ और तेरा कलाम नहीं भूलता।

-3-

17अपने ख़ादिम से भलाई कर ताकि मैं ज़िंदा रहूँ और तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँ।

18मेरी आँखों को खोल ताकि तेरी शरीअत के
अजायब देखूँ।
19दुनिया में मैं परदेसी ही हूँ। अपने अहकाम
मुझसे छुपाए न रख!
20मेरी जान हर वक़्त तेरी हिदायात की आरज़ू
करते करते निढाल हो रही है।
21तू मग़रूरों को डाँटता है। उन पर लानत जो
तेरे अहकाम से भटक जाते हैं!
22मुझे लोगों की तौहीन और तहक़ीर से रिहाई
दे, क्योंकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहा हूँ।
23गो बुज़ुर्ग मेरे ख़िलाफ़ मनसूबे बाँधने के लिए
बैठ गए हैं, तेरा ख़ादिम तेरे अहकाम में महवे-
ख़याल रहता है।
24तेरे अहकाम से ही मैं लुत्फ़ उठाता हूँ, वही
मेरे मुशीर हैं।

-4-

25मेरी जान ख़ाक में दब गई है। अपने कलाम
के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
26मैंने अपनी राहें बयान कीं तो तूने मेरी सुनी।
मुझे अपने अहकाम सिखा।
27मुझे अपने अहकाम की राह समझने के
क़ाबिल बना ताकि तेरे अजायब में महवे-ख़याल
रहूँ।
28मेरी जान दुख के मारे निढाल हो गई है। मुझे
अपने कलाम के मुताबिक़ तक़वियत दे।
29फ़रेब की राह मुझसे दूर रख और मुझे अपनी
शरीअत से नवाज़।
30मैंने वफ़ा की राह इख़्तियार करके तेरे आईन
अपने सामने रखे हैं।
31मैं तेरे अहकाम से लिपटा रहता हूँ। ऐ रब,
मुझे शरमिंदा न होने दे।
32मैं तेरे फ़रमानों की राह पर दौड़ता हूँ, क्योंकि
तूने मेरे दिल को कुशादगी बख़्शी है।

-5-

33ऐ रब, मुझे अपने आईन की राह सिखा तो
मैं उम्र-भर उन पर अमल करूँगा।
34मुझे समझ अता कर ताकि तेरी शरीअत के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँ और पूरे दिल से उसके
ताबे रहूँ।
35अपने अहकाम की राह पर मेरी राह-
नुमाई कर, क्योंकि यही मैं पसंद करता हूँ।
36मेरे दिल को लालच में आने न दे बल्कि उसे
अपने फ़रमानों की तरफ़ मायल कर।
37मेरी आँखों को बातिल चीज़ों से फेर ले,
और मुझे अपनी राहों पर सँभालकर मेरी जान
को ताज़ादम कर।
38जो वादा तूने अपने ख़ादिम से किया वह पूरा
कर ताकि लोग तेरा ख़ौफ़ मानें।
39जिस रुसवाई से मुझे ख़ौफ़ है उसका ख़तरा
दूर कर, क्योंकि तेरे अहकाम अच्छे हैं।
40मैं तेरी हिदायात का शदीद आरज़ूमंद हूँ,
अपनी रास्ती से मेरी जान को ताज़ादम कर।

-6-

41ऐ रब, तेरी शफ़क़त और वह नजात जिसका
वादा तूने किया है मुझ तक पहुँचे
42ताकि मैं बेइज़्ज़ती करनेवाले को जवाब दे
सकूँ। क्योंकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ।
43मेरे मुँह से सच्चाई का कलाम न छीन,
क्योंकि मैं तेरे फ़रमानों के इंतज़ार में हूँ।
44मैं हर वक़्त तेरी शरीअत की पैरवी करूँगा,
अब से अबद तक उसमें क़ायम रहूँगा।
45मैं खुले मैदान में चलता फिरूँगा, क्योंकि तेरे
आईन का तालिब रहता हूँ।
46मैं शर्म किए बग़ैर बादशाहों के सामने तेरे
अहकाम बयान करूँगा।
47मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ, वह
मुझे प्यारे हैं।
48मैं अपने हाथ तेरे फ़रमानों की तरफ़
उठाऊँगा, क्योंकि वह मुझे प्यारे हैं। मैं तेरी
हिदायात में महवे-ख़याल रहूँगा।

-7-

49उस बात का ख़याल रख जो तूने अपने ख़ादिम से की और जिससे तूने मुझे उम्मीद दिलाई है।
50मुसीबत में यही तसल्ली का बाइस रहा है कि तेरा कलाम मेरी जान को ताज़ादम करता है।
51मग़रूर मेरा हद से ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाते हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से दूर नहीं होता।
52ऐ रब, मैं तेरे क़दीम फ़रमान याद करता हूँ तो मुझे तसल्ली मिलती है।
53बेदीनों को देखकर मैं आग-बगूला हो जाता हूँ, क्योंकि उन्होंने तेरी शरीअत को तर्क किया है।
54जिस घर में मैं परदेसी हूँ उसमें मैं तेरे अहकाम के गीत गाता रहता हूँ।
55ऐ रब, रात को मैं तेरा नाम याद करता हूँ, तेरी शरीअत पर अमल करता रहता हूँ।
56यह तेरी बख़्शिश है कि मैं तेरे आईन की पैरवी करता हूँ।

-8-

57रब मेरी मीरास है। मैंने तेरे फ़रमानों पर अमल करने का वादा किया है।
58मैं पूरे दिल से तेरी शफ़क़त का तालिब रहा हूँ। अपने वादे के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर।
59मैंने अपनी राहों पर ध्यान देकर तेरे अहकाम की तरफ़ क़दम बढ़ाए हैं।
60मैं नहीं झिजकता बल्कि भागकर तेरे अहकाम पर अमल करने की कोशिश करता हूँ।
61बेदीनों के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया है, लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
62आधी रात को मैं जाग उठता हूँ ताकि तेरे रास्त फ़रमानों के लिए तेरा शुक्र करूँ।
63मैं उन सबका साथी हूँ जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उन सबका दोस्त जो तेरी हिदायात पर अमल करते हैं।
64ऐ रब, दुनिया तेरी शफ़क़त से मामूर है। मुझे अपने अहकाम सिखा!

-9-

65ऐ रब, तूने अपने कलाम के मुताबिक़ अपने ख़ादिम से भलाई की है।
66मुझे सहीह इम्तियाज़ और इरफ़ान सिखा, क्योंकि मैं तेरे अहकाम पर ईमान रखता हूँ।
67इससे पहले कि मुझे पस्त किया गया मैं आवारा फिरता था, लेकिन अब मैं तेरे कलाम के ताबे रहता हूँ।
68तू भला है और भलाई करता है। मुझे अपने आईन सिखा!
69मग़रूरों ने झूट बोलकर मुझ पर कीचड़ उछाली है, लेकिन मैं पूरे दिल से तेरी हिदायात की फ़रमाँबरदारी करता हूँ।
70उनके दिल अकड़कर बेहिस हो गए हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
71मेरे लिए अच्छा था कि मुझे पस्त किया गया, क्योंकि इस तरह मैंने तेरे अहकाम सीख लिए।
72जो शरीअत तेरे मुँह से सादिर हुई है वह मुझे सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से ज़्यादा पसंद है।

-10-

73तेरे हाथों ने मुझे बनाकर मज़बूत बुनियाद पर रख दिया है। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि तेरे अहकाम सीख लूँ।
74जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं वह मुझे देखकर ख़ुश हो जाएँ, क्योंकि मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में रहता हूँ।
75ऐ रब, मैंने जान लिया है कि तेरे फ़ैसले रास्त हैं। यह भी तेरी वफ़ादारी का इज़हार है कि तूने मुझे पस्त किया है।
76तेरी शफ़क़त मुझे तसल्ली दे, जिस तरह तूने अपने ख़ादिम से वादा किया है।
77मुझ पर अपने रहम का इज़हार कर ताकि मेरी जान में जान आए, क्योंकि मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
78जो मग़रूर मुझे झूट से पस्त कर रहे हैं वह शरमिंदा हो जाएँ। लेकिन मैं तेरे फ़रमानों में महवे-ख़याल रहूँगा।

79काश जो तेरा ख़ौफ़ मानते और तेरे अहकाम
जानते हैं वह मेरे पास वापस आएँ!
80मेरा दिल तेरे आईन की पैरवी करने में
बेइलज़ाम रहे ताकि मेरी रुसवाई न हो जाए।

-11-

81मेरी जान तेरी नजात की आरज़ू करते करते
निढाल हो रही है, मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में हूँ।
82मेरी आँखें तेरे वादे की राह देखते देखते
धुँधला रही हैं। तू मुझे कब तसल्ली देगा?
83मैं धुएँ में सुकड़ी हुई मशक की मानिंद हूँ
लेकिन तेरे फ़रमानों को नहीं भूलता।
84तेरे ख़ादिम को मज़ीद कितनी देर इंतज़ार
करना पड़ेगा? तू मेरा ताक़्क़ुब करनेवालों की
अदालत कब करेगा?
85जो मग़रूर तेरी शरीअत के ताबे नहीं होते
उन्होंने मुझे फँसाने के लिए गढ़े खोद लिए हैं।
86तेरे तमाम अहकाम पुरवफ़ा हैं। मेरी मदद
कर, क्योंकि वह झूट का सहारा लेकर मेरा
ताक़्क़ुब कर रहे हैं।
87वह मुझे रूए-ज़मीन पर से मिटाने के क़रीब
ही हैं, लेकिन मैंने तेरे आईन को तर्क नहीं किया।
88अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मेरी जान
को ताज़ादम कर ताकि तेरे मुँह के फ़रमानों पर
अमल करूँ।

-12-

89ऐ रब, तेरा कलाम अबद तक आसमान पर
क़ायमो-दायम है।
90तेरी वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त रहती है। तूने
ज़मीन की बुनियाद रखी, और वह वहीं की वहीं
बरक़रार रहती है।
91आज तक आसमानो-ज़मीन तेरे फ़र-
मानों को पूरा करने के लिए हाज़िर रहते हैं,
क्योंकि तमाम चीज़ें तेरी ख़िदमत करने के लिए
बनाई गई हैं।
92अगर तेरी शरीअत मेरी ख़ुशी न होती तो मैं
अपनी मुसीबत में हलाक हो गया होता।
93मैं तेरी हिदायात कभी नहीं भूलूँगा, क्योंकि
उन्हीं के ज़रीए तू मेरी जान को ताज़ादम करता
है।
94मैं तेरा ही हूँ, मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरे
अहकाम का तालिब रहा हूँ।
95बेदीन मेरी ताक में बैठ गए हैं ताकि मुझे मार
डालें, लेकिन मैं तेरे आईन पर ध्यान देता रहूँगा।
96मैंने देखा है कि हर कामिल चीज़ की हद
होती है, लेकिन तेरे फ़रमान की कोई हद नहीं
होती।

-13-

97तेरी शरीअत मुझे कितनी प्यारी है! दिन-
भर मैं उसमें महवे-ख़याल रहता हूँ।
98तेरा फ़रमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज़्यादा
दानिशमंद बना देता है, क्योंकि वह हमेशा तक
मेरा ख़ज़ाना है।
99मुझे अपने तमाम उस्तादों से ज़्यादा समझ
हासिल है, क्योंकि मैं तेरे आईन में महवे-ख़याल
रहता हूँ।
100मुझे बुज़ुर्गों से ज़्यादा समझ हासिल है,
क्योंकि मैं वफ़ादारी से तेरे अहकाम की पैरवी
करता हूँ।
101मैंने हर बुरी राह पर क़दम रखने से गुरेज़
किया है ताकि तेरे कलाम से लिपटा रहूँ।
102मैं तेरे फ़रमानों से दूर नहीं हुआ, क्योंकि तू
ही ने मुझे तालीम दी है।
103तेरा कलाम कितना लज़ीज़ है, वह मेरे मुँह
में शहद से ज़्यादा मीठा है।
104तेरे अहकाम से मुझे समझ हासिल होती
है, इसलिए मैं झूट की हर राह से नफ़रत करता
हूँ।

-14-

105तेरा कलाम मेरे पाँवों के लिए चराग़ है जो
मेरी राह को रौशन करता है।

106मैंने क़सम खाई है कि तेरे रास्त फ़रमानों की पैरवी करूँगा, और मैं यह वादा पूरा भी करूँगा।
107मुझे बहुत पस्त किया गया है। ऐ रब, अपने कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
108ऐ रब, मेरे मुँह की रज़ाकाराना क़ुरबा-नियों को पसंद कर और मुझे अपने आईन सिखा!
109मेरी जान हमेशा ख़तरे में है, लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
110बेदीनों ने मेरे लिए फंदा तैयार कर रखा है, लेकिन मैं तेरे फ़रमानों से नहीं भटका।
111तेरे अहकाम मेरी अबदी मीरास बन गए हैं, क्योंकि उनसे मेरा दिल ख़ुशी से उछलता है।
112मैंने अपना दिल तेरे अहकाम पर अमल करने की तरफ़ मायल किया है, क्योंकि इसका अज्र अबदी है।

-15-

113मैं दोदिलों से नफ़रत लेकिन तेरी शरीअत से मुहब्बत करता हूँ।
114तू मेरी पनाहगाह और मेरी ढाल है, मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में रहता हूँ।
115ऐ बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि मैं अपने ख़ुदा के अहकाम से लिपटा रहूँगा।
116अपने फ़रमान के मुताबिक़ मुझे सँभाल ताकि ज़िंदा रहूँ। मेरी आस टूटने न दे ताकि शरमिंदा न हो जाऊँ।
117मेरा सहारा बन ताकि बचकर हर वक़्त तेरे आईन का लिहाज़ रखूँ।
118तू उन सबको रद्द करता है जो तेरे अहकाम से भटके फिरते हैं, क्योंकि उनकी धोकेबाज़ी फ़रेब ही है।
119तू ज़मीन के तमाम बेदीनों को नापाक चाँदी से ख़ारिज की हुई मैल की तरह फेंककर नेस्त कर देता है, इसलिए तेरे फ़रमान मुझे प्यारे हैं।
120मेरा जिस्म तुझसे दहशत खाकर थरथराता है, और मैं तेरे फ़ैसलों से डरता हूँ।

-16-

121मैंने रास्त और बा-इनसाफ़ काम किया है, चुनाँचे मुझे उनके हवाले न कर जो मुझ पर ज़ुल्म करते हैं।
122अपने ख़ादिम की ख़ुशहाली का ज़ा-मिन बनकर मग़रूरों को मुझ पर ज़ुल्म करने न दे।
123मेरी आँखें तेरी नजात और तेरे रास्त वादे की राह देखते देखते रह गई हैं।
124अपने ख़ादिम से तेरा सुलूक तेरी शफ़क़त के मुताबिक़ हो। मुझे अपने अहकाम सिखा।
125मैं तेरा ही ख़ादिम हूँ। मुझे फ़हम अता फ़रमा ताकि तेरे आईन की पूरी समझ आए।
126अब वक़्त आ गया है कि रब क़दम उठाए, क्योंकि लोगों ने तेरी शरीअत को तोड़ डाला है।
127इसलिए मैं तेरे अहकाम को सोने बल्कि ख़ालिस सोने से ज़्यादा प्यार करता हूँ।
128इसलिए मैं एहतियात से तेरे तमाम आईन के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। मैं हर फ़रेबदेह राह से नफ़रत करता हूँ।

-17-

129तेरे अहकाम ताज्जुबअंगेज़ हैं, इस-लिए मेरी जान उन पर अमल करती है।
130तेरे कलाम का इनकिशाफ़ रौशनी बख़्शता और सादालौह को समझ अता करता है।
131मैं तेरे फ़रमानों के लिए इतना प्यासा हूँ कि मुँह खोलकर हाँप रहा हूँ।
132मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा और मुझ पर वही मेहरबानी कर जो तू उन सब पर करता है जो तेरे नाम से प्यार करते हैं।
133अपने कलाम से मेरे क़दम मज़बूत कर, किसी भी गुनाह को मुझ पर हुकूमत न करने दे।
134फ़िद्या देकर मुझे इनसान के ज़ुल्म से छुटकारा दे ताकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहूँ।
135अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका और मुझे अपने अहकाम सिखा।

136मेरी आँखों से आँसुओं की नदियाँ बह रही हैं, क्योंकि लोग तेरी शरीअत के ताबे नहीं रहते।

-18-

137ऐ रब, तू रास्त है, और तेरे फ़ैसले दुरुस्त हैं।

138तूने रास्ती और बड़ी वफ़ादारी के साथ अपने फ़रमान जारी किए हैं।

139मेरी जान ग़ैरत के बाइस तबाह हो गई है, क्योंकि मेरे दुश्मन तेरे फ़रमान भूल गए हैं।

140तेरा कलाम आज़माकर पाक-साफ़ साबित हुआ है, तेरा ख़ादिम उसे प्यार करता है।

141मुझे ज़लील और हक़ीर जाना जाता है, लेकिन मैं तेरे आईन नहीं भूलता।

142तेरी रास्ती अबदी है, और तेरी शरीअत सच्चाई है।

143मुसीबत और परेशानी मुझ पर ग़ालिब आ गई हैं, लेकिन मैं तेरे अहकाम से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।

144तेरे अहकाम अबद तक रास्त हैं। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि मैं जीता रहूँ।

-19-

145मैं पूरे दिल से पुकारता हूँ, "ऐ रब, मेरी सुन! मैं तेरे आईन के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँगा।"

146मैं पुकारता हूँ, "मुझे बचा! मैं तेरे अहकाम की पैरवी करूँगा।"

147पौ फटने से पहले पहले मैं उठकर मदद के लिए पुकारता हूँ। मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में हूँ।

148रात के वक़्त ही मेरी आँखें खुल जाती हैं ताकि तेरे कलाम पर ग़ौरो-ख़ौज़ करूँ।

149अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी आवाज़ सुन! ऐ रब, अपने फ़रमानों के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

150जो चालाकी से मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं वह क़रीब पहुँच गए हैं। लेकिन वह तेरी शरीअत से इंतहाई दूर हैं।

151ऐ रब, तू क़रीब ही है, और तेरे अहकाम सच्चाई हैं।

152बड़ी देर पहले मुझे तेरे फ़रमानों से मालूम हुआ है कि तूने उन्हें हमेशा के लिए क़ायम रखा है।

-20-

153मेरी मुसीबत का ख़याल करके मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।

154अदालत में मेरे हक़ में लड़कर मेरा एवज़ाना दे ताकि मेरी जान छूट जाए। अपने वादे के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

155नजात बेदीनों से बहुत दूर है, क्योंकि वह तेरे अहकाम के तालिब नहीं होते।

156ऐ रब, तू मुतअद्दिद तरीक़ों से अपने रहम का इज़हार करता है। अपने आईन के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

157मेरा ताक़्क़ुब करनेवालों और मेरे दुश्मनों की बड़ी तादाद है, लेकिन मैं तेरे अहकाम से दूर नहीं हुआ।

158बेवफ़ाओं को देखकर मुझे घिन आती है, क्योंकि वह तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारते।

159देख, मुझे तेरे अहकाम से प्यार है। ऐ रब, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

160तेरे कलाम का लुब्बे-लुबाब सच्चाई है, तेरे तमाम रास्त फ़रमान अबद तक क़ायम हैं।

-21-

161सरदार बिलावजह मेरा पीछा करते हैं, लेकिन मेरा दिल तेरे कलाम से ही डरता है।

162मैं तेरे कलाम की ख़ुशी उस की तरह मनाता हूँ जिसे कसरत का माले-ग़नीमत मिल गया हो।

163मैं झूट से नफ़रत करता बल्कि घिन खाता हूँ, लेकिन तेरी शरीअत मुझे प्यारी है।

164मैं दिन में सात बार तेरी सताइश करता हूँ,
क्योंकि तेरे अहकाम रास्त हैं।
165जिन्हें शरीअत प्यारी है उन्हें बड़ा सुकून
हासिल है, वह किसी भी चीज़ से ठोकर खाकर
नहीं गिरेंगे।
166ऐ रब, मैं तेरी नजात के इंतज़ार में रहते हुए
तेरे अहकाम की पैरवी करता हूँ।
167मेरी जान तेरे फ़रमानों से लिपटी रहती है,
वह उसे निहायत प्यारे हैं।
168मैं तेरे आईन और हिदायात की पैरवी करता
हूँ, क्योंकि मेरी तमाम राहें तेरे सामने हैं।

-22-

169ऐ रब, मेरी आहें तेरे सामने आएँ, मुझे
अपने कलाम के मुताबिक़ समझ अता फ़रमा।
170मेरी इल्तिजाएँ तेरे सामने आएँ, मुझे अपने
कलाम के मुताबिक़ छुड़ा!
171मेरे होंटों से हम्दो-सना फूट निकले,
क्योंकि तू मुझे अपने अहकाम सिखाता है।
172मेरी ज़बान तेरे कलाम की मद्हसराई करे,
क्योंकि तेरे तमाम फ़रमान रास्त हैं।
173तेरा हाथ मेरी मदद करने के लिए तैयार
रहे, क्योंकि मैंने तेरे अहकाम इख़्तियार किए हैं।
174ऐ रब, मैं तेरी नजात का आरज़ूमंद हूँ, तेरी
शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
175मेरी जान ज़िंदा रहे ताकि तेरी सताइश कर
सके। तेरे आईन मेरी मदद करें।
176मैं भटकी हुई भेड़ की तरह आवारा फिर
रहा हूँ। अपने ख़ादिम को तलाश कर, क्योंकि मैं
तेरे अहकाम नहीं भूलता।

तोहमत लगानेवालों से रिहाई के लिए दुआ

120 ज़ियारत का गीत।
मुसीबत में मैंने रब को पुकारा,
और उसने मेरी सुनी।
2ऐ रब, मेरी जान को झूटे होंटों और फ़रेबदेह
ज़बान से बचा।
3ऐ फ़रेबदेह ज़बान, वह तेरे साथ किया करे,
मज़ीद तुझे क्या दे?
4वह तुझ पर जंगजू के तेज़ तीर और दहकते
कोयले बरसाए!

5मुझ पर अफ़सोस! मुझे अजनबी मुल्क
मसक में, क़ीदार के ख़ैमों के पास रहना पड़ता
है।
6इतनी देर से अमन के दुश्मनों के पास रहने से
मेरी जान तंग आ गई है।
7मैं तो अमन चाहता हूँ, लेकिन जब कभी बोलूँ
तो वह जंग करने पर तुले होते हैं।

इनसान का वफ़ादार मुहाफ़िज़

121 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को पहाड़ों की
तरफ़ उठाता हूँ। मेरी मदद कहाँ से आती है?
2मेरी मदद रब से आती है, जो आसमानो-
ज़मीन का ख़ालिक़ है।

3वह तेरा पाँव फिसलने नहीं देगा। तेरा
मुहाफ़िज़ ऊँघने का नहीं।
4यक़ीनन इसराईल का मुहाफ़िज़ न ऊँघ-
ता है, न सोता है।
5रब तेरा मुहाफ़िज़ है, रब तेरे दहने हाथ पर
सायबान है।
6न दिन को सूरज, न रात को चाँद तुझे ज़रर
पहुँचाएगा।
7रब तुझे हर नुक़सान से बचाएगा, वह तेरी
जान को महफ़ूज़ रखेगा।
8रब अब से अबद तक तेरे आने जाने की
पहरादारी करेगा।

यरूशलम पर बरकत

122 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
मैं उनसे ख़ुश हुआ जिन्होंने
मुझसे कहा, “आओ, हम रब के घर चलें।”

2ऐ यरूशलम, अब हमारे पाँव तेरे दरवाज़ों में
खड़े हैं।
3यरूशलम शहर यों बनाया गया है कि उसके
तमाम हिस्से मज़बूती से एक दूसरे के साथ जुड़े
हुए हैं।
4वहाँ क़बीले, हाँ रब के क़बीले हाज़िर होते
हैं ताकि रब के नाम की सताइश करें जिस तरह
इसराईल को फ़रमाया गया है।
5क्योंकि वहाँ तख़्ते-अदालत करने के लिए
लगाए गए हैं, वहाँ दाऊद के घराने के तख़्त हैं।
6यरूशलम के लिए सलामती माँगो! "जो
तुझसे प्यार करते हैं वह सुकून पाएँ।
7तेरी फ़सील में सलामती और तेरे महलों में
सुकून हो।"
8अपने भाइयों और हमसायों की ख़ातिर मैं
कहूँगा, "तेरे अंदर सलामती हो!"
9रब हमारे ख़ुदा के घर की ख़ातिर मैं तेरी
ख़ुशहाली का तालिब रहूँगा।

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे

123 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को तेरी तरफ़
उठाता हूँ, तेरी तरफ़ जो आसमान पर तख़्तनशीन
है।
2जिस तरह ग़ुलाम की आँखें अपने मालिक
के हाथ की तरफ़ और लौंडी की आँखें अपनी
मालिकन के हाथ की तरफ़ लगी रहती हैं उसी
तरह हमारी आँखें रब अपने ख़ुदा पर लगी रहती
हैं, जब तक वह हम पर मेहरबानी न करे।
3ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर, हम पर
मेहरबानी कर! क्योंकि हम हद से ज़्यादा हिक़ारत
का निशाना बन गए हैं।
4सुकून से ज़िंदगी गुज़ारनेवालों की लान-तान
और मग़रूरों की तहक़ीर से हमारी जान दूभर हो
गई है।

मुसीबत में अल्लाह हमारा सहारा है

124 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
इसराईल कहे, "अगर रब हमारे
साथ न होता,
2अगर रब हमारे साथ न होता जब लोग हमारे
ख़िलाफ़ उठे
3और आग-बगूला होकर अपना पूरा ग़ुस्सा हम
पर उतारा, तो वह हमें ज़िंदा हड़प कर लेते।
4फिर सैलाब हम पर टूट पड़ता, नदी का तेज़
धारा हम पर ग़ालिब आ जाता
5और मुतलातिम पानी हम पर से गुज़र
जाता।"
6रब की हम्द हो जिसने हमें उनके दाँतों के
हवाले न किया, वरना वह हमें फाड़ खाते।
7हमारी जान उस चिड़िया की तरह छूट गई है
जो चिड़ीमार के फंदे से निकलकर उड़ गई है।
फंदा टूट गया है, और हम बच निकले हैं।
8रब का नाम, हाँ उसी का नाम हमारा सहारा
है जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है।

चारों तरफ़ से क़ौम की हिफ़ाज़त

125 ज़ियारत का गीत।
जो रब पर भरोसा रखते हैं
वह कोहे-सिय्यून की मानिंद हैं जो कभी नहीं
डगमगाता बल्कि अबद तक क़ायम रहता है।
2जिस तरह यरूशलम पहाड़ों से घिरा रहता है
उसी तरह रब अपनी क़ौम को अब से अबद तक
चारों तरफ़ से महफ़ूज़ रखता है।
3क्योंकि बेदीनों की रास्तबाज़ों की मीरास पर
हुकूमत नहीं रहेगी, ऐसा न हो कि रास्तबाज़
बदकारी करने की आज़माइश में पड़ जाएँ।
4ऐ रब, उनसे भलाई कर जो नेक हैं, जो दिल
से सीधी राह पर चलते हैं।
5लेकिन जो भटककर अपनी टेढ़ी-मेढ़ी राहों
पर चलते हैं उन्हें रब बदकारों के साथ ख़ारिज
कर दे। इसराईल की सलामती हो!

रब अपने क़ैदियों को रिहाई देता है

126 ज़ियारत का गीत।
जब रब ने सिय्यून को बहाल
किया तो ऐसा लग रहा था कि हम ख़ाब देख रहे
हैं।
2तब हमारा मुँह हँसी-ख़ुशी से भर गया, और
हमारी ज़बान शादमानी के नारे लगाने से रुक न
सकी। तब दीगर क़ौमों में कहा गया, "रब ने उनके
लिए ज़बरदस्त काम किया है।"
3रब ने वाक़ई हमारे लिए ज़बरदस्त काम किया
है। हम कितने ख़ुश थे, कितने ख़ुश!

4ऐ रब, हमें बहाल कर। जिस तरह मौसमे-
बरसात में दश्ते-नजब के ख़ुश्क नाले पानी से भर
जाते हैं उसी तरह हमें बहाल कर।
5जो आँसू बहा बहाकर बीज बोएँ वह ख़ुशी के
नारे लगाकर फ़सल काटेंगे।
6वह रोते हुए बीज बोने के लिए निकलेंगे,
लेकिन जब फ़सल पक जाए तो ख़ुशी के नारे
लगाकर पूले उठाए अपने घर लौटेंगे।

अल्लाह ही हमारा घर तामीर करता है

127 सुलेमान का ज़ियारत का गीत।
अगर रब घर को तामीर न करे
तो उस पर काम करनेवालों की मेहनत अबस है।
अगर रब शहर की पहरादारी न करे तो इनसानी
पहरेदारों की निगहबानी अबस है।
2यह भी अबस है कि तुम सुबह-सवेरे उठो और
पूरे दिन मेहनत-मशक़्क़त के साथ रोज़ी कमाकर
रात गए सो जाओ। क्योंकि जो अल्लाह को प्यारे
हैं उन्हें वह उनकी ज़रूरियात उनके सोते में पूरी
कर देता है।

3बच्चे ऐसी नेमत हैं जो हम मीरास में रब से
पाते हैं, औलाद एक अज्र है जो वही हमें देता है।
4जवानी में पैदा हुए बेटे सूरमे के हाथ में तीरों
की मानिंद हैं।
5मुबारक है वह आदमी जिसका तरकश उनसे
भरा है। जब वह शहर के दरवाज़े पर अपने दुश्मनों
से झगड़ेगा तो शरमिंदा नहीं होगा।

जिस ख़ानदान को अल्लाह बरकत देता है

128 ज़ियारत का गीत।
मुबारक है वह जो रब का ख़ौफ़
मानकर उस की राहों पर चलता है।
2यक़ीनन तू अपनी मेहनत का फल खाएगा।
मुबारक हो, क्योंकि तू कामयाब होगा।
3घर में तेरी बीवी अंगूर की फलदार बेल की
मानिंद होगी, और तेरे बेटे मेज़ के इर्दगिर्द बैठकर
ज़ैतून की ताज़ा शाख़ों[a] की मानिंद होंगे।
4जो आदमी रब का ख़ौफ़ माने उसे ऐसी ही
बरकत मिलेगी।
5रब तुझे कोहे-सिय्यून से बरकत दे। वह करे
कि तू जीते-जी यरूशलम की ख़ुशहाली देखे,
6कि तू अपने पोतों-नवासों को भी देखे।
इसराईल की सलामती हो!

मदद के लिए इसराईल की दुआ

129 ज़ियारत का गीत।
इसराईल कहे, "मेरी जवा-
नी से ही मेरे दुश्मन बार बार मुझ पर हम-
लाआवर हुए हैं।
2मेरी जवानी से ही वह बार बार मुझ पर
हमलाआवर हुए हैं। तो भी वह मुझ पर ग़ालिब
न आए।"
3हल चलानेवालों ने मेरी पीठ पर हल चलाकर
उस पर अपनी लंबी लंबी रेघारयाँ बनाई हैं।
4रब रास्त है। उसने बेदीनों के रस्से काटकर
मुझे आज़ाद कर दिया है।

[a]इससे मुराद है पैवंदकारी के लिए दरख़्त से काटी गई
टहनियाँ।

5अल्लाह करे कि जितने भी सिय्यून से नफ़रत
रखें वह शरमिंदा होकर पीछे हट जाएँ।
6वह छतों पर की घास की मानिंद हों जो सहीह
तौर पर बढ़ने से पहले ही मुरझा जाती है
7और जिससे न फ़सल काटनेवाला अपना
हाथ, न पूले बाँधनेवाला अपना बाज़ू भर सके।
8जो भी उनसे गुज़रे वह न कहे, "रब तुम्हें
बरकत दे।"
हम रब का नाम लेकर तुम्हें बरकत देते हैं!

बड़ी मुसीबत से रिहाई की दुआ (तौबा का छटा ज़बूर)

130 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, मैं तुझे गहराइयों से
पुकारता हूँ।
2ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन! कान लगाकर मेरी
इल्तिजाओं पर ध्यान दे!
3ऐ रब, अगर तू हमारे गुनाहों का हिसाब करे
तो कौन क़ायम रहेगा? कोई भी नहीं!
4लेकिन तुझसे मुआफ़ी हासिल होती है ताकि
तेरा ख़ौफ़ माना जाए।

5मैं रब के इंतज़ार में हूँ, मेरी जान शिद्दत से
इंतज़ार करती है। मैं उसके कलाम से उम्मीद
रखता हूँ।
6पहरेदार जिस शिद्दत से पौ फटने के इंतज़ार
में रहते हैं, मेरी जान उससे भी ज़्यादा शिद्दत के
साथ, हाँ ज़्यादा शिद्दत के साथ रब की मुंतज़िर
रहती है।

7ऐ इसराईल, रब की राह देखता रह! क्योंकि
रब के पास शफ़क़त और फ़िद्या का ठोस बंदोबस्त
है।
8वह इसराईल के तमाम गुनाहों का फ़िद्या देकर
उसे नजात देगा।

बच्चे का-सा ईमान

131 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, न मेरा दिल घमंडी है, न
मेरी आँखें मग़रूर हैं। जो बातें इतनी अज़ीम और
हैरानकुन हैं कि मैं उनसे निपट नहीं सकता उन्हें
मैं नहीं छेड़ता।
2यक़ीनन मैंने अपनी जान को राहत और
सुकून दिलाया है, और अब वह माँ की गोद में
बैठे छोटे बच्चे की मानिंद है, हाँ मेरी जान छोटे
बच्चे[a] की मानिंद है।
3ऐ इसराईल, अब से अबद तक रब के इंतज़ार
में रह!

दाऊद का घराना और सिय्यून पर मक़्दिस

132 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, दाऊद का ख़याल रख,
उस की तमाम मुसीबतों को याद कर।
2उसने क़सम खाकर रब से वादा किया और
याक़ूब के क़वी ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत मानी,
3"न मैं अपने घर में दाख़िल हूँगा, न बिस्तर
पर लेटूँगा,
4न मैं अपनी आँखों को सोने दूँगा, न अपने
पपोटों को ऊँघने दूँगा
5जब तक रब के लिए मक़ाम और याक़ूब के
सूरमे के लिए सुकूनतगाह न मिले।"

6हमने इफ़राता में अहद के संदूक़ की ख़बर
सुनी और यार के खुले मैदान में उसे पा लिया।
7आओ, हम उस की सुकूनतगाह में दाख़िल
होकर उसके पाँवों की चौकी के सामने सिजदा
करें।

8ऐ रब, उठकर अपनी आरामगाह के पास आ,
तू और अहद का संदूक़ जो तेरी क़ुदरत का इज़्हार
है।
9तेरे इमाम रास्ती से मुलब्बस हो जाएँ, और
तेरे ईमानदार ख़ुशी के नारे लगाएँ।

[a]जिस बच्चे ने माँ का दूध पीना छोड़ दिया है।

10ऐ अल्लाह, अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर
अपने मसह किए हुए बंदे के चेहरे को रद्द न कर।
11रब ने क़सम खाकर दाऊद से वादा किया
है, और वह उससे कभी नहीं फिरेगा, "मैं तेरी
औलाद में से एक को तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा।
12अगर तेरे बेटे मेरे अहद के वफ़ादार रहें और
उन अहकाम की पैरवी करें जो मैं उन्हें सिखाऊँगा
तो उनके बेटे भी हमेशा तक तेरे तख़्त पर बैठेंगे।"

13क्योंकि रब ने कोहे-सिय्यून को चुन लिया है,
और वही वहाँ सुकूनत करने का आरज़ूमंद था।
14उसने फ़रमाया, "यह हमेशा तक मेरी
आरामगाह है, और यहाँ मैं सुकूनत करूँगा,
क्योंकि मैं इसका आरज़ूमंद हूँ।
15मैं सिय्यून की ख़ुराक को कसरत की बरकत
देकर उसके ग़रीबों को रोटी से सेर करूँगा।
16मैं उसके इमामों को नजात से मुलब्बस
करूँगा, और उसके ईमानदार ख़ुशी से ज़ोरदार
नारे लगाएँगे।
17यहाँ मैं दाऊद की ताक़त बढ़ा दूँगा,[a] और
यहाँ मैंने अपने मसह किए हुए ख़ादिम के लिए
चराग़ तैयार कर रखा है।
18मैं उसके दुश्मनों को शरमिंदगी से मुलब्बस
करूँगा जबकि उसके सर का ताज चमकता
रहेगा।"

भाइयों की यगांगत की बरकत

133 दाऊद का ज़बूर। ज़ियारत का गीत।
जब भाई मिलकर और यगांगत
से रहते हैं यह कितना अच्छा और प्यारा है।
2यह उस नफ़ीस तेल की मानिंद है जो हारून
इमाम के सर पर उंडेला जाता है और टपक
टपककर उस की दाढ़ी और लिबास के गरेबान
पर आ जाता है।
3यह उस ओस की मानिंद है जो कोहे-हरमून
से सिय्यून के पहाड़ों पर पड़ती है। क्योंकि रब ने
फ़रमाया है, "वहीं हमेशा तक बरकत और ज़िंदगी
मिलेगी।"

रब के घर में रात की सताइश

134 ज़ियारत का गीत।
आओ, रब की सताइश करो, ऐ
रब के तमाम ख़ादिमो जो रात के वक़्त रब के घर
में खड़े हो।
2मक़दिस में अपने हाथ उठाकर रब की
तमजीद करो!
3रब सिय्यून से तुझे बरकत दे, आसमानो-
ज़मीन का ख़ालिक़ तुझे बरकत दे।

अल्लाह की परस्तिश

135 रब की हम्द हो! रब के नाम की
सताइश करो! उस की तमजीद
करो, ऐ रब के तमाम ख़ादिमो,
2जो रब के घर में, हमारे ख़ुदा की बारगाहों में
खड़े हो।
3रब की हम्द करो, क्योंकि रब भला है। उसके
नाम की मद्हसराई करो, क्योंकि वह प्यारा है।
4क्योंकि रब ने याक़ूब को अपने लिए चुन
लिया, इसराईल को अपनी मिलकियत बना
लिया है।

5हाँ, मैंने जान लिया है कि रब अज़ीम है, कि
हमारा रब दीगर तमाम माबूदों से ज़्यादा अज़ीम
है।
6रब जो जी चाहे करता है, ख़ाह आसमान पर
हो या ज़मीन पर, ख़ाह समुंदरों में हो या गहराइयों
में कहीं भी हो।
7वह ज़मीन की इंतहा से बादल चढ़ने देता और
बिजली बारिश के लिए पैदा करता है, वह हवा
अपने गोदामों से निकाल लाता है।
8मिसर में उसने इनसानो-हैवान के तमाम
पहलौठों को मार डाला।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : मैं दाऊद का सींग फूटने दूँगा।

9ऐ मिसर, उसने अपने इलाही निशान और
मोजिज़ात तेरे दरमियान ही किए। तब फ़िरौन
और उसके तमाम मुलाज़िम उनका निशाना बन
गए।

10उसने मुतअद्दिद क़ौमों को शिकस्त देकर
ताक़तवर बादशाहों को मौत के घाट उतार दिया।
11अमोरियों का बादशाह सीहोन, बसन का
बादशाह ओज और मुल्के-कनान की तमाम
सलतनतें न रहीं।
12उसने उनका मुल्क इसराईल को देकर
फ़रमाया कि आइंदा यह मेरी क़ौम की मौरूसी
मिलकियत होगा।

13ऐ रब, तेरा नाम अबदी है। ऐ रब, तुझे पुश्त-
दर-पुश्त याद किया जाएगा।
14क्योंकि रब अपनी क़ौम का इनसाफ़ करके
अपने ख़ादिमों पर तरस खाएगा।

15दीगर क़ौमों के बुत सोने-चाँदी के हैं, इनसान
के हाथ ने उन्हें बनाया।
16उनके मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते,
उनकी आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
17उनके कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते,
उनके मुँह में साँस ही नहीं होती।
18जो बुत बनाते हैं वह उनकी मानिंद हो जाएँ,
जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिसो-
हरकत हो जाएँ।

19ऐ इसराईल के घराने, रब की सताइश कर।
ऐ हारून के घराने, रब की तमजीद कर।
20ऐ लावी के घराने, रब की हम्दो-सना कर। ऐ
रब का ख़ौफ़ माननेवालो, रब की सताइश करो।
21सिय्यून से रब की हम्द हो। उस की हम्द हो
जो यरूशलम में सुकूनत करता है। रब की हम्द
हो!

तख़लीक़ और क़ौम की तारीख़ में अल्लाह के मोजिज़े

136 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह
भला है, और उस की शफ़क़त
अबदी है।
2ख़ुदाओं के ख़ुदा का शुक्र करो, क्योंकि उस
की शफ़क़त अबदी है।
3मालिकों के मालिक का शुक्र करो, क्योंकि
उस की शफ़क़त अबदी है।
4जो अकेला ही अज़ीम मोजिज़े करता है
उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
5जिसने हिकमत के साथ आसमान बना-
या उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़-
क़त अबदी है।
6जिसने ज़मीन को मज़बूती से पानी के ऊपर
लगा दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
7जिसने आसमान की रौशनियों को ख़लक़
किया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
8जिसने सूरज को दिन के वक़्त हुकूमत करने
के लिए बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
9जिसने चाँद और सितारों को रात के वक़्त
हुकूमत करने के लिए बनाया उसका शुक्र करो,
क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
10जिसने मिसर में पहलौठों को मार डाला
उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
11जो इसराईल को मिसरियों में से निकाल
लाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
12जिसने उस वक़्त बड़ी ताक़त और क़ुदरत
का इज़हार किया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस
की शफ़क़त अबदी है।

13जिसने बहरे-क़ुलज़ुम को दो हिस्सों में तक़सीम कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

14जिसने इसराईल को उसके बीच में से गुज़रने दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

15जिसने फ़िरौन और उस की फ़ौज को बहरे-क़ुलज़ुम में बहाकर ग़रक़ कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

16जिसने रेगिस्तान में अपनी क़ौम की क़ियादत की उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

17जिसने बड़े बादशाहों को शिकस्त दी उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

18जिसने ताक़तवर बादशाहों को मार डाला उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

19जिसने अमोरियों के बादशाह सीहोन को मौत के घाट उतारा उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

20जिसने बसन के बादशाह ओज को हलाक कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

21जिसने उनका मुल्क इसराईल को मीरास में दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

22जिसने उनका मुल्क अपने ख़ादिम इसराईल की मौरूसी मिलकियत बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

23जिसने हमारा ख़याल किया जब हम ख़ाक में दब गए थे उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

24जिसने हमें उनके क़ब्ज़े से छुड़ाया जो हम पर ज़ुल्म कर रहे थे उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

25जो तमाम जानदारों को ख़ुराक मुहैया करता है उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

26आसमान के ख़ुदा का शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

बाबल में जिलावतनों की आहो-ज़ारी

137 जब सिय्यून की याद आई तो हम बाबल की नहरों के किनारे ही बैठकर रो पड़े।

2हमने वहाँ के सफ़ेदा के दरख़्तों से अपने सरोद लटका दिए,

3क्योंकि जिन्होंने हमें गिरिफ़्तार किया था उन्होंने हमें वहाँ गीत गाने को कहा, और जो हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं उन्होंने ख़ुशी का मुतालबा किया, "हमें सिय्यून का कोई गीत सुनाओ!"

4लेकिन हम अजनबी मुल्क में किस तरह रब का गीत गाएँ?

5ऐ यरूशलम, अगर मैं तुझे भूल जाऊँ तो मेरा दहना हाथ सूख जाए।

6अगर मैं तुझे याद न करूँ और यरूशलम को अपनी अज़ीमतरीन ख़ुशी से ज़्यादा क़ीमती न समझूँ तो मेरी ज़बान तालू से चिपक जाए।

7ऐ रब, वह कुछ याद कर जो अदोमियों ने उस दिन किया जब यरूशलम दुश्मन के क़ब्ज़े में आया। उस वक़्त वह बोले, "उसे ढा दो! बुनियादों तक उसे गिरा दो!"

8ऐ बाबल बेटी जो तबाह करने पर तुली हुई है, मुबारक है वह जो तुझे उसका बदला दे जो तूने हमारे साथ किया है।

9मुबारक है वह जो तेरे बच्चों को पकड़कर पत्थर पर पटख़ दे।

अल्लाह की मदद के लिए शुक्रगुज़ारी

138 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, माबूदों के सामने ही तेरी तमजीद करूँगा।

2मैं तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की तरफ़ रुख़ करके सिजदा करूँगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी के बाइस तेरा शुक्र करूँगा। क्योंकि

तूने अपने नाम और कलाम को तमाम चीज़ों पर
सरफ़राज़ किया है।
3जिस दिन मैंने तुझे पुकारा तूने मेरी सुनकर
मेरी जान को बड़ी तक़वियत दी।

4ऐ रब, दुनिया के तमाम हुक्मरान तेरे मुँह के
फ़रमान सुनकर तेरा शुक्र करें।
5वह रब की राहों की मद्‌हसराई करें, क्योंकि
रब का जलाल अज़ीम है।
6क्योंकि गो रब बुलंदियों पर है वह पस्तहाल
का ख़याल करता और मग़रूरों को दूर से ही
पहचान लेता है।

7जब कभी मुसीबत मेरा दामन नहीं छोड़ती तो
तू मेरी जान को ताज़ादम करता है, तू अपना दहना
हाथ बढ़ाकर मुझे मेरे दुश्मनों के तैश से बचाता
है।
8रब मेरी ख़ातिर बदला लेगा। ऐ रब, तेरी
शफ़क़त अबदी है। उन्हें न छोड़ जिनको तेरे हाथों
ने बनाया है!

अल्लाह सब कुछ जानता और हर जगह मौजूद है

139 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए।
ऐ रब, तू मेरा मुआयना करता और मुझे ख़ूब
जानता है।
2मेरा उठना बैठना तुझे मालूम है, और तू दूर
से ही मेरी सोच समझता है।
3तू मुझे जाँचता है, ख़ाह मैं रास्ते में हूँ या
आराम करूँ। तू मेरी तमाम राहों से वाक़िफ़ है।
4क्योंकि जब भी कोई बात मेरी ज़बान पर आए
तू ऐ रब पहले ही उसका पूरा इल्म रखता है।
5तू मुझे चारों तरफ़ से घेरे रखता है, तेरा हाथ
मेरे ऊपर ही रहता है।
6इसका इल्म इतना हैरानकुन और अज़ीम है
कि मैं इसे समझ नहीं सकता।
7मैं तेरे रूह से कहाँ भाग जाऊँ, तेरे चेहरे से
कहाँ फ़रार हो जाऊँ?
8अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ तो तू वहाँ मौजूद
है, अगर उतरकर अपना बिस्तर पाताल में बिछाऊँ
तो तू वहाँ भी है।
9गो मैं तुलूए-सुबह के परों पर उड़कर समुंदर
की दूरतरीन हद पर जा बसूँ,
10वहाँ भी तेरा हाथ मेरी क़ियादत करेगा, वहाँ
भी तेरा दहना हाथ मुझे थामे रखेगा।
11अगर मैं कहूँ, "तारीकी मुझे छुपा दे, और
मेरे इर्दगिर्द की रौशनी रात में बदल जाए," तो
भी कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा।
12तेरे सामने तारीकी भी तारीक नहीं होती,
तेरे हुज़ूर रात दिन की तरह रौशन होती है बल्कि
रौशनी और अंधेरा एक जैसे होते हैं।

13क्योंकि तूने मेरा बातिन बनाया है, तूने मुझे
माँ के पेट में तश्कील दिया है।
14मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मुझे जलाली और
मोजिज़ाना तौर से बनाया गया है। तेरे काम
हैरतअंगेज़ हैं, और मेरी जान यह ख़ूब जानती है।
15मेरा ढाँचा तुझसे छुपा नहीं था जब मुझे
पोशीदगी में बनाया गया, जब मुझे ज़मीन की
गहराइयों में तश्कील दिया गया।
16तेरी आँखों ने मुझे उस वक़्त देखा जब मेरे
जिस्म की शक्ल अभी नामुकम्मल थी। जितने
भी दिन मेरे लिए मुक़र्रर थे वह सब तेरी किताब
में उस वक़्त दर्ज थे, जब एक भी नहीं गुज़रा था।

17ऐ अल्लाह, तेरे ख़यालात समझना मेरे लिए
कितना मुश्किल है! उनकी कुल तादाद कितनी
अज़ीम है।
18अगर मैं उन्हें गिन सकता तो वह रेत से
ज़्यादा होते। मैं जाग उठता हूँ तो तेरे ही साथ
होता हूँ।

19ऐ अल्लाह, काश तू बेदीन को मार डाले, कि
ख़ूनख़ार मुझसे दूर हो जाएँ।

20वह फ़रेब से तेरा ज़िक्र करते हैं, हाँ तेरे मुख़ालिफ़ झूट बोलते हैं।
21ऐ रब, क्या मैं उनसे नफ़रत न करूँ जो तुझसे नफ़रत करते हैं? क्या मैं उनसे घिन न खाऊँ जो तेरे ख़िलाफ़ उठे हैं?
22यक़ीनन मैं उनसे सख़्त नफ़रत करता हूँ। वह मेरे दुश्मन बन गए हैं।

23ऐ अल्लाह, मेरा मुआयना करके मेरे दिल का हाल जान ले, मुझे जाँचकर मेरे बेचैन ख़यालात को जान ले।
24मैं नुक़सानदेह राह पर तो नहीं चल रहा? अबदी राह पर मेरी क़ियादत कर!

दुश्मन से रिहाई की दुआ

140 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ रब, मुझे शरीरों से छुड़ा और ज़ालिमों से महफ़ूज़ रख।
2दिल में वह बुरे मनसूबे बाँधते, रोज़ाना जंग छेड़ते हैं।
3उनकी ज़बान साँप की ज़बान जैसी तेज़ है, और उनके होंटों में साँप का ज़हर है। (सिलाह)
4ऐ रब, मुझे बेदीन के हाथों से महफ़ूज़ रख, ज़ालिम से मुझे बचाए रख, उनसे जो मेरे पाँवों को ठोकर खिलाने के मनसूबे बाँध रहे हैं।
5मग़रूरों ने मेरे रास्ते में फंदा और रस्से छुपाए हैं, उन्होंने जाल बिछाकर रास्ते के किनारे किनारे मुझे पकड़ने के फंदे लगाए हैं। (सिलाह)

6मैं रब से कहता हूँ, "तू ही मेरा ख़ुदा है, मेरी इल्तिजाओं की आवाज़ सुन!"
7ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, ऐ मेरी क़वी नजात! जंग के दिन तू अपनी ढाल से मेरे सर की हिफ़ाज़त करता है।
8ऐ रब, बेदीन का लालच पूरा न कर। उसका इरादा कामयाब होने न दे, ऐसा न हो कि यह लोग सरफ़राज़ हो जाएँ। (सिलाह)
9उन्होंने मुझे घेर लिया है, लेकिन जो आफ़त उनके होंट मुझ पर लाना चाहते हैं वह उनके अपने सरों पर आए!
10दहकते कोयले उन पर बरसें, और उन्हें आग में, अथाह गढ़ों में फेंका जाए ताकि आइंदा कभी न उठें।
11तोहमत लगानेवाला मुल्क में क़ायम न रहे, और बुराई ज़ालिम को मार मारकर उसका पीछा करे।

12मैं जानता हूँ कि रब अदालत में मुसीबतज़दा का दिफ़ा करेगा। वही ज़रूरतमंद का इनसाफ़ करेगा।
13यक़ीनन रास्तबाज़ तेरे नाम की सताइश करेंगे, और दियानतदार तेरे हुज़ूर बसेंगे।

हिफ़ाज़त की गुज़ारिश

141 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकार रहा हूँ, मेरे पास आने में जल्दी कर! जब मैं तुझे आवाज़ देता हूँ तो मेरी फ़रियाद पर ध्यान दे!
2मेरी दुआ तेरे हुज़ूर बख़ूर की क़ुरबानी की तरह क़बूल हो, मेरे तेरी तरफ़ उठाए हुए हाथ शाम की ग़ल्ला की नज़र की तरह मंज़ूर हों।
3ऐ रब, मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होंटों के दरवाज़े की निगहबानी कर।
4मेरे दिल को ग़लत बात की तरफ़ मायल न होने दे, ऐसा न हो कि मैं बदकारों के साथ मिलकर बुरे काम में मुलव्वस हो जाऊँ और उनके लज़ीज़ खानों में शिरकत करूँ।

5रास्तबाज़ शफ़क़त से मुझे मारे और मुझे तंबीह करे। मेरा सर इससे इनकार नहीं करेगा, क्योंकि यह उसके लिए शफ़ाबख़्श तेल की मानिंद होगा। लेकिन मैं हर वक़्त शरीरों की हरकतों के ख़िलाफ़ दुआ करता हूँ।
6जब वह गिरकर उस चट्टान के हाथ में आएँगे जो उनका मुंसिफ़ है तो वह मेरी बातों पर ध्यान

देंगे, और उन्हें समझ आएगी कि वह कितनी प्यारी हैं।

7ऐ अल्लाह, हमारी हड्डियाँ उस ज़मीन की मानिंद हैं जिस पर किसी ने इतने ज़ोर से हल चलाया है कि ढेले उड़कर इधर-उधर बिखर गए हैं। हमारी हड्डियाँ पाताल के मुँह तक बिखर गई हैं।

8ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहती हैं, और मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। मुझे मौत के हवाले न कर।

9मुझे उस जाल से महफ़ूज़ रख जो उन्होंने मुझे पकड़ने के लिए बिछाया है। मुझे बदकारों के फंदों से बचाए रख।

10बेदीन मिलकर उनके अपने जालों में उलझ जाएँ जबकि मैं बचकर आगे निकलूँ।

सख़्त मुसीबत में मदद की पुकार

142 हिकमत का गीत। दुआ जो दाऊद ने की जब वह ग़ार में था।

मैं मदद के लिए चीख़ता-चिल्लाता रब को पुकारता हूँ, मैं ज़ोरदार आवाज़ से रब से इल्तिजा करता हूँ।

2मैं अपनी आहो-ज़ारी उसके सामने उंडेल देता, अपनी तमाम मुसीबत उसके हुज़ूर पेश करता हूँ।

3जब मेरी रूह मेरे अंदर निढाल हो जाती है तो तू ही मेरी राह जानता है। जिस रास्ते में मैं चलता हूँ उसमें लोगों ने फंदा छुपाया है।

4मैं दहनी तरफ़ नज़र डालकर देखता हूँ, लेकिन कोई नहीं है जो मेरा ख़याल करे। मैं बच नहीं सकता, कोई नहीं है जो मेरी जान की फ़िकर करे।

5ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ। मैं कहता हूँ, "तू मेरी पनाहगाह और ज़िंदों के मुल्क में मेरा मौरूसी हिस्सा है।"

6मेरी चीख़ों पर ध्यान दे, क्योंकि मैं बहुत पस्त हो गया हूँ। मुझे उनसे छुड़ा जो मेरा पीछा कर रहे हैं, क्योंकि मैं उन पर क़ाबू नहीं पा सकता।

7मेरी जान को क़ैदख़ाने से निकाल ला ताकि तेरे नाम की सताइश करूँ। जब तू मेरे साथ भलाई करेगा तो रास्तबाज़ मेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएंगे।

बचाव और क़ियादत की गुज़ारिश (तौबा का सातवाँ ज़बूर)

143 दाऊद का ज़बूर।

ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर ध्यान दे। अपनी वफ़ादारी और रास्ती की ख़ातिर मेरी सुन!

2अपने ख़ादिम को अपनी अदालत में न ला, क्योंकि तेरे हुज़ूर कोई भी जानदार रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता।

3क्योंकि दुश्मन ने मेरी जान का पीछा करके उसे ख़ाक में कुचल दिया है। उसने मुझे उन लोगों की तरह तारीकी में बसा दिया है जो बड़े अरसे से मुरदा हैं।

4मेरे अंदर मेरी रूह निढाल है, मेरे अंदर मेरा दिल दहशत के मारे बेहिसो-हरकत हो गया है।

5मैं क़दीम ज़माने के दिन याद करता और तेरे कामों पर ग़ौरो-ख़ौज़ करता हूँ। जो कुछ तेरे हाथों ने किया उसमें मैं महवे-ख़याल रहता हूँ।

6मैं अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाता हूँ, मेरी जान ख़ुश्क ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है। (सिलाह)

7ऐ रब, मेरी सुनने में जल्दी कर। मेरी जान तो ख़त्म होनेवाली है। अपना चेहरा मुझसे छुपाए न रख, वरना मैं गढ़े में उतरनेवालों की मानिंद हो जाऊँगा।

8सुबह के वक़्त मुझे अपनी शफ़क़त की ख़बर सुना, क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मुझे वह राह दिखा जिस पर मुझे जाना है, क्योंकि मैं तेरा ही आरज़ूमंद हूँ।

9ऐ रब, मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा, क्योंकि मैं
तुझमें पनाह लेता हूँ।
10मुझे अपनी मरज़ी पूरी करना सिखा, क्योंकि
तू मेरा ख़ुदा है। तेरा नेक रूह हमवार ज़मीन पर
मेरी राहनुमाई करे।
11ऐ रब, अपने नाम की ख़ातिर मेरी जान को
ताज़ादम कर। अपनी रास्ती से मेरी जान को
मुसीबत से बचा।
12अपनी शफ़क़त से मेरे दुश्मनों को हलाक
कर। जो भी मुझे तंग कर रहे हैं उन्हें तबाह कर!
क्योंकि मैं तेरा ख़ादिम हूँ।

नजात और ख़ुशहाली की दुआ

144 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी चट्टान की हम्द हो, जो
मेरे हाथों को लड़ने और मेरी उँगलियों को जंग
करने की तरबियत देता है।
2वह मेरी शफ़क़त, मेरा क़िला, मेरा
नजातदहिंदा और मेरी ढाल है। उसी में मैं पनाह
लेता हूँ, और वही दीगर अक़वाम को मेरे ताबे कर
देता है।

3ऐ रब, इनसान कौन है कि तू उसका ख़याल
रखे? आदमज़ाद कौन है कि तू उसका लिहाज़
करे?
4इनसान दम-भर का ही है, उसके दिन तेज़ी
से गुज़रनेवाले साये की मानिंद हैं।

5ऐ रब, अपने आसमान को झुकाकर उतर आ!
पहाड़ों को छू ताकि वह धुआँ छोड़ें।
6बिजली भेजकर उन्हें मुंतशिर कर, अपने तीर
चलाकर उन्हें दरहम-बरहम कर।
7अपना हाथ बुलंदियों से नीचे बढ़ा और मुझे
छुड़ाकर पानी की गहराइयों और परदेसियों के
हाथ से बचा,
8जिनका मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब
देता है।

9ऐ अल्लाह, मैं तेरी तमजीद में नया गीत
गाऊँगा, दस तारों का सितार बजाकर तेरी
मद्हसराई करूँगा।
10क्योंकि तू बादशाहों को नजात देता और
अपने ख़ादिम दाऊद को मोहलक तलवार से
बचाता है।

11मुझे छुड़ाकर परदेसियों के हाथ से बचा,
जिनका मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब
देता है।
12हमारे बेटे जवानी में फलने-फूलनेवाले पौदों
की मानिंद हों, हमारी बेटियाँ महल को सजाने के
लिए तराशे हुए कोने के सतून की मानिंद हों।
13हमारे गोदाम भरे रहें और हर क़िस्म की
ख़ुराक मुहैया करें। हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे
मैदानों में हज़ारों बल्कि बेशुमार बच्चे जन्म दें।
14हमारे गाय-बैल मोटे-ताज़े हों, और न कोई
ज़ाया हो जाए, न किसी को नुक़सान पहुँचे। हमारे
चौकों में आहो-ज़ारी की आवाज़ सुनाई न दे।
15मुबारक है वह क़ौम जिस पर यह सब कुछ
सादिक़ आता है, मुबारक है वह क़ौम जिसका
ख़ुदा रब है!

अल्लाह की अबदी शफ़क़त

145 दाऊद का ज़बूर। हम्दो-सना का गीत।
ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम
करूँगा। ऐ बादशाह, मैं हमेशा तक तेरे नाम की
सताइश करूँगा।
2रोज़ाना मैं तेरी तमजीद करूँगा, हमेशा तक
तेरे नाम की हम्द करूँगा।
3रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लायक़ है।
उस की अज़मत इनसान की समझ से बाहर है।
4एक पुश्त अगली पुश्त के सामने वह कुछ
सराहे जो तूने किया है, वह दूसरों को तेरे
ज़बरदस्त काम सुनाएँ।
5मैं तेरे शानदार जलाल की अज़मत और तेरे
मोजिज़ों में महवे-ख़याल रहूँगा।

6लोग तेरे हैबतनाक कामों की क़ुदरत पेश करें,
और मैं भी तेरी अज़मत बयान करूँगा।
7वह जोश से तेरी बड़ी भलाई को सराहें और
ख़ुशी से तेरी रास्ती की मद्हसराई करें।
8रब मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मुल और
शफ़क़त से भरपूर है।
9रब सबके साथ भलाई करता है, वह अपनी
तमाम मख़लूक़ात पर रहम करता है।

10ऐ रब, तेरी तमाम मख़लूक़ात तेरा शुक्र करें।
तेरे ईमानदार तेरी तमजीद करें।
11वह तेरी बादशाही के जलाल पर फ़ख़र करें
और तेरी क़ुदरत बयान करें
12ताकि आदमज़ाद तेरे क़वी कामों और तेरी
बादशाही की जलाली शानो-शौकत से आगाह हो
जाएँ।
13तेरी बादशाही की कोई इंतहा नहीं, और
तेरी सलतनत पुश्त-दर-पुश्त हमेशा तक क़ायम
रहेगी।

14रब तमाम गिरनेवालों का सहारा है। जो भी
दब जाए उसे वह उठा खड़ा करता है।
15सबकी आँखें तेरे इंतज़ार में रहती हैं, और तू
हर एक को वक़्त पर उसका खाना मुहैया करता
है।
16तू अपनी मुट्ठी खोलकर हर जानदार की
ख़ाहिश पूरी करता है।
17रब अपनी तमाम राहों में रास्त और अपने
तमाम कामों में वफ़ादार है।
18रब उन सबके क़रीब है जो उसे पुकारते हैं,
जो दियानतदारी से उसे पुकारते हैं।
19जो उसका ख़ौफ़ मानें उनकी आरज़ू वह पूरी
करता है। वह उनकी फ़रियादें सुनकर उनकी मदद
करता है।
20रब उन सबको महफ़ूज़ रखता है जो उसे
प्यार करते हैं, लेकिन बेदीनों को वह हलाक
करता है।
21मेरा मुँह रब की तारीफ़ बयान करे, तमाम
मख़लूक़ात हमेशा तक उसके मुक़द्दस नाम की
सताइश करें।

अल्लाह की अबदी वफ़ादारी

146 रब की हम्द हो! ऐ मेरी जान, रब
की हम्द कर।
2जीते-जी मैं रब की सताइश करूँगा, उम्र-भर
अपने ख़ुदा की मद्हसराई करूँगा।

3शुरफ़ा पर भरोसा न रखो, न आदमज़ाद पर
जो नजात नहीं दे सकता।
4जब उस की रूह निकल जाए तो वह दुबारा
ख़ाक में मिल जाता है, उसी वक़्त उसके मनसूबे
अधूरे रह जाते हैं।

5मुबारक है वह जिसका सहारा याक़ूब का
ख़ुदा है, जो रब अपने ख़ुदा के इंतज़ार में रहता
है।
6क्योंकि उसने आसमानो-ज़मीन, समुंदर और
जो कुछ उनमें है बनाया है। वह हमेशा तक
वफ़ादार है।
7वह मज़लूमों का इनसाफ़ करता और भूकों
को रोटी खिलाता है। रब क़ैदियों को आज़ाद
करता है।
8रब अंधों की आँखें बहाल करता और ख़ाक
में दबे हुओं को उठा खड़ा करता है, रब रास्तबाज़
को प्यार करता है।
9रब परदेसियों की देख-भाल करता, यतीमों
और बेवाओं को क़ायम रखता है। लेकिन वह
बेदीनों की राह को टेढ़ा बनाकर कामयाब होने
नहीं देता।

10रब अबद तक हुकूमत करेगा। ऐ सिय्यून,
तेरा ख़ुदा पुश्त-दर-पुश्त बादशाह रहेगा। रब की
हम्द हो।

कायनात और तारीख़ में रब का बंदोबस्त

147 रब की हम्द हो! अपने ख़ुदा की
मद्हसराई करना कितना भला
है, उस की तमजीद करना कितना प्यारा और
ख़ूबसूरत है।
2रब यरूशलम को तामीर करता और इसराईल
के मुंतशिर जिलावतनों को जमा करता है।
3वह दिलशिकस्तों को शफ़ा देकर उनके
ज़ख़मों पर मरहम-पट्टी लगाता है।
4वह सितारों की तादाद गिन लेता और हर एक
का नाम लेकर उन्हें बुलाता है।
5हमारा रब अज़ीम है, और उस की क़ुदरत
ज़बरदस्त है। उस की हिकमत की कोई इंतहा
नहीं।
6रब मुसीबतज़दों को उठा खड़ा करता लेकिन
बदकारों को ख़ाक में मिला देता है।

7रब की तमजीद में शुक्र का गीत गाओ, हमारे
ख़ुदा की ख़ुशी में सरोद बजाओ।
8क्योंकि वह आसमान पर बादल छाने देता,
ज़मीन को बारिश मुहैया करता और पहाड़ों पर
घास फूटने देता है।
9वह मवेशी को चारा और कौवे के बच्चों को
वह कुछ खिलाता है जो वह शोर मचाकर माँगते
हैं।

10न वह घोड़े की ताक़त से लुत्फ़अंदोज़ होता,
न आदमी की मज़बूत टाँगों से ख़ुश होता है।
11रब उन्हीं से ख़ुश होता है जो उसका ख़ौफ़
मानते और उस की शफ़क़त के इंतज़ार में रहते
हैं।

12ऐ यरूशलम, रब की मद्हसराई कर! ऐ
सिय्यून, अपने ख़ुदा की हम्द कर!
13क्योंकि उसने तेरे दरवाज़ों के कुंडे मज़बूत
करके तेरे दरमियान बसनेवाली औलाद को
बरकत दी है।
14वही तेरे इलाक़े में अमन और सुकून क़ायम
रखता और तुझे बेहतरीन गंदुम से सेर करता है।
15वह अपना फ़रमान ज़मीन पर भेजता है तो
उसका कलाम तेज़ी से पहुँचता है।
16वह ऊन जैसी बर्फ़ मुहैया करता और पाला
राख की तरह चारों तरफ़ बिखेर देता है।
17वह अपने ओले कंकरों की तरह ज़मीन पर
फेंक देता है। कौन उस की शदीद सर्दी बरदाश्त
कर सकता है?
18वह एक बार फिर अपना फ़रमान भेजता है
तो बर्फ़ पिघल जाती है। वह अपनी हवा चलने
देता है तो पानी टपकने लगता है।

19उसने याक़ूब को अपना कलाम सुनाया,
इसराईल पर अपने अहकाम और आईन ज़ाहिर
किए हैं।
20ऐसा सुलूक उसने किसी और क़ौम से
नहीं किया। दीगर अक़वाम तो तेरे अहकाम नहीं
जानतीं। रब की हम्द हो!

आसमानो-ज़मीन पर अल्लाह की तमजीद

148 रब की हम्द हो! आसमान से रब
की सताइश करो, बुलंदियों पर
उस की तमजीद करो!
2ऐ उसके तमाम फ़रिश्तो, उस की हम्द करो!
ऐ उसके तमाम लशकरो, उस की तारीफ़ करो!
3ऐ सूरज और चाँद, उस की हम्द करो! ऐ
तमाम चमकदार सितारो, उस की सताइश करो!
4ऐ बुलंदतरीन आसमानो और आसमान के
ऊपर के पानी, उस की हम्द करो!

5वह रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि
उसने फ़रमाया तो वह वुजूद में आए।
6उसने नाक़ाबिले-मनसूख़ फ़रमान जारी
करके उन्हें हमेशा के लिए क़ायम किया है।

7ऐ समुंदर के अज़दहाओ और तमाम
गहराइयो, ज़मीन से रब की तमजीद करो!

8ऐ आग, ओलो, बर्फ़, धुंध और उसके हुक्म पर चलनेवाली आँधियो, उस की हम्द करो!

9ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, फलदार दरख़्तो और तमाम देवदारो, उस की तारीफ़ करो!

10ऐ जंगली जानवरो, मवेशियो, रेंगनेवाली मख़लूक़ात और परिंदो, उस की हम्द करो!

11ऐ ज़मीन के बादशाहो और तमाम क़ौमो, सरदारो और ज़मीन के तमाम हुक्मरानो, उस की तमजीद करो!

12ऐ नौजवानो और कुँवारियो, बुज़ुर्गो और बच्चो, उस की हम्द करो!

13सब रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि सिर्फ़ उसी का नाम अज़ीम है, उस की अज़मत आसमानो-ज़मीन से आला है।

14उसने अपनी क़ौम को सरफ़राज़ करके[a] अपने तमाम ईमानदारों की शोहरत बढ़ाई है, यानी इसराईलियों की शोहरत, उस क़ौम की जो उसके क़रीब रहती है। रब की हम्द हो!

सिय्यून रब की हम्द करे!

149 रब की हम्द हो! रब की तमजीद में नया गीत गाओ, ईमानदारों की जमात में उस की तारीफ़ करो।

2इसराईल अपने ख़ालिक़ से ख़ुश हो, सिय्यून के फ़रज़ंद अपने बादशाह की ख़ुशी मनाएँ।

3वह नाचकर उसके नाम की सताइश करें, दफ़ और सरोद से उस की मद्हसराई करें।

4क्योंकि रब अपनी क़ौम से ख़ुश है। वह मुसीबतज़दों को अपनी नजात की शानो-शौकत से आरास्ता करता है।

5ईमानदार इस शानो-शौकत के बाइस ख़ुशी मनाएँ, वह अपने बिस्तरों पर शादमानी के नारे लगाएँ।

6उनके मुँह में अल्लाह की हम्दो-सना और उनके हाथों में दोधारी तलवार हो

7ताकि दीगर अक़वाम से इंतक़ाम लें और उम्मतों को सज़ा दें।

8वह उनके बादशाहों को ज़ंजीरों में और उनके शुरफ़ा को बेड़ियों में जकड़ लेंगे

9ताकि उन्हें वह सज़ा दें जिसका फ़ैसला क़लमबंद हो चुका है। यह इज़्ज़त अल्लाह के तमाम ईमानदारों को हासिल है। रब की हम्द हो!

रब की हम्दो-सना

150 रब की हम्द हो! अल्लाह के मक़दिस में उस की सताइश करो। उस की क़ुदरत के बने हुए आसमानी गुंबद में उस की तमजीद करो।

2उसके अज़ीम कामों के बाइस उस की हम्द करो। उस की ज़बरदस्त अज़मत के बाइस उस की सताइश करो।

3नरसिंगा फूँककर उस की हम्द करो, सितार और सरोद बजाकर उस की तमजीद करो।

4दफ़ और लोकनाच से उस की हम्द करो। तारदार साज़ और बाँसरी बजाकर उस की सताइश करो।

5झाँझों की झंकारती आवाज़ से उस की हम्द करो, गूँजती झाँझ से उस की तारीफ़ करो।

6जिसमें भी साँस है वह रब की सताइश करे। रब की हम्द हो!।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अपनी क़ौम का सींग बुलंद करके।

अमसाल

किताब का मक़सद

1 ज़ैल में इसराईल के बादशाह सुलेमान बिन
दाऊद की अमसाल क़लमबंद हैं।
2इनसे तू हिकमत और तरबियत हासिल
करेगा, बसीरत के अलफ़ाज़ समझने के
क़ाबिल हो जाएगा, 3और दानाई दिलाने-
वाली तरबियत, रास्ती, इनसाफ़ और दिया-
नतदारी अपनाएगा। 4यह अमसाल सादा-
लौह को होशियारी और नौजवान को इल्म और
तमीज़ सिखाती हैं। 5जो दाना है वह सुनकर
अपने इल्म में इज़ाफ़ा करे, जो समझदार है
वह राहनुमाई करने का फ़न सीख ले। 6तब वह
अमसाल और तमसीलें, दानिशमंदों की बातें और
उनके मुअम्मे समझ लेगा।
7हिकमत इससे शुरू होती है कि हम रब का
ख़ौफ़ मानें। सिर्फ़ अहमक़ हिकमत और तरबियत
को हक़ीर जानते हैं।

ग़लत साथियों से ख़बरदार

8मेरे बेटे, अपने बाप की तरबियत के ताबे
रह, और अपनी माँ की हिदायत मुस्तरद न कर।
9क्योंकि यह तेरे सर पर दिलकश सेहरा और तेरे
गले में गुलूबंद हैं। 10मेरे बेटे, जब ख़ताकार तुझे
फुसलाने की कोशिश करें तो उनके पीछे न हो ले।
11उनकी बात न मान जब वह कहें, "आ, हमारे
साथ चल! हम ताक में बैठकर किसी को क़त्ल
करें, बिलावजह किसी बेक़ुसूर की घात लगाएँ।
12हम उन्हें पाताल की तरह ज़िंदा निगल लें, उन्हें
मौत के गढ़े में उतरनेवालों की तरह एकदम हड़प
कर लें। 13हम हर क़िस्म की क़ीमती चीज़ हासिल
करेंगे, अपने घरों को लूट के माल से भर लेंगे।
14आ, जुर्रत करके हममें शरीक हो जा, हम लूट
का तमाम माल बराबर तक़सीम करेंगे।"
15मेरे बेटे, उनके साथ मत जाना, अपना पाँव
उनकी राहों पर रखने से रोक लेना। 16क्योंकि
उनके पाँव ग़लत काम के पीछे दौड़ते, ख़ून बहाने
के लिए भागते हैं। 17जब चिड़ीमार अपना जाल
लगाकर उस पर परिंदों को फाँसने के लिए रोटी
के टुकड़े बिखेर देता है तो परिंदों की नज़र में
यह बेमक़सद है। 18यह लोग भी एक दिन फँस
जाएंगे। जब ताक में बैठ जाते हैं तो अपने आपको
तबाह करते हैं, जब दूसरों की घात लगाते हैं तो
अपनी ही जान को नुक़सान पहुँचाते हैं। 19यही
उन सबका अंजाम है जो नारवा नफ़ा के पीछे
भागते हैं। नाजायज़ नफ़ा अपने मालिक की जान
छीन लेता है।

हिक्मत की पुकार

20हिकमत गली में ज़ोर से आवाज़ देती, चौकों
में बुलंद आवाज़ से पुकारती है। 21जहाँ सबसे
ज़्यादा शोर-शराबा है वहाँ वह चिल्ला चिल्लाकर
बोलती, शहर के दरवाज़ों पर ही अपनी तक़रीर
करती है, 22"ऐ सादालौह लोगो, तुम कब तक
अपनी सादालौही से मुहब्बत रखोगे? मज़ाक़

उड़ानेवाले कब तक अपने मज़ाक़ से लुत्फ़
उठाएँगे, अहमक़ कब तक इल्म से नफ़रत करेंगे?
23आओ, मेरी सरज़निश पर ध्यान दो। तब मैं
अपनी रूह का चश्मा तुम पर फूटने दूँगी, तुम्हें
अपनी बातें सुनाऊँगी।

24लेकिन जब मैंने आवाज़ दी तो तुमने इनकार
किया, जब मैंने अपना हाथ तुम्हारी तरफ़ बढ़ाया
तो किसी ने भी तवज्जुह न दी। 25तुमने मेरे किसी
मशवरे की परवा न की, मेरी मलामत तुम्हारे
नज़दीक क़ाबिले-क़बूल नहीं थी। 26इसलिए जब
तुम पर आफ़त आएगी तो मैं क़हक़हा लगाऊँगी,
जब तुम हौलनाक मुसीबत में फँस जाओगे तो
तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाऊँगी। 27उस वक़्त तुम पर
दहशतनाक आँधी टूट पड़ेगी, आफ़त तूफ़ान की
तरह तुम पर आएगी, और तुम मुसीबत और
तकलीफ़ के सैलाब में डूब जाओगे। 28तब वह
मुझे आवाज़ देंगे, लेकिन मैं उनकी नहीं सुनूँगी,
वह मुझे ढूँडेंगे पर पाएँगे नहीं।

29क्योंकि वह इल्म से नफ़रत करके रब का
ख़ौफ़ मानने के लिए तैयार नहीं थे। 30मेरा
मशवरा उन्हें क़बूल नहीं था बल्कि वह मेरी हर
सरज़निश को हक़ीर जानते थे। 31चुनाँचे अब वह
अपने चाल-चलन का फल खाएँ, अपने मनसूबों
की फ़सल खा खाकर सेर हो जाएँ।

32क्योंकि सहीह राह से दूर होने का अमल
सादालौह को मार डालता है, और अहमक़ों की
बेपरवाई उन्हें तबाह करती है। 33लेकिन जो मेरी
सुने वह सुकून से बसेगा, हौलनाक मुसीबत उसे
परेशान नहीं करेगी।”

हिक्मत की अहमियत

2 मेरे बेटे, मेरी बात क़बूल करके मेरे
अहकाम अपने दिल में महफ़ूज़ रख।
2अपना कान हिकमत पर धर, अपना दिल समझ
की तरफ़ मायल कर। 3बसीरत के लिए आवाज़
दे, चिल्लाकर समझ माँग। 4उसे यों तलाश कर
गोया चाँदी हो, उसका यों खोज लगा गोया
पोशीदा ख़ज़ाना हो। 5अगर तू ऐसा करे तो तुझे
रब के ख़ौफ़ की समझ आएगी और अल्लाह का
इरफ़ान हासिल होगा। 6क्योंकि रब ही हिकमत
अता करता, उसी के मुँह से इरफ़ान और समझ
निकलती है। 7वह सीधी राह पर चलनेवालों को
कामयाबी फ़राहम करता और बेइलज़ाम ज़िंदगी
गुज़ारनेवालों की ढाल बना रहता है। 8क्योंकि वह
इनसाफ़ पसंदों की राहों की पहरादारी करता है।
जहाँ भी उसके ईमानदार चलते हैं वहाँ वह उनकी
हिफ़ाज़त करता है।

9तब तुझे रास्ती, इनसाफ़, दियानतदारी
और हर अच्छी राह की समझ आएगी।
10क्योंकि तेरे दिल में हिकमत दाख़िल हो
जाएगी, और इल्मो-इरफ़ान तेरी जान को
प्यारा हो जाएगा। 11तमीज़ तेरी हिफ़ाज़त
और समझ तेरी चौकीदारी करेगी। 12हिक-
मत तुझे ग़लत राह और कजरौ बातें करनेवाले
से बचाए रखेगी। 13ऐसे लोग सीधी राह को छोड़
देते हैं ताकि तारीक रास्तों पर चलें, 14वह बुरी
हरकतें करने से ख़ुश हो जाते हैं, ग़लत काम की
कजरवी देखकर जशन मनाते हैं। 15उनकी राहें
टेढ़ी हैं, और वह जहाँ भी चलें आवारा फिरते हैं।

16हिकमत तुझे नाजायज़ औरत से छुड़ा-
ती है, उस अजनबी औरत से जो चिकनी-चुपड़ी
बातें करती, 17जो अपने जीवनसाथी को तर्क
करके अपने ख़ुदा का अहद भूल जाती है।
18क्योंकि उसके घर में दाख़िल होने का अंजाम
मौत, उस की राहों की मनज़िले-मक़सूद पाताल
है। 19जो भी उसके पास जाए वह वापस नहीं
आएगा, वह ज़िंदगीबख़्श राहों पर दुबारा नहीं
पहुँचेगा।

20चुनाँचे अच्छे लोगों की राह पर चल-फिर,
ध्यान दे कि तेरे क़दम रास्तबाज़ों के रास्ते पर
रहें। 21क्योंकि सीधी राह पर चलनेवाले मुल्क
में आबाद होंगे, आख़िरकार बेइलज़ाम ही उसमें
बाक़ी रहेंगे। 22लेकिन बेदीन मुल्क से मिट

जाएंगे, और बेवफ़ाओं को उखाड़कर मुल्क से
ख़ारिज कर दिया जाएगा।

अल्लाह के ख़ौफ़ और हिकमत की बरकत

3 मेरे बेटे, मेरी हिदायत मत भूलना। मेरे
अहकाम तेरे दिल में महफ़ूज़ रहें। 2क्योंकि
इन्हीं से तेरी ज़िंदगी के दिनों और सालों में इज़ाफ़ा
होगा और तेरी ख़ुशहाली बढ़ेगी। 3शफ़क़त और
वफ़ा तेरा दामन न छोड़ें। उन्हें अपने गले से
बाँधना, अपने दिल की तख़्ती पर कंदा करना।
4तब तुझे अल्लाह और इनसान के सामने
मेहरबानी और क़बूलियत हासिल होगी।

5पूरे दिल से रब पर भरोसा रख, और अपनी
अक़्ल पर तकिया न कर। 6जहाँ भी तू चले
सिर्फ़ उसी को जान ले, फिर वह ख़ुद तेरी राहों
को हमवार करेगा। 7अपने आपको दानिशमंद
मत समझना बल्कि रब का ख़ौफ़ मानकर बुराई
से दूर रह। 8इससे तेरा बदन सेहत पाएगा
और तेरी हड्डियाँ तरो-ताज़ा हो जाएँगी। 9अपनी
मिलकियत और अपनी तमाम पैदावार के पहले
फल से रब का एहतराम कर, 10फिर तेरे गोदाम
अनाज से भर जाएंगे और तेरे बरतन मै से छलक
उठेंगे।

11मेरे बेटे, रब की तरबियत को रद्द न कर, जब
वह तुझे डाँटे तो रंजीदा न हो। 12क्योंकि जो रब
को प्यारा है उस की वह तादीब करता है, जिस
तरह बाप उस बेटे को तंबीह करता है जो उसे
पसंद है।

हक़ीक़ी दौलत

13मुबारक है वह जो हिकमत पाता है, जिसे
समझ हासिल होती है। 14क्योंकि हिकमत चाँदी
से कहीं ज़्यादा सूदमंद है, और उससे सोने से कहीं
ज़्यादा क़ीमती चीज़ें हासिल होती हैं। 15हिकमत
मोतियों से ज़्यादा नफ़ीस है, तेरे तमाम ख़ज़ाने
उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते। 16उसके दहने
हाथ में उम्र की दराज़ी और बाएँ हाथ में दौलत
और इज़्ज़त है। 17उस की राहें ख़ुशगवार, उसके
तमाम रास्ते पुरअमन हैं। 18जो उसका दामन
पकड़ ले उसके लिए वह ज़िंदगी का दरख़्त है।
मुबारक है वह जो उससे लिपटा रहे। 19रब ने
हिकमत के वसीले से ही ज़मीन की बुनियाद
रखी, समझ के ज़रीए ही आसमान को मज़बूती
से लगाया। 20उसके इरफ़ान से ही गहराइयों
का पानी फूट निकला और आसमान से शबनम
टपककर ज़मीन पर पड़ती है।

21मेरे बेटे, दानाई और तमीज़ अपने पास
महफ़ूज़ रख और उन्हें अपनी नज़र से दूर न होने
दे। 22उनसे तेरी जान तरो-ताज़ा और तेरा गला
आरास्ता रहेगा। 23तब तू चलते वक़्त महफ़ूज़
रहेगा, और तेरा पाँव ठोकर नहीं खाएगा। 24तू
पाँव फैलाकर सो सकेगा, कोई सदमा तुझे नहीं
पहुँचेगा बल्कि तू लेटकर गहरी नींद सोएगा।
25नागहाँ आफ़त से मत डरना, न उस तबाही से
जो बेदीन पर ग़ालिब आती है, 26क्योंकि रब पर
तेरा एतमाद है, वही तेरे पाँवों को फँस जाने से
महफ़ूज़ रखेगा।

दूसरों की मदद करने की नसीहत

27अगर कोई ज़रूरतमंद हो और तू उस की
मदद कर सके तो उसके साथ भलाई करने से
इनकार न कर। 28अगर तू आज कुछ दे सके
तो अपने पड़ोसी से मत कहना, “कल आना तो
मैं आपको कुछ दे दूँगा।” 29जो पड़ोसी बेफ़िकर
तेरे साथ रहता है उसके ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे मत
बाँधना। 30जिसने तुझे नुक़सान नहीं पहुँचाया
अदालत में उस पर बेबुनियाद इलज़ाम न लगाना।

31न ज़ालिम से हसद कर, न उस की कोई
राह इख़्तियार कर। 32क्योंकि बुरी राह पर
चलनेवाले से रब घिन खाता है जबकि सीधी राह
पर चलनेवालों को वह अपने राज़ों से आगाह
करता है। 33बेदीन के घर पर रब की लानत
आती जबकि रास्तबाज़ के घर को वह बरकत
देता है। 34मज़ाक़ उड़ानेवालों का वह मज़ाक़
उड़ाता, लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता

है। 35दानिशमंद मीरास में इज़्ज़त पाएँगे जबकि अहमक़ के नसीब में शरमिंदगी होगी।

बाप की नसीहत

4 ऐ बेटो, बाप की नसीहत सुनो, ध्यान दो ताकि तुम सीखकर समझ हासिल कर सको। 2मैं तुम्हें अच्छी तालीम देता हूँ, इसलिए मेरी हिदायत को तर्क न करो। 3मैं अभी अपने बाप के घर में नाज़ुक लड़का था, अपनी माँ का वाहिद बच्चा, 4तो मेरे बाप ने मुझे तालीम देकर कहा,

"पूरे दिल से मेरे अलफ़ाज़ अपना ले और हर वक़्त मेरे अहकाम पर अमल कर तो तू जीता रहेगा। 5हिकमत हासिल कर, समझ अपना ले! यह चीज़ें मत भूलना, मेरे मुँह के अलफ़ाज़ से दूर न होना। 6हिकमत तर्क न कर तो वह तुझे महफ़ूज़ रखेगी। उससे मुहब्बत रख तो वह तेरी देख-भाल करेगी। 7हिकमत इससे शुरू होती है कि तू हिकमत अपना ले। समझ हासिल करने के लिए बाक़ी तमाम मिलकियत क़ुरबान करने के लिए तैयार हो। 8उसे अज़ीज़ रख तो वह तुझे सरफ़राज़ करेगी, उसे गले लगा तो वह तुझे इज़्ज़त बख़्शेगी। 9तब वह तेरे सर को ख़ूबसूरत सेहरे से आरास्ता करेगी और तुझे शानदार ताज से नवाज़ेगी।"

10मेरे बेटे, मेरी सुन! मेरी बातें अपना ले तो तेरी उम्र दराज़ होगी। 11मैं तुझे हिकमत की राह पर चलने की हिदायत देता, तुझे सीधी राहों पर फिरने देता हूँ। 12जब तू चलेगा तो तेरे क़दमों को किसी भी चीज़ से रोका नहीं जाएगा, और दौड़ते वक़्त तू ठोकर नहीं खाएगा। 13तरबियत का दामन थामे रह! उसे न छोड़ बल्कि महफ़ूज़ रख, क्योंकि वह तेरी ज़िंदगी है।

14बेदीनों की राह पर क़दम न रख, शरीरों के रास्ते पर मत जा। 15उससे गुरेज़ कर, उस पर सफ़र न कर बल्कि उससे कतराकर आगे निकल जा। 16क्योंकि जब तक उनसे बुरा काम सरज़द न हो जाए वह सो ही नहीं सकते, जब तक उन्होंने किसी को ठोकर खिलाकर ख़ाक में मिला न दिया हो वह नींद से महरूम रहते हैं। 17वह बेदीनी की रोटी खाते और ज़ुल्म की मै पीते हैं। 18लेकिन रास्तबाज़ की राह तुलूए-सुबह की पहली रौशनी की मानिंद है जो दिन के उरूज तक बढ़ती रहती है। 19इसके मुक़ाबले में बेदीन का रास्ता गहरी तारीकी की मानिंद है, उन्हें पता ही नहीं चलता कि किस चीज़ से ठोकर खाकर गिर गए हैं।

20मेरे बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दे, मेरे अलफ़ाज़ पर कान धर। 21उन्हें अपनी नज़र से ओझल न होने दे बल्कि अपने दिल में महफ़ूज़ रख। 22क्योंकि जो यह बातें अपनाएँ वह ज़िंदगी और पूरे जिस्म के लिए शफ़ा पाते हैं। 23तमाम चीज़ों से पहले अपने दिल की हिफ़ाज़त कर, क्योंकि यही ज़िंदगी का सरचश्मा है। 24अपने मुँह से झूट और अपने होंटों से कजगोई दूर कर। 25ध्यान दे कि तेरी आँखें सीधा आगे की तरफ़ देखें, कि तेरी नज़र उस रास्ते पर लगी रहे जो सीधा है। 26अपने पाँवों का रास्ता चलने के क़ाबिल बना दे, ध्यान दे कि तेरी राहें मज़बूत हैं। 27न दाईं, न बाईं तरफ़ मुड़ बल्कि अपने पाँवों को ग़लत क़दम उठाने से बाज़ रख।

ज़िनाकारी से ख़बरदार

5 मेरे बेटे, मेरी हिकमत पर ध्यान दे, मेरी समझ की बातों पर कान धर। 2फिर तू तमीज़ का दामन थामे रहेगा, और तेरे होंट इल्मो-इरफ़ान महफ़ूज़ रखेंगे। 3क्योंकि ज़िनाकार औरत के होंटों से शहद टपकता है, उस की बातें तेल की तरह चिकनी-चुपड़ी होती हैं। 4लेकिन अंजाम में वह ज़हर जैसी कड़वी और दोधारी तलवार जैसी तेज़ साबित होती है। 5उसके पाँव मौत की तरफ़ उतरते, उसके क़दम पाताल की जानिब बढ़ते जाते हैं। 6उसके रास्ते कभी इधर कभी इधर फिरते हैं ताकि तू ज़िंदगी की राह पर तवज्जुह न दे और उस की आवारगी को जान न ले।

7चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो और मेरे मुँह की
बातों से दूर न हो जाओ। 8अपने रास्ते उससे
दूर रख, उसके घर के दरवाज़े के क़रीब भी न
जा। 9ऐसा न हो कि तू अपनी ताक़त किसी
और के लिए सर्फ़ करे और अपने साल ज़ालिम
के लिए ज़ाया करे। 10ऐसा न हो कि परदेसी
तेरी मिलकियत से सेर हो जाएँ, कि जो कुछ
तूने मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया वह किसी
और के घर में आए। 11तब आख़िरकार तेरा बदन
और गोश्त घुल जाएंगे, और तू आहें भर भरकर
12कहेगा, "हाय, मैंने क्यों तरबियत से नफ़रत
की, मेरे दिल ने क्यों सरज़निश को हक़ीर जाना?
13हिदायत करनेवालों की मैंने न सुनी, अपने
उस्तादों की बातों पर कान न धरा। 14जमात के
दरमियान ही रहते हुए मुझ पर ऐसी आफ़त आई
कि मैं तबाही के दहाने तक पहुँच गया हूँ।"

15अपने ही हौज़ का पानी और अपने ही कुएँ
से फूटनेवाला पानी पी ले। 16क्या मुनासिब है
कि तेरे चश्मे गलियों में और तेरी नदियाँ चौकों में
बह निकलें? 17जो पानी तेरा अपना है वह तुझ
तक महदूद रहे, अजनबी उसमें शरीक न हो जाए।
18तेरा चश्मा मुबारक हो। हाँ, अपनी बीवी से ख़ुश
रह। 19वही तेरी मनमोहन हिरनी और दिलरुबा
ग़ज़ाल[a] है। उसी का प्यार तुझे तरो-ताज़ा करे,
उसी की मुहब्बत तुझे हमेशा मस्त रखे।

20मेरे बेटे, तू अजनबी औरत से क्यों मस्त
हो जाए, किसी दूसरे की बीवी से क्यों लिपट
जाए? 21ख़याल रख, इनसान की राहें रब को
साफ़ दिखाई देती हैं, जहाँ भी वह चले उस पर वह
तवज्जुह देता है। 22बेदीन की अपनी ही हरकतें
उसे फँसा देती हैं, वह अपने ही गुनाह के रस्सों
में जकड़ा रहता है। 23वह तरबियत की कमी के
सबब से हलाक हो जाएगा, अपनी बड़ी हमाक़त
के बाइस डगमगाते हुए अपने अंजाम को पहुँचेगा।

ज़मानत देने, काहिली और झूट से ख़बरदार

6 मेरे बेटे, क्या तू अपने पड़ोसी का ज़ामिन
बना है? क्या तूने हाथ मिलाकर वादा
किया है कि मैं किसी दूसरे का ज़िम्मेदार ठहरूँगा?
2क्या तू अपने वादे से बँधा हुआ, अपने मुँह के
अलफ़ाज़ से फँसा हुआ है? 3ऐसा करने से तू
अपने पड़ोसी के हाथ में आ गया है, इसलिए
अपनी जान को छुड़ाने के लिए उसके सामने
औंधे मुँह होकर उसे अपनी मिन्नत-समाजत से
तंग कर। 4अपनी आँखों को सोने न दे, अपने
पपोटों को ऊँघने न दे जब तक तू इस ज़िम्मेदारी
से फ़ारिग़ न हो जाए। 5जिस तरह ग़ज़ाल शिकारी
के हाथ से और परिंदा चिड़ीमार के हाथ से छूट
जाता है उसी तरह सिर-तोड़ कोशिश कर ताकि
तेरी जान छूट जाए।

6ऐ काहिल, चियूँटी के पास जाकर उस की
राहों पर ग़ौर कर! उसके नमूने से हिकमत सीख
ले। 7उस पर न सरदार, न अफ़सर या हुक्मरान
मुक़र्रर है, 8तो भी वह गरमियों में सर्दियों के लिए
खाने का ज़ख़ीरा कर रखती, फ़सल के दिनों
में ख़ूब ख़ुराक इकट्ठी करती है। 9ऐ काहिल, तू
मज़ीद कब तक सोया रहेगा, कब जाग उठेगा?
10तू कहता है, "मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी
देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने
दे ताकि आराम कर सकूँ।" 11लेकिन ख़बरदार,
जल्द ही ग़ुरबत राहज़न की तरह तुझ पर आएगी,
मुफ़लिसी हथियार से लैस डाकू की तरह तुझ पर
टूट पड़ेगी।

12बदमाश और कमीना किस तरह पह-
चाना जाता है? वह मुँह में झूट लिए फिरता है,
13अपनी आँखों, पाँवों और उँगलियों से इशारा
करके तुझे फ़रेब के जाल में फँसाने की कोशिश
करता है। 14उसके दिल में कजी है, और वह हर
वक़्त बुरे मनसूबे बाँधने में लगा रहता है। जहाँ
भी जाए वहाँ झगड़े छिड़ जाते हैं। 15लेकिन ऐसे
शख़्स पर अचानक ही आफ़त आएगी। एक ही

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : पहाड़ी बकरी।

लमहे में वह पाश पाश हो जाएगा। तब उसका
इलाज नामुमकिन होगा।
16रब छः चीज़ों से नफ़रत बल्कि सात चीज़ों
से घिन खाता है,
17वह आँखें जो ग़ुरूर से देखती हैं, वह ज़बान
जो झूट बोलती है, वह हाथ जो बेगुनाहों को क़त्ल
करते हैं, 18वह दिल जो बुरे मनसूबे बाँधता है,
वह पाँव जो दूसरों को नुक़सान पहुँचाने के लिए
भागते हैं, 19वह गवाह जो अदालत में झूट बोलता
और वह जो भाइयों में झगड़ा पैदा करता है।

ज़िना करने से ख़बरदार

20मेरे बेटे, अपने बाप के हुक्म से लिपटा रह,
और अपनी माँ की हिदायत नज़रंदाज़ न कर।
21उन्हें यों अपने दिल के साथ बाँधे रख कि कभी
दूर न हो जाएँ। उन्हें हार की तरह अपने गले
में डाल ले। 22चलते वक़्त वह तेरी राहनुमाई
करें, आराम करते वक़्त तेरी पहरादारी करें,
जागते वक़्त तुझसे हमकलाम हों। 23क्योंकि
बाप का हुक्म चराग़ और माँ की हिदायत रौशनी
है, तरबियत की डाँट-डपट ज़िंदगीबख़्श राह है।
24यों तू बदकार औरत और दूसरे की ज़िनाकार
बीवी की चिकनी-चुपड़ी बातों से महफ़ूज़ रहेगा।
25दिल में उसके हुस्न का लालच न कर, ऐसा
न हो कि वह पलक मार मारकर तुझे पकड़ ले।
26क्योंकि गो कसबी आदमी को उसके पैसे से
महरूम करती है, लेकिन दूसरे की ज़िनाकार बीवी
उस की क़ीमती जान का शिकार करती है।
27क्या इनसान अपनी झोली में भड़कती आग
यों उठाकर फिर सकता है कि उसके कपड़े न
जलें? 28या क्या कोई दहकते कोयलों पर
यों फिर सकता है कि उसके पाँव झुलस न
जाएँ? 29इसी तरह जो किसी दूसरे की बीवी
से हमबिसतर हो जाए उसका अंजाम बुरा है, जो
भी दूसरे की बीवी को छेड़े उसे सज़ा मिलेगी।
30जो भूक के मारे अपना पेट भरने के लिए चोरी
करे उसे लोग हद से ज़्यादा हक़ीर नहीं जानते,
31हालाँकि उसे चोरी किए हुए माल को सात
गुना वापस करना है और उसके घर की दौलत
जाती रहेगी। 32लेकिन जो किसी दूसरे की बीवी
के साथ ज़िना करे वह बेअक़्ल है। जो अपनी जान
को तबाह करना चाहे वही ऐसा करता है। 33उस
की पिटाई और बेइज़्ज़ती की जाएगी, और उस
की शरमिंदगी कभी नहीं मिटेगी। 34क्योंकि शौहर
ग़ैरत खाकर और तैश में आकर बेरहमी से बदला
लेगा। 35न वह कोई मुआवज़ा क़बूल करेगा, न
रिश्वत लेगा, ख़ाह कितनी ज़्यादा क्यों न हो।

बेवफ़ा बीवी

7 मेरे बेटे, मेरे अलफ़ाज़ की पैरवी कर, मेरे
अहकाम अपने अंदर महफ़ूज़ रख। 2मेरे
अहकाम के ताबे रह तो जीता रहेगा। अपनी आँख
की पुतली की तरह मेरी हिदायत की हिफ़ाज़त
कर। 3उन्हें अपनी उँगली के साथ बाँध, अपने
दिल की तख़्ती पर कंदा कर। 4हिकमत से कह,
“तू मेरी बहन है,” और समझ से, “तू मेरी क़रीबी
रिश्तेदार है।” 5यही तुझे ज़िनाकार औरत से
महफ़ूज़ रखेंगी, दूसरे की उस बीवी से जो अपनी
चिकनी-चुपड़ी बातों से तुझे फुसलाने की कोशिश
करती है।
6एक दिन मैंने अपने घर की खिड़की[a] में से
बाहर झाँका 7तो क्या देखता हूँ कि वहाँ कुछ
सादालौह नौजवान खड़े हैं। उनमें से एक बेअक़्ल
जवान नज़र आया। 8वह गली में से गुज़रकर
ज़िनाकार औरत के कोने की तरफ़ टहलने लगा।
चलते चलते वह उस रास्ते पर आ गया जो औरत
के घर तक ले जाता है। 9शाम का धुँधलका था,
दिन ढलने और रात का अंधेरा छाने लगा था।
10तब एक औरत कसबी का लिबास पहने हुए
चालाकी से उससे मिलने आई। 11यह औरत
इतनी बेलगाम और ख़ुदसर है कि उसके पाँव
उसके घर में नहीं टिकते। 12कभी वह गली में,
कभी चौकों में होती है, हर कोने पर वह ताक में
बैठी रहती है।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : घर की खिड़की के जंगले।

13अब उसने नौजवान को पकड़कर उसे बोसा
दिया। बेहया नज़र उस पर डालकर उसने कहा,
14“मुझे सलामती की क़ुरबानियाँ पेश करनी
थीं, और आज ही मैंने अपनी मन्नतें पूरी कीं।
15इसलिए मैं निकलकर तुझसे मिलने आई, मैंने
तेरा पता किया और अब तू मुझे मिल गया है।
16मैंने अपने बिस्तर पर मिसर के रंगीन कम्बल
बिछाए, 17उस पर मुर, ऊद और दारचीनी की
ख़ुशबू छिड़की है। 18आओ, हम सुबह तक
मुहब्बत का प्याला तह तक पी लें, हम इश्क़बाज़ी
से लुत्फ़अंदोज़ हों! 19क्योंकि मेरा ख़ाविंद घर में
नहीं है, वह लंबे सफ़र के लिए रवाना हुआ है।
20वह बटवे में पैसे डालकर चला गया है और पूरे
चाँद तक वापस नहीं आएगा।”

21ऐसी बातें करते करते औरत ने नौजवान
को तरग़ीब देकर अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से
वरग़लाया। 22नौजवान सीधा उसके पीछे यों हो
लिया जिस तरह बैल ज़बह होने के लिए जाता या
हिरन उछलकर फंदे में फँस जाता है। 23क्योंकि
एक वक़्त आएगा कि तीर उसका दिल चीर
डालेगा। लेकिन फ़िलहाल उस की हालत उस
चिड़िया की मानिंद है जो उड़कर जाल में आ जाती
और ख़याल तक नहीं करती कि मेरी जान ख़तरे
में है।

24चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, मेरे मुँह की बातों
पर ध्यान दो! 25तेरा दिल भटककर उस तरफ़
रुख़ न करे जहाँ ज़िनाकार औरत फिरती है, ऐसा
न हो कि तू आवारा होकर उस की राहों में उलझ
जाए। 26क्योंकि उनकी तादाद बड़ी है जिन्हें उसने
गिराकर मौत के घाट उतारा है, उसने मुतअद्दिद
लोगों को मार डाला है। 27उसका घर पाताल का
रास्ता है जो लोगों को मौत की कोठड़ियों तक
पहुँचाता है।

हिक्मत की दावत और वादा

8 सुनो! क्या हिकमत आवाज़ नहीं देती?
हाँ, समझ ऊँची आवाज़ से एलान करती
है। 2वह बुलंदियों पर खड़ी है, उस जगह जहाँ
तमाम रास्ते एक दूसरे से मिलते हैं। 3शहर के
दरवाज़ों पर जहाँ लोग निकलते और दाख़िल होते
हैं वहाँ हिकमत ज़ोरदार आवाज़ से पुकारती है,

4“ऐ मर्दो, मैं तुम्हीं को पुकारती हूँ, तमाम
इनसानों को आवाज़ देती हूँ।

5ऐ सादालौहो, होशियारी सीख लो! ऐ
अहमक़ो, समझ अपना लो!

6सुनो, क्योंकि मैं शराफ़त की बातें करती हूँ,
और मेरे होंट सच्चाई पेश करते हैं।

7मेरा मुँह सच बोलता है, क्योंकि मेरे होंट
बेदीनी से घिन खाते हैं।

8जो भी बात मेरे मुँह से निकले वह रास्त है,
एक भी पेचदार या टेढ़ी नहीं है।

9समझदार जानता है कि मेरी बातें सब दुरुस्त
हैं, इल्म रखनेवाले को मालूम है कि वह सहीह हैं।

10चाँदी की जगह मेरी तरबियत और ख़ा-
लिस सोने के बजाए इल्मो-इरफ़ान अपना लो।

11क्योंकि हिकमत मोतियों से कहीं बेहतर
है, कोई भी ख़ज़ाना उसका मुक़ाबला नहीं कर
सकता।

12मैं जो हिकमत हूँ होशियारी के साथ बसती
हूँ, और मैं तमीज़ का इल्म रखती हूँ।

13जो रब का ख़ौफ़ मानता है वह बुराई से
नफ़रत करता है। मुझे ग़ुरूर, तकब्बुर, ग़लत
चाल-चलन और टेढ़ी बातों से नफ़रत है।

14मेरे पास अच्छा मशवरा और कामयाबी है।
मेरा दूसरा नाम समझ है, और मुझे क़ुव्वत हासिल
है।

15मेरे वसीले से बादशाह सलतनत और
हुक्मरान रास्त फ़ैसले करते हैं।

16मेरे ज़रीए रईस और शुरफ़ा बल्कि तमाम
आदिल मुंसिफ़ हुकूमत करते हैं।

17जो मुझे प्यार करते हैं उन्हें मैं प्यार करती
हूँ, और जो मुझे ढूँडते हैं वह मुझे पा लेते हैं।

18मेरे पास इज़्ज़तो-दौलत, शानदार माल और
रास्ती है।

19मेरा फल सोने बल्कि ख़ालिस सोने से कहीं
बेहतर है, मेरी पैदावार ख़ालिस चाँदी पर सबक़त
रखती है।
20मैं रास्ती की राह पर ही चलती हूँ, वहीं जहाँ
इनसाफ़ है।
21जो मुझसे मुहब्बत रखते हैं उन्हें मैं मीरास में
दौलत मुहैया करती हूँ। उनके गोदाम भरे रहते हैं।

हिक्मत का तख़लीक़ में हिस्सा

22जब रब तख़लीक़ का सिलसिला अमल में
लाया तो पहले उसने मुझे ही बनाया। क़दीम
ज़माने में मैं उसके दीगर कामों से पहले ही वुजूद
में आई।
23मुझे अज़ल से मुक़र्रर किया गया, इब्तिदा
ही से जब दुनिया अभी पैदा नहीं हुई थी।
24न समुंदर की गहराइयाँ, न कसरत से
फूटनेवाले चश्मे थे जब मैंने जन्म लिया।
25न पहाड़ अपनी अपनी जगह पर क़ायम हुए
थे, न पहाड़ियाँ थीं जब मैं पैदा हुई।
26उस वक़्त अल्लाह ने न ज़मीन, न उसके
मैदान, और न दुनिया के पहले ढेले बनाए थे।
27जब उसने आसमान को उस की जगह पर
लगाया और समुंदर की गहराइयों पर ज़मीन का
इलाक़ा मुक़र्रर किया तो मैं साथ थी।
28जब उसने आसमान पर बादलों और
गहराइयों में सरचश्मों का इंतज़ाम मज़बूत किया
तो मैं साथ थी।
29जब उसने समुंदर की हद्दें मुक़र्रर कीं और
हुक्म दिया कि पानी उनसे तजावुज़ न करे, जब
उसने ज़मीन की बुनियादें अपनी अपनी जगह पर
रखीं
30तो मैं माहिर कारीगर की हैसियत से उसके
साथ थी। रोज़ बरोज़ मैं लुत्फ़ का बाइस थी, हर
वक़्त उसके हुज़ूर रंगरलियाँ मनाती रही।
31मैं उस की ज़मीन की सतह पर रंग-
रलियाँ मनाती और इनसान से लुत्फ़अंदोज़ होती
रही।
32चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, क्योंकि मुबारक
हैं वह जो मेरी राहों पर चलते हैं।
33मेरी तरबियत मानकर दानिशमंद बन जाओ,
उसे नज़रंदाज़ मत करना।
34मुबारक है वह जो मेरी सुने, जो रोज़ बरोज़
मेरे दरवाज़े पर चौकस खड़ा रहे, रोज़ाना मेरी
चौखट पर हाज़िर रहे।
35क्योंकि जो मुझे पाए वह ज़िंदगी और रब
की मंज़ूरी पाता है।
36लेकिन जो मुझे पाने से क़ासिर रहे वह
अपनी जान पर ज़ुल्म करता है, जो भी मुझसे
नफ़रत करे उसे मौत प्यारी है।”

हिक्मत की ज़ियाफ़त

9 हिकमत ने अपना घर तामीर करके अपने
लिए सात सतून तराश लिए हैं।
2अपने जानवरों को ज़बह करने और अप-
नी मै तैयार करने के बाद उसने अपनी मेज़ बिछाई
है। 3अब उसने अपनी नौकरानियों को भेजा है,
और ख़ुद भी लोगों को शहर की बुलंदियों से
ज़ियाफ़त करने की दावत देती है,
4“जो सादालौह है, वह मेरे पास आए।”
नासमझ लोगों से वह कहती है, 5“आओ, मेरी
रोटी खाओ, वह मै पियो जो मैंने तैयार कर रखी
है। 6अपनी सादालौह राहों से बाज़ आओ तो जीते
रहोगे, समझ की राह पर चल पड़ो।”

7जो लान-तान करनेवाले को तालीम दे उस की
अपनी रुसवाई हो जाएगी, और जो बेदीन को डाँटे
उसे नुक़सान पहुँचेगा। 8लान-तान करनेवाले की
मलामत न कर वरना वह तुझसे नफ़रत करेगा।
दानिशमंद की मलामत कर तो वह तुझसे मुहब्बत
करेगा। 9दानिशमंद को हिदायत दे तो उस की
हिकमत मज़ीद बढ़ेगी, रास्तबाज़ को तालीम दे
तो वह अपने इल्म में इज़ाफ़ा करेगा।
10रब का ख़ौफ़ मानने से ही हिकमत शुरू होती
है, क़ुद्दूस ख़ुदा को जानने से ही समझ हासिल
होती है। 11मुझसे ही तेरी उम्र के दिनों और

सालों में इज़ाफ़ा होगा। 12अगर तू दानिशमंद हो
तो ख़ुद इससे फ़ायदा उठाएगा, अगर लान-तान
करनेवाला हो तो तुझे ही इसका नुक़सान झेलना
पड़ेगा।

हमाक़त बीबी की ज़ियाफ़त

13हमाक़त बीबी बेलगाम और नासमझ है, वह
कुछ नहीं जानती। 14उसका घर शहर की बुलंदी
पर वाक़े है। दरवाज़े के पास कुरसी पर बैठी 15वह
गुज़रनेवालों को जो सीधी राह पर चलते हैं ऊँची
आवाज़ से दावत देती है, 16“जो सादालौह है वह
मेरे पास आए।”

जो नासमझ हैं उनसे वह कहती है, 17“चोरी
का पानी मीठा और पोशीदगी में खाई गई रोटी
लज़ीज़ होती है।”

18लेकिन उन्हें मालूम नहीं कि हमाक़त बीबी
के घर में सिर्फ़ मुरदों की रूहें बसती हैं, कि उसके
मेहमान पाताल की गहराइयों में रहते हैं।

सुलेमान की हिकमत भरी हिदायात

10 ज़ैल में सुलेमान की अमसाल
क़लमबंद हैं।

ज़िंदगीबख़्श बातें

दानिशमंद बेटा अपने बाप को ख़ुशी दिलाता
जबकि अहमक़ बेटा अपनी माँ को दुख पहुँचाता
है।

2ख़ज़ानों का कोई फ़ायदा नहीं अगर वह बेदीन
तरीक़ों से जमा हो गए हों, लेकिन रास्तबाज़ी मौत
से बचाए रखती है।

3रब रास्तबाज़ को भूके मरने नहीं देता, लेकिन
बेदीनों का लालच रोक देता है।

4ढीले हाथ ग़ुरबत और मेहनती हाथ दौलत की
तरफ़ ले जाते हैं।

5जो गरमियों में फ़सल जमा करता है वह
दानिशमंद बेटा है जबकि जो फ़सल की कटाई
के वक़्त सोया रहता है वह वालिदैन के लिए शर्म
का बाइस है।

6रास्तबाज़ का सर बरकत के ताज से आरास्ता
रहता है जबकि बेदीनों के मुँह पर ज़ुल्म का परदा
पड़ा रहता है।

7लोग रास्तबाज़ को याद करके उसे मुबारक
कहते हैं, लेकिन बेदीन का नाम सड़कर मिट
जाएगा।

8जो दिल से दानिशमंद है वह अहकाम क़बूल
करता है, लेकिन बकवासी तबाह हो जाएगा।

9जिसका चाल-चलन बेइलज़ाम है वह सुकून
से ज़िंदगी गुज़ारता है, लेकिन जो टेढ़ा रास्ता
इख़्तियार करे उसे पकड़ा जाएगा।

10आँख मारनेवाला दुख पहुँचाता है, और
बकवासी तबाह हो जाएगा।

11रास्तबाज़ का मुँह ज़िंदगी का सरचश्मा है,
लेकिन बेदीन के मुँह पर ज़ुल्म का परदा पड़ा रहता
है।

12नफ़रत झगड़े छेड़ती रहती जबकि मुहब्बत
तमाम ख़ताओं पर परदा डाल देती है।

13समझदार के होंटों पर हिकमत पाई जाती
है, लेकिन नासमझ सिर्फ़ डंडे का पैग़ाम समझता
है।

14दानिशमंद अपना इल्म महफ़ूज़ रखते हैं,
लेकिन अहमक़ का मुँह जल्द ही तबाही की तरफ़
ले जाता है।

15अमीर की दौलत क़िलाबंद शहर है जिसमें
वह महफ़ूज़ है जबकि ग़रीब की ग़ुरबत उस की
तबाही का बाइस है।

16जो कुछ रास्तबाज़ कमा लेता है वह ज़िंदगी
का बाइस है, लेकिन बेदीन अपनी रोज़ी गुनाह
करने के लिए इस्तेमाल करता है।

17जो तरबियत क़बूल करे वह दूसरों को
ज़िंदगी की राह पर लाता है, जो नसीहत नज़रंदाज़
करे वह दूसरों को सहीह राह से दूर ले जाता है।

18जो अपनी नफ़रत छुपाए रखे वह झूट
बोलता है, जो दूसरों के बारे में ग़लत ख़बरें फैलाए
वह अहमक़ है।

19जहाँ बहुत बातें की जाती हैं वहाँ गुनाह भी आ मौजूद होता है, जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह दानिशमंद है।

20रास्तबाज़ की ज़बान उम्दा चाँदी है जबकि बेदीन के दिल की कोई क़दर नहीं।

21रास्तबाज़ की ज़बान बहुतों की परवरिश करती है,[a] लेकिन अहमक़ अपनी बेअक़्ली के बाइस हलाक हो जाते हैं।

22रब की बरकत दौलत का बाइस है, हमारी अपनी मेहनत-मशक़्क़त इसमें इज़ाफ़ा नहीं करती।

23अहमक़ ग़लत काम से अपना दिल बहलाता, लेकिन समझदार हिकमत से लुत्फ़अंदोज़ होता है।

24जिस चीज़ से बेदीन दहशत खाता है वही उस पर आएगी, लेकिन रास्तबाज़ की आरज़ू पूरी हो जाएगी।

25जब तूफ़ान आते हैं तो बेदीन का नामो-निशान मिट जाता जबकि रास्तबाज़ हमेशा तक क़ायम रहता है।

26जिस तरह दाँत सिरके से और आँखें धुएँ से तंग आ जाती हैं उसी तरह वह तंग आ जाता है जो सुस्त आदमी से काम करवाता है।

27जो रब का ख़ौफ़ माने उस की ज़िंदगी के दिनों में इज़ाफ़ा होता है जबकि बेदीन की ज़िंदगी वक़्त से पहले ही ख़त्म हो जाती है।

28रास्तबाज़ आख़िरकार ख़ुशी मनाएँगे, क्योंकि उनकी उम्मीद बर आएगी। लेकिन बेदीनों की उम्मीद जाती रहेगी।

29रब की राह बेइलज़ाम शख़्स के लिए पनाहगाह, लेकिन बदकार के लिए तबाही का बाइस है।

30रास्तबाज़ कभी डाँवाँडोल नहीं होगा, लेकिन बेदीन मुल्क में आबाद नहीं रहेंगे।

31रास्तबाज़ का मुँह हिकमत का फल लाता रहता है, लेकिन कजगो ज़बान को काट डाला जाएगा।

32रास्तबाज़ के होंट जानते हैं कि अल्लाह को क्या पसंद है, लेकिन बेदीन का मुँह टेढ़ी बातें ही जानता है।

11 रब ग़लत तराज़ू से घिन खाता है, वह सहीह तराज़ू ही से ख़ुश होता है।

2जहाँ तकब्बुर है वहाँ बदनामी भी क़रीब ही रहती है, लेकिन जो हलीम है उसके दामन में हिकमत रहती है।

3सीधी राह पर चलनेवालों की दियानतदारी उनकी राहनुमाई करती जबकि बेवफ़ाओं की नमकहरामी उन्हें तबाह करती है।

4ग़ज़ब के दिन दौलत का कोई फ़ायदा नहीं जबकि रास्तबाज़ी लोगों की जान को छुड़ाती है।

5बेइलज़ाम की रास्तबाज़ी उसका रास्ता हमवार बना देती है जबकि बेदीन की बुरी हरकतें उसे गिरा देती हैं।

6सीधी राह पर चलनेवालों की रास्तबाज़ी उन्हें छुड़ा देती जबकि बेवफ़ाओं का लालच उन्हें फँसा देता है।

7दम तोड़ते वक़्त बेदीन की सारी उम्मीद जाती रहती है, जिस दौलत की तवक़्क़ो उसने की वह जाती रहती है।

8रास्तबाज़ की जान मुसीबत से छूट जाती है, और उस की जगह बेदीन फँस जाता है।

9काफ़िर अपने मुँह से अपने पड़ोसी को तबाह करता है, लेकिन रास्तबाज़ों का इल्म उन्हें छुड़ाता है।

10जब रास्तबाज़ कामयाब हों तो पूरा शहर जशन मनाता है, जब बेदीन हलाक हों तो ख़ुशी के नारे बुलंद हो जाते हैं।

11सीधी राह पर चलनेवालों की बरकत से शहर तरक़्क़ी करता है, लेकिन बेदीन के मुँह से वह मिसमार हो जाता है।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : रास्तबाज़ के होंट बहुतों को चराते हैं।

12नासमझ आदमी अपने पड़ोसी को हक़ीर जानता है जबकि समझदार आदमी ख़ामोश रहता है।

13तोहमत लगानेवाला दूसरों के राज़ फ़ाश करता है, लेकिन क़ाबिले-एतमाद शख़्स वह भेद पोशीदा रखता है जो उसके सुपुर्द किया गया हो।

14जहाँ क़ियादत की कमी है वहाँ क़ौम का तनज़्ज़ुल यक़ीनी है, जहाँ मुशीरों की कसरत है वहाँ क़ौम फ़तहयाब रहेगी।

15जो अजनबी का ज़ामिन हो जाए उसे यक़ीनन नुक़सान पहुँचेगा, जो ज़ामिन बनने से इनकार करे वह महफ़ूज़ रहेगा।

16नेक औरत इज़्ज़त से और ज़ालिम आदमी दौलत से लिपटे रहते हैं।

17शफ़ीक़ का अच्छा सुलूक उसी के लिए फ़ायदामंद है जबकि ज़ालिम का बुरा सुलूक उसी के लिए नुक़सानदेह है।

18जो कुछ बेदीन कमाता है वह फ़रेबदेह है, लेकिन जो रास्ती का बीज बोए उसका अज्र यक़ीनी है।

19रास्तबाज़ी का फल ज़िंदगी है जबकि बुराई के पीछे भागनेवाले का अंजाम मौत है।

20रब कजदिलों से घिन खाता है, वह बेइलज़ाम राह पर चलनेवालों ही से ख़ुश होता है।

21यक़ीन करो, बदकार सज़ा से नहीं बचेगा जबकि रास्तबाज़ों के फ़रज़ंद छूट जाएंगे।

22जिस तरह सुअर की थूथनी में सोने का छल्ला खटकता है उसी तरह ख़ूबसूरत औरत की बेतमीज़ी खटकती है।

23अल्लाह रास्तबाज़ों की आरज़ू अच्छी चीज़ों से पूरी करता है, लेकिन उसका ग़ज़ब बेदीनों की उम्मीद पर नाज़िल होता है।

24एक आदमी की दौलत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह फ़ैयाज़दिली से तक़सीम करता है। दूसरे की ग़ुरबत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह हद से ज़्यादा कंजूस है।

25फ़ैयाज़दिल ख़ुशहाल रहेगा, जो दूसरों को तरो-ताज़ा करे वह ख़ुद ताज़ादम रहेगा।

26लोग गंदुम के ज़ख़ीराअंदोज़ पर लानत भेजते हैं, लेकिन जो गंदुम को बाज़ार में आने देता है उसके सर पर बरकत आती है।

27जो भलाई की तलाश में रहे वह अल्लाह की मंज़ूरी चाहता है, लेकिन जो बुराई की तलाश में रहे वह ख़ुद बुराई के फंदे में फँस जाएगा।

28जो अपनी दौलत पर भरोसा रखे वह गिर जाएगा, लेकिन रास्तबाज़ हरे-भरे पत्तों की तरह फलें-फूलेंगे।

29जो अपने घर में गड़बड़ पैदा करे वह मीरास में हवा ही पाएगा। अहमक़ दानिशमंद का नौकर बनेगा।

30रास्तबाज़ का फल ज़िंदगी का दरख़्त है, और दानिशमंद आदमी जानें जीतता है।

31रास्तबाज़ को ज़मीन पर ही अज्र मिलता है। तो फिर बेदीन और गुनाहगार सज़ा क्यों न पाएँ?

12 जिसे इल्मो-इरफ़ान प्यारा है उसे तरबियत भी प्यारी है, जिसे नसीहत से नफ़रत है वह बेअक़्ल है।

2रब अच्छे आदमी से ख़ुश होता है जबकि वह साज़िश करनेवाले को क़ुसूरवार ठहराता है।

3इनसान बेदीनी की बुनियाद पर क़ायम नहीं रह सकता जबकि रास्तबाज़ की जड़ें उखाड़ी नहीं जा सकतीं।

4सुघड़ बीवी अपने शौहर का ताज है, लेकिन जो शौहर की रुसवाई का बाइस है वह उस की हड्डियों में सड़ाहट की मानिंद है।

5रास्तबाज़ के ख़यालात मुंसिफ़ाना हैं जबकि बेदीनों के मनसूबे फ़रेबदेह हैं।

6बेदीनों के अलफ़ाज़ लोगों को क़त्ल करने की ताक में रहते हैं जबकि सीधी राह पर चलनेवालों की बातें लोगों को छुड़ा लेती हैं।

7बेदीनों को ख़ाक में यों मिलाया जाता है कि उनका नामो-निशान तक नहीं रहता, लेकिन रास्तबाज़ का घर क़ायम रहता है।

8किसी की जितनी अक़्लो-समझ है उतना ही लोग उस की तारीफ़ करते हैं, लेकिन जिसके ज़हन में फ़ुतूर है उसे हक़ीर जाना जाता है।

9निचले तबक़े का जो आदमी अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा करता है वह उस आदमी से कहीं बेहतर है जो नख़रा बघारता है गो उसके पास रोटी भी नहीं है।

10रास्तबाज़ अपने मवेशी का भी ख़याल करता है जबकि बेदीन का दिल ज़ालिम ही ज़ालिम है।

11जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे उसके पास कसरत का खाना होगा, लेकिन जो फ़ज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह नासमझ है।

12बेदीन दूसरों को जाल में फँसाने से अपना दिल बहलाता है, लेकिन रास्तबाज़ की जड़ फलदार होती है।

13शरीर अपनी ग़लत बातों के जाल में उलझ जाता जबकि रास्तबाज़ मुसीबत से बच जाता है।

14इनसान अपने मुँह के फल से ख़ूब सेर हो जाता है, और जो काम उसके हाथों ने किया उसका अज्र उसे ज़रूर मिलेगा।

15अहमक़ की नज़र में उस की अपनी राह ठीक है, लेकिन दानिशमंद दूसरों के मशवरे पर ध्यान देता है।

16अहमक़ एकदम अपनी नाराज़ी का इज़हार करता है, लेकिन दाना अपनी बदनामी छुपाए रखता है।

17दियानतदार गवाह खुले तौर पर सच्चाई बयान करता है जबकि झूटा गवाह धोका ही धोका पेश करता है।

18गप्पें हाँकनेवाले की बातें तलवार की तरह ज़ख़मी कर देती हैं जबकि दानिशमंद की ज़बान शफ़ा देती है।

19सच्चे होंट हमेशा तक क़ायम रहते हैं जबकि झूटी ज़बान एक ही लमहे के बाद ख़त्म हो जाती है।

20बुरे मनसूबे बाँधनेवाले का दिल धोके से भरा रहता जबकि सलामती के मशवरे देनेवाले का दिल ख़ुशी से छलकता है।

21कोई भी आफ़त रास्तबाज़ पर नहीं आएगी जबकि दुख तकलीफ़ बेदीनों का दामन कभी नहीं छोड़ेगी।

22रब फ़रेबदेह होंटों से घिन खाता है, लेकिन जो वफ़ादारी से ज़िंदगी गुज़ारते हैं उनसे वह ख़ुश होता है।

23समझदार अपना इल्म छुपाए रखता जबकि अहमक़ अपने दिल की हमाक़त बुलंद आवाज़ से सबको पेश करता है।

24जिसके हाथ मेहनती हैं वह हुकूमत करेगा, लेकिन जिसके हाथ ढीले हैं उसे बेगार में काम करना पड़ेगा।

25जिसके दिल में परेशानी है वह दबा रहता है, लेकिन कोई भी अच्छी बात उसे ख़ुशी दिलाती है।

26रास्तबाज़ अपनी चरागाह मालूम कर लेता है, लेकिन बेदीनों की राह उन्हें आवारा फिरने देती है।

27ढीला आदमी अपना शिकार नहीं पकड़ सकता जबकि मेहनती शख़्स कसरत का माल हासिल कर लेता है।

28रास्ती की राह में ज़िंदगी है, लेकिन ग़लत राह मौत तक पहुँचाती है।

13 दानिशमंद बेटा अपने बाप की तरबियत क़बूल करता है, लेकिन तानाज़न परवा ही नहीं करता अगर कोई उसे डाँटे।

2इनसान अपने मुँह के अच्छे फल से ख़ूब सेर हो जाता है, लेकिन बेवफ़ा के दिल में ज़ुल्म का लालच रहता है।

3जो अपनी ज़बान क़ाबू में रखे वह अपनी ज़िंदगी महफ़ूज़ रखता है, जो अपनी ज़बान को बेलगाम छोड़ दे वह तबाह हो जाएगा।

4काहिल आदमी लालच करता है, लेकिन उसे कुछ नहीं मिलता जबकि मेहनती शख़्स की आरज़ू पूरी हो जाती है।

5रास्तबाज़ झूट से नफ़रत करता है, लेकिन बेदीन शर्म और रुसवाई का बाइस है।

6रास्ती बेइलज़ाम की हिफ़ाज़त करती जबकि बेदीनी गुनाहगार को तबाह कर देती है।

7कुछ लोग अमीर का रूप भरकर फिरते हैं गो ग़रीब हैं। दूसरे ग़रीब का रूप भरकर फिरते हैं गो अमीरतरीन हैं।

8कभी अमीर को अपनी जान छुड़ाने के लिए ऐसा तावान देना पड़ता है कि तमाम दौलत जाती रहती है, लेकिन ग़रीब की जान इस क़िस्म की धमकी से बची रहती है।

9रास्तबाज़ की रौशनी चमकती रहती[a] जबकि बेदीन का चराग़ बुझ जाता है।

10मग़रूरों में हमेशा झगड़ा होता है जबकि दानिशमंद सलाह-मशवरे के मुताबिक़ ही चलते हैं।

11जल्दबाज़ी से हासिलशुदा दौलत जल्द ही ख़त्म हो जाती है जबकि जो रफ़्ता रफ़्ता अपना माल जमा करे वह उसे बढ़ाता रहेगा।

12जो उम्मीद वक़्त पर पूरी न हो जाए वह दिल को बीमार कर देती है, लेकिन जो आरज़ू पूरी हो जाए वह ज़िंदगी का दरख़्त है।

13जो अच्छी हिदायत को हक़ीर जाने उसे नुक़सान पहुँचेगा, लेकिन जो हुक्म माने उसे अज्र मिलेगा।

14दानिशमंद की हिदायत ज़िंदगी का सरचश्मा है जो इनसान को मोहलक फंदों से बचाए रखती है।

15अच्छी समझ मंज़ूरी अता करती है, लेकिन बेवफ़ा की राह अबदी तबाही का बाइस है।

16ज़हीन हर काम सोच-समझकर करता, लेकिन अहमक़ तमाम नज़रों के सामने ही अपनी हमाक़त की नुमाइश करता है।

17बेदीन क़ासिद मुसीबत में फँस जाता जबकि वफ़ादार क़ासिद शफ़ा का बाइस है।

18जो तरबियत की परवा न करे उसे ग़ुरबत और शरमिंदगी हासिल होगी, लेकिन जो दूसरे की नसीहत मान जाए उसका एहतराम किया जाएगा।

19जो आरज़ू पूरी हो जाए वह दिल को तरो-ताज़ा करती है, लेकिन अहमक़ बुराई से दरेग़ करने से घिन खाता है।

20जो दानिशमंदों के साथ चले वह ख़ुद दानिशमंद हो जाएगा, लेकिन जो अहमक़ों के साथ चले उसे नुक़सान पहुँचेगा।

21मुसीबत गुनाहगार का पीछा करती है जबकि रास्तबाज़ों का अज्र ख़ुशहाली है।

22नेक आदमी के बेटे और पोते उस की मीरास पाएँगे, लेकिन गुनाहगार की दौलत रास्तबाज़ के लिए महफ़ूज़ रखी जाएगी।

23ग़रीब का खेत कसरत की फ़सलें मुहैया कर सकता है, लेकिन जहाँ इनसाफ़ नहीं वहाँ सब कुछ छीन लिया जाता है।

24जो अपने बेटे को तंबीह नहीं करता वह उससे नफ़रत करता है। जो उससे मुहब्बत रखे वह वक़्त पर उस की तरबियत करता है।

25रास्तबाज़ जी भरकर खाना खाता है, लेकिन बेदीन का पेट ख़ाली रहता है।

14 हिकमत बीबी अपना घर तामीर करती है, लेकिन हमाक़त बीबी अपने ही हाथों से उसे ढा देती है।

2जो सीधी राह पर चलता है वह अल्लाह का ख़ौफ़ मानता है, लेकिन जो ग़लत राह पर चलता है वह उसे हक़ीर जानता है।

3अहमक़ की बातों से वह डंडा निकलता है जो उसे उसके तकब्बुर की सज़ा देता है, लेकिन दानिशमंद के होंट उसे महफ़ूज़ रखते हैं।

4जहाँ बैल नहीं वहाँ चरनी ख़ाली रहती है, बैल की ताक़त ही से कसरत की फ़सलें पैदा होती हैं।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : ख़ुशी मनाती।

5वफ़ादार गवाह झूट नहीं बोलता, लेकिन झूटे गवाह के मुँह से झूट निकलता है।

6तानाज़न हिकमत को ढूँडता है, लेकिन बेफ़ायदा। समझदार के इल्म में आसानी से इज़ाफ़ा होता है।

7अहमक़ से दूर रह, क्योंकि तू उस की बातों में इल्म नहीं पाएगा।

8ज़हीन की हिकमत इसमें है कि वह सोच-समझकर अपनी राह पर चले, लेकिन अहमक़ की हमाक़त सरासर धोका ही है।

9अहमक़ अपने क़ुसूर का मज़ाक़ उड़ाते हैं, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाले रब को मंज़ूर हैं।

10हर दिल की अपनी ही तलख़ी होती है जिससे सिर्फ़ वही वाक़िफ़ है, और उस की ख़ुशी में भी कोई और शरीक नहीं हो सकता।

11बेदीन का घर तबाह हो जाएगा, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाले का ख़ैमा फले-फूलेगा।

12ऐसी राह भी होती है जो देखने में ठीक तो लगती है गो उसका अंजाम मौत है।

13दिल हँसते वक़्त भी रंजीदा हो सकता है, और ख़ुशी के इख़्तिताम पर दुख ही बाक़ी रह जाता है।

14जिसका दिल बेवफ़ा है वह जी भरकर अपने चाल-चलन का कड़वा फल खाएगा जबकि नेक आदमी अपने आमाल के मीठे फल से सेर हो जाएगा।

15सादालौह हर एक की बात मान लेता है जबकि ज़हीन आदमी अपना हर क़दम सोच-समझकर उठाता है।

16दानिशमंद डरते डरते ग़लत काम से दरेग़ करता है, लेकिन अहमक़ ख़ुदएतमाद है और एकदम मुश्तइल हो जाता है।

17ग़ुसीला आदमी अहमक़ाना हरकतें करता है, और लोग साज़िशी शख़्स से नफ़रत करते हैं।

18सादालौह मीरास में हमाक़त पाता है जबकि ज़हीन आदमी का सर इल्म के ताज से आरास्ता रहता है।

19शरीरों को नेकों के सामने झुकना पड़ेगा, और बेदीनों को रास्तबाज़ के दरवाज़े पर औंधे मुँह होना पड़ेगा।

20ग़रीब के हमसाये भी उससे नफ़रत करते हैं जबकि अमीर के बेशुमार दोस्त होते हैं।

21जो अपने पड़ोसी को हक़ीर जाने वह गुनाह करता है। मुबारक है वह जो ज़रूरतमंद पर तरस खाता है।

22बुरे मनसूबे बाँधनेवाले सब आवारा फिरते हैं। लेकिन अच्छे मनसूबे बाँधनेवाले शफ़क़त और वफ़ा पाएँगे।

23मेहनत-मशक़्क़त करने में हमेशा फ़ायदा होता है, जबकि ख़ाली बातें करने से लोग ग़रीब हो जाते हैं।

24दानिशमंदों का अज्र दौलत का ताज है जबकि अहमक़ों का अज्र हमाक़त ही है।

25सच्चा गवाह जानें बचाता है जबकि झूटा गवाह फ़रेबदेह है।

26जो रब का ख़ौफ़ माने उसके पास महफ़ूज़ क़िला है जिसमें उस की औलाद भी पनाह ले सकती है।

27रब का ख़ौफ़ ज़िंदगी का सरचश्मा है जो इनसान को मोहलक फंदों से बचाए रखता है।

28जितनी आबादी मुल्क में है उतनी ही बादशाह की शानो-शौकत है। रिआया की कमी हुक्मरान के तनज़्ज़ुल का बाइस है।

29तहम्मुल करनेवाला बड़ी समझदारी का मालिक है, लेकिन ग़ुसीला आदमी अपनी हमाक़त का इज़हार करता है।

30पुरसुकून दिल जिस्म को ज़िंदगी दिलाता जबकि हसद हड्डियों को गलने देता है।

31जो पस्तहाल पर ज़ुल्म करे वह उसके ख़ालिक़ की तहक़ीर करता है जबकि जो ज़रूरतमंद पर तरस खाए वह अल्लाह का एहतराम करता है।

32बेदीन की बुराई उसे ख़ाक में मिला देती है, लेकिन रास्तबाज़ मरते वक़्त भी अल्लाह में पनाह लेता है।

33हिकमत समझदार के दिल में आराम करती है, और वह अहमक़ों के दरमियान भी ज़ाहिर हो जाती है।

34रास्ती से हर क़ौम सरफ़राज़ होती है जबकि गुनाह से उम्मतें रुसवा हो जाती हैं।

35बादशाह दानिशमंद मुलाज़िम से ख़ुश होता है, लेकिन शर्मनाक काम करनेवाला मुलाज़िम उसके ग़ुस्से का निशाना बन जाता है।

15 नरम जवाब ग़ुस्सा ठंडा करता, लेकिन तुरश बात तैश दिलाती है।

2दानिशमंदों की ज़बान इल्मो-इरफ़ान फैलाती है जबकि अहमक़ का मुँह हमाक़त का ज़ोर से उबलनेवाला चश्मा है।

3रब की आँखें हर जगह मौजूद हैं, वह बुरे और भले सब पर ध्यान देती हैं।

4नरम ज़बान ज़िंदगी का दरख़्त है जबकि फ़रेबदेह ज़बान शिकस्तादिल कर देती है।

5अहमक़ अपने बाप की तरबियत को हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत माने वह दानिशमंद है।

6रास्तबाज़ के घर में बड़ा ख़ज़ाना होता है, लेकिन जो कुछ बेदीन हासिल करता है वह तबाही का बाइस है।

7दानिशमंदों के होंट इल्मो-इरफ़ान का बीज बिखेर देते हैं, लेकिन अहमक़ों का दिल ऐसा नहीं करता।

8रब बेदीनों की क़ुरबानी से घिन खाता, लेकिन सीधी राह पर चलनेवालों की दुआ से ख़ुश होता है।

9रब बेदीन की राह से घिन खाता, लेकिन रास्ती का पीछा करनेवाले से प्यार करता है।

10जो सहीह राह को तर्क करे उस की सख़्त तादीब की जाएगी, जो नसीहत से नफ़रत करे वह मर जाएगा।

11पाताल और आलमे-अरवाह रब को साफ़ नज़र आते हैं। तो फिर इनसानों के दिल उसे क्यों न साफ़ दिखाई दें?

12तानाज़न को दूसरों की नसीहत पसंद नहीं आती, इसलिए वह दानिशमंदों के पास नहीं जाता।

13जिसका दिल ख़ुश है उसका चेहरा खुला रहता है, लेकिन जिसका दिल परेशान है उस की रूह शिकस्ता रहती है।

14समझदार का दिल इल्मो-इरफ़ान की तलाश में रहता, लेकिन अहमक़ हमाक़त की चरागाह में चरता रहता है।

15मुसीबतज़दा के तमाम दिन बुरे हैं, लेकिन जिसका दिल ख़ुश है वह रोज़ाना जशन मनाता है।

16जो ग़रीब रब का ख़ौफ़ मानता है उसका हाल उस करोड़पति से कहीं बेहतर है जो बड़ी बेचैनी से ज़िंदगी गुज़ारता है।

17जहाँ मुहब्बत है वहाँ सब्ज़ी का सालन बहुत है, जहाँ नफ़रत है वहाँ मोटे-ताज़े बछड़े की ज़ियाफ़त भी बेफ़ायदा है।

18ग़ुसीला आदमी झगड़े छेड़ता रहता जबकि तहम्मुल करनेवाला लोगों के ग़ुस्से को ठंडा कर देता है।

19काहिल का रास्ता काँटेदार बाड़ की मानिंद है, लेकिन दियानतदारों की राह पक्की सड़क ही है।

20दानिशमंद बेटा अपने बाप के लिए ख़ुशी का बाइस है, लेकिन अहमक़ अपनी माँ को हक़ीर जानता है।

21नासमझ आदमी हमाक़त से लुत्फ़-अंदोज़ होता, लेकिन समझदार आदमी सीधी राह पर चलता है।

22जहाँ सलाह-मशवरा नहीं होता वहाँ मनसूबे नाकाम रह जाते हैं, जहाँ बहुत-से मुशीर होते हैं वहाँ कामयाबी होती है।

23इनसान मौज़ूँ जवाब देने से ख़ुश हो जाता है, वक़्त पर मुनासिब बात कितनी अच्छी होती है।

24ज़िंदगी की राह चढ़ती रहती है ताकि समझदार उस पर चलते हुए पाताल में उतरने से बच जाए।

25रब मुतकब्बिर का घर ढा देता, लेकिन बेवा
की ज़मीन की हुदूद महफ़ूज़ रखता है।
26रब बुरे मनसूबों से घिन खाता है, और
मेहरबान अलफ़ाज़ उसके नज़दीक पाक हैं।
27जो नाजायज़ नफ़ा कमाए वह अपने घर पर
आफ़त लाता है, लेकिन जो रिश्वत से नफ़रत रखे
वह जीता रहेगा।
28रास्तबाज़ का दिल सोच-समझकर जवाब
देता है, लेकिन बेदीन का मुँह ज़ोर से उबलनेवाला
चश्मा है जिससे बुरी बातें निकलती रहती हैं।
29रब बेदीनों से दूर रहता, लेकिन रास्त-
बाज़ की दुआ सुनता है।
30चमकती आँखें दिल को ख़ुशी दिलाती हैं,
अच्छी ख़बर पूरे जिस्म को तरो-ताज़ा कर देती
है।
31जो ज़िंदगीबख़्श नसीहत पर ध्यान दे वह
दानिशमंदों के दरमियान ही सुकूनत करेगा।
32जो तरबियत की परवा न करे वह अपने
आपको हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत पर
ध्यान दे उस की समझ में इज़ाफ़ा होता है।
33रब का ख़ौफ़ ही वह तरबियत है जिससे
इनसान हिकमत सीखता है। पहले फ़रोतनी
अपना ले, क्योंकि यही इज़्ज़त पाने का पहला
क़दम है।

16 इनसान दिल में मनसूबे बाँधता है,
लेकिन ज़बान का जवाब रब की तरफ़
से आता है।
2इनसान की नज़र में उस की तमाम राहें पाक-
साफ़ हैं, लेकिन रब ही रूहों की जाँच-पड़ताल
करता है।
3जो कुछ भी तू करना चाहे उसे रब के सुपुर्द
कर। तब ही तेरे मनसूबे कामयाब होंगे।
4रब ने सब कुछ अपने ही मक़ासिद पूरे करने
के लिए बनाया है। वह दिन भी पहले से मुक़र्रर है
जब बेदीन पर आफ़त आएगी।
5रब हर मग़रूर दिल से घिन खाता है। यक़ीनन
वह सज़ा से नहीं बचेगा।
6शफ़क़त और वफ़ादारी गुनाह का कफ़्फ़ारा
देती हैं। रब का ख़ौफ़ मानने से इनसान बुराई से
दूर रहता है।
7अगर रब किसी इनसान की राहों से ख़ुश हो
तो वह उसके दुश्मनों को भी उससे सुलह कराने
देता है।
8इनसाफ़ से थोड़ा-बहुत कमाना नाइन-
साफ़ी से बहुत दौलत जमा करने से कहीं बेहतर
है।
9इनसान अपने दिल में मनसूबे बाँधता रहता है,
लेकिन रब ही मुक़र्रर करता है कि वह आख़िरकार
किस राह पर चल पड़े।
10बादशाह के होंट गोया इलाही फ़ैसले पेश
करते हैं, उसका मुँह अदालत करते वक़्त बेवफ़ा
नहीं होता।
11रब दुरुस्त तराज़ू का मालिक है, उसी ने
तमाम बाटों का इंतज़ाम क़ायम किया।
12बादशाह बेदीनी से घिन खाता है, क्योंकि
उसका तख़्त रास्तबाज़ी की बुनियाद पर मज़बूत
रहता है।
13बादशाह रास्तबाज़ होंटों से ख़ुश होता और
साफ़ बात करनेवाले से मुहब्बत रखता है।
14बादशाह का ग़ुस्सा मौत का पेशख़ैमा है,
लेकिन दानिशमंद उसे ठंडा करने के तरीक़े
जानता है।
15जब बादशाह का चेहरा खिल उठे तो मतलब
ज़िंदगी है। उस की मंज़ूरी मौसमे-बहार के तरो-
ताज़ा करनेवाले बादल की मानिंद है।
16हिकमत का हुसूल सोने से कहीं बेहतर और
समझ पाना चाँदी से कहीं बढ़कर है।
17दियानतदार की मज़बूत राह बुरे काम से दूर
रहती है, जो अपनी राह की पहरादारी करे वह
अपनी जान बचाए रखता है।
18तबाही से पहले ग़ुरूर और गिरने से पहले
तकब्बुर आता है।
19फ़रोतनी से ज़रूरतमंदों के दरमियान बसना
घमंडियों के लूटे हुए माल में शरीक होने से कहीं
बेहतर है।

20जो कलाम पर ध्यान दे वह ख़ुशहाल होगा, मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखे।

21जो दिल से दानिशमंद है उसे समझदार क़रार दिया जाता है, और मीठे अलफ़ाज़ तालीम में इज़ाफ़ा करते हैं।

22फ़हम अपने मालिक के लिए ज़िंदगी का सरचश्मा है, लेकिन अहमक़ की अपनी ही हमाक़त उसे सज़ा देती है।

23दानिशमंद का दिल समझ की बातें ज़बान पर लाता और तालीम देने में होंटों का सहारा बनता है।

24मेहरबान अलफ़ाज़ ख़ालिस शहद हैं, वह जान के लिए शीरीं और पूरे जिस्म को तरो-ताज़ा कर देते हैं।

25ऐसी राह भी होती है जो देखने में तो ठीक लगती है गो उसका अंजाम मौत है।

26मज़दूर का ख़ाली पेट उसे काम करने पर मजबूर करता, उस की भूक उसे हाँकती रहती है।

27शरीर कुरेद कुरेदकर ग़लत काम निकाल लेता, उसके होंटों पर झुलसानेवाली आग रहती है।

28कजरौ आदमी झगड़े छेड़ता रहता, और तोहमत लगानेवाला दिली दोस्तों में भी रख़ना डालता है।

29ज़ालिम अपने पड़ोसी को वरग़लाकर ग़लत राह पर ले जाता है।

30जो आँख मारे वह ग़लत मनसूबे बाँध रहा है, जो अपने होंट चबाए वह ग़लत काम करने पर तुला हुआ है।

31सफ़ेद बाल एक शानदार ताज हैं जो रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने से हासिल होते हैं।

32तहम्मुल करनेवाला सूरमे से सबक़त लेता है, जो अपने आपको क़ाबू में रखे वह शहर को शिकस्त देनेवाले से बरतर है।

33इनसान तो क़ुरा डालता है, लेकिन उसका हर फ़ैसला रब की तरफ़ से है।

17 जिस घर में रोटी का बासी टुकड़ा सुकून के साथ खाया जाए वह उस घर से कहीं बेहतर है जिसमें लड़ाई-झगड़ा है, ख़ाह उसमें कितनी शानदार ज़ियाफ़त क्यों न हो रही हो।

2समझदार मुलाज़िम मालिक के उस बेटे पर क़ाबू पाएगा जो शर्म का बाइस है, और जब भाइयों में मौरूसी मिलकियत तक़सीम की जाए तो उसे भी हिस्सा मिलेगा।

3सोना-चाँदी कुठाली में पिघलाकर पाक-साफ़ की जाती है, लेकिन रब ही दिल की जाँच-पड़ताल करता है।

4बदकार शरीर होंटों पर ध्यान और धोकेबाज़ तबाहकुन ज़बान पर तवज्जुह देता है।

5जो ग़रीब का मज़ाक़ उड़ाए वह उसके ख़ालिक़ की तहक़ीर करता है, जो दूसरे की मुसीबत देखकर ख़ुश हो जाए वह सज़ा से नहीं बचेगा।

6पोते बूढ़ों का ताज और वालिदैन अपने बच्चों के ज़ेवर हैं।

7अहमक़ के लिए बड़ी बड़ी बातें करना मौज़ूँ नहीं, लेकिन शरीफ़ होंटों पर फ़रेब कहीं ज़्यादा ग़ैरमुनासिब है।

8रिश्वत देनेवाले की नज़र में रिश्वत जादू की मानिंद है। जिस दरवाज़े पर भी खटखटाए वह खुल जाता है।

9जो दूसरे की ग़लती को दरगुज़र करे वह मुहब्बत को फ़रोग़ देता है, लेकिन जो माज़ी की ग़लतियाँ दोहराता रहे वह क़रीबी दोस्तों में निफ़ाक़ पैदा करता है।

10अगर समझदार को डाँटा जाए तो वह ख़ूब सीख लेता है, लेकिन अगर अहमक़ को सौ बार मारा जाए तो भी वह इतना नहीं सीखता।

11शरीर सरकशी पर तुला रहता है, लेकिन उसके ख़िलाफ़ ज़ालिम क़ासिद भेजा जाएगा।

12जो अहमक़ अपनी हमाक़त में उलझा हुआ हो उससे दरेग़ कर, क्योंकि उससे मिलने से बेहतर यह है कि तेरा उस रीछनी से वास्ता पड़े जिसके बच्चे उससे छीन लिए गए हों।

13जो भलाई के एवज़ बुराई करे उसके घर से बुराई कभी दूर नहीं होगी।

14लड़ाई-झगड़ा छेड़ना बंद में रख़ना डालने के बराबर है। इससे पहले कि मुक़दमाबाज़ी शुरू हो उससे बाज़ आ।

15जो बेदीन को बेक़ुसूर और रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराए उससे रब घिन खाता है।

16अहमक़ के हाथ में पैसों का क्या फ़ायदा है? क्या वह हिकमत ख़रीद सकता है जबकि उसमें अक़्ल नहीं? हरगिज़ नहीं!

17पड़ोसी वह है जो हर वक़्त मुहब्बत रखता है, भाई वह है जो मुसीबत में सहारा देने के लिए पैदा हुआ है।

18जो हाथ मिलाकर अपने पड़ोसी का ज़ामिन होने का वादा करे वह नासमझ है।

19जो लड़ाई-झगड़े से मुहब्बत रखे वह गुनाह से मुहब्बत रखता है, जो अपना दरवाज़ा हद से ज़्यादा बड़ा बनाए वह तबाही को दाख़िल होने की दावत देता है।

20जिसका दिल टेढ़ा है वह ख़ुशहाली नहीं पाएगा, और जिसकी ज़बान चालाक है वह मुसीबत में उलझ जाएगा।

21जिसके हाँ अहमक़ बेटा पैदा हो जाए उसे दुख पहुँचता है, और अक़्ल से ख़ाली बेटा बाप के लिए ख़ुशी का बाइस नहीं होता।

22ख़ुशबाश दिल पूरे जिस्म को शफ़ा देता है, लेकिन शिकस्ता रूह हड्डियों को ख़ुश्क कर देती है।

23बेदीन चुपके से रिश्वत लेकर इनसाफ़ की राहों को बिगाड़ देता है।

24समझदार अपनी नज़र के सामने हिकमत रखता है, लेकिन अहमक़ की नज़रें दुनिया की इंतहा तक आवारा फिरती हैं।

25अहमक़ बेटा बाप के लिए रंज का बाइस और माँ के लिए तलख़ी का सबब है।

26बेक़ुसूर पर जुरमाना लगाना ग़लत है, और शरीफ़ को उस की दियानतदारी के सबब से कोड़े लगाना बुरा है।

27जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह इल्मो-इरफ़ान का मालिक है, जो ठंडे दिल से बात करे वह समझदार है।

28अगर अहमक़ ख़ामोश रहे तो वह भी दानिशमंद लगता है। जब तक वह बात न करे लोग उसे समझदार क़रार देते हैं।

18 जो दूसरों से अलग हो जाए वह अपने ज़ाती मक़ासिद पूरे करना चाहता और समझ की हर बात पर झगड़ने लगता है।

2अहमक़ समझ से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होता बल्कि सिर्फ़ अपने दिल की बातें दूसरों पर ज़ाहिर करने से।

3जहाँ बेदीन आए वहाँ हिक़ारत भी आ मौजूद होती, और जहाँ रुसवाई हो वहाँ तानाज़नी भी होती है।

4इनसान के अलफ़ाज़ गहरा पानी हैं, हिकमत का सरचश्मा बहती हुई नदी है।

5बेदीन की जानिबदारी करके रास्तबाज़ का हक़ मारना ग़लत है।

6अहमक़ के होंट लड़ाई-झगड़ा पैदा करते हैं, उसका मुँह ज़ोर से पिटाई का मुतालबा करता है।

7अहमक़ का मुँह उस की तबाही का बाइस है, उसके होंट ऐसा फंदा हैं जिसमें उस की अपनी जान उलझ जाती है।

8तोहमत लगानेवाले की बातें लज़ीज़ खाने के लुक़्मों की मानिंद हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती हैं।

9जो अपने काम में ज़रा भी ढीला हो जाए, उसे याद रहे कि ढीलेपन का भाई तबाही है।

10रब का नाम मज़बूत बुर्ज है जिसमें रास्तबाज़ भागकर महफ़ूज़ रहता है।

11अमीर समझता है कि मेरी दौलत मेरा क़िलाबंद शहर और मेरी ऊँची चारदीवारी है जिसमें मैं महफ़ूज़ हूँ।

12तबाह होने से पहले इनसान का दिल मग़रूर हो जाता है, इज़्ज़त मिलने से पहले लाज़िम है कि वह फ़रोतन हो जाए।

13दूसरे की बात सुनने से पहले जवाब देना हमाक़त है। जो ऐसा करे उस की रुसवाई हो जाएगी।

14बीमार होते वक़्त इनसान की रूह जिस्म की परवरिश करती है, लेकिन अगर रूह शिकस्ता हो तो फिर कौन उसको सहारा देगा?

15समझदार का दिल इल्म अपनाता और दानिशमंद का कान इरफ़ान का खोज लगाता रहता है।

16तोहफ़ा रास्ता खोलकर देनेवाले को बड़ों तक पहुँचा देता है।

17जो अदालत में पहले अपना मौक़िफ़ पेश करे वह उस वक़्त तक हक़-बजानिब लगता है जब तक दूसरा फ़रीक़ सामने आकर उस की हर बात की तहक़ीक़ न करे।

18क़ुरा डालने से झगड़े ख़त्म हो जाते और बड़ों का एक दूसरे से लड़ने का ख़तरा दूर हो जाता है।

19जिस भाई को एक दफ़ा मायूस कर दिया जाए उसे दुबारा जीत लेना क़िलाबंद शहर पर फ़तह पाने से ज़्यादा दुश्वार है। झगड़े हल करना बुर्ज के कुंडे तोड़ने की तरह मुश्किल है।

20इनसान अपने मुँह के फल से सेर हो जाएगा, वह अपने होंटों की पैदावार को जी भरकर खाएगा।

21ज़बान का ज़िंदगी और मौत पर इख़्तियार है, जो उसे प्यार करे वह उसका फल भी खाएगा।

22जिसे बीवी मिली उसे अच्छी नेमत मिली, और उसे रब की मंज़ूरी हासिल हुई।

23ग़रीब मिन्नत करते करते अपना मामला पेश करता है, लेकिन अमीर का जवाब सख़्त होता है।

24कई दोस्त तुझे तबाह करते हैं, लेकिन ऐसे भी हैं जो तुझसे भाई से ज़्यादा लिपटे रहते हैं।

19 जो ग़रीब बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे वह टेढ़ी बातें करनेवाले अहमक़ से कहीं बेहतर है।

2अगर इल्म साथ न हो तो सरगरमी का कोई फ़ायदा नहीं। जल्दबाज़ ग़लत राह पर आता रहता है।

3गो इनसान की अपनी हमाक़त उसे भटका देती है तो भी उसका दिल रब से नाराज़ होता है।

4दौलतमंद के दोस्तों में इज़ाफ़ा होता है, लेकिन ग़रीब का एक दोस्त भी उससे अलग हो जाता है।

5झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, जो झूटी गवाही दे उस की जान नहीं छूटेगी।

6मुतअद्दिद लोग बड़े आदमी की ख़ुशामद करते हैं, और हर एक उस आदमी का दोस्त है जो तोह्फ़े देता है।

7ग़रीब के तमाम भाई उससे नफ़रत करते हैं, तो फिर उसके दोस्त उससे क्यों दूर न रहें। वह बातें करते करते उनका पीछा करता है, लेकिन वह ग़ायब हो जाते हैं।

8जो हिकमत अपना ले वह अपनी जान से मुहब्बत रखता है, जो समझ की परवरिश करे उसे कामयाबी होगी।

9झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, झूटी गवाही देनेवाला तबाह हो जाएगा।

10अहमक़ के लिए ऐशो-इशरत से ज़िंदगी गुज़ारना मौज़ूँ नहीं, लेकिन ग़ुलाम की हुक्मरानों पर हुकूमत कहीं ज़्यादा ग़ैर-मुनासिब है।

11इनसान की हिकमत उसे तहम्मुल सिखाती है, और दूसरों के जरायम से दरगुज़र करना उसका फ़ख़र है।

12बादशाह का तैश जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिंद है जबकि उस की मंज़ूरी घास पर शबनम की तरह तरो-ताज़ा करती है।

13अहमक़ बेटा बाप की तबाही और झगड़ालू बीवी मुसलसल टपकनेवाली छत है।

14मौरूसी घर और मिलकियत बापदादा की तरफ़ से मिलती है, लेकिन समझदार बीवी रब की तरफ़ से है।

15सुस्त होने से इनसान गहरी नींद सो जाता है, लेकिन ढीला शख़्स भूके मरेगा।

16जो वफ़ादारी से हुक्म पर अमल करे वह अपनी जान महफ़ूज़ रखता है, लेकिन जो अपनी राहों की परवा न करे वह मर जाएगा।

17जो ग़रीब पर मेहरबानी करे वह रब को उधार देता है, वही उसे अज्र देगा।

18जब तक उम्मीद की किरण बाक़ी हो अपने बेटे की तादीब कर, लेकिन इतने जोश में न आ कि वह मर जाए।

19जो हद से ज़्यादा तैश में आए उसे जुरमाना देना पड़ेगा। उसे बचाने की कोशिश मत कर वरना उसका तैश और बढ़ेगा।

20अच्छा मशवरा अपना और तरबियत क़बूल कर ताकि आइंदा दानिशमंद हो।

21इनसान दिल में मुतअद्दिद मनसूबे बाँधता रहता है, लेकिन रब का इरादा हमेशा पूरा हो जाता है।

22इनसान का लालच उस की रुसवाई का बाइस है, और ग़रीब दरोग़गो से बेहतर है।

23रब का ख़ौफ़ ज़िंदगी का मंबा है। ख़ुदातरस आदमी सेर होकर सुकून से सो जाता और मुसीबत से महफ़ूज़ रहता है।

24काहिल अपना हाथ खाने के बरतन में डालकर उसे मुँह तक नहीं ला सकता।

25तानाज़न को मार तो सादालौह सबक़ सीखेगा, समझदार को डाँट तो उसके इल्म में इज़ाफ़ा होगा।

26जो अपने बाप पर ज़ुल्म करे और अपनी माँ को निकाल दे वह वालिदैन के लिए शर्म और रुसवाई का बाइस है।

27मेरे बेटे, तरबियत पर ध्यान देने से बाज़ न आ, वरना तू इल्मो-इरफ़ान की राह से भटक जाएगा।

28शरीर गवाह इनसाफ़ का मज़ाक़ उड़ाता है, और बेदीन का मुँह आफ़त की ख़बरें फैलाता है।

29तानाज़न के लिए सज़ा और अहमक़ की पीठ के लिए कोड़ा तैयार है।

20 मै तानाज़न का बाप और शराब शोर-शराबा की माँ है। जो यह पी पीकर डगमगाने लगे वह दानिशमंद नहीं।

2बादशाह का क़हर जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिंद है, जो उसे तैश दिलाए वह अपनी जान पर खेलता है।

3लड़ाई-झगड़े से बाज़ रहना इज़्ज़त का तुर्राए-इम्तियाज़ है जबकि हर अहमक़ झगड़ने के लिए तैयार रहता है।

4काहिल वक़्त पर हल नहीं चलाता, चुनाँचे जब वह फ़सल पकते वक़्त अपने खेत पर निगाह करे तो कुछ नज़र नहीं आएगा।

5इनसान के दिल का मनसूबा गहरे पानी की मानिंद है, लेकिन समझदार आदमी उसे निकालकर अमल में लाता है।

6बहुत-से लोग अपनी वफ़ादारी पर फ़ख़र करते हैं, लेकिन क़ाबिले-एतमाद शख़्स कहाँ पाया जाता है?

7जो रास्तबाज़ बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे उस की औलाद मुबारक है।

8जब बादशाह तख़्ते-अदालत पर बैठ जाए तो वह अपनी आँखों से सब कुछ छानकर हर ग़लत बात एक तरफ़ कर लेता है।

9कौन कह सकता है, “मैंने अपने दिल को पाक-साफ़ कर रखा है, मैं अपने गुनाह से पाक हो गया हूँ”?

10ग़लत बाट और ग़लत पैमाइश, रब दोनों से घिन खाता है।

11लड़के का किरदार उसके सुलूक से मालूम होता है। इससे पता चलता है कि उसका चाल-चलन पाक और रास्त है या नहीं।

12सुननेवाले कान और देखनेवाली आँखें दोनों ही रब ने बनाई हैं।

13नींद को प्यार न कर वरना ग़रीब हो जाएगा। अपनी आँखों को खुला रख तो जी भरकर खाना खाएगा।

14गाहक दुकानदार से कहता है, "यह कैसी नाक़िस चीज़ है!" लेकिन फिर जाकर दूसरों के सामने अपने सौदे पर शेख़ी मारता है।

15सोना और कसरत के मोती पाए जा सकते हैं, लेकिन समझदार होंट उनसे कहीं ज़्यादा क़ीमती हैं।

16ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी ने परदेसी का ज़ामिन बनकर दिया है। अगर वह अजनबी का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उसने दी थी।

17धोके से हासिल की हुई रोटी आदमी को मीठी लगती है, लेकिन उसका अंजाम कंकरों से भरा मुँह है।

18मनसूबे सलाह-मशवरे से मज़बूत हो जाते हैं, और जंग करने से पहले दूसरों की हिदायात पर ध्यान दे।

19अगर तू बुहतान लगानेवाले को हमराज़ बनाए तो वह इधर-उधर फिरकर बात फैलाएगा। चुनाँचे बातूनी से गुरेज़ कर।

20जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसका चराग़ घने अंधेरे में बुझ जाएगा।

21जो मीरास शुरू में बड़ी जल्दी से मिल जाए वह आख़िर में बरकत का बाइस नहीं होगी।

22मत कहना, "मैं ग़लत काम का इंतक़ाम लूँगा।" रब के इंतज़ार में रह तो वही तेरी मदद करेगा।

23रब झूटे बाटों से घिन खाता है, और ग़लत तराज़ू उसे अच्छा नहीं लगता।

24रब हर एक के क़दम मुक़र्रर करता है। तो फिर इनसान किस तरह अपनी राह समझ सकता है?

25इनसान अपने लिए फंदा तैयार करता है जब वह जल्दबाज़ी से मन्नत मानता और बाद में ही मन्नत के नतायज पर ग़ौर करने लगता है।

26दानिशमंद बादशाह बेदीनों को छान छानकर उड़ा लेता है, हाँ वह गाहने का आला ही उन पर से गुज़रने देता है।

27आदमज़ाद की रूह रब का चराग़ है जो इनसान के बातिन की तह तक सब कुछ की तहक़ीक़ करता है।

28शफ़क़त और वफ़ा बादशाह को महफ़ूज़ रखती हैं, शफ़क़त से वह अपना तख़्त मुस्तहकम कर लेता है।

29नौजवानों का फ़ख़र उनकी ताक़त और बुज़ुर्गों की शान उनके सफ़ेद बाल हैं।

30ज़ख़म और चोटें बुराई को दूर कर देती हैं, ज़रबें बातिन की तह तक सब कुछ साफ़ कर देती हैं।

21 बादशाह का दिल रब के हाथ में नहर की मानिंद है। वह जिधर चाहे उसका रुख़ फेर देता है।

2हर आदमी की राह उस की अपनी नज़र में ठीक लगती है, लेकिन रब ही दिलों की जाँच-पड़ताल करता है।

3रास्तबाज़ी और इनसाफ़ करना रब को ज़बह की क़ुरबानियों से कहीं ज़्यादा पसंद है।

4मग़रूर आँखें और मुतकब्बिर दिल जो बेदीनों का चराग़ हैं गुनाह हैं।

5मेहनती शख़्स के मनसूबे नफ़ा का बाइस हैं, लेकिन जल्दबाज़ी ग़ुरबत तक पहुँचा देती है।

6फ़रेबदेह ज़बान से जमा किया हुआ ख़ज़ाना बिखर जानेवाला धुआँ और मोहलक फंदा है।

7बेदीनों का ज़ुल्म ही उन्हें घसीटकर ले जाता है, क्योंकि वह इनसाफ़ करने से इनकार करते हैं।

8क़ुसूरवार की राह पेचदार है जबकि पाक शख़्स सीधी राह पर चलता है।

9झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की निसबत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर है।

10बेदीन ग़लत काम करने के लालच में रहता है और अपने किसी भी पड़ोसी पर तरस नहीं खाता।

11तानाज़न पर जुरमाना लगा तो सादा-लौह सबक़ सीखेगा, दानिशमंद को तालीम दे तो उसके इल्म में इज़ाफ़ा होगा।

12अल्लाह जो रास्त है बेदीन के घर को ध्यान में रखता है, वही बेदीन को ख़ाक में मिला देता है।

13जो कान में उँगली डालकर ग़रीब की मदद के लिए चीख़ें नहीं सुनता वह भी एक दिन चीख़ें मारेगा, और उस की भी सुनी नहीं जाएगी।

14पोशीदगी में सिला देने से दूसरे का ग़ुस्सा ठंडा हो जाता, किसी की जेब गरम करने से उसका सख़्त तैश दूर हो जाता है।

15जब इनसाफ़ किया जाए तो रास्तबाज़ ख़ुश हो जाता, लेकिन बदकार दहशत खाने लगता है।

16जो समझ की राह से भटक जाए वह एक दिन मुरदों की जमात में आराम करेगा।

17जो ऐशो-इशरत की ज़िंदगी पसंद करे वह ग़रीब हो जाएगा, जिसे मै और तेल प्यारा हो वह अमीर नहीं हो जाएगा।

18जब रास्तबाज़ का फ़िद्या देना है तो बेदीन को दिया जाएगा, और दियानतदार की जगह बेवफ़ा को दिया जाएगा।

19झगड़ालू और तंग करनेवाली बीवी के साथ बसने की निसबत रेगिस्तान में गुज़ारा करना बेहतर है।

20दानिशमंद के घर में उम्दा ख़ज़ाना और तेल होता है, लेकिन अहमक़ अपना सारा माल हड़प कर लेता है।

21जो इनसाफ़ और शफ़क़त का ताक़्क़ुब करता रहे वह ज़िंदगी, रास्ती और इज़्ज़त पाएगा।

22दानिशमंद आदमी ताक़तवर फ़ौजियों के शहर पर हमला करके वह क़िलाबंदी ढा देता है जिस पर उनका पूरा एतमाद था।

23जो अपने मुँह और ज़बान की पहरादारी करे वह अपनी जान को मुसीबत से बचाए रखता है।

24मग़रूर और घमंडी का नाम 'तानाज़न' है, हर काम वह बेहद तकब्बुर के साथ करता है।

25काहिल का लालच उसे मौत के घाट उतार देता है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से इनकार करते हैं।

26लालची पूरा दिन लालच करता रहता है, लेकिन रास्तबाज़ फ़ैयाज़दिली से देता है।

27बेदीनों की क़ुरबानी क़ाबिले-घिन है, ख़ासकर जब उसे बुरे मक़सद से पेश किया जाए।

28झूटा गवाह तबाह हो जाएगा, लेकिन जो दूसरे की ध्यान से सुने उस की बात हमेशा तक क़ायम रहेगी।

29बेदीन आदमी गुस्ताख़ अंदाज़ से पेश आता है, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाला सोच-समझकर अपनी राह पर चलता है।

30किसी की भी हिकमत, समझ या मनसूबा रब का सामना नहीं कर सकता।

31घोड़े को जंग के दिन के लिए तैयार तो किया जाता है, लेकिन फ़तह रब के हाथ में है।

22 नेक नाम बड़ी दौलत से क़ीमती, और मंज़ूरे-नज़र होना सोने-चाँदी से बेहतर है।

2अमीर और ग़रीब एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, रब उन सबका ख़ालिक़ है।

3ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँपकर छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़कर उस की लपेट में आ जाता है।

4फ़रोतनी और रब का ख़ौफ़ मानने का फल दौलत, एहतराम और ज़िंदगी है।

5बेदीन की राह में काँटे और फंदे होते हैं। जो अपनी जान महफ़ूज़ रखना चाहे वह उनसे दूर रहता है।

6छोटे बच्चे को सहीह राह पर चलने की तरबियत कर तो वह बूढ़ा होकर भी उससे नहीं हटेगा।

7अमीर ग़रीब पर हुकूमत करता, और क़र्ज़दार क़र्ज़ख़ाह का ग़ुलाम होता है।

8जो नाइनसाफ़ी का बीज बोए वह आफ़त की फ़सल काटेगा, तब उस की ज़्यादती की लाठी टूट जाएगी।

9फ़ैयाज़दिल को बरकत मिलेगी, क्योंकि वह पस्तहाल को अपने खाने में शरीक करता है।

10तानाज़न को भगा दे तो लड़ाई-झगड़ा घर से निकल जाएगा, तू तू मैं मैं और एक दूसरे की बेइज़्ज़ती करने का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा।

11जो दिल की पाकीज़गी को प्यार करे और मेहरबान ज़बान का मालिक हो वह बादशाह का दोस्त बनेगा।

12रब की आँखें इल्मो-इरफ़ान की देख-भाल करती हैं, लेकिन वह बेवफ़ा की बातों को तबाह होने देता है।

13काहिल कहता है, "गली में शेर है, अगर बाहर जाऊँ तो मुझे किसी चौक में फाड़ खाएगा।"

14ज़िनाकार औरत का मुँह गहरा गढ़ा है। जिससे रब नाराज़ हो वह उसमें गिर जाता है।

15बच्चे के दिल में हमाक़त टिकती है, लेकिन तरबियत की छड़ी उसे भगा देती है।

16एक पस्तहाल पर ज़ुल्म करता है ताकि दौलत पाए, दूसरा अमीर को तोहफ़े देता है लेकिन ग़रीब हो जाता है।

दानिशमंदों की 30 कहावतें

17कान लगाकर दानाओं की बातों पर ध्यान
दे, दिल से मेरी तालीम अपना ले! 18क्योंकि
अच्छा है कि तू उन्हें अपने दिल में महफ़ूज़ रखे,
वह सब तेरे होंटों पर मुस्तैद रहें। 19आज मैं तुझे,
हाँ तुझे ही तालीम दे रहा हूँ ताकि तेरा भरोसा रब
पर रहे। 20मैंने तेरे लिए 30 कहावतें क़लमबंद
की हैं, ऐसी बातें जो मशवरों और इल्म से भरी हुई
हैं। 21क्योंकि मैं तुझे सच्चाई की क़ाबिले-एतमाद
बातें सिखाना चाहता हूँ ताकि तू उन्हें क़ाबिले-एतमाद जवाब दे सके जिन्होंने तुझे भेजा है।

-1-

22पस्तहाल को इसलिए न लूट कि वह
पस्तहाल है, मुसीबतज़दा को अदालत में मत
कुचलना। 23क्योंकि रब ख़ुद उनका दिफ़ा करके
उन्हें लूट लेगा जो उन्हें लूट रहे हैं।

-2-

24ग़ुसीले शख़्स का दोस्त न बन, न उससे
ज़्यादा ताल्लुक़ रख जो जल्दी से आग-बगूला हो
जाता है। 25ऐसा न हो कि तू उसका चाल-चलन
अपनाकर अपनी जान के लिए फंदा लगाए।

-3-

26कभी हाथ मिलाकर वादा न कर कि मैं दूसरे
के कर्ज़े का ज़ामिन हूँगा। 27क़र्ज़दार के पैसे
वापस न करने पर अगर तू भी पैसे अदा न कर सके तो तेरी चारपाई भी तेरे नीचे से छीन ली जाएगी।

-4-

28ज़मीन की जो हुदूद तेरे बापदादा ने मुक़र्रर कीं उन्हें आगे पीछे मत करना।

-5-

29क्या तुझे ऐसा आदमी नज़र आता है जो अपने काम में माहिर है? वह निचले तबक़े के लोगों की ख़िदमत नहीं करेगा बल्कि बादशाहों की।

-6-

23 अगर तू किसी हुक्मरान के खाने में
शरीक हो जाए तो ख़ूब ध्यान दे कि
तू किसके हुज़ूर है। 2अगर तू पेटू हो तो अपने गले
पर छुरी रख। 3उस की उम्दा चीज़ों का लालच मत
कर, क्योंकि यह खाना फ़रेबदेह है।

-7-

4अपनी पूरी ताक़त अमीर बनने में सर्फ़ न
कर, अपनी हिकमत ऐसी कोशिशों से ज़ाया मत

कर। 5एक नज़र दौलत पर डाल तो वह ओझल
हो जाती है, और पर लगाकर उक़ाब की तरह
आसमान की तरफ़ उड़ जाती है।

-8-

6जलनेवाले की रोटी मत खा, उसके लज़ीज़
खानों का लालच न कर। 7क्योंकि यह गले में
बाल की तरह होगा। वह तुझसे कहेगा, "खाओ,
पियो!" लेकिन उसका दिल तेरे साथ नहीं है।
8जो लुक़मा तूने खा लिया उससे तुझे क़ै आएगी,
और तेरी उससे दोस्ताना बातें ज़ाया हो जाएँगी।

-9-

9अहमक़ से बात न कर, क्योंकि वह तेरी
दानिशमंद बातें हक़ीर जानेगा।

-10-

10ज़मीन की जो हुदूद क़दीम ज़माने में मुक़र्रर
हुईं उन्हें आगे पीछे मत करना, और यतीमों
के खेतों पर क़ब्ज़ा न कर। 11क्योंकि उनका
छुड़ानेवाला क़वी है, वह उनके हक़ में ख़ुद तेरे
ख़िलाफ़ लड़ेगा।

-11-

12अपना दिल तरबियत के हवाले कर और
अपने कान इल्म की बातों पर लगा।

-12-

13बच्चे को तरबियत से महरूम न रख, छड़ी से
उसे सज़ा देने से वह नहीं मरेगा। 14छड़ी से उसे
सज़ा दे तो उस की जान मौत से छूट जाएगी।

-13-

15मेरे बेटे, अगर तेरा दिल दानिशमंद हो तो
मेरा दिल भी ख़ुश होगा। 16मैं अंदर ही अंदर ख़ुशी
मनाऊँगा जब तेरे होंट दियानतदार बातें करेंगे।

-14-

17तेरा दिल गुनाहगारों को देखकर कुढ़ता न रहे
बल्कि पूरे दिन रब का ख़ौफ़ रखने में सरगरम रहे।
18क्योंकि तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि
तेरा मुस्तक़बिल यक़ीनन अच्छा होगा।

-15-

19मेरे बेटे, सुनकर दानिशमंद हो जा और सहीह
राह पर अपने दिल की राहनुमाई कर। 20शराबी
और पेटू से दरेग़ कर, 21क्योंकि शराबी और
पेटू ग़रीब हो जाएंगे, और काहिली उन्हें चीथड़े
पहनाएगी।

-16-

22अपने बाप की सुन जिसने तुझे पैदा किया,
और अपनी माँ को हक़ीर न जान जब बूढ़ी हो
जाए।

23सच्चाई ख़रीद ले और कभी फ़रोख़्त न कर,
उसमें शामिल हिकमत, तरबियत और समझ
अपना ले।

24रास्तबाज़ का बाप बड़ी ख़ुशी मनाता है, और
दानिशमंद बेटे का वालिद उससे लुत्फ़अंदोज़ होता
है।

25चुनाँचे अपने माँ-बाप के लिए ख़ुशी का
बाइस हो, ऐसी ज़िंदगी गुज़ार कि तेरी माँ जशन
मना सके।

-17-

26मेरे बेटे, अपना दिल मेरे हवाले कर, तेरी
आँखें मेरी राहें पसंद करें। 27क्योंकि कसबी गहरा
गढ़ा और ज़िनाकार औरत तंग कुआँ है, 28डाकू
की तरह वह ताक लगाए बैठकर मर्दों में बेवफ़ाओं
का इज़ाफ़ा करती है।

-18-

29कौन आहें भरता है? कौन हाय हाय करता
और लड़ाई-झगड़े में मुलव्वस रहता है? किस को
बिलावजह चोटें लगती, किसकी आँखें धुँधली-
सी रहती हैं? 30वह जो रात गए तक मै पीने

और मसालेदार मै से मज़ा लेने में मसरूफ़ रहता
है। 31मै को तकता न रह, ख़ाह उसका सुर्ख़ रंग
कितनी ख़ूबसूरती से प्याले में क्यों न चमके, ख़ाह
उसे बड़े मज़े से क्यों न पिया जाए। 32अंजामकार
वह तुझे साँप की तरह काटेगी, नाग की तरह
डसेगी। 33तेरी आँखें अजीबो-ग़रीब मंज़र देखेंगी
और तेरा दिल बेतुकी बातें हकलाएगा। 34तू
समुंदर के बीच में लेटनेवाले की मानिंद होगा, उस
जैसा जो मस्तूल पर चढ़कर लेट गया हो। 35तू
कहेगा, “मेरी पिटाई हुई लेकिन दर्द महसूस न
हुआ, मुझे मारा गया लेकिन मालूम न हुआ। मैं
कब जाग उठूँगा ताकि दुबारा शराब की तरफ़ रुख़
कर सकूँ?”

-19-

24 शरीरों से हसद न कर, न उनसे
सोहबत रखने की आरज़ू रख,
2क्योंकि उनका दिल ज़ुल्म करने पर तुला रहता
है, उनके होंट दूसरों को दुख पहुँचाते हैं।

-20-

3हिकमत घर को तामीर करती, समझ उसे
मज़बूत बुनियाद पर खड़ा कर देती, 4और
इल्मो-इरफ़ान उसके कमरों को बेशक़ीमत और
मनमोहन चीज़ों से भर देता है।

-21-

5दानिशमंद को ताक़त हासिल होती और इल्म
रखनेवाले की क़ुव्वत बढ़ती रहती है, 6क्योंकि
जंग करने के लिए हिदायत और फ़तह पाने के
लिए मुतअद्दिद मुशीरों की ज़रूरत होती है।

-22-

7हिकमत इतनी बुलंदो-बाला है कि अह-
मक़ उसे पा नहीं सकता। जब बुज़ुर्ग शहर के
दरवाज़े में फ़ैसला करने के लिए जमा होते हैं तो
वह कुछ नहीं कह सकता।

-23-

8बुरे मनसूबे बाँधनेवाला साज़िशी कह-
लाता है। 9अहमक़ की चालाकियाँ गुनाह हैं, और
लोग तानाज़न से घिन खाते हैं।

-24-

10अगर तू मुसीबत के दिन हिम्मत हारकर
ढीला हो जाए तो तेरी ताक़त जाती रहेगी।

-25-

11जिन्हें मौत के हवाले किया जा रहा है उन्हें
छुड़ा, जो क़साई की तरफ़ डगमगाते हुए जा रहे हैं
उन्हें रोक दे। 12शायद तू कहे, “हमें तो इसके बारे
में इल्म नहीं था।” लेकिन यक़ीन जान, जो दिल
की जाँच-पड़ताल करता है वह बात समझता है,
जो तेरी जान की देख-भाल करता है उसे मालूम
है। वह इनसान को उसके आमाल का बदला देता
है।

-26-

13मेरे बेटे, शहद खा क्योंकि वह अच्छा है,
छत्ते का ख़ालिस शहद मीठा है। 14जान ले कि
हिकमत इसी तरह तेरी जान के लिए मीठी है।
अगर तू उसे पाए तो तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी
बल्कि तेरा मुस्तक़बिल अच्छा होगा।

-27-

15ऐ बेदीन, रास्तबाज़ के घर की ताक लगाए
मत बैठना, उस की रिहाइशगाह तबाह न कर।
16क्योंकि गो रास्तबाज़ सात बार गिर जाए तो
भी हर बार दुबारा उठ खड़ा होगा जबकि बेदीन
एक बार ठोकर खाकर मुसीबत में फँसा रहेगा।

-28-

17अगर तेरा दुश्मन गिर जाए तो ख़ुश न हो,
अगर वह ठोकर खाए तो तेरा दिल जशन न
मनाए। 18ऐसा न हो कि रब यह देखकर तेरा
रवैया पसंद न करे और अपना ग़ुस्सा दुश्मन पर
उतारने से बाज़ आए।

-29-

19बदकारों को देखकर मुश्तइल न हो जा,
बेदीनों के बाइस कुढ़ता न रह। 20क्योंकि शरीरों
का कोई मुस्तक़बिल नहीं, बेदीनों का चराग़ बुझ
जाएगा।

-30-

21मेरे बेटे, रब और बादशाह का ख़ौफ़ मान,
और सरकशों में शरीक न हो। 22क्योंकि अचानक
ही उन पर आफ़त आएगी, किसी को पता ही नहीं
चलेगा जब दोनों उन पर हमला करके उन्हें तबाह
कर देंगे।

दानिशमंदों की मज़ीद कहावतें

23ज़ैल में दानिशमंदों की मज़ीद कहावतें
क़लमबंद हैं।

अदालत में जानिबदारी दिखाना बुरी बात है।
24जो क़ुसूरवार से कहे, "तू बेक़ुसूर है" उस पर
क़ौमें लानत भेजेंगी, उस की सरज़निश उम्मतें
करेंगी। 25लेकिन जो क़ुसूरवार को मुजरिम
ठहराए वह ख़ुशहाल होगा, उसे कसरत की
बरकत मिलेगी।

26सच्चा जवाब दोस्त के बोसे की मानिंद है।

27पहले बाहर का काम मुकम्मल करके अपने
खेतों को तैयार कर, फिर ही अपना घर तामीर
कर।

28बिलावजह अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ गवाही
मत दे। या क्या तू अपने होंटों से धोका देना चाहता
है?

29मत कहना, "जिस तरह उसने मेरे साथ
किया उसी तरह मैं उसके साथ करूँगा, मैं उसके
हर फ़ेल का मुनासिब जवाब दूँगा।"

30एक दिन मैं सुस्त और नासमझ आदमी के
खेत और अंगूर के बाग़ में से गुज़रा। 31हर जगह
काँटेदार झाड़ियाँ फैली हुई थीं, ख़ुदरौ पौदे पूरी
ज़मीन पर छा गए थे। उस की चारदीवारी भी गिर
गई थी। 32यह देखकर मैंने दिल से ध्यान दिया
और सबक़ सीख लिया,

33अगर तू कहे, "मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी
देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने
दे ताकि मैं आराम कर सकूँ" 34तो ख़बरदार,
जल्द ही ग़ुरबत राहज़न की तरह तुझ पर आएगी,
मुफ़लिसी हथियार से लैस डाकू की तरह तुझ पर
आ पड़ेगी।

सुलेमान की मज़ीद कहावतें

25 ज़ैल में सुलेमान की मज़ीद कहावतें
दर्ज हैं जिन्हें यहूदाह के बादशाह
हिज़क़ियाह के लोगों ने जमा किया।

2अल्लाह का जलाल इसमें ज़ाहिर होता है कि
वह मामला पोशीदा रखता है, बादशाह का जलाल
इसमें कि वह मामले की तहक़ीक़ करता है।

3जितना आसमान बुलंद और ज़मीन गहरी है
उतना ही बादशाहों के दिल का खोज नहीं लगाया
जा सकता।

4चाँदी से मैल दूर करो तो सुनार बरतन बनाने में
कामयाब हो जाएगा, 5बेदीन को बादशाह के हुज़ूर
से दूर करो तो उसका तख़्त रास्ती की बुनियाद पर
क़ायम रहेगा।

6बादशाह के हुज़ूर अपने आप पर फ़ख़र न कर,
न इज़्ज़त की उस जगह पर खड़ा हो जा जो बुज़ुर्गों
के लिए मख़सूस है। 7इससे पहले कि शुरफ़ा के
सामने ही तेरी बेइज़्ज़ती हो जाए बेहतर है कि तू
पीछे खड़ा हो जा और बाद में कोई तुझसे कहे,
"यहाँ सामने आ जाएँ।"

जो कुछ तेरी आँखों ने देखा उसे अदालत में
पेश करने में 8जल्दबाज़ी न कर, क्योंकि तू क्या
करेगा अगर तेरा पड़ोसी तेरे मामले को झुटलाकर
तुझे शरमिंदा करे?

9अदालत में अपने पड़ोसी से लड़ते वक़्त
वह बात बयान न कर जो किसी ने पोशीदगी
में तेरे सुपुर्द की, 10ऐसा न हो कि सुननेवाला

तेरी बेइज़्ज़ती करे। तब तेरी बदनामी कभी नहीं
मिटेगी।
11वक़्त पर मौज़ूँ बात चाँदी के बरतन में सोने
के सेब की मानिंद है। 12दानिशमंद की नसीहत
क़बूल करनेवाले के लिए सोने की बाली और
ख़ालिस सोने के गुलूबंद की मानिंद है।
13क़ाबिले-एतमाद क़ासिद भेजनेवाले के लिए
फ़सल काटते वक़्त बर्फ़ की ठंडक जैसा है, इस
तरह वह अपने मालिक की जान को तरो-ताज़ा
कर देता है।
14जो शेख़ी मारकर तोहफ़ों का वादा करे
लेकिन कुछ न दे वह उन तूफ़ानी बादलों की
मानिंद है जो बरसे बग़ैर गुज़र जाते हैं।
15हुक्मरान को तहम्मुल से क़ायल किया
जा सकता, और नरम ज़बान हड्डियाँ तोड़ने के
क़ाबिल है।
16अगर शहद मिल जाए तो ज़रूरत से ज़्यादा
मत खा, हद से ज़्यादा खाने से तुझे क़ै आएगी।
17अपने पड़ोसी के घर में बार बार जाने से
अपने क़दमों को रोक, वरना वह तंग आकर तुझसे
नफ़रत करने लगेगा।
18जो अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ झूटी गवाही
दे वह हथौड़े, तलवार और तेज़ तीर जैसा
नुक़सानदेह है।
19मुसीबत के वक़्त बेवफ़ा पर एतबार
करना ख़राब दाँत या डगमगाते पाँवों की तरह
तकलीफ़देह है।
20दुखते दिल के लिए गीत गाना उतना ही
ग़ैरमौज़ूँ है जितना सर्दियों के मौसम में क़मीस
उतारना या सोडे पर सिरका डालना।
21अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना
खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला।
22क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सर पर जलते
हुए कोयलों का ढेर लगाएगा, और रब तुझे अज्र
देगा।
23जिस तरह काले बादल लानेवाली हवा
बारिश पैदा करती है उसी तरह बातूनी की चुपके
से की गई बातों से लोगों के मुँह बिगड़ जाते हैं।
24झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने
की निसबत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना
बेहतर है।
25दूर-दराज़ मुल्क की ख़ुशख़बरी प्यासे गले में
ठंडा पानी है।
26जो रास्तबाज़ बेदीन के सामने डगमगाने
लगे, वह गदला चश्मा और आलूदा कुआँ है।
27ज़्यादा शहद खाना अच्छा नहीं, और न ही
ज़्यादा अपनी इज़्ज़त की फ़िकर करना।
28जो अपने आप पर क़ाबू न पा सके वह उस
शहर की मानिंद है जिसकी फ़सील ढा दी गई है।

26 अहमक़ की इज़्ज़त करना उतना ही
ग़ैरमौज़ूँ है जितना मौसमे-गरमा में
बर्फ़ या फ़सल काटते वक़्त बारिश।
2बिलावजह भेजी हुई लानत फड़फड़ाती
चिड़िया या उड़ती हुई अबाबील की तरह ओझल
होकर बेअसर रह जाती है।
3घोड़े को छड़ी से, गधे को लगाम से और
अहमक़ की पीठ को लाठी से तरबियत दे।
4जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे
जवाब न दे, वरना तू उसी के बराबर हो जाएगा।
5जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे
जवाब दे, वरना वह अपनी नज़र में दानिशमंद
ठहरेगा।
6जो अहमक़ के हाथ पैग़ाम भेजे वह उस की
मानिंद है जो अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी मारकर
अपने आपसे ज़्यादती करता है।[a]
7अहमक़ के मुँह में हिकमत की बात मफ़लूज
की बेहरकत लटकती टाँगों की तरह बेकार है।
8अहमक़ का एहतराम करना फ़लाख़न के
साथ पत्थर बाँधने के बराबर है।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : ज़्यादती का प्याला पीता है।

9अहमक़ के मुँह में हिकमत की बात नशे में धुत शराबी के हाथ में काँटेदार झाड़ी की मानिंद है।

10जो अहमक़ या हर किसी गुज़रनेवाले को काम पर लगाए वह सबको ज़ख़मी करनेवाले तीरअंदाज़ की मानिंद है।

11जो अहमक़ अपनी हमाक़त दोहराए वह अपनी क़ै के पास वापस आनेवाले कुत्ते की मानिंद है।

12क्या कोई दिखाई देता है जो अपने आपको दानिशमंद समझता है? उस की निसबत अहमक़ के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।

13काहिल कहता है, "रास्ते में शेर है, हाँ चौकों में शेर फिर रहा है!"

14जिस तरह दरवाज़ा क़ब्ज़े पर घूमता है उसी तरह काहिल अपने बिस्तर पर करवटें बदलता है।

15जब काहिल अपना हाथ खाने के बरतन में डाल दे तो वह इतना सुस्त है कि उसे मुँह तक वापस नहीं ला सकता।

16काहिल अपनी नज़र में हिकमत से जवाब देनेवाले सात आदमियों से कहीं ज़्यादा दानिशमंद है।

17जो गुज़रते वक़्त दूसरों के झगड़े में मुदाख़लत करे वह उस आदमी की मानिंद है जो कुत्ते को कानों से पकड़ ले।

18-19जो अपने पड़ोसी को फ़रेब देकर बाद में कहे, "मैं सिर्फ़ मज़ाक़ कर रहा था" वह उस दीवाने की मानिंद है जो लोगों पर जलते हुए और मोहलक तीर बरसाता है।

20लकड़ी के ख़त्म होने पर आग बुझ जाती है, तोहमत लगानेवाले के चले जाने पर झगड़ा बंद हो जाता है।

21अंगारों में कोयले और आग में लकड़ी डाल तो आग भड़क उठेगी। झगड़ालू को कहीं भी खड़ा कर तो लोग मुश्तइल हो जाएंगे।

22तोहमत लगानेवाले की बातें लज़ीज़ खाने के लुक़्मों जैसी हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती हैं।

23जलनेवाले होंट और शरीर दिल मिट्टी के उस बरतन की मानिंद हैं जिसे चमकदार बनाया गया हो।

24नफ़रत करनेवाला अपने होंटों से अपना असली रूप छुपा लेता है, लेकिन उसका दिल
फ़रेब से भरा रहता है। 25जब वह मेहरबान बातें
करे तो उस पर यक़ीन न कर, क्योंकि उसके
दिल में सात मकरूह बातें हैं। 26गो उस की
नफ़रत फ़िलहाल फ़रेब से छुपी रहे, लेकिन एक दिन उसका ग़लत किरदार पूरी जमात के सामने ज़ाहिर हो जाएगा।

27जो दूसरों को फँसाने के लिए गढ़ा खोदे वह उसमें ख़ुद गिर जाएगा, जो पत्थर लुढ़काकर दूसरों पर फेंकना चाहे उस पर ही पत्थर वापस लुढ़क आएगा।

28झूटी ज़बान उनसे नफ़रत करती है जिन्हें वह कुचल देती है, ख़ुशामद करनेवाला मुँह तबाही मचा देता है।

27 उस पर शेख़ी न मार जो तू कल करेगा, तुझे क्या मालूम कि कल का दिन क्या कुछ फ़राहम करेगा?

2तेरा अपना मुँह और अपने होंट तेरी तारीफ़ न करें बल्कि वह जो तुझसे वाक़िफ़ भी न हो।

3पत्थर भारी और रेत वज़नी है, लेकिन जो अहमक़ तुझे तंग करे वह ज़्यादा नाक़ाबिले-बरदाश्त है।

4ग़ुस्सा ज़ालिम होता और तैश सैलाब की तरह इनसान पर आ जाता है, लेकिन कौन हसद का मुक़ाबला कर सकता है?

5खुली मलामत छुपी हुई मुहब्बत से बेहतर है।

6प्यार करनेवाले की ज़रबें वफ़ा का सबूत हैं, लेकिन नफ़रत करनेवाले के मुतअद्दिद बोसों से ख़बरदार रह।

7जो सेर है वह शहद को भी पाँवों तले रौंद देता है, लेकिन भूके को कड़वी चीज़ें भी मीठी लगती हैं।

8जो आदमी अपने घर से निकलकर मारा मारा फिरे वह उस परिंदे की मानिंद है जो अपने घोंसले

से भागकर कभी इधर कभी इधर फड़फड़ाता
रहता है।
9तेल और बख़ूर दिल को ख़ुश करते हैं, लेकिन
दोस्त अपने अच्छे मशवरों से ख़ुशी दिलाता है।
10अपने दोस्तों को कभी न छोड़, न अपने
ज़ाती दोस्तों को न अपने बाप के दोस्तों को।
तब तुझे मुसीबत के दिन अपने भाई से मदद नहीं
माँगनी पड़ेगी। क्योंकि क़रीब का पड़ोसी दूर के
भाई से बेहतर है।
11मेरे बेटे, दानिशमंद बनकर मेरे दिल को ख़ुश
कर ताकि मैं अपने हक़ीर जाननेवाले को जवाब
दे सकूँ।
12ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँपकर छुप
जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़कर उस की
लपेट में आ जाता है।
13ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो
किसी ने परदेसी का ज़ामिन बनकर दिया है। अगर
वह अजनबी औरत का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत
पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उसने दी थी।
14जो सुबह-सवेरे बुलंद आवाज़ से अपने
पड़ोसी को बरकत दे उस की बरकत लानत
ठहराई जाएगी।
15झगड़ालू बीवी मूसलाधार बारिश के बाइस
मुसलसल टपकनेवाली छत की मानिंद है। 16उसे
रोकना हवा को रोकने या तेल को पकड़ने के
बराबर है।
17लोहा लोहे को और इनसान इनसान के
ज़हन को तेज़ करता है।
18जो अंजीर के दरख़्त की देख-भाल करे
वह उसका फल खाएगा, जो अपने मालिक की
वफ़ादारी से ख़िदमत करे उसका एहतराम किया
जाएगा।
19जिस तरह पानी चेहरे को मुनअकिस करता
है उसी तरह इनसान का दिल इनसान को
मुनअकिस करता है।
20न मौत और न पाताल कभी सेर होते हैं, न
इनसान की आँखें।
21सोना और चाँदी कुठाली में पिघलाकर
पाक-साफ़ कर, लेकिन इनसान का किरदार
इससे मालूम कर कि लोग उस की कितनी क़दर
करते हैं।
22अगर अहमक़ को अनाज की तरह ओखली
और मूसल से कूटा भी जाए तो भी उस की
हमाक़त दूर नहीं हो जाएगी।
23एहतियात से अपनी भेड़-बकरियों की
हालत पर ध्यान दे, अपने रेवड़ों पर ख़ूब
तवज्जुह दे। 24क्योंकि कोई भी दौलत हमेशा
तक क़ायम नहीं रहती, कोई भी ताज नसल-दर-
नसल बरक़रार नहीं रहता। 25खुले मैदान में घास
काटकर जमा कर ताकि नई घास उग सके, चारा
पहाड़ों से भी इकट्ठा कर। 26तब तू भेड़ों की ऊन
से कपड़े बना सकेगा, बकरों की फ़रोख़्त से खेत
ख़रीद सकेगा, 27और बकरियाँ इतना दूध देंगी
कि तेरे, तेरे ख़ानदान और तेरे नौकर-चाकरों के
लिए काफ़ी होगा।
28 बेदीन फ़रार हो जाता है हालाँकि
ताक़्क़ुब करनेवाला कोई नहीं होता,
लेकिन रास्तबाज़ अपने आपको जवान शेरबबर
की तरह महफ़ूज़ समझता है।
2मुल्क की ख़ताकारी के सबब से उस की
हुकूमत की यगांगत क़ायम नहीं रहेगी, लेकिन
समझदार और दानिशमंद आदमी उसे बड़ी देर
तक क़ायम रखेगा।
3जो ग़रीब ग़रीबों पर ज़ुल्म करे वह उस
मूसलाधार बारिश की मानिंद है जो सैलाब लाकर
फ़सलों को तबाह कर देती है।
4जिसने शरीअत को तर्क किया वह बेदीन की
तारीफ़ करता है, लेकिन जो शरीअत के ताबे
रहता है वह उस की मुख़ालफ़त करता है।
5शरीर इनसाफ़ नहीं समझते, लेकिन रब के
तालिब सब कुछ समझते हैं।
6बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारनेवाला ग़रीब टेढ़ी
राहों पर चलनेवाले अमीर से बेहतर है।

7जो शरीअत की पैरवी करे वह समझदार बेटा है, लेकिन ऐयाशों का साथी अपने बाप की बेइज़्ज़ती करता है।

8जो अपनी दौलत नाजायज़ सूद से बढ़ाए वह उसे किसी और के लिए जमा कर रहा है, ऐसे शख़्स के लिए जो ग़रीबों पर रहम करेगा।

9जो अपने कान में उँगली डाले ताकि शरीअत की बातें न सुने उस की दुआएँ भी क़ाबिले-घिन हैं।

10जो सीधी राह पर चलनेवालों को ग़लत राह पर लाए वह अपने ही गढ़े में गिर जाएगा, लेकिन बेइलज़ाम अच्छी मीरास पाएँगे।

11अमीर अपने आपको दानिशमंद समझ-ता है, लेकिन जो ज़रूरतमंद समझदार है वह उसका असली किरदार मालूम कर लेता है।

12जब रास्तबाज़ फ़तहयाब हों तो मुल्क की शानो-शौकत बढ़ जाती है, लेकिन जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं।

13जो अपने गुनाह छुपाए वह नाकाम रहेगा, लेकिन जो उन्हें तसलीम करके तर्क करे वह रहम पाएगा।

14मुबारक है वह जो हर वक़्त रब का ख़ौफ़ माने, लेकिन जो अपना दिल सख़्त करे वह मुसीबत में फँस जाएगा।

15पस्तहाल क़ौम पर हुकूमत करनेवाला बेदीन ग़ुर्राते हुए शेरबबर और हमलाआवर रीछ की मानिंद है।

16जहाँ नासमझ हुक्मरान है वहाँ ज़ुल्म होता है, लेकिन जिसे ग़लत नफ़ा से नफ़रत हो उस की उम्र दराज़ होगी।

17जो किसी को क़त्ल करे वह मौत तक अपने क़ुसूर के नीचे दबा हुआ मारा मारा फिरेगा। ऐसे शख़्स का सहारा न बन!

18जो बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे वह बचा रहेगा, लेकिन जो टेढ़ी राह पर चले वह अचानक ही गिर जाएगा।

19जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे वह जी भरकर रोटी खाएगा, लेकिन जो फ़ज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह ग़ुरबत से सेर हो जाएगा।

20क़ाबिले-एतमाद आदमी को कसरत की बरकतें हासिल होंगी, लेकिन जो भाग भागकर दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे वह सज़ा से नहीं बचेगा।

21जानिबदारी बुरी बात है, लेकिन इनसान रोटी का टुकड़ा हासिल करने के लिए मुजरिम बन जाता है।

22लालची भाग भागकर दौलत जमा करता है, उसे मालूम ही नहीं कि इसका अंजाम ग़ुरबत ही है।

23आख़िरकार नसीहत देनेवाला चापलूसी करनेवाले से ज़्यादा मंज़ूर होता है।

24जो अपने बाप या माँ को लूटकर कहे, “यह जुर्म नहीं है” वह मोहलक क़ातिल का शरीके-कार होता है।

25लालची झगड़ों का मंबा रहता है, लेकिन जो रब पर भरोसा रखे वह ख़ुशहाल रहेगा।

26जो अपने दिल पर भरोसा रखे वह बेवुक़ूफ़ है, लेकिन जो हिकमत की राह पर चले वह महफ़ूज़ रहेगा।

27ग़रीबों को देनेवाला ज़रूरतमंद नहीं होगा, लेकिन जो अपनी आँखें बंद करके उन्हें नज़रंदाज़ करे उस पर बहुत लानतें आएँगी।

28जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं, लेकिन जब हलाक हो जाएँ तो रास्तबाज़ों की तादाद बढ़ जाती है।

29 जो मुतअद्दिद नसीहतों के बा-वुजूद हटधर्म रहे वह अचानक ही बरबाद हो जाएगा, और शफ़ा का इमकान ही नहीं होगा।

2जब रास्तबाज़ बहुत हैं तो क़ौम ख़ुश होती, लेकिन जब बेदीन हुकूमत करे तो क़ौम आहें भरती है।

3जिसे हिकमत प्यारी हो वह अपने बाप को ख़ुशी दिलाता है, लेकिन कसबियों का साथी अपनी दौलत उड़ा देता है।

4बादशाह इनसाफ़ से मुल्क को मुस्तहकम करता, लेकिन हद से ज़्यादा टैक्स लेने से उसे तबाह करता है।

5जो अपने पड़ोसी की चापलूसी करे वह उसके क़दमों के आगे जाल बिछाता है।

6शरीर जुर्म करते वक़्त अपने आपको फँसा देता, लेकिन रास्तबाज़ ख़ुशी मनाकर शादमान रहता है।

7रास्तबाज़ पस्तहालों के हुक़ूक़ का ख़याल रखता है, लेकिन बेदीन परवा ही नहीं करता।

8तानाज़न शहर में अफ़रा-तफ़री मचा देते जबकि दानिशमंद ग़ुस्सा ठंडा कर देते हैं।

9जब दानिशमंद आदमी अदालत में अहमक़ से लड़े तो अहमक़ तैश में आ जाता या क़हक़हा लगाता है, सुकून का इमकान ही नहीं होता।

10ख़ूनख़ार आदमी बेइलज़ाम शख़्स से नफ़रत करता, लेकिन सीधी राह पर चलने-वाला उस की बेहतरी चाहता है।

11अहमक़ अपना पूरा ग़ुस्सा उतारता, लेकिन दानिशमंद उसे रोककर क़ाबू में रखता है।

12जो हुक्मरान झूट पर ध्यान दे उसके तमाम मुलाज़िम बेदीन होंगे।

13जब ग़रीब और ज़ालिम की मुलाक़ात होती है तो दोनों की आँखों को रौशन करनेवाला रब ही है।

14जो बादशाह दियानतदारी से ज़रूरतमंद की अदालत करे उसका तख़्त हमेशा तक क़ायम रहेगा।

15छड़ी और नसीहत हिकमत पैदा करती हैं। जिसे बेलगाम छोड़ा जाए वह अपनी माँ के लिए शरमिंदगी का बाइस होगा।

16जब बेदीन फलें-फूलें तो गुनाह भी फलता-फूलता है, लेकिन रास्तबाज़ उनकी शिकस्त के गवाह होंगे।

17अपने बेटे की तरबियत कर तो वह तुझे सुकून और ख़ुशी दिलाएगा।

18जहाँ रोया नहीं वहाँ क़ौम बेलगाम हो जाती है, लेकिन मुबारक है वह जो शरीअत के ताबे रहता है।

19नौकर सिर्फ़ अलफ़ाज़ से नहीं सुधरता। अगर वह बात समझे भी तो भी ध्यान नहीं देगा।

20क्या कोई दिखाई देता है जो बात करने में जल्दबाज़ है? उस की निसबत अहमक़ के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।

21जो ग़ुलाम जवानी से नाज़ो-नेमत में पलकर बिगड़ जाए उसका बुरा अंजाम होगा।

22ग़ज़बआलूद आदमी झगड़े छेड़ता रहता है, ग़ुसीले शख़्स से मुतअद्दिद गुनाह सरज़द होते हैं।

23तकब्बुर अपने मालिक को पस्त कर देगा जबकि फ़रोतन शख़्स इज़्ज़त पाएगा।

24जो चोर का साथी हो वह अपनी जान से नफ़रत रखता है। गो उससे हलफ़ उठवाया जाए कि चोरी के बारे में गवाही दे तो भी कुछ नहीं बताता बल्कि हलफ़ की लानत की ज़द में आ जाता है।

25जो इनसान से ख़ौफ़ खाए वह फंदे में फँस जाएगा, लेकिन जो रब का ख़ौफ़ माने वह महफ़ूज़ रहेगा।

26बहुत लोग हुक्मरान की मंज़ूरी के तालिब रहते हैं, लेकिन इनसाफ़ रब ही की तरफ़ से मिलता है।

27रास्तबाज़ बदकार से और बेदीन सीधी राह पर चलनेवाले से घिन खाता है।

अजूर की कहावतें

30 ज़ैल में अजूर बिन याक़ा की कहावतें हैं। वह मस्सा का रहने-वाला था। उसने फ़रमाया,

ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, यह मेरे बस की बात नहीं रही।
2यक़ीनन मैं इनसानों में सबसे ज़्यादा नादान हूँ, मुझे इनसान की समझ हासिल नहीं। 3न मैंने

हिकमत सीखी, न क़ुद्दूस ख़ुदा के बारे में इल्म
रखता हूँ।

4कौन आसमान पर चढ़कर वापस उतर
आया? किसने हवा को अपने हाथों में जमा
किया? किसने गहरे पानी को चादर में लपेट
लिया? किसने ज़मीन की हुदूद को अपनी अपनी
जगह पर क़ायम किया है? उसका नाम क्या है,
उसके बेटे का क्या नाम है? अगर तुझे मालूम हो
तो मुझे बता!

5अल्लाह की हर बात आज़मूदा है, जो उसमें
पनाह ले उसके लिए वह ढाल है।
6उस की बातों में इज़ाफ़ा मत कर, वरना वह
तुझे डाँटेगा और तू झूटा ठहरेगा।

7ऐ रब, मैं तुझसे दो चीज़ें माँगता हूँ, मेरे मरने
से पहले इनसे इनकार न कर। 8पहले, दरोग़गोई
और झूट मुझसे दूर रख। दूसरे, न ग़ुरबत न दौलत
मुझे दे बल्कि उतनी ही रोटी जितनी मेरा हक़ है,
9ऐसा न हो कि मैं दौलत के बाइस सेर होकर तेरा
इनकार करूँ और कहूँ, "रब कौन है?" ऐसा भी
न हो कि मैं ग़ुरबत के बाइस चोरी करके अपने
ख़ुदा के नाम की बेहुरमती करूँ।
10मालिक के सामने मुलाज़िम पर तोहमत न
लगा, ऐसा न हो कि वह तुझ पर लानत भेजे और
तुझे इसका बुरा नतीजा भुगतना पड़े।

11ऐसी नसल भी है जो अपने बाप पर लानत
करती और अपनी माँ को बरकत नहीं देती।
12ऐसी नसल भी है जो अपनी नज़र में पाक-
साफ़ है, गो उस की ग़िलाज़त दूर नहीं हुई।
13ऐसी नसल भी है जिसकी आँखें बड़े तकब्बुर
से देखती हैं, जो अपनी पलकें बड़े घमंड से मारती
है।

14ऐसी नसल भी है जिसके दाँत तलवारें और
जबड़े छुरियाँ हैं ताकि दुनिया के मुसीबतज़दों को
खा जाएँ, मुआशरे के ज़रूरतमंदों को हड़प कर
लें।

15जोंक की दो बेटियाँ हैं, चूसने के दो आज़ा
जो चीख़ते रहते हैं, "और दो, और दो।"
तीन चीज़ें हैं जो कभी सेर नहीं होतीं बल्कि
चार हैं जो कभी नहीं कहतीं, "अब बस करो,
अब काफ़ी है," 16पाताल, बाँझ का रहम, ज़मीन
जिसकी प्यास कभी नहीं बुझती और आग जो
कभी नहीं कहती, "अब बस करो, अब काफ़ी
है।"
17जो आँख बाप का मज़ाक़ उड़ाए और माँ की
हिदायत को हक़ीर जाने उसे वादी के कौवे अपनी
चोंचों से निकालेंगे और गिद्ध के बच्चे खा जाएंगे।
18तीन बातें मुझे हैरतज़दा करती हैं बल्कि चार
हैं जिनकी मुझे समझ नहीं आती, 19आसमान की
बुलंदियों पर उक़ाब की राह, चट्टान पर साँप की
राह, समुंदर के बीच में जहाज़ की राह और वह
राह जो मर्द कुँवारी के साथ चलता है।
20ज़िनाकार औरत की यह राह है, वह खा लेती
और फिर अपना मुँह पोंछकर कहती है, "मुझसे
कोई ग़लती नहीं हुई।"
21ज़मीन तीन चीज़ों से लरज़ उठती है बल्कि
चार चीज़ें बरदाश्त नहीं कर सकती, 22वह ग़ुलाम
जो बादशाह बन जाए, वह अहमक़ जो जी भरकर
खाना खा सके, 23वह नफ़रतअंगेज़[a] औरत
जिसकी शादी हो जाए और वह नौकरानी जो
अपनी मालिकन की मिलकियत पर क़ब्ज़ा करे।
24ज़मीन की चार मख़लूक़ात निहायत ही
दानिशमंद हैं हालाँकि छोटी हैं। 25चियूँटियाँ
कमज़ोर नसल हैं लेकिन गरमियों के मौसम
में सर्दियों के लिए ख़ुराक जमा करती हैं,
26बिज्जू कमज़ोर नसल हैं लेकिन चट्टानों में ही
अपने घर बना लेते हैं, 27टिड्डियों का बादशाह

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : जिससे नफ़रत की जाती है।

नहीं होता ताहम सब परे बाँधकर निकलती हैं,
28छिपकलियाँ गो हाथ से पकड़ी जाती हैं, ताहम
शाही महलों में पाई जाती हैं।

29तीन बल्कि चार जानदार पुरवक़ार अंदाज़
में चलते हैं। 30पहले, शेरबबर जो जानवरों में
ज़ोरावर है और किसी से भी पीछे नहीं हटता,
31दूसरे, मुरग़ा जो अकड़कर चलता है, तीसरे,
बकरा और चौथे अपनी फ़ौज के साथ चलनेवाला
बादशाह।

32अगर तूने मग़रूर होकर हमाक़त की या
बुरे मनसूबे बाँधे तो अपने मुँह पर हाथ रखकर
ख़ामोश हो जा, 33क्योंकि दूध बिलोने से मक्खन,
नाक को मरोड़ने[a] से ख़ून और किसी को ग़ुस्सा
दिलाने से लड़ाई-झगड़ा पैदा होता है।

लमुएल की कहावतें

31 ज़ैल में मस्सा के बादशाह लमु-
एल की कहावतें हैं। उस की माँ ने
उसे यह तालीम दी,

2ऐ मेरे बेटे, मेरे पेट के फल, जो मेरी मन्नतों
से पैदा हुआ, मैं तुझे क्या बताऊँ? 3अपनी
पूरी ताक़त औरतों पर ज़ाया न कर, उन पर जो
बादशाहों की तबाही का बाइस हैं।

4ऐ लमुएल, बादशाहों के लिए मै पीना
मुनासिब नहीं, हुक्मरानों के लिए शराब की आरज़ू
रखना मौज़ूँ नहीं। 5ऐसा न हो कि वह पी पीकर
क़वानीन भूल जाएँ और तमाम मज़लूमों का हक़
मारें। 6शराब उन्हें पिला जो तबाह होनेवाले हैं, मै
उन्हें पिला जो ग़म खाते हैं, 7ऐसे ही पी पीकर
अपनी ग़ुरबत और मुसीबत भूल जाएँ।

8अपना मुँह उनके लिए खोल जो बोल नहीं
सकते, उनके हक़ में जो ज़रूरतमंद हैं। 9अपना
मुँह खोलकर इनसाफ़ से अदालत कर और
मुसीबतज़दा और ग़रीबों के हुक़ूक़ महफ़ूज़ रख।

सुघड़ बीवी की तारीफ़

10सुघड़ बीवी कौन पा सकता है? ऐसी औरत
मोतियों से कहीं ज़्यादा बेशक़ीमत है। 11उस पर
उसके शौहर को पूरा एतमाद है, और वह नफ़ा से
महरूम नहीं रहेगा। 12उम्र-भर वह उसे नुक़सान
नहीं पहुँचाएगी बल्कि बरकत का बाइस होगी।

13वह ऊन और सन चुनकर बड़ी मेहनत से
धागा बना लेती है। 14तिजारती जहाज़ों की तरह
वह दूर-दराज़ इलाक़ों से अपनी रोटी ले आती है।

15वह पौ फटने से पहले ही जाग उठती है
ताकि अपने घरवालों के लिए खाना और अपनी
नौकरानियों के लिए उनका हिस्सा तैयार करे।
16सोच-बिचार के बाद वह खेत ख़रीद लेती,
अपने कमाए हुए पैसों से अंगूर का बाग़ लगा लेती
है।

17ताक़त से कमरबस्ता होकर वह अपने
बाज़ुओं को मज़बूत करती है। 18वह महसूस
करती है, "मेरा कारोबार फ़ायदामंद है," इसलिए
उसका चराग़ रात के वक़्त भी नहीं बुझता।
19उसके हाथ हर वक़्त ऊन और कतान कातने में
मसरूफ़ रहते हैं। 20वह अपनी मुट्ठी मुसीबतज़दों
और ग़रीबों के लिए खोलकर उनकी मदद करती
है। 21जब बर्फ़ पड़े तो उसे घरवालों के बारे में कोई
डर नहीं, क्योंकि सब गरम गरम कपड़े पहने हुए
हैं। 22अपने बिस्तर के लिए वह अच्छे कम्बल बना
लेती, और ख़ुद वह बारीक कतान और अरग़वानी
रंग के लिबास पहने फिरती है।

23शहर के दरवाज़े में बैठे मुल्क के बुज़ुर्ग उसके
शौहर से ख़ूब वाक़िफ़ हैं, और जब कभी कोई
फ़ैसला करना हो तो वह भी शूरा में शरीक होता
है।

24बीवी कपड़ों की सिलाई करके उन्हें फ़रोख़्त
करती है, सौदागर उसके कमरबंद ख़रीद लेते हैं।

25वह ताक़त और वक़ार से मुलब्बस रहती
और हँसकर आनेवाले दिनों का सामना करती
है। 26वह हिकमत से बात करती, और उस की

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : दबाव डालने।

ज़बान पर शफ़ीक़ तालीम रहती है। 27वह सुस्ती
की रोटी नहीं खाती बल्कि अपने घर में हर मामले
की देख-भाल करती है।

28उसके बेटे खड़े होकर उसे मुबारक कहते हैं,
उसका शौहर भी उस की तारीफ़ करके कहता है,
29“बहुत-सी औरतें सुघड़ साबित हुई हैं, लेकिन
तू उन सब पर सबक़त रखती है!”

30दिलफ़रेबी, धोका और हुस्न पल-भर का है,
लेकिन जो औरत अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह
क़ाबिले-तारीफ़ है। 31उसे उस की मेहनत का
अज्र दो! शहर के दरवाज़ों में उसके काम उस
की सताइश करें!।

वाइज़

हर दुनियावी चीज़ बातिल है

1 ज़ैल में वाइज़ के अलफ़ाज़ क़लमबंद हैं,
उसके जो दाऊद का बेटा और यरूशलम
में बादशाह है,
2वाइज़ फ़रमाता है, “बातिल ही बातिल,
बातिल ही बातिल, सब कुछ बातिल ही बातिल
है!” 3सूरज तले जो मेहनत-मशक़्क़त इनसान
करे उसका क्या फ़ायदा है? कुछ नहीं! 4एक
पुश्त आती और दूसरी जाती है, लेकिन ज़मीन
हमेशा तक क़ायम रहती है। 5सूरज तुलू और
ग़ुरूब हो जाता है, फिर सुरअत से उसी जगह
वापस चला जाता है जहाँ से दुबारा तुलू होता
है। 6हवा जुनूब की तरफ़ चलती, फिर मुड़कर
शिमाल की तरफ़ चलने लगती है। यों चक्कर
काट काटकर वह बार बार नुक़ताए-आग़ाज़ पर
वापस आती है। 7तमाम दरिया समुंदर में जा
मिलते हैं, तो भी समुंदर की सतह वही रहती
है, क्योंकि दरियाओं का पानी मुसलसल उन
सरचश्मों के पास वापस आता है जहाँ से बह
निकला है। 8इनसान बातें करते करते थक जाता
है और सहीह तौर से कुछ बयान नहीं कर सकता।
आँख कभी इतना नहीं देखती कि कहे, “अब बस
करो, काफ़ी है।” कान कभी इतना नहीं सुनता
कि और न सुनना चाहे। 9जो कुछ पेश आया
वही दुबारा पेश आएगा, जो कुछ किया गया वही
दुबारा किया जाएगा। सूरज तले कोई भी बात नई
नहीं। 10क्या कोई बात है जिसके बारे में कहा
जा सके, “देखो, यह नई है”? हरगिज़ नहीं, यह
भी हमसे बहुत देर पहले ही मौजूद थी। 11जो
पहले ज़िंदा थे उन्हें कोई याद नहीं करता, और
जो आनेवाले हैं उन्हें भी वह याद नहीं करेंगे जो
उनके बाद आएँगे।

हिक्मत हासिल करना बातिल है

12मैं जो वाइज़ हूँ यरूशलम में इसराईल का
बादशाह था। 13मैंने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त
इस पर लगाई कि जो कुछ आसमान तले किया
जाता है उस की हिकमत के ज़रीए तफ़तीशो-
तहक़ीक़ करूँ। यह काम ना-गवार है गो अल्लाह
ने ख़ुद इनसान को इसमें मेहनत-मशक़्क़त करने
की ज़िम्मेदारी दी है।
14मैंने तमाम कामों का मुलाहज़ा किया जो
सूरज तले होते हैं, तो नतीजा यह निकला कि
सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर
है। 15जो पेचदार है वह सीधा नहीं हो सकता,
जिसकी कमी है उसे गिना नहीं जा सकता।
16मैंने दिल में कहा, “हिक्मत में मैंने इतना
इज़ाफ़ा किया और इतनी तरक़्क़ी की कि उन
सबसे सबक़त ले गया जो मुझसे पहले यरूशलम
पर हुकूमत करते थे। मेरे दिल ने बहुत हिकमत
और इल्म अपना लिया है।” 17मैंने अपनी पूरी
ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि हिकमत समझूँ,
नीज़ कि मुझे दीवानगी और हमाक़त की समझ
भी आए। लेकिन मुझे मालूम हुआ कि यह भी

हवा को पकड़ने के बराबर है। 18क्योंकि जहाँ
हिकमत बहुत है वहाँ रंजीदगी भी बहुत है। जो
इल्मो-इरफ़ान में इज़ाफ़ा करे, वह दुख में इज़ाफ़ा
करता है।

दुनिया की ख़ुशियाँ बातिल हैं

2 मैंने अपने आपसे कहा, "आ, ख़ुशी
को आज़माकर अच्छी चीज़ों का तजरबा
कर!" लेकिन यह भी बातिल ही निकला। 2मैं
बोला, "हँसना बेहूदा है, और ख़ुशी से क्या
हासिल होता है?" 3मैंने दिल में अपना जिस्म
मै से तरो-ताज़ा करने और हमाक़त अपनाने के
तरीक़े ढूँड निकाले। इसके पीछे भी मेरी हिकमत
मालूम करने की कोशिश थी, क्योंकि मैं देखना
चाहता था कि जब तक इनसान आसमान तले
जीता रहे उसके लिए क्या कुछ करना मुफ़ीद है।

4मैंने बड़े बड़े काम अंजाम दिए, अपने
लिए मकान तामीर किए, ताकिस्तान लगाए,
5मुतअद्दिद बाग़ और पार्क लगाकर उनमें
मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फलदार दरख़्त लगाए।
6फलने-फूलनेवाले जंगल की आबपाशी के लिए
मैंने तालाब बनवाए। 7मैंने ग़ुलाम और लौंडियाँ
ख़रीद लीं। ऐसे ग़ुलाम भी बहुत थे जो घर में पैदा
हुए थे। मुझे उतने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ
मिलीं जितनी मुझसे पहले यरूशलम में किसी को
हासिल न थीं। 8मैंने अपने लिए सोना-चाँदी और
बादशाहों और सूबों के ख़ज़ाने जमा किए। मैंने
गुलूकार मर्दो-ख़वातीन हासिल किए, साथ साथ
कसरत की ऐसी चीज़ें जिनसे इनसान अपना दिल
बहलाता है।

9यों मैंने बहुत तरक़्क़ी करके उन सब पर
सबक़त हासिल की जो मुझसे पहले यरूशलम
में थे। और हर काम में मेरी हिकमत मेरे दिल में
क़ायम रही। 10जो कुछ भी मेरी आँखें चाहती थीं
वह मैंने उनके लिए मुहैया किया, मैंने अपने दिल
से किसी भी ख़ुशी का इनकार न किया। मेरे दिल
ने मेरे हर काम से लुत्फ़ उठाया, और यह मेरी
तमाम मेहनत-मशक़्क़त का अज्र रहा।

11लेकिन जब मैंने अपने हाथों के तमाम कामों
का जायज़ा लिया, उस मेहनत-मशक़्क़त का जो
मैंने की थी तो नतीजा यही निकला कि सब कुछ
बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। सूरज
तले किसी भी काम का फ़ायदा नहीं होता।

सबका एक ही अंजाम है

12फिर मैं हिकमत, बेहुदगी और हमाक़त पर
ग़ौर करने लगा। मैंने सोचा, जो आदमी बादशाह
की वफ़ात पर तख़्तनशीन होगा वह क्या करेगा?
वही कुछ जो पहले भी किया जा चुका है!

13मैंने देखा कि जिस तरह रौशनी अंधेरे से
बेहतर है उसी तरह हिकमत हमाक़त से बेहतर है।
14दानिशमंद के सर में आँखें हैं जबकि अहमक़
अंधेरे ही में चलता है। लेकिन मैंने यह भी जान
लिया कि दोनों का एक ही अंजाम है। 15मैंने दिल
में कहा, "अहमक़ का-सा अंजाम मेरा भी होगा।
तो फिर इतनी ज़्यादा हिकमत हासिल करने का
क्या फ़ायदा है? यह भी बातिल है।" 16क्योंकि
अहमक़ की तरह दानिशमंद की याद भी हमेशा
तक नहीं रहेगी। आनेवाले दिनों में सबकी याद
मिट जाएगी। अहमक़ की तरह दानिशमंद को भी
मरना ही है!

17यों सोचते सोचते मैं ज़िंदगी से नफ़रत करने
लगा। जो भी काम सूरज तले किया जाता है वह
मुझे बुरा लगा, क्योंकि सब कुछ बातिल और हवा
को पकड़ने के बराबर है। 18सूरज तले मैंने जो
कुछ भी मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया था
उससे मुझे नफ़रत हो गई, क्योंकि मुझे यह सब
कुछ उसके लिए छोड़ना है जो मेरे बाद मेरी जगह
आएगा। 19और क्या मालूम कि वह दानिशमंद
या अहमक़ होगा? लेकिन जो भी हो, वह उन
तमाम चीज़ों का मालिक होगा जो हासिल करने
के लिए मैंने सूरज तले अपनी पूरी ताक़त और
हिकमत सर्फ़ की है। यह भी बातिल है।

20तब मेरा दिल मायूस होकर हिम्मत हारने
लगा, क्योंकि जो भी मेहनत-मशक़्क़त मैंने सूरज
तले की थी वह बेकार-सी लगी। 21क्योंकि ख़ाह

इनसान अपना काम हिकमत, इल्म और महारत
से क्यों न करे, आख़िरकार उसे सब कुछ किसी
के लिए छोड़ना है जिसने उसके लिए एक उँगली
भी नहीं हिलाई। यह भी बातिल और बड़ी मुसीबत
है। 22क्योंकि आख़िर में इनसान के लिए क्या
कुछ क़ायम रहता है, जबकि उसने सूरज तले
इतनी मेहनत-मशक़्क़त और कोशिशों के साथ
सब कुछ हासिल कर लिया है? 23उसके तमाम
दिन दुख और रंजीदगी से भरे रहते हैं, रात को भी
उसका दिल आराम नहीं पाता। यह भी बातिल ही
है।

24इनसान के लिए सबसे अच्छी बात यह है
कि खाए-पिए और अपनी मेहनत-मशक़्क़त के
फल से लुत्फ़अंदोज़ हो। लेकिन मैंने यह भी जान
लिया कि अल्लाह ही यह सब कुछ मुहैया करता
है। 25क्योंकि उसके बग़ैर कौन खाकर ख़ुश हो
सकता है? कोई नहीं! 26जो इनसान अल्लाह
को मंज़ूर हो उसे वह हिकमत, इल्मो-इरफ़ान और
ख़ुशी अता करता है, लेकिन गुनाहगार को वह
जमा करने और ज़ख़ीरा करने की ज़िम्मेदारी देता
है ताकि बाद में यह दौलत अल्लाह को मंज़ूर
शख़्स के हवाले की जाए। यह भी बातिल और
हवा को पकड़ने के बराबर है।

हर बात का अपना वक़्त है

3 हर चीज़ की अपनी घड़ी होती, आसमान
तले हर मामले का अपना वक़्त होता है,
2जन्म लेने और मरने का,
पौदा लगाने और उखाड़ने का,
3मार देने और शफ़ा देने का,
ढा देने और तामीर करने का,
4रोने और हँसने का,
आहें भरने और रक़्स करने का,
5पत्थर फेंकने और पत्थर जमा करने का,
गले मिलने और इससे बाज़ रहने का,
6तलाश करने और खो देने का,
महफ़ूज़ रखने और फेंकने का,
7फाड़ने और सीकर जोड़ने का,
ख़ामोश रहने और बोलने का,
8प्यार करने और नफ़रत करने का,
जंग लड़ने और सलामती से ज़िंदगी गुज़ारने
का,

9चुनाँचे क्या फ़ायदा है कि काम करने-
वाला मेहनत-मशक़्क़त करे?
10मैंने वह तकलीफ़देह काम-काज देखा जो
अल्लाह ने इनसान के सुपुर्द किया ताकि वह
उसमें उलझा रहे। 11उसने हर चीज़ को यों बनाया
है कि वह अपने वक़्त के लिए ख़ूबसूरत और
मुनासिब हो। उसने इनसान के दिल में जाविदानी
भी डाली है, गो वह शुरू से लेकर आख़िर तक उस
काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो अल्लाह ने
किया है। 12मैंने जान लिया कि इनसान के लिए
इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह ख़ुश रहे और
जीते-जी ज़िंदगी का मज़ा ले। 13क्योंकि अगर
कोई खाए-पिए और तमाम मेहनत-मशक़्क़त के
साथ साथ ख़ुशहाल भी हो तो यह अल्लाह की
बख़्शिश है।

14मुझे समझ आई कि जो कुछ अल्लाह करे
वह अबद तक क़ायम रहेगा। उसमें न इज़ाफ़ा हो
सकता है न कमी। अल्लाह यह सब कुछ इसलिए
करता है कि इनसान उसका ख़ौफ़ माने। 15जो
हाल में पेश आ रहा है वह माज़ी में पेश आ चुका
है, और जो मुस्तक़बिल में पेश आएगा वह भी
पेश आ चुका है। हाँ, जो कुछ गुज़र चुका है उसे
अल्लाह दुबारा वापस लाता है।

इनसान फ़ानी है

16मैंने सूरज तले मज़ीद देखा, जहाँ अदालत
करनी है वहाँ नाइनसाफ़ी है, जहाँ इनसाफ़ करना
है वहाँ बेदीनी है। 17लेकिन मैं दिल में बोला,
"अल्लाह रास्तबाज़ और बेदीन दोनों की अदालत
करेगा, क्योंकि हर मामले और काम का अपना
वक़्त होता है।"
18मैंने यह भी सोचा, "जहाँ तक इनसानों का
ताल्लुक़ है अल्लाह उनकी जाँच-पड़ताल करता

है ताकि उन्हें पता चले कि वह जानवरों की मानिंद
हैं। 19क्योंकि इनसानो-हैवान का एक ही अंजाम
है। दोनों दम छोड़ते, दोनों में एक-सा दम है,
इसलिए इनसान को हैवान की निसबत ज़्यादा
फ़ायदा हासिल नहीं होता। सब कुछ बातिल ही
है। 20सब कुछ एक ही जगह चला जाता है, सब
कुछ ख़ाक से बना है और सब कुछ दुबारा ख़ाक
में मिल जाएगा। 21कौन यक़ीन से कह सकता
है कि इनसान की रूह ऊपर की तरफ़ जाती और
हैवान की रूह नीचे ज़मीन में उतरती है?"

22ग़रज़ मैंने जान लिया कि इनसान के लिए
इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह अपने कामों में
ख़ुश रहे, यही उसके नसीब में है। क्योंकि कौन
उसे वह देखने के क़ाबिल बनाएगा जो उसके बाद
पेश आएगा? कोई नहीं!

मुरदों का हाल बेहतर है

4 मैंने एक बार फिर नज़र डाली तो मुझे
वह तमाम ज़ुल्म नज़र आया जो सूरज
तले होता है। मज़लूमों के आँसू बहते हैं, और
तसल्ली देनेवाला कोई नहीं होता। ज़ालिम उनसे
ज़्यादती करते हैं, और तसल्ली देनेवाला कोई
नहीं होता। 2यह देखकर मैंने मुरदों को मुबारक
कहा, हालाँकि वह अरसे से वफ़ात पा चुके थे।
मैंने कहा, "वह हाल के ज़िंदा लोगों से कहीं
मुबारक हैं। 3लेकिन इनसे ज़्यादा मुबारक वह
है जो अब तक वुजूद में नहीं आया, जिसने वह
तमाम बुराइयाँ नहीं देखीं जो सूरज तले होती हैं।"

ग़ुरबत में सुकून बेहतर है

4मैंने यह भी देखा कि सब लोग इसलिए
मेहनत-मशक़्क़त और महारत से काम करते हैं
कि एक दूसरे से हसद करते हैं। यह भी बातिल
और हवा को पकड़ने के बराबर है। 5एक तरफ़ तो
अहमक़ हाथ पर हाथ धरे बैठने के बाइस अपने
आपको तबाही तक पहुँचाता है। 6लेकिन दूसरी
तरफ़ अगर कोई मुट्ठी-भर रोज़ी कमाकर सुकून
के साथ ज़िंदगी गुज़ार सके तो यह इससे बेहतर
है कि दोनों मुट्ठियाँ सिर-तोड़ मेहनत और हवा को
पकड़ने की कोशिशों के बाद ही भरें।

तनहाई की निसबत मिलकर रहना बेहतर है

7मैंने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा जो बातिल
है। 8एक आदमी अकेला ही था। न उसके बेटा
था, न भाई। वह बेहद मेहनत-मशक़्क़त करता
रहा, लेकिन उस की आँखें कभी अपनी दौलत
से मुतमइन न थीं। सवाल यह रहा, "मैं इतनी
सिर-तोड़ कोशिश किसके लिए कर रहा हूँ? मैं
अपनी जान को ज़िंदगी के मज़े लेने से क्यों
महरूम रख रहा हूँ?" यह भी बातिल और ना-
गवार मामला है।

9दो एक से बेहतर हैं, क्योंकि उन्हें अपने काम-
काज का अच्छा अज्र मिलेगा। 10अगर एक गिर
जाए तो उसका साथी उसे दुबारा खड़ा करेगा।
लेकिन उस पर अफ़सोस जो गिर जाए और कोई
साथी न हो जो उसे दुबारा खड़ा करे। 11नीज़,
जब दो सर्दियों के मौसम में मिलकर बिस्तर पर
लेट जाएँ तो वह गरम रहते हैं। जो तनहा है
वह किस तरह गरम हो जाएगा? 12एक शख़्स
पर क़ाबू पाया जा सकता है जबकि दो मिलकर
अपना दिफ़ा कर सकते हैं। तीन लड़ियोंवाली
रस्सी जल्दी से नहीं टूटती।

क़ौम की क़बूलियत फ़ज़ूल है

13जो लड़का ग़रीब लेकिन दानिशमंद है वह
उस बुज़ुर्ग लेकिन अहमक़ बादशाह से कहीं बेहतर
है जो तंबीह मानने से इनकार करे। 14क्योंकि
गो वह बूढ़े बादशाह की हुकूमत के दौरान ग़ुरबत
में पैदा हुआ था तो भी वह जेल से निकलकर
बादशाह बन गया। 15लेकिन फिर मैंने देखा कि
सूरज तले तमाम लोग एक और लड़के के पीछे हो
लिए जिसे पहले की जगह तख़्तनशीन होना था।
16उन तमाम लोगों की इंतहा नहीं थी जिनकी
क़ियादत वह करता था। तो भी जो बाद में आएँगे
वह उससे ख़ुश नहीं होंगे। यह भी बातिल और
हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का ख़ौफ़ मानना

5 अल्लाह के घर में जाते वक़्त अपने क़दमों का ख़याल रख और सुनने के लिए तैयार रह। यह अहमक़ों की क़ुरबानियों से कहीं बेहतर है, क्योंकि वह जानते ही नहीं कि ग़लत काम कर रहे हैं।

2बोलने में जल्दबाज़ी न कर, तेरा दिल अल्लाह के हुज़ूर कुछ बयान करने में जल्दी न करे। अल्लाह आसमान पर है जबकि तू ज़मीन पर ही है। लिहाज़ा बेहतर है कि तू कम बातें
करे। 3क्योंकि जिस तरह हद से ज़्यादा मेहनत-मशक़्क़त से ख़ाब आने लगते हैं उसी तरह बहुत बातें करने से आदमी की हमाक़त ज़ाहिर होती है।
4अगर तू अल्लाह के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर मत कर। वह अहमक़ों से ख़ुश
नहीं होता, चुनाँचे अपनी मन्नत पूरी कर। 5मन्नत
न मानना मन्नत मानकर उसे पूरा न करने से बेहतर है।

6अपने मुँह को इजाज़त न दे कि वह तुझे गुनाह में फँसाए, और अल्लाह के पैग़ंबर के सामने न कह, "मुझसे ग़ैरइरादी ग़लती हुई है।" क्या ज़रूरत है कि अल्लाह तेरी बात से नाराज़ होकर तेरी मेहनत का काम तबाह करे?

7जहाँ बहुत ख़ाब देखे जाते हैं वहाँ फ़ज़ूल बातें और बेशुमार अलफ़ाज़ होते हैं। चुनाँचे अल्लाह का ख़ौफ़ मान!

ज़ालिमों का ज़ुल्म

8क्या तुझे सूबे में ऐसे लोग नज़र आते हैं जो ग़रीबों पर ज़ुल्म करते, उनका हक़ मारते और उन्हें इनसाफ़ से महरूम रखते हैं? ताज्जुब न कर, क्योंकि एक सरकारी मुलाज़िम दूसरे की निगहबानी करता है, और उन पर मज़ीद मुलाज़िम
मुक़र्रर होते हैं। 9चुनाँचे मुल्क के लिए हर लिहाज़
से फ़ायदा इसमें है कि ऐसा बादशाह उस पर हुकूमत करे जो काश्तकारी की फ़िकर करता है।

दौलत ख़ुशहाली की ज़मानत नहीं दे सकती

10जिसे पैसे प्यारे हों वह कभी मुतमइन नहीं होगा, ख़ाह उसके पास कितने ही पैसे क्यों न हों। जो ज़रदोस्त हो वह कभी आसूदा नहीं होगा, ख़ाह उसके पास कितनी ही दौलत क्यों न हो।
यह भी बातिल ही है। 11जितना माल में इज़ाफ़ा
हो उतना ही उनकी तादाद बढ़ती है जो उसे खा जाते हैं। उसके मालिक को उसका क्या फ़ायदा है सिवाए इसके कि वह उसे देख देखकर मज़ा
ले? 12काम-काज करनेवाले की नींद मीठी होती है, ख़ाह उसने कम या ज़्यादा खाना खाया हो, लेकिन अमीर की दौलत उसे सोने नहीं देती।

13मुझे सूरज तले एक निहायत बुरी बात नज़र आई। जो दौलत किसी ने अपने लिए महफ़ूज़ रखी वह उसके लिए नुक़सान का बाइस बन
गई। 14क्योंकि जब यह दौलत किसी मुसीबत के बाइस तबाह हो गई और आदमी के हाँ बेटा
पैदा हुआ तो उसके हाथ में कुछ नहीं था। 15माँ
के पेट से निकलते वक़्त वह नंगा था, और इसी तरह कूच करके चला भी जाएगा। उस की मेहनत का कोई फल नहीं होगा जिसे वह अपने साथ ले जा सके।

16यह भी बहुत बुरी बात है कि जिस तरह इनसान आया उसी तरह कूच करके चला भी जाता है। उसे क्या फ़ायदा हुआ है कि उसने हवा
के लिए मेहनत-मशक़्क़त की हो? 17जीते-जी
वह हर दिन तारीकी में खाना खाते हुए गुज़ारता, ज़िंदगी-भर वह बड़ी रंजीदगी, बीमारी और ग़ुस्से में मुब्तला रहता है।

18तब मैंने जान लिया कि इनसान के लिए अच्छा और मुनासिब है कि वह जितने दिन अल्लाह ने उसे दिए हैं खाए-पिए और सूरज तले अपनी मेहनत-मशक़्क़त के फल का मज़ा
ले, क्योंकि यही उसके नसीब में है। 19क्योंकि
जब अल्लाह किसी शख़्स को मालो-मता अता करके उसे इस क़ाबिल बनाए कि उसका मज़ा ले सके, अपना नसीब क़बूल कर सके और मेहनत-

मशक़्क़त के साथ साथ ख़ुश भी हो सके तो यह अल्लाह की बख़्शिश है। 20ऐसे शख़्स को ज़िंदगी के दिनों पर ग़ौरो-ख़ौज़ करने का कम ही वक़्त मिलता है, क्योंकि अल्लाह उसे दिल में ख़ुशी दिलाकर मसरूफ़ रखता है।

6 मुझे सूरज तले एक और बुरी बात नज़र आई जो इनसान को अपने बोझ तले दबाए रखती है।

2अल्लाह किसी आदमी को मालो-मता और इज़्ज़त अता करता है। ग़रज़ उसके पास सब कुछ है जो उसका दिल चाहे। लेकिन अल्लाह उसे इन चीज़ों से लुत्फ़ उठाने नहीं देता बल्कि कोई अजनबी उसका मज़ा लेता है। यह बातिल और एक बड़ी मुसीबत है। 3हो सकता है कि किसी आदमी के सौ बच्चे पैदा हों और वह उम्ररसीदा भी हो जाए, लेकिन ख़ाह वह कितना बूढ़ा क्यों न हो जाए, अगर अपनी ख़ुशहाली का मज़ा न ले सके और आख़िरकार सहीह रसूमात के साथ दफ़नाया न जाए तो इसका क्या फ़ायदा? मैं कहता हूँ कि उस की निसबत माँ के पेट में ज़ाया हो गए बच्चे का हाल बेहतर है। 4बेशक ऐसे बच्चे का आना बेमानी है, और वह अंधेरे में ही कूच करके चला जाता बल्कि उसका नाम तक अंधेरे में छुपा रहता है। 5लेकिन गो उसने न कभी सूरज देखा, न उसे कभी मालूम हुआ कि ऐसी चीज़ है ताहम उसे मज़कूरा आदमी से कहीं ज़्यादा आरामो-सुकून हासिल है। 6और अगर वह दो हज़ार साल तक जीता रहे, लेकिन अपनी ख़ुशहाली से लुत्फ़अंदोज़ न हो सके तो क्या फ़ायदा है? सबको तो एक ही जगह जाना है।

7इनसान की तमाम मेहनत-मशक़्क़त का यह मक़सद है कि पेट भर जाए, तो भी उस की भूक कभी नहीं मिटती। 8दानिशमंद को क्या हासिल है जिसके बाइस वह अहमक़ से बरतर है? इसका क्या फ़ायदा है कि ग़रीब आदमी ज़िंदों के साथ मुनासिब सुलूक करने का फ़न सीख ले? 9दूर-दराज़ चीज़ों के आरज़ूमंद रहने की निसबत बेहतर यह है कि इनसान उन चीज़ों से लुत्फ़ उठाए जो आँखों के सामने ही हैं। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता

10जो कुछ भी पेश आता है उसका नाम पहले ही रखा गया है, जो भी इनसान वुजूद में आता है वह पहले ही मालूम था। कोई भी इनसान उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता जो उससे ताक़तवर है। 11क्योंकि जितनी भी बातें इनसान करे उतना ही ज़्यादा मालूम होगा कि बातिल हैं। इनसान के लिए इसका क्या फ़ायदा?

12किस को मालूम है कि उन थोड़े और बेकार दिनों के दौरान जो साये की तरह गुज़र जाते हैं इनसान के लिए क्या कुछ फ़ायदामंद है? कौन उसे बता सकता है कि उसके चले जाने पर सूरज तले क्या कुछ पेश आएगा?

अच्छा क्या है?

7 अच्छा नाम ख़ुशबूदार तेल से और मौत का दिन पैदाइश के दिन से बेहतर है।

2ज़ियाफ़त करनेवालों के घर में जाने की निसबत मातम करनेवालों के घर में जाना बेहतर है, क्योंकि हर इनसान का अंजाम मौत ही है। जो ज़िंदा हैं वह इस बात पर ख़ूब ध्यान दें। 3दुख हँसी से बेहतर है, उतरा हुआ चेहरा दिल की बेहतरी का बाइस है। 4दानिशमंद का दिल मातम करनेवालों के घर में ठहरता जबकि अहमक़ का दिल ऐशो-इशरत करनेवालों के घर में टिक जाता है।

5अहमक़ों के गीत सुनने की निसबत दानिशमंद की झिड़कियों पर ध्यान देना बेहतर है। 6अहमक़ के क़हक़हे देगची तले चटख़नेवाले काँटों की आग की मानिंद हैं। यह भी बातिल ही है।

7नारवा नफ़ा दानिशमंद को अहमक़ बना देता, रिश्वत दिल को बिगाड़ देती है।

8किसी मामले का अंजाम उस की इब्तिदा से बेहतर है, सब्र करना मग़रूर होने से बेहतर है।

9ग़ुस्सा करने में जल्दी न कर, क्योंकि ग़ुस्सा अहमक़ों की गोद में ही आराम करता है।

10यह न पूछ कि आज की निसबत पुराना ज़माना बेहतर क्यों था, क्योंकि यह हिकमत की बात नहीं।

11अगर हिकमत के अलावा मीरास में मिलकियत भी मिल जाए तो यह अच्छी बात है, यह उनके लिए सूदमंद है जो सूरज देखते हैं।
12क्योंकि हिकमत पैसों की तरह पनाह देती है, लेकिन हिकमत का ख़ास फ़ायदा यह है कि वह अपने मालिक की जान बचाए रखती है।

13अल्लाह के काम का मुलाहज़ा कर। जो कुछ उसने पेचदार बनाया कौन उसे सुलझा सकता है?

14ख़ुशी के दिन ख़ुश हो, लेकिन मुसीबत के दिन ख़याल रख कि अल्लाह ने यह दिन भी बनाया और वह भी इसलिए कि इनसान अपने मुस्तक़बिल के बारे में कुछ मालूम न कर सके।

इंतहापसंदों से दरेग़ कर

15अपनी अबस ज़िंदगी के दौरान मैंने दो बातें देखी हैं। एक तरफ़ रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी के बावुजूद तबाह हो जाता जबकि दूसरी तरफ़ बेदीन अपनी बेदीनी के बावुजूद उम्ररसीदा हो
जाता है। 16न हद से ज़्यादा रास्तबाज़ी दिखा, न हद से ज़्यादा दानिशमंदी। अपने आपको तबाह
करने की क्या ज़रूरत है? 17न हद से ज़्यादा बेदीनी, न हद से ज़्यादा हमाक़त दिखा। मुक़र्ररा
वक़्त से पहले मरने की क्या ज़रूरत है? 18अच्छा है कि तू यह बात थामे रखे और दूसरी भी न छोड़े। जो अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह दोनों ख़तरों से बच निकलेगा।

19हिकमत दानिशमंद को शहर के दस हुक्मरानों से ज़्यादा ताक़तवर बना देती है।
20दुनिया में कोई भी इनसान इतना रास्तबाज़ नहीं कि हमेशा अच्छा काम करे और कभी गुनाह न करे।

21लोगों की हर बात पर ध्यान न दे, ऐसा न हो कि तू नौकर की लानत भी सुन ले जो वह तुझ
पर करता है। 22क्योंकि दिल में तू जानता है कि तूने ख़ुद मुतअद्दिद बार दूसरों पर लानत भेजी है।

कौन दानिशमंद है?

23हिकमत के ज़रीए मैंने इन तमाम बातों की जाँच-पड़ताल की। मैं बोला, “मैं दानिशमंद बनना
चाहता हूँ,” लेकिन हिकमत मुझसे दूर रही। 24जो कुछ मौजूद है वह दूर और निहायत गहरा है।
कौन उस की तह तक पहुँच सकता है? 25चुनाँचे मैं रुख़ बदलकर पूरे ध्यान से इसकी तहक़ीक़ो-तफ़तीश करने लगा कि हिकमत और मुख़्तलिफ़ बातों के सहीह नतायज क्या हैं। नीज़, मैं बेदीनी की हमाक़त और बेहुदगी की दीवानगी मालूम करना चाहता था।

26मुझे मालूम हुआ कि मौत से कहीं तलख़ वह औरत है जो फंदा है, जिसका दिल जाल और हाथ ज़ंजीरें हैं। जो आदमी अल्लाह को मंज़ूर हो वह बच निकलेगा, लेकिन गुनाहगार उसके जाल में उलझ जाएगा।

27वाइज़ फ़रमाता है, “यह सब कुछ मुझे मालूम हुआ जब मैंने मुख़्तलिफ़ बातें एक दूसरे के साथ मुंसलिक कीं ताकि सहीह नतायज
तक पहुँचूँ। 28लेकिन जिसे मैं ढूँडता रहा वह न मिला। हज़ार अफ़राद में से मुझे सिर्फ़ एक ही दियानतदार मर्द मिला, लेकिन एक भी दियानतदार औरत नहीं।[a]

29मुझे सिर्फ़ इतना ही मालूम हुआ कि गो अल्लाह ने इनसानों को दियानतदार बनाया, लेकिन वह कई क़िस्म की चालाकियाँ ढूँड निकालते हैं।”

8 कौन दानिशमंद की मानिंद है? कौन बातों की सहीह तशरीह करने का इल्म रखता है? हिकमत इनसान का चेहरा रौशन और उसके मुँह का सख़्त अंदाज़ नरम कर देती है।

[a]‘दियानतदार’ इज़ाफ़ा है ताकि आयत का जो ग़ालिबन मतलब है वह साफ़ हो जाए।

हुक्मरान का इख़्तियार

2मैं कहता हूँ, बादशाह के हुक्म पर चल, क्योंकि तूने अल्लाह के सामने हलफ़ उठाया है। 3बादशाह के हुज़ूर से दूर होने में जल्दबाज़ी न कर। किसी बुरे मामले में मुब्तला न हो जा, क्योंकि उसी की मरज़ी चलती है। 4बादशाह के फ़रमान के पीछे उसका इख़्तियार है, इसलिए कौन उससे पूछे, "तू क्या कर रहा है?" 5जो उसके हुक्म पर चले उसका किसी बुरे मामले से वास्ता नहीं पड़ेगा, क्योंकि दानिशमंद दिल मुनासिब वक़्त और इनसाफ़ की राह जानता है।

6क्योंकि हर मामले के लिए मुनासिब वक़्त और इनसाफ़ की राह होती है। लेकिन मुसीबत इनसान को दबाए रखती है, 7क्योंकि वह नहीं जानता कि मुस्तक़बिल कैसा होगा। कोई उसे यह नहीं बता सकता है। 8कोई भी इनसान हवा को बंद रखने के क़ाबिल नहीं।[a] इसी तरह किसी को भी अपनी मौत का दिन मुक़र्रर करने का इख़्तियार नहीं। यह उतना यक़ीनी है जितना यह कि फ़ौजियों को जंग के दौरान फ़ारिग़ नहीं किया जाता और बेदीनी बेदीन को नहीं बचाती।

9मैंने यह सब कुछ देखा जब पूरे दिल से उन तमाम बातों पर ध्यान दिया जो सूरज तले होती हैं, जहाँ इस वक़्त एक आदमी दूसरे को नुक़सान पहुँचाने का इख़्तियार रखता है।

दुनिया में नाइनसाफ़ी

10फिर मैंने देखा कि बेदीनों को इज़्ज़त के साथ दफ़नाया गया। यह लोग मक़दिस के पास आते-जाते थे! लेकिन जो रास्तबाज़ थे उनकी याद शहर में मिट गई। यह भी बातिल ही है।

11मुजरिमों को जल्दी से सज़ा नहीं दी जाती, इसलिए लोगों के दिल बुरे काम करने के मनसूबों से भर जाते हैं। 12गुनाहगार से सौ गुनाह सरज़द होते हैं, तो भी उम्ररसीदा हो जाता है।

बेशक मैं यह भी जानता हूँ कि ख़ुदातरस लोगों की ख़ैर होगी, उनकी जो अल्लाह के चेहरे से डरते हैं। 13बेदीन की ख़ैर नहीं होगी, क्योंकि वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानता। उस की ज़िंदगी के दिन ज़्यादा नहीं बल्कि साये जैसे आरिज़ी होंगे।
14तो भी एक और बात दुनिया में पेश आती है जो बातिल है, रास्तबाज़ों को वह सज़ा मिलती है जो बेदीनों को मिलनी चाहिए, और बेदीनों को वह अज्र मिलता है जो रास्तबाज़ों को मिलना चाहिए। यह देखकर मैं बोला, "यह भी बातिल ही है।"

15चुनाँचे मैंने ख़ुशी की तारीफ़ की, क्योंकि सूरज तले इनसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह खाए-पिए और ख़ुश रहे। फिर मेहनत-मशक़्क़त करते वक़्त ख़ुशी उतने ही दिन उसके साथ रहेगी जितने अल्लाह ने सूरज तले उसके लिए मुक़र्रर किए हैं।

जो कुछ अल्लाह करता है वह नाक़ाबिले-फ़हम है

16मैंने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि हिकमत जान लूँ और ज़मीन पर इनसान की मेहनतों का मुआयना कर लूँ, ऐसी मेहनतें कि उसे दिन-रात नींद नहीं आती। 17तब मैंने अल्लाह का सारा काम देखकर जान लिया कि इनसान उस तमाम काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो सूरज तले होता है। ख़ाह वह उस की कितनी तहक़ीक़ क्यों न करे तो भी वह तह तक नहीं पहुँच सकता। हो सकता है कोई दानिशमंद दावा करे, "मुझे इसकी पूरी समझ आई है," लेकिन ऐसा नहीं है, वह तह तक नहीं पहुँच सकता।

9 इन तमाम बातों पर मैंने दिल से ग़ौर किया। इनके मुआयने के बाद मैंने नतीजा निकाला कि रास्तबाज़ और दानिशमंद और जो कुछ वह करें अल्लाह के हाथ में हैं। ख़ाह मुहब्बत हो ख़ाह नफ़रत, इसकी भी समझ इनसान को नहीं आती, दोनों की जड़ें उससे पहले माज़ी में

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : कोई भी इनसान अपनी जान को निकलने से नहीं रोक सकता।

हैं। 2सबके नसीब में एक ही अंजाम है, रास्तबाज़
और बेदीन के, नेक और बद के, पाक और नापाक
के, क़ुरबानियाँ पेश करनेवाले के और उसके जो
कुछ नहीं पेश करता। अच्छे शख़्स और गुनाहगार
का एक ही अंजाम है, हलफ़ उठानेवाले और
इससे डरकर गुरेज़ करनेवाले की एक ही मनज़िल
है।

3सूरज तले हर काम की यही मुसीबत है कि हर
एक के नसीब में एक ही अंजाम है। इनसान का
मुलाहज़ा कर। उसका दिल बुराई से भरा रहता
बल्कि उम्र-भर उसके दिल में बेहुदगी रहती है।
लेकिन आख़िरकार उसे मुरदों में ही जा मिलना
है।

4जो अब तक ज़िंदों में शरीक है उसे उम्मीद है।
क्योंकि ज़िंदा कुत्ते का हाल मुरदा शेर से बेहतर है।
5कम अज़ कम जो ज़िंदा हैं वह जानते हैं कि हम
मरेंगे। लेकिन मुरदे कुछ नहीं जानते, उन्हें मज़ीद
कोई अज्र नहीं मिलना है। उनकी यादें भी मिट
जाती हैं। 6उनकी मुहब्बत, नफ़रत और ग़ैरत सब
कुछ बड़ी देर से जाती रही है। अब वह कभी भी
उन कामों में हिस्सा नहीं लेंगे जो सूरज तले होते
हैं।

ज़िंदगी के मज़े ले!

7चुनाँचे जाकर अपना खाना ख़ुशी के साथ
खा, अपनी मै ज़िंदादिली से पी, क्योंकि अल्लाह
काफ़ी देर से तेरे कामों से ख़ुश है। 8तेरे कपड़े
हर वक़्त सफ़ेद[a] हों, तेरा सर तेल से महरूम न
रहे। 9अपने जीवनसाथी के साथ जो तुझे प्यारा
है ज़िंदगी के मज़े लेता रह। सूरज तले की बातिल
ज़िंदगी के जितने दिन अल्लाह ने तुझे बख़्श दिए
हैं उन्हें इसी तरह गुज़ार! क्योंकि ज़िंदगी में और
सूरज तले तेरी मेहनत-मशक़्क़त में यही कुछ तेरे
नसीब में है। 10जिस काम को भी हाथ लगाए
उसे पूरे जोशो-ख़ुरोश से कर, क्योंकि पाताल में
जहाँ तू जा रहा है न कोई काम है, न मनसूबा, न
इल्म और न हिकमत।

दुनिया में हिकमत की क़दर नहीं की जाती

11मैंने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा। यक़ीनी
बात नहीं कि मुक़ाबले में सबसे तेज़ दौड़नेवाला
जीत जाए, कि जंग में पहलवान फ़तह पाए, कि
दानिशमंद को ख़ुराक हासिल हो, कि समझदार
को दौलत मिले या कि आलिम मंज़ूरी पाए। नहीं,
सब कुछ मौक़े और इत्तफ़ाक़ पर मुनहसिर होता
है। 12नीज़, कोई भी इनसान नहीं जानता कि
मुसीबत का वक़्त कब उस पर आएगा। जिस तरह
मछलियाँ ज़ालिम जाल में उलझ जाती या परिंदे
फंदे में फँस जाते हैं उसी तरह इनसान मुसीबत में
फँस जाता है। मुसीबत अचानक ही उस पर आ
जाती है।

13सूरज तले मैंने हिकमत की एक और मिसाल
देखी जो मुझे अहम लगी।

14कहीं कोई छोटा शहर था जिसमें थोड़े-
से अफ़राद बसते थे। एक दिन एक ताक़तवर
बादशाह उससे लड़ने आया। उसने उसका
मुहासरा किया और इस मक़सद से उसके इर्दगिर्द
बड़े बड़े बुर्ज खड़े किए। 15शहर में एक आदमी
रहता था जो दानिशमंद अलबत्ता ग़रीब था। इस
शख़्स ने अपनी हिकमत से शहर को बचा लिया।
लेकिन बाद में किसी ने भी ग़रीब को याद न
किया। 16यह देखकर मैं बोला, "हिक्मत ताक़त
से बेहतर है," लेकिन ग़रीब की हिकमत हक़ीर
जानी जाती है। कोई भी उस की बातों पर ध्यान
नहीं देता। 17दानिशमंद की जो बातें आराम से
सुनी जाएँ वह अहमक़ों के दरमियान रहनेवाले
हुक्मरान के ज़ोरदार एलानात से कहीं बेहतर हैं।
18हिकमत जंग के हथियारों से बेहतर है, लेकिन
एक ही गुनाहगार बहुत कुछ जो अच्छा है तबाह
करता है।

मुख़्तलिफ़ हिदायात

10 मरी हुई मक्खियाँ ख़ुशबूदार तेल
ख़राब करती हैं, और हिकमत और

[a]यानी ख़ुशी मनाने के कपड़े।

इज़्ज़त की निसबत थोड़ी-सी हमाक़त का ज़्यादा असर होता है।

2दानिशमंद का दिल सहीह राह चुन लेता है जबकि अहमक़ का दिल ग़लत राह पर आ जाता है। 3रास्ते पर चलते वक़्त भी अहमक़ समझ से ख़ाली है, जिससे भी मिले उसे बताता है कि वह बेवुक़ूफ़ है।[a]

4अगर हुक्मरान तुझसे नाराज़ हो जाए तो अपनी जगह मत छोड़, क्योंकि पुरसुकून रवैया बड़ी बड़ी ग़लतियाँ दूर कर देता है।

5मुझे सूरज तले एक ऐसी बुरी बात नज़र आई जो अकसर हुक्मरानों से सरज़द होती है।
6अहमक़ को बड़े ओहदों पर फ़ायज़ किया जाता है जबकि अमीर छोटे ओहदों पर ही रहते हैं। 7मैंने
ग़ुलामों को घोड़े पर सवार और हुक्मरानों को ग़ुलामों की तरह पैदल चलते देखा है।

8जो गढ़ा खोदे वह ख़ुद उसमें गिर सकता है, जो दीवार गिरा दे हो सकता है कि साँप उसे डसे।
9जो कान से पत्थर निकाले उसे चोट लग सकती है, जो लकड़ी चीर डाले वह ज़ख़मी हो जाने के ख़तरे में है।

10अगर कुल्हाड़ी कुंद हो और कोई उसे तेज़ न करे तो ज़्यादा ताक़त दरकार है। लिहाज़ा हिकमत को सहीह तौर से अमल में ला, तब ही कामयाबी हासिल होगी।

11अगर इससे पहले कि सपेरा साँप पर क़ाबू पाए वह उसे डसे तो फिर सपेरा होने का क्या फ़ायदा?

12दानिशमंद अपने मुँह की बातों से दूसरों की मेहरबानी हासिल करता है, लेकिन अहमक़ के
अपने ही होंट उसे हड़प कर लेते हैं। 13उसका
बयान अहमक़ाना बातों से शुरू और ख़तरनाक बेवुक़ूफ़ियों से ख़त्म होता है। 14ऐसा शख़्स बातें
करने से बाज़ नहीं आता, गो इनसान मुस्तक़बिल के बारे में कुछ नहीं जानता। कौन उसे बता सकता है कि उसके बाद क्या कुछ होगा? 15अहमक़ का
काम उसे थका देता है, और वह शहर का रास्ता भी नहीं जानता।

16उस मुल्क पर अफ़सोस जिसका बाद-शाह बच्चा है और जिसके बुज़ुर्ग सुबह ही ज़ियाफ़त करने लगते हैं। 17मुबारक है वह मुल्क
जिसका बादशाह शरीफ़ है और जिसके बुज़ुर्ग नशे में धुत नहीं रहते बल्कि मुनासिब वक़्त पर और नज़मो-ज़ब्त के साथ खाना खाते हैं।

18जो सुस्त है उसके घर के शहतीर झुकने लगते हैं, जिसके हाथ ढीले हैं उस की छत से पानी टपकने लगता है।

19ज़ियाफ़त करने से हँसी-ख़ुशी और मै पीने से ज़िंदादिली पैदा होती है, लेकिन पैसा ही सब कुछ मुहैया करता है।

20ख़यालों में भी बादशाह पर लानत न कर, अपने सोने के कमरे में भी अमीर पर लानत न भेज, ऐसा न हो कि कोई परिंदा तेरे अलफ़ाज़ लेकर उस तक पहुँचाए।

मेहनत का फ़ायदा

11 अपनी रोटी पानी पर फेंककर जाने दे तो मुतअद्दिद दिनों के बाद वह तुझे फिर मिल जाएगी। 2अपनी मिलकियत सात
बल्कि आठ मुख़्तलिफ़ कामों में लगा दे, क्योंकि तुझे क्या मालूम कि मुल्क किस किस मुसीबत से दोचार होगा।

3अगर बादल पानी से भरे हों तो ज़मीन पर बारिश ज़रूर होगी। दरख़्त जुनूब या शिमाल की तरफ़ गिर जाए तो उसी तरफ़ पड़ा रहेगा।

4जो हर वक़्त हवा का रुख़ देखता रहे वह कभी बीज नहीं बोएगा। जो बादलों को तकता रहे वह कभी फ़सल की कटाई नहीं करेगा।

5जिस तरह न तुझे हवा के चक्कर मालूम हैं, न यह कि माँ के पेट में बच्चा किस तरह तश्कील पाता है उसी तरह तू अल्लाह का काम नहीं समझ सकता, जो सब कुछ अमल में लाता है।

[a]इबरानी ज़ूमानी है। दूसरा मतलब 'कि मैं बेवुक़ूफ़ हूँ' हो सकता है।

6सुबह के वक़्त अपना बीज बो और शाम को
भी काम में लगा रह, क्योंकि क्या मालूम कि
किस काम में कामयाबी होगी, इसमें, उसमें या
दोनों में।

अपनी जवानी से लुत्फ़अंदोज़ हो

7रौशनी कितनी भली है, और सूरज आँखों
के लिए कितना ख़ुशगवार है। 8जितने भी साल
इनसान ज़िंदा रहे उतने साल वह ख़ुशबाश रहे।
साथ साथ उसे याद रहे कि तारीक दिन भी
आनेवाले हैं, और कि उनकी बड़ी तादाद होगी।
जो कुछ आनेवाला है वह बातिल ही है।

9ऐ नौजवान, जब तक तू जवान है ख़ुश रह और
जवानी के मज़े लेता रह। जो कुछ तेरा दिल चाहे
और तेरी आँखों को पसंद आए वह कर, लेकिन
याद रहे कि जो कुछ भी तू करे उसका जवाब
अल्लाह तुझसे तलब करेगा। 10चुनाँचे अपने दिल
से रंजीदगी और अपने जिस्म से दुख-दर्द दूर रख,
क्योंकि जवानी और काले बाल दम-भर के ही हैं।

12 जवानी में ही अपने ख़ालिक़ को याद
रख, इससे पहले कि मुसीबत के दिन
आएँ, वह साल क़रीब आएँ जिनके बारे में तू
कहेगा, “यह मुझे पसंद नहीं।” 2उसे याद रख
इससे पहले कि रौशनी तेरे लिए ख़त्म हो जाए,
सूरज, चाँद और सितारे अंधेरे हो जाएँ और
बारिश के बाद बादल लौट आएँ। 3उसे याद
रख, इससे पहले कि घर के पहरेदार थरथराने
लगें, ताक़तवर आदमी कुबड़े हो जाएँ, गंदुम
पीसनेवाली नौकरानियाँ कम होने के बाइस काम
करना छोड़ दें और खिड़कियों में से देखनेवाली
ख़वातीन धुँधला जाएँ। 4उसे याद रख, इससे
पहले कि गली में पहुँचानेवाला दरवाज़ा बंद हो
जाए और चक्की की आवाज़ आहिस्ता हो जाए।
जब चिड़ियाँ चहचहाने लगेंगी तो तू जाग उठेगा,
लेकिन तमाम गीतों की आवाज़ दबी-सी सुनाई
देगी। 5उसे याद रख, इससे पहले कि तू ऊँची
जगहों और गलियों के ख़तरों से डरने लगे। गो
बादाम का फूल खिल जाए, टिड्डी बोझ तले दब
जाए और करीर का फूल फूट निकले, लेकिन तू
कूच करके अपने अबदी घर में चला जाएगा, और
मातम करनेवाले गलियों में घूमते फिरेंगे।

6अल्लाह को याद रख, इससे पहले कि चाँदी
का रस्सा टूट जाए, सोने का बरतन टुकड़े टुकड़े
हो जाए, चश्मे के पास घड़ा पाश पाश हो जाए
और कुएँ का पानी निकालनेवाला पहिया टूटकर
उसमें गिर जाए। 7तब तेरी ख़ाक दुबारा उस ख़ाक
में मिल जाएगी जिससे निकल आई और तेरी रूह
उस ख़ुदा के पास लौट जाएगी जिसने उसे बख़्शा
था।

8वाइज़ फ़रमाता है, “बातिल ही बातिल! सब
कुछ बातिल ही बातिल है!”

ख़ातमा

9दानिशमंद होने के अलावा वाइज़ क़ौम
को इल्मो-इरफ़ान की तालीम देता रहा।
उसने मुतअद्दिद अमसाल को सहीह वज़न
देकर उनकी जाँच-पड़ताल की और उन्हें
तरतीबवार जमा किया। 10वाइज़ की को-
शिश थी कि मुनासिब अलफ़ाज़ इस्तेमाल करे
और दियानतदारी से सच्ची बातें लिखे।

11दानिशमंदों के अलफ़ाज़ आँकुस की मानिंद
हैं, तरतीब से जमाशुदा अमसाल लकड़ी में
मज़बूती से ठोंकी गई कीलों जैसी हैं। यह एक
ही गल्लाबान की दी हुई हैं।

12मेरे बेटे, इसके अलावा ख़बरदार रह। किताबें
लिखने का सिलसिला कभी ख़त्म नहीं हो
जाएगा, और हद से ज़्यादा कुतुबबीनी से जिस्म
थक जाता है।

13आओ, इख़्तिताम पर हम तमाम तालीम के
ख़ुलासे पर ध्यान दें। रब का ख़ौफ़ मान और
उसके अहकाम की पैरवी कर। यह हर इनसान
का फ़र्ज़ है। 14क्योंकि अल्लाह हर काम को ख़ाह
वह छुपा ही हो, ख़ाह बुरा या भला हो अदालत में
लाएगा।

ग़ज़लुल-ग़ज़लात

तू मेरा बादशाह है

1 सुलेमान की ग़ज़लुल-ग़ज़लात। 2वह मुझे अपने मुँह से बोसे दे, क्योंकि तेरी मुहब्बत मै से कहीं ज़्यादा राहतबख़्श है।

3तेरी इत्र की ख़ुशबू कितनी मनमोहन है, तेरा नाम छिड़का गया महकदार तेल ही है। इसलिए कुँवारियाँ तुझे प्यार करती हैं।

4आ, मुझे खींचकर अपने साथ ले जा! आ, हम दौड़कर चले जाएँ! बादशाह मुझे अपने कमरों में ले जाए, और हम बाग़ बाग़ होकर तेरी ख़ुशी मनाएँ। हम मै की निसबत तेरे प्यार की ज़्यादा तारीफ़ करें। मुनासिब है कि लोग तुझसे मुहब्बत करें।

मुझे हक़ीर न जानो

5ऐ यरूशलम की बेटियो, मैं स्याहफ़ाम लेकिन मनमोहन हूँ, मैं क़ीदार के ख़ैमों जैसी, सुलेमान के ख़ैमों के परदों जैसी ख़ूबसूरत हूँ। 6इसलिए
मुझे हक़ीर न जानो कि मैं स्याहफ़ाम हूँ, कि मेरी जिल्द धूप से झुलस गई है। मेरे सगे भाई मुझसे नाराज़ थे, इसलिए उन्होंने मुझे अंगूर के बाग़ों की देख-भाल करने की ज़िम्मेदारी दी, अंगूर के अपने ज़ाती बाग़ की देख-भाल मैं कर न सकी।

तू कहाँ है?

7ऐ तू जो मेरी जान का प्यारा है, मुझे बता कि भेड़-बकरियाँ कहाँ चरा रहा है? तू उन्हें दोपहर के वक़्त कहाँ आराम करने बिठाता है? मैं क्यों निक़ाबपोश की तरह तेरे साथियों के रेवड़ों के पास ठहरी रहूँ?

8क्या तू नहीं जानती, तू जो औरतों में सबसे ख़ूबसूरत है? फिर घर से निकलकर खोज लगा कि मेरी भेड़-बकरियाँ किस तरफ़ चली गई हैं, अपने मेमनों को गल्लाबानों के ख़ैमों के पास चरा।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

9मेरी महबूबा, मैं तुझे किस चीज़ से तशबीह दूँ? तू फ़िरौन का शानदार रथ खींचनेवाली घोड़ी है!

10तेरे गाल बालियों से कितने आरास्ता, तेरी गरदन मोती के गुलूबंद से कितनी दिलफ़रेब लगती है।

11हम तेरे लिए सोने का ऐसा हार बनवा लेंगे जिसमें चाँदी के मोती लगे होंगे।

12जितनी देर बादशाह ज़ियाफ़त में शरीक था मेरे बालछड़ की ख़ुशबू चारों तरफ़ फैलती रही।

13मेरा महबूब गोया मुर की डिबिया है, जो मेरी छातियों के दरमियान पड़ी रहती है।

14मेरा महबूब मेरे लिए मेहँदी के फूलों का
गुच्छा है, जो ऐन-जदी के अंगूर के बाग़ों से लाया
गया है।

15मेरी महबूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत है, कितनी
हसीन! तेरी आँखें कबूतर ही हैं।

16मेरे महबूब, तू कितना ख़ूबसूरत है, कितना
दिलरुबा! सायादार हरियाली हमारा बिस्तर
17और देवदार के दरख़्त हमारे घर के शहतीर हैं।
जूनीपर के दरख़्त तख़्तों का काम देते हैं।

तू लासानी है

2 मैं मैदाने-शारून का फूल और वा-
दियों की सोसन हूँ।

2लड़कियों के दरमियान मेरी महबूबा काँटेदार
पौदों में सोसन की मानिंद है।

3जवान आदमियों में मेरा महबूब जंगल में सेब
के दरख़्त की मानिंद है। मैं उसके साये में बैठने
की कितनी आरज़ूमंद हूँ, उसका फल मुझे कितना
मीठा लगता है।

मैं इश्क़ के मारे बीमार हो गई हूँ

4वह मुझे मैकदे[a] में लाया है, मेरे ऊपर उसका
झंडा मुहब्बत है।
5किशमिश की टिक्कियों से मुझे तरो-ताज़ा
करो, सेबों से मुझे तक़वियत दो, क्योंकि मैं इश्क़
के मारे बीमार हो गई हूँ।
6उसका बायाँ बाज़ू मेरे सर के नीचे होता और
दहना बाज़ू मुझे गले लगाता है।
7ऐ यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और खुले
मैदान की हिरनियों की क़सम खाओ कि जब तक
मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न
बेदार करोगी।

बहार आ गई है

8सुनो, मेरा महबूब आ रहा है। वह देखो, वह
पहाड़ों पर फलाँगता और टीलों पर से उछलता-
कूदता आ रहा है।
9मेरा महबूब ग़ज़ाल या जवान हिरन की मानिंद
है। अब वह हमारे घर की दीवार के सामने रुककर
खिड़कियों में से झाँक रहा, जंगले में से तक रहा
है।

10वह मुझसे कहता है, "ऐ मेरी ख़ूबसूरत
महबूबा, उठकर मेरे साथ चल!
11देख, सर्दियों का मौसम गुज़र गया है, बारिशें
भी ख़त्म हो गई हैं।
12ज़मीन से फूल फूट निकले हैं और गीत का
वक़्त आ गया है, कबूतरों की ग़ूँ ग़ूँ हमारे मुल्क में
सुनाई देती है।
13अंजीर के दरख़्तों पर पहली फ़सल का फल
पक रहा है, और अंगूर की बेलों के फूल ख़ुशबू
फैला रहे हैं। चुनाँचे आ मेरी हसीन महबूबा,
उठकर आ जा!
14ऐ मेरी कबूतरी, चट्टान की दराड़ों में छुपी न
रह, पहाड़ी पत्थरों में पोशीदा न रह बल्कि मुझे
अपनी शक्ल दिखा, मुझे अपनी आवाज़ सुनने दे,
क्योंकि तेरी आवाज़ शीरीं, तेरी शक्ल ख़ूबसूरत
है।"

15हमारे लिए लोमड़ियों को पकड़ लो, उन
छोटी लोमड़ियों को जो अंगूर के बाग़ों को तबाह
करती हैं। क्योंकि हमारी बेलों से फूल फूट निकले
हैं।

16मेरा महबूब मेरा ही है, और मैं उसी की हूँ,
उसी की जो सोसनों में चरता है।
17ऐ मेरे महबूब, इससे पहले कि शाम की हवा
चले और साये लंबे होकर फ़रार हो जाएँ ग़ज़ाल

[a]मैकदे से मुराद ग़ालिबन महल का वह हिस्सा है जिसमें बादशाह ज़ियाफ़त करता था।

या जवान हिरन की तरह संगलाख़ पहाड़ों का रुख़ कर!

रात को महबूब की आरज़ू

3 रात को जब मैं बिस्तर पर लेटी थी तो मैंने उसे ढूँडा जो मेरी जान का प्यारा है, मैंने उसे ढूँडा लेकिन न पाया।

2मैं बोली, "अब मैं उठकर शहर में घूमती, उस की गलियों और चौकों में फिरकर उसे तलाश करती हूँ जो मेरी जान का प्यारा है।" मैं ढूँडती रही लेकिन वह न मिला।

3जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन्होंने मुझे देखा। मैंने पूछा, "क्या आपने उसे देखा है जो मेरी जान का प्यारा है?"

4आगे निकलते ही मुझे वह मिल गया जो मेरी जान का प्यारा है। मैंने उसे पकड़ लिया। अब मैं उसे नहीं छोड़ूँगी जब तक उसे अपनी माँ के घर में न ले जाऊँ, उसके कमरे में न पहुँचाऊँ जिसने मुझे जन्म दिया था।

5ऐ यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और खुले मैदान की हिरनियों की क़सम खाओ कि जब तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

दूल्हा अपने लोगों के साथ आता है

6यह कौन है जो धुएँ के सतून की तरह सीधा हमारे पास चला आ रहा है? उससे चारों तरफ़ मुर, बख़ूर और ताजिर की तमाम ख़ुशबुएँ फैल रही हैं।

7यह तो सुलेमान की पालकी है जो इसराईल के 60 पहलवानों से घिरी हुई है।

8सब तलवार से लैस और तजरबाकार फ़ौजी हैं। हर एक ने अपनी तलवार को रात के हौलनाक ख़तरों का सामना करने के लिए तैयार कर रखा है।

9सुलेमान बादशाह ने ख़ुद यह पालकी लुबनान के देवदार की लकड़ी से बनवाई।

10उसने उसके पाए चाँदी से, पुश्त सोने से, और निशस्त अरग़वानी रंग के कपड़े से बनवाई। यरूशलम की बेटियों ने बड़े प्यार से उसका अंदरूनी हिस्सा मुरस्साकारी से आरास्ता किया है।

11ऐ सिय्यून की बेटियो, निकल आओ और सुलेमान बादशाह को देखो। उसके सर पर वह ताज है जो उस की माँ ने उस की शादी के दिन उसके सर पर पहनाया, उस दिन जब उसका दिल बाग़ बाग़ हुआ।

तू कितनी हसीन है!

4 मेरी महबूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत, कितनी हसीन है! निक़ाब के पीछे तेरी आँखों की झलक कबूतरों की मानिंद है। तेरे बाल उन बकरियों की मानिंद हैं जो उछलती-कूदती कोहे-जिलियाद से उतरती हैं।

2तेरे दाँत अभी अभी कतरी और नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।

3तेरे होंट क़िरमिज़ी रंग का डोरा हैं, तेरा मुँह कितना प्यारा है। निक़ाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के टुकड़ों की मानिंद दिखाई देती है।

4तेरी गरदन दाऊद के बुर्ज जैसी दिलरुबा है। जिस तरह इस गोल और मज़बूत बुर्ज से पहलवानों की हज़ार ढालें लटकी हैं उस तरह तेरी गरदन भी ज़ेवरात से आरास्ता है।

5तेरी छातियाँ सोसनों में चरनेवाले ग़ज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिंद हैं।

6इससे पहले कि शाम की हवा चले और साये लंबे होकर फ़रार हो जाएँ मैं मुर के पहाड़ और बख़ूर की पहाड़ी के पास चलूँगा।

7मेरी महबूबा, तेरा हुस्न कामिल है, तुझमें कोई नुक़्स नहीं है।

दुलहन का जादू

8आ मेरी दुलहन, लुबनान से मेरे साथ आ!
हम कोहे-अमाना की चोटी से, सनीर और हरमून
की चोटियों से उतरें, शेरों की माँदों और चीतों के
पहाड़ों से उतरें।

9मेरी बहन, मेरी दुलहन, तूने मेरा दिल चुरा
लिया है, अपनी आँखों की एक ही नज़र से, अपने
गुलूबंद के एक ही जौहर से तूने मेरा दिल चुरा
लिया है।

10मेरी बहन, मेरी दुलहन, तेरी मुहब्बत कितनी
मनमोहन है! तेरा प्यार मै से कहीं ज़्यादा पसंदीदा
है। बलसान की कोई भी ख़ुशबू तेरी महक का
मुक़ाबला नहीं कर सकती।

11मेरी दुलहन, जिस तरह शहद छत्ते से
टपकता है उसी तरह तेरे होंटों से मिठास टपकती
है। दूध और शहद तेरी ज़बान तले रहते हैं। तेरे
कपड़ों की ख़ुशबू सूँघकर लुबनान की ख़ुशबू याद
आती है।

दुलहन नफ़ीस बाग़ है

12मेरी बहन, मेरी दुलहन, तू एक बाग़ है
जिसकी चारदीवारी किसी और को अंदर आने
नहीं देती, एक बंद किया गया चश्मा जिस पर
मुहर लगी है।
13बाग़ में अनार के दरख़्त लगे हैं जिन पर
लज़ीज़ फल पक रहा है। मेहँदी के पौदे भी उग
रहे हैं।
14बालछड़, ज़ाफ़रान, ख़ुशबूदार बेद,
दारचीनी, बख़ूर की हर क़िस्म का दरख़्त, मुर,
ऊद और हर क़िस्म का बलसान बाग़ में फलता-
फूलता है।
15तू बाग़ का उबलता चश्मा है, एक ऐसा मंबा
जिसका ताज़ा पानी लुबनान से बहकर आता है।

16ऐ शिमाली हवा, जाग उठ! ऐ जुनूबी हवा,
आ! मेरे बाग़ में से गुज़र जा ताकि वहाँ से चारों
तरफ़ बलसान की ख़ुशबू फैल जाए। मेरा महबूब
अपने बाग़ में आकर उसके लज़ीज़ फलों से खाए।

5 मेरी बहन, मेरी दुलहन, अब मैं अपने बाग़
में दाख़िल हो गया हूँ। मैंने अपना मुर अपने
बलसान समेत चुन लिया, अपना छत्ता शहद
समेत खा लिया, अपनी मै अपने दूध समेत पी ली
है। खाओ, मेरे दोस्तो, खाओ और पियो, मुहब्बत
से सरशार हो जाओ!

रात को महबूब की तलाश

2मैं सो रही थी, लेकिन मेरा दिल बेदार रहा।
सुन! मेरा महबूब दस्तक दे रहा है,
"ऐ मेरी बहन, मेरी साथी, मेरे लिए दरवाज़ा
खोल दे! ऐ मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी,
मेरा सर ओस से तर हो गया है, मेरी ज़ुल्फ़ें रात
की शबनम से भीग गई हैं।"

3"मैं अपना लिबास उतार चुकी हूँ, अब मैं
किस तरह उसे दुबारा पहन लूँ? मैं अपने पाँव
धो चुकी हूँ, अब मैं उन्हें किस तरह दुबारा मैला
करूँ?"

4मेरे महबूब ने अपना हाथ दीवार के सूराख़ में
से अंदर डाल दिया। तब मेरा दिल तड़प उठा।
5मैं उठी ताकि अपने महबूब के लिए दरवाज़ा
खोलूँ। मेरे हाथ मुर से, मेरी उँगलियाँ मुर की
ख़ुशबू से टपक रही थीं जब मैं कुंडी खोलने आई।
6मैंने अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोल
दिया, लेकिन वह मुड़कर चला गया था। मुझे
सख़्त सदमा हुआ। मैंने उसे तलाश किया लेकिन
न मिला। मैंने उसे आवाज़ दी, लेकिन जवाब न
मिला।
7जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उनसे मेरा
वास्ता पड़ा, उन्होंने मेरी पिटाई करके मुझे ज़ख़मी
कर दिया। फ़सील के चौकीदारों ने मेरी चादर भी
छीन ली।

8ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि
अगर मेरा महबूब मिला तो उसे इत्तला दोगी, मैं
मुहब्बत के मारे बीमार हो गई हूँ।
9तू जो औरतों में सबसे हसीन है, हमें बता, तेरे
महबूब की क्या ख़ासियत है जो दूसरों में नहीं है?
तेरा महबूब दूसरों से किस तरह सबक़त रखता है
कि तू हमें ऐसी क़सम खिलाना चाहती है?
10मेरे महबूब की जिल्द गुलाबी और सफ़ेद है।
हज़ारों के साथ उसका मुक़ाबला करो तो उसका
आला किरदार नुमायाँ तौर पर नज़र आएगा।
11उसका सर ख़ालिस सोने का है, उसके बाल
खजूर के फूलदार गुच्छों[a] की मानिंद और कौवे
की तरह स्याह हैं।
12उस की आँखें नदियों के किनारे के कबूतरों
की मानिंद हैं, जो दूध में नहलाए और कसरत के
पानी के पास बैठे हैं।
13उसके गाल बलसान की क्यारी की मानिंद,
उसके होंट मुर से टपकते सोसन के फूलों जैसे
हैं।
14उसके बाज़ू सोने की सलाखें हैं जिनमें
पुखराज[b] जड़े हुए हैं, उसका जिस्म हाथी-
दाँत का शाहकार है जिसमें संगे-लाजवर्द[c] के
पत्थर लगे हैं।
15उस की रानें मरमर के सतून हैं जो ख़ालिस
सोने के पाइयों पर लगे हैं। उसका हुलिया लुबनान
और देवदार के दरख़्तों जैसा उम्दा है।
16उसका मुँह मिठास ही है, ग़रज़ वह हर
लिहाज़ से पसंदीदा है।

ऐ यरूशलम की बेटियो, यह है मेरा महबूब, मेरा
दोस्त।

6 ऐ तू जो औरतों में सबसे ख़ूबसूरत है, तेरा
महबूब किधर चला गया है? उसने कौन-
सी सिम्त इख़्तियार की ताकि हम तेरे साथ उसका
खोज लगाएँ?
2मेरा महबूब यहाँ से उतरकर अपने बाग़ में
चला गया है, वह बलसान की क्यारियों के पास
गया है ताकि बाग़ों में चरे और सोसन के फूल
चुने।
3मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मेरा ही है,
वह जो सोसनों में चरता है।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

4मेरी महबूबा, तू तिरज़ा शहर जैसी हसीन,
यरूशलम जैसी ख़ूबसूरत और अलमबरदार दस्तों
जैसी रोबदार है।

5अपनी नज़रों को मुझसे हटा ले, क्योंकि वह
मुझमें उलझन पैदा कर रही हैं।

तेरे बाल उन बकरियों की मानिंद हैं जो
उछलती-कूदती कोहे-जिलियाद से उतरती हैं।
6तेरे दाँत अभी अभी नहलाई हुई भेड़ों जैसे
सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं
हुआ।
7निक़ाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार
के टुकड़ों की मानिंद दिखाई देती है।

8गो बादशाह की 60 बीवियाँ, 80 दाश्ताएँ
और बेशुमार कुँवारियाँ हों 9लेकिन मेरी कबूतरी,
मेरी कामिल साथी लासानी है। वह अपनी माँ
की वाहिद बेटी है, जिसने उसे जन्म दिया उस
की पाक लाडली है। बेटियों ने उसे देखकर उसे
मुबारक कहा, रानियों और दाश्ताओं ने उस की
तारीफ़ की,
10“यह कौन है जो तुलूए-सुबह की तरह चमक
उठी, जो चाँद जैसी ख़ूबसूरत, आफ़ताब जैसी
पाक और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है?”

[a] इबरानी लफ़्ज़ का मतलब मुबहम-सा है।
[b] topas
[c] lapis lazuli

महबूबा के लिए आरज़ू

11मैं अख़रोट के बाग़ में उतर आया ताकि वादी में फूटनेवाले पौदों का मुआयना करूँ। मैं यह भी मालूम करना चाहता था कि क्या अंगूर की कोंपलें निकल आई या अनार के फूल लग गए हैं।

12लेकिन चलते चलते न जाने क्या हुआ, मेरी आरज़ू ने मुझे मेरी शरीफ़ क़ौम के रथों के पास पहुँचाया।

महबूबा की दिलकशी

13ऐ शूलम्मीत, लौट आ, लौट आ! मुड़-कर लौट आ ताकि हम तुझ पर नज़र करें।

तुम शूलम्मीत को क्यों देखना चाहती हो? हम लशकरगाह का लोकनाच देखना चाहती हैं!

7 ऐ रईस की बेटी, जूतों में चलने का तेरा अंदाज़ कितना मनमोहन है! तेरी ख़ुशवज़ा रानें माहिर कारीगर के ज़ेवरात की मानिंद हैं।

2तेरी नाफ़ प्याला है जो मै से कभी नहीं महरूम रहती। तेरा जिस्म गंदुम का ढेर है जिसका इहाता सोसन के फूलों से किया गया है।

3तेरी छातियाँ ग़ज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिंद हैं।

4तेरी गरदन हाथीदाँत का मीनार, तेरी आँखें हसबोन शहर के तालाब हैं, वह जो बत-रब्बीम के दरवाज़े के पास हैं। तेरी नाक मीनारे-लुबनान की मानिंद है जिसका मुँह दमिश्क़ की तरफ़ है।

5तेरा सर कोहे-करमिल की मानिंद है, तेरे खुले बाल अरग़वान की तरह क़ीमती और दिलकश हैं। बादशाह तेरी ज़ुल्फ़ों की ज़ंजीरों में जकड़ा रहता है।

महबूबा के लिए आरज़ू

6ऐ ख़ुशियों से लबरेज़ मुहब्बत, तू कितनी हसीन है, कितनी दिलरुबा!

7तेरा क़दो-क़ामत खजूर के दरख़्त सा, तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छों जैसी हैं।

8मैं बोला, "मैं खजूर के दरख़्त पर चढ़कर उसके फूलदार गुच्छों[a] पर हाथ लगाऊँगा।" तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छों की मानिंद हों, तेरे साँस की ख़ुशबू सेबों की ख़ुशबू जैसी हो।

9तेरा मुँह बेहतरीन मै हो, ऐसी मै जो सीधी मेरे महबूब के मुँह में जाकर नरमी से होंटों और दाँतों में से गुज़र जाए।

महबूब के लिए आरज़ू

10मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मुझे चाहता है।

11आ, मेरे महबूब, हम शहर से निकलकर देहात में रात गुज़ारें।

12आ, हम सुबह-सवेरे अंगूर के बाग़ों में जाकर मालूम करें कि क्या बेलों से कोंपलें निकल आई हैं और फूल लगे हैं, कि क्या अनार के दरख़्त खिल रहे हैं। वहाँ मैं तुझ पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करूँगी।

13मर्दुमगयाह[b] की ख़ुशबू फैल रही, और हमारे दरवाज़े पर हर क़िस्म का लज़ीज़ फल है, नई फ़सल का भी और गुज़री का भी। क्योंकि मैंने यह चीज़ें तेरे लिए, अपने महबूब के लिए महफ़ूज़ रखी हैं।

काश हम अकेले हों

8 काश तू मेरा सगा भाई[c] होता, तब अगर बाहर तुझसे मुलाक़ात होती तो मैं तुझे बोसा देती और कोई न होता जो यह देखकर मुझे हक़ीर जानता।

2मैं तेरी राहनुमाई करके तुझे अपनी माँ के घर में ले जाती, उसके घर में जिसने मुझे तालीम दी। वहाँ मैं तुझे मसालेदार मै और अपने अनारों का रस पिलाती।

[a]इबरानी लफ़्ज़ का मतलब मुबहम-सा है।
[b]एक पौदा जिसके बारे में सोचा जाता था कि उसे खाकर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।
[c]लफ़्ज़ी तरजुमा : मेरा भाई होता, जिसे मेरी माँ ने दूध पिलाया होता।

3उसका बायाँ बाज़ू मेरे सर के नीचे होता और
दायाँ बाज़ू मुझे गले लगाता है।
4ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि जब
तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी,
न बेदार करोगी।

महबूब की आख़िरी बात

5यह कौन है जो अपने महबूब का सहारा लेकर
रेगिस्तान से चढ़ी आ रही है?

सेब के दरख़्त तले मैंने तुझे जगा दिया, वहाँ जहाँ तेरी माँ ने तुझे जन्म दिया, जहाँ उसने दर्दे-ज़ह में मुब्तला होकर तुझे पैदा किया।

6मुझे मुहर की तरह अपने दिल पर, अपने
बाज़ू पर लगाए रख! क्योंकि मुहब्बत मौत जैसी ताक़तवर, और उस की सरगरमी पाताल जैसी बे-लचक है। वह दहकती आग, रब का भड़कता शोला है।
7पानी का बड़ा सैलाब भी मुहब्बत को बुझा
नहीं सकता, बड़े दरिया भी उसे बहाकर ले जा नहीं सकते। और अगर कोई मुहब्बत को पाने के लिए अपने घर की तमाम दौलत पेश भी करे तो भी उसे जवाब में हक़ीर ही जाना जाएगा।

महबूबा की आख़िरी बात

8हमारी छोटी बहन की छातियाँ नहीं हैं। हम
अपनी बहन के लिए क्या करें अगर कोई उससे रिश्ता बाँधने आए?
9अगर वह दीवार हो तो हम उस पर चाँदी का
क़िलाबंद इंतज़ाम बनाएँगे। अगर वह दरवाज़ा हो तो हम उसे देवदार के तख़्ते से महफ़ूज़ रखेंगे।

10मैं दीवार हूँ, और मेरी छातियाँ मज़बूत मीनार
हैं। अब मैं उस की नज़र में ऐसी ख़ातून बन गई हूँ जिसे सलामती हासिल हुई है।

सुलेमान से ज़्यादा दौलतमंद

11बाल-हामून में सुलेमान का अंगूर का बाग़
था। इस बाग़ को उसने पहरेदारों के हवाले कर दिया। हर एक को उस की फ़सल के लिए चाँदी के हज़ार सिक्के देने थे।

12लेकिन मेरा अपना अंगूर का बाग़ मेरे सामने
ही मौजूद है। ऐ सुलेमान, चाँदी के हज़ार सिक्के तेरे लिए हैं, और 200 सिक्के उनके लिए जो उस की फ़सल की पहरादारी करते हैं।

मुझे ही पुकार

13ऐ बाग़ में बसनेवाली, मेरे साथी तेरी आवाज़
पर तवज्जुह दे रहे हैं। मुझे ही अपनी आवाज़ सुनने दे।

14ऐ मेरे महबूब, ग़ज़ाल या जवान हिरन की
तरह बलसान के पहाड़ों की जानिब भाग जा!।

सहायफ़े-अंबिया

असल इबरानी और अरामी मतन से
नया उर्दू तरजुमा

यसायाह

1 ज़ैल में वह रोयाएँ दर्ज हैं जो यसा-
याह बिन आमूस ने यहूदाह और यरूशलम
के बारे में देखीं और जो उन सालों में मुंकशिफ़ हुईं
जब उज़्ज़ियाह, यूताम, आख़ज़ और हिज़क़ियाह
यहूदाह के बादशाह थे।

इसराईली अपने आक़ा को जानने से इनकार करते हैं

2ऐ आसमान, मेरी बात सुन! ऐ ज़मीन, मेरे
अलफ़ाज़ पर कान धर! क्योंकि रब ने फ़रमाया
है,

"जिन बच्चों की परवरिश मैंने की है और जो मेरे
ज़ेरे-निगरानी परवान चढ़े हैं, उन्होंने मुझसे रिश्ता
तोड़ लिया है। 3बैल अपने मालिक को जानता
और गधा अपने आक़ा की चरनी को पहचानता
है, लेकिन इसराईल इतना नहीं जानता, मेरी क़ौम
समझ से ख़ाली है।"

4ऐ गुनाहगार क़ौम, तुझ पर अफ़सोस! ऐ
संगीन क़ुसूर में फँसी हुई उम्मत, तुझ पर
अफ़सोस! शरीर नसल, बदचलन बच्चे! उन्होंने
रब को तर्क कर दिया है। हाँ, उन्होंने इसराईल के
क़ुद्दूस को हक़ीर जानकर रद्द किया, अपना मुँह
उससे फेर लिया है। 5अब तुम्हें मज़ीद कहाँ पीटा
जाए? तुम्हारी ज़िद तो मज़ीद बढ़ती जा रही है गो
पूरा सर ज़ख़मी और पूरा दिल बीमार है। 6चाँद से
लेकर तल्वे तक पूरा जिस्म मजरूह है, हर जगह
चोटें, घाव और ताज़ा ताज़ा ज़रबें लगी हैं। और न
उन्हें साफ़ किया गया, न उनकी मरहम-पट्टी की
गई है।

7तुम्हारा मुल्क वीरानो-सुनसान हो गया है,
तुम्हारे शहर भस्म हो गए हैं। तुम्हारे देखते देखते
परदेसी तुम्हारे खेतों को लूट रहे हैं, उन्हें यों उजाड़
रहे हैं जिस तरह परदेसी ही कर सकते हैं। 8सिर्फ़
यरूशलम ही बाक़ी रह गया है, सिय्यून बेटी अंगूर
के बाग़ में झोंपड़ी की तरह अकेली रह गई है।
अब दुश्मन से घिरा हुआ यह शहर खीरे के खेत में
लगे छप्पर की मानिंद है। 9अगर रब्बुल-अफ़वाज
हममें से चंद एक को ज़िंदा न छोड़ता तो हम
सदूम की तरह मिट जाते, हमारा अमूरा की तरह
सत्यानास हो जाता।

10ऐ सदूम के सरदारो, रब का फ़रमान सुन
लो! ऐ अमूरा के लोगो, हमारे ख़ुदा की हिदायत
पर ध्यान दो! 11रब फ़रमाता है, "अगर तुम
बेशुमार क़ुरबानियाँ पेश करो तो मुझे क्या? मैं
तो भस्म होनेवाले मेंढों और मोटे-ताज़े बछड़ों की
चरबी से उकता गया हूँ। बैलों, लेलों और बकरों
का जो ख़ून मुझे पेश किया जाता है वह मुझे पसंद
नहीं। 12किसने तुमसे तक़ाज़ा किया कि मेरे हुज़ूर
आते वक़्त मेरी बारगाहों को पाँवों तले रौंदो?
13रुक जाओ! अपनी बेमानी क़ुरबानियाँ मत
पेश करो! तुम्हारे बख़ूर से मुझे घिन आती है। नए
चाँद की ईद और सबत का दिन मत मनाओ, लोगों
को इबादत के लिए जमा न करो! मैं तुम्हारे बेदीन
इजतिमा बरदाश्त ही नहीं कर सकता। 14जब तुम

नए चाँद की ईद और बाक़ी तक़रीबात मनाते हो
तो मेरे दिल में नफ़रत पैदा होती है। यह मेरे लिए
भारी बोझ बन गई हैं जिनसे मैं तंग आ गया हूँ।
15बेशक अपने हाथों को दुआ के लिए उठाते
जाओ, मैं ध्यान नहीं दूँगा। गो तुम बहुत ज़्यादा
नमाज़ भी पढ़ो, मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा, क्योंकि
तुम्हारे हाथ ख़ूनआलूदा हैं। 16पहले नहाकर अपने
आपको पाक-साफ़ करो। अपनी शरीर हरकतों से
बाज़ आओ ताकि वह मुझे नज़र न आएँ। अपनी
ग़लत राहों को छोड़कर 17नेक काम करना सीख
लो। इनसाफ़ के तालिब रहो, मज़लूमों का सहारा
बनो, यतीमों का इनसाफ़ करो और बेवाओं के
हक़ में लड़ो!"

अल्लाह अपनी क़ौम की अदालत करता है

18रब फ़रमाता है, "आओ हम अदालत में
जाकर एक दूसरे से मुक़दमा लड़ें। अगर तुम्हारे
गुनाह लहू-रंग हो जाएँ तो क्या वह बर्फ़ जैसे
उजले हो जाएँगे? अगर वह क़िरमिज़ी जैसे लाल
हो जाएँ तो क्या वह ऊन जैसे सफ़ेद हो जाएँगे?
19अगर तुम सुनने के लिए तैयार हो तो मुल्क की
बेहतरीन पैदावार से लुत्फ़अंदोज़ होगे। 20लेकिन
अगर इनकार करके सरकश हो जाओ तो तलवार
की ज़द में आकर मर जाओगे। इस बात का
यक़ीन करो, क्योंकि रब ने यह कुछ फ़रमाया है।"
21यह कैसे हो गया है कि जो शहर पहले इतना
वफ़ादार था वह अब कसबी बन गया है? पहले
यरूशलम इनसाफ़ से मामूर था, और रास्ती उसमें
सुकूनत करती थी। लेकिन अब हर तरफ़ क़ातिल
ही क़ातिल हैं! 22ऐ यरूशलम, तेरी ख़ालिस चाँदी
ख़ाम चाँदी में बदल गई है, तेरी बेहतरीन मै में पानी
मिलाया गया है। 23तेरे बुज़ुर्ग हटधर्म और चोरों
के यार हैं। यह रिश्वतख़ोर सब लोगों के पीछे पड़े
रहते हैं ताकि चाय-पानी मिल जाए। न वह परवा
करते हैं कि यतीमों को इनसाफ़ मिले, न बेवाओं
की फ़रियाद उन तक पहुँचती है।
24इसलिए क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़-
वाज जो इसराईल का ज़बरदस्त सूरमा है
फ़रमाता है, "आओ, मैं अपने मुख़ालिफ़ों और
दुश्मनों से इंतक़ाम लेकर सुकून पाऊँ। 25मैं
तेरे ख़िलाफ़ हाथ उठाऊँगा और ख़ाम चाँदी की
तरह तुझे पोटाश के साथ पिघलाकर तमाम
मैल से पाक-साफ़ कर दूँगा। 26मैं तुझे दुबारा
क़दीम ज़माने के-से क़ाज़ी और इब्तिदा के-से
मुशीर अता करूँगा। फिर यरूशलम दुबारा दारुल-
इनसाफ़ और वफ़ादार शहर कहलाएगा।"
27अल्लाह सिय्यून की अदालत करके उसका
फ़िद्या देगा, जो उसमें तौबा करेंगे उनका वह
इनसाफ़ करके उन्हें छुड़ाएगा। 28लेकिन बाग़ी
और गुनाहगार सबके सब पाश पाश हो जाएंगे,
रब को तर्क करनेवाले हलाक हो जाएंगे।
29बलूत के जिन दरख़्तों की पूजा से तुम
लुत्फ़अंदोज़ होते हो उनके बाइस तुम शर्मसार
होगे, और जिन बाग़ों को तुमने अपनी बुतपरस्ती
के लिए चुन लिया है उनके बाइस तुम्हें शर्म
आएगी। 30तुम उस बलूत के दरख़्त की मानिंद
होगे जिसके पत्ते मुरझा गए हों, तुम्हारी हालत
उस बाग़ की-सी होगी जिसमें पानी नायाब हो।
31ज़बरदस्त आदमी फूस और उस की ग़लत
हरकतें चिंगारी जैसी होंगी। दोनों मिलकर यों
भड़क उठेंगे कि कोई भी बुझा नहीं सकेगा।

यरूशलम अबदी अमनो-अमान का मरकज़ होगा

2 यसायाह बिन आमूस ने यहूदाह और
यरूशलम के बारे में ज़ैल की रोया देखी,
2आख़िरी ऐयाम में रब के घर का पहाड़
मज़बूती से क़ायम होगा। सबसे बड़ा यह पहाड़
दीगर तमाम बुलंदियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़
होगा। तब तमाम क़ौमें जौक़-दर-जौक़ उसके
पास पहुँचेंगी, 3और बेशुमार उम्मतें आकर
कहेंगी, "आओ, हम रब के पहाड़ पर चढ़कर
याक़ूब के ख़ुदा के घर के पास जाएँ ताकि वह
हमें अपनी मरज़ी की तालीम दे और हम उस की
राहों पर चलें।"

क्योंकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत
निकलेगी, और यरूशलम से उसका कलाम
सादिर होगा। 4रब बैनुल-अक़वामी झगड़ों को
निपटाएगा और बेशुमार क़ौमों का इनसाफ़
करेगा। तब वह अपनी तलवारों को कूटकर फाले
बनाएँगी और अपने नेज़ों को काँट-छाँट के औज़ार
में तबदील करेंगी। अब से न एक क़ौम दूसरी पर
हमला करेगी, न लोग जंग करने की तरबियत
हासिल करेंगे।
5ऐ याक़ूब के घराने, आओ हम रब के नूर में
चलें!

अल्लाह की हैबतनाक अदालत

6ऐ अल्लाह, तूने अपनी क़ौम, याक़ूब के
घराने को तर्क कर दिया है। और क्या अजब!
क्योंकि वह मशरिक़ी जादूगरी से भर गए हैं।
फ़िलिस्तियों की तरह हमारे लोग भी क़िस्मत का
हाल पूछते हैं, वह परदेसियों के साथ बग़लगीर
रहते हैं। 7इसराईल सोने-चाँदी से भर गया है,
उसके ख़ज़ानों की हद ही नहीं रही। हर तरफ़ घोड़े
ही घोड़े नज़र आते हैं, और उनके रथ गिने नहीं
जा सकते। 8लेकिन साथ साथ उनका मुल्क बुतों
से भी भर गया है। जो चीज़ें उनके हाथों ने बनाईं
उनके सामने वह झुक जाते हैं, जो कुछ उनकी
उँगलियों ने तश्कील दिया उसे वह सिजदा करते
हैं। 9चुनाँचे अब उन्हें ख़ुद झुकाया जाएगा, उन्हें
पस्त किया जाएगा। ऐ रब, उन्हें मुआफ़ न कर!
10चट्टानों में घुस जाओ! ख़ाक में छुप जाओ!
क्योंकि रब का दहशतअंगेज़ और शानदार जलाल
आने को है। 11तब इनसान की मग़रूर आँखों को
नीचा किया जाएगा, मर्दों का तकब्बुर ख़ाक में
मिलाया जाएगा। उस दिन सिर्फ़ रब ही सरफ़राज़
होगा। 12क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज ने एक ख़ास
दिन ठहराया है जिसमें सब कुछ जो मग़रूर, बुलंद
या सरफ़राज़ हो ज़ेर किया जाएगा। 13लुबनान
में देवदार के तमाम बुलंदो-बाला दरख़्त, बसन
के कुल बलूत, 14तमाम आली पहाड़ और
ऊँची पहाड़ियाँ, 15हर अज़ीम बुर्ज और क़िलाबंद
दीवार, 16समुंदर का हर अज़ीम तिजारती और
शानदार जहाज़ ज़ेर हो जाएगा। 17चुनाँचे इनसान
का ग़ुरूर ख़ाक में मिलाया जाएगा और मर्दों का
तकब्बुर नीचा कर दिया जाएगा। उस दिन सिर्फ़
रब ही सरफ़राज़ होगा, 18और बुत सबके सब
फ़ना हो जाएंगे।
19जब रब ज़मीन को दहशतज़दा करने के लिए
उठ खड़ा होगा तो लोग मिट्टी के गढ़ों में खिसक
जाएंगे। रब की महीब और शानदार तजल्ली को
देखकर वह चट्टानों के ग़ारों में छुप जाएंगे। 20उस
दिन इनसान सोने-चाँदी के उन बुतों को फेंक देगा
जिन्हें उसने सिजदा करने के लिए बना लिया था।
उन्हें चूहों और चमगादड़ों के आगे फेंककर 21वह
चट्टानों के शिगाफ़ों और दराड़ों में घुस जाएंगे
ताकि रब की महीब और शानदार तजल्ली से
बच जाएँ जब वह ज़मीन को दहशतज़दा करने
के लिए उठ खड़ा होगा। 22चुनाँचे इनसान पर
एतमाद करने से बाज़ आओ जिसकी ज़िंदगी दम-
भर की है। उस की क़दर ही क्या है?

यहूदाह की तबाही

3 क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज य-
रूशलम और यहूदाह से सब कुछ
छीनने को है जिस पर लोग इनहिसार करते
हैं। रोटी का हर लुक़मा और पानी का हर
क़तरा, 2सूरमे और फ़ौजी, क़ाज़ी और नबी,
क़िस्मत का हाल बतानेवाले और बुज़ुर्ग, 3फ़ौजी
अफ़सर और असरो-रसूख़वाले, मुशीर, जादूगर
और मंत्र फूँकनेवाले, सबके सब छीन लिए
जाएंगे। 4मैं लड़के उन पर मुक़र्रर करूँगा, और
मुतलव्विनमिज़ाज ज़ालिम उन पर हुकूमत करेंगे।
5अवाम एक दूसरे पर ज़ुल्म करेंगे, और हर एक
अपने पड़ोसी को दबाएगा। नौजवान बुज़ुर्गों पर
और कमीने, इज़्ज़तदारों पर हमला करेंगे।
6तब कोई अपने बाप के घर में अपने भाई को
पकड़कर उससे कहेगा, “तेरे पास अब तक चादर
है, इसलिए आ, हमारा सरबराह बन जा! खंडरात
के इस ढेर को सँभालने की ज़िम्मेदारी उठा ले!”

7लेकिन वह चीख़कर इनकार करेगा, “नहीं, मैं
तुम्हारा मुआलजा कर ही नहीं सकता! मेरे घर में
न रोटी है, न चादर। मुझे अवाम का सरबराह मत
बनाना!”

8यरूशलम डगमगा रहा है, यहूदाह धड़ाम से
गिर गया है। और वजह यह है कि वह अपनी
बातों और हरकतों से रब की मुख़ालफ़त करते
हैं। उसके जलाली हुज़ूर ही में वह सरकशी
का इज़हार करते हैं। 9उनकी जानिबदारी उनके
ख़िलाफ़ गवाही देती है। और वह सदूम के बाशिंदों
की तरह अलानिया अपने गुनाहों पर फ़ख़र करते
हैं, वह उन्हें छुपाने की कोशिश ही नहीं करते। उन
पर अफ़सोस! वह तो अपने आपको मुसीबत में
डाल रहे हैं।

10रास्तबाज़ों को मुबारकबाद दो, क्योंकि वह
अपने आमाल के अच्छे फल से लुत्फ़अंदोज़ होंगे।
11लेकिन बेदीनों पर अफ़सोस! उनका अंजाम
बुरा होगा, क्योंकि उन्हें ग़लत काम की मुनासिब
सज़ा मिलेगी।

12हाय, मेरी क़ौम! मुतलव्विनमिज़ाज तुझ पर
ज़ुल्म करते और औरतें तुझ पर हुकूमत करती हैं।
ऐ मेरी क़ौम, तेरे राहनुमा तुझे गुमराह कर रहे
हैं, वह तुझे उलझाकर सहीह राह से भटका रहे
हैं।

रब अपनी क़ौम की अदालत करता है

13रब अदालत में मुक़दमा लड़ने के लिए खड़ा
हुआ है, वह क़ौमों की अदालत करने के लिए उठा
है। 14रब अपनी क़ौम के बुज़ुर्गों और रईसों का
फ़ैसला करने के लिए सामने आकर फ़रमाता है,
“तुम ही अंगूर के बाग़ में चरते हुए सब कुछ खा
गए हो, तुम्हारे घर ज़रूरतमंदों के लूटे हुए माल
से भरे पड़े हैं। 15यह तुमने कैसी गुस्ताख़ी कर
दिखाई? यह मेरी ही क़ौम है जिसे तुम कुचल
रहे हो। तुम मुसीबतज़दों के चेहरों को चक्की में
पीस रहे हो।” क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज
यों फ़रमाता है।

यरूशलम की ख़वातीन की अदालत

16रब ने फ़रमाया, “सिय्यून की बेटियाँ कितनी
मग़रूर हैं। जब आँख मार मारकर चलती हैं तो
अपनी गरदनों को कितनी शोख़ी से इधर-उधर
घुमाती हैं। और जब मटक मटककर क़दम उठाती
हैं तो पाँवों पर बँधे हुए घुंघरू बोलते हैं टन टन,
टन टन।”

17जवाब में रब उनके सरों पर फोड़े पैदा करके
उनके माथों को गंजा होने देगा। 18उस दिन रब
उनका तमाम सिंगार उतार देगा : उनके घुंघरू,
सूरज और चाँद के ज़ेवरात, 19आवेज़े, कड़े,
दोपट्टे, 20सजीली टोपियाँ, पायल, ख़ुशबू की
बोतलें, तावीज़, 21अंगूठियाँ, नथ, 22शानदार
कपड़े, चादरें, बटवे, 23आईने, नफ़ीस लिबास,
सरबंद और शाल। 24ख़ुशबू की बजाए बदबू
होगी, कमरबंद के बजाए रस्सी, सुलझे हुए बालों
के बजाए गंजापन, शानदार लिबास के बजाए
टाट, ख़ूबसूरती की बजाए शरमिंदगी।

25हाय, यरूशलम! तेरे मर्द तलवार की ज़द
में आकर मरेंगे, तेरे सूरमे लड़ते लड़ते शहीद
हो जाएंगे। 26शहर के दरवाज़े आहें भर भरकर
मातम करेंगे, सिय्यून बेटी तनहा रहकर ख़ाक में
बैठ जाएगी।

4 तब सात औरतें एक ही मर्द से लिपट-
कर कहेंगी, “हमसे शादी करें! बेशक हम
ख़ुद ही रोज़मर्रा की ज़रूरियात पूरी करेंगी, ख़ाह
खाना हो या कपड़ा। लेकिन हम आपके नाम से
कहलाएँ ताकि हमारी शरमिंदगी दूर हो जाए।”

यरूशलम की बहाली

2उस दिन जो कुछ रब फूटने देगा वह शानदार
और जलाली होगा, मुल्क की पैदावार बचे हुए
इसराईलियों के लिए फ़ख़र और आबो-ताब का
बाइस होगी। 3तब जो भी सिय्यून में बाक़ी रह
गए होंगे वह मुक़द्दस कहलाएँगे। यरूशलम के
जिन बाशिंदों के नाम ज़िंदों की फ़हरिस्त में दर्ज
किए गए हैं वह बचकर मुक़द्दस कहलाएँगे। 4रब
सिय्यून की फ़ुज़्ला से लतपत बेटियों को धोकर

पाक-साफ़ करेगा, वह अदालत और तबाही की
रूह से यरूशलम की ख़ूनरेज़ी के धब्बे दूर कर
देगा। 5फिर रब होने देगा कि दिन को बादल
सिय्यून के पूरे पहाड़ और उस पर जमा होनेवालों
पर साया डाले जबकि रात को धुआँ और दहकती
आग की चमक-दमक उस पर छाई रहे। यों उस
पूरे शानदार इलाक़े पर सायबान होगा 6जो उसे
झुलसती धूप से महफ़ूज़ रखेगा और तूफ़ान और
बारिश से पनाह देगा।

बेफल अंगूर का बाग़

5 आओ, मैं अपने महबूब के लिए गीत गाऊँ,
एक गीत जो उसके अंगूर के बाग़ के बारे
में है।

मेरे प्यारे का बाग़ था। अंगूर का यह बाग़
ज़रख़ेज़ पहाड़ी पर था। 2उसने गोडी करते करते
उसमें से तमाम पत्थर निकाल दिए, फिर बेहतरीन
अंगूर की क़लमें लगाईं। बीच में उसने मीनार
खड़ा किया ताकि उस की सहीह चौकीदारी कर
सके। साथ साथ उसने अंगूर का रस निकालने के
लिए पत्थर में हौज़ तराश लिया। फिर वह पहली
फ़सल का इंतज़ार करने लगा। बड़ी उम्मीद थी
कि अच्छे मीठे अंगूर मिलेंगे। लेकिन अफ़सोस!
जब फ़सल पक गई तो छोटे और खट्टे अंगूर ही
निकले थे।

3"ऐ यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदो, अब
ख़ुद फ़ैसला करो कि मैं उस बाग़ के साथ क्या
करूँ। 4क्या मैंने बाग़ के लिए हर मुमकिन कोशिश
नहीं की थी? क्या मुनासिब नहीं था कि मैं अच्छी
फ़सल की उम्मीद रखूँ? क्या वजह है कि सिर्फ़
छोटे और खट्टे अंगूर निकले?

5पता है कि मैं अपने बाग़ के साथ क्या करूँगा?
मैं उस की काँटेदार बाड़ को ख़त्म करूँगा और
उस की चारदीवारी गिरा दूँगा। उसमें जानवर घुस
आएँगे और चरकर सब कुछ तबाह करेंगे, सब
कुछ पाँवों तले रौंद डालेंगे!

6मैं उस की ज़मीन बंजर बना दूँगा। न उस की
बेलों की काँट-छाँट होगी, न गोडी की जाएगी।
वहाँ काँटेदार और ख़ुदरौ पौदे उगेंगे। न सिर्फ़ यह
बल्कि मैं बादलों को भी उस पर बरसने से रोक
दूँगा।"

7सुनो, इसराईली क़ौम अंगूर का बाग़ है
जिसका मालिक रब्बुल-अफ़वाज है। यहूदाह
के लोग उसके लगाए हुए पौदे हैं जिनसे वह
लुत्फ़अंदोज़ होना चाहता है। वह उम्मीद रखता
था कि इनसाफ़ की फ़सल पैदा होगी, लेकिन
अफ़सोस! उन्होंने ग़ैरक़ानूनी हरकतें कीं। रास्ती
की तवक़्क़ो थी, लेकिन मज़लूमों की चीख़ें ही
सुनाई दीं।

लोगों की ग़ैरक़ानूनी हरकतें

8तुम पर अफ़सोस जो यके बाद दीगरे घरों
और खेतों को अपनाते जा रहे हो। आख़िरकार
दीगर तमाम लोगों को निकलना पड़ेगा और तुम
मुल्क में अकेले ही रहोगे। 9रब्बुल-अफ़वाज ने
मेरी मौजूदगी में ही क़सम खाई है, "यक़ीनन
यह मुतअद्दिद मकान वीरानो-सुनसान हो जाएंगे,
इन बड़े और आलीशान घरों में कोई नहीं बसेगा।
10दस एकड़[a] ज़मीन के अंगूरों से मै के सिर्फ़
22 लिटर बनेंगे, और बीज के 160 किलोग्राम
से ग़ल्ला के सिर्फ़ 16 किलोग्राम पैदा होंगे।"

11तुम पर अफ़सोस जो सुबह-सवेरे उठ-
कर शराब के पीछे पड़ जाते और रात-भर मै पी
पीकर मस्त हो जाते हो। 12तुम्हारी ज़ियाफ़तों
में कितनी रौनक़ होती है! तुम्हारे मेहमान मै
पी पीकर सरोद, सितार, दफ़ और बाँसरी की
सुरीली आवाज़ों से अपना दिल बहलाते हैं।
लेकिन अफ़सोस, तुम्हें ख़याल तक नहीं आता
कि रब क्या कर रहा है। जो कुछ रब के हाथों
हो रहा है उसका तुम लिहाज़ ही नहीं करते।
13इसी लिए मेरी क़ौम जिलावतन हो जाएगी,
क्योंकि वह समझ से ख़ाली है। उसके बड़े

[a]लफ़्ज़ी मतलब : जितनी ज़मीन पर बैलों की दस जोड़ियाँ एक दिन में हल चला सकती हैं।

अफ़सर भूके मरेंगे, और अवाम प्यास के मारे
सूख जाएंगे। 14पाताल ने अपना मुँह फाड़कर
खोला है ताकि क़ौम की तमाम शानो-शौकत,
शोर-शराबा, हंगामा और शादमान अफ़राद उसके
गले में उतर जाएँ। 15इनसान को पस्त करके
ख़ाक में मिलाया जाएगा, और मग़रूर की आँखें
नीची हो जाएँगी।

16लेकिन रब्बुल-अफ़वाज की अदालत उस
की अज़मत दिखाएगी, और क़ुद्दूस ख़ुदा की
रास्ती ज़ाहिर करेगी कि वह क़ुद्दूस है। 17उन
दिनों में लेले और मोटी-ताज़ी भेड़ें जिलावतनों के
खंडरात में यों चरेंगी जिस तरह अपनी चरागाहों
में।

18तुम पर अफ़सोस जो अपने क़ुसूर को
धोकेबाज़ रस्सों के साथ अपने पीछे खींचते और
अपने गुनाह को बैलगाड़ी की तरह अपने पीछे
घसीटते हो। 19तुम कहते हो, "अल्लाह जल्दी
जल्दी अपना काम निपटाए ताकि हम इसका
मुआयना करें। जो मनसूबा इसराईल का क़ुद्दूस
रखता है वह जल्दी सामने आए ताकि हम उसे
जान लें।"

20तुम पर अफ़सोस जो बुराई को भुला और
भलाई को बुरा क़रार देते हो, जो कहते हो
कि तारीकी रौशनी और रौशनी तारीकी है, कि
कड़वाहट मीठी और मिठास कड़वी है।

21तुम पर अफ़सोस जो अपनी नज़र में
दानिशमंद हो और अपने आपको होशियार
समझते हो।

22तुम पर अफ़सोस जो मै पीने में पहलवान हो
और शराब मिलाने में अपनी बहादुरी दिखाते हो।

23तुम रिश्वत खाकर मुजरिमों को बरी करते
और बेक़ुसूरों के हुक़ूक़ मारते हो। 24अब तुम्हें
इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। जिस तरह भूसा
आग की लपेट में आकर राख हो जाता और सूखी
घास आग के शोले में चुरमुर हो जाती है उसी तरह
तुम ख़त्म हो जाओगे। तुम्हारी जड़ें सड़ जाएँगी
और तुम्हारे फूल गर्द की तरह उड़ जाएंगे, क्योंकि
तुमने रब्बुल-अफ़वाज की शरीअत को रद्द किया
है, तुमने इसराईल के क़ुद्दूस का फ़रमान हक़ीर
जाना है।

असूरी फ़ौज का हमला

25यही वजह है कि रब का ग़ज़ब उस की क़ौम
पर नाज़िल हुआ है, कि उसने अपना हाथ बढ़ाकर
उन पर हमला किया है। पहाड़ लरज़ रहे और
गलियों में लाशें कचरे की तरह बिखरी हुई हैं।
ताहम उसका ग़ुस्सा ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका
हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

26वह एक दूर-दराज़ क़ौम के लिए फ़ौजी
झंडा गाड़कर उसे अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ खड़ा
करेगा, वह सीटी बजाकर उसे दुनिया की इंतहा
से बुलाएगा। वह देखो, दुश्मन भागते हुए आ
रहे हैं! 27उनमें से कोई नहीं जो थकामाँदा हो
या लड़खड़ाकर चले। कोई नहीं ऊँघता या सोया
हुआ है। किसी का भी पटका ढीला नहीं, किसी
का भी तसमा टूटा नहीं। 28उनके तीर तेज़ और
कमान तने हुए हैं। उनके घोड़ों के खुर चक़माक़
जैसे, उनके रथों के पहिये आँधी जैसे हैं। 29वह
शेरनी की तरह गरजते हैं बल्कि जवान शेरबबर
की तरह दहाड़ते और ग़ुर्राते हुए अपना शिकार
छीनकर वहाँ ले जाते हैं जहाँ उसे कोई नहीं बचा
सकता।

30उस दिन दुश्मन ग़ुर्राते और मुतलातिम
समुंदर का-सा शोर मचाते हुए इसराईल पर टूट
पड़ेंगे। जहाँ भी देखो वहाँ अंधेरा ही अंधेरा और
मुसीबत ही मुसीबत। बादल छा जाने के सबब से
रौशनी तारीक हो जाएगी।

यसायाह की बुलाहट

6 जिस साल उज़्ज़ियाह बादशाह ने वफ़ात
पाई उस साल मैंने रब को आला और
जलाली तख़्त पर बैठे देखा। उसके लिबास के
दामन से रब का घर भर गया। 2सराफ़ीम फ़रिश्ते
उसके ऊपर खड़े थे। हर एक के छः पर थे। दो से
वह अपने मुँह को और दो से अपने पाँवों को ढाँप
लेते थे जबकि दो से वह उड़ते थे। 3बुलंद आवाज़

से वह एक दूसरे को पुकार रहे थे, “क़ुद्दूस, क़ुद्दूस, क़ुद्दूस है रब्बुल-अफ़वाज। तमाम दुनिया उसके जलाल से मामूर है।”

4उनकी आवाज़ों से दहलीज़ें[a] हिल गईं और रब
का घर धुएँ से भर गया। 5मैं चिल्ला उठा, “मुझ
पर अफ़सोस, मैं बरबाद हो गया हूँ! क्योंकि गो मेरे होंट नापाक हैं, और जिस क़ौम के दरमियान रहता हूँ उसके होंट भी नजिस हैं तो भी मैंने अपनी आँखों से बादशाह रब्बुल-अफ़वाज को देखा है।”

6तब सराफ़ीम फ़रिश्तों में से एक उड़ता हुआ
मेरे पास आया। उसके हाथ में दमकता कोयला था जो उसने चिमटे से क़ुरबानगाह से लिया था।
7इससे उसने मेरे मुँह को छूकर फ़रमाया, “देख,
कोयले ने तेरे होंटों को छू दिया है। अब तेरा क़ुसूर दूर हो गया, तेरे गुनाह का कफ़्फ़ारा दिया गया है।”

8फिर मैंने रब की आवाज़ सुनी। उसने पूछा,
“मैं किस को भेजूँ? कौन हमारी तरफ़ से जाए?”
मैं बोला, “मैं हाज़िर हूँ। मुझे ही भेज दे।” 9तब
रब ने फ़रमाया, “जा, इस क़ौम को बता, ‘अपने कानों से सुनो मगर कुछ न समझना। अपनी
आँखों से देखो, मगर कुछ न जानना!’ 10इस
क़ौम के दिल को बेहिस कर दे, उनके कानों और आँखों को बंद कर। ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें, अपने कानों से सुनें, मेरी तरफ़ रुजू करें और शफ़ा पाएँ।”

11मैंने सवाल किया, “ऐ रब, कब तक?”
उसने जवाब दिया, “उस वक़्त तक कि मुल्क के शहर वीरानो-सुनसान, उसके घर ग़ैरआबाद और
उसके खेत बंजर न हों। 12पहले लाज़िम है कि
रब लोगों को दूर दूर तक भगा दे, कि पूरा मुल्क
तने-तनहा और बेकस रह जाए। 13अगर क़ौम का
दसवाँ हिस्सा मुल्क में बाक़ी भी रहे लेकिन उसे भी जला दिया जाएगा। वह किसी बलूत या दीगर लंबे-चौड़े दरख़्त की तरह यों कट जाएगा कि मुढ ही बाक़ी रहेगा। ताहम यह मुढ एक मुक़द्दस बीज होगा जिससे नए सिरे से ज़िंदगी फूट निकलेगी।”

अल्लाह आख़ज़ को तसल्ली देता है

7
जब आख़ज़ बिन यूताम बिन उज़्ज़ियाह, यहूदाह का बादशाह था तो शाम का बादशाह रज़ीन और इसराईल का बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह यरूशलम के साथ लड़ने के लिए निकले। लेकिन वह शहर पर क़ब्ज़ा करने
में नाकाम रहे। 2जब दाऊद के शाही घराने को
इत्तला मिली कि शाम की फ़ौज ने इफ़राईम के इलाक़े में अपनी लशकरगाह लगाई है तो आख़ज़ बादशाह और उस की क़ौम लरज़ उठे। उनके दिल आँधी के झोंकों से हिलनेवाले दरख़्तों की तरह थरथराने लगे।

3तब रब यसायाह से हमकलाम हुआ, “अपने
बेटे शयार-याशूब[b] को अपने साथ लेकर आख़ज़ बादशाह से मिलने के लिए निकल जा। वह उस नाले के सिरे के पास रुका हुआ है जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों के घाट तक ले जाता
है)। 4उसे बता कि मुहतात रहकर सुकून का
दामन मत छोड़। मत डर। तेरा दिल रज़ीन, शाम और बिन रमलियाह का तैश देखकर हिम्मत न हारे। यह बस जली हुई लकड़ी के दो बचे हुए टुकड़े
हैं जो अब तक कुछ धुआँ छोड़ रहे हैं। 5बेशक
शाम और इसराईल के बादशाहों ने तेरे ख़िलाफ़
बुरे मनसूबे बाँधे हैं, और वह कहते हैं, 6‘आओ हम
यहूदाह पर हमला करें। हम वहाँ दहशत फैलाकर उस पर फ़तह पाएँ और फिर ताबियेल के बेटे
को उसका बादशाह बनाएँ।’ 7लेकिन रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि उनका मनसूबा नाकाम
हो जाएगा। बात नहीं बनेगी! 8क्योंकि शाम का
सर दमिश्क़ और दमिश्क़ का सर महज़ रज़ीन है। जहाँ तक मुल्के-इसराईल का ताल्लुक़ है, 65 साल के अंदर अंदर वह चकनाचूर हो जाएगा, और

[a]लफ़्ज़ी मतलब : दहलीज़ों में घूमनेवाली दरवाज़ों की चूलें।

[b]शयार-याशूब से मुराद है ‘एक बचा-खुचा हिस्सा वापस आएगा।’

क़ौम नेस्तो-नाबूद हो जाएगी। 9इसराईल का सर
सामरिया और सामरिया का सर महज़ रमलियाह
का बेटा है।

अगर ईमान में क़ायम न रहो, तो ख़ुद क़ायम
नहीं रहोगे।"

रब आख़ज़ को निशान देता है

10रब आख़ज़ बादशाह से एक बार फिर
हमकलाम हुआ, 11"इसकी तसदीक़ के लिए रब
अपने ख़ुदा से कोई इलाही निशान माँग ले, ख़्वाह
आसमान पर हो या पाताल में।"

12लेकिन आख़ज़ ने इनकार किया, "नहीं,
मैं निशान माँगकर रब को नहीं आज़-
माऊँगा।"

13तब यसायाह ने कहा, "फिर मेरी बात सुनो,
ऐ दाऊद के ख़ानदान! क्या यह काफ़ी नहीं कि
तुम इनसान को थका दो? क्या लाज़िम है कि
अल्लाह को भी थकाने पर मुसिर रहो? 14चलो,
फिर रब अपनी ही तरफ़ से तुम्हें निशान देगा।
निशान यह होगा कि कुँवारी उम्मीद से हो जाएगी।
जब बेटा पैदा होगा तो उसका नाम इम्मानुएल[a]
रखेगी। 15जिस वक़्त बच्चा इतना बड़ा होगा
कि ग़लत काम रद्द करने और अच्छा काम चुनने
का इल्म रखेगा उस वक़्त से बालाई और शहद
खाएगा। 16क्योंकि इससे पहले कि लड़का ग़लत
काम रद्द करने और अच्छा काम चुनने का इल्म
रखे वह मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा जिसके
दोनों बादशाहों से तू दहशत खाता है।

यहूदाह भी तबाह हो जाएगा

17रब तुझे भी तेरे आबाई ख़ानदान और क़ौम
समेत बड़ी मुसीबत में डालेगा। क्योंकि वह असूर
के बादशाह को तुम्हारे ख़िलाफ़ भेजेगा। उस वक़्त
तुम्हें ऐसे मुश्किल दिनों का सामना करना पड़ेगा
कि इसराईल के यहूदाह से अलग हो जाने से
लेकर आज तक नहीं गुज़रे।"

18उस दिन रब सीटी बजाकर दुश्मन को
बुलाएगा। कुछ मक्खियों के ग़ोल की तरह
दरियाए-नील की दूर-दराज़ शाख़ों से आएँगे, और
कुछ शहद की मक्खियों की तरह असूर से रवाना
होकर मुल्क पर धावा बोल देंगे। 19हर जगह वह
टिक जाएंगे, गहरी घाटियों और चट्टानों की दराड़ों
में, तमाम काँटेदार झाड़ियों में और हर जोहड़ के
पास। 20उस दिन क़ादिरे-मुतलक़ दरियाए-फ़ुरात
के परली तरफ़ एक उस्तरा किराए पर लेकर तुम
पर चलाएगा। यानी असूर के बादशाह के ज़रीए
वह तुम्हारे सर और टाँगों को मुँडवाएगा। हाँ, वह
तुम्हारी दाढ़ी-मूँछ का भी सफ़ाया करेगा।

21उस दिन जो आदमी एक जवान गाय
और दो भेड़-बकरियाँ रख सके वह ख़ुश-
क़िसमत होगा। 22तो भी वह इतना दूध देंगी कि
वह बालाई खाता रहेगा। हाँ, जो भी मुल्क में बाक़ी
रह गया होगा वह बालाई और शहद खाएगा।

23उस दिन जहाँ जहाँ हाल में अंगूर के हज़ार
पौदे चाँदी के हज़ार सिक्कों के लिए बिकते हैं वहाँ
काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे ही उगेंगे। 24पूरा
मुल्क काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों के सबब
से इतना जंगली होगा कि लोग तीर और कमान
लेकर उसमें शिकार खेलने के लिए जाएंगे।
25जिन बुलंदियों पर इस वक़्त खेतीबाड़ी की
जाती है वहाँ लोग काँटेदार पौदों और ऊँटकटारों
की वजह से जा नहीं सकेंगे। गाय-बैल उन पर
चरेंगे, और भेड़-बकरियाँ सब कुछ पाँवों तले
रौंदेंगी।

जल्द ही लूट-खसोट

8 रब मुझसे हमकलाम हुआ, "एक बड़ा
तख़्ता लेकर उस पर साफ़ अलफ़ाज़
में लिख दे, 'जल्द ही लूट-खसोट, सुरअत
से ग़ारतगरी'।" 2मैंने ऊरियाह इमाम और
ज़करियाह बिन यबरकियाह की मौजूदगी में ऐसा
ही लिख दिया, क्योंकि दोनों मोतबर गवाह थे।

[a]इम्मानुएल से मुराद है 'अल्लाह हमारे साथ है।'

3उस वक़्त जब मैं अपनी बीवी नबिया के पास
गया तो वह उम्मीद से हुई। बेटा पैदा हुआ, और
रब ने मुझे हुक्म दिया, "इसका नाम 'जल्द ही
लूट-खसोट, सुरअत से ग़ारतगरी' रख। 4क्योंकि
इससे पहले कि लड़का 'अब्बू' या 'अम्मी' कह
सके दमिश्क़ की दौलत और सामरिया का मालो-
असबाब छीन लिया गया होगा, असूर के बादशाह
ने सब कुछ लूट लिया होगा।"

शिलोख़ का पानी रद्द करने का बुरा अंजाम

5एक बार फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ,
6"यह लोग यरूशलम में आराम से बहनेवाले
शिलोख़ नाले का पानी मुस्तरद करके रज़ीन और
फ़िक़ह बिन रमलियाह से ख़ुश हैं। 7इसलिए
रब उन पर दरियाए-फ़ुरात का ज़बरदस्त सैलाब
लाएगा, असूर का बादशाह अपनी तमाम शानो-
शौकत के साथ उन पर टूट पड़ेगा। उस की
तमाम दरियाई शाख़ें अपने किनारों से निकल कर
8सैलाब की सूरत में यहूदाह पर से गुज़रेंगी। ऐ
इम्मानुएल, पानी परिंदे की तरह अपने परों को
फैलाकर तेरे पूरे मुल्क को ढाँप लेगा, और लोग
गले तक उसमें डूब जाएंगे।"

9ऐ क़ौमो, बेशक जंग के नारे लगाओ। तुम
फिर भी चकनाचूर हो जाओगी। ऐ दूर-दराज़
ममालिक के तमाम बाशिंदो, ध्यान दो! बेशक
जंग के लिए तैयारियाँ करो। तुम फिर भी पाश
पाश हो जाओगे। क्योंकि जंग के लिए तैयारियाँ
करने के बावुजूद भी तुम्हें कुचला जाएगा। 10जो
भी मनसूबा तुम बान्धो, बात नहीं बनेगी। आपस
में जो भी फ़ैसला करो, तुम नाकाम हो जाओगे,
क्योंकि अल्लाह हमारे साथ है।[a]

रब नबी को क़ौम के बारे में आगाह करता है

11जिस वक़्त रब ने मुझे मज़बूती से पकड़
लिया उस वक़्त उसने मुझे इस क़ौम की राहों पर
चलने से ख़बरदार किया। उसने फ़रमाया, 12"हर
बात को साज़िश मत समझना जो यह क़ौम
साज़िश समझती है। जिससे यह लोग डरते हैं
उससे न डरना, न दहशत खाना 13बल्कि रब्बुल-
अफ़वाज से डरो। उसी से दहशत खाओ और उसी
को क़ुद्दूस मानो। 14तब वह इसराईल और यहूदाह
का मक़दिस होगा, एक ऐसा पत्थर जो ठोकर का
बाइस बनेगा, एक चट्टान जो ठेस लगने का सबब
होगी। यरूशलम के बाशिंदे उसके फंदे और जाल
में उलझ जाएंगे। 15उनमें से बहुत सारे ठोकर
खाएँगे। वह गिरकर पाश पाश हो जाएंगे और फंदे
में फँसकर पकड़े जाएंगे।"

रब का कलाम शागिर्दों के हवाले करना है

16मुझे मुकाशफ़े को लिफ़ाफ़े में डालकर
महफ़ूज़ रखना है, अपने शागिर्दों के दर-
मियान ही अल्लाह की हिदायत पर मुहर लगानी
है। 17मैं ख़ुद रब के इंतज़ार में रहूँगा जिसने अपने
चेहरे को याक़ूब के घराने से छुपा लिया है। उसी
से मैं उम्मीद रखूँगा।

18अब मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे
जो अल्लाह ने मुझे दिए हैं, हम इसराईल
में इलाही और मोजिज़ाना निशान हैं जिन-
से रब्बुल-अफ़वाज जो कोहे-सिय्यून पर सुकूनत
करता है लोगों को आगाह कर रहा है।

19लोग तुम्हें मशवरा देते हैं, "जाओ, मुरदों
से राबिता करनेवालों और क़िस्मत का हाल
बतानेवालों से पता करो, उनसे जो बारीक
आवाज़ें निकालते और बुड़बुड़ाते हुए जवाब देते
हैं।" लेकिन उनसे कहो, "क्या मुनासिब नहीं कि
क़ौम अपने ख़ुदा से मशवरा करे? हम ज़िंदों की
ख़ातिर मुर्दों से बात क्यों करें?"

20अल्लाह की हिदायत और मुकाशफ़ा की
तरफ़ रुजू करो! जो इनकार करे उस पर सुबह
की रौशनी कभी नहीं चमकेगी। 21ऐसे लोग
मायूस और फ़ाक़ाकश हालत में मुल्क में मारे
मारे फिरेंगे। और जब भूके मरने को होंगे तो

[a]इबरानी में 'इम्मानुएल' लिखा है, देखिए 7:14 का फ़ुटनोट।

झुँझलाकर अपने बादशाह और अपने ख़ुदा पर
लानत करेंगे। वह ऊपर आसमान 22और नीचे
ज़मीन की तरफ़ देखेंगे, लेकिन जहाँ भी नज़र
पड़े वहाँ मुसीबत, अंधेरा और हौलनाक तारीकी
ही दिखाई देगी। उन्हें तारीकी ही तारीकी में डाल
दिया जाएगा।

आनेवाले मसीह की रौशनी

9 लेकिन मुसीबतज़दा तारीकी में नहीं
रहेंगे। गो पहले ज़बूलून का इलाक़ा और
नफ़ताली का इलाक़ा पस्त हुआ है, लेकिन
आइंदा झील के साथ का रास्ता, दरियाए-यरदन
के पार, ग़ैरयहूदियों का गलील सरफ़राज़ होगा।
2अंधेरे में चलनेवाली क़ौम ने एक तेज़ रौशनी
देखी, मौत के साये में डूबे हुए मुल्क के बाशिंदों
पर रौशनी चमकी। 3तूने क़ौम को बढ़ाकर उसे
बड़ी ख़ुशी दिलाई है। तेरे हुज़ूर वह यों ख़ुशी मनाते
हैं जिस तरह फ़सल काटते और लूट का माल
बाँटते वक़्त मनाई जाती है। 4तूने अपनी क़ौम
को उस दिन की तरह छुटकारा दिया जब तूने
मिदियान को शिकस्त दी थी। उसे दबानेवाला
जुआ टूट गया, और उस पर ज़ुल्म करनेवाले
की लाठी टुकड़े टुकड़े हो गई है। 5ज़मीन पर
ज़ोर से मारे गए फ़ौजी जूते और ख़ून में लतपत
फ़ौजी वरदियाँ सब हवालाए-आतिश होकर भस्म
हो जाएँगी।

6क्योंकि हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ, हमें
बेटा बख़्शा गया है। उसके कंधों पर हुकूमत
का इख़्तियार ठहरा रहेगा। वह अनोखा मुशीर,
क़वी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती
का शहज़ादा कहलाएगा। 7उस की हुकूमत ज़ोर
पकड़ती जाएगी, और अमनो-अमान की इंतहा
नहीं होगी। वह दाऊद के तख़्त पर बैठकर उस
की सलतनत पर हुकूमत करेगा, वह उसे अदलो-
इनसाफ़ से मज़बूत करके अब से अबद तक
क़ायम रखेगा। रब्बुल-अफ़वाज की ग़ैरत ही इसे
अंजाम देगी।

रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा

8रब ने याक़ूब के ख़िलाफ़ पैग़ाम भेजा, और
वह इसराईल पर नाज़िल हो गया है। 9इसराईल
और सामरिया के तमाम बाशिंदे इसे जल्द ही
जान जाएंगे, हालाँकि वह इस वक़्त बड़ी शेख़ी
मारकर कहते हैं, 10"बेशक हमारी ईंटों की
दीवारें गिर गई हैं, लेकिन हम उन्हें तराशे हुए
पत्थरों से दुबारा तामीर कर लेंगे। बेशक हमारे
अंजीर-तूत के दरख़्त कट गए हैं, लेकिन कोई
बात नहीं, हम उनकी जगह देवदार के दरख़्त
लगा लेंगे।" 11लेकिन रब इसराईल के दुश्मन
रज़ीन को तक़वियत देकर उसके ख़िलाफ़ भेजेगा
बल्कि इसराईल के तमाम दुश्मनों को उस पर
हमला करने के लिए उभारेगा। 12शाम के फ़ौजी
मशरिक़ से और फ़िलिस्ती मग़रिब से मुँह फाड़कर
इसराईल को हड़प कर लेंगे। ताहम रब का ग़ज़ब
ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए
उठा ही रहेगा।

13क्योंकि इसके बावुजूद भी लोग सज़ा
देनेवाले के पास वापस नहीं आएँगे और रब्बुल-
अफ़वाज के तालिब नहीं होंगे। 14नतीजे में
रब एक ही दिन में इसराईल का न सिर्फ़ सर
बल्कि उस की दुम भी काटेगा, न सिर्फ़ खजूर
की शानदार शाख़ बल्कि मामूली-सा सरकंडा
भी तोड़ेगा। 15बुज़ुर्ग और असरो-रसूख़वाले
इसराईल का सर हैं जबकि झूटी तालीम देनेवाले
नबी उस की दुम हैं। 16क्योंकि क़ौम के राहनुमा
लोगों को ग़लत राह पर ले गए हैं, और जिनकी
राहनुमाई वह कर रहे हैं उनके दिमाग़ में फ़ुतूर
आ गया है। 17इसलिए रब न क़ौम के जवानों
से ख़ुश होगा, न यतीमों और बेवाओं पर रहम
करेगा। क्योंकि सबके सब बेदीन और शरीर हैं,
हर मुँह कुफ़र बकता है। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा
नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा
ही रहेगा।

18क्योंकि उनकी बेदीनी की भड़कती हुई आग
काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे भस्म कर देती है,

बल्कि गुंजान जंगल भी उस की ज़द में आकर धुएँ
के काले बादल छोड़ता है। 19रब्बुल-अफ़वाज के
ग़ज़ब से मुल्क झुलस जाएगा और उसके बाशिंदे
आग का लुक़मा बन जाएंगे। यहाँ तक कि कोई
भी अपने भाई पर तरस नहीं खाएगा। 20और
गो हर एक दाईं तरफ़ मुड़कर सब कुछ हड़प
कर जाए तो भी भूका रहेगा, गो बाईं तरफ़ रुख़
करके सब कुछ निगल जाए तो भी सेर नहीं होगा।
हर एक अपने पड़ोसी को खाएगा, 21मनस्सी
इफ़राईम को और इफ़राईम मनस्सी को। और
दोनों मिलकर यहूदाह पर हमला करेंगे। ताहम रब
का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने
के लिए उठा ही रहेगा।

10 तुम पर अफ़सोस जो ग़लत
क़वानीन सादिर करते और ज़ा-
लिम फ़तवे देते हो 2ताकि ग़रीबों का हक़ मारो
और मज़लूमों के हुक़ूक़ पामाल करो। बेवाएँ
तुम्हारा शिकार होती हैं, और तुम यतीमों को
लूट लेते हो। 3लेकिन अदालत के दिन तुम क्या
करोगे, जब दूर दूर से ज़बरदस्त तूफ़ान तुम पर
आन पड़ेगा तो तुम मदद के लिए किसके पास
भागोगे और अपना मालो-दौलत कहाँ महफ़ूज़
रख छोड़ोगे? 4जो झुककर क़ैदी न बने वह
गिरकर हलाक हो जाएगा। ताहम रब का ग़ज़ब
ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए
उठा ही रहेगा।

असूर की भी अदालत होगी

5असूर पर अफ़सोस जो मेरे ग़ज़ब का आला
है, जिसके हाथ में मेरे क़हर की लाठी है। 6मैं उसे
एक बेदीन क़ौम के ख़िलाफ़ भेज रहा हूँ, एक
क़ौम के ख़िलाफ़ जो मुझे ग़ुस्सा दिलाती है। मैंने
असूर को हुक्म दिया है कि उसे लूटकर गली की
कीचड़ की तरह पामाल कर।

7लेकिन उसका अपना इरादा फ़रक़ है। वह
ऐसी सोच नहीं रखता बल्कि सब कुछ तबाह
करने पर तुला हुआ है, बहुत क़ौमों को नेस्तो-
नाबूद करने पर आमादा है। 8वह फ़ख़र करता है,
"मेरे तमाम अफ़सर तो बादशाह हैं। 9फिर हमारी
फ़ुतूहात पर ग़ौर करो। करकिमीस, कलनो,
अरफ़ाद, हमात, दमिश्क़ और सामरिया जैसे
तमाम शहर यके बाद दीगरे मेरे क़ब्ज़े में आ गए
हैं। 10मैंने कई सलतनतों पर क़ाबू पा लिया है
जिनके बुत यरूशलम और सामरिया के बुतों से
कहीं बेहतर थे। 11सामरिया और उसके बुतों को
मैं बरबाद कर चुका हूँ, और अब मैं यरूशलम और
उसके बुतों के साथ भी ऐसा ही करूँगा!"

12लेकिन कोहे-सिय्यून पर और यरूशलम में
अपने तमाम मक़ासिद पूरे करने के बाद रब
फ़रमाएगा, "मैं शाहे-असूर को भी सज़ा दूँगा,
क्योंकि उसके मग़रूर दिल से कितना बुरा काम
उभर आया है, और उस की आँखें कितने ग़ुरूर
से देखती हैं। 13वह शेख़ी मारकर कहता है, 'मैंने
अपने ही ज़ोरे-बाज़ू और हिकमत से यह सब कुछ
कर लिया है, क्योंकि मैं समझदार हूँ। मैंने क़ौमों
की हुदूद ख़त्म करके उनके ख़ज़ानों को लूट लिया
और ज़बरदस्त साँड की तरह उनके बादशाहों को
मार मारकर ख़ाक में मिला दिया है। 14जिस तरह
कोई अपना हाथ घोंसले में डालकर अंडे निकाल
लेता है उसी तरह मैंने क़ौमों की दौलत छीन ली
है। आम आदमी परिंदों को भगाकर उनके छोड़े
हुए अंडे इकट्ठे कर लेता है जबकि मैंने यही सुलूक
दुनिया के तमाम ममालिक के साथ किया। जब
मैं उन्हें अपने क़ब्ज़े में लाया तो एक ने भी अपने
परों को फड़फड़ाने या चोंच खोलकर चीं चीं करने
की जुर्रत न की'।"

15लेकिन क्या कुल्हाड़ी उसके सामने शेख़ी
बघारती जो उसे चलाता है? क्या आरी उसके
सामने अपने आप पर फ़ख़र करती जो उसे
इस्तेमाल करता है? यह उतना ही नामुमकिन
है जितना यह कि लाठी पकड़नेवाले को घुमाए
या डंडा आदमी को उठाए।

16चुनाँचे क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज
असूर के मोटे-ताज़े फ़ौजियों में एक मरज़ फैला
देगा जो उनके जिस्मों को रफ़्ता रफ़्ता ज़ाया
करेगा। असूर की शानो-शौकत के नीचे एक

भड़कती हुई आग लगाई जाएगी। 17उस वक़्त
इसराईल का नूर आग और इसराईल का क़ुद्दूस
शोला बनकर असूर की काँटेदार झाड़ियों और
ऊँटकटारों को एक ही दिन में भस्म कर देगा।
18वह उसके शानदार जंगलों और बाग़ों को
मुकम्मल तौर पर तबाह कर देगा, और वह मरीज़
की तरह घुल घुलकर ज़ायल हो जाएंगे। 19जंगलों
के इतने कम दरख़्त बचेंगे कि बच्चा भी उन्हें
गिनकर किताब में दर्ज कर सकेगा।

इसराईल का छोटा-सा हिस्सा बच जाएगा

20उस दिन से इसराईल का बक़िया यानी
याक़ूब के घराने का बचा-खुचा हिस्सा उस पर
मज़ीद इनहिसार नहीं करेगा जो उसे मारता रहा
था, बल्कि वह पूरी वफ़ादारी से इसराईल के
क़ुद्दूस, रब पर भरोसा रखेगा। 21बक़िया वापस
आएगा, याक़ूब का बचा-खुचा हिस्सा क़वी ख़ुदा
के हुज़ूर लौट आएगा। 22ऐ इसराईल, गो तू
साहिल पर की रेत जैसा बेशुमार क्यों न हो तो भी
सिर्फ़ एक बचा हुआ हिस्सा वापस आएगा। तेरे
बरबाद होने का फ़ैसला हो चुका है, और इनसाफ़
का सैलाब मुल्क पर आनेवाला है। 23क्योंकि
इसका अटल फ़ैसला हो चुका है कि क़ादिरे-
मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज पूरे मुल्क पर हलाकत
लाने को है।

24इसलिए क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़-
वाज फ़रमाता है, "ऐ सिय्यून में बसनेवाली मेरी
क़ौम, असूर से मत डरना जो लाठी से तुझे मारता
है और तेरे ख़िलाफ़ लाठी यों उठाता है जिस तरह
पहले मिसर किया करता था। 25मेरा तुझ पर
ग़ुस्सा जल्द ही ठंडा हो जाएगा और मेरा ग़ज़ब
असूरियों पर नाज़िल होकर उन्हें ख़त्म करेगा।"
26जिस तरह रब्बुल-अफ़वाज ने मिदियानियों को
मारा जब जिदाऊन ने ओरेब की चट्टान पर उन्हें
शिकस्त दी उसी तरह वह असूरियों को भी कोड़े
से मारेगा। और जिस तरह रब ने अपनी लाठी
मूसा के ज़रीए समुंदर के ऊपर उठाई और नतीजे
में मिसर की फ़ौज उसमें डूब गई बिलकुल उसी
तरह वह असूरियों के साथ भी करेगा। 27उस
दिन असूर का बोझ तेरे कंधों पर से उतर जाएगा,
और उसका जुआ तेरी गरदन पर से दूर होकर टूट
जाएगा।

यरूशलम की तरफ़ फ़ातेह की तरक़्क़ी

फ़ातेह ने यशीमोन की तरफ़ से चढ़कर
28ऐयात पर हमला किया है। उसने मिजरोन में
से गुज़रकर मिकमास में अपना लशकरी सामान
छोड़ रखा है। 29दर्रे को पार करके वह कहते
हैं, "आज हम रात को जिबा में गुज़ारेंगे।" रामा
थरथरा रहा और साऊल का शहर जिबिया भाग
गया है। 30ऐ जल्लीम बेटी, ज़ोर से चीख़ें मार!
ऐ लैसा, ध्यान दे! ऐ अनतोत, उसे जवाब दे!
31मदमीना फ़रार हो गया और जेबीम के बाशिंदों
ने दूसरी जगहों में पनाह ली है। 32आज ही फ़ातेह
नोब के पास रुककर सिय्यून बेटी के पहाड़ यानी
कोहे-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा।[a]

33देखो, क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज बड़े
ज़ोर से शाख़ों को तोड़नेवाला है। तब ऊँचे ऊँचे
दरख़्त कटकर गिर जाएंगे, और जो सरफ़राज़ हैं
उन्हें ख़ाक में मिलाया जाएगा। 34वह कुल्हाड़ी
लेकर घने जंगल को काट डालेगा बल्कि लुबनान
भी ज़ोरावर के हाथों गिर जाएगा।

मसीह की पुरअमन सलतनत

11 यस्सी[b] के मुढ में से कोंपल फूट
निकलेगी, और उस की बची हुई जड़ों
से शाख़ निकलकर फल लाएगी। 2रब का रूह
उस पर ठहरेगा यानी हिकमत और समझ का
रूह, मशवरत और क़ुव्वत का रूह, इरफ़ान और
रब के ख़ौफ़ का रूह। 3रब का ख़ौफ़ उसे अज़ीज़

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : आज ही फ़ातेह नोब के पास रुककर कोहे-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा ताकि उसे बड़ा बनाए।

[b]यस्सी से मुराद हज़रत दाऊद की नसल है (यस्सी हज़रत दाऊद का बाप था)।

होगा। न वह दिखावे की बिना पर फ़ैसला करेगा,
न सुनी-सुनाई बातों की बिना पर फ़तवा देगा
4बल्कि इनसाफ़ से बेबसों की अदालत करेगा
और ग़ैरजानिबदारी से मुल्क के मुसीबतज़दों का
फ़ैसला करेगा। अपने कलाम की लाठी से वह
ज़मीन को मारेगा और अपने मुँह की फूँक से
बेदीन को हलाक करेगा। 5वह रास्तबाज़ी के
पटके और वफ़ादारी के ज़ेरजामे से मुलब्बस
रहेगा।

6भेड़िया उस वक़्त भेड़ के बच्चे के पास
ठहरेगा, और चीता भेड़ के बच्चे के पास आराम
करेगा। बछड़ा, जवान शेरबबर और मोटा-ताज़ा
बैल मिलकर रहेंगे, और छोटा लड़का उन्हें
हाँककर सँभालेगा। 7गाय रीछ के साथ चरेगी,
और उनके बच्चे एक दूसरे के साथ आराम करेंगे।
शेरबबर बैल की तरह भूसा खाएगा। 8शीरख़ार
बच्चा नाग की बाँबी के क़रीब खेलेगा, और
जवान बच्चा अपना हाथ ज़हरीले साँप के बिल
में डालेगा।

9मेरे तमाम मुक़द्दस पहाड़ पर न ग़लत और न
तबाहकुन काम किया जाएगा। क्योंकि मुल्क रब
के इरफ़ान से यों मामूर होगा जिस तरह समुंदर
पानी से भरा रहता है। 10उस दिन यस्सी की
जड़ से फूटी हुई कोंपल उम्मतों के लिए झंडा
होगा। क़ौमें उस की तालिब होंगी, और उस की
सुकूनतगाह जलाली होगी।

रब अपनी क़ौम को वापस लाएगा

11उस दिन रब एक बार फिर अपना हाथ
बढ़ाएगा ताकि अपनी क़ौम का वह बचा-खुचा
हिस्सा दुबारा हासिल करे जो असूर, शिमाली
और जुनूबी मिसर, एथोपिया, ऐलाम, बाबल,
हमात और साहिली इलाक़ों में मुंतशिर होगा।
12वह क़ौमों के लिए झंडा गाड़कर इसराईल के
जिलावतनों को इकट्ठा करेगा। हाँ, वह यहूदाह
के बिखरे अफ़राद को दुनिया के चारों कोनों से
लाकर जमा करेगा। 13तब इसराईल का हसद
ख़त्म हो जाएगा, और यहूदाह के दुश्मन नेस्तो-
नाबूद हो जाएंगे। न इसराईल यहूदाह से हसद
करेगा, न यहूदाह इसराईल से दुश्मनी रखेगा।
14फिर दोनों मग़रिब में फ़िलिस्ती मुल्क पर
झपट पड़ेंगे और मिलकर मशरिक़ के बाशिंदों
को लूट लेंगे। अदोम और मोआब उनके क़ब्ज़े
में आएँगे, और अम्मोन उनके ताबे हो जाएगा।
15रब बहरे-क़ुलज़ुम को ख़ुश्क करेगा और साथ
साथ दरियाए-फ़ुरात के ऊपर हाथ हिलाकर उस
पर ज़ोरदार हवा चलाएगा। तब दरिया सात
ऐसी नहरों में बट जाएगा जो पैदल ही पार
की जा सकेंगी। 16एक ऐसा रास्ता बनेगा जो
रब के बचे हुए अफ़राद को असूर से इसराईल
तक पहुँचाएगा, बिलकुल उस रास्ते की तरह
जिसने इसराईलियों को मिसर से निकलते वक़्त
इसराईल तक पहुँचाया था।

बचे हुओं की हम्दो-सना

12 उस दिन तुम गीत गाओगे,
“ऐ रब, मैं तेरी सताइश करूँगा!
यक़ीनन तू मुझसे नाराज़ था, लेकिन अब तेरा
ग़ज़ब मुझ पर से दूर हो जाए और तू मुझे तसल्ली
दे।

2अल्लाह मेरी नजात है। उस पर भरोसा
रखकर मैं दहशत नहीं खाऊँगा। क्योंकि रब ख़ुदा
मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन
गया है।”

3तुम शादमानी से नजात के चश्मों से पानी
भरोगे।

4उस दिन तुम कहोगे, “रब की सताइश करो!
उसका नाम लेकर उसे पुकारो! जो कुछ उसने
किया है दुनिया को बताओ, उसके नाम की
अज़मत का एलान करो।

5रब की तमजीद का गीत गाओ, क्योंकि उसने
ज़बरदस्त काम किया है, और इसका इल्म पूरी
दुनिया तक पहुँचे।

6ऐ यरूशलम की रहनेवाली, शादियाना
बजाकर ख़ुशी के नारे लगा! क्योंकि इसराईल

का क़ुद्दूस अज़ीम है, और वह तेरे दरमियान ही
सुकूनत करता है।”

बाबल के ख़िलाफ़ एलान

13 दर्जे-ज़ैल बाबल के बारे में वह एलान
है जो यसायाह बिन आमूस ने रोया में
देखा।

2नंगे पहाड़ पर झंडा गाड़ दो। उन्हें बुलंद
आवाज़ दो, हाथ हिलाकर उन्हें शुरफ़ा के दरवाज़ों
में दाख़िल होने का हुक्म दो। 3मैंने अपने
मुक़द्दसीन को काम पर लगा दिया है, मैंने अपने
सूरमाओं को जो मेरी अज़मत की ख़ुशी मनाते हैं
बुला लिया है ताकि मेरे ग़ज़ब का आलाए-कार
बनें।

4सुनो! पहाड़ों पर बड़े हुजूम का शोर मच
रहा है। सुनो! मुतअद्दिद ममालिक और जमा
होनेवाली क़ौमों का ग़ुल-ग़पाड़ा सुनाई दे रहा
है। रब्बुल-अफ़वाज जंग के लिए फ़ौज जमा कर
रहा है। 5उसके फ़ौजी दूर-दराज़ इलाक़ों बल्कि
आसमान की इंतहा से आ रहे हैं। क्योंकि रब
अपने ग़ज़ब के आलात के साथ आ रहा है ताकि
तमाम मुल्क को बरबाद कर दे।

6वावैला करो, क्योंकि रब का दिन क़रीब ही
है, वह दिन जब क़ादिरे-मुतलक़ की तरफ़ से
तबाही मचेगी। 7तब तमाम हाथ बेहिसो-हरकत
हो जाएंगे, और हर एक का दिल हिम्मत हार देगा।
8दहशत उन पर छा जाएगी, और वह जान-कनी
और दर्दे-ज़ह की-सी गिरिफ़्त में आकर जन्म
देनेवाली औरत की तरह तड़पेंगे। एक दूसरे को
डर के मारे घूर घूरकर उनके चेहरे आग की तरह
तमतमा रहे होंगे।

9देखो, रब का बेरहम दिन आ रहा है जब
उसका क़हर और शदीद ग़ज़ब नाज़िल होगा।
उस वक़्त मुल्क तबाह हो जाएगा और गुनाहगार
को उसमें से मिटा दिया जाएगा। 10आसमान के
सितारे और उनके झुरमुट नहीं चमकेंगे, सूरज तुलू
होते वक़्त तारीक ही रहेगा, और चाँद की रौशनी
ख़त्म होगी।

11मैं दुनिया को उस की बदकारी का अज्र
और बेदीनों को उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा, मैं
शोख़ों का घमंड ख़त्म कर दूँगा और ज़ालिमों का
ग़ुरूर ख़ाक में मिला दूँगा। 12लोग ख़ालिस सोने
से कहीं ज़्यादा नायाब होंगे, इनसान ओफ़ीर के
क़ीमती सोने की निसबत कहीं ज़्यादा कमयाब
होगा।

13क्योंकि आसमान रब्बुल-अफ़वाज के क़हर
के सामने काँप उठेगा, उसके शदीद ग़ज़ब के
नाज़िल होने पर ज़मीन लरज़कर अपनी जगह
से खिसक जाएगी। 14बाबल के तमाम बाशिंदे
शिकारी के सामने दौड़नेवाले ग़ज़ाल और चरवाहे
से महरूम भेड़-बकरियों की तरह इधर-उधर
भागकर अपने मुल्क और अपनी क़ौम में वापस
आने की कोशिश करेंगे। 15जो भी दुश्मन के क़ाबू
में आएगा उसे छेदा जाएगा, जिसे भी पकड़ा
जाएगा उसे तलवार से मारा जाएगा। 16उनके
देखते देखते दुश्मन उनके बच्चों को ज़मीन पर
पटख़ देगा और उनके घरों को लूटकर उनकी
औरतों की इसमतदरी करेगा।

17मैं मादियों को उन पर चढ़ा लाऊँगा, ऐसे
लोगों को जिन्हें रिश्वत से नहीं आज़माया जा
सकता, जो सोने-चाँदी की परवा ही नहीं करते।
18उनके तीर नौजवानों को मार देंगे। न वह
शीरख़ारों पर तरस खाएँगे, न बच्चों पर रहम
करेंगे।

बाबल जंगली जानवरों का घर बन जाएगा

19अल्लाह बाबल को जो तमाम ममालिक का
ताज और बाबलियों का ख़ास फ़ख़र है रूए-
ज़मीन पर से मिटा डालेगा। उस दिन वह सदूम
और अमूरा की तरह तबाह हो जाएगा। 20आइंदा
उसे कभी दुबारा बसाया नहीं जाएगा, नसल-दर-
नसल वह वीरान ही रहेगा। न बद्दू अपना तंबू वहाँ
लगाएगा, और न गल्लाबान अपने रेवड़ उसमें
ठहराएगा। 21सिर्फ़ रेगिस्तान के जानवर खंडरात
में जा बसेंगे। शहर के घर उनकी आवाज़ों से गूँज
उठेंगे, उक़ाबी उल्लू वहाँ ठहरेंगे, और बकरानुमा

जिन उसमें रक़्स करेंगे। 22जंगली कुत्ते उसके
महलों में रोएँगे, और गीदड़ ऐशो-इशरत के क़सरों
में अपनी दर्द भरी आवाज़ें निकालेंगे। बाबल का
ख़ातमा क़रीब ही है, अब देर नहीं लगेगी।

इसराईली वापस आएँगे

14 क्योंकि रब याक़ूब पर तरस खाएगा,
वह दुबारा इसराईलियों को चुनकर
उन्हें उनके अपने मुल्क में बसा देगा। परदेसी भी
उनके साथ मिल जाएंगे, वह याक़ूब के घराने से
मुंसलिक हो जाएंगे। 2दीगर क़ौमें इसराईलियों
को लेकर उनके वतन में वापस पहुँचा देंगी। तब
इसराईल का घराना इन परदेसियों को विरसे
में पाएगा, और यह रब के मुल्क में उनके
नौकर-नौकरानियाँ बनकर उनकी ख़िदमत करेंगे।
जिन्होंने उन्हें जिलावतन किया था उन्हीं को वह
जिलावतन किए रखेंगे, जिन्होंने उन पर ज़ुल्म
किया था उन्हीं पर वह हुकूमत करेंगे। 3जिस दिन
रब तुझे मुसीबत, बेचैनी और ज़ालिमाना ग़ुलामी
से आराम देगा 4उस दिन तू बाबल के बादशाह
पर तंज़ का गीत गाएगा,

बाबल पर तंज़ का गीत

"यह कैसी बात है? ज़ालिम नेस्तो-नाबूद और
उसके हमले ख़त्म हो गए हैं। 5रब ने बेदीनों की
लाठी तोड़कर हुक्मरानों का वह शाही असा टुकड़े
टुकड़े कर दिया है 6जो तैश में आकर क़ौमों
को मुसलसल मारता रहा और ग़ुस्से से उन पर
हुकूमत करता, बेरहमी से उनके पीछे पड़ा रहा।
7अब पूरी दुनिया को आरामो-सुकून हासिल हुआ
है, अब हर तरफ़ ख़ुशी के नारे सुनाई दे रहे हैं।
8जूनीपर के दरख़्त और लुबनान के देवदार भी
तेरे अंजाम पर ख़ुश होकर कहते हैं, 'शुक्र है! जब
से तू गिरा दिया गया कोई यहाँ चढ़कर हमें काटने
नहीं आता।'

9पाताल तेरे उतरने के बाइस हिल गया है। तेरे
इंतज़ार में वह मुरदा रूहों को हरकत में ला रहा
है। वहाँ दुनिया के तमाम रईस और अक़वाम के
तमाम बादशाह अपने तख़्तों से खड़े होकर तेरा
इस्तक़बाल करेंगे। 10सब मिलकर तुझसे कहेंगे,
'अब तू भी हम जैसा कमज़ोर हो गया है, तू भी
हमारे बराबर हो गया है!' 11तेरी तमाम शानो-
शौकत पाताल में उतर गई है, तेरे सितार ख़ामोश
हो गए हैं। अब कीड़े तेरा गद्दा और केंचुए तेरा
कम्बल होंगे।

12ऐ सिताराए-सुबह, ऐ इब्ने-सहर, तू
आसमान से किस तरह गिर गया है! जिसने दीगर
ममालिक को शिकस्त दी थी वह अब ख़ुद पाश
पाश हो गया है। 13दिल में तूने कहा, 'मैं आसमान
पर चढ़कर अपना तख़्त अल्लाह के सितारों के
ऊपर लगा लूँगा, मैं इंतहाई शिमाल में उस पहाड़
पर जहाँ देवता जमा होते हैं तख़्तनशीन हूँगा। 14मैं
बादलों की बुलंदियों पर चढ़कर क़ादिरे-मुतलक़
के बिलकुल बराबर हो जाऊँगा।' 15लेकिन तुझे
तो पाताल में उतारा जाएगा, उसके सबसे गहरे
गढ़े में गिराया जाएगा।

16जो भी तुझ पर नज़र डालेगा वह ग़ौर से
देखकर पूछेगा, 'क्या यही वह आदमी है जिसने
ज़मीन को हिला दिया, जिसके सामने दीगर
ममालिक काँप उठे? 17क्या इसी ने दुनिया
को वीरान कर दिया और उसके शहरों को ढाकर
क़ैदियों को घर वापस जाने की इजाज़त न दी?'

18दीगर ममालिक के तमाम बादशाह बड़ी
इज़्ज़त के साथ अपने अपने मक़बरों में पड़े हुए
हैं। 19लेकिन तुझे अपनी क़ब्र से दूर किसी बेकार
कोंपल की तरह फेंक दिया जाएगा। तुझे मक़तूलों
से ढाँका जाएगा, उनसे जिनको तलवार से छेदा
गया है, जो पथरीले गढ़ों में उतर गए हैं। तू पाँवों
तले रौंदी हुई लाश जैसा होगा, 20और तदफ़ीन
के वक़्त तू दीगर बादशाहों से जा नहीं मिलेगा।
क्योंकि तूने अपने मुल्क को तबाह और अपनी
क़ौम को हलाक कर दिया है। चुनाँचे अब से अबद
तक इन बेदीनों की औलाद का ज़िक्र तक नहीं
किया जाएगा। 21इस आदमी के बेटों को फाँसी
देने की जगह तैयार करो! क्योंकि उनके बापदादा
का क़ुसूर इतना संगीन है कि उन्हें मरना ही है।

ऐसा न हो कि वह दुबारा उठकर दुनिया पर क़ब्ज़ा कर लें, कि रूए-ज़मीन उनके शहरों से भर जाए।”

रब के हाथों बाबल का अंजाम

22रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं उनके ख़िलाफ़ यों उठूँगा कि बाबल का नामो-निशान तक नहीं रहेगा। मैं उस की औलाद को रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा, और एक भी नहीं बचने
का। 23बाबल ख़ारपुश्त का मसकन और दलदल का इलाक़ा बन जाएगा, क्योंकि मैं ख़ुद उसमें तबाही का झाड़ू फेर दूँगा।” यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

असूरी फ़ौज की तबाही

24रब्बुल-अफ़वाज ने क़सम खाकर फ़रमाया है, “यक़ीनन सब कुछ मेरे मनसूबे के मुताबिक़ ही होगा, मेरा इरादा ज़रूर पूरा हो
जाएगा। 25मैं असूर को अपने मुल्क में चकनाचूर कर दूँगा और उसे अपने पहाड़ों पर कुचल डालूँगा। तब उसका जुआ मेरी क़ौम पर से दूर हो जाएगा, और उसका बोझ उसके कंधों पर से उतर
जाएगा।” 26पूरी दुनिया के बारे में यह मनसूबा अटल है, और रब अपना हाथ तमाम क़ौमों
के ख़िलाफ़ बढ़ा चुका है। 27रब्बुल-अफ़वाज ने फ़ैसला कर लिया है, तो कौन इसे मनसूख़ करेगा? उसने अपना हाथ बढ़ा दिया है, तो कौन उसे रोकेगा?

फ़िलिस्तियों का अंजाम क़रीब है

28ज़ैल का कलाम उस साल नाज़िल हुआ जब आख़ज़ बादशाह ने वफ़ात पाई।

29ऐ तमाम फ़िलिस्ती मुल्क, इस पर ख़ुशी मत मना कि हमें मारनेवाली लाठी टूट गई है। क्योंकि साँप की बची हुई जड़ से ज़हरीला साँप फूट निकलेगा, और उसका फल शोलाफ़िशाँ
उड़नअज़दहा होगा। 30तब ज़रूरतमंदों को चरागाह मिलेगी, और ग़रीब महफ़ूज़ जगह पर आराम करेंगे। लेकिन तेरी जड़ को मैं काल से मार दूँगा, और जो बच जाएँ उन्हें भी हलाक कर दूँगा।

31ऐ शहर के दरवाज़े, वावैला कर! ऐ शहर, ज़ोर से चीख़ें मार! ऐ फ़िलिस्तियो, हिम्मत हारकर लड़खड़ाते जाओ। क्योंकि शिमाल से तुम्हारी तरफ़ धुआँ बढ़ रहा है, और उस की सफ़ों
में पीछे रहनेवाला कोई नहीं है। 32तो फिर हमारे पास भेजे हुए क़ासिदों को हम क्या जवाब दें? यह कि रब ने सिय्यून को क़ायम रखा है, कि उस की क़ौम के मज़लूम उसी में पनाह लेंगे।

मोआब के अंजाम का एलान

15 मोआब के बारे में रब का फ़रमान :
एक ही रात में मोआब का शहर आर तबाह हो गया है। एक ही रात में मोआब का शहर क़ीर बरबाद
हो गया है। 2अब दीबोन के बाशिंदे मातम करने के लिए अपने मंदिर और पहाड़ी क़ुरबानगाहों की तरफ़ चढ़ रहे हैं। मोआब अपने शहरों नबू और मीदबा पर वावैला कर रहा है। हर सर मुंडा हुआ
और हर दाढ़ी कट गई है। 3गलियों में वह टाट से मुलब्बस फिर रहे हैं, छतों पर और चौकों में सब
रो रोकर आहो-बुका कर रहे हैं। 4हसबोन और इलियाली मदद के लिए पुकार रहे हैं, और उनकी आवाज़ें यहज़ तक सुनाई दे रही हैं। इसलिए मोआब के मुसल्लह मर्द जंग के नारे लगा रहे हैं, गो वह अंदर ही अंदर काँप रहे हैं।

5मेरा दिल मोआब को देखकर रो रहा है। उसके मुहाजिरीन भागकर ज़ुग़र और इजलत-शलीशियाह तक पहुँच रहे हैं। लोग रो रोकर लूहीत की तरफ़ चढ़ रहे हैं, वह होरोनायम तक जानेवाले रास्ते पर चलते हुए अपनी तबाही पर
गिर्याओ-ज़ारी कर रहे हैं। 6निमरीम का पानी सूख गया है, घास झुलस गई है, तमाम हरियाली ख़त्म हो गई है, सब्ज़ाज़ारों का नामो-निशान तक
नहीं रहा। 7इसलिए लोग अपना सारा जमाशुदा सामान समेटकर वादीए-सफ़ेदा को उबूर कर रहे
हैं। 8चीख़ें मोआब की हुदूद तक गूँज रही हैं, हाय

हाय की आवाज़ें इजलायम और बैर-एलीम तक
सुनाई दे रही हैं। 9लेकिन गो दीमोन की नहर ख़ून
से सुर्ख़ हो गई है, ताहम मैं उस पर मज़ीद मुसीबत
लाऊँगा। मैं शेरबबर भेजूँगा जो उन पर भी धावा
बोलेंगे जो मोआब से बच निकले होंगे और उन पर
भी जो मुल्क में पीछे रह गए होंगे।

मोआब इसराईलियों से मदद माँगेगा

16 मुल्क का जो हुक्मरान रेगिस्तान के
पार सिला में है उस की तरफ़ से
सिय्यून बेटी के पहाड़ पर मेंढा भेज दो। 2मोआब
की बेटियाँ घोंसले से भगाए हुए परिंदों की तरह
दरियाए-अरनोन के पायाब मक़ामों पर इधर-
उधर फड़फड़ा रही हैं। 3"हमें कोई मशवरा दे,
कोई फ़ैसला पेश कर। हम पर साया डाल ताकि
दोपहर की तपती धूप हम पर न पड़े बल्कि रात
जैसा अंधेरा हो। मफ़रूरों को छुपा दे, दुश्मन को
पनाहगुज़ीनों के बारे में इत्तला न दे। 4मोआबी
मुहाजिरों को अपने पास ठहरने दे, मोआबी
मफ़रूरों के लिए पनाहगाह हो ताकि वह हलाकू
के हाथ से बच जाएँ।"

लेकिन ज़ालिम का अंजाम आनेवाला है।
तबाही का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा, और
कुचलनेवाला मुल्क से ग़ायब हो जाएगा। 5तब
अल्लाह अपने फ़ज़्ल से दाऊद के घराने के लिए
तख़्त क़ायम करेगा। और जो उस पर बैठेगा वह
वफ़ादारी से हुकूमत करेगा। वह इनसाफ़ का
तालिब रहकर अदालत करेगा और रास्ती क़ायम
रखने में माहिर होगा।

मोआब की मुनासिब सज़ा पर अफ़सोस

6हमने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है,
क्योंकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मग़रूर,
घमंडी और शोख़चश्म है। लेकिन उस की डींगें
अबस हैं।

7इसलिए मोआबी अपने आप पर आहो-ज़ारी
कर रहे, सब मिलकर आहें भर रहे हैं। वह
सिसक सिसककर क़ीर-हरासत की किशमिश
की टिक्कियाँ याद कर रहे हैं, उनका निहायत
बुरा हाल हो गया है। 8हसबोन के बाग़ मुरझा
गए, सिबमाह के अंगूर ख़त्म हो गए हैं। पहले तो
उनकी अनोखी बेलें याज़ेर बल्कि रेगिस्तान तक
फैली हुई थीं, उनकी कोंपलें समुंदर को भी पार
करती थीं। लेकिन अब ग़ैरक़ौम हुक्मरानों ने यह
उम्दा बेलें तोड़ डाली हैं। 9इसलिए मैं याज़ेर के
साथ मिलकर सिबमाह के अंगूरों के लिए आहो-
ज़ारी कर रहा हूँ। ऐ हसबोन, ऐ इलियाली, तुम्हारी
हालत देखकर मेरे बेहद आँसू बह रहे हैं। क्योंकि
जब तुम्हारा फल पक गया और तुम्हारी फ़सल
तैयार हुई तब जंग के नारे तुम्हारे इलाक़े में गूँज
उठे। 10अब ख़ुशी-ओ-शादमानी बाग़ों से ग़ायब
हो गई है, अंगूर के बाग़ों में गीत और ख़ुशी के नारे
बंद हो गए हैं। कोई नहीं रहा जो हौज़ों में अंगूर
को रौंदकर रस निकाले, क्योंकि मैंने फ़सल की
ख़ुशियाँ ख़त्म कर दी हैं।

11मेरा दिल सरोद के मातमी सुर निकाल-
कर मोआब के लिए नोहा कर रहा है, मेरी जान
क़ीर-हरासत के लिए आहें भर रही है। 12जब
मोआब अपनी पहाड़ी क़ुरबानगाह के सामने
हाज़िर होकर सिजदा करता है तो बेकार मेहनत
करता है। जब वह पूजा करने के लिए अपने मंदिर
में दाख़िल होता है तो फ़ायदा कोई नहीं होता।

13रब ने माज़ी में इन बातों का एलान किया।
14लेकिन अब वह मज़ीद फ़रमाता है, "तीन साल
के अंदर अंदर[a] मोआब की तमाम शानो-शौकत
और धूमधाम जाती रहेगी। जो थोड़े-बहुत बचेंगे,
वह निहायत ही कम होंगे।"

शाम और इसराईल की तबाही

17 दमिश्क़ शहर के बारे में अल्लाह का
फ़रमान :

"दमिश्क़ मिट जाएगा, मलबे का ढेर ही रह
जाएगा। 2अरोईर के शहर भी वीरानो-सुनसान
हो जाएंगे। तब रेवड़ ही उनकी गलियों में चरेंगे

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : मज़दूर के-से तीन साल के अंदर अंदर।

और आराम करेंगे। कोई नहीं होगा जो उन्हें
भगाए। 3इसराईल के क़िलाबंद शहर नेस्तो-
नाबूद हो जाएंगे, और दमिश्क़ की सलतनत जाती
रहेगी। शाम के जो लोग बच निकलेंगे उनका और
इसराईल की शानो-शौकत का एक ही अंजाम
होगा।” यह है रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान।

4“उस दिन याक़ूब की शानो-शौकत कम और
उसका मोटा-ताज़ा जिस्म लाग़र होता जाएगा।
5फ़सल की कटाई की-सी हालत होगी। जिस
तरह काटनेवाला एक हाथ से गंदुम के डंठल को
पकड़कर दूसरे से बालों को काटता है उसी तरह
इसराईलियों को काटा जाएगा। और जिस तरह
वादीए-रफ़ाईम में ग़रीब लोग फ़सल काटनेवालों
के पीछे पीछे चलकर बची हुई बालियों को चुनते
हैं उसी तरह इसराईल के बचे हुओं को चुना
जाएगा। 6ताहम कुछ न कुछ बचा रहेगा, उन
दो-चार ज़ैतूनों की तरह जो चुनते वक़्त दरख़्त की
चोटी पर रह जाते हैं। दरख़्त को डंडे से झाड़ने के
बावुजूद कहीं न कहीं चंद एक लगे रहेंगे।” यह है
रब, इसराईल के ख़ुदा का फ़रमान।

7तब इनसान अपनी नज़र अपने ख़ालिक़ की
तरफ़ उठाएगा, और उस की आँखें इसराईल के
क़ुद्दूस की तरफ़ देखेंगी। 8आइंदा न वह अपने
हाथों से बनी हुई क़ुरबानगाहों को तकेगा, न
अपनी उँगलियों से बने हुए यसीरत देवी के खंबों
और बख़ूर की क़ुरबानगाहों पर ध्यान देगा।

9उस वक़्त इसराईली अपने क़िलाबंद शहरों
को यों छोड़ेंगे जिस तरह कनानियों ने अपने
जंगलों और पहाड़ों की चोटियों को इसराईलियों
के आगे आगे छोड़ा था। सब कुछ वीरानो-सुनसान
होगा। 10अफ़सोस, तू अपनी नजात के ख़ुदा को
भूल गया है। तुझे वह चट्टान याद न रही जिस पर
तू पनाह ले सकता है। चुनाँचे अपने प्यारे देवताओं
के बाग़ लगाता जा, और उनमें परदेसी अंगूर की
क़लमें लगाता जा। 11शायद ही वह लगाते वक़्त
तेज़ी से उगने लगें, शायद ही उनके फूल उसी
सुबह खिलने लगें। तो भी तेरी मेहनत अबस है।
तू कभी भी उनके फल से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होगा
बल्कि महज़ बीमारी और लाइलाज दर्द की फ़सल
काटेगा।

दीगर क़ौमों के बेकार हमले

12बेशुमार क़ौमों का शोर-शराबा सुनो जो
तूफ़ानी समुंदर की-सी ठाठें मार रही हैं। उम्मतों
का ग़ुल-ग़पाड़ा सुनो जो थपेड़े मारनेवाली मौजों
की तरह गरज रही हैं। 13क्योंकि ग़ैरक़ौमें
पहाड़नुमा लहरों की तरह मुतलातिम हैं। लेकिन
रब उन्हें डाँटेगा तो वह दूर दूर भाग जाएँगी।
जिस तरह पहाड़ों पर भूसा हवा के झोंकों से
उड़ जाता और लुढ़कबूटी आँधी में चक्कर खाने
लगती है उसी तरह वह फ़रार हो जाएँगी। 14शाम
को इसराईल सख़्त घबरा जाएगा, लेकिन पौ
फटने से पहले पहले उसके दुश्मन मर गए होंगे।
यही हमें लूटनेवालों का नसीब, हमारी ग़ारतगरी
करनेवालों का अंजाम होगा।

एथोपिया की अदालत

18 फड़फड़ाते बादबानों[a] के मुल्क पर
अफ़सोस! एथोपिया पर अफ़सोस
जहाँ कूश के दरिया बहते हैं, 2और जो अपने
क़ासिदों को आबी नरसल की कश्तियों में
बिठाकर समुंदरी सफ़रों पर भेजता है। ऐ
तेज़रौ क़ासिदो, लंबे क़द और चिकनी-चुपड़ी
जिल्दवाली क़ौम के पास जाओ। उस क़ौम के
पास पहुँचो जिससे दीगर क़ौमें दूर-दराज़ इलाक़ों
तक डरती हैं, जो ज़बरदस्ती सब कुछ पाँवों तले
कुचल देती है, और जिसका मुल्क दरियाओं से
बटा हुआ है।

3ऐ दुनिया के तमाम बाशिंदो, ज़मीन के तमाम
बसनेवालो! जब पहाड़ों पर झंडा गाढ़ा जाए तो
उस पर ध्यान दो! जब नरसिंगा बजाया जाए तो
उस पर ग़ौर करो! 4क्योंकि रब मुझसे हमकलाम
हुआ है, “मैं अपनी सुकूनतगाह से ख़ामोशी से

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : फड़फड़ाती टिड्डियों।

देखता रहूँगा। लेकिन मेरी यह ख़ामोशी दोपहर
की चिलचिलाती धूप या मौसमे-गरमा में धुंध
के बादल की मानिंद होगी।” 5क्योंकि अंगूर की
फ़सल के पकने से पहले ही रब अपना हाथ बढ़ा
देगा। फूलों के ख़त्म होने पर जब अंगूर पक रहे
होंगे वह कोंपलों को छुरी से काटेगा, फैलती हुई
शाख़ों को तोड़ तोड़कर उनकी काँट-छाँट करेगा।
6यही एथोपिया की हालत होगी। उस की लाशों
को पहाड़ों के शिकारी परिंदों और जंगली जानवरों
के हवाले किया जाएगा। मौसमे-गरमा के दौरान
शिकारी परिंदे उन्हें खाते जाएंगे, और सर्दियों में
जंगली जानवर लाशों से सेर हो जाएंगे।

7उस वक़्त लंबे क़द और चिकनी-चुपड़ी
जिल्दवाली यह क़ौम रब्बुल-अफ़वाज के हुज़ूर
तोह्फ़ा लाएगी। हाँ, जिन लोगों से दीगर क़ौमें दूर-
दराज़ इलाक़ों तक डरती हैं और जो ज़बरदस्ती
सब कुछ पाँवों तले कुचल देते हैं वह दरियाओं
से बटे हुए अपने मुल्क से आकर अपना तोह्फ़ा
सिय्यून पहाड़ पर पेश करेंगे, वहाँ जहाँ रब्बुल-
अफ़वाज का नाम सुकूनत करता है।

मिसर की अदालत

19 मिसर के बारे में अल्लाह का
फ़रमान :

रब तेज़रौ बादल पर सवार होकर मिसर आ
रहा है। उसके सामने मिसर के बुत थरथरा रहे हैं
और मिसर की हिम्मत टूट गई है। 2“मैं मिसरियों
को एक दूसरे के साथ लड़ने पर उकसा दूँगा। भाई
भाई के साथ, पड़ोसी पड़ोसी के साथ, शहर शहर
के साथ, और बादशाही बादशाही के साथ जंग
करेगी। 3मिसर की रूह मुज़तरिब हो जाएगी, और
मैं उनके मनसूबों को दरहम-बरहम कर दूँगा। गो
वह बुतों, मुरदों की रूहों, उनसे राबिता करनेवालों
और क़िस्मत का हाल बतानेवालों से मशवरा
करेंगे, 4लेकिन मैं उन्हें एक ज़ालिम मालिक के
हवाले कर दूँगा, और एक सख़्त बादशाह उन पर
हुकूमत करेगा।” यह है क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-
अफ़वाज का फ़रमान।

5दरियाए-नील का पानी ख़त्म हो जाएगा, वह
बिलकुल सूख जाएगा। 6मिसर की नहरों से
बदबू फैलेगी बल्कि मिसर के नाले घटते घटते
ख़ुश्क हो जाएंगे। नरसल और सरकंडे मुरझा
जाएंगे। 7दरियाए-नील के दहाने तक जितनी भी
हरियाली और फ़सलें किनारे पर उगती हैं वह सब
पज़मुरदा हो जाएँगी और हवा में बिखरकर ग़ायब
हो जाएँगी। 8मछेरे आहो-ज़ारी करेंगे, दरिया में
काँटा और जाल डालनेवाले घटते जाएंगे। 9सन
के रेशों से धागा बनानेवालों को शर्म आएगी,
और जूलाहों का रंग फ़क़ पड़ जाएगा। 10कपड़ा
बनानेवाले सख़्त मायूस होंगे, तमाम मज़दूर दिल-
बरदाश्ता होंगे।

11ज़ुअन के अफ़सर नासमझ ही हैं, फ़िरौन के
दाना मुशीर उसे अहमक़ाना मशवरे दे रहे हैं। तुम
मिसरी बादशाह के सामने किस तरह दावा कर
सकते हो, “मैं दानिशमंदों के हलक़े में शामिल
और क़दीम बादशाहों का वारिस हूँ”? 12ऐ
फ़िरौन, अब तेरे दानिशमंद कहाँ हैं? वह मालूम
करके तुझे बताएँ कि रब्बुल-अफ़वाज मिसर
के साथ क्या कुछ करने का इरादा रखता है।
13ज़ुअन के अफ़सर अहमक़ बन बैठे हैं, मेंफ़िस
के बुज़ुर्गों ने धोका खाया है। उसके क़बायली
सरदारों के फ़रेब से मिसर डगमगाने लगा है।
14क्योंकि रब ने उनमें अबतरी की रूह डाल
दी है। जिस तरह नशे में धुत शराबी अपनी क़ै
में लड़खड़ाता रहता है उसी तरह मिसर उनके
मशवरों से डाँवाँडोल हो गया है, ख़ाह वह क्या
कुछ क्यों न करे। 15उस की कोई बात नहीं बनती,
ख़ाह सर हो या दुम, कोंपल हो या तना।

16मिसरी उस दिन औरतों जैसे कमज़ोर होंगे।
जब रब्बुल-अफ़वाज उन्हें मारने के लिए अपना
हाथ उठाएगा तो वह घबराकर काँप उठेंगे।
17मुल्के-यहूदाह मिसरियों के लिए शर्म का बाइस
बनेगा। जब भी उसका ज़िक्र होगा तो वह दहशत
खाएँगे, क्योंकि उन्हें वह मनसूबा याद आएगा जो
रब ने उनके ख़िलाफ़ बाँधा है।

मिसर, असूर और इसराईल मिल कर इबादत करेंगे

18उस दिन मिसर के पाँच शहर कनान की ज़बान अपनाकर रब्बुल-अफ़वाज के नाम पर क़सम खाएँगे। उनमें से एक 'तबाही का शहर' कहलाएगा।[a]

19उस दिन मुल्के-मिसर के बीच में रब के लिए क़ुरबानगाह मख़सूस की जाएगी, और उस की सरहद पर रब की याद में सतून खड़ा किया
जाएगा। 20यह दोनों रब्बुल-अफ़वाज की हुज़ूरी की निशानदेही करेंगे और गवाही देंगे कि वह मौजूद है। चुनाँचे जब उन पर ज़ुल्म किया जाएगा तो वह चिल्लाकर उससे फ़रियाद करेंगे, और रब उनके पास नजातदहिंदा भेज देगा जो उनकी
ख़ातिर लड़कर उन्हें बचाएगा। 21यों रब अपने आपको मिसरियों पर ज़ाहिर करेगा। उस दिन वह रब को जान लेंगे, और ज़बह और ग़ल्ला की क़ुरबानियाँ चढ़ाकर उस की परस्तिश करेंगे। वह रब के लिए मन्नतें मानकर उनको पूरा करेंगे।
22रब मिसर को मारेगा भी और उसे शफ़ा भी देगा। मिसरी रब की तरफ़ रुजू करेंगे तो वह उनकी इल्तिजाओं के जवाब में उन्हें शफ़ा देगा।

23उस दिन एक पक्की सड़क मिसर को असूर के साथ मुंसलिक कर देगी। असूरी और मिसरी आज़ादी से एक दूसरे के मुल्क में आएँगे, और दोनों मिलकर अल्लाह की इबादत करेंगे। 24उस
दिन इसराईल भी मिसर और असूर के इत्तहाद में शरीक होकर तमाम दुनिया के लिए बरकत का बाइस होगा। 25क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज उन्हें बरकत देकर फ़रमाएगा, "मेरी क़ौम मिसर पर बरकत हो, मेरे हाथों से बने मुल्क असूर पर मेरी बरकत हो, मेरी मीरास इसराईल पर बरकत हो।"

यसायाह की बरहनगी और मिसर और एथोपिया का अंजाम

20 एक दिन असूरी बादशाह सरजून ने अपने कमाँडर को अशदूद से लड़ने भेजा। जब असूरियों ने उस फ़िलिस्ती शहर पर हमला किया तो वह उनके क़ब्ज़े में आ गया।

2तीन साल पहले रब यसायाह बिन आमूस से हमकलाम हुआ था, "जा, टाट का जो लिबास तू पहने रहा है उतार। अपने जूतों को भी उतार।" नबी ने ऐसा ही किया और इसी हालत में फिरता
रहा था। 3जब अशदूद असूरियों के क़ब्ज़े में आ गया तो रब ने फ़रमाया, "मेरे ख़ादिम यसायाह को बरहना और नंगे पाँव फिरते तीन साल हो गए हैं। इससे उसने अलामती तौर पर इसकी निशानदेही की है कि मिसर और एथोपिया का
क्या अंजाम होगा। 4शाहे-असूर मिसरी क़ैदियों और एथोपिया के जिलावतनों को इसी हालत में अपने आगे आगे हाँकेगा। नौजवान और बुज़ुर्ग सब बरहना और नंगे पाँव फिरेंगे, वह कमर से लेकर पाँव तक बरहना होंगे। मिसर कितना शरमिंदा होगा।

5यह देखकर फ़िलिस्ती दहशत खाएँगे। उन्हें शर्म आएगी, क्योंकि वह एथोपिया से उम्मीद रखते और अपने मिसरी इत्तहादी पर फ़ख़र करते
थे। 6उस वक़्त इस साहिली इलाक़े के बाशिंदे कहेंगे, 'देखो उन लोगों की हालत जिनसे हम उम्मीद रखते थे। उन्हीं के पास हम भागकर आए ताकि मदद और असूरी बादशाह से छुटकारा मिल जाए। अगर उनके साथ ऐसा हुआ तो हम किस तरह बचेंगे'?"

[a]ग़ालिबन इससे मुराद सूरज का शहर यानी Heliopolis है।

बाबल की तबाही का एलान

21 दलदल के इलाक़े[a] के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

जिस तरह दश्ते-नजब में तूफ़ान के तेज़ झोंके बार बार आ पड़ते हैं उसी तरह आफ़त बयाबान से आएगी, दुश्मन दहशतनाक मुल्क से आकर तुझ पर टूट पड़ेगा। 2रब ने हौलनाक रोया में मुझ पर ज़ाहिर किया है कि नमकहराम और हलाकू हरकत में आ गए हैं। ऐ ऐलाम चल, बाबल पर हमला कर! ऐ मादी उठ, शहर का मुहासरा कर! मैं होने दूँगा कि बाबल के मज़लूमों की आहें बंद हो जाएँगी।

3इसलिए मेरी कमर शिद्दत से लरज़ने लगी है। दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की-सी घबराहट मेरी अंतड़ियों को मरोड़ रही है। जो कुछ मैंने सुना है उससे मैं तड़प उठा हूँ, और जो कुछ मैंने देखा है, उससे मैं हवासबाख़्ता हो गया हूँ। 4मेरा दिल धड़क रहा है, कपकपी मुझ पर तारी हो गई है। पहले शाम का धुँधलका मुझे प्यारा लगता था, लेकिन अब रोया को देखकर वह मेरे लिए दहशत का बाइस बन गया है।

5ताहम बाबल में लोग मेज़ लगाकर क़ालीन बिछा रहे हैं। बेपरवाई से वह खाना खा रहे और मै पी रहे हैं। ऐ अफ़सरो, उठो! अपनी ढालों पर तेल लगाकर लड़ने के लिए तैयार हो जाओ!

6रब ने मुझे हुक्म दिया, "जाकर पहरेदार खड़ा कर दे जो तुझे हर नज़र आनेवाली चीज़ की इत्तला दे। 7ज्योंही दो घोड़ोंवाले रथ या गधों और ऊँटों पर सवार आदमी दिखाई दें तो ख़बरदार! पहरेदार पूरी तवज्जुह दे।"

8तब पहरेदार शेरबबर की तरह पुकार उठा, "मेरे आक़ा, रोज़ बरोज़ मैं पूरी वफ़ादारी से अपनी बुर्जी पर खड़ा रहा हूँ, और रातों मैं तैयार रहकर यहाँ पहरादारी करता आया हूँ। 9अब वह देखो! दो घोड़ोंवाला रथ आ रहा है जिस पर आदमी सवार है। अब वह जवाब में कह रहा है, 'बाबल गिर गया, वह गिर गया है! उसके तमाम बुत चकनाचूर होकर ज़मीन पर बिखर गए हैं'।"

10ऐ गाहने की जगह पर कुचली हुई[b] मेरी क़ौम! जो कुछ इसराईल के ख़ुदा, रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे फ़रमाया है उसे मैंने तुम्हें सुना दिया है।

अदोम की हालत : सुबह होने में कितनी देर है?

11अदोम[c] के बारे में रब का फ़रमान :

सईर के पहाड़ी इलाक़े से कोई मुझे आवाज़ देता है, "ऐ पहरेदार, सुबह होने में कितनी देर बाक़ी है? ऐ पहरेदार, सुबह होने में कितनी देर बाक़ी है?" 12पहरेदार जवाब देता है, "सुबह होनेवाली है, लेकिन रात भी। अगर आप मज़ीद पूछना चाहें तो दुबारा आकर पूछ लें।"

मुल्के-अरब का अंजाम

13मुल्के-अरब[d] के बारे में रब का फ़रमान : ऐ ददानियों के क़ाफ़िलो, मुल्के-अरब के जंगल में रात गुज़ारो। 14ऐ मुल्के-तैमा के बाशिंदो, पानी लेकर प्यासों से मिलने जाओ! पनाहगुज़ीनों के पास जाकर उन्हें रोटी खिलाओ! 15क्योंकि वह तलवार से लैस दुश्मन से भाग रहे हैं, ऐसे लोगों से जो तलवार थामे और कमान ताने उनसे सख़्त लड़ाई लड़े हैं।

16क्योंकि रब ने मुझसे फ़रमाया, "एक साल के अंदर अंदर[e] क़ीदार की तमाम शानो-शौकत ख़त्म हो जाएगी। 17क़ीदार के ज़बरदस्त तीरअंदाज़ों में से थोड़े ही बच पाएँगे।" यह रब, इसराईल के ख़ुदा का फ़रमान है।

यरूशलम का अंजाम

22 रोया की वादी यरूशलम के बारे में रब का फ़रमान :

---

[a]यानी बाबल।
[b]लफ़्ज़ी तरजुमा : गाही गई।
[c]इब्रानी में दूमा जिस का मतलब अदोम या ख़ामोशी है।
[d]या बयाबान।
[e]लफ़्ज़ी तरजुमा : मज़दूर के-से एक साल के अंदर अंदर।

क्या हुआ है? सब छतों पर क्यों चढ़ गए हैं?
2हर तरफ़ शोर-शराबा मच रहा है, पूरा शहर बग़लें
बजा रहा है। यह कैसी बात है? तेरे मक़तूल न
तलवार से, न मैदाने-जंग में मरे। 3क्योंकि तेरे
तमाम लीडर मिलकर फ़रार हुए और फिर तीर
चलाए बग़ैर पकड़े गए। बाक़ी जितने लोग तुझमें
थे वह भी दूर दूर भागना चाहते थे, लेकिन उन्हें
भी क़ैद किया गया।

4इसलिए मैंने कहा, "अपना मुँह मुझसे फेरकर
मुझे ज़ार ज़ार रोने दो। मुझे तसल्ली देने पर
बज़िद न रहो जबकि मेरी क़ौम तबाह हो रही
है।" 5क्योंकि क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज
रोया की वादी पर हौलनाक दिन लाया है। हर
तरफ़ घबराहट, कुचले हुए लोग और अबतरी
नज़र आती है। शहर की चारदीवारी टूटने लगी
है, पहाड़ों में चीख़ें गूँज रही हैं।

6ऐलाम के फ़ौजी अपने तरकश उठाकर रथों,
आदमियों और घोड़ों के साथ आ गए हैं। क़ीर के
मर्द भी अपनी ढालें ग़िलाफ़ से निकालकर तुझसे
लड़ने के लिए निकल आए हैं। 7यरूशलम के
गिर्दो-नवाह की बेहतरीन वादियाँ दुश्मन के रथों से
भर गई हैं, और उसके घुड़सवार शहर के दरवाज़े
पर हमला करने के लिए उसके सामने खड़े हो गए
हैं। 8जो भी बंदोबस्त यहूदाह ने अपने तहफ़्फ़ुज़
के लिए कर लिया था वह ख़त्म हो गया है।

उस दिन तुम लोगों ने क्या किया? तुम
'जंगलघर' नामी सिलाहख़ाने में जाकर असला
का मुआयना करने लगे। 9-11तुमने उन मुतअद्दिद
दराड़ों का जायज़ा लिया जो दाऊद के शहर की
फ़सील में पड़ गई थीं। उसे मज़बूत करने के लिए
तुमने यरूशलम के मकानों को गिनकर उनमें से
कुछ गिरा दिए। साथ साथ तुमने निचले तालाब
का पानी जमा किया। ऊपर के पुराने तालाब से
निकलनेवाला पानी जमा करने के लिए तुमने
अंदरूनी और बैरूनी फ़सील के दरमियान एक
और तालाब बना लिया। लेकिन अफ़सोस, तुम
उस की परवा नहीं करते जो यह सारा सिलसिला
अमल में लाया। उस पर तुम तवज्जुह ही नहीं देते
जिसने बड़ी देर पहले इसे तश्कील दिया था।

12उस वक़्त क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़-
वाज ने हुक्म दिया कि गिर्याओ-ज़ारी करो, अपने
बालों को मुँडवाकर टाट का लिबास पहन लो।
13लेकिन क्या हुआ? तमाम लोग शादियाना
बजाकर ख़ुशी मना रहे हैं। हर तरफ़ बैलों और
भेड़-बकरियों को ज़बह किया जा रहा है। सब
गोश्त और मै से लुत्फ़अंदोज़ होकर कह रहे हैं,
"आओ, हम खाएँ-पिएँ, क्योंकि कल तो मर ही
जाना है।"

14लेकिन रब्बुल-अफ़वाज ने मेरी मौजूद-
गी में ही ज़ाहिर किया है कि यक़ीनन यह क़ुसूर
तुम्हारे मरते दम तक मुआफ़ नहीं किया जाएगा।[a]
यह क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान
है।

रब शिबनाह की जगह इलियाक़ीम को महल का निगरान मुक़र्रर करेगा

15क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज फ़र-
माता है, "उस निगरान शिबनाह के पास चल जो
महल का इंचार्ज है। उसे पैग़ाम पहुँचा दे, 16'तू
यहाँ क्या कर रहा है? किसने तुझे यहाँ अपने
लिए मक़बरा तराशने की इजाज़त दी? तू कौन है
कि बुलंदी पर अपने लिए मज़ार बनवाए, चट्टान
में आरामगाह खुदवाए? 17ऐ मर्द, ख़बरदार!
रब तुझे ज़ोर से दूर दूर तक फेंकनेवाला है। वह
तुझे पकड़ लेगा 18और मरोड़ मरोड़कर गेंद की
तरह एक वसी मुल्क में फेंक देगा। वहीं तू मरेगा,
वहीं तेरे शानदार रथ पड़े रहेंगे। क्योंकि तू अपने
मालिक के घराने के लिए शर्म का बाइस बना
है। 19मैं तुझे बरतरफ़ करूँगा, और तू ज़बरदस्ती
अपने ओहदे और मंसब से फ़ारिग़ कर दिया
जाएगा।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : यक़ीनन इस क़ुसूर का कफ़्फ़ारा तुम्हारे मरते दम तक नहीं दिया जाएगा।

20उस दिन मैं अपने ख़ादिम इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह को बुलाऊँगा। 21मैं उसे तेरा ही सरकारी लिबास और कमरबंद पहनाकर तेरा इख़्तियार उसे दे दूँगा। उस वक़्त वह यहूदाह के घराने और यरूशलम के तमाम बाशिंदों का बाप बनेगा। 22मैं उसके कंधे पर दाऊद के घराने की चाबी रख दूँगा। जो दरवाज़ा वह खोलेगा उसे कोई बंद नहीं कर सकेगा, और जो दरवाज़ा वह बंद करेगा उसे कोई खोल नहीं सकेगा। 23वह खूँटी की मानिंद होगा जिसको मैं ज़ोर से ठोंककर मज़बूत दीवार में लगा दूँगा। उससे उसके बाप के घराने को शराफ़त का ऊँचा मक़ाम हासिल होगा।

24लेकिन फिर आबाई घराने का पूरा बोझ उसके साथ लटक जाएगा। तमाम औलाद और रिश्तेदार, तमाम छोटे बरतन प्यालों से लेकर मरतबानों तक उसके साथ लटक जाएंगे। 25रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि उस वक़्त मज़बूत दीवार में लगी यह खूँटी निकल जाएगी। उसे तोड़ा जाएगा तो वह गिर जाएगी, और उसके साथ लटका सारा सामान टूट जाएगा'।" यह रब का फ़रमान है।

सूर और सैदा की तबाही

23 सूर के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

ऐ तरसीस के उम्दा जहाज़ो,[a] वावैला करो! क्योंकि सूर तबाह हो गया है, वहाँ टिकने की जगह तक नहीं रही। जज़ीराए-क़ुबरुस से वापस आते वक़्त उन्हें इत्तला दी गई। 2ऐ साहिली इलाक़े में बसनेवालो, आहो-ज़ारी करो! ऐ सैदा के ताजिरो, मातम करो! तेरे क़ासिद समुंदर को पार करते थे, 3वह गहरे पानी पर सफ़र करते हुए मिसर[b] का ग़ल्ला तुझ तक पहुँचाते थे, क्योंकि तू ही दरियाए-नील की फ़सल से नफ़ा कमाता था। यों तू तमाम क़ौमों का तिजारती मरकज़ बना।

4लेकिन अब शर्मसार हो, ऐ सैदा, क्योंकि समुंदर का क़िलाबंद शहर सूर कहता है, "हाय, सब कुछ तबाह हो गया है। अब ऐसा लगता है कि मैंने न कभी दर्दे-ज़ह में मुब्तला होकर बच्चे जन्म दिए, न कभी बेटे-बेटियाँ पाले।"

5जब यह ख़बर मिसर तक पहुँचेगी तो वहाँ के बाशिंदे तड़प उठेंगे।

6चुनाँचे समुंदर को पार करके तरसीस तक पहुँचो! ऐ साहिली इलाक़े के बाशिंदो, गिर्याओ-ज़ारी करो! 7क्या यह वाक़ई तुम्हारा वह शहर है जिसकी रंगरलियाँ मशहूर थीं, वह क़दीम शहर जिसके पाँव उसे दूर-दराज़ इलाक़ों तक ले गए ताकि वहाँ नई आबादियाँ क़ायम करे? 8किसने सूर के ख़िलाफ़ यह मनसूबा बाँधा? यह शहर तो पहले बादशाहों को तख़्त पर बिठाया करता था, और उसके सौदागर रईस थे, उसके ताजिर दुनिया के शुरफ़ा में गिने जाते थे। 9रब्बुल-अफ़वाज ने यह मनसूबा बाँधा ताकि तमाम शानो-शौकत का घमंड पस्त और दुनिया के तमाम ओहदेदार ज़ेर हो जाएँ।

10ऐ तरसीस बेटी, अब से अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी कर, उन किसानों की तरह काश्तकारी कर जो दरियाए-नील के किनारे अपनी फ़सलें लगाते हैं, क्योंकि तेरी बंदरगाह जाती रही है। 11रब ने अपने हाथ को समुंदर के ऊपर उठाकर ममालिक को हिला दिया। उसने हुक्म दिया है कि कनान[c] के क़िले बरबाद हो जाएँ। 12उसने फ़रमाया, "ऐ सैदा बेटी, अब से तेरी रंगरलियाँ बंद रहेंगी। ऐ कुँवारी जिसकी इसमतदरी हुई है, उठ और समुंदर को पार करके क़ुबरुस में पनाह ले। लेकिन वहाँ भी तू आराम नहीं कर पाएगी।"

[a]'तरसीस का जहाज़' न सिर्फ़ मुल्के-तरसीस के जहाज़ के लिए बल्कि हर उम्दा क़िस्म के तिजारती जहाज़ के लिए इस्तेमाल होता था। देखिए आयत 14।

[b]इबरानी में 'सैहूर' मुस्तामल है जो दरियाए-नील की एक शाख़ है।

[c]कनान से मुराद लुबनान यानी क़दीम ज़माने का Phoenicia है।

13मुल्के-बाबल पर नज़र डालो। यह क़ौम
तो नेस्तो-नाबूद हो गई, उसका मुल्क जंगली
जानवरों का घर बन गया है। असूरियों ने बुर्ज
बनाकर उसे घेर लिया और उसके क़िलों को ढा
दिया। मलबे का ढेर ही रह गया है।

14ऐ तरसीस के उम्दा जहाज़ो, हाय हाय करो,
क्योंकि तुम्हारा क़िला तबाह हो गया है!

15तब सूर इनसान की याद से उतर जाएगा।
लेकिन 70 साल यानी एक बादशाह की मुद्दतुल-
उम्र के बाद सूर उस तरह बहाल हो जाएगा जिस
तरह गीत में कसबी के बारे में गाया जाता है,

16“ऐ फ़रामोश कसबी, चल! अपना सरोद
पकड़कर गलियों में फिर! सरोद को ख़ूब बजा,
कई एक गीत गा ताकि लोग तुझे याद करें।”

17क्योंकि 70 साल के बाद रब सूर को बहाल
करेगा। कसबी दुबारा पैसे कमाएगी, दुनिया के
तमाम ममालिक उसके गाहक बनेंगे। 18लेकिन
जो पैसे वह कमाएगी वह रब के लिए मख़सूस
होंगे। वह ज़ख़ीरा करने के लिए जमा नहीं होंगे
बल्कि रब के हुज़ूर ठहरनेवालों को दिए जाएंगे
ताकि जी भरकर खा सकें और शानदार कपड़े
पहन सकें।

रब तमाम दुनिया की अदालत करता है

24 देखो, रब दुनिया को वीरानो-सुनसान
कर देगा, रूए-ज़मीन को उलट-पलट
करके उसके बाशिंदों को मुंतशिर कर देगा।
2किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा, ख़ाह इमाम
हो या आम शख़्स, मालिक या नौकर, मालिकन
या नौकरानी, बेचनेवाला या ख़रीदार, उधार लेने
या देनेवाला, क़र्ज़दार या क़र्ज़ख़ाह। 3ज़मीन
मुकम्मल तौर पर उजड़ जाएगी, उसे सरासर
लूटा जाएगा। रब ही ने यह सब कुछ फ़रमाया
है। 4ज़मीन सूख सूखकर सुकड़ जाएगी, दुनिया
ख़ुश्क होकर मुरझा जाएगी। उसके बड़े बड़े लोग
भी निढाल हो जाएंगे। 5ज़मीन के अपने बाशिंदों
ने उस की बेहुरमती की है, क्योंकि वह शरीअत
के ताबे न रहे बल्कि उसके अहकाम को तबदील
करके अल्लाह के साथ का अबदी अहद तोड़ दिया
है।

6इसी लिए ज़मीन लानत का लुक़मा बन गई
है, उस पर बसनेवाले अपनी सज़ा भुगत रहे हैं।
इसी लिए दुनिया के बाशिंदे भस्म हो रहे हैं और
कम ही बाक़ी रह गए हैं। 7अंगूर का ताज़ा रस
सूखकर ख़त्म हो रहा, अंगूर की बेलें मुरझा रही
हैं। जो पहले ख़ुशबाश थे वह आहें भरने लगे
हैं। 8दफ़ों की ख़ुशकुन आवाज़ें बंद, रंगरलियाँ
मनानेवालों का शोर बंद, सरोदों के सुरीले नग़मे
बंद हो गए हैं। 9अब लोग गीत गा गाकर मै
नहीं पीते बल्कि शराब उन्हें कड़वी ही लगती
है। 10वीरानो-सुनसान शहर तबाह हो गया है,
हर घर के दरवाज़े पर कुंडी लगी है ताकि अंदर
घुसनेवालों से महफ़ूज़ रहे। 11गलियों में लोग
गिर्याओ-ज़ारी कर रहे हैं कि मै ख़त्म है। हर ख़ुशी
दूर हो गई है, हर शादमानी ज़मीन से ग़ायब है।
12शहर में मलबे के ढेर ही रह गए हैं, उसके
दरवाज़े टुकड़े टुकड़े हो गए हैं।

13क्योंकि मुल्क के दरमियान और अक़-
वाम के बीच में यही सूरते-हाल होगी कि चंद
एक ही बच पाएँगे, बिलकुल उन दो-चार ज़ैतूनों
की मानिंद जो दरख़्त को झाड़ने के बावुजूद उस
पर रह जाते हैं, या उन दो-चार अंगूरों की तरह
जो फ़सल चुनने के बावुजूद बेलों पर लगे रहते
हैं। 14लेकिन यह चंद एक ही पुकारकर ख़ुशी
के नारे लगाएँगे। मग़रिब से वह रब की अज़मत
की सताइश करेंगे। 15चुनाँचे मशरिक़ में रब को
जलाल दो, जज़ीरों में इसराईल के ख़ुदा के नाम
की ताज़ीम करो। 16हमें दुनिया की इंतहा से गीत
सुनाई दे रहे हैं, “रास्त ख़ुदा की तारीफ़ हो!”

लेकिन मैं बोल उठा, “हाय, मैं घुल घुलकर
मर रहा हूँ, मैं घुल घुलकर मर रहा हूँ! मुझ पर
अफ़सोस, क्योंकि बेवफ़ा अपनी बेवफ़ाई दिखा
रहे हैं, बेवफ़ा खुले तौर पर अपनी बेवफ़ाई दिखा
रहे हैं!” 17ऐ दुनिया के बाशिंदो, तुम दहशतनाक
मुसीबत, गढ़ों और फंदों में फँस जाओगे। 18तब
जो हौलनाक आवाज़ों से भागकर बच जाए वह

गढ़े में गिर जाएगा, और जो गढ़े से निकल जाए
वह फंदे में फँस जाएगा। क्योंकि आसमान के
दरीचे खुल रहे और ज़मीन की बुनियादें हिल रही
हैं। 19ज़मीन कड़क से फ़ट रही है। वह डगमगा
रही, झूम रही, 20नशे में आए शराबी की तरह
लड़खड़ा रही और कच्ची झोंपड़ी की तरह झूल
रही है। आख़िरकार वह अपनी बेवफ़ाई के बोझ
तले इतने धड़ाम से गिरेगी कि आइंदा कभी नहीं
उठने की।

21उस दिन रब आसमान के लशकर और
ज़मीन के बादशाहों से जवाब तलब करेगा।
22तब वह गिरिफ़्तार होकर गढ़े में जमा होंगे,
उन्हें क़ैदख़ाने में डालकर मुतअद्दिद दिनों के
बाद सज़ा मिलेगी। 23उस वक़्त चाँद नादिम
होगा और सूरज शर्म खाएगा, क्योंकि रब्बुल-
अफ़वाज कोहे-सिय्यून पर तख़्तनशीन होगा। वहाँ
यरूशलम में वह बड़ी शानो-शौकत के साथ अपने
बुज़ुर्गों के सामने हुकूमत करेगा।

नजात के लिए अल्लाह की तारीफ़

25 ऐ रब, तू मेरा ख़ुदा है, मैं तेरी ताज़ीम
और तेरे नाम की तारीफ़ करूँगा।
क्योंकि तूने बड़ी वफ़ादारी से अनोखा काम करके
क़दीम ज़माने में बँधे हुए मनसूबों को पूरा किया
है।

2तूने शहर को मलबे का ढेर बनाकर हमलों
से महफ़ूज़ आबादी को खंडरात में तबदील कर
दिया। ग़ैरमुल्कियों का क़िलाबंद महल यों ख़ाक
में मिलाया गया कि आइंदा कभी शहर नहीं
कहलाएगा, कभी अज़ सरे-नौ तामीर नहीं होगा।

3यह देखकर एक ज़ोरावर क़ौम तेरी ताज़ीम
करेगी, ज़बरदस्त अक़वाम के शहर तेरा ख़ौफ़
मानेंगे। 4क्योंकि तू पस्तहालों के लिए क़िला और
मुसीबतज़दा ग़रीबों के लिए पनाहगाह साबित
हुआ है। तेरी आड़ में इनसान तूफ़ान और गरमी
की शिद्दत से महफ़ूज़ रहता है। गो ज़बरदस्तों
की फूँकें बारिश की बौछाड़ 5या रेगिस्तान में
तपिश जैसी क्यों न हों, ताहम तू ग़ैरमुल्कियों
की गरज को रोक देता है। जिस तरह बादल के
साये से झुलसती गरमी जाती रहती है, उसी तरह
ज़बरदस्तों की शेख़ी को तू बंद कर देता है।

यरूशलम में बैनुल- अक़वामी ज़ियाफ़त

6यहीं कोहे-सिय्यून पर रब्बुल-अफ़वाज
तमाम अक़वाम की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त करेगा।
बेहतरीन क़िस्म की क़दीम और साफ़-शफ़्फ़ाफ़
मै पी जाएगी, उम्दा और लज़ीज़तरीन खाना
खाया जाएगा।

7इसी पहाड़ पर वह तमाम उम्मतों पर का
निक़ाब उतारेगा और तमाम अक़वाम पर का परदा
हटा देगा। 8मौत इलाही फ़तह का लुक़्मा होकर
अबद तक नेस्तो-नाबूद रहेगी। तब रब क़ादिरे-
मुतलक़ हर चेहरे के आँसू पोंछकर तमाम दुनिया
में से अपनी क़ौम की रुसवाई दूर करेगा। रब ही ने
यह सब कुछ फ़रमाया है। 9उस दिन लोग कहेंगे,
“यही हमारा ख़ुदा है जिसकी नजात के इंतज़ार में
हम रहे। यही है रब जिससे हम उम्मीद रखते रहे।
आओ, हम शादियाना बजाकर उस की नजात की
ख़ुशी मनाएँ।”

रब मोआब के क़िलों को ढा देगा

10रब का हाथ इस पहाड़ पर ठहरा रहेगा।
लेकिन मोआब को वह यों रौंदेगा जिस तरह भूसा
गोबर में मिलाने के लिए रौंदा जाता है। 11और
गो मोआब हाथ फैलाकर उसमें तैरने की कोशिश
करे तो भी रब उसका ग़ुरूर गोबर में दबाए रखेगा,
चाहे वह कितनी महारत से हाथ-पाँव मारने की
कोशिश क्यों न करे। 12ऐ मोआब, वह तेरी बुलंद
और क़िलाबंद दीवारों को गिराएगा, उन्हें ढाकर
ख़ाक में मिलाएगा।

हमारा ख़ुदा मज़बूत चट्टान है

26 उस दिन मुल्के-यहूदाह में गीत गाया
जाएगा,

“हमारा शहर मज़बूत है, क्योंकि हम अल्लाह
की नजात देनेवाली चारदीवारी और पुश्तों से घिरे
हुए हैं।
2शहर के दरवाज़ों को खोलो ताकि रास्त क़ौम
दाख़िल हो, वह क़ौम जो वफ़ादार रही है।
3ऐ रब, जिसका इरादा मज़बूत है उसे तू
महफ़ूज़ रखता है। उसे पूरी सलामती हासिल है,
क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।
4रब पर अबद तक एतमाद रखो! क्योंकि रब
ख़ुदा अबदी चट्टान है।
5वह बुलंदियों पर रहनेवालों को ज़ेर और ऊँचे
शहर को नीचा करके ख़ाक में मिला देता है।
6ज़रूरतमंद और पस्तहाल उसे पाँवों तले
कुचल देते हैं।”

दुआ

7ऐ अल्लाह, रास्तबाज़ की राह हमवार है,
क्योंकि तू उसका रास्ता चलने के क़ाबिल बना
देता है।
8ऐ रब, हम तेरे इंतज़ार में रहते हैं, उस वक़्त
भी जब तू हमारी अदालत करता है। हम तेरे नाम
और तेरी तमजीद के आरज़ूमंद रहते हैं।
9रात के वक़्त मेरी रूह तेरे लिए तड़पती, मेरा
दिल तेरा तालिब रहता है। क्योंकि दुनिया के
बाशिंदे उस वक़्त इनसाफ़ का मतलब सीखते हैं
जब तू दुनिया की अदालत करता है।

10अफ़सोस, जब बेदीन पर रहम किया जाता
है तो वह इनसाफ़ का मतलब नहीं सीखता बल्कि
इनसाफ़ के मुल्क में भी ग़लत काम करने से बाज़
नहीं रहता, वहाँ भी रब की अज़मत का लिहाज़
नहीं करता।
11ऐ रब, गो तेरा हाथ उन्हें मारने के लिए उठा
हुआ है तो भी वह ध्यान नहीं देते। लेकिन एक
दिन उनकी आँखें खुल जाएँगी, और वह तेरी
अपनी क़ौम के लिए ग़ैरत को देखकर शरमिंदा
हो जाएंगे। तब तू अपनी भस्म करनेवाली आग
उन पर नाज़िल करेगा।

12ऐ रब, तू हमें अमनो-अमान मुहैया करता है
बल्कि हमारी तमाम कामयाबियाँ तेरे ही हाथ से
हासिल हुई हैं।
13ऐ रब हमारे ख़ुदा, गो तेरे सिवा दीगर मालिक
हम पर हुकूमत करते आए हैं तो भी हम तेरे ही
फ़ज़ल से तेरे नाम को याद कर पाए। 14अब
यह लोग मर गए हैं और आइंदा कभी ज़िंदा नहीं
होंगे, उनकी रूहें कूच कर गई हैं और आइंदा कभी
वापस नहीं आएँगी। क्योंकि तूने उन्हें सज़ा देकर
हलाक कर दिया, उनका नामो-निशान मिटा डाला
है।

15ऐ रब, तूने अपनी क़ौम को फ़रोग़ दिया है।
तूने अपनी क़ौम को बड़ा बनाकर अपने जलाल
का इज़हार किया है। तेरे हाथ से उस की सरहद्दें
चारों तरफ़ बढ़ गई हैं।

16ऐ रब, वह मुसीबत में फँसकर तुझे तलाश
करने लगे, तेरी तादीब के बाइस मंत्र फूँकने लगे।
17ऐ रब, तेरे हुज़ूर हम दर्दे-ज़ह में मुब्तला
औरत की तरह तड़पते और चीख़ते-चिल्लाते रहे।
18जनने का दर्द महसूस करके हम पेचो-ताब खा
रहे थे। लेकिन अफ़सोस, हवा ही पैदा हुई। न
हमने मुल्क को नजात दी, न दुनिया के नए बाशिंदे
पैदा हुए।

19लेकिन तेरे मुरदे दुबारा ज़िंदा होंगे, उनकी
लाशें एक दिन जी उठेंगी। ऐ ख़ाक में बसनेवालो,
जाग उठो और ख़ुशी के नारे लगाओ! क्योंकि
तेरी ओस नूरों की शबनम है, और ज़मीन मुरदा
रूहों को जन्म देगी।

रब इसराईल के दुश्मनों से बदला लेगा

20ऐ मेरी क़ौम, जा और थोड़ी देर के लिए
अपने कमरों में छुपकर कुंडी लगा ले। जब तक
रब का ग़ज़ब ठंडा न हो वहाँ ठहरी रह। 21क्योंकि
देख, रब अपनी सुकूनतगाह से निकलने को है
ताकि दुनिया के बाशिंदों को सज़ा दे। तब ज़मीन

अपने आप पर बहाया हुआ ख़ून फ़ाश करेगी और अपने मक़तूलों को मज़ीद छुपाए नहीं रखेगी।

27 उस दिन रब उस भागने और पेचो-ताब खानेवाले साँप को सज़ा देगा जो लिवियातान कहलाता है। अपनी सख़्त, अज़ीम और ताक़तवर तलवार से वह समुंदर के अज़दहे को मार डालेगा।

अंगूर के बाग़ का नया गीत

2उस दिन कहा जाएगा,

"अंगूर का कितना ख़ूबसूरत बाग़ है! उस की
तारीफ़ में गीत गाओ! 3मैं, रब ख़ुद ही उसे
सँभालता, उसे मुसलसल पानी देता रहता हूँ। दिन-रात मैं उस की पहरादारी करता हूँ ताकि कोई उसे नुक़सान न पहुँचाए।

4अब मेरा ग़ुस्सा ठंडा हो गया है। लेकिन अगर बाग़ में ऊँटकटारे और ख़ारदार झाड़ियाँ मिल जाएँ तो मैं उनसे निपट लूँगा, मैं उनसे जंग करके
सबको जला दूँगा। 5लेकिन अगर वह मान जाएँ
तो मेरे पास आकर पनाह लें। वह मेरे साथ सुलह करें, हाँ मेरे साथ सुलह करें।"

सज़ा के बावुजूद इसराईल पर रहम

6एक वक़्त आएगा कि याक़ूब जड़ पकड़ेगा। इसराईल को फूल लग जाएंगे, उस की कोंपलें निकलेंगी और दुनिया उसके फल से भर जाएगी।
7क्या रब ने अपनी क़ौम को यों मारा जिस तरह उसने इसराईल को मारनेवालों को मारा है? हरगिज़ नहीं! या क्या इसराईल को यों क़त्ल किया गया जिस तरह उसके क़ातिलों को क़त्ल
किया गया है? 8नहीं, बल्कि तूने उसे डराकर और भगाकर उससे जवाब तलब किया, तूने उसके ख़िलाफ़ मशरिक़ से तेज़ आँधी भेजकर उसे अपने हुज़ूर से निकाल दिया।

9इस तरह याक़ूब के क़ुसूर का कफ़्फ़ारा दिया जाएगा। और जब इसराईल का गुनाह दूर हो जाएगा तो नतीजे में वह तमाम ग़लत क़ुरबानगाहों को चूने के पत्थरों की तरह चकनाचूर करेगा। न यसीरत देवी के खंबे, न बख़ूर जलाने की ग़लत क़ुरबानगाहें खड़ी रहेंगी। 10क्योंकि क़िलाबंद शहर तनहा रह गया है। लोगों ने उसे वीरान छोड़कर रेगिस्तान की तरह तर्क कर दिया है। अब से उसमें बछड़े ही चरेंगे। वही उस की गलियों में आराम करके उस की टहनियों को चबा लेंगे।
11तब उस की शाख़ें सूख जाएँगी और औरतें उन्हें तोड़ तोड़कर जलाएँगी। क्योंकि यह क़ौम समझ से ख़ाली है, लिहाज़ा उसका ख़ालिक़ उस पर तरस नहीं खाएगा, जिसने उसे तश्कील दिया वह उस पर मेहरबानी नहीं करेगा।

12उस दिन तुम इसराईली ग़ल्ला जैसे होगे, और रब तुम्हारी बालियों को दरियाए-फ़ुरात से लेकर मिसर की शिमाली सरहद पर वाक़े वादीए-मिसर तक काटेगा। फिर वह तुम्हें गाहकर दाना बदाना तमाम ग़ल्ला इकट्ठा करेगा। 13उस दिन नरसिंगा बुलंद आवाज़ से बजेगा। तब असूर में तबाह होनेवाले और मिसर में भगाए हुए लोग वापस आकर यरूशलम के मुक़द्दस पहाड़ पर रब को सिजदा करेंगे।

मग़रूर शहर सामरिया मुरझाने वाला फूल है

28 सामरिया पर अफ़सोस जो इसराईली शराबियों का शानदार ताज है। उस शहर पर अफ़सोस जो इसराईल की शानो-शौकत था लेकिन अब मुरझानेवाला फूल है। उस आबादी पर अफ़सोस जो नशे में धुत लोगों की ज़रख़ेज़ वादी के ऊपर तख़्तनशीन है। 2देखो, रब एक ज़बरदस्त सूरमा भेजेगा जो ओलों के तूफ़ान, तबाहकुन आँधी और सैलाब पैदा करनेवाली मूसलाधार बारिश की तरह सामरिया पर टूट पड़ेगा और ज़ोर से उसे ज़मीन पर पटख़ देगा। 3तब इसराईली शराबियों का शानदार ताज सामरिया पाँवों तले रौंदा जाएगा।
4तब यह मुरझानेवाला फूल जो ज़रख़ेज़ वादी के ऊपर तख़्तनशीन है और उस की शानो-शौकत ख़त्म हो जाएगी। उसका हाल फ़सल से पहले

पकनेवाले अंजीर जैसा होगा। क्योंकि ज्योंही कोई उसे देखे वह उसे तोड़कर हड़प कर लेगा।
5उस दिन रब्बुल-अफ़वाज ख़ुद इसराईल का
शानदार ताज होगा, वह अपनी क़ौम के बचे हुओं
का जलाली सेहरा होगा। 6वह अदालत करनेवाले
को इनसाफ़ की रूह दिलाएगा और शहर के दरवाज़े पर दुश्मन को पीछे धकेलनेवालों के लिए ताक़त का बाइस होगा।

यरूशलम के मत्वाले नबी

7लेकिन यह लोग भी मै के असर से डगमगा रहे
और शराब पी पीकर लड़खड़ा रहे हैं। इमाम और नबी नशे में झूम रहे हैं। मै पीने से उनके दिमाग़ों में ख़लल आ गया है, शराब पी पीकर वह चक्कर खा रहे हैं। रोया देखते वक़्त वह झूमते, फ़ैसले
करते वक़्त झूलते हैं। 8तमाम मेज़ें उनकी क़ै से
गंदी हैं, उनकी ग़िलाज़त हर तरफ़ नज़र आती है।
9वह आपस में कहते हैं, “यह शख़्स हमारे
साथ इस क़िस्म की बातें क्यों करता है? हमें तालीम देते और इलाही पैग़ाम का मतलब सुनाते वक़्त वह हमें यों समझाता है गोया हम छोटे बच्चे हों जिनका दूध अभी अभी छुड़ाया गया
हो। 10क्योंकि यह कहता है, ‘सव लासव सव
लासव, क़व लाक़व क़व लाक़व, थोड़ा-सा इस तरफ़ थोड़ा-सा उस तरफ़’।”
11चुनाँचे अब अल्लाह हकलाते हुए होंटों और
ग़ैरज़बानों की मारिफ़त इस क़ौम से बात करेगा।
12गो उसने उनसे फ़रमाया था, “यह आराम की
जगह है। थकेमाँदों को आराम दो, क्योंकि यहीं वह सुकून पाएँगे।” लेकिन वह सुनने के लिए
तैयार नहीं थे। 13इसलिए आइंदा रब उनसे इन्हीं
अलफ़ाज़ से हमकलाम होगा, “सव लासव सव लासव, क़व लाक़व कव लाक़व, थोड़ा-सा इस तरफ़, थोड़ा-सा उस तरफ़।” क्योंकि लाज़िम है कि वह चलकर ठोकर खाएँ, और धड़ाम से अपनी पुश्त पर गिर जाएँ, कि वह ज़ख़मी हो जाएँ और फंदे में फँसकर गिरिफ़्तार हो जाएँ।

अल्लाह का वाज़िह पैग़ाम

14चुनाँचे अब रब का कलाम सुन लो, ऐ
मज़ाक़ उड़ानेवालो, जो यरूशलम में बसनेवाली
इस क़ौम पर हुकूमत करते हो। 15तुम शेख़ी
मारकर कहते हो, “हमने मौत से अहद बाँधा और पाताल से मुआहदा किया है। इसलिए जब सज़ा का सैलाब हम पर से गुज़रे तो हमें नुक़सान नहीं पहुँचाएगा। क्योंकि हमने झूट में पनाह ली
और धोके में छुप गए हैं।” 16इसके जवाब में रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “देखो, मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ, कोने का एक आज़मूदा और क़ीमती पत्थर जो मज़बूत बुनियाद पर लगा है। जो ईमान लाएगा वह कभी नहीं हिलेगा।
17इनसाफ़ मेरा फ़ीता और रास्ती मेरी साहूल की
डोरी होगी। इनसे मैं सब कुछ परखूँगा।
ओले उस झूट का सफ़ाया करेंगे जिसमें तुमने पनाह ली है, और सैलाब तुम्हारी छुपने की
जगह उड़ाकर अपने साथ बहा ले जाएगा। 18तब
तुम्हारा मौत के साथ अहद मनसूख़ हो जाएगा, और तुम्हारा पाताल के साथ मुआहदा क़ायम नहीं रहेगा। सज़ा का सैलाब तुम पर से गुज़रकर तुम्हें
पामाल करेगा। 19वह सुबह बसुबह और दिन-रात
गुज़रेगा, और जब भी गुज़रेगा तो तुम्हें अपने साथ बहा ले जाएगा। उस वक़्त लोग दहशतज़दा होकर
कलाम का मतलब समझेंगे।” 20चारपाई इतनी
छोटी होगी कि तुम पाँव फैलाकर सो नहीं सकोगे। बिस्तर की चौड़ाई इतनी कम होगी कि तुम उसे लपेटकर आराम नहीं कर सकोगे।
21क्योंकि रब उठकर यों तुम पर झपट पड़ेगा
जिस तरह पराज़ीम पहाड़ के पास फ़िलिस्तियों पर झपट पड़ा। जिस तरह वादीए-जिबऊन में अमोरियों पर टूट पड़ा उसी तरह वह तुम पर टूट पड़ेगा। और जो काम वह करेगा वह अजीब होगा, जो क़दम वह उठाएगा वह मामूल से हटकर होगा।
22चुनाँचे अपनी तानाज़नी से बाज़ आओ, वरना
तुम्हारी ज़ंजीरें मज़ीद ज़ोर से कस दी जाएँगी। क्योंकि मुझे क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज से

पैग़ाम मिला है कि तमाम दुनिया की तबाही मुतैयिन है।

माहिर किसान की तमसील

23ग़ौर से मेरी बात सुनो! ध्यान से उस पर
कान धरो जो मैं कह रहा हूँ! 24जब किसान
खेत को बीज बोने के लिए तैयार करता है तो
क्या वह पूरा दिन हल चलाता रहता है? क्या
वह अपना पूरा वक़्त ज़मीन खोदने और ढेले
तोड़ने में सर्फ़ करता है? 25हरगिज़ नहीं! जब
पूरे खेत की सतह हमवार और तैयार है तो वह
अपनी अपनी जगह पर स्याह ज़ीरा और सफ़ेद
ज़ीरा, गंदुम, बाजरा और जो का बीज बोता है।
आख़िर में वह किनारे पर चारे का बीज बोता है।
26किसान को ख़ूब मालूम है कि क्या क्या करना
होता है, क्योंकि उसके ख़ुदा ने उसे तालीम देकर
सहीह तरीक़ा सिखाया। 27चुनाँचे स्याह ज़ीरा
और सफ़ेद ज़ीरा को अनाज की तरह गाहा नहीं
जाता। दाने निकालने के लिए उन पर वज़नी चीज़
नहीं चलाई जाती बल्कि उन्हें डंडे से मारा जाता है।
28और क्या अनाज को गाह गाहकर पीसा जाता
है? हरगिज़ नहीं! किसान उसे हद से ज़्यादा नहीं
गाहता। गो उसके घोड़े कोई वज़नी चीज़ खींचते
हुए बालियों पर से गुज़रते हैं ताकि दाने निकलें
ताहम किसान ध्यान देता है कि दाने पिस न जाएँ।
29उसे यह इल्म भी रब्बुल-अफ़वाज से मिला है
जो ज़बरदस्त मशवरों और कामिल हिकमत का
मंबा है।

यरूशलम ख़बरदार रहे

29 ऐ अरियेल, अरियेल,[a] तुझ पर
अफ़सोस! ऐ शहर जिसमें दाऊद
ख़ैमाज़न था, तुझ पर अफ़सोस! चलो, साल
बसाल अपने तहवार मनाते रहो। 2लेकिन मैं
अरियेल को यों घेरकर तंग करूँगा कि उसमें
आहो-ज़ारी सुनाई देगी। तब यरूशलम मेरे
नज़दीक सहीह मानों में अरियेल साबित होगा।
3क्योंकि मैं तुझे हर तरफ़ से पुश्ताबंदी से घेरकर
बंद रखूँगा, तेरे मुहासरे का पूरा बंदोबस्त करूँगा।
4तब तू इतना पस्त होगा कि ख़ाक में से बोलेगा,
तेरी दबी दबी आवाज़ गर्द में से निकलेगी। जिस
तरह मुरदा रूह ज़मीन के अंदर से सरगोशी करती
है उसी तरह तेरी धीमी धीमी आवाज़ ज़मीन में से
निकलेगी।

5लेकिन अचानक तेरे मुतअद्दिद दुश्मन बारीक
धूल की तरह उड़ जाएंगे, ज़ालिमों का ग़ोल हवा
में भूसे की तरह तित्तर-बित्तर हो जाएगा। क्योंकि
अचानक, एक ही लमहे में 6रब्बुल-अफ़वाज उन
पर टूट पड़ेगा। वह बिजली की कड़कती आवाज़ें,
ज़लज़ला, बड़ा शोर, तेज़ आँधी, तूफ़ान और
भस्म करनेवाली आग के शोले अपने साथ लेकर
शहर की मदद करने आएगा। 7तब अरियेल से
लड़नेवाली तमाम क़ौमों के ग़ोल ख़ाब जैसे लगेंगे।
जो यरूशलम पर हमला करके उसका मुहासरा
कर रहे और उसे तंग कर रहे थे वह रात में रोया
जैसे ग़ैरहक़ीक़ी लगेंगे। 8तुम्हारे दुश्मन उस भूके
आदमी की मानिंद होंगे जो ख़ाब में देखता है कि मैं
खाना खा रहा हूँ, लेकिन फिर जागकर जान लेता
है कि मैं वैसे का वैसा भूका हूँ। तुम्हारे मुख़ालिफ़
उस प्यासे आदमी की मानिंद होंगे जो ख़ाब में
देखता है कि मैं पानी पी रहा हूँ, लेकिन फिर
जागकर जान लेता है कि मैं वैसे का वैसा निढाल
और प्यासा हूँ। यही उन तमाम बैनुल-अक़वामी
ग़ोलों का हाल होगा जो कोहे-सिय्यून से जंग
करेंगे।

अल्लाह का कलाम क़ौम की समझ से बाहर है

9हैरतज़दा होकर हक्का-बक्का रह जाओ!
अंधे होकर नाबीना हो जाओ! मत्वाले

[a] मुराद है यरूशलम। अरियेल का एक मतलब ‘अल्लाह का शेरबबर’ और दूसरा ‘भस्म होनेवाली क़ुरबानियों की क़ुरबानगाह’ है। यहाँ दोनों मतलब मुमकिन हैं।

हो जाओ, लेकिन मै से नहीं। लड़-
खड़ाते जाओ, लेकिन शराब से नहीं। 10क्योंकि
रब ने तुम्हें गहरी नींद सुला दिया है, उसने तुम्हारी
आँखों यानी नबियों को बंद किया और तुम्हारे
सरों यानी रोया देखनेवालों पर परदा डाल दिया
है।

11इसलिए जो भी कलाम नाज़िल हुआ है वह
तुम्हारे लिए सर-बमुहर किताब ही है। अगर उसे
किसी पढ़े-लिखे आदमी को दिया जाए ताकि पढ़े
तो वह जवाब देगा, “यह पढ़ा नहीं जा सकता,
क्योंकि इस पर मुहर है।” 12और अगर उसे किसी
अनपढ़ आदमी को दिया जाए तो वह कहेगा, “मैं
अनपढ़ हूँ।”

13रब फ़रमाता है, “यह क़ौम मेरे हुज़ूर आकर
अपनी ज़बान और होंटों से तो मेरा एहतराम
करती है, लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है। उनकी
ख़ुदातरसी सिर्फ़ इनसान ही के रटे-रटाए अहकाम
पर मबनी है। 14इसलिए आइंदा भी मेरा इस क़ौम
के साथ सुलूक हैरतअंगेज़ होगा। हाँ, मेरा सुलूक
अजीबो-ग़रीब होगा। तब उसके दानिशमंदों की
दानिश जाती रहेगी, और उसके समझदारों की
समझ ग़ायब हो जाएगी।”

15उन पर अफ़सोस जो अपना मनसूबा ज़मीन
की गहराइयों में दबाकर रब से छुपाने की कोशिश
करते हैं, जो तारीकी में अपने काम करके कहते
हैं, “कौन हमें देख लेगा, कौन हमें पहचान
लेगा?” 16तुम्हारी कजरवी पर लानत! क्या
कुम्हार को उसके गारे के बराबर समझा जाता है?
क्या बनी हुई चीज़ बनानेवाले के बारे में कहती
है, “उसने मुझे नहीं बनाया”? या क्या जिसको
तश्कील दिया गया है वह तश्कील देनेवाले के बारे
में कहता है, “वह कुछ नहीं समझता”? हरगिज़
नहीं!

बड़ी तबदीलियाँ आनेवाली हैं

17थोड़ी ही देर के बाद लुबनान का जंगल
फलते-फूलते बाग़ में तबदील होगा जब-
कि फलता-फूलता बाग़ जंगल-सा लगेगा। 18उस
दिन बहरे किताब की तिलावत सुनेंगे, और अंधों
की आँखें अंधेरे और तारीकी में से निकलकर देख
सकेंगी। 19एक बार फिर फ़रोतन रब की ख़ुशी
मनाएँगे, और मुहताज इसराईल के क़ुद्दूस के
बाइस शादियाना बजाएंगे। 20ज़ालिम का नामो-
निशान नहीं रहेगा, तानाज़न ख़त्म हो जाएंगे,
और दूसरों की ताक में बैठनेवाले सबके सब रूए-
ज़मीन पर से मिट जाएंगे। 21यही उनका अंजाम
होगा जो अदालत में दूसरों को क़ुसूरवार ठहराते,
शहर के दरवाज़े में अदालत करनेवाले क़ाज़ी को
फँसाने की कोशिश करते और झूटी गवाहियों से
बेक़ुसूर का हक़ मारते हैं।

22चुनाँचे रब जिसने पहले इब्राहीम का भी
फ़िद्या देकर उसे छुड़ाया था याक़ूब के घराने
से फ़रमाता है, “अब से याक़ूब शरमिंदा नहीं
होगा, अब से इसराईलियों का रंग फ़क़ नहीं पड़
जाएगा। 23जब वह अपने दरमियान अपने बच्चों
को जो मेरे हाथों का काम हैं देखेंगे तो वह मेरे
नाम को मुक़द्दस मानेंगे। वह याक़ूब के क़ुद्दूस को
मुक़द्दस जानेंगे और इसराईल के ख़ुदा का ख़ौफ़
मानेंगे। 24उस वक़्त जिनकी रूह आवारा है वह
समझ हासिल करेंगे, और बुड़बुड़ानेवाले तालीम
क़बूल करेंगे।”

मिसर के वादे बेकार हैं

30 रब फ़रमाता है, “ऐ ज़िद्दी बच्चो, तुम
पर अफ़सोस! क्योंकि तुम मेरे बग़ैर
मनसूबे बाँधते और मेरे रूह के बग़ैर मुआहदे कर
लेते हो। गुनाहों में इज़ाफ़ा करते करते 2तुमने
मुझसे मशवरा लिए बग़ैर मिसर की तरफ़ रुजू
किया ताकि फ़िरौन की आड़ में पनाह लो और
मिसर के साये में हिफ़ाज़त पाओ। 3लेकिन
ख़बरदार! फ़िरौन का तहफ़्फ़ुज़ तुम्हारे लिए
शर्म का बाइस बनेगा, मिसर के साये में पनाह
लेने से तुम्हारी रुसवाई हो जाएगी। 4क्योंकि गो
उसके अफ़सर ज़ुअन में हैं और उसके एलची
हनीस तक पहुँच गए हैं 5तो भी सब इस क़ौम से
शरमिंदा हो जाएंगे, क्योंकि इसके साथ मुआहदा

बेकार होगा। इससे न मदद और न फ़ायदा हासिल
होगा बल्कि यह शर्म और ख़जालत का बाइस ही
होगी।”
6दश्ते-नजब के जानवरों के बारे में रब का
फ़रमान :
यहूदाह के सफ़ीर एक तकलीफ़देह और
परेशानकुन मुल्क में से गुज़र रहे हैं जिसमें
शेरबबर, शेरनी, ज़हरीले और उड़नसाँप बसते
हैं। उनके गधे और ऊँट यहूदाह की दौलत और
ख़ज़ानों से लदे हुए हैं, और वह सब कुछ मिसर के
पास पहुँचा रहे हैं, गो इस क़ौम का कोई फ़ायदा
नहीं। 7मिसर की मदद फ़ज़ूल ही है! इसलिए
मैंने मिसर का नाम ‘रहब अज़दहा जिसका मुँह
बंद कर दिया गया है’ रखा है।
8अब दूसरों के पास जाकर सब कुछ तख़्ते पर
लिख। उसे किताब की सूरत में क़लमबंद कर
ताकि मेरे अलफ़ाज़ आनेवाले दिनों में हमेशा तक
गवाही दें। 9क्योंकि यह क़ौम सरकश है, यह लोग
धोकेबाज़ बच्चे हैं जो रब की हिदायात को मानने
के लिए तैयार ही नहीं। 10ग़ैबबीनों को वह कहते
हैं, “रोया से बाज़ आओ।” और रोया देखनेवालों
को वह हुक्म देते हैं, “हमें सच्ची रोया मत बताना
बल्कि हमारी ख़ुशामद करनेवाली बातें। फ़रेबदेह
रोया देखकर हमारे आगे बयान करो! 11सहीह
रास्ते से हट जाओ, सीधी राह को छोड़ दो। हमारे
सामने इसराईल के क़ुद्दूस का ज़िक्र करने से बाज़
आओ!”
12जवाब में इसराईल का क़ुद्दूस फ़रमाता है,
“तुमने यह कलाम रद्द करके ज़ुल्म और चालाकी
पर भरोसा बल्कि पूरा एतमाद किया है। 13अब
यह गुनाह तुम्हारे लिए उस ऊँची दीवार की मानिंद
होगा जिसमें दराड़ें पड़ गई हैं। दराड़ें फैलती हैं और
दीवार बैठी जाती है। फिर अचानक एक ही लमहे
में वह धड़ाम से ज़मीनबोस हो जाती है। 14वह
टुकड़े टुकड़े हो जाती है, बिलकुल मिट्टी के उस
बरतन की तरह जो बेरहमी से चकनाचूर किया
जाता है और जिसका एक टुकड़ा भी आग से
कोयले उठाकर ले जाने या हौज़ से थोड़ा-बहुत
पानी निकालने के क़ाबिल नहीं रह जाता।”

सब्र के साथ रब पर भरोसा रखो

15रब क़ादिरे-मुतलक़ जो इसराईल का क़ुद्दूस
है फ़रमाता है, “वापस आकर सुकून पाओ, तब
ही तुम्हें नजात मिलेगी। ख़ामोश रहकर मुझ पर
भरोसा रखो, तब ही तुम्हें तक़वियत मिलेगी।
लेकिन तुम इसके लिए तैयार ही नहीं थे।
16चूँकि तुम जवाब में बोले, ‘हरगिज़ नहीं,
हम अपने घोड़ों पर सवार होकर भागेंगे’ इसलिए
तुम भाग जाओगे। चूँकि तुमने कहा, ‘हम तेज़
घोड़ों पर सवार होकर बच निकलेंगे’ इसलिए
तुम्हारा ताक़्क़ुब करनेवाले कहीं ज़्यादा तेज़ होंगे।
17तुम्हारे हज़ार मर्द एक ही आदमी की धमकी पर
भाग जाएंगे। और जब दुश्मन के पाँच अफ़राद
तुम्हें धमकाएँगे तो तुम सबके सब फ़रार हो
जाओगे। आख़िरकार जो बचेंगे वह पहाड़ की
चोटी पर परचम के डंडे की तरह तनहा रह जाएंगे,
पहाड़ी पर झंडे की तरह अकेले होंगे।”
18लेकिन रब तुम्हें मेहरबानी दिखाने के इंतज़ार
में है, वह तुम पर रहम करने के लिए उठ खड़ा
हुआ है। क्योंकि रब इनसाफ़ का ख़ुदा है। मुबारक
हैं वह जो उसके इंतज़ार में रहते हैं।
19ऐ सिय्यून के बाशिंदो जो यरूशलम में रहते
हो, आइंदा तुम नहीं रोओगे। जब तुम फ़रियाद
करोगे तो वह ज़रूर तुम पर मेहरबानी करेगा।
तुम्हारी सुनते ही वह जवाब देगा। 20गो माज़ी में
रब ने तुम्हें तंगी की रोटी खिलाई और ज़ुल्म का
पानी पिलाया, लेकिन अब तेरा उस्ताद छुपा नहीं
रहेगा बल्कि तेरी अपनी ही आँखें उसे देखेंगी।
21अगर दाईं या बाईं तरफ़ मुड़ना है तो तुम्हें पीछे
से हिदायत मिलेगी, “यही रास्ता सहीह है, इसी
पर चलो!” तुम्हारे अपने कान यह सुनेंगे। 22उस
वक़्त तुम चाँदी और सोने से सजे हुए अपने बुतों
की बेहुरमती करोगे। तुम “उफ़, गंदी चीज़!”
कहकर उन्हें नापाक कचरे की तरह बाहर फेंकोगे।

23बीज बोते वक़्त रब तेरे खेतों पर
बारिश भेजकर बेहतरीन फ़सलें पकने देगा,
ग़िज़ाइयतबख़्श ख़ुराक मुहैया करेगा। उस दिन
तेरी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल वसी चरागाहों
में चरेंगे। 24खेतीबाड़ी के लिए मुस्तामल बैलों
और गधों को छाज और दोशाख़े के ज़रीए साफ़
की गई बेहतरीन ख़ुराक मिलेगी। 25उस दिन जब
दुश्मन हलाक हो जाएगा और उसके बुर्ज गिर
जाएंगे तो हर ऊँचे पहाड़ से नहरें और हर बुलंदी
से नाले बहेंगे। 26चाँद सूरज की मानिंद चमकेगा
जबकि सूरज की रौशनी सात गुना ज़्यादा तेज़
होगी। एक दिन की रौशनी सात आम दिनों की
रौशनी के बराबर होगी। उस दिन रब अपनी क़ौम
के ज़ख़मों पर मरहम-पट्टी करके उसे शफ़ा देगा।

रब असूरियों की अदालत करता है

27वह देखो, रब का नाम दूर-दराज़ इलाक़े से
आ रहा है। वह ग़ैज़ो-ग़ज़ब से और बड़े रोब के
साथ क़रीब पहुँच रहा है। उसके होंट क़हर से हिल
रहे हैं, उस की ज़बान के आगे आगे सब कुछ
राख हो रहा है। 28उसका दम किनारों से बाहर
आनेवाली नदी है जो सब कुछ गले तक डुबो देती
है। वह अक़वाम को हलाकत की छलनी में छान
छानकर उनके मुँह में दहाना डालता है ताकि वह
भटककर तबाहकुन राह पर आएँ।

29लेकिन तुम गीत गाओगे, ऐसे गीत जैसे
मुक़द्दस ईद की रात गाए जाते हैं। इतनी रौनक़
होगी कि तुम्हारे दिल फूले न समाएँगे। तुम्हारी
ख़ुशी उन ज़ायरीन की मानिंद होगी जो बाँसरी
बजाते हुए रब के पहाड़ पर चढ़ते और इसराईल
की चट्टान के हुज़ूर आते हैं।

30तब रब अपनी बारोब आवाज़ से लोगों पर
अपनी क़ुदरत का इज़हार करेगा। उसका सख़्त
ग़ज़ब और भस्म करनेवाली आग नाज़िल होगी,
साथ साथ बारिश की तेज़ बौछाड़ और ओलों
का तूफ़ान उन पर टूट पड़ेगा। 31रब की आवाज़
असूर को पाश पाश कर देगी, उस की लाठी उसे
मारती रहेगी। 32और ज्यों-ज्यों रब सज़ा के लठ
से असूर को ज़रब लगाएगा त्यों-त्यों दफ़ और
सरोद बजेंगे। अपने ज़ोरावर बाज़ू से वह असूर
से लड़ेगा। 33क्योंकि बड़ी देर से वह गढ़ा तैयार
है जहाँ असूरी बादशाह की लाश को जलाना है।
उसे गहरा और चौड़ा बनाया गया है, और उसमें
लकड़ी का बड़ा ढेर है। रब का दम ही उसे गंधक
की तरह जलाएगा।

मिसर की मदद बेकार है

31 उन पर अफ़सोस जो मदद के लिए
मिसर जाते हैं। उनकी पूरी उम्मीद
घोड़ों से है, और वह अपने मुतअद्दिद रथों
और ताक़तवर घुड़सवारों पर एतमाद रखते हैं।
अफ़सोस, न वह इसराईल के क़ुद्दूस की तरफ़
नज़र उठाते, न रब की मरज़ी दरियाफ़्त करते
हैं। 2लेकिन अल्लाह भी दाना है। वह तुम पर
आफ़त लाएगा और अपना फ़रमान मनसूख़ नहीं
करेगा बल्कि शरीरों के घर और उनके मुआविनों
के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होगा। 3मिसरी तो ख़ुदा
नहीं बल्कि इनसान हैं। और उनके घोड़े आलमे-
अरवाह के नहीं बल्कि फ़ानी दुनिया के हैं। जहाँ
भी रब अपना हाथ बढ़ाए वहाँ मदद करनेवाले
मदद मिलनेवालों समेत ठोकर खाकर गिर जाते
हैं, सब मिलकर हलाक हो जाते हैं।

4रब मुझसे हमकलाम हुआ, “सिय्यून पर
उतरते वक़्त मैं उस जवान शेरबबर की तरह हूँगा
जो बकरी मारकर उसके ऊपर खड़ा ग़ुर्राता है।
गो मुतअद्दिद गल्लाबानों को उसे भगाने के लिए
बुलाया जाए तो भी वह उनकी चीख़ों से दहशत
नहीं खाता, न उनके शोर-शराबा से डरकर दबक
जाता है। रब्बुल-अफ़वाज इसी तरह ही कोहे-
सिय्यून पर उतरकर लड़ेगा। 5रब्बुल-अफ़वाज पर
फैलाए हुए परिंदे की तरह यरूशलम को पनाह
देगा, वह उसे महफ़ूज़ रखकर छुटकारा देगा, उसे
सज़ा देने के बजाए रिहा करेगा।”

6ऐ इसराईलियो, जिससे तुम सरकश होकर
इतने दूर हो गए हो उसके पास वापस आ जाओ।
7अब तक तुम अपने हाथों से बने हुए सोने-चाँदी

के बुतों की पूजा करते हो, अब तक तुम इस गुनाह
में मुलव्वस हो। लेकिन वह दिन आनेवाला है जब
हर एक अपने बुतों को रद्द करेगा।
8“असूर तलवार की ज़द में आकर गिर
जाएगा। लेकिन यह किसी मर्द की तलवार नहीं
होगी। जो तलवार असूर को खा जाएगी वह फ़ानी
इनसान की नहीं होगी। असूर तलवार के आगे
आगे भागेगा, और उसके जवानों को बेगार में
काम करना पड़ेगा। 9उस की चट्टान डर के मारे
जाती रहेगी, उसके अफ़सर लशकरी झंडे को
देखकर दहशत खाएँगे।” यह रब का फ़रमान है
जिसकी आग सिय्यून में भड़कती और जिसका
तनूर यरूशलम में तपता है।

रास्त बादशाह की आमद

32 एक बादशाह आनेवाला है जो
इनसाफ़ से हुकूमत करेगा। उस-
के अफ़सर भी सदाक़त से हुक्मरानी करेंगे। 2हर
एक आँधी और तूफ़ान से पनाह देगा, हर एक
रेगिस्तान में नदियों की तरह तरो-ताज़ा करेगा,
हर एक तपती धूप में बड़ी चट्टान का-सा साया
देगा।
3तब देखनेवालों की आँखें अंधी नहीं रहेंगी,
और सुननेवालों के कान ध्यान देंगे। 4जल्दबाज़ों
के दिल समझदार हो जाएंगे, और हक्लों की
ज़बान रवानी से साफ़ बात करेगी। 5उस वक़्त
न अहमक़ शरीफ़ कहलाएगा, न बदमाश को
मुमताज़ क़रार दिया जाएगा। 6क्योंकि अहमक़
हमाक़त बयान करता है, और उसका ज़हन शरीर
मनसूबे बाँधता है। वह बेदीन हरकतें करके रब के
बारे में कुफ़र बकता है। भूके को वह भूका छोड़ता
और प्यासे को पानी पीने से रोकता है। 7बदमाश
के तरीक़े-कार शरीर हैं। वह ज़रूरतमंद को झूट
से तबाह करने के मनसूबे बाँधता रहता है, ख़ाह
ग़रीब हक़ पर क्यों न हो। 8उसके मुक़ाबले में
शरीफ़ आदमी शरीफ़ मनसूबे बाँधता और शरीफ़
काम करने में साबितक़दम रहता है।

बेपरवा ज़िंदगी ख़त्म होनेवाली है

9ऐ बेपरवा औरतो, उठकर मेरी बात सुनो! ऐ
बेटियो जो अपने आपको महफ़ूज़ समझती हो,
मेरे अलफ़ाज़ पर ध्यान दो! 10एक साल और
चंद एक दिनों के बाद तुम जो अपने आपको
महफ़ूज़ समझती हो काँप उठोगी। क्योंकि अंगूर
की फ़सल ज़ाया हो जाएगी, और फल की फ़सल
पकने नहीं पाएगी। 11ऐ बेपरवा औरतो, लरज़
उठो! ऐ बेटियो जो अपने आपको महफ़ूज़
समझती हो, थरथराओ! अपने अच्छे कपड़ों को
उतारकर टाट के लिबास पहन लो। 12अपने सीनों
को पीट पीटकर अपने ख़ुशगवार खेतों और अंगूर
के फलदार बाग़ों पर मातम करो। 13मेरी क़ौम
की ज़मीन पर आहो-ज़ारी करो, क्योंकि उस पर
ख़ारदार झाड़ियाँ छा गई हैं। रंगरलियाँ मनानेवाले
शहर के तमाम ख़ुशबाश घरों पर ग़म खाओ।
14महल वीरान होगा, रौनक़दार शहर सुनसान
होगा। क़िला और बुर्ज हमेशा के लिए ग़ार बनेंगे
जहाँ जंगली गधे अपने दिल बहलाएँगे और भेड़-
बकरियाँ चरेंगी।

अल्लाह के रूह से बहाली

15जब तक अल्लाह अपना रूह हम पर नाज़िल
न करे उस वक़्त तक हालात ऐसे ही रहेंगे। लेकिन
फिर रेगिस्तान बाग़ में तबदील हो जाएगा, और
बाग़ के फलदार दरख़्त जंगल जैसे घने हो जाएंगे।
16तब इनसाफ़ रेगिस्तान में बसेगा, और सदाक़त
फलते-फूलते बाग़ में सुकूनत करेगी। 17इनसाफ़
का फल अमनो-अमान होगा, और सदाक़त का
असर अबदी सुकून और हिफ़ाज़त होगी।
18मेरी क़ौम पुरसुकून और महफ़ूज़ आबा-
दियों में बसेगी, उसके घर आरामदेह और
पुरअमन होंगे। 19गो जंगल तबाह और शहर
ज़मीनबोस क्यों न हो, 20लेकिन तुम मुबारक हो
जो हर नदी के पास बीज बो सकोगे और आज़ादी
से अपने गाय-बैलों और गधों को चरा सकोगे।

या रब, मदद!

33 तुझ पर अफ़सोस, जो दूसरों को
बरबाद करने के बावुजूद बरबाद नहीं
हुआ। तुझ पर अफ़सोस, जो दूसरों से बेवफ़ा था,
हालाँकि तेरे साथ बेवफ़ाई नहीं हुई। लेकिन तेरी
बारी भी आएगी। बरबादी का काम तकमील तक
पहुँचाने पर तू ख़ुद बरबाद हो जाएगा। बेवफ़ाई
का काम तकमील तक पहुँचाने पर तेरे साथ भी
बेवफ़ाई की जाएगी।

2ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर! हम तुझसे
उम्मीद रखते हैं। हर सुबह हमारी ताक़त बन,
मुसीबत के वक़्त हमारी रिहाई का बाइस हो।

3तेरी गरजती आवाज़ सुनकर क़ौमें भाग जाती
हैं, तेरे उठ खड़े होने पर वह चारों तरफ़ बिखर
जाती हैं। 4ऐ क़ौमो, जो माल तुमने लूट लिया
वह दूसरे छीन लेंगे। जिस तरह टिड्डियों के ग़ोल
फ़सलों पर झपटकर सब कुछ चट कर जाते हैं
उसी तरह दूसरे तुम्हारी पूरी मिलकियत पर टूट
पड़ेंगे।

5रब सरफ़राज़ है और बुलंदियों पर सुकूनत
करता है। वही सिय्यून को इनसाफ़ और
सदाक़त से मालामाल करेगा। 6उन दिनों में वह
तेरी हिफ़ाज़त की ज़मानत होगा। तुझे नजात,
हिकमत और दानाई का ज़ख़ीरा हासिल होगा,
और रब का ख़ौफ़ तेरा ख़ज़ाना होगा।

दुश्मन से धोका, रब से रिहाई

7सुनो, उनके सूरमे गलियों में चीख़ रहे हैं,
अमन के सफ़ीर तलख़ आहें भर रहे हैं। 8सड़कें
वीरानो-सुनसान हैं, और मुसाफ़िर उन पर नज़र
ही नहीं आते। मुआहदे को तोड़ा गया है, लोगों ने
उसके गवाहों को रद्द करके इनसान को हक़ीर
जाना है। 9ज़मीन ख़ुश्क होकर मुरझा गई है,
लुबनान कुमलाकर शरमिंदा हो गया है। शारून
का मैदान बेशजर बयाबान-सा बन गया है, बसन
और करमिल अपने पत्ते झाड़ रहे हैं।

10लेकिन रब फ़रमाता है, "अब मैं उठ खड़ा
हूँगा, अब मैं सरफ़राज़ होकर अपनी क़ुव्वत का
इज़हार करूँगा। 11तुम उम्मीद से हो, लेकिन पेट
में सूखी घास ही है, और जन्म देते वक़्त भूसा ही
पैदा होगा। जब तुम फूँक मारोगे तो तुम्हारा दम
आग बनकर तुम्हीं को राख कर देगा। 12अक़वाम
यों भस्म हो जाएँगी कि चूना ही रह जाएगा, वह
ख़ारदार झाड़ियों की तरह कटकर जल जाएँगी।
13ऐ दूर-दराज़ इलाक़ों के बाशिंदो, वह कुछ सुनो
जो मैंने किया है। ऐ क़रीब के बसनेवालो, मेरी
क़ुदरत जान लो।"

14सिय्यून में गुनाहगार घबरा गए हैं, बेदीन
परेशानी के आलम में थरथराते हुए चिल्ला रहे
हैं, "हममें से कौन भस्म करनेवाली इस आग के
सामने ज़िंदा रह सकता है? हममें से कौन हमेशा
तक भड़कनेवाली इस अंगीठी के क़रीब क़ायम
रह सकता है?" 15लेकिन वह शख़्स क़ायम
रहेगा जो रास्त ज़िंदगी गुज़ारे और सच्चाई बोले,
जो ग़ैरक़ानूनी नफ़ा और रिश्वत लेने से इनकार
करे, जो क़ातिलाना साज़िशों और ग़लत काम
से गुरेज़ करे। 16वही बुलंदियों पर बसेगा और
पहाड़ के क़िले में महफ़ूज़ रहेगा। उसे रोटी मिलती
रहेगी, और पानी की कभी कमी न होगी।

पुरजलाल बादशाह का मुल्क

17तेरी आँखें बादशाह और उस की पूरी
ख़ूबसूरती का मुशाहदा करेंगी, वह एक वसी और
दूर दूर तक फैला हुआ मुल्क देखेंगी। 18तब तू
गुज़रे हुए हौलनाक वक़्त पर ग़ौरो-ख़ौज़ करके
पूछेगा, "दुश्मन के बड़े अफ़सर किधर हैं? टैक्स
लेनेवाला कहाँ ग़ायब हुआ? वह अफ़सर किधर
है जो बुर्जों का हिसाब-किताब करता था?"
19आइंदा तुझे यह गुस्ताख़ क़ौम नज़र नहीं
आएगी, यह लोग जो नाक़ाबिले-फ़हम ज़बान
बोलते और हकलाते हुए ऐसी बातें करते हैं जो
समझ में नहीं आतीं।

20हमारी ईदों के शहर सिय्यून पर नज़र डाल!
तेरी आँखें यरूशलम को देखेंगी। उस वक़्त
वह महफ़ूज़ सुकूनतगाह होगा, एक ख़ैमा जो
आइंदा कभी नहीं हटेगा, जिसकी मेख़ें कभी

नहीं निकलेंगी, और जिसका एक रस्सा भी नहीं
टूटेगा।
21वहाँ रब ही हमारा ज़ोरावर आक़ा होगा,
और शहर दरियाओं का मक़ाम होगा, ऐसी चौड़ी
नदियों का मक़ाम जिन पर न चप्पूवाली कश्ती, न
शानदार जहाज़ चलेगा। 22क्योंकि रब ही हमारा
क़ाज़ी, रब ही हमारा सरदार और रब ही हमारा
बादशाह है। वही हमें छुटकारा देगा। 23दुश्मन का
बेड़ा ग़रक़ होनेवाला है। बादबान के रस्से ढीले हैं,
और न वह मस्तूल को मज़बूत रखने, न बादबान
को फैलाए रखने में मदद देते हैं। उस वक़्त कसरत
का लूटा हुआ माल बटेगा, बल्कि इतना माल होगा
कि लँगड़े भी लूटने में शिरकत करेंगे। 24सिय्यून
का कोई भी फ़रद नहीं कहेगा, "मैं कमज़ोर हूँ,"
क्योंकि उसके बाशिंदों के गुनाह बख़्शे गए होंगे।

अदोम पर अदालत का एलान

34 ऐ क़ौमो, क़रीब आकर सुन लो! ऐ
उम्मतो, ध्यान दो! दुनिया और जो
भी उसमें है कान लगाए, ज़मीन और जो कुछ
उसमें से फूट निकला है तवज्जुह दे! 2क्योंकि
रब को तमाम उम्मतों पर ग़ुस्सा आ गया है, और
उसका ग़ज़ब उनके तमाम लशकरों पर नाज़िल हो
रहा है। वह उन्हें मुकम्मल तौर पर तबाह करेगा,
इन्हें सफ़्फ़ाक के हवाले करेगा। 3उनके मक़तूलों
को बाहर फेंका जाएगा, और लाशों की बदबू चारों
तरफ़ फैलेगी। पहाड़ उनके ख़ून से शराबोर होंगे।
4तमाम सितारे गल जाएंगे, और आसमान को
तूमार की तरह लपेटा जाएगा। सितारों का पूरा
लशकर अंगूर के मुरझाए हुए पत्तों की तरह झड़
जाएगा, वह अंजीर के दरख़्त की सूखी हरियाली
की तरह गिर जाएगा।
5क्योंकि आसमान पर मेरी तलवार ख़ून पी
पीकर मस्त हो गई है। देखो, अब वह अदोम पर
नाज़िल हो रही है ताकि उस की अदालत करे, उस
क़ौम की जिसकी मुकम्मल तबाही का फ़ैसला मैं
कर चुका हूँ। 6रब की तलवार ख़ूनआलूदा हो गई
है, और उससे चरबी टपकती है। भेड़-बकरियों का
ख़ून और मेंढों के गुरदों की चरबी उस पर लगी है,
क्योंकि रब बुसरा शहर में क़ुरबानी की ईद और
मुल्के-अदोम में क़त्ले-आम का तहवार मनाएगा।
7उस वक़्त जंगली बैल उनके साथ गिर जाएंगे,
और बछड़े ताक़तवर साँडों समेत ख़त्म हो जाएंगे।
उनकी ज़मीन ख़ून से मस्त और ख़ाक चरबी से
शराबोर होगी।
8क्योंकि वह दिन आ गया है जब रब बदला
लेगा, वह साल जब वह अदोम से इसराईल का
इंतक़ाम लेगा। 9अदोम की नदियों में तारकोल
ही बहेगा, और गंधक ज़मीन को ढाँपेगी। मुल्क
भड़कती हुई राल से भर जाएगा, 10जिसकी
आग न दिन और न रात बुझेगी बल्कि हमेशा
तक धुआँ छोड़ती रहेगी। मुल्क नसल-दर-नसल
वीरानो-सुनसान रहेगा, यहाँ तक कि मुसाफ़िर
भी हमेशा तक उसमें से गुज़रने से गुरेज़ करेंगे।
11दश्ती उल्लू और ख़ारपुश्त उस पर क़ब्ज़ा
करेंगे, चिंघाड़नेवाले उल्लू और कौवे उसमें बसेरा
करेंगे। क्योंकि रब फ़ीते और साहूल से अदोम
का पूरा मुल्क नाप नापकर उजाड़ और वीरानी के
हवाले करेगा। 12उसके शुरफ़ा का नामो-निशान
तक नहीं रहेगा। कुछ नहीं रहेगा जो बादशाही
कहलाए, मुल्क के तमाम रईस जाते रहेंगे।
13काँटेदार पौदे उसके महलों पर छा जाएंगे,
ख़ुदरौ पौदे और ऊँटकटारे उसके क़िलाबंद शहरों
में फैल जाएंगे। मुल्क गीदड़ और उक़ाबी उल्लू का
घर बनेगा। 14वहाँ रेगिस्तान के जानवर जंगली
कुत्तों से मिलेंगे, और बकरानुमा जिन एक दूसरे से
मुलाक़ात करेंगे। लीलीत नामी आसेब भी उसमें
ठहरेगा, वहाँ उसे भी आरामगाह मिलेगी। 15मादा
साँप उसके साये में बिल बनाकर उसमें अपने अंडे
देगी और उन्हें सेकर पालेगी। शिकारी परिंदे भी
दो दो होकर वहाँ जमा होंगे।
16रब की किताब में पढ़कर इसकी तहक़ीक़
करो! अदोम में यह तमाम चीज़ें मिल जाएँगी।
मुल्क एक से भी महरूम नहीं रहेगा बल्कि सब
मिलकर उसमें पाई जाएँगी। क्योंकि रब ही के मुँह
ने इसका हुक्म दिया है, और उसी का रूह इन्हें

इकट्ठा करेगा। 17वही सारी ज़मीन की पैमाइश
करेगा और फिर क़ुरा डालकर मज़कूरा जानदारों
में तक़सीम करेगा। तब मुल्क अबद तक उनकी
मिलकियत में आएगा, और वह नसल-दर-नसल
उसमें आबाद होंगे।

क़ौम की रिहाई

35 रेगिस्तान और प्यासी ज़मीन बाग़
बाग़ होंगे, बयाबान ख़ुशी मनाकर
खिल उठेगा। उसके फूल सोसन की तरह 2फूट
निकलेंगे, और वह ज़ोर से शादियाना बजाकर
ख़ुशी के नारे लगाएगा। उसे लुबनान की शान,
करमिल और शारून का पूरा हुस्नो-जमाल दिया
जाएगा। लोग रब का जलाल और हमारे ख़ुदा की
शानो-शौकत देखेंगे।

3निढाल हाथों को तक़वियत दो, डाँवाँ-
डोल घुटनों को मज़बूत करो! 4धड़कते हुए दिलों
से कहो, "हौसला रखो, मत डरो। देखो, तुम्हारा
ख़ुदा इंतक़ाम लेने के लिए आ रहा है। वह हर एक
को जज़ा-ओ-सज़ा देकर तुम्हें बचाने के लिए आ
रहा है।"

5तब अंधों की आँखों को और बहरों के कानों
को खोला जाएगा।
6लँगड़े हिरन की-सी छलाँगें लगाएँगे, और गूँगे
ख़ुशी के नारे लगाएँगे। रेगिस्तान में चश्मे फूट
निकलेंगे, और बयाबान में से नदियाँ गुज़रेंगी।
7झुलसती हुई रेत की जगह जोहड़ बनेगा,
और प्यासी ज़मीन की जगह पानी के सोते फूट
निकलेंगे। जहाँ पहले गीदड़ आराम करते थे वहाँ
हरी घास, सरकंडे और आबी नरसल की नशो-
नुमा होगी।

8मुल्क में से शाहराह गुज़रेगी जो 'शाह-
राहे-मुक़द्दस' कहलाएगी। नापाक लोग उस पर
सफ़र नहीं करेंगे, क्योंकि वह सहीह राह पर
चलनेवालों के लिए मख़सूस है। अहमक़ उस पर
भटकने नहीं पाएँगे।
9उस पर न शेरबबर होगा, न कोई और वहशी
जानवर आएगा या पाया जाएगा। सिर्फ़ वह उस
पर चलेंगे जिन्हें अल्लाह ने एवज़ाना देकर छुड़ा
लिया है।

10जितनों को रब ने फ़िद्या देकर रिहा किया है
वह वापस आएँगे और गीत गाते हुए सिय्यून में
दाख़िल होंगे। उनके सर पर अबदी ख़ुशी का ताज
होगा, और वह इतने मसरूर और शादमान होंगे
कि मातम और गिर्याओ-ज़ारी उनके आगे आगे
भाग जाएगी।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

36 हिज़क़ियाह बादशाह की हुकूमत के
14वें साल में असूर के बादशाह
सनहेरिब ने यहूदाह के तमाम क़िलाबंद शहरों पर
धावा बोलकर उन पर क़ब्ज़ा कर लिया। 2फिर
उसने अपने आला अफ़सर रबशाक़ी को बड़ी
फ़ौज के साथ लकीस से यरूशलम को भेजा।
यरूशलम पहुँचकर रबशाक़ी उस नाले के पास
रुक गया जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक
पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो
धोबियों के घाट तक ले जाता है)। 3यह देखकर
महल का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह,
मीरमुंशी शिबनाह और मुशीरे-ख़ास युआख़ बिन
आसफ़ शहर से निकलकर उससे मिलने आए।
4रबशाक़ी ने उनके हाथ हिज़क़ियाह को पैग़ाम
भेजा,
"असूर के अज़ीम बादशाह फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है? 5तुम समझते हो कि
ख़ाली बातें करना फ़ौजी हिकमते-अमली और
ताक़त के बराबर है। यह कैसी बात है? तुम
किस पर एतमाद कर रहे हो कि मुझसे सरकश
हो गए हो? 6क्या तुम मिसर पर भरोसा करते
हो? वह तो टूटा हुआ सरकंडा ही है। जो भी
उस पर टेक लगाए उसका हाथ वह चीरकर

ज़ख़मी कर देगा। यही कुछ उन सबके साथ हो
जाएगा जो मिसर के बादशाह फ़िरौन पर भरोसा
करें! 7शायद तुम कहो, 'हम रब अपने ख़ुदा पर
तवक्कुल करते हैं।' लेकिन यह किस तरह हो
सकता है? हिज़क़ियाह ने तो उस की बेहुरमती
की है। क्योंकि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों और
क़ुरबानगाहों को ढाकर यहूदाह और यरूशलम से
कहा है कि सिर्फ़ यरूशलम की क़ुरबानगाह के
सामने परस्तिश करें। 8आओ, मेरे आक़ा असूर के
बादशाह से सौदा करो। मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा
बशर्तेकि तुम उनके लिए सवार मुहैया कर सको।
लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे पास इतने घुड़सवार हैं
ही नहीं! 9तुम मेरे आक़ा असूर के बादशाह के
सबसे छोटे अफ़सर का भी मुक़ाबला नहीं कर
सकते। लिहाज़ा मिसर के रथों पर भरोसा रखने
का क्या फ़ायदा? 10शायद तुम समझते हो
कि मैं रब की मरज़ी के बग़ैर ही इस मुल्क पर
हमला करने आया हूँ ताकि सब कुछ बरबाद करूँ।
लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! रब ने ख़ुद मुझे कहा
कि इस मुल्क पर धावा बोलकर इसे तबाह कर
दे।"

11यह सुनकर इलियाक़ीम, शिबनाह और
युआख़ ने रबशाक़ी की तक़रीर में दख़ल देकर
कहा, "बराहे-करम अरामी ज़बान में अपने
ख़ादिमों के साथ गुफ़्तगू कीजिए, क्योंकि हम
यह अच्छी तरह बोल लेते हैं। इबरानी ज़बान
इस्तेमाल न करें, वरना शहर की फ़सील पर खड़े
लोग आपकी बातें सुन लेंगे।" 12लेकिन रबशाक़ी
ने जवाब दिया, "क्या तुम समझते हो कि मेरे
मालिक ने यह पैग़ाम सिर्फ़ तुम्हें और तुम्हारे
मालिक को भेजा है? हरगिज़ नहीं! वह चाहते
हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें। क्योंकि वह
भी तुम्हारी तरह अपना फ़ुज़्ला खाने और अपना
पेशाब पीने पर मजबूर हो जाएंगे।"

13फिर वह फ़सील की तरफ़ मुड़कर बुलंद
आवाज़ से इबरानी ज़बान में अवाम से मुख़ातिब
हुआ, "सुनो! शहनशाह, असूर के बादशाह के
फ़रमान पर ध्यान दो! 14बादशाह फ़रमाते हैं
कि हिज़क़ियाह तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें बचा
नहीं सकता। 15बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने
की कोशिश करके कहता है, 'रब हमें ज़रूर
छुटकारा देगा, यह शहर कभी भी असूरी बादशाह
के क़ब्ज़े में नहीं आएगा।' लेकिन इस क़िस्म
की बातों से तसल्ली पाकर रब पर भरोसा मत
करना। 16हिज़क़ियाह की बातें न मानो बल्कि
असूर के बादशाह की। क्योंकि वह फ़रमाते हैं,
मेरे साथ सुलह करो और शहर से निकलकर मेरे
पास आ जाओ। फिर तुममें से हर एक अंगूर की
अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख़्त का फल
खाएगा और अपने हौज़ का पानी पिएगा। 17फिर
कुछ देर के बाद मैं तुम्हें एक ऐसे मुल्क में ले
जाऊँगा जो तुम्हारे अपने मुल्क की मानिंद होगा।
उसमें भी अनाज और नई मै, रोटी और अंगूर के
बाग़ हैं। 18हिज़क़ियाह की मत सुनना। जब वह
कहता है, 'रब हमें बचाएगा' तो वह तुम्हें धोका
दे रहा है। क्या दीगर अक़वाम के देवता अपने
मुल्कों को शाहे-असूर से बचाने के क़ाबिल रहे
हैं? 19हमात और अरफ़ाद के देवता कहाँ रह गए
हैं? सिफ़रवायम के देवता क्या कर सके? और
क्या किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त
से बचाया? 20नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क
मुझसे बचा न सका। तो फिर रब यरूशलम को
किस तरह मुझसे बचाएगा?"

21फ़सील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्होंने
कोई जवाब न दिया, क्योंकि बादशाह ने हुक्म
दिया था कि जवाब में एक लफ़्ज़ भी न
कहें। 22फिर महल का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन
ख़िलक़ियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशीरे-ख़ास
युआख़ बिन आसफ़ रंजिश के मारे अपने लिबास
फाड़कर हिज़क़ियाह के पास वापस गए। दरबार
में पहुँचकर उन्होंने बादशाह को सब कुछ कह
सुनाया जो रबशाक़ी ने उन्हें कहा था।

रब हिज़क़ियाह को तसल्ली देता है

37 यह बातें सुनकर हिज़क़ियाह ने अपने
कपड़े फाड़े और टाट का मातमी

लिबास पहनकर रब के घर में गया। 2साथ
साथ उसने महल के इंचार्ज इलियाक़ीम, मीरमुंशी
शिबनाह और इमामों के बुज़ुर्गों को आमूस के बेटे
यसायाह नबी के पास भेजा। सब टाट के मातमी
लिबास पहने हुए थे। 3नबी के पास पहुँचकर
उन्होंने हिज़क़ियाह का पैग़ाम सुनाया, "आज हम
बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा के इस दिन असूरियों ने
हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती की है। हमारा हाल दर्दे-
ज़ह में मुब्तला उस औरत का-सा है जिसके पेट
से बच्चा निकलने को है, लेकिन जो इसलिए
नहीं निकल सकता कि माँ की ताक़त जाती रही
है। 4लेकिन शायद रब आपके ख़ुदा ने रबशाक़ी
की वह बातें सुनी हों जो उसके आक़ा असूर के
बादशाह ने ज़िंदा ख़ुदा की तौहीन में भेजी हैं। हो
सकता है रब आपका ख़ुदा उस की बातें सुनकर
उसे सज़ा दे। बराहे-करम हमारे लिए जो अब तक
बचे हुए हैं दुआ करें।"

5जब हिज़क़ियाह के अफ़सरों ने यसायाह
को बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया 6तो नबी ने
जवाब दिया, "अपने आक़ा को बता देना कि
रब फ़रमाता है, 'उन धमकियों से ख़ौफ़ मत खा
जो असूरी बादशाह के मुलाज़िमों ने मेरी इहानत
करके दी हैं। 7देख, मैं उसका इरादा बदल दूँगा।
वह अफ़वाह सुनकर इतना मुज़तरिब हो जाएगा
कि अपने ही मुल्क को वापस चला जाएगा। वहाँ
मैं उसे तलवार से मरवा दूँगा'।"

सनहेरिब की धमकियाँ और हिज़क़ियाह की दुआ

8रबशाक़ी यरूशलम को छोड़कर असूर के
बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त
लकीस से रवाना होकर लिबना पर चढ़ाई कर रहा
था।

9फिर सनहेरिब को इत्तला मिली, "एथो-
पिया का बादशाह तिरहाक़ा आपसे लड़ने आ
रहा है।" तब उसने अपने क़ासिदों को दुबारा
यरूशलम भेज दिया ताकि हिज़क़ियाह को पैग़ाम
पहुँचाएँ, 10"जिस देवता पर तुम भरोसा रखते
हो उससे फ़रेब न खाओ जब वह कहता है कि
यरूशलम असूरी बादशाह के क़ब्ज़े में कभी नहीं
आएगा। 11तुम तो सुन चुके हो कि असूर के
बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या कुछ किया है।
हर मुल्क को उन्होंने मुकम्मल तौर पर तबाह कर
दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच जाओगे?
12क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता
उनकी हिफ़ाज़त कर पाए? क्या मुल्के-अदन में
तिलस्सार के बाशिंदे बच सके? नहीं, कोई भी
देवता उनकी मदद न कर सका जब मेरे बापदादा
ने उन्हें तबाह किया। 13ध्यान दो, अब हमात,
अरफ़ाद, सिफ़रवायम शहर, हेना और इव्वा के
बादशाह कहाँ हैं?"

14ख़त मिलने पर हिज़क़ियाह ने उसे पढ़ लिया
और फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को
रब के सामने बिछाकर 15उसने रब से दुआ की,

16"ऐ रब्बुल-अफ़वाज इसराईल के ख़ुदा
जो करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्त-
नशीन है, तू अकेला ही दुनिया के तमाम ममालिक
का ख़ुदा है। तू ही ने आसमानो-ज़मीन को ख़लक़
किया है। 17ऐ रब, मेरी सुन! अपनी आँखें
खोलकर देख! सनहेरिब की उन तमाम बातों पर
ध्यान दे जो उसने इस मक़सद से हम तक पहुँचाई
हैं कि ज़िंदा ख़ुदा की इहानत करे। 18ऐ रब, यह
बात सच है कि असूरी बादशाहों ने इन तमाम
क़ौमों को उनके मुल्कों समेत तबाह कर दिया है।
19वह तो उनके बुतों को आग में फेंककर भस्म
कर सकते थे, क्योंकि वह ज़िंदा नहीं बल्कि सिर्फ़
इनसान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर
के बुत थे। 20ऐ रब हमारे ख़ुदा, अब मैं तुझसे
इलतमास करता हूँ कि हमें असूरी बादशाह के
हाथ से बचा ताकि दुनिया के तमाम ममालिक
जान लें कि तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा है।"

असूरी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

21फिर यसायाह बिन आमूस ने हिज़क़ि-
याह को पैग़ाम भेजा, "रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है कि मैंने असूरी बादशाह सनहेरिब के

बारे में तेरी दुआ सुनी है। 22अब रब का उसके
ख़िलाफ़ फ़रमान सुन,
कुँवारी सिय्यून बेटी तुझे हक़ीर जानती है,
हाँ यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिलाकर
हिक़ारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है।
23क्या तू नहीं जानता कि किस को गालियाँ दीं
और किसकी इहानत की है? क्या तुझे नहीं
मालूम कि तूने किसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद
की है? जिसकी तरफ़ तू ग़ुरूर की नज़र से देख
रहा है वह इसराईल का क़ुद्दूस है!
24अपने क़ासिदों के ज़रीए तूने रब की इहानत
की है। तू डींगें मारकर कहता है, 'मैं अपने बेशुमार
रथों से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की इंतहा
तक चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े और
जूनीपर के बेहतरीन दरख़्तों को काटकर लुबनान
की दूरतरीन बुलंदियों तक, उसके सबसे घने
जंगल तक पहुँच गया हूँ। 25मैंने ग़ैरमुल्कों में कुएँ
खुदवाकर उनका पानी पी लिया है। मेरे तल्वों तले
मिसर की तमाम नदियाँ ख़ुश्क हो गईं।'
26ऐ असूरी बादशाह, क्या तूने नहीं सुना कि
बड़ी देर से मैंने यह सब कुछ मुक़र्रर किया?
क़दीम ज़माने में ही मैंने इसका मनसूबा बाँध
लिया, और अब मैं इसे वुजूद में लाया। मेरी मरज़ी
थी कि तू क़िलाबंद शहरों को ख़ाक में मिलाकर
पत्थर के ढेरों में बदल दे। 27इसी लिए उनके
बाशिंदों की ताक़त जाती रही, वह घबराए और
शरमिंदा हुए। वह घास की तरह कमज़ोर थे, छत
पर उगनेवाली उस हरियाली की मानिंद जो थोड़ी
देर के लिए फलती-फूलती तो है, लेकिन लू चलते
वक़्त एकदम मुरझा जाती है। 28मैं तो तुझसे
ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि तू कहाँ ठहरा
हुआ है, और तेरा आना जाना मुझसे पोशीदा नहीं
रहता। मुझे पता है कि तू मेरे ख़िलाफ़ कितने तैश
में आ गया है। 29तेरा तैश और ग़ुरूर देखकर मैं
तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगाम डालकर
तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा
जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।
30ऐ हिज़क़ियाह, मैं तुझे इस निशान से
तसल्ली दिलाऊँगा कि इस साल और आनेवाले
साल तुम वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद
बख़ुद उगेगा। लेकिन तीसरे साल तुम बीज बोकर
फ़सलें काटोगे और अंगूर के बाग़ लगाकर उनका
फल खाओगे। 31यहूदाह के बचे हुए बाशिंदे एक
बार फिर जड़ पकड़कर फल लाएँगे। 32क्योंकि
यरूशलम से क़ौम का बक़िया निकल आएगा,
और कोहे-सिय्यून का बचा-खुचा हिस्सा दुबारा
मुल्क में फैल जाएगा। रब्बुल-अफ़वाज की ग़ैरत
यह कुछ सरंजाम देगी।
33जहाँ तक असूरी बादशाह का ताल्लुक़ है रब
फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा।
वह एक तीर तक उसमें नहीं चलाएगा। न वह ढाल
लेकर उस पर हमला करेगा, न शहर की फ़सील
के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 34जिस रास्ते से
बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने
मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने
नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 35क्योंकि मैं
अपनी और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर इस
शहर का दिफ़ा करके उसे बचाऊँगा।"
36उसी रात रब का फ़रिश्ता निकल आया और
असूरी लशकरगाह में से गुज़रकर 1,85,000
फ़ौजियों को मार डाला। जब लोग सुबह-सवेरे
उठे तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।
37यह देखकर सनहेरिब अपने ख़ैमे उ-
खाड़कर अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा
शहर पहुँचकर वह वहाँ ठहर गया। 38एक दिन
जब वह अपने देवता निसरूक के मंदिर में पूजा
कर रहा था तो उसके बेटों अद्रम्मलिक और
शराज़र ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया और
फ़रार होकर मुल्के-अरारात में पनाह ली। फिर
उसका बेटा असर्हद्दून तख़्तनशीन हुआ।

अल्लाह हिज़क़ियाह को शफ़ा देता है

38 उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार
हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची।
आमूस का बेटा यसायाह नबी उससे मिलने आया

और कहा, "रब फ़रमाता है कि अपने घर का
बंदोबस्त कर ले, क्योंकि तुझे मरना है। तू इस
बीमारी से शफ़ा नहीं पाएगा।"
2यह सुनकर हिज़क़ियाह ने अपना मुँह दीवार
की तरफ़ फेरकर दुआ की, 3"ऐ रब, याद कर
कि मैं वफ़ादारी और ख़ुलूसदिली से तेरे सामने
चलता रहा हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो
तुझे पसंद है।" फिर वह फूट फूटकर रोने लगा।
4तब यसायाह नबी को रब का कलाम मिला,
5"हिज़क़ियाह के पास जाकर उसे बता देना कि
रब तेरे बाप दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मैंने तेरी
दुआ सुन ली और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तेरी ज़िंदगी
में 15 साल का इज़ाफ़ा करूँगा। 6साथ साथ मैं
तुझे और इस शहर को असूर के बादशाह से बचा
लूँगा। मैं ही इस शहर का दिफ़ा करूँगा'।"
7यह पैग़ाम हिज़क़ियाह को सुनाकर यसायाह
ने मज़ीद कहा, "रब तुझे एक निशान देगा जिससे
तू जान लेगा कि वह अपना वादा पूरा करेगा। 8मेरे
कहने पर आख़ज़ की बनाई हुई धूपघड़ी का साया
दस दर्जे पीछे जाएगा।" और ऐसा ही हुआ। साया
दस दर्जे पीछे हट गया।

शफ़ा पाने पर हिज़क़ियाह का गीत

9यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह ने शफ़ा पाने
पर ज़ैल का गीत क़लमबंद किया,
10"मैं बोला, क्या मुझे ज़िंदगी के उरूज
पर पाताल के दरवाज़ों में दाख़िल होना है?
बाक़ीमाँदा साल मुझसे छीन लिए गए हैं।
11मैं बोला, आइंदा मैं रब को ज़िंदों के मुल्क
में नहीं देखूँगा। अब से मैं पाताल के बाशिंदों के
साथ रहकर इस दुनिया के लोगों पर नज़र नहीं
डालूँगा।
12मेरे घर को गल्लाबानों के ख़ैमे की तरह
उतारा गया है, वह मेरे ऊपर से छीन लिया गया है।
मैंने अपनी ज़िंदगी को जूलाहे की तरह इख़्तिताम
तक बुन लिया है। अब उसने मुझे काटकर ताँत
के धागों से अलग कर दिया है। एक दिन के अंदर
अंदर तूने मुझे ख़त्म किया।
13सुबह तक मैं चीख़कर फ़रियाद करता रहा,
लेकिन उसने शेरबबर की तरह मेरी तमाम हड्डियाँ
तोड़ दीं। एक दिन के अंदर अंदर तूने मुझे ख़त्म
किया।
14मैं बेजान होकर अबाबील या बुलबुल की
तरह चीं चीं करने लगा, ग़ूँ ग़ूँ करके कबूतर की-
सी आहें भरने लगा। मेरी आँखें निढाल होकर
आसमान की तरफ़ तकती रहीं। ऐ रब, मुझ पर
ज़ुल्म हो रहा है। मेरी मदद के लिए आ!

15लेकिन मैं क्या कहूँ? उसने ख़ुद मुझसे
हमकलाम होकर यह किया है। मैं तलख़ियों से
मग़लूब होकर ज़िंदगी के आख़िर तक दबी हुई
हालत में फिरूँगा।
16ऐ रब, इन्हीं चीज़ों के सबब से इनसान ज़िंदा
रहता है, मेरी रूह की ज़िंदगी भी इन्हीं पर मबनी
है। तू मुझे बहाल करके जीने देगा।

17यक़ीनन यह तलख़ तजरबा मेरी बरकत का
बाइस बन गया। तेरी मुहब्बत ने मेरी जान को क़ब्र
से महफ़ूज़ रखा, तूने मेरे तमाम गुनाहों को अपनी
पीठ के पीछे फेंक दिया है।
18क्योंकि पाताल तेरी हम्दो-सना नहीं करता,
और मौत तेरी सताइश में गीत नहीं गाती, ज़मीन
की गहराइयों में उतरे हुए तेरी वफ़ादारी के इंतज़ार
में नहीं रहते।
19नहीं, जो ज़िंदा है वही तेरी तारीफ़ करता,
वही तेरी तमजीद करता है, जिस तरह मैं आज
कर रहा हूँ। पुश्त-दर-पुश्त बाप अपने बच्चों को
तेरी वफ़ादारी के बारे में बताते हैं।
20रब मुझे बचाने के लिए तैयार था। आओ,
हम उम्र-भर रब के घर में तारदार साज़ बजाएँ।"

इलाज का तरीक़े-कार

21यसायाह ने हिदायत दी थी, "अंजीर की
टिक्की लाकर बादशाह के नासूर पर बाँध दो!
तब उसे शफ़ा मिलेगी।" 22पहले हिज़क़ियाह ने
पूछा था, "रब कौन-सा निशान देगा जिससे मुझे

यक़ीन आए कि मैं दुबारा रब के घर की इबादत
में शरीक हूँगा?”

हिज़क़ियाह से संगीन ग़लती होती है

39 थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह
मरूदक-बलदान बिन बलदान ने
हिज़क़ियाह की बीमारी और शफ़ा की ख़बर
सुनकर वफ़्द के हाथ ख़त और तोह्फ़े भेजे।
2हिज़क़ियाह ने ख़ुशी से वफ़्द का इस्तक़बाल
करके उसे वह तमाम ख़ज़ाने दिखाए जो
ज़ख़ीराख़ाने में महफ़ूज़ रखे गए थे यानी तमाम
सोना-चाँदी, बलसान का तेल और बाक़ी क़ीमती
तेल। उसने पूरा असलिहाख़ाना और बाक़ी सब
कुछ भी दिखाया जो उसके ख़ज़ानों में था। पूरे
महल और पूरे मुल्क में कोई ख़ास चीज़ न रही
जो उसने उन्हें न दिखाई।

3तब यसायाह नबी हिज़क़ियाह बादशाह के
पास आया और पूछा, “इन आदमियों ने क्या
कहा? कहाँ से आए हैं?” हिज़क़ियाह ने जवाब
दिया, “दूर-दराज़ मुल्क बाबल से मेरे पास आए
हैं।” 4यसायाह बोला, “उन्होंने महल में क्या कुछ
देखा?” हिज़क़ियाह ने कहा, “उन्होंने महल में
सब कुछ देख लिया है। मेरे ख़ज़ानों में कोई चीज़
न रही जो मैंने उन्हें नहीं दिखाई।”

5तब यसायाह ने कहा, “रब्बुल-अफ़वाज का
फ़रमान सुनें! 6एक दिन आनेवाला है कि तेरे
महल का तमाम माल छीन लिया जाएगा। जितने
भी ख़ज़ाने तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा
किए हैं उन सबको दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब
फ़रमाता है कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी।
7तेरे बेटों में से भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे
जो अब तक पैदा नहीं हुए। तब वह ख़्वाजासरा
बनकर शाहे-बाबल के महल में ख़िदमत करेंगे।”

8हिज़क़ियाह बोला, “रब का जो पैग़ाम आपने
मुझे दिया है वह ठीक है।” क्योंकि उसने सोचा,
“बड़ी बात यह है कि मेरे जीते-जी अमनो-अमान
होगा।”

अल्लाह की क़ौम को तसल्ली

40 तुम्हारा रब फ़रमाता है,
“तसल्ली दो, मेरी क़ौम को तसल्ली
दो! 2नरमी से यरूशलम से बात करो, बुलंद
आवाज़ से उसे बताओ कि तेरी ग़ुलामी के दिन पूरे
हो गए हैं, तेरा क़ुसूर मुआफ़ हो गया है। क्योंकि
तुझे रब के हाथ से तमाम गुनाहों की दुगनी सज़ा
मिल गई है।”

3एक आवाज़ पुकार रही है, “रेगिस्तान में रब
की राह तैयार करो! बयाबान में हमारे ख़ुदा का
रास्ता सीधा बनाओ। 4लाज़िम है कि हर वादी
भर दी जाए, ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलंद
जगह मैदान बन जाए। जो टेढ़ा है उसे सीधा किया
जाए, जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए।
5तब अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा, और
तमाम इनसान मिलकर उसे देखेंगे। यह रब के
अपने मुँह का फ़रमान है।”

6एक आवाज़ ने कहा, “ज़ोर से आवाज़ दे!”
मैंने पूछा, “मैं क्या कहूँ?” “यह कि तमाम
इनसान घास ही हैं, उनकी तमाम शानो-शौकत
जंगली फूल की मानिंद है। 7जब रब का साँस
उन पर से गुज़रे तो घास मुरझा जाती और फूल
गिर जाता है, क्योंकि इनसान घास ही है। 8घास
तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है, लेकिन
हमारे ख़ुदा का कलाम अबद तक क़ायम रहता
है।”

9ऐ सिय्यून, ऐ ख़ुशख़बरी के पैग़ंबर, बुलंदियों
पर चढ़ जा! ऐ यरूशलम, ऐ ख़ुशख़बरी के
पैग़ंबर, ज़ोर से आवाज़ दे! पुकारकर कह और
ख़ौफ़ मत खा। यहूदाह के शहरों को बता, “वह
देखो, तुम्हारा ख़ुदा!”

10देखो, रब क़ादिरे-मुतलक़ बड़ी क़ुदरत के
साथ आ रहा है, वह बड़ी ताक़त के साथ हुकूमत
करेगा। देखो, उसका अज्र उसके पास है, और
उसका इनाम उसके आगे आगे चलता है। 11वह
चरवाहे की तरह अपने गल्ले की गल्लाबानी
करेगा। वह भेड़ के बच्चों को अपने बाज़ुओं में

महफ़ूज़ रखकर सीने के साथ लगाए फिरेगा और उनकी माओं को बड़े ध्यान से अपने साथ ले चलेगा।

अल्लाह की नाक़ाबिले-बयान अज़मत

12किसने अपने हाथ से दुनिया का पानी नाप लिया है? किसने अपने हाथ से आसमान की पैमाइश की है? किसने ज़मीन की मिट्टी की मिक़दार मालूम की या तराज़ू से पहाड़ों का कुल वज़न मुतैयिन किया है?
13किसने रब के रूह की तहक़ीक़ कर पाई? क्या उसका कोई मुशीर है जो उसे तालीम दे?
14क्या उसे किसी से मशवरा लेने की ज़रूरत है ताकि उसे समझ आकर रास्त राह की तालीम मिल जाए? हरगिज़ नहीं! क्या किसी ने कभी उसे इल्मो-इरफ़ान या समझदार ज़िंदगी गुज़ारने का फ़न सिखाया है? हरगिज़ नहीं!

15यक़ीनन तमाम अक़वाम रब के नज़दीक बालटी के एक क़तरे या तराज़ू में गर्द की मानिंद हैं। जज़ीरों को वह रेत के ज़र्रों की तरह उठा लेता है।
16ख़ाह लुबनान के तमाम दरख़्त और जानवर रब के लिए क़ुरबान क्यों न होते तो भी मुनासिब क़ुरबानी के लिए काफ़ी न होते।
17उसके सामने तमाम अक़वाम कुछ भी नहीं हैं। उस की नज़र में वह हेच और नाचीज़ हैं।

18अल्लाह का मुवाज़ना किससे हो सकता है? उसका मुक़ाबला किस तस्वीर या मुजस्समे से हो सकता है?
19बुत तो यों बनता है कि पहले दस्तकार उसे ढाल देता है, फिर सुनार उस पर सोना चढ़ाकर उसे चाँदी की ज़ंजीरों से सजा देता है।
20जो ग़ुरबत के बाइस यह नहीं करवा सकता वह कम अज़ कम कोई ऐसी लकड़ी चुन लेता है जो गल-सड़ नहीं जाती। फिर वह किसी माहिर दस्तकार से बुत को यों बनवाता है कि वह अपनी जगह से न हिले।

21क्या तुमको मालूम नहीं? क्या तुमने बात नहीं सुनी? क्या तुम्हें इब्तिदा से सुनाया नहीं गया? क्या तुम्हें दुनिया के क़ियाम से लेकर आज तक समझ नहीं आई?
22रब रूए-ज़मीन के ऊपर बुलंदियों पर तख़्तनशीन है जहाँ से इनसान टिड्डियों जैसे लगते हैं। वह आसमान को परदे की तरह तानकर और हर तरफ़ खींचकर रहने के क़ाबिल ख़ैमा बना देता है।
23वह सरदारों को नाचीज़ और दुनिया के क़ाज़ियों को हेच बना देता है।
24वह नए पौदों की मानिंद हैं जिनकी पनीरी अभी अभी लगी है, बीज अभी अभी बोए गए हैं, पौदों ने अभी अभी जड़ पकड़ी है कि रब उन पर फूँक मारता है और वह मुरझा जाते हैं। तब आँधी उन्हें भूसे की तरह उड़ा ले जाती है।

25क़ुद्दूस ख़ुदा फ़रमाता है, "तुम मेरा मुवाज़ना किससे करना चाहते हो? कौन मेरे बराबर है?"
26अपनी नज़र उठाकर आसमान की तरफ़ देखो। किसने यह सब कुछ ख़लक़ किया? वह जो आसमानी लशकर की पूरी तादाद बाहर लाकर हर एक को नाम लेकर बुलाता है। उस की क़ुदरत और ज़बरदस्त ताक़त इतनी अज़ीम है कि एक भी दूर नहीं रहता।

27ऐ याक़ूब की क़ौम, तू क्यों कहती है कि मेरी राह रब की नज़र से छुपी रहती है? ऐ इसराईल, तू क्यों शिकायत करता है कि मेरा मामला मेरे ख़ुदा के इल्म में नहीं आता?

28क्या तुझे मालूम नहीं, क्या तूने नहीं सुना कि रब लाज़वाल ख़ुदा और दुनिया की इंतहा तक का ख़ालिक़ है? वह कभी नहीं थकता, कभी निढाल नहीं होता। कोई भी उस की समझ की गहराइयों तक नहीं पहुँच सकता।
29वह थकेमाँदों को ताज़गी और बेबसों को तक़वियत देता है।
30गो नौजवान थककर निढाल हो जाएँ और जवान आदमी ठोकर खाकर गिर जाएँ,
31लेकिन रब से उम्मीद रखनेवाले नई ताक़त पाएँगे और उक़ाब के-से पर फैलाकर बुलंदियों तक उड़ेंगे। न वह दौड़ते हुए थकेंगे, न चलते हुए निढाल हो जाएंगे।

दुश्मन के हमले रब ही की तरफ़ से हैं

41 “ऐ जज़ीरो, ख़ामोश रहकर मेरी
बात सुनो! अक़वाम अज़ सरे-नौ
तक़वियत पाएँ और मेरे हुज़ूर आएँ, फिर बात
करें। आओ, हम एक दूसरे से मिलकर अदालत
में हाज़िर हो जाएँ!
2कौन उस आदमी को जगाकर मशरिक़ से
लाया है जिसके दामन में इनसाफ़ है? कौन दीगर
क़ौमों को इस शख़्स के हवाले करके बादशाहों को
ख़ाक में मिलाता है? उस की तलवार से वह गर्द
हो जाते हैं, उस की कमान से लोग हवा में भूसे की
तरह उड़कर बिखर जाते हैं। 3वह उनका ताक़्क़ुब
करके सहीह-सलामत आगे निकलता है, भागते
हुए उसके पाँव रास्ते को नहीं छूते। 4किसने यह
सब कुछ किया, किसने यह अंजाम दिया? उसी
ने जो इब्तिदा ही से नसलों को बुलाता आया है।
मैं, रब अव्वल हूँ, और आख़िर में आनेवालों के
साथ भी मैं वही हूँ।”
5जज़ीरे यह देखकर डर गए, दुनिया के दूर-
दराज़ इलाक़े काँप उठे हैं। वह क़रीब आते हुए
6एक दूसरे को सहारा देकर कहते हैं, “हौसला
रख!” 7दस्तकार सुनार की हौसलाअफ़्ज़ाई
करता है, और जो बुत की नाहमवारियों को हथौड़े
से ठीक करता है वह अहरन पर काम करनेवाले
की हिम्मत बढ़ाता और टाँके का मुआयना करके
कहता है, “अब ठीक है!” फिर मिलकर बुत को
कीलों से मज़बूत करते हैं ताकि हिले न।

मत डरना, क्योंकि मैं तेरा ख़ुदा हूँ

8“लेकिन तू मेरे ख़ादिम इसराईल, तू फ़रक़
है। ऐ याक़ूब की क़ौम, मैंने तुझे चुन लिया, और
तू मेरे दोस्त इब्राहीम की औलाद है। 9मैं तुझे
पकड़कर दुनिया की इंतहा से लाया, उसके दूर-
दराज़ कोनों से बुलाया। मैंने फ़रमाया, ‘तू मेरा
ख़ादिम है।’ मैंने तुझे रद्द नहीं किया बल्कि तुझे
चुन लिया है। 10चुनाँचे मत डर, क्योंकि मैं तेरे
साथ हूँ। दहशत मत खा, क्योंकि मैं तेरा ख़ुदा
हूँ। मैं तुझे मज़बूत करता, तेरी मदद करता, तुझे
अपने दहने हाथ के इनसाफ़ से क़ायम रखता हूँ।
11देख, जितने भी तेरे ख़िलाफ़ तैश में आ गए हैं
वह सब शरमिंदा हो जाएंगे, उनका मुँह काला हो
जाएगा। तुझसे झगड़नेवाले हेच ही साबित होकर
हलाक हो जाएंगे। 12तब तू अपने मुख़ालिफ़ों का
पता करेगा लेकिन उनका नामो-निशान तक नहीं
मिलेगा। तुझसे लड़नेवाले ख़त्म ही होंगे, ऐसा ही
लगेगा कि वह कभी थे नहीं। 13क्योंकि मैं रब
तेरा ख़ुदा हूँ। मैं तेरे दहने हाथ को पकड़कर तुझे
बताता हूँ, ‘मत डरना, मैं ही तेरी मदद करता हूँ।’
14ऐ कीड़े याक़ूब मत डर, ऐ छोटी क़ौम
इसराईल ख़ौफ़ मत खा। क्योंकि मैं ही तेरी मदद
करूँगा, और जो एवज़ाना देकर तुझे छुड़ा रहा
है वह इसराईल का क़ुद्दूस है।” यह है रब का
फ़रमान। 15“मेरे हाथ से तू गाहने का नया और
मुतअद्दिद तेज़ नोकें रखनेवाला आला बनेगा।
तब तू पहाड़ों को गाहकर रेज़ा रेज़ा कर देगा,
और पहाड़ियाँ भूसे की मानिंद हो जाएँगी। 16तू
उन्हें उछाल उछालकर उड़ाएगा तो हवा उन्हें ले
जाएगी, आँधी उन्हें दूर तक बिखेर देगी। लेकिन
तू रब की ख़ुशी मनाएगा और इसराईल के क़ुद्दूस
पर फ़ख़र करेगा।

अल्लाह रेगिस्तान में पानी मुहैया करता है

17ग़रीब और ज़रूरतमंद पानी की तलाश में
हैं, लेकिन बेफ़ायदा, उनकी ज़बानें प्यास के मारे
ख़ुश्क हो गई हैं। लेकिन मैं, रब उनकी सुनूँगा, मैं
जो इसराईल का ख़ुदा हूँ उन्हें तर्क नहीं करूँगा।
18मैं बंजर बुलंदियों पर नदियाँ जारी करूँगा और
वादियों में चश्मे फूटने दूँगा। मैं रेगिस्तान को
जोहड़ में और सूखी सूखी ज़मीन को पानी के
सोतों में बदल दूँगा। 19मेरे हाथ से रेगिस्तान में
देवदार, कीकर, मेहँदी और ज़ैतून के दरख़्त लगेंगे,
बयाबान में जूनीपर, सनोबर और सरो के दरख़्त
मिलकर उगेंगे। 20मैं यह इसलिए करूँगा कि लोग
ध्यान देकर जान लें कि रब के हाथ ने यह सब कुछ
किया है, कि इसराईल के क़ुद्दूस ने यह पैदा किया
है।”

देवता बेकार हैं

21रब जो याक़ूब का बादशाह है फ़रमाता है,
“आओ, अदालत में अपना मामला पेश करो,
अपने दलायल बयान करो। 22आओ, अपने बुतों
को ले आओ ताकि वह हमें बताएँ कि क्या क्या
पेश आना है। माज़ी में क्या क्या हुआ? बताओ,
ताकि हम ध्यान दें। या हमें मुस्तक़बिल की बातें
सुनाओ, 23वह कुछ जो आनेवाले दिनों में होगा,
ताकि हमें मालूम हो जाए कि तुम देवता हो। कम
अज़ कम कुछ न कुछ करो, ख़ाह अच्छा हो या
बुरा, ताकि हम घबराकर डर जाएँ। 24तुम तो कुछ
भी नहीं हो, और तुम्हारा काम भी बेकार है। जो
तुम्हें चुन लेता है वह क़ाबिले-घिन है।

25अब मैंने शिमाल से एक आदमी को जगा
दिया है, और वह मेरा नाम लेकर मशरिक़ से आ
रहा है। यह शख़्स हुक्मरानों को मिट्टी की तरह
कुचल देता है, उन्हें गारे को नरम करनेवाले कुम्हार
की तरह रौंद देता है। 26किसने इब्तिदा से इसका
एलान किया ताकि हमें इल्म हो? किसने पहले
से इसकी पेशगोई की ताकि हम कहें, ‘उसने
बिलकुल सहीह कहा है’? कोई नहीं था जिसने
पहले से इसका एलान करके इसकी पेशगोई की।
कोई नहीं था जिसने तुम्हारे मुँह से इसके बारे
में एक लफ़्ज़ भी सुना। 27किसने सिय्यून को
पहले बता दिया, ‘वह देखो, तेरा सहारा आने को
है!’ मैं ही ने यह फ़रमाया, मैं ही ने यरूशलम को
ख़ुशख़बरी का पैग़ंबर अता किया।

28लेकिन जब मैं अपने इर्दगिर्द देखता हूँ तो
कोई नहीं है जो मुझे मशवरा दे, कोई नहीं जो मेरे
सवाल का जवाब दे। 29देखो, यह सब धोका ही
धोका हैं। उनके काम हेच और उनके ढाले हुए
मुजस्समे ख़ाली हवा ही हैं।

अल्लाह का पैग़ंबर अक़वाम के लिए मशाले-राह है

42 देखो, मेरा ख़ादिम जिसे मैं क़ायम
रखता हूँ, मेरा बरगुज़ीदा जो मुझे
पसंद है। मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा, और
वह अक़वाम में इनसाफ़ क़ायम करेगा। 2वह
न तो चीख़ेगा, न चिल्लाएगा, गलियों में उस
की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। 3न वह कुचले
हुए सरकंडे को तोड़ेगा, न बुझती हुई बत्ती
को बुझाएगा। वफ़ादारी से वह इनसाफ़ क़ायम
करेगा। 4और जब तक उसने दुनिया में इनसाफ़
क़ायम न कर लिया हो तब तक न उस की बत्ती
बुझेगी, न उसे कुचला जाएगा। जज़ीरे उस की
हिदायत से उम्मीद रखेंगे।”

5रब ख़ुदा ने आसमान को ख़लक़ करके ख़ैमे
की तरह ज़मीन के ऊपर तान लिया। उसी ने
ज़मीन को और जो कुछ उसमें से फूट निकलता है
तश्कील दिया, और उसी ने रूए-ज़मीन पर बसने
और चलनेवालों में दम फूँककर जान डाली। अब
यही ख़ुदा अपने ख़ादिम से फ़रमाता है, 6“मैं, रब
ने इनसाफ़ से तुझे बुलाया है। मैं तेरे हाथ को
पकड़कर तुझे महफ़ूज़ रखूँगा। क्योंकि मैं तुझे
क़ौम का अहद और दीगर अक़वाम की रौशनी
बना दूँगा 7ताकि तू अंधों की आँखें खोले, क़ैदियों
को कोठड़ी से रिहा करे और तारीकी की क़ैद
में बसनेवालों को छुटकारा दे। 8मैं रब हूँ, यही
मेरा नाम है! मैं बरदाश्त नहीं करूँगा कि जो
जलाल मुझे मिलना है वह किसी और को दे दिया
जाए, कि लोग बुतों की तमजीद करें जबकि उन्हें
मेरी तमजीद करनी चाहिए। 9देखो, जिसकी भी
पेशगोई मैंने की थी वह वुक़ू में आया है। अब मैं
नई बातों का एलान करता हूँ। इससे पहले कि
वह वुजूद में आएँ मैं उन्हें तुम्हें सुना देता हूँ।”

रब की तमजीद में गीत गाओ!

10रब की तमजीद में गीत गाओ, दुनिया की
इंतहा तक उस की मद्हसराई करो! ऐ समुंदर के
मुसाफ़िरो और जो कुछ उसमें है, उस की सताइश
करो! ऐ जज़ीरो, अपने बाशिंदों समेत उस की
तारीफ़ करो! 11बयाबान और उसके क़सबे ख़ुशी
के नारे लगाएँ, जिन आबादियों में क़ीदार बसता
है वह शादमान हों। सिला के बाशिंदे बाग़ बाग़
होकर पहाड़ों की चोटियों पर ज़ोर से शादियाना

बजाएँ। 12सब रब को जलाल दें और जज़ीरों तक
उस की तारीफ़ फैलाएँ।

13रब सूरमे की तरह लड़ने के लिए निकलेगा,
फ़ौजी की तरह जोश में आएगा और जंग के नारे
लगा लगाकर अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आएगा।

14वह फ़रमाता है, "मैं बड़ी देर से ख़ामोश रहा
हूँ। मैं चुप रहा और अपने आपको रोकता रहा।
लेकिन अब मैं दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह
कराहता हूँ। मेरा साँस फूल जाता और मैं बेताबी
से हाँपता रहता हूँ। 15मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को
तबाह करके उनकी तमाम हरियाली झुलसा दूँगा।
दरिया ख़ुश्क ज़मीन बन जाएंगे, और जोहड़ सूख
जाएंगे। 16मैं अंधों को ऐसी राहों पर ले चलूँगा
जिनसे वह वाक़िफ़ नहीं होंगे, ग़ैरमानूस रास्तों पर
उनकी राहनुमाई करूँगा। उनके आगे मैं अंधेरे को
रौशन और नाहमवार ज़मीन को हमवार करूँगा।
यह सब कुछ मैं सरंजाम दूँगा, एक बात भी अधूरी
नहीं रह जाएगी।

17लेकिन जो बुतों पर भरोसा रखकर उनसे
कहते हैं, 'तुम हमारे देवता हो' वह सख़्त शर्म
खाकर पीछे हट जाएंगे।

सज़ा का सबब अंधापन है

18ऐ बहरो, सुनो! ऐ अंधो, नज़र उठाओ ताकि
देख सको! 19कौन मेरे ख़ादिम जैसा अंधा है?
कौन मेरे पैग़ंबर जैसा बहरा है, उस जैसा जिसे मैं
भेज रहा हूँ? गो मैंने उसके साथ अहद बाँधा तो
भी रब के ख़ादिम जैसा अंधा और नाबीना कोई
नहीं है। 20गो तूने बहुत कुछ देखा है तूने तवज्जुह
नहीं दी, गो तेरे कान हर बात सुन लेते हैं तू सुनता
नहीं।" 21रब ने अपनी रास्ती की ख़ातिर अपनी
शरीअत की अज़मत और जलाल को बढ़ाया है,
क्योंकि यह उस की मरज़ी थी। 22लेकिन अब
उस की क़ौम को ग़ारत किया गया, सब कुछ लूट
लिया गया है। सबके सब गढ़ों में जकड़े या जेलों
में छुपाए हुए हैं। वह लूट का माल बन गए हैं, और
कोई नहीं है जो उन्हें बचाए। उन्हें छीन लिया गया
है, और कोई नहीं है जो कहे, "उन्हें वापस करो!"

23काश तुममें से कोई ध्यान दे, कोई आइंदा के
लिए तवज्जुह दे। 24सोच लो! किसने इजाज़त
दी कि याक़ूब की औलाद को ग़ारत किया जाए?
किसने इसराईल को लुटेरों के हवाले कर दिया?
क्या यह रब की तरफ़ से नहीं हुआ, जिसके
ख़िलाफ़ हमने गुनाह किया है? लोग तो उस
की राहों पर चलना ही नहीं चाहते थे, वह उस
की शरीअत के ताबे रहने के लिए तैयार ही न
थे। 25इसी वजह से उसने उन पर अपना सख़्त
ग़ज़ब नाज़िल किया, उन्हें शदीद जंग की ज़द में
आने दिया। लेकिन अफ़सोस, गो आग ने क़ौम
को घेरकर झुलसा दिया ताहम उसे समझ नहीं
आई, गो वह भस्म हुई तो भी उसने दिल से सबक़
नहीं सीखा।

रब क़ौम को वतन में वापस लाएगा

43 लेकिन अब रब जिसने तुझे ऐ याक़ूब
ख़लक़ किया और तुझे ऐ इसराईल
तश्कील दिया फ़रमाता है, "ख़ौफ़ मत खा,
क्योंकि मैंने एवज़ाना देकर तुझे छुड़ाया है, मैंने
तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया है, तू मेरा ही है।
2पानी की गहराइयों में से गुज़रते वक़्त मैं तेरे साथ
हूँगा, दरियाओं को पार करते वक़्त तू नहीं डूबेगा।
आग में से गुज़रते वक़्त न तू झुलस जाएगा,
न शोलों से भस्म हो जाएगा। 3क्योंकि मैं रब
तेरा ख़ुदा हूँ, मैं इसराईल का क़ुद्दूस और तेरा
नजातदहिंदा हूँ। तुझे छुड़ाने के लिए मैं एवज़ाना
के तौर पर मिसर देता, तेरी जगह एथोपिया और
सिबा अदा करता हूँ। 4तू मेरी नज़र में क़ीमती
और अज़ीज़ है, तू मुझे प्यारा है, इसलिए मैं तेरे
बदले में लोग और तेरी जान के एवज़ क़ौमें अदा
करता हूँ।

5चुनाँचे मत डरना, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं
तेरी औलाद को मशरिक़ और मग़रिब से जमा
करके वापस लाऊँगा। 6शिमाल को मैं हुक्म दूँगा,
'मुझे दो!' और जुनूब को, 'उन्हें मत रोकना!'
मेरे बेटे-बेटियों को दुनिया की इंतहा से वापस ले
आओ, 7उन सबको जो मेरा नाम रखते हैं और

जिन्हें मैंने अपने जलाल की ख़ातिर ख़लक़ किया,
जिन्हें मैंने तश्कील देकर बनाया है।”

8उस क़ौम को निकाल लाओ जो आँखें रखने
के बावुजूद देख नहीं सकती, जो कान रखने के
बावुजूद सुन नहीं सकती। 9तमाम ग़ैरक़ौमें जमा
हो जाएँ, तमाम उम्मतें इकट्ठी हो जाएँ। उनमें
से कौन इसकी पेशगोई कर सकता, कौन माज़ी
की बातें सुना सकता है? वह अपने गवाहों को
पेश करें जो उन्हें दुरुस्त साबित करें, ताकि लोग
सुनकर कहें, “उनकी बात बिलकुल सहीह है।”
10लेकिन रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईली क़ौम,
तुम ही मेरे गवाह हो, तुम ही मेरे ख़ादिम हो
जिसे मैंने चुन लिया ताकि तुम जान लो, मुझ
पर ईमान लाओ और पहचान लो कि मैं ही हूँ।
न मुझसे पहले कोई ख़ुदा वुजूद में आया, न मेरे
बाद कोई आएगा। 11मैं, सिर्फ़ मैं रब हूँ, और मेरे
सिवा कोई और नजातदहिंदा नहीं है। 12मैं ही ने
इसका एलान करके तुम्हें छुटकारा दिया, मैं ही
तुम्हें अपना कलाम पहुँचाता रहा। और यह तुम्हारे
दरमियान के किसी अजनबी माबूद से कभी नहीं
हुआ बल्कि सिर्फ़ मुझी से। तुम ही मेरे गवाह
हो कि मैं ही ख़ुदा हूँ।” यह रब का फ़रमान है।
13“अज़ल से मैं वही हूँ। कोई नहीं है जो मेरे हाथ
से छुड़ा सके। जब मैं कुछ अमल में लाता हूँ तो
कौन इसे बदल सकता है?”

14रब जो तुम्हारा छुड़ानेवाला और इस-
राईल का क़ुद्दूस है फ़रमाता है, “तुम्हारी ख़ातिर
मैं बाबल के ख़िलाफ़ फ़ौज भेजकर तमाम कुंडे
तुड़वा दूँगा। तब बाबल की शादमानी गिर्याओ-
ज़ारी में बदल जाएगी। 15मैं रब हूँ, तुम्हारा क़ुद्दूस
जो इसराईल का ख़ालिक़ और तुम्हारा बादशाह
है।”

16रब फ़रमाता है, “मैं ही ने समुंदर में से गुज़रने
की राह और गहरे पानी में से रास्ता बना दिया।
17मेरे कहने पर मिसर की फ़ौज अपने सूरमाओं,
रथों और घोड़ों समेत लड़ने के लिए निकल आई।
अब वह मिलकर समुंदर की तह में पड़े हुए हैं और
दुबारा कभी नहीं उठेंगे। वह बत्ती की तरह बुझ
गए। 18लेकिन माज़ी की बातें छोड़ दो, जो कुछ
गुज़र गया है उस पर ध्यान न दो। 19क्योंकि देखो,
मैं एक नया काम वुजूद में ला रहा हूँ जो अभी फूट
निकलने को है। क्या यह तुम्हें नज़र नहीं आ रहा?
मैं रेगिस्तान में रास्ता और बयाबान में नहरें बना
रहा हूँ। 20जंगली जानवर, गीदड़ और उक़ाबी
उल्लू मेरा एहतराम करेंगे, क्योंकि मैं रेगिस्तान
में पानी मुहैया करूँगा, बयाबान में नहरें बनाऊँगा
ताकि अपनी बरगुज़ीदा क़ौम को पानी पिलाऊँ।
21जो क़ौम मैंने अपने लिए तश्कील दी है वह मेरे
काम सुनाकर मेरी तमजीद करे।

रब इसराईल के गुनाहों से तंग आ गया है

22ऐ याक़ूब की औलाद, ऐ इसराईल, बात
यह नहीं कि तूने मुझसे फ़रियाद की, कि तू
मेरी मरज़ी दरियाफ़्त करने के लिए कोशाँ रहा।
23क्योंकि न तूने मेरे लिए अपनी भेड़-बकरियाँ
भस्म कीं, न अपनी ज़बह की क़ुरबानियों से
मेरा एहतराम किया। न मैंने ग़ल्ला की नज़रों से
तुझ पर बोझ डाला, न बख़ूर की क़ुरबानी से
तंग किया। 24तूने न मेरे लिए क़ीमती मसाला
ख़रीदा, न मुझे अपनी क़ुरबानियों की चरबी से
ख़ुश किया। इसके बरअक्स तूने अपने गुनाहों
से मुझ पर बोझ डाला और अपनी बुरी हरकतों
से मुझे तंग किया। 25ताहम मैं, हाँ मैं ही अपनी
ख़ातिर तेरे जरायम को मिटा देता और तेरे गुनाहों
को ज़हन से निकाल देता हूँ।

26जा, कचहरी में मेरे ख़िलाफ़ मुक़दमा दायर
कर! आ, हम दोनों अदालत में हाज़िर हो जाएँ!
अपना मामला पेश कर ताकि तू बेक़ुसूर साबित
हो। 27शुरू में तेरे ख़ानदान के बानी ने गुनाह
किया, और उस वक़्त से लेकर आज तक तेरे
नुमाइंदे मुझसे बेवफ़ा होते आए हैं। 28इसलिए
मैं मक़दिस के बुज़ुर्गों को यों रुसवा करूँगा कि
उनकी मुक़द्दस हालत जाती रहेगी, मैं याक़ूब की
औलाद इसराईल को मुकम्मल तबाही और लान-
तान के लिए मख़सूस करूँगा।

रब की क़ौम के लिए नई ज़िंदगी

44 लेकिन अब सुन, ऐ याक़ूब मेरे
ख़ादिम! मेरी बात पर तवज्जुह दे,
ऐ इसराईल जिसे मैंने चुन लिया है। 2रब जिसने
तुझे बनाया और माँ के पेट से ही तश्कील देकर
तेरी मदद करता आया है वह फ़रमाता है, 'ऐ
याक़ूब मेरे ख़ादिम, मत डर! ऐ यसूरून जिसे मैंने
चुन लिया है, ख़ौफ़ न खा। 3क्योंकि मैं प्यासी
ज़मीन पर पानी डालूँगा और ख़ुश्की पर नदियाँ
बहने दूँगा। मैं अपना रूह तेरी औलाद पर नाज़िल
करूँगा, अपनी बरकत तेरे बच्चों को बख़्शूँगा।
4तब वह पानी के दरमियान की हरियाली की
तरह फूट निकलेंगे, नहरों पर सफ़ेदा के दरख़्तों
की तरह फलें-फूलेंगे।'

5एक कहेगा, 'मैं रब का हूँ,' दूसरा याक़ूब का
नाम लेकर पुकारेगा और तीसरा अपने हाथ पर
'रब का बंदा' लिखकर इसराईल का एज़ाज़ी नाम
रखेगा।"

6रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का बाद-
शाह और छुड़ानेवाला है फ़रमाता है, "मैं अव्वल
और आख़िर हूँ। मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है।
7कौन मेरी मानिंद है? वह आवाज़ देकर बताए
और अपने दलायल पेश करे। वह तरतीब से सब
कुछ सुनाए जो उस क़दीम वक़्त से हुआ है जब
मैंने अपनी क़ौम को क़ायम किया। वह आनेवाली
बातों का एलान करके बताए कि आइंदा क्या कुछ
पेश आएगा।

8घबराकर दहशतज़दा न हो। क्या मैंने बहुत
देर पहले तुझे इत्तला नहीं दी थी कि यह कुछ
पेश आएगा? तुम ख़ुद मेरे गवाह हो। क्या मेरे
सिवा कोई और ख़ुदा है? हरगिज़ नहीं! और कोई
चट्टान नहीं है, मैं किसी और को नहीं जानता।"

ख़ुदसाख़्ता देवता

9बुत बनानेवाले सब हेच ही हैं, और जो चीज़ें
उन्हें प्यारी लगती हैं वह बेफ़ायदा हैं। उनके गवाह
न देख और न जान सकते हैं, लिहाज़ा आख़िरकार
शरमिंदा हो जाएंगे।

10यह किस तरह के लोग हैं जो अपने लिए
देवता बनाते और बेफ़ायदा बुत ढाल लेते हैं?
11उनके तमाम साथी शरमिंदा हो जाएंगे। आख़िर
बुत बनानेवाले इनसान ही तो हैं। आओ, वह सब
जमा होकर ख़ुदा के हुज़ूर खड़े हो जाएँ। क्योंकि
वह दहशत खाकर सख़्त शरमिंदा हो जाएंगे।

12लोहार औज़ार लेकर उसे जलते हुए कोयलों
में इस्तेमाल करता है। फिर वह अपने हथौड़े से
ठोंक ठोंककर बुत को तश्कील देता है। पूरे ज़ोर
से काम करते करते वह ताक़त के जवाब देने तक
भूका हो जाता, पानी न पीने की वजह से निढाल
हो जाता है। 13जब बुत को लकड़ी से बनाना है
तो कारीगर फ़ीते से नापकर पेंसिल से लकड़ी पर
ख़ाका खींचता है। परकार भी काम आ जाता है।
फिर कारीगर लकड़ी को छुरी से तराश तराशकर
आदमी की शक्ल बनाता है। यों शानदार आदमी
का मुजस्समा किसी के घर में लगने के लिए तैयार
हो जाता है।

14कारीगर बुत बनाने के लिए देवदार का दरख़्त
काट लेता है। कभी कभी वह बलूत या किसी
और क़िस्म का दरख़्त चुनकर उसे जंगल के दीगर
दरख़्तों के बीच में उगने देता है। या वह सनोबर[a]
का दरख़्त लगाता है, और बारिश उसे फलने-
फूलने देती है। 15ध्यान दो कि इनसान लकड़ी
को ईंधन के लिए भी इस्तेमाल करता, कुछ
लेकर आग तापता, कुछ जलाकर रोटी पकाता
है। बाक़ी हिस्से से वह बुत बनाकर उसे सिजदा
करता, देवता का मुजस्समा तैयार करके उसके
सामने झुक जाता है। 16वह लकड़ी का आधा
हिस्सा जलाकर उस पर अपना गोश्त भूनता, फिर
जी भरकर खाना खाता है। साथ साथ वह आग
सेंककर कहता है, "वाह, आग की गरमी कितनी
अच्छी लग रही है, अब गरमी महसूस हो रही है।"
17लेकिन बाक़ी लकड़ी से वह अपने लिए देवता

[a]शायद इबरानी लफ़्ज़ से मुराद सनोबर नहीं बल्कि laurel हो, एक छोटा सदाबहार काफ़ूरी दरख़्त।

का बुत बनाता है जिसके सामने वह झुककर पूजा
करता है। उससे वह इलतमास करता है, "मुझे
बचा, क्योंकि तू मेरा देवता है।"
18यह लोग कुछ नहीं जानते, कुछ नहीं
समझते। उनकी आँखों और दिलों पर परदा पड़ा
है, इसलिए न वह देख सकते, न समझ सकते
हैं। 19वह इस पर ग़ौर नहीं करते, उन्हें फ़हम और
समझ तक नहीं कि सोचें, "मैंने लकड़ी का आधा
हिस्सा आग में झोंककर उसके कोयलों पर रोटी
पकाई और गोश्त भून लिया। यह चीज़ें खाने के
बाद मैं बाक़ी लकड़ी से क़ाबिले-घिन बुत क्यों
बनाऊँ, लकड़ी के टुकड़े के सामने क्यों झुक
जाऊँ?" 20जो यों राख में मुलव्वस हो जाए उसने
धोका खाया, उसके दिल ने उसे फ़रेब दिया है।
वह अपनी जान छुड़ाकर नहीं मान सकता कि जो
बुत मैं दहने हाथ में थामे हुए हूँ वह झूट है।

रब अपनी क़ौम को आज़ाद करता है

21"ऐ याक़ूब की औलाद, ऐ इसराईल, याद
रख कि तू मेरा ख़ादिम है। मैंने तुझे तश्कील दिया,
तू मेरा ही ख़ादिम है। ऐ इसराईल, मैं तुझे कभी
नहीं भूलूँगा। 22मैंने तेरे जरायम और गुनाहों को
मिटा डाला है, वह धूप में धुंध या तेज़ हवा से
बिखरे बादलों की तरह ओझल हो गए हैं। अब
मेरे पास वापस आ, क्योंकि मैंने एवज़ाना देकर
तुझे छुड़ाया है।"
23ऐ आसमान, ख़ुशी के नारे लगा, क्योंकि रब
ने सब कुछ किया है। ऐ ज़मीन की गहराइयो,
शादियाना बजाओ! ऐ पहाड़ो और जंगलो,
अपने तमाम दरख़्तों समेत ख़ुशी के गीत गाओ,
क्योंकि रब ने एवज़ाना देकर याक़ूब को छुड़ाया
है, इसराईल में उसने अपना जलाल ज़ाहिर किया
है।
24रब तेरा छुड़ानेवाला जिसने तुझे माँ के पेट
से ही तश्कील दिया फ़रमाता है, "मैं रब हूँ।
मैं ही सब कुछ वुजूद में लाया, मैंने अकेले
ही आसमान को ज़मीन के ऊपर तान लिया
और ज़मीन को बिछाया। 25मैं ही क़िस्मत का
हाल बतानेवालों के अजीबो-ग़रीब निशान नाकाम
होने देता, फ़ाल खोलनेवालों को अहमक़ साबित
करता और दानाओं को पीछे हटाकर उनके इल्म
की हमाक़त ज़ाहिर करता हूँ। 26मैं ही अपने
ख़ादिम का कलाम पूरा होने देता और अपने
पैग़ंबरों का मनसूबा तकमील तक पहुँचाता हूँ, मैं
ही यरूशलम के बारे में फ़रमाता हूँ, 'वह दुबारा
आबाद हो जाएगा,' और यहूदाह के शहरों के बारे
में, 'वह नए सिरे से तामीर हो जाएंगे, मैं उनके
खंडरात दुबारा खड़े करूँगा।' 27मैं ही गहरे समुंदर
को हुक्म देता हूँ, 'सूख जा, मैं तेरी गहराइयों
को ख़ुश्क करता हूँ।' 28और मैं ही ने ख़ोरस के
बारे में फ़रमाया, 'यह मेरा गल्लाबान है! यही
मेरी मरज़ी पूरी करके कहेगा कि यरूशलम दुबारा
तामीर किया जाए, रब के घर की बुनियाद नए
सिरे से रखी जाए'!"

ख़ोरस रब का आलाए-कार है

45 रब अपने मसह किए हुए ख़ादिम
ख़ोरस से फ़रमाता है, "मैंने तेरे दहने
हाथ को पकड़ लिया है, इसलिए जहाँ भी तू
जाए वहाँ क़ौमें तेरे ताबे हो जाएँगी, बादशाहों
की ताक़त जाती रहेगी, दरवाज़े खुल जाएंगे और
शहर के दरवाज़े बंद नहीं रहेंगे। 2मैं ख़ुद तेरे
आगे आगे जाकर क़िलाबंदियों को ज़मीनबोस
कर दूँगा। मैं पीतल के दरवाज़े टुकड़े टुकड़े करके
तमाम कुंडे तुड़वा दूँगा। 3मैं तुझे अंधेरे में छुपे
ख़ज़ाने और पोशीदा मालो-दौलत अता करूँगा
ताकि तू जान ले कि मैं रब हूँ जो तेरा नाम
लेकर तुझे बुलाता है, कि मैं इसराईल का ख़ुदा
हूँ। 4गो तू मुझे नहीं जानता था, लेकिन अपने
ख़ादिम याक़ूब की ख़ातिर मैंने तेरा नाम लेकर
तुझे बुलाया, अपने बरगुज़ीदा इसराईल के वास्ते
तुझे एज़ाज़ी नाम से नवाज़ा है।
5मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और ख़ुदा
नहीं है। गो तू मुझे नहीं जानता था तो भी मैं तुझे
कमरबस्ता करता हूँ 6ताकि मशरिक़ से मग़रिब
तक इनसान जान लें कि मेरे सिवा कोई और नहीं

है। मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नहीं है।
7मैं ही रौशनी को तश्कील देता और अंधेरे को
वुजूद में लाता हूँ, मैं ही अच्छे और बुरे हालात
पैदा करता, मैं रब ही यह सब कुछ करता हूँ।
8ऐ आसमान, रास्ती की बूँदा-बाँदी से ज़मीन को
तरो-ताज़ा कर! ऐ बादलो, सदाक़त बरसाओ!
ज़मीन खुलकर नजात का फल लाए और रास्ती
का पौदा फूटने दे। मैं रब ही उसे वुजूद में लाया
हूँ।"

अपने ख़ालिक़ पर इलज़ाम लगाने वाले पर अफ़सोस

9उस पर अफ़सोस जो अपने ख़ालिक़ से
झगड़ा करता है, गो वह मिट्टी के टूटे-फूटे बरतनों
का ठीकरा ही है। क्या गारा कुम्हार से पूछता है,
"तू क्या बना रहा है?" क्या तेरी बनाई हुई कोई
चीज़ तेरे बारे में शिकायत करती है, "उस की कोई
ताक़त नहीं"? 10उस पर अफ़सोस जो बाप से
सवाल करे, "तू क्यों बाप बन रहा है?" या औरत
से, "तू क्यों बच्चा जन्म दे रही है?"

11रब जो इसराईल का क़ुद्दूस और उसे
तश्कील देनेवाला है फ़रमाता है, "तुम किस तरह
मेरे बच्चों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर सकते हो?
जो कुछ मेरे हाथों ने बनाया उसके बारे में तुम कैसे
मुझे हुक्म दे सकते हो? 12मैं ही ने ज़मीन को
बनाकर इनसान को उस पर ख़लक़ किया। मेरे
अपने हाथों ने आसमान को ख़ैमे की तरह उसके
ऊपर तान लिया और मैं ही ने उसके सितारों के पूरे
लशकर को तरतीब दिया। 13मैं ही ने ख़ोरस को
इनसाफ़ से जगा दिया, और मैं ही उसके तमाम
रास्ते सीधे बना देता हूँ। वह मेरे शहर को नए सिरे
से तामीर करेगा और मेरे जिलावतनों को आज़ाद
करेगा। और यह सब कुछ मुफ़्त में होगा, न वह
पैसे लेगा, न तोह्फ़े।" यह रब्बुल-अफ़वाज का
फ़रमान है।

रब वाहिद ख़ुदा है

14रब फ़रमाता है, "मिसर की दौलत,
एथोपिया का तिजारती माल और सिबा के
दराज़क़द अफ़राद तेरे मातहत होकर तेरी
मिलकियत बन जाएंगे। वह तेरे पीछे चलेंगे,
ज़ंजीरों में जकड़े तेरे ताबे हो जाएंगे। तेरे
सामने झुककर वह इलतमास करके कहेंगे,
'यक़ीनन अल्लाह तेरे साथ है। उसके सिवा कोई
और ख़ुदा है नहीं'।" 15ऐ इसराईल के ख़ुदा
और नजातदहिंदा, यक़ीनन तू अपने आपको
छुपाए रखनेवाला ख़ुदा है। 16बुत बनानेवाले सब
शरमिंदा हो जाएंगे। उनके मुँह काले हो जाएंगे,
और वह मिलकर शर्मसार हालत में चले जाएंगे।
17लेकिन इसराईल को छुटकारा मिलेगा, रब उसे
अबदी नजात देगा। तब तुम्हारी रुसवाई कभी नहीं
होगी, तुम हमेशा तक शरमिंदा होने से महफ़ूज़
रहोगे।

18क्योंकि रब फ़रमाता है, "मैं ही रब हूँ, और
मेरे सिवा कोई और नहीं है! जो यह फ़रमाता है
वह ख़ुदा है, जिसने आसमान को ख़लक़ किया
और ज़मीन को तश्कील देकर महफ़ूज़ बुनियाद
पर रखा। और ज़मीन सुनसान बयाबान न रही
बल्कि उसने उसे बसने के क़ाबिल बना दिया
ताकि जानदार उसमें रह सकें। 19मैंने पोशीदगी
में या दुनिया के किसी तारीक कोने से बात नहीं
की। मैंने याक़ूब की औलाद से यह भी नहीं कहा,
'बेशक मुझे तलाश करो, लेकिन तुम मुझे नहीं
पाओगे।' नहीं, मैं रब ही हूँ, जो इनसाफ़ बयान
करता, सच्चाई का एलान करता है।

20तुम जो दीगर अक़वाम से बच निकले हो
आओ, जमा हो जाओ। मिलकर मेरे हुज़ूर हाज़िर
हो जाओ! जो लकड़ी के बुत उठाकर अपने साथ
लिए फिरते हैं वह कुछ नहीं जानते! जो देवता
छुटकारा नहीं दे सकते उनसे वह क्यों इल्तिजा
करते हैं? 21आओ, अपना मामला सुनाओ,
अपने दलायल पेश करो! बेशक पहले एक
दूसरे से मशवरा करो। किसने बड़ी देर पहले यह

कुछ सुनाया था? क्या मैं, रब ने तवील अरसा
पहले इसका एलान नहीं किया था? क्योंकि मेरे
सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। मैं रास्त ख़ुदा और
नजातदहिंदा हूँ। मेरे सिवा कोई और नहीं है।

22ऐ ज़मीन की इंतहाओ, सब मेरी तरफ़ रुजू
करके नजात पाओ! क्योंकि मैं ही ख़ुदा हूँ, मेरे
सिवा कोई और नहीं है। 23मैंने अपने नाम की
क़सम खाकर फ़रमाया है, और मेरा फ़रमान रास्त
है, वह कभी मनसूख़ नहीं होगा। फ़रमान यह है
कि मेरे सामने हर घुटना झुकेगा और हर ज़बान
मेरी क़सम खा कर 24कहेगी, 'रब ही रास्ती और
क़ुव्वत का मंबा है'!"

जो पहले तैश में आकर रब की मुख़ालफ़त
करते थे वह भी सब शरमिंदा होकर उसके हुज़ूर
आएँगे। 25लेकिन इसराईल की तमाम औलाद
रब में रास्तबाज़ ठहरकर उस पर फ़ख़र करेगी।

देवता मदद नहीं कर सकते

46 बाबल के देवता बेल और नबू झुककर
गिर गए हैं, और लादू जानवर उनके
बुतों को उठाए फिर रहे हैं। तुम्हारे जो बुत उठाए
जा सकते हैं थकेहारे जानवरों का बोझ बन गए
हैं। 2क्योंकि दोनों देवता झुककर गिर गए हैं।
वह बोझ बनने से बच न सके, और अब ख़ुद
जिलावतनी में जा रहे हैं।

3"ऐ याक़ूब के घराने, सुनो! ऐ इसराईल के
घराने के बचे हुए अफ़राद, ध्यान दो! माँ के पेट से
ही तुम मेरे लिए बोझ रहे हो, पैदाइश से पहले ही
मैं तुम्हें उठाए फिर रहा हूँ। 4तुम्हारे बूढ़े होने तक
मैं वही रहूँगा, तुम्हारे बाल के सफ़ेद हो जाने तक
तुम्हें उठाए फिरूँगा। यह इब्तिदा से मेरा ही काम
रहा है, और आइंदा भी मैं तुझे उठाए फिरूँगा,
आइंदा भी तेरा सहारा बनकर तुझे बचाए रखूँगा।

5तुम मेरा मुक़ाबला किससे करोगे, मुझे
किसके बराबर ठहराओगे? तुम मेरा मुवाज़ना
किससे करोगे जो मेरी मानिंद हो? 6लोग
बुत बनवाने के लिए बटवे से कसरत का सोना
निकालते और चाँदी तराज़ू में तोलते हैं। फिर वह
सुनार को बुत बनाने का ठेका देते हैं। जब तैयार
हो जाए तो वह झुककर मुँह के बल उस की पूजा
करते हैं। 7वह उसे अपने कंधों पर रखकर इधर-
उधर लिए फिरते हैं, फिर उसे दुबारा उस की जगह
पर रख देते हैं। वहाँ वह खड़ा रहता है और ज़रा
भी नहीं हिलता। लोग चिल्लाकर उससे फ़रियाद
करते हैं, लेकिन वह जवाब नहीं देता, दुआगो को
मुसीबत से नहीं बचाता।

8ऐ बेवफ़ा लोगो, इसका ख़याल रखो!
मरदानगी दिखाकर संजीदगी से इस पर ध्यान दो!
9जो कुछ अज़ल से पेश आया है उसे याद रखो।
क्योंकि मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और
नहीं। मैं ही रब हूँ, और मेरी मानिंद कोई नहीं।

10मैं इब्तिदा से अंजाम का एलान, क़दीम
ज़माने से आनेवाली बातों की पेशगोई करता
आया हूँ। अब मैं फ़रमाता हूँ कि मेरा मनसूबा
अटल है, मैं अपनी मरज़ी हर लिहाज़ से पूरी
करूँगा। 11मशरिक़ से मैं शिकारी परिंदा बुला रहा
हूँ, दूर-दराज़ मुल्क से एक ऐसा आदमी जो मेरा
मनसूबा पूरा करे। ध्यान दो, जो कुछ मैंने फ़रमाया
वह तकमील तक पहुँचाऊँगा, जो मनसूबा मैंने
बाँधा वह पूरा करूँगा।

12ऐ ज़िद्दी लोगो जो रास्ती से कहीं दूर हो, मेरी
सुनो! 13मैं अपनी रास्ती क़रीब ही लाया हूँ, वह
दूर नहीं है। मेरी नजात के आने में देर नहीं होगी।
मैं सिय्यून को नजात दूँगा, इसराईल को अपनी
शानो-शौकत से नवाज़ूँगा।

रब बाबल को सज़ा देगा

47 ऐ कुँवारी बाबल बेटी, उतर जा!
ख़ाक में बैठ जा! ऐ बाबलियों की
बेटी, ज़मीन पर बैठ जा जहाँ तख़्त नहीं है! अब
से लोग तुझसे नहीं कहेंगे, 'ऐ मेरी नाज़-परवर्दा,
ऐ मेरी लाडली!'

2अब चक्की लेकर आटा पीस! अपना निक़ाब
हटा, अपने लिबास का दामन उठा, अपनी टाँगों
को उरियाँ करके नदियाँ पार कर। 3तेरी बरहनगी
सब पर ज़ाहिर होगी, सब तेरी शर्मसार हालत

देखेंगे। क्योंकि मैं बदला लेकर किसी को नहीं
छोड़ूँगा।”
4जिसने एवज़ाना देकर हमें छुड़ाया है वही यह
फ़रमाता है, वह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है
और जो इसराईल का क़ुद्दूस है।
5“ऐ बाबलियों की बेटी, चुपके से बैठ जा!
तारीकी में छुप जा! आइंदा तू ‘ममालिक की
मलिका’ नहीं कहलाएगी।
6जब मुझे अपनी क़ौम पर ग़ुस्सा आया तो मैंने
उसे यों रुसवा किया कि उस की मुक़द्दस हालत
जाती रही, गो वह मेरा मौरूसी हिस्सा थी। उस
वक़्त मैंने उन्हें तेरे हवाले कर दिया, लेकिन तूने
उन पर रहम न किया बल्कि बूढ़ों की गरदन पर
भी अपना भारी जुआ रख दिया। 7तू बोली, ‘मैं
अबद तक मलिका ही रहूँगी!’ तूने संजीदगी से
ध्यान न दिया, न इसके अंजाम पर ग़ौर किया।
8अब सुन, ऐ ऐयाश, तू जो अपने आपको
महफ़ूज़ समझकर कहती है, ‘मैं ही हूँ, मेरे सिवा
कोई और नहीं है। मैं न कभी बेवा, न कभी
बेऔलाद हूँगी।’ 9मैं फ़रमाता हूँ कि एक ही दिन
और एक ही लमहे में तू बेऔलाद भी बनेगी और
बेवा भी। तेरे सारे ज़बरदस्त जादूमंत्र के बावुजूद
यह आफ़त पूरे ज़ोर से तुझ पर आएगी।
10तूने अपनी बदकारी पर एतमाद करके
सोचा, ‘कोई नहीं मुझे देखता।’ लेकिन तेरी
‘हिक्मत’ और ‘इल्म’ तुझे ग़लत राह पर लाया
है। उनकी बिना पर तूने दिल में कहा, ‘मैं ही हूँ,
मेरे सिवा कोई और नहीं है।’ 11अब तुझ पर ऐसी
आफ़त आएगी जिसे तेरे जादूमंत्र दूर करने नहीं
पाएँगे, तू ऐसी मुसीबत में फँस जाएगी जिससे
निपट नहीं सकेगी। अचानक ही तुझ पर तबाही
नाज़िल होगी, और तू उसके लिए तैयार ही नहीं
होगी। 12अब खड़ी हो जा, अपने जादू-टोने का
पूरा ख़ज़ाना खोलकर सब कुछ इस्तेमाल में ला
जो तूने जवानी से बड़ी मेहनत-मशक़्क़त के साथ
अपना लिया है। शायद फ़ायदा हो, शायद तू लोगों
को डराकर भगा सके।
13लेकिन दूसरों के बेशुमार मशवरे बेकार हैं,
उन्होंने तुझे सिर्फ़ थका दिया है। अब तेरे नजूमी
खड़े हो जाएँ, जो सितारों को देख देखकर हर
महीने पेशगोइयाँ करते हैं वह सामने आकर
तुझे उससे बचाएँ जो तुझ पर आनेवाला है।
14यक़ीनन वह आग में जलनेवाला भूसा ही हैं जो
अपनी जान को शोलों से बचा नहीं सकते। और
यह कोयलों की आग नहीं होगी जिसके सामने
इनसान बैठकर आग ताप सके।
15यही उन सबका हाल है जिन पर तूने मेहनत
की है और जो तेरी जवानी से तेरे साथ तिजारत
करते रहे हैं। हर एक लड़खड़ाते हुए अपनी अपनी
राह इख़्तियार करेगा, और एक भी नहीं होगा जो
तुझे बचाए।

रब अपने नाम की ख़ातिर इसराईल को बचाएगा

48 ऐ याक़ूब के घराने, सुनो! तुम
जो इसराईल कहलाते और यहू-
दाह के क़बीले के हो, ध्यान दो! तुम जो रब
के नाम की क़सम खाकर इसराईल के ख़ुदा को
याद करते हो, अगरचे तुम्हारी बात न सच्चाई, न
इनसाफ़ पर मबनी है, ग़ौर करो! 2हाँ तवज्जुह
दो, तुम जो मुक़द्दस शहर के लोग कहलाते और
इसराईल के ख़ुदा पर एतमाद करते हो, सुनो कि
अल्लाह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है क्या
फ़रमाता है।
3जो कुछ पेश आया है उसका एलान मैंने बड़ी
देर पहले किया। मेरे ही मुँह से उस की पेशगोई
सादिर हुई, मैं ही ने उस की इत्तला दी। फिर
अचानक ही मैं उसे अमल में लाया और वह
वुक़ूपज़ीर हुआ। 4मैं जानता था कि तू कितना
ज़िद्दी है। तेरे गले की नसें लोहे जैसी बे-लचक और
तेरी पेशानी पीतल जैसी सख़्त है। 5यह जानकर
मैंने बड़ी देर पहले इन बातों की पेशगोई की।
उनके पेश आने से पहले मैंने तुझे उनकी ख़बर
दी ताकि तू दावा न कर सके, ‘मेरे बुत ने यह कुछ
किया, मेरे तराशे और ढाले गए देवता ने इसका

हुक्म दिया।’ 6अब जब तूने यह सुन लिया है तो
सब कुछ पर ग़ौर कर। तू क्यों इन बातों को मानने
के लिए तैयार नहीं?

अब से मैं तुझे नई नई बातें बताऊँगा, ऐसी
पोशीदा बातें जो तुझे अब तक मालूम न थीं।
7यह किसी क़दीम ज़माने में वुजूद में नहीं आईं
बल्कि अभी अभी आज ही तेरे इल्म में आई हैं।
क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि तू कहे, ‘मुझे पहले
से इसका इल्म था।’ 8चुनाँचे न यह बातें तेरे कान
तक पहुँची हैं, न तू इनका इल्म रखता है, बल्कि
क़दीम ज़माने से ही तेरा कान यह सुन नहीं सकता
था। क्योंकि मैं जानता था कि तू सरासर बेवफ़ा
है, कि पैदाइश से ही नमकहराम कहलाता है।
9तो भी मैं अपने नाम की ख़ातिर अपना ग़ज़ब
नाज़िल करने से बाज़ रहता, अपनी तमजीद की
ख़ातिर अपने आपको तुझे नेस्तो-नाबूद करने से
रोके रखता हूँ। 10देख, मैंने तुझे पाक-साफ़ कर
दिया है, लेकिन चाँदी को साफ़ करने की कुठाली
में नहीं बल्कि मुसीबत की भट्टी में। उसी में मैंने
तुझे आज़माया है। 11अपनी ख़ातिर, हाँ अपनी
ही ख़ातिर मैं यह सब कुछ करता हूँ, ऐसा न हो
कि मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए। क्योंकि मैं
इजाज़त नहीं दूँगा कि किसी और को वह जलाल
दिया जाए जिसका सिर्फ़ मैं हक़दार हूँ।

रब इसराईल का नजातदहिंदा है

12ऐ याक़ूब की औलाद, मेरी सुन! ऐ मेरे
बरगुज़ीदा इसराईल, ध्यान दे! मैं ही वही हूँ। मैं ही
अव्वलो-आख़िर हूँ। 13मेरे ही हाथ ने ज़मीन की
बुनियाद रखी, मेरे ही दहने हाथ ने आसमान को
ख़ैमे की तरह तान लिया। जब मैं आवाज़ देता
हूँ तो सब मिलकर खड़े हो जाते हैं। 14आओ,
सब जमा होकर सुनो! बुतों में से किसने इसकी
पेशगोई की? किसी ने नहीं! जिस आदमी
को रब प्यार करता है वह बाबल के ख़िलाफ़
उस की मरज़ी पूरी करेगा, बाबलियों पर उस
की क़ुव्वत का इज़हार करेगा। 15मैं, हाँ मैं ही ने
यह फ़रमाया। मैं ही उसे बुलाकर यहाँ लाया हूँ,
इसलिए वह ज़रूर कामयाब होगा। 16मेरे क़रीब
आकर सुनो! शुरू से मैंने अलानिया बात की, जब
से यह पेश आया मैं हाज़िर हूँ।”

और अब रब क़ादिरे-मुतलक़ और उसके रूह ने
मुझे भेजा है।

17रब जो तेरा छुड़ानेवाला और इसराईल का
क़ुद्दूस है फ़रमाता है, “मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ। मैं तुझे
वह कुछ सिखाता हूँ जो मुफ़ीद है और तुझे उन
राहों पर चलने देता हूँ जिन पर तुझे चलना है।
18काश तू मेरे अहकाम पर ध्यान देता! तब तेरी
सलामती बहते दरिया जैसी और तेरी रास्तबाज़ी
समुंदर की मौजों जैसी होती। 19तेरी औलाद रेत
की मानिंद होती, तेरे पेट का फल रेत के ज़र्रों जैसा
अनगिनत होता। इसका इमकान ही न होता कि
तेरा नामो-निशान मेरे सामने से मिट जाए।”

20बाबल से निकल जाओ! बाबलियों के बीच
में से हिजरत करो! ख़ुशी के नारे लगा लगाकर
एलान करो, दुनिया की इंतहा तक ख़ुशख़बरी
फैलाते जाओ कि रब ने एवज़ाना देकर अपने
ख़ादिम याक़ूब को छुड़ाया है। 21उन्हें प्यास न
लगी जब उसने उन्हें रेगिस्तान में से गुज़रने दिया।
उसके हुक्म पर पत्थर में से पानी बह निकला।
जब उसने चट्टान को चीर डाला तो पानी फूट
निकला।

22लेकिन रब फ़रमाता है कि बेदीन सलामती
नहीं पाएँगे।

रब का पैग़ंबर अक़वाम का नूर है

49 ऐ जज़ीरो, सुनो! ऐ दूर-दराज़ क़ौमो,
ध्यान दो! रब ने मुझे पैदाइश से पहले
ही बुलाया, मेरी माँ के पेट से ही मेरे नाम को याद
करता आया है। 2उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार
बनाकर मुझे अपने हाथ के साये में छुपाए रखा,
मुझे तेज़ तीर बनाकर अपने तरकश में पोशीदा
रखा है। 3वह मुझसे हमकलाम हुआ, “तू मेरा
ख़ादिम इसराईल है, जिसके ज़रीए मैं अपना
जलाल ज़ाहिर करूँगा।”

4मैं तो बोला था, “मेरी मेहनत-मशक़्क़त बेसूद
थी, मैंने अपनी ताक़त बेफ़ायदा और बेमक़सद
ज़ाया कर दी है। ताहम मेरा हक़ अल्लाह के हाथ
में है, मेरा ख़ुदा ही मुझे अज्र देगा।”
5लेकिन अब रब मुझसे हमकलाम हुआ है,
वह जो माँ के पेट से ही मुझे इस मक़सद से
तश्कील देता आया है कि मैं उस की ख़िदमत
करके याक़ूब की औलाद को उसके पास वापस
लाऊँ और इसराईल को उसके हुज़ूर जमा करूँ।
रब ही के हुज़ूर मेरा एहतराम किया जाएगा, मेरा
ख़ुदा ही मेरी क़ुव्वत होगा। 6वही फ़रमाता है, “तू
मेरी ख़िदमत करके न सिर्फ़ याक़ूब के क़बीले
बहाल करेगा और उन्हें वापस लाएगा जिन्हें मैंने
महफ़ूज़ रखा है बल्कि तू इससे कहीं बढ़कर
करेगा। क्योंकि मैं तुझे दीगर अक़वाम की रौशनी
बना दूँगा ताकि तू मेरी नजात को दुनिया की इंतहा
तक पहुँचाए।”
7रब जो इसराईल का छुड़ानेवाला और उसका
क़ुद्दूस है उससे हमकलाम हुआ है जिसे लोग
हक़ीर जानते हैं, जिससे दीगर अक़वाम घिन खाते
हैं और जो हुक्मरानों का ग़ुलाम है। उससे रब
फ़रमाता है, “तुझे देखते ही बादशाह खड़े हो
जाएंगे और रईस मुँह के बल झुक जाएंगे। यह
रब की ख़ातिर ही पेश आएगा जो वफ़ादार है और
इसराईल के क़ुद्दूस के बाइस ही वुक़ूपज़ीर होगा
जिसने तुझे चुन लिया है।”
8रब फ़रमाता है, “क़बूलियत के वक़्त मैं तेरी
सुनूँगा, नजात के दिन तेरी मदद करूँगा। तब मैं
तुझे महफ़ूज़ रखकर मुक़र्रर करूँगा कि तू मेरे और
क़ौम के दरमियान अहद बने, कि तू मुल्क बहाल
करके तबाहशुदा मौरूसी ज़मीन को नए सिरे से
तक़सीम करे, 9कि तू क़ैदियों को कहे, ‘निकल
आओ’ और तारीकी में बसनेवालों को, ‘रौशनी में
आ जाओ!’ तब मेरी भेड़ें रास्तों के किनारे किनारे
चरेंगी, और तमाम बंजर बुलंदियों पर भी उनकी
हरी हरी चरागाहें होंगी। 10न उन्हें भूक सताएगी न
प्यास। न तपती गरमी, न धूप उन्हें झुलसाएगी।
क्योंकि जो उन पर तरस खाता है वह उनकी
क़ियादत करके उन्हें चश्मों के पास ले जाएगा।
11मैं पहाड़ों को हमवार रास्तों में तबदील कर
दूँगा जबकि मेरी शाहराहें ऊँची हो जाएँगी। 12तब
वह दूर-दराज़ इलाक़ों से आएँगे, कुछ शिमाल से,
कुछ मग़रिब से, और कुछ मिसर के जुनूबी शहर
असवान से भी।”
13ऐ आसमान, ख़ुशी के नारे लगा! ऐ ज़मीन,
बाग़ बाग़ हो जा! ऐ पहाड़ो, शादमानी के गीत
गाओ! क्योंकि रब ने अपनी क़ौम को तसल्ली दी
है, उसे अपने मुसीबतज़दा लोगों पर तरस आया
है।

रब अपनी क़ौम को कभी नहीं भूलेगा

14लेकिन सिय्यून कहती है, “रब ने मुझे तर्क
कर दिया है, क़ादिरे-मुतलक़ मुझे भूल गया है।”
15“यह कैसे हो सकता है? क्या माँ अपने
शीरख़ार को भूल सकती है? जिस बच्चे को उसने
जन्म दिया, क्या वह उस पर तरस नहीं खाएगी?
शायद वह भूल जाए, लेकिन मैं तुझे कभी नहीं
भूलूँगा! 16देख, मैंने तुझे अपनी दोनों हथेलियों
में कंदा कर दिया है, तेरी ज़मीनबोस दीवारें हमेशा
मेरे सामने हैं।
17जो तुझे नए सिरे से तामीर करना चाहते हैं
वह दौड़कर वापस आ रहे हैं जबकि जिन लोगों
ने तुझे ढाकर तबाह किया वह तुझसे निकल रहे
हैं। 18ऐ सिय्यून बेटी, नज़र उठाकर चारों तरफ़
देख! यह सब जमा होकर तेरे पास आ रहे हैं।
मेरी हयात की क़सम, यह सब तेरे ज़ेवरात बनेंगे
जिनसे तू अपने आपको दुलहन की तरह आरास्ता
करेगी।” यह रब का फ़रमान है।
19“फ़िलहाल तेरे मुल्क में चारों तरफ़ खंडरात,
उजाड़ और तबाही नज़र आती है, लेकिन आइंदा
वह अपने बाशिंदों की कसरत के बाइस छोटा
होगा। और जिन्होंने तुझे हड़प कर लिया था वह
दूर रहेंगे। 20पहले तू बेऔलाद थी, लेकिन अब
तेरे इतने बच्चे होंगे कि वह तेरे पास आकर कहेंगे,
‘मेरे लिए जगह कम है, मुझे और ज़मीन दें ताकि

मैं आराम से ज़िंदगी गुज़ार सकूँ।’ तू अपने कानों
से यह सुनेगी।
21तब तू हैरान होकर दिल में सोचेगी, ‘किसने
यह बच्चे मेरे लिए पैदा किए? मैं तो बच्चों से
महरूम और बेऔलाद थी, मुझे जिलावतन करके
हटाया गया था। किसने इनको पाला? मुझे तो
तनहा ही छोड़ दिया गया था। तो फिर यह कहाँ
से आ गए हैं’?”
22रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “देख, मैं
दीगर क़ौमों को हाथ से इशारा देकर उनके
सामने अपना झंडा गाड़ दूँगा। तब वह तेरे बेटों
को उठाकर अपने बाज़ुओं में वापस ले आएँगे
और तेरी बेटियों को कंधे पर बिठाकर तेरे पास
पहुँचाएँगे। 23बादशाह तेरे बच्चों की देख-भाल
करेंगे, और रानियाँ उनकी दाइयाँ होंगी। वह मुँह
के बल झुककर तेरे पाँवों की ख़ाक चाटेंगे। तब
तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ, कि जो भी मुझसे
उम्मीद रखे वह कभी शरमिंदा नहीं होगा।”
24क्या सूरमे का लूटा हुआ माल उसके हाथ
से छीना जा सकता है? या क्या ज़ालिम के
क़ैदी उसके क़ब्ज़े से छूट सकते हैं? मुश्किल
ही से। 25लेकिन रब फ़रमाता है, “यक़ीनन सूरमे
का क़ैदी उसके हाथ से छीन लिया जाएगा और
ज़ालिम का लूटा हुआ माल उसके क़ब्ज़े से
छूट जाएगा। जो तुझसे झगड़े उसके साथ मैं
ख़ुद झगड़ूँगा, मैं ही तेरे बच्चों को नजात दूँगा।
26जिन्होंने तुझ पर ज़ुल्म किया उन्हें मैं उनका
अपना गोश्त खिलाऊँगा, उनका अपना ख़ून यों
पिलाऊँगा कि वह उसे नई मै की तरह पी पीकर
मस्त हो जाएंगे। तब तमाम इनसान जान लेंगे
कि मैं रब तेरा नजातदहिंदा, तेरा छुड़ानेवाला और
याक़ूब का ज़बरदस्त सूरमा हूँ।”

तुम अपने ज़ाती गुनाहों की सज़ा भुगत रहे हो

50 रब फ़रमाता है, “आओ, मुझे वह
तलाक़नामा दिखाओ जो मैंने देकर
तुम्हारी माँ को छोड़ दिया था। वह कहाँ है? या
मुझे वह क़र्ज़ख़ाह दिखाओ जिसके हवाले मैंने
तुम्हें अपना क़र्ज़ उतारने के लिए किया। वह कहाँ
है? देखो, तुम्हें अपने ही गुनाहों के सबब से
फ़रोख़्त किया गया, तुम्हारे अपने ही गुनाहों के
सबब से तुम्हारी माँ को फ़ारिग़ कर दिया गया।
2जब मैं आया तो कोई नहीं था। क्या वजह?
जब मैंने आवाज़ दी तो जवाब देनेवाला कोई नहीं
था। क्यों? क्या मैं फ़िद्या देकर तुम्हें छुड़ाने के
क़ाबिल न था? क्या मेरी इतनी ताक़त नहीं कि
तुम्हें बचा सकूँ? मेरी तो एक ही धमकी से समुंदर
ख़ुश्क हो जाता और दरिया रेगिस्तान बन जाते
हैं। तब उनकी मछलियाँ पानी से महरूम होकर
गल जाती हैं, और उनकी बदबू चारों तरफ़ फैल
जाती है। 3मैं ही आसमान को तारीकी का जामा
पहनाता, मैं ही उसे टाट के मातमी लिबास में
लपेट देता हूँ।”

रब के पैग़ंबर की रुसवाई

4रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे शागिर्द की-सी
ज़बान अता की ताकि मैं वह कलाम जान लूँ
जिससे थकामाँदा तक़वियत पाए। सुबह बसुबह
वह मेरे कान को जगा देता है ताकि मैं शागिर्द
की तरह सुन सकूँ। 5रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मेरे
कान को खोल दिया, और न मैं सरकश हुआ, न
पीछे हट गया। 6मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ
और बाल नोचनेवालों को अपने गाल पेश किए।
मैंने अपना चेहरा उनकी गालियों और थूक से न
छुपाया।
7लेकिन रब क़ादिरे-मुतलक़ मेरी मदद करता
है, इसलिए मेरी रुसवाई नहीं होगी। चुनाँचे मैंने
अपना मुँह चक़माक़ की तरह सख़्त कर लिया
है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं शरमिंदा नहीं हो
जाऊँगा। 8जो मुझे रास्त ठहराता है वह क़रीब ही
है। तो फिर कौन मेरे साथ झगड़ेगा? आओ, हम
मिलकर अदालत में खड़े हो जाएँ। कौन मुझ पर
इलज़ाम लगाने की जुर्रत करेगा? वह आकर मेरा
सामना करे! 9रब क़ादिरे-मुतलक़ ही मेरी मदद
करता है। तो फिर कौन मुझे मुजरिम ठहराएगा?

यह तो सब पुराने कपड़े की तरह घिसकर फटेंगे,
कीड़े उन्हें खा जाएंगे।
10तुममें से कौन रब का ख़ौफ़ मानता और
उसके ख़ादिम की सुनता है? जब उसे रौशनी
के बग़ैर अंधेरे में चलना पड़े तो वह रब के नाम
पर भरोसा रखे और अपने ख़ुदा पर इनहिसार
करे। 11लेकिन तुम बाक़ी लोग जो आग लगाकर
अपने आपको जलते हुए तीरों से लैस करते हो,
अपनी ही आग के शोलों में चले जाओ! ख़ुद उन
तीरों की ज़द में आओ जो तुमने दूसरों के लिए
जलाए हैं! मेरे हाथ से तुम्हें यही अज्र मिलेगा,
तुम सख़्त अज़ियत का शिकार होकर ज़मीन पर
तड़पते रहोगे।

रब अपनी क़ौम को तसल्ली देता है

51 "तुम जो रास्ती के पीछे लगे रहते,
जो रब के तालिब हो, मेरी बात सुनो!
उस चट्टान पर ध्यान दो जिसमें से तुम्हें तराशकर
निकाला गया है, उस कान पर ग़ौर करो जिसमें
से तुम्हें खोदा गया है। 2यानी अपने बाप इब्राहीम
और अपनी माँ सारा पर तवज्जुह दो, जिसने
दर्दे-ज़ह की तकलीफ़ उठाकर तुम्हें जन्म दिया।
इब्राहीम बेऔलाद था जब मैंने उसे बुलाया,
लेकिन फिर मैंने उसे बरकत देकर बहुत औलाद
बख़्शी।"
3यक़ीनन रब सिय्यून को तसल्ली देगा। वह
उसके तमाम खंडरात को तशफ़्फ़ी देकर उसके
रेगिस्तान को बाग़े-अदन में और उस की बंजर
ज़मीन को रब के बाग़ में बदल देगा। तब
उसमें ख़ुशी-ओ-शादमानी पाई जाएगी, हर तरफ़
शुक्रगुज़ारी और गीतों की आवाज़ें सुनाई देंगी।
4"ऐ मेरी क़ौम, मुझ पर ध्यान दे! ऐ मेरी
उम्मत, मुझ पर ग़ौर कर! क्योंकि हिदायत मुझसे
सादिर होगी, और मेरा इनसाफ़ क़ौमों की रौशनी
बनेगा। 5मेरी रास्ती क़रीब ही है, मेरी नजात रास्ते
में है, और मेरा ज़ोरावर बाज़ू क़ौमों में इनसाफ़
क़ायम करेगा। जज़ीरे मुझसे उम्मीद रखेंगे, वह
मेरी क़ुदरत देखने के इंतज़ार में रहेंगे। 6अपनी
आँखें आसमान की तरफ़ उठाओ! नीचे ज़मीन
पर नज़र डालो! आसमान धुएँ की तरह बिखर
जाएगा, ज़मीन पुराने कपड़े की तरह घिसे-फटेगी
और उसके बाशिंदे मच्छरों की तरह मर जाएंगे।
लेकिन मेरी नजात अबद तक क़ायम रहेगी, और
मेरी रास्ती कभी ख़त्म नहीं होगी।
7ऐ सहीह राह को जाननेवालो, ऐ क़ौम जिसके
दिल में मेरी शरीअत है, मेरी बात सुनो! जब लोग
तुम्हारी बेइज़्ज़ती करते हैं तो उनसे मत डरना,
जब वह तुम्हें गालियाँ देते हैं तो मत घबराना।
8क्योंकि किरम उन्हें कपड़े की तरह खा जाएगा,
कीड़ा उन्हें ऊन की तरह हज़म करेगा। लेकिन मेरी
रास्ती अबद तक क़ायम रहेगी, मेरी नजात पुश्त-
दर-पुश्त बरक़रार रहेगी।"

रब की रिहाई

9ऐ रब के बाज़ू, उठ! जाग उठ और क़ुव्वत का
जामा पहन ले! यों अमल में आ जिस तरह क़दीम
ज़माने में आया था, जब तूने मुतअद्दिद नसलों
पहले रहब को टुकड़े टुकड़े कर दिया, समुंदरी
अज़दहे को छेद डाला। 10क्योंकि तू ही ने समुंदर
को ख़ुश्क किया, तू ही ने गहराइयों की तह पर
रास्ता बनाया ताकि वह जिन्हें तूने एवज़ाना देकर
छुड़ाया था उसमें से गुज़र सकें।
11जिन्हें रब ने फ़िद्या देकर छुड़ाया है वह
वापस आएँगे। वह शादियाना बजाकर सिय्यून में
दाख़िल होंगे, और हर एक का सर अबदी ख़ुशी
के ताज से आरास्ता होगा। क्योंकि ख़ुशी और
शादमानी उन पर ग़ालिब आकर तमाम ग़म और
आहो-ज़ारी भगा देगी।
12"मैं, सिर्फ़ मैं ही तुझे तसल्ली देता हूँ। तो
फिर तू फ़ानी इनसान से क्यों डरती है, जो घास
की तरह मुरझाकर ख़त्म हो जाता है? 13तू
रब अपने ख़ालिक़ को क्यों भूल गई है, जिसने
आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया और ज़मीन
की बुनियाद रखी? जब ज़ालिम तुझे तबाह करने
पर तुला रहता है तो तू उसके तैश से पूरे दिन
क्यों ख़ौफ़ खाती रहती है? अब उसका तैश कहाँ

रहा? 14जो ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ है वह जल्द ही
आज़ाद हो जाएगा। न वह मरकर क़ब्र में उतरेगा,
न रोटी से महरूम रहेगा। 15क्योंकि मैं रब तेरा
ख़ुदा हूँ जो समुंदर को यों हरकत में लाता है कि
वह मुतलातिम होकर गरजने लगता है। रब्बुल-
अफ़वाज मेरा नाम है। 16मैंने अपने अलफ़ाज़
तेरे मुँह में डालकर तुझे अपने हाथ के साये में
छुपाए रखा है ताकि नए सिरे से आसमान को
तानूँ, ज़मीन की बुनियादें रखूँ और सिय्यून को
बताऊँ, 'तू मेरी क़ौम है'।"

ऐ यरूशलम, जाग उठ!

17ऐ यरूशलम, उठ! जाग उठ! ऐ शहर
जिसने रब के हाथ से उसका ग़ज़ब भरा प्याला पी
लिया है, खड़ी हो जा! अब तूने लड़खड़ा देनेवाले
प्याले को आख़िरी क़तरे तक चाट लिया है।
18जितने भी बेटे तूने जन्म दिए उनमें से एक भी
नहीं रहा जो तेरी राहनुमाई करे। जितने भी बेटे तूने
पाले उनमें से एक भी नहीं जो तेरा हाथ पकड़कर
तेरे साथ चले। 19तुझ पर दो आफ़तें आईं यानी
बरबादी-ओ-तबाही, काल और तलवार। लेकिन
किसने हमदर्दी का इज़हार किया? किसने तुझे
तसल्ली दी? 20तेरे बेटे ग़श खाकर गिर गए हैं।
हर गली में वह जाल में फँसे हुए ग़ज़ाल[a] की
तरह ज़मीन पर तड़प रहे हैं। क्योंकि रब का ग़ज़ब
उन पर नाज़िल हुआ है, वह इलाही डाँट-डपट का
निशाना बन गए हैं।

21चुनाँचे मेरी बात सुन, ऐ मुसीबतज़दा क़ौम,
ऐ नशे में मत्वाली उम्मत, गो तू मै के असर से
नहीं डगमगा रही। 22रब तेरा आक़ा जो तेरा ख़ुदा
है और अपनी क़ौम के लिए लड़ता है वह फ़रमाता
है, "देख, मैंने तेरे हाथ से वह प्याला दूर कर
दिया जो तेरे लड़खड़ाने का सबब बना। आइंदा तू
मेरा ग़ज़ब भरा प्याला नहीं पिएगी। 23अब मैं इसे
उनको पकड़ा दूँगा जिन्होंने तुझे अज़ियत पहुँचाई
है, जिन्होंने तुझसे कहा, 'औंधे मुँह झुक जा ताकि
हम तुझ पर से गुज़रें।' उस वक़्त तेरी पीठ ख़ाक
में धँसकर दूसरों के लिए रास्ता बन गई थी।"

ज़ंजीरों को तोड़!

52 ऐ सिय्यून, उठ, जाग उठ! अपनी
ताक़त से मुलब्बस हो जा! ऐ मुक़द्दस
शहर यरूशलम, अपने शानदार कपड़े से आरास्ता
हो जा! आइंदा कभी भी ग़ैरमख़तून या नापाक
शख़्स तुझमें दाख़िल नहीं होगा। 2ऐ यरूशलम,
अपने आपसे गर्द झाड़कर खड़ी हो जा और तख़्त
पर बैठ जा। ऐ गिरिफ़्तार की हुई सिय्यून बेटी,
अपनी गरदन की ज़ंजीरों को खोलकर उनसे
आज़ाद हो जा! 3क्योंकि रब फ़रमाता है, "तुम्हें
मुफ़्त में बेचा गया, और अब तुम्हें पैसे दिए बग़ैर
छुड़ाया जाएगा।"

4क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है,
"क़दीम ज़माने में मेरी क़ौम मिसर चली गई ताकि
वहाँ परदेस में रहे। बाद में असूर ने बिलावजह
उस पर ज़ुल्म किया है।" 5रब फ़रमाता है, "अब
जो ज़्यादती मेरी क़ौम से हो रही है उसका मेरे
साथ क्या वास्ता है?" रब फ़रमाता है, "मेरी
क़ौम तो मुफ़्त में छीन ली गई है, और उस पर
हुकूमत करनेवाले शेख़ी मारकर पूरा दिन मेरे नाम
पर कुफ़र बकते हैं। 6चुनाँचे मेरी क़ौम मेरे नाम को
जान लेगी, उस दिन वह पहचान लेगी कि मैं ही
वही हूँ जो फ़रमाता है, 'मैं हाज़िर हूँ'!"

7उसके क़दम कितने प्यारे हैं जो पहाड़ों पर
चलते हुए ख़ुशख़बरी सुनाता है। क्योंकि वह
अमनो-अमान, ख़ुशी का पैग़ाम और नजात का
एलान करेगा, वह सिय्यून से कहेगा, "तेरा ख़ुदा
बादशाह है!" 8सुन! तेरे पहरेदार आवाज़ बुलंद
कर रहे हैं, वह मिलकर ख़ुशी के नारे लगा रहे हैं।
क्योंकि जब रब कोहे-सिय्यून पर वापस आएगा
तो वह अपनी आँखों से इसका मुशाहदा करेंगे।

9ऐ यरूशलम के खंडरात, शादियाना बजाओ,
ख़ुशी के गीत गाओ! क्योंकि रब ने अपनी
क़ौम को तसल्ली दी है, उसने एवज़ाना देकर

[a]ग़ज़ाले-अफ़्रीक़ा, oryx।

यरूशलम को छुड़ाया है। 10रब अपनी मुक़द्दस
क़ुदरत तमाम अक़वाम पर ज़ाहिर करेगा, दुनिया
की इंतहा तक सब हमारे ख़ुदा की नजात देखेंगे।

11जाओ, चले जाओ! वहाँ से निकल जाओ!
किसी भी नापाक चीज़ को न छूना। जो रब का
सामान उठाए चल रहे हैं वह वहाँ से निकलकर
पाक-साफ़ रहें। 12लेकिन लाज़िम नहीं कि
तुम भागकर रवाना हो जाओ। तुम्हें अचानक
फ़रार होने की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि रब
तुम्हारे आगे भी चलेगा और तुम्हारे पीछे भी।
यों इसराईल का ख़ुदा दोनों तरफ़ से तुम्हारी
हिफ़ाज़त करेगा।

रब का पैग़ंबर हमारे गुनाहों को उठाएगा

13देखो, मेरा ख़ादिम कामयाब होगा। वह
सरबुलंद, मुमताज़ और बहुत सरफ़राज़ होगा।
14तुझे देखकर बहुतों के रोंगटे खड़े हो गए।
क्योंकि उस की शक्ल इतनी ख़राब थी, उस की
सूरत किसी भी इनसान से कहीं ज़्यादा बिगड़ी हुई
थी। 15लेकिन अब बहुत-सी क़ौमें उसे देखकर
हक्का-बक्का हो जाएँगी, बादशाह दम बख़ुद रह
जाएंगे। क्योंकि जो कुछ उन्हें नहीं बताया गया
उसे वह देखेंगे, और जो कुछ उन्होंने नहीं सुना
उस की उन्हें समझ आएगी।

53 लेकिन कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान
लाया? और रब की क़ुदरत किस
पर ज़ाहिर हुई? 2उसके सामने वह कोंपल
की तरह फूट निकला, उस ताज़ा और मुलायम
शिगूफ़े की तरह जो ख़ुश्क ज़मीन में छुपी हुई
जड़ से निकलकर फलने-फूलने लगती है। न वह
ख़ूबसूरत था, न शानदार। हमने उसे देखा तो उस
की शक्लो-सूरत में कुछ नहीं था जो हमें पसंद
आता। 3उसे हक़ीर और मरदूद समझा जाता था।
दुख और बीमारियाँ उस की साथी रहीं, और लोग
यहाँ तक उस की तहक़ीर करते थे कि उसे देखकर
अपना मुँह फेर लेते थे। हम उस की कुछ क़दर नहीं
करते थे।

4लेकिन उसने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं,
हमारा ही दुख भुगत लिया। तो भी हम समझे कि
यह उस की मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह ने ख़ुद
उसे मारकर ख़ाक में मिला दिया है। 5लेकिन उसे
हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया, हमारे
ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे सज़ा
मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी
के ज़ख़मों से हमें शफ़ा मिली। 6हम सब भेड़-
बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक
ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की। लेकिन रब ने
उसे हम सबके क़ुसूर का निशाना बनाया।

7उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उसने सब कुछ
बरदाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस
भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते
हैं। जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने
ख़ामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न
खोला। 8उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन
लिया गया। उस के दौर के लोग—किस ने ध्यान
दिया कि उसका ज़िंदों के मुल्क से ताल्लुक़ कट
गया, कि वह मेरी क़ौम के जुर्म के सबब से सज़ा
का निशाना बन गया? 9मुक़र्रर यह हुआ कि उस
की क़ब्र बेदीनों के पास हो, कि वह मरते वक़्त
एक अमीर के पास दफ़नाया जाए, गो न उसने
तशद्दुद किया, न उसके मुँह में फ़रेब था।

10रब ही की मरज़ी थी कि उसे कुचले, उसे दुख
पहुँचाए। लेकिन जब वह अपनी जान को क़ुसूर
की क़ुरबानी के तौर पर देगा तो वह अपने फ़रज़ंदों
को देखेगा, अपने दिनों में इज़ाफ़ा करेगा। हाँ, वह
रब की मरज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा।
11इतनी तकलीफ़ बरदाश्त करने के बाद उसे
फल नज़र आएगा, और वह सेर हो जाएगा। अपने
इल्म से मेरा रास्त ख़ादिम बहुतों का इनसाफ़
क़ायम करेगा, क्योंकि वह उनके गुनाहों को अपने
ऊपर उठाकर दूर कर देगा।

12इसलिए मैं उसे बड़ों में हिस्सा दूँगा, और वह
ज़ोरावरों के साथ लूट का माल तक़सीम करेगा।
क्योंकि उसने अपनी जान को मौत के हवाले कर
दिया, और उसे मुजरिमों में शुमार किया गया।

हाँ, उसने बहुतों का गुनाह उठाकर दूर कर दिया
और मुजरिमों की शफ़ाअत की।

रब ने यरूशलम को दुबारा क़बूल कर लिया है

54 रब फ़रमाता है, "ख़ुशी के नारे लगा,
तू जो बेऔलाद है, जो बच्चे को जन्म
ही नहीं दे सकती। बुलंद आवाज़ से शादियाना
बजा, तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ। क्योंकि
अब तर्क की हुई औरत के बच्चे शादीशुदा औरत
के बच्चों से ज़्यादा हैं। 2अपने ख़ैमे को बड़ा बना,
उसके परदे हर तरफ़ बिछा! बचत मत करना!
ख़ैमे के रस्से लंबे लंबे करके मेख़ें मज़बूती से
ज़मीन में ठोंक दे। 3क्योंकि तू तेज़ी से दाईं और
बाईं तरफ़ फैल जाएगी, और तेरी औलाद दीगर
क़ौमों पर क़ब्ज़ा करके तबाहशुदा शहरों को अज़
सरे-नौ आबाद करेगी।

4मत डरना, तेरी रुसवाई नहीं होगी। शर्मसार
न हो, तेरी बेहुरमती नहीं होगी। अब तू अपनी
जवानी की शरमिंदगी भूल जाएगी, तेरे ज़हन से
बेवा होने की ज़िल्लत उतर जाएगी। 5क्योंकि तेरा
ख़ालिक़ तेरा शौहर है, रब्बुल-अफ़वाज उसका
नाम है, और तेरा छुड़ानेवाला इसराईल का क़ुद्दूस
है, जो पूरी दुनिया का ख़ुदा कहलाता है।"

6तेरा ख़ुदा फ़रमाता है, "तू मतरूका और दिल
से मजरूह बीवी की मानिंद है, उस औरत की
मानिंद जिसके शौहर ने उसे रद्द किया, गो उस की
शादी उस वक़्त हुई जब कुँवारी ही थी। लेकिन
अब मैं, रब ने तुझे बुलाया है। 7एक ही लमहे
के लिए मैंने तुझे तर्क किया, लेकिन अब बड़े
रहम से तुझे जमा करूँगा। 8मैंने अपने ग़ज़ब
का पूरा ज़ोर तुझ पर नाज़िल करके पल-भर के
लिए अपना चेहरा तुझसे छुपा लिया, लेकिन अब
अबदी शफ़क़त से तुझ पर रहम करूँगा।" रब तेरा
छुड़ानेवाला यह फ़रमाता है।

9"बड़े सैलाब के बाद मैंने नूह से क़सम खाई
थी कि आइंदा सैलाब कभी पूरी ज़मीन पर नहीं
आएगा। इसी तरह अब मैं क़सम खाकर वादा
करता हूँ कि आइंदा न मैं कभी तुझसे नाराज़ हूँगा,
न तुझे मलामत करूँगा। 10गो पहाड़ हट जाएँ और
पहाड़ियाँ जुंबिश खाएँ, लेकिन मेरी शफ़क़त तुझ
पर से कभी नहीं हटेगी, मेरा सलामती का अहद
कभी नहीं हिलेगा।" यह रब का फ़रमान है जो
तुझ पर तरस खाता है।

नया शहर यरूशलम

11"बेचारी बेटी यरूशलम! शदीद तूफ़ान तुझ
पर से गुज़र गए हैं, और कोई नहीं है जो तुझे
तसल्ली दे। देख, मैं तेरी दीवारों के पत्थर मज़बूत
चूने से जोड़ दूँगा और तेरी बुनियादों को संगे-
लाजवर्द[a] से रख दूँगा। 12मैं तेरी दीवारों को
याक़ूत, तेरे दरवाज़ों को आबे-बहर[b] और तेरी
तमाम फ़सील को क़ीमती जवाहिर से तामीर
करूँगा। 13तेरे तमाम फ़रज़ंद रब से तालीम
पाएँगे, और तेरी औलाद की सलामती अज़ीम
होगी। 14तुझे इनसाफ़ की मज़बूत बुनियाद पर
रखा जाएगा, चुनाँचे दूसरों के ज़ुल्म से दूर रह,
क्योंकि डरने की ज़रूरत नहीं होगी। दहशतज़दा
न हो, क्योंकि दहशत खाने का सबब तेरे क़रीब
नहीं आएगा। 15अगर कोई तुझ पर हमला करे
भी तो यह मेरी तरफ़ से नहीं होगा, इसलिए हर
हमलाआवर शिकस्त खाएगा।

16देख, मैं ही उस लोहार का ख़ालिक़ हूँ जो
हवा देकर कोयलों को दहका देता है ताकि काम
के लिए मौज़ूँ हथियार बना ले। और मैं ही ने तबाह
करनेवाले को ख़लक़ किया ताकि वह बरबादी
का काम अंजाम दे। 17चुनाँचे जो भी हथियार
तुझ पर हमला करने के लिए तैयार हो जाए
वह नाकाम होगा, और जो भी ज़बान तुझ पर
इलज़ाम लगाए उसे तू मुजरिम साबित करेगी।
यही रब के ख़ादिमों का मौरूसी हिस्सा है, मैं ही
उनकी रास्तबाज़ी बरक़रार रखूँगा।" रब ख़ुद यह
फ़रमाता है।

[a]lapis lazuli

[b]beryl

रब के पास आओ ताकि ज़िंदगी पाओ

55 “क्या तुम प्यासे हो? आओ, सब पानी के पास आओ! क्या तुम्हारे पास पैसे नहीं? इधर आओ, सौदा ख़रीदकर खाना खाओ। यहाँ की मै और दूध मुफ़्त है। आओ, उसे पैसे दिए बग़ैर ख़रीदो। 2उस पर पैसे क्यों ख़र्च करते हो जो रोटी नहीं है? जो सेर नहीं करता उसके लिए मेहनत-मशक़्क़त क्यों करते हो? सुनो, सुनो मेरी बात! फिर तुम अच्छी ख़ुराक खाओगे, बेहतरीन खाने से लुत्फ़अंदोज़ होगे। 3कान लगाकर मेरे पास आओ! सुनो तो जीते रहोगे।

मैं तुम्हारे साथ अबदी अहद बाँधूँगा, तुम्हें उन अनमिट मेहरबानियों से नवाज़ूँगा जिनका वादा दाऊद से किया था। 4देख, मैंने मुक़र्रर किया कि वह अक़वाम के सामने मेरा गवाह हो, कि अक़वाम का रईस और हुक्मरान हो। 5देख, तू ऐसी क़ौम को बुलाएगा जिसे तू नहीं जानता, और तुझसे नावाक़िफ़ क़ौम रब तेरे ख़ुदा की ख़ातिर तेरे पास दौड़ी चली आएगी। क्योंकि जो इसराईल का क़ुद्दूस है उसने तुझे शानो-शौकत अता की है।”

मेरा कलाम बेतासीर नहीं रहता

6अभी रब को तलाश करो जबकि उसे पाया जा सकता है। अभी उसे पुकारो जबकि वह क़रीब ही है। 7बेदीन अपनी बुरी राह और शरीर अपने बुरे ख़यालात छोड़े। वह रब के पास वापस आए तो वह उस पर रहम करेगा। वह हमारे ख़ुदा के पास वापस आए, क्योंकि वह फ़राख़दिली से मुआफ़ कर देता है।

8क्योंकि रब फ़रमाता है, “मेरे ख़यालात और तुम्हारे ख़यालात में और मेरी राहों और तुम्हारी राहों में बड़ा फ़रक़ है। 9जितना आसमान ज़मीन से ऊँचा है उतनी ही मेरी राहें तुम्हारी राहों और मेरे ख़यालात तुम्हारे ख़यालात से बुलंद हैं।

10बारिश और बर्फ़ पर ग़ौर करो! ज़मीन पर पड़ने के बाद यह ख़ाली हाथ वापस नहीं आती बल्कि ज़मीन को यों सेराब करती है कि पौदे फूटने और फलने-फूलने लगते हैं बल्कि पकते पकते बीज बोनेवाले को बीज और भूके को रोटी मुहैया करते हैं। 11मेरे मुँह से निकला हुआ कलाम भी ऐसा ही है। वह ख़ाली हाथ वापस नहीं आएगा बल्कि मेरी मरज़ी पूरी करेगा और उसमें कामयाब होगा जिसके लिए मैंने उसे भेजा था।

12क्योंकि तुम ख़ुशी से निकलोगे, तुम्हें सलामती से लाया जाएगा। पहाड़ और पहाड़ियाँ तुम्हारे आने पर बाग़ बाग़ होकर शादियाना बजाएँगी, और मैदान के तमाम दरख़्त तालियाँ बजाएंगे। 13काँटेदार झाड़ी की बजाए जूनीपर का दरख़्त उगेगा, और बिच्छूबूटी की बजाए मेहँदी फले-फूलेगी। यों रब के नाम को जलाल मिलेगा, और उस की क़ुदरत का अबदी और अनमिट निशान क़ायम होगा।”

हर शख़्स अल्लाह की क़ौम में शामिल हो सकता है

56 रब फ़रमाता है, “इनसाफ़ को क़ायम रखो और वह कुछ किया करो जो रास्त है, क्योंकि मेरी नजात क़रीब ही है, और मेरी रास्ती ज़ाहिर होने को है। 2मुबारक है वह जो यों रास्ती से लिपटा रहे। मुबारक है वह जो सबत के दिन की बेहुरमती न करे बल्कि उसे मनाए, जो हर बुरे काम से गुरेज़ करे।”

3जो परदेसी रब का पैरोकार हो गया है वह न कहे कि बेशक रब मुझे अपनी क़ौम से अलग कर रखेगा। ख़्वाजासरा भी न सोचे कि हाय, मैं सूखा हुआ दरख़्त ही हूँ!

4क्योंकि रब फ़रमाता है, “जो ख़्वाजासरा मेरे सबत के दिन मनाएँ, ऐसे क़दम उठाएँ जो मुझे पसंद हों और मेरे अहद के साथ लिपटे रहें वह बेफ़िकर रहें। 5क्योंकि मैं उन्हें अपने घर और उस की चारदीवारी में ऐसी यादगार और ऐसा नाम अता करूँगा जो बेटे-बेटियाँ मिलने से कहीं बेहतर होगा। और जो नाम मैं उन्हें दूँगा वह अबदी होगा, वह कभी नहीं मिटने का।

6वह परदेसी भी बेफ़िकर रहें जो रब के पैरोकार
बनकर उस की ख़िदमत करना चाहते, जो रब
का नाम अज़ीज़ रखकर उस की इबादत करते,
जो सबत के दिन की बेहुरमती नहीं करते बल्कि
उसे मनाते और जो मेरे अहद के साथ लिपटे रहते
हैं। 7क्योंकि मैं उन्हें अपने मुक़द्दस पहाड़ के पास
लाकर अपने दुआ के घर में ख़ुशी दिलाऊँगा। जब
वह मेरी क़ुरबानगाह पर अपनी भस्म होनेवाली
और ज़बह की क़ुरबानियाँ चढ़ाएँगे तो वह मुझे
पसंद आएँगी। क्योंकि मेरा घर तमाम क़ौमों के
लिए दुआ का घर कहलाएगा।"

8रब क़ादिरे-मुतलक़ जो इसराईल की बिखरी
हुई क़ौम जमा कर रहा है फ़रमाता है, "उनमें जो
इकट्ठे हो चुके हैं मैं और भी जमा कर दूँगा।"

क़ौम के राहनुमा सुस्त और लालची कुत्ते हैं

9ऐ मैदान के तमाम हैवानो, आओ! ऐ जंगल
के तमाम जानवरो, आकर खाओ! 10इसराईल
के पहरेदार अंधे हैं, सबके सब कुछ भी नहीं
जानते। सबके सब बहरे कुत्ते हैं जो भौंक ही
नहीं सकते। फ़र्श पर लेटे हुए वह अच्छे अच्छे
ख़ाब देखते रहते हैं। ऊँघना उन्हें कितना पसंद है!
11लेकिन यह कुत्ते लालची भी हैं और कभी सेर
नहीं होते, हालाँकि गल्लाबान कहलाते हैं। वह
समझ से ख़ाली हैं, और हर एक अपनी अपनी
राह पर ध्यान देकर अपने ही नफ़ा की तलाश में
रहता है। 12हर एक आवाज़ देता है, "आओ, मैं
मै ले आता हूँ! आओ, हम जी भरकर शराब पी
लें। और कल भी आज की तरह हो बल्कि इससे
भी ज़्यादा रौनक़ हो!"

रब बेदीनों की अदालत करता है

57 रास्तबाज़ हलाक हो जाता है, लेकिन
किसी को परवा नहीं। दियानतदार
दुनिया से छीन लिए जाते हैं, लेकिन कोई ध्यान
नहीं देता। कोई नहीं समझता कि रास्तबाज़ को
बुराई से बचने के लिए छीन लिया जाता है।
2क्योंकि उस की मनज़िले-मक़सूद सलामती है।
सीधी राह पर चलनेवाले मरते वक़्त पाँव फैलाकर
आराम करते हैं।

3"लेकिन ऐ जादूगरनी की औलाद, ज़िना-
कार और फ़ह्हाशी के बच्चो, इधर आओ! 4तुम
किसका मज़ाक़ उड़ा रहे हो, किस पर ज़बान
चलाकर मुँह चिड़ाते हो? तुम मुजरिमों और
धोकेबाज़ों के ही बच्चे हो!

5तुम बलूत बल्कि हर घने दरख़्त के साये
में मस्ती में आ जाते हो, वादियों और चट्टानों
के शिगाफ़ों में अपने बच्चों को ज़बह करते हो।
6वादियों के रगड़े हुए पत्थर तेरा हिस्सा और
तेरा मुक़द्दर बन गए हैं। क्योंकि उन्हीं को तूने
मै और ग़ल्ला की नज़रें पेश कीं। इसके मद्दे-
नज़र मैं अपना फ़ैसला क्यों बदलूँ? 7तूने अपना
बिस्तर ऊँचे पहाड़ पर लगाया, उस पर चढ़कर
अपनी क़ुरबानियाँ पेश कीं। 8अपने घर के दरवाज़े
और चौखट के पीछे तूने अपनी बुतपरस्ती के
निशान लगाए। मुझे तर्क करके तू अपना बिस्तर
बिछाकर उस पर लेट गई। तूने उसे इतना बड़ा
बना दिया कि दूसरे भी उस पर लेट सकें। फिर
तूने इसमतफ़रोशी के पैसे मुक़र्रर किए। उनकी
सोहबत तुझे कितनी प्यारी थी, उनकी बरहनगी से
तू कितना लुत्फ़ उठाती थी! 9तू कसरत का तेल
और ख़ुशबूदार क्रीम लेकर मलिक देवता के पास
गई। तूने अपने क़ासिदों को दूर दूर बल्कि पाताल
तक भेज दिया। 10गो तू सफ़र करते करते बहुत
थक गई तो भी तूने कभी न कहा, 'फ़ज़ूल है!'
अब तक तुझे तक़वियत मिलती रही, इसलिए तू
निढाल न हुई।

11तुझे किससे इतना ख़ौफ़ो-हिरास था कि तूने
झूट बोलकर न मुझे याद किया, न परवा की?
ऐसा ही है ना, तू इसलिए मेरा ख़ौफ़ नहीं मानती
कि मैं ख़ामोश और छुपा रहा।

12लेकिन मैं लोगों पर तेरी नाम-निहाद
रास्तबाज़ी और तेरे काम ज़ाहिर करूँगा। यक़ीनन
यह तेरे लिए मुफ़ीद नहीं होंगे। 13आ, मदद के
लिए आवाज़ दे! देखते हैं कि तेरे बुतों का
मजमुआ तुझे बचा सकेगा कि नहीं। लेकिन ऐसा

नहीं होगा बल्कि उन्हें हवा उठा ले जाएगी, एक फूँक उन्हें उड़ा देगी।

लेकिन जो मुझ पर भरोसा रखे वह मुल्क को मीरास में पाएगा, मुक़द्दस पहाड़ उस की मौरूसी मिलकियत बनेगा।"

रब अपनी क़ौम की मदद करेगा

14अल्लाह फ़रमाता है, "रास्ता बनाओ, रास्ता
बनाओ! उसे साफ़-सुथरा करके हर रुकावट
दूर करो ताकि मेरी क़ौम आ सके।" 15क्योंकि
जो अज़ीम और सरबुलंद है, जो अबद तक
तख़्तनशीन और जिसका नाम क़ुद्दूस है वह
फ़रमाता है, "मैं न सिर्फ़ बुलंदियों के मक़दिस
में बल्कि शिकस्ताहाल और फ़रोतन रूह के
साथ भी सुकूनत करता हूँ ताकि फ़रोतन की
रूह और शिकस्ताहाल के दिल को नई ज़िंदगी
बख़्शूँ। 16क्योंकि मैं हमेशा तक उनके साथ नहीं
झगड़ूँगा, अबद तक नाराज़ नहीं रहूँगा। वरना
उनकी रूह मेरे हुज़ूर निढाल हो जाती, उन लोगों
की जान जिन्हें मैंने ख़ुद ख़लक़ किया। 17मैं
इसराईल का नाजायज़ मनाफ़े देखकर तैश में
आया और उसे सज़ा देकर अपना मुँह छुपाए
रखा। तो भी वह अपने दिल की बरगश्ता राहों
पर चलता रहा। 18लेकिन गो मैं उसके चाल-
चलन से वाक़िफ़ हूँ मैं उसे फिर भी शफ़ा दूँगा,
उस की राहनुमाई करके उसे दुबारा तसल्ली दूँगा।
और उसके जितने लोग मातम कर रहे हैं 19उनके
लिए मैं होंटों का फल पैदा करूँगा।" क्योंकि रब
फ़रमाता है, "उनकी सलामती हो जो दूर हैं और
उनकी जो क़रीब हैं। मैं ही उन्हें शफ़ा दूँगा।"
20लेकिन बेदीन मुतलातिम समुंदर की मानिंद
हैं जो थम नहीं सकता और जिसकी लहरें गंद और
कीचड़ उछालती रहती हैं। 21मेरा ख़ुदा फ़रमाता
है, "बेदीन सलामती नहीं पाएँगे।

रब को पसंदीदा रोज़ा

58 गला फाड़कर आवाज़ दे, रुक
रुककर बात न कर! नरसिंगे की-
सी बुलंद आवाज़ के साथ मेरी क़ौम को उस
की सरकशी सुना, याक़ूब के घराने को उसके
गुनाहों की फ़हरिस्त बयान कर। 2रोज़ बरोज़ वह
मेरी मरज़ी दरियाफ़्त करते हैं। हाँ, वह मेरी राहों
को जानने के शौक़ीन हैं, उस क़ौम की मानिंद
जिसने अपने ख़ुदा के अहकाम को तर्क नहीं किया
बल्कि रास्तबाज़ है। चुनाँचे वह मुझसे मुंसिफ़ाना
फ़ैसले माँगकर ज़ाहिरन अल्लाह की क़ुरबत से
लुत्फ़अंदोज़ होते हैं। 3वह शिकायत करते हैं,
'जब हम रोज़ा रखते हैं तो तू तवज्जुह क्यों नहीं
देता? जब हम अपने आपको ख़ाकसार बनाकर
इंकिसारी का इज़हार करते हैं तो तू ध्यान क्यों
नहीं देता?'
सुनो! रोज़ा रखते वक़्त तुम अपना कारोबार
मामूल के मुताबिक़ चलाकर अपने मज़दूरों को
दबाए रखते हो। 4न सिर्फ़ यह बल्कि तुम रोज़ा
रखने के साथ साथ झगड़ते और लड़ते भी हो।
तुम एक दूसरे को शरारत के मुक्के मारने से भी
नहीं चूकते। यह कैसी बात है? अगर तुम यों
रोज़ा रखो तो इसकी तवक़्क़ो नहीं कर सकते कि
तुम्हारी बात आसमान तक पहुँचे। 5क्या मुझे इस
क़िस्म का रोज़ा पसंद है? क्या यह काफ़ी है कि
बंदा अपने आपको कुछ देर के लिए ख़ाकसार
बनाकर इंकिसारी का इज़हार करे? कि वह अपने
सर को आबी नरसल की तरह झुकाकर टाट और
राख में लेट जाए? क्या तुम वाक़ई समझते हो
कि यह रोज़ा है, कि ऐसा वक़्त रब को पसंद है?
6यह किस तरह हो सकता है? जो रोज़ा मैं
पसंद करता हूँ वह फ़रक़ है। हक़ीक़ी रोज़ा यह
है कि तू बेइनसाफ़ी की ज़ंजीरों में जकड़े हुओं
को रिहा करे, मज़लूमों का जुआ हटाए, कुचले
हुओं को आज़ाद करे, हर जुए को तोड़े, 7भूके
को अपने खाने में शरीक करे, बेघर मुसीबतज़दा
को पनाह दे, बरहना को कपड़े पहनाए और अपने
रिश्तेदार की मदद करने से गुरेज़ न करे!
8अगर तू ऐसा करे तो तू सुबह की पहली
किरणों की तरह चमक उठेगा, और तेरे ज़ख़्म
जल्द ही भरेंगे। तब तेरी रास्तबाज़ी तेरे आगे

आगे चलेगी, और रब का जलाल तेरे पीछे तेरी
हिफ़ाज़त करेगा। 9तब तू फ़रियाद करेगा और
रब जवाब देगा। जब तू मदद के लिए पुकारेगा तो
वह फ़रमाएगा, 'मैं हाज़िर हूँ।'

अपने दरमियान दूसरों पर जुआ डालने,
उँगलियाँ उठाने और दूसरों की बदनामी करने
का सिलसिला ख़त्म कर! 10भूके को अपनी
रोटी दे और मज़लूमों की ज़रूरियात पूरी कर!
फिर तेरी रौशनी अंधेरे में चमक उठेगी और तेरी
रात दोपहर की तरह रौशन होगी। 11रब हमेशा
तेरी क़ियादत करेगा, वह झुलसते हुए इलाक़ों
में भी तेरी जान की ज़रूरियात पूरी करेगा और
तेरे आज़ा को तक़वियत देगा। तब तू सेराब बाग़
की मानिंद होगा, उस चश्मे की मानिंद जिसका
पानी कभी ख़त्म नहीं होता। 12तेरे लोग क़दीम
खंडरात को नए सिरे से तामीर करेंगे। जो बुनियादें
गुज़री नसलों ने रखी थीं उन्हें तू दुबारा रखेगा। तब
तू 'रख़ने को बंद करनेवाला' और 'गलियों को
दुबारा रहने के क़ाबिल बनानेवाला' कहलाएगा।

13सबत के दिन अपने पैरों को काम करने से
रोक। मेरे मुक़द्दस दिन के दौरान कारोबार मत
करना बल्कि उसे 'राहतबख़्श' और 'मुअज़्ज़ज़'
क़रार दे। उस दिन न मामूल की राहों पर चल, न
अपने कारोबार चला, न ख़ाली गप्पें हाँक। यों तू
सबत का सहीह एहतराम करेगा। 14तब रब तेरी
राहत का मंबा होगा, और मैं तुझे रथ में बिठाकर
मुल्क की बुलंदियों पर से गुज़रने दूँगा, तुझे तेरे
बाप याक़ूब की मीरास में से सेर करूँगा।" रब के
मुँह ने यह फ़रमाया है।

तुम्हारे क़ुसूर ने तुम्हें रब से दूर कर दिया है

59 यक़ीनन रब का बाज़ू छोटा नहीं कि
वह बचा न सके, उसका कान बहरा
नहीं कि सुन न सके। 2हक़ीक़त में तुम्हारे बुरे
कामों ने तुम्हें उससे अलग कर दिया, तुम्हारे
गुनाहों ने उसका चेहरा तुमसे छुपाए रखा,
इसलिए वह तुम्हारी नहीं सुनता। 3क्योंकि तुम्हारे
हाथ ख़ूनआलूदा, तुम्हारी उँगलियाँ गुनाह से
नापाक हैं। तुम्हारे होंट झूट बोलते और तुम्हारी
ज़बान शरीर बातें फुसफुसाती है। 4अदालत में
कोई मुंसिफ़ाना मुक़दमा नहीं चलाता, कोई सच्चे
दलायल पेश नहीं करता। लोग सच्चाई से ख़ाली
बातों पर एतबार करके झूट बोलते हैं, वह बदकारी
से हामिला होकर बेदीनी को जन्म देते हैं। 5-6वह
ज़हरीले साँपों के अंडों पर बैठ जाते हैं ताकि बच्चे
निकलें। जो उनके अंडे खाए वह मर जाता है, और
अगर उनके अंडे दबाए तो ज़हरीला साँप निकल
आता है। यह लोग मकड़ी के जाले तान लेते हैं,
ऐसा कपड़ा जो पहनने के लिए बेकार है। अपने
हाथों के बनाए हुए इस कपड़े से वह अपने आपको
ढाँप नहीं सकते। उनके आमाल बुरे ही हैं, उनके
हाथ तशद्दुद ही करते हैं। 7जहाँ भी ग़लत काम
करने का मौक़ा मिले वहाँ उनके पाँव भागकर
पहुँच जाते हैं। वह बेक़ुसूर को क़त्ल करने के लिए
तैयार रहते हैं। उनके ख़यालात शरीर ही हैं, अपने
पीछे वह तबाही-ओ-बरबादी छोड़ जाते हैं। 8न
वह सलामती की राह जानते हैं, न उनके रास्तों
में इनसाफ़ पाया जाता है। क्योंकि उन्होंने उन्हें
टेढ़ा-मेढ़ा बना रखा है, और जो भी उन पर चले
वह सलामती को नहीं जानता।

तौबा की दुआ

9इसी लिए इनसाफ़ हमसे दूर है, रास्ती हम
तक पहुँचती नहीं। हम रौशनी के इंतज़ार में रहते
हैं, लेकिन अफ़सोस, अंधेरा ही अंधेरा नज़र आता
है। हम आबो-ताब की उम्मीद रखते हैं, लेकिन
अफ़सोस, जहाँ भी चलते हैं वहाँ घनी तारीकी
छाई रहती है। 10हम अंधों की तरह दीवार को
हाथ से छू छूकर रास्ता मालूम करते हैं, आँखों
से महरूम लोगों की तरह टटोल टटोलकर आगे
बढ़ते हैं। दोपहर के वक़्त भी हम ठोकर खा खाकर
यों फिरते हैं जैसे धुँधलका हो। गो हम तनआवर
लोगों के दरमियान रहते हैं, लेकिन ख़ुद मुरदों की
मानिंद हैं। 11हम सब निढाल हालत में रीछों की
तरह ग़ुर्राते, कबूतरों की मानिंद ग़ूँ ग़ूँ करते हैं। हम
इनसाफ़ के इंतज़ार में रहते हैं, लेकिन बेसूद। हम

नजात की उम्मीद रखते हैं, लेकिन वह हमसे दूर
ही रहती है।
12क्योंकि हमारे मुतअद्दिद जरायम तेरे सामने
हैं, और हमारे गुनाह हमारे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं।
हमें मुतवातिर अपने जरायम का एहसास है, हम
अपने गुनाहों से ख़ूब वाक़िफ़ हैं। 13हम मानते हैं
कि रब से बेवफ़ा रहे बल्कि उसका इनकार भी
किया है। हमने अपना मुँह अपने ख़ुदा से फेरकर
ज़ुल्म और धोके की बातें फैलाई हैं। हमारे दिलों
में झूट का बीज बढ़ते बढ़ते मुँह में से निकला।
14नतीजे में इनसाफ़ पीछे हट गया, और रास्ती
दूर खड़ी रहती है। सच्चाई चौक में ठोकर खाकर
गिर गई है, और दियानतदारी दाख़िल ही नहीं
हो सकती। 15चुनाँचे सच्चाई कहीं भी पाई नहीं
जाती, और ग़लत काम से गुरेज़ करनेवाले को
लूटा जाता है।

रब का जवाब

यह सब कुछ रब को नज़र आया, और वह
नाख़ुश था कि इनसाफ़ नहीं है। 16उसने देखा
कि कोई नहीं है, वह हैरान हुआ कि मुदाख़लत
करनेवाला कोई नहीं है। तब उसके ज़ोरावर बाज़ू
ने उस की मदद की, और उस की रास्ती ने
उसको सहारा दिया। 17रास्ती के ज़िरा-बकतर
से मुलब्बस होकर उसने सर पर नजात का
ख़ोद रखा, इंतक़ाम का लिबास पहनकर उसने
ग़ैरत की चादर ओढ़ ली। 18हर एक को वह
उसका मुनासिब मुआवज़ा देगा। वह मुख़ालिफ़ों
पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करेगा और दुश्मनों से
बदला लेगा बल्कि जज़ीरों को भी उनकी हरकतों
का अज्र देगा। 19तब इनसान मग़रिब में रब के
नाम का ख़ौफ़ मानेंगे और मशरिक़ में उसे जलाल
देंगे। क्योंकि वह रब की फूँक से चलाए हुए
ज़ोरदार सैलाब की तरह उन पर टूट पड़ेगा।
20रब फ़रमाता है, "छुड़ानेवाला कोहे-सिय्यून
पर आएगा। वह याक़ूब के उन फ़रज़ंदों के पास
आएगा जो अपने गुनाहों को छोड़कर वापस
आएँगे।"
21रब फ़रमाता है, "जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है,
उनके साथ मेरा यह अहद है : मेरा रूह जो तुझ
पर ठहरा हुआ है और मेरे अलफ़ाज़ जो मैंने तेरे
मुँह में डाले हैं वह अब से अबद तक न तेरे मुँह से,
न तेरी औलाद के मुँह से और न तेरी औलाद की
औलाद से हटेंगे।" यह रब का फ़रमान है।

अक़वाम यरूशलम के नूर के पास आएँगी

60 "उठ, खड़ी होकर चमक उठ!
क्योंकि तेरा नूर आ गया है, और रब
का जलाल तुझ पर तुलू हुआ है। 2क्योंकि गो
ज़मीन पर तारीकी छाई हुई है और अक़वाम घने
अंधेरे में रहती हैं, लेकिन तुझ पर रब का नूर तुलू
हो रहा है, और उसका जलाल तुझ पर ज़ाहिर हो
रहा है। 3अक़वाम तेरे नूर के पास और बादशाह
उस चमकती-दमकती रौशनी के पास आएँगे जो
तुझ पर तुलू होगी।
4अपनी नज़र उठाकर चारों तरफ़ देख! सबके
सब जमा होकर तेरे पास आ रहे हैं। तेरे बेटे दूर
दूर से पहुँच रहे हैं, और तेरी बेटियों को गोद में
उठाकर क़रीब लाया जा रहा है। 5उस वक़्त तू
यह देखकर चमक उठेगी। तेरा दिल ख़ुशी के मारे
तेज़ी से धड़कने लगेगा और कुशादा हो जाएगा।
क्योंकि समुंदर के ख़ज़ाने तेरे पास लाए जाएंगे,
अक़वाम की दौलत तेरे पास पहुँचेगी। 6ऊँटों का
ग़ोल बल्कि मिदियान और ऐफ़ा के जवान ऊँट
तेरे मुल्क को ढाँप देंगे। वह सोने और बख़ूर
से लदे हुए और रब की हम्दो-सना करते हुए
मुल्के-सबा से आएँगे। 7क़ीदार की तमाम भेड़-
बकरियाँ तेरे हवाले की जाएँगी, और नबायोत के
मेंढे तेरी ख़िदमत के लिए हाज़िर होंगे। उन्हें मेरी
क़ुरबानगाह पर चढ़ाया जाएगा और मैं उन्हें पसंद
करूँगा। यों मैं अपने जलाल के घर को शानो-
शौकत से आरास्ता करूँगा।
8यह कौन हैं जो बादलों की तरह और काबुक
के पास वापस आनेवाले कबूतरों की मानिंद
उड़कर आ रहे हैं? 9यह तरसीस के ज़बरदस्त
बहरी जहाज़ हैं जो तेरे पास पहुँच रहे हैं। क्योंकि

जज़ीरे मुझसे उम्मीद रखते हैं। यह जहाज़ तेरे बेटों
को उनकी सोने-चाँदी समेत दूर-दराज़ इलाक़ों से
लेकर आ रहे हैं। यों रब तेरे ख़ुदा के नाम और
इसराईल के क़ुद्दूस की ताज़ीम होगी जिसने तुझे
शानो-शौकत से नवाज़ा है।

10परदेसी तेरी दीवारें अज़ सरे-नौ तामीर
करेंगे, और उनके बादशाह तेरी ख़िदमत करेंगे।
क्योंकि गो मैंने अपने ग़ज़ब में तुझे सज़ा दी,
लेकिन अब मैं अपने फ़ज़ल से तुझ पर रहम
करूँगा। 11तेरी फ़सील के दरवाज़े हमेशा खुले
रहेंगे। उन्हें न दिन को बंद किया जाएगा, न रात
को ताकि अक़वाम का मालो-दौलत और उनके
गिरिफ़्तार किए गए बादशाहों को शहर के अंदर
लाया जा सके। 12क्योंकि जो क़ौम या सलतनत
तेरी ख़िदमत करने से इनकार करे वह बरबाद हो
जाएगी, उसे पूरे तौर पर तबाह किया जाएगा।

13लुबनान की शानो-शौकत तेरे सामने हाज़िर
होगी। जूनीपर, सनोबर और सरो के दरख़्त
मिलकर तेरे पास आएँगे ताकि मेरे मक़दिस को
आरास्ता करें। यों मैं अपने पाँवों की चौकी को
जलाल दूँगा। 14तुझ पर ज़ुल्म करनेवालों के
बेटे झुक झुककर तेरे हुज़ूर आएँगे, तेरी तहक़ीर
करनेवाले तेरे पाँवों के सामने औंधे मुँह हो जाएंगे।
वह तुझे 'रब का शहर' और 'इसराईल के क़ुद्दूस
का सिय्यून' क़रार देंगे। 15पहले तुझे तर्क किया
गया था, लोग तुझसे नफ़रत रखते थे, और तुझमें
से कोई नहीं गुज़रता था। लेकिन अब मैं तुझे
अबदी फ़ख़र का बाइस बना दूँगा, और तमाम
नसलें तुझे देखकर ख़ुश होंगी।

16तू अक़वाम का दूध पिएगी, और बादशाह
तुझे दूध पिलाएँगे। तब तू जान लेगी कि मैं रब तेरा
नजातदहिंदा हूँ, कि मैं जो याक़ूब का ज़बरदस्त
सूरमा हूँ तेरा छुड़ानेवाला हूँ।

17मैं तेरे पीतल को सोने में, तेरे लोहे को चाँदी
में, तेरी लकड़ी को पीतल में और तेरे पत्थर को
लोहे में बदलूँगा। मैं सलामती को तेरी मुहाफ़िज़
और रास्ती को तेरी निगरान बनाऊँगा। 18अब से
तेरे मुल्क में न तशद्दुद का ज़िक्र होगा, न बरबादी-
ओ-तबाही का। अब से तेरी चारदीवारी 'नजात'
और तेरे दरवाज़े 'हम्दो-सना' कहलाएँगे।

19आइंदा तुझे न दिन के वक़्त सूरज, न रात
के वक़्त चाँद की ज़रूरत होगी, क्योंकि रब ही
तेरी अबदी रौशनी होगा, तेरा ख़ुदा ही तेरी आबो-
ताब होगा। 20आइंदा तेरा सूरज कभी ग़ुरूब नहीं
होगा, तेरा चाँद कभी नहीं घटेगा। क्योंकि रब तेरा
अबदी नूर होगा, और मातम के तेरे दिन ख़त्म हो
जाएंगे।

21तब तेरी क़ौम के तमाम अफ़राद रास्तबाज़
होंगे, और मुल्क हमेशा तक उनकी मिलकियत
रहेगा। क्योंकि वह मेरे हाथ से लगाई हुई पनीरी
होंगे, मेरे हाथ का काम जिससे मैं अपना जलाल
ज़ाहिर करूँगा। 22तब सबसे छोटे ख़ानदान की
तादाद बढ़कर हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल होगी,
सबसे कमज़ोर कुंबा ताक़तवर क़ौम बनेगा।
मुक़र्ररा वक़्त पर मैं, रब यह सब कुछ तेज़ी से
अंजाम दूँगा।"

मातम का वक़्त ख़त्म है

61 रब क़ादिरे-मुतलक़ का रूह मुझ पर
है, क्योंकि रब ने मुझे तेल से मसह
करके ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने का इख़्तियार
दिया है। उसने मुझे शिकस्तादिलों की मरहम-
पट्टी करने के लिए और यह एलान करने के
लिए भेजा है कि क़ैदियों को रिहाई मिलेगी और
ज़ंजीरों में जकड़े हुए आज़ाद हो जाएंगे, 2कि
बहाली का साल और हमारे ख़ुदा के इंतक़ाम
का दिन आ गया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं
तमाम मातम करनेवालों को तसल्ली दूँ 3और
सिय्यून के सोगवारों को दिलासा देकर राख के
बजाए शानदार ताज, मातम के बजाए ख़ुशी का
तेल और शिकस्ता रूह के बजाए हम्दो-सना का
लिबास मुहैया करूँ।

तब वह 'रास्ती के दरख़्त' कहलाएँगे, ऐसे पौदे
जो रब ने अपना जलाल ज़ाहिर करने के लिए
लगाए हैं। 4वह क़दीम खंडरात को अज़ सरे-नौ
तामीर करके देर से बरबाद हुए मक़ामों को बहाल

करेंगे। वह उन तबाहशुदा शहरों को दुबारा क़ायम
करेंगे जो नसल-दर-नसल वीरानो-सुनसान रहे हैं।
5ग़ैरमुल्की खड़े होकर तुम्हारी भेड़-बकरियों की
गल्लाबानी करेंगे, परदेसी तुम्हारे खेतों और बाग़ों
में काम करेंगे। 6उस वक़्त तुम 'रब के इमाम'
कहलाओगे, लोग तुम्हें 'हमारे ख़ुदा के ख़ादिम'
क़रार देंगे।

तुम अक़वाम की दौलत से लुत्फ़अंदोज़ होगे,
उनकी शानो-शौकत अपनाकर उस पर फ़ख़र
करोगे। 7तुम्हारी शरमिंदगी नहीं रहेगी बल्कि तुम
इज़्ज़त का दुगना हिस्सा पाओगे, तुम्हारी रुसवाई
नहीं रहेगी बल्कि तुम शानदार हिस्सा मिलने के
बाइस शादियाना बजाओगे। क्योंकि तुम्हें वतन में
दुगना हिस्सा मिलेगा, और अबदी ख़ुशी तुम्हारी
मीरास होगी।

8क्योंकि रब फ़रमाता है, "मुझे इनसाफ़ पसंद
है। मैं ग़ारतगरी और कजरवी से नफ़रत रखता हूँ।
मैं अपने लोगों को वफ़ादारी से उनका अज्र दूँगा,
मैं उनके साथ अबदी अहद बाँधूँगा। 9उनकी नसल
अक़वाम में और उनकी औलाद दीगर उम्मतों में
मशहूर होगी। जो भी उन्हें देखे वह जान लेगा कि
रब ने उन्हें बरकत दी है।"

10मैं रब से निहायत ही शादमान हूँ, मेरी जान
अपने ख़ुदा की तारीफ़ में ख़ुशी के गीत गाती है।
क्योंकि जिस तरह दूल्हा अपना सर इमाम की-
सी पगड़ी से सजाता और दुलहन अपने आपको
अपने ज़ेवरात से आरास्ता करती है उसी तरह
अल्लाह ने मुझे नजात का लिबास पहनाकर
रास्ती की चादर में लपेटा है। 11क्योंकि जिस
तरह ज़मीन अपनी हरियाली को निकलने देती
और बाग़ अपने बीजों को फूटने देता है उसी तरह
रब क़ादिरे-मुतलक़ अक़वाम के सामने अपनी
रास्ती और सताइश फूटने देगा।

यरूशलम की बहाली

62 सिय्यून की ख़ातिर मैं ख़ामोश नहीं
रहूँगा, यरूशलम की ख़ातिर तब तक
आराम नहीं करूँगा जब तक उस की रास्ती तुलूए-
सुबह की तरह न चमके और उस की नजात
मशाल की तरह न भड़के।

2अक़वाम तेरी रास्ती देखेंगी, तमाम बादशाह
तेरी शानो-शौकत का मुशाहदा करेंगे। उस वक़्त
तुझे नया नाम मिलेगा, ऐसा नाम जो रब का
अपना मुँह मुतैयिन करेगा। 3तू रब के हाथ
में शानदार ताज और अपने ख़ुदा के हाथ
में शाही कुलाह होगी। 4आइंदा लोग तुझे न
कभी 'मतरूका' न तेरे मुल्क को 'वीरानो-
सुनसान' क़रार देंगे बल्कि तू मेरा लुत्फ़ और
तेरा मुल्क ब्याही कहलाएगा। क्योंकि रब तुझसे
लुत्फ़अंदोज़ होगा, और तेरा मुल्क शादीशुदा
होगा। 5जिस तरह जवान आदमी कुँवारी से शादी
करता है उसी तरह तेरे फ़रज़ंद तुझे ब्याह लेंगे।
और जिस तरह दूल्हा दुलहन के बाइस ख़ुशी
मनाता है उसी तरह तेरा ख़ुदा तेरे सबब से ख़ुशी
मनाएगा।

6ऐ यरूशलम, मैंने तेरी फ़सील पर पहरेदार
लगाए हैं जो दिन-रात आवाज़ दें। उन्हें एक लमहे
के लिए भी ख़ामोश रहने की इजाज़त नहीं है। ऐ
रब को याद दिलानेवालो, उस वक़्त तक न ख़ुद
आराम करो, 7न रब को आराम करने दो जब तक
वह यरूशलम को अज़ सरे-नौ क़ायम न कर ले।
जब पूरी दुनिया शहर की तारीफ़ करेगी तब ही तुम
सुकून का साँस ले सकते हो। 8रब ने अपने दाएँ
हाथ और ज़ोरावर बाज़ू की क़सम खाकर वादा
किया है, "आइंदा न मैं तेरा ग़ल्ला तेरे दुश्मनों को
खिलाऊँगा, न बड़ी मेहनत से बनाई गई तेरी मै
को अजनबियों को पिलाऊँगा। 9क्योंकि आइंदा
फ़सल की कटाई करनेवाले ही रब की सताइश
करते हुए उसे खाएँगे, और अंगूर चुननेवाले ही मेरे
मक़दिस के सहनों में आकर उनका रस पिएँगे।"

10दाख़िल हो जाओ, शहर के दरवाज़ों में
दाख़िल हो जाओ! क़ौम के लिए रास्ता तैयार
करो! रास्ता बनाओ, रास्ता बनाओ! उसे पत्थरों
से साफ़ करो! तमाम अक़वाम के ऊपर झंडा गाड़
दो!

11क्योंकि रब ने दुनिया की इंतहा तक एलान
किया है, “सिय्यून बेटी को बताओ कि देख, तेरी
नजात आनेवाली है। देख, उसका अज्र उसके
पास है, उसका इनाम उसके आगे आगे चल रहा
है।” 12तब वह ‘मुक़द्दस क़ौम’ और ‘वह क़ौम
जिसे रब ने एवज़ाना देकर छुड़ाया है’ कहलाएँगे।
ऐ यरूशलम बेटी, तू ‘मरग़ूब’ और ‘ग़ैरमतरूका
शहर’ कहलाएगी।

अल्लाह अपनी क़ौम की अदालत करता है

63 यह कौन है जो अदोम से आ रहा है,
जो सुर्ख़ सुर्ख़ कपड़े पहने बुसरा शहर
से पहुँच रहा है? यह कौन है जो रोब से मुलब्बस
बड़ी ताक़त के साथ आगे बढ़ रहा है? “मैं ही हूँ,
वह जो इनसाफ़ से बोलता, जो बड़ी क़ुदरत से
तुझे बचाता है।”

2तेरे कपड़े क्यों इतने लाल हैं? लगता है कि
तेरा लिबास हौज़ में अंगूर कुचलने से सुर्ख़ हो गया
है।

3“मैं अंगूरों को अकेला ही कुचलता रहा हूँ,
अक़्वाम में से कोई मेरे साथ नहीं था। मैंने ग़ुस्से में
आकर उन्हें कुचला, तैश में उन्हें रौंदा। उनके ख़ून
की छींटें मेरे कपड़ों पर पड़ गईं, मेरा सारा लिबास
आलूदा हुआ। 4क्योंकि मेरा दिल इंतक़ाम लेने
पर तुला हुआ था, अपनी क़ौम का एवज़ाना देने
का साल आ गया था। 5मैंने अपने इर्दगिर्द नज़र
दौड़ाई, लेकिन कोई नहीं था जो मेरी मदद करता।
मैं हैरान था कि किसी ने भी मेरा साथ न दिया।
चुनाँचे मेरे अपने बाज़ू ने मेरी मदद की, और मेरे
तैश ने मुझे सहारा दिया। 6ग़ुस्से में आकर मैंने
अक़्वाम को पामाल किया, तैश में उन्हें मदहोश
करके उनका ख़ून ज़मीन पर गिरा दिया।”

रब की तमजीद

7मैं रब की मेहरबानियाँ सुनाऊँगा, उसके
क़ाबिले-तारीफ़ कामों की तमजीद करूँगा। जो
कुछ रब ने हमारे लिए किया, जो मुतअद्दिद
भलाइयाँ उसने अपने रहम और बड़े फ़ज़्ल से
इसराईल को दिखाई हैं उनकी सताइश करूँगा।

8उसने फ़रमाया, “यक़ीनन यह मेरी क़ौम के
हैं, ऐसे फ़रज़ंद जो बेवफ़ा नहीं होंगे।” यह कहकर
वह उनका नजातदहिंदा बन गया, 9वह उनकी
तमाम मुसीबत में शरीक हुआ, और उसके हुज़ूर
के फ़रिश्ते ने उन्हें छुटकारा दिया। वह उन्हें प्यार
करता, उन पर तरस खाता था, इसलिए उसने
एवज़ाना देकर उन्हें छुड़ाया। हाँ, क़दीम ज़माने से
आज तक वह उन्हें उठाए फिरता रहा।

10लेकिन वह सरकश हुए, उन्होंने उसके क़ुद्दूस
रूह को दुख पहुँचाया। तब वह मुड़कर उनका
दुश्मन बन गया। ख़ुद वह उनसे लड़ने लगा।

11फिर उस की क़ौम को वह क़दीम ज़माना
याद आया जब मूसा अपनी क़ौम के दरमियान
था, और वह पुकार उठे, “वह कहाँ है जो अपनी
भेड़-बकरियों को उनके गल्लाबानों समेत समुंदर
में से निकाल लाया? वह कहाँ है जिसने अपने
रूहुल-क़ुद्स को उनके दरमियान नाज़िल किया,
12जिसकी जलाली क़ुदरत मूसा के दाएँ हाथ
हाज़िर रही ताकि उसको सहारा दे? वह कहाँ है
जिसने पानी को इसराईलियों के सामने तक़सीम
करके अपने लिए अबदी शोहरत पैदा की 13और
उन्हें गहराइयों में से गुज़रने दिया? उस वक़्त वह
खुले मैदान में चलनेवाले घोड़े की तरह आराम से
गुज़रे और कहीं भी ठोकर न खाई। 14जिस तरह
गाय-बैल आराम के लिए वादी में उतरते हैं उसी
तरह उन्हें रब के रूह से आराम और सुकून हासिल
हुआ।”

इसी तरह तूने अपनी क़ौम की राहनुमाई की
ताकि तेरे नाम को जलाल मिले।

तौबा की दुआ

15ऐ अल्लाह, आसमान से हम पर नज़र
डाल, बुलंदियों पर अपनी मुक़द्दस और शानदार
सुकूनतगाह से देख! इस वक़्त तेरी ग़ैरत और
क़ुदरत कहाँ है? हम तेरी नरमी और मेहरबानियों
से महरूम रह गए हैं! 16तू तो हमारा बाप है।

क्योंकि इब्राहीम हमें नहीं जानता और इसराईल
हमें नहीं पहचानता, लेकिन तू, रब हमारा बाप है,
क़दीम ज़माने से ही तेरा नाम 'हमारा छुड़ानेवाला'
है। 17ऐ रब, तू हमें अपनी राहों से क्यों भटकने
देता है? तूने हमारे दिलों को इतना सख़्त क्यों कर
दिया कि हम तेरा ख़ौफ़ नहीं मान सकते? हमारी
ख़ातिर वापस आ! क्योंकि हम तेरे ख़ादिम, तेरी
मौरूसी मिलकियत के क़बीले हैं। 18तेरा मक़दिस
थोड़ी ही देर के लिए तेरी क़ौम की मिलकियत
रहा, लेकिन अब हमारे मुख़ालिफ़ों ने उसे पाँवों
तले रौंद डाला है। 19लगता है कि हम कभी तेरी
हुकूमत के तहत नहीं रहे, कि हम पर कभी तेरे
नाम का ठप्पा नहीं लगा था।

64 काश तू आसमान को फाड़कर
उतर आए, कि पहाड़ तेरे साम-
ने थरथराएँ। 2काश तू डालियों को भड़का
देनेवाली आग या पानी को एकदम उबाल-
नेवाली आतिश की तरह नाज़िल हो ताकि तेरे
दुश्मन तेरा नाम जान लें और क़ौमें तेरे सामने
लरज़ उठें! 3क्योंकि क़दीम ज़माने में जब तू
ख़ौफ़नाक और ग़ैरमुतवक़्क़े काम किया करता
था तो यों ही नाज़िल हुआ, और पहाड़ यों ही तेरे
सामने काँपने लगे। 4क़दीम ज़माने से ही किसी ने
तेरे सिवा किसी और ख़ुदा को न देखा न सुना है।
सिर्फ़ तू ही ऐसा ख़ुदा है जो उनकी मदद करता है
जो तेरे इंतज़ार में रहते हैं।

5तू उनसे मिलता है जो ख़ुशी से रास्त काम
करते, जो तेरी राहों पर चलते हुए तुझे याद करते
हैं! अफ़सोस, तू हमसे नाराज़ हुआ, क्योंकि हम
शुरू से तेरा गुनाह करके तुझसे बेवफ़ा रहे हैं।
तो फिर हम किस तरह बच जाएंगे? 6हम सब
नापाक हो गए हैं, हमारे तमाम नाम-निहाद रास्त
काम गंदे चीथड़ों की मानिंद हैं। हम सब पत्तों की
तरह मुरझा गए हैं, और हमारे गुनाह हमें हवा के
झोंकों की तरह उड़ाकर ले जा रहे हैं।

7कोई नहीं जो तेरा नाम पुकारे या तुझसे
लिपटने की कोशिश करे। क्योंकि तूने अपना
चेहरा हमसे छुपाकर हमें हमारे क़ुसूरों के हवाले
छोड़ दिया है।

8ऐ रब, ताहम तू ही हमारा बाप, हमारा कुम्हार
है। हम सब मिट्टी ही हैं जिसे तेरे हाथ ने तश्कील
दिया है। 9ऐ रब, हद से ज़्यादा हमसे नाराज़ न
हो! हमारे गुनाह तुझे हमेशा तक याद न रहें।
ज़रा इसका लिहाज़ कर कि हम सब तेरी क़ौम
हैं। 10तेरे मुक़द्दस शहर वीरान हो गए हैं, यहाँ तक
कि सिय्यून भी बयाबान ही है, यरूशलम वीरानो-
सुनसान है। 11हमारा मुक़द्दस और शानदार घर
जहाँ हमारे बापदादा तेरी सताइश करते थे नज़रे-
आतिश हो गया है, जो कुछ भी हम अज़ीज़ रखते
थे वह खंडर बन गया है।

12ऐ रब, क्या तू इन वाक़ियात के बावुजूद भी
अपने आपको हमसे दूर रखेगा? क्या तू ख़ामोश
रहकर हमें हद से ज़्यादा पस्त होने देगा?।

रब का ग़ज़ब क़ौम पर नाज़िल होगा

65 "जो मेरे बारे में दरियाफ़्त नहीं करते
थे उन्हें मैंने मुझे ढूँडने का मौक़ा दिया।
जो मुझे तलाश नहीं करते थे उन्हें मैंने मुझे पाने
का मौक़ा दिया। मैं बोला, 'मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर
हूँ!' हालाँकि जिस क़ौम से मैं मुख़ातिब हुआ वह
मेरा नाम नहीं पुकारती थी।

2दिन-भर मैंने अपने हाथ फैलाए रखे ताकि
एक सरकश क़ौम का इस्तक़बाल करूँ, हालाँकि
यह लोग ग़लत राह पर चलते और अपने
कजरौ ख़यालात के पीछे पड़े रहते हैं। 3यह
मुतवातिर और मेरे रूबरू ही मुझे नाराज़ करते हैं।
क्योंकि यह बाग़ों में क़ुरबानियाँ चढ़ाकर ईंटों की
क़ुरबानगाहों पर बख़ूर जलाते हैं। 4यह क़ब्रिस्तान
में बैठकर ख़ुफ़िया ग़ारों में रात गुज़ारते हैं। यह
सुअर का गोश्त खाते हैं, उनकी देगों में क़ाबिले-
घिन शोरबा होता है। 5साथ साथ यह एक दूसरे
से कहते हैं, 'मुझसे दूर रहो, क़रीब मत आना!
क्योंकि मैं तेरी निसबत कहीं ज़्यादा मुक़द्दस हूँ।'

इस क़िस्म के लोग मेरी नाक में धुएँ की मानिंद
हैं, एक आग जो दिन-भर जलती रहती है। 6देखो,

यह बात मेरे सामने ही क़लमबंद हुई है कि मैं ख़ामोश नहीं रहूँगा बल्कि पूरा पूरा अज्र दूँगा। मैं उनकी झोली उनके अज्र से भर दूँगा।”
7रब फ़रमाता है, “उन्हें न सिर्फ़ उनके अपने गुनाहों की सज़ा मिलेगी बल्कि बापदादा के गुनाहों की भी। चूँकि उन्होंने पहाड़ों पर बख़ूर की क़ुरबानियाँ चढ़ाकर मेरी तहक़ीर की इसलिए मैं उनकी झोली उनकी हरकतों के मुआवज़े से भर दूँगा।”

मौत न चुनो बल्कि हयात!

8रब फ़रमाता है, “जब तक अंगूर में थोड़ा-सा रस बाक़ी हो लोग कहते हैं, ‘उसे ज़ाया मत करना, क्योंकि अब तक उसमें कुछ न कुछ है जो बरकत का बाइस है।’ मैं इसराईल के साथ भी ऐसा ही करूँगा। क्योंकि अपने ख़ादिमों की ख़ातिर मैं सबको नेस्त नहीं करूँगा।
9मैं याक़ूब और यहूदाह को ऐसी औलाद बख़्श दूँगा जो मेरे पहाड़ों को मीरास में पाएगी। तब पहाड़ मेरे बरगुज़ीदों की मिलकियत होंगे, और मेरे ख़ादिम उन पर बसेंगे।
10वादीए-शारून में भेड़-बकरियाँ चरेंगी, वादीए-अकूर में गाय-बैल आराम करेंगे। यह सब कुछ मेरी उस क़ौम को दस्तयाब होगा जो मेरी तालिब रहेगी।

11लेकिन तुम जो रब को तर्क करके मेरे मुक़द्दस पहाड़ को भूल गए हो, ख़बरदार! गो इस वक़्त तुम ख़ुशक़िस्मती के देवता जद के लिए मेज़ बिछाते और तक़दीर के देवता मनात के लिए मै का बरतन भर देते हो,
12लेकिन तुम्हारी तक़दीर और है। मैंने तुम्हारे लिए तलवार की तक़दीर मुक़र्रर की है। तुम सबको क़साई के सामने झुकना पड़ेगा, क्योंकि जब मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने जवाब न दिया। जब मैं तुमसे हमकलाम हुआ तो तुमने न सुना बल्कि वह कुछ किया जो मुझे बुरा लगा। तुमने वह कुछ इख़्तियार किया जो मुझे नापसंद है।”

13इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “मेरे ख़ादिम खाना खाएँगे, लेकिन तुम भूके रहोगे। मेरे ख़ादिम पानी पिएँगे, लेकिन तुम प्यासे रहोगे। मेरे ख़ादिम मसरूर होंगे, लेकिन तुम शर्मसार होगे।
14मेरे ख़ादिम ख़ुशी के मारे शादियाना बजाएंगे, लेकिन तुम रंजीदा होकर रो पड़ोगे, तुम मायूस होकर वावैला करोगे।
15आख़िरकार तुम्हारा नाम ही मेरे बरगुज़ीदों के पास बाक़ी रहेगा, और वह भी सिर्फ़ लानत के तौर पर इस्तेमाल होगा। क़सम खाते वक़्त वह कहेंगे, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ तुम्हें इसी तरह क़त्ल करे।’ लेकिन मेरे ख़ादिमों का एक और नाम रखा जाएगा।
16मुल्क में जो भी अपने लिए बरकत माँगे या क़सम खाए वह वफ़ादार ख़ुदा का नाम लेगा। क्योंकि गुज़री मुसीबतों की यादें मिट जाएँगी, वह मेरी आँखों से छुप जाएँगी।

नए ज़माने का आग़ाज़

17क्योंकि मैं नया आसमान और नई ज़मीन ख़लक़ करूँगा। तब गुज़री चीज़ें याद नहीं आएँगी, उनका ख़याल तक नहीं आएगा।

18चुनाँचे ख़ुशो-ख़ुर्रम हो! जो कुछ मैं ख़लक़ करूँगा उस की हमेशा तक ख़ुशी मनाओ! क्योंकि देखो, मैं यरूशलम को शादमानी का बाइस और उसके बाशिंदों को ख़ुशी का सबब बनाऊँगा।
19मैं ख़ुद भी यरूशलम की ख़ुशी मनाऊँगा और अपनी क़ौम से लुत्फ़अंदोज़ हूँगा।

आइंदा उसमें रोना और वावैला सुनाई नहीं देगा।
20वहाँ कोई भी पैदाइश के थोड़े दिनों बाद फ़ौत नहीं होगा, कोई भी वक़्त से पहले नहीं मरेगा। जो सौ साल का होगा उसे जवान समझा जाएगा, और जो सौ साल की उम्र से पहले ही फ़ौत हो जाए उसे मलऊन समझा जाएगा।

21लोग घर बनाकर उनमें बसेंगे, वह अंगूर के बाग़ लगाकर उनका फल खाएँगे।
22आइंदा ऐसा नहीं होगा कि घर बनाने के बाद कोई और उसमें बसे, कि बाग़ लगाने के बाद कोई और उसका फल खाए। क्योंकि मेरी क़ौम की उम्र दरख़्तों जैसी दराज़ होगी, और मेरे बरगुज़ीदा अपने हाथों के काम से लुत्फ़अंदोज़ होंगे।
23न उनकी मेहनत-मशक़्क़त रायगाँ जाएगी, न उनके बच्चे अचानक

तशद्दुद का निशाना बनकर मरेंगे। क्योंकि वह
रब की मुबारक नसल होंगे, वह ख़ुद और उनकी
औलाद भी। 24इससे पहले कि वह आवाज़ दें मैं
जवाब दूँगा, वह अभी बोल रहे होंगे कि मैं उनकी
सुनूँगा।"

25रब फ़रमाता है, "भेड़िया और लेला मिलकर
चरेंगे, शेरबबर बैल की तरह भूसा खाएगा, और
साँप की ख़ुराक ख़ाक ही होगी। मेरे पूरे मुक़द्दस
पहाड़ पर न ग़लत काम किया जाएगा, न किसी
को नुक़सान पहुँचेगा।"

दो मालिकों की ख़िदमत करना नामुमकिन है

66 रब फ़रमाता है, "आसमान मेरा तख़्त
है और ज़मीन मेरे पाँवों की चौकी, तो
फिर वह घर कहाँ है जो तुम मेरे लिए बनाओगे?
वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?" 2रब
फ़रमाता है, "मेरे हाथ ने यह सब कुछ बनाया,
तब ही यह सब कुछ वुजूद में आया। और मैं
उसी का ख़याल रखता हूँ जो मुसीबतज़दा और
शिकस्तादिल है, जो मेरे कलाम के सामने काँपता
है।

3लेकिन बैल को ज़बह करनेवाला क़ातिल के
बराबर और लेले को क़ुरबान करनेवाला कुत्ते
की गरदन तोड़नेवाले के बराबर है। ग़ल्ला की
नज़र पेश करनेवाला सुअर का ख़ून चढ़ानेवाले
से बेहतर नहीं, और बख़ूर जलानेवाला बुतपरस्त
की मानिंद है। इन लोगों ने अपनी ग़लत राहों
को इख़्तियार किया है, और इनकी जान अपनी
घिनौनी चीज़ों से लुत्फ़अंदोज़ होती है। 4जवाब में
मैं भी उनसे बदसुलूकी की राह इख़्तियार करूँगा,
मैं उन पर वह कुछ नाज़िल करूँगा जिससे वह
दहशत खाते हैं। क्योंकि जब मैंने उन्हें आवाज़
दी तो किसी ने जवाब न दिया, जब मैं बोला तो
उन्होंने न सुना बल्कि वही कुछ करते रहे जो मुझे
बुरा लगा, वही करने पर तुले रहे जो मुझे नापसंद
है।"

यरूशलम के साथ ख़ुशी मनाओ

5ऐ रब के कलाम के सामने लरज़नेवालो,
उसका फ़रमान सुनो! "तुम्हारे अपने भाई तुमसे
नफ़रत करते और मेरे नाम के बाइस तुम्हें रद्द
करते हैं। वह मज़ाक़ उड़ाकर कहते हैं, 'रब अपने
जलाल का इज़हार करे ताकि हम तुम्हारी ख़ुशी
का मुशाहदा कर सकें।' लेकिन वह शरमिंदा हो
जाएंगे।

6सुनो! शहर में शोरो-ग़ौग़ा हो रहा है। सुनो!
रब के घर से हलचल की आवाज़ सुनाई दे रही
है। सुनो! रब अपने दुश्मनों को उनकी मुनासिब
सज़ा दे रहा है।

7दर्दे-ज़ह में मुब्तला होने से पहले ही यरूशलम
ने बच्चा जन्म दिया, ज़च्चगी की ईज़ा से पहले ही
उसके बेटा पैदा हुआ। 8किसने कभी ऐसी बात
सुनी है? किसने कभी इस क़िस्म का मामला
देखा है? क्या कोई मुल्क एक ही दिन के अंदर
अंदर पैदा हो सकता है? क्या कोई क़ौम एक
ही लमहे में जन्म ले सकती है? लेकिन सिय्यून
के साथ ऐसा ही हुआ है। दर्दे-ज़ह अभी शुरू ही
होना था कि उसके बच्चे पैदा हुए।" 9रब फ़रमाता
है, "क्या मैं बच्चे को यहाँ तक लाऊँ कि वह माँ
के पेट से निकलनेवाला हो और फिर उसे जन्म
लेने न दूँ? हरगिज़ नहीं!" तेरा ख़ुदा फ़रमाता है,
"क्या मैं जो बच्चे को पैदा होने देता हूँ बच्चे को
रोक दूँ? कभी नहीं!"

10"ऐ यरूशलम को प्यार करनेवालो, सब
उसके साथ ख़ुशी मनाओ! ऐ शहर पर मातम
करनेवालो, सब उसके साथ शादियाना बजाओ!
11क्योंकि अब तुम उस की तसल्ली दिलानेवाली
छाती से जी भरकर दूध पियोगे, तुम उसके
शानदार दूध की कसरत से लुत्फ़अंदोज़ होगे।"
12क्योंकि रब फ़रमाता है, "मैं यरूशलम में
सलामती का दरिया बहने दूँगा और उस पर
अक़वाम की शानो-शौकत का सैलाब आने दूँगा।
तब वह तुम्हें अपना दूध पिलाकर उठाए फिरेगी,
तुम्हें गोद में बिठाकर प्यार करेगी। 13मैं तुम्हें

माँ की-सी तसल्ली दूँगा, और तुम यरूशलम
को देखकर तसल्ली पाओगे। 14इन बातों का
मुशाहदा करके तुम्हारा दिल ख़ुश होगा और तुम
ताज़ा हरियाली की तरह फलो-फूलोगे।”

उस वक़्त ज़ाहिर हो जाएगा कि रब का हाथ
उसके ख़ादिमों के साथ है जबकि उसके दुश्मन
उसके ग़ज़ब का निशाना बनेंगे। 15रब आग की
सूरत में आ रहा है, आँधी जैसे रथों के साथ
नाज़िल हो रहा है ताकि दहकते कोयलों से
अपना ग़ुस्सा ठंडा करे और शोला-अफ़शाँ आग
से मलामत करे। 16क्योंकि रब आग और अपनी
तलवार के ज़रीए तमाम इनसानों की अदालत
करके अपने हाथ से मुतअद्दिद लोगों को हलाक
करेगा।

17रब फ़रमाता है, “जो अपने आपको बुतों के
बाग़ों के लिए मख़सूस और पाक-साफ़ करते हैं
और दरमियान के राहनुमा की पैरवी करके सुअर,
चूहे और दीगर घिनौनी चीज़ें खाते हैं वह मिलकर
हलाक हो जाएंगे।

दीगर अक़्वाम भी रब की परस्तिश करेंगी

18चुनाँचे मैं जो उनके आमाल और ख़यालात
से वाक़िफ़ हूँ तमाम अक़्वाम और अलग अलग
ज़बानें बोलनेवालों को जमा करने के लिए नाज़िल
हो रहा हूँ। तब वह आकर मेरे जलाल का मुशाहदा
करेंगे। 19मैं उनके दरमियान इलाही निशान
क़ायम करके बचे हुओं में से कुछ दीगर अक़्वाम
के पास भेज दूँगा। वह तरसीस, लिबिया, तीर
चलाने की माहिर क़ौम लुदिया, तूबल, यूनान और
उन दूर-दराज़ जज़ीरों के पास जाएंगे जिन्होंने न
मेरे बारे में सुना, न मेरे जलाल का मुशाहदा किया
है। इन अक़्वाम में वह मेरे जलाल का एलान
करेंगे।

20फिर वह तमाम अक़्वाम में रहनेवाले
तुम्हारे भाइयों को घोड़ों, रथों, गाड़ियों,
ख़च्चरों और ऊँटों पर सवार करके यरू-
शलम ले आएँगे। यहाँ मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर
वह उन्हें ग़ल्ला की नज़र के तौर पर पेश करेंगे।
क्योंकि रब फ़रमाता है कि जिस तरह इसराईली
अपनी ग़ल्ला की नज़रें पाक बरतनों में रखकर
रब के घर में ले आते हैं उसी तरह वह तुम्हारे
इसराईली भाइयों को यहाँ पेश करेंगे। 21उनमें से
मैं बाज़ को इमाम और लावी का ओहदा दूँगा।”
यह रब का फ़रमान है।

22रब फ़रमाता है, “जितने यक़ीन के साथ मेरा
बनाया हुआ नया आसमान और नई ज़मीन मेरे
सामने क़ायम रहेगा उतने यक़ीन के साथ तुम्हारी
नसल और तुम्हारा नाम अबद तक क़ायम रहेगा।
23उस वक़्त तमाम इनसान मेरे पास आकर
मुझे सिजदा करेंगे। हर नए चाँद और हर सबत
को वह बाक़ायदगी से आते रहेंगे।” यह रब का
फ़रमान है। 24“तब वह शहर से निकलकर उनकी
लाशों पर नज़र डालेंगे जो मुझसे सरकश हुए थे।
क्योंकि न उन्हें खानेवाले कीड़े कभी मरेंगे, न उन्हें
जलानेवाली आग कभी बुझेगी। तमाम इनसान
उनसे घिन खाएँगे।”

यरमियाह

रब का नबी यरमियाह

1 ज़ैल में यरमियाह बिन ख़िलक़ियाह
के पैग़ामात क़लमबंद किए गए हैं।
(बिनयमीन के क़बायली इलाक़े के शहर अनतोत
में कुछ इमाम रहते थे, और यरमियाह का वालिद
उनमें से था)। 2रब का फ़रमान पहली बार यहूदाह
के बादशाह यूसियाह बिन अमून की हुकूमत
के 13वें साल में यरमियाह पर नाज़िल हुआ,
3और यरमियाह को यह पैग़ामात यहूयक़ीम बिन
यूसियाह के दौरे-हुकूमत से लेकर सिदक़ियाह
बिन यूसियाह की हुकूमत के 11वें साल के पाँचवें
महीने[a] तक मिलते रहे। उस वक़्त यरूशलम के
बाशिंदों को जिलावतन कर दिया गया।

यरमियाह की बुलाहट

4एक दिन रब का कलाम मुझ पर नाज़िल
हुआ, 5"मैं तुझे माँ के पेट में तश्कील देने से पहले
ही जानता था, तेरी पैदाइश से पहले ही मैंने तुझे
मख़सूसो-मुक़द्दस करके अक़्वाम के लिए नबी
मुक़र्रर किया।"

6मैंने एतराज़ किया, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़,
अफ़सोस! मैं तेरा कलाम सुनाने का सहीह इल्म
नहीं रखता, मैं तो बच्चा ही हूँ।" 7लेकिन रब
ने मुझसे फ़रमाया, "मत कह 'मैं बच्चा ही हूँ।'
क्योंकि जिनके पास भी मैं तुझे भेजूँगा उनके
पास तू जाएगा, और जो कुछ भी मैं तुझे सुनाने
को कहूँगा उसे तू सुनाएगा। 8लोगों से मत डरना,
क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तुझे बचाए रखूँगा।"
यह रब का फ़रमान है।

9फिर रब ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे होंटों को छू
दिया और फ़रमाया, "देख, मैंने अपने अलफ़ाज़
को तेरे मुँह में डाल दिया है। 10आज मैं तुझे क़ौमों
और सलतनतों पर मुक़र्रर कर देता हूँ। कहीं तुझे
उन्हें जड़ से उखाड़कर गिरा देना, कहीं बरबाद
करके ढा देना और कहीं तामीर करके पौदे की
तरह लगा देना है।"

बादाम की शाख़ और उबलती देग की रोया

11रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, "ऐ
यरमियाह, तुझे क्या नज़र आ रहा है?" मैंने
जवाब दिया, "बादाम की एक शाख़, उस दरख़्त
की जो 'देखनेवाला' कहलाता है।" 12रब ने
फ़रमाया, "तूने सहीह देखा है। इसका मतलब
है कि मैं अपने कलाम की देख-भाल कर रहा हूँ,
मैं ध्यान दे रहा हूँ कि वह पूरा हो जाए।"

13फिर रब का कलाम दुबारा मुझ पर नाज़िल
हुआ, "तुझे क्या नज़र आ रहा है?" मैंने जवाब
दिया, "शिमाल में देग दिखाई दे रही है। जो कुछ
उसमें है वह उबल रहा है, और उसका मुँह हमारी
तरफ़ झुका हुआ है।" 14तब रब ने मुझसे कहा,
"इसी तरह शिमाल से मुल्क के तमाम बाशिंदों पर
आफ़त टूट पड़ेगी।" 15क्योंकि रब फ़रमाता है,

[a]जुलाई ता अगस्त।

“मैं शिमाली ममालिक के तमाम घरानों को बुला
लूँगा, और हर एक आकर अपना तख़्त यरूशलम
के दरवाज़ों के सामने ही खड़ा करेगा। हाँ, वह उस
की पूरी फ़सील को घेरकर उस पर बल्कि यहूदाह
के तमाम शहरों पर छापा मारेंगे। 16यों मैं अपनी
क़ौम पर फ़ैसले सादिर करके उनके ग़लत कामों
की सज़ा दूँगा। क्योंकि उन्होंने मुझे तर्क करके
अजनबी माबूदों के लिए बख़ूर जलाया और अपने
हाथों से बने हुए बुतों को सिजदा किया है।

17चुनाँचे कमरबस्ता हो जा! उठकर उन्हें सब
कुछ सुना दे जो मैं फ़रमाऊँगा। उनसे दहशत मत
खाना, वरना मैं तुझे उनके सामने ही दहशतज़दा
कर दूँगा। 18देख, आज मैंने तुझे क़िलाबंद शहर,
लोहे के सतून और पीतल की चारदीवारी जैसा
मज़बूत बना दिया है ताकि तू पूरे मुल्क का सामना
कर सके, ख़ाह यहूदाह के बादशाह, अफ़सर,
इमाम या अवाम तुझ पर हमला क्यों न करें।
19तुझसे लड़ने के बावुजूद वह तुझ पर ग़ालिब
नहीं आएँगे, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं ही तुझे
बचाए रखूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

अल्लाह की जवान इसराईल के लिए फ़िकर

2 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
2“जा, ज़ोर से यरूशलम के कान में
पुकार कि रब फ़रमाता है, ‘मुझे तेरी जवानी की
वफ़ादारी ख़ूब याद है। जब तेरी शादी क़रीब आई
तो तू मुझे कितना प्यार करती थी, यहाँ तक कि तू
रेगिस्तान में भी जहाँ खेतीबाड़ी नामुमकिन थी मेरे
पीछे पीछे चलती रही। 3उस वक़्त इसराईल रब
के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस था, वह उस की फ़सल
का पहला फल था। जिसने भी उसमें से कुछ
खाया वह मुजरिम ठहरा, और उस पर आफ़त
नाज़िल हुई। यह रब का फ़रमान है’।”

इसराईल के बापदादा के गुनाह

4ऐ याक़ूब की औलाद, रब का कलाम सुनो!
ऐ इसराईल के तमाम घरानो, ध्यान दो! 5रब
फ़रमाता है, “तुम्हारे बापदादा ने मुझमें कौन-सी
नाइनसाफ़ी पाई कि मुझसे इतने दूर हो गए? हेच
बुतों के पीछे होकर वह ख़ुद हेच हो गए। 6उन्होंने
पूछा तक नहीं कि रब कहाँ है जो हमें मिसर
से निकाल लाया और रेगिस्तान में सहीह राह
दिखाई, गो वह इलाक़ा वीरानो-सुनसान था। हर
तरफ़ घाटियों, पानी की सख़्त कमी और तारीकी
का सामना करना पड़ा। न कोई उसमें से गुज़रता,
न कोई वहाँ रहता है। 7मैं तो तुम्हें बाग़ों से भरे
मुल्क में लाया ताकि तुम उसके फल और अच्छी
पैदावार से लुत्फ़अंदोज़ हो सको। लेकिन तुमने
क्या किया? मेरे मुल्क में दाख़िल होते ही तुमने
उसे नापाक कर दिया, और मैं अपनी मौरूसी
मिलकियत से घिन खाने लगा। 8न इमामों ने पूछा
कि रब कहाँ है, न शरीअत को अमल में लानेवाले
मुझे जानते थे। क़ौम के गल्लाबान मुझसे बेवफ़ा
हुए, और नबी बेफ़ायदा बुतों के पीछे लगकर बाल
देवता के पैग़ामात सुनाने लगे।”

रब का अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ मुक़दमा

9रब फ़रमाता है, “इसी वजह से मैं आइंदा
भी अदालत में तुम्हारे साथ लड़ूँगा। हाँ, न सिर्फ़
तुम्हारे साथ बल्कि तुम्हारी आनेवाली नसलों
के साथ भी। 10जाओ, समुंदर को पार करके
जज़ीराए-क़ुबरुस की तफ़तीश करो! अपने
क़ासिदों को मुल्के-क़ीदार में भेजकर ग़ौर से
दरियाफ़्त करो कि क्या वहाँ कभी यहाँ का-सा
काम हुआ है? 11क्या किसी क़ौम ने कभी अपने
देवताओं को तबदील किया, गो वह हक़ीक़त
में ख़ुदा नहीं हैं? हरगिज़ नहीं! लेकिन मेरी
क़ौम अपनी शानो-शौकत के ख़ुदा को छोड़कर
बेफ़ायदा बुतों की पूजा करने लगी है।” 12रब
फ़रमाता है, “ऐ आसमान, यह देखकर हैबतज़दा
हो जा, तेरे रोंगटे खड़े हो जाएँ, हक्का-बक्का
रह जा! 13क्योंकि मेरी क़ौम से दो संगीन जुर्म
सरज़द हुए हैं। एक, उन्होंने मुझे तर्क किया, गो
मैं ज़िंदगी के पानी का सरचश्मा हूँ। दूसरे, उन्होंने
अपने ज़ाती हौज़ बनाए हैं जो दराड़ों की वजह से
भर ही नहीं सकते।

इसराईल की बेवफ़ाई के नतायज

14क्या इसराईल इब्तिदा से ही ग़ुलाम है? क्या
उसके वालिदैन ग़ुलाम थे कि वह अब तक ग़ुलाम
है? हरगिज़ नहीं! तो फिर वह क्यों दूसरों का
लूटा हुआ माल बन गया है? 15जवान शेरबबर
दहाड़ते हुए उस पर टूट पड़े हैं, गरजते गरजते
उन्होंने मुल्के-इसराईल को बरबाद कर दिया है।
उसके शहर नज़रे-आतिश होकर वीरानो-सुनसान
हो गए हैं। 16साथ साथ मेंफ़िस और तहफ़नहीस
के लोग भी तेरे सर को मुँडवा रहे हैं।

17ऐ इसराईली क़ौम, क्या यह तेरे ग़लत काम
का नतीजा नहीं? क्योंकि तूने रब अपने ख़ुदा
को उस वक़्त तर्क किया जब वह तेरी राहनुमाई
कर रहा था। 18अब मुझे बता कि मिसर को
जाकर दरियाए-नील का पानी पीने का क्या
फ़ायदा? मुल्के-असूर में जाकर दरियाए-फ़ुरात
का पानी पीने से क्या हासिल? 19तेरा ग़लत
काम तुझे सज़ा दे रहा है, तेरी बेवफ़ा हरकतें
ही तेरी सरज़निश कर रही हैं। चुनाँचे जान ले
और ध्यान दे कि रब अपने ख़ुदा को छोड़कर
उसका ख़ौफ़ न मानने का फल कितना बुरा और
कड़वा है।" यह क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज
का फ़रमान है।

20"क्योंकि शुरू से ही तू अपने जुए और
रस्सों को तोड़कर कहती रही, 'मैं तेरी ख़िदमत
नहीं करूँगी!' तू हर बुलंदी पर और हर घने
दरख़्त के साये में लेटकर इसमतफ़रोशी करती
रही। 21पहले तू अंगूर की मख़सूस और क़ाबिले-
एतमाद नसल की पनीरी थी जिसे मैंने ख़ुद ज़मीन
में लगाया। तो यह क्या हुआ कि तू बिगड़कर
जंगली[a] बेल बन गई? 22अब तेरे क़ुसूर का
दाग़ उतर नहीं सकता, ख़ाह तू कितना खारी
सोडा और साबुन क्यों न इस्तेमाल करे।" यह
रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

23"तू किस तरह यह कहने की जुर्रत कर
सकती है कि मैंने अपने आपको आलूदा नहीं
किया, मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं गई। वादी में
अपनी हरकतों पर तो ग़ौर कर! जान ले कि तुझसे
क्या कुछ सरज़द हुआ है। तू बेमक़सद इधर-उधर
भागनेवाली ऊँटनी है। 24बल्कि तू रेगिस्तान में
रहने की आदी गधी ही है जो शहवत के मारे
हाँपती है। मस्ती के इस आलम में कौन उस पर
क़ाबू पा सकता है? जो भी उससे मिलना चाहे
उसे ज़्यादा जिद्दो-जहद की ज़रूरत नहीं, क्योंकि
मस्ती के मौसम में वह हर एक के लिए हाज़िर है।
25ऐ इसराईल, इतना न दौड़ कि तेरे जूते घिसकर
फट जाएँ और तेरा गला ख़ुश्क हो जाए। लेकिन
अफ़सोस, तू बज़िद है, 'नहीं, मुझे छोड़ दे! मैं
अजनबी माबूदों को प्यार करती हूँ, और लाज़िम
है कि मैं उनके पीछे भागती जाऊँ।'

26सुनो! इसराईली क़ौम के तमाम अफ़राद
उनके बादशाहों, अफ़सरों, इमामों और नबियों
समेत शरमिंदा हो जाएंगे। वह पकड़े हुए चोर की-
सी शर्म महसूस करेंगे। 27यह लोग लकड़ी के बुत
से कहते हैं, 'तू मेरा बाप है' और पत्थर के देवता
से, 'तूने मुझे जन्म दिया।' लेकिन गो यह मेरी
तरफ़ रुजू नहीं करते बल्कि अपना मुँह मुझसे
फेरकर चलते हैं तो भी ज्योंही कोई आफ़त उन
पर आ जाए तो यह मुझसे इल्तिजा करने लगते हैं
कि आकर हमें बचा! 28अब यह बुत कहाँ हैं जो
तूने अपने लिए बनाए? वही खड़े होकर दिखाएँ
कि तुझे मुसीबत से बचा सकते हैं। ऐ यहूदाह,
आख़िर जितने तेरे शहर हैं उतने तेरे देवता भी हैं।"
29रब फ़रमाता है, "तुम मुझ पर क्यों इलज़ाम
लगाते हो? तुम तो सब मुझसे बेवफ़ा हो गए
हो। 30मैंने तुम्हारे बच्चों को सज़ा दी, लेकिन
बेफ़ायदा। वह मेरी तरबियत क़बूल नहीं करते।
बल्कि तुमने फाड़नेवाले शेरबबर की तरह अपने
नबियों पर टूटकर उन्हें तलवार से क़त्ल किया।

31ऐ मौजूदा नसल, रब के कलाम पर ध्यान
दो! क्या मैं इसराईल के लिए रेगिस्तान या
तारीकतरीन इलाक़े की मानिंद था? मेरी क़ौम

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अजनबी।

क्यों कहती है, 'अब हम आज़ादी से इधर-उधर
फिर सकते हैं, आइंदा हम तेरे हुज़ूर नहीं आएँगे?'
32क्या कुँवारी कभी अपने ज़ेवरात को भूल
सकती है, या दुलहन अपना उरूसी लिबास?
हरगिज़ नहीं! लेकिन मेरी क़ौम बेशुमार दिनों से
मुझे भूल गई है।

33तू इश्क़ ढूँडने में कितनी माहिर है! बदकार
औरतें भी तुझसे बहुत कुछ सीख लेती हैं। 34तेरे
लिबास का दामन बेगुनाह ग़रीबों के ख़ून से
आलूदा है, गो तूने उन्हें नक़बज़नी जैसा ग़लत
काम करते वक़्त न पकड़ा। इस सब कुछ के
बावुजूद भी 35तू बज़िद है कि मैं बेक़ुसूर हूँ,
अल्लाह का मुझ पर ग़ुस्सा ठंडा हो गया है।
लेकिन मैं तेरी अदालत करूँगा, इसलिए कि तू
कहती है, 'मुझसे गुनाह सरज़द नहीं हुआ।'

36तू कभी इधर, कभी इधर जाकर इतनी
आसानी से अपना रुख़ क्यों बदलती है? यक़ीन
कर कि जिस तरह तू अपने इत्तहादी असूर से
मायूस होकर शरमिंदा हुई है उसी तरह तू नए
इत्तहादी मिसर से भी नादिम हो जाएगी। 37तू
उस जगह से भी अपने हाथों को सर पर रखकर
निकलेगी। क्योंकि रब ने उन्हें रद्द किया है जिन
पर तू भरोसा रखती है। उनसे तुझे मदद हासिल
नहीं होगी।"

इसराईल की रब से बेवफ़ाई

3 रब फ़रमाता है, "अगर कोई अपनी बीवी
को तलाक़ दे और अलग होने के बाद बीवी
की किसी और से शादी हो जाए तो क्या पहले
शौहर को उससे दुबारा शादी करने की इजाज़त
है? हरगिज़ नहीं, बल्कि ऐसी हरकत से पूरे मुल्क
की बेहुरमती हो जाती है। देख, यही तेरी हालत
है। तूने मुतअद्दिद आशिक़ों से ज़िना किया है, और
अब तू मेरे पास वापस आना चाहती है। यह कैसी
बात है?

2अपनी नज़र बंजर पहाड़ियों की तरफ़ उठाकर
देख! क्या कोई जगह है जहाँ ज़िना करने से
तेरी बेहुरमती नहीं हुई? रेगिस्तान में तनहा
बैठनेवाले बद्दू की तरह तू रास्तों के किनारे
पर अपने आशिक़ों की ताक में बैठी रही है।
अपनी इसमतफ़रोशी और बदकारी से तूने मुल्क
की बेहुरमती की है। 3इसी वजह से बहार में
बरसात का मौसम रोका गया और बारिश नहीं
पड़ी। लेकिन अफ़सोस, तू कसबी की-सी पेशानी
रखती है, तू शर्म खाने के लिए तैयार ही नहीं।
4इस वक़्त भी तू चीख़ती-चिल्लाती आवाज़ देती
है, 'ऐ मेरे बाप, जो मेरी जवानी से मेरा दोस्त है,
5क्या तू हमेशा तक मेरे साथ नाराज़ रहेगा? क्या
तेरा क़हर कभी ठंडा नहीं होगा?' यही तेरे अपने
अलफ़ाज़ हैं, लेकिन साथ साथ तू ग़लत काम
करने की हर मुमकिन कोशिश करती रहती है।"

6यूसियाह बादशाह की हुकूमत के दौरान रब
मुझसे हमकलाम हुआ, "क्या तूने वह कुछ देखा
जो बेवफ़ा इसराईल ने किया है? उसने हर बुलंदी
पर और हर घने दरख़्त के साये में ज़िना किया
है। 7मैंने सोचा कि यह सब कुछ करने के बाद
वह मेरे पास वापस आएगी। लेकिन अफ़सोस,
ऐसा न हुआ। उस की ग़द्दार बहन यहूदाह भी इन
तमाम वाक़ियात की गवाह थी। 8बेवफ़ा इसराईल
की ज़िनाकारी नाक़ाबिले-बरदाश्त थी, इसलिए
मैंने उसे घर से निकालकर तलाक़नामा दे दिया।
फिर भी मैंने देखा कि उस की ग़द्दार बहन यहूदाह
ने ख़ौफ़ न खाया बल्कि ख़ुद निकलकर ज़िना
करने लगी। 9इसराईल को इस जुर्म की संजीदगी
महसूस न हुई बल्कि उसने पत्थर और लकड़ी के
बुतों के साथ ज़िना करके मुल्क की बेहुरमती की।
10इसके बावुजूद उस की बेवफ़ा बहन यहूदाह पूरे
दिल से नहीं बल्कि सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर मेरे पास
वापस आई।" यह रब का फ़रमान है।

मेरे पास लौट आ

11रब मुझसे हमकलाम हुआ, "बेवफ़ा
इसराईल ग़द्दार यहूदाह की निसबत ज़्यादा
रास्तबाज़ है। 12जा, शिमाल की तरफ़ देखकर
बुलंद आवाज़ से एलान कर, 'ऐ बेवफ़ा इसराईल,
रब फ़रमाता है कि वापस आ! आइंदा मैं ग़ुस्से से

तेरी तरफ़ नहीं देखूँगा, क्योंकि मैं मेहरबान हूँ। मैं
हमेशा तक नाराज़ नहीं रहूँगा। यह रब का फ़रमान
है।

13लेकिन लाज़िम है कि तू अपना क़ुसूर
तसलीम करे। इक़रार कर कि मैं रब अपने ख़ुदा
से सरकश हुई। मैं इधर-उधर घूमकर हर घने
दरख़्त के साये में अजनबी माबूदों की पूजा करती
रही, मैंने रब की न सुनी'।" यह रब का फ़रमान
है। 14रब फ़रमाता है, "ऐ बेवफ़ा बच्चो, वापस
आओ, क्योंकि मैं तुम्हारा मालिक हूँ। मैं तुम्हें हर
जगह से निकालकर सिय्यून में वापस लाऊँगा।
किसी शहर से मैं एक को निकाल लाऊँगा, और
किसी ख़ानदान से दो अफ़राद को।

15तब मैं तुम्हें ऐसे गल्लाबानों से नवाज़ूँगा जो
मेरी सोच रखेंगे और जो समझ और अक़्ल के
साथ तुम्हारी गल्लाबानी करेंगे। 16फिर तुम्हारी
तादाद बहुत बढ़ेगी और तुम चारों तरफ़ फैल
जाओगे।" रब फ़रमाता है, "उन दिनों में रब के
अहद के संदूक़ का ज़िक्र नहीं किया जाएगा।
न उसका ख़याल आएगा, न उसे याद किया
जाएगा। न उस की कमी महसूस होगी, न
उसे दुबारा बनाया जाएगा। 17क्योंकि उस वक़्त
यरूशलम 'रब का तख़्त' कहलाएगा, और उसमें
तमाम अक़वाम रब के नाम की ताज़ीम में जमा
हो जाएँगी। तब वह अपने शरीर और ज़िद्दी दिलों
के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारेंगी। 18तब यहूदाह
का घराना इसराईल के घराने के पास आएगा,
और वह मिलकर शिमाली मुल्क से उस मुल्क में
वापस आएँगे जो मैंने तुम्हारे बापदादा को मीरास
में दिया था।

19मैंने सोचा, काश मैं तेरे साथ बेटों का-सा
सुलूक करके तुझे एक ख़ुशगवार मुल्क दे सकूँ,
एक ऐसी मीरास जो दीगर अक़वाम की निसबत
कहीं शानदार हो। मैं समझा कि तुम मुझे अपना
बाप ठहराकर अपना मुँह मुझसे नहीं फेरोगे।
20लेकिन ऐ इसराईली क़ौम, तू मुझसे बेवफ़ा
रही है, बिलकुल उस औरत की तरह जो अपने
शौहर से बेवफ़ा हो गई है।" यह रब का फ़रमान
है।

21"सुनो! बंजर बुलंदियों पर चीख़ें और
इल्तिजाएँ सुनाई दे रही हैं। इसराईली रो रहे हैं,
इसलिए कि वह ग़लत राह इख़्तियार करके रब
अपने ख़ुदा को भूल गए हैं। 22ऐ बेवफ़ा बच्चो,
वापस आओ ताकि मैं तुम्हारे बेवफ़ा दिलों को
शफ़ा दे सकूँ।"

"ऐ रब, हम हाज़िर हैं। हम तेरे पास आते
हैं, क्योंकि तू ही रब हमारा ख़ुदा है। 23वाक़ई,
पहाड़ियों और पहाड़ों पर बुतपरस्ती का तमाशा
फ़रेब ही है। यक़ीनन रब हमारा ख़ुदा इसराईल
की नजात है। 24हमारी जवानी से लेकर आज
तक शर्मनाक देवता हमारे बापदादा की मेहनत का
फल खाते आए हैं, ख़ाह उनकी भेड़-बकरियाँ और
गाय-बैल थे, ख़ाह उनके बेटे-बेटियाँ। 25आओ,
हम अपनी शर्म के बिस्तर पर लेट जाएँ और
अपनी बेइज़्ज़ती की रज़ाई में छुप जाएँ। क्योंकि
हमने अपने बापदादा समेत रब अपने ख़ुदा का
गुनाह किया है। अपनी जवानी से लेकर आज तक
हमने रब अपने ख़ुदा की नहीं सुनी।"

तौबा करो

4 रब फ़रमाता है, "ऐ इसराईल, अगर तू
वापस आना चाहे तो मेरे पास वापस आ!
अगर तू अपने घिनौने बुतों को मेरे हुज़ूर से दूर
करके आवारा न फिरे 2और रब की हयात की
क़सम खाते वक़्त दियानतदारी, इनसाफ़ और
सदाक़त से अपना वादा पूरा करे तो ग़ैरअक़वाम
मुझसे बरकत पाकर मुझ पर फ़ख़र करेंगी।"

3रब यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों से
फ़रमाता है, "अपने दिलों की ग़ैरमुस्तामल ज़मीन
पर हल चलाकर उसे क़ाबिले-काश्त बनाओ!
अपने बीज काँटेदार झाड़ियों में बोकर ज़ाया मत
करना। 4ऐ यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदो,
अपने आपको रब के लिए मख़सूस करके अपना
ख़तना कराओ यानी अपने दिलों का ख़तना
कराओ, वरना मेरा क़हर तुम्हारे ग़लत कामों के

बाइस कभी न बुझनेवाली आग की तरह तुझ पर
नाज़िल होगा।

शिमाल से आफ़त का एलान

5यहूदाह में एलान करो और यरूशलम को
इत्तला दो, 'मुल्क-भर में नरसिंगा बजाओ!' गला
फाड़कर चिल्लाओ, 'इकट्ठे हो जाओ! आओ,
हम क़िलाबंद शहरों में पनाह लें!' 6झंडा गाड़
दो ताकि लोग उसे देखकर सिय्यून में पनाह लें।
महफ़ूज़ मक़ाम में भाग जाओ और कहीं न रुको,
क्योंकि मैं शिमाल की तरफ़ से आफ़त ला रहा
हूँ, सब कुछ धड़ाम से गिर जाएगा।

7शेरबबर जंगल में अपनी छुपने की जगह से
निकल आया, क़ौमों को हलाक करनेवाला अपने
मक़ाम से रवाना हो चुका है ताकि तेरे मुल्क को
तबाह करे। तेरे शहर बरबाद हो जाएंगे, और उनमें
कोई नहीं रहेगा।

8चुनाँचे टाट का लिबास पहनकर आहो-ज़ारी
करो, क्योंकि रब का सख़्त ग़ज़ब अब तक हम
पर नाज़िल हो रहा है।"

9रब फ़रमाता है, "उस दिन बादशाह और
उसके अफ़सर हिम्मत हारेंगे, इमामों के रोंगटे
खड़े हो जाएंगे और नबी ख़ौफ़ से सुन होकर रह
जाएंगे।"

10तब मैं बोल उठा, "हाय, हाय! ऐ रब
क़ादिरे-मुतलक़, तूने इस क़ौम और यरूशलम को
कितना सख़्त फ़रेब दिया जब तूने फ़रमाया, तुम्हें
अमनो-अमान हासिल होगा हालाँकि हमारे गलों
पर तलवार फिरने को है।" 11उस वक़्त इस क़ौम
और यरूशलम को इत्तला दी जाएगी, "रेगिस्तान
के बंजर टीलों से सब कुछ झुलसानेवाली लू मेरी
क़ौम के पास आ रही है। और यह गंदुम को
फटककर भूसे से अलग करनेवाली मुफ़ीद हवा
नहीं होगी 12बल्कि आँधी जैसी तेज़ हवा मेरी
तरफ़ से आएगी। क्योंकि अब मैं उन पर अपने
फ़ैसले सादिर करूँगा।"

13देखो, दुश्मन तूफ़ानी बादलों की तरह आगे
बढ़ रहा है! उसके रथ आँधी जैसे, और उसके
घोड़े उक़ाब से तेज़ हैं। हाय, हम पर अफ़सोस!
हमारा अंजाम आ गया है।

14ऐ यरूशलम, अपने दिल को धोकर बुराई से
साफ़ कर ताकि तुझे छुटकारा मिले। तू अंदर ही
अंदर कब तक अपने शरीर मनसूबे बाँधती रहेगी?

15सुनो! दान से बुरी ख़बरें आ रही हैं,
इफ़राईम पहाड़ से आफ़त का पैग़ाम पहुँच रहा
है। 16ग़ैरअक़्वाम को इत्तला दो और यरूशलम
के बारे में एलान करो, "मुहासरा करनेवाले फ़ौजी
दूर-दराज़ मुल्क से आ रहे हैं! वह जंग के नारे लगा
लगाकर यहूदाह के शहरों पर टूट पड़ेंगे। 17तब वह
खेतों की चौकीदारी करनेवालों की तरह यरूशलम
को घेर लेंगे। क्योंकि यह शहर मुझसे सरकश हो
गया है।" यह रब का फ़रमान है। 18"यह तेरे
अपने ही चाल-चलन और हरकतों का नतीजा है।
हाय, तेरी बेदीनी का अंजाम कितना तलख़ और
दिलख़राश है!"

यरमियाह का अपनी क़ौम के लिए दुख

19हाय, मेरी तड़पती जान, मेरी तड़पती जान!
मैं दर्द के मारे पेचो-ताब खा रहा हूँ। हाय, मेरा
दिल! वह बेकाबू होकर धड़क रहा है। मैं ख़ामोश
नहीं रह सकता, क्योंकि नरसिंगे की आवाज़ और
जंग के नारे मेरे कान तक पहुँच गए हैं। 20यके
बाद दीगरे शिकस्तों की ख़बरें मिल रही हैं, चारों
तरफ़ मुल्क की तबाही हुई है। अचानक ही मेरे तंबू
बरबाद हैं, एक ही लमहे में मेरे ख़ैमे ख़त्म हो गए
हैं। 21मुझे कब तक जंग का झंडा देखना पड़ेगा,
कब तक नरसिंगे की आवाज़ सुननी पड़ेगी?

22"मेरी क़ौम अहमक़ है और मुझे नहीं
जानती। वह बेवुक़ूफ़ और नासमझ बच्चे हैं। गो
वह ग़लत काम करने में बहुत तेज़ हैं, लेकिन
भलाई करना उनकी समझ से बाहर है।"

23मैंने मुल्क पर नज़र डाली तो वीरानो-
सुनसान था। जब आसमान की तरफ़ देखा तो
अंधेरा था। 24मेरी निगाह पहाड़ों पर पड़ी तो
थरथरा रहे थे, तमाम पहाड़ियाँ हिचकोले खा रही
थीं। 25कहीं कोई शख़्स नज़र न आया, तमाम

परिंदे भी उड़कर जा चुके थे। 26मैंने मुल्क पर नज़र दौड़ाई तो क्या देखता हूँ कि ज़रख़ेज़ ज़मीन रेगिस्तान बन गई है। रब और उसके शदीद ग़ज़ब के सामने उसके तमाम शहर नेस्तो-नाबूद हो गए हैं। 27क्योंकि रब फ़रमाता है, "पूरा मुल्क बरबाद हो जाएगा, अगरचे मैं उसे पूरे तौर पर ख़त्म नहीं करूँगा। 28ज़मीन मातम करेगी और आसमान तारीक हो जाएगा, क्योंकि मैं यह फ़रमा चुका हूँ, और मेरा इरादा अटल है। न मैं यह करने से पछताऊँगा, न इससे बाज़ आऊँगा।"

29घुड़सवारों और तीर चलानेवालों का शोर-शराबा सुनकर लोग तमाम शहरों से निकलकर जंगलों और चट्टानों में खिसक जाएंगे। तमाम शहर वीरानो-सुनसान होंगे, किसी में भी लोग नहीं बसेंगे।

30तो फिर तू क्या कर रही है, तू जिसे ख़ाक में मिला दिया गया है? अब क़िरमिज़ी लिबास और सोने के ज़ेवरात पहनने की क्या ज़रूरत है? इस वक़्त अपनी आँखों को सुरमे से सजाने और अपने आपको आरास्ता करने का कोई फ़ायदा नहीं। तेरे आशिक़ तो तुझे हक़ीर जानते बल्कि तुझे जान से मारने के दरपै हैं। 31क्योंकि मुझे दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की आवाज़, पहली बार जन्म देनेवाली की आहो-ज़ारी सुनाई दे रही है। सिय्यून बेटी कराह रही है, वह अपने हाथ फैलाए हुए कह रही है, "हाय, मुझ पर अफ़सोस! मेरी जान क़ातिलों के हाथ में आकर निकल रही है।"

अब मुआफ़ी नामुमकिन है

5 "यरूशलम की गलियों में घूमो फिरो! हर जगह का मुलाहज़ा करके पता करो कि क्या हो रहा है। उसके चौकों की तफ़तीश भी करो। अगर तुम्हें एक भी शख़्स मिल जाए जो इनसाफ़ करे और दियानतदारी का तालिब रहे तो मैं शहर को मुआफ़ कर दूँगा। 2वह रब की हयात की क़सम खाते वक़्त भी झूट बोलते हैं।"

3ऐ रब, तेरी आँखें दियानतदारी देखना चाहती हैं। तूने उन्हें मारा, लेकिन उन्हें दुख न हुआ। तूने उन्हें कुचल डाला, लेकिन वह तरबियत पाने के लिए तैयार नहीं। उन्होंने अपने चेहरे को पत्थर से कहीं ज़्यादा सख़्त बनाकर तौबा करने से इनकार किया है। 4मैंने सोचा, "सिर्फ़ ग़रीब लोग ऐसे हैं। यह इसलिए अहमक़ाना हरकतें कर रहे हैं कि रब की राह और अपने ख़ुदा की शरीअत से वाक़िफ़ नहीं हैं। 5आओ, मैं बुज़ुर्गों के पास जाकर उनसे बात करता हूँ। वह तो ज़रूर रब की राह और अल्लाह की शरीअत को जानते होंगे।" लेकिन अफ़सोस, सबके सबने अपने जुए और रस्से तोड़ डाले हैं।

6इसलिए शेरबबर जंगल से निकलकर उन पर हमला करेगा, भेड़िया बयाबान से आकर उन्हें बरबाद करेगा, चीता उनके शहरों के क़रीब ताक में बैठकर हर निकलनेवाले को फाड़ डालेगा। क्योंकि वह बार बार सरकश हुए हैं, मुतअद्दिद दफ़ा उन्होंने अपनी बेवफ़ाई का इज़हार किया है।

7"मैं तुझे कैसे मुआफ़ करूँ? तेरी औलाद ने मुझे तर्क करके उनकी क़सम खाई है जो ख़ुदा नहीं हैं। गो मैंने उनकी हर ज़रूरत पूरी की तो भी उन्होंने ज़िना किया, चकले के सामने उनकी लंबी क़तारें लगी रहीं। 8यह लोग मोटे-ताज़े घोड़े हैं जो मस्ती में आ गए हैं। हर एक हिनहिनाता हुआ अपने पड़ोसी की बीवी को आँख मारता है।" 9रब फ़रमाता है, "क्या मैं जवाब में उन्हें सज़ा न दूँ? क्या मैं ऐसी क़ौम से इंतक़ाम न लूँ? 10जाओ, उसके अंगूर के बाग़ों पर टूट पड़ो और सब कुछ बरबाद कर दो। लेकिन उन्हें मुकम्मल तौर पर ख़त्म मत करना। बेलों की शाख़ों को दूर करो, क्योंकि वह रब के लोग नहीं हैं।"

रब अपनी क़ौम से जवाब तलब करेगा

11क्योंकि रब फ़रमाता है, "इसराईल और यहूदाह के बाशिंदे हर तरह से मुझसे बेवफ़ा रहे हैं। 12उन्होंने रब का इनकार करके कहा है, वह कुछ नहीं करेगा। हम पर मुसीबत नहीं आएगी। हमें न तलवार, न काल से नुक़सान पहुँचेगा। 13नबियों की क्या हैसियत है? वह तो बकवास ही करते

हैं, और रब का कलाम उनमें नहीं है। बल्कि उन्हीं
के साथ ऐसा किया जाएगा।”
14इसलिए रब लशकरों का ख़ुदा फ़रमाता है,
“ऐ यरमियाह, चूँकि लोग ऐसी बातें कर रहे हैं
इसलिए तेरे मुँह में मेरे अलफ़ाज़ आग बनकर
इस क़ौम को लकड़ी की तरह भस्म कर देंगे।”
15रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईल, मैं दूर की क़ौम
को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा, ऐसी पुख़्ता और क़दीम
क़ौम जिसकी ज़बान तू नहीं जानता और जिसकी
बातें तू नहीं समझता। 16उनके तरकश खुली क़ब्रें
हैं, सबके सब ज़बरदस्त सूरमे हैं। 17वह सब कुछ
हड़प कर लेंगे : तेरी फ़सलें, तेरी ख़ुराक, तेरे
बेटे-बेटियाँ, तेरी भेड़-बकरियाँ, तेरे गाय-बैल, तेरी
अंगूर की बेलें और तेरे अंजीर के दरख़्त। जिन
क़िलाबंद शहरों पर तुम भरोसा रखते हो उन्हें वह
तलवार से ख़ाक में मिला देंगे।

18फिर भी मैं उस वक़्त तुम्हें मुकम्मल तौर
पर बरबाद नहीं करूँगा।” यह रब का फ़रमान
है। 19“ऐ यरमियाह, अगर लोग तुझसे पूछें, रब
हमारे ख़ुदा ने यह सब कुछ हमारे साथ क्यों
किया? तो उन्हें बता, तुम मुझे तर्क करके अपने
वतन में अजनबी माबूदों की ख़िदमत करते रहे
हो, इसलिए तुम वतन से दूर मुल्क में अजनबियों
की ख़िदमत करोगे।

20इसराईल में एलान करो और यहूदाह को
इत्तला दो 21कि ऐ बेवुक़ूफ़ और नासमझ क़ौम,
सुनो! लेकिन अफ़सोस, उनकी आँखें तो हैं
लेकिन वह देख नहीं सकते, उनके कान तो हैं
लेकिन वह सुन नहीं सकते।” 22रब फ़रमाता है,
“क्या तुम्हें मेरा ख़ौफ़ नहीं मानना चाहिए, मेरे
हुज़ूर नहीं काँपना चाहिए? सोच लो! मैं ही ने रेत
से समुंदर की सरहद मुक़र्रर की, एक ऐसी बाड़
बनाई जिस पर से वह कभी नहीं गुज़र सकता।
गो वह ज़ोर से लहरें मारे तो भी नाकाम रहता है,
गो उस की मौजें ख़ूब गरजें तो भी मुक़र्ररा हद से
आगे नहीं बढ़ सकतीं।

23लेकिन अफ़सोस, इस क़ौम का दिल ज़िद्दी
और सरकश है। यह लोग सहीह राह से हटकर
अपनी ही राहों पर चल पड़े हैं। 24वह दिल में कभी
नहीं कहते, आओ, हम रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़
मानें। क्योंकि वही हमें वक़्त पर ख़िज़ाँ और बहार
के मौसम में बारिश मुहैया करता है, वही इसकी
ज़मानत देता है कि हमारी फ़सलें बाक़ायदगी से
पक जाएँ। 25अब तुम्हारे ग़लत कामों ने तुम्हें इन
नेमतों से महरूम कर दिया, तुम्हारे गुनाहों ने तुम्हें
इन अच्छी चीज़ों से रोक रखा है।

26क्योंकि मेरी क़ौम में ऐसे बेदीन अफ़राद पाए
जाते हैं जो दूसरों की ताक लगाए रहते हैं। जिस
तरह शिकारी परिंदे पकड़ने के लिए झुककर छुप
जाता है, उसी तरह वह दूसरों की घात में बैठ
जाते हैं। वह फंदे लगाकर लोगों को उनमें फँसाते
हैं। 27और जिस तरह शिकारी अपने पिंजरे को
चिड़ियों से भर देता है उसी तरह इन शरीर लोगों
के घर फ़रेब से भरे रहते हैं। अपनी चालों से
वह अमीर, ताक़तवर 28और मोटे-ताज़े हो गए
हैं। उनके ग़लत कामों की हद नहीं रहती। वह
इनसाफ़ करते ही नहीं। न वह यतीमों की मदद
करते हैं ताकि उन्हें वह कुछ मिल जाए जो उनका
हक़ है, न ग़रीबों के हुक़ूक़ क़ायम रखते हैं।”
29रब फ़रमाता है, “अब मुझे बताओ, क्या मुझे
उन्हें इसकी सज़ा नहीं देनी चाहिए? क्या मुझे
इस क़िस्म की हरकतें करनेवाली क़ौम से बदला
नहीं लेना चाहिए?

30जो कुछ मुल्क में हुआ है वह हौलनाक और
क़ाबिले-घिन है। 31क्योंकि नबी झूटी पेशगोइयाँ
सुनाते और इमाम अपनी ही मरज़ी से हुकूमत
करते हैं। और मेरी क़ौम उनका यह रवैया अज़ीज़
रखती है। लेकिन मुझे बताओ, जब यह सब कुछ
ख़त्म हो जाएगा तो फिर तुम क्या करोगे?

यरूशलम दुश्मनों से घिरा हुआ है

6 ऐ बिनयमीन की औलाद, यरूशलम से
निकलकर कहीं और पनाह लो! तक़ुअ
में नरसिंगा फूँको! बैत-करम में भागने का ऐसा
इशारा खड़ा कर जो सबको नज़र आए! क्योंकि

शिमाल से आफ़त नाज़िल हो रही है, सब कुछ
धड़ाम से गिर जाएगा।
2सिय्यून बेटी कितनी मनमोहन और नाज़ुक
है। लेकिन मैं उसे हलाक कर दूँगा, 3और चरवाहे
अपने रेवड़ों को लेकर उस पर टूट पड़ेंगे। वह अपने
ख़ैमों को उसके इर्दगिर्द लगा लेंगे, और हर एक
का रेवड़ चर चरकर अपना हिस्सा खा जाएगा।
4वह कहेंगे, 'आओ, हम उससे लड़ने के लिए
तैयार हो जाएँ। आओ, हम दोपहर के वक़्त हमला
करें! लेकिन अफ़सोस, दिन ढल रहा है, और
शाम के साये लंबे होते जा रहे हैं। 5कोई बात
नहीं, रात के वक़्त ही हम उस पर छापा मारेंगे,
उसी वक़्त हम उसके बुर्जों को गिरा देंगे'।"
6रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "दरख़्तों को
काटो, मिट्टी के ढेरों से यरूशलम का घेराव करो!
शहर को सज़ा देनी है, क्योंकि उसमें ज़ुल्म ही
ज़ुल्म पाया जाता है। 7जिस तरह कुएँ से ताज़ा
पानी निकलता रहता है उसी तरह यरूशलम की
बदी भी ताज़ा ताज़ा उससे निकलती रहती है।
ज़ुल्मो-तशद्दुद की आवाज़ें उसमें गूँजती रहती हैं,
उस की बीमार हालत और ज़ख़म लगातार मेरे
सामने रहते हैं।
8ऐ यरूशलम, मेरी तरबियत को क़बूल कर,
वरना मैं तंग आकर तुझसे अपना मुँह फेर लूँगा,
मैं तुझे तबाह कर दूँगा और तू ग़ैरआबाद हो
जाएगी।"
9रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "जिस तरह
अंगूर चुनने के बाद ग़रीब लोग तमाम बचा-खुचा
फल तोड़ लेते हैं उसी तरह इसराईल का बचा-
खुचा हिस्सा भी एहतियात से तोड़ लिया जाएगा।
चुननेवाले की तरह दुबारा अपने हाथ को अंगूर की
शाख़ों पर से गुज़रने दे।"
10ऐ रब, मैं किससे बात करूँ, किस को आगाह
करूँ? कौन सुनेगा? देख, उनके कान नामख़तून
हैं, इसलिए वह सुन ही नहीं सकते। रब का कलाम
उन्हें मज़हकाख़ेज़ लगता है, वह उन्हें नापसंद है।
11इसलिए मैं रब के ग़ज़ब से भरा हुआ हूँ, मैं उसे
बरदाश्त करते करते इतना थक गया हूँ कि उसे
मज़ीद नहीं रोक सकता।
"उसे गलियों में खेलनेवाले बच्चों और
जमाशुदा नौजवानों पर नाज़िल कर, क्योंकि
सबको गिरिफ़्तार किया जाएगा, ख़्वाह
आदमी हो या औरत, बुज़ुर्ग हो या उम्र-
रसीदा। 12उनके घरों को खेतों और बीवियों समेत
दूसरों के हवाले किया जाएगा, क्योंकि मैं अपना
हाथ मुल्क के बाशिंदों के ख़िलाफ़ बढ़ाऊँगा।"
यह रब का फ़रमान है। 13"छोटे से लेकर बड़े
तक सब ग़लत नफ़ा के पीछे पड़े हैं, नबी से लेकर
इमाम तक सब धोकेबाज़ हैं। 14वह मेरी क़ौम के
ज़ख़म पर आरिज़ी मरहम-पट्टी लगाकर कहते हैं,
अब सब कुछ ठीक हो गया है, अब सलामती का
दौर आ गया है हालाँकि सलामती है ही नहीं।
15ऐसा घिनौना रवैया उनके लिए शर्म का बाइस
होना चाहिए, लेकिन वह शर्म नहीं करते बल्कि
सरासर बेशर्म हैं। इसलिए जब सब कुछ गिर
जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब मैं इन
पर सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खाकर
ख़ाक में मिल जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

सहीह रास्ते की तलाश में रहो

16रब फ़रमाता है, "रास्तों के पास खड़े होकर
उनका मुआयना करो! क़दीम राहों की तफ़तीश
करके पता करो कि उनमें से कौन-सी अच्छी है,
फिर उस पर चलो। तब तुम्हारी जान को सुकून
मिलेगा। लेकिन अफ़सोस, तुम इनकार करके
कहते हो, नहीं, हम यह राह इख़्तियार नहीं करेंगे!
17देखो, मैंने तुम पर पहरेदार मुक़र्रर किए और
कहा, 'जब नरसिंगा फूँका जाएगा तो ध्यान दो!'
लेकिन तुमने इनकार किया, 'नहीं, हम तवज्जुह
नहीं देंगे।'
18चुनाँचे ऐ क़ौमो, सुनो! ऐ जमात, जान ले
कि उनके साथ क्या कुछ किया जाएगा। 19ऐ
ज़मीन, ध्यान दे कि मैं इस क़ौम पर क्या आफ़त
नाज़िल करूँगा। और यह उनके अपने मनसूबों का
फल होगा, क्योंकि उन्होंने मेरी बातों पर तवज्जुह

न दी बल्कि मेरी शरीअत को रद्द कर दिया।
20मुझे सबा के बख़ूर या दूर-दराज़ ममालिक के
क़ीमती मसालों की क्या परवा! तुम्हारी भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ मुझे पसंद नहीं, तुम्हारी
ज़बह की क़ुरबानियों से मैं लुत्फ़अंदोज़ नहीं
होता।" 21रब फ़रमाता है, "मैं इस क़ौम के रास्ते
में ऐसी रुकावटें खड़ी कर दूँगा जिनसे बाप और
बेटा ठोकर खाकर गिर जाएंगे। पड़ोसी और दोस्त
मिलकर हलाक हो जाएंगे।"

शिमाल से दुश्मन का हमला

22रब फ़रमाता है, "शिमाली मुल्क से फ़ौज
आ रही है, दुनिया की इंतहा से एक अज़ीम क़ौम
को जगाया जा रहा है। 23उसके ज़ालिम और
बेरहम फ़ौजी कमान और शमशेर से लैस हैं। सुनो
उनका शोर! मुतलातिम समुंदर की-सी आवाज़
सुनाई दे रही है। ऐ सिय्यून बेटी, वह घोड़ों पर
सफ़आरा होकर तुझ पर हमला करने आ रहे हैं।"

24उनके बारे में इत्तला पाकर हमारे हाथ हिम्मत
हार गए हैं। हम पर ख़ौफ़ तारी हो गया है, हमें
दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत का-सा दर्द हो रहा है।
25शहर से निकलकर खेत में या सड़क पर मत
चलना, क्योंकि वहाँ दुश्मन तलवार थामे खड़ा है,
चारों तरफ़ दहशत ही दहशत फैल गई है।

26ऐ मेरी क़ौम, टाट का लिबास पहनकर राख
में लोट-पोट हो जा। यों मातम कर जिस तरह
इकलौता बेटा मर गया हो। ज़ोर से वावैला कर,
क्योंकि अचानक ही हलाकू हम पर छापा मारेगा।

यरमियाह क़ौम को आज़माता है

27रब मुझसे हमकलाम हुआ, "मैंने तुझे धातों
को जाँचने की ज़िम्मेदारी दी है, और मेरी क़ौम
वह धात है जिसका चाल-चलन तुझे मालूम करके
परखना है।" 28ऐ रब, यह तमाम लोग बदतरीन
क़िस्म के सरकश हैं। तोहमत लगाना इनकी
रोज़ी बन गया है। यह पीतल और लोहा ही हैं,
सबके सब तबाही का बाइस हैं। 29धौंकनी ख़ूब
हवा दे रही है ताकि सीसा आग में पिघलकर
चाँदी से अलग हो जाए। लेकिन अफ़सोस, सारी
मेहनत रायगाँ है। सीसा यानी बेदीनों को अलग
नहीं किया जा सकता, ख़ालिस चाँदी बाक़ी नहीं
रहती। 30चुनाँचे उन्हें 'रद्दी चाँदी' क़रार दिया
जाता है, क्योंकि रब ने उन्हें रद्द कर दिया है।

रब के घर के बारे में पैग़ाम

7 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2"रब
के घर के सहन के दरवाज़े पर खड़ा होकर
एलान कर कि ऐ यहूदाह के तमाम बाशिंदो, रब
का कलाम सुनो! जितने भी रब की परस्तिश
करने के लिए इन दरवाज़ों में दाख़िल होते हैं वह
सब तवज्जुह दें! 3रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है कि अपनी ज़िंदगी और
चाल-चलन दुरुस्त करो तो मैं आइंदा भी तुम्हें इस
मक़ाम पर बसने दूँगा। 4उनके फ़रेबदेह अलफ़ाज़
पर एतमाद मत करो जो कहते हैं, 'यहाँ हम
महफ़ूज़ हैं क्योंकि यह रब का घर, रब का घर,
रब का घर है।' 5सुनो, शर्त तो यह है कि तुम
अपनी ज़िंदगी और चाल-चलन दुरुस्त करो और
एक दूसरे के साथ इनसाफ़ का सुलूक करो, 6कि
तुम परदेसी, यतीम और बेवा पर ज़ुल्म न करो,
इस जगह बेक़ुसूर का ख़ून न बहाओ और अजनबी
माबूदों के पीछे लगकर अपने आपको नुक़सान न
पहुँचाओ। 7अगर तुम ऐसा करो तो मैं आइंदा भी
तुम्हें इस जगह बसने दूँगा, उस मुल्क में जो मैंने
तुम्हारे बापदादा को हमेशा के लिए बख़्श दिया
था।

8लेकिन अफ़सोस, तुम फ़रेबदेह अल-
फ़ाज़ पर भरोसा रखते हो जो फ़ज़ूल ही हैं। 9तुम
चोर, क़ातिल और ज़िनाकार हो। नीज़ तुम झूटी
क़सम खाते, बाल देवता के हुज़ूर बख़ूर जलाते
और अजनबी माबूदों के पीछे लग जाते हो, ऐसे
देवताओं के पीछे जिनसे तुम पहले वाक़िफ़ नहीं
थे। 10लेकिन साथ साथ तुम यहाँ मेरे हुज़ूर भी
आते हो। जिस मकान पर मेरे ही नाम का ठप्पा
लगा है उसी में तुम खड़े होकर कहते हो, 'हम
महफ़ूज़ हैं।' तुम रब के घर में इबादत करने के

साथ साथ किस तरह यह तमाम घिनौनी हरकतें
जारी रख सकते हो?”
11रब फ़रमाता है, “क्या तुम्हारे नज़दीक यह
मकान जिस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है
डाकुओं का अड्डा बन गया है? ख़बरदार! यह
सब कुछ मुझे भी नज़र आता है। 12सैला शहर
का चक्कर लगाओ जहाँ मैंने पहले अपना नाम
बसाया था। मालूम करो कि मैंने अपनी क़ौम
इसराईल की बेदीनी के सबब से उस शहर के
साथ क्या किया।” 13रब फ़रमाता है, “तुम यह
शरीर हरकतें करते रहे, और मैं बार बार तुमसे
हमकलाम होता रहा, लेकिन तुमने मेरी न सुनी।
मैं तुम्हें बुलाता रहा, लेकिन तुम जवाब देने के
लिए तैयार न हुए। 14इसलिए अब मैं इस घर
के साथ वह कुछ करूँगा जो मैंने सैला के साथ
किया था, गो इस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा
है, यह वह मकान है जिस पर तुम एतमाद रखते
हो और जिसे मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को
अता किया था। 15मैं तुम्हें अपने हुज़ूर से निकाल
दूँगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मैंने तुम्हारे
तमाम भाइयों यानी इसराईल[a] की औलाद को
निकाल दिया था।

लोगों की नाफ़रमानी

16ऐ यरमियाह, इस क़ौम के लिए दुआ मत
कर। इसके लिए न इल्तिजा कर, न मिन्नत।
इन लोगों की ख़ातिर मुझे तंग न कर, क्योंकि मैं
तेरी नहीं सुनूँगा। 17क्या तुझे वह कुछ नज़र नहीं
आ रहा जो यह यहूदाह के शहरों और यरूशलम
की गलियों में कर रहे हैं? 18और सब इसमें
मुलव्वस हैं। बच्चे लकड़ी चुनकर ढेर बनाते हैं,
फिर बाप उसे आग लगाते हैं जबकि औरतें आटा
गूँध गूँधकर आग पर आसमान की मलिका नामी
देवी के लिए टिक्कियाँ पकाती हैं। मुझे तंग करने
के लिए वह अजनबी माबूदों को मै की नज़रें भी
पेश करते हैं।
19लेकिन हक़ीक़त में यह मुझे उतना तंग नहीं
कर रहे जितना अपने आपको। ऐसी हरकतों से
वह अपनी ही रुसवाई कर रहे हैं।” 20रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है, “मेरा क़हर और ग़ज़ब इस
मक़ाम पर, इनसानो-हैवान पर, खुले मैदान के
दरख़्तों पर और ज़मीन की पैदावार पर नाज़िल
होगा। सब कुछ नज़रे-आतिश हो जाएगा, और
कोई उसे बुझा नहीं सकेगा।”
21रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, “भस्म होनेवाली क़ुरबानियों को मुझे
पेश न करो, बल्कि उनका गोश्त दीगर क़ुरबानियों
समेत ख़ुद खा लो। 22क्योंकि जिस दिन मैं तुम्हारे
बापदादा को मिसर से निकाल लाया उस दिन
मैंने उन्हें भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और दीगर
क़ुरबानियाँ चढ़ाने का हुक्म न दिया। 23मैंने उन्हें
सिर्फ़ यह हुक्म दिया कि मेरी सुनो! तब ही मैं
तुम्हारा ख़ुदा हूँगा और तुम मेरी क़ौम होगे। पूरे तौर
पर उस राह पर चलते रहो जो मैं तुम्हें दिखाता हूँ।
तब ही तुम्हारी ख़ैर होगी। 24लेकिन उन्होंने मेरी न
सुनी, न ध्यान दिया बल्कि अपने शरीर दिल की
ज़िद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने लगे। उन्होंने
मेरी तरफ़ रुजू न किया बल्कि अपना मुँह मुझसे
फेर लिया। 25जब से तुम्हारे बापदादा मिसर से
निकल आए आज तक मैं रोज़ बरोज़ और बार
बार अपने ख़ादिमों यानी नबियों को तुम्हारे पास
भेजता रहा। 26तो भी उन्होंने न मेरी सुनी, न
तवज्जुह दी। वह बज़िद रहे बल्कि अपने बापदादा
की निसबत ज़्यादा बुरे थे।
27ऐ यरमियाह, तू उन्हें यह तमाम बातें
बताएगा, लेकिन वह तेरी नहीं सुनेंगे। तू उन्हें
बुलाएगा, लेकिन वह जवाब नहीं देंगे। 28तब तू
उन्हें बताएगा, ‘इस क़ौम ने न रब अपने ख़ुदा की
आवाज़ सुनी, न उस की तरबियत क़बूल की।
दियानतदारी ख़त्म होकर उनके मुँह से मिट गई
है।’

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : इफ़राईम।

वादीए-बिन-हिन्नूम में क़ाबिले-घिन रसूम

29अपने बालों को काटकर फेंक दे! जा, बंजर
टीलों पर मातम का गीत गा, क्योंकि यह नसल
रब के ग़ज़ब का निशाना बन गई है, और उसने
इसे रद्द करके छोड़ दिया है।”

30क्योंकि रब फ़रमाता है, “जो कुछ यहूदाह
के बाशिंदों ने किया वह मुझे बहुत बुरा लगता है।
उन्होंने अपने घिनौने बुतों को मेरे नाम के लिए
मख़सूस घर में रखकर उस की बेहुरमती की है।
31साथ साथ उन्होंने वादीए-बिन-हिन्नूम में वाक़े
तूफ़त की ऊँची जगहें तामीर कीं ताकि अपने बेटे-
बेटियों को जलाकर क़ुरबान करें। मैंने कभी भी
ऐसी रस्म अदा करने का हुक्म नहीं दिया बल्कि
इसका ख़याल मेरे ज़हन में आया तक नहीं।

32चुनाँचे रब का कलाम सुनो! वह दिन
आनेवाले हैं जब यह मक़ाम ‘तूफ़त’ या ‘वादीए-
बिन-हिन्नूम’ नहीं कहलाएगा बल्कि ‘क़त्लो-
ग़ारत की वादी।’ उस वक़्त लोग तूफ़त में इतनी
लाशें दफ़नाएँगे कि आख़िरकार ख़ाली जगह नहीं
रहेगी। 33तब इस क़ौम की लाशें परिंदों और
जंगली जानवरों की ख़ुराक बन जाएँगी, और कोई
नहीं होगा जो उन्हें भगा दे। 34मैं यहूदाह के शहरों
और यरूशलम की गलियों में ख़ुशी-ओ-शादमानी
की आवाज़ें ख़त्म कर दूँगा, दूल्हा-दुलहन की
आवाज़ें बंद हो जाएँगी। क्योंकि मुल्क वीरानो-
सुनसान हो जाएगा।”

8 रब फ़रमाता है, “उस वक़्त दुश्मन
क़ब्रों को खोलकर यहूदाह के बाद-
शाहों, अफ़सरों, इमामों, नबियों और यरू-
शलम के आम बाशिंदों की हड्डियों को निकालेगा
2और ज़मीन पर बिखेर देगा। वहाँ वह उनके
सामने पड़ी रहेंगी जो उन्हें प्यारे थे यानी सूरज,
चाँद और सितारों के तमाम लशकर के सामने।
क्योंकि वह उन्हीं की ख़िदमत करते, उन्हीं के
पीछे चलते, उन्हीं के तालिब रहते, और उन्हीं को
सिजदा करते थे। उनकी हड्डियाँ दुबारा न इकट्ठी
की जाएँगी, न दफ़न की जाएँगी बल्कि खेत में
गोबर की तरह बिखरी पड़ी रहेंगी। 3और जहाँ
भी मैं इस शरीर क़ौम के बचे हुओं को मुंतशिर
करूँगा वहाँ वह सब कहेंगे कि काश हम भी ज़िंदा
न रहें बल्कि मर जाएँ।” यह रब्बुल-अफ़वाज का
फ़रमान है।

क़ौम तबाहकुन राह से हटने के लिए तैयार नहीं

4“उन्हें बता, रब फ़रमाता है कि जब कोई गिर
जाता है तो क्या दुबारा उठने की कोशिश नहीं
करता? ज़रूर। और जब कोई सहीह रास्ते से दूर
हो जाता है तो क्या वह दुबारा वापस आ जाने की
कोशिश नहीं करता? बेशक। 5तो फिर यरूशलम
के यह लोग सहीह राह से बार बार क्यों भटक
जाते हैं? यह फ़रेब के साथ लिपटे रहते और
वापस आने से इनकार ही करते हैं। 6मैंने ध्यान
देकर देखा है कि यह झूट ही बोलते हैं। कोई भी
पछताकर नहीं कहता, ‘यह कैसा ग़लत काम है
जो मैंने किया!’ जिस तरह जंग में घोड़े दुश्मन पर
टूट पड़ते हैं उसी तरह हर एक सीधा अपनी ग़लत
राह पर दौड़ता रहता है। 7फ़िज़ा में उड़नेवाले
लक़लक़ पर ग़ौर करो जिसे आने जाने के मुक़र्ररा
औक़ात ख़ूब मालूम होते हैं। फ़ाख़्ता, अबाबील
और बुलबुल पर भी ध्यान दो जो सर्दियों के मौसम
में कहीं और होते हैं, गरमियों के मौसम में कहीं
और। वह मुक़र्ररा औक़ात से कभी नहीं हटते।
लेकिन अफ़सोस, मेरी क़ौम रब की शरीअत नहीं
जानती।

8तुम किस तरह कह सकते हो, ‘हम दानिशमंद
हैं, क्योंकि हमारे पास रब की शरीअत है’?
हक़ीक़त में कातिबों के फ़रेबदेह क़लम ने इसे
तोड़-मरोड़कर बयान किया है। 9सुनो, दानिशमंदों
की रुसवाई हो जाएगी, वह दहशतज़दा होकर
पकड़े जाएंगे। देखो, रब का कलाम रद्द करने के
बाद उनकी अपनी हिकमत कहाँ रही?

10इसलिए मैं उनकी बीवियों को परदेसियों के
हवाले कर दूँगा और उनके खेतों को ऐसे लोगों
के सुपुर्द जो उन्हें निकाल देंगे। क्योंकि छोटे से

लेकर बड़े तक सबके सब नाजायज़ नफ़ा के
पीछे पड़े हैं, नबियों से लेकर इमामों तक सब
धोकेबाज़ हैं। 11वह मेरी क़ौम के ज़ख़म पर
आरिज़ी मरहम-पट्टी लगाकर कहते हैं, 'अब सब
कुछ ठीक हो गया है, अब सलामती का दौर आ
गया है' हालाँकि सलामती है ही नहीं।

12गो ऐसा घिनौना रवैया उनके लिए शर्म का
बाइस होना चाहिए, लेकिन वह शर्म नहीं करते
बल्कि सरासर बेशर्म हैं। इसलिए जब सब कुछ
गिर जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब मैं
इन पर सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खाकर
ख़ाक में मिल जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

13रब फ़रमाता है, "मैं उनकी पूरी फ़सल छीन
लूँगा। अंगूर की बेल पर एक दाना भी नहीं रहेगा,
अंजीर के तमाम दरख़्त फल से महरूम हो जाएंगे
बल्कि तमाम पत्ते भी झड़ जाएंगे। जो कुछ भी मैंने
उन्हें अता किया था वह उनसे छीन लिया जाएगा।

14तब तुम कहोगे, 'हम यहाँ क्यों बैठे रहें?
आओ, हम क़िलाबंद शहरों में पनाह लेकर वहीं
हलाक हो जाएँ। हमने रब अपने ख़ुदा का गुनाह
किया है, और अब हम इसका नतीजा भुगत
रहे हैं। क्योंकि उसी ने हमें हलाकत के हवाले
करके हमें ज़हरीला पानी पिला दिया है। 15हम
सलामती के इंतज़ार में रहे, लेकिन हालात ठीक
न हुए। हम शफ़ा पाने की उम्मीद रखते थे, लेकिन
इसके बजाए हम पर दहशत छा गई। 16सुनो!
दुश्मन के घोड़े नथने फुला रहे हैं। दान से उनका
शोर हम तक पहुँच रहा है। उनके हिनहिनाने से
पूरा मुल्क थरथरा रहा है, क्योंकि आते वक़्त यह
पूरे मुल्क को उसके शहरों और बाशिंदों समेत
हड़प कर लेंगे'।"

अपनी क़ौम पर यरमियाह का नोहा

17रब फ़रमाता है, "मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ अफ़ई
भेज दूँगा, ऐसे ज़हरीले साँप जिनके ख़िलाफ़
हर जादूमंत्र बेअसर रहेगा। यह तुम्हें काटेंगे।"
18लाइलाज ग़म मुझ पर हावी हो गया, मेरा दिल
निढाल हो गया है। 19सुनो! मेरी क़ौम दूर-दराज़
मुल्क से चीख़ चीख़कर मदद के लिए आवाज़ दे
रही है। लोग पूछते हैं, "क्या रब सिय्यून में नहीं है,
क्या यरूशलम का बादशाह अब से वहाँ सुकूनत
नहीं करता?" "सुनो, उन्होंने अपने मुजस्समों
और बेकार अजनबी बुतों की पूजा करके मुझे
क्यों तैश दिलाया?"

20लोग आहें भर भरकर कहते हैं, "फ़सल कट
गई है, फल चुना गया है, लेकिन अब तक हमें
नजात हासिल नहीं हुई।"

21मेरी क़ौम की मुकम्मल तबाही देखकर मेरा
दिल टूट गया है। मैं मातम कर रहा हूँ, क्योंकि उस
की हालत इतनी बुरी है कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए
हैं। 22क्या जिलियाद में मरहम नहीं? क्या वहाँ
डाक्टर नहीं मिलता? मुझे बताओ, मेरी क़ौम का
ज़ख़म क्यों नहीं भरता?

9 काश मेरा सर पानी का मंबा और मेरी
आँखें आँसुओं का चश्मा हों ताकि मैं
दिन-रात अपनी क़ौम के मक़तूलों पर आहो-ज़ारी
कर सकूँ।

धोकेबाज़ों की क़ौम

2काश रेगिस्तान में कहीं मुसाफ़िरों के लिए
सराय हो ताकि मैं अपनी क़ौम को छोड़कर वहाँ
चला जाऊँ। क्योंकि सब ज़िनाकार, सब ग़द्दारों
का जत्था हैं।

3रब फ़रमाता है, "वह अपनी ज़बान से झूट
के तीर चलाते हैं, और मुल्क में उनकी ताक़त
दियानतदारी पर मबनी नहीं होती। नीज़, वह
बदतर होते जा रहे हैं। मुझे तो वह जानते ही
नहीं। 4हर एक अपने पड़ोसी से ख़बरदार रहे,
और अपने किसी भी भाई पर भरोसा मत रखना।
क्योंकि हर भाई चालाकी करने में माहिर है, और
हर पड़ोसी तोहमत लगाने पर तुला रहता है। 5हर
एक अपने पड़ोसी को धोका देता है, कोई भी सच
नहीं बोलता। उन्होंने अपनी ज़बान को झूट बोलना
सिखाया है, और अब वह ग़लत काम करते करते
थक गए हैं। 6ऐ यरमियाह, तू फ़रेब से घिरा रहता

है, और यह लोग फ़रेब के बाइस ही मुझे जानने
से इनकार करते हैं।"
7इसलिए रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "देखो,
मैं उन्हें ख़ाम चाँदी की तरह पिघलाकर
आज़माऊँगा, क्योंकि मैं अपनी क़ौम, अपनी बेटी
के साथ और क्या कर सकता हूँ? 8उनकी ज़बानें
मोहलक तीर हैं। उनके मुँह पड़ोसी से सुलह-
सलामती की बातें करते हैं जबकि अंदर ही अंदर
वह उस की ताक में बैठे हैं।" 9रब फ़रमाता है,
"क्या मुझे उन्हें इसकी सज़ा नहीं देनी चाहिए?
क्या मुझे ऐसी क़ौम से बदला नहीं लेना चाहिए?"

नोहा करो!

10मैं पहाड़ों के बारे में आहो-ज़ारी करूँगा,
बयाबान की चरागाहों पर मातम का गीत गाऊँगा।
क्योंकि वह यों तबाह हो गए हैं कि न कोई उनमें
से गुज़रता, न रेवड़ों की आवाज़ें उनमें सुनाई देती
हैं। परिंदे और जानवर सब भागकर चले गए हैं।
11"यरूशलम को मैं मलबे का ढेर बना दूँगा, और
आइंदा गीदड़ उसमें जा बसेंगे। यहूदाह के शहरों
को मैं वीरानो-सुनसान कर दूँगा। एक भी उनमें
नहीं बसेगा।"
12कौन इतना दानिशमंद है कि यह समझ
सके? किस को रब से इतनी हिदायत मिली है
कि वह बयान कर सके कि मुल्क क्यों बरबाद हो
गया है? वह क्यों रेगिस्तान जैसा बन गया है,
इतना वीरान कि उसमें से कोई नहीं गुज़रता?
13रब ने फ़रमाया, "वजह यह है कि उन्होंने मेरी
शरीअत को तर्क किया, वह हिदायत जो मैंने ख़ुद
उन्हें दी थी। न उन्होंने मेरी सुनी, न मेरी शरीअत
की पैरवी की। 14इसके बजाए वह अपने ज़िद्दी
दिलों की पैरवी करके बाल देवताओं के पीछे लग
गए हैं। उन्होंने वही कुछ किया जो उनके बापदादा
ने उन्हें सिखाया था।"
15इसलिए रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, "देखो, मैं इस क़ौम को
कड़वा खाना खिलाकर ज़हरीला पानी पिला दूँगा।
16मैं उन्हें ऐसी क़ौमों में मुंतशिर कर दूँगा जिनसे
न वह और न उनके बापदादा वाक़िफ़ थे। मेरी
तलवार उस वक़्त तक उनके पीछे पड़ी रहेगी
जब तक हलाक न हो जाएँ।" 17रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, "ध्यान देकर गिर्या करनेवाली औरतों
को बुलाओ। जो जनाज़ों पर वावैला करती हैं
उनमें से सबसे माहिर औरतों को बुलाओ।
18वह जल्द आकर हम पर आहो-ज़ारी करें
ताकि हमारी आँखों से आँसू बह निकलें, हमारी
पलकों से पानी ख़ूब टपकने लगे।
19क्योंकि सिय्यून से गिर्या की आवाज़ें बुलंद
हो रही हैं, 'हाय, हमारे साथ कैसी ज़्यादती हुई है,
हमारी कैसी रुसवाई हुई है! हम मुल्क को छोड़ने
पर मजबूर हैं, क्योंकि दुश्मन ने हमारे घरों को ढा
दिया है'।"
20ऐ औरतो, रब का पैग़ाम सुनो। अपने कानों
को उस की हर बात पर धरो! अपनी बेटियों को
नोहा करने की तालीम दो, एक दूसरी को मातम
का यह गीत सिखाओ,
21"मौत फलाँगकर हमारी खिड़कियों में से
घुस आई और हमारे क़िलों में दाख़िल हुई है।
अब वह बच्चों को गलियों में से और नौजवानों
को चौकों में से मिटा डालने जा रही है।"
22रब फ़रमाता है, "नाशें खेतों में गोबर की
तरह इधर-उधर बिखरी पड़ी रहेंगी। जिस तरह
कटा हुआ गंदुम फ़सल काटनेवाले के पीछे इधर-
उधर पड़ा रहता है उसी तरह लाशें इधर-उधर पड़ी
रहेंगी। लेकिन उन्हें इकट्ठा करनेवाला कोई नहीं
होगा।"
23रब फ़रमाता है, "न दानिशमंद अपनी
हिकमत पर फ़ख़र करे, न ज़ोरावर अपने ज़ोर पर
या अमीर अपनी दौलत पर। 24फ़ख़र करनेवाला
फ़ख़र करे कि उसे समझ हासिल है, कि वह रब
को जानता है और कि मैं रब हूँ जो दुनिया में
मेहरबानी, इनसाफ़ और रास्ती को अमल में लाता
हूँ। क्योंकि यही चीज़ें मुझे पसंद हैं।"
25रब फ़रमाता है, "ऐसा वक़्त आ रहा है जब
मैं उन सबको सज़ा दूँगा जिनका सिर्फ़ जिस्मानी
ख़तना हुआ है। 26इनमें मिसर, यहूदाह, अदोम,

अम्मोन, मोआब और वह शामिल हैं जो रेगिस्तान
के किनारे किनारे रहते हैं। क्योंकि गो यह तमाम
अक़वाम ज़ाहिरी तौर पर ख़तना की रस्म अदा
करती हैं, लेकिन उनका ख़तना बातिनी तौर पर
नहीं हुआ। ध्यान दो कि इसराईल की भी यही
हालत है।”

बुत बेफ़ायदा हैं

10 ऐ इसराईल के घराने, रब का
पैग़ाम सुन! 2रब फ़रमाता है,
“दीगर अक़वाम की बुतपरस्ती मत अपना-
ना। यह लोग इल्मे-नुजूम से मुस्तक़बिल जान
लेने की कोशिश करते करते परेशान हो जाते हैं,
लेकिन तुम उनकी बातों से परेशान न हो जाओ।
3क्योंकि दीगर क़ौमों के रस्मो-रिवाज फ़ज़ूल ही
हैं। जंगल में दरख़्त कट जाता है, फिर कारीगर
उसे अपने औज़ार से तश्कील देता है। 4लोग
उसे अपनी सोना-चाँदी से सजाकर कीलों से कहीं
लगा देते हैं ताकि हिले न। 5बुत उन पुतलों की
मानिंद हैं जो खीरे के खेत में खड़े किए जाते हैं
ताकि परिंदों को भगा दें। न वह बोल सकते, न
चल सकते हैं, इसलिए लोग उन्हें उठाकर अपने
साथ ले जाते हैं। उनसे मत डरना, क्योंकि न वह
नुक़सान का बाइस हैं, न भलाई का।”

6ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है, तू अज़ीम है,
तेरे नाम की अज़मत ज़ोरदार तरीक़े से ज़ाहिर
हुई है। 7ऐ अक़वाम के बादशाह, कौन तेरा ख़ौफ़
नहीं मानेगा? क्योंकि तू इस लायक़ है। अक़वाम
के तमाम दानिशमंदों और उनके तमाम ममालिक
में तुझ जैसा कोई नहीं है। 8सब अहमक़ और
बेवुक़ूफ़ साबित हुए हैं, क्योंकि उनकी तरबियत
लकड़ी के बेकार बुतों से हासिल हुई है। 9तरसीस
से चाँदी की चादरें और ऊफ़ाज़ से सोना लाया
जाता है। उनसे कारीगर और सुनार बुत बना देते
हैं जिसे क़िरमिज़ी और अरग़वानी रंग के कपड़े
पहनाए जाते हैं। सब कुछ माहिर उस्तादों के हाथ
से बनाया जाता है।

10लेकिन रब ही हक़ीक़ी ख़ुदा है। वही ज़िंदा
ख़ुदा और अबदी बादशाह है। जब वह नाराज़ हो
जाता है तो ज़मीन लरज़ने लगती है। अक़वाम
उसका क़हर बरदाश्त नहीं कर सकतीं।

11बुतपरस्तों को बताओ कि देवताओं ने
न आसमान को बनाया और न ज़मीन को,
उनका नामो-निशान तो आसमानो-ज़मीन से मिट
जाएगा। 12देखो, अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से
ज़मीन को ख़लक़ किया, उसी ने अपनी हिकमत
से दुनिया की बुनियाद रखी, और उसी ने अपनी
समझ के मुताबिक़ आसमान को ख़ैमे की तरह
तान लिया। 13उसके हुक्म पर आसमान पर पानी
के ज़ख़ीरे गरजने लगते हैं। वह दुनिया की इंतहा
से बादल चढ़ने देता, बारिश के साथ बिजली
कड़कने देता और अपने गोदामों से हवा निकलने
देता है।

14तमाम इनसान अहमक़ और समझ से ख़ाली
हैं। हर सुनार अपने बुतों के बाइस शरमिंदा हुआ
है। उसके बुत धोका ही हैं, उनमें दम नहीं। 15वह
फ़ज़ूल और मज़हकाख़ेज़ हैं। अदालत के वक़्त
वह नेस्त हो जाएंगे। 16अल्लाह जो याक़ूब का
मौरूसी हिस्सा है इनकी मानिंद नहीं है। वह
सबका ख़ालिक़ है, और इसराईली क़ौम उसका
मौरूसी हिस्सा है। रब्बुल-अफ़वाज ही उसका
नाम है।

आनेवाली जिलावतनी

17ऐ मुहासराशुदा शहर, अपना सामान
समेटकर मुल्क से निकलने की तैयारियाँ कर ले।
18क्योंकि रब फ़रमाता है, “इस बार मैं मुल्क के
बाशिंदों को बाहर फेंक दूँगा। मैं उन्हें तंग करूँगा
ताकि उन्हें पकड़ा जाए।”

19हाय, मेरा बेड़ा ग़रक़ हो गया है! हाय, मेरा
ज़ख़म भर नहीं सकता। पहले मैंने सोचा कि यह
ऐसी बीमारी है जिसे मुझे बरदाश्त ही करना है।
20लेकिन अब मेरा ख़ैमा तबाह हो गया है, उसके
तमाम रस्से टूट गए हैं। मेरे बेटे मेरे पास से चले
गए हैं, एक भी नहीं रहा। कोई नहीं है जो मेरा

ख़ैमा दुबारा लगाए, जो उसके परदे नए सिरे से
लटकाए। 21क्योंकि क़ौम के गल्लाबान अहमक़
हो गए हैं, उन्होंने रब को तलाश नहीं किया।
इसलिए वह कामयाब नहीं रहे, और उनका पूरा
रेवड़ तित्तर-बित्तर हो गया है।

22सुनो! एक ख़बर पहुँच रही है, शिमाली
मुल्क से शोरो-ग़ौग़ा सुनाई दे रहा है। यहूदाह के
शहर उस की ज़द में आकर बरबाद हो जाएंगे।
आइंदा गीदड़ ही उनमें बसेंगे।

23ऐ रब, मैंने जान लिया है कि इनसान की
राह उसके अपने हाथ में नहीं होती। अपनी मरज़ी
से न वह चलता, न क़दम उठाता है। 24ऐ रब,
मेरी तंबीह कर, लेकिन मुनासिब हद तक। तैश
में आकर मेरी तंबीह न कर, वरना मैं भस्म
हो जाऊँगा। 25अपना ग़ज़ब उन अक़वाम पर
नाज़िल कर जो तुझे नहीं जानतीं, उन उम्मतों पर
जो तेरा नाम लेकर तुझे नहीं पुकारतीं। क्योंकि
उन्होंने याक़ूब को हड़प कर लिया है। उन्होंने उसे
मुकम्मल तौर पर निगलकर उस की चरागाह को
तबाह कर दिया है।

क़ौम की अहदशिकनी

11 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ,
2“यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों
से कह कि उस अहद की शरायत पर ध्यान दो
जो मैंने तुम्हारे साथ बाँधा था। 3रब जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है कि उस पर लानत जो
उस अहद की शरायत पूरी न करे 4जो मैंने तुम्हारे
बापदादा से बाँधा था जब उन्हें मिसर से निकाल
लाया, उस मक़ाम से जो लोहा पिघलानेवाली
भट्टी की मानिंद था। उस वक़्त मैं बोला, ‘मेरी
सुनो और मेरे हर हुक्म पर अमल करो तो तुम
मेरी क़ौम होगे और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। 5फिर
मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने क़सम खाकर
तुम्हारे बापदादा से किया था, मैं तुम्हें वह मुल्क
दूँगा जिसमें दूध और शहद की कसरत है।’ आज
तुम उसी मुल्क में रह रहे हो।”

मैं, यरमियाह ने जवाब दिया, “ऐ रब, आमीन,
ऐसा ही हो!”

6तब रब ने मुझे हुक्म दिया कि यहूदाह के शहरों
और यरूशलम की गलियों में फिरकर यह तमाम
बातें सुना दे। एलान कर, “अहद की शरायत पर
ध्यान देकर उन पर अमल करो। 7तुम्हारे बापदादा
को मिसर से निकालते वक़्त मैंने उन्हें आगाह
किया कि मेरी सुनो। आज तक मैं बार बार यही
बात दोहराता रहा, 8लेकिन उन्होंने न मेरी सुनी,
न ध्यान दिया बल्कि हर एक अपने शरीर दिल
की ज़िद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता रहा। अहद
की जिन बातों पर मैंने उन्हें अमल करने का हुक्म
दिया था उन पर उन्होंने अमल न किया। नतीजे
में मैं उन पर वह तमाम लानतें लाया जो अहद में
बयान की गई हैं।”

9रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, “यहू-
दाह और यरूशलम के बाशिंदों ने मेरे ख़िलाफ़
साज़िश की है। 10उनसे वही गुनाह सरज़द हुए
हैं जो उनके बापदादा ने किए थे। क्योंकि यह भी
मेरी बातें सुनने के लिए तैयार नहीं हैं, यह भी
अजनबी माबूदों के पीछे हो लिए हैं ताकि उनकी
ख़िदमत करें। इसराईल और यहूदाह ने मिलकर
वह अहद तोड़ा है जो मैंने उनके बापदादा से बाँधा
था।

11इसलिए रब फ़रमाता है कि मैं उन पर
ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा जिससे वह बच नहीं
सकेंगे। तब वह मदद के लिए मुझसे फ़रियाद
करेंगे, लेकिन मैं उनकी नहीं सुनूँगा। 12फिर
यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदे अपने शहरों
से निकलकर चीख़ते-चिल्लाते उन देवताओं से
मिन्नत करेंगे जिनके सामने बख़ूर जलाते रहे हैं।
लेकिन अब जब वह मुसीबत में मुब्तला होंगे तो
यह उन्हें नहीं बचाएँगे। 13ऐ यहूदाह, तेरे देवता
तेरे शहरों जैसे बेशुमार हो गए हैं। शर्मनाक देवता
बाल के लिए बख़ूर जलाने की इतनी क़ुरबानगाहें
खड़ी की गई हैं जितनी यरूशलम में गलियाँ होती
हैं। 14ऐ यरमियाह, इस क़ौम के लिए दुआ मत
करना! इसके लिए न मिन्नत कर, न समाजत।

क्योंकि जब आफ़त उन पर आएगी और वह चिल्लाकर मुझसे फ़रियाद करेंगे तो मैं उनकी नहीं सुनूँगा।

15मेरी प्यारी क़ौम मेरे घर में क्यों हाज़िर होती है? वह तो अपनी बेशुमार साज़िशों से बाज़ ही नहीं आती। क्या आनेवाली आफ़त क़ुरबानी का मुक़द्दस गोश्त पेश करने से रुक जाएगी? अगर ऐसा होता तो तू ख़ुशी मना सकती।

16रब ने तेरा नाम 'ज़ैतून का फलता-फूलता दरख़्त जिसका ख़ूबसूरत फल है' रखा, लेकिन अब वह ज़बरदस्त आँधी का शोर मचाकर दरख़्त को आग लगाएगा। तब उस की तमाम डालियाँ भस्म हो जाएँगी।
17ऐ इसराईल और यहूदाह, रब्बुल-अफ़वाज ने ख़ुद तुम्हें ज़मीन में लगाया। लेकिन अब उसने तुम पर आफ़त लाने का फ़ैसला किया है। क्यों? तुम्हारे ग़लत काम की वजह से, और इसलिए कि तुमने बाल देवता को बख़ूर की क़ुरबानियाँ पेश करके मुझे तैश दिलाया है।"

यरमियाह के लिए जान का ख़तरा

18रब ने मुझे इत्तला दी तो मुझे मालूम हुआ। हाँ, उस वक़्त तू ही ने मुझे उनके मनसूबों से आगाह किया।
19पहले मैं उस भूले-भाले भेड़ के बच्चे की मानिंद था जिसे क़साई के पास लाया जा रहा हो। मुझे क्या पता था कि यह मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे हैं। आपस में वह कह रहे थे, "आओ, हम दरख़्त को फल समेत ख़त्म करें, आओ हम उसे ज़िंदों के मुल्क में से मिटाएँ ताकि उसका नामो-निशान तक याद न रहे।"

20ऐ रब्बुल-अफ़वाज, तू आदिल मुंसिफ़ है जो लोगों के सबसे गहरे ख़यालात और राज़ जाँच लेता है। अब बख़्श दे कि मैं अपनी आँखों से वह इंतक़ाम देखूँ जो तू मेरे मुख़ालिफ़ों से लेगा। क्योंकि मैंने अपना मामला तेरे ही सुपुर्द कर दिया है।

21रब फ़रमाता है, "अनतोत के आदमी तुझे क़त्ल करना चाहते हैं। वह कहते हैं, 'रब का नाम लेकर नबुव्वत मत करना, वरना तू हमारे हाथों मार दिया जाएगा'।"
22चूँकि यह लोग ऐसी बातें करते हैं इसलिए रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "मैं उन्हें सज़ा दूँगा! उनके जवान आदमी तलवार से और उनके बेटे-बेटियाँ काल से हलाक हो जाएंगे।
23उनमें से एक भी नहीं बचेगा। क्योंकि जिस साल उनकी सज़ा नाज़िल होगी, उस वक़्त मैं अनतोत के आदमियों पर सख़्त आफ़त लाऊँगा।"

बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यों हासिल होती है?

12 ऐ रब, तू हमेशा हक़ पर है, लिहाज़ा अदालत में तुझसे शिकायत करने का क्या फ़ायदा? ताहम मैं अपना मामला तुझे पेश करना चाहता हूँ। बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यों हासिल होती है? ग़द्दार इतने सुकून से ज़िंदगी क्यों गुज़ारते हैं?
2तूने उन्हें ज़मीन में लगा दिया, और अब वह जड़ पकड़कर ख़ूब उगने लगे बल्कि फल भी ला रहे हैं। गो तेरा नाम उनकी ज़बान पर रहता है, लेकिन उनका दिल तुझसे दूर है।
3लेकिन ऐ रब, तू मुझे जानता है। तू मेरा मुलाहज़ा करके मेरे दिल को परखता रहता है। गुज़ारिश है कि तू उन्हें भेड़ों की तरह घसीटकर ज़बह करने के लिए ले जा। उन्हें क़त्लो-ग़ारत के दिन के लिए मख़सूस कर!

4मुल्क कब तक काल की गिरिफ़्त में रहेगा? खेतों में हरियाली कब तक मुरझाई हुई नज़र आएगी? बाशिंदों की बुराई के बाइस जानवर और परिंदे ग़ायब हो गए हैं। क्योंकि लोग कहते हैं, "अल्लाह को नहीं मालूम कि हमारे साथ क्या हो जाएगा।"

5रब मुझसे हमकलाम हुआ, "पैदल चलनेवालों से दौड़ का मुक़ाबला करना तुझे थका देता है, तो फिर तू किस तरह घोड़ों का मुक़ाबला करेगा? तू अपने आपको सिर्फ़ वहाँ महफ़ूज़ समझता है जहाँ चारों तरफ़ अमनो-अमान फैला हुआ है, तो फिर तू दरियाए-यरदन के गुंजान जंगल से किस तरह निपटेगा?
6क्योंकि तेरे सगे

भाई, हाँ तेरे बाप का घर भी तुझसे बेवफ़ा हो गया है। यह भी बुलंद आवाज़ से तेरे पीछे तुझे गालियाँ देते हैं। उन पर एतमाद मत करना, ख़ाह वह तेरे साथ अच्छी बातें क्यों न करें।

अल्लाह अपने मुल्क पर मातम करता है

7मैंने अपने घर इसराईल को तर्क कर दिया है।
जो मेरी मौरूसी मिलकियत थी उसे मैंने रद्द किया
है। मैंने अपने लख़्ते-जिगर को उसके दुश्मनों के
हवाले कर दिया है। 8क्योंकि मेरी क़ौम जो मेरी
मौरूसी मिलकियत है मेरे साथ बुरा सुलूक करती
है। जंगल में शेरबबर की तरह वह मेरे ख़िलाफ़
दहाड़ती है, इसलिए मैं उससे नफ़रत करता हूँ।
9अब मेरी मौरूसी मिलकियत उस रंगीन शिकारी
परिंदे की मानिंद है जिसे दीगर शिकारी परिंदों
ने घेर रखा है। जाओ, तमाम दरिंदों को इकट्ठा
करो ताकि वह आकर उसे खा जाएँ। 10मुतअद्दिद
गल्लाबानों ने मेरे अंगूर के बाग़ को ख़राब कर
दिया है। मेरे प्यारे खेत को उन्होंने पाँवों तले
रौंदकर रेगिस्तान में बदल दिया है। 11अब वह
बंजर ज़मीन बनकर उजाड़ हालत में मेरे सामने
मातम करता है। पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान है,
लेकिन कोई परवा नहीं करता।

12तबाहकुन फ़ौजी बयाबान की बंजर बुलंदियों
पर से उतरकर क़रीब पहुँच रहे हैं। क्योंकि रब की
तलवार मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सब
कुछ खा जाएगी। कोई भी नहीं बचेगा।

13इस क़ौम ने गंदुम का बीज बोया, लेकिन
काँटों की फ़सल पक गई। ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त
करने के बावुजूद भी कुछ हासिल न हुआ, क्योंकि
रब का सख़्त ग़ज़ब क़ौम पर नाज़िल हो रहा है।
चुनाँचे अब रुसवाई की फ़सल काटो!”

अल्लाह का पड़ोसी ममालिक के लिए पैग़ाम

14रब फ़रमाता है, “मैं उन तमाम शरीर पड़ोसी
ममालिक को जड़ से उखाड़ दूँगा जो मेरी क़ौम
इसराईल की मिलकियत को छीनने की कोशिश
कर रहे हैं, वह मिलकियत जो मैंने ख़ुद उन्हें मीरास
में दी थी। साथ साथ मैं यहूदाह को भी जड़ से
उनके दरमियान से निकाल दूँगा। 15लेकिन बाद
में मैं उन पर तरस खाकर हर एक को फिर उस की
अपनी मौरूसी ज़मीन और अपने मुल्क में पहुँचा
दूँगा। 16पहले उन दीगर क़ौमों ने मेरी क़ौम को
बाल देवता की क़सम खाने का तर्ज़ सिखाया।
लेकिन अब अगर वह मेरी क़ौम की राहें अच्छी
तरह सीखकर मेरे ही नाम और मेरी ही हयात की
क़सम खाएँ तो मेरी क़ौम के दरमियान रहकर
अज़ सरे-नौ क़ायम हो जाएँगी। 17लेकिन जो
क़ौम मेरी नहीं सुनेगी उसे मैं हतमी तौर पर जड़ से
उखाड़कर नेस्त कर दूँगा।” यह रब का फ़रमान
है।

गली-सड़ी लँगोटी

13 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “जा,
कतान की लँगोटी ख़रीदकर उसे बाँध
ले। लेकिन वह भीग न जाए।” 2मैंने ऐसा ही
किया। लँगोटी ख़रीदकर मैंने उसे बाँध लिया।
3तब रब का कलाम दुबारा मुझ पर नाज़िल
हुआ, 4“अब वह लँगोटी ले जो तूने ख़रीदकर
बाँध ली है। दरियाए-फ़ुरात के पास जाकर उसे
किसी चट्टान की दराड़ में छुपा दे।” 5चुनाँचे
मैं रवाना होकर दरियाए-फ़ुरात के किनारे पहुँच
गया। वहाँ मैंने लँगोटी को कहीं छुपा दिया जिस
तरह रब ने हुक्म दिया था। 6बहुत दिन गुज़र गए।
फिर रब मुझसे एक बार फिर हमकलाम हुआ,
“उठ, दरियाए-फ़ुरात के पास जाकर वह लँगोटी
निकाल ला जो मैंने तुझे वहाँ छुपाने को कहा
था।” 7चुनाँचे मैं रवाना होकर दरियाए-फ़ुरात के
पास पहुँच गया। वहाँ मैंने खोदकर लँगोटी को
उस जगह से निकाल लिया जहाँ मैंने उसे छुपा
दिया था। लेकिन अफ़सोस, वह गल-सड़ गई थी,
बिलकुल बेकार हो गई थी।

8तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
9“जिस तरह यह कपड़ा ज़मीन में दबकर गल-
सड़ गया उसी तरह मैं यहूदाह और यरूशलम का
बड़ा घमंड ख़ाक में मिला दूँगा। 10यह ख़राब लोग

मेरी बातें सुनने के लिए तैयार नहीं बल्कि अपने
शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते
हैं। अजनबी माबूदों के पीछे लगकर यह उन्हीं
की ख़िदमत और पूजा करते हैं। लेकिन इनका
अंजाम लँगोटी की मानिंद ही होगा। यह बेकार हो
जाएंगे। 11क्योंकि जिस तरह लँगोटी आदमी की
कमर के साथ लिपटी रहती है उसी तरह मैंने पूरे
इसराईल और पूरे यहूदाह को अपने साथ लिपटने
का मौक़ा फ़राहम किया ताकि वह मेरी क़ौम और
मेरी शोहरत, तारीफ़ और इज़्ज़त का बाइस बन
जाएँ। लेकिन अफ़सोस, वह सुनने के लिए तैयार
नहीं थे।” यह रब का फ़रमान है।

मै के घड़े भरे हुए हैं

12“उन्हें बता दे कि रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है, ‘हर घड़े को मै से भरना है।’ वह
जवाब में कहेंगे, ‘हम तो ख़ुद जानते हैं कि हर घड़े
को मै से भरना है।’ 13तब उन्हें इसका मतलब
बता। ‘रब फ़रमाता है कि इस मुल्क के तमाम
बाशिंदे घड़े हैं जिन्हें मैं मै से भर दूँगा। दाऊद
के तख़्त पर बैठनेवाले बादशाह, इमाम, नबी
और यरूशलम के तमाम रहनेवाले सबके सब
भर भरकर नशे में धुत हो जाएंगे। 14तब मैं उन्हें
एक दूसरे के साथ टकरा दूँगा, और बाप बेटों के
साथ मिलकर टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे। न मैं तरस
खाऊँगा, न उन पर रहम करूँगा बल्कि हमदर्दी
दिखाए बग़ैर उन्हें तबाह करूँगा’।” यह रब का
फ़रमान है।

क़ैद की हैबतनाक हालत

15ध्यान से सुनो! मग़रूर न हो, क्योंकि रब
ने ख़ुद फ़रमाया है। 16इससे पहले कि तारीकी
फैल जाए और तुम्हारे पाँव धुँधलेपन में पहाड़ों के
साथ ठोकर खाएँ, रब अपने ख़ुदा को जलाल दो!
क्योंकि उस वक़्त गो तुम रौशनी के इंतज़ार में
रहोगे, लेकिन अल्लाह अंधेरे को मज़ीद बढ़ाएगा,
गहरी तारीकी तुम पर छा जाएगी। 17लेकिन
अगर तुम न सुनो तो मैं तुम्हारे तकब्बुर को
देखकर पोशीदगी में गिर्याओ-ज़ारी करूँगा। मैं
ज़ार ज़ार रोऊँगा, मेरी आँखों से आँसू ज़ोर से
टपकेंगे, क्योंकि दुश्मन रब के रेवड़ को पकड़कर
जिलावतन कर देगा।

18बादशाह और उस की माँ को इत्तला दे,
“अपने तख़्तों से उतरकर ज़मीन पर बैठ जाओ,
क्योंकि तुम्हारी शान का ताज तुम्हारे सरों से गिर
गया है।” 19दश्ते-नजब के शहर बंद किए जाएंगे,
और उन्हें खोलनेवाला कोई नहीं होगा। पूरे यहूदाह
को जिलावतन कर दिया जाएगा, एक भी नहीं
बचेगा।

20ऐ यरूशलम, अपनी नज़र उठाकर उन्हें देख
जो शिमाल से आ रहे हैं। अब वह रेवड़ कहाँ
रहा जो तेरे सुपुर्द किया गया, तेरी शानदार भेड़-
बकरियाँ किधर हैं? 21तू उस दिन क्या कहेगी
जब रब उन्हें तुझ पर मुक़र्रर करेगा जिन्हें तूने
अपने क़रीबी दोस्त बनाया था? जन्म देनेवाली
औरत का-सा दर्द तुझ पर ग़ालिब आएगा।
22और अगर तेरे दिल में सवाल उभर आए कि मेरे
साथ यह क्यों हो रहा है तो सुन! यह तेरे संगीन
गुनाहों की वजह से हो रहा है। इन्हीं की वजह से
तेरे कपड़े उतारे गए हैं और तेरी इसमतदरी हुई है।

23क्या काला आदमी अपनी जिल्द का रंग
या चीता अपनी खाल के धब्बे बदल सकता है?
हरगिज़ नहीं! तुम भी बदल नहीं सकते। तुम
ग़लत काम के इतने आदी हो गए हो कि सहीह
काम कर ही नहीं सकते।

24“जिस तरह भूसा रेगिस्तान की तेज़ हवा में
उड़कर तित्तर-बित्तर हो जाता है उसी तरह मैं तेरे
बाशिंदों को मुंतशिर कर दूँगा।” 25रब फ़रमाता
है, “यही तेरा अंजाम होगा, मैंने ख़ुद मुक़र्रर
किया है कि तुझे यह अज्र मिलना है। क्योंकि तूने
मुझे भूलकर झूट पर भरोसा रखा है। 26मैं ख़ुद
तेरे कपड़े उतारूँगा ताकि तेरी बरहनगी सबको
नज़र आए। 27मैंने पहाड़ी और मैदानी इलाक़ों
में तेरी घिनौनी हरकतों पर ख़ूब ध्यान दिया है।
तेरी ज़िनाकारी, तेरा मस्ताना हिनहिनाना, तेरी
बेशर्म इसमतफ़रोशी, सब कुछ मुझे नज़र आता

है। ऐ यरूशलम, तुझ पर अफ़सोस! तू पाक-
साफ़ हो जाने के लिए तैयार नहीं। मज़ीद कितनी
देर लगेगी?"

काल के दौरान रब का पैग़ाम

14 काल के दौरान रब यरमियाह से
हमकलाम हुआ,
2"यहूदाह मातम कर रहा है, उसके दरवाज़ों
की हालत क़ाबिले-रहम है। लोग सोगवार हालत
में फ़र्श पर बैठे हैं, और यरूशलम की चीख़ें
आसमान तक बुलंद हो रही हैं। 3अमीर अपने
नौकरों को पानी भरने भेजते हैं, लेकिन हौज़ों
के पास पहुँचकर पता चलता है कि पानी नहीं
है, इसलिए वह ख़ाली हाथ वापस आ जाते हैं।
शरमिंदगी और नदामत के मारे वह अपने सरों को
ढाँप लेते हैं। 4बारिश न होने की वजह से ज़मीन
में दराड़ें पड़ गई हैं। खेतों में काम करनेवाले भी
शर्म के मारे अपने सरों को ढाँप लेते हैं। 5घास
नहीं है, इसलिए हिरनी अपने नौमौलूद बच्चे को
छोड़ देती है। 6जंगली गधे बंजर टीलों पर खड़े
गीदड़ों की तरह हाँपते हैं। हरियाली न मिलने की
वजह से वह बेजान हो रहे हैं।"
7ऐ रब, हमारे गुनाह हमारे ख़िलाफ़ गवाही दे
रहे हैं। तो भी अपने नाम की ख़ातिर हम पर रहम
कर। हम मानते हैं कि बुरी तरह बेवफ़ा हो गए
हैं, हमने तेरा ही गुनाह किया है। 8ऐ अल्लाह, तू
इसराईल की उम्मीद है, तू ही मुसीबत के वक़्त
उसे छुटकारा देता है। तो फिर हमारे साथ तेरा
सुलूक मुल्क में अजनबी का-सा क्यों है? तू रात
को कभी इधर कभी इधर ठहरनेवाले मुसाफ़िर
जैसा क्यों है? 9तू क्यों उस आदमी की मानिंद
है जो अचानक दम बख़ुद हो जाता है, उस सूरमे
की मानिंद जो बेबस होकर बचा नहीं सकता। ऐ
रब, तू तो हमारे दरमियान ही रहता है, और हम
पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। हमें तर्क न कर!

इस क़ौम के लिए दुआ मत करना

10लेकिन रब इस क़ौम के बारे में फ़रमाता है,
"यह लोग आवारा फिरने के शौक़ीन हैं, यह अपने
पाँवों को रोक ही नहीं सकते। मैं उनसे नाख़ुश
हूँ। अब मुझे उनके ग़लत काम याद रहेंगे, अब मैं
उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा।" 11रब मज़ीद मुझसे
हमकलाम हुआ, "इस क़ौम की बहबूदी के लिए
दुआ मत करना। 12गो यह रोज़ा भी रखें तो भी
मैं इनकी इल्तिजाओं पर ध्यान नहीं दूँगा। गो यह
भस्म होनेवाली और ग़ल्ला की क़ुरबानियाँ पेश
भी करें तो भी मैं इनसे ख़ुश नहीं हूँगा बल्कि इन्हें
काल, तलवार और बीमारियों से नेस्तो-नाबूद कर
दूँगा।"
13यह सुनकर मैंने एतराज़ किया, "ऐ रब
क़ादिरे-मुतलक़, नबी इन्हें बताते आए हैं, 'न
क़त्लो-ग़ारत का ख़तरा होगा, न काल पड़ेगा
बल्कि मैं यहीं तुम्हारे लिए अमनो-अमान का
पक्का बंदोबस्त कर लूँगा'।"
14रब ने जवाब दिया, "नबी मेरा नाम लेकर
झूटी पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। मैंने न उन्हें
भेजा, न उन्हें कोई ज़िम्मेदारी दी और न उनसे
हमकलाम हुआ। यह तुम्हें झूटी रोयाएँ, फ़ज़ूल
पेशगोइयाँ और अपने दिल के वहम सुनाते रहे
हैं।" 15चुनाँचे रब फ़रमाता है, "यह नबी तलवार
और काल की ज़द में आकर मर जाएंगे। क्योंकि
गो मैंने उन्हें नहीं भेजा तो भी यह मेरे नाम में
नबुव्वत करके कहते हैं कि मुल्क में न क़त्लो-
ग़ारत का ख़तरा होगा, न काल पड़ेगा। 16और
जिन लोगों को वह अपनी नबुव्वतें सुनाते रहे हैं
वह तलवार और काल का शिकार बन जाएंगे,
उनकी लाशें यरूशलम की गलियों में फेंक दी
जाएँगी। उन्हें दफ़नानेवाला कोई नहीं होगा, न
उनको, न उनकी बीवियों को और न उनके बेटे-
बेटियों को। यों मैं उन पर उनकी अपनी बदकारी
नाज़िल करूँगा।

ऐ रब, हमें मुआफ़ कर!

17ऐ यरमियाह, उन्हें यह कलाम सुना,
'दिन-रात मेरे आँसू बह रहे हैं। वह रुक नहीं
सकते, क्योंकि मेरी क़ौम, मेरी कुँवारी बेटी को
गहरी चोट लग गई है, ऐसा ज़ख़म जो भर नहीं
सकता। 18देहात में जाकर मुझे वह सब नज़र
आते हैं जो तलवार से क़त्ल किए गए हैं। जब मैं
शहर में वापस आता हूँ तो चारों तरफ़ काल के
बुरे असरात दिखाई देते हैं। नबी और इमाम मुल्क
में मारे मारे फिर रहे हैं, और उन्हें मालूम नहीं कि
क्या करें'।"

19ऐ रब, क्या तूने यहूदाह को सरासर रद्द किया
है? क्या तुझे सिय्यून से इतनी घिन आती है?
तूने हमें इतनी बार क्यों मारा कि हमारा इलाज
नामुमकिन हो गया है? हम अमनो-अमान के
इंतज़ार में रहे, लेकिन हालात ठीक न हुए। हम
शफ़ा पाने की उम्मीद रखते थे, लेकिन इसके
बजाए हम पर दहशत छा गई।

20ऐ रब, हम अपनी बेदीनी और अपने
बापदादा का क़ुसूर तसलीम करते हैं। हमने तेरा
ही गुनाह किया है। 21अपने नाम की ख़ातिर हमें
हक़ीर न जान, अपने जलाली तख़्त की बेहुरमती
होने न दे! हमारे साथ अपना अहद याद कर,
उसे मनसूख़ न कर। 22क्या दीगर अक़वाम के
देवताओं में से कोई है जो बारिश बरसा सके?
या क्या आसमान ख़ुद ही बारिशें ज़मीन पर भेज
देता है? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू ही यह सब कुछ
करता है, ऐ रब हमारे ख़ुदा। इसी लिए हम तुझ
पर उम्मीद रखते हैं। तू ही ने यह सारा इंतज़ाम
क़ायम किया है।

सज़ा ज़रूर आएगी, क्योंकि देर हो गई है

15 फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ,
"अब से मेरा दिल इस क़ौम की तरफ़
मायल नहीं होगा, ख़ाह मूसा और समुएल मेरे
सामने आकर उनकी शफ़ाअत क्यों न करें। उन्हें
मेरे हुज़ूर से निकाल दे, वह चले जाएँ! 2अगर वह
तुझसे पूछें, 'हम किधर जाएँ?' तो उन्हें जवाब दे,
'रब फ़रमाता है कि जिसे मरना है वह मरे, जिसे
तलवार की ज़द में आना है वह तलवार का लुक़मा
बने, जिसे भूके मरना है वह भूके मरे, जिसे क़ैद में
जाना है वह क़ैद हो जाए'।" 3रब फ़रमाता है, "मैं
उन्हें चार क़िस्म की सज़ा दूँगा। एक, तलवार उन्हें
क़त्ल करेगी। दूसरे, कुत्ते उनकी लाशें घसीटकर
ले जाएंगे। तीसरे और चौथे, परिंदे और दरिंदे उन्हें
खा खाकर ख़त्म कर देंगे। 4जब मैं अपनी क़ौम
से निपट लूँगा तो दुनिया के तमाम ममालिक उस
की हालत देखकर काँप उठेंगे। उनके रोंगटे खड़े
हो जाएंगे जब वह यहूदाह के बादशाह मनस्सी
बिन हिज़क़ियाह की उन शरीर हरकतों का अंजाम
देखेंगे जो उसने यरूशलम में की हैं।

5ऐ यरूशलम, कौन तुझ पर तरस खाएगा,
कौन हमदर्दी का इज़हार करेगा? कौन तेरे घर
आकर तेरा हाल पूछेगा?" 6रब फ़रमाता है,
"तूने मुझे रद्द किया, अपना मुँह मुझसे फेर लिया
है। अब मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ बढ़ाकर तुझे
तबाह कर दूँगा। क्योंकि मैं हमदर्दी दिखाते दिखाते
तंग आ गया हूँ।

7जिस तरह गंदुम को हवा में उछालकर भूसे
से अलग किया जाता है उसी तरह मैं उन्हें मुल्क
के दरवाज़ों के सामने फटकूँगा। चूँकि मेरी क़ौम
ने अपने ग़लत रास्तों को तर्क न किया इसलिए
मैं उसे बेऔलाद बनाकर बरबाद कर दूँगा। 8उस
की बेवाएँ समुंदर की रेत जैसी बेशुमार होंगी।
दोपहर के वक़्त ही मैं नौजवानों की माओं पर
तबाही नाज़िल करूँगा, अचानक ही उन पर पेचो-
ताब और दहशत छा जाएगी। 9सात बच्चों की
माँ निढाल होकर जान से हाथ धो बैठेगी। दिन के
वक़्त ही उसका सूरज डूब जाएगा, उसका फ़ख़र
और इज़्ज़त जाती रहेगी। जो लोग बच जाएंगे उन्हें
मैं दुश्मन के आगे आगे तलवार से मार डालूँगा।"
यह रब का फ़रमान है।

यरमियाह रब से शिकायत करता है

10ऐ मेरी माँ, मुझ पर अफ़सोस! अफ़-
सोस कि तूने मुझ जैसे शख़्स को जन्म दिया

जिसके साथ पूरा मुल्क झगड़ता और लड़ता है।
गो मैंने न उधार दिया न लिया तो भी सब मुझ पर
लानत करते हैं। 11रब ने जवाब दिया, “यक़ीनन
मैं तुझे मज़बूत करके अपना अच्छा मक़सद पूरा
करूँगा। यक़ीनन मैं होने दूँगा कि मुसीबत के वक़्त
दुश्मन तुझसे मिन्नत करे।

12क्योंकि कोई उस लोहे को तोड़ नहीं सकेगा
जो शिमाल से आएगा, हाँ लोहे और पीतल का
वह सरिया तोड़ा नहीं जाएगा। 13मैं तेरे ख़ज़ाने
दुश्मन को मुफ़्त में दूँगा। तुझे तमाम गुनाहों का
अज्र मिलेगा जब वह पूरे मुल्क में तेरी दौलत लूटने
आएगा। 14तब मैं तुझे दुश्मन के ज़रीए एक मुल्क
में पहुँचा दूँगा जिससे तू नावाक़िफ़ है। क्योंकि मेरे
ग़ज़ब की भड़कती आग तुझे भस्म कर देगी।”

15ऐ रब, तू सब कुछ जानता है। मुझे याद
कर, मेरा ख़याल कर, ताक़्क़ुब करनेवालों से मेरा
इंतक़ाम ले! उन्हें यहाँ तक बरदाश्त न कर कि
आख़िरकार मेरा सफ़ाया हो जाए। इसे ध्यान में
रख कि मेरी रुसवाई तेरी ही ख़ातिर हो रही है।
16ऐ रब, लशकरों के ख़ुदा, जब भी तेरा कलाम
मुझ पर नाज़िल हुआ तो मैंने उसे हज़म किया,
और मेरा दिल उससे ख़ुशो-ख़ुर्रम हुआ। क्योंकि
मुझ पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। 17जब
दीगर लोग रंगरलियों में अपने दिल बहलाते थे तो
मैं कभी उनके साथ न बैठा, कभी उनकी बातों
से लुत्फ़अंदोज़ न हुआ। नहीं, तेरा हाथ मुझ पर
था, इसलिए मैं दूसरों से दूर ही बैठा रहा। क्योंकि
तूने मेरे दिल को क़ौम पर क़हर से भर दिया
था। 18क्या वजह है कि मेरा दर्द कभी ख़त्म नहीं
होता, कि मेरा ज़ख़्म लाइलाज है और कभी नहीं
भरता? तू मेरे लिए फ़रेबदेह चश्मा बन गया है,
ऐसी नदी जिसके पानी पर एतमाद नहीं किया जा
सकता।

19रब जवाब में फ़रमाता है, “अगर तू मेरे पास
वापस आए तो मैं तुझे वापस आने दूँगा, और तू
दुबारा मेरे सामने हाज़िर हो सकेगा। और अगर तू
फ़ज़ूल बातें न करे बल्कि मेरे लायक़ अलफ़ाज़
बोले तो मेरा तरजुमान होगा। लाज़िम है कि
लोग तेरी तरफ़ रुजू करें, लेकिन ख़बरदार, कभी
उनकी तरफ़ रुजू न कर!” 20रब फ़रमाता है, “मैं
तुझे पीतल की मज़बूत दीवार बना दूँगा ताकि तू
इस क़ौम का सामना कर सके। यह तुझसे लड़ेंगे
लेकिन तुझ पर ग़ालिब नहीं आएँगे, क्योंकि मैं तेरे
साथ हूँ, मैं तेरी मदद करके तुझे बचाए रखूँगा।
21मैं तुझे बेदीनों के हाथ से बचाऊँगा और फ़िद्या
देकर ज़ालिमों की गिरिफ़्त से छुड़ाऊँगा।”

यरमियाह को शादी करने की इजाज़त नहीं

16 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“इस
मक़ाम में न तेरी शादी हो, न तेरे बेटे-
बेटियाँ पैदा हो जाएँ।” 3क्योंकि रब यहाँ पैदा
होनेवाले बेटे-बेटियों और उनके माँ-बाप के बारे में
फ़रमाता है, 4“वह मोहलक बीमारियों से मरकर
खेतों में गोबर की तरह पड़े रहेंगे। न कोई उन
पर मातम करेगा, न उन्हें दफ़नाएगा, क्योंकि वह
तलवार और काल से हलाक हो जाएंगे, और
उनकी लाशें परिंदों और दरिंदों की ख़ुराक बन
जाएँगी।”

5रब फ़रमाता है, “ऐसे घर में मत जाना जिसमें
कोई फ़ौत हो गया है।[a] उसमें न मातम करने
के लिए, न अफ़सोस करने के लिए दाख़िल
होना। क्योंकि अब से मैं इस क़ौम पर अपनी
सलामती, मेहरबानी और रहम का इज़हार नहीं
करूँगा।” यह रब का फ़रमान है। 6“इस मुल्क
के बाशिंदे मर जाएंगे, ख़ाह बड़े हों या छोटे। और
न कोई उन्हें दफ़नाएगा, न मातम करेगा। कोई
नहीं होगा जो ग़म के मारे अपनी जिल्द को काटे
या अपने सर को मुँडवाए। 7किसी का बाप या
माँ भी इंतक़ाल कर जाए तो भी लोग मातम
करनेवाले घर में नहीं जाएंगे, न तसल्ली देने के
लिए जनाज़े के खाने-पीने में शरीक होंगे। 8ऐसे
घर में भी दाख़िल न होना जहाँ लोग ज़ियाफ़त

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : जिसमें जनाज़े का खाना खिलाया जा
रहा है।

कर रहे हैं। उनके साथ खाने-पीने के लिए मत
बैठना।” 9क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, “तुम्हारे जीते-जी, हाँ
तुम्हारे देखते देखते मैं यहाँ ख़ुशी-ओ-शादमानी
की आवाज़ें बंद कर दूँगा। अब से दूल्हा-दुलहन
की आवाज़ें ख़ामोश हो जाएँगी।

10जब तू इस क़ौम को यह सब कुछ बताएगा
तो लोग पूछेंगे, ‘रब इतनी बड़ी आफ़त हम पर
लाने पर क्यों तुला हुआ है? हमसे क्या जुर्म हुआ
है? हमने रब अपने ख़ुदा का क्या गुनाह किया
है?’ 11उन्हें जवाब दे, ‘वजह यह है कि तुम्हारे
बापदादा ने मुझे तर्क कर दिया। वह मेरी शरीअत
के ताबे न रहे बल्कि मुझे छोड़कर अजनबी माबूदों
के पीछे लग गए और उन्हीं की ख़िदमत और
पूजा करने लगे। 12लेकिन तुम अपने बापदादा
की निसबत कहीं ज़्यादा ग़लत काम करते हो।
देखो, मेरी कोई नहीं सुनता बल्कि हर एक अपने
शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता
है। 13इसलिए मैं तुम्हें इस मुल्क से निकालकर
एक ऐसे मुल्क में फेंक दूँगा जिससे न तुम और
न तुम्हारे बापदादा वाक़िफ़ थे। वहाँ तुम दिन-रात
अजनबी माबूदों की ख़िदमत करोगे, क्योंकि उस
वक़्त मैं तुम पर रहम नहीं करूँगा’।”

जिलावतनी से वापसी

14लेकिन रब यह भी फ़रमाता है, “ऐसा वक़्त
आनेवाला है कि लोग क़सम खाते वक़्त नहीं
कहेंगे, ‘रब की हयात की क़सम जो इसराईलियों
को मिसर से निकाल लाया।’ 15इसके बजाए वह
कहेंगे, ‘रब की हयात की क़सम जो इसराईलियों
को शिमाली मुल्क और उन दीगर ममालिक से
निकाल लाया जिनमें उसने उन्हें मुंतशिर कर दिया
था।’ क्योंकि मैं उन्हें उस मुल्क में वापस लाऊँगा
जो मैंने उनके बापदादा को दिया था।”

आनेवाली सज़ा

16लेकिन मौजूदा हाल के बारे में रब फ़रमाता
है, “मैं बहुत-से माहीगीर भेज दूँगा जो जाल
डालकर उन्हें पकड़ेंगे। इसके बाद मैं मुतअद्दिद
शिकारी भेज दूँगा जो उनका ताक़्क़ुब करके उन्हें
हर जगह पकड़ेंगे, ख़ाह वह किसी पहाड़ या टीले
पर छुप गए हों, ख़ाह चट्टानों की किसी दराड़ में।
17क्योंकि उनकी तमाम हरकतें मुझे नज़र आती
हैं। मेरे सामने वह छुप नहीं सकते, और उनका
क़ुसूर मेरे सामने पोशीदा नहीं है। 18अब मैं उन्हें
उनके गुनाहों की दुगनी सज़ा दूँगा, क्योंकि उन्होंने
अपने मुरदार बुतों और घिनौनी चीज़ों से मेरी
मौरूसी ज़मीन को भरकर मेरे मुल्क की बेहुरमती
की है।”

यरमियाह का रब पर एतमाद

19ऐ रब, तू मेरी क़ुव्वत और मेरा क़िला है,
मुसीबत के दिन मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। दुनिया
की इंतहा से अक़वाम तेरे पास आकर कहेंगी,
“हमारे बापदादा को मीरास में झूट ही मिला, ऐसे
बेकार बुत जो उनकी मदद न कर सके। 20इनसान
किस तरह अपने लिए ख़ुदा बना सकता है?
उसके बुत तो ख़ुदा नहीं हैं।”

21रब फ़रमाता है, “चुनाँचे इस बार मैं उन्हें
सहीह पहचान अता करूँगा। वह मेरी क़ुव्वत और
ताक़त को पहचान लेंगे, और वह जान लेंगे कि
मेरा नाम रब है।

यहूदाह का गुनाह और उस की सज़ा

17 ऐ यहूदाह के लोगो, तुम्हारा गु-
नाह तुम्हारी ज़िंदगियों का अन-
मिट हिस्सा बन गया है। उसे हीरे की नोक
रखनेवाले लोहे के आले से तुम्हारे दिलों की
तख़्तियों और तुम्हारी क़ुरबानगाहों के सींगों पर
कंदा किया गया है। 2न सिर्फ़ तुम बल्कि तुम्हारे
बच्चे भी अपनी क़ुरबानगाहों और असीरत देवी
के खंबों को याद करते हैं, ख़ाह वह घने दरख़्तों
के साये में या ऊँची जगहों पर क्यों न हों। 3ऐ मेरे
पहाड़ जो देहात से घिरा हुआ है, तेरे पूरे मुल्क पर
गुनाह का असर है, इसलिए मैं होने दूँगा कि सब
कुछ लूट लिया जाएगा। तेरा माल, तेरे ख़ज़ाने

और तेरी ऊँची जगहों की क़ुरबानगाहें सब छीन
ली जाएँगी।
4अपने क़ुसूर के सबब से तुझे अपनी मौरूसी
मिलकियत छोड़नी पड़ेगी, वह मिलकियत जो
तुझे मेरी तरफ़ से मिली थी। मैं तुझे तेरे दुश्मनों
का ग़ुलाम बना दूँगा, और तू एक नामालूम मुल्क
में बसेगा। क्योंकि तुम लोगों ने मुझे तैश दिलाया
है, और अब तुम पर मेरा ग़ज़ब कभी न बुझनेवाली
आग की तरह भड़कता रहेगा।"

मुख़्तलिफ़ फ़रमान

5रब फ़रमाता है, "उस पर लानत जिसका दिल
रब से दूर होकर सिर्फ़ इनसान और उसी की
ताक़त पर भरोसा रखता है। 6वह रेगिस्तान में
झाड़ी की मानिंद होगा, उसे किसी भी अच्छी चीज़
का तजरबा नहीं होगा बल्कि वह बयाबान के ऐसे
पथरीले और कल्लरवाले इलाक़ों में बसेगा जहाँ
कोई और नहीं रहता। 7लेकिन मुबारक है वह जो
रब पर भरोसा रखता है, जिसका एतमाद उसी
पर है। 8वह पानी के किनारे पर लगे उस दरख़्त
की मानिंद है जिसकी जड़ें नहर तक फैली हुई हैं।
झुलसानेवाली गरमी भी आए तो उसे डर नहीं,
बल्कि उसके पत्ते हरे-भरे रहते हैं। काल भी पड़े
तो वह परेशान नहीं होता बल्कि वक़्त पर फल
लाता रहता है।
9दिल हद से ज़्यादा फ़रेबदेह है, और उसका
इलाज नामुमकिन है। कौन उसका सहीह इल्म
रखता है? 10मैं, रब ही दिल की तफ़तीश करता
हूँ। मैं हर एक की बातिनी हालत जाँचकर उसे
उसके चाल-चलन और अमल का मुनासिब अज्र
देता हूँ।
11जिस शख़्स ने ग़लत तरीक़े से दौलत जमा
की है वह उस तीतर की मानिंद है जो किसी दूसरे
के अंडों पर बैठ जाता है। क्योंकि ज़िंदगी के उरूज
पर उसे सब कुछ छोड़ना पड़ेगा, और आख़िरकार
उस की हमाक़त सब पर ज़ाहिर हो जाएगी।"
12हमारा मक़दिस अल्लाह का जलाली तख़्त है
जो अज़ल से अज़ीम है। 13ऐ रब, तू ही इसराईल
की उम्मीद है। तुझे तर्क करनेवाले सब शरमिंदा
हो जाएंगे। तुझसे दूर होनेवाले ख़ाक में मिलाए
जाएंगे, क्योंकि उन्होंने रब को छोड़ दिया है जो
ज़िंदगी के पानी का सरचश्मा है।

मदद के लिए यरमियाह की दरख़ास्त

14ऐ रब, तू ही मुझे शफ़ा दे तो मुझे शफ़ा
मिलेगी। तू ही मुझे बचा तो मैं बचूँगा। क्योंकि
तू ही मेरा फ़ख़र है। 15लोग मुझसे पूछते रहते
हैं, "रब का जो कलाम तूने पेश किया वह कहाँ
है? उसे पूरा होने दे!" 16मैंने तो इसरार नहीं
किया था कि तेरे पीछे गल्लाबानी करूँ, न मैंने
कभी ख़ाहिश रखी कि मुसीबत का दिन आए।
तू ही यह सब कुछ जानता है; जो भी बात मेरे
मुँह से निकली है वह तेरे सामने है। 17अब मेरे
लिए दहशत का बाइस न बन! मुसीबत के
दिन मैं तुझमें ही पनाह लेता हूँ। 18मेरा ताक़्क़ुब
करनेवाले शरमिंदा हो जाएँ, लेकिन मेरी रुसवाई
न हो। उन पर दहशत छा जाए, लेकिन मैं इससे
बचा रहूँ। उन पर मुसीबत का दिन नाज़िल कर,
उनको दो बार कुचलकर ख़ाक में मिला दे।

सबत का दिन मनाओ

19रब मुझसे हमकलाम हुआ, "शहर के
अवामी दरवाज़े में खड़ा हो जा, जिसे यहूदाह
के बादशाह इस्तेमाल करते हैं जब शहर में आते
और उससे निकलते हैं। इसी तरह यरूशलम के
दीगर दरवाज़ों में भी खड़ा हो जा। 20वहाँ लोगों
से कह, 'ऐ दरवाज़ों में से गुज़रनेवालो, रब का
कलाम सुनो! ऐ यहूदाह के बादशाहो और यहूदाह
और यरूशलम के तमाम बाशिंदो, मेरी तरफ़ कान
लगाओ!
21रब फ़रमाता है कि अपनी जान ख़तरे में
न डालो बल्कि ध्यान दो कि तुम सबत के दिन
मालो-असबाब शहर में न लाओ और उसे उठाकर
शहर के दरवाज़ों में दाख़िल न हो। 22न सबत
के दिन बोझ उठाकर अपने घर से कहीं और
ले जाओ, न कोई और काम करो, बल्कि उसे

इस तरह मनाना कि मख़सूसो-मुक़द्दस हो। मैंने तुम्हारे बापदादा को यह करने का हुक्म दिया था, 23लेकिन उन्होंने मेरी न सुनी, न तवज्जुह दी बल्कि अपने मौक़िफ़ पर अड़े रहे और न मेरी सुनी, न मेरी तरबियत क़बूल की।

24रब फ़रमाता है कि अगर तुम वाक़ई मेरी सुनो और सबत के दिन अपना मालो-असबाब इस शहर में न लाओ बल्कि आराम करने से यह दिन मख़सूसो-मुक़द्दस मानो 25तो फिर आइंदा भी दाऊद की नसल के बादशाह और सरदार इस शहर के दरवाज़ों में से गुज़रेंगे। तब वह घोड़ों और रथों पर सवार होकर अपने अफ़सरों और यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों के साथ शहर में आते-जाते रहेंगे। अगर तुम सबत को मानो तो यह शहर हमेशा तक आबाद रहेगा। 26फिर पूरे मुल्क से लोग यहाँ आएँगे। यहूदाह के शहरों और यरूशलम के गिर्दो-नवाह के देहात से, बिनयमीन के क़बायली इलाक़े से, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े से, पहाड़ी इलाक़े से और दश्ते-नजब से सब अपनी क़ुरबानियाँ लाकर रब के घर में पेश करेंगे। उनकी तमाम भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ, ज़बह, ग़ल्ला, बख़ूर और सलामती की क़ुरबानियाँ रब के घर में चढ़ाई जाएँगी। 27लेकिन अगर तुम मेरी न सुनो और सबत का दिन मख़सूसो-मुक़द्दस न मानो तो फिर तुम्हें सख़्त सज़ा मिलेगी। अगर तुम सबत के दिन अपना मालो-असबाब शहर में लाओ तो मैं इन्हीं दरवाज़ों में एक न बुझनेवाली आग लगा दूँगा जो जलती जलती यरूशलम के महलों को भस्म कर देगी'।"

अल्लाह अज़ीम कुम्हार है

18 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2"उठ और कुम्हार के घर में जा! वहाँ मैं तुझसे हमकलाम हूँगा।" 3चुनाँचे मैं कुम्हार के घर में पहुँच गया। उस वक़्त वह चाक पर काम कर रहा था। 4लेकिन मिट्टी का जो बरतन वह अपने हाथों से तश्कील दे रहा था वह ख़राब हो गया। यह देखकर कुम्हार ने उसी मिट्टी से नया बरतन बना दिया जो उसे ज़्यादा पसंद था।

5तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 6"ऐ इसराईल, क्या मैं तुम्हारे साथ वैसा सुलूक नहीं कर सकता जैसा कुम्हार अपने बरतन से करता है? जिस तरह मिट्टी कुम्हार के हाथ में तश्कील पाती है उसी तरह तुम मेरे हाथ में तश्कील पाते हो।" यह रब का फ़रमान है। 7"कभी मैं एलान करता हूँ कि किसी क़ौम या सलतनत को जड़ से उखाड़ दूँगा, उसे गिराकर तबाह कर दूँगा। 8लेकिन कई बार यह क़ौम अपनी ग़लत राह को तर्क कर देती है। इस सूरत में मैं पछताकर उस पर वह आफ़त नहीं लाता जो मैंने लाने को कहा था। 9कभी मैं किसी क़ौम या सलतनत को पनीरी की तरह लगाने और तामीर करने का एलान भी करता हूँ। 10लेकिन अफ़सोस, कई दफ़ा यह क़ौम मेरी नहीं सुनती बल्कि ऐसा काम करने लगती है जो मुझे नापसंद है। इस सूरत में मैं पछताकर उस पर वह मेहरबानी नहीं करता जिसका एलान मैंने किया था।

11अब यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों से मुख़ातिब होकर कह, 'रब फ़रमाता है कि मैं तुम पर आफ़त लाने की तैयारियाँ कर रहा हूँ, मैंने तुम्हारे ख़िलाफ़ मनसूबा बाँध लिया है। चुनाँचे हर एक अपनी ग़लत राह से हटकर वापस आए, हर एक अपना चाल-चलन और अपना रवैया दुरुस्त करे।' 12लेकिन अफ़सोस, यह एतराज़ करेंगे, 'दफ़ा करो! हम अपने ही मनसूबे जारी रखेंगे। हर एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ही ज़िंदगी गुज़ारेगा'।"

क़ौम रब को भूल गई है

13इसलिए रब फ़रमाता है, "दीगर अक़-वाम से दरियाफ़्त करो कि उनमें कभी ऐसी बात सुनने में आई है। कुँवारी इसराईल से निहायत घिनौना जुर्म हुआ है! 14क्या लुबनान की पथरीली चोटियों की बर्फ़ कभी पिघलकर ख़त्म हो जाती है? क्या दूर-दराज़ चश्मों से बहनेवाला

बर्फ़ीला पानी कभी थम जाता है? 15लेकिन
मेरी क़ौम मुझे भूल गई है। यह लोग बातिल बुतों
के सामने बख़ूर जलाते हैं, उन चीज़ों के सामने
जिनके बाइस वह ठोकर खाकर क़दीम राहों से
हट गए हैं और अब कच्चे रास्तों पर चल रहे हैं।
16इसलिए उनका मुल्क वीरान हो जाएगा, एक
ऐसी जगह जिसे दूसरे अपने मज़ाक़ का निशाना
बनाएँगे। जो भी गुज़रे उसके रोंगटे खड़े हो जाएंगे,
वह अफ़सोस से अपना सर हिलाएगा। 17दुश्मन
आएगा तो मैं अपनी क़ौम को उसके आगे आगे
मुंतशिर करूँगा। जिस तरह गर्द मशरिक़ी हवा के
तेज़ झोंकों से उड़कर बिखर जाती है उसी तरह
वह तित्तर-बित्तर हो जाएंगे। जब आफ़त उन पर
नाज़िल होगी तो मैं उनकी तरफ़ रुजू नहीं करूँगा
बल्कि अपना मुँह उनसे फेर लूँगा।"

यरमियाह के ख़िलाफ़ साज़िश

18यह सुनकर लोग आपस में कहने लगे,
"आओ, हम यरमियाह के ख़िलाफ़ मनसूबे बाँधें,
क्योंकि उस की बातें सहीह नहीं हैं। न इमाम
शरीअत की हिदायत से, न दानिशमंद अच्छे
मशवरों से, और न नबी अल्लाह के कलाम से
महरूम हो जाएगा। आओ, हम ज़बानी उस पर
हमला करें और उस की बातों पर ध्यान न दें,
ख़ाह वह कुछ भी क्यों न कहे।"

19ऐ रब, मुझ पर तवज्जुह दे और उस पर
ग़ौर कर जो मेरे मुख़ालिफ़ कह रहे हैं। 20क्या
इनसान को नेक काम के बदले में बुरा काम करना
चाहिए? क्योंकि उन्होंने मुझे फँसाने के लिए गढ़ा
खोदकर तैयार कर रखा है। याद कर कि मैंने तेरे
हुज़ूर खड़े होकर उनके लिए शफ़ाअत की ताकि
तेरा ग़ज़ब उन पर नाज़िल न हो। 21अब होने दे कि
उनके बच्चे भूके मर जाएँ और वह ख़ुद तलवार
की ज़द में आएँ। उनकी बीवियाँ बेऔलाद और
शौहरों से महरूम हो जाएँ। उनके आदमियों को
मौत के घाट उतारा जाए, उनके नौजवान जंग
में लड़ते लड़ते हलाक हो जाएँ। 22अचानक उन
पर जंगी दस्ते ला ताकि उनके घरों से चीख़ों की
आवाज़ें बुलंद हों। क्योंकि उन्होंने मुझे पकड़ने के
लिए गढ़ा खोदा है, उन्होंने मेरे पाँवों को फँसाने
के लिए मेरे रास्ते में फंदे छुपा रखे हैं।

23ऐ रब, तू उनकी मुझे क़त्ल करने की तमाम
साज़िशें जानता है। उनका क़ुसूर मुआफ़ न कर,
और उनके गुनाहों को न मिटा बल्कि उन्हें हमेशा
याद कर। होने दे कि वह ठोकर खाकर तेरे सामने
गिर जाएँ। जब तेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा तो उनसे
भी निपट ले।

क़ौम मिट्टी के टूटे हुए बरतन की मानिंद होगी

19 रब ने हुक्म दिया, "कुम्हार के पास
जाकर मिट्टी का बरतन ख़रीद ले।
फिर अवाम के कुछ बुज़ुर्गों और चंद एक बुज़ुर्ग
इमामों को अपने साथ लेकर 2शहर से निकल
जा। वादीए-बिन-हिन्नूम में चला जा जो शहर के
दरवाज़े बनाम 'ठीकरे का दरवाज़ा' के सामने
है। वहाँ वह कलाम सुना जो मैं तुझे सुनाने को
कहूँगा। 3उन्हें बता,

'ऐ यहूदाह के बादशाहो और यरूशलम के
बाशिंदो, रब का कलाम सुनो! रब्बुल-अफ़वाज
जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं
इस मक़ाम पर ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा कि
जिसे भी इसकी ख़बर मिलेगी उसके कान बजेंगे।
4क्योंकि उन्होंने मुझे तर्क करके इस मक़ाम को
अजनबी माबूदों के हवाले कर दिया है। जिन बुतों
से न उनके बापदादा और न यहूदाह के बादशाह
कभी वाक़िफ़ थे उनके हुज़ूर उन्होंने क़ुरबानियाँ
पेश कीं। नीज़, उन्होंने इस जगह को बेक़ुसूरों के
ख़ून से भर दिया है। 5उन्होंने ऊँची जगहों पर बाल
देवता के लिए क़ुरबानगाहें तामीर कीं ताकि अपने
बेटों को उन पर जलाकर उसे पेश करें। मैंने यह
करने का कभी हुक्म नहीं दिया था। न मैंने कभी
इसका ज़िक्र किया, न कभी मेरे ज़हन में इसका
ख़याल तक आया।

6चुनाँचे ख़बरदार! रब फ़रमाता है कि ऐसा
वक़्त आनेवाला है जब यह वादी "तूफ़त" या
"बिन-हिन्नूम" नहीं कहलाएगी बल्कि "वादीए-

क़त्लो-ग़ारत।” 7इस जगह मैं यहूदाह और
यरूशलम के मनसूबे ख़ाक में मिला दूँगा। मैं होने
दूँगा कि उनके दुश्मन उन्हें मौत के घाट उतारें, कि
जो उन्हें जान से मारना चाहें वह इसमें कामयाब हो
जाएँ। तब मैं उनकी लाशों को परिंदों और दरिंदों
को खिला दूँगा। 8मैं इस शहर को हौलनाक तरीक़े
से तबाह करूँगा। तब दूसरे उसे अपने मज़ाक़ का
निशाना बनाएँगे। जो भी गुज़रे उसके रोंगटे खड़े
हो जाएंगे। उस की तबाहशुदा हालत देखकर वह
“तौबा तौबा” कहेगा। 9जब उनका जानी दुश्मन
शहर का मुहासरा करेगा तो इतना सख़्त काल
पड़ेगा कि बाशिंदे अपने बच्चों और एक दूसरे को
खा जाएंगे।’

10फिर साथवालों की मौजूदगी में मिट्टी के
बरतन को ज़मीन पर पटख़ दे। 11साथ साथ उन्हें
बता, ‘रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि जिस तरह
मिट्टी का बरतन पाश पाश हो गया है और उस
की मरम्मत नामुमकिन है उसी तरह मैं इस क़ौम
और शहर को भी पाश पाश कर दूँगा। उस वक़्त
लाशों को तूफ़त में दफ़नाया जाएगा, क्योंकि
कहीं और जगह नहीं मिलेगी। 12इस शहर और
इसके बाशिंदों के साथ मैं यही सुलूक करूँगा।
मैं इस शहर को तूफ़त की मानिंद बना दूँगा। यह
रब का फ़रमान है। 13यरूशलम के घर यहूदाह
के शाही महलों समेत तूफ़त की तरह नापाक
हो जाएंगे। हाँ, वह तमाम घर नापाक हो जाएंगे
जिनकी छतों पर तमाम आसमानी लशकर के
लिए बख़ूर जलाया जाता और अजनबी माबूदों
को मै की नज़रें पेश की जाती थीं’।”

14इसके बाद यरमियाह वादीए-तूफ़त से
वापस आया जहाँ रब ने उसे नबुव्वत करने के
लिए भेजा था। फिर वह रब के घर के सहन में खड़े
होकर तमाम लोगों से मुख़ातिब हुआ, 15“रब्बुल-
अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि
सुनो! मैं इस शहर और यहूदाह के दीगर शहरों
पर वह तमाम मुसीबत लाने को हूँ जिसका एलान
मैंने किया है। क्योंकि तुम अड़ गए हो और मेरी
बातें सुनने के लिए तैयार ही नहीं।”

यरमियाह फ़शहूर इमाम से टकरा जाता है

20 उस वक़्त एक इमाम रब के घर में
था जिसका नाम फ़शहूर बिन इम्मेर
था। वह रब के घर का आला अफ़सर था। जब
यरमियाह की यह पेशगोइयाँ उसके कानों तक
पहुँच गईं 2तो उसने यरमियाह नबी की पिटाई
करवाकर उसके पाँव काठ में ठोंक दिए। यह काठ
रब के घर से मुलहिक़ शहर के ऊपरवाले दरवाज़े
बनाम बिनयमीन में था।

3अगले दिन फ़शहूर ने उसे आज़ाद कर दिया।
तब यरमियाह ने उससे कहा, “रब ने आपका एक
नया नाम रखा है। अब से आपका नाम फ़शहूर
नहीं है बल्कि ‘चारों तरफ़ दहशत ही दहशत।’
4क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तू
अपने लिए और अपने तमाम दोस्तों के लिए
दहशत की अलामत बनेगा। क्योंकि तू अपनी
आँखों से अपने दोस्तों की क़त्लो-ग़ारत देखेगा। मैं
यहूदाह के तमाम बाशिंदों को बाबल के बादशाह
के क़ब्ज़े में कर दूँगा जो बाज़ को मुल्के-बाबल में
ले जाएगा और बाज़ को मौत के घाट उतार देगा।
5मैं इस शहर की सारी दौलत दुश्मन के हवाले
कर दूँगा, और वह इसकी तमाम पैदावार, क़ीमती
चीज़ें और शाही ख़ज़ाने लूटकर मुल्के-बाबल ले
जाएगा। 6ऐ फ़शहूर, तू भी अपने घरवालों समेत
मुल्के-बाबल में जिलावतन होगा। वहाँ तू मरकर
दफ़नाया जाएगा। और न सिर्फ़ तू बल्कि तेरे वह
सारे दोस्त भी जिन्हें तूने झूटी पेशगोइयाँ सुनाई
हैं’।”

यरमियाह की रब से शिकायत

7ऐ रब, तूने मुझे मनवाया, और मैं मान गया। तू
मुझे अपने क़ाबू में लाकर मुझ पर ग़ालिब आया।
अब मैं पूरा दिन मज़ाक़ का निशाना बना रहता हूँ।
हर एक मेरी हँसी उड़ाता रहता है। 8क्योंकि जब
भी मैं अपना मुँह खोलता हूँ तो मुझे चिल्लाकर
‘ज़ुल्मो-तबाही’ का नारा लगाना पड़ता है। चुनाँचे
मैं रब के कलाम के बाइस पूरा दिन गालियों
और मज़ाक़ का निशाना बना रहता हूँ। 9लेकिन

अगर मैं कहूँ, “आइंदा मैं न रब का ज़िक्र करूँगा,
न उसका नाम लेकर बोलूँगा” तो फिर उसका
कलाम आग की तरह मेरे दिल में भड़कने लगता
है। और यह आग मेरी हड्डियों में बंद रहती और
कभी नहीं निकलती। मैं इसे बरदाश्त करते करते
थक गया हूँ, यह मेरे बस की बात नहीं रही।
10मुतअद्दिद लोगों की सरगोशियाँ मेरे कानों तक
पहुँचती हैं। वह कहते हैं, “चारों तरफ़ दहशत ही
दहशत? यह क्या कह रहा है? उस की रपट
लिखवाओ! आओ, हम उस की रिपोर्ट करें।”
मेरे तमाम नाम-निहाद दोस्त इस इंतज़ार में हैं कि
मैं फिसल जाऊँ। वह कहते हैं, “शायद वह धोका
खाकर फँस जाए और हम उस पर ग़ालिब आकर
उससे इंतक़ाम ले सकें।”

11लेकिन रब ज़बरदस्त सूरमे की तरह मेरे
साथ है, इसलिए मेरा ताक़्क़ुब करनेवाले मुझ
पर ग़ालिब नहीं आएँगे बल्कि ख़ुद ठोकर खाकर
गिर जाएंगे। उनके मुँह काले हो जाएंगे, क्योंकि
वह नाकाम हो जाएंगे। उनकी रुसवाई हमेशा ही
याद रहेगी और कभी नहीं मिटेगी। 12ऐ रब्बुल-
अफ़वाज, तू रास्तबाज़ का मुआयना करके दिल
और ज़हन को परखता है। अब बख़्श दे कि मैं
अपनी आँखों से वह इंतक़ाम देखूँ जो तू मेरे
मुख़ालिफ़ों से लेगा। क्योंकि मैंने अपना मामला
तेरे ही सुपुर्द कर दिया है। 13रब की मद्हसराई
करो! रब की तमजीद करो! क्योंकि उसने
ज़रूरतमंद की जान को शरीरों के हाथ से बचा
लिया है।

मैं क्यों पैदा हुआ?

14उस दिन पर लानत जब मैं पैदा हुआ! वह
दिन मुबारक न हो जब मेरी माँ ने मुझे जन्म दिया।
15उस आदमी पर लानत जिसने मेरे बाप को बड़ी
ख़ुशी दिलाकर इत्तला दी कि तेरे बेटा पैदा हुआ
है! 16वह उन शहरों की मानिंद हो जिनको रब ने
बेरहमी से ख़ाक में मिला दिया। अल्लाह करे कि
सुबह के वक़्त उसे चीख़ें सुनाई दें और दोपहर के
वक़्त जंग के नारे। 17क्योंकि उसे मुझे उसी वक़्त
मार डालना चाहिए था जब मैं अभी माँ के पेट में
था। फिर मेरी माँ मेरी क़ब्र बन जाती, उसका पाँव
हमेशा तक भारी रहता। 18मैं क्यों माँ के पेट में से
निकला? क्या सिर्फ़ इसलिए कि मुसीबत और
ग़म देखूँ और ज़िंदगी के इख़्तिताम तक रुसवाई
की ज़िंदगी गुज़ारूँ?

बाबल की फ़ौज यरूशलम पर फ़तह पाएगी

21 एक दिन सिदक़ियाह बादशाह
ने फ़शहूर बिन मलकियाह और
मासियाह के बेटे सफ़नियाह इमाम को यरमियाह
के पास भेज दिया। उसके पास पहुँचकर उन्होंने
कहा, 2“बाबल का बादशाह नबूकदनज़्ज़र हम
पर हमला कर रहा है। शायद जिस तरह रब ने
माज़ी में कई बार किया इस दफ़ा भी हमारी
मदद करके नबूकदनज़्ज़र को मोजिज़ाना तौर
पर यरूशलम को छोड़ने पर मजबूर करे। रब से
इसके बारे में दरियाफ़्त करें।”

तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल
हुआ, 3और उसने दोनों आदमियों से कहा,
“सिदक़ियाह को बताओ कि 4रब जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘बेशक शहर से निकलकर
बाबल की मुहासरा करनेवाली फ़ौज और उसके
बादशाह से लड़ो। लेकिन मैं तुम्हें पीछे धकेलकर
शहर में पनाह लेने पर मजबूर करूँगा। वहाँ
उसके बीच में ही तुम अपने हथियारों समेत
जमा हो जाओगे। 5मैं ख़ुद अपना हाथ बढ़ाकर
बड़ी क़ुदरत से तुम्हारे साथ लड़ूँगा, मैं अपने
ग़ुस्से और तैश का पूरा इज़हार करूँगा, मेरा
सख़्त ग़ज़ब तुम पर नाज़िल होगा। 6शहर के
बाशिंदे मेरे हाथ से हलाक हो जाएंगे, ख़ाह
इनसान हों या हैवान। मोहलक वबा उन्हें मौत
के घाट उतार देगी।’ 7रब फ़रमाता है, ‘इसके
बाद मैं यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह को उसके
अफ़सरों और बाक़ी बाशिंदों समेत बाबल के
बादशाह नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दूँगा। वबा,
तलवार और काल से बचनेवाले सब अपने जानी
दुश्मन के क़ाबू में आ जाएंगे। तब नबूकदनज़्ज़र

बेरहमी से उन्हें तलवार से मार देगा। न उसे उन पर
तरस आएगा, न वह हमदर्दी का इज़हार करेगा।'
8इस क़ौम को बता कि रब फ़रमाता है, 'मैं
तुम्हें अपनी जान को बचाने का मौक़ा फ़राहम
करता हूँ। इससे फ़ायदा उठाओ, वरना तुम मरोगे।
9अगर तुम तलवार, काल या वबा से मरना चाहो
तो इस शहर में रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान
को बचाना चाहो तो शहर से निकलकर अपने
आपको बाबल की मुहासरा करनेवाली फ़ौज के
हवाले करो। जो कोई यह करे उस की जान छूट
जाएगी।'[a]

10रब फ़रमाता है, 'मैंने अटल फ़ैसला किया है
कि इस शहर पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि इसे
नुक़सान पहुँचाऊँगा। इसे शाहे-बाबल के हवाले
कर दिया जाएगा जो इसे आग लगाकर तबाह
करेगा।'

11यहूदाह के शाही ख़ानदान से कह, 'रब का
कलाम सुनो! 12ऐ दाऊद के घराने, रब फ़रमाता
है कि हर सुबह लोगों का इनसाफ़ करो। जिसे लूट
लिया गया हो उसे ज़ालिम के हाथ से बचाओ!
ऐसा न हो कि मेरा ग़ज़ब तुम्हारी शरीर हरकतों
की वजह से तुम पर नाज़िल होकर आग की तरह
भड़क उठे और कोई न हो जो उसे बुझा सके।

13रब फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम, तू वादी के
ऊपर ऊँची चट्टान पर रहकर फ़ख़र करती है कि
कौन हम पर हमला करेगा, कौन हमारे घरों में
घुस सकता है? लेकिन अब मैं ख़ुद तुझसे निपट
लूँगा। 14रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हारी हरकतों
का पूरा अज्र दूँगा। मैं यरूशलम के जंगल में ऐसी
आग लगा दूँगा जो इर्दगिर्द सब कुछ भस्म कर
देगी'।"

शाही महल नज़रे-आतिश हो जाएगा

22 रब ने फ़रमाया, "शाहे-यहूदाह के
महल के पास जाकर मेरा यह कलाम
सुना, 2'ऐ यहूदाह के बादशाह, रब का फ़रमान
सुन! ऐ तू जो दाऊद के तख़्त पर बैठा है, अपने
मुलाज़िमों और महल के दरवाज़ों में आनेवाले
लोगों समेत मेरी बात पर ग़ौर कर! 3रब फ़रमाता
है कि इनसाफ़ और रास्ती क़ायम रखो। जिसे लूट
लिया गया है उसे ज़ालिम के हाथ से छुड़ाओ।
परदेसी, यतीम और बेवा को मत दबाना, न उनसे
ज़्यादती करना, और इस जगह बेक़ुसूर लोगों की
ख़ूनरेज़ी मत करना। 4अगर तुम एहतियात से इस
पर अमल करो तो आइंदा भी दाऊद की नसल के
बादशाह अपने अफ़सरों और रिआया के साथ रथों
और घोड़ों पर सवार होकर इस महल में दाख़िल
होंगे। 5लेकिन अगर तुम मेरी इन बातों की न सुनो
तो मेरे नाम की क़सम! यह महल मलबे का ढेर
बन जाएगा। यह रब का फ़रमान है।

6क्योंकि रब शाहे-यहूदाह के महल के बारे में
फ़रमाता है कि तू जिलियाद जैसा ख़ुशगवार और
लुबनान की चोटी जैसा ख़ूबसूरत था। लेकिन अब
मैं तुझे बयाबान में बदल दूँगा, तू ग़ैरआबाद शहर
की मानिंद हो जाएगा। 7मैं आदमियों को तुझे
तबाह करने के लिए मख़सूस करके हर एक को
हथियार से लैस करूँगा, और वह देवदार के तेरे
उम्दा शहतीरों को काटकर आग में झोंक देंगे।
8तब मुतअद्दिद क़ौमों के अफ़राद यहाँ से गुज़रकर
पूछेंगे कि रब ने इस जैसे बड़े शहर के साथ ऐसा
सुलूक क्यों किया? 9उन्हें जवाब दिया जाएगा,
वजह यह है कि इन्होंने रब अपने ख़ुदा का अहद
तर्क करके अजनबी माबूदों की पूजा और ख़िदमत
की है'।"

यहुआख़ज़ बादशाह वापस नहीं आएगा

10इसलिए गिर्याओ-ज़ारी न करो कि यूसियाह
बादशाह कूच कर गया है बल्कि उस पर मातम
करो जिसे जिलावतन किया गया है, क्योंकि
वह कभी वापस नहीं आएगा, कभी अपना वतन
दुबारा नहीं देखेगा।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान
को बचाएगा।

11क्योंकि रब यूसियाह के बेटे और जा-नशीन
सल्लूम यानी यहुआख़ज़ के बारे में फ़रमाता है,
“यहुआख़ज़ यहाँ से चला गया है और कभी
वापस नहीं आएगा। 12जहाँ उसे गिरिफ़्तार करके
पहुँचाया गया है वहीं वह वफ़ात पाएगा। वह यह
मुल्क दुबारा कभी नहीं देखेगा।

यहूयक़ीम पर इलज़ाम

13यहूयक़ीम बादशाह पर अफ़सोस जो
नाजायज़ तरीक़े से अपना घर तामीर कर रहा है,
जो नाइनसाफ़ी से उस की दूसरी मनज़िल बना
रहा है। क्योंकि वह अपने हमवतनों को मुफ़्त
में काम करने पर मजबूर कर रहा है और उन्हें
उनकी मेहनत का मुआवज़ा नहीं दे रहा। 14वह
कहता है, ‘मैं अपने लिए कुशादा महल बनवा
लूँगा जिसकी दूसरी मनज़िल पर बड़े बड़े कमरे
होंगे। मैं घर में बड़ी खिड़कियाँ बनवाकर दीवारों
को देवदार की लकड़ी से ढाँप दूँगा। इसके बाद मैं
उसे सुर्ख़ रंग से आरास्ता करूँगा।’ 15क्या देवदार
की शानदार इमारतें बनवाने से यह साबित होता
है कि तू बादशाह है? हरगिज़ नहीं! तेरे बाप को
भी खाने-पीने की हर चीज़ मुयस्सर थी, लेकिन
उसने इसका ख़याल किया कि इनसाफ़ और
रास्ती क़ायम रहे। नतीजे में उसे बरकत मिली।
16उसने तवज्जुह दी कि ग़रीबों और ज़रूरतमंदों
का हक़ मारा न जाए, इसी लिए उसे कामयाबी
हासिल हुई।” रब फ़रमाता है, “जो इसी तरह
ज़िंदगी गुज़ारे वही मुझे सहीह तौर पर जानता
है। 17लेकिन तू फ़रक़ है। तेरी आँखें और दिल
नाजायज़ नफ़ा कमाने पर तुले रहते हैं। न तू
बेक़ुसूर को क़त्ल करने से, न ज़ुल्म करने या
जबरन कुछ लेने से झिजकता है।”

18चुनाँचे रब यहूदाह के बादशाह यहू-
यक़ीम बिन यूसियाह के बारे में फ़रमाता है, “लोग
उस पर मातम नहीं करेंगे कि ‘हाय मेरे भाई, हाय
मेरी बहन,’ न वह रोकर कहेंगे, ‘हाय, मेरे आक़ा!
हाय, उस की शान जाती रही है।’ 19इसके बजाए
उसे गधे की तरह दफ़नाया जाएगा। लोग उसे
घसीटकर बाहर यरूशलम के दरवाज़ों से कहीं दूर
फेंक देंगे।

यहूयाकीन बादशाह को दुश्मन के हवाले किया जाएगा

20ऐ यरूशलम, लुबनान पर चढ़कर ज़ारो-
क़तार रो! बसन की बुलंदियों पर जाकर चीख़ें
मार! अबारीम के पहाड़ों की चोटियों पर आहो-
ज़ारी कर! क्योंकि तेरे तमाम आशिक़[a] पाश
पाश हो गए हैं। 21मैंने तुझे उस वक़्त आगाह
किया था जब तू सुकून से ज़िंदगी गुज़ार रही
थी, लेकिन तूने कहा, ‘मैं नहीं सुनूँगी।’ तेरी
जवानी से ही तेरा यही रवैया रहा। उस वक़्त से
लेकर आज तक तूने मेरी नहीं सुनी। 22तेरे तमाम
गल्लाबानों को आँधी उड़ा ले जाएगी, और तेरे
आशिक़ जिलावतन हो जाएंगे। तब तू अपनी बुरी
हरकतों के बाइस शरमिंदा हो जाएगी, क्योंकि
तेरी ख़ूब रुसवाई हो जाएगी। 23बेशक इस वक़्त
तू लुबनान में रहती है और तेरा बसेरा देवदार के
दरख़्तों में है। लेकिन जल्द ही तू आहें भर भरकर
दर्दे-ज़ह में मुब्तला हो जाएगी, तू जन्म देनेवाली
औरत की तरह पेचो-ताब खाएगी।”

24रब फ़रमाता है, “ऐ यहूदाह के बादशाह
यहूयाकीन[a] बिन यहूयक़ीम, मेरी हयात की
क़सम! ख़ाह तू मेरे दहने हाथ की मुहरदार
अंगूठी क्यों न होता तो भी मैं तुझे उतारकर
फेंक देता। 25मैं तुझे उस जानी दुश्मन के हवाले
करूँगा जिससे तू डरता है यानी बाबल के बादशाह
नबूकदनज़्ज़र और उस की क़ौम के हवाले। 26मैं
तुझे तेरी माँ समेत एक अजनबी मुल्क में फेंक
दूँगा। जहाँ तुम पैदा नहीं हुए वहीं वफ़ात पाओगे।
27तुम वतन में वापस आने के शदीद आरज़ूमंद
होगे लेकिन उसमें कभी नहीं लौटोगे।”

28लोग एतराज़ करते हैं, “क्या यह आदमी
यहूयाकीन[a] वाक़ई ऐसा हक़ीर और टूटा-फूटा
बरतन है जो किसी को भी पसंद नहीं आता?

[a]आशिक़ से मुराद यहूदाह के इत्तहादी हैं।

उसे अपने बच्चों समेत क्यों ज़ोर से निकालकर
किसी नामालूम मुल्क में फेंक दिया जाएगा?”
29ऐ मुल्क, ऐ मुल्क, ऐ मुल्क! रब का पैग़ाम
सुन! 30रब फ़रमाता है, “रजिस्टर में दर्ज करो
कि यह आदमी बेऔलाद है, कि यह उम्र-भर
नाकाम रहेगा। क्योंकि उसके बच्चों में से कोई
दाऊद के तख़्त पर बैठकर यहूदाह की हुकूमत
करने में कामयाब नहीं होगा।”

रब क़ौम के सहीह गल्लाबान मुक़र्रर करेगा

23 रब फ़रमाता है, “उन गल्लाबानों पर
अफ़सोस जो मेरी चरागाह की भेड़ों
को तबाह करके मुंतशिर कर रहे हैं।” 2इसलिए
रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, “ऐ मेरी
क़ौम को चरानेवाले गल्लाबानो, मैं तुम्हारी शरीर
हरकतों की मुनासिब सज़ा दूँगा, क्योंकि तुमने
मेरी भेड़ों की फ़िकर नहीं की बल्कि उन्हें मुंतशिर
करके तित्तर-बित्तर कर दिया है।” रब फ़रमाता है,
“सुनो, मैं तुम्हारी शरीर हरकतों से निपट लूँगा।
3मैं ख़ुद अपने रेवड़ की बची हुई भेड़ों को
जमा करूँगा। जहाँ भी मैंने उन्हें मुंतशिर कर
दिया था, उन तमाम ममालिक से मैं उन्हें उनकी
अपनी चरागाह में वापस लाऊँगा। वहाँ वह फलें-
फूलेंगे, और उनकी तादाद बढ़ती जाएगी। 4मैं
ऐसे गल्लाबानों को उन पर मुक़र्रर करूँगा जो
उनकी सहीह गल्लाबानी करेंगे। आइंदा न वह
ख़ौफ़ खाएँगे, न घबरा जाएंगे। एक भी गुम नहीं
हो जाएगा।” यह रब का फ़रमान है।

रब सहीह बादशाह मुक़र्रर करेगा

5रब फ़रमाता है, “वह वक़्त आनेवाला है
कि मैं दाऊद के लिए एक रास्तबाज़ कोंपल
फूटने दूँगा, एक ऐसा बादशाह जो हिकमत से
हुकूमत करेगा, जो मुल्क में इनसाफ़ और रास्ती
क़ायम रखेगा। 6उसके दौरे-हुकूमत में यहूदाह को
छुटकारा मिलेगा और इसराईल महफ़ूज़ ज़िंदगी
गुज़ारेगा। वह ‘रब हमारी रास्तबाज़ी’ कहलाएगा।
7चुनाँचे वह वक़्त आनेवाला है जब लोग क़सम
खाते वक़्त नहीं कहेंगे, ‘रब की हयात की क़सम
जो इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया।’
8इसके बजाए वह कहेंगे, ‘रब की हयात की
क़सम जो इसराईलियों को शिमाली मुल्क और
दीगर उन तमाम ममालिक से निकाल लाया
जिनमें उसने उन्हें मुंतशिर कर दिया था।’ उस
वक़्त वह दुबारा अपने ही मुल्क में बसेंगे।” यह
रब का फ़रमान है।

झूटे नबियों पर यक़ीन मत करना

9झूटे नबियों को देखकर मेरा दिल टूट गया
है, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज़ रही हैं। मैं नशे में धुत
आदमी की मानिंद हूँ। मै से मग़लूब शख़्स की तरह
मैं रब और उसके मुक़द्दस अलफ़ाज़ के सबब से
डगमगा रहा हूँ।
10यह मुल्क ज़िनाकारों से भरा हुआ है,
इसलिए उस पर अल्लाह की लानत है। ज़मीन
झुलस गई है, बयाबान की चरागाहों की हरियाली
मुरझा गई है। नबी ग़लत राह पर दौड़ रहे हैं, और
जिसमें वह ताक़तवर हैं वह ठीक नहीं। 11रब
फ़रमाता है, “नबी और इमाम दोनों ही बेदीन
हैं। मैंने अपने घर में भी उनका बुरा काम पाया
है। 12इसलिए जहाँ भी चलें वह फिसल जाएंगे,
वह अंधेरे में ठोकर खाकर गिर जाएंगे। क्योंकि मैं
मुक़र्ररा वक़्त पर उन पर आफ़त लाऊँगा।” यह
रब का फ़रमान है।
13“मैंने देखा कि सामरिया के नबी बाल
के नाम में नबुव्वत करके मेरी क़ौम इसराईल
को ग़लत राह पर लाए। यह क़ाबिले-घिन है,
14लेकिन जो कुछ मुझे यरूशलम के नबियों में
नज़र आता है वह उतना ही घिनौना है। वह ज़िना
करते और झूट के पैरोकार हैं। साथ साथ वह
बदकारों की हौसलाअफ़्ज़ाई भी करते हैं, और

[b]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल है।

नतीजे में कोई भी अपनी बदी से बाज़ नहीं
आता। मेरी नज़र में वह सब सदूम की मानिंद हैं।
हाँ, यरूशलम के बाशिंदे अमूरा के बराबर हैं।"
15इसलिए रब इन नबियों के बारे में फ़रमाता है,
"मैं उन्हें कड़वा खाना खिलाऊँगा और ज़हरीला
पानी पिलाऊँगा, क्योंकि यरूशलम के नबियों ने
पूरे मुल्क में बेदीनी फैलाई है।"

16रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "नबियों की
पेशगोइयों पर ध्यान मत देना। वह तुम्हें फ़रेब दे
रहे हैं। क्योंकि वह रब का कलाम नहीं सुनाते
बल्कि महज़ अपने दिल में से उभरनेवाली रोया
पेश करते हैं। 17जो मुझे हक़ीर जानते हैं उन्हें
वह बताते रहते हैं, 'रब फ़रमाता है कि हालात
सहीह-सलामत रहेंगे।' जो अपने दिलों की ज़िद
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं, उन सबको वह
तसल्ली देकर कहते हैं, 'तुम पर आफ़त नहीं
आएगी।' 18बात तो यह है : कौन रब की
मजलिस में शरीक हुआ है? वह देख ले और
उसका फ़रमान सुन ले! किसने तवज्जुह देकर
मेरा कलाम सुन लिया है?

19देखो, रब की ग़ज़बनाक आँधी चलने लगी
है, उसका तेज़ी से घूमता हुआ बगूला बेदीनों के
सरों पर मँडला रहा है। 20और रब का यह ग़ज़ब
उस वक़्त तक ठंडा नहीं होगा जब तक उसके दिल
का इरादा तकमील तक न पहुँच जाए। आनेवाले
दिनों में तुम्हें इसकी पूरी समझ आएगी।

21यह नबी दौड़कर अपनी बातें सुनाते रहते हैं
अगरचे मैंने उन्हें नहीं भेजा। गो मैं उनसे हमकलाम
नहीं हुआ तो भी यह पेशगोइयाँ करते हैं। 22अगर
यह मेरी मजलिस में शरीक होते तो मेरी क़ौम को
मेरे अलफ़ाज़ सुनाकर उसे उसके बुरे चाल-चलन
और ग़लत हरकतों से हटाने की कोशिश करते।"

23रब फ़रमाता है, "क्या मैं सिर्फ़ क़रीब का
ख़ुदा हूँ? हरगिज़ नहीं! मैं दूर का ख़ुदा भी हूँ।
24क्या कोई मेरी नज़र से ग़ायब हो सकता है?
नहीं, ऐसी जगह है नहीं जहाँ वह मुझसे छुप सके।
आसमानो-ज़मीन मुझसे मामूर रहते हैं।" यह रब
का फ़रमान है।

25"इन नबियों की बातें मुझ तक पहुँच गई
हैं। यह मेरा नाम लेकर झूट बोलते हैं कि मैंने
ख़ाब देखा है, ख़ाब देखा है! 26यह नबी झूटी
पेशगोइयाँ और अपने दिलों के वसवसे सुनाने से
कब बाज़ आएँगे? 27जो ख़ाब वह एक दूसरे
को बताते हैं उनसे वह चाहते हैं कि मेरी क़ौम
मेरा नाम यों भूल जाए जिस तरह उनके बापदादा
बाल की पूजा करने से मेरा नाम भूल गए थे।"
28रब फ़रमाता है, "जिस नबी ने ख़ाब देखा हो
वह बेशक अपना ख़ाब बयान करे, लेकिन जिस
पर मेरा कलाम नाज़िल हुआ हो वह वफ़ादारी से
मेरा कलाम सुनाए। भूसे का गंदुम से क्या वास्ता
है?"

29रब फ़रमाता है, "क्या मेरा कलाम आग की
मानिंद नहीं? क्या वह हथौड़े की तरह चट्टान को
टुकड़े टुकड़े नहीं करता?" 30चुनाँचे रब फ़रमाता
है, "अब मैं उन नबियों से निपट लूँगा जो एक
दूसरे के पैग़ामात चुराकर दावा करते हैं कि वह
मेरी तरफ़ से हैं।" 31रब फ़रमाता है, "मैं उनसे
निपट लूँगा जो अपने शख़्सी ख़यालात सुनाकर
दावा करते हैं, 'यह रब का फ़रमान है'।" 32रब
फ़रमाता है, "मैं उनसे निपट लूँगा जो झूटे ख़ाब
सुनाकर मेरी क़ौम को अपनी धोकेबाज़ी और
शेख़ी की बातों से ग़लत राह पर लाते हैं, हालाँकि
मैंने उन्हें न भेजा, न कुछ कहने को कहा था।
उन लोगों का इस क़ौम के लिए कोई भी फ़ायदा
नहीं।" यह रब का फ़रमान है।

रब के लिए तुम बोझ का बाइस हो

33"ऐ यरमियाह, अगर इस क़ौम के आम लोग
या इमाम या नबी तुझसे पूछें, 'आज रब ने तुझ
पर कलाम का क्या बोझ नाज़िल किया है?' तो
जवाब दे, 'रब फ़रमाता है कि तुम ही मुझ पर
बोझ हो! लेकिन मैं तुम्हें उतार फेंकूँगा।' 34और
अगर कोई नबी, इमाम या आम शख़्स दावा करे,
'रब ने मुझ पर कलाम का बोझ नाज़िल किया है'
तो मैं उसे उसके घराने समेत सज़ा दूँगा।

35इसके बजाए एक दूसरे से सवाल करो कि ‘रब ने क्या जवाब दिया?’ या ‘रब ने क्या फ़रमाया?’ 36आइंदा रब के पैग़ाम के लिए लफ़्ज़ ‘बोझ’ इस्तेमाल न करो, क्योंकि जो भी बात तुम करो वह तुम्हारा अपना बोझ होगी। क्योंकि तुम ज़िंदा ख़ुदा के अलफ़ाज़ को तोड़-मरोड़कर बयान करते हो, उस कलाम को जो रब्बुल-अफ़वाज हमारे ख़ुदा ने नाज़िल किया है। 37चुनाँचे आइंदा नबी से सिर्फ़ इतना ही पूछो कि ‘रब ने तुझे क्या जवाब दिया?’ या ‘रब ने क्या फ़रमाया?’ 38लेकिन अगर तुम ‘रब का बोझ’ कहने पर इसरार करो तो रब का जवाब सुनो! चूँकि तुम कहते हो कि ‘मुझ पर रब का बोझ नाज़िल हुआ है’ गो मैंने यह मना किया था, 39इसलिए मैं तुम्हें अपनी याद से मिटाकर यरूशलम समेत अपने हुज़ूर से दूर फेंक दूँगा, गो मैंने ख़ुद यह शहर तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को फ़राहम किया था। 40मैं तुम्हारी अबदी रुसवाई कराऊँगा, और तुम्हारी शरमिंदगी हमेशा तक याद रहेगी।”

अंजीर की दो टोकरियाँ

24 एक दिन रब ने मुझे रोया दिखाई। उस वक़्त बाबल का बादशाह नबूकदनज़्ज़र यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन[a] बिन यहूयक़ीम को यहूदाह के बुज़ुर्गों, कारीगरों और लोहारों समेत बाबल में जिलावतन कर चुका था।

रोया में मैंने देखा कि अंजीरों से भरी दो टोकरियाँ रब के घर के सामने पड़ी हैं। 2एक टोकरी में मौसम के शुरू में पकनेवाले बेहतरीन अंजीर थे जबकि दूसरी में ख़राब अंजीर थे जो खाए भी नहीं जा सकते थे।

3रब ने मुझसे सवाल किया, “ऐ यरमियाह, तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “मुझे अंजीर नज़र आते हैं। कुछ बेहतरीन हैं जबकि दूसरे इतने ख़राब हैं कि उन्हें खाया भी नहीं जा सकता।”

4तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 5“रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि अच्छे अंजीर यहूदाह के वह लोग हैं जिन्हें मैंने जिलावतन करके मुल्के-बाबल में भेजा है। उन्हें मैं मेहरबानी की निगाह से देखता हूँ। 6क्योंकि उन पर मैं अपने करम का इज़हार करके उन्हें इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मैं उन्हें गिराऊँगा नहीं बल्कि तामीर करूँगा, उन्हें जड़ से उखाड़ूँगा नहीं बल्कि पनीरी की तरह लगाऊँगा। 7मैं उन्हें समझदार दिल अता करूँगा ताकि वह मुझे जान लें, वह पहचान लें कि मैं रब हूँ। तब वह मेरी क़ौम होंगे और मैं उनका ख़ुदा हूँगा, क्योंकि वह पूरे दिल से मेरे पास वापस आएँगे।

8लेकिन बाक़ी लोग उन ख़राब अंजीरों की मानिंद हैं जो खाए नहीं जाते। उनके साथ मैं वह सुलूक करूँगा जो ख़राब अंजीरों के साथ किया जाता है। उनमें यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह, उसके अफ़सर, यरूशलम और यहूदाह में बचे हुए लोग और मिसर में पनाह लेनेवाले सब शामिल हैं। 9मैं होने दूँगा कि वह दुनिया के तमाम ममालिक के लिए दहशत और आफ़त की अलामत बन जाएंगे। जहाँ भी मैं उन्हें मुंतशिर करूँगा वहाँ वह इबरतअंगेज़ मिसाल बन जाएंगे। हर जगह लोग उनकी बेइज़्ज़ती, उन्हें लान-तान और उन पर लानत करेंगे। 10जब तक वह उस मुल्क में से मिट न जाएँ जो मैंने उनके बापदादा को दे दिया था उस वक़्त तक मैं उनके दरमियान तलवार, काल और मोहलक बीमारियाँ भेजता रहूँगा।”

मुल्के-बाबल में 70 साल रहने की पेशगोई

25 यहूयक़ीम बिन यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल में अल्लाह का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। उसी साल बाबल का बादशाह नबूकदनज़्ज़र तख़्तनशीन हुआ था। यह

[a]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

कलाम यहूदाह के तमाम बाशिंदों के बारे में था।
2चुनाँचे यरमियाह नबी ने यरूशलम के तमाम
बाशिंदों और यहूदाह की पूरी क़ौम से मुख़ातिब
होकर कहा,

3"23 साल से रब का कलाम मुझ पर नाज़िल
होता रहा है यानी यूसियाह बिन अमून की हुकूमत
के तेरहवें साल से लेकर आज तक। बार बार
मैं तुम्हें पैग़ामात सुनाता रहा हूँ, लेकिन तुमने
ध्यान नहीं दिया। 4मेरे अलावा रब दीगर तमाम
नबियों को भी बार बार तुम्हारे पास भेजता रहा,
लेकिन तुमने न सुना, न तवज्जुह दी, 5गो मेरे
ख़ादिम तुम्हें बार बार आगाह करते रहे, 'तौबा
करो! हर एक अपनी ग़लत राहों और बुरी हरकतों
से बाज़ आकर वापस आए। फिर तुम हमेशा तक
उस मुल्क में रहोगे जो रब ने तुम्हें और तुम्हारे
बापदादा को अता किया था। 6अजनबी माबूदों
की पैरवी करके उनकी ख़िदमत और पूजा मत
करना! अपने हाथों के बनाए हुए बुतों से मुझे तैश
न दिलाना, वरना मैं तुम्हें नुक़सान पहुँचाऊँगा'।"

7रब फ़रमाता है, "अफ़सोस! तुमने मेरी
न सुनी बल्कि मुझे अपने हाथों के बनाए हुए
बुतों से ग़ुस्सा दिलाकर अपने आपको नुक़सान
पहुँचाया।" 8रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "चूँकि
तुमने मेरे पैग़ामात पर ध्यान न दिया, 9इसलिए
मैं शिमाल की तमाम क़ौमों और अपने ख़ादिम
बाबल के बादशाह नबूकदनज़्ज़र को बुला लूँगा
ताकि वह इस मुल्क, इसके बाशिंदों और गिर्दो-
नवाह के ममालिक पर हमला करें। तब यह
सफ़हाए-हस्ती से यों मिट जाएंगे कि लोगों के
रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह उनका मज़ाक़
उड़ाएँगे। यह इलाक़े दायमी खंडरात बन जाएंगे।
10मैं उनके दरमियान ख़ुशी-ओ-शादमानी और
दूल्हे दुलहन की आवाज़ें बंद कर दूँगा। चक्कियाँ
ख़ामोश पड़ जाएँगी और चराग़ बुझ जाएंगे।
11पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा, चारों
तरफ़ मलबे के ढेर नज़र आएँगे। तब तुम और
इर्दगिर्द की क़ौमें 70 साल तक शाहे-बाबल की
ख़िदमत करोगे।

12लेकिन 70 साल के बाद मैं शाहे-बाबल और
उस की क़ौम को मुनासिब सज़ा दूँगा। मैं मुल्के-
बाबल को यों बरबाद करूँगा कि वह हमेशा तक
वीरानो-सुनसान रहेगा। 13उस वक़्त मैं उस मुल्क
पर सब कुछ नाज़िल करूँगा जो मैंने उसके बारे
में फ़रमाया है, सब कुछ पूरा हो जाएगा जो इस
किताब में दर्ज है और जिसकी पेशगोई यरमियाह
ने तमाम अक़वाम के बारे में की है। 14उस वक़्त
उन्हें भी मुतअद्दिद क़ौमों और बड़े बड़े बादशाहों
की ख़िदमत करनी पड़ेगी। यों मैं उन्हें उनकी
हरकतों और आमाल का मुनासिब अज्र दूँगा।"

रब के ग़ज़ब का प्याला

15रब जो इसराईल का ख़ुदा है मुझसे
हमकलाम हुआ, "देख, मेरे हाथ में मेरे ग़ज़ब
से भरा हुआ प्याला है। इसे लेकर उन तमाम
क़ौमों को पिला दे जिनके पास मैं तुझे भेजता
हूँ। 16जो भी क़ौम यह पिए वह मेरी तलवार के
आगे डगमगाती हुई दीवाना हो जाएगी।"

17चुनाँचे मैंने रब के हाथ से प्याला लेकर उसे
उन तमाम अक़वाम को पिला दिया जिनके पास
रब ने मुझे भेजा। 18पहले यरूशलम और यहूदाह
के शहरों को उनके बादशाहों और बुज़ुर्गों समेत
ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। तब मुल्क मलबे का
ढेर बन गया जिसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े
हो गए। आज तक वह मज़ाक़ और लानत का
निशाना है।

19फिर यके बाद दीगरे मुतअद्दिद क़ौमों को
ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। ज़ैल में उनकी
फ़हरिस्त है : मिसर का बादशाह फ़िरौन, उसके
दरबारी, अफ़सर, पूरी मिसरी क़ौम 20और मुल्क
में बसनेवाले ग़ैरमुल्की, मुल्के-ऊज़ के तमाम
बादशाह,

फ़िलिस्ती बादशाह और उनके शहर अस्क़लून,
ग़ज़्ज़ा और अक़रून, नीज़ फ़िलिस्ती शहर
अशदूद का बचा-खुचा हिस्सा,

21अदोम, मोआब और अम्मोन,

22सूर और सैदा के तमाम बादशाह, बहीराए-रूम के साहिली इलाक़े,

23ददान, तैमा और बूज़ के शहर, वह क़ौमें जो रेगिस्तान के किनारे किनारे रहती हैं,

24मुल्के-अरब के तमाम बादशाह, रेगिस्तान में मिलकर बसनेवाले ग़ैरमुल्कियों के बादशाह,

25ज़िमरी, ऐलाम और मादी के तमाम बादशाह,

26शिमाल के दूरो-नज़दीक के तमाम बादशाह।

यके बाद दीगरे दुनिया के तमाम ममालिक को ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। आख़िर में शेशक के बादशाह[a] को भी यह प्याला पीना पड़ा।

27फिर रब ने कहा, "उन्हें बता, 'रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि ग़ज़ब का प्याला ख़ूब पियो! इतना पियो कि नशे में आकर क़ै आने लगे। उस वक़्त तक पीते जाओ जब तक तुम मेरी तलवार के आगे गिरकर पड़े न
रहो।' 28अगर वह तेरे हाथ से प्याला न लें बल्कि उसे पीने से इनकार करें तो उन्हें बता, 'रब्बुल-
अफ़वाज ख़ुद फ़रमाता है कि पियो! 29देखो,
जिस शहर पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है उसी पर मैं आफ़त लाने लगा हूँ। अगर मैंने उसी से शुरू किया तो फिर तुम किस तरह बचे रहोगे? यक़ीनन तुम्हें सज़ा मिलेगी, क्योंकि मैंने तय कर लिया है कि दुनिया के तमाम बाशिंदे तलवार की ज़द में आ जाएँ'।" यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

तमाम अक़वाम की अदालत

30"ऐ यरमियाह, उन्हें यह तमाम पेशगोइयाँ सुनाकर बता कि रब बुलंदियों से दहाड़ेगा। उस की मुक़द्दस सुकूनतगाह से उस की कड़कती आवाज़ निकलेगी, वह ज़ोर से अपनी चरागाह के ख़िलाफ़ गरजेगा। जिस तरह अंगूर का रस निकालनेवाले अंगूर को रौंदते वक़्त ज़ोर से नारे लगाते हैं उसी तरह वह नारे लगाएगा, अलबत्ता जंग के नारे। क्योंकि वह दुनिया के तमाम बाशिंदों के ख़िलाफ़ जंग के नारे लगाएगा। 31उसका
शोर दुनिया की इंतहा तक गूँजेगा, क्योंकि रब अदालत में अक़वाम से मुक़दमा लड़ेगा, वह तमाम इनसानों का इनसाफ़ करके शरीरों को तलवार के हवाले कर देगा।" यह रब का फ़रमान
है। 32रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "देखो, यके बाद दीगरे तमाम क़ौमों पर आफ़त नाज़िल हो रही है, ज़मीन की इंतहा से ज़बरदस्त तूफ़ान आ रहा
है। 33उस वक़्त रब के मारे हुए लोगों की लाशें दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पड़ी रहेंगी। न कोई उन पर मातम करेगा, न उन्हें उठाकर दफ़न करेगा। वह खेत में बिखरे गोबर की तरह ज़मीन पर पड़ी रहेंगी।

34ऐ गल्लाबानो, वावैला करो! ऐ रेवड़ के राहनुमाओ, राख में लोट-पोट हो जाओ! क्योंकि वक़्त आ गया है कि तुम्हें ज़बह किया जाए। तुम गिरकर नाज़ुक बरतन की तरह पाश पाश हो
जाओगे। 35गल्लाबान कहीं भी भागकर पनाह नहीं ले सकेंगे, रेवड़ के राहनुमा बच ही नहीं
सकेंगे। 36सुनो! गल्लाबानों की चीख़ें और रेवड़ के राहनुमाओं की आहें! क्योंकि रब उनकी चरागाह को तबाह कर रहा है। 37पुरसुकून
मर्ग़ज़ारों का सत्यानास होगा जब रब का सख़्त ग़ज़ब नाज़िल होगा, 38जब रब जवान शेरबबर
की तरह अपनी छुपने की जगह से निकलकर लोगों पर टूट पड़ेगा। तब ज़ालिम की तेज़ तलवार और रब का शदीद क़हर उनका मुल्क तबाह करेगा।"

रब के घर में यरमियाह का पैग़ाम

26 जब यहूयक़ीम बिन यूसियाह यहूदाह के तख़्त पर बैठ गया तो थोड़ी देर के बाद रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ।
2रब ने फ़रमाया, "ऐ यरमियाह, रब के घर के सहन में खड़ा होकर उन तमाम लोगों से मुख़ातिब हो जो रब के घर में सिजदा करने के लिए यहूदाह

[a]ग़ालिबन इससे मुराद बाबल का बादशाह है।

के दीगर शहरों से आए हैं। उन्हें मेरा पूरा पैग़ाम
सुना दे, एक बात भी न छोड़! 3शायद वह सुनें
और हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आ जाए। इस
सूरत में मैं पछताकर उन पर वह सज़ा नाज़िल नहीं
करूँगा जिसका मनसूबा मैंने उनके बुरे आमाल
देखकर बाँध लिया है।

4उन्हें बता, 'रब फ़रमाता है कि मेरी सुनो और
मेरी उस शरीअत पर अमल करो जो मैंने तुम्हें
दी है। 5नीज़, नबियों के पैग़ामात पर ध्यान दो।
अफ़सोस, गो मैं अपने ख़ादिमों को बार बार
तुम्हारे पास भेजता रहा तो भी तुमने उनकी न
सुनी। 6अगर तुम आइंदा भी न सुनो तो मैं इस
घर को यों तबाह करूँगा जिस तरह मैंने सैला का
मक़दिस तबाह किया था। मैं इस शहर को भी
यों ख़ाक में मिला दूँगा कि इबरतअंगेज़ मिसाल
बन जाएगा। दुनिया की तमाम क़ौमों में जब कोई
अपने दुश्मन पर लानत भेजना चाहे तो वह कहेगा
कि उसका यरूशलम का-सा अंजाम हो'।"

यरमियाह की अदालत

7जब यरमियाह ने रब के घर में रब के यह
अलफ़ाज़ सुनाए तो इमामों, नबियों और तमाम
बाक़ी लोगों ने ग़ौर से सुना। 8यरमियाह ने उन्हें
सब कुछ पेश किया जो रब ने उसे सुनाने को
कहा था। लेकिन ज्योंही वह इख़्तिताम पर पहुँच
गया तो इमाम, नबी और बाक़ी तमाम लोग उसे
पकड़कर चीख़ने लगे, "तुझे मरना ही है! 9तू रब
का नाम लेकर क्यों कह रहा है कि रब का घर
सैला की तरह तबाह हो जाएगा, और यरूशलम
मलबे का ढेर बनकर ग़ैरआबाद हो जाएगा?"
ऐसी बातें कहकर तमाम लोगों ने रब के घर में
यरमियाह को घेरे रखा।

10जब यहूदाह के बुज़ुर्गों को इसकी ख़बर
मिली तो वह शाही महल से निकलकर रब के घर
के पास पहुँचे। वहाँ वह रब के घर के सहन के नए
दरवाज़े में बैठ गए ताकि यरमियाह की अदालत
करें। 11तब इमामों और नबियों ने बुज़ुर्गों और
तमाम लोगों के सामने यरमियाह पर इलज़ाम
लगाया, "लाज़िम है कि इस आदमी को सज़ाए-
मौत दी जाए! क्योंकि इसने इस शहर यरूशलम
के ख़िलाफ़ नबुव्वत की है। आपने अपने कानों से
यह बात सुनी है।"

12तब यरमियाह ने बुज़ुर्गों और बाक़ी तमाम
लोगों से कहा, "रब ने ख़ुद मुझे यहाँ भेजा ताकि
मैं रब के घर और यरूशलम के ख़िलाफ़ उन
तमाम बातों की पेशगोई करूँ जो आपने सुनी
हैं। 13चुनाँचे अपनी राहों और आमाल को दुरुस्त
करें! रब अपने ख़ुदा की सुनें ताकि वह पछताकर
आप पर वह सज़ा नाज़िल न करे जिसका एलान
उसने किया है। 14जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, मैं
तो आपके हाथ में हूँ। मेरे साथ वह सुलूक करें
जो आपको अच्छा और मुनासिब लगे। 15लेकिन
एक बात जान लें। अगर आप मुझे सज़ाए-मौत
दें तो आप बेक़ुसूर के क़ातिल ठहरेंगे। आप और
यह शहर उसके तमाम बाशिंदों समेत क़ुसूरवार
ठहरेंगे। क्योंकि रब ही ने मुझे आपके पास भेजा
ताकि आपके सामने ही यह बातें करूँ।"

16यह सुनकर बुज़ुर्गों और अवाम के तमाम
लोगों ने इमामों और नबियों से कहा, "यह आदमी
सज़ाए-मौत के लायक़ नहीं है! क्योंकि उसने रब
हमारे ख़ुदा का नाम लेकर हमसे बात की है।"

17फिर मुल्क के कुछ बुज़ुर्ग खड़े होकर पूरी
जमात से मुख़ातिब हुए, 18"जब हिज़क़ियाह
यहूदाह का बादशाह था तो मोरशत के रहनेवाले
नबी मीकाह ने नबुव्वत करके यहूदाह के तमाम
बाशिंदों से कहा, 'रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि
सिय्यून पर खेत की तरह हल चलाया जाएगा,
और यरूशलम मलबे का ढेर बन जाएगा। रब के
घर की पहाड़ी पर गुंजान जंगल उगेगा।' 19क्या
यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह या यहूदाह के
किसी और शख़्स ने मीकाह को सज़ाए-मौत दी?
हरगिज़ नहीं, बल्कि हिज़क़ियाह ने रब का ख़ौफ़
मानकर उसका ग़ुस्सा ठंडा करने की कोशिश
की। नतीजे में रब ने पछताकर वह सज़ा उन पर
नाज़िल न की जिसका एलान वह कर चुका था।

सुनें, अगर हम यरमियाह को सज़ाए-मौत दें तो
अपने आप पर सख़्त सज़ा लाएँगे।”

ऊरियाह नबी का क़त्ल

20उन दिनों में एक और नबी भी यरमियाह
की तरह रब का नाम लेकर नबुव्वत करता था।
उसका नाम ऊरियाह बिन समायाह था, और
वह क़िरियत-यारीम का रहनेवाला था। उसने
भी यरूशलम और यहूदाह के ख़िलाफ़ वही
पेशगोइयाँ सुनाईं जो यरमियाह सुनाता था।
21जब यहूयक़ीम बादशाह और उसके तमाम
फ़ौजी और सरकारी अफ़सरों ने उस की बातें
सुनीं तो बादशाह ने उसे मार डालने की कोशिश
की। लेकिन ऊरियाह को इसकी ख़बर मिली, और
वह डरकर भाग गया। चलते चलते वह मिसर
पहुँच गया। 22तब यहूयक़ीम ने इलनातन बिन
अकबोर और चंद एक आदमियों को वहाँ भेज
दिया। 23वहाँ पहुँचकर वह ऊरियाह को पकड़कर
यहूयक़ीम के पास वापस लाए। बादशाह के हुक्म
पर उसका सर क़लम कर दिया गया और उस की
नाश को निचले तबक़े के लोगों के क़ब्रिस्तान में
दफ़नाया गया।
24लेकिन यरमियाह की जान छूट गई। उसे
अवाम के हवाले न किया गया, गो वह उसे मार
डालना चाहते थे, क्योंकि अख़ीक़ाम बिन साफ़न
उसके हक़ में था।

जुए की अलामत

27 जब सिदक़ियाह बिन यूसियाह
यहूदाह के तख़्त पर बैठ गया तो
रब यरमियाह से हमकलाम हुआ। 2रब ने मुझे
फ़रमाया,
“अपने लिए जुआ और उसके रस्से बनाकर
उसे अपनी गरदन पर रख ले! 3फिर अदोम,
मोआब, अम्मोन, सूर और सैदा के शाही सफ़ीरों
के पास जा जो इस वक़्त यरूशलम में सिदक़ियाह
बादशाह के पास जमा हैं। 4उनके हाथ उनके
बादशाहों को पैग़ाम भेज, ‘रब्बुल-अफ़वाज जो
इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि 5मैंने
अपना हाथ बढ़ाकर बड़ी क़ुदरत से दुनिया को
इनसानो-हैवान समेत ख़लक़ किया है, और मैं
ही यह चीज़ें उसे अता करता हूँ जो मेरी नज़र में
लायक़ है। 6इस वक़्त मैं तुम्हारे तमाम ममालिक
को अपने ख़ादिम शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र के
हवाले करूँगा। जंगली जानवर तक सब उसके
ताबे हो जाएंगे। 7तमाम अक़वाम उस की और
उसके बेटे और पोते की ख़िदमत करेंगी। फिर
एक वक़्त आएगा कि बाबल की हुकूमत ख़त्म हो
जाएगी। तब मुतअद्दिद क़ौमें और बड़े बड़े बादशाह
उसे अपने ही ताबे कर लेंगे। 8लेकिन इस वक़्त
लाज़िम है कि हर क़ौम और सलतनत शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र की ख़िदमत करके उसका जुआ
क़बूल करे। जो इनकार करे उसे मैं तलवार, काल
और मोहलक बीमारियों से उस वक़्त तक सज़ा
दूँगा जब तक वह पूरे तौर पर नबूकदनज़्ज़र के
हाथ से तबाह न हो जाए। यह रब का फ़रमान है।
9चुनाँचे अपने नबियों, फ़ालगीरों, ख़ाब
देखनेवालों, क़िस्मत का हाल बतानेवालों और
जादूगरों पर ध्यान न दो जब वह तुम्हें बताते हैं
कि तुम शाहे-बाबल की ख़िदमत नहीं करोगे।
10क्योंकि वह तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ पेश कर रहे
हैं जिनका सिर्फ़ यह नतीजा निकलेगा कि मैं
तुम्हें वतन से निकालकर मुंतशिर करूँगा और
तुम हलाक हो जाओगे। 11लेकिन जो क़ौम शाहे-
बाबल का जुआ क़बूल करके उस की ख़िदमत
करे उसे मैं उसके अपने मुल्क में रहने दूँगा, और
वह उस की खेतीबाड़ी करके उसमें बसेगी। यह
रब का फ़रमान है’।”
12मैंने यही पैग़ाम यहूदाह के बादशाह
सिदक़ियाह को भी सुनाया। मैं बोला, “शाहे-
बाबल के जुए को क़बूल करके उस की और
उस की क़ौम की ख़िदमत करो तो तुम ज़िंदा
रहोगे। 13क्या ज़रूरत है कि तू अपनी क़ौम समेत
तलवार, काल और मोहलक बीमारियों की ज़द में
आकर हलाक हो जाए? क्योंकि रब ने फ़रमाया
है कि हर क़ौम जो शाहे-बाबल की ख़िदमत करने

से इनकार करे उसका यही अंजाम होगा। 14उन
नबियों पर तवज्जुह मत देना जो तुमसे कहते
हैं, 'तुम शाहे-बाबल की ख़िदमत नहीं करोगे।'
उनकी यह पेशगोई झूट ही है। 15रब फ़रमाता है,
'मैंने उन्हें नहीं भेजा बल्कि वह मेरा नाम लेकर
झूटी पेशगोइयाँ सुना रहे हैं। अगर तुम उनकी सुनो
तो मैं तुम्हें मुंतशिर कर दूँगा, और तुम नबुव्वत
करनेवाले उन नबियों समेत हलाक हो जाओगे'।"

16फिर मैं इमामों और पूरी क़ौम से मु-
ख़ातिब हुआ, "रब फ़रमाता है, 'उन नबियों
की न सुनो जो नबुव्वत करके कहते हैं कि अब
रब के घर का सामान जल्द ही मुल्के-बाबल से
वापस लाया जाएगा। वह तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ
बयान कर रहे हैं। 17उन पर तवज्जुह मत देना।
बाबल के बादशाह की ख़िदमत करो तो तुम ज़िंदा
रहोगे। यह शहर क्यों मलबे का ढेर बन जाए?
18अगर यह लोग वाक़ई नबी हों और इन्हें रब
का कलाम मिला हो तो इन्हें रब के घर, शाही
महल और यरूशलम में अब तक बचे हुए सामान
के लिए दुआ करनी चाहिए। वह रब्बुल-अफ़वाज
से शफ़ाअत करें कि यह चीज़ें मुल्के-बाबल न ले
जाई जाएँ बल्कि यहीं रहें।

19-22अब तक पीतल के सतून, पीतल का
हौज़ बनाम समुंदर, पानी के बासन उठानेवाली
हथगाड़ियाँ और इस शहर का बाक़ी बचा हुआ
सामान यहीं मौजूद है। नबूकदनज़्ज़र ने इन्हें
उस वक़्त अपने साथ नहीं लिया था जब वह
यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन[a] बिन यहूयक़ीम
को यरूशलम और यहूदाह के तमाम शुरफ़ा
समेत जिलावतन करके मुल्के-बाबल ले गया था।
लेकिन रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
इन चीज़ों के बारे में फ़रमाता है कि जितनी भी
क़ीमती चीज़ें अब तक रब के घर, शाही महल या
यरूशलम में कहीं और बच गई हैं वह भी मुल्के-
बाबल में पहुँचाई जाएँगी। वहीं वह उस वक़्त तक
रहेंगी जब तक मैं उन पर नज़र डालकर उन्हें इस
जगह वापस न लाऊँ।' यह रब का फ़रमान है।"

हननियाह नबी की मुख़ालफ़त

28 उसी साल के पाँचवें महीने[b]
में जिबऊन का रहनेवाला नबी
हननियाह बिन अज़्ज़ूर रब के घर में आया। उस
वक़्त यानी सिदक़ियाह की हुकूमत के चौथे साल
में वह इमामों और क़ौम की मौजूदगी में मुझसे
मुख़ातिब हुआ, 2"रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं शाहे-बाबल का
जुआ तोड़ डालूँगा। 3दो साल के अंदर अंदर मैं
रब के घर का वह सारा सामान इस जगह वापस
पहुँचाऊँगा जो शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र यहाँ से
निकालकर बाबल ले गया था। 4उस वक़्त मैं
यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन[a] बिन यहूयक़ीम
और यहूदाह के दीगर तमाम जिलावतनों को भी
बाबल से वापस लाऊँगा। क्योंकि मैं यक़ीनन
शाहे-बाबल का जुआ तोड़ डालूँगा। यह रब का
फ़रमान है।"

5यह सुनकर यरमियाह ने इमामों और रब
के घर में खड़े बाक़ी परस्तारों की मौजूदगी में
हननियाह नबी से कहा, 6"आमीन! रब ऐसा
ही करे, वह तेरी पेशगोई पूरी करके रब के घर
का सामान और तमाम जिलावतनों को बाबल से
इस जगह वापस लाए। 7लेकिन उस पर तवज्जुह
दे जो मैं तेरी और पूरी क़ौम की मौजूदगी में
बयान करता हूँ! 8क़दीम ज़माने से लेकर आज
तक जितने नबी मुझसे और तुझसे पहले ख़िदमत
करते आए हैं उन्होंने मुतअद्दिद मुल्कों और बड़ी
बड़ी सलतनतों के बारे में नबुव्वत की थी कि उन
पर जंग, आफ़त और मोहलक बीमारियाँ नाज़िल
होंगी। 9चुनाँचे ख़बरदार! जो नबी सलामती की
पेशगोई करे उस की तसदीक़ उस वक़्त होगी जब
उस की पेशगोई पूरी हो जाएगी। उसी वक़्त लोग

[a]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

[b]जुलाई ता अगस्त।

जान लेंगे कि उसे वाक़ई रब की तरफ़ से भेजा
गया है।”

10तब हननियाह ने लकड़ी के जुए को
यरमियाह की गरदन पर से उतारकर उसे तोड़
दिया। 11तमाम लोगों के सामने उसने कहा, “रब
फ़रमाता है कि दो साल के अंदर अंदर मैं इसी
तरह शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र का जुआ तमाम
क़ौमों की गरदन पर से उतारकर तोड़ डालूँगा।”
तब यरमियाह वहाँ से चला गया।

12इस वाक़िये के थोड़ी देर बाद रब यरमियाह
से हमकलाम हुआ, 13“जा, हननियाह को बता,
‘रब फ़रमाता है कि तूने लकड़ी का जुआ
तो तोड़ दिया है, लेकिन उस की जगह तूने
अपनी गरदन पर लोहे का जुआ रख लिया है।’
14क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा
है फ़रमाता है कि मैंने लोहे का जुआ इन तमाम
क़ौमों पर रख दिया है ताकि वह नबूकदनज़्ज़र की
ख़िदमत करें। और न सिर्फ़ यह उस की ख़िदमत
करेंगे बल्कि मैं जंगली जानवरों को भी उसके हाथ
में कर दूँगा।”

15फिर यरमियाह ने हननियाह से कहा, “ऐ
हननियाह, सुन! गो रब ने तुझे नहीं भेजा तो
भी तूने इस क़ौम को झूट पर भरोसा रखने पर
आमादा किया है। 16इसलिए रब फ़रमाता है, ‘मैं
तुझे रूए-ज़मीन पर से मिटाने को हूँ। इसी साल तू
मर जाएगा, इसलिए कि तूने रब से सरकश होने
का मशवरा दिया है’।”

17और ऐसा ही हुआ। उसी साल के सातवें
महीने[a] यानी दो महीने के बाद हननियाह नबी
कूच कर गया।

यरमियाह जिलावतनों को ख़त भेजता है

29 एक दिन यरमियाह नबी ने यरू-
शलम से एक ख़त मुल्के-बाबल
भेजा। यह ख़त उन बचे हुए बुज़ुर्गों, इमामों,
नबियों और बाक़ी इसराईलियों के नाम लिखा था
जिन्हें नबूकदनज़्ज़र बादशाह जिलावतन करके
बाबल ले गया था। 2उनमें यहूयाकीन[b] बादशाह,
उस की माँ और दरबारी, और यहूदाह और
यरूशलम के बुज़ुर्ग, कारीगर और लोहार शामिल
थे। 3यह ख़त इलियासा बिन साफ़न और
जमरियाह बिन ख़िलक़ियाह के हाथ बाबल पहुँचा
जिन्हें यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह ने बाबल में
शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र के पास भेजा था। ख़त
में लिखा था,

4“रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘ऐ तमाम जिलावतनो जिन्हें मैं
यरूशलम से निकालकर बाबल ले गया हूँ, ध्यान
से सुनो!

5बाबल में घर बनाकर उनमें बसने लगो। बाग़
लगाकर उनका फल खाओ। 6शादी करके बेटे-
बेटियाँ पैदा करो। अपने बेटे-बेटियों की शादी
कराओ ताकि उनके भी बच्चे पैदा हो जाएँ। ध्यान
दो कि मुल्के-बाबल में तुम्हारी तादाद कम न हो
जाए बल्कि बढ़ जाए। 7उस शहर की सलामती
के तालिब रहो जिसमें मैं तुम्हें जिलावतन करके
ले गया हूँ। रब से उसके लिए दुआ करो! क्योंकि
तुम्हारी सलामती उसी की सलामती पर मुनहसिर
है।’

8रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘ख़बरदार! तुम्हारे दरमियान
रहनेवाले नबी और क़िस्मत का हाल बताने-
वाले तुम्हें फ़रेब न दें। उन ख़ाबों पर तवज्जुह मत
देना जो यह देखते हैं।’ 9रब फ़रमाता है, ‘यह
मेरा नाम लेकर तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं,
गो मैंने उन्हें नहीं भेजा।’ 10क्योंकि रब फ़रमाता
है, ‘तुम्हें बाबल में रहते हुए कुल 70 साल गुज़र
जाएंगे। लेकिन इसके बाद मैं तुम्हारी तरफ़ रुजू
करूँगा, मैं अपना पुरफ़ज़ल वादा पूरा करके तुम्हें
वापस लाऊँगा।’ 11क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं
उन मनसूबों से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ जो मैंने तुम्हारे लिए
बाँधे हैं। यह मनसूबे तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचाएँगे

[a]सितंबर ता अक्तूबर।

[b]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

बल्कि तुम्हारी सलामती का बाइस होंगे, तुम्हें
उम्मीद दिलाकर एक अच्छा मुस्तक़बिल फ़राहम
करेंगे। 12उस वक़्त तुम मुझे पुकारोगे, तुम आकर
मुझसे दुआ करोगे तो मैं तुम्हारी सुनूँगा। 13तुम
मुझे तलाश करके पा लोगे। क्योंकि अगर तुम
पूरे दिल से मुझे ढूँडो 14तो मैं होने दूँगा कि तुम
मुझे पाओ।' यह रब का फ़रमान है। 'फिर मैं तुम्हें
बहाल करके उन तमाम क़ौमों और मक़ामों से
जमा करूँगा जहाँ मैंने तुम्हें मुंतशिर कर दिया था।
और मैं तुम्हें उस मुल्क में वापस लाऊँगा जिससे
मैंने तुम्हें निकालकर जिलावतन कर दिया था।'
यह रब का फ़रमान है।

15तुम्हारा दावा है कि रब ने यहाँ बाबल में भी
हमारे लिए नबी बरपा किए हैं। 16-17लेकिन रब
का जवाब सुनो! दाऊद के तख़्त पर बैठनेवाले
बादशाह और यरूशलम में बचे हुए तमाम
बाशिंदों के बारे में रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है,
'तुम्हारे जितने भाई जिलावतनी से बच गए हैं
उनके ख़िलाफ़ मैं तलवार, काल और मोहलक
बीमारियाँ भेज दूँगा। मैं उन्हें गले हुए अंजीरों की
मानिंद बना दूँगा, जो ख़राब होने की वजह से खाए
नहीं जाएंगे। 18मैं तलवार, काल और मोहलक
बीमारियों से उनका यों ताक़्क़ुब करूँगा कि दुनिया
के तमाम ममालिक उनकी हालत देखकर घबरा
जाएंगे। जिस क़ौम में भी मैं उन्हें मुंतशिर करूँगा
वहाँ लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। किसी पर
लानत भेजते वक़्त लोग कहेंगे कि उसे यहूदाह
के बाशिंदों का-सा अंजाम नसीब हो। हर जगह
वह मज़ाक़ और रुसवाई का निशाना बन जाएंगे।
19क्यों? इसलिए कि उन्होंने मेरी न सुनी, गो
मैं अपने ख़ादिमों यानी नबियों के ज़रीए बार बार
उन्हें पैग़ामात भेजता रहा। लेकिन तुमने भी मेरी
न सुनी।' यह रब का फ़रमान है।

20अब रब का फ़रमान सुनो, तुम सब
जो जिलावतन हो चुके हो, जिन्हें मैं यरू-
शलम से निकालकर बाबल भेज चुका हूँ।
21रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, 'अख़ियब बिन क़ौलायाह और
सिदक़ियाह बिन मासियाह मेरा नाम लेकर तुम्हें
झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं। इसलिए मैं उन्हें शाहे-
बाबल नबूकदनज़्ज़र के हाथ में दूँगा जो उन्हें
तेरे देखते देखते सज़ाए-मौत देगा। 22उनका
अंजाम इबरतअंगेज़ मिसाल बन जाएगा। किसी
पर लानत भेजते वक़्त यहूदाह के जिलावतन
कहेंगे, "रब तेरे साथ सिदक़ियाह और अख़ियब
का-सा सुलूक करे जिन्हें शाहे-बाबल ने आग
में भून लिया!" 23क्योंकि उन्होंने इसराईल में
बेदीन हरकतें की हैं। अपने पड़ोसियों की बीवियों
के साथ ज़िना करने के साथ साथ उन्होंने मेरा
नाम लेकर ऐसे झूटे पैग़ाम सुनाए हैं जो मैंने उन्हें
सुनाने को नहीं कहा था। मुझे इसका पूरा इल्म
है, और मैं इसका गवाह हूँ।' यह रब का फ़रमान
है।"

समायाह के लिए रब का पैग़ाम

24रब ने फ़रमाया, "बाबल के रहनेवाले
समायाह नख़लामी को इत्तला दे, 25रब्बुल-
अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है
कि तूने अपनी ही तरफ़ से इमाम सफ़नियाह
बिन मासियाह को ख़त भेजा। दीगर इमामों और
यरूशलम के बाक़ी तमाम बाशिंदों को भी इसकी
कापियाँ मिल गईं। ख़त में लिखा था,

26'रब ने आपको यहोयदा की जगह अपने
घर की देख-भाल करने की ज़िम्मेदारी दी है।
आपकी ज़िम्मेदारियों में यह भी शामिल है कि
हर दीवाने और नबुव्वत करनेवाले को काठ में
डालकर उस की गरदन में लोहे की ज़ंजीरें डालें।
27तो फिर आपने अनतोत के रहनेवाले यरमियाह
के ख़िलाफ़ क़दम क्यों नहीं उठाया जो आपके
दरमियान नबुव्वत करता रहता है? 28क्योंकि
उसने हमें जो बाबल में हैं ख़त भेजकर मशवरा
दिया है कि देर लगेगी, इसलिए घर बनाकर उनमें
बसने लगो, बाग़ लगाकर उनका फल खाओ'।"

29जब सफ़नियाह को समायाह का ख़त मिल
गया तो उसने यरमियाह को सब कुछ सुनाया।
30तब यरमियाह पर रब का कलाम नाज़िल हुआ,

31“तमाम जिलावतनों को ख़त भेजकर लिख दे,
‘रब समायाह नख़लामी के बारे में फ़रमाता है
कि गो मैंने समायाह को नहीं भेजा तो भी उसने
तुम्हें पेशगोइयाँ सुनाकर झूट पर भरोसा रखने
पर आमादा किया है। 32चुनाँचे रब फ़रमाता है
कि मैं समायाह नख़लामी को उस की औलाद
समेत सज़ा दूँगा। इस क़ौम में उस की नसल
ख़त्म हो जाएगी, और वह ख़ुद उन अच्छी चीज़ों
से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होगा जो मैं अपनी क़ौम को
फ़राहम करूँगा। क्योंकि उसने रब से सरकश होने
का मशवरा दिया है’।”

इसराईल और यहूदाह बहाल हो जाएंगे

30 रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल
हुआ, 2“रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है कि जो भी पैग़ाम मैंने तुझ पर नाज़िल
किए उन्हें किताब की सूरत में क़लमबंद कर!
3क्योंकि रब फ़रमाता है कि वह वक़्त आनेवाला
है जब मैं अपनी क़ौम इसराईल और यहूदाह को
बहाल करके उस मुल्क में वापस लाऊँगा जो मैंने
उनके बापदादा को मीरास में दिया था।”

4यह इसराईल और यहूदाह के बारे में रब के
फ़रमान हैं। 5“रब फ़रमाता है, ‘ख़ौफ़ज़दा चीख़ें
सुनाई दे रही हैं। अमन का नामो-निशान तक नहीं
बल्कि चारों तरफ़ दहशत ही दहशत फैली हुई है।
6क्या मर्द बच्चे जन्म दे सकता है? तो फिर तमाम
मर्द क्यों अपने हाथ कमर पर रखकर दर्दे-ज़ह में
मुब्तला औरतों की तरह तड़प रहे हैं? हर एक का
रंग फ़क़ पड़ गया है।

7अफ़सोस! वह दिन कितना हौलनाक होगा!
उस जैसा कोई नहीं होगा। याक़ूब की औलाद
को बड़ी मुसीबत पेश आएगी, लेकिन आख़िरकार
उसे रिहाई मिलेगी।’ 8रब फ़रमाता है, ‘उस दिन
मैं उनकी गरदन पर रखे जुए और उनकी ज़ंजीरों
को तोड़ डालूँगा। तब वह ग़ैरमुल्कियों के ग़ुलाम
नहीं रहेंगे 9बल्कि रब अपने ख़ुदा और दाऊद की
नसल के उस बादशाह की ख़िदमत करेंगे जिसे मैं
बरपा करके उन पर मुक़र्रर करूँगा।’

10चुनाँचे रब फ़रमाता है, ‘ऐ याक़ूब मेरे
ख़ादिम, मत डर! ऐ इसराईल, दहशत मत
खा! देख, मैं तुझे दूर-दराज़ इलाक़ों से और
तेरी औलाद को जिलावतनी से छुड़ाकर वापस ले
आऊँगा। याक़ूब वापस आकर सुकून से ज़िंदगी
गुज़ारेगा, और उसे परेशान करनेवाला कोई नहीं
होगा।’ 11क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं तेरे साथ
हूँ, मैं ही तुझे बचाऊँगा। मैं उन तमाम क़ौमों को
नेस्तो-नाबूद कर दूँगा जिनमें मैंने तुझे मुंतशिर कर
दिया है, लेकिन तुझे मैं इस तरह सफ़हाए-हस्ती
से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं मुनासिब हद तक
तेरी तंबीह करूँगा, क्योंकि मैं तुझे सज़ा दिए बग़ैर
नहीं छोड़ सकता।’

12क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘तेरा ज़ख़म
लाइलाज है, तेरी चोट भर ही नहीं सकती।
13कोई नहीं है जो तेरे फोड़ की तहक़ीक़ करे,[a]
तेरी चोट भर ही नहीं सकती। 14तेरे तमाम
आशिक़[b] तुझे भूल गए हैं और तेरी परवा ही नहीं
करते। तेरा क़ुसूर बहुत संगीन है, तुझसे बेशुमार
गुनाह सरज़द हुए हैं। इसी लिए मैंने तुझे दुश्मन
की तरह मारा, ज़ालिम की तरह तंबीह दी है।

15अब जब चोट लग गई है और लाइलाज दर्द
महसूस हो रहा है तो तू मदद के लिए क्यों चीख़ता
है? यह मैं ही ने तेरे संगीन क़ुसूर और मुतअद्दिद
गुनाहों की वजह से तेरे साथ किया है।

16लेकिन जो तुझे हड़प करें उन्हें भी हड़प
किया जाएगा। तेरे तमाम दुश्मन जिलावतन हो
जाएंगे। जिन्होंने तुझे लूट लिया उन्हें भी लूटा
जाएगा, जिन्होंने तुझे ग़ारत किया उन्हें भी ग़ारत
किया जाएगा।’ 17क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं तेरे
ज़ख़मों को भरकर तुझे शफ़ा दूँगा, क्योंकि लोगों
ने तुझे मरदूद क़रार देकर कहा है कि सिय्यून
को देखो जिसकी फ़िक्र कोई नहीं करता।’
18रब फ़रमाता है, ‘देखो, मैं याक़ूब के ख़ैमों की

[a] या जो तेरे हक़ में बात करके तेरे फोड़ का मुआलजा करे।

[b] आशिक़ से मुराद इसराईल के इत्तहादी हैं।

बदनसीबी ख़त्म करूँगा, मैं इसराईल के घरों पर
तरस खाऊँगा। तब यरूशलम को खंडरात पर
नए सिरे से तामीर किया जाएगा, और महल
को दुबारा उस की पुरानी जगह पर खड़ा किया
जाएगा।

19उस वक़्त वहाँ शुक्रगुज़ारी के गीत और ख़ुशी
मनानेवालों की आवाज़ें बुलंद हो जाएँगी। और
मैं ध्यान दूँगा कि उनकी तादाद कम न हो जाए
बल्कि मज़ीद बढ़ जाए। उन्हें हक़ीर नहीं समझा
जाएगा बल्कि मैं उनकी इज़्ज़त बहुत बढ़ा दूँगा।
20उनके बच्चे क़दीम ज़माने की तरह महफ़ूज़
ज़िंदगी गुज़ारेंगे, और उनकी जमात मज़बूती से
मेरे हुज़ूर क़ायम रहेगी। लेकिन जितनों ने उन पर
ज़ुल्म किया है उन्हें मैं सज़ा दूँगा।

21उनका हुक्मरान उनका अपना हमवतन
होगा, वह दुबारा उनमें से उठकर तख़्तनशीन हो
जाएगा। मैं ख़ुद उसे अपने क़रीब लाऊँगा तो
वह मेरे क़रीब आएगा।' क्योंकि रब फ़रमाता है,
'सिर्फ़ वही अपनी जान ख़तरे में डालकर मेरे
क़रीब आने की जुर्रत कर सकता है जिसे मैं ख़ुद
अपने क़रीब लाया हूँ। 22उस वक़्त तुम मेरी क़ौम
होगे और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा'।"

23देखो, रब का ग़ज़ब ज़बरदस्त आँधी की तरह
नाज़िल हो रहा है। तेज़ बगूले के झोंके बेदीनों के
सरों पर उतर रहे हैं। 24और रब का शदीद क़हर
उस वक़्त तक ठंडा नहीं होगा जब तक उसने
अपने दिल के मनसूबों को तकमील तक नहीं
पहुँचाया। आनेवाले दिनों में तुम्हें इसकी साफ़
समझ आएगी।

जिलावतनों की वापसी

31 रब फ़रमाता है, "उस वक़्त मैं तमाम
इसराईली घरानों का ख़ुदा हूँगा, और
वह मेरी क़ौम होंगे।" 2रब फ़रमाता है, "तलवार
से बचे हुए लोगों को रेगिस्तान में ही मेरा फ़ज़्ल
हासिल हुआ है, और इसराईल अपनी आरामगाह
के पास पहुँच रहा है।"

3रब ने दूर से मुझ पर ज़ाहिर होकर फ़रमाया,
"मैंने तुझे हमेशा ही प्यार किया है, इसलिए मैं
तुझे बड़ी शफ़क़त से अपने पास खींच लाया हूँ।
4ऐ कुँवारी इसराईल, तेरी नए सिरे से तामीर
हो जाएगी, क्योंकि मैं ख़ुद तुझे तामीर करूँगा।
तू दुबारा अपने दफ़ों से आरास्ता होकर ख़ुशी
मनानेवालों के लोकनाच के लिए निकलेगी। 5तू
दुबारा सामरिया की पहाड़ियों पर अंगूर के बाग़
लगाएगी। और जो पौदों को लगाएँगे वह ख़ुद
उनके फल से लुत्फ़अंदोज़ होंगे। 6क्योंकि वह
दिन आनेवाला है जब इफ़राईम पहाड़ के पहरेदार
आवाज़ देकर कहेंगे, 'आओ हम सिय्यून के पास
जाएँ ताकि रब अपने ख़ुदा को सिजदा करें'।"

7क्योंकि रब फ़रमाता है, "याक़ूब को देखकर
ख़ुशी मनाओ! क़ौमों के सरबराह को देखकर
शादमानी का नारा मारो! बुलंद आवाज़ से
अल्लाह की हम्दो-सना करके कहो, 'ऐ रब,
अपनी क़ौम को बचा, इसराईल के बचे हुए
हिस्से को छुटकारा दे।' 8क्योंकि मैं उन्हें शिमाली
मुल्क से वापस लाऊँगा, उन्हें दुनिया की इंतहा
से जमा करूँगा। अंधे और लँगड़े उनमें शामिल
होंगे, हामिला और जन्म देनेवाली औरतें भी साथ
चलेंगी। उनका बड़ा हुजूम वापस आएगा। 9और
जब मैं उन्हें वापस लाऊँगा तो वह रोते हुए और
इल्तिजाएँ करते हुए मेरे पीछे चलेंगे। मैं उन्हें
नदियों के किनारे किनारे और ऐसे हमवार रास्तों
पर वापस ले चलूँगा, जहाँ ठोकर खाने का ख़तरा
नहीं होगा। क्योंकि मैं इसराईल का बाप हूँ, और
इफ़राईम[a] मेरा पहलौठा है।

10ऐ क़ौमो, रब का कलाम सुनो! दूर-दराज़
जज़ीरों तक एलान करो, 'जिसने इसराईल को
मुंतशिर कर दिया है वह उसे दुबारा जमा करेगा
और चरवाहे की-सी फ़िकर रखकर उस की
गल्लाबानी करेगा।' 11क्योंकि रब ने फ़िद्या देकर
याक़ूब को बचाया है, उसने एवज़ाना देकर उसे
ज़ोरावर के हाथ से छुड़ाया है। 12तब वह आकर

[a]यहाँ इफ़राईम इसराईल का दूसरा नाम है।

सिय्यून की बुलंदी पर ख़ुशी के नारे लगाएँगे,
उनके चेहरे रब की बरकतों को देखकर चमक
उठेंगे। क्योंकि उस वक़्त वह उन्हें अनाज, नई मै,
ज़ैतून के तेल और जवान भेड़-बकरियों और गाय-
बैलों की कसरत से नवाज़ेगा। उनकी जान सेराब
बाग़ की तरह सरसब्ज़ होगी, और उनकी निढाल
हालत सँभल जाएगी। 13फिर कुँवारियाँ ख़ुशी के
मारे लोकनाच नाचेंगी, जवान और बुज़ुर्ग आदमी
भी उसमें हिस्सा लेंगे। यों मैं उनका मातम ख़ुशी
में बदल दूँगा, मैं उनके दिलों से ग़म निकालकर
उन्हें अपनी तसल्ली और शादमानी से भर दूँगा।”
14रब फ़रमाता है, “मैं इमामों की जान को तरो-
ताज़ा करूँगा, और मेरी क़ौम मेरी बरकतों से सेर
हो जाएगी।”

15रब फ़रमाता है, “रामा में शोर मच गया है,
रोने पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें। राख़िल
अपने बच्चों के लिए रो रही है और तसल्ली क़बूल
नहीं कर रही, क्योंकि वह हलाक हो गए हैं।”

16लेकिन रब फ़रमाता है, “रोने और आँसू
बहाने से बाज़ आ, क्योंकि तुझे अपनी मेहनत का
अज्र मिलेगा। यह रब का वादा है कि वह दुश्मन
के मुल्क से लौट आएँगे। 17तेरा मुस्तक़बिल
पुरउम्मीद होगा, क्योंकि तेरे बच्चे अपने वतन में
वापस आएँगे।” यह रब का फ़रमान है।

18“इसराईल[a] की गिर्याओ-ज़ारी मुझ तक
पहुँच गई है। क्योंकि वह कहता है, ‘हाय, तूने
मेरी सख़्त तादीब की है। मेरी यों तरबियत हुई है
जिस तरह बछड़े की होती है जब उस की गरदन
पर पहली बार जुआ रखा जाता है। ऐ रब, मुझे
वापस ला ताकि मैं वापस आऊँ, क्योंकि तू ही रब
मेरा ख़ुदा है। 19मेरे वापस आने पर मुझे नदामत
महसूस हुई, और समझ आने पर मैं अपना सीना
पीटने लगा। मुझे शरमिंदगी और रुसवाई का
शदीद एहसास हो रहा है, क्योंकि अब मैं अपनी
जवानी के शर्मनाक फल की फ़सल काट रहा
हूँ।’ 20लेकिन रब फ़रमाता है कि इसराईल मेरा
क़ीमती बेटा, मेरा लाडला है। गो मैं बार बार उसके
ख़िलाफ़ बातें करता हूँ तो भी उसे याद करता
रहता हूँ। इसलिए मेरा दिल उसके लिए तड़पता
है, और लाज़िम है कि मैं उस पर तरस खाऊँ।

21ऐ मेरी क़ौम, ऐसे निशान खड़े कर जिनसे
लोगों को सहीह रास्ते का पता चले! उस पक्की
सड़क पर ध्यान दे जिस पर तूने सफ़र किया है। ऐ
कुँवारी इसराईल, वापस आ, अपने इन शहरों में
लौट आ! 22ऐ बेवफ़ा बेटी, तू कब तक भटकती
फिरेगी? रब ने मुल्क में एक नई चीज़ पैदा की
है, यह कि आइंदा औरत आदमी के गिर्द रहेगी।”

इसराईल और यहूदाह दुबारा आबाद हो जाएंगे

23रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, “जब मैं इसराईलियों को बहाल
करूँगा तो मुल्के-यहूदाह और उसके शहरों के
बाशिंदे दुबारा कहेंगे, ‘ऐ रास्ती के घर, ऐ मुक़द्दस
पहाड़, रब तुझे बरकत दे!’ 24तब यहूदाह और
उसके शहर दुबारा आबाद होंगे। किसान भी मुल्क
में बसेंगे, और वह भी जो अपने रेवड़ों के साथ
इधर-उधर फिरते हैं। 25क्योंकि मैं थकेमाँदों को
नई ताक़त दूँगा और ग़श खानेवालों को तरो-ताज़ा
करूँगा।”

26तब मैं जाग उठा और चारों तरफ़ देखा। मेरी
नींद कितनी मीठी रही थी!

27रब फ़रमाता है, “वह वक़्त आनेवाला है जब
मैं इसराईल के घराने और यहूदाह के घराने का
बीज बोकर इनसानो-हैवान की तादाद बढ़ा दूँगा।
28पहले मैंने बड़े ध्यान से उन्हें जड़ से उखाड़
दिया, गिरा दिया, ढा दिया, हाँ तबाह करके ख़ाक
में मिला दिया। लेकिन आइंदा मैं उतने ही ध्यान
से उन्हें तामीर करूँगा, उन्हें पनीरी की तरह लगा
दूँगा।” यह रब का फ़रमान है। 29“उस वक़्त लोग
यह कहने से बाज़ आएँगे कि वालिदैन ने खट्टे अंगूर
खाए, लेकिन दाँत उनके बच्चों के खट्टे हो गए हैं।
30क्योंकि अब से खट्टे अंगूर खानेवाले के अपने

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : इफ़राईम।

ही दाँत खट्टे होंगे। अब से उसी को सज़ाए-मौत
दी जाएगी जो क़ुसूरवार है।"

नया अहद

31रब फ़रमाता है, "ऐसे दिन आ रहे हैं जब
मैं इसराईल के घराने और यहूदाह के घराने के
साथ एक नया अहद बाँधूँगा। 32यह उस अहद की
मानिंद नहीं होगा जो मैंने उनके बापदादा के साथ
उस दिन बाँधा था जब मैं उनका हाथ पकड़कर
उन्हें मिसर से निकाल लाया। क्योंकि उन्होंने वह
अहद तोड़ दिया, गो मैं उनका मालिक था।" यह
रब का फ़रमान है।

33"जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद इसराईल
के घराने के साथ बाँधूँगा उसके तहत मैं अपनी
शरीअत उनके अंदर डालकर उनके दिलों पर कंदा
करूँगा। तब मैं ही उनका ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी
क़ौम होंगे। 34उस वक़्त से इसकी ज़रूरत नहीं
रहेगी कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम
देकर कहे, 'रब को जान लो।' क्योंकि छोटे से
लेकर बड़े तक सब मुझे जानेंगे। क्योंकि मैं उनका
क़ुसूर मुआफ़ करूँगा और आइंदा उनके गुनाहों
को याद नहीं करूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

35रब फ़रमाता है, "मैं ही ने मुक़र्रर किया
है कि दिन के वक़्त सूरज चमके और रात के
वक़्त चाँद सितारों समेत रौशनी दे। मैं ही समुंदर
को यों उछाल देता हूँ कि उस की मौजें गरजने
लगती हैं। रब्बुल-अफ़वाज ही मेरा नाम है।"
36रब फ़रमाता है, "जब तक यह क़ुदरती उसूल
मेरे सामने क़ायम रहेंगे उस वक़्त तक इसराईल
क़ौम मेरे सामने क़ायम रहेगी। 37क्या इनसान
आसमान की पैमाइश कर सकता है? या क्या
वह ज़मीन की बुनियादों की तफ़तीश कर सकता
है? हरगिज़ नहीं! इसी तरह यह मुमकिन ही नहीं
कि मैं इसराईल की पूरी क़ौम को उसके गुनाहों
के सबब से रद्द करूँ।" यह रब का फ़रमान है।

यरूशलम को नए सिरे से तामीर किया जाएगा

38रब फ़रमाता है, "वह वक़्त आनेवाला है जब
यरूशलम को रब के लिए नए सिरे से तामीर किया
जाएगा। तब उस की फ़सील हननेल के बुर्ज से
लेकर कोने के दरवाज़े तक तैयार हो जाएगी।
39वहाँ से शहर की सरहद सीधी जरीब पहाड़ी
तक पहुँचेगी, फिर जोआ की तरफ़ मुड़ेगी। 40उस
वक़्त जो वादी लाशों और भस्म हुई चरबी की
राख से नापाक हुई है वह पूरे तौर पर रब के लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस होगी। उस की ढलानों पर के
तमाम खेत भी वादीए-क़िदरोन तक शामिल होंगे,
बल्कि मशरिक़ में घोड़े के दरवाज़े के कोने तक
सब कुछ मुक़द्दस होगा। आइंदा शहर को न कभी
दुबारा जड़ से उखाड़ा जाएगा, न तबाह किया
जाएगा।"

यरमियाह मुहासरे के दौरान खेत ख़रीदता है

32 यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह
की हुकूमत के दसवें साल में
रब यरमियाह से हमकलाम हुआ। उस
वक़्त नबूकदनज़्ज़र जो 18 साल से बा-
बल का बादशाह था 2अपनी फ़ौज के साथ
यरूशलम का मुहासरा कर रहा था। यरमियाह
उन दिनों में शाही महल के मुहाफ़िज़ों के सहन
में क़ैद था। 3सिदक़ियाह ने यह कहकर उसे
गिरिफ़्तार किया था, "तू क्यों इस क़िस्म की
पेशगोई सुनाता है? तू कहता है, 'रब फ़रमाता
है कि मैं इस शहर को शाहे-बाबल के हाथ में
देनेवाला हूँ। जब वह उस पर क़ब्ज़ा करेगा 4तो
सिदक़ियाह बाबल की फ़ौज से नहीं बचेगा। उसे
शाहे-बाबल के हवाले कर दिया जाएगा, और वह
उसके रूबरू उससे बात करेगा, अपनी आँखों से
उसे देखेगा। 5शाहे-बाबल सिदक़ियाह को बाबल
ले जाएगा, और वहाँ वह उस वक़्त तक रहेगा जब
तक मैं उसे दुबारा क़बूल न करूँ। रब फ़रमाता है
कि अगर तुम बाबल की फ़ौज से लड़ो तो नाकाम
रहोगे'।"

6जब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल
हुआ तो यरमियाह ने कहा, "रब मुझसे हमकलाम
हुआ, 7'तेरा चचाज़ाद भाई हनमेल बिन सल्लूम
तेरे पास आकर कहेगा कि अनतोत में मेरा
खेत ख़रीद लें। आप सबसे क़रीबी रिश्तेदार हैं,
इसलिए उसे ख़रीदना आपका हक़ बल्कि फ़र्ज़
भी है ताकि ज़मीन हमारे ख़ानदान की मिलकियत
रहे।[a] 8ऐसा ही हुआ जिस तरह रब ने फ़रमाया
था। मेरा चचाज़ाद भाई हनमेल शाही मुहाफ़िज़ों
के सहन में आया और मुझसे कहा, 'बिनयमीन
के क़बीले के शहर अनतोत में मेरा खेत ख़रीद
लें। यह खेत ख़रीदना आपका मौरूसी हक़ बल्कि
फ़र्ज़ भी है ताकि ज़मीन हमारे ख़ानदान की
मिलकियत रहे। आएँ, उसे ख़रीद लें!'

तब मैंने जान लिया कि यह वही बात है जो
रब ने फ़रमाई थी। 9चुनाँचे मैंने अपने चचाज़ाद
भाई हनमेल से अनतोत का खेत ख़रीदकर उसे
चाँदी के 17 सिक्के दे दिए। 10मैंने इंतक़ालनामा
लिखकर उस पर मुहर लगाई, फिर चाँदी के
सिक्के तोलकर अपने भाई को दे दिए। मैंने
गवाह भी बुलाए थे ताकि वह पूरी कारररवाई
की तसदीक़ करें। 11-12इसके बाद मैंने मुहरशुदा
इंतक़ालनामा तमाम शरायत और क़वायद समेत
बारूक बिन नैरियाह बिन महसियाह के सुपुर्द कर
दिया। साथ साथ मैंने उसे एक नक़ल भी दी जिस
पर मुहर नहीं लगी थी। हनमेल, इंतक़ालनामे पर
दस्तख़त करनेवाले गवाह और सहन में हाज़िर
बाक़ी हमवतन सब इसके गवाह थे। 13उनके
देखते देखते मैंने बारूक को हिदायत दी,

14'रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है कि मुहरशुदा इंतक़ालनामा और उस
की नक़ल लेकर मिट्टी के बरतन में डाल दे ताकि
लंबे अरसे तक महफ़ूज़ रहें। 15क्योंकि रब्बुल-
अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है
कि एक वक़्त आएगा जब इस मुल्क में दुबारा
घर, खेत और अंगूर के बाग़ ख़रीदे जाएंगे।'

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : एवज़ाना देकर उसे छुड़ाना (ताकि ख़ानदान का हिस्सा रहे)' आप ही का हक़ है।

यरमियाह अल्लाह की तमजीद करता है

16बारूक बिन नैरियाह को इंतक़ालनामा देने
के बाद मैंने रब से दुआ की,

17'ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तूने अपना हाथ
बढ़ाकर बड़ी क़ुदरत से आसमानो-ज़मीन को
बनाया, तेरे लिए कोई भी काम नामुमकिन नहीं।
18तू हज़ारों पर शफ़क़त करता और साथ साथ
बच्चों को उनके वालिदैन के गुनाहों की सज़ा
देता है। ऐ अज़ीम और क़ादिर ख़ुदा जिसका नाम
रब्बुल-अफ़वाज है, 19तेरे मक़ासिद अज़ीम और
तेरे काम ज़बरदस्त हैं, तेरी आँखें इनसान की
तमाम राहों को देखती रहती हैं। तू हर एक को
उसके चाल-चलन और आमाल का मुनासिब अज्र
देता है।

20मिसर में तूने इलाही निशान और मोजिज़े
दिखाए, और तेरा यह सिलसिला आज तक जारी
रहा है, इसराईल में भी और बाक़ी क़ौमों में भी।
यों तेरे नाम को वह इज़्ज़तो-जलाल मिला जो
तुझे आज तक हासिल है। 21तू इलाही निशान
और मोजिज़े दिखाकर अपनी क़ौम इसराईल को
मिसर से निकाल लाया। तूने अपना हाथ बढ़ाकर
अपनी अज़ीम क़ुदरत मिसरियों पर ज़ाहिर की
तो उन पर शदीद दहशत तारी हुई। 22तब तूने
अपनी क़ौम को यह मुल्क बख़्श दिया जिसमें दूध
और शहद की कसरत थी और जिसका वादा तूने
क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था।

23लेकिन जब हमारे बापदादा ने मुल्क में
दाख़िल होकर उस पर क़ब्ज़ा किया तो उन्होंने
न तेरी सुनी, न तेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारी। जो कुछ भी तूने उन्हें करने को कहा था
उस पर उन्होंने अमल न किया। नतीजे में तू उन
पर यह आफ़त लाया। 24दुश्मन मिट्टी के पुश्ते
बनाकर फ़सील के क़रीब पहुँच चुका है। हम
तलवार, काल और मोहलक बीमारियों से इतने
कमज़ोर हो गए हैं कि जब बाबल की फ़ौज शहर
पर हमला करेगी तो वह उसके क़ब्ज़े में आएगा।

जो कुछ भी तूने फ़रमाया था वह पेश आया है।
तू ख़ुद इसका गवाह है। 25लेकिन ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, कमाल है कि गो शहर को बाबल की
फ़ौज के हवाले किया जाएगा तो भी तू मुझसे
हमकलाम हुआ है कि चाँदी देकर खेत ख़रीद ले
और गवाहों से काररवाई की तसदीक़ करवा'।"

रब का जवाब

26तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल
हुआ, 27"देख, मैं रब और तमाम इनसानों का
ख़ुदा हूँ। तो फिर क्या कोई काम है जो मुझसे
नहीं हो सकता?" 28चुनाँचे रब फ़रमाता है,
"मैं इस शहर को बाबल और उसके बादशाह
नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दूँगा। वह ज़रूर उस
पर क़ब्ज़ा करेगा। 29बाबल के जो फ़ौजी इस
शहर पर हमला कर रहे हैं इसमें घुसकर सब
कुछ जला देंगे, सब कुछ नज़रे-आतिश करेंगे।
तब वह तमाम घर राख हो जाएंगे जिनकी छतों
पर लोगों ने बाल देवता के लिए बख़ूर जलाकर
और अजनबी माबूदों को मै की नज़रें पेश करके
मुझे तैश दिलाया।"

30रब फ़रमाता है, "इसराईल और यहूदाह के
क़बीले जवानी से लेकर आज तक वही कुछ
करते आए हैं जो मुझे नापसंद है। अपने हाथों
के काम से वह मुझे बार बार ग़ुस्सा दिलाते रहे हैं।
31यरूशलम की बुनियादें डालने से लेकर आज
तक इस शहर ने मुझे हद से ज़्यादा मुश्तइल कर
दिया है। अब लाज़िम है कि मैं उसे नज़रों से
दूर कर दूँ। 32क्योंकि इसराईल और यहूदाह के
बाशिंदों ने अपनी बुरी हरकतों से मुझे तैश दिलाया
है, ख़ाह बादशाह हो या मुलाज़िम, ख़ाह इमाम हो
या नबी, ख़ाह यहूदाह हो या यरूशलम। 33उन्होंने
अपना मुँह मुझसे फेरकर मेरी तरफ़ रुजू करने से
इनकार किया है। गो मैं उन्हें बार बार तालीम देता
रहा तो भी वह सुनने या मेरी तरबियत क़बूल करने
के लिए तैयार नहीं थे। 34न सिर्फ़ यह बल्कि जिस
घर पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है उसमें उन्होंने
अपने घिनौने बुतों को रखकर उस की बेहुरमती
की है। 35वादीए-बिन-हिन्नूम की ऊँची जगहों पर
उन्होंने बाल देवता की क़ुरबानगाहें तामीर कीं
ताकि वहाँ अपने बेटे-बेटियों को मलिक देवता के
लिए क़ुरबान करें। मैंने उन्हें ऐसी क़ाबिले-घिन
हरकतें करने का हुक्म नहीं दिया था, बल्कि मुझे
इसका ख़याल तक नहीं आया। यों उन्होंने यहूदाह
को गुनाह करने पर उकसाया है।

36इस वक़्त तुम कह रहे हो, 'यह शहर ज़रूर
शाहे-बाबल के क़ब्ज़े में आ जाएगा, क्योंकि
तलवार, काल और मोहलक बीमारियों ने हमें
कमज़ोर कर दिया है।' लेकिन अब शहर के बारे
में रब का फ़रमान सुनो, जो इसराईल का ख़ुदा
है!

37बेशक मैं बड़े तैश में आकर शहर के बाशिंदों
को मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा,
लेकिन मैं उन्हें उन जगहों से फिर जमा करके
वापस भी लाऊँगा ताकि वह दुबारा यहाँ सुकून
के साथ रह सकें। 38तब वह मेरी क़ौम होंगे, और
मैं उनका ख़ुदा हूँगा। 39मैं होने दूँगा कि वह सोच
और चाल-चलन में एक होकर हर वक़्त मेरा ख़ौफ़
मानेंगे। क्योंकि उन्हें मालूम होगा कि ऐसा करने
से हमें और हमारी औलाद को बरकत मिलेगी।

40मैं उनके साथ अबदी अहद बाँधकर वादा
करूँगा कि उन पर शफ़क़त करने से बाज़ नहीं
आऊँगा। साथ साथ मैं अपना ख़ौफ़ उनके दिलों
में डाल दूँगा ताकि वह मुझसे दूर न हो जाएँ।
41उन्हें बरकत देना मेरे लिए ख़ुशी का बाइस
होगा, और मैं वफ़ादारी और पूरे दिलो-जान से
उन्हें पनीरी की तरह इस मुल्क में दुबारा लगा
दूँगा।" 42क्योंकि रब फ़रमाता है, "मैं ही ने यह
बड़ी आफ़त इस क़ौम पर नाज़िल की, और मैं
ही उन्हें उन तमाम बरकतों से नवाज़ूँगा जिनका
वादा मैंने किया है। 43बेशक तुम इस वक़्त कहते
हो, 'हाय, हमारा मुल्क वीरानो-सुनसान है, उसमें
न इनसान और न हैवान रह गया है, क्योंकि
सब कुछ बाबल के हवाले कर दिया गया है।'
लेकिन मैं फ़रमाता हूँ कि पूरे मुल्क में दुबारा
खेत ख़रीदे 44और फ़रोख़्त किए जाएंगे। लोग

मामूल के मुताबिक़ इंतक़ालनामे लिखकर उन पर मुहर लगाएँगे और कारवाई की तसदीक़ के लिए गवाह बुलाएँगे। तमाम इलाक़े यानी बिनयमीन के क़बायली इलाक़े में, यरूशलम के देहात में, यहूदाह और पहाड़ी इलाक़े के शहरों में, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े के शहरों में और दश्ते-नजब के शहरों में ऐसा ही किया जाएगा। मैं ख़ुद उनकी बदनसीबी ख़त्म करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

यरूशलम में दुबारा ख़ुशी होगी

33 यरमियाह अब तक शाही मुहा-
फ़िज़ों के सहन में गिरिफ़्तार था कि
रब एक बार फिर उससे हमकलाम हुआ, 2“जो
सब कुछ ख़लक़ करता, तश्कील देता और क़ायम
रखता है उसका नाम रब है। यही रब फ़रमाता है,
3मुझे पुकार तो मैं तुझे जवाब में ऐसी अज़ीम
और नाक़ाबिले-फ़हम बातें बयान करूँगा जो तू
नहीं जानता।
4क्योंकि रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता
है कि तुमने इस शहर के मकानों बल्कि चंद
एक शाही मकानों को भी ढा दिया है ताकि
उनके पत्थरों और लकड़ी से फ़सील को मज़बूत
करो और शहर को दुश्मन के पुश्तों और तलवार
से बचाए रखो। 5गो तुम बाबल की फ़ौज से
लड़ना चाहते हो, लेकिन शहर के घर इसराईलियों
की लाशों से भर जाएंगे। क्योंकि उन्हीं पर
मैं अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। यरूशलम की
तमाम बेदीनी के बाइस मैंने अपना मुँह उससे छुपा
लिया है।
6लेकिन बाद में मैं उसे शफ़ा देकर उसके ज़ख़्म
भरने दूँगा, मैं उसके बाशिंदों को सेहत अता
करूँगा और उन पर कसरत की सलामती और
वफ़ादारी ज़ाहिर करूँगा। 7क्योंकि मैं यहूदाह और
इसराईल को बहाल करके उन्हें वैसे तामीर करूँगा
जैसे पहले थे। 8मैं उन्हें उनकी तमाम बेदीनी
से पाक-साफ़ करके उनकी तमाम सरकशी
और तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दूँगा। 9तब
यरूशलम पूरी दुनिया में मेरे लिए मुसर्रत, शोहरत,
तारीफ़ और जलाल का बाइस बनेगा। दुनिया के
तमाम ममालिक मेरी उस पर मेहरबानी देखकर
मुतअस्सिर हो जाएंगे। वह घबराकर काँप उठेंगे
जब उन्हें पता चलेगा कि मैंने यरूशलम को
कितनी बरकत और सुकून मुहैया किया है।
10तुम कहते हो, ‘हमारा शहर वीरानो-सुनसान
है। उसमें न इनसान, न हैवान रहते हैं।’ लेकिन
रब फ़रमाता है कि यरूशलम और यहूदाह के
दीगर शहरों की जो गलियाँ इस वक़्त वीरान और
इनसानो-हैवान से ख़ाली हैं, 11उनमें दुबारा ख़ुशी-
ओ-शादमानी, दूल्हे दुलहन की आवाज़ और रब
के घर में शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानियाँ पहुँचानेवालों
के गीत सुनाई देंगे। उस वक़्त वह गाएँगे, ‘रब्बुल-
अफ़वाज का शुक्र करो, क्योंकि रब भला है, और
उस की शफ़क़त अबदी है।’ क्योंकि मैं इस मुल्क
को पहले की तरह बहाल कर दूँगा। यह रब का
फ़रमान है।
12रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि फ़िल-
हाल यह मक़ाम वीरान और इनसानो-हैवान से
ख़ाली है। लेकिन आइंदा यहाँ और बाक़ी तमाम
शहरों में दुबारा ऐसी चरागाहें होंगी जहाँ गल्लाबान
अपने रेवड़ों को चराएँगे। 13तब पूरे मुल्क में
चरवाहे अपने रेवड़ों को गिनते और सँभालते हुए
नज़र आएँगे, ख़ाह पहाड़ी इलाक़े के शहरों या
मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में देखो, ख़ाह
दश्ते-नजब या बिनयमीन के क़बायली इलाक़े में
मालूम करो, ख़ाह यरूशलम के देहात या यहूदाह
के बाक़ी शहरों में दरियाफ़्त करो। यह रब का
फ़रमान है।

अबदी अहद का वादा

14रब फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त आनेवाला
है जब मैं वह अच्छा वादा पूरा करूँगा जो मैंने
इसराईल के घराने और यहूदाह के घराने से
किया है। 15उस वक़्त मैं दाऊद की नसल
से एक रास्तबाज़ कोंपल फूटने दूँगा, और
वही मुल्क में इनसाफ़ और रास्ती क़ायम
करेगा। 16उन दिनों में यहूदाह को छुटकारा

मिलेगा और यरूशलम पुरअमन ज़िंदगी गुज़ारेगा।
तब यरूशलम 'रब हमारी रास्ती' कहलाएगा।
17क्योंकि रब फ़रमाता है कि इसराईल के तख़्त
पर बैठनेवाला हमेशा ही दाऊद की नसल का
होगा। 18इसी तरह रब के घर में ख़िदमतगुज़ार
इमाम हमेशा ही लावी के क़बीले के होंगे। वही
मुतवातिर मेरे हुज़ूर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ
और ग़ल्ला और ज़बह की क़ुरबानियाँ पेश
करेंगे।"

19रब एक बार फिर यरमियाह से हम-
कलाम हुआ, 20"रब फ़रमाता है कि मैंने दिन
और रात से अहद बाँधा है कि वह मुक़र्ररा वक़्त
पर और तरतीबवार गुज़रें। कोई इस अहद को
तोड़ नहीं सकता। 21इसी तरह मैंने अपने ख़ादिम
दाऊद से भी अहद बाँधकर वादा किया कि
इसराईल का बादशाह हमेशा उसी की नसल
का होगा। नीज़, मैंने लावी के इमामों से भी
अहद बाँधकर वादा किया कि रब के घर में
ख़िदमतगुज़ार इमाम हमेशा लावी के क़बीले के
ही होंगे। रात और दिन से बँधे हुए अहद की
तरह इन अहदों को भी तोड़ा नहीं जा सकता।
22मैं अपने ख़ादिम दाऊद की औलाद और अपने
ख़िदमतगुज़ार लावियों को सितारों और समुंदर
की रेत जैसा बेशुमार बना दूँगा।"

23रब यरमियाह से एक बार फिर हम-
कलाम हुआ, 24"क्या तुझे लोगों की बातें मालूम
नहीं हुईं? यह कह रहे हैं, 'गो रब ने इसराईल
और यहूदाह को चुनकर अपनी क़ौम बना लिया
था, लेकिन अब उसने दोनों को रद्द कर दिया है।'
यों वह मेरी क़ौम को हक़ीर जानते हैं बल्कि इसे
अब से क़ौम ही नहीं समझते।" 25लेकिन रब
फ़रमाता है, "जो अहद मैंने दिन और रात से बाँधा
है वह मैं नहीं तोड़ूँगा, न कभी आसमानो-ज़मीन
के मुक़र्ररा उसूल मनसूख़ करूँगा। 26इसी तरह
यह मुमकिन ही नहीं कि मैं याक़ूब और अपने
ख़ादिम दाऊद की औलाद को कभी रद्द करूँ।
नहीं, मैं हमेशा ही दाऊद की नसल में से किसी को
तख़्त पर बिठाऊँगा ताकि वह इब्राहीम, इसहाक़
और याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करे, क्योंकि
मैं उन्हें बहाल करके उन पर तरस खाऊँगा।"

सिदक़ियाह बाबल की क़ैद में मर जाएगा

34 रब उस वक़्त यरमियाह से हम-
कलाम हुआ जब शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र अपनी पूरी फ़ौज लेकर यरूशलम
और यहूदाह के तमाम शहरों पर हमला कर रहा
था। उसके साथ दुनिया के उन तमाम ममालिक
और क़ौमों की फ़ौजें थीं जिन्हें उसने अपने ताबे
कर लिया था।

2"रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है
कि यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह के पास
जाकर उसे बता, रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर
यरूशलम को शाहे-बाबल के हवाले करने को हूँ,
और वह इसे नज़रे-आतिश कर देगा। 3तू भी
उसके हाथ से नहीं बचेगा बल्कि ज़रूर पकड़ा
जाएगा। तुझे उसके हवाले किया जाएगा, और तू
शाहे-बाबल को अपनी आँखों से देखेगा, वह तेरे
रूबरू तुझसे बात करेगा। फिर तुझे बाबल जाना
पड़ेगा। 4लेकिन ऐ सिदक़ियाह बादशाह, रब का
यह फ़रमान भी सुन! रब तेरे बारे में फ़रमाता है
कि तू तलवार से नहीं 5बल्कि तबई मौत मरेगा,
और लोग उसी तरह तेरी ताज़ीम में लकड़ी का
बड़ा ढेर बनाकर आग लगाएँगे जिस तरह तेरे
बापदादा के लिए करते आए हैं। वह तुझ पर भी
मातम करेंगे और कहेंगे, 'हाय, मेरे आक़ा!' यह
रब का फ़रमान है।"

6यरमियाह नबी ने सिदक़ियाह बादशाह को
यरूशलम में यह पैग़ाम सुनाया। 7उस वक़्त
बाबल की फ़ौज यरूशलम, लकीस और अज़ीक़ा
से लड़ रही थी। यहूदाह के तमाम क़िलाबंद शहरों
में से यही तीन अब तक क़ायम रहे थे।

ग़ुलामों के साथ बेवफ़ाई

8रब का कलाम एक बार फिर यरमियाह पर
नाज़िल हुआ। उस वक़्त सिदक़ियाह बादशाह ने
यरूशलम के बाशिंदों के साथ अहद बाँधा था कि

हम अपने हमवतन ग़ुलामों को आज़ाद कर देंगे।
9हर एक ने अपने हमवतन ग़ुलामों और लौंडियों
को आज़ाद करने का वादा किया था, क्योंकि
सब मुत्तफ़िक़ हुए थे कि हम अपने हमवतनों
को ग़ुलामी में नहीं रखेंगे। 10तमाम बुज़ुर्ग और
बाक़ी तमाम लोग यह करने पर राज़ी हुए थे। यह
अहद करने पर उन्होंने अपने ग़ुलामों को वाक़ई
आज़ाद कर दिया था। 11लेकिन बाद में वह अपना
इरादा बदलकर अपने आज़ाद किए हुए ग़ुलामों
को वापस लाए और उन्हें दुबारा अपने ग़ुलाम बना
लिया था। 12तब रब का कलाम यरमियाह पर
नाज़िल हुआ।

13"रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है,
'जब मैं तुम्हारे बापदादा को मिसर की ग़ुलामी से
निकाल लाया तो मैंने उनसे अहद बाँधा। उस की
एक शर्त यह थी 14कि जब किसी हमवतन ने
अपने आपको बेचकर छः साल तक तेरी ख़िदमत
की है तो लाज़िम है कि सातवें साल तू उसे
आज़ाद कर दे। यह शर्त तुम सब पर सादिक़
आती है। लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे बापदादा ने
न मेरी सुनी, न मेरी बात पर ध्यान दिया। 15अब
तुमने पछताकर वह कुछ किया जो मुझे पसंद था।
हर एक ने एलान किया कि हम अपने हमवतन
ग़ुलामों को आज़ाद कर देंगे। तुम उस घर में
आए जिस पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है और
अहद बाँधकर मेरे हुज़ूर उस वादे की तसदीक़
की। 16लेकिन अब तुमने अपना इरादा बदलकर
मेरे नाम की बेहुरमती की है। अपने ग़ुलामों और
लौंडियों को आज़ाद कर देने के बाद हर एक
उन्हें अपने पास वापस लाया है। पहले तुमने उन्हें
बताया कि जहाँ जी चाहो चले जाओ, और अब
तुमने उन्हें दुबारा ग़ुलाम बनने पर मजबूर किया
है।'

17चुनाँचे सुनो जो कुछ रब फ़रमाता है! 'तुमने
मेरी नहीं सुनी, क्योंकि तुमने अपने हमवतन
ग़ुलामों को आज़ाद नहीं छोड़ा। इसलिए अब
रब तुम्हें तलवार, मोहलक बीमारियों और काल
के लिए आज़ाद छोड़ देगा। तुम्हें देखकर दुनिया
के तमाम ममालिक के रोंगटे खड़े हो जाएंगे।'
यह रब का फ़रमान है। 18-19'देखो, यहूदाह
और यरूशलम के बुज़ुर्गों, दरबारियों, इमामों और
अवाम ने मेरे साथ अहद बाँधा। इसकी तसदीक़
करने के लिए वह एक बछड़े को दो हिस्सों में
तक़सीम करके उनके दरमियान से गुज़र गए। तो
भी उन्होंने अहद तोड़कर उस की शरायत पूरी न
कीं। चुनाँचे मैं होने दूँगा कि वह उस बछड़े की
मानिंद हो जाएँ जिसके दो हिस्सों में से वह गुज़र
गए हैं। 20मैं उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर
दूँगा, उन्हीं के हवाले जो उन्हें जान से मारने के
दरपै हैं। उनकी लाशें परिंदों और जंगली जानवरों
की ख़ुराक बन जाएँगी।

21मैं यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह और
उसके अफ़सरों को उनके दुश्मन के हवाले
कर दूँगा, उन्हीं के हवाले जो उन्हें जान से
मारने पर तुले हुए हैं। वह यक़ीनन शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र की फ़ौज के क़ब्ज़े में आ जाएंगे।
क्योंकि गो फ़ौजी इस वक़्त पीछे हट गए
हैं, 22लेकिन मेरे हुक्म पर वह वापस आकर
यरूशलम पर हमला करेंगे। और इस मरतबा वह
उस पर क़ब्ज़ा करके उसे नज़रे-आतिश कर देंगे।
मैं यहूदाह के शहरों को भी यों ख़ाक में मिला दूँगा
कि कोई उनमें नहीं रह सकेगा'।" यह रब का
फ़रमान है।

यरमियाह रैकाबियों को आज़माता है

35 जब यहूयक़ीम बिन यूसियाह अभी
यहूदाह का बादशाह था तो रब मुझसे
हमकलाम हुआ, 2"रैकाबी ख़ानदान के पास
जाकर उन्हें रब के घर के सहन के किसी कमरे
में आने की दावत दे। जब वह आएँ तो उन्हें मै
पिला दे।"

3चुनाँचे मैं याज़नियाह बिन यरमियाह बिन
हबस्सिनियाह के पास गया और उसे उसके
भाइयों और तमाम बेटों यानी रैकाबियों के पूरे
घराने समेत 4रब के घर में लाया। हम हनान
के बेटों के कमरे में बैठ गए। मर्दे-ख़ुदा हनान,

यिज्दलियाह का बेटा था। यह कमरा बुज़ुर्गों के
कमरे से मुलहिक़ और रब के घर के दरबान
मासियाह बिन सल्लूम के कमरे के ऊपर था।
5वहाँ मैंने मै के जाम और प्याले रैकाबी आदमियों
को पेश करके उनसे कहा, “आएँ, कुछ मै पी
लें।”

6लेकिन उन्होंने इनकार करके कहा, “हम मै
नहीं पीते, क्योंकि हमारे बाप यूनदब बिन रैकाब
ने हमें और हमारी औलाद को मै पीने से मना
किया है। 7उसने हमें यह हिदायत भी दी, ‘न
मकान तामीर करना, न बीज बोना और न अंगूर
का बाग़ लगाना। यह चीज़ें कभी भी तुम्हारी
मिलकियत में शामिल न हों, क्योंकि लाज़िम है
कि तुम हमेशा ख़ैमों में ज़िंदगी गुज़ारो। फिर तुम
लंबे अरसे तक उस मुल्क में रहोगे जिसमें तुम
मेहमान हो।’ 8चुनाँचे हम अपने बाप यूनदब बिन
रैकाब की इन तमाम हिदायात के ताबे रहते हैं।
न हम और न हमारी बीवियाँ या बच्चे कभी मै
पीते हैं। 9हम अपनी रिहाइश के लिए मकान नहीं
बनाते, और न अंगूर के बाग़, न खेत या फ़सलें
हमारी मिलकियत में होती हैं। 10इसके बजाए हम
आज तक ख़ैमों में रहते हैं। जो भी हिदायत हमारे
बाप यूनदब ने हमें दी उस पर हम पूरे उतरे हैं।
11हम सिर्फ़ आरिज़ी तौर पर शहर में ठहरे हुए हैं।
क्योंकि जब शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र इस मुल्क
में घुस आया तो हम बोले, ‘आएँ, हम यरूशलम
शहर में जाएँ ताकि बाबल और शाम की फ़ौजों
से बच जाएँ।’ हम सिर्फ़ इसी लिए यरूशलम में
ठहरे हुए हैं।”

12तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
13“रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है कि यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों
के पास जाकर कह, ‘तुम मेरी तरबियत क्यों
क़बूल नहीं करते? तुम मेरी क्यों नहीं सुनते?
14यूनदब बिन रैकाब पर ग़ौर करो। उसने अपनी
औलाद को मै पीने से मना किया, इसलिए उसका
घराना आज तक मै नहीं पीता। यह लोग अपने
बाप की हिदायात के ताबे रहते हैं। इसके मुक़ाबले
में तुम लोग क्या कर रहे हो? गो मैं बार बार तुमसे
हमकलाम हुआ तो भी तुमने मेरी नहीं सुनी।

15बार बार मैं अपने नबियों को तुम्हारे पास
भेजता रहा ताकि मेरे ख़ादिम तुम्हें आगाह करते
रहें कि हर एक अपनी बुरी राह तर्क करके
वापस आए! अपना चाल-चलन दुरुस्त करो और
अजनबी माबूदों की पैरवी करके उनकी ख़िदमत
मत करो! फिर तुम उस मुल्क में रहोगे जो
मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को बख़्श दिया
था। लेकिन तुमने न तवज्जुह दी, न मेरी सुनी।
16यूनदब बिन रैकाब की औलाद अपने बाप की
हिदायात पर पूरी उतरी है, लेकिन इस क़ौम ने
मेरी नहीं सुनी।’

17इसलिए रब जो लशकरों का और इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘सुनो! मैं यहूदाह पर और
यरूशलम के हर बाशिंदे पर वह तमाम आफ़त
नाज़िल करूँगा जिसका एलान मैंने किया है। गो मैं
उनसे हमकलाम हुआ तो भी उन्होंने न सुनी। मैंने
उन्हें बुलाया, लेकिन उन्होंने जवाब न दिया’।”

18लेकिन रैकाबियों से यरमियाह ने कहा,
“रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘तुम अपने बाप यूनदब के हुक्म पर
पूरे उतरकर उस की हर हिदायत और हर हुक्म
पर अमल करते हो।’ 19इसलिए रब्बुल-अफ़वाज
जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘यूनदब बिन
रैकाब की औलाद में से हमेशा कोई न कोई होगा
जो मेरे हुज़ूर ख़िदमत करेगा’।”

रब के घर में यरमियाह की किताब की तिलावत

36 यहूदाह के बादशाह यहूयक़ीम बिन
यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल
में रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ,
2“तूमार लेकर उसमें इसराईल, यहूदाह और
बाक़ी तमाम क़ौमों के बारे में वह तमाम पैग़ामात
क़लमबंद कर जो मैंने यूसियाह की हुकूमत से
लेकर आज तक तुझ पर नाज़िल किए हैं। 3शायद
यहूदाह के घराने में हर एक अपनी बुरी राह से

बाज़ आकर वापस आए अगर उस आफ़त की पूरी
ख़बर उन तक पहुँचे जो मैं इस क़ौम पर नाज़िल
करने को हूँ। फिर मैं उनकी बेदीनी और गुनाह को
मुआफ़ करूँगा।”

4चुनाँचे यरमियाह ने बारूक बिन नैरियाह
को बुलाकर उससे वह तमाम पैग़ामात तूमार
में लिखवाए जो रब ने उस पर नाज़िल किए
थे। 5फिर यरमियाह ने बारूक से कहा, “मुझे
नज़रबंद किया गया है, इसलिए मैं रब के घर
में नहीं जा सकता। 6लेकिन आप तो जा सकते
हैं। रोज़े के दिन यह तूमार अपने साथ लेकर रब
के घर में जाएँ। हाज़िरीन के सामने रब की उन
तमाम बातों को पढ़कर सुनाएँ जो मैंने आपसे
लिखवाई हैं। सबको तूमार की बातें सुनाएँ, उन्हें
भी जो यहूदाह की दीगर आबादियों से यहाँ पहुँचे
हैं। 7शायद वह इल्तिजा करें कि रब उन पर रहम
करे। शायद हर एक अपनी बुरी राह से बाज़
आकर वापस आए। क्योंकि जो ग़ज़ब इस क़ौम
पर नाज़िल होनेवाला है और जिसका एलान रब
कर चुका है वह बहुत सख़्त है।”

8बारूक बिन नैरियाह ने ऐसा ही किया।
यरमियाह नबी की हिदायत के मुताबिक़ उसने रब
के घर में तूमार में दर्ज रब के कलाम की तिलावत
की। 9उस वक़्त लोग रोज़ा रखे हुए थे, क्योंकि
बादशाह यहूयक़ीम बिन यूसियाह की हुकूमत के
पाँचवें साल और नवें महीने[a] में एलान किया गया
था कि यरूशलम के बाशिंदे और यहूदाह के दीगर
शहरों से आए हुए तमाम लोग रब के हुज़ूर रोज़ा
रखें। 10जब बारूक ने तूमार की तिलावत की तो
तमाम लोग हाज़िर थे। उस वक़्त वह रब के घर
में शाही मुहर्रिर साफ़न के बेटे जमरियाह के कमरे
में बैठा था। यह कमरा रब के घर के ऊपरवाले
सहन में था, और सहन का नया दरवाज़ा वहाँ से
दूर नहीं था।

11तूमार में दर्ज रब के तमाम पैग़ामात
सुनकर जमरियाह बिन साफ़न का बेटा
मीकायाह 12शाही महल में मीरमुंशी के
दफ़्तर में चला गया। वहाँ तमाम सरकारी
अफ़सर बैठे थे यानी इलीसमा मीरमुंशी,
दिलायाह बिन समायाह, इलनातन बिन
अकबोर, जमरियाह बिन साफ़न, सिदक़ि-
याह बिन हननियाह और बाक़ी तमाम मुलाज़िम।
13मीकायाह ने उन्हें सब कुछ सुनाया जो बारूक
ने तूमार की तिलावत करके पेश किया था।
14तब तमाम बुज़ुर्गों ने यहूदी बिन नतनियाह बिन
सलमियाह बिन कूशी को बारूक के पास भेजकर
उसे इत्तला दी, “जिस तूमार की तिलावत आपने
लोगों के सामने की उसे लेकर हमारे पास आएँ।”
चुनाँचे बारूक बिन नैरियाह हाथ में तूमार को थामे
हुए उनके पास आया।

15अफ़सरों ने कहा, “ज़रा बैठकर हमारे लिए
भी तूमार की तिलावत करें।” चुनाँचे बारूक ने
उन्हें सब कुछ पढ़कर सुना दिया। 16यरमियाह
की तमाम पेशगोइयाँ सुनते ही वह घबरा गए
और डर के मारे एक दूसरे को देखने लगे। फिर
उन्होंने बारूक से कहा, “लाज़िम है कि हम
बादशाह को इन तमाम बातों से आगाह करें।
17हमें ज़रा बताएँ, आपने यह तमाम बातें किस
तरह क़लमबंद कीं? क्या यरमियाह ने सब कुछ
ज़बानी आपको पेश किया?” 18बारूक ने जवाब
दिया, “जी, वह मुझे यह तमाम बातें सुनाता गया,
और मैं सब कुछ स्याही से इस तूमार में दर्ज करता
गया।”

19यह सुनकर अफ़सरों ने बारूक से कहा,
“अब चले जाएँ, आप और यरमियाह दोनों छुप
जाएँ! किसी को भी पता न चले कि आप कहाँ
हैं।”

यहूयक़ीम तूमार को जला देता है

20अफ़सरों ने तूमार को शाही मीरमुंशी
इलीसमा के दफ़्तर में महफ़ूज़ रख दिया, फिर
दरबार में दाख़िल होकर बादशाह को सब कुछ
बता दिया। 21बादशाह ने यहूदी को तूमार ले

[a]नवंबर ता दिसंबर।

आने का हुक्म दिया। यहूदी, इलीसमा मीरमुंशी के दफ़्तर से तूमार को लेकर बादशाह और तमाम अफ़सरों की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

22चूँकि नवाँ महीना[a] था इसलिए बादशाह महल के उस हिस्से में बैठा था जो सर्दियों के मौसम के लिए बनाया गया था। उसके सामने पड़ी अंगीठी में आग जल रही थी। 23जब भी
यहूदी तीन या चार कालम पढ़ने से फ़ारिग़ हुआ तो बादशाह ने मुंशी की छुरी लेकर उन्हें तूमार से काट लिया और आग में फेंक दिया। यहूदी पढ़ता और बादशाह काटता गया। आख़िरकार पूरा तूमार राख हो गया था।

24गो बादशाह और उसके तमाम मुला-
ज़िमों ने यह तमाम बातें सुनीं तो भी न वह घबराए, न उन्होंने परेशान होकर अपने कपड़े
फाड़े। 25और गो इलनातन, दिलायाह और
जमरियाह ने बादशाह से मिन्नत की कि वह तूमार को न जलाए तो भी उसने उनकी न मानी
26बल्कि बाद में यरहमियेल शाहज़ादा, सिरायाह बिन अज़रियेल और सलमियाह बिन अबदियेल को भेजा ताकि वह बारूक मुंशी और यरमियाह नबी को गिरिफ़्तार करें। लेकिन रब ने उन्हें छुपाए रखा था।

अल्लाह का कलाम दुबारा क़लमबंद किया जाता है

27बादशाह के तूमार को जलाने के बाद रब यरमियाह से दुबारा हमकलाम हुआ,

28“नया तूमार लेकर उसमें वही तमाम पैग़ामात क़लमबंद कर जो उस तूमार में दर्ज थे जिसे शाहे-यहूदाह ने जला दिया था। 29साथ
साथ यहूयक़ीम के बारे में एलान कर कि रब फ़रमाता है, ‘तूने तूमार को जलाकर यरमियाह से शिकायत की कि तूने इस किताब में क्यों लिखा है कि शाहे-बाबल ज़रूर आकर इस मुल्क को तबाह करेगा, और इसमें न इनसान, न हैवान रहेगा?’
30चुनाँचे यहूदाह के बादशाह के बारे में रब का फ़ैसला सुन!

आइंदा उसके ख़ानदान का कोई भी फ़रद दाऊद के तख़्त पर नहीं बैठेगा। यहूयक़ीम की लाश बाहर फेंकी जाएगी, और वहाँ वह खुले मैदान में पड़ी रहेगी। कोई भी उसे दिन की तपती गरमी या रात की शदीद सर्दी से बचाए नहीं
रखेगा। 31मैं उसे उसके बच्चों और मुलाज़िमों समेत उनकी बेदीनी का मुनासिब अज्र दूँगा। क्योंकि मैं उन पर और यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों पर वह तमाम आफ़त नाज़िल करूँगा जिसका एलान मैं कर चुका हूँ। अफ़सोस, उन्होंने मेरी नहीं सुनी।”

32चुनाँचे यरमियाह ने नया तूमार लेकर उसे बारूक बिन नैरियाह को दे दिया। फिर उसने बारूक मुंशी से वह तमाम पैग़ामात दुबारा लिखवाए जो उस तूमार में दर्ज थे जिसे शाहे-यहूदाह यहूयक़ीम ने जला दिया था। उनके अलावा मज़ीद बहुत-से पैग़ामात का इज़ाफ़ा हुआ।

[a]तक़रीबन दिसंबर।

मिसर सिदक़ियाह की मदद नहीं कर सकता

37 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन[a] बिन
यहूयक़ीम को तख़्त से उतारने के बाद
शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र ने सिदक़ियाह बिन
यूसियाह को तख़्त पर बिठा दिया। 2लेकिन न
सिदक़ियाह, न उसके अफ़सरों या अवाम ने उन
पैग़ामात पर ध्यान दिया जो रब ने यरमियाह नबी
की मारिफ़त फ़रमाए थे।

3एक दिन सिदक़ियाह बादशाह ने यहूकल बिन
सलमियाह और इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह
को यरमियाह के पास भेजा ताकि वह गुज़ारिश
करें, "मेहरबानी करके रब हमारे ख़ुदा से हमारी
शफ़ाअत करें।"

4यरमियाह को अब तक क़ैद में डाला नहीं गया
था, इसलिए वह आज़ादी से लोगों में चल-फिर
सकता था। 5उस वक़्त फ़िरौन की फ़ौज मिसर
से निकलकर इसराईल की तरफ़ बढ़ रही थी।
जब यरूशलम का मुहासरा करनेवाली बाबल की
फ़ौज को यह ख़बर मिली तो वह वहाँ से पीछे हट
गई। 6तब रब यरमियाह नबी से हमकलाम हुआ,

7"रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि शाहे-
यहूदाह ने तुम्हें मेरी मरज़ी दरियाफ़्त करने भेजा
है। उसे जवाब दो कि फ़िरौन की जो फ़ौज तुम्हारी
मदद करने के लिए निकल आई है वह अपने
मुल्क वापस लौटने को है। 8फिर बाबल के फ़ौजी
वापस आकर यरूशलम पर हमला करेंगे। वह
इसे अपने क़ब्ज़े में लेकर नज़रे-आतिश कर देंगे।
9क्योंकि रब फ़रमाता है कि यह सोचकर धोका
मत खाओ कि बाबल की फ़ौज ज़रूर हमें छोड़कर
चली जाएगी। ऐसा कभी नहीं होगा! 10ख़ाह तुम
हमलाआवर पूरी बाबली फ़ौज को शिकस्त क्यों
न देते और सिर्फ़ ज़ख़मी आदमी बचे रहते तो भी
तुम नाकाम रहते, तो भी यह बाज़ एक आदमी
अपने ख़ैमों में से निकलकर यरूशलम को नज़रे-
आतिश करते।"

यरमियाह को क़ैद में डाला जाता है

11जब फ़िरौन की फ़ौज इसराईल की तरफ़
बढ़ने लगी तो बाबल के फ़ौजी यरूशलम को
छोड़कर पीछे हट गए। 12उन दिनों में यरमियाह
बिनयमीन के क़बायली इलाक़े के लिए रवाना
हुआ, क्योंकि वह अपने रिश्तेदारों के साथ
कोई मौरूसी मिलकियत तक़सीम करना चाहता
था। लेकिन जब वह शहर से निकलते हुए
13बिनयमीन के दरवाज़े तक पहुँच गया तो
पहरेदारों का एक अफ़सर उसे पकड़कर कहने
लगा, "तुम भगोड़े हो! तुम बाबल की फ़ौज के
पास जाना चाहते हो!" अफ़सर का नाम इरियाह
बिन सलमियाह बिन हननियाह था। 14यरमियाह
ने एतराज़ किया, "झूट! मैं भगोड़ा नहीं हूँ!
मैं बाबल की फ़ौज के पास नहीं जा रहा।"
लेकिन इरियाह न माना बल्कि उसे गिरिफ़्तार
करके सरकारी अफ़सरों के पास ले गया। 15उसे
देखकर उन्हें यरमियाह पर ग़ुस्सा आया, और वह
उस की पिटाई कराकर उसे शाही मुहर्रिर यूनतन
के घर में लाए जिसे उन्होंने क़ैदख़ाना बनाया
था। 16वहाँ उसे एक ज़मीनदोज़ कमरे में डाल
दिया गया जो पहले हौज़ था और जिसकी छत
मेहराबदार थी। वह मुतअद्दिद दिन उसमें बंद रहा।

17एक दिन सिदक़ियाह ने उसे महल में
बुलाया। वहाँ अलहदगी में उससे पूछा, "क्या रब
की तरफ़ से मेरे लिए कोई पैग़ाम है?" यरमियाह
ने जवाब दिया, "जी हाँ। आपको शाहे-बाबल
के हवाले किया जाएगा।" 18तब यरमियाह ने
सिदक़ियाह बादशाह से अपनी बात जारी रखकर
कहा, "मुझसे क्या जुर्म हुआ है? मैंने आपके
अफ़सरों और अवाम का क्या क़ुसूर किया है कि
मुझे जेल में डलवा दिया? 19आपके वह नबी
कहाँ हैं जिन्होंने आपको पेशगोई सुनाई कि शाहे-
बाबल न आप पर, न इस मुल्क पर हमला करेगा?
20ऐ मेरे मालिक और बादशाह, मेहरबानी करके
मेरी बात सुनें, मेरी गुज़ारिश पूरी करें! मुझे

[a]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल
है।

यूनतन मुहर्रिर के घर में वापस न भेजें, वरना मैं मर जाऊँगा।”

21तब सिदक़ियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि यरमियाह को शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में रखा जाए। उसने यह हिदायत भी दी कि जब तक शहर में रोटी दस्तयाब हो यरमियाह को नानबाई-गली से हर रोज़ एक रोटी मिलती रहे। चुनाँचे यरमियाह मुहाफ़िज़ों के सहन में रहने लगा।

यरमियाह को सज़ाए- मौत देने का इरादा

38 सफ़तियाह बिन मत्तान, जिद-लियाह बिन फ़शहूर, यूकल बिन सलमियाह और फ़शहूर बिन मलकियाह को मालूम हुआ कि यरमियाह तमाम लोगों को बता रहा है 2कि रब फ़रमाता है,

“अगर तुम तलवार, काल या वबा से मरना चाहो तो इस शहर में रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान को बचाना चाहो तो शहर से निकलकर अपने आपको बाबल की फ़ौज के हवाले करो। जो कोई यह करे उस की जान छूट जाएगी।[a] 3क्योंकि रब फ़रमाता है कि यरूशलम को ज़रूर शाहे-बाबल की फ़ौज के हवाले किया जाएगा। वह यक़ीनन उस पर क़ब्ज़ा करेगा।”

4तब मज़कूरा अफ़सरों ने बादशाह से कहा, “इस आदमी को सज़ाए-मौत दीनी चाहिए, क्योंकि यह शहर में बचे हुए फ़ौजियों और बाक़ी तमाम लोगों को ऐसी बातें बता रहा है जिनसे वह हिम्मत हार गए हैं। यह आदमी क़ौम की बहबूदी नहीं चाहता बल्कि उसे मुसीबत में डालने पर तुला रहता है।”

5सिदक़ियाह बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है, वह आपके हाथ में है। मैं आपको रोक नहीं सकता।” 6तब उन्होंने यरमियाह को पकड़कर मलकियाह शाहज़ादा के हौज़ में डाल दिया। यह हौज़ शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में था। रस्सों के ज़रीए उन्होंने यरमियाह को उतार दिया। हौज़ में पानी नहीं था बल्कि सिर्फ़ कीचड़, और यरमियाह कीचड़ में धँस गया।

7लेकिन एथोपिया के एक दरबारी बनाम अबद-मलिक को पता चला कि यरमियाह के साथ क्या कुछ किया जा रहा है। जब बादशाह शहर के दरवाज़े बनाम बिनयमीन में कचहरी लगाए बैठा था 8तो अबद-मलिक शाही महल से निकलकर उसके पास गया और कहा, 9“मेरे आक़ा और बादशाह, जो सुलूक इन आदमियों ने यरमियाह के साथ किया है वह निहायत बुरा है। उन्होंने उसे एक हौज़ में फेंक दिया है जहाँ वह भूका मरने को है। क्योंकि शहर में रोटी ख़त्म हो गई है।”

10यह सुनकर बादशाह ने अबद-मलिक को हुक्म दिया, “इससे पहले कि यरमियाह मर जाए यहाँ से 30 आदमियों को लेकर नबी को हौज़ से निकाल दें।” 11अबद-मलिक आदमियों को अपने साथ लेकर शाही महल के गोदाम के नीचे के एक कमरे में गया। वहाँ से उसने कुछ पुराने चीथड़े और घिसे-फटे कपड़े चुनकर उन्हें रस्सों के ज़रीए हौज़ में यरमियाह तक उतार दिया। 12अबद-मलिक बोला, “रस्से बाँधने से पहले यह पुराने चीथड़े और घिसे-फटे कपड़े बग़ल में रखें।” यरमियाह ने ऐसा ही किया, 13तो वह उसे रस्सों से खींचकर हौज़ से निकाल लाए। इसके बाद यरमियाह शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में रहा।

सिदक़ियाह को आख़िरी मरतबा आगाह किया जाता है

14एक दिन सिदक़ियाह बादशाह ने यर-मियाह को रब के घर के तीसरे दरवाज़े के पास बुलाकर उससे कहा, “मैं आपसे एक बात दरियाफ़्त करना चाहता हूँ। मुझे इसका साफ़ जवाब दें, कोई भी बात मुझसे मत छुपाएँ।” 15यरमियाह ने एतराज़ किया, “अगर मैं आपको साफ़ जवाब दूँ तो आप मुझे मार डालेंगे। और

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

अगर मैं आपको मशवरा दूँ भी तो आप उसे
क़बूल नहीं करेंगे।” 16तब सिदक़ियाह बादशाह
ने अलहदगी में क़सम खाकर यरमियाह से वादा
किया, “रब की हयात की क़सम जिसने हमें जान
दी है, न मैं आपको मार डालूँगा, न आपके जानी
दुश्मनों के हवाले करूँगा।”

17तब यरमियाह बोला, “रब जो लशकरों का
और इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘अपने
आपको शाहे-बाबल के अफ़सरान के हवाले कर।
फिर तेरी जान छूट जाएगी और यह शहर नज़रे-
आतिश नहीं हो जाएगा। तू और तेरा ख़ानदान
जीता रहेगा। 18दूसरी सूरत में इस शहर को
बाबल के हवाले किया जाएगा और फ़ौजी इसे
नज़रे-आतिश करेंगे। तू भी उनके हाथ से नहीं
बचेगा’।”

19लेकिन सिदक़ियाह बादशाह ने एतराज़
किया, “मुझे उन हमवतनों से डर लगता है जो
ग़द्दारी करके बाबल की फ़ौज के पास भाग गए
हैं। हो सकता है कि बाबल के फ़ौजी मुझे उनके
हवाले करें और वह मेरे साथ बदसुलूकी करें।”
20यरमियाह ने जवाब दिया, “वह आपको उनके
हवाले नहीं करेंगे। रब की सुनकर वह कुछ करें जो
मैंने आपको बताया है। फिर आपकी सलामती
होगी और आपकी जान छूट जाएगी। 21लेकिन
अगर आप शहर से निकलकर हथियार डालने के
लिए तैयार नहीं हैं तो फिर यह पैग़ाम सुनें जो
रब ने मुझ पर ज़ाहिर किया है! 22शाही महल
में जितनी ख़वातीन बच गई हैं उन सबको शाहे-
बाबल के अफ़सरों के पास पहुँचाया जाएगा। तब
यह ख़वातीन आपके बारे में कहेंगी, ‘हाय, जिन
आदमियों पर तू पूरा एतमाद रखता था वह फ़रेब
देकर तुझ पर ग़ालिब आ गए हैं। तेरे पाँव दलदल
में धँस गए हैं, लेकिन यह लोग ग़ायब हो गए हैं।’
23हाँ, तेरे तमाम बाल-बच्चों को बाहर बाबल की
फ़ौज के पास लाया जाएगा। तू ख़ुद भी उनके
हाथ से नहीं बचेगा बल्कि शाहे-बाबल तुझे पकड़
लेगा। यह शहर नज़रे-आतिश हो जाएगा।”

24फिर सिदक़ियाह ने यरमियाह से कहा,
“ख़बरदार! किसी को भी यह मालूम न हो कि
हमने क्या क्या बातें की हैं, वरना आप मर जाएंगे।
25जब मेरे अफ़सरों को पता चले कि मेरी आपसे
गुफ़्तगू हुई है तो वह आपके पास आकर पूछेंगे,
‘तुमने बादशाह से क्या बात की, और बादशाह ने
तुमसे क्या कहा? हमें साफ़ जवाब दो और झूट
न बोलो, वरना हम तुम्हें मार डालेंगे।’ 26जब वह
इस तरह की बातें करेंगे तो उन्हें सिर्फ़ इतना-सा
बताएँ, ‘मैं बादशाह से मिन्नत कर रहा था कि वह
मुझे यूनतन के घर में वापस न भेजें, वरना मैं मर
जाऊँगा’।”

27ऐसा ही हुआ। तमाम सरकारी अफ़सर
यरमियाह के पास आए और उससे सवाल करने
लगे। लेकिन उसने उन्हें सिर्फ़ वह कुछ बताया
जो बादशाह ने उसे कहने को कहा था। तब वह
ख़ामोश हो गए, क्योंकि किसी ने भी उस की
बादशाह से गुफ़्तगू नहीं सुनी थी।

28इसके बाद यरमियाह यरूशलम की शिकस्त
तक शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में क़ैदी रहा।

यरूशलम की शिकस्त

39 यरूशलम यों दुश्मन के हाथ में आया :
यहूदाह के बादशाह के नवें साल और
10वें महीने[a] में शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र अपनी
तमाम फ़ौज लेकर यरूशलम पहुँचा और शहर का
मुहासरा करने लगा। 2सिदक़ियाह के 11वें साल
के चौथे महीने और नवें दिन[b] दुश्मन ने फ़सील में
रख़ना डाल दिया। 3तब नबूकदनज़्ज़र के तमाम
आला अफ़सर शहर में आकर उसके दरमियानी
दरवाज़े में बैठ गए। उनमें यह शामिल थे : नैरगल-
सराज़र समगर, नबू-सर-सकीम जो रब-सारीस
था, नैरगल-सराज़र जो रब-माग था और शाहे-
बाबल के बाक़ी बुज़ुर्ग।

[a]दिसंबर ता जनवरी।

[b]18 जुलाई।

4उन्हें देखकर यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह और उसके तमाम फ़ौजी भाग गए। रात के वक़्त वह फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़ के साथ मुलहिक़ दो दीवारों के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ़ दौड़ने लगे, 5लेकिन बाबल के फ़ौजियों ने उनका ताक़्क़ुब करके सिदक़ियाह को यरीहू के मैदानी इलाक़े में पकड़ लिया। फिर उसे मुल्के-हमात के शहर रिबला में शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र के पास लाया गया, और वहीं उसने सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर किया। 6सिदक़ियाह के देखते देखते शाहे-बाबल ने रिबला में उसके बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ उसने यहूदाह के तमाम बुज़ुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया। 7फिर उसने सिदक़ियाह की आँखें निकलवाकर उसे पीतल की ज़ंजीरों में जकड़ लिया और बाबल को ले जाने के लिए महफ़ूज़ रखा।

8बाबल के फ़ौजियों ने शाही महल और दीगर लोगों के घरों को जलाकर यरूशलम की फ़सील को गिरा दिया। 9शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान ने सबको जिलावतन कर दिया जो यरूशलम और यहूदाह में पीछे रह गए थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान ग़द्दारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे। 10लेकिन नबूज़रादान ने सबसे निचले तबक़े के बाज़ लोगों को मुल्के-यहूदाह में छोड़ दिया, ऐसे लोग जिनके पास कुछ नहीं था। उन्हें उसने उस वक़्त अंगूर के बाग़ और खेत दिए।

11-12नबूकदनज़्ज़र बादशाह ने शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान को हुक्म दिया, "यरमियाह को अपने पास रखें। उसका ख़याल रखें। उसे नुक़सान न पहुँचाएँ बल्कि जो भी दरख़ास्त वह करे उसे पूरा करें।"

13चुनाँचे शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान ने किसी को यरमियाह के पास भेजा। उस वक़्त नबूशज़बान जो रब-सारीस था, नैरगल-सराज़र जो रब-माग था और शाहे-बाबल के बाक़ी अफ़सर नबूज़रादान के पास थे। 14यरमियाह अब तक शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में गिरिफ़्तार था। उन्होंने हुक्म दिया कि उसे वहाँ से निकालकर जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न के हवाले कर दिया जाए ताकि वह उसे उसके अपने घर पहुँचा दे। यों यरमियाह अपने लोगों के दरमियान बसने लगा।

अबद-मलिक के लिए ख़ुशख़बरी

15जब यरमियाह अभी शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में गिरिफ़्तार था तो रब उससे हमकलाम हुआ,

16"जाकर एथोपिया के अबद-मलिक को बता, 'रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि देख, मैं इस शहर के साथ वह सब कुछ करने को हूँ जिसका एलान मैंने किया था। मैं उस पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि उसे नुक़सान पहुँचाऊँगा। तू अपनी आँखों से यह देखेगा। 17लेकिन रब फ़रमाता है कि तुझे मैं उस दिन छुटकारा दूँगा, तुझे उनके हवाले नहीं किया जाएगा जिनसे तू डरता है। 18मैं ख़ुद तुझे बचाऊँगा। चूँकि तूने मुझ पर भरोसा किया इसलिए तू तलवार की ज़द में नहीं आएगा बल्कि तेरी जान छूट जाएगी।[a] यह रब का फ़रमान है'।"

यरमियाह को आज़ाद किया जाता है

40 आज़ाद होने के बाद भी रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान ने उसे रामा में रिहा किया था। क्योंकि जब यरूशलम और बाक़ी यहूदाह के क़ैदियों को मुल्के-बाबल में ले जाने के लिए जमा किया गया तो मालूम हुआ कि यरमियाह भी ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ उनमें शामिल है। 2तब नबूज़रादान ने यरमियाह को बुलाकर उससे कहा, "रब आपके

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : तू ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

ख़ुदा ने एलान किया था कि इस जगह पर आफ़त
आएगी। 3और अब वह यह आफ़त उसी तरह ही
लाया जिस तरह उसने फ़रमाया था। सब कुछ
इसलिए हुआ कि आपकी क़ौम रब का गुनाह
करती रही और उस की न सुनी। 4लेकिन आज
मैं वह ज़ंजीरें खोल देता हूँ जिनसे आपके हाथ
जकड़े हुए हैं। आप आज़ाद हैं। अगर चाहें तो मेरे
साथ बाबल जाएँ। तब मैं ही आपकी निगरानी
करूँगा। बाक़ी आपकी मरज़ी। अगर यहीं रहना
पसंद करेंगे तो यहीं रहें। पूरे मुल्क में जहाँ भी
जाना चाहें जाएँ। कोई आपको नहीं रोकेगा।”

5यरमियाह अब तक झिजक रहा था,
इसलिए नबूज़रादान ने कहा, “फिर जिदलि-
याह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न के पास चले
जाएँ! शाहे-बाबल ने उसे सूबा यहूदाह के शहरों
पर मुक़र्रर किया है। उसके साथ रहें। या फिर जहाँ
भी रहना पसंद करें वहीं रहें।”

नबूज़रादान ने यरमियाह को कुछ ख़ुराक
और एक तोहफ़ा देकर उसे रुख़सत कर दिया।
6जिदलियाह मिसफ़ाह में ठहरा हुआ था।
यरमियाह उसके पास जाकर मुल्क के बचे हुए
लोगों के बीच में बसने लगा।

जिदलियाह को क़त्ल करने की साज़िशें

7देहात में अब तक यहूदाह के कुछ फ़ौजी
अफ़सर अपने दस्तों समेत छुपे रहते थे। जब
उन्हें ख़बर मिली कि शाहे-बाबल ने जिदलियाह
बिन अख़ीक़ाम को यहूदाह का गवर्नर बनाकर उन
ग़रीब आदमियों और बाल-बच्चों पर मुक़र्रर किया
है जो जिलावतन नहीं हुए हैं 8तो वह मिसफ़ाह
में जिदलियाह के पास आए। अफ़सरों के नाम
इसमाईल बिन नतनियाह, क़रीह के बेटे यूहनान
और यूनतन, सिरायाह बिन तनहूमत, ईफी
नतूफ़ाती के बेटे और याज़नियाह बिन माकाती
थे। उनके फ़ौजी भी साथ आए। 9जिदलियाह
बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न ने क़सम खाकर
उनसे वादा किया, “बाबल के ताबे हो जाने से
मत डरना! मुल्क में आबाद होकर शाहे-बाबल
की ख़िदमत करें तो आपकी सलामती होगी।
10मैं ख़ुद मिसफ़ाह में ठहरकर आपकी सिफ़ारिश
करूँगा जब बाबल के नुमाइंदे आएँगे। इतने में
अंगूर, मौसमे-गरमा का फल और ज़ैतून की
फ़सलें जमा करके अपने बरतनों में महफ़ूज़ रखें।
उन शहरों में आबाद रहें जिन पर आपने क़ब्ज़ा
कर लिया है।”

11यहूदाह के मुतअद्दिद बाशिंदे मोआब,
अम्मोन, अदोम और दीगर पड़ोसी ममालिक
में हिजरत कर गए थे। अब जब उन्हें इत्तला
मिली कि शाहे-बाबल ने कुछ बचे हुए लोगों को
यहूदाह में छोड़कर जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम
बिन साफ़न को गवर्नर बना दिया है 12तो वह
सब यहूदाह में वापस आए। जिन ममालिक में
भी वह मुंतशिर हुए थे वहाँ से वह मिसफ़ाह आए
ताकि जिदलियाह से मिलें। उस मौसमे-गरमा में
वह अंगूर और बाक़ी फल की बड़ी फ़सल जमा
कर सके।

13एक दिन यूहनान बिन क़रीह और वह तमाम
फ़ौजी अफ़सर जो अब तक देहात में ठहरे हुए
थे जिदलियाह से मिलने आए। 14मिसफ़ाह में
पहुँचकर वह जिदलियाह से कहने लगे, “क्या
आपको नहीं मालूम कि अम्मोन के बादशाह
बालीस ने इसमाईल बिन नतनियाह को आपको
क़त्ल करने के लिए भेजा है?” लेकिन
जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम ने उनकी बात का
यक़ीन न किया। 15तब यूहनान बिन क़रीह
मिसफ़ाह आया और अलहदगी में जिदलियाह से
मिला। वह बोला, “मुझे इसमाईल बिन नतनियाह
के पास जाकर उसे मार देने की इजाज़त दें। किसी
को भी पता नहीं चलेगा। क्या ज़रूरत है कि वह
आपको क़त्ल करे? अगर वह इसमें कामयाब हो
जाए तो आपके पास जमाशुदा हमवतन सबके
सब मुंतशिर हो जाएंगे और यहूदाह का बचा
हुआ हिस्सा हलाक हो जाएगा।” 16जिदलियाह
ने यूहनान को डाँटकर कहा, “ऐसा मत करना!
जो कुछ आप इसमाईल के बारे में बता रहे हैं वह
झूट है।”

इसमाईल जिदलियाह गवर्नर को क़त्ल करता है

41 इसमाईल बिन नतनियाह बिन इलीसमा शाही नसल का था और पहले शाहे-यहूदाह का आला अफ़सर था। सातवें महीने[a] में वह दस आदमियों को अपने साथ लेकर मिसफ़ाह में जिदलियाह से मिलने आया। जब वह मिलकर खाना खा रहे थे
2तो इसमाईल और उसके दस आदमी अचानक उठे और अपनी तलवारों को खींचकर जिदलियाह को मार डाला। यों इसमाईल ने उस आदमी को क़त्ल किया जिसे बाबल के बादशाह ने सूबा यहूदाह पर मुक़र्रर किया था।
3उसने मिसफ़ाह में जिदलियाह के साथ रहनेवाले तमाम हमवतनों को भी क़त्ल किया और वहाँ ठहरनेवाले बाबल के फ़ौजियों को भी।

4अगले दिन जब किसी को मालूम नहीं था कि जिदलियाह को क़त्ल किया गया है
5तो 80 आदमी वहाँ पहुँचे जो सिकम, सैला और सामरिया से आकर रब के तबाहशुदा घर में उस की परस्तिश करने जा रहे थे। उनके पास ग़ल्ला और बख़ूर की क़ुरबानियाँ थीं, और उन्होंने ग़म के मारे अपनी दाढ़ियाँ मुँडवाकर अपने कपड़े फाड़ लिए और अपनी जिल्द को ज़ख़मी कर दिया था।
6इसमाईल रोते रोते मिसफ़ाह से निकलकर उनसे मिलने आया। जब वह उनके पास पहुँचा तो कहने लगा, "जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम के पास आओ और देखो कि क्या हुआ है!"

7ज्योंही वह शहर में दाख़िल हुए तो इसमाईल और उसके साथियों ने उन्हें क़त्ल करके एक हौज़ में फेंक दिया।
8सिर्फ़ दस आदमी बच गए जब उन्होंने इसमाईल से कहा, "हमें मत क़त्ल करना, क्योंकि हमारे पास गंदुम, जौ और शहद के ज़ख़ीरे हैं जो हमने खुले मैदान में कहीं छुपा रखे हैं।" यह सुनकर उसने उन्हें दूसरों की तरह न मारा बल्कि ज़िंदा छोड़ा।

9जिस हौज़ में इसमाईल ने उन आदमियों की लाशें फेंक दीं जो उसने जिदलियाह के मामले में मार डाले थे उसे यहूदाह के बादशाह आसा ने बनवाया था—उस वक़्त जब वह इसराईली बादशाह बाशा की वजह से मिसफ़ाह को मज़बूत बना रहा था। इसमाईल ने इसी हौज़ को मक़तूलों से भर दिया।
10मिसफ़ाह के बाक़ी लोगों को उसने क़ैदी बना लिया। उनमें यहूदाह के बादशाह की बेटियाँ और बाक़ी वह तमाम लोग शामिल थे जिन पर शाही मुहाफ़िज़ों के सरदार नबूज़रादान ने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम को मुक़र्रर किया था। फिर इसमाईल उन सबको अपने साथ लेकर मुल्के-अम्मोन के लिए रवाना हुआ।

11लेकिन यूहनान बिन क़रीह और उसके साथी अफ़सरों को इत्तला दी गई कि इसमाईल से क्या जुर्म हुआ है।
12तब वह अपने तमाम फ़ौजियों को जमा करके इसमाईल से लड़ने के लिए निकले और उसका ताक़्क़ुब करते करते उसे जिबऊन के जोहड़ के पास जा लिया।
13ज्योंही इसमाईल के क़ैदियों ने यूहनान और उसके अफ़सरों को देखा तो वह ख़ुश हुए।
14सबने इसमाईल को छोड़ दिया और मुड़कर यूहनान के पास भाग आए।
15इसमाईल आठ साथियों समेत फ़रार हुआ और यूहनान के हाथ से बचकर मुल्के-अम्मोन में चला गया।

16यों मिसफ़ाह के बचे हुए तमाम लोग जिबऊन में यूहनान और उसके साथी अफ़सरों के ज़ेरे-निगरानी आए। उनमें वह तमाम फ़ौजी, ख़वातीन, बच्चे और दरबारी शामिल थे जिन्हें इसमाईल ने जिदलियाह को क़त्ल करने के बाद क़ैदी बनाया था।
17लेकिन वह मिसफ़ाह वापस न गए बल्कि आगे चलते चलते बैत-लहम के क़रीब के गाँव बनाम सराय-किमहाम में रुक गए। वहाँ वह मिसर के लिए रवाना होने की तैयारियाँ करने लगे,
18क्योंकि वह बाबल के इंतक़ाम से डरते थे, इसलिए कि जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम को

[a]सितंबर ता अक्तूबर।

क़त्ल करने से इसमाईल बिन नतनियाह ने उस
आदमी को मौत के घाट उतारा था जिसे शाहे-
बाबल ने यहूदाह का गवर्नर मुक़र्रर किया था।

यरमियाह मिसर न जाने का मशवरा देता है

42 यूहनान बिन क़रीह, यज़नियाह बिन
हूसायाह और दीगर फ़ौजी अफ़सर
बाक़ी तमाम लोगों के साथ छोटे से लेकर बड़े तक
2यरमियाह नबी के पास आए और कहने लगे,
"हमारी मिन्नत क़बूल करें और रब अपने ख़ुदा
से हमारे लिए दुआ करें। आप ख़ुद देख सकते हैं
कि गो हम पहले मुतअद्दिद लोग थे, लेकिन अब
थोड़े ही रह गए हैं। 3दुआ करें कि रब आपका
ख़ुदा हमें दिखाए कि हम कहाँ जाएँ और क्या
कुछ करें।"

4यरमियाह ने जवाब दिया, "ठीक है, मैं दुआ में
ज़रूर रब आपके ख़ुदा को आपकी गुज़ारिश पेश
करूँगा। और जो भी जवाब रब दे वह मैं लफ़्ज़
बलफ़्ज़ आपको बता दूँगा। मैं आपको किसी भी
बात से महरूम नहीं रखूँगा।" 5उन्होंने कहा, "रब
हमारा वफ़ादार और क़ाबिले-एतमाद गवाह है।
अगर हम हर बात पर अमल न करें जो रब आपका
ख़ुदा आपकी मारिफ़त हम पर नाज़िल करेगा
तो वही हमारे ख़िलाफ़ गवाही दे। 6ख़ाह उसकी
हिदायत हमें अच्छी लगे या बुरी, हम रब अपने
ख़ुदा की सुनेंगे जिसके पास हम आपको भेज रहे
हैं ताकि हमारी सलामती हो। हम तो ज़रूर रब
अपने ख़ुदा की सुनेंगे।."

7दस दिन गुज़रने के बाद रब का कलाम
यरमियाह पर नाज़िल हुआ। 8उसने यूहनान,
उसके साथी अफ़सरों और बाक़ी तमाम लोगों को
छोटे से लेकर बड़े तक अपने पास बुलाकर 9कहा,
"आपने मुझे रब इसराईल के ख़ुदा के पास भेजा
ताकि मैं आपकी गुज़ारिश उसके सामने लाऊँ।
अब उसका फ़रमान सुनें! 10'अगर तुम इस
मुल्क में रहो तो मैं तुम्हें नहीं गिराऊँगा बल्कि
तामीर करूँगा, तुम्हें जड़ से नहीं उखाड़ूँगा बल्कि
पनीरी की तरह लगा दूँगा। क्योंकि मुझे उस
मुसीबत पर अफ़सोस है जिसमें मैंने तुम्हें मुब्तला
किया है। 11इस वक़्त तुम शाहे-बाबल से डरते
हो, लेकिन उससे ख़ौफ़ मत खाना!' रब फ़रमाता
है, 'उससे दहशत न खाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे
साथ हूँ और तुम्हारी मदद करके उसके हाथ से
छुटकारा दूँगा। 12मैं तुम पर रहम करूँगा, इसलिए
वह भी तुम पर रहम करके तुम्हें तुम्हारे मुल्क में
वापस आने देगा।

13लेकिन अगर तुम रब अपने ख़ुदा की सुनने
के लिए तैयार न हो बल्कि कहो कि हम इस
मुल्क में नहीं रहेंगे 14बल्कि मिसर जाएंगे जहाँ
न जंग देखेंगे, न जंगी नरसिंगे की आवाज़ सुनेंगे
और न भूके रहेंगे 15तो रब का जवाब सुनो! ऐ
यहूदाह के बचे हुए लोगो, रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है कि अगर तुम मिसर में जाकर वहाँ
पनाह लेने पर तुले हुए हो 16तो यक़ीन जानो कि
जिस तलवार और काल से तुम डरते हो वह वहीं
मिसर में तुम्हारा पीछा करता रहेगा। वहाँ जाकर
तुम यक़ीनन मरोगे। 17जितने भी मिसर जाकर
वहाँ रहने पर तुले हुए हों वह सब तलवार, काल
और मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर मर
जाएंगे। जिस मुसीबत में मैं उन्हें डाल दूँगा उससे
कोई नहीं बचेगा।'

18क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, 'पहले मेरा सख़्त ग़ज़ब
यरूशलम के बाशिंदों पर नाज़िल हुआ। अगर तुम
मिसर जाओ तो मेरा ग़ज़ब तुम पर भी नाज़िल
होगा। तुम्हें देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे,
और तुम उनकी लान-तान और हिक़ारत का
निशाना बनोगे। लानत करनेवाला अपने दुश्मनों
के लिए तुम्हारे जैसा अंजाम चाहेगा। जहाँ तक
तुम्हारे वतन का ताल्लुक़ है, तुम उसे आइंदा कभी
नहीं देखोगे।'

19ऐ यहूदाह के बचे हुए लोगो, अब रब आपसे
हमकलाम हुआ है। उसका जवाब साफ़ है। मिसर
को मत जाना! यह बात ख़ूब जान लें कि आज
मैंने आपको आगाह कर दिया है। 20आपने अपने
आपको सख़्त धोका दिया है। क्योंकि आप ही

ने मुझे रब अपने ख़ुदा के पास भेजकर कहा,
'रब हमारे ख़ुदा से हमारे लिए दुआ करें। जो भी
वह फ़रमाए वह हमें बताएँ तो हम उस पर अमल
करेंगे।' 21आज मैंने यह किया है, लेकिन आप
रब अपने ख़ुदा की सुनने के लिए तैयार नहीं हैं।
जो कुछ भी उसने मुझे आपको सुनाने को कहा है
उस पर आप अमल नहीं करना चाहते। 22चुनाँचे
अब जान लें कि जहाँ आप जाकर पनाह लेना
चाहते हैं वहाँ आप तलवार, काल और मोहलक
बीमारियों की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे।"

यरमियाह की आगाही को नज़र-अंदाज़ किया जाता है

43 यरमियाह ख़ामोश हुआ। जो कुछ भी
रब उनके ख़ुदा ने यरमियाह को उन्हें
सुनाने को कहा था उसे उसने उन सब तक
पहुँचाया था। 2फिर अज़रियाह बिन हूसायाह,
यूहनान बिन अख़ीक़ाम और तमाम बदतमीज़
आदमी बोल उठे, "तुम झूट बोल रहे हो! रब
हमारे ख़ुदा ने तुम्हें यह सुनाने को नहीं भेजा कि
मिसर को न जाओ, न वहाँ आबाद हो जाओ।
3इसके पीछे बारूक बिन नैरियाह का हाथ है। वही
तुम्हें हमारे ख़िलाफ़ उकसा रहा है, क्योंकि वह
चाहता है कि हम बाबलियों के हाथ में आ जाएँ
ताकि वह हमें क़त्ल करें या जिलावतन करके
मुल्के-बाबल ले जाएँ।"

4ऐसी बातें करते करते यूहनान बिन क़रीह,
दीगर फ़ौजी अफ़सरों और बाक़ी तमाम लोगों ने
रब का हुक्म रद्द किया। वह मुल्के-यहूदाह में न
रहे 5बल्कि सब यूहनान और बाक़ी तमाम फ़ौजी
अफ़सरों की राहनुमाई में मिसर चले गए। उनमें
यहूदाह के वह बचे हुए सब लोग शामिल थे जो
पहले मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर हुए थे,
लेकिन अब यहूदाह में दुबारा आबाद होने के लिए
वापस आए थे। 6वह तमाम मर्द, औरतें और बच्चे
बादशाह की बेटियों समेत भी उनमें शामिल थे
जिन्हें शाही मुहाफ़िज़ों के सरदार नबूज़रादान ने
जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम के सुपुर्द किया था।
यरमियाह नबी और बारूक बिन नैरियाह को भी
साथ जाना पड़ा। 7यों वह रब की हिदायत रद्द
करके रवाना हुए और चलते चलते मिसरी सरहद
के शहर तहफ़नहीस तक पहुँचे।

शाहे-बाबल के मिसर में घुस आने की पेशगोई

8तहफ़नहीस में रब का कलाम यरमियाह पर
नाज़िल हुआ, 9"अपने हमवतनों के देखते देखते
चंद-एक बड़े पत्थर फ़िरौन के महल के दरवाज़े
के क़रीब ले जाकर गारे की मदद से फ़र्श की
कच्ची ईंटों में दबा दे। 10फिर उन्हें बता दे, 'रब्बुल-
अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है
कि मैं अपने ख़ादिम शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र
को बुलाकर यहाँ लाऊँगा और उसका तख़्त उन
पत्थरों के ऊपर खड़ा करूँगा जो मैंने यरमियाह
के ज़रीए दबाए हैं। नबूकदनज़्ज़र उन्हीं के ऊपर
अपना शाही तंबू लगाएगा। 11क्योंकि वह आएगा
और मिसर पर हमला करके हर एक के साथ
वह कुछ करेगा जो उसके नसीब में है। एक मर
जाएगा, दूसरा क़ैद में जाएगा और तीसरा तलवार
की ज़द में आएगा। 12-13मैं मिसरी देवताओं
के मंदिरों को जला दूँगा। शाहे-बाबल उन्हें राख
करेगा। वह उनके बुतों पर क़ब्ज़ा करके उन्हें
अपने साथ ले जाएगा। जिस तरह चरवाहा चादर
ओढ़ लेता है उसी तरह वह मुल्के-मिसर ओढ़
लेगा। मिसर आते वक़्त वह सूरज देवता के सतूनों
को ढा देगा। हाँ, वह मिसरी देवताओं के मंदिर
नज़रे-आतिश करेगा। तब वह सही-सलामत वहाँ
से वापस चला जाएगा'।"

तुम बुतपरस्ती से बाज़ क्यों नहीं आते?

44 रब का कलाम एक बार फिर
यरमियाह पर नाज़िल हुआ। उसमें
वह उन तमाम हमवतनों से हमकलाम हुआ जो
शिमाली मिसर के शहरों मिजदाल, तहफ़नहीस
और मेंफ़िस और जुनूबी मिसर बनाम पतरूस में
रहते थे।

2“रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘तुमने ख़ुद वह बड़ी आफ़त देखी
जो मैं यरूशलम और यहूदाह के दीगर तमाम
शहरों पर लाया। आज वह वीरानो-सुनसान हैं,
और उनमें कोई नहीं बसता। 3यों उन्हें उनकी बुरी
हरकतों का अज्र मिला। क्योंकि अजनबी माबूदों
के लिए बख़ूर जलाकर उनकी ख़िदमत करने से
उन्होंने मुझे तैश दिलाया। और यह ऐसे देवता थे
जिनसे पहले न वह, न तुम और न तुम्हारे बापदादा
वाक़िफ़ थे। 4बार बार मैं नबियों को उनके पास
भेजता रहा, और बार बार मेरे ख़ादिम कहते रहे
कि ऐसी घिनौनी हरकतें मत करना, क्योंकि मुझे
इनसे नफ़रत है! 5लेकिन उन्होंने न सुनी, न
ध्यान दिया। न वह अपनी बेदीनी से बाज़ आए, न
अजनबी माबूदों को बख़ूर जलाने का सिलसिला
बंद किया।

6तब मेरा शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ।
मेरे क़हर की ज़बरदस्त आग ने यहूदाह के शहरों
और यरूशलम की गलियों में फैलते फैलते उन्हें
वीरानो-सुनसान कर दिया। आज तक उनका यही
हाल है।’

7अब रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘तुम अपना सत्यानास क्यों कर रहे
हो? ऐसे क़दम उठाने से तुम यहूदाह से आए
हुए मर्दों और औरतों को बच्चों और शीरख़ारों
समेत हलाकत की तरफ़ ला रहे हो। इस सूरत
में एक भी नहीं बचेगा। 8मुझे अपने हाथों के
काम से तैश क्यों दिलाते हो? यहाँ मिसर में
पनाह लेकर तुम अजनबी माबूदों के लिए बख़ूर
क्यों जलाते हो? इससे तुम अपने आपको
नेस्तो-नाबूद कर रहे हो, तुम दुनिया की तमाम
क़ौमों के लिए लानत और मज़ाक़ का निशाना
बनोगे। 9क्या तुम्हें वह बुराइयाँ याद नहीं जो
तुम्हारे बापदादा, यहूदाह के राजा-रानियों और
तुमसे तुम्हारी बीवियों समेत मुल्के-यहूदाह और
यरूशलम की गलियों में सरज़द हुई हैं? 10आज
तक तुमने न इंकिसारी का इज़हार किया, न मेरा
ख़ौफ़ माना, और न मेरी शरीअत के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारी। तुम उन हिदायात के ताबे न रहे
जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता की
थीं।’

11चुनाँचे रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘मैं तुम पर आफ़त लाने
का अटल इरादा रखता हूँ। तमाम यहूदाह ख़त्म
हो जाएगा। 12मैं यहूदाह के उस बचे हुए हिस्से
को सफ़हाए-हस्ती से मिटा दूँगा जो मिसर में
जाकर पनाह लेने पर तुला हुआ था। सब मिसर
में हलाक हो जाएंगे, ख़ाह तलवार से, ख़ाह काल
से। छोटे से लेकर बड़े तक सबके सब तलवार
या काल की ज़द में आकर मर जाएंगे। उन्हें
देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह
दूसरों की लान-तान और हिक़ारत का निशाना
बनेंगे। लानत करनेवाला अपने दुश्मनों के लिए
उन्हीं का-सा अंजाम चाहेगा। 13जिस तरह मैंने
यरूशलम को सज़ा दी ऐन उसी तरह मैं मिसर
में आनेवाले हमवतनों को तलवार, काल और
मोहलक बीमारियों से सज़ा दूँगा। 14यहूदाह के
जितने बचे हुए लोग यहाँ मिसर में पनाह लेने
के लिए आए हैं वह सब यहीं हलाक हो जाएंगे।
कोई भी बचकर मुल्के-यहूदाह में नहीं लौटेगा,
गो तुम सब वहाँ दुबारा आबाद होने की शदीद
आरज़ू रखते हो। सिर्फ़ चंद एक इसमें कामयाब
हो जाएंगे’।”

आसमानी मलिका की पूजा पर ज़िद

15उस वक़्त जुनूबी मिसर में रहनेवाले यहूदाह
के तमाम मर्द और औरतें एक बड़े इजतिमा के
लिए जमा हुए थे। मर्दों को ख़ूब मालूम था कि
हमारी बीवियाँ अजनबी माबूदों को बख़ूर की
क़ुरबानियाँ पेश करती हैं। अब उन्होंने यरमियाह
से कहा, 16“जो बात आपने रब का नाम लेकर
हमसे की है वह हम नहीं मानते। 17हम उन तमाम
बातों पर ज़रूर अमल करेंगे जो हमने कही हैं। हम
आसमानी मलिका देवी के लिए बख़ूर जलाएँगे
और उसे मै की नज़रें पेश करेंगे। हम वही कुछ
करेंगे जो हम, हमारे बापदादा, हमारे बादशाह

और हमारे बुज़ुर्ग मुल्के-यहूदाह और यरूशलम की
गलियों में किया करते थे। क्योंकि उस वक़्त रोटी
की कसरत थी और हमारा अच्छा हाल था। उस
वक़्त हम किसी भी मुसीबत से दोचार न हुए।
18लेकिन जब से हम आसमानी मलिका को बख़ूर
और मै की नज़रें पेश करने से बाज़ आए हैं उस
वक़्त से हर लिहाज़ से हाजतमंद रहे हैं। उसी वक़्त
से हम तलवार और काल की ज़द में आकर नेस्त
हो रहे हैं।" 19औरतों ने बात जारी रखकर कहा,
"क्या आप समझते हैं कि हमारे शौहरों को इसका
इल्म नहीं था कि हम आसमानी मलिका को बख़ूर
और मै की नज़रें पेश करती हैं, कि हम उस की
शक्ल की टिक्कियाँ बनाकर उस की पूजा करती
हैं?"

चंद एक के बचने की पेशगोई

20यरमियाह एतराज़ करनेवाले तमाम मर्दों
और औरतों से दुबारा मुख़ातिब हुआ, 21"देखो,
रब ने उस बख़ूर पर ध्यान दिया जो तुम और
तुम्हारे बापदादा ने बादशाहों, बुज़ुर्गों और अवाम
समेत यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों
में जलाया है। यह बात उसे ख़ूब याद है।
22आख़िरकार एक वक़्त आया जब तुम्हारी शरीर
और घिनौनी हरकतें क़ाबिले-बरदाश्त न रहीं, और
रब को तुम्हें सज़ा देनी पड़ी। यही वजह है कि
आज तुम्हारा मुल्क वीरानो-सुनसान है, कि उसे
देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लानत
करनेवाला अपने दुश्मन के लिए ऐसा ही अंजाम
चाहता है। 23आफ़त इसी लिए तुम पर आई कि
तुमने बुतों के लिए बख़ूर जलाकर रब की न सुनी।
न तुमने उस की शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारी, न उस की हिदायात और अहकाम पर
अमल किया। आज तक मुल्क का यही हाल रहा
है।"

24फिर यरमियाह ने तमाम लोगों से औरतों
समेत कहा, "ऐ मिसर में रहनेवाले यहूदाह के
तमाम हमवतनो, रब का कलाम सुनो! 25रब्बुल-
अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है
कि तुम और तुम्हारी बीवियों ने इसरार किया है,
'हम ज़रूर अपनी उन मन्नतों को पूरा करेंगे जो
हमने मानी हैं, हम ज़रूर आसमानी मलिका को
बख़ूर और मै की नज़रें पेश करेंगे।' और तुमने
अपने अलफ़ाज़ और अपनी हरकतों से साबित
कर दिया है कि तुम संजीदगी से अपने इस एलान
पर अमल करना चाहते हो। तो ठीक है, अपना
वादा और अपनी मन्नतें पूरी करो!

26लेकिन ऐ मिसर में रहनेवाले तमाम
हमवतनो, रब के कलाम पर ध्यान दो! रब
फ़रमाता है कि मेरे अज़ीम नाम की क़सम, आइंदा
मिसर में तुममें से कोई मेरा नाम लेकर क़सम नहीं
खाएगा, कोई नहीं कहेगा, 'रब क़ादिरे-मुतलक़
की हयात की क़सम!' 27क्योंकि मैं तुम्हारी
निगरानी कर रहा हूँ, लेकिन तुम पर मेहरबानी
करने के लिए नहीं बल्कि तुम्हें नुक़सान पहुँचाने
के लिए। मिसर में रहनेवाले यहूदाह के तमाम
लोग तलवार और काल की ज़द में आ जाएंगे और
पिसते पिसते हलाक हो जाएंगे। 28सिर्फ़ चंद एक
दुश्मन की तलवार से बचकर मुल्के-यहूदाह वापस
आएँगे। तब यहूदाह के जितने बचे हुए लोग मिसर
में पनाह लेने के लिए आए हैं वह सब जान लेंगे कि
किसकी बात दुरुस्त निकली है, मेरी या उन की।
29रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हें निशान भी देता हूँ
ताकि तुम्हें यक़ीन हो जाए कि मैं तुम्हारे ख़िलाफ़
ख़ाली बातें नहीं कर रहा बल्कि तुम्हें यक़ीनन
मिसर में सज़ा दूँगा। 30निशान यह होगा कि
जिस तरह मैंने यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह
को उसके जानी दुश्मन नबूकदनज़्ज़र के हवाले
कर दिया उसी तरह मैं हुफ़रा फ़िरौन को भी उसके
जानी दुश्मनों के हवाले कर दूँगा। यह रब का
फ़रमान है।"

बारूक के लिए तसल्ली का पैग़ाम

45 यहूदाह के बादशाह यहूयक़ीम बिन
यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल में
यरमियाह नबी को बारूक बिन नैरियाह के लिए
रब का पैग़ाम मिला। उस वक़्त बारूक यरमियाह

की वह बातें एक किताब में दर्ज कर रहा था
जो उस पर नाज़िल हुई थीं। यरमियाह ने कहा,
2“ऐ बारूक, रब इसराईल का ख़ुदा तेरे बारे में
फ़रमाता है 3कि तू कहता है, ‘हाय, मुझ पर
अफ़सोस! रब ने मेरे दर्द में इज़ाफ़ा कर दिया
है, अब मुझे रंजो-अलम भी सहना पड़ता है। मैं
कराहते कराहते थक गया हूँ। कहीं भी आरामो-
सुकून नहीं मिलता।’

4ऐ बारूक, रब जवाब में फ़रमाता है कि जो
कुछ मैंने ख़ुद तामीर किया उसे मैं गिरा दूँगा, जो
पौदा मैंने ख़ुद लगाया उसे जड़ से उखाड़ दूँगा। पूरे
मुल्क के साथ ऐसा ही सुलूक करूँगा। 5तो फिर
तू अपने लिए क्यों बड़ी कामयाबी हासिल करने
का आरज़ूमंद है? ऐसा ख़याल छोड़ दे, क्योंकि
मैं तमाम इनसानों पर आफ़त ला रहा हूँ। यह रब
का फ़रमान है। लेकिन जहाँ भी तू जाए वहाँ मैं
होने दूँगा कि तेरी जान छूट जाए।”[a]

मिसर की शिकस्त की पेशगोई

46 यरमियाह पर मुख़्तलिफ़ क़ौमों के
बारे में भी पैग़ामात नाज़िल हुए। यह
ज़ैल में दर्ज हैं।

2पहला पैग़ाम मिसर के बारे में है। यहूदाह के
बादशाह यहूयक़ीम बिन यूसियाह के चौथे साल
में शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र ने दरियाए-फ़ुरात
पर वाक़े शहर करकिमीस के पास मिसरी फ़ौज
को शिकस्त दी थी। उन दिनों में मिसरी बादशाह
निकोह फ़िरौन की फ़ौज के बारे में रब का कलाम
नाज़िल हुआ,

3“अपनी बड़ी और छोटी ढालें तैयार करके जंग
के लिए निकलो! 4घोड़ों को रथों में जोतो! दीगर
घोड़ों पर सवार हो जाओ! ख़ोद पहनकर खड़े हो
जाओ! अपने नेज़ों को रौग़न से चमकाकर ज़िरा-
बकतर पहन लो! 5लेकिन मुझे क्या नज़र आ
रहा है? मिसरी फ़ौजियों पर दहशत तारी हुई है।
वह पीछे हट रहे हैं, उनके सूरमाओं ने हथियार
डाल दिए हैं। वह भाग भागकर फ़रार हो रहे हैं
और पीछे भी नहीं देखते। रब फ़रमाता है कि चारों
तरफ़ दहशत ही दहशत फैल गई है। 6न तेज़ी से
भागनेवाला, न ज़बरदस्त फ़ौजी बच सकता है।
शिमाल में दरियाए-फ़ुरात के किनारे ही वह ठोकर
खाकर गिर गए हैं।

7यह क्या है जो दरियाए-नील की तरह चढ़
रहा है, जो सैलाब बनकर सब कुछ ग़रक़ कर
रहा है? 8मिसर दरियाए-नील की तरह चढ़ रहा
है, वही सैलाब बनकर सब कुछ ग़रक़ कर रहा
है। वह कहता है, ‘मैं चढ़कर पूरी ज़मीन को
ग़रक़ कर दूँगा। मैं शहरों को उनके बाशिंदों समेत
तबाह करूँगा।’ 9ऐ घोड़ो, दुश्मन पर टूट पड़ो! ऐ
रथो, दीवानों की तरह दौड़ो! ऐ फ़ौजियो, लड़ने
के लिए निकलो! ऐ एथोपिया और लिबिया के
सिपाहियो, अपनी ढालें पकड़कर चलो, ऐ लुदिया
के तीर चलानेवालो, अपने कमान तानकर आगे
बढ़ो!

10लेकिन आज क़ादिरे-मुतलक़, रब्बुल-
अफ़वाज का ही दिन है। इंतक़ाम के इस दिन वह
अपने दुश्मनों से बदला लेगा। उस की तलवार
उन्हें खा खाकर सेर हो जाएगी, और उनका ख़ून
पी पीकर उस की प्यास बुझेगी। क्योंकि शिमाल
में दरियाए-फ़ुरात के किनारे उन्हें क़ादिरे-मुतलक़,
रब्बुल-अफ़वाज को क़ुरबान किया जाएगा।

11ऐ कुँवारी मिसर बेटी, मुल्के-जिलियाद में
जाकर अपने ज़ख़मों के लिए बलसान ख़रीद ले।
लेकिन क्या फ़ायदा? ख़ाह तू कितनी दवाई क्यों
न इस्तेमाल करे तेरी चोटें भर ही नहीं सकतीं!
12तेरी शरमिंदगी की ख़बर दीगर अक़वाम में फैल
गई है, तेरी चीख़ें पूरी दुनिया में गूँज रही हैं।
क्योंकि तेरे सूरमे एक दूसरे से ठोकर खाकर गिर
गए हैं।”

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : मैं तुझे तेरी जान ग़नीमत के तौर पर बख़्श दूँगा।

शाहे-बाबल के मिसर में घुस आने की पेशगोई

13जब शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र मिसर पर हमला करने आया तो रब इसके बारे में यरमियाह से हमकलाम हुआ,

14"मिसरी शहरों मिजदाल, मेंफ़िस और तहफ़नहीस में एलान करो, 'जंग की तैयारियाँ करके लड़ने के लिए खड़े हो जाओ! क्योंकि तलवार तुम्हारे आस-पास सब कुछ खा रही है।'

15ऐ मिसर, तेरे ज़बरदस्त साँड[a] को ख़ाक में क्यों मिलाया गया है? वह खड़ा नहीं रह सकता, क्योंकि रब ने उसे दबा दिया है।
16उसने मुतअद्दिद अफ़राद को ठोकर खाने दिया, और वह एक दूसरे पर गिर गए। उन्होंने कहा, 'आओ, हम अपनी ही क़ौम और अपने वतन में वापस चले जाएँ जहाँ ज़ालिम की तलवार हम तक नहीं पहुँच सकती।'
17वहाँ वह पुकार उठे, 'मिसर का बादशाह शोर तो बहुत मचाता है लेकिन इसके पीछे कुछ भी नहीं। जो सुनहरा मौक़ा उसे मिला वह जाता रहा है'।"

18दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम, जो तुम पर हमला करने आ रहा है वह दूसरों से उतना बड़ा है जितना तबूर दीगर पहाड़ों से और करमिल समुंदर से ऊँचा है।
19ऐ मिसर के बाशिंदो, अपना मालो-असबाब बाँधकर जिलावतन होने की तैयारियाँ करो। क्योंकि मेंफ़िस मिसमार होकर नज़्रे-आतिश हो जाएगा। उसमें कोई नहीं रहेगा।

20मिसर ख़ूबसूरत-सी जवान गाय है, लेकिन शिमाल से मोहलक मक्खी आकर उस पर धावा बोल रही है। हाँ, वह आ रही है।
21मिसरी फ़ौज के भाड़े के फ़ौजी मोटे-ताज़े बछड़े हैं, लेकिन वह भी मुड़कर फ़रार हो जाएंगे। एक भी क़ायम नहीं रहेगा। क्योंकि आफ़त का दिन उन पर आनेवाला है, वह वक़्त जब उन्हें पूरी सज़ा मिलेगी।
22मिसर साँप की तरह फुँकारते हुए पीछे हट जाएगा जब दुश्मन के फ़ौजी पूरे ज़ोर से उस पर हमला करेंगे, जब वह लकड़हारों की तरह अपनी कुल्हाड़ियाँ पकड़े हुए उस पर टूट पड़ेंगे।"
23रब फ़रमाता है, "तब वह मिसर का जंगल काट डालेंगे, गो वह कितना घना क्यों न हो। क्योंकि उनकी तादाद टिड्डियों से ज़्यादा होगी बल्कि वह अनगिनत होंगे।
24मिसर बेटी की बेइज़्ज़ती की जाएगी, उसे शिमाली क़ौम के हवाले किया जाएगा।"

25रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, "मैं थीबस शहर के देवता आमून, फ़िरौन और तमाम मिसर को उसके देवताओं और बादशाहों समेत सज़ा दूँगा। हाँ, मैं फ़िरौन और उस पर एतमाद रखनेवाले तमाम लोगों की अदालत करूँगा।"
26रब फ़रमाता है, "मैं उन्हें उनके जानी दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, और वह शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र और उसके अफ़सरों के क़ाबू में आ जाएंगे। लेकिन बाद में मिसर पहले की तरह दुबारा आबाद हो जाएगा।

27जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम, ख़ौफ़ मत खा! ऐ इसराईल, हौसला मत हार! देख, मैं तुझे दूर-दराज़ मुल्क से छुटकारा दूँगा। तेरी औलाद को मैं उस मुल्क से नजात दूँगा जहाँ उसे जिलावतन किया गया है। फिर याक़ूब वापस आकर आरामो-सुकून की ज़िंदगी गुज़ारेगा। कोई नहीं होगा जो उसे हैबतज़दा करे।"
28रब फ़रमाता है, "ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम, ख़ौफ़ न खा, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं उन तमाम क़ौमों को नेस्तो-नाबूद कर दूँगा जिनमें मैंने तुझे मुंतशिर कर दिया है, लेकिन तुझे मैं इस तरह सफ़हाए-हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं मुनासिब हद तक तेरी तंबीह करूँगा, क्योंकि मैं तुझे सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ सकता।"

[a]साँड : मिसर का एक देवता। इबरानी लफ़्ज़ का मतलब सूरमा भी हो सकता है।

फ़िलिस्तियों को सफ़हाए-हस्ती से मिटाया जाएगा

47 फ़िरौन के ग़ज़्ज़ा शहर पर हमला करने से पहले यरमियाह नबी पर फ़िलिस्तियों के बारे में रब का कलाम नाज़िल हुआ,

2“रब फ़रमाता है कि शिमाल से पानी आ रहा
है जो सैलाब बनकर पूरे मुल्क को ग़रक़ कर देगा।
पूरा मुल्क शहरों और बाशिंदों समेत उसमें डूब
जाएगा। लोग चीख़ उठेंगे, और मुल्क के तमाम
बाशिंदे आहो-ज़ारी करेंगे। 3क्योंकि सरपट दौड़ते
हुए घोड़ों की टापें सुनाई देंगी, दुश्मन के रथों
का शोर और पहियों की गड़गड़ाहट उनके कानों
तक पहुँचेगी। बाप ख़ौफ़ज़दा होकर यों साकित
हो जाएंगे कि वह अपने बच्चों की मदद करने
के लिए पीछे भी देख नहीं सकेंगे। 4क्योंकि वह
दिन आनेवाला है जब तमाम फ़िलिस्तियों को
नेस्तो-नाबूद किया जाएगा ताकि सूर और सैदा
के आख़िरी मदद करनेवाले भी ख़त्म हो जाएँ।
क्योंकि रब फ़िलिस्तियों को सफ़हाए-हस्ती से
मिटानेवाला है, जज़ीराए-क्रेते के उन बचे हुओं
को जो यहाँ आकर आबाद हुए हैं।

5ग़ज़्ज़ा बेटी मातम के आलम में अपना सर
मुँडवाएगी, अस्क़लून शहर मिसमार हो जाएगा।
ऐ मैदानी इलाक़े के बचे हुए लोगो, तुम कब तक
अपनी जिल्द को ज़ख़मी करते रहोगे? 6‘हाय, ऐ
रब की तलवार, क्या तू कभी नहीं आराम करेगी?
दुबारा अपने मियान में छुप जा! ख़ामोश होकर
आराम कर!’ 7लेकिन तू किस तरह आराम कर
सकती है जब रब ने इसका हुक्म दिया है? उसी ने
तो मुक़र्रर किया है कि वह अस्क़लून और साहिली
इलाक़े पर धावा बोले।”

मोआब के अंजाम की पेशगोई

48 मोआब के बारे में रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है,

“नबू शहर पर अफ़सोस, क्योंकि वह तबाह
हो गया है। दुश्मन ने क़िरियतायम की बेहुरमती
करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया है। चट्टान के क़िले
की रुसवाई हो गई, वह पाश पाश हो गया है।
2अब से कोई मोआब की तारीफ़ नहीं करेगा।
हसबोन में आदमी उस की शिकस्त की साज़िशें
करके कह रहे हैं, आओ, हम मोआबी क़ौम को
नेस्तो-नाबूद करें। ‘ऐ मदमीन, तू भी तबाह हो
जाएगा, तलवार तेरे भी पीछे पड़ जाएगी।’

3सुनो! होरोनायम से चीख़ें बुलंद हो रही हैं।
तबाही और बड़ी शिकस्त का शोर मच रहा है।
4मोआब चूर चूर हो गया है, उसके बच्चे ज़ोर
से चिल्ला रहे हैं। 5लोग रोते रोते लूहीत की
तरफ़ चढ़ रहे हैं। होरोनायम की तरफ़ उतरते
रास्ते पर शिकस्त की आहो-ज़ारी सुनाई दे रही
है। 6भागकर अपनी जान बचाओ! रेगिस्तान में
झाड़ी[a] की मानिंद बन जाओ।

7चूँकि तुम मोआबियों ने अपनी काम-
याबियों और दौलत पर भरोसा रखा, इसलिए
तुम भी क़ैद में जाओगे। तुम्हारा देवता कमोस भी
अपने पुजारियों और बुज़ुर्गों समेत जिलावतन हो
जाएगा। 8तबाह करनेवाला हर शहर पर हमला
करेगा, एक भी नहीं बचेगा। जिस तरह रब ने
फ़रमाया है, वादी भी तबाह हो जाएगी और
मैदाने-मुरतफ़ा भी। 9मोआब पर नमक डाल दो,
क्योंकि वह मिसमार हो जाएगा। उसके शहर
वीरानो-सुनसान हो जाएंगे, और उनमें कोई नहीं
बसेगा।

10उस पर लानत जो सुस्ती से रब का काम
करे! उस पर लानत जो अपनी तलवार को ख़ून
बहाने से रोक ले! 11अपनी जवानी से लेकर
आज तक मोआब आरामो-सुकून की ज़िंदगी
गुज़ारता आया है, उस मै की मानिंद जो कभी
नहीं छेड़ी गई और कभी एक बरतन से दूसरे में
उंडेली नहीं गई। इसलिए उसका मज़ा क़ायम और
ज़ायक़ा बेहतरीन रहा है।” 12लेकिन रब फ़रमाता

[a]या अरोईर।

है, “वह दिन आनेवाला है जब मैं ऐसे आदमियों
को उसके पास भेजूँगा जो मै को बरतनों से
निकालकर ज़ाया कर देंगे, और बरतनों को ख़ाली
करने के बाद पाश पाश कर देंगे। 13तब मोआब
को अपने देवता कमोस पर यों शर्म आएगी जिस
तरह इसराईल को बैतेल के उस बुत पर शर्म आई
जिस पर वह भरोसा रखता था।

14हाय, तुम अपने आप पर कितना फ़ख़र
करते हो कि हम सूरमे और ज़बरदस्त जंगजू
हैं। 15लेकिन दुनिया का बादशाह जिसका नाम
रब्बुल-अफ़वाज है फ़रमाता है कि मोआब तबाह
हो जाएगा। दुश्मन उसके शहरों पर चढ़ आएगा,
और उसके बेहतरीन जवान उतरकर क़त्लो-ग़ारत
की ज़द में आ जाएँगे।

मोआब की ताक़त टूट गई है

16मोआब का अंजाम क़रीब ही है, आफ़त
उस पर नाज़िल होनेवाली है। 17ऐ पड़ोस में
बसनेवालो, उस पर मातम करो! जितने उस की
शोहरत जानते हो आहो-ज़ारी करो। बोलो, ‘हाय,
मोआब का ज़ोरदार असाए-शाही टूट गया है, उस
की शानो-शौकत की अलामत ख़ाक में मिलाई
गई है।’

18ऐ दीबोन बेटी, अपने शानदार तख़्त पर
से उतरकर प्यासी ज़मीन पर बैठ जा। क्योंकि
मोआब को तबाह करनेवाला तुझ पर भी चढ़
आएगा, वह तेरे क़िलाबंद शहरों को भी मिसमार
करेगा। 19ऐ अरोईर की रहनेवाली, सड़क के
किनारे खड़ी होकर ध्यान दे! भागनेवालों और
अपनी जान बचानेवालों से पूछ ले कि क्या हुआ
है। 20तब तुझे जवाब मिलेगा, ‘मोआब रुसवा
हुआ है, वह पाश पाश हो गया है। बुलंद आवाज़ से
वावैला करो! दरियाए-अरनोन के किनारे एलान
करो कि मोआब ख़त्म है।’

21मैदाने-मुरतफ़ा पर अल्लाह की अदालत
नाज़िल हुई है। हौलून, यहज़, मिफ़ात,
22दीबोन, नबू, बैत-दिबलातायम, 23क़िरि-
यतायम, बैत-जमूल, बैत-मऊन, 24क़रियोत
और बुसरा, ग़रज़ मोआब के तमाम शहरों की
अदालत हुई है, ख़ाह वह दूर हों या क़रीब।”

25रब फ़रमाता है, “मोआब की ताक़त टूट गई
है, उसका बाज़ू पाश पाश हो गया है। 26उसे
मै पिला पिलाकर मतवाला करो, वह अपनी
क़ै में लोट-पोट होकर सबके लिए मज़ाक़ का
निशाना बन जाए। क्योंकि वह मग़रूर होकर रब
के ख़िलाफ़ खड़ा हो गया है।

27तुम मोआबियों ने इसराईल को अपने
मज़ाक़ का निशाना बनाया था। तुम यों उसे
गालियाँ देते रहे जैसे उसे चोरी करते वक़्त पकड़ा
गया हो। 28लेकिन अब तुम्हारी बारी आ गई है।
अपने शहरों को छोड़कर चट्टानों में जा बसो!
कबूतर बनकर तंग और गहरी घाटी की खड़ी
चढ़ाइयों पर अपने घोंसले बना लो।

29हमने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना
है, क्योंकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मग़रूर,
घमंडी, ख़ुदपसंद और अनापरस्त है।”

30रब फ़रमाता है, “मैं उसके तकब्बुर से
वाक़िफ़ हूँ। लेकिन उस की डींगें अबस हैं, उनके
पीछे कुछ नहीं है। 31इसलिए मैं मोआब पर
आहो-ज़ारी कर रहा, तमाम मोआब के सबब
से चिल्ला रहा हूँ। क़ीर-हरासत के बाशिंदों का
अंजाम देखकर मैं आहें भर रहा हूँ। 32ऐ सिबमाह
की अंगूर की बेल, याज़ेर की निसबत मैं कहीं
ज़्यादा तुझ पर मातम कर रहा हूँ। तेरी कोंपलें
याज़ेर तक फैली हुई थीं बल्कि समुंदर को पार भी
करती थीं। लेकिन अब तबाह करनेवाला दुश्मन
तेरे पके हुए अंगूरों और मौसमे-गरमा के फल पर
टूट पड़ा है। 33अब ख़ुशी-ओ-शादमानी मोआब
के बाग़ों और खेतों से जाती रही है। मैंने अंगूर
का रस निकालने का काम रोक दिया है। कोई
ख़ुशी के नारे लगा लगाकर अंगूर को पाँवों तले
नहीं रौंदता। शोर तो मच रहा है, लेकिन ख़ुशी के
नारे बुलंद नहीं हो रहे बल्कि जंग के।

34हसबोन में लोग मदद के लिए पुकार रहे हैं,
उनकी आवाज़ इलियाली और यहज़ तक सुनाई दे
रही है। इसी तरह ज़ुग़र की चीख़ें होरोनायम और

इजलत-शलीशियाह तक पहुँच गई हैं। क्योंकि
निमरीम का पानी भी ख़ुश्क हो जाएगा।” 35रब
फ़रमाता है, “मोआब में जो ऊँची जगहों पर
चढ़कर अपने देवताओं को बख़ूर और बाक़ी
क़ुरबानियाँ पेश करते हैं उनका मैं ख़ातमा कर
दूँगा।

36इसलिए मेरा दिल बाँसरी के मातमी सुर
निकालकर मोआब और क़ीर-हरासत के लिए
नोहा कर रहा है। क्योंकि उनकी हासिलशुदा
दौलत जाती रही है। 37हर सर गंजा, हर दाढ़ी
मुँडवाई गई है। हर हाथ की जिल्द को ज़ख़मी
कर दिया गया है, हर कमर टाट से मुलब्बस है।
38मोआब की तमाम छतों पर और उसके चौकों
में आहो-ज़ारी बुलंद हो रही है।”

क्योंकि रब फ़रमाता है, “मैंने मोआब को
बेकार मिट्टी के बरतन की तरह तोड़ डाला है।
39हाय, मोआब पाश पाश हो गया है! लोग ज़ारो-
क़तार रो रहे हैं, और मोआब ने शर्म के मारे अपना
मुँह ढाँप लिया है। वह मज़ाक़ का निशाना बन
गया है, उसे देखकर तमाम पड़ोसियों के रोंगटे
खड़े हो गए हैं।”

मोआब रब के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है

40रब फ़रमाता है, “वह देखो! दुश्मन उक़ाब
की तरह मोआब पर झपट्टा मारता है। अपने परों
को फैलाकर वह पूरे मुल्क पर साया डालता
है। 41दुश्मन ने क़सबों पर क़ब्ज़ा कर लिया है,
क़िले उसके हाथ में आ गए हैं। उस दिन मोआबी
सूरमाओं का दिल दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की
तरह पेचो-ताब खाएगा। 42क्योंकि मोआबी क़ौम
सफ़हाए-हस्ती से मिट जाएगी, इसलिए कि वह
मग़रूर होकर रब के ख़िलाफ़ खड़ी हो गई है।

43ऐ मोआबी क़ौम, दहशत, गढ़ा और फंदा
तेरे नसीब में हैं।” 44क्योंकि रब फ़रमाता है,
“जो दहशत से भागकर बच जाए वह गढ़े में गिर
जाएगा, और जो गढ़े से निकल जाए वह फंदे
में फँस जाएगा। क्योंकि मैं मोआब पर उस की
अदालत का साल लाऊँगा।

45पनाहगुज़ीन थकेहारे हसबोन के साये में
रुक जाते हैं। लेकिन अफ़सोस, हसबोन से आग
निकल आई है और सीहोन बादशाह के शहर में
से शोला भड़क उठा है जो मोआब की पेशानी को
और शोर मचानेवालों के चाँदों को नज़रे-आतिश
करेगा। 46ऐ मोआब, तुझ पर अफ़सोस! कमोस
देवता के परस्तार नेस्तो-नाबूद हैं, तेरे बेटे-बेटियाँ
क़ैदी बनकर जिलावतन हो गए हैं।

47लेकिन आनेवाले दिनों में मैं मोआब को
बहाल करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

यहाँ मोआब पर अदालत का फ़ैसला इख़्तिताम
पर पहुँच गया है।

अम्मोनियों की अदालत

49 अम्मोनियों के बारे में रब फ़र-
माता है,

“क्या इसराईल की कोई औलाद नहीं, कोई
वारिस नहीं जो जद के क़बायली इलाक़े में रह
सके? मलिक देवता के परस्तारों ने उस पर क्यों
क़ब्ज़ा किया है? क्या वजह है कि यह लोग जद
के शहरों में आबाद हो गए हैं?” 2चुनाँचे रब
फ़रमाता है, “वह वक़्त आनेवाला है कि मेरे हुक्म
पर अम्मोनी दारुल-हुकूमत रब्बा के ख़िलाफ़ जंग
के नारे लगाए जाएंगे। तब वह मलबे का ढेर बन
जाएगा, और गिर्दो-नवाह की आबादियाँ नज़रे-
आतिश हो जाएँगी। तब इसराईल उन पर क़ब्ज़ा
करेगा जिन्होंने उस पर क़ब्ज़ा किया था।” यह
रब का फ़रमान है।

3“ऐ हसबोन, वावैला कर, क्योंकि अई शहर
बरबाद हुआ है। ऐ रब्बा की बेटियो, मदद के लिए
चिल्लाओ! टाट ओढ़कर मातम करो! बाड़ों
के अंदर बेचैनी से इधर-उधर फिरो! क्योंकि
मलिक देवता अपने पुजारियों और बुज़ुर्गों समेत
जिलावतन हो जाएगा। 4ऐ बेवफ़ा बेटी, तू घाटियों
पर, पानी से छलकती अपनी वादी पर कितना
फ़ख़्र करती है! तू अपने मालो-दौलत पर भरोसा
करके शेख़ी मारती है कि अब मुझ पर कोई
हमला नहीं करेगा।” 5क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-

अफ़वाज फ़रमाता है, "मैं तमाम पड़ोसियों की
तरफ़ से तुझ पर दहशत छा जाने दूँगा। तुम सबको
चारों तरफ़ मुंतशिर कर दिया जाएगा, और तेरे
पनाहगुज़ीनों को कोई जमा नहीं करेगा।
6लेकिन बाद में मैं अम्मोनियों को बहाल
करूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

अदोम की अदालत

7रब्बुल-अफ़वाज अदोम के बारे में फ़र-
माता है, "क्या तेमान में हिकमत का नामो-
निशान नहीं रहा? क्या दानिशमंद सहीह मशवरा
नहीं दे सकते? क्या उनकी दानाई बेकार हो गई
है?
8ऐ ददान के बाशिंदो, भागकर हिजरत करो,
ज़मीन के अंदर छुप जाओ। क्योंकि मैं एसौ की
औलाद पर आफ़त नाज़िल करता हूँ, मेरी सज़ा
का दिन क़रीब आ गया है। 9ऐ अदोम, अगर तू
अंगूर का बाग़ होता और मज़दूर फ़सल चुनने के
लिए आते तो थोड़ा-बहुत उनके पीछे रह जाता।
अगर डाकू रात के वक़्त तुझे लूट लेते तो वह सिर्फ़
उतना ही छीन लेते जितना उठाकर ले जा सकते
हैं। लेकिन तेरा अंजाम इससे कहीं ज़्यादा बुरा
होगा। 10क्योंकि मैंने एसौ को नंगा करके उस की
तमाम छुपने की जगहें ढूँड निकाली हैं। वह कहीं
भी छुप नहीं सकेगा। उस की औलाद, भाई और
हमसाये हलाक हो जाएंगे, एक भी बाक़ी नहीं
रहेगा। 11अपने यतीमों को पीछे छोड़ दे, क्योंकि
मैं उनकी जान को बचाए रखूँगा। तुम्हारी बेवाएँ
भी मुझ पर भरोसा रखें।"
12रब फ़रमाता है, "जिन्हें मेरे ग़ज़ब का प्याला
पीने का फ़ैसला नहीं सुनाया गया था उन्हें भी
पीना पड़ा। तो फिर तेरी जान किस तरह बचेगी?
नहीं, तू यक़ीनन सज़ा का प्याला पी लेगा।"
13रब फ़रमाता है, "मेरे नाम की क़सम, बुसरा
शहर गिर्दो-नवाह के तमाम शहरों समेत अबदी
खंडरात बन जाएगा। उसे देखकर लोगों के रोंगटे
खड़े हो जाएंगे, और वह उसे लान-तान करेंगे।
लानत करनेवाला अपने दुश्मन के लिए बुसरा ही
का-सा अंजाम चाहेगा।"
14मैंने रब की तरफ़ से पैग़ाम सुना है, "एक
क़ासिद को अक़वाम के पास भेजा गया है जो
उन्हें हुक्म दे, 'जमा होकर अदोम पर हमला करने
के लिए निकलो! उससे लड़ने के लिए उठो!'
15अब मैं तुझे छोटा बना दूँगा, एक ऐसी क़ौम
जिसे दीगर लोग हक़ीर जानेंगे। 16माज़ी में दूसरे
तुझसे दहशत खाते थे, लेकिन इस बात ने और तेरे
ग़ुरूर ने तुझे फ़रेब दिया है। बेशक तू चट्टानों की
दराड़ों में बसेरा करता है, और पहाड़ी बुलंदियाँ
तेरे क़ब्ज़े में हैं। लेकिन ख़ाह तू अपना घोंसला
उक़ाब की-सी ऊँची जगहों पर क्यों न बनाए तो
भी मैं तुझे वहाँ से उतारकर ख़ाक में मिला दूँगा।"
यह रब का फ़रमान है।
17"मुल्के-अदोम यों बरबाद हो जाएगा कि
वहाँ से गुज़रनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे।
उसके ज़ख़मों को देखकर वह 'तौबा तौबा'
कहेंगे।" 18रब फ़रमाता है, "उसका अंजाम
सदूम, अमूरा और उनके पड़ोसी शहरों की मानिंद
होगा जिन्हें अल्लाह ने उलटाकर नेस्तो-नाबूद
कर दिया। वहाँ कोई नहीं बसेगा। 19जिस तरह
शेर-बबर यरदन के जंगल से निकलकर शादाब
चरागाहों में चरनेवाली भेड़-बकरियों पर टूट पड़ता
है उसी तरह मैं एकदम अदोम को उसके अपने
मुल्क से भगा दूँगा। तब मैं अपने चुने हुए आदमी
को अदोम पर मुक़र्रर करूँगा। क्योंकि कौन मेरे
बराबर है? कौन मुझसे जवाब तलब कर सकता
है? वह गल्लाबान कहाँ है जो मेरा मुक़ाबला कर
सके?"
20चुनाँचे अदोम पर रब का फ़ैसला सुनो!
तेमान के बाशिंदों के लिए उसके मनसूबे पर ध्यान
दो! दुश्मन पूरे रेवड़ को सबसे नन्हे बच्चों से
लेकर बड़ों तक घसीटकर ले जाएगा। उसकी
चरागाह वीरानो-सुनसान हो जाएगी। 21अदोम
इतने धड़ाम से गिर जाएगा कि ज़मीन थरथरा
उठेगी। लोगों की चीख़ें बहरे-क़ुलज़ुम तक सुनाई
देंगी। 22वह देखो! दुश्मन उक़ाब की तरह उड़कर

अदोम पर झपट्टा मारता है। वह अपने परों को फैलाकर बुसरा पर साया डालता है। उस दिन अदोमी सूरमाओं का दिल दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाएगा।

दमिश्क़ की अदालत

23रब दमिश्क़ के बारे में फ़रमाता है,
“हमात और अरफ़ाद शरमिंदा हो गए हैं। बुरी ख़बरें सुनकर वह हिम्मत हार गए हैं। परेशानी ने उन्हें उस मुतलातिम समुंदर जैसा बेचैन कर दिया
है जो थम नहीं सकता। 24दमिश्क़ हिम्मत हारकर भागने के लिए मुड़ गया है। दहशत उस पर छा गई है, और वह दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह तड़प रहा है।
25हाय, दमिश्क़ को तर्क किया गया है! जिस मशहूर शहर से मेरा दिल लुत्फ़अंदोज़ होता
था वह वीरानो-सुनसान है।” 26रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, “उस दिन उसके जवान आदमी गलियों में गिरकर रह जाएंगे, उसके तमाम फ़ौजी
हलाक हो जाएंगे। 27मैं दमिश्क़ की फ़सील को आग लगा दूँगा जो फैलते फैलते बिन-हदद बादशाह के महलों को भी अपनी लपेट में ले लेगी।”

बद्दू क़बीलों की अदालत

28ज़ैल में क़ीदार और हसूर के बद्दू क़बीलों के बारे में कलाम दर्ज है। बाद में शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र ने उन्हें शिकस्त दी। रब फ़रमाता है,
“उठो! क़ीदार पर हमला करो! मशरिक़ में बसनेवाले बद्दू क़बीलों को तबाह करो! 29तुम
उनके ख़ैमों, भेड़-बकरियों और ऊँटों को छीन लोगे, उनके ख़ैमों के परदों और बाक़ी सामान को लूट लोगे। चीख़ें सुनाई देंगी, ‘हाय, चारों तरफ़ दहशत ही दहशत’!”
30रब फ़रमाता है, “ऐ हसूर में बसनेवाले क़बीलो, जल्दी से भाग जाओ, ज़मीन की दराड़ों में छुप जाओ! क्योंकि शाहे-बाबल ने तुम पर हमला करने का फ़ैसला करके तुम्हारे ख़िलाफ़
मनसूबा बाँध लिया है।” 31रब फ़रमाता है, “ऐ
बाबल के फ़ौजियो, उठकर उस क़ौम पर हमला करो जो अलहदगी में पुरसुकून और महफ़ूज़ ज़िंदगी गुज़ारती है, जिसके न दरवाज़े, न कुंडे
हैं। 32उनके ऊँट और बड़े बड़े रेवड़ लूट का माल बन जाएंगे। क्योंकि मैं रेगिस्तान के किनारे पर रहनेवाले इन क़बीलों को चारों तरफ़ मुंतशिर कर दूँगा। उन पर चारों तरफ़ से आफ़त आएगी।” यह
रब का फ़रमान है। 33“हसूर हमेशा तक वीरानो-सुनसान रहेगा, उसमें कोई नहीं बसेगा। गीदड़ ही उसमें अपने घर बना लेंगे।”

मुल्के-ऐलाम की अदालत

34शाहे-यहूदाह सिदक़ियाह की हुकूमत के इब्तिदाई दिनों में रब यरमियाह नबी से हमकलाम हुआ। पैग़ाम ऐलाम के मु-ताल्लिक़ था।
35“रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘मैं ऐ-लाम की कमान को तोड़ डालता हूँ, उस हथियार को जिस पर ऐलाम की ताक़त मबनी है।
36आसमान की चारों सिम्तों से मैं ऐलामियों के ख़िलाफ़ तेज़ हवाएँ चलाऊँगा जो उन्हें उड़ाकर चारों तरफ़ मुंतशिर कर देंगी। कोई ऐसा मुल्क नहीं होगा जिस तक ऐलामी जिलावतन नहीं
पहुँचेंगे।’ 37रब फ़रमाता है, ‘मैं ऐलाम को उसके जानी दुश्मनों के सामने पाश पाश कर दूँगा। मैं उन पर आफ़त लाऊँगा, मेरा सख़्त क़हर उन पर नाज़िल होगा। जब तक वह नेस्त न हों मैं तलवार
को उनके पीछे चलाता रहूँगा। 38तब मैं ऐलाम में अपना तख़्त खड़ा करके उसके बादशाह और बुज़ुर्गों को तबाह कर दूँगा।’ यह रब का फ़रमान है।
39लेकिन रब यह भी फ़रमाता है, ‘आने-वाले दिनों में मैं ऐलाम को बहाल करूँगा’।”

बाबल की अदालत

50 मुल्के-बाबल और उसके दारुल-
हुकूमत बाबल के बारे में रब का
कलाम यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ,
2“अक़वाम के सामने एलान करो, हर जगह
इत्तला दो! झंडा गाड़कर कुछ न छुपाओ बल्कि
सबको साफ़ बताओ, ‘बाबल शहर दुश्मन के
क़ब्ज़े में आ गया है! बेल देवता की बेहुरमती
हुई है, मर्दुक देवता पाश पाश हो गया है। बाबल
के तमाम देवताओं की बेहुरमती हुई है, तमाम
बुत चकनाचूर हो गए हैं!’ 3क्योंकि शिमाल से
एक क़ौम बाबल पर चढ़ आई है जो पूरे मुल्क को
बरबाद कर देगी। इनसान और हैवान सब हिजरत
कर जाएंगे, मुल्क में कोई नहीं रहेगा।”
4रब फ़रमाता है, “जब यह वक़्त आएगा तो
इसराईल और यहूदाह के लोग मिलकर अपने
वतन में वापस आएँगे। तब वह रोते हुए रब अपने
ख़ुदा को तलाश करने आएँगे। 5वह सिय्यून का
रास्ता पूछ पूछकर अपना रुख़ उस तरफ़ कर
लेंगे और कहेंगे, ‘आओ, हम रब के साथ लिपट
जाएँ, हम उसके साथ अबदी अहद बाँध लें जो
कभी न भुलाया जाए।’ 6मेरी क़ौम की हालत
गुमशुदा भेड़-बकरियों की मानिंद थी। क्योंकि
उनके गल्लाबानों ने उन्हें ग़लत राह पर लाकर
फ़रेबदेह पहाड़ों पर आवारा फिरने दिया था।
यों पहाड़ों पर इधर-उधर घूमते घूमते वह अपनी
आरामगाह भूल गए थे। 7जो भी उनको पाते
वह उन्हें पकड़कर खा जाते थे। उनके मुख़ालिफ़
कहते थे, ‘इसमें हमारा क्या क़ुसूर है? उन्होंने
तो रब का गुनाह किया है, गो वह उनकी हक़ीक़ी
चरागाह है और उनके बापदादा उस पर उम्मीद
रखते थे।’

बाबल से हिजरत करो!

8ऐ मेरी क़ौम, मुल्के-बाबल और उसके दारुल-
हुकूमत से भाग निकलो! उन बकरों की मानिंद
बन जाओ जो रेवड़ की राहनुमाई करते हैं।
9क्योंकि मैं शिमाली मुल्क में बड़ी क़ौमों के
इत्तहाद को बाबल पर हमला करने पर उभारूँगा,
जो उसके ख़िलाफ़ सफ़आरा होकर उस पर
क़ब्ज़ा करेगा। दुश्मन के तीरअंदाज़ इतने माहिर
होंगे कि हर तीर निशाने पर लग जाएगा।” 10रब
फ़रमाता है, “बाबल को यों लूट लिया जाएगा कि
तमाम लूटनेवाले सेर हो जाएंगे।
11ऐ मेरे मौरूसी हिस्से को लूटनेवालो, बेशक
तुम इस वक़्त शादियाना बजाकर ख़ुशी मनाते
हो। बेशक तुम गाहते हुए बछड़ों की तरह
उछलते-कूदते और घोड़ों की तरह हिनहिनाते हो।
12लेकिन आइंदा तुम्हारी माँ बेहद शरमिंदा हो
जाएगी, जिसने तुम्हें जन्म दिया वह रुसवा हो
जाएगी। आइंदा बाबल सबसे ज़लील क़ौम होगी,
वह ख़ुश्क और वीरान रेगिस्तान ही होगी। 13जब
रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल होगा तो वहाँ कोई
आबाद नहीं रहेगा बल्कि मुल्क सरासर वीरानो-
सुनसान रहेगा। बाबल से गुज़रनेवालों के रोंगटे
खड़े हो जाएंगे, उसके ज़ख़मों को देखकर सब
‘तौबा तौबा’ कहेंगे।
14ऐ तीरअंदाज़ो, बाबल शहर को घेरकर उस
पर तीर बरसाओ! तमाम तीर इस्तेमाल करो,
एक भी बाक़ी न रहे, क्योंकि उसने रब का गुनाह
किया है। 15चारों तरफ़ उसके ख़िलाफ़ जंग के
नारे लगाओ! देखो, उसने हथियार डाल दिए हैं।
उसके बुर्ज गिर गए, उस की दीवारें मिसमार हो
गई हैं। रब इंतक़ाम ले रहा है, चुनाँचे बाबल से ख़ूब
बदला लो। जो सुलूक उसने दूसरों के साथ किया,
वही उसके साथ करो। 16बाबल में जो बीज बोते
और फ़सल के वक़्त दराँती चलाते हैं उन्हें रूए-
ज़मीन पर से मिटा दो। उस वक़्त शहर के परदेसी
मोहलक तलवार से भागकर अपने अपने वतन में
वापस चले जाएंगे।
17इसराईली क़ौम बिखरी हुई भेड़ है, शेर-
बबरों ने उसे रेवड़ से अलग कर दिया है। क्योंकि
पहले शाहे-असूर ने आकर उसे हड़प कर लिया,
फिर शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र ने उस की हड्डियों
को चबा लिया।” 18इसलिए रब्बुल-अफ़वाज जो
इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, “पहले मैंने

शाहे-असूर को सज़ा दी, और अब मैं शाहे-बाबल
को उसके मुल्क समेत वही सज़ा दूँगा। 19लेकिन
इसराईल को मैं उस की अपनी चरागाह में वापस
लाऊँगा, और वह दुबारा करमिल और बसन
की ढलानों पर चरेगा, वह दुबारा इफ़राईम और
जिलियाद के पहाड़ी इलाक़ों में सेर हो जाएगा।"
20रब फ़रमाता है, "उन दिनों में जो इसराईल का
क़ुसूर ढूँड निकालने की कोशिश करे उसे कुछ
नहीं मिलेगा। यही यहूदाह की हालत भी होगी।
उसके गुनाह पाए नहीं जाएंगे, क्योंकि जिन लोगों
को मैं ज़िंदा छोड़ूँगा उन्हें मैं मुआफ़ कर दूँगा।"

अल्लाह अपने घर का बदला लेता है

21रब फ़रमाता है, "मुल्के-मरातायम और
फ़िक़ोद के बाशिंदों पर हमला करो! उन्हें मारते
मारते सफ़हाए-हस्ती से मिटा दो! जो भी हुक्म
मैंने दिया उस पर अमल करो।

22मुल्के-बाबल में जंग का शोर-शराबा सुनो!
बाबल की हौलनाक शिकस्त देखो! 23जो पहले
तमाम दुनिया का हथोड़ा था उसे तोड़कर टुकड़े
टुकड़े कर दिया गया है। बाबल को देखकर लोगों
को सख़्त धच्का लगता है।

24ऐ बाबल, तूने अपने लिए फंदा लगा दिया
और तू उसमें फँस भी गया—तुझे पता भी
न चला। तुझे ढूँड निकाला गया और तुझे
पकड़ा भी गया। क्यों? इसलिए कि तूने
रब का मुक़ाबला किया।" 25क़ादिरे-मुतलक़
जो रब्बुल-अफ़वाज है फ़रमाता है, "मैं अपना
असलिहाख़ाना खोलकर अपना ग़ज़ब नाज़िल
करने के हथियार निकाल लाया हूँ, क्योंकि मुल्के-
बाबल में उनकी अशद्द ज़रूरत है।

26चारों तरफ़ से बाबल पर चढ़ आओ! उसके
अनाज के गोदामों को खोलकर सारे माल का
ढेर लगाओ! फिर सब कुछ नेस्तो-नाबूद करो,
कुछ बचा न रहे। 27उसके तमाम बैलों को ज़बह
करो! सब क़साई की ज़द में आएँ! उन पर
अफ़सोस, क्योंकि उनका मुक़र्ररा दिन, उनकी
सज़ा का वक़्त आ गया है।

28सुनो! मुल्के-बाबल से बचे हुए पनाहगुज़ीन
सिय्यून में बता रहे हैं कि रब हमारे ख़ुदा ने किस
तरह इंतक़ाम लिया। क्योंकि अब उसने अपने घर
का बदला लिया है!

29बहुतों को बुलाओ ताकि बाबल पर हमला
करें! हाँ, तमाम तीरंदाज़ों को बुलाओ। उसे घेर
लो ताकि कोई न बचे। उसे उस की हरकतों का
मुनासिब अज्र दो! जो बुरा सुलूक उसने दूसरों के
साथ किया वही उसके साथ करो। क्योंकि उसका
रवैया रब, इसराईल के क़ुद्दूस के साथ गुस्ताखाना
था। 30इसलिए उसके नौजवान गलियों में गिरकर
मर जाएंगे, उसके तमाम फ़ौजी उस दिन हलाक
हो जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

31क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज फ़र-
माता है, "ऐ गुस्ताख़ शहर, मैं तुझसे निपटनेवाला
हूँ। क्योंकि वह दिन आ गया है जब तुझे सज़ा
मिलनी है। 32तब गुस्ताख़ शहर ठोकर खाकर
गिर जाएगा, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं
करेगा। मैं उसके तमाम शहरों में आग लगा दूँगा
जो गिर्दो-नवाह में सब कुछ राख कर देगी।"

रब अपनी क़ौम को रिहा करवाता है

33रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "इसरा-
ईल और यहूदाह के लोगों पर ज़ुल्म हुआ है।
जिन्होंने उन्हें असीर करके जिलावतन किया है वह
उन्हें रिहा नहीं करना चाहते, उन्हें जाने नहीं देते।
34लेकिन उनका छुड़ानेवाला क़वी है, उसका
नाम रब्बुल-अफ़वाज है। वह ख़ूब लड़कर उनका
मामला दुरुस्त करेगा ताकि ज़मीन को आरामो-
सुकून मिल जाए। लेकिन बाबल के बाशिंदों को
वह थरथराने देगा।"

35रब फ़रमाता है, "तलवार बाबल की क़ौम
पर टूट पड़े! वह बाबल के बाशिंदों, उसके बुज़ुर्गों
और दानिशमंदों पर टूट पड़े! 36तलवार उसके
क़िस्मत का हाल बतानेवालों पर टूट पड़े ताकि
बेवुक़ूफ़ साबित हों। तलवार उसके सूरमाओं पर
टूट पड़े ताकि उन पर दहशत छा जाए। 37तलवार
बाबल के घोड़ों, रथों और परदेसी फ़ौजियों पर

टूट पड़े ताकि वह औरतों की मानिंद बन जाएँ।
तलवार उसके ख़ज़ानों पर टूट पड़े ताकि वह छीन
लिए जाएँ। 38तलवार उसके पानी के ज़ख़ीरों
पर टूट पड़े ताकि वह ख़ुश्क हो जाएँ। क्योंकि
मुल्के-बाबल बुतों से भरा हुआ है, ऐसे बुतों से
जिनके बाइस लोग दीवानों की तरह फिरते हैं।
39आख़िर में गलियों में सिर्फ़ रेगिस्तान के जानवर
और जंगली कुत्ते फिरेंगे, वहाँ उक़ाबी उल्लू बसेंगे।
वह हमेशा तक इनसान की बस्तियों से महरूम
और नसल-दर-नसल ग़ैरआबाद रहेगा।” 40रब
फ़रमाता है, “उस की हालत सदूम और अमूरा
की-सी होगी जिन्हें मैंने पड़ोस के शहरों समेत
उलटाकर सफ़हाए-हस्ती से मिटा दिया। आइंदा
वहाँ कोई नहीं बसेगा, कोई नहीं आबाद होगा।”
यह रब का फ़रमान है।

शिमाल से दुश्मन आ रहा है

41“देखो, शिमाल से फ़ौज आ रही है, एक बड़ी
क़ौम और मुतअद्दिद बादशाह दुनिया की इंतहा
से रवाना हुए हैं। 42उसके ज़ालिम और बेरहम
फ़ौजी कमान और शमशेर से लैस हैं। जब वह
अपने घोड़ों पर सवार होकर चलते हैं तो गरजते
समुंदर का-सा शोर बरपा होता है। ऐ बाबल बेटी,
वह सब सफ़आरा होकर तुझसे लड़ने आ रहे हैं।
43उनकी ख़बर सुनते ही शाहे-बाबल हिम्मत हार
गया है। ख़ौफ़ज़दा होकर वह दर्दे-ज़ह में मुब्तला
औरत की तरह तड़पने लगा है।

44जिस तरह शेर-बबर यरदन के जंगलों से
निकलकर शादाब चरागाहों में चरनेवाली भेड़-
बकरियों पर टूट पड़ता है उसी तरह मैं बाबल
को एकदम उसके अपने मुल्क से भगा दूँगा। तब
मैं अपने चुने हुए आदमी को बाबल पर मुक़र्रर
करूँगा। क्योंकि कौन मेरे बराबर है? कौन मुझसे
जवाब तलब कर सकता है? वह गल्लाबान कहाँ
है जो मेरा मुक़ाबला कर सके?” 45चुनाँचे बाबल
पर रब का फ़ैसला सुनो, मुल्के-बाबल के लिए
उसके मनसूबे पर ध्यान दो! “दुश्मन पूरे रेवड़
को सबसे नन्हे बच्चों से लेकर बड़ों तक घसीटकर
ले जाएगा। उस की चरागाह वीरानो-सुनसान हो
जाएगी।

46ज्योंही नारा बुलंद होगा कि बाबल दुश्मन के
क़ब्ज़े में आ गया है तो ज़मीन लरज़ उठेगी। तब
मदद के लिए बाबल की चीख़ें दीगर ममालिक
तक गूँजेंगी।”

बाबल का ज़माना ख़त्म है

51 रब फ़रमाता है, “मैं बाबल और उसके
बाशिंदों के ख़िलाफ़ मोहलक आँधी
चलाऊँगा। 2मैं मुल्के-बाबल में ग़ैरमुल्की भेजूँगा
ताकि वह उसे अनाज की तरह फटककर तबाह
करें। आफ़त के दिन वह पूरे मुल्क को घेरे रखेंगे।
3तीरअंदाज़ को तीर चलाने से रोको! फ़ौजी को
ज़िरा-बकतर पहनकर लड़ने के लिए खड़े होने न
दो! उनके नौजवानों को ज़िंदा मत छोड़ना बल्कि
फ़ौज को सरासर नेस्तो-नाबूद कर देना!

4तब मुल्के-बाबल में हर तरफ़ लाशें नज़र
आएँगी, तलवार के चिरे हुए उस की गलियों में पड़े
रहेंगे। 5लेकिन रब्बुल-अफ़वाज ने इसराईल और
यहूदाह को अकेला[a] नहीं छोड़ा, उनके ख़ुदा ने
उन्हें तर्क नहीं किया हालाँकि इसराईल के क़ुद्दूस
के हुज़ूर उनके मुल्क का क़ुसूर संगीन है। 6बाबल
से भाग निकलो! दौड़कर अपनी जान बचाओ,
वरना तुम्हें भी बाबल के क़ुसूर का अज्र मिलेगा।
क्योंकि रब के इंतक़ाम का वक़्त आ पहुँचा है,
अब बाबल को मुनासिब सज़ा मिलेगी।

7बाबल रब के हाथ में सोने का प्याला था
जिसे उसने पूरी दुनिया को पिला दिया। अक़वाम
उस की मै पी पीकर मत्वाली हो गईं, इसलिए
वह दीवानी हो गई हैं। 8लेकिन अब यह प्याला
अचानक गिरकर टूट गया है। चुनाँचे बाबल पर
आहो-ज़ारी करो! उसके दर्द और तकलीफ़ को
दूर करने के लिए बलसान ले आओ, शायद उसे
शफ़ा मिले। 9लेकिन लोग कहेंगे, ‘हम बाबल
की मदद करना चाहते थे, लेकिन उसके ज़ख़्म

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : रंडवा।

भर नहीं सकते। इसलिए आओ, हम उसे छोड़ दें और हर एक अपने अपने मुल्क में जा बसे। क्योंकि उस की सख़्त अदालत हो रही है, जितना आसमान और बादल बुलंद हैं उतनी ही सख़्त उस की सज़ा है।'

10रब की क़ौम बोले, 'रब ने हमारे हक़ में लड़कर हमें बहाल कर दिया है। आओ, हम सिय्यून में वह कुछ सुनाएँ जो रब हमारे ख़ुदा ने किया है।'

11तीरों को तेज़ करो! अपना तरकश उनसे भर लो! रब मादी बादशाहों को हरकत में लाया है, क्योंकि वह बाबल को तबाह करने का इरादा रखता है। रब इंतक़ाम लेगा, अपने घर की तबाही का बदला लेगा।
12बाबल की फ़सील के ख़िलाफ़ जंग का झंडा गाड़ दो! शहर के इर्दगिर्द पहरादारी का बंदोबस्त मज़बूत करो, हाँ मज़ीद संतरी खड़े करो। क्योंकि रब ने बाबल के बाशिंदों के ख़िलाफ़ मनसूबा बाँधकर उसका एलान किया है, और अब वह उसे पूरा करेगा।

13ऐ बाबल बेटी, तू गहरे पानी के पास बसती और निहायत दौलतमंद हो गई है। लेकिन ख़बरदार! तेरा अंजाम क़रीब ही है, तेरी ज़िंदगी का धागा कट गया है।
14रब्बुल-अफ़वाज ने अपने नाम की क़सम खाकर फ़रमाया है कि मैं तुझे दुश्मनों से भर दूँगा, और वह टिड्डियों के ग़ोल की तरह पूरे शहर को ढाँप लेंगे। हर जगह वह तुझ पर फ़तह के नारे लगाएँगे।

15देखो, अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से ज़मीन को ख़लक़ किया, उसी ने अपनी हिकमत से दुनिया की बुनियाद रखी, और उसी ने अपनी समझ के मुताबिक़ आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया।
16उसके हुक्म पर आसमान पर पानी के ज़ख़ीरे गरजने लगते हैं। वह दुनिया की इंतहा से बादल चढ़ने देता, बारिश के साथ बिजली कड़कने देता और अपने गोदामों से हवा निकलने देता है।

17तमाम इनसान अहमक़ और समझ से ख़ाली हैं। हर सुनार अपने बुतों के बाइस शरमिंदा हुआ है। उसके बुत धोका ही हैं, उनमें दम नहीं।
18वह फ़ज़ूल और मज़हकाख़ेज़ हैं। अदालत के वक़्त वह नेस्त हो जाएंगे।
19अल्लाह जो याक़ूब का मौरूसी हिस्सा है इनकी मानिंद नहीं है। वह सबका ख़ालिक़ है, और इसराईली क़ौम उसका मौरूसी हिस्सा है। रब्बुल-अफ़वाज ही उसका नाम है।

अब रब बाबल पर हमला करेगा

20ऐ बाबल, तू मेरा हथोड़ा, मेरा जंगी हथियार था। तेरे ही ज़रीए मैंने क़ौमों को पाश पाश कर दिया, सलतनतों को ख़ाक में मिला दिया।
21तेरे ही ज़रीए मैंने घोड़ों को सवारों समेत और रथों को रथबानों समेत पाश पाश कर दिया।
22तेरे ही ज़रीए मैंने मर्दों और औरतों, बुज़ुर्गों और बच्चों, नौजवानों और कुँवारियों को पारा पारा कर दिया।
23तेरे ही ज़रीए मैंने गल्लाबान और उसके रेवड़, किसान और उसके बैलों, गवर्नरों और सरकारी मुलाज़िमों को रेज़ा रेज़ा कर दिया।

24लेकिन अब मैं बाबल और उसके तमाम बाशिंदों को उनकी सिय्यून के साथ बदसुलूकी का पूरा अज्र दूँगा। तुम अपनी आँखों से इसके गवाह होगे।" यह रब का फ़रमान है।

25रब फ़रमाता है, "ऐ बाबल, पहले तू मोहलक पहाड़ था जिसने तमाम दुनिया का सत्यानास कर दिया। लेकिन अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ बढ़ाकर तुझे ऊँची ऊँची चट्टानों से पटख़ दूँगा। आख़िरकार मलबे का झुलसा हुआ ढेर ही बाक़ी रहेगा।
26तू इतना तबाह हो जाएगा कि तेरे पत्थर न किसी मकान के कोनों के लिए, न किसी बुनियाद के लिए इस्तेमाल हो सकेंगे।" यह रब का फ़रमान है।

27"आओ, मुल्क में जंग का झंडा गाड़ दो! अक़वाम में नरसिंगा फूँक फूँककर उन्हें बाबल के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए मख़सूस करो! उससे लड़ने के लिए अरारात, मिन्नी और अश्कनाज़ की सलतनतों को बुलाओ! बाबल से लड़ने के लिए

कमाँडर मुक़र्रर करो। घोड़े भेज दो जो टिड्डियों
के हौलनाक ग़ोल की तरह उस पर टूट पड़ें।
28अक़वाम को बाबल से लड़ने के लिए मख़सूस
करो! मादी बादशाह अपने गवर्नरों, अफ़सरों
और तमाम मुती ममालिक समेत तैयार हो जाएँ।
29ज़मीन लरज़ती और थरथराती है, क्योंकि रब
का मनसूबा अटल है, वह मुल्के-बाबल को यों
तबाह करना चाहता है कि आइंदा उसमें कोई न
रहे।

30बाबल के जंगआज़मूदा फ़ौजी लड़ने से बाज़
आकर अपने क़िलों में छुप गए हैं। उनकी ताक़त
जाती रही है, वह औरतों की मानिंद हो गए हैं।
अब बाबल के घरों को आग लग गई है, फ़सील
के दरवाज़ों के कुंडे टूट गए हैं। 31यके बाद
दीगरे क़ासिद दौड़कर शाहे-बाबल को इत्तला देते
हैं, 'शहर चारों तरफ़ से दुश्मन के क़ब्ज़े में है!
32दरिया को पार करने के तमाम रास्ते उसके
हाथ में हैं, सरकंडे का दलदली इलाक़ा जल रहा
है, और फ़ौजी ख़ौफ़ के मारे बेहिसो-हरकत हो
गए हैं'।"

33क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, "फ़सल की कटाई से पहले
पहले गाहने की जगह के फ़र्श को दबा दबाकर
मज़बूत किया जाता है। यही बाबल बेटी की हालत
है। फ़सल की कटाई क़रीब आ गई है, और थोड़ी
देर के बाद बाबल को पाँवों तले ख़ूब दबाया
जाएगा।

रब बाबल से यरूशलम का इंतक़ाम लेगा

34सिय्यून बेटी रोती है, 'शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र ने मुझे हड़प कर लिया, चूस लिया,
ख़ाली बरतन की तरह एक तरफ़ रख दिया है।
उसने अज़दहे की तरह मुझे निगल लिया, अपने
पेट को मेरी लज़ीज़ चीज़ों से भर लिया है। फिर
उसने कुल्ली करके मुझे उगल दिया।' 35लेकिन
अब सिय्यून की रहनेवाली कहे, 'जो ज़्यादती
मेरे साथ हुई वह बाबल के साथ की जाए। जो
क़त्लो-ग़ारत मुझमें हुई वह बाबल के बाशिंदों में
मच जाए'!"

36रब यरूशलम से फ़रमाता है, "देख, मैं ख़ुद
तेरे हक़ में लड़ूँगा, मैं ख़ुद तेरा बदला लूँगा। तब
उसकी झील ख़ुश्क हो जाएगी, उसके चश्मे बंद
हो जाएंगे। 37बाबल मलबे का ढेर बन जाएगा।
गीदड़ ही उसमें अपना घर बना लेंगे। उसे देखकर
गुज़रनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह
'तौबा तौबा' कहकर आगे निकलेंगे। कोई भी वहाँ
नहीं बसेगा।

38इस वक़्त बाबल के बाशिंदे शेरबबर की तरह
दहाड़ रहे हैं, वह शेर के बच्चों की तरह ग़ुर्रा रहे हैं।
39लेकिन रब फ़रमाता है कि वह अभी मस्त होंगे
कि मैं उनके लिए ज़ियाफ़त तैयार करूँगा, एक
ऐसी ज़ियाफ़त जिसमें वह मत्वाले होकर ख़ुशी
के नारे मारेंगे, फिर अबदी नींद सो जाएंगे। उस
नींद से वह कभी नहीं उठेंगे। 40मैं उन्हें भेड़ के
बच्चों, मेंढों और बकरों की तरह क़साई के पास
ले जाऊँगा।

41हाय, बाबल दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है!
जिसकी तारीफ़ पूरी दुनिया करती थी वह छीन
लिया गया है! अब उसे देखकर क़ौमों के रोंगटे
खड़े हो जाते हैं। 42समुंदर बाबल पर चढ़ आया
है, उस की गरजती लहरों ने उसे ढाँप लिया है।
43उसके शहर रेगिस्तान बन गए हैं, अब चारों
तरफ़ ख़ुश्क और वीरान बयाबान ही नज़र आता
है। न कोई उसमें रहता, न उसमें से गुज़रता है।

44मैं बाबल के देवता बेल को सज़ा देकर उसके
मुँह से वह कुछ निकाल दूँगा जो उसने हड़प
कर लिया था। अब से दीगर अक़वाम जौक़-दर-
जौक़ उसके पास नहीं आएँगी, क्योंकि बाबल की
फ़सील भी गिर गई है।

45ऐ मेरी क़ौम, बाबल से निकल आ! हर एक
अपनी जान बचाने के लिए वहाँ से भाग जाए,
क्योंकि रब का शदीद ग़ज़ब उस पर नाज़िल होने
को है।

46जब अफ़वाहें मुल्क में फैल जाएँ तो हिम्मत
मत हारना, न ख़ौफ़ खाना। क्योंकि हर साल

कोई और अफ़वाह फैलेगी, ज़ुल्म पर ज़ुल्म और
हुक्मरान पर हुक्मरान आता रहेगा। 47क्योंकि वह
वक़्त क़रीब ही है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा
दूँगा। तब पूरे मुल्क की बेहुरमती हो जाएगी, और
उसके मक़तूल उसके बीच में गिरकर पड़े रहेंगे।
48तब आसमानो-ज़मीन और जो कुछ उनमें है
बाबल पर शादियाना बजाएंगे। क्योंकि तबाहकुन
दुश्मन शिमाल से उस पर हमला करने आ रहा
है।" यह रब का फ़रमान है।

49"ऐ इसराईल के मक़तूलो, बाबल को भी
गिरना है, जिस तरह पूरी दुनिया के मक़तूल
बाबल के वास्ते गिर गए हैं।

50ऐ तलवार से बचे हुए इसराईलियो, रुके न
रहो बल्कि रवाना हो जाओ! दूर-दराज़ मुल्क में
रब को याद करो, यरूशलम का भी ख़याल करो!
51बेशक तुम कहते हो, 'हम शरमिंदा हैं, हमारी
सख़्त रुसवाई हुई है, शर्म के मारे हमने अपने मुँह
को ढाँप लिया है। क्योंकि परदेसी रब के घर की
मुक़द्दसतरीन जगहों में घुस आए हैं।'

52लेकिन रब फ़रमाता है कि वह वक़्त
आनेवाला है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा दूँगा।
तब उसके पूरे मुल्क में मौत के घाट उतरनेवालों
की आहें सुनाई देंगी। 53ख़ाह बाबल की ताक़त
आसमान तक ऊँची क्यों न हो, ख़ाह वह अपने
बुलंद क़िले को कितना मज़बूत क्यों न करे तो भी
वह गिर जाएगा। मैं तबाह करनेवाले फ़ौजी उस
पर चढ़ा लाऊँगा।" यह रब का फ़रमान है।

54"सुनो! बाबल में चीख़ें बुलंद हो रही हैं,
मुल्के-बाबल धड़ाम से गिर पड़ा है। 55क्योंकि
रब बाबल को बरबाद कर रहा, वह उसका शोर-
शराबा बंद कर रहा है। दुश्मन की लहरें मुतलातिम
समुंदर की तरह उस पर चढ़ रही हैं, उनकी
गरजती आवाज़ फ़िज़ा में गूँज रही है। 56क्योंकि
तबाहकुन दुश्मन बाबल पर हमला करने आ रहा
है। तब उसके सूरमाओं को पकड़ा जाएगा और
उनकी कमानें टूट जाएँगी। क्योंकि रब इंतक़ाम
का ख़ुदा है, वह हर इनसान को उसका मुनासिब
अज्र देगा।"

57दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बुल-
अफ़वाज है फ़रमाता है, "मैं बाबल के बड़ों को
मतवाला करूँगा, ख़ाह वह बुज़ुर्ग, दानिशमंद,
गवर्नर, सरकारी अफ़सर या फ़ौजी क्यों न हों।
तब वह अबदी नींद सो जाएंगे और दुबारा कभी
नहीं उठेंगे।"

58रब फ़रमाता है, "बाबल की मोटी मोटी
फ़सील को ख़ाक में मिलाया जाएगा, और उसके
ऊँचे ऊँचे दरवाज़े राख हो जाएंगे। तब यह कहावत
बाबल पर सादिक़ आएगी, 'अक़वाम की मेहनत-
मशक़्क़त बेफ़ायदा रही, जो कुछ उन्होंने बड़ी
मुश्किल से बनाया वह नज़रे-आतिश हो गया
है'।"

यरमियाह अपना पैग़ाम बाबल भेजता है

59यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह के चौथे
साल में यरमियाह नबी ने यह कलाम सिरायाह
बिन नैरियाह बिन महसियाह के सुपुर्द कर दिया
जो उस वक़्त बादशाह के साथ बाबल के लिए
रवाना हुआ। सफ़र का पूरा बंदोबस्त सिरायाह के
हाथ में था।

60यरमियाह ने तूमार में बाबल पर नाज़िल
होनेवाली आफ़त की पूरी तफ़सील लिख दी थी।
उसके बाबल के बारे में तमाम पैग़ामात उसमें
क़लमबंद थे। 61उसने सिरायाह से कहा, "बाबल
पहुँचकर ध्यान से तूमार की तमाम बातों की
तिलावत करें। 62तब दुआ करें, 'ऐ रब, तूने
एलान किया है कि मैं बाबल को यों तबाह करूँगा
कि आइंदा न इनसान, न हैवान उसमें बसेगा।
शहर अबद तक वीरानो-सुनसान रहेगा।' 63पूरी
किताब की तिलावत के इख़्तिताम पर उसे पत्थर
के साथ बाँध लें, फिर दरियाए-फ़ुरात में फेंककर
64बोलें, 'जो आफ़त मैं उस पर नाज़िल करूँगा
उसकी वजह से बाबल का बेड़ा इस पत्थर की
तरह ग़रक़ हो जाएगा। वह दुबारा कभी नहीं उभर
आएगा चाहे वह कितनी मेहनत-मशक़्क़त क्यों न
करें'।"

यरमियाह के पैग़ामात यहाँ इख़्तिताम पर पहुँच गए हैं।

शाहे-यहूदाह सिदक़ियाह की हुकूमत

52 सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 11 साल था। उस की माँ हमूतल बिंत यरमियाह लिबना शहर की रहनेवाली थी। 2यहूयक़ीम की तरह सिदक़ियाह ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था। 3रब यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों से इतना नाराज़ हुआ कि आख़िर में उसने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया।

सिदक़ियाह का फ़रार और गिरिफ़्तारी

एक दिन सिदक़ियाह बाबल के बादशाह से सरकश हुआ, 4इसलिए शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र तमाम फ़ौज अपने साथ लेकर दुबारा यरूशलम पहुँचा ताकि उस पर हमला करे।

सिदक़ियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल की फ़ौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी। यह काम दसवें महीने के दसवें दिन[a] शुरू हुआ। पूरे शहर के इर्दगिर्द बादशाह ने पुश्ते बनवाए। 5सिदक़ियाह की हुकूमत के 11वें साल तक यरूशलम क़ायम रहा। 6लेकिन फिर काल ने शहर में ज़ोर पकड़ा, और अवाम के लिए खाने की चीज़ें न रहीं।

चौथे महीने के नवें दिन[b] 7बाबल के फ़ौजियों ने फ़सील में रख़ना डाल दिया। उसी रात सिदक़ियाह अपने तमाम फ़ौजियों समेत फ़रार होने में कामयाब हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से घिरा हुआ था। वह फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़ के साथ मुलहिक़ दो दीवारों के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ़ भागने लगे, 8लेकिन बाबल की फ़ौज ने बादशाह का ताक़्क़ुब करके उसे यरीहू के मैदान में पकड़ लिया। उसके फ़ौजी उससे अलग होकर चारों तरफ़ मुंतशिर हो गए, 9और वह ख़ुद गिरिफ़्तार हो गया। फिर उसे मुल्के-हमात के शहर रिबला में शाहे-बाबल के पास लाया गया, और वहीं उसने सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर किया। 10सिदक़ियाह के देखते देखते शाहे-बाबल ने रिबला में उसके बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ उसने यहूदाह के तमाम बुज़ुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया। 11फिर उसने सिदक़ियाह की आँखें निकलवाकर उसे पीतल की ज़ंजीरों में जकड़ लिया और बाबल ले गया जहाँ वह जीते-जी रहा।

यरूशलम और रब के घर की तबाही

12शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र की हुकूमत के 19वें साल में बादशाह का ख़ास अफ़सर नबूज़रादान यरूशलम पहुँचा। वह शाही मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था। पाँचवें महीने के सातवें दिन[c] उसने आकर 13रब के घर, शाही महल और यरूशलम के तमाम मकानों को जला दिया। हर बड़ी इमारत भस्म हो गई। 14उसने अपने तमाम फ़ौजियों से शहर की पूरी फ़सील को भी गिरा दिया। 15फिर नबूज़रादान ने सबको जिलावतन कर दिया जो यरूशलम में पीछे रह गए थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान ग़द्दारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे। नबूज़रादान बाक़ीमाँदा कारीगर और ग़रीबों में से भी कुछ बाबल ले गया। 16लेकिन उसने सबसे निचले तबक़े के बाज़ लोगों को मुल्के-यहूदाह में छोड़ दिया ताकि वह अंगूर के बाग़ों और खेतों को सँभालें।

17बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जाकर पीतल के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों और समुंदर नामी पीतल के हौज़ को तोड़ दिया और सारा पीतल उठाकर बाबल ले गए। 18वह रब के घर की ख़िदमत

[a] 15 जनवरी।
[b] 18 जुलाई।
[c] 17 अगस्त।

सरंजाम देने के लिए दरकार सामान भी ले
गए यानी बालटियाँ, बेलचे, बत्ती कतरने के
औज़ार, छिड़काव के कटोरे, प्याले और पीतल
का बाक़ी सारा सामान। 19ख़ालिस सोने और
चाँदी के बरतन भी इसमें शामिल थे यानी बासन,
जलते हुए कोयले के बरतन, छिड़काव के कटोरे,
बालटियाँ, शमादान, प्याले और मै की नज़रें
पेश करने के बरतन। शाही मुहाफ़िज़ों का यह
अफ़सर सारा सामान उठाकर बाबल ले गया।
20जब दोनों सतूनों, समुंदर नामी हौज़, हौज़
को उठानेवाले पीतल के बैलों और बासनों को
उठानेवाली हथगाड़ियों का पीतल तुड़वाया गया
तो वह इतना वज़नी था कि उसे तोला न जा सका।
सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब के घर के लिए
बनवाई थीं। 21हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट और
घेरा 18 फ़ुट था। दोनों खोखले थे, और उनकी
दीवारों की मोटाई 3 इंच थी। 22उनके बालाई
हिस्सों की ऊँचाई साढ़े सात फ़ुट थी, और वह
पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे।
2396 अनार लगे हुए थे। जाली के इर्दगिर्द कुल
100 अनार लगे थे।

24शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रा-
दान ने ज़ैल के क़ैदियों को अलग कर दिया :
इमामे-आज़म सिरायाह, उसके बाद आनेवाले
इमाम सफ़नियाह, रब के घर के तीन दरबानों,
25शहर के बचे हुओं में से उस अफ़सर को जो
शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर था, सिदक़ियाह
बादशाह के सात मुशीरों, उम्मत की भरती
करनेवाले अफ़सर और शहर में मौजूद उसके 60
मर्दों को। 26नबूज़रादान इन सबको अलग करके
सूबा हमात के शहर रिबला ले गया जहाँ शाहे-
बाबल था। 27वहाँ नबूकदनज़्ज़र ने उन्हें सज़ाए-
मौत दी।

यों यहूदाह के बाशिंदों को जिलावतन कर
दिया गया। 28नबूकदनज़्ज़र ने अपनी हुकूमत
के 7वें साल में यहूदाह के 3,023 अफ़राद,
2918वें साल में यरूशलम के 832 अफ़राद,
30और 23वें साल में 745 अफ़राद को
जिलावतन कर दिया। यह आख़िरी लोग
शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान के
ज़रीए बाबल लाए गए। कुल 4,600 अफ़राद
जिलावतन हुए।

यहूयाकीन को आज़ाद किया जाता है

31यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की
जिलावतनी के 37वें साल में अवील-मरूदक
बाबल का बादशाह बना। उसी साल के 12वें
महीने के 25वें दिन[a] उसने यहूयाकीन को
क़ैदख़ाने से आज़ाद कर दिया। 32उसने उसके
साथ नरम बातें करके उसे इज़्ज़त की ऐसी कुरसी
पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए गए
बाक़ी बादशाहों की निसबत ज़्यादा अहम थी।
33यहूयाकीन को क़ैदी के कपड़े उतारने की
इजाज़त मिली, और उसे ज़िंदगी-भर बादशाह
की मेज़ पर बाक़ायदगी से खाना खाने का शरफ़
हासिल रहा। 34बादशाह ने मुक़र्रर किया कि
यहूयाकीन को उम्र-भर इतना वज़ीफ़ा मिलता रहे
कि उस की रोज़मर्रा ज़रूरियात पूरी होती रहें।

[a]31 मार्च।

नोहा

वीरानो-सुनसान

1 हाय, अफ़सोस! यरूशलम बेटी कितनी तनहा बैठी है, गो उसमें पहले इतनी रौनक़ थी। जो पहले अक़वाम में अव्वल दर्जा रखती थी वह बेवा बन गई है, जो पहले ममालिक की रानी थी वह ग़ुलामी में आ गई है।

2रात को वह रो रोकर गुज़ारती है, उसके गाल आँसुओं से तर रहते हैं। आशिक़ों में से कोई नहीं रहा जो उसे तसल्ली दे। दोस्त सबके सब बेवफ़ा होकर उसके दुश्मन बन गए हैं।

3पहले भी यहूदाह बेटी बड़ी मुसीबत में फँसी हुई थी, पहले भी उसे सख़्त मज़दूरी करनी पड़ी। लेकिन अब वह जिलावतन होकर दीगर अक़वाम के बीच में रहती है, अब उसे कहीं भी ऐसी जगह नहीं मिलती जहाँ सुकून से रह सके। क्योंकि जब वह बड़ी तकलीफ़ में मुब्तला थी तो दुश्मन ने उसका ताक़्क़ुब करके उसे घेर लिया।

4सिय्यून की राहें मातमज़दा हैं, क्योंकि कोई ईद मनाने के लिए नहीं आता। शहर के तमाम दरवाज़े वीरानो-सुनसान हैं। उसके इमाम आहें भर रहे, उस की कुँवारियाँ ग़म खा रही हैं और उसे ख़ुद शदीद तलख़ी महसूस हो रही है।

5उसके मुख़ालिफ़ मालिक बन गए, उसके दुश्मन सुकून से रह रहे हैं। क्योंकि रब ने शहर को उसके मुतअद्दिद गुनाहों का अज्र देकर उसे दुख पहुँचाया है। उसके फ़रज़ंद दुश्मन के आगे आगे चलकर जिलावतन हो गए हैं।

6सिय्यून बेटी की तमाम शानो-शौकत जाती रही है। उसके बुज़ुर्ग चरागाह न पानेवाले हिरन हैं जो थकते थकते शिकारियों के आगे आगे भागते हैं।

7अब जब यरूशलम मुसीबतज़दा और बेवतन है तो उसे वह क़ीमती चीज़ें याद आती हैं जो उसे क़दीम ज़माने से ही हासिल थीं। क्योंकि जब उस की क़ौम दुश्मन के हाथ में आई तो कोई नहीं था जो उस की मदद करता बल्कि उसके मुख़ालिफ़ तमाशा देखने दौड़े आए, वह उस की तबाही से ख़ुश होकर हँस पड़े।

8यरूशलम बेटी से संगीन गुनाह सरज़द हुआ है, इसी लिए वह लान-तान का निशाना बन गई है। जो पहले उस की इज़्ज़त करते थे वह सब उसे हक़ीर जानते हैं, क्योंकि उन्होंने उस की बरहनगी देखी है। अब वह आहें भर भरकर अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लेती है।

9गो उसके दामन में बहुत गंदगी थी, तो भी उसने अपने अंजाम का ख़याल तक न किया। अब वह धड़ाम से गिर गई है, और कोई नहीं है जो उसे तसल्ली दे। “ऐ रब, मेरी मुसीबत का लिहाज़ कर! क्योंकि दुश्मन शेख़ी मार रहा है।”

10जो कुछ भी यरूशलम को प्यारा था उस पर दुश्मन ने हाथ डाला है। हत्ता कि उसे देखना पड़ा

कि ग़ैरअक़वाम उसके मक़दिस में दाख़िल हो रहे हैं, गो तूने ऐसे लोगों को अपनी जमात में शरीक होने से मना किया था।

11तमाम बाशिंदे आहें भर भरकर रोटी की तलाश में रहते हैं। हर एक खाने का कोई न कोई टुकड़ा पाने के लिए अपनी बेशक़ीमत चीज़ें बेच रहा है। ज़हन में एक ही ख़याल है कि अपनी जान को किसी न किसी तरह बचाए। "ऐ रब, मुझ पर नज़र डालकर ध्यान दे कि मेरी कितनी तज़लील हुई है।

12ऐ यहाँ से गुज़रनेवालो, क्या यह सब कुछ तुम्हारे नज़दीक बेमानी है? ग़ौर से सोच लो, जो ईज़ा मुझे बरदाश्त करनी पड़ती है क्या वह कहीं और पाई जाती है? हरगिज़ नहीं! यह रब की तरफ़ से है, उसी का सख़्त ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हुआ है।

13बुलंदियों से उसने मेरी हड्डियों पर आग नाज़िल करके उन्हें कुचल दिया। उसने मेरे पाँवों के सामने जाल बिछाकर मुझे पीछे हटा दिया। उसी ने मुझे वीरानो-सुनसान करके हमेशा के लिए बीमार कर दिया।

14मेरे जरायम का जुआ भारी है। रब के हाथ ने उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़कर मेरी गरदन पर रख दिया। अब मेरी ताक़त ख़त्म है, रब ने मुझे उन्हीं के हवाले कर दिया जिनका मुक़ाबला मैं कर ही नहीं सकता।

15रब ने मेरे दरमियान के तमाम सूरमाओं को रद्द कर दिया, उसने मेरे ख़िलाफ़ जुलूस निकलवाया जो मेरे जवानों को पाश पाश करे। हाँ, रब ने कुँवारी यहूदाह बेटी को अंगूर का रस निकालने के हौज़ में फेंककर कुचल डाला।

16इसलिए मैं रो रही हूँ, मेरी आँखों से आँसू टपकते रहते हैं। क्योंकि क़रीब कोई नहीं है जो मुझे तसल्ली देकर मेरी जान को तरो-ताज़ा करे। मेरे बच्चे तबाह हैं, क्योंकि दुश्मन ग़ालिब आ गया है।"

17सिय्यून बेटी अपने हाथ फैलाती है, लेकिन कोई नहीं है जो उसे तसल्ली दे। रब के हुक्म पर याक़ूब के पड़ोसी उसके दुश्मन बन गए हैं। यरूशलम उनके दरमियान घिनौनी चीज़ बन गई है।

18"रब हक़-बजानिब है, क्योंकि मैं उसके कलाम से सरकश हुई। ऐ तमाम अक़वाम, सुनो! मेरी ईज़ा पर ग़ौर करो! मेरे नौजवान और कुँवारियाँ जिलावतन हो गए हैं।

19मैंने अपने आशिक़ों को बुलाया, लेकिन उन्होंने बेवफ़ा होकर मुझे तर्क कर दिया। अब मेरे इमाम और बुज़ुर्ग अपनी जान बचाने के लिए ख़ुराक ढूँडते ढूँडते शहर में हलाक हो गए हैं।

20ऐ रब, मेरी तंगदस्ती पर ध्यान दे! बातिन में मैं तड़प रही हूँ, मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा है, इसलिए कि मैं इतनी ज़्यादा सरकश रही हूँ। बाहर गली में तलवार ने मुझे बच्चों से महरूम कर दिया, घर के अंदर मौत मेरे पीछे पड़ी है।

21मेरी आहें तो लोगों तक पहुँचती हैं, लेकिन कोई मुझे तसल्ली देने के लिए नहीं आता। इसके बजाए मेरे तमाम दुश्मन मेरी मुसीबत के बारे में सुनकर बग़लें बजा रहे हैं। वह ख़ुश हैं कि तूने मेरे साथ ऐसा सुलूक किया है। ऐ रब, वह दिन आने दे जिसका एलान तूने किया है ताकि वह भी मेरी तरह की मुसीबत में फँस जाएँ।

22उनकी तमाम बुरी हरकतें तेरे सामने आएँ। उनसे यों निपट ले जिस तरह तूने मेरे गुनाहों के जवाब में मुझसे निपट लिया है। क्योंकि आहें भरते भरते मेरा दिल निढाल हो गया है।"

रब का ग़ज़ब यरूशलम पर नाज़िल हुआ है

2 हाय, रब का क़हर काले बादलों की तरह सिय्यून बेटी पर छा गया है! इसराईल की जो शानो-शौकत पहले आसमान की तरह बुलंद थी उसे अल्लाह ने ख़ाक में मिला दिया है। जब उसका ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो उसने अपने घर का भी ख़याल न किया, गो वह उसके पाँवों की चौकी है।

2रब ने बेरहमी से याक़ूब की आबादियों को मिटा डाला, क़हर में यहूदाह बेटी के क़िलों को ढा दिया। उसने यहूदाह की सलतनत और बुज़ुर्गों को ख़ाक में मिलाकर उनकी बेहुरमती की है।

3ग़ज़बनाक होकर उसने इसराईल की पूरी ताक़त ख़त्म कर दी। फिर जब दुश्मन क़रीब आया तो उसने अपने दहने हाथ को इसराईल की मदद करने से रोक लिया। न सिर्फ़ यह बल्कि वह शोलाज़न आग बन गया जिसने याक़ूब में चारों तरफ़ फैलकर सब कुछ भस्म कर दिया।

4अपनी कमान को तानकर वह अपने दहने हाथ से तीर चलाने के लिए उठा। दुश्मन की तरह उसने सब कुछ जो मनमोहन था मौत के घाट उतारा। सिय्यून बेटी का ख़ैमा उसके क़हर के भड़कते कोयलों से भर गया।

5रब ने इसराईल का दुश्मन-सा बनकर मुल्क को उसके महलों और क़िलों समेत तबाह कर दिया है। उसी के हाथों यहूदाह बेटी की आहो-ज़ारी में इज़ाफ़ा होता गया।

6उसने अपनी सुकूनतगाह को बाग़ की झोंपड़ी की तरह गिरा दिया, उसी मक़ाम को बरबाद कर दिया जहाँ क़ौम उससे मिलने के लिए जमा होती थी। रब के हाथों यों हुआ कि अब सिय्यून की ईदों और सबतों की याद ही नहीं रही। उसके शदीद क़हर ने बादशाह और इमाम दोनों को रद्द कर दिया है।

7अपनी क़ुरबानगाह और मक़दिस को मुस्तरद करके रब ने यरूशलम के महलों की दीवारें दुश्मन के हवाले कर दीं। तब रब के घर में भी ईद के दिन का-सा शोर मच गया।

8रब ने फ़ैसला किया कि सिय्यून बेटी की फ़सील को गिरा दिया जाए। उसने फ़ीते से दीवारों को नाप नापकर अपने हाथ को न रोका जब तक सब कुछ तबाह न हो गया। तब क़िलाबंदी के पुश्ते और फ़सील मातम करते करते ज़ाया हो गए।

9शहर के दरवाज़े ज़मीन में धँस गए, उनके कुंडे टूटकर बेकार हो गए। यरूशलम के बादशाह और राहनुमा दीगर अक़वाम में जिलावतन हो गए हैं। अब न शरीअत रही, न सिय्यून के नबियों को रब की रोया मिलती है।

10सिय्यून बेटी के बुज़ुर्ग ख़ामोशी से ज़मीन पर बैठ गए हैं। टाट के लिबास ओढ़कर उन्होंने अपने सरों पर ख़ाक डाल ली है। यरूशलम की कुँवारियाँ भी अपने सरों को झुकाए बैठी हैं।

11मेरी आँखें रो रोकर थक गई हैं, शदीद दर्द ने मेरे दिल को बेहाल कर दिया है। क्योंकि मेरी क़ौम नेस्त हो गई है। शहर के चौकों में बच्चे पज़मुरदा हालत में फिर रहे हैं, शीरख़ार बच्चे ग़श खा रहे हैं। यह देखकर मेरा कलेजा फट रहा है।

12अपनी माँ से वह पूछते हैं, "रोटी और मै कहाँ है?" लेकिन बेफ़ायदा। वह मौत के घाट उतरनेवाले ज़ख़मी आदमियों की तरह चौकों में भूके मर रहे हैं, उनकी जान माँ की गोद में ही निकल रही है।

13ऐ यरूशलम बेटी, मैं किससे तेरा मुवाज़ना करके तेरी हौसलाअफ़्ज़ाई करूँ? ऐ कुँवारी सिय्यून बेटी, मैं किससे तेरा मुक़ाबला करके तुझे तसल्ली दूँ? क्योंकि तुझे समुंदर जैसा वसी नुक़सान पहुँचा है। कौन तुझे शफ़ा दे सकता है?

14तेरे नबियों ने तुझे झूटी और बेकार रोयाएँ पेश कीं। उन्होंने तेरा क़ुसूर तुझ पर ज़ाहिर न किया, हालाँकि उन्हें करना चाहिए था ताकि तू इस सज़ा से बच जाती। इसके बजाए उन्होंने तुझे झूट और फ़रेबदेह पैग़ामात सुनाए।

15अब तेरे पास से गुज़रनेवाले ताली बजाकर आवाज़े कसते हैं। यरूशलम बेटी को देखकर वह सर हिलाते हुए तौबा तौबा कहते हैं, "क्या यह वह शहर है जो 'तकमीले-हुस्न' और 'तमाम दुनिया की ख़ुशी' कहलाता था?"

16तेरे तमाम दुश्मन मुँह पसारकर तेरे ख़िलाफ़ बातें करते हैं। वह आवाज़े कसते और दाँत पीसते हुए कहते हैं, "हमने उसे हड़प कर लिया है। लो, वह दिन आ गया है जिसके इंतज़ार में हम

रहे। आख़िरकार वह पहुँच गया, आख़िरकार हमने
अपनी आँखों से उसे देख लिया है।”
17अब रब ने अपनी मरज़ी पूरी की है। अब
उसने सब कुछ पूरा किया है जो बड़ी देर से
फ़रमाता आया है। बेरहमी से उसने तुझे ख़ाक में
मिला दिया। उसी ने होने दिया कि दुश्मन तुझ पर
शादियाना बजाता, कि तेरे मुख़ालिफ़ों की ताक़त
तुझ पर ग़ालिब आ गई है।

18लोगों के दिल रब को पुकारते हैं। ऐ सिय्यून
बेटी की फ़सील, तेरे आँसू दिन-रात बहते बहते
नदी बन जाएँ। न इससे बाज़ आ, न अपनी आँखों
को रोने से रुकने दे!
19उठ, रात के हर पहर की इब्तिदा में आहो-
ज़ारी कर! अपने दिल की हर बात पानी की
तरह रब के हुज़ूर उंडेल दे। अपने हाथों को उस
की तरफ़ उठाकर अपने बच्चों की जानों के लिए
इल्तिजा कर जो इस वक़्त गली गली में भूके मर
रहे हैं।

20ऐ रब, ध्यान से देख कि तूने किससे ऐसा
सुलूक किया है। क्या यह औरतें अपने पेट का
फल, अपने लाडले बच्चों को खाएँ? क्या रब
के मक़दिस में ही इमाम और नबी को मार डाला
जाए?
21लड़कों और बुज़ुर्गों की लाशें मिलकर
गलियों में पड़ी हैं। मेरे जवान लड़के-लड़कियाँ
तलवार की ज़द में आकर गिर गए हैं। जब तेरा
ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो तूने उन्हें मार डाला, बेरहमी
से उन्हें मौत के घाट उतार दिया।
22जिनसे मैं दहशत खाता था उन्हें तूने बुलाया।
जिस तरह बड़ी ईदों के मौक़े पर हुजूम शहर में
जमा होते हैं उसी तरह दुश्मन चारों तरफ़ से मुझ
पर टूट पड़े। जब रब का ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो
न कोई बचा, न कोई बाक़ी रह गया। जिन्हें मैंने
पाला और जो मेरे ज़ेरे-निगरानी परवान चढ़े उन्हें
दुश्मन ने हलाक कर दिया।

मुसीबत में रब की मेहरबानी पर उम्मीद

3 हाय, मुझे कितना दुख उठाना पड़ा! और
यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि रब का
ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हुआ है, उसी की लाठी मुझे
तरबियत दे रही है।
2उसने मुझे हाँक हाँककर तारीकी में चलने
दिया, कहीं भी रौशनी नज़र नहीं आई।
3रोज़ाना वह बार बार अपना हाथ मेरे ख़िलाफ़
उठाता रहता है।
4उसने मेरे जिस्म और जिल्द को सड़ने दिया,
मेरी हड्डियों को तोड़ डाला।
5मुझे घेरकर उसने ज़हर और सख़्त मुसीबत
की दीवार मेरे इर्दगिर्द खड़ी कर दी।
6उसने मुझे तारीकी में बसाया। अब मैं उनकी
मानिंद हूँ जो बड़ी देर से क़ब्र में पड़े हैं।
7उसने मुझे पीतल की भारी ज़ंजीरों में
जकड़कर मेरे इर्दगिर्द ऐसी दीवारें खड़ी कीं जिनसे
मैं निकल नहीं सकता।
8ख़ाह मैं मदद के लिए कितनी चीख़ें क्यों न
मारूँ वह मेरी इल्तिजाएँ अपने हुज़ूर पहुँचने नहीं
देता।
9जहाँ भी मैं चलना चाहूँ वहाँ उसने तराशे
पत्थरों की मज़बूत दीवार से मुझे रोक लिया। मेरे
तमाम रास्ते भूलभुलय्याँ बन गए हैं।
10अल्लाह रीछ की तरह मेरी घात में बैठ गया,
शेरबबर की तरह मेरी ताक लगाए छुप गया।
11उसने मुझे सहीह रास्ते से भटका दिया, फिर
मुझे फाड़कर बेसहारा छोड़ दिया।
12अपनी कमान को तानकर उसने मुझे अपने
तीरों का निशाना बनाया।
13उसके तीरों ने मेरे गुरदों को चीर डाला।
14मैं अपनी पूरी क़ौम के लिए मज़ाक़ का
निशाना बन गया हूँ। वह पूरे दिन अपने गीतों में
मुझे लान-तान करते हैं।
15अल्लाह ने मुझे कड़वे ज़हर से सेर किया,
मुझे ना-गवार तलख़ी का प्याला पिलाया।

16उसने मेरे दाँतों को बजरी चबाने दी, मुझे
कुचलकर ख़ाक में मिला दिया।
17मेरी जान से सुकून छीन लिया गया, अब मैं
ख़ुशहाली का मज़ा भूल ही गया हूँ।

18चुनाँचे मैं बोला, "मेरी शान और रब पर से
मेरी उम्मीद जाती रही है।"
19मेरी तकलीफ़देह और बेवतन हालत का
ख़याल कड़वे ज़हर की मानिंद है।
20तो भी मेरी जान को उस की याद आती रहती
है, सोचते सोचते वह मेरे अंदर दब जाती है।

21लेकिन मुझे एक बात की उम्मीद रही है, और
यही मैं बार बार ज़हन में लाता हूँ,
22रब की मेहरबानी है कि हम नेस्तो-नाबूद नहीं
हुए। क्योंकि उस की शफ़क़त कभी ख़त्म नहीं
होती
23बल्कि हर सुबह अज़ सरे-नौ हम पर चमक
उठती है। ऐ मेरे आक़ा, तेरी वफ़ादारी अज़ीम है।
24मेरी जान कहती है, "रब मेरा मौरूसी हिस्सा
है, इसलिए मैं उसके इंतज़ार में रहूँगी।"
25क्योंकि रब उन पर मेहरबान है जो उस पर
उम्मीद रखकर उसके तालिब रहते हैं।
26चुनाँचे अच्छा है कि हम ख़ामोशी से रब की
नजात के इंतज़ार में रहें।
27अच्छा है कि इनसान जवानी में अल्लाह का
जुआ उठाए फिरे।
28जब जुआ उस की गरदन पर रखा जाए तो
वह चुपके से तनहाई में बैठ जाए।
29वह ख़ाक में औंधे मुँह हो जाए, शायद अभी
तक उम्मीद हो।
30वह मारनेवाले को अपना गाल पेश करे,
चुपके से हर तरह की रुसवाई बरदाश्त करे।

31क्योंकि रब इनसान को हमेशा तक रद्द नहीं
करता।
32उस की शफ़क़त इतनी अज़ीम है कि गो
वह कभी इनसान को दुख पहुँचाए तो भी वह
आख़िरकार उस पर दुबारा रहम करता है।
33क्योंकि वह इनसान को दबाने और ग़म
पहुँचाने में ख़ुशी महसूस नहीं करता।

34मुल्क में तमाम क़ैदियों को पाँवों तले कुचला
जा रहा है।
35अल्लाह तआला के देखते देखते इन-
सान की हक़तलफ़ी की जा रही है,
36अदालत में लोगों का हक़ मारा जा रहा है।
लेकिन रब को यह सब कुछ नज़र आता है।
37कौन कुछ करवा सकता है अगर रब ने
इसका हुक्म न दिया हो?
38आफ़तें और अच्छी चीज़ें दोनों अल्लाह
तआला के फ़रमान पर वुजूद में आती हैं।
39तो फिर इनसानों में से कौन अपने गुनाहों
की सज़ा पाने पर शिकायत करे?
40आओ, हम अपने चाल-चलन का जायज़ा
लें, उसे अच्छी तरह जाँचकर रब के पास वापस
आएँ।
41हम अपने दिल को हाथों समेत आस-
मान की तरफ़ मायल करें जहाँ अल्लाह है।

42हम इक़रार करें, "हम बेवफ़ा होकर सरकश
हो गए हैं, और तूने हमें मुआफ़ नहीं किया।
43तू अपने क़हर के परदे के पीछे छुपकर हमारा
ताक़्क़ुब करने लगा, बेरहमी से हमें मारता गया।
44तू बादल में यों छुप गया है कि कोई भी दुआ
तुझ तक नहीं पहुँच सकती।
45तूने हमें अक़वाम के दरमियान कूड़ा-करकट
बना दिया।
46हमारे तमाम दुश्मन हमें ताने देते हैं।
47दहशत और गढ़े हमारे नसीब में हैं, हम
धड़ाम से गिरकर तबाह हो गए हैं।"

48आँसू मेरी आँखों से टपक टपककर नदियाँ
बन गए हैं, मैं इसलिए रो रहा हूँ कि मेरी क़ौम
तबाह हो गई है।
49मेरे आँसू रुक नहीं सकते बल्कि उस वक़्त
तक जारी रहेंगे
50जब तक रब आसमान से झाँककर मुझ पर
ध्यान न दे।
51अपने शहर की औरतों से दुश्मन का सुलूक
देखकर मेरा दिल छलनी हो रहा है।
52जो बिलावजह मेरे दुश्मन हैं उन्होंने परिंदे की
तरह मेरा शिकार किया।
53उन्होंने मुझे जान से मारने के लिए गढ़े में
डालकर मुझ पर पत्थर फेंक दिए।
54सैलाब मुझ पर आया, और मेरा सर पानी में
डूब गया। मैं बोला, "मेरी ज़िंदगी का धागा कट
गया है।"

55ऐ रब, जब मैं गढ़े की गहराइयों में था तो
मैंने तेरे नाम को पुकारा।
56मैंने इल्तिजा की, "अपना कान बंद न रख
बल्कि मेरी आहें और चीख़ें सुन!" और तूने मेरी
सुनी।
57जब मैंने तुझे पुकारा तो तूने क़रीब आकर
फ़रमाया, "ख़ौफ़ न खा।"
58ऐ रब, तू अदालत में मेरे हक़ में मुक़दमा
लड़ा, बल्कि तूने मेरी जान का एवज़ाना भी दिया।
59ऐ रब, जो ज़ुल्म मुझ पर हुआ वह तुझे साफ़
नज़र आता है। अब मेरा इनसाफ़ कर!
60तूने उनकी तमाम कीनापरवरी पर तवज्जुह
दी है। जितनी भी साज़िशें उन्होंने मेरे ख़िलाफ़ की
हैं उनसे तू वाक़िफ़ है।
61ऐ रब, उनकी लान-तान, उनके मेरे ख़िलाफ़
तमाम मनसूबे तेरे कान तक पहुँच गए हैं।
62जो कुछ मेरे मुख़ालिफ़ पूरा दिन मेरे ख़िलाफ़
फुसफुसाते और बुड़बुड़ाते हैं उससे तू ख़ूब आश्ना
है।
63देख कि यह क्या करते हैं! ख़्वाह बैठे या खड़े
हों, हर वक़्त वह अपने गीतों में मुझे अपने मज़ाक़
का निशाना बनाते हैं।
64ऐ रब, उन्हें उनकी हरकतों का मुनासिब अज्र
दे!
65उनके ज़हनों को कुंद कर, तेरी लानत उन
पर आ पड़े!
66उन पर अपना पूरा ग़ज़ब नाज़िल कर! जब
तक वह तेरे आसमान के नीचे से ग़ायब न हो जाएँ
उनका ताक़्क़ुब करता रह!

यरूशलम की मुसीबत

4 हाय, सोने की आबो-ताब न रही, ख़ालिस
सोना भी माँद पड़ गया है। मक़दिस के
जवाहिर तमाम गलियों में बिखरे पड़े हैं।
2पहले तो सिय्यून के गिराँक़दर फ़रज़ंद
ख़ालिस सोने जैसे क़ीमती थे, लेकिन अब वह
गोया मिट्टी के बरतन समझे जाते हैं जो आम
कुम्हार ने बनाए हैं।
3गो गीदड़ भी अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं,
लेकिन मेरी क़ौम रेगिस्तान में रहनेवाले उक़ाबी
उल्लू जैसी ज़ालिम हो गई है।
4शीरख़ार बच्चे की ज़बान प्यास के मारे तालू
से चिपक गई है। छोटे बच्चे भूक के मारे रोटी
माँगते हैं, लेकिन खिलानेवाला कोई नहीं है।
5जो पहले लज़ीज़ खाना खाते थे वह अब
गलियों में तबाह हो रहे हैं। जो पहले अरग़वानी
रंग के शानदार कपड़े पहनते थे वह अब कूड़े-
करकट में लोट-पोट हो रहे हैं।

6मेरी क़ौम से सदूम की निसबत कहीं ज़्यादा
संगीन गुनाह सरज़द हुआ है। और सदूम का क़ुसूर
इतना संगीन था कि वह एक ही लमहे में तबाह
हुआ। किसी ने भी मुदाख़लत न की।
7सिय्यून के रईस कितने शानदार थे! जिल्द
बर्फ़ जैसी निखरी, दूध जैसी सफ़ेद थी। रुख़सार

[a]lapis lazuli

मूँगे की तरह गुलाबी, शक्लो-सूरत संगे-लाजवर्द[a]
जैसी चमकदार थी।
8लेकिन अब वह कोयले जैसे काले नज़र आते
हैं। जब गलियों में घूमते हैं तो उन्हें पहचाना नहीं
जाता। उनकी हड्डियों पर की जिल्द सुकड़कर
लकड़ी की तरह सूखी हुई है।
9जो तलवार से हलाक हुए उनका हाल उनसे
बेहतर था जो भूके मर गए। क्योंकि खेतों से
ख़ुराक न मिलने पर वह घुल घुलकर मर गए।
10जब मेरी क़ौम तबाह हुई तो इतना सख़्त
काल पड़ गया कि नरमदिल माओं ने भी अपने
बच्चों को पकाकर खा लिया।

11रब ने अपना पूरा ग़ज़ब सिय्यून पर नाज़िल
किया, उसे अपने शदीद क़हर का निशाना
बनाया। उसने यरूशलम में इतनी ज़बरदस्त आग
लगाई कि वह बुनियादों तक भस्म हो गया।
12अब दुश्मन यरूशलम के दरवाज़ों में दाख़िल
हुए हैं, हालाँकि दुनिया के तमाम बादशाह बल्कि
सब लोग समझते थे कि यह मुमकिन ही नहीं।
13लेकिन यह सब कुछ उसके नबियों और
इमामों के सबब से हुआ जिन्होंने शहर ही में
रास्तबाज़ों की ख़ूनरेज़ी की।
14अब यही लोग अंधों की तरह गलियों में
टटोल टटोलकर फिरते हैं। वह ख़ून से इतने
आलूदा हैं कि सब लोग उनके कपड़ों से लगने
से गुरेज़ करते हैं।
15उन्हें देखकर लोग गरजते हैं, "हटो, तुम
नापाक हो! भाग जाओ, दफ़ा हो जाओ, हमें
हाथ मत लगाना!" फिर जब वह दीगर अक़वाम
में जाकर इधर-उधर फिरने लगते हैं तो वहाँ के
लोग भी कहते हैं कि यह मज़ीद यहाँ न ठहरें।
16रब ने ख़ुद उन्हें मुंतशिर कर दिया, अब से
वह उनका ख़याल नहीं करेगा। अब न इमामों की
इज़्ज़त होती है, न बुज़ुर्गों पर मेहरबानी की जाती
है।
17हम चारों तरफ़ आँख दौड़ाते रहे, लेकिन
बेफ़ायदा, कोई मदद न मिली। देखते देखते हमारी
नज़र धुँधला गई। क्योंकि हम अपने बुर्जों पर खड़े
एक ऐसी क़ौम के इंतज़ार में रहे जो हमारी मदद
कर ही नहीं सकती थी।
18हम अपने चौकों में जा न सके, क्योंकि
वहाँ दुश्मन हमारी ताक में बैठा था। हमारा
ख़ातमा क़रीब आया, हमारा मुक़र्ररा वक़्त
इख़्तितामपज़ीर हुआ, हमारा अंजाम आ पहुँचा।
19जिस तरह आसमान पर मँडलानेवाला
उक़ाब एकदम शिकार पर झपट पड़ता है उसी
तरह हमारा ताक़्क़ुब करनेवाले हम पर टूट पड़े,
और वह भी कहीं ज़्यादा तेज़ी से। वह पहाड़ों पर
हमारे पीछे पीछे भागे और रेगिस्तान में हमारी घात
में रहे।
20हमारा बादशाह भी उनके गढ़ों में फँस गया।
जो हमारी जान था और जिसे रब ने मसह करके
चुन लिया था उसे भी पकड़ लिया गया, गो हमने
सोचा था कि उसके साये में बसकर अक़वाम के
दरमियान महफ़ूज़ रहेंगे।

21ऐ अदोम बेटी, बेशक शादियाना बजा!
बेशक मुल्के-ऊज़ में रहकर ख़ुशी मना! लेकिन
ख़बरदार, अल्लाह के ग़ज़ब का प्याला तुझे भी
पिलाया जाएगा। तब तू उसे पी पीकर मस्त हो
जाएगी और नशे में अपने कपड़े उतारकर बरहना
फिरेगी।
22ऐ सिय्यून बेटी, तेरी सज़ा का वक़्त पूरा हो
गया है। अब से रब तुझे क़ैदी बनाकर जिलावतन
नहीं करेगा। लेकिन ऐ अदोम बेटी, वह तुझे तेरे
क़ुसूर का पूरा अज्र देगा, वह तेरे गुनाहों पर से
परदा उठा लेगा।

ऐ रब, हमें अपने हुज़ूर वापस ला!

5 ऐ रब, याद कर कि हमारे साथ क्या कुछ
हुआ! ग़ौर कर कि हमारी कैसी रुसवाई
हुई है।

2हमारी मौरूसी मिलकियत परदेसियों के हवाले की गई, हमारे घर अजनबियों के हाथ में आ गए हैं।

3हम वालिदों से महरूम होकर यतीम हो गए हैं, हमारी माएँ बेवाओं की तरह ग़ैरमहफ़ूज़ हैं।

4ख़ाह पीने का पानी हो या लकड़ी, हर चीज़ की पूरी क़ीमत अदा करनी पड़ती है, हालाँकि यह हमारी अपनी ही चीज़ें थीं।

5हमारा ताक़्क़ुब करनेवाले हमारे सर पर चढ़ आए हैं, और हम थक गए हैं। कहीं भी सुकून नहीं मिलता।

6हमने अपने आपको मिसर और असूर के हवाले कर दिया ताकि रोटी मिल जाए और भूके न मरें।

7हमारे बापदादा ने गुनाह किया, लेकिन वह कूच कर गए हैं। अब हम ही उनकी सज़ा भुगत रहे हैं।

8ग़ुलाम हम पर हुकूमत करते हैं, और कोई नहीं है जो हमें उनके हाथ से बचाए।

9हम अपनी जान को ख़तरे में डालकर रोज़ी कमाते हैं, क्योंकि बयाबान में तलवार हमारी ताक में बैठी रहती है।

10भूक के मारे हमारी जिल्द तनूर जैसी गरम होकर चुरमुर हो गई है।

11सिय्यून में औरतों की इसमतदरी, यहूदाह के शहरों में कुँवारियों की बेहुरमती हुई है।

12दुश्मन ने रईसों को फाँसी देकर बुज़ुर्गों की बेइज़्ज़ती की है।

13नौजवानों को चक्की का पाट उठाए फिरना है, लड़के लकड़ी के बोझ तले डगमगाकर गिर जाते हैं।

14अब बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े से और जवान अपने साज़ों से बाज़ रहते हैं।

15ख़ुशी हमारे दिलों से जाती रही है, हमारा लोकनाच आहो-ज़ारी में बदल गया है।

16ताज हमारे सर पर से गिर गया है। हम पर अफ़सोस, हमसे गुनाह सरज़द हुआ है।

17इसी लिए हमारा दिल निढाल हो गया, हमारी नज़र धुँधला गई है।

18क्योंकि कोहे-सिय्यून तबाह हुआ है, लोमड़ियाँ उस की गलियों में फिरती हैं।

19ऐ रब, तेरा राज अबदी है, तेरा तख़्त पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहता है।

20तू हमें हमेशा तक क्यों भूलना चाहता है? तूने हमें इतनी देर तक क्यों तर्क किए रखा है?

21ऐ रब, हमें अपने पास वापस ला ताकि हम वापस आ सकें। हमें बहाल कर ताकि हमारा हाल पहले की तरह हो।

22या क्या तूने हमें हतमी तौर पर मुस्तरद कर दिया है? क्या तेरा हम पर ग़ुस्सा हद से ज़्यादा बढ़ गया है?।

हिज़क़ियेल

अल्लाह के रथ की रोया

1 1-3जब मैं यानी इमाम हिज़क़ियेल बिन
बूज़ी तीस साल का था तो मैं यहूदाह
के जिलावतनों के साथ मुल्के-बाबल के दरिया
किबार के किनारे ठहरा हुआ था। यहूयाकीन
बादशाह को जिलावतन हुए पाँच साल हो गए थे।
चौथे महीने के पाँचवें दिन[a] आसमान खुल गया
और अल्लाह ने मुझ पर मुख़्तलिफ़ रोयाएँ ज़ाहिर
कीं। उस वक़्त रब मुझसे हमकलाम हुआ, और
उसका हाथ मुझ पर आ ठहरा।

4रोया में मैंने ज़बरदस्त आँधी देखी जिसने
शिमाल से आकर बड़ा बादल मेरे पास पहुँचाया।
बादल में चमकती-दमकती आग नज़र आई, और
वह तेज़ रौशनी से घिरा हुआ था। आग का मरकज़
चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था।

5आग में चार जानदारों जैसे चल रहे थे जिनकी
शक्लो-सूरत इनसान की-सी थी। 6लेकिन हर
एक के चार चेहरे और चार पर थे। 7उनकी टाँगें
इनसानों जैसी सीधी थीं, लेकिन पाँवों के तल्वे
बछड़ों के-से खुर थे। वह पालिश किए हुए पीतल
की तरह जगमगा रहे थे। 8चारों के चेहरे और पर
थे, और चारों परों के नीचे इनसानी हाथ दिखाई
दिए। 9जानदार अपने परों से एक दूसरे को छू
रहे थे। चलते वक़्त मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी,
क्योंकि हर एक के चार चेहरे चारों तरफ़ देखते थे।
जब कभी किसी सिम्त जाना होता तो उसी सिम्त
का चेहरा चल पड़ता। 10चारों के चेहरे एक जैसे
थे। सामने का चेहरा इनसान का, दाईं तरफ़ का
चेहरा शेरबबर का, बाईं तरफ़ का चेहरा बैल का
और पीछे का चेहरा उक़ाब का था। 11उनके पर
ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे। दो पर बाएँ और दाएँ
हाथ के जानदारों से लगते थे, और दो पर उनके
जिस्मों को ढाँपे रखते थे। 12जहाँ भी अल्लाह का
रूह जाना चाहता था वहाँ यह जानदार चल पड़ते।
उन्हें मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह हमेशा
अपने चारों चेहरों में से एक का रुख़ इख़्तियार
करते थे।

13जानदारों के बीच में ऐसा लग रहा था जैसे
कोयले दहक रहे हों, कि उनके दरमियान मशालें
इधर-उधर चल रही हों। झिलमिलाती आग में से
बिजली भी चमककर निकलती थी। 14जानदार
ख़ुद इतनी तेज़ी से इधर-उधर घूम रहे थे कि बादल
की बिजली जैसे नज़र आ रहे थे।

15जब मैंने ग़ौर से उन पर नज़र डाली तो
देखा कि हर एक जानदार के पास पहिया है
जो ज़मीन को छू रहा है। 16लगता था कि चारों
पहिये पुखराज[b] से बने हुए हैं। चारों एक जैसे थे।
हर पहिये के अंदर एक और पहिया ज़ावियाए-
क़ायमा में घूम रहा था, 17इसलिए वह मुड़े बग़ैर
हर रुख़ इख़्तियार कर सकते थे। 18उनके लंबे

[a]31 जुलाई।

[b]topas

चक्कर ख़ौफ़नाक थे, और चक्करों की हर जगह
पर आँखें ही आँखें थीं। 19जब चार जानदार चलते
तो चारों पहिये भी साथ चलते, जब जानदार
ज़मीन से उड़ते तो पहिये भी साथ उड़ते थे।
20जहाँ भी अल्लाह का रूह जाता वहाँ जानदार
भी जाते थे। पहिये भी उड़कर साथ साथ चलते
थे, क्योंकि जानदारों की रूह पहियों में थी। 21जब
कभी जानदार चलते तो यह भी चलते, जब रुक
जाते तो यह भी रुक जाते, जब उड़ते तो यह भी
उड़ते। क्योंकि जानदारों की रूह पहियों में थी।

22जानदारों के सरों के ऊपर गुंबद-सा फैला
हुआ था जो साफ़-शफ़्फ़ाफ़ बिल्लौर जैसा लग
रहा था। उसे देखकर इनसान घबरा जाता था।
23चारों जानदार इस गुंबद के नीचे थे, और हर
एक अपने परों को फैलाकर एक से बाईं तरफ़
के साथी और दूसरे से दाईं तरफ़ के साथी को
छू रहा था। बाक़ी दो परों से वह अपने जिस्म
को ढाँपे रखता था। 24चलते वक़्त उनके परों का
शोर मुझ तक पहुँचा। यों लग रहा था जैसे क़रीब
ही ज़बरदस्त आबशार बह रही हो, कि क़ादिरे-
मुतलक़ कोई बात फ़रमा रहा हो, या कि कोई
लशकर हरकत में आ गया हो। रुकते वक़्त वह
अपने परों को नीचे लटकने देते थे।

25फिर गुंबद के ऊपर से आवाज़ सुनाई दी,
और जानदारों ने रुककर अपने परों को लटकने
दिया। 26मैंने देखा कि उनके सरों के ऊपर के
गुंबद पर संगे-लाजवर्द[a] का तख़्त-सा नज़र आ
रहा है जिस पर कोई बैठा था जिसकी शक्लो-
सूरत इनसान की मानिंद है। 27लेकिन कमर
से लेकर सर तक वह चमकदार धात की तरह
तमतमा रहा था, जबकि कमर से लेकर पाँव तक
आग की मानिंद भड़क रहा था। तेज़ रौशनी उसके
इर्दगिर्द झिलमिला रही थी। 28उसे देखकर क़ौसे-
क़ुज़ह की वह आबो-ताब याद आती थी जो बारिश
होते वक़्त बादल में दिखाई देती है। यों रब का
जलाल नज़र आया। यह देखते ही मैं औंधे मुँह
गिर गया। इसी हालत में कोई मुझसे बात करने
लगा।

हिज़क़ियेल की बुलाहट, तूमार की रोया

2 वह बोला, "ऐ आदमज़ाद, खड़ा हो जा!
मैं तुझसे बात करना चाहता हूँ।" 2ज्योंही
वह मुझसे हमकलाम हुआ तो रूह ने मुझमें आकर
मुझे खड़ा कर दिया। फिर मैंने आवाज़ को यह
कहते हुए सुना,

3"ऐ आदमज़ाद, मैं तुझे इसराईलियों के पास
भेज रहा हूँ, एक ऐसी सरकश क़ौम के पास
जिसने मुझसे बग़ावत की है। शुरू से लेकर आज
तक वह अपने बापदादा समेत मुझसे बेवफ़ा रहे
हैं। 4जिन लोगों के पास मैं तुझे भेज रहा हूँ वह
बेशर्म और ज़िद्दी हैं। उन्हें वह कुछ सुना दे जो रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है। 5ख़ाह यह बाग़ी सुनें
या न सुनें, वह ज़रूर जान लेंगे कि हमारे दरमियान
नबी बरपा हुआ है। 6ऐ आदमज़ाद, उनसे या
उनकी बातों से मत डरना। गो तू काँटेदार झाड़ियों
से घिरा रहेगा और तुझे बिच्छुओं के दरमियान
बसना पड़ेगा तो भी ख़ौफ़ज़दा न हो। न उनकी
बातों से ख़ौफ़ खाना, न उनके रवय्ये से दहशत
खाना। क्योंकि यह क़ौम सरकश है। 7ख़ाह यह
सुनें या न सुनें लाज़िम है कि तू मेरे पैग़ामात उन्हें
सुनाए। क्योंकि वह बाग़ी ही हैं। 8ऐ आदमज़ाद,
जब मैं तुझसे हमकलाम हूँगा तो ध्यान दे और इस
सरकश क़ौम की तरह बग़ावत मत करना। अपने
मुँह को खोलकर वह कुछ खा जो मैं तुझे खिलाता
हूँ।"

9तब एक हाथ मेरी तरफ़ बढ़ा हुआ नज़र आया
जिसमें तूमार था। 10तूमार को खोला गया तो मैंने
देखा कि उसमें आगे भी और पीछे भी मातम और
आहो-ज़ारी क़लमबंद हुई है।

3 उसने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, जो कुछ
तुझे दिया जा रहा है उसे खा ले! तूमार
को खा, फिर जाकर इसराईली क़ौम से मुख़ातिब
हो जा।" 2मैंने अपना मुँह खोला तो उसने मुझे

[a]lapis lazuli

तूमार खिलाया। 3साथ साथ उसने फ़रमाया,
“आदमज़ाद, जो तूमार मैं तुझे खिलाता हूँ उसे
खा, पेट भरकर खा!” जब मैंने उसे खाया तो
शहद की तरह मीठा लगा।

4तब अल्लाह मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ
आदमज़ाद, अब जाकर इसराईली घराने को मेरे
पैग़ामात सुना दे। 5मैं तुझे ऐसी क़ौम के पास नहीं
भेज रहा जिसकी अजनबी ज़बान तुझे समझ न
आए बल्कि तुझे इसराईली क़ौम के पास भेज
रहा हूँ। 6बेशक ऐसी बहुत-सी क़ौमें हैं जिनकी
अजनबी ज़बानें तुझे नहीं आतीं, लेकिन उनके
पास मैं तुझे नहीं भेज रहा। अगर मैं तुझे उन्हीं के
पास भेजता तो वह ज़रूर तेरी सुनतीं। 7लेकिन
इसराईली घराना तेरी सुनने के लिए तैयार नहीं
होगा, क्योंकि वह मेरी सुनने के लिए तैयार ही
नहीं। क्योंकि पूरी क़ौम का माथा सख़्त और
दिल अड़ा हुआ है। 8लेकिन मैंने तेरा चेहरा भी
उनके चेहरे जैसा सख़्त कर दिया, तेरा माथा भी
उनके माथे जैसा मज़बूत कर दिया है। 9तू उनका
मुक़ाबला कर सकेगा, क्योंकि मैंने तेरे माथे को
हीरे जैसा मज़बूत, चक़माक़ जैसा पायदार कर
दिया है। गो यह क़ौम बाग़ी है तो भी उनसे ख़ौफ़
न खा, न उनके सुलूक से दहशतज़दा हो।”

10अल्लाह ने मज़ीद फ़रमाया, “ऐ आदम-
ज़ाद, मेरी हर बात पर ध्यान देकर उसे ज़हन में
बिठा। 11अब रवाना होकर अपनी क़ौम के उन
अफ़राद के पास जा जो बाबल में जिलावतन हुए
हैं। उन्हें वह कुछ सुना दे जो रब क़ादिरे-मुतलक़
उन्हें बताना चाहता है, ख़ाह वह सुनें या न सुनें।”

12तब अल्लाह के रूह ने मुझे वहाँ से उठाया।
मैंने अपने पीछे एक गिड़गिड़ाती आवाज़ सुनी :
मुबारक हो रब का जलाल अपनी जगह से!
13फ़िज़ा चारों जानदारों के शोर से गूँज उठी
जब उनके पर एक दूसरे से लगने और उनके
पहिये घूमने लगे। 14अल्लाह का रूह मुझे उठाकर
वहाँ से ले गया, और मैं तलख़मिज़ाजी और
बड़ी सरगरमी से रवाना हुआ। क्योंकि रब का
हाथ ज़ोर से मुझ पर ठहरा हुआ था। 15चलते
चलते मैं दरियाए-किबार की आबादी तल-अबीब
में रहनेवाले जिलावतनों के पास पहुँच गया। मैं
उनके दरमियान बैठ गया। सात दिन तक मेरी
हालत गुमसुम रही।

मेरी क़ौम को आगाह कर!

16सात दिन के बाद रब मुझसे हमकलाम हुआ,
17“ऐ आदमज़ाद, मैंने तुझे इसराईली क़ौम पर
पहरेदार बनाया, इसलिए जब भी तुझे मुझसे
कलाम मिले तो उन्हें मेरी तरफ़ से आगाह कर!

18मैं तेरे ज़रीए बेदीन को इत्तला दूँगा कि उसे
मरना ही है ताकि वह अपनी बुरी राह से हटकर
बच जाए। अगर तू उसे यह पैग़ाम न पहुँचाए, न
उसे तंबीह करे और वह अपने क़ुसूर के बाइस मर
जाए तो मैं तुझे ही उस की मौत का ज़िम्मेदार
ठहराऊँगा। 19लेकिन अगर वह तेरी तंबीह पर
अपनी बेदीनी और बुरी राह से न हटे तो यह अलग
बात है। बेशक वह मरेगा, लेकिन तू ज़िम्मेदार नहीं
ठहरेगा बल्कि अपनी जान को छुड़ाएगा।

20जब रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी को
छोड़कर बुरी राह पर आ जाएगा तो मैं तुझे उसे
आगाह करने की ज़िम्मेदारी दूँगा। अगर तू यह
करने से बाज़ रहा तो तू ही ज़िम्मेदार ठहरेगा जब
मैं उसे ठोकर खिलाकर मार डालूँगा। उस वक़्त
उसके रास्त काम याद नहीं रहेंगे बल्कि वह अपने
गुनाह के सबब से मरेगा। लेकिन तू ही उस की
मौत का ज़िम्मेदार ठहरेगा। 21लेकिन अगर तू उसे
तंबीह करे और वह अपने गुनाह से बाज़ आए तो
वह मेरी तंबीह को क़बूल करने के बाइस बचेगा,
और तू भी अपनी जान को छुड़ाएगा।”

22वहीं रब का हाथ दुबारा मुझ पर आ ठहरा।
उसने फ़रमाया, “उठ, यहाँ से निकलकर वादी के
खुले मैदान में चला जा! वहाँ मैं तुझसे हमकलाम
हूँगा।”

23मैं उठा और निकलकर वादी के खुले मैदान
में चला गया। जब पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि
रब का जलाल वहाँ यों मौजूद है जिस तरह पहली
रोया में दरियाए-किबार के किनारे पर था। मैं मुँह

के बल गिर गया। 24तब अल्लाह के रूह ने आकर
मुझे दुबारा खड़ा किया और फ़रमाया, “अपने घर
में जाकर अपने पीछे कुंडी लगा। 25ऐ आदमज़ाद,
लोग तुझे रस्सियों में जकड़कर बंद रखेंगे ताकि
तू निकलकर दूसरों में न फिर सके। 26मैं होने
दूँगा कि तेरी ज़बान तालू से चिपक जाए और
तू ख़ामोश रहकर उन्हें डाँट न सके। क्योंकि यह
क़ौम सरकश है। 27लेकिन जब भी मैं तुझसे
हमकलाम हूँगा तो तेरे मुँह को खोलूँगा। तब तू
मेरा कलाम सुनाकर कहेगा, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है!’ तब जो सुनने के लिए तैयार हो वह
सुने, और जो तैयार न हो वह न सुने। क्योंकि यह
क़ौम सरकश है।

यरूशलम का मुहासरा

4 ऐ आदमज़ाद, अब एक कच्ची ईंट ले और
उसे अपने सामने रखकर उस पर यरूशलम
शहर का नक़्शा कंदा कर। 2फिर यह नक़्शा
शहर का मुहासरा दिखाने के लिए इस्तेमाल कर।
बुर्ज और पुश्ते बनाकर घेरा डाल। यरूशलम
के बाहर लशकरगाह लगाकर शहर के इर्दगिर्द
क़िलाशिकन मशीनें तैयार रख। 3फिर लोहे की
प्लेट लेकर अपने और शहर के दरमियान रख।
इससे मुराद लोहे की दीवार है। शहर को घूर
घूरकर ज़ाहिर कर कि तू उसका मुहासरा कर रहा
है। इस निशान से तू दिखाएगा कि इसराईलियों
के साथ क्या कुछ होनेवाला है।

4-5इसके बाद अपने बाएँ पहलू पर लेटकर
अलामती तौर पर मुल्के-इसराईल की सज़ा पा।
जितने भी साल वह गुनाह करते आए हैं उतने ही
दिन तुझे इसी हालत में लेटे रहना है। वह 390
साल गुनाह करते रहे हैं, इसलिए तू 390 दिन
उनके गुनाहों की सज़ा पाएगा। 6इसके बाद अपने
दाएँ पहलू पर लेट जा और मुल्के-यहूदाह की
सज़ा पा। मैंने मुक़र्रर किया है कि तू 40 दिन यह
करे, क्योंकि यहूदाह 40 साल गुनाह करता रहा
है। 7घेरे हुए शहर यरूशलम को घूर घूरकर अपने
नंगे बाज़ू से उसे धमकी दे और उसके ख़िलाफ़
पेशगोई कर। 8साथ साथ मैं तुझे रस्सियों में
जकड़ लूँगा ताकि तू उतने दिन करवटें बदल न
सके जितने दिन तेरा मुहासरा किया जाएगा।

9अब कुछ गंदुम, जौ, लोबिया, मसूर, बाजरा
और यहाँ मुस्तामल घटिया क़िस्म का गंदुम जमा
करके एक ही बरतन में डाल। बाएँ पहलू पर
लेटते वक़्त यानी पूरे 390 दिन इन्हीं से रोटी
बनाकर खा। 10-11फ़ी दिन तुझे रोटी का एक
पाव खाने और पानी का पौना लिटर पीने की
इजाज़त है। यह चीज़ें एहतियात से तोलकर
मुक़र्ररा औक़ात पर खा और पी। 12रोटी को जौ
की रोटी की तरह तैयार करके खा। ईंधन के लिए
इनसान का फ़ुज़्ला इस्तेमाल कर। ध्यान दे कि
सब इसके गवाह हों।” 13रब ने फ़रमाया, “जब मैं
इसराईलियों को दीगर अक़वाम में मुंतशिर करूँगा
तो उन्हें नापाक रोटी खानी पड़ेगी।”

14यह सुनकर मैं बोल उठा, “हाय, हाय! ऐ रब
क़ादिरे-मुतलक़, मैं कभी भी नापाक नहीं हुआ।
जवानी से लेकर आज तक मैंने कभी ऐसे जानवर
का गोश्त नहीं खाया जिसे ज़बह नहीं किया गया
था या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ा था। नापाक
गोश्त कभी मेरे मुँह में नहीं आया।”

15तब रब ने जवाब दिया, “ठीक है, रोटी को
बनाने के लिए तू इनसान के फ़ुज़्ले के बजाए
गोबर इस्तेमाल कर सकता है। मैं तुझे इसकी
इजाज़त देता हूँ।”

16उसने मज़ीद फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, मैं
यरूशलम में रोटी का बंदोबस्त ख़त्म हो जाने
दूँगा। तब लोग अपना खाना बड़ी एहतियात से
और परेशानी में तोल तोलकर खाएँगे। वह पानी
का क़तरा क़तरा गिनकर उसे लरज़ते हुए पिएँगे।
17क्योंकि खाने और पानी की क़िल्लत होगी।
सब मिलकर तबाह हो जाएंगे, सब अपने गुनाहों
के सबब से सड़ जाएंगे।

यरूशलम के ख़िलाफ़ तलवार

5 ऐ आदमज़ाद, तेज़ तलवार लेकर अपने
सर के बाल और दाढ़ी मुँडवा। फिर तराज़ू

में बालों को तोलकर तीन हिस्सों में तक़सीम कर।
2कच्ची ईंट पर कंदा यरूशलम के नक़्शे के ज़रीए
ज़ाहिर कर कि शहर का मुहासरा ख़त्म हो गया है।
फिर बालों की एक तिहाई शहर के नक़्शे के बीच
में जला दे, एक तिहाई तलवार से मार मारकर
शहर के इर्दगिर्द ज़मीन पर गिरने दे, और एक
तिहाई हवा में उड़ाकर मुंतशिर कर। क्योंकि मैं
इसी तरह अपनी तलवार को मियान से खींचकर
लोगों के पीछे पड़ जाऊँगा। 3लेकिन बालों में से
थोड़े थोड़े बचा ले और अपनी झोली में लपेटकर
महफ़ूज़ रख। 4फिर इनमें से कुछ ले और आग
में फेंककर भस्म कर। यही आग इसराईल के पूरे
घराने में फैल जाएगी।”

5रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “यही
यरूशलम की हालत है! गो मैंने उसे दीगर
अक़वाम के दरमियान रखकर दीगर ममालिक का
मरकज़ बना दिया 6तो भी वह मेरे अहकाम और
हिदायात से सरकश हो गया है। गिर्दो-नवाह की
अक़वामो-ममालिक की निसबत उस की हरकतें
कहीं ज़्यादा बुरी हैं। क्योंकि उसके बाशिंदों ने
मेरे अहकाम को रद्द करके मेरी हिदायात के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने से इनकार कर दिया
है।” 7रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “तुम्हारी
हरकतें इर्दगिर्द की क़ौमों की निसबत कहीं ज़्यादा
बुरी हैं। न तुमने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारी, न मेरे अहकाम पर अमल किया। बल्कि
तुम इतने शरारती थे कि गिर्दो-नवाह की अक़वाम
के रस्मो-रिवाज से भी बदतर ज़िंदगी गुज़ारने
लगे।” 8इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है,
“ऐ यरूशलम, अब मैं ख़ुद तुझसे निपट लूँगा।
दीगर अक़वाम के देखते देखते मैं तेरी अदालत
करूँगा। 9तेरी घिनौनी बुतपरस्ती के सबब से मैं
तेरे साथ ऐसा सुलूक करूँगा जैसा मैंने पहले कभी
नहीं किया है और आइंदा भी कभी नहीं करूँगा।
10तब तेरे दरमियान बाप अपने बेटों को और बेटे
अपने बाप को खाएँगे। मैं तेरी अदालत यों करूँगा
कि जितने बचेंगे वह सब हवा में उड़कर चारों तरफ़
मुंतशिर हो जाएंगे।”

11रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “मेरी हयात
की क़सम, तूने अपने घिनौने बुतों और रस्मो-
रिवाज से मेरे मक़दिस की बेहुरमती की है,
इसलिए मैं तुझे मुँडवाकर तबाह कर दूँगा। न मैं
तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। 12तेरे
बाशिंदों की एक तिहाई मोहलक बीमारियों और
काल से शहर में हलाक हो जाएगी। दूसरी तिहाई
तलवार की ज़द में आकर शहर के इर्दगिर्द मर
जाएगी। तीसरी तिहाई को मैं हवा में उड़ाकर
मुंतशिर कर दूँगा और फिर तलवार को मियान से
खींचकर उनका पीछा करूँगा। 13यों मेरा क़हर
ठंडा हो जाएगा और मैं इंतक़ाम लेकर अपना
ग़ुस्सा उतारूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं, रब
ग़ैरत में उनसे हमकलाम हुआ हूँ।

14मैं तुझे मलबे का ढेर और इर्दगिर्द की
अक़वाम की लान-तान का निशाना बना दूँगा।
हर गुज़रनेवाला तेरी हालत देखकर ‘तौबा तौबा’
कहेगा। 15जब मेरा ग़ज़ब तुझ पर टूट पड़ेगा और
मैं तेरी सख़्त अदालत और सरज़निश करूँगा तो
उस वक़्त तू पड़ोस की अक़वाम के लिए मज़ाक़
और लानत-मलामत का निशाना बन जाएगा।
तेरी हालत को देखकर उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे
और वह मुहतात रहने का सबक़ सीखेंगे। यह मेरा,
रब का फ़रमान है।

16ऐ यरूशलम के बाशिंदो, मैं काल के
मोहलक और तबाहकुन तीर तुम पर बरसाऊँगा
ताकि तुम हलाक हो जाओ। काल यहाँ तक
ज़ोर पकड़ेगा कि खाने का बंदोबस्त ख़त्म हो
जाएगा। 17मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ काल और वहशी
जानवर भेजूँगा ताकि तू बेऔलाद हो जाए।
मोहलक बीमारियाँ और क़त्लो-ग़ारत तेरे बीच
में से गुज़रेगी, और मैं तेरे ख़िलाफ़ तलवार
चलाऊँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।”

बुलंदियों पर मज़ारों की अदालत

6 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, इसराईल के पहाड़ों की तरफ़
रुख़ करके उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर। 3उनसे

कह, ‘ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब क़ादिरे-मुतलक़
का कलाम सुनो! वह पहाड़ों, पहाड़ियों, घाटियों
और वादियों के बारे में फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे
ख़िलाफ़ तलवार चलाकर तुम्हारी ऊँची जगहों के
मंदिरों को तबाह कर दूँगा। 4जिन क़ुरबानगाहों
पर तुम अपने जानवर और बख़ूर जलाते हो वह
ढा दूँगा। मैं तेरे मक़तूलों को तेरे बुतों के सामने
ही फेंक छोड़ूँगा। 5मैं इसराईलियों की लाशों को
उनके बुतों के सामने डालकर तुम्हारी हड्डियों
को तुम्हारी क़ुरबानगाहों के इर्दगिर्द बिखेर दूँगा।
6जहाँ भी तुम आबाद हो वहाँ तुम्हारे शहर खंडरात
बन जाएंगे और ऊँची जगहों के मंदिर मिसमार हो
जाएंगे। क्योंकि लाज़िम है कि जिन क़ुरबानगाहों
पर तुम अपने जानवर और बख़ूर जलाते हो वह
ख़ाक में मिलाई जाएँ, कि तुम्हारे बुतों को पाश
पाश किया जाए, कि तुम्हारी बुतपरस्ती की चीज़ें
नेस्तो-नाबूद हो जाएँ। 7मक़तूल तुम्हारे दरमियान
गिरकर पड़े रहेंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही
रब हूँ।

8लेकिन मैं चंद एक को ज़िंदा छोड़ूँगा। क्योंकि
जब तुम्हें दीगर ममालिक और अक़वाम में मुंतशिर
किया जाएगा तो कुछ तलवार से बचे रहेंगे। 9जब
यह लोग क़ैदी बनकर मुख़्तलिफ़ ममालिक में
लाए जाएंगे तो उन्हें मेरा ख़याल आएगा। उन्हें
याद आएगा कि मुझे कितना ग़म खाना पड़ा जब
उनके ज़िनाकार दिल मुझसे दूर हुए और उनकी
आँखें अपने बुतों से ज़िना करती रहीं। तब वह
यह सोचकर कि हमने कितना बुरा काम किया
और कितनी मकरूह हरकतें की हैं अपने आपसे
घिन खाएँगे। 10उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं रब
हूँ, कि उन पर यह आफ़त लाने का एलान करते
वक़्त मैं ख़ाली बातें नहीं कर रहा था’।”

11फिर रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझसे फ़रमाया,
“तालियाँ बजाकर पाँव ज़ोर से ज़मीन पर मार!
साथ साथ यह कह, ‘इसराईली क़ौम की घिनौनी
हरकतों पर अफ़सोस! वह तलवार, काल और
मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर हलाक हो
जाएंगे। 12जो दूर है वह मोहलक वबा से मर
जाएगा, जो क़रीब है वह तलवार से क़त्ल हो
जाएगा, और जो बच जाए वह भूके मरेगा। यों
मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। 13वह
जान लेंगे कि मैं रब हूँ जब उनके मक़तूल उनके
बुतों के दरमियान, उनकी क़ुरबानगाहों के इर्दगिर्द,
हर पहाड़ और पहाड़ की चोटी पर और हर हरे
दरख़्त और बलूत के घने दरख़्त के साये में नज़र
आएँगे। जहाँ भी वह अपने बुतों को ख़ुश करने
के लिए कोशाँ रहे वहाँ उनकी लाशें पाई जाएँगी।
14मैं अपना हाथ उनके ख़िलाफ़ उठाकर मुल्क
को यहूदाह के रेगिस्तान से लेकर दिबला तक
तबाह कर दूँगा। उनकी तमाम आबादियाँ वीरानो-
सुनसान हो जाएँगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ’।”

मुल्क का बुरा अंजाम

7 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ आ-
दमज़ाद, रब क़ादिरे-मुतलक़ मुल्के-
इसराईल से फ़रमाता है कि तेरा अंजाम क़रीब ही
है! जहाँ भी देखो, पूरा मुल्क तबाह हो जाएगा।
3अब तेरा सत्यानास होनेवाला है, मैं ख़ुद अपना
ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन
को परख परखकर तेरी अदालत करूँगा, तेरी
मकरूह हरकतों का पूरा अज्र दूँगा। 4न मैं तुझ
पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि तुझे तेरे
चाल-चलन का मुनासिब अज्र दूँगा। क्योंकि तेरी
मकरूह हरकतों का बीज तेरे दरमियान ही उगकर
फल लाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब
हूँ।”

5रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “आफ़त पर
आफ़त ही आ रही है। 6तेरा अंजाम, हाँ, तेरा
अंजाम आ रहा है। अब वह उठकर तुझ पर
लपक रहा है। 7ऐ मुल्क के बाशिंदे, तेरी फ़ना
पहुँच रही है। अब वह वक़्त क़रीब ही है, वह
दिन जब तेरे पहाड़ों पर ख़ुशी के नारों के बजाए
अफ़रा-तफ़री का शोर मचेगा। 8अब मैं जल्द ही
अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा, जल्द ही
अपना ग़ुस्सा तुझ पर उतारूँगा। मैं तेरे चाल-

चलन को परख परखकर तेरी अदालत करूँगा,
तेरी घिनौनी हरकतों का पूरा अज्र दूँगा। 9न मैं
तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि तुझे
तेरे चाल-चलन का मुनासिब अज्र दूँगा। क्योंकि
तेरी मकरूह हरकतों का बीज तेरे दरमियान ही
उगकर फल लाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं
यानी रब ही ज़रब लगा रहा हूँ।

10देखो, मज़कूरा दिन क़रीब ही है! तेरी
हलाकत पहुँच रही है। नाइनसाफ़ी के फूल और
शोख़ी की कोंपलें फूट निकली हैं। 11लोगों का
ज़ुल्म बढ़ बढ़कर लाठी बन गया है जो उन्हें
उनकी बेदीनी की सज़ा देगी। कुछ नहीं रहेगा,
न वह ख़ुद, न उनकी दौलत, न उनका शोर-
शराबा, और न उनकी शानो-शौकत। 12अदालत
का दिन क़रीब ही है। उस वक़्त जो कुछ ख़रीदे
वह ख़ुश न हो, और जो कुछ फ़रोख़्त करे वह
ग़म न खाए। क्योंकि अब इन चीज़ों का कोई
फ़ायदा नहीं, इलाही ग़ज़ब सब पर नाज़िल हो
रहा है। 13बेचनेवाले बच भी जाएँ तो वह अपना
कारोबार नहीं कर सकेंगे। क्योंकि सब पर इलाही
ग़ज़ब का फ़ैसला अटल है और मनसूख़ नहीं हो
सकता। लोगों के गुनाहों के बाइस एक जान भी
नहीं छूटेगी। 14बेशक लोग बिगुल बजाकर जंग
की तैयारियाँ करें, लेकिन क्या फ़ायदा? लड़ने
के लिए कोई नहीं निकलेगा, क्योंकि सबके सब
मेरे क़हर का निशाना बन जाएंगे।

15बाहर तलवार, अंदर मोहलक वबा और
भूक। क्योंकि देहात में लोग तलवार की ज़द में
आ जाएंगे, शहर में काल और मोहलक वबा से
हलाक हो जाएंगे। 16जितने भी बचेंगे वह पहाड़ों
में पनाह लेंगे, घाटियों में फ़ाख़्ताओं की तरह ग़ूँ ग़ूँ
करके अपने गुनाहों पर आहो-ज़ारी करेंगे। 17हर
हाथ से ताक़त जाती रहेगी, हर घुटना डाँवाँडोल
हो जाएगा।

18वह टाट के मातमी कपड़े ओढ़ लेंगे, उन
पर कपकपी तारी हो जाएगी। हर चेहरे पर
शरमिंदगी नज़र आएगी, हर सर मुँडवाया गया
होगा। 19अपनी चाँदी को वह गलियों में फेंक
देंगे, अपने सोने को ग़िलाज़त समझेंगे। क्योंकि
जब रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल होगा तो न
उनकी चाँदी उन्हें बचा सकेगी, न सोना। उनसे
न वह अपनी भूक मिटा सकेंगे, न अपने पेट को
भर सकेंगे, क्योंकि यही चीज़ें उनके लिए गुनाह
का बाइस बन गई थीं। 20उन्होंने अपने ख़ूबसूरत
ज़ेवरात पर फ़ख़र करके उनसे अपने घिनौने बुत
और मकरूह मुजस्समे बनाए, इसलिए मैं होने
दूँगा कि वह अपनी दौलत से घिन खाएँगे।

21मैं यह सब कुछ परदेसियों के हवाले कर
दूँगा, और वह उसे लूट लेंगे। दुनिया के बेदीन
उसे छीनकर उस की बेहुरमती करेंगे। 22मैं अपना
मुँह इसराईलियों से फेर लूँगा तो अजनबी मेरे
क़ीमती मक़ाम की बेहुरमती करेंगे। डाकू उसमें
घुसकर उसे नापाक करेंगे। 23ज़ंजीरें तैयार कर!
क्योंकि मुल्क में क़त्लो-ग़ारत आम हो गई है,
शहर ज़ुल्मो-तशद्दुद से भर गया है। 24मैं दीगर
अक़वाम के सबसे शरीर लोगों को बुलाऊँगा
ताकि इसराईलियों के घरों पर क़ब्ज़ा करें, मैं
ज़ोरावरों का तकब्बुर ख़ाक में मिला दूँगा। जो
भी मक़ाम उन्हें मुक़द्दस हो उस की बेहुरमती की
जाएगी।

25जब दहशत उन पर तारी होगी तो वह अमनो-
अमान तलाश करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। अमनो-
अमान कहीं भी पाया नहीं जाएगा। 26आफ़त पर
आफ़त ही उन पर आएगी, यके बाद दीगरे बुरी
ख़बरें उन तक पहुँचेंगी। वह नबी से रोया मिलने
की उम्मीद करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। न इमाम उन्हें
शरीअत की तालीम, न बुज़ुर्ग उन्हें मशवरा दे
सकेंगे। 27बादशाह मातम करेगा, रईस हैबतज़दा
होगा, और अवाम के हाथ थरथराएँगे। मैं उनके
चाल-चलन के मुताबिक़ उनसे निपटूँगा, उनके
अपने ही उसूलों के मुताबिक़ उनकी अदालत
करूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

रब के घर में बुतपरस्ती की रोया

8 जिलावतनी के छटे साल के छटे महीने
के पाँचवें दिन[a] मैं अपने घर में बैठा था।
यहूदाह के बुज़ुर्ग पास ही बैठे थे। तब रब क़ादिरे-
मुतलक़ का हाथ मुझ पर आ ठहरा। 2रोया में मैंने
किसी को देखा जिसकी शक्लो-सूरत इनसान की
मानिंद थी। लेकिन कमर से लेकर पाँव तक वह
आग की मानिंद भड़क रहा था जबकि कमर से
लेकर सर तक चमकदार धात की तरह तमतमा
रहा था। 3उसने कुछ आगे बढ़ा दिया जो हाथ-सा
लग रहा था और मेरे बालों को पकड़ लिया। फिर
रूह ने मुझे उठाया और ज़मीन और आसमान के
दरमियान चलते चलते यरूशलम तक पहुँचाया।
अभी तक मैं अल्लाह की रोया देख रहा था। मैं
रब के घर के अंदरूनी सहन के उस दरवाज़े के
पास पहुँच गया जिसका रुख़ शिमाल की तरफ़
है। दरवाज़े के क़रीब एक बुत पड़ा था जो रब को
मुश्तइल करके ग़ैरत दिलाता है।

4वहाँ इसराईल के ख़ुदा का जलाल मुझ पर
उसी तरह ज़ाहिर हुआ जिस तरह पहले मैदान
की रोया में मुझ पर ज़ाहिर हुआ था। 5वह मुझसे
हमकलाम हुआ, “ऐ आदमज़ाद, शिमाल की
तरफ़ नज़र उठा।” मैंने अपनी नज़र शिमाल की
तरफ़ उठाई तो दरवाज़े के बाहर क़ुरबानगाह
देखी। साथ साथ दरवाज़े के क़रीब ही वह बुत
खड़ा था जो रब को ग़ैरत दिलाता है। 6फिर रब
बोला, “ऐ आदमज़ाद, क्या तुझे वह कुछ नज़र
आता है जो इसराईली क़ौम यहाँ करती है? यह
लोग यहाँ बड़ी मकरूह हरकतें कर रहे हैं ताकि मैं
अपने मक़दिस से दूर हो जाऊँ। लेकिन तू इनसे
भी ज़्यादा मकरूह चीज़ें देखेगा।”

7वह मुझे रब के घर के बैरूनी सहन के दरवाज़े
के पास ले गया तो मैंने दीवार में सूराख़ देखा।
8अल्लाह ने फ़रमाया, “आदमज़ाद, इस सूराख़
को बड़ा बना।” मैंने ऐसा किया तो दीवार के
पीछे दरवाज़ा नज़र आया। 9तब उसने फ़रमाया,
“अंदर जाकर वह शरीर और घिनौनी हरकतें देख
जो लोग यहाँ कर रहे हैं।”

10मैं दरवाज़े में दाख़िल हुआ तो क्या देखता हूँ
कि दीवारों पर चारों तरफ़ बुतपरस्ती की तस्वीरें
कंदा हुई हैं। हर क़िस्म के रेंगनेवाले और दीगर
मकरूह जानवर बल्कि इसराईली क़ौम के तमाम
बुत उन पर नज़र आए। 11इसराईली क़ौम के
70 बुज़ुर्ग बख़ूरदान पकड़े उनके सामने खड़े थे।
बख़ूरदानों में से बख़ूर का ख़ुशबूदार धुआँ उठ रहा
था। याज़नियाह बिन साफ़न भी बुज़ुर्गों में शामिल
था।

12रब मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ आदम-
ज़ाद, क्या तूने देखा कि इसराईली क़ौम के बुज़ुर्ग
अंधेरे में क्या कुछ कर रहे हैं? हर एक ने अपने
घर में अपने बुतों के लिए कमरा मख़सूस कर रखा
है। क्योंकि वह समझते हैं, ‘हम रब को नज़र नहीं
आते, उसने हमारे मुल्क को तर्क कर दिया है।’
13लेकिन आ, मैं तुझे इससे भी ज़्यादा क़ाबिले-
घिन हरकतें दिखाता हूँ।”

14वह मुझे रब के घर के अंदरूनी सहन के
शिमाली दरवाज़े के पास ले गया। वहाँ औरतें बैठी
थीं जो रो रोकर तम्मूज़ देवता[b] का मातम कर रही
थीं। 15रब ने सवाल किया, “आदमज़ाद, क्या
तुझे यह नज़र आता है? लेकिन आ, मैं तुझे इससे
भी ज़्यादा क़ाबिले-घिन हरकतें दिखाता हूँ।”

16वह मुझे रब के घर के अंदरूनी सहन में ले
गया। रब के घर के दरवाज़े पर यानी सामनेवाले
बरामदे और क़ुरबानगाह के दरमियान ही 25
आदमी खड़े थे। उनका रुख़ रब के घर की तरफ़
नहीं बल्कि मशरिक़ की तरफ़ था, और वह सूरज
को सिजदा कर रहे थे।

---

[a]17 सितंबर।

[b]तम्मूज़ मसोपुतामिया का एक देवता था जिसके पैरोकार समझते थे कि वह मौसमे-गरमा के इख़्तिताम पर हरियाली के साथ साथ मर जाता और मौसमे-बहार में दुबारा जी उठता है।

17रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, क्या तुझे
यह नज़र आता है? और यह मकरूह हरकतें
भी यहूदाह के बाशिंदों के लिए काफ़ी नहीं हैं
बल्कि वह पूरे मुल्क को ज़ुल्मो-तशद्दुद से भरकर
मुझे मुश्तइल करने के लिए कोशाँ रहते हैं। देख,
अब वह अपनी नाकों के सामने अंगूर की बेल
लहराकर बुतपरस्ती की एक और रस्म अदा कर
रहे हैं! 18चुनाँचे मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल
करूँगा। न मैं उन पर तरस खाऊँगा, न रहम
करूँगा। ख़ाह वह मदद के लिए कितने ज़ोर से
क्यों न चीख़ें मैं उनकी नहीं सुनूँगा।"

यरूशलम तबाह हो जाएगा

9 फिर मैंने अल्लाह की बुलंद आवाज़ सुनी,
"यरूशलम की अदालत क़रीब आ गई
है! आओ, हर एक अपना तबाहकुन हथियार
पकड़कर खड़ा हो जाए!" 2तब छ: आदमी रब के
घर के शिमाली दरवाज़े के रास्ते से चले आए। हर
एक अपना तबाहकुन हथियार थामे चल रहा था।
उनके साथ एक और आदमी था जिसका लिबास
कतान का था। उसके पटके से कातिब का सामान
लटका हुआ था। यह आदमी क़रीब आकर पीतल
की क़ुरबानगाह के पास खड़े हो गए।

3इसराईल के ख़ुदा का जलाल अब तक करूबी
फ़रिश्तों के ऊपर ठहरा हुआ था। अब वह वहाँ से
उड़कर रब के घर की दहलीज़ के पास रुक गया।
फिर रब कतान से मुलब्बस उस मर्द से हमकलाम
हुआ जिसके पटके से कातिब का सामान लटका
हुआ था। 4उसने फ़रमाया, "जा, यरूशलम शहर
में से गुज़रकर हर एक के माथे पर निशान लगा दे
जो बाशिंदों की तमाम मकरूह हरकतों को देखकर
आहो-ज़ारी करता है।" 5मेरे सुनते सुनते रब ने
दीगर आदमियों से कहा, "पहले आदमी के पीछे
पीछे चलकर लोगों को मार डालो! न किसी पर
तरस खाओ, न रहम करो 6बल्कि बुज़ुर्गों को
कुँवारे-कुँवारियों और बाल-बच्चों समेत मौत के
घाट उतारो। सिर्फ़ उन्हें छोड़ना जिनके माथे पर
निशान है। मेरे मक़दिस से शुरू करो!"

चुनाँचे आदमियों ने उन बुज़ुर्गों से शुरू किया
जो रब के घर के सामने खड़े थे। 7फिर रब उनसे
दुबारा हमकलाम हुआ, "रब के घर के सहनों को
मक़तूलों से भरकर उस की बेहुरमती करो, फिर
वहाँ से निकल जाओ!" वह निकल गए और शहर
में से गुज़रकर लोगों को मार डालने लगे। 8रब के
घर के सहन में सिर्फ़ मुझे ही ज़िंदा छोड़ा गया था।

मैं औंधे मुँह गिरकर चीख़ उठा, "ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, क्या तू यरूशलम पर अपना ग़ज़ब
नाज़िल करके इसराईल के तमाम बचे हुओं
को मौत के घाट उतारेगा?" 9रब ने जवाब
दिया, "इसराईल और यहूदाह के लोगों का क़ुसूर
निहायत ही संगीन है। मुल्क में क़त्लो-ग़ारत आम
है, और शहर नाइनसाफ़ी से भर गया है। क्योंकि
लोग कहते हैं, 'रब ने मुल्क को तर्क किया है,
हम उसे नज़र ही नहीं आते।' 10इसलिए न मैं
उन पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि
उनकी हरकतों की मुनासिब सज़ा उनके सरों पर
लाऊँगा।"

11फिर कतान से मुलब्बस वह आदमी लौट
आया जिसके पटके से कातिब का सामान लटका
हुआ था। उसने इत्तला दी, "जो कुछ तूने फ़रमाया
वह मैंने पूरा किया है।"

10 मैंने उस गुंबद पर नज़र डाली जो
करूबी फ़रिश्तों के सरों के ऊपर फैली
हुई थी। उस पर संगे-लाजवर्द[a] का तख़्त-सा
नज़र आया। 2रब ने कतान से मुलब्बस मर्द से
फ़रमाया, "करूबी फ़रिश्तों के नीचे लगे पहियों
के बीच में जा। वहाँ से दो मुट्ठी-भर कोयले लेकर
शहर पर बिखेर दे।" आदमी मेरे देखते देखते
फ़रिश्तों के बीच में चला गया। 3उस वक़्त करूबी
फ़रिश्ते रब के घर के जुनूब में खड़े थे, और
अंदरूनी सहन बादल से भरा हुआ था।

[a]lapis lazuli

4फिर रब का जलाल जो करूबी फ़रिश्तों के ऊपर ठहरा हुआ था वहाँ से उठकर रब के घर की दहलीज़ पर रुक गया। पूरा मकान बादल से भर गया बल्कि सहन भी रब के जलाल की आबो-ताब से भर गया। 5करूबी फ़रिश्ते अपने परों को इतने ज़ोर से फड़फड़ा रहे थे कि उसका शोर बैरूनी सहन तक सुनाई दे रहा था। यों लग रहा था कि क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा बोल रहा है। 6जब रब ने कतान से मुलब्बस आदमी को हुक्म दिया कि करूबी फ़रिश्तों के पहियों के बीच में से जलते हुए कोयले ले तो वह उनके दरमियान चलकर एक पहिये के पास खड़ा हुआ। 7फिर करूबी फ़रिश्तों में से एक ने अपना हाथ बढ़ाकर बीच में जलनेवाले कोयलों में से कुछ ले लिया और आदमी के हाथों में डाल दिया। कतान से मुलब्बस यह आदमी कोयले लेकर चला गया।

रब अपने घर को छोड़ देता है

8मैंने देखा कि करूबी फ़रिश्तों के परों के नीचे कुछ है जो इनसानी हाथ जैसा लग रहा है। 9हर फ़रिश्ते के पास एक पहिया था। पुखराज[a] जैसी किसी चीज़ से बने यह चार पहिये 10एक जैसे थे। हर पहिये के अंदर एक और पहिया ज़ावियाए-क़ायमा में घूम रहा था, 11इसलिए यह मुड़े बग़ैर हर रुख़ इख़्तियार कर सकते थे। जिस तरफ़ एक चल पड़ता उस तरफ़ बाक़ी भी मुड़े बग़ैर चलने लगते। 12फ़रिश्तों के जिस्मों की हर जगह पर आँखें ही आँखें थीं। आँखें न सिर्फ़ सामने नज़र आईं बल्कि उनकी पीठ, हाथों और परों पर भी बल्कि चारों पहियों पर भी। 13तो भी यह पहिये ही थे, क्योंकि मैंने ख़ुद सुना कि उनके लिए यही नाम इस्तेमाल हुआ।

14हर फ़रिश्ते के चार चेहरे थे। पहला चेहरा करूबी का, दूसरा आदमी का, तीसरा शेरबबर का और चौथा उक़ाब का चेहरा था। 15फिर करूबी फ़रिश्ते उड़ गए। वही जानदार थे जिन्हें मैं दरियाए-किबार के किनारे देख चुका था। 16जब फ़रिश्ते हरकत में आ जाते तो पहिये भी चलने लगते, और जब फ़रिश्ते फड़फड़ाकर उड़ने लगते तो पहिये भी उनके साथ उड़ने लगते। 17फ़रिश्तों के रुकने पर पहिये रुक जाते, और उनके उड़ने पर यह भी उड़ जाते, क्योंकि जानदारों की रूह उनमें थी।

18फिर रब का जलाल अपने घर की दहलीज़ से हट गया और दुबारा करूबी फ़रिश्तों के ऊपर आकर ठहर गया। 19मेरे देखते देखते फ़रिश्तों ने अपने परों को फैलाया और ज़मीन से उड़कर पहियों समेत निकल गए। चलते चलते वह रब के घर के मशरिक़ी दरवाज़े के पास रुक गए। ख़ुदाए-इसराईल का जलाल उनके ऊपर ठहरा रहा।

20वही जानदार थे जिन्हें मैंने दरियाए-किबार के किनारे ख़ुदाए-इसराईल के नीचे देखा था। मैंने जान लिया कि यह करूबी फ़रिश्ते हैं। 21हर एक के चार चेहरे और चार पर थे, और परों के नीचे कुछ नज़र आया जो इनसानी हाथों की मानिंद था। 22उनके चेहरों की शक्लो-सूरत उन चेहरों की मानिंद थी जो मैंने दरियाए-किबार के किनारे देखे थे। चलते वक़्त हर जानदार सीधा अपने किसी एक चेहरे का रुख़ इख़्तियार करता था।

अल्लाह की यरूशलम के बुज़ुर्गों के लिए सख़्त सज़ा

11 तब रूह मुझे उठाकर रब के घर के मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया। वहाँ दरवाज़े पर 25 मर्द खड़े थे। मैंने देखा कि क़ौम के दो बुज़ुर्ग याज़नियाह बिन अज़्ज़ूर और फ़लतियाह बिन बिनायाह भी उनमें शामिल हैं। 2रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, यह वही मर्द हैं जो शरीर मनसूबे बाँध रहे और यरूशलम में बुरे मशवरे दे रहे हैं। 3यह कहते हैं, 'आनेवाले दिनों में घर तामीर करने की ज़रूरत नहीं। हमारा शहर तो देग है जबकि हम उसमें पकनेवाला बेहतरीन गोश्त हैं।' 4आदमज़ाद, चूँकि वह ऐसी बातें करते

[a]topas

हैं इसलिए नबुव्वत कर! उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत
कर!”
5तब रब का रूह मुझ पर आ ठहरा, और उसने
मुझे यह पेश करने को कहा, “रब फ़रमाता है, ‘ऐ
इसराईली क़ौम, तुम इस क़िस्म की बातें करते
हो। मैं तो उन ख़यालात से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ जो
तुम्हारे दिलों से उभरते रहते हैं। 6तुमने इस शहर में
मुतअद्दिद लोगों को क़त्ल करके उस की गलियों
को लाशों से भर दिया है।’
7चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है,
‘बेशक शहर देग है, लेकिन तुम उसमें पकनेवाला
अच्छा गोश्त नहीं होगे बल्कि वही जिनको तुमने
उसके दरमियान क़त्ल किया है। तुम्हें मैं इस शहर
से निकाल दूँगा। 8जिस तलवार से तुम डरते हो,
उसी को मैं तुम पर नाज़िल करूँगा।’ यह रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है। 9‘मैं तुम्हें शहर से
निकालूँगा और परदेसियों के हवाले करके तुम्हारी
अदालत करूँगा। 10तुम तलवार की ज़द में आकर
मर जाओगे। इसराईल की हुदूद पर ही मैं तुम्हारी
अदालत करूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब
हूँ। 11चुनाँचे न यरूशलम शहर तुम्हारे लिए देग
होगा, न तुम उसमें बेहतरीन गोश्त होगे बल्कि मैं
इसराईल की हुदूद ही पर तुम्हारी अदालत करूँगा।
12तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ, जिसके
अहकाम के मुताबिक़ तुमने ज़िंदगी नहीं गुज़ारी।
क्योंकि तुमने मेरे उसूलों की पैरवी नहीं की बल्कि
अपनी पड़ोसी क़ौमों के उसूलों की’।”
13मैं अभी इस पेशगोई का एलान कर रहा
था कि फ़लतियाह बिन बिनायाह फ़ौत हुआ।
यह देखकर मैं मुँह के बल गिर गया और बुलंद
आवाज़ से चीख़ उठा, “हाय, हाय! ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, क्या तू इसराईल के बचे-खुचे हिस्से को
सरासर मिटाना चाहता है?”

अल्लाह इसराईल को बहाल करेगा

14रब मुझसे हमकलाम हुआ, 15“ऐ आ-
दमज़ाद, यरूशलम के बाशिंदे तेरे भाइयों, तेरे
रिश्तेदारों और बाबल में जिलावतन हुए तमाम
इसराईलियों के बारे में कह रहे हैं, ‘यह लोग रब
से कहीं दूर हो गए हैं, अब इसराईल हमारे ही
क़ब्ज़े में है।’ 16जो इस क़िस्म की बातें करते हैं
उन्हें जवाब दे, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है
कि जी हाँ, मैंने उन्हें दूर दूर भगा दिया, और अब
वह दीगर क़ौमों के दरमियान ही रहते हैं। मैंने ख़ुद
उन्हें मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दिया,
ऐसे इलाक़ों में जहाँ उन्हें मक़दिस में मेरे हुज़ूर
आने का मौक़ा थोड़ा ही मिलता है। 17लेकिन रब
क़ादिरे-मुतलक़ यह भी फ़रमाता है, मैं तुम्हें दीगर
क़ौमों में से निकाल लूँगा, तुम्हें उन मुल्कों से जमा
करूँगा जहाँ मैंने तुम्हें मुंतशिर कर दिया था। तब
मैं तुम्हें मुल्के-इसराईल दुबारा अता करूँगा।
18फिर वह यहाँ आकर तमाम मकरूह बुत
और घिनौनी चीज़ें दूर करेंगे। 19उस वक़्त मैं उन्हें
एक ही दिल बख़्शकर उनमें नई रूह डालूँगा।
मैं उनका संगीन दिल निकालकर उन्हें गोश्त-
पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। 20तब वह मेरे
अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेंगे और ध्यान
से मेरी हिदायात पर अमल करेंगे। वह मेरी क़ौम
होंगे, और मैं उनका ख़ुदा हूँगा। 21लेकिन जिन
लोगों के दिल उनके घिनौने बुतों से लिपटे रहते हैं
उनके सर पर मैं उनके ग़लत काम का मुनासिब
अज्र लाऊँगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है’।”

रब यरूशलम को छोड़ देता है

22फिर करूबी फ़रिश्तों ने अपने परों को
फैलाया, उनके पहिये हरकत में आ गए और
ख़ुदाए-इसराईल का जलाल जो उनके ऊपर था
23उठकर शहर से निकल गया। चलते चलते वह
यरूशलम के मशरिक़ में वाक़े पहाड़ पर ठहर
गया। 24अल्लाह के रूह से दी गई रोया में रूह
मुझे उठाकर मुल्के-बाबल के जिलावतनों के पास
वापस ले गया। फिर रोया ख़त्म हुई, 25और मैंने
जिलावतनों को सब कुछ सुनाया जो रब ने मुझे
दिखाया था।

नबी सामान लपेटकर जिलावतनी की पेशगोई करता है

12 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, तू एक सरकश क़ौम के
दरमियान रहता है। गो उनकी आँखें हैं तो भी कुछ
नहीं देखते, गो उनके कान हैं तो भी कुछ नहीं
सुनते। क्योंकि यह क़ौम हटधर्म है।

3ऐ आदमज़ाद, अब अपना सामान यों लपेट
ले जिस तरह तुझे जिलावतन किया जा रहा हो।
फिर दिन के वक़्त और उनके देखते देखते घर से
रवाना होकर किसी और जगह चला जा। शायद
उन्हें समझ आए कि उन्हें जिलावतन होना है,
हालाँकि यह क़ौम सरकश है। 4दिन के वक़्त
उनके देखते देखते अपना सामान घर से निकाल
ले, यों जैसे तू जिलावतनी के लिए तैयारियाँ कर
रहा हो। फिर शाम के वक़्त उनकी मौजूदगी में
जिलावतन का-सा किरदार अदा करके रवाना हो
जा। 5घर से निकलने के लिए दीवार में सूराख़
बना, फिर अपना सारा सामान उसमें से बाहर ले
जा। सब इसके गवाह हों। 6उनके देखते देखते
अंधेरे में अपना सामान कंधे पर रखकर वहाँ से
निकल जा। लेकिन अपना मुँह ढाँप ले ताकि तू
मुल्क को देख न सके। लाज़िम है कि तू यह
सब कुछ करे, क्योंकि मैंने मुक़र्रर किया है कि
तू इसराईली क़ौम को आगाह करने का निशान
बन जाए।”

7मैंने वैसा ही किया जैसा रब ने मुझे हुक्म दिया
था। मैंने अपना सामान यों लपेट लिया जैसे मुझे
जिलावतन किया जा रहा हो। दिन के वक़्त मैं उसे
घर से बाहर ले गया, शाम को मैंने अपने हाथों
से दीवार में सूराख़ बना लिया। लोगों के देखते
देखते मैं सामान को अपने कंधे पर उठाकर वहाँ
से निकल आया। उतने में अंधेरा हो गया था।

8सुबह के वक़्त रब का कलाम मुझ पर
नाज़िल हुआ, 9“ऐ आदमज़ाद, इस हटधर्म क़ौम
इसराईल ने तुझसे पूछा कि तू क्या कर रहा है?
10उन्हें जवाब दे, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता
है कि इस पैग़ाम का ताल्लुक़ यरूशलम के रईस
और शहर में बसनेवाले तमाम इसराईलियों से है।’
11उन्हें बता, ‘मैं तुम्हें आगाह करने का निशान हूँ।
जो कुछ मैंने किया वह तुम्हारे साथ हो जाएगा।
तुम क़ैदी बनकर जिलावतन हो जाओगे। 12जो
रईस तुम्हारे दरमियान है वह अंधेरे में अपना
सामान कंधे पर उठाकर चला जाएगा। दीवार में
सूराख़ बनाया जाएगा ताकि वह निकल सके।
वह अपना मुँह ढाँप लेगा ताकि मुल्क को न देख
सके। 13लेकिन मैं अपना जाल उस पर डाल दूँगा,
और वह मेरे फंदे में फँस जाएगा। मैं उसे बाबल
लाऊँगा जो बाबलियों के मुल्क में है, अगरचे
वह उसे अपनी आँखों से नहीं देखेगा। वहीं वह
वफ़ात पाएगा। 14जितने भी मुलाज़िम और दस्ते
उसके इर्दगिर्द होंगे उन सबको मैं हवा में उड़ाकर
चारों तरफ़ मुंतशिर कर दूँगा। अपनी तलवार को
मियान से खींचकर मैं उनके पीछे पड़ा रहूँगा।
15जब मैं उन्हें दीगर अक़वाम और मुख़्तलिफ़
ममालिक में मुंतशिर करूँगा तो वह जान लेंगे कि
मैं ही रब हूँ। 16लेकिन मैं उनमें से चंद एक को
बचाकर तलवार, काल और मोहलक वबा की
ज़द में नहीं आने दूँगा। क्योंकि लाज़िम है कि
जिन अक़वाम में भी वह जा बसें वहाँ वह अपनी
मकरूह हरकतें बयान करें। तब यह अक़वाम भी
जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ’।”

एक और निशान : हिज़क़ियेल का काँपना

17रब मुझसे हमकलाम हुआ, 18“ऐ
आदमज़ाद, खाना खाते वक़्त अपनी रोटी को
लरज़ते हुए खा और अपने पानी को परेशानी के
मारे थरथराते हुए पी। 19साथ साथ उम्मत को
बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मुल्के-
इसराईल के शहर यरूशलम के बाशिंदे परेशानी
में अपना खाना खाएँगे और दहशतज़दा हालत में
अपना पानी पिएँगे, क्योंकि उनका मुल्क तबाह
और हर बरकत से ख़ाली हो जाएगा। और सबब
उसके बाशिंदों का ज़ुल्मो-तशद्दुद होगा। 20जिन
शहरों में लोग अब तक आबाद हैं वह बरबाद हो

जाएंगे, मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा। तब
तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ’।”

अल्लाह का कलाम जल्द ही पूरा हो जाएगा

21रब मुझसे हमकलाम हुआ, 22“ऐ
आदमज़ाद, यह कैसी कहावत है जो मुल्के-
इसराईल में आम हो गई है? लोग कहते हैं,
‘ज्यों-ज्यों दिन गुज़रते जाते हैं त्यों-त्यों हर रोया
ग़लत साबित होती जाती है।’ 23जवाब में उन्हें
बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं इस
कहावत को ख़त्म करूँगा, आइंदा यह इसराईल
में इस्तेमाल नहीं होगी।’ उन्हें यह भी बता, ‘वह
वक़्त क़रीब ही है जब हर रोया पूरी हो जाएगी।
24क्योंकि आइंदा इसराईली क़ौम में न फ़रेबदेह
रोया, न चापलूसी की पेशगोइयाँ पाई जाएँगी।
25क्योंकि मैं रब हूँ। जो कुछ मैं फ़रमाता हूँ वह
वुजूद में आता है। ऐ सरकश क़ौम, देर नहीं होगी
बल्कि तुम्हारे ही ऐयाम में मैं बात भी करूँगा और
उसे पूरा भी करूँगा।’ यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।”

26रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, 27“ऐ
आदमज़ाद, इसराईली क़ौम तेरे बारे में कहती
है, ‘जो रोया यह आदमी देखता है वह बड़ी देर
के बाद ही पूरी होगी, उस की पेशगोइयाँ दूर के
मुस्तक़बिल के बारे में हैं।’ 28लेकिन उन्हें जवाब
दे, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जो कुछ
भी मैं फ़रमाता हूँ उसमें मज़ीद देर नहीं होगी
बल्कि वह जल्द ही पूरा होगा।’ यह रब क़ादिरे-
मुतलक़ का फ़रमान है।”

झूटे नबी हलाक हो जाएंगे

13 रब मुझसे हमकलाम हुआ,
2“ऐ आदमज़ाद, इसराईल के नाम-
निहाद नबियों के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! जो
नबुव्वत करते वक़्त अपने दिलों से उभरनेवाली
बातें ही पेश करते हैं, उनसे कह,

‘रब का फ़रमान सुनो! 3रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि उन अहमक़ नबियों पर अफ़सोस
जिन्हें अपनी ही रूह से तहरीक मिलती है और
जो हक़ीक़त में रोया नहीं देखते। 4ऐ इसराईल,
तेरे नबी खंडरात में गीदड़ों की तरह आवारा फिर
रहे हैं। 5न कोई दीवार के रख़नों में खड़ा हुआ,
न किसी ने उस की मरम्मत की ताकि इसराईली
क़ौम रब के उस दिन क़ायम रह सके जब जंग
छिड़ जाएगी। 6उनकी रोयाएँ धोका ही धोका,
उनकी पेशगोइयाँ झूट ही झूट हैं। वह कहते हैं,
“रब फ़रमाता है” गो रब ने उन्हें नहीं भेजा।
ताज्जुब की बात है कि तो भी वह तवक़्क़ो करते
हैं कि मैं उनकी पेशगोइयाँ पूरी होने दूँ! 7हक़ीक़त
में तुम्हारी रोयाएँ धोका ही धोका और तुम्हारी
पेशगोइयाँ झूट ही झूट हैं। तो भी तुम कहते
हो, “रब फ़रमाता है” हालाँकि मैंने कुछ नहीं
फ़रमाया।

8चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
तुम्हारी फ़रेबदेह बातों और झूटी रोयाओं की वजह
से तुमसे निपट लूँगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़
का फ़रमान है। 9मैं अपना हाथ उन नबियों के
ख़िलाफ़ बढ़ा दूँगा जो धोके की रोयाएँ देखते और
झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं। न वह मेरी क़ौम की
मजलिस में शरीक होंगे, न इसराईली क़ौम की
फ़हरिस्तों में दर्ज होंगे। मुल्के-इसराईल में वह
कभी दाख़िल नहीं होंगे। तब तुम जान लोगे कि
मैं रब क़ादिरे-मुतलक़ हूँ। 10वह मेरी क़ौम को
ग़लत राह पर लाकर अमनो-अमान का एलान
करते हैं अगरचे अमनो-अमान है नहीं। जब क़ौम
अपने लिए कच्ची-सी दीवार बना लेती है तो यह
नबी उस पर सफेदी फेर देते हैं। 11लेकिन ऐ
सफेदी करनेवालो, ख़बरदार! यह दीवार गिर
जाएगी। मूसलाधार बारिश बरसेगी, ओले पड़ेंगे
और सख़्त आँधी उस पर टूट पड़ेगी। 12तब दीवार
गिर जाएगी, और लोग तंज़न तुमसे पूछेंगे कि अब
वह सफेदी कहाँ है जो तुमने दीवार पर फेरी थी?

13रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तैश
में आकर दीवार पर ज़बरदस्त आँधी आने दूँगा,
ग़ुस्से में उस पर मूसलाधार बारिश और मोहलक
ओले बरसा दूँगा। 14मैं उस दीवार को ढा दूँगा

जिस पर तुमने सफेदी फेरी थी, उसे ख़ाक में यों
मिला दूँगा कि उस की बुनियाद नज़र आएगी।
और जब वह गिर जाएगी तो तुम भी उस की ज़द
में आकर तबाह हो जाओगे। तब तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ। 15यों मैं दीवार और उस की
सफेदी करनेवालों पर अपना ग़ुस्सा उतारूँगा। तब
मैं तुमसे कहूँगा कि दीवार भी ख़त्म है और उस की
सफेदी करनेवाले भी, 16यानी इसराईल के वह
नबी जिन्होंने यरूशलम को ऐसी पेशगोइयाँ और
रोयाएँ सुनाईं जिनके मुताबिक़ अमनो-अमान का
दौर क़रीब ही है, हालाँकि अमनो-अमान का
इमकान ही नहीं। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।'

17ऐ आदमज़ाद, अब अपनी क़ौम की उन
बेटियों का सामना कर जो नबुव्वत करते वक़्त
वही बातें पेश करती हैं जो उनके दिलों से उभर
आती हैं। उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत करके 18कह,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन औरतों
पर अफ़सोस जो तमाम लोगों के लिए कलाई
से बाँधनेवाले तावीज़-सी लेती हैं, जो लोगों को
फँसाने के लिए छोटों और बड़ों के सरों के लिए
परदे बना लेती हैं। ऐ औरतो, क्या तुम वाक़ई
समझती हो कि मेरी क़ौम में से बाज़ को फाँस
सकती और बाज़ को अपने लिए ज़िंदा छोड़
सकती हो? 19मेरी क़ौम के दरमियान ही तुमने
मेरी बेहुरमती की, और यह सिर्फ़ चंद एक मुट्ठी-
भर जौ और रोटी के दो-चार टुकड़ों के लिए।
अफ़सोस, मेरी क़ौम झूट सुनना पसंद करती है।
इससे फ़ायदा उठाकर तुमने उसे झूट पेश करके
उन्हें मार डाला जिन्हें मरना नहीं था और उन्हें ज़िंदा
छोड़ा जिन्हें ज़िंदा नहीं रहना था।

20इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैं तुम्हारे तावीज़ों से निपट लूँगा जिनके ज़रीए
तुम लोगों को परिंदों की तरह पकड़ लेती हो। मैं
जादूगरी की यह चीज़ें तुम्हारे बाज़ुओं से नोचकर
फाड़ डालूँगा और उन्हें रिहा करूँगा जिन्हें तुमने
परिंदों की तरह पकड़ लिया है। 21मैं तुम्हारे परदों
को फाड़कर हटा लूँगा और अपनी क़ौम को तुम्हारे
हाथों से बचा लूँगा। आइंदा वह तुम्हारा शिकार
नहीं रहेगी। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ।

22तुमने अपने झूट से रास्तबाज़ों को दुख
पहुँचाया, हालाँकि यह दुख मेरी तरफ़ से नहीं था।
साथ साथ तुमने बेदीनों की हौसलाअफ़्ज़ाई की
कि वह अपनी बुरी राहों से बाज़ न आएँ, हालाँकि
वह बाज़ आने से बच जाते। 23इसलिए आइंदा न
तुम फ़रेबदेह रोया देखोगी, न दूसरों की क़िस्मत
का हाल बताओगी। मैं अपनी क़ौम को तुम्हारे
हाथों से छुटकारा दूँगा। तब तुम जान लोगी कि मैं
ही रब हूँ'।"

अल्लाह बुतपरस्ती का मुनासिब जवाब देगा

14 इसराईल के कुछ बुज़ुर्ग मुझसे मिलने
आए और मेरे सामने बैठ गए। 2तब
रब मुझसे हमकलाम हुआ, 3"ऐ आदमज़ाद, इन
आदमियों के दिल अपने बुतों से लिपटे रहते हैं।
जो चीज़ें उनके लिए ठोकर और गुनाह का बाइस
हैं उन्हें उन्होंने अपने मुँह के सामने ही रखा है। तो
फिर क्या मुनासिब है कि मैं उन्हें जवाब दूँ जब वह
मुझसे दरियाफ़्त करने आते हैं? 4उन्हें बता, 'रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, यह लोग अपने बुतों
से लिपटे रहते और वह चीज़ें अपने मुँह के सामने
रखते हैं जो ठोकर और गुनाह का बाइस हैं। साथ
साथ यह नबी के पास भी जाते हैं ताकि मुझसे
मालूमात हासिल करें। जो भी इसराईली ऐसा करे
उसे मैं ख़ुद जो रब हूँ जवाब दूँगा, ऐसा जवाब जो
उसके मुतअद्दिद बुतों के ऐन मुताबिक़ होगा। 5मैं
उनसे ऐसा सुलूक करूँगा ताकि इसराईली क़ौम
के दिल को मज़बूती से पकड़ लूँ। क्योंकि अपने
बुतों की ख़ातिर सबके सब मुझसे दूर हो गए हैं।'

6चुनाँचे इसराईली क़ौम को बता, 'रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि तौबा करो! अपने बुतों
और तमाम मकरूह रस्मो-रिवाज से मुँह मोड़कर
मेरे पास वापस आ जाओ। 7उसके अंजाम पर
ध्यान दो जो ऐसा नहीं करेगा, ख़ाह वह इसराईली
या इसराईल में रहनेवाला परदेसी हो। अगर वह
मुझसे दूर होकर अपने बुतों से लिपट जाए और

वह चीज़ें अपने सामने रखे जो ठोकर और गुनाह
का बाइस हैं तो जब वह नबी की मारिफ़त मुझसे
मालूमात हासिल करने की कोशिश करेगा तो
मैं, रब उसे मुनासिब जवाब दूँगा। 8मैं ऐसे शख़्स
का सामना करके उससे यों निपट लूँगा कि वह
दूसरों के लिए इबरतअंगेज़ मिसाल बन जाएगा।
मैं उसे यों मिटा दूँगा कि मेरी क़ौम में उसका नामो-
निशान तक नहीं रहेगा। तब तुम जान लोगे कि मैं
ही रब हूँ।

9अगर किसी नबी को कुछ सुनाने पर उकसाया
गया जो मेरी तरफ़ से नहीं था तो यह इसलिए
हुआ कि मैं, रब ने ख़ुद उसे उकसाया। ऐसे नबी
के ख़िलाफ़ मैं अपना हाथ उठाकर उसे यों तबाह
करूँगा कि मेरी क़ौम में उसका नामो-निशान
तक नहीं रहेगा। 10दोनों को उनके क़ुसूर की
मुनासिब सज़ा मिलेगी, नबी को भी और उसे भी
जो हिदायत पाने के लिए उसके पास आता है।
11तब इसराईली क़ौम न मुझसे दूर होकर आवारा
फिरेगी, न अपने आपको इन तमाम गुनाहों से
आलूदा करेगी। वह मेरी क़ौम होंगे, और मैं उनका
ख़ुदा हूँगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है'।"

सिर्फ़ रास्तबाज़ ही बचे रहेंगे

12रब मुझसे हमकलाम हुआ, 13"ऐ
आदमज़ाद, फ़र्ज़ कर कि कोई मुल्क बेवफ़ा
होकर मेरा गुनाह करे, और मैं काल के ज़रीए उसे
सज़ा देकर उसमें से इनसानो-हैवान मिटा डालूँ।
14ख़ाह मुल्क में नूह, दानियाल और अय्यूब क्यों
न बसते तो भी मुल्क न बचता। यह आदमी
अपनी रास्तबाज़ी से सिर्फ़ अपनी ही जानों को
बचा सकते। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है।

15या फ़र्ज़ कर कि मैं मज़कूरा मुल्क में वहशी
दरिंदों को भेज दूँ जो इधर-उधर फिरकर सबको
फाड़ खाएँ। मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाए और
जंगली दरिंदों की वजह से कोई उसमें से गुज़रने
की जुर्रत न करे। 16मेरी हयात की क़सम, ख़ाह
मज़कूरा तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यों न
बसते तो भी अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-
बेटियों को भी बचा न सकते बल्कि पूरा मुल्क
वीरानो-सुनसान होता। यह रब क़ादिरे-मुतलक़
का फ़रमान है।

17या फ़र्ज़ कर कि मैं मज़कूरा मुल्क को जंग
से तबाह करूँ, मैं तलवार को हुक्म दूँ कि मुल्क
में से गुज़रकर इनसानो-हैवान को नेस्तो-नाबूद
कर दे। 18मेरी हयात की क़सम, ख़ाह मज़कूरा
तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यों न बसते
वह अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-बेटियों को
भी बचा न सकते। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।

19या फ़र्ज़ कर कि मैं अपना ग़ुस्सा मुल्क
पर उतारकर उसमें मोहलक वबा यों फैला दूँ
कि इनसानो-हैवान सबके सब मर जाएँ। 20मेरी
हयात की क़सम, ख़ाह नूह, दानियाल और
अय्यूब मुल्क में क्यों न बसते तो भी वह
अपने बेटे-बेटियों को बचा न सकते। वह अपनी
रास्तबाज़ी से सिर्फ़ अपनी ही जानों को बचाते।
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

21अब यरूशलम के बारे में रब क़ादिरे-मुतलक़
का फ़रमान सुनो! यरूशलम का कितना बुरा
हाल होगा जब मैं अपनी चार सख़्त सज़ाएँ उस
पर नाज़िल करूँगा। क्योंकि इनसानो-हैवान जंग,
काल, वहशी दरिंदों और मोहलक वबा की ज़द
में आकर हलाक हो जाएंगे। 22तो भी चंद एक
बचेंगे, कुछ बेटे-बेटियाँ जिलावतन होकर बाबल
में तुम्हारे पास आएँगे। जब तुम उनका बुरा चाल-
चलन और हरकतें देखोगे तो तुम्हें तसल्ली मिलेगी
कि हर आफ़त मुनासिब थी जो मैं यरूशलम पर
लाया। 23उनका चाल-चलन और हरकतें देखकर
तुम्हें तसल्ली मिलेगी, क्योंकि तुम जान लोगे कि
जो कुछ भी मैंने यरूशलम के साथ किया वह
बिलावजह नहीं था। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।"

यरूशलम अंगूर की बेल की बेकार लकड़ी है

15 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, अंगूर की बेल की लकड़ी
किस लिहाज़ से जंगल की दीगर लकड़ियों से
बेहतर है? 3क्या यह किसी काम आ जाती है?
क्या यह कम अज़ कम खूँटियाँ बनाने के लिए
इस्तेमाल हो सकती है जिनसे चीज़ें लटकाई जा
सकें? हरगिज़ नहीं! 4उसे ईंधन के तौर पर आग
में फेंका जाता है। इसके बाद जब उसके दोनों
सिरे भस्म हुए हैं और बीच में भी आग लग गई
है तो क्या वह किसी काम आ जाती है? 5आग
लगने से पहले भी बेकार थी, तो अब वह किस
काम आएगी जब उसके दोनों सिरे भस्म हुए हैं
बल्कि बीच में भी आग लग गई है?

6रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम
के बाशिंदे अंगूर की बेल की लकड़ी जैसे हैं जिन्हें
मैं जंगल के दरख़्तों के दरमियान से निकालकर
आग में फेंक देता हूँ। 7क्योंकि मैं उनके ख़िलाफ़
उठ खड़ा हूँगा। गो वह आग से बच निकले हैं तो
भी आख़िरकार आग ही उन्हें भस्म करेगी। जब मैं
उनके ख़िलाफ़ उठ खड़ा हूँगा तो तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ। 8पूरे मुल्क को मैं वीरानो-सुनसान
कर दूँगा, इसलिए कि वह बेवफ़ा साबित हुए हैं।
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।”

यरूशलम बेवफ़ा औरत है

16 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, यरूशलम के ज़हन में
उस की मकरूह हरकतों की संजीदगी बिठाकर
3एलान कर कि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है,
‘ऐ यरूशलम बेटी, तेरी नसल मुल्के-कनान की
है, और वहीं तू पैदा हुई। तेरा बाप अमोरी, तेरी
माँ हित्ती थी। 4पैदा होते वक़्त नाफ़ के साथ लगी
नाल को काटकर दूर नहीं किया गया। न तुझे
पानी से नहलाया गया, न तेरे जिस्म पर नमक
मला गया, और न तुझे कपड़ों में लपेटा गया। 5न
किसी को इतना तरस आया, न किसी ने तुझ पर
इतना रहम किया कि इन कामों में से एक भी
करता। इसके बजाए तुझे खुले मैदान में फेंककर
छोड़ दिया गया। क्योंकि जब तू पैदा हुई तो सब
तुझे हक़ीर जानते थे।

6तब मैं वहाँ से गुज़रा। उस वक़्त तू अपने
ख़ून में तड़प रही थी। तुझे इस हालत में देखकर
मैं बोला, “जीती रह!” हाँ, तू अपने ख़ून में
तड़प रही थी जब मैं बोला, “जीती रह! 7खेत
में हरियाली की तरह फलती-फूलती जा!” तब
तू फलती-फूलती हुई परवान चढ़ी। तू निहायत
ख़ूबसूरत बन गई। छातियाँ और बाल देखने में
प्यारे लगे। लेकिन अभी तक तू नंगी और बरहना
थी।

8मैं दुबारा तेरे पास से गुज़रा तो देखा कि तू
शादी के क़ाबिल हो गई है। मैंने अपने लिबास का
दामन तुझ पर बिछाकर तेरी बरहनगी को ढाँप
दिया। मैंने क़सम खाकर तेरे साथ अहद बाँधा
और यों तेरा मालिक बन गया। यह रब क़ादिरे-
मुतलक़ का फ़रमान है।

9मैंने तुझे नहलाकर ख़ून से साफ़ किया,
फिर तेरे जिस्म पर तेल मला। 10मैंने तुझे
शानदार लिबास और चमड़े के नफ़ीस जूते
पहनाए, तुझे बारीक कतान और क़ीमती कपड़े
से मुलब्बस किया। 11फिर मैंने तुझे ख़ूबसूरत
ज़ेवरात, चूड़ियों, हार, 12नथ, बालियों और
शानदार ताज से सजाया। 13यों तू सोने-चाँदी से
आरास्ता और बारीक कतान, रेशम और शानदार
कपड़े से मुलब्बस हुई। तेरी ख़ुराक बेहतरीन मैदे,
शहद और ज़ैतून के तेल पर मुश्तमिल थी। तू
निहायत ही ख़ूबसूरत हुई, और होते होते मलिका
बन गई।’ 14रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘तेरे
हुस्न की शोहरत दीगर अक़्वाम में फैल गई,
क्योंकि मैंने तुझे अपनी शानो-शौकत में यों शरीक
किया था कि तेरा हुस्न कामिल था।

15लेकिन तूने क्या किया? तूने अपने हुस्न पर
भरोसा रखा। अपनी शोहरत से फ़ायदा उठाकर
तू ज़िनाकार बन गई। हर गुज़रनेवाले को तूने
अपने आपको पेश किया, हर एक को तेरा हुस्न
हासिल हुआ। 16तूने अपने कुछ शानदार कपड़े

लेकर अपने लिए रंगदार बिस्तर बनाया और उसे
ऊँची जगहों पर बिछाकर ज़िना करने लगी। ऐसा
न माज़ी में कभी हुआ, न आइंदा कभी होगा।
17तूने वही नफ़ीस ज़ेवरात लिए जो मैंने तुझे
दिए थे और मेरी ही सोने-चाँदी से अपने लिए
मर्दों के बुत ढालकर उनसे ज़िना करने लगी।
18उन्हें अपने शानदार कपड़े पहनाकर तूने मेरा ही
तेल और बख़ूर उन्हें पेश किया।' 19रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है, 'जो ख़ुराक यानी बेहतरीन
मैदा, ज़ैतून का तेल और शहद मैंने तुझे दिया था
उसे तूने उन्हें पेश किया ताकि उस की ख़ुशबू उन्हें
पसंद आए।

20जिन बेटे-बेटियों को तूने मेरे हाँ जन्म दिया
था उन्हें तूने क़ुरबान करके बुतों को खिलाया।
क्या तू अपनी ज़िनाकारी पर इकतिफ़ा न कर
सकी? 21क्या ज़रूरत थी कि मेरे बच्चों को भी
क़त्ल करके बुतों के लिए जला दे? 22ताज्जुब
है कि जब भी तू ऐसी मकरूह हरकतें और ज़िना
करती थी तो तुझे एक बार भी जवानी का ख़याल
न आया, यानी वह वक़्त जब तू नंगी और बरहना
हालत में अपने ख़ून में तड़पती रही।'

23रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, 'अफ़-
सोस, तुझ पर अफ़सोस! अपनी बाक़ी तमाम
शरारतों के अलावा 24तूने हर चौक में बुतों के
लिए क़ुरबानगाह तामीर करके हर एक के साथ
ज़िना करने की जगह भी बनाई। 25हर गली के
कोने में तूने ज़िना करने का कमरा बनाया। अपने
हुस्न की बेहुरमती करके तू अपनी इसमतफ़रोशी
ज़ोरों पर लाई। हर गुज़रनेवाले को तूने अपना
बदन पेश किया। 26पहले तू अपने शहवतपरस्त
पड़ोसी मिसर के साथ ज़िना करने लगी। जब
तूने अपनी इसमतफ़रोशी को ज़ोरों पर लाकर
मुझे मुश्तइल किया 27तो मैंने अपना हाथ तेरे
ख़िलाफ़ बढ़ाकर तेरे इलाक़े को छोटा कर दिया।
मैंने तुझे फ़िलिस्ती बेटियों के लालच के हवाले
कर दिया, उनके हवाले जो तुझसे नफ़रत करती
हैं और जिनको तेरे ज़िनाकाराना चाल-चलन पर
शर्म आती है।

28अब तक तेरी शहवत को तसकीन नहीं
मिली थी, इसलिए तू असूरियों से ज़िना करने
लगी। लेकिन यह भी तेरे लिए काफ़ी न था।
29अपनी ज़िनाकारी में इज़ाफ़ा करके तू सौदागरों
के मुल्क बाबल के पीछे पड़ गई। लेकिन यह
भी तेरी शहवत के लिए काफ़ी नहीं था।' 30रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, 'ऐसी हरकतें करके
तू कितनी सरगरम हुई! साफ़ ज़ाहिर हुआ कि
तू ज़बरदस्त कसबी है। 31जब तूने हर चौक में
बुतों की क़ुरबानगाह बनाई और हर गली के कोने
में ज़िना करने का कमरा तामीर किया तो तू
आम कसबी से मुख़्तलिफ़ थी। क्योंकि तूने अपने
गाहकों से पैसे लेने से इनकार किया। 32हाय, तू
कैसी बदकार बीवी है! अपने शौहर पर तू दीगर
मर्दों को तरजीह देती है। 33हर कसबी को फ़ीस
मिलती है, लेकिन तू तो अपने तमाम आशिक़ों
को तोहफ़े देती है ताकि वह हर जगह से आकर
तेरे साथ ज़िना करें। 34इसमें तू दीगर कसबियों
से फ़रक़ है। क्योंकि न गाहक तेरे पीछे भागते,
न वह तेरी मुहब्बत का मुआवज़ा देते हैं बल्कि
तू ख़ुद उनके पीछे भागती और उन्हें अपने साथ
ज़िना करने का मुआवज़ा देती है।'

35ऐ कसबी, अब रब का फ़रमान सुन ले!
36रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तूने अपने
आशिक़ों को अपनी बरहनगी दिखाकर अपनी
इसमतफ़रोशी की, तूने मकरूह बुत बनाकर
उनकी पूजा की, तूने उन्हें अपने बच्चों का
ख़ून क़ुरबान किया है। 37इसलिए मैं तेरे तमाम
आशिक़ों को इकट्ठा करूँगा, उन सबको जिन्हें तू
पसंद आई, उन्हें भी जो तुझे प्यारे थे और उन्हें
भी जिनसे तूने नफ़रत की। मैं उन्हें चारों तरफ़
से जमा करके तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा। तब मैं उनके
सामने ही तेरे तमाम कपड़े उतारूँगा ताकि वह तेरी
पूरी बरहनगी देखें। 38मैं तेरी अदालत करके तेरी
ज़िनाकारी और क़ातिलाना हरकतों का फ़ैसला
करूँगा। मेरा ग़ुस्सा और मेरी ग़ैरत तुझे ख़ूनरेज़ी
की सज़ा देगी।

39मैं तुझे तेरे आशिक़ों के हवाले करूँगा, और वह तेरे बुतों की क़ुरबानगाहें उन कमरों समेत ढा देंगे जहाँ तू ज़िनाकारी करती रही है। वह तेरे कपड़े और शानदार ज़ेवरात उतारकर तुझे उरियाँ और बरहना छोड़ देंगे।
40वह तेरे ख़िलाफ़ जुलूस निकालेंगे और तुझे संगसार करके तलवार से टुकड़े टुकड़े कर देंगे।
41तेरे घरों को जलाकर वह मुतअद्दिद औरतों के देखते देखते तुझे सज़ा देंगे। यों मैं तेरी ज़िनाकारी को रोक दूँगा, और आइंदा तू अपने आशिक़ों को ज़िना करने के पैसे नहीं दे सकेगी।

42तब मेरा ग़ुस्सा ठंडा हो जाएगा, और तू मेरी ग़ैरत का निशाना नहीं रहेगी। मेरी नाराज़ी ख़त्म हो जाएगी, और मुझे दुबारा तसकीन मिलेगी।’
43रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मैं तेरे सर पर तेरी हरकतों का पूरा नतीजा लाऊँगा, क्योंकि तुझे जवानी में मेरी मदद की याद न रही बल्कि तू मुझे इन तमाम बातों से तैश दिलाती रही। बाक़ी तमाम घिनौनी हरकतें तेरे लिए काफ़ी नहीं थीं बल्कि तू ज़िना भी करने लगी।

44तब लोग यह कहावत कहकर तेरा मज़ाक़ उड़ाएँगे, “जैसी माँ, वैसी बेटी!”
45तू वाक़ई अपनी माँ की मानिंद है, जो अपने शौहर और बच्चों से सख़्त नफ़रत करती थी। तू अपनी बहनों की मानिंद भी है, क्योंकि वह भी अपने शौहरों और बच्चों से सख़्त नफ़रत करती थीं। तेरी माँ हित्ती और तेरा बाप अमोरी था।
46तेरी बड़ी बहन सामरिया थी जो अपनी बेटियों के साथ तेरे शिमाल में आबाद थी। और तेरी छोटी बहन सदूम थी जो अपनी बेटियों के साथ तेरे जुनूब में रहती थी।
47तू न सिर्फ़ उनके ग़लत नमूने पर चल पड़ी और उनकी-सी मकरूह हरकतें करने लगी बल्कि उनसे कहीं ज़्यादा बुरा काम करने लगी।’
48रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मेरी हयात की क़सम, तेरी बहन सदूम और उस की बेटियों से कभी इतना ग़लत काम सरज़द न हुआ जितना कि तुझसे और तेरी बेटियों से हुआ है।
49तेरी बहन सदूम का क्या क़ुसूर था? वह अपनी बेटियों समेत मुतकब्बिर थी। गो उन्हें ख़ुराक की कसरत और आरामो-सुकून हासिल था तो भी वह मुसीबतज़दों और ग़रीबों का सहारा नहीं बनती थीं।
50वह मग़रूर थीं और मेरी मौजूदगी में ही घिनौना काम करती थीं। इसी वजह से मैंने उन्हें हटा दिया। तू ख़ुद इसकी गवाह है।
51सामरिया पर भी ग़ौर कर। जितने गुनाह तुझसे सरज़द हुए उनका आधा हिस्सा भी उससे न हुआ। अपनी बहनों की निसबत तूने कहीं ज़्यादा घिनौनी हरकतें की हैं। तेरे मुक़ाबले में तेरी बहनें फ़रिश्ते हैं।
52चुनाँचे अब अपनी ख़जालत को बरदाश्त कर। क्योंकि अपने गुनाहों से तू अपनी बहनों की जगह खड़ी हो गई है। तूने उनसे कहीं ज़्यादा क़ाबिले-घिन काम किए हैं, और अब वह तेरे मुक़ाबले में मासूम बच्चे लगती हैं। शर्म खा खाकर अपनी रुसवाई को बरदाश्त कर, क्योंकि तुझसे ऐसे संगीन गुनाह सरज़द हुए हैं कि तेरी बहनें रास्तबाज़ ही लगती हैं।

तो भी रब वफ़ादार रहेगा

53लेकिन एक दिन आएगा जब मैं सदूम, सामरिया, तुझे और तुम सबकी बेटियों को बहाल करूँगा।
54तब तू अपनी रुसवाई बरदाश्त कर सकेगी और अपने सारे ग़लत काम पर शर्म खाएगी। सदूम और सामरिया यह देखकर तसल्ली पाएँगी।
55हाँ, तेरी बहनें सदूम और सामरिया अपनी बेटियों समेत दुबारा क़ायम हो जाएँगी। तू भी अपनी बेटियों समेत दुबारा क़ायम हो जाएगी।

56पहले तू इतनी मग़रूर थी कि अपनी बहन सदूम का ज़िक्र तक नहीं करती थी।
57लेकिन फिर तेरी अपनी बुराई पर रौशनी डाली गई, और अब तेरी तमाम पड़ोसनें तेरा ही मज़ाक़ उड़ाती हैं, ख़ाह अदोमी हों, ख़ाह फ़िलिस्ती। सब तुझे हक़ीर जानती हैं।
58चुनाँचे अब तुझे अपनी ज़िनाकारी और मकरूह हरकतों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। यह रब का फ़रमान है।’

59रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मैं तुझे
मुनासिब सज़ा दूँगा, क्योंकि तूने मेरा वह अहद
तोड़कर उस क़सम को हक़ीर जाना है जो मैंने
तेरे साथ अहद बाँधते वक़्त खाई थी। 60तो भी
मैं वह अहद याद करूँगा जो मैंने तेरी जवानी में
तेरे साथ बाँधा था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं तेरे साथ
अबदी अहद क़ायम करूँगा। 61तब तुझे वह ग़लत
काम याद आएगा जो पहले तुझसे सरज़द हुआ
था, और तुझे शर्म आएगी जब मैं तेरी बड़ी और
छोटी बहनों को लेकर तेरे हवाले करूँगा ताकि वह
तेरी बेटियाँ बन जाएँ। लेकिन यह सब कुछ इस
वजह से नहीं होगा कि तू अहद के मुताबिक़ चलती
रही है। 62मैं ख़ुद तेरे साथ अपना अहद क़ायम
करूँगा, और तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ।’ 63रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘जब मैं तेरे तमाम
गुनाहों को मुआफ़ करूँगा तब तुझे उनका ख़याल
आकर शरमिंदगी महसूस होगी, और तू शर्म के
मारे गुमसुम रहेगी’।”

अंगूर की बेल और उक़ाब की तमसील

17 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, इसराईली क़ौम को
पहेली पेश कर, तमसील सुना दे। 3उन्हें बता, ‘रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि एक बड़ा उक़ाब
उड़कर मुल्के-लुबनान में आया। उसके बड़े बड़े
पर और लंबे लंबे पंख थे, उसके घने और रंगीन
बालो-पर चमक रहे थे। लुबनान में उसने एक
देवदार के दरख़्त की चोटी पकड़ ली 4और उस की
सबसे ऊँची शाख़ को तोड़कर ताजिरों के मुल्क में
ले गया। वहाँ उसने उसे सौदागरों के शहर में लगा
दिया। 5फिर उक़ाब इसराईल में आया और वहाँ
से कुछ बीज लेकर एक बड़े दरिया के किनारे पर
ज़रख़ेज़ ज़मीन में बो दिया। 6तब अंगूर की बेल
फूट निकली जो ज़्यादा ऊँची न हुई बल्कि चारों
तरफ़ फैलती गई। शाख़ों का रुख़ उक़ाब की तरफ़
रहा जबकि उस की जड़ें ज़मीन में धँसती गईं।
चुनाँचे अच्छी बेल बन गई जो फूटती फूटती नई
शाख़ें निकालती गई।

7लेकिन फिर एक और बड़ा उक़ाब आया।
उसके भी बड़े बड़े पर और घने घने बालो-पर थे।
अब मैं क्या देखता हूँ, बेल दूसरे उक़ाब की तरफ़
रुख़ करने लगती है। उस की जड़ें और शाख़ें उस
खेत में न रहीं जिसमें उसे लगाया गया था बल्कि
वह दूसरे उक़ाब से पानी मिलने की उम्मीद रखकर
उसी की तरफ़ फैलने लगी। 8ताज्जुब यह था
कि उसे अच्छी ज़मीन में लगाया गया था, जहाँ
उसे कसरत का पानी हासिल था। वहाँ वह ख़ूब
फैलकर फल ला सकती थी, वहाँ वह ज़बरदस्त
बेल बन सकती थी।’

9अब रब क़ादिरे-मुतलक़ पूछता है, ‘क्या बेल
की नशो-नुमा जारी रहेगी? हरगिज़ नहीं! क्या
उसे जड़ से उखाड़कर फेंका नहीं जाएगा? ज़रूर!
क्या उसका फल छीन नहीं लिया जाएगा? बेशक
बल्कि आख़िरकार उस की ताज़ा ताज़ा कोंपलें
भी सबकी सब मुरझाकर ख़त्म हो जाएँगी। तब
उसे जड़ से उखाड़ने के लिए न ज़्यादा लोगों, न
ताक़त की ज़रूरत होगी। 10गो उसे लगाया गया है
तो भी बेल की नशो-नुमा जारी नहीं रहेगी। ज्योंही
मशरिक़ी लू उस पर चलेगी वह मुकम्मल तौर पर
मुरझा जाएगी। जिस खेत में उसे लगाया गया वहीं
वह ख़त्म हो जाएगी’।”

11रब मुझसे मज़ीद हमकलाम हुआ, 12“इस
सरकश क़ौम से पूछ, ‘क्या तुझे इस तमसील
की समझ नहीं आई?’ तब उन्हें इसका मतलब
समझा दे। ‘बाबल के बादशाह ने यरूशलम पर
हमला किया। वह उसके बादशाह और अफ़सरों
को गिरिफ़्तार करके अपने मुल्क में ले गया।
13उसने यहूदाह के शाही ख़ानदान में से एक को
चुन लिया और उसके साथ अहद बाँधकर उसे
तख़्त पर बिठा दिया। नए बादशाह ने बाबल से
वफ़ादार रहने की क़सम खाई। बाबल के बादशाह
ने यहूदाह के राहनुमाओं को भी जिलावतन कर
दिया 14ताकि मुल्के-यहूदाह और उसका नया
बादशाह कमज़ोर रहकर सरकश होने के क़ाबिल
न बनें बल्कि उसके साथ अहद क़ायम रखकर
ख़ुद क़ायम रहें। 15तो भी यहूदाह का बादशाह

बाग़ी हो गया और अपने क़ासिद मिसर भेजे
ताकि वहाँ से घोड़े और फ़ौजी मँगवाएँ। क्या
उसे कामयाबी हासिल होगी? क्या जिसने ऐसी
हरकतें की हैं बच निकलेगा? हरगिज़ नहीं! क्या
जिसने अहद तोड़ लिया है वह बचेगा? हरगिज़
नहीं!

16रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी
हयात की क़सम, उस शख़्स ने क़सम के तहत
शाहे-बाबल से अहद बाँधा है, लेकिन अब उसने
यह क़सम हक़ीर जानकर अहद को तोड़ डाला
है। इसलिए वह बाबल में वफ़ात पाएगा, उस
बादशाह के मुल्क में जिसने उसे तख़्त पर बिठाया
था। 17जब बाबल की फ़ौज यरूशलम के इर्दगिर्द
पुश्ते और बुर्ज बनाकर उसका मुहासरा करेगी
ताकि बहुतों को मार डाले तो फ़िरौन अपनी बड़ी
फ़ौज और मुतअद्दिद फ़ौजियों को लेकर उस की
मदद करने नहीं आएगा। 18क्योंकि यहूदाह के
बादशाह ने अहद को तोड़कर वह क़सम हक़ीर
जानी है जिसके तहत यह बाँधा गया। गो उसने
शाहे-बाबल से हाथ मिलाकर अहद की तसदीक़
की थी तो भी बेवफ़ा हो गया, इसलिए वह नहीं
बचेगा। 19रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी
हयात की क़सम, उसने मेरे ही अहद को तोड़
डाला, मेरी ही क़सम को हक़ीर जाना है। इसलिए
मैं अहद तोड़ने के तमाम नतायज उसके सर पर
लाऊँगा। 20मैं उस पर अपना जाल डाल दूँगा, उसे
अपने फंदे में पकड़ लूँगा। चूँकि वह मुझसे बेवफ़ा
हो गया है इसलिए मैं उसे बाबल ले जाकर उस की
अदालत करूँगा। 21उसके बेहतरीन फ़ौजी सब
मर जाएंगे, और जितने बच जाएंगे वह चारों तरफ़
मुंतशिर हो जाएंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं, रब
ने यह सब कुछ फ़रमाया है।

22रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि अब मैं
ख़ुद देवदार के दरख़्त की चोटी से नरमो-नाज़ुक
कोंपल तोड़कर उसे एक बुलंदो-बाला पहाड़ पर
लगा दूँगा। 23और जब मैं उसे इसराईल की
बुलंदियों पर लगा दूँगा तो उस की शाख़ें फूट
निकलेंगी, और वह फल लाकर शानदार दरख़्त
बनेगा। हर क़िस्म के परिंदे उसमें बसेरा करेंगे,
सब उस की शाख़ों के साये में पनाह लेंगे। 24तब
मुल्क के तमाम दरख़्त जान लेंगे कि मैं रब हूँ। मैं
ही ऊँचे दरख़्त को ख़ाक में मिला देता, और मैं ही
छोटे दरख़्त को बड़ा बना देता हूँ। मैं ही सायादार
दरख़्त को सूखने देता और मैं ही सूखे दरख़्त को
फलने-फूलने देता हूँ। यह मेरा, रब का फ़रमान
है, और मैं यह करूँगा भी'।"

हर एक को सिर्फ़ अपने ही आमाल की सज़ा मिलेगी

18 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"तुम
लोग मुल्के-इसराईल के लिए यह
कहावत क्यों इस्तेमाल करते हो, 'वालिदैन ने खट्टे
अंगूर खाए, लेकिन उनके बच्चों ही के दाँत खट्टे
हो गए हैं।' 3रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मेरी हयात की क़सम, आइंदा तुम यह कहावत
इसराईल में इस्तेमाल नहीं करोगे! 4हर इनसान
की जान मेरी ही है, ख़ाह बाप की हो या बेटे की।
जिसने गुनाह किया है सिर्फ़ उसी को सज़ाए-मौत
मिलेगी।

5लेकिन उस रास्तबाज़ का मामला फ़रक़ है
जो रास्ती और इनसाफ़ की राह पर चलते हुए
6न ऊँची जगहों की नाजायज़ क़ुरबानियाँ खाता,
न इसराईली क़ौम के बुतों की पूजा करता है। न
वह अपने पड़ोसी की बीवी की बेहुरमती करता,
न माहवारी के दौरान किसी औरत से हमबिसतर
होता है। 7वह किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। अगर
कोई ज़मानत देकर उससे क़र्ज़ा ले तो पैसे वापस
मिलने पर वह ज़मानत वापस कर देता है। वह
चोरी नहीं करता बल्कि भूकों को खाना खिलाता
और नंगों को कपड़े पहनाता है। 8वह किसी से
भी सूद नहीं लेता। वह ग़लत काम करने से गुरेज़
करता और झगड़नेवालों का मुंसिफ़ाना फ़ैसला
करता है। 9वह मेरे क़वायद के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारता और वफ़ादारी से मेरे अहकाम पर अमल
करता है। ऐसा शख़्स रास्तबाज़ है, और वह

यक़ीनन ज़िंदा रहेगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।

10अब फ़र्ज़ करो कि उसका एक ज़ालिम बेटा
है जो क़ातिल है और वह कुछ करता है 11जिससे
उसका बाप गुरेज़ करता था। वह ऊँची जगहों
की नाजायज़ क़ुरबानियाँ खाता, अपने पड़ोसी
की बीवी की बेहुरमती करता, 12ग़रीबों और
ज़रूरतमंदों पर ज़ुल्म करता और चोरी करता है।
जब क़र्ज़दार क़र्ज़ा अदा करे तो वह उसे ज़मानत
वापस नहीं देता। वह बुतों की पूजा बल्कि कई
क़िस्म की मकरूह हरकतें करता है। 13वह सूद भी
लेता है। क्या ऐसा आदमी ज़िंदा रहेगा? हरगिज़
नहीं! इन तमाम मकरूह हरकतों की बिना पर उसे
सज़ाए-मौत दी जाएगी। वह ख़ुद अपने गुनाहों का
ज़िम्मेदार ठहरेगा।

14लेकिन फ़र्ज़ करो कि इस बेटे के हाँ बेटा पैदा
हो जाए। गो बेटा सब कुछ देखता है जो उसके
बाप से सरज़द होता है तो भी वह बाप के ग़लत
नमूने पर नहीं चलता। 15न वह ऊँची जगहों की
नाजायज़ क़ुरबानियाँ खाता, न इसराईली क़ौम
के बुतों की पूजा करता है। वह अपने पड़ोसी
की बीवी की बेहुरमती नहीं करता 16और किसी
पर भी ज़ुल्म नहीं करता। अगर कोई ज़मानत
देकर उससे क़र्ज़ा ले तो पैसे वापस मिलने पर
वह ज़मानत लौटा देता है। वह चोरी नहीं करता
बल्कि भूकों को खाना खिलाता और नंगों को
कपड़े पहनाता है। 17वह ग़लत काम करने से
गुरेज़ करके सूद नहीं लेता। वह मेरे क़वायद के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता और मेरे अहकाम पर
अमल करता है। ऐसे शख़्स को अपने बाप की
सज़ा नहीं भुगतनी पड़ेगी। उसे सज़ाए-मौत नहीं
मिलेगी, हालाँकि उसके बाप ने मज़कूरा गुनाह
किए हैं। नहीं, वह यक़ीनन ज़िंदा रहेगा। 18लेकिन
उसके बाप को ज़रूर उसके गुनाहों की सज़ा
मिलेगी, वह यक़ीनन मरेगा। क्योंकि उसने लोगों
पर ज़ुल्म किया, अपने भाई से चोरी की और
अपनी ही क़ौम के दरमियान बुरा काम किया।

19लेकिन तुम लोग एतराज़ करते हो, 'बेटा
बाप के क़ुसूर में क्यों न शरीक हो? उसे भी बाप
की सज़ा भुगतनी चाहिए।' जवाब यह है कि बेटा
तो रास्तबाज़ और इनसाफ़ की राह पर चलता रहा
है, वह एहतियात से मेरे तमाम अहकाम पर अमल
करता रहा है। इसलिए लाज़िम है कि वह ज़िंदा
रहे। 20जिससे गुनाह सरज़द हुआ है सिर्फ़ उसे
ही मरना है। लिहाज़ा न बेटे को बाप की सज़ा
भुगतनी पड़ेगी, न बाप को बेटे की। रास्तबाज़
अपनी रास्तबाज़ी का अज्र पाएगा, और बेदीन
अपनी बेदीनी का।

21तो भी अगर बेदीन आदमी अपने गुनाहों को
तर्क करे और मेरे तमाम क़वायद के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारकर रास्तबाज़ी और इनसाफ़ की
राह पर चल पड़े तो वह यक़ीनन ज़िंदा रहेगा,
वह मरेगा नहीं। 22जितने भी ग़लत काम उससे
सरज़द हुए हैं उनका हिसाब मैं नहीं लूँगा बल्कि
उसके रास्तबाज़ चाल-चलन का लिहाज़ करके
उसे ज़िंदा रहने दूँगा। 23रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि क्या मैं बेदीन की हलाकत देखकर
ख़ुश होता हूँ? हरगिज़ नहीं, बल्कि मैं चाहता हूँ
कि वह अपनी बुरी राहों को छोड़कर ज़िंदा रहे।

24इसके बरअक्स क्या रास्तबाज़ ज़िंदा रहेगा
अगर वह अपनी रास्तबाज़ ज़िंदगी तर्क करे और
गुनाह करके वही क़ाबिले-घिन हरकतें करने लगे
जो बेदीन करते हैं? हरगिज़ नहीं! जितना भी
अच्छा काम उसने किया उसका मैं ख़याल नहीं
करूँगा बल्कि उस की बेवफ़ाई और गुनाहों का।
उन्हीं की वजह से उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।

25लेकिन तुम लोग दावा करते हो कि जो कुछ
रब करता है वह ठीक नहीं। ऐ इसराईली क़ौम,
सुनो! यह कैसी बात है कि मेरा अमल ठीक
नहीं? अपने ही आमाल पर ग़ौर करो! वही
दुरुस्त नहीं। 26अगर रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़
ज़िंदगी तर्क करके गुनाह करे तो वह इस बिना
पर मर जाएगा। अपनी नारास्ती की वजह से
ही वह मर जाएगा। 27इसके बरअक्स अगर
बेदीन अपनी बेदीन ज़िंदगी तर्क करके रास्ती और

इनसाफ़ की राह पर चलने लगे तो वह अपनी जान को छुड़ाएगा। 28क्योंकि अगर वह अपना क़ुसूर तसलीम करके अपने गुनाहों से मुँह मोड़ ले तो वह मरेगा नहीं बल्कि ज़िंदा रहेगा। 29लेकिन इसराईली क़ौम दावा करती है कि जो कुछ रब करता है वह ठीक नहीं। ऐ इसराईली क़ौम, यह कैसी बात है कि मेरा अमल ठीक नहीं? अपने ही आमाल पर ग़ौर करो! वही दुरुस्त नहीं।

30इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ इसराईल की क़ौम, मैं तेरी अदालत करूँगा, हर एक का उसके कामों के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करूँगा। चुनाँचे ख़बरदार! तौबा करके अपनी बेवफ़ा हरकतों से मुँह फेरो, वरना तुम गुनाह में फँसकर गिर जाओगे। 31अपने तमाम ग़लत काम तर्क करके नया दिल और नई रूह अपना लो। ऐ इसराईलियो, तुम क्यों मर जाओ? 32क्योंकि मैं किसी की मौत से ख़ुश नहीं होता। चुनाँचे तौबा करो, तब ही तुम ज़िंदा रहोगे। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

इसराईली बुज़ुर्गों पर मातमी गीत

19 ऐ नबी, इसराईल के रईसों पर मातमी गीत गा,

2‘तेरी माँ कितनी ज़बरदस्त शेरनी थी। जवान शेरबबरों के दरमियान ही अपना घर बनाकर उसने अपने बच्चों को पाल लिया।

3एक बच्चे को उसने ख़ास तरबियत दी। जब बड़ा हुआ तो जानवरों को फाड़ना सीख लिया, बल्कि इनसान भी उस की ख़ुराक बन गए।

4इसकी ख़बर दीगर अक़वाम तक पहुँची तो उन्होंने उसे अपने गढ़े में पकड़ लिया। वह उस की नाक में काँटे डालकर उसे मिसर में घसीट ले गए।

5जब शेरनी के इस बच्चे पर से उम्मीद जाती रही तो उसने दीगर बच्चों में से एक को चुनकर उसे ख़ास तरबियत दी।

6यह भी ताक़तवर होकर दीगर शेरों में घूमने फिरने लगा। उसने जानवरों को फाड़ना सीख लिया, बल्कि इनसान भी उस की ख़ुराक बन गए।

7उनके क़िलों को गिराकर उसने उनके शहरों को ख़ाक में मिला दिया। उस की दहाड़ती आवाज़ से मुल्क बाशिंदों समेत ख़ौफ़ज़दा हो गया।

8तब इर्दगिर्द के सूबों में बसनेवाली अक़वाम उससे लड़ने आईं। उन्होंने अपना जाल उस पर डाल दिया, उसे अपने गढ़े में पकड़ लिया।

9वह उस की गरदन में पट्टा और नाक में काँटे डालकर उसे शाहे-बाबल के पास घसीट ले गए। वहाँ उसे क़ैद में डाला गया ताकि आइंदा इसराईल के पहाड़ों पर उस की गरजती आवाज़ सुनाई न दे।

10तेरी माँ पानी के किनारे लगाई गई अंगूर की-सी बेल थी। बेल कसरत के पानी के बाइस फलदार और शाख़दार थी।

11उस की शाख़ें इतनी मज़बूत थीं कि उनसे शाही असा बन सकते थे। वह बाक़ी पौदों से कहीं ज़्यादा ऊँची थी बल्कि उस की शाख़ें दूर दूर तक नज़र आती थीं।

12लेकिन आख़िरकार लोगों ने तैश में आकर उसे उखाड़कर फेंक दिया। मशरिक़ी लू ने उसका फल मुरझाने दिया। सब कुछ उतारा गया, लिहाज़ा वह सूख गया और उसका मज़बूत तना नज़रे-आतिश हुआ।

13अब बेल को रेगिस्तान में लगाया गया है, वहाँ जहाँ ख़ुश्क और प्यासी ज़मीन होती है।

14उसके तने की एक टहनी से आग ने निकलकर उसका फल भस्म कर दिया। अब कोई मज़बूत शाख़ नहीं रही जिससे शाही असा बन सके’।”

दर्जे-बाला गीत मातमी है और आहो-ज़ारी करने के लिए इस्तेमाल हुआ है।

इसराईल की मुसलसल बेवफ़ाई

20 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की
जिलावतनी के सातवें साल में
इसराईली क़ौम के कुछ बुज़ुर्ग मेरे पास आए
ताकि रब से कुछ दरियाफ़्त करें। पाँचवें महीने का
दसवाँ दिन[a] था। वह मेरे सामने बैठ गए। 2तब
रब मुझसे हमकलाम हुआ, 3“ऐ आदमज़ाद,
इसराईल के बुज़ुर्गों को बता,

‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या तुम
मुझसे दरियाफ़्त करने आए हो? मेरी हयात की
क़सम, मैं तुम्हें कोई जवाब नहीं दूँगा! यह रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।’

4ऐ आदमज़ाद, क्या तू उनकी अदालत करने
के लिए तैयार है? फिर उनकी अदालत कर!
उन्हें उनके बापदादा की क़ाबिले-घिन हरकतों
का एहसास दिला। 5उन्हें बता, ‘रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि इसराईली क़ौम को चुनते
वक़्त मैंने अपना हाथ उठाकर उससे क़सम खाई।
मुल्के-मिसर में ही मैंने अपने आपको उन पर
ज़ाहिर किया और क़सम खाकर कहा कि मैं रब
तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 6यह मेरा अटल वादा है कि मैं
तुम्हें मिसर से निकालकर एक मुल्क में पहुँचा
दूँगा जिसका जायज़ा मैं तुम्हारी ख़ातिर ले चुका
हूँ। यह मुल्क दीगर तमाम ममालिक से कहीं
ज़्यादा ख़ूबसूरत है, और इसमें दूध और शहद की
कसरत है। 7उस वक़्त मैंने इसराईलियों से कहा,
“हर एक अपने घिनौने बुतों को फेंक दे! मिसर
के देवताओं से लिपटे न रहो, क्योंकि उनसे तुम
अपने आपको नापाक कर रहे हो। मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ।”

8लेकिन वह मुझसे बाग़ी हुए और मेरी सुनने
के लिए तैयार न थे। किसी ने भी अपने बुतों को
न फेंका बल्कि वह इन घिनौनी चीज़ों से लिपटे
रहे और मिसरी देवताओं को तर्क न किया। यह
देखकर मैं वहीं मिसर में अपना ग़ज़ब उन पर
नाज़िल करना चाहता था। उसी वक़्त मैं अपना
ग़ुस्सा उन पर उतारना चाहता था। 9लेकिन मैं
बाज़ रहा, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि जिन
अक़वाम के दरमियान इसराईली रहते थे उनके
सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए। क्योंकि
उन क़ौमों की मौजूदगी में ही मैंने अपने आपको
इसराईलियों पर ज़ाहिर करके वादा किया था कि
मैं तुम्हें मिसर से निकाल लाऊँगा।

10चुनाँचे मैं उन्हें मिसर से निकालकर रेगिस्तान
में लाया। 11वहाँ मैंने उन्हें अपनी हिदायात दीं, वह
अहकाम जिनकी पैरवी करने से इनसान जीता
रहता है। 12मैंने उन्हें सबत का दिन भी अता
किया। मैं चाहता था कि आराम का यह दिन मेरे
उनके साथ अहद का निशान हो, कि इससे लोग
जान लें कि मैं रब ही उन्हें मुक़द्दस बनाता हूँ।

13लेकिन रेगिस्तान में भी इसराईली मुझसे
बाग़ी हुए। उन्होंने मेरी हिदायात के मुताबिक़
ज़िंदगी न गुज़ारी बल्कि मेरे अहकाम को मुस्तरद
कर दिया, हालाँकि इनसान उनकी पैरवी करने
से ही जीता रहता है। उन्होंने सबत की भी बड़ी
बेहुरमती की। यह देखकर मैं अपना ग़ज़ब उन
पर नाज़िल करके उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक
करना चाहता था। 14ताहम मैं बाज़ रहा, क्योंकि
मैं नहीं चाहता था कि उन अक़वाम के सामने मेरे
नाम की बेहुरमती हो जाए जिनके देखते देखते
मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया था।
15चुनाँचे मैंने यह करने के बजाए अपना हाथ
उठाकर क़सम खाई, “मैं तुम्हें उस मुल्क में नहीं
ले जाऊँगा जो मैंने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया
था, हालाँकि उसमें दूध और शहद की कसरत
है और वह दीगर तमाम ममालिक की निसबत
कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत है। 16क्योंकि तुमने मेरी
हिदायात को रद्द करके मेरे अहकाम के मुताबिक़
ज़िंदगी न गुज़ारी बल्कि सबत के दिन की भी
बेहुरमती की। अभी तक तुम्हारे दिल बुतों से
लिपटे रहते हैं।”

[a] 14 अगस्त।

17लेकिन एक बार फिर मैंने उन पर तरस खाया। न मैंने उन्हें तबाह किया, न पूरी क़ौम को रेगिस्तान में मिटा दिया। 18रेगिस्तान में ही मैंने उनके बेटों को आगाह किया, "अपने बापदादा के क़वायद के मुताबिक़ ज़िंदगी मत गुज़ारना। न उनके अहकाम पर अमल करो, न उनके बुतों की पूजा से अपने आपको नापाक करो। 19मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो और एहतियात से मेरे अहकाम पर अमल करो। 20मेरे सबत के दिन आराम करके उन्हें मुक़द्दस मानो ताकि वह मेरे साथ बँधे हुए अहद का निशान रहें। तब तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"

21लेकिन यह बच्चे भी मुझसे बाग़ी हुए। न उन्होंने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी, न एहतियात से मेरे अहकाम पर अमल किया, हालाँकि इनसान उनकी पैरवी करने से ही जीता रहता है। उन्होंने मेरे सबत के दिनों की भी बेहुरमती की। यह देखकर मैं अपना ग़ुस्सा उन पर नाज़िल करके उन्हें वहीं रेगिस्तान में तबाह करना चाहता था। 22लेकिन एक बार फिर मैं अपने हाथ को रोककर बाज़ रहा, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उन अक़वाम के सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए जिनके देखते देखते मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया था। 23चुनाँचे मैंने यह करने के बजाए अपना हाथ उठाकर क़सम खाई, "मैं तुम्हें दीगर अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर करूँगा, 24क्योंकि तुमने मेरे अहकाम की पैरवी नहीं की बल्कि मेरी हिदायात को रद्द कर दिया। गो मैंने सबत का दिन मानने का हुक्म दिया था तो भी तुमने आराम के इस दिन की बेहुरमती की। और यह भी काफ़ी नहीं था बल्कि तुम अपने बापदादा के बुतों के भी पीछे लगे रहे।"

25तब मैंने उन्हें ऐसे अहकाम दिए जो अच्छे नहीं थे, ऐसी हिदायात जो इनसान को जीने नहीं देतीं। 26नीज़, मैंने होने दिया कि वह अपने पहलौठों को क़ुरबान करके अपने आपको नापाक करें। मक़सद यह था कि उनके रोंगटे खड़े हो जाएँ और वह जान लें कि मैं ही रब हूँ।'

27चुनाँचे ऐ आदमज़ाद, इसराईली क़ौम को बता, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम्हारे बापदादा ने इसमें भी मेरी तकफ़ीर की कि वह मुझसे बेवफ़ा हुए। 28मैंने तो उनसे मुल्के-इसराईल देने की क़सम खाकर वादा किया था। लेकिन ज्योंही मैं उन्हें उसमें लाया तो जहाँ भी कोई ऊँची जगह या सायादार दरख़्त नज़र आया वहाँ वह अपने जानवरों को ज़बह करने, तैश दिलानेवाली क़ुरबानियाँ चढ़ाने, ख़ुशबूदार बख़ूर जलाने और मै की नज़रें पेश करने लगे। 29मैंने उनका सामना करके कहा, "यह किस तरह की ऊँची जगहें हैं जहाँ तुम जाते हो?" आज तक यह क़ुरबानगाहें ऊँची जगहें कहलाती हैं।'

30ऐ आदमज़ाद, इसराईली क़ौम को बता, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या तुम अपने बापदादा की हरकतें अपनाकर अपने आपको नापाक करना चाहते हो? क्या तुम भी उनके घिनौने बुतों के पीछे लगकर ज़िना करना चाहते हो? 31क्योंकि अपने नज़राने पेश करने और अपने बच्चों को क़ुरबान करने से तुम अपने आपको अपने बुतों से आलूदा करते हो। ऐ इसराईली क़ौम, आज तक यही तुम्हारा रवैया है! तो फिर मैं क्या करूँ? क्या मुझे तुम्हें जवाब देना चाहिए जब तुम मुझसे कुछ दरियाफ़्त करने के लिए आते हो? हरगिज़ नहीं! मेरी हयात की क़सम, मैं तुम्हें जवाब में कुछ नहीं बताऊँगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

अल्लाह अपनी क़ौम को वापस लाएगा

32तुम कहते हो, "हम दीगर क़ौमों की मानिंद होना चाहते, दुनिया के दूसरे ममालिक की तरह लकड़ी और पत्थर की चीज़ों की इबादत करना चाहते हैं।" गो यह ख़याल तुम्हारे ज़हनों में उभर आया है, लेकिन ऐसा कभी नहीं होगा। 33रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं बड़े ग़ुस्से और ज़ोरदार तरीक़े से अपनी

क़ुदरत का इज़हार करके तुम पर हुकूमत करूँगा।
34मैं बड़े ग़ुस्से और ज़ोरदार तरीक़े से अपनी
क़ुदरत का इज़हार करके तुम्हें उन क़ौमों और
ममालिक से निकालकर जमा करूँगा जहाँ तुम
मुंतशिर हो गए हो। 35तब मैं तुम्हें अक़्वाम के
रेगिस्तान में लाकर तुम्हारे रूबरू तुम्हारी अदालत
करूँगा। 36जिस तरह मैंने तुम्हारे बापदादा की
अदालत मिसर के रेगिस्तान में की उसी तरह
तुम्हारी भी अदालत करूँगा। यह रब क़ादिरे-
मुतलक़ का फ़रमान है। 37जिस तरह गल्लाबान
भेड़-बकरियों को अपनी लाठी के नीचे से गुज़रने
देता है ताकि उन्हें गिन ले उसी तरह मैं तुम्हें अपनी
लाठी के नीचे से गुज़रने दूँगा और तुम्हें अहद के
बंधन में शरीक करूँगा। 38जो बेवफ़ा होकर मुझसे
बाग़ी हो गए हैं उन्हें मैं तुमसे दूर कर दूँगा ताकि
तुम पाक हो जाओ। अगरचे मैं उन्हें भी उन दीगर
ममालिक से निकाल लाऊँगा जिनमें वह रह रहे हैं
तो भी वह मुल्के-इसराईल में दाख़िल नहीं होंगे।
तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

39जहाँ तेरा ताल्लुक़ है, ऐ इसराईली क़ौम, रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जाओ, हर एक
अपने बुतों की इबादत करता जाए अगर तुम मेरी
नहीं सुनने के। लेकिन तुम अपनी क़ुरबानियों और
बुतों की पूजा से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती
नहीं करोगे।

40क्योंकि रब फ़रमाता है कि आइंदा पूरी
इसराईली क़ौम मेरे मुक़द्दस पहाड़ यानी
इसराईल के बुलंद पहाड़ सिय्यून पर मेरी
ख़िदमत करेगी। वहाँ मैं ख़ुशी से उन्हें क़बूल
करूँगा, और वहाँ मैं तुम्हारी क़ुरबानियाँ,
तुम्हारे पहले फल और तुम्हारे तमाम मु-
क़द्दस हदिये तलब करूँगा। 41मेरे तुम्हें उन
अक़्वाम और ममालिक से निकालकर जमा
करने के बाद जिनमें तुम मुंतशिर हो गए हो तुम
इसराईल में मुझे क़ुरबानियाँ पेश करोगे, और
मैं उनकी ख़ुशबू सूँघकर ख़ुशी से तुम्हें क़बूल
करूँगा। यों मैं तुम्हारे ज़रीए दीगर अक़्वाम पर
ज़ाहिर करूँगा कि मैं क़ुद्दूस ख़ुदा हूँ। 42तब
जब मैं तुम्हें मुल्के-इसराईल यानी उस मुल्क में
लाऊँगा जिसका वादा मैंने क़सम खाकर तुम्हारे
बापदादा से किया था तो तुम जान लोगे कि मैं ही
रब हूँ। 43वहाँ तुम्हें अपना वह चाल-चलन और
अपनी वह हरकतें याद आएँगी जिनसे तुमने अपने
आपको नापाक कर दिया था, और तुम अपने
तमाम बुरे आमाल के बाइस अपने आपसे घिन
खाओगे। 44ऐ इसराईली क़ौम, तुम जान लोगे
कि मैं रब हूँ जब मैं अपने नाम की ख़ातिर नरमी से
तुमसे पेश आऊँगा, हालाँकि तुम अपने बुरे सुलूक
और तबाहकुन हरकतों की वजह से सख़्त सज़ा
के लायक़ थे। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है’।”

जंगल में आग लगने की तमसील

45रब मुझसे हमकलाम हुआ, 46“ऐ
आदमज़ाद, जुनूब की तरफ़ रुख़ करके उसके
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! दश्ते-नजब के जंगल के
ख़िलाफ़ नबुव्वत करके 47उसे बता, ‘रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तुझमें ऐसी आग
लगानेवाला हूँ जो तेरे तमाम दरख़्तों को भस्म
करेगी, ख़ाह वह हरे-भरे या सूखे हुए हों। इस
आग के भड़कते शोले नहीं बुझेंगे बल्कि जुनूब
से लेकर शिमाल तक हर चेहरे को झुलसा देंगे।
48हर एक को नज़र आएगा कि यह आग मेरे,
रब के हाथ ने लगाई है। यह बुझेगी नहीं’।”

49यह सुनकर मैं बोला, “ऐ क़ादिरे-मुतलक़,
यह बताने का क्या फ़ायदा है? लोग पहले से मेरे
बारे में कहते हैं कि यह हमेशा नाक़ाबिले-समझ
तमसीलें पेश करता है।”

रब इसराईल के ख़िलाफ़ तलवार चलाने को है

21 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, यरूशलम की तरफ़ रुख़
करके मुक़द्दस जगहों और मुल्के-इसराईल के
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! 3मुल्क को बता, ‘रब
फ़रमाता है कि अब मैं तुझसे निपट लूँगा!

अपनी तलवार मियान से खींचकर मैं तेरे तमाम
बाशिंदों को मिटा दूँगा, ख़ाह रास्तबाज़ हों या
बेदीन। 4क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को बेदीनों समेत
मार डालूँगा, इसलिए मेरी तलवार मियान से
निकलकर जुनूब से लेकर शिमाल तक हर शख़्स
पर टूट पड़ेगी। 5तब तमाम लोगों को पता चलेगा
कि मैं, रब ने अपनी तलवार को मियान से खींच
लिया है। तलवार मारती रहेगी और मियान में
वापस नहीं आएगी।'

6ऐ आदमज़ाद, आहें भर भरकर यह पैग़ाम
सुना! लोगों के सामने इतनी तलख़ी से आहो-
ज़ारी कर कि कमर में दर्द होने लगे। 7जब वह
तुझसे पूछें, 'आप क्यों कराह रहे हैं?' तो उन्हें
जवाब दे, 'मुझे एक हौलनाक ख़बर का इल्म है
जो अभी आनेवाली है। जब यहाँ पहुँचेगी तो हर
एक की हिम्मत टूट जाएगी और हर हाथ बेहिसो-
हरकत हो जाएगा। हर जान हौसला हारेगी और
हर घुटना डाँवाँडोल हो जाएगा। रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि इस ख़बर का वक़्त क़रीब
आ गया है, जो कुछ पेश आना है वह जल्द ही पेश
आएगा'।"

8रब एक बार फिर मुझसे हमकलाम हुआ,
9"ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके लोगों को बता,

'तलवार को रगड़ रगड़कर तेज़ कर दिया गया
है। 10अब वह क़त्लो-ग़ारत के लिए तैयार है,
बिजली की तरह चमकने लगी है। हम यह देखकर
किस तरह ख़ुश हो सकते हैं? ऐ मेरे बेटे, तूने
लाठी और हर तरबियत को हक़ीर जाना है।
11चुनाँचे तलवार को तेज़ करवाने के लिए भेजा
गया ताकि उसे ख़ूब इस्तेमाल किया जा सके।
अब वह रगड़ रगड़कर तेज़ की गई है, अब वह
क़ातिल के हाथ के लिए तैयार है।'

12ऐ आदमज़ाद, चीख़ उठ! वावैला कर!
अफ़सोस से अपना सीना पीट! तलवार मेरी क़ौम
और इसराईल के बुज़ुर्गों के ख़िलाफ़ चलने लगी
है, और सब उस की ज़द में आ जाएंगे। 13क्योंकि
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जाँच-पड़ताल का
वक़्त आ गया है, और लाज़िम है कि वह आए,
क्योंकि तूने लाठी की तरबियत को हक़ीर जाना
है।

14चुनाँचे ऐ आदमज़ाद, अब ताली बजा-
कर नबुव्वत कर! तलवार को दो बल्कि तीन
बार उन पर टूटने दे! क्योंकि क़त्लो-ग़ारत की
यह मोहलक तलवार क़ब्ज़े तक मक़तूलों में
घोंपी जाएगी। 15मैंने तलवार को उनके शहरों
के हर दरवाज़े पर खड़ा कर दिया है ताकि आने
जानेवालों को मार डाले, हर दिल हिम्मत हारे और
मुतअद्दिद अफ़राद हलाक हो जाएँ। अफ़सोस!
उसे बिजली की तरह चमकाया गया है, वह
क़त्लो-ग़ारत के लिए तैयार है।

16ऐ तलवार, दाईं और बाईं तरफ़ घूमती फिर,
जिस तरफ़ भी तू मुड़े उस तरफ़ मारती जा! 17मैं
भी तालियाँ बजाकर अपना ग़ुस्सा इसराईल पर
उतारूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।"

दो रास्तों का नक़्शा, बाबल के ज़रीए यरूशलम की तबाही

18रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 19"ऐ
आदमज़ाद, नक़्शा बनाकर उस पर वह दो रास्ते
दिखा जो शाहे-बाबल की तलवार इख़्तियार कर
सकती है। दोनों रास्ते एक ही मुल्क से शुरू हो
जाएँ। जहाँ यह एक दूसरे से अलग हो जाते हैं
वहाँ दो सायन-बोर्ड खड़े कर जो दो मुख़्तलिफ़
शहरों के रास्ते दिखाएँ, 20एक अम्मोनियों के
शहर रब्बा का और दूसरा यहूदाह के क़िलाबंद
शहर यरूशलम का।

यह वह दो रास्ते हैं जो शाहे-बाबल की तलवार
इख़्तियार कर सकती है। 21क्योंकि जहाँ यह
दो रास्ते एक दूसरे से अलग हो जाते हैं वहाँ
शाहे-बाबल रुककर मालूम करेगा कि कौन-सा
रास्ता इख़्तियार करना है। वह तीरों के ज़रीए
क़ुरा डालेगा, अपने बुतों से इशारा मिलने की
कोशिश करेगा और किसी जानवर की कलेजी का
मुआयना करेगा। 22तब उसे यरूशलम का रास्ता
इख़्तियार करने की हिदायत मिलेगी, चुनाँचे
वह अपने फ़ौजियों के साथ यरूशलम के पास

पहुँचकर क़त्लो-ग़ारत का हुक्म देगा। तब वह ज़ोर
से जंग के नारे लगा लगाकर शहर को पुश्ते से घेर
लेंगे, मुहासरे के बुर्ज तामीर करेंगे और दरवाज़ों
को तोड़ने की क़िलाशिकन मशीनें खड़ी करेंगे।
23जिन्होंने शाहे-बाबल से वफ़ादारी की क़सम
खाई है उन्हें यह पेशगोई ग़लत लगेगी, लेकिन वह
उन्हें उनके क़ुसूर की याद दिलाकर उन्हें गिरिफ़्तार
करेगा।

24चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तुम
लोगों ने ख़ुद अलानिया तौर पर बेवफ़ा होने से
अपने क़ुसूर की याद दिलाई है। तुम्हारे तमाम
आमाल में तुम्हारे गुनाह नज़र आते हैं। इसलिए
तुमसे सख़्ती से निपटा जाएगा।

25ऐ इसराईल के बिगड़े हुए और बेदीन
रईस, अब वह वक़्त आ गया है जब तुझे
हतमी सज़ा दी जाएगी। 26रब क़ादिरे-मुत-
लक़ फ़रमाता है कि पगड़ी को उतार, ताज को
दूर कर! अब सब कुछ उलट जाएगा। ज़लील
को सरफ़राज़ और सरफ़राज़ को ज़लील किया
जाएगा।

27मैं यरूशलम को मलबे का ढेर, मलबे का
ढेर, मलबे का ढेर बना दूँगा। और शहर उस वक़्त
तक नए सिरे से तामीर नहीं किया जाएगा जब
तक वह न आए जो हक़दार है। उसी के हवाले मैं
यरूशलम करूँगा।'

अम्मोनी भी तलवार की ज़द में आएँगे

28ऐ आदमज़ाद, अम्मोनियों और उनकी लान-
तान के जवाब में नबुव्वत कर! उन्हें बता,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तल-
वार क़त्लो-ग़ारत के लिए मियान से खींच ली गई
है, उसे रगड़ रगड़कर तेज़ किया गया है ताकि
बिजली की तरह चमकते हुए मारती जाए।

29तेरे नबियों ने तुझे फ़रेबदेह रोयाएँ और झूटे
पैग़ामात सुनाए हैं। लेकिन तलवार बेदीनों की
गरदन पर नाज़िल होनेवाली है, क्योंकि वह वक़्त
आ गया है जब उन्हें हतमी सज़ा दी जाए।

30लेकिन इसके बाद अपनी तलवार को मियान
में वापस डाल, क्योंकि मैं तुझे भी सज़ा दूँगा।
जहाँ तू पैदा हुआ, तेरे अपने वतन में मैं तेरी
अदालत करूँगा। 31मैं अपना ग़ज़ब तुझ पर
नाज़िल करूँगा, अपने क़हर की आग तेरे ख़िलाफ़
भड़काऊँगा। मैं तुझे ऐसे वहशी आदमियों के
हवाले करूँगा जो तबाह करने का फ़न ख़ूब जानते
हैं। 32तू आग का ईंधन बन जाएगा, तेरा ख़ून तेरे
अपने मुल्क में बह जाएगा। आइंदा तुझे कोई याद
नहीं करेगा। क्योंकि यह मेरा, रब का फ़रमान
है'।"

यरूशलम ख़ूनरेज़ी का शहर है

22 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
2"ऐ आदमज़ाद, क्या तू यरूशलम
की अदालत करने के लिए तैयार है? क्या तू इस
क़ातिल शहर पर फ़ैसला करने के लिए मुस्तैद
है? फिर उस पर उस की मकरूह हरकतें ज़ाहिर
कर। 3उसे बता,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ
यरूशलम बेटी, तेरा अंजाम क़रीब ही है, और
यह तेरा अपना क़ुसूर है। क्योंकि तूने अपने
दरमियान मासूमों का ख़ून बहाया और अपने लिए
बुत बनाकर अपने आपको नापाक कर दिया है।
4अपनी ख़ूनरेज़ी से तू मुजरिम बन गई है, अपनी
बुतपरस्ती से नापाक हो गई है। तू ख़ुद अपनी
अदालत का दिन क़रीब लाई है। इसी वजह से तेरा
अंजाम क़रीब आ गया है, इसी लिए मैं तुझे दीगर
अक़वाम की लान-तान और तमाम ममालिक के
मज़ाक़ का निशाना बना दूँगा। 5सब तुझ पर ठट्ठा
मारेंगे, ख़ाह वह क़रीब हों या दूर। तेरे नाम पर
दाग़ लग गया है, तुझमें फ़साद हद से ज़्यादा बढ़
गया है।

6इसराईल का जो भी बुज़ुर्ग तुझमें रहता है
वह अपनी पूरी ताक़त से ख़ून बहाने की कोशिश
करता है। 7तेरे बाशिंदे अपने माँ-बाप को हक़ीर
जानते हैं। वह परदेसी पर सख़्ती करके यतीमों
और बेवाओं पर ज़ुल्म करते हैं। 8जो मुझे मुक़द्दस

है उसे तू पाँवों तले कुचल देती है। तू मेरे सबत के
दिनों की बेहुरमती भी करती है।
9तुझमें ऐसे तोहमत लगानेवाले हैं जो ख़ूनरेज़ी
पर तुले हुए हैं। तेरे बाशिंदे पहाड़ों की नाजायज़
क़ुरबानगाहों के पास क़ुरबानियाँ खाते और तेरे
दरमियान शर्मनाक हरकतें करते हैं। 10बेटा माँ
से हमबिसतर होकर बाप की बेहुरमती करता है,
शौहर माहवारी के दौरान बीवी से सोहबत करके
उससे ज़्यादती करता है। 11एक अपने पड़ोसी
की बीवी से ज़िना करता है जबकि दूसरा अपनी
बहू की बेहुरमती और तीसरा अपनी सगी बहन
की इसमतदरी करता है। 12तुझमें ऐसे लोग हैं
जो रिश्वत के एवज़ क़त्ल करते हैं। सूद क़ाबिले-
क़बूल है, और लोग एक दूसरे पर ज़ुल्म करके
नाजायज़ नफ़ा कमाते हैं। रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम, तू मुझे सरासर भूल
गई है!
13तेरा नाजायज़ नफ़ा और तेरे बीच में ख़ूनरेज़ी
देखकर मैं ग़ुस्से में ताली बजाता हूँ। 14सोच ले!
जिस दिन मैं तुझसे निपटूँगा तो क्या तेरा हौसला
क़ायम और तेरे हाथ मज़बूत रहेंगे? यह मेरा, रब
का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा भी। 15मैं तुझे
दीगर अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर करके तेरी
नापाकी दूर करूँगा। 16फिर जब दीगर क़ौमों के
देखते देखते तेरी बेहुरमती हो जाएगी तब तू जान
लेगी कि मैं ही रब हूँ'।"

इसराईली क़ौम भट्टी में धात का मैल है

17रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, 18"ऐ
आदमज़ाद, इसराईली क़ौम मेरे नज़दीक उस मैल
की मानिंद बन गई है जो चाँदी को ख़ालिस करने
के बाद भट्टी में बाक़ी रह जाता है। सबके सब उस
ताँबे, टीन, लोहे और सीसे की मानिंद हैं जो भट्टी
में रह जाता है। वह कचरा ही हैं। 19चुनाँचे रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि चूँकि तुम भट्टी
में बचा हुआ मैल हो इसलिए मैं तुम्हें यरूशलम
में इकट्ठा करके 20भट्टी में फेंक दूँगा। जिस तरह
चाँदी, ताँबे, लोहे, सीसे और टीन की आमेज़िश
को तपती भट्टी में फेंका जाता है ताकि पिघल
जाए उसी तरह मैं तुम्हें ग़ुस्से में इकट्ठा करूँगा
और भट्टी में फेंककर पिघला दूँगा। 21मैं तुम्हें
जमा करके आग में फेंक दूँगा और बड़े ग़ुस्से से
हवा देकर तुम्हें पिघला दूँगा। 22जिस तरह चाँदी
भट्टी में पिघल जाती है उसी तरह तुम यरूशलम
में पिघल जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब
ने अपना ग़ज़ब तुम पर नाज़िल किया है।"

पूरी क़ौम क़ुसूरवार है

23रब मुझसे हमकलाम हुआ, 24"ऐ
आदमज़ाद, मुल्के-इसराईल को बता, 'ग़ज़ब
के दिन तुझ पर मेंह नहीं बरसेगा बल्कि तू बारिश
से महरूम रहेगा।'
25मुल्क के बीच में साज़िश करनेवाले राहनुमा
शेरबबर की मानिंद हैं जो दहाड़ते दहाड़ते अपना
शिकार फाड़ लेते हैं। वह लोगों को हड़प करके
उनके ख़ज़ाने और क़ीमती चीज़ें छीन लेते और
मुल्क के दरमियान ही मुतअद्दिद औरतों को बेवाएँ
बना देते हैं।
26मुल्क के इमाम मेरी शरीअत से ज़्यादती
करके उन चीज़ों की बेहुरमती करते हैं जो मुझे
मुक़द्दस हैं। न वह मुक़द्दस और आम चीज़ों में
इम्तियाज़ करते, न पाक और नापाक अशया का
फ़रक़ सिखाते हैं। नीज़, वह मेरे सबत के दिन
अपनी आँखों को बंद रखते हैं ताकि उस की
बेहुरमती नज़र न आए। यों उनके दरमियान ही
मेरी बेहुरमती की जाती है।
27मुल्क के दरमियान के बुज़ुर्ग भेड़ियों की
मानिंद हैं जो अपने शिकार को फाड़ फाड़कर ख़ून
बहाते और लोगों को मौत के घाट उतारते हैं ताकि
नारवा नफ़ा कमाएँ।
28मुल्क के नबी फ़रेबदेह रोयाएँ और झूटे
पैग़ामात सुनाकर लोगों के बुरे कामों पर सफ़ेदी
फेर देते हैं ताकि उनकी ग़लतियाँ नज़र न आएँ।
वह कहते हैं, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है'
हालाँकि रब ने उन पर कुछ नाज़िल नहीं किया
होता।

29मुल्क के आम लोग भी एक दूसरे का
इस्तेह्साल करते हैं। वह डकैत बनकर ग़रीबों
और ज़रूरतमंदों पर ज़ुल्म करते और परदेसियों
से बदसुलूकी करके उनका हक़ मारते हैं।
30इसराईल में मैं ऐसे आदमी की तलाश में रहा
जो मुल्क के लिए हिफ़ाज़ती चारदीवारी तामीर
करे, जो मेरे हुज़ूर आकर दीवार के रख़ने में
खड़ा हो जाए ताकि मैं मुल्क को तबाह न करूँ।
लेकिन मुझे एक भी न मिला जो इस क़ाबिल हो।
31चुनाँचे मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा
और उन्हें अपने सख़्त क़हर से भस्म करूँगा। तब
उनके ग़लत कामों का नतीजा उनके अपने सरों
पर आएगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है।”

बेहया बहनें अहोला और अहोलीबा

23 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, दो औरतों की कहा-
नी सुन ले। दोनों एक ही माँ की बेटियाँ थीं।
3वह अभी जवान ही थीं जब मिसर में कसबी
बन गईं। वहीं मर्द दोनों कुँवारियों की छातियाँ
सहलाकर अपना दिल बहलाते थे। 4बड़ी का
नाम अहोला और छोटी का नाम अहोलीबा था।
अहोला सामरिया और अहोलीबा यरूशलम है। मैं
दोनों का मालिक बन गया, और दोनों के बेटे-
बेटियाँ पैदा हुए।
5गो मैं अहोला का मालिक था तो भी वह ज़िना
करने लगी। शहवत से भरकर वह जंगजू असूरियों
के पीछे पड़ गई, और यही उसके आशिक़ बन
गए। 6शानदार कपड़ों से मुलब्बस यह गवर्नर और
फ़ौजी अफ़सर उसे बड़े प्यारे लगे। सब ख़ूबसूरत
जवान और अच्छे घुड़सवार थे। 7असूर के चीदा
चीदा बेटों से उसने ज़िना किया। जिसकी भी उसे
शहवत थी उससे और उसके बुतों से वह नापाक
हुई। 8लेकिन उसने जवानी में मिसरियों के साथ
जो ज़िनाकारी शुरू हुई वह भी न छोड़ी। वही लोग
थे जो उसके साथ उस वक़्त हमबिसतर हुए थे जब
वह अभी कुँवारी थी, जिन्होंने उस की छातियाँ
सहलाकर अपनी गंदी ख़ाहिशात उससे पूरी की
थीं।
9यह देखकर मैंने उसे उसके असूरी आशिक़ों
के हवाले कर दिया, उन्हीं के हवाले जिनकी शदीद
शहवत उसे थी। 10उन्हीं से अहोला की अदालत
हुई। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे बरहना
कर दिया और उसके बेटे-बेटियों को उससे छीन
लिया। उसे ख़ुद उन्होंने तलवार से मार डाला। यों
वह दीगर औरतों के लिए इबरतअंगेज़ मिसाल बन
गई।
11गो उस की बहन अहोलीबा ने यह सब कुछ
देखा तो भी वह शहवत और ज़िनाकारी के लिहाज़
से अपनी बहन से कहीं ज़्यादा आगे बढ़ी। 12वह
भी शहवत के मारे असूरियों के पीछे पड़ गई।
यह ख़ूबसूरत जवान सब उसे प्यारे थे, ख़ाह
असूरी गवर्नर या अफ़सर, ख़ाह शानदार कपड़ों
से मुलब्बस फ़ौजी या अच्छे घुड़सवार थे। 13मैंने
देखा कि उसने भी अपने आपको नापाक कर
दिया। इसमें दोनों बेटियाँ एक जैसी थीं।
14लेकिन अहोलीबा की ज़िनाकाराना हरकतें
कहीं ज़्यादा बुरी थीं। एक दिन उसने दीवार पर
बाबल के मर्दों की तस्वीर देखी। तस्वीर लाल
रंग से खींची हुई थी। 15मर्दों की कमर में पटका
और सर पर पगड़ी बँधी हुई थी। वह बाबल के
उन अफ़सरों की मानिंद लगते थे जो रथों पर
सवार लड़ते हैं। 16मर्दों की तस्वीर देखते ही
अहोलीबा के दिल में उनके लिए शदीद आरज़ू
पैदा हुई। चुनाँचे उसने अपने क़ासिदों को बाबल
भेजकर उन्हें आने की दावत दी। 17तब बाबल
के मर्द उसके पास आए और उससे हमबिसतर
हुए। अपनी ज़िनाकारी से उन्होंने उसे नापाक कर
दिया। लेकिन उनसे नापाक होने के बाद उसने
तंग आकर अपना मुँह उनसे फेर लिया।
18जब उसने खुले तौर पर उनसे ज़िना करके
अपनी बरहनगी सब पर ज़ाहिर की तो मैंने तंग
आकर अपना मुँह उससे फेर लिया, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह मैंने अपना मुँह उस की बहन
से भी फेर लिया था। 19लेकिन यह भी उसके

लिए काफ़ी न था बल्कि उसने अपनी ज़िनाकारी
में मज़ीद इज़ाफ़ा किया। उसे जवानी के दिन
याद आए जब वह मिसर में कसबी थी। 20वह
शहवत के मारे पहले आशिक़ों की आरज़ू करने
लगी, उनसे जो गधों और घोड़ों की-सी जिंसी
ताक़त रखते थे। 21क्योंकि तू अपनी जवानी की
ज़िनाकारी दोहराने की मुतमन्नी थी। तू एक बार
फिर उनसे हमबिसतर होना चाहती थी जो मिसर
में तेरी छातियाँ सहलाकर अपना दिल बहलाते
थे।

22चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, 'ऐ
अहोलीबा, मैं तेरे आशिक़ों को तेरे ख़िलाफ़
खड़ा करूँगा। जिनसे तूने तंग आकर अपना
मुँह फेर लिया था उन्हें मैं चारों तरफ़ से तेरे
ख़िलाफ़ लाऊँगा। 23बाबल, कसदियों, फ़िक़ोद,
शोअ और क़ोअ के फ़ौजी मिलकर तुझ पर टूट
पड़ेंगे। घुड़सवार असूरी भी उनमें शामिल होंगे,
ऐसे ख़ूबसूरत जवान जो सब गवर्नर, अफ़सर,
रथसवार फ़ौजी और ऊँचे तबक़े के अफ़राद होंगे।
24शिमाल से वह रथों और मुख़्तलिफ़ क़ौमों के
मुतअद्दिद फ़ौजियों समेत तुझ पर हमला करेंगे।
वह तुझे यों घेर लेंगे कि हर तरफ़ छोटी और
बड़ी ढालें, हर तरफ़ ख़ोद नज़र आएँगे। मैं तुझे
उनके हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे सज़ा देकर
अपने क़वानीन के मुताबिक़ तेरी अदालत करें।
25तू मेरी ग़ैरत का तजरबा करेगी, क्योंकि यह
लोग ग़ुस्से में तुझसे निपट लेंगे। वह तेरी नाक
और कानों को काट डालेंगे और बचे हुओं को
तलवार से मौत के घाट उतारेंगे। तेरे बेटे-बेटियों
को वह ले जाएंगे, और जो कुछ उनके पीछे रह
जाए वह भस्म हो जाएगा। 26वह तेरे लिबास और
तेरे ज़ेवरात को तुझ पर से उतारेंगे।

27यों मैं तेरी वह फ़हहाशी और ज़िनाकारी रोक
दूँगा जिसका सिलसिला तूने मिसर में शुरू किया
था। तब न तू आरज़ूमंद नज़रों से इन चीज़ों की
तरफ़ देखेगी, न मिसर को याद करेगी। 28क्योंकि
रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तुझे उनके
हवाले करने को हूँ जो तुझसे नफ़रत करते हैं,
उनके हवाले जिनसे तूने तंग आकर अपना मुँह
फेर लिया था। 29वह बड़ी नफ़रत से तेरे साथ
पेश आएँगे। जो कुछ तूने मेहनत से कमाया उसे
वह छीनकर तुझे नंगी और बरहना छोड़ेंगे। तब
तेरी ज़िनाकारी का शर्मनाक अंजाम और तेरी
फ़हहाशी सब पर ज़ाहिर हो जाएगी। 30तब तुझे
इसका अज्र मिलेगा कि तू क़ौमों के पीछे पड़कर
ज़िना करती रही, कि तूने उनके बुतों की पूजा
करके अपने आपको नापाक कर दिया है।

31तू अपनी बहन के नमूने पर चल पड़ी,
इसलिए मैं तुझे वही प्याला पिलाऊँगा जो उसे
पीना पड़ा। 32रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
तुझे अपनी बहन का प्याला पीना पड़ेगा जो बड़ा
और गहरा है। और तू उस वक़्त तक उसे पीती
रहेगी जब तक मज़ाक़ और लान-तान का निशाना
न बन गई हो। 33दहशत और तबाही का प्याला
पी पीकर तू मदहोशी और दुख से भर जाएगी। तू
अपनी बहन सामरिया का यह प्याला 34आख़िरी
क़तरे तक पी लेगी, फिर प्याले को पाश पाश
करके उसके टुकड़े चबा लेगी और अपने सीने को
फाड़ लेगी।' यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है। 35रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तूने मुझे
भूलकर अपना मुँह मुझसे फेर लिया है। अब
तुझे अपनी फ़हहाशी और ज़िनाकारी का नतीजा
भुगतना पड़ेगा'।"

36रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, "ऐ
आदमज़ाद, क्या तू अहोला और अहोलीबा की
अदालत करने के लिए तैयार है? फिर उन पर
उनकी मकरूह हरकतें ज़ाहिर कर। 37उनसे दो
जुर्म सरज़द हुए हैं, ज़िना और क़त्ल। उन्होंने बुतों
से ज़िना किया और अपने बच्चों को जलाकर उन्हें
खिलाया, उन बच्चों को जो उन्होंने मेरे हाँ जन्म
दिए थे। 38लेकिन यह उनके लिए काफ़ी नहीं
था। साथ साथ उन्होंने मेरा मक़दिस नापाक और
मेरे सबत के दिनों की बेहुरमती की। 39क्योंकि
जब कभी वह अपने बच्चों को अपने बुतों के हुज़ूर
क़ुरबान करती थीं उसी दिन वह मेरे घर में आकर

उस की बेहुरमती करती थीं। मेरे ही घर में वह ऐसी हरकतें करती थीं।

40यह भी इन दो बहनों के लिए काफ़ी नहीं था बल्कि आदमियों की तलाश में उन्होंने अपने क़ासिदों को दूर दूर तक भेज दिया। जब मर्द पहुँचे तो तूने उनके लिए नहाकर अपनी आँखों में सुरमा लगाया और अपने ज़ेवरात पहन लिए। 41फिर तू शानदार सोफ़े पर बैठ गई। तेरे सामने मेज़ थी जिस पर तूने मेरे लिए मख़सूस बख़ूर और तेल रखा था। 42रेगिस्तान से सिबा के मुतअद्दिद आदमी लाए गए तो शहर में शोर मच गया, और लोगों ने सुकून का साँस लिया। आदमियों ने दोनों बहनों के बाज़ुओं में कड़े पहनाए और उनके सरों पर शानदार ताज रखे। 43तब मैंने ज़िनाकारी से घिसी-फटी औरत के बारे में कहा, ‘अब वह उसके साथ ज़िना करें, क्योंकि वह ज़िनाकार ही है।’ 44ऐसा ही हुआ। मर्द उन बेहया बहनों अहोला और अहोलीबा से यों हमबिसतर हुए जिस तरह कसबियों से।

45लेकिन रास्तबाज़ आदमी उनकी अदालत करके उन्हें ज़िना और क़त्ल के मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि दोनों बहनें ज़िनाकार और क़ातिल ही हैं। 46रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उनके ख़िलाफ़ जुलूस निकालकर उन्हें दहशत और लूट-मार के हवाले करो। 47लोग उन्हें संगसार करके तलवार से टुकड़े टुकड़े करें, वह उनके बेटे-बेटियों को मार डालें और उनके घरों को नज़रे-आतिश करें।

48यों मैं मुल्क में ज़िनाकारी ख़त्म करूँगा। इससे तमाम औरतों को तंबीह मिलेगी कि वह तुम्हारे शर्मनाक नमूने पर न चलें। 49तुम्हें ज़िनाकारी और बुतपरस्ती की मुनासिब सज़ा मिलेगी। तब तुम जान लोगी कि मैं रब क़ादिरे-मुतलक़ हूँ।”

यरूशलम आग पर ज़ंगआलूदा देग है

24 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के नवें साल में रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ। दसवें महीने का दसवाँ दिन[a] था। पैग़ाम यह था, 2“ऐ आदमज़ाद, इसी दिन की तारीख़ लिख ले, क्योंकि इसी दिन शाहे-बाबल यरूशलम का मुहासरा करने लगा है। 3फिर इस सरकश क़ौम इसराईल को तमसील पेश करके बता,

‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि आग पर देग रखकर उसमें पानी डाल दे। 4फिर उसे बेहतरीन गोश्त से भर दे। रान और शाने के टुकड़े, नीज़ बेहतरीन हड्डियाँ उसमें डाल दे। 5सिर्फ़ बेहतरीन भेड़ों का गोश्त इस्तेमाल कर। ध्यान दे कि देग के नीचे आग ज़ोर से भड़कती रहे। गोश्त को हड्डियों समेत ख़ूब पकने दे।

6रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम पर अफ़सोस जिसमें इतना ख़ून बहाया गया है! यह शहर देग है जिसमें ज़ंग लगा है, ऐसा ज़ंग जो उतरता नहीं। अब गोश्त के टुकड़ों को यके बाद दीगरे देग से निकाल दे। उन्हें किसी तरतीब से मत निकालना बल्कि क़ुरा डाले बग़ैर निकाल दे।

7जो ख़ून यरूशलम ने बहाया वह अब तक उसमें मौजूद है। क्योंकि वह मिट्टी पर न गिरा जो उसे जज़ब कर सकती बल्कि नंगी चट्टान पर। 8मैंने ख़ुद यह ख़ून नंगी चट्टान पर बहने दिया ताकि वह छुप न जाए बल्कि मेरा ग़ज़ब यरूशलम पर नाज़िल हो जाए और मैं बदला लूँ।

9रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम पर अफ़सोस जिसने इतना ख़ून बहाया है! मैं भी तेरे नीचे लकड़ी का बड़ा ढेर लगाऊँगा। 10आ, लकड़ी का बड़ा ढेर करके आग लगा दे। गोश्त को ख़ूब पका, फिर शोरबा निकालकर हड्डियों को भस्म होने दे। 11इसके बाद ख़ाली देग को जलते कोयलों पर रख दे ताकि पीतल गरम

[a] 15 जनवरी।

होकर तमतमाने लगे और देग में मैल पिघल जाए, उसका ज़ंग उतर जाए।

12लेकिन बेफ़ायदा! इतना ज़ंग लगा है कि वह आग में भी नहीं उतरता।

13ऐ यरूशलम, अपनी बेहया हरकतों से तूने अपने आपको नापाक कर दिया है। अगरचे मैं ख़ुद तुझे पाक-साफ़ करना चाहता था तो भी तू पाक-साफ़ न हुई। अब तू उस वक़्त तक पाक नहीं होगी जब तक मैं अपना पूरा ग़ुस्सा तुझ पर उतार न लूँ।
14मेरे रब का यह फ़रमान पूरा होनेवाला है, और मैं ध्यान से उसे अमल में लाऊँगा। न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन और आमाल के मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा।' यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।"

बीवी की वफ़ात पर हिज़क़ियेल मातम न करे

15रब मुझसे हमकलाम हुआ, 16"ऐ
आदमज़ाद, मैं तुझसे अचानक तेरी आँख का तारा छीन लूँगा। लेकिन लाज़िम है कि तू न आहो-ज़ारी करे, न आँसू बहाए। 17बेशक चुपके
से कराहता रह, लेकिन अपनी अज़ीज़ा के लिए अलानिया मातम न कर। न सर से पगड़ी उतार और न पाँवों से जूते। न दाढ़ी को ढाँपना, न जनाज़े का खाना खा।"

18सुबह को मैंने क़ौम को यह पैग़ाम सुनाया, और शाम को मेरी बीवी इंतक़ाल कर गई। अगली सुबह मैंने वह कुछ किया जो रब ने मुझे करने को कहा था। 19यह देखकर लोगों ने मुझसे पूछा,
"आपके रवय्ये का हमारे साथ क्या ताल्लुक़ है? ज़रा हमें बताएँ।"

20मैंने जवाब दिया, "रब ने मुझे 21आप
इसराईलियों को यह पैग़ाम सुनाने को कहा, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरा घर तुम्हारे नज़दीक पनाहगाह है जिस पर तुम फ़ख़र करते हो। लेकिन यह मक़दिस जो तुम्हारी आँख का तारा और जान का प्यारा है तबाह होनेवाला है। मैं उस की बेहुरमती करने को हूँ। और तुम्हारे जितने बेटे-बेटियाँ यरूशलम में पीछे रह गए थे वह सब तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे। 22तब तुम
वह कुछ करोगे जो हिज़क़ियेल इस वक़्त कर रहा है। न तुम अपनी दाढ़ियों को ढाँपोगे, न जनाज़े का खाना खाओगे। 23न तुम सर से पगड़ी, न
पाँवों से जूते उतारोगे। तुम्हारे हाँ न मातम का शोर, न रोने की आवाज़ सुनाई देगी बल्कि तुम अपने गुनाहों के सबब से ज़ाया होते जाओगे। तुम चुपके से एक दूसरे के साथ बैठकर कराहते रहोगे।
24हिज़क़ियेल तुम्हारे लिए निशान है। जो कुछ वह इस वक़्त कर रहा है वह तुम भी करोगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब क़ादिरे-मुतलक़ हूँ'।"

25रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, "ऐ आदमज़ाद, यह घर इसराईलियों के नज़दीक पनाहगाह है जिसके बारे में वह ख़ास ख़ुशी महसूस करते हैं, जिस पर वह फ़ख़र करते हैं। लेकिन मैं यह मक़दिस जो उनकी आँख का तारा और जान का प्यारा है उनसे छीन लूँगा और साथ साथ उनके बेटे-बेटियों को भी। जिस दिन यह पेश आएगा 26उस दिन एक आदमी बचकर तुझे
इसकी ख़बर पहुँचाएगा। 27उसी वक़्त तू दुबारा
बोल सकेगा। तू गूँगा नहीं रहेगा बल्कि उससे बातें करने लगेगा। यों तू इसराईलियों के लिए निशान होगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

अम्मोनियों का मुल्क उन से छीन लिया जाएगा

25 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"ऐ
आदमज़ाद, अम्मोनियों के मुल्क की तरफ़ रुख़ करके उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर।
3उन्हें बता,

'सुनो रब क़ादिरे-मुतलक़ का कलाम! वह फ़रमाता है कि ऐ अम्मोन बेटी, तूने ख़ुश होकर क़हक़हा लगाया जब मेरे मक़दिस की बेहुरमती हुई, मुल्के-इसराईल तबाह हुआ और यहूदाह के बाशिंदे जिलावतन हुए। 4इसलिए मैं तुझे
मशरिक़ी क़बीलों के हवाले करूँगा जो अपने डेरे तुझमें लगाकर पूरी बस्तियाँ क़ायम करेंगे। वह तेरा ही फल खाएँगे, तेरा ही दूध पिएँगे। 5रब्बा

शहर को मैं ऊँटों की चरागाह में बदल दूँगा और
मुल्के-अम्मोन को भेड़-बकरियों की आरामगाह
बना दूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।
6क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
तूने तालियाँ बजा बजाकर और पाँव ज़मीन पर
मार मारकर इसराईल के अंजाम पर अपनी दिली
ख़ुशी का इज़हार किया। तेरी इसराईल के लिए
हिक़ारत साफ़ तौर पर नज़र आई। 7इसलिए
मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ बढ़ाकर तुझे दीगर
अक़वाम के हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे लूट
लें। मैं तुझे यों मिटा दूँगा कि अक़वामो-ममालिक
में तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। तब तू जान
लेगी कि मैं ही रब हूँ'।"

मोआब के शहर तबाह हो जाएंगे

8"रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मोआब
और सईर इसराईल का मज़ाक़ उड़ाकर कहते
हैं, 'लो, देखो यहूदाह के घराने का हाल! अब
वह भी बाक़ी क़ौमों की तरह बन गया है।'
9इसलिए मैं मोआब की पहाड़ी ढलानों को
उनके शहरों से महरूम करूँगा। मुल्क के एक
सिरे से दूसरे सिरे तक एक भी आबादी नहीं
रहेगी। गो मोआबी अपने शहरों बैत-यसीमोत,
बाल-मऊन और क़िरियतायम पर ख़ास फ़ख़र
करते हैं, लेकिन वह भी ज़मीनबोस हो जाएंगे।
10अम्मोन की तरह मैं मोआब को भी मशरिक़ी
क़बीलों के हवाले करूँगा। आख़िरकार अक़वाम
में अम्मोनियों की याद तक नहीं रहेगी, 11और
मोआब को भी मुझसे मुनासिब सज़ा मिलेगी। तब
वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

अल्लाह अदोमियों से इंतक़ाम लेगा

12"रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यहूदाह
से इंतक़ाम लेने से अदोम ने संगीन गुनाह किया
है। 13इसलिए मैं अपना हाथ अदोम के ख़िलाफ़
बढ़ाकर उसके इनसानो-हैवान को मार डालूँगा,
और वह तलवार से मारे जाएंगे। तेमान से लेकर
ददान तक यह मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा।
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है। 14रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि अपनी क़ौम के
हाथों मैं अदोम से बदला लूँगा, और इसराईल मेरे
ग़ज़ब और क़हर के मुताबिक़ ही अदोम से निपट
लेगा। तब वह मेरा इंतक़ाम जान लेंगे।"

फ़िलिस्तियों का ख़ातमा

15"रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
फ़िलिस्तियों ने बड़े ज़ुल्म के साथ यहूदाह से
बदला लिया है। उन्होंने उस पर अपनी दिली
हिक़ारत और दायमी दुश्मनी का इज़हार किया
और इंतक़ाम लेकर उसे तबाह करने की कोशिश
की। 16इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है
कि मैं अपना हाथ फ़िलिस्तियों के ख़िलाफ़ बढ़ाने
को हूँ। मैं इन करेतियों और साहिली इलाक़े के
बचे हुओं को मिटा दूँगा। 17मैं अपना ग़ज़ब उन
पर नाज़िल करके सख़्ती से उनसे बदला लूँगा।
तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

सूर का सत्यानास

26 यहूयाकीन बादशाह की जिला-
वतनी के 11वें साल में रब मुझसे
हमकलाम हुआ। महीने का पहला दिन था।
2"ऐ आदमज़ाद, सूर बेटी यरूशलम की तबाही
देखकर ख़ुश हुई है। वह कहती है, 'लो, अक़वाम
का दरवाज़ा टूट गया है! अब मैं ही इसकी
ज़िम्मेदारियाँ निभाऊँगी। अब जब यरूशलम
वीरान है तो मैं ही फ़रोग़ पाऊँगी।'
3जवाब में रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ सूर, मैं तुझसे निपट लूँगा! मैं मुतअद्दिद क़ौमों
को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा। समुंदर की ज़बरदस्त
मौजों की तरह वह तुझ पर टूट पड़ेंगी। 4वह सूर
शहर की फ़सील को ढाकर उसके बुर्जों को ख़ाक
में मिला देंगी। तब मैं उसे इतने ज़ोर से झाड़ दूँगा
कि मिट्टी तक नहीं रहेगी। ख़ाली चट्टान ही नज़र
आएगी। 5रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि वह
समुंदर के दरमियान ऐसी जगह रहेगी जहाँ मछेरे
अपने जालों को सुखाने के लिए बिछा देंगे। दीगर

अक़्वाम उसे लूट लेंगी, 6और ख़ुश्की पर उस की
आबादियाँ तलवार की ज़द में आ जाएँगी। तब वह
जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

7क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
बाबल के बादशाह नबूकदनज़्ज़र को तेरे ख़िलाफ़
भेजूँगा जो घोड़े, रथ, घुड़सवार और बड़ी फ़ौज
लेकर शिमाल से तुझ पर हमला करेगा। 8ख़ुश्की
पर तेरी आबादियों को वह तलवार से तबाह
करेगा, फिर पुश्ते और बुर्जों से तुझे घेर लेगा।
उसके फ़ौजी अपनी ढालें उठाकर तुझ पर हमला
करेंगे। 9बादशाह अपनी क़िलाशिकन मशीनों से
तेरी फ़सील को ढा देगा और अपने आलात से
तेरे बुर्जों को गिरा देगा। 10जब उसके बेशुमार
घोड़े चल पड़ेंगे तो इतनी गर्द उड़ जाएगी कि
तू उसमें डूब जाएगी। जब बादशाह तेरी फ़सील
को तोड़ तोड़कर तेरे दरवाज़ों में दाख़िल होगा
तो तेरी दीवारें घोड़ों और रथों के शोर से लरज़
उठेंगी। 11उसके घोड़ों के खुर तेरी तमाम गलियों
को कुचल देंगे, और तेरे बाशिंदे तलवार से मर
जाएंगे, तेरे मज़बूत सतून ज़मीनबोस हो जाएंगे।
12दुश्मन तेरी दौलत छीन लेंगे और तेरी तिजारत
का माल लूट लेंगे। वह तेरी दीवारों को गिराकर
तेरी शानदार इमारतों को मिसमार करेंगे, फिर तेरे
पत्थर, लकड़ी और मलबा समुंदर में फेंक देंगे।
13मैं तेरे गीतों का शोर बंद करूँगा। आइंदा तेरे
सरोदों की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। 14मैं तुझे
नंगी चट्टान में तबदील करूँगा, और मछेरे तुझे
अपने जाल बिछाकर सुखाने के लिए इस्तेमाल
करेंगे। आइंदा तुझे कभी दुबारा तामीर नहीं किया
जाएगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

15रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सूर
बेटी, साहिली इलाक़े काँप उठेंगे जब तू धड़ाम
से गिर जाएगी, जब हर तरफ़ ज़ख़मी लोगों की
कराहती आवाज़ें सुनाई देंगी, हर गली में क़त्लो-
ग़ारत का शोर मचेगा। 16तब साहिली इलाक़ों के
तमाम हुक्मरान अपने तख़्तों से उतरकर अपने
चोग़े और शानदार लिबास उतारेंगे। वह मातमी
कपड़े पहनकर ज़मीन पर बैठ जाएंगे और बार
बार लरज़ उठेंगे, यहाँ तक वह तेरे अंजाम पर
परेशान होंगे। 17तब वह तुझ पर मातम करके
गीत गाएँगे,

‘हाय, तू कितने धड़ाम से गिरकर तबाह हुई
है! ऐ साहिली शहर, ऐ सूर बेटी, पहले तू अपने
बाशिंदों समेत समुंदर के दरमियान रहकर कितनी
मशहूर और ताक़तवर थी। गिर्दो-नवाह के तमाम
बाशिंदे तुझसे दहशत खाते थे। 18अब साहिली
इलाक़े तेरे अंजाम को देखकर थरथरा रहे हैं।
समुंदर के जज़ीरे तेरे ख़ातमे की ख़बर सुनकर
दहशतज़दा हो गए हैं।’

19रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सूर
बेटी, मैं तुझे वीरानो-सुनसान करूँगा। तू उन दीगर
शहरों की मानिंद बन जाएगी जो नेस्तो-नाबूद हो
गए हैं। मैं तुझ पर सैलाब लाऊँगा, और गहरा
पानी तुझे ढाँप देगा। 20मैं तुझे पाताल में उतरने
दूँगा, और तू उस क़ौम के पास पहुँचेगी जो क़दीम
ज़माने से ही वहाँ बसती है। तब तुझे ज़मीन की
गहराइयों में रहना पड़ेगा, वहाँ जहाँ क़दीम ज़मानों
के खंडरात हैं। तू मुरदों के मुल्क में रहेगी और
कभी ज़िंदगी के मुल्क में वापस नहीं आएगी, न
वहाँ अपना मक़ाम दुबारा हासिल करेगी। 21मैं
होने दूँगा कि तेरा अंजाम दहशतनाक होगा, और
तू सरासर तबाह हो जाएगी। लोग तेरा खोज
लगाएँगे लेकिन तुझे कभी नहीं पाएँगे। यह रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।”

सूर के अंजाम पर मातमी गीत

27 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, सूर बेटी पर मातमी गीत
गा, 3उस शहर पर जो समुंदर की गुज़रगाह पर
वाक़े है और मुतअद्दिद साहिली क़ौमों से तिजारत
करता है। उससे कह,

‘रब फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी, तू अपने आप
पर बहुत फ़ख़र करके कहती है कि वाह, मेरा
हुस्न कमाल का है। 4और वाक़ई, तेरा इलाक़ा
समुंदर के बीच में ही है, और जिन्होंने तुझे तामीर
किया उन्होंने तेरे हुस्न को तकमील तक पहुँचाया,

5तुझे शानदार बहरी जहाज़ की मानिंद बनाया। तेरे तख़्ते सनीर में उगनेवाले जूनीपर के दरख़्तों से बनाए गए, तेरा मस्तूल लुबनान का देवदार का दरख़्त था। 6तेरे चप्पू बसन के बलूत के दरख़्तों से बनाए गए, जबकि तेरे फ़र्श के लिए क़ुबरुस से सरो की लकड़ी लाई गई, फिर उसे हाथीदाँत से आरास्ता किया गया। 7नफ़ीस कतान का तेरा रंगदार बादबान मिसर का था। वह तेरा इम्तियाज़ी निशान बन गया। तेरे तिरपालों का क़िरमिज़ी और अरग़वानी रंग इलीसा के साहिली इलाक़े से लाया गया।

8सैदा और अरवद के मर्द तेरे चप्पू मारते थे, सूर के अपने ही दाना तेरे मल्लाह थे। 9जबल[a] के बुज़ुर्ग और दानिशमंद आदमी ध्यान देते थे कि तेरी दर्ज़ें बंद रहें। तमाम बहरी जहाज़ अपने मल्लाहों समेत तेरे पास आया करते थे ताकि तेरे साथ तिजारत करें। 10फ़ारस, लुदिया और लिबिया के अफ़राद तेरी फ़ौज में ख़िदमत करते थे। तेरी दीवारों से लटकी उनकी ढालों और ख़ोदों ने तेरी शान मज़ीद बढ़ा दी। 11अरवद और ख़लक[b] के आदमी तेरी फ़सील का दिफ़ा करते थे, जम्माद के फ़ौजी तेरे बुर्जों में पहरादारी करते थे। तेरी दीवारों से लटकी हुई उनकी ढालों ने तेरे हुस्न को कमाल तक पहुँचा दिया।

12तू अमीर थी, तुझमें मालो-असबाब की कसरत की तिजारत की जाती थी। इसलिए तरसीस तुझे चाँदी, लोहा, टीन और सीसा देकर तुझसे सौदा करता था। 13यूनान, तूबल और मसक तुझसे तिजारत करते, तेरा माल ख़रीदकर मुआवज़े में ग़ुलाम और पीतल का सामान देते थे। 14बैत-तुजरमा के ताजिर तेरे माल के लिए तुझे आम घोड़े, फ़ौजी घोड़े और ख़च्चर पहुँचाते थे। 15ददान के आदमी तेरे साथ तिजारत करते थे, हाँ मुतअद्दिद साहिली इलाक़े तेरे गाहक थे। उनके साथ सौदाबाज़ी करके तुझे हाथीदाँत और आबनूस की लकड़ी मिलती थी। 16शाम तेरी पैदावार की कसरत की वजह से तेरे साथ तिजारत करता था। मुआवज़े में तुझे फ़ीरोज़ा, अरग़वानी रंग, रंगदार कपड़े, बारीक कतान, मूँगा और याक़ूत मिलता था। 17यहूदाह और इसराईल तेरे गाहक थे। तेरा माल ख़रीदकर वह तुझे मिन्नीत का गंदुम, पन्नग की टिक्कियाँ, शहद, ज़ैतून का तेल और बलसान देते थे। 18दमिश्क़ तेरी वाफ़िर पैदावार और माल की कसरत की वजह से तेरे साथ कारोबार करता था। उससे तुझे हलबून की मै और साहर की ऊन मिलती थी। 19विदान और यूनान तेरे गाहक थे। वह ऊज़ाल का ढाला हुआ लोहा, दारचीनी और कलमस का मसाला पहुँचाते थे। 20ददान से तिजारत करने से तुझे ज़ीनपोश मिलती थी। 21अरब और क़ीदार के तमाम हुक्मरान तेरे गाहक थे। तेरे माल के एवज़ वह भेड़ के बच्चे, मेंढे और बकरे देते थे। 22सबा और रामा के ताजिर तेरा माल हासिल करने के लिए तुझे बेहतरीन बलसान, हर क़िस्म के जवाहिर और सोना देते थे। 23हारान, कन्ना, अदन, सबा, असूर और कुल मादी सब तेरे साथ तिजारत करते थे। 24वह तेरे पास आकर तुझे शानदार लिबास, क़िरमिज़ी रंग की चादरें, रंगदार कपड़े और कम्बल, नीज़ मज़बूत रस्से पेश करते थे। 25तरसीस के उम्दा जहाज़ तेरा माल मुख़्तलिफ़ ममालिक में पहुँचाते थे। यों तू जहाज़ की मानिंद समुंदर के बीच में रहकर दौलत और शान से मालामाल हो गई। 26तेरे चप्पू चलानेवाले तुझे दूर दूर तक पहुँचाते हैं।

लेकिन वह वक़्त क़रीब है जब मशरिक़ से तेज़ आँधी आकर तुझे समुंदर के दरमियान ही टुकड़े टुकड़े कर देगी। 27जिस दिन तू गिर जाएगी उस दिन तेरी तमाम मिलकियत समुंदर के बीच में ही डूब जाएगी। तेरी दौलत, तेरा सौदा, तेरे मल्लाह, तेरे बहरी मुसाफ़िर, तेरी दर्ज़ें बंद रखनेवाले, तेरे ताजिर, तेरे तमाम फ़ौजी और बाक़ी जितने भी तुझ पर सवार हैं सबके सब ग़रक़ हो जाएंगे।

[a] Biblos

[b] ग़ालिबन Cilicia।

28तेरे मल्लाहों की चीख़ती-चिल्लाती आवाज़ें
सुनकर साहिली इलाक़े काँप उठेंगे। 29तमाम
चप्पू चलानेवाले, मल्लाह और बहरी मुसाफ़िर
अपने जहाज़ों से उतरकर साहिल पर खड़े हो
जाएंगे। 30वह ज़ोर से रो पड़ेंगे, बड़ी तलख़ी
से गिर्याओ-ज़ारी करेंगे। अपने सरों पर ख़ाक
डालकर वह राख में लोट-पोट हो जाएंगे। 31तेरी
ही वजह से वह अपने सरों को मुँडवाकर टाट का
लिबास ओढ़ लेंगे, वह बड़ी बेचैनी और तलख़ी
से तुझ पर मातम करेंगे। 32तब वह ज़ारो-क़तार
रोकर मातम का गीत गाएँगे,

“हाय, कौन समुंदर से घिरे हुए सूर की तरह
ख़ामोश हो गया है?”

33जब तिजारत का माल समुंदर की चारों तरफ़
से तुझ तक पहुँचता था तो तू मुतअद्दिद क़ौमों को
सेर करती थी। दुनिया के बादशाह तेरी दौलत और
तिजारती सामान की कसरत से अमीर हुए।

34अफ़सोस! अब तू पाश पाश होकर समुंदर
की गहराइयों में ग़ायब हो गई है। तेरा माल और
तेरे तमाम अफ़राद तेरे साथ डूब गए हैं।

35साहिली इलाक़ों में बसनेवाले घबरा गए हैं।
उनके बादशाहों के रोंगटे खड़े हो गए, उनके चेहरे
परेशान नज़र आते हैं।

36दीगर अक़वाम के ताजिर तुझे देखकर
“तौबा तौबा” कहते हैं। तेरा हौलनाक अंजाम
अचानक ही आ गया है। अब से तू कभी नहीं
उठेगी’।”

सूर के हुक्मरान के लिए पैग़ाम

28 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, सूर के हुक्मरान को बता,

‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तू मग़रूर
हो गया है। तू कहता है कि मैं ख़ुदा हूँ, मैं
समुंदर के दरमियान ही अपने तख़्ते-इलाही पर
बैठा हूँ। लेकिन तू ख़ुदा नहीं बल्कि इनसान
है, गो तू अपने आपको ख़ुदा-सा समझता है।
3बेशक तू अपने आपको दानियाल से कहीं ज़्यादा
दानिशमंद समझकर कहता है कि कोई भी भेद
मुझसे पोशीदा नहीं रहता। 4और यह हक़ीक़त
भी है कि तूने अपनी हिकमत और समझ से बहुत
दौलत हासिल की है, सोने और चाँदी से अपने
ख़ज़ानों को भर दिया है। 5बड़ी दानिशमंदी से तूने
तिजारत के ज़रीए अपनी दौलत बढ़ाई। लेकिन
जितनी तेरी दौलत बढ़ती गई उतना ही तेरा ग़ुरूर
भी बढ़ता गया।

6चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
चूँकि तू अपने आपको ख़ुदा-सा समझता है
7इसलिए मैं सबसे ज़ालिम क़ौमों को तेरे ख़िलाफ़
भेजूँगा जो अपनी तलवारों को तेरी ख़ूबसूरती
और हिकमत के ख़िलाफ़ खींचकर तेरी शानो-
शौकत की बेहुरमती करेंगी। 8वह तुझे पाताल में
उतारेंगी। समुंदर के बीच में ही तुझे मार डाला
जाएगा। 9क्या तू उस वक़्त अपने क़ातिलों से
कहेगा कि मैं ख़ुदा हूँ? हरगिज़ नहीं! अपने
क़ातिलों के हाथ में होते वक़्त तू ख़ुदा नहीं बल्कि
इनसान साबित होगा। 10तू अजनबियों के हाथों
नामख़तून की-सी वफ़ात पाएगा। यह मेरा, रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है’।”

11रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, 12“ऐ
आदमज़ाद, सूर के बादशाह पर मातमी गीत
गाकर उससे कह,

‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुझ
पर कामिलियत का ठप्पा था। तू हिक-
मत से भरपूर था, तेरा हुस्न कमाल का था।
13अल्लाह के बाग़े-अदन में रहकर तू हर क़िस्म
के जवाहिर से सजा हुआ था। लाल,[a] ज़बरजद,[b]
हजरुल-क़मर,[c] पुखराज,[d] अक़ीक़े-अहमर[e] और

[a]या एक क़िस्म का सुर्ख़ अक़ीक़। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अकसर जवाहिरात के नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरजुमा हो सकता है।

[b]peridot
[c]moonstone
[d]topas
[e]carnelian

यशब,[a] संगे-लाजवर्द,[b] फ़ीरोज़ा और ज़ुमुर्रद सब
तुझे आरास्ता करते थे। सब कुछ सोने के काम से
मज़ीद ख़ूबसूरत बनाया गया था। जिस दिन तुझे
ख़लक़ किया गया उसी दिन यह चीज़ें तेरे लिए
तैयार हुईं।

14मैंने तुझे अल्लाह के मुक़द्दस पहाड़ पर खड़ा
किया था। वहाँ तू करूबी फ़रिश्ते की हैसियत से
अपने पर फैलाए पहरादारी करता था, वहाँ तू
जलते हुए पत्थरों के दरमियान ही घुमता-फिरता
रहा।

15जिस दिन तुझे ख़लक़ किया गया तेरा
चाल-चलन बेइलज़ाम था, लेकिन अब तुझमें
नाइनसाफ़ी पाई गई है। 16तिजारत में कामयाबी
की वजह से तू ज़ुल्मो-तशद्दुद से भर गया और
गुनाह करने लगा।

यह देखकर मैंने तुझे अल्लाह के पहाड़ पर से
उतार दिया। मैंने तुझे जो पहरादारी करनेवाला
फ़रिश्ता था तबाह करके जलते हुए पत्थरों के
दरमियान से निकाल दिया। 17तेरी ख़ूबसूरती
तेरे लिए ग़ुरूर का बाइस बन गई, हाँ तेरी
शानो-शौकत ने तुझे इतना फुला दिया कि तेरी
हिकमत जाती रही। इसी लिए मैंने तुझे ज़मीन पर
पटख़कर दीगर बादशाहों के सामने तमाशा बना
दिया। 18अपने बेशुमार गुनाहों और बेइनसाफ़
तिजारत से तूने अपने मुक़द्दस मक़ामों की
बेहुरमती की है। जवाब में मैंने होने दिया कि आग
तेरे दरमियान से निकलकर तुझे भस्म करे। मैंने
तुझे तमाशा देखनेवाले तमाम लोगों के सामने ही
राख कर दिया। 19जितनी भी क़ौमें तुझे जानती
थीं उनके रोंगटे खड़े हो गए। तेरा हौलनाक अंजाम
अचानक ही आ गया है। अब से तू कभी नहीं
उठेगा'।"

सैदा को सज़ा दी जाएगी

20रब मुझसे हमकलाम हुआ, 21"ऐ
आदमज़ाद, सैदा की तरफ़ रुख़ करके उसके
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! 22रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि ऐ सैदा, मैं तुझसे निपट लूँगा।
तेरे दरमियान ही मैं अपना जलाल दिखाऊँगा।
तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ, क्योंकि मैं
शहर की अदालत करके अपना मुक़द्दस किरदार
उन पर ज़ाहिर करूँगा। 23मैं उसमें मोहलक वबा
फैलाकर उस की गलियों में ख़ून बहा दूँगा। उसे
चारों तरफ़ से तलवार घेर लेगी तो उसमें फँसे हुए
लोग हलाक हो जाएंगे। तब वह जान लेंगे कि मैं
ही रब हूँ।

इसराईल की बहाली

24इस वक़्त इसराईल के पड़ोसी उसे हक़ीर
जानते हैं। अब तक वह उसे चुभनेवाले ख़ार
और ज़ख़मी करनेवाले काँटे हैं। लेकिन आइंदा
ऐसा नहीं होगा। तब वह जान लेंगे कि मैं रब
क़ादिरे-मुतलक़ हूँ। 25क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि दीगर अक़वाम के देखते देखते
मैं ज़ाहिर करूँगा कि मैं मुक़द्दस हूँ। क्योंकि मैं
इसराईलियों को उन अक़वाम में से निकालकर
जमा करूँगा जहाँ मैंने उन्हें मुंतशिर कर दिया था।
तब वह अपने वतन में जा बसेंगे, उस मुल्क में जो
मैंने अपने ख़ादिम याक़ूब को दिया था। 26वह
हिफ़ाज़त से उसमें रहकर घर तामीर करेंगे और
अंगूर के बाग़ लगाएँगे। लेकिन जो पड़ोसी उन्हें
हक़ीर जानते थे उनकी मैं अदालत करूँगा। तब
वह जान लेंगे कि मैं रब उनका ख़ुदा हूँ।"

मिसर को सज़ा मिलेगी

29 यहूयाकीन बादशाह की जिला-
वतनी के दसवें साल में रब मुझसे
हमकलाम हुआ। दसवें महीने का 11वाँ दिन[c]
था। रब ने फ़रमाया, 2"ऐ आदमज़ाद, मिसर के
बादशाह फ़िरौन की तरफ़ रुख़ करके उसके और
तमाम मिसर के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर!

[a]jasper
[b]lapis lazuli
[c]7 जनवरी।

3उसे बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ शाहे-मिसर फ़िरौन, मैं तुझसे निपटने को हूँ।
बेशक तू एक बड़ा अज़दहा है जो दरियाए-नील
की मुख़्तलिफ़ शाख़ों के बीच में लेटा हुआ कहता
है कि यह दरिया मेरा ही है, मैंने ख़ुद उसे बनाया।
4लेकिन मैं तेरे मुँह में काँटे डालकर तुझे दरिया
से निकाल लाऊँगा। मेरे कहने पर तेरी नदियों
की तमाम मछलियाँ तेरे छिलकों के साथ लगकर
तेरे साथ पकड़ी जाएँगी। 5मैं तुझे इन तमाम
मछलियों समेत रेगिस्तान में फेंक छोड़ूँगा। तू खुले
मैदान में गिरकर पड़ा रहेगा। न कोई तुझे इकट्ठा
करेगा, न जमा करेगा बल्कि मैं तुझे दरिंदों और
परिंदों को खिला दूँगा। 6तब मिसर के तमाम
बाशिंदे जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

तू इसराईल के लिए सरकंडे की कच्ची छड़ी
साबित हुआ है। 7जब उन्होंने तुझे पकड़ने की
कोशिश की तो तूने टुकड़े टुकड़े होकर उनके
कंधे को ज़ख़मी कर दिया। जब उन्होंने अपना
पूरा वज़न तुझ पर डाला तो तू टूट गया, और
उनकी कमर डाँवाँडोल हो गई। 8इसलिए रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तेरे ख़िलाफ़
तलवार भेजूँगा जो मुल्क में से इनसानो-हैवान
मिटा डालेगी। 9मुल्के-मिसर वीरानो-सुनसान हो
जाएगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

चूँकि तूने दावा किया, “दरियाए-नील मेरा ही
है, मैंने ख़ुद उसे बनाया” 10इसलिए मैं तुझसे
और तेरी नदियों से निपट लूँगा। मिसर में हर
तरफ़ खंडरात नज़र आएँगे। शिमाल में मिजदाल
से लेकर जुनूबी शहर असवान बल्कि एथोपिया
की सरहद तक मैं मिसर को वीरानो-सुनसान
कर दूँगा। 11न इनसान और न हैवान का पाँव
उसमें से गुज़रेगा। चालीस साल तक उसमें कोई
नहीं बसेगा। 12इर्दगिर्द के दीगर तमाम ममालिक
की तरह मैं मिसर को भी उजाड़ूँगा, इर्दगिर्द के
दीगर तमाम शहरों की तरह मैं मिसर के शहर भी
मलबे के ढेर बना दूँगा। चालीस साल तक उनकी
यही हालत रहेगी। साथ साथ मैं मिसरियों को
मुख़्तलिफ़ अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर कर
दूँगा।

13लेकिन रब क़ादिरे-मुतलक़ यह भी फ़रमाता
है कि चालीस साल के बाद मैं मिसरियों को
उन ममालिक से निकालकर जमा करूँगा जहाँ
मैंने उन्हें मुंतशिर कर दिया था। 14मैं मिसर को
बहाल करके उन्हें उनके आबाई वतन यानी जुनूबी
मिसर में वापस लाऊँगा। वहाँ वह एक ग़ैरअहम
सलतनत क़ायम करेंगे 15जो बाक़ी ममालिक की
निसबत छोटी होगी। आइंदा वह दीगर क़ौमों पर
अपना रोब नहीं डालेंगे। मैं ख़ुद ध्यान दूँगा कि
वह आइंदा इतने कमज़ोर रहें कि दीगर क़ौमों पर
हुकूमत न कर सकें। 16आइंदा इसराईल न मिसर
पर भरोसा करने और न उससे लिपट जाने की
आज़माइश में पड़ेगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब क़ादिरे-मुतलक़ हूँ’।”

शाहे-बाबल को मिसर मिलेगा

17यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
27वें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ।
पहले महीने का पहला दिन[a] था। उसने
फ़रमाया, 18“ऐ आदमज़ाद, जब शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र ने सूर का मुहासरा किया तो उस
की फ़ौज को सख़्त मेहनत करनी पड़ी। हर सर
गंजा हुआ, हर कंधे की जिल्द छिल गई। लेकिन न
उसे और न उस की फ़ौज को मेहनत का मुनासिब
अज्र मिला।

19इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैं शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र को मिसर दे दूँगा।
उस की दौलत को वह उठाकर ले जाएगा। अपनी
फ़ौज को पैसे देने के लिए वह मिसर को लूट
लेगा। 20चूँकि नबूकदनज़्ज़र और उस की फ़ौज
ने मेरे लिए ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त की इसलिए
मैंने उसे मुआवज़े के तौर पर मिसर दे दिया है।
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

[a]26 अप्रैल।

21जब यह कुछ पेश आएगा तो मैं इसराईल को नई ताक़त दूँगा। ऐ हिज़क़ियेल, उस वक़्त मैं तेरा मुँह खोल दूँगा, और तू दुबारा उनके दरमियान बोलेगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

मिसर की ताक़त ख़त्म हो जाएगी

30 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके यह पैग़ाम सुना दे,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि आहो-ज़ारी करो! उस दिन पर अफ़सोस 3जो आनेवाला है। क्योंकि रब का दिन क़रीब ही है। उस दिन घने बादल छा जाएंगे, और मैं अक़वाम की अदालत करूँगा। 4मिसर पर तलवार नाज़िल होकर वहाँ के बाशिंदों को मार डालेगी। मुल्क की दौलत छीन ली जाएगी, और उस की बुनियादों को ढा दिया जाएगा। यह देखकर एथोपिया लरज़ उठेगा, 5क्योंकि उसके लोग भी तलवार की ज़द में आ जाएंगे। कई क़ौमों के अफ़राद मिसरियों के साथ हलाक हो जाएंगे। एथोपिया के, लिबिया के, लुदिया के, मिसर में बसनेवाले तमाम अजनबी क़ौमों के, कूब के और मेरे अहद की क़ौम इसराईल के लोग हलाक हो जाएंगे। 6रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मिसर को सहारा देनेवाले सब गिर जाएंगे, और जिस ताक़त पर वह फ़ख़र करता है वह जाती रहेगी। शिमाल में मिजदाल से लेकर जुनूबी शहर असवान तक उन्हें तलवार मार डालेगी। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है। 7इर्दगिर्द के दीगर ममालिक की तरह मिसर भी वीरानो-सुनसान होगा, इर्दगिर्द के दीगर शहरों की तरह उसके शहर भी मलबे के ढेर होंगे। 8जब मैं मिसर में यों आग लगाकर उसके मददगारों को कुचल डालूँगा तो लोग जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

9अब तक एथोपिया अपने आपको महफ़ूज़ समझता है, लेकिन उस दिन मेरी तरफ़ से क़ासिद निकलकर उस मुल्क के बाशिंदों को ऐसी ख़बर पहुँचाएँगे जिससे वह थरथरा उठेंगे। क्योंकि क़ासिद कश्तियों में बैठकर दरियाए-नील के ज़रीए उन तक पहुँचेंगे और उन्हें इत्तला देंगे कि मिसर तबाह हो गया है। यह सुनकर वहाँ के लोग काँप उठेंगे। यक़ीन करो, यह दिन जल्द ही आनेवाला है। 10रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र के ज़रीए मैं मिसर की शानो-शौकत छीन लूँगा। 11उसे फ़ौज समेत मिसर में लाया जाएगा ताकि उसे तबाह करे। तब अक़वाम में से सबसे ज़ालिम यह लोग अपनी तलवारों को चलाकर मुल्क को मक़तूलों से भर देंगे। 12मैं दरियाए-नील की शाख़ों को ख़ुश्क करूँगा और मिसर को फ़रोख़्त करके शरीर आदमियों के हवाले कर दूँगा। परदेसियों के ज़रीए मैं मुल्क और जो कुछ भी उसमें है तबाह कर दूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

13रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं मिसरी बुतों को बरबाद करूँगा और मेंफ़िस के मुजस्समे हटा दूँगा। मिसर में हुक्मरान नहीं रहेगा, और मैं मुल्क पर ख़ौफ़ तारी करूँगा। 14मेरे हुक्म पर जुनूबी मिसर बरबाद और ज़ुअन नज़रे-आतिश होगा। मैं थीबस की अदालत 15और मिसरी क़िले पलूसियम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। हाँ, थीबस की शानो-शौकत नेस्तो-नाबूद हो जाएगी। 16मैं मिसर को नज़रे-आतिश करूँगा। तब पलूसियम दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाएगा, थीबस दुश्मन के क़ब्ज़े में आएगा और मेंफ़िस मुसलसल मुसीबत में फँसा रहेगा। 17दुश्मन की तलवार हीलियोपुलिस और बूबस्तिस के जवानों को मार डालेगी जबकि बची हुई औरतें ग़ुलाम बनकर जिलावतन हो जाएँगी। 18तहफ़नहीस में दिन तारीक हो जाएगा जब मैं वहाँ मिसर के जुए को तोड़ दूँगा। वहीं उस की ज़बरदस्त ताक़त जाती रहेगी। घना बादल शहर पर छा जाएगा, और गिर्दो-नवाह की आबादियाँ क़ैदी बनकर जिलावतन हो जाएँगी। 19यों मैं मिसर की अदालत करूँगा और वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ'।"

20यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के ग्यारहवें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। पहले

महीने का सातवाँ दिन[a] था। उसने फ़रमाया था,
21“ऐ आदमज़ाद, मैंने मिसरी बादशाह फ़िरौन
का बाज़ू तोड़ डाला है। शफ़ा पाने के लिए लाज़िम
था कि बाज़ू पर पट्टी बाँधी जाए, कि टूटी हुई हड्डी
के साथ खपच्ची बाँधी जाए ताकि बाज़ू मज़बूत
होकर तलवार चलाने के क़ाबिल हो जाए। लेकिन
इस क़िस्म का इलाज हुआ नहीं।

22चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
मिसरी बादशाह फ़िरौन से निपटकर उसके दोनों
बाज़ुओं को तोड़ डालूँगा, सेहतमंद बाज़ू को भी
और टूटे हुए को भी। तब तलवार उसके हाथ से
गिर जाएगी 23और मैं मिसरियों को मुख़्तलिफ़
अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा।

24मैं शाहे-बाबल के बाज़ुओं को तक़वियत
देकर उसे अपनी ही तलवार पकड़ा दूँगा। लेकिन
फ़िरौन के बाज़ुओं को मैं तोड़ डालूँगा, और वह
शाहे-बाबल के सामने मरनेवाले ज़ख़मी आदमी
की तरह कराह उठेगा। 25शाहे-बाबल के बाज़ुओं
को मैं तक़वियत दूँगा जबकि फ़िरौन के बाज़ू
बेहिसो-हरकत हो जाएंगे। जिस वक़्त मैं अपनी
तलवार को शाहे-बाबल को पकड़ा दूँगा और
वह उसे मिसर के ख़िलाफ़ चलाएगा उस वक़्त
लोग जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 26हाँ, जिस
वक़्त मैं मिसरियों को दीगर अक़वामो-ममालिक
में मुंतशिर कर दूँगा उस वक़्त वह जान लेंगे कि
मैं ही रब हूँ।”

मिसरी दरख़्त धड़ाम से गिर जाएगा

31 यहूयाकीन बादशाह की जिला-
वतनी के ग्यारहवें साल में रब मुझसे
हमकलाम हुआ। तीसरे महीने का पहला दिन[b]
था। उसने फ़रमाया, 2“ऐ आदमज़ाद, मिसरी
बादशाह फ़िरौन और उस की शानो-शौकत से
कह,

‘कौन तुझ जैसा अज़ीम था? 3तू सरो
का दरख़्त, लुबनान का देवदार का दरख़्त था,
जिसकी ख़ूबसूरत और घनी शाख़ें जंगल को
साया देती थीं। वह इतना बड़ा था कि उस की
चोटी बादलों में ओझल थी। 4पानी की कसरत ने
उसे इतनी तरक़्क़ी दी, गहरे चश्मों ने उसे बड़ा
बना दिया। उस की नदियाँ तने के चारों तरफ़
बहती थीं और फिर आगे जाकर खेत के बाक़ी
तमाम दरख़्तों को भी सेराब करती थीं। 5चुनाँचे
वह दीगर दरख़्तों से कहीं ज़्यादा बड़ा था। उस
की शाख़ें बढ़ती और उस की टहनियाँ लंबी होती
गईं। वाफ़िर पानी के बाइस वह ख़ूब फैलता गया।
6तमाम परिंदे अपने घोंसले उस की शाख़ों में
बनाते थे। उस की शाख़ों की आड़ में जंगली
जानवरों के बच्चे पैदा होते, उसके साये में तमाम
अज़ीम क़ौमें बसती थीं। 7चूँकि दरख़्त की जड़ों
को पानी की कसरत मिलती थी इसलिए उस की
लंबाई और शाख़ें क़ाबिले-तारीफ़ और ख़ूबसूरत
बन गईं। 8बाग़े-ख़ुदा के देवदार के दरख़्त उसके
बराबर नहीं थे। न जूनीपर की टहनियाँ, न चनार
की शाख़ें उस की शाख़ों के बराबर थीं। बाग़े-
ख़ुदा में कोई भी दरख़्त उस की ख़ूबसूरती का
मुक़ाबला नहीं कर सकता था। 9मैंने ख़ुद उसे
मुतअद्दिद डालियाँ मुहैया करके ख़ूबसूरत बनाया
था। अल्लाह के बाग़े-अदन के तमाम दीगर दरख़्त
उससे रश्क खाते थे।

10लेकिन अब रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़र-
माता है कि जब दरख़्त इतना बड़ा हो गया कि
उस की चोटी बादलों में ओझल हो गई तो वह
अपने क़द पर फ़ख़र करके मग़रूर हो गया।

11यह देखकर मैंने उसे अक़वाम के सबसे बड़े
हुक्मरान के हवाले कर दिया ताकि वह उस की
बेदीनी के मुताबिक़ उससे निपट ले। मैंने उसे
निकाल दिया, 12तो अजनबी अक़वाम के सबसे
ज़ालिम लोगों ने उसे टुकड़े टुकड़े करके ज़मीन
पर छोड़ दिया। तब उस की शाख़ें पहाड़ों पर और
तमाम वादियों में गिर गईं, उस की टहनियाँ टूटकर
मुल्क की तमाम घाटियों में पड़ी रहीं। दुनिया
की तमाम अक़वाम उसके साये में से निकलकर

[a]29 अप्रैल।

[b]21 जून।

वहाँ से चली गईं। 13तमाम परिंदे उसके कटे हुए तने पर बैठ गए, तमाम जंगली जानवर उस की सूखी हुई शाख़ों पर लेट गए। 14यह इसलिए हुआ कि आइंदा पानी के किनारे पर लगा कोई भी दरख़्त इतना बड़ा न हो कि उस की चोटी बादलों में ओझल हो जाए और नतीजतन वह अपने आपको दूसरों से बरतर समझे। क्योंकि सबके लिए मौत और ज़मीन की गहराइयाँ मुक़र्रर हैं, सबको पाताल में उतरकर मुरदों के दरमियान बसना है।

15रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस वक़्त यह दरख़्त पाताल में उतर गया उस दिन मैंने गहराइयों के चश्मों को उस पर मातम करने दिया और उनकी नदियों को रोक दिया ताकि पानी इतनी कसरत से न बहे। उस की ख़ातिर मैंने लुबनान को मातमी लिबास पहनाए। तब खुले मैदान के तमाम दरख़्त मुरझा गए। 16वह इतने धड़ाम से गिर गया जब मैंने उसे पाताल में उनके पास उतार दिया जो गढ़े में उतर चुके थे कि दीगर अक़वाम को धच्का लगा। लेकिन बाग़े-अदन के बाक़ी तमाम दरख़्तों को तसल्ली मिली। क्योंकि गो लुबनान के इन चीदा और बेहतरीन दरख़्तों को पानी की कसरत मिलती रही थी ताहम यह भी पाताल में उतर गए थे। 17गो यह बड़े दरख़्त की ताक़त रहे थे और अक़वाम के दरमियान रहकर उसके साये में अपना घर बना लिया था तो भी यह बड़े दरख़्त के साथ वहाँ उतर गए जहाँ मक़तूल उनके इंतज़ार में थे।

18ऐ मिसर, अज़मत और शान के लिहाज़ से बाग़े-अदन का कौन-सा दरख़्त तेरा मुक़ाबला कर सकता है? लेकिन तुझे बाग़े-अदन के दीगर दरख़्तों के साथ ज़मीन की गहराइयों में उतारा जाएगा। वहाँ तू नामख़तूनों और मक़तूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यही फ़िरौन और उस की शानो-शौकत का अंजाम होगा’।”

अज़दहे फ़िरौन को मारा जाएगा

32 यहूयाकीन बादशाह के 12वें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। 12वें महीने का पहला दिन[a] था। मुझे यह पैग़ाम मिला, 2“ऐ आदमज़ाद, मिसर के बादशाह फ़िरौन पर मातमी गीत गाकर उसे बता,

‘गो अक़वाम के दरमियान तुझे जवान शेरबबर समझा जाता है, लेकिन दर-हक़ीक़त तू दरियाए-नील की शाख़ों में रहनेवाला अज़दहा है जो अपनी नदियों को उबलने देता और पाँवों से पानी को ज़ोर से हरकत में लाकर गदला कर देता है।

3रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं मुतअद्दिद क़ौमों को जमा करके तेरे पास भेजूँगा ताकि तुझ पर जाल डालकर तुझे पानी से खींच निकालें। 4तब मैं तुझे ज़ोर से ख़ुश्की पर पटख़ दूँगा, खुले मैदान पर ही तुझे फेंक छोड़ूँगा। तमाम परिंदे तुझ पर बैठ जाएंगे, तमाम जंगली जानवर तुझे खा खाकर सेर हो जाएंगे। 5तेरा गोश्त मैं पहाड़ों पर फेंक दूँगा, तेरी लाश से वादियों को भर दूँगा। 6तेरे बहते ख़ून से मैं ज़मीन को पहाड़ों तक सेराब करूँगा, घाटियाँ तुझसे भर जाएँगी।

7जिस वक़्त मैं तेरी ज़िंदगी की बत्ती बुझा दूँगा उस वक़्त मैं आसमान को ढाँप दूँगा। सितारे तारीक हो जाएंगे, सूरज बादलों में छुप जाएगा और चाँद की रौशनी नज़र नहीं आएगी। 8जो कुछ भी आसमान पर चमकता-दमकता है उसे मैं तेरे बाइस तारीक कर दूँगा। तेरे पूरे मुल्क पर तारीकी छा जाएगी। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

9बहुत क़ौमों के दिल घबरा जाएंगे जब मैं तेरे अंजाम की ख़बर दीगर अक़वाम तक पहुँचाऊँगा, ऐसे ममालिक तक जिनसे तू नावाक़िफ़ है। 10मुतअद्दिद क़ौमों के सामने ही मैं तुझ पर तलवार चला दूँगा। यह देखकर उन पर दहशत तारी हो जाएगी, और उनके बादशाहों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। जिस दिन तू धड़ाम से गिर जाएगा

---
[a]3 मार्च।

उस दिन उन पर मरने का इतना ख़ौफ़ छा जाएगा
कि वह बार बार काँप उठेंगे।
11क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
शाहे-बाबल की तलवार तुझ पर हमला करेगी।
12तेरी शानदार फ़ौज उसके सूरमाओं की तलवार
से गिरकर हलाक हो जाएगी। दुनिया के सबसे
ज़ालिम आदमी मिसर का ग़ुरूर और उस की
तमाम शानो-शौकत ख़ाक में मिला देंगे। 13मैं
वाफ़िर पानी के पास खड़े उसके मवेशी को भी
बरबाद करूँगा। आइंदा यह पानी न इनसान, न
हैवान के पाँवों से गदला होगा। 14रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि उस वक़्त मैं होने दूँगा कि
उनका पानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ हो जाए और नदियाँ
तेल की तरह बहने लगें। 15मैं मिसर को वीरानो-
सुनसान करके हर चीज़ से महरूम करूँगा, मैं
उसके तमाम बाशिंदों को मार डालूँगा। तब वह
जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ'।"
16रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, "ला-
ज़िम है कि दर्जे-बाला मातमी गीत को गाया जाए।
दीगर अक़वाम उसे गाएँ, वह मिसर और उस की
शानो-शौकत पर मातम का यह गीत ज़रूर गाएँ।"

पाताल में दीगर अक़वाम मिसर के इंतज़ार में हैं

17यहूयाकीन बादशाह के 12वें साल में रब
मुझसे हमकलाम हुआ। महीने का 15वाँ दिन
था। उसने फ़रमाया, 18"ऐ आदमज़ाद, मिसर की
शानो-शौकत पर वावैला कर। उसे दीगर अज़ीम
अक़वाम के साथ पाताल में उतार दे। उसे उनके
पास पहुँचा दे जो पहले गढ़े में पहुँच चुके हैं।
19मिसर को बता,

'अब तेरी ख़ूबसूरती कहाँ गई? अब तू इसमें
किसका मुक़ाबला कर सकता है? उतर जा!
पाताल में नामख़तूनों के पास ही पड़ा रह।'
20क्योंकि लाज़िम है कि मिसरी मक़तूलों के बीच
में ही गिरकर हलाक हो जाएँ। तलवार उन पर
हमला करने के लिए खींची जा चुकी है। अब
मिसर को उस की तमाम शानो-शौकत के साथ
घसीटकर पाताल में ले जाओ! 21तब पाताल
में बड़े सूरमे मिसर और उसके मददगारों का
इस्तक़बाल करके कहेंगे, 'लो, अब यह भी उतर
आए हैं, यह भी यहाँ पड़े नामख़तूनों और मक़तूलों
में शामिल हो गए हैं।'
22वहाँ असूर पहले से अपनी पूरी फ़ौज समेत
पड़ा है, और उसके इर्दगिर्द तलवार के मक़तूलों
की क़ब्रें हैं। 23असूर को पाताल के सबसे गहरे
गढ़े में क़ब्रें मिल गईं, और इर्दगिर्द उस की फ़ौज
दफ़न हुई है। पहले यह ज़िंदों के मुल्क में चारों
तरफ़ दहशत फैलाते थे, लेकिन अब ख़ुद तलवार
से हलाक हो गए हैं।
24वहाँ ऐलाम भी अपनी तमाम शानो-शौकत
समेत पड़ा है। उसके इर्दगिर्द दफ़न हुए फ़ौजी
तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब उतरकर
नामख़तूनों में शामिल हो गए हैं, गो ज़िंदों के
मुल्क में लोग उनसे शदीद दहशत खाते थे। अब
वह भी पाताल में उतरे हुए दीगर लोगों की तरह
अपनी रुसवाई भुगत रहे हैं। 25ऐलाम का बिस्तर
मक़तूलों के दरमियान ही बिछाया गया है, और
उसके इर्दगिर्द उस की तमाम शानदार फ़ौज को
क़ब्रें मिल गई हैं। सब नामख़तून, सब मक़तूल
हैं, गो ज़िंदों के मुल्क में लोग उनसे सख़्त दहशत
खाते थे। अब वह भी पाताल में उतरे हुए दीगर
लोगों की तरह अपनी रुसवाई भुगत रहे हैं। उन्हें
मक़तूलों के दरमियान ही जगह मिल गई है।
26वहाँ मसक-तूबल भी अपनी तमाम शानो-
शौकत समेत पड़ा है। उसके इर्दगिर्द दफ़न हुए
फ़ौजी तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब
नामख़तूनों में शामिल हो गए हैं, गो ज़िंदों के मुल्क
में लोग उनसे शदीद दहशत खाते थे। 27और उन्हें
उन सूरमाओं के पास जगह नहीं मिली जो क़दीम
ज़माने में नामख़तूनों के दरमियान फ़ौत होकर
अपने हथियारों के साथ पाताल में उतर आए थे
और जिनके सरों के नीचे तलवार रखी गई। उनका
क़ुसूर उनकी हड्डियों पर पड़ा रहता है, गो ज़िंदों के
मुल्क में लोग इन जंगजुओं से दहशत खाते थे।

28ऐ फ़िरौन, तू भी पाश पाश होकर नामख़तूनों और मक़तूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। 29अदोम पहले से अपने बादशाहों और रईसों समेत वहाँ पहुँच चुका होगा। गो वह पहले इतने ताक़तवर थे, लेकिन अब मक़तूलों में शामिल हैं, उन नामख़तूनों में जो पाताल में उतर गए हैं। 30इस तरह शिमाल के तमाम हुक्मरान और सैदा के तमाम बाशिंदे भी वहाँ आ मौजूद होंगे। वह भी मक़तूलों के साथ पाताल में उतर गए हैं। गो उनकी ज़बरदस्त ताक़त लोगों में दहशत फैलाती थी, लेकिन अब वह शरमिंदा हो गए हैं, अब वह नामख़तून हालत में मक़तूलों के साथ पड़े हैं। वह भी पाताल में उतरे हुए बाक़ी लोगों के साथ अपनी रुसवाई भुगत रहे हैं।

31तब फ़िरौन इन सबको देखकर तसल्ली पाएगा, गो उस की तमाम शानो-शौकत पाताल में उतर गई होगी। रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि फ़िरौन और उस की पूरी फ़ौज तलवार की ज़द में आ जाएंगे।

32पहले मेरी मरज़ी थी कि फ़िरौन ज़िंदों के मुल्क में ख़ौफ़ो-हिरास फैलाए, लेकिन अब उसे उस की तमाम शानो-शौकत के साथ नामख़तूनों और मक़तूलों के दरमियान रखा जाएगा। यह मेरा रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।”

हिज़क़ियेल इसराईल का पहरेदार है

33 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ आदमज़ाद, अपने हमवतनों को यह पैग़ाम पहुँचा दे,

‘जब कभी मैं किसी मुल्क में जंग छेड़ता हूँ तो उस मुल्क के बाशिंदे अपने मर्दों में से एक को चुनकर अपना पहरेदार बना लेते हैं। 3पहरेदार की ज़िम्मेदारी यह है कि ज्योंही दुश्मन नज़र आए त्योंही नरसिंगा बजाकर लोगों को आगाह करे। 4उस वक़्त जो नरसिंगे की आवाज़ सुनकर परवा न करे वह ख़ुद ज़िम्मेदार ठहरेगा अगर दुश्मन उस पर हमला करके उसे क़त्ल करे। 5यह उसका अपना क़ुसूर होगा, क्योंकि उसने नरसिंगे की आवाज़ सुनने के बावुजूद परवा न की। लेकिन अगर वह पहरेदार की ख़बर मान ले तो अपनी जान को बचाएगा।

6अब फ़र्ज़ करो कि पहरेदार दुश्मन को देखे लेकिन न नरसिंगा बजाए, न लोगों को आगाह करे। अगर नतीजे में कोई क़त्ल हो जाए तो वह अपने गुनाहों के बाइस ही मर जाएगा। लेकिन मैं पहरेदार को उस की मौत का ज़िम्मेदार ठहराऊँगा।’

7ऐ आदमज़ाद, मैंने तुझे इसराईली क़ौम की पहरादारी करने की ज़िम्मेदारी दी है। इसलिए लाज़िम है कि जब भी मैं कुछ फ़रमाऊँ तो तू मेरी सुनकर इसराईलियों को मेरी तरफ़ से आगाह करे। 8अगर मैं किसी बेदीन को बताना चाहूँ, ‘तू यक़ीनन मरेगा’ तो लाज़िम है कि तू उसे यह सुनाकर उस की ग़लत राह से आगाह करे। अगर तू ऐसा न करे तो गो बेदीन अपने गुनाहों के बाइस ही मरेगा ताहम मैं तुझे ही उस की मौत का ज़िम्मेदार ठहराऊँगा। 9लेकिन अगर तू उसे उस की ग़लत राह से आगाह करे और वह न माने तो वह अपने गुनाहों के बाइस मरेगा, लेकिन तूने अपनी जान को बचाया होगा।

तौबा करो!

10ऐ आदमज़ाद, इसराईलियों को बता, तुम आहें भर भरकर कहते हो, ‘हाय हम अपने जरायम और गुनाहों के बाइस गल-सड़कर तबाह हो रहे हैं। हम किस तरह जीते रहें?’ 11लेकिन रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मेरी हयात की क़सम, मैं बेदीन की मौत से ख़ुश नहीं होता बल्कि मैं चाहता हूँ कि वह अपनी ग़लत राह से हटकर ज़िंदा रहे। चुनाँचे तौबा करो! अपनी ग़लत राहों को तर्क करके वापस आओ! ऐ इसराईली क़ौम, क्या ज़रूरत है कि तू मर जाए?’

12ऐ आदमज़ाद, अपने हमवतनों को बता,

‘अगर रास्तबाज़ ग़लत काम करे तो यह बात उसे नहीं बचाएगी कि पहले रास्तबाज़ था। अगर वह गुनाह करे तो उसे ज़िंदा नहीं छोड़ा जाएगा।

इसके मुक़ाबले में अगर बेदीन अपनी बेदीनी से तौबा करके वापस आए तो यह बात उस की तबाही का बाइस नहीं बनेगी कि पहले बेदीन था।’ 13हो सकता है मैं रास्तबाज़ को बताऊँ, ‘तू ज़िंदा रहेगा।’ अगर वह यह सुनकर समझने लगे, ‘मेरी रास्तबाज़ी मुझे हर सूरत में बचाएगी’ और नतीजे में ग़लत काम करे तो मैं उसके तमाम रास्त कामों का लिहाज़ नहीं करूँगा बल्कि उसके ग़लत काम के बाइस उसे सज़ाए-मौत दूँगा। 14लेकिन फ़र्ज़ करो मैं किसी बेदीन आदमी को बताऊँ, ‘तू यक़ीनन मरेगा।’ हो सकता है वह यह सुनकर अपने गुनाह से तौबा करके इनसाफ़ और रास्तबाज़ी करने लगे। 15वह अपने क़र्ज़दार को वह कुछ वापस करे जो ज़मानत के तौर पर मिला था, वह चोरी हुई चीज़ें वापस कर दे, वह ज़िंदगीबख़्श हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे, ग़रज़ वह हर बुरे काम से गुरेज़ करे। इस सूरत में वह मरेगा नहीं बल्कि ज़िंदा ही रहेगा। 16जो भी गुनाह उससे सरज़द हुए थे वह मैं याद नहीं करूँगा। चूँकि उसने बाद में वह कुछ किया जो मुंसिफ़ाना और रास्त था इसलिए वह यक़ीनन ज़िंदा रहेगा।

17तेरे हमवतन एतराज़ करते हैं कि रब का सुलूक सहीह नहीं है जबकि उनका अपना सुलूक सहीह नहीं है। 18अगर रास्तबाज़ अपना रास्त चाल-चलन छोड़कर बदी करने लगे तो उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी। 19इसके मुक़ाबले में अगर बेदीन अपना बेदीन चाल-चलन छोड़कर वह कुछ करने लगे जो मुंसिफ़ाना और रास्त है तो वह इस बिना पर ज़िंदा रहेगा।

20ऐ इसराईलियो, तुम दावा करते हो कि रब का सुलूक सहीह नहीं है। लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! तुम्हारी अदालत करते वक़्त मैं हर एक के चाल-चलन का ख़याल करूँगा।”

यरूशलम पर दुश्मन के क़ब्ज़े की ख़बर

21यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के 12वें साल में एक आदमी मेरे पास आया। 10वें महीने का पाँचवाँ दिन[a] था। यह आदमी यरूशलम से भाग निकला था। उसने कहा, “यरूशलम दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है!”

22एक दिन पहले रब का हाथ शाम के वक़्त मुझ पर आया था, और अगले दिन जब यह आदमी सुबह के वक़्त पहुँचा तो रब ने मेरे मुँह को खोल दिया, और मैं दुबारा बोल सका।

बचे हुए इसराईली अपने आप पर ग़लत एतमाद करते हैं

23रब मुझसे हमकलाम हुआ, 24“ऐ आदमज़ाद, मुल्के-इसराईल के खंडरात में रहनेवाले लोग कह रहे हैं, ‘गो इब्राहीम सिर्फ़ एक आदमी था तो भी उसने पूरे मुल्क पर क़ब्ज़ा किया। उस की निसबत हम बहुत हैं, इसलिए लाज़िम है कि हमें यह मुल्क हासिल हो।’ 25उन्हें बता,

‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम गोश्त खाते हो जिसमें ख़ून है, तुम्हारे हाँ बुतपरस्ती और ख़ूनरेज़ी आम है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल हो सकता है? 26तुम अपनी तलवार पर भरोसा रखकर क़ाबिले-घिन हरकतें करते हो, हत्ता कि हर एक अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करता है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल हो सकता है?’

27उन्हें बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, जो इसराईल के खंडरात में रहते हैं वह तलवार की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे, जो बचकर खुले मैदान में जा बसे हैं उन्हें मैं दरिंदों को खिला दूँगा, और जिन्होंने पहाड़ी क़िलों और ग़ारों में पनाह ली है वह मोहलक बीमारियों का शिकार हो जाएंगे। 28मैं मुल्क को वीरानो-सुनसान कर दूँगा। जिस ताक़त पर वह फ़ख़र करते हैं वह जाती रहेगी। इसराईल

[a]8 जनवरी।

का पहाड़ी इलाक़ा भी इतना तबाह हो जाएगा
कि लोग उसमें से गुज़रने से गुरेज़ करेंगे। 29फिर
जब मैं मुल्क को उनकी मकरूह हरकतों के बाइस
वीरानो-सुनसान कर दूँगा तब वह जान लेंगे कि मैं
ही रब हूँ।'

जिलावतन इसराईलियों की बेपरवाई

30ऐ आदमज़ाद, तेरे हमवतन अपने घरों की
दीवारों और दरवाज़ों के पास खड़े होकर तेरा
ज़िक्र करते हैं। वह कहते हैं, 'आओ, हम नबी के
पास जाकर वह पैग़ाम सुनें जो रब की तरफ़ से
आया है।' 31लेकिन गो इन लोगों के हुजूम आकर
तेरे पैग़ामात सुनने के लिए तेरे सामने बैठ जाते
हैं तो भी वह उन पर अमल नहीं करते। क्योंकि
उनकी ज़बान पर इश्क़ के ही गीत हैं। उन्हीं पर
वह अमल करते हैं, जबकि उनका दिल नारवा
नफ़ा के पीछे पड़ा रहता है। 32असल में वह तेरी
बातें यों सुनते हैं जिस तरह किसी गुलूकार के
गीत जो महारत से साज़ बजाकर सुरीली आवाज़
से इश्क़ के गीत गाए। गो वह तेरी बातें सुनकर
ख़ुश हो जाते हैं तो भी उन पर अमल नहीं करते।
33लेकिन यक़ीनन एक दिन आनेवाला है जब वह
जान लेंगे कि हमारे दरमियान नबी रहा है।"

इसराईल के बेपरवा गल्लाबान

34 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"ऐ
आदमज़ाद, इसराईल के गल्ला-
बानों के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! उन्हें बता,
'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस-
राईल के गल्लाबानों पर अफ़सोस जो सिर्फ़
अपनी ही फ़िकर करते हैं। क्या गल्लाबान को
रेवड़ की फ़िकर नहीं करनी चाहिए? 3तुम भेड़-
बकरियों का दूध पीते, उनकी ऊन के कपड़े
पहनते और बेहतरीन जानवरों का गोश्त खाते
हो। तो भी तुम रेवड़ की देख-भाल नहीं करते!
4न तुमने कमज़ोरों को तक़वियत, न बीमारों को
शफ़ा दी या ज़ख़मियों की मरहम-पट्टी की। न तुम
आवारा फिरनेवालों को वापस लाए, न गुमशुदा
जानवरों को तलाश किया बल्कि सख़्ती और
ज़ालिमाना तरीक़े से उन पर हुकूमत करते रहे।
5गल्लाबान न होने की वजह से भेड़-बकरियाँ
तित्तर-बित्तर होकर दरिंदों का शिकार हो गईं।
6मेरी भेड़-बकरियाँ तमाम पहाड़ों और बुलंद
जगहों पर आवारा फिरती रहीं। सारी ज़मीन पर
वह मुंतशिर हो गईं, और कोई नहीं था जो उन्हें
ढूँडकर वापस लाता।
7चुनाँचे ऐ गल्लाबानो, रब का जवाब सुनो!
8रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात
की क़सम, मेरी भेड़-बकरियाँ लुटेरों का शिकार
और तमाम दरिंदों की ग़िज़ा बन गई हैं। उनकी
देख-भाल करनेवाला कोई नहीं है। मेरे गल्लाबान
मेरे रेवड़ को ढूँडकर वापस नहीं लाते बल्कि
सिर्फ़ अपना ही ख़याल करते हैं। 9चुनाँचे
ऐ गल्लाबानो, रब का जवाब सुनो! 10रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं गल्लाबानों
से निपटकर उन्हें अपनी भेड़-बकरियों के लिए
ज़िम्मेदार ठहराऊँगा। तब मैं उन्हें गल्लाबानी की
ज़िम्मेदारी से फ़ारिग़ करूँगा ताकि सिर्फ़ अपना
ही ख़याल करने का सिलसिला ख़त्म हो जाए। मैं
अपनी भेड़-बकरियों को उनके मुँह से निकालकर
बचाऊँगा ताकि आइंदा वह उन्हें न खाएँ।

अल्लाह अच्छा चरवाहा है

11रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि आइंदा
मैं ख़ुद अपनी भेड़-बकरियों को ढूँडकर वापस
लाऊँगा, ख़ुद उनकी देख-भाल करूँगा। 12जिस
तरह चरवाहा चारों तरफ़ बिखरी हुई अपनी भेड़-
बकरियों को इकट्ठा करके उनकी देख-भाल करता
है उसी तरह मैं अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल
करूँगा। मैं उन्हें उन तमाम मक़ामों से निकालकर
बचाऊँगा जहाँ उन्हें घने बादलों और तारीकी के
दिन मुंतशिर कर दिया गया था। 13मैं उन्हें दीगर
अक़वाम और ममालिक में से निकालकर जमा
करूँगा और उन्हें उनके अपने मुल्क में वापस
लाकर इसराईल के पहाड़ों, घाटियों और तमाम
आबादियों में चराऊँगा। 14तब मैं अच्छी चरागाहों

में उनकी देख-भाल करूँगा, और वह इसराईल की बुलंदियों पर ही चरेंगी। वहाँ वह सरसब्ज़ मैदानों में आराम करके इसराईल के पहाड़ों पर बेहतरीन घास चरेंगी। 15रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं ख़ुद अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल करूँगा, ख़ुद उन्हें बिठाऊँगा।

16मैं गुमशुदा भेड़-बकरियों का खोज लगाऊँगा और आवारा फिरनेवालों को वापस लाऊँगा। मैं ज़ख़मियों की मरहम-पट्टी करूँगा और कमज़ोरों को तक़वियत दूँगा। लेकिन मोटे-ताज़े और ताक़तवर जानवरों को मैं ख़त्म करूँगा। मैं इनसाफ़ से रेवड़ की गल्लाबानी करूँगा।

17रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मेरे रेवड़, जहाँ भेड़ों, मेंढों और बकरों के दरमियान नाइनसाफ़ी है वहाँ मैं उनकी अदालत करूँगा। 18क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं कि तुम्हें खाने के लिए चरागाह का बेहतरीन हिस्सा और पीने के लिए साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी मिल गया है? तुम बाक़ी चरागाह को क्यों रौंदते और बाक़ी पानी को पाँवों से गदला करते हो? 19मेरा रेवड़ क्यों तुमसे कुचली हुई घास खाए और तुम्हारा गदला किया हुआ पानी पिए?

20रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जहाँ मोटी और दुबली भेड़-बकरियों के दरमियान नाइनसाफ़ी है वहाँ मैं ख़ुद फ़ैसला करूँगा। 21क्योंकि तुम मोटी भेड़ों ने कमज़ोरों को कंधों से धक्का देकर और सींगों से मार मारकर अच्छी घास से भगा दिया है। 22लेकिन मैं अपनी भेड़-बकरियों को तुमसे बचा लूँगा। आइंदा उन्हें लूटा नहीं जाएगा बल्कि मैं ख़ुद उनमें इनसाफ़ क़ायम रखूँगा।

अमनो-अमान की सलतनत

23मैं उन पर एक ही गल्लाबान यानी अपने ख़ादिम दाऊद को मुक़र्रर करूँगा जो उन्हें चराकर उनकी देख-भाल करेगा। वही उनका सहीह चरवाहा रहेगा। 24मैं, रब उनका ख़ुदा हूँगा और मेरा ख़ादिम दाऊद उनके दरमियान उनका हुक्मरान होगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

25मैं इसराईलियों के साथ सलामती का अहद बाँधकर दरिंदों को मुल्क से निकाल दूँगा। फिर वह हिफ़ाज़त से सो सकेंगे, ख़ाह रेगिस्तान में हों या जंगल में। 26मैं उन्हें और अपने पहाड़ के इर्दगिर्द के इलाक़े को बरकत दूँगा। मैं मुल्क में वक़्त पर बारिश बरसाता रहूँगा। ऐसी मुबारक बारिशें होंगी 27कि मुल्क के बाग़ों और खेतों में ज़बरदस्त फ़सलें पकेंगी। लोग अपने मुल्क में महफ़ूज़ होंगे। फिर जब मैं उनके जुए को तोड़कर उन्हें उनसे रिहाई दूँगा जिन्होंने उन्हें ग़ुलाम बनाया था तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 28आइंदा न दीगर अक़वाम उन्हें लूटेंगी, न वह दरिंदों की ख़ुराक बनेंगे बल्कि वह हिफ़ाज़त से अपने घरों में बसेंगे। डरानेवाला कोई नहीं होगा। 29मेरे हुक्म पर ज़मीन ऐसी फ़सलें पैदा करेगी जिनकी शोहरत दूर दूर तक फैलेगी। आइंदा न वह भूके मरेंगे, न उन्हें दीगर अक़वाम की लान-तान सुननी पड़ेगी। 30रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा फ़रमाता है कि उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं जो रब उनका ख़ुदा हूँ उनके साथ हूँ, कि इसराईली मेरी क़ौम हैं। 31रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम मेरा रेवड़, मेरी चरागाह की भेड़-बकरियाँ हो। तुम मेरे लोग, और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँ'।"

अदोम रेगिस्तान बनेगा

35 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"ऐ आदमज़ाद, सईर के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ रुख़ करके उसके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! 3उसे बता,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सईर के पहाड़ी इलाक़े, अब मैं तुझसे निपट लूँगा। मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ उठाकर तुझे वीरानो-सुनसान कर दूँगा। 4मैं तेरे शहरों को मलबे के ढेर बना दूँगा, और तू सरासर उजड़ जाएगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

5तू हमेशा इसराईलियों का सख़्त दुश्मन रहा है,
और जब उन पर आफ़त आई और उनकी सज़ा
उरूज तक पहुँची तो तू भी तलवार लेकर उन पर
टूट पड़ा। 6इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता
है कि मेरी हयात की क़सम, मैं तुझे क़त्लो-ग़ारत
के हवाले करूँगा, और क़त्लो-ग़ारत तेरा ताक़्क़ुब
करती रहेगी। चूँकि तूने क़त्लो-ग़ारत करने से
नफ़रत न की, इसलिए क़त्लो-ग़ारत तेरे पीछे पड़ी
रहेगी। 7मैं सईर के पहाड़ी इलाक़े को वीरानो-
सुनसान करके वहाँ के तमाम आने जानेवालों को
मिटा डालूँगा। 8तेरे पहाड़ी इलाक़े को मैं मक़तूलों
से भर दूँगा। तलवार की ज़द में आनेवाले हर तरफ़
पड़े रहेंगे। तेरी पहाड़ियों, वादियों और तमाम
घाटियों में लाशें नज़र आएँगी। 9मेरे हुक्म पर तू
अबद तक वीरान रहेगा, और तेरे शहर ग़ैरआबाद
रहेंगे। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

10तू बोला, "इसराईल और यहूदाह की दोनों
क़ौमें अपने इलाक़ों समेत मेरी ही हैं! आओ हम
उन पर क़ब्ज़ा करें।" तुझे ख़याल तक नहीं आया
कि रब वहाँ मौजूद है। 11इसलिए रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं
तुझसे वही सुलूक करूँगा जो तूने उनसे किया जब
तूने ग़ुस्से और हसद के आलम में उन पर अपनी
पूरी नफ़रत का इज़हार किया। लेकिन उन्हीं पर मैं
अपने आपको ज़ाहिर करूँगा जब मैं तेरी अदालत
करूँगा। 12उस वक़्त तू जान लेगा कि मैं, रब ने
वह तमाम कुफ़र सुन लिया है जो तूने इसराईल
के पहाड़ों के ख़िलाफ़ बका है। क्योंकि तूने कहा,
"यह उजड़ गए हैं, अब यह हमारे क़ब्ज़े में आ
गए हैं और हम उन्हें खा सकते हैं।" 13तूने शेख़ी
मार मारकर मेरे ख़िलाफ़ कुफ़र बका है, लेकिन
ख़बरदार! मैंने इन तमाम बातों पर तवज्जुह दी है।
14रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तूने ख़ुशी
मनाई कि पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान है, लेकिन
मैं तुझे भी उतना ही वीरान कर दूँगा। 15तू कितना
ख़ुश हुआ जब इसराईल की मौरूसी ज़मीन उजड़
गई! अब मैं तेरे साथ भी ऐसा ही करूँगा। ऐ सईर
के पहाड़ी इलाक़े, तू पूरे अदोम समेत वीरानो-
सुनसान हो जाएगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ।'

इसराईल अपने वतन वापस आएगा

36 ऐ आदमज़ाद, इसराईल के पहा-
ड़ों के बारे में नबुव्वत करके कह,
'ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब का कलाम सुनो!
2रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि दुश्मन बग़लें
बजाकर कहता है कि क्या ख़ूब, इसराईल की
क़दीम बुलंदियाँ हमारे क़ब्ज़े में आ गई हैं!
3क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन्होंने तुम्हें
उजाड़ दिया, तुम्हें चारों तरफ़ से तंग किया है।
नतीजे में तुम दीगर अक़वाम के क़ब्ज़े में आ गई
हो और लोग तुम पर कुफ़र बकने लगे हैं। 4चुनाँचे
ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब क़ादिरे-मुतलक़ का
कलाम सुनो!

रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ पहाड़ो
और पहाड़ियो, ऐ घाटियो और वादियो, ऐ
खंडरात और इनसान से ख़ाली शहरो, तुम गिर्दो-
नवाह की अक़वाम के लिए लूट-मार और मज़ाक़
का निशाना बन गए हो।

5इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैंने बड़ी ग़ैरत से इन बाक़ी अक़वाम की
सरज़निश की है, ख़ासकर अदोम की। क्योंकि
वह मेरी क़ौम का नुक़सान देखकर शादियाना
बजाने लगीं और अपनी हिक़ारत का इज़हार
करके मेरे मुल्क पर क़ब्ज़ा किया ताकि उस की
चरागाह को लूट लें। 6ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो,
ऐ घाटियो और वादियो, रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि चूँकि दीगर अक़वाम ने तेरी इतनी
रुसवाई की है इसलिए मैं अपनी ग़ैरत और अपना
ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। 7मैं रब क़ादिरे-
मुतलक़ अपना हाथ उठाकर क़सम खाता हूँ कि
गिर्दो-नवाह की इन अक़वाम की भी रुसवाई की
जाएगी।

8लेकिन ऐ इसराईल के पहाड़ो, तुम पर दुबारा
हरियाली फले-फूलेगी। तुम नए सिरे से मेरी क़ौम
इसराईल के लिए फल लाओगे, क्योंकि वह जल्द

ही वापस आनेवाली है। 9मैं दुबारा तुम्हारी तरफ़
रुजू करूँगा, दुबारा तुम पर मेहरबानी करूँगा। तब
लोग नए सिरे से तुम पर हल चलाकर बीज बोएँगे।
10मैं तुम पर की आबादी बढ़ा दूँगा। क्योंकि
तमाम इसराईली आकर तुम्हारी ढलानों पर अपने
घर बना लेंगे। तुम्हारे शहर दुबारा आबाद हो
जाएंगे, और खंडरात की जगह नए घर बन
जाएंगे। 11मैं तुम पर बसनेवाले इनसानो-हैवान
की तादाद बढ़ा दूँगा, और वह बढ़कर फलें-
फूलेंगे। मैं होने दूँगा कि तुम्हारे इलाक़े में माज़ी
की तरह आबादी होगी, पहले की निसबत मैं तुम
पर कहीं ज़्यादा मेहरबानी करूँगा। तब तुम जान
लोगे कि मैं ही रब हूँ।
12मैं अपनी क़ौम इसराईल को तुम्हारे पास
पहुँचा दूँगा, और वह दुबारा तुम्हारी ढलानों पर
घूमते फिरेंगे। वह तुम पर क़ब्ज़ा करेंगे, और तुम
उनकी मौरूसी ज़मीन होगे। आइंदा कभी तुम
उन्हें उनकी औलाद से महरूम नहीं करोगे। 13रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि बेशक लोग तुम्हारे
बारे में कहते हैं कि तुम लोगों को हड़प करके
अपनी क़ौम को उस की औलाद से महरूम कर
देते हो। 14लेकिन आइंदा ऐसा नहीं होगा। आइंदा
तुम न आदमियों को हड़प करोगे, न अपनी क़ौम
को उस की औलाद से महरूम करोगे। यह रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है। 15मैं ख़ुद होने
दूँगा कि आइंदा तुम्हें दीगर अक़वाम की लान-तान
नहीं सुननी पड़ेगी। आइंदा तुम्हें उनका मज़ाक़
बरदाश्त नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि ऐसा कभी
होगा नहीं कि तुम अपनी क़ौम के लिए ठोकर का
बाइस हो। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है'।”

अल्लाह अपनी क़ौम को नया दिल और नया रूह बख़्शेगा

16रब मुझसे हमकलाम हुआ, 17“ऐ
आदमज़ाद, जब इसराईली अपने मुल्क में आबाद
थे तो मुल्क उनके चाल-चलन और हरकतों से
नापाक हुआ। वह अपने बुरे रवय्ये के बाइस
मेरी नज़र में माहवारी में मुब्तला औरत की तरह
नापाक थे। 18उनके हाथों लोग क़त्ल हुए, उनकी
बुतपरस्ती से मुल्क नापाक हो गया।
जवाब में मैंने उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल
किया। 19मैंने उन्हें मुख़्तलिफ़ अक़वामो-
ममालिक में मुंतशिर करके उनके चाल-चलन
और ग़लत कामों की मुनासिब सज़ा दी।
20लेकिन जहाँ भी वह पहुँचे वहाँ उन्हीं के सबब
से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती हुई। क्योंकि
जिनसे भी उनकी मुलाक़ात हुई उन्होंने कहा, 'गो
यह रब की क़ौम हैं तो भी इन्हें उसके मुल्क को
छोड़ना पड़ा!' 21यह देखकर कि जिस क़ौम में
भी इसराईली जा बसे वहाँ उन्होंने मेरे मुक़द्दस
नाम की बेहुरमती की मैं अपने नाम की फ़िकर
करने लगा। 22इसलिए इसराईली क़ौम को बता,
'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जो कुछ मैं
करनेवाला हूँ वह मैं तेरी ख़ातिर नहीं करूँगा बल्कि
अपने मुक़द्दस नाम की ख़ातिर। क्योंकि तुमने
दीगर अक़वाम में मुंतशिर होकर उस की बेहुरमती
की है। 23मैं ज़ाहिर करूँगा कि मेरा अज़ीम
नाम कितना मुक़द्दस है। तुमने दीगर अक़वाम के
दरमियान रहकर उस की बेहुरमती की है, लेकिन
मैं उनकी मौजूदगी में तुम्हारी मदद करके अपना
मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर करूँगा। तब वह
जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ। यह रब क़ादिरे-मुतलक़
का फ़रमान है।
24मैं तुम्हें दीगर अक़वामो-ममालिक से
निकाल दूँगा और तुम्हें जमा करके तुम्हारे अपने
मुल्क में वापस लाऊँगा। 25मैं तुम पर साफ़ पानी
छिड़कूँगा तो तुम पाक-साफ़ हो जाओगे। हाँ, मैं
तुम्हें तमाम नापाकियों और बुतों से पाक-साफ़
कर दूँगा।
26तब मैं तुम्हें नया दिल बख़्शकर तुममें नई
रूह डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकालकर
तुम्हें गोश्त-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा।
27क्योंकि मैं अपना ही रूह तुममें डालकर तुम्हें
इस क़ाबिल बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की
पैरवी और मेरे अहकाम पर ध्यान से अमल कर

सको। 28तब तुम दुबारा उस मुल्क में सुकूनत
करोगे जो मैंने तुम्हारे बापदादा को दिया था। तुम
मेरी क़ौम होगे, और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। 29मैं
ख़ुद तुम्हें तुम्हारी तमाम नापाकी से छुड़ाऊँगा।
आइंदा मैं तुम्हारे मुल्क में काल पड़ने नहीं दूँगा
बल्कि अनाज को उगने और बढ़ने का हुक्म
दूँगा। 30मैं बाग़ों और खेतों की पैदावार बढ़ा दूँगा
ताकि आइंदा तुम्हें मुल्क में काल पड़ने के बाइस
दीगर क़ौमों के ताने सुनने न पड़ें। 31तब तुम्हारी
बुरी राहें और ग़लत हरकतें तुम्हें याद आएँगी,
और तुम अपने गुनाहों और बुतपरस्ती के बाइस
अपने आपसे घिन खाओगे। 32लेकिन याद रहे
कि मैं यह सब कुछ तुम्हारी ख़ातिर नहीं कर रहा।
रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ इसराईली
क़ौम, शर्म करो! अपने चाल-चलन पर शर्मसार
हो!

33रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस
दिन मैं तुम्हें तुम्हारे तमाम गुनाहों से पाक-साफ़
करूँगा उस दिन मैं तुम्हें दुबारा तुम्हारे शहरों में
आबाद करूँगा। तब खंडरात पर नए घर बनेंगे।
34गो इस वक़्त मुल्क में से गुज़रनेवाले हर
मुसाफ़िर को उस की तबाहशुदा हालत नज़र
आती है, लेकिन उस वक़्त ऐसा नहीं होगा बल्कि
ज़मीन की खेतीबाड़ी की जाएगी। 35लोग यह
देखकर कहेंगे, "पहले सब कुछ वीरानो-सुनसान
था, लेकिन अब मुल्क बाग़े-अदन बन गया है!
पहले उसके शहर ज़मीनबोस थे और उनकी जगह
मलबे के ढेर नज़र आते थे। लेकिन अब उनकी
नए सिरे से क़िलाबंदी हो गई है और लोग उनमें
आबाद हैं।" 36फिर इर्दगिर्द की जितनी क़ौमें बच
गई होंगी वह जान लेंगी कि मैं, रब ने नए सिरे से
वह कुछ तामीर किया है जो पहले ढा दिया गया
था, मैंने वीरान ज़मीन में दुबारा पौदे लगाए हैं।
यह मेरा, रब का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा
भी।

37क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि एक बार
फिर मैं इसराईली क़ौम की इल्तिजाएँ सुनकर
बाशिंदों की तादाद रेवड़ की तरह बढ़ा दूँगा।
38जिस तरह माज़ी में ईद के दिन यरूशलम में
हर तरफ़ क़ुरबानी की भेड़-बकरियाँ नज़र आती
थीं उसी तरह मुल्क के शहरों में दुबारा हुजूम के
हुजूम नज़र आएँगे। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ'।"

हड्डियों से भरी वादी की रोया

37 एक दिन रब का हाथ मुझ पर आ
ठहरा। रब ने मुझे अपने रूह से बाहर
ले जाकर एक खुली वादी के बीच में खड़ा किया।
वादी हड्डियों से भरी थी। 2उसने मुझे उनमें से
गुज़रने दिया तो मैंने देखा कि वादी की ज़मीन पर
बेशुमार हड्डियाँ बिखरी पड़ी हैं। यह हड्डियाँ सरासर
सूखी हुई थीं।

3रब ने मुझसे पूछा, "ऐ आदमज़ाद, क्या यह
हड्डियाँ दुबारा ज़िंदा हो सकती हैं?" मैंने जवाब
दिया, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू ही जानता है।"
4तब उसने फ़रमाया, "नबुव्वत करके हड्डियों
को बता, 'ऐ सूखी हुई हड्डियो, रब का कलाम
सुनो! 5रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैं तुममें दम डालूँगा तो तुम दुबारा ज़िंदा हो
जाओगी। 6मैं तुम पर नसें और गोश्त चढ़ाकर
सब कुछ जिल्द से ढाँप दूँगा। मैं तुममें दम डाल
दूँगा, और तुम ज़िंदा हो जाओगी। तब तुम जान
लोगी कि मैं ही रब हूँ'।"

7मैंने ऐसा ही किया। और ज्योंही मैं नबुव्वत
करने लगा तो शोर मच गया। हड्डियाँ खड़खड़ाते
हुए एक दूसरी के साथ जुड़ गईं, और होते होते पूरे
ढाँचे बन गए। 8मेरे देखते देखते नसें और गोश्त
ढाँचों पर चढ़ गया और सब कुछ जिल्द से ढाँपा
गया। लेकिन अब तक जिस्मों में दम नहीं था।

9फिर रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत
करके दम से मुख़ातिब हो जा, 'ऐ दम, रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि चारों तरफ़ से आकर
मक़तूलों पर फूँक मार ताकि दुबारा ज़िंदा हो
जाएँ'।"

10मैंने ऐसा ही किया तो मक़तूलों में दम आ
गया, और वह ज़िंदा होकर अपने पाँवों पर खड़े

हो गए। एक निहायत बड़ी फ़ौज वुजूद में आ गई
थी!
11तब रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, यह
हड्डियाँ इसराईली क़ौम के तमाम अफ़राद हैं।
वह कहते हैं, 'हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं, हमारी
उम्मीद जाती रही है। हम ख़त्म ही हो गए हैं!'
12चुनाँचे नबुव्वत करके उन्हें बता,
'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मेरी
क़ौम, मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोल दूँगा और तुम्हें
उनमें से निकालकर मुल्के-इसराईल में वापस
लाऊँगा। 13ऐ मेरी क़ौम, जब मैं तुम्हारी क़ब्रों को
खोल दूँगा और तुम्हें उनमें से निकाल लाऊँगा तब
तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 14मैं अपना रूह
तुममें डाल दूँगा तो तुम ज़िंदा हो जाओगे। फिर
मैं तुम्हें तुम्हारे अपने मुल्क में बसा दूँगा। तब तुम
जान लोगे कि यह मेरा, रब का फ़रमान है और मैं
यह करूँगा भी'।"

यहूदाह और इसराईल मुत्तहिद हो जाएंगे

15रब मुझसे हमकलाम हुआ, 16"ऐ
आदमज़ाद, लकड़ी का टुकड़ा लेकर उस पर
लिख दे, 'जुनूबी क़बीला यहूदाह और जितने
इसराईली क़बीले उसके साथ मुत्तहिद हैं।' फिर
लकड़ी का एक और टुकड़ा लेकर उस पर लिख
दे, 'शिमाली क़बीला यूसुफ़ यानी इफ़राईम और
जितने इसराईली क़बीले उसके साथ मुत्तहिद हैं।'
17अब लकड़ी के दोनों टुकड़े एक दूसरे के साथ
यों जोड़ दे कि तेरे हाथ में एक हो जाएँ।
18तेरे हमवतन तुझसे पूछेंगे, 'क्या आप
हमें इसका मतलब नहीं बताएँगे?' 19तब
उन्हें बता, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता
है कि मैं यूसुफ़ यानी लकड़ी के मालिक
इफ़राईम और उसके साथ मुत्तहिद इसरा-
ईली क़बीलों को लेकर यहूदाह की लकड़ी के
साथ जोड़ दूँगा। मेरे हाथ में वह लकड़ी का एक
ही टुकड़ा बन जाएंगे।'
20अपने हमवतनों की मौजूदगी में लकड़ी के
मज़कूरा टुकड़े हाथ में थामे रख 21और साथ साथ
उन्हें बता, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
इसराईलियों को उन क़ौमों में से निकाल लाऊँगा
जहाँ वह जा बसे हैं। मैं उन्हें जमा करके उनके
अपने मुल्क में वापस लाऊँगा। 22वहीं इसराईल
के पहाड़ों पर मैं उन्हें मुत्तहिद करके एक ही क़ौम
बना दूँगा। उन पर एक ही बादशाह हुकूमत करेगा।
आइंदा वह न कभी दो क़ौमों में तक़सीम हो
जाएंगे, न दो सलतनतों में। 23आइंदा वह अपने
आपको न अपने बुतों या बाक़ी मकरूह चीज़ों से
नापाक करेंगे, न उन गुनाहों से जो अब तक करते
आए हैं। मैं उन्हें उन तमाम मक़ामों से निकालकर
छुड़ाऊँगा जिनमें उन्होंने गुनाह किया है। मैं उन्हें
पाक-साफ़ करूँगा। यों वह मेरी क़ौम होंगे और मैं
उनका ख़ुदा हूँगा। 24मेरा ख़ादिम दाऊद उनका
बादशाह होगा, उनका एक ही गल्लाबान होगा।
तब वह मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेंगे
और ध्यान से मेरे अहकाम पर अमल करेंगे।
25जो मुल्क मैंने अपने ख़ादिम याक़ूब को
दिया था और जिसमें तुम्हारे बापदादा रहते थे
उसमें इसराईली दुबारा बसेंगे। हाँ, वह और उनकी
औलाद हमेशा तक उसमें आबाद रहेंगे, और मेरा
ख़ादिम दाऊद अबद तक उन पर हुकूमत करेगा।
26तब मैं उनके साथ सलामती का अहद बाँधूँगा,
एक ऐसा अहद जो हमेशा तक क़ायम रहेगा। मैं
उन्हें क़ायम करके उनकी तादाद बढ़ाता जाऊँगा,
और मेरा मक़दिस अबद तक उनके दरमियान
रहेगा। 27वह मेरी सुकूनतगाह के साये में बसेंगे।
मैं उनका ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम होंगे।
28जब मेरा मक़दिस अबद तक उनके दरमियान
होगा तो दीगर अक़वाम जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ,
कि इसराईल को मुक़द्दस करनेवाला मैं ही हूँ'।"

इसराईल का दुश्मन जूज

38 रब मुझसे हमकलाम हुआ,
2"ऐ आदमज़ाद, मुल्के-माजूज के
हुक्मरान जूज की तरफ़ रुख़ कर जो मसक और
तूबल का आला रईस है। उसके ख़िलाफ़ नबुव्वत
करके 3कह,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मसक और तूबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझसे निपट लूँगा। 4मैं तेरे मुँह को फेर दूँगा, तेरे मुँह में काँटे डालकर तुझे पूरी फ़ौज समेत निकाल दूँगा। शानदार वरदियों से आरास्ता तेरे तमाम घुड़सवार और फ़ौजी अपने घोड़ों समेत निकल आएँगे, गो तेरी बड़ी फ़ौज के मर्द छोटी और बड़ी ढालें उठाए फिरेंगे, और हर एक तलवार से लैस होगा। 5फ़ारस, एथोपिया और लिबिया के मर्द भी फ़ौज में शामिल होंगे। हर एक बड़ी ढाल और ख़ोद से मुसल्लह होगा। 6जुमर और शिमाल के दूर-दराज़ इलाक़े बैत-तुजरमा के तमाम दस्ते भी साथ होंगे। ग़रज़ उस वक़्त बहुत-सी क़ौमें तेरे साथ निकलेंगी। 7चुनाँचे मुस्तैद हो जा! जितने लशकर तेरे इर्दगिर्द जमा हो गए हैं उनके साथ मिलकर ख़ूब तैयारियाँ कर! उनके लिए पहरादारी कर।

8मुतअद्दिद दिनों के बाद तुझे मुल्के-इसराईल पर हमला करने के लिए बुलाया जाएगा जिसे अभी जंग से छुटकारा मिला होगा और जिसके जिलावतन दीगर बहुत-सी क़ौमों में से वापस आ गए होंगे। गो इसराईल का पहाड़ी इलाक़ा बड़ी देर से बरबाद हुआ होगा, लेकिन उस वक़्त उसके बाशिंदे जिलावतनी से वापस आकर अमनो-अमान से उसमें बसेंगे।

9तब तू तूफ़ान की तरह आगे बढ़ेगा, तेरे दस्ते बादल की तरह पूरे मुल्क पर छा जाएंगे। तेरे साथ बहुत-सी क़ौमें होंगी। 10रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उस वक़्त तेरे ज़हन में बुरे ख़यालात उभर आएँगे और तू शरीर मनसूबे बाँधेगा। 11तू कहेगा, "यह मुल्क खुला है, और उसके बाशिंदे आराम और सुकून के साथ रह रहे हैं। आओ, मैं उन पर हमला करूँ, क्योंकि वह अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते। न उनकी चारदीवारी है, न दरवाज़ा या कुंडा। 12मैं इसराईलियों को लूट लूँगा। जो शहर पहले खंडरात थे लेकिन अब नए सिरे से आबाद हुए हैं उन पर मैं टूट पड़ूँगा। जो जिलावतन दीगर अक़वाम से वापस आ गए हैं उनकी दौलत मैं छीन लूँगा। क्योंकि उन्हें काफ़ी माल-मवेशी हासिल हुए हैं, और अब वह दुनिया के मरकज़ में आ बसे हैं।" 13सबा, ददान और तरसीस के ताजिर और बुज़ुर्ग पूछेंगे कि क्या तूने वाक़ई अपने फ़ौजियों को लूट-मार के लिए इकट्ठा कर लिया है? क्या तू वाक़ई सोना-चाँदी, माल-मवेशी और बाक़ी बहुत-सी दौलत छीनना चाहता है?'

14ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके जूज को बता, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उस वक़्त तुझे पता चलेगा कि मेरी क़ौम इसराईल सुकून से ज़िंदगी गुज़ार रही है, 15और तू दूर-दराज़ शिमाल के अपने मुल्क से निकलेगा। तेरी वसी और ताक़तवर फ़ौज में मुतअद्दिद क़ौमें शामिल होंगी, और सब घोड़ों पर सवार 16मेरी क़ौम इसराईल पर धावा बोल देंगे। वह उस पर बादल की तरह छा जाएंगे। ऐ जूज, उन आख़िरी दिनों में मैं ख़ुद तुझे अपने मुल्क पर हमला करने दूँगा ताकि दीगर अक़वाम मुझे जान लें। क्योंकि जो कुछ मैं उनके देखते देखते तेरे साथ करूँगा उससे मेरा मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर हो जाएगा। 17रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तू वही है जिसका ज़िक्र मैंने माज़ी में किया था। क्योंकि माज़ी में मेरे ख़ादिम यानी इसराईल के नबी काफ़ी सालों से पेशगोई करते रहे कि मैं तुझे इसराईल के ख़िलाफ़ भेजूँगा।

अल्लाह ख़ुद जूज को तबाह करेगा

18रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस दिन जूज मुल्के-इसराईल पर हमला करेगा उस दिन मैं आग-बगूला हो जाऊँगा। 19मैं फ़रमाता हूँ कि उस दिन मेरी ग़ैरत और शदीद क़हर यों भड़क उठेगा कि यक़ीनन मुल्के-इसराईल में ज़बरदस्त ज़लज़ला आए-गा। 20सब मेरे सामने थरथरा उठेंगे, ख़ाह मछलियाँ हों या परिंदे, ख़ाह ज़मीन पर चलने और रेंगनेवाले जानवर हों या इनसान। पहाड़ उनकी गुज़रगाहों समेत ख़ाक में मिलाए जाएंगे, और हर दीवार गिर जाएगी।

21रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं अपने तमाम पहाड़ी इलाक़े में जूज के ख़िलाफ़ तलवार भेजूँगा। तब सब आपस में लड़ने लगेंगे। 22मैं उनमें मोहलक बीमारियाँ और क़त्लो-ग़ारत फैलाकर उनकी अदालत करूँगा। साथ साथ मैं मूसलाधार बारिश, ओले, आग और गंधक जूज और उस की बैनुल-अक़वामी फ़ौज पर बरसा दूँगा। 23यों मैं अपना अज़ीम और मुक़द्दस किरदार मुतअद्दिद क़ौमों पर ज़ाहिर करूँगा, उनके देखते देखते अपने आपका इज़हार करूँगा। तब वह जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ।’

39 ऐ आदमज़ाद, जूज के ख़िलाफ़ नबुव्वत करके कह,

‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मसक और तूबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझसे निपट लूँगा। 2मैं तेरा मुँह फेर दूँगा और तुझे शिमाल के दूर-दराज़ इलाक़े से घसीटकर इसराईल के पहाड़ों पर लाऊँगा। 3वहाँ मैं तेरे बाएँ हाथ से कमान हटाऊँगा और तेरे दाएँ हाथ से तीर गिरा दूँगा। 4इसराईल के पहाड़ों पर ही तू अपने तमाम बैनुल-अक़वामी फ़ौजियों के साथ हलाक हो जाएगा। मैं तुझे हर क़िस्म के शिकारी परिंदों और दरिंदों को खिला दूँगा। 5क्योंकि तेरी लाश खुले मैदान में गिरकर पड़ी रहेगी। यह मेरा, रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

6मैं माजूज पर और अपने आपको महफ़ूज़ समझनेवाले साहिली इलाक़ों पर आग भेजूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 7अपनी क़ौम इसराईल के दरमियान ही मैं अपना मुक़द्दस नाम ज़ाहिर करूँगा। आइंदा मैं अपने मुक़द्दस नाम की बेहुरमती बरदाश्त नहीं करूँगा। तब अक़वाम जान लेंगी कि मैं रब और इसराईल का क़ुद्दूस हूँ। 8रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यह सब कुछ होनेवाला है, यह ज़रूर पेश आएगा! वही दिन है जिसका ज़िक्र मैं कर चुका हूँ।

जूज और उस की फ़ौज की तदफ़ीन

9फिर इसराईली शहरों के बाशिंदे मैदाने-जंग में जाकर दुश्मन के असला को ईंधन के लिए जमा करेंगे। इतनी छोटी और बड़ी ढालें, कमान, तीर, लाठियाँ और नेज़े इकट्ठे हो जाएंगे कि सात साल तक किसी और ईंधन की ज़रूरत नहीं होगी। 10इसराईलियों को खुले मैदान में लकड़ी चुनने या जंगल में दरख़्त काटने की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि वह यह हथियार ईंधन के तौर पर इस्तेमाल करेंगे। अब वह उन्हें लूटेंगे जिन्होंने उन्हें लूट लिया था, वह उनसे माल-मवेशी छीन लेंगे जिन्होंने उनसे सब कुछ छीन लिया था। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

11उस दिन मैं इसराईल में जूज के लिए क़ब्रिस्तान मुक़र्रर करूँगा। यह क़ब्रिस्तान वादीए-अबारीम[a] में होगा जो बहीराए-मुरदार के मशरिक़ में है। जूज के साथ उस की तमाम फ़ौज भी दफ़न होगी, इसलिए मुसाफ़िर आइंदा उसमें से नहीं गुज़र सकेंगे। तब वह जगह वादीए-हमून जूज[b] भी कहलाएगी। 12जब इसराईली तमाम लाशें दफ़नाकर मुल्क को पाक-साफ़ करेंगे तो सात महीने लगेंगे। 13तमाम उम्मत इस काम में मसरूफ़ रहेगी। रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस दिन मैं दुनिया पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा उस दिन यह उनके लिए शोहरत का बाइस होगा।

14सात महीनों के बाद कुछ आदमियों को अलग करके कहा जाएगा कि पूरे मुल्क में से गुज़रकर मालूम करें कि अभी कहाँ कहाँ लाशें पड़ी हैं। क्योंकि लाज़िम है कि सब दफ़न हो जाएँ ताकि मुल्क दुबारा पाक-साफ़ हो जाए। 15जहाँ कहीं कोई लाश नज़र आए उस जगह की वह निशानदेही करेंगे ताकि दफ़नानेवाले उसे वादीए-हमून जूज में ले जाकर दफ़न करें। 16यों मुल्क को पाक-साफ़ किया जाएगा। उस वक़्त से इसराईल के एक शहर का नाम हमूना[c] कहलाएगा।’

[a]या गुज़रनेवालों की वादी।
[b]जूज के फ़ौजी हुजूम की वादी।
[c]हुजूम यानी जूज के।

17ऐ आदमज़ाद, रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि हर क़िस्म के परिंदे और दरिंदे बुलाकर कह, 'आओ, इधर जमा हो जाओ! चारों तरफ़ से आकर इसराईल के पहाड़ी इलाक़े में जमा हो जाओ! क्योंकि यहाँ मैं तुम्हारे लिए क़ुरबानी की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त तैयार कर रहा हूँ। यहाँ तुम्हें गोश्त खाने और ख़ून पीने का सुनहरा मौक़ा मिलेगा। 18तुम सूरमाओं का गोश्त खाओगे और दुनिया के हुक्मरानों का ख़ून पियोगे। सब बसन के मोटे-ताज़े मेंढों, भेड़ के बच्चों, बकरों और बैलों जैसे मज़ेदार होंगे। 19क्योंकि जो क़ुरबानी में तुम्हारे लिए तैयार कर रहा हूँ उस की चरबी तुम जी भरकर खाओगे, उसका ख़ून पी पीकर मस्त हो जाओगे। 20रब फ़रमाता है कि तुम मेरी मेज़ पर बैठकर घोड़ों और घुड़सवारों, सूरमाओं और हर क़िस्म के फ़ौजियों से सेर हो जाओगे।'

रब अपनी क़ौम वापस लाएगा

21यों मैं दीगर अक़्वाम पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। क्योंकि जब मैं जूज और उस की फ़ौज की अदालत करके उनसे निपट लूँगा तो तमाम अक़्वाम इसकी गवाह होंगी। 22तब इसराईली क़ौम हमेशा के लिए जान लेगी कि मैं रब उसका ख़ुदा हूँ। 23और दीगर अक़्वाम जान लेंगी कि इसराईली अपने गुनाहों के सबब से जिलावतन हुए। वह जान लेंगी कि चूँकि इसराईली मुझसे बेवफ़ा हुए, इसी लिए मैंने अपना मुँह उनसे छुपाकर उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दिया, इसी लिए वह सब तलवार की ज़द में आकर हलाक हुए। 24क्योंकि मैंने उन्हें उनकी नापाकी और जरायम का मुनासिब बदला देकर अपना चेहरा उनसे छुपा लिया था।

25चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि अब मैं याक़ूब की औलाद को बहाल करके तमाम इसराईली क़ौम पर तरस खाऊँगा। अब मैं बड़ी ग़ैरत से अपने मुक़द्दस नाम का दिफ़ा करूँगा। 26जब इसराईली सुकून से और ख़ौफ़ खाए बग़ैर अपने मुल्क में रहेंगे तो वह अपनी रुसवाई और मेरे साथ बेवफ़ाई का एतराफ़ करेंगे। 27मैं उन्हें दीगर अक़्वाम और उनके दुश्मनों के ममालिक में से जमा करके उन्हें वापस लाऊँगा और यों उनके ज़रीए अपना मुक़द्दस किरदार मुतअद्दिद अक़्वाम पर ज़ाहिर करूँगा। 28तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। क्योंकि उन्हें अक़्वाम में जिलावतन करने के बाद मैं उन्हें उनके अपने ही मुल्क में दुबारा जमा करूँगा। एक भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा। 29रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि आइंदा मैं अपना चेहरा उनसे नहीं छुपाऊँगा। क्योंकि मैं अपना रूह इसराईली क़ौम पर उंडेल दूँगा।"

रब के नए घर की रोया

40 हमारी जिलावतनी के 25वें साल में रब का हाथ मुझ पर आ ठहरा और वह मुझे यरूशलम ले गया। महीने का दसवाँ दिन[a] था। उस वक़्त यरूशलम को दुश्मन के क़ब्ज़े में आए 14 साल हो गए थे। 2इलाही रोयाओं में अल्लाह ने मुझे मुल्के-इसराईल के एक निहायत बुलंद पहाड़ पर पहुँचाया। पहाड़ के जुनूब में मुझे एक शहर-सा नज़र आया। 3अल्लाह मुझे शहर के क़रीब ले गया तो मैंने शहर के दरवाज़े में खड़े एक आदमी को देखा जो पीतल का बना हुआ लग रहा था। उसके हाथ में कतान की रस्सी और फ़ीता था। 4उसने मुझसे कहा, "ऐ आदमज़ाद, ध्यान से देख, ग़ौर से सुन! जो कुछ भी मैं तुझे दिखाऊँगा, उस पर तवज्जुह दे। क्योंकि तुझे इसी लिए यहाँ लाया गया है कि मैं तुझे यह दिखाऊँ। जो कुछ भी तू देखे उसे इसराईली क़ौम को सुना दे!"

रब के घर के बैरूनी सहन का मशरिक़ी दरवाज़ा

5मैंने देखा कि रब के घर का सहन चारदीवारी से घिरा हुआ है। जो फ़ीता मेरे राहनुमा के हाथ में था उस की लंबाई साढ़े 10 फ़ुट थी। इसके ज़रीए

[a]28 अप्रैल।

उसने चारदीवारी को नाप लिया। दीवार की मोटाई और ऊँचाई दोनों साढ़े दस दस फ़ुट थी।

6फिर मेरा राहनुमा मशरिक़ी दरवाज़े के पास पहुँचानेवाली सीढ़ी पर चढ़कर दरवाज़े की दहलीज़ पर रुक गया। जब उसने उस की पैमाइश की तो उस की गहराई साढ़े 10 फ़ुट निकली।

7जब वह दरवाज़े में खड़ा हुआ तो दाईं और बाईं तरफ़ पहरेदारों के तीन तीन कमरे नज़र आए। हर कमरे की लंबाई और चौड़ाई साढ़े दस दस फ़ुट थी। कमरों के दरमियान की दीवार पौने नौ फ़ुट मोटी थी। इन कमरों के बाद एक और दहलीज़ थी जो साढ़े 10 फ़ुट गहरी थी। उस पर से गुज़रकर हम दरवाज़े से मुलहिक़ एक बरामदे में
आए जिसका रुख़ रब के घर की तरफ़ था। 8मेरे
राहनुमा ने बरामदे की पैमाइश की 9तो पता चला
कि उस की लंबाई 14 फ़ुट है। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू साढ़े तीन तीन फ़ुट मोटे थे। बरामदे
का रुख़ रब के घर की तरफ़ था। 10पहरेदारों के
मज़कूरा कमरे सब एक जैसे बड़े थे, और उनके दरमियानवाली दीवारें सब एक जैसी मोटी थीं।

11इसके बाद उसने दरवाज़े की गुज़रगाह की चौड़ाई नापी। यह मिल मिलाकर पौने 23 फ़ुट थी, अलबत्ता जब किवाड़ खुले थे तो उनके दरमियान का फ़ासला साढ़े 17 फ़ुट था।
12पहरेदारों के हर कमरे के सामने एक छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई 21 इंच थी जबकि हर कमरे की लंबाई और ऊँचाई साढ़े दस दस फ़ुट
थी। 13फिर मेरे राहनुमा ने वह फ़ासला नापा जो इन कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था। मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है।

14सहन में दरवाज़े से मुलहिक़ वह बरामदा था जिसका रुख़ रब के घर की तरफ़ था। उस की
चौड़ाई 33 फ़ुट थी।[a] 15जो बाहर से दरवाज़े में दाख़िल होता था वह साढ़े 87 फ़ुट के बाद ही सहन में पहुँचता था।

16पहरेदारों के तमाम कमरों में छोटी खिड़कियाँ थीं। कुछ बैरूनी दीवार में थीं, कुछ कमरों के दरमियान की दीवारों में। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं में खजूर के दरख़्त मुनक़्क़श थे।

रब के घर का बैरूनी सहन

17फिर मेरा राहनुमा दरवाज़े में से गुज़रकर मुझे रब के घर के बैरूनी सहन में लाया। चारदीवारी के साथ साथ 30 कमरे बनाए गए थे जिनके सामने
पत्थर का फ़र्श था। 18यह फ़र्श चारदीवारी के साथ साथ था। जहाँ दरवाज़ों की गुज़रगाहें थीं वहाँ फ़र्श उनकी दीवारों से लगता था। जितना लंबा इन गुज़रगाहों का वह हिस्सा था जो सहन में था उतना ही चौड़ा फ़र्श भी था। यह फ़र्श अंदरूनी सहन की निसबत नीचा था।

19बैरूनी और अंदरूनी सहनों के दरमियान भी दरवाज़ा था। यह बैरूनी दरवाज़े के मुक़ाबिल था। जब मेरे राहनुमा ने दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासला नापा तो मालूम हुआ कि 175 फ़ुट है।

बैरूनी सहन का शिमाली दरवाज़ा

20इसके बाद उसने चारदीवारी के शिमाली दरवाज़े की पैमाइश की।

21इस दरवाज़े में भी दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन कमरे थे जो मशरिक़ी दरवाज़े के कमरों जितने बड़े थे। उसमें से गुज़रकर हम वहाँ भी दरवाज़े से मुलहिक़ बरामदे में आए जिसका रुख़ रब के घर की तरफ़ था। उस की और उसके सतून-नुमा बाज़ुओं की लंबाई और चौड़ाई उतनी ही थी जितनी मशरिक़ी दरवाज़े के बरामदे और उसके सतून-नुमा बाज़ुओं की थी। गुज़रगाह की पूरी लंबाई साढ़े 87 फ़ुट थी। जब मेरे राहनुमा ने वह फ़ासला नापा जो पहरेदारों के कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम

[a]इबरानी मतन में इस आयत का मतलब ग़ैरवाज़िह है।

हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 22दरवाज़े से मुलहिक़ बरामदा, खिड़कियाँ और कंदा किए गए खजूर के दरख़्त उसी तरह बनाए गए थे जिस तरह मशरिक़ी दरवाज़े में। बाहर एक सीढ़ी दरवाज़े तक पहुँचाती थी जिसके सात क़दमचे थे। मशरिक़ी दरवाज़े की तरह शिमाली दरवाज़े के अंदरूनी सिरे के साथ एक बरामदा मुलहिक़ था जिससे होकर इनसान सहन में पहुँचता था।

23मशरिक़ी दरवाज़े की तरह इस दरवाज़े के मुक़ाबिल भी अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला दरवाज़ा था। दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासला 175 फ़ुट था।

बैरूनी सहन का जुनूबी दरवाज़ा

24इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे बाहर ले गया। चलते चलते हम जुनूबी चारदीवारी के पास पहुँचे। वहाँ भी दरवाज़ा नज़र आया। उसमें से गुज़रकर हम वहाँ भी दरवाज़े से मुलहिक़ बरामदे में आए जिसका रुख़ रब के घर की तरफ़ था। यह बरामदा दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं समेत दीगर दरवाज़ों के बरामदे जितना बड़ा था। 25दरवाज़े और बरामदे की खिड़कियाँ भी दीगर खिड़कियों की मानिंद थीं। गुज़रगाह की पूरी लंबाई साढ़े 87 फ़ुट थी। जब उसने वह फ़ासला नापा जो पहरेदारों के कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 26बाहर एक सीढ़ी दरवाज़े तक पहुँचाती थी जिसके सात क़दमचे थे। दीगर दरवाज़ों की तरह जुनूबी दरवाज़े के अंदरूनी सिरे के साथ बरामदा मुलहिक़ था जिससे होकर इनसान सहन में पहुँचता था। बरामदे के दोनों सतून-नुमा बाज़ुओं पर खजूर के दरख़्त कंदा किए गए थे।

27इस दरवाज़े के मुक़ाबिल भी अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला दरवाज़ा था। दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासला 175 फ़ुट था।

अंदरूनी सहन का जुनूबी दरवाज़ा

28फिर मेरा राहनुमा जुनूबी दरवाज़े में से गुज़रकर मुझे अंदरूनी सहन में लाया। जब उसने वहाँ का दरवाज़ा नापा तो मालूम हुआ कि वह बैरूनी दरवाज़ों की मानिंद है। 29-30पहरेदारों के कमरे, बरामदा और उसके सतून-नुमा बाज़ू सब पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाज़ों की मानिंद थे। इस दरवाज़े और इसके साथ मुलहिक़ बरामदे में भी खिड़कियाँ थीं। गुज़रगाह की पूरी लंबाई साढ़े 87 फ़ुट थी। जब मेरे राहनुमा ने वह फ़ासला नापा जो पहरेदारों के कमरे में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 31लेकिन उसके बरामदे का रुख़ बैरूनी सहन की तरफ़ था। उसमें पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ क़दमचे थे। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं पर खजूर के दरख़्त कंदा किए गए थे।

अंदरूनी सहन का मशरिक़ी दरवाज़ा

32इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिक़ी दरवाज़े से होकर अंदरूनी सहन में लाया। जब उसने यह दरवाज़ा नापा तो मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाज़ों जितना बड़ा है। 33पहरेदारों के कमरे, दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू और बरामदा पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाज़ों की मानिंद थे। यहाँ भी दरवाज़े और बरामदे में खिड़कियाँ लगी थीं। गुज़रगाह की लंबाई साढ़े 87 फ़ुट और चौड़ाई पौने 44 फ़ुट थी। 34इस दरवाज़े के बरामदे का रुख़ भी बैरूनी सहन की तरफ़ था। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं पर खजूर के दरख़्त कंदा किए गए थे। बरामदे में पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ क़दमचे थे।

अंदरूनी सहन का शिमाली दरवाज़ा

35फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाज़े के पास लाया। उस की पैमाइश करने पर मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाज़ों जितना बड़ा है।

36पहरेदारों के कमरे, सतून-नुमा बाज़ू, बरामदा और दीवारों में खिड़कियाँ भी दूसरे दरवाज़ों की मानिंद थीं। गुज़रगाह की लंबाई साढ़े 87 फ़ुट और चौड़ाई पौने 44 फ़ुट थी। 37उसके बरामदे का रुख़ भी बैरूनी सहन की तरफ़ था। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं पर खजूर के दरख़्त कंदा किए गए थे। उसमें पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ क़दमचे थे।

अंदरूनी शिमाली दरवाज़े के पास ज़बह का बंदोबस्त

38अंदरूनी शिमाली दरवाज़े के बरामदे में दरवाज़ा था जिसमें से गुज़रकर इनसान उस कमरे में दाख़िल होता था जहाँ उन ज़बह किए हुए जानवरों को धोया जाता था जिन्हें भस्म करना होता था। 39बरामदे में चार मेज़ें थीं, कमरे के दोनों तरफ़ दो दो मेज़ें। इन मेज़ों पर उन जानवरों को ज़बह किया जाता था जो भस्म होनेवाली क़ुरबानियों, गुनाह की क़ुरबानियों और क़ुसूर की क़ुरबानियों के लिए मख़सूस थे। 40इस बरामदे से बाहर मज़ीद चार ऐसी मेज़ें थीं, दो एक तरफ़ और दो दूसरी तरफ़। 41मिल मिलाकर आठ मेज़ें थीं जिन पर क़ुरबानियों के जानवर ज़बह किए जाते थे। चार बरामदे के अंदर और चार उससे बाहर के सहन में थीं।

42बरामदे की चार मेज़ें तराशे हुए पत्थर से बनाई गई थीं। हर एक की लंबाई और चौड़ाई साढ़े 31 इंच और ऊँचाई 21 इंच थी। उन पर वह तमाम आलात पड़े थे जो जानवरों को भस्म होनेवाली क़ुरबानी और बाक़ी क़ुरबानियों के लिए तैयार करने के लिए दरकार थे। 43जानवरों का गोश्त इन मेज़ों पर रखा जाता था। इर्दगिर्द की दीवारों में तीन तीन इंच लंबी हुकें लगी थीं।

44फिर हम अंदरूनी सहन में दाख़िल हुए। वहाँ शिमाली दरवाज़े के साथ एक कमरा मुलहिक़ था जो अंदरूनी सहन की तरफ़ खुला था और जिसका रुख़ जुनूब की तरफ़ था। जुनूबी दरवाज़े के साथ भी ऐसा कमरा था। उसका रुख़ शिमाल की तरफ़ था। 45मेरे राहनुमा ने मुझसे कहा, "जिस कमरे का रुख़ जुनूब की तरफ़ है वह उन इमामों के लिए है जो रब के घर की देख-भाल करते हैं, 46जबकि जिस कमरे का रुख़ शिमाल की तरफ़ है वह उन इमामों के लिए है जो क़ुरबानगाह की देख-भाल करते हैं। तमाम इमाम सदोक़ की औलाद हैं। लावी के क़बीले में से सिर्फ़ उन्हीं को रब के हुज़ूर आकर उस की ख़िदमत करने की इजाज़त है।"

अंदरूनी सहन और रब का घर

47मेरे राहनुमा ने अंदरूनी सहन की पैमाइश की। उस की लंबाई और चौड़ाई पौने दो दो सौ फ़ुट थी। क़ुरबानगाह इस सहन में रब के घर के सामने ही थी। 48फिर उसने मुझे रब के घर के बरामदे में ले जाकर दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं की पैमाइश की। मालूम हुआ कि यह पौने 9 फ़ुट मोटे हैं। दरवाज़े की चौड़ाई साढ़े 24 फ़ुट थी जबकि दाएँ -बाएँ की दीवारों की लंबाई सवा पाँच पाँच फ़ुट थी। 49चुनाँचे बरामदे की पूरी चौड़ाई 35 और लंबाई 21 फ़ुट थी। उसमें दाख़िल होने के लिए दस क़दमचोंवाली सीढ़ी बनाई गई थी। दरवाज़े के दोनों सतून-नुमा बाज़ुओं के साथ साथ एक एक सतून खड़ा किया गया था।

41 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे रब के घर के पहले कमरे यानी 'मुक़द्दस कमरा' में ले गया। उसने दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू नापे तो मालूम हुआ कि साढ़े दस दस फ़ुट मोटे हैं। 2दरवाज़े की चौड़ाई साढ़े 17 फ़ुट थी, और दाएँ -बाएँ की दीवारें पौने नौ नौ फ़ुट लंबी थीं। कमरे की पूरी लंबाई 70 फ़ुट और चौड़ाई 35 फ़ुट थी।

3फिर वह आगे बढ़कर सबसे अंदरूनी कमरे में दाख़िल हुआ। उसने दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं की पैमाइश की तो मालूम हुआ कि साढ़े तीन तीन फ़ुट मोटे हैं। दरवाज़े की चौड़ाई साढ़े 10 फ़ुट थी, और दाएँ -बाएँ की दीवारें सवा बारह बारह फ़ुट लंबी थीं। 4अंदरूनी कमरे की लंबाई

और चौड़ाई पैंतीस पैंतीस फ़ुट थी। वह बोला,
“यह मुक़द्दसतरीन कमरा है।”

रब के घर से मुलहिक़ कमरे

5फिर उसने रब के घर की बैरूनी दीवार नापी।
उस की मोटाई साढ़े 10 फ़ुट थी। दीवार के साथ
साथ कमरे तामीर किए गए थे। हर कमरे की
चौड़ाई 7 फ़ुट थी। 6कमरों की तीन मनज़िलें
थीं, कुल 30 कमरे थे। रब के घर की बैरूनी
दीवार दूसरी मनज़िल पर पहली मनज़िल की
निसबत कम मोटी और तीसरी मनज़िल पर दूसरी
मनज़िल की निसबत कम मोटी थी। नतीजतन
हर मनज़िल का वज़न उस की बैरूनी दीवार
पर था और ज़रूरत नहीं थी कि इस दीवार में
शहतीर लगाएँ। 7चुनाँचे दूसरी मनज़िल पहली
की निसबत चौड़ी और तीसरी दूसरी की निसबत
चौड़ी थी। एक सीढ़ी निचली मनज़िल से दूसरी
और तीसरी मनज़िल तक पहुँचाती थी।

8-11इन कमरों की बैरूनी दीवार पौने 9 फ़ुट
मोटी थी। जो कमरे रब के घर की शिमाली दीवार
में थे उनमें दाख़िल होने का एक दरवाज़ा था, और
इसी तरह जुनूबी कमरों में दाख़िल होने का एक
दरवाज़ा था। मैंने देखा कि रब का घर एक चबूतरे
पर तामीर हुआ है। इसका जितना हिस्सा उसके
इर्दगिर्द नज़र आता था वह पौने 9 फ़ुट चौड़ा और
साढ़े 10 फ़ुट ऊँचा था। रब के घर की बैरूनी
दीवार से मुलहिक़ कमरे इस पर बनाए गए थे।
इस चबूतरे और इमामों से मुस्तामल मकानों के
दरमियान खुली जगह थी जिसका फ़ासला 35
फ़ुट था। यह खुली जगह रब के घर के चारों तरफ़
नज़र आती थी।

मग़रिब में इमारत

12इस खुली जगह के मग़रिब में एक इमारत
थी जो साढ़े 157 फ़ुट लंबी और साढ़े 122 फ़ुट
चौड़ी थी। उस की दीवारें चारों तरफ़ पौने नौ नौ
फ़ुट मोटी थीं।

रब के घर की बैरूनी पैमाइश

13फिर मेरे राहनुमा ने बाहर से रब के घर की
पैमाइश की। उस की लंबाई 175 फ़ुट थी। रब के
घर की पिछली दीवार से मग़रिबी इमारत तक का
फ़ासला भी 175 फ़ुट था। 14फिर उसने रब के
घर के सामनेवाली यानी मशरिक़ी दीवार शिमाल
और जुनूब में खुली जगह समेत की पैमाइश की।
मालूम हुआ कि उसका फ़ासला भी 175 फ़ुट है।
15उसने मग़रिब में उस इमारत की लंबाई नापी
जो रब के घर के पीछे थी। मालूम हुआ कि यह
भी दोनों पहलुओं की गुज़रगाहों समेत 175 फ़ुट
लंबी है।

रब के घर का अंदरूनी हिस्सा

रब के घर के बरामदे, मुक़द्दस कमरे और
मुक़द्दसतरीन कमरे की दीवारों पर 16फ़र्श से
लेकर खिड़कियों तक लकड़ी के तख़्ते लगाए गए
थे। इन खिड़कियों को बंद किया जा सकता था।
17रब के घर की अंदरूनी दीवारों पर दरवाज़ों
के ऊपर तक तस्वीरें कंदा की गई थीं। 18खजूर
के दरख़्तों और करूबी फ़रिश्तों की तस्वीरें बारी
बारी नज़र आती थीं। हर फ़रिश्ते के दो चेहरे थे।
19इनसान का चेहरा एक तरफ़ के दरख़्त की
तरफ़ देखता था जबकि शेरबबर का चेहरा दूसरी
तरफ़ के दरख़्त की तरफ़ देखता था। यह दरख़्त
और करूबी पूरी दीवार पर बारी बारी मुनक़्क़श
किए गए थे, 20फ़र्श से लेकर दरवाज़ों के
ऊपर तक। 21मुक़द्दस कमरे में दाख़िल होनेवाले
दरवाज़े के दोनों बाज़ू मुरब्बा थे।

लकड़ी की क़ुरबानगाह

मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सामने
22लकड़ी की क़ुरबानगाह नज़र आई। उस की
ऊँचाई सवा 5 फ़ुट और चौड़ाई साढ़े तीन फ़ुट
थी। उसके कोने, पाया और चारों पहलू लकड़ी
से बने थे। उसने मुझसे कहा, “यह वही मेज़ है
जो रब के हुज़ूर रहती है।”

दरवाज़े

23मुक़द्दस कमरे में दाख़िल होने का एक दरवाज़ा था और मुक़द्दसतरीन कमरे का एक। 24हर दरवाज़े के दो किवाड़ थे, वह दरमियान में से खुलते थे। 25दीवारों की तरह मुक़द्दस कमरे के दरवाज़े पर भी खजूर के दरख़्त और करूबी फ़रिश्ते कंदा किए गए थे। और बरामदे के बाहरवाले दरवाज़े के ऊपर लकड़ी की छोटी-सी छत बनाई गई थी।

26बरामदे के दोनों तरफ़ खिड़कियाँ थीं, और दीवारों पर खजूर के दरख़्त कंदा किए गए थे।

इमामों के लिए मख़सूस कमरे

42 इसके बाद हम दुबारा बैरूनी सहन में आए। मेरा राहनुमा मुझे रब के घर के शिमाल में वाक़े एक इमारत के पास ले गया जो रब के घर के पीछे यानी मग़रिब में वाक़े इमारत के मुक़ाबिल थी। 2यह इमारत 175 फ़ुट लंबी और साढ़े 87 फ़ुट चौड़ी थी।

3उसका रुख़ अंदरूनी सहन की उस खुली जगह की तरफ़ था जो 35 फ़ुट चौड़ी थी। दूसरा रुख़ बैरूनी सहन के पक्के फ़र्श की तरफ़ था।

मकान की तीन मनज़िलें थीं। दूसरी मनज़िल पहली की निसबत कम चौड़ी और तीसरी दूसरी की निसबत कम चौड़ी थी। 4मकान के शिमाली पहलू में एक गुज़रगाह थी जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक ले जाती थी। उस की लंबाई 175 फ़ुट और चौड़ाई साढ़े 17 फ़ुट थी। कमरों के दरवाज़े सब शिमाल की तरफ़ खुलते थे। 5-6दूसरी मनज़िल के कमरे पहली मनज़िल की निसबत कम चौड़े थे ताकि उनके सामने टैरस हो। इसी तरह तीसरी मनज़िल के कमरे दूसरी की निसबत कम चौड़े थे। इस इमारत में सहन की दूसरी इमारतों की तरह सतून नहीं थे।

7कमरों के सामने एक बैरूनी दीवार थी जो उन्हें बैरूनी सहन से अलग करती थी। उस की लंबाई साढ़े 87 फ़ुट थी, 8क्योंकि बैरूनी सहन की तरफ़ कमरों की मिल मिलाकर लंबाई साढ़े 87 फ़ुट थी अगरचे पूरी दीवार की लंबाई 175 फ़ुट थी। 9बैरूनी सहन से इस इमारत में दाख़िल होने के लिए मशरिक़ की तरफ़ से आना पड़ता था। वहाँ एक दरवाज़ा था।

10रब के घर के जुनूब में उस जैसी एक और इमारत थी जो रब के घर के पीछेवाली यानी मग़रिबी इमारत के मुक़ाबिल थी। 11उसके कमरों के सामने भी मज़कूरा शिमाली इमारत जैसी गुज़रगाह थी। उस की लंबाई और चौड़ाई, डिज़ायन और दरवाज़े, ग़रज़ सब कुछ शिमाली मकान की मानिंद था। 12कमरों के दरवाज़े जुनूब की तरफ़ थे, और उनके सामने भी एक हिफ़ाज़ती दीवार थी। बैरूनी सहन से इस इमारत में दाख़िल होने के लिए मशरिक़ से आना पड़ता था। उसका दरवाज़ा भी गुज़रगाह के शुरू में था।

13उस आदमी ने मुझसे कहा, “यह दोनों इमारतें मुक़द्दस हैं। जो इमाम रब के हुज़ूर आते हैं वह इन्हीं में मुक़द्दसतरीन क़ुरबानियाँ खाते हैं। चूँकि यह कमरे मुक़द्दस हैं इसलिए इमाम इनमें मुक़द्दसतरीन क़ुरबानियाँ रखेंगे, ख़ाह ग़ल्ला, गुनाह या क़ुसूर की क़ुरबानियाँ क्यों न हों। 14जो इमाम मक़दिस से निकलकर बैरूनी सहन में जाना चाहें उन्हें इन कमरों में वह मुक़द्दस लिबास उतारकर छोड़ना है जो उन्होंने रब की ख़िदमत करते वक़्त पहने हुए थे। लाज़िम है कि वह पहले अपने कपड़े बदलें, फिर ही वहाँ जाएँ जहाँ बाक़ी लोग जमा होते हैं।”

बाहर से रब के घर की चारदीवारी की पैमाइश

15रब के घर के इहाते में सब कुछ नापने के बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिक़ी दरवाज़े से बाहर ले गया और बाहर से चारदीवारी की पैमाइश करने लगा। 16-20फ़ीते से पहले मशरिक़ी दीवार नापी, फिर शिमाली, जुनूबी और मग़रिबी दीवार। हर दीवार की लंबाई 875 फ़ुट थी। इस चारदीवारी का मक़सद यह था कि जो कुछ मुक़द्दस है वह उससे अलग किया जाए जो मुक़द्दस नहीं है।

रब अपने घर में वापस आ जाता है

43 मेरा राहनुमा मुझे दुबारा रब के घर
के मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया।
2अचानक इसराईल के ख़ुदा का जलाल मशरिक़
से आता हुआ दिखाई दिया। ज़बरदस्त आबशार
का-सा शोर सुनाई दिया, और ज़मीन उसके
जलाल से चमक रही थी। 3रब मुझ पर यों ज़ाहिर
हुआ जिस तरह दीगर रोयाओं में, पहले दरियाए-
किबार के किनारे और फिर उस वक़्त जब वह
यरूशलम को तबाह करने आया था।

मैं मुँह के बल गिर गया। 4रब का जलाल
मशरिक़ी दरवाज़े में से रब के घर में दाख़िल हुआ।
5फिर अल्लाह का रूह मुझे उठाकर अंदरूनी
सहन में ले गया। वहाँ मैंने देखा कि पूरा घर रब
के जलाल से मामूर है।

6मेरे पास खड़े आदमी की मौजूदगी में कोई रब
के घर में से मुझसे मुख़ातिब हुआ,

7“ऐ आदमज़ाद, यह मेरे तख़्त और मेरे
पाँवों के तल्वों का मक़ाम है। यहीं मैं हमेशा
तक इसराईलियों के दरमियान सुकूनत करूँगा।
आइंदा न कभी इसराईली और न उनके बादशाह
मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती करेंगे। न वह
अपनी ज़िनाकाराना बुतपरस्ती से, न बादशाहों
की लाशों से मेरे नाम की बेहुरमती करेंगे। 8माज़ी
में इसराईल के बादशाहों ने अपने महलों को मेरे
घर के साथ ही तामीर किया। उनकी दहलीज़
मेरी दहलीज़ के साथ और उनके दरवाज़े का बाज़ू
मेरे दरवाज़े के बाज़ू के साथ लगता था। एक ही
दीवार उन्हें मुझसे अलग रखती थी। यों उन्होंने
अपनी मकरूह हरकतों से मेरे मुक़द्दस नाम की
बेहुरमती की, और जवाब में मैंने अपने ग़ज़ब में
उन्हें हलाक कर दिया। 9लेकिन अब वह अपनी
ज़िनाकाराना बुतपरस्ती और अपने बादशाहों की
लाशें मुझसे दूर रखेंगे। तब मैं हमेशा तक उनके
दरमियान सुकूनत करूँगा।

10ऐ आदमज़ाद, इसराईलियों को इस घर के
बारे में बता दे ताकि उन्हें अपने गुनाहों पर शर्म
आए। वह ध्यान से नए घर के नक़्शे का मुतालआ
करें। 11अगर उन्हें अपनी हरकतों पर शर्म आए
तो उन्हें घर की तफ़सीलात भी दिखा दे, यानी
उस की तरतीब, उसके आने जाने के रास्ते और
उसका पूरा इंतज़ाम तमाम क़वायद और अहकाम
समेत। सब कुछ उनके सामने ही लिख दे ताकि
वह उसके पूरे इंतज़ाम के पाबंद रहें और उसके
तमाम क़वायद की पैरवी करें। 12रब के घर के
लिए मेरी हिदायत सुन! इस पहाड़ की चोटी
गिर्दो-नवाह के तमाम इलाक़े समेत मुक़द्दसतरीन
जगह है। यह घर के लिए मेरी हिदायत है।”

भस्म होनेवाली क़ुरबानियों की क़ुरबानगाह

13क़ुरबानगाह यों बनाई गई थी कि उसका
पाया नाली से घिरा हुआ था जो 21 इंच गहरी
और उतनी ही चौड़ी थी। बाहर की तरफ़ नाली के
किनारे पर छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई 9
इंच थी। 14क़ुरबानगाह के तीन हिस्से थे। सबसे
निचला हिस्सा साढ़े तीन फ़ुट ऊँचा था। इस पर
बना हुआ हिस्सा 7 फ़ुट ऊँचा था, लेकिन उस की
चौड़ाई कुछ कम थी, इसलिए चारों तरफ़ निचले
हिस्से का ऊपरवाला किनारा नज़र आता था। इस
किनारे की चौड़ाई 21 इंच थी। तीसरा और सबसे
ऊपरवाला हिस्सा भी इसी तरह बनाया गया
था। वह दूसरे हिस्से की निसबत कम चौड़ा था,
इसलिए चारों तरफ़ दूसरे हिस्से का ऊपरवाला
किनारा नज़र आता था। इस किनारे की चौड़ाई
भी 21 इंच थी। 15तीसरे हिस्से पर क़ुरबानियाँ
जलाई जाती थीं, और चारों कोनों पर सींग लगे
थे। यह हिस्सा भी 7 फ़ुट ऊँचा था। 16क़ुरबानगाह
की ऊपरवाली सतह मुरब्बा शक्ल की थी। उस
की चौड़ाई और लंबाई इक्कीस इक्कीस फ़ुट थी।
17दूसरा हिस्सा भी मुरब्बा शक्ल का था। उस की
चौड़ाई और लंबाई साढ़े चौबीस चौबीस फ़ुट थी।
उसका ऊपरवाला किनारा नज़र आता था, और
उस पर 21 इंच चौड़ी नाली थी, यों कि किनारे पर
छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई साढ़े 10 इंच

थी। क़ुरबानगाह पर चढ़ने के लिए उसके मशरिक़ में सीढ़ी थी।

क़ुरबानगाह की मख़सूसियत

18फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, "ऐ आदमज़ाद, रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस क़ुरबानगाह को तामीर करने के बाद तुझे इस पर क़ुरबानियाँ जलाकर इसे मख़सूस करना है। साथ साथ इस पर क़ुरबानियों का ख़ून भी छिड़कना है। इस सिलसिले में मेरी हिदायात सुन!

19सिर्फ़ लावी के क़बीले के उन इमामों को रब के घर में मेरे हुज़ूर ख़िदमत करने की इजाज़त है जो सदोक़ की औलाद हैं।

रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन्हें एक जवान बैल दे ताकि वह उसे गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश करें। 20इस बैल का कुछ ख़ून लेकर क़ुरबानगाह के चारों सींगों, निचले हिस्से के चारों कोनों और इर्दगिर्द उसके किनारे पर लगा दे। यों तू क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा देकर उसे पाक-साफ़ करेगा। 21इसके बाद जवान बैल को मक़दिस से बाहर किसी मुक़र्ररा जगह पर ले जा। वहाँ उसे जला देना है।

22अगले दिन एक बेऐब बकरे को क़ुरबान कर। यह भी गुनाह की क़ुरबानी है, और इसके ज़रीए क़ुरबानगाह को पहली क़ुरबानी की तरह पाक-साफ़ करना है।

23पाक-साफ़ करने के इस सिलसिले की तकमील पर एक बेऐब बैल और एक बेऐब मेंढे को चुनकर 24रब को पेश कर। इमाम इन जानवरों पर नमक छिड़ककर इन्हें रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करें।

25लाज़िम है कि तू सात दिन तक रोज़ाना एक बकरा, एक जवान बैल और एक मेंढा क़ुरबान करे। सब जानवर बेऐब हों। 26सात दिनों की इस काररवाई से तुम क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा देकर उसे पाक-साफ़ और मख़सूस करोगे। 27आठवें दिन से इमाम बाक़ायदा क़ुरबानियाँ शुरू कर सकेंगे। उस वक़्त से वह तुम्हारे लिए भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाएँगे। तब तुम मुझे मंज़ूर होगे। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।"

रब के घर का बैरूनी मशरिक़ी दरवाज़ा बंद किया जाता है

44 मेरा राहनुमा मुझे दुबारा मक़दिस के बैरूनी मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया। अब वह बंद था। 2रब ने फ़रमाया, "अब से यह दरवाज़ा हमेशा तक बंद रहे। इसे कभी नहीं खोलना है। किसी को भी इसमें से दाख़िल होने की इजाज़त नहीं, क्योंकि रब जो इसराईल का ख़ुदा है इस दरवाज़े में से होकर रब के घर में दाख़िल हुआ है। 3सिर्फ़ इसराईल के हुक्मरान को इस दरवाज़े में बैठने और मेरे हुज़ूर क़ुरबानी का अपना हिस्सा खाने की इजाज़त है। लेकिन इसके लिए वह दरवाज़े में से गुज़र नहीं सकेगा बल्कि बैरूनी सहन की तरफ़ से उसमें दाख़िल होगा। वह दरवाज़े के साथ मुलहिक़ बरामदे से होकर वहाँ पहुँचेगा और इसी रास्ते से वहाँ से निकलेगा भी।"

अकसर लावियों की ख़िदमत को महदूद किया जाता है

4फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाज़े में से होकर दुबारा अंदरूनी सहन में ले गया। हम रब के घर के सामने पहुँचे। मैंने देखा कि रब का घर रब के जलाल से मामूर हो रहा है। मैं मुँह के बल गिर गया।

5रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, ध्यान से देख, ग़ौर से सुन! रब के घर के बारे में उन तमाम हिदायात पर तवज्जुह दे जो मैं तुझे बतानेवाला हूँ। ध्यान दे कि कौन कौन उसमें जा सकेगा। 6इस सरकश क़ौम इसराईल को बता,

'ऐ इसराईली क़ौम, रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम्हारी मकरूह हरकतें बहुत हैं, अब बस करो! 7तुम परदेसियों को मेरे मक़दिस में लाए हो, ऐसे लोगों को जो बातिन और ज़ाहिर

में नामख़तून हैं। और यह तुमने उस वक़्त किया
जब तुम मुझे मेरी ख़ुराक यानी चरबी और ख़ून
पेश कर रहे थे। यों तुमने मेरे घर की बेहुरमती
करके अपनी घिनौनी हरकतों से वह अहद तोड़
डाला है जो मैंने तुम्हारे साथ बाँधा था। 8तुम
ख़ुद मेरे मक़दिस में ख़िदमत नहीं करना चाहते
थे बल्कि तुमने परदेसियों को यह ज़िम्मेदारी दी
थी कि वह तुम्हारी जगह यह ख़िदमत अंजाम दें।

9इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
आइंदा जो भी ग़ैरमुल्की अंदरूनी और बैरूनी तौर
पर नामख़तून है उसे मेरे मक़दिस में दाख़िल
होने की इजाज़त नहीं। इसमें वह अजनबी भी
शामिल हैं जो इसराईलियों के दरमियान रहते
हैं। 10जब इसराईली भटक गए और मुझसे दूर
होकर बुतों के पीछे लग गए तो अकसर लावी
भी मुझसे दूर हुए। अब उन्हें अपने गुनाह की
सज़ा भुगतनी पड़ेगी। 11आइंदा वह मेरे मक़दिस
में हर क़िस्म की ख़िदमत नहीं करेंगे। उन्हें सिर्फ़
दरवाज़ों की पहरादारी करने और जानवरों को
ज़बह करने की इजाज़त होगी। इन जानवरों में
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ भी शामिल होंगी और
ज़बह की क़ुरबानियाँ भी। लावी क़ौम की ख़िदमत
के लिए रब के घर में हाज़िर रहेंगे, 12लेकिन चूँकि
वह अपने हमवतनों के बुतों के सामने लोगों की
ख़िदमत करके उनके लिए गुनाह का बाइस बने
रहे इसलिए मैंने अपना हाथ उठाकर क़सम खाई
है कि उन्हें इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। यह रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

13अब से वह इमाम की हैसियत से मेरे क़रीब
आकर मेरी ख़िदमत नहीं करेंगे, अब से वह
उन चीज़ों के क़रीब नहीं आएँगे जिनको मैंने
मुक़द्दसतरीन क़रार दिया है। 14इसके बजाए मैं
उन्हें रब के घर के निचले दर्जे की ज़िम्मेदारियाँ
दूँगा।

इमामों के लिए हिदायात

15लेकिन रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
लावी का एक ख़ानदान उनमें शामिल नहीं है।
सदोक़ का ख़ानदान आइंदा भी मेरी ख़िदमत
करेगा। उसके इमाम उस वक़्त भी वफ़ादारी
से मेरे मक़दिस में मेरी ख़िदमत करते रहे जब
इसराईल के बाक़ी लोग मुझसे दूर हो गए
थे। इसलिए यह आइंदा भी मेरे हुज़ूर आकर
मुझे क़ुरबानियों की चरबी और ख़ून पेश करेंगे।
16सिर्फ़ यही इमाम मेरे मक़दिस में दाख़िल होंगे
और मेरी मेज़ पर मेरी ख़िदमत करके मेरे तमाम
फ़रायज़ अदा करेंगे।

17जब भी इमाम अंदरूनी दरवाज़े में दाख़िल
होते हैं तो लाज़िम है कि वह कतान के कपड़े
पहन लें। अंदरूनी सहन और रब के घर में ख़िदमत
करते वक़्त ऊन के कपड़े पहनना मना है। 18वह
कतान की पगड़ी और पाजामा पहनें, क्योंकि
उन्हें पसीना दिलानेवाले कपड़ों से गुरेज़ करना
है। 19जब भी इमाम अंदरूनी सहन से दुबारा
बैरूनी सहन में जाना चाहें तो लाज़िम है कि वह
ख़िदमत के लिए मुस्तामल कपड़ों को उतारें। वह
इन कपड़ों को मुक़द्दस कमरों में छोड़ आएँ और
आम कपड़े पहन लें, ऐसा न हो कि मुक़द्दस कपड़े
छूने से आम लोगों की जान ख़तरे में पड़ जाए।

20न इमाम अपना सर मुँडवाएँ, न उनके बाल
लंबे हों बल्कि वह उन्हें कटवाते रहें। 21इमाम को
अंदरूनी सहन में दाख़िल होने से पहले मै पीना
मना है।

22इमाम को किसी तलाक़शुदा औरत या बेवा
से शादी करने की इजाज़त नहीं है। वह सिर्फ़
इसराईली कुँवारी से शादी करे। सिर्फ़ उस वक़्त
बेवा से शादी करने की इजाज़त है जब मरहूम
शौहर इमाम था।

23इमाम अवाम को मुक़द्दस और ग़ैर-
मुक़द्दस चीज़ों में फ़रक़ की तालीम दें। वह उन्हें
नापाक और पाक चीज़ों में इम्तियाज़ करना
सिखाएँ। 24अगर तनाज़ा हो तो इमाम मेरे
अहकाम के मुताबिक़ ही उस पर फ़ैसला करें।
उनका फ़र्ज़ है कि वह मेरी मुक़र्ररा ईदों को मेरी
हिदायात और क़वायद के मुताबिक़ ही मनाएँ।
वह मेरा सबत का दिन मख़सूसो-मुक़द्दस रखें।

25इमाम अपने आपको किसी लाश के पास जाने से नापाक न करे। इसकी इजाज़त सिर्फ़ इसी सूरत में है कि उसके माँ-बाप, बच्चों, भाइयों या ग़ैरशादीशुदा बहनों में से कोई इंतक़ाल कर जाए। 26अगर कभी ऐसा हो तो वह अपने आपको पाक-साफ़ करने के बाद मज़ीद सात दिन इंतज़ार करे, 27फिर मक़दिस के अंदरूनी सहन में जाकर अपने लिए गुनाह की क़ुरबानी पेश करे। तब ही वह दुबारा मक़दिस में ख़िदमत कर सकता है। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

28सिर्फ़ मैं ही इमामों का मौरूसी हिस्सा हूँ। उन्हें इसराईल में मौरूसी मिलकियत मत देना, क्योंकि मैं ख़ुद उनकी मौरूसी मिलकियत हूँ। 29खाने के लिए इमामों को ग़ल्ला, गुनाह और क़ुसूर की क़ुरबानियाँ मिलेंगी, नीज़ इसराईल में वह सब कुछ जो रब के लिए मख़सूस किया जाता है। 30इमामों को फ़सल के पहले फल का बेहतरीन हिस्सा और तुम्हारे तमाम हदिये मिलेंगे। उन्हें अपने गुँधे हुए आटे से भी हिस्सा देना है। तब अल्लाह की बरकत तेरे घराने पर ठहरेगी।

31जो परिंदा या दीगर जानवर फ़ितरी तौर पर या किसी दूसरे जानवर के हमले से मर जाए उसका गोश्त खाना इमाम के लिए मना है।

इसराईल में रब का हिस्सा

45 जब तुम मुल्क को क़ुरा डालकर क़बीलों में तक़सीम करोगे तो एक हिस्से को रब के लिए मख़सूस करना है। उस ज़मीन की लंबाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई 10 किलोमीटर होगी। पूरी ज़मीन मुक़द्दस होगी।

2इस ख़ित्ते में एक प्लाट रब के घर के लिए मख़सूस होगा। उस की लंबाई भी 875 फ़ुट होगी और उस की चौड़ाई भी। उसके इर्दगिर्द खुली जगह होगी जिसकी चौड़ाई साढ़े 87 फ़ुट होगी। 3ख़ित्ते का आधा हिस्सा अलग किया जाए। उस की लंबाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई 5 किलोमीटर होगी, और उसमें मक़दिस यानी मुक़द्दसतरीन जगह होगी। 4यह ख़ित्ता मुल्क का मुक़द्दस इलाक़ा होगा। वह उन इमामों के लिए मख़सूस होगा जो मक़दिस में उस की ख़िदमत करते हैं। उसमें उनके घर और मक़दिस का मख़सूस प्लाट होगा।

5ख़ित्ते का दूसरा हिस्सा उन बाक़ी लावियों को दिया जाएगा जो रब के घर में ख़िदमत करेंगे। यह उनकी मिलकियत होगी, और उसमें वह अपनी आबादियाँ बना सकेंगे। उस की लंबाई और चौड़ाई पहले हिस्से के बराबर होगी।

6मुक़द्दस ख़ित्ते से मुलहिक़ एक और ख़ित्ता होगा जिसकी लंबाई साढ़े 12 किलो-मीटर और चौड़ाई ढाई किलोमीटर होगी। यह एक ऐसे शहर के लिए मख़सूस होगा जिसमें कोई भी इसराईली रह सकेगा।

हुक्मरान के लिए ज़मीन

7हुक्मरान के लिए भी ज़मीन अलग करनी है। यह ज़मीन मुक़द्दस ख़ित्ते की मशरिक़ी हद से लेकर मुल्क की मशरिक़ी सरहद तक और मुक़द्दस ख़ित्ते की मग़रिबी हद से लेकर समुंदर तक होगी। चुनाँचे मशरिक़ से मग़रिब तक मुक़द्दस ख़ित्ते और हुक्मरान के इलाक़े का मिल मिलाकर फ़ासला उतना है जितना क़बायली इलाक़ों का है। 8यह इलाक़ा मुल्के-इसराईल में हुक्मरान का हिस्सा होगा। फिर वह आइंदा मेरी क़ौम पर ज़ुल्म नहीं करेगा बल्कि मुल्क के बाक़ी हिस्से को इसराईल के क़बीलों पर छोड़ेगा।

हुक्मरान के लिए हिदायात

9रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ इसराईली हुक्मरानो, अब बस करो! अपनी ग़लत हरकतों से बाज़ आओ। अपना ज़ुल्मो-तशद्दुद छोड़कर इनसाफ़ और रास्तबाज़ी क़ायम करो। मेरी क़ौम को उस की मौरूसी ज़मीन से भगाने से बाज़ आओ। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

10सहीह तराज़ू इस्तेमाल करो, तुम्हारे बाट
और पैमाइश के आलात ग़लत न हों। 11ग़ल्ला
नापने का बरतन बनाम ऐफ़ा माए नापने के बरतन
बनाम बत जितना बड़ा हो। दोनों के लिए कसौटी
ख़ोमर है। एक ख़ोमर 10 ऐफ़ा और 10 बत के
बराबर है। 12तुम्हारे बाट यों हों कि 20 जीरह 1
मिस्क़ाल के बराबर और 60 मिस्क़ाल 1 माना
के बराबर हों।

13दर्जे-ज़ैल तुम्हारे बाक़ायदा हदिये हैं :
अनाज : तुम्हारी फ़सल का 60वाँ हिस्सा,
जौ : तुम्हारी फ़सल का 60वाँ हिस्सा,
14ज़ैतून का तेल : तुम्हारी फ़सल का 100वाँ
हिस्सा (तेल को बत के हिसाब से नापना है। 10
बत 1 ख़ोमर और 1 कोर के बराबर है।),
15 200 भेड़-बकरियों में से एक।

यह चीज़ें ग़ल्ला की नज़रों के लिए,
भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और सलामती की
क़ुरबानियों के लिए मुक़र्रर हैं। उनसे क़ौम का
कफ़्फ़ारा दिया जाएगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़
का फ़रमान है।

16लाज़िम है कि तमाम इसराईली यह हदिये
मुल्क के हुक्मरान के हवाले करें। 17हुक्मरान का
फ़र्ज़ होगा कि वह नए चाँद की ईदों, सबत के
दिनों और दीगर ईदों पर तमाम इसराईली क़ौम के
लिए क़ुरबानियाँ मुहैया करे। इनमें भस्म होनेवाली
क़ुरबानियाँ, गुनाह और सलामती की क़ुरबानियाँ
और ग़ल्ला और मै की नज़रें शामिल होंगी। यों
वह इसराईल का कफ़्फ़ारा देगा।

बड़ी ईदों पर क़ुरबानियाँ

18रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि पहले
महीने[a] के पहले दिन को एक बेऐब बैल को
क़ुरबान करके मक़दिस को पाक-साफ़ कर।
19इमाम बैल का ख़ून लेकर उसे रब के घर के
दरवाज़ों के बाज़ुओं, क़ुरबानगाह के दरमियानी
हिस्से के कोनों और अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाले
दरवाज़ों के बाज़ुओं पर लगा दे। 20यही अमल
पहले महीने के सातवें दिन भी कर ताकि उन
सबका कफ़्फ़ारा दिया जाए जिन्होंने ग़ैरइरादी तौर
पर या बेख़बरी से गुनाह किया हो। यों तुम रब के
घर का कफ़्फ़ारा दोगे।

21पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद
का आग़ाज़ हो। उसे सात दिन मनाओ, और
उसके दौरान सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खाओ। 22पहले
दिन मुल्क का हुक्मरान अपने और तमाम क़ौम
के लिए गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर एक
बैल पेश करे। 23नीज़, वह ईद के सात दिन के
दौरान रोज़ाना सात बेऐब बैल और सात मेंढे भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर क़ुरबान करे और
गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर एक एक बकरा
पेश करे। 24वह हर बैल और हर मेंढे के साथ
साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करे। इसके लिए
वह फ़ी जानवर 16 किलोग्राम मैदा और 4 लिटर
तेल मुहैया करे।

25सातवें महीने[b] के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों
की ईद शुरू होती है। हुक्मरान इस ईद पर भी
सात दिन के दौरान वही क़ुरबानियाँ पेश करे जो
फ़सह की ईद के लिए दरकार हैं यानी गुनाह की
क़ुरबानियाँ, भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ, ग़ल्ला
की नज़रें और तेल।

ईदों पर हुक्मरान की जानिब से क़ुरबानियाँ

46 रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
लाज़िम है कि अंदरूनी सहन में
पहुँचानेवाला मशरिक़ी दरवाज़ा इतवार से लेकर
जुमे तक बंद रहे। उसे सिर्फ़ सबत और नए चाँद के
दिन खोलना है। 2उस वक़्त हुक्मरान बैरूनी सहन
से होकर मशरिक़ी दरवाज़े के बरामदे में दाख़िल
हो जाए और उसमें से गुज़रकर दरवाज़े के बाज़ू
के पास खड़ा हो जाए। वहाँ से वह इमामों को उस
की भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ
पेश करते हुए देख सकेगा। दरवाज़े की दहलीज़
पर वह सिजदा करेगा, फिर चला जाएगा। यह
दरवाज़ा शाम तक खुला रहे। 3लाज़िम है कि

[a]मार्च ता अप्रैल।

[b]सितंबर ता अक्तूबर।

बाक़ी इसराईली सबत और नए चाँद के दिन
बैरूनी सहन में इबादत करें। वह इसी मशरिक़ी
दरवाज़े के पास आकर मेरे हुज़ूर औंधे मुँह हो
जाएँ।
4सबत के दिन हुक्मरान छः बेऐब भेड़ के
बच्चे और एक बेऐब मेंढा चुनकर रब को भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 5वह हर
मेंढे के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करे यानी
16 किलोग्राम मैदा और 4 लिटर ज़ैतून का तेल।
हर भेड़ के बच्चे के साथ वह उतना ही ग़ल्ला दे
जितना जी चाहे। 6नए चाँद के दिन वह एक जवान
बैल, छः भेड़ के बच्चे और एक मेंढा पेश करे। सब
बेऐब हों। 7जवान बैल और मेंढे के साथ ग़ल्ला की
नज़र भी पेश की जाए। ग़ल्ला की यह नज़र 16
किलोग्राम मैदे और 4 लिटर ज़ैतून के तेल पर
मुश्तमिल हो। वह हर भेड़ के बच्चे के साथ उतना
ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे।
8हुक्मरान अंदरूनी मशरिक़ी दरवाज़े में बैरूनी
सहन से होकर दाख़िल हो, और वह इसी रास्ते
से निकले भी। 9जब बाक़ी इसराईली किसी ईद
पर रब को सिजदा करने आएँ तो जो शिमाली
दरवाज़े से बैरूनी सहन में दाख़िल हों वह इबादत
के बाद जुनूबी दरवाज़े से निकलें, और जो जुनूबी
दरवाज़े से दाख़िल हों वह शिमाली दरवाज़े से
निकलें। कोई उस दरवाज़े से न निकले जिसमें
से वह दाख़िल हुआ बल्कि मुक़ाबिल के दरवाज़े
से। 10हुक्मरान उस वक़्त सहन में दाख़िल हो जब
बाक़ी इसराईली दाख़िल हो रहे हों, और वह उस
वक़्त रवाना हो जब बाक़ी इसराईली रवाना हो
जाएँ।
11ईदों और मुक़र्ररा तहवारों पर बैल और मेंढे
के साथ ग़ल्ला की नज़र पेश की जाए। ग़ल्ला की
यह नज़र 16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर ज़ैतून
के तेल पर मुश्तमिल हो। हुक्मरान भेड़ के बच्चों
के साथ उतना ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे।
12जब हुक्मरान अपनी ख़ुशी से मुझे क़ुरबानी
पेश करना चाहे ख़ाह भस्म होने वाली या
सलामती की क़ुरबानी हो, तो उसके लिए अंदरूनी
दरवाज़े का मशरिक़ी दरवाज़ा खोला जाए। वहाँ
वह अपनी क़ुरबानी यों पेश करे जिस तरह सबत
के दिन करता है। उसके निकलने पर यह दरवाज़ा
बंद कर दिया जाए।

रोज़ाना की क़ुरबानी

13इसराईल रब को हर सुबह एक बेऐब
यकसाला भेड़ का बच्चा पेश करे। भस्म होनेवाली
यह क़ुरबानी रोज़ाना चढ़ाई जाए। 14साथ साथ
ग़ल्ला की नज़र पेश की जाए। इसके लिए सवा
लिटर ज़ैतून का तेल ढाई किलोग्राम मैदे के साथ
मिलाया जाए। ग़ल्ला की यह नज़र हमेशा ही मुझे
पेश करनी है। 15लाज़िम है कि हर सुबह भेड़ का
बच्चा, मैदा और तेल मेरे लिए जलाया जाए।

हुक्मरान की मौरूसी ज़मीन

16क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि अगर
इसराईल का हुक्मरान अपने किसी बेटे को कुछ
मौरूसी ज़मीन दे तो यह ज़मीन बेटे की मौरूसी
ज़मीन बनकर उस की औलाद की मिलकियत
रहेगी। 17लेकिन अगर हुक्मरान कुछ मौरूसी
ज़मीन अपने किसी मुलाज़िम को दे तो यह ज़मीन
सिर्फ़ अगले बहाली के साल तक मुलाज़िम
के हाथ में रहेगी। फिर यह दुबारा हुक्मरान के
क़ब्ज़े में वापस आएगी। क्योंकि यह मौरूसी
ज़मीन मुस्तक़िल तौर पर उस की और उसके
बेटों की मिलकियत है। 18हुक्मरान को जबरन
दूसरे इसराईलियों की मौरूसी ज़मीन अपनाने की
इजाज़त नहीं। लाज़िम है कि जो भी ज़मीन वह
अपने बेटों में तक़सीम करे वह उस की अपनी
ही मौरूसी ज़मीन हो। मेरी क़ौम में से किसी
को निकालकर उस की मौरूसी ज़मीन से महरूम
करना मना है’।”

रब के घर का किचन

19इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे उन कमरों के
दरवाज़े के पास ले गया जिनका रुख़ शिमाल
की तरफ़ था और जो अंदरूनी सहन के जुनूबी

दरवाज़े के क़रीब थे। यह इमामों के मुक़द्दस कमरे हैं। उसने मुझे कमरों के मग़रिबी सिरे में एक जगह दिखा कर 20कहा, “यहाँ इमाम वह गोश्त उबालेंगे जो गुनाह और क़ुसूर की क़ुरबानियों में से उनका हिस्सा बनता है। यहाँ वह ग़ल्ला की नज़र लेकर रोटी भी बनाएँगे। क़ुरबानियों में से कोई भी चीज़ बैरूनी सहन में नहीं लाई जा सकती, ऐसा न हो कि मुक़द्दस चीज़ें छूने से आम लोगों की जान ख़तरे में पड़ जाए।”

21फिर मेरा राहनुमा दुबारा मेरे साथ बैरूनी सहन में आ गया। वहाँ उसने मुझे उसके चार कोने दिखाए। हर कोने में एक सहन था 22जिसकी लंबाई 70 फ़ुट और चौड़ाई साढ़े 52 फ़ुट थी। हर सहन इतना ही बड़ा था 23और एक दीवार से घिरा हुआ था। दीवार के साथ साथ चूल्हे थे। 24मेरे राहनुमा ने मुझे बताया, “यह वह किचन हैं जिनमें रब के घर के ख़ादिम लोगों की पेशकरदा क़ुरबानियाँ उबालेंगे।”

रब के घर में से निकलनेवाला दरिया

47 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे एक बार फिर रब के घर के दरवाज़े के पास ले गया। यह दरवाज़ा मशरिक़ में था, क्योंकि रब के घर का रुख़ ही मशरिक़ की तरफ़ था। मैंने देखा कि दहलीज़ के नीचे से पानी निकल रहा है। दरवाज़े से निकलकर वह पहले रब के घर की जुनूबी दीवार के साथ साथ बहता था, फिर क़ुरबानगाह के जुनूब में से गुज़रकर मशरिक़ की तरफ़ बह निकला। 2मेरा राहनुमा मेरे साथ बैरूनी सहन के शिमाली दरवाज़े में से निकला। बाहर चारदीवारी के साथ साथ चलते चलते हम बैरूनी सहन के मशरिक़ी दरवाज़े के पास पहुँच गए। मैंने देखा कि पानी इस दरवाज़े के जुनूबी हिस्से में से निकल रहा है।

3हम पानी के किनारे किनारे चल पड़े। मेरे राहनुमा ने अपने फ़ीते के साथ आधा किलोमीटर का फ़ासला नापा। फिर उसने मुझे पानी में से गुज़रने को कहा। यहाँ पानी टख़नों तक पहुँचता था। 4उसने मज़ीद आधे किलोमीटर का फ़ासला नापा, फिर मुझे दुबारा पानी में से गुज़रने को कहा। अब पानी घुटनों तक पहुँचा। जब उसने तीसरी मरतबा आधा किलोमीटर का फ़ासला नापकर मुझे उसमें से गुज़रने दिया तो पानी कमर तक पहुँचा। 5एक आख़िरी दफ़ा उसने आधे किलोमीटर का फ़ासला नापा। अब मैं पानी में से गुज़र न सका। पानी इतना गहरा था कि उसमें से गुज़रने के लिए तैरने की ज़रूरत थी।

6उसने मुझसे पूछा, “ऐ आदमज़ाद, क्या तूने ग़ौर किया है?” फिर वह मुझे दरिया के किनारे तक वापस लाया।

7जब वापस आया तो मैंने देखा कि दरिया के दोनों किनारों पर मुतअद्दिद दरख़्त लगे हैं। 8वह बोला, “यह पानी मशरिक़ की तरफ़ बहकर वादीए-यरदन में पहुँचता है। उसे पार करके वह बहीराए-मुरदार में आ जाता है। उसके असर से बहीराए-मुरदार का नमकीन पानी पीने के क़ाबिल हो जाएगा। 9जहाँ भी दरिया बहेगा वहाँ के बेशुमार जानदार जीते रहेंगे। बहुत मछलियाँ होंगी, और दरिया बहीराए-मुरदार का नमकीन पानी पीने के क़ाबिल बनाएगा। जहाँ से भी गुज़रेगा वहाँ सब कुछ फलता-फूलता रहेगा। 10ऐन-जदी से लेकर ऐन-अजलैम तक उसके किनारों पर मछेरे खड़े होंगे। हर तरफ़ उनके जाल सूखने के लिए फैलाए हुए नज़र आएँगे। दरिया में हर क़िस्म की मछलियाँ होंगी, उतनी जितनी बहीराए-रूम में पाई जाती हैं। 11सिर्फ़ बहीराए-मुरदार के इर्दगिर्द की दलदली जगहों और जोहड़ों का पानी नमकीन रहेगा, क्योंकि वह नमक हासिल करने के लिए इस्तेमाल होगा। 12दरिया के दोनों किनारों पर हर क़िस्म के फलदार दरख़्त उगेंगे। इन दरख़्तों के पत्ते न कभी मुरझाएँगे, न कभी उनका फल ख़त्म होगा। वह हर महीने फल लाएँगे, इसलिए कि मक़दिस का पानी उनकी आबपाशी करता रहेगा। उनका फल लोगों की ख़ुराक बनेगा, और उनके पत्ते शफ़ा देंगे।”

इसराईल की सरहद्दें

13फिर रब क़ादिरे-मुतलक़ ने फ़रमाया, "मैं
तुझे उस मुल्क की सरहद्दें बताता हूँ जो बारह
क़बीलों में तक़सीम करना है। यूसुफ़ को दो हिस्से
देने हैं, बाक़ी क़बीलों को एक एक हिस्सा। 14मैंने
अपना हाथ उठाकर क़सम खाई थी कि मैं यह
मुल्क तुम्हारे बापदादा को अता करूँगा, इसलिए
तुम यह मुल्क मीरास में पाओगे। अब उसे आपस
में बराबर तक़सीम कर लो।

15शिमाली सरहद बहीराए-रूम से शुरू होकर
मशरिक़ की तरफ़ हतलून, लबो-हमात और
सिदाद के पास से गुज़रती है। 16वहाँ से वह बेरोता
और सिबरैम के पास पहुँचती है (सिबरैम मुल्के-
दमिश्क़ और मुल्के-हमात के दरमियान वाक़े है)।
फिर सरहद हसर-एनान शहर तक आगे निकलती
है जो हौरान की सरहद पर वाक़े है। 17ग़रज़
शिमाली सरहद बहीराए-रूम से लेकर हसर-एनान
तक पहुँचती है। दमिश्क़ और हमात की सरहद्दें
उसके शिमाल में हैं।

18मुल्क की मशरिक़ी सरहद वहाँ शुरू होती है
जहाँ दमिश्क़ का इलाक़ा हौरान के पहाड़ी इलाक़े
से मिलता है। वहाँ से सरहद दरियाए-यरदन के
साथ साथ चलती हुई जुनूब में बहीराए-रूम के
पास तमर शहर तक पहुँचती है। यों दरियाए-
यरदन मुल्के-इसराईल की मशरिक़ी सरहद और
मुल्के-जिलियाद की मग़रिबी सरहद है।

19जुनूबी सरहद तमर से शुरू होकर जु-
नूब-मग़रिब की तरफ़ चलती चलती मरीबा-
क़ादिस के चश्मों तक पहुँचती है। फिर वह
शिमाल-मग़रिब की तरफ़ रुख़ करके मिसर की
सरहद यानी वादीए-मिसर के साथ साथ बहीराए-
रूम तक पहुँचती है।

20मग़रिबी सरहद बहीराए-रूम है जो शिमाल
में लबो-हमात के मुक़ाबिल ख़त्म होती है।

21मुल्क को अपने क़बीलों में तक़सीम करो!
22यह तुम्हारी मौरूसी ज़मीन होगी। जब तुम
क़ुरा डालकर उसे आपस में तक़सीम करो तो
उन ग़ैरमुल्कियों को भी ज़मीन मिलनी है जो
तुम्हारे दरमियान रहते और जिनके बच्चे यहाँ
पैदा हुए हैं। तुम्हारा उनके साथ वैसा सुलूक हो
जैसा इसराईलियों के साथ। क़ुरा डालते वक़्त
उन्हें इसराईली क़बीलों के साथ ज़मीन मिलनी
है। 23रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस
क़बीले में भी परदेसी आबाद हों वहाँ तुम्हें उन्हें
मौरूसी ज़मीन देनी है।

क़बीलों में मुल्क की तक़सीम

48
1-7इसराईल की शिमाली सरहद
बहीराए-रूम से शुरू होकर मश-
रिक़ की तरफ़ हतलून, लबो-हमात और हसर-
एनान के पास से गुज़रती है। दमिश्क़ और हमात
सरहद के शिमाल में हैं। हर क़बीले को मुल्क
का एक हिस्सा मिलेगा। हर ख़ित्ते का एक
सिरा मुल्क की मशरिक़ी सरहद और दूसरा सिरा
मग़रिबी सरहद होगा। शिमाल से लेकर जुनूब तक
क़बायली इलाक़ों की यह तरतीब होगी : दान,
आशर, नफ़ताली, मनस्सी, इफ़राईम, रूबिन और
यहूदाह।

मुल्क के बीच में मख़सूस इलाक़ा

8यहूदाह के जुनूब में वह इलाक़ा होगा जो तुम्हें
मेरे लिए अलग करना है। क़बायली इलाक़ों की
तरह उसका भी एक सिरा मुल्क की मशरिक़ी
सरहद और दूसरा सिरा मग़रिबी सरहद होगा।
शिमाल से जुनूब तक का फ़ासला साढ़े 12
किलोमीटर है। उसके बीच में मक़दिस है।

9इस इलाक़े के दरमियान एक ख़ास ख़ित्ता
होगा। मशरिक़ से मग़रिब तक उसका फ़ासला
साढ़े 12 किलोमीटर होगा जबकि शिमाल से
जुनूब तक फ़ासला 10 किलोमीटर होगा। रब के
लिए मख़सूस इस ख़ित्ते 10का एक हिस्सा इमामों
के लिए मख़सूस होगा। इस हिस्से का फ़ासला
मशरिक़ से मग़रिब तक साढ़े 12 किलोमीटर और
शिमाल से जुनूब तक 5 किलोमीटर होगा। इसके
बीच में ही रब का मक़दिस होगा। 11यह मुक़द्दस

इलाक़ा लावी के ख़ानदान सदोक़ के मख़सूसो-
मुक़द्दस किए गए इमामों को दिया जाएगा।
क्योंकि जब इसराईली मुझसे बरगश्ता हुए तो
बाक़ी लावी उनके साथ भटक गए, लेकिन सदोक़
का ख़ानदान वफ़ादारी से मेरी ख़िदमत करता
रहा। 12इसलिए उन्हें मेरे लिए मख़सूस इलाक़े
का मुक़द्दसतरीन हिस्सा मिलेगा। यह लावियों के
ख़ित्ते के शिमाल में होगा। 13इमामों के जुनूब
में बाक़ी लावियों का ख़ित्ता होगा। मशरिक़ से
मग़रिब तक उसका फ़ासला साढ़े 12 किलोमीटर
और शिमाल से जुनूब तक 5 किलोमीटर होगा।

14रब के लिए मख़सूस यह इलाक़ा पूरे मुल्क
का बेहतरीन हिस्सा है। उसका कोई भी प्लाट
किसी दूसरे के हाथ में देने की इजाज़त नहीं। उसे
न बेचा जाए, न किसी दूसरे को किसी प्लाट के
एवज़ में दिया जाए। क्योंकि यह इलाक़ा रब के
लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है।

15रब के मक़दिस के इस ख़ास इलाक़े के जुनूब
में एक और ख़ित्ता होगा जिसकी लंबाई साढ़े 12
किलोमीटर और चौड़ाई अढ़ाई किलोमीटर है। वह
मुक़द्दस नहीं है बल्कि आम लोगों की रिहाइश के
लिए होगा। इसके बीच में शहर होगा, जिसके
इर्दगिर्द चरागाहें होंगी। 16यह शहर मुरब्बा शक्ल
का होगा। लंबाई और चौड़ाई दोनों सवा दो दो
किलोमीटर होगी।

17शहर के चारों तरफ़ जानवरों को चराने की
खुली जगह होगी जिसकी चौड़ाई 133 मीटर
होगी। 18चूँकि शहर अपने ख़ित्ते के बीच में होगा
इसलिए मज़कूरा खुली जगह के मशरिक़ में एक
ख़ित्ता बाक़ी रह जाएगा जिसका मशरिक़ से
शहर तक फ़ासला 5 किलोमीटर और शिमाल
से जुनूब तक फ़ासला अढ़ाई किलोमीटर होगा।
शहर के मग़रिब में भी इतना ही बड़ा ख़ित्ता
होगा। इन दो ख़ित्तों में खेतीबाड़ी की जाएगी
जिसकी पैदावार शहर में काम करनेवालों की
ख़ुराक होगी। 19शहर में काम करनेवाले तमाम
क़बीलों के होंगे। वही इन खेतों की खेतीबाड़ी
करेंगे।

20चुनाँचे मेरे लिए अलग किया गया यह पूरा
इलाक़ा मुरब्बा शक्ल का है। उस की लंबाई और
चौड़ाई साढ़े बारह बारह किलोमीटर है। इसमें
शहर भी शामिल है।

21-22मज़कूरा मुक़द्दस ख़ित्ते में मक़दिस,
इमामों और बाक़ी लावियों की ज़मीनें हैं।
उसके मशरिक़ और मग़रिब में बाक़ीमाँदा ज़मीन
हुक्मरान की मिलकियत है। मुक़द्दस ख़ित्ते के
मशरिक़ में हुक्मरान की ज़मीन मुल्क की
मशरिक़ी सरहद तक होगी और मुक़द्दस ख़ित्ते
के मग़रिब में वह समुंदर तक होगी। शिमाल से
जुनूब तक वह मुक़द्दस ख़ित्ते जितनी चौड़ी यानी
साढ़े 12 किलोमीटर होगी। शिमाल में यहूदाह का
क़बायली इलाक़ा होगा और जुनूब में बिनयमीन
का।

दीगर क़बीलों की ज़मीन

23-27मुल्क के इस ख़ास दरमियानी हिस्से के
जुनूब में बाक़ी क़बीलों को एक एक इलाक़ा
मिलेगा। हर इलाक़े का एक सिरा मुल्क की
मशरिक़ी सरहद और दूसरा सिरा बहीराए-रूम
होगा। शिमाल से लेकर जुनूब तक क़बायली
इलाक़ों की यह तरतीब होगी : बिनयमीन,
शमाऊन, इशकार, ज़बूलून और जद।

28जद के क़बीले की जुनूबी सरहद मुल्क की
सरहद भी है। वह तमर से जुनूब-मग़रिब में मरीबा-
क़ादिस के चश्मों तक चलती है, फिर मिसर की
सरहद यानी वादीए-मिसर के साथ साथ शिमाल-
मग़रिब का रुख़ करके बहीराए-रूम तक पहुँचती
है।

29रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यही
तुम्हारा मुल्क होगा! उसे इसराईली क़बीलों में
तक़सीम करो। जो कुछ भी उन्हें क़ुरा डालकर
मिले वह उनकी मौरूसी ज़मीन होगी।

यरूशलम के दरवाज़े

30-34यरूशलम शहर के 12 दरवाज़े होंगे।
फ़सील की चारों दीवारें सवा दो दो किलोमीटर

लंबी होंगी। हर दीवार के तीन दरवाज़े होंगे, ग़रज़ कुल बारह दरवाज़े होंगे। हर एक का नाम किसी क़बीले का नाम होगा। चुनाँचे शिमाल में रूबिन का दरवाज़ा, यहूदाह का दरवाज़ा और लावी का दरवाज़ा होगा, मशरिक़ में यूसुफ़ का दरवाज़ा, बिनयमीन का दरवाज़ा और दान का दरवाज़ा होगा, जुनूब में शमाऊन का दरवाज़ा, इशकार का दरवाज़ा और ज़बूलून का दरवाज़ा होगा, और मग़रिब में जद का दरवाज़ा, आशर का दरवाज़ा और नफ़ताली का दरवाज़ा होगा।
35फ़सील की पूरी लंबाई 9 किलोमीटर है।

तब शहर 'यहाँ रब है' कहलाएगा।!"

दानियाल

दानियाल और उसके दोस्त शाहे-बाबल के दरबार में

1 शाहे-यहूदाह यहूयक़ीम की सलतनत के तीसरे साल में शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र ने यरूशलम आकर उसका मुहासरा किया। 2उस वक़्त रब ने यहूयक़ीम और अल्लाह के घर का काफ़ी सामान नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दिया। नबूकदनज़्ज़र ने यह चीज़ें मुल्के-बाबल में ले जाकर अपने देवता के मंदिर के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ कर दीं।

3फिर उसने अपने दरबार के आला अफ़सर अश्पनाज़ को हुक्म दिया, "यहूदाह के शाही ख़ानदान और ऊँचे तबक़े के ख़ानदानों की तफ़तीश करो। उनमें से कुछ ऐसे नौजवानों को चुनकर ले आओ 4जो बेऐब, ख़ूबसूरत, हिकमत के हर लिहाज़ से समझदार, तालीमयाफ़्ता और समझने में तेज़ हों। ग़रज़ यह आदमी शाही महल में ख़िदमत करने के क़ाबिल हों। उन्हें बाबल की ज़बान लिखने और बोलने की तालीम दो।" 5बादशाह ने मुक़र्रर किया कि रोज़ाना उन्हें शाही बावरचीख़ाने से कितना खाना और मै मिलनी है। तीन साल की तरबियत के बाद उन्हें बादशाह की ख़िदमत के लिए हाज़िर होना था।

6जब इन नौजवानों को चुना गया तो चार आदमी उनमें शामिल थे जिनके नाम दानियाल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह थे। 7दरबार के आला अफ़सर ने उनके नए नाम रखे। दानियाल बेल्तशज़्ज़र में बदल गया, हननियाह सद्रक में, मीसाएल मीसक में और अज़रियाह अबद-नजू में।

8लेकिन दानियाल ने मुसम्मम इरादा कर लिया कि मैं अपने आपको शाही खाना खाने और शाही मै पीने से नापाक नहीं करूँगा। उसने दरबार के आला अफ़सर से इन चीज़ों से परहेज़ करने की इजाज़त माँगी। 9अल्लाह ने पहले से इस अफ़सर का दिल नरम कर दिया था, इसलिए वह दानियाल का ख़ास लिहाज़ करता और उस पर मेहरबानी करता था। 10लेकिन दानियाल की दरख़ास्त सुनकर उसने जवाब दिया, "मुझे अपने आक़ा बादशाह से डर है। उन्हीं ने मुतैयिन किया कि तुम्हें क्या क्या खाना और पीना है। अगर उन्हें पता चले कि तुम दूसरे नौजवानों की निसबत दुबले-पतले और कमज़ोर लगे तो वह मेरा सर क़लम करेंगे।" 11तब दानियाल ने उस निगरान से बात की जिसे दरबार के आला अफ़सर ने दानियाल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह पर मुक़र्रर किया था। वह बोला, 12"ज़रा दस दिन तक अपने ख़ादिमों को आज़माएँ। इतने में हमें खाने के लिए सिर्फ़ साग-पात और पीने के लिए पानी दीजिए। 13इसके बाद हमारी सूरत का मुक़ाबला उन दीगर नौजवानों के साथ करें

जो शाही खाना खाते हैं। फिर ही फ़ैसला करें
कि आइंदा अपने ख़ादिमों के साथ कैसा सुलूक
करेंगे।”
14निगरान मान गया। दस दिन तक वह
उन्हें साग-पात खिलाकर और पानी पिलाकर
आज़माता रहा। 15दस दिन के बाद क्या देखता
है कि दानियाल और उसके तीन दोस्त शाही
खाना खानेवाले दीगर नौजवानों की निसबत कहीं
ज़्यादा सेहतमंद और मोटे-ताज़े लग रहे हैं। 16तब
निगरान उनके लिए मुक़र्ररा शाही खाने और मै का
इंतज़ाम बंद करके उन्हें सिर्फ़ साग-पात खिलाने
लगा। 17अल्लाह ने इन चार आदमियों को अदब
और हिकमत के हर शोबे में इल्म और समझ अता
की। नीज़, दानियाल हर क़िस्म की रोया और
ख़ाब की ताबीर कर सकता था।
18मुक़र्ररा तीन साल के बाद दरबार के आला
अफ़सर ने तमाम नौजवानों को नबूकदनज़्ज़र
के सामने पेश किया। 19जब बादशाह ने उनसे
गुफ़्तगू की तो मालूम हुआ कि दानियाल,
हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह दूसरों पर
सबक़त रखते हैं। चुनाँचे चारों बादशाह के
मुलाज़िम बन गए। 20जब भी किसी मामले
में ख़ास हिकमत और समझ दरकार होती तो
बादशाह ने देखा कि यह चार नौजवान मशवरा
देने में पूरी सलतनत के तमाम क़िस्मत का हाल
बतानेवालों और जादूगरों से दस गुना ज़्यादा
क़ाबिल हैं।
21दानियाल ख़ोरस की हुकूमत के पहले साल
तक शाही दरबार में ख़िदमत करता रहा।

नबूकदनज़्ज़र का ख़ाब

2 अपनी हुकूमत के दूसरे साल में
नबूकदनज़्ज़र ने ख़ाब देखा। ख़ाब इतना
हौलनाक था कि वह घबराकर जाग उठा।
2उसने हुक्म दिया कि तमाम क़िस्मत का हाल
बतानेवाले, जादूगर, अफ़सूँगर और नजूमी मेरे
पास आकर ख़ाब का मतलब बताएँ। जब वह
हाज़िर हुए 3तो बादशाह बोला, “मैंने एक ख़ाब
देखा है जो मुझे बहुत परेशान कर रहा है। अब मैं
उसका मतलब जानना चाहता हूँ।”
4नुजूमियों ने अरामी ज़बान में जवाब दिया,
“बादशाह सलामत अपने ख़ादिमों के सामने यह
ख़ाब बयान करें तो हम उस की ताबीर करेंगे।”
5लेकिन बादशाह बोला, “नहीं, तुम ही मुझे
वह कुछ बताओ और उस की ताबीर करो जो मैंने
ख़ाब में देखा। अगर तुम यह न कर सको तो मैं
हुक्म दूँगा कि तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए
और तुम्हारे घर कचरे के ढेर हो जाएँ। यह मेरा
मुसम्मम इरादा है। 6लेकिन अगर तुम मुझे वह
कुछ बताकर उस की ताबीर करो जो मैंने ख़ाब
में देखा तो मैं तुम्हें अच्छे तोह्फ़े और इनाम दूँगा,
नीज़ तुम्हारी ख़ास इज़्ज़त करूँगा। अब शुरू करो!
मुझे वह कुछ बताओ और उस की ताबीर करो जो
मैंने ख़ाब में देखा।”
7एक बार फिर उन्होंने मिन्नत की, “बाद-
शाह अपने ख़ादिमों के सामने अपना ख़ाब बताएँ
तो हम ज़रूर उस की ताबीर करेंगे।”
8बादशाह ने जवाब दिया, “मुझे साफ़ पता
है कि तुम क्या कर रहे हो! तुम सिर्फ़ टाल-
मटोल कर रहे हो, क्योंकि तुम समझ गए हो कि
मेरा इरादा पक्का है। 9अगर तुम मुझे ख़ाब न
बताओ तो तुम सबको एक ही सज़ा दी जाएगी।
क्योंकि तुम सब झूट और ग़लत बातें पेश करने
पर मुत्तफ़िक़ हो गए हो, यह उम्मीद रखते हुए
कि हालात किसी वक़्त बदल जाएंगे। मुझे ख़ाब
बताओ तो मुझे पता चल जाएगा कि तुम मुझे उस
की सहीह ताबीर पेश कर सकते हो।”
10नुजूमियों ने एतराज़ किया, “दुनिया में कोई
भी इनसान वह कुछ नहीं कर पाता जो बादशाह
माँगते हैं। यह कभी हुआ भी नहीं कि किसी
बादशाह ने ऐसी बात किसी क़िस्मत का हाल
बतानेवाले, जादूगर या नजूमी से तलब की, ख़ाह
बादशाह कितना अज़ीम क्यों न था। 11जिस चीज़
का तक़ाज़ा बादशाह करते हैं वह हद से ज़्यादा
मुश्किल है। सिर्फ़ देवता ही यह बात बादशाह पर

ज़ाहिर कर सकते हैं, लेकिन वह तो इनसान के
दरमियान रहते नहीं।”

12यह सुनकर बादशाह आग-बगूला हो गया।
बड़े ग़ुस्से में उसने हुक्म दिया कि बाबल के तमाम
दानिशमंदों को सज़ाए-मौत दी जाए। 13फ़रमान
सादिर हुआ कि दानिशमंदों को मार डालना है।
चुनाँचे दानियाल और उसके दोस्तों को भी तलाश
किया गया ताकि उन्हें सज़ाए-मौत दें।

14शाही मुहाफ़िज़ों का अफ़सर बनाम अरयूक
अभी दानिशमंदों को मार डालने के लिए
रवाना हुआ कि दानियाल बड़ी हिकमत और
मौक़ाशनासी से उससे मुख़ातिब हुआ। 15उसने
अफ़सर से पूछा, “बादशाह ने इतना सख़्त
फ़रमान क्यों जारी किया?” अरयूक ने दानियाल
को सारा मामला बयान किया। 16दानियाल
फ़ौरन बादशाह के पास गया और उससे दरख़ास्त
की, “ज़रा मुझे कुछ मोहलत दीजिए ताकि मैं
बादशाह के ख़ाब की ताबीर कर सकूँ।” 17फिर
वह अपने घर वापस गया और अपने दोस्तों
हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह को तमाम
सूरते-हाल सुनाई। 18वह बोला, “आसमान के
ख़ुदा से इल्तिजा करें कि वह मुझ पर रहम करे।
मिन्नत करें कि वह मेरे लिए भेद खोले ताकि हम
दीगर दानिशमंदों के साथ हलाक न हो जाएँ।”

19रात के वक़्त दानियाल ने रोया देखी जिसमें
उसके लिए भेद खोला गया। तब उसने आसमान
के ख़ुदा की हम्दो-सना की,

20“अल्लाह के नाम की तमजीद अज़ल से
अबद तक हो। वही हिकमत और क़ुव्वत का
मालिक है। 21वही औक़ात और ज़माने बदलने
देता है। वही बादशाहों को तख़्त पर बिठा देता और
उन्हें तख़्त पर से उतार देता है। वही दानिशमंदों
को दानाई और समझदारों को समझ अता करता
है। 22वही गहरी और पोशीदा बातें ज़ाहिर करता
है। जो कुछ अंधेरे में छुपा रहता है उसका इल्म
वह रखता है, क्योंकि वह रौशनी से घिरा रहता
है। 23ऐ मेरे बापदादा के ख़ुदा, मैं तेरी हम्दो-सना
करता हूँ! तूने मुझे हिकमत और ताक़त अता
की है। जो बात हमने तुझसे माँगी वह तूने हम पर
ज़ाहिर की, क्योंकि तूने हम पर बादशाह का ख़ाब
ज़ाहिर किया है।”

24फिर दानियाल अरयूक के पास गया जिसे
बादशाह ने बाबल के दानिशमंदों को सज़ाए-मौत
देने की ज़िम्मेदारी दी थी। उसने उससे दरख़ास्त
की, “बाबल के दानिशमंदों को मौत के घाट न
उतारें, क्योंकि मैं बादशाह के ख़ाब की ताबीर कर
सकता हूँ। मुझे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा दें तो मैं
उन्हें सब कुछ बता दूँगा।”

25यह सुनकर अरयूक भागकर दानियाल
को बादशाह के हुज़ूर ले गया। वह बोला,
“मुझे यहूदाह के जिलावतनों में से एक
आदमी मिल गया जो बादशाह को ख़ाब
का मतलब बता सकता है।” 26तब नबूकद-
नज़्ज़र ने दानियाल से जो बेल्तशज़्ज़र कहलाता
था पूछा, “क्या तुम मुझे वह कुछ बता सकते हो
जो मैंने ख़ाब में देखा? क्या तुम उस की ताबीर
कर सकते हो?”

27दानियाल ने जवाब दिया, “जो भेद बादशाह
जानना चाहते हैं उसे खोलने की कुंजी किसी
भी दानिशमंद, जादूगर, क़िस्मत का हाल
बतानेवाले या ग़ैबदान के पास नहीं होती।
28लेकिन आसमान पर एक ख़ुदा है जो भेदों का
मतलब इनसान पर ज़ाहिर कर देता है। उसी ने
नबूकदनज़्ज़र बादशाह को दिखाया कि आनेवाले
दिनों में क्या कुछ पेश आएगा। सोते वक़्त आपने
ख़ाब में रोया देखी। 29ऐ बादशाह, जब आप
पलंग पर लेटे हुए थे तो आपके ज़हन में आनेवाले
दिनों के बारे में ख़यालात उभर आए। तब भेदों
को खोलनेवाले ख़ुदा ने आप पर ज़ाहिर किया कि
आनेवाले दिनों में क्या कुछ पेश आएगा। 30इस
भेद का मतलब मुझ पर ज़ाहिर हुआ है, लेकिन
इसलिए नहीं कि मुझे दीगर तमाम दानिशमंदों
से ज़्यादा हिकमत हासिल है बल्कि इसलिए कि
आपको भेद का मतलब मालूम हो जाए और आप
समझ सकें कि आपके ज़हन में क्या कुछ उभर
आया है।

31ऐ बादशाह, रोया में आपने अपने सामने
एक बड़ा और लंबा-तड़ंगा मुजस्समा देखा जो
तेज़ी से चमक रहा था। शक्लो-सूरत ऐसी थी कि
इनसान के रोंगटे खड़े हो जाते थे। 32सर ख़ालिस
सोने का था जबकि सीना और बाज़ू चाँदी के,
पेट और रान पीतल की 33और पिंडलियाँ लोहे
की थीं। उसके पाँवों का आधा हिस्सा लोहा और
आधा हिस्सा पकी हुई मिट्टी था। 34आप इस
मंज़र पर ग़ौर ही कर रहे थे कि अचानक किसी
पहाड़ी ढलान से पत्थर का बड़ा टुकड़ा अलग
हुआ। यह बग़ैर किसी इनसानी हाथ के हुआ।
पत्थर ने धड़ाम से मुजस्समे के लोहे और मिट्टी
के पाँवों पर गिरकर दोनों को चूर चूर कर दिया।
35नतीजे में पूरा मुजस्समा पाश पाश हो गया।
जितना भी लोहा, मिट्टी, पीतल, चाँदी और सोना
था वह उस भूसे की मानिंद बन गया जो गाहते
वक़्त बाक़ी रह जाता है। हवा ने सब कुछ यों उड़ा
दिया कि इन चीज़ों का नामो-निशान तक न रहा।
लेकिन जिस पत्थर ने मुजस्समे को गिरा दिया वह
ज़बरदस्त पहाड़ बनकर इतना बढ़ गया कि पूरी
दुनिया उससे भर गई।

36यही बादशाह का ख़ाब था। अब हम बादशाह
को ख़ाब का मतलब बताते हैं। 37ऐ बादशाह,
आप शहनशाह हैं। आसमान के ख़ुदा ने आपको
सलतनत, क़ुव्वत, ताक़त और इज़्ज़त से नवाज़ा
है। 38उसने इनसान को जंगली जानवरों और
परिंदों समेत आप ही के हवाले कर दिया है।
जहाँ भी वह बसते हैं उसने आपको ही उन पर
मुक़र्रर किया है। आप ही मज़कूरा सोने का सर
हैं। 39आपके बाद एक और सलतनत क़ायम हो
जाएगी, लेकिन उस की ताक़त आपकी सलतनत
से कम होगी। फिर पीतल की एक तीसरी
सलतनत वुजूद में आएगी जो पूरी दुनिया पर
हुकूमत करेगी। 40आख़िर में एक चौथी सलतनत
आएगी जो लोहे जैसी ताक़तवर होगी। जिस तरह
लोहा सब कुछ तोड़कर पाश पाश कर देता है
उसी तरह वह दीगर सबको तोड़कर पाश पाश
करेगी। 41आपने देखा कि मुजस्समे के पाँवों और
उँगलियों में कुछ लोहा और कुछ पकी हुई मिट्टी
थी। इसका मतलब है, इस सलतनत के दो अलग
हिस्से होंगे। लेकिन जिस तरह ख़ाब में मिट्टी के
साथ लोहा मिलाया गया था उसी तरह चौथी
सलतनत में लोहे की कुछ न कुछ ताक़त होगी।
42ख़ाब में पाँवों की उँगलियों में कुछ लोहा भी
था और कुछ मिट्टी भी। इसका मतलब है, चौथी
सलतनत का एक हिस्सा ताक़तवर और दूसरा
नाज़ुक होगा। 43लोहे और मिट्टी की मिलावट का
मतलब है कि गो लोग आपस में शादी करने से
एक दूसरे के साथ मुत्तहिद होने की कोशिश करेंगे
तो भी वह एक दूसरे से पैवस्त नहीं रहेंगे, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह लोहा मिट्टी के साथ पैवस्त
नहीं रह सकता।

44जब यह बादशाह हुकूमत करेंगे, उन्हीं दिनों
में आसमान का ख़ुदा एक बादशाही क़ायम करेगा
जो न कभी तबाह होगी, न किसी दूसरी क़ौम के
हाथ में आएगी। यह बादशाही इन दीगर तमाम
सलतनतों को पाश पाश करके ख़त्म करेगी,
लेकिन ख़ुद अबद तक क़ायम रहेगी। 45यही
ख़ाब में उस पत्थर का मतलब है जिसने बग़ैर
किसी इनसानी हाथ के पहाड़ी ढलान से अलग
होकर मुजस्समे के लोहे, पीतल, मिट्टी, चाँदी
और सोने को पाश पाश कर दिया। इस तरीक़े
से अज़ीम ख़ुदा ने बादशाह पर ज़ाहिर किया है
कि मुस्तक़बिल में क्या कुछ पेश आएगा। यह
ख़ाब क़ाबिले-एतमाद और उस की ताबीर सहीह
है।”

46यह सुनकर नबूकदनज़्ज़र बादशाह ने औंधे
मुँह होकर दानियाल को सिजदा किया और हुक्म
दिया कि दानियाल को ग़ल्ला और बख़ूर की
क़ुरबानियाँ पेश की जाएँ। 47दानियाल से उसने
कहा, “यक़ीनन, तुम्हारा ख़ुदा ख़ुदाओं का ख़ुदा
और बादशाहों का मालिक है। वह वाक़ई भेदों
को खोलता है, वरना तुम यह भेद मेरे लिए खोल
न पाते।” 48नबूकदनज़्ज़र ने दानियाल को बड़ा
ओहदा और मुतअद्दिद बेशक़ीमत तोहफ़े दिए।
उसने उसे पूरे सूबा बाबल का गवर्नर बना दिया।

साथ साथ दानियाल बाबल के तमाम दानिशमंदों पर मुक़र्रर हुआ। 49उस की गुज़ारिश पर बादशाह ने सद्रक, मीसक और अबद-नजू को सूबा बाबल की इंतज़ामिया पर मुक़र्रर किया। दानियाल ख़ुद शाही दरबार में हाज़िर रहता था।

सोने के बुत की पूजा करने का हुक्म

3 एक दिन नबूकदनज़्ज़र ने सोने का मुजस्समा बनवाया। उस की ऊँचाई 90 फ़ुट और चौड़ाई 9 फ़ुट थी। उसने हुक्म दिया कि बुत को सूबा बाबल के मैदान बनाम दूरा में खड़ा किया जाए। 2फिर उसने तमाम सूबेदारों, गवर्नरों, मुन्तज़िमों, मुशीरों, ख़ज़ानचियों, जजों, मजिस्ट्रेटों, और सूबों के दीगर तमाम बड़े बड़े सरकारी मुलाज़िमों को पैग़ाम भेजा कि मुजस्समे की मख़सूसियत के लिए आकर जमा हो जाओ। 3चुनाँचे सब बुत की मख़सूसियत के लिए जमा हो गए। जब सब उसके सामने खड़े थे 4तो शाही नक़ीब ने बुलंद आवाज़ से एलान किया,

"ऐ मुख़्तलिफ़ क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के लोगो, सुनो! बादशाह फ़रमाता है, 5'ज्योंही नरसिंगा, शहनाई, संतूर, सरोद, ऊद, बीन और दीगर तमाम साज़ बजेंगे तो लाज़िम है कि सब औंधे मुँह होकर बादशाह के खड़े किए गए सोने के बुत को सिजदा करें। 6जो भी सिजदा न करे उसे फ़ौरन भड़कती भट्टी में फेंका जाएगा'।"

7चुनाँचे ज्योंही साज़ बजने लगे तो मुख़्तलिफ़ क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के तमाम लोग मुँह के बल होकर नबूकदनज़्ज़र के खड़े किए गए बुत को सिजदा करने लगे।

8उस वक़्त कुछ नजूमी बादशाह के पास आकर यहूदियों पर इलज़ाम लगाने लगे। 9वह बोले, "बादशाह सलामत अबद तक जीते रहें! 10ऐ बादशाह, आपने फ़रमाया, 'ज्योंही नरसिंगा, शहनाई, संतूर, सरोद, ऊद, बीन और दीगर तमाम साज़ बजेंगे तो लाज़िम है कि सब औंधे मुँह होकर बादशाह के खड़े किए गए इस सोने के बुत को सिजदा करें। 11जो भी सिजदा न करे उसे भड़कती भट्टी में फेंका जाएगा।' 12लेकिन कुछ यहूदी आदमी हैं जो आपकी परवा ही नहीं करते, हालाँकि आपने उन्हें सूबा बाबल की इंतज़ामिया पर मुक़र्रर किया था। यह आदमी बनाम सद्रक, मीसक और अबद-नजू न आपके देवताओं की पूजा करते, न सोने के उस बुत की परस्तिश करते हैं जो आपने खड़ा किया है।"

13यह सुनकर नबूकदनज़्ज़र आपे से बाहर हो गया। उसने सीधा सद्रक, मीसक और अबद-नजू को बुलाया। जब पहुँचे 14तो बोला, "ऐ सद्रक, मीसक और अबद-नजू, क्या यह सहीह है कि न तुम मेरे देवताओं की पूजा करते, न मेरे खड़े किए गए मुजस्समे की परस्तिश करते हो? 15मैं तुम्हें एक आख़िरी मौक़ा देता हूँ। साज़ दुबारा बजेंगे तो तुम्हें मुँह के बल होकर मेरे बनवाए हुए मुजस्समे को सिजदा करना है। अगर तुम ऐसा न करो तो तुम्हें सीधा भड़कती भट्टी में फेंका जाएगा। तब कौन-सा ख़ुदा तुम्हें मेरे हाथ से बचा सकेगा?"

16सद्रक, मीसक और अबद-नजू ने जवाब दिया, "ऐ नबूकदनज़्ज़र, इस मामले में हमें अपना दिफ़ा करने की ज़रूरत नहीं है। 17जिस ख़ुदा की ख़िदमत हम करते हैं वह हमें बचा सकता है, ख़ाह हमें भड़कती भट्टी में क्यों न फेंका जाए। ऐ बादशाह, वह हमें ज़रूर आपके हाथ से बचाएगा। 18लेकिन अगर वह हमें न भी बचाए तो भी आपको मालूम हो कि न हम आपके देवताओं की पूजा करेंगे, न आपके खड़े किए गए सोने के मुजस्समे की परस्तिश करेंगे।"

19यह सुनकर नबूकदनज़्ज़र आग-बगूला हो गया। सद्रक, मीसक और अबद-नजू के सामने उसका चेहरा बिगड़ गया और उसने हुक्म दिया कि भट्टी को मामूल की निसबत सात गुना ज़्यादा गरम किया जाए। 20फिर उसने कहा कि बेहतरीन फ़ौजियों में से चंद एक सद्रक, मीसक और अबद-नजू को बाँधकर भड़कती भट्टी में फेंक दें। 21तीनों को बाँधकर भड़कती भट्टी में फेंका गया। उनके चोग़े, पाजामे और टोपियाँ उतारी न गईं। 22चूँकि बादशाह ने भट्टी को गरम करने पर ख़ास

ज़ोर दिया था इसलिए आग इतनी तेज़ हुई कि जो फ़ौजी सद्रक, मीसक और अबद-नजू को लेकर भट्टी के मुँह तक चढ़ गए वह फ़ौरन नज़रे-आतिश हो गए। 23उनके क़ैदी बँधी हुई हालत में शोलाज़न आग में गिर गए।

24अचानक नबूकदनज़्ज़र बादशाह चौंक उठा। उसने उछलकर अपने मुशीरों से पूछा, "हमने तो तीन आदमियों को बाँधकर भट्टी में फेंकवाया कि नहीं?" उन्होंने जवाब दिया, "जी, ऐ बादशाह।" 25वह बोला, "तो फिर यह क्या है? मुझे चार आदमी आग में इधर-उधर फिरते हुए नज़र आ रहे हैं। न वह बँधे हुए हैं, न उन्हें नुक़सान पहुँच रहा है। चौथा आदमी देवताओं का बेटा-सा लग रहा है।"

26नबूकदनज़्ज़र जलती हुई भट्टी के मुँह के क़रीब गया और पुकारा, "ऐ सद्रक, मीसक और अबद-नजू, ऐ अल्लाह तआला के बंदो, निकल आओ! इधर आओ।" तब सद्रक, मीसक और अबद-नजू आग से निकल आए। 27सूबेदार, गवर्नर, मुन्तज़िम और शाही मुशीर उनके गिर्द जमा हुए तो देखा कि आग ने उनके जिस्मों को नुक़सान नहीं पहुँचाया। बालों में से एक भी झुलस नहीं गया था, न उनके लिबास आग से मुतअस्सिर हुए थे। आग और धुएँ की बू तक नहीं थी।

28तब नबूकदनज़्ज़र बोला, "सद्रक, मीसक और अबद-नजू के ख़ुदा की तमजीद हो जिसने अपने फ़रिश्ते को भेजकर अपने बंदों को बचाया। उन्होंने उस पर भरोसा रखकर बादशाह के हुक्म की नाफ़रमानी की। अपने ख़ुदा के सिवा किसी और की ख़िदमत या परस्तिश करने से पहले वह अपनी जान को देने के लिए तैयार थे। 29चुनाँचे मेरा हुक्म सुनो! सद्रक, मीसक और अबद-नजू के ख़ुदा के ख़िलाफ़ कुफ़्र बकना तमाम क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद के लिए सख़्त मना है। जो भी ऐसा करे उसे टुकड़े टुकड़े कर दिया जाएगा और उसके घर को कचरे का ढेर बनाया जाएगा। क्योंकि कोई भी देवता इस तरह नहीं बचा सकता।" 30फिर बादशाह ने तीनों आदमियों को सूबा बाबल में सरफ़राज़ किया।

नबूकदनज़्ज़र के दूसरे ख़ाब की ताबीर

4 नबूकदनज़्ज़र दुनिया की तमाम क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद को ज़ैल का पैग़ाम भेजता है,

सबकी सलामती हो! 2मैंने सबको उन इलाही निशानात और मोजिज़ात से आगाह करने का फ़ैसला किया है जो अल्लाह तआला ने मेरे लिए किए हैं। 3उसके निशान कितने अज़ीम, उसके मोजिज़ात कितने ज़बरदस्त हैं! उस की बादशाही अबदी है, उस की सलतनत नसल-दर-नसल क़ायम रहती है।

4मैं, नबूकदनज़्ज़र ख़ुशी और सुकून से अपने महल में रहता था। 5लेकिन एक दिन मैं एक ख़ाब देखकर बहुत घबरा गया। मैं पलंग पर लेटा हुआ था कि इतनी हौलनाक बातें और रोयाएँ मेरे सामने से गुज़रीं कि मैं डर गया। 6तब मैंने हुक्म दिया कि बाबल के तमाम दानिशमंद मेरे पास आएँ ताकि मेरे लिए ख़ाब की ताबीर करें। 7क़िस्मत का हाल बतानेवाले, जादूगर, नजूमी और ग़ैबदान पहुँचे तो मैंने उन्हें अपना ख़ाब बयान किया, लेकिन वह उस की ताबीर करने में नाकाम रहे।

8आख़िरकार दानियाल मेरे हुज़ूर आया जिसका नाम बेल्तशज़्ज़र रखा गया है (मेरे देवता का नाम बेल है)। दानियाल में मुक़द्दस देवताओं की रूह है। उसे भी मैंने अपना ख़ाब सुनाया। 9मैं बोला, "ऐ बेल्तशज़्ज़र, तुम जादूगरों के सरदार हो, और मैं जानता हूँ कि मुक़द्दस देवताओं की रूह तुममें है। कोई भी भेद तुम्हारे लिए इतना मुश्किल नहीं है कि तुम उसे खोल न सको। अब मेरा ख़ाब सुनकर उस की ताबीर करो!

10पलंग पर लेटे हुए मैंने रोया में देखा कि दुनिया के बीच में निहायत लंबा-सा दरख़्त लगा है। 11यह दरख़्त इतना ऊँचा और तनावर होता गया कि आख़िरकार उस की चोटी आसमान तक

पहुँच गई और वह दुनिया की इंतहा तक नज़र
आया। 12उसके पत्ते ख़ूबसूरत थे, और वह बहुत
फल लाता था। उसके साये में जंगली जानवर
पनाह लेते, उस की शाख़ों में परिंदे बसेरा करते
थे। हर इनसानो-हैवान को उससे ख़ुराक मिलती
थी।

13मैं अभी दरख़्त को देख रहा था कि
एक मुक़द्दस फ़रिश्ता आसमान से उतर आया।
14उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी, 'दरख़्त को
काट डालो! उस की शाख़ें तोड़ दो, उसके पत्ते
झाड़ दो, उसका फल बिखेर दो! जानवर उसके
साये में से निकलकर भाग जाएँ, परिंदे उस की
शाख़ों से उड़ जाएँ। 15लेकिन उसका मुढ जड़ों
समेत ज़मीन में रहने दो। उसे लोहे और पीतल
की ज़ंजीरों में जकड़कर खुले मैदान की घास में
छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान की ओस तर करे,
और जानवरों के साथ ज़मीन की घास ही उसको
नसीब हो। 16सात साल तक उसका इनसानी
दिल जानवर के दिल में बदल जाए। 17क्योंकि
मुक़द्दस फ़रिश्तों ने फ़तवा दिया है कि ऐसा ही हो
ताकि इनसान जान ले कि अल्लाह तआला का
इख़्तियार इनसानी सलतनतों पर है। वह अपनी
ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है,
ख़ाह वह कितने ज़लील क्यों न हों।'

18मैं, नबूकदनज़्ज़र ने ख़ाब में यह कुछ देखा।
ऐ बेल्तशज़्ज़र, अब मुझे इसकी ताबीर पेश करो।
मेरी सलतनत के तमाम दानिशमंद इसमें नाकाम
रहे हैं। लेकिन तुम यह कर पाओगे, क्योंकि तुममें
मुक़द्दस देवताओं की रूह है।"

19तब बेल्तशज़्ज़र यानी दानियाल के रोंगटे
खड़े हो गए, और जो ख़यालात उभर आए उनसे
उस पर काफ़ी देर तक सख़्त दहशत तारी रही।
आख़िरकार बादशाह बोला, "ऐ बेल्तशज़्ज़र,
ख़ाब और उसका मतलब तुझे इतना दहशतज़दा
न करे।" बेल्तशज़्ज़र ने जवाब दिया, "मेरे
आक़ा, काश ख़ाब की बातें आपके दुश्मनों और
मुख़ालिफ़ों को पेश आएँ! 20आपने एक दरख़्त
देखा जो इतना ऊँचा और तनावर हो गया कि
उस की चोटी आसमान तक पहुँची और वह पूरी
दुनिया को नज़र आया। 21उसके पत्ते ख़ूबसूरत
थे, और वह बहुत-सा फल लाता था। उसके साये
में जंगली जानवर पनाह लेते, उस की शाख़ों
में परिंदे बसेरा करते थे। हर इनसानो-हैवान को
उससे ख़ुराक मिलती थी।

22ऐ बादशाह, आप ही यह दरख़्त हैं! आप
ही बड़े और ताक़तवर हो गए हैं बल्कि आपकी
अज़मत बढ़ते बढ़ते आसमान से बातें करने लगी,
आपकी सलतनत दुनिया की इंतहा तक फैल गई
है। 23ऐ बादशाह, इसके बाद आपने एक मुक़द्दस
फ़रिश्ते को देखा जो आसमान से उतरकर बोला,
'दरख़्त को काट डालो! उसे तबाह करो, लेकिन
उसका मुढ जड़ों समेत ज़मीन में रहने दो। उसे
लोहे और पीतल की ज़ंजीरों में जकड़कर खुले
मैदान की घास में छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान
की ओस तर करे, और जानवरों के साथ ज़मीन
की घास ही उसको नसीब हो। सात साल यों ही
गुज़र जाएँ।'

24ऐ बादशाह, इसका मतलब यह है,
अल्लाह तआला ने मेरे आक़ा बादशाह के
बारे में फ़ैसला किया है 25कि आपको
इनसानी संगत से निकालकर भगाया जाए-
गा। तब आप जंगली जानवरों के साथ रहकर
बैलों की तरह घास चरेंगे और आसमान की ओस
से तर हो जाएंगे। सात साल यों ही गुज़रेंगे।
फिर आख़िरकार आप इक़रार करेंगे कि अल्लाह
तआला का इनसानी सलतनतों पर इख़्तियार है,
वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर
करता है। 26लेकिन ख़ाब में यह भी कहा गया
कि दरख़्त के मुढ को जड़ों समेत ज़मीन में छोड़ा
जाए। इसका मतलब है कि आपकी सलतनत
ताहम क़ायम रहेगी। जब आप एतराफ़ करेंगे
कि तमाम इख़्तियार आसमान के हाथ में है तो
आपको सलतनत वापस मिलेगी। 27ऐ बादशाह,
अब मेहरबानी से मेरा मशवरा क़बूल फ़रमाएँ।
इनसाफ़ करके और मज़लूमों पर करम फ़रमाकर

अपने गुनाहों को दूर करें। शायद ऐसा करने से
आपकी ख़ुशहाली क़ायम रहे।”
28दानियाल की हर बात नबूकदनज़्ज़र को पेश
आई। 29बारह महीने के बाद बादशाह बाबल में
अपने शाही महल की छत पर टहल रहा था।
30तब वह कहने लगा, “लो, यह अज़ीम शहर
देखो जो मैंने अपनी रिहाइश के लिए तामीर किया
है! यह सब कुछ मैंने अपनी ही ज़बरदस्त क़ुव्वत
से बना लिया है ताकि मेरी शानो-शौकत मज़ीद
बढ़ती जाए।”
31बादशाह यह बात बोल ही रहा था कि
आसमान से आवाज़ सुनाई दी, “ऐ नबूकदनज़्ज़र
बादशाह, सुन! सलतनत तुझसे छीन ली गई
है। 32तुझे इनसानी संगत से निकालकर भगाया
जाएगा, और तू जंगली जानवरों के साथ रहकर
बैल की तरह घास चरेगा। सात साल यों ही
गुज़र जाएंगे। फिर आख़िरकार तू इक़रार करेगा
कि अल्लाह तआला का इनसानी सलतनतों पर
इख़्तियार है, वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को
उन पर मुक़र्रर करता है।”
33ज्योंही आवाज़ बंद हुई तो ऐसा ही हुआ।
नबूकदनज़्ज़र को इनसानी संगत से निकालकर
भगाया गया, और वह बैलों की तरह घास चरने
लगा। उसका जिस्म आसमान की ओस से तर
होता रहा। होते होते उसके बाल उक़ाब के परों
जितने लंबे और उसके नाख़ुन परिंदे के चंगुल
की मानिंद हुए। 34लेकिन सात साल गुज़रने के
बाद मैं, नबूकदनज़्ज़र अपनी आँखों को आसमान
की तरफ़ उठाकर दुबारा होश में आया। तब मैंने
अल्लाह तआला की तमजीद की, मैंने उस की
हम्दो-सना की जो हमेशा तक ज़िंदा है। उस
की हुकूमत अबदी है, उस की सलतनत नसल-
दर-नसल क़ायम रहती है। 35उस की निसबत
दुनिया के तमाम बाशिंदे सिफ़र के बराबर हैं। वह
आसमानी फ़ौज और दुनिया के बाशिंदों के साथ
जो जी चाहे करता है। उसे कुछ करने से कोई नहीं
रोक सकता, कोई उससे जवाब तलब करके पूछ
नहीं सकता, “तूने क्या किया?”
36ज्योंही मैं दुबारा होश में आया तो मुझे पहली
शाही इज़्ज़त और शानो-शौकत भी अज़ सरे-
नौ हासिल हुई। मेरे मुशीर और शुरफ़ा दुबारा
मेरे सामने हाज़िर हुए, और मुझे दुबारा तख़्त पर
बिठाया गया। पहले की निसबत मेरी अज़मत में
इज़ाफ़ा हुआ।
37अब मैं, नबूकदनज़्ज़र आसमान के बादशाह
की हम्दो-सना करता हूँ। मैं उसी को जलाल देता
हूँ, क्योंकि जो कुछ भी वह करे वह सहीह है। उस
की तमाम राहें मुंसिफ़ाना हैं। जो मग़रूर होकर
ज़िंदगी गुज़ारते हैं उन्हें वह पस्त करने के क़ाबिल
है।

बेलशज़्ज़र की ज़ियाफ़त

5 एक दिन बेलशज़्ज़र बादशाह अपने बड़ों
के हज़ार अफ़राद के लिए ज़बरदस्त
ज़ियाफ़त करके उनके साथ मै पीने लगा। 2नशे
में उसने हुक्म दिया, “सोने-चाँदी के जो प्याले मेरे
बाप नबूकदनज़्ज़र ने यरूशलम में वाक़े अल्लाह
के घर से छीन लिए थे वह मेरे पास ले आओ
ताकि मैं अपने बड़ों, बीवियों और दाश्ताओं के
साथ उनसे मै पी लूँ।” 3चुनाँचे यरूशलम में वाक़े
अल्लाह के घर से लूटे हुए प्याले उसके पास
लाए गए, और सब उनसे मै पी कर 4सोने, चाँदी,
पीतल, लोहे, लकड़ी और पत्थर के अपने बुतों
की तमजीद करने लगे।
5उसी लमहे शाही महल के हाल में इनसानी
हाथ की उँगलियाँ नज़र आईं जो शमादान के
मुक़ाबिल दीवार के पलस्तर पर कुछ लिखने
लगीं। जब बादशाह ने हाथ को लिखते हुए देखा
6तो उसका चेहरा डर के मारे फ़क़ हो गया। उस
की कमर के जोड़ ढीले पड़ गए, और उसके घुटने
एक दूसरे से टकराने लगे।
7वह ज़ोर से चीख़ा, “जादूगरों, नुजूमियों और
ग़ैबदानों को बुलाओ!” बाबल के दानिशमंद पहुँचे
तो वह बोला, “जो भी लिखे हुए अलफ़ाज़ पढ़कर
मुझे उनका मतलब बता सके उसे अरग़वानी रंग
का लिबास पहनाया जाएगा। उसके गले में सोने

की ज़ंजीर पहनाई जाएगी, और हुकूमत में सिर्फ़ दो लोग उससे बड़े होंगे।”

8बादशाह के दानिशमंद क़रीब आए, लेकिन न वह लिखे हुए अलफ़ाज़ पढ़ सके, न उनका मतलब बादशाह को बता सके। 9तब बेलशज़्ज़र बादशाह निहायत परेशान हुआ, और उसका चेहरा मज़ीद माँद पड़ गया। उसके शुरफ़ा भी सख़्त परेशान हो गए।

10बादशाह और शुरफ़ा की बातें मलिका तक पहुँच गईं तो वह ज़ियाफ़त के हाल में दाख़िल हुई। कहने लगी, “बादशाह अबद तक जीते रहें! घबराने या माँद पड़ने की क्या ज़रूरत है? 11आपकी बादशाही में एक आदमी है जिसमें मुक़द्दस देवताओं की रूह है। आपके बाप के दौरे-हुकूमत में साबित हुआ कि वह देवताओं की-सी बसीरत, फ़हम और हिकमत का मालिक है। आपके बाप नबूकदनज़्ज़र बादशाह ने उसे क़िस्मत का हाल बतानेवालों, जादूगरों, नुजूमियों और ग़ैबदानों पर मुक़र्रर किया था, 12क्योंकि उसमें ग़ैरमामूली ज़िहानत, इल्म और समझ पाई जाती है। वह ख़ाबों की ताबीर करने और पहेलियाँ और पेचीदा मसले हल करने में माहिर साबित हुआ है। आदमी का नाम दानियाल है, गो बादशाह ने उसका नाम बेल्तशज़्ज़र रखा था। मेरा मशवरा है कि आप उसे बुलाएँ, क्योंकि वह आपको ज़रूर लिखे हुए अलफ़ाज़ का मतलब बताएगा।”

13यह सुनकर बादशाह ने दानियाल को फ़ौरन बुला लिया। जब पहुँचा तो बादशाह उससे मुख़ातिब हुआ, “क्या तुम वह दानियाल हो जिसे मेरे बाप नबूकदनज़्ज़र बादशाह यहूदाह के जिलावतनों के साथ यहूदाह से यहाँ लाए थे? 14सुना है कि देवताओं की रूह तुममें है, कि तुम बसीरत, फ़हम और ग़ैरमामूली हिकमत के मालिक हो। 15दानिशमंदों और नुजूमियों को मेरे सामने लाया गया है ताकि दीवार पर लिखे हुए अलफ़ाज़ पढ़कर मुझे उनका मतलब बताएँ, लेकिन वह नाकाम रहे हैं। 16अब मुझे बताया गया कि तुम ख़ाबों की ताबीर और पेचीदा मसलों को हल करने में माहिर हो। अगर तुम यह अलफ़ाज़ पढ़कर मुझे इनका मतलब बता सको तो तुम्हें अरग़वानी रंग का लिबास पहनाया जाएगा। तुम्हारे गले में सोने की ज़ंजीर पहनाई जाएगी, और हुकूमत में सिर्फ़ दो लोग तुमसे बड़े होंगे।”

17दानियाल ने जवाब दिया, “मुझे अज्र न दें, अपने तोहफ़े किसी और को दीजिए। मैं बादशाह को यह अलफ़ाज़ और इनका मतलब वैसे ही बता दूँगा। 18ऐ बादशाह, जो सलतनत, अज़मत और शानो-शौकत आपके बाप नबूकदनज़्ज़र को हासिल थी वह अल्लाह तआला से मिली थी। 19उसी ने उन्हें वह अज़मत अता की थी जिसके बाइस तमाम क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद उनसे डरते और उनके सामने काँपते थे। जिसे वह मार डालना चाहते थे उसे मारा गया, जिसे वह ज़िंदा छोड़ना चाहते थे वह ज़िंदा रहा। जिसे वह सरफ़राज़ करना चाहते थे वह सरफ़राज़ हुआ और जिसे पस्त करना चाहते थे वह पस्त हुआ। 20लेकिन वह फूलकर हद से ज़्यादा मग़रूर हो गए, इसलिए उन्हें तख़्त से उतारा गया, और वह अपनी क़दरो-मनज़िलत खो बैठे। 21उन्हें इनसानी संगत से निकालकर भगाया गया, और उनका दिल जानवर के दिल की मानिंद बन गया। उनका रहन-सहन जंगली गधों के साथ था, और वह बैलों की तरह घास चरने लगे। उनका जिस्म आसमान की ओस से तर रहता था। यह हालत उस वक़्त तक रही जब तक कि उन्होंने इक़रार न किया कि अल्लाह तआला का इनसानी सलतनतों पर इख़्तियार है, वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है।

22ऐ बेलशज़्ज़र बादशाह, गो आप उनके बेटे हैं और इस बात का इल्म रखते हैं तो भी आप फ़रोतन न रहे 23बल्कि आसमान के मालिक के ख़िलाफ़ उठ खड़े हो गए हैं। आपने हुक्म दिया कि उसके घर के प्याले आपके हुज़ूर लाए जाएँ, और आपने अपने बड़ों, बीवियों और दाश्ताओं के साथ उन्हें मै पीने के लिए इस्तेमाल किया। साथ

साथ आपने अपने देवताओं की तमजीद की गो वह चाँदी, सोने, पीतल, लोहे, लकड़ी और पत्थर के बुत ही हैं। न वह देख सकते, न सुन या समझ सकते हैं। लेकिन जिस ख़ुदा के हाथ में आपकी जान और आपकी तमाम राहें हैं उसका एहतराम आपने नहीं किया।

24इसी लिए उसने हाथ भेजकर दीवार पर यह अलफ़ाज़ लिखवा दिए। 25और लिखा यह है, ‘मिने मिने तक़ेलो-फ़रसीन।’

26‘मिने’ का मतलब ‘गिना हुआ’ है। यानी आपकी सलतनत के दिन गिने हुए हैं, अल्लाह ने उन्हें इख़्तिताम तक पहुँचाया है।

27‘तक़ेल’ का मतलब ‘तोला हुआ’ है। यानी अल्लाह ने आपको तोलकर मालूम किया है कि आपका वज़न कम है।

28‘फ़रसीन’ का मतलब ‘तक़सीम हुआ’ है। यानी आपकी बादशाही को मादियों और फ़ारसियों में तक़सीम किया जाएगा।”

29दानियाल ख़ामोश हुआ तो बेलशज़्ज़र ने हुक्म दिया कि उसे अरग़वानी रंग का लिबास पहनाया जाए और उसके गले में सोने की ज़ंजीर पहनाई जाए। साथ साथ एलान किया गया कि अब से हुकूमत में सिर्फ़ दो आदमी दानियाल से बड़े हैं।

30उसी रात शाहे-बाबल बेलशज़्ज़र को क़त्ल किया गया, 31और दारा मादी तख़्त पर बैठ गया। उस की उम्र 62 साल थी।

दानियाल शेरबबर की माँद में

6 दारा ने सलतनत के तमाम सूबों पर 120 सूबेदार मुतैयिन करने का फ़ैसला किया। 2उन पर तीन वज़ीर मुक़र्रर थे जिनमें से एक दानियाल था। गवर्नर उनके सामने जवाबदेह थे ताकि बादशाह को नुक़सान न पहुँचे। 3जल्द ही पता चला कि दानियाल दूसरे वज़ीरों और सूबेदारों पर सबक़त रखता था, क्योंकि वह ग़ैरमामूली ज़िहानत का मालिक था। नतीजतन बादशाह ने उसे पूरी सलतनत पर मुक़र्रर करने का इरादा किया। 4जब दीगर वज़ीरों और सूबेदारों को यह बात मालूम हुई तो वह दानियाल पर इलज़ाम लगाने का बहाना ढूँडने लगे। लेकिन वह अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने में इतना क़ाबिले-एतमाद था कि वह नाकाम रहे। क्योंकि न वह रिश्वतख़ोर था, न किसी काम में सुस्त।

5आख़िरकार वह आदमी आपस में कहने लगे, “इस तरीक़े से हमें दानियाल पर इलज़ाम लगाने का मौक़ा नहीं मिलेगा। लेकिन एक बात है जो इलज़ाम का बाइस बन सकती है यानी उसके ख़ुदा की शरीअत।” 6तब वह गुरोह की सूरत में बादशाह के सामने हाज़िर हुए और कहने लगे, “दारा बादशाह अबद तक जीते रहें! 7सलतनत के तमाम वज़ीर, गवर्नर, सूबेदार, मुशीर और मुन्तज़िम आपस में मशवरा करके मुत्तफ़िक़ हुए हैं कि अगले 30 दिन के दौरान सबको सिर्फ़ बादशाह से दुआ करनी चाहिए। बादशाह एक फ़रमान सादिर करें कि जो भी किसी और माबूद या इनसान से इल्तिजा करे उसे शेरों की माँद में फेंका जाएगा। ध्यान देना चाहिए कि सब ही इस पर अमल करें। 8ऐ बादशाह, गुज़ारिश है कि आप यह फ़रमान ज़रूर सादिर करें बल्कि लिखकर उस की तसदीक़ भी करें ताकि उसे तबदील न किया जा सके। तब वह मादियों और फ़ारसियों के क़वानीन का हिस्सा बनकर मनसूख़ नहीं किया जा सकेगा।”

9दारा बादशाह मान गया। उसने फ़रमान लिखवाकर उस की तसदीक़ की।

10जब दानियाल को मालूम हुआ कि फ़रमान सादिर हुआ है तो वह सीधा अपने घर में चला गया। छत पर एक कमरा था जिसकी खुली खिड़कियों का रुख़ यरूशलम की तरफ़ था। इस कमरे में दानियाल रोज़ाना तीन बार अपने घुटने टेककर दुआ और अपने ख़ुदा की सताइश करता था। अब भी उसने यह सिलसिला जारी रखा। 11ज्योंही दानियाल अपने ख़ुदा से दुआ और इल्तिजा कर रहा था तो उसके दुश्मनों ने गुरोह की सूरत में घर में घुसकर उसे यह करते हुए पाया।

12तब वह बादशाह के पास गए और उसे शाही फ़रमान की याद दिलाई, “क्या आपने फ़रमान सादिर नहीं किया था कि अगले 30 दिन के दौरान सबको सिर्फ़ बादशाह से दुआ करनी है, और जो किसी और माबूद या इनसान से इल्तिजा करे उसे शेरों की माँद में फेंका जाएगा?” बादशाह ने जवाब दिया, “जी, यह फ़रमान क़ायम है बल्कि मादियों और फ़ारसियों के क़वानीन का हिस्सा है जो मनसूख़ नहीं किया जा सकता।” 13उन्होंने कहा, “ऐ बादशाह, दानियाल जो यहूदाह के जिलावतनों में से है न आपकी परवा करता, न उस फ़रमान की जिसकी आपने लिखकर तसदीक़ की। अभी तक वह रोज़ाना तीन बार अपने ख़ुदा से दुआ करता है।”

14यह सुनकर बादशाह को बड़ी दिक़्क़त महसूस हुई। पूरा दिन वह सोचता रहा कि मैं दानियाल को किस तरह बचाऊँ। सूरज के ग़ुरूब होने तक वह उसे छुड़ाने के लिए कोशाँ रहा। 15लेकिन आख़िरकार वह आदमी गुरोह की सूरत में दुबारा बादशाह के हुज़ूर आए और कहने लगे, “बादशाह को याद रहे कि मादियों और फ़ारसियों के क़वानीन के मुताबिक़ जो भी फ़रमान बादशाह सादिर करे उसे तबदील नहीं किया जा सकता।” 16चुनाँचे बादशाह ने हुक्म दिया कि दानियाल को पकड़कर शेरों की माँद में फेंका जाए। ऐसा ही हुआ। बादशाह बोला, “ऐ दानियाल, जिस ख़ुदा की इबादत तुम बिलानाग़ा करते आए हो वह तुम्हें बचाए।” 17फिर माँद के मुँह पर पत्थर रखा गया, और बादशाह ने अपनी मुहर और अपने बड़ों की मुहरें उस पर लगाईं ताकि कोई भी उसे खोलकर दानियाल की मदद न करे।

18इसके बाद बादशाह शाही महल में वापस चला गया और पूरी रात रोज़ा रखे हुए गुज़ारी। न कुछ उसका दिल बहलाने के लिए उसके पास लाया गया, न उसे नींद आई।

19जब पौ फटने लगी तो वह उठकर शेरों की माँद के पास गया। 20उसके क़रीब पहुँचकर बादशाह ने ग़मगीन आवाज़ से पुकारा, “ऐ ज़िंदा ख़ुदा के बंदे दानियाल, क्या तुम्हारे ख़ुदा जिसकी तुम बिलानाग़ा इबादत करते रहे हो तुम्हें शेरों से बचा सका?” 21दानियाल ने जवाब दिया, “बादशाह अबद तक जीते रहें! 22मेरे ख़ुदा ने अपने फ़रिश्ते को भेज दिया जिसने शेरों के मुँह को बंद किए रखा। उन्होंने मुझे कोई भी नुक़सान न पहुँचाया, क्योंकि अल्लाह के सामने मैं बेक़ुसूर हूँ। बादशाह सलामत के ख़िलाफ़ भी मुझसे जुर्म नहीं हुआ।”

23यह सुनकर बादशाह आपे में न समाया। उसने दानियाल को माँद से निकालने का हुक्म दिया। जब उसे खींचकर निकाला गया तो मालूम हुआ कि उसे कोई भी नुक़सान नहीं पहुँचा। यों उसे अल्लाह पर भरोसा रखने का अज्र मिला। 24लेकिन जिन आदमियों ने दानियाल पर इलज़ाम लगाया था उनका बुरा अंजाम हुआ। बादशाह के हुक्म पर उन्हें उनके बाल-बच्चों समेत शेरों की माँद में फेंका गया। माँद के फ़र्श पर गिरने से पहले ही शेर उन पर झपट पड़े और उन्हें फाड़कर उनकी हड्डियों को चबा लिया।

25फिर दारा बादशाह ने सलतनत की तमाम क़ौमों, उम्मतों और अहले-ज़बान को ज़ैल का पैग़ाम भेजा,

“सबकी सलामती हो! 26मेरा फ़रमान सुनो! लाज़िम है कि मेरी सलतनत की हर जगह लोग दानियाल के ख़ुदा के सामने थरथराएँ और उसका ख़ौफ़ मानें। क्योंकि वह ज़िंदा ख़ुदा और अबद तक क़ायम है। न कभी उस की बादशाही तबाह, न उस की हुकूमत ख़त्म होगी। 27वही बचाता और नजात देता है, वही आसमानो-ज़मीन पर इलाही निशान और मोजिज़े दिखाता है। उसी ने दानियाल को शेरों के क़ब्ज़े से बचाया।”

28चुनाँचे दानियाल को दारा बादशाह और फ़ारस के बादशाह ख़ोरस के दौरे-हुकूमत में बहुत कामयाबी हासिल हुई।

दानियाल की पहली रोया : चार जानवर

7 शाहे-बाबल बेलशज़्ज़र की हुकूमत के
पहले साल में दानियाल ने ख़ाब में रोया
देखी। जाग उठने पर उसने वह कुछ क़लमबंद
कर लिया जो ख़ाब में देखा था। ज़ैल में इसका
बयान है,

2रात के वक़्त मैं, दानियाल ने रोया में देखा
कि आसमान की चारों हवाएँ ज़ोर से बड़े समुंदर
को मुतलातिम कर रही हैं। 3फिर चार बड़े जानवर
समुंदर से निकल आए जो एक दूसरे से मुख़्तलिफ़
थे।

4पहला जानवर शेरबबर जैसा था, लेकिन
उसके उक़ाब के पर थे। मेरे देखते ही उसके परों
को नोच लिया गया और उसे उठाकर इनसान की
तरह पिछले दो पैरों पर खड़ा किया गया। उसे
इनसान का दिल भी मिल गया।

5दूसरा जानवर रीछ जैसा था। उसका एक
पहलू खड़ा किया गया था, और वह अपने दाँतों
में तीन पसलियाँ पकड़े हुए था। उसे बताया गया,
“उठ, जी भरकर गोश्त खा ले!”

6फिर मैंने तीसरे जानवर को देखा। वह चीते
जैसा था, लेकिन उसके चार सर थे। उसे हुकूमत
करने का इख़्तियार दिया गया।

7इसके बाद रात की रोया में एक चौथा जानवर
नज़र आया जो डरावना, हौलनाक और निहायत
ही ताक़तवर था। अपने लोहे के बड़े बड़े दाँतों से
वह सब कुछ खाता और चूर चूर करता था। जो
कुछ बच जाता उसे वह पाँवों तले रौंद देता था। यह
जानवर दीगर जानवरों से मुख़्तलिफ़ था। उसके
दस सींग थे। 8मैं सींगों पर ग़ौर ही कर रहा था
कि एक और छोटा-सा सींग उनके दरमियान से
निकल आया। पहले दस सींगों में से तीन को नोच
लिया गया ताकि उसे जगह मिल जाए। छोटे सींग
पर इनसानी आँखें थीं, और उसका मुँह बड़ी बड़ी
बातें करता था।

9मैं देख ही रहा था कि तख़्त लगाए गए और
क़दीमुल-ऐयाम बैठ गया। उसका लिबास बर्फ़
जैसा सफ़ेद और उसके बाल ख़ालिस ऊन की
मानिंद थे। जिस तख़्त पर वह बैठा था वह आग
की तरह भड़क रहा था, और उस पर शोलाज़न
पहिये लगे थे। 10उसके सामने से आग की नहर
बहकर निकल रही थी। बेशुमार हस्तियाँ उस की
ख़िदमत के लिए खड़ी थीं। लोग अदालत के लिए
बैठ गए, और किताबें खोली गईं।

11मैंने ग़ौर किया कि छोटा सींग बड़ी बड़ी
बातें कर रहा है। मैं देखता रहा तो चौथे जानवर
को क़त्ल किया गया। उसका जिस्म तबाह हुआ
और भड़कती आग में फेंका गया। 12दीगर तीन
जानवरों की हुकूमत उनसे छीन ली गई, लेकिन
उन्हें कुछ देर के लिए ज़िंदा रहने की इजाज़त दी
गई।

13रात की रोया में मैंने यह भी देखा कि
आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा
है जो इब्ने-आदम-सा लग रहा है। जब क़दीमुल-
ऐयाम के क़रीब पहुँचा तो उसके हुज़ूर लाया गया।
14उसे सलतनत, इज़्ज़त और बादशाही दी गई,
और हर क़ौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने
उस की परस्तिश की। उस की हुकूमत अबदी है
और कभी ख़त्म नहीं होगी। उस की बादशाही
कभी तबाह नहीं होगी।

15मैं, दानियाल सख़्त परेशान हुआ, क्योंकि
रोया से मुझ पर दहशत छा गई थी। 16इसलिए
मैंने वहाँ खड़े किसी के पास जाकर उससे
गुज़ारिश की कि वह मुझे इन तमाम बातों
का मतलब बताए। उसने मुझे इनका मतलब
बताया, 17“चार बड़े जानवर चार सलतनतें हैं
जो ज़मीन से निकलकर क़ायम हो जाएँगी।
18लेकिन अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन को
हक़ीक़ी बादशाही मिलेगी, वह बादशाही जो अबद
तक हासिल रहेगी।”

19मैं चौथे जानवर के बारे में मज़ीद जानना
चाहता था, उस जानवर के बारे में जो दीगर
जानवरों से इतना मुख़्तलिफ़ और इतना हौलनाक
था। क्योंकि उसके दाँत लोहे और पंजे पीतल के
थे, और वह सब कुछ खाता और चूर चूर करता

था। जो बच जाता उसे वह पाँवों तले रौंद देता
था। 20मैं उसके सर के दस सींगों और उनमें से
निकले हुए छोटे सींग के बारे में भी मज़ीद जानना
चाहता था। क्योंकि छोटे सींग के निकलने पर
दस सींगों में से तीन निकलकर गिर गए, और
यह सींग बढ़कर साथवाले सींगों से कहीं बड़ा
नज़र आया। उस की आँखें थीं, और उसका मुँह
बड़ी बड़ी बातें करता था। 21रोया में मैंने देखा
कि छोटे सींग ने मुक़द्दसीन से जंग करके उन्हें
शिकस्त दी। 22लेकिन फिर क़दीमुल-ऐयाम आ
पहुँचा और अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन के लिए
इनसाफ़ क़ायम किया। फिर वह वक़्त आया जब
मुक़द्दसीन को बादशाही हासिल हुई।

23जिससे मैंने रोया का मतलब पूछा था उसने
कहा, "चौथे जानवर से मुराद ज़मीन पर एक
चौथी बादशाही है जो दीगर तमाम बादशाहियों
से मुख़्तलिफ़ होगी। वह तमाम दुनिया को खा
जाएगी, उसे रौंदकर चूर चूर कर देगी। 24दस
सींगों से मुराद दस बादशाह हैं जो इस बादशाही
से निकल आएँगे। उनके बाद एक और बादशाह
आएगा जो गुज़रे बादशाहों से मुख़्तलिफ़ होगा
और तीन बादशाहों को ख़ाक में मिला देगा। 25वह
अल्लाह तआला के ख़िलाफ़ कुफ़्र बकेगा, और
मुक़द्दसीन उसके तहत पिसते रहेंगे, यहाँ तक कि
वह ईदों के मुक़र्ररा औक़ात और शरीअत को
तबदील करने की कोशिश करेगा। मुक़द्दसीन को
एक अरसे, दो अरसों और आधे अरसे के लिए
उसके हवाले किया जाएगा।

26लेकिन फिर लोग उस की अदालत के
लिए बैठ जाएंगे। उस की हुकूमत उससे छीन
ली जाएगी, और वह मुकम्मल तौर पर तबाह
हो जाएगी। 27तब आसमान तले की तमाम
सलतनतों की बादशाहत, सलतनत और अज़मत
अल्लाह तआला की मुक़द्दस क़ौम के हवाले कर
दी जाएगी। अल्लाह तआला की बादशाही अबदी
होगी, और तमाम हुक्मरान उस की ख़िदमत
करके उसके ताबे रहेंगे।"

28मुझे मज़ीद कुछ नहीं बताया गया। मैं,
दानियाल इन बातों से बहुत परेशान हुआ, और
मेरा चेहरा माँद पड़ गया, लेकिन मैंने मामला
अपने दिल में महफ़ूज़ रखा।

दानियाल की दूसरी रोया : मेंढा और बकरा

8 बेलशज़्ज़र बादशाह के दौरे-हुकूमत के
तीसरे साल में मैं, दानियाल ने एक और
रोया देखी। 2रोया में मैं सूबा ऐलाम के क़िलाबंद
शहर सोसन की नहर ऊलाई के किनारे पर खड़ा
था। 3जब मैंने अपनी निगाह उठाई तो किनारे पर
मेरे सामने ही एक मेंढा खड़ा था। उसके दो बड़े
सींग थे जिनमें से एक ज़्यादा बड़ा था। लेकिन
वह दूसरे के बाद ही बड़ा हो गया था। 4मेरी नज़रों
के सामने मेंढा मग़रिब, शिमाल और जुनूब की
तरफ़ सींग मारने लगा। न कोई जानवर उसका
मुक़ाबला कर सका, न कोई उसके क़ाबू से बचा
सका। जो जी चाहे करता था और होते होते बहुत
बड़ा हो गया।

5मैं उस पर ग़ौर ही कर रहा था कि अचानक
मग़रिब से आते हुए एक बकरा दिखाई दिया। उस
की आँखों के दरमियान ज़बरदस्त सींग था, और
वह ज़मीन को छुए बग़ैर चल रहा था। पूरी दुनिया
को उबूर करके 6वह दो सींगोंवाले उस मेंढे के पास
पहुँच गया जो मैंने नहर के किनारे खड़ा देखा था।
बड़े तैश में आकर वह उस पर टूट पड़ा। 7मैंने देखा
कि वह मेंढे के पहलू से टकरा गया। बड़े ग़ुस्से में
उसने उसे यों मारा कि मेंढे के दोनों सींग टुकड़े
टुकड़े हो गए। इस बेबस हालत में मेंढा उसका
मुक़ाबला न कर सका। बकरे ने उसे ज़मीन पर
पटख़कर पाँवों तले कुचल दिया। कोई नहीं था
जो मेंढे को बकरे के क़ाबू से बचाए।

8बकरा निहायत ताक़तवर हो गया। ले-
किन ताक़त के उरूज पर ही उसका बड़ा सींग
टूट गया, और उस की जगह मज़ीद चार ज़बरदस्त
सींग निकल आए जिनका रुख़ आसमान की चार
सिम्तों की तरफ़ था। 9उनके एक सींग में से एक
और सींग निकल आया जो इब्तिदा में छोटा था।

लेकिन वह जुनूब, मशरिक़ और ख़ूबसूरत मुल्क इसराईल की तरफ़ बढ़ते बढ़ते बहुत ताक़तवर हो गया। 10फिर वह आसमानी फ़ौज तक बढ़ गया। वहाँ उसने कुछ फ़ौजियों और सितारों को ज़मीन पर फेंककर पाँवों तले कुचल दिया। 11वह बढ़ते बढ़ते आसमानी फ़ौज के कमाँडर तक भी पहुँच गया और उसे उन क़ुरबानियों से महरूम कर दिया जो उसे रोज़ाना पेश की जाती थीं। साथ साथ सींग ने उसके मक़दिस के मक़ाम को तबाह कर दिया। 12उस की फ़ौज से रोज़ाना की क़ुरबानियों की बेहुरमती हुई, और सींग ने सच्चाई को ज़मीन पर पटख़ दिया। जो कुछ भी उसने किया उसमें वह कामयाब रहा।

13फिर मैंने दो मुक़द्दस हस्तियों को आपस में बात करते हुए सुना। एक ने पूछा, "इस रोया में पेश किए गए हालात कब तक क़ायम रहेंगे, यानी जो कुछ रोज़ाना की क़ुरबानियों के साथ हो रहा है, यह तबाहकुन बेहुरमती और यह बात कि मक़दिस को पामाल किया जा रहा है?" 14दूसरे ने जवाब में मुझे बताया, "हालात 2,300 शामों और सुबहों तक यों ही रहेंगे। इसके बाद मक़दिस को नए सिरे से मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाएगा।"

15मैं देखे हुए वाक़ियात को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि कोई मेरे सामने खड़ा हुआ जो मर्द जैसा लग रहा था। 16साथ साथ मैंने नहर ऊलाई की तरफ़ से किसी शख़्स की आवाज़ सुनी जिसने कहा, "ऐ जिबराईल, इस आदमी को रोया का मतलब बता दे।" 17फ़रिश्ता मेरे क़रीब आया तो मैं सख़्त घबराकर मुँह के बल गिर गया। लेकिन वह बोला, "ऐ आदमज़ाद, जान ले कि इस रोया का ताल्लुक़ आख़िरी ज़माने से है।"

18जब वह मुझसे बात कर रहा था तो मैं मदहोश हालत में मुँह के बल पड़ा रहा। अब फ़रिश्ते ने मुझे छूकर पाँवों पर खड़ा किया। 19वह बोला, "मैं तुझे समझा देता हूँ कि उस आख़िरी ज़माने में क्या कुछ पेश आएगा जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। क्योंकि रोया का ताल्लुक़ आख़िरी ज़माने से है। 20दो सींगों के जिस मेंढे को तूने देखा वह मादी और फ़ारस के बादशाहों की नुमाइंदगी करता है। 21लंबे बालों का बकरा यूनान का बादशाह है। उस की आँखों के दरमियान लगा बड़ा सींग यूनानी शहनशाही का पहला बादशाह है। 22तूने देखा कि यह सींग टूट गया और उस की जगह चार सींग निकल आए। इसका मतलब है कि पहली बादशाही से चार और निकल आएँगी। लेकिन चारों की ताक़त पहली की निसबत कम होगी। 23उनकी हुकूमत के आख़िरी ऐयाम में बेवफ़ाओं की बदकिरदारी उरूज तक पहुँच गई होगी।

उस वक़्त एक गुस्ताख़ और साज़िश का माहिर बादशाह तख़्त पर बैठेगा। 24वह बहुत ताक़तवर हो जाएगा, लेकिन यह उस की अपनी ताक़त नहीं होगी। वह हैरतअंगेज़ बरबादी का बाइस बनेगा, और जो कुछ भी करेगा उसमें कामयाब होगा। वह ज़ोरावरों और मुक़द्दस क़ौम को तबाह करेगा। 25अपनी समझ और फ़रेब के ज़रीए वह कामयाब रहेगा। तब वह मुतकब्बिर हो जाएगा। जब लोग अपने आपको महफ़ूज़ समझेंगे तो वह उन्हें मौत के घाट उतारेगा। आख़िरकार वह हुक्मरानों के हुक्मरान के ख़िलाफ़ भी उठेगा। लेकिन वह पाश पाश हो जाएगा, अलबत्ता इनसानी हाथ से नहीं।

26ऐ दानियाल, शामों और सुबहों के बारे में जो रोया तुझ पर ज़ाहिर हुई वह सच्ची है। लेकिन फ़िलहाल उसे पोशीदा रख, क्योंकि यह वाक़ियात अभी पेश नहीं आएँगे बल्कि बहुत दिनों के गुज़र जाने के बाद ही।"

27इसके बाद मैं, दानियाल निढाल होकर कई दिनों तक बीमार रहा। फिर मैं उठा और बादशाह की ख़िदमत में दुबारा अपने फ़रायज़ अदा करने लगा। मैं रोया से सख़्त परेशान था, और कोई नहीं था जो मुझे उसका मतलब बता सके।

दानियाल अपनी क़ौम की शफ़ाअत करता है

9 दारा बिन अख़स्वेरुस बाबल के तख़्त पर बैठ गया था। इस मादी बादशाह 2की हुकूमत के पहले साल में मैं, दानियाल ने पाक

नविश्तों की तहक़ीक़ की। मैंने ख़ासकर उस
पर ग़ौर किया जो रब ने यरमियाह नबी की
मारिफ़त फ़रमाया था। उसके मुताबिक़ यरूशलम
की तबाहशुदा हालत 70 साल तक क़ायम रहेगी।
3चुनाँचे मैंने रब अपने ख़ुदा की तरफ़ रुजू किया
ताकि अपनी दुआ और इल्तिजाओं से उस की
मरज़ी दरियाफ़्त करूँ। साथ साथ मैंने रोज़ा रखा,
टाट का लिबास ओढ़ लिया और अपने सर पर
राख डाल ली। 4मैंने रब अपने ख़ुदा से दुआ करके
इक़रार किया,

“ऐ रब, तू कितना अज़ीम और महीब ख़ुदा
है! जो भी तुझे प्यार करता और तेरे अहकाम के
ताबे रहता है उसके साथ तू अपना अहद क़ायम
रखता और उस पर मेहरबानी करता है। 5लेकिन
हमने गुनाह और बदी की है। हम बेदीन और बाग़ी
होकर तेरे अहकाम और हिदायात से भटक गए हैं।
6हमने नबियों की नहीं सुनी, हालाँकि तेरे ख़ादिम
तेरा नाम लेकर हमारे बादशाहों, बुज़ुर्गों, बापदादा
बल्कि मुल्क के तमाम बाशिंदों से मुख़ातिब हुए।
7ऐ रब, तू हक़-बजानिब है जबकि इस दिन
हम सब शर्मसार हैं, ख़ाह यहूदाह, यरूशलम या
इसराईल के हों, ख़ाह क़रीब या उन तमाम दूर-
दराज़ ममालिक में रहते हों जहाँ तूने हमें हमारी
बेवफ़ाई के सबब से मुंतशिर कर दिया है। क्योंकि
हम तेरे ही साथ बेवफ़ा रहे हैं। 8ऐ रब, हम
अपने बादशाहों, बुज़ुर्गों और बापदादा समेत बहुत
शर्मसार हैं, क्योंकि हमने तेरा ही गुनाह किया है।

9लेकिन रब हमारा ख़ुदा रहीम है और ख़ुशी
से मुआफ़ करता है, गो हम उससे सरकश हुए
हैं। 10न हम रब अपने ख़ुदा के ताबे रहे, न
उसके उन अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी
जो उसने हमें अपने ख़ादिमों यानी नबियों की
मारिफ़त दिए थे। 11तमाम इसराईल तेरी शरीअत
की ख़िलाफ़वरज़ी करके सहीह राह से भटक गया
है, कोई तेरी सुनने के लिए तैयार नहीं था।

अल्लाह के ख़ादिम मूसा ने शरीअत में क़सम
खाकर लानतें भेजी थीं, और अब यह लानतें हम
पर नाज़िल हुई हैं, इसलिए कि हमने तेरा गुनाह
किया। 12जो कुछ तूने हमारे और हमारे हुक्मरानों
के ख़िलाफ़ फ़रमाया था वह पूरा हुआ, और हम
पर बड़ी आफ़त आई। आसमान तले कहीं भी
ऐसी मुसीबत नहीं आई जिस तरह यरूशलम को
पेश आई है। 13मूसा की शरीअत में मज़कूर हर
वह लानत हम पर नाज़िल हुई जो नाफ़रमानों पर
भेजी गई है। तो भी न हमने अपने गुनाहों को
छोड़ा, न तेरी सच्चाई पर ध्यान दिया, हालाँकि
इससे हम रब अपने ख़ुदा का ग़ज़ब ठंडा कर
सकते थे। 14इसी लिए रब हम पर आफ़त लाने
से न झिजका। क्योंकि जो कुछ भी रब हमारा
ख़ुदा करता है उसमें वह हक़-बजानिब होता है।
लेकिन हमने उस की न सुनी।

15ऐ रब हमारे ख़ुदा, तू बड़ी क़ुदरत का इज़हार
करके अपनी क़ौम को मिसर से निकाल लाया।
यों तेरे नाम को वह इज़्ज़तो-जलाल मिला जो
आज तक क़ायम रहा है। इसके बावुजूद हमने
गुनाह किया, हमसे बेदीन हरकतें सरज़द हुई हैं।
16ऐ रब, तू अपने मुंसिफ़ाना कामों में वफ़ादार
रहा है! अब भी इसका लिहाज़ कर और अपने
सख़्त ग़ज़ब को अपने शहर और मुक़द्दस पहाड़
यरूशलम से दूर कर! यरूशलम और तेरी क़ौम
गिर्दो-नवाह की क़ौमों के लिए मज़ाक़ का निशाना
बन गई है, गो हम मानते हैं कि यह हमारे गुनाहों
और हमारे बापदादा की ख़ताओं की वजह से हो
रहा है।

17ऐ हमारे ख़ुदा, अब अपने ख़ादिम की
दुआओं और इल्तिजाओं को सुन! ऐ रब, अपनी
ही ख़ातिर अपने तबाहशुदा मक़दिस पर अपने
चेहरे का मेहरबान नूर चमका। 18ऐ मेरे ख़ुदा,
कान लगाकर मेरी सुन! अपनी आँखें खोल!
उस शहर के खंडरात पर नज़र कर जिस पर तेरे
ही नाम का ठप्पा लगा है। हम इसलिए तुझसे
इल्तिजाएँ नहीं कर रहे कि हम रास्तबाज़ हैं बल्कि
इसलिए कि तू निहायत मेहरबान है। 19ऐ रब,
हमारी सुन! ऐ रब, हमें मुआफ़ कर! ऐ मेरे ख़ुदा,
अपनी ख़ातिर देर न कर, क्योंकि तेरे शहर और
क़ौम पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।”

70 हफ़्तों का भेद

20यों मैं दुआ करता और अपने और अपनी
क़ौम इसराईल के गुनाहों का इक़रार करता
गया। मैं ख़ासकर अपने ख़ुदा के मुक़द्दस पहाड़
यरूशलम के लिए रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर
फ़रियाद कर रहा था।

21मैं दुआ कर ही रहा था कि जिबराईल जिसे
मैंने दूसरी रोया में देखा था मेरे पास आ पहुँचा।
रब के घर में शाम की क़ुरबानी पेश करने का
वक़्त था। मैं बहुत ही थक गया था। 22उसने
मुझे समझाकर कहा, "ऐ दानियाल, अब मैं
तुझे समझ और बसीरत देने के लिए आया हूँ।
23ज्योंही तू दुआ करने लगा तो अल्लाह ने जवाब
दिया, क्योंकि तू उस की नज़र में गिराँक़दर है। मैं
तुझे यह जवाब सुनाने आया हूँ। अब ध्यान से रोया
को समझ ले! 24तेरी क़ौम और तेरे मुक़द्दस शहर
के लिए 70 हफ़्ते मुक़र्रर किए गए हैं ताकि उतने
में जरायम और गुनाहों का सिलसिला ख़त्म किया
जाए, क़ुसूर का कफ़्फ़ारा दिया जाए, अबदी
रास्ती क़ायम की जाए, रोया और पेशगोई की
तसदीक़ की जाए और मुक़द्दसतरीन जगह को
मसह करके मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।

25अब जान ले और समझ ले कि यरू-
शलम को दुबारा तामीर करने का हुक्म दिया
जाएगा, लेकिन मज़ीद सात हफ़्ते गुज़रेंगे, फिर
ही अल्लाह एक हुक्मरान को इस काम के लिए
चुनकर मसह करेगा। तब शहर को 62 हफ़्तों
के अंदर चौकों और ख़ंदक़ों समेत नए सिरे से
तामीर किया जाएगा, गो इस दौरान वह काफ़ी
मुसीबत से दोचार होगा। 26इन 62 हफ़्तों के बाद
अल्लाह के मसह किए गए बंदे को क़त्ल किया
जाएगा, और उसके पास कुछ भी नहीं होगा। उस
वक़्त एक और हुक्मरान की क़ौम आकर शहर
और मक़दिस को तबाह करेगी। इख़्तिताम सैलाब
की सूरत में आएगा, और आख़िर तक जंग जारी
रहेगी, ऐसी तबाही होगी जिसका फ़ैसला हो चुका
है। 27एक हफ़्ते तक यह हुक्मरान मुतअद्दिद
लोगों को एक अहद के तहत रहने पर मजबूर
करेगा। इस हफ़्ते के बीच में वह ज़बह और
ग़ल्ला की क़ुरबानियों का इंतज़ाम बंद करेगा और
मक़दिस के एक तरफ़ वह कुछ खड़ा करेगा जो
बेहुरमती और तबाही का बाइस है। लेकिन तबाह
करनेवाले का ख़ातमा भी मुक़र्रर किया गया है,
और आख़िरकार वह भी तबाह हो जाएगा।"

दानियाल की आख़िरी रोया

10 फ़ारस के बादशाह ख़ोरस की
हुकूमत के तीसरे साल में बेल्त-
शज़्ज़र यानी दानियाल पर एक बात ज़ाहिर हुई
जो यक़ीनी है और जिसका ताल्लुक़ एक बड़ी
मुसीबत से है। उसे रोया में इस पैग़ाम की समझ
हासिल हुई।

2उन दिनों में मैं, दानियाल तीन पूरे हफ़्ते
मातम कर रहा था। 3न मैंने उम्दा खाना खाया,
न गोश्त या मै मेरे होंटों तक पहुँची। तीन पूरे
हफ़्ते मैंने हर ख़ुशबूदार तेल से परहेज़ किया।
4पहले महीने के 24वें दिन[a] मैं बड़े दरिया दिजला
के किनारे पर खड़ा था। 5मैंने निगाह उठाई तो
क्या देखता हूँ कि मेरे सामने कतान से मुलब्बस
आदमी खड़ा है जिसकी कमर में ख़ालिस सोने का
पटका बँधा हुआ है। 6उसका जिस्म पुखराज[b]
जैसा था, उसका चेहरा आसमानी बिजली की
तरह चमक रहा था, और उस की आँखें भड़कती
मशालों की मानिंद थीं। उसके बाज़ू और पाँव
पालिश किए हुए पीतल की तरह दमक रहे थे।
बोलते वक़्त यों लग रहा था कि बड़ा हुजूम शोर
मचा रहा है।

7सिर्फ़ मैं, दानियाल ने यह रोया देखी। मेरे
साथियों ने उसे न देखा। तो भी अचानक उन पर
इतनी दहशत तारी हुई कि वह भागकर छुप गए।
8चुनाँचे मैं अकेला ही रह गया। लेकिन यह अज़ीम
रोया देखकर मेरी सारी ताक़त जाती रही। मेरे
चेहरे का रंग माँद पड़ गया और मैं बेबस हुआ।

[a]23 अप्रैल।

[b]topas

9फिर वह बोलने लगा। उसे सुनते ही मैं मुँह के
बल गिरकर मदहोश हालत में ज़मीन पर पड़ा
रहा। 10तब एक हाथ ने मुझे छूकर हिलाया। उस
की मदद से मैं अपने हाथों और घुटनों के बल हो
सका।

11वह आदमी बोला, “ऐ दानियाल, तू अल्लाह
के नज़दीक बहुत गिराँक़दर है! जो बातें मैं तुझसे
करूँगा उन पर ग़ौर कर। खड़ा हो जा, क्योंकि
इस वक़्त मुझे तेरे ही पास भेजा गया है।” तब
मैं थरथराते हुए खड़ा हो गया। 12उसने अपनी
बात जारी रखी, “ऐ दानियाल, मत डरना! जब
से तूने समझ हासिल करने और अपने ख़ुदा के
सामने झुकने का पूरा इरादा कर रखा है, उसी
दिन से तेरी सुनी गई है। मैं तेरी दुआओं के जवाब
में आ गया हूँ। 13लेकिन फ़ारसी बादशाही का
सरदार 21 दिन तक मेरे रास्ते में खड़ा रहा। फिर
मीकाएल जो अल्लाह के सरदार फ़रिश्तों में से
एक है मेरी मदद करने आया, और मेरी जान
फ़ारसी बादशाही के उस सरदार के साथ लड़ने
से छूट गई। 14मैं तुझे वह कुछ सुनाने को आया
हूँ जो आख़िरी दिनों में तेरी क़ौम को पेश आएगा।
क्योंकि रोया का ताल्लुक़ आनेवाले वक़्त से है।”

15जब वह मेरे साथ यह बातें कर रहा था तो मैं
ख़ामोशी से नीचे ज़मीन की तरफ़ देखता रहा।
16फिर जो आदमी-सा लग रहा था उसने मेरे
होंटों को छू दिया, और मैं मुँह खोलकर बोलने
लगा। मैंने अपने सामने खड़े फ़रिश्ते से कहा,
“ऐ मेरे आक़ा, यह रोया देखकर मैं दर्दे-ज़ह में
मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाने लगा हूँ।
मेरी ताक़त जाती रही है। 17ऐ मेरे आक़ा, आपका
ख़ादिम किस तरह आपसे बात कर सकता है?
मेरी ताक़त तो जवाब दे गई है, साँस लेना भी
मुश्किल हो गया है।”

18जो आदमी-सा लग रहा था उसने मुझे एक
बार फिर छूकर तक़वियत दी 19और बोला, “ऐ
तू जो अल्लाह की नज़र में गिराँक़दर है, मत
डरना! तेरी सलामती हो। हौसला रख, मज़बूत
हो जा!” ज्योंही उसने मुझसे बात की मुझे
तक़वियत मिली, और मैं बोला, “अब मेरे आक़ा
बात करें, क्योंकि आपने मुझे तक़वियत दी है।”

20उसने कहा, “क्या तू मेरे आने का मक़सद
जानता है? जल्द ही मैं दुबारा फ़ारस के सरदार से
लड़ने चला जाऊँगा। और उससे निपटने के बाद
यूनान का सरदार आएगा। 21लेकिन पहले मैं तेरे
सामने वह कुछ बयान करता हूँ जो ‘सच्चाई की
किताब’ में लिखा है। (इन सरदारों से लड़ने में
मेरी मदद कोई नहीं करता सिवाए तुम्हारे सरदार
फ़रिश्ते मीकाएल के।

11 मादी बादशाह दारा की हुकूमत के
पहले साल से ही मैं मीकाएल के साथ
खड़ा रहा हूँ ताकि उसको सहारा दूँ और उस की
हिफ़ाज़त करूँ।)

शिमाली और जुनूबी सलतनतों की जंगें

2अब मैं तुझे वह कुछ बताता हूँ जो यक़ीनन
पेश आएगा। फ़ारस में मज़ीद तीन बादशाह तख़्त
पर बैठेंगे। इसके बाद एक चौथा आदमी बादशाह
बनेगा जो तमाम दूसरों से कहीं ज़्यादा दौलतमंद
होगा। जब वह दौलत के बाइस ताक़तवर हो
जाएगा तो वह यूनानी ममलकत से लड़ने के लिए
सब कुछ जमा करेगा।

3फिर एक ज़ोरावर बादशाह बरपा हो जाएगा
जो बड़ी क़ुव्वत से हुकूमत करेगा और जो
जी चाहे करेगा। 4लेकिन ज्योंही वह बरपा हो
जाए उस की सलतनत टुकड़े टुकड़े होकर एक
शिमाली, एक जुनूबी, एक मग़रिबी और एक
मशरिक़ी हिस्से में तक़सीम हो जाएगी। न यह
चार हिस्से पहली सलतनत जितने ताक़तवर होंगे,
न बादशाह की औलाद तख़्त पर बैठेगी, क्योंकि
उस की सलतनत जड़ से उखाड़कर दूसरों को दी
जाएगी। 5जुनूबी मुल्क का बादशाह तक़वियत
पाएगा, लेकिन उसका एक अफ़सर कहीं ज़्यादा
ताक़तवर हो जाएगा, उस की हुकूमत कहीं ज़्यादा
मज़बूत होगी।

6चंद साल के बाद दोनों सलतनतें मुत्तहिद हो
जाएँगी। अहद को मज़बूत करने के लिए जुनूबी

बादशाह की बेटी की शादी शिमाली बादशाह से
कराई जाएगी। लेकिन न बेटी कामयाब होगी,
न उसका शौहर और न उस की ताक़त क़ायम
रहेगी। उन दिनों में उसे उसके साथियों, बाप और
शौहर समेत दुश्मन के हवाले किया जाएगा। 7बेटी
की जगह उसका एक रिश्तेदार खड़ा हो जाएगा
जो शिमाली बादशाह की फ़ौज पर हमला करके
उसके क़िले में घुस आएगा। वह उनसे निपटकर
फ़तह पाएगा 8और उनके ढाले हुए बुतों को सोने-
चाँदी की क़ीमती चीज़ों समेत छीनकर मिसर ले
जाएगा। वह कुछ साल तक शिमाली बादशाह
को नहीं छेड़ेगा। 9फिर शिमाली बादशाह जुनूबी
बादशाह के मुल्क में घुस आएगा, लेकिन उसे
अपने मुल्क में वापस जाना पड़ेगा। 10इसके बाद
उसके बेटे जंग की तैयारियाँ करके बड़ी बड़ी
फ़ौजें जमा करेंगे। उनमें से एक जुनूबी बादशाह
की तरफ़ बढ़कर सैलाब की तरह जुनूबी मुल्क
पर आएगी और लड़ते लड़ते उसके क़िले तक
पहुँचेगी।

11फिर जुनूबी बादशाह तैश में आकर शि-
माली बादशाह से लड़ने के लिए निकलेगा।
शिमाली बादशाह जवाब में बड़ी फ़ौज खड़ी
करेगा, लेकिन वह शिकस्त खा कर 12तबाह
हो जाएगी। तब जुनूबी बादशाह का दिल ग़ुरूर
से भर जाएगा, और वह बेशुमार अफ़राद को
मौत के घाट उतारेगा। तो भी वह ताक़तवर नहीं
रहेगा। 13क्योंकि शिमाली बादशाह एक और
फ़ौज जमा करेगा जो पहली की निसबत कहीं
ज़्यादा बड़ी होगी। चंद साल के बाद वह इस
बड़ी और हथियारों से लैस फ़ौज के साथ जुनूबी
बादशाह से लड़ने आएगा।

14उस वक़्त बहुत-से लोग जुनूबी बादशाह के
ख़िलाफ़ उठ खड़े होंगे। तेरी क़ौम के बेदीन लोग
भी उसके ख़िलाफ़ खड़े हो जाएंगे और यों रोया
को पूरा करेंगे। लेकिन वह ठोकर खाकर गिर
जाएंगे। 15फिर शिमाली बादशाह आकर एक
क़िलाबंद शहर का मुहासरा करेगा। वह पुश्ता
बनाकर शहर पर क़ब्ज़ा कर लेगा। जुनूब की
फ़ौजें उसे रोक नहीं सकेंगी, उनके बेहतरीन दस्ते
भी बेबस होकर उसका सामना नहीं कर सकेंगे।
16हमलाआवर बादशाह जो जी चाहे करेगा, और
कोई उसका सामना नहीं कर सकेगा।

उस वक़्त वह ख़ूबसूरत मुल्क इसराईल में
टिक जाएगा और उसे तबाह करने का इख़्तियार
रखेगा। 17तब वह अपनी पूरी सलतनत पर क़ाबू
पाने का मनसूबा बाँधेगा। इस ज़िम्न में वह जुनूबी
बादशाह के साथ अहद बाँधकर उससे अपनी
बेटी की शादी कराएगा ताकि जुनूबी मुल्क को
तबाह करे, लेकिन बेफ़ायदा। मनसूबा नाकाम हो
जाएगा।

18इसके बाद वह साहिली इलाक़ों की तरफ़
रुख़ करेगा। उनमें से वह बहुतों पर क़ब्ज़ा
भी करेगा, लेकिन आख़िरकार एक हुक्मरान
उसके गुस्ताखाना रवय्ये का ख़ातमा करेगा, और
उसे शरमिंदा होकर पीछे हटना पड़ेगा। 19फिर
शिमाली बादशाह अपने मुल्क के क़िलों के पास
वापस आएगा, लेकिन इतने में ठोकर खाकर
गिर जाएगा। तब उसका नामो-निशान तक नहीं
रहेगा।

20उस की जगह एक बादशाह बरपा हो जाएगा
जो अपने अफ़सर को शानदार मुल्क इसराईल में
भेजेगा ताकि वहाँ से गुज़रकर लोगों से टैक्स ले।
लेकिन थोड़े दिनों के बाद वह तबाह हो जाएगा।
न वह किसी झगड़े के सबब से हलाक होगा, न
किसी जंग में।

इसराईली क़ौम का बड़ा दुश्मन

21उस की जगह एक क़ाबिले-मज़म्मत आदमी
खड़ा हो जाएगा। वह तख़्त के लिए मुक़र्रर
नहीं हुआ होगा बल्कि ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर
आकर साज़िशों के वसीले से बादशाह बनेगा।
22मुख़ालिफ़ फ़ौजें उस पर टूट पड़ेंगी, लेकिन
वह सैलाब की तरह उन पर आकर उन्हें बहा ले
जाएगा। वह और अहद का एक रईस तबाह हो
जाएंगे। 23क्योंकि उसके साथ अहद बाँधने के
बाद वह उसे फ़रेब देगा और सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद

के ज़रीए इक़तिदार हासिल कर लेगा। 24वह ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर दौलतमंद सूबों में घुसकर वह कुछ करेगा जो न उसके बाप और न उसके बापदादा से कभी सरज़द हुआ होगा। लूटा हुआ माल और मिलकियत वह अपने लोगों में तक़सीम करेगा। वह क़िलाबंद शहरों पर क़ब्ज़ा करने के मनसूबे भी बाँधेगा, लेकिन सिर्फ़ महदूद अरसे के लिए।

25फिर वह हिम्मत बाँधकर और पूरा ज़ोर लगाकर बड़ी फ़ौज के साथ जुनूबी बादशाह से लड़ने जाएगा। जवाब में जुनूबी बादशाह एक बड़ी और निहायत ही ताक़तवर फ़ौज को लड़ने के लिए तैयार करेगा। तो भी वह शिमाली बादशाह का सामना नहीं कर पाएगा, इसलिए कि उसके ख़िलाफ़ साज़िशें कामयाब हो जाएँगी। 26उस की रोटी खानेवाले ही उसे तबाह करेंगे। तब उस की फ़ौज मुंतशिर हो जाएगी, और बहुत-से अफ़राद मैदाने-जंग में खेत आएँगे।

27दोनों बादशाह मुज़ाकरात के लिए एक ही मेज़ पर बैठ जाएंगे। वहाँ दोनों झूट बोलते हुए एक दूसरे को नुक़सान पहुँचाने के लिए कोशाँ रहेंगे। लेकिन किसी को कामयाबी हासिल नहीं होगी, क्योंकि मुक़र्ररा आख़िरी वक़्त अभी नहीं आना है। 28शिमाली बादशाह बड़ी दौलत के साथ अपने मुल्क में वापस चला जाएगा। रास्ते में वह मुक़द्दस अहद की क़ौम इसराईल पर ध्यान देकर उसे नुक़सान पहुँचाएगा, फिर अपने वतन वापस जाएगा।

29मुक़र्ररा वक़्त पर वह दुबारा जुनूबी मुल्क में घुस आएगा, लेकिन पहले की निसबत इस बार नतीजा फ़रक़ होगा। 30क्योंकि कित्तीम के बहरी जहाज़ उस की मुख़ालफ़त करेंगे, और वह हौसला हारेगा।

तब वह मुड़कर मुक़द्दस अहद की क़ौम पर अपना पूरा ग़ुस्सा उतारेगा। जो मुक़द्दस अहद को तर्क करेंगे उन पर वह मेहरबानी करेगा। 31उसके फ़ौजी आकर क़िलाबंद मक़दिस की बेहुरमती करेंगे। वह रोज़ाना की क़ुरबानियों का इंतज़ाम बंद करके तबाही का मकरूह बुत खड़ा करेंगे। 32जो यहूदी पहले से अहद की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे होंगे उन्हें वह चिकनी-चुपड़ी बातों से मुरतद हो जाने पर आमादा करेगा। लेकिन जो लोग अपने ख़ुदा को जानते हैं वह मज़बूत रहकर उस की मुख़ालफ़त करेंगे। 33क़ौम के समझदार बहुतों को सहीह राह की तालीम देंगे। लेकिन कुछ अरसे के लिए वह तलवार, आग, क़ैद और लूट-मार के बाइस डाँवाँडोल रहेंगे। 34उस वक़्त उन्हें थोड़ी-बहुत मदद हासिल तो होगी, लेकिन बहुत-से ऐसे लोग उनके साथ मिल जाएंगे जो मुख़लिस नहीं होंगे। 35समझदारों में से कुछ डाँवाँडोल हो जाएंगे ताकि लोगों को आज़माकर आख़िरी वक़्त तक ख़ालिस और पाक-साफ़ किया जाए। क्योंकि मुक़र्ररा वक़्त कुछ देर के बाद आएगा।

36बादशाह जो जी चाहे करेगा। वह सरफ़राज़ होकर अपने आपको तमाम माबूदों से अज़ीम क़रार देगा। ख़ुदाओं के ख़ुदा के ख़िलाफ़ वह नाक़ाबिले-बयान कुफ़र बकेगा। उसे कामयाबी भी हासिल होगी, लेकिन सिर्फ़ उस वक़्त तक जब तक इलाही ग़ज़ब ठंडा न हो जाए। क्योंकि जो कुछ मुक़र्रर हुआ है उसे पूरा होना है। 37बादशाह न अपने बापदादा के देवताओं की परवा करेगा, न औरतों के अज़ीज़ देवता की, न किसी और की। क्योंकि वह अपने आपको सब पर सरफ़राज़ करेगा। 38इन देवताओं के बजाए वह क़िलों के देवता की पूजा करेगा जिससे उसके बापदादा वाक़िफ़ ही नहीं थे। वह सोने-चाँदी, जवाहिरात और क़ीमती तोहफ़ों से देवता का एहतराम करेगा। 39चुनाँचे वह अजनबी माबूद की मदद से मज़बूत क़िलों पर हमला करेगा। जो उस की हुकूमत मानें उनकी वह बड़ी इज़्ज़त करेगा, इन्हें बहुतों पर मुक़र्रर करेगा और उनमें अज्र के तौर पर ज़मीन तक़सीम करेगा।

40लेकिन फिर आख़िरी वक़्त आएगा। जुनूबी बादशाह जंग में उससे टकराएगा, तो जवाब में शिमाली बादशाह रथ, घुड़सवार और मुतअद्दिद बहरी जहाज़ लेकर उस पर टूट पड़ेगा। तब

वह बहुत-से मुल्कों में घुस आएगा और सैलाब
की तरह सब कुछ ग़रक़ करके आगे बढ़ेगा।
41इस दौरान वह ख़ूबसूरत मुल्क इसराईल में भी
घुस आएगा। बहुत-से ममालिक शिकस्त खाएँगे,
लेकिन अदोम और मोआब अम्मोन के मरकज़ी
हिस्से समेत बच जाएंगे। 42उस वक़्त उसका
इक़तिदार बहुत-से ममालिक पर छा जाएगा,
मिसर भी नहीं बचेगा। 43शिमाली बादशाह मिसर
की सोने-चाँदी और बाक़ी दौलत पर क़ब्ज़ा
करेगा, और लिबिया और एथोपिया भी उसके
नक़्शे-क़दम पर चलेंगे। 44लेकिन फिर मशरिक़
और शिमाल की तरफ़ से अफ़वाहें उसे सदमा
पहुँचाएँगी, और वह बड़े तैश में आकर बहुतों
को तबाह और हलाक करने के लिए निकलेगा।
45रास्ते में वह समुंदर और ख़ूबसूरत मुक़द्दस
पहाड़ के दरमियान अपने शाही ख़ैमे लगा लेगा।
लेकिन फिर उसका अंजाम आएगा, और कोई
उस की मदद नहीं करेगा।

मुरदे जी उठते हैं

12 उस वक़्त फ़रिश्तों का अज़ीम
सरदार मीकाएल उठ खड़ा हो-
गा, वह जो तेरी क़ौम की शफ़ाअत करता है।
मुसीबत का ऐसा वक़्त होगा कि क़ौमों के पैदा
होने से लेकर उस वक़्त तक नहीं हुआ होगा।
लेकिन साथ साथ तेरी क़ौम को नजात मिलेगी।
जिसका भी नाम अल्लाह की किताब में दर्ज है वह
नजात पाएगा। 2तब ख़ाक में सोए हुए मुतअद्दिद
लोग जाग उठेंगे, कुछ अबदी ज़िंदगी पाने के लिए
और कुछ अबदी रुसवाई और घिन का निशाना
बनने के लिए। 3जो समझदार हैं वह आसमान
की आबो-ताब की मानिंद चमकेंगे, और जो बहुतों
को रास्त राह पर लाए हैं वह हमेशा तक सितारों
की तरह जगमगाएँगे।

4लेकिन तू, ऐ दानियाल, इन बातों को छुपाए
रख! इस किताब पर आख़िरी वक़्त तक मुहर
लगा दे! बहुत लोग इधर-उधर घूमते फिरेंगे, और
इल्म में इज़ाफ़ा होता जाएगा।”

आख़िरी वक़्त

5फिर मैं, दानियाल ने दरिया के पास दो
आदमियों को देखा। एक इस किनारे पर खड़ा
था जबकि दूसरा दूसरे किनारे पर। 6कतान से
मुलब्बस आदमी बहते हुए पानी के ऊपर था।
किनारों पर खड़े आदमियों में से एक ने उससे
पूछा, “इन हैरतअंगेज़ बातों की तकमील तक
मज़ीद कितनी देर लगेगी?”

7कतान से मुलब्बस आदमी ने दोनों हाथ
आसमान की तरफ़ उठाए और अबद तक ज़िंदा
ख़ुदा की क़सम खाकर बोला, “पहले एक अरसा,
फिर दो अरसे, फिर आधा अरसा गुज़रेगा। पहले
मुक़द्दस क़ौम की ताक़त को पाश पाश करने का
सिलसिला इख़्तिताम पर पहुँचना है। इसके बाद
ही यह तमाम बातें तकमील तक पहुँचेंगी।”

8गो मैंने उस की यह बात सुनी, लेकिन वह मेरी
समझ में न आई। चुनाँचे मैंने पूछा, “मेरे आक़ा,
इन तमाम बातों का क्या अंजाम होगा?”

9वह बोला, “ऐ दानियाल, अब चला जा!
क्योंकि इन बातों को आख़िरी वक़्त तक छुपाए
रखना है। उस वक़्त तक इन पर मुहर लगी रहेगी।
10बहुतों को आज़माकर पाक-साफ़ और ख़ालिस
किया जाएगा। लेकिन बेदीन बेदीन ही रहेंगे। कोई
भी बेदीन यह नहीं समझेगा, लेकिन समझदारों
को समझ आएगी। 11जिस वक़्त से रोज़ाना
की क़ुरबानी का इंतज़ाम बंद किया जाएगा और
तबाही के मकरूह बुत को मक़दिस में खड़ा
किया जाएगा उस वक़्त से 1,290 दिन गुज़रेंगे।
12जो सब्र करके 1,335 दिनों के इख़्तिताम तक
क़ायम रहे वह मुबारक है!

13जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, आख़िरी वक़्त की
तरफ़ बढ़ता चला जा! तू आराम करेगा और फिर
दिनों के इख़्तिताम पर जी उठकर अपनी मीरास
पाएगा।”

होसेअ

नबी का ख़ानदान इसराईल की अलामत है

1 ज़ैल में रब का वह कलाम दर्ज है
जो उन दिनों में होसेअ बिन बैरी
पर नाज़िल हुआ जब उज़्ज़ियाह, यूताम,
आख़ज़ और हिज़क़ियाह यहूदाह के बाद-
शाह और यरुबियाम बिन युआस इसराईल का
बादशाह था।

2जब रब पहली बार होसेअ से हमकलाम हुआ
तो उसने हुक्म दिया, “जा, ज़िनाकार औरत से
शादी कर और ज़िनाकार बच्चे पैदा कर, क्योंकि
मुल्क रब की पैरवी छोड़कर मुसलसल ज़िना
करता रहता है।” 3चुनाँचे होसेअ की जुमर बिंत
दिबलायम से शादी हुई। उसका पाँव भारी हुआ,
और बेटा पैदा हुआ। 4तब रब ने होसेअ से कहा,
“उसका नाम यज़्रएल रखना। क्योंकि जल्द ही मैं
याहू के ख़ानदान को यज़्रएल में उस क़त्लो-ग़ारत
की सज़ा दूँगा जो उससे सरज़द हुई। साथ साथ मैं
इसराईली बादशाही को भी ख़त्म करूँगा। 5उस
दिन मैं मैदाने-यज़्रएल में इसराईल की कमान को
तोड़ डालूँगा।”

6इसके बाद जुमर दुबारा उम्मीद से हुई। इस
बार बेटी पैदा हुई। रब ने होसेअ से कहा, “इसका
नाम लोरुहामा यानी ‘जिस पर रहम न हुआ हो’
रखना, क्योंकि आइंदा मैं इसराईलियों पर रहम
नहीं करूँगा बल्कि वह मेरे रहम से सरासर महरूम
रहेंगे।

7लेकिन यहूदाह के बाशिंदों पर मैं रहम
करके उन्हें छुटकारा दूँगा। मैं उन्हें कमान,
तलवार, जंग के हथियारों, घोड़ों या घुड़-
सवारों की मारिफ़त छुटकारा नहीं दूँगा बल्कि मैं
जो रब उनका ख़ुदा हूँ ख़ुद ही उन्हें नजात दूँगा।”

8लोरुहामा का दूध छुड़ाने पर जुमर फिर
हामिला हुई। इस मरतबा बेटा पैदा हुआ। 9तब रब
ने फ़रमाया, “इसका नाम लोअम्मी यानी ‘मेरी
क़ौम नहीं’ रखना। क्योंकि तुम मेरी क़ौम नहीं,
और मैं तुम्हारा ख़ुदा नहीं हूँगा।

10लेकिन वह वक़्त आएगा जब इसराईली
समुंदर की रेत जैसे बेशुमार होंगे। न उनकी
पैमाइश की जा सकेगी, न उन्हें गिना जा सकेगा।
तब जहाँ उनसे कहा गया कि ‘तुम मेरी क़ौम
नहीं’ वहाँ वह ‘ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद’ कहलाएँगे।
11तब यहूदाह और इसराईल के लोग मुत्तहिद हो
जाएंगे और मिलकर एक राहनुमा मुक़र्रर करेंगे।
फिर वह मुल्क में से निकल आएँगे, क्योंकि
यज़्रएल[a] का दिन अज़ीम होगा!

[a]यानी अल्लाह बीज बोता है।

2 उस वक़्त अपने भाइयों का नाम अम्मी
यानी 'मेरी क़ौम' और अपनी बहनों का
नाम रुहामा यानी 'जिस पर रहम किया गया हो'
रखो।

इसराईल बेवफ़ा जुमर की मानिंद है

2अपनी माँ इसराईल पर इलज़ाम लगाओ, हाँ
उस पर इलज़ाम लगाओ! क्योंकि न वह मेरी
बीवी है, न मैं उसका शौहर हूँ। वह अपने चेहरे से
और अपनी छातियों के दरमियान से ज़िनाकारी के
निशान दूर करे, 3वरना मैं उसके कपड़े उतारकर
उसे उस नंगी हालत में छोड़ूँगा जिसमें वह पैदा
हुई। मैं होने दूँगा कि वह रेगिस्तान और झुलसती
ज़मीन में तबदील हो जाए, कि वह प्यास के
मारे मर जाए। 4मैं उसके बच्चों पर भी रहम नहीं
करूँगा, क्योंकि वह ज़िनाकार बच्चे हैं। 5उनकी
माँ ने ज़िना किया, उन्हें जन्म देनेवाली ने शर्मनाक
हरकतें की हैं। वह बोली, 'मैं अपने आशिक़ों के
पीछे भाग जाऊँगी। आख़िर मेरी रोटी, पानी, ऊन,
कतान, तेल और पीने की चीज़ें वही मुहैया करते
हैं।'

6इसलिए जहाँ भी वह चलना चाहे वहाँ मैं उसे
काँटेदार झाड़ियों से रोक दूँगा, मैं ऐसी दीवार
खड़ी करूँगा कि उसे रास्ते का पता न चले। 7वह
अपने आशिक़ों का पीछा करते करते थक जाएगी
और कभी उन तक पहुँचेगी नहीं, वह उनका खोज
लगाती रहेगी लेकिन उन्हें पाएगी नहीं। फिर वह
बोलेगी, 'मैं अपने पहले शौहर के पास वापस
जाऊँ, क्योंकि उस वक़्त मेरा हाल आज की
निसबत कहीं बेहतर था।' 8लेकिन वह यह बात
जानने के लिए तैयार नहीं कि उसे अल्लाह ही
की तरफ़ से सब कुछ मुहैया हुआ है। मैं ही ने
उसे वह अनाज, मै, तेल और कसरत की सोना-
चाँदी दे दी जो लोगों ने बाल देवता को पेश की।
9इसलिए मैं अपने अनाज और अपने अंगूर को
फ़सल की कटाई से पहले पहले वापस लूँगा। जो
ऊन और कतान मैं उसे देता रहा ताकि उस की
बरहनगी नज़र न आए उसे मैं उससे छीन लूँगा।
10उसके आशिक़ों के देखते देखते मैं उसके सारे
कपड़े उतारूँगा, और कोई उसे मेरे हाथ से नहीं
बचाएगा। 11मैं उस की तमाम ख़ुशियाँ बंद कर
दूँगा। न कोई ईद, न नए चाँद का तहवार, न सबत
का दिन या बाक़ी कोई मुक़र्ररा जशन मनाया
जाएगा। 12मैं उसके अंगूर और अंजीर के बाग़ों
को तबाह करूँगा, उन चीज़ों को जिनके बारे में
उसने कहा, 'यह मुझे आशिक़ों की ख़िदमत करने
के एवज़ मिल गई हैं।' मैं यह बाग़ जंगल बनने
दूँगा, और जंगली जानवर उनका फल खाएँगे।

13रब फ़रमाता है कि मैं उसे उन दिनों की
सज़ा दूँगा जब उसने बाल के बुतों को बख़ूर की
क़ुरबानियाँ पेश कीं। उस वक़्त वह अपने आपको
बालियों और ज़ेवरात से सजाकर अपने आशिक़ों
के पीछे भाग गई। मुझे वह भूल गई।

अल्लाह वफ़ादार रहता है

14चुनाँचे अब मैं उसे मनाने की कोशिश
करूँगा, उसे रेगिस्तान में ले जाकर उससे नरमी से
बात करूँगा। 15फिर मैं उसे वहाँ से होकर उसके
अंगूर के बाग़ वापस करूँगा और वादीए-अकूर[a]
को उम्मीद के दरवाज़े में बदल दूँगा। उस वक़्त
वह ख़ुशी से मेरे पीछे होकर वहाँ चलेगी, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह जवानी में करती थी जब मेरे
पीछे होकर मिसर से निकल आई।"

16रब फ़रमाता है, "उस दिन तू मुझे पुकारते
वक़्त 'ऐ मेरे बाल'[b] नहीं कहेगी बल्कि 'ऐ मेरे
ख़ाविंद।' 17मैं बाल देवताओं के नाम तेरे मुँह
से निकाल दूँगा, और तू आइंदा उनके नामों का
ज़िक्र तक नहीं करेगी। 18उस दिन मैं जंगली
जानवरों, परिंदों और रेंगनेवाले जानदारों के साथ
अहद बाँधूँगा ताकि वह इसराईल को नुक़सान न
पहुँचाएँ। कमान और तलवार को तोड़कर मैं जंग
का ख़तरा मुल्क से दूर कर दूँगा। सब आरामो-
सुकून से ज़िंदगी गुज़ारेंगे।

[a]यानी मुसीबत की वादी।

[b]बाल का मतलब 'मालिक' है।

19मैं तेरे साथ अबदी रिश्ता बाँधूँगा, ऐसा रिश्ता जो रास्ती, इनसाफ़, फ़ज़ल और रहम पर मबनी होगा। 20हाँ, जो रिश्ता मैं तेरे साथ बाँधूँगा उस की बुनियाद वफ़ादारी होगी। तब तू रब को जान लेगी।”

21रब फ़रमाता है, “उस दिन मैं सुनूँगा। मैं आसमान की सुनकर बादल पैदा करूँगा, आसमान ज़मीन की सुनकर बारिश बरसाएगा, 22ज़मीन अनाज, अंगूर और ज़ैतून की सुनकर उन्हें तक़वियत देगी, और यह चीज़ें मैदाने-यज्रएल[a] की सुनकर कसरत से पैदा हो जाएँगी। 23उस वक़्त मैं अपनी ख़ातिर इसराईल का बीज मुल्क में बो दूँगा। ‘लोरुहामा’[b] पर मैं रहम करूँगा, और ‘लोअम्मी’[c] से मैं कहूँगा, ‘तू मेरी क़ौम है।’ जवाब में वह बोलेगी, ‘तू मेरा ख़ुदा है’।”

जुमर की तरह इसराईल को वापस ख़रीदा जाएगा

3 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “जा, अपनी बीवी को दुबारा प्यार कर, हालाँकि उसका आशिक़ है जिससे उसने ज़िना किया है। उसे यों प्यार कर जिस तरह रब इसराईलियों को प्यार करता है, हालाँकि उनका रुख़ दीगर माबूदों की तरफ़ है और उन्हें उन्हीं की अंगूर की टिक्कियाँ पसंद हैं।”

2तब मैंने चाँदी के 15 सिक्के और जौ के 195 किलोग्राम देकर उसे वापस ख़रीद लिया। 3मैंने उससे कहा, “अब तुझे बड़े अरसे तक मेरे साथ रहना है। इतने में न ज़िना कर, न किसी आदमी से सोहबत रख। मैं भी बड़ी देर तक तुझसे हमबिसतर नहीं हूँगा।”

4इसराईल का यही हाल होगा। बड़ी देर तक न उनका बादशाह होगा, न राहनुमा, न क़ुरबानी का इंतज़ाम, न यादगार पत्थर, न इमाम का बालापोश। उनके पास बुत तक भी नहीं होंगे। 5इसके बाद इसराईली वापस आकर रब अपने ख़ुदा और दाऊद अपने बादशाह को तलाश करेंगे। आख़िरी दिनों में वह लरज़ते हुए रब और उस की भलाई की तरफ़ रुजू करेंगे।

इमामों पर रब का इलज़ाम

4 ऐ इसराईलियो, रब का कलाम सुनो! क्योंकि रब का मुल्क के बाशिंदों से मुक़दमा है। “इलज़ाम यह है कि मुल्क में न वफ़ादारी, न मेहरबानी और न अल्लाह का इरफ़ान है। 2कोसना, झूट बोलना, चोरी और ज़िना करना आम हो गया है। रोज़ बरोज़ क़त्लो-ग़ारत की नई ख़बरें मिलती रहती हैं। 3इसी लिए मुल्क में काल है और उसके तमाम बाशिंदे पज़मुरदा हो गए हैं। जंगली जानवर, परिंदे और मछलियाँ भी फ़ना हो रही हैं।

4लेकिन बिलावजह किसी पर इलज़ाम मत लगाना, न ख़ाहमख़ाह किसी की तंबीह करो! ऐ इमामो, मैं तुम्हीं पर इलज़ाम लगाता हूँ। 5ऐ इमाम, दिन के वक़्त तू ठोकर खाकर गिरेगा, और रात के वक़्त नबी गिरकर तेरे साथ पड़ा रहेगा। मैं तेरी माँ को भी तबाह करूँगा। 6अफ़सोस, मेरी क़ौम इसलिए तबाह हो रही है कि वह सहीह इल्म नहीं रखती। और क्या अजब जब तुम इमामों ने यह इल्म रद्द कर दिया है। अब मैं तुम्हें भी रद्द करता हूँ। आइंदा तुम इमाम की ख़िदमत अदा नहीं करोगे। चूँकि तुम अपने ख़ुदा की शरीअत भूल गए हो इसलिए मैं तुम्हारी औलाद को भी भूल जाऊँगा।

7इमामों की तादाद जितनी बढ़ती गई उतना ही वह मेरा गुनाह करते गए। उन्होंने अपनी इज़्ज़त ऐसी चीज़ के एवज़ छोड़ दी जो रुसवाई का बाइस है। 8मेरी क़ौम के गुनाह उनकी ख़ुराक हैं, और वह इस लालच में रहते हैं कि लोगों का क़ुसूर मज़ीद बढ़ जाए। 9चुनाँचे इमामों और क़ौम के साथ एक जैसा सुलूक किया जाएगा। दोनों को

[a]अल्लाह बीज बोता है।
[b]जिस पर रहम न हुआ हो।
[c]मेरी क़ौम नहीं।

मैं उनके चाल-चलन की सज़ा दूँगा, दोनों को
उनकी हरकतों का अज्र दूँगा। 10खाना तो वह
खाएँगे लेकिन सेर नहीं होंगे। ज़िना भी करते
रहेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। इससे उनकी तादाद नहीं
बढ़ेगी। क्योंकि उन्होंने रब का ख़याल करना छोड़
दिया है।

11ज़िना करने और नई और पुरानी मै पीने
से लोगों की अक़्ल जाती रहती है। 12मेरी क़ौम
लकड़ी से दरियाफ़्त करती है कि क्या करना है,
और उस की लाठी उसे हिदायत देती है। क्योंकि
ज़िनाकारी की रूह ने उन्हें भटका दिया है, ज़िना
करते करते वह अपने ख़ुदा से कहीं दूर हो गए
हैं। 13वह पहाड़ों की चोटियों पर अपने जानवरों
को क़ुरबान करते हैं और पहाड़ियों पर चढ़कर
बलूत, सफ़ेदा या किसी और दरख़्त के ख़ुशगवार
साये में बख़ूर की क़ुरबानियाँ पेश करते हैं। इसी
लिए तुम्हारी बेटियाँ इसमतफ़रोश बन गई हैं, और
तुम्हारी बहुएँ ज़िना करती हैं। 14लेकिन मैं उन्हें
उनकी इसमतफ़रोशी और ज़िनाकारी की सज़ा
क्यों दूँ जबकि तुम मर्द कसबियों से सोहबत
रखते और देवताओं की ख़िदमत में इसमतफ़रोशी
करनेवाली औरतों के साथ क़ुरबानियाँ चढ़ाते हो?
ऐसी हरकतों से नासमझ क़ौम तबाह हो रही है।

15ऐ इसराईल, तू इसमतफ़रोश है, लेकिन
यहूदाह ख़बरदार रहे कि वह इस जुर्म में मुलव्वस
न हो जाए। इसराईल के शहरों जिलजाल और
बैत-आवन[a] की क़ुरबानगाहों के पास मत जाना।
ऐसी जगहों पर रब का नाम लेकर उस की हयात
की क़सम खाना मना है। 16इसराईल तो ज़िद्दी
गाय की तरह अड़ गया है। तो फिर रब उन्हें किस
तरह सब्ज़ाज़ार में भेड़ के बच्चों की तरह चरा
सकता है?

17इसराईल[b] तो बुतों का इत्तहादी है, उसे छोड़
दे! 18यह लोग शराब की महफ़िल से फ़ारिग़
होकर ज़िनाकारी में लग जाते हैं। वह नाजायज़
मुहब्बत करते करते कभी नहीं थकते। लेकिन
इसका अज्र उनकी अपनी बेइज़्ज़ती है। 19आँधी
उन्हें अपनी लपेट में लेकर उड़ा ले जाएगी, और
वह अपनी क़ुरबानियों के बाइस शरमिंदा हो
जाएंगे।

इसराईल और यहूदाह दोनों क़ुसूरवार हैं

5 ऐ इमामो, सुनो मेरी बात! ऐ इसराईल के
घराने, तवज्जुह दे! ऐ शाही ख़ानदान, मेरे
पैग़ाम पर ग़ौर कर!

तुम पर फ़ैसला है, क्योंकि अपनी बुत-
परस्ती से तुमने मिसफ़ाह में फंदा लगा दिया,
तबूर पहाड़ पर जाल बिछा दिया 2और शित्तीम
में गढ़ा खुदवा लिया है। ख़बरदार! मैं तुम सबको
सज़ा दूँगा।

3मैं तो इसराईल को ख़ूब जानता हूँ, वह मुझसे
छुपा नहीं रह सकता। इसराईल अब इसमतफ़रोश
बन गया है, वह नापाक है। 4उनकी बुरी हरकतें
उन्हें उनके ख़ुदा के पास वापस आने नहीं देतीं।
क्योंकि उनके अंदर ज़िनाकारी की रूह है, और वह
रब को नहीं जानते। 5इसराईल का तकब्बुर उसके
ख़िलाफ़ गवाही देता है, और वह अपने क़ुसूर के
बाइस गिर जाएगा। यहूदाह भी उसके साथ गिर
जाएगा।

6तब वह अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों
को लेकर रब को तलाश करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा।
वह उसे पा नहीं सकेंगे, क्योंकि वह उन्हें छोड़कर
चला गया है। 7उन्होंने रब से बेवफ़ा होकर
नाजायज़ औलाद पैदा की है। अब नया चाँद उन्हें
उनकी मौरूसी ज़मीनों समेत हड़प कर लेगा।

अपनी क़ौम पर अल्लाह का इलज़ाम

8जिबिया में नरसिंगा फूँको, रामा में तुरम
बजाओ! बैत-आवन में जंग के नारे बुलंद करो।
ऐ बिनयमीन, दुश्मन तेरे पीछे पड़ गया है! 9जिस

[a]बैत-आवन यानी 'गुनाह का घर' से मुराद बैतेल है।

[b]होसेअ के इबरानी मतन में यहाँ और मुतअद्दिद दीगर आयात में 'इफ़राईम' मुस्तामल है जिससे मुराद शिमाली मुल्के-इसराईल है।

दिन मैं सज़ा दूँगा उस दिन इसराईल वीरानो-
सुनसान हो जाएगा। ध्यान दो कि मैंने इसराईली
क़बीलों के बारे में क़ाबिले-एतमाद बातें बताई हैं।
10यहूदाह के राहनुमा उन जैसे बन गए हैं जो
नाजायज़ तौर पर अपनी ज़मीन की हुदूद बढ़ा देते
हैं। जवाब में मैं अपना ग़ज़ब मूसलाधार बारिश
की तरह उन पर नाज़िल करूँगा। 11इसराईल पर
इसलिए ज़ुल्म हो रहा है और उसका हक़ मारा
जा रहा है कि वह बेमानी बुतों के पीछे भागने पर
तुला हुआ है। 12मैं इसराईल के लिए पीप और
यहूदाह के लिए सड़ाहट का बाइस बनूँगा।
13इसराईल ने अपनी बीमारी देखी और यहूदाह
ने अपने नासूर पर ग़ौर किया। तब इसराईल ने
असूर की तरफ़ रुजू किया और असूर के अज़ीम
बादशाह को पैग़ाम भेजकर उससे मदद माँगी।
लेकिन वह तुम्हें शफ़ा नहीं दे सकता, वह तुम्हारे
नासूर का इलाज नहीं कर सकता।
14क्योंकि मैं शेरबबर की तरह इसराईल पर
टूट पड़ूँगा और जवान शेरबबर की तरह यहूदाह
पर झपट पड़ूँगा। मैं उन्हें फाड़कर अपने साथ
घसीट ले जाऊँगा, और कोई उन्हें नहीं बचाएगा।
15फिर मैं अपने घर वापस जाकर उस वक़्त तक
उनसे दूर रहूँगा जब तक वह अपना क़ुसूर तसलीम
करके मेरे चेहरे को तलाश न करें। क्योंकि जब
वह मुसीबत में फँस जाएंगे तब ही मुझे तलाश
6 करेंगे।” 1उस वक़्त वह कहेंगे, “आओ,
हम रब के पास वापस चलें। क्योंकि उसी
ने हमें फाड़ा, और वही हमें शफ़ा भी देगा। उसी
ने हमारी पिटाई की, और वही हमारी मरहम-पट्टी
भी करेगा। 2दो दिन के बाद वह हमें नए सिरे
से ज़िंदा करेगा और तीसरे दिन हमें दुबारा उठा
खड़ा करेगा ताकि हम उसके हुज़ूर ज़िंदगी गुज़ारें।
3आओ, हम उसे जान लें, हम पूरी जिद्दो-जहद
के साथ रब को जानने के लिए कोशाँ रहें। वह
ज़रूर हम पर ज़ाहिर होगा। यह उतना यक़ीनी है
जितना सूरज का रोज़ाना तुलू होना यक़ीनी है।
जिस तरह मौसमे-बहार की तेज़ बारिश ज़मीन
को सेराब करती है उसी तरह अल्लाह भी हमारे
पास आएगा।”
4“ऐ इसराईल, मैं तेरे साथ क्या करूँ? ऐ
यहूदाह, मैं तेरे साथ क्या करूँ? तुम्हारी मुहब्बत
सुबह की धुंध जैसी आरिज़ी है। धूप में ओस की
तरह वह जल्द ही काफ़ूर हो जाती है। 5इसी लिए
मैंने अपने नबियों की मारिफ़त तुम्हें पटख़ दिया,
अपने मुँह के अलफ़ाज़ से तुम्हें मार डाला है। मेरे
इनसाफ़ का नूर सूरज की तरह ही तुलू होता है।
6क्योंकि मैं क़ुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता
हूँ, भस्म होनेवाली क़ुरबानियों की निसबत मुझे
यह पसंद है कि तुम अल्लाह को जान लो।

अदालत की फ़सल पक गई है

7वह आदम शहर में अहद तोड़कर मुझसे
बेवफ़ा हो गए। 8जिलियाद शहर मुजरिमों से भर
गया है, हर तरफ़ ख़ून के दाग़ हैं। 9इमामों के जत्थे
डाकुओं की मानिंद बन गए हैं। क्योंकि वह सिकम
को पहुँचानेवाले रास्ते पर मुसाफ़िरों की ताक
लगाकर उन्हें क़त्ल करते हैं। हाँ, वह शर्मनाक
हरकतों से गुरेज़ नहीं करते। 10मैंने इसराईल
में ऐसी बातें देखी हैं जिनसे रोंगटे खड़े हो जाते
हैं। क्योंकि इसराईल ज़िना करता है, वह अपने
आपको नापाक करता है। 11लेकिन यहूदाह पर
भी अदालत की फ़सल पकनेवाली है।
जब कभी मैं अपनी क़ौम को बहाल करके
7 इसराईल को शफ़ा देना चाहता हूँ तो
इसराईल का क़ुसूर और सामरिया की
बुराई साफ़ ज़ाहिर हो जाती है। क्योंकि फ़रेब देना
उनका पेशा ही बन गया है। चोर घरों में नक़ब
लगाते जबकि बाहर गली में डाकुओं के जत्थे
लोगों को लूट लेते हैं। 2लेकिन वह ख़याल नहीं
करते कि मुझे उनकी तमाम बुरी हरकतों की याद
रहती है। वह नहीं समझते कि अब वह अपने ग़लत
कामों से घिरे रहते हैं, कि यह गुनाह हर वक़्त मुझे
नज़र आते हैं। 3अपनी बुराई से वह बादशाह को
ख़ुश रखते हैं, उनके झूट से बुज़ुर्ग लुत्फ़अंदोज़
होते हैं। 4सबके सब ज़िनाकार हैं। वह उस तपते

तनूर की मानिंद हैं जो इतना गरम है कि नानबाई
को उसे मज़ीद छेड़ने की ज़रूरत नहीं। अगर वह
आटा गूँधकर उसके ख़मीर होने तक इंतज़ार भी
करे तो भी तनूर इतना गरम रहता है कि रोटी पक
जाएगी। 5हमारे बादशाह के जशन पर राहनुमा
मै पी पीकर मस्त हो जाते हैं, और वह कुफ़्र
बकनेवालों से हाथ मिलाता है। 6यह लोग क़रीब
आकर ताक में बैठ जाते हैं जबकि उनके दिल
तनूर की तरह तपते हैं। पूरी रात को उनका ग़ुस्सा
सोया रहता है, लेकिन सुबह के वक़्त वह बेदार
होकर शोलाज़न आग की तरह दहकने लगता है।
7सब तनूर की तरह तपते तपते अपने राहनुमाओं
को हड़प कर लेते हैं। उनके तमाम बादशाह गिर
जाते हैं, और एक भी मुझे नहीं पुकारता।

8इसराईल दीगर अक़वाम के साथ मिल-
कर एक हो गया है। अब वह उस रोटी की मानिंद
है जो तवे पर सिर्फ़ एक तरफ़ से पक गई है, दूसरी
तरफ़ से कच्ची ही है। 9ग़ैरमुल्की उस की ताक़त
खा खाकर उसे कमज़ोर कर रहे हैं, लेकिन अभी
तक उसे पता नहीं चला। उसके बाल सफ़ेद हो
गए हैं, लेकिन अभी तक उसे मालूम नहीं हुआ।
10इसराईल का तकब्बुर उसके ख़िलाफ़ गवाही
देता है। तो भी न वह रब अपने ख़ुदा के पास
वापस आ जाता, न उसे तलाश करता है।

11इसराईल नासमझ कबूतर की मानिंद है
जिसे आसानी से वरग़लाया जा सकता है। पहले
वह मिसर को मदद के लिए बुलाता, फिर असूर
के पास भाग जाता है। 12लेकिन ज्योंही वह
कभी इधर कभी इधर दौड़ेंगे तो मैं उन पर अपना
जाल डालूँगा, उन्हें उड़ते हुए परिंदों की तरह नीचे
उतारूँगा। मैं उनकी यों तादीब करूँगा जिस तरह
उनकी जमात को आगाह किया गया है।

13उन पर अफ़सोस, क्योंकि वह मुझसे भाग
गए हैं। उन पर तबाही आए, क्योंकि वह मुझसे
सरकश हो गए हैं। मैं फ़िद्या देकर उन्हें छुड़ाना
चाहता था, लेकिन जवाब में वह मेरे बारे में झूट
बोलते हैं। 14वह ख़ुलूसदिली से मुझसे इल्तिजा
नहीं करते। वह बिस्तर पर लेटे लेटे 'हाय हाय'
करते और ग़ल्ला और अंगूर को हासिल करने
के लिए अपने आपको ज़ख़मी करते हैं। लेकिन
मुझसे वह दूर रहते हैं।

15मैं ही ने उन्हें तरबियत दी, मैं ही ने उन्हें
तक़वियत दी, लेकिन वह मेरे ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे
बाँधते हैं। 16वह तौबा करके वापस आ जाते हैं,
लेकिन मेरे पास नहीं, लिहाज़ा वह ढीली कमान
जैसे बेकार हो गए हैं। चुनाँचे उनके राहनुमा कुफ़्र
बकने के सबब से तलवार की ज़द में आकर
हलाक हो जाएंगे। इस बात के बाइस वह मिसर
में मज़ाक़ का निशाना बन जाएंगे।

अल्लाह की बेवफ़ा क़ौम पर अदालत

8 नरसिंगा बजाओ! दुश्मन उक़ाब की तरह
रब के घर पर झपट्टा मारने को है। क्योंकि
लोगों ने मेरे अहद को तोड़कर मेरी शरीअत की
ख़िलाफ़वरज़ी की है। 2बेशक वह मदद के लिए
चीख़ते-चिल्लाते हैं, 'ऐ हमारे ख़ुदा, हम तो तुझे
जानते हैं, हम तो इसराईल हैं।' 3लेकिन हक़ीक़त
में इसराईल ने वह कुछ मुस्तरद कर दिया है जो
अच्छा है। चुनाँचे दुश्मन उसका ताक़्क़ुब करे!
4उन्होंने मेरी मरज़ी पूछे बग़ैर अपने बादशाह
मुक़र्रर किए, मेरी मंज़ूरी के बग़ैर अपने राहनुमाओं
को चुन लिया है। अपने सोने-चाँदी से अपने लिए
बुत बनाकर वह अपनी तबाही अपने सर पर लाए
हैं।

5ऐ सामरिया, मैंने तेरे बछड़े को रद्द कर दिया
है! मेरा ग़ज़ब तेरे बाशिंदों पर नाज़िल होनेवाला
है, क्योंकि वह पाक-साफ़ हो जाने के क़ाबिल
ही नहीं! यह हालत कब तक जारी रहेगी? 6ऐ
इसराईल, जिस बछड़े की पूजा तू करता है उसे
दस्तकार ही ने बनाया है। सामरिया का बछड़ा
ख़ुदा नहीं है बल्कि पाश पाश हो जाएगा।

7वह हवा का बीज बो रहे हैं और आँधी
की फ़सल काटेंगे। अनाज की फ़सल तैयार है,
लेकिन बालियाँ कहीं नज़र नहीं आतीं। इससे
आटा मिलने का इमकान ही नहीं। और अगर

थोड़ा-बहुत गंदुम मिले भी तो ग़ैरमुल्की उसे हड़प
कर लेंगे।
8हाँ, तमाम इसराईल को हड़प कर लिया
गया है। अब वह क़ौमों में ऐसा बरतन बन गया
है जो कोई पसंद नहीं करता। 9क्योंकि उसके
लोग असूर के पास चले गए हैं। जंगली गधा तो
अकेला रहता है, लेकिन इसराईल अपने आशिक़
को तोहफ़े देकर ख़ुश रखने पर तुला रहता है।
10लेकिन ख़ाह वह दीगर क़ौमों में कितने तोहफ़े
क्यों न तक़सीम करें अब मैं उन्हें सज़ा देने के लिए
जमा करूँगा। जल्द ही वह शहनशाह के बोझ तले
पेचो-ताब खाने लगेंगे। 11गो इसराईल ने गुनाहों
को दूर करने के लिए मुतअद्दिद क़ुरबानगाहें
तामीर कीं, लेकिन वह उसके लिए गुनाह का
बाइस बन गई हैं। 12ख़ाह मैं अपने अहकाम
को इसराईलियों के लिए हज़ारों दफ़ा क्यों न
क़लमबंद करता, तो भी फ़रक़ न पड़ता, वह
समझते कि यह अहकाम अजनबी हैं, यह हम
पर लागू नहीं होते। 13गो वह मुझे क़ुरबानियाँ
पेश करके उनका गोश्त खाते हैं, लेकिन मैं, रब
इनसे ख़ुश नहीं होता बल्कि उनके गुनाहों को याद
करके उन्हें सज़ा दूँगा। तब उन्हें दुबारा मिसर जाना
पड़ेगा। 14इसराईल ने अपने ख़ालिक़ को भूलकर
बड़े महल बना लिए हैं, और यहूदाह ने मुतअद्दिद
शहरों को क़िलाबंद बना लिया है। लेकिन मैं उनके
शहरों पर आग नाज़िल करके उनके महलों को
भस्म कर दूँगा।”

इसराईल का अंजाम

9 ऐ इसराईल, ख़ुशी न मना, दीगर अक़वाम
की तरह शादियाना मत बजा। क्योंकि तू
ज़िना करते करते अपने ख़ुदा से दूर होता जा रहा
है। जहाँ भी लोग गंदुम गाहते हैं वहाँ तू जाकर
अपनी इसमतफ़रोशी के पैसे जमा करता है, यही
कुछ तुझे प्यारा है। 2इसलिए आइंदा गंदुम गाहने
और अंगूर का रस निकालने की जगहें उन्हें ख़ुराक
मुहैया नहीं करेंगी, और अंगूर की फ़सल उन्हें रस
मुहैया नहीं करेगी।
3इसराईली रब के मुल्क में नहीं रहेंगे बल्कि
उन्हें मिसर वापस जाना पड़ेगा, उन्हें असूर में
नापाक चीज़ें खानी पड़ेंगी। 4वहाँ वह रब को न मै
की और न ज़बह की क़ुरबानियाँ पेश कर सकेंगे।
उनकी रोटी मातम करनेवालों की रोटी जैसी होगी
यानी जो भी उसे खाए वह नापाक हो जाएगा। हाँ,
उनका खाना सिर्फ़ उनकी अपनी भूक मिटाने के
लिए होगा, और वह रब के घर में नहीं आएगा।
5उस वक़्त तुम ईदों पर क्या करोगे? रब के
तहवारों को तुम कैसे मनाओगे? 6जो तबाहशुदा
मुल्क से निकलेंगे उन्हें मिसर इकट्ठा करेगा, उन्हें
मेंफ़िस दफ़नाएगा। ख़ुदरौ पौदे उनकी क़ीमती
चाँदी पर क़ब्ज़ा करेंगे, काँटेदार झाड़ियाँ उनके
घरों पर छा जाएँगी।
7सज़ा के दिन आ गए हैं, हिसाब-किताब के
दिन पहुँच गए हैं। इसराईल यह बात जान ले। तुम
कहते हो, “यह नबी अहमक़ है, रूह का यह बंदा
पागल है।” क्योंकि जितना संगीन तुम्हारा गुनाह
है उतने ही ज़ोर से तुम मेरी मुख़ालफ़त करते हो।
8नबी मेरे ख़ुदा की तरफ़ से इसराईल का
पहरेदार बनाया गया है। लेकिन जहाँ भी वह जाए
वहाँ उसे फँसाने के फंदे लगाए गए हैं, बल्कि उसे
उसके ख़ुदा के घर में भी सताया जाता है। 9उनसे
निहायत ही ख़राब काम सरज़द हुआ है, ऐसा
शरीर काम जैसा जिबिया के बाशिंदों से हुआ था।
अल्लाह उनका क़ुसूर याद करके उनके गुनाहों की
मुनासिब सज़ा देगा।

इसराईल शुरू से ही शरीर है

10रब फ़रमाता है, “जब मेरा इसराईल से
पहला वास्ता पड़ा तो रेगिस्तान में अंगूर जैसा
लग रहा था। तुम्हारे बापदादा अंजीर के दरख़्त
पर लगे पहले पकनेवाले फल जैसे नज़र आए।
लेकिन बाल-फ़ग़ूर के पास पहुँचते ही उन्होंने
अपने आपको उस शर्मनाक बुत के लिए मख़सूस
कर लिया। तब वह अपने आशिक़ जैसे मकरूह
हो गए। 11अब इसराईल की शानो-शौकत परिंदे
की तरह उड़कर ग़ायब हो जाएगी। आइंदा न कोई

उम्मीद से होगी, न बच्चा जनेगी। 12अगर वह
अपने बच्चों को परवान चढ़ने तक पालें भी तो भी
मैं उन्हें बेऔलाद कर दूँगा। एक भी नहीं रहेगा।
उन पर अफ़सोस जब मैं उनसे दूर हो जाऊँगा।
13पहले जब मैंने इसराईल पर नज़र डाली तो वह
सूर की मानिंद शानदार था, उसे शादाब जगह पर
पौदे की तरह लगाया गया था। लेकिन अब उसे
अपनी औलाद को बाहर लाकर क़ातिल के हवाले
करना पड़ेगा।”

14ऐ रब, उन्हें दे! क्या दे? होने दे कि उनके
बच्चे पेट में ज़ाया हो जाएँ, कि औरतें दूध न पिला
सकें।

15रब फ़रमाता है, “जब उनकी तमाम बेदीनी
जिलजाल में ज़ाहिर हुई तो मैंने उनसे नफ़रत की।
उनकी बुरी हरकतों की वजह से मैं उन्हें अपने घर
से निकाल दूँगा। आइंदा मैं उन्हें प्यार नहीं करूँगा।
उनके तमाम राहनुमा सरकश हैं। 16इसराईल को
मारा गया, लोगों की जड़ सूख गई है, और वह
फल नहीं ला सकते। उनके बच्चे पैदा हो भी जाएँ
तो मैं उनकी क़ीमती औलाद को मार डालूँगा।”
17मेरा ख़ुदा उन्हें रद्द करेगा, इसलिए कि उन्होंने
उस की नहीं सुनी। चुनाँचे उन्हें दीगर अक़वाम में
मारे मारे फिरना पड़ेगा।

बुतपरस्ती के नतायज

10 इसराईल अंगूर की फलती-फूलती
बेल था जो काफ़ी फल लाती रही।
लेकिन जितना उसका फल बढ़ता गया उतना
ही वह बुतों के लिए क़ुरबानगाहें बनाता गया।
जितना उसका मुल्क तरक़्क़ी करता गया उतना
ही वह देवताओं के मख़सूस सतूनों को सजाता
गया। 2लोग दोदिले हैं, और अब उन्हें उनके क़ुसूर
का अज्र भुगतना पड़ेगा। रब उनकी क़ुरबानगाहों
को गिरा देगा, उनके सतूनों को मिसमार करेगा।
3जल्द ही वह कहेंगे, “हम इसलिए बादशाह से
महरूम हैं कि हमने रब का ख़ौफ़ न माना। लेकिन
अगर बादशाह होता भी तो वह हमारे लिए क्या
कर सकता?” 4वह बड़ी बातें करते, झूटी क़समें
खाते और ख़ाली अहद बाँधते हैं। उनका इनसाफ़
उन ज़हरीले ख़ुदरौ पौदों की मानिंद है जो बीज के
लिए तैयारशुदा ज़मीन से फूट निकलते हैं।

5सामरिया के बाशिंदे परेशान हैं कि बैत-
आवन[a] में बछड़े के बुत के साथ क्या किया
जाएगा। उसके परस्तार उस पर मातम करेंगे,
उसके पुजारी उस की शानो-शौकत याद करके
वावैला करेंगे, क्योंकि वह उनसे छिनकर परदेस
में ले जाया जाएगा। 6हाँ, बछड़े को मुल्के-असूर
में ले जाकर शहनशाह को ख़राज के तौर पर पेश
किया जाएगा। इसराईल की रुसवाई हो जाएगी,
वह अपने मनसूबे के बाइस शरमिंदा हो जाएगा।

7सामरिया नेस्तो-नाबूद, उसका बादशाह पानी
पर तैरती हुई टहनी की तरह बेबस होगा। 8बैत-
आवन[b] की वह ऊँची जगहें तबाह हो जाएँगी
जहाँ इसराईल गुनाह करता रहा है। उनकी
क़ुरबानगाहों पर काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे
छा जाएंगे। तब लोग पहाड़ों से कहेंगे, “हमें छुपा
लो!” और पहाड़ियों को “हम पर गिर पड़ो!”

9रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईल, जिबिया के
वाक़िये से लेकर आज तक तू गुनाह करता आया
है, लोग वहीं के वहीं रह गए हैं। क्या मुनासिब
नहीं कि जिबिया में जंग उन पर टूट पड़े जो इतने
शरीर हैं? 10अब मैं अपनी मरज़ी से उनकी तादीब
करूँगा। अक़वाम उनके ख़िलाफ़ जमा हो जाएँगी
जब उन्हें उनके दुगने क़ुसूर के लिए ज़ंजीरों में
जकड़ लिया जाएगा।

11इसराईल जवान गाय था जिसे गंदुम गाहने
की तरबियत दी गई थी और जो शौक़ से यह
काम करती थी। तब मैंने उसके ख़ूबसूरत गले
पर जुआ रखकर उसे जोत लिया। यहूदाह को
हल खींचना और याक़ूब[c] को ज़मीन पर सुहागा
फेरना था। 12मैंने फ़रमाया, ‘इनसाफ़ का बीज
बोकर शफ़क़त की फ़सल काटो। जिस ज़मीन पर

[a]बैत-आवन यानी ‘गुनाह का घर’ से मुराद बैतेल है।
[b]बैत-आवन यानी ‘गुनाह का घर’ से मुराद बैतेल है।
[c]याक़ूब से मुराद इसराईल है।

हल कभी नहीं चलाया गया उस पर ठीक तरह हल चलाओ! जब तक रब को तलाश करने का मौक़ा है उसे तलाश करो, और जब तक वह आकर तुम पर इनसाफ़ की बारिश न बरसाए उसे ढूँडो।’

13लेकिन जवाब में तुमने हल चलाकर बेदीनी का बीज बोया, तुमने बुराई की फ़सल काटकर फ़रेब का फल खाया है। चूँकि तूने अपनी राह और अपने सूरमाओं की बड़ी तादाद पर भरोसा रखा है 14इसलिए तेरी क़ौम में जंग का शोर मचेगा, तेरे तमाम क़िले ख़ाक में मिलाए जाएंगे। शलमन के बैत-अरबेल पर हमले के-से हालात होंगे जिसने उस शहर को ज़मीनबोस करके माओं को बच्चों समेत ज़मीन पर पटख़ दिया। 15ऐ बैतेल के बाशिंदो, तुम्हारे साथ भी ऐसा ही किया जाएगा, क्योंकि तुम्हारी बदकारी हद से ज़्यादा है। पौ फटते ही इसराईल का बादशाह नेस्त हो जाएगा।”

बेवफ़ाई के बावुजूद अल्लाह की शफ़क़त

11 रब फ़रमाता है, “इसराईल अभी लड़का था जब मैंने उसे प्यार किया, जब मैंने अपने बेटे को मिसर से बुलाया। 2लेकिन बाद में जितना ही मैं उन्हें बुलाता रहा उतना ही वह मुझसे दूर होते गए। वह बाल देवताओं के लिए जानवर चढ़ाने, बुतों के लिए बख़ूर जलाने लगे। 3मैंने ख़ुद इसराईल को चलने की तरबियत दी, बार बार उन्हें गोद में उठाकर लिए फिरा। लेकिन वह न समझे कि मैं ही उन्हें शफ़ा देनेवाला हूँ। 4मैं उन्हें खींचता रहा, लेकिन ऐसे रस्सों से नहीं जो इनसान बरदाश्त न कर सके बल्कि शफ़क़त भरे रस्सों से। मैंने उनके गले पर का जुआ हलका कर दिया और नरमी से उन्हें ख़ुराक खिलाई।

5क्या उन्हें मुल्के-मिसर वापस नहीं जाना पड़ेगा? बल्कि असूर ही उनका बादशाह बनेगा, इसलिए कि वह मेरे पास वापस आने के लिए तैयार नहीं। 6तलवार उनके शहरों में घूम घूमकर ग़ैबदानों को हलाक करेगी और लोगों को उनके ग़लत मशवरों के सबब से खाती जाएगी। 7लेकिन मेरी क़ौम मुझे तर्क करने पर तुली हुई है। जब उसे ऊपर अल्लाह की तरफ़ देखने को कहा जाए तो उसमें से कोई भी उस तरफ़ रुजू नहीं करता।

8ऐ इसराईल, मैं तुझे किस तरह छोड़ सकता हूँ? मैं तुझे किस तरह दुश्मन के हवाले कर सकता, किस तरह अदमा की तरह दूसरों के क़ब्ज़े में छोड़ सकता, किस तरह ज़बोईम की तरह तबाह कर सकता हूँ? मेरा इरादा सरासर बदल गया है, मैं तुझ पर शफ़क़त करने के लिए बेचैन हूँ। 9न मैं अपना सख़्त ग़ज़ब नाज़िल करूँगा, न दुबारा इसराईल को बरबाद करूँगा। क्योंकि मैं इनसान नहीं बल्कि ख़ुदा हूँ, वह क़ुद्दूस जो तेरे दरमियान सुकूनत करता है। मैं ग़ज़ब में नहीं आऊँगा। 10उस वक़्त वह रब के पीछे ही चलेंगे। तब वह शेरबबर की तरह दहाड़ेगा। और जब दहाड़ेगा तो उसके फ़रज़ंद मग़रिब से लरज़ते हुए वापस आएँगे। 11वह परिंदों की तरह फड़फड़ाते हुए मिसर से आएँगे, थरथराते कबूतरों की तरह असूर से लौटेंगे। फिर मैं उन्हें उनके घरों में बसा दूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

12इसराईल ने मुझे झूट से घेर लिया, फ़रेब से मेरा मुहासरा कर लिया है। लेकिन यहूदाह भी मज़बूती से अल्लाह के साथ नहीं है बल्कि आवारा फिरता है, हालाँकि क़ुद्दूस ख़ुदा वफ़ादार है।”

सरकशी की राम कहानी

12 इसराईल हवा चरने की कोशिश कर रहा है, पूरा दिन वह मशरिक़ी लू के पीछे भागता रहता है। उसके झूट और ज़ुल्म में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। असूर से अहद बाँधने के साथ साथ वह मिसर को भी ज़ैतून का तेल भेज देता है।

2रब अदालत में यहूदाह से भी लड़ेगा। वह याक़ूब[a] को उसके चाल-चलन की सज़ा, उसके आमाल का मुनासिब अज्र देगा। 3क्योंकि माँ के पेट में ही उसने अपने भाई की एड़ी पकड़कर उसे

[a]याक़ूब से मुराद इसराईल है।

धोका दिया। जब बालिग़ हुआ तो अल्लाह से लड़ा
4बल्कि फ़रिश्ते से लड़ते लड़ते उस पर ग़ालिब
आया। फिर उसने रोते रोते उससे इल्तिजा की कि
मुझ पर रहम कर। बाद में याक़ूब ने अल्लाह को
बैतेल में पाया, और वहाँ ख़ुदा उससे हमकलाम
हुआ। 5रब जो लशकरों का ख़ुदा है और जिसका
नाम रब ही है, उसने फ़रमाया, 6"अपने ख़ुदा
के पास वापस आकर रहम और इनसाफ़ क़ायम
रख! कभी अपने ख़ुदा पर उम्मीद रखने से बाज़
न आ।"

7इसराईल ताजिर है जिसके हाथ में ग़लत
तराज़ू है और जिसे लोगों से नाजायज़ फ़ायदा
उठाने का बड़ा शौक़ है। 8वह कहता है, "मैं अमीर
हो गया हूँ, मैंने कसरत की दौलत पाई है। कोई
साबित नहीं कर सकेगा कि मुझसे यह तमाम
मिलकियत हासिल करने में कोई क़ुसूर या गुनाह
सरज़द हुआ है।"

9"लेकिन मैं, रब जो मिसर से तुझे निकालते
वक़्त आज तक तेरा ख़ुदा हूँ मैं यह नज़रंदाज़
नहीं करूँगा। मैं तुझे दुबारा ख़ैमों में बसने दूँगा।
यों होगा जिस तरह उन पहले दिनों में हुआ जब
इसराईली मेरी परस्तिश करने के लिए रेगिस्तान
में जमा होते थे। 10मैं बार बार नबियों की मारिफ़त
तुमसे हमकलाम हुआ, मैंने उन्हें मुतअद्दिद रोयाएँ
दिखाईं और उनके ज़रीए तुम्हें तमसीलें सुनाईं।"

बुतपरस्ती का अज्र ज़वाल है

11क्या जिलियाद बेदीन है? उसके लोग
नाकारा ही हैं! जिलजाल में लोगों ने साँड क़ुरबान
किए हैं, इसलिए उनकी क़ुरबानगाहें मलबे के ढेर
बन जाएँगी। वह बीज बोने के लिए तैयारशुदा खेत
के किनारे पर लगे पत्थर के ढेर जैसी बनेंगी।

12याक़ूब को भागकर मुल्के-अराम में पनाह
लेनी पड़ी। वहाँ वह बीवी मिलने के लिए मुलाज़िम
बन गया, औरत के बाइस उसने भेड़-बकरियों की
गल्लाबानी की। 13लेकिन बाद में रब नबी की
मारिफ़त इसराईल को मिसर से निकाल लाया
और नबी के ज़रीए उस की गल्लाबानी की।
14तो भी इसराईल ने उसे बड़ा तैश दिलाया। अब
उन्हें उनकी क़त्लो-ग़ारत का अज्र भुगतना पड़ेगा।
उन्होंने अपने आक़ा की तौहीन की है, और अब
वह उन्हें मुनासिब सज़ा देगा।

अल्लाह की तरफ़ से इसराईल की अदालत

13 पहले जब इसराईल ने बात की
तो लोग काँप उठे, क्योंकि मुल्के-
इसराईल में वह सरफ़राज़ था। लेकिन फिर वह
बाल की बुतपरस्ती में मुलव्वस होकर हलाक
हुआ। 2अब वह अपने गुनाहों में बहुत इज़ाफ़ा
कर रहे हैं। वह अपनी चाँदी लेकर महारत से बुत
ढाल लेते हैं। फिर दस्तकारों के हाथ से बने इन
बुतों के बारे में कहा जाता है, "जो बछड़े के बुतों
को चूमना चाहे वह किसी इनसान को क़ुरबान
करे!" 3इसलिए वह सुबह-सवेरे की धुंध जैसे
आरिज़ी और धूप में जल्द ही ख़त्म होनेवाली ओस
की मानिंद होंगे। वह गाहते वक़्त गंदुम से अलग
होनेवाले भूसे की मानिंद हवा में उड़ जाएंगे, घर
में से निकलनेवाले धुएँ की तरह ज़ाया हो जाएंगे।

4"लेकिन मैं, रब तुझे मिसर से निकालते वक़्त
से लेकर आज तक तेरा ख़ुदा हूँ। तुझे मेरे सिवा
किसी और को ख़ुदा नहीं जानना है। मेरे सिवा
और कोई नजातदहिंदा नहीं है। 5रेगिस्तान में
मैंने तेरी देख-भाल की, वहाँ जहाँ तपती गरमी
थी। 6वहाँ उन्हें अच्छी ख़ुराक मिली। लेकिन जब
वह जी भरकर खा सके और सेर हुए तो मग़रूर
होकर मुझे भूल गए। 7यह देखकर मैं उनके लिए
शेरबबर बन गया हूँ। अब मैं चीते की तरह रास्ते
के किनारे उनकी ताक में बैठूँगा। 8उस रीछनी
की तरह जिसके बच्चों को छीन लिया गया हो मैं
उन पर झपट्टा मारकर उनकी अंतड़ियों को फाड़
निकालूँगा। मैं उन्हें शेरबबर की तरह हड़प कर
लूँगा, और जंगली जानवर उन्हें टुकड़े टुकड़े कर
देंगे।

9ऐ इसराईल, तू इसलिए तबाह हो गया है कि
तू मेरे ख़िलाफ़ है, उसके ख़िलाफ़ जो तेरी मदद
कर सकता है। 10अब तेरा बादशाह कहाँ है कि

वह तेरे तमाम शहरों में आकर तुझे छुटकारा दे? अब तेरे राहनुमा किधर हैं जिनसे तूने कहा था, ‘मुझे बादशाह और राहनुमा दे दे।’ 11मैंने ग़ुस्से में तुझे बादशाह दे दिया और ग़ुस्से में उसे तुझसे छीन भी लिया।

12इसराईल का क़ुसूर लपेटकर गोदाम में रखा गया है, उसके गुनाह हिसाब-किताब के लिए महफ़ूज़ रखे गए हैं। 13दर्दे-ज़ह शुरू हो गया है, लेकिन वह नासमझ बच्चा है। वह माँ के पेट से निकलना नहीं चाहता।

14मैं फ़िद्या देकर उन्हें पाताल से क्यों रिहा करूँ? मैं उन्हें मौत की गिरिफ़्त से क्यों छुड़ाऊँ? ऐ मौत, तेरे काँटे कहाँ रहे? ऐ पाताल, तेरा डंक कहाँ रहा? उसे काम में ला, क्योंकि मैं तरस नहीं खाऊँगा। 15ख़ाह वह अपने भाइयों के दरमियान फलता-फूलता क्यों न हो तो भी रब की तरफ़ से मशरिक़ी लू उस पर चलेगी। और जब रेगिस्तान से आएगी तो इसराईल के कुएँ और चश्मे ख़ुश्क हो जाएंगे। हर ख़ज़ाना, हर क़ीमती चीज़ लूट का माल बन जाएगी। 16सामरिया के बाशिंदों को उनके क़ुसूर की सज़ा भुगतनी पड़ेगी, क्योंकि वह अपने ख़ुदा से सरकश हो गए हैं। दुश्मन उन्हें तलवार से मारकर उनके बच्चों को ज़मीन पर पटख़ देगा और उनकी हामिला औरतों के पेट चीर डालेगा।”

रब के पास वापस आओ!

14 ऐ इसराईल, तौबा करके रब अपने ख़ुदा के पास वापस आ! क्योंकि तेरा क़ुसूर तेरे ज़वाल का सबब बन गया है। 2अपने गुनाहों का इक़रार करते हुए रब के पास वापस आओ। उससे कहो, “हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करके हमें मेहरबानी से क़बूल फ़रमा ताकि हम अपने होंटों से तेरी तारीफ़ करके तुझे मुनासिब क़ुरबानी अदा कर सकें। 3असूर हमें न बचाए। आइंदा न हम घोड़ों पर सवार हो जाएंगे, न कहेंगे कि हमारे हाथों की चीज़ें हमारा ख़ुदा हैं। क्योंकि तू ही यतीम पर रहम करता है।”

4तब रब फ़रमाएगा, “मैं उनकी बेवफ़ाई के असरात ख़त्म करके उन्हें शफ़ा दूँगा, हाँ मैं उन्हें खुले दिल से प्यार करूँगा, क्योंकि मेरा उन पर ग़ज़ब ठंडा हो गया है। 5इसराईल के लिए मैं शबनम की मानिंद हूँगा। तब वह सोसन की मानिंद फूल निकालेगा, लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह जड़ पकड़ेगा, 6उस की कोंपलें फूट निकलेंगी, और शाख़ें बनकर फैलती जाएँगी। उस की शान ज़ैतून के दरख़्त की मानिंद होगी, उस की ख़ुशबू लुबनान के देवदार के दरख़्त की ख़ुशबू की तरह फैल जाएगी।

7लोग दुबारा उसके साये में जा बसेंगे। वहाँ वह अनाज की तरह फलें-फूलेंगे, अंगूर के-से फूल निकालेंगे। दूसरे उनकी यों तारीफ़ करेंगे जिस तरह लुबनान की उम्दा मै की। 8तब इसराईल कहेगा, ‘मेरा बुतों से क्या वास्ता?’ मैं ही तेरी सुनकर तेरी देख-भाल करूँगा। मैं जूनीपर का सायादार दरख़्त हूँ, और तू मुझसे ही फल पाएगा।”

9कौन दानिशमंद है? वह समझ ले। कौन साहबे-फ़हम है? वह मतलब जान ले। क्योंकि रब की राहें दुरुस्त हैं। रास्तबाज़ उन पर चलते रहेंगे, लेकिन सरकश उन पर चलते वक़्त ठोकर खाकर गिर जाएंगे।

योएल

1 ज़ैल में रब का वह कलाम है जो योएल
बिन फ़तुएल पर नाज़िल हुआ।
2ऐ बुज़ुर्गो, सुनो! ऐ मुल्क के तमाम बाशिंदो,
तवज्जुह दो! जो कुछ इन दिनों में तुम्हें पेश आया
है क्या वह पहले कभी तुम्हें या तुम्हारे बापदादा
को पेश आया? 3अपने बच्चों को इसके बारे में
बताओ, जो कुछ पेश आया है उस की याद नसल-
दर-नसल ताज़ा रहे।

4जो कुछ टिड्डी के लार्वे ने छोड़ दिया उसे
बालिग़ टिड्डी खा गई, जो बालिग़ टिड्डी छोड़ गई
उसे टिड्डी का बच्चा खा गया, और जो टिड्डी का
बच्चा छोड़ गया उसे जवान टिड्डी खा गई। 5ऐ
नशे में धुत लोगो, जाग उठो और रो पड़ो! ऐ मै
पीनेवालो, वावैला करो! क्योंकि नई मै तुम्हारे
मुँह से छीन ली गई है। 6टिड्डियों की ज़बरदस्त
और अनगिनत क़ौम मेरे मुल्क पर टूट पड़ी है।
उनके शेर के-से दाँत और शेरनी का-सा जबड़ा है।
7नतीजे में मेरे अंगूर की बेलें तबाह, मेरे अंजीर के
दरख़्त ज़ाया हो गए हैं। टिड्डियों ने छाल को भी
उतार लिया, अब शाख़ें सफ़ेद सफ़ेद नज़र आती
हैं।

8आहो-ज़ारी करो, टाट से मुलब्बस उस कुँवारी
की तरह गिर्या करो जिसका मंगेतर इंतक़ाल कर
गया हो। 9रब के घर में ग़ल्ला और मै की नज़रें
बंद हो गई हैं। इमाम जो रब के ख़ादिम हैं मातम
कर रहे हैं। 10खेत तबाह हुए, ज़मीन झुलस गई
है। अनाज ख़त्म, अंगूर ख़त्म, ज़ैतून ख़त्म।

11ऐ काश्तकारो, शर्मसार हो जाओ! ऐ अंगूर
के बाग़बानो, आहो-बुका करो! क्योंकि खेत की
फ़सल बरबाद हो गई है, गंदुम और जौ की फ़सल
ख़त्म ही है। 12अंगूर की बेल सूख गई, अंजीर का
दरख़्त मुरझा गया है। अनार, खजूर, सेब बल्कि
फल लानेवाले तमाम दरख़्त पज़मुरदा हो गए हैं।
इनसान की तमाम ख़ुशी ख़ाक में मिलाई गई है।

13ऐ इमामो, टाट का लिबास ओढ़कर मातम
करो! ऐ क़ुरबानगाह के ख़ादिमो, वावैला करो!
ऐ मेरे ख़ुदा के ख़ादिमो, आओ, रात को भी टाट
ओढ़कर गुज़ारो! क्योंकि तुम्हारे ख़ुदा का घर
ग़ल्ला और मै की नज़रों से महरूम हो गया है।
14मुक़द्दस रोज़े का एलान करो। लोगों को ख़ास
इजतिमा के लिए बुलाओ। बुज़ुर्गों और मुल्क के
तमाम बाशिंदों को रब अपने ख़ुदा के घर में जमा
करके बुलंद आवाज़ से रब से इल्तिजा करो।

15उस दिन पर अफ़सोस! क्योंकि रब का
वह दिन क़रीब ही है जब क़ादिरे-मुतलक़ हम पर
तबाही नाज़िल करेगा। 16क्या ऐसा नहीं हुआ कि
हमारे देखते देखते हमसे ख़ुराक छीन ली गई,
कि अल्लाह के घर में ख़ुशी-ओ-शादमानी बंद
हो गई है? 17ढेलों में छुपे बीज झुलस गए हैं,
इसलिए ख़ाली गोदाम ख़स्ताहाल और अनाज को
महफ़ूज़ रखने के मकान टूट फूट गए हैं। उनकी

ज़रूरत नहीं रही, क्योंकि ग़ल्ला सूख गया है।
18हाय, मवेशी कैसी दर्दनाक आवाज़ निकाल
रहे हैं! गाय-बैल परेशानी से इधर-उधर फिर रहे
हैं, क्योंकि कहीं भी चरागाह नहीं मिलती। भेड़-
बकरियों को भी तकलीफ़ है।

19ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि खुले
मैदान की चरागाहें नज़रे-आतिश हो गई हैं, तमाम
दरख़्त भस्म हो गए हैं। 20जंगली जानवर भी
हाँपते हाँपते तेरे इंतज़ार में हैं, क्योंकि नदियाँ सूख
गई हैं, और खुले मैदान की चरागाहें नज़रे-आतिश
हो गई हैं।

रब का अदालती दिन

2 कोहे-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मेरे
मुक़द्दस पहाड़ पर जंग का नारा लगाओ।
मुल्क के तमाम बाशिंदे लरज़ उठें, क्योंकि रब का
दिन आनेवाला है बल्कि क़रीब ही है। 2ज़ुल्मत
और तारीकी का दिन, घने बादलों और घुप अंधेरे
का दिन होगा। जिस तरह पौ फटते ही रौशनी
पहाड़ों पर फैल जाती है उसी तरह एक बड़ी और
ताक़तवर क़ौम आ रही है, ऐसी क़ौम जैसी न
माज़ी में कभी थी, न मुस्तक़बिल में कभी होगी।
3उसके आगे आगे आतिश सब कुछ भस्म करती
है, उसके पीछे पीछे झुलसानेवाला शोला चलता
है। जहाँ भी वह पहुँचे वहाँ मुल्क वीरानो-सुनसान
हो जाता है, ख़ाह वह बाग़े-अदन क्यों न होता।
उससे कुछ नहीं बचता। 4देखने में वह घोड़े जैसे
लगते हैं, फ़ौजी घोड़ों की तरह सरपट दौड़ते हैं।
5रथों का-सा शोर मचाते हुए वह उछल उछलकर
पहाड़ की चोटियों पर से गुज़रते हैं। भूसे को भस्म
करनेवाली आग की चटख़्ती आवाज़ सुनाई देती
है जब वह जंग के लिए तैयार बड़ी बड़ी फ़ौज की
तरह आगे बढ़ते हैं। 6उन्हें देखकर क़ौमें डर के
मारे पेचो-ताब खाने लगती हैं, हर चेहरा माँद पड़
जाता है।

7वह सूरमाओं की तरह हमला करते, फ़ौजियों
की तरह दीवारों पर छलाँग लगाते हैं। सब सफ़
बाँधकर आगे बढ़ते हैं, एक भी मुक़र्ररा रास्ते से
नहीं हटता। 8वह एक दूसरे को धक्का नहीं देते
बल्कि हर एक सीधा अपनी राह पर आगे बढ़ता
है। यों सफ़बस्ता होकर वह दुश्मन की दिफ़ाई
सफ़ों में से गुज़र जाते हैं 9और शहर पर झपट्टा
मारकर फ़सील पर छलाँग लगाते हैं, घरों की
दीवारों पर चढ़कर चोर की तरह खिड़कियों में से
घुस आते हैं।

10उनके आगे आगे ज़मीन काँप उठती,
आसमान थरथराता, सूरज और चाँद तारीक हो
जाते और सितारों की चमक-दमक जाती रहती
है। 11रब ख़ुद अपनी फ़ौज के आगे आगे गरजता
रहता है। उसका लशकर निहायत बड़ा है, और
जो फ़ौजी उसके हुक्म पर चलते हैं वह ताक़तवर
हैं। क्योंकि रब का दिन अज़ीम और निहायत
हौलनाक है, कौन उसे बरदाश्त कर सकता है?

तौबा करके वापस आओ

12रब फ़रमाता है, "अब भी तुम तौबा कर
सकते हो। पूरे दिल से मेरे पास वापस आओ!
रोज़ा रखो, आहो-ज़ारी करो, मातम करो!
13रंजिश का इज़हार करने के लिए अपने कपड़ों
को मत फाड़ो बल्कि अपने दिल को।"

रब अपने ख़ुदा के पास वापस आओ, क्योंकि
वह मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मुल और
शफ़क़त से भरपूर है और जल्द ही सज़ा देने से
पछताता है। 14कौन जाने, शायद वह इस बार भी
पछताकर अपने पीछे बरकत छोड़ जाए और तुम
नए सिरे से रब अपने ख़ुदा को ग़ल्ला और मै की
नज़रें पेश कर सको।

15कोहे-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मु-
क़द्दस रोज़े का एलान करो, लोगों को ख़ास
इजतिमा के लिए बुलाओ! 16लोगों को
जमा करो, फिर जमात को मख़सूसो-मुक़द्दस
करो। न सिर्फ़ बुज़ुर्गों को बल्कि बच्चों को भी
शीरख़ारों समेत इकट्ठा करो। दूल्हा और दुलहन
भी अपने अपने उरूसी कमरों से निकलकर आएँ।
17लाज़िम है कि इमाम जो अल्लाह के ख़ादिम
हैं रब के घर के बरामदे और क़ुरबानगाह के

दरमियान खड़े होकर आहो-ज़ारी करें। वह इक़रार
करें, "ऐ रब, अपनी क़ौम पर तरस की निगाह
डाल! अपनी मौरूसी मिलकियत को लान-तान
का निशाना बनने न दे। ऐसा न हो कि दीगर
अक़्वाम उसका मज़ाक़ उड़ाकर कहें, 'उनका
ख़ुदा कहाँ है'?"

रब अपनी क़ौम पर रहम करता है

18तब रब अपने मुल्क के लिए ग़ैरत खाकर
अपनी क़ौम पर तरस खाएगा। 19वह अपनी क़ौम
से वादा करेगा, "मैं तुम्हें इतना अनाज, अंगूर और
ज़ैतून भेज देता हूँ कि तुम सेर हो जाओगे। आइंदा
मैं तुम्हें दीगर अक़्वाम के मज़ाक़ का निशाना नहीं
बनाऊँगा। 20मैं शिमाल से आए हुए दुश्मन को
तुमसे दूर करके वीरानो-सुनसान मुल्क में भगा
दूँगा। वहाँ उसके अगले दस्ते मशरिक़ी समुंदर में
और उसके पिछले दस्ते मग़रिबी समुंदर में डूब
जाएंगे। तब उनकी गली-सड़ी नाशों की बदबू चारों
तरफ़ फैल जाएगी।" क्योंकि उस[a] ने अज़ीम
काम किए हैं।

21ऐ मुल्क, मत डरना बल्कि शादियाना
बजाकर ख़ुशी मना! क्योंकि रब ने अज़ीम काम
किए हैं।

22ऐ जंगली जानवरो, मत डरना, क्योंकि खुले
मैदान की हरियाली दुबारा उगने लगी है। दरख़्त
नए सिरे से फल ला रहे हैं, अंजीर और अंगूर की
बड़ी फ़सल पक रही है।

23ऐ सिय्यून के बाशिंदो, तुम भी शादि-
याना बजाकर रब अपने ख़ुदा की ख़ुशी मनाओ।
क्योंकि वह अपनी रास्ती के मुताबिक़ तुम पर
मेंह बरसाता, पहले की तरह ख़िज़ाँ और बहार
की बारिशें बख़्श देता है। 24अनाज की कसरत
से गाहने की जगहें भर जाएँगी, अंगूर और ज़ैतून
की कसरत से हौज़ छलक उठेंगे।

25रब फ़रमाता है, "मैं तुम्हें सब कुछ वापस
कर दूँगा जो टिड्डियों की बड़ी फ़ौज ने खा लिया
है। तुम्हें सब कुछ वापस मिल जाएगा जो बालिग़
टिड्डी, टिड्डी के बच्चे, जवान टिड्डी और टिड्डियों के
लार्वों ने खा लिया जब मैंने उन्हें तुम्हारे ख़िलाफ़
भेजा था। 26तुम दुबारा जी भरकर खा सकोगे।
तब तुम रब अपने ख़ुदा के नाम की सताइश करोगे
जिसने तुम्हारी ख़ातिर इतने बड़े मोजिज़े किए हैं।
आइंदा मेरी क़ौम कभी शरमिंदा न होगी। 27तब
तुम जान लोगे कि मैं इसराईल के दरमियान
मौजूद हूँ, कि मैं, रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ और मेरे
सिवा और कोई नहीं है। आइंदा मेरी क़ौम कभी
भी शर्मसार नहीं होगी।

अल्लाह अपने रूह का वादा करता है

28इसके बाद मैं अपने रूह को तमाम इनसानों
पर उंडेल दूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,
तुम्हारे बुज़ुर्ग ख़ाब और तुम्हारे नौजवान रोयाएँ
देखेंगे। 29उन दिनों में मैं अपने रूह को ख़ादिमों
और ख़ादिमाओं पर भी उंडेल दूँगा। 30मैं
आसमान पर मोजिज़े दिखाऊँगा और ज़मीन पर
इलाही निशान ज़ाहिर करूँगा, ख़ून, आग और धुएँ
के बादल। 31सूरज तारीक हो जाएगा, चाँद का
रंग ख़ून-सा हो जाएगा, और फिर रब का अज़ीम
और जलाली दिन आएगा। 32उस वक़्त जो भी
रब का नाम लेगा नजात पाएगा। क्योंकि कोहे-
सिय्यून पर और यरूशलम में नजात मिलेगी,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने फ़रमाया
है। जिन बचे हुओं को रब ने बुलाया है उन्हीं में
नजात पाई जाएगी।

दुश्मन की सज़ा

3 उन दिनों में, हाँ उस वक़्त जब मैं
यहूदाह और यरूशलम को बहाल करूँगा
2मैं तमाम दीगर अक़्वाम को जमा करके
वादीए-यहूसफ़त[b] में ले जाऊँगा। वहाँ मैं अपनी
क़ौम और मौरूसी मिलकियत की ख़ातिर उनसे
मुक़दमा लड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने मेरी क़ौम को

[a]ग़ालिबन 'उस' से मुराद ख़ुदा है, लेकिन दुश्मन भी हो सकता है।

[b]यहूसफ़त का मतलब : 'रब अदालत करता है।'

दीगर अक़वाम में मुंतशिर करके मेरे मुल्क को
आपस में तक़सीम कर लिया, 3क़ुरा डालकर
मेरी क़ौम को आपस में बाँट लिया है। उन्होंने
इसराईली लड़कों को कसबियों के बदले में दे
दिया और इसराईली लड़कियों को फ़रोख़्त किया
ताकि मै ख़रीदकर पी सकें।

4ऐ सूर, सैदा और तमाम फ़िलिस्ती इलाक़ो,
मेरा तुमसे क्या वास्ता? क्या तुम मुझसे इंतक़ाम
लेना या मुझे सज़ा देना चाहते हो? जल्द ही मैं
तेज़ी से तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो तुमने
दूसरों के साथ किया है। 5क्योंकि तुमने मेरी
सोना-चाँदी और मेरे बेशक़ीमत ख़ज़ाने लूटकर
अपने मंदिरों में रख लिए हैं। 6यहूदाह और
यरूशलम के बाशिंदों को तुमने यूनानियों के हाथ
बेच डाला ताकि वह अपने वतन से दूर रहें।

7लेकिन मैं उन्हें जगाकर उन मक़ामों से वापस
लाऊँगा जहाँ तुमने उन्हें फ़रोख़्त कर दिया था।
साथ साथ मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो
तुमने उनके साथ किया था। 8रब फ़रमाता है कि
मैं तुम्हारे बेटे-बेटियों को यहूदाह के बाशिंदों के
हाथ बेच डालूँगा, और वह उन्हें दूर-दराज़ क़ौम
सबा के हवाले करके फ़रोख़्त करेंगे।

9बुलंद आवाज़ से दीगर अक़वाम में एलान
करो कि जंग की तैयारियाँ करो। अपने बेहतरीन
फ़ौजियों को खड़ा करो। लड़ने के क़ाबिल तमाम
मर्द आकर हमला करें। 10अपने हल की फालियों
को कूट कूटकर तलवारें बना लो, काँट-छाँट
के औज़ारों को नेज़ों में तबदील करो। कमज़ोर
आदमी भी कहे, 'मैं सूरमा हूँ!' 11ऐ तमाम
अक़वाम, चारों तरफ़ से आकर वादी में जमा हो
जाओ! जल्दी करो।"

ऐ रब, अपने सूरमाओं को वहाँ उतरने दे!

12"दीगर अक़वाम हरकत में आकर वादीए-
यहूसफ़त में आ जाएँ। क्योंकि वहाँ मैं तख़्त पर
बैठकर इर्दगिर्द की तमाम अक़वाम का फ़ैसला
करूँगा। 13आओ, दराँती चलाओ, क्योंकि फ़सल
पक गई है। आओ, अंगूर को कुचल दो, क्योंकि
उसका रस निकालने का हौज़ भरा हुआ है, और
तमाम बरतन रस से छलकने लगे हैं। क्योंकि
उनकी बुराई बहुत है।"

14फ़ैसले की वादी में हंगामा ही हंगामा है,
क्योंकि फ़ैसले की वादी में रब का दिन क़रीब
आ गया है। 15सूरज और चाँद तारीक हो जाएंगे,
सितारों की चमक-दमक जाती रहेगी। 16रब
कोहे-सिय्यून पर से दहाड़ेगा, यरूशलम से उस
की गरजती आवाज़ यों सुनाई देगी कि आसमानो-
ज़मीन लरज़ उठेंगे।

इसराईल का जलाली मुस्तक़बिल

लेकिन रब अपनी क़ौम की पनाहगाह और
इसराईलियों का क़िला होगा। 17"तब तुम जान
लोगे कि मैं, रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ और अपने मुक़द्दस
पहाड़ सिय्यून पर सुकूनत करता हूँ। यरूशलम
मुक़द्दस होगा, और आइंदा परदेसी उसमें से नहीं
गुज़रेंगे।

18उस दिन हर चीज़ कसरत से दस्तयाब होगी।
पहाड़ों से अंगूर का रस टपकेगा, पहाड़ियों से दूध
की नदियाँ बहेंगी, और यहूदाह के तमाम नदी-
नाले पानी से भरे रहेंगे। नीज़, रब के घर में से
एक चश्मा फूट निकलेगा और बहता हुआ वादीए-
शित्तीम की आबपाशी करेगा। 19लेकिन मिसर
तबाह और अदोम वीरानो-सुनसान हो जाएगा,
क्योंकि उन्होंने यहूदाह के बाशिंदों पर ज़ुल्मो-
तशद्दुद किया, उनके अपने ही मुल्क में बेक़ुसूर
लोगों को क़त्ल किया है। 20लेकिन यहूदाह
हमेशा तक आबाद रहेगा, यरूशलम नसल-दर-
नसल क़ायम रहेगा। 21जो क़त्लो-ग़ारत उनके
दरमियान हुई है उस की सज़ा मैं ज़रूर दूँगा।"

रब कोहे-सिय्यून पर सुकूनत करता है।!

आमूस

इसराईल के पड़ोसियों की अदालत

1 ज़ैल में आमूस के पैग़ामात क़लमबंद हैं।
आमूस तक़ुअ शहर का गल्लाबान था।
ज़लज़ले से दो साल पहले उसने इसराईल के बारे
में रोया में यह कुछ देखा। उस वक़्त उज़्ज़ियाह
यहूदाह का और यरुबियाम बिन युआस इसराईल
का बादशाह था।
2आमूस बोला, “रब कोहे-सिय्यून पर से
दहाड़ता है, उस की गरजती आवाज़ यरूशलम से
सुनाई देती है। तब गल्लाबानों की चरागाहें सूख
जाती हैं और करमिल की चोटी पर जंगल मुरझा
जाता है।”
3रब फ़रमाता है, “दमिश्क़ के बाशिंदों ने
बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने जिलियाद
को गाहने के आहनी औज़ार से ख़ूब कूटकर
गाह लिया है। 4चुनाँचे मैं हज़ाएल के घराने पर
आग नाज़िल करूँगा, और बिन-हदद के महल
नज़रे-आतिश हो जाएंगे। 5मैं दमिश्क़ के कुंडे
को तोड़कर बिक़अत-आवन और बैत-अदन के
हुक्मरानों को मौत के घाट उतारूँगा। अराम की
क़ौम जिलावतन होकर क़ीर में जा बसेगी।” यह
रब का फ़रमान है।
6रब फ़रमाता है, “ग़ज़्ज़ा के बाशिंदों ने बार
बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने पूरी आबादियों
को जिलावतन करके अदोम के हवाले कर दिया
है। 7चुनाँचे मैं ग़ज़्ज़ा की फ़सील पर आग
नाज़िल करूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश
हो जाएंगे। 8अशदूद और अस्क़लून के हुक्मरानों
को मैं मार डालूँगा, अक़रून पर भी हमला करूँगा।
तब बचे-खुचे फ़िलिस्ती भी हलाक हो जाएंगे।”
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।
9रब फ़रमाता है, “सूर के बाशिंदों ने बार
बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने बरादराना
अहद का लिहाज़ न किया बल्कि पूरी आबादियों
को जिलावतन करके अदोम के हवाले कर
दिया। 10चुनाँचे मैं सूर की फ़सील पर आग
नाज़िल करूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश
हो जाएंगे।”
11रब फ़रमाता है, “अदोम के बाशिंदों ने
बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने अपने
इसराईली भाइयों को तलवार से मार मारकर
उनका ताक़्क़ुब किया और सख़्ती से उन पर रहम
करने से इनकार किया। उनका क़हर भड़कता
रहा, उनका तैश कभी ठंडा न हुआ। 12चुनाँचे
मैं तेमान पर आग नाज़िल करूँगा, और बुसरा के
महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे।”
13रब फ़रमाता है, “अम्मोन के बाशिंदों ने
बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि अपनी सरहद्दों
को बढ़ाने के लिए उन्होंने जिलियाद की हामिला

औरतों के पेट चीर डाले। 14चुनाँचे मैं रब्बा की फ़सील को आग लगा दूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे। जंग के उस दिन हर तरफ़ फ़ौजियों के नारे बुलंद हो जाएंगे, तूफ़ान के उस दिन उन पर सख़्त आँधी टूट पड़ेगी। 15उनका बादशाह[a] अपने अफ़सरों समेत क़ैदी बनकर जिलावतन हो जाएगा।” यह रब का फ़रमान है।

2 रब फ़रमाता है, “मोआब के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने अदोम के बादशाह की हड्डियों को जलाकर राख कर दिया है। 2चुनाँचे मैं मुल्के-मोआब पर आग नाज़िल करूँगा, और क़रियोत के महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे। जंग का शोर-शराबा मचेगा, फ़ौजियों के नारे बुलंद हो जाएंगे, नरसिंगा फूँका जाएगा। तब मोआब हलाक हो जाएगा। 3मैं उसके हुक्मरान को उसके तमाम अफ़सरों समेत हलाक कर दूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

यहूदाह की अदालत

4रब फ़रमाता है, “यहूदाह के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने रब की शरीअत को रद्द करके उसके अहकाम पर अमल नहीं किया। उनके झूटे देवता उन्हें ग़लत राह पर ले गए हैं, वह देवता जिनकी पैरवी उनके बापदादा भी करते रहे। 5चुनाँचे मैं यहूदाह पर आग नाज़िल करूँगा, और यरूशलम के महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे।”

इसराईल की अदालत

6रब फ़रमाता है, “इसराईल के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि वह शरीफ़ लोगों को पैसे के लिए बेचते और ज़रूरतमंदों को फ़रोख़्त करते हैं ताकि एक जोड़ी जूता मिल जाए। 7वह ग़रीबों के सर को ज़मीन पर कुचल देते, मुसीबतज़दों को इनसाफ़ मिलने से रोकते हैं। बाप और बेटा दोनों एक ही कसबी के पास जाकर मेरे नाम की बेहुरमती करते हैं। 8जब कभी किसी क़ुरबानगाह के पास पूजा करने जाते हैं तो ऐसे कपड़ों पर आराम करते हैं जो क़र्ज़दारों ने ज़मानत के तौर पर दिए थे। जब कभी अपने देवता के मंदिर में जाते तो ऐसे पैसों से मै ख़रीदकर पीते हैं जो जुरमाना के तौर पर ज़रूरतमंदों से मिल गए थे।

9यह कैसी बात है? मैं ही ने अमोरियों को उनके आगे आगे नेस्त कर दिया था, हालाँकि वह देवदार के दरख़्तों जैसे लंबे और बलूत के दरख़्तों जैसे ताक़तवर थे। मैं ही ने अमोरियों को जड़ों और फल समेत मिटा दिया था। 10इससे पहले मैं ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया, मैं ही ने चालीस साल तक रेगिस्तान में तुम्हारी राहनुमाई करते करते तुम्हें अमोरियों के मुल्क तक पहुँचाया ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो। 11मैं ही ने तुम्हारे बेटों में से नबी बरपा किए, और मैं ही ने तुम्हारे नौजवानों में से कुछ चुन लिए ताकि अपनी ख़िदमत के लिए मख़सूस करूँ।” रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईलियो, क्या ऐसा नहीं था? 12लेकिन तुमने मेरे लिए मख़सूस आदमियों को मै पिलाई और नबियों को हुक्म दिया कि नबुव्वत मत करो।

13अब मैं होने दूँगा कि तुम अनाज से ख़ूब लदी हुई बैलगाड़ी की तरह झूलने लगोगे। 14न तेज़रौ शख़्स भागकर बचेगा, न ताक़तवर आदमी कुछ कर पाएगा। न सूरमा अपनी जान बचाएगा, 15न तीर चलानेवाला क़ायम रहेगा। कोई नहीं बचेगा, ख़ाह पैदल दौड़नेवाला हो या घोड़े पर सवार। 16उस दिन सबसे बहादुर सूरमा भी हथियार डालकर नंगी हालत में भाग जाएगा।” यह रब का फ़रमान है।

3 ऐ इसराईलियो, वह कलाम सुनो जो रब तुम्हारे ख़िलाफ़ फ़रमाता है, उस पूरी क़ौम के ख़िलाफ़ जिसे मैं मिसर से निकाल लाया था।

[a]या मलिक देवता।

2“दुनिया की तमाम क़ौमों में से मैंने सिर्फ़ तुम्हीं को जान लिया, इसलिए मैं तुम्हीं को तुम्हारे तमाम गुनाहों की सज़ा दूँगा।”

नबी की ज़िम्मेदारी

3क्या दो अफ़राद मिलकर सफ़र कर सकते हैं अगर वह मुत्तफ़िक़ न हों? 4क्या शेरबबर दहाड़ता है अगर उसे शिकार न मिला हो? क्या जवान शेर अपनी माँद में गरजता है अगर उसने कुछ पकड़ा न हो? 5क्या परिंदा फंदे में फँस जाता है अगर फंदे को लगाया न गया हो? या फंदा कुछ फँसा सकता है अगर शिकार न हो? 6जब शहर में नरसिंगा फूँका जाता है ताकि लोगों को किसी ख़तरे से आगाह करे तो क्या वह नहीं घबराते? जब आफ़त शहर पर आती है तो क्या रब की तरफ़ से नहीं होती?

7यक़ीनन जो भी मनसूबा रब क़ादिरे-मुतलक़ बाँधे उस पर अमल करने से पहले वह उसे अपने ख़ादिमों यानी नबियों पर ज़ाहिर करता है।

8शेरबबर दहाड़ उठा है तो कौन है जो डर न जाए? रब क़ादिरे-मुतलक़ बोल उठा है तो कौन है जो नबुव्वत न करे?

सामरिया को रिहाई नहीं मिलेगी

9अशदूद और मिसर के महलों को इत्तला दो, “सामरिया के पहाड़ों पर जमा होकर उस पर नज़र डालो जो कुछ शहर में हो रहा है। कितनी बड़ी हलचल मच गई है, कितना ज़ुल्म हो रहा है।” 10रब फ़रमाता है, “यह लोग सहीह काम करना जानते ही नहीं बल्कि ज़ालिम और तबाहकुन तरीक़ों से अपने महलों में ख़ज़ाने जमा करते हैं।”

11चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “दुश्मन मुल्क को घेरकर तेरी क़िलाबंदियों को ढा देगा और तेरे महलों को लूट लेगा।” 12रब फ़रमाता है, “अगर चरवाहा अपनी भेड़ को शेरबबर के मुँह से निकालने की कोशिश करे तो शायद दो पिंडलियाँ या कान का टुकड़ा बच जाए। सामरिया के इसराईली भी इसी तरह ही बच जाएंगे, ख़ाह वह इस वक़्त अपने शानदार सोफ़ों और ख़ूबसूरत गद्दियों पर आराम क्यों न करें।”

13रब क़ादिरे-मुतलक़ जो आसमानी लशकरों का ख़ुदा है फ़रमाता है, “सुनो, याक़ूब के घराने के ख़िलाफ़ गवाही दो! 14जिस दिन मैं इसराईल को उसके गुनाहों की सज़ा दूँगा उस दिन मैं बैतेल की क़ुरबानगाहों को मिसमार करूँगा। तब क़ुरबानगाह के कोनों पर लगे सींग टूटकर ज़मीन पर गिर जाएंगे। 15मैं सर्दियों और गरमियों के मौसम के लिए तामीर किए गए घरों को ढा दूँगा। हाथीदाँत से आरास्ता इमारतें ख़ाक में मिलाई जाएँगी, और जहाँ इस वक़्त मुतअद्दिद मकान नज़र आते हैं वहाँ कुछ नहीं रहेगा।” यह रब का फ़रमान है।

सामरिया की ज़ालिम औरतें

4 ऐ कोहे-सामरिया की मोटी-ताज़ी गायो,[a] सुनो मेरी बात! तुम ग़रीबों पर ज़ुल्म करती और ज़रूरतमंदों को कुचल देती, तुम अपने शौहरों को कहती हो, “जाकर मै ले आओ, हम और पीना चाहती हैं।” 2रब ने अपनी क़ुद्दूसियत की क़सम खाकर फ़रमाया है, “वह दिन आनेवाला है जब दुश्मन तुम्हें काँटों के ज़रीए घसीटकर अपने साथ ले जाएगा। जो बचेगा उसे मछली के काँटे से पकड़ा जाएगा। 3हर एक को फ़सील के रख़नों में से सीधा निकलना पड़ेगा, हर एक को हरमून पहाड़ की तरफ़ भगा दिया जाएगा।” यह रब का फ़रमान है।

इसराईल को समझाया नहीं जा सकता

4“चलो, बैतेल जाकर गुनाह करो, जिलजाल जाकर अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करो! सुबह के वक़्त अपनी क़ुरबानियों को चढ़ाओ,

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : ‘बसन की गायो।’ बसन एक पहाड़ी इलाक़ा था जिसके मवेशी मशहूर थे।

तीसरे दिन आमदनी का दसवाँ हिस्सा पेश करो।
5ख़मीरी रोटी जलाकर अपनी शुक्रगुज़ारी का
इज़हार करो, बुलंद आवाज़ से उन क़ुरबानियों
का एलान करो जो तुम अपनी ख़ुशी से अदा
कर रहे हो। क्योंकि ऐसी हरकतें तुम इसराईलियों
को बहुत पसंद हैं।” यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।

6रब फ़रमाता है, “मैंने काल पड़ने दिया। हर
शहर और आबादी में रोटी ख़त्म हुई। तो भी तुम
मेरे पास वापस नहीं आए! 7अभी फ़सल के
पकने तक तीन माह बाक़ी थे कि मैंने तुम्हारे
मुल्क में बारिशों को रोक दिया। मैंने होने दिया कि
एक शहर में बारिश हुई जबकि साथवाला शहर
उससे महरूम रहा, एक खेत बारिश से सेराब हुआ
जबकि दूसरा झुलस गया। 8जिस शहर में थोड़ा-
बहुत पानी बाक़ी था वहाँ दीगर कई शहरों के
बाशिंदे लड़खड़ाते हुए पहुँचे, लेकिन उनके लिए
काफ़ी नहीं था। तो भी तुम मेरे पास वापस न
आए!” यह रब का फ़रमान है।

9रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारी फ़सलों को
पतरोग और फफूँदी से तबाह कर दिया। जो भी
तुम्हारे मुतअद्दिद अंगूर, अंजीर, ज़ैतून और बाक़ी
फल के बाग़ों में उगता था उसे टिड्डियाँ खा गईं।
तो भी तुम मेरे पास वापस न आए!”

10रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारे दरमियान ऐसी
मोहलक बीमारी फैला दी जैसी क़दीम ज़माने
में मिसर में फैल गई थी। तुम्हारे नौजवानों को
मैंने तलवार से मार डाला, तुम्हारे घोड़े तुमसे
छीन लिए गए। तुम्हारी लशकरगाहों में लाशों का
ताफ़्फ़ुन इतना फैल गया कि तुम बहुत तंग हुए।
तो भी तुम मेरे पास वापस न आए।”

11रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारे दरमियान ऐसी
तबाही मचाई जैसी उस दिन हुई जब मैंने सदूम
और अमूरा को तबाह किया।

तुम्हारी हालत बिलकुल उस लकड़ी की मानिंद
थी जो आग से निकालकर बचाई तो गई लेकिन
फिर भी काफ़ी झुलस गई थी। तो भी तुम वापस
न आए। 12चुनाँचे ऐ इसराईल, अब मैं आइंदा भी
तेरे साथ ऐसा ही करूँगा। और चूँकि मैं तेरे साथ
ऐसा करूँगा, इसलिए अपने ख़ुदा से मिलने के
लिए तैयार हो जा, ऐ इसराईल!”

13क्योंकि अल्लाह ही पहाड़ों को तश्कील
देता, हवा को ख़लक़ करता और अपने ख़यालात
को इनसान पर ज़ाहिर करता है। वही तड़का और
अंधेरा पैदा करता और वही ज़मीन की बुलंदियों
पर चलता है। उसका नाम ‘रब, लशकरों का
ख़ुदा’ है।

मेरे पास लौट आओ!

5 ऐ इसराईली क़ौम, मेरी बात सुनो, तुम्हारे
बारे में मेरे नोहा पर ध्यान दो!

2“कुँवारी इसराईल गिर गई है और आइंदा
कभी नहीं उठेगी। उसे उस की अपनी ज़मीन पर
पटख़ दिया गया है, और कोई उसे दुबारा खड़ा
नहीं करेगा।”

3रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “इस-
राईल के जिस शहर से 1,000 मर्द लड़ने के
लिए निकलेंगे उसके सिर्फ़ 100 अफ़राद वापस
आएँगे। और जिस शहर से 100 निकलेंगे, उसके
सिर्फ़ 10 मर्द वापस आएँगे।” 4क्योंकि रब
इसराईली क़ौम से फ़रमाता है, “मुझे तलाश करो
तो तुम जीते रहोगे। 5न बैतेल के तालिब हो, न
जिलजाल के पास जाओ, और न बैर-सबा के
लिए रवाना हो जाओ! क्योंकि जिलजाल के
बाशिंदे यक़ीनन जिलावतन हो जाएंगे, और बैतेल
नेस्तो-नाबूद हो जाएगा।”

6रब को तलाश करो तो तुम जीते रहोगे। वरना
वह आग की तरह यूसुफ़ के घराने में से गुज़रकर
बैतेल को भस्म करेगा, और उसे कोई नहीं बुझा
सकेगा।

हर तरफ़ नाइनसाफ़ी

7उन पर अफ़सोस जो इनसाफ़ को उलट-
कर ज़हर में बदल देते, जो रास्ती को ज़मीन पर
पटख़ देते हैं!

8अल्लाह सात सहेलियों के झुमके और जौज़े
का ख़ालिक़ है। अंधेरे को वह सुबह की रौशनी
में और दिन को रात में बदल देता है। जो समुंदर
के पानी को बुलाकर रूए-ज़मीन पर उंडेल देता है
उसका नाम रब है! 9अचानक ही वह ज़ोरावरों पर
आफ़त लाता है, और उसके कहने पर क़िलाबंद
शहर तबाह हो जाता है।

10तुम उससे नफ़रत करते हो जो अदालत में
इनसाफ़ करे, तुम्हें उससे घिन आती है जो सच
बोले। 11तुम ग़रीबों को कुचलकर उनके अनाज
पर हद से ज़्यादा टैक्स लगाते हो। इसलिए गो
तुमने तराशे हुए पत्थरों से शानदार घर बनाए
हैं तो भी उनमें नहीं रहोगे, गो तुमने अंगूर के
फलते-फूलते बाग़ लगाए हैं तो भी उनकी मै
से महज़ूज़ नहीं होगे। 12मैं तो तुम्हारे मुतअद्दिद
जरायम और संगीन गुनाहों से ख़ूब वाक़िफ़
हूँ। तुम रास्तबाज़ों पर ज़ुल्म करते और रिश्वत
लेकर ग़रीबों को अदालत में इनसाफ़ से महरूम
रखते हो। 13इसलिए समझदार शख़्स इस वक़्त
ख़ामोश रहता है, वक़्त इतना ही बुरा है।

14बुराई को तलाश न करो बल्कि अच्छाई को,
तब ही जीते रहोगे। तब ही तुम्हारा दावा दुरुस्त
होगा कि रब जो लशकरों का ख़ुदा है हमारे साथ
है। 15बुराई से नफ़रत करो और जो कुछ अच्छा
है उसे प्यार करो। अदालतों में इनसाफ़ क़ायम
रखो, शायद रब जो लशकरों का ख़ुदा है यूसुफ़
के बचे-खुचे हिस्से पर रहम करे।

16चुनाँचे रब जो लशकरों का ख़ुदा और हमारा
आक़ा है फ़रमाता है, "तमाम चौकों में आहो-बुका
होगी, तमाम गलियों में लोग 'हाय, हाय' करेंगे।
खेतीबाड़ी करनेवालों को भी बुलाया जाएगा
ताकि पेशावराना तौर पर सोग मनानेवालों के
साथ गिर्याओ-ज़ारी करें। 17अंगूर के तमाम बाग़ों
में वावैला मचेगा, क्योंकि मैं ख़ुद तुम्हारे दरमियान
से गुज़रूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

रब का दिन हौलनाक है

18उन पर अफ़सोस जो कहते हैं, "काश रब
का दिन आ जाए!" तुम्हारे लिए रब के दिन का
क्या फ़ायदा होगा? वह तो तुम्हारे लिए रौशनी
का नहीं बल्कि तारीकी का बाइस होगा। 19तब
तुम उस आदमी की मानिंद होगे जो शेरबबर से
भागकर रीछ से टकरा जाता है। जब घर में पनाह
लेकर हाथ से दीवार का सहारा लेता है तो साँप
उसे डस लेता है।

20हाँ, रब का दिन तुम्हारे लिए रौशनी का नहीं
बल्कि तारीकी का बाइस होगा। ऐसा अंधेरा होगा
कि उम्मीद की किरण तक नज़र नहीं आएगी।

21रब फ़रमाता है, "मुझे तुम्हारे मज़हबी
तहवारों से नफ़रत है, मैं उन्हें हक़ीर जानता हूँ।
तुम्हारे इजतिमाओं से मुझे घिन आती है। 22जो
भस्म होनेवाली और ग़ल्ला की क़ुरबानियाँ तुम
मुझे पेश करते हो उन्हें मैं पसंद नहीं करता, जो
मोटे-ताज़े बैल तुम मुझे सलामती की क़ुरबानी के
तौर पर चढ़ाते हो उन पर मैं नज़र भी नहीं डालना
चाहता। 23दफ़ा करो अपने गीतों का शोर! मैं
तुम्हारे सितारों की मौसीक़ी सुनना नहीं चाहता।
24इन चीज़ों की बजाए इनसाफ़ का चश्मा फूट
निकले और रास्ती की कभी बंद न होनेवाली नहर
बह निकले।

25ऐ इसराईल के घराने, जब तुम रेगिस्तान में
घुमते-फिरते थे तो क्या तुमने उन 40 सालों के
दौरान कभी मुझे ज़बह और ग़ल्ला की क़ुरबानियाँ
पेश कीं? 26नहीं, उस वक़्त भी तुम अपने
बादशाह सक्कूत देवता और अपने सितारे कीवान
देवता को उठाए फिरते थे, गो तुमने अपने हाथों
से यह बुत अपने लिए बना लिए थे। 27इसलिए
रब जिसका नाम लशकरों का ख़ुदा है फ़रमाता
है कि मैं तुम्हें जिलावतन करके दमिश्क़ के पार
बसा दूँगा।"

राहनुमाओं की ख़ुदएतमादी और ऐयाशी

6 कोहे-सिय्यून के बेपरवा बाशिंदों पर
अफ़सोस! कोहे-सामरिया के बा-

शिंदों पर अफ़सोस जो अपने आपको मह-
फ़ूज़ समझते हैं। हाँ, सबसे आला क़ौम के उन
शुरफ़ा पर अफ़सोस जिनके पास इसराईली क़ौम
मदद के लिए आती है। 2कलना शहर के पास
जाकर उस पर ग़ौर करो, वहाँ से अज़ीम शहर
हमात के पास पहुँचो, फिर फ़िलिस्ती मुल्क के
शहर जात के पास उतरो। क्या तुम इन ममालिक
से बेहतर हो? क्या तुम्हारा इलाक़ा इनकी
निसबत बड़ा है?

3तुम अपने आपको आफ़त के दिन से दूर
समझकर अपनी ज़ालिम हुकूमत दूसरों पर
जताते हो। 4तुम हाथीदाँत से आरास्ता पलंगों पर
सोते और अपने शानदार सोफ़ों पर पाँव फैलाते
हो। खाने के लिए तुम अपने रेवड़ों से अच्छे
अच्छे भेड़ के बच्चे और मोटे-ताज़े बछड़े चुन
लेते हो। 5तुम अपने सितारों को बजा बजाकर
दाऊद की तरह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के गीत तैयार
करते हो। 6मै को तुम बड़े बड़े प्यालों से पी लेते,
बेहतरीन क़िस्म के तेल अपने जिस्म पर मिलते
हो। अफ़सोस, तुम परवा ही नहीं करते कि यूसुफ़
का घराना तबाह होनेवाला है।

7इसलिए तुम उन लोगों में से होगे जो पहले
क़ैदी बनकर जिलावतन हो जाएंगे। तब तुम्हारी
रंगरलियाँ बंद हो जाएँगी, तुम्हारी आवारागर्द और
काहिल ज़िंदगी ख़त्म हो जाएगी।

8रब जो लशकरों का ख़ुदा है फ़रमाता है, "मुझे
याक़ूब का ग़ुरूर देखकर घिन आती है, उसके
महलों से मैं मुतनफ़्फ़िर हूँ। मैं शहर और जो कुछ
उसमें है दुश्मन के हवाले कर दूँगा। मेरे नाम की
क़सम, यह मेरा, रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है।" 9उस वक़्त अगर एक घर में दस आदमी रह
जाएँ तो वह भी मर जाएंगे। 10फिर जब कोई
रिश्तेदार आए ताकि लाशों को उठाकर दफ़नाने
जाए और देखे कि घर के किसी कोने में अभी कोई
छुपकर बच गया है तो वह उससे पूछेगा, "क्या
आपके अलावा कोई और भी बचा है?" तो वह
जवाब देगा, "नहीं, एक भी नहीं।" तब रिश्तेदार
कहेगा, "चुप! रब के नाम का ज़िक्र मत करना,
ऐसा न हो कि वह तुझे भी मौत के घाट उतारे।"[a]

11क्योंकि रब ने हुक्म दिया है कि शानदार घरों
को टुकड़े टुकड़े और छोटे घरों को रेज़ा रेज़ा किया
जाए।

12क्या घोड़े चट्टानों पर सरपट दौड़ते हैं? क्या
इनसान बैल लेकर उन पर हल चलाता है?
लेकिन तुम इतनी ही ग़ैरफ़ितरी हरकतें करते हो।
क्योंकि तुम इनसाफ़ को ज़हर में और रास्ती
का मीठा फल कड़वाहट में बदल देते हो। 13तुम
लो-दिबार की फ़तह पर शादियाना बजा बजाकर
फ़ख़र करते हो, "हमने अपनी ही ताक़त से
क़रनैम पर क़ब्ज़ा कर लिया!" 14चुनाँचे रब जो
लशकरों का ख़ुदा है फ़रमाता है, "ऐ इसराईली
क़ौम, मैं तेरे ख़िलाफ़ एक क़ौम को तहरीक दूँगा
जो तुझे शिमाल के शहर लबो-हमात से लेकर
जुनूब की वादी अराबा तक अज़ियत पहुँचाएगी।"

टिड्डियों की रोया

7 रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे रोया दि-
खाई। मैंने देखा कि अल्लाह टिड्डियों के
ग़ोल पैदा कर रहा है। उस वक़्त पहली घास
की कटाई हो चुकी थी, वह घास जो बादशाह
के लिए मुक़र्रर थी। अब घास दुबारा उगने लगी
थी। 2तब टिड्डियाँ मुल्क की पूरी हरियाली पर
टूट पड़ीं और सब कुछ खा गईं। मैं चिल्ला उठा,
"ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मेहरबानी करके मुआफ़
कर, वरना याक़ूब किस तरह क़ायम रहेगा? वह
पहले से इतनी छोटी क़ौम है।" 3तब रब पछताया
और फ़रमाया, "जो कुछ तूने देखा वह पेश नहीं
आएगा।"

आग की रोया

4फिर रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे एक और
रोया दिखाई। मैंने देखा कि रब क़ादिरे-मुतलक़

[a]'ऐसा न हो कि वह . . . घाट उतारे' इज़ाफ़ा है ताकि
मतलब साफ़ हो।

आग की बारिश बुला रहा है ताकि मुल्क पर
बरसे। आग ने समुंदर की गहराइयों को ख़ुश्क कर
दिया, फिर मुल्क में फैलने लगी। 5तब मैं चिल्ला
उठा, “ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मेहरबानी करके
इससे बाज़ आ, वरना याक़ूब किस तरह क़ायम
रहेगा? वह पहले से इतनी छोटी क़ौम है।” 6तब
रब दुबारा पछताया और फ़रमाया, “यह भी पेश
नहीं आएगा।”

साहूल की रोया

7इसके बाद रब ने मुझे एक तीसरी रोया
दिखाई। मैंने देखा कि क़ादिरे-मुतलक़ एक ऐसी
दीवार पर खड़ा है जो साहूल से नाप नापकर
तामीर की गई है। उसके हाथ में साहूल था। 8रब
ने मुझसे पूछा, “ऐ आमूस, तुझे क्या नज़र आता
है?” मैंने जवाब दिया, “साहूल।” तब रब ने
फ़रमाया, “मैं अपनी क़ौम इसराईल के दरमियान
साहूल लगानेवाला हूँ। आइंदा मैं उनके गुनाहों
को नज़रंदाज़ नहीं करूँगा बल्कि नाप नापकर
उनको सज़ा दूँगा। 9उन बुलंदियों की क़ुरबानगाहें
तबाह हो जाएँगी जहाँ इसहाक़ की औलाद अपनी
क़ुरबानियाँ पेश करती है। इसराईल के मक़दिस
ख़ाक में मिलाए जाएंगे, और मैं अपनी तलवार को
पकड़कर यरुबियाम के ख़ानदान पर टूट पड़ूँगा।”

आमूस को इसराईल से निकलने का हुक्म दिया जाता है

10यह सुनकर बैतेल के इमाम अमसियाह
ने इसराईल के बादशाह यरुबियाम को इत्तला
दी, “आमूस इसराईल के दरमियान ही आपके
ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहा है! मुल्क उसके
पैग़ाम बरदाश्त नहीं कर सकता, 11क्योंकि वह
कहता है, ‘यरुबियाम तलवार की ज़द में आकर
मर जाएगा, और इसराईली क़ौम यक़ीनन क़ैदी
बनकर जिलावतन हो जाएगी’।”

12अमसियाह ने आमूस से कहा, “ऐ रोया
देखनेवाले, यहाँ से निकल जा! मुल्के-यहूदाह
में भागकर वहीं रोज़ी कमा, वहीं नबुव्वत कर।
13आइंदा बैतेल में नबुव्वत मत करना, क्योंकि
यह बादशाह का मक़दिस और बादशाही की
मरकज़ी इबादतगाह है।”

14आमूस ने जवाब दिया, “पेशा के लिहाज़
से न मैं नबी हूँ, न किसी नबी का शागिर्द बल्कि
गल्लाबान और अंजीर-तूत का बाग़बान। 15तो
भी रब ने मुझे भेड़-बकरियों की गल्लाबानी करने
से हटाकर हुक्म दिया कि मेरी क़ौम इसराईल
के पास जा और नबुव्वत करके उसे मेरा कलाम
पेश कर। 16अब रब का कलाम सुन! तू कहता
है, ‘इसराईल के ख़िलाफ़ नबुव्वत मत करना,
इसहाक़ की क़ौम के ख़िलाफ़ बात मत करना।’
17जवाब में रब फ़रमाता है, ‘तेरी बीवी शहर
में कसबी बनेगी, तेरे बेटे-बेटियाँ सब तलवार से
क़त्ल हो जाएंगे, तेरी ज़मीन नापकर दूसरों में
तक़सीम की जाएगी, और तू ख़ुद एक नापाक
मुल्क में वफ़ात पाएगा। यक़ीनन इसराईली क़ौम
क़ैदी बनकर जिलावतन हो जाएगी’।”

पके फल से भरी टोकरी

8 एक बार फिर रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे
रोया दिखाई। मैंने पके हुए फल से भरी
हुई टोकरी देखी। 2रब ने पूछा, “ऐ आमूस, तुझे
क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “पके
हुए फल से भरी हुई टोकरी।” तब रब ने मुझसे
फ़रमाया, “मेरी क़ौम का अंजाम पक गया है।
अब से मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। 3रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उस दिन महल
में गीत सुनाई नहीं देंगे बल्कि आहो-ज़ारी। चारों
तरफ़ नाशें नज़र आएँगी, क्योंकि दुश्मन उन्हें हर
जगह फेंकेगा। ख़ामोश!”

अवाम का इस्तेह्साल

4ऐ ग़रीबों को कुचलनेवालो, ऐ ज़रू-
रतमंदों को तबाह करनेवालो, सुनो! 5-6तुम
कहते हो, “नए चाँद की ईद कब गुज़र जाएगी,
सबत का दिन कब ख़त्म है ताकि हम अनाज
के गोदाम खोलकर ग़ल्ला बेच सकें? तब हम

पैमाइश के बरतन छोटे और तराज़ू के बाट हलके
बनाएँगे, साथ साथ सौदे का भाव बढ़ाएँगे। हम
फ़रोख़्त करते वक़्त अनाज के साथ उसका भूसा
भी मिलाएँगे।” अपने नाजायज़ तरीक़ों से तुम
थोड़े पैसों में बल्कि एक जोड़ी जूतों के एवज़
ग़रीबों को ख़रीदते हो।
7रब ने याक़ूब के फ़ख़र की क़सम खाकर वादा
किया है, “जो कुछ उनसे सरज़द हुआ है उसे मैं
कभी नहीं भूलूँगा। 8उन्हीं की वजह से ज़मीन
लरज़ उठेगी और उसके तमाम बाशिंदे मातम
करेंगे। जिस तरह मिसर में दरियाए-नील बरसात
के मौसम में सैलाबी सूरत इख़्तियार कर लेता है
उसी तरह पूरी ज़मीन उठेगी। वह नील की तरह
जोश में आएगी, फिर दुबारा उतर जाएगी।”
9रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “उस दिन
मैं होने दूँगा कि सूरज दोपहर के वक़्त ग़ुरूब हो
जाए। दिन उरूज पर ही होगा तो ज़मीन पर अंधेरा
छा जाएगा। 10मैं तुम्हारे तहवारों को मातम में
और तुम्हारे गीतों को आहो-बुका में बदल दूँगा। मैं
सबको टाट के मातमी लिबास पहनाकर हर एक
का सर मुँडवाऊँगा। लोग यों मातम करेंगे जैसा
उनका वाहिद बेटा कूच कर गया हो। अंजाम का
वह दिन कितना तलख़ होगा।”

अल्लाह आइंदा जवाब नहीं देगा

11क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “ऐसे दिन
आनेवाले हैं जब मैं मुल्क में काल भेजूँगा। लेकिन
लोग न रोटी और न पानी से बल्कि अल्लाह का
कलाम सुनने से महरूम रहेंगे। 12लोग लड़खड़ाते
हुए एक समुंदर से दूसरे तक और शिमाल से
मशरिक़ तक फिरेंगे ताकि रब का कलाम मिल
जाए, लेकिन बेसूद।
13उस दिन ख़ूबसूरत कुँवारियाँ और जवान मर्द
प्यास के मारे बेहोश हो जाएंगे। 14जो इस वक़्त
सामरिया के मकरूह बुत की क़सम खाते और
कहते हैं, ‘ऐ दान, तेरे देवता की हयात की क़सम’
या ‘ऐ बैर-सबा, तेरे देवता की क़सम!’ वह उस
वक़्त गिर जाएंगे और दुबारा कभी नहीं उठेंगे।”

आख़िरी रोया : इसराईल की तबाही

9 मैंने रब को क़ुरबानगाह के पास खड़ा
देखा। उसने फ़रमाया, “मक़दिस के
सतूनों के बालाई हिस्सों को इतने ज़ोर से मार
कि दहलीज़ें लरज़ उठें और उनके टुकड़े हाज़िरीन
के सरों पर गिर जाएँ। उनमें से जितने ज़िंदा रहें
उन्हें मैं तलवार से मार डालूँगा। एक भी भाग
जाने में कामयाब नहीं होगा, एक भी नहीं बचेगा।
2ख़ाह वह ज़मीन में खोद खोदकर पाताल तक
क्यों न पहुँचें तो भी मेरा हाथ उन्हें पकड़कर वहाँ
से वापस लाएगा। और ख़ाह वह आसमान तक
क्यों न चढ़ जाएँ तो भी मैं उन्हें वहाँ से उतारूँगा।
3ख़ाह वह करमिल की चोटी पर क्यों न छुप जाएँ
तो भी मैं उनका खोज लगाकर उन्हें छीन लूँगा। गो
वह समुंदर की तह तक उतरकर मुझसे पोशीदा
होने की कोशिश क्यों न करें तो भी बेफ़ायदा
होगा, क्योंकि मैं समुंदरी साँप को उन्हें डसने
का हुक्म दूँगा। 4अगर उनके दुश्मन उन्हें भगाकर
जिलावतन करें तो मैं तलवार को उन्हें क़त्ल करने
का हुक्म दूँगा। मैं ध्यान से उनको तकता रहूँगा,
लेकिन बरकत देने के लिए नहीं बल्कि नुक़सान
पहुँचाने के लिए।”
5क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज है। जब वह
ज़मीन को छू देता है तो वह लरज़ उठती और
उसके तमाम बाशिंदे मातम करने लगते हैं। तब
जिस तरह मिसर में दरियाए-नील बरसात के
मौसम में सैलाब की सूरत इख़्तियार कर लेता
है उसी तरह पूरी ज़मीन उठती, फिर दुबारा उतर
जाती है।
6वह आसमान पर अपना बालाख़ाना तामीर
करता और ज़मीन पर अपने तहख़ाने की बुनियाद
डालता है। वह समुंदर का पानी बुलाकर रूए-
ज़मीन पर उंडेल देता है। उसी का नाम रब है!

तुम दूसरों से बेहतर नहीं

7रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईलियो, यह मत
समझना कि मेरे नज़दीक तुम एथोपिया के
बाशिंदों से बेहतर हो। बेशक मैं इसराईल को

मिसर से निकाल लाया, लेकिन बिलकुल इसी
तरह मैं फ़िलिस्तियों को क्रेते[a] से और अरामियों
को क़ीर से निकाल लाया। **8**मैं, रब क़ादिरे-
मुतलक़ ध्यान से इसराईल की गुनाहआलूदा
बादशाही पर ग़ौर कर रहा हूँ। यक़ीनन मैं उसे रूए-
ज़मीन पर से मिटा डालूँगा।”
ताहम रब फ़रमाता है, “मैं याक़ूब के घराने
को सरासर तबाह नहीं करूँगा। **9**मेरे हुक्म पर
इसराईली क़ौम को तमाम अक़वाम के दरमियान
ही यों हिलाया जाएगा जिस तरह अनाज को
छलनी में हिला हिलाकर पाक-साफ़ किया जाता
है। आख़िर में एक भी पत्थर अनाज में बाक़ी नहीं
रहेगा। **10**मेरी क़ौम के तमाम गुनाहगार तलवार
की ज़द में आकर मर जाएंगे, गो वह इस वक़्त
कहते हैं कि न हम पर आफ़त आएगी, न हम उस
की ज़द में आएँगे।

इसराईल के लिए नई उम्मीद

11उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए घर को नए
सिरे से खड़ा करूँगा। मैं उसके रख़नों को बंद और
उसके खंडरात को बहाल करूँगा। मैं सब कुछ यों
तामीर करूँगा जिस तरह क़दीम ज़माने में था।
12तब इसराईली अदोम के बचे-खुचे हिस्से और
उन तमाम क़ौमों पर क़ब्ज़ा करेंगे जिन पर मेरे
नाम का ठप्पा लगा है।” यह रब का फ़रमान है,
और वह यह करेगा भी।
13रब फ़रमाता है, “ऐसे दिन आनेवाले हैं जब
फ़सलें बहुत ही ज़्यादा होंगी। फ़सल की कटाई
के लिए इतना वक़्त दरकार होगा कि आख़िरकार
हल चलानेवाला कटाई करनेवालों के पीछे पीछे
खेत को अगली फ़सल के लिए तैयार करता
जाएगा। अंगूर की फ़सल भी ऐसी ही होगी।
अंगूर की कसरत के बाइस उनसे रस निकालने
के लिए इतना वक़्त लगेगा कि आख़िरकार बीज
बोनेवाला साथ साथ बीज बोने का काम शुरू
करेगा। कसरत के बाइस नई मै पहाड़ों से टपकेगी
और तमाम पहाड़ियों से बहेगी।
14उस वक़्त मैं अपनी क़ौम इसराईल को
बहाल करूँगा। तब वह तबाहशुदा शहरों को नए
सिरे से तामीर करके उनमें आबाद हो जाएंगे।
वह अंगूर के बाग़ लगाकर उनकी मै पिएँगे, दीगर
फलों के बाग़ लगाकर उनका फल खाएँगे। **15**मैं
उन्हें पनीरी की तरह उनके अपने मुल्क में लगा
दूँगा। तब वह आइंदा उस मुल्क से कभी जड़ से
नहीं उखाड़े जाएंगे जो मैंने उन्हें अता किया है।”
यह रब तेरे ख़ुदा का फ़रमान है।

[a]क्रेते : इबरानी कफ़तूर।

अबदियाह

रब अदोम की अदालत करेगा

1 ज़ैल में वह रोया क़लमबंद है जो अबदि-
याह ने देखी। उसमें वह कुछ बयान किया गया
है जो रब क़ादिरे-मुतलक़ ने अदोम के बारे में
फ़रमाया।

हमने रब की तरफ़ से पैग़ाम सुना है, एक
क़ासिद को अक़वाम के पास भेजा गया है जो
उन्हें हुक्म दे, "उठो! आओ, हम अदोम से लड़ने
के लिए तैयार हो जाएँ।"

2 रब अदोम से फ़रमाता है, "मैं तुझे क़ौमों
में छोटा बना दूँगा, और तुझे बहुत हक़ीर जाना
जाएगा। 3 तेरे दिल के ग़ुरूर ने तुझे फ़रेब दिया
है। चूँकि तू चट्टानों की दराड़ों में और बुलंदियों पर
रहता है इसलिए तू दिल में सोचता है, 'कौन मुझे
यहाँ से उतार देगा'?" 4 लेकिन रब फ़रमाता है,
"ख़्वाह तू अपना घोंसला उक़ाब की तरह बुलंदी
पर क्यों न बनाए बल्कि उसे सितारों के दरमियान
लगा ले, तो भी मैं तुझे वहाँ से उतारकर ख़ाक में
मिला दूँगा।

5 अगर डाकू रात के वक़्त तुझे लूट लेते तो
वह सिर्फ़ उतना ही छीन लेते जितना उठाकर
ले जा सकते हैं। अगर तू अंगूर का बाग़ होता
और मज़दूर फ़सल चुनने के लिए आते तो थोड़ा-
बहुत उनके पीछे रह जाता। लेकिन तेरा अंजाम
इससे कहीं ज़्यादा बुरा होगा। 6 दुश्मन एसौ[a] के
कोने कोने का खोज लगा लगाकर उसके तमाम
पोशीदा ख़ज़ाने लूट लेगा। 7 तेरे तमाम इत्तहादी
तुझे मुल्क की सरहद तक भगा देंगे, तेरे दोस्त
तुझे फ़रेब देकर तुझ पर ग़ालिब आएँगे। बल्कि
तेरी रोटी खानेवाले ही तेरे लिए फंदा लगाएँगे,
और तुझे पता नहीं चलेगा।" 8 रब फ़रमाता है,
"उस दिन मैं अदोम के दानिशमंदों को तबाह कर
दूँगा। तब एसौ के पहाड़ी इलाक़े में समझ और
अक़्ल का नामो-निशान नहीं रहेगा। 9 ऐ तेमान,
तेरे सूरमे भी सख़्त दहशत खाएँगे, क्योंकि उस
वक़्त एसौ के पहाड़ी इलाक़े में क़त्लो-ग़ारत आम
होगी, कोई नहीं बचेगा।

10 तूने अपने भाई याक़ूब[b] पर ज़ुल्मो-तशद्दुद
किया, इसलिए तेरी ख़ूब रुसवाई हो जाएगी, तुझे
यों मिटाया जाएगा कि आइंदा तेरा नामो-निशान
तक नहीं रहेगा। 11 जब अजनबी फ़ौजी यरूशलम
के दरवाज़ों में घुस आए तो तू फ़ासले पर खड़ा
होकर उन जैसा था। जब उन्होंने तमाम मालो-
दौलत छीन लिया, जब उन्होंने क़ुरा डालकर
आपस में यरूशलम को बाँट लिया तो तूने उनका
ही रवैया अपना लिया। 12 तुझे तेरे भाई की
बदक़िस्मती पर ख़ुशी नहीं मनानी चाहिए थी।
मुनासिब नहीं था कि तू यहूदाह के बाशिंदों की
तबाही पर शादियाना बजाता। उनकी मुसीबत
देखकर तुझे शेख़ी नहीं मारनी चाहिए थी। 13 यह

[a] एसौ से मुराद अदोम है।

[b] याक़ूब से मुराद इसराईल है।

ठीक नहीं था कि तू उस दिन तबाहशुदा शहर में घुस आया ताकि यरूशलम की मुसीबत से लुत्फ़ उठाए और उनका बचा-खुचा माल लूट ले। 14 कितनी बुरी बात थी कि तू शहर से निकलनेवाले रास्तों पर ताक में बैठ गया ताकि वहाँ से भागनेवालों को तबाह करे और बचे हुओं को दुश्मन के हवाले करे। 15 क्योंकि रब का दिन तमाम अक़वाम के लिए क़रीब आ गया है। जो सुलूक तूने दूसरों के साथ किया वही सुलूक तेरे साथ किया जाएगा। तेरा ग़लत काम तेरे अपने ही सर पर आएगा।

अल्लाह की क़ौम नजात पाएगी

16 पहले तुम्हें मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर मेरे ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा, लेकिन अब तमाम दीगर अक़वाम उसे पीती रहेंगी। बल्कि वह उसे पी पीकर ख़ाली करेंगी, उन्हें उसके आख़िरी क़तरे भी चाटने पड़ेंगे। फिर उनका नामो-निशान नहीं रहेगा, ऐसा लगेगा कि वह कभी थीं नहीं।

17 लेकिन कोहे-सिय्यून पर नजात होगी, यरूशलम मुक़द्दस होगा।

तब याक़ूब का घराना[a] दुबारा अपनी मौरूसी ज़मीन पर क़ब्ज़ा करेगा, 18 और इसराईली क़ौम[b] भड़कती आग बनकर अदोम को भूसे की तरह भस्म करेगी। अदोम का एक शख़्स भी नहीं बचेगा। क्योंकि रब ने यह फ़रमाया है।

19 तब नजब यानी जुनूब के बाशिंदे अदोम के पहाड़ी इलाक़े पर क़ब्ज़ा करेंगे, और मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े के बाशिंदे फ़िलिस्तियों का इलाक़ा अपना लेंगे। वह इफ़राईम और सामरिया के इलाक़ों पर भी क़ब्ज़ा करेंगे। जिलियाद का इलाक़ा बिनयमीन के क़बीले की मिलकियत बनेगा। 20 इसराईल के जिलावतनों को कनानियों का मुल्क शिमाली शहर सारपत तक हासिल होगा जबकि यरूशलम के जो बाशिंदे जिलावतन होकर सिफ़राद में जा बसे वह जुनूबी इलाक़े नजब पर क़ब्ज़ा करेंगे। 21 नजात देनेवाले कोहे-सिय्यून पर आकर अदोम के पहाड़ी इलाक़े पर हुकूमत करेंगे। तब रब ही बादशाह होगा!”

[a] याक़ूब का घराना से मुराद इसराईल है।

[b] लफ़्ज़ी तरजुमा : याक़ूब और यूसुफ़ के घराने।

यूनुस

यूनुस अल्लाह से फ़रार हो जाता है

1 रब यूनुस बिन अमित्ती से हमकलाम हुआ,
2 “बड़े शहर नीनवा जाकर उस पर मेरी
अदालत का एलान कर, क्योंकि उनकी बुराई मेरे
हुज़ूर तक पहुँच गई है।”
3 यूनुस रवाना हुआ, लेकिन मशरिक़ी शहर
नीनवा के लिए नहीं बल्कि मग़रिबी शहर तरसीस
के लिए। रब के हुज़ूर से फ़रार होने के लिए वह
याफ़ा शहर पहुँच गया जहाँ एक बहरी जहाज़
तरसीस को जानेवाला था। सफ़र का किराया
अदा करके यूनुस जहाज़ में बैठ गया ताकि रब
के हुज़ूर से भाग निकले।
4 लेकिन रब ने समुंदर पर ज़बरदस्त आँधी
भेजी। तूफ़ान इतना शदीद था कि जहाज़ के टुकड़े
टुकड़े होने का ख़तरा था। 5 मल्लाह सहम गए,
और हर एक चीख़ता-चिल्लाता अपने देवता से
इल्तिजा करने लगा। जहाज़ को हलका करने के
लिए उन्होंने सामान को समुंदर में फेंक दिया।
लेकिन यूनुस जहाज़ के निचले हिस्से में लेट
गया था। अब वह गहरी नींद सो रहा था। 6 फिर
कप्तान उसके पास आया और कहने लगा, “आप
किस तरह सो सकते हैं? उठें, अपने देवता से
इल्तिजा करें! शायद वह हम पर ध्यान दे और
हम हलाक न हों।”
7 मल्लाह आपस में कहने लगे, “आओ, हम
क़ुरा डालकर मालूम करें कि कौन हमारी मुसीबत
का बाइस है।” उन्होंने क़ुरा डाला तो यूनुस का
नाम निकला। 8 तब उन्होंने उससे पूछा, “हमें
बताएँ कि यह आफ़त किसके क़ुसूर के बाइस
हम पर नाज़िल हुई है? आप क्या करते हैं, कहाँ
से आए हैं, किस मुल्क और किस क़ौम से हैं?”
9 यूनुस ने जवाब दिया, “मैं इबरानी हूँ, और रब
का परस्तार हूँ जो आसमान का ख़ुदा है। समुंदर
और ख़ुश्की दोनों उसी ने बनाए हैं।” 10 यूनुस ने
उन्हें यह भी बताया कि मैं रब के हुज़ूर से फ़रार
हो रहा हूँ। यह सब कुछ सुनकर दीगर मुसाफ़िरों
पर शदीद दहशत तारी हुई। उन्होंने कहा, “यह
आपने क्या किया है?” 11 इतने में समुंदर मज़ीद
मुतलातिम होता जा रहा था। चुनाँचे उन्होंने पूछा,
“अब हम आपके साथ क्या करें ताकि समुंदर
थम जाए और हमारा पीछा छोड़ दे?” 12 यूनुस
ने जवाब दिया, “मुझे उठाकर समुंदर में फेंक दें
तो वह थम जाएगा। क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह
बड़ा तूफ़ान मेरी ही वजह से आप पर टूट पड़ा
है।”
13 पहले मल्लाहों ने उसका मशवरा न माना
बल्कि चप्पू मार मारकर साहिल पर पहुँचने की
सिर-तोड़ कोशिश करते रहे। लेकिन बेफ़ायदा,
समुंदर पहले की निसबत कहीं ज़्यादा मुतलातिम
हो गया। 14 तब वह बुलंद आवाज़ से रब से
इल्तिजा करने लगे, “ऐ रब, ऐसा न हो कि हम
इस आदमी की ज़िंदगी के सबब से हलाक हो
जाएँ। और जब हम उसे समुंदर में फेंकेंगे तो
हमें बेगुनाह आदमी की जान लेने के ज़िम्मेदार

न ठहरा। क्योंकि जो कुछ हो रहा है वह तेरी ही
मरज़ी से हो रहा है।” 15 यह कहकर उन्होंने यूनुस
को उठाकर समुंदर में फेंक दिया। पानी में गिरते
ही समुंदर ठाठें मारने से बाज़ आकर थम गया।
16 यह देखकर मुसाफ़िरों पर सख़्त दहशत छा
गई, और उन्होंने रब को ज़बह की क़ुरबानी पेश
की और मन्नतें मानीं।

17 लेकिन रब ने एक बड़ी मछली को यूनुस के
पास भेजा जिसने उसे निगल लिया। यूनुस तीन
दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा।

यूनुस की दुआ

2 मछली के पेट में यूनुस ने रब अपने ख़ुदा
से ज़ैल की दुआ की,

2 “मैंने बड़ी मुसीबत में आकर रब से इल्तिजा
की, और उसने मुझे जवाब दिया। मैंने पाताल की
गहराइयों से चीख़कर फ़रियाद की तो तूने मेरी
सुनी।

3 तूने मुझे गहरे पानी बल्कि समुंदर के बीच
में ही फेंक दिया। पानी के ज़ोरदार बहाव ने मुझे
घेर लिया, तेरी तमाम लहरें और मौजें मुझ पर से
गुज़र गईं।

4 तब मैं बोला, ‘मुझे तेरे हुज़ूर से ख़ारिज कर
दिया गया है, लेकिन मैं तेरे मुक़द्दस घर की तरफ़
तकता रहूँगा।’

5 पानी मेरे गले तक पहुँच गया, समुंदर की
गहराइयों ने मुझे छुपा लिया। मेरे सर से समुंदरी
पौदे लिपट गए।

6 पानी में उतरते उतरते मैं पहाड़ों की बुनियादों
तक पहुँच गया। मैं ज़मीन में धँसकर एक ऐसे
मुल्क में आ गया जिसके दरवाज़े हमेशा के लिए
मेरे पीछे बंद हो गए। लेकिन ऐ रब, मेरे ख़ुदा, तू
ही मेरी जान को गढ़े से निकाल लाया!

7 जब मेरी जान निकलने लगी तो तू, ऐ रब मुझे
याद आया, और मेरी दुआ तेरे मुक़द्दस घर में तेरे
हुज़ूर पहुँची।

8 जो बुतों की पूजा करते हैं उन्होंने अल्लाह से
वफ़ादार रहने का वादा तोड़ दिया है।

9 लेकिन मैं शुक्रगुज़ारी के गीत गाते हुए तुझे
क़ुरबानी पेश करूँगा। जो मन्नत मैंने मानी उसे
पूरा करूँगा। रब ही नजात देता है।”

10 तब रब ने मछली को हुक्म दिया कि वह
यूनुस को ख़ुश्की पर उगल दे।

यूनुस नीनवा में

3 रब एक बार फिर यूनुस से हमकलाम हुआ,
2 “बड़े शहर नीनवा जाकर उसे वह पैग़ाम
सुना दे जो मैं तुझे दूँगा।”

3 इस मरतबा यूनुस रब की सुनकर नीनवा के
लिए रवाना हुआ। रब के नज़दीक नीनवा अहम
शहर था। उसमें से गुज़रने के लिए तीन दिन
दरकार थे। 4 पहले दिन यूनुस शहर में दाख़िल
हुआ और चलते चलते लोगों को पैग़ाम सुनाने
लगा, “ऐन 40 दिन के बाद नीनवा तबाह हो
जाएगा।”

5 यह सुनकर नीनवा के बाशिंदे अल्लाह पर
ईमान लाए। उन्होंने रोज़े का एलान किया, और
छोटे से लेकर बड़े तक सब टाट ओढ़कर मातम
करने लगे।

6 जब यूनुस का पैग़ाम नीनवा के बादशाह
तक पहुँचा तो उसने तख़्त पर से उतरकर अपने
शाही कपड़ों को उतार दिया और टाट ओढ़कर
ख़ाक में बैठ गया। 7 उसने शहर में एलान किया,
“बादशाह और उसके शुरफ़ा का फ़रमान सुनो!
किसी को भी खाने या पीने की इजाज़त नहीं।
गाय-बैल और भेड़-बकरियों समेत तमाम जानवर
भी इसमें शामिल हैं। न उन्हें चरने दो, न पानी
पीने दो। 8 लाज़िम है कि सब लोग जानवरों
समेत टाट ओढ़ लें। हर एक पूरे ज़ोर से अल्लाह
से इल्तिजा करे, हर एक अपनी बुरी राहों और
अपने ज़ुल्मो-तशद्दुद से बाज़ आए। 9 क्या मालूम,
शायद अल्लाह पछताए। शायद उसका शदीद
ग़ज़ब टल जाए और हम हलाक न हों।”

10 जब अल्लाह ने उनका यह रवैया देखा, कि
वह वाक़ई अपनी बुरी राहों से बाज़ आए तो वह

पछताया और उन पर वह आफ़त न लाया जिसका
एलान उसने किया था।

यूनुस अल्लाह की मेहरबानी देख कर नाराज़ हो जाता है

4 यह बात यूनुस को निहायत बुरी लगी, और
वह ग़ुस्से हुआ। 2 उसने रब से दुआ की,
“ऐ रब, क्या यह वही बात नहीं जो मैंने उस वक़्त
की जब अभी अपने वतन में था? इसी लिए मैं
इतनी तेज़ी से भागकर तरसीस के लिए रवाना
हुआ था। मैं जानता था कि तू मेहरबान और रहीम
ख़ुदा है। तू तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है और
जल्द ही सज़ा देने से पछताता है। 3 ऐ रब, अब
मुझे जान से मार दे! जीने से बेहतर यही है कि मैं
कूच कर जाऊँ।”
4 लेकिन रब ने जवाब दिया, “क्या तू ग़ुस्से
होने में हक़-बजानिब है?”
5 यूनुस शहर से निकलकर उसके मशरिक़ में
रुक गया। वहाँ वह अपने लिए झोंपड़ी बनाकर
उसके साये में बैठ गया। क्योंकि वह देखना
चाहता था कि शहर के साथ क्या कुछ हो जाएगा।
6 तब रब ख़ुदा ने एक बेल को फूटने दिया जो
बढ़ते बढ़ते यूनुस के ऊपर फैल गई ताकि साया
देकर उस की नाराज़ी दूर करे। यह देखकर यूनुस
बहुत ख़ुश हुआ। 7 लेकिन अगले दिन जब पौ
फटने लगी तो अल्लाह ने एक कीड़ा भेजा जिसने
बेल पर हमला किया। बेल जल्द ही मुरझा गई।
8 जब सूरज तुलू हुआ तो अल्लाह ने मशरिक़
से झुलसती लू भेजी। धूप इतनी शदीद थी कि
यूनुस ग़श खाने लगा। आख़िरकार वह मरना ही
चाहता था। वह बोला, “जीने से बेहतर यही है कि
मैं कूच कर जाऊँ।”
9 तब अल्लाह ने उससे पूछा, “क्या तू बेल के
सबब से ग़ुस्से होने में हक़-बजानिब है?” यूनुस
ने जवाब दिया, “जी हाँ, मैं मरने तक ग़ुस्से हूँ,
और इसमें मैं हक़-बजानिब भी हूँ।”
10 रब ने जवाब दिया, “तू इस बेल पर ग़म
खाता है, हालाँकि तूने उसके फलने-फूलने के
लिए एक उँगली भी नहीं हिलाई। यह बेल
एक रात में पैदा हुई और अगली रात ख़त्म
हुई 11 जबकि नीनवा बहुत बड़ा शहर है, उसमें
1,20,000 अफ़राद और मुतअद्दिद जानवर
बसते हैं। और यह लोग इतने जाहिल हैं कि
अपने दाएँ और बाएँ हाथ में इम्तियाज़ नहीं कर
पाते। क्या मुझे इस बड़े शहर पर ग़म नहीं खाना
चाहिए?”

मीकाह

सामरिया की तबाही

1 ज़ैल में रब का वह कलाम दर्ज है जो
मीकाह मोरश्ती पर यहूदाह के बादशाहों
यूताम, आख़ज़ और हिज़क़ियाह के दौरे-हुकूमत
में नाज़िल हुआ। उसने सामरिया और यरूशलम
के बारे में यह बातें रोया में देखीं।
2 ऐ तमाम अक़वाम, सुनो! ऐ ज़मीन और
जो कुछ उस पर है, ध्यान दो! रब क़ादिरे-
मुतलक़ तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दे, क़ादिरे-
मुतलक़ अपने मुक़द्दस घर की तरफ़ से गवाही
दे। 3 क्योंकि देखो, रब अपनी सुकूनतगाह से
निकल रहा है ताकि उतरकर ज़मीन की बुलंदियों
पर चले। 4 उसके पाँवों तले पहाड़ पिघल जाएंगे
और वादियाँ फट जाएँगी, वह आग के सामने
पिघलनेवाले मोम या ढलान पर उंडेले गए पानी
की मानिंद होंगे।
5 यह सब कुछ याक़ूब के जुर्म, इसराईली क़ौम
के गुनाहों के सबब से हो रहा है। कौन याक़ूब के
जुर्म का ज़िम्मेदार है? सामरिया! किसने यहूदाह
को बुलंद जगहों पर बुतपरस्ती करने की तहरीक
दी? यरूशलम ने!
6 इसलिए रब फ़रमाता है, "मैं सामरिया को
खुले मैदान में मलबे का ढेर बना दूँगा, इतनी
ख़ाली जगह कि लोग वहाँ अंगूर के बाग़ लगाएँगे।
मैं उसके पत्थर वादी में फेंक दूँगा, उसे इतने
धड़ाम से गिरा दूँगा कि उस की बुनियादें ही
नज़र आएँगी। 7 उसके तमाम बुत टुकड़े टुकड़े
हो जाएंगे, उस की इसमतफ़रोशी का पूरा अज्र
नज़रे-आतिश हो जाएगा। मैं उसके देवताओं के
तमाम मुजस्समों को तबाह कर दूँगा। क्योंकि
सामरिया ने यह तमाम चीज़ें अपनी इसमतफ़रोशी
से हासिल की हैं, और अब यह सब उससे छीन
ली जाएँगी और दीगर इसमतफ़रोशों को मुआवज़े
के तौर पर दी जाएँगी।"

अपनी क़ौम पर मातम

8 इसलिए मैं आहो-ज़ारी करूँगा, नंगे पाँव और
बरहना फिरूँगा, गीदड़ों की तरह वावैला करूँगा,
उक़ाबी उल्लू की तरह आहें भरूँगा। 9 क्योंकि
सामरिया का ज़ख़म लाइलाज है, और वह मुल्के-
यहूदाह में भी फैल गया है, वह मेरी क़ौम के
दरवाज़े यानी यरूशलम तक पहुँच गया है।
10 फ़िलिस्ती शहर जात में यह बात न बताओ,
उन्हें अपने आँसू न दिखाओ। बैत-लाफ़रा[a] में
ख़ाक में लोट-पोट हो जाओ। 11 ऐ सफ़ीर[b] के
रहनेवालो, बरहना और शर्मसार होकर यहाँ से
गुज़र जाओ। ज़ानान[c] के बाशिंदे निकलेंगे नहीं।
बैत-एज़ल[d] मातम करेगा जब तुमसे हर सहारा

[a]बैत-लाफ़रा = ख़ाक का घर।
[b]सफ़ीर = ख़ूबसूरत।
[c]ज़ानान = निकलनेवाला।
[d]बैत-एज़ल = साथवाला यानी सहारा देनेवाला घर।

छीन लिया जाएगा। 12 मारोत[a] के बसनेवाले
अपने माल के लिए पेचो-ताब खा रहे हैं, क्योंकि
रब की तरफ़ से आफ़त नाज़िल होकर यरूशलम
के दरवाज़े तक पहुँच गई है।

13 ऐ लकीस[b] के बाशिंदो, घोड़ों को रथ में
जोतकर भाग जाओ। क्योंकि इब्तिदा में तुम
ही सिय्यून बेटी के लिए गुनाह का बाइस बन
गए, तुम्हीं में वह जरायम मौजूद थे जो इसराईल
से सरज़द हो रहे हैं। 14 इसलिए तुम्हें तोहफ़े
देकर मोरशत-जात[c] को रुख़सत करनी पड़ेगी।
अकज़ीब[d] के घर इसराईल के बादशाहों के लिए
फ़रेबदेह साबित होंगे।

15 ऐ मरेसा[e] के लोगो, मैं होने दूँगा कि एक
क़ब्ज़ा करनेवाला तुम पर हमला करेगा। तब
इसराईल का जलाल अदुल्लाम तक पहुँचेगा।
16 ऐ सिय्यून बेटी, अपने बाल कटवाकर गिद्ध
जैसी गंजी हो जा। अपने लाडले बच्चों पर मातम
कर, क्योंकि वह क़ैदी बनकर तुझसे दूर हो
जाएंगे।

क़ौम पर ज़ुल्म करनेवालों पर अफ़सोस

2 उन पर अफ़सोस जो दूसरों को नुक़सान
पहुँचाने के मनसूबे बाँधते और अपने
बिस्तर पर ही साज़िशें करते हैं। पौ फटते ही वह
उठकर उन्हें पूरा करते हैं, क्योंकि वह यह करने
का इख़्तियार रखते हैं। 2 जब वह किसी खेत या
मकान के लालच में आ जाते हैं तो उसे छीन
लेते हैं। वह लोगों पर ज़ुल्म करके उनके घर और
मौरूसी मिलकियत उनसे लूट लेते हैं।

3 चुनाँचे रब फ़रमाता है, "मैं इस क़ौम पर
आफ़त का मनसूबा बाँध रहा हूँ, ऐसा फंदा जिसमें
से तुम अपनी गरदनों को निकाल नहीं सकोगे।
तब तुम सर उठाकर नहीं फिरोगे, क्योंकि वक़्त
बुरा ही होगा। 4 उस दिन लोग अपने गीतों में
तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएँगे, वह मातम का तलख़ गीत
गाकर तुम्हें लान-तान करेंगे,

'हाय, हम सरासर तबाह हो गए हैं! मेरी क़ौम
की मौरूसी ज़मीन दूसरों के हाथ में आ गई है।
वह किस तरह मुझसे छीन ली गई है! हमारे काम
के जवाब में हमारे खेत दूसरों में तक़सीम हो रहे
हैं'।"

5 चुनाँचे आइंदा तुममें से कोई नहीं होगा जो
रब की जमात में क़ुरा डालकर मौरूसी ज़मीन
तक़सीम करे।

6 वह नबुव्वत करते हैं, "नबुव्वत मत करो!
नबुव्वत करते वक़्त इनसान को इस क़िस्म की
बातें नहीं सुनानी चाहिएँ। यह सहीह नहीं कि
हमारी रुसवाई हो जाएगी।" 7 ऐ याक़ूब के घराने,
क्या तुझे इस तरह की बातें करनी चाहिएँ, "क्या
रब नाराज़ है? क्या वह ऐसा काम करेगा?"

रब फ़रमाता है, "यह बात दुरुस्त है कि मैं
उससे मेहरबान बातें करता हूँ जो सहीह राह पर
चले। 8 लेकिन काफ़ी देर से मेरी क़ौम दुश्मन
बनकर उठ खड़ी हुई है। जिन लोगों का जंग
करने से ताल्लुक़ ही नहीं उनसे तुम चादर तक
सब कुछ छीन लेते हो जब वह अपने आपको
महफ़ूज़ समझकर तुम्हारे पास से गुज़रते हैं।
9 मेरी क़ौम की औरतों को तुम उनके ख़ुशनुमा
घरों से भगाकर उनके बच्चों को हमेशा के लिए
मेरी शानदार बरकतों से महरूम कर देते हो।
10 अब उठकर चले जाओ! आइंदा तुम्हें यहाँ
सुकून हासिल नहीं होगा। क्योंकि नापाकी के
सबब से यह मक़ाम अज़ियतनाक तरीक़े से
तबाह हो जाएगा। 11 हक़ीक़त में यह क़ौम ऐसा

[a] मारोत = तलख़ी।
[b] लकीस के क़िलाबंद शहर में जंगी रथ रखे जाते थे।
[c] 'मोरशत' तोहफ़े और जहेज़ के लिए मुस्तामल इबरानी लफ़्ज़ से मिलता-जुलता है।
[d] अकज़ीब = फ़रेब है।
[e] 'मरेसा' फ़ातेह और क़ाबिज़ के लिए मुस्तामल इबरानी लफ़्ज़ से मिलता-जुलता है।

फ़रेबदेह नबी चाहती है जो ख़ाली हाथ आकर[a]
उससे कहे, 'तुम्हें कसरत की मै और शराब
हासिल होगी!'

अल्लाह क़ौम को वापस लाएगा

12 ऐ याक़ूब की औलाद, एक दिन मैं तुम
सबको यक़ीनन जमा करूँगा। तब मैं इसराईल
का बचा हुआ हिस्सा यों इकट्ठा करूँगा जिस तरह
भेड़-बकरियों को बाड़े में या रेवड़ को चरागाह
में। मुल्क में चारों तरफ़ हुजूमों का शोर मचेगा।
13 एक राहनुमा उनके आगे आगे चलेगा जो उनके
लिए रास्ता खोलेगा। तब वह शहर के दरवाज़े
को तोड़कर उसमें से निकलेंगे। उनका बादशाह
उनके आगे आगे चलेगा, रब ख़ुद उनकी राहनुमाई
करेगा।"

राहनुमाओं और झूटे नबियों पर इलाही फ़ैसला

3 मैं बोला, "ऐ याक़ूब के राहनुमाओ, ऐ
इसराईल के बुज़ुर्गो, सुनो! तुम्हें इनसाफ़
को जानना चाहिए। 2 लेकिन जो अच्छा है उससे
तुम नफ़रत करते और जो ग़लत है उसे प्यार करते
हो। तुम मेरी क़ौम की खाल उतारकर उसका
गोश्त हड्डियों से जुदा कर लेते हो। 3 क्योंकि
तुम मेरी क़ौम का गोश्त खा लेते हो। उनकी
खाल उतारकर तुम उनकी हड्डियों और गोश्त को
टुकड़े टुकड़े करके देग में फेंक देते हो।" 4 तब
वह चिल्लाकर रब से इल्तिजा करेंगे, लेकिन वह
उनकी नहीं सुनेगा। उनके ग़लत कामों के सबब
से वह अपना चेहरा उनसे छुपा लेगा।

5 रब फ़रमाता है, "ऐ नबियो, तुम मेरी क़ौम
को भटका रहे हो। अगर तुम्हें कुछ खिलाया जाए
तो तुम एलान करते हो कि अमनो-अमान होगा।
लेकिन जो तुम्हें कुछ न खिलाए उस पर तुम
जिहाद का फ़तवा देते हो। 6 चुनाँचे तुम पर ऐसी
रात छा जाएगी जिसमें तुम रोया नहीं देखोगे,
ऐसी तारीकी जिसमें तुम्हें मुस्तक़बिल के बारे
में कोई भी बात नहीं मिलेगी। नबियों पर सूरज
डूब जाएगा, उनके चारों तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा
छा जाएगा। 7 तब रोया देखनेवाले शर्मसार और
क़िस्मत का हाल बतानेवाले शरमिंदा हो जाएंगे।
शर्म के मारे वह अपने मुँह को छुपा लेंगे,[b] क्योंकि
अल्लाह से कोई भी जवाब नहीं मिलेगा।"

8 लेकिन मैं ख़ुद क़ुव्वत से, रब के रूह से और
इनसाफ़ और ताक़त से भरा हुआ हूँ ताकि याक़ूब
की औलाद को उसके जरायम और इसराईल को
उसके गुनाह सुना सकूँ।

9 ऐ याक़ूब के राहनुमाओ, ऐ इसराईल के
बुज़ुर्गो, सुनो! तुम इनसाफ़ से घिन खाकर हर
सीधी बात को टेढ़ी बना लेते हो। 10 तुम सिय्यून
को ख़ूनरेज़ी से और यरूशलम को नाइनसाफ़ी से
तामीर कर रहे हो। 11 यरूशलम के बुज़ुर्ग अदालत
करते वक़्त रिश्वत लेते हैं। उसके इमाम तालीम
देते हैं लेकिन सिर्फ़ कुछ मिलने के लिए। उसके
नबी पेशगोई सुना देते हैं लेकिन सिर्फ़ पैसों के
मुआवज़े में। ताहम यह लोग रब पर इनहिसार
करके कहते हैं, "हम पर आफ़त आ ही नहीं
सकती, क्योंकि रब हमारे दरमियान है।"

12 तुम्हारी वजह से सिय्यून पर हल चलाया
जाएगा और यरूशलम मलबे का ढेर बन जाएगा।
जिस पहाड़ पर रब का घर है उस पर जंगल छा
जाएगा।

यरूशलम एक नई बादशाही का मरकज़ बन जाएगा

4 आख़िरी ऐयाम में रब के घर का पहाड़
मज़बूती से क़ायम होगा। सबसे बड़ा यह
पहाड़ दीगर तमाम बुलंदियों से कहीं ज़्यादा
सरफ़राज़ होगा। तब उम्मतें जौक़-दर-जौक़
उसके पास पहुँचेंगी, 2 और बेशुमार क़ौमें आकर
कहेंगी, "आओ, हम रब के पहाड़ पर चढ़कर
याक़ूब के ख़ुदा के घर के पास जाएँ ताकि वह

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : जो हवा यानी कुछ नहीं अपने साथ लेकर आए।

[b] मुँह का लफ़्ज़ी तरजुमा 'मूँछें' है।

हमें अपनी मरज़ी की तालीम दे और हम उस की राहों पर चलें।”

क्योंकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत निकलेगी, और यरूशलम से उसका कलाम सादिर होगा। 3 रब बैनुल-अक़वामी झगड़ों को निपटाएगा और दूर तक की ज़ोरावर क़ौमों का इनसाफ़ करेगा। तब वह अपनी तलवारों को कूटकर फाले बनाएँगी और अपने नेज़ों को काँट-छाँट के औज़ार में तबदील करेंगी। अब से न एक क़ौम दूसरी पर हमला करेगी, न लोग जंग करने की तरबियत हासिल करेंगे। 4 हर एक अपनी अंगूर की बेल और अपने अंजीर के दरख़्त के साये में बैठकर आराम करेगा। कोई नहीं रहेगा जो उन्हें अचानक दहशतज़दा करे। क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज ने यह कुछ फ़रमाया है।

5 हर दूसरी क़ौम अपने देवता का नाम लेकर फिरती है, लेकिन हम हमेशा तक रब अपने ख़ुदा का नाम लेकर फिरेंगे।

6 रब फ़रमाता है, “उस दिन मैं लँगड़ों को जमा करूँगा और उन्हें इकट्ठा करूँगा जिन्हें मैंने मुंतशिर करके दुख पहुँचाया था। 7 मैं लँगड़ों को क़ौम का बचा हुआ हिस्सा बना दूँगा और जो दूर तक भटक गए थे उन्हें ताक़तवर उम्मत में तबदील करूँगा। तब रब उनका बादशाह बनकर अबद तक सिय्यून पहाड़ पर उन पर हुकूमत करेगा। 8 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, ऐ रेवड़ के बुर्ज, ऐ सिय्यून बेटी के पहाड़, तुझे पहले की-सी सलतनत हासिल होगी। यरूशलम बेटी को दुबारा बादशाहत मिलेगी।”

यरूशलम अभी तक ख़तरे में है

9 ऐ यरूशलम बेटी, इस वक़्त तू इतने ज़ोर से क्यों चीख़ रही है? क्या तेरा कोई बादशाह नहीं? क्या तेरे मुशीर सब ख़त्म हो गए हैं कि तू दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खा रही है?

10 ऐ सिय्यून बेटी, जन्म देनेवाली औरत की तरह तड़पती और चीख़ती जा! क्योंकि अब तुझे शहर से निकलकर खुले मैदान में रहना पड़ेगा, आख़िर में तू बाबल तक पहुँचेगी। लेकिन वहाँ रब तुझे बचाएगा, वहाँ वह एवज़ाना देकर तुझे दुश्मन के हाथ से छुड़ाएगा।

11 इस वक़्त तो मुतअद्दिद क़ौमें तेरे ख़िलाफ़ जमा हो गई हैं। आपस में वह कह रही हैं, “आओ, यरूशलम की बेहुरमती हो जाए, हम सिय्यून की हालत देखकर लुत्फ़अंदोज़ हो जाएँ।” 12 लेकिन वह रब के ख़यालात को नहीं जानते, उसका मनसूबा नहीं समझते। उन्हें मालूम नहीं कि वह उन्हें गंदुम के पूलों की तरह इकट्ठा कर रहा है ताकि उन्हें गाह ले।

13 “ऐ सिय्यून बेटी, उठकर गाह ले! क्योंकि मैं तुझे लोहे के सींगों और पीतल के खुरों से नवाज़ूँगा ताकि तू बहुत-सी क़ौमों को चूर चूर कर सके। तब मैं उनका लूटा हुआ माल रब के लिए मख़सूस करूँगा, उनकी दौलत पूरी दुनिया के मालिक के हवाले करूँगा।”

नजातदहिंदा की उम्मीद

5 ऐ शहर जिस पर हमला हो रहा है, अब अपने आपको छुरी से ज़ख़मी कर, क्योंकि हमारा मुहासरा हो रहा है। दुश्मन लाठी से इसराईल के हुक्मरान के गाल पर मारेगा।

2 लेकिन तू, ऐ बैत-लहम इफ़राता, जो यहूदाह के दीगर ख़ानदानों की निसबत छोटा है, तुझमें से वह निकलेगा जो इसराईल का हुक्मरान होगा और जो क़दीम ज़माने बल्कि अज़ल से सादिर हुआ है। 3 लेकिन जब तक हामिला औरत उसे जन्म न दे, उस वक़्त तक रब अपनी क़ौम को दुश्मन के हवाले छोड़ेगा। लेकिन फिर उसके भाइयों का बचा हुआ हिस्सा इसराईलियों के पास वापस आएगा।

4 यह हुक्मरान खड़े होकर रब की क़ुव्वत के साथ अपने रेवड़ की गल्लाबानी करेगा। उसे रब अपने ख़ुदा के नाम का अज़ीम इख़्तियार हासिल होगा। तब क़ौम सलामती से बसेगी, क्योंकि उस की अज़मत दुनिया की इंतहा तक फैलेगी। 5 वही सलामती का मंबा होगा। जब असूर की फ़ौज हमारे मुल्क में दाख़िल होकर हमारे महलों में घुस

आए तो हम उसके ख़िलाफ़ सात चरवाहे और
आठ रईस खड़े करेंगे 6 जो तलवार से मुल्के-असूर
की गल्लाबानी करेंगे, हाँ तलवार को मियान से
खींचकर नमरूद के मुल्क पर हुकूमत करेंगे। यों
हुक्मरान हमें असूर से बचाएगा जब यह हमारे
मुल्क और हमारी सरहद में घुस आएगा।

7 तब याक़ूब के जितने लोग बचकर मुतअद्दिद
अक़वाम के बीच में रहेंगे वह रब की भेजी हुई
ओस या हरियाली पर पड़नेवाली बारिश की
मानिंद होंगे यानी ऐसी चीज़ों की मानिंद जो न
किसी इनसान के इंतज़ार में रहती, न किसी
इनसान के हुक्म पर पड़ती हैं। 8 याक़ूब के जितने
लोग बचकर मुतअद्दिद अक़वाम के बीच में रहेंगे
वह जंगली जानवरों के दरमियान शेरबबर और
भेड़-बकरियों के बीच में जवान शेर की मानिंद
होंगे यानी ऐसे जानवर की मानिंद जो जहाँ से भी
गुज़रे जानवरों को रौंदकर फाड़ लेता है। उसके
हाथ से कोई बचा नहीं सकता। 9 तेरा हाथ तेरे
तमाम मुख़ालिफ़ों पर फ़तह पाएगा, तेरे तमाम
दुश्मन नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे।

रब इसराईल के बुतों को ख़त्म करेगा

10 रब फ़रमाता है, "उस दिन मैं तेरे घोड़ों को
नेस्त और तेरे रथों को नाबूद करूँगा। 11 मैं तेरे
मुल्क के शहरों को ख़ाक में मिलाकर तेरे तमाम
क़िलों को गिरा दूँगा। 12 तेरी जादूगरी को मैं मिटा
डालूँगा, क़िस्मत का हाल बतानेवाले तेरे बीच में
नहीं रहेंगे। 13 तेरे बुत और तेरे मख़सूस सतूनों
को मैं यों तबाह करूँगा कि तू आइंदा अपने हाथ
की बनाई हुई चीज़ों की पूजा नहीं करेगा। 14 तेरे
असीरत देवी के खंबे मैं उखाड़कर तेरे शहरों को
मिसमार करूँगा। 15 उस वक़्त मैं बड़े ग़ुस्से से उन
क़ौमों से इंतक़ाम लूँगा जिन्होंने मेरी नहीं सुनी।"

अल्लाह इसराईल पर इलज़ाम लगाता है

6 ऐ इसराईल, रब का फ़रमान सुन,
"अदालत में खड़े होकर अपना मामला
बयान कर! पहाड़ और पहाड़ियाँ तेरे गवाह हों,
उन्हें अपनी बात सुना दे।"

2 ऐ पहाड़ो, अब रब का अपनी क़ौम पर
इलज़ाम सुनो! ऐ दुनिया की क़दीम बुनियादो,
तवज्जुह दो! क्योंकि रब अदालत में अपनी क़ौम
पर इलज़ाम लगा रहा है, वह इसराईल से मुक़दमा
उठा रहा है।

3 वह सवाल करता है, "ऐ मेरी क़ौम, मैंने
तेरे साथ क्या ग़लत सुलूक किया? मैंने क्या
किया कि तू इतनी थक गई है? बता तो सही!
4 हक़ीक़त तो यह है कि मैं तुझे मुल्के-मिसर से
निकाल लाया, मैंने फ़िद्या देकर तुझे ग़ुलामी से
रिहा कर दिया। साथ साथ मैंने मूसा, हारून और
मरियम को भेजा ताकि तेरे आगे चलकर तेरी
राहनुमाई करें। 5 ऐ मेरी क़ौम, वह वक़्त याद कर
जब मोआब के बादशाह बलक़ ने बिलाम बिन
बओर को बुलाया ताकि तुझ पर लानत भेजे।
लानत की बजाए उसने तुझे बरकत दी! वह
सफ़र भी याद कर जब तू शित्तीम से रवाना होकर
जिलजाल पहुँची। अगर तू इन तमाम बातों पर
ग़ौर करे तो जान लेगी कि रब ने कितनी वफ़ादारी
और इनसाफ़ से तेरे साथ सुलूक किया है।"

6 जब हम रब के हुज़ूर आते हैं ताकि अल्लाह
तआला को सिजदा करें तो हमें अपने साथ क्या
लाना चाहिए? क्या हमें यकसाला बछड़े उसके
हुज़ूर लाकर भस्म करने चाहिएँ? 7 क्या रब
हज़ारों मेंढों या तेल की बेशुमार नदियों से ख़ुश
हो जाएगा? क्या मुझे अपने पहलौठे को अपने
जरायम के एवज़ चढ़ाना चाहिए, अपने जिस्म के
फल को अपने गुनाहों को मिटाने के लिए पेश
करना चाहिए? हरगिज़ नहीं!

8 ऐ इनसान, उसने तुझे साफ़ बताया है कि
क्या कुछ अच्छा है। रब तुझसे चाहता है कि तू
इनसाफ़ क़ायम रखे, मेहरबानी करने में लगा रहे
और फ़रोतनी से अपने ख़ुदा के हुज़ूर चलता रहे।

यरूशलम को भी सामरिया की सी सज़ा मिलेगी

9 सुनो! रब यरूशलम को आवाज़ दे रहा है।
तवज्जुह दो, क्योंकि दानिशमंद उसके नाम का
ख़ौफ़ मानता है। ऐ क़बीले, ध्यान दो कि किसने
यह मुक़र्रर किया है,

10 “अब तक नाजायज़ नफ़ा की दौलत बेदीन
आदमी के घर में जमा हो रही है, अब तक लोग
गंदुम बेचते वक़्त पूरा तोल नहीं तोलते, उनकी
ग़लत पैमाइश पर लानत! 11 क्या मैं उस आदमी
को बरी क़रार दूँ जो ग़लत तराज़ू इस्तेमाल करता
है और जिसकी थैली में हलके बाट पड़े रहते हैं?
हरगिज़ नहीं! 12 यरूशलम के अमीर बड़े ज़ालिम
हैं, लेकिन बाक़ी बाशिंदे भी झूट बोलते हैं, उनकी
हर बात धोका ही धोका है!

13 इसलिए मैं तुझे मार मारकर ज़ख़मी करूँगा।
मैं तुझे तेरे गुनाहों के बदले में तबाह करूँगा। 14 तू
खाना खाएगा लेकिन सेर नहीं होगा बल्कि पेट
ख़ाली रहेगा। तू माल महफ़ूज़ रखने की कोशिश
करेगा, लेकिन कुछ नहीं बचेगा। क्योंकि जो
कुछ तू बचाने की कोशिश करेगा उसे मैं तलवार
के हवाले करूँगा। 15 तू बीज बोएगा लेकिन
फ़सल नहीं काटेगा, ज़ैतून का तेल निकालेगा
लेकिन उसे इस्तेमाल नहीं करेगा, अंगूर का
रस निकालेगा लेकिन उसे नहीं पिएगा। 16 तू
इसराईल के बादशाहों उमरी और अख़ियब के
नमूने पर चल पड़ा है, आज तक उन्हीं के मनसूबों
की पैरवी करता आया है। इसलिए मैं तुझे तबाही
के हवाले कर दूँगा, तेरे लोगों को मज़ाक़ का
निशाना बनाऊँगा। तुझे दीगर अक़वाम की लान-
तान बरदाश्त करनी पड़ेगी।”

अपनी क़ौम पर अफ़सोस

7 हाय, मुझ पर अफ़सोस! मैं उस शख़्स
की मानिंद हूँ जो फ़सल के जमा होने पर
अंगूर के बाग़ में से गुज़र जाता है ताकि बचा हुआ
थोड़ा-बहुत फल मिल जाए, लेकिन एक गुच्छा
तक बाक़ी नहीं। मैं उस आदमी की मानिंद हूँ जो
अंजीर का पहला फल मिलने की उम्मीद रखता
है लेकिन एक भी नहीं मिलता। 2 मुल्क में से
दियानतदार मिट गए हैं, एक भी ईमानदार नहीं
रहा। सब ताक में बैठे हैं ताकि एक दूसरे को क़त्ल
करें, हर एक अपना जाल बिछाकर अपने भाई को
पकड़ने की कोशिश करता है। 3 दोनों हाथ ग़लत
काम करने में एक जैसे माहिर हैं। हुक्मरान और
क़ाज़ी रिश्वत खाते, बड़े लोग मुतलव्विनमिज़ाजी
से कभी यह, कभी वह तलब करते हैं। सब
मिलकर साज़िशें करने में मसरूफ़ रहते हैं। 4 उनमें
से सबसे शरीफ़ शख़्स ख़ारदार झाड़ी की मानिंद
है, सबसे ईमानदार आदमी काँटेदार बाड़ से अच्छा
नहीं।

लेकिन वह दिन आनेवाला है जिसका एलान
तुम्हारे पहरेदारों ने किया है। तब अल्लाह तुझसे
निपट लेगा, सब कुछ उलट-पलट हो जाएगा।

5 किसी पर भी भरोसा मत रखना, न अपने
पड़ोसी पर, न अपने दोस्त पर। अपनी बीवी से
भी बात करने से मुहतात रहो। 6 क्योंकि बेटा
अपने बाप की हैसियत नहीं मानता, बेटी अपनी
माँ के ख़िलाफ़ खड़ी हो जाती और बहू अपनी
सास की मुख़ालफ़त करती है। तुम्हारे अपने ही
घरवाले तुम्हारे दुश्मन हैं।

7 लेकिन मैं ख़ुद रब की राह देखूँगा, अपनी
नजात के ख़ुदा के इंतज़ार में रहूँगा। क्योंकि मेरा
ख़ुदा मेरी सुनेगा।

रब हमें रिहा करेगा

8 ऐ मेरे दुश्मन, मुझे देखकर शादियाना मत
बजा! गो मैं गिर गया हूँ ताहम दुबारा खड़ा हो
जाऊँगा, गो अंधेरे में बैठा हूँ ताहम रब मेरी रौशनी
है। 9 मैंने रब का ही गुनाह किया है, इसलिए
मुझे उसका ग़ज़ब भुगतना पड़ेगा। क्योंकि जब
तक वह मेरे हक़ में मुक़दमा लड़कर मेरा इनसाफ़
न करे उस वक़्त तक मैं उसका क़हर बरदाश्त
करूँगा। तब वह मुझे तारीकी से निकालकर
रौशनी में लाएगा, और मैं अपनी आँखों से उसके
इनसाफ़ और वफ़ादारी का मुशाहदा करूँगा।

10 मेरा दुश्मन यह देखकर सरासर शर-
मिंदा हो जाएगा, हालाँकि इस वक़्त वह कह रहा
है, “रब तेरा ख़ुदा कहाँ है?” मेरी अपनी आँखें
उस की शरमिंदगी देखेंगी, क्योंकि उस वक़्त उसे
गली में कचरे की तरह पाँवों तले रौंदा जाएगा।

11 ऐ इसराईल, वह दिन आनेवाला है जब
तेरी दीवारें नए सिरे से तामीर हो जाएँगी।
उस दिन तेरी सरहद्दें वसी हो जाएँगी। 12 लोग
चारों तरफ़ से तेरे पास आएँगे। वह असूर से,
मिसर के शहरों से, दरियाए-फ़ुरात के इलाक़े से
बल्कि दूर-दराज़ साहिली और पहाड़ी इलाक़ों से
भी आएँगे। 13 ज़मीन अपने बाशिंदों के बाइस
वीरानो-सुनसान हो जाएगी, आख़िरकार उनकी
हरकतों का कड़वा फल निकल आएगा।

14 ऐ रब, अपनी लाठी से अपनी क़ौम की
गल्लाबानी कर! क्योंकि तेरी मीरास का यह
रेवड़ इस वक़्त जंगल में तनहा रहता है, हालाँकि
गिर्दो-नवाह की ज़मीन ज़रख़ेज़ है। क़दीम ज़माने
की तरह उन्हें बसन और जिलियाद की शादाब
चरागाहों में चरने दे! 15 रब फ़रमाता है, “मिसर
से निकलते वक़्त की तरह मैं तुझे मोजिज़ात
दिखा दूँगा।” 16 यह देखकर अक़वाम शरमिंदा
हो जाएँगी और अपनी तमाम ताक़त के बावुजूद
कुछ नहीं कर पाएँगी। वह घबराकर मुँह पर हाथ
रखेंगी, उनके कान बहरे हो जाएंगे। 17 साँप और
रेंगनेवाले जानवरों की तरह वह ख़ाक चाटेंगी और
थरथराते हुए अपने क़िलों से निकल आएँगी। वह
डर के मारे रब हमारे ख़ुदा की तरफ़ रुजू करेंगी,
हाँ तुझसे दहशत खाएँगी।

18 ऐ रब, तुझ जैसा ख़ुदा कहाँ है? तू ही
गुनाहों को मुआफ़ कर देता, तू ही अपनी मीरास
के बचे हुओं के जरायम से दरगुज़र करता है। तू
हमेशा तक ग़ुस्से नहीं रहता बल्कि शफ़क़त पसंद
करता है। 19 तू दुबारा हम पर रहम करेगा, दुबारा
हमारे गुनाहों को पाँवों तले कुचलकर समुंदर
की गहराइयों में फेंक देगा। 20 तू याक़ूब और
इब्राहीम की औलाद पर अपनी वफ़ा और शफ़क़त
दिखाकर वह वादा पूरा करेगा जो तूने क़सम
खाकर क़दीम ज़माने में हमारे बापदादा से किया
था।

नाहूम

अल्लाह के ग़ज़ब का इज़हार

1 ज़ैल में नीनवा के बारे में वह कलाम
क़लमबंद है जो अल्लाह ने रोया में नाहूम
इलक़ूशी को दिखाया।
2 रब ग़ैरतमंद और इंतक़ाम लेनेवाला ख़ुदा है।
इंतक़ाम लेते वक़्त रब अपना पूरा ग़ुस्सा उतारता
है। रब अपने मुख़ालिफ़ों से बदला लेता और अपने
दुश्मनों से नाराज़ रहता है।
3 रब तहम्मुल से भरपूर है, और उस की क़ुदरत
अज़ीम है। वह क़ुसूरवार को कभी भी सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ता।

वह आँधी और तूफ़ान से घिरा हुआ चलता है,
और बादल उसके पाँवों तले की गर्द होते हैं।
4 वह समुंदर को डाँटता तो वह सूख जाता,
उसके हुक्म पर तमाम दरिया ख़ुश्क हो जाते
हैं। तब बसन और करमिल की शादाब हरियाली
मुरझा जाती और लुबनान के फूल कुमला जाते
हैं।

5 उसके सामने पहाड़ लरज़ उठते, पहा-
ड़ियाँ पिघल जाती हैं। उसके हुज़ूर पूरी ज़मीन
अपने बाशिंदों समेत लरज़ उठती है।
6 कौन उस की नाराज़ी और उसके शदीद क़हर
का सामना कर सकता है? उसका ग़ज़ब आग की
तरह भड़ककर ज़मीन पर नाज़िल होता है, उसके
आने पर पत्थर फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं।

7 रब मेहरबान है। मुसीबत के दिन वह मज़बूत
क़िला है, और जो उसमें पनाह लेते हैं उन्हें वह
जानता है।
8 लेकिन अपने दुश्मनों पर वह सैलाब लाएगा
जो उनके मक़ाम को ग़रक़ करेगा। जहाँ भी दुश्मन
भाग जाए वहाँ उस पर तारीकी छा जाने देगा।

9 रब के ख़िलाफ़ मनसूबा बाँधने का क्या
फ़ायदा? वह तो तुम्हें एकदम तबाह कर देगा,
दूसरी बार तुम पर आफ़त लाने की ज़रूरत ही
नहीं होगी।
10 क्योंकि गो दुश्मन घनी और ख़ारदार
झाड़ियों और नशे में धुत शराबी की मानिंद हैं,
लेकिन वह जल्द ही ख़ुश्क भूसे की तरह भस्म हो
जाएंगे।
11 ऐ नीनवा, तुझसे वह निकल आया जिसने
रब के ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधे, जिसने शैतानी
मशवरे दिए।
12 लेकिन अपनी क़ौम से रब फ़रमाता है,
“गो दुश्मन ताक़तवर और बेशुमार क्यों न हों
तो भी उन्हें मिटाया जाएगा और वह ग़ायब हो
जाएंगे। बेशक मैंने तुझे पस्त कर दिया, लेकिन
आइंदा ऐसा नहीं करूँगा। 13 अब मैं वह जुआ तोड़
डालूँगा जो उन्होंने तेरी गरदन पर रख दिया था,
मैं तेरी ज़ंजीरों को फाड़ डालूँगा।”
14 लेकिन नीनवा से रब फ़रमाता है, “आइंदा
तेरी कोई औलाद क़ायम नहीं रहेगी जो तेरा नाम

रखे। जितने भी बुत और मुजस्समे तेरे मंदिर में पड़े हैं उन सबको मैं नेस्तो-नाबूद कर दूँगा। मैं तेरी क़ब्र तैयार कर रहा हूँ, क्योंकि तू कुछ भी नहीं है।”

नीनवा की शिकस्त

15 वह देखो, पहाड़ों पर उसके क़दम चल रहे हैं जो अमनो-अमान की ख़ुशख़बरी सुनाता है। ऐ यहूदाह, अब अपनी ईदें मना, अपनी मन्नतें पूरी कर! क्योंकि आइंदा शैतानी आदमी तुझमें नहीं घुसेगा, वह सरासर मिट गया है।

2 ऐ नीनवा, सब कुछ मुंतशिर करनेवाला तुझ पर हमला करने आ रहा है, चुनाँचे क़िले की पहरादारी कर! रास्ते पर ध्यान दे, कमरबस्ता हो जा, जहाँ तक मुमकिन है दिफ़ा की तैयारियाँ कर!

2 गो याक़ूब तबाह और उसके अंगूरों के बाग़ नाबूद हो गए हैं, लेकिन अब रब इसराईल की शानो-शौकत बहाल करेगा।

3 वह देखो, नीनवा पर हमला करनेवाले सूरमाओं की ढालें सुर्ख़ हैं, फ़ौजी क़िरमिज़ी रंग की वरदियाँ पहने हुए हैं। दुश्मन ने अपने रथों को तैयार कर रखा है, और वह भड़कती मशालों की तरह चमक रहे हैं। साथ साथ सिपाही अपने नेज़े लहरा रहे हैं। 4 अब रथ गलियों में से अंधा-धुंध गुज़र रहे हैं। चौकों में वह इधर-उधर भाग रहे हैं। यों लग रहा है कि भड़कती मशालें या बादल की बिजलियाँ इधर-उधर चमक रही हैं।

5 हुक्मरान अपने चीदा अफ़सरों को बुला लेता है, और वह ठोकर खा खाकर आगे बढ़ते हैं। वह दौड़कर फ़सील के पास पहुँच जाते, जल्दी से हिफ़ाज़ती ढाल खड़ी करते हैं। 6 फिर दरिया के दरवाज़े खुल जाते और शाही महल लड़खड़ाने लगता है। 7 तब दुश्मन मलिका के कपड़े उतारकर उसे ले जाते हैं। उस की लौंडियाँ छाती पीट पीटकर कबूतरों की तरह ग़ूँ ग़ूँ करती हैं। 8 नीनवा बड़ी देर से अच्छे-ख़ासे तालाब की मानिंद था, लेकिन अब लोग उससे भाग रहे हैं। लोगों को कहा जाता है, “रुक जाओ, रुको तो सही!” लेकिन कोई नहीं रुकता। सब सर पर पाँव रखकर शहर से भाग रहे हैं, और कोई नहीं मुड़ता।

9 आओ, नीनवा की चाँदी लूट लो, उसका सोना छीन लो! क्योंकि ज़ख़ीरे की इंतहा नहीं, उसके ख़ज़ानों की दौलत ला-महदूद है। 10 लूटनेवाले कुछ नहीं छोड़ते। जल्द ही शहर ख़ाली और वीरानो-सुनसान हो जाता है। हर दिल हौसला हार जाता, हर घुटना काँप उठता, हर कमर थरथराने लगती और हर चेहरे का रंग माँद पड़ जाता है।

11 अब नीनवा बेटी की क्या हैसियत रही? पहले वह शेरबबर की माँद थी, ऐसी जगह जहाँ जवान शेरों को गोश्त खिलाया जाता, जहाँ शेर और शेरनी अपने बच्चों समेत टहलते थे। कोई उन्हें डराकर भगा नहीं सकता था। 12 उस वक़्त शेर अपने बच्चों के लिए बहुत कुछ फाड़ लेता और अपनी शेरनियों के लिए भी गला घूँटकर मार डालता था। उस की माँदें और छुपने की जगहें फाड़े हुए शिकार से भरी रहती थीं।

13 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ नीनवा, अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं तेरे रथों को नज़रे-आतिश कर दूँगा, और तेरे जवान शेर तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे। मैं होने दूँगा कि आइंदा तुझे ज़मीन पर कुछ न मिले जिसे फाड़कर खा सके। आइंदा तेरे क़ासिदों की आवाज़ कभी सुनाई नहीं देगी।”

नीनवा की रुसवाई

3 उस क़ातिल शहर पर अफ़सोस जो झूट और लूटे हुए माल से भरा हुआ है। वह लूट-मार से कभी बाज़ नहीं आता।

2 सुनो! चाबुक की आवाज़, चलते हुए रथों का शोर! घोड़े सरपट दौड़ रहे, रथ भाग भागकर उछल रहे हैं। 3 घुड़सवार आगे बढ़ रहे, शोलाज़न तलवारें और चमकते नेज़े नज़र आ रहे हैं। हर तरफ़ मक़तूल ही मक़तूल, बेशुमार लाशों के ढेर पड़े हैं। इतनी हैं कि लोग ठोकर खा खाकर उन

पर से गुज़रते हैं। 4 यह होगा नीनवा का अंजाम,
उस दिलफ़रेब कसबी और जादूगरनी का जिसने
अपनी जादूगरी और इसमतफ़रोशी से अक़वाम
और उम्मतों को ग़ुलामी में बेच डाला।

5 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ नीनवा बेटी,
अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं तेरा लिबास तेरे
सर के ऊपर उठाऊँगा कि तेरा नंगापन अक़वाम
को नज़र आए और तेरा मुँह दीगर ममालिक के
सामने काला हो जाए। 6 मैं तुझ पर कूड़ा-करकट
फेंककर तेरी तहक़ीर करूँगा। तू दूसरों के लिए
तमाशा बन जाएगी। 7 तब सब तुझे देखकर भाग
जाएंगे। वह कहेंगे, ‘नीनवा तबाह हो गई है!’ अब
उस पर अफ़सोस करनेवाला कौन रहा? अब मुझे
कहाँ से लोग मिलेंगे जो तुझे तसल्ली दें?”

8 क्या तू थीबस[a] शहर से बेहतर है, जो
दरियाए-नील पर वाक़े था? वह तो पानी से
घिरा हुआ था, और पानी ही उसे हमलों से
महफ़ूज़ रखता था। 9 एथोपिया और मिसर के
फ़ौजी उसके लिए ला-महदूद ताक़त का बाइस
थे, फ़ूत और लिबिया उसके इत्तहादी थे। 10 तो
भी वह क़ैदी बनकर जिलावतन हुआ। हर गली
के कोने में उसके शीरख़ार बच्चों को ज़मीन पर
पटख़ दिया गया। उसके शुरफ़ा क़ुरा-अंदाज़ी के
ज़रीए तक़सीम हुए, उसके तमाम बुज़ुर्ग ज़ंजीरों
में जकड़े गए।

11 ऐ नीनवा बेटी, तू भी नशे में धुत हो जाएगी।
तू भी हवासबाख़्ता होकर दुश्मन से पनाह लेने की
कोशिश करेगी। 12 तेरे तमाम क़िले पके फल से
लदे हुए अंजीर के दरख़्त हैं। जब उन्हें हिलाया
जाए तो अंजीर फ़ौरन खानेवाले के मुँह में गिर
जाते हैं। 13 लो, तेरे तमाम दस्ते औरतें बन गए
हैं। तेरे मुल्क के दरवाज़े दुश्मन के लिए पूरे तौर
पर खोले गए, तेरे कुंडे नज़रे-आतिश हो गए हैं।

14 ख़ूब पानी जमा कर ताकि मुहासरे के
दौरान काफ़ी हो। अपनी क़िलाबंदी मज़ीद
मज़बूत कर! गारे को पाँवों से लताड़ लताड़-
कर ईंटें बना ले! 15 ताहम आग तुझे भस्म करेगी,
तलवार तुझे मार डालेगी, हाँ वह तुझे टिड्डियों
की तरह खा जाएगी। बचने का कोई इमकान
नहीं होगा, ख़ाह तू टिड्डियों की तरह बेशुमार
क्यों न हो जाए। 16 बेशक तेरे ताजिर सितारों
जितने लातादाद हो गए हैं, लेकिन अचानक वह
टिड्डियों के बच्चों की तरह अपनी केंचली को
उतार लेंगे और उड़कर ग़ायब हो जाएंगे। 17 तेरे
दरबारी टिड्डियों जैसे और तेरे अफ़सर टिड्डी दलों
की मानिंद हैं जो सर्दियों के मौसम में दीवारों के
साथ चिपक जाती लेकिन धूप निकलते ही उड़कर
ओझल हो जाती हैं। किसी को भी पता नहीं कि
वह कहाँ चली गई हैं।

18 ऐ असूर के बादशाह, तेरे चरवाहे गहरी
नींद सो रहे, तेरे शुरफ़ा आराम कर रहे हैं। तेरी
क़ौम पहाड़ों पर मुंतशिर हो गई है, और कोई
नहीं जो उन्हें दुबारा जमा करे। 19 तेरी चोट
भर ही नहीं सकती, तेरा ज़ख़म लाइलाज है।
जिसे भी तेरे अंजाम की ख़बर मिले वह ताली
बजाएगा। क्योंकि सबको तेरा मुसलसल ज़ुल्मो-
तशद्दुद बरदाश्त करना पड़ा।

[a] Thebes। इबरानी में नो-आमून।

हबक़्क़ूक़

नबी की शिकायत : हर तरफ़ नाइनसाफ़ी

1 ज़ैल में वह कलाम क़लमबंद है जो
हबक़्क़ूक़ नबी को रोया देखकर मिला।
2 ऐ रब, मैं मज़ीद कब तक मदद के लिए
पुकारूँ? अब तक तूने मेरी नहीं सुनी। मैं मज़ीद
कब तक चीख़ें मार मारकर कहूँ कि फ़साद हो रहा
है? अब तक तूने हमें छुटकारा नहीं दिया। 3 तू
क्यों होने देता है कि मुझे इतनी नाइनसाफ़ी देखनी
पड़े? लोगों को इतना नुक़सान पहुँचाया जा रहा
है, लेकिन तू ख़ामोशी से सब कुछ देखता रहता
है। जहाँ भी मैं नज़र डालूँ, वहाँ ज़ुल्मो-तशद्दुद
ही नज़र आता है, मुक़दमाबाज़ी और झगड़े सर
उठाते हैं। 4 नतीजे में शरीअत बेअसर हो गई है,
और बा-इनसाफ़ फ़ैसले कभी जारी नहीं होते।
बेदीनों ने रास्तबाज़ों को घेर लिया है, इसलिए
अदालत में बेहूदा फ़ैसले किए जाते हैं।

अल्लाह का जवाब

5 "दीगर अक़वाम पर निगाह डालो, हाँ उन पर
ध्यान दो तो हक्का-बक्का रह जाओगे। क्योंकि मैं
तुम्हारे जीते-जी एक ऐसा काम करूँगा जिसकी
जब ख़बर सुनोगे तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा।
6 मैं बाबलियों को खड़ा करूँगा। यह ज़ालिम और
तलख़रू क़ौम पूरी दुनिया को उबूर करके दूसरे
ममालिक पर क़ब्ज़ा करेगी। 7 लोग उससे सख़्त
दहशत खाएँगे, हर तरफ़ उसी के क़वानीन और
अज़मत माननी पड़ेगी। 8 उनके घोड़े चीतों से
तेज़ हैं, और शाम के वक़्त शिकार करनेवाले
भेड़ीए भी उन जैसे फुरतीले नहीं होते। वह सरपट
दौड़कर दूर दूर से आते हैं। जिस तरह उक़ाब लाश
पर झपट्टा मारता है उसी तरह वह अपने शिकार
पर हमला करते हैं। 9 सब इसी मक़सद से आते हैं
कि ज़ुल्मो-तशद्दुद करें। जहाँ भी जाएँ वहाँ आगे
बढ़ते जाते हैं। रेत जैसे बेशुमार क़ैदी उनके हाथ में
जमा होते हैं। 10 वह दीगर बादशाहों का मज़ाक़
उड़ाते हैं, और दूसरों के बुज़ुर्ग उनके तमस्ख़ुर का
निशाना बन जाते हैं। हर क़िले को देखकर वह
हँस उठते हैं। जल्द ही वह उनकी दीवारों के साथ
मिट्टी के ढेर लगाकर उन पर क़ब्ज़ा करते हैं।
11 फिर वह तेज़ हवा की तरह वहाँ से गुज़रकर
आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन वह क़ुसूरवार ठहरेंगे,
क्योंकि उनकी अपनी ताक़त उनका ख़ुदा है।"

ऐ रब, तू क्यों ख़ामोश रहता है?

12 ऐ रब, क्या तू क़दीम ज़माने से ही मेरा
ख़ुदा, मेरा क़ुद्दूस नहीं है? हम नहीं मरेंगे। ऐ
रब, तूने उन्हें सज़ा देने के लिए मुक़र्रर किया है।
ऐ चट्टान, तेरी मरज़ी है कि वह हमारी तरबियत
करें। 13 तेरी आँखें बिलकुल पाक हैं, इसलिए तू
बुरा काम बरदाश्त नहीं कर सकता, तू ख़ामोशी
से ज़ुल्मो-तशद्दुद पर नज़र नहीं डाल सकता। तो
फिर तू इन बेवफ़ाओं की हरकतों को किस तरह
बरदाश्त करता है? जब बेदीन उसे हड़प कर लेता
जो उससे कहीं ज़्यादा रास्तबाज़ है तो तू ख़ामोश

क्यों रहता है? 14 तूने होने दिया है कि इनसान से
मछलियों का-सा सुलूक किया जाए, कि उसे उन
समुंदरी जानवरों की तरह पकड़ा जाए, जिनका
कोई मालिक नहीं। 15 दुश्मन उन सबको काँटे
के ज़रीए पानी से निकाल लेता है, अपना जाल
डालकर उन्हें पकड़ लेता है। जब उनका बड़ा ढेर
जमा हो जाता है तो वह ख़ुश होकर शादियाना
बजाता है। 16 तब वह अपने जाल के सामने बख़ूर
जलाकर उसे जानवर क़ुरबान करता है। क्योंकि
उसी के वसीले से वह ऐशो-इशरत की ज़िंदगी
गुज़ार सकता है। 17 क्या वह मुसलसल अपना
जाल डालता और क़ौमों को बेरहमी से मौत के
घाट उतारता रहे?

2 अब मैं पहरा देने के लिए अपनी बुर्जी पर
चढ़ जाऊँगा, क़िले की ऊँची जगह पर
खड़ा होकर चारों तरफ़ देखता रहूँगा। क्योंकि
मैं जानना चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे क्या कुछ
बताएगा, कि वह मेरी शिकायत का क्या जवाब
देगा।

रब का जवाब

2 रब ने मुझे जवाब दिया, "जो कुछ तूने रोया
में देखा है उसे तख़्तों पर यों लिख दे कि हर
गुज़रनेवाला उसे रवानी से पढ़ सके। 3 क्योंकि वह
फ़ौरन पूरी नहीं हो जाएगी बल्कि मुक़र्ररा वक़्त पर
आख़िरकार ज़ाहिर होगी, वह झूटी साबित नहीं
होगी। गो देर भी लगे तो भी सब्र कर। क्योंकि
आनेवाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।

4 मग़रूर आदमी फूला हुआ है और अंदर से
सीधी राह पर नहीं चलता। लेकिन रास्तबाज़
ईमान ही से जीता रहेगा। 5 यक़ीनन मै एक बेवफ़ा
साथी है। मग़रूर शख़्स जीता नहीं रहेगा, गो वह
अपने मुँह को पाताल की तरह खुला रखता और
उस की भूक मौत की तरह कभी नहीं मिटती,
वह तमाम अक़्वाम और उम्मतें अपने पास जमा
करता है।

बेदीनों का अंजाम

6 लेकिन यह सब उसका मज़ाक़ उड़ाकर उसे
लान-तान करेंगी। वह कहेंगी, 'उस पर अफ़सोस
जो दूसरों की चीज़ें छीनकर अपनी मिलकियत
में इज़ाफ़ा करता है, जो क़र्ज़दारों की ज़मानत
पर क़ब्ज़ा करने से दौलतमंद हो गया है। यह
काररवाई कब तक जारी रहेगी?' 7 क्योंकि
अचानक ही ऐसे लोग उठेंगे जो तुझे काटेंगे,
ऐसे लोग जाग उठेंगे जिनके सामने तू थरथराने
लगेगा। तब तू ख़ुद उनका शिकार बन जाएगा।
8 चूँकि तूने दीगर मुतअद्दिद अक़्वाम को लूट
लिया है इसलिए अब बची हुई उम्मतें तुझे ही
लूट लेंगी। क्योंकि तुझसे क़त्लो-ग़ारत सरज़द हुई
है, तूने देहात और शहर पर उनके बाशिंदों समेत
शदीद ज़ुल्म किया है।

9 उस पर अफ़सोस जो नाजायज़ नफ़ा
कमाकर अपने घर पर आफ़त लाता है, हालाँकि
वह आफ़त से बचने के लिए अपना घोंसला
बुलंदियों पर बना लेता है। 10 तेरे मनसूबों से
मुतअद्दिद क़ौमें तबाह हुई हैं, लेकिन यह तेरे ही
घराने के लिए शर्म का बाइस बन गया है। इस
गुनाह से तू अपने आप पर मौत की सज़ा लाया है।
11 यक़ीनन दीवारों के पत्थर चीख़कर इल्तिजा
करेंगे और लकड़ी के शहतीर जवाब में आहो-ज़ारी
करेंगे।

12 उस पर अफ़सोस जो शहर को क़त्लो-
ग़ारत के ज़रीए तामीर करता, जो आबादी को
नाइनसाफ़ी की बुनियाद पर क़ायम करता है।
13 रब्बुल-अफ़वाज ने मुक़र्रर किया है कि जो कुछ
क़ौमों ने बड़ी मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया
उसे नज़रे-आतिश होना है, जो कुछ पाने के लिए
उम्मतें थक जाती हैं वह बेकार ही है। 14 क्योंकि
जिस तरह समुंदर पानी से भरा हुआ है, उसी तरह
दुनिया एक दिन रब के जलाल के इरफ़ान से भर
जाएगी।

15 उस पर अफ़सोस जो अपना प्याला
ज़हरीली शराब से भरकर उसे अपने पड़ो-

सियों को पिला देता है ताकि उन्हें नशे में
लाकर उनकी बरहनगी से लुत्फ़अंदोज़ हो जाए।
16 लेकिन अब तेरी बारी भी आ गई है! तेरी
शानो-शौकत ख़त्म हो जाएगी, और तेरा मुँह
काला हो जाएगा। अब ख़ुद पी ले! नशे में आकर
अपने कपड़े उतार ले। ग़ज़ब का जो प्याला रब
के दहने हाथ में है वह तेरे पास भी पहुँचेगा। तब
तेरी इतनी रुसवाई हो जाएगी कि तेरी शान का
नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

17 जो ज़ुल्म तूने लुबनान पर किया वह तुझ
पर ही ग़ालिब आएगा, जिन जानवरों को तूने
वहाँ तबाह किया उनकी दहशत तुझी पर तारी
हो जाएगी। क्योंकि तुझसे क़त्लो-ग़ारत सरज़द
हुई है, तूने देहात और शहरों पर उनके बाशिंदों
समेत शदीद ज़ुल्म किया है।

18 बुत का क्या फ़ायदा? आख़िर किसी माहिर
कारीगर ने उसे तराशा या ढाल लिया है, और वह
झूट ही झूट की हिदायात देता है। कारीगर अपने
हाथों के बुत पर भरोसा रखता है, हालाँकि वह
बोल भी नहीं सकता!

19 उस पर अफ़सोस जो लकड़ी से कहता है,
'जाग उठ!' और ख़ामोश पत्थर से, 'खड़ा हो
जा!' क्या यह चीज़ें हिदायत दे सकती हैं?
हरगिज़ नहीं! उनमें जान ही नहीं, ख़ाह उन पर
सोना या चाँदी क्यों न चढ़ाई गई हो। 20 लेकिन
रब अपने मुक़द्दस घर में मौजूद है। उसके हुज़ूर
पूरी दुनिया ख़ामोश रहे।"

हबक़्क़ूक़ की दुआ

3 ज़ैल में हबक़्क़ूक़ नबी की दुआ है। इसे
'शिगियूनोत' के तर्ज़ पर गाना है।

2 ऐ रब, मैंने तेरा पैग़ाम सुना है। ऐ रब, तेरा
काम देखकर मैं डर गया हूँ। हमारे जीते-जी उसे
वुजूद में ला, जल्द ही उसे हम पर ज़ाहिर कर।
जब तुझे हम पर ग़ुस्सा आए तो अपना रहम याद
कर।

3 अल्लाह तेमान से आ रहा है, क़ुद्दूस फ़ारान के
पहाड़ी इलाक़े से पहुँच रहा है। (सिलाह)[a] उसका
जलाल पूरे आसमान पर छा गया है, ज़मीन उस
की हम्दो-सना से भरी हुई है।

4 तब उस की शान सूरज की तरह चमकती,
उसके हाथ से तेज़ किरणें निकलती हैं जिनमें उस
की क़ुदरत पिनहाँ होती है।

5 मोहलक बीमारी उसके आगे आगे फैल-
ती, वबाई मरज़ उसके नक़्शे-क़दम पर चलता है।

6 जहाँ भी क़दम उठाए, वहाँ ज़मीन हिल जाती,
जहाँ भी नज़र डाले वहाँ अक़वाम लरज़ उठती
हैं। तब क़दीम पहाड़ फट जाते, पुरानी पहाड़ियाँ
दबक जाती हैं। उस की राहें अज़ल से ऐसी ही
रही हैं।

7 मैंने कूशान के ख़ैमों को मुसीबत में देखा,
मिदियान के तंबू काँप रहे थे।

8 ऐ रब, क्या तू दरियाओं और नदियों से ग़ुस्से
था? क्या तेरा ग़ज़ब समुंदर पर नाज़िल हुआ जब
तू अपने घोड़ों और फ़तहमंद रथों पर सवार होकर
निकला?

9 तूने अपनी कमान को निकाल लिया, तेरी
लानतें तीरों की तरह बरसने लगी हैं। (सिलाह)
तू ज़मीन को फाड़कर उन जगहों पर दरिया बहने
देता है।

10 तुझे देखकर पहाड़ काँप उठते, मूस-
लाधार बारिश बरसने लगती और पानी की
गहराइयाँ गरजती हुई अपने हाथ आसमान की
तरफ़ उठाती हैं।

11 सूरज और चाँद अपनी बुलंद रिहाइश-
गाह में रुक जाते हैं। तेरे चमकते तीरों के सामने

[a] सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इसके मतलब के बारे में इत्तफ़ाक़े-राय नहीं होती।

वह माँद पड़ जाते, तेरे नेज़ों की झिलमिलाती
रौशनी में ओझल हो जाते हैं।

12 तू ग़ुस्से में दुनिया में से गुज़रता, तैश से
दीगर अक़्वाम को मारकर गाह लेता है।
13 तू अपनी क़ौम को रिहा करने के लिए
निकला, अपने मसह किए हुए ख़ादिम की मदद
करने आया है। तूने बेदीन का घर छत से लेकर
बुनियाद तक गिरा दिया, अब कुछ नज़र नहीं
आता। (सिलाह)
14 उसके अपने नेज़ों से तूने उसके सर को छेद
डाला। पहले उसके दस्ते कितनी ख़ुशी से हम पर
टूट पड़े ताकि हमें मुंतशिर करके मुसीबतज़दा को
पोशीदगी में खा सकें! लेकिन अब वह ख़ुद भूसे
की तरह हवा में उड़ गए हैं।
15 तूने अपने घोड़ों से समुंदर को यों कुचल
दिया कि गहरा पानी झाग निकालने लगा।

अल्लाह मुझे तक़वियत देता है

16 यह सब कुछ सुनकर मेरा जिस्म लरज़ उठा।
इतना शोर था कि मेरे दाँत बजने लगे,[a] मेरी
हड्डियाँ सड़ने लगीं, मेरे घुटने काँप उठे। अब मैं
उस दिन के इंतज़ार में रहूँगा जब आफ़त उस क़ौम
पर आएगी जो हम पर हमला कर रही है।

17 अभी तक कोंपलें अंजीर के दरख़्त पर नज़र
नहीं आतीं, अंगूर की बेलें बेफल हैं। अभी तक
ज़ैतून के दरख़्त फल से महरूम हैं और खेतों में
फ़सलें नहीं उगतीं। बाड़ों में न भेड़-बकरियाँ, न
मवेशी हैं।
18 ताहम मैं रब की ख़ुशी मनाऊँगा, अपने
नजातदहिंदा अल्लाह के बाइस शादियाना
बजाऊँगा।
19 रब क़ादिरे-मुतलक़ मेरी क़ुव्वत है। वही मुझे
हिरनों के-से तेज़रौ पाँव मुहैया करता है, वही मुझे
बुलंदियों पर से गुज़रने देता है।

दर्जे-बाला गीत मौसीक़ी के राहनुमा के लिए
है। इसे मेरे तर्ज़ के तारदार साज़ों के साथ गाना
है।

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : होंट हिलने लगे।

सफ़नियाह

1 ज़ैल में रब का वह कलाम क़लमबंद है
जो सफ़नियाह बिन कूशी बिन जिदलियाह
बिन अमरियाह बिन हिज़क़ियाह पर नाज़िल
हुआ। उस वक़्त यूसियाह बिन अमून यहूदाह का
बादशाह था।

2 रब फ़रमाता है, "मैं रूए-ज़मीन पर से सब
कुछ मिटा डालूँगा, 3 इनसानो-हैवान, परिंदों,
मछलियों, ठोकर खिलानेवाली चीज़ों और बेदीनों
को। तब ज़मीन पर इनसान का नामो-निशान तक
नहीं रहेगा।" यह रब का फ़रमान है।

4 "यहूदाह और यरूशलम के तमाम बाशिंदों पर
मेरी सज़ा नाज़िल होगी। बाल देवता की जितनी
भी बुतपरस्ती अब तक रह गई है उसे नेस्तो-नाबूद
कर दूँगा। न बुतपरस्त पुजारियों का नामो-निशान
रहेगा, 5 न उनका जो छतों पर सूरज, चाँद बल्कि
आसमान के पूरे लशकर को सिजदा करते हैं, जो
रब की क़सम खाने के साथ साथ मिलकूम देवता
की भी क़सम खाते हैं। 6 जो रब की पैरवी छोड़कर
न उसे तलाश करते, न उस की मरज़ी दरियाफ़्त
करते हैं वह सबके सब तबाह हो जाएंगे।

7 अब रब क़ादिरे-मुतलक़ के सामने ख़ा-
मोश हो जाओ, क्योंकि रब का दिन क़रीब ही है।
रब ने इसके लिए ज़बह की क़ुरबानी तैयार करके
अपने मेहमानों को मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया
है।" 8 रब फ़रमाता है, "जिस दिन मैं यह क़ुरबानी
चढ़ाऊँगा उस दिन बुज़ुर्गों, शहज़ादों और अजनबी
लिबास पहननेवालों को सज़ा दूँगा। 9 उस दिन मैं
उन पर सज़ा नाज़िल करूँगा जो तवह्हुमपरस्ती
के बाइस दहलीज़ पर क़दम रखने से गुरेज़ करते
हैं, जो अपने मालिक के घर को ज़ुल्म और फ़रेब
से भर देते हैं।"

10 रब फ़रमाता है, "उस दिन मछली के
दरवाज़े से ज़ोर की चीख़ें, नए शहर से आहो-ज़ारी
और पहाड़ियों से कड़कती आवाज़ें सुनाई देंगी।
11 ऐ मकतीस मुहल्ले के बाशिंदो, वावैला करो,
क्योंकि तुम्हारे तमाम ताजिर हलाक हो जाएंगे।
वहाँ के जितने भी सौदागर चाँदी तोलते हैं वह
नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे।

12 तब मैं चराग़ लेकर यरूशलम के कोने कोने
में उनका खोज लगाऊँगा जो इस वक़्त बड़े आराम
से बैठे हैं, ख़ाह हालात कितने बुरे क्यों न हों।
मैं उनसे निपट लूँगा जो सोचते हैं, 'रब कुछ नहीं
करेगा, न अच्छा काम और न बुरा।' 13 ऐसे लोगों
का माल लूट लिया जाएगा, उनके घर मिसमार
हो जाएंगे। वह नए मकान तामीर तो करेंगे लेकिन
उनमें रहेंगे नहीं, अंगूर के बाग़ लगाएँगे लेकिन
उनकी मै पिएँगे नहीं।"

14 रब का अज़ीम दिन क़रीब ही है, वह बड़ी
तेज़ी से हम पर नाज़िल हो रहा है। सुनो! वह
दिन तलख़ होगा। हालात ऐसे होंगे कि बहादुर
फ़ौजी भी चीख़कर मदद के लिए पुकारेंगे। 15 रब
का पूरा ग़ज़ब नाज़िल होगा, और लोग परेशानी

और मुसीबत में मुब्तला रहेंगे। हर तरफ़ तबाही-
ओ-बरबादी, हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा, हर तरफ़
घने बादल छाए रहेंगे। 16 उस दिन दुश्मन नरसिंगा
फूँककर और जंग के नारे लगाकर क़िलाबंद शहरों
और बुर्जों पर टूट पड़ेगा। 17 रब फ़रमाता है,
“चूँकि लोगों ने मेरा गुनाह किया है इसलिए मैं
उनको बड़ी मुसीबत में उलझा दूँगा। वह अंधों की
तरह टटोल टटोलकर इधर-उधर फिरेंगे, उनका
ख़ून ख़ाक की तरह गिराया जाएगा और उनकी
नाशें गोबर की तरह ज़मीन पर फेंकी जाएँगी।”
18 जब रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा तो न उनका
सोना, न चाँदी उन्हें बचा सकेगी। उस की ग़ैरत
पूरे मुल्क को आग की तरह भस्म कर देगी। वह
मुल्क के तमाम बाशिंदों को हलाक करेगा, हाँ
उनका अंजाम हौलनाक होगा।

होश में आओ!

2 ऐ बेहया क़ौम, जमा होकर हाज़िरी के लिए
खड़ी हो जा, 2 इससे पहले कि मुक़र्ररा दिन
आकर तुझे भूसे की तरह उड़ा ले जाए। ऐसा न
हो कि तुम रब के सख़्त ग़ुस्से का निशाना बन
जाओ, कि रब का ग़ज़बनाक दिन तुम पर नाज़िल
हो जाए।

3 ऐ मुल्क के तमाम फ़रोतनो, ऐ उसके
अहकाम पर अमल करनेवालो, रब को तलाश
करो! रास्तबाज़ी के तालिब हो, हलीमी ढूँडो।
शायद तुम उस दिन रब के ग़ज़ब से बच जाओ।[a]

इसराईल के दुश्मनों का अंजाम

4 ग़ज़्ज़ा को छोड़ दिया जाएगा, अस्क़लून
वीरानो-सुनसान हो जाएगा। दोपहर के वक़्त ही
अशदूद के बाशिंदों को निकाला जाएगा, अक़रून
को जड़ से उखाड़ा जाएगा। 5 क्रेते से आई
हुई क़ौम पर अफ़सोस जो साहिली इलाक़े में
रहती है। क्योंकि रब तुम्हारे बारे में फ़रमाता
है, “ऐ फ़िलिस्तियों की सरज़मीन, ऐ मुल्के-
कनान, मैं तुझे तबाह करूँगा, एक भी बाक़ी नहीं
रहेगा।” 6 तब यह साहिली इलाक़ा चराने के लिए
इस्तेमाल होगा, और चरवाहे उसमें अपनी भेड़-
बकरियों के लिए बाड़े बना लेंगे। 7 मुल्क यहूदाह
के घराने के बचे हुओं के क़ब्ज़े में आएगा, और
वही वहाँ चरेंगे, वही शाम के वक़्त अस्क़लून के
घरों में आराम करेंगे। क्योंकि रब उनका ख़ुदा
उनकी देख-भाल करेगा, वही उन्हें बहाल करेगा।

8 “मैंने मोआबियों की लान-तान और
अम्मोनियों की इहानत पर ग़ौर किया है। उन्होंने
मेरी क़ौम की रुसवाई और उसके मुल्क के
ख़िलाफ़ बड़ी बड़ी बातें की हैं।” 9 इसलिए
रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, “मेरी हयात की क़सम, मोआब और
अम्मोन के इलाक़े सदूम और अमूरा की मानिंद
बन जाएंगे। उनमें ख़ुदरौ पौदे और नमक के गढ़े ही
पाए जाएंगे, और वह अबद तक वीरानो-सुनसान
रहेंगे। तब मेरी क़ौम का बचा हुआ हिस्सा उन्हें
लूटकर उनकी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेगा।”

10 यही उनके तकब्बुर का अज्र होगा। क्योंकि
उन्होंने रब्बुल-अफ़वाज की क़ौम को लान-तान
करके क़ौम के ख़िलाफ़ बड़ी बड़ी बातें की हैं।
11 जब रब मुल्क के तमाम देवताओं को तबाह
करेगा तो उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। तमाम
साहिली इलाक़ों की अक़वाम उसके सामने झुक
जाएँगी, हर एक अपने अपने मक़ाम पर उसे
सिजदा करेगा।

12 रब फ़रमाता है, “ऐ एथोपिया के बाशिंदो,
मेरी तलवार तुम्हें भी मार डालेगी।”

13 वह अपना हाथ शिमाल की तरफ़ भी
बढ़ाकर असूर को तबाह करेगा। नीनवा वी-
रानो-सुनसान होकर रेगिस्तान जैसा ख़ुश्क हो
जाएगा। 14 शहर के बीच में रेवड़ और दीगर
कई क़िस्म के जानवर आराम करेंगे। दश्ती उल्लू
और ख़ारपुश्त उसके टूटे-फूटे सतूनों में बसेरा
करेंगे, और जंगली जानवरों की चीख़ें खिड़कियों
में से गूँजेंगी। घरों की दहलीज़ें मलबे के ढेरों

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : छुपे रह सको।

में छुपी रहेंगी जबकि उनकी देवदार की लकड़ी
हर गुज़रनेवाले को दिखाई देगी। 15 यही उस
ख़ुशबाश शहर का अंजाम होगा जो पहले इतनी
हिफ़ाज़त से बसता था और जो दिल में कहता था,
“मैं ही हूँ, मेरे सिवा कोई और है ही नहीं।” आइंदा
वह रेगिस्तान होगा, ऐसी जगह जहाँ जानवर ही
आराम करेंगे। हर मुसाफ़िर “तौबा तौबा” कहकर
वहाँ से गुज़रेगा।

यरूशलम का अंजाम

3 उस सरकश, नापाक और ज़ालिम शहर
पर अफ़सोस जो यरूशलम कहलाता है।
2 न वह सुनता, न तरबियत क़बूल करता है।
न वह रब पर भरोसा रखता, न अपने ख़ुदा के
क़रीब आता है। 3 जो बुज़ुर्ग उसके बीच में हैं
वह दहाड़ते हुए शेरबबर हैं। उसके क़ाज़ी शाम
के वक़्त भूके फिरनेवाले भेड़ीए हैं जो तुलूए-
सुबह तक शिकार की एक हड्डी तक नहीं छोड़ते।
4 उसके नबी गुस्ताख़ और ग़द्दार हैं। उसके इमाम
मक़दिस की बेहुरमती और शरीअत से ज़्यादती
करते हैं।

5 लेकिन रब भी शहर के बीच में है, और वह
रास्त है, वह बेइनसाफ़ी नहीं करता। सुबह बसुबह
वह अपना इनसाफ़ क़ायम रखता है, हम कभी
उससे महरूम नहीं रहते। लेकिन बेदीन शर्म से
वाक़िफ़ ही नहीं होता।

6 रब फ़रमाता है, “मैंने क़ौमों को नेस्तो-नाबूद
कर दिया है। उनके क़िले तबाह, उनकी गलियाँ
सुनसान हैं। अब उनमें से कोई नहीं गुज़रता।
उनके शहर इतने बरबाद हैं कि कोई भी उनमें नहीं
रहता। 7 मैं बोला, ‘बेशक यरूशलम मेरा ख़ौफ़
मानकर मेरी तरबियत क़बूल करेगा। क्योंकि क्या
ज़रूरत है कि उस की रिहाइशगाह मिट जाए और
मेरी तमाम सज़ाएँ उस पर नाज़िल हो जाएँ।’
लेकिन उसके बाशिंदे मज़ीद जोश के साथ अपनी
बुरी हरकतों में लग गए।” 8 चुनाँचे रब फ़रमाता
है, “अब मेरे इंतज़ार में रहो, उस दिन के इंतज़ार
में जब मैं शिकार करने के लिए उठूँगा।[a] क्योंकि
मैंने अक़वाम को जमा करने का फ़ैसला किया
है। मैं ममालिक को इकट्ठा करके उन पर अपना
ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। तब वह मेरे सख़्त क़हर
का निशाना बन जाएंगे, पूरी दुनिया मेरी ग़ैरत की
आग से भस्म हो जाएगी।

इसराईल के लिए नई उम्मीद

9 लेकिन इसके बाद मैं अक़वाम के होंटों को
पाक-साफ़ करूँगा ताकि वह आइंदा रब का
नाम लेकर इबादत करें, कि वह शाना बशाना
खड़ी होकर मेरी ख़िदमत करें। 10 उस वक़्त मेरे
परस्तार, मेरी मुंतशिर हुई क़ौम एथोपिया के
दरियाओं के पार से भी आकर मुझे क़ुरबानियाँ
पेश करेगी।

11 ऐ सिय्यून बेटी, उस दिन तुझे शर्मसार
नहीं होना पड़ेगा हालाँकि तूने मुझसे बेवफ़ा
होकर निहायत बुरे काम किए हैं। क्योंकि मैं
तेरे दरमियान से तेरे मुतकब्बिर शेख़ीबाज़ों को
निकालूँगा। आइंदा तू मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर
मग़रूर नहीं होगी। 12 मैं तुझमें सिर्फ़ क़ौम के
ग़रीबों और ज़रूरतमंदों को छोड़ूँगा, उन सबको
जो रब के नाम में पनाह लेंगे। 13 इसराईल का
यह बचा हुआ हिस्सा न ग़लत काम करेगा, न झूट
बोलेगा। उनकी ज़बान पर फ़रेब नहीं होगा। तब
वह भेड़ों की तरह चरागाह में चरेंगे और आराम
करेंगे। उन्हें डरानेवाला कोई नहीं होगा।”

14 ऐ सिय्यून बेटी, ख़ुशी के नारे लगा! ऐ
इसराईल, ख़ुशी मना! ऐ यरूशलम बेटी,
शादमान हो, पूरे दिल से शादियाना बजा।
15 क्योंकि रब ने तेरी सज़ा मिटाकर तेरे दुश्मन
को भगा दिया है। रब जो इसराईल का बादशाह
है तेरे दरमियान ही है। आइंदा तुझे किसी नुक़सान
से डरने की ज़रूरत नहीं होगी।

16 उस दिन लोग यरूशलम से कहेंगे, “ऐ
सिय्यून, मत डरना! हौसला न हार, तेरे हाथ
ढीले न हों। 17 रब तेरा ख़ुदा तेरे दरमियान है, तेरा

[a] एक और मुमकिना तरजुमा : गवाही देने के लिए।

पहलवान तुझे नजात देगा। वह शादमान होकर
तेरी ख़ुशी मनाएगा। उस की मुहब्बत तेरे क़ुसूर
का ज़िक्र ही नहीं करेगी बल्कि वह तुझसे इंतहाई
ख़ुश होकर शादियाना बजाएगा।”
18 रब फ़रमाता है, “मैं ईद को तर्क करनेवालों
को तुझसे दूर कर दूँगा, क्योंकि वह तेरी रुसवाई
का बाइस थे। **19** मैं उनसे भी निपट लूँगा जो तुझे
कुचल रहे हैं। जो लँगड़ाता है उसे मैं बचाऊँगा,
जो मुंतशिर हैं उन्हें जमा करूँगा। जिस मुल्क
में भी उनकी रुसवाई हुई वहाँ मैं उनकी तारीफ़
और एहतराम कराऊँगा। **20** उस वक़्त मैं तुम्हें
जमा करके वतन में वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारे
देखते देखते तुम्हें बहाल करूँगा और दुनिया की
तमाम अक़वाम में तुम्हारी तारीफ़ और एहतराम
कराऊँगा।” यह रब का फ़रमान है।

हज्जी

रब के घर को दुबारा बनाने का हुक्म

1 फ़ारस के बादशाह दारा की हुकूमत के
दूसरे साल में हज्जी नबी पर रब का कलाम
नाज़िल हुआ। छटे महीने का पहला दिन[a] था।
कलाम में अल्लाह यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल
बिन सियालतियेल और इमामे-आज़म यशुअ बिन
यहूसदक़ से मुख़ातिब हुआ।
2-3 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “यह क़ौम
कहती है, ‘अभी रब के घर को दुबारा तामीर करने
का वक़्त नहीं आया।’ **4** क्या यह ठीक है कि तुम
ख़ुद लकड़ी से सजे हुए घरों में रहते हो जबकि
मेरा घर अब तक मलबे का ढेर है?” **5** रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है, “अपने हाल पर ग़ौर करो।
6 तुमने बहुत बीज बोया लेकिन कम फ़सल काटी
है। तुम खाना तो खाते हो लेकिन भूके रहते हो,
पानी तो पीते हो लेकिन प्यासे रहते हो, कपड़े
तो पहनते हो लेकिन सर्दी लगती है। और जब
कोई पैसे कमाकर उन्हें अपने बटवे में डालता है
तो उसमें सूराख़ हैं।”
7 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “अपने हाल
पर ध्यान देकर उसका सहीह नतीजा निकालो!
8 पहाड़ों पर चढ़कर लकड़ी ले आओ और रब
के घर की तामीर शुरू करो। ऐसा ही रवैया मुझे
पसंद होगा, और इस तरह ही तुम मुझे जलाल
दोगे।” यह रब का फ़रमान है। **9** “देखो, तुमने
बहुत बरकत पाने की तवक़्क़ो की, लेकिन क्या
हुआ? कम ही हासिल हुआ। और जो कुछ तुम
अपने घर वापस लाए उसे मैंने हवा में उड़ा दिया।
क्यों? मैं, रब्बुल-अफ़वाज तुम्हें इसकी असल
वजह बताता हूँ। मेरा घर अब तक मलबे का ढेर है
जबकि तुममें से हर एक अपना अपना घर मज़बूत
करने के लिए भाग-दौड़ कर रहा है। **10** इसी लिए
आसमान ने तुम्हें ओस से और ज़मीन ने तुम्हें
फ़सलों से महरूम कर रखा है। **11** इसी लिए मैंने
हुक्म दिया कि खेतों में और पहाड़ों पर काल
पड़े, कि मुल्क का अनाज, अंगूर, ज़ैतून बल्कि
ज़मीन की हर पैदावार उस की लपेट में आ जाए।
इनसानो-हैवान उस की ज़द में आ गए हैं, और
तुम्हारी मेहनत-मशक़्क़त ज़ाया हो रही है।”
12 तब ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल, इमामे-
आज़म यशुअ बिन यहूसदक़ और क़ौम के पूरे बचे
हुए हिस्से ने रब अपने ख़ुदा की सुनी। जो भी बात
रब उनके ख़ुदा ने हज्जी नबी को सुनाने को कहा
था उसे उन्होंने मान लिया। रब का ख़ौफ़ पूरी क़ौम
पर तारी हुआ। **13** तब रब ने अपने पैग़ंबर हज्जी
की मारिफ़त उन्हें यह पैग़ाम दिया, “रब फ़रमाता
है, मैं तुम्हारे साथ हूँ।”
14-15 यों रब ने यहूदाह के गवर्नर ज़-
रुब्बाबल बिन सियालतियेल, इमामे-आज़म
यशुअ बिन यहूसदक़ और क़ौम के बचे हुए हिस्से

[a] 29 अगस्त।

को रब के घर की तामीर करने की तहरीक दी। दारा बादशाह की हुकूमत के दूसरे साल में वह आकर रब्बुल-अफ़वाज अपने ख़ुदा के घर पर काम करने लगे। छटे महीने का 24वाँ दिन[a] था।

रब का नया घर शानदार होगा

2 उसी साल के सातवें महीने के 21वें दिन[b] हज्जी नबी पर रब का कलाम नाज़िल हुआ, 2 "यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल, इमामे-आज़म यशुअ बिन यहूसदक़ और क़ौम के बचे हुए हिस्से को बता देना,

3 'तुममें से किस को याद है कि रब का घर तबाह होने से पहले कितना शानदार था? जो इस वक़्त उस की जगह तामीर हो रहा है वह तुम्हें कैसा लगता है? रब के पहले घर की निसबत यह कुछ भी नहीं लगता। 4 लेकिन रब फ़रमाता है कि ऐ ज़रुब्बाबल, हौसला रख! ऐ इमामे-आज़म यशुअ बिन यहूसदक़ हौसला रख! ऐ मुल्क के तमाम बाशिंदो, हौसला रखकर अपना काम जारी रखो। क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। 5 जो अहद मैंने मिसर से निकलते वक़्त तुमसे बाँधा था वह क़ायम रहेगा। मेरा रूह तुम्हारे दरमियान ही रहेगा। डरो मत!

6 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि थोड़ी देर के बाद मैं एक बार फिर आसमानो-ज़मीन और बहरो-बर्र को हिला दूँगा। 7 तब तमाम अक़वाम लरज़ उठेंगी, उनके बेशक़ीमत ख़ज़ाने इधर लाए जाएंगे, और मैं इस घर को अपने जलाल से भर दूँगा। 8 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि चाँदी मेरी है और सोना मेरा है। 9 नया घर पुराने घर से कहीं ज़्यादा शानदार होगा, और मैं इस जगह को सलामती अता करूँगा।' यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।"

[a]21 सितंबर।
[b]17 अक्तूबर।

मैं तुम्हें दुबारा बरकत दूँगा

10 दारा बादशाह की हुकूमत के दूसरे साल में हज्जी पर रब का एक और कलाम नाज़िल हुआ। नवें महीने का 24वाँ दिन[c] था।

11 "रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'इमामों से सवाल कर कि शरीअत ज़ैल के मामले के बारे में क्या फ़रमाती है, 12 अगर कोई शख़्स मख़सूसो-मुक़द्दस गोश्त अपनी झोली में डालकर कहीं ले जाए और रास्ते में झोली मै, ज़ैतून के तेल, रोटी या मज़ीद किसी खानेवाली चीज़ से लग जाए तो क्या खानेवाली यह चीज़ गोश्त से मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाती है'?"

हज्जी ने इमामों को यह सवाल पेश किया तो उन्होंने जवाब दिया, "नहीं।"

13 तब उसने मज़ीद पूछा, "अगर कोई किसी लाश को छूने से नापाक होकर इन खानेवाली चीज़ों में से कुछ छुए तो क्या खानेवाली चीज़ उससे नापाक हो जाती है?"

इमामों ने जवाब दिया, "जी हाँ।"

14 फिर हज्जी ने कहा, "रब फ़रमाता है कि मेरी नज़र में इस क़ौम का यही हाल है। जो कुछ भी यह करते और क़ुरबान करते हैं वह नापाक है।

15 लेकिन अब इस बात पर ध्यान दो कि आज से हालात कैसे होंगे। रब के घर की नए सिरे से बुनियाद रखने से पहले हालात कैसे थे? 16 जहाँ तुम फ़सल की 20 बोरियों की उम्मीद रखते थे वहाँ सिर्फ़ 10 हासिल हुईं। जहाँ तुम अंगूरों को कुचलकर रस के 100 लिटर की तवक़्क़ो रखते थे वहाँ सिर्फ़ 40 लिटर निकले।" 17 रब फ़रमाता है, "तेरी मेहनत-मशक़्क़त ज़ाया हुई, क्योंकि मैंने पतरोग, फफूँदी और ओलों से तुम्हारी पैदावार को नुक़सान पहुँचाया। तो भी तुमने तौबा करके मेरी तरफ़ रुजू न किया। 18 लेकिन अब तवज्जुह दो कि तुम्हारा हाल आज यानी नवें महीने के 24वें दिन से कैसा होगा। इस दिन रब के घर की बुनियाद रखी गई, इसलिए ग़ौर करो 19 कि

[c]18 दिसंबर।

क्या आइंदा भी गोदाम में जमाशुदा बीज ज़ाया
हो जाएगा, कि क्या आइंदा भी अंगूर, अंजीर,
अनार और ज़ैतून का फल न होने के बराबर होगा।
क्योंकि आज से मैं तुम्हें बरकत दूँगा।”

ज़रुब्बाबल से अल्लाह का वादा

20 उसी दिन हज्जी पर रब का एक और कलाम
नाज़िल हुआ, 21 “यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल
को बता दे कि मैं आसमानो-ज़मीन को हिला
दूँगा। 22 मैं शाही तख़्तों को उलटकर अजनबी
सलतनतों की ताक़त तबाह कर दूँगा। मैं रथों को
उनके रथबानों समेत उलट दूँगा, और घोड़े अपने
सवारों समेत गिर जाएंगे। हर एक अपने भाई की
तलवार से मरेगा।” 23 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता
है, “उस दिन मैं तुझे, अपने ख़ादिम ज़रुब्बाबल
बिन सियालतियेल को लेकर मुहर की अंगूठी की
मानिंद बना दूँगा, क्योंकि मैंने तुझे चुन लिया है।”
यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

ज़करियाह

तौबा करो!

1 फ़ारस के बादशाह दारा की हुकूमत के
दूसरे साल और आठवें महीने[a] में रब का
कलाम नबी ज़करियाह बिन बरकियाह बिन इद्दू
पर नाज़िल हुआ,
2-3 "लोगों से कह कि रब तुम्हारे बापदादा
से निहायत ही नाराज़ था। अब रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ तो मैं भी
तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 4 अपने बापदादा
की मानिंद न हो जिन्होंने न मेरी सुनी, न मेरी
तरफ़ तवज्जुह दी, गो मैंने उस वक़्त के नबियों
की मारिफ़त उन्हें आगाह किया था कि अपनी
बुरी राहों और शरीर हरकतों से बाज़ आओ।
5 अब तुम्हारे बापदादा कहाँ हैं? और क्या नबी
अबद तक ज़िंदा रहते हैं? दोनों बहुत देर हुई
वफ़ात पा चुके हैं।[b] 6 लेकिन तुम्हारे बापदादा के
बारे में जितनी भी बातें और फ़ैसले मैंने अपने
ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाए वह
सब पूरे हुए। तब उन्होंने तौबा करके इक़रार
किया, 'रब्बुल-अफ़वाज ने हमारी बुरी राहों और
हरकतों के सबब से वह कुछ किया है जो उसने
करने को कहा था'।"

ज़करियाह रोया देखता है

7 तीन माह के बाद रब ने नबी ज़करियाह बिन
बरकियाह बिन इद्दू पर एक और कलाम नाज़िल
किया। सबात यानी 11वें महीने का 24वाँ दिन[c]
था।

पहली रोया : घुड़सवार

8 उस रात मैंने रोया में एक आदमी को सुर्ख़ रंग
के घोड़े पर सवार देखा। वह घाटी के दरमियान
उगनेवाली मेहँदी की झाड़ियों के बीच में रुका
हुआ था। उसके पीछे सुर्ख़, भूरे और सफ़ेद रंग
के घोड़े खड़े थे। उन पर भी आदमी बैठे थे।[d]
9 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे मैंने
पूछा, "मेरे आक़ा, इन घुड़सवारों से क्या मुराद
है?" उसने जवाब दिया, "मैं तुझे उनका मतलब
दिखाता हूँ।" 10 तब मेहँदी की झाड़ियों में रुके
हुए आदमी ने जवाब दिया, "यह वह हैं जिन्हें
रब ने पूरी दुनिया की गश्त करने के लिए भेजा
है।" 11 अब दीगर घुड़सवार रब के उस फ़रिश्ते
के पास आए जो मेहँदी की झाड़ियों के दरमियान
रुका हुआ था। उन्होंने इत्तला दी, "हमने दुनिया
की गश्त लगाई तो मालूम हुआ कि पूरी दुनिया
में अमनो-अमान है।" 12 तब रब का फ़रिश्ता
बोला, "ऐ रब्बुल-अफ़वाज, अब तू 70 सालों से

[a] अक्तूबर ता नवंबर।
[b] 'दोनों . . . चुके हैं' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।
[c] 15 फ़रवरी।
[d] 'उन . . . बैठे थे' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

यरूशलम और यहूदाह की आबादियों से नाराज़ रहा है। तू कब तक उन पर रहम न करेगा?"

13 जवाब में रब ने मेरे साथ गुफ़्तगू करनेवाले फ़रिश्ते से नरम और तसल्ली देनेवाली बातें कीं। 14 फ़रिश्ता दुबारा मुझसे मुख़ातिब हुआ, "एलान कर कि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'मैं बड़ी ग़ैरत से यरूशलम और कोहे-सिय्यून के लिए लड़ूँगा। 15 मैं उन दीगर अक़वाम से निहायत नाराज़ हूँ जो इस वक़्त अपने आपको महफ़ूज़ समझती हैं। बेशक मैं अपनी क़ौम से कुछ नाराज़ था, लेकिन इन दीगर क़ौमों ने उसे हद से ज़्यादा तबाह कर दिया है। यह कभी भी मेरा मक़सद नहीं था।' 16 रब फ़रमाता है, 'अब मैं दुबारा यरूशलम की तरफ़ मायल होकर उस पर रहम करूँगा। मेरा घर नए सिरे से उसमें तामीर हो जाएगा बल्कि पूरे शहर की पैमाइश की जाएगी ताकि उसे दुबारा तामीर किया जाए।' यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

17 मज़ीद एलान कर कि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'मेरे शहरों में दुबारा कसरत का माल पाया जाएगा। रब दुबारा कोहे-सिय्यून को तसल्ली देगा, दुबारा यरूशलम को चुन लेगा'।"

दूसरी रोया : सींग और कारीगर

18 मैंने अपनी निगाह उठाई तो क्या देखता हूँ कि चार सींग मेरे सामने हैं। 19 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे मैंने पूछा, "इनका क्या मतलब है?" उसने जवाब दिया, "यह वह सींग हैं जिन्होंने यहूदाह और इसराईल को यरूशलम समेत मुंतशिर कर दिया था।"

20 फिर रब ने मुझे चार कारीगर दिखाए। 21 मैंने सवाल किया, "यह क्या करने आ रहे हैं?" उसने जवाब दिया, "मज़कूरा सींगों ने यहूदाह को इतने ज़ोर से मुंतशिर कर दिया कि आख़िरकार एक भी अपना सर नहीं उठा सका। लेकिन अब यह कारीगर उनमें दहशत फैलाने आए हैं। यह उन क़ौमों के सींगों को ख़ाक में मिला देंगे जिन्होंने उनसे यहूदाह के बाशिंदों को मुंतशिर कर दिया था।"

तीसरी रोया : आदमी यरूशलम की पैमाइश करता है

2 मैंने अपनी नज़र दुबारा उठाई तो एक आदमी को देखा जिसके हाथ में फ़ीता था। 2 मैंने पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं?" उसने जवाब दिया, "यरूशलम की पैमाइश करने जा रहा हूँ। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि शहर की लंबाई और चौड़ाई कितनी होनी चाहिए।" 3 तब वह फ़रिश्ता रवाना हुआ जो अब तक मुझसे बात कर रहा था। लेकिन रास्ते में एक और फ़रिश्ता उससे मिलने आया। 4 इस दूसरे फ़रिश्ते ने कहा, "भागकर पैमाइश करनेवाले नौजवान को बता दे, 'इनसानो-हैवान की इतनी बड़ी तादाद होगी कि आइंदा यरूशलम की फ़सील नहीं होगी। 5 रब फ़रमाता है कि उस वक़्त मैं आग की चारदीवारी बनकर उस की हिफ़ाज़त करूँगा, मैं उसके दरमियान रहकर उस की इज़्ज़तो-जलाल का बाइस हूँगा'।"

6 रब फ़रमाता है, "उठो, उठो! शिमाली मुल्क से भाग आओ। क्योंकि मैंने ख़ुद तुम्हें चारों तरफ़ मुंतशिर कर दिया था। 7 लेकिन अब मैं फ़रमाता हूँ कि वहाँ से निकल आओ। सिय्यून के जितने लोग बाबल[a] में रहते हैं वहाँ से बच निकलें!" 8 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जिसने मुझे भेजा वह उन क़ौमों के बारे में जिन्होंने तुम्हें लूट लिया फ़रमाता है, "जो तुम्हें छेड़े वह मेरी आँख की पुतली को छेड़ेगा। 9 इसलिए यक़ीन करो कि मैं अपना हाथ उनके ख़िलाफ़ उठाऊँगा। उनके अपने ग़ुलाम उन्हें लूट लेंगे।"

तब तुम जान लोगे कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे भेजा है। 10 रब फ़रमाता है, "ऐ सिय्यून बेटी, ख़ुशी के नारे लगा! क्योंकि मैं आ रहा हूँ, मैं तेरे दरमियान सुकूनत करूँगा। 11 उस दिन बहुत-सी अक़वाम मेरे साथ पैवस्त होकर मेरी क़ौम का

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : बाबल बेटी।

हिस्सा बन जाएँगी। मैं ख़ुद तेरे दरमियान सुकूनत
करूँगा।”
तब तू जान लेगी कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे
तेरे पास भेजा है।
12 मुक़द्दस मुल्क में यहूदाह रब की मौरूसी
ज़मीन बनेगा, और वह यरूशलम को दुबारा चुन
लेगा। 13 तमाम इनसान रब के सामने ख़ामोश
हो जाएँ, क्योंकि वह उठकर अपनी मुक़द्दस
सुकूनतगाह से निकल आया है।

चौथी रोया : इमामे-आज़म यशुअ

3 इसके बाद रब ने मुझे रोया में इमामे-
आज़म यशुअ को दिखाया। वह रब के
फ़रिश्ते के सामने खड़ा था, और इबलीस उस
पर इलज़ाम लगाने के लिए उसके दाएँ हाथ खड़ा
हो गया था। 2 रब ने इबलीस से फ़रमाया, “ऐ
इबलीस, रब तुझे मलामत करता है! रब जिसने
यरूशलम को चुन लिया वह तुझे डाँटता है! यह
आदमी तो बाल बाल बच गया है, उस लकड़ी की
तरह जो भड़कती आग में से छीन ली गई है।”
3 यशुअ गंदे कपड़े पहने हुए फ़रिश्ते के सामने
खड़ा था। 4 जो अफ़राद साथ खड़े थे उन्हें फ़रिश्ते
ने हुक्म दिया, “उसके मैले कपड़े उतार दो।”
फिर यशुअ से मुख़ातिब हुआ, “देख, मैंने तेरा
क़ुसूर तुझसे दूर कर दिया है, और अब मैं तुझे
शानदार सफ़ेद कपड़े पहना देता हूँ।” 5 मैंने कहा,
“वह उसके सर पर पाक-साफ़ पगड़ी बाँधें!”
चुनाँचे उन्होंने यशुअ के सर पर पाक-साफ़ पगड़ी
बाँधकर उसे नए कपड़े पहनाए। रब का फ़रिश्ता
साथ खड़ा रहा। 6 यशुअ से उसने बड़ी संजीदगी
से कहा,
7 “रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘मेरी राहों पर
चलकर मेरे अहकाम पर अमल कर तो तू मेरे घर
की राहनुमाई और उस की बारगाहों की देख-भाल
करेगा। फिर मैं तेरे लिए यहाँ आने और हाज़िरीन
में खड़े होने का रास्ता क़ायम रखूँगा।
8 ऐ इमामे-आज़म यशुअ, सुन! तू और तेरे
सामने बैठे तेरे इमाम भाई मिलकर उस वक़्त
की तरफ़ इशारा हैं जब मैं अपने ख़ादिम को
जो कोंपल कहलाता है आने दूँगा। 9 देखो वह
जौहर जो मैंने यशुअ के सामने रखा है। उस एक
ही पत्थर पर सात आँखें हैं।’ रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, ‘मैं उस पर कतबा कंदा करके एक
ही दिन में इस मुल्क का गुनाह मिटा दूँगा। 10 उस
दिन तुम एक दूसरे को अपनी अंगूर की बेल और
अपने अंजीर के दरख़्त के साये में बैठने की दावत
दोगे।’ यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।”

पाँचवीं रोया : सोने का शमादान और ज़ैतून के दरख़्त

4 जिस फ़रिश्ते ने मुझसे बात की थी वह
अब मेरे पास वापस आया। उसने मुझे यों
जगा दिया जिस तरह गहरी नींद सोनेवाले को
जगाया जाता है। 2 उसने पूछा, “तुझे क्या नज़र
आता है?” मैंने जवाब दिया, “ख़ालिस सोने
का शमादान जिस पर तेल का प्याला और सात
चराग़ हैं। हर चराग़ के सात मुँह हैं। 3 ज़ैतून के
दो दरख़्त भी दिखाई देते हैं। एक दरख़्त तेल के
प्याले के दाईं तरफ़ और दूसरा उसके बाईं तरफ़
है। 4 लेकिन मेरे आक़ा, इन चीज़ों का मतलब
क्या है?”
5 फ़रिश्ता बोला, “क्या यह तुझे मालूम
नहीं?” मैंने जवाब दिया, “नहीं, मेरे आक़ा।”
6 फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “ज़रुब्बाबल के लिए
रब का यह पैग़ाम है,
‘रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि तू न अपनी
ताक़त, न अपनी क़ुव्वत से बल्कि मेरे रूह से
ही कामयाब होगा।’ 7 क्या रास्ते में बड़ा पहाड़
हायल है? ज़रुब्बाबल के सामने वह हमवार
मैदान बन जाएगा। और जब ज़रुब्बाबल रब के घर
का आख़िरी पत्थर लगाएगा तो हाज़िरीन पुकार
उठेंगे, ‘मुबारक हो! मुबारक हो’!”
8 रब का कलाम एक बार फिर मुझ पर नाज़िल
हुआ, 9 “ज़रुब्बाबल के हाथों ने इस घर की
बुनियाद डाली, और उसी के हाथ उसे तकमील
तक पहुँचाएँगे। तब तू जान लेगा कि रब्बुल-

अफ़वाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 10 गो
तामीर के आग़ाज़ में बहुत कम नज़र आता है तो
भी उस पर हिक़ारत की निगाह न डालो। क्योंकि
लोग ख़ुशी मनाएँगे जब ज़रुब्बाबल के हाथ में
साहूल देखेंगे। (मज़कूरा सात चराग़ रब की आँखें
हैं जो पूरी दुनिया की गश्त लगाती रहती हैं)।"
11 मैंने मज़ीद पूछा, "शमादान के दाएँ-बाएँ के
ज़ैतून के दो दरख़्तों से क्या मुराद है? 12 यहाँ
सोने के दो पायप भी नज़र आते हैं जिनसे ज़ैतून
का सुनहरा तेल बह निकलता है। ज़ैतून की जो दो
टहनियाँ उनके साथ हैं उनका मतलब क्या है?"
13 फ़रिश्ते ने कहा, "क्या तू यह नहीं
जानता?" मैं बोला, "नहीं, मेरे आक़ा।" 14 तब
उसने फ़रमाया, "यह वह दो मसह किए हुए
आदमी हैं जो पूरी दुनिया के मालिक के हुज़ूर खड़े
होते हैं।"

छटी रोया : उड़नेवाला तूमार

5 मैंने एक बार फिर अपनी नज़र उठाई तो
एक उड़ता हुआ तूमार देखा। 2 फ़रिश्ते ने
पूछा, "तुझे क्या नज़र आता है?" मैंने जवाब
दिया, "एक उड़ता हुआ तूमार जो 30 फ़ुट लंबा
और 15 फ़ुट चौड़ा है।" 3 वह बोला, "इससे
मुराद एक लानत है जो पूरे मुल्क पर भेजी
जाएगी। इस तूमार के एक तरफ़ लिखा है कि हर
चोर को मिटा दिया जाएगा और दूसरी तरफ़ यह
कि झूटी क़सम खानेवाले को नेस्त किया जाएगा।
4 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'मैं यह भेजूँगा तो
चोर और मेरे नाम की झूटी क़सम खानेवाले के
घर में लानत दाख़िल होगी और उसके बीच में
रहकर उसे लकड़ी और पत्थर समेत तबाह कर
देगी'।"

सातवीं रोया : टोकरी में औरत

5 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उसने
आकर मुझसे कहा, "अपनी निगाह उठाकर वह
देख जो निकलकर आ रहा है।" 6 मैंने पूछा, "यह
क्या है?" उसने जवाब दिया, "यह अनाज की
पैमाइश करने की टोकरी है। यह पूरे मुल्क में नज़र
आती है।" 7 टोकरी पर सीसे का ढकना था। अब
वह खुल गया, और टोकरी में बैठी हुई एक औरत
दिखाई दी। 8 फ़रिश्ता बोला, "इस औरत से मुराद
बेदीनी है।" उसने औरत को धक्का देकर टोकरी
में वापस कर दिया और सीसे का ढकना ज़ोर से
बंद कर दिया।
9 मैंने दुबारा अपनी नज़र उठाई तो दो औरतों
को देखा। उनके लक़लक़ के-से पर थे, और
उड़ते वक़्त हवा उनके साथ थी। टोकरी के पास
पहुँचकर वह उसे उठाकर आसमानो-ज़मीन के
दरमियान ले गईं। 10 जो फ़रिश्ता मुझसे गुफ़्तगू
कर रहा था उससे मैंने पूछा, "औरतें टोकरी को
किधर ले जा रही हैं?" 11 उसने जवाब दिया,
"मुल्के-बाबल में। वहाँ वह उसके लिए घर बना
देंगी। जब घर तैयार होगा तो टोकरी वहाँ उस की
अपनी जगह पर रखी जाएगी।"

चार रथ

6 मैंने फिर अपनी निगाह उठाई तो क्या
देखता हूँ कि चार रथ पीतल के दो पहाड़ों
के बीच में से निकल रहे हैं। 2 पहले रथ के घोड़े
सुर्ख़, दूसरे के स्याह, 3 तीसरे के सफ़ेद और चौथे
के धब्बेदार थे। सब ताक़तवर थे।
4 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे
मैंने सवाल किया, "मेरे आक़ा, इनका क्या
मतलब है?" 5 उसने जवाब दिया, "यह
आसमान की चार रूहें[a] हैं। पहले यह पूरी दुनिया
के मालिक के हुज़ूर खड़ी थीं, लेकिन अब वहाँ
से निकल रही हैं। 6 स्याह घोड़ों का रथ शिमाली
मुल्क की तरफ़ जा रहा है, सफ़ेद घोड़ों का
मग़रिब की तरफ़, और धब्बेदार घोड़ों का जुनूब
की तरफ़।"
7 यह ताक़तवर घोड़े बड़ी बेताबी से इस इंतज़ार
में थे कि दुनिया की गश्त करें। फिर उसने हुक्म
दिया, "चलो, दुनिया की गश्त करो।" वह फ़ौरन

[a] या हवाएँ।

निकलकर दुनिया की गश्त करने लगे। 8 फ़रिश्ते
ने मुझे आवाज़ देकर कहा, "उन घोड़ों पर ख़ास
ध्यान दो जो शिमाली मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं।
यह उस मुल्क पर मेरा ग़ुस्सा उतारेंगे।"

इसराईल का आनेवाला बादशाह

9 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
10 "आज ही यूसियाह बिन सफ़नियाह के घर
में जा! वहाँ तेरी मुलाक़ात बाबल में जिलावतन
किए हुए इसराईलियों ख़लदी, तूबियाह और
यदायाह से होगी जो इस वक़्त वहाँ पहुँच चुके हैं।
जो हदिये वह अपने साथ लाए हैं उन्हें क़बूल कर।
11 उनकी यह सोना-चाँदी लेकर ताज बना ले,
फिर ताज को इमामे-आज़म यशुअ बिन यहूसदक़
के सर पर रखकर 12 उसे बता, 'रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है कि एक आदमी आनेवाला है जिसका
नाम कोंपल है। उसके साये में बहुत कोंपलें फूट
निकलेंगी, और वह रब का घर तामीर करेगा।
13 हाँ, वही रब का घर बनाएगा और शानो-शौकत
के साथ तख़्त पर बैठकर हुकूमत करेगा। वह
इमाम की हैसियत से भी तख़्त पर बैठेगा, और
दोनों ओहदों में इत्तफ़ाक़ और सलामती होगी।'
14 ताज को हीलम, तूबियाह, यदायाह और हेन
बिन सफ़नियाह की याद में रब के घर में महफ़ूज़
रखा जाए। 15 लोग दूर-दराज़ इलाक़ों से आकर
रब का घर तामीर करने में मदद करेंगे।"

तब तुम जान लोगे कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। अगर तुम ध्यान से रब अपने ख़ुदा की सुनो तो यह सब कुछ पूरा हो जाएगा।

तुम मेरी सुनने से इनकार करते हो

7 दारा बादशाह की हुकूमत के चौथे साल
में रब ज़करियाह से हमकलाम हुआ।
किसलेव यानी नवें महीने का चौथा दिन[a] था।
2 उस वक़्त बैतेल शहर ने सराज़र और रजम-
मलिक को उसके आदमियों समेत यरूशलम
भेजा था ताकि रब से इलतमास करें। 3 साथ साथ
उन्हें रब्बुल-अफ़वाज के घर के इमामों को यह
सवाल पेश करना था, "अब हम कई साल से
पाँचवें महीने में रोज़ा रखकर रब के घर की तबाही
पर मातम करते आए हैं। क्या लाज़िम है कि हम
यह दस्तूर आइंदा भी जारी रखें?"

4 तब मुझे रब्बुल-अफ़वाज से जवाब मिला,
5 "मुल्क के तमाम बाशिंदों और इमामों से कह,
'बेशक तुम 70 साल से पाँचवें और सातवें महीने
में रोज़ा रखकर मातम करते आए हो। लेकिन क्या
तुमने यह दस्तूर वाक़ई मेरी ख़ातिर अदा किया?
हरगिज़ नहीं! 6 ईदों पर भी तुम खाते-पीते वक़्त
सिर्फ़ अपनी ही ख़ातिर ख़ुशी मनाते हो। 7 यह वही
बात है जो मैंने माज़ी में भी नबियों की मारिफ़त
तुम्हें बताई, उस वक़्त जब यरूशलम में आबादी
और सुकून था, जब गिर्दो-नवाह के शहर दश्ते-
नजब और मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े तक
आबाद थे'।"

8 इस नाते से ज़करियाह पर रब का एक
और कलाम नाज़िल हुआ, 9 "रब्बुल-अफ़-
वाज फ़रमाता है, 'अदालत में मुंसिफ़ाना फ़ैसले
करो, एक दूसरे पर मेहरबानी और रहम करो!
10 बेवाओं, यतीमों, अजनबियों और ग़रीबों पर
ज़ुल्म मत करना। अपने दिल में एक दूसरे के
ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे न बान्धो।' 11 जब तुम्हारे
बापदादा ने यह कुछ सुना तो वह इस पर ध्यान
देने के लिए तैयार नहीं थे बल्कि अकड़ गए।
उन्होंने अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेरकर अपने कानों
को बंद किए रखा। 12 उन्होंने अपने दिलों को
हीरे की तरह सख़्त कर लिया ताकि शरीअत
और वह बातें उन पर असरअंदाज़ न हो सकें
जो रब्बुल-अफ़वाज ने अपने रूह के वसीले से
गुज़शता नबियों को बताने को कहा था। तब
रब्बुल-अफ़वाज का शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल
हुआ। 13 वह फ़रमाता है, 'चूँकि उन्होंने मेरी न
सुनी इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि जब वह मदद
के लिए मुझसे इल्तिजा करें तो मैं भी उनकी

[a] 4 दिसंबर।

नहीं सुनूँगा। 14 मैंने उन्हें आँधी से उड़ाकर तमाम
दीगर अक़्वाम में मुंतशिर कर दिया, ऐसी क़ौमों
में जिनसे वह नावाक़िफ़ थे। उनके जाने पर वतन
इतना वीरानो-सुनसान हुआ कि कोई न रहा जो
उसमें आए या वहाँ से जाए। यों उन्होंने उस
ख़ुशगवार मुल्क को तबाह कर दिया’।”

एक नया आग़ाज़

8 एक बार फिर रब्बुल-अफ़वाज का
कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 “रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं बड़ी ग़ैरत से सिय्यून
के लिए लड़ रहा हूँ, बड़े ग़ुस्से में उसके लिए
जिद्दो-जहद कर रहा हूँ। 3 रब फ़रमाता है कि
मैं सिय्यून के पास वापस आऊँगा, दुबारा
यरूशलम के बीच में सुकूनत करूँगा। तब
यरूशलम ‘वफ़ादारी का शहर’ और रब्बुल-
अफ़वाज का पहाड़ ‘कोहे-मुक़द्दस’ कहलाएगा।
4 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘बुज़ुर्ग
मर्दो-ख़वातीन दुबारा यरूशलम के चौकों में बैठेंगे,
और हर एक इतना उम्ररसीदा होगा कि उसे छड़ी
का सहारा लेना पड़ेगा। 5 साथ साथ चौक खेल-
कूद में मसरूफ़ लड़के-लड़कियों से भरे रहेंगे।’

6 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘शायद यह उस
वक़्त बचे हुए इसराईलियों को नामुमकिन लगे।
लेकिन क्या ऐसा काम मेरे लिए जो रब्बुल-
अफ़वाज हूँ नामुमकिन है? हरगिज़ नहीं!’
7 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘मैं अपनी क़ौम
को मशरिक़ और मग़रिब के ममालिक से बचाकर
8 वापस लाऊँगा, और वह यरूशलम में बसेंगे।
वहाँ वह मेरी क़ौम होंगे और मैं वफ़ादारी और
इनसाफ़ के साथ उनका ख़ुदा हूँगा।’

9 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘हौसला
रखकर तामीरी काम तकमील तक पहुँ-
चाओ! आज भी तुम उन बातों पर एतमाद कर
सकते हो जो नबियों ने रब्बुल-अफ़वाज के घर की
बुनियाद डालते वक़्त सुनाई थीं। 10 याद रहे कि
उस वक़्त से पहले न इनसान और न हैवान को
मेहनत की मज़दूरी मिलती थी। आने जानेवाले
कहीं भी दुश्मन के हमलों से महफ़ूज़ नहीं थे,
क्योंकि मैंने हर आदमी को उसके हमसाये का
दुश्मन बना दिया था।’ 11 लेकिन रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, ‘अब से मैं तुमसे जो बचे हुए हो
ऐसा सुलूक नहीं करूँगा। 12 लोग सलामती से
बीज बोएँगे, अंगूर की बेल वक़्त पर अपना फल
लाएगी, खेतों में फ़सलें पकेंगी और आसमान
ओस पड़ने देगा। यह तमाम चीज़ें मैं यहूदाह के
बचे हुओं को मीरास में दूँगा। 13 ऐ यहूदाह और
इसराईल, पहले तुम दीगर अक़्वाम में लानत का
निशाना बन गए थे, लेकिन अब जब मैं तुम्हें रिहा
करूँगा तो तुम बरकत का बाइस होगे। डरो मत!
हौसला रखो!’

14 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘पहले जब
तुम्हारे बापदादा ने मुझे तैश दिलाया तो मैंने तुम
पर आफ़त लाने का मुसम्मम इरादा कर लिया
था और कभी न पछताया। 15 लेकिन अब मैं
यरूशलम और यहूदाह को बरकत देना चाहता
हूँ। इसमें मेरा इरादा उतना ही पक्का है जितना
पहले तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में पक्का था। चुनाँचे
डरो मत! 16 लेकिन इन बातों पर ध्यान दो,
एक दूसरे से सच बात करो, अदालत में सच्चाई
और सलामती पर मबनी फ़ैसले करो, 17 अपने
पड़ोसी के ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे मत बान्धो और
झूटी क़सम खाने के शौक़ से बाज़ आओ। इन
तमाम चीज़ों से मैं नफ़रत करता हूँ।’ यह रब का
फ़रमान है।”

18 एक बार फिर रब्बुल-अफ़वाज का कलाम
मुझ पर नाज़िल हुआ, 19 “रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है कि आज तक यहूदाह के लोग चौथे,
पाँचवें, सातवें और दसवें महीने में रोज़ा रखकर
मातम करते आए हैं। लेकिन अब से यह औक़ात
ख़ुशी-ओ-शादमानी के मौक़े होंगे जिन पर जशन
मनाओगे। लेकिन सच्चाई और सलामती को प्यार
करो!

20 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त
आएगा जब दीगर अक़्वाम और मुतअद्दिद शहरों
के लोग यहाँ आएँगे। 21 एक शहर के बाशिंदे

दूसरे शहर में जाकर कहेंगे, ‘आओ, हम यरूशलम
जाकर रब से इलतमास करें, रब्बुल-अफ़वाज
की मरज़ी दरियाफ़्त करें। हम भी जाएंगे।’
22 हाँ, मुतअद्दिद अक़वाम और ताक़तवर उम्मतें
यरूशलम आएँगी ताकि रब्बुल-अफ़वाज की
मरज़ी मालूम करें और उससे इलतमास करें।
23 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि उन दिनों
में मुख़्तलिफ़ अक़वाम और अहले-ज़बान के दस
आदमी एक यहूदी के दामन को पकड़कर कहेंगे,
‘हमें अपने साथ चलने दें, क्योंकि हमने सुना है
कि अल्लाह आपके साथ है’।”

इसराईल के दुश्मनों की अदालत

9 रब का कलाम मुल्के-हद्राक के ख़ि-
लाफ़ है, और वह दमिश्क़ पर नाज़िल
होगा। क्योंकि इनसान और इसराईल के तमाम
क़बीलों की आँखें रब की तरफ़ देखती हैं।
2 दमिश्क़ की सरहद पर वाक़े हमात बल्कि सूर
और सैदा भी इस कलाम से मुतअस्सिर हो
जाएंगे, ख़ाह वह कितने दानिशमंद क्यों न हों।
3 बेशक सूर ने अपने लिए मज़बूत क़िला बना
लिया है, बेशक उसने सोने-चाँदी के ऐसे ढेर
लगाए हैं जैसे आम तौर पर गलियों में रेत या कचरे
के ढेर लगा लिए जाते हैं। 4 लेकिन रब उस पर
क़ब्ज़ा करके उस की फ़ौज को समुंदर में फेंक
देगा। तब शहर नज़रे-आतिश हो जाएगा। 5 यह
देखकर अस्क़लून घबरा जाएगा और ग़ज़्ज़ा तड़प
उठेगा। अक़रून भी लरज़ उठेगा, क्योंकि उस की
उम्मीद जाती रहेगी। ग़ज़्ज़ा का बादशाह हलाक
और अस्क़लून ग़ैरआबाद हो जाएगा। 6 अशदूद में
दो नसलों के लोग बसेंगे। रब फ़रमाता है, “जो
कुछ फ़िलिस्तियों के लिए फ़ख़र का बाइस है उसे
मैं मिटा दूँगा। 7 मैं उनकी बुतपरस्ती ख़त्म करूँगा।
आइंदा वह गोश्त को ख़ून के साथ और अपनी
घिनौनी क़ुरबानियाँ नहीं खाएँगे। तब जो बच
जाएंगे मेरे परस्तार होंगे और यहूदाह के ख़ानदानों
में शामिल हो जाएंगे। अक़रून के फ़िलिस्ती यों
मेरी क़ौम में शामिल हो जाएंगे जिस तरह क़दीम
ज़माने में यबूसी मेरी क़ौम में शामिल हो गए। 8 मैं
ख़ुद अपने घर की पहरादारी करूँगा ताकि आइंदा
जो भी आते या जाते वक़्त वहाँ से गुज़रे उस पर
हमला न करे, कोई भी ज़ालिम मेरी क़ौम को तंग
न करे। अब से मैं ख़ुद उस की देख-भाल करूँगा।

नया बादशाह आनेवाला है

9 ऐ सिय्यून बेटी, शादियाना बजा! ऐ
यरूशलम बेटी, शादमानी के नारे लगा! देख, तेरा
बादशाह तेरे पास आ रहा है। वह रास्तबाज़ और
फ़तहमंद है, वह हलीम है और गधे पर, हाँ गधी
के बच्चे पर सवार है।
10 मैं इफ़राईम से रथ और यरूशलम से घोड़े
दूर कर दूँगा। जंग की कमान टूट जाएगी।
मौऊदा बादशाह[a] के कहने पर तमाम अक़वाम
में सलामती क़ायम हो जाएगी। उस की हुकूमत
एक समुंदर से दूसरे तक और दरियाए-फ़ुरात से
दुनिया की इंतहा तक मानी जाएगी।

रब अपनी क़ौम की हिफ़ाज़त करेगा

11 ऐ मेरी क़ौम, मैंने तेरे साथ एक अहद बाँधा
जिसकी तसदीक़ क़ुरबानियों के ख़ून से हुई,
इसलिए मैं तेरे क़ैदियों को पानी से महरूम गढ़े
से रिहा करूँगा। 12 ऐ पुरउम्मीद क़ैदियो, क़िले
के पास वापस आओ! क्योंकि आज ही मैं एलान
करता हूँ कि तुम्हारी हर तकलीफ़ के एवज़ मैं तुम्हें
दो बरकतें बख़्श दूँगा।
13 यहूदाह मेरी कमान है और इसराईल मेरे तीर
जो मैं दुश्मन के ख़िलाफ़ चलाऊँगा। ऐ सिय्यून
बेटी, मैं तेरे बेटों को यूनान के फ़ौजियों से लड़ने
के लिए भेजूँगा, मैं तुझे सूरमे की तलवार की
मानिंद बना दूँगा।”
14 तब रब उन पर ज़ाहिर होकर बिजली
की तरह अपना तीर चलाएगा। रब क़ादिरे-
मुतलक़ नरसिंगा फूँककर जुनूबी आँधियों
में आएगा। 15 रब्बुल-अफ़वाज ख़ुद इसराई-

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : उसके कहने पर।

लियों को पनाह देगा। तब वह दुश्मन को खा खाकर उसके फेंके हुए पत्थरों को ख़ाक में मिला देंगे और ख़ून को मै की तरह पी पीकर शोर मचाएँगे। वह क़ुरबानी के ख़ून से भरे कटोरे की तरह भर जाएंगे, क़ुरबानगाह के कोनों जैसे ख़ूनआलूदा हो जाएंगे।

16 उस दिन रब उनका ख़ुदा उन्हें जो उस की क़ौम का रेवड़ हैं छुटकारा देगा। तब वह उसके मुल्क में ताज के जवाहिर की मानिंद चमक उठेंगे।
17 वह कितने दिलकश और ख़ूबसूरत लगेंगे! अनाज और मै की कसरत से कुँवारे-कुँवारियाँ फलने-फूलने लगेंगे।

रब ही मदद कर सकता है

10 बहार के मौसम में रब से बारिश माँगो। क्योंकि वही घने बादल बनाता है, वही बारिश बरसाकर हर एक को खेत की हरियाली मुहैया करता है। 2 तुम्हारे घरों के बुत फ़रेब देते, तुम्हारे ग़ैबदान झूटी रोया देखते और फ़रेबदेह ख़ाब सुनाते हैं। उनकी तसल्ली अबस है। इसी लिए क़ौम को भेड़-बकरियों की तरह यहाँ से चला जाना पड़ा। गल्लाबान नहीं है, इसलिए वह मुसीबत में उलझे रहते हैं।

रब अपनी क़ौम को वापस लाएगा

3 रब फ़रमाता है, "मेरी क़ौम के गल्ला-बानों पर मेरा ग़ज़ब भड़क उठा है, और जो बकरे उस की राहनुमाई कर रहे हैं उन्हें मैं सज़ा दूँगा। क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज अपने रेवड़ यहूदाह के घराने की देख-भाल करेगा, उसे जंगी घोड़े जैसा शानदार बना देगा। 4 यहूदाह से कोने का बुनियादी पत्थर, मेख़, जंग की कमान और तमाम हुक्मरान निकल आएँगे। 5 सब सूरमे की मानिंद होंगे जो लड़ते वक़्त दुश्मन को गली के कचरे में कुचल देंगे। रब्बुल-अफ़वाज उनके साथ होगा, इसलिए वह लड़कर ग़ालिब आएँगे। मुख़ालिफ़ घुड़सवारों की बड़ी रुसवाई होगी।

6 मैं यहूदाह के घराने को तक़वियत दूँगा, यूसुफ़ के घराने को छुटकारा दूँगा, हाँ उन पर रहम करके उन्हें दुबारा वतन में बसा दूँगा। तब उनकी हालत से पता नहीं चलेगा कि मैंने कभी उन्हें रद्द किया था। क्योंकि मैं रब उनका ख़ुदा हूँ,
मैं ही उनकी सुनूँगा। 7 इफ़राईम के अफ़राद सूरमे से बन जाएंगे, वह यों ख़ुश हो जाएंगे जिस तरह दिल मै पीने से ख़ुश हो जाता है। उनके बच्चे यह देखकर बाग़ बाग़ हो जाएंगे, उनके दिल रब की ख़ुशी मनाएँगे।

8 मैं सीटी बजाकर उन्हें जमा करूँगा, क्योंकि मैंने फ़िद्या देकर उन्हें आज़ाद कर दिया है। तब
वह पहले की तरह बेशुमार हो जाएंगे। 9 मैं उन्हें बीज की तरह मुख़्तलिफ़ क़ौमों में बोकर मुंतशिर कर दूँगा, लेकिन दूर-दराज़ इलाक़ों में वह मुझे याद करेंगे। और एक दिन वह अपनी औलाद
समेत बचकर वापस आएँगे। 10 मैं उन्हें मिसर से वापस लाऊँगा, असूर से इकट्ठा करूँगा। मैं उन्हें जिलियाद और लुबनान में लाऊँगा, तो भी उनके
लिए जगह काफ़ी नहीं होगी। 11 जब वह मुसीबत के समुंदर में से गुज़रेंगे तो रब मौजों को यों मारेगा कि सब कुछ पानी की गहराइयों तक ख़ुश्क हो जाएगा। असूर का फ़ख़र ख़ाक में मिल जाएगा,
और मिसर का शाही असा दूर हो जाएगा। 12 मैं
अपनी क़ौम को रब में तक़वियत दूँगा, और वह उसका ही नाम लेकर ज़िंदगी गुज़ारेंगे।" यह रब का फ़रमान है।

बड़ों को नीचा किया जाएगा

11 ऐ लुबनान, अपने दरवाज़ों को खोल दे ताकि तेरे देवदार के दरख़्त नज़रे-आतिश हो जाएँ।

2 ऐ जूनीपर के दरख़तो, वावैला करो! क्योंकि देवदार के दरख़्त गिर गए हैं, यह ज़बरदस्त दरख़्त तबाह हो गए हैं। ऐ बसन के बलूतो, आहो-ज़ारी करो! जो जंगल इतना घना था कि कोई उसमें से गुज़र न सकता था उसे काटा गया है।

3 सुनो, चरवाहे रो रहे हैं, क्योंकि उनकी शानदार चरागाहें बरबाद हो गई हैं। सुनो, जवान शेरबबर दहाड़ रहे हैं, क्योंकि वादीए-यरदन का गुंजान जंगल ख़त्म हो गया है।

दो क़िस्म के गल्लाबान

4 रब मेरा ख़ुदा मुझसे हमकलाम हुआ, "ज़बह होनेवाली भेड़-बकरियों की गल्ला-
बानी कर! 5 जो उन्हें ख़रीद लेते वह उन्हें ज़बह करते हैं और क़ुसूरवार नहीं ठहरते। और जो उन्हें बेचते वह कहते हैं, 'अल्लाह की हम्द हो, मैं अमीर हो गया हूँ!' उनके अपने चरवाहे उन पर तरस नहीं खाते।

6 इसलिए रब फ़रमाता है कि मैं भी मुल्क के बाशिंदों पर तरस नहीं खाऊँगा। मैं हर एक को उसके पड़ोसी और उसके बादशाह के हवाले करूँगा। वह मुल्क को टुकड़े टुकड़े करेंगे, और मैं उन्हें उनके हाथ से नहीं छुड़ाऊँगा।"

7 चुनाँचे मैं, ज़करियाह ने सौदागरों के लिए ज़बह होनेवाली भेड़-बकरियों की गल्लाबानी की। मैंने उस काम के लिए दो लाठियाँ लीं। एक का नाम 'मेहरबानी' और दूसरी का नाम 'यगांगत' था। उनके साथ मैंने रेवड़ की गल्लाबानी की।
8 एक ही महीने में मैंने तीन गल्लाबानों को मिटा दिया। लेकिन जल्द ही मैं भेड़-बकरियों से तंग आ गया, और उन्होंने मुझे भी हक़ीर जाना।

9 तब मैं बोला, "आइंदा मैं तुम्हारी गल्ला-बानी नहीं करूँगा। जिसे मरना है वह मरे, जिसे ज़ाया होना है वह ज़ाया हो जाए। और जो बच जाएँ वह एक दूसरे का गोश्त खाएँ। मैं ज़िम्मेदार नहीं हूँगा!"[a]
10 मैंने लाठी बनाम 'मेहरबानी' को तोड़कर ज़ाहिर किया कि जो अहद मैंने तमाम अक़वाम के साथ बाँधा था वह मनसूख़ है।
11 उसी दिन वह मनसूख़ हुआ।

तब भेड़-बकरियों के जो सौदागर मुझ पर ध्यान दे रहे थे उन्होंने जान लिया कि यह पैग़ाम रब की तरफ़ से है।
12 फिर मैंने उनसे कहा, "अगर यह आपको मुनासिब लगे तो मुझे मज़दूरी के पैसे दे दें, वरना रहने दें।" उन्होंने मज़दूरी के लिए मुझे चाँदी के 30 सिक्के दे दिए।

13 तब रब ने मुझे हुक्म दिया, "अब यह रक़म कुम्हार[b] के सामने फेंक दे। कितनी शानदार रक़म है! यह मेरी इतनी ही क़दर करते हैं।" मैंने चाँदी के 30 सिक्के लेकर रब के घर में कुम्हार के सामने फेंक दिए।
14 इसके बाद मैंने दूसरी लाठी बनाम 'यगांगत' को तोड़कर ज़ाहिर किया कि यहूदाह और इसराईल की अख़ुव्वत मनसूख़ हो गई है।

15 फिर रब ने मुझे बताया, "अब दुबारा गल्लाबान का सामान ले ले। लेकिन इस बार अहमक़ चरवाहे का-सा रवैया अपना ले।
16 क्योंकि मैं मुल्क पर ऐसा गल्लाबान मुक़र्रर करूँगा जो न हलाक होनेवालों की देख-भाल करेगा, न छोटों को तलाश करेगा, न ज़ख़मियों को शफ़ा देगा, न सेहतमंदों को ख़ुराक मुहैया करेगा। इसके बजाए वह बेहतरीन जानवरों का गोश्त खा लेगा बल्कि इतना ज़ालिम होगा कि उनके खुरों को फाड़कर तोड़ेगा।
17 उस बेकार चरवाहे पर अफ़सोस जो अपने रेवड़ को छोड़ देता है। तलवार उसके बाज़ू और दहनी आँख को ज़ख़मी करे। उसका बाज़ू सूख जाए और उस की दहनी आँख अंधी हो जाए।"

अल्लाह यरूशलम की हिफ़ाज़त करेगा

12 ज़ैल में रब का इसराईल के लिए कलाम है। रब जिसने आसमान को ख़ैमे की तरह तानकर ज़मीन की बुनियादें रखीं और इनसान के अंदर उस की रूह को तश्कील दिया वह फ़रमाता है,

2 "मैं यरूशलम को गिर्दो-नवाह की क़ौमों के लिए शराब का प्याला बना दूँगा जिसे वह पीकर लड़खड़ाने लगेंगी। यहूदाह भी मुसीबत में आएगा जब यरूशलम का मुहासरा किया जाएगा।
3 उस

[a] 'मैं ज़िम्मेदार नहीं हूँगा' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

[b] या धात ढालनेवाले।

दिन दुनिया की तमाम अक़वाम यरूशलम के
ख़िलाफ़ जमा हो जाएँगी। तब मैं यरूशलम को
एक ऐसा पत्थर बनाऊँगा जो कोई नहीं उठा
सकेगा। जो भी उसे उठाकर ले जाना चाहे वह
ज़ख़मी हो जाएगा।” 4 रब फ़रमाता है, “उस दिन
मैं तमाम घोड़ों में अबतरी और उनके सवारों में
दीवानगी पैदा करूँगा। मैं दीगर अक़वाम के तमाम
घोड़ों को अंधा कर दूँगा।

साथ साथ मैं खुली आँखों से यहूदाह के घराने
की देख-भाल करूँगा। 5 तब यहूदाह के ख़ानदान
दिल में कहेंगे, ‘यरूशलम के बाशिंदे इसलिए
हमारे लिए क़ुव्वत का बाइस हैं कि रब्बुल-
अफ़वाज उनका ख़ुदा है।’ 6 उस दिन मैं यहूदाह
के ख़ानदानों को जलते हुए कोयले बना दूँगा
जो दुश्मन की सूखी लकड़ी को जला देंगे। वह
भड़कती हुई मशाल होंगे जो दुश्मन की पूलों को
भस्म करेगी। उनके दाईं और बाईं तरफ़ जितनी
भी क़ौमें गिर्दो-नवाह में रहती हैं वह सब नज़रे-
आतिश हो जाएँगी। लेकिन यरूशलम अपनी ही
जगह महफ़ूज़ रहेगा।

7 पहले रब यहूदाह के घरों को बचाएगा ताकि
दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों की
शानो-शौकत यहूदाह से बड़ी न हो। 8 लेकिन रब
यरूशलम के बाशिंदों को भी पनाह देगा। तब
उनमें से कमज़ोर आदमी दाऊद जैसा सूरमा होगा
जबकि दाऊद का घराना ख़ुदा की मानिंद, उनके
आगे चलनेवाले रब के फ़रिश्ते की मानिंद होगा।
9 उस दिन मैं यरूशलम पर हमलाआवर तमाम
अक़वाम को तबाह करने के लिए निकलूँगा।

यरूशलम का मातम

10 मैं दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों
पर मेहरबानी और इलतमास का रूह उंडेलूँगा।
तब वह मुझ पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है,
और वह उसके लिए ऐसा मातम करेंगे जैसे अपने
इकलौते बेटे के लिए, उसके लिए ऐसा शदीद
ग़म खाएँगे जिस तरह अपने पहलौठे के लिए।
11 उस दिन लोग यरूशलम में शिद्दत से मातम
करेंगे। ऐसा मातम होगा जैसा मैदाने-मजिद्दो में
हदद-रिम्मोन पर किया जाता था। 12-14 पूरे का
पूरा मुल्क वावैला करेगा। तमाम ख़ानदान एक
दूसरे से अलग और तमाम औरतें दूसरों से अलग
आहो-बुका करेंगी। दाऊद का ख़ानदान, नातन
का ख़ानदान, लावी का ख़ानदान, सिमई का
ख़ानदान और मुल्क के बाक़ी तमाम ख़ानदान
अलग अलग मातम करेंगे।

बुतपरस्ती और झूटी नबुव्वत का ख़ातमा

13 उस दिन दाऊद के घराने और
यरूशलम के बाशिंदों के लिए चश्मा
खोला जाएगा जिसके ज़रीए वह अपने गुनाहों
और नापाकी को दूर कर सकेंगे।”

2 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “उस दिन मैं
तमाम बुतों को मुल्क में से मिटा दूँगा। उनका
नामो-निशान तक नहीं रहेगा, और वह किसी को
याद नहीं रहेंगे।

नबियों और नापाकी की रूह को भी मैं मुल्क
से दूर करूँगा। 3 इसके बाद अगर कोई नबुव्वत
करे तो उसके अपने माँ-बाप उससे कहेंगे, ‘तू
ज़िंदा नहीं रह सकता, क्योंकि तूने रब का नाम
लेकर झूट बोला है।’ जब वह पेशगोइयाँ सुनाएगा
तो उसके अपने वालिदैन उसे छेद डालेंगे। 4 उस
वक़्त हर नबी को अपनी रोया पर शर्म आएगी जब
नबुव्वत करेगा। वह नबी का बालों से बना लिबास
नहीं पहनेगा ताकि फ़रेब दे 5 बल्कि कहेगा, ‘मैं
नबी नहीं बल्कि काश्तकार हूँ। जवानी से ही मेरा
पेशा खेतीबाड़ी रहा है।’ 6 अगर कोई पूछे, ‘तो
फिर तेरे सीने पर ज़ख़मों के निशान किस तरह
लगे? तो जवाब देगा, मैं अपने दोस्तों के घर में
ज़ख़मी हुआ’।”

लोगों की जाँच-पड़ताल

7 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ तल-
वार, जाग उठ! मेरे गल्लाबान पर हमला कर,
उस पर जो मेरे क़रीब है। गल्लाबान को मार डाल
ताकि भेड़-बकरियाँ तित्तर-बित्तर हो जाएँ। मैं ख़ुद

अपने हाथ को छोटों के ख़िलाफ़ उठाऊँगा।” 8 रब
फ़रमाता है, “पूरे मुल्क में लोगों के तीन हिस्सों
में से दो हिस्सों को मिटाया जाएगा। दो हिस्से
हलाक हो जाएंगे और सिर्फ़ एक ही हिस्सा बचा
रहेगा। 9 इस बचे हुए हिस्से को मैं आग में डालकर
चाँदी या सोने की तरह पाक-साफ़ करूँगा। तब
वह मेरा नाम पुकारेंगे, और मैं उनकी सुनूँगा। मैं
कहूँगा, ‘यह मेरी क़ौम है,’ और वह कहेंगे, ‘रब
हमारा ख़ुदा है’।”

रब ख़ुद यरूशलम में बादशाह होगा

14 ऐ यरूशलम, रब का वह दिन
आनेवाला है जब दुश्मन तेरा माल
लूटकर तेरे दरमियान ही उसे आपस में तक़सीम
करेगा। 2 क्योंकि मैं तमाम अक़वाम को यरूशलम
से लड़ने के लिए जमा करूँगा। शहर दुश्मन के
क़ब्ज़े में आएगा, घरों को लूट लिया जाएगा
और औरतों की इसमतदरी की जाएगी। शहर के
आधे बाशिंदे जिलावतन हो जाएंगे, लेकिन बाक़ी
हिस्सा उसमें ज़िंदा छोड़ा जाएगा।

3 लेकिन फिर रब ख़ुद निकलकर इन अक़वाम
से यों लड़ेगा जिस तरह तब लड़ता है जब कभी
मैदाने-जंग में आ जाता है। 4 उस दिन उसके
पाँव यरूशलम के मशरिक़ में ज़ैतून के पहाड़
पर खड़े होंगे। तब पहाड़ फट जाएगा। उसका
एक हिस्सा शिमाल की तरफ़ और दूसरा जुनूब
की तरफ़ खिसक जाएगा। बीच में मशरिक़ से
मग़रिब की तरफ़ एक बड़ी वादी पैदा हो जाएगी।
5 तुम मेरे पहाड़ों की इस वादी में भागकर पनाह
लोगे, क्योंकि यह आज़ल तक पहुँचाएगी। जिस
तरह तुम यहूदाह के बादशाह उज़्ज़ियाह के ऐयाम
में अपने आपको ज़लज़ले से बचाने के लिए
यरूशलम से भाग निकले थे उसी तरह तुम
मज़कूरा वादी में दौड़ आओगे। तब रब मेरा ख़ुदा
आएगा, और तमाम मुक़द्दसीन उसके साथ होंगे।

6 उस दिन न तपती गरमी होगी, न सर्दी या
पाला। 7 वह एक मुन्फ़रिद दिन होगा जो रब ही
को मालूम होगा। न दिन होगा और न रात बल्कि
शाम को भी रौशनी होगी। 8 उस दिन यरूशलम
से ज़िंदगी का पानी बह निकलेगा। उस की एक
शाख़ मशरिक़ के बहीराए-मुरदार की तरफ़ और
दूसरी शाख़ मग़रिब के समुंदर की तरफ़ बहेगी।
इस पानी में न गरमियों में, न सर्दियों में कभी
कमी होगी।

9 रब पूरी दुनिया का बादशाह होगा। उस दिन
रब वाहिद ख़ुदा होगा, लोग सिर्फ़ उसी के नाम
की परस्तिश करेंगे। 10 पूरा मुल्क शिमाली शहर
जिबा से लेकर यरूशलम के जुनूब में वाक़े शहर
रिम्मोन तक खुला मैदान बन जाएगा। सिर्फ़
यरूशलम अपनी ही ऊँची जगह पर रहेगा। उस
की पुरानी हुदूद भी क़ायम रहेंगी यानी बिनयमीन
के दरवाज़े से लेकर पुराने दरवाज़े और कोने के
दरवाज़े तक, फिर हननेल के बुर्ज से लेकर उस
जगह तक जहाँ शाही मै बनाई जाती है। 11 लोग
उसमें बसेंगे, और आइंदा उसे कभी पूरी तबाही
के लिए मख़सूस नहीं किया जाएगा। यरूशलम
महफ़ूज़ जगह रहेगी।

12 लेकिन जो क़ौमें यरूशलम से लड़ने निकलें
उन पर रब एक हौलनाक बीमारी लाएगा। लोग
अभी खड़े हो सकेंगे कि उनके जिस्म सड़ जाएंगे।
आँखें अपने ख़ानों में और ज़बान मुँह में गल
जाएगी। 13 उस दिन रब उनमें बड़ी अबतरी पैदा
करेगा। हर एक अपने साथी का हाथ पकड़कर
उस पर हमला करेगा। 14 यहूदाह भी यरूशलम
से[a] लड़ेगा। तमाम पड़ोसी अक़वाम की दौलत
वहाँ जमा हो जाएगी यानी कसरत का सोना,
चाँदी और कपड़े। 15 न सिर्फ़ इनसान मोहलक
बीमारी की ज़द में आएगा बल्कि जानवर भी।
घोड़े, ख़च्चर, ऊँट, गधे और बाक़ी जितने जानवर
उन लशकरगाहों में होंगे उन सब पर यही आफ़त
आएगी।

[a] या में।

तमाम अक़वाम यरूशलम में ईद मनाएँगी

16 तो भी उन तमाम अक़वाम के कुछ लोग बच
जाएंगे जिन्होंने यरूशलम पर हमला किया था।
अब वह साल बसाल यरूशलम आते रहेंगे ताकि
हमारे बादशाह रब्बुल-अफ़वाज की परस्तिश करें
और झोंपड़ियों की ईद मनाएँ। 17 जब कभी
दुनिया की तमाम अक़वाम में से कोई हमारे
बादशाह रब्बुल-अफ़वाज को सिजदा करने के
लिए यरूशलम न आए तो उसका मुल्क बारिश
से महरूम रहेगा। 18 अगर मिसरी क़ौम यरूशलम
न आए और हिस्सा न ले तो वह बारिश से
महरूम रहेगी। यों रब उन क़ौमों को सज़ा देगा
जो झोंपड़ियों की ईद मनाने के लिए यरूशलम
नहीं आएँगी। 19 जितनी भी क़ौमें झोंपड़ियों की
ईद मनाने के लिए यरूशलम न आएँ उन्हें यही
सज़ा मिलेगी, ख़ाह मिसर हो या कोई और क़ौम।

20 उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा,
“रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस।” और रब के घर
की देगें उन मुक़द्दस कटोरों के बराबर होंगी जो
क़ुरबानगाह के सामने इस्तेमाल होते हैं। 21 हाँ,
यरूशलम और यहूदाह में मौजूद हर देग रब्बुल-
अफ़वाज के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होगी। जो भी
क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए यरूशलम आए वह
उन्हें अपनी क़ुरबानियाँ पकाने के लिए इस्तेमाल
करेगा। उस दिन से रब्बुल-अफ़वाज के घर में
कोई भी सौदागर पाया नहीं जाएगा।

मलाकी

1 ज़ैल में इसराईल के लिए रब का वह
कलाम है जो उसने मलाकी पर नाज़िल
किया।
2 रब फ़रमाता है, “तुम मुझे प्यारे हो।” लेकिन
तुम कहते हो, “किस तरह? तेरी हमसे मुहब्बत
कहाँ ज़ाहिर हुई है?”
सुनो रब का जवाब! “क्या एसौ और याक़ूब
सगे भाई नहीं थे? तो भी सिर्फ़ याक़ूब मुझे प्यारा
था 3 जबकि एसौ से मैं मुतनफ़्फ़िर रहा। उसके
पहाड़ी इलाक़े अदोम को मैंने वीरानो-सुनसान कर
दिया, उस की मौरूसी ज़मीन को रेगिस्तान के
गीदड़ों के हवाले कर दिया है।” 4 अदोमी कहते
हैं, “गो हम चकनाचूर हो गए हैं तो भी खंडरात की
जगह नए घर बना लेंगे।” लेकिन रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, “बेशक तामीर का काम करते जाओ,
लेकिन मैं सब कुछ दुबारा ढा दूँगा। उनका मुल्क
‘बेदीनी का मुल्क’ और उनकी क़ौम ‘वह क़ौम
जिस पर रब की अबदी लानत है’ कहलाएगी।
5 तुम इसराईली अपनी आँखों से यह देखोगे। तब
तुम कहोगे, ‘रब अपनी अज़मत इसराईल की
सरहद्दों से बाहर भी ज़ाहिर करता है’।”

इमामों पर इलज़ाम

6 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ इमामो,
बेटा अपने बाप का और नौकर अपने मालिक का
एहतराम करता है। लेकिन मेरा एहतराम कौन
करता है, गो मैं तुम्हारा बाप हूँ? मेरा ख़ौफ़ कौन
मानता है, गो मैं तुम्हारा मालिक हूँ? हक़ीक़त
यह है कि तुम मेरे नाम को हक़ीर जानते हो।
लेकिन तुम एतराज़ करते हो, ‘हम किस तरह
तेरे नाम को हक़ीर जानते हैं?’ 7 इसमें कि तुम
मेरी क़ुरबानगाह पर नापाक ख़ुराक रख देते हो।
तुम पूछते हो, ‘हमने तुझे किस बात में नापाक
किया है?’ इसमें कि तुम रब की मेज़ को क़ाबिले-
तहक़ीर क़रार देते हो। 8 क्योंकि गो अंधे जानवरों
को क़ुरबान करना सख़्त मना है, तो भी तुम यह
बात नज़रंदाज़ करके ऐसे जानवरों को क़ुरबान
करते हो। लँगड़े या बीमार जानवर चढ़ाना भी
ममनू है, तो भी तुम कहते हो, ‘कोई बात नहीं’
और ऐसे ही जानवरों को पेश करते हो।” रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है, “अगर वाक़ई इसकी कोई
बात नहीं तो अपने मुल्क के गवर्नर को ऐसे
जानवरों को पेश करो। क्या वह तुमसे ख़ुश होगा?
क्या वह तुम्हें क़बूल करेगा? हरगिज़ नहीं!
9 चुनाँचे अब अल्लाह से इलतमास करो कि हम
पर मेहरबानी कर।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता
है, “ख़ुद सोच लो, क्या हमारे हाथों से ऐसी
क़ुरबानियाँ मिलने पर अल्लाह हमें क़बूल करेगा?
10 काश तुममें से कोई मेरे घर के दरवाज़ों को
बंद करे ताकि मेरी क़ुरबानगाह पर बेफ़ायदा आग
न लगा सको! मैं तुमसे ख़ुश नहीं, और तुम्हारे
हाथों से क़ुरबानियाँ मुझे बिलकुल पसंद नहीं।”
यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

11 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “पूरी दुनिया
में मशरिक़ से मग़रिब तक मेरा नाम अज़ीम है।
हर जगह मेरे नाम को बख़ूर और पाक क़ुरबानियाँ
पेश की जाती हैं। क्योंकि दीगर अक़वाम में मेरा
नाम अज़ीम है। 12 लेकिन तुम अपनी हरकतों
से मेरे नाम की बेहुरमती करते हो। तुम कहते
हो, ‘रब की मेज़ को नापाक किया जा सकता
है, उस की क़ुरबानियों को हक़ीर जाना जा
सकता है।’ 13 तुम शिकायत करते हो, ‘हाय, यह
ख़िदमत कितनी तकलीफ़देह है!’ और क़ुरबानी
की आग को हिक़ारत की नज़रों से देखते हुए
तेज़ करते हो। हर क़िस्म का जानवर पेश किया
जाता है, ख़ाह वह ज़ख़मी, लँगड़ा या बीमार
क्यों न हो।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “क्या
मैं तुम्हारे हाथों से ऐसी क़ुरबानियाँ क़बूल कर
सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! 14 उस धोकेबाज़ पर
लानत जो मन्नत मानकर कहे, ‘मैं रब को अपने
रेवड़ का अच्छा मेंढा क़ुरबान करूँगा’ लेकिन
इसके बजाए नाक़िस जानवर पेश करे।” क्योंकि
रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं अज़ीम बादशाह
हूँ, और अक़वाम में मेरे नाम का ख़ौफ़ माना जाता
है।

2 ऐ इमामो, अब मेरे फ़ैसले पर ध्यान
दो!” 2 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है,
“मेरी सुनो, पूरे दिल से मेरे नाम का एहतराम
करो, वरना मैं तुम पर लानत भेजूँगा, मैं तुम्हारी
बरकतों को लानतों में तबदील कर दूँगा। बल्कि
मैं यह कर भी चुका हूँ, क्योंकि तुमने पूरे दिल से
मेरे नाम का एहतराम नहीं किया। 3 तुम्हारे चाल-
चलन के सबब से मैं तुम्हारी औलाद को डाँटूँगा।
मैं तुम्हारी ईद की क़ुरबानियों का गोबर तुम्हारे मुँह
पर फेंक दूँगा, और तुम्हें उसके समेत बाहर फेंका
जाएगा।”

4 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “तब तुम जान
लोगे कि मैंने तुम पर यह फ़ैसला किया है ताकि
मेरा लावी के क़बीले के साथ अहद क़ायम रहे।
5 क्योंकि मैंने अहद बाँधकर लावियों से ज़िंदगी
और सलामती का वादा किया था, और मैंने
वादे को पूरा भी किया। उस वक़्त लावी मेरा
ख़ौफ़ मानते बल्कि मेरे नाम से दहशत खाते थे।
6 वह क़ाबिले-एतमाद तालीम देते थे, और उनकी
ज़बान पर झूट नहीं होता था। वह सलामती से
और सीधी राह पर मेरे साथ चलते थे, और बहुत-
से लोग उनके बाइस गुनाह से दूर हो गए।

7 इमामों का फ़र्ज़ है कि वह सहीह तालीम
महफ़ूज़ रखें, और लोगों को उनसे हिदायत
हासिल करनी चाहिए। क्योंकि इमाम रब्बुल-
अफ़वाज का पैग़ंबर है। 8 लेकिन तुम सहीह राह
से हट गए हो। तुम्हारी तालीम बहुतों के लिए
ठोकर का बाइस बन गई है।” रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, “तुमने लावियों के साथ मेरे अहद को
ख़ाक में मिला दिया है। 9 इसलिए मैंने तुम्हें तमाम
क़ौम के सामने ज़लील कर दिया है, सब तुम्हें
हक़ीर जानते हैं। क्योंकि तुम मेरी राहों पर नहीं
रहते बल्कि तालीम देते वक़्त जानिबदारी दिखाते
हो।”

नाजायज़ शादियाँ और तलाक़ पर मलामत

10 क्या हम सबका एक ही बाप नहीं? एक ही
ख़ुदा ने हमें ख़लक़ किया है। तो फिर हम एक
दूसरे से बेवफ़ाई करके अपने बापदादा के अहद
की बेहुरमती क्यों कर रहे हैं?

11 यहूदाह बेवफ़ा हो गया है। इसराईल और
यरूशलम में मकरूह हरकतें सरज़द हुई हैं,
क्योंकि यहूदाह के आदमियों ने रब के घर की
बेहुरमती की है, उस मक़दिस की जो रब को
प्यारा है। किस तरह? उन्होंने दीगर अक़वाम

की बुतपरस्त औरतों से शादी की है।[a] 12 लेकिन
जिसने भी ऐसा किया है उसे रब जड़ से याक़ूब
के ख़ैमों से निकाल फेंकेगा, ख़ाह वह रब्बुल-
अफ़वाज को कितनी क़ुरबानियाँ पेश क्यों न करे।
13 तुमसे एक और ख़ता भी सरज़द होती है।
बेशक रब की क़ुरबानगाह को अपने आँसुओं से
तर करो, बेशक रोते और कराहते रहो कि रब
न हमारी क़ुरबानियों पर तवज्जुह देता, न उन्हें
ख़ुशी से हमारे हाथ से क़बूल करता है। लेकिन यह
करने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा। 14 तुम पूछते हो,
"क्यों?" इसलिए कि शादी करते वक़्त रब ख़ुद
गवाह होता है। और अब तू अपनी बीवी से बेवफ़ा
हो गया है, गो वह तेरी जीवनसाथी है जिससे तूने
शादी का अहद बाँधा था। 15 क्या रब ने शौहर
और बीवी को एक नहीं बनाया, एक जिस्म जिसमें
रूह है? और यह एक जिस्म क्या चाहता है?
अल्लाह की तरफ़ से औलाद। चुनाँचे अपनी रूह
में ख़बरदार रहो! अपनी बीवी से बेवफ़ा न हो
जा! 16 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, "मैं तलाक़ से नफ़रत
करता हूँ और उससे मुतनफ़्फ़िर हूँ जो ज़ुल्म से
मुलब्बस होता है। चुनाँचे अपनी रूह में ख़बरदार
रहकर इस तरह का बेवफ़ा रवैया इख़्तियार न
करो!"

रब लोगों की अदालत करेगा

17 तुम्हारी बातों को सुन सुनकर रब थक गया
है। तुम पूछते हो, "हमने उसे किस तरह थका
दिया है?" इसमें कि तुम दावा करते हो, "बदी
करनेवाला रब की नज़र में ठीक है, वह ऐसे
लोगों को पसंद करता है।" तुम यह भी कहते
हो, "अल्लाह कहाँ है? वह इनसाफ़ क्यों नहीं
करता?"

3 रब्बुल-अफ़वाज जवाब में फ़रमाता है,
"देख, मैं अपने पैग़ंबर को भेज देता हूँ जो
मेरे आगे आगे चलकर मेरा रास्ता तैयार करेगा।
तब जिस रब को तुम तलाश कर रहे हो वह
अचानक अपने घर में आ मौजूद होगा। हाँ, अहद
का पैग़ंबर जिसकी तुम शिद्दत से आरज़ू करते हो
वह आनेवाला है!"
2 लेकिन जब वह आए तो कौन यह बरदाश्त
कर सकेगा? कौन क़ायम रह सकेगा जब वह हम
पर ज़ाहिर हो जाएगा? वह तो धात ढालनेवाले
की आग या धोबी के तेज़ साबुन की मानिंद होगा।
3 वह बैठकर चाँदी को पिघलाकर पाक-साफ़
करेगा। जिस तरह सोने-चाँदी को पिघलाकर
पाक-साफ़ किया जाता है उसी तरह वह लावी
के क़बीले को पाक-साफ़ करेगा। तब वह रब को
रास्त क़ुरबानियाँ पेश करेंगे। 4 फिर यहूदाह और
यरूशलम की क़ुरबानियाँ क़दीम ज़माने की तरह
दुबारा रब को क़बूल होंगी।
5 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "मैं तुम्हारी
अदालत करने के लिए तुम्हारे पास आऊँगा। जल्द
ही मैं उनके ख़िलाफ़ गवाही दूँगा जो मेरा ख़ौफ़
नहीं मानते, जो जादूगर और ज़िनाकार हैं, जो
झूटी क़सम खाते, मज़दूरों का हक़ मारते, बेवाओं
और यतीमों पर ज़ुल्म करते और अजनबियों का
हक़ मारते हैं।

तुम अल्लाह को धोका देते हो

6 मैं, रब तबदील नहीं होता, लेकिन तुम अब
तक याक़ूब की औलाद रहे हो। 7 अपने बापदादा
के ज़माने से लेकर आज तक तुमने मेरे अहकाम
से दूर रहकर उन पर ध्यान नहीं दिया। रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ!
तब मैं भी तुम्हारे पास वापस आऊँगा।
लेकिन तुम एतराज़ करते हो, 'हम क्यों वापस
आएँ, हमसे क्या सरज़द हुआ है?' 8 क्या
मुनासिब है कि इनसान अल्लाह को ठगे?

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : यहूदाह ने अजनबी माबूदों की बेटियों
से शादी की है।

हरगिज़ नहीं! लेकिन तुम लोग यही कुछ कर
रहे हो। तुम पूछते हो, 'हम किस तरह तुझे ठगते
हैं?' इसमें कि तुम मुझे अपनी पैदावार का दसवाँ
हिस्सा नहीं देते। नीज़, तुम इमामों को क़ुरबानियों
का वह हिस्सा नहीं देते जो उनका हक़ बनता है।
9 पूरी क़ौम मुझे ठगती रहती है, इसलिए मैंने तुम
पर लानत भेजी है।"

10 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "मेरे घर के
गोदाम में अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा
जमा करो ताकि इसमें ख़ुराक दस्तयाब हो। मुझे
इसमें आज़माकर देखो कि मैं अपने वादे को पूरा
करता हूँ कि नहीं। क्योंकि मैं तुमसे वादा करता हूँ
कि जवाब में मैं आसमान के दरीचे खोलकर तुम
पर हद से ज़्यादा बरकत बरसा दूँगा।" 11 रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है, "मैं कीड़ों को तुम्हारी
फ़सलों से दूर रखूँगा ताकि तुम्हारे खेतों की
पैदावार और तुम्हारे अंगूर ख़राब न हो जाएँ बल्कि
पक जाएँ। 12 तब तुम्हारा मुल्क इतना राहतबख़्श
होगा कि तमाम अक़वाम तुम्हें मुबारक कहेंगी।"
यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

जिस दिन अल्लाह फ़ैसला करेगा

13 रब फ़रमाता है, "तुम मेरे बारे में कुफ़्र
बकते हो। तुम कहते हो, 'हम क्योंकर कुफ़्र
बकते हैं?' 14 इसमें कि तुम कहते हो, 'अल्लाह
की ख़िदमत करना अबस है। क्योंकि रब्बुल-
अफ़वाज की हिदायात पर ध्यान देने और मुँह
लटकाकर उसके हुज़ूर फिरने से हमें क्या फ़ायदा
हुआ है? 15 चुनाँचे गुस्ताख़ लोगों को मुबारक
हो, क्योंकि बेदीन फलते-फूलते और अल्लाह को
आज़मानेवाले ही बचे रहते हैं'।"

16 लेकिन फिर रब का ख़ौफ़ माननेवाले आपस
में बात करने लगे, और रब ने ग़ौर से उनकी
सुनी। उसके हुज़ूर यादगारी की किताब लिखी गई
जिसमें उनके नाम दर्ज हैं जो रब का ख़ौफ़ मानते
और उसके नाम का एहतराम करते हैं। 17 रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है, "जिस दिन मैं हरकत में
आऊँगा उस दिन वह मेरी ख़ास मिलकियत होंगे।
मैं उन पर यों रहम करूँगा, जिस तरह बाप अपने
उस बेटे पर तरस खाता है जो उस की ख़िदमत
करता है। 18 उस वक़्त तुम्हें रास्तबाज़ और बेदीन
का फ़रक़ दुबारा नज़र आएगा। साफ़ ज़ाहिर हो
जाएगा कि अल्लाह की ख़िदमत करनेवालों और
दूसरों में क्या फ़रक़ है।"

4 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "यक़ी-
नन वह दिन आनेवाला है जब मेरा ग़ज़ब
भड़कती भट्टी की तरह नाज़िल होकर हर गुस्ताख़
और बेदीन शख़्स को भूसे की तरह भस्म कर
देगा। वह जड़ से लेकर शाख़ तक मिट जाएंगे।

2 लेकिन तुम पर जो मेरे नाम का ख़ौफ़ मानते
हो रास्ती का सूरज तुलू होगा, और उसके परों
तले शफ़ा होगी। तब तुम बाहर निकलकर खुले
छोड़े हुए बछड़ों की तरह ख़ुशी से कूदते फाँदते
फिरोगे। 3 जिस दिन मैं यह कुछ करूँगा उस दिन
तुम बेदीनों को यों कुचल डालोगे कि वह पाँवों
तले की ख़ाक बन जाएंगे।" यह रब्बुल-अफ़वाज
का फ़रमान है।

4 "मेरे ख़ादिम मूसा की शरीअत को याद रखो
यानी वह तमाम अहकाम और हिदायात जो मैंने
उसे होरिब यानी सीना पहाड़ पर इसराईली क़ौम
के लिए दी थीं। 5 रब के उस अज़ीम और हौलनाक
दिन से पहले मैं तुम्हारे पास इलियास नबी को
भेजूँगा। 6 जब वह आएगा तो बाप का दिल बेटे
और बेटे का दिल बाप की तरफ़ मायल करेगा
ताकि मैं आकर मुल्क को अपने लिए मख़सूस
करके नेस्तो-नाबूद न करूँ।"

इंजीले-मुक़द्दस

असल यूनानी मतन से
नया उर्दू तरजुमा

मत्ती की मारिफ़त इंजील

ईसा मसीह का नसबनामा

1 ईसा मसीह बिन दाऊद बिन इब्राहीम का
नसबनामा :
2 इब्राहीम इसहाक़ का बाप था, इसहाक़
याक़ूब का बाप और याक़ूब यहूदा और उसके
भाइयों का बाप। 3 यहूदा के दो बेटे फ़ारस
और ज़ारह थे (उनकी माँ तमर थी)। फ़ारस
हसरोन का बाप और हसरोन राम का बाप था।
4 राम अम्मीनदाब का बाप, अम्मीनदाब नहसोन
का बाप और नहसोन सलमोन का बाप था।
5 सलमोन बोअज़ का बाप था (बोअज़ की माँ
राहब थी)। बोअज़ ओबेद का बाप था (ओबेद की
माँ रूत थी)। ओबेद यस्सी का बाप और 6 यस्सी
दाऊद बादशाह का बाप था।
दाऊद सुलेमान का बाप था (सुलेमान की
माँ पहले ऊरिय्याह की बीवी थी)। 7 सुलेमान
रहुबियाम का बाप, रहुबियाम अबियाह का बाप
और अबियाह आसा का बाप था। 8 आसा
यहूसफ़त का बाप, यहूसफ़त यूराम का बाप और
यूराम उज़्ज़ियाह का बाप था। 9 उज़्ज़ियाह यूताम
का बाप, यूताम आख़ज़ का बाप और आख़ज़
हिज़क़ियाह का बाप था। 10 हिज़क़ियाह मनस्सी
का बाप, मनस्सी अमून का बाप और अमून
यूसियाह का बाप था। 11 यूसियाह यहूयाकीन[a]
और उसके भाइयों का बाप था (यह बाबल की
जिलावतनी के दौरान पैदा हुए)।
12 बाबल की जिलावतनी के बाद यहूया-
कीन[a] सियालतियेल का बाप और सियाल-
तियेल ज़रुब्बाबल का बाप था। 13 ज़रु-
ब्बाबल अबीहूद का बाप, अबीहूद इलि-
याक़ीम का बाप और इलियाक़ीम आज़ोर का
बाप था। 14 आज़ोर सदोक़ का बाप, सदोक़
अख़ीम का बाप और अख़ीम इलीहूद का बाप
था। 15 इलीहूद इलियज़र का बाप, इलियज़र
मत्तान का बाप और मत्तान याक़ूब का बाप
था। 16 याक़ूब मरियम के शौहर यूसुफ़ का बाप
था। इस मरियम से ईसा पैदा हुआ, जो मसीह
कहलाता है।
17 यों इब्राहीम से दाऊद तक 14 नसलें हैं,
दाऊद से बाबल की जिलावतनी तक 14 नसलें
हैं और जिलावतनी से मसीह तक 14 नसलें हैं।

ईसा मसीह की पैदाइश

18 ईसा मसीह की पैदाइश यों हुई : उस वक़्त
उस की माँ मरियम की मँगनी यूसुफ़ के साथ हो
चुकी थी कि वह रूहुल-क़ुद्स से हामिला पाई गई।
अभी उनकी शादी नहीं हुई थी। 19 उसका मंगेतर
यूसुफ़ रास्तबाज़ था, वह अलानिया मरियम को
बदनाम नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने

[a] यूनानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

ख़ामोशी से यह रिश्ता तोड़ने का इरादा कर
लिया। 20 वह इस बात पर अभी ग़ौरो-फ़िकर कर
ही रहा था कि रब का फ़रिश्ता ख़ाब में उस पर
ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, "यूसुफ़ बिन दाऊद,
मरियम से शादी करके उसे अपने घर ले आने
से मत डर, क्योंकि पैदा होनेवाला बच्चा रूहुल-
क़ुद्स से है। 21 उसके बेटा होगा और उसका नाम
ईसा रखना, क्योंकि वह अपनी क़ौम को उसके
गुनाहों से रिहाई देगा।"

22 यह सब कुछ इसलिए हुआ ताकि रब की
वह बात पूरी हो जाए जो उसने अपने नबी
की मारिफ़त फ़रमाई थी, 23 "देखो एक कुँवारी
हामिला होगी। उससे बेटा पैदा होगा और वह
उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे।" (इम्मानुएल का
मतलब 'ख़ुदा हमारे साथ' है।)

24 जब यूसुफ़ जाग उठा तो उसने रब के
फ़रिश्ते के फ़रमान के मुताबिक़ मरियम से शादी
कर ली और उसे अपने घर ले गया। 25 लेकिन
जब तक उसके बेटा पैदा न हुआ वह मरियम से
हमबिसतर न हुआ। और यूसुफ़ ने बच्चे का नाम
ईसा रखा।

मशरिक़ से मजूसी आलिम

2 ईसा हेरोदेस बादशाह के ज़माने में सूबा
यहूदिया के शहर बैत-लहम में पैदा हुआ।
उन दिनों में कुछ मजूसी आलिम मशरिक़ से
आकर यरूशलम पहुँच गए। 2 उन्होंने पूछा,
"यहूदियों का वह बादशाह कहाँ है जो हाल ही
में पैदा हुआ है? क्योंकि हमने मशरिक़ में उसका
सितारा देखा है और हम उसे सिजदा करने आए
हैं।"

3 यह सुनकर हेरोदेस बादशाह पूरे यरू-
शलम समेत घबरा गया। 4 तमाम राहनुमा इमामों
और शरीअत के उलमा को जमा करके उसने
उनसे दरियाफ़्त किया कि मसीह कहाँ पैदा होगा।
5 उन्होंने जवाब दिया, "यहूदिया के शहर बैत-
लहम में, क्योंकि नबी की मारिफ़त यों लिखा
है, 6 'ऐ मुल्के-यहूदिया में वाक़े बैत-लहम, तू
यहूदिया के हुक्मरानों में हरगिज़ सबसे छोटा नहीं।
क्योंकि तुझमें से एक हुक्मरान निकलेगा जो मेरी
क़ौम इसराईल की गल्लाबानी करेगा'।"

7 इस पर हेरोदेस ने ख़ुफ़िया तौर पर मजूसी
आलिमों को बुलाकर तफ़सील से पूछा कि वह
सितारा किस वक़्त दिखाई दिया था। 8 फिर उसने
उन्हें बताया, "बैत-लहम जाएँ और तफ़सील से
बच्चे का पता लगाएँ। जब आप उसे पा लें तो मुझे
इत्तला दें ताकि मैं भी जाकर उसे सिजदा करूँ।"

9 बादशाह के इन अलफ़ाज़ के बाद वह चले
गए। और देखो जो सितारा उन्होंने मशरिक़ में
देखा था वह उनके आगे आगे चलता गया और
चलते चलते उस मक़ाम के ऊपर ठहर गया जहाँ
बच्चा था। 10 सितारे को देखकर वह बहुत ख़ुश
हुए। 11 वह घर में दाख़िल हुए और बच्चे को माँ
के साथ देखकर उन्होंने औंधे मुँह गिरकर उसे
सिजदा किया। फिर अपने डिब्बे खोलकर उसे
सोने, लुबान और मुर के तोह्फ़े पेश किए।

12 जब रवानगी का वक़्त आया तो वह
यरूशलम से होकर न गए बल्कि एक और रास्ते
से अपने मुल्क चले गए, क्योंकि उन्हें ख़ाब में
आगाह किया गया था कि हेरोदेस के पास वापस
न जाओ।

मिसर की जानिब हिजरत

13 उनके चले जाने के बाद रब का फ़रिश्ता
ख़ाब में यूसुफ़ पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "उठ,
बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मिसर को
हिजरत कर जा। जब तक मैं तुझे इत्तला न दूँ
वहीं ठहरा रह, क्योंकि हेरोदेस बच्चे को तलाश
करेगा ताकि उसे क़त्ल करे।"

14 यूसुफ़ उठा और उसी रात बच्चे को उस
की माँ समेत लेकर मिसर के लिए रवाना हुआ।
15 वहाँ वह हेरोदेस के इंतक़ाल तक रहा। यों वह
बात पूरी हुई जो रब ने नबी की मारिफ़त फ़रमाई
थी, "मैंने अपने फ़रज़ंद को मिसर से बुलाया।"

बच्चों का क़त्ल

16 जब हेरोदेस को मालूम हुआ कि मजूसी
आलिमों ने मुझे फ़रेब दिया है तो उसे बड़ा
तैश आया। उसने अपने फ़ौजियों को बैत-लहम
भेजकर उन्हें हुक्म दिया कि बैत-लहम और
इर्दगिर्द के इलाक़े के उन तमाम लड़कों को क़त्ल
करें जिनकी उम्र दो साल तक हो। क्योंकि उसने
मजूसियों से बच्चे की उम्र के बारे में यह मालूम
कर लिया था।
17 यों यरमियाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,
18 “रामा में शोर मच गया है, रोने पीटने और
शदीद मातम की आवाज़ें। राख़िल अपने बच्चों
के लिए रो रही है और तसल्ली क़बूल नहीं कर
रही, क्योंकि वह हलाक हो गए हैं।”

मिसर से वापसी

19 जब हेरोदेस इंतक़ाल कर गया तो रब का
फ़रिश्ता ख़ाब में यूसुफ़ पर ज़ाहिर हुआ जो अभी
मिसर ही में था। 20 फ़रिश्ते ने उसे बताया, “उठ,
बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मुल्के-इसराईल
वापस चला जा, क्योंकि जो बच्चे को जान से
मारने के दरपै थे वह मर गए हैं।” 21 चुनाँचे यूसुफ़
उठा और बच्चे और उस की माँ को लेकर मुल्के-
इसराईल में लौट आया।
22 लेकिन जब उसने सुना कि अरख़ि-
लाउस अपने बाप हेरोदेस की जगह यहूदिया में
तख़्तनशीन हो गया है तो वह वहाँ जाने से डर
गया। फिर ख़ाब में हिदायत पाकर वह गलील के
इलाक़े के लिए रवाना हुआ। 23 वहाँ वह एक शहर
में जा बसा जिसका नाम नासरत था। यों नबियों
की बात पूरी हुई कि ‘वह नासरी कहलाएगा।’

यहया बपतिस्मा देनेवाले की ख़िदमत

3 उन दिनों में यहया बपतिस्मा देनेवाला
आया और यहूदिया के रेगिस्तान में एलान
करने लगा, 2 “तौबा करो, क्योंकि आसमान
की बादशाही क़रीब आ गई है।” 3 यहया वही
है जिसके बारे में यसायाह नबी ने फ़रमाया,
‘रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है, रब की
राह तैयार करो! उसके रास्ते सीधे बनाओ।’
4 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और
कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था। ख़ुराक
के तौर पर वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता
था। 5 लोग यरूशलम, पूरे यहूदिया और दरियाए-
यरदन के पूरे इलाक़े से निकलकर उसके पास
आए। 6 और अपने गुनाहों को तसलीम करके
उन्होंने दरियाए-यरदन में यहया से बपतिस्मा
लिया।
7 बहुत-से फ़रीसी और सदूक़ी भी वहाँ आए
जहाँ वह बपतिस्मा दे रहा था। उन्हें देखकर
उसने कहा, “ऐ ज़हरीले साँप के बच्चो! किसने
तुम्हें आनेवाले ग़ज़ब से बचने की हिदायत की?
8 अपनी ज़िंदगी से ज़ाहिर करो कि तुमने वाक़ई
तौबा की है। 9 यह ख़याल मत करो कि हम तो बच
जाएंगे क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुमको
बताता हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम
के लिए औलाद पैदा कर सकता है। 10 अब तो
अदालत की कुल्हाड़ी दरख़्तों की जड़ों पर रखी
हुई है। हर दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा
और आग में झोंका जाएगा। 11 मैं तो तुम तौबा
करनेवालों को पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन
एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं उसके
जूतों को उठाने के भी लायक़ नहीं। वह तुम्हें
रूहुल-क़ुद्स और आग से बपतिस्मा देगा। 12 वह
हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से अलग
करने के लिए तैयार खड़ा है। वह गाहने की जगह
बिलकुल साफ़ करके अनाज को अपने गोदाम में
जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में
झोंकेगा जो बुझने की नहीं।”

ईसा का बपतिस्मा

13 फिर ईसा गलील से दरियाए-यरदन के
किनारे आया ताकि यहया से बपतिस्मा ले।
14 लेकिन यहया ने उसे रोकने की कोशिश करके
कहा, “मुझे तो आपसे बपतिस्मा लेने की ज़रूरत
है, तो फिर आप मेरे पास क्यों आए हैं?”

15 ईसा ने जवाब दिया, “अब होने ही दे,
क्योंकि मुनासिब है कि हम यह करते हुए अल्लाह
की रास्त मरज़ी पूरी करें।”[a] इस पर यहया मान
गया।
16 बपतिस्मा लेने पर ईसा फ़ौरन पानी से
निकला। उसी लमहे आसमान खुल गया और
उसने अल्लाह के रूह को देखा जो कबूतर की
तरह उतरकर उस पर ठहर गया। 17 साथ साथ
आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा
प्यारा फ़रज़ंद है, इससे मैं ख़ुश हूँ।”

ईसा को आज़माया जाता है

4 फिर रूहुल-क़ुद्स ईसा को रेगिस्तान में
ले गया ताकि उसे इबलीस से आज़माया
जाए। 2 चालीस दिन और चालीस रात रोज़ा
रखने के बाद उसे आख़िरकार भूक लगी। 3 फिर
आज़मानेवाला उसके पास आकर कहने लगा,
“अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इन पत्थरों
को हुक्म दे कि रोटी बन जाएँ।”
4 लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, “हरगिज़
नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि
इनसान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं
होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से
निकलती है।”
5 इस पर इबलीस ने उसे मुक़द्दस शहर
यरूशलम ले जाकर बैतुल-मुक़द्दस की सबसे
ऊँची जगह पर खड़ा किया और कहा, 6 “अगर
तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो यहाँ से छलाँग लगा
दे। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘वह तेरी
ख़ातिर अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, और वह
तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को
पत्थर से ठेस न लगे’।”
7 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “कलामे-
मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है, ‘रब अपने ख़ुदा को
न आज़माना’।”
8 फिर इबलीस ने उसे एक निहायत ऊँचे पहाड़
पर ले जाकर उसे दुनिया के तमाम ममालिक और
उनकी शानो-शौकत दिखाई। 9 वह बोला, “यह
सब कुछ मैं तुझे दे दूँगा, शर्त यह है कि तू गिरकर
मुझे सिजदा करे।”
10 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया
और कहा, “इबलीस, दफ़ा हो जा! क्योंकि
कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, ‘रब अपने ख़ुदा
को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत
कर’।”
11 इस पर इबलीस उसे छोड़कर चला गया और
फ़रिश्ते आकर उस की ख़िदमत करने लगे।

गलील में ईसा की ख़िदमत का आग़ाज़

12 जब ईसा को ख़बर मिली कि यहया को जेल
में डाल दिया गया है तो वह वहाँ से चला गया
और गलील में आया। 13 नासरत को छोड़कर वह
झील के किनारे पर वाक़े शहर कफ़र्नहूम में रहने
लगा, यानी ज़बूलून और नफ़ताली के इलाक़े में।
14 यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,
15 “ज़बूलून का इलाक़ा,
नफ़ताली का इलाक़ा,
झील के साथ का रास्ता,
दरियाए-यरदन के पार,
ग़ैरयहूदियों का गलील :
16 अंधेरे में बैठी क़ौम ने
एक तेज़ रौशनी देखी,
मौत के साये में डूबे हुए मुल्क
के बाशिंदों पर रौशनी चमकी।”
17 उस वक़्त से ईसा इस पैग़ाम की मुनादी
करने लगा, “तौबा करो, क्योंकि आसमान की
बादशाही क़रीब आ गई है।”

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

18 एक दिन जब ईसा गलील की झील के
किनारे किनारे चल रहा था तो उसने दो भाइयों
को देखा—शमाऊन जो पतरस भी कहलाता था
और अंदरियास को। वह पानी में जाल डाल रहे थे,
क्योंकि वह माहीगीर थे। 19 उसने कहा, “आओ,

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : हम तमाम रास्तबाज़ी पूरी करें।

मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको आदमगीर बनाऊँगा।”
20 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़कर
उसके पीछे हो लिए।
21 आगे जाकर ईसा ने दो और भाइयों को
देखा, याक़ूब बिन ज़बदी और उसके भाई यूहन्ना
को। वह कश्ती में बैठे अपने बाप ज़बदी के साथ
अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। ईसा ने उन्हें
बुलाया 22 तो वह फ़ौरन कश्ती और अपने बाप
को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

ईसा तालीम देता, मुनादी करता और शफ़ा देता है

23 और ईसा गलील के पूरे इलाक़े में फिरता
रहा। जहाँ भी वह जाता वह यहूदी इबादतख़ानों
में तालीम देता, बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाता
और हर क़िस्म की बीमारी और अलालत से शफ़ा
देता था। 24 उस की ख़बर मुल्के-शाम के कोने
कोने तक पहुँच गई, और लोग अपने तमाम
मरीज़ों को उसके पास लाने लगे। क़िस्म क़िस्म
की बीमारियों तले दबे लोग, ऐसे जो शदीद दर्द
का शिकार थे, बदरूहों की गिरिफ़्त में मुब्तला,
मिरगीवाले और फ़ालिजज़दा, ग़रज़ जो भी आया
ईसा ने उसे शफ़ा बख़्शी। 25 गलील, दिकपुलिस,
यरूशलम, यहूदिया और दरियाए-यरदन के पार
के इलाक़े से बड़े बड़े हुजूम उसके पीछे चलते
रहे।

पहाड़ी वाज़

5 भीड़ को देखकर ईसा पहाड़ पर चढ़कर
बैठ गया। उसके शागिर्द उसके पास आए
2 और वह उन्हें यह तालीम देने लगा :

हक़ीक़ी ख़ुशी

3 “मुबारक हैं वह जिनकी रूह ज़रूरतमंद है,
क्योंकि आसमान की बादशाही उन्हीं की है।
4 मुबारक हैं वह जो मातम करते हैं, क्योंकि
उन्हें तसल्ली दी जाएगी।
5 मुबारक हैं वह जो हलीम हैं, क्योंकि वह
ज़मीन विरसे में पाएँगे।
6 मुबारक हैं वह जिन्हें रास्तबाज़ी की भूक और
प्यास है, क्योंकि वह सेर हो जाएंगे।
7 मुबारक हैं वह जो रहमदिल हैं, क्योंकि उन
पर रहम किया जाएगा।
8 मुबारक हैं वह जो ख़ालिस दिल हैं, क्योंकि
वह अल्लाह को देखेंगे।
9 मुबारक हैं वह जो सुलह कराते हैं, क्योंकि
वह अल्लाह के फ़रज़ंद कहलाएँगे।
10 मुबारक हैं वह जिनको रास्तबाज़ होने के
सबब से सताया जाता है, क्योंकि उन्हें आसमान
की बादशाही विरसे में मिलेगी।
11 मुबारक हो तुम जब लोग मेरी वजह से
तुम्हें लान-तान करते, तुम्हें सताते और तुम्हारे
बारे में हर क़िस्म की बुरी और झूटी बात करते
हैं। 12 ख़ुशी मनाओ और बाग़ बाग़ हो जाओ,
तुमको आसमान पर बड़ा अज्र मिलेगा। क्योंकि
इसी तरह उन्होंने तुमसे पहले नबियों को भी ईज़ा
पहुँचाई थी।

तुम नमक और रौशनी हो

13 तुम दुनिया का नमक हो। लेकिन अगर
नमक का ज़ायक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर
दुबारा नमकीन किया जा सकता है? वह किसी
भी काम का नहीं रहा बल्कि बाहर फेंका जाएगा
जहाँ वह लोगों के पाँवों तले रौंदा जाएगा।
14 तुम दुनिया की रौशनी हो। पहाड़ पर वाक़े
शहर की तरह तुमको छुपाया नहीं जा सकता।
15 जब कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे बरतन
के नीचे नहीं रखता बल्कि शमादान पर रख देता
है जहाँ से वह घर के तमाम अफ़राद को रौशनी
देता है। 16 इसी तरह तुम्हारी रौशनी भी लोगों के
सामने चमके ताकि वह तुम्हारे नेक काम देखकर
तुम्हारे आसमानी बाप को जलाल दें।

शरीअत

17 यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और
नबियों की बातों को मनसूख़ करने आया हूँ।
मनसूख़ करने नहीं बल्कि उनकी तकमील करने
आया हूँ। 18 मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक
आसमानो-ज़मीन क़ायम रहेंगे तब तक शरीअत
भी क़ायम रहेगी—न उसका कोई हरफ़, न
उसका कोई ज़ेर या ज़बर मनसूख़ होगा जब तक
सब कुछ पूरा न हो जाए। 19 जो इन सबसे छोटे
अहकाम में से एक को भी मनसूख़ करे और
लोगों को ऐसा करना सिखाए उसे आसमान की
बादशाही में सबसे छोटा क़रार दिया जाएगा।
इसके मुक़ाबले में जो इन अहकाम पर अमल
करके इन्हें सिखाता है उसे आसमान की बादशाही
में बड़ा क़रार दिया जाएगा। 20 क्योंकि मैं तुमको
बताता हूँ कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी शरीअत के
उलमा और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज़्यादा
नहीं तो तुम आसमान की बादशाही में दाख़िल
होने के लायक़ नहीं।

ग़ुस्सा

21 तुमने सुना है कि बापदादा को फ़रमाया
गया, 'क़त्ल न करना। और जो क़त्ल करे उसे
अदालत में जवाब देना होगा।' 22 लेकिन मैं
तुमको बताता हूँ कि जो भी अपने भाई पर ग़ुस्सा
करे उसे अदालत में जवाब देना होगा। इसी तरह
जो अपने भाई को 'अहमक़' कहे उसे यहूदी
अदालते-आलिया में जवाब देना होगा। और जो
उसको 'बेवुक़ूफ़!' कहे वह जहन्नुम की आग में
फेंके जाने के लायक़ ठहरेगा। 23 लिहाज़ा अगर
तुझे बैतुल-मुक़द्दस में क़ुरबानी पेश करते वक़्त
याद आए कि तेरे भाई को तुझसे कोई शिकायत
है 24 तो अपनी क़ुरबानी को वहीं क़ुरबानगाह के
सामने ही छोड़कर अपने भाई के पास चला जा।
पहले उससे सुलह कर और फिर वापस आकर
अल्लाह को अपनी क़ुरबानी पेश कर।

25 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़दमा
चलाया है। अगर ऐसा हो तो कचहरी में दाख़िल
होने से पहले पहले जल्दी से झगड़ा ख़त्म कर।
ऐसा न हो कि वह तुझे जज के हवाले करे, जज
तुझे पुलिस अफ़सर के हवाले करे और नतीजे में
तुझको जेल में डाला जाए। 26 मैं तुझे सच बताता
हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक नहीं निकल पाएगा
जब तक जुर्माने की पूरी पूरी रक़म अदा न कर दे।

ज़िनाकारी

27 तुमने यह हुक्म सुन लिया है कि 'ज़िना न
करना।' 28 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, जो किसी
औरत को बुरी ख़ाहिश से देखता है वह अपने दिल
में उसके साथ ज़िना कर चुका है। 29 अगर तेरी
दाईं आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे
निकालकर फेंक दे। इससे पहले कि तेरे पूरे जिस्म
को जहन्नुम में डाला जाए बेहतर यह है कि तेरा
एक ही अज़ु जाता रहे। 30 और अगर तेरा दहना
हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर
फेंक दे। इससे पहले कि तेरा पूरा जिस्म जहन्नुम
में जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अज़ु जाता
रहे।

तलाक़

31 यह भी फ़रमाया गया है, 'जो भी अपनी
बीवी को तलाक़ दे वह उसे तलाक़नामा लिख दे।'
32 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि अगर किसी
की बीवी ने ज़िना न किया हो तो भी शौहर उसे
तलाक़ दे तो वह उससे ज़िना कराता है। और जो
तलाक़शुदा औरत से शादी करे वह ज़िना करता
है।

क़सम मत खाना

33 तुमने यह भी सुना है कि बापदादा को
फ़रमाया गया, 'झूटी क़सम मत खाना बल्कि
जो वादे तूने रब से क़सम खाकर किए हों उन्हें
पूरा करना।' 34 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, क़सम
बिलकुल न खाना। न 'आसमान की क़सम'
क्योंकि आसमान अल्लाह का तख़्त है, 35 न
'ज़मीन की' क्योंकि ज़मीन उसके पाँवों की चौकी

है। ‘यरूशलम की क़सम’ भी न खाना क्योंकि
यरूशलम अज़ीम बादशाह का शहर है। 36 यहाँ
तक कि अपने सर की क़सम भी न खाना, क्योंकि
तू अपना एक बाल भी काला या सफ़ेद नहीं
कर सकता। 37 सिर्फ़ इतना ही कहना, ‘जी हाँ’
या ‘जी नहीं।’ अगर इससे ज़्यादा कहो तो यह
इबलीस की तरफ़ से है।

बदला लेना

38 तुमने सुना है कि यह फ़रमाया गया है,
‘आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत।’
39 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि बदकार का
मुक़ाबला मत करना। अगर कोई तेरे दहने गाल
पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर
दे। 40 अगर कोई तेरी क़मीस लेने के लिए तुझ
पर मुक़दमा करना चाहे तो उसे अपनी चादर
भी दे देना। 41 अगर कोई तुझको उसका सामान
उठाकर एक किलोमीटर जाने पर मजबूर करे तो
उसके साथ दो किलोमीटर चला जाना। 42 जो
तुझसे कुछ माँगे उसे दे देना और जो तुझसे क़र्ज़
लेना चाहे उससे इनकार न करना।

दुश्मन से मुहब्बत

43 तुमने सुना है कि फ़रमाया गया है, ‘अपने
पड़ोसी से मुहब्बत रखना और अपने दुश्मन से
नफ़रत करना।’ 44 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ,
अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए
दुआ करो जो तुमको सताते हैं। 45 फिर तुम अपने
आसमानी बाप के फ़रज़ंद ठहरोगे, क्योंकि वह
अपना सूरज सब पर तुलू होने देता है, ख़ाह
वह अच्छे हों या बुरे। और वह सब पर बारिश
बरसने देता है, ख़ाह वह रास्तबाज़ हों या नारास्त।
46 अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत करो जो तुमसे
करते हैं तो तुमको क्या अज्र मिलेगा? टैक्स
लेनेवाले भी तो ऐसा ही करते हैं। 47 और अगर
तुम सिर्फ़ अपने भाइयों के लिए सलामती की
दुआ करो तो कौन-सी ख़ास बात करते हो?
ग़ैरयहूदी भी तो ऐसा ही करते हैं। 48 चुनाँचे
वैसे ही कामिल हो जैसा तुम्हारा आसमानी बाप
कामिल है।

ख़ैरात

6 ख़बरदार! अपने नेक काम लोगों के सामने
दिखावे के लिए न करो, वरना तुमको
अपने आसमानी बाप से कोई अज्र नहीं मिलेगा।
2 चुनाँचे ख़ैरात देते वक़्त रियाकारों की तरह
न कर जो इबादतख़ानों और गलियों में बिगुल
बजाकर इसका एलान करते हैं ताकि लोग उनकी
इज़्ज़त करें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र
उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 3 इसके बजाए
जब तू ख़ैरात दे तो तेरे दाएँ हाथ को पता न चले
कि बायाँ हाथ क्या कर रहा है। 4 तेरी ख़ैरात यों
पोशीदगी में दी जाए तो तेरा बाप जो पोशीदा बातें
देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

दुआ

5 दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना
जो इबादतख़ानों और चौकों में जाकर दुआ करना
पसंद करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सकें। मैं तुमको
सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें
मिल चुका है। 6 इसके बजाए जब तू दुआ करता
है तो अंदर के कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर
और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में
है। फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे
इसका मुआवज़ा देगा।
7 दुआ करते वक़्त ग़ैरयहूदियों की तरह तवील
और बेमानी बातें न दोहराते रहो। वह समझते हैं
कि हमारी बहुत-सी बातों के सबब से हमारी सुनी
जाएगी। 8 उनकी मानिंद न बनो, क्योंकि तुम्हारा
बाप पहले से तुम्हारी ज़रूरियात से वाक़िफ़ है,
9 बल्कि यों दुआ किया करो,

ऐ हमारे आसमानी बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
10 तेरी बादशाही आए।
तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में
पूरी होती है

ज़मीन पर भी पूरी हो।
11 हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।
12 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर
जिस तरह हमने उन्हें मुआफ़ किया[a]
जिन्होंने हमारा गुनाह किया है।
13 और हमें आज़माइश में न पड़ने दे
बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख।
[क्योंकि बादशाही, क़ुदरत और जलाल
अबद तक तेरे ही हैं।]
14 क्योंकि जब तुम लोगों के गुनाह मुआफ़
करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुमको
मुआफ़ करेगा। 15 लेकिन अगर तुम उन्हें मुआफ़
न करो तो तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाह मुआफ़
नहीं करेगा।

रोज़ा

16 रोज़ा रखते वक़्त रियाकारों की तरह मुँह
लटकाए न फिरो, क्योंकि वह ऐसा रूप भरते हैं
ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि वह रोज़ा से
हैं। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें
मिलना था उन्हें मिल चुका है। 17 ऐसा मत करना
बल्कि रोज़े के वक़्त अपने बालों में तेल डाल
और अपना मुँह धो। 18 फिर लोगों को मालूम नहीं
होगा कि तू रोज़ा से है बल्कि सिर्फ़ तेरे बाप को
जो पोशीदगी में है। और तेरा बाप जो पोशीदा बातें
देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

आसमान पर ख़ज़ाना

19 इस दुनिया में अपने लिए ख़ज़ाने जमा न
करो, जहाँ कीड़ा और ज़ंग उन्हें खा जाते और
चोर नक़ब लगाकर चुरा लेते हैं। 20 इसके बजाए
अपने ख़ज़ाने आसमान पर जमा करो जहाँ कीड़ा
और ज़ंग उन्हें तबाह नहीं कर सकते, न चोर
नक़ब लगाकर चुरा सकते हैं। 21 क्योंकि जहाँ तेरा
ख़ज़ाना है वहीं तेरा दिल भी लगा रहेगा।

जिस्म की रौशनी

22 बदन का चराग़ आँख है। अगर तेरी आँख
ठीक हो तो फिर तेरा पूरा बदन रौशन होगा।
23 लेकिन अगर तेरी आँख ख़राब हो तो तेरा पूरा
बदन अंधेरा ही अंधेरा होगा। और अगर तेरे अंदर
की रौशनी तारीकी हो तो यह तारीकी कितनी
शदीद होगी!

बेफ़िकर होना

24 कोई भी दो मालिकों की ख़िदमत नहीं कर
सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे
से मुहब्बत रखेगा या एक से लिपटकर दूसरे को
हक़ीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और
दौलत की ख़िदमत नहीं कर सकते।
25 इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ, अपनी ज़िंदगी
की ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो
कि हाय, मैं क्या खाऊँ और क्या पियूँ। और
जिस्म के लिए फ़िकरमंद न रहो कि हाय, मैं क्या
पहनूँ। क्या ज़िंदगी खाने-पीने से अहम नहीं है?
और क्या जिस्म पोशाक से ज़्यादा अहमियत नहीं
रखता? 26 परिंदों पर ग़ौर करो। न वह बीज बोते,
न फ़सलें काटकर उन्हें गोदाम में जमा करते हैं।
तुम्हारा आसमानी बाप ख़ुद उन्हें खाना खिलाता
है। क्या तुम्हारी उनकी निसबत ज़्यादा क़दरो-
क़ीमत नहीं है? 27 क्या तुममें से कोई फ़िकर
करते करते अपनी ज़िंदगी में एक लमहे का भी
इज़ाफ़ा कर सकता है?
28 और तुम अपने कपड़ों के लिए क्यों
फ़िकरमंद होते हो? ग़ौर करो कि सोसन के
फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते,
न कातते हैं। 29 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि
सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के
बावुजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलब्बस नहीं था
जैसे उनमें से एक। 30 अगर अल्लाह उस घास
को जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी
जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : हमारे क़र्ज़ हमें मुआफ़ कर जिस तरह हमने अपने क़र्ज़दारों को मुआफ़ किया।

कमएतक़ादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या
कुछ नहीं करेगा?
31 चुनाँचे परेशानी के आलम में फ़िकर करते
करते यह न कहते रहो, 'हम क्या खाएँ? हम क्या
पिएँ? हम क्या पहनें?' 32 क्योंकि जो ईमान
नहीं रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे भागते
रहते हैं जबकि तुम्हारे आसमानी बाप को पहले से
मालूम है कि तुमको इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत
है। 33 पहले अल्लाह की बादशाही और उस की
रास्तबाज़ी की तलाश में रहो। फिर यह तमाम
चीज़ें भी तुमको मिल जाएँगी। 34 इसलिए कल
के बारे में फ़िकर करते करते परेशान न हो क्योंकि
कल का दिन अपने लिए आप फ़िकर कर लेगा।
हर दिन की अपनी मुसीबतें काफ़ी हैं।

औरों का मुंसिफ़ बनना

7 दूसरों की अदालत मत करना, वरना
तुम्हारी अदालत भी की जाएगी। 2 क्योंकि
जितनी सख़्ती से तुम दूसरों का फ़ैसला करते
हो उतनी सख़्ती से तुम्हारा भी फ़ैसला किया
जाएगा। और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी
पैमाने से तुम भी नापे जाओगे। 3 तू क्यों ग़ौर से
अपने भाई की आँख में पड़े तिनके पर नज़र करता
है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं आता जो तेरी
अपनी आँख में है? 4 तू क्योंकर अपने भाई से
कह सकता है, 'ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा
तिनका निकालने दो,' जबकि तेरी अपनी आँख
में शहतीर है। 5 रियाकार! पहले अपनी आँख के
शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका
साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से
देखकर निकाल सकेगा।
6 कुत्तों को मुक़द्दस ख़ुराक मत खिलाना और
सुअरों के आगे अपने मोती न फेंकना। ऐसा न हो
कि वह उन्हें पाँवों तले रौंदें और मुड़कर तुमको
फाड़ डालें।

माँगते रहना

7 माँगते रहो तो तुमको दिया जाएगा। ढूँडते रहो
तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे
लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। 8 क्योंकि जो
भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँडता है उसे मिलता
है, और जो खटखटाता है उसके लिए दरवाज़ा
खोल दिया जाता है। 9 तुममें से कौन अपने बेटे
को पत्थर देगा अगर वह रोटी माँगे? 10 या कौन
उसे साँप देगा अगर वह मछली माँगे? कोई नहीं!
11 जब तुम बुरे होने के बावुजूद इतने समझदार
हो कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो
तो फिर कितनी ज़्यादा यक़ीनी बात है कि तुम्हारा
आसमानी बाप माँगनेवालों को अच्छी चीज़ें देगा।
12 हर बात में दूसरों के साथ वही सुलूक करो
जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें। क्योंकि
यही शरीअत और नबियों की तालीमात का लुब्बे-
लुबाब है।

तंग दरवाज़ा

13 तंग दरवाज़े से दाख़िल हो, क्योंकि हलाकत
की तरफ़ ले जानेवाला रास्ता कुशादा और उसका
दरवाज़ा चौड़ा है। बहुत-से लोग उसमें दाख़िल हो
जाते हैं। 14 लेकिन ज़िंदगी की तरफ़ ले जानेवाला
रास्ता तंग है और उसका दरवाज़ा छोटा। कम ही
लोग उसे पाते हैं।

हर दरख़्त का अपना फल होता है

15 झूटे नबियों से ख़बरदार रहो! गो वह भेड़ों
का भेस बदलकर तुम्हारे पास आते हैं, लेकिन
अंदर से वह ग़ारतगर भेड़िये होते हैं। 16 उनका
फल देखकर तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या ख़ारदार
झाड़ियों से अंगूर तोड़े जाते हैं या ऊँटकटारों से
अंजीर? हरगिज़ नहीं। 17 इसी तरह अच्छा दरख़्त
अच्छा फल लाता है और ख़राब दरख़्त ख़राब
फल। 18 न अच्छा दरख़्त ख़राब फल ला सकता
है, न ख़राब दरख़्त अच्छा फल। 19 जो भी दरख़्त
अच्छा फल नहीं लाता उसे काटकर आग में झोंका

जाता है। 20 यों तुम उनका फल देखकर उन्हें
पहचान लोगे।

सिर्फ़ असल पैरोकार दाख़िल होंगे

21 जो मुझे 'ख़ुदावंद, ख़ुदावंद' कहते हैं उनमें
से सब आसमान की बादशाही में दाख़िल न होंगे
बल्कि सिर्फ़ वह जो मेरे आसमानी बाप की मरज़ी
पर अमल करते हैं। 22 अदालत के दिन बहुत-से
लोग मुझसे कहेंगे, 'ऐ ख़ुदावंद, ख़ुदावंद! क्या
हमने तेरे ही नाम में नबुव्वत नहीं की, तेरे ही नाम
से बदरूहें नहीं निकालीं, तेरे ही नाम से मोजिज़े
नहीं किए?' 23 उस वक़्त मैं उनसे साफ़ साफ़
कह दूँगा, 'मेरी कभी तुमसे जान पहचान न थी।
ऐ बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।'

दो क़िस्म के मकान

24 लिहाज़ा जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन
पर अमल करता है वह उस समझदार आदमी की
मानिंद है जिसने अपने मकान की बुनियाद चट्टान
पर रखी। 25 बारिश होने लगी, सैलाब आया और
आँधी मकान को झँझोड़ने लगी। लेकिन वह न
गिरा, क्योंकि उस की बुनियाद चट्टान पर रखी
गई थी।

26 लेकिन जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर
अमल नहीं करता वह उस अहमक़ की मानिंद है
जिसने अपना मकान सहीह बुनियाद डाले बग़ैर
रेत पर तामीर किया। 27 जब बारिश होने लगी,
सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी
तो यह मकान धड़ाम से गिर गया।"

ईसा का इख़्तियार

28 जब ईसा ने यह बातें ख़त्म कर लीं तो लोग
उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए,
29 क्योंकि वह उनके उलमा की तरह नहीं बल्कि
इख़्तियार के साथ सिखाता था।

कोढ़ से शफ़ा

8 ईसा पहाड़ से उतरा तो बड़ी भीड़ उसके
पीछे चलने लगी। 2 फिर एक आदमी
उसके पास आया जो कोढ़ का मरीज़ था। मुँह
के बल गिरकर उसने कहा, "ख़ुदावंद, अगर आप
चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।"

3 ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और
कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।" इस
पर वह फ़ौरन उस बीमारी से पाक-साफ़ हो गया।
4 ईसा ने उससे कहा, "ख़बरदार! यह बात किसी
को न बताना बल्कि बैतुल-मुक़द्दस में इमाम के
पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ
वह क़ुरबानी ले जा जिसका तक़ाज़ा मूसा की
शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा मिली
है। यों अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई
पाक-साफ़ हो गया है।"

रोमी अफ़सर के ग़ुलाम की शफ़ा

5 जब ईसा कफ़र्नहूम में दाख़िल हुआ तो सौ
फ़ौजियों पर मुक़र्रर एक अफ़सर उसके पास
आकर उस की मिन्नत करने लगा, 6 "ख़ुदावंद,
मेरा ग़ुलाम मफ़लूज हालत में घर में पड़ा है, और
उसे शदीद दर्द हो रहा है।"

7 ईसा ने उससे कहा, "मैं आकर उसे शफ़ा
दूँगा।"

8 अफ़सर ने जवाब दिया, "नहीं ख़ुदावंद, मैं
इस लायक़ नहीं कि आप मेरे घर जाएँ। बस यहीं
से हुक्म करें तो मेरा ग़ुलाम शफ़ा पा जाएगा।
9 क्योंकि मुझे ख़ुद आला अफ़सरों के हुक्म पर
चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं।
एक को कहता हूँ, 'जा!' तो वह जाता है और
दूसरे को 'आ!' तो वह आता है। इसी तरह मैं
अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, 'यह कर' तो वह
करता है।"

10 यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने
मुड़कर अपने पीछे आनेवालों से कहा, "मैं तुमको
सच बताता हूँ, मैंने इसराईल में भी इस क़िस्म
का ईमान नहीं पाया। 11 मैं तुम्हें बताता हूँ, बहुत-
से लोग मशरिक़ और मग़रिब से आकर इब्राहीम,
इसहाक़ और याक़ूब के साथ आसमान की
बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 12 लेकिन

बादशाही के असल वारिसों को निकालकर अंधेरे में डाल दिया जाएगा, उस जगह जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।" 13 फिर ईसा अफ़सर से मुख़ातिब हुआ, "जा, तेरे साथ वैसा ही हो जैसा तेरा ईमान है।"

और अफ़सर के ग़ुलाम को उसी घड़ी शफ़ा मिल गई।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ा

14 ईसा पतरस के घर में आया। वहाँ उसने पतरस की सास को बिस्तर पर पड़े देखा। उसे बुख़ार था। 15 उसने उसका हाथ छू लिया तो बुख़ार उतर गया और वह उठकर उस की ख़िदमत करने लगी।

16 शाम हुई तो बदरूहों की गिरिफ़्त में पड़े बहुत-से लोगों को ईसा के पास लाया गया। उसने बदरूहों को हुक्म देकर निकाल दिया और तमाम मरीज़ों को शफ़ा दी। 17 यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि "उसने हमारी कमज़ोरियाँ ले लीं और हमारी बीमारियाँ उठा लीं।"

पैरवी की संजीदगी

18 जब ईसा ने अपने गिर्द बड़ा हुजूम देखा तो उसने शागिर्दों को झील पार करने का हुक्म दिया। 19 रवाना होने से पहले शरीअत का एक आलिम उसके पास आकर कहने लगा, "उस्ताद, जहाँ भी आप जाएंगे मैं आपके पीछे चलता रहूँगा।"

20 ईसा ने जवाब दिया, "लोमड़ियाँ अपने भटों में और परिंदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं, लेकिन इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम करने की कोई जगह नहीं।"

21 किसी और शागिर्द ने उससे कहा, "ख़ुदावंद, मुझे पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करने की इजाज़त दें।"

22 लेकिन ईसा ने उसे बताया, "मेरे पीछे हो ले और मुरदों को अपने मुरदे दफ़न करने दे।"

ईसा आँधी को थमा देता है

23 फिर वह कश्ती पर सवार हुआ और उसके पीछे उसके शागिर्द भी। 24 अचानक झील पर सख़्त आँधी चलने लगी और कश्ती लहरों में डूबने लगी। लेकिन ईसा सो रहा था। 25 शागिर्द उसके पास गए और उसे जगाकर कहने लगे, "ख़ुदावंद, हमें बचा, हम तबाह हो रहे हैं!"

26 उसने जवाब दिया, "ऐ कमएतक़ादो! घबराते क्यों हो?" खड़े होकर उसने आँधी और मौजों को डाँटा तो लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 27 शागिर्द हैरान होकर कहने लगे, "यह किस क़िस्म का शख़्स है? हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।"

दो बदरूह-गिरिफ़्ता आदमियों की शफ़ा

28 वह झील के पार गदरीनियों के इलाक़े में पहुँचे तो बदरूह-गिरिफ़्ता दो आदमी क़ब्रों में से निकलकर ईसा को मिले। वह इतने ख़तरनाक थे कि वहाँ से कोई गुज़र नहीं सकता था। 29 चीख़ें मार मारकर उन्होंने कहा, "अल्लाह के फ़रज़ंद, हमारा आपके साथ क्या वास्ता? क्या आप हमें मुक़र्ररा वक़्त से पहले अज़ाब में डालने आए हैं?"

30 कुछ फ़ासले पर सुअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा था। 31 बदरूहों ने ईसा से इल्तिजा की, "अगर आप हमें निकालते हैं तो सुअरों के उस ग़ोल में भेज दें।"

32 ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, "जाओ।" बदरूहें निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे का पूरा ग़ोल भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरा और झील में झपटकर डूब मरा। 33 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। शहर में जाकर उन्होंने लोगों को सब कुछ सुनाया और वह भी जो बदरूह-गिरिफ़्ता आदमियों के साथ हुआ था। 34 फिर पूरा शहर निकलकर ईसा को मिलने आया। उसे देखकर उन्होंने उस की मिन्नत की कि हमारे इलाक़े से चले जाएँ।

मफ़लूज आदमी की शफ़ा

9 कश्ती में बैठकर ईसा ने झील को पार
किया और अपने शहर पहुँच गया। 2 वहाँ
एक मफ़लूज आदमी को चारपाई पर डालकर
उसके पास लाया गया। उनका ईमान देखकर
ईसा ने कहा, “बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह
मुआफ़ कर दिए गए हैं।”
3 यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा दिल में
कहने लगे, “यह कुफ़्र बक रहा है!”
4 ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं,
इसलिए उसने उनसे पूछा, 5 “तुम दिल में बुरी
बातें क्यों सोच रहे हो? क्या मफ़लूज से यह
कहना ज़्यादा आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़
कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ और चल-फिर?’
6 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को
वाक़ई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार
है।” यह कहकर वह मफ़लूज से मुख़ातिब हुआ,
“उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।”
7 वह आदमी खड़ा हुआ और अपने घर चला
गया। 8 यह देखकर हुजूम पर अल्लाह का ख़ौफ़
तारी हो गया और वह अल्लाह की तमजीद
करने लगे कि उसने इनसान को इस क़िस्म का
इख़्तियार दिया है।

मत्ती की बुलाहट

9 आगे जाकर ईसा ने एक आदमी को देखा जो
टैक्स लेनेवालों की चौकी पर बैठा था। उसका
नाम मत्ती था। ईसा ने उससे कहा, “मेरे पीछे हो
ले।” और मत्ती उठकर उसके पीछे हो लिया।
10 बाद में ईसा मत्ती के घर में खाना खा
रहा था। बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार
भी आकर ईसा और उसके शागिर्दों के साथ
खाने में शरीक हुए। 11 यह देखकर फ़रीसियों ने
उसके शागिर्दों से पूछा, “आपका उस्ताद टैक्स
लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता
है?”
12 यह सुनकर ईसा ने कहा, “सेहतमंदों को
डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को।
13 पहले जाओ और कलामे-मुक़द्दस की इस बात
का मतलब जान लो कि ‘मैं क़ुरबानी नहीं बल्कि
रहम पसंद करता हूँ।’ क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को
नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।”

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

14 फिर यहया के शागिर्द उसके पास आए
और पूछा, “आपके शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते
जबकि हम और फ़रीसी रोज़ा रखते हैं?”
15 ईसा ने जवाब दिया, “शादी के मेहमान
किस तरह मातम कर सकते हैं जब तक दूल्हा
उनके दरमियान है? लेकिन एक दिन आएगा जब
दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर
रोज़ा रखेंगे।
16 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने
लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो
नया टुकड़ा बाद में सुकड़कर पुराने लिबास से
अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई
जगह पहले की निसबत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी।
17 इसी तरह अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-
लचक मशकों में नहीं डाला जाता। अगर ऐसा
किया जाए तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस
के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मशकें
दोनों ज़ाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर का ताज़ा
रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार
होती हैं। यों रस और मशकें दोनों ही महफ़ूज़ रहते
हैं।”

याईर की बेटी और बीमार औरत

18 ईसा अभी यह बयान कर रहा था कि एक
यहूदी राहनुमा ने गिरकर उसे सिजदा किया और
कहा, “मेरी बेटी अभी अभी मरी है। लेकिन
आकर अपना हाथ उस पर रखें तो वह दुबारा ज़िंदा
हो जाएगी।”
19 ईसा उठकर अपने शागिर्दों समेत उसके
साथ हो लिया।
20 चलते चलते एक औरत ने पीछे से आकर
ईसा के लिबास का किनारा छुआ। यह औरत

बारह साल से ख़ून बहने की मरीज़ा थी 21 और
वह सोच रही थी, “अगर मैं सिर्फ़ उसके लिबास
को ही छू लूँ तो शफ़ा पा लूँगी।”
22 ईसा ने मुड़कर उसे देखा और कहा, “बेटी,
हौसला रख! तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।”
और औरत को उसी वक़्त शफ़ा मिल गई।
23 फिर ईसा राहनुमा के घर में दाख़िल हुआ।
बाँसरी बजानेवाले और बहुत-से लोग पहुँच चुके थे
और बहुत शोर-शराबा था। यह देखकर 24 ईसा ने
कहा, “निकल जाओ! लड़की मर नहीं गई बल्कि
सो रही है।” लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने
लगे। 25 लेकिन जब सबको निकाल दिया गया
तो वह अंदर गया। उसने लड़की का हाथ पकड़ा
तो वह उठ खड़ी हुई। 26 इस मोजिज़े की ख़बर
उस पूरे इलाक़े में फैल गई।

दो अंधों की शफ़ा

27 जब ईसा वहाँ से रवाना हुआ तो दो अंधे
उसके पीछे चलकर चिल्लाने लगे, “इब्ने-दाऊद,
हम पर रहम करें।”
28 जब ईसा किसी के घर में दाख़िल हुआ तो
वह उसके पास आए। ईसा ने उनसे पूछा, “क्या
तुम्हारा ईमान है कि मैं यह कर सकता हूँ?”
उन्होंने जवाब दिया, “जी, ख़ुदावंद।”
29 फिर उसने उनकी आँखें छूकर कहा,
“तुम्हारे साथ तुम्हारे ईमान के मुताबिक़ हो
जाए।” 30 उनकी आँखें बहाल हो गईं और ईसा
ने सख़्ती से उन्हें कहा, “ख़बरदार, किसी को भी
इसका पता न चले!”
31 लेकिन वह निकलकर पूरे इलाक़े में उस की
ख़बर फैलाने लगे।

गूँगे आदमी की शफ़ा

32 जब वह निकल रहे थे तो एक गूँगा आदमी
ईसा के पास लाया गया जो किसी बदरूह के
क़ब्ज़े में था। 33 जब बदरूह को निकाला गया तो
गूँगा बोलने लगा। हुजूम हैरान रह गया। उन्होंने
कहा, “ऐसा काम इसराईल में कभी नहीं देखा
गया।”
34 लेकिन फ़रीसियों ने कहा, “वह बदरूहों के
सरदार ही की मदद से बदरूहों को निकालता है।”

ईसा को लोगों पर तरस आता है

35 और ईसा सफ़र करते करते तमाम शहरों
और गाँवों में से गुज़रा। जहाँ भी वह पहुँचा वहाँ
उसने उनके इबादतख़ानों में तालीम दी, बादशाही
की ख़ुशख़बरी सुनाई और हर क़िस्म के मरज़ और
अलालत से शफ़ा दी। 36 हुजूम को देखकर उसे
उन पर बड़ा तरस आया, क्योंकि वह पिसे हुए
और बेबस थे, ऐसी भेड़ों की तरह जिनका चरवाहा
न हो। 37 उसने अपने शागिर्दों से कहा, “फ़सल
बहुत है, लेकिन मज़दूर कम। 38 इसलिए फ़सल
के मालिक से गुज़ारिश करो कि वह अपनी फ़सल
काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे।”

बारह रसूलों को इख़्तियार दिया जाता है

10 फिर ईसा ने अपने बारह रसूलों
को बुलाकर उन्हें नापाक रूहें
निकालने और हर क़िस्म के मरज़ और
अलालत से शफ़ा देने का इख़्तियार दिया।
2 बारह रसूलों के नाम यह हैं : पहला
शमाऊन जो पतरस भी कहलाता है, फिर
उसका भाई अंदरियास, याक़ूब बिन ज़बदी
और उसका भाई यूहन्ना, 3 फ़िलिप्पुस, बर-
तुलमाई, तोमा, मत्ती (जो टैक्स लेनेवाला था),
याक़ूब बिन हलफ़ई, तद्दी, 4 शमाऊन मुजाहिद
और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे
दुश्मनों के हवाले कर दिया।

रसूलों को तबलीग़ के लिए भेजा जाता है

5 इन बारह मर्दों को ईसा ने भेज दिया।
साथ साथ उसने उन्हें हिदायत दी, “ग़ैरयहूदी
आबादियों में न जाना, न किसी सामरी शहर में,
6 बल्कि सिर्फ़ इसराईल की खोई हुई भेड़ों के
पास। 7 और चलते चलते मुनादी करते जाओ

कि ‘आसमान की बादशाही क़रीब आ चुकी
है।’ 8 बीमारों को शफ़ा दो, मुरदों को ज़िंदा
करो, कोढ़ियों को पाक-साफ़ करो, बदरूहों को
निकालो। तुमको मुफ़्त में मिला है, मुफ़्त में ही
बाँटना। 9 अपने कमरबंद में पैसे न रखना—न
सोने, न चाँदी और न ताँबे के सिक्के। 10 न सफ़र
के लिए बैग हो, न एक से ज़्यादा सूट, न जूते, न
लाठी। क्योंकि मज़दूर अपनी रोज़ी का हक़दार
है।

11 जिस शहर या गाँव में दाख़िल होते हो उसमें
किसी लायक़ शख़्स का पता करो और रवाना होते
वक़्त तक उसी के घर में ठहरो। 12 घर में दाख़िल
होते वक़्त उसे दुआए-ख़ैर दो। 13 अगर वह घर
इस लायक़ होगा तो जो सलामती तुमने उसके
लिए माँगी है वह उस पर आकर ठहरी रहेगी।
अगर नहीं तो यह सलामती तुम्हारे पास लौट
आएगी। 14 अगर कोई घराना या शहर तुमको
क़बूल न करे, न तुम्हारी सुने तो रवाना होते वक़्त
उस जगह की गर्द अपने पाँवों से झाड़ देना। 15 मैं
तुम्हें सच बताता हूँ, अदालत के दिन उस शहर
की निसबत सदूम और अमूरा के इलाक़े का हाल
ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त होगा।

आनेवाली ईज़ारसानियाँ

16 देखो, मैं तुम भेड़ों को भेड़ियों में भेज रहा
हूँ। इसलिए साँपों की तरह होशियार और कबूतरों
की तरह मासूम बनो। 17 लोगों से ख़बरदार रहो,
क्योंकि वह तुमको मक़ामी अदालतों के हवाले
करके अपने इबादतख़ानों में कोड़े लगवाएँगे।
18 मेरी ख़ातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के
सामने पेश किया जाएगा और यों तुमको उन्हें
और ग़ैरयहूदियों को गवाही देने का मौक़ा मिलेगा।
19 जब वह तुम्हें गिरिफ़्तार करेंगे तो यह सोचते
सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ या
किस तरह बात करूँ। उस वक़्त तुमको बताया
जाएगा कि क्या कहना है, 20 क्योंकि तुम ख़ुद
बात नहीं करोगे बल्कि तुम्हारे बाप का रूह तुम्हारी
मारिफ़त बोलेगा।

21 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे
को मौत के हवाले करेगा। बच्चे अपने वालिदैन के
ख़िलाफ़ खड़े होकर उन्हें क़त्ल करवाएँगे। 22 सब
तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार
हो। लेकिन जो आख़िर तक क़ायम रहेगा उसे
नजात मिलेगी। 23 जब वह एक शहर में तुम्हें
सताएँगे तो किसी दूसरे शहर को हिजरत कर
जाना। मैं तुमको सच बताता हूँ कि इब्ने-आदम
की आमद तक तुम इसराईल के तमाम शहरों तक
नहीं पहुँच पाओगे।

24 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता,
न ग़ुलाम अपने मालिक से। 25 शागिर्द को इस
पर इकतिफ़ा करना है कि वह अपने उस्ताद की
मानिंद हो, और इसी तरह ग़ुलाम को कि वह अपने
मालिक की मानिंद हो। घराने के सरपरस्त को
अगर बदरूहों का सरदार बाल-ज़बूल क़रार दिया
गया है तो उसके घरवालों को क्या कुछ न कहा
जाएगा।

किससे डरना है?

26 उनसे मत डरना, क्योंकि जो कुछ अभी
छुपा हुआ है उसे आख़िर में ज़ाहिर किया जाएगा,
और जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उसका
राज़ आख़िर में खुल जाएगा। 27 जो कुछ मैं तुम्हें
अंधेरे में सुना रहा हूँ उसे रोज़े-रौशन में सुना देना।
और जो कुछ आहिस्ता आहिस्ता तुम्हारे कान
में बताया गया है उसका छतों से एलान करो।
28 उनसे ख़ौफ़ मत खाना जो तुम्हारी रूह को
नहीं बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे जिस्म को क़त्ल कर
सकते हैं। अल्लाह से डरो जो रूह और जिस्म
दोनों को जहन्नुम में डालकर हलाक कर सकता
है। 29 क्या चिड़ियों का जोड़ा कम पैसों में नहीं
बिकता? ताहम उनमें से एक भी तुम्हारे बाप
की इजाज़त के बग़ैर ज़मीन पर नहीं गिर सकती।
30 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी
गिने हुए हैं। 31 लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी क़दरो-
क़ीमत बहुत-सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इक़रार या इनकार करने का नतीजा

32 जो भी लोगों के सामने मेरा इक़रार करे
उसका इक़रार मैं ख़ुद भी अपने आसमानी बाप के
सामने करूँगा। 33 लेकिन जो भी लोगों के सामने
मेरा इनकार करे उसका मैं भी अपने आसमानी
बाप के सामने इनकार करूँगा।

ईसा सुलह-सलामती का बाइस नहीं

34 यह मत समझो कि मैं दुनिया में सुलह-
सलामती क़ायम करने आया हूँ। मैं सुलह-
सलामती नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया हूँ।
35 मैं बेटे को उसके बाप के ख़िलाफ़ खड़ा करने
आया हूँ, बेटी को उस की माँ के ख़िलाफ़ और
बहू को उस की सास के ख़िलाफ़। 36 इनसान के
दुश्मन उसके अपने घरवाले होंगे।

37 जो अपने बाप या माँ को मुझसे ज़्यादा प्यार
करे वह मेरे लायक़ नहीं। जो अपने बेटे या बेटी
को मुझसे ज़्यादा प्यार करे वह मेरे लायक़ नहीं।
38 जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले
वह मेरे लायक़ नहीं। 39 जो भी अपनी जान को
बचाए वह उसे खो देगा, लेकिन जो अपनी जान
को मेरी ख़ातिर खो दे वह उसे पाएगा।

ईसा और उसके पैरोकारों को क़बूल करने का अज्र

40 जो तुम्हें क़बूल करे वह मुझे क़बूल करता है,
और जो मुझे क़बूल करता है वह उसको क़बूल
करता है जिसने मुझे भेजा है। 41 जो किसी नबी
को क़बूल करे उसे नबी का-सा अज्र मिलेगा। और
जो किसी रास्तबाज़ शख़्स को उस की रास्तबाज़ी
के सबब से क़बूल करे उसे रास्तबाज़ शख़्स का-
सा अज्र मिलेगा। 42 मैं तुमको सच बताता हूँ कि
जो इन छोटों में से किसी एक को मेरा शागिर्द होने
के बाइस ठंडे पानी का गलास भी पिलाए उसका
अज्र क़ायम रहेगा।”

यहया का ईसा से सवाल

11 अपने शागिर्दों को यह हिदायात देने
के बाद ईसा उनके शहरों में तालीम
देने और मुनादी करने के लिए रवाना हुआ।

2 यहया ने जो उस वक़्त जेल में था सुना कि
ईसा क्या क्या कर रहा है। इस पर उसने अपने
शागिर्दों को उसके पास भेज दिया 3 ताकि वह
उससे पूछें, “क्या आप वही हैं जिसे आना है या
हम किसी और के इंतज़ार में रहें?”

4 ईसा ने जवाब दिया, “यहया के पास वापस
जाकर उसे सब कुछ बता देना जो तुमने देखा
और सुना है। 5 ‘अंधे देखते, लँगड़े चलते-फिरते
हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे
सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया जाता है और
ग़रीबों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई जाती
है।’ 6 मुबारक है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर
बरगश्ता नहीं होता।”

7 यहया के यह शागिर्द चले गए तो ईसा हुजूम
से यहया के बारे में बात करने लगा, “तुम
रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो
हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 8 या
क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तवक़्क़ो कर रहे
थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए है?
नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते हैं वह शाही महलों
में पाए जाते हैं। 9 तो फिर तुम क्या देखने गए थे?
एक नबी को? बिलकुल सहीह, बल्कि मैं तुमको
बताता हूँ कि वह नबी से भी बड़ा है। 10 उसी
के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘देख, मैं
अपने पैग़ंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो
तेरे सामने रास्ता तैयार करेगा।’ 11 मैं तुमको सच
बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होनेवाला कोई
भी शख़्स यहया से बड़ा नहीं है। तो भी आसमान
की बादशाही में दाख़िल होनेवाला सबसे छोटा
शख़्स उससे बड़ा है। 12 यहया बपतिस्मा देनेवाले
की ख़िदमत से लेकर आज तक आसमान की
बादशाही पर ज़बरदस्ती की जा रही है, और
ज़बरदस्त उसे छीन रहे हैं। 13 क्योंकि तमाम नबी

और तौरेत ने यहया के दौर तक इसके बारे में
पेशगोई की है। 14 और अगर तुम यह मानने के
लिए तैयार हो तो मानो कि वह इलियास नबी है
जिसे आना था। 15 जो सुन सकता है वह सुन ले!
16 मैं इस नसल को किससे तशबीह दूँ? वह
उन बच्चों की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल
रहे हैं। उनमें से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों
से शिकायत कर रहे हैं, 17 'हमने बाँसरी बजाई
तो तुम न नाचे। फिर हमने नोहा के गीत गाए,
लेकिन तुमने छाती पीटकर मातम न किया।'
18 देखो, यहया आया और न खाया, न पिया।
यह देखकर लोग कहते हैं कि उसमें बदरूह है।
19 फिर इब्ने-आदम खाता और पीता हुआ आया।
अब कहते हैं, 'देखो यह कैसा पेटू और शराबी
है। और वह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों का
दोस्त भी है।' लेकिन हिकमत अपने आमाल से
ही सहीह साबित हुई है।"

तौबा न करनेवाले शहरों पर अफ़सोस

20 फिर ईसा उन शहरों को डाँटने लगा जिनमें
उसने ज़्यादा मोजिज़े किए थे, क्योंकि उन्होंने
तौबा नहीं की थी। 21 "ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर
अफ़सोस! बैत-सैदा, तुझ पर अफ़सोस! अगर
सूर और सैदा में वह मोजिज़े किए गए होते जो
तुममें हुए तो वहाँ के लोग कब के टाट ओढ़कर
और सर पर राख डालकर तौबा कर चुके होते।
22 जी हाँ, अदालत के दिन तुम्हारी निसबत सूर
और सैदा का हाल ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त होगा।
23 और ऐ कफ़र्नहूम, क्या तुझे आसमान तक
सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू
उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा। अगर सदूम
में वह मोजिज़े किए गए होते जो तुझमें हुए हैं तो
वह आज तक क़ायम रहता। 24 हाँ, अदालत के
दिन तेरी निसबत सदूम का हाल ज़्यादा क़ाबिले-
बरदाश्त होगा।"

बाप की तमजीद

25 उस वक़्त ईसा ने कहा, "ऐ बाप,
आसमानो-ज़मीन के मालिक! मैं तेरी तमजीद
करता हूँ कि तूने यह बातें दानाओं और अक़्लमंदों
से छुपाकर छोटे बच्चों पर ज़ाहिर कर दी हैं। 26 हाँ
मेरे बाप, यही तुझे पसंद आया।
27 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है।
कोई भी फ़रज़ंद को नहीं जानता सिवाए बाप के।
और कोई बाप को नहीं जानता सिवाए फ़रज़ंद
के और उन लोगों के जिन पर फ़रज़ंद बाप को
ज़ाहिर करना चाहता है।
28 ऐ थकेमाँदे और बोझ तले दबे हुए लोगो,
सब मेरे पास आओ! मैं तुमको आराम दूँगा।
29 मेरा जुआ अपने ऊपर उठाकर मुझसे सीखो,
क्योंकि मैं हलीम और नरमदिल हूँ। यों करने से
तुम्हारी जानें आराम पाएँगी, 30 क्योंकि मेरा जुआ
मुलायम और मेरा बोझ हलका है।"

सबत के बारे में सवाल

12 उन दिनों में ईसा अनाज के खेतों में
से गुज़र रहा था। सबत का दिन था।
चलते चलते उसके शागिर्दों को भूक लगी और
वह अनाज की बालें तोड़ तोड़कर खाने लगे।
2 यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से शिकायत की,
"देखो, आपके शागिर्द ऐसा काम कर रहे हैं जो
सबत के दिन मना है।"
3 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुमने नहीं पढ़ा
कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके
साथियों को भूक लगी? 4 वह अल्लाह के घर
में दाख़िल हुआ और अपने साथियों समेत रब
के लिए मख़सूसशुदा रोटियाँ खाईं, अगरचे उन्हें
इसकी इजाज़त नहीं थी बल्कि सिर्फ़ इमामों
को? 5 या क्या तुमने तौरेत में नहीं पढ़ा कि गो
इमाम सबत के दिन बैतुल-मुक़द्दस में ख़िदमत
करते हुए आराम करने का हुक्म तोड़ते हैं तो
भी वह बेइलज़ाम ठहरते हैं? 6 मैं तुम्हें बताता
हूँ कि यहाँ वह है जो बैतुल-मुक़द्दस से अफ़ज़ल
है। 7 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'मैं क़ुरबानी

नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ।' अगर तुम
इसका मतलब समझते तो बेक़ुसूरों को मुजरिम न
ठहराते। 8 क्योंकि इब्ने-आदम सबत का मालिक
है।"

सूखे हाथवाले आदमी की शफ़ा

9 वहाँ से चलते चलते वह उनके इबा-
दतख़ाने में दाख़िल हुआ। 10 उसमें एक आदमी
था जिसका हाथ सूखा हुआ था। लोग ईसा पर
इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे
थे, इसलिए उन्होंने उससे पूछा, "क्या शरीअत
सबत के दिन शफ़ा देने की इजाज़त देती है?"

11 ईसा ने जवाब दिया, "अगर तुममें से किसी
की भेड़ सबत के दिन गढ़े में गिर जाए तो
क्या उसे नहीं निकालोगे? 12 और भेड़ की
निसबत इनसान की कितनी ज़्यादा क़दरो-क़ीमत
है! ग़रज़ शरीअत नेक काम करने की इजाज़त
देती है।" 13 फिर उसने उस आदमी से जिसका
हाथ सूखा हुआ था कहा, "अपना हाथ आगे
बढ़ा।"

उसने ऐसा किया तो उसका हाथ दूसरे हाथ
की मानिंद तनदुरुस्त हो गया। 14 इस पर फ़रीसी
निकलकर आपस में ईसा को क़त्ल करने की
साज़िशें करने लगे।

अल्लाह का चुना हुआ ख़ादिम

15 जब ईसा ने यह जान लिया तो वह वहाँ से
चला गया। बहुत-से लोग उसके पीछे चल रहे थे।
उसने उनके तमाम मरीज़ों को शफ़ा देकर 16 उन्हें
ताकीद की, "किसी को मेरे बारे में न बताओ।"
17 यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,

18 'देखो, मेरा ख़ादिम
जिसे मैंने चुन लिया है,
मेरा प्यारा जो मुझे पसंद है।
मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा,
और वह अक़वाम में
इनसाफ़ का एलान करेगा।
19 वह न तो झगड़ेगा, न चिल्लाएगा।
गलियों में उस की आवाज़ सुनाई
नहीं देगी।
20 न वह कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा,
न बुझती हुई बत्ती को बुझाएगा
जब तक वह इनसाफ़ को ग़लबा न बख़्शे।
21 उसी के नाम से क़ौमें उम्मीद रखेंगी।'

ईसा और बदरूहों का सरदार

22 फिर एक आदमी को ईसा के पास लाया
गया जो बदरूह की गिरिफ़्त में था। वह अंधा और
गूँगा था। ईसा ने उसे शफ़ा दी तो गूँगा बोलने
और देखने लगा। 23 हुजूम के तमाम लोग हक्का-
बक्का रह गए और पूछने लगे, "क्या यह इब्ने-
दाऊद नहीं?"

24 लेकिन जब फ़रीसियों ने यह सुना तो उन्होंने
कहा, "यह सिर्फ़ बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल
की मारिफ़त बदरूहों को निकालता है।"

25 उनके यह ख़यालात जानकर ईसा ने उनसे
कहा, "जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह तबाह
हो जाएगी। और जिस शहर या घराने की ऐसी
हालत हो वह भी क़ायम नहीं रह सकता। 26 इसी
तरह अगर इबलीस अपने आपको निकाले तो
फिर उसमें फूट पड़ गई है। इस सूरत में उस
की बादशाही किस तरह क़ायम रह सकती है?
27 और अगर मैं बदरूहों को बाल-ज़बूल की मदद
से निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे उन्हें किसके ज़रीए
निकालते हैं? चुनाँचे वही इस बात में तुम्हारे
मुंसिफ़ होंगे। 28 लेकिन अगर मैं अल्लाह के रूह
की मारिफ़त बदरूहों को निकाल देता हूँ तो फिर
अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच चुकी है।

29 किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुसकर
उसका मालो-असबाब लूटना किस तरह मुमकिन
है जब तक कि उसे बाँधा न जाए? फिर ही उसे
लूटा जा सकता है।

30 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे ख़िलाफ़ है और
जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है।
31 ग़रज़ मैं तुमको बताता हूँ कि इनसान का
हर गुनाह और कुफ़र मुआफ़ किया जा सकेगा

सिवाए रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़र बकने के।
इसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा। 32 जो इब्ने-
आदम के ख़िलाफ़ बात करे उसे मुआफ़ किया
जा सकेगा, लेकिन जो रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़
बात करे उसे न इस जहान में और न आनेवाले
जहान में मुआफ़ किया जाएगा।

दरख़्त उसके फल से पहचाना जाता है

33 अच्छे फल के लिए अच्छे दरख़्त की ज़रूरत
होती है। ख़राब दरख़्त से ख़राब फल मिलता है।
दरख़्त उसके फल से ही पहचाना जाता है। 34 ऐ
साँप के बच्चो! तुम जो बुरे हो किस तरह अच्छी
बातें कर सकते हो? क्योंकि जिस चीज़ से दिल
लबरेज़ होता है वह छलककर ज़बान पर आ जाती
है। 35 अच्छा शख़्स अपने दिल के अच्छे ख़ज़ाने
से अच्छी चीज़ें निकालता है जबकि बुरा शख़्स
अपने बुरे ख़ज़ाने से बुरी चीज़ें।

36 मैं तुमको बताता हूँ कि क़ियामत के दिन
लोगों को बेपरवाई से की गई हर बात का हिसाब
देना पड़ेगा। 37 तुम्हारी अपनी बातों की बिना पर
तुमको रास्त या नारास्त ठहराया जाएगा।”

इलाही निशान का तक़ाज़ा

38 फिर शरीअत के कुछ उलमा और फ़रीसियों
ने ईसा से बात की, “उस्ताद, हम आपकी तरफ़
से इलाही निशान देखना चाहते हैं।”

39 उसने जवाब दिया, “सिर्फ़ शरीर और
ज़िनाकार नसल इलाही निशान का तक़ाज़ा
करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान पेश
नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस नबी के निशान
के। 40 क्योंकि जिस तरह यूनुस तीन दिन और
तीन रात मछली के पेट में रहा उसी तरह इब्ने-
आदम भी तीन दिन और तीन रात ज़मीन की
गोद में पड़ा रहेगा। 41 क़ियामत के दिन नीनवा
के बाशिंदे इस नसल के साथ खड़े होकर इसे
मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि यूनुस के एलान पर
उन्होंने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूनुस
से भी बड़ा है। 42 उस दिन जुनूबी मुल्क सबा की
मलिका भी इस नसल के साथ खड़ी होकर इसे
मुजरिम क़रार देगी। क्योंकि वह दूर-दराज़ मुल्क
से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई थी
जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है।

बदरूह की वापसी

43 जब कोई बदरूह किसी शख़्स से निकलती
है तो वह वीरान इलाक़ों में से गुज़रती हुई आराम
की जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई
ऐसा मक़ाम नहीं मिलता 44 तो वह कहती है,
‘मैं अपने उस घर में वापस चली जाऊँगी जिसमें
से निकली थी।’ वह वापस आकर देखती है कि
घर ख़ाली है और किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ
सलीक़े से रख दिया है। 45 फिर वह जाकर सात
और बदरूहें ढूँड लाती है जो उससे बदतर होती
हैं, और वह सब उस शख़्स में घुसकर रहने लगती
हैं। चुनाँचे अब उस आदमी की हालत पहले की
निसबत ज़्यादा बुरी हो जाती है। इस शरीर नसल
का भी यही हाल होगा।”

ईसा की माँ और भाई

46 ईसा अभी हुजूम से बात कर ही रहा था कि
उस की माँ और भाई बाहर खड़े उससे बात करने
की कोशिश करने लगे। 47 किसी ने ईसा से कहा,
“आपकी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे
बात करना चाहते हैं।”

48 ईसा ने पूछा, “कौन है मेरी माँ और कौन
हैं मेरे भाई?” 49 फिर अपने हाथ से शागिर्दों
की तरफ़ इशारा करके उसने कहा, “देखो, यह
मेरी माँ और मेरे भाई हैं। 50 क्योंकि जो भी मेरे
आसमानी बाप की मरज़ी पूरी करता है वह मेरा
भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।”

बीज बोनेवाले की तमसील

13 उसी दिन ईसा घर से निकलकर
झील के किनारे बैठ गया। 2 इत-
ना बड़ा हुजूम उसके गिर्द जमा हो गया कि
आख़िरकार वह एक कश्ती में बैठ गया जबकि

लोग किनारे पर खड़े रहे। 3 फिर उसने उन्हें बहुत-
सी बातें तमसीलों में सुनाईं।

“एक किसान बीज बोने के लिए निकला।
4 जब बीज इधर-उधर बिखर गया तो कुछ दाने
रास्ते पर गिरे और परिंदों ने आकर उन्हें चुग
लिया। 5 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी
की कमी थी। वह जल्द उग आए क्योंकि मिट्टी
गहरी नहीं थी। 6 लेकिन जब सूरज निकला तो
पौदे झुलस गए और चूँकि वह जड़ न पकड़ सके
इसलिए सूख गए। 7 कुछ ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के
दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन
ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने-
फूलने न दिया। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो गए।
8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन में
गिरे और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि
सौ गुना तक ज़्यादा फल लाए। 9 जो सुन सकता
है वह सुन ले!”

तमसीलों का मक़सद

10 शागिर्द उसके पास आकर पूछने लगे,
“आप लोगों से तमसीलों में बात क्यों करते हैं?”

11 उसने जवाब दिया, “तुमको तो आस-
मान की बादशाही के भेद समझने की लियाक़त
दी गई है, लेकिन उन्हें यह लियाक़त नहीं दी गई।
12 जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा
और उसके पास कसरत की चीज़ें होंगी। लेकिन
जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन
लिया जाएगा जो उसके पास है। 13 इसलिए मैं
तमसीलों में उनसे बात करता हूँ। क्योंकि वह
देखते हुए कुछ नहीं देखते, वह सुनते हुए कुछ नहीं
सुनते और कुछ नहीं समझते। 14 उनमें यसायाह
नबी की यह पेशगोई पूरी हो रही है :

‘तुम अपने कानों से सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।
15 क्योंकि इस क़ौम का दिल बेहिस
हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।’

16 लेकिन तुम्हारी आँखें मुबारक हैं क्योंकि वह
देख सकती हैं और तुम्हारे कान मुबारक हैं क्योंकि
वह सुन सकते हैं। 17 मैं तुमको सच बताता हूँ
कि जो कुछ तुम देख रहे हो बहुत-से नबी और
रास्तबाज़ इसे देख न पाए अगरचे वह इसके
आरज़ूमंद थे। और जो कुछ तुम सुन रहे हो इसे
वह सुनने न पाए, अगरचे वह इसके ख़ाहिशमंद
थे।

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

18 अब सुनो कि बीज बोनेवाले की तम-
सील का मतलब क्या है। 19 रास्ते पर गिरे हुए
दाने वह लोग हैं जो बादशाही का कलाम सुनते
तो हैं, लेकिन उसे समझते नहीं। फिर इबलीस
आकर वह कलाम छीन लेता है जो उनके दिलों
में बोया गया है। 20 पथरीली ज़मीन पर गिरे हुए
दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे ख़ुशी
से क़बूल तो कर लेते हैं, 21 लेकिन वह जड़
नहीं पकड़ते और इसलिए ज़्यादा देर तक क़ायम
नहीं रहते। ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के
बाइस किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार
हो जाएँ तो वह बरगश्ता हो जाते हैं। 22 ख़ुदरौ
काँटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग
हैं जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर रोज़मर्रा
की परेशानियाँ और दौलत का फ़रेब कलाम को
फलने-फूलने नहीं देता। नतीजे में वह फल लाने
तक नहीं पहुँचता। 23 इसके मुक़ाबले में ज़रख़ेज़
ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम
को सुनकर उसे समझ लेते और बढ़ते बढ़ते तीस
गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाते
हैं।”

ख़ुदरौ पौदों की तमसील

24 ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई। “आसमान की बादशाही उस किसान से मुताबिक़त रखती है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बो दिया। 25 लेकिन जब लोग सो रहे थे तो उसके दुश्मन ने आकर अनाज के पौदों के दरमियान ख़ुदरौ पौदों का बीज बो दिया। फिर वह चला गया। 26 जब अनाज फूट निकला और फ़सल पकने लगी तो ख़ुदरौ पौदे भी नज़र आए। 27 नौकर मालिक के पास आए और कहने लगे, ‘जनाब, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? तो फिर यह ख़ुदरौ पौदे कहाँ से आ गए हैं?’

28 उसने जवाब दिया, ‘किसी दुश्मन ने यह कर दिया है।’

नौकरों ने पूछा, ‘क्या हम जाकर उन्हें उखाड़ें?’

29 ‘नहीं,’ उसने कहा। ‘ऐसा न हो कि ख़ुदरौ पौदों के साथ साथ तुम अनाज के पौदे भी उखाड़ डालो। 30 उन्हें फ़सल की कटाई तक मिलकर बढ़ने दो। उस वक़्त मैं फ़सल की कटाई करनेवालों से कहूँगा कि पहले ख़ुदरौ पौदों को चुन लो और उन्हें जलाने के लिए गठों में बाँध लो। फिर ही अनाज को जमा करके गोदाम में लाओ’।”

राई के दाने की तमसील

31 ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई। “आसमान की बादशाही राई के दाने की मानिंद है जो किसी ने लेकर अपने खेत में बो दिया। 32 गो यह बीजों में सबसे छोटा दाना है, लेकिन बढ़ते बढ़ते यह सब्ज़ियों में सबसे बड़ा हो जाता है। बल्कि यह दरख़्त-सा बन जाता है और परिंदे आकर उस की शाख़ों में घोंसले बना लेते हैं।”

ख़मीर की तमसील

33 उसने उन्हें एक और तमसील भी सुनाई। “आसमान की बादशाही ख़मीर की मानिंद है जो किसी औरत ने लेकर तक़रीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गुँधे हुए आटे को ख़मीर बना दिया।”

तमसीलों में बात करने का सबब

34 ईसा ने यह तमाम बातें हुजूम के सामने तमसीलों की सूरत में कीं। तमसील के बग़ैर उसने उनसे बात ही नहीं की। 35 यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि “मैं तमसीलों में बात करूँगा, मैं दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक छुपी हुई बातें बयान करूँगा।”

ख़ुदरौ पौदों की तमसील का मतलब

36 फिर ईसा हुजूम को रुख़सत करके घर के अंदर चला गया। उसके शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे, “खेत में ख़ुदरौ पौदों की तमसील का मतलब हमें समझाएँ।”

37 उसने जवाब दिया, “अच्छा बीज बोने-
वाला इब्ने-आदम है। 38 खेत दुनिया है जबकि अच्छे बीज से मुराद बादशाही के फ़रज़ंद हैं। ख़ुदरौ पौदे इबलीस के फ़रज़ंद हैं 39 और उन्हें बोनेवाला दुश्मन इबलीस है। फ़सल की कटाई का मतलब दुनिया का इख़्तिताम है जबकि फ़सल की कटाई करनेवाले फ़रिश्ते हैं। 40 जिस तरह तमसील में ख़ुदरौ पौदे उखाड़े जाते और आग में जलाए जाते हैं उसी तरह दुनिया के इख़्तिताम पर भी किया जाएगा। 41 इब्ने-आदम अपने फ़रिश्तों को भेज देगा, और वह उस की बादशाही से बरगश्तगी का हर सबब और शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी करनेवाले हर शख़्स को निकालते जाएंगे। 42 वह उन्हें भड़कती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे। 43 फिर रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है वह सुन ले!

छुपे हुए ख़ज़ाने की तमसील

44 आसमान की बादशाही खेत में छुपे ख़ज़ाने की मानिंद है। जब किसी आदमी को उसके बारे

में मालूम हुआ तो उसने उसे दुबारा छुपा दिया।
फिर वह ख़ुशी के मारे चला गया, अपनी तमाम
मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस खेत को
ख़रीद लिया।

मोती की तमसील

45 नीज़, आसमान की बादशाही ऐसे सौदागर
की मानिंद है जो अच्छे मोतियों की तलाश में था।
46 जब उसे एक निहायत क़ीमती मोती के बारे
में मालूम हुआ तो वह चला गया, अपनी तमाम
मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस मोती को
ख़रीद लिया।

जाल की तमसील

47 आसमान की बादशाही जाल की मानिंद
भी है। उसे झील में डाला गया तो हर क़िस्म
की मछलियाँ पकड़ी गईं। 48 जब वह भर गया
तो मछेरों ने उसे किनारे पर खींच लिया।
फिर उन्होंने बैठकर क़ाबिले-इस्तेमाल मछलियाँ
चुनकर टोकरियों में डाल दीं और नाक़ाबिले-
इस्तेमाल मछलियाँ फेंक दीं। 49 दुनिया के
इख़्तिताम पर ऐसा ही होगा। फ़रिश्ते आएँगे और
बुरे लोगों को रास्तबाज़ों से अलग करके 50 उन्हें
भड़कती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते और दाँत
पीसते रहेंगे।"

नई और पुरानी सच्चाइयाँ

51 ईसा ने पूछा, "क्या तुमको इन तमाम बातों
की समझ आ गई है?"

"जी," शागिर्दों ने जवाब दिया।

52 उसने उनसे कहा, "इसलिए शरीअत का हर
आलिम जो आसमान की बादशाही में शागिर्द बन
गया है ऐसे मालिके-मकान की मानिंद है जो अपने
ख़ज़ाने से नए और पुराने जवाहिर निकालता है।"

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

53 यह तमसीलें सुनाने के बाद ईसा वहाँ से
चला गया। 54 अपने वतनी शहर नासरत पहुँचकर
वह इबादतख़ाने में लोगों को तालीम देने लगा।
उस की बातें सुनकर वह हैरतज़दा हुए। उन्होंने
पूछा, "उसे यह हिकमत और मोजिज़े करने की
यह क़ुदरत कहाँ से हासिल हुई है? 55 क्या यह
बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उस की माँ का नाम
मरियम नहीं है, और क्या उसके भाई याक़ूब,
यूसुफ़, शमाऊन और यहूदा नहीं हैं? 56 क्या उस
की बहनें हमारे साथ नहीं रहतीं? तो फिर उसे यह
सब कुछ कहाँ से मिल गया?" 57 यों वह उससे
ठोकर खाकर उसे क़बूल करने से क़ासिर रहे।

ईसा ने उनसे कहा, "नबी की इज़्ज़त हर जगह
की जाती है सिवाए उसके वतनी शहर और उसके
अपने ख़ानदान के।" 58 और उनके ईमान की
कमी के बाइस उसने वहाँ ज़्यादा मोजिज़े न किए।

यहया का क़त्ल

14 उस वक़्त गलील के हुक्मरान हेरोदेस
अंतिपास को ईसा के बारे में इत्तला
मिली। 2 इस पर उसने अपने दरबारियों से कहा,
"यह यहया बपतिस्मा देनेवाला है जो मुरदों में से
जी उठा है, इसलिए उस की मोजिज़ाना ताक़तें
इसमें नज़र आती हैं।"

3 वजह यह थी कि हेरोदेस ने यहया को
गिरिफ़्तार करके जेल में डाला था। यह हेरोदियास
की ख़ातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई
फ़िलिप्पुस की बीवी थी। 4 यहया ने हेरोदेस को
बताया था, "हेरोदियास से तेरी शादी नाजायज़
है।" 5 हेरोदेस यहया को क़त्ल करना चाहता था,
लेकिन अवाम से डरता था क्योंकि वह उसे नबी
समझते थे।

6 हेरोदेस की सालगिरह के मौक़े पर हेरोदियास
की बेटी उनके सामने नाची। हेरोदेस को उसका
नाचना इतना पसंद आया 7 कि उसने क़सम
खाकर उससे वादा किया, "जो भी तू माँगेगी मैं
तुझे दूँगा।"

8 अपनी माँ के सिखाने पर बेटी ने कहा, "मुझे
यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में मँगवा दें।"

9 यह सुनकर बादशाह को दुख हुआ। लेकिन
अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी की

वजह से उसने उसे देने का हुक्म दे दिया।
10 चुनाँचे यहया का सर क़लम कर दिया गया।
11 फिर ट्रे में रखकर अंदर लाया गया और लड़की
को दे दिया गया। लड़की उसे अपनी माँ के पास
ले गई। 12 बाद में यहया के शागिर्द आए और उस
की लाश लेकर उसे दफ़नाया। फिर वह ईसा के
पास गए और उसे इत्तला दी।

ईसा 5000 मर्दों को खाना खिलाता है

13 यह ख़बर सुनकर ईसा लोगों से अलग होकर
कश्ती पर सवार हुआ और किसी वीरान जगह
चला गया। लेकिन हुजूम को उस की ख़बर मिली।
लोग पैदल चलकर शहरों से निकल आए और
उसके पीछे लग गए। 14 जब ईसा ने कश्ती पर
से उतरकर बड़े हुजूम को देखा तो उसे लोगों पर
बड़ा तरस आया। वहीं उसने उनके मरीज़ों को
शफ़ा दी।

15 जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके
पास आए और कहा, "यह जगह वीरान है और
दिन ढलने लगा है। इनको रुख़सत कर दें ताकि
यह इर्दगिर्द के देहातों में जाकर खाने के लिए कुछ
ख़रीद लें।"

16 ईसा ने जवाब दिया, "इन्हें जाने की ज़रूरत
नहीं, तुम ख़ुद इन्हें खाने को दो।"

17 उन्होंने जवाब दिया, "हमारे पास सिर्फ़ पाँच
रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।"

18 उसने कहा, "उन्हें यहाँ मेरे पास ले आओ,"
19 और लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया।
ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को
लेकर आसमान की तरफ़ देखा और शुक्रगुज़ारी
की दुआ की। फिर उसने रोटियों को तोड़ तोड़कर
शागिर्दों को दिया, और शागिर्दों ने यह रोटियाँ
लोगों में तक़सीम कर दीं। 20 सबने जी भरकर
खाया। जब शागिर्दों ने बचे हुए टुकड़े जमा किए
तो बारह टोकरे भर गए। 21 ख़वातीन और बच्चों
के अलावा खानेवाले तक़रीबन 5,000 मर्द थे।

ईसा पानी पर चलता है

22 इसके ऐन बाद ईसा ने शागिर्दों को मजबूर
किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें
और झील के पार चले जाएँ। इतने में वह हुजूम
को रुख़सत करना चाहता था। 23 उन्हें ख़ैरबाद
कहने के बाद वह दुआ करने के लिए अकेला
पहाड़ पर चढ़ गया। शाम के वक़्त वह वहाँ अकेला
था 24 जबकि कश्ती किनारे से काफ़ी दूर हो गई
थी। लहरें कश्ती को बहुत तंग कर रही थीं क्योंकि
हवा उसके ख़िलाफ़ चल रही थी।

25 तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी
पर चलते हुए उनके पास आया। 26 जब शागिर्दों
ने उसे झील की सतह पर चलते हुए देखा तो
उन्होंने दहशत खाई। "यह कोई भूत है," उन्होंने
कहा और डर के मारे चीख़ें मारने लगे।

27 लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुख़ातिब होकर
बोला, "हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।"

28 इस पर पतरस बोल उठा, "ख़ुदावंद, अगर
आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का
हुक्म दें।"

29 ईसा ने जवाब दिया, "आ।" पतरस कश्ती
पर से उतरकर पानी पर चलते चलते ईसा की
तरफ़ बढ़ने लगा। 30 लेकिन जब उसने तेज़ हवा
पर ग़ौर किया तो वह घबरा गया और डूबने लगा।
वह चिल्ला उठा, "ख़ुदावंद, मुझे बचाएँ!"

31 ईसा ने फ़ौरन अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़
लिया। उसने कहा, "ऐ कमएतक़ाद! तू शक में
क्यों पड़ गया था?"

32 दोनों कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गई।
33 फिर कश्ती में मौजूद शागिर्दों ने उसे सिजदा
करके कहा, "यक़ीनन आप अल्लाह के फ़रज़ंद
हैं!"

गन्नेसरत में मरीज़ों की शफ़ा

34 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर
के पास पहुँच गए। 35 जब उस जगह के लोगों
ने ईसा को पहचान लिया तो उन्होंने इर्दगिर्द के
पूरे इलाक़े में इसकी ख़बर फैलाई। उन्होंने अपने

तमाम मरीज़ों को उसके पास लाकर 36 उससे
मिन्नत की कि वह उन्हें सिर्फ़ अपने लिबास के
दामन को छूने दे। और जिसने भी उसे छुआ उसे
शफ़ा मिली।

बापदादा की तालीम

15 फिर कुछ फ़रीसी और शरीअत
के आलिम यरूशलम से आकर
ईसा से पूछने लगे, 2 "आपके शागिर्द बाप-
दादा की रिवायत क्यों तोड़ते हैं? क्योंकि वह
हाथ धोए बग़ैर रोटी खाते हैं।"

3 ईसा ने जवाब दिया, "और तुम अपनी
रिवायात की ख़ातिर अल्लाह का हुक्म क्यों तोड़ते
हो? 4 क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया, 'अपने बाप
और अपनी माँ की इज़्ज़त करना' और 'जो अपने
बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी
जाए।' 5 लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे,
'मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने
मन्नत मानी है कि जो कुछ मुझे आपको देना
था वह अल्लाह के लिए वक़्फ़ है' तो तुम इसे
जायज़ क़रार देते हो। 6 यों तुम कहते हो कि उसे
अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करने की ज़रूरत नहीं
है। और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को
अपनी रिवायत की ख़ातिर मनसूख़ कर लेते हो।
7 रियाकारो! यसायाह नबी ने तुम्हारे बारे में क्या
ख़ूब नबुव्वत की है,

8 'यह क़ौम अपने होंटों से तो
मेरा एहतराम करती है
लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।
9 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं,
लेकिन बेफ़ायदा।
क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के
अहकाम सिखाते हैं'।"

इनसान को क्या कुछ नापाक कर देता है?

10 फिर ईसा ने हुजूम को अपने पास बुला-
कर कहा, "सब मेरी बात सुनो और इसे समझने
की कोशिश करो। 11 कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो
इनसान के मुँह में दाख़िल होकर उसे नापाक कर
सके, बल्कि जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता
है वही उसे नापाक कर देता है।"

12 इस पर शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा,
"क्या आपको मालूम है कि फ़रीसी यह बात
सुनकर नाराज़ हुए हैं?"

13 उसने जवाब दिया, "जो भी पौदा मेरे
आसमानी बाप ने नहीं लगाया उसे जड़ से
उखाड़ा जाएगा। 14 उन्हें छोड़ दो, वह अंधे राह
दिखानेवाले हैं। अगर एक अंधा दूसरे अंधे की
राहनुमाई करे तो दोनों गढ़े में गिर जाएंगे।"

15 पतरस बोल उठा, "इस तमसील का
मतलब हमें बताएँ।"

16 ईसा ने कहा, "क्या तुम अभी तक इतने
नासमझ हो? 17 क्या तुम नहीं समझ सकते कि
जो कुछ इनसान के मुँह में दाख़िल हो जाता है
वह उसके मेदे में जाता है और वहाँ से निकलकर
जाए-ज़रूरत में? 18 लेकिन जो कुछ इनसान के
मुँह से निकलता है वह दिल से आता है। वही
इनसान को नापाक करता है। 19 दिल ही से बुरे
ख़यालात, क़त्लो-ग़ारत, ज़िनाकारी, हरामकारी,
चोरी, झूटी गवाही और बुहतान निकलते हैं।
20 यही कुछ इनसान को नापाक कर देता है,
लेकिन हाथ धोए बग़ैर खाना खाने से वह नापाक
नहीं होता।"

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

21 फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल
में सूर और सैदा के इलाक़े में आया। 22 इस
इलाक़े की एक कनानी ख़ातून उसके पास आकर
चिल्लाने लगी, "ख़ुदावंद, इब्ने-दाऊद, मुझ पर
रहम करें। एक बदरूह मेरी बेटी को बहुत सताती
है।"

23 लेकिन ईसा ने जवाब में एक लफ़्ज़ भी न
कहा। इस पर उसके शागिर्द उसके पास आकर
उससे गुज़ारिश करने लगे, "उसे फ़ारिग़ कर दें,
क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे चीख़ती-चिल्लाती
है।"

24 ईसा ने जवाब दिया, “मुझे सिर्फ़ इसराईल
की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया है।”
25 औरत उसके पास आकर मुँह के बल झुक
गई और कहा, “ख़ुदावंद, मेरी मदद करें!”
26 उसने उसे बताया, “यह मुनासिब नहीं कि
बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के सामने फेंक दिया
जाए।”
27 उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, लेकिन
कुत्ते भी वह टुकड़े खाते हैं जो उनके मालिक की
मेज़ पर से फ़र्श पर गिर जाते हैं।”
28 ईसा ने कहा, “ऐ औरत, तेरा ईमान बड़ा है।
तेरी दरख़ास्त पूरी हो जाए।” उसी लमहे औरत
की बेटी को शफ़ा मिल गई।

ईसा बहुत-से मरीज़ों को शफ़ा देता है

29 फिर ईसा वहाँ से रवाना होकर गलील की
झील के किनारे पहुँच गया। वहाँ वह पहाड़ पर
चढ़कर बैठ गया। 30 लोगों की बड़ी तादाद उसके
पास आई। वह अपने लँगड़े, अंधे, मफ़लूज, गूँगे
और कई और क़िस्म के मरीज़ भी साथ ले आए।
उन्होंने उन्हें ईसा के सामने रखा तो उसने उन्हें
शफ़ा दी। 31 हुजूम हैरतज़दा हो गया। क्योंकि गूँगे
बोल रहे थे, अपाहजों के आज़ा बहाल हो गए,
लँगड़े चलने और अंधे देखने लगे थे। यह देखकर
भीड़ ने इसराईल के ख़ुदा की तमजीद की।

ईसा 4000 मर्दों को खाना खिलाता है

32 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर
उनसे कहा, “मुझे इन लोगों पर तरस आता है।
इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं और इनके
पास खाने की कोई चीज़ नहीं है। लेकिन मैं इन्हें
इस भूकी हालत में रुख़सत नहीं करना चाहता।
ऐसा न हो कि वह रास्ते में थककर चूर हो जाएँ।”
33 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान
इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि
यह लोग खाकर सेर हो जाएँ?”
34 ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ
हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “सात, और चंद एक
छोटी मछलियाँ।”
35 ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा।
36 फिर सात रोटियों और मछलियों को लेकर
उसने शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें तोड़
तोड़कर अपने शागिर्दों को तक़सीम करने के लिए
दे दिया। 37 सबने जी भरकर खाया। बाद में जब
खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात
बड़े टोकरे भर गए। 38 ख़वातीन और बच्चों के
अलावा खानेवाले 4,000 मर्द थे।
39 फिर ईसा लोगों को रुख़सत करके कश्ती
पर सवार हुआ और मगदन के इलाक़े में चला
गया।

फ़रीसी इलाही निशान का तक़ाज़ा करते हैं

16 एक दिन फ़रीसी और सदूक़ी ईसा
के पास आए। उसे परखने के लिए
उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की
तरफ़ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उसका
इख़्तियार साबित हो जाए। 2 लेकिन उसने जवाब
दिया, “शाम को तुम कहते हो, ‘कल मौसम
साफ़ होगा क्योंकि आसमान सुर्ख़ नज़र आता
है।’ 3 और सुबह के वक़्त कहते हो, ‘आज तूफ़ान
होगा क्योंकि आसमान सुर्ख़ है और बादल छाए
हुए हैं।’ ग़रज़ तुम आसमान की हालत पर ग़ौर
करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो, लेकिन
ज़मानों की अलामतों पर ग़ौर करके सहीह नतीजे
तक पहुँचना तुम्हारे बस की बात नहीं है। 4 सिर्फ़
शरीर और ज़िनाकार नसल इलाही निशान का
तक़ाज़ा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही
निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस नबी
के निशान के।”
यह कहकर ईसा उन्हें छोड़कर चला गया।

फ़रीसियों और सदूक़ियों का ख़मीर

5 झील को पार करते वक़्त शागिर्द अपने साथ
खाना लाना भूल गए थे। 6 ईसा ने उनसे कहा,

“ख़बरदार, फ़रीसियों और सदूक़ियों के ख़मीर
से होशियार रहना।”
7 शागिर्द आपस में बहस करने लगे, “वह
इसलिए कह रहे होंगे कि हम खाना साथ नहीं
लाए।”
8 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं।
उसने कहा, “तुम आपस में क्यों बहस कर रहे हो
कि हमारे पास रोटी नहीं है? 9 क्या तुम अभी तक
नहीं समझते? क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने पाँच
रोटियाँ लेकर 5,000 आदमियों को खाना खिला
दिया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने
टोकरे उठाए थे? 10 या क्या तुम भूल गए हो
कि मैंने सात रोटियाँ लेकर 4,000 आदमियों को
खाना खिलाया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के
कितने टोकरे उठाए थे? 11 तुम क्यों नहीं समझते
कि मैं तुमसे खाने की बात नहीं कर रहा? सुनो
मेरी बात! फ़रीसियों और सदूक़ियों के ख़मीर से
होशियार रहो!”
12 फिर उन्हें समझ आई कि ईसा उन्हें रोटी
के ख़मीर से आगाह नहीं कर रहा था बल्कि
फ़रीसियों और सदूक़ियों की तालीम से।

पतरस का इक़रार

13 जब ईसा क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के इलाक़े में
पहुँचा तो उसने शागिर्दों से पूछा, “इब्ने-आदम
लोगों के नज़दीक कौन है?”
14 उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास
नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि यरमियाह या
नबियों में से एक।”
15 उसने पूछा, “लेकिन तुम्हारे नज़दीक मैं
कौन हूँ?”
16 पतरस ने जवाब दिया, “आप ज़िंदा ख़ुदा के
फ़रज़ंद मसीह हैं।”
17 ईसा ने कहा, “शमाऊन बिन यूनुस, तू
मुबारक है, क्योंकि किसी इनसान ने तुझ पर यह
ज़ाहिर नहीं किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने।
18 मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि तू पतरस यानी
पत्थर है, और इसी पत्थर पर मैं अपनी जमात
को तामीर करूँगा, ऐसी जमात जिस पर पाताल
के दरवाज़े भी ग़ालिब नहीं आएँगे। 19 मैं तुझे
आसमान की बादशाही की कुंजियाँ दे दूँगा। जो
कुछ तू ज़मीन पर बाँधेगा वह आसमान पर भी
बँधेगा। और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा वह
आसमान पर भी खुलेगा।”
20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया,
“किसी को भी न बताओ कि मैं मसीह हूँ।”

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21 उस वक़्त से ईसा अपने शागिर्दों पर वाज़िह
करने लगा, “लाज़िम है कि मैं यरूशलम जाकर
क़ौम के बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत
के उलमा के हाथों बहुत दुख उठाऊँ। मुझे क़त्ल
किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा।”
22 इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जाकर
समझाने लगा। “ऐ ख़ुदावंद, अल्लाह न करे कि
यह कभी भी आपके साथ हो।”
23 ईसा ने मुड़कर पतरस से कहा, “शैतान, मेरे
सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस
है, क्योंकि तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि
इनसान की।”
24 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “जो
मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार
करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले।
25 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे
वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी ख़ातिर अपनी
जान खो दे वही उसे पा लेगा। 26 क्या फ़ायदा
है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए,
लेकिन वह अपनी जान से महरूम हो जाए?
इनसान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है?
27 क्योंकि इब्ने-आदम अपने बाप के जलाल में
अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा, और उस वक़्त
वह हर एक को उसके काम का बदला देगा। 28 मैं
तुम्हें सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं
जो मरने से पहले ही इब्ने-आदम को उस की
बादशाही में आते हुए देखेंगे।”

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

17 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस,
याक़ूब और यूहन्ना को अपने साथ
लेकर ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। 2 वहाँ उस की
शक्लो-सूरत उनके सामने बदल गई। उसका
चेहरा सूरज की तरह चमकने लगा, और उसके
कपड़े नूर की मानिंद सफ़ेद हो गए। 3 अचानक
इलियास और मूसा ज़ाहिर हुए और ईसा से
बातें करने लगे। 4 पतरस बोल उठा, “ख़ुदावंद,
कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। अगर आप
चाहें तो मैं तीन झोंपड़ियाँ बनाऊँगा, एक आपके
लिए, एक मूसा के लिए और एक इलियास के
लिए।”

5 वह अभी बात कर ही रहा था कि एक
चमकदार बादल आकर उन पर छा गया और
बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा
प्यारा फ़रज़ंद है, जिससे मैं ख़ुश हूँ। इसकी
सुनो।”

6 यह सुनकर शागिर्द दहशत खाकर औंधे मुँह
गिर गए। 7 लेकिन ईसा ने आकर उन्हें छुआ।
उसने कहा, “उठो, मत डरो।” 8 जब उन्होंने नज़र
उठाई तो ईसा के सिवा किसी को न देखा।

9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म
दिया, “जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त
तक किसी को न बताना जब तक कि इब्ने-आदम
मुरदों में से जी न उठे।”

10 शागिर्दों ने उससे पूछा, “शरीअत के उलमा
क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले
इलियास का आना ज़रूरी है?”

11 ईसा ने जवाब दिया, “इलियास तो ज़रूर
सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। 12 लेकिन
मैं तुमको बताता हूँ कि इलियास तो आ चुका है
और उन्होंने उसे नहीं पहचाना बल्कि उसके साथ
जो चाहा किया। इसी तरह इब्ने-आदम भी उनके
हाथों दुख उठाएगा।”

13 फिर शागिर्दों को समझ आई कि वह उनके
साथ यहया बपतिस्मा देनेवाले की बात कर रहा
था।

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

14 जब वह नीचे हुजूम के पास पहुँचे तो एक
आदमी ने ईसा के सामने आकर घुटने टेके 15 और
कहा, “ख़ुदावंद, मेरे बेटे पर रहम करें, उसे मिरगी
के दौरे पड़ते हैं और उसे शदीद तकलीफ़ उठानी
पड़ती है। कई बार वह आग या पानी में गिर जाता
है। 16 मैं उसे आपके शागिर्दों के पास लाया था,
लेकिन वह उसे शफ़ा न दे सके।”

17 ईसा ने जवाब दिया, “ईमान से ख़ाली और
टेढ़ी नसल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब
तक तुम्हें बरदाश्त करूँ? लड़के को मेरे पास
ले आओ।” 18 ईसा ने बदरूह को डाँटा, तो वह
लड़के में से निकल गई। उसी लमहे उसे शफ़ा
मिल गई।

19 बाद में शागिर्दों ने अलहदगी में ईसा के पास
आकर पूछा, “हम बदरूह को क्यों न निकाल
सके?”

20 उसने जवाब दिया, “अपने ईमान की कमी
के सबब से। मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अगर तुम्हारा
ईमान राई के दाने के बराबर भी हो तो फिर तुम
इस पहाड़ को कह सकोगे, ‘इधर से उधर खिसक
जा,’ तो वह खिसक जाएगा। और तुम्हारे लिए
कुछ भी नामुमकिन नहीं होगा। 21 [लेकिन इस
क़िस्म की बदरूह दुआ और रोज़े के बग़ैर नहीं
निकलती।]”

ईसा दूसरी बार अपनी मौत का ज़िक्र करता है

22 जब वह गलील में जमा हुए तो ईसा ने उन्हें
बताया, “इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर
दिया जाएगा। 23 वह उसे क़त्ल करेंगे, लेकिन
तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”
यह सुनकर शागिर्द निहायत ग़मगीन हुए।

बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स

24 वह कफ़र्नहूम पहुँचे तो बैतुल-मुक़द्दस का
टैक्स जमा करनेवाले पतरस के पास आकर पूछने
लगे, “क्या आपका उस्ताद बैतुल-मुक़द्दस का
टैक्स अदा नहीं करता?”
25 “जी, वह करता है,” पतरस ने जवाब दिया।
वह घर में आया तो ईसा पहले ही बोलने लगा,
“क्या ख़याल है शमाऊन, दुनिया के बादशाह
किनसे ड्यूटी और टैक्स लेते हैं, अपने फ़रज़ंदों
से या अजनबियों से?”
26 पतरस ने जवाब दिया, “अजनबियों से।”
ईसा बोला “तो फिर उनके फ़रज़ंद टैक्स देने
से बरी हुए। 27 लेकिन हम उन्हें नाराज़ नहीं करना
चाहते। इसलिए झील पर जाकर उसमें डोरी डाल
देना। जो मछली तू पहले पकड़ेगा उसका मुँह
खोलना तो उसमें से चाँदी का सिक्का निकलेगा।
उसे लेकर उन्हें मेरे और अपने लिए अदा कर दे।”

कौन सबसे बड़ा है?

18 उस वक़्त शागिर्द ईसा के पास आकर
पूछने लगे, “आसमान की बादशाही
में कौन सबसे बड़ा है?”
2 जवाब में ईसा ने एक छोटे बच्चे को बुलाकर
उनके दरमियान खड़ा किया 3 और कहा, “मैं
तुमको सच बताता हूँ अगर तुम बदलकर छोटे
बच्चों की मानिंद न बनो तो तुम कभी आसमान
की बादशाही में दाख़िल नहीं होगे। 4 इसलिए
जो भी अपने आपको इस बच्चे की तरह छोटा
बनाएगा वह आसमान में सबसे बड़ा होगा। 5 और
जो भी मेरे नाम में इस जैसे छोटे बच्चे को क़बूल
करे वह मुझे क़बूल करता है।

आज़माइशें

6 लेकिन जो कोई इन छोटों में से किसी को
गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर है
कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधकर
उसे समुंदर की गहराइयों में डुबो दिया जाए।
7 दुनिया पर उन चीज़ों की वजह से अफ़सोस जो
गुनाह करने पर उकसाती हैं। लाज़िम है कि ऐसी
आज़माइशें आएँ, लेकिन उस शख़्स पर अफ़सोस
जिसकी मारिफ़त वह आएँ।
8 अगर तेरा हाथ या पाँव तुझे गुनाह करने पर
उकसाए तो उसे काटकर फेंक देना। इससे पहले
कि तुझे दो हाथों या दो पाँवों समेत जहन्नुम की
अबदी आग में फेंका जाए, बेहतर यह है कि एक
हाथ या पाँव से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में
दाख़िल हो। 9 और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह
करने पर उकसाए तो उसे निकालकर फेंक देना।
इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम की
आग में फेंका जाए बेहतर यह है कि एक आँख
से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाख़िल हो।

खोई हुई भेड़ की तमसील

10 ख़बरदार! तुम इन छोटों में से किसी को भी
हक़ीर न जानना। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि
आसमान पर इनके फ़रिश्ते हर वक़्त मेरे बाप के
चेहरे को देखते रहते हैं। 11 [क्योंकि इब्ने-आदम
खोए हुओं को ढूँडने और नजात देने आया है।]
12 तुम्हारा क्या ख़याल है? अगर किसी
आदमी की 100 भेड़ें हों और एक भटककर गुम
हो जाए तो वह क्या करेगा? क्या वह बाक़ी 99
भेड़ें पहाड़ी इलाक़े में छोड़कर भटकी हुई भेड़ को
ढूँडने नहीं जाएगा? 13 और मैं तुमको सच बताता
हूँ कि भटकी हुई भेड़ के मिलने पर वह उसके बारे
में उन बाक़ी 99 भेड़ों की निसबत कहीं ज़्यादा
ख़ुशी मनाएगा जो भटकी नहीं। 14 बिलकुल इसी
तरह आसमान पर तुम्हारा बाप नहीं चाहता कि इन
छोटों में से एक भी हलाक हो जाए।

गुनाह में पड़े भाई से सुलूक

15 अगर तेरे भाई ने तेरा गुनाह किया हो तो
अकेले उसके पास जाकर उस पर उसका गुनाह
ज़ाहिर कर। अगर वह तेरी बात माने तो तूने अपने
भाई को जीत लिया। 16 लेकिन अगर वह न माने
तो एक या दो और लोगों को अपने साथ ले जा
ताकि तुम्हारी हर बात की दो या तीन गवाहों से

तसदीक़ हो जाए। 17 अगर वह उनकी बात भी
न माने तो जमात को बता देना। और अगर वह
जमात की भी न माने तो उसके साथ ग़ैरईमानदार
या टैक्स लेनेवाले का-सा सुलूक कर।

बाँधने और खोलने का इख़्तियार

18 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ भी
तुम ज़मीन पर बान्धोगे आसमान पर भी बँधेगा,
और जो कुछ ज़मीन पर खोलोगे आसमान पर भी
खुलेगा।

19 मैं तुमको यह भी बताता हूँ कि अगर तुममें
से दो शख़्स किसी बात को माँगने पर मुत्तफ़िक़
हो जाएँ तो मेरा आसमानी बाप तुमको बख़्शेगा।
20 क्योंकि जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम
में जमा हो जाएँ वहाँ मैं उनके दरमियान हूँगा।"

मुआफ़ न करनेवाले नौकर की तमसील

21 फिर पतरस ने ईसा के पास आकर पूछा,
"ख़ुदावंद, जब मेरा भाई मेरा गुनाह करे तो मैं
कितनी बार उसे मुआफ़ करूँ? सात बार तक?"

22 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे बताता हूँ,
सात बार नहीं बल्कि 77 बार। 23 इसलिए
आसमान की बादशाही एक बादशाह की
मानिंद है जो अपने नौकरों के कर्ज़ों का
हिसाब-किताब करना चाहता था। 24 हि-
साब-किताब शुरू करते वक़्त एक आदमी उसके
सामने पेश किया गया जो अरबों के हिसाब से
उसका क़र्ज़दार था। 25 वह यह रक़म अदा न
कर सका, इसलिए उसके मालिक ने यह क़र्ज़
वसूल करने के लिए हुक्म दिया कि उसे बाल-
बच्चों और तमाम मिलकियत समेत फ़रोख़्त कर
दिया जाए। 26 यह सुनकर नौकर मुँह के बल
गिरा और मिन्नत करने लगा, 'मुझे मोहलत दें,
मैं पूरी रक़म अदा कर दूँगा।' 27 बादशाह को उस
पर तरस आया। उसने उसका क़र्ज़ मुआफ़ करके
उसे जाने दिया।

28 लेकिन जब यही नौकर बाहर निकला तो
एक हमख़िदमत मिला जो उसका चंद हज़ार रूपों
का क़र्ज़दार था। उसे पकड़कर वह उसका गला
दबाकर कहने लगा, 'अपना क़र्ज़ अदा कर!'
29 दूसरा नौकर गिरकर मिन्नत करने लगा, 'मुझे
मोहलत दें, मैं आपको सारी रक़म अदा कर दूँगा।'
30 लेकिन वह इसके लिए तैयार न हुआ, बल्कि
जाकर उसे उस वक़्त तक जेल में डलवाया जब
तक वह पूरी रक़म अदा न कर दे। 31 जब बाक़ी
नौकरों ने यह देखा तो उन्हें शदीद दुख हुआ और
उन्होंने अपने मालिक के पास जाकर सब कुछ
बता दिया जो हुआ था। 32 इस पर मालिक ने
उस नौकर को अपने पास बुला लिया और कहा,
'शरीर नौकर! जब तूने मेरी मिन्नत की तो मैंने
तेरा पूरा क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया। 33 क्या लाज़िम
न था कि तू भी अपने साथी नौकर पर उतना रहम
करता जितना मैंने तुझ पर किया था?' 34 ग़ुस्से
में मालिक ने उसे जेल के अफ़सरों के हवाले कर
दिया ताकि उस पर उस वक़्त तक तशद्दुद किया
जाए जब तक वह क़र्ज़ की पूरी रक़म अदा न कर
दे।

35 मेरा आसमानी बाप तुममें से हर एक के
साथ भी ऐसा ही करेगा अगर तुमने अपने भाई
को पूरे दिल से मुआफ़ न किया।"

तलाक़ के बारे में तालीम

19 यह कहने के बाद ईसा गलील को
छोड़कर यहूदिया में दरियाए-यरदन
के पार चला गया। 2 बड़ा हुजूम उसके पीछे हो
लिया और उसने उन्हें वहाँ शफ़ा दी।

3 कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की ग़रज़
से सवाल किया, "क्या जायज़ है कि मर्द अपनी
बीवी को किसी भी वजह से तलाक़ दे?"

4 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुमने कलामे-
मुक़द्दस में नहीं पढ़ा कि इब्तिदा में ख़ालिक़ ने उन्हें
मर्द और औरत बनाया? 5 और उसने फ़रमाया,
'इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी
बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो
जाते हैं।' 6 यों वह कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़

दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। जिसे अल्लाह
ने जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।”
7 उन्होंने एतराज़ किया, “तो फिर मूसा ने यह
क्यों फ़रमाया कि आदमी तलाक़नामा लिखकर
बीवी को रुख़सत कर दे?”
8 ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी
सख़्तदिली की वजह से तुमको अपनी बीवी को
तलाक़ देने की इजाज़त दी। लेकिन इब्तिदा में
ऐसा न था। 9 मैं तुम्हें बताता हूँ, जो अपनी बीवी
को जिसने ज़िना न किया हो तलाक़ दे और किसी
और से शादी करे, वह ज़िना करता है।”
10 शागिर्दों ने उससे कहा, “अगर शौहर और
बीवी का आपस का ताल्लुक़ ऐसा है तो शादी न
करना बेहतर है।”
11 ईसा ने जवाब दिया, “हर कोई यह बात
समझ नहीं सकता बल्कि सिर्फ़ वह जिसे इस
क़ाबिल बना दिया गया हो। 12 क्योंकि कुछ
पैदाइश ही से शादी करने के क़ाबिल नहीं होते,
बाज़ को दूसरों ने यों बनाया है और बाज़ ने
आसमान की बादशाही की ख़ातिर शादी करने
से इनकार किया है। लिहाज़ा जो यह समझ सके
वह समझ ले।”

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन छोटे बच्चों को ईसा के पास लाया
गया ताकि वह उन पर अपने हाथ रखकर दुआ
करे। लेकिन शागिर्दों ने लानेवालों को मलामत
की। 14 यह देखकर ईसा ने कहा, “बच्चों को मेरे
पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि आसमान
की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है।”
15 उसने उन पर अपने हाथ रखे और फिर वहाँ
से चला गया।

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

16 फिर एक आदमी ईसा के पास आया। उसने
कहा, “उस्ताद, में कौन-सा नेक काम करूँ ताकि
अबदी ज़िंदगी मिल जाए?”
17 ईसा ने जवाब दिया, “तू मुझे नेकी के बारे
में क्यों पूछ रहा है? सिर्फ़ एक ही नेक है। लेकिन
अगर तू अबदी ज़िंदगी में दाख़िल होना चाहता है
तो अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार।”
18 आदमी ने पूछा, “कौन-से अहकाम?”
ईसा ने जवाब दिया, “क़त्ल न करना, ज़िना
न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना,
19 अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना
और अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी
तू अपने आपसे रखता है।”
20 जवान आदमी ने जवाब दिया, “मैंने इन
तमाम अहकाम की पैरवी की है, अब क्या रह
गया है?”
21 ईसा ने उसे बताया, “अगर तू कामिल होना
चाहता है तो जा और अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त
करके पैसे ग़रीबों में तक़सीम कर दे। फिर तेरे
लिए आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा।
इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।”
22 यह सुनकर नौजवान मायूस होकर चला
गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।
23 इस पर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा,
“मैं तुमको सच बताता हूँ कि दौलतमंद के लिए
आसमान की बादशाही में दाख़िल होना मुश्किल
है। 24 मैं यह दुबारा कहता हूँ, अमीर के आसमान
की बादशाही में दाख़िल होने की निसबत ज़्यादा
आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र
जाए।”
25 यह सुनकर शागिर्द निहायत हैरतज़दा हुए
और पूछने लगे, “फिर किस को नजात हासिल
हो सकती है?”
26 ईसा ने ग़ौर से उनकी तरफ़ देखकर जवाब
दिया, “यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है,
लेकिन अल्लाह के लिए सब कुछ मुमकिन है।”
27 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब
कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं। हमें क्या
मिलेगा?”
28 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता
हूँ, दुनिया की नई तख़लीक़ पर जब इब्ने-आदम

अपने जलाली तख़्त पर बैठेगा तो तुम भी जिन्होंने
मेरी पैरवी की है बारह तख़्तों पर बैठकर इसराईल
के बारह क़बीलों की अदालत करोगे। 29 और
जिसने भी मेरी ख़ातिर अपने घरों, भाइयों, बहनों,
बाप, माँ, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है उसे सौ
गुना ज़्यादा मिल जाएगा और मीरास में अबदी
ज़िंदगी पाएगा। 30 लेकिन बहुत-से लोग जो अब
अव्वल हैं उस वक़्त आख़िर होंगे और जो अब
आख़िर हैं वह अव्वल होंगे।

अंगूर के बाग़ में मज़दूर

20 क्योंकि आसमान की बादशाही उस
ज़मीनदार से मुताबिक़त रखती है जो
एक दिन सुबह-सवेरे निकला ताकि अपने अंगूर
के बाग़ के लिए मज़दूर ढूँडे। 2 वह उनसे दिहाड़ी
के लिए चाँदी का एक सिक्का देने पर मुत्तफ़िक़
हुआ और उन्हें अपने अंगूर के बाग़ में भेज दिया।
3 नौ बजे वह दुबारा निकला तो देखा कि कुछ लोग
अभी तक मंडी में फ़ारिग़ बैठे हैं। 4 उसने उनसे
कहा, 'तुम भी जाकर मेरे अंगूर के बाग़ में काम
करो। मैं तुम्हें मुनासिब उजरत दूँगा।' 5 चुनाँचे वह
काम करने के लिए चले गए। बारह बजे और तीन
बजे दोपहर के वक़्त भी वह निकला और इस तरह
के फ़ारिग़ मज़दूरों को काम पर लगाया। 6 फिर
शाम के पाँच बज गए। वह निकला तो देखा कि
अभी तक कुछ लोग फ़ारिग़ बैठे हैं। उसने उनसे
पूछा, 'तुम क्यों पूरा दिन फ़ारिग़ बैठे रहे हो?'
7 उन्होंने जवाब दिया, 'इसलिए कि किसी ने हमें
काम पर नहीं लगाया।' उसने उनसे कहा, 'तुम
भी जाकर मेरे अंगूर के बाग़ में काम करो।'

8 दिन ढल गया तो ज़मीनदार ने अपने अफ़सर
को बताया, 'मज़दूरों को बुलाकर उन्हें मज़दूरी
दे दे, आख़िर में आनेवालों से शुरू करके पहले
आनेवालों तक।' 9 जो मज़दूर पाँच बजे आए
थे उन्हें चाँदी का एक एक सिक्का मिल गया।
10 इसलिए जब वह आए जो पहले काम पर
लगाए गए थे तो उन्होंने ज़्यादा मिलने की तवक़्क़ो
की। लेकिन उन्हें भी चाँदी का एक एक सिक्का
मिला। 11 इस पर वह ज़मीनदार के ख़िलाफ़
बुड़बुड़ाने लगे, 12 'यह आदमी जिन्हें आख़िर में
लगाया गया उन्होंने सिर्फ़ एक घंटा काम किया।
तो भी आपने उन्हें हमारे बराबर की मज़दूरी दी
हालाँकि हमें दिन का पूरा बोझ और धूप की शिद्दत
बरदाश्त करनी पड़ी।'

13 लेकिन ज़मीनदार ने उनमें से एक से बात
की, 'यार, मैंने ग़लत काम नहीं किया। क्या तू
चाँदी के एक सिक्के के लिए मज़दूरी करने पर
मुत्तफ़िक़ न हुआ था? 14 अपने पैसे लेकर चला
जा। मैं आख़िर में काम पर लगनेवालों को उतना
ही देना चाहता हूँ जितना तुझे। 15 क्या मेरा हक़
नहीं कि मैं जैसा चाहूँ अपने पैसे ख़र्च करूँ? या
क्या तू इसलिए हसद करता है कि मैं फ़ैयाज़दिल
हूँ?'

16 यों अव्वल आख़िर में आएँगे और जो
आख़िरी हैं वह अव्वल हो जाएंगे।"

ईसा तीसरी मरतबा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

17 अब जब ईसा यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहा
था तो बारह शागिर्दों को एक तरफ़ ले जाकर
उसने उनसे कहा, 18 "हम यरूशलम की तरफ़
बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-आदम को राहनुमा इमामों
और शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया
जाएगा। वह उस पर सज़ाए-मौत का फ़तवा देकर
19 उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर देंगे ताकि वह
उसका मज़ाक़ उड़ाएँ, उसको कोड़े मारें और उसे
मसलूब करें। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।"

याक़ूब और यूहन्ना की माँ की गुज़ारिश

20 फिर ज़बदी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की
माँ अपने बेटों को साथ लेकर ईसा के पास आई
और सिजदा करके कहा, "आपसे एक गुज़ारिश
है।"

21 ईसा ने पूछा, "तू क्या चाहती है?"

उसने जवाब दिया, “अपनी बादशाही में मेरे इन
बेटों में से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और
दूसरे को बाएँ हाथ।”
22 ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या
माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो
मैं पीने को हूँ?”
“जी, हम पी सकते हैं,” उन्होंने जवाब दिया।
23 फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम मेरा प्याला
तो ज़रूर पियोगे, लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा
काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन
बाएँ हाथ। मेरे बाप ने यह मक़ाम उन्हीं के लिए
तैयार किया है जिनको उसने ख़ुद मुक़र्रर किया
है।”
24 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें
याक़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सा आया। 25 इस पर
ईसा ने उन सबको बुलाकर कहा, “तुम जानते
हो कि क़ौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब
डालते हैं और उनके बड़े अफ़सर उन पर अपने
इख़्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 26 लेकिन
तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा
होना चाहे वह तुम्हारा ख़ादिम बने 27 और जो
तुममें अव्वल होना चाहे वह तुम्हारा ग़ुलाम बने।
28 क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया
कि ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे
और अपनी जान फ़िद्या के तौर पर देकर बहुतों
को छुड़ाए।”

दो अंधों की शफ़ा

29 जब वह यरीहू शहर से निकलने लगे तो
एक बड़ा हुजूम उनके पीछे चल रहा था। 30 दो
अंधे रास्ते के किनारे बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि
ईसा गुज़र रहा है तो वह चिल्लाने लगे, “ख़ुदावंद,
इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”
31 हुजूम ने उन्हें डाँटकर कहा, “ख़ामोश!”
लेकिन वह और भी ऊँची आवाज़ से पुकारते रहे,
“ख़ुदावंद, इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”
32 ईसा रुक गया। उसने उन्हें अपने पास
बुलाया और पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिए करूँ?”
33 उन्होंने जवाब दिया, “ख़ुदावंद, यह कि हम
देख सकें।”
34 ईसा को उन पर तरस आया। उसने उनकी
आँखों को छुआ तो वह फ़ौरन बहाल हो गईं। फिर
वह उसके पीछे चलने लगे।

यरूशलम में पुरजोश इस्तक़बाल

21 वह यरूशलम के क़रीब बैत-फ़गे
पहुँचे। यह गाँव ज़ैतून के पहाड़ पर
वाक़े था। ईसा ने दो शागिर्दों को भेजा 2 और
कहा, “सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुमको
फ़ौरन एक गधी नज़र आएगी जो अपने बच्चे के
साथ बँधी हुई होगी। उन्हें खोलकर यहाँ ले आओ।
3 अगर कोई यह देखकर तुमसे कुछ कहे तो उसे
बता देना, ‘ख़ुदावंद को इनकी ज़रूरत है।’ यह
सुनकर वह फ़ौरन इन्हें भेज देगा।”
4 यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,
5 ‘सिय्यून बेटी को बता देना,
देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है।
वह हलीम है और गधे पर,
हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।’
6 दोनों शागिर्द चले गए। उन्होंने वैसा ही किया
जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 7 वह गधी को बच्चे
समेत ले आए और अपने कपड़े उन पर रख दिए।
फिर ईसा उन पर बैठ गया। 8 जब वह चल पड़ा
तो बहुत ज़्यादा लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में
अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने शाख़ें भी उसके
आगे आगे रास्ते में बिछा दीं जो उन्होंने दरख़्तों से
काट ली थीं। 9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल
रहे थे और चिल्लाकर यह नारे लगा रहे थे,
“इब्ने-दाऊद को होशाना![a]
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।
आसमान की बुलंदियों पर होशाना।”

[a]होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ
इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

10 जब ईसा यरूशलम में दाख़िल हुआ तो पूरा
शहर हिल गया। सबने पूछा, “यह कौन है?”
11 हुजूम ने जवाब दिया, “यह ईसा है, वह नबी
जो गलील के नासरत से है।”

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

12 और ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उन
सबको निकालने लगा जो वहाँ क़ुरबानियों के
लिए दरकार चीज़ों की ख़रीदो-फ़रोख़्त कर रहे
थे। उसने सिक्कों का तबादला करनेवालों की
मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की कुरसियाँ उलट दीं
13 और उनसे कहा, “कलामे-मुक़द्दस में लिखा
है, ‘मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा।’ लेकिन
तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।”
14 अंधे और लँगड़े बैतुल-मुक़द्दस में उस-
के पास आए और उसने उन्हें शफ़ा दी। 15 लेकिन
राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा नाराज़
हुए जब उन्होंने उसके हैरतअंगेज़ काम देखे और
यह कि बच्चे बैतुल-मुक़द्दस में “इब्ने-दाऊद को
होशाना” चिल्ला रहे हैं। 16 उन्होंने उससे पूछा,
“क्या आप सुन रहे हैं कि यह बच्चे क्या कह रहे
हैं?”
“जी,” ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने
कलामे-मुक़द्दस में कभी नहीं पढ़ा कि ‘तूने छोटे
बच्चों और शीरख़ारों की ज़बान को तैयार किया
है ताकि वह तेरी तमजीद करें’?”
17 फिर वह उन्हें छोड़कर शहर से निकला और
बैत-अनियाह पहुँचा जहाँ उसने रात गुज़ारी।

अंजीर के दरख़्त पर लानत

18 अगले दिन सुबह-सवेरे जब वह यरू-
शलम लौट रहा था तो ईसा को भूक लगी।
19 रास्ते के क़रीब अंजीर का एक दरख़्त देखकर
वह उसके पास गया। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा
तो देखा कि फल नहीं लगा बल्कि सिर्फ़ पत्ते ही
पत्ते हैं। इस पर उसने दरख़्त से कहा, “अब से
कभी भी तुझमें फल न लगे!” दरख़्त फ़ौरन सूख
गया।
20 यह देखकर शागिर्द हैरान हुए और कहा,
“अंजीर का दरख़्त इतनी जल्दी से किस तरह
सूख गया?”
21 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता
हूँ, अगर तुम शक न करो बल्कि ईमान रखो तो
फिर तुम न सिर्फ़ ऐसा काम कर सकोगे बल्कि
इससे भी बड़ा। तुम इस पहाड़ से कहोगे, ‘उठ,
अपने आपको समुंदर में गिरा दे’ तो यह हो
जाएगा। 22 अगर तुम ईमान रखो तो जो कुछ भी
तुम दुआ में माँगोगे वह तुमको मिल जाएगा।”

किसने ईसा को इख़्तियार दिया?

23 ईसा बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल होकर
तालीम देने लगा। इतने में राहनुमा इमाम और
क़ौम के बुज़ुर्ग उसके पास आए और पूछा, “आप
यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहे हैं?
किसने आपको यह इख़्तियार दिया है?”
24 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक
सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता
दूँगा कि मैं यह किस इख़्तियार से कर रहा हूँ।
25 मुझे बताओ कि यहया का बपतिस्मा कहाँ से
था—क्या वह आसमानी था या इनसानी?”
वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें
‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस पर
ईमान क्यों न लाए?’ 26 लेकिन हम कैसे कह
सकते हैं कि वह इनसानी था? हम तो आम लोगों
से डरते हैं, क्योंकि वह सब मानते हैं कि यहया
नबी था।” 27 चुनाँचे उन्होंने जवाब दिया, “हम
नहीं जानते।”
ईसा ने कहा, “फिर मैं भी तुमको नहीं बताता
कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहा
हूँ।

दो बेटों की तमसील

28 तुम्हारा क्या ख़याल है? एक आदमी के दो
बेटे थे। बाप बड़े बेटे के पास गया और कहा, ‘बेटा,
आज अंगूर के बाग़ में जाकर काम कर।’ 29 बेटे ने
जवाब दिया, ‘मैं जाना नहीं चाहता,’ लेकिन बाद

में उसने अपना ख़याल बदल लिया और बाग़ में
चला गया। 30 इतने में बाप छोटे बेटे के पास भी
गया और उसे बाग़ में जाने को कहा। 'जी जनाब,
मैं जाऊँगा,' छोटे बेटे ने कहा। लेकिन वह न गया।
31 अब मुझे बताओ कि किस बेटे ने अपने बाप
की मरज़ी पूरी की?"

"पहले बेटे ने," उन्होंने जवाब दिया।

ईसा ने कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ
कि टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ तुमसे पहले
अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो रहे हैं।
32 क्योंकि यहया तुमको रास्तबाज़ी की राह
दिखाने आया और तुम उस पर ईमान न लाए।
लेकिन टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ उस पर
ईमान लाए। और यह देखकर भी तुमने अपना
ख़याल न बदला और उस पर ईमान न लाए।

अंगूर के बाग़ में मुज़ारेओं की बग़ावत

33 एक और तमसील सुनो। एक ज़मीनदार था
जिसने अंगूर का बाग़ लगाया। उसने उस की
चारदीवारी बनाई, अंगूरों का रस निकालने के
लिए एक गढ़े की खुदाई की और पहरेदारों के
लिए बुर्ज तामीर किया। फिर वह उसे मुज़ारेओं
के सुपुर्द करके बैरूने-मुल्क चला गया। 34 जब
अंगूर को तोड़ने का वक़्त क़रीब आ गया तो उसने
अपने नौकरों को मुज़ारेओं के पास भेज दिया
ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करें।
35 लेकिन मुज़ारेओं ने उसके नौकरों को पकड़
लिया। उन्होंने एक की पिटाई की, दूसरे को क़त्ल
किया और तीसरे को संगसार किया। 36 फिर
मालिक ने मज़ीद नौकरों को उनके पास भेज
दिया जो पहले की निसबत ज़्यादा थे। लेकिन
मुज़ारेओं ने उनके साथ भी वही सुलूक किया।
37 आख़िरकार ज़मीनदार ने अपने बेटे को उनके
पास भेजा। उसने कहा, 'आख़िर मेरे बेटे का तो
लिहाज़ करेंगे।' 38 लेकिन बेटे को देखकर मुज़ारे
एक दूसरे से कहने लगे, 'यह ज़मीन का वारिस
है। आओ, हम इसे क़त्ल करके उस की मीरास
पर क़ब्ज़ा कर लें।' 39 उन्होंने उसे पकड़कर बाग़
से बाहर फेंक दिया और क़त्ल किया।"

40 ईसा ने पूछा, "अब बताओ, बाग़ का
मालिक जब आएगा तो उन मुज़ारेओं के साथ
क्या करेगा?"

41 उन्होंने जवाब दिया, "वह उन्हें बुरी तरह
तबाह करेगा और बाग़ को दूसरों के सुपुर्द कर
देगा, ऐसे मुज़ारेओं के सुपुर्द जो वक़्त पर उसे
फ़सल का उसका हिस्सा देंगे।"

42 ईसा ने उनसे कहा, "क्या तुमने कभी
कलाम का यह हवाला नहीं पढ़ा,

'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द
किया,
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।
यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है'?

43 इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि अल्लाह की
बादशाही तुमसे ले ली जाएगी और एक ऐसी क़ौम
को दी जाएगी जो इसके मुताबिक़ फल लाएगी।
44 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो
जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा उसे वह
पीस डालेगा।"

45 ईसा की तमसीलें सुनकर राहनुमा इमाम
और फ़रीसी समझ गए कि वह हमारे बारे में बात
कर रहा है। 46 उन्होंने ईसा को गिरिफ़्तार करने
की कोशिश की, लेकिन वह अवाम से डरते थे
क्योंकि वह समझते थे कि ईसा नबी है।

बड़ी ज़ियाफ़त की तमसील

22 ईसा ने एक बार फिर तमसीलों में
उनसे बात की। 2 "आसमान की
बादशाही एक बादशाह से मुताबिक़त रखती है
जिसने अपने बेटे की शादी की ज़ियाफ़त की
तैयारियाँ करवाईं। 3 जब ज़ियाफ़त का वक़्त आ
गया तो उसने अपने नौकरों को मेहमानों के पास
यह इत्तला देने के लिए भेजा कि वह आएँ,
लेकिन वह आना नहीं चाहते थे। 4 फिर उसने
मज़ीद कुछ नौकरों को भेजकर कहा, 'मेहमानों

को बताना कि मैंने अपना खाना तैयार कर रखा
है। बैलों और मोटे-ताज़े बछड़ों को ज़बह किया
गया है, 5 सब कुछ तैयार है। आएँ, ज़ियाफ़त में
शरीक हो जाएँ।’ लेकिन मेहमानों ने परवा न की
बल्कि अपने मुख़्तलिफ़ कामों में लग गए। एक
अपने खेत को चला गया, दूसरा अपने कारोबार
में मसरूफ़ हो गया। 6 बाक़ियों ने बादशाह के
नौकरों को पकड़ लिया और उनसे बुरा सुलूक
करके उन्हें क़त्ल किया। 7 बादशाह बड़े तैश में
आ गया। उसने अपनी फ़ौज को भेजकर क़ातिलों
को तबाह कर दिया और उनका शहर जला दिया।
8 फिर उसने अपने नौकरों से कहा, ‘शादी की
ज़ियाफ़त तो तैयार है, लेकिन जिन मेहमानों को
मैंने दावत दी थी वह आने के लायक़ नहीं थे।
9 अब वहाँ जाओ जहाँ सड़कें शहर से निकलती हैं
और जिससे भी मुलाक़ात हो जाए उसे ज़ियाफ़त
के लिए दावत दे देना।’ 10 चुनाँचे नौकर सड़कों
पर निकले और जिससे भी मुलाक़ात हुई उसे
लाए, ख़ाह वह अच्छा था या बुरा। यों शादी हाल
मेहमानों से भर गया।

11 लेकिन जब बादशाह मेहमानों से मिलने के
लिए अंदर आया तो उसे एक आदमी नज़र आया
जिसने शादी के लिए मुनासिब कपड़े नहीं पहने
थे। 12 बादशाह ने पूछा, ‘दोस्त, तुम शादी का
लिबास पहने बग़ैर अंदर किस तरह आए?’ वह
आदमी कोई जवाब न दे सका। 13 फिर बादशाह
ने अपने दरबारियों को हुक्म दिया, ‘इसके हाथ
और पाँव बाँधकर इसे बाहर तारीकी में फेंक दो,
वहाँ जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।’

14 क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, लेकिन चुने
हुए कम।”

क्या टैक्स देना जायज़ है?

15 फिर फ़रीसियों ने जाकर आपस में मशवरा
किया कि हम ईसा को किस तरह ऐसी बात
करने के लिए उभारें जिससे उसे पकड़ा जा सके।
16 इस मक़सद के तहत उन्होंने अपने शागिर्दों को
हेरोदेस के पैरोकारों समेत ईसा के पास भेजा।
उन्होंने कहा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप
सच्चे हैं और दियानतदारी से अल्लाह की राह की
तालीम देते हैं। आप किसी की परवा नहीं करते
क्योंकि आप ग़ैरजानिबदार हैं। 17 अब हमें अपनी
राय बताएँ। क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना
जायज़ है या नाजायज़?”

18 लेकिन ईसा ने उनकी बुरी नीयत पहचान
ली। उसने कहा, “रियाकारो, तुम मुझे क्यों
फँसाना चाहते हो? 19 मुझे वह सिक्का दिखाओ
जो टैक्स अदा करने के लिए इस्तेमाल होता है।”

वह उसके पास चाँदी का एक रोमी सिक्का ले
आए 20 तो उसने पूछा, “किसकी सूरत और नाम
इस पर कंदा है?”

21 उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है शहनशाह
को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।”

22 उसका यह जवाब सुनकर वह हक्का-बक्का
रह गए और उसे छोड़कर चले गए।

क्या हम जी उठेंगे?

23 उस दिन सदूक़ी ईसा के पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़े-क़ियामत मुरदे जी उठेंगे।
उन्होंने ईसा से एक सवाल किया। 24 “उस्ताद,
मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा
आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो
तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके
अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 25 अब फ़र्ज़
करें कि हमारे दरमियान सात भाई थे। पहले ने
शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। इसलिए
दूसरे भाई ने बेवा से शादी की। 26 लेकिन वह भी
बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी
की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा।
यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के
बाद मर गया। 27 आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई।
28 अब बताएँ कि क़ियामत के दिन वह किसकी
बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने
उससे शादी की थी।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “तुम इसलिए ग़लती
पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो,
न अल्लाह की क़ुदरत से। 30 क्योंकि क़ियामत
के दिन लोग न शादी करेंगे न उनकी शादी कराई
जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिश्तों की
मानिंद होंगे। 31 रही यह बात कि मुरदे जी उठेंगे,
क्या तुमने वह बात नहीं पढ़ी जो अल्लाह ने
तुमसे कही? 32 उसने फ़रमाया, ‘मैं इब्राहीम का
ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ,’
हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से मर चुके
थे। इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त में ज़िंदा
हैं। क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं बल्कि ज़िंदों
का ख़ुदा है।”
33 यह सुनकर हुजूम उस की तालीम के बाइस
हैरान रह गया।

अव्वल हुक्म

34 जब फ़रीसियों ने सुना कि ईसा ने सदूक़ियों
को लाजवाब कर दिया है तो वह जमा हुए।
35 उनमें से एक ने जो शरीअत का आलिम था
उसे फँसाने के लिए सवाल किया, 36 “उस्ताद,
शरीअत में सबसे बड़ा हुक्म कौन-सा है?”
37 ईसा ने जवाब दिया, “‘रब अपने ख़ुदा से
अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने
पूरे ज़हन से प्यार करना।’ 38 यह अव्वल और
सबसे बड़ा हुक्म है। 39 और दूसरा हुक्म इसके
बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत
रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ 40 तमाम
शरीअत और नबियों की तालीमात इन दो
अहकाम पर मबनी हैं।”

मसीह के बारे में सवाल

41 जब फ़रीसी इकट्ठे थे तो ईसा ने उनसे पूछा,
42 “तुम्हारा मसीह के बारे में क्या ख़याल है? वह
किसका फ़रज़ंद है?”
उन्होंने जवाब दिया, “वह दाऊद का फ़रज़ंद
है।”
43 ईसा ने कहा, “तो फिर दाऊद रूहुल-क़ुद्स
की मारिफ़त उसे किस तरह ‘रब’ कहता है?
क्योंकि वह फ़रमाता है,
44 ‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’
45 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो
फिर वह किस तरह उसका फ़रज़ंद हो सकता
है?”
46 कोई भी जवाब न दे सका, और उस दिन से
किसी ने भी उससे मज़ीद कुछ पूछने की जुर्रत न
की।

उलमा और फ़रीसियों से ख़बरदार

23 फिर ईसा हुजूम और अपने शा-
गिर्दों से मुख़ातिब हुआ, 2 “शरी-
अत के उलमा और फ़रीसी मूसा की कुरसी पर
बैठे हैं। 3 चुनाँचे जो कुछ वह तुमको बताते हैं वह
करो और उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो। लेकिन
जो कुछ वह करते हैं वह न करो, क्योंकि वह ख़ुद
अपनी तालीम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारते।
4 वह भारी गठड़ियाँ बाँध बाँधकर लोगों के कंधों
पर रख देते हैं, लेकिन ख़ुद उन्हें उठाने के लिए एक
उँगली तक हिलाने को तैयार नहीं होते। 5 जो भी
करते हैं दिखावे के लिए करते हैं। जो तावीज़[a]
वह अपने बाज़ुओं और पेशानियों पर बाँधते और
जो फुँदने अपने लिबास से लगाते हैं वह ख़ास
बड़े होते हैं। 6 उनकी बस एक ही ख़ाहिश होती
है कि ज़ियाफ़तों और इबादतख़ानों में इज़्ज़त की
कुरसियों पर बैठ जाएँ। 7 जब लोग बाज़ारों में
सलाम करके उनकी इज़्ज़त करते और ‘उस्ताद’
कहकर उनसे बात करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो
जाते हैं। 8 लेकिन तुमको उस्ताद नहीं कहलाना
चाहिए, क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही उस्ताद है
जबकि तुम सब भाई हो। 9 और दुनिया में किसी
को ‘बाप’ कहकर उससे बात न करो, क्योंकि

[a] तावीज़ों में तौरेत के हवालाजात लिखकर रखे जाते थे।

तुम्हारा एक ही बाप है और वह आसमान पर है।
10 हादी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही
हादी है यानी अल-मसीह। 11 तुममें से सबसे बड़ा
शख़्स तुम्हारा ख़ादिम होगा। 12 क्योंकि जो भी
अपने आपको सरफ़राज़ करेगा उसे पस्त किया
जाएगा और जो अपने आपको पस्त करेगा उसे
सरफ़राज़ किया जाएगा।

उनकी रियाकारी पर अफ़सोस

13 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम लोगों के सामने
आसमान की बादशाही पर ताला लगाते हो। न
तुम ख़ुद दाख़िल होते हो, न उन्हें दाख़िल होने देते
हो जो अंदर जाना चाहते हैं।

14 [शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बेवाओं के घरों
पर क़ब्ज़ा कर लेते और दिखावे के लिए लंबी
लंबी नमाज़ पढ़ते हो। इसलिए तुम्हें ज़्यादा सज़ा
मिलेगी।]

15 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम एक नौमुरीद
बनाने की ख़ातिर ख़ुश्की और तरी के लंबे सफ़र
करते हो। और जब इसमें कामयाब हो जाते हो
तो तुम उस शख़्स को अपनी निसबत जहन्नुम
का दुगना शरीर फ़रज़ंद बना देते हो। 16 अंधे
राहनुमाओ, तुम पर अफ़सोस! तुम कहते हो,
'अगर कोई बैतुल-मुक़द्दस की क़सम खाए तो
ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन अगर
वह बैतुल-मुक़द्दस के सोने की क़सम खाए तो
लाज़िम है कि उसे पूरा करे।' 17 अंधे अहमक़ो!
ज़्यादा अहम किया है, सोना या बैतुल-मुक़द्दस जो
सोने को मख़सूसो-मुक़द्दस बनाता है? 18 तुम
यह भी कहते हो, 'अगर कोई क़ुरबानगाह की
क़सम खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा
करे। लेकिन अगर वह क़ुरबानगाह पर पड़े हदिये
की क़सम खाए तो लाज़िम है कि वह उसे पूरा
करे।' 19 अंधो! ज़्यादा अहम किया है, हदिया
या क़ुरबानगाह जो हदिये को मख़सूसो-मुक़द्दस
बनाती है? 20 ग़रज़, जो क़ुरबानगाह की क़सम
खाता है वह उन तमाम चीज़ों की क़सम भी खाता
है जो उस पर पड़ी हैं। 21 और जो बैतुल-मुक़द्दस
की क़सम खाता है वह उस की भी क़सम खाता है
जो उसमें सुकूनत करता है। 22 और जो आसमान
की क़सम खाता है वह अल्लाह के तख़्त की और
उस पर बैठनेवाले की क़सम भी खाता है।

23 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! गो तुम बड़ी एहतियात
से पौदीने, अजवायन और ज़ीरे का दसवाँ हिस्सा
हदिये के लिए मख़सूस करते हो, लेकिन तुमने
शरीअत की ज़्यादा अहम बातों को नज़रंदाज़ कर
दिया है यानी इनसाफ़, रहम और वफ़ादारी को।
लाज़िम है कि तुम यह काम भी करो और पहला
भी न छोड़ो। 24 अंधे राहनुमाओ! तुम अपने
मशरूब छानते हो ताकि ग़लती से मच्छर न पी
लिया जाए, लेकिन साथ साथ ऊँट को निगल
लेते हो।

25 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बाहर से हर
प्याले और बरतन की सफ़ाई करते हो, लेकिन
अंदर से वह लूट-मार और ऐशपरस्ती से भरे होते
हैं। 26 अंधे फ़रीसियो, पहले अंदर से प्याले और
बरतन की सफ़ाई करो, और फिर वह बाहर से भी
पाक-साफ़ हो जाएंगे।

27 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम ऐसी क़ब्रों से
मुताबिक़त रखते हो जिन पर सफेदी की गई हो।
गो वह बाहर से दिलकश नज़र आती हैं, लेकिन
अंदर से वह मुरदों की हड्डियों और हर क़िस्म
की नापाकी से भरी होती हैं। 28 तुम भी बाहर
से रास्तबाज़ दिखाई देते हो जबकि अंदर से तुम
रियाकारी और बेदीनी से मामूर होते हो।

29 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम नबियों के
लिए क़ब्रें तामीर करते और रास्तबाज़ों के मज़ार
सजाते हो। 30 और तुम कहते हो, 'अगर हम
अपने बापदादा के ज़माने में ज़िंदा होते तो नबियों

को क़त्ल करने में शरीक न होते।’ 31 लेकिन
यह कहने से तुम अपने ख़िलाफ़ गवाही देते
हो कि तुम नबियों के क़ातिलों की औलाद
हो। 32 अब जाओ, वह काम मुकम्मल करो
जो तुम्हारे बापदादा ने अधूरा छोड़ दिया था।
33 साँपो, ज़हरीले साँपों के बच्चो! तुम किस तरह
जहन्नुम की सज़ा से बच पाओगे? 34 इसलिए मैं
नबियों, दानिशमंदों और शरीअत के आलिमों को
तुम्हारे पास भेज देता हूँ। उनमें से बाज़ को तुम
क़त्ल और मसलूब करोगे और बाज़ को अपने
इबादतख़ानों में ले जाकर कोड़े लगवाओगे और
शहर बशहर उनका ताक़्क़ुब करोगे। 35 नतीजे
में तुम तमाम रास्तबाज़ों के क़त्ल के ज़िम्मेदार
ठहरोगे—रास्तबाज़ हाबील के क़त्ल से लेकर
ज़करियाह बिन बरकियाह के क़त्ल तक जिसे
तुमने बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े और उसके सहन
में मौजूद क़ुरबानगाह के दरमियान मार डाला।
36 मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह सब कुछ इसी
नसल पर आएगा।

यरूशलम पर अफ़सोस

37 हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों
को क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़ंबरों
को संगसार करती है। मैंने कितनी ही बार तेरी
औलाद को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह मुरग़ी अपने बच्चों को अपने परों तले
जमा करके महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तुमने
न चाहा। 38 अब तुम्हारे घर को वीरानो-सुनसान
छोड़ा जाएगा। 39 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ,
तुम मुझे उस वक़्त तक दुबारा नहीं देखोगे जब
तक तुम न कहो कि मुबारक है वह जो रब के
नाम से आता है।”

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

24 ईसा बैतुल-मुक़द्दस को छोड़कर
निकल रहा था कि उसके शागिर्द
उसके पास आए और बैतुल-मुक़द्दस की
मुख़्तलिफ़ इमारतों की तरफ़ उस की तवज्जुह
दिलाने लगे। 2 लेकिन ईसा ने जवाब में कहा,
“क्या तुमको यह सब कुछ नज़र आता है? मैं
तुमको सच बताता हूँ कि यहाँ पत्थर पर पत्थर
नहीं रहेगा बल्कि सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानियों की पेशगोई

3 बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैठ गया।
शागिर्द अकेले उसके पास आए। उन्होंने कहा,
“हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र
आएगा जिससे पता चलेगा कि आप आनेवाले हैं
और यह दुनिया ख़त्म होनेवाली है?”

4 ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई
तुम्हें गुमराह न कर दे। 5 क्योंकि बहुत-से लोग
मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह
हूँ।’ यों वह बहुतों को गुमराह कर देंगे। 6 जंगों
की ख़बरें और अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी, लेकिन
मुहतात रहो ताकि तुम घबरा न जाओ। क्योंकि
लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी
अभी आख़िरत नहीं होगी। 7 एक क़ौम दूसरी
के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही
दूसरी के ख़िलाफ़। काल पड़ेंगे और जगह जगह
ज़लज़ले आएँगे। 8 लेकिन यह सिर्फ़ दर्दे-ज़ह की
इब्तिदा ही होगी।

9 फिर वह तुमको बड़ी मुसीबत में डाल देंगे और
तुमको क़त्ल करेंगे। तमाम क़ौमें तुमसे इसलिए
नफ़रत करेंगी कि तुम मेरे पैरोकार हो। 10 उस
वक़्त बहुत-से लोग ईमान से बरगश्ता होकर एक
दूसरे को दुश्मन के हवाले करेंगे और एक दूसरे से
नफ़रत करेंगे। 11 बहुत-से झूटे नबी खड़े होकर
बहुत-से लोगों को गुमराह कर देंगे। 12 बेदीनी
के बढ़ जाने की वजह से बेशतर लोगों की
मुहब्बत ठंडी पड़ जाएगी। 13 लेकिन जो आख़िर
तक क़ायम रहेगा उसे नजात मिलेगी। 14 और
बादशाही की इस ख़ुशख़बरी के पैग़ाम का एलान
पूरी दुनिया में किया जाएगा ताकि तमाम क़ौमों के
सामने उस की गवाही दी जाए। फिर ही आख़िरत
आएगी।

बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती

15 एक दिन आएगा जब तुम मुक़द्दस मक़ाम
में वह कुछ खड़ा देखोगे जिसका ज़िक्र दानियाल
नबी ने किया और जो बेहुरमती और तबाही का
बाइस है।” (क़ारी इस पर ध्यान दे!) 16 “उस
वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर पहाड़ी इलाक़े
में पनाह लें। 17 जो अपने घर की छत पर हो
वह घर में से कुछ साथ ले जाने के लिए न
उतरे। 18 जो खेत में हो वह अपनी चादर साथ
ले जाने के लिए वापस न जाए। 19 उन ख़वातीन
पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या
अपने बच्चों को दूध पिलाती हों। 20 दुआ करो
कि तुमको सर्दियों के मौसम में या सबत के दिन
हिजरत न करनी पड़े। 21 क्योंकि उस वक़्त ऐसी
शदीद मुसीबत होगी कि दुनिया की तख़लीक़ से
आज तक देखने में न आई होगी। इस क़िस्म की
मुसीबत बाद में भी कभी नहीं आएगी। 22 और
अगर इस मुसीबत का दौरानिया मुख़तसर न
किया जाता तो कोई न बचता। लेकिन अल्लाह के
चुने हुओं की ख़ातिर इसका दौरानिया मुख़तसर
कर दिया जाएगा।

23 उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, ‘देखो,
मसीह यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’ तो उस की
बात न मानना। 24 क्योंकि झूटे मसीह और झूटे
नबी उठ खड़े होंगे जो बड़े अजीबो-ग़रीब निशान
और मोजिज़े दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए
लोगों को भी ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह
मुमकिन होता। 25 देखो, मैंने तुम्हें पहले से इससे
आगाह कर दिया है।

26 चुनाँचे अगर कोई तुमको बताए, ‘देखो, वह
रेगिस्तान में है’ तो वहाँ जाने के लिए न निकलना।
और अगर कोई कहे, ‘देखो, वह अंदरूनी कमरों में
है’ तो उसका यक़ीन न करना। 27 क्योंकि जिस
तरह बादल की बिजली मशरिक़ में कड़ककर
मग़रिब तक चमकती है उसी तरह इब्ने-आदम
की आमद भी होगी।

28 जहाँ भी लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो
जाएंगे।

इब्ने-आदम की आमद

29 मुसीबत के उन दिनों के ऐन बाद सूरज
तारीक हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म
हो जाएगी। सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे
और आसमान की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 30 उस
वक़्त इब्ने-आदम का निशान आसमान पर नज़र
आएगा। तब दुनिया की तमाम क़ौमें मातम
करेंगी। वह इब्ने-आदम को बड़ी क़ुदरत और
जलाल के साथ आसमान के बादलों पर आते हुए
देखेंगी। 31 और वह अपने फ़रिश्तों को बिगुल की
ऊँची आवाज़ के साथ भेज देगा ताकि उसके चुने
हुओं को चारों तरफ़ से जमा करें, आसमान के
एक सिरे से दूसरे सिरे तक इकट्ठा करें।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

32 अंजीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। ज्योंही
उस की शाख़ें नरम और लचकदार हो जाती हैं
और उनसे कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुमको
मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम क़रीब
आ गया है। 33 इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात
देखोगे तो जान लोगे कि इब्ने-आदम की आमद
क़रीब बल्कि दरवाज़े पर है। 34 मैं तुमको सच
बताता हूँ कि इस नसल के ख़त्म होने से पहले
पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 35 आसमानो-
ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक
क़ायम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

36 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह
किस दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा।
आसमान के फ़रिश्तों और फ़रज़ंद को भी इल्म
नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को। 37 जब इब्ने-आदम
आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे।
38 क्योंकि सैलाब से पहले के दिनों में लोग उस

वक़्त तक खाते-पीते और शादियाँ करते कराते
रहे जब तक नूह कश्ती में दाख़िल न हो गया।
39 वह उस वक़्त तक आनेवाली मुसीबत के बारे
में लाइल्म रहे जब तक सैलाब आकर उन सबको
बहा न ले गया। जब इब्ने-आदम आएगा तो इसी
क़िस्म के हालात होंगे। 40 उस वक़्त दो अफ़राद
खेत में होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा
जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 41 दो
ख़वातीन चक्की पर गंदुम पीस रही होंगी, एक
को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे
छोड़ दिया जाएगा।

42 इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं
जानते कि तुम्हारा ख़ुदावंद किस दिन आ जाएगा।
43 यक़ीन जानो, अगर किसी घर के मालिक को
मालूम होता कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर
चौकस रहता और उसे अपने घर में नक़ब लगाने न
देता। 44 तुम भी तैयार रहो, क्योंकि इब्ने-आदम
ऐसे वक़्त आएगा जब तुम उस की तवक़्क़ो नहीं
करोगे।

वफ़ादार नौकर

45 चुनाँचे कौन-सा नौकर वफ़ादार और
समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने
किसी नौकर को बाक़ी नौकरों पर मुक़र्रर किया
हो। उस की एक ज़िम्मेदारी यह भी है कि उन्हें
वक़्त पर खाना खिलाए। 46 वह नौकर मुबारक
होगा जो मालिक की वापसी पर यह सब कुछ
कर रहा होगा। 47 मैं तुमको सच बताता हूँ कि
यह देखकर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद पर
मुक़र्रर करेगा। 48 लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर
अपने दिल में सोचे, 'मालिक की वापसी में अभी
देर है।' 49 वह अपने साथी नौकरों को पीटने और
शराबियों के साथ खाने-पीने लगे। 50 अगर वह
ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा
जिसकी तवक़्क़ो नौकर को नहीं होगी। 51 इन
हालात को देखकर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर
डालेगा और उसे रियाकारों में शामिल करेगा, वहाँ
जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।

दस कुँवारियों की तमसील

25 उस वक़्त आसमान की बाद-
शाही दस कुँवारियों से मुता-
बिक़त रखेगी जो अपने चराग़ लेकर दूल्हे को
मिलने के लिए निकलें। 2 उनमें से पाँच नासमझ
थीं और पाँच समझदार। 3 नासमझ कुँवारियों ने
अपने पास चराग़ों के लिए फ़ाल्तू तेल न रखा।
4 लेकिन समझदार कुँवारियों ने कुप्पी में तेल
डालकर अपने साथ ले लिया। 5 दूल्हे को आने में
बड़ी देर लगी, इसलिए वह सब ऊँघ ऊँघकर सो
गईं।

6 आधी रात को शोर मच गया, 'देखो, दूल्हा
पहुँच रहा है, उसे मिलने के लिए निकलो!' 7 इस
पर तमाम कुँवारियाँ जाग उठीं और अपने चराग़ों
को दुरुस्त करने लगीं। 8 नासमझ कुँवारियों ने
समझदार कुँवारियों से कहा, 'अपने तेल में से
हमें भी कुछ दे दो। हमारे चराग़ बुझनेवाले हैं।'
9 दूसरी कुँवारियों ने जवाब दिया, 'नहीं, ऐसा न
हो कि न सिर्फ़ तुम्हारे लिए बल्कि हमारे लिए
भी तेल काफ़ी न हो। दुकान पर जाकर अपने
लिए ख़रीद लो।' 10 चुनाँचे नासमझ कुँवारियाँ
चली गईं। लेकिन इस दौरान दूल्हा पहुँच गया। जो
कुँवारियाँ तैयार थीं वह उसके साथ शादी हाल में
दाख़िल हुईं। फिर दरवाज़े को बंद कर दिया गया।

11 कुछ देर के बाद बाक़ी कुँवारियाँ आईं और
चिल्लाने लगीं, 'जनाब! हमारे लिए दरवाज़ा
खोल दें।' 12 लेकिन उसने जवाब दिया, 'यक़ीन
जानो, मैं तुमको नहीं जानता।'

13 इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम इब्ने-
आदम के आने का दिन या वक़्त नहीं जानते।

तीन नौकरों की तमसील

14 उस वक़्त आसमान की बादशाही यों होगी :
एक आदमी को बैरूने-मुल्क जाना था। उसने
अपने नौकरों को बुलाकर अपनी मिलकियत
उनके सुपुर्द कर दी। 15 पहले को उसने सोने
के 5,000 सिक्के दिए, दूसरे को 2,000 और
तीसरे को 1,000। हर एक को उसने उस की

क़ाबिलियत के मुताबिक़ पैसे दिए। फिर वह
रवाना हुआ। 16 जिस नौकर को 5,000 सिक्के
मिले थे उसने सीधा जाकर उन्हें किसी कारोबार
में लगाया। इससे उसे मज़ीद 5,000 सिक्के
हासिल हुए। 17 इसी तरह दूसरे को भी जिसे
2,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 2,000 सिक्के
हासिल हुए। 18 लेकिन जिस आदमी को 1,000
सिक्के मिले थे वह चला गया और कहीं ज़मीन
में गढ़ा खोदकर अपने मालिक के पैसे उसमें छुपा
दिए।

19 बड़ी देर के बाद उनका मालिक लौट आया।
जब उसने उनके साथ हिसाब-किताब किया
20 तो पहला नौकर जिसे 5,000 सिक्के मिले
थे मज़ीद 5,000 सिक्के लेकर आया। उसने
कहा, 'जनाब, आपने 5,000 सिक्के मेरे सुपुर्द
किए थे। यह देखें, मैंने मज़ीद 5,000 सिक्के
हासिल किए हैं।' 21 उसके मालिक ने जवाब
दिया, 'शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार नौकर।
तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत
कुछ पर मुक़र्रर करूँगा। अंदर आओ और अपने
मालिक की ख़ुशी में शरीक हो जाओ।'

22 फिर दूसरा नौकर आया जिसे 2,000
सिक्के मिले थे। उसने कहा, 'जनाब, आपने
2,000 सिक्के मेरे सुपुर्द किए थे। यह देखें,
मैंने मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल किए हैं।'
23 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे
अच्छे और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार
रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्रर करूँगा।
अंदर आओ और अपने मालिक की ख़ुशी में
शरीक हो जाओ।'

24 फिर तीसरा नौकर आया जिसे 1,000
सिक्के मिले थे। उसने कहा, 'जनाब, मैं जानता
था कि आप सख़्त आदमी हैं। जो बीज आपने नहीं
बोया उस की फ़सल आप काटते हैं और जो कुछ
आपने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करते
हैं। 25 इसलिए मैं डर गया और जाकर आपके पैसे
ज़मीन में छुपा दिए। अब आप अपने पैसे वापस
ले सकते हैं।'

26 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शरीर और
सुस्त नौकर! क्या तू जानता था कि जो बीज मैंने
नहीं बोया उस की फ़सल काटता हूँ और जो कुछ
मैंने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करता हूँ?
27 तो फिर तूने मेरे पैसे बैंक में क्यों न जमा करा
दिए? अगर ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम
अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।' 28 यह
कहकर मालिक दूसरों से मुख़ातिब हुआ, 'यह
पैसे इससे लेकर उस नौकर को दे दो जिसके पास
10,000 सिक्के हैं। 29 क्योंकि जिसके पास
कुछ है उसे और दिया जाएगा और उसके पास
कसरत की चीज़ें होंगी। लेकिन जिसके पास कुछ
नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके
पास है। 30 अब इस बेकार नौकर को निकालकर
बाहर की तारीकी में फेंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते
और दाँत पीसते रहेंगे।'

आख़िरी अदालत

31 जब इब्ने-आदम अपने जलाल के साथ
आएगा और तमाम फ़रिश्ते उसके साथ होंगे तो
वह अपने जलाली तख़्त पर बैठ जाएगा। 32 तब
तमाम क़ौमें उसके सामने जमा की जाएँगी। और
जिस तरह चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग
करता है उसी तरह वह लोगों को एक दूसरे
से अलग करेगा। 33 वह भेड़ों को अपने दहने
हाथ खड़ा करेगा और बकरियों को अपने बाएँ
हाथ। 34 फिर बादशाह दहने हाथवालों से कहेगा,
'आओ, मेरे बाप के मुबारक लोगो! जो बादशाही
दुनिया की तख़लीक़ से तुम्हारे लिए तैयार है उसे
मीरास में ले लो। 35 क्योंकि मैं भूका था और
तुमने मुझे खाना खिलाया, मैं प्यासा था और
तुमने मुझे पानी पिलाया, मैं अजनबी था और
तुमने मेरी मेहमान-नवाज़ी की, 36 मैं नंगा था और
तुमने मुझे कपड़े पहनाए, मैं बीमार था और तुमने
मेरी देख-भाल की, मैं जेल में था और तुम मुझसे
मिलने आए।'

37 फिर यह रास्तबाज़ लोग जवाब में कहेंगे,
'ख़ुदावंद, हमने आपको कब भूका देखकर खाना

खिलाया, आपको कब प्यासा देखकर पानी
पिलाया? 38 हमने आपको कब अजनबी की
हैसियत से देखकर आपकी मेहमान-नवाज़ी की,
आपको कब नंगा देखकर कपड़े पहनाए? 39 हम
आपको कब बीमार हालत में या जेल में पड़ा
देखकर आपसे मिलने गए?’ 40 बादशाह जवाब
देगा, ‘मैं तुम्हें सच बताता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे
इन सबसे छोटे भाइयों में से एक के लिए किया
वह तुमने मेरे ही लिए किया।’

41 फिर वह बाएँ हाथवालों से कहेगा, ‘लानती
लोगो, मुझसे दूर हो जाओ और उस अबदी आग
में चले जाओ जो इबलीस और उसके फ़रिश्तों
के लिए तैयार है। 42 क्योंकि मैं भूका था और
तुमने मुझे कुछ न खिलाया, मैं प्यासा था और
तुमने मुझे पानी न पिलाया, 43 मैं अजनबी था
और तुमने मेरी मेहमान-नवाज़ी न की, मैं नंगा था
और तुमने मुझे कपड़े न पहनाए, मैं बीमार और
जेल में था और तुम मुझसे मिलने न आए।’

44 फिर वह जवाब में पूछेंगे, ‘ख़ुदावंद, हमने
आपको कब भूका, प्यासा, अजनबी, नंगा,
बीमार या जेल में पड़ा देखा और आपकी ख़िदमत
न की?’ 45 वह जवाब देगा, ‘मैं तुमको सच
बताता हूँ कि जब कभी तुमने इन सबसे छोटों में
से एक की मदद करने से इनकार किया तो तुमने
मेरी ख़िदमत करने से इनकार किया।’ 46 फिर
यह अबदी सज़ा भुगतने के लिए जाएंगे जबकि
रास्तबाज़ अबदी ज़िंदगी में दाख़िल होंगे।”

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

26 यह बातें ख़त्म करने पर ईसा शा-
गिर्दों से मुख़ातिब हुआ, 2 “तुम
जानते हो कि दो दिन के बाद फ़सह की ईद शुरू
होगी। उस वक़्त इब्ने-आदम को दुश्मन के हवाले
किया जाएगा ताकि उसे मसलूब किया जाए।”

3 फिर राहनुमा इमाम और क़ौम के बुज़ुर्ग
कायफ़ा नामी इमामे-आज़म के महल में जमा
हुए 4 और ईसा को किसी चालाकी से गिरिफ़्तार
करके क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।
5 उन्होंने कहा, “लेकिन यह ईद के दौरान नहीं
होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल
मच जाए।”

ख़ातून ईसा पर ख़ुशबू उंडेलती है

6 इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक
आदमी के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त
कोढ़ का मरीज़ था। उसका नाम शमाऊन था।
7 ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक
औरत आई जिसके पास निहायत क़ीमती इत्र
का इत्रदान था। उसने उसे ईसा के सर पर उंडेल
दिया। 8 शागिर्द यह देखकर नाराज़ हुए। उन्होंने
कहा, “इतना क़ीमती इत्र ज़ाया करने की क्या
ज़रूरत थी? 9 यह बहुत महँगी चीज़ है। अगर
इसे बेचा जाता तो इसके पैसे ग़रीबों को दिए जा
सकते थे।”

10 लेकिन उनके ख़याल पहचानकर ईसा ने
उनसे कहा, “तुम इसे क्यों तंग कर रहे हो? इसने
तो मेरे लिए एक नेक काम किया है। 11 ग़रीब तो
हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तक
तुम्हारे पास नहीं रहूँगा। 12 मुझ पर इत्र उंडेलने
से उसने मेरे बदन को दफ़न होने के लिए तैयार
किया है। 13 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम
दुनिया में जहाँ भी अल्लाह की ख़ुशख़बरी का
एलान किया जाएगा वहाँ लोग इस ख़ातून को
याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

14 फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शा-
गिर्दों में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया।
15 उसने पूछा, “आप मुझे ईसा को आपके हवाले
करने के एवज़ कितने पैसे देने के लिए तैयार
हैं?” उन्होंने उसके लिए चाँदी के 30 सिक्के
मुतैयिन किए। 16 उस वक़्त से यहूदा ईसा को
उनके हवाले करने का मौक़ा ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

17 बेख़मीरी रोटी की ईद आई। पहले दिन ईसा
के शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा, "हम कहाँ
आपके लिए फ़सह का खाना तैयार करें?"

18 उसने जवाब दिया, "यरूशलम शहर में
फ़ुलाँ आदमी के पास जाओ और उसे बताओ,
'उस्ताद ने कहा है कि मेरा मुक़र्ररा वक़्त क़रीब
आ गया है। मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह की
ईद का खाना आपके घर में खाऊँगा'।"

19 शागिर्दों ने वह कुछ किया जो ईसा ने उन्हें
बताया था और फ़सह की ईद का खाना तैयार
किया।

कौन ग़द्दार है?

20 शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों के साथ
खाना खाने के लिए बैठ गया। 21 जब वह खाना
खा रहे थे तो उसने कहा, "मैं तुमको सच बताता
हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर
देगा।"

22 शागिर्द यह सुनकर निहायत ग़मगीन हुए।
बारी बारी वह उससे पूछने लगे, "ख़ुदावंद, मैं तो
नहीं हूँ?"

23 ईसा ने जवाब दिया, "जिसने मेरे साथ
अपना हाथ सालन के बरतन में डाला है वही मुझे
दुश्मन के हवाले करेगा। 24 इब्ने-आदम तो कूच
कर जाएगा जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा
है, लेकिन उस शख़्स पर अफ़सोस जिसके वसीले
से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके
लिए बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न
होता।"

25 फिर यहूदा ने जो उसे दुश्मन के हवाले करने
को था पूछा, "उस्ताद, मैं तो नहीं हूँ?"

ईसा ने जवाब दिया, "जी, तुमने ख़ुद कहा है।"

फ़सह का आख़िरी खाना

26 खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर
शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके
शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, "यह लो और
खाओ। यह मेरा बदन है।"

27 फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्र-
गुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें देकर कहा,
"तुम सब इसमें से पियो। 28 यह मेरा ख़ून है,
नए अहद का वह ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया
जाता है ताकि उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दिया
जाए। 29 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अब से मैं
अंगूर का यह रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली
दफ़ा इसे तुम्हारे साथ अपने बाप की बादशाही में
ही पियूँगा।"

30 फिर एक ज़बूर गाकर वह निकले और ज़ैतून
के पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

31 ईसा ने उन्हें बताया, "आज रात तुम सब
मेरी बाबत बरगश्ता हो जाओगे, क्योंकि कलामे-
मुक़द्दस में अल्लाह फ़रमाता है, 'मैं चरवाहे को
मार डालूँगा और रेवड़ की भेड़ें तित्तर-बित्तर हो
जाएँगी।' 32 लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं
तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।"

33 पतरस ने एतराज़ किया, "दूसरे बेशक सब
आपकी बाबत बरगश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी
नहीं हूँगा।"

34 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता
हूँ, इसी रात मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू
तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।"

35 पतरस ने कहा, "हरगिज़ नहीं! मैं आपको
जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे
आपके साथ मरना भी पड़े।"

दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

36 ईसा अपने शागिर्दों के साथ एक बाग़ में
पहुँचा जिसका नाम गत्समनी था। उसने उनसे
कहा, "यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ
करने के लिए आगे जाता हूँ।" 37 उसने पतरस
और ज़बदी के दो बेटों याक़ूब और यूहन्ना को

साथ लिया। वहाँ वह ग़मगीन और बेक़रार होने
लगा। 38 उसने उनसे कहा, “मैं दुख से इतना
दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर मेरे
साथ जागते रहो।”

39 कुछ आगे जाकर वह औंधे मुँह ज़मीन पर
गिरकर यों दुआ करने लगा, “ऐ मेरे बाप, अगर
मुमकिन हो तो दुख का यह प्याला मुझसे हट
जाए। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी
हो।”

40 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो
देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से पूछा,
“क्या तुम लोग एक घंटा भी मेरे साथ नहीं जाग
सके? 41 जागते और दुआ करते रहो ताकि
आज़माइश में न पड़ो। क्योंकि रूह तो तैयार है
लेकिन जिस्म कमज़ोर।”

42 एक बार फिर उसने जाकर दुआ की, “मेरे
बाप, अगर यह प्याला मेरे पिए बग़ैर हट नहीं
सकता तो फिर तेरी मरज़ी पूरी हो।” 43 जब वह
वापस आया तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं,
क्योंकि नींद की बदौलत उनकी आँखें बोझल थीं।

44 चुनाँचे वह उन्हें दुबारा छोड़कर चला गया
और तीसरी बार यही दुआ करने लगा। 45 फिर
ईसा शागिर्दों के पास वापस आया और उनसे
कहा, “अभी तक सो और आराम कर रहे हो?
देखो, वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम गुनाहगारों
के हवाले किया जाए। 46 उठो! आओ, चलें।
देखो, मुझे दुश्मन के हवाले करनेवाला क़रीब आ
चुका है।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदा
पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके
साथ तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों का
बड़ा हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों और क़ौम के
बुज़ुर्गों ने भेजा था। 48 इस ग़द्दार यहूदा ने उन्हें
एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको मैं
बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरिफ़्तार कर लेना।

49 ज्योंही वह पहुँचे यहूदा ईसा के पास गया
और “उस्ताद, अस्सलामु अलैकुम!” कहकर
उसे बोसा दिया।

50 ईसा ने कहा, “दोस्त, क्या तू इसी मक़सद
से आया है?”

फिर उन्होंने उसे पकड़कर गिरिफ़्तार कर
लिया। 51 इस पर ईसा के एक साथी ने अपनी
तलवार मियान से निकाली और इमामे-आज़म
के ग़ुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया।
52 लेकिन ईसा ने कहा, “अपनी तलवार को
मियान में रख, क्योंकि जो भी तलवार चलाता है
उसे तलवार से मारा जाएगा। 53 या क्या तू नहीं
समझता कि मेरा बाप मुझे हज़ारों फ़रिश्ते फ़ौरन
भेज देगा अगर मैं उन्हें तलब करूँ? 54 लेकिन
अगर मैं ऐसा करता तो फिर कलामे-मुक़द्दस की
पेशगोइयाँ किस तरह पूरी होतीं जिनके मुताबिक़
यह ऐसा ही होना है?”

55 उस वक़्त ईसा ने हुजूम से कहा, “क्या मैं
डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मुझे
गिरिफ़्तार करने निकले हो? मैं तो रोज़ाना बैतुल-
मुक़द्दस में बैठकर तालीम देता रहा, मगर तुमने
मुझे गिरिफ़्तार नहीं किया। 56 लेकिन यह सब
कुछ इसलिए हो रहा है ताकि नबियों के सहीफ़ों
में दर्ज पेशगोइयाँ पूरी हो जाएँ।”

फिर तमाम शागिर्द उसे छोड़कर भाग गए।

ईसा यहूदी अदालते-आलिया के सामने

57 जिन्होंने ईसा को गिरिफ़्तार किया था वह
उसे कायफ़ा इमामे-आज़म के घर ले गए जहाँ
शरीअत के तमाम उलमा और क़ौम के बुज़ुर्ग जमा
थे। 58 इतने में पतरस कुछ फ़ासले पर ईसा के
पीछे पीछे इमामे-आज़म के सहन तक पहुँच गया।
उसमें दाख़िल होकर वह मुलाज़िमों के साथ आग
के पास बैठ गया ताकि इस सिलसिले का अंजाम
देख सके। 59 मकान के अंदर राहनुमा इमाम और
यहूदी अदालते-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा
के ख़िलाफ़ झूटी गवाहियाँ ढूँड रहे थे ताकि उसे
सज़ाए-मौत दिलवा सकें। 60 बहुत-से झूटे गवाह

सामने आए, लेकिन कोई ऐसी गवाही न मिली।
आख़िरकार दो आदमियों ने सामने आकर 61 यह
बात पेश की, “इसने कहा है कि मैं अल्लाह के
बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर
अंदर दुबारा तामीर कर सकता हूँ।”
62 फिर इमामे-आज़म ने खड़े होकर ईसा से
कहा, “क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या
गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे ख़िलाफ़ दे रहे हैं?”
63 लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। इमामे-आज़म ने
उससे एक और सवाल किया, “मैं तुझे ज़िंदा ख़ुदा
की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तू अल्लाह का
फ़रज़ंद मसीह है?”
64 ईसा ने कहा, “जी, तूने ख़ुद कह दिया है।
और मैं तुम सबको बताता हूँ कि आइंदा तुम इब्ने-
आदम को क़ादिरे-मुतलक़ के दहने हाथ बैठे और
आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।”
65 इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके
अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, “इसने कुफ़र
बका है! हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही!
आपने ख़ुद सुन लिया है कि इसने कुफ़र बका है।
66 आपका क्या फ़ैसला है?”
उन्होंने जवाब दिया, “यह सज़ाए-मौत के
लायक़ है।”
67 फिर वह उस पर थूकने और उसके मुक्के
मारने लगे। बाज़ ने उसके थप्पड़ मार मारकर
68 कहा, “ऐ मसीह, नबुव्वत करके हमें बता कि
तुझे किसने मारा।”

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

69 इस दौरान पतरस बाहर सहन में बैठा था।
एक नौकरानी उसके पास आई। उसने कहा,
“तुम भी गलील के उस आदमी ईसा के साथ
थे।”
70 लेकिन पतरस ने उन सबके सामने इनकार
किया, “मैं नहीं जानता कि तू क्या बात कर रही
है।” यह कहकर 71 वह बाहर गेट तक गया। वहाँ
एक और नौकरानी ने उसे देखा और पास खड़े
लोगों से कहा, “यह आदमी ईसा नासरी के साथ
था।”
72 दुबारा पतरस ने इनकार किया। इस दफ़ा
उसने क़सम खाकर कहा, “मैं इस आदमी को
नहीं जानता।”
73 थोड़ी देर के बाद वहाँ खड़े कुछ लोगों ने
पतरस के पास आकर कहा, “तुम ज़रूर उनमें
से हो क्योंकि तुम्हारी बोली से साफ़ पता चलता
है।”
74 इस पर पतरस ने क़सम खाकर कहा, “मुझ
पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं इस आदमी
को नहीं जानता!” फ़ौरन मुरग़ की बाँग सुनाई
दी। 75 फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा
ने कही थी, “मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू
तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”
इस पर वह बाहर निकला और टूटे दिल से ख़ूब
रोया।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

27 सुबह-सवेरे तमाम राहनुमा इ-
माम और क़ौम के तमाम बुज़ुर्ग इस
फ़ैसले तक पहुँच गए कि ईसा को सज़ाए-मौत
दी जाए। 2 वह उसे बाँधकर वहाँ से ले गए और
रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया।

यहूदा की ख़ुदकुशी

3 जब यहूदा ने जिसने उसे दुश्मन के हवाले कर
दिया था देखा कि उस पर सज़ाए-मौत का फ़तवा
दे दिया गया है तो उसने पछताकर चाँदी के 30
सिक्के राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों को
वापस कर दिए। 4 उसने कहा, “मैंने गुनाह किया
है, क्योंकि एक बेक़ुसूर आदमी को सज़ाए-मौत
दी गई है और मैं ही ने उसे आपके हवाले किया
है।”
उन्होंने जवाब दिया, “हमें क्या! यह तेरा
मसला है।” 5 यहूदा चाँदी के सिक्के बैतुल-

मुक़द्दस में फेंककर चला गया। फिर उसने जाकर फाँसी ले ली।

6 राहनुमा इमामों ने सिक्कों को जमा करके कहा, "शरीअत यह पैसे बैतुल-मुक़द्दस के ख़ज़ाने में डालने की इजाज़त नहीं देती, क्योंकि यह ख़ूनरेज़ी का मुआवज़ा है।" 7 आपस में मशवरा करने के बाद उन्होंने कुम्हार का खेत ख़रीदने का फ़ैसला किया ताकि परदेसियों को दफ़नाने के लिए जगह हो। 8 इसलिए यह खेत आज तक ख़ून का खेत कहलाता है।

9 यों यरमियाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि "उन्होंने चाँदी के 30 सिक्के लिए यानी वह रक़म जो इसराईलियों ने उसके लिए लगाई थी। 10 इनसे उन्होंने कुम्हार का खेत ख़रीद लिया, बिलकुल ऐसा जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था।"

पीलातुस ईसा की पूछ-गछ करता है

11 इतने में ईसा को रोमी गवर्नर पीलातुस के सामने पेश किया गया। उसने उससे पूछा, "क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?"

ईसा ने जवाब दिया, "जी, आप ख़ुद कहते हैं।" 12 लेकिन जब राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों ने उस पर इलज़ाम लगाए तो ईसा ख़ामोश रहा।

13 चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उससे सवाल किया, "क्या तुम यह तमाम इलज़ामात नहीं सुन रहे जो तुम पर लगाए जा रहे हैं?"

14 लेकिन ईसा ने एक इलज़ाम का भी जवाब न दिया, इसलिए गवर्नर निहायत हैरान हुआ।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

15 उन दिनों यह रिवाज था कि गवर्नर हर साल फ़सह की ईद पर एक क़ैदी को आज़ाद कर देता था। यह क़ैदी हुजूम से मुंतख़ब किया जाता था। 16 उस वक़्त जेल में एक बदनाम क़ैदी था। उसका नाम बर-अब्बा था। 17 चुनाँचे जब हुजूम जमा हुआ तो पीलातुस ने उससे पूछा, "तुम क्या चाहते हो? मैं बर-अब्बा को आज़ाद करूँ या ईसा को जो मसीह कहलाता है?" 18 वह तो जानता था कि उन्होंने ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके हवाले किया है।

19 जब पीलातुस यों अदालत के तख़्त पर बैठा था तो उस की बीवी ने उसे पैग़ाम भेजा, "इस बेक़ुसूर आदमी को हाथ न लगाएँ, क्योंकि मुझे पिछली रात इसके बाइस ख़ाब में शदीद तकलीफ़ हुई।"

20 लेकिन राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों ने हुजूम को उकसाया कि वह बर-अब्बा को माँगें और ईसा की मौत तलब करें। गवर्नर ने दुबारा पूछा, 21 "मैं इन दोनों में से किस को तुम्हारे लिए आज़ाद करूँ?"

वह चिल्लाए, "बर-अब्बा को।"

22 पीलातुस ने पूछा, "फिर मैं ईसा के साथ क्या करूँ जो मसीह कहलाता है?"

वह चीख़े, "उसे मसलूब करें।"

23 पीलातुस ने पूछा, "क्यों? उसने क्या जुर्म किया है?"

लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीख़ते रहे, "उसे मसलूब करें!"

24 पीलातुस ने देखा कि वह किसी नतीजे तक नहीं पहुँच रहा बल्कि हंगामा बरपा हो रहा है। इसलिए उसने पानी लेकर हुजूम के सामने अपने हाथ धोए। उसने कहा, "अगर इस आदमी को क़त्ल किया जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ, तुम ही उसके लिए जवाबदेह ठहरो।"

25 तमाम लोगों ने जवाब दिया, "हम और हमारी औलाद उसके ख़ून के जवाबदेह हैं।"

26 फिर उसने बर-अब्बा को आज़ाद करके उन्हें दे दिया। लेकिन ईसा को उसने कोड़े लगाने का हुक्म दिया, फिर उसे मसलूब करने के लिए फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

27 गवर्नर के फ़ौजी ईसा को महल बनाम प्रैटोरियुम के सहन में ले गए और पूरी पलटन

को उसके इर्दगिर्द इकट्ठा किया। 28 उसके कपड़े
उतारकर उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास
पहनाया, 29 फिर काँटेदार टहनियों का एक ताज
बनाकर उसके सर पर रख दिया। उसके दहने
हाथ में छड़ी पकड़ाकर उन्होंने उसके सामने घुटने
टेककर उसका मज़ाक़ उड़ाया, "ऐ यहूदियों के
बादशाह, आदाब!" 30 वह उस पर थूकते रहे,
छड़ी लेकर बार बार उसके सर को मारा। 31 फिर
उसका मज़ाक़ उड़ाने से थककर उन्होंने अरग़वानी
लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े
पहनाए और उसे मसलूब करने के लिए ले गए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

32 शहर से निकलते वक़्त उन्होंने एक आदमी
को देखा जो लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला
था। उसका नाम शमाऊन था। उसे उन्होंने सलीब
उठाकर ले जाने पर मजबूर किया। 33 यों चलते
चलते वह एक मक़ाम तक पहुँच गए जिसका नाम
गुलगुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था। 34 वहाँ
उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें कोई कड़वी चीज़
मिलाई गई थी। लेकिन चखकर ईसा ने उसे पीने
से इनकार कर दिया।

35 फिर फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और
उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला
करने के लिए कि किस को क्या क्या मिले
उन्होंने क़ुरा डाला। 36 यों वह वहाँ बैठकर उस
की पहरादारी करते रहे। 37 सलीब पर ईसा के
सर के ऊपर एक तख़्ती लगा दी गई जिस पर यह
इलज़ाम लिखा था, "यह यहूदियों का बादशाह
ईसा है।" 38 दो डाकुओं को भी ईसा के साथ
मसलूब किया गया, एक को उसके दहने हाथ
और दूसरे को उसके बाएँ हाथ।

39 जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़र बककर उस
की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी
हिक़ारत का इज़हार किया। 40 उन्होंने कहा, "तूने
तो कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे
तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा।
अब अपने आपको बचा! अगर तू वाक़ई अल्लाह
का फ़रज़ंद है तो सलीब पर से उतर आ।"

41 राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और
क़ौम के बुज़ुर्गों ने भी ईसा का मज़ाक़ उड़ाया,
42 "इसने औरों को बचाया, लेकिन अपने
आपको नहीं बचा सकता। यह इसराईल का
बादशाह है! अभी यह सलीब पर से उतर आए तो
हम इस पर ईमान ले आएँगे। 43 इसने अल्लाह पर
भरोसा रखा है। अब अल्लाह इसे बचाए अगर वह
इसे चाहता है, क्योंकि इसने कहा, 'मैं अल्लाह
का फ़रज़ंद हूँ'।"

44 और जिन डाकुओं को उसके साथ मसलूब
किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

45 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब
गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 46 फिर
तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा,
"एली, एली, लमा शबक़्तनी" जिसका मतलब
है, "ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क
कर दिया है?"

47 यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे,
"वह इलियास नबी को बुला रहा है।" 48 उनमें
से एक ने फ़ौरन दौड़कर एक इस्फ़ंज को मै के
सिरके में डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा
को चुसाने की कोशिश की।

49 दूसरों ने कहा, "आओ, हम देखें, शायद
इलियास आकर उसे बचाए।"

50 लेकिन ईसा ने दुबारा बड़े ज़ोर से चिल्लाकर
दम छोड़ दिया।

51 उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दस-
तरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से
लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। ज़लज़ला
आया, चट्टानें फट गईं 52 और क़ब्रें खुल गईं। कई
मरहूम मुक़द्दसीन के जिस्मों को ज़िंदा कर दिया
गया। 53 वह ईसा के जी उठने के बाद क़ब्रों में
से निकलकर मुक़द्दस शहर में दाख़िल हुए और
बहुतों को नज़र आए।

54 जब पास खड़े रोमी अफ़सर[a] और ईसा
की पहरादारी करनेवाले फ़ौजियों ने ज़लज़ला
और यह तमाम वाक़ियात देखे तो वह निहायत
दहशतज़दा हो गए। उन्होंने कहा, "यह वाक़ई
अल्लाह का फ़रज़ंद था।"
55 बहुत-सी ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ
फ़ासले पर इसका मुशाहदा कर रही थीं। वह
गलील में ईसा के पीछे चलकर यहाँ तक उस
की ख़िदमत करती आई थीं। 56 उनमें मरियम
मग्दलीनी, याक़ूब और यूसुफ़ की माँ मरियम और
ज़बदी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की माँ भी थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

57 जब शाम होने को थी तो अरिमतियाह का
एक दौलतमंद आदमी बनाम यूसुफ़ आया। वह
भी ईसा का शागिर्द था। 58 उसने पीलातुस के
पास जाकर ईसा की लाश माँगी, और पीलातुस
ने हुक्म दिया कि वह उसे दे दी जाए। 59 यूसुफ़ ने
लाश को लेकर उसे कतान के एक साफ़ कफ़न
में लपेटा 60 और अपनी ज़ाती ग़ैरइस्तेमालशुदा
क़ब्र में रख दिया जो चट्टान में तराशी गई थी।
आख़िर में उसने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर क़ब्र
का मुँह बंद कर दिया और चला गया। 61 उस
वक़्त मरियम मग्दलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र
के मुक़ाबिल बैठी थीं।

क़ब्र की पहरादारी

62 अगले दिन, जो सबत का दिन था, राहनुमा
इमाम और फ़रीसी पीलातुस के पास आए।
63 "जनाब," उन्होंने कहा, "हमें याद आया कि
जब वह धोकेबाज़ अभी ज़िंदा था तो उसने कहा
था, 'तीन दिन के बाद मैं जी उठूँगा।' 64 इसलिए
हुक्म दें कि क़ब्र को तीसरे दिन तक महफ़ूज़ रखा
जाए। ऐसा न हो कि उसके शागिर्द आकर उस
की लाश को चुरा ले जाएँ और लोगों को बताएँ
कि वह मुरदों में से जी उठा है। अगर ऐसा हुआ
तो यह आख़िरी धोका पहले धोके से भी ज़्यादा
बड़ा होगा।"
65 पीलातुस ने जवाब दिया, "पहरेदारों को
लेकर क़ब्र को इतना महफ़ूज़ कर दो जितना तुम
कर सकते हो।"
66 चुनाँचे उन्होंने जाकर क़ब्र को महफ़ूज़ कर
लिया। क़ब्र के मुँह पर पड़े पत्थर पर मुहर लगाकर
उन्होंने उस पर पहरेदार मुक़र्रर कर दिए।

ईसा जी उठता है

28 इतवार को सुबह-सवेरे ही मरि-
यम मग्दलीनी और दूसरी मरि-
यम क़ब्र को देखने के लिए निकलीं। सूरज तुलू हो
रहा था। 2 अचानक एक शदीद ज़लज़ला आया,
क्योंकि रब का एक फ़रिश्ता आसमान से उतर
आया और क़ब्र के पास जाकर उस पर पड़े पत्थर
को एक तरफ़ लुढ़का दिया। फिर वह उस पर बैठ
गया। 3 उस की शक्लो-सूरत बिजली की तरह
चमक रही थी और उसका लिबास बर्फ़ की मानिंद
सफ़ेद था। 4 पहरेदार इतने डर गए कि वह लरज़ते
लरज़ते मुरदा से हो गए।
5 फ़रिश्ते ने ख़वातीन से कहा, "मत डरो। मुझे
मालूम है कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मसलूब
हुआ था। 6 वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जिस
तरह उसने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को
ख़ुद देख लो जहाँ वह पड़ा था। 7 और अब जल्दी
से जाकर उसके शागिर्दों को बता दो कि वह
जी उठा है और तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच
जाएगा। वहीं तुम उसे देखोगे। अब मैंने तुमको
इससे आगाह किया है।"
8 ख़वातीन जल्दी से क़ब्र से चली गईं। वह
सहमी हुई लेकिन बड़ी ख़ुश थीं और दौड़ी दौड़ी
उसके शागिर्दों को यह ख़बर सुनाने गईं।
9 अचानक ईसा उनसे मिला। उसने कहा,
"सलाम।" वह उसके पास आईं, उसके पाँव
पकड़े और उसे सिजदा किया। 10 ईसा ने उनसे
कहा, "मत डरो। जाओ, मेरे भाइयों को बता

[a] सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

दो कि वह गलील को चले जाएँ। वहाँ वह मुझे देखेंगे।”

पहरेदारों की रिपोर्ट

11 ख़वातीन अभी रास्ते में थीं कि पहरेदारों में से कुछ शहर में गए और राहनुमा इमामों को सब कुछ बता दिया। 12 राहनुमा इमामों ने क़ौम के बुज़ुर्गों के साथ एक मीटिंग मुनअक़िद की और पहरेदारों को रिश्वत की बड़ी रक़म देने का फ़ैसला किया। 13 उन्होंने उन्हें बताया, “तुमको कहना है, ‘जब हम रात के वक़्त सो रहे थे तो उसके शागिर्द आए और उसे चुरा ले गए।’ 14 अगर यह ख़बर गवर्नर तक पहुँचे तो हम उसे समझा लेंगे। तुमको फ़िकर करने की ज़रूरत नहीं।”

15 चुनाँचे पहरेदारों ने रिश्वत लेकर वह कुछ किया जो उन्हें सिखाया गया था। उनकी यह कहानी यहूदियों के दरमियान बहुत फैलाई गई और आज तक उनमें रायज है।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

16 फिर ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ के पास पहुँचे जहाँ ईसा ने उन्हें जाने को कहा था। 17 वहाँ उसे देखकर उन्होंने उसे सिजदा किया। लेकिन कुछ शक में पड़ गए। 18 फिर ईसा ने उनके पास आकर कहा, “आसमान और ज़मीन का कुल इख़्तियार मुझे दे दिया गया है। 19 इसलिए जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। 20 और उन्हें यह सिखाओ कि वह उन तमाम अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें जो मैंने तुम्हें दिए हैं। और देखो, मैं दुनिया के इख़्तिताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।”

मरक़ुस की मारिफ़त इंजील

यहया बपतिस्मा देनेवाले की ख़िदमत

1 यह अल्लाह के फ़रज़ंद ईसा मसीह के बारे
में ख़ुशख़बरी है, 2 जो यसायाह नबी की
पेशगोई के मुताबिक़ यों शुरू हुई :

‘देख, मैं अपने पैग़ंबर को तेरे आगे आगे
भेज देता हूँ
जो तेरे लिए रास्ता तैयार करेगा।
3 रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,
रब की राह तैयार करो!
उसके रास्ते सीधे बनाओ।’

4 यह पैग़ंबर यहया बपतिस्मा देनेवाला था।
रेगिस्तान में रहकर उसने एलान किया कि लोग
तौबा करके बपतिस्मा लें ताकि उन्हें अपने गुनाहों
की मुआफ़ी मिल जाए। 5 यहूदिया के पूरे इलाक़े
के लोग यरूशलम के तमाम बाशिंदों समेत
निकलकर उसके पास आए। और अपने गुनाहों
को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में
यहया से बपतिस्मा लिया।

6 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और
कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था।
ख़ुराक के तौर पर वह टिड्डियाँ और जंगली शहद
खाता था। 7 उसने एलान किया, “मेरे बाद एक
आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं झुककर उसके
जूतों के तसमे खोलने के भी लायक़ नहीं। 8 मैं
तुमको पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन वह तुम्हें
रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।”

ईसा का बपतिस्मा और आज़माइश

9 उन दिनों में ईसा नासरत से आया और
यहया ने उसे दरियाए-यरदन में बपतिस्मा दिया।
10 पानी से निकलते ही ईसा ने देखा कि आसमान
फट रहा है और रूहुल-क़ुद्स कबूतर की तरह
मुझ पर उतर रहा है। 11 साथ साथ आसमान से
एक आवाज़ सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है,
तुझसे मैं ख़ुश हूँ।”

12 इसके फ़ौरन बाद रूहुल-क़ुद्स ने उसे
रेगिस्तान में भेज दिया। 13 वहाँ वह चालीस दिन
रहा जिसके दौरान इबलीस उस की आज़माइश
करता रहा। वह जंगली जानवरों के दरमियान
रहता और फ़रिश्ते उस की ख़िदमत करते थे।

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

14 जब यहया को जेल में डाल दिया गया तो
ईसा गलील के इलाक़े में आया और अल्लाह की
ख़ुशख़बरी का एलान करने लगा। 15 वह बोला,
“मुक़र्ररा वक़्त आ गया है, अल्लाह की बादशाही
क़रीब आ गई है। तौबा करो और अल्लाह की
ख़ुशख़बरी पर ईमान लाओ।”

16 एक दिन जब ईसा गलील की झील के
किनारे किनारे चल रहा था तो उसने शमाऊन
और उसके भाई अंदरियास को देखा। वह झील
में जाल डाल रहे थे क्योंकि वह माहीगीर थे।
17 उसने कहा, “आओ, मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको

आदमगीर बनाऊँगा।” 18 यह सुनते ही वह अपने
जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
19 थोड़ा-सा आगे जाकर ईसा ने ज़बदी के बेटों
याक़ूब और यूहन्ना को देखा। वह कश्ती में बैठे
अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। 20 उसने उन्हें
फ़ौरन बुलाया तो वह अपने बाप को मज़दूरों समेत
कश्ती में छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

आदमी की बदरूह के क़ब्ज़े से रिहाई

21 वह कफ़र्नहूम शहर में दाख़िल हुए। और
सबत के दिन ईसा इबादतख़ाने में जाकर लोगों
को सिखाने लगा। 22 वह उस की तालीम सुनकर
हक्का-बक्का रह गए क्योंकि वह उन्हें शरीअत के
आलिमों की तरह नहीं बल्कि इख़्तियार के साथ
सिखाता था।
23 उनके इबादतख़ाने में एक आदमी था जो
किसी नापाक रूह के क़ब्ज़े में था। ईसा को देखते
ही वह चीख़ चीख़कर बोलने लगा, 24 “ऐ नासरत
के ईसा, हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या
आप हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ
कि आप कौन हैं, आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।”
25 ईसा ने उसे डाँटकर कहा, “ख़ामोश!
आदमी से निकल जा!” 26 इस पर बदरूह
आदमी को झँझोड़कर और चीख़ें मार मारकर
उसमें से निकल गई।
27 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से
कहने लगे, “यह क्या है? एक नई तालीम जो
इख़्तियार के साथ दी जा रही है। और वह बदरूहों
को हुक्म देता है तो वह उस की मानती हैं।”
28 और ईसा के बारे में चर्चा जल्दी से गलील
के पूरे इलाक़े में फैल गया।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ा

29 इबादतख़ाने से निकलने के ऐन बाद वह
याक़ूब और यूहन्ना के साथ शमाऊन और
अंदरियास के घर गए। 30 वहाँ शमाऊन की सास
बिस्तर पर पड़ी थी, क्योंकि उसे बुख़ार था।
उन्होंने ईसा को बता दिया 31 तो वह उसके
नज़दीक गया। उसका हाथ पकड़कर उसने उठने
में उस की मदद की। इस पर बुख़ार उतर गया
और वह उनकी ख़िदमत करने लगी।
32 जब शाम हुई और सूरज ग़ुरूब हुआ तो लोग
तमाम मरीज़ों और बदरूह-गिरिफ़्ता अशख़ास को
ईसा के पास लाए। 33 पूरा शहर दरवाज़े पर
जमा हो गया 34 और ईसा ने बहुत-से मरीज़ों
को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियों से शफ़ा दी।
उसने बहुत-सी बदरूहें भी निकाल दीं, लेकिन
उसने उन्हें बोलने न दिया, क्योंकि वह जानती
थीं कि वह कौन है।

गलील में मुनादी

35 अगले दिन सुबह-सवेरे जब अभी अंधेरा ही
था तो ईसा उठकर दुआ करने के लिए किसी
वीरान जगह चला गया। 36 बाद में शमाऊन और
उसके साथी उसे ढूँडने निकले। 37 जब मालूम
हुआ कि वह कहाँ है तो उन्होंने उससे कहा,
“तमाम लोग आपको तलाश कर रहे हैं!”
38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “आओ, हम
साथवाली आबादियों में जाएँ ताकि मैं वहाँ भी
मुनादी करूँ। क्योंकि मैं इसी मक़सद से निकल
आया हूँ।”
39 चुनाँचे वह पूरे गलील में से गुज़रता हुआ
इबादतख़ानों में मुनादी करता और बदरूहों को
निकालता रहा।

कोढ़ से शफ़ा

40 एक आदमी ईसा के पास आया जो कोढ़ का
मरीज़ था। घुटनों के बल झुककर उसने मिन्नत
की, “अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर
सकते हैं।”
41 ईसा को तरस आया। उसने अपना हाथ
बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ,
पाक-साफ़ हो जा।” 42 इस पर बीमारी फ़ौरन दूर
हो गई और वह पाक-साफ़ हो गया। 43 ईसा ने
उसे फ़ौरन रुख़सत करके सख़्ती से समझाया,
44 “ख़बरदार! यह बात किसी को न बताना

बल्कि बैतुल-मुक़द्दस में इमाम के पास जा ताकि
वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह क़ुरबानी
ले जा जिसका तक़ाज़ा मूसा की शरीअत उनसे
करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा मिली हो। यों
अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-
साफ़ हो गया है।”

45 आदमी चला गया, लेकिन वह हर जगह
अपनी कहानी सुनाने लगा। उसने यह ख़बर इतनी
फैलाई कि ईसा खुले तौर पर किसी भी शहर में
दाख़िल न हो सका बल्कि उसे वीरान जगहों में
रहना पड़ा। लेकिन वहाँ भी लोग हर जगह से
उसके पास पहुँच गए।

मफ़लूज के लिए छत खोली जाती है

2 कुछ दिनों के बाद ईसा कफ़र्नहूम में वापस
आया। जल्द ही ख़बर फैल गई कि वह घर
में है। 2 इस पर इतने लोग जमा हो गए कि पूरा
घर भर गया बल्कि दरवाज़े के सामने भी जगह
न रही। वह उन्हें कलामे-मुक़द्दस सुनाने लगा।
3 इतने में कुछ लोग पहुँचे। उनमें से चार आदमी
एक मफ़लूज को उठाए ईसा के पास लाना चाहते
थे। 4 मगर वह उसे हुजूम की वजह से ईसा तक न
पहुँचा सके, इसलिए उन्होंने छत खोल दी। ईसा
के ऊपर का हिस्सा उधेड़कर उन्होंने चारपाई को
जिस पर मफ़लूज लेटा था उतार दिया। 5 जब
ईसा ने उनका ईमान देखा तो उसने मफ़लूज से
कहा, “बेटा, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।”

6 शरीअत के कुछ आलिम वहाँ बैठे थे। वह
यह सुनकर सोच-बिचार में पड़ गए। 7 “यह किस
तरह ऐसी बातें कर सकता है? कुफ़र बक रहा
है। सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता
है।”

8 ईसा ने अपनी रूह में फ़ौरन जान लिया
कि वह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे
पूछा, “तुम दिल में इस तरह की बातें क्यों
सोच रहे हो? 9 क्या मफ़लूज से यह कहना
आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए
हैं’ या यह कि ‘उठ, अपनी चारपाई उठाकर चल-
फिर’? 10 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-
आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने
का इख़्तियार है।” यह कहकर वह मफ़लूज से
मुख़ातिब हुआ, 11 “मैं तुझसे कहता हूँ कि उठ,
अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।”

12 वह आदमी खड़ा हुआ और फ़ौरन अपनी
चारपाई उठाकर उनके देखते देखते चला गया।
सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तमजीद
करके कहने लगे, “ऐसा काम हमने कभी नहीं
देखा!”

ईसा मत्ती को बुलाता है

13 फिर ईसा निकलकर दुबारा झील के किनारे
गया। एक बड़ी भीड़ उसके पास आई तो वह उन्हें
सिखाने लगा। 14 चलते चलते उसने हलफ़ई के
बेटे लावी को देखा जो टैक्स लेने के लिए अपनी
चौकी पर बैठा था। ईसा ने उससे कहा, “मेरे पीछे
हो ले।” और लावी उठकर उसके पीछे हो लिया।

15 बाद में ईसा लावी के घर में खाना खा रहा
था। उसके साथ न सिर्फ़ उसके शागिर्द बल्कि
बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार भी थे,
क्योंकि उनमें से बहुतेरे उसके पैरोकार बन चुके
थे। 16 शरीअत के कुछ फ़रीसी आलिमों ने उसे
यों टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ खाते
देखा तो उसके शागिर्दों से पूछा, “यह टैक्स
लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता
है?”

17 यह सुनकर ईसा ने जवाब दिया, “सेहतमंदों
को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों
को। मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को
बुलाने आया हूँ।”

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

18 यहया के शागिर्द और फ़रीसी रोज़ा रखा
करते थे। एक मौक़े पर कुछ लोग ईसा के पास
आए और पूछा, “आपके शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं
रखते जबकि यहया और फ़रीसियों के शागिर्द
रोज़ा रखते हैं?”

19 ईसा ने जवाब दिया, “शादी के मेहमान
किस तरह रोज़ा रख सकते हैं जब दूल्हा उनके
दरमियान है? जब तक दूल्हा उनके साथ है वह
रोज़ा नहीं रख सकते। 20 लेकिन एक दिन आएगा
जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह
ज़रूर रोज़ा रखेंगे।

21 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने
लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो
नया टुकड़ा बाद में सुकड़कर पुराने लिबास से
अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई
जगह पहले की निसबत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी।
22 इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी
और बे-लचक मशकों में नहीं डालता। अगर वह
ऐसा करे तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के
बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मशकें दोनों
ज़ाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर का ताज़ा रस
नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती
हैं।”

सबत के बारे में सवाल

23 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र
रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द खाने के लिए
अनाज की बालें तोड़ने लगे। सबत का दिन था।
24 यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, “देखो,
यह क्यों ऐसा कर रहे हैं? सबत के दिन ऐसा
करना मना है।”

25 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कभी नहीं
पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके
साथियों को भूक लगी और उनके पास ख़ुराक
नहीं थी? 26 उस वक़्त अबियातर इमामे-आज़म
था। दाऊद अल्लाह के घर में दाख़िल हुआ और
रब के लिए मख़सूसशुदा रोटियाँ लेकर खाईं,
अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त
है। और उसने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ
खिलाईं।”

27 फिर उसने कहा, “इनसान को सबत के दिन
के लिए नहीं बनाया गया बल्कि सबत का दिन
इनसान के लिए। 28 चुनाँचे इब्ने-आदम सबत का
भी मालिक है।”

सूखे हुए हाथ की शफ़ा

3 किसी और वक़्त जब ईसा इबा-
दतख़ाने में गया तो वहाँ एक आदमी था
जिसका हाथ सूखा हुआ था। 2 सबत का दिन था
और लोग बड़े ग़ौर से देख रहे थे कि क्या ईसा
उस आदमी को आज भी शफ़ा देगा। क्योंकि वह
इस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश
कर रहे थे। 3 ईसा ने सूखे हाथवाले आदमी से
कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।” 4 फिर ईसा
ने उनसे पूछा, “मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत
के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम
करने की या ग़लत काम करने की, किसी की
जान बचाने की या उसे तबाह करने की?”

सब ख़ामोश रहे। 5 वह ग़ुस्से से अपने इर्दगिर्द
के लोगों की तरफ़ देखने लगा। उनकी सख़्तदिली
उसके लिए बड़े दुख का बाइस बन रही थी। फिर
उसने आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।”
उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल हो गया।
6 इस पर फ़रीसी बाहर निकलकर सीधे हेरोदेस
की पार्टी के अफ़राद के साथ मिलकर ईसा को
क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।

झील के किनारे पर हुजूम

7 लेकिन ईसा वहाँ से हटकर अपने शागिर्दों के
साथ झील के पास गया। एक बड़ा हुजूम उसके
पीछे हो लिया। लोग न सिर्फ़ गलील के इलाक़े से
आए बल्कि बहुत-सी और जगहों यानी यहूदिया,
8 यरूशलम, इदूमया, दरियाए-यरदन के पार और
सूर और सैदा के इलाक़े से भी। वजह यह थी कि
ईसा के काम की ख़बर उन इलाक़ों तक भी पहुँच
चुकी थी और नतीजे में बहुत-से लोग वहाँ से भी
आए। 9 ईसा ने शागिर्दों से कहा, “एहतियातन
एक कश्ती उस वक़्त के लिए तैयार कर रखो
जब हुजूम मुझे हद से ज़्यादा दबाने लगेगा।”
10 क्योंकि उस दिन उसने बहुतों को शफ़ा दी थी,

इसलिए जिसे भी कोई तकलीफ़ थी वह धक्के
दे देकर उसके पास आया ताकि उसे छू सके।
11 और जब भी नापाक रूहों ने ईसा को देखा तो
वह उसके सामने गिरकर चीख़ें मारने लगीं, "आप
अल्लाह के फ़रज़ंद हैं।"

12 लेकिन ईसा ने उन्हें सख़्ती से डाँटकर कहा
कि वह उसे ज़ाहिर न करें।

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

13 इसके बाद ईसा ने पहाड़ पर चढ़कर जिन्हें
वह चाहता था उन्हें अपने पास बुला लिया। और
वह उसके पास आए। 14 उसने उनमें से बारह को
चुन लिया। उन्हें उसने अपने रसूल मुक़र्रर कर
लिया ताकि वह उसके साथ चलें और वह उन्हें
मुनादी करने के लिए भेज सके। 15 उसने उन्हें
बदरूहें निकालने का इख़्तियार भी दिया।

16 जिन बारह को उसने मुक़र्रर किया उनके
नाम यह हैं : शमाऊन जिसका लक़ब उसने
पतरस रखा, 17 ज़बदी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना
जिनका लक़ब ईसा ने 'बादल की गरज के बेटे'
रखा, 18 अंदरियास, फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई,
मत्ती, तोमा, याक़ूब बिन हलफ़ई, तद्दी, शमाऊन
मुजाहिद 19 और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद
में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

ईसा और बदरूहों का सरदार

20 फिर ईसा किसी घर में दाख़िल हुआ। इस
बार भी इतना हुजूम जमा हो गया कि ईसा को
अपने शागिर्दों समेत खाना खाने का मौक़ा भी न
मिला। 21 जब उसके ख़ानदान के अफ़राद ने यह
सुना तो वह उसे पकड़कर ले जाने के लिए आए,
क्योंकि उन्होंने कहा, "वह होश में नहीं है।"

22 लेकिन शरीअत के जो आलिम यरू-
शलम से आए थे उन्होंने कहा, "यह बदरूहों के
सरदार बाल-ज़बूल के क़ब्ज़े में है। उसी की मदद
से बदरूहों को निकाल रहा है।"

23 फिर ईसा ने उन्हें अपने पास बुलाकर
तमसीलों में जवाब दिया। "इबलीस किस तरह
इबलीस को निकाल सकता है? 24 जिस
बादशाही में फूट पड़ जाए वह क़ायम नहीं रह
सकती। 25 और जिस घराने की ऐसी हालत हो
वह भी क़ायम नहीं रह सकता। 26 इसी तरह अगर
इबलीस अपने आपकी मुख़ालफ़त करे और यों
उसमें फूट पड़ जाए तो वह क़ायम नहीं रह सकता
बल्कि ख़त्म हो चुका है।

27 किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुसकर
उसका मालो-असबाब लूटना उस वक़्त तक
मुमकिन नहीं है जब तक उस आदमी को बाँधा
न जाए। फिर ही उसे लूटा जा सकता है।

28 मैं तुमसे सच कहता हूँ कि लोगों के तमाम
गुनाह और कुफ़र की बातें मुआफ़ की जा सकेंगी,
ख़ाह वह कितना ही कुफ़र क्यों न बकें। 29 लेकिन
जो रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़र बके उसे अबद
तक मुआफ़ी नहीं मिलेगी। वह एक अबदी गुनाह
का क़ुसूरवार ठहरेगा।" 30 ईसा ने यह इसलिए
कहा क्योंकि आलिम कह रहे थे कि वह किसी
बदरूह की गिरिफ़्त में है।

ईसा की माँ और भाई

31 फिर ईसा की माँ और भाई पहुँच गए। बाहर
खड़े होकर उन्होंने किसी को उसे बुलाने को भेज
दिया। 32 उसके इर्दगिर्द हुजूम बैठा था। उन्होंने
कहा, "आपकी माँ और भाई बाहर आपको बुला
रहे हैं।"

33 ईसा ने पूछा, "कौन मेरी माँ और कौन मेरे
भाई हैं?" 34 और अपने गिर्द बैठे लोगों पर नज़र
डालकर उसने कहा, "देखो, यह मेरी माँ और मेरे
भाई हैं। 35 जो भी अल्लाह की मरज़ी पूरी करता
है वह मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।"

बीज बोनेवाले की तमसील

4 फिर ईसा दुबारा झील के किनारे तालीम
देने लगा। और इतनी बड़ी भीड़ उसके पास
जमा हुई कि वह झील में खड़ी एक कश्ती में बैठ
गया। बाक़ी लोग झील के किनारे पर खड़े रहे।

2 उसने उन्हें बहुत-सी बातें तमसीलों में सिखाईं।
उनमें से एक यह थी :
3 "सुनो! एक किसान बीज बोने के लिए
निकला। 4 जब बीज इधर-उधर बिखर गया तो
कुछ दाने रास्ते पर गिरे और परिंदों ने आकर
उन्हें चुग लिया। 5 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे
जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह जल्द उग आए
क्योंकि मिट्टी गहरी नहीं थी। 6 लेकिन जब सूरज
निकला तो पौदे झुलस गए और चूँकि वह जड़ न
पकड़ सके इसलिए सूख गए। 7 कुछ दाने ख़ुदरौ
काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने
तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर
उन्हें फलने-फूलने की जगह न दी। चुनाँचे वह भी
ख़त्म हो गए और फल न ला सके। 8 लेकिन ऐसे
दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे। वहाँ वह
फूट निकले और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना
बल्कि सौ गुना तक फल लाए।"
9 फिर उसने कहा, "जो सुन सकता है वह सुन
ले!"

तमसीलों का मक़सद

10 जब वह अकेला था तो जो लोग उसके
इर्दगिर्द जमा थे उन्होंने बारह शागिर्दों समेत उससे
पूछा कि इस तमसील का क्या मतलब है?
11 उसने जवाब दिया, "तुमको तो अल्लाह की
बादशाही का भेद समझने की लियाक़त दी गई
है। लेकिन मैं इस दायरे से बाहर के लोगों को हर
बात समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता
हूँ 12 ताकि पाक कलाम पूरा हो जाए कि

'वह अपनी आँखों से देखेंगे
मगर कुछ नहीं जानेंगे,
वह अपने कानों से सुनेंगे
मगर कुछ नहीं समझेंगे,
ऐसा न हो कि वह मेरी तरफ़ रुजू करें
और उन्हें मुआफ़ कर दिया जाए'।"

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

13 फिर ईसा ने उनसे कहा, "क्या तुम यह
तमसील नहीं समझते? तो फिर बाक़ी तमाम
तमसीलें किस तरह समझ पाओगे? 14 बीज
बोनेवाला अल्लाह का कलाम बो देता है। 15 रास्ते
पर गिरनेवाले दाने वह लोग हैं जो कलाम को
सुनते तो हैं, लेकिन फिर इबलीस फ़ौरन आकर
वह कलाम छीन लेता है जो उनमें बोया गया
है। 16 पथरीली ज़मीन पर गिरनेवाले दाने वह
लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे ख़ुशी से क़बूल
तो कर लेते हैं, 17 लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते
और इसलिए ज़्यादा देर तक क़ायम नहीं रहते।
ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस
किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ,
तो वह बरगश्ता हो जाते हैं। 18 ख़ुदरौ काँटेदार
पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो
कलाम सुनते तो हैं, 19 लेकिन फिर रोज़मर्रा की
परेशानियाँ, दौलत का फ़रेब और दीगर चीज़ों का
लालच कलाम को फलने-फूलने नहीं देते। नतीजे
में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। 20 इसके
मुक़ाबले में ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह
लोग हैं जो कलाम सुनकर उसे क़बूल करते और
बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना
तक फल लाते हैं।"

कोई चराग़ को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

21 ईसा ने बात जारी रखी और कहा, "क्या
चराग़ को इसलिए जलाकर लाया जाता है कि
वह किसी बरतन या चारपाई के नीचे रखा जाए?
हरगिज़ नहीं! उसे शमादान पर रखा जाता है।
22 क्योंकि जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उसे
आख़िरकार ज़ाहिर हो जाना है और तमाम भेदों
को एक दिन खुल जाना है। 23 अगर कोई सुन
सके तो सुन ले।"
24 उसने उनसे यह भी कहा, "इस पर ध्यान दो
कि तुम क्या सुनते हो। जिस हिसाब से तुम दूसरों
को देते हो उसी हिसाब से तुमको भी दिया जाएगा
बल्कि तुमको उससे बढ़कर मिलेगा। 25 क्योंकि

जिसे कुछ हासिल हुआ है उसे और भी दिया
जाएगा, जबकि जिसे कुछ हासिल नहीं हुआ
उससे वह थोड़ा-बहुत भी छीन लिया जाएगा जो
उसे हासिल है।"

ख़ुद बख़ुद उगनेवाले बीज की तमसील

26 फिर ईसा ने कहा, "अल्लाह की बादशाही
यों समझ लो : एक किसान ज़मीन में बीज बिखेर
देता है। 27 यह बीज फूटकर दिन-रात उगता रहता
है, ख़ाह किसान सो रहा या जाग रहा हो। उसे
मालूम नहीं कि यह क्योंकर होता है। 28 ज़मीन
ख़ुद बख़ुद अनाज की फ़सल पैदा करती है। पहले
पत्ते निकलते हैं, फिर बालें नज़र आने लगती हैं
और आख़िर में दाने पैदा हो जाते हैं। 29 और
ज्योंही अनाज की फ़सल पक जाती है किसान
आकर दराँती से उसे काट लेता है, क्योंकि फ़सल
की कटाई का वक़्त आ चुका होता है।"

राई के दाने की तमसील

30 फिर ईसा ने कहा, "हम अल्लाह की
बादशाही का मुवाज़ना किस चीज़ से करें? या
हम कौन-सी तमसील से इसे बयान करें? 31 वह
राई के दाने की मानिंद है जो ज़मीन में डाला गया
हो। राई बीजों में सबसे छोटा दाना है 32 लेकिन
बढ़ते बढ़ते सब्ज़ियों में सबसे बड़ा हो जाता है।
उस की शाख़ें इतनी लंबी हो जाती हैं कि परिंदे
उसके साये में अपने घोंसले बना सकते हैं।"

33 ईसा इसी क़िस्म की बहुत-सी तमसीलों की
मदद से उन्हें कलाम यों सुनाता था कि वह इसे
समझ सकते थे। 34 हाँ, अवाम को वह सिर्फ़
तमसीलों के ज़रीए सिखाता था। लेकिन जब वह
अपने शागिर्दों के साथ अकेला होता तो वह हर
बात की तशरीह करता था।

ईसा आँधी को थमा देता है

35 उस दिन जब शाम हुई तो ईसा ने अपने
शागिर्दों से कहा, "आओ, हम झील के पार
चलें।" 36 चुनाँचे वह भीड़ को रुख़सत करके उसे
लेकर चल पड़े। बाज़ और कश्तियाँ भी साथ गईं।
37 अचानक सख़्त आँधी आई। लहरें कश्ती से
टकराकर उसे पानी से भरने लगीं, 38 लेकिन ईसा
अभी तक कश्ती के पिछले हिस्से में अपना सर
गद्दी पर रखे सो रहा था। शागिर्दों ने उसे जगाकर
कहा, "उस्ताद, क्या आपको परवा नहीं कि हम
तबाह हो रहे हैं?"

39 वह जाग उठा, आँधी को डाँटा और झील से
कहा, "ख़ामोश! चुप कर!" इस पर आँधी थम
गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 40 फिर
ईसा ने शागिर्दों से पूछा, "तुम क्यों घबराते हो?
क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?"

41 उन पर सख़्त ख़ौफ़ तारी हो गया और वह
एक दूसरे से कहने लगे, "आख़िर यह कौन है?
हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।"

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

5 फिर वह झील के पार गरासा के इलाक़े में
पहुँचे। 2 जब ईसा कश्ती से उतरा तो एक
आदमी जो नापाक रूह की गिरिफ़्त में था क़ब्रों में
से निकलकर ईसा को मिला। 3 यह आदमी क़ब्रों
में रहता और इस नौबत तक पहुँच गया था कि
कोई भी उसे बाँध न सकता था, चाहे उसे ज़ंजीरों
से भी बाँधा जाता। 4 उसे बहुत दफ़ा बेड़ियों और
ज़ंजीरों से बाँधा गया था, लेकिन जब भी ऐसा
हुआ तो उसने ज़ंजीरों को तोड़कर बेड़ियों को
टुकड़े टुकड़े कर दिया था। कोई भी उसे कंट्रोल
नहीं कर सकता था। 5 दिन-रात वह चीख़ें मार
मारकर क़ब्रों और पहाड़ी इलाक़े में घुमता-फिरता
और अपने आपको पत्थरों से ज़ख़मी कर लेता
था।

6 ईसा को दूर से देखकर वह दौड़ा और उसके
सामने मुँह के बल गिरा। 7 वह ज़ोर से चीख़ा,
"ऐ ईसा अल्लाह तआला के फ़रज़ंद, मेरा आपके
साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के नाम में आपको
क़सम देता हूँ कि मुझे अज़ाब में न डालें।"

8 क्योंकि ईसा ने उसे कहा था, “ऐ नापाक रूह,
आदमी में से निकल जा!”
9 फिर ईसा ने पूछा, “तेरा नाम क्या है?”
उसने जवाब दिया, “लशकर, क्योंकि हम
बहुत-से हैं।” 10 और वह बार बार मिन्नत करता
रहा कि ईसा उन्हें इस इलाक़े से न निकाले।
11 उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सुअरों का
बड़ा ग़ोल चर रहा था। 12 बदरूहों ने ईसा से
इलतमास की, “हमें सुअरों में भेज दें, हमें उनमें
दाख़िल होने दें।” 13 उसने उन्हें इजाज़त दी तो
बदरूहें उस आदमी में से निकलकर सुअरों में
जा घुसीं। इस पर पूरे ग़ोल के तक़रीबन 2,000
सुअर भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे
और झील में झपटकर डूब मरे।
14 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए।
उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा किया
तो लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ
है अपनी जगहों से निकलकर ईसा के पास आए।
15 उसके पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिसमें
पहले बदरूहों का लशकर था। अब वह कपड़े
पहने वहाँ बैठा था और उस की ज़हनी हालत
ठीक थी। यह देखकर वह डर गए। 16 जिन्होंने
सब कुछ देखा था उन्होंने लोगों को बताया कि
बदरूह-गिरिफ़्ता आदमी और सुअरों के साथ क्या
हुआ है।
17 फिर लोग ईसा की मिन्नत करने लगे कि
वह उनके इलाक़े से चला जाए।
18 ईसा कश्ती पर सवार होने लगा तो बदरूहों
से आज़ाद किए गए आदमी ने उससे इलतमास
की, “मुझे भी अपने साथ जाने दें।”
19 लेकिन ईसा ने उसे साथ जाने न दिया बल्कि
कहा, “अपने घर वापस चला जा और अपने
अज़ीज़ों को सब कुछ बता जो रब ने तेरे लिए
किया है, कि उसने तुझ पर कितना रहम किया
है।”
20 चुनाँचे आदमी चला गया और दिक-
पुलिस के इलाक़े में लोगों को बताने लगा कि
ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया है। और सब
हैरतज़दा हुए।

याईर की बेटी और बीमार औरत

21 ईसा ने कश्ती में बैठे झील को दुबारा पार
किया। जब दूसरे किनारे पहुँचा तो एक हुजूम
उसके गिर्द जमा हो गया। वह अभी झील के
पास ही था 22 कि मक़ामी इबादतख़ाने का एक
राहनुमा उसके पास आया। उसका नाम याईर
था। ईसा को देखकर वह उसके पाँवों में गिर गया
23 और बहुत मिन्नत करने लगा, “मेरी छोटी बेटी
मरनेवाली है, बराहे-करम आकर उस पर अपने
हाथ रखें ताकि वह शफ़ा पाकर ज़िंदा रहे।”
24 चुनाँचे ईसा उसके साथ चल पड़ा। एक बड़ी
भीड़ उसके पीछे लग गई और लोग उसे घेरकर
हर तरफ़ से दबाने लगे।
25 हुजूम में एक औरत थी जो बारह साल से
ख़ून बहने के मरज़ से रिहाई न पा सकी थी।
26 बहुत डाक्टरों से अपना इलाज करवा करवा
कर उसे कई तरह की मुसीबत झेलनी पड़ी थी
और इतने में उसके तमाम पैसे भी ख़र्च हो गए
थे। तो भी कोई फ़ायदा न हुआ था बल्कि उस की
हालत मज़ीद ख़राब होती गई। 27 ईसा के बारे
में सुनकर वह भीड़ में शामिल हो गई थी। अब
पीछे से आकर उसने उसके लिबास को छुआ,
28 क्योंकि उसने सोचा, “अगर मैं सिर्फ़ उसके
लिबास को ही छू लूँ तो मैं शफ़ा पा लूँगी।”
29 ख़ून बहना फ़ौरन बंद हो गया और उसने
अपने जिस्म में महसूस किया कि मुझे इस
अज़ियतनाक हालत से रिहाई मिल गई है।
30 लेकिन उसी लमहे ईसा को ख़ुद महसूस हुआ
कि मुझमें से तवानाई निकली है। उसने मुड़कर
पूछा, “किसने मेरे कपड़ों को छुआ है?”
31 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “आप ख़ुद
देख रहे हैं कि हुजूम आपको घेरकर दबा रहा है।
तो फिर आप किस तरह पूछ सकते हैं कि किसने
मुझे छुआ?”

32 लेकिन ईसा अपने चारों तरफ़ देखता रहा
कि किसने यह किया है। 33 इस पर वह औरत यह
जानकर कि मेरे साथ क्या हुआ है ख़ौफ़ के मारे
लरज़ती हुई उसके पास आई। वह उसके सामने
गिर पड़ी और उसे पूरी हक़ीक़त खोलकर बयान
की। 34 ईसा ने उससे कहा, "बेटी, तेरे ईमान ने
तुझे बचा लिया है। सलामती से जा और अपनी
अज़ियतनाक हालत से बची रह।"

35 ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी कि
इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर की तरफ़ से
कुछ लोग पहुँचे और कहा, "आपकी बेटी फ़ौत
हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ़ देने
की क्या ज़रूरत?"

36 उनकी यह बात नज़रंदाज़ करके ईसा ने
याईर से कहा, "मत घबराओ, फ़क़त ईमान
रखो।" 37 फिर ईसा ने हुजूम को रोक लिया और
सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और उसके भाई यूहन्ना
को अपने साथ जाने की इजाज़त दी। 38 जब
इबादतख़ाने के राहनुमा के घर पहुँचे तो वहाँ बड़ी
अफ़रा-तफ़री नज़र आई। लोग ख़ूब गिर्याओ-
ज़ारी कर रहे थे। 39 अंदर जाकर ईसा ने उनसे
कहा, "यह कैसा शोर-शराबा है? क्यों रो रहे
हो? लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही है।"

40 लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे।
लेकिन उसने सबको बाहर निकाल दिया। फिर
सिर्फ़ लड़की के वालिदैन और अपने तीन शागिर्दों
को साथ लेकर वह उस कमरे में दाख़िल हुआ
जिसमें लड़की पड़ी थी। 41 उसने उसका हाथ
पकड़कर कहा, "तलिथा क़ूम!" इसका मतलब
है, "छोटी लड़की, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि जाग
उठ!"

42 लड़की फ़ौरन उठकर चलने-फिरने लगी।
उस की उम्र बारह साल थी। यह देखकर लोग
घबराकर हैरान रह गए। 43 ईसा ने उन्हें संजीदगी
से समझाया कि वह किसी को भी इसके बारे में
न बताएँ। फिर उसने उन्हें कहा कि उसे खाने को
कुछ दो।

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

6 फिर ईसा वहाँ से चला गया और अपने
वतनी शहर नासरत में आया। उसके
शागिर्द उसके साथ थे। 2 सबत के दिन वह
इबादतख़ाने में तालीम देने लगा। बेशतर लोग उस
की बातें सुनकर हैरतज़दा हुए। उन्होंने पूछा, "इसे
यह कहाँ से हासिल हुआ है? यह हिकमत जो
इसे मिली है, और यह मोजिज़े जो इसके हाथों
से होते हैं, यह क्या है? 3 क्या यह वह बढ़ई
नहीं है जो मरियम का बेटा है और जिसके भाई
याक़ूब, यूसुफ़, यहूदाह और शमाऊन हैं? और
क्या इसकी बहनें यहीं नहीं रहतीं?" यों उन्होंने
उससे ठोकर खाकर उसे क़बूल न किया।

4 ईसा ने उनसे कहा, "नबी की हर जगह
इज़्ज़त होती है सिवाए उसके वतनी शहर, उसके
रिश्तेदारों और उसके अपने ख़ानदान के।"

5 वहाँ वह कोई मोजिज़ा न कर सका। उसने
सिर्फ़ चंद एक मरीज़ों पर हाथ रखकर उनको
शफ़ा दी। 6 और वह उनकी बेएतक़ादी के सबब
से बहुत हैरान था।

ईसा बारह शागिर्दों को तबलीग़ करने भेजता है

इसके बाद ईसा ने इर्दगिर्द के इलाक़े में गाँव
गाँव जाकर लोगों को तालीम दी। 7 बारह शागिर्दों
को बुलाकर वह उन्हें दो दो करके मुख़्तलिफ़
जगहों पर भेजने लगा। इसके लिए उसने उन्हें
नापाक रूहों को निकालने का इख़्तियार देकर
8 यह हिदायत की, "सफ़र पर अपने साथ कुछ
न लेना सिवाए एक लाठी के। न रोटी, न सामान
के लिए कोई बैग, न कमरबंद में कोई पैसा, 9 न
एक से ज़्यादा सूट। तुम जूते पहन सकते हो।
10 जिस घर में भी दाख़िल हो उसमें उस मक़ाम से
चले जाने तक ठहरो। 11 और अगर कोई मक़ाम
तुमको क़बूल न करे या तुम्हारी न सुने तो फिर
रवाना होते वक़्त अपने पाँवों से गर्द झाड़ दो। यों
तुम उनके ख़िलाफ़ गवाही दोगे।"

12 चुनाँचे शागिर्द वहाँ से निकलकर मुनादी
करने लगे कि लोग तौबा करें। 13 उन्होंने बहुत-
सी बदरूहें निकाल दीं और बहुत-से मरीज़ों पर
ज़ैतून का तेल मलकर उन्हें शफ़ा दी।

यहया बपतिस्मा देनेवाले का क़त्ल

14 बादशाह हेरोदेस अंतिपास ने ईसा के बारे
में सुना, क्योंकि उसका नाम मशहूर हो गया
था। कुछ कह रहे थे, "यहया बपतिस्मा देनेवाला
मुरदों में से जी उठा है, इसलिए इस क़िस्म की
मोजिज़ाना ताक़तें उसमें नज़र आती हैं।"

औरों ने सोचा, "यह इलियास नबी है।"

15 यह ख़याल भी पेश किया जा रहा था कि
वह क़दीम ज़माने के नबियों जैसा कोई नबी है।

16 लेकिन जब हेरोदेस ने उसके बारे में सुना
तो उसने कहा, "यहया जिसका मैंने सर क़लम
करवाया है मुरदों में से जी उठा है।" 17 वजह
यह थी कि हेरोदेस के हुक्म पर ही यहया को
गिरिफ़्तार करके जेल में डाला गया था। यह
हेरोदियास की ख़ातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस
के भाई फ़िलिप्पुस की बीवी थी, लेकिन जिससे
उसने अब ख़ुद शादी कर ली थी। 18 यहया ने
हेरोदेस को बताया था, "अपने भाई की बीवी से
तेरी शादी नाजायज़ है।"

19 इस वजह से हेरोदियास उससे कीना रखती
और उसे क़त्ल कराना चाहती थी। लेकिन इसमें
वह नाकाम रही 20 क्योंकि हेरोदेस यहया से डरता
था। वह जानता था कि यह आदमी रास्तबाज़
और मुक़द्दस है, इसलिए वह उस की हिफ़ाज़त
करता था। जब भी उससे बात होती तो हेरोदेस
सुन सुनकर बड़ी उलझन में पड़ जाता। तो भी वह
उस की बातें सुनना पसंद करता था।

21 आख़िरकार हेरोदियास को हेरोदेस की
सालगिरह पर अच्छा मौक़ा मिल गया। सालगिरह
को मनाने के लिए हेरोदेस ने अपने बड़े सरकारी
अफ़सरों, मिल्ट्री कमाँडरों और गलील के अव्वल
दर्जे के शहरियों की ज़ियाफ़त की। 22 ज़ियाफ़त
के दौरान हेरोदियास की बेटी अंदर आकर नाचने
लगी। हेरोदेस और उसके मेहमानों को यह बहुत
पसंद आया और उसने लड़की से कहा, "जो जी
चाहे मुझसे माँग तो मैं वह तुझे दूँगा।" 23 बल्कि
उसने क़सम खाकर कहा, "जो भी तू माँगेगी मैं
तुझे दूँगा, ख़ाह बादशाही का आधा हिस्सा ही क्यों
न हो।"

24 लड़की ने निकलकर अपनी माँ से पूछा, "मैं
क्या माँगूँ?"

माँ ने जवाब दिया, "यहया बपतिस्मा देनेवाले
का सर।"

25 लड़की फुरती से अंदर जाकर बादशाह के
पास वापस आई और कहा, "मैं चाहती हूँ कि
आप मुझे अभी अभी यहया बपतिस्मा देनेवाले
का सर ट्रे में मँगवा दें।"

26 यह सुनकर बादशाह को बहुत दुख हुआ।
लेकिन अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी
की वजह से वह इनकार करने के लिए भी तैयार
नहीं था। 27 चुनाँचे उसने फ़ौरन जल्लाद को
भेजकर हुक्म दिया कि वह यहया का सर ले
आए। जल्लाद ने जेल में जाकर यहया का सर
क़लम कर दिया। 28 फिर वह उसे ट्रे में रखकर
ले आया और लड़की को दे दिया। लड़की ने
उसे अपनी माँ के सुपुर्द किया। 29 जब यहया के
शागिर्दों को यह ख़बर पहुँची तो वह आए और उस
की लाश लेकर उसे क़ब्र में रख दिया।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

30 रसूल वापस आकर ईसा के पास जमा हुए
और उसे सब कुछ सुनाने लगे जो उन्होंने किया
और सिखाया था। 31 इस दौरान इतने लोग आ
और जा रहे थे कि उन्हें खाना खाने का मौक़ा
भी न मिला। इसलिए ईसा ने बारह शागिर्दों
से कहा, "आओ, हम लोगों से अलग होकर
किसी ग़ैरआबाद जगह जाएँ और आराम करें।"
32 चुनाँचे वह कश्ती पर सवार होकर किसी वीरान
जगह चले गए।

33 लेकिन बहुत-से लोगों ने उन्हें जाते वक़्त
पहचान लिया। वह पैदल चलकर तमाम शहरों

से निकल आए और दौड़ दौड़कर उनसे पहले
मनज़िले-मक़सूद तक पहुँच गए। **34** जब ईसा ने
कश्ती पर से उतरकर बड़े हुजूम को देखा तो उसे
लोगों पर तरस आया, क्योंकि वह उन भेड़ों की
मानिंद थे जिनका कोई चरवाहा न हो। वहीं वह
उन्हें बहुत-सी बातें सिखाने लगा।

35 जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके
पास आए और कहा, “यह जगह वीरान है और
दिन ढलने लगा है। **36** इनको रुख़सत कर दें ताकि
यह इर्दगिर्द की बस्तियों और देहातों में जाकर
खाने के लिए कुछ ख़रीद लें।”

37 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, “तुम ख़ुद इन्हें
कुछ खाने को दो।”

उन्होंने पूछा, “हम इसके लिए दरकार चाँदी के
200 सिक्के कहाँ से लेकर रोटी ख़रीदने जाएँ
और इन्हें खिलाएँ?”

38 उसने कहा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ
हैं? जाकर पता करो!”

उन्होंने मालूम किया। फिर दुबारा उसके पास
आकर कहने लगे, “हमारे पास पाँच रोटियाँ और
दो मछलियाँ हैं।”

39 इस पर ईसा ने उन्हें हिदायत दी, “तमाम
लोगों को गुरोहों में हरी घास पर बिठा दो।”
40 चुनाँचे लोग सौ सौ और पचास पचास की
सूरत में बैठ गए। **41** फिर ईसा ने उन पाँच रोटियों
और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ़
देखा और शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसने
रोटियों को तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया ताकि
वह लोगों में तक़सीम करें। उसने दो मछलियों
को भी टुकड़े टुकड़े करके शागिर्दों के ज़रीए उनमें
तक़सीम करवाया। **42** और सबने जी भरकर
खाया। **43** जब शागिर्दों ने रोटियों और मछलियों
के बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे भर
गए। **44** खानेवाले मर्दों की कुल तादाद 5,000
थी।

ईसा पानी पर चलता है

45 इसके ऐन बाद ईसा ने अपने शागिर्दों को
मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे
निकलें और झील के पार के शहर बैत-सैदा जाएँ।
इतने में वह हुजूम को रुख़सत करना चाहता था।
46 उन्हें ख़ैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने
के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। **47** शाम के वक़्त
शागिर्दों की कश्ती झील के बीच तक पहुँच गई थी
जबकि ईसा ख़ुद ख़ुश्की पर अकेला रह गया था।
48 वहाँ से उसने देखा कि शागिर्द कश्ती को खेने
में बड़ी जिद्दो-जहद कर रहे हैं, क्योंकि हवा उनके
ख़िलाफ़ चल रही थी। तक़रीबन तीन बजे रात के
वक़्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास आया।
वह उनसे आगे निकलना चाहता था, **49** लेकिन
जब उन्होंने उसे झील की सतह पर चलते हुए
देखा तो सोचने लगे, “यह कोई भूत है” और
चीख़ें मारने लगे। **50** क्योंकि सबने उसे देखकर
दहशत खाई।

लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुख़ातिब होकर
बोला, “हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।”
51 फिर वह उनके पास आया और कश्ती में बैठ
गया। उसी वक़्त हवा थम गई। शागिर्द निहायत
ही हैरतज़दा हुए। **52** क्योंकि जब रोटियों का
मोजिज़ा किया गया था तो वह इसका मतलब
नहीं समझे थे बल्कि उनके दिल बेहिस हो गए
थे।

गन्नेसरत में मरीज़ों की शफ़ा

53 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के
पास पहुँच गए और लंगर डाल दिया। **54** ज्योंही
वह कश्ती से उतरे लोगों ने ईसा को पहचान
लिया। **55** वह भाग भागकर उस पूरे इलाक़े में से
गुज़रे और मरीज़ों को चारपाइयों पर उठा उठाकर
वहाँ ले आए जहाँ कहीं उन्हें ख़बर मिली कि वह
ठहरा हुआ है। **56** जहाँ भी वह गया चाहे गाँव,
शहर या बस्ती में, वहाँ लोगों ने बीमारों को चौकों
में रखकर उससे मिन्नत की कि वह कम अज़

कम उन्हें अपने लिबास के दामन को छूने दे। और
जिसने भी उसे छुआ उसे शफ़ा मिली।

बापदादा की तालीम

7 एक दिन फ़रीसी और शरीअत के कुछ
आलिम यरूशलम से ईसा से मिलने आए।
2 जब वह वहाँ थे तो उन्होंने देखा कि उसके कुछ
शागिर्द अपने हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर यानी
धोए बग़ैर खाना खा रहे हैं।

3 (क्योंकि यहूदी और ख़ासकर फ़रीसी फ़िरक़े
के लोग इस मामले में अपने बापदादा की रिवायत
को मानते हैं। वह अपने हाथ अच्छी तरह धोए
बग़ैर खाना नहीं खाते। 4 इसी तरह जब वह कभी
बाज़ार से आते हैं तो वह ग़ुस्ल करके ही खाना
खाते हैं। वह बहुत-सी और रिवायतों पर भी अमल
करते हैं, मसलन कप, जग और केतली को धोकर
पाक-साफ़ करने की रस्म पर।)

5 चुनाँचे फ़रीसियों और शरीअत के आलि-
मों ने ईसा से पूछा, "आपके शागिर्द बापदादा की
रिवायतों के मुताबिक़ ज़िंदगी क्यों नहीं गुज़ारते
बल्कि रोटी भी हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर खाते
हैं?"

6 ईसा ने जवाब दिया, "यसायाह नबी ने तुम
रियाकारों के बारे में ठीक कहा जब उसने यह
नबुव्वत की,

'यह क़ौम अपने होंटों से तो मेरा एहतराम
करती है

लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।

7 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन
बेफ़ायदा।

क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के अहकाम
सिखाते हैं।'

8 तुम अल्लाह के अहकाम को छोड़कर
इनसानी रिवायात की पैरवी करते हो।"

9 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, "तुम कितने
सलीक़े से अल्लाह का हुक्म मनसूख़ करते हो
ताकि अपनी रिवायात को क़ायम रख सको।
10 मसलन मूसा ने फ़रमाया, 'अपने बाप और
अपनी माँ की इज़्ज़त करना' और 'जो अपने बाप
या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।'
11 लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे, 'मैं
आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने मन्नत
मानी है कि जो मुझे आपको देना था वह अल्लाह
के लिए क़ुरबानी है' तो तुम इसे जायज़ क़रार देते
हो। 12 यों तुम उसे अपने माँ-बाप की मदद करने
से रोक लेते हो। 13 और इसी तरह तुम अल्लाह
के कलाम को अपनी उस रिवायत से मनसूख़
कर लेते हो जो तुमने नसल-दर-नसल मुंतक़िल
की है। तुम इस क़िस्म की बहुत-सी हरकतें करते
हो।"

क्या कुछ इनसान को नापाक कर देता है?

14 फिर ईसा ने दुबारा हुजूम को अपने पास
बुलाया और कहा, "सब मेरी बात सुनो और
इसे समझने की कोशिश करो। 15 कोई ऐसी
चीज़ है नहीं जो इनसान में दाख़िल होकर उसे
नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के अंदर
से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है।"
16 [अगर कोई सुन सकता है तो वह सुन ले।]

17 फिर वह हुजूम को छोड़कर किसी घर में
दाख़िल हुआ। वहाँ उसके शागिर्दों ने पूछा, "इस
तमसील का क्या मतलब है?"

18 उसने कहा, "क्या तुम भी इतने नासमझ
हो? क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ बाहर से
इनसान में दाख़िल होता है वह उसे नापाक नहीं
कर सकता? 19 वह तो उसके दिल में नहीं जाता
बल्कि उसके मेदे में और वहाँ से निकलकर जाए-
ज़रूरत में।" (यह कहकर ईसा ने हर क़िस्म का
खाना पाक-साफ़ क़रार दिया।)

20 उसने यह भी कहा, "जो कुछ इनसान
के अंदर से निकलता है वही उसे नापाक
करता है। 21 क्योंकि लोगों के अंदर से,
उनके दिलों ही से बुरे ख़यालात, हरामकारी,
चोरी, क़त्लो-ग़ारत, 22 ज़िनाकारी, लालच,
बदकारी, धोका, शहवतपरस्ती, हसद, बुह-
तान, ग़ुरूर और हमाक़त निकलते हैं। 23 यह

तमाम बुराइयाँ अंदर ही से निकलकर इनसान को
नापाक कर देती हैं।”

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

24 फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल
में सूर के इलाक़े में आया। वहाँ वह किसी घर
में दाख़िल हुआ। वह नहीं चाहता था कि किसी
को पता चले, लेकिन वह पोशीदा न रह सका।
25 फ़ौरन एक औरत उसके पास आई जिसने
उसके बारे में सुन रखा था। वह उसके पाँवों में
गिर गई। उस की छोटी बेटी किसी नापाक रूह के
क़ब्ज़े में थी, 26 और उसने ईसा से गुज़ारिश की,
“बदरूह को मेरी बेटी में से निकाल दें।” लेकिन
वह औरत यूनानी थी और सूरुफ़ेनीके के इलाक़े
में पैदा हुई थी, 27 इसलिए ईसा ने उसे बताया,
“पहले बच्चों को जी भरकर खाने दे, क्योंकि यह
मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के
सामने फेंक दिया जाए।”

28 उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, लेकिन
मेज़ के नीचे के कुत्ते भी बच्चों के गिरे हुए टुकड़े
खाते हैं।”

29 ईसा ने कहा, “तूने अच्छा जवाब दिया,
इसलिए जा, बदरूह तेरी बेटी में से निकल गई
है।”

30 औरत अपने घर वापस चली गई तो देखा
कि लड़की बिस्तर पर पड़ी है और बदरूह उसमें
से निकल चुकी है।

गूँगे-बहरे की शफ़ा

31 जब ईसा सूर से रवाना हुआ तो वह पहले
शिमाल में वाक़े शहर सैदा को चला गया। फिर
वहाँ से भी फ़ारिग़ होकर वह दुबारा गलील की
झील के किनारे वाक़े दिकपुलिस के इलाक़े
में पहुँच गया। 32 वहाँ उसके पास एक बहरा
आदमी लाया गया जो मुश्किल ही से बोल सकता
था। उन्होंने मिन्नत की कि वह अपना हाथ उस
पर रखे। 33 ईसा उसे हुजूम से दूर ले गया।
उसने अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डालीं और
थूककर आदमी की ज़बान को छुआ। 34 फिर
आसमान की तरफ़ नज़र उठाकर उसने आह भरी
और उससे कहा, “इफ़्फ़तह!” (इसका मतलब
है “खुल जा!”)

35 फ़ौरन आदमी के कान खुल गए, ज़बान का
बंधन टूट गया और वह ठीक ठीक बोलने लगा।
36 ईसा ने हाज़िरीन को हुक्म दिया कि वह किसी
को यह बात न बताएँ। लेकिन जितना वह मना
करता था उतना ही लोग इसकी ख़बर फैलाते
थे। 37 वह निहायत ही हैरान हुए और कहने लगे,
“इसने सब कुछ अच्छा किया है, यह बहरों को
सुनने की ताक़त देता है और गूँगों को बोलने
की।”

ईसा 4000 अफ़राद को खाना खिलाता है

8 उन दिनों में एक और मरतबा ऐसा हुआ
कि बहुत-से लोग जमा हुए जिनके पास
खाने का बंदोबस्त नहीं था। चुनाँचे ईसा ने अपने
शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा, 2 “मुझे इन
लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन
दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई
चीज़ नहीं है। 3 लेकिन अगर मैं इन्हें रुख़सत कर
दूँ और वह इस भूकी हालत में अपने अपने घर
चले जाएँ तो वह रास्ते में थककर चूर हो जाएंगे।
और इनमें से कई दूर-दराज़ से आए हैं।”

4 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान
इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि
यह खाकर सेर हो जाएँ?”

5 ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ
हैं?”

उन्होंने जवाब दिया, “सात।”

6 ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा।
फिर सात रोटियों को लेकर उसने शुक्रगुज़ारी की
दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों
को तक़सीम करने के लिए दे दिया। 7 उनके पास
दो-चार छोटी मछलियाँ भी थीं। ईसा ने उन पर
भी शुक्रगुज़ारी की दुआ की और शागिर्दों को उन्हें
बाँटने को कहा। 8 लोगों ने जी भरकर खाया। बाद

में जब खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए
तो सात बड़े टोकरे भर गए। 9 तक़रीबन 4,000
आदमी हाज़िर थे। खाने के बाद ईसा ने उन्हें
रुख़सत कर दिया 10 और फ़ौरन कश्ती पर सवार
होकर अपने शागिर्दों के साथ दल्मनूता के इलाक़े
में पहुँच गया।

फ़रीसी इलाही निशान तलब करते हैं

11 इस पर फ़रीसी निकलकर ईसा के पास
आए और उससे बहस करने लगे। उसे आज़माने
के लिए उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें
आसमान की तरफ़ से कोई इलाही निशान
दिखाए ताकि उसका इख़्तियार साबित हो जाए।
12 लेकिन उसने ठंडी आह भरकर कहा, "यह
नसल क्यों इलाही निशान का मुतालबा करती
है? मैं तुमको सच बताता हूँ कि इसे कोई निशान
नहीं दिया जाएगा।"

13 और उन्हें छोड़कर वह दुबारा कश्ती में बैठ
गया और झील को पार करने लगा।

फ़रीसियों और हेरोदेस का ख़मीर

14 लेकिन शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल
गए थे। कश्ती में उनके पास सिर्फ़ एक रोटी
थी। 15 ईसा ने उन्हें हिदायत की, "ख़बरदार,
फ़रीसियों और हेरोदेस के ख़मीर से होशियार
रहना।"

16 शागिर्द आपस में बहस करने लगे, "वह
इसलिए कह रहे होंगे कि हमारे पास रोटी नहीं
है।"

17 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे
हैं। उसने कहा, "तुम आपस में क्यों बहस कर
रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम
अब तक न जानते, न समझते हो? क्या तुम्हारे
दिल इतने बेहिस हो गए हैं? 18 तुम्हारी आँखें तो
हैं, क्या तुम देख नहीं सकते? तुम्हारे कान तो
हैं, क्या तुम सुन नहीं सकते? और क्या तुम्हें
याद नहीं 19 जब मैंने 5,000 आदमियों को पाँच
रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों
के कितने टोकरे उठाए थे?"

उन्होंने जवाब दिया, "बारह"।

20 "और जब मैंने 4,000 आदमियों को सात
रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों
के कितने टोकरे उठाए थे?"

उन्होंने जवाब दिया, "सात।"

21 उसने पूछा, "क्या तुम अभी तक नहीं
समझते?"

बैत-सैदा में अंधे की शफ़ा

22 वह बैत-सैदा पहुँचे तो लोग ईसा के पास
एक अंधे आदमी को लाए। उन्होंने इलतमास की
कि वह उसे छुए। 23 ईसा अंधे का हाथ पकड़कर
उसे गाँव से बाहर ले गया। वहाँ उसने उस की
आँखों पर थूककर अपने हाथ उस पर रख दिए
और पूछा, "क्या तू कुछ देख सकता है?"

24 आदमी ने नज़र उठाकर कहा, "हाँ, मैं लोगों
को देख सकता हूँ। वह फिरते हुए दरख़्तों की
मानिंद दिखाई दे रहे हैं।"

25 ईसा ने दुबारा अपने हाथ उस की आँखों पर
रखे। इस पर आदमी की आँखें पूरे तौर पर खुल
गईं, उस की नज़र बहाल हो गई और वह सब
कुछ साफ़ साफ़ देख सकता था। 26 ईसा ने उसे
रुख़सत करके कहा, "इस गाँव में वापस न जाना
बल्कि सीधा अपने घर चला जा।"

पतरस का इक़रार

27 फिर ईसा वहाँ से निकलकर अपने शागिर्दों
के साथ क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के क़रीब के देहातों
में गया। चलते चलते उसने उनसे पूछा, "मैं लोगों
के नज़दीक कौन हूँ?"

28 उन्होंने जवाब दिया, "कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास
नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि नबियों में से
एक।"

29 उसने पूछा, "लेकिन तुम क्या कहते हो?
तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?"

पतरस ने जवाब दिया, "आप मसीह हैं।"
30 यह सुनकर ईसा ने उन्हें किसी को भी यह
बात बताने से मना किया।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

31 फिर ईसा उन्हें तालीम देने लगा, "ला-
ज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर बुज़ुर्गों,
राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द
किया जाए। उसे क़त्ल भी किया जाएगा, लेकिन
वह तीसरे दिन जी उठेगा।" 32 उसने उन्हें यह बात
साफ़ साफ़ बताई। इस पर पतरस उसे एक तरफ़
ले जाकर समझाने लगा। 33 ईसा मुड़कर शागिर्दों
की तरफ़ देखने लगा। उसने पतरस को डाँटा,
"शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू अल्लाह की
सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की।"

34 फिर उसने शागिर्दों के अलावा हुजूम को
भी अपने पास बुलाया। उसने कहा, "जो मेरे
पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे
और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले।
35 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे
वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी और अल्लाह
की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर अपनी जान खो दे वही
उसे बचाएगा। 36 क्या फ़ायदा है अगर किसी को
पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी
जान से महरूम हो जाए? 37 इनसान अपनी
जान के बदले क्या दे सकता है? 38 जो भी इस
ज़िनाकार और गुनाहआलूदा नसल के सामने मेरे
और मेरी बातों के सबब से शरमाए उससे इब्ने-
आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह अपने बाप
के जलाल में मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ आएगा।"

9 ईसा ने उन्हें यह भी बताया, "मैं तुमको
सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं
जो मरने से पहले ही अल्लाह की बादशाही को
क़ुदरत के साथ आते हुए देखेंगे।"

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

2 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस, याक़ूब
और यूहन्ना को अपने साथ लेकर ऊँचे पहाड़
पर चढ़ गया। वहाँ उस की शक्लो-सूरत उनके
सामने बदल गई। 3 उसके कपड़े चमकने लगे
और निहायत सफ़ेद हो गए। दुनिया में कोई भी
धोबी कपड़े इतने सफ़ेद नहीं कर सकता। 4 फिर
इलियास और मूसा ज़ाहिर हुए और ईसा से बात
करने लगे। 5 पतरस बोल उठा, "उस्ताद, कितनी
अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आएँ, हम तीन
झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आपके लिए, एक मूसा के
लिए और एक इलियास के लिए।" 6 उसने यह
इसलिए कहा कि तीनों शागिर्द सहमे हुए थे और
वह नहीं जानता था कि क्या कहे।

7 इस पर एक बादल आकर उन पर छा गया
और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह
मेरा प्यारा फ़रज़ंद है। इसकी सुनो।" 8 अचानक
मूसा और इलियास ग़ायब हो गए। शागिर्दों ने
चारों तरफ़ देखा, लेकिन सिर्फ़ ईसा नज़र आया।

9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म
दिया, "जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त
तक किसी को न बताना जब तक कि इब्ने-आदम
मुरदों में से जी न उठे।"

10 चुनाँचे उन्होंने यह बात अपने तक महदूद
रखी। लेकिन वह कई बार आपस में बहस करने
लगे कि मुरदों में से जी उठने से क्या मुराद हो
सकती है। 11 फिर उन्होंने उससे पूछा, "शरीअत
के उलमा क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से
पहले इलियास का आना ज़रूरी है?"

12 ईसा ने जवाब दिया, "इलियास तो ज़रूर
पहले सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा।
लेकिन कलामे-मुक़द्दस में इब्ने-आदम के बारे में
यह क्यों लिखा है कि उसे बहुत दुख उठाना और
हक़ीर समझा जाना है? 13 लेकिन मैं तुमको
बताता हूँ, इलियास तो आ चुका है और उन्होंने
उसके साथ जो चाहा किया। यह भी कलामे-
मुक़द्दस के मुताबिक़ ही हुआ है।"

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

14 जब वह बाक़ी शागिर्दों के पास वापस पहुँचे
तो उन्होंने देखा कि उनके गिर्द एक बड़ा हुजूम

जमा है और शरीअत के कुछ उलमा उनके साथ
बहस कर रहे हैं। 15 ईसा को देखते ही लोगों ने
बड़ी बेचैनी से उस की तरफ़ दौड़कर उसे सलाम
किया। 16 उसने शागिर्दों से सवाल किया, “तुम
उनके साथ किसके बारे में बहस कर रहे हो?”

17 हुजूम में से एक आदमी ने जवाब दिया,
“उस्ताद, मैं अपने बेटे को आपके पास लाया था।
वह ऐसी बदरूह के क़ब्ज़े में है जो उसे बोलने नहीं
देती। 18 और जब भी वह उस पर ग़ालिब आती
है वह उसे ज़मीन पर पटक देती है। बेटे के मुँह से
झाग निकलने लगता और वह दाँत पीसने लगता
है। फिर उसका जिस्म अकड़ जाता है। मैंने आपके
शागिर्दों से कहा तो था कि वह बदरूह को निकाल
दें, लेकिन वह न निकाल सके।”

19 ईसा ने उनसे कहा, “ईमान से ख़ाली नसल!
मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें
बरदाश्त करूँ? लड़के को मेरे पास ले आओ।”
20 वह उसे ईसा के पास ले आए।

ईसा को देखते ही बदरूह लड़के को झँझोड़ने
लगी। वह ज़मीन पर गिर गया और इधर-उधर
लुढ़कते हुए मुँह से झाग निकालने लगा। 21 ईसा
ने बाप से पूछा, “इसके साथ कब से ऐसा हो रहा
है?”

उसने जवाब दिया, “बचपन से। 22 बहुत दफ़ा
उसने इसे हलाक करने की ख़ातिर आग या पानी
में गिराया है। अगर आप कुछ कर सकते हैं तो
तरस खाकर हमारी मदद करें।”

23 ईसा ने पूछा, “क्या मतलब, ‘अगर आप
कुछ कर सकते हैं’? जो ईमान रखता है उसके
लिए सब कुछ मुमकिन है।”

24 लड़के का बाप फ़ौरन चिल्ला उठा, “मैं
ईमान रखता हूँ। मेरी बेएतक़ादी का इलाज करें।”

25 ईसा ने देखा कि बहुत-से लोग दौड़ दौड़कर
देखने आ रहे हैं, इसलिए उसने नापाक रूह को
डाँटा, “ऐ गूँगी और बहरी बदरूह, मैं तुझे हुक्म
देता हूँ कि इसमें से निकल जा। कभी भी इसमें
दुबारा दाख़िल न होना!”

26 इस पर बदरूह चीख़ उठी और लड़के को
शिद्दत से झँझोड़कर निकल गई। लड़का लाश की
तरह ज़मीन पर पड़ा रहा, इसलिए सबने कहा,
“वह मर गया है।” 27 लेकिन ईसा ने उसका हाथ
पकड़कर उठने में उस की मदद की और वह खड़ा
हो गया।

28 बाद में जब ईसा किसी घर में जाकर अपने
शागिर्दों के साथ अकेला था तो उन्होंने उससे
पूछा, “हम बदरूह को क्यों न निकाल सके?”

29 उसने जवाब दिया, “इस क़िस्म की बदरूह
सिर्फ़ दुआ से निकाली जा सकती है।”

ईसा दूसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

30 वहाँ से निकलकर वह गलील में से गुज़रे।
ईसा नहीं चाहता था कि किसी को पता चले
कि वह कहाँ है, 31 क्योंकि वह अपने शागिर्दों
को तालीम दे रहा था। उसने उनसे कहा, “इब्ने-
आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा।
वह उसे क़त्ल करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह
जी उठेगा।”

32 लेकिन शागिर्द इसका मतलब न समझे और
वह ईसा से इसके बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सबसे बड़ा है?

33 चलते चलते वह कफ़र्नहूम पहुँचे। जब वह
किसी घर में थे तो ईसा ने शागिर्दों से सवाल
किया, “रास्ते में तुम किस बात पर बहस कर
रहे थे?”

34 लेकिन वह ख़ामोश रहे, क्योंकि वह रास्ते
में इस पर बहस कर रहे थे कि हममें से बड़ा
कौन है? 35 ईसा बैठ गया और बारह शागिर्दों
को बुलाकर कहा, “जो अव्वल होना चाहता है
वह सबसे आख़िर में आए और सबका ख़ादिम
हो।” 36 फिर उसने एक छोटे बच्चे को लेकर
उनके दरमियान खड़ा किया। उसे गले लगाकर
उसने उनसे कहा, 37 “जो मेरे नाम में इन बच्चों
में से किसी को क़बूल करता है वह मुझे ही क़बूल

करता है। और जो मुझे क़बूल करता है वह मुझे नहीं बल्कि उसे क़बूल करता है जिसने मुझे भेजा है।”

जो हमारे ख़िलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है

38 यूहन्ना बोल उठा, “उस्ताद, हमने एक शख़्स को देखा जो आपका नाम लेकर बदरूहें निकाल रहा था। हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारी पैरवी नहीं करता।”

39 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना। जो भी मेरे नाम में मोजिज़ा करे वह अगले लमहे मेरे बारे में बुरी बातें नहीं कह सकेगा। **40** क्योंकि जो हमारे ख़िलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है। **41** मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी तुम्हें इस वजह से पानी का गलास पिलाए कि तुम मसीह के पैरोकार हो उसे ज़रूर अज्र मिलेगा।

आज़माइशें

42 और जो कोई मुझ पर ईमान रखनेवाले इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधकर उसे समुंदर में फेंक दिया जाए। **43-[44]** अगर तेरा हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे पहले कि तू दो हाथों समेत जहन्नुम की कभी न बुझनेवाली आग में चला जाए [यानी वहाँ जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक हाथ से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाख़िल हो। **45-[46]** अगर तेरा पाँव तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे पहले कि तुझे दो पाँवों समेत जहन्नुम में फेंका जाए [जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक पाँव से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाख़िल हो। **47-[48]** और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकाल देना। इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम में फेंका जाए जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती बेहतर यह है कि तू एक आँख से महरूम होकर अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो।

49 क्योंकि हर एक को आग से नमकीन किया जाएगा [और हर एक क़ुरबानी नमक से नमकीन की जाएगी]।

50 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका ज़ायक़ा जाता रहे तो उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया जा सकता है? अपने दरमियान नमक की ख़ूबियाँ बरक़रार रखो और सुलह-सलामती से एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारो।”

तलाक़ के बारे में तालीम

10 फिर ईसा उस जगह को छोड़कर यहूदिया के इलाक़े में और दरियाए-यरदन के पार चला गया। वहाँ भी हुजूम जमा हो गया। उसने उन्हें मामूल के मुताबिक़ तालीम दी।

2 कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की ग़रज़ से सवाल किया, “क्या जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को तलाक़ दे?”

3 ईसा ने उनसे पूछा, “मूसा ने शरीअत में तुमको क्या हिदायत की है?”

4 उन्होंने कहा, “उसने इजाज़त दी है कि आदमी तलाक़नामा लिखकर बीवी को रुख़सत कर दे।”

5 ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी सख़्तदिली की वजह से तुम्हारे लिए यह हुक्म लिखा था। **6** लेकिन इब्तिदा में ऐसा नहीं था। दुनिया की तख़लीक़ के वक़्त अल्लाह ने उन्हें मर्द और औरत बनाया। **7** ‘इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। **8** वह दोनों एक हो जाते हैं।’ यों वह कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। **9** तो जिसे अल्लाह ने ख़ुद जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।”

10 किसी घर में आकर शागिर्दों ने यह बात
दुबारा छेड़कर ईसा से मज़ीद दरियाफ़्त किया।
11 उसने उन्हें बताया, "जो अपनी बीवी को
तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह उसके
साथ ज़िना करता है। 12 और जो औरत अपने
ख़ाविंद को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे
वह भी ज़िना करती है।"

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को ईसा के
पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। लेकिन शागिर्दों ने
उनको मलामत की। 14 यह देखकर ईसा नाराज़
हुआ। उसने उनसे कहा, "बच्चों को मेरे पास
आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि अल्लाह
की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है।
15 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की
बादशाही को बच्चे की तरह क़बूल न करे वह
उसमें दाख़िल नहीं होगा।" 16 यह कहकर उसने
उन्हें गले लगाया और अपने हाथ उन पर रखकर
उन्हें बरकत दी।

अमीर मुश्किल से बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

17 जब ईसा रवाना होने लगा तो एक आदमी
दौड़कर उसके पास आया और उसके सामने घुटने
टेककर पूछा, "नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि
अबदी ज़िंदगी मीरास में पाऊँ?"
18 ईसा ने पूछा, "तू मुझे नेक क्यों कहता है?
कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह।
19 तू शरीअत के अहकाम से तो वाक़िफ़ है। क़त्ल
न करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, झूटी
गवाही न देना, धोका न देना, अपने बाप और
अपनी माँ की इज़्ज़त करना।"
20 आदमी ने जवाब दिया, "उस्ताद, मैंने
जवानी से आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी
की है।"
21 ईसा ने ग़ौर से उस की तरफ़ देखा। उसके
दिल में उसके लिए प्यार उभर आया। वह बोला,
"एक काम रह गया है। जा, अपनी पूरी जायदाद
फ़रोख़्त करके पैसे ग़रीबों में तक़सीम कर दे।
फिर तेरे लिए आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो
जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।"
22 यह सुनकर आदमी का मुँह लटक गया और
वह मायूस होकर चला गया, क्योंकि वह निहायत
दौलतमंद था।
23 ईसा ने अपने इर्दगिर्द देखकर शागिर्दों से
कहा, "दौलतमंदों के लिए अल्लाह की बादशाही
में दाख़िल होना कितना मुश्किल है!"
24 शागिर्द उसके यह अलफ़ाज़ सुनकर हैरान
हुए। लेकिन ईसा ने दुबारा कहा, "बच्चो!
अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होना कितना
मुश्किल है। 25 अमीर के अल्लाह की बादशाही
में दाख़िल होने की निसबत ज़्यादा आसान यह है
कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।"
26 इस पर शागिर्द मज़ीद हैरतज़दा हुए और
एक दूसरे से कहने लगे, "फिर किस को नजात
मिल सकती है?"
27 ईसा ने ग़ौर से उनकी तरफ़ देखकर जवाब
दिया, "यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है,
लेकिन अल्लाह के लिए नहीं। उसके लिए सब
कुछ मुमकिन है।"
28 फिर पतरस बोल उठा, "हम तो अपना सब
कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।"
29 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता
हूँ, जिसने भी मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी
की ख़ातिर अपने घर, भाइयों, बहनों, माँ, बाप,
बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है 30 उसे इस
ज़माने में ईज़ारसानी के साथ साथ सौ गुना
ज़्यादा घर, भाई, बहनें, माएँ, बच्चे और खेत
मिल जाएंगे। और आनेवाले ज़माने में उसे अबदी
ज़िंदगी मिलेगी। 31 लेकिन बहुत-से लोग जो अब
अव्वल हैं उस वक़्त आख़िर होंगे और जो अब
आख़िर हैं वह अव्वल होंगे।"

ईसा तीसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

32 अब वह यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे थे
और ईसा उनके आगे आगे चल रहा था। शागिर्द
हैरतज़दा थे जबकि उनके पीछे चलनेवाले लोग
सहमे हुए थे। एक और दफ़ा बारह शागिर्दों को
एक तरफ़ ले जाकर ईसा उन्हें वह कुछ बताने
लगा जो उसके साथ होने को था। 33 उसने कहा,
“हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-
आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा
के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर सज़ाए-
मौत का फ़तवा देकर उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले
कर देंगे, 34 जो उसका मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस पर
थूकेंगे, उसको कोड़े मारेंगे और उसे क़त्ल करेंगे।
लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

याक़ूब और यूहन्ना की गुज़ारिश

35 फिर ज़बदी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना उसके
पास आए। वह कहने लगे, “उस्ताद, आपसे एक
गुज़ारिश है।”

36 उसने पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिए करूँ?”

37 उन्होंने जवाब दिया, “जब आप अपने
जलाली तख़्त पर बैठेंगे तो हममें से एक को अपने
दाएँ हाथ बैठने दें और दूसरे को बाएँ हाथ।”

38 ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या
माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो
मैं पीने को हूँ या वह बपतिस्मा ले सकते हो जो
मैं लेने को हूँ?”

39 उन्होंने जवाब दिया, “जी, हम कर सकते
हैं।” फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम ज़रूर वह
प्याला पियोगे जो मैं पीने को हूँ और वह बपतिस्मा
लोगे जो मैं लेने को हूँ। 40 लेकिन यह फ़ैसला
करना मेरा काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा
और कौन बाएँ हाथ। अल्लाह ने यह मक़ाम सिर्फ़
उन्हीं के लिए तैयार किया है जिनको उसने ख़ुद
मुक़र्रर किया है।”

41 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें
याक़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सा आया। 42 इस पर
ईसा ने उन सबको बुलाकर कहा, “तुम जानते
हो कि क़ौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब
डालते हैं, और उनके बड़े अफ़सर उन पर अपने
इख़्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 43 लेकिन
तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा
होना चाहे वह तुम्हारा ख़ादिम बने 44 और जो
तुममें अव्वल होना चाहे वह सबका ग़ुलाम बने।
45 क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया
कि ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे
और अपनी जान फ़िद्या के तौर पर देकर बहुतों
को छुड़ाए।”

अंधे बरतिमाई की शफ़ा

46 वह यरीहू पहुँच गए। उसमें से गुज़रकर
ईसा शागिर्दों और एक बड़े हुजूम के साथ बाहर
निकलने लगा। वहाँ एक अंधा भीक माँगनेवाला
रास्ते के किनारे बैठा था। उसका नाम बरतिमाई
(तिमाई का बेटा) था। 47 जब उसने सुना कि ईसा
नासरी क़रीब ही है तो वह चिल्लाने लगा, “ईसा
इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

48 बहुत-से लोगों ने उसे डाँटकर कहा,
“ख़ामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से
पुकारता रहा, “इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

49 ईसा रुककर बोला, “उसे बुलाओ।”

चुनाँचे उन्होंने उसे बुलाकर कहा, “हौसला
रख। उठ, वह तुझे बुला रहा है।”

50 बरतिमाई ने अपनी चादर ज़मीन पर फेंक
दी और उछलकर ईसा के पास आया।

51 ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे
लिए करूँ?”

उसने जवाब दिया, “उस्ताद, यह कि मैं देख
सकूँ।”

52 ईसा ने कहा, “जा, तेरे ईमान ने तुझे बचा
लिया है।”

ज्योंही ईसा ने यह कहा अंधे की आँखें बहाल
हो गईं और वह ईसा के पीछे चलने लगा।

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

11 वह यरूशलम के क़रीब बैत-फ़गे और
बैत-अनियाह पहुँचने लगे। यह गाँव
ज़ैतून के पहाड़ पर वाक़े थे। ईसा ने अपने शागिर्दों
में से दो को भेजा 2 और कहा, "सामनेवाले गाँव
में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह
बँधा हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर
सवार नहीं हुआ है। उसे खोलकर यहाँ ले आओ।
3 अगर कोई पूछे कि यह क्या कर रहे हो तो उसे
बता देना, 'ख़ुदावंद को इसकी ज़रूरत है। वह
जल्द ही इसे वापस भेज देंगे'।"

4 दोनों शागिर्द वहाँ गए तो एक जवान गधा
देखा जो बाहर गली में किसी दरवाज़े के साथ
बँधा हुआ था। जब वह उस की रस्सी खोलने लगे
5 तो वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पूछा, "तुम यह क्या
कर रहे हो? जवान गधे को क्यों खोल रहे हो?"

6 उन्होंने जवाब में वह कुछ बता दिया जो ईसा
ने उन्हें कहा था। इस पर लोगों ने उन्हें खोलने
दिया। 7 वह जवान गधे को ईसा के पास ले आए
और अपने कपड़े उस पर रख दिए। फिर ईसा उस
पर सवार हुआ। 8 जब वह चल पड़ा तो बहुत-से
लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े
बिछा दिए। बाज़ ने हरी शाख़ें भी उसके आगे
बिछा दीं जो उन्होंने खेतों के दरख़्तों से काट ली
थीं। 9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे
और चिल्ला चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

"होशाना![a]
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।
10 मुबारक है हमारे बाप दाऊद की
बादशाही जो आ रही है।
आसमान की बुलंदियों पर होशाना।"

11 यों ईसा यरूशलम में दाख़िल हुआ। वह
बैतुल-मुक़द्दस में गया और अपने इर्दगिर्द नज़र
दौड़ाकर सब कुछ देखने के बाद चला गया। चूँकि
शाम का पिछला वक़्त था इसलिए वह बारह
शागिर्दों समेत शहर से निकलकर बैत-अनियाह
वापस गया।

अंजीर के दरख़्त पर लानत

12 अगले दिन जब वह बैत-अनियाह से निकल
रहे थे तो ईसा को भूक लगी। 13 उसने कुछ
फ़ासले पर अंजीर का एक दरख़्त देखा जिस पर
पत्ते थे। इसलिए वह यह देखने के लिए उसके
पास गया कि आया कोई फल लगा है या नहीं।
लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि पत्ते ही
पत्ते हैं। वजह यह थी कि अंजीर का मौसम नहीं
था। 14 इस पर ईसा ने दरख़्त से कहा, "अब
से हमेशा तक तुझसे फल खाया न जा सके!"
उसके शागिर्दों ने उस की यह बात सुन ली।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

15 वह यरूशलम पहुँच गए। और ईसा बैतुल-
मुक़द्दस में जाकर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ
क़ुरबानियों के लिए दरकार चीज़ों की ख़रीदो-
फ़रोख़्त कर रहे थे। उसने सिक्कों का तबादला
करनेवालों की मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की
कुरसियाँ उलट दीं 16 और जो तिजारती माल
लेकर बैतुल-मुक़द्दस के सहनों में से गुज़र रहे
थे उन्हें रोक लिया। 17 तालीम देकर उसने कहा,
"क्या कलामे-मुक़द्दस में नहीं लिखा है, 'मेरा घर
तमाम क़ौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा'?
लेकिन तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया
है।"

18 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने
जब यह सुना तो उसे क़त्ल करने का मौक़ा ढूँडने
लगे। क्योंकि वह उससे डरते थे इसलिए कि पूरा
हुजूम उस की तालीम से निहायत हैरान था।

19 जब शाम हुई तो ईसा और उसके शागिर्द
शहर से निकल गए।

[a] होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

20 अगले दिन वह सुबह-सवेरे अंजीर के उस
दरख़्त के पास से गुज़रे जिस पर ईसा ने लानत
भेजी थी। जब उन्होंने उस पर ग़ौर किया तो मालूम
हुआ कि वह जड़ों तक सूख गया है। 21 तब
पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कल
अंजीर के दरख़्त से की थी। उसने कहा, “उस्ताद,
यह देखें! अंजीर के जिस दरख़्त पर आपने लानत
भेजी थी वह सूख गया है।”

22 ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह पर ईमान
रखो। 23 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अगर कोई
इस पहाड़ से कहे, ‘उठ, अपने आपको समुंदर
में गिरा दे’ तो यह हो जाएगा। शर्त सिर्फ़ यह
है कि वह शक न करे बल्कि ईमान रखे कि जो
कुछ उसने कहा है वह उसके लिए हो जाएगा।
24 इसलिए मैं तुमको बताता हूँ, जब भी तुम दुआ
करके कुछ माँगते हो तो ईमान रखो कि तुमको
मिल गया है। फिर वह तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा।
25 और जब तुम खड़े होकर दुआ करते हो तो
अगर तुम्हें किसी से शिकायत हो तो पहले उसे
मुआफ़ करो ताकि आसमान पर तुम्हारा बाप भी
तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ करे। 26 [और अगर तुम
मुआफ़ न करो तो तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे
गुनाह भी मुआफ़ नहीं करेगा।]”

किसने ईसा को इख़्तियार दिया?

27 वह एक और दफ़ा यरूशलम पहुँच गए।
और जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में फिर रहा था तो
राहनुमा इमाम, शरीअत के उलमा और बुज़ुर्ग
उसके पास आए। 28 उन्होंने पूछा, “आप यह
सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहे हैं? किसने
आपको यह करने का इख़्तियार दिया है?”

29 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक
सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको
बता दूँगा कि मैं यह किस इख़्तियार से कर रहा
हूँ। 30 मुझे बताओ, क्या यहया का बपतिस्मा
आसमानी था या इनसानी?”

31 वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम
कहें ‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस
पर ईमान क्यों न लाए?’ 32 लेकिन हम कैसे कह
सकते हैं कि वह इनसानी था?” वजह यह थी कि
वह आम लोगों से डरते थे, क्योंकि सब मानते थे
कि यहया वाक़ई नबी था। 33 चुनाँचे उन्होंने जवाब
दिया, “हम नहीं जानते।”

ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुमको नहीं
बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से
कर रहा हूँ।”

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बग़ावत

12 फिर वह तमसीलों में उनसे बात करने
लगा। “किसी आदमी ने अंगूर का
एक बाग़ लगाया। उसने उस की चारदीवारी
बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक
गढ़े की खुदाई की और पहरेदारों के लिए बुर्ज
तामीर किया। फिर वह उसे मुज़ारेओं के सुपुर्द
करके बैरूने-मुल्क चला गया। 2 जब अंगूर पक
गए तो उसने अपने नौकर को मुज़ारेओं के पास
भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा
वसूल करे। 3 लेकिन मुज़ारेओं ने उसे पकड़कर
उस की पिटाई की और उसे ख़ाली हाथ लौटा
दिया। 4 फिर मालिक ने एक और नौकर को भेज
दिया। लेकिन उन्होंने उस की भी बेइज़्ज़ती करके
उसका सर फोड़ दिया। 5 जब मालिक ने तीसरे
नौकर को भेजा तो उन्होंने उसे मार डाला। यों
उसने कई एक को भेजा। बाज़ को उन्होंने मारा-
पीटा, बाज़ को क़त्ल किया। 6 आख़िरकार सिर्फ़
एक बाक़ी रह गया था। वह था उसका प्यारा बेटा।
अब उसने उसे भेजकर कहा, ‘आख़िर मेरे बेटे का
तो लिहाज़ करेंगे।’ 7 लेकिन मुज़ारे एक दूसरे से
कहने लगे, ‘यह ज़मीन का वारिस है। आओ हम
इसे मार डालें तो फिर इसकी मीरास हमारी ही
होगी।’ 8 उन्होंने उसे पकड़कर क़त्ल किया और
बाग़ से बाहर फेंक दिया।

9 अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या करेगा?
वह जाकर मुज़ारेओं को हलाक करेगा और बाग़

को दूसरों के सुपुर्द कर देगा। 10 क्या तुमने
कलामे-मुक़द्दस का यह हवाला नहीं पढ़ा,
'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने
रद्द किया
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।
11 यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है'।"
12 इस पर दीनी राहनुमाओं ने ईसा को
गिरिफ़्तार करने की कोशिश की, क्योंकि वह
समझ गए थे कि तमसील में बयानशुदा मुज़ारे
हम ही हैं। लेकिन वह हुजूम से डरते थे, इसलिए
वह उसे छोड़कर चले गए।

क्या टैक्स देना जायज़ है?

13 बाद में उन्होंने कुछ फ़रीसियों और हेरोदेस
के पैरोकारों को उसके पास भेज दिया ताकि वह
उसे कोई ऐसी बात करने पर उभारें जिससे उसे
पकड़ा जा सके। 14 वह उसके पास आकर कहने
लगे, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं
और किसी की परवा नहीं करते। आप जानिबदार
नहीं होते बल्कि दियानतदारी से अल्लाह की राह
की तालीम देते हैं। अब हमें बताएँ कि क्या रोमी
शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़?
क्या हम अदा करें या न करें?"
15 लेकिन ईसा ने उनकी रियाकारी जान-
कर उनसे कहा, "मुझे क्यों फँसाना चाहते हो?
चाँदी का एक रोमी सिक्का मेरे पास ले आओ।"
16 वह एक सिक्का उसके पास ले आए तो
उसने पूछा, "किसकी सूरत और नाम इस पर
कंदा है?" उन्होंने जवाब दिया, "शहनशाह का।"
17 उसने कहा, "तो जो शहनशाह का है
शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह
को।"

उसका यह जवाब सुनकर उन्होंने बड़ा ताज्जुब
किया।

क्या हम जी उठेंगे?

18 फिर कुछ सदूक़ी ईसा के पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़े-क़ियामत मुरदे जी उठेंगे।
उन्होंने ईसा से एक सवाल किया, 19 "उस्ताद,
मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा
आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो
तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके
अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 20 अब
फ़र्ज़ करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की,
लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। 21 इस पर दूसरे ने
उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर
गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की। 22 यह
सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद
दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर
गया। आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 23 अब
बताएँ कि क़ियामत के दिन वह किसकी बीवी
होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे
शादी की थी।"
24 ईसा ने जवाब दिया, "तुम इसलिए ग़लती
पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो,
न अल्लाह की क़ुदरत से। 25 क्योंकि जब मुरदे
जी उठेंगे तो न वह शादी करेंगे न उनकी शादी
कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिश्तों
की मानिंद होंगे। 26 रही यह बात कि मुरदे जी
उठेंगे। क्या तुमने मूसा की किताब में नहीं पढ़ा कि
अल्लाह जलती हुई झाड़ी में से किस तरह मूसा
से हमकलाम हुआ? उसने फ़रमाया, 'मैं इब्राहीम
का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा
हूँ,' हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से मर
चुके थे। 27 इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त में
ज़िंदा हैं, क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं, बल्कि
ज़िंदों का ख़ुदा है। तुमसे बड़ी ग़लती हुई है।"

अव्वल हुक्म

28 इतने में शरीअत का एक आलिम उनके
पास आया। उसने उन्हें बहस करते हुए सुना था
और जान लिया कि ईसा ने अच्छा जवाब दिया,

इसलिए उसने पूछा, “तमाम अहकाम में से कौन-
सा हुक्म सबसे अहम है?”
29 ईसा ने जवाब दिया, “अव्वल हुक्म यह है :
‘सुन ऐ इसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब
है। 30 रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी
पूरी जान, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त
से प्यार करना।’ 31 दूसरा हुक्म यह है : ‘अपने
पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने
आपसे रखता है।’ दीगर कोई भी हुक्म इन दो
अहकाम से अहम नहीं है।”
32 उस आलिम ने कहा, “शाबाश, उस्ताद!
आपने सच कहा है कि अल्लाह सिर्फ़ एक ही
है और उसके सिवा कोई और नहीं है। 33 हमें
उसे अपने पूरे दिल, अपने पूरे ज़हन और अपनी
पूरी ताक़त से प्यार करना चाहिए और साथ साथ
अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखनी चाहिए जैसी
अपने आपसे रखते हैं। यह दो अहकाम भस्म
होनेवाली तमाम क़ुरबानियों और दीगर नज़रों से
ज़्यादा अहमियत रखते हैं।”
34 जब ईसा ने उसका यह जवाब सुना तो उससे
कहा, “तू अल्लाह की बादशाही से दूर नहीं है।”
इसके बाद किसी ने भी उससे सवाल पूछने की
जुर्रत न की।

मसीह के बारे में सवाल

35 जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा
था तो उसने पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों
दावा करते हैं कि मसीह दाऊद का फ़रज़ंद है?
36 क्योंकि दाऊद ने तो ख़ुद रूहुल-क़ुद्स की
मारिफ़त यह फ़रमाया,

‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’

37 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो
फिर वह किस तरह दाऊद का फ़रज़ंद हो सकता
है?”

शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहना

एक बड़ा हुजूम मज़े से ईसा की बातें सुन
रहा था। 38 उन्हें तालीम देते वक़्त उसने कहा,
“उलमा से ख़बरदार रहो! क्योंकि वह शानदार
चोग़े पहनकर इधर-उधर फिरना पसंद करते हैं।
जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़्ज़त
करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो जाते हैं। 39 उनकी
बस एक ही ख़ाहिश होती है कि इबादतख़ानों
और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठ
जाएँ। 40 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते
और साथ साथ दिखावे के लिए लंबी लंबी दुआएँ
माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा
मिलेगी।”

बेवा का चंदा

41 ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स के
मुक़ाबिल बैठ गया और हुजूम को हदिये डालते
हुए देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रक़में डाल
रहे थे। 42 फिर एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री
जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से सिक्के डाल
दिए। 43 ईसा ने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर
कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस ग़रीब
बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है।
44 क्योंकि इन सबने अपनी दौलत की कसरत से
दे दिया जबकि उसने ज़रूरतमंद होने के बावुजूद
भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।”

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

13 उस दिन जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस से
निकल रहा था तो उसके शागिर्दों ने
कहा, “उस्ताद, देखें कितने शानदार पत्थर और
इमारतें हैं!”
2 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमको यह बड़ी
बड़ी इमारतें नज़र आती हैं? पत्थर पर पत्थर नहीं
रहेगा। सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

3 बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैतुल-मुक़द्दस
के मुक़ाबिल बैठ गया। पतरस, याक़ूब, यूहन्ना
और अंदरियास अकेले उसके पास आए। उन्होंने
कहा, 4 “हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या
क्या नज़र आएगा जिससे मालूम होगा कि यह
अब पूरा होने को है?”

5 ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई
तुम्हें गुमराह न कर दे। 6 बहुत-से लोग मेरा नाम
लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ।’ यों वह
बहुतों को गुमराह कर देंगे। 7 जब जंगों की ख़बरें
और अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना।
क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो
भी अभी आख़िरत नहीं होगी। 8 एक क़ौम दूसरी
के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी और एक बादशाही
दूसरी के ख़िलाफ़। जगह जगह ज़लज़ले आएँगे,
काल पड़ेंगे। लेकिन यह सिर्फ़ दर्दे-ज़ह की इब्तिदा
ही होगी।

9 तुम ख़ुद ख़बरदार रहो। तुमको मक़ामी
अदालतों के हवाले कर दिया जाएगा और लोग
यहूदी इबादतख़ानों में तुम्हें कोड़े लगवाएँगे। मेरी
ख़ातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने
पेश किया जाएगा। यों तुम उन्हें मेरी गवाही दोगे।
10 लाज़िम है कि आख़िरत से पहले अल्लाह
की ख़ुशख़बरी तमाम अक़वाम को सुनाई जाए।
11 लेकिन जब लोग तुमको गिरिफ़्तार करके
अदालत में पेश करेंगे तो यह सोचते सोचते
परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ। बस वही
कुछ कहना जो अल्लाह तुम्हें उस वक़्त बताएगा।
क्योंकि उस वक़्त तुम नहीं बल्कि रूहुल-क़ुद्स
बोलनेवाला होगा। 12 भाई अपने भाई को और
बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले कर देगा। बच्चे
अपने वालिदैन के ख़िलाफ़ खड़े होकर उन्हें क़त्ल
करवाएँगे। 13 सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए
कि तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आख़िर तक
क़ायम रहेगा उसे नजात मिलेगी।

बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती

14 एक दिन आएगा जब तुम वहाँ जहाँ उसे नहीं
होना चाहिए वह कुछ खड़ा देखोगे जो बेहुरमती
और तबाही का बाइस है।” (क़ारी इस पर ध्यान
दे!) “उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर
पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। 15 जो अपने घर की
छत पर हो वह न उतरे, न कुछ साथ ले जाने के
लिए घर में दाख़िल हो जाए। 16 जो खेत में हो
वह अपनी चादर साथ ले जाने के लिए वापस न
जाए। 17 उन ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों
में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों।
18 दुआ करो कि यह वाक़िया सर्दियों के मौसम में
पेश न आए। 19 क्योंकि उन दिनों में ऐसी मुसीबत
होगी कि दुनिया की तख़लीक़ से आज तक देखने
में न आई होगी। इस क़िस्म की मुसीबत बाद में
भी कभी नहीं आएगी। 20 और अगर ख़ुदावंद इस
मुसीबत का दौरानिया मुख़तसर न करता तो कोई
न बचता। लेकिन उसने अपने चुने हुओं की ख़ातिर
उसका दौरानिया मुख़तसर कर दिया है।

21 उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, ‘देखो,
मसीह यहाँ है,’ या ‘वह वहाँ है’ तो उस की
बात न मानना। 22 क्योंकि झूटे मसीह और झूटे
नबी उठ खड़े होंगे जो अजीबो-ग़रीब निशान और
मोजिज़े दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों
को ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह मुमकिन
होता। 23 इसलिए ख़बरदार! मैंने तुमको पहले
ही इन सब बातों से आगाह कर दिया है।

इब्ने-आदम की आमद

24 मुसीबत के उन दिनों के बाद सूरज तारीक
हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी।
25 सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और
आसमान की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 26 उस
वक़्त लोग इब्ने-आदम को बड़ी क़ुदरत और
जलाल के साथ बादलों में आते हुए देखेंगे।
27 और वह अपने फ़रिश्तों को भेज देगा ताकि
उसके चुने हुओं को चारों तरफ़ से जमा करें,

दुनिया के कोने कोने से आसमान की इंतहा तक
इकट्ठा करें।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

28 अंजीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। ज्योंही
उस की शाख़ें नरम और लचकदार हो जाती हैं
और उनसे कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुमको
मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम क़रीब
आ गया है। 29 इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात
देखोगे तो जान लोगे कि इब्ने-आदम की आमद
क़रीब बल्कि दरवाज़े पर है। 30 मैं तुमको सच
बताता हूँ, इस नसल के ख़त्म होने से पहले पहले
यह सब कुछ वाक़े होगा। 31 आसमानो-ज़मीन तो
जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक क़ायम
रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

32 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह
किस दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा।
आसमान के फ़रिश्तों और फ़रज़ंद को भी इल्म
नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को। 33 चुनाँचे ख़बरदार
और चौकन्ने रहो! क्योंकि तुमको नहीं मालूम
कि यह वक़्त कब आएगा। 34 इब्ने-आदम की
आमद उस आदमी से मुताबिक़त रखती है जिसे
किसी सफ़र पर जाना था। घर छोड़ते वक़्त उसने
अपने नौकरों को इंतज़ाम चलाने का इख़्तियार
देकर हर एक को उस की अपनी ज़िम्मेदारी सौंप
दी। दरबान को उसने हुक्म दिया कि वह चौकस
रहे। 35 तुम भी इसी तरह चौकस रहो, क्योंकि
तुम नहीं जानते कि घर का मालिक कब वापस
आएगा, शाम को, आधी रात को, मुरग़ के बाँग
देते या पौ फटते वक़्त। 36 ऐसा न हो कि वह
अचानक आकर तुमको सोते पाए। 37 यह बात मैं
न सिर्फ़ तुमको बल्कि सबको बताता हूँ, चौकस
रहो!”

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

14 फ़सह और बेख़मीरी रोटी की ईद
क़रीब आ गई थी। सिर्फ़ दो दिन रह
गए थे। राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा
ईसा को किसी चालाकी से गिरिफ़्तार करके
क़त्ल करने की तलाश में थे। 2 उन्होंने कहा,
“लेकिन यह ईद के दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा
न हो कि अवाम में हलचल मच जाए।”

ख़ातून ईसा पर ख़ुशबू उंडेलती है

3 इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक
आदमी के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त
कोढ़ का मरीज़ था। उसका नाम शमाऊन था।
ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत
आई। उसके पास ख़ालिस जटामासी के निहायत
क़ीमती इत्र का इत्रदान था। उसका सर तोड़कर
उसने इत्र ईसा के सर पर उंडेल दिया। 4 हाज़िरीन
में से कुछ नाराज़ हुए। “इतना क़ीमती इत्र ज़ाया
करने की क्या ज़रूरत थी? 5 इसकी क़ीमत
कम अज़ कम चाँदी के 300 सिक्के थी। अगर
इसे बेचा जाता तो इसके पैसे ग़रीबों को दिए
जा सकते थे।” ऐसी बातें करते हुए उन्होंने उसे
झिड़का।

6 लेकिन ईसा ने कहा, “इसे छोड़ दो, तुम इसे
क्यों तंग कर रहे हो? इसने तो मेरे लिए एक
नेक काम किया है। 7 ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास
रहेंगे, और तुम जब भी चाहो उनकी मदद कर
सकोगे। लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।
8 जो कुछ वह कर सकती थी उसने किया है। मुझ
पर इत्र उंडेलने से वह मुक़र्ररा वक़्त से पहले मेरे
बदन को दफ़नाने के लिए तैयार कर चुकी है।
9 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में
जहाँ भी अल्लाह की ख़ुशख़बरी का एलान किया
जाएगा वहाँ लोग इस ख़ातून को याद करके वह
कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

10 फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शागिर्दों
में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया
ताकि ईसा को उनके हवाले करने की बात करे।
11 उसके आने का मक़सद सुनकर वह ख़ुश हुए
और उसे पैसे देने का वादा किया। चुनाँचे वह ईसा
को उनके हवाले करने का मौक़ा ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

12 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब लोग फ़सह
के लेले को क़ुरबान करते थे। ईसा के शागिर्दों ने
उससे पूछा, "हम कहाँ आपके लिए फ़सह का
खाना तैयार करें?"

13 चुनाँचे ईसा ने उनमें से दो को यह हिदायत
देकर यरूशलम भेज दिया कि "जब तुम शहर
में दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी
से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा।
उसके पीछे हो लेना। 14 जिस घर में वह दाख़िल
हो उसके मालिक से कहना, 'उस्ताद आपसे
पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने
शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?' 15 वह
तुम्हें दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ
कमरा दिखाएगा। वह तैयार होगा। हमारे लिए
फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।"

16 दोनों चले गए तो शहर में दाख़िल होकर सब
कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था।
फिर उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया।

ग़द्दार कौन है?

17 शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों समेत वहाँ
पहुँच गया। 18 जब वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे
थे तो उसने कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ, तुममें
से एक जो मेरे साथ खाना खा रहा है मुझे दुश्मन
के हवाले कर देगा।"

19 शागिर्द यह सुनकर ग़मगीन हुए। बारी बारी
उन्होंने उससे पूछा, "मैं तो नहीं हूँ?"

20 ईसा ने जवाब दिया, "तुम बारह में से एक
है। वह मेरे साथ अपनी रोटी सालन के बरतन में
डाल रहा है। 21 इब्ने-आदम तो कूच कर जाएगा
जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन
उस शख़्स पर अफ़सोस जिसके वसीले से उसे
दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके लिए
बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न होता।"

फ़सह का आख़िरी खाना

22 खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर
शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके
शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, "यह लो, यह
मेरा बदन है।"

23 फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्र-
गुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें दे दिया। सबने
उसमें से पी लिया। 24 उसने उनसे कहा, "यह
मेरा ख़ून है, नए अहद का वह ख़ून जो बहुतों के
लिए बहाया जाता है। 25 मैं तुमको सच बताता
हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा,
क्योंकि अगली दफ़ा इसे नए सिरे से अल्लाह की
बादशाही में ही पियूँगा।"

26 फिर वह एक ज़बूर गाकर निकले और ज़ैतून
के पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

27 ईसा ने उन्हें बताया, "तुम सब बरगश्ता
हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में अल्लाह
फ़रमाता है, 'मैं चरवाहे को मार डालूँगा और
भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।' 28 लेकिन अपने
जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील
पहुँचूँगा।"

29 पतरस ने एतराज़ किया, "दूसरे बेशक सब
बरगश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।"

30 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता
हूँ, इसी रात मुरग़ के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले
पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका
होगा।"

31 पतरस ने इसरार किया, "हरगिज़ नहीं! मैं
आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे
मुझे आपके साथ मरना भी पड़े।"

दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

32 वह एक बाग़ में पहुँचे जिसका नाम
गत्समनी था। ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा,
“यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ करने
के लिए आगे जाता हूँ।” 33 उसने पतरस, याक़ूब
और यूहन्ना को साथ लिया। वहाँ वह घबराकर
बेक़रार होने लगा। 34 उसने उनसे कहा, “मैं दुख
से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर
जागते रहो।”

35 कुछ आगे जाकर वह ज़मीन पर गिर गया
और दुआ करने लगा कि अगर मुमकिन हो तो
मुझे आनेवाली घड़ियों की तकलीफ़ से गुज़रना न
पड़े। 36 उसने कहा, “ऐ अब्बा, ऐ बाप! तेरे लिए
सब कुछ मुमकिन है। दुख का यह प्याला मुझसे
हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी
हो।”

37 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो
देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से कहा,
“शमाऊन, क्या तू सो रहा है? क्या तू एक घंटा
भी नहीं जाग सका? 38 जागते और दुआ करते
रहो ताकि तुम आज़माइश में न पड़ो। क्योंकि रूह
तो तैयार है, लेकिन जिस्म कमज़ोर।”

39 एक बार फिर उसने जाकर वही दुआ की
जो पहले की थी। 40 जब वापस आया तो दुबारा
देखा कि वह सो रहे हैं, क्योंकि नींद की बदौलत
उनकी आँखें बोझल थीं। वह नहीं जानते थे कि
क्या जवाब दें।

41 जब ईसा तीसरी बार वापस आया तो उसने
उनसे कहा, “तुम अभी तक सो और आराम कर
रहे हो? बस काफ़ी है। वक़्त आ गया है। देखो,
इब्ने-आदम को गुनाहगारों के हवाले किया जा
रहा है। 42 उठो। आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन
के हवाले करनेवाला क़रीब आ चुका है।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

43 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदाह
पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके
साथ तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों का
हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा
और बुज़ुर्गों ने भेजा था। 44 इस ग़द्दार यहूदाह ने
उन्हें एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको
मैं बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरिफ़्तार करके ले
जाएँ।

45 ज्योंही वह पहुँचे यहूदाह ईसा के पास गया
और “उस्ताद!” कहकर उसे बोसा दिया। 46 इस
पर उन्होंने उसे पकड़कर गिरिफ़्तार कर लिया।
47 लेकिन ईसा के पास खड़े एक शख़्स ने अपनी
तलवार मियान से निकाली और इमामे-आज़म
के ग़ुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया।
48 ईसा ने उनसे पूछा, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम
तलवारें और लाठियाँ लिए मुझे गिरिफ़्तार करने
निकले हो? 49 मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में
तुम्हारे पास था और तालीम देता रहा, मगर तुमने
मुझे गिरिफ़्तार नहीं किया। लेकिन यह इसलिए
हो रहा है ताकि कलामे-मुक़द्दस की बातें पूरी हो
जाएँ।”

50 फिर सबके सब उसे छोड़कर भाग गए।

51 लेकिन एक नौजवान ईसा के पीछे पीछे
चलता रहा जो सिर्फ़ चादर ओढ़े हुए था। लोगों
ने उसे पकड़ने की कोशिश की, 52 लेकिन वह
चादर छोड़कर नंगी हालत में भाग गया।

यहूदी अदालते-आलिया के सामने

53 वह ईसा को इमामे-आज़म के पास ले गए
जहाँ तमाम राहनुमा इमाम, बुज़ुर्ग और शरीअत
के उलमा भी जमा थे। 54 इतने में पतरस कुछ
फ़ासले पर ईसा के पीछे पीछे इमामे-आज़म के
सहन तक पहुँच गया। वहाँ वह मुलाज़िमों के
साथ बैठकर आग तापने लगा। 55 मकान के अंदर
राहनुमा इमाम और यहूदी अदालते-आलिया के
तमाम अफ़राद ईसा के ख़िलाफ़ गवाहियाँ ढूँड रहे
थे ताकि उसे सज़ाए-मौत दिलवा सकें। लेकिन

कोई गवाही न मिली। 56 काफ़ी लोगों ने उसके
ख़िलाफ़ झूटी गवाही तो दी, लेकिन उनके बयान
एक दूसरे के मुतज़ाद थे।
57 आख़िरकार बाज़ ने खड़े होकर यह झूटी
गवाही दी, 58 "हमने इसे यह कहते सुना है
कि मैं इनसान के हाथों के बने इस बैतुल-
मुक़द्दस को ढाकर तीन दिन के अंदर अंदर नया
मक़दिस तामीर कर दूँगा, एक ऐसा मक़दिस जो
इनसान के हाथ नहीं बनाएँगे।" 59 लेकिन उनकी
गवाहियाँ भी एक दूसरी से मुतज़ाद थीं।
60 फिर इमामे-आज़म ने हाज़िरीन के सामने
खड़े होकर ईसा से पूछा, "क्या तू कोई जवाब
नहीं देगा? यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे
ख़िलाफ़ दे रहे हैं?"
61 लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। उसने कोई जवाब
न दिया। इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल
किया, "क्या तू अल-हमीद का फ़रज़ंद मसीह
है?"
62 ईसा ने कहा, "जी, मैं हूँ। और आइंदा तुम
इब्ने-आदम को क़ादिरे-मुतलक़ के दहने हाथ बैठे
और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।"
63 इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके
अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, "हमें मज़ीद
गवाहों की क्या ज़रूरत रही! 64 आपने ख़ुद सुन
लिया है कि इसने कुफ़्र बका है। आपका क्या
फ़ैसला है?"
सबने उसे सज़ाए-मौत के लायक़ क़रार दिया।
65 फिर कुछ उस पर थूकने लगे। उन्होंने उस
की आँखों पर पट्टी बाँधी और उसे मुक्के मार
मारकर कहने लगे, "नबुव्वत कर!" मुलाज़िमों
ने भी उसे थप्पड़ मारे।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

66 इस दौरान पतरस नीचे सहन में था। इमामे-
आज़म की एक नौकरानी वहाँ से गुज़री 67 और
देखा कि पतरस वहाँ आग ताप रहा है। उसने ग़ौर
से उस पर नज़र की और कहा, "तुम भी नासरत
के उस आदमी ईसा के साथ थे।"
68 लेकिन उसने इनकार किया, "मैं नहीं
जानता या समझता कि तू क्या बात कर रही है।"
यह कहकर वह गेट के क़रीब चला गया। [उसी
लमहे मुरग़ ने बाँग दी।]
69 जब नौकरानी ने उसे वहाँ देखा तो उसने
दुबारा पास खड़े लोगों से कहा, "यह बंदा उनमें
से है।" 70 दुबारा पतरस ने इनकार किया।
थोड़ी देर के बाद पतरस के साथ खड़े लोगों ने
भी उससे कहा, "तुम ज़रूर उनमें से हो क्योंकि
तुम गलील के रहनेवाले हो।"
71 इस पर पतरस ने क़सम खाकर कहा, "मुझ
पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं उस आदमी
को नहीं जानता जिसका ज़िक्र तुम कर रहे हो।"
72 फ़ौरन मुरग़ की बाँग दूसरी मरतबा सुनाई
दी। फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा
ने उससे कही थी, "मुरग़ के दूसरी दफ़ा बाँग देने
से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार
कर चुका होगा।" इस पर वह रो पड़ा।

पीलातुस के सामने

15 सुबह-सवेरे ही राहनुमा इमाम
बुज़ुर्गों, शरीअत के उलमा और
पूरी यहूदी अदालते-आलिया के साथ मिल-
कर फ़ैसले तक पहुँच गए। वह ईसा को बाँधकर
वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले
कर दिया। 2 पीलातुस ने उससे पूछा, "क्या तुम
यहूदियों के बादशाह हो?"
ईसा ने जवाब दिया, "जी, आप ख़ुद कहते हैं।"
3 राहनुमा इमामों ने उस पर बहुत इलज़ाम
लगाए। 4 चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उससे सवाल
किया, "क्या तुम कोई जवाब नहीं दोगे? यह तो
तुम पर बहुत-से इलज़ामात लगा रहे हैं।"
5 लेकिन ईसा ने इस पर भी कोई जवाब न
दिया, और पीलातुस बड़ा हैरान हुआ।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

6 उन दिनों यह रिवाज था कि हर साल फ़सह
की ईद पर एक क़ैदी को रिहा कर दिया जाता

था। यह क़ैदी अवाम से मुंतख़ब किया जाता था।
7 उस वक़्त कुछ आदमी जेल में थे जो हुकूमत के
ख़िलाफ़ किसी इंकलाबी तहरीक में शरीक हुए
थे और जिन्होंने बग़ावत के मौक़े पर क़त्लो-ग़ारत
की थी। उनमें से एक का नाम बर-अब्बा था।
8 अब हुजूम ने पीलातुस के पास आकर उससे
गुज़ारिश की कि वह मामूल के मुताबिक़ एक क़ैदी
को आज़ाद कर दे। 9 पीलातुस ने पूछा, "क्या तुम
चाहते हो कि मैं यहूदियों के बादशाह को आज़ाद
कर दूँ?" 10 वह जानता था कि राहनुमा इमामों
ने ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके हवाले
किया है।

11 लेकिन राहनुमा इमामों ने हुजूम को
उकसाया कि वह ईसा के बजाए बर-अब्बा को
माँगें। 12 पीलातुस ने सवाल किया, "फिर मैं
इसके साथ क्या करूँ जिसका नाम तुमने यहूदियों
का बादशाह रखा है?"

13 वह चीख़े, "उसे मसलूब करें।"

14 पीलातुस ने पूछा, "क्यों? उसने क्या जुर्म
किया है?"

लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीख़ते रहे,
"उसे मसलूब करें!"

15 चुनाँचे पीलातुस ने हुजूम को मुतमइन करने
की ख़ातिर बर-अब्बा को आज़ाद कर दिया। उसने
ईसा को कोड़े लगाने को कहा, फिर उसे मसलूब
करने के लिए फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

16 फ़ौजी ईसा को गवर्नर के महल बनाम
प्रैटोरियुम के सहन में ले गए और पूरी पलटन
को इकट्ठा किया। 17 उन्होंने उसे अरग़वानी रंग
का लिबास पहनाया और काँटेदार टहनियों का
एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया।
18 फिर वह उसे सलाम करने लगे, "ऐ यहूदियों
के बादशाह, आदाब!" 19 लाठी से उसके
सर पर मार मारकर वह उस पर थूकते रहे।
घुटने टेककर उन्होंने उसे सिजदा किया। 20 फिर
उसका मज़ाक़ उड़ाने से थककर उन्होंने अरग़वानी
लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े
पहनाए। फिर वह उसे मसलूब करने के लिए बाहर
ले गए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

21 उस वक़्त लिबिया के शहर कुरेन का
रहनेवाला एक आदमी बनाम शमाऊन देहात से
शहर को आ रहा था। वह सिकंदर और रूफ़ुस
का बाप था। जब वह ईसा और फ़ौजियों के
पास से गुज़रने लगा तो फ़ौजियों ने उसे सलीब
उठाने पर मजबूर किया। 22 यों चलते चलते वह
ईसा को एक मक़ाम पर ले गए जिसका नाम
गुलगुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था। 23 वहाँ
उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें मुर मिलाया गया
था, लेकिन उसने पीने से इनकार किया। 24 फिर
फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े
आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए
कि किस को क्या क्या मिलेगा उन्होंने क़ुरा डाला।
25 नौ बजे सुबह का वक़्त था जब उन्होंने उसे
मसलूब किया। 26 एक तख़्ती सलीब पर लगा दी
गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, "यहूदियों
का बादशाह।" 27 दो डाकुओं को भी ईसा के
साथ मसलूब किया गया, एक को उसके दहने
हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ। 28 [यों
मुक़द्दस कलाम का वह हवाला पूरा हुआ जिसमें
लिखा है, 'उसे मुजरिमों में शुमार किया गया।']

29 जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़्र बककर उस
की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी
हिक़ारत का इज़हार किया। उन्होंने कहा, "तूने तो
कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन
दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा। 30 अब
सलीब पर से उतरकर अपने आपको बचा!"

31 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने
भी ईसा का मज़ाक़ उड़ाकर कहा, "इसने औरों
को बचाया, लेकिन अपने आपको नहीं बचा
सकता। 32 इसराईल का यह बादशाह मसीह अब
सलीब पर से उतर आए ताकि हम यह देखकर
ईमान लाएँ।" और जिन आदमियों को उसके

साथ मसलूब किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

33 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब
गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 34 फिर
तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “एली, एली, लमा शबक़्तनी?” जिसका मतलब है, “ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?”

35 यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे,
“वह इलियास नबी को बुला रहा है।” 36 किसी
ने दौड़कर मै के सिरके में एक इस्फ़ंज डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की। वह बोला, “आओ हम देखें, शायद इलियास आकर उसे सलीब पर से उतार ले।”

37 लेकिन ईसा ने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।

38 उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दस-तरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। 39 जब
ईसा के मुक़ाबिल खड़े रोमी अफ़सर[a] ने देखा कि वह किस तरह मरा तो उसने कहा, “यह आदमी वाक़ई अल्लाह का फ़रज़ंद था!”

40 कुछ ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासले पर उसका मुशाहदा कर रही थीं। उनमें मरियम मग्दलीनी, छोटे याक़ूब और योसेस की माँ मरियम और सलोमी भी थीं। 41 गलील में यह
औरतें ईसा के पीछे चलकर इसकी ख़िदमत करती रही थीं। कई और ख़वातीन भी वहाँ थीं जो उसके साथ यरूशलम आ गई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

42 यह सब कुछ जुमे को हुआ जो अगले दिन के सबत के लिए तैयारी का दिन था। जब शाम होने को थी 43 तो अरिमतियाह का एक आदमी
बनाम यूसुफ़ हिम्मत करके पीलातुस के पास गया और उससे ईसा की लाश माँगी। (यूसुफ़ यहूदी अदालते-आलिया का नामवर मेंबर था और अल्लाह की बादशाही के आने के इंतज़ार में था।)
44 पीलातुस यह सुनकर हैरान हुआ कि ईसा मर
चुका है। उसने रोमी अफ़सर को बुलाकर उससे पूछा कि क्या ईसा वाक़ई मर चुका है? 45 जब
अफ़सर ने इसकी तसदीक़ की तो पीलातुस ने यूसुफ़ को लाश दे दी। 46 यूसुफ़ ने कफ़न ख़रीद
लिया, फिर ईसा की लाश उतारकर उसे कतान के कफ़न में लपेटा और एक क़ब्र में रख दिया जो चट्टान में तराशी गई थी। आख़िर में उसने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर क़ब्र का मुँह बंद कर दिया।
47 मरियम मग्दलीनी और योसेस की माँ मरियम
ने देख लिया कि ईसा की लाश कहाँ रखी गई है।

ईसा जी उठता है

16 हफ़ते की शाम को जब सबत का दिन गुज़र गया तो मरियम मग्दलीनी, याक़ूब की माँ मरियम और सलोमी ने ख़ुशबूदार मसाले ख़रीद लिए, क्योंकि वह क़ब्र के पास जाकर उन्हें ईसा की लाश पर लगाना चाहती थीं।
2 चुनाँचे वह इतवार को सुबह-सवेरे ही क़ब्र पर
गईं। सूरज तुलू हो रहा था। 3 रास्ते में वह एक
दूसरे से पूछने लगीं, “कौन हमारे लिए क़ब्र के मुँह से पत्थर को लुढ़काएगा?” 4 लेकिन जब
वहाँ पहुँचीं और नज़र उठाकर क़ब्र पर ग़ौर किया तो देखा कि पत्थर को एक तरफ़ लुढ़काया जा चुका है। यह पत्थर बहुत बड़ा था। 5 वह क़ब्र में
दाख़िल हुईं। वहाँ एक जवान आदमी नज़र आया जो सफ़ेद लिबास पहने हुए दाईं तरफ़ बैठा था। वह घबरा गईं।

6 उसने कहा, “मत घबराओ। तुम ईसा नासरी
को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था। वह जी उठा है, वह यहाँ नहीं है। उस जगह को ख़ुद देख लो जहाँ उसे रखा गया था। 7 अब जाओ, उसके
शागिर्दों और पतरस को बता दो कि वह तुम्हारे

[a] सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वहीं तुम उसे
देखोगे, जिस तरह उसने तुमको बताया था।”
8 ख़वातीन लरज़ती और उलझी हुई हालत में
क़ब्र से निकलकर भाग गईं। उन्होंने किसी को
भी कुछ न बताया, क्योंकि वह निहायत सहमी
हुई थीं।

ईसा मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर होता है

9 जब ईसा इतवार को सुबह-सवेरे जी उठा तो
पहला शख़्स जिस पर वह ज़ाहिर हुआ मरियम
मग्दलीनी थी जिससे उसने सात बदरूहें निकाली
थीं। 10 मरियम ईसा के साथियों के पास गई जो
मातम कर रहे और रो रहे थे। उसने उन्हें जो कुछ
हुआ था बताया। 11 लेकिन गो उन्होंने सुना कि
ईसा ज़िंदा है और कि मरियम ने उसे देखा है तो
भी उन्हें यक़ीन न आया।

ईसा मज़ीद दो शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

12 इसके बाद ईसा दूसरी सूरत में उनमें से
दो पर ज़ाहिर हुआ जब वह यरूशलम से देहात
की तरफ़ पैदल चल रहे थे। 13 दोनों ने वापस
जाकर यह बात बाक़ी लोगों को बताई। लेकिन
उन्हें इनका भी यक़ीन न आया।

ईसा ग्यारह रसूलों पर ज़ाहिर होता है

14 आख़िर में ईसा ग्यारह शागिर्दों पर भी
ज़ाहिर हुआ। उस वक़्त वह मेज़ पर बैठे खाना
खा रहे थे। उसने उन्हें उनकी बेएतक़ादी और
सख़्तदिली के सबब से डाँटा, कि उन्होंने उनका
यक़ीन न किया जिन्होंने उसे ज़िंदा देखा था।
15 फिर उसने उनसे कहा, “पूरी दुनिया में जाकर
तमाम मख़लूक़ात को अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाओ। 16 जो भी ईमान लाकर बपतिस्मा ले
उसे नजात मिलेगी। लेकिन जो ईमान न लाए उसे
मुजरिम क़रार दिया जाएगा। 17 और जहाँ जहाँ
लोग ईमान रखेंगे वहाँ यह इलाही निशान ज़ाहिर
होंगे : वह मेरे नाम से बदरूहें निकाल देंगे, नई नई
ज़बानें बोलेंगे 18 और साँपों को उठाकर महफ़ूज़
रहेंगे। मोहलक ज़हर पीने से उन्हें नुक़सान नहीं
पहुँचेगा और जब वह अपने हाथ मरीज़ों पर रखेंगे
तो शफ़ा पाएँगे।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

19 उनसे बात करने के बाद ख़ुदावंद ईसा को
आसमान पर उठा लिया गया और वह अल्लाह
के दहने हाथ बैठ गया। 20 इस पर शागिर्दों ने
निकलकर हर जगह मुनादी की। और ख़ुदावंद ने
उनकी हिमायत करके इलाही निशानों से कलाम
की तसदीक़ की।

लूक़ा की मारिफ़त इंजील

पेशलफ़्ज़

1 मुहतरम थियुफ़िलुस, बहुत-से लोग वह
सब कुछ लिख चुके हैं जो हमारे दरमियान
वाक़े हुआ है। 2 उनकी कोशिश यह थी कि वही
कुछ बयान किया जाए जिसकी गवाही वह देते हैं
जो शुरू ही से साथ थे और आज तक अल्लाह
का कलाम सुनाने की ख़िदमत सरंजाम दे रहे हैं।
3 मैंने भी हर मुमकिन कोशिश की है कि सब कुछ
शुरू से और ऐन हक़ीक़त के मुताबिक़ मालूम
करूँ। अब मैं यह बातें तरतीब से आपके लिए
लिखना चाहता हूँ। 4 आप यह पढ़कर जान लेंगे
कि जो बातें आपको सिखाई गई हैं वह सच और
दुरुस्त हैं।

यहया के बारे में पेशगोई

5 यहूदिया के बादशाह हेरोदेस के ज़माने में एक
इमाम था जिसका नाम ज़करियाह था। बैतुल-
मुक़द्दस में इमामों के मुख़्तलिफ़ गुरोह ख़िदमत
सरंजाम देते थे, और ज़करियाह का ताल्लुक़
अबियाह के गुरोह से था। उस की बीवी इमामे-
आज़म हारून की नसल से थी और उसका नाम
इलीशिबा था। 6 मियाँ-बीवी अल्लाह के नज़दीक
रास्तबाज़ थे और रब के तमाम अहकाम और
हिदायात के मुताबिक़ बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारते
थे। 7 लेकिन वह बेऔलाद थे। इलीशिबा के बच्चे
पैदा नहीं हो सकते थे। अब वह दोनों बूढ़े हो चुके
थे।

8 एक दिन बैतुल-मुक़द्दस में अबियाह के गुरोह
की बारी थी और ज़करियाह अल्लाह के हुज़ूर
अपनी ख़िदमत सरंजाम दे रहा था। 9 दस्तूर के
मुताबिक़ उन्होंने क़ुरा डाला ताकि मालूम करें कि
रब के मक़दिस में जाकर बख़ूर की क़ुरबानी कौन
जलाए। ज़करियाह को चुना गया। 10 जब वह
मुक़र्ररा वक़्त पर बख़ूर जलाने के लिए बैतुल-
मुक़द्दस में दाख़िल हुआ तो जमा होनेवाले तमाम
परस्तार सहन में दुआ कर रहे थे।

11 अचानक रब का एक फ़रिश्ता ज़ाहिर
हुआ जो बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह
के दहनी तरफ़ खड़ा था। 12 उसे देखकर
ज़करियाह घबराया और बहुत डर गया।
13 लेकिन फ़रिश्ते ने उससे कहा, “ज़करि-
याह, मत डर! अल्लाह ने तेरी दुआ सुन ली
है। तेरी बीवी इलीशिबा के बेटा होगा। उसका
नाम यहया रखना। 14 वह न सिर्फ़ तेरे लिए ख़ुशी
और मुसर्रत का बाइस होगा, बल्कि बहुत-से लोग
उस की पैदाइश पर ख़ुशी मनाएँगे। 15 क्योंकि
वह रब के नज़दीक अज़ीम होगा। लाज़िम है कि
वह मै और शराब से परहेज़ करे। वह पैदा होने
से पहले ही रूहुल-क़ुद्स से मामूर होगा 16 और
इसराईली क़ौम में से बहुतों को रब उनके ख़ुदा
के पास वापस लाएगा। 17 वह इलियास की रूह

और क़ुव्वत से ख़ुदावंद के आगे आगे चलेगा।
उस की ख़िदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों
की तरफ़ मायल हो जाएंगे और नाफ़रमान लोग
रास्तबाज़ों की दानाई की तरफ़ रुजू करेंगे। यों
वह इस क़ौम को रब के लिए तैयार करेगा।”
18 ज़करियाह ने फ़रिश्ते से पूछा, “मैं किस
तरह जानूँ कि यह बात सच है? मैं ख़ुद बूढ़ा हूँ
और मेरी बीवी भी उम्ररसीदा है।”
19 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “मैं जिबराईल हूँ जो
अल्लाह के हुज़ूर खड़ा रहता हूँ। मुझे इसी मक़सद
के लिए भेजा गया है कि तुझे यह ख़ुशख़बरी
सुनाऊँ। 20 लेकिन चूँकि तूने मेरी बात का यक़ीन
नहीं किया इसलिए तू ख़ामोश रहेगा और उस
वक़्त तक बोल नहीं सकेगा जब तक तेरे बेटा
पैदा न हो। मेरी यह बातें मुक़र्ररा वक़्त पर ही पूरी
होंगी।”
21 इस दौरान बाहर के लोग ज़करियाह के
इंतज़ार में थे। वह हैरान होते जा रहे थे कि
उसे वापस आने में क्यों इतनी देर हो रही है।
22 आख़िरकार वह बाहर आया, लेकिन वह उनसे
बात न कर सका। तब उन्होंने जान लिया कि उसने
बैतुल-मुक़द्दस में रोया देखी है। उसने हाथों से
इशारे तो किए, लेकिन ख़ामोश रहा।
23 ज़करियाह मुक़र्ररा वक़्त तक बैतुल-मुक़द्दस
में अपनी ख़िदमत अंजाम देता रहा, फिर अपने घर
वापस चला गया। 24 थोड़े दिनों के बाद उस की
बीवी इलीशिबा हामिला हो गई और वह पाँच माह
तक घर में छुपी रही। 25 उसने कहा, “ख़ुदावंद ने
मेरे लिए कितना बड़ा काम किया है, क्योंकि अब
उसने मेरी फ़िकर की और लोगों के सामने से मेरी
रुसवाई दूर कर दी।”

ईसा की पैदाइश की पेशगोई

26-27 इलीशिबा छः माह से उम्मीद से थी जब
अल्लाह ने जिबराईल फ़रिश्ते को एक कुँवारी
के पास भेजा जो नासरत में रहती थी। नासरत
गलील का एक शहर है और कुँवारी का नाम
मरियम था। उस की मँगनी एक मर्द के साथ हो
चुकी थी जो दाऊद बादशाह की नसल से था और
जिसका नाम यूसुफ़ था। 28 फ़रिश्ते ने उसके पास
आकर कहा, “ऐ ख़ातून जिस पर रब का ख़ास
फ़ज़ल हुआ है, सलाम! रब तेरे साथ है।”
29 मरियम यह सुनकर घबरा गई और सोचा,
“यह किस तरह का सलाम है?” 30 लेकिन
फ़रिश्ते ने अपनी बात जारी रखी और कहा, “ऐ
मरियम, मत डर, क्योंकि तुझ पर अल्लाह का
फ़ज़ल हुआ है। 31 तू उम्मीद से होकर एक बेटे
को जन्म देगी। तुझे उसका नाम ईसा (नजात
देनेवाला) रखना है। 32 वह अज़ीम होगा और
अल्लाह तआला का फ़रज़ंद कहलाएगा। रब
हमारा ख़ुदा उसे उसके बाप दाऊद के तख़्त पर
बिठाएगा 33 और वह हमेशा तक इसराईल पर
हुकूमत करेगा। उस की सलतनत कभी ख़त्म न
होगी।”
34 मरियम ने फ़रिश्ते से कहा, “यह क्योंकर
हो सकता है? अभी तो मैं कुँवारी हूँ।”
35 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “रूहुल-क़ुद्स तुझ
पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत
का साया तुझ पर छा जाएगा। इसलिए यह बच्चा
क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़रज़ंद कहलाएगा।
36 और देख, तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बेटा
होगा हालाँकि वह उम्ररसीदा है। गो उसे बाँझ
क़रार दिया गया था, लेकिन वह छः माह से उम्मीद
से है। 37 क्योंकि अल्लाह के नज़दीक कोई काम
नामुमकिन नहीं है।”
38 मरियम ने जवाब दिया, “मैं रब की ख़िदमत
के लिए हाज़िर हूँ। मेरे साथ वैसा ही हो जैसा
आपने कहा है।” इस पर फ़रिश्ता चला गया।

मरियम इलीशिबा से मिलती है

39 उन दिनों में मरियम यहूदिया के पहाड़ी
इलाक़े के एक शहर के लिए रवाना हुई। उसने
जल्दी जल्दी सफ़र किया। 40 वहाँ पहुँचकर वह
ज़करियाह के घर में दाख़िल हुई और इलीशिबा
को सलाम किया। 41 मरियम का यह सलाम
सुनकर इलीशिबा का बच्चा उसके पेट में उछल

पड़ा और इलीशिबा ख़ुद रूहुल-क़ुद्स से भर गई।
42 उसने बुलंद आवाज़ से कहा, "तू तमाम औरतों
में मुबारक है और मुबारक है तेरा बच्चा! 43 मैं
कौन हूँ कि मेरे ख़ुदावंद की माँ मेरे पास आई!
44 ज्योंही मैंने तेरा सलाम सुना बच्चा मेरे पेट में
ख़ुशी से उछल पड़ा। 45 तू कितनी मुबारक है,
क्योंकि तू ईमान लाई कि जो कुछ रब ने फ़रमाया
है वह तकमील तक पहुँचेगा।"

मरियम का गीत

46 इस पर मरियम ने कहा,
"मेरी जान रब की ताज़ीम करती है
47 और मेरी रूह अपने नजातदहिंदा
अल्लाह से निहायत ख़ुश है।
48 क्योंकि उसने अपनी ख़ादिमा
की पस्ती पर नज़र की है।
हाँ, अब से तमाम नसलें
मुझे मुबारक कहेंगी,
49 क्योंकि क़ादिरे-मुतलक़ ने मेरे लिए
बड़े बड़े काम किए हैं।
उसका नाम क़ुद्दूस है।
50 जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं
उन पर वह पुश्त-दर-पुश्त
अपनी रहमत ज़ाहिर करेगा।
51 उस की क़ुदरत ने अज़ीम काम
कर दिखाए हैं,
और दिल से मग़रूर लोग
तित्तर-बित्तर हो गए हैं।
52 उसने हुक्मरानों को
उनके तख़्त से हटाकर
पस्तहाल लोगों को सरफ़राज़ कर दिया है।
53 भूकों को उसने
अच्छी चीज़ों से मालामाल करके
अमीरों को ख़ाली हाथ लौटा दिया है।
54 वह अपने ख़ादिम
इसराईल की मदद के लिए आ गया है।
हाँ, उसने अपनी रहमत को याद किया है,
55 यानी वह दायमी वादा जो उसने
हमारे बुज़ुर्गों के साथ किया था,
इब्राहीम और उस की औलाद के साथ।"
56 मरियम तक़रीबन तीन माह इलीशिबा के हाँ
ठहरी रही, फिर अपने घर लौट गई।

यहया बपतिस्मा देनेवाले की पैदाइश

57 फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का
दिन आ पहुँचा और उसके बेटा हुआ। 58 जब
उसके हमसायों और रिश्तेदारों को इत्तला मिली
कि रब की उस पर कितनी बड़ी रहमत हुई है तो
उन्होंने उसके साथ ख़ुशी मनाई।
59 जब बच्चा आठ दिन का था तो वह उसका
ख़तना करवाने की रस्म के लिए आए। वह बच्चे
का नाम उसके बाप के नाम पर ज़करियाह रखना
चाहते थे, 60 लेकिन उस की माँ ने एतराज़ किया।
उसने कहा, "नहीं, उसका नाम यहया हो।"
61 उन्होंने कहा, "आपके रिश्तेदारों में तो ऐसा
नाम कहीं भी नहीं पाया जाता।" 62 तब उन्होंने
इशारों से बच्चे के बाप से पूछा कि वह क्या नाम
रखना चाहता है।
63 जवाब में ज़करियाह ने तख़्ती मँगवाकर उस
पर लिखा, "इसका नाम यहया है।" यह देखकर
सब हैरान हुए। 64 उसी लमहे ज़करियाह दुबारा
बोलने के क़ाबिल हो गया, और वह अल्लाह की
तमजीद करने लगा। 65 तमाम हमसायों पर ख़ौफ़
छा गया और इस बात का चर्चा यहूदिया के पूरे
इलाक़े में फैल गया। 66 जिसने भी सुना उसने
संजीदगी से इस पर ग़ौर किया और सोचा, "इस
बच्चे का क्या बनेगा?" क्योंकि रब की क़ुदरत
उसके साथ थी।

ज़करियाह की नबुव्वत

67 उसका बाप ज़करियाह रूहुल-क़ुद्स से
मामूर हो गया और नबुव्वत करके कहा,
68 "रब इसराईल के अल्लाह की
तमजीद हो!
क्योंकि वह अपनी क़ौम की मदद के लिए
आया है,

उसने फ़िद्या देकर उसे छुड़ाया है।
69 उसने अपने ख़ादिम दाऊद के घराने में
हमारे लिए एक अज़ीम नजातदहिंदा
खड़ा किया है।
70 ऐसा ही हुआ
जिस तरह उसने क़दीम ज़मानों में
अपने मुक़द्दस नबियों की मारिफ़त
फ़रमाया था,
71 कि वह हमें हमारे दुश्मनों से
नजात दिलाएगा,
उन सबके हाथ से
जो हमसे नफ़रत रखते हैं।
72 क्योंकि उसने फ़रमाया था
कि वह हमारे बापदादा पर रहम करेगा
73 और अपने मुक़द्दस अहद को
याद रखेगा,
उस वादे को जो उसने क़सम खा कर
इब्राहीम के साथ किया था।
74 अब उसका यह वादा पूरा हो जाएगा :
हम अपने दुश्मनों से मख़लसी पाकर
ख़ौफ़ के बग़ैर अल्लाह की ख़िदमत
कर सकेंगे,
75 जीते-जी उसके हुज़ूर
मुक़द्दस और रास्त ज़िंदगी
गुज़ार सकेंगे।
76 और तू, मेरे बच्चे,
अल्लाह तआला का नबी कहलाएगा।
क्योंकि तू ख़ुदावंद के आगे आगे
उसके रास्ते तैयार करेगा।
77 तू उस की क़ौम को
नजात का रास्ता दिखाएगा,
कि वह किस तरह
अपने गुनाहों की मुआफ़ी पाएगी।
78 हमारे अल्लाह की बड़ी रहमत
की वजह से
हम पर इलाही नूर चमकेगा।
79 उस की रौशनी उन पर फैल जाएगी
जो अंधेरे और मौत के साये में बैठे हैं,
हाँ वह हमारे क़दमों को
सलामती की राह पर पहुँचाएगी।”
80 यहया परवान चढ़ा और उस की रूह ने
तक़वियत पाई। उसने उस वक़्त तक रेगिस्तान
में ज़िंदगी गुज़ारी जब तक उसे इसराईल की
ख़िदमत करने के लिए बुलाया न गया।

ईसा की पैदाइश

2 उन ऐयाम में रोम के शहनशाह औगुस्तुस
ने फ़रमान जारी किया कि पूरी सलतनत
की मर्दुमशुमारी की जाए। 2 यह पहली
मर्दुमशुमारी उस वक़्त हुई जब कूरिनियुस शाम
का गवर्नर था। 3 हर किसी को अपने वतनी शहर
में जाना पड़ा ताकि वहाँ रजिस्टर में अपना नाम
दर्ज करवाए।
4 चुनाँचे यूसुफ़ गलील के शहर नासरत से
रवाना होकर यहूदिया के शहर बैत-लहम पहुँचा।
वजह यह थी कि वह दाऊद बादशाह के घराने
और नसल से था, और बैत-लहम दाऊद का शहर
था। 5 चुनाँचे वह अपने नाम को रजिस्टर में दर्ज
करवाने के लिए वहाँ गया। उस की मंगेतर मरियम
भी साथ थी। उस वक़्त वह उम्मीद से थी। 6 जब
वह वहाँ ठहरे हुए थे तो बच्चे को जन्म देने का
वक़्त आ पहुँचा। 7 बेटा पैदा हुआ। यह मरियम का
पहला बच्चा था। उसने उसे कपड़ों[a] में लपेटकर
एक चरनी में लिटा दिया, क्योंकि उन्हें सराय में
रहने की जगह नहीं मिली थी।

चरवाहों को ख़ुशख़बरी

8 उस रात कुछ चरवाहे क़रीब के खुले मैदान में
अपने रेवड़ों की पहरादारी कर रहे थे। 9 अचानक
रब का एक फ़रिश्ता उन पर ज़ाहिर हुआ, और
उनके इर्दगिर्द रब का जलाल चमका। यह देखकर
वह सख़्त डर गए। 10 लेकिन फ़रिश्ते ने उनसे
कहा, “डरो मत! देखो मैं तुमको बड़ी ख़ुशी

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : पोतड़ों

की ख़बर देता हूँ जो तमाम लोगों के लिए
होगी। 11 आज ही दाऊद के शहर में तुम्हारे लिए
नजातदहिंदा पैदा हुआ है यानी मसीह ख़ुदावंद।
12 और तुम उसे इस निशान से पहचान लोगे,
तुम एक शीरख़ार बच्चे को कपड़ों में लिपटा हुआ
पाओगे। वह चरनी में पड़ा हुआ होगा।"

13 अचानक आसमानी लशकरों के बे-
शुमार फ़रिश्ते उस फ़रिश्ते के साथ ज़ाहिर हुए
जो अल्लाह की हम्दो-सना करके कह रहे थे,

14 "आसमान की बुलंदियों पर अल्लाह की
इज़्ज़तो-जलाल, ज़मीन पर उन लोगों की
सलामती जो उसे मंज़ूर हैं।"

15 फ़रिश्ते उन्हें छोड़कर आसमान पर वापस
चले गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, "आओ,
हम बैत-लहम जाकर यह बात देखें जो हुई है और
जो रब ने हम पर ज़ाहिर की है।"

16 वह भागकर बैत-लहम पहुँचे। वहाँ उन्हें
मरियम और यूसुफ़ मिले और साथ ही छोटा बच्चा
जो चरनी में पड़ा हुआ था। 17 यह देखकर उन्होंने
सब कुछ बयान किया जो उन्हें इस बच्चे के बारे में
बताया गया था। 18 जिसने भी उनकी बात सुनी
वह हैरतज़दा हुआ। 19 लेकिन मरियम को यह
तमाम बातें याद रहीं और वह अपने दिल में उन
पर ग़ौर करती रही।

20 फिर चरवाहे लौट गए और चलते चलते उन
तमाम बातों के लिए अल्लाह की ताज़ीमो-तारीफ़
करते रहे जो उन्होंने सुनी और देखी थीं, क्योंकि
सब कुछ वैसा ही पाया था जैसा फ़रिश्ते ने उन्हें
बताया था।

बच्चे का नाम ईसा रखा जाता है

21 आठ दिन के बाद बच्चे का ख़तना करवाने
का वक़्त आ गया। उसका नाम ईसा रखा गया,
यानी वही नाम जो फ़रिश्ते ने मरियम को उसके
हामिला होने से पहले बताया था।

ईसा को बैतुल-मुक़द्दस में पेश किया जाता है

22 जब मूसा की शरीअत के मुताबिक़ तहारत
के दिन पूरे हुए तब वह बच्चे को यरूशलम ले गए
ताकि उसे रब के हुज़ूर पेश किया जाए, 23 जैसे
रब की शरीअत में लिखा है, "हर पहलौठे को रब
के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करना है।" 24 साथ ही
उन्होंने मरियम की तहारत की रस्म के लिए वह
क़ुरबानी पेश की जो रब की शरीअत बयान करती
है, यानी "दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर।"

25 उस वक़्त यरूशलम में एक आदमी बनाम
शमाऊन रहता था। वह रास्तबाज़ और ख़ुदातरस
था और इस इंतज़ार में था कि मसीह आकर
इसराईल को सुकून बख़्शे। रूहुल-क़ुद्स उस पर
था, 26 और उसने उस पर यह बात ज़ाहिर की
थी कि वह जीते-जी रब के मसीह को देखेगा।
27 उस दिन रूहुल-क़ुद्स ने उसे तहरीक दी कि
वह बैतुल-मुक़द्दस में जाए। चुनाँचे जब मरियम
और यूसुफ़ बच्चे को रब की शरीअत के मुताबिक़
पेश करने के लिए बैतुल-मुक़द्दस में आए 28 तो
शमाऊन मौजूद था। उसने बच्चे को अपने बाज़ुओं
में लेकर अल्लाह की हम्दो-सना करते हुए कहा,

29 "ऐ आक़ा, अब तू अपने बंदे को
इजाज़त देता है
कि वह सलामती से रेहलत कर जाए,
जिस तरह तूने फ़रमाया है।
30 क्योंकि मैंने अपनी आँखों से
तेरी उस नजात का मुशाहदा
कर लिया है
31 जो तूने तमाम क़ौमों की मौजूदगी में
तैयार की है।
32 यह एक ऐसी रौशनी है
जिससे ग़ैरयहूदियों की आँखें खुल जाएँगी
और तेरी क़ौम इसराईल को
जलाल हासिल होगा।"

33 बच्चे के माँ-बाप अपने बेटे के बारे में इन
अलफ़ाज़ पर हैरान हुए। 34 शमाऊन ने उन्हें
बरकत दी और मरियम से कहा, "यह बच्चा

मुक़र्रर हुआ है कि इसराईल के बहुत-से लोग
इससे ठोकर खाकर गिर जाएँ, लेकिन बहुत-से
इससे अपने पाँवों पर खड़े भी हो जाएंगे। गो
यह अल्लाह की तरफ़ से एक इशारा है तो भी
इसकी मुख़ालफ़त की जाएगी। 35 यों बहुतों के
दिली ख़यालात ज़ाहिर हो जाएंगे। इस सिलसिले
में तलवार तेरी जान में से भी गुज़र जाएगी।”

36 वहाँ बैतुल-मुक़द्दस में एक उम्ररसीदा नबिया
भी थी जिसका नाम हन्नाह था। वह फ़नुएल की
बेटी और आशर के क़बीले से थी। शादी के सात
साल बाद उसका शौहर मर गया था। 37 अब वह
बेवा की हैसियत से 84 साल की हो चुकी थी। वह
कभी बैतुल-मुक़द्दस को नहीं छोड़ती थी, बल्कि
दिन-रात अल्लाह को सिजदा करती, रोज़ा रखती
और दुआ करती थी। 38 उस वक़्त वह मरियम
और यूसुफ़ के पास आकर अल्लाह की तमजीद
करने लगी। साथ साथ वह हर एक को जो इस
इंतज़ार में था कि अल्लाह फ़िद्या देकर यरूशलम
को छुड़ाए, बच्चे के बारे में बताती रही।

वह नासरत वापस चले जाते हैं

39 जब ईसा के वालिदैन ने रब की शरीअत में
दर्ज तमाम फ़रायज़ अदा कर लिए तो वह गलील
में अपने शहर नासरत को लौट गए। 40 वहाँ
बच्चा परवान चढ़ा और तक़वियत पाता गया। वह
हिकमतो-दानाई से मामूर था, और अल्लाह का
फ़ज़्ल उस पर था।

बारह साल की उम्र में बैतुल-मुक़द्दस में

41 ईसा के वालिदैन हर साल फ़सह की ईद के
लिए यरूशलम जाया करते थे। 42 उस साल भी
वह मामूल के मुताबिक़ ईद के लिए गए जब ईसा
बारह साल का था। 43 ईद के इख़्तिताम पर वह
नासरत वापस जाने लगे, लेकिन ईसा यरूशलम
में रह गया। पहले उसके वालिदैन को मालूम न
था, 44 क्योंकि वह समझते थे कि वह क़ाफ़िले
में कहीं मौजूद है। लेकिन चलते चलते पहला
दिन गुज़र गया और वह अब तक नज़र न आया
था। इस पर वालिदैन उसे अपने रिश्तेदारों और
अज़ीज़ों में ढूँडने लगे। 45 जब वह वहाँ न मिला तो
मरियम और यूसुफ़ यरूशलम वापस गए और वहाँ
ढूँडने लगे। 46 तीन दिन के बाद वह आख़िरकार
बैतुल-मुक़द्दस में पहुँचे। वहाँ ईसा दीनी उस्तादों
के दरमियान बैठा उनकी बातें सुन रहा और उनसे
सवालात पूछ रहा था। 47 जिसने भी उस की बातें
सुनीं वह उस की समझ और जवाबों से दंग रह
गया। 48 उसे देखकर उसके वालिदैन घबरा गए।
उस की माँ ने कहा, “बेटा, तूने हमारे साथ यह
क्यों किया? तेरा बाप और मैं तुझे ढूँडते ढूँडते
शदीद कोफ़्त का शिकार हुए।”

49 ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझे तलाश
करने की क्या ज़रूरत थी? क्या आपको मालूम
न था कि मुझे अपने बाप के घर में होना ज़रूर
है?” 50 लेकिन वह उस की बात न समझे।

51 फिर वह उनके साथ रवाना होकर नासरत
वापस आया और उनके ताबे रहा। लेकिन उस
की माँ ने यह तमाम बातें अपने दिल में महफ़ूज़
रखें। 52 यों ईसा जवान हुआ। उस की समझ
और हिकमत बढ़ती गई, और उसे अल्लाह और
इनसान की मक़बूलियत हासिल थी।

यहया बपतिस्मा देनेवाले की ख़िदमत

3 फिर रोम के शहनशाह तिबरियुस की
हुकूमत का पंद्रहवाँ साल आ गया। उस
वक़्त पुंतियुस पीलातुस सूबा यहूदिया का गवर्नर
था, हेरोदेस अंतिपास गलील का हाकिम था,
उसका भाई फ़िलिप्पुस इतूरिया और त्रख़ोनीतिस
के इलाक़े का, जबकि लिसानियास अबिलेने
का। 2 हन्ना और कायफ़ा दोनों इमामे-आज़म
थे। उन दिनों में अल्लाह यहया बिन ज़करियाह
से हमकलाम हुआ जब वह रेगिस्तान में था।
3 फिर वह दरियाए-यरदन के पूरे इलाक़े में से
गुज़रा। हर जगह उसने एलान किया कि तौबा
करके बपतिस्मा लो ताकि तुम्हें अपने गुनाहों
की मुआफ़ी मिल जाए। 4 यों यसायाह नबी के
अलफ़ाज़ पूरे हुए जो उस की किताब में दर्ज हैं :

‘रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,
रब की राह तैयार करो!
उसके रास्ते सीधे बनाओ।
5 लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए,
ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलंद जगह
मैदान बन जाए।
जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए,
जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए।
6 और तमाम इनसान
अल्लाह की नजात देखेंगे।’

7 जब बहुत-से लोग यहया के पास आए ताकि
उससे बपतिस्मा लें तो उसने उनसे कहा, “ऐ
ज़हरीले साँप के बच्चो! किसने तुमको आनेवाले
ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? 8 अपनी ज़िंदगी
से ज़ाहिर करो कि तुमने वाक़ई तौबा की है।
यह ख़याल मत करो कि हम तो बच जाएंगे
क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुमको बताता
हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए
औलाद पैदा कर सकता है। 9 अब तो अदालत
की कुल्हाड़ी दरख़्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर
दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में
झोंका जाएगा।”

10 लोगों ने उससे पूछा, “फिर हम क्या करें?”

11 उसने जवाब दिया, “जिसके पास दो कुरते
हैं वह एक उसको दे दे जिसके पास कुछ न
हो। और जिसके पास खाना है वह उसे खिला
दे जिसके पास कुछ न हो।”

12 टैक्स लेनेवाले भी बपतिस्मा लेने के लिए
आए तो उन्होंने पूछा, “उस्ताद, हम क्या करें?”

13 उसने जवाब दिया, “सिर्फ़ उतने टैक्स लेना
जितने हुकूमत ने मुक़र्रर किए हैं।”

14 कुछ फ़ौजियों ने पूछा, “हमें क्या करना
चाहिए?”

उसने जवाब दिया, “किसी से जबरन या
ग़लत इलज़ाम लगाकर पैसे न लेना बल्कि अपनी
जायज़ आमदनी पर इकतिफ़ा करना।”

15 लोगों की तवक़्क़ोआत बहुत बढ़ गईं। वह
अपने दिलों में सोचने लगे कि क्या यह मसीह तो
नहीं है? 16 इस पर यहया उन सबसे मुख़ातिब
होकर कहने लगा, “मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा
देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो मुझसे
बड़ा है। मैं उसके जूतों के तसमे खोलने के भी
लायक़ नहीं। वह तुम्हें रूहुल-क़ुद्स और आग से
बपतिस्मा देगा। 17 वह हाथ में छाज पकड़े हुए
अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तैयार
खड़ा है। वह गाहने की जगह को बिलकुल साफ़
करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा।
लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो
बुझने की नहीं।”

18 इस क़िस्म की बहुत-सी और बातों से उसने
क़ौम को नसीहत की और उसे अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुनाई। 19 लेकिन एक दिन यों हुआ
कि यहया ने गलील के हाकिम हेरोदेस अंतिपास
को डाँटा। वजह यह थी कि हेरोदेस ने अपने भाई
की बीवी हेरोदियास से शादी कर ली थी और
इसके अलावा और बहुत-से ग़लत काम किए थे।
20 यह मलामत सुनकर हेरोदेस ने अपने ग़लत
कामों में और इज़ाफ़ा यह किया कि यहया को
जेल में डाल दिया।

ईसा का बपतिस्मा

21 एक दिन जब बहुत-से लोगों को बपतिस्मा
दिया जा रहा था तो ईसा ने भी बपतिस्मा लिया।
जब वह दुआ कर रहा था तो आसमान खुल गया
22 और रूहुल-क़ुद्स जिस्मानी सूरत में कबूतर की
तरह उस पर उतर आया। साथ साथ आसमान से
एक आवाज़ सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है,
तुझसे मैं ख़ुश हूँ।”

ईसा का नसबनामा

23 ईसा तक़रीबन तीस साल का था जब उसने
ख़िदमत शुरू की। उसे यूसुफ़ का बेटा समझा
जाता था। उसका नसबनामा यह है : यूसुफ़
बिन एली 24 बिन मत्तात बिन लावी बिन मलकी
बिन यन्ना बिन यूसुफ़ 25 बिन मत्तितियाह बिन
आमूस बिन नाहूम बिन असलियाह बिन नोगा

26 बिन माअत बिन मत्तितियाह बिन शमई बिन
योसेख़ बिन यूदाह 27 बिन यूहन्नाह बिन रेसा बिन
ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल बिन नेरी 28 बिन
मलिकी बिन अद्दी बिन क़ोसाम बिन इलमोदाम
बिन एर 29 बिन यशुअ बिन इलियज़र बिन योरीम
बिन मत्तात बिन लावी 30 बिन शमाऊन बिन
यहूदाह बिन यूसुफ़ बिन योनाम बिन इलियाक़ीम
31 बिन मलेआह बिन मिन्नाह बिन मत्तितियाह
बिन नातन बिन दाऊद 32 बिन यस्सी बिन ओबेद
बिन बोअज़ बिन सलमोन बिन नहसोन 33 बिन
अम्मीनदाब बिन अदमीन बिन अरनी बिन हसरोन
बिन फ़ारस बिन यहूदाह 34 बिन याक़ूब बिन
इसहाक़ बिन इब्राहीम बिन तारह बिन नहूर
35 बिन सरूज बिन रऊ बिन फ़लज बिन इबर बिन
सिलह 36 बिन क़ीनान बिन अरफ़क्सद बिन सिम
बिन नूह बिन लमक 37 बिन मतूसिलह बिन हनूक
बिन यारिद बिन महललेल बिन क़ीनान 38 बिन
अनूस बिन सेत बिन आदम। आदम को अल्लाह
ने पैदा किया था।

ईसा को आज़माया जाता है

4 ईसा दरियाए-यरदन से वापस आया। वह
रूहुल-क़ुद्स से मामूर था जिसने उसे
रेगिस्तान में लाकर उस की राहनुमाई की। 2 वहाँ
उसे चालीस दिन तक इबलीस से आज़माया
गया। इस पूरे अरसे में उसने कुछ न खाया।
आख़िरकार उसे भूक लगी।

3 फिर इबलीस ने उससे कहा, "अगर तू
अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इस पत्थर को हुक्म
दे कि रोटी बन जाए।"

4 लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, "हरगिज़
नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि
इनसान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं
होती।"

5 इस पर इबलीस ने उसे किसी बुलंद जगह पर
ले जाकर एक लमहे में दुनिया के तमाम ममालिक
दिखाए। 6 वह बोला, "मैं तुझे इन ममालिक की
शानो-शौकत और इन पर तमाम इख़्तियार दूँगा।
क्योंकि यह मेरे सुपुर्द किए गए हैं और जिसे चाहूँ
दे सकता हूँ। 7 लिहाज़ा यह सब कुछ तेरा ही
होगा। शर्त यह है कि तू मुझे सिजदा करे।"

8 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "हरगिज़ नहीं,
क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, 'रब
अपने अल्लाह को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी
की इबादत कर'।"

9 फिर इबलीस ने उसे यरूशलम ले जाकर
बैतुल-मुक़द्दस की सबसे ऊँची जगह पर खड़ा
किया और कहा, "अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद
है तो यहाँ से छलाँग लगा दे। 10 क्योंकि कलामे-
मुक़द्दस में लिखा है, 'वह अपने फ़रिश्तों को तेरी
हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा, 11 और वह तुझे
अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर
से ठेस न लगे'।"

12 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया
और कहा, "कलामे-मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है,
'रब अपने अल्लाह को न आज़माना'।"

13 इन आज़माइशों के बाद इबलीस ने ईसा को
कुछ देर के लिए छोड़ दिया।

ख़िदमत का आग़ाज़

14 फिर ईसा वापस गलील में आया। उसमें
रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत थी, और उस की शोहरत
उस पूरे इलाक़े में फैल गई। 15 वहाँ वह उनके
इबादतख़ानों में तालीम देने लगा, और सबने उस
की तारीफ़ की।

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

16 एक दिन वह नासरत पहुँचा जहाँ वह परवान
चढ़ा था। वहाँ भी वह मामूल के मुताबिक़ सबत
के दिन मक़ामी इबादतख़ाने में जाकर कलामे-
मुक़द्दस में से पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। 17 उसे
यसायाह नबी की किताब दी गई तो उसने तूमार
को खोलकर यह हवाला ढूँड निकाला,

18 "रब का रूह मुझ पर है,
क्योंकि उसने मुझे तेल से मसह करके
ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने

का इख़्तियार दिया है।
उसने मुझे यह एलान करने के लिए
भेजा है
कि क़ैदियों को रिहाई मिलेगी
और अंधे देखेंगे।
उसने मुझे भेजा है
कि मैं कुचले हुओं को आज़ाद कराऊँ
19 और रब की तरफ़ से
बहाली के साल का एलान करूँ।"
20 यह कहकर ईसा ने तूमार को लपेटकर
इबादतख़ाने के मुलाज़िम को वापस कर दिया
और बैठ गया। सारी जमात की आँखें उस पर
लगी थीं। 21 फिर वह बोल उठा, "आज अल्लाह
का यह फ़रमान तुम्हारे सुनते ही पूरा हो गया है।"
22 सब ईसा के हक़ में बातें करने लगे। वह उन
पुरफ़ज़ल बातों पर हैरतज़दा थे जो उसके मुँह से
निकलीं, और वह कहने लगे, "क्या यह यूसुफ़
का बेटा नहीं है?"
23 उसने उनसे कहा, "बेशक तुम मुझे यह
कहावत बताओगे, 'ऐ डाक्टर, पहले अपने
आपका इलाज कर।' यानी सुनने में आया है कि
आपने कफ़र्नहूम में मोजिज़े किए हैं। अब ऐसे
मोजिज़े यहाँ अपने वतनी शहर में भी दिखाएँ।
24 लेकिन मैं तुमको सच बताता हूँ कि कोई भी
नबी अपने वतनी शहर में मक़बूल नहीं होता।
25 यह हक़ीक़त है कि इलियास नबी के ज़माने
में इसराईल में बहुत-सी ज़रूरतमंद बेवाएँ थीं, उस
वक़्त जब साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई और
पूरे मुल्क में सख़्त काल पड़ा। 26 इसके बावुजूद
इलियास को उनमें से किसी के पास नहीं भेजा
गया बल्कि एक ग़ैरयहूदी बेवा के पास जो सैदा के
शहर सारपत में रहती थी। 27 इसी तरह इलीशा
नबी के ज़माने में इसराईल में कोढ़ के बहुत-से
मरीज़ थे। लेकिन उनमें से किसी को शफ़ा न
मिली बल्कि सिर्फ़ नामान को जो मुल्के-शाम का
शहरी था।"
28 जब इबादतख़ाने में जमा लोगों ने यह बातें
सुनीं तो वह बड़े तैश में आ गए। 29 वह उठे और
उसे शहर से निकालकर उस पहाड़ी के किनारे ले
गए जिस पर शहर को तामीर किया गया था। वहाँ
से वह उसे नीचे गिराना चाहते थे, 30 लेकिन ईसा
उनमें से गुज़रकर वहाँ से चला गया।

आदमी का बदरूह की गिरिफ़्त से रिहाई

31 इसके बाद वह गलील के शहर कफ़र्न-
हूम को गया और सबत के दिन इबादतख़ाने
में लोगों को सिखाने लगा। 32 वह उस की
तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, क्योंकि
वह इख़्तियार के साथ तालीम देता था।
33 इबादतख़ाने में एक आदमी था जो किसी
नापाक रूह के क़ब्ज़े में था। अब वह चीख़
चीख़कर बोलने लगा, 34 "अरे नासरत के ईसा,
हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या आप
हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि
आप कौन हैं, आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।"
35 ईसा ने उसे डाँटकर कहा, "ख़ामोश!
आदमी में से निकल जा!" इस पर बदरूह आदमी
को जमात के बीच में फ़र्श पर पटककर उसमें से
निकल गई। लेकिन वह आदमी ज़ख़मी न हुआ।
36 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से
कहने लगे, "उस आदमी के अलफ़ाज़ में क्या
इख़्तियार और क़ुव्वत है कि बदरूहें उसका हुक्म
मानती और उसके कहने पर निकल जाती हैं?"
37 और ईसा के बारे में चर्चा उस पूरे इलाक़े में
फैल गया।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ायाबी

38 फिर ईसा इबादतख़ाने को छोड़कर शमाऊन
के घर गया। वहाँ शमाऊन की सास शदीद बुख़ार
में मुब्तला थी। उन्होंने ईसा से गुज़ारिश की कि
वह उस की मदद करे। 39 उसने उसके सिरहाने
खड़े होकर बुख़ार को डाँटा तो वह उतर गया
और शमाऊन की सास उसी वक़्त उठकर उनकी
ख़िदमत करने लगी।
40 जब दिन ढल गया तो सब मक़ामी लोग
अपने मरीज़ों को ईसा के पास लाए। ख़ाह उनकी

बीमारियाँ कुछ भी क्यों न थीं, उसने हर एक
पर अपने हाथ रखकर उसे शफ़ा दी। 41 बहुतों में
बदरूहें भी थीं जिन्होंने निकलते वक़्त चिल्लाकर
कहा, "तू अल्लाह का फ़रज़ंद है।" लेकिन चूँकि
वह जानती थीं कि वह मसीह है इसलिए उसने
उन्हें डाँटकर बोलने न दिया।

ख़ुशख़बरी हर एक के लिए है

42 जब अगला दिन चढ़ा तो ईसा शहर से
निकलकर किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन
हुजूम उसे ढूँडते ढूँडते आख़िरकार उसके पास
पहुँचा। लोग उसे अपने पास से जाने नहीं देना
चाहते थे। 43 लेकिन उसने उनसे कहा, "लाज़िम
है कि मैं दूसरे शहरों में भी जाकर अल्लाह की
बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ, क्योंकि मुझे
इसी मक़सद के लिए भेजा गया है।"

44 चुनाँचे वह यहूदिया के इबादतख़ानों में
मुनादी करता रहा।

पहले शागिर्दों की बुलाहट

5 एक दिन ईसा गलील की झील गन्नेसरत
के किनारे पर खड़ा हुजूम को अल्लाह का
कलाम सुना रहा था। लोग सुनते सुनते इतने
क़रीब आ गए कि उसके लिए जगह कम हो गई।
2 फिर उसे दो कश्तियाँ नज़र आईं जो झील के
किनारे लगी थीं। मछेरे उनमें से उतर चुके थे और
अब अपने जालों को धो रहे थे। 3 ईसा एक कश्ती
पर सवार हुआ। उसने कश्ती के मालिक शमाऊन
से दरख़ास्त की कि वह कश्ती को किनारे से
थोड़ा-सा दूर ले चले। फिर वह कश्ती में बैठा और
हुजूम को तालीम देने लगा।

4 तालीम देने के इख़्तिताम पर उसने शमाऊन
से कहा, "अब कश्ती को वहाँ ले जा जहाँ पानी
गहरा है और अपने जालों को मछलियाँ पकड़ने
के लिए डाल दो।"

5 लेकिन शमाऊन ने एतराज़ किया, "उस्ताद,
हमने तो पूरी रात बड़ी कोशिश की, लेकिन एक
भी न पकड़ी। ताहम आपके कहने पर मैं जालों को
दुबारा डालूँगा।" 6 यह कहकर उन्होंने गहरे पानी
में जाकर अपने जाल डाल दिए। और वाक़ई,
मछलियों का इतना बड़ा ग़ोल जालों में फँस गया
कि वह फटने लगे। 7 यह देखकर उन्होंने अपने
साथियों को इशारा करके बुलाया ताकि वह दूसरी
कश्ती में आकर उनकी मदद करें। वह आए और
सबने मिलकर दोनों कश्तियों को इतनी मछलियों
से भर दिया कि आख़िरकार दोनों डूबने के ख़तरे
में थीं। 8 जब शमाऊन पतरस ने यह सब कुछ
देखा तो उसने ईसा के सामने मुँह के बल गिरकर
कहा, "ख़ुदावंद, मुझसे दूर चले जाएँ। मैं तो
गुनाहगार हूँ।" 9 क्योंकि वह और उसके साथी
इतनी मछलियाँ पकड़ने की वजह से सख़्त हैरान
थे। 10 और ज़बदी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना की
हालत भी यही थी जो शमाऊन के साथ मिलकर
काम करते थे।

लेकिन ईसा ने शमाऊन से कहा, "मत डर।
अब से तू आदमियों को पकड़ा करेगा।"

11 वह अपनी कश्तियों को किनारे पर ले आए
और सब कुछ छोड़कर ईसा के पीछे हो लिए।

कोढ़ से शफ़ा

12 एक दिन ईसा किसी शहर में से गुज़र रहा
था कि वहाँ एक मरीज़ मिला जिसका पूरा जिस्म
कोढ़ से मुतअस्सिर था। जब उसने ईसा को देखा
तो वह मुँह के बल गिर पड़ा और इल्तिजा की,
"ऐ ख़ुदावंद, अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़
कर सकते हैं।"

13 ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और
कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।" इस पर
बीमारी फ़ौरन दूर हो गई। 14 ईसा ने उसे हिदायत
की कि वह किसी को न बताए कि क्या हुआ
है। उसने कहा, "सीधा बैतुल-मुक़द्दस में इमाम
के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने
साथ वह क़ुरबानी ले जा जिसका तक़ाज़ा मूसा
की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा
मिलती है। यों अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि
तू वाक़ई पाक-साफ़ हो गया है।"

15 ताहम ईसा के बारे में ख़बर और ज़्यादा
तेज़ी से फैलती गई। लोगों के बड़े गुरोह उसके
पास आते रहे ताकि उस की बातें सुनें और उसके
हाथ से शफ़ा पाएँ। 16 फिर भी वह कई बार उन्हें
छोड़कर दुआ करने के लिए वीरान जगहों पर
जाया करता था।

मफ़लूज के लिए छत खोली जाती है

17 एक दिन वह लोगों को तालीम दे रहा था।
फ़रीसी और शरीअत के आलिम भी गलील और
यहूदिया के हर गाँव और यरूशलम से आकर
उसके पास बैठे थे। और रब की क़ुदरत उसे शफ़ा
देने के लिए तहरीक दे रही थी। 18 इतने में कुछ
आदमी एक मफ़लूज को चारपाई पर डालकर
वहाँ पहुँचे। उन्होंने उसे घर के अंदर ईसा के सामने
रखने की कोशिश की, 19 लेकिन बेफ़ायदा। घर
में इतने लोग थे कि अंदर जाना नामुमकिन था।
इसलिए वह आख़िरकार छत पर चढ़ गए और
कुछ टायलें उधेड़कर छत का एक हिस्सा खोल
दिया। फिर उन्होंने चारपाई को मफ़लूज समेत
हुजूम के दरमियान ईसा के सामने उतारा। 20 जब
ईसा ने उनका ईमान देखा तो उसने मफ़लूज से
कहा, "ऐ आदमी, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए
हैं।"

21 यह सुनकर शरीअत के आलिम और फ़रीसी
सोच-बिचार में पड़ गए, "यह किस तरह का बंदा
है जो इस क़िस्म का कुफ़र बकता है? सिर्फ़
अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।"

22 लेकिन ईसा ने जान लिया कि यह क्या
सोच रहे हैं, इसलिए उसने पूछा, "तुम दिल में
इस तरह की बातें क्यों सोच रहे हो? 23 क्या
मफ़लूज से यह कहना ज़्यादा आसान है कि 'तेरे
गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं' या यह कि 'उठकर
चल-फिर'? 24 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि
इब्ने-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह मुआफ़
करने का इख़्तियार है।" यह कहकर वह मफ़लूज
से मुख़ातिब हुआ, "उठ, अपनी चारपाई उठाकर
अपने घर चला जा।"

25 लोगों के देखते देखते वह आदमी खड़ा हुआ
और अपनी चारपाई उठाकर अल्लाह की हम्दो-
सना करते हुए अपने घर चला गया। 26 यह
देखकर सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की
तमजीद करने लगे। उन पर ख़ौफ़ छा गया और
वह कह उठे, "आज हमने नाक़ाबिले-यक़ीन बातें
देखी हैं।"

ईसा मत्ती को बुलाता है

27 इसके बाद ईसा निकलकर एक टैक्स
लेनेवाले के पास से गुज़रा जो अपनी चौकी पर
बैठा था। उसका नाम लावी था। उसे देखकर ईसा
ने कहा, "मेरे पीछे हो ले।" 28 वह उठा और सब
कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिया।

29 बाद में उसने अपने घर में ईसा की बड़ी
ज़ियाफ़त की। बहुत-से टैक्स लेनेवाले और दीगर
मेहमान इसमें शरीक हुए। 30 यह देखकर कुछ
फ़रीसियों और उनसे ताल्लुक़ रखनेवाले शरीअत
के आलिमों ने ईसा के शागिर्दों से शिकायत
की। उन्होंने कहा, "तुम टैक्स लेनेवालों और
गुनाहगारों के साथ क्यों खाते-पीते हो?"

31 ईसा ने जवाब दिया, "सेहतमंदों को
डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरी-
ज़ों को। 32 मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि
गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ ताकि वह तौबा
करें।"

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

33 कुछ लोगों ने ईसा से एक और सवाल पूछा,
"यहया के शागिर्द अकसर रोज़ा रखते हैं। और
साथ साथ वह दुआ भी करते रहते हैं। फ़रीसियों
के शागिर्द भी इसी तरह करते हैं। लेकिन आपके
शागिर्द खाने-पीने का सिलसिला जारी रखते हैं।"

34 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुम शादी के
मेहमानों को रोज़ा रखने को कह सकते हो
जब दूल्हा उनके दरमियान है? हरगिज़ नहीं!
35 लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले
लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।"

36 उसने उन्हें यह मिसाल भी दी, “कौन किसी
नए लिबास को फाड़कर उसका एक टुकड़ा किसी
पुराने लिबास में लगाएगा? कोई भी नहीं! अगर
वह ऐसा करे तो न सिर्फ़ नया लिबास ख़राब होगा
बल्कि उससे लिया गया टुकड़ा पुराने लिबास को
भी ख़राब कर देगा। 37 इसी तरह कोई भी अंगूर
का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं
डालेगा। अगर वह ऐसा करे तो पुरानी मशकें पैदा
होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै
और मशकें दोनों ज़ाया हो जाएँगी। 38 इसलिए
अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है
जो लचकदार होती हैं। 39 लेकिन जो भी पुरानी
मै पीना पसंद करे वह अंगूर का नया और ताज़ा
रस पसंद नहीं करेगा। वह कहेगा कि पुरानी ही
बेहतर है।”

सबत के बारे में सवाल

6 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र
रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द अनाज
की बालें तोड़ने और अपने हाथों से मलकर खाने
लगे। सबत का दिन था। 2 यह देखकर कुछ
फ़रीसियों ने कहा, “तुम यह क्यों कर रहे हो?
सबत के दिन ऐसा करना मना है।”

3 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कभी नहीं
पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके
साथियों को भूक लगी थी? 4 वह अल्लाह के
घर में दाख़िल हुआ और रब के लिए मख़सूसशुदा
रोटियाँ लेकर खाईं, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें
खाने की इजाज़त है। और उसने अपने साथियों
को भी यह रोटियाँ खिलाईं।” 5 फिर ईसा ने उनसे
कहा, “इब्ने-आदम सबत का मालिक है।”

सूखे हाथ की शफ़ा

6 सबत के एक और दिन ईसा इबादतख़ाने
में जाकर सिखाने लगा। वहाँ एक आदमी था
जिसका दहना हाथ सूखा हुआ था। 7 शरीअत के
आलिम और फ़रीसी बड़े ग़ौर से देख रहे थे कि
क्या ईसा इस आदमी को आज भी शफ़ा देगा?
क्योंकि वह उस पर इलज़ाम लगाने का कोई
बहाना ढूँड रहे थे। 8 लेकिन ईसा ने उनकी सोच
को जान लिया और उस सूखे हाथवाले आदमी से
कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।” चुनाँचे वह
आदमी खड़ा हुआ। 9 फिर ईसा ने उनसे पूछा,
“मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के दिन क्या
करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की
या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने
की या उसे तबाह करने की?” 10 वह ख़ामोश
होकर अपने इर्दगिर्द के तमाम लोगों की तरफ़
देखने लगा। फिर उसने कहा, “अपना हाथ आगे
बढ़ा।” उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल
हो गया।

11 लेकिन वह आपे में न रहे और एक दूसरे से
बात करने लगे कि हम ईसा से किस तरह निपट
सकते हैं?

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

12 उन्हीं दिनों में ईसा निकलकर दुआ करने के
लिए पहाड़ पर चढ़ गया। दुआ करते करते पूरी
रात गुज़र गई। 13 फिर उसने अपने शागिर्दों को
अपने पास बुलाकर उनमें से बारह को चुन लिया,
जिन्हें उसने अपने रसूल मुक़र्रर किया। उनके नाम
यह हैं : 14 शमाऊन जिसका लक़ब उसने पतरस
रखा, उसका भाई अंदरियास, याक़ूब, यूहन्ना,
फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई, 15 मत्ती, तोमा, याक़ूब
बिन हलफ़ई, शमाऊन मुजाहिद, 16 यहूदाह बिन
याक़ूब और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद में
उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

ईसा तालीम और शफ़ा देता है

17 फिर वह उनके साथ पहाड़ से उतरकर एक
खुले और हमवार मैदान में खड़ा हुआ। वहाँ
शागिर्दों की बड़ी तादाद ने उसे घेर लिया। साथ ही
बहुत-से लोग यहूदिया, यरूशलम और सूर और
सैदा के साहिली इलाक़े से 18 उस की तालीम
सुनने और बीमारियों से शफ़ा पाने के लिए आए
थे। और जिन्हें बदरूहें तंग कर रही थीं उन्हें भी

शफ़ा मिली। 19 तमाम लोग उसे छूने की कोशिश
कर रहे थे, क्योंकि उसमें से क़ुव्वत निकलकर
सबको शफ़ा दे रही थी।

कौन मुबारक है?

20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों की तरफ़ देखकर
कहा,

“मुबारक हो तुम जो ज़रूरतमंद हो,
क्योंकि अल्लाह की बादशाही
तुमको ही हासिल है।
21 मुबारक हो तुम जो इस वक़्त भूके हो,
क्योंकि सेर हो जाओगे।
मुबारक हो तुम जो इस वक़्त रोते हो,
क्योंकि ख़ुशी से हँसोगे।

22 मुबारक हो तुम जब लोग इसलिए तुमसे
नफ़रत करते और तुम्हारा हुक़्क़ा-पानी बंद करते
हैं कि तुम इब्ने-आदम के पैरोकार बन गए हो।
हाँ, मुबारक हो तुम जब वह इसी वजह से तुम्हें
लान-तान करते और तुम्हारी बदनामी करते हैं।
23 जब वह ऐसा करते हैं तो शादमान होकर ख़ुशी
से नाचो, क्योंकि आसमान पर तुमको बड़ा अज्र
मिलेगा। उनके बापदादा ने यही सुलूक नबियों के
साथ किया था।

24 मगर तुम पर अफ़सोस
जो अब दौलतमंद हो,
क्योंकि तुम्हारा सुकून
यहीं ख़त्म हो जाएगा।
25 तुम पर अफ़सोस
जो इस वक़्त ख़ूब सेर हो,
क्योंकि बाद में तुम भूके होगे।
तुम पर अफ़सोस जो अब हँस रहे हो,
क्योंकि एक वक़्त आएगा
कि रो रोकर मातम करोगे।

26 तुम पर अफ़सोस जिनकी तमाम लोग
तारीफ़ करते हैं, क्योंकि उनके बापदादा ने यही
सुलूक झूटे नबियों के साथ किया था।

अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखना

27 लेकिन तुमको जो सुन रहे हो मैं यह बताता
हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो, और उनसे
भलाई करो जो तुमसे नफ़रत करते हैं। 28 जो
तुम पर लानत करते हैं उन्हें बरकत दो, और जो
तुमसे बुरा सुलूक करते हैं उनके लिए दुआ करो।
29 अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो
उसे दूसरा गाल भी पेश कर दो। इसी तरह अगर
कोई तुम्हारी चादर छीन ले तो उसे क़मीस लेने
से भी न रोको। 30 जो भी तुमसे कुछ माँगता है
उसे दो। और जिसने तुमसे कुछ लिया है उससे
उसे वापस देने का तक़ाज़ा न करो। 31 लोगों के
साथ वैसा सुलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह
तुम्हारे साथ करें।

32 अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत करो जो
तुमसे करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या ख़ास
मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं।
33 और अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से भलाई करो जो
तुमसे भलाई करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या ख़ास
मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं।
34 इसी तरह अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं को उधार दो
जिनके बारे में तुम्हें अंदाज़ा है कि वह वापस कर
देंगे तो इसमें तुम्हारी क्या ख़ास मेहरबानी होगी?
गुनाहगार भी गुनाहगारों को उधार देते हैं जब
उन्हें सब कुछ वापस मिलने का यक़ीन होता है।
35 नहीं, अपने दुश्मनों से मुहब्बत करो और उन्हीं
से भलाई करो। उन्हें उधार दो जिनके बारे में तुम्हें
वापस मिलने की उम्मीद नहीं है। फिर तुमको बड़ा
अज्र मिलेगा और तुम अल्लाह तआला के फ़रज़ंद
साबित होगे, क्योंकि वह भी नाशुक्रों और बुरे
लोगों पर नेकी का इज़हार करता है। 36 लाज़िम
है कि तुम रहमदिल हो क्योंकि तुम्हारा बाप भी
रहमदिल है।

मुंसिफ़ न बनना

37 दूसरों की अदालत न करना तो तुम्हारी भी
अदालत नहीं की जाएगी। दूसरों को मुजरिम
क़रार न देना तो तुमको भी मुजरिम क़रार नहीं

दिया जाएगा। मुआफ़ करो तो तुमको भी मुआफ़
कर दिया जाएगा। 38 दो तो तुमको भी दिया
जाएगा। हाँ, जिस हिसाब से तुमने दिया उसी
हिसाब से तुमको दिया जाएगा, बल्कि पैमाना
दबा दबा और हिला हिलाकर और लबरेज़ करके
तुम्हारी झोली में डाल दिया जाएगा। क्योंकि जिस
पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा
जाएगा।”

39 फिर ईसा ने यह मिसाल पेश की। “क्या
एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई कर सकता है?
हरगिज़ नहीं! अगर वह ऐसा करे तो दोनों गढ़े में
गिर जाएंगे। 40 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं
होता बल्कि जब उसे पूरी ट्रेनिंग मिली हो तो वह
अपने उस्ताद ही की मानिंद होगा।

41 तू क्यों ग़ौर से अपने भाई की आँख में पड़े
तिनके पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर
नज़र नहीं आता जो तेरी अपनी आँख में है? 42 तू
क्योंकर अपने भाई से कह सकता है, ‘भाई,
ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा तिनका निकालने
दो’ जबकि तुझे अपनी आँख का शहतीर नज़र
नहीं आता? रियाकार! पहले अपनी आँख के
शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका
साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से
देखकर निकाल सकेगा।

दरख़्त उसके फल से पहचाना जाता है

43 न अच्छा दरख़्त ख़राब फल लाता है, न
ख़राब दरख़्त अच्छा फल। 44 हर क़िस्म का दरख़्त
उसके फल से पहचाना जाता है। ख़ारदार झाड़ियों
से अंजीर या अंगूर नहीं तोड़े जाते। 45 नेक शख़्स
का अच्छा फल उसके दिल के अच्छे ख़ज़ाने से
निकलता है जबकि बुरे शख़्स का ख़राब फल
उसके दिल की बुराई से निकलता है। क्योंकि
जिस चीज़ से दिल भरा होता है वही छलककर
मुँह से निकलती है।

दो क़िस्म के मकान

46 तुम क्यों मुझे ‘ख़ुदावंद, ख़ुदावंद’ कहकर
पुकारते हो? मेरी बात पर तो तुम अमल नहीं
करते। 47 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि वह
शख़्स किसकी मानिंद है जो मेरे पास आकर मेरी
बात सुन लेता और उस पर अमल करता है।
48 वह उस आदमी की मानिंद है जिसने अपना
मकान बनाने के लिए गहरी बुनियाद की खुदाई
करवाई। खोद खोदकर वह चट्टान तक पहुँच गया।
उसी पर उसने मकान की बुनियाद रखी। मकान
मुकम्मल हुआ तो एक दिन सैलाब आया। ज़ोर
से बहता हुआ पानी मकान से टकराया, लेकिन
वह उसे हिला न सका क्योंकि वह मज़बूती से
बनाया गया था। 49 लेकिन जो मेरी बात सुनता
और उस पर अमल नहीं करता वह उस शख़्स की
मानिंद है जिसने अपना मकान बुनियाद के बग़ैर
ज़मीन पर ही तामीर किया। ज्योंही ज़ोर से बहता
हुआ पानी उससे टकराया तो वह गिर गया और
सरासर तबाह हो गया।”

रोमी अफ़सर के ग़ुलाम की शफ़ा

7 यह सब कुछ लोगों को सुनाने के बाद ईसा
कफ़र्नहूम चला गया। 2 वहाँ सौ फ़ौजियों
पर मुक़र्रर एक अफ़सर रहता था। उन दिनों में
उसका एक ग़ुलाम जो उसे बहुत अज़ीज़ था
बीमार पड़ गया। अब वह मरने को था। 3 चूँकि
अफ़सर ने ईसा के बारे में सुना था इसलिए उसने
यहूदियों के कुछ बुज़ुर्ग यह दरख़ास्त करने के लिए
उसके पास भेज दिए कि वह आकर ग़ुलाम को
शफ़ा दे। 4 वह ईसा के पास पहुँचकर बड़े ज़ोर से
इल्तिजा करने लगे, “यह आदमी इस लायक़ है
कि आप उस की दरख़ास्त पूरी करें, 5 क्योंकि वह
हमारी क़ौम से प्यार करता है, यहाँ तक कि उसने
हमारे लिए इबादतख़ाना भी तामीर करवाया है।”

6 चुनाँचे ईसा उनके साथ चल पड़ा। लेकिन
जब वह घर के क़रीब पहुँच गया तो अफ़सर ने
अपने कुछ दोस्त यह कहकर उसके पास भेज
दिए कि “ख़ुदावंद, मेरे घर में आने की तकलीफ़

न करें, क्योंकि मैं इस लायक़ नहीं हूँ। 7 इसलिए
मैंने ख़ुद को आपके पास आने के लायक़ भी न
समझा। बस वहीं से कह दें तो मेरा ग़ुलाम शफ़ा
पा जाएगा। 8 क्योंकि मुझे ख़ुद आला अफ़सरों
के हुक्म पर चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी
फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ, 'जा!' तो वह जाता
है और दूसरे को 'आ!' तो वह आता है। इसी
तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, 'यह कर!'
तो वह करता है।"

9 यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने
मुड़कर अपने पीछे आनेवाले हुजूम से कहा, "मैं
तुमको सच बताता हूँ, मैंने इसराईल में भी इस
क़िस्म का ईमान नहीं पाया।"

10 जब अफ़सर का पैग़ाम पहुँचानेवाले घर
वापस आए तो उन्होंने देखा कि ग़ुलाम की सेहत
बहाल हो चुकी है।

बेवा का बेटा ज़िंदा किया जाता है

11 कुछ देर के बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ
नायन शहर के लिए रवाना हुआ। एक बड़ा हुजूम
भी साथ चल रहा था। 12 जब वह शहर के दरवाज़े
के क़रीब पहुँचा तो एक जनाज़ा निकला। जो
नौजवान फ़ौत हुआ था उस की माँ बेवा थी और
वह उसका इकलौता बेटा था। माँ के साथ शहर के
बहुत-से लोग चल रहे थे। 13 उसे देखकर ख़ुदावंद
को उस पर बड़ा तरस आया। उसने उससे कहा,
"मत रो।" 14 फिर वह जनाज़े के पास गया और
उसे छुआ। उसे उठानेवाले रुक गए तो ईसा ने
कहा, "ऐ नौजवान, मैं तुझे कहता हूँ कि उठ!"
15 मुरदा उठ बैठा और बोलने लगा। ईसा ने उसे
उस की माँ के सुपुर्द कर दिया।

16 यह देखकर तमाम लोगों पर ख़ौफ़ तारी हो
गया और वह अल्लाह की तमजीद करके कहने
लगे, "हमारे दरमियान एक बड़ा नबी बरपा हुआ
है। अल्लाह ने अपनी क़ौम पर नज़र की है।"

17 और ईसा के बारे में यह ख़बर पूरे यहूदिया
और इर्दगिर्द के इलाक़े में फैल गई।

यहया का ईसा से सवाल

18 यहया को भी अपने शागिर्दों की मारिफ़त
इन तमाम वाक़ियात के बारे में पता चला। इस पर
उसने दो शागिर्दों को बुलाकर 19 उन्हें यह पूछने
के लिए ख़ुदावंद के पास भेजा, "क्या आप वही
हैं जिसे आना है या हम किसी और के इंतज़ार में
रहें?"

20 चुनाँचे यह शागिर्द ईसा के पास पहुँच-
कर कहने लगे, "यहया बपतिस्मा देनेवाले ने हमें
यह पूछने के लिए भेजा है कि क्या आप वही
हैं जिसे आना है या हम किसी और का इंतज़ार
करें?"

21 ईसा ने उसी वक़्त बहुत-से लोगों को शफ़ा
दी थी जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियों,
मुसीबतों और बदरूहों की गिरिफ़्त में थे। अंधों
की आँखें भी बहाल हो गई थीं। 22 इसलिए उसने
जवाब में यहया के क़ासिदों से कहा, "यहया
के पास वापस जाकर उसे सब कुछ बता देना
जो तुमने देखा और सुना है। 'अंधे देखते, लँगड़े
चलते-फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया
जाता है, बहरे सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया
जाता है और ग़रीबों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाई जाती है।' 23 यहया को बताओ, 'मुबारक
है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर बरगश्ता नहीं
होता'।"

24 यहया के यह क़ासिद चले गए तो ईसा
हुजूम से यहया के बारे में बात करने लगा, "तुम
रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो
हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 25 या
क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तवक़्क़ो कर रहे
थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए है?
नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते और ऐशो-इशरत
में ज़िंदगी गुज़ारते हैं वह शाही महलों में पाए जाते
हैं। 26 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी
को? बिलकुल सहीह, बल्कि मैं तुमको बताता
हूँ कि वह नबी से भी बड़ा है। 27 उसी के बारे में
कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'देख मैं अपने पैग़ंबर

को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने रास्ता
तैयार करेगा।' 28 मैं तुमको बताता हूँ कि इस
दुनिया में पैदा होनेवाला कोई भी शख़्स यहया
से बड़ा नहीं है। तो भी अल्लाह की बादशाही में
दाख़िल होनेवाला सबसे छोटा शख़्स उससे बड़ा
है।"

29 बात यह थी कि तमाम क़ौम बशमूल टैक्स
लेनेवालों ने यहया का पैग़ाम सुनकर अल्लाह
का इनसाफ़ मान लिया और यहया से बपतिस्मा
लिया था। 30 सिर्फ़ फ़रीसी और शरीअत के
उलमा ने अपने बारे में अल्लाह की मरज़ी को रद्द
करके यहया का बपतिस्मा लेने से इनकार किया
था।

31 ईसा ने बात जारी रखी, "चुनाँचे मैं इस
नसल के लोगों को किससे तशबीह दूँ? वह
किससे मुताबिक़त रखते हैं? 32 वह उन बच्चों
की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं।
उनमें से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से
शिकायत कर रहे हैं, 'हमने बाँसरी बजाई तो तुम
न नाचे। फिर हमने नोहा के गीत गाए, लेकिन
तुम न रोए।' 33 देखो, यहया बपतिस्मा देनेवाला
आया और न रोटी खाई, न मै पी। यह देखकर
तुम कहते हो कि उसमें बदरूह है। 34 फिर इब्ने-
आदम खाता और पीता हुआ आया। अब तुम
कहते हो, 'देखो यह कैसा पेटू और शराबी है। और
वह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों का दोस्त भी
है।' 35 लेकिन हिकमत अपने तमाम बच्चों से ही
सहीह साबित हुई है।"

ईसा शमाऊन फ़रीसी के घर में

36 एक फ़रीसी ने ईसा को खाना खाने की
दावत दी। ईसा उसके घर जाकर खाना खाने के
लिए बैठ गया। 37 उस शहर में एक बदचलन
औरत रहती थी। जब उसे पता चला कि ईसा उस
फ़रीसी के घर में खाना खा रहा है तो वह इत्रदान
में बेशक़ीमत इत्र लाकर 38 पीछे से उसके पाँवों
के पास खड़ी हो गई। वह रो पड़ी और उसके
आँसू टपक टपककर ईसा के पाँवों को तर करने
लगे। फिर उसने उसके पाँवों को अपने बालों से
पोंछकर उन्हें चूमा और उन पर इत्र डाला। 39 जब
ईसा के फ़रीसी मेज़बान ने यह देखा तो उसने
दिल में कहा, "अगर यह आदमी नबी होता तो
उसे मालूम होता कि यह किस क़िस्म की औरत
है जो उसे छू रही है, कि यह गुनाहगार है।"

40 ईसा ने इन ख़यालात के जवाब में उससे
कहा, "शमाऊन, मैं तुझे कुछ बताना चाहता हूँ।"

उसने कहा, "जी उस्ताद, बताएँ।"

41 ईसा ने कहा, "एक साहूकार के दो क़र्ज़दार
थे। एक को उसने चाँदी के 500 सिक्के दिए थे
और दूसरे को 50 सिक्के। 42 लेकिन दोनों अपना
क़र्ज़ अदा न कर सके। यह देखकर उसने दोनों
का क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया। अब मुझे बता, दोनों
क़र्ज़दारों में से कौन उसे ज़्यादा अज़ीज़ रखेगा?"

43 शमाऊन ने जवाब दिया, "मेरे ख़याल में वह
जिसे ज़्यादा मुआफ़ किया गया।"

ईसा ने कहा, "तूने ठीक अंदाज़ा लगाया है।"
44 और औरत की तरफ़ मुड़कर उसने शमाऊन से
बात जारी रखी, "क्या तू इस औरत को देखता
है? 45 जब मैं इस घर में आया तो तूने मुझे पाँव
धोने के लिए पानी न दिया। लेकिन इसने मेरे पाँवों
को अपने आँसुओं से तर करके अपने बालों से
पोंछकर ख़ुश्क कर दिया है। तूने मुझे बोसा न
दिया, लेकिन यह मेरे अंदर आने से लेकर अब
तक मेरे पाँवों को चूमने से बाज़ नहीं रही। 46 तूने
मेरे सर पर ज़ैतून का तेल न डाला, लेकिन इसने
मेरे पाँवों पर इत्र डाला। 47 इसलिए मैं तुझे बताता
हूँ कि इसके गुनाहों को गो वह बहुत हैं मुआफ़
कर दिया गया है, क्योंकि इसने बहुत मुहब्बत का
इज़हार किया है। लेकिन जिसे कम मुआफ़ किया
गया हो वह कम मुहब्बत रखता है।"

48 फिर ईसा ने औरत से कहा, "तेरे गुनाहों को
मुआफ़ कर दिया गया है।"

49 यह सुनकर जो साथ बैठे थे आपस में कहने
लगे, "यह किस क़िस्म का शख़्स है जो गुनाहों
को भी मुआफ़ करता है?"

50 लेकिन ईसा ने ख़ातून से कहा, “तेरे ईमान
ने तुझे बचा लिया है। सलामती से चली जा।”

ख़िदमतगुज़ार ख़वातीन ईसा के साथ सफ़र करती हैं

8 इसके कुछ देर बाद ईसा मुख़्तलिफ़ शहरों
और देहातों में से गुज़रकर सफ़र करने
लगा। हर जगह उसने अल्लाह की बादशाही के
बारे में ख़ुशख़बरी सुनाई। उसके बारह शागिर्द
उसके साथ थे, 2 नीज़ कुछ ख़वातीन भी जिन्हें
उसने बदरूहों से रिहाई और बीमारियों से शफ़ा
दी थी। इनमें से एक मरियम थी जो मग्दलीनी
कहलाती थी जिसमें से सात बदरूहें निकाली गई
थीं। 3 फिर युअन्ना जो ख़ूज़ा की बीवी थी (ख़ूज़ा
हेरोदेस बादशाह का एक अफ़सर था)। सूसन्ना
और दीगर कई ख़वातीन भी थीं जो अपने माली
वसायल से उनकी ख़िदमत करती थीं।

बीज बोनेवाले की तमसील

4 एक दिन ईसा ने एक बड़े हुजूम को एक
तमसील सुनाई। लोग मुख़्तलिफ़ शहरों से उसे
सुनने के लिए जमा हो गए थे।

5 “एक किसान बीज बोने के लिए निक-
ला। जब बीज इधर-उधर बिखर गया तो कुछ दाने
रास्ते पर गिरे। वहाँ उन्हें पाँवों तले कुचला गया
और परिंदों ने उन्हें चुग लिया। 6 कुछ पथरीली
ज़मीन पर गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन
नमी की कमी थी, इसलिए पौदे कुछ देर के बाद
सूख गए। 7 कुछ दाने ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के
दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन
ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने-
फूलने की जगह न दी। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो
गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन
पर गिरे। वहाँ वह उग सके और जब फ़सल पक
गई तो सौ गुना ज़्यादा फल पैदा हुआ।”

यह कहकर ईसा पुकार उठा, “जो सुन सकता
है वह सुन ले!”

तमसीलों का मक़सद

9 उसके शागिर्दों ने उससे पूछा कि इस तमसील
का क्या मतलब है? 10 जवाब में उसने कहा,
“तुमको तो अल्लाह की बादशाही के भेद समझने
की लियाक़त दी गई है। लेकिन मैं दूसरों को
समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता हूँ
ताकि पाक कलाम पूरा हो जाए कि ‘वह अपनी
आँखों से देखेंगे मगर कुछ नहीं जानेंगे, वह अपने
कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं समझेंगे।’

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

11 तमसील का मतलब यह है : बीज से मुराद
अल्लाह का कलाम है। 12 राह पर गिरे हुए दाने
वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर
इबलीस आकर उसे उनके दिलों से छीन लेता
है, ऐसा न हो कि वह ईमान लाकर नजात पाएँ।
13 पथरीली ज़मीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो
कलाम सुनकर उसे ख़ुशी से क़बूल तो कर लेते
हैं, लेकिन जड़ नहीं पकड़ते। नतीजे में अगरचे
वह कुछ देर के लिए ईमान रखते हैं तो भी जब
किसी आज़माइश का सामना करना पड़ता है तो
वह बरगश्ता हो जाते हैं। 14 ख़ुदरौ काँटेदार पौदों
के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो सुनते
तो हैं, लेकिन जब वह चले जाते हैं तो रोज़मर्रा
की परेशानियाँ, दौलत और ज़िंदगी की ऐशो-
इशरत उन्हें फलने-फूलने नहीं देती। नतीजे में वह
फल लाने तक नहीं पहुँचते। 15 इसके मुक़ाबले में
ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जिनका
दिल दियानतदार और अच्छा है। जब वह कलाम
सुनते हैं तो वह उसे अपनाते और साबितक़दमी
से तरक़्क़ी करते करते फल लाते हैं।

कोई चराग़ को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

16 जब कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे किसी
बरतन या चारपाई के नीचे नहीं रखता, बल्कि उसे
शमादान पर रख देता है ताकि उस की रौशनी
अंदर आनेवालों को नज़र आए।

17 जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है वह आख़िर
में ज़ाहिर हो जाएगा, और जो कुछ भी छुपा हुआ
है वह मालूम हो जाएगा और रौशनी में लाया
जाएगा।
18 चुनाँचे इस पर ध्यान दो कि तुम किस तरह
सुनते हो। क्योंकि जिसके पास कुछ है उसे और
दिया जाएगा, जबकि जिसके पास कुछ नहीं है
उससे वह भी छीन लिया जाएगा जिसके बारे में
वह ख़याल करता है कि उसका है।”

ईसा की माँ और भाई

19 एक दिन ईसा की माँ और भाई उसके पास
आए, लेकिन वह हुजूम की वजह से उस तक
न पहुँच सके। 20 चुनाँचे ईसा को इत्तला दी गई,
“आपकी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे
मिलना चाहते हैं।”
21 उसने जवाब दिया, “मेरी माँ और भाई वह
सब हैं जो अल्लाह का कलाम सुनकर उस पर
अमल करते हैं।”

ईसा आँधी को थमा देता है

22 एक दिन ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा,
“आओ, हम झील को पार करें।” चुनाँचे वह
कश्ती पर सवार होकर रवाना हुए। 23 जब कश्ती
चली जा रही थी तो ईसा सो गया। अचानक
झील पर आँधी आई। कश्ती पानी से भरने लगी
और डूबने का ख़तरा था। 24 फिर उन्होंने ईसा के
पास जाकर उसे जगा दिया और कहा, “उस्ताद,
उस्ताद, हम तबाह हो रहे हैं।”
वह जाग उठा और आँधी और मौजों को डाँटा।
आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो
गईं। 25 फिर उसने शागिर्दों से पूछा, “तुम्हारा
ईमान कहाँ है?”
उन पर ख़ौफ़ तारी हो गया और वह सख़्त हैरान
होकर आपस में कहने लगे, “आख़िर यह कौन
है? वह हवा और पानी को भी हुक्म देता है, और
वह उस की मानते हैं।”

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

26 फिर वह सफ़र जारी रखते हुए गरासा के
इलाक़े के किनारे पर पहुँचे जो झील के पार
गलील के मुक़ाबिल है। 27 जब ईसा कश्ती से
उतरा तो शहर का एक आदमी ईसा को मिला
जो बदरूहों की गिरिफ़्त में था। वह काफ़ी देर से
कपड़े पहने बग़ैर चलता-फिरता था और अपने घर
के बजाए क़ब्रों में रहता था। 28 ईसा को देखकर
वह चिल्लाया और उसके सामने गिर गया। ऊँची
आवाज़ से उसने कहा, “ईसा अल्लाह तआला
के फ़रज़ंद, मेरा आपके साथ क्या वास्ता है?
मैं मिन्नत करता हूँ, मुझे अज़ाब में न डालें।”
29 क्योंकि ईसा ने नापाक रूह को हुक्म दिया
था, “आदमी में से निकल जा!” इस बदरूह
ने बड़ी देर से उस पर क़ब्ज़ा किया हुआ था,
इसलिए लोगों ने उसके हाथ-पाँव ज़ंजीरों से
बाँधकर उस की पहरादारी करने की कोशिश की
थी, लेकिन बेफ़ायदा। वह ज़ंजीरों को तोड़ डालता
और बदरूह उसे वीरान इलाक़ों में भगाए फिरती
थी।
30 ईसा ने उससे पूछा, “तेरा नाम क्या है?”
उसने जवाब दिया, “लशकर।” इस नाम की
वजह यह थी कि उसमें बहुत-सी बदरूहें घुसी हुई
थीं। 31 अब यह मिन्नत करने लगीं, “हमें अथाह
गढ़े में जाने को न कहें।”
32 उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सुअरों
का बड़ा ग़ोल चर रहा था। बदरूहों ने ईसा से
इलतमास की, “हमें उन सुअरों में दाख़िल होने
दें।” उसने इजाज़त दे दी। 33 चुनाँचे वह उस
आदमी में से निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस
पर पूरे ग़ोल के सुअर भाग भागकर पहाड़ी की
ढलान पर से उतरे और झील में झपटकर डूब मरे।
34 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए।
उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा
किया 35 तो लोग यह मालूम करने के लिए कि
क्या हुआ है अपनी जगहों से निकलकर ईसा

के पास आए। उसके पास पहुँचे तो वह आदमी
मिला जिससे बदरूहें निकल गई थीं। अब वह
कपड़े पहने ईसा के पाँवों में बैठा था और उस
की ज़हनी हालत ठीक थी। यह देखकर वह डर
गए। 36 जिन्होंने सब कुछ देखा था उन्होंने लोगों
को बताया कि इस बदरूह-गिरिफ़्ता आदमी को
किस तरह रिहाई मिली है। 37 फिर उस इलाक़े के
तमाम लोगों ने ईसा से दरख़ास्त की कि वह उन्हें
छोड़कर चला जाए, क्योंकि उन पर बड़ा ख़ौफ़
छा गया था। चुनाँचे ईसा कश्ती पर सवार होकर
वापस चला गया। 38 जिस आदमी से बदरूहें
निकल गई थीं उसने उससे इलतमास की, "मुझे
भी अपने साथ जाने दें।"

लेकिन ईसा ने उसे इजाज़त न दी बल्कि कहा,
39 "अपने घर वापस चला जा और दूसरों को वह
सब कुछ बता जो अल्लाह ने तेरे लिए किया है।"

चुनाँचे वह वापस चला गया और पूरे शहर में
लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या
कुछ किया है।

याईर की बेटी और बीमार ख़ातून

40 जब ईसा झील के दूसरे किनारे पर वापस
पहुँचा तो लोगों ने उसका इस्तक़बाल किया,
क्योंकि वह उसके इंतज़ार में थे। 41 इतने में एक
आदमी ईसा के पास आया जिसका नाम याईर
था। वह मक़ामी इबादतख़ाने का राहनुमा था। वह
ईसा के पाँवों में गिरकर मिन्नत करने लगा, "मेरे
घर चलें।" 42 क्योंकि उस की इकलौती बेटी जो
तक़रीबन बारह साल की थी मरने को थी।

ईसा चल पड़ा। हुजूम ने उसे यों घेरा हुआ था
कि साँस लेना भी मुश्किल था। 43 हुजूम में एक
ख़ातून थी जो बारह साल से ख़ून बहने के मरज़
से रिहाई न पा सकी थी। कोई उसे शफ़ा न दे
सका था। 44 अब उसने पीछे से आकर ईसा के
लिबास के किनारे को छुआ। ख़ून बहना फ़ौरन
बंद हो गया। 45 लेकिन ईसा ने पूछा, "किसने
मुझे छुआ है?"

सबने इनकार किया और पतरस ने कहा,
"उस्ताद, यह तमाम लोग तो आपको घेरकर दबा
रहे हैं।"

46 लेकिन ईसा ने इसरार किया, "किसी ने
ज़रूर मुझे छुआ है, क्योंकि मुझे महसूस हुआ है
कि मुझमें से तवानाई निकली है।" 47 जब उस
ख़ातून ने देखा कि भेद खुल गया तो वह लरज़ती
हुई आई और उसके सामने गिर गई। पूरे हुजूम
की मौजूदगी में उसने बयान किया कि उसने ईसा
को क्यों छुआ था और कि छूते ही उसे शफ़ा मिल
गई थी। 48 ईसा ने कहा, "बेटी, तेरे ईमान ने तुझे
बचा लिया है। सलामती से चली जा।"

49 ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी
कि इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर से कोई
शख़्स आ पहुँचा। उसने कहा, "आपकी बेटी फ़ौत
हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ़ न
दें।"

50 लेकिन ईसा ने यह सुनकर कहा, "मत
घबरा। फ़क़त ईमान रख तो वह बच जाएगी।"

51 वह घर पहुँच गए तो ईसा ने किसी को
भी सिवाए पतरस, यूहन्ना, याक़ूब और बेटी
के वालिदैन के अंदर आने की इजाज़त न दी।
52 तमाम लोग रो रहे और छाती पीट पीटकर
मातम कर रहे थे। ईसा ने कहा, "ख़ामोश! वह
मर नहीं गई बल्कि सो रही है।"

53 लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे,
क्योंकि वह जानते थे कि लड़की मर गई है।
54 लेकिन ईसा ने लड़की का हाथ पकड़कर ऊँची
आवाज़ से कहा, "बेटी, जाग उठ!" 55 लड़की
की जान वापस आ गई और वह फ़ौरन उठ खड़ी
हुई। फिर ईसा ने हुक्म दिया कि उसे कुछ खाने
को दिया जाए। 56 यह सब कुछ देखकर उसके
वालिदैन हैरतज़दा हुए। लेकिन उसने उन्हें कहा
कि इसके बारे में किसी को भी न बताना।

ईसा बारह रसूलों को तबलीग़ करने भेज देता है

9 इसके बाद ईसा ने अपने बारह शा-
गिर्दों को इकट्ठा करके उन्हें बदरूहों को
निकालने और मरीज़ों को शफ़ा देने की क़ुव्वत
और इख़्तियार दिया। 2 फिर उसने उन्हें अल्लाह
की बादशाही की मुनादी करने और शफ़ा देने के
लिए भेज दिया। 3 उसने कहा, "सफ़र पर कुछ
साथ न लेना। न लाठी, न सामान के लिए बैग, न
रोटी, न पैसे और न एक से ज़्यादा सूट। 4 जिस
घर में भी तुम जाते हो उसमें उस मक़ाम से चले
जाने तक ठहरो। 5 और अगर मक़ामी लोग तुमको
क़बूल न करें तो फिर उस शहर से निकलते वक़्त
उस की गर्द अपने पाँवों से झाड़ दो। यों तुम उनके
ख़िलाफ़ गवाही दोगे।"
6 चुनाँचे वह निकलकर गाँव गाँव जाकर
अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने और मरीज़ों को
शफ़ा देने लगे।

हेरोदेस अंतिपास परेशान हो जाता है

7 जब गलील के हुक्मरान हेरोदेस अंति-
पास ने सब कुछ सुना जो ईसा कर रहा था तो वह
उलझन में पड़ गया। बाज़ तो कह रहे थे कि यहया
बपतिस्मा देनेवाला जी उठा है। 8 औरों का ख़याल
था कि इलियास नबी ईसा में ज़ाहिर हुआ है या
कि क़दीम ज़माने का कोई और नबी जी उठा है।
9 लेकिन हेरोदेस ने कहा, "मैंने ख़ुद यहया का सर
क़लम करवाया था। तो फिर यह कौन है जिसके
बारे में मैं इस क़िस्म की बातें सुनता हूँ?" और
वह उससे मिलने की कोशिश करने लगा।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

10 रसूल वापस आए तो उन्होंने ईसा को सब
कुछ सुनाया जो उन्होंने किया था। फिर वह उन्हें
अलग ले जाकर बैत-सैदा नामी शहर में आया।
11 लेकिन जब लोगों को पता चला तो वह उनके
पीछे वहाँ पहुँच गए। ईसा ने उन्हें आने दिया और
अल्लाह की बादशाही के बारे में तालीम दी। साथ
साथ उसने मरीज़ों को शफ़ा भी दी। 12 जब दिन
ढलने लगा तो बारह शागिर्दों ने पास आकर उससे
कहा, "लोगों को रुख़सत कर दें ताकि वह इर्दगिर्द
के देहातों और बस्तियों में जाकर रात ठहरने और
खाने का बंदोबस्त कर सकें, क्योंकि इस वीरान
जगह में कुछ नहीं मिलेगा।"
13 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, "तुम ख़ुद इन्हें
कुछ खाने को दो।"
उन्होंने जवाब दिया, "हमारे पास सिर्फ़ पाँच
रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। या क्या हम जाकर
इन तमाम लोगों के लिए खाना ख़रीद लाएँ?"
14 (वहाँ तक़रीबन 5,000 मर्द थे।)
ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "तमाम लोगों
को गुरोहों में तक़सीम करके बिठा दो। हर गुरोह
पचास अफ़राद पर मुश्तमिल हो।"
15 शागिर्दों ने ऐसा ही किया और सबको बिठा
दिया। 16 इस पर ईसा ने उन पाँच रोटियों और
दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ़ नज़र
उठाई और उनके लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ की।
फिर उसने उन्हें तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया
ताकि वह लोगों में तक़सीम करें। 17 और सबने
जी भरकर खाया। इसके बाद जब बचे हुए टुकड़े
जमा किए गए तो बारह टोकरे भर गए।

पतरस का इक़रार

18 एक दिन ईसा अकेला दुआ कर रहा था।
सिर्फ़ शागिर्द उसके साथ थे। उसने उनसे पूछा,
"मैं आम लोगों के नज़दीक कौन हूँ?"
19 उन्होंने जवाब दिया, "कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास
नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि क़दीम ज़माने
का कोई नबी जी उठा है।"
20 उसने पूछा, "लेकिन तुम क्या कहते हो?
तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?"
पतरस ने जवाब दिया, "आप अल्लाह के
मसीह हैं।"

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21 यह सुनकर ईसा ने उन्हें यह बात किसी
को भी बताने से मना किया। 22 उसने कहा,
“लाज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर
बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा
से रद्द किया जाए। उसे क़त्ल भी किया जाएगा,
लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”
23 फिर उसने सबसे कहा, “जो मेरे पीछे आना
चाहे वह अपने आपका इनकार करे और हर रोज़
अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। 24 क्योंकि
जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो
देगा। लेकिन जो मेरी ख़ातिर अपनी जान खो दे
वही उसे बचाएगा। 25 क्या फ़ायदा है अगर किसी
को पूरी दुनिया हासिल हो जाए मगर वह अपनी
जान से महरूम हो जाए या उसे इसका नुक़सान
उठाना पड़े? 26 जो भी मेरे और मेरी बातों के
सबब से शरमाए उससे इब्ने-आदम भी उस वक़्त
शरमाएगा जब वह अपने और अपने बाप के और
मुक़द्दस फ़रिश्तों के जलाल में आएगा। 27 मैं
तुमको सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े
हैं जो मरने से पहले ही अल्लाह की बादशाही को
देखेंगे।”

ईसा की सूरत बदल जाती है

28 तक़रीबन आठ दिन गुज़र गए। फिर ईसा
पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को साथ ले-
कर दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया।
29 वहाँ दुआ करते करते उसके चेहरे की सूरत
बदल गई और उसके कपड़े सफ़ेद होकर बिजली
की तरह चमकने लगे। 30 अचानक दो मर्द ज़ाहिर
होकर उससे मुख़ातिब हुए। एक मूसा और दूसरा
इलियास था। 31 उनकी शक्लो-सूरत पुरजलाल
थी। वह ईसा से इसके बारे में बात करने लगे कि
वह किस तरह अल्लाह का मक़सद पूरा करके
यरूशलम में इस दुनिया से कूच कर जाएगा।
32 पतरस और उसके साथियों को गहरी नींद आ
गई थी, लेकिन जब वह जाग उठे तो ईसा का
जलाल देखा और यह कि दो आदमी उसके साथ
खड़े हैं। 33 जब वह मर्द ईसा को छोड़कर रवाना
होने लगे तो पतरस ने कहा, “उस्ताद, कितनी
अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आएँ, हम तीन
झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आपके लिए, एक मूसा के
लिए और एक इलियास के लिए।” लेकिन वह
नहीं जानता था कि क्या कह रहा है।
34 यह कहते ही एक बादल आकर उन पर छा
गया। जब वह उसमें दाख़िल हुए तो दहशतज़दा
हो गए। 35 फिर बादल से एक आवाज़ सुनाई दी,
“यह मेरा चुना हुआ फ़रज़ंद है, इसकी सुनो।”
36 आवाज़ ख़त्म हुई तो ईसा अकेला ही था।
और उन दिनों में शागिर्दों ने किसी को भी इस
वाक़िये के बारे में न बताया बल्कि ख़ामोश रहे।

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

37 अगले दिन वह पहाड़ से उतर आए तो
एक बड़ा हुजूम ईसा से मिलने आया। 38 हुजूम
में से एक आदमी ने ऊँची आवाज़ से कहा,
“उस्ताद, मेहरबानी करके मेरे बेटे पर नज़र करें।
वह मेरा इकलौता बेटा है। 39 एक बदरूह उसे
बार बार अपनी गिरिफ़्त में ले लेती है। फिर
वह अचानक चीख़ें मारने लगता है। बदरूह उसे
झँझोड़कर इतना तंग करती है कि उसके मुँह से
झाग निकलने लगता है। वह उसे कुचल कुचलकर
मुश्किल से छोड़ती है। 40 मैंने आपके शागिर्दों से
दरख़ास्त की थी कि वह उसे निकालें, लेकिन वह
नाकाम रहे।”
41 ईसा ने कहा, “ईमान से ख़ाली और टेढ़ी
नसल! मैं कब तक तुम्हारे पास रहूँ, कब तक
तुम्हें बरदाश्त करूँ?” फिर उसने आदमी से कहा,
“अपने बेटे को ले आ।”
42 बेटा ईसा के पास आ रहा था तो बदरूह उसे
ज़मीन पर पटख़कर झँझोड़ने लगी। लेकिन ईसा
ने नापाक रूह को डाँटकर बच्चे को शफ़ा दी।
फिर उसने उसे वापस बाप के सुपुर्द कर दिया।
43 तमाम लोग अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत को
देखकर हक्का-बक्का रह गए।

ईसा की मौत का दूसरा एलान

अभी सब उन तमाम कामों पर ताज्जुब कर
रहे थे जो ईसा ने हाल ही में किए थे कि उसने
अपने शागिर्दों से कहा, 44 “मेरी इस बात पर ख़ूब
ध्यान दो, इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर
दिया जाएगा।” 45 लेकिन शागिर्द इसका मतलब
न समझे। यह बात उनसे पोशीदा रही और वह इसे
समझ न सके। नीज़, वह ईसा से इसके बारे में
पूछने से डरते भी थे।

कौन सबसे बड़ा है?

46 फिर शागिर्द बहस करने लगे कि हममें से
कौन सबसे बड़ा है। 47 लेकिन ईसा जानता था
कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने एक छोटे बच्चे
को लेकर अपने पास खड़ा किया 48 और उनसे
कहा, “जो मेरे नाम में इस बच्चे को क़बूल करता
है वह मुझे ही क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल
करता है वह उसे क़बूल करता है जिसने मुझे भेजा
है। चुनाँचे तुममें से जो सबसे छोटा है वही बड़ा
है।”

जो तुम्हारे ख़िलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़ में है

49 यूहन्ना बोल उठा, “उस्ताद, हमने किसी को
देखा जो आपका नाम लेकर बदरूहें निकाल रहा
था। हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ
मिलकर आपकी पैरवी नहीं करता।”

50 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना,
क्योंकि जो तुम्हारे ख़िलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़
में है।”

एक सामरी गाँव ईसा को ठहरने नहीं देता

51 जब वह वक़्त क़रीब आया कि ईसा को
आसमान पर उठा लिया जाए तो वह बड़े अज़्म
के साथ यरूशलम की तरफ़ सफ़र करने लगा।
52 इस मक़सद के तहत उसने अपने आगे क़ासिद
भेज दिए। चलते चलते वह सामरियों के एक
गाँव में पहुँचे जहाँ वह उसके लिए ठहरने की
जगह तैयार करना चाहते थे। 53 लेकिन गाँव
के लोगों ने ईसा को टिकने न दिया, क्योंकि
उस की मनज़िले-मक़सूद यरूशलम थी। 54 यह
देखकर उसके शागिर्द याक़ूब और यूहन्ना ने कहा,
“ख़ुदावंद, क्या [इलियास की तरह] हम कहें कि
आसमान पर से आग नाज़िल होकर इनको भस्म
कर दे?”

55 लेकिन ईसा ने मुड़कर उन्हें डाँटा [और
कहा, “तुम नहीं जानते कि तुम किस क़िस्म की
रूह के हो। इब्ने-आदम इसलिए नहीं आया कि
लोगों को हलाक करे बल्कि इसलिए कि उन्हें
बचाए।”] 56 चुनाँचे वह किसी और गाँव में चले
गए।

पैरवी की संजीदगी

57 सफ़र करते करते किसी ने रास्ते में ईसा से
कहा, “जहाँ भी आप जाएँ मैं आपके पीछे चलता
रहूँगा।”

58 ईसा ने जवाब दिया, “लोमड़ियाँ अपने भटों
में और परिंदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते
हैं, लेकिन इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम
करने की कोई जगह नहीं।”

59 किसी और से उसने कहा, “मेरे पीछे हो
ले।”

लेकिन उस आदमी ने कहा, “ख़ुदावंद, मुझे
पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करने की
इजाज़त दें।”

60 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “मुरदों को
अपने मुरदे दफ़नाने दे। तू जाकर अल्लाह की
बादशाही की मुनादी कर।”

61 एक और आदमी ने यह माज़रत चाही,
“ख़ुदावंद, मैं ज़रूर आपके पीछे हो लूँगा। लेकिन
पहले मुझे अपने घरवालों को ख़ैरबाद कहने दें।”

62 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “जो भी हल
चलाते हुए पीछे की तरफ़ देखे वह अल्लाह की
बादशाही के लायक़ नहीं है।”

ईसा 72 शागिर्दों को मुनादी के लिए भेजता है

10 इसके बाद ख़ुदावंद ने मज़ीद 72
शागिर्दों को मुक़र्रर किया और उन्हें दो
दो करके अपने आगे हर उस शहर और जगह भेज
दिया जहाँ वह अभी जाने को था। 2 उसने उनसे
कहा, “फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े।
इसलिए फ़सल के मालिक से दरख़ास्त करो कि
वह फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे।
3 अब रवाना हो जाओ, लेकिन ज़हन में यह बात
रखो कि तुम भेड़ के बच्चों की मानिंद हो जिन्हें मैं
भेड़ियों के दरमियान भेज रहा हूँ। 4 अपने साथ
न बटवा ले जाना, न सामान के लिए बैग, न
जूते। और रास्ते में किसी को भी सलाम न करना।
5 जब भी तुम किसी के घर में दाख़िल हो तो पहले
यह कहना, ‘इस घर की सलामती हो।’ 6 अगर
उसमें सलामती का कोई बंदा होगा तो तुम्हारी
बरकत उस पर ठहरेगी, वरना वह तुम पर लौट
आएगी। 7 सलामती के ऐसे घर में ठहरो और वह
कुछ खाओ-पियो जो तुमको दिया जाए, क्योंकि
मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है। मुख़्तलिफ़
घरों में घूमते न फिरो बल्कि एक ही घर में रहो।
8 जब भी तुम किसी शहर में दाख़िल हो और लोग
तुमको क़बूल करें तो जो कुछ वह तुमको खाने
को दें उसे खाओ। 9 वहाँ के मरीज़ों को शफ़ा
देकर बताओ कि अल्लाह की बादशाही क़रीब आ
गई है। 10 लेकिन अगर तुम किसी शहर में जाओ
और लोग तुमको क़बूल न करें तो फिर शहर की
सड़कों पर खड़े होकर कहो, 11 ‘हम अपने जूतों
से तुम्हारे शहर की गर्द भी झाड़ देते हैं। यों हम
तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं। लेकिन यह जान
लो कि अल्लाह की बादशाही क़रीब आ गई है।’
12 मैं तुमको बताता हूँ कि उस दिन उस शहर की
निसबत सदूम का हाल ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त
होगा।

तौबा न करनेवाले शहरों पर अफ़सोस

13 ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर अफ़सोस! बैत-
सैदा, तुझ पर अफ़सोस! अगर सूर और सैदा
में वह मोजिज़े किए गए होते जो तुममें हुए तो
वहाँ के लोग कब के टाट ओढ़कर और सर पर
राख डालकर तौबा कर चुके होते। 14 जी हाँ,
अदालत के दिन तुम्हारी निसबत सूर और सैदा
का हाल ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त होगा। 15 और तू
ऐ कफ़र्नहूम, क्या तुझे आसमान तक सरफ़राज़
किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू उतरता
उतरता पाताल तक पहुँचेगा।

16 जिसने तुम्हारी सुनी उसने मेरी भी सुनी।
और जिसने तुमको रद्द किया उसने मुझे भी रद्द
किया। और मुझे रद्द करनेवाले ने उसे भी रद्द किया
जिसने मुझे भेजा है।”

72 शागिर्दों की वापसी

17 72 शागिर्द लौट आए। वह बहुत ख़ुश थे
और कहने लगे, “ख़ुदावंद, जब हम आपका नाम
लेते हैं तो बदरूहें भी हमारे ताबे हो जाती हैं।”

18 ईसा ने जवाब दिया, “इबलीस मुझे नज़र
आया और वह बिजली की तरह आसमान से गिर
रहा था। 19 देखो, मैंने तुमको साँपों और बिच्छुओं
पर चलने का इख़्तियार दिया है। तुमको दुश्मन
की पूरी ताक़त पर इख़्तियार हासिल है। कुछ भी
तुमको नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा। 20 लेकिन
इस वजह से ख़ुशी न मनाओ कि बदरूहें तुम्हारे
ताबे हैं, बल्कि इस वजह से कि तुम्हारे नाम
आसमान पर दर्ज किए गए हैं।”

बाप की तमजीद

21 उसी वक़्त ईसा रूहुल-क़ुद्स में ख़ुशी
मनाने लगा। उसने कहा, “ऐ बाप, आस-
मानो-ज़मीन के मालिक! मैं तेरी तमजीद करता
हूँ कि तूने यह बात दानाओं और अक़्लमंदों से
छुपाकर छोटे बच्चों पर ज़ाहिर कर दी है। हाँ मेरे
बाप, क्योंकि यही तुझे पसंद आया।

22 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है।
कोई नहीं जानता कि फ़रज़ंद कौन है सिवाए बाप
के। और कोई नहीं जानता कि बाप कौन है सिवाए
फ़रज़ंद के और उन लोगों के जिन पर फ़रज़ंद यह
ज़ाहिर करना चाहता है।”

23 फिर ईसा शागिर्दों की तरफ़ मुड़ा और
अलहदगी में उनसे कहने लगा, “मुबारक हैं वह
आँखें जो वह कुछ देखती हैं जो तुमने देखा है।
24 मैं तुमको बताता हूँ कि बहुत-से नबी और
बादशाह यह देखना चाहते थे जो तुम देखते हो,
लेकिन उन्होंने न देखा। और वह यह सुनने के
आरज़ूमंद थे जो तुम सुनते हो, लेकिन उन्होंने न
सुना।”

नेक सामरी की तमसील

25 एक मौक़े पर शरीअत का एक आलिम ईसा
को फँसाने की ख़ातिर खड़ा हुआ। उसने पूछा,
“उस्ताद, मैं क्या क्या करने से मीरास में अबदी
ज़िंदगी पा सकता हूँ?”

26 ईसा ने उससे कहा, “शरीअत में क्या लिखा
है? तू उसमें क्या पढ़ता है?”

27 आदमी ने जवाब दिया, “‘रब अपने ख़ुदा
से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी
ताक़त और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ और
‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू
अपने आपसे रखता है’।”

28 ईसा ने कहा, “तूने ठीक जवाब दिया। ऐसा
ही कर तो ज़िंदा रहेगा।”

29 लेकिन आलिम ने अपने आपको दुरुस्त
साबित करने की ग़रज़ से पूछा, “तो मेरा पड़ोसी
कौन है?”

30 ईसा ने जवाब में कहा, “एक आदमी
यरूशलम से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि वह
डाकुओं के हाथों में पड़ गया। उन्होंने उसके कपड़े
उतारकर उसे ख़ूब मारा और अधमुआ छोड़कर
चले गए। 31 इत्तफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी
रास्ते पर यरीहू की तरफ़ चल रहा था। लेकिन
जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो रास्ते की
परली तरफ़ होकर आगे निकल गया। 32 लावी
क़बीले का एक ख़ादिम भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन
वह भी रास्ते की परली तरफ़ से आगे निकल
गया। 33 फिर सामरिया का एक मुसाफ़िर वहाँ
से गुज़रा। जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो
उसे उस पर तरस आया। 34 वह उसके पास गया
और उसके ज़ख़मों पर तेल और मै लगाकर उन
पर पट्टियाँ बाँध दीं। फिर उसको अपने गधे पर
बिठाकर सराय तक ले गया। वहाँ उसने उस की
मज़ीद देख-भाल की। 35 अगले दिन उसने चाँदी
के दो सिक्के निकालकर सराय के मालिक को
दिए और कहा, ‘इसकी देख-भाल करना। अगर
ख़र्चा इससे बढ़कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा
कर दूँगा’।”

36 फिर ईसा ने पूछा, “अब तेरा क्या ख़याल है,
डाकुओं की ज़द में आनेवाले आदमी का पड़ोसी
कौन था? इमाम, लावी या सामरी?”

37 आलिम ने जवाब दिया, “वह जिसने उस
पर रहम किया।”

ईसा ने कहा, “बिलकुल ठीक। अब तू भी
जाकर ऐसा ही कर।”

ईसा मरियम और मर्था के घर जाता है

38 फिर ईसा शागिर्दों के साथ आगे निक-
ला। चलते चलते वह एक गाँव में पहुँचा। वहाँ
की एक औरत बनाम मर्था ने उसे अपने घर में
ख़ुशआमदीद कहा। 39 मर्था की एक बहन थी
जिसका नाम मरियम था। वह ख़ुदावंद के पाँवों
में बैठकर उस की बातें सुनने लगी 40 जबकि
मर्था मेहमानों की ख़िदमत करते करते थक गई।
आख़िरकार वह ईसा के पास आकर कहने लगी,
“ख़ुदावंद, क्या आपको परवा नहीं कि मेरी बहन
ने मेहमानों की ख़िदमत का पूरा इंतज़ाम मुझ पर
छोड़ दिया है? उससे कहें कि वह मेरी मदद करे।”

41 लेकिन ख़ुदावंद ईसा ने जवाब में कहा,
“मर्था, मर्था, तू बहुत-सी फ़िकरों और परेशानियों
में पड़ गई है। 42 लेकिन एक बात ज़रूरी है।

मरियम ने बेहतर हिस्सा चुन लिया है और यह
उससे छीना नहीं जाएगा।"

दुआ किस तरह करनी है

11 एक दिन ईसा कहीं दुआ कर रहा
था। जब वह फ़ारिग़ हुआ तो उसके
किसी शागिर्द ने कहा, "ख़ुदावंद, हमें दुआ करना
सिखाएँ, जिस तरह यहया ने भी अपने शागिर्दों
को दुआ करने की तालीम दी।"
2 ईसा ने कहा, "दुआ करते वक़्त यों कहना,
ऐ बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
तेरी बादशाही आए।
3 हर रोज़ हमें हमारी रोज़ की रोटी दे।
4 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।
क्योंकि हम भी हर एक को मुआफ़ करते हैं
जो हमारा गुनाह करता है।[a]
और हमें आज़माइश में न पड़ने दे।"

माँगते रहो

5 फिर उसने उनसे कहा, "अगर तुममें से कोई
आधी रात के वक़्त अपने दोस्त के घर जाकर कहे,
'भाई, मुझे तीन रोटियाँ दे, बाद में मैं यह वापस
कर दूँगा। 6 क्योंकि मेरा दोस्त सफ़र करके मेरे
पास आया है और मैं उसे खाने के लिए कुछ नहीं
दे सकता।' 7 अब फ़र्ज़ करो कि यह दोस्त अंदर
से जवाब दे, 'मेहरबानी करके मुझे तंग न कर।
दरवाज़े पर ताला लगा है और मेरे बच्चे मेरे साथ
बिस्तर पर हैं, इसलिए मैं तुझे देने के लिए उठ
नहीं सकता।' 8 लेकिन मैं तुमको यह बताता हूँ
कि अगर वह दोस्ती की ख़ातिर न भी उठे, तो भी
वह अपने दोस्त के बेजा इसरार की वजह से उस
की तमाम ज़रूरत पूरी करेगा।
9 चुनाँचे माँगते रहो तो तुमको दिया जाएगा,
ढूँडते रहो तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते
रहो तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा।
10 क्योंकि जो भी माँगता है वह पाता है, जो
ढूँडता है उसे मिलता है और जो खटखटाता है
उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया जाता है। 11 तुम
बापों में से कौन अपने बेटे को साँप देगा अगर
वह मछली माँगे? 12 या कौन उसे बिच्छू देगा
अगर वह अंडा माँगे? कोई नहीं! 13 जब तुम
बुरे होने के बावुजूद इतने समझदार हो कि अपने
बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी
ज़्यादा यक़ीनी बात है कि आसमानी बाप अपने
माँगनेवालों को रूहुल-क़ुद्स देगा।"

ईसा और बदरूहों का सरदार

14 एक दिन ईसा ने एक ऐसी बदरूह निकाल
दी जो गूँगी थी। जब वह गूँगे आदमी में से निकली
तो वह बोलने लगा। वहाँ पर जमा लोग हक्का-
बक्का रह गए। 15 लेकिन बाज़ ने कहा, "यह तो
बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों
को निकालता है।"
16 औरों ने उसे आज़माने के लिए किसी इलाही
निशान का मुतालबा किया। 17 लेकिन ईसा ने
उनके ख़यालात जानकर कहा, "जिस बादशाही
में भी फूट पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी, और
जिस घराने की ऐसी हालत हो वह भी ख़ाक में
मिल जाएगा। 18 तुम कहते हो कि मैं बाल-ज़बूल
की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ। लेकिन
अगर इबलीस में फूट पड़ गई है तो फिर उस
की बादशाही किस तरह क़ायम रह सकती है?
19 दूसरा सवाल यह है, अगर मैं बाल-ज़बूल की
मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे
उन्हें किसके ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे वही इस
बात में तुम्हारे मुंसिफ़ होंगे। 20 लेकिन अगर मैं
अल्लाह की क़ुदरत से बदरूहों को निकालता हूँ
तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच
चुकी है।
21 जब तक कोई ज़ोरावर आदमी हथियारों से
लैस अपने डेरे की पहरादारी करे उस वक़्त तक
उस की मिलकियत महफ़ूज़ रहती है। 22 लेकिन
अगर कोई ज़्यादा ताक़तवर शख़्स हमला करके

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : जो हमारा क़र्ज़दार है।

उस पर ग़ालिब आए तो वह उसके असला पर क़ब्ज़ा करेगा जिस पर उसका भरोसा था, और लूटा हुआ माल अपने लोगों में तक़सीम कर देगा।
23 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे ख़िलाफ़ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है।

बदरूह की वापसी

24 जब कोई बदरूह किसी शख़्स में से निकलती है तो वह वीरान इलाक़ों में से गुज़रती हुई आराम की जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा मक़ाम नहीं मिलता तो वह कहती है, 'मैं अपने उस घर में वापस चली जाऊँगी जिसमें से निकली थी।'
25 वह वापस आकर देखती है कि किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ सलीक़े से रख दिया है।
26 फिर वह जाकर सात और बदरूहें ढूँड लाती है जो उससे बदतर होती हैं, और वह सब उस शख़्स में घुसकर रहने लगती हैं। चुनाँचे अब उस आदमी की हालत पहले की निसबत ज़्यादा बुरी हो जाती है।"

कौन मुबारक है?

27 ईसा अभी यह बात कर ही रहा था कि एक औरत ने ऊँची आवाज़ से कहा, "आपकी माँ मुबारक है जिसने आपको जन्म दिया और आपको दूध पिलाया।"
28 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "बात यह नहीं है। हक़ीक़त में वह मुबारक हैं जो अल्लाह का कलाम सुनकर उस पर अमल करते हैं।"

इलाही निशान का तक़ाज़ा

29 सुननेवालों की तादाद बहुत बढ़ गई तो वह कहने लगा, "यह नसल शरीर है, क्योंकि यह मुझसे इलाही निशान का तक़ाज़ा करती है। लेकिन इसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस के निशान के।
30 क्योंकि जिस तरह यूनुस नीनवा शहर के बाशिंदों के लिए निशान था बिलकुल उसी तरह इब्ने-आदम इस नसल के लिए निशान होगा।
31 क़ियामत के दिन जुनूबी मुल्क सबा की मलिका इस नसल के लोगों के साथ खड़ी होकर उन्हें मुजरिम क़रार देगी। क्योंकि वह दूर-दराज़ मुल्क से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई थी जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है।
32 उस दिन नीनवा के बाशिंदे भी इस नसल के लोगों के साथ खड़े होकर उन्हें मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि यूनुस के एलान पर उन्होंने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूनुस से भी बड़ा है।

बदन की रौशनी

33 जब कोई शख़्स चराग़ जलाता है तो न वह उसे छुपाता, न बरतन के नीचे रखता बल्कि उसे शमादान पर रख देता है ताकि उस की रौशनी अंदर आनेवालों को नज़र आए।
34 तेरी आँख तेरे बदन का चराग़ है। अगर तेरी आँख ठीक हो तो तेरा पूरा जिस्म रौशन होगा। लेकिन अगर आँख ख़राब हो तो पूरा जिस्म अंधेरा ही अंधेरा होगा।
35 ख़बरदार! ऐसा न हो कि जो रौशनी तेरे अंदर है वह हक़ीक़त में तारीकी हो।
36 चुनाँचे अगर तेरा पूरा जिस्म रौशन हो और कोई भी हिस्सा तारीक न हो तो फिर वह बिलकुल रौशन होगा, ऐसा जैसा उस वक़्त होता है जब चराग़ तुझे अपने चमकने-दमकने से रौशन कर देता है।"

फ़रीसियों पर अफ़सोस

37 ईसा अभी बात कर रहा था कि किसी फ़रीसी ने उसे खाने की दावत दी। चुनाँचे वह उसके घर में जाकर खाने के लिए बैठ गया।
38 मेज़बान बड़ा हैरान हुआ, क्योंकि उसने देखा कि ईसा हाथ धोए बग़ैर खाने के लिए बैठ गया है।
39 लेकिन ख़ुदावंद ने उससे कहा, "देखो, तुम फ़रीसी बाहर से हर प्याले और बरतन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अंदर से तुम लूट-मार और शरारत से भरे होते हो।
40 नादानो! अल्लाह ने बाहरवाले हिस्से को ख़लक़ किया, तो क्या उसने अंदरवाले हिस्से को नहीं बनाया?
41 चुनाँचे जो

कुछ बरतन के अंदर है उसे ग़रीबों को दे दो। फिर
तुम्हारे लिए सब कुछ पाक-साफ़ होगा।
42 फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि
एक तरफ़ तुम पौदीना, सदाब और बाग़ की हर
क़िस्म की तरकारी का दसवाँ हिस्सा अल्लाह के
लिए मख़सूस करते हो, लेकिन दूसरी तरफ़ तुम
इनसाफ़ और अल्लाह की मुहब्बत को नज़रंदाज़
करते हो। लाज़िम है कि तुम यह काम भी करो
और पहला भी न छोड़ो।
43 फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम
इबादतख़ानों की इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठने
के लिए बेचैन रहते और बाज़ार में लोगों का
सलाम सुनने के लिए तड़पते हो। 44 हाँ, तुम पर
अफ़सोस! क्योंकि तुम पोशीदा क़ब्रों की मानिंद
हो जिन पर से लोग नादानिस्ता तौर पर गुज़रते
हैं।”
45 शरीअत के एक आलिम ने एतराज़ किया,
“उस्ताद, आप यह कहकर हमारी भी बेइज़्ज़ती
करते हैं।”
46 ईसा ने जवाब दिया, “तुम शरीअत के
आलिमों पर भी अफ़सोस! क्योंकि तुम लोगों पर
भारी बोझ डाल देते हो जो मुश्किल से उठाया जा
सकता है। न सिर्फ़ यह बल्कि तुम ख़ुद इस बोझ
को अपनी एक उँगली भी नहीं लगाते। 47 तुम
पर अफ़सोस! क्योंकि तुम नबियों के मज़ार
बना देते हो, उनके जिन्हें तुम्हारे बापदादा ने मार
डाला। 48 इससे तुम गवाही देते हो कि तुम वह
कुछ पसंद करते हो जो तुम्हारे बापदादा ने किया।
उन्होंने नबियों को क़त्ल किया जबकि तुम उनके
मज़ार तामीर करते हो। 49 इसलिए अल्लाह की
हिकमत ने कहा, ‘मैं उनमें नबी और रसूल भेज
दूँगी। उनमें से बाज़ को वह क़त्ल करेंगे और
बाज़ को सताएँगे।’ 50 नतीजे में यह नसल तमाम
नबियों के क़त्ल की ज़िम्मेदार ठहरेगी—दुनिया
की तख़लीक़ से लेकर आज तक, 51 यानी
हाबील के क़त्ल से लेकर ज़करियाह के क़त्ल
तक, जिसे बैतुल-मुक़द्दस के सहन में मौजूद
क़ुरबानगाह और बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े के
दरमियान क़त्ल किया गया। हाँ, मैं तुमको बताता
हूँ कि यह नसल ज़रूर उनकी ज़िम्मेदार ठहरेगी।
52 शरीअत के आलिमो, तुम पर अफ़-
सोस! क्योंकि तुमने इल्म की कुंजी को छीन
लिया है। न सिर्फ़ यह कि तुम ख़ुद दाख़िल नहीं
हुए, बल्कि तुमने दाख़िल होनेवालों को भी रोक
लिया।”
53 जब ईसा वहाँ से निकला तो आलिम और
फ़रीसी उसके सख़्त मुख़ालिफ़ हो गए और बड़े
ग़ौर से उस की पूछ-गछ करने लगे। 54 वह इस
ताक में रहे कि उसे मुँह से निकली किसी बात की
वजह से पकड़ें।

रियाकारी से ख़बरदार रहो!

12 इतने में कई हज़ार लोग जमा हो गए
थे। बड़ी तादाद की वजह से वह एक
दूसरे पर गिरे पड़ते थे। फिर ईसा अपने शागिर्दों
से यह बात करने लगा, “फ़रीसियों के ख़मीर
यानी रियाकारी से ख़बरदार! 2 जो कुछ भी
अभी छुपा हुआ है उसे आख़िर में ज़ाहिर किया
जाएगा और जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है
उसका राज़ आख़िर में खुल जाएगा। 3 इसलिए
जो कुछ तुमने अंधेरे में कहा है वह रोज़े-रौशन में
सुनाया जाएगा और जो कुछ तुमने अंदरूनी कमरों
का दरवाज़ा बंद करके आहिस्ता आहिस्ता कान
में बयान किया है उसका छतों से एलान किया
जाएगा।

किससे डरना चाहिए?

4 मेरे अज़ीज़ो, उनसे मत डरना जो सिर्फ़ जिस्म
को क़त्ल करते हैं और मज़ीद नुक़सान नहीं पहुँचा
सकते। 5 मैं तुमको बताता हूँ कि किससे डरना
है। अल्लाह से डरो, जो तुम्हें हलाक करने के बाद
जहन्नुम में फेंकने का इख़्तियार भी रखता है। जी
हाँ, उसी से ख़ौफ़ खाओ।
6 क्या पाँच चिड़ियाँ दो पैसों में नहीं
बिकतीं? तो भी अल्लाह हर एक की फ़िकर
करके एक को भी नहीं भूलता। 7 हाँ, बल्कि

तुम्हारे सर के सब बाल भी गिने हुए हैं। लिहाज़ा
मत डरो। तुम्हारी क़दरो-क़ीमत बहुत-सी चिड़ियों
से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इक़रार या इनकार करने के नतीजे

8 मैं तुमको बताता हूँ, जो भी लोगों के सामने
मेरा इक़रार करे उसका इक़रार इब्ने-आदम भी
फ़रिश्तों के सामने करेगा। 9 लेकिन जो लोगों के
सामने मेरा इनकार करे उसका भी अल्लाह के
फ़रिश्तों के सामने इनकार किया जाएगा।

10 और जो भी इब्ने-आदम के ख़िलाफ़ बात
करे उसे मुआफ़ किया जा सकता है। लेकिन जो
रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़र बके उसे मुआफ़
नहीं किया जाएगा।

11 जब लोग तुमको इबादतख़ानों में और
हाकिमों और इख़्तियारवालों के सामने घसीटकर
ले जाएंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना
कि मैं किस तरह अपना दिफ़ा करूँ या क्या कहूँ,
12 क्योंकि रूहुल-क़ुद्स तुमको उसी वक़्त सिखा
देगा कि तुमको क्या कहना है।”

नादान अमीर की तमसील

13 किसी ने भीड़ में से कहा, “उस्ताद, मेरे भाई
से कहें कि मीरास का मेरा हिस्सा मुझे दे।”

14 ईसा ने जवाब दिया, “भई, किसने मुझे
तुम पर जज या तक़सीम करनेवाला मुक़र्रर
किया है?” 15 फिर उसने उनसे मज़ीद कहा,
“ख़बरदार! हर क़िस्म के लालच से बचे रहना,
क्योंकि इनसान की ज़िंदगी उसके मालो-दौलत
की कसरत पर मुनहसिर नहीं।”

16 उसने उन्हें एक तमसील सुनाई। “किसी
अमीर आदमी की ज़मीन में अच्छी फ़सल पैदा
हुई। 17 चुनाँचे वह सोचने लगा, ‘अब मैं क्या
करूँ? मेरे पास तो इतनी जगह नहीं जहाँ मैं सब
कुछ जमा करके रखूँ।’ 18 फिर उसने कहा, ‘मैं
यह करूँगा कि अपने गोदामों को ढाकर इनसे बड़े
तामीर करूँगा। उनमें अपना तमाम अनाज और
बाक़ी पैदावार जमा कर लूँगा। 19 फिर मैं अपने
आपसे कहूँगा कि लो, इन अच्छी चीज़ों से तेरी
ज़रूरियात बहुत सालों तक पूरी होती रहेंगी। अब
आराम कर। खा, पी और ख़ुशी मना।’ 20 लेकिन
अल्लाह ने उससे कहा, ‘अहमक़! इसी रात तू
मर जाएगा। तो फिर जो चीज़ें तूने जमा की हैं वह
किसकी होंगी?’

21 यही उस शख़्स का अंजाम है जो सिर्फ़ अपने
लिए चीज़ें जमा करता है जबकि वह अल्लाह के
सामने ग़रीब है।”

अल्लाह पर भरोसा

22 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा,
“इसलिए अपनी ज़िंदगी की ज़रूरियात पूरी करने
के लिए परेशान न रहो कि हाय, मैं क्या खाऊँ।
और जिस्म के लिए फ़िकरमंद न रहो कि हाय, मैं
क्या पहनूँ। 23 ज़िंदगी तो खाने से ज़्यादा अहम है
और जिस्म पोशाक से ज़्यादा। 24 कौवों पर ग़ौर
करो। न वह बीज बोते, न फ़सलें काटते हैं। उनके
पास न स्टोर होता है, न गोदाम। तो भी अल्लाह
ख़ुद उन्हें खाना खिलाता है। और तुम्हारी क़दरो-
क़ीमत तो परिंदों से कहीं ज़्यादा है। 25 क्या तुममें
से कोई फ़िकर करते करते अपनी ज़िंदगी में एक
लमहे का भी इज़ाफ़ा कर सकता है? 26 अगर
तुम फ़िकर करने से इतनी छोटी-सी तबदीली भी
नहीं ला सकते तो फिर तुम बाक़ी बातों के बारे में
क्यों फ़िकरमंद हो? 27 ग़ौर करो कि सोसन के
फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते, न
कातते हैं। लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलेमान
बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के बावुजूद ऐसे
शानदार कपड़ों से मुलब्बस नहीं था जैसे उनमें से
एक। 28 अगर अल्लाह उस घास को जो आज
मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी ऐसा
शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमएतक़ादो,
वह तुमको पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा?

29 इसकी तलाश में न रहना कि क्या खाओगे
या क्या पियोगे। ऐसी बातों की वजह से बेचैन
न रहो। 30 क्योंकि दुनिया में जो ईमान नहीं

रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते
हैं, जबकि तुम्हारे बाप को पहले से मालूम है
कि तुमको इनकी ज़रूरत है। 31 चुनाँचे उसी की
बादशाही की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें
भी तुमको मिल जाएँगी।

आसमान पर दौलत जमा करना

32 ऐ छोटे गल्ले, मत डरना, क्योंकि तुम्हारे
बाप ने तुमको बादशाही देना पसंद किया।
33 अपनी मिलकियत बेचकर ग़रीबों को दे देना।
अपने लिए ऐसे बटवे बनवाओ जो नहीं घिसते।
अपने लिए आसमान पर ऐसा ख़ज़ाना जमा करो
जो कभी ख़त्म नहीं होगा और जहाँ न कोई
चोर आएगा, न कोई कीड़ा उसे ख़राब करेगा।
34 क्योंकि जहाँ तुम्हारा ख़ज़ाना है वहीं तुम्हारा
दिल भी लगा रहेगा।

हर वक़्त तैयार नौकर

35 ख़िदमत के लिए तैयार खड़े रहो और इस पर
ध्यान दो कि तुम्हारे चराग़ जलते रहें। 36 यानी ऐसे
नौकरों की मानिंद जिनका मालिक किसी शादी
से वापस आनेवाला है और वह उसके लिए तैयार
खड़े हैं। ज्योंही वह आकर दस्तक दे वह दरवाज़े
को खोल देंगे। 37 वह नौकर मुबारक हैं जिन्हें
मालिक आकर जागते हुए और चौकस पाएगा।
मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक
अपने कपड़े बदलकर उन्हें बिठाएगा और मेज़ पर
उनकी ख़िदमत करेगा। 38 हो सकता है मालिक
आधी रात या इसके बाद आए। अगर वह इस
सूरत में भी उन्हें मुस्तैद पाए तो वह मुबारक हैं।
39 यक़ीन जानो, अगर किसी घर के मालिक को
पता होता कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर उसे
घर में नक़ब लगाने न देता। 40 तुम भी तैयार रहो,
क्योंकि इब्ने-आदम ऐसे वक़्त आएगा जब तुम
इसकी तवक़्क़ो नहीं करोगे।”

वफ़ादार नौकर

41 पतरस ने पूछा, “ख़ुदावंद, क्या यह
तमसील सिर्फ़ हमारे लिए है या सबके लिए?”
42 ख़ुदावंद ने जवाब दिया, “कौन-सा नौकर
वफ़ादार और समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर
के मालिक ने किसी नौकर को बाक़ी नौकरों
पर मुक़र्रर किया हो। उस की एक ज़िम्मेदारी
यह भी है कि उन्हें वक़्त पर मुनासिब खाना
खिलाए। 43 वह नौकर मुबारक होगा जो मालिक
की वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 44 मैं
तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक उसे
अपनी पूरी जायदाद पर मुक़र्रर करेगा। 45 लेकिन
फ़र्ज़ करो कि नौकर अपने दिल में सोचे, ‘मालिक
की वापसी में अभी देर है।’ वह नौकरों और
नौकरानियों को पीटने लगे और खाते-पीते वह
नशे में रहे। 46 अगर वह ऐसा करे तो मालिक
ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिसकी तवक़्क़ो
नौकर को नहीं होगी। इन हालात को देखकर
वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और उसे
ग़ैरईमानदारों में शामिल करेगा।
47 जो नौकर अपने मालिक की मरज़ी को
जानता है, लेकिन उसके लिए तैयारियाँ नहीं
करता, न उसे पूरी करने की कोशिश करता
है, उस की ख़ूब पिटाई की जाएगी। 48 इसके
मुक़ाबले में वह जो मालिक की मरज़ी को नहीं
जानता और इस बिना पर कोई क़ाबिले-सज़ा
काम करे उस की कम पिटाई की जाएगी। क्योंकि
जिसे बहुत दिया गया हो उससे बहुत तलब किया
जाएगा। और जिसके सुपुर्द बहुत कुछ किया गया
हो उससे कहीं ज़्यादा माँगा जाएगा।

ईसा की वजह से इख़्तिलाफ़ पैदा होगा

49 मैं ज़मीन पर आग लगाने आया हूँ, और
काश वह पहले ही भड़क रही होती! 50 लेकिन
अब तक मेरे सामने एक बपतिस्मा है जिसे लेना
ज़रूरी है। और मुझ पर कितना दबाव है जब तक
उस की तकमील न हो जाए। 51 क्या तुम समझते
हो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती क़ायम करने

आया हूँ? नहीं, मैं तुमको बताता हूँ कि इसकी
बजाए मैं इख़्तिलाफ़ पैदा करूँगा। 52 क्योंकि अब
से एक घराने के पाँच अफ़राद में इख़्तिलाफ़
होगा। तीन दो के ख़िलाफ़ और दो तीन के
ख़िलाफ़ होंगे। 53 बाप बेटे के ख़िलाफ़ होगा और
बेटा बाप के ख़िलाफ़, माँ बेटी के ख़िलाफ़ और
बेटी माँ के ख़िलाफ़, सास बहू के ख़िलाफ़ और
बहू सास के ख़िलाफ़।”

मौजूदा हालात का सहीह नतीजा निकालना चाहिए

54 ईसा ने हुजूम से यह भी कहा, “ज्योंही कोई
बादल मग़रिबी उफ़क़ से चढ़ता हुआ नज़र आए
तो तुम कहते हो कि बारिश होगी। और ऐसा ही
होता है। 55 और जब जुनूबी लू चलती है तो तुम
कहते हो कि सख़्त गरमी होगी। और ऐसा ही होता
है। 56 ऐ रियाकारो! तुम आसमानो-ज़मीन के
हालात पर ग़ौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते
हो। तो फिर तुम मौजूदा ज़माने के हालात पर ग़ौर
करके सहीह नतीजा क्यों नहीं निकाल सकते?

अपने मुख़ालिफ़ से समझौता करना

57 तुम ख़ुद सहीह फ़ैसला क्यों नहीं कर
सकते? 58 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर
मुक़दमा चलाया है। अगर ऐसा हो तो पूरी कोशिश
कर कि कचहरी में पहुँचने से पहले पहले मामला
हल करके मुख़ालिफ़ से फ़ारिग़ हो जाए। ऐसा
न हो कि वह तुझको जज के सामने घसीटकर ले
जाए, जज तुझे पुलिस अफ़सर के हवाले करे और
पुलिस अफ़सर तुझे जेल में डाल दे। 59 मैं तुझे
बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक नहीं निकल
पाएगा जब तक जुर्माने की पूरी पूरी रक़म अदा
न कर दे।”

तौबा करो वरना हलाक हो जाओगे

13 उस वक़्त कुछ लोग ईसा के पास
पहुँचे। उन्होंने उसे गलील के कुछ
लोगों के बारे में बताया जिन्हें पीलातुस ने उस
वक़्त क़त्ल करवाया था जब वह बैतुल-मुक़द्दस
में क़ुरबानियाँ पेश कर रहे थे। यों उनका ख़ून
क़ुरबानियों के ख़ून के साथ मिलाया गया था।
2 ईसा ने यह सुनकर पूछा, “क्या तुम्हारे ख़याल
में यह लोग गलील के बाक़ी लोगों से ज़्यादा
गुनाहगार थे कि इन्हें इतना दुख उठाना पड़ा?
3 हरगिज़ नहीं! बल्कि मैं तुमको बताता हूँ कि
अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी इसी तरह
तबाह हो जाओगे। 4 या उन 18 अफ़राद के बारे में
तुम्हारा क्या ख़याल है जो मर गए जब शिलोख़
का बुर्ज उन पर गिरा? क्या वह यरूशलम के
बाक़ी बाशिंदों की निसबत ज़्यादा गुनाहगार थे?
5 हरगिज़ नहीं! मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम
तौबा न करो तो तुम भी तबाह हो जाओगे।”

बेफल अंजीर का दरख़्त

6 फिर ईसा ने उन्हें यह तमसील सुनाई, “किसी
ने अपने बाग़ में अंजीर का दरख़्त लगाया। जब वह
उसका फल तोड़ने के लिए आया तो कोई फल
नहीं था। 7 यह देखकर उसने माली से कहा, ‘मैं
तीन साल से इसका फल तोड़ने आता हूँ, लेकिन
आज तक कुछ भी नहीं मिला। इसे काट डाल।
यह ज़मीन की ताक़त क्यों ख़त्म करे?’ 8 लेकिन
माली ने कहा, ‘जनाब, इसे एक साल और रहने
दें। मैं इसके इर्दगिर्द गोडी करके खाद डालूँगा।
9 फिर अगर यह अगले साल फल लाया तो ठीक,
वरना इसे कटवा डालना’।”

सबत के दिन कुबड़ी औरत की शफ़ा

10 सबत के दिन ईसा किसी इबादतख़ाने में
तालीम दे रहा था। 11 वहाँ एक औरत थी जो 18
साल से बदरूह के बाइस बीमार थी। वह कुबड़ी हो
गई थी और सीधी खड़ी होने के बिलकुल क़ाबिल
न थी। 12 जब ईसा ने उसे देखा तो पुकारकर
कहा, “ऐ औरत, तू अपनी बीमारी से छूट गई
है!” 13 उसने अपने हाथ उस पर रखे तो वह
फ़ौरन सीधी खड़ी होकर अल्लाह की तमजीद
करने लगी।

14 लेकिन इबादतख़ाने का राहनुमा नाराज़
हुआ क्योंकि ईसा ने सबत के दिन शफ़ा दी थी।
उसने लोगों से कहा, "हफ़्ते के छः दिन काम
करने के लिए होते हैं। इसलिए इतवार से लेकर
जुमे तक शफ़ा पाने के लिए आओ, न कि सबत
के दिन।"

15 ख़ुदावंद ने जवाब में उससे कहा, "तुम
कितने रियाकार हो! क्या तुममें से हर कोई सबत
के दिन अपने बैल या गधे को खोलकर उसे थान
से बाहर नहीं ले जाता ताकि उसे पानी पिलाए?
16 अब इस औरत को देखो जो इब्राहीम की बेटी
है और जो 18 साल से इबलीस के बंधन में थी।
जब तुम सबत के दिन अपने जानवरों की मदद
करते हो तो क्या यह ठीक नहीं कि औरत को
इस बंधन से रिहाई दिलाई जाती, चाहे यह काम
सबत के दिन ही क्यों न किया जाए?" 17 ईसा
के इस जवाब से उसके मुख़ालिफ़ शरमिंदा हो
गए। लेकिन आम लोग उसके इन तमाम शानदार
कामों से ख़ुश हुए।

राई के दाने की तमसील

18 ईसा ने कहा, "अल्लाह की बादशाही किस
चीज़ की मानिंद है? मैं इसका मुवाज़ना किससे
करूँ? 19 वह राई के एक दाने की मानिंद है जो
किसी ने अपने बाग़ में बो दिया। बढ़ते बढ़ते वह
दरख़्त-सा बन गया और परिंदों ने उस की शाख़ों
में अपने घोंसले बना लिए।"

ख़मीर की मिसाल

20 उसने दुबारा पूछा, "अल्लाह की बाद-
शाही का किस चीज़ से मुवाज़ना करूँ? 21 वह
उस ख़मीर की मानिंद है जो किसी औरत ने लेकर
तक़रीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो
वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गुँधे हुए
आटे को ख़मीर कर गया।"

तंग दरवाज़ा

22 ईसा तालीम देते देते मुख़्तलिफ़ शहरों और
देहातों में से गुज़रा। अब उसका रुख़ यरूशलम ही
की तरफ़ था। 23 इतने में किसी ने उससे पूछा,
"ख़ुदावंद, क्या कम लोगों को नजात मिलेगी?"
उसने जवाब दिया, 24 "तंग दरवाज़े में से
दाख़िल होने की सिर-तोड़ कोशिश करो। क्योंकि
मैं तुमको बताता हूँ कि बहुत-से लोग अंदर
जाने की कोशिश करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा।
25 एक वक़्त आएगा कि घर का मालिक उठकर
दरवाज़ा बंद कर देगा। फिर तुम बाहर खड़े रहोगे
और खटखटाते खटखटाते इलतमास करोगे,
'ख़ुदावंद, हमारे लिए दरवाज़ा खोल दें।' लेकिन
वह जवाब देगा, 'न मैं तुमको जानता हूँ, न यह
कि तुम कहाँ के हो।' 26 फिर तुम कहोगे, 'हमने
तो आपके सामने ही खाया और पिया और आप
ही हमारी सड़कों पर तालीम देते रहे।' 27 लेकिन
वह जवाब देगा, 'न मैं तुमको जानता हूँ, न यह
कि तुम कहाँ के हो। ऐ तमाम बदकारो, मुझसे
दूर हो जाओ!' 28 वहाँ तुम रोते और दाँत पीसते
रहोगे। क्योंकि तुम देखोगे कि इब्राहीम, इसहाक़,
याक़ूब और तमाम नबी अल्लाह की बादशाही में
हैं जबकि तुमको निकाल दिया गया है। 29 और
लोग मशरिक़, मग़रिब, शिमाल और जुनूब से
आकर अल्लाह की बादशाही की ज़ियाफ़त में
शरीक होंगे। 30 उस वक़्त कुछ ऐसे होंगे जो पहले
आख़िर थे, लेकिन अब अव्वल होंगे। और कुछ
ऐसे भी होंगे जो पहले अव्वल थे, लेकिन अब
आख़िर होंगे।"

यरूशलम पर अफ़सोस

31 उस वक़्त कुछ फ़रीसी ईसा के पास आकर
उससे कहने लगे, "इस मक़ाम को छोड़कर कहीं
और चले जाएँ, क्योंकि हेरोदेस आपको क़त्ल
करने का इरादा रखता है।"

32 ईसा ने जवाब दिया, "जाओ, उस लोमड़ी
को बता दो, 'आज और कल मैं बदरूहें निकालता
और मरीज़ों को शफ़ा देता रहूँगा। फिर तीसरे दिन

मैं पायाए-तकमील को पहुँचूँगा।’ 33 इसलिए
लाज़िम है कि मैं आज, कल और परसों आगे
चलता रहूँ। क्योंकि मुमकिन नहीं कि कोई नबी
यरूशलम से बाहर हलाक हो।

34 हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों
को क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़ंबरों
को संगसार करती है। मैंने कितनी ही बार तेरी
औलाद को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह मुरग़ी अपने बच्चों को अपने परों तले
जमा करके महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तूने न
चाहा। 35 अब तेरे घर को वीरानो-सुनसान छोड़ा
जाएगा। और मैं तुमको बताता हूँ, तुम मुझे उस
वक़्त तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो
कि मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।”

सबत के दिन मरीज़ की शफ़ा

14 सबत के एक दिन ईसा खाने के लिए
फ़रीसियों के किसी राहनुमा के घर
आया। लोग उसे पकड़ने के लिए उस की हर
हरकत पर नज़र रखे हुए थे। 2 वहाँ एक आदमी
ईसा के सामने था जिसके बाज़ू और टाँगें फूले
हुए थे। 3 यह देखकर वह फ़रीसियों और शरीअत
के आलिमों से पूछने लगा, “क्या शरीअत सबत
के दिन शफ़ा देने की इजाज़त देती है?”

4 लेकिन वह ख़ामोश रहे। फिर उसने उस
आदमी पर हाथ रखा और उसे शफ़ा देकर रुख़सत
कर दिया। 5 हाज़िरीन से वह कहने लगा, “अगर
तुममें से किसी का बेटा या बैल सबत के दिन
कुएँ में गिर जाए तो क्या तुम उसे फ़ौरन नहीं
निकालोगे?”

6 इस पर वह कोई जवाब न दे सके।

इज़्ज़त और अज्र हासिल करने का तरीक़ा

7 जब ईसा ने देखा कि मेहमान मेज़ पर इज़्ज़त
की कुरसियाँ चुन रहे हैं तो उसने उन्हें यह तमसील
सुनाई, 8 “जब तुझे किसी शादी की ज़ियाफ़त
में शरीक होने की दावत दी जाए तो वहाँ जाकर
इज़्ज़त की कुरसी पर न बैठना। ऐसा न हो
कि किसी और को भी दावत दी गई हो जो
तुझसे ज़्यादा इज़्ज़तदार है। 9 क्योंकि जब वह
पहुँचेगा तो मेज़बान तेरे पास आकर कहेगा,
‘ज़रा इस आदमी को यहाँ बैठने दे।’ यों तेरी
बेइज़्ज़ती हो जाएगी और तुझे वहाँ से उठकर
आख़िरी कुरसी पर बैठना पड़ेगा। 10 इसलिए
ऐसा मत करना बल्कि जब तुझे दावत दी जाए
तो जाकर आख़िरी कुरसी पर बैठ जा। फिर जब
मेज़बान तुझे वहाँ बैठा हुआ देखेगा तो वह कहेगा,
‘दोस्त, सामनेवाली कुरसी पर बैठ।’ इस तरह
तमाम मेहमानों के सामने तेरी इज़्ज़त हो जाएगी।
11 क्योंकि जो भी अपने आपको सरफ़राज़ करे
उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आपको
पस्त करे उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।”

12 फिर ईसा ने मेज़बान से बात की, “जब तू
लोगों को दोपहर या शाम का खाना खाने की
दावत देना चाहता है तो अपने दोस्तों, भाइयों,
रिश्तेदारों या अमीर हमसायों को न बुला। ऐसा न
हो कि वह इसके एवज़ तुझे भी दावत दें। क्योंकि
अगर वह ऐसा करें तो यही तेरा मुआवज़ा होगा।
13 इसके बजाए ज़ियाफ़त करते वक़्त ग़रीबों,
लँगड़ों, मफ़लूजों और अंधों को दावत दे। 14 ऐसा
करने से तुझे बरकत मिलेगी। क्योंकि वह तुझे
इसके एवज़ कुछ नहीं दे सकेंगे, बल्कि तुझे
इसका मुआवज़ा उस वक़्त मिलेगा जब रास्तबाज़
जी उठेंगे।”

बड़ी ज़ियाफ़त की तमसील

15 यह सुनकर मेहमानों में से एक ने उससे
कहा, “मुबारक है वह जो अल्लाह की बादशाही
में खाना खाए।”

16 ईसा ने जवाब में कहा, “किसी आदमी ने
एक बड़ी ज़ियाफ़त का इंतज़ाम किया। इसके
लिए उसने बहुत-से लोगों को दावत दी। 17 जब
ज़ियाफ़त का वक़्त आया तो उसने अपने नौकर
को मेहमानों को इत्तला देने के लिए भेजा कि
‘आएँ, सब कुछ तैयार है।’ 18 लेकिन वह सबके
सब माज़रत चाहने लगे। पहले ने कहा, ‘मैंने खेत

ख़रीदा है और अब ज़रूरी है कि निकलकर उसका
मुआयना करूँ। मैं माज़रत चाहता हूँ।' 19 दूसरे ने
कहा, 'मैंने बैलों के पाँच जोड़े ख़रीदे हैं। अब मैं
उन्हें आज़माने जा रहा हूँ। मैं माज़रत चाहता हूँ।'
20 तीसरे ने कहा, 'मैंने शादी की है, इसलिए नहीं
आ सकता।'

21 नौकर ने वापस आकर मालिक को सब कुछ
बताया। वह ग़ुस्से होकर नौकर से कहने लगा,
'जा, सीधे शहर की सड़कों और गलियों में जाकर
वहाँ के ग़रीबों, लँगड़ों, अंधों और मफ़लूजों को
ले आ।' नौकर ने ऐसा ही किया। 22 फिर वापस
आकर उसने मालिक को इत्तला दी, 'जनाब, जो
कुछ आपने कहा था पूरा हो चुका है। लेकिन अब
भी मज़ीद लोगों के लिए गुंजाइश है।' 23 मालिक
ने उससे कहा, फिर शहर से निकलकर देहात की
सड़कों पर और बाड़ों के पास जा। जो भी मिल
जाए उसे हमारी ख़ुशी में शरीक होने पर मजबूर
कर ताकि मेरा घर भर जाए। 24 क्योंकि मैं तुमको
बताता हूँ कि जिनको पहले दावत दी गई थी उनमें
से कोई भी मेरी ज़ियाफ़त में शरीक न होगा।"

शागिर्द होने की क़ीमत

25 एक बड़ा हुजूम ईसा के साथ चल रहा था।
उनकी तरफ़ मुड़कर उसने कहा, 26 "अगर कोई
मेरे पास आकर अपने बाप, माँ, बीवी, बच्चों,
भाइयों, बहनों बल्कि अपने आपसे भी दुश्मनी न
रखे तो वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता। 27 और
जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह
मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।

28 अगर तुममें से कोई बुर्ज तामीर कर-
ना चाहे तो क्या वह पहले बैठकर पूरे अख़राजात
का अंदाज़ा नहीं लगाएगा ताकि मालूम हो जाए
कि वह उसे तकमील तक पहुँचा सकेगा या नहीं?
29 वरना ख़तरा है कि उस की बुनियाद डालने
के बाद पैसे ख़त्म हो जाएँ और वह आगे कुछ
न बना सके। फिर जो कोई भी देखेगा वह उसका
मज़ाक़ उड़ाकर 30 कहेगा, 'उसने इमारत को शुरू
तो किया, लेकिन अब उसे मुकम्मल नहीं कर
पाया।'

31 या अगर कोई बादशाह किसी दूसरे बादशाह
के साथ जंग के लिए निकले तो क्या वह पहले
बैठकर अंदाज़ा नहीं लगाएगा कि वह अपने दस
हज़ार फ़ौजियों से उन बीस हज़ार फ़ौजियों पर
ग़ालिब आ सकता है जो उससे लड़ने आ रहे हैं?
32 अगर वह इस नतीजे पर पहुँचे कि ग़ालिब नहीं
आ सकता तो वह सुलह करने के लिए अपने
नुमाइंदे दुश्मन के पास भेजेगा जब वह अभी दूर
ही हो। 33 इसी तरह तुममें से जो भी अपना सब
कुछ न छोड़े वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।

बेकार नमक

34 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका
ज़ायक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर दुबारा
नमकीन किया जा सकता है? 35 न वह ज़मीन
के लिए मुफ़ीद है, न खाद के लिए बल्कि उसे
निकालकर बाहर फेंका जाएगा। जो सुन सकता
है वह सुन ले।"

खोई हुई भेड़

15 अब ऐसा था कि तमाम टैक्स
लेनेवाले और गुनाहगार ईसा की बातें
सुनने के लिए उसके पास आते थे। 2 यह देखकर
फ़रीसी और शरीअत के आलिम बुड़बुड़ाने लगे,
"यह आदमी गुनाहगारों को ख़ुशआमदीद कहकर
उनके साथ खाना खाता है।" 3 इस पर ईसा ने
उन्हें यह तमसील सुनाई,

4 "फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी की सौ भेड़ें
हैं। लेकिन एक गुम हो जाती है। अब मालिक
क्या करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें खुले मैदान
में छोड़कर गुमशुदा भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा?
ज़रूर जाएगा, बल्कि जब तक उसे वह भेड़ मिल
न जाए वह उस की तलाश में रहेगा। 5 फिर वह
ख़ुश होकर उसे अपने कंधों पर उठा लेगा। 6 यों
चलते चलते वह अपने घर पहुँच जाएगा और वहाँ
अपने दोस्तों और हमसायों को बुलाकर उनसे

कहेगा, 'मेरे साथ ख़ुशी मनाओ! क्योंकि मुझे
अपनी खोई हुई भेड़ मिल गई है।' 7 मैं तुमको
बताता हूँ कि आसमान पर बिलकुल इसी तरह
ख़ुशी मनाई जाएगी जब एक ही गुनाहगार तौबा
करेगा। और यह ख़ुशी उस ख़ुशी की निसबत
ज़्यादा होगी जो उन 99 अफ़राद के बाइस मनाई
जाएगी जिन्हें तौबा करने की ज़रूरत ही नहीं थी।

गुमशुदा सिक्का

8 या फ़र्ज़ करो कि किसी औरत के पास दस
सिक्के हों लेकिन एक सिक्का गुम हो जाए। अब
औरत क्या करेगी? क्या वह चराग़ जलाकर और
घर में झाड़ू दे देकर बड़ी एहतियात से सिक्के
को तलाश नहीं करेगी? ज़रूर करेगी, बल्कि वह
उस वक़्त तक ढूँडती रहेगी जब तक उसे सिक्का
मिल न जाए। 9 जब उसे सिक्का मिल जाएगा तो
वह अपनी सहेलियों और हमसायों को बुलाकर
उनसे कहेगी, 'मेरे साथ ख़ुशी मनाओ! क्योंकि
मुझे अपना गुमशुदा सिक्का मिल गया है।' 10 मैं
तुमको बताता हूँ कि बिलकुल इसी तरह अल्लाह
के फ़रिश्तों के सामने ख़ुशी मनाई जाती है जब
एक भी गुनाहगार तौबा करता है।"

गुमशुदा बेटा

11 ईसा ने अपनी बात जारी रखी। "किसी
आदमी के दो बेटे थे। 12 इनमें से छोटे ने बाप से
कहा, 'ऐ बाप, मीरास का मेरा हिस्सा दे दें।' इस
पर बाप ने दोनों में अपनी मिलकियत तक़सीम
कर दी। 13 थोड़े दिनों के बाद छोटा बेटा अपना
सारा सामान समेटकर अपने साथ किसी दूर-
दराज़ मुल्क में ले गया। वहाँ उसने ऐयाशी में
अपना पूरा मालो-मता उड़ा दिया। 14 सब कुछ
ज़ाया हो गया तो उस मुल्क में सख़्त काल पड़ा।
अब वह ज़रूरतमंद होने लगा। 15 नतीजे में वह
उस मुल्क के किसी बाशिंदे के हाँ जा पड़ा जिसने
उसे सुअरों को चराने के लिए अपने खेतों में भेज
दिया। 16 वहाँ वह अपना पेट उन फलियों से भरने
की शदीद ख़ाहिश रखता था जो सुअर खाते थे,
लेकिन उसे इसकी भी इजाज़त न मिली। 17 फिर
वह होश में आया। वह कहने लगा, 'मेरे बाप के
कितने मज़दूरों को कसरत से खाना मिलता है
जबकि मैं यहाँ भूका मर रहा हूँ। 18 मैं उठकर
अपने बाप के पास वापस चला जाऊँगा और
उससे कहूँगा, "ऐ बाप, मैंने आसमान का और
आपका गुनाह किया है। 19 अब मैं इस लायक़
नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ। मेहरबानी
करके मुझे अपने मज़दूरों में रख लें"।' 20 फिर
वह उठकर अपने बाप के पास वापस चला गया।

लेकिन वह घर से अभी दूर ही था कि उसके
बाप ने उसे देख लिया। उसे तरस आया और
वह भागकर बेटे के पास आया और गले लगाकर
उसे बोसा दिया। 21 बेटे ने कहा, 'ऐ बाप, मैंने
आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं
इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ।'
22 लेकिन बाप ने अपने नौकरों को बुलाया और
कहा, 'जल्दी करो, बेहतरीन सूट लाकर इसे
पहनाओ। इसके हाथ में अंगूठी और पाँवों में जूते
पहना दो। 23 फिर मोटा-ताज़ा बछड़ा लाकर उसे
ज़बह करो ताकि हम खाएँ और ख़ुशी मनाएँ,
24 क्योंकि यह मेरा बेटा मुरदा था अब ज़िंदा हो
गया है, गुम हो गया था अब मिल गया है।' इस
पर वह ख़ुशी मनाने लगे।

25 इस दौरान बाप का बड़ा बेटा खेत में था।
अब वह घर लौटा। जब वह घर के क़रीब पहुँचा
तो अंदर से मौसीक़ी और नाचने की आवाज़ें
सुनाई दीं। 26 उसने किसी नौकर को बुलाकर
पूछा, 'यह क्या हो रहा है?' 27 नौकर ने जवाब
दिया, 'आपका भाई आ गया है और आपके बाप
ने मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह करवाया है, क्योंकि
उसे अपना बेटा सहीह-सलामत वापस मिल गया
है।'

28 यह सुनकर बड़ा बेटा ग़ुस्से हुआ और अंदर
जाने से इनकार कर दिया। फिर बाप घर से
निकलकर उसे समझाने लगा। 29 लेकिन उसने
जवाब में अपने बाप से कहा, 'देखें, मैंने इतने
साल आपकी ख़िदमत में सख़्त मेहनत-मशक़्क़त

की है और एक दफ़ा भी आपकी मरज़ी की
ख़िलाफ़वरज़ी नहीं की। तो भी आपने मुझे इस
पूरे अरसे में एक छोटा बकरा भी नहीं दिया
कि उसे ज़बह करके अपने दोस्तों के साथ
ज़ियाफ़त करता। 30 लेकिन ज्योंही आपका यह
बेटा आया जिसने आपकी दौलत कसबियों में
उड़ा दी, आपने उसके लिए मोटा-ताज़ा बछड़ा
ज़बह करवाया।’ 31 बाप ने जवाब दिया, ‘बेटा,
आप तो हर वक़्त मेरे पास रहे हैं, और जो कुछ
मेरा है वह आप ही का है। 32 लेकिन अब ज़रूरी
था कि हम जशन मनाएँ और ख़ुश हों। क्योंकि
आपका यह भाई जो मुरदा था अब ज़िंदा हो गया
है, जो गुम हो गया था अब मिल गया है’।”

चालाक मुलाज़िम

16 ईसा ने शागिर्दों से कहा, “किसी
अमीर आदमी ने एक मुलाज़िम रखा
था जो उस की जायदाद की देख-भाल करता
था। ऐसा हुआ कि एक दिन उस पर इलज़ाम
लगाया गया कि वह अपने मालिक की दौलत
ज़ाया कर रहा है। 2 मालिक ने उसे बुलाकर कहा,
‘यह क्या है जो मैं तेरे बारे में सुनता हूँ? अपनी
तमाम ज़िम्मेदारियों का हिसाब दे, क्योंकि मैं
तुझे बरख़ास्त कर दूँगा।’ 3 मुलाज़िम ने दिल में
कहा, ‘अब मैं क्या करूँ जबकि मेरा मालिक यह
ज़िम्मेदारी मुझसे छीन लेगा? खुदाई जैसा सख़्त
काम मुझसे नहीं होता और भीक माँगने से शर्म
आती है। 4 हाँ, मैं जानता हूँ कि क्या करूँ ताकि
लोग मुझे बरख़ास्त किए जाने के बाद अपने घरों
में ख़ुशआमदीद कहें।’

5 यह कहकर उसने अपने मालिक के तमाम
क़र्ज़दारों को बुलाया। पहले से उसने पूछा,
‘तुम्हारा क़र्ज़ा कितना है?’ 6 उसने जवाब दिया,
‘मुझे मालिक को ज़ैतून के तेल के सौ कनस्तर
वापस करने हैं।’ मुलाज़िम ने कहा, ‘अपना बिल
ले लो और बैठकर जल्दी से सौ कनस्तर पचास में
बदल लो।’ 7 दूसरे से उसने पूछा, ‘तुम्हारा कितना
क़र्ज़ा है?’ उसने जवाब दिया, ‘मुझे गंदुम की
हज़ार बोरियाँ वापस करनी हैं।’ मुलाज़िम ने कहा,
‘अपना बिल ले लो और हज़ार के बदले आठ सौ
लिख लो।’

8 यह देखकर मालिक ने बेईमान मुलाज़िम की
तारीफ़ की कि उसने अक़्ल से काम लिया है।
क्योंकि इस दुनिया के फ़रज़ंद अपनी नसल के
लोगों से निपटने में नूर के फ़रज़ंदों से ज़्यादा
होशियार होते हैं।

9 मैं तुमको बताता हूँ कि दुनिया की नारास्त
दौलत से अपने लिए दोस्त बना लो ताकि जब यह
ख़त्म हो जाए तो लोग तुमको अबदी रिहाइशगाहों
में ख़ुशआमदीद कहें। 10 जो थोड़े में वफ़ादार
है वह ज़्यादा में भी वफ़ादार होगा। और जो
थोड़े में बेईमान है वह ज़्यादा में भी बेईमानी
करेगा। 11 अगर तुम दुनिया की नारास्त दौलत
को सँभालने में वफ़ादार न रहे तो फिर कौन
हक़ीक़ी दौलत तुम्हारे सुपुर्द करेगा? 12 और
अगर तुमने दूसरों की दौलत सँभालने में बेईमानी
दिखाई है तो फिर कौन तुमको तुम्हारे ज़ाती
इस्तेमाल के लिए कुछ देगा?

13 कोई भी ग़ुलाम दो मालिकों की ख़िदमत
नहीं कर सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके
दूसरे से मुहब्बत रखेगा, या एक से लिपटकर
दूसरे को हक़ीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त
में अल्लाह और दौलत की ख़िदमत नहीं कर
सकते।”

ईसा की चंद कहावतें

14 फ़रीसियों ने यह सब कुछ सुना तो वह
उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे, क्योंकि वह लालची
थे। 15 उसने उनसे कहा, “तुम ही वह हो जो
अपने आपको लोगों के सामने रास्तबाज़ क़रार
देते हो, लेकिन अल्लाह तुम्हारे दिलों से वाक़िफ़
है। क्योंकि लोग जिस चीज़ की बहुत क़दर करते
हैं वह अल्लाह के नज़दीक मकरूह है।

16 यहया के आने तक तुम्हारे राहनुमा मूसा की
शरीअत और नबियों के पैग़ामात थे। लेकिन अब
अल्लाह की बादशाही की ख़ुशख़बरी का एलान

किया जा रहा है और तमाम लोग ज़बरदस्ती
इसमें दाख़िल हो रहे हैं। 17 लेकिन इसका यह
मतलब नहीं कि शरीअत मनसूख़ हो गई है बल्कि
आसमानो-ज़मीन जाते रहेंगे, लेकिन शरीअत की
ज़ेर ज़बर तक कोई भी बात नहीं बदलेगी।
18 चुनाँचे जो आदमी अपनी बीवी को तलाक़
देकर किसी और से शादी करे वह ज़िना करता है।
इसी तरह जो किसी तलाक़शुदा औरत से शादी
करे वह भी ज़िना करता है।

अमीर आदमी और लाज़र

19 एक अमीर आदमी का ज़िक्र है जो
अरग़वानी रंग के कपड़े और नफ़ीस कतान
पहनता और हर रोज़ ऐशो-इशरत में गु-
ज़ारता था। 20 अमीर के गेट पर एक ग़रीब आदमी
पड़ा था जिसके पूरे जिस्म पर नासूर थे। उसका
नाम लाज़र था 21 और उस की बस एक ही
ख़ाहिश थी कि वह अमीर की मेज़ से गिरे हुए
टुकड़े खाकर सेर हो जाए। कुत्ते उसके पास
आकर उसके नासूर चाटते थे।
22 फिर ऐसा हुआ कि ग़रीब आदमी मर गया।
फ़रिश्तों ने उसे उठाकर इब्राहीम की गोद में बिठा
दिया। अमीर आदमी भी फ़ौत हुआ और दफ़नाया
गया। 23 वह जहन्नुम में पहुँचा। अज़ाब की हालत
में उसने अपनी नज़र उठाई तो दूर से इब्राहीम और
उस की गोद में लाज़र को देखा। 24 वह पुकार
उठा, 'ऐ मेरे बाप इब्राहीम, मुझ पर रहम करें।
मेहरबानी करके लाज़र को मेरे पास भेज दें ताकि
वह अपनी उँगली को पानी में डुबोकर मेरी ज़बान
को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस आग में तड़पता हूँ।'
25 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, 'बेटा, याद
रख कि तुझे अपनी ज़िंदगी में बेहतरीन चीज़ें
मिल चुकी हैं जबकि लाज़र को बदतरीन चीज़ें।
लेकिन अब उसे आराम और तसल्ली मिल गई है
जबकि तुझे अज़ियत। 26 नीज़, हमारे और तुम्हारे
दरमियान एक वसी ख़लीज क़ायम है। अगर कोई
चाहे भी तो उसे पार करके यहाँ से तुम्हारे पास
नहीं जा सकता, न वहाँ से कोई यहाँ आ सकता
है।' 27 अमीर आदमी ने कहा, 'मेरे बाप, फिर मेरी
एक और गुज़ारिश है, मेहरबानी करके लाज़र को
मेरे वालिद के घर भेज दें। 28 मेरे पाँच भाई हैं।
वह वहाँ जाकर उन्हें आगाह करे, ऐसा न हो कि
उनका अंजाम भी यह अज़ियतनाक मक़ाम हो।'
29 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, 'उनके पास
मूसा की तौरेत और नबियों के सहीफ़े तो हैं। वह
उनकी सुनें।' 30 अमीर ने अर्ज़ की, 'नहीं, मेरे बाप
इब्राहीम, अगर कोई मुरदों में से उनके पास जाए
तो फिर वह ज़रूर तौबा करेंगे।' 31 इब्राहीम ने
कहा, 'अगर वह मूसा और नबियों की नहीं सुनते
तो वह उस वक़्त भी क़ायल नहीं होंगे जब कोई
मुरदों में से जी उठकर उनके पास जाएगा'।"

गुनाह

17 ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा,
"आज़माइशों को तो आना ही आना
है, लेकिन उस पर अफ़सोस जिसकी मारिफ़त
वह आएँ। 2 अगर वह इन छोटों में से किसी को
गुनाह करने पर उकसाए तो उसके लिए बेहतर है
कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधा जाए
और उसे समुंदर में फेंक दिया जाए। 3 ख़बरदार
रहो!
अगर तुम्हारा भाई गुनाह करे तो उसे
समझाओ। अगर वह इस पर तौबा करे तो उसे
मुआफ़ कर दो। 4 अब फ़र्ज़ करो कि वह एक दिन
के अंदर सात बार तुम्हारा गुनाह करे, लेकिन हर
दफ़ा वापस आकर तौबा का इज़हार करे, तो भी
उसे हर दफ़ा मुआफ़ कर दो।"

ईमान

5 रसूलों ने ख़ुदावंद से कहा, "हमारे ईमान को
बढ़ा दें।"
6 ख़ुदावंद ने जवाब दिया, "अगर तुम्हारा ईमान
राई के दाने जैसा छोटा भी हो तो तुम शहतूत के
इस दरख़्त को कह सकते हो, 'उखड़कर समुंदर
में जा लग' तो वह तुम्हारी बात पर अमल करेगा।

ग़ुलाम का फ़र्ज़

7 फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी ने हल चलाने या
जानवर चराने के लिए एक ग़ुलाम रखा है। जब
यह ग़ुलाम खेत से घर आएगा तो क्या उसका
मालिक कहेगा, 'इधर आओ, खाने के लिए बैठ
जाओ?' 8 हरगिज़ नहीं, बल्कि वह यह कहेगा,
'मेरा खाना तैयार करो, ड्यूटी के कपड़े पहनकर
मेरी ख़िदमत करो जब तक मैं खा-पी न लूँ। इसके
बाद तुम भी खा और पी सकोगे।' 9 और क्या
वह अपने ग़ुलाम की उस ख़िदमत का शुक्रिया
अदा करेगा जो उसने उसे करने को कहा था?
हरगिज़ नहीं! 10 इसी तरह जब तुम सब कुछ जो
तुम्हें करने को कहा गया है कर चुको तब तुमको
यह कहना चाहिए, 'हम नालायक़ नौकर हैं। हमने
सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ अदा किया है'।"

कोढ़ के दस मरीज़ों की शफ़ा

11 ऐसा हुआ कि यरूशलम की तरफ़ सफ़र
करते करते ईसा सामरिया और गलील में से
गुज़रा। 12 एक दिन वह किसी गाँव में दाख़िल
हो रहा था कि कोढ़ के दस मरीज़ उसको मिलने
आए। वह कुछ फ़ासले पर खड़े होकर 13 ऊँची
आवाज़ से कहने लगे, "ऐ ईसा, उस्ताद, हम पर
रहम करें।"

14 उसने उन्हें देखा तो कहा, "जाओ, अपने
आपको इमामों को दिखाओ ताकि वह तुम्हारा
मुआयना करें।"

और ऐसा हुआ कि वह चलते चलते अपनी
बीमारी से पाक-साफ़ हो गए। 15 उनमें से एक
ने जब देखा कि शफ़ा मिल गई है तो वह मुड़कर
ऊँची आवाज़ से अल्लाह की तमजीद करने लगा,
16 और ईसा के सामने मुँह के बल गिरकर शुक्रिया
अदा किया। यह आदमी सामरिया का बाशिंदा
था। 17 ईसा ने पूछा, "क्या दस के दस आदमी
अपनी बीमारी से पाक-साफ़ नहीं हुए? बाक़ी नौ
कहाँ हैं? 18 क्या इस ग़ैरमुल्की के अलावा कोई
और वापस आकर अल्लाह की तमजीद करने के
लिए तैयार नहीं था?" 19 फिर उसने उससे कहा,
"उठकर चला जा। तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया
है।"

अल्लाह की बादशाही कब आएगी

20 कुछ फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, "अल्लाह
की बादशाही कब आएगी?" उसने जवाब दिया,
"अल्लाह की बादशाही यों नहीं आ रही कि उसे
ज़ाहिरी निशानों से पहचाना जाए। 21 लोग यह
भी नहीं कह सकेंगे, 'वह यहाँ है' या 'वह वहाँ है'
क्योंकि अल्लाह की बादशाही तुम्हारे दरमियान
है।"

22 फिर उसने अपने शागिर्दों से कहा, "ऐसे
दिन आएँगे कि तुम इब्ने-आदम का कम अज़ कम
एक दिन देखने की तमन्ना करोगे, लेकिन नहीं
देखोगे। 23 लोग तुमको बताएँगे, 'वह वहाँ है' या
'वह यहाँ है।' लेकिन मत जाना और उनके पीछे
न लगना। 24 क्योंकि जब इब्ने-आदम का दिन
आएगा तो वह बिजली की मानिंद होगा जिसकी
चमक आसमान को एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे
तक रौशन कर देती है। 25 लेकिन पहले लाज़िम
है कि वह बहुत दुख उठाए और इस नसल के
हाथों रद्द किया जाए। 26 जब इब्ने-आदम का
वक़्त आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे।
27 लोग उस दिन तक खाने-पीने और शादी करने
करवाने में लगे रहे जब तक नूह कश्ती में दाख़िल
न हो गया। फिर सैलाब ने आकर उन सबको
तबाह कर दिया। 28 बिलकुल यही कुछ लूत के
ऐयाम में हुआ। लोग खाने-पीने, ख़रीदो-फ़रोख़्त,
काश्तकारी और तामीर के काम में लगे रहे।
29 लेकिन जब लूत सदूम को छोड़कर निकला
तो आग और गंधक ने आसमान से बरसकर उन
सबको तबाह कर दिया। 30 इब्ने-आदम के ज़ुहूर
के वक़्त ऐसे ही हालात होंगे।

31 जो शख़्स उस दिन छत पर हो वह घर का
सामान साथ ले जाने के लिए नीचे न उतरे। इसी
तरह जो खेत में हो वह अपने पीछे पड़ी चीज़ों
को साथ ले जाने के लिए घर न लौटे। 32 लूत की
बीवी को याद रखो। 33 जो अपनी जान बचाने की

कोशिश करेगा वह उसे खो देगा, और जो अपनी
जान खो देगा वही उसे बचाए रखेगा। 34 मैं तुमको
बताता हूँ कि उस रात दो अफ़राद एक बिस्तर में
सोए होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि
दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 35 दो ख़वातीन
चक्की पर गंदुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले
लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया
जाएगा। 36 [दो अफ़राद खेत में होंगे, एक को
साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़
दिया जाएगा।]”
37 उन्होंने पूछा, “ख़ुदावंद, यह कहाँ होगा?”
उसने जवाब दिया, “जहाँ लाश पड़ी हो वहाँ
गिद्ध जमा हो जाएंगे।”

बेवा और जज की तमसील

18 फिर ईसा ने उन्हें एक तमसील सुनाई
जो मुसलसल दुआ करने और हिम्मत
न हारने की ज़रूरत को ज़ाहिर करती है। 2 उसने
कहा, “किसी शहर में एक जज रहता था जो
न ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता, न किसी इनसान का
लिहाज़ करता था। 3 अब उस शहर में एक बेवा
भी थी जो यह कहकर उसके पास आती रही
कि ‘मेरे मुख़ालिफ़ को जीतने न दें बल्कि मेरा
इनसाफ़ करें।’ 4 कुछ देर के लिए जज ने इनकार
किया। लेकिन फिर वह दिल में कहने लगा,
‘बेशक मैं ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं मानता, न लोगों
की परवा करता हूँ, 5 लेकिन यह बेवा मुझे बार
बार तंग कर रही है। इसलिए मैं उसका इनसाफ़
करूँगा। ऐसा न हो कि आख़िरकार वह आकर मेरे
मुँह पर थप्पड़ मारे’।”
6 ख़ुदावंद ने बात जारी रखी। “इस पर ध्यान
दो जो बेइनसाफ़ जज ने कहा। 7 अगर उसने
आख़िरकार इनसाफ़ किया तो क्या अल्लाह
अपने चुने हुए लोगों का इनसाफ़ नहीं करेगा जो
दिन-रात उसे मदद के लिए पुकारते हैं? क्या
वह उनकी बात मुलतवी करता रहेगा? 8 हरगिज़
नहीं! मैं तुमको बताता हूँ कि वह जल्दी से उनका
इनसाफ़ करेगा। लेकिन क्या इब्ने-आदम जब
दुनिया में आएगा तो ईमान देख पाएगा?”

फ़रीसी और टैक्स लेनेवाले की तमसील

9 बाज़ लोग मौजूद थे जो अपनी रास्त-
बाज़ी पर भरोसा रखते और दूसरों को हक़ीर
जानते थे। उन्हें ईसा ने यह तमसील सुनाई,
10 “दो आदमी बैतुल-मुक़द्दस में दुआ करने आए।
एक फ़रीसी था और दूसरा टैक्स लेनेवाला।
11 फ़रीसी खड़ा होकर यह दुआ करने लगा,
‘ऐ ख़ुदा, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मैं बाक़ी लोगों
की तरह नहीं हूँ। न मैं डाकू हूँ, न बेइनसाफ़, न
ज़िनाकार। मैं इस टैक्स लेनेवाले की मानिंद भी
नहीं हूँ। 12 मैं हफ़ते में दो मरतबा रोज़ा रखता हूँ
और तमाम आमदनी का दसवाँ हिस्सा तेरे लिए
मख़सूस करता हूँ।’
13 लेकिन टैक्स लेनेवाला दूर ही खड़ा रहा।
उसने अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाने तक
की जुर्रत न की बल्कि अपनी छाती पीट पीटकर
कहने लगा, ‘ऐ ख़ुदा, मुझ गुनाहगार पर रहम
कर!’ 14 मैं तुमको बताता हूँ कि जब दोनों अपने
अपने घर लौटे तो फ़रीसी नहीं बल्कि यह आदमी
अल्लाह के नज़दीक रास्तबाज़ ठहरा। क्योंकि
जो भी अपने आपको सरफ़राज़ करे उसे पस्त
किया जाएगा और जो अपने आपको पस्त करे
उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।”

ईसा छोटे बच्चों को प्यार करता है

15 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को भी ईसा
के पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। यह देखकर
शागिर्दों ने उनको मलामत की। 16 लेकिन ईसा
ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, “बच्चों को मेरे
पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि अल्लाह
की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है। 17 मैं
तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की बादशाही
को बच्चे की तरह क़बूल न करे वह उसमें दाख़िल
नहीं होगा।”

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

18 किसी राहनुमा ने उससे पूछा, "नेक उस्ताद,
मैं क्या करूँ ताकि मीरास में अबदी ज़िंदगी
पाऊँ?"

19 ईसा ने जवाब दिया, "तू मुझे नेक क्यों
कहता है? कोई नेक नहीं सिवाए एक के और
वह है अल्लाह। 20 तू शरीअत के अहकाम से तो
वाक़िफ़ है कि ज़िना न करना, क़त्ल न करना,
चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, अपने बाप
और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।"

21 आदमी ने जवाब दिया, "मैंने जवानी से
आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी की है।"

22 यह सुनकर ईसा ने कहा, "एक काम अब
तक रह गया है। अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त
करके पैसे ग़रीबों में तक़सीम कर दे। फिर तेरे
लिए आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा।
इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।" 23 यह
सुनकर आदमी को बहुत दुख हुआ, क्योंकि वह
निहायत दौलतमंद था।

24 यह देखकर ईसा ने कहा, "दौलतमंदों के
लिए अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होना
कितना मुश्किल है! 25 अमीर के अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल होने की निसबत यह ज़्यादा
आसान है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।"

26 यह बात सुनकर सुननेवालों ने पूछा, "फिर
किस को नजात मिल सकती है?"

27 ईसा ने जवाब दिया, "जो इनसान के लिए
नामुमकिन है वह अल्लाह के लिए मुमकिन है।"

28 पतरस ने उससे कहा, "हम तो अपना सब
कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।"

29 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता
हूँ कि जिसने भी अल्लाह की बादशाही की ख़ातिर
अपने घर, बीवी, भाइयों, वालिदैन या बच्चों को
छोड़ दिया है 30 उसे इस ज़माने में कई गुना ज़्यादा
और आनेवाले ज़माने में अबदी ज़िंदगी मिलेगी।"

ईसा की मौत की तीसरी पेशगोई

31 ईसा शागिर्दों को एक तरफ़ ले जाकर उनसे
कहने लगा, "सुनो, हम यरूशलम की तरफ़ बढ़
रहे हैं। वहाँ सब कुछ पूरा हो जाएगा जो नबियों
की मारिफ़त इब्ने-आदम के बारे में लिखा गया है।
32 उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर दिया जाएगा जो
उसका मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस की बेइज़्ज़ती करेंगे,
उस पर थूकेंगे, 33 उसको कोड़े मारेंगे और उसे
क़त्ल करेंगे। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।"

34 लेकिन शागिर्दों की समझ में कुछ न आया।
इस बात का मतलब उनसे छुपा रहा और वह न
समझे कि वह क्या कह रहा है।

अंधे की शफ़ा

35 ईसा यरीहू के क़रीब पहुँचा। वहाँ रास्ते
के किनारे एक अंधा बैठा भीक माँग रहा था।
36 बहुत-से लोग उसके सामने से गुज़रने लगे तो
उसने यह सुनकर पूछा कि क्या हो रहा है।

37 उन्होंने कहा, "ईसा नासरी यहाँ से गुज़र रहा
है।"

38 अंधा चिल्लाने लगा, "ऐ ईसा इब्ने-दाऊद,
मुझ पर रहम करें।"

39 आगे चलनेवालों ने उसे डाँटकर कहा,
"ख़ामोश!" लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़
से पुकारता रहा, "ऐ इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम
करें।"

40 ईसा रुक गया और हुक्म दिया, "उसे मेरे
पास लाओ।" जब वह क़रीब आया तो ईसा ने
उससे पूछा, 41 "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए
करूँ?"

उसने जवाब दिया, "ख़ुदावंद, यह कि मैं देख
सकूँ।"

42 ईसा ने उससे कहा, "तो फिर देख! तेरे
ईमान ने तुझे बचा लिया है।"

43 ज्योंही उसने यह कहा अंधे की आँखें बहाल
हो गईं और वह अल्लाह की तमजीद करते हुए
उसके पीछे हो लिया। यह देखकर पूरे हुजूम ने
अल्लाह को जलाल दिया।

ईसा और ज़क्काई

19 फिर ईसा यरीहू में दाख़िल हुआ और
उसमें से गुज़रने लगा। 2 उस शहर में
एक अमीर आदमी बनाम ज़क्काई रहता था जो
टैक्स लेनेवालों का अफ़सर था। 3 वह जानना
चाहता था कि यह ईसा कौन है, लेकिन पूरी
कोशिश करने के बावुजूद उसे देख न सका,
क्योंकि ईसा के इर्दगिर्द बड़ा हुजूम था और
ज़क्काई का क़द छोटा था। 4 इसलिए वह दौड़कर
आगे निकला और उसे देखने के लिए अंजीर-तूत[a]
के दरख़्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था। 5 जब
ईसा वहाँ पहुँचा तो उसने नज़र उठाकर कहा,
"ज़क्काई, जल्दी से उतर आ, क्योंकि आज मुझे
तेरे घर में ठहरना है।"

6 ज़क्काई फ़ौरन उतर आया और ख़ुशी से
उस की मेहमान-नवाज़ी की। 7 यह देखकर बाक़ी
तमाम लोग बुड़बुड़ाने लगे, "इसके घर में जाकर
वह एक गुनाहगार के मेहमान बन गए हैं।"

8 लेकिन ज़क्काई ने ख़ुदावंद के सामने खड़े
होकर कहा, "ख़ुदावंद, मैं अपने माल का आधा
हिस्सा ग़रीबों को दे देता हूँ। और जिससे मैंने
नाजायज़ तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना
वापस करता हूँ।"

9 ईसा ने उससे कहा, "आज इस घराने को
नजात मिल गई है, इसलिए कि यह भी इब्राहीम
का बेटा है। 10 क्योंकि इब्ने-आदम गुमशुदा को
ढूँडने और नजात देने के लिए आया है।"

पैसों में इज़ाफ़ा

11 अब ईसा यरूशलम के क़रीब आ चुका था,
इसलिए लोग अंदाज़ा लगाने लगे कि अल्लाह
की बादशाही ज़ाहिर होनेवाली है। इसके पेशे-
नज़र ईसा ने अपनी यह बातें सुननेवालों को
एक तमसील सुनाई। 12 उसने कहा, "एक नवाब
किसी दूर-दराज़ मुल्क को चला गया ताकि उसे
बादशाह मुक़र्रर किया जाए। फिर उसे वापस
आना था। 13 रवाना होने से पहले उसने अपने
नौकरों में से दस को बुलाकर उन्हें सोने का एक
एक सिक्का दिया। साथ साथ उसने कहा, 'यह
पैसे लेकर उस वक़्त तक कारोबार में लगाओ
जब तक मैं वापस न आऊँ।' 14 लेकिन उस की
रिआया उससे नफ़रत रखती थी, इसलिए उसने
उसके पीछे वफ़्द भेजकर इत्तला दी, 'हम नहीं
चाहते कि यह आदमी हमारा बादशाह बने।'

15 तो भी उसे बादशाह मुक़र्रर किया गया।
इसके बाद जब वापस आया तो उसने उन नौकरों
को बुलाया जिन्हें उसने पैसे दिए थे ताकि मालूम
करे कि उन्होंने यह पैसे कारोबार में लगाकर
कितना इज़ाफ़ा किया है। 16 पहला नौकर आया।
उसने कहा, 'जनाब, आपके एक सिक्के से दस
हो गए हैं।' 17 मालिक ने कहा, 'शाबाश, अच्छे
नौकर। तू थोड़े में वफ़ादार रहा, इसलिए अब तुझे
दस शहरों पर इख़्तियार मिलेगा।' 18 फिर दूसरा
नौकर आया। उसने कहा, 'जनाब, आपके एक
सिक्के से पाँच हो गए हैं।' 19 मालिक ने उससे
कहा, 'तुझे पाँच शहरों पर इख़्तियार मिलेगा।'

20 फिर एक और नौकर आकर कहने लगा,
'जनाब, यह आपका सिक्का है। मैंने इसे कपड़े
में लपेटकर महफ़ूज़ रखा, 21 क्योंकि मैं आपसे
डरता था, इसलिए कि आप सख़्त आदमी हैं। जो
पैसे आपने नहीं लगाए उन्हें ले लेते हैं और जो
बीज आपने नहीं बोया उस की फ़सल काटते हैं।'
22 मालिक ने कहा, 'शरीर नौकर! मैं तेरे अपने
अलफ़ाज़ के मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा। जब
तू जानता था कि मैं सख़्त आदमी हूँ, कि वह पैसे
ले लेता हूँ जो ख़ुद नहीं लगाए और वह फ़सल
काटता हूँ जिसका बीज नहीं बोया, 23 तो फिर
तूने मेरे पैसे बैंक में क्यों न जमा कराए? अगर
तू ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम
वह पैसे सूद समेत मिल जाते।'

---

[a] एक सायादार दरख़्त जिसमें अंजीर की तरह का ख़ुरदनी फल लगता है। इसके फूल ज़रद और आराइशी होते हैं। मिसरी तूत। जमीज़। ficus sycomorus।

24 यह कहकर वह हाज़िरीन से मुख़ातिब हुआ,
'यह सिक्का इससे लेकर उस नौकर को दे दो
जिसके पास दस सिक्के हैं।' 25 उन्होंने एतराज़
किया, 'जनाब, उसके पास तो पहले ही दस
सिक्के हैं।' 26 उसने जवाब दिया, 'मैं तुम्हें बताता
हूँ कि हर शख़्स जिसके पास कुछ है उसे और दिया
जाएगा, लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे
वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है।
27 अब उन दुश्मनों को ले आओ जो नहीं चाहते
थे कि मैं उनका बादशाह बनूँ। उन्हें मेरे सामने
फाँसी दे दो'।"

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

28 इन बातों के बाद ईसा दूसरों के आगे आगे
यरूशलम की तरफ़ बढ़ने लगा। 29 जब वह
बैत-फ़गे और बैत-अनियाह के क़रीब पहुँचा जो
ज़ैतून के पहाड़ पर थे तो उसने दो शागिर्दों को
अपने आगे भेजकर 30 कहा, "सामनेवाले गाँव में
जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बँधा
हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार
नहीं हुआ है। उसे खोलकर ले आओ। 31 अगर
कोई पूछे कि गधे को क्यों खोल रहे हो तो उसे
बता देना कि ख़ुदावंद को इसकी ज़रूरत है।"

32 दोनों शागिर्द गए तो देखा कि सब कुछ वैसा
ही है जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 33 जब वह
जवान गधे को खोलने लगे तो उसके मालिकों ने
पूछा, "तुम गधे को क्यों खोल रहे हो?"

34 उन्होंने जवाब दिया, "ख़ुदावंद को इसकी
ज़रूरत है।" 35 वह उसे ईसा के पास ले आए,
और अपने कपड़े गधे पर रखकर उसको उस पर
सवार किया। 36 जब वह चल पड़ा तो लोगों ने
उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए।

37 चलते चलते वह उस जगह के क़रीब पहुँचा
जहाँ रास्ता ज़ैतून के पहाड़ पर से उतरने लगता
है। इस पर शागिर्दों का पूरा हुजूम ख़ुशी के मारे
ऊँची आवाज़ से उन मोजिज़ों के लिए अल्लाह
की तमजीद करने लगा जो उन्होंने देखे थे,

38 "मुबारक है वह बादशाह
जो रब के नाम से आता है।
आसमान पर सलामती हो
और बुलंदियों पर इज़्ज़तो-जलाल।"

39 कुछ फ़रीसी भीड़ में थे। उन्होंने ईसा से
कहा, "उस्ताद, अपने शागिर्दों को समझाएँ।"

40 उसने जवाब दिया, "मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर
यह चुप हो जाएँ तो पत्थर पुकार उठेंगे।"

ईसा शहर को देखकर रो पड़ता है

41 जब वह यरूशलम के क़रीब पहुँचा तो शहर
को देखकर रो पड़ा 42 और कहा, "काश तू भी
इस दिन जान लेती कि तेरी सलामती किसमें
है। लेकिन अब यह बात तेरी आँखों से छुपी हुई
है। 43 क्योंकि तुझ पर ऐसा वक़्त आएगा कि
तेरे दुश्मन तेरे इर्दगिर्द बंद बाँधकर तेरा मुहासरा
करेंगे और यों तुझे चारों तरफ़ से घेरकर तंग
करेंगे। 44 वह तुझे तेरे बच्चों समेत ज़मीन पर
पटकेंगे और तेरे अंदर एक भी पत्थर दूसरे पर
नहीं छोड़ेंगे। और वजह यही होगी कि तूने वह
वक़्त नहीं पहचाना जब अल्लाह ने तेरी नजात के
लिए तुझ पर नज़र की।"

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

45 फिर ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उन्हें
निकालने लगा जो वहाँ क़ुरबानियों के लिए
दरकार चीज़ें बेच रहे थे। उसने कहा, 46 "कलामे-
मुक़द्दस में लिखा है, 'मेरा घर दुआ का घर होगा'
जबकि तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया
है।"

47 और वह रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तालीम
देता रहा। लेकिन बैतुल-मुक़द्दस के राहनुमा
इमाम, शरीअत के आलिम और अवामी राहनुमा
उसे क़त्ल करने के लिए कोशाँ रहे, 48 अलबत्ता
उन्हें कोई मौक़ा न मिला, क्योंकि तमाम लोग
ईसा की हर बात सुन सुनकर उससे लिपटे रहते
थे।

ईसा का इख़्तियार

20 एक दिन जब वह बैतुल-मुक़द्दस में
लोगों को तालीम दे रहा और अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुना रहा था तो राहनुमा इमाम,
शरीअत के उलमा और बुज़ुर्ग उसके पास आए।
2 उन्होंने कहा, “हमें बताएँ, आप यह किस
इख़्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह
इख़्तियार दिया है?”
3 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक
सवाल है। तुम मुझे बताओ कि 4 क्या यहया का
बपतिस्मा आसमानी था या इनसानी?”
5 वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम
कहें ‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम
उस पर ईमान क्यों न लाए?’ 6 लेकिन अगर
हम कहें ‘इनसानी’ तो तमाम लोग हमें संगसार
करेंगे, क्योंकि वह तो यक़ीन रखते हैं कि यहया
नबी था।” 7 इसलिए उन्होंने जवाब दिया, “हम
नहीं जानते कि वह कहाँ से था।”
8 ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुमको नहीं
बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से
कर रहा हूँ।”

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बग़ावत

9 फिर ईसा लोगों को यह तमसील सुनाने लगा,
“किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़ लगाया।
फिर वह उसे मुज़ारेओं के सुपुर्द करके बहुत देर
के लिए बैरूने-मुल्क चला गया। 10 जब अंगूर
पक गए तो उसने अपने नौकर को उनके पास
भेज दिया ताकि वह मालिक का हिस्सा वसूल
करे। लेकिन मुज़ारेओं ने उस की पिटाई करके
उसे ख़ाली हाथ लौटा दिया। 11 इस पर मालिक
ने एक और नौकर को उनके पास भेजा। लेकिन
मुज़ारेओं ने उसे भी मार मारकर उस की बेइज़्ज़ती
की और ख़ाली हाथ निकाल दिया। 12 फिर
मालिक ने तीसरे नौकर को भेज दिया। उसे भी
उन्होंने मारकर ज़ख़मी कर दिया और निकाल
दिया। 13 बाग़ के मालिक ने कहा, ‘अब मैं क्या
करूँ? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा, शायद वह
उसका लिहाज़ करें।’ 14 लेकिन मालिक के बेटे
को देखकर मुज़ारे आपस में कहने लगे, ‘यह
ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे मार डालें।
फिर इसकी मीरास हमारी ही होगी।’ 15 उन्होंने
उसे बाग़ से बाहर फेंककर क़त्ल किया।”
ईसा ने पूछा, “अब बताओ, बाग़ का मालिक
क्या करेगा? 16 वह वहाँ जाकर मुज़ारेओं को
हलाक करेगा और बाग़ को दूसरों के सुपुर्द कर
देगा।”
यह सुनकर लोगों ने कहा, “ख़ुदा ऐसा कभी न
करे।”
17 ईसा ने उन पर नज़र डालकर पूछा, “तो
फिर कलामे-मुक़द्दस के इस हवाले का क्या
मतलब है कि

‘जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने
  रद्द किया,
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया’?

18 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े
हो जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा उसे
पीस डालेगा।”

क्या टैक्स देना जायज़ है?

19 शरीअत के उलमा और राहनुमा इमामों ने
उसी वक़्त उसे पकड़ने की कोशिश की, क्योंकि
वह समझ गए थे कि तमसील में बयानशुदा
मुज़ारे हम ही हैं। लेकिन वह अवाम से डरते थे।
20 चुनाँचे वह उसे पकड़ने का मौक़ा ढूँडते रहे।
इस मक़सद के तहत उन्होंने उसके पास जासूस
भेज दिए। यह लोग अपने आपको दियानतदार
ज़ाहिर करके ईसा के पास आए ताकि उस की
कोई बात पकड़कर उसे रोमी गवर्नर के हवाले कर
सकें। 21 इन जासूसों ने उससे पूछा, “उस्ताद,
हम जानते हैं कि आप वही कुछ बयान करते
और सिखाते हैं जो सहीह है। आप जानिबदार
नहीं होते बल्कि दियानतदारी से अल्लाह की
राह की तालीम देते हैं। 22 अब हमें बताएँ कि
क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या
नाजायज़?”

23 लेकिन ईसा ने उनकी चालाकी भाँप ली
और कहा, 24 “मुझे चाँदी का एक रोमी सिक्का
दिखाओ। किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा
है?”

उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

25 उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है
शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह
को।”

26 यों वह अवाम के सामने उस की कोई बात
पकड़ने में नाकाम रहे। उसका जवाब सुनकर वह
हक्का-बक्का रह गए और मज़ीद कोई बात न
कर सके।

क्या हम जी उठेंगे?

27 फिर कुछ सदूक़ी उसके पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़े-क़ियामत मुरदे जी उठेंगे।
उन्होंने ईसा से एक सवाल किया, 28 “उस्ताद,
मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा
आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो
तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके
अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 29 अब
फ़र्ज़ करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की,
लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। 30 इस पर दूसरे ने
उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर
गया। 31 फिर तीसरे ने उससे शादी की। यह
सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद
दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर
गया। 32 आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 33 अब
बताएँ कि क़ियामत के दिन वह किसकी बीवी
होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे
शादी की थी।”

34 ईसा ने जवाब दिया, “इस ज़माने में लोग
ब्याह-शादी करते और कराते हैं। 35 लेकिन जिन्हें
अल्लाह आनेवाले ज़माने में शरीक होने और
मुरदों में से जी उठने के लायक़ समझता है वह उस
वक़्त शादी नहीं करेंगे, न उनकी शादी किसी से
कराई जाएगी। 36 वह मर भी नहीं सकेंगे, क्योंकि
वह फ़रिश्तों की मानिंद होंगे और क़ियामत के
फ़रज़ंद होने के बाइस अल्लाह के फ़रज़ंद होंगे।
37 और यह बात कि मुरदे जी उठेंगे मूसा से भी
ज़ाहिर की गई है। क्योंकि जब वह काँटेदार झाड़ी
के पास आया तो उसने रब को यह नाम दिया,
‘इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब
का ख़ुदा,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों बहुत पहले
मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त
में ज़िंदा हैं। 38 क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं
बल्कि ज़िंदों का ख़ुदा है। उसके नज़दीक यह सब
ज़िंदा हैं।”

39 यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा ने
कहा, “शाबाश उस्ताद, आपने अच्छा कहा है।”
40 इसके बाद उन्होंने उससे कोई भी सवाल करने
की जुर्रत न की।

मसीह के बारे में सवाल

41 फिर ईसा ने उनसे पूछा, “मसीह के बारे
में क्यों कहा जाता है कि वह दाऊद का फ़रज़ंद
है? 42 क्योंकि दाऊद ख़ुद ज़बूर की किताब में
फ़रमाता है,

‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
43 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।’

44 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो
फिर वह किस तरह दाऊद का फ़रज़ंद हो सकता
है?”

शरीअत के उलमा से ख़बरदार

45 जब लोग सुन रहे थे तो उसने अपने शागिर्दों
से कहा, 46 “शरीअत के उलमा से ख़बरदार
रहो! क्योंकि वह शानदार चोग़े पहनकर इधर-
उधर फिरना पसंद करते हैं। जब लोग बाज़ारों में
सलाम करके उनकी इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह
ख़ुश हो जाते हैं। उनकी बस एक ही ख़ाहिश होती
है कि इबादतख़ानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की
कुरसियों पर बैठ जाएँ। 47 यह लोग बेवाओं के
घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के

लिए लंबी लंबी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को
निहायत सख़्त सज़ा मिलेगी।”

बेवा का चंदा

21 ईसा ने नज़र उठाकर देखा कि अमीर
लोग अपने हदिये बैतुल-मुक़द्दस के
चंदे के बक्स में डाल रहे हैं। 2 एक ग़रीब बेवा भी
वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-
से सिक्के डाल दिए। 3 ईसा ने कहा, “मैं तुमको
सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों
की निसबत ज़्यादा डाला है। 4 क्योंकि इन सबने
तो अपनी दौलत की कसरत से कुछ डाला जबकि
इसने ज़रूरतमंद होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे
के सारे पैसे दे दिए हैं।”

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

5 उस वक़्त कुछ लोग बैतुल-मुक़द्दस की
तारीफ़ में कहने लगे कि वह कितने ख़ूबसूरत
पत्थरों और मन्नत के तोहफ़ों से सजी हुई है।
यह सुनकर ईसा ने कहा, 6 “जो कुछ तुमको यहाँ
नज़र आता है उसका पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा।
आनेवाले दिनों में सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

7 उन्होंने पूछा, “उस्ताद, यह कब होगा? क्या
क्या नज़र आएगा जिससे मालूम हो कि यह अब
होने को है?”
8 ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई
तुम्हें गुमराह न कर दे। क्योंकि बहुत-से लोग मेरा
नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ’
और कि ‘वक़्त क़रीब आ चुका है।’ लेकिन उनके
पीछे न लगना। 9 और जब जंगों और फ़ितनों की
ख़बरें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्योंकि
लाज़िम है कि यह सब कुछ पहले पेश आए। तो
भी अभी आख़िरत न होगी।”
10 उसने अपनी बात जारी रखी, “एक क़ौम
दूसरी के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक
बादशाही दूसरी के ख़िलाफ़। 11 शदीद ज़लज़ले
आएँगे, जगह जगह काल पड़ेंगे और वबाई
बीमारियाँ फैल जाएँगी। हैबतनाक वाक़ियात
और आसमान पर बड़े निशान देखने में आएँगे।
12 लेकिन इन तमाम वाक़ियात से पहले लोग
तुमको पकड़कर सताएँगे। वह तुमको यहूदी
इबादतख़ानों के हवाले करेंगे, क़ैदख़ानों में
डलवाएँगे और बादशाहों और हुक्मरानों के सामने
पेश करेंगे। और यह इसलिए होगा कि तुम
मेरे पैरोकार हो। 13 नतीजे में तुम्हें मेरी गवाही
देने का मौक़ा मिलेगा। 14 लेकिन ठान लो कि
तुम पहले से अपना दिफ़ा करने की तैयारी न
करो, 15 क्योंकि मैं तुमको ऐसे अलफ़ाज़ और
हिकमत अता करूँगा कि तुम्हारे तमाम मुख़ालिफ़
न उसका मुक़ाबला और न उस की तरदीद कर
सकेंगे। 16 तुम्हारे वालिदैन, भाई, रिश्तेदार और
दोस्त भी तुमको दुश्मन के हवाले कर देंगे, बल्कि
तुममें से बाज़ को क़त्ल किया जाएगा। 17 सब
तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार
हो। 18 तो भी तुम्हारा एक बाल भी बीका नहीं
होगा। 19 साबितक़दम रहने से ही तुम अपनी जान
बचा लोगे।

यरूशलम की तबाही

20 जब तुम यरूशलम को फ़ौजों से घिरा हुआ
देखो तो जान लो कि उस की तबाही क़रीब आ
चुकी है। 21 उस वक़्त यहूदिया के बाशिंदे भागकर
पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। शहर के रहनेवाले
उससे निकल जाएँ और देहात में आबाद लोग
शहर में दाख़िल न हों। 22 क्योंकि यह इलाही
ग़ज़ब के दिन होंगे जिनमें वह सब कुछ पूरा हो
जाएगा जो कलामे-मुक़द्दस में लिखा है। 23 उन
ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों
या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों, क्योंकि मुल्क
में बहुत मुसीबत होगी और इस क़ौम पर अल्लाह
का ग़ज़ब नाज़िल होगा। 24 लोग उन्हें तलवार
से क़त्ल करेंगे और क़ैद करके तमाम ग़ैरयहूदी
ममालिक में ले जाएंगे। ग़ैरयहूदी यरूशलम को
पाँवों तले कुचल डालेंगे। यह सिलसिला उस

वक़्त तक जारी रहेगा जब तक ग़ैरयहूदियों का
दौर पूरा न हो जाए।

इब्ने-आदम की आमद

25 सूरज, चाँद और सितारों में अजीबो-ग़रीब
निशान ज़ाहिर होंगे। क़ौमें समुंदर के शोर और
ठाठें मारने से हैरानो-परेशान होंगी। 26 लोग इस
अंदेशे से कि क्या क्या मुसीबत दुनिया पर आएगी
इस क़दर ख़ौफ़ खाएँगे कि उनकी जान में जान
न रहेगी, क्योंकि आसमान की क़ुव्वतें हिलाई
जाएँगी। 27 और फिर वह इब्ने-आदम को बड़ी
क़ुदरत और जलाल के साथ बादल में आते हुए
देखेंगे। 28 चुनाँचे जब यह कुछ पेश आने लगे तो
सीधे खड़े होकर अपनी नज़र उठाओ, क्योंकि
तुम्हारी नजात नज़दीक होगी।”

अंजीर के दरख़्त की तमसील

29 इस सिलसिले में ईसा ने उन्हें एक तमसील
सुनाई। “अंजीर के दरख़्त और बाक़ी दरख़्तों पर
ग़ौर करो। 30 ज्योंही कोंपलें निकलने लगती हैं
तुम जान लेते हो कि गरमियों का मौसम नज़दीक
है। 31 इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात देखोगे
तो जान लोगे कि अल्लाह की बादशाही क़रीब ही
है।

32 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस नसल के
ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा।
33 आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी
बातें हमेशा तक क़ायम रहेंगी।

ख़बरदार रहना

34 ख़बरदार रहो ताकि तुम्हारे दिल ऐयाशी,
नशाबाज़ी और रोज़ाना की फ़िकरों तले दब न
जाएँ। वरना यह दिन अचानक तुम पर आन
पड़ेगा, 35 और फंदे की तरह तुम्हें जकड़ लेगा।
क्योंकि वह दुनिया के तमाम बाशिंदों पर आएगा।
36 हर वक़्त चौकस रहो और दुआ करते रहो कि
तुमको आनेवाली इन सब बातों से बच निकलने
की तौफ़ीक़ मिल जाए और तुम इब्ने-आदम के
सामने खड़े हो सको।”

37 हर रोज़ ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता
रहा और हर शाम वह निकलकर उस पहाड़ पर
रात गुज़ारता था जिसका नाम ज़ैतून का पहाड़ है।
38 और तमाम लोग उस की बातें सुनने के लिए
सुबह-सवेरे बैतुल-मुक़द्दस में उसके पास आते थे।

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

22 बेख़मीरी रोटी की ईद यानी फ़सह
की ईद क़रीब आ गई थी। 2 राहनुमा
इमाम और शरीअत के उलमा ईसा को क़त्ल
करने का कोई मौज़ूँ मौक़ा ढूँड रहे थे, क्योंकि
वह अवाम के रद्दे-अमल से डरते थे।

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

3 उस वक़्त इबलीस यहूदाह इस्करियोती में
समा गया जो बारह रसूलों में से था। 4 अब वह
राहनुमा इमामों और बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों
के अफ़सरों से मिला और उनसे बात करने लगा
कि वह ईसा को किस तरह उनके हवाले कर
सकेगा। 5 वह ख़ुश हुए और उसे पैसे देने पर
मुत्तफ़िक़ हुए। 6 यहूदाह रज़ामंद हुआ। अब से
वह इस तलाश में रहा कि ईसा को ऐसे मौक़े पर
उनके हवाले करे जब हुजूम उसके पास न हो।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

7 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के
लेले को क़ुरबान करना था। 8 ईसा ने पतरस और
यूहन्ना को आगे भेजकर हिदायत की, “जाओ,
हमारे लिए फ़सह का खाना तैयार करो ताकि हम
जाकर उसे खा सकें।”

9 उन्होंने पूछा, “हम उसे कहाँ तैयार करें?”

10 उसने जवाब दिया, “जब तुम शहर में
दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी
से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा।
उसके पीछे चलकर उस घर में दाख़िल हो जाओ
जिसमें वह जाएगा। 11 वहाँ के मालिक से कहना,

‘उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है
जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना
खाऊँ?’ 12 वह तुमको दूसरी मनज़िल पर एक
बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। फ़सह का
खाना वहीं तैयार करना।”

13 दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया
जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह
का खाना तैयार किया।

फ़सह का आख़िरी खाना

14 मुक़र्ररा वक़्त पर ईसा अपने शागिर्दों के
साथ खाने के लिए बैठ गया। 15 उसने उनसे कहा,
“मेरी शदीद आरज़ू थी कि दुख उठाने से पहले
तुम्हारे साथ मिलकर फ़सह का यह खाना खाऊँ।
16 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि उस वक़्त तक
इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इसका
मक़सद अल्लाह की बादशाही में पूरा न हो गया
हो।”

17 फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्र-
गुज़ारी की दुआ की और कहा, “इसको लेकर
आपस में बाँट लो। 18 मैं तुमको बताता हूँ कि
अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा, क्योंकि
अगली दफ़ा इसे अल्लाह की बादशाही के आने
पर पियूँगा।”

19 फिर उसने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ
की और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उसने
कहा, “यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया
जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया
करो।” 20 इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला
लेकर कहा, “मै का यह प्याला वह नया अहद है
जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम किया जाता है, वह
ख़ून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है।

21 लेकिन जिस शख़्स का हाथ मेरे साथ खाना
खाने में शरीक है वह मुझे दुश्मन के हवाले कर
देगा। 22 इब्ने-आदम तो अल्लाह की मरज़ी के
मुताबिक़ कूच कर जाएगा, लेकिन उस शख़्स पर
अफ़सोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के हवाले
कर दिया जाएगा।”

23 यह सुनकर शागिर्द एक दूसरे से बहस करने
लगे कि हममें से यह कौन हो सकता है जो इस
क़िस्म की हरकत करेगा।

कौन बड़ा है?

24 फिर एक और बात भी छिड़ गई। वह एक
दूसरे से बहस करने लगे कि हममें से कौन सबसे
बड़ा समझा जाए। 25 लेकिन ईसा ने उनसे कहा,
“ग़ैरयहूदी क़ौमों में बादशाह वही हैं जो दूसरों पर
हुकूमत करते हैं, और इख़्तियारवाले वही हैं जिन्हें
‘मोहसिन’ का लक़ब दिया जाता है। 26 लेकिन
तुमको ऐसा नहीं होना चाहिए। इसके बजाए जो
सबसे बड़ा है वह सबसे छोटे लड़के की मानिंद हो
और जो राहनुमाई करता है वह नौकर जैसा हो।
27 क्योंकि आम तौर पर कौन ज़्यादा बड़ा होता
है, वह जो खाने के लिए बैठा है या वह जो लोगों
की ख़िदमत के लिए हाज़िर होता है? क्या वह
नहीं जो खाने के लिए बैठा है? बेशक। लेकिन
मैं ख़िदमत करनेवाले की हैसियत से ही तुम्हारे
दरमियान हूँ।

28 देखो, तुम वही हो जो मेरी तमाम
आज़माइशों के दौरान मेरे साथ रहे हो। 29 चुनाँचे
मैं तुमको बादशाही अता करता हूँ जिस तरह बाप
ने मुझे भी बादशाही अता की है। 30 तुम मेरी
बादशाही में मेरी मेज़ पर बैठकर मेरे साथ खाओ
और पियोगे, और तख़्तों पर बैठकर इसराईल के
बारह क़बीलों का इनसाफ़ करोगे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

31 शमाऊन, शमाऊन! इबलीस ने तुम लोगों
को गंदुम की तरह फटकने का मुतालबा किया
है। 32 लेकिन मैंने तेरे लिए दुआ की है ताकि तेरा
ईमान जाता न रहे। और जब तू मुड़कर वापस
आए तो उस वक़्त अपने भाइयों को मज़बूत
करना।”

33 पतरस ने जवाब दिया, “ख़ुदावंद, मैं तो
आपके साथ जेल में भी जाने बल्कि मरने को
तैयार हूँ।”

34 ईसा ने कहा, "पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि कल सुबह मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।"

अब बटवे, बैग और तलवार की ज़रूरत है

35 फिर उसने उनसे पूछा, "जब मैंने तुमको बटवे, सामान के लिए बैग और जूतों के बग़ैर भेज दिया तो क्या तुम किसी भी चीज़ से महरूम रहे?"

उन्होंने जवाब दिया, "किसी से नहीं।"

36 उसने कहा, "लेकिन अब जिसके पास बटवा या बैग हो वह उसे साथ ले जाए, बल्कि जिसके पास तलवार न हो वह अपनी चादर
बेचकर तलवार ख़रीद ले। 37 कलामे-मुक़द्दस में
लिखा है, 'उसे मुजरिमों में शुमार किया गया' और मैं तुमको बताता हूँ, लाज़िम है कि यह बात मुझमें पूरी हो जाए। क्योंकि जो कुछ मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा ही होना है।"

38 उन्होंने कहा, "ख़ुदावंद, यहाँ दो तलवारें हैं।" उसने कहा, "बस! काफ़ी है!"

ज़ैतून के पहाड़ पर ईसा की दुआ

39 फिर वह शहर से निकलकर मामूल के मुताबिक़ ज़ैतून के पहाड़ की तरफ़ चल दिया।
उसके शागिर्द उसके पीछे हो लिए। 40 वहाँ
पहुँचकर उसने उनसे कहा, "दुआ करो ताकि आज़माइश में न पड़ो।"

41 फिर वह उन्हें छोड़कर कुछ आगे निकला, तक़रीबन इतने फ़ासले पर जितनी दूर तक पत्थर फेंका जा सकता है। वहाँ वह झुककर दुआ करने
लगा, 42 "ऐ बाप, अगर तू चाहे तो यह प्याला
मुझसे हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी
पूरी हो।" 43 उस वक़्त एक फ़रिश्ते ने आसमान
पर से उस पर ज़ाहिर होकर उसको तक़वियत दी।
44 वह सख़्त परेशान होकर ज़्यादा दिलसोज़ी से दुआ करने लगा। साथ साथ उसका पसीना ख़ून की बूँदों की तरह ज़मीन पर टपकने लगा।

45 जब वह दुआ से फ़ारिग़ होकर खड़ा हुआ और शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि
वह ग़म के मारे सो गए हैं। 46 उसने उनसे कहा,
"तुम क्यों सो रहे हो? उठकर दुआ करते रहो ताकि आज़माइश में न पड़ो।"

ईसा की गिरिफ़्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि एक हुजूम आ पहुँचा जिसके आगे आगे यहूदाह चल रहा था। वह ईसा को बोसा देने के लिए उसके
पास आया। 48 लेकिन उसने कहा, "यहूदाह,
क्या तू इब्ने-आदम को बोसा देकर दुश्मन के हवाले कर रहा है?"

49 जब उसके साथियों ने भाँप लिया कि अब क्या होनेवाला है तो उन्होंने कहा, "ख़ुदावंद, क्या
हम तलवार चलाएँ?" 50 और उनमें से एक ने
अपनी तलवार से इमामे-आज़म के ग़ुलाम का दहना कान उड़ा दिया।

51 लेकिन ईसा ने कहा, "बस कर!" उसने
ग़ुलाम का कान छूकर उसे शफ़ा दी। 52 फिर वह
उन राहनुमा इमामों, बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों के अफ़सरों और बुज़ुर्गों से मुख़ातिब हुआ जो उसके पास आए थे, "क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मेरे ख़िलाफ़ निकले
हो? 53 मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तुम्हारे
पास था, मगर तुमने वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया। लेकिन अब यह तुम्हारा वक़्त है, वह वक़्त जब तारीकी हुकूमत करती है।"

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

54 फिर वह उसे गिरिफ़्तार करके इमामे-आज़म के घर ले गए। पतरस कुछ फ़ासले पर
उनके पीछे पीछे वहाँ पहुँच गया। 55 लोग सहन
में आग जलाकर उसके इर्दगिर्द बैठ गए। पतरस
भी उनके दरमियान बैठ गया। 56 किसी नौकरानी
ने उसे वहाँ आग के पास बैठे हुए देखा। उसने उसे घूरकर कहा, "यह भी उसके साथ था।"

57 लेकिन उसने इनकार किया, “ख़ातून, मैं
उसे नहीं जानता।”
58 थोड़ी देर के बाद किसी आदमी ने उसे देखा
और कहा, “तुम भी उनमें से हो।”
लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “नहीं भई! मैं
नहीं हूँ।”
59 तक़रीबन एक घंटा गुज़र गया तो किसी
और ने इसरार करके कहा, “यह आदमी यक़ीनन
उसके साथ था, क्योंकि यह भी गलील का
रहनेवाला है।”
60 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “यार, मैं नहीं
जानता कि तुम क्या कह रहे हो!”
वह अभी बात कर ही रहा था कि अचानक
मुरग़ की बाँग सुनाई दी। 61 ख़ुदावंद ने मुड़कर
पतरस पर नज़र डाली। फिर पतरस को ख़ुदावंद
की वह बात याद आई जो उसने उससे कही थी
कि “कल सुबह मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू
तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”
62 पतरस वहाँ से निकलकर टूटे दिल से ख़ूब
रोया।

लान-तान और पिटाई

63 पहरेदार ईसा का मज़ाक़ उड़ाने और उस
की पिटाई करने लगे। 64 उन्होंने उस की आँखों
पर पट्टी बाँधकर पूछा, “नबुव्वत कर कि किसने
तुझे मारा?” 65 इस तरह की और बहुत-सी बातों
से वह उस की बेइज़्ज़ती करते रहे।

यहूदी अदालते-आलिया के सामने पेशी

66 जब दिन चढ़ा तो राहनुमा इमामों और
शरीअत के उलमा पर मुश्तमिल क़ौम की
मजलिस ने जमा होकर उसे यहूदी अदालते-
आलिया में पेश किया। 67 उन्होंने कहा, “अगर
तू मसीह है तो हमें बता!”
ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं तुमको बताऊँ
तो तुम मेरी बात नहीं मानोगे, 68 और अगर तुमसे
पूछूँ तो तुम जवाब नहीं दोगे। 69 लेकिन अब से
इब्ने-आदम अल्लाह तआला के दहने हाथ बैठा
होगा।”
70 सबने पूछा, “तो फिर क्या तू अल्लाह का
फ़रज़ंद है?”
उसने जवाब दिया, “जी, तुम ख़ुद कहते हो।”
71 इस पर उन्होंने कहा, “अब हमें किसी और
गवाही की क्या ज़रूरत रही? क्योंकि हमने यह
बात उसके अपने मुँह से सुन ली है।”

पीलातुस के सामने

23 फिर पूरी मजलिस उठी और उसे
पीलातुस के पास ले आई। 2 वहाँ
वह उस पर इलज़ाम लगाकर कहने लगे, “हमने
मालूम किया है कि यह आदमी हमारी क़ौम को
गुमराह कर रहा है। यह शहनशाह को टैक्स देने
से मना करता और दावा करता है कि मैं मसीह
और बादशाह हूँ।”
3 पीलातुस ने उससे पूछा, “अच्छा, तुम
यहूदियों के बादशाह हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप ख़ुद कहते हैं।”
4 फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों और हुजूम
से कहा, “मुझे इस आदमी पर इलज़ाम लगाने
की कोई वजह नज़र नहीं आती।”
5 लेकिन वह अड़े रहे। उन्होंने कहा, “वह पूरे
यहूदिया में तालीम देते हुए क़ौम को उकसाता
है। वह गलील से शुरू करके यहाँ तक आ पहुँचा
है।”

हेरोदेस के सामने

6 यह सुनकर पीलातुस ने पूछा, “क्या यह
शख़्स गलील का है?” 7 जब उसे मालूम हुआ
कि ईसा गलील यानी उस इलाक़े से है जिस पर
हेरोदेस अंतिपास की हुकूमत है तो उसने उसे
हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि वह भी उस
वक़्त यरूशलम में था। 8 हेरोदेस ईसा को देखकर
बहुत ख़ुश हुआ, क्योंकि उसने उसके बारे में बहुत
कुछ सुना था और इसलिए काफ़ी देर से उससे
मिलना चाहता था। अब उस की बड़ी ख़ाहिश थी

कि ईसा को कोई मोजिज़ा करते हुए देख सके।
9 उसने उससे बहुत सारे सवाल किए, लेकिन
ईसा ने एक का भी जवाब न दिया। 10 राहनुमा
इमाम और शरीअत के उलमा साथ खड़े बड़े जोश
से उस पर इलज़ाम लगाते रहे। 11 फिर हेरोदेस
और उसके फ़ौजियों ने उस की तहक़ीर करते हुए
उसका मज़ाक़ उड़ाया और उसे चमकदार लिबास
पहनाकर पीलातुस के पास वापस भेज दिया।
12 उसी दिन हेरोदेस और पीलातुस दोस्त बन गए,
क्योंकि इससे पहले उनकी दुश्मनी चल रही थी।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

13 फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों, सर-
दारों और अवाम को जमा करके 14 उनसे कहा,
"तुमने इस शख़्स को मेरे पास लाकर इस पर
इलज़ाम लगाया है कि यह क़ौम को उकसा रहा
है। मैंने तुम्हारी मौजूदगी में इसका जायज़ा लेकर
ऐसा कुछ नहीं पाया जो तुम्हारे इलज़ामात की
तसदीक़ करे। 15 हेरोदेस भी कुछ नहीं मालूम
कर सका, इसलिए उसने इसे हमारे पास वापस
भेज दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा क़ुसूर
नहीं हुआ कि यह सज़ाए-मौत के लायक़ है।
16 इसलिए मैं इसे कोड़ों की सज़ा देकर रिहा कर
देता हूँ।"

17 [असल में यह उसका फ़र्ज़ था कि वह ईद
के मौक़े पर उनकी ख़ातिर एक क़ैदी को रिहा कर
दे।]

18 लेकिन सब मिलकर शोर मचाकर कहने
लगे, "इसे ले जाएँ! इसे नहीं बल्कि बर-
अब्बा को रिहा करके हमें दें।" 19 (बर-अब्बा को
इसलिए जेल में डाला गया था कि वह क़ातिल था
और उसने शहर में हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत
की थी।)

20 पीलातुस ईसा को रिहा करना चाहता
था, इसलिए वह दुबारा उनसे मुख़ातिब हुआ।
21 लेकिन वह चिल्लाते रहे, "इसे मसलूब करें,
इसे मसलूब करें।"

22 फिर पीलातुस ने तीसरी दफ़ा उनसे कहा,
"क्यों? उसने क्या जुर्म किया है? मुझे इसे
सज़ाए-मौत देने की कोई वजह नज़र नहीं आती।
इसलिए मैं इसे कोड़े लगवाकर रिहा कर देता हूँ।"

23 लेकिन वह बड़ा शोर मचाकर उसे मसलूब
करने का तक़ाज़ा करते रहे, और आख़िरकार
उनकी आवाज़ें ग़ालिब आ गईं। 24 फिर पीलातुस
ने फ़ैसला किया कि उनका मुतालबा पूरा किया
जाए। 25 उसने उस आदमी को रिहा कर दिया जो
अपनी बाग़ियाना हरकतों और क़त्ल की वजह से
जेल में डाल दिया गया था जबकि ईसा को उसने
उनकी मरज़ी के मुताबिक़ उनके हवाले कर दिया।

ईसा को मसलूब किया जाता है

26 जब फ़ौजी ईसा को ले जा रहे थे तो उन्होंने
एक आदमी को पकड़ लिया जो लिबिया के शहर
कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम शमाऊन था।
उस वक़्त वह देहात से शहर में दाख़िल हो रहा
था। उन्होंने सलीब को उसके कंधों पर रखकर
उसे ईसा के पीछे चलने का हुक्म दिया।

27 एक बड़ा हुजूम उसके पीछे हो लिया जिसमें
कुछ ऐसी औरतें भी शामिल थीं जो सीना पीट
पीटकर उसका मातम कर रही थीं। 28 ईसा ने
मुड़कर उनसे कहा, "यरूशलम की बेटियो! मेरे
वास्ते न रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के
वास्ते रोओ। 29 क्योंकि ऐसे दिन आएँगे जब लोग
कहेंगे, 'मुबारक हैं वह जो बाँझ हैं, जिन्होंने न तो
बच्चों को जन्म दिया, न दूध पिलाया।' 30 फिर
लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे, 'हम पर गिर पड़ो,'
और पहाड़ियों से कि 'हमें छुपा लो।' 31 क्योंकि
अगर हरी लकड़ी से ऐसा सुलूक किया जाता है
तो फिर सूखी लकड़ी का क्या बनेगा?"

32 दो और मर्दों को भी फाँसी देने के लिए
बाहर ले जाया जा रहा था। दोनों मुजरिम थे।
33 चलते चलते वह उस जगह पहुँचे जिसका नाम
खोपड़ी था। वहाँ उन्होंने ईसा को दोनों मुजरिमों
समेत मसलूब किया। एक मुजरिम को उसके दाएँ
हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ लटका दिया

गया। 34 ईसा ने कहा, "ऐ बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्योंकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।"

उन्होंने क़ुरा डालकर उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। 35 हुजूम वहाँ खड़ा तमाशा देखता रहा जबकि क़ौम के सरदारों ने उसका मज़ाक़ भी उड़ाया। उन्होंने कहा, "उसने औरों को बचाया है। अगर यह अल्लाह का चुना हुआ और मसीह है तो अपने आपको बचाए।"

36 फ़ौजियों ने भी उसे लान-तान की। उसके पास आकर उन्होंने उसे मै का सिरका पेश किया
37 और कहा, "अगर तू यहूदियों का बादशाह है तो अपने आपको बचा ले।"

38 उसके सर के ऊपर एक तख़्ती लगाई गई थी जिस पर लिखा था, "यह यहूदियों का बादशाह है।"

39 जो मुजरिम उसके साथ मसलूब हुए थे उनमें से एक ने कुफ़र बकते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर अपने आपको और हमें भी बचा ले।"

40 लेकिन दूसरे ने यह सुनकर उसे डाँटा, "क्या तू अल्लाह से भी नहीं डरता? जो सज़ा उसे दी
गई है वह तुझे भी मिली है। 41 हमारी सज़ा तो
वाजिबी है, क्योंकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है, लेकिन इसने कोई बुरा काम नहीं
किया।" 42 फिर उसने ईसा से कहा, "जब आप अपनी बादशाही में आएँ तो मुझे याद करें।"

43 ईसा ने उससे कहा, "मैं तुझे सच बताता हूँ कि तू आज ही मेरे साथ फ़िर्दौस में होगा।"

ईसा की मौत

44 बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा
मुल्क अंधेरे में डूब गया। 45 सूरज तारीक हो
गया और बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा दो हिस्सों में फट
गया। 46 ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "ऐ बाप, मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" यह कहकर उसने दम छोड़ दिया।

47 यह देखकर वहाँ खड़े फ़ौजी अफ़सर[a] ने अल्लाह की तमजीद करके कहा, "यह आदमी वाक़ई रास्तबाज़ था।"

48 और हुजूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देखकर छाती पीटने लगे और शहर में वापस चले गए।
49 लेकिन ईसा के जाननेवाले कुछ फ़ासले पर खड़े देखते रहे। उनमें वह ख़वातीन भी शामिल थीं जो गलील में उसके पीछे चलकर यहाँ तक उसके साथ आई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

50 वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम यूसुफ़ था। वह यहूदी अदालते-आलिया का रुकन
था 51 लेकिन दूसरों के फ़ैसले और हरकतों पर रज़ामंद नहीं हुआ था। यह आदमी यहूदिया के शहर अरिमतियाह का रहनेवाला था और इस इंतज़ार में था कि अल्लाह की बादशाही आए।
52 अब उसने पीलातुस के पास जाकर उससे ईसा
की लाश ले जाने की इजाज़त माँगी। 53 फिर
लाश को उतारकर उसने उसे कतान के कफ़न में लपेटकर चट्टान में तराशी हुई एक क़ब्र में रख दिया जिसमें अब तक किसी को दफ़नाया नहीं
गया था। 54 यह तैयारी का दिन यानी जुमा था,
लेकिन सबत का दिन शुरू होने को था।[b] 55 जो
औरतें ईसा के साथ गलील से आई थीं वह यूसुफ़ के पीछे हो लीं। उन्होंने क़ब्र को देखा और यह भी कि ईसा की लाश किस तरह उसमें रखी गई है।
56 फिर वह शहर में वापस चली गईं और उस की लाश के लिए ख़ुशबूदार मसाले तैयार करने लगीं। लेकिन बीच में सबत का दिन शुरू हुआ, इसलिए उन्होंने शरीअत के मुताबिक़ आराम किया।

ईसा जी उठता है

24 इतवार के दिन यह औरतें अपने तैयारशुदा मसाले लेकर सुबह-सवेरे
क़ब्र पर गईं। 2 वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि क़ब्र

[a]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

[b]यहूदी दिन सूरज के ग़ुरूब होने से शुरू होता है।

पर का पत्थर एक तरफ़ लुढ़का हुआ है। 3 लेकिन
जब वह क़ब्र में गईं तो वहाँ ख़ुदावंद ईसा की लाश
न पाई। 4 वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थीं कि
अचानक दो मर्द उनके पास आ खड़े हुए जिनके
लिबास बिजली की तरह चमक रहे थे। 5 औरतें
दहशत खाकर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन
मर्दों ने कहा, “तुम क्यों ज़िंदा को मुरदों में ढूँड रही
हो? 6 वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह
बात याद करो जो उसने तुमसे उस वक़्त कही जब
वह गलील में था। 7 ‘लाज़िम है कि इब्ने-आदम
को गुनाहगारों के हवाले कर दिया जाए, मसलूब
किया जाए और कि वह तीसरे दिन जी उठे’।”
8 फिर उन्हें यह बात याद आई। 9 और क़ब्र से
वापस आकर उन्होंने यह सब कुछ ग्यारह रसूलों
और बाक़ी शागिर्दों को सुना दिया। 10 मरियम
मग्दलीनी, युअन्ना, याक़ूब की माँ मरियम और
चंद एक और औरतें उनमें शामिल थीं जिन्होंने
यह बातें रसूलों को बताईं। 11 लेकिन उनको यह
बातें बेतुकी-सी लग रही थीं, इसलिए उन्हें यक़ीन
न आया। 12 तो भी पतरस उठा और भागकर
क़ब्र के पास आया। जब पहुँचा तो झुककर अंदर
झाँका, लेकिन सिर्फ़ कफ़न[a] ही नज़र आया। यह
हालात देखकर वह हैरान हुआ और चला गया।

इम्माउस के रास्ते में ईसा से मुलाक़ात

13 उसी दिन ईसा के दो पैरोकार एक गाँव
बनाम इम्माउस की तरफ़ चल रहे थे। यह गाँव
यरूशलम से तक़रीबन दस किलोमीटर दूर था।
14 चलते चलते वह आपस में उन वाक़ियात का
ज़िक्र कर रहे थे जो हुए थे। 15 और ऐसा हुआ
कि जब वह बातें और एक दूसरे के साथ बहस-
मुबाहसा कर रहे थे तो ईसा ख़ुद क़रीब आकर
उनके साथ चलने लगा। 16 लेकिन उनकी आँखों
पर परदा डाला गया था, इसलिए वह उसे पहचान
न सके। 17 ईसा ने कहा, “यह कैसी बातें हैं
जिनके बारे में तुम चलते चलते तबादलाए-ख़याल
कर रहे हो?”

यह सुनकर वह ग़मगीन से खड़े हो गए।
18 उनमें से एक बनाम क्लियुपास ने उससे पूछा,
“क्या आप यरूशलम में वाहिद शख़्स हैं जिसे
मालूम नहीं कि इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?”
19 उसने कहा, “क्या हुआ है?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह जो ईसा नासरी के
साथ हुआ है। वह नबी था जिसे कलाम और
काम में अल्लाह और तमाम क़ौम के सामने
ज़बरदस्त क़ुव्वत हासिल थी। 20 लेकिन हमारे
राहनुमा इमामों और सरदारों ने उसे हुक्मरानों के
हवाले कर दिया ताकि उसे सज़ाए-मौत दी जाए,
और उन्होंने उसे मसलूब किया। 21 लेकिन हमें
तो उम्मीद थी कि वही इसराईल को नजात देगा।
इन वाक़ियात को तीन दिन हो गए हैं। 22 लेकिन
हममें से कुछ ख़वातीन ने भी हमें हैरान कर दिया
है। वह आज सुबह-सवेरे क़ब्र पर गईं 23 तो देखा
कि लाश वहाँ नहीं है। उन्होंने लौटकर हमें बताया
कि हम पर फ़रिश्ते ज़ाहिर हुए जिन्होंने कहा कि
ईसा ज़िंदा है। 24 हममें से कुछ क़ब्र पर गए और
उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने कहा
था। लेकिन उसे ख़ुद उन्होंने नहीं देखा।”

25 फिर ईसा ने उनसे कहा, “अरे नादानो! तुम
कितने कुंदज़हन हो कि तुम्हें उन तमाम बातों
पर यक़ीन नहीं आया जो नबियों ने फ़रमाई हैं।
26 क्या लाज़िम नहीं था कि मसीह यह सब कुछ
झेलकर अपने जलाल में दाख़िल हो जाए?”
27 फिर मूसा और तमाम नबियों से शुरू करके
ईसा ने कलामे-मुक़द्दस की हर बात की तशरीह
की जहाँ जहाँ उसका ज़िक्र है।

28 चलते चलते वह उस गाँव के क़रीब पहुँचे
जहाँ उन्हें जाना था। ईसा ने ऐसा किया गोया कि
वह आगे बढ़ना चाहता है, 29 लेकिन उन्होंने उसे
मजबूर करके कहा, “हमारे पास ठहरें, क्योंकि
शाम होने को है और दिन ढल गया है।” चुनाँचे

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : कतान की पट्टियाँ जो कफ़न के लिए इस्तेमाल होती थीं।

वह उनके साथ ठहरने के लिए अंदर गया। 30 और
ऐसा हुआ कि जब वह खाने के लिए बैठ गए
तो उसने रोटी लेकर उसके लिए शुक्रगुज़ारी की
दुआ की। फिर उसने उसे टुकड़े करके उन्हें दिया।
31 अचानक उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने
उसे पहचान लिया। लेकिन उसी लमहे वह ओझल
हो गया। 32 फिर वह एक दूसरे से कहने लगे,
“क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब वह
रास्ते में हमसे बातें करते करते हमें सहीफ़ों का
मतलब समझा रहा था?”

33 और वह उसी वक़्त उठकर यरूशलम वापस
चले गए। जब वह वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल
अपने साथियों समेत पहले से जमा थे 34 और
यह कह रहे थे, “ख़ुदावंद वाक़ई जी उठा है! वह
शमाऊन पर ज़ाहिर हुआ है।”

35 फिर इम्माउस के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया
कि गाँव की तरफ़ जाते हुए क्या हुआ था और
कि ईसा के रोटी तोड़ते वक़्त उन्होंने उसे कैसे
पहचाना।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

36 वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि ईसा
ख़ुद उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा,
“तुम्हारी सलामती हो।”

37 वह घबराकर बहुत डर गए, क्योंकि उनका
ख़याल था कि कोई भूत-प्रेत देख रहे हैं। 38 उसने
उनसे कहा, “तुम क्यों परेशान हो गए हो? क्या
वजह है कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है?
39 मेरे हाथों और पाँवों को देखो कि मैं ही हूँ। मुझे
टटोलकर देखो, क्योंकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ
नहीं होतीं जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म
है।”

40 यह कहकर उसने उन्हें अपने हाथ और पाँव
दिखाए। 41 जब उन्हें ख़ुशी के मारे यक़ीन नहीं आ
रहा था और ताज्जुब कर रहे थे तो ईसा ने पूछा,
“क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?”
42 उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा
दिया। 43 उसने उसे लेकर उनके सामने ही खा
लिया।

44 फिर उसने उनसे कहा, “यही है जो मैंने
तुमको उस वक़्त बताया था जब तुम्हारे साथ था
कि जो कुछ भी मूसा की शरीअत, नबियों के
सहीफ़ों और ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा
है उसे पूरा होना है।”

45 फिर उसने उनके ज़हन को खोल दिया ताकि
वह अल्लाह का कलाम समझ सकें। 46 उसने
उनसे कहा, “कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है,
मसीह दुख उठाकर तीसरे दिन मुरदों में से जी
उठेगा। 47 फिर यरूशलम से शुरू करके उसके
नाम में यह पैग़ाम तमाम क़ौमों को सुनाया जाएगा
कि वह तौबा करके गुनाहों की मुआफ़ी पाएँ।
48 तुम इन बातों के गवाह हो। 49 और मैं तुम्हारे
पास उसे भेज दूँगा जिसका वादा मेरे बाप ने किया
है। फिर तुमको आसमान की क़ुव्वत से मुलब्बस
किया जाएगा। उस वक़्त तक शहर से बाहर न
निकलना।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

50 फिर वह शहर से निकलकर उन्हें बैत-
अनियाह तक ले गया। वहाँ उसने अपने हाथ
उठाकर उन्हें बरकत दी। 51 और ऐसा हुआ कि
बरकत देते हुए वह उनसे जुदा होकर आसमान
पर उठा लिया गया। 52 उन्होंने उसे सिजदा किया
और फिर बड़ी ख़ुशी से यरूशलम वापस चले गए।
53 वहाँ वह अपना पूरा वक़्त बैतुल-मुक़द्दस में
गुज़ारकर अल्लाह की तमजीद करते रहे।

यूहन्ना की मारिफ़त इंजील

ज़िंदगी का कलाम

1 इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह
के साथ था और कलाम अल्लाह था।
2 यही इब्तिदा में अल्लाह के साथ था। 3 सब कुछ
कलाम के वसीले से पैदा हुआ। मख़लूक़ात की
एक भी चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई। 4 उसमें
ज़िंदगी थी, और यह ज़िंदगी इनसानों का नूर थी।
5 यह नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने
उस पर क़ाबू न पाया।

6 एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़ंबर भेज दिया,
एक आदमी जिसका नाम यहया था। 7 वह नूर की
गवाही देने के लिए आया। मक़सद यह था कि
लोग उस की गवाही की बिना पर ईमान लाएँ।
8 वह ख़ुद तो नूर न था बल्कि उसे सिर्फ़ नूर की
गवाही देनी थी। 9 हक़ीक़ी नूर जो हर शख़्स को
रौशन करता है दुनिया में आने को था।

10 गो कलाम दुनिया में था और दुनिया उसके
वसीले से पैदा हुई तो भी दुनिया ने उसे न
पहचाना। 11 वह उसमें आया जो उसका अपना
था, लेकिन उसके अपनों ने उसे क़बूल न किया।
12 तो भी कुछ उसे क़बूल करके उसके नाम पर
ईमान लाए। उन्हें उसने अल्लाह के फ़रज़ंद बनने
का हक़ बख़्श दिया, 13 ऐसे फ़रज़ंद जो न फ़ितरी
तौर पर, न किसी इनसान या मर्द के मनसूबे से
पैदा हुए बल्कि अल्लाह से।

14 कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान
रिहाइशपज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का
मुशाहदा किया। वह फ़ज़्ल और सच्चाई से मामूर
था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद
का-सा था।

15 यहया उसके बारे में गवाही देकर पुकार
उठा, "यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, 'एक
मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि
वह मुझसे पहले था'।"

16 उस की कसरत से हम सबने फ़ज़्ल पर
फ़ज़्ल पाया। 17 क्योंकि शरीअत मूसा की
मारिफ़त दी गई, लेकिन अल्लाह का फ़ज़्ल और
सच्चाई ईसा मसीह के वसीले से क़ायम हुई।
18 किसी ने कभी भी अल्लाह को नहीं देखा।
लेकिन इकलौता फ़रज़ंद जो अल्लाह की गोद में
है उसी ने अल्लाह को हम पर ज़ाहिर किया है।

यहया बपतिस्मा देनेवाले का पैग़ाम

19 यह यहया की गवाही है जब यरूशलम के
यहूदियों ने इमामों और लावियों को उसके पास
भेजकर पूछा, "आप कौन हैं?"

20 उसने इनकार न किया बल्कि साफ़
तसलीम किया, "मैं मसीह नहीं हूँ।"

21 उन्होंने पूछा, "तो फिर आप कौन हैं? क्या
आप इलियास हैं?"

उसने जवाब दिया, "नहीं, मैं वह नहीं हूँ।"

उन्होंने सवाल किया, "क्या आप आने-
वाला नबी हैं?"

उसने कहा, "नहीं।"

22 "तो फिर हमें बताएँ कि आप कौन हैं?
जिन्होंने हमें भेजा है उन्हें हमें कोई न कोई जवाब
देना है। आप ख़ुद अपने बारे में क्या कहते हैं?"

23 यहया ने यसायाह नबी का हवाला देकर
जवाब दिया, "मैं रेगिस्तान में वह आवाज़ हूँ जो
पुकार रही है, रब का रास्ता सीधा बनाओ।"

24 भेजे गए लोग फ़रीसी फ़िरक़े से ता-
ल्लुक़ रखते थे। 25 उन्होंने पूछा, "अगर आप न
मसीह हैं, न इलियास या आनेवाला नबी तो फिर
आप बपतिस्मा क्यों दे रहे हैं?"

26 यहया ने जवाब दिया, "मैं तो पानी से
बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन तुम्हारे दरमियान ही
एक खड़ा है जिसको तुम नहीं जानते। 27 वही मेरे
बाद आनेवाला है और मैं उसके जूतों के तसमे भी
खोलने के लायक़ नहीं।"

28 यह यरदन के पार बैत-अनियाह में हुआ जहाँ
यहया बपतिस्मा दे रहा था।

अल्लाह का लेला

29 अगले दिन यहया ने ईसा को अपने पास
आते देखा। उसने कहा, "देखो, यह अल्लाह का
लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है।
30 यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, 'एक मेरे
बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह
मुझसे पहले था।' 31 मैं तो उसे नहीं जानता था,
लेकिन मैं इसलिए आकर पानी से बपतिस्मा देने
लगा ताकि वह इसराईल पर ज़ाहिर हो जाए।"

32 और यहया ने यह गवाही दी, "मैंने देखा
कि रूहुल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर
से उतरकर उस पर ठहर गया। 33 मैं तो उसे
नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे
बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उसने मुझे बताया,
'तू देखेगा कि रूहुल-क़ुद्स उतरकर किसी पर
ठहर जाएगा। यह वही होगा जो रूहुल-क़ुद्स से
बपतिस्मा देगा।' 34 अब मैंने देखा है और गवाही
देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़ंद है।"

ईसा के पहले शागिर्द

35 अगले दिन यहया दुबारा वहीं खड़ा था।
उसके दो शागिर्द साथ थे। 36 उसने ईसा को वहाँ
से गुज़रते हुए देखा तो कहा, "देखो, यह अल्लाह
का लेला है!"

37 उस की यह बात सुनकर उसके दो शागिर्द
ईसा के पीछे हो लिए। 38 ईसा ने मुड़कर देखा कि
यह मेरे पीछे चल रहे हैं तो उसने पूछा, "तुम क्या
चाहते हो?"

उन्होंने कहा, "उस्ताद, आप कहाँ ठहरे हुए
हैं?"

39 उसने जवाब दिया, "आओ, ख़ुद देख लो।"
चुनाँचे वह उसके साथ गए। उन्होंने वह जगह देखी
जहाँ वह ठहरा हुआ था और दिन के बाक़ी वक़्त
उसके पास रहे। शाम के तक़रीबन चार बज गए
थे।

40 शमाऊन पतरस का भाई अंदरियास उन दो
शागिर्दों में से एक था जो यहया की बात सुनकर
ईसा के पीछे हो लिए थे। 41 अब उस की पहली
मुलाक़ात उसके अपने भाई शमाऊन से हुई।
उसने उसे बताया, "हमें मसीह मिल गया है।"
(मसीह का मतलब 'मसह किया हुआ शख़्स' है।)
42 फिर वह उसे ईसा के पास ले गया।

उसे देखकर ईसा ने कहा, "तू यूहन्ना का
बेटा शमाऊन है। तू कैफ़ा कहलाएगा।" (इसका
यूनानी तरजुमा पतरस यानी पत्थर है।)

ईसा फ़िलिप्पुस और नतनेल को बुलाता है

43 अगले दिन ईसा ने गलील जाने का इरादा
किया। फ़िलिप्पुस से मिला तो उससे कहा, "मेरे
पीछे हो ले।" 44 अंदरियास और पतरस की
तरह फ़िलिप्पुस का वतनी शहर बैत-सैदा था।
45 फ़िलिप्पुस नतनेल से मिला, और उसने उससे
कहा, "हमें वही शख़्स मिल गया जिसका ज़िक्र
मूसा ने तौरेत और नबियों ने अपने सहीफ़ों में

किया है। उसका नाम ईसा बिन यूसुफ़ है और
वह नासरत का रहनेवाला है।”
46 नतनेल ने कहा, “नासरत? क्या नासरत
से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?”
फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, “आ और ख़ुद देख
ले।”
47 जब ईसा ने नतनेल को आते देखा तो उसने
कहा, “लो, यह सच्चा इसराईली है जिसमें मकर
नहीं।”
48 नतनेल ने पूछा, “आप मुझे कहाँ से जानते
हैं?”
ईसा ने जवाब दिया, “इससे पहले कि
फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया मैंने तुझे देखा। तू
अंजीर के दरख़्त के साये में था।”
49 नतनेल ने कहा, “उस्ताद, आप अल्लाह के
फ़रज़ंद हैं, आप इसराईल के बादशाह हैं।”
50 ईसा ने उससे पूछा, “अच्छा, मेरी यह बात
सुनकर कि मैंने तुझे अंजीर के दरख़्त के साये में
देखा तू ईमान लाया है? तू इससे कहीं बड़ी बातें
देखेगा।” 51 उसने बात जारी रखी, “मैं तुमको
सच बताता हूँ कि तुम आसमान को खुला और
अल्लाह के फ़रिश्तों को ऊपर चढ़ते और इब्ने-
आदम पर उतरते देखोगे।”

क़ाना में शादी

2 तीसरे दिन गलील के गाँव क़ाना में एक
शादी हुई। ईसा की माँ वहाँ थी 2 और ईसा
और उसके शागिर्दों को भी दावत दी गई थी। 3 मै
ख़त्म हो गई तो ईसा की माँ ने उससे कहा, “उनके
पास मै नहीं रही।”
4 ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, मेरा आपसे
क्या वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।”
5 लेकिन उस की माँ ने नौकरों को बताया, “जो
कुछ वह तुमको बताए वह करो।” 6 वहाँ पत्थर के
छः मटके पड़े थे जिन्हें यहूदी दीनी ग़ुस्ल के लिए
इस्तेमाल करते थे। हर एक में तक़रीबन 100
लिटर की गुंजाइश थी। 7 ईसा ने नौकरों से कहा,
“मटकों को पानी से भर दो।” चुनाँचे उन्होंने उन्हें
लबालब भर दिया। 8 फिर उसने कहा, “अब कुछ
निकालकर ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के
पास ले जाओ।” उन्होंने ऐसा ही किया। 9 ज्योंही
ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले ने वह पानी
चखा जो मै में बदल गया था तो उसने दूल्हे
को बुलाया। (उसे मालूम न था कि यह कहाँ
से आई है, अगरचे उन नौकरों को पता था जो
उसे निकालकर लाए थे।) 10 उसने कहा, “हर
मेज़बान पहले अच्छी क़िस्म की मै पीने के लिए
पेश करता है। फिर जब लोगों को नशा चढ़ने
लगे तो वह निसबतन घटिया क़िस्म की मै पिलाने
लगता है। लेकिन आपने अच्छी मै अब तक रख
छोड़ी है।”
11 यों ईसा ने गलील के क़ाना में यह पहला
इलाही निशान दिखाकर अपने जलाल का इज़हार
किया। यह देखकर उसके शागिर्द उस पर ईमान
लाए।
12 इसके बाद वह अपनी माँ, अपने भाइयों
और अपने शागिर्दों के साथ कफ़र्नहूम को चला
गया। वहाँ वह थोड़े दिन रहे।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

13 जब यहूदी ईदे-फ़सह क़रीब आ गई तो
ईसा यरूशलम चला गया। 14 बैतुल-मुक़द्दस में
जाकर उसने देखा कि कई लोग उसमें गाय-
बैल, भेड़ें और कबूतर बेच रहे हैं। दूसरे मेज़ पर
बैठे ग़ैरमुल्की सिक्के बैतुल-मुक़द्दस के सिक्कों
में बदल रहे हैं। 15 फिर ईसा ने रस्सियों का
कोड़ा बनाकर सबको बैतुल-मुक़द्दस से निकाल
दिया। उसने भेड़ों और गाय-बैलों को बाहर हाँक
दिया, पैसे बदलनेवालों के सिक्के बिखेर दिए
और उनकी मेज़ें उलट दीं। 16 कबूतर बेचनेवालों
को उसने कहा, “इसे ले जाओ। मेरे बाप के घर
को मंडी में मत बदलो।” 17 यह देखकर ईसा के
शागिर्दों को कलामे-मुक़द्दस का यह हवाला याद
आया कि “तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा जाएगी।”

18 यहूदियों ने जवाब में पूछा, "आप हमें क्या
इलाही निशान दिखा सकते हैं ताकि हमें यक़ीन
आए कि आपको यह करने का इख़्तियार है?"
19 ईसा ने जवाब दिया, "इस मक़दिस को ढा
दो तो मैं इसे तीन दिन के अंदर दुबारा तामीर कर
दूँगा।"
20 यहूदियों ने कहा, "बैतुल-मुक़द्दस को तामीर
करने में 46 साल लग गए थे और आप उसे तीन
दिन में तामीर करना चाहते हैं?"
21 लेकिन जब ईसा ने "इस मक़दिस" के
अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए तो इसका मतलब
उसका अपना बदन था। 22 उसके मुरदों में से
जी उठने के बाद उसके शागिर्दों को उस की यह
बात याद आई। फिर वह कलामे-मुक़द्दस और उन
बातों पर ईमान लाए जो ईसा ने की थीं।

ईसा इनसानी फ़ितरत से वाक़िफ़ है

23 जब ईसा फ़सह की ईद के लिए यरूशलम
में था तो बहुत-से लोग उसके पेशकरदा इलाही
निशानों को देखकर उसके नाम पर ईमान लाने
लगे। 24 लेकिन उसको उन पर एतमाद नहीं था,
क्योंकि वह सबको जानता था। 25 और उसे
इनसान के बारे में किसी की गवाही की ज़रूरत
नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि इनसान के
अंदर क्या कुछ है।

नीकुदेमुस के साथ मुलाक़ात

3 फ़रीसी फ़िरक़े का एक आदमी बनाम
नीकुदेमुस था जो यहूदी अदालते-आलिया
का रुकन था। 2 वह रात के वक़्त ईसा के पास
आया और कहा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप
ऐसे उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं,
क्योंकि जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह
सिर्फ़ ऐसा शख़्स ही दिखा सकता है जिसके साथ
अल्लाह हो।"
3 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ,
सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख
सकता है जो नए सिरे से पैदा हुआ हो।"
4 नीकुदेमुस ने एतराज़ किया, "क्या मतलब?
बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता
है? क्या वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जाकर
पैदा हो सकता है?"
5 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ,
सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल
हो सकता है जो पानी और रूह से पैदा हुआ हो।
6 जो कुछ जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी
है, लेकिन जो रूह से पैदा होता है वह रूहानी है।
7 इसलिए तू ताज्जुब न कर कि मैं कहता हूँ, 'तुम्हें
नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।' 8 हवा जहाँ चाहे
चलती है। तू उस की आवाज़ तो सुनता है, लेकिन
यह नहीं जानता कि कहाँ से आती और कहाँ को
जाती है। यही हालत हर उस शख़्स की है जो रूह
से पैदा हुआ है।"
9 नीकुदेमुस ने पूछा, "यह किस तरह हो
सकता है?"
10 ईसा ने जवाब दिया, "तू तो इसराईल का
उस्ताद है। क्या इसके बावुजूद भी यह बातें नहीं
समझता? 11 मैं तुझको सच बताता हूँ, हम वह
कुछ बयान करते हैं जो हम जानते हैं और उस
की गवाही देते हैं जो हमने ख़ुद देखा है। तो भी
तुम लोग हमारी गवाही क़बूल नहीं करते। 12 मैंने
तुमको दुनियावी बातें सुनाई हैं और तुम उन पर
ईमान नहीं रखते। तो फिर तुम क्योंकर ईमान
लाओगे अगर तुम्हें आसमानी बातों के बारे में
बताऊँ? 13 आसमान पर कोई नहीं चढ़ा सिवाए
इब्ने-आदम के, जो आसमान से उतरा है।
14 और जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को
लकड़ी पर लटकाकर ऊँचा कर दिया उसी तरह
ज़रूर है कि इब्ने-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया
जाए, 15 ताकि हर एक को जो उस पर ईमान
लाएगा अबदी ज़िंदगी मिल जाए। 16 क्योंकि
अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने
अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो
भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी
ज़िंदगी पाए। 17 क्योंकि अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद
को इसलिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया

को मुजरिम ठहराए बल्कि इसलिए कि वह उसे
नजात दे।
18 जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुजरिम
नहीं क़रार दिया जाएगा, लेकिन जो ईमान नहीं
रखता उसे मुजरिम ठहराया जा चुका है। वजह
यह है कि वह अल्लाह के इकलौते फ़रज़ंद के नाम
पर ईमान नहीं लाया। 19 और लोगों को मुजरिम
ठहराने का सबब यह है कि गो अल्लाह का नूर इस
दुनिया में आया, लेकिन लोगों ने नूर की निसबत
अंधेरे को ज़्यादा प्यार किया, क्योंकि उनके काम
बुरे थे। 20 जो भी ग़लत काम करता है वह नूर
से दुश्मनी रखता है और उसके क़रीब नहीं आता
ताकि उसके बुरे कामों का पोल न खुल जाए।
21 लेकिन जो सच्चा काम करता है वह नूर के
पास आता है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि उसके
काम अल्लाह के वसीले से हुए हैं।"

ईसा और यहया

22 इसके बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ
यहूदिया के इलाक़े में गया। वहाँ वह कुछ देर के
लिए उनके साथ ठहरा और लोगों को बपतिस्मा
देने लगा। 23 उस वक़्त यहया भी शालेम के
क़रीब वाक़े मक़ाम ऐनोन में बपतिस्मा दे रहा था,
क्योंकि वहाँ पानी बहुत था। उस जगह पर लोग
बपतिस्मा लेने के लिए आते रहे। 24 (यहया को
अब तक जेल में नहीं डाला गया था।)
25 एक दिन यहया के शागिर्दों का किसी यहूदी
के साथ मुबाहसा छिड़ गया। ज़ेरे-ग़ौर मज़मून
दीनी ग़ुस्ल था। 26 वह यहया के पास आए और
कहने लगे, "उस्ताद, जिस आदमी से आपकी
दरियाए-यरदन के पार मुलाक़ात हुई और जिसके
बारे में आपने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी
लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी
के पास जा रहे हैं।"
27 यहया ने जवाब दिया, "हर एक को सिर्फ़
वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया
जाता है। 28 तुम ख़ुद इसके गवाह हो कि मैंने
कहा, 'मैं मसीह नहीं हूँ बल्कि मुझे उसके आगे
आगे भेजा गया है।' 29 दूल्हा ही दुलहन से शादी
करता है, और दुलहन उसी की है। उसका दोस्त
सिर्फ़ साथ खड़ा होता है। और दूल्हे की आवाज़
सुन सुनकर दोस्त की ख़ुशी की इंतहा नहीं होती।
मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ जिसकी ख़ुशी पूरी हो गई
है। 30 लाज़िम है कि वह बढ़ता जाए जबकि मैं
घटता जाऊँ।

आसमान से आनेवाला

31 जो आसमान पर से आया है उसका
इख़्तियार सब पर है। जो दुनिया से है उसका
ताल्लुक़ दुनिया से ही है और वह दुनियावी बातें
करता है। लेकिन जो आसमान पर से आया है
उसका इख़्तियार सब पर है। 32 जो कुछ उसने
ख़ुद देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। तो
भी कोई उस की गवाही को क़बूल नहीं करता।
33 लेकिन जिसने उसे क़बूल किया उसने इसकी
तसदीक़ की है कि अल्लाह सच्चा है। 34 जिसे
अल्लाह ने भेजा है वह अल्लाह की बातें सुनाता
है, क्योंकि अल्लाह अपना रूह नाप-तोलकर नहीं
देता। 35 बाप अपने फ़रज़ंद को प्यार करता है,
और उसने सब कुछ उसके सुपुर्द कर दिया है।
36 चुनाँचे जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान लाता
है अबदी ज़िंदगी उस की है। लेकिन जो फ़रज़ंद
को रद्द करे वह इस ज़िंदगी को नहीं देखेगा बल्कि
अल्लाह का ग़ज़ब उस पर ठहरा रहेगा।"

ईसा और सामरी औरत

4 फ़रीसियों को इत्तला मिली कि ईसा यहया
की निसबत ज़्यादा शागिर्द बना रहा और
लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, 2 हालाँकि वह ख़ुद
बपतिस्मा नहीं देता था बल्कि उसके शागिर्द।
3 जब ख़ुदावंद ईसा को यह बात मालूम हुई तो
वह यहूदिया को छोड़कर गलील को वापस चला
गया। 4 वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से
गुज़रना था।
5 चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया
जिसका नाम सूख़ार था। यह उस ज़मीन के क़रीब

था जो याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी।
6 वहाँ याक़ूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक
गया था, इसलिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर
के तक़रीबन बारह बज गए थे।

7 एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने
उससे कहा, “मुझे ज़रा पानी पिला।” 8 (उसके
शागिर्द खाना ख़रीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

9 सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्योंकि
यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक़ रखने से इनकार
करते हैं। उसने कहा, “आप तो यहूदी हैं, और मैं
सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी
पिलाने की दरख़ास्त कर सकते हैं?”

10 ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख़्शिश
से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता
है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा
है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का
पानी देता।”

11 ख़ातून ने कहा, “ख़ुदावंद, आपके पास तो
बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको
ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला? 12 क्या
आप हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिसने हमें यह
कुआँ दिया और जो ख़ुद भी अपने बेटों और रेवड़ों
समेत उसके पानी से लुत्फ़अंदोज़ हुआ?”

13 ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में
से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। 14 लेकिन जिसे
मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं
लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक
चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी
ज़िंदगी मुहैया करेगा।”

15 औरत ने उससे कहा, “ख़ुदावंद, मुझे यह
पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं
लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना
नहीं पड़ेगा।”

16 ईसा ने कहा, “जा, अपने ख़ाविंद को बुला
ला।”

17 औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई ख़ाविंद
नहीं है।”

ईसा ने कहा, “तूने सहीह कहा कि मेरा ख़ाविंद
नहीं है, 18 क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी
है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह
तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।”

19 औरत ने कहा, “ख़ुदावंद, मैं देखती हूँ कि
आप नबी हैं। 20 हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर
इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार
करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें
इबादत करनी है।”

21 ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, यक़ीन
जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस
पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम
में। 22 तुम सामरी उस की परस्तिश करते हो
जिसे नहीं जानते। इसके मुक़ाबले में हम उस की
परस्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि नजात
यहूदियों में से है। 23 लेकिन वह वक़्त आ रहा
है बल्कि पहुँच चुका है जब हक़ीक़ी परस्तार रूह
और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे, क्योंकि
बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। 24 अल्लाह रूह
है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और
सच्चाई से उस की परस्तिश करें।”

25 औरत ने उससे कहा, “मुझे मालूम है कि
मसीह यानी मसह किया हुआ शख़्स आ रहा है।
जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”

26 इस पर ईसा ने उसे बताया, “मैं ही मसीह
हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”

27 उसी लमहे शागिर्द पहुँच गए। उन्होंने जब
देखा कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो
ताज्जुब किया। लेकिन किसी ने पूछने की जुर्रत
न की कि “आप क्या चाहते हैं?” या “आप इस
औरत से क्यों बातें कर रहे हैं?”

28 औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली
गई और वहाँ लोगों से कहने लगी, 29 “आओ,
एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता
दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?”
30 चुनाँचे वह शहर से निकलकर ईसा के पास
आए।

31 इतने में शागिर्द ज़ोर देकर ईसा से कहने
लगे, “उस्ताद, कुछ खाना खा लें।”
32 लेकिन उसने जवाब दिया, “मेरे पास खाने
की ऐसी चीज़ है जिससे तुम वाक़िफ़ नहीं हो।”
33 शागिर्द आपस में कहने लगे, “क्या कोई
उसके पास खाना लेकर आया?”
34 लेकिन ईसा ने उनसे कहा, “मेरा खाना
यह है कि उस की मरज़ी पूरी करूँ जिसने मुझे
भेजा है और उसका काम तकमील तक पहुँचाऊँ।
35 तुम तो ख़ुद कहते हो, ‘मज़ीद चार महीने तक
फ़सल पक जाएगी।’ लेकिन मैं तुमको बताता
हूँ, अपनी नज़र उठाकर खेतों पर ग़ौर करो।
फ़सल पक गई है और कटाई के लिए तैयार
है। 36 फ़सल की कटाई शुरू हो चुकी है। कटाई
करनेवाले को मज़दूरी मिल रही है और वह फ़सल
को अबदी ज़िंदगी के लिए जमा कर रहा है
ताकि बीज बोनेवाला और कटाई करनेवाला दोनों
मिलकर ख़ुशी मना सकें। 37 यों यह कहावत
दुरुस्त साबित हो जाती है कि ‘एक बीज बोता
और दूसरा फ़सल काटता है।’ 38 मैंने तुमको उस
फ़सल की कटाई करने के लिए भेज दिया है
जिसे तैयार करने के लिए तुमने मेहनत नहीं की।
औरों ने ख़ूब मेहनत की है और तुम इससे फ़ायदा
उठाकर फ़सल जमा कर सकते हो।”
39 उस शहर के बहुत-से सामरी ईसा पर ईमान
लाए। वजह यह थी कि उस औरत ने उसके बारे
में यह गवाही दी थी, “उसने मुझे सब कुछ बता
दिया जो मैंने किया है।” 40 जब वह उसके पास
आए तो उन्होंने मिन्नत की, “हमारे पास ठहरें।”
चुनाँचे वह दो दिन वहाँ रहा।
41 और उस की बातें सुनकर मज़ीद बहुत-से
लोग ईमान लाए। 42 उन्होंने औरत से कहा, “अब
हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि
इसलिए कि हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि
वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।”

अफ़सर के बेटे की शफ़ा

43 वहाँ दो दिन गुज़ारने के बाद ईसा गलील को
चला गया। 44 उसने ख़ुद गवाही देकर कहा था कि
नबी की उसके अपने वतन में इज़्ज़त नहीं होती।
45 अब जब वह गलील पहुँचा तो मक़ामी लोगों
ने उसे ख़ुशआमदीद कहा, क्योंकि वह फ़सह की
ईद मनाने के लिए यरूशलम आए थे और उन्होंने
सब कुछ देखा जो ईसा ने वहाँ किया था।
46 फिर वह दुबारा क़ाना में आया जहाँ उसने
पानी को मै में बदल दिया था। उस इलाक़े में
एक शाही अफ़सर था जिसका बेटा कफ़र्नहूम में
बीमार पड़ा था। 47 जब उसे इत्तला मिली कि ईसा
यहूदिया से गलील पहुँच गया है तो वह उसके
पास गया और गुज़ारिश की, “क़ाना से मेरे पास
उतर आएँ और मेरे बेटे को शफ़ा दें। क्योंकि वह
मरने को है।” 48 ईसा ने उससे कहा, “जब तक
तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े नहीं देखते
ईमान नहीं लाते।”
49 शाही अफ़सर ने कहा, “ख़ुदावंद आएँ,
इससे पहले कि मेरा लड़का मर जाए।”
50 ईसा ने जवाब दिया, “जा, तेरा बेटा ज़िंदा
रहेगा।”

आदमी ईसा की बात पर ईमान लाया और
अपने घर चला गया। 51 वह अभी उतर रहा था
कि उसके नौकर उससे मिले। उन्होंने उसे इत्तला
दी कि बेटा ज़िंदा है।
52 उसने उनसे पूछ-गछ की कि उस की
तबियत किस वक़्त से बेहतर होने लगी थी।
उन्होंने जवाब दिया, “बुख़ार कल दोपहर एक बजे
उतर गया।” 53 फिर बाप ने जान लिया कि उसी
वक़्त ईसा ने उसे बताया था, “तुम्हारा बेटा ज़िंदा
रहेगा।” और वह अपने पूरे घराने समेत उस पर
ईमान लाया।
54 यों ईसा ने अपना दूसरा इलाही निशान उस
वक़्त दिखाया जब वह यहूदिया से गलील में आया
था।

बैतुल-मुक़द्दस के हौज़ पर शफ़ा

5 कुछ देर के बाद ईसा किसी यहूदी ईद के
मौक़े पर यरूशलम गया। 2 शहर में एक
हौज़ था जिसका नाम अरामी ज़बान में बैत-हसदा
था। उसके पाँच बड़े बरामदे थे और वह शहर के
उस दरवाज़े के क़रीब था जिसका नाम 'भेड़ों का
दरवाज़ा' है। 3 इन बरामदों में बेशुमार माज़ूर लोग
पड़े रहते थे। यह अंधे, लँगड़े और मफ़लूज पानी
के हिलने के इंतज़ार में रहते थे। 4 [क्योंकि गाहे
बगाहे रब का फ़रिश्ता उतरकर पानी को हिला
देता था। जो भी उस वक़्त उसमें पहले दाख़िल
हो जाता उसे शफ़ा मिल जाती थी ख़ाह उस की
बीमारी कोई भी क्यों न होती।] 5 मरीज़ों में से
एक आदमी 38 साल से माज़ूर था। 6 जब ईसा
ने उसे वहाँ पड़ा देखा और उसे मालूम हुआ कि
यह इतनी देर से इस हालत में है तो उसने पूछा,
"क्या तू तनदुरुस्त होना चाहता है?"

7 उसने जवाब दिया, "ख़ुदावंद, यह मुश्किल
है। मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठाकर पानी में
जब उसे हिलाया जाता है ले जाए। इसलिए मेरे
वहाँ पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई
और मुझसे पहले पानी में उतर जाता है।"

8 ईसा ने कहा, "उठ, अपना बिस्तर उठाकर
चल-फिर!" 9 वह आदमी फ़ौरन बहाल हो गया।
उसने अपना बिस्तर उठाया और चलने-फिरने
लगा।

यह वाक़िया सबत के दिन हुआ। 10 इस-
लिए यहूदियों ने शफ़ायाब आदमी को बताया,
"आज सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना
मना है।"

11 लेकिन उसने जवाब दिया, "जिस आदमी ने
मुझे शफ़ा दी उसने मुझे बताया, 'अपना बिस्तर
उठाकर चल-फिर'।"

12 उन्होंने सवाल किया, "वह कौन है जिसने
तुझे यह कुछ बताया?" 13 लेकिन शफ़ायाब
आदमी को मालूम न था, क्योंकि ईसा हुजूम के
सबब से चुपके से वहाँ से चला गया था।

14 बाद में ईसा उसे बैतुल-मुक़द्दस में मिला।
उसने कहा, "अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह
न करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी
बदतर हो जाए।"

15 उस आदमी ने उसे छोड़कर यहूदियों को
इत्तला दी, "ईसा ने मुझे शफ़ा दी।" 16 इस
पर यहूदी उसको सताने लगे, क्योंकि उसने
उस आदमी को सबत के दिन बहाल किया था।
17 लेकिन ईसा ने उन्हें जवाब दिया, "मेरा बाप
आज तक काम करता आया है, और मैं भी ऐसा
करता हूँ।"

18 यह सुनकर यहूदी उसे क़त्ल करने की
मज़ीद कोशिश करने लगे, क्योंकि उसने न सिर्फ़
सबत के दिन को मनसूख़ क़रार दिया था बल्कि
अल्लाह को अपना बाप कहकर अपने आपको
अल्लाह के बराबर ठहराया था।

फ़रज़ंद का इख़्तियार

19 ईसा ने उन्हें जवाब दिया, "मैं तुमको सच
बताता हूँ कि फ़रज़ंद अपनी मरज़ी से कुछ नहीं
कर सकता। वह सिर्फ़ वह कुछ करता है जो वह
बाप को करते देखता है। जो कुछ बाप करता है
वही फ़रज़ंद भी करता है, 20 क्योंकि बाप फ़रज़ंद
को प्यार करता और उसे सब कुछ दिखाता है जो
वह ख़ुद करता है। हाँ, वह फ़रज़ंद को इनसे भी
अज़ीम काम दिखाएगा। फिर तुम और भी ज़्यादा
हैरतज़दा होगे। 21 क्योंकि जिस तरह बाप मुरदों
को ज़िंदा करता है उसी तरह फ़रज़ंद भी जिन्हें
चाहता है ज़िंदा कर देता है। 22 और बाप किसी
की भी अदालत नहीं करता बल्कि उसने अदालत
का पूरा इंतज़ाम फ़रज़ंद के सुपुर्द कर दिया है
23 ताकि सब उसी तरह फ़रज़ंद की इज़्ज़त करें
जिस तरह वह बाप की इज़्ज़त करते हैं। जो
फ़रज़ंद की इज़्ज़त नहीं करता वह बाप की भी
इज़्ज़त नहीं करता जिसने उसे भेजा है।

24 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी मेरी बात
सुनकर उस पर ईमान लाता है जिसने मुझे भेजा
है अबदी ज़िंदगी उस की है। उसे मुजरिम नहीं

ठहराया जाएगा बल्कि वह मौत की गिरिफ़्त से
निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गया है। 25 मैं
तुमको सच बताता हूँ कि एक वक़्त आनेवाला है
बल्कि आ चुका है जब मुरदे अल्लाह के फ़रज़ंद
की आवाज़ सुनेंगे। और जितने सुनेंगे वह ज़िंदा
हो जाएंगे। 26 क्योंकि जिस तरह बाप ज़िंदगी
का मंबा है उसी तरह उसने अपने फ़रज़ंद को
ज़िंदगी का मंबा बना दिया है। 27 साथ साथ उसने
उसे अदालत करने का इख़्तियार भी दे दिया
है, क्योंकि वह इब्ने-आदम है। 28 यह सुनकर
ताज्जुब न करो क्योंकि एक वक़्त आ रहा है जब
तमाम मुरदे उस की आवाज़ सुनकर 29 क़ब्रों में से
निकल आएँगे। जिन्होंने नेक काम किया वह जी
उठकर ज़िंदगी पाएँगे जबकि जिन्होंने बुरा काम
किया वह जी तो उठेंगे लेकिन उनकी अदालत
की जाएगी।

ईसा के गवाह

30 मैं अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता
बल्कि जो कुछ बाप से सुनता हूँ उसके मुताबिक़
अदालत करता हूँ। और मेरी अदालत रास्त है
क्योंकि मैं अपनी मरज़ी करने की कोशिश नहीं
करता बल्कि उसी की जिसने मुझे भेजा है।

31 अगर मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता तो
मेरी गवाही मोतबर न होती। 32 लेकिन एक और
है जो मेरे बारे में गवाही दे रहा है और मैं जानता
हूँ कि मेरे बारे में उस की गवाही सच्ची और
मोतबर है। 33 तुमने पता करने के लिए अपने
लोगों को यहया के पास भेजा है और उसने
हक़ीक़त की तसदीक़ की है। 34 बेशक मुझे किसी
इनसानी गवाह की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं यह
इसलिए बता रहा हूँ ताकि तुमको नजात मिल
जाए। 35 यहया एक जलता हुआ चराग़ था जो
रौशनी देता था, और कुछ देर के लिए तुमने
उस की रौशनी में ख़ुशी मनाना पसंद किया।
36 लेकिन मेरे पास एक और गवाह है जो यहया
की निसबत ज़्यादा अहम है—वह काम जो बाप ने
मुझे मुकम्मल करने के लिए दे दिया। यही काम
जो मैं कर रहा हूँ मेरे बारे में गवाही देता है कि
बाप ने मुझे भेजा है। 37 इसके अलावा बाप ने
ख़ुद जिसने मुझे भेजा है मेरे बारे में गवाही दी है।
अफ़सोस, तुमने कभी उस की आवाज़ नहीं सुनी,
न उस की शक्लो-सूरत देखी, 38 और उसका
कलाम तुम्हारे अंदर नहीं रहता, क्योंकि तुम उस
पर ईमान नहीं रखते जिसे उसने भेजा है। 39 तुम
अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो क्योंकि समझते हो
कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी हासिल है। लेकिन
यही मेरे बारे में गवाही देते हैं! 40 तो भी तुम
ज़िंदगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते।

41 मैं इनसानों से इज़्ज़त नहीं चाहता,
42 लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुममें अल्लाह
की मुहब्बत नहीं। 43 अगरचे मैं अपने बाप के
नाम में आया हूँ तो भी तुम मुझे क़बूल नहीं
करते। इसके मुक़ाबले में अगर कोई अपने नाम में
आएगा तो तुम उसे क़बूल करोगे। 44 कोई अजब
नहीं कि तुम ईमान नहीं ला सकते। क्योंकि तुम
एक दूसरे से इज़्ज़त चाहते हो जबकि तुम वह
इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद
ख़ुदा से मिलती है। 45 लेकिन यह न समझो कि
मैं बाप के सामने तुम पर इलज़ाम लगाऊँगा। एक
और है जो तुम पर इलज़ाम लगा रहा है—मूसा,
जिससे तुम उम्मीद रखते हो। 46 अगर तुम वाक़ई
मूसा पर ईमान रखते तो ज़रूर मुझ पर भी
ईमान रखते, क्योंकि उसने मेरे ही बारे में लिखा।
47 लेकिन चूँकि तुम वह कुछ नहीं मानते जो उसने
लिखा है तो मेरी बातें क्योंकर मान सकते हो!”

ईसा बड़े हुजूम को खाना खिलाता है

6 इसके बाद ईसा ने गलील की झील को पार
किया। (झील का दूसरा नाम तिबरियास
था।) 2 एक बड़ा हुजूम उसके पीछे लग गया था,
क्योंकि उसने इलाही निशान दिखाकर मरीज़ों को
शफ़ा दी थी और लोगों ने इसका मुशाहदा किया
था। 3 फिर ईसा पहाड़ पर चढ़कर अपने शागिर्दों
के साथ बैठ गया। 4 (यहूदी ईदे-फ़सह क़रीब आ
गई थी।) 5 वहाँ बैठे ईसा ने अपनी नज़र उठाई

तो देखा कि एक बड़ा हुजूम पहुँच रहा है। उसने
फ़िलिप्पुस से पूछा, “हम कहाँ से खाना ख़रीदें
ताकि उन्हें खिलाएँ?” 6 (यह उसने फ़िलिप्पुस
को आज़माने के लिए कहा। ख़ुद तो वह जानता
था कि क्या करेगा।)
7 फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, “अगर हर एक
को सिर्फ़ थोड़ा-सा मिले तो भी चाँदी के 200
सिक्के काफ़ी नहीं होंगे।”
8 फिर शमाऊन पतरस का भाई अंदरियास
बोल उठा, 9 “यहाँ एक लड़का है जिसके पास
जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। मगर
इतने लोगों में यह क्या हैं!”
10 ईसा ने कहा, “लोगों को बिठा दो।” उस
जगह बहुत घास थी। चुनाँचे सब बैठ गए। (सिर्फ़
मर्दों की तादाद 5,000 थी।) 11 ईसा ने रोटियाँ
लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें बैठे
हुए लोगों में तक़सीम करवाया। यही कुछ उसने
मछलियों के साथ भी किया। और सबने जी
भरकर रोटी खाई। 12 जब सब सेर हो गए तो
ईसा ने शागिर्दों को बताया, “अब बचे हुए टुकड़े
जमा करो ताकि कुछ ज़ाया न हो जाए।” 13 जब
उन्होंने बचा हुआ खाना इकट्ठा किया तो जौ की
पाँच रोटियों के टुकड़ों से बारह टोकरे भर गए।
14 जब लोगों ने ईसा को यह इलाही निशान
दिखाते देखा तो उन्होंने कहा, “यक़ीनन यह
वही नबी है जिसे दुनिया में आना था।” 15 ईसा
को मालूम हुआ कि वह आकर उसे ज़बरदस्ती
बादशाह बनाना चाहते हैं, इसलिए वह दुबारा
उनसे अलग होकर अकेला ही किसी पहाड़ पर
चढ़ गया।

ईसा पानी पर चलता है

16 शाम को शागिर्द झील के पास गए 17 और
कश्ती पर सवार होकर झील के पार शहर
कफ़र्नहूम के लिए रवाना हुए। अंधेरा हो चुका
था और ईसा अब तक उनके पास वापस नहीं
आया था। 18 तेज़ हवा के बाइस झील में लहरें
उठने लगीं। 19 कश्ती को खेते खेते शागिर्द चार
या पाँच किलोमीटर का सफ़र तय कर चुके थे
कि अचानक ईसा नज़र आया। वह पानी पर
चलता हुआ कश्ती की तरफ़ बढ़ रहा था। शागिर्द
दहशतज़दा हो गए। 20 लेकिन उसने उनसे कहा,
“मैं ही हूँ। ख़ौफ़ न करो।” 21 वह उसे कश्ती में
बिठाने पर आमादा हुए। और कश्ती उसी लमहे
उस जगह पहुँच गई जहाँ वह जाना चाहते थे।

लोग ईसा को ढूँडते हैं

22 हुजूम तो झील के पार रह गया था। अगले
दिन लोगों को पता चला कि शागिर्द एक ही कश्ती
लेकर चले गए हैं और कि उस वक़्त ईसा कश्ती में
नहीं था। 23 फिर कुछ कश्तियाँ तिबरियास से उस
मक़ाम के क़रीब पहुँचीं जहाँ ख़ुदावंद ईसा ने रोटी
के लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ करके उसे लोगों को
खिलाया था। 24 जब लोगों ने देखा कि न ईसा
और न उसके शागिर्द वहाँ हैं तो वह कश्तियों पर
सवार होकर ईसा को ढूँडते ढूँडते कफ़र्नहूम पहुँचे।

ईसा ज़िंदगी की रोटी है

25 जब उन्होंने उसे झील के पार पाया तो पूछा,
“उस्ताद, आप किस तरह यहाँ पहुँच गए?”
26 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता
हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँड रहे कि इलाही
निशान देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने जी
भरकर रोटी खाई है। 27 ऐसी ख़ुराक के लिए
जिद्दो-जहद न करो जो गल-सड़ जाती है, बल्कि
ऐसी के लिए जो अबदी ज़िंदगी तक क़ायम रहती
है और जो इब्ने-आदम तुमको देगा, क्योंकि ख़ुदा
बाप ने उस पर अपनी तसदीक़ की मुहर लगाई
है।”
28 इस पर उन्होंने पूछा, “हमें क्या करना
चाहिए ताकि अल्लाह का मतलूबा काम करें?”
29 ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह का काम यह
है कि तुम उस पर ईमान लाओ जिसे उसने भेजा
है।”
30 उन्होंने कहा, “तो फिर आप क्या इलाही
निशान दिखाएँगे जिसे देखकर हम आप पर ईमान

लाएँ? आप क्या काम सरंजाम देंगे? 31 हमारे
बापदादा ने तो रेगिस्तान में मन खाया। चुनाँचे
कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि मूसा ने उन्हें
आसमान से रोटी खिलाई।”

32 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता
हूँ कि ख़ुद मूसा ने तुमको आसमान से रोटी नहीं
खिलाई बल्कि मेरे बाप ने। वही तुमको आसमान
से हक़ीक़ी रोटी देता है। 33 क्योंकि अल्लाह की
रोटी वह शख़्स है जो आसमान पर से उतरकर
दुनिया को ज़िंदगी बख़्शता है।”

34 उन्होंने कहा, “ख़ुदावंद, हमें यह रोटी हर
वक़्त दिया करें।”

35 जवाब में ईसा ने कहा, “मैं ही ज़िंदगी की
रोटी हूँ। जो मेरे पास आए उसे फिर कभी भूक
नहीं लगेगी। और जो मुझ पर ईमान लाए उसे फिर
कभी प्यास नहीं लगेगी। 36 लेकिन जिस तरह मैं
तुमको बता चुका हूँ, तुमने मुझे देखा और फिर
भी ईमान नहीं लाए। 37 जितने भी बाप ने मुझे
दिए हैं वह मेरे पास आएँगे और जो भी मेरे पास
आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा। 38 क्योंकि
मैं अपनी मरज़ी पूरी करने के लिए आसमान से
नहीं उतरा बल्कि उस की जिसने मुझे भेजा है।
39 और जिसने मुझे भेजा उस की मरज़ी यह है
कि जितने भी उसने मुझे दिए हैं उनमें से मैं एक
को भी खो न दूँ बल्कि सबको क़ियामत के दिन
मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँ। 40 क्योंकि मेरे बाप
की मरज़ी यही है कि जो भी फ़रज़ंद को देखकर
उस पर ईमान लाए उसे अबदी ज़िंदगी हासिल
हो। ऐसे शख़्स को मैं क़ियामत के दिन मुरदों में
से फिर ज़िंदा करूँगा।”

41 यह सुनकर यहूदी इसलिए बुड़बुड़ाने लगे
कि उसने कहा था, “मैं ही वह रोटी हूँ जो
आसमान पर से उतर आई है।” 42 उन्होंने एतराज़
किया, “क्या यह ईसा बिन यूसुफ़ नहीं, जिसके
बाप और माँ से हम वाक़िफ़ हैं? वह क्योंकर कह
सकता है कि ‘मैं आसमान से उतरा हूँ’?”

43 ईसा ने जवाब में कहा, “आपस में मत
बुड़बुड़ाओ। 44 सिर्फ़ वह शख़्स मेरे पास आ
सकता है जिसे बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे पास
खींच लाया है। ऐसे शख़्स को मैं क़ियामत के
दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँगा। 45 नबियों
के सहीफ़ों में लिखा है, ‘सब अल्लाह से तालीम
पाएँगे।’ जो भी अल्लाह की सुनकर उससे
सीखता है वह मेरे पास आ जाता है। 46 इसका
मतलब यह नहीं कि किसी ने कभी बाप को देखा।
सिर्फ़ एक ही ने बाप को देखा है, वही जो अल्लाह
की तरफ़ से है। 47 मैं तुमको सच बताता हूँ कि
जो ईमान रखता है उसे अबदी ज़िंदगी हासिल
है। 48 ज़िंदगी की रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे बापदादा
रेगिस्तान में मन खाते रहे, तो भी वह मर गए।
50 लेकिन यहाँ आसमान से उतरनेवाली ऐसी
रोटी है जिसे खाकर इनसान नहीं मरता। 51 मैं
ही ज़िंदगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर
आई है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक ज़िंदा
रहेगा। और यह रोटी मेरा गोश्त है जो मैं दुनिया
को ज़िंदगी मुहैया करने की ख़ातिर पेश करूँगा।”

52 यहूदी बड़ी सरगरमी से एक दूसरे से बहस
करने लगे, “यह आदमी हमें किस तरह अपना
गोश्त खिला सकता है?”

53 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता
हूँ कि सिर्फ़ इब्ने-आदम का गोश्त खाने और
उसका ख़ून पीने ही से तुममें ज़िंदगी होगी। 54 जो
मेरा गोश्त खाए और मेरा ख़ून पिए अबदी ज़िंदगी
उस की है और मैं उसे क़ियामत के दिन मुरदों
में से फिर ज़िंदा करूँगा। 55 क्योंकि मेरा गोश्त
हक़ीक़ी ख़ुराक और मेरा ख़ून हक़ीक़ी पीने की
चीज़ है। 56 जो मेरा गोश्त खाता और मेरा ख़ून
पीता है वह मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें।
57 मैं उस ज़िंदा बाप की वजह से ज़िंदा हूँ जिसने
मुझे भेजा। इसी तरह जो मुझे खाता है वह मेरी
ही वजह से ज़िंदा रहेगा। 58 यही वह रोटी है जो
आसमान से उतरी है। तुम्हारे बापदादा मन खाने
के बावुजूद मर गए, लेकिन जो यह रोटी खाएगा
वह अबद तक ज़िंदा रहेगा।”

59 ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह
कफ़र्नहूम में यहूदी इबादतख़ाने में तालीम दे रहा
था।

अबदी ज़िंदगी की बातें

60 यह सुनकर उसके बहुत-से शागिर्दों ने कहा,
“यह बातें ना-गवार हैं। कौन इन्हें सुन सकता है!”
61 ईसा को मालूम था कि मेरे शागिर्द मेरे बारे में
बुड़बुड़ा रहे हैं, इसलिए उसने कहा, “क्या तुमको
इन बातों से ठेस लगी है? 62 तो फिर तुम क्या
सोचोगे जब इब्ने-आदम को ऊपर जाते देखोगे
जहाँ वह पहले था? 63 अल्लाह का रूह ही ज़िंदा
करता है जबकि जिस्मानी ताक़त का कोई फ़ायदा
नहीं होता। जो बातें मैंने तुमको बताई हैं वह रूह
और ज़िंदगी हैं। 64 लेकिन तुममें से कुछ हैं जो
ईमान नहीं रखते।” (ईसा तो शुरू से ही जानता
था कि कौन कौन ईमान नहीं रखते और कौन मुझे
दुश्मन के हवाले करेगा।) 65 फिर उसने कहा,
“इसलिए मैंने तुमको बताया कि सिर्फ़ वह शख़्स
मेरे पास आ सकता है जिसे बाप की तरफ़ से यह
तौफ़ीक़ मिले।”

66 उस वक़्त से उसके बहुत-से शागिर्द उलटे
पाँव फिर गए और आइंदा को उसके साथ न चले।
67 तब ईसा ने बारह शागिर्दों से पूछा, “क्या तुम
भी चले जाना चाहते हो?”

68 शमाऊन पतरस ने जवाब दिया, “ख़ुदा-
वंद, हम किसके पास जाएँ? अबदी ज़िंदगी की
बातें तो आप ही के पास हैं। 69 और हमने ईमान
लाकर जान लिया है कि आप अल्लाह के क़ुद्दूस
हैं।”

70 जवाब में ईसा ने कहा, “क्या मैंने तुम बारह
को नहीं चुना? तो भी तुममें से एक शख़्स शैतान
है।” 71 (वह शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह
की तरफ़ इशारा कर रहा था जो बारह शागिर्दों
में से एक था और जिसने बाद में उसे दुश्मन के
हवाले कर दिया।)

ईसा और उसके भाई

7 इसके बाद ईसा ने गलील के इलाक़े में
इधर-उधर सफ़र किया। वह यहूदिया में
फिरना नहीं चाहता था क्योंकि वहाँ के यहूदी उसे
क़त्ल करने का मौक़ा ढूँड रहे थे। 2 लेकिन जब
यहूदी ईद बनाम झोंपड़ियों की ईद क़रीब आई
3 तो उसके भाइयों ने उससे कहा, “यह जगह
छोड़कर यहूदिया चला जा ताकि तेरे पैरोकार
भी वह मोजिज़े देख लें जो तू करता है। 4 जो
शख़्स चाहता है कि अवाम उसे जाने वह पोशीदगी
में काम नहीं करता। अगर तू इस क़िस्म का
मोजिज़ाना काम करता है तो अपने आपको
दुनिया पर ज़ाहिर कर।” 5 (असल में ईसा के भाई
भी उस पर ईमान नहीं रखते थे।)

6 ईसा ने उन्हें बताया, “अभी वह वक़्त नहीं
आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है। लेकिन तुम जा
सकते हो, तुम्हारे लिए हर वक़्त मौज़ूँ है। 7 दुनिया
तुमसे दुश्मनी नहीं रख सकती। लेकिन मुझसे वह
दुश्मनी रखती है, क्योंकि मैं उसके बारे में यह
गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। 8 तुम ख़ुद
ईद पर जाओ। मैं नहीं जाऊँगा, क्योंकि अभी वह
वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है।” 9 यह
कहकर वह गलील में ठहरा रहा।

ईसा झोंपड़ियों की ईद पर

10 लेकिन बाद में, जब उसके भाई ईद पर जा
चुके थे तो वह भी गया, अगरचे अलानिया नहीं
बल्कि ख़ुफ़िया तौर पर। 11 यहूदी ईद के मौक़े
पर उसे तलाश कर रहे थे। वह पूछते रहे, “वह
आदमी कहाँ है?”

12 हुजूम में से कई लोग ईसा के बारे में बुड़बुड़ा
रहे थे। बाज़ ने कहा, “वह अच्छा बंदा है।” लेकिन
दूसरों ने एतराज़ किया, “नहीं, वह अवाम को
बहकाता है।” 13 लेकिन किसी ने भी उसके बारे
में खुलकर बात न की, क्योंकि वह यहूदियों से
डरते थे।

14 ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था जब
ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगा।

15 उसे सुनकर यहूदी हैरतज़दा हुए और कहा,
“यह आदमी किस तरह इतना इल्म रखता है
हालाँकि इसने कहीं से भी तालीम हासिल नहीं
की!”
16 ईसा ने जवाब दिया, “जो तालीम मैं देता
हूँ वह मेरी अपनी नहीं बल्कि उस की है जिसने
मुझे भेजा। 17 जो उस की मरज़ी पूरी करने के
लिए तैयार है वह जान लेगा कि मेरी तालीम
अल्लाह की तरफ़ से है या कि मेरी अपनी तरफ़
से। 18 जो अपनी तरफ़ से बोलता है वह अपनी
ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो अपने भेजनेवाले
की इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाने की कोशिश करता है
वह सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं है। 19 क्या
मूसा ने तुमको शरीअत नहीं दी? तो फिर तुम
मुझे क़त्ल करने की कोशिश क्यों कर रहे हो?”
20 हुजूम ने जवाब दिया, “तुम किसी बदरूह
की गिरिफ़्त में हो। कौन तुम्हें क़त्ल करने की
कोशिश कर रहा है?”
21 ईसा ने उनसे कहा, “मैंने सबत के दिन
एक ही मोजिज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा
हुए। 22 लेकिन तुम भी सबत के दिन काम करते
हो। तुम उस दिन अपने बच्चों का ख़तना करवाते
हो। और यह रस्म मूसा की शरीअत के मुताबिक़
ही है, अगरचे यह मूसा से नहीं बल्कि हमारे
बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से शुरू
हुई। 23 क्योंकि शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है
कि बच्चे का ख़तना आठवें दिन करवाया जाए,
और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी
अपने बच्चे का ख़तना करवाते हो ताकि शरीअत
की ख़िलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझसे
क्यों नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी
के पूरे जिस्म को शफ़ा दी? 24 ज़ाहिरी सूरत की
बिना पर फ़ैसला न करो बल्कि बातिनी हालत
पहचानकर मुंसिफ़ाना फ़ैसला करो।”

क्या ईसा ही मसीह है?

25 उस वक़्त यरूशलम के कुछ रहनेवाले कहने
लगे, “क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग
क़त्ल करने की कोशिश कर रहे हैं? 26 ताहम
वह यहाँ खुलकर बात कर रहा है और कोई भी
उसे रोकने की कोशिश नहीं कर रहा। क्या हमारे
राहनुमाओं ने हक़ीक़त में जान लिया है कि यह
मसीह है? 27 लेकिन जब मसीह आएगा तो
किसी को भी मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से
है। यह आदमी फ़रक़ है। हम तो जानते हैं कि यह
कहाँ से है।”
28 ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था।
अब वह पुकार उठा, “तुम मुझे जानते हो और
यह भी जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ। लेकिन मैं
अपनी तरफ़ से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है
वह सच्चा है और उसे तुम नहीं जानते। 29 लेकिन
मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उस की तरफ़ से हूँ
और उसने मुझे भेजा है।”
30 तब उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश
की। लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका,
क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया था। 31 तो
भी हुजूम के कई लोग उस पर ईमान लाए,
क्योंकि उन्होंने कहा, “जब मसीह आएगा तो
क्या वह इस आदमी से ज़्यादा इलाही निशान
दिखाएगा?”

पहरेदार उसे गिरिफ़्तार करने आते हैं

32 फ़रीसियों ने देखा कि हुजूम में इस क़िस्म
की बातें धीमी धीमी आवाज़ के साथ फैल रही हैं।
चुनाँचे उन्होंने राहनुमा इमामों के साथ मिलकर
बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार ईसा को गिरिफ़्तार
करने के लिए भेजे। 33 लेकिन ईसा ने कहा,
“मैं सिर्फ़ थोड़ी देर और तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर
मैं उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे
भेजा है। 34 उस वक़्त तुम मुझे ढूँडोगे, मगर नहीं
पाओगे, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ
सकते।”
35 यहूदी आपस में कहने लगे, “यह कहाँ जाना
चाहता है जहाँ हम उसे नहीं पा सकेंगे? क्या वह
बैरूने-मुल्क जाना चाहता है, वहाँ जहाँ हमारे लोग
यूनानियों में बिखरी हालत में रहते हैं? क्या वह

यूनानियों को तालीम देना चाहता है? 36 मतलब
क्या है जब वह कहता है, ‘तुम मुझे ढूँडोगे मगर
नहीं पाओगे’ और ‘जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ
सकते’।”

ज़िंदगी के पानी की नहरें

37 ईद के आख़िरी दिन जो सबसे अहम है ईसा
खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा,
“जो प्यासा हो वह मेरे पास आए, 38 और जो
मुझ पर ईमान लाए वह पिए। कलामे-मुक़द्दस
के मुताबिक़ ‘उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की
नहरें बह निकलेंगी’।” 39 (‘ज़िंदगी के पानी’ से
वह रूहुल-क़ुद्स की तरफ़ इशारा कर रहा था जो
उनको हासिल होता है जो ईसा पर ईमान लाते
हैं। लेकिन वह उस वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ
था, क्योंकि ईसा अब तक अपने जलाल को न
पहुँचा था।)

सुननेवालों में नाइत्तफ़ाक़ी

40 ईसा की यह बातें सुनकर हुजूम के कुछ
लोगों ने कहा, “यह आदमी वाक़ई वह नबी है
जिसके इंतज़ार में हम हैं।”
41 दूसरों ने कहा, “यह मसीह है।”
लेकिन बाज़ ने एतराज़ किया, “मसीह गलील
से किस तरह आ सकता है! 42 पाक कलाम तो
बयान करता है कि मसीह दाऊद के ख़ानदान और
बैत-लहम से आएगा, उस गाँव से जहाँ दाऊद
बादशाह पैदा हुआ।” 43 यों ईसा की वजह से
लोगों में फूट पड़ गई। 44 कुछ तो उसे गिरिफ़्तार
करना चाहते थे, लेकिन कोई भी उसको हाथ न
लगा सका।

यहूदी राहनुमा ईसा पर ईमान नहीं रखते

45 इतने में बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार राहनुमा
इमामों और फ़रीसियों के पास वापस आए। वह
ईसा को लेकर नहीं आए थे, इसलिए राहनुमाओं
ने पूछा, “तुम उसे क्यों नहीं लाए?”
46 पहरेदारों ने जवाब दिया, “किसी ने कभी
इस आदमी की तरह बात नहीं की।”
47 फ़रीसियों ने तंज़न कहा, “क्या तुमको भी
बहका दिया गया है? 48 क्या राहनुमाओं या
फ़रीसियों में कोई है जो उस पर ईमान लाया हो?
कोई भी नहीं! 49 लेकिन शरीअत से नावाक़िफ़
यह हुजूम लानती है!”
50 इन राहनुमाओं में नीकुदेमुस भी शामिल था
जो कुछ देर पहले ईसा के पास गया था। अब वह
बोल उठा, 51 “क्या हमारी शरीअत किसी पर यों
फ़ैसला देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है
कि उसे पहले अदालत में पेश किया जाए ताकि
मालूम हो जाए कि उससे क्या कुछ सरज़द हुआ
है।”
52 दूसरों ने एतराज़ किया, “क्या तुम भी
गलील के रहनेवाले हो? कलामे-मुक़द्दस में
तफ़तीश करके ख़ुद देख लो कि गलील से कोई
नबी नहीं आएगा।” 53 यह कहकर हर एक अपने
अपने घर चला गया।

ज़िनाकार औरत पर पहला पत्थर

8 ईसा ख़ुद ज़ैतून के पहाड़ पर चला गया।
2 अगले दिन पौ फटते वक़्त वह दुबारा
बैतुल-मुक़द्दस में आया। वहाँ सब लोग उसके गिर्द
जमा हुए और वह बैठकर उन्हें तालीम देने लगा।
3 इस दौरान शरीअत के उलमा और फ़रीसी एक
औरत को लेकर आए जिसे ज़िना करते वक़्त
पकड़ा गया था। उसे बीच में खड़ा करके 4 उन्होंने
ईसा से कहा, “उस्ताद, इस औरत को ज़िना
करते वक़्त पकड़ा गया है। 5 मूसा ने शरीअत में
हमें हुक्म दिया है कि ऐसे लोगों को संगसार करना
है। आप क्या कहते हैं?” 6 इस सवाल से वह उसे
फँसाना चाहते थे ताकि उस पर इलज़ाम लगाने
का कोई बहाना उनके हाथ आ जाए। लेकिन ईसा
झुक गया और अपनी उँगली से ज़मीन पर लिखने
लगा।
7 जब वह उससे जवाब का तक़ाज़ा करते रहे
तो वह खड़ा होकर उनसे मुख़ातिब हुआ, “तुममें

से जिसने कभी गुनाह नहीं किया, वह पहला
पत्थर मारे।” 8 फिर वह दुबारा झुककर ज़मीन
पर लिखने लगा। 9 यह जवाब सुनकर इलज़ाम
लगानेवाले यके बाद दीगरे वहाँ से खिसक गए,
पहले बुज़ुर्ग, फिर बाक़ी सब। आख़िरकार ईसा
और दरमियान में खड़ी वह औरत अकेले रह गए।
10 फिर उसने खड़े होकर कहा, “ऐ औरत, वह
सब कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर फ़तवा
नहीं लगाया?”
11 औरत ने जवाब दिया, “नहीं ख़ुदावंद।”
ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर फ़तवा नहीं
लगाता। जा, आइंदा गुनाह न करना।”

ईसा दुनिया का नूर है

12 फिर ईसा दुबारा लोगों से मुख़ातिब हुआ,
“दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह
तारीकी में नहीं चलेगा, क्योंकि उसे ज़िंदगी का
नूर हासिल होगा।”
13 फ़रीसियों ने एतराज़ किया, “आप तो
अपने बारे में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर
नहीं होती।”
14 ईसा ने जवाब दिया, “अगरचे मैं अपने बारे
में ही गवाही दे रहा हूँ तो भी वह मोतबर है।
क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और
कहाँ को जा रहा हूँ। लेकिन तुमको तो मालूम
नहीं कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा
हूँ। 15 तुम इनसानी सोच के मुताबिक़ लोगों का
फ़ैसला करते हो, लेकिन मैं किसी का भी फ़ैसला
नहीं करता। 16 और अगर फ़ैसला करूँ भी तो
मेरा फ़ैसला दुरुस्त है, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ।
बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे साथ है। 17 तुम्हारी
शरीअत में लिखा है कि दो आदमियों की गवाही
मोतबर है। 18 मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता हूँ
जबकि दूसरा गवाह बाप है जिसने मुझे भेजा।”
19 उन्होंने पूछा, “आपका बाप कहाँ है?” ईसा
ने जवाब दिया, “तुम न मुझे जानते हो, न मेरे बाप
को। अगर तुम मुझे जानते तो फिर मेरे बाप को
भी जानते।”
20 ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह उस
जगह के क़रीब तालीम दे रहा था जहाँ लोग अपना
हदिया डालते थे। लेकिन किसी ने उसे गिरिफ़्तार
न किया क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया
था।

जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं जा सकते

21 एक और बार ईसा उनसे मुख़ातिब हुआ,
“मैं जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँड ढूँडकर अपने
गुनाह में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम
नहीं पहुँच सकते।”
22 यहूदियों ने पूछा, “क्या वह ख़ुदकुशी करना
चाहता है? क्या वह इसी वजह से कहता है, ‘जहाँ
मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते’?”
23 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम नीचे
से हो जबकि मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के
हो जबकि मैं इस दुनिया का नहीं हूँ। 24 मैं तुमको
बता चुका हूँ कि तुम अपने गुनाहों में मर जाओगे।
क्योंकि अगर तुम ईमान नहीं लाते कि मैं वही हूँ
तो तुम यक़ीनन अपने गुनाहों में मर जाओगे।”
25 उन्होंने सवाल किया, “आप कौन हैं?”
ईसा ने जवाब दिया, “मैं वही हूँ जो मैं शुरू
से ही बताता आया हूँ। 26 मैं तुम्हारे बारे में बहुत
कुछ कह सकता हूँ। बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनकी
बिना पर मैं तुमको मुजरिम ठहरा सकता हूँ।
लेकिन जिसने मुझे भेजा है वही सच्चा और
मोतबर है और मैं दुनिया को सिर्फ़ वह कुछ सुनाता
हूँ जो मैंने उससे सुना है।”
27 सुननेवाले न समझे कि ईसा बाप का ज़िक्र
कर रहा है। 28 चुनाँचे उसने कहा, “जब तुम इब्ने-
आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तब ही तुम जान लोगे
कि मैं वही हूँ, कि मैं अपनी तरफ़ से कुछ नहीं
करता बल्कि सिर्फ़ वही सुनाता हूँ जो बाप ने मुझे
सिखाया है। 29 और जिसने मुझे भेजा है वह मेरे
साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं
हर वक़्त वही कुछ करता हूँ जो उसे पसंद आता
है।”

30 यह बातें सुनकर बहुत-से लोग उस पर
ईमान लाए।

सच्चाई तुमको आज़ाद करेगी

31 जो यहूदी उसका यक़ीन करते थे ईसा अब
उनसे हमकलाम हुआ, “अगर तुम मेरी तालीम
के ताबे रहोगे तब ही तुम मेरे सच्चे शागिर्द होगे।
32 फिर तुम सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई
तुमको आज़ाद कर देगी।”

33 उन्होंने एतराज़ किया, “हम तो इब्राहीम की
औलाद हैं, हम कभी भी किसी के ग़ुलाम नहीं
रहे। फिर आप किस तरह कह सकते हैं कि हम
आज़ाद हो जाएंगे?”

34 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता
हूँ कि जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का
ग़ुलाम है। 35 ग़ुलाम तो आरिज़ी तौर पर घर में
रहता है, लेकिन मालिक का बेटा हमेशा तक।
36 इसलिए अगर फ़रज़ंद तुमको आज़ाद करे तो
तुम हक़ीक़तन आज़ाद होगे। 37 मुझे मालूम है
कि तुम इब्राहीम की औलाद हो। लेकिन तुम मुझे
क़त्ल करने के दरपै हो, क्योंकि तुम्हारे अंदर मेरे
पैग़ाम के लिए गुंजाइश नहीं है। 38 मैं तुमको वही
कुछ बताता हूँ जो मैंने बाप के हाँ देखा है, जबकि
तुम वही कुछ सुनाते हो जो तुमने अपने बाप से
सुना है।”

39 उन्होंने कहा, “हमारा बाप इब्राहीम है।”
ईसा ने जवाब दिया, “अगर तुम इब्राहीम की
औलाद होते तो तुम उसके नमूने पर चलते।
40 इसके बजाए तुम मुझे क़त्ल करने की तलाश
में हो, इसलिए कि मैंने तुमको वही सच्चाई सुनाई
है जो मैंने अल्लाह के हुज़ूर सुनी है। इब्राहीम ने
कभी भी इस क़िस्म का काम न किया। 41 नहीं,
तुम अपने बाप का काम कर रहे हो।”

उन्होंने एतराज़ किया, “हम हरामज़ादे नहीं हैं।
अल्लाह ही हमारा वाहिद बाप है।”

42 ईसा ने उनसे कहा, “अगर अल्लाह तुम्हारा
बाप होता तो तुम मुझसे मुहब्बत रखते, क्योंकि
मैं अल्लाह में से निकल आया हूँ। मैं अपनी तरफ़
से नहीं आया बल्कि उसी ने मुझे भेजा है। 43 तुम
मेरी ज़बान क्यों नहीं समझते? इसलिए कि तुम
मेरी बात सुन नहीं सकते। 44 तुम अपने बाप
इबलीस से हो और अपने बाप की ख़ाहिशों पर
अमल करने के ख़ाहाँ रहते हो। वह शुरू ही से
क़ातिल है और सच्चाई पर क़ायम न रहा, क्योंकि
उसमें सच्चाई है नहीं। जब वह झूट बोलता है तो
यह फ़ितरी बात है, क्योंकि वह झूट बोलनेवाला
और झूट का बाप है। 45 लेकिन मैं सच्ची बातें
सुनाता हूँ और यही वजह है कि तुमको मुझ पर
यक़ीन नहीं आता। 46 क्या तुममें से कोई साबित
कर सकता है कि मुझसे कोई गुनाह सरज़द हुआ
है? मैं तो तुमको हक़ीक़त बता रहा हूँ। फिर
तुमको मुझ पर यक़ीन क्यों नहीं आता? 47 जो
अल्लाह से है वह अल्लाह की बातें सुनता है। तुम
यह इसलिए नहीं सुनते कि तुम अल्लाह से नहीं
हो।”

ईसा और इब्राहीम

48 यहूदियों ने जवाब दिया, “क्या हमने ठीक
नहीं कहा कि तुम सामरी हो और किसी बदरूह
के क़ब्ज़े में हो?”

49 ईसा ने कहा, “मैं बदरूह के क़ब्ज़े में नहीं
हूँ बल्कि अपने बाप की इज़्ज़त करता हूँ जबकि
तुम मेरी बेइज़्ज़ती करते हो। 50 मैं ख़ुद अपनी
इज़्ज़त का ख़ाहाँ नहीं हूँ। लेकिन एक है जो
मेरी इज़्ज़त और जलाल का ख़याल रखता और
इनसाफ़ करता है। 51 मैं तुमको सच बताता हूँ कि
जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह मौत
को कभी नहीं देखेगा।”

52 यह सुनकर लोगों ने कहा, “अब हमें पता
चल गया है कि तुम किसी बदरूह के क़ब्ज़े में हो।
इब्राहीम और नबी सब इंतक़ाल कर गए जबकि
तुम दावा करते हो, ‘जो भी मेरे कलाम पर अमल
करता रहे वह मौत का मज़ा कभी नहीं चखेगा।’
53 क्या तुम हमारे बाप इब्राहीम से बड़े हो? वह
मर गया, और नबी भी मर गए। तुम अपने आपको
क्या समझते हो?”

54 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं अपनी
इज़्ज़त और जलाल बढ़ाता तो मेरा जलाल
बातिल होता। लेकिन मेरा बाप ही मेरी इज़्ज़तो-
जलाल बढ़ाता है, वही जिसके बारे में तुम दावा
करते हो कि ‘वह हमारा ख़ुदा है।’ 55 लेकिन
हक़ीक़त में तुमने उसे नहीं जाना जबकि मैं उसे
जानता हूँ। अगर मैं कहता कि मैं उसे नहीं जानता
तो मैं तुम्हारी तरह झूटा होता। लेकिन मैं उसे
जानता और उसके कलाम पर अमल करता हूँ।
56 तुम्हारे बाप इब्राहीम ने ख़ुशी मनाई जब उसे
मालूम हुआ कि वह मेरी आमद का दिन देखेगा,
और वह उसे देखकर मसरूर हुआ।”

57 यहूदियों ने एतराज़ किया, “तुम्हारी उम्र तो
अभी पचास साल भी नहीं, तो फिर तुम किस
तरह कह सकते हो कि तुमने इब्राहीम को देखा
है?”

58 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता
हूँ, इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर ‘मैं हूँ’।”

59 इस पर लोग उसे संगसार करने के लिए
पत्थर उठाने लगे। लेकिन ईसा ग़ायब होकर
बैतुल-मुक़द्दस से निकल गया।

अंधे की शफ़ा

9 चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा
जो पैदाइश का अंधा था। 2 उसके शागिर्दों
ने उससे पूछा, “उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यों
पैदा हुआ? क्या इसका कोई गुनाह है या इसके
वालिदैन का?”

3 ईसा ने जवाब दिया, “न इसका कोई गुनाह
है और न इसके वालिदैन का। यह इसलिए हुआ
कि इसकी ज़िंदगी में अल्लाह का काम ज़ाहिर हो
जाए। 4 अभी दिन है। लाज़िम है कि हम जितनी
देर तक दिन है उसका काम करते रहें जिसने मुझे
भेजा है। क्योंकि रात आनेवाली है, उस वक़्त
कोई काम नहीं कर सकेगा। 5 लेकिन जितनी देर
तक मैं दुनिया में हूँ उतनी देर तक मैं दुनिया का
नूर हूँ।”

6 यह कहकर उसने ज़मीन पर थूककर मिट्टी
सानी और उस की आँखों पर लगा दी। 7 उसने
उससे कहा, “जा, शिलोख़ के हौज़ में नहा ले।”
(शिलोख़ का मतलब ‘भेजा हुआ’ है।) अंधे ने
जाकर नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख
सकता था।

8 उसके हमसाये और वह जिन्होंने पहले उसे
भीक माँगते देखा था पूछने लगे, “क्या यह वही
नहीं जो बैठा भीक माँगा करता था?”

9 बाज़ ने कहा, “हाँ, वही है।”

औरों ने इनकार किया, “नहीं, यह सिर्फ़ उसका
हमशक्ल है।”

लेकिन आदमी ने ख़ुद इसरार किया, “मैं वही
हूँ।”

10 उन्होंने उससे सवाल किया, “तेरी आँखें
किस तरह बहाल हुईं?”

11 उसने जवाब दिया, “वह आदमी जो ईसा
कहलाता है उसने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर
लगा दी। फिर उसने मुझे कहा, ‘शिलोख़ के हौज़
पर जा और नहा ले।’ मैं वहाँ गया और नहाते ही
मेरी आँखें बहाल हो गईं।”

12 उन्होंने पूछा, “वह कहाँ है?”

उसने जवाब दिया, “मुझे नहीं मालूम।”

फ़रीसी शफ़ा की तफ़तीश करते हैं

13 तब वह शफ़ायाब अंधे को फ़रीसियों के
पास ले गए। 14 जिस दिन ईसा ने मिट्टी सानकर
उस की आँखों को बहाल किया था वह सबत का
दिन था। 15 इसलिए फ़रीसियों ने भी उससे पूछ-
गछ की कि उसे किस तरह बसारत मिल गई।
आदमी ने जवाब दिया, “उसने मेरी आँखों पर
मिट्टी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख
सकता हूँ।”

16 फ़रीसियों में से बाज़ ने कहा, “यह शख़्स
अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के
दिन काम करता है।”

दूसरों ने एतराज़ किया, “गुनाहगार इस क़िस्म
के इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?”
यों उनमें फूट पड़ गई।
17 फिर वह दुबारा उस आदमी से मुख़ातिब हुए
जो पहले अंधा था, “तू ख़ुद इसके बारे में क्या
कहता है? उसने तो तेरी ही आँखों को बहाल
किया है।”
उसने जवाब दिया, “वह नबी है।”
18 यहूदियों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि
वह वाक़ई अंधा था और फिर बहाल हो गया
है। इसलिए उन्होंने उसके वालिदैन को बुलाया।
19 उन्होंने उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है,
वही जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा
पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता
है?”
20 उसके वालिदैन ने जवाब दिया, “हम जानते
हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते
वक़्त अंधा था। 21 लेकिन हमें मालूम नहीं कि
अब यह किस तरह देख सकता है या कि किसने
इसकी आँखों को बहाल किया है। इससे ख़ुद पता
करें, यह बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता
सकता है।” 22 उसके वालिदैन ने यह इसलिए
कहा कि वह यहूदियों से डरते थे। क्योंकि वह
फ़ैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा को मसीह
क़रार दे उसे यहूदी जमात से निकाल दिया जाए।
23 यही वजह थी कि उसके वालिदैन ने कहा था,
“यह बालिग़ है, इससे ख़ुद पूछ लें।”
24 एक बार फिर उन्होंने शफ़ायाब अंधे को
बुलाया, “अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते
हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।”
25 आदमी ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता है
कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं
जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख
सकता हूँ!”
26 फिर उन्होंने उससे सवाल किया, “उसने तेरे
साथ क्या किया? उसने किस तरह तेरी आँखों
को बहाल कर दिया?”
27 उसने जवाब दिया, “मैं पहले भी आपको
बता चुका हूँ और आपने सुना नहीं। क्या आप भी
उसके शागिर्द बनना चाहते हैं?”
28 इस पर उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, “तू ही
उसका शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं।
29 हम तो जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से बात
की है, लेकिन इसके बारे में हम यह भी नहीं जानते
कि वह कहाँ से आया है।”
30 आदमी ने जवाब दिया, “अजीब बात है,
उसने मेरी आँखों को शफ़ा दी है और फिर भी
आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है। 31 हम जानते
हैं कि अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो
उस की सुनता है जो उसका ख़ौफ़ मानता और
उस की मरज़ी के मुताबिक़ चलता है। 32 इब्तिदा
ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने
पैदाइशी अंधे की आँखों को बहाल कर दिया हो।
33 अगर यह आदमी अल्लाह की तरफ़ से न होता
तो कुछ न कर सकता।”
34 जवाब में उन्होंने उसे बताया, “तू जो
गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा
उस्ताद बनना चाहता है?” यह कहकर उन्होंने
उसे जमात में से निकाल दिया।

रूहानी अंधापन

35 जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल
दिया गया है तो वह उसको मिला और पूछा,
“क्या तू इब्ने-आदम पर ईमान रखता है?”
36 उसने कहा, “ख़ुदावंद, वह कौन है? मुझे
बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।”
37 ईसा ने जवाब दिया, “तूने उसे देख लिया है
बल्कि वह तुझसे बात कर रहा है।”
38 उसने कहा, “ख़ुदावंद, मैं ईमान रखता हूँ”
और उसे सिजदा किया।
39 ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए
इस दुनिया में आया हूँ, इसलिए कि अंधे देखें
और देखनेवाले अंधे हो जाएँ।”
40 कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ
सुनकर पूछने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?”

41 ईसा ने उनसे कहा, “अगर तुम अंधे होते
तो तुम क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि
तुम दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इसलिए
तुम्हारा गुनाह क़ायम रहता है।

चरवाहे की तमसील

10 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो
दरवाज़े से भेड़ों के बाड़े में दाख़िल
नहीं होता बल्कि फलाँगकर अंदर घुस आता
है वह चोर और डाकू है। 2 लेकिन जो दरवाज़े
से दाख़िल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है।
3 चौकीदार उसके लिए दरवाज़ा खोल देता है और
भेड़ें उस की आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर एक
भेड़ का नाम लेकर उन्हें बुलाता और बाहर ले
जाता है। 4 अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने
के बाद वह उनके आगे आगे चलने लगता है
और भेड़ें उसके पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्योंकि
वह उस की आवाज़ पहचानती हैं। 5 लेकिन वह
किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी बल्कि उससे
भाग जाएँगी, क्योंकि वह उस की आवाज़ नहीं
पहचानतीं।”

6 ईसा ने उन्हें यह तमसील पेश की, लेकिन वह
न समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है।

अच्छा चरवाहा

7 इसलिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा,
“मैं तुमको सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए
दरवाज़ा मैं हूँ। 8 जितने भी मुझसे पहले आए वह
चोर और डाकू हैं। लेकिन भेड़ों ने उनकी न सुनी।
9 मैं ही दरवाज़ा हूँ। जो भी मेरे ज़रीए अंदर आए
उसे नजात मिलेगी। वह आता जाता और हरी
चरागाहें पाता रहेगा। 10 चोर तो सिर्फ़ चोरी करने,
ज़बह करने और तबाह करने आता है। लेकिन
मैं इसलिए आया हूँ कि वह ज़िंदगी पाएँ, बल्कि
कसरत की ज़िंदगी पाएँ।

11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी
भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। 12 मज़दूर
चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्योंकि भेड़ें
उस की अपनी नहीं होतीं। इसलिए ज्योंही कोई
भेड़िया आता है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों
को छोड़कर भाग जाता है। नतीजे में भेड़िया कुछ
भेड़ें पकड़ लेता और बाक़ियों को मुंतशिर कर
देता है। 13 वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और
भेड़ों की फ़िकर नहीं करता। 14 अच्छा चरवाहा
मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वह मुझे
जानती हैं, 15 बिलकुल उसी तरह जिस तरह बाप
मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और
मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ। 16 मेरी और
भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। लाज़िम है कि
उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी।
फिर एक ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा।

17 मेरा बाप मुझे इसलिए प्यार करता है कि
मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ।
18 कोई मेरी जान मुझसे छीन नहीं सकता बल्कि
मैं उसे अपनी मरज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने
का इख़्तियार है और उसे वापस लेने का भी। यह
हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ़ से मिला है।”

19 इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फूट पड़ गई।
20 बहुतों ने कहा, “यह बदरूह की गिरिफ़्त में है,
यह दीवाना है। इसकी क्यों सुनें!”

21 लेकिन औरों ने कहा, “यह ऐसी बातें नहीं हैं
जो बदरूह-गिरिफ़्ता शख़्स कर सके। क्या बदरूहें
अंधों की आँखें बहाल कर सकती हैं?”

ईसा को रद्द किया जाता है

22 सर्दियों का मौसम था और ईसा बैतुल-
मुक़द्दस की मख़सूसियत की ईद बनाम हनूका के
दौरान यरूशलम में था। 23 वह बैतुल-मुक़द्दस के
उस बरामदे में फिर रहा था जिसका नाम सुलेमान
का बरामदा था। 24 यहूदी उसे घेरकर कहने लगे,
“आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप
मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।”

25 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको बता चुका
हूँ, लेकिन तुमको यक़ीन नहीं आया। जो काम
मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह
हैं। 26 लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम

मेरी भेड़ें नहीं हो। 27 मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती
हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती
हैं। 28 मैं उन्हें अबदी ज़िंदगी देता हूँ, इसलिए वह
कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से
छीन न लेगा, 29 क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सुपुर्द
किया है और वही सबसे बड़ा है। कोई उन्हें बाप
के हाथ से छीन नहीं सकता। 30 मैं और बाप एक
हैं।”

31 यह सुनकर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे
ताकि ईसा को संगसार करें। 32 उसने उनसे कहा,
“मैंने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई इलाही निशान
दिखाए हैं। तुम मुझे इनमें से किस निशान की
वजह से संगसार कर रहे हो?”

33 यहूदियों ने जवाब दिया, “हम तुमको किसी
अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे
बल्कि कुफ़र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़
इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो।”

34 ईसा ने कहा, “क्या यह तुम्हारी शरीअत में
नहीं लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया, ‘तुम ख़ुदा
हो’? 35 उन्हें ‘ख़ुदा’ कहा गया जिन तक अल्लाह
का यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं
कि कलामे-मुक़द्दस को मनसूख़ नहीं किया जा
सकता। 36 तो फिर तुम कुफ़र बकने की बात
क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं अल्लाह का
फ़रज़ंद हूँ? आख़िर बाप ने ख़ुद मुझे मख़सूस
करके दुनिया में भेजा है। 37 अगर मैं अपने बाप
के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो। 38 लेकिन
अगर उसके काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो,
लेकिन कम अज़ कम उन कामों की गवाही तो
मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे
कि बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ।”

39 एक बार फिर उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने
की कोशिश की, लेकिन वह उनके हाथ से निकल
गया।

40 फिर ईसा दुबारा दरियाए-यरदन के पार उस
जगह चला गया जहाँ यहया शुरू में बपतिस्मा
दिया करता था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा। 41 बहुत-
से लोग उसके पास आते रहे। उन्होंने कहा,
“यहया ने कभी कोई इलाही निशान न दिखाया,
लेकिन जो कुछ उसने इसके बारे में बयान किया,
वह बिलकुल सहीह निकला।” 42 और वहाँ बहुत-
से लोग ईसा पर ईमान लाए।

लाज़र की मौत

11 उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़
गया जिसका नाम लाज़र था। वह
अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत-
अनियाह में रहता था। 2 यह वही मरियम थी
जिसने बाद में ख़ुदावंद पर ख़ुशबू उंडेलकर उसके
पाँव अपने बालों से ख़ुश्क किए थे। उसी का
भाई लाज़र बीमार था। 3 चुनाँचे बहनों ने ईसा
को इत्तला दी, “ख़ुदावंद, जिसे आप प्यार करते
हैं वह बीमार है।”

4 जब ईसा को यह ख़बर मिली तो उसने कहा,
“इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है, बल्कि यह
अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इससे
अल्लाह के फ़रज़ंद को जलाल मिले।”

5 ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत
रखता था। 6 तो भी वह लाज़र के बारे में इत्तला
मिलने के बाद दो दिन और वहीं ठहरा। 7 फिर
उसने अपने शागिर्दों से बात की, “आओ, हम
दुबारा यहूदिया चले जाएँ।”

8 शागिर्दों ने एतराज़ किया, “उस्ताद, अभी
अभी वहाँ के यहूदी आपको संगसार करने की
कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना
चाहते हैं?”

9 ईसा ने जवाब दिया, “क्या दिन में रौशनी के
बारह घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त
चलता-फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं
टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनिया की रौशनी के
ज़रीए देख सकता है। 10 लेकिन जो रात के वक़्त
चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि
उसके पास रौशनी नहीं है।” 11 फिर उसने कहा,
“हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जाकर
उसे जगा दूँगा।”

12 शागिर्दों ने कहा, “ख़ुदावंद, अगर वह सो
रहा है तो वह बच जाएगा।”

13 उनका ख़याल था कि ईसा लाज़र की
फ़ितरी नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हक़ीक़त
में वह उस की मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था।
14 इसलिए उसने उन्हें साफ़ बता दिया, “लाज़र
वफ़ात पा गया है। 15 और तुम्हारी ख़ातिर मैं ख़ुश
हूँ कि मैं उसके मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि
अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उसके पास
जाएँ।”

16 तोमा ने जिसका लक़ब जुड़वाँ था अपने
साथी शागिर्दों से कहा, “चलो, हम भी वहाँ
जाकर उसके साथ मर जाएँ।”

ईसा क़ियामत और ज़िंदगी है

17 वहाँ पहुँचकर ईसा को मालूम हुआ कि
लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं।
18 बैत-अनियाह का यरूशलम से फ़ासला तीन
किलोमीटर से कम था, 19 और बहुत-से यहूदी
मर्था और मरियम को उनके भाई के बारे में
तसल्ली देने के लिए आए हुए थे।

20 यह सुनकर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे
मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही।
21 मर्था ने कहा, “ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते
तो मेरा भाई न मरता। 22 लेकिन मैं जानती हूँ कि
अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा।”

23 ईसा ने उसे बताया, “तेरा भाई जी उठेगा।”

24 मर्था ने जवाब दिया, “जी, मुझे मालूम है
कि वह क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी
उठेंगे।”

25 ईसा ने उसे बताया, “क़ियामत और ज़िंदगी
तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा,
चाहे वह मर भी जाए। 26 और जो ज़िंदा है और
मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा।
मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?”

27 मर्था ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, मैं ईमान
रखती हूँ कि आप ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं, जिसे
दुनिया में आना था।”

ईसा रोता है

28 यह कहकर मर्था वापस चली गई और चुपके
से मरियम को बुलाया, “उस्ताद आ गए हैं, वह
तुझे बुला रहे हैं।” 29 यह सुनते ही मरियम उठकर
ईसा के पास गई। 30 वह अभी गाँव के बाहर उसी
जगह ठहरा था जहाँ उस की मुलाक़ात मर्था से
हुई थी। 31 जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे
उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि वह
जल्दी से उठकर निकल गई है तो वह उसके पीछे
हो लिए। क्योंकि वह समझ रहे थे कि वह मातम
करने के लिए अपने भाई की क़ब्र पर जा रही है।

32 मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते
ही वह उसके पाँवों में गिर गई और कहने लगी,
“ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न
मरता।”

33 जब ईसा ने मरियम और उसके साथियों को
रोते देखा तो उसे बड़ी रंजिश हुई। मुज़तरिब हालत
में 34 उसने पूछा, “तुमने उसे कहाँ रखा है?”

उन्होंने जवाब दिया, “आएँ ख़ुदावंद, और देख
लें।”

35 ईसा रो पड़ा। 36 यहूदियों ने कहा, “देखो,
वह उसे कितना अज़ीज़ था।”

37 लेकिन उनमें से बाज़ ने कहा, “इस आदमी
ने अंधे को शफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से
नहीं बचा सकता था?”

लाज़र को ज़िंदा कर दिया जाता है

38 फिर ईसा दुबारा निहायत रंजीदा होकर क़ब्र
पर आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिसके मुँह पर पत्थर
रखा गया था। 39 ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा
दो।”

लेकिन मरहूम की बहन मर्था ने एतराज़ किया,
“ख़ुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े
चार दिन हो गए हैं।”

40 ईसा ने उससे कहा, “क्या मैंने तुझे नहीं
बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का
जलाल देखेगी?” 41 चुनाँचे उन्होंने पत्थर को
हटा दिया। फिर ईसा ने अपनी नज़र उठाकर

कहा, “ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मेरी
सुन ली है। 42 मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी
सुनता है। लेकिन मैंने यह बात पास खड़े लोगों
की ख़ातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तूने
मुझे भेजा है।” 43 फिर ईसा ज़ोर से पुकार उठा,
“लाज़र, निकल आ!” 44 और मुरदा निकल
आया। अभी तक उसके हाथ और पाँव पट्टियों से
बँधे हुए थे जबकि उसका चेहरा कपड़े में लिपटा
हुआ था। ईसा ने उनसे कहा, “इसके कफ़न को
खोलकर इसे जाने दो।”

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदी

45 उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए
थे बहुत-से ईसा पर ईमान लाए जब उन्होंने वह
देखा जो उसने किया। 46 लेकिन बाज़ फ़रीसियों
के पास गए और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या
किया है। 47 तब राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने
यहूदी अदालते-आलिया का इजलास मुनअक़िद
किया। उन्होंने एक दूसरे से पूछा, “हम क्या
कर रहे हैं? यह आदमी बहुत-से इलाही निशान
दिखा रहा है। 48 अगर हम उसे खुला छोड़ें तो
आख़िरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर
रोमी आकर हमारे बैतुल-मुक़द्दस और हमारे मुल्क
को तबाह कर देंगे।”

49 उनमें से एक कायफ़ा था जो उस साल
इमामे-आज़म था। उसने कहा, “आप कुछ नहीं
समझते 50 और इसका ख़याल भी नहीं करते कि
इससे पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर
यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।”
51 उसने यह बात अपनी तरफ़ से नहीं की थी।
उस साल के इमामे-आज़म की हैसियत से ही
उसने यह पेशगोई की कि ईसा यहूदी क़ौम के
लिए मरेगा। 52 और न सिर्फ़ इसके लिए बल्कि
अल्लाह के बिखरे हुए फ़रज़ंदों को जमा करके
एक करने के लिए भी।

53 उस दिन से उन्होंने ईसा को क़त्ल करने
का इरादा कर लिया। 54 इसलिए उसने अब से
अलानिया यहूदियों के दरमियान वक़्त न गुज़ारा,
बल्कि उस जगह को छोड़कर रेगिस्तान के क़रीब
एक इलाक़े में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत
एक गाँव बनाम इफ़राईम में रहने लगा।

55 फिर यहूदियों की ईदे-फ़सह क़रीब आ
गई। देहात से बहुत-से लोग अपने आपको पाक
करवाने के लिए ईद से पहले पहले यरूशलम
पहुँचे। 56 वहाँ वह ईसा का पता करते और बैतुल-
मुक़द्दस में खड़े आपस में बात करते रहे, “क्या
ख़याल है? क्या वह तहवार पर नहीं आएगा?”
57 लेकिन राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने हुक्म
दिया था, “अगर किसी को मालूम हो जाए कि
ईसा कहाँ है तो वह इत्तला दे ताकि हम उसे
गिरिफ़्तार कर लें।”

ईसा को बैत-अनियाह में मसह किया जाता है

12 फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी
थे कि ईसा बैत-अनियाह पहुँचा। यह
वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे
ईसा ने मुरदों में से ज़िंदा किया था। 2 वहाँ
उसके लिए एक ख़ास खाना बनाया गया। मर्था
खानेवालों की ख़िदमत कर रही थी जबकि लाज़र
ईसा और बाक़ी मेहमानों के साथ खाने में शरीक
था। 3 फिर मरियम ने आधा लिटर ख़ालिस
जटामासी का निहायत क़ीमती इत्र लेकर ईसा
के पाँवों पर उंडेल दिया और उन्हें अपने बालों से
पोंछकर ख़ुश्क किया। ख़ुशबू पूरे घर में फैल गई।
4 लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ने
एतराज़ किया (बाद में उसी ने ईसा को दुश्मन
के हवाले कर दिया)। उसने कहा, 5 “इस इत्र
की क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यों
नहीं बेचा गया ताकि इसके पैसे ग़रीबों को दिए
जाते?” 6 उसने यह बात इसलिए नहीं की कि
उसे ग़रीबों की फ़िकर थी। असल में वह चोर था।
वह शागिर्दों का ख़ज़ानची था और जमाशुदा पैसों
में से बददियानती करता रहता था।

7 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे छोड़ दे! उसने
मेरी तदफ़ीन की तैयारी के लिए यह किया है।

8 ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं
हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।”

लाज़र के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदी

9 इतने में यहूदियों की बड़ी तादाद को मालूम
हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा से मिलने
के लिए आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उसने
मुरदों में से ज़िंदा किया था। 10 इसलिए राहनुमा
इमामों ने लाज़र को भी क़त्ल करने का मनसूबा
बनाया। 11 क्योंकि उस की वजह से बहुत-से
यहूदी उनमें से चले गए और ईसा पर ईमान ले
आए थे।

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

12 अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को
पता चला कि ईसा यरूशलम आ रहा है। एक
बड़ा हुजूम 13 खजूर की डालियाँ पकड़े शहर से
निकलकर उससे मिलने आया। चलते चलते वह
चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

“होशाना![a]
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!
इसराईल का बादशाह मुबारक है!”

14 ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया
और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलामे-
मुक़द्दस में लिखा है,

15 “ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!
देख, तेरा बादशाह
गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।”

16 उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की
समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने
जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों
ने उसके साथ यह कुछ किया था और वह समझ
गए कि कलामे-मुक़द्दस में इसका ज़िक्र भी है।
17 जो हुजूम उस वक़्त ईसा के साथ था जब
उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था, वह
दूसरों को इसके बारे में बताता रहा था। 18 इसी
वजह से इतने लोग ईसा से मिलने के लिए आए
थे, उन्होंने उसके इस इलाही निशान के बारे में
सुना था। 19 यह देखकर फ़रीसी आपस में कहने
लगे, “आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही।
देखो, तमाम दुनिया उसके पीछे हो ली है।”

कुछ यूनानी ईसा को तलाश करते हैं

20 कुछ यूनानी भी उनमें थे जो फ़सह की ईद
के मौक़े पर परस्तिश करने के लिए आए हुए थे।
21 अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील
के बैत-सैदा से था। उन्होंने कहा, “जनाब, हम
ईसा से मिलना चाहते हैं।”
22 फ़िलिप्पुस ने अंदरियास को यह बात बताई
और फिर वह मिलकर ईसा के पास गए और उसे
यह ख़बर पहुँचाई। 23 लेकिन ईसा ने जवाब दिया,
“अब वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल
मिले। 24 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब तक
गंदुम का दाना ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह
अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है
तो बहुत-सा फल लाता है। 25 जो अपनी जान
को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो
इस दुनिया में अपनी जान से दुश्मनी रखता है
वह उसे अबद तक महफ़ूज़ रखेगा। 26 अगर कोई
मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले,
क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा। और
जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उस की इज़्ज़त
करेगा।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

27 अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ?
क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए
रख’? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। 28 ऐ बाप,
अपने नाम को जलाल दे।”

तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “मैं
उसे जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल
दूँगा।”

---

[a] होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

29 हुजूम के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने
यह सुनकर कहा, “बादल गरज रहे हैं।” औरों
ने ख़याल पेश किया, “कोई फ़रिश्ता उससे
हमकलाम हुआ है।”
30 ईसा ने उन्हें बताया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते
नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। 31 अब दुनिया की
अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया
के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा। 32 और
मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद
सबको अपने पास खींच लूँगा।” 33 इन अलफ़ाज़
से उसने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस
तरह की मौत मरेगा।
34 हुजूम बोल उठा, “कलामे-मुक़द्दस से हमने
सुना है कि मसीह अबद तक क़ायम रहेगा। तो
फिर आपकी यह कैसी बात है कि इब्ने-आदम को
ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आख़िर इब्ने-आदम है
कौन?”
35 ईसा ने जवाब दिया, “नूर थोड़ी देर और
तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस
नूर में चलते रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न
जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि
वह कहाँ जा रहा है। 36 नूर के तुम्हारे पास से चले
जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि
तुम नूर के फ़रज़ंद बन जाओ।”

लोग ईमान नहीं रखते

यह कहने के बाद ईसा चला गया और ग़ायब हो
गया। 37 अगरचे ईसा ने यह तमाम इलाही निशान
उनके सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान
न लाए। 38 यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

“ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया?
और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई?”

39 चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह
यसायाह नबी ने कहीं और फ़रमाया है,

40 “अल्लाह ने उनकी आँखों को अंधा
और उनके दिल को बेहिस कर दिया है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।”

41 यसायाह ने यह इसलिए फ़रमाया क्यों-
कि उसने ईसा का जलाल देखकर उसके बारे में
बात की।
42 तो भी बहुत-से लोग ईसा पर ईमान रखते
थे। उनमें कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह
इसका अलानिया इक़रार नहीं करते थे, क्योंकि
वह डरते थे कि फ़रीसी हमें यहूदी जमात से
ख़ारिज कर देंगे। 43 असल में वह अल्लाह की
इज़्ज़त की निसबत इनसान की इज़्ज़त को ज़्यादा
अज़ीज़ रखते थे।

ईसा का कलाम लोगों की अदालत करेगा

44 फिर ईसा पुकार उठा, “जो मुझ पर ईमान
रखता है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान
रखता है जिसने मुझे भेजा है। 45 और जो मुझे
देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है।
46 मैं नूर की हैसियत से इस दुनिया में आया हूँ
ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में
न रहे। 47 जो मेरी बातें सुनकर उन पर अमल नहीं
करता मैं उस की अदालत नहीं करूँगा, क्योंकि
मैं दुनिया की अदालत करने के लिए नहीं आया
बल्कि उसे नजात देने के लिए। 48 तो भी एक
है जो उस की अदालत करता है। जो मुझे रद्द
करके मेरी बातें क़बूल नहीं करता मेरा पेश किया
गया कलाम ही क़ियामत के दिन उस की अदालत
करेगा। 49 क्योंकि जो कुछ मैंने बयान किया है
वह मेरी तरफ़ से नहीं है। मेरे भेजनेवाले बाप ही ने
मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना
है। 50 और मैं जानता हूँ कि उसका हुक्म अबदी
ज़िंदगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं सुनाता
हूँ वही कुछ है जो बाप ने मुझे बताया है।”

ईसा अपने शागिर्दों के पाँव धोता है

13 फ़सह की ईद अब शुरू होनेवाली थी।
ईसा जानता था कि वह वक़्त आ गया
है कि मुझे इस दुनिया को छोड़कर बाप के पास

जाना है। गो उसने हमेशा दुनिया में अपने लोगों से
मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उसने आख़िरी हद
तक उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया।
2 फिर शाम का खाना तैयार हुआ। उस वक़्त
इबलीस शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के
दिल में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का इरादा
डाल चुका था। 3 ईसा जानता था कि बाप ने सब
कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है और कि मैं अल्लाह
में से निकल आया और अब उसके पास वापस
जा रहा हूँ। 4 चुनाँचे उसने दस्तरख़ान से उठकर
अपना लिबास उतार दिया और कमर पर तौलिया
बाँध लिया। 5 फिर वह बासन में पानी डालकर
शागिर्दों के पाँव धोने और बँधे हुए तौलिये से
पोंछकर ख़ुश्क करने लगा। 6 जब पतरस की बारी
आई तो उसने कहा, “ख़ुदावंद, आप मेरे पाँव
धोना चाहते हैं?”
7 ईसा ने जवाब दिया, “इस वक़्त तू नहीं
समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में
यह तेरी समझ में आ जाएगा।”
8 पतरस ने एतराज़ किया, “मैं कभी भी
आपको मेरे पाँव धोने नहीं दूँगा!”
ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं तुझे न धोऊँ तो
मेरे साथ तेरा कोई हिस्सा नहीं होगा।”
9 यह सुनकर पतरस ने कहा, “तो फिर
ख़ुदावंद, न सिर्फ़ मेरे पाँवों बल्कि मेरे हाथों और
सर को भी धोएँ!”
10 ईसा ने जवाब दिया, “जिस शख़्स ने नहा
लिया है उसे सिर्फ़ अपने पाँवों को धोने की ज़रूरत
होती है, क्योंकि वह पूरे तौर पर पाक-साफ़ है।
तुम पाक-साफ़ हो, लेकिन सबके सब नहीं।”
11 (ईसा को मालूम था कि कौन उसे दुश्मन के
हवाले करेगा। इसलिए उसने कहा कि सबके सब
पाक-साफ़ नहीं हैं।)
12 उन सबके पाँव धोने के बाद ईसा दुबारा
अपना लिबास पहनकर बैठ गया। उसने सवाल
किया, “क्या तुम समझते हो कि मैंने तुम्हारे
लिए क्या किया है? 13 तुम मुझे ‘उस्ताद’ और
‘ख़ुदावंद’ कहकर मुख़ातिब करते हो और यह
सहीह है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ। 14 मैं, तुम्हारे
ख़ुदावंद और उस्ताद ने तुम्हारे पाँव धोए। इसलिए
अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है कि एक दूसरे के पाँव धोया
करो। 15 मैंने तुमको एक नमूना दिया है ताकि तुम
भी वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया है। 16 मैं
तुमको सच बताता हूँ कि ग़ुलाम अपने मालिक
से बड़ा नहीं होता, न पैग़ंबर अपने भेजनेवाले से।
17 अगर तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी
करो, फिर ही तुम मुबारक होगे।
18 मैं तुम सबकी बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने
चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलामे-
मुक़द्दस की उस बात का पूरा होना ज़रूर है, ‘जो
मेरी रोटी खाता है उसने मुझ पर लात उठाई है।’
19 मैं तुमको इससे पहले कि वह पेश आए यह
अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो
तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ। 20 मैं तुमको सच
बताता हूँ कि जो शख़्स उसे क़बूल करता है जिसे
मैंने भेजा है वह मुझे क़बूल करता है। और जो मुझे
क़बूल करता है वह उसे क़बूल करता है जिसने
मुझे भेजा है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले किया जाता है

21 इन अलफ़ाज़ के बाद ईसा निहायत
मुज़तरिब हुआ और कहा, “मैं तुमको सच बताता
हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर
देगा।”
22 शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देखकर
सोचने लगे कि ईसा किसकी बात कर रहा है।
23 एक शागिर्द जिसे ईसा प्यार करता था उसके
क़रीबतरीन बैठा था। 24 पतरस ने उसे इशारा
किया कि वह उससे दरियाफ़्त करे कि वह
किसकी बात कर रहा है।
25 उस शागिर्द ने ईसा की तरफ़ सर झुकाकर
पूछा, “ख़ुदावंद, यह कौन है?”
26 ईसा ने जवाब दिया, “जिसे मैं रोटी का
लुक़मा शोर्बे में डुबोकर दूँ, वही है।” फिर लुक़मे
को डुबोकर उसने शमाऊन इस्करियोती के बेटे
यहूदाह को दे दिया। 27 ज्योंही यहूदाह ने यह

लुक़्मा ले लिया इबलीस उसमें समा गया। ईसा
ने उसे बताया, “जो कुछ करना है वह जल्दी
से कर ले।” 28 लेकिन मेज़ पर बैठे लोगों में से
किसी को मालूम न हुआ कि ईसा ने यह क्यों
कहा। 29 बाज़ का ख़याल था कि चूँकि यहूदाह
ख़ज़ानची था इसलिए वह उसे बता रहा है कि ईद
के लिए दरकार चीज़ें ख़रीद ले या ग़रीबों में कुछ
तक़सीम कर दे।

30 चुनाँचे ईसा से यह लुक़्मा लेते ही यहूदाह
बाहर निकल गया। रात का वक़्त था।

ईसा का नया हुक्म

31 यहूदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा,
“अब इब्ने-आदम ने जलाल पाया और अल्लाह
ने उसमें जलाल पाया है। 32 हाँ, चूँकि अल्लाह
को उसमें जलाल मिल गया है इसलिए अल्लाह
अपने में फ़रज़ंद को जलाल देगा। और वह यह
जलाल फ़ौरन देगा। 33 मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर
और तुम्हारे पास ठहरूँगा। तुम मुझे तलाश करोगे,
और जो कुछ मैं यहूदियों को बता चुका हूँ वह अब
तुमको भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम
नहीं आ सकते। 34 मैं तुमको एक नया हुक्म देता
हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह
मैंने तुमसे मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक
दूसरे से मुहब्बत करो। 35 अगर तुम एक दूसरे
से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे
शागिर्द हो।”

पतरस के इनकार की पेशगोई

36 पतरस ने पूछा, “ख़ुदावंद, आप कहाँ जा रहे
हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ
तू मेरे पीछे नहीं आ सकता। लेकिन बाद में तू मेरे
पीछे आ जाएगा।”

37 पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावंद, मैं
आपके पीछे अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं
आपके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।”

38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “तू मेरे लिए
अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता
हूँ कि मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन
मरतबा मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।

ईसा बाप के पास जाने की राह है

14 तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह
पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान
रखो। 2 मेरे बाप के घर में बेशुमार मकान हैं। अगर
ऐसा न होता तो क्या मैं तुमको बताता कि मैं
तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए वहाँ जा
रहा हूँ? 3 और अगर मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह
तैयार करूँ तो वापस आकर तुमको अपने साथ ले
जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो। 4 और
जहाँ मैं जा रहा हूँ उस की राह तुम जानते हो।”

5 तोमा बोल उठा, “ख़ुदावंद, हमें मालूम नहीं
कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह
किस तरह जानें?”

6 ईसा ने जवाब दिया, “राह और हक़ और
ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के
पास नहीं आ सकता। 7 अगर तुमने मुझे जान
लिया है तो इसका मतलब है कि तुम मेरे बाप को
भी जान लोगे। और अब से ऐसा है भी। तुम उसे
जानते हो और तुमने उसको देख लिया है।”

8 फ़िलिप्पुस ने कहा, “ऐ ख़ुदावंद, बाप को हमें
दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।”

9 ईसा ने जवाब दिया, “फ़िलिप्पुस, मैं इतनी
देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इसके बावुजूद तू मुझे
नहीं जानता? जिसने मुझे देखा उसने बाप को
देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, ‘बाप को
हमें दिखाएँ’? 10 क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं
बाप में हूँ और बाप मुझमें है? जो बातें मैं तुमको
बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझमें रहनेवाले
बाप की तरफ़ से हैं। वही अपना काम कर रहा
है। 11 मेरी बात का यक़ीन करो कि मैं बाप में हूँ
और बाप मुझमें है। या कम अज़ कम उन कामों
की बिना पर यक़ीन करो जो मैंने किए हैं। 12 मैं
तुमको सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे

वह वही कुछ करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ़ यह
बल्कि वह इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं
बाप के पास जा रहा हूँ। 13 और जो कुछ तुम मेरे
नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को फ़रज़ंद में
जलाल मिल जाए। 14 जो कुछ तुम मेरे नाम में
मुझसे चाहो वह मैं करूँगा।

रूहुल-क़ुद्स देने का वादा

15 अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे
अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे। 16 और मैं
बाप से गुज़ारिश करूँगा तो वह तुमको एक और
मददगार देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा
17 यानी सच्चाई का रूह, जिसे दुनिया पा नहीं
सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखती न जानती
है। लेकिन तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे
साथ रहता है और आइंदा तुम्हारे अंदर रहेगा।

18 मैं तुमको यतीम छोड़कर नहीं जाऊँगा
बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 19 थोड़ी देर
के बाद दुनिया मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे
देखते रहोगे। चूँकि मैं ज़िंदा हूँ इसलिए तुम भी
ज़िंदा रहोगे। 20 जब वह दिन आएगा तो तुम जान
लोगे कि मैं अपने बाप में हूँ, तुम मुझमें हो और मैं
तुममें।

21 जिसके पास मेरे अहकाम हैं और जो उनके
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार
करता है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा
बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और
अपने आपको उस पर ज़ाहिर करूँगा।"

22 यहूदाह (यहूदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा,
"ख़ुदावंद, क्या वजह है कि आप अपने आपको
सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर करेंगे और दुनिया पर नहीं?"

23 ईसा ने जवाब दिया, "अगर कोई मुझे
प्यार करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे शख़्स को प्यार करेगा
और हम उसके पास आकर उसके साथ सुकूनत
करेंगे। 24 जो मुझसे मुहब्बत नहीं करता वह मेरी
बातों के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारता। और
जो कलाम तुम मुझसे सुनते हो वह मेरा अपना
कलाम नहीं है बल्कि बाप का है जिसने मुझे भेजा
है।

25 यह सब कुछ मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए
तुमको बताया है। 26 लेकिन बाद में रूहुल-क़ुद्स,
जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा तुमको सब कुछ
सिखाएगा। यह मददगार तुमको हर बात की याद
दिलाएगा जो मैंने तुमको बताई है।

27 मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ,
अपनी ही सलामती तुमको दे देता हूँ। और मैं इसे
यों नहीं देता जिस तरह दुनिया देती है। तुम्हारा
दिल न घबराए और न डरे। 28 तुमने मुझसे सुन
लिया है कि 'मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस
आऊँगा।' अगर तुम मुझसे मुहब्बत रखते तो तुम
इस बात पर ख़ुश होते कि मैं बाप के पास जा
रहा हूँ, क्योंकि बाप मुझसे बड़ा है। 29 मैंने तुमको
पहले से बता दिया है, इससे पेशतर कि यह हो,
ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान लाओ। 30 अब
से मैं तुमसे ज़्यादा बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस
दुनिया का हुक्मरान आ रहा है। उसे मुझ पर कोई
क़ाबू नहीं है, 31 लेकिन दुनिया यह जान ले कि
मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ करता हूँ
जिसका हुक्म वह मुझे देता है।

अब उठो, हम यहाँ से चलें।

ईसा अंगूर की हक़ीक़ी बेल है

15 मैं अंगूर की हक़ीक़ी बेल हूँ और मेरा
बाप माली है। 2 वह मेरी हर शाख़ को
जो फल नहीं लाती काटकर फेंक देता है। लेकिन
जो शाख़ फल लाती है उस की वह काँट-छाँट
करता है ताकि ज़्यादा फल लाए। 3 उस कलाम
के ज़रीए जो मैंने तुमको सुनाया है तुम तो पाक-
साफ़ हो चुके हो। 4 मुझमें क़ायम रहो तो मैं भी
तुममें क़ायम रहूँगा। जो शाख़ बेल से कट गई है
वह फल नहीं ला सकती। बिलकुल इसी तरह तुम
भी अगर तुम मुझमें क़ायम नहीं रहते फल नहीं
ला सकते।

5 मैं ही अंगूर की बेल हूँ, और तुम उस की
शाख़ें हो। जो मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें

वह बहुत-सा फल लाता है, क्योंकि मुझसे अलग
होकर तुम कुछ नहीं कर सकते। 6 जो मुझमें
क़ायम नहीं रहता और न मैं उसमें उसे बेफ़ायदा
शाख़ की तरह बाहर फेंक दिया जाता है। ऐसी
शाख़ें सूख जाती हैं और लोग उनका ढेर लगाकर
उन्हें आग में झोंक देते हैं जहाँ वह जल जाती
हैं। 7 अगर तुम मुझमें क़ायम रहो और मैं तुममें
तो जो जी चाहे माँगो, वह तुमको दिया जाएगा।
8 जब तुम बहुत-सा फल लाते और यों मेरे शागिर्द
साबित होते हो तो इससे मेरे बाप को जलाल
मिलता है। 9 जिस तरह बाप ने मुझसे मुहब्बत
रखी है उसी तरह मैंने तुमसे भी मुहब्बत रखी है।
अब मेरी मुहब्बत में क़ायम रहो। 10 जब तुम मेरे
अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हो तो तुम
मेरी मुहाब्बत में क़ायम रहते हो। मैं भी इसी तरह
अपने बाप के अहकाम के मुताबिक़ चलता हूँ और
यों उस की मुहब्बत में क़ायम रहता हूँ।

11 मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि मेरी
ख़ुशी तुममें हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भरकर
छलक उठे। 12 मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे
को वैसे प्यार करो जैसे मैंने तुमको प्यार किया
है। 13 इससे बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने
दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। 14 तुम मेरे दोस्त
हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुमको बताता
हूँ। 15 अब से मैं नहीं कहता कि तुम ग़ुलाम हो,
क्योंकि ग़ुलाम नहीं जानता कि उसका मालिक
क्या करता है। इसके बजाए मैंने कहा है कि तुम
दोस्त हो, क्योंकि मैंने तुमको सब कुछ बताया है
जो मैंने अपने बाप से सुना है। 16 तुमने मुझे नहीं
चुना बल्कि मैंने तुमको चुन लिया है। मैंने तुमको
मुक़र्रर किया कि जाकर फल लाओ, ऐसा फल
जो क़ायम रहे। फिर बाप तुमको वह कुछ देगा जो
तुम मेरे नाम में माँगोगे। 17 मेरा हुक्म यही है कि
एक दूसरे से मुहब्बत रखो।

दुनिया की दुश्मनी

18 अगर दुनिया तुमसे दुश्मनी रखे तो यह बात
ज़हन में रखो कि उसने तुमसे पहले मुझसे दुश्मनी
रखी है। 19 अगर तुम दुनिया के होते तो दुनिया
तुमको अपना समझकर प्यार करती। लेकिन तुम
दुनिया के नहीं हो। मैंने तुमको दुनिया से अलग
करके चुन लिया है। इसलिए दुनिया तुमसे दुश्मनी
रखती है। 20 वह बात याद करो जो मैंने तुमको
बताई कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता।
अगर उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे।
और अगर उन्होंने मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेंगे।
21 लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम
की वजह से करेंगे, क्योंकि वह उसे नहीं जानते
जिसने मुझे भेजा है। 22 अगर मैं आया न होता
और उनसे बात न की होती तो वह क़ुसूरवार न
ठहरते। लेकिन अब उनके गुनाह का कोई भी उज़्र
बाक़ी नहीं रहा। 23 जो मुझसे दुश्मनी रखता है
वह मेरे बाप से भी दुश्मनी रखता है। 24 अगर
मैंने उनके दरमियान ऐसा काम न किया होता
जो किसी और ने नहीं किया तो वह क़ुसूरवार
न ठहरते। लेकिन अब उन्होंने सब कुछ देखा है
और फिर भी मुझसे और मेरे बाप से दुश्मनी
रखी है। 25 और ऐसा होना भी था ताकि कलामे-
मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए कि 'उन्होंने
बिलावजह मुझसे कीना रखा है।'

26 जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की
तरफ़ से तुम्हारे पास भेजूँगा तो वह मेरे बारे में
गवाही देगा। वह सच्चाई का रूह है जो बाप में से
निकलता है। 27 तुमको भी मेरे बारे में गवाही देना
है, क्योंकि तुम इब्तिदा से मेरे साथ रहे हो।

16 मैंने तुमको यह इसलिए बताया है
ताकि तुम गुमराह न हो जाओ। 2 वह
तुमको यहूदी जमातों से निकाल देंगे, बल्कि वह
वक़्त भी आनेवाला है कि जो भी तुमको मार
डालेगा वह समझेगा, 'मैंने अल्लाह की ख़िदमत
की है।' 3 वह इस क़िस्म की हरकतें इसलिए
करेंगे कि उन्होंने न बाप को जाना है, न मुझे।
4 मैंने तुमको यह बातें इसलिए बताई हैं कि जब
उनका वक़्त आ जाए तो तुमको याद आए कि
मैंने तुम्हें आगाह कर दिया था।

रूहुल-क़ुद्स की ख़िदमत

मैंने अब तक तुमको यह नहीं बताया क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। 5 लेकिन अब मैं उसके पास जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है। तो भी तुममें से कोई मुझसे नहीं पूछता, 'आप कहाँ जा रहे हैं?' 6 इसके बजाए तुम्हारे दिल ग़मज़दा हैं कि मैंने तुमको ऐसी बातें बताई हैं। 7 लेकिन मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फ़ायदामंद है कि मैं जा रहा हूँ। अगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8 और जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनिया की ग़लती को बेनिक़ाब करके यह ज़ाहिर करेगा : 9 गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते, 10 रास्तबाज़ी के बारे में यह कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे, 11 और अदालत के बारे में यह कि इस दुनिया के हुक्मरान की अदालत हो चुकी है।

12 मुझे तुमको मज़ीद बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस वक़्त तुम उसे बरदाश्त नहीं कर सकते। 13 जब सच्चाई का रूह आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी मरज़ी से बात नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़ वही कुछ कहेगा जो वह ख़ुद सुनेगा। वही तुमको मुस्तक़बिल के बारे में भी बताएगा। 14 और वह इसमें मुझे जलाल देगा कि वह तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा। 15 जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इसलिए मैंने कहा, 'रूह तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा।'

अब दुख फिर सुख

16 थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।"

17 उसके कुछ शागिर्द आपस में बात करने लगे, "ईसा के यह कहने से क्या मुराद है कि 'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे'? और इसका क्या मतलब है, 'मैं बाप के पास जा रहा हूँ'?" 18 और वह सोचते रहे, "यह किस क़िस्म की 'थोड़ी देर' है जिसका ज़िक्र वह कर रहे हैं? हम उनकी बात नहीं समझते।"

19 ईसा ने जान लिया कि वह मुझसे इसके बारे में सवाल करना चाहते हैं। इसलिए उसने कहा, "क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात का क्या मतलब है कि 'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे'? 20 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम रो रोकर मातम करोगे जबकि दुनिया ख़ुश होगी। तुम ग़म करोगे, लेकिन तुम्हारा ग़म ख़ुशी में बदल जाएगा। 21 जब किसी औरत के बच्चा पैदा होनेवाला होता है तो उसे ग़म और तकलीफ़ होती है क्योंकि उसका वक़्त आ गया है। लेकिन ज्योंही बच्चा पैदा हो जाता है तो माँ ख़ुशी के मारे कि एक इनसान दुनिया में आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। 22 यही तुम्हारी हालत है। क्योंकि अब तुम ग़मज़दा हो, लेकिन मैं तुमसे दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुमको ख़ुशी होगी, ऐसी ख़ुशी जो तुमसे कोई छीन न लेगा।

23 उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह तुमको देगा। 24 अब तक तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुमको मिलेगा। फिर तुम्हारी ख़ुशी पूरी हो जाएगी।

दुनिया पर फ़तह

25 मैंने तुमको यह तमसीलों में बताया है। लेकिन एक दिन आएगा जब मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस वक़्त मैं तमसीलों में बात नहीं करूँगा बल्कि तुमको बाप के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा। 26 उस दिन तुम मेरा नाम लेकर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी ख़ातिर बाप से दरख़ास्त करूँगा। 27 क्योंकि बाप ख़ुद तुमको प्यार करता है, इसलिए कि तुमने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो कि मैं अल्लाह में से निकल

आया हूँ। 28 मैं बाप में से निकलकर दुनिया में आया हूँ। और अब मैं दुनिया को छोड़कर बाप के पास वापस जाता हूँ।”

29 इस पर उसके शागिर्दों ने कहा, “अब आप तमसीलों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं। 30 अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इसकी ज़रूरत नहीं कि कोई आपकी पूछ-गछ करे। इसलिए हम ईमान रखते हैं कि आप अल्लाह में से निकलकर आए हैं।”

31 ईसा ने जवाब दिया, “अब तुम ईमान रखते हो? 32 देखो, वह वक़्त आ रहा है बल्कि आ चुका है जब तुम तित्तर-बित्तर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला नहीं हूँगा क्योंकि बाप मेरे साथ है। 33 मैंने तुमको इसलिए यह बात बताई ताकि तुम मुझमें सलामती पाओ। दुनिया में तुम मुसीबत में फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनिया पर ग़ालिब आया हूँ।”

ईसा अपने शागिर्दों के लिए दुआ करता है

17 यह कहकर ईसा ने अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाई और दुआ की, “ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने फ़रज़ंद को जलाल दे ताकि फ़रज़ंद तुझे जलाल दे। 2 क्योंकि तूने उसे तमाम इनसानों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह उन सबको अबदी ज़िंदगी दे जो तूने उसे दिए हैं। 3 और अबदी ज़िंदगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और सच्चा ख़ुदा है और ईसा मसीह को भी जान लें जिसे तूने भेजा है। 4 मैंने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम की तकमील की जिसकी ज़िम्मेदारी तूने मुझे दी थी। 5 और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे, ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर तेरे हुज़ूर रखता था।

6 मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तूने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है। 7 अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह तेरी तरफ़ से है। 8 क्योंकि जो बातें तूने मुझे दीं मैंने उन्हें दी हैं। नतीजे में उन्होंने यह बातें क़बूल करके हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं तुझमें से निकलकर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तूने मुझे भेजा है।

9 मैं उनके लिए दुआ करता हूँ, दुनिया के लिए नहीं बल्कि उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वह तेरे ही हैं। 10 जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उनमें जलाल मिला है। 11 अब से मैं दुनिया में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनिया में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। क़ुद्दूस बाप, अपने नाम में उन्हें महफ़ूज़ रख, उस नाम में जो तूने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं। 12 जितनी देर मैं उनके साथ रहा मैंने उन्हें तेरे नाम में महफ़ूज़ रखा, उसी नाम में जो तूने मुझे दिया था। मैंने यों उनकी निगहबानी की कि उनमें से एक भी हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़रज़ंद के। यों कलाम की पेशगोई पूरी हुई। 13 अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं दुनिया में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उनके दिल मेरी ख़ुशी से भरकर छलक उठें। 14 मैंने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी, क्योंकि यह दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 15 मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनिया से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इबलीस से महफ़ूज़ रखे। 16 वह दुनिया के नहीं हैं जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 17 उन्हें सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है। 18 जिस तरह तूने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। 19 उनकी ख़ातिर मैं अपने आपको मख़सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।

20 मेरी दुआ न सिर्फ़ इन्हीं के लिए है, बल्कि उन सबके लिए भी जो इनका पैग़ाम सुनकर मुझ पर ईमान लाएँगे 21 ताकि सब एक हों। जिस तरह

तू ऐ बाप, मुझमें है और मैं तुझमें हूँ उसी तरह वह
भी हममें हों ताकि दुनिया यक़ीन करे कि तूने मुझे
भेजा है। 22 मैंने उन्हें वह जलाल दिया है जो तूने
मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक
हैं, 23 मैं उनमें और तू मुझमें। वह कामिल तौर पर
एक हों ताकि दुनिया जान ले कि तूने मुझे भेजा
और कि तूने उनसे मुहब्बत रखी है जिस तरह
मुझसे रखी है।

24 ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तूने मुझे दिए
हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह
मेरे जलाल को देखें, वह जलाल जो तूने इसलिए
मुझे दिया है कि तूने मुझे दुनिया की तख़लीक़ से
पेशतर प्यार किया है। 25 ऐ रास्त बाप, दुनिया
तुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और
यह शागिर्द जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। 26 मैंने
तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर
करता रहूँगा ताकि तेरी मुझसे मुहब्बत उनमें हो
और मैं उनमें हूँ।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

18 यह कहकर ईसा अपने शागिर्दों के
साथ निकला और वादीए-क़िदरोन
को पार करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ।
2 यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करनेवाला था
वह भी इस जगह से वाक़िफ़ था, क्योंकि ईसा
वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता था।
3 राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को
रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैतुल-मुक़द्दस के
कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशालें, लालटैन
और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। 4 ईसा को
मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनाँचे उसने
निकलकर उनसे पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे
हो?”

5 उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।”

यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता
था, वह भी उनके साथ खड़ा था। 6 जब ईसा ने
एलान किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हटकर
ज़मीन पर गिर पड़े। 7 एक और बार ईसा ने उनसे
सवाल किया, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”

उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

8 उसने कहा, “मैं तुमको बता चुका हूँ कि मैं
ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इनको जाने
दो।” 9 यों उस की यह बात पूरी हुई, “मैंने उनमें
से जो तूने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।”

10 शमाऊन पतरस के पास तलवार थी। अब
उसने उसे मियान से निकालकर इमामे-आज़म के
ग़ुलाम का दहना कान उड़ा दिया (ग़ुलाम का नाम
मलख़ुस था)। 11 लेकिन ईसा ने पतरस से कहा,
“तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला
न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?”

ईसा हन्ना के सामने

12 फिर फ़ौजी दस्ते, उनके अफ़सर और बैतुल-
मुक़द्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरिफ़्तार
करके बाँध लिया। 13 पहले वह उसे हन्ना के पास
ले गए। हन्ना उस साल के इमामे-आज़म कायफ़ा
का सुसर था। 14 कायफ़ा ही ने यहूदियों को यह
मशवरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही
आदमी उम्मत के लिए मर जाए।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

15 शमाऊन पतरस किसी और शागिर्द के साथ
ईसा के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द
इमामे-आज़म का जाननेवाला था, इसलिए वह
ईसा के साथ इमामे-आज़म के सहन में दाख़िल
हुआ। 16 पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा।
फिर इमामे-आज़म का जाननेवाला शागिर्द दुबारा
निकल आया। उसने गेट की निगरानी करनेवाली
औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ
अंदर ले जाने की इजाज़त मिली। 17 उस औरत ने
पतरस से पूछा, “तुम भी इस आदमी के शागिर्द
हो कि नहीं?”

उसने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

18 ठंड थी, इसलिए ग़ुलामों और पहरेदारों ने
लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उसके

पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा
ताप रहा था।

इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करता है

19 इतने में इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ
करके उसके शागिर्दों और तालीम के बारे में
तफ़तीश करने लगा। 20 ईसा ने जवाब में कहा,
“मैंने दुनिया में खुलकर बात की है। मैं हमेशा
यहूदी इबादतख़ानों और बैतुल-मुक़द्दस में तालीम
देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते
हैं। पोशीदगी में तो मैंने कुछ नहीं कहा। 21 आप
मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? उनसे दरियाफ़्त करें
जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उनको मालूम है कि
मैंने क्या कुछ कहा है।”

22 इस पर साथ खड़े बैतुल-मुक़द्दस के
पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़
मारकर कहा, “क्या यह इमामे-आज़म से बात
करने का तरीक़ा है जब वह तुमसे कुछ पूछे?”

23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैंने बुरी बात
की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो
तूने मुझे क्यों मारा?”

24 फिर हन्ना ने ईसा को बँधी हुई हालत में
इमामे-आज़म कायफ़ा के पास भेज दिया।

पतरस दुबारा ईसा को जानने से इनकार करता है

25 शमाऊन पतरस अब तक आग के पास खड़ा
ताप रहा था। इतने में दूसरे उससे पूछने लगे, “तुम
भी उसके शागिर्द हो कि नहीं?”

लेकिन पतरस ने इनकार किया, “नहीं, मैं नहीं
हूँ।”

26 फिर इमामे-आज़म का एक ग़ुलाम बोल
उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिसका
कान पतरस ने उड़ा दिया था, “क्या मैंने तुमको
बाग़ में उसके साथ नहीं देखा था?”

27 पतरस ने एक बार फिर इनकार किया, और
इनकार करते ही मुरग़ की बाँग सुनाई दी।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

28 फिर यहूदी ईसा को कायफ़ा से लेकर रोमी
गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच
गए। अब सुबह हो चुकी थी और चूँकि यहूदी
फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे,
इसलिए वह महल में दाख़िल न हुए, वरना वह
नापाक हो जाते। 29 चुनाँचे पीलातुस निकलकर
उनके पास आया और पूछा, “तुम इस आदमी पर
क्या इलज़ाम लगा रहे हो?”

30 उन्होंने जवाब दिया, “अगर यह मुजरिम न
होता तो हम इसे आपके हवाले न करते।”

31 पीलातुस ने कहा, “फिर इसे ले जाओ और
अपनी शरई अदालतों में पेश करो।”

लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया, “हमें किसी
को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं।” 32 ईसा
ने इस तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह
मरेगा और अब उस की यह बात पूरी हुई।

33 तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ
से उसने ईसा को बुलाया और उससे पूछा, “क्या
तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

34 ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ़ से
यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आपको मेरे
बारे में बताया है?”

35 पीलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी
हूँ? तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने
तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुमसे क्या कुछ सरज़द
हुआ है?”

36 ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनिया
की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो
मेरे ख़ादिम सख़्त जिद्दो-जहद करते ताकि मुझे
यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा
नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।”

37 पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाक़ई
बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “आप सहीह कहते हैं, मैं
बादशाह हूँ। मैं इसी मक़सद के लिए पैदा होकर

दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी
सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।”
38 पीलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?”

ईसा को सज़ाए-मौत सुनाई जाती है

फिर वह दुबारा निकलकर यहूदियों के पास
गया। उसने एलान किया, “मुझे उसे मुजरिम
ठहराने की कोई वजह नहीं मिली। 39 लेकिन
तुम्हारी एक रस्म है जिसके मुताबिक़ मुझे ईदे-
फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक क़ैदी को रिहा
करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के
बादशाह’ को रिहा कर दूँ?”
40 लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं,
इसको नहीं बल्कि बर-अब्बा को।” (बर-अब्बा
डाकू था।)

19 फिर पीलातुस ने ईसा को कोड़े
लगवाए। 2 फ़ौजियों ने काँटेदार
टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख
दिया। उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास भी
पहनाया। 3 फिर उसके सामने आकर वह कहते,
“ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” और उसे
थप्पड़ मारते थे।
4 एक बार फिर पीलातुस निकल आया और
यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे
पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे
इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।”
5 फिर ईसा काँटेदार ताज और अरग़वानी रंग
का लिबास पहने बाहर आया। पीलातुस ने उनसे
कहा, “लो यह है वह आदमी।”
6 उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उनके
मुलाज़िम चीख़ने लगे, “इसे मसलूब करें, इसे
मसलूब करें!”
पीलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही इसे ले जाकर
मसलूब करो। क्योंकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने
की कोई वजह नहीं मिली।”
7 यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास
शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम
है कि वह मारा जाए। क्योंकि इसने अपने आपको
अल्लाह का फ़रज़ंद क़रार दिया है।”
8 यह सुनकर पीलातुस मज़ीद डर गया।
9 दुबारा महल में जाकर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ
से आए हो?”
लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। 10 पीलातुस ने
उससे कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं
करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा
करने और मसलूब करने का इख़्तियार है?”
11 ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझ पर
इख़्तियार न होता अगर वह आपको ऊपर से न
दिया गया होता। इस वजह से उस शख़्स से ज़्यादा
संगीन गुनाह हुआ है जिसने मुझे दुश्मन के हवाले
कर दिया है।”
12 इसके बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने
की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़कर
कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप
रोमी शहनशाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे।
जो भी बादशाह होने का दावा करे वह शहनशाह
की मुख़ालफ़त करता है।”
13 इस तरह की बातें सुनकर पीलातुस ईसा
को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुरसी
पर बैठ गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी”
था। (अरामी ज़बान में वह गब्बता कहलाती थी।)
14 अब दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे। उस
दिन ईद के लिए तैयारियाँ की जाती थीं, क्योंकि
अगले दिन ईद का आग़ाज़ था। पीलातुस बोल
उठा, “लो, तुम्हारा बादशाह!”
15 लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले
जाएँ! इसे मसलूब करें!”
पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे
बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?”
राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए
शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”
16 फिर पीलातुस ने ईसा को उनके हवाले कर
दिया ताकि उसे मसलूब किया जाए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

चुनाँचे वह ईसा को लेकर चले गए। 17 वह
अपनी सलीब उठाए शहर से निकला और उस
जगह पहुँचा जिसका नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान
में गुलगुता) था। 18 वहाँ उन्होंने उसे सलीब पर
चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने उसके बाएँ और
दाएँ हाथ दो और आदमियों को मसलूब किया।
19 पीलातुस ने एक तख़्ती बनवाकर उसे ईसा की
सलीब पर लगवा दिया। तख़्ती पर लिखा था,
'ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह।' 20 बहुत-
से यहूदियों ने यह पढ़ लिया, क्योंकि मसलूबियत
का मक़ाम शहर के क़रीब था और यह जुमला
अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों में लिखा
था। 21 यह देखकर यहूदियों के राहनुमा इमामों
ने एतराज़ किया, "'यहूदियों का बादशाह' न
लिखें बल्कि यह कि 'इस आदमी ने यहूदियों का
बादशाह होने का दावा किया'।"

22 पीलातुस ने जवाब दिया, "जो कुछ मैंने
लिख दिया सो लिख दिया।"

23 ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों
ने उसके कपड़े लेकर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर
फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोग़ा बेजोड़
था। वह ऊपर से लेकर नीचे तक बुना हुआ एक
ही टुकड़े का था। 24 इसलिए फ़ौजियों ने कहा,
"आओ, इसे फाड़कर तक़सीम न करें बल्कि
इस पर क़ुरा डालें।" यों कलामे-मुक़द्दस की यह
पेशगोई पूरी हुई, "उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बाँट
लिए और मेरे लिबास पर क़ुरा डाला।" फ़ौजियों
ने यही कुछ किया।

25 कुछ ख़वातीन भी ईसा की सलीब के क़रीब
खड़ी थीं : उस की माँ, उस की ख़ाला, क्लोपास
की बीवी मरियम और मरियम मग्दलीनी। 26 जब
ईसा ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े
देखा जो उसे प्यारा था तो उसने कहा, "ऐ ख़ातून,
देखें आपका बेटा यह है।"
27 और उस शागिर्द से उसने कहा, "देख, तेरी
माँ यह है।" उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की
माँ को अपने घर रखा।

ईसा की मौत

28 इसके बाद जब ईसा ने जान लिया कि
मेरा मिशन तकमील तक पहुँच चुका है तो उसने
कहा, "मुझे प्यास लगी है।" (इससे भी कलामे-
मुक़द्दस की एक पेशगोई पूरी हुई।)

29 क़रीब मै के सिरके से भरा बरतन पड़ा था।
उन्होंने एक इस्पंज सिरके में डुबोकर उसे ज़ूफ़े
की शाख़ पर लगा दिया और उठाकर ईसा के मुँह
तक पहुँचाया। 30 यह सिरका पीने के बाद ईसा
बोल उठा, "काम मुकम्मल हो गया है।" और सर
झुकाकर उसने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर
दी।

ईसा का पहलू छेदा जाता है

31 फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले
दिन ईद का आग़ाज़ और एक ख़ास सबत था।
इसलिए यहूदी नहीं चाहते थे कि मसलूब हुई लाशें
अगले दिन तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनाँचे
उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उनकी
टाँगें तुड़वाकर उन्हें सलीबों से उतारने दे। 32 तब
फ़ौजियों ने आकर ईसा के साथ मसलूब किए
जानेवाले आदमियों की टाँगें तोड़ दीं, पहले एक
की फिर दूसरे की। 33 जब वह ईसा के पास आए
तो उन्होंने देखा कि वह फ़ौत हो चुका है, इसलिए
उन्होंने उस की टाँगें न तोड़ीं। 34 इसके बजाए एक
ने नेज़े से ईसा का पहलू छेद दिया। ज़ख़्म से
फ़ौरन ख़ून और पानी बह निकला। 35 (जिसने
यह देखा है उसने गवाही दी है और उस की गवाही
सच्ची है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त बयान
कर रहा है और उस की गवाही का मक़सद यह
है कि आप भी ईमान लाएँ।) 36 यह यों हुआ
ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो
जाए, "उस की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।"

37 कलामे-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “वह उस
पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है।”

ईसा को दफ़नाया जाता है

38 बाद में अरिमतियाह के रहनेवाले यूसुफ़ ने
पीलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त
माँगी। (यूसुफ़ ईसा का ख़ुफ़िया शागिर्द था,
क्योंकि वह यहूदियों से डरता था।) इसकी
इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार
लिया। 39 नीकुदेमुस भी साथ था, वह आदमी
जो गुज़रे दिनों में रात के वक़्त ईसा से मिलने
आया था। नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की
तक़रीबन 34 किलोग्राम ख़ुशबू लेकर आया था।
40 यहूदी जनाज़े की रसूमात के मुताबिक़ उन्होंने
लाश पर ख़ुशबू लगाकर उसे पट्टियों से लपेट
दिया। 41 सलीबों के क़रीब एक बाग़ था और
बाग़ में एक नई क़ब्र थी जो अब तक इस्तेमाल
नहीं की गई थी। 42 उसके क़रीब होने के सबब से
उन्होंने ईसा को उसमें रख दिया, क्योंकि फ़सह
की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का
आग़ाज़ था।

ख़ाली क़ब्र

20 हफ़ते का दिन गुज़र गया तो इतवार
को मरियम मग्दलीनी सुबह-सवेरे
क़ब्र के पास आई। अभी अंधेरा था। वहाँ पहुँचकर
उसने देखा कि क़ब्र के मुँह पर का पत्थर एक
तरफ़ हटाया गया है। 2 मरियम दौड़कर शमाऊन
पतरस और ईसा को प्यारे शागिर्द के पास आई।
उसने इत्तला दी, “वह ख़ुदावंद को क़ब्र से ले गए
हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख
दिया है।”

3 तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत क़ब्र की तरफ़
चल पड़ा। 4 दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द
ज़्यादा तेज़रफ़्तार था। वह पहले क़ब्र पर पहुँच
गया। 5 उसने झुककर अंदर झाँका तो कफ़न
की पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह
अंदर न गया। 6 फिर शमाऊन पतरस उसके पीछे
पहुँचकर क़ब्र में दाख़िल हुआ। उसने भी देखा
कि कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं 7 और साथ
वह कपड़ा भी जिसमें ईसा का सर लिपटा हुआ
था। यह कपड़ा तह किया गया था और पट्टियों
से अलग पड़ा था। 8 फिर दूसरा शागिर्द जो पहले
पहुँच गया था, वह भी दाख़िल हुआ। जब उसने
यह देखा तो वह ईमान लाया। 9 (लेकिन अब भी
वह कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई नहीं समझते
थे कि उसे मुरदों में से जी उठना है।) 10 फिर दोनों
शागिर्द घर वापस चले गए।

ईसा मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर होता है

11 लेकिन मरियम रो रोकर क़ब्र के सामने खड़ी
रही। और रोते हुए उसने झुककर क़ब्र में झाँका
12 तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास
पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश
पड़ी थी, एक उसके सिरहाने और दूसरा वहाँ जहाँ
पहले उसके पाँव थे। 13 उन्होंने मरियम से पूछा,
“ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है?”

उसने कहा, “वह मेरे ख़ुदावंद को ले गए हैं,
और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया
है।”

14 फिर उसने पीछे मुड़कर ईसा को वहाँ खड़े
देखा, लेकिन उसने उसे न पहचाना। 15 ईसा ने
पूछा, “ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है, किस को ढूँड
रही है?”

यह सोचकर कि वह माली है उसने कहा,
“जनाब, अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें
कि उसे कहाँ रख दिया है ताकि उसे ले जाऊँ।”

16 ईसा ने उससे कहा, “मरियम!”

वह उस की तरफ़ मुड़ी और बोल उठी,
“रब्बूनी!” (इसका मतलब अरामी ज़बान में
उस्ताद है।)

17 ईसा ने कहा, “मेरे साथ चिमटी न रह,
क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया।
लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, ‘मैं
अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा
रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास’।”

18 चुनाँचे मरियम मग्दलीनी शागिर्दों के पास
गई और उन्हें इत्तला दी, “मैंने ख़ुदावंद को देखा
है और उसने मुझसे यह बातें कहीं।”

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

19 उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे।
उन्होंने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि
वह यहूदियों से डरते थे। अचानक ईसा उनके
दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी
सलामती हो,” 20 और उन्हें अपने हाथों और
पहलू को दिखाया। ख़ुदावंद को देखकर वह
निहायत ख़ुश हुए। 21 ईसा ने दुबारा कहा,
“तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे
भेजा उसी तरह मैं तुमको भेज रहा हूँ।” 22 फिर
उन पर फूँककर उसने फ़रमाया, “रूहुल-क़ुद्स
को पा लो। 23 अगर तुम किसी के गुनाहों को
मुआफ़ करो तो वह मुआफ़ किए जाएंगे। और
अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो वह मुआफ़ नहीं
किए जाएंगे।”

तोमा शक करता है

24 बारह शागिर्दों में से तोमा जिसका लक़ब
जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था।
25 चुनाँचे दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, “हमने
ख़ुदावंद को देखा है!” लेकिन तोमा ने कहा,
“मुझे यक़ीन नहीं आता। पहले मुझे उसके हाथों
में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उनमें
अपनी उँगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उसके
पहलू के ज़ख़्म में डालूँ। फिर ही मुझे यक़ीन
आएगा।”

26 एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा
मकान में जमा थे। इस मरतबा तोमा भी साथ
था। अगरचे दरवाज़ों पर ताले लगे थे फिर भी
ईसा उनके दरमियान आकर खड़ा हुआ। उसने
कहा, “तुम्हारी सलामती हो!” 27 फिर वह तोमा
से मुख़ातिब हुआ, “अपनी उँगली को मेरे हाथों
और अपने हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़्म में डाल
और बेएतक़ाद न हो बल्कि ईमान रख।”

28 तोमा ने जवाब में उससे कहा, “ऐ मेरे
ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!”

29 फिर ईसा ने उसे बताया, “क्या तू इसलिए
ईमान लाया है कि तूने मुझे देखा है? मुबारक हैं
वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।”

इस किताब का मक़सद

30 ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद
बहुत-से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो इस
किताब में दर्ज नहीं हैं। 31 लेकिन जितने दर्ज हैं
उनका मक़सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि
ईसा ही मसीह यानी अल्लाह का फ़रज़ंद है और
आपको इस ईमान के वसीले से उसके नाम से
ज़िंदगी हासिल हो।

ईसा झील पर शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

21 इसके बाद ईसा एक बार फिर अपने
शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ जब वह
तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह
यों हुआ। 2 कुछ शागिर्द शमाऊन पतरस के साथ
जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतनेल
जो गलील के क़ाना से था, ज़बदी के दो बेटे और
मज़ीद दो शागिर्द।

3 शमाऊन पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने
जा रहा हूँ।”

दूसरों ने कहा, “हम भी साथ जाएंगे।” चुनाँचे
वह निकलकर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस
पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई। 4 सुबह-
सवेरे ईसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ।
लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था कि वह ईसा
ही है। 5 उसने उनसे पूछा, “बच्चो, क्या तुम्हें खाने
के लिए कुछ मिल गया?”

उन्होंने जवाब दिया, “नहीं।”

6 उसने कहा, “अपना जाल कश्ती के दाएँ हाथ
डालो, फिर तुमको कुछ मिलेगा।” उन्होंने ऐसा
किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तादाद थी कि
वह जाल कश्ती तक न ला सके।

7 इस पर ख़ुदावंद के प्यारे शागिर्द ने पतरस
से कहा, "यह तो ख़ुदावंद है।" यह सुनते ही कि
ख़ुदावंद है शमाऊन पतरस अपनी चादर ओढ़कर
पानी में कूद पड़ा (उसने चादर को काम करने के
लिए उतार लिया था।) 8 दूसरे शागिर्द कश्ती पर
सवार उसके पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर
नहीं थे, तक़रीबन सौ मीटर के फ़ासले पर थे।
इसलिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी में
खींच खींचकर ख़ुश्की तक लाए। 9 जब वह कश्ती
से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग
पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी
है। 10 ईसा ने उनसे कहा, "उन मछलियों में से
कुछ ले आओ जो तुमने अभी पकड़ी हैं।"

11 शमाऊन पतरस कश्ती पर गया और जाल
को ख़ुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी
मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा।
12 ईसा ने उनसे कहा, "आओ, नाश्ता कर लो।"
किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की जुर्रत न की
कि "आप कौन हैं?" क्योंकि वह तो जानते थे
कि यह ख़ुदावंद ही है। 13 फिर ईसा आया और
रोटी लेकर उन्हें दी और इसी तरह मछली भी उन्हें
खिलाई।

14 ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार थी
कि वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ।

ईसा का पतरस से सवाल

15 नाश्ते के बाद ईसा शमाऊन पतरस से
मुख़ातिब हुआ, "यूहन्ना के बेटे शमाऊन, क्या
तू इनकी निसबत मुझसे ज़्यादा मुहब्बत करता
है?"

उसने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, आप तो
जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा बोला, "फिर मेरे लेलों को चरा।" 16 तब
ईसा ने एक और मरतबा पूछा, "शमाऊन यूहन्ना
के बेटे, क्या तू मुझसे मुहब्बत करता है?"

उसने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, आप तो
जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा बोला, "फिर मेरी भेड़ों की गल्ला-
बानी कर।" 17 तीसरी बार ईसा ने उससे पूछा,
"शमाऊन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता
है?"

तीसरी दफ़ा यह सवाल सुनने से पतरस को
बड़ा दुख हुआ। उसने कहा, "ख़ुदावंद, आपको
सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं
आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों को चरा।
18 मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था
तो तू ख़ुद अपनी कमर बाँधकर जहाँ जी चाहता
घुमता-फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू
अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी
कमर बाँधकर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं
करेगा।" 19 (ईसा की यह बात इस तरफ़ इशारा
थी कि पतरस किस क़िस्म की मौत से अल्लाह
को जलाल देगा।) फिर उसने उसे बताया, "मेरे
पीछे चल।"

ईसा और दूसरा शागिर्द

20 पतरस ने मुड़कर देखा कि जो शागिर्द ईसा
को प्यारा था वह उनके पीछे चल रहा है। यह वही
शागिर्द था जिसने शाम के खाने के दौरान ईसा
की तरफ़ सर झुकाकर पूछा था, "ख़ुदावंद, कौन
आपको दुश्मन के हवाले करेगा?" 21 अब उसे
देखकर पतरस ने सवाल किया, "ख़ुदावंद, इसके
साथ क्या होगा?"

22 ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं चाहूँ कि यह
मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या? बस
तू मेरे पीछे चलता रह।"

23 नतीजे में भाइयों में यह ख़याल फैल गया
कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह
बात नहीं की थी। उसने सिर्फ़ यह कहा था, "अगर
मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो
तुझे क्या?"

24 यह वह शागिर्द है जिसने इन बातों की
गवाही देकर इन्हें क़लमबंद कर दिया है। और हम
जानते हैं कि उस की गवाही सच्ची है।

ख़ुलासा

25 ईसा ने इसके अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उसका हर काम क़लमबंद किया जाता तो मेरे ख़याल में पूरी दुनिया में यह किताबें रखने की गुंजाइश न होती।

रसूलों के आमाल

1 मुअज़्ज़ज़ थियुफ़िलुस, पहली कि-
ताब में मैंने सब कुछ बयान किया जो
ईसा ने शुरू से लेकर 2 उस दिन तक किया
और सिखाया, जब उसे आसमान पर उठाया
गया। जाने से पहले उसने अपने चुने हुए रसूलों
को रूहुल-क़ुद्स की मारिफ़त मज़ीद हिदायात
दीं। 3 अपने दुख उठाने और मौत सहने के बाद
उसने अपने आपको ज़ाहिर करके उन्हें बहुत-सी
दलीलों से क़ायल किया कि वह वाक़ई ज़िंदा
है। वह चालीस दिन के दौरान उन पर ज़ाहिर
होता और उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में
बताता रहा। 4 जब वह अभी उनके साथ था उसने
उन्हें हुक्म दिया, “यरूशलम को न छोड़ना बल्कि
इस इंतज़ार में यहीं ठहरो कि बाप का वादा पूरा
हो जाए, वह वादा जिसके बारे में मैंने तुमको
आगाह किया है। 5 क्योंकि यहया ने तो पानी से
बपतिस्मा दिया, लेकिन तुमको थोड़े दिनों के बाद
रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।”

ईसा को उठाया जाता है

6 जो वहाँ जमा थे उन्होंने उससे पूछा,
“ख़ुदावंद, क्या आप इसी वक़्त इसराईल के लिए
उस की बादशाही दुबारा क़ायम करेंगे?”
7 ईसा ने जवाब दिया, “यह जानना तुम्हारा
काम नहीं है बल्कि सिर्फ़ बाप का जो ऐसे औक़ात
और तारीखें मुक़र्रर करने का इख़्तियार रखता है।
8 लेकिन तुम्हें रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत मिलेगी जो
तुम पर नाज़िल होगा। फिर तुम यरूशलम, पूरे
यहूदिया और सामरिया बल्कि दुनिया की इंतहा
तक मेरे गवाह होगे।” 9 यह कहकर वह उनके
देखते देखते उठा लिया गया। और एक बादल ने
उसे उनकी नज़रों से ओझल कर दिया।
10 वह अभी आसमान की तरफ़ देख ही रहे
थे कि अचानक दो आदमी उनके पास आ खड़े
हुए। दोनों सफ़ेद लिबास पहने हुए थे। 11 उन्होंने
कहा, “गलील के मर्दो, आप क्यों खड़े आसमान
की तरफ़ देख रहे हैं? यही ईसा जिसे आपके
पास से आसमान पर उठाया गया है उसी तरह
वापस आएगा जिस तरह आपने उसे ऊपर जाते
हुए देखा है।”

यहूदाह का जा-नशीन

12 फिर वह ज़ैतून के पहाड़ से यरूशलम शहर
वापस चले गए। (यह पहाड़ शहर से तक़रीबन
एक किलोमीटर दूर है।) 13 वहाँ पहुँचकर वह उस
बालाख़ाने में दाख़िल हुए जिसमें वह ठहरे हुए थे,
यानी पतरस, यूहन्ना, याक़ूब और अंदरियास,
फ़िलिप्पुस और तोमा, बरतुलमाई और मत्ती,
याक़ूब बिन हलफ़ई, शमाऊन मुजाहिद और
यहूदाह बिन याक़ूब। 14 यह सब यकदिल होकर
दुआ में लगे रहे। कुछ औरतें, ईसा की माँ मरियम
और उसके भाई भी साथ थे।

15 उन दिनों में पतरस भाइयों में खड़ा हुआ। उस वक़्त तक़रीबन 120 लोग जमा थे। उसने कहा, 16 "भाइयो, लाज़िम था कि कलामे-मुक़द्दस की वह पेशगोई पूरी हो जो रूहुल-क़ुद्स ने दाऊद की मारिफ़त यहूदाह के बारे में की। यहूदाह उनका राहनुमा बन गया जिन्होंने ईसा को गिरिफ़्तार किया, 17 गो उसे हममें शुमार किया जाता था और वह इसी ख़िदमत में हमारे साथ शरीक था।"

18 (जो पैसे यहूदाह को उसके ग़लत काम के लिए मिल गए थे उनसे उसने एक खेत ख़रीद लिया था। वहाँ वह सर के बल गिर गया, उसका पेट फट गया और उस की तमाम अंतड़ियाँ बाहर निकल पडीं। 19 इसका चर्चा यरूशलम के तमाम बाशिंदों में फैल गया, इसलिए यह खेत उनकी मादरी ज़बान में हक़ल-दमा के नाम से मशहूर हुआ जिसका मतलब है ख़ून का खेत।)

20 पतरस ने अपनी बात जारी रखी, "यही बात ज़बूर की किताब में लिखी है, 'उस की रिहाइशगाह सुनसान हो जाए, कोई उसमें आबाद न हो।' यह भी लिखा है, 'कोई और उस की ज़िम्मेदारी उठाए।' 21 चुनाँचे अब ज़रूरी है कि हम यहूदाह की जगह किसी और को चुन लें। यह शख़्स उन मर्दों में से एक हो जो उस पूरे वक़्त के दौरान हमारे साथ सफ़र करते रहे जब ख़ुदावंद ईसा हमारे साथ था, 22 यानी उसके यहया के हाथ से बपतिस्मा लेने से लेकर उस वक़्त तक जब उसे हमारे पास से उठाया गया। लाज़िम है कि उनमें से एक हमारे साथ ईसा के जी उठने का गवाह हो।"

23 चुनाँचे उन्होंने दो आदमी पेश किए, यूसुफ़ जो बरसब्बा कहलाता था (उसका दूसरा नाम यूसतुस था) और मत्तियाह। 24 फिर उन्होंने दुआ की, "ऐ ख़ुदावंद, तू हर एक के दिल से वाक़िफ़ है। हम पर ज़ाहिर कर कि तूने इन दोनों में से किस को चुना है 25 ताकि वह उस ख़िदमत की ज़िम्मेदारी उठाए जो यहूदाह छोड़कर वहाँ चला गया जहाँ उसे जाना ही था।" 26 यह कहकर उन्होंने दोनों का नाम लेकर क़ुरा डाला तो मत्तियाह का नाम निकला। लिहाज़ा उसे भी ग्यारह रसूलों में शामिल कर लिया गया।

रूहुल-क़ुद्स की आमद

2 फिर ईदे-पंतिकुस्त का दिन आया। सब एक जगह जमा थे 2 कि अचानक आसमान से ऐसी आवाज़ आई जैसे शदीद आँधी चल रही हो। पूरा मकान जिसमें वह बैठे थे इस आवाज़ से गूँज उठा। 3 और उन्हें शोले की लौएँ जैसी नज़र आईं जो अलग अलग होकर उनमें से हर एक पर उतरकर ठहर गईं। 4 सब रूहुल-क़ुद्स से भर गए और मुख़्तलिफ़ ग़ैरमुल्की ज़बानों में बोलने लगे, हर एक उस ज़बान में जो बोलने की रूहुल-क़ुद्स ने उसे तौफ़ीक़ दी।

5 उस वक़्त यरूशलम में ऐसे ख़ुदातरस यहूदी ठहरे हुए थे जो आसमान तले की हर क़ौम में से थे। 6 जब यह आवाज़ सुनाई दी तो एक बड़ा हुजूम जमा हुआ। सब घबरा गए क्योंकि हर एक ने ईमानदारों को अपनी मादरी ज़बान में बोलते सुना। 7 सख़्त हैरतज़दा होकर वह कहने लगे, "क्या यह सब गलील के रहनेवाले नहीं हैं? 8 तो फिर यह किस तरह हो सकता है कि हममें से हर एक उन्हें अपनी मादरी ज़बान में बातें करते सुन रहा है 9 जबकि हमारे ममालिक यह हैं : पारथिया, मादिया, ऐलाम, मसोपुतामिया, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुंतुस, आसिया, 10 फ़रूगिया, पंफ़ीलिया, मिसर और लिबिया का वह इलाक़ा जो कुरेन के इर्दगिर्द है। रोम से भी लोग मौजूद हैं। 11 यहाँ यहूदी भी हैं और ग़ैरयहूदी नौमुरीद भी, क्रेते के लोग और अरब के बाशिंदे भी। और अब हम सबके सब इनको अपनी अपनी ज़बान में अल्लाह के अज़ीम कामों का ज़िक्र करते सुन रहे हैं।" 12 सब दंग रह गए। उलझन में पड़कर वह एक दूसरे से पूछने लगे, "इसका क्या मतलब है?"

13 लेकिन कुछ लोग उनका मज़ाक़ उड़ा-
कर कहने लगे, "यह बस नई मै पीकर नशे में
धुत हो गए हैं।"

पतरस का पैग़ाम

14 फिर पतरस बाक़ी ग्यारह रसूलों समेत खड़ा
होकर ऊँची आवाज़ से उनसे मुख़ातिब हुआ,
"सुनें, यहूदी भाइयो और यरूशलम के तमाम
रहनेवालो! जान लें और ग़ौर से मेरी बात सुन
लें! 15 आपका ख़याल है कि यह लोग नशे में
हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। देखें, अभी तो सुबह के
नौ बजे का वक़्त है। 16 अब वह कुछ हो रहा है
जिसकी पेशगोई योएल नबी ने की थी,

17 'अल्लाह फ़रमाता है
कि आख़िरी दिनों में
मैं अपने रूह को
तमाम इनसानों पर उंडेल दूँगा।
तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,
तुम्हारे नौजवान रोयाएँ
और तुम्हारे बुज़ुर्ग ख़ाब देखेंगे।
18 उन दिनों में मैं अपने रूह को
अपने ख़ादिमों और ख़ादिमाओं पर भी
उंडेल दूँगा,
और वह नबुव्वत करेंगे।
19 मैं ऊपर आसमान पर मोजिज़े
दिखाऊँगा
और नीचे ज़मीन पर इलाही निशान
ज़ाहिर करूँगा,
ख़ून, आग और धुएँ के बादल।
20 सूरज तारीक हो जाएगा,
चाँद का रंग ख़ून-सा हो जाएगा,
और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन
आएगा।
21 उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा
नजात पाएगा।'

22 इसराईल के मर्दो, मेरी बात सुनें! अल्लाह
ने आपके सामने ही ईसा नासरी की तसदीक़ की,
क्योंकि उसने उसके वसीले से आपके दरमियान
अजूबे, मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए। आप
ख़ुद इस बात से वाक़िफ़ हैं। 23 लेकिन अल्लाह
को पहले ही इल्म था कि क्या होना है, क्योंकि
उसने ख़ुद अपनी मरज़ी से मुक़र्रर किया था कि
ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया जाए। चुनाँचे
आपने बेदीन लोगों के ज़रीए उसे सलीब पर
चढ़वाकर क़त्ल किया। 24 लेकिन अल्लाह ने उसे
मौत की अज़ियतनाक गिरिफ़्त से आज़ाद करके
ज़िंदा कर दिया, क्योंकि मुमकिन ही नहीं था कि
मौत उसे अपने क़ब्ज़े में रखे। 25 चुनाँचे दाऊद ने
उसके बारे में कहा,

'रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहा।
वह मेरे दहने हाथ रहता है
ताकि मैं न डगमगाऊँ।
26 इसलिए मेरा दिल शादमान है,
और मेरी ज़बान ख़ुशी के नारे लगाती है।
हाँ, मेरा बदन पुरउम्मीद ज़िंदगी गुज़ारेगा।
27 क्योंकि तू मेरी जान को
पाताल में नहीं छोड़ेगा,
और न अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने
की नौबत तक पहुँचने देगा।
28 तूने मुझे ज़िंदगी की राहों से
आगाह कर दिया है,
और तू अपने हुज़ूर मुझे ख़ुशी से
सरशार करेगा।'

29 मेरे भाइयो, अगर इजाज़त हो तो मैं आपको
दिलेरी से अपने बुज़ुर्ग दाऊद के बारे में कुछ
बताऊँ। वह तो फ़ौत होकर दफ़नाया गया और
उस की क़ब्र आज तक हमारे दरमियान मौजूद
है। 30 लेकिन वह नबी था और जानता था कि
अल्लाह ने क़सम खाकर मुझसे वादा किया
है कि वह मेरी औलाद में से एक को मेरे
तख़्त पर बिठाएगा। 31 मज़कूरा आयात में दाऊद
मुस्तक़बिल में देखकर मसीह के जी उठने का
ज़िक्र कर रहा है, यानी कि न उसे पाताल में छोड़ा
गया, न उसका बदन गलने-सड़ने की नौबत तक
पहुँचा। 32 अल्लाह ने इसी ईसा को ज़िंदा कर
दिया है और हम सब इसके गवाह हैं। 33 अब उसे

सरफ़राज़ करके ख़ुदा के दहने हाथ बिठाया गया
और बाप की तरफ़ से उसे मौऊदा रूहुल-क़ुद्स
मिल गया है। इसी को उसने हम पर उंडेल दिया,
जिस तरह आप देख और सुन रहे हैं। 34 दाऊद
ख़ुद तो आसमान पर नहीं चढ़ा, तो भी उसने
फ़रमाया,

‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ
35 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।’

36 चुनाँचे पूरा इसराईल यक़ीन जाने कि जिस
ईसा को आपने मसलूब किया है उसे ही अल्लाह
ने ख़ुदावंद और मसीह बना दिया है।”

37 पतरस की यह बातें सुनकर लोगों के दिल
छिद गए। उन्होंने पतरस और बाक़ी रसूलों से
पूछा, “भाइयो, फिर हम क्या करें?”

38 पतरस ने जवाब दिया, “आपमें से हर एक
तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि
आपके गुनाह मुआफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको
रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। 39 क्योंकि
यह देने का वादा आपसे और आपके बच्चों से
किया गया है, बल्कि उनसे भी जो दूर के हैं,
उन सबसे जिन्हें रब हमारा ख़ुदा अपने पास
बुलाएगा।”

40 पतरस ने मज़ीद बहुत-सी बातों से उन्हें
नसीहत की और समझाया कि “इस टेढ़ी नसल
से निकलकर नजात पाएँ।” 41 जिन्होंने पतरस
की बात क़बूल की उनका बपतिस्मा हुआ। यों
उस दिन जमात में तक़रीबन 3,000 अफ़राद का
इज़ाफ़ा हुआ। 42 यह ईमानदार रसूलों से तालीम
पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और
दुआओं में शरीक होते रहे।

ईमानदारों की हैरतअंगेज़ ज़िंदगी

43 सब पर ख़ौफ़ छा गया और रसूलों की तरफ़
से बहुत-से मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए
गए। 44 जो भी ईमान लाते थे वह एक जगह
जमा होते थे। उनकी हर चीज़ मुश्तरका होती थी।
45 अपनी मिलकियत और माल फ़रोख़्त करके
उन्होंने हर एक को उस की ज़रूरत के मुताबिक़
दिया। 46 रोज़ाना वह यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस
में जमा होते रहे। साथ साथ वह मसीह की याद में
अपने घरों में रोटी तोड़ते, बड़ी ख़ुशी और सादगी
से रिफ़ाक़ती खाना खाते 47 और अल्लाह की
तमजीद करते रहे। उस वक़्त वह तमाम लोगों के
मंज़ूरे-नज़र थे। और ख़ुदावंद रोज़ बरोज़ जमात
में नजातयाफ़्ता लोगों का इज़ाफ़ा करता रहा।

लँगड़े आदमी की शफ़ा

3 एक दोपहर पतरस और यूहन्ना दुआ करने
के लिए बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ चल पड़े।
तीन बज गए थे। 2 उस वक़्त लोग एक पैदाइशी
लँगड़े को उठाकर वहाँ ला रहे थे। रोज़ाना उसे
सहन के उस दरवाज़े के पास लाया जाता था
जो ‘ख़ूबसूरत दरवाज़ा’ कहलाता था ताकि वह
बैतुल-मुक़द्दस के सहनों में दाख़िल होनेवालों से
भीक माँग सके। 3 पतरस और यूहन्ना बैतुल-
मुक़द्दस में दाख़िल होनेवाले थे तो लँगड़ा उनसे
भीक माँगने लगा। 4 पतरस और यूहन्ना ग़ौर
से उस की तरफ़ देखने लगे। फिर पतरस ने
कहा, “हमारी तरफ़ देखें।” 5 इस तवक़्क़ो से कि
उसे कुछ मिलेगा लँगड़ा उनकी तरफ़ मुतवज्जिह
हुआ। 6 लेकिन पतरस ने कहा, “मेरे पास न तो
चाँदी है, न सोना, लेकिन जो कुछ है वह आपको
दे देता हूँ। नासरत के ईसा मसीह के नाम से
उठें और चलें-फिरें!” 7 उसने उसका दहना हाथ
पकड़कर उसे खड़ा किया। उसी वक़्त लँगड़े के
पाँव और टख़ने मज़बूत हो गए। 8 वह उछलकर
खड़ा हुआ और चलने-फिरने लगा। फिर वह
चलते, कूदते और अल्लाह की तमजीद करते हुए
उनके साथ बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल हुआ। 9 और
तमाम लोगों ने उसे चलते-फिरते और अल्लाह
की तमजीद करते हुए देखा। 10 जब उन्होंने जान
लिया कि यह वही आदमी है जो ख़ूबसूरत नामी
दरवाज़े पर बैठा भीक माँगा करता था तो वह उस
की तबदीली देखकर दंग रह गए।

बैतुल-मुक़द्दस में पतरस का पैग़ाम

11 वह सब दौड़कर सुलेमान के बरामदे में आए
जहाँ भीक माँगनेवाला अब तक पतरस और
यूहन्ना से लिपटा हुआ था। 12 यह देखकर पतरस
उनसे मुख़ातिब हुआ, “इसराईल के हज़रात,
आप यह देखकर क्यों हैरान हैं? आप क्यों घूर
घूरकर हमारी तरफ़ देख रहे हैं गोया हमने अपनी
ज़ाती ताक़त या दीनदारी के बाइस यह किया है
कि यह आदमी चल-फिर सके? 13 यह हमारे
बापदादा के ख़ुदा, इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब
के ख़ुदा की तरफ़ से है जिसने अपने बंदे ईसा
को जलाल दिया है। यह वही ईसा है जिसे आपने
दुश्मन के हवाले करके पीलातुस के सामने रद्द
किया, अगरचे वह उसे रिहा करने का फ़ैसला कर
चुका था। 14 आपने उस क़ुद्दूस और रास्तबाज़
को रद्द करके तक़ाज़ा किया कि पीलातुस उसके
एवज़ एक क़ातिल को रिहा करके आपको दे
दे। 15 आपने ज़िंदगी के सरदार को क़त्ल किया,
लेकिन अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर
दिया। हम इस बात के गवाह हैं। 16 आप तो इस
आदमी से वाक़िफ़ हैं जिसे देख रहे हैं। अब वह
ईसा के नाम पर ईमान लाने से बहाल हो गया है,
क्योंकि जो ईमान ईसा के ज़रीए मिलता है उसी
ने इस आदमी को आपके सामने पूरी सेहतमंदी
अता की।

17 मेरे भाइयो, मैं जानता हूँ कि आप और
आपके राहनुमाओं को सहीह इल्म नहीं था,
इसलिए आपने ऐसा किया। 18 लेकिन अल्लाह
ने वह कुछ पूरा किया जिसकी पेशगोई उसने
तमाम नबियों की मारिफ़त की थी, यानी यह कि
उसका मसीह दुख उठाएगा। 19 अब तौबा करें
और अल्लाह की तरफ़ रुजू लाएँ ताकि आपके
गुनाहों को मिटाया जाए। 20 फिर आपको रब
के हुज़ूर से ताज़गी के दिन मुयस्सर आएँगे और
वह दुबारा ईसा यानी मसीह को भेज देगा जिसे
आपके लिए मुक़र्रर किया गया है। 21 लाज़िम है
कि वह उस वक़्त तक आसमान पर रहे जब तक
अल्लाह सब कुछ बहाल न कर दे, जिस तरह
वह इब्तिदा से अपने मुक़द्दस नबियों की ज़बानी
फ़रमाता आया है। 22 क्योंकि मूसा ने कहा, ‘रब
तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ
जैसे नबी को बरपा करेगा। जो भी बात वह कहे
उस की सुनना। 23 जो नहीं सुनेगा उसे मिटाकर
क़ौम से निकाल दिया जाएगा।’ 24 और समुएल
से लेकर हर नबी ने इन दिनों की पेशगोई की
है। 25 आप तो इन नबियों की औलाद और उस
अहद के वारिस हैं जो अल्लाह ने आपके बापदादा
से क़ायम किया था, क्योंकि उसने इब्राहीम से
कहा था, ‘तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें
बरकत पाएँगी।’ 26 जब अल्लाह ने अपने बंदे
ईसा को बरपा किया तो पहले उसे आपके पास
भेज दिया ताकि वह आपमें से हर एक को उस
की बुरी राहों से फेरकर बरकत दे।”

पतरस और यूहन्ना यहूदी अदालते-आलिया के सामने

4 पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर
ही रहे थे कि इमाम, बैतुल-मुक़द्दस के
पहरेदारों का कप्तान और सदूक़ी उनके पास
पहुँचे। 2 वह नाराज़ थे कि रसूल ईसा के जी उठने
की मुनादी करके लोगों को मुरदों में से जी उठने
की तालीम दे रहे हैं। 3 उन्होंने उन्हें गिरिफ़्तार
करके अगले दिन तक जेल में डाल दिया, क्योंकि
शाम हो चुकी थी। 4 लेकिन जिन्होंने उनका पैग़ाम
सुन लिया था उनमें से बहुत-से लोग ईमान लाए।
यों ईमानदारों में मर्दों की तादाद बढ़कर तक़रीबन
5,000 तक पहुँच गई।

5 अगले दिन यरूशलम में यहूदी अदालते-
आलिया के सरदारों, बुज़ुर्गों और शरीअत के
उलमा का इजलास मुनअक़िद हुआ। 6 इमामे-
आज़म हन्ना और इसी तरह कायफ़ा, यूहन्ना,
सिकंदर और इमामे-आज़म के ख़ानदान के दीगर
मर्द भी शामिल थे। 7 उन्होंने दोनों को अपने
दरमियान खड़ा करके पूछा, “तुमने यह काम
किस क़ुव्वत और नाम से किया?”

8 पतरस ने रूहुल-क़ुद्स से मामूर होकर उनसे
कहा, "क़ौम के राहनुमाओ और बुज़ुर्गो, 9 आज
हमारी पूछ-गछ की जा रही है कि हमने माज़ूर
आदमी पर रहम का इज़हार किसके वसीले से
किया कि उसे शफ़ा मिल गई है। 10 तो फिर
आप सब और पूरी क़ौम इसराईल जान ले कि
यह नासरत के ईसा मसीह के नाम से हुआ है,
जिसे आपने मसलूब किया और जिसे अल्लाह ने
मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। यह आदमी उसी के
वसीले से सेहत पाकर यहाँ आपके सामने खड़ा
है। 11 ईसा वह पत्थर है जिसके बारे में कलामे-
मुक़द्दस में लिखा है, 'जिस पत्थर को मकान
बनानेवालों ने रद्द किया वह कोने का बुनियादी
पत्थर बन गया।' और आप ही ने उसे रद्द कर दिया
है। 12 किसी दूसरे के वसीले से नजात हासिल
नहीं होती, क्योंकि आसमान के तले हम इनसानों
को कोई और नाम नहीं बख़्शा गया जिसके वसीले
से हम नजात पा सकें।"

13 पतरस और यूहन्ना की बातें सुनकर लोग
हैरान हुए क्योंकि वह दिलेरी से बात कर रहे थे
अगरचे वह न तो आलिम थे, न उन्होंने शरीअत
की ख़ास तालीम पाई थी। साथ साथ सुननेवालों
ने यह भी जान लिया कि दोनों ईसा के साथी
हैं। 14 लेकिन चूँकि वह अपनी आँखों से उस
आदमी को देख रहे थे जो शफ़ा पाकर उनके
साथ खड़ा था इसलिए वह इसके ख़िलाफ़ कोई
बात न कर सके। 15 चुनाँचे उन्होंने उन दोनों को
इजलास में से बाहर जाने को कहा और आपस
में सलाह-मशवरा करने लगे, 16 "हम इन लोगों
के साथ क्या सुलूक करें? बात वाज़िह है कि
उनके ज़रीए एक इलाही निशान दिखाया गया है।
इसका यरूशलम के तमाम बाशिंदों को इल्म हुआ
है। हम इसका इनकार नहीं कर सकते। 17 लेकिन
लाज़िम है कि उन्हें धमकी देकर हुक्म दें कि वह
किसी भी शख़्स से यह नाम लेकर बात न करें,
वरना यह मामला क़ौम में मज़ीद फैल जाएगा।"

18 चुनाँचे उन्होंने दोनों को बुलाकर हुक्म दिया
कि वह आइंदा ईसा के नाम से न कभी बोलें और
न तालीम दें।

19 लेकिन पतरस और यूहन्ना ने जवाब में
कहा, "आप ख़ुद फ़ैसला कर लें, क्या यह
अल्लाह के नज़दीक ठीक है कि हम उस की
निसबत आपकी बात मानें? 20 मुमकिन ही नहीं
कि जो कुछ हमने देख और सुन लिया है उसे दूसरों
को सुनाने से बाज़ रहें।"

21 तब इजलास के मेंबरान ने दोनों को मज़ीद
धमकियाँ देकर छोड़ दिया। वह फ़ैसला न कर
सके कि क्या सज़ा दें, क्योंकि तमाम लोग पतरस
और यूहन्ना के इस काम की वजह से अल्लाह की
तमजीद कर रहे थे। 22 क्योंकि जिस आदमी को
मोजिज़ाना तौर पर शफ़ा मिली थी वह चालीस
साल से ज़्यादा लँगड़ा रहा था।

दिलेरी के लिए दुआ

23 उनकी रिहाई के बाद पतरस और यूहन्ना
अपने साथियों के पास वापस गए और सब कुछ
सुनाया जो राहनुमा इमामों और बुज़ुर्गों ने उन्हें
बताया था। 24 यह सुनकर तमाम ईमानदारों ने
मिलकर ऊँची आवाज़ से दुआ की, "ऐ आक़ा,
तूने आसमानो-ज़मीन और समुंदर को और जो
कुछ उनमें है ख़लक़ किया है। 25 और तूने अपने
ख़ादिम हमारे बाप दाऊद के मुँह से रूहुल-क़ुद्स
की मारिफ़त कहा,

'अक़वाम क्यों तैश में आ गई हैं?
उम्मतें क्यों बेकार साज़िशें कर रही हैं?
26 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए,
हुक्मरान रब और उसके मसीह के ख़िलाफ़
जमा हो गए हैं।'

27 और वाक़ई यही कुछ इस शहर में हुआ।
हेरोदेस अंतिपास, पुंतियुस पीलातुस, ग़ैरयहूदी
और यहूदी सब तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के
ख़िलाफ़ जमा हुए जिसे तूने मसह किया था।
28 लेकिन जो कुछ उन्होंने किया वह तूने अपनी
क़ुदरत और मरज़ी से पहले ही से मुक़र्रर किया

था। 29 ऐ रब, अब उनकी धमकियों पर ग़ौर कर।
अपने ख़ादिमों को अपना कलाम सुनाने की बड़ी
दिलेरी अता फ़रमा। 30 अपनी क़ुदरत का इज़हार
कर ताकि हम तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के नाम से
शफ़ा, इलाही निशान और मोजिज़े दिखा सकें।”

31 दुआ के इख़्तिताम पर वह जगह हिल गई
जहाँ वह जमा थे। सब रूहुल-क़ुद्स से मामूर हो
गए और दिलेरी से अल्लाह का कलाम सुनाने
लगे।

ईमानदारों की मुश्तरका मिलकियत

32 ईमानदारों की पूरी जमात यकदिल थी।
किसी ने भी अपनी मिलकियत की किसी चीज़ के
बारे में नहीं कहा कि यह मेरी है बल्कि उनकी हर
चीज़ मुश्तरका थी। 33 और रसूल बड़े इख़्तियार
के साथ ख़ुदावंद ईसा के जी उठने की गवाही देते
रहे। अल्लाह की बड़ी मेहरबानी उन सब पर थी।
34 उनमें से कोई भी ज़रूरतमंद नहीं था, क्योंकि
जिसके पास भी ज़मीनें या मकान थे उसने उन्हें
फ़रोख़्त करके रक़म 35 रसूलों के पाँवों में रख
दी। यों जमाशुदा पैसों में से हर एक को उतने
दिए जाते जितनों की उसे ज़रूरत होती थी।

36 मसलन यूसुफ़ नामी एक आदमी था
जिसका नाम रसूलों ने बरनबास (हौसला-
अफ़्ज़ाई का बेटा) रखा था। वह लावी
क़बीले से और जज़ीराए-क़ुबरुस का रहने-
वाला था। 37 उसने अपना एक खेत फ़रोख़्त
करके पैसे रसूलों के पाँवों में रख दिए।

हननियाह और सफ़ीरा

5 एक और आदमी था जिसने अपनी बीवी के
साथ मिलकर अपनी कोई ज़मीन बेच दी।
उनके नाम हननियाह और सफ़ीरा थे। 2 लेकिन
हननियाह पूरी रक़म रसूलों के पास न लाया
बल्कि उसमें से कुछ अपने लिए रख छोड़ा और
बाक़ी रसूलों के पाँवों में रख दिया। उस की बीवी
भी इस बात से वाक़िफ़ थी। 3 लेकिन पतरस ने
कहा, “हननियाह, इबलीस ने आपके दिल को यों
क्यों भर दिया है कि आपने रूहुल-क़ुद्स से झूट
बोला है? क्योंकि आपने ज़मीन की रक़म के कुछ
पैसे अपने पास रख लिए हैं। 4 क्या यह ज़मीन
फ़रोख़्त करने से पहले आपकी नहीं थी? और
उसे बेचकर क्या आप पैसे जैसे चाहते इस्तेमाल
नहीं कर सकते थे? आपने क्यों अपने दिल में
यह ठान लिया? आपने हमें नहीं बल्कि अल्लाह
को धोका दिया है।”

5 यह सुनते ही हननियाह फ़र्श पर गिरकर मर
गया। और तमाम सुननेवालों पर बड़ी दहशत तारी
हो गई। 6 जमात के नौजवानों ने उठकर लाश को
कफ़न में लपेट दिया और उसे बाहर ले जाकर
दफ़न कर दिया।

7 तक़रीबन तीन घंटे गुज़र गए तो उस की बीवी
अंदर आई। उसे मालूम न था कि शौहर को क्या
हुआ है।

8 पतरस ने उससे पूछा, “मुझे बताएँ, क्या
आपको अपनी ज़मीन के लिए इतनी ही रक़म
मिली थी?”

सफ़ीरा ने जवाब दिया, “जी, इतनी ही रक़म
थी।”

9 पतरस ने कहा, “क्यों आप दोनों रब के रूह
को आज़माने पर मुत्तफ़िक़ हुए? देखो, जिन्होंने
आपके ख़ाविंद को दफ़नाया है वह दरवाज़े पर
खड़े हैं और आपको भी उठाकर बाहर ले जाएंगे।”
10 उसी लमहे सफ़ीरा पतरस के पाँवों में गिरकर
मर गई। नौजवान अंदर आए तो उस की लाश
देखकर उसे भी बाहर ले गए और उसके शौहर के
पास दफ़न कर दिया। 11 पूरी जमात बल्कि हर
सुननेवाले पर बड़ा ख़ौफ़ तारी हो गया।

मोजिज़े

12 रसूलों की मारिफ़त अवाम में बहुत-से
इलाही निशान और मोजिज़े ज़ाहिर हुए। उस
वक़्त तमाम ईमानदार यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस
में सुलेमान के बरामदे में जमा हुआ करते
थे। 13 बाक़ी लोग उनसे क़रीबी ताल्लुक़ रखने
की जुर्रत नहीं करते थे, अगरचे अवाम उनकी

बहुत इज़्ज़त करते थे। 14 तो भी ख़ुदावंद पर
ईमान रखनेवाले मर्दों-ख़वातीन की तादाद बढ़ती
गई। 15 लोग अपने मरीज़ों को चारपाइयों और
चटाइयों पर रखकर सड़कों पर लाते थे ताकि जब
पतरस वहाँ से गुज़रे तो कम अज़ कम उसका
साया किसी न किसी पर पड़ जाए। 16 बहुत-से
लोग यरूशलम के इर्दगिर्द की आबादियों से भी
अपने मरीज़ों और बदरूह-गिरिफ़्ता अज़ीज़ों को
लाते, और सब शफ़ा पाते थे।

रसूलों की ईज़ारसानी

17 फिर इमामे-आज़म सदूक़ी फ़िरक़े के तमाम
साथियों के साथ हरकत में आया। हसद से
जलकर 18 उन्होंने रसूलों को गिरिफ़्तार करके
अवामी जेल में डाल दिया। 19 लेकिन रात
को रब का एक फ़रिश्ता क़ैदख़ाने के दरवाज़ों
को खोलकर उन्हें बाहर लाया। उसने कहा,
20 “जाओ, बैतुल-मुक़द्दस में खड़े होकर लोगों
को इस नई ज़िंदगी से मुताल्लिक़ सब बातें
सुनाओ।” 21 फ़रिश्ते की सुनकर रसूल सुबह-
सवेरे बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगे।

अब ऐसा हुआ कि इमामे-आज़म अपने
साथियों समेत पहुँचा और यहूदी अदालते-
आलिया का इजलास मुनअक़िद किया। इसमें
इसराईल के तमाम बुज़ुर्ग शरीक हुए। फिर उन्होंने
अपने मुलाज़िमों को क़ैदख़ाने में भेज दिया ताकि
रसूलों को लाकर उनके सामने पेश किया जाए।
22 लेकिन जब वह वहाँ पहुँचे तो पता चला कि
रसूल जेल में नहीं हैं। वह वापस आए और कहने
लगे, 23 “जब हम पहुँचे तो जेल बड़ी एहतियात
से बंद थी और दरवाज़ों पर पहरेदार खड़े थे।
लेकिन जब हम दरवाज़ों को खोलकर अंदर गए
तो वहाँ कोई नहीं था!” 24 यह सुनकर बैतुल-
मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान और राहनुमा
इमाम बड़ी उलझन में पड़ गए और सोचने लगे
कि अब क्या होगा? 25 इतने में कोई आकर
कहने लगा, “बात सुनें, जिन आदमियों को आपने
जेल में डाला था वह बैतुल-मुक़द्दस में खड़े लोगों
को तालीम दे रहे हैं।” 26 तब बैतुल-मुक़द्दस के
पहरेदारों का कप्तान अपने मुलाज़िमों के साथ
रसूलों के पास गया और उन्हें लाया, लेकिन
ज़बरदस्ती नहीं, क्योंकि वह डरते थे कि जमाशुदा
लोग उन्हें संगसार न कर दें।

27 चुनाँचे उन्होंने रसूलों को लाकर इज-
लास के सामने खड़ा किया। इमामे-आज़म उनसे
मुख़ातिब हुआ, 28 “हमने तो तुमको सख़्ती से
मना किया था कि इस आदमी का नाम लेकर
तालीम न दो। इसके बरअक्स तुमने न सिर्फ़
अपनी तालीम यरूशलम की हर जगह तक पहुँचा
दी है बल्कि हमें इस आदमी की मौत के ज़िम्मेदार
भी ठहराना चाहते हो।”

29 पतरस और बाक़ी रसूलों ने जवाब दिया,
“लाज़िम है कि हम पहले अल्लाह की सुनें, फिर
इनसान की। 30 हमारे बापदादा के ख़ुदा ने ईसा
को ज़िंदा कर दिया, उसी शख़्स को जिसे आपने
सलीब पर चढ़वाकर मार डाला था। 31 अल्लाह ने
उसी को हुक्मरान और नजातदहिंदा की हैसियत
से सरफ़राज़ करके अपने दहने हाथ बिठा लिया
ताकि वह इसराईल को तौबा और गुनाहों की
मुआफ़ी का मौक़ा फ़राहम करे। 32 हम ख़ुद इन
बातों के गवाह हैं और रूहुल-क़ुद्स भी, जिसे
अल्लाह ने अपने फ़रमाँबरदारों को दे दिया है।”

33 यह सुनकर अदालत के लोग तैश में आकर
उन्हें क़त्ल करना चाहते थे। 34 लेकिन एक
फ़रीसी आलिम इजलास में खड़ा हुआ जिसका
नाम जमलियेल था। पूरी क़ौम में वह इज़्ज़तदार
था। उसने हुक्म दिया कि रसूलों को थोड़ी देर
के लिए इजलास से निकाल दिया जाए। 35 फिर
उसने कहा, “मेरे इसराईली भाइयो, ग़ौर से सोचें
कि आप इन आदमियों के साथ क्या करेंगे।
36 क्योंकि कुछ देर हुई थियूदास उठकर कहने
लगा कि मैं कोई ख़ास शख़्स हूँ। तक़रीबन
400 आदमी उसके पीछे लग गए। लेकिन उसे
क़त्ल किया गया और उसके पैरोकार बिखर गए।
उनकी सरगरमियों से कुछ न हुआ। 37 इसके
बाद मर्दुमशुमारी के दिनों में यहूदाह गलीली उठा।

उसने भी काफ़ी लोगों को अपने पैरोकार बनाकर
बग़ावत करने पर उकसाया। लेकिन उसे भी
मार दिया गया और उसके पैरोकार मुंतशिर हुए।
38 यह पेशे-नज़र रखकर मेरा मशवरा यह है कि
इन लोगों को छोड़ दें, इन्हें जाने दें। अगर इनका
इरादा या सरगरमियाँ इनसानी हैं तो सब कुछ
ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाएगा। 39 लेकिन अगर
यह अल्लाह की तरफ़ से है तो आप इन्हें ख़त्म
नहीं कर सकेंगे। ऐसा न हो कि आख़िरकार आप
अल्लाह ही के ख़िलाफ़ लड़ रहे हों।”
हाज़िरीन ने उस की बात मान ली। 40 उन्होंने
रसूलों को बुलाकर उनको कोड़े लगवाए। फिर
उन्होंने उन्हें ईसा का नाम लेकर बोलने से मना
किया और फिर जाने दिया। 41 रसूल यहूदी
अदालते-आलिया से निकलकर चले गए। यह
बात उनके लिए बड़ी ख़ुशी का बाइस थी कि
अल्लाह ने हमें इस लायक़ समझा है कि ईसा के
नाम की ख़ातिर बेइज़्ज़त हो जाएँ। 42 इसके बाद
भी वह रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस और मुख़्तलिफ़
घरों में जा जाकर सिखाते और इस ख़ुशख़बरी
की मुनादी करते रहे कि ईसा ही मसीह है।

रसूलों के सात मददगार

6 उन दिनों में जब ईसा के शागिर्दों की तादाद
बढ़ती गई तो यूनानी ज़बान बोलनेवाले
ईमानदार इबरानी बोलनेवाले ईमानदारों के बारे
में बुड़बुड़ाने लगे। उन्होंने कहा, “जब रोज़मर्रा
का खाना तक़सीम होता है तो हमारी बेवाओं को
नज़रंदाज़ किया जाता है।” 2 तब बारह रसूलों ने
शागिर्दों की पूरी जमात को इकट्ठा करके कहा,
“यह ठीक नहीं कि हम अल्लाह का कलाम
सिखाने की ख़िदमत को छोड़कर खाना तक़सीम
करने में मसरूफ़ रहें। 3 भाइयो, यह बात पेशे-
नज़र रखकर अपने में से सात आदमी चुन लें,
जिनके नेक किरदार की आप तसदीक़ कर सकते
हैं और जो रूहुल-क़ुद्स और हिकमत से मामूर
हैं। फिर हम उन्हें खाना तक़सीम करने की यह
ज़िम्मेदारी देकर 4 अपना पूरा वक़्त दुआ और
कलाम की ख़िदमत में सर्फ़ कर सकेंगे।”
5 यह बात पूरी जमात को पसंद आई और
उन्होंने सात आदमी चुन लिए : स्तिफ़नुस
(जो ईमान और रूहुल-क़ुद्स से मामूर था),
फ़िलिप्पुस, प्रुख़ुरुस, नीकानोर, तीमोन,
परमिनास और अंताकिया का नीकुलाउस।
(नीकुलाओस ग़ैरयहूदी था जिसने ईसा पर ईमान
लाने से पहले यहूदी मज़हब को अपना लिया
था।) 6 इन सात आदमियों को रसूलों के सामने
पेश किया गया तो उन्होंने इन पर हाथ रखकर
दुआ की।
7 यों अल्लाह का पैग़ाम फैलता गया।
यरूशलम में ईमानदारों की तादाद निहायत बढ़ती
गई और बैतुल-मुक़द्दस के बहुत-से इमाम भी
ईमान ले आए।

स्तिफ़नुस की गिरिफ़्तारी

8 स्तिफ़नुस अल्लाह के फ़ज़ल और क़ु-
व्वत से मामूर था और लोगों के दरमियान
बड़े बड़े मोजिज़े और इलाही निशान दिखाता
था। 9 एक दिन कुछ यहूदी स्तिफ़नुस से
बहस करने लगे। (वह कुरेन, इस्कंदरिया,
किलिकिया और सूबा आसिया के रहनेवाले
थे और उनके इबादतख़ाने का नाम लिबर-
तीनियों यानी आज़ाद किए गए ग़ुलामों का
इबादतख़ाना था।) 10 लेकिन वह न उस की
हिकमत का सामना कर सके, न उस रूह का
जो कलाम करते वक़्त उस की मदद करता था।
11 इसलिए उन्होंने बाज़ आदमियों को यह कहने
को उकसाया कि “इसने मूसा और अल्लाह के
बारे में कुफ़्र बका है। हम ख़ुद इसके गवाह हैं।”
12 यों आम लोगों, बुज़ुर्गों और शरीअत के उलमा
में हलचल मच गई। वह स्तिफ़नुस पर चढ़ आए
और उसे घसीटकर यहूदी अदालते-आलिया के
पास लाए। 13 वहाँ उन्होंने झूटे गवाह खड़े किए
जिन्होंने कहा, “यह आदमी बैतुल-मुक़द्दस और
शरीअत के ख़िलाफ़ बातें करने से बाज़ नहीं

आता। 14 हमने इसके मुँह से सुना है कि ईसा नासरी यह मक़ाम तबाह करेगा और वह रस्मो-रिवाज बदल देगा जो मूसा ने हमारे सुपुर्द किए हैं।” 15 जब इजलास में बैठे तमाम लोग घूर घूरकर स्तिफ़नुस की तरफ़ देखने लगे तो उसका चेहरा फ़रिश्ते का-सा नज़र आया।

स्तिफ़नुस की तक़रीर

7 इमामे-आज़म ने पूछा, “क्या यह सच है?”

2 स्तिफ़नुस ने जवाब दिया, “भाइयो और बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें। जलाल का ख़ुदा हमारे बाप इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ जब वह अभी मसोपुतामिया में आबाद था। उस वक़्त वह हारान में मुंतक़िल नहीं हुआ था। 3 अल्लाह ने उससे कहा, ‘अपने वतन और अपनी क़ौम को छोड़कर इस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।’ 4 चुनाँचे वह कसदियों के मुल्क को छोड़कर हारान में रहने लगा। वहाँ उसका बाप फ़ौत हुआ तो अल्लाह ने उसे इस मुल्क में मुंतक़िल किया जिसमें आप आज तक आबाद हैं। 5 उस वक़्त अल्लाह ने उसे इस मुल्क में कोई भी मौरूसी ज़मीन न दी थी, एक मुरब्बा फ़ुट तक भी नहीं। लेकिन उसने उससे वादा किया, ‘मैं इस मुल्क को तेरे और तेरी औलाद के क़ब्ज़े में कर दूँगा,’ अगरचे उस वक़्त इब्राहीम के हाँ कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ था। 6 अल्लाह ने उसे यह भी बताया, ‘तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उसका नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और ग़ुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया जाएगा। 7 लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत करूँगा जिसने उसे ग़ुलाम बनाया होगा। इसके बाद वह उस मुल्क में से निकलकर इस मक़ाम पर मेरी इबादत करेंगे।’ 8 फिर अल्लाह ने इब्राहीम को ख़तना का अहद दिया। चुनाँचे जब इब्राहीम का बेटा इसहाक़ पैदा हुआ तो बाप ने आठवें दिन उसका ख़तना किया। यह सिलसिला जारी रहा जब इसहाक़ का बेटा याक़ूब पैदा हुआ और याक़ूब के बारह बेटे, हमारे बारह क़बीलों के सरदार।

9 यह सरदार अपने भाई यूसुफ़ से हसद करने लगे और इसलिए उसे बेच दिया। यों वह ग़ुलाम बनकर मिसर पहुँचा। लेकिन अल्लाह उसके साथ रहा 10 और उसे उस की तमाम मुसीबतों से रिहाई दी। उसने उसे दानाई अता करके इस क़ाबिल बना दिया कि वह मिसर के बादशाह फ़िरौन का मंज़ूरे-नज़र हो जाए। यों फ़िरौन ने उसे मिसर और अपने पूरे घराने पर हुक्मरान मुक़र्रर किया। 11 फिर तमाम मिसर और कनान में काल पड़ा। लोग बड़ी मुसीबत में पड़ गए और हमारे बापदादा के पास भी ख़ुराक ख़त्म हो गई। 12 याक़ूब को पता चला कि मिसर में अब तक अनाज है, इसलिए उसने अपने बेटों को अनाज ख़रीदने को वहाँ भेज दिया। 13 जब उन्हें दूसरी बार वहाँ जाना पड़ा तो यूसुफ़ ने अपने आपको अपने भाइयों पर ज़ाहिर किया, और फ़िरौन को यूसुफ़ के ख़ानदान के बारे में आगाह किया गया। 14 इसके बाद यूसुफ़ ने अपने बाप याक़ूब और तमाम रिश्तेदारों को बुला लिया। कुल 75 अफ़राद आए। 15 यों याक़ूब मिसर पहुँचा। वहाँ वह और हमारे बापदादा मर गए। 16 उन्हें सिकम में लाकर उस क़ब्र में दफ़नाया गया जो इब्राहीम ने हमोर की औलाद से पैसे देकर ख़रीदी थी।

17 फिर वह वक़्त क़रीब आ गया जिसका वादा अल्लाह ने इब्राहीम से किया था। मिसर में हमारी क़ौम की तादाद बहुत बढ़ चुकी थी। 18 लेकिन होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। 19 उसने हमारी क़ौम का इस्तेह्साल करके उनसे बदसुलूकी की और उन्हें अपने शीरख़ार बच्चों को ज़ाया करने पर मजबूर किया। 20 उस वक़्त मूसा पैदा हुआ। वह अल्लाह के नज़दीक ख़ूबसूरत बच्चा था और तीन माह तक अपने बाप के घर में पाला गया। 21 इसके बाद वालिदैन को उसे छोड़ना पड़ा, लेकिन फ़िरौन की बेटी ने उसे लेपालक बनाकर अपने बेटे के तौर पर पाला। 22 और मूसा को मिसरियों की हिकमत

के हर शोबे में तरबियत मिली। उसे बोलने और अमल करने की ज़बरदस्त क़ाबिलियत हासिल थी।

23 जब वह चालीस साल का था तो उसे अपनी क़ौम इसराईल के लोगों से मिलने का ख़याल
आया। 24 जब उसने उनके पास जाकर देखा कि एक मिसरी किसी इसराईली पर तशद्दुद कर रहा है तो उसने इसराईली की हिमायत करके मज़लूम का बदला लिया और मिसरी को मार डाला।
25 उसका ख़याल तो यह था कि मेरे भाइयों को समझ आएगी कि अल्लाह मेरे वसीले से उन्हें रिहाई देगा, लेकिन ऐसा नहीं था। 26 अगले दिन
वह दो इसराईलियों के पास से गुज़रा जो आपस में लड़ रहे थे। उसने सुलह कराने की कोशिश में कहा, 'मर्दो, आप तो भाई हैं। आप क्यों एक दूसरे से ग़लत सुलूक कर रहे हैं?' 27 लेकिन
जो आदमी दूसरे से बदसुलूकी कर रहा था उसने मूसा को एक तरफ़ धकेलकर कहा, 'किसने आपको हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया है? 28 क्या आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते हैं जिस तरह कल मिसरी को मार डाला था?'
29 यह सुनकर मूसा फ़रार होकर मुल्के-मिदियान में अजनबी के तौर पर रहने लगा। वहाँ उसके दो बेटे पैदा हुए।

30 चालीस साल के बाद एक फ़रिश्ता जलती हुई काँटेदार झाड़ी के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। उस वक़्त मूसा सीना पहाड़ के क़रीब
रेगिस्तान में था। 31 यह मंज़र देखकर मूसा हैरान हुआ। जब वह उसका मुआयना करने के लिए
क़रीब पहुँचा तो रब की आवाज़ सुनाई दी, 32 'मैं
तेरे बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।' मूसा थरथराने लगा और उस
तरफ़ देखने की जुर्रत न की। 33 फिर रब ने उससे
कहा, 'अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस
ज़मीन पर खड़ा है। 34 मैंने मिसर में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और उनकी आहें सुनी हैं, इसलिए उन्हें बचाने के लिए उतर आया हूँ। अब जा, मैं तुझे मिसर भेजता हूँ।'

35 यों अल्लाह ने उस शख़्स को उनके पास भेज दिया जिसे वह यह कहकर रद्द कर चुके थे कि 'किसने आपको हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया है?' जलती हुई काँटेदार झाड़ी में मौजूद फ़रिश्ते की मारिफ़त अल्लाह ने मूसा को उनके पास भेज दिया ताकि वह उनका
हुक्मरान और नजातदहिंदा बन जाए। 36 और वह
मोजिज़े और इलाही निशान दिखाकर उन्हें मिसर से निकाल लाया, फिर बहरे-क़ुलज़ुम से गुज़रकर 40 साल के दौरान रेगिस्तान में उनकी राहनुमाई
की। 37 मूसा ने ख़ुद इसराईलियों को बताया, 'अल्लाह तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ
जैसे नबी को बरपा करेगा।' 38 मूसा रेगिस्तान में
क़ौम की जमात में शरीक था। एक तरफ़ वह उस फ़रिश्ते के साथ था जो सीना पहाड़ पर उससे बातें करता था, दूसरी तरफ़ हमारे बापदादा के साथ। फ़रिश्ते से उसे ज़िंदगीबख़्श बातें मिल गईं जो उसे हमारे सुपुर्द करनी थीं।

39 लेकिन हमारे बापदादा ने उस की सुनने से इनकार करके उसे रद्द कर दिया। दिल ही दिल
में वह मिसर की तरफ़ रुजू कर चुके थे। 40 वह
हारून से कहने लगे, 'आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।'
41 उसी वक़्त उन्होंने बछड़े का बुत बनाकर उसे क़ुरबानियाँ पेश कीं और अपने हाथों के काम की
ख़ुशी मनाई। 42 इस पर अल्लाह ने अपना मुँह
फेर लिया और उन्हें सितारों की पूजा की गिरिफ़्त में छोड़ दिया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह नबियों के सहीफ़े में लिखा है,

'ऐ इसराईल के घराने,
जब तुम रेगिस्तान में घुमते-फिरते थे
तो क्या तुमने उन 40 सालों के दौरान
कभी मुझे ज़बह और ग़ल्ला
  की क़ुरबानियाँ पेश कीं?
43 नहीं, उस वक़्त भी
  तुम मलिक देवता का ताबूत

और रिफ़ान देवता का सितारा
उठाए फिरते थे,
गो तुमने अपने हाथों से यह बुत
पूजा करने के लिए बना लिए थे।
इसलिए मैं तुम्हें जिलावतन करके
बाबल के पार बसा दूँगा।'
44 रेगिस्तान में हमारे बापदादा के पास
मुलाक़ात का ख़ैमा था। उसे उस नमूने के
मुताबिक़ बनाया गया था जो अल्लाह ने मूसा
को दिखाया था। 45 मूसा की मौत के बाद हमारे
बापदादा ने उसे विरसे में पाकर अपने साथ ले
लिया जब उन्होंने यशुअ की राहनुमाई में इस
मुल्क में दाख़िल होकर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया।
उस वक़्त अल्लाह उसमें आबाद क़ौमों को उनके
आगे आगे निकालता गया। यों मुलाक़ात का
ख़ैमा दाऊद बादशाह के ज़माने तक मुल्क में
रहा। 46 दाऊद अल्लाह का मंज़ूरे-नज़र था। उसने
याक़ूब के ख़ुदा को एक सुकूनतगाह मुहैया करने
की इजाज़त माँगी। 47 लेकिन सुलेमान को उसके
लिए मकान बनाने का एज़ाज़ हासिल हुआ।
48 हक़ीक़त में अल्लाह तआला इनसान के
हाथ के बनाए हुए मकानों में नहीं रहता। नबी रब
का फ़रमान यों बयान करता है,
49 'आसमान मेरा तख़्त है
और ज़मीन मेरे पाँवों की चौकी,
तो फिर तुम मेरे लिए किस क़िस्म
का घर बनाओगे?
वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?
50 क्या मेरे हाथ ने
यह सब कुछ नहीं बनाया?'
51 ऐ गरदनकश लोगो! बेशक आपका ख़तना
हुआ है जो अल्लाह की क़ौम का ज़ाहिरी निशान
है। लेकिन उसका आपके दिलों और कानों पर
कुछ भी असर नहीं हुआ। आप अपने बापदादा
की तरह हमेशा रूहुल-क़ुद्स की मुख़ालफ़त करते
रहते हैं। 52 क्या कभी कोई नबी था जिसे आपके
बापदादा ने न सताया? उन्होंने उन्हें भी क़त्ल
किया जिन्होंने रास्तबाज़ मसीह की पेशगोई की,
उस शख़्स की जिसे आपने दुश्मनों के हवाले
करके मार डाला। 53 आप ही को फ़रिश्तों के हाथ
से अल्लाह की शरीअत हासिल हुई मगर उस पर
अमल नहीं किया।"

स्तिफ़नुस को संगसार किया जाता है

54 स्तिफ़नुस की यह बातें सुनकर इजलास के
लोग तैश में आकर दाँत पीसने लगे। 55 लेकिन
स्तिफ़नुस रूहुल-क़ुद्स से मामूर अपनी नज़र
उठाकर आसमान की तरफ़ तकने लगा। वहाँ
उसे अल्लाह का जलाल नज़र आया, और ईसा
अल्लाह के दहने हाथ खड़ा था। 56 उसने कहा,
"देखो, मुझे आसमान खुला हुआ दिखाई दे रहा
है और इब्ने-आदम अल्लाह के दहने हाथ खड़ा
है!"
57 यह सुनते ही उन्होंने चीख़ चीख़कर हाथों
से अपने कानों को बंद कर लिया और मिलकर
उस पर झपट पड़े। 58 फिर वह उसे शहर से
निकालकर संगसार करने लगे। और जिन लोगों
ने उसके ख़िलाफ़ गवाही दी थी उन्होंने अपनी
चादरें उतारकर एक जवान आदमी के पाँवों में
रख दीं। उस आदमी का नाम साऊल था। 59 जब
वह स्तिफ़नुस को संगसार कर रहे थे तो उसने
दुआ करके कहा, "ऐ ख़ुदावंद ईसा, मेरी रूह को
क़बूल कर।" 60 फिर घुटने टेककर उसने ऊँची
आवाज़ से कहा, "ऐ ख़ुदावंद, उन्हें इस गुनाह के
ज़िम्मेदार न ठहरा।" यह कहकर वह इंतक़ाल कर
गया।

8 और साऊल को भी स्तिफ़नुस का क़त्ल
मंज़ूर था।

साऊल जमात को सताता है

उस दिन यरूशलम में मौजूद जमात सख़्त
ईज़ारसानी की ज़द में आ गई। इसलिए सिवाए
रसूलों के तमाम ईमानदार यहूदिया और सामरिया
के इलाक़ों में तित्तर-बित्तर हो गए। 2 कुछ
ख़ुदातरस आदमियों ने स्तिफ़नुस को दफ़न करके
रो रोकर उसका मातम किया।

3 लेकिन साऊल ईसा की जमात को तबाह
करने पर तुला हुआ था। उसने घर घर जाकर
ईमानदार मर्दो-ख़वातीन को निकाल दिया और
उन्हें घसीटकर क़ैदख़ाने में डलवा दिया।

ख़ुशख़बरी सामरिया में फैल जाती है

4 जो ईमानदार बिखर गए थे वह जगह जगह
जाकर अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते फिरे। 5 इस
तरह फ़िलिप्पुस सामरिया के किसी शहर को
गया और वहाँ के लोगों को मसीह के बारे में
बताया। 6 जो कुछ भी फ़िलिप्पुस ने कहा और
जो भी इलाही निशान उसने दिखाए, उस पर
सुननेवाले हुजूम ने यकदिल होकर तवज्जुह दी।
7 बहुत-से लोगों में से बदरूहें ज़ोरदार चीख़ें मार
मारकर निकल गईं, और बहुत-से मफ़लूजों और
लँगड़ों को शफ़ा मिल गई। 8 यों उस शहर में बड़ी
शादमानी फैल गई।

9 वहाँ काफ़ी अरसे से एक आदमी रहता था
जिसका नाम शमाऊन था। वह जादूगर था और
उसके हैरतअंगेज़ काम से सामरिया के लोग
बहुत मुतअस्सिर थे। उसका अपना दावा था कि
मैं कोई ख़ास शख़्स हूँ। 10 इसलिए सब लोग
छोटे से लेकर बड़े तक उस पर ख़ास तवज्जुह
देते थे। उनका कहना था, 'यह आदमी वह
इलाही क़ुव्वत है जो अज़ीम कहलाती है।' 11 वह
इसलिए उसके पीछे लग गए थे कि उसने उन्हें
बड़ी देर से अपने हैरतअंगेज़ कामों से मुतअस्सिर
कर रखा था। 12 लेकिन अब लोग फ़िलिप्पुस
की अल्लाह की बादशाही और ईसा के नाम के
बारे में ख़ुशख़बरी पर ईमान ले आए, और मर्दो-
ख़वातीन ने बपतिस्मा लिया। 13 ख़ुद शमाऊन ने
भी ईमान लाकर बपतिस्मा लिया और फ़िलिप्पुस
के साथ रहा। जब उसने वह बड़े इलाही निशान
और मोजिज़े देखे जो फ़िलिप्पुस के हाथ से ज़ाहिर
हुए तो वह हक्का-बक्का रह गया।

14 जब यरूशलम में रसूलों ने सुना कि
सामरिया ने अल्लाह का कलाम क़बूल कर
लिया है तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके
पास भेज दिया। 15 वहाँ पहुँचकर उन्होंने उनके
लिए दुआ की कि उन्हें रूहुल-क़ुद्स मिल जाए,
16 क्योंकि अभी रूहुल-क़ुद्स उन पर नाज़िल नहीं
हुआ था बल्कि उन्हें सिर्फ़ ख़ुदावंद ईसा के नाम में
बपतिस्मा दिया गया था। 17 अब जब पतरस और
यूहन्ना ने अपने हाथ उन पर रखे तो उन्हें रूहुल-
क़ुद्स मिल गया।

18 शमाऊन ने देखा कि जब रसूल लोगों पर
हाथ रखते हैं तो उनको रूहुल-क़ुद्स मिलता है।
इसलिए उसने उन्हें पैसे पेश करके 19 कहा, "मुझे
भी यह इख़्तियार दे दें कि जिस पर मैं हाथ रखूँ
उसे रूहुल-क़ुद्स मिल जाए।"

20 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, "आपके पैसे
आपके साथ ग़ारत हो जाएँ, क्योंकि आपने सोचा
कि अल्लाह की नेमत पैसों से ख़रीदी जा सकती
है। 21 इस ख़िदमत में आपका कोई हिस्सा नहीं है,
क्योंकि आपका दिल अल्लाह के सामने ख़ालिस
नहीं है। 22 अपनी इस शरारत से तौबा करके
ख़ुदावंद से दुआ करें। शायद वह आपको इस
इरादे की मुआफ़ी दे जो आपने दिल में रखा है।
23 क्योंकि मैं देखता हूँ कि आप कड़वे पित से भरे
और नारास्ती के बंधन में जकड़े हुए हैं।"

24 शमाऊन ने कहा, "फिर ख़ुदावंद से मेरे लिए
दुआ करें कि आपकी मज़कूरा मुसीबतों में से मुझ
पर कोई न आए।"

25 ख़ुदावंद के कलाम की गवाही देने और उस
की मुनादी करने के बाद पतरस और यूहन्ना
वापस यरूशलम के लिए रवाना हुए। रास्ते में
उन्होंने सामरिया के बहुत-से देहातों में अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाई।

फ़िलिप्पुस और एथोपिया का अफ़सर

26 एक दिन रब के फ़रिश्ते ने फ़िलिप्पुस से
कहा, "उठकर जुनूब की तरफ़ उस राह पर जा
जो रेगिस्तान में से गुज़रकर यरूशलम से ग़ज़्ज़ा
को जाती है।" 27 फ़िलिप्पुस उठकर रवाना हुआ।
चलते चलते उस की मुलाक़ात एथोपिया की
मलिका कंदाके के एक ख़्वाजासरा से हुई।

मलिका के पूरे ख़ज़ाने पर मुक़र्रर यह दरबारी
इबादत करने के लिए यरूशलम गया था 28 और
अब अपने मुल्क में वापस जा रहा था। उस
वक़्त वह रथ में सवार यसायाह नबी की किताब
की तिलावत कर रहा था। 29 रूहुल-क़ुद्स ने
फ़िलिप्पुस से कहा, "उसके पास जाकर रथ
के साथ हो ले।" 30 फ़िलिप्पुस दौड़कर रथ के
पास पहुँचा तो सुना कि वह यसायाह नबी की
किताब की तिलावत कर रहा है। उसने पूछा,
"क्या आपको उस सबकी समझ आती है जो
आप पढ़ रहे हैं?"

31 दरबारी ने जवाब दिया, "मैं क्योंकर समझूँ
जब तक कोई मेरी राहनुमाई न करे?" और उसने
फ़िलिप्पुस को रथ में सवार होने की दावत दी।
32 कलामे-मुक़द्दस का जो हवाला वह पढ़ रहा
था यह था,

'उसे भेड़ की तरह
ज़बह करने के लिए ले गए।
जिस तरह लेला बाल कतरनेवाले
के सामने ख़ामोश रहता है,
उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।
33 उस की तज़लील की गई
और उसे इनसाफ़ न मिला।
कौन उस की नसल बयान कर सकता है?
क्योंकि उस की जान
दुनिया से छीन ली गई।'

34 दरबारी ने फ़िलिप्पुस से पूछा, "मेहर-
बानी करके मुझे बता दीजिए कि नबी यहाँ
किसका ज़िक्र कर रहा है, अपना या किसी और
का?" 35 जवाब में फ़िलिप्पुस ने कलामे-मुक़द्दस
के इसी हवाले से शुरू करके उसे ईसा के बारे
में ख़ुशख़बरी सुनाई। 36 सड़क पर सफ़र करते
करते वह एक जगह से गुज़रे जहाँ पानी था।
ख़्वाजासरा ने कहा, "देखें, यहाँ पानी है। अब मुझे
बपतिस्मा लेने से कौन-सी चीज़ रोक सकती है?"
37 [फ़िलिप्पुस ने कहा, "अगर आप पूरे दिल से
ईमान लाएँ तो ले सकते हैं।" उसने जवाब दिया,
"मैं ईमान रखता हूँ कि ईसा मसीह अल्लाह का
फ़रज़ंद है।"]

38 उसने रथ को रोकने का हुक्म दिया। दोनों
पानी में उतर गए और फ़िलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा
दिया। 39 जब वह पानी से निकल आए तो
ख़ुदावंद का रूह फ़िलिप्पुस को उठा ले गया।
इसके बाद ख़्वाजासरा ने उसे फिर कभी न देखा,
लेकिन उसने ख़ुशी मनाते हुए अपना सफ़र जारी
रखा। 40 इतने में फ़िलिप्पुस को अशदूद शहर में
पाया गया। वह वहाँ और क़ैसरिया तक के तमाम
शहरों में से गुज़रकर अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाता गया।

पौलुस की तबदीली

9 अब तक साऊल ख़ुदावंद के शागिर्दों को
धमकाने और क़त्ल करने के दरपै था।
उसने इमामे-आज़म के पास जाकर 2 उससे
गुज़ारिश की कि "मुझे दमिश्क़ में यहूदी
इबादतख़ानों के लिए सिफ़ारिशी ख़त लिखकर
दें ताकि वह मेरे साथ तावुन करें। क्योंकि मैं वहाँ
मसीह की राह पर चलनेवालों को ख़ाह वह मर्द
हों या ख़वातीन ढूँडकर और बाँधकर यरूशलम
लाना चाहता हूँ।"

3 वह इस मक़सद से सफ़र करके दमिश्क़
के क़रीब पहुँचा ही था कि अचानक आस-
मान की तरफ़ से एक तेज़ रौशनी उसके गिर्द
चमकी। 4 वह ज़मीन पर गिर पड़ा तो एक आवाज़
सुनाई दी, "साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता
है?"

5 उसने पूछा, "ख़ुदावंद, आप कौन हैं?"

आवाज़ ने जवाब दिया, "मैं ईसा हूँ जिसे तू
सताता है। 6 अब उठकर शहर में जा। वहाँ तुझे
बताया जाएगा कि तुझे क्या करना है।"

7 साऊल के पास खड़े हमसफ़र दम बख़ुद रह
गए। आवाज़ तो वह सुन रहे थे, लेकिन उन्हें
कोई नज़र न आया। 8 साऊल ज़मीन पर से उठा,
लेकिन जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो मालूम
हुआ कि वह अंधा है। चुनाँचे उसके साथी उसका

हाथ पकड़कर उसे दमिश्क़ ले गए। 9 वहाँ तीन
दिन के दौरान वह अंधा रहा। इतने में उसने न
कुछ खाया, न पिया।

10 उस वक़्त दमिश्क़ में ईसा का एक
शागिर्द रहता था जिसका नाम हननियाह था।
अब ख़ुदावंद रोया में उससे हमकलाम हुआ,
“हननियाह!”

उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, मैं हाज़िर
हूँ।”

11 ख़ुदावंद ने फ़रमाया, “उठ, उस गली में जा
जो ‘सीधी’ कहलाती है। वहाँ यहूदाह के घर में
तरसुस के एक आदमी का पता करना जिसका
नाम साऊल है। क्योंकि देख, वह दुआ कर रहा
है। 12 और रोया में उसने देख लिया है कि एक
आदमी बनाम हननियाह मेरे पास आकर अपने
हाथ मुझ पर रखेगा। इससे मेरी आँखें बहाल हो
जाएँगी।”

13 हननियाह ने एतराज़ किया, “ऐ ख़ुदा-
वंद, मैंने बहुत-से लोगों से उस शख़्स की शरीर
हरकतों के बारे में सुना है। यरूशलम में उसने तेरे
मुक़द्दसों के साथ बहुत ज़्यादती की है। 14 अब
उसे राहनुमा इमामों से इख़्तियार मिल गया है
कि यहाँ भी हर एक को गिरिफ़्तार करे जो तेरी
इबादत करता है।”

15 लेकिन ख़ुदावंद ने कहा, “जा, यह
आदमी मेरा चुना हुआ वसीला है जो मेरा
नाम ग़ैरयहूदियों, बादशाहों और इसराई-
लियों तक पहुँचाएगा। 16 और मैं उसे दिखा दूँगा
कि उसे मेरे नाम की ख़ातिर कितना दुख उठाना
पड़ेगा।”

17 चुनाँचे हननियाह मज़कूरा घर के पास गया,
उसमें दाख़िल हुआ और अपने हाथ साऊल पर
रख दिए। उसने कहा, “साऊल भाई, ख़ुदावंद
ईसा जो आप पर ज़ाहिर हुआ जब आप यहाँ आ
रहे थे उसी ने मुझे भेजा है ताकि आप दुबारा देख
पाएँ और रूहुल-क़ुद्स से मामूर हो जाएँ।” 18 यह
कहते ही छिलकों जैसी कोई चीज़ साऊल की
आँखों पर से गिरी और वह दुबारा देखने लगा।
उसने उठकर बपतिस्मा लिया, 19 फिर कुछ खाना
खाकर नए सिरे से तक़वियत पाई।

साऊल दमिश्क़ में अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाता है

साऊल कई दिन शागिर्दों के साथ दमिश्क़ में
रहा। 20 उसी वक़्त वह सीधा यहूदी इबादतख़ानों
में जाकर एलान करने लगा कि ईसा अल्लाह का
फ़रज़ंद है।

21 और जिसने भी उसे सुना वह हैरान रह
गया और पूछा, “क्या यह वह आदमी नहीं जो
यरूशलम में ईसा की इबादत करनेवालों को
हलाक कर रहा था? और क्या वह इस मक़सद से
यहाँ नहीं आया कि ऐसे लोगों को बाँधकर राहनुमा
इमामों के पास ले जाए?”

22 लेकिन साऊल रोज़ बरोज़ ज़ोर पकड़-
ता गया, और चूँकि उसने साबित किया कि ईसा
वादा किया हुआ मसीह है इसलिए दमिश्क़ में
आबाद यहूदी उलझन में पड़ गए।

23 चुनाँचे काफ़ी दिनों के बाद उन्होंने मिलकर
उसे क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। 24 लेकिन
साऊल को पता चल गया। यहूदी दिन-रात शहर
के दरवाज़ों की पहरादारी करते रहे ताकि उसे
क़त्ल करें, 25 इसलिए उसके शागिर्दों ने उसे रात
के वक़्त टोकरे में बिठाकर शहर की चारदीवारी
के एक सूराख़ में से उतार दिया।

साऊल यरूशलम में

26 साऊल यरूशलम वापस चला गया। वहाँ
उसने शागिर्दों से राबिता करने की कोशिश की,
लेकिन सब उससे डरते थे, क्योंकि उन्हें यक़ीन
नहीं आया था कि वह वाक़ई ईसा का शागिर्द
बन गया है। 27 फिर बरनबास उसे रसूलों के पास
ले आया। उसने उन्हें साऊल के बारे में सब कुछ
बताया, कि उसने दमिश्क़ की तरफ़ सफ़र करते
वक़्त रास्ते में ख़ुदावंद को देखा, कि ख़ुदावंद
उससे हमकलाम हुआ था और उसने दमिश्क़ में
दिलेरी से ईसा के नाम से बात की थी। 28 चुनाँचे

साऊल उनके साथ रहकर आज़ादी से यरूशलम
में फिरने और दिलेरी से ख़ुदावंद ईसा के नाम
से कलाम करने लगा। 29 उसने यूनानी ज़बान
बोलनेवाले यहूदियों से भी मुख़ातिब होकर बहस
की, लेकिन जवाब में वह उसे क़त्ल करने की
कोशिश करने लगे। 30 जब भाइयों को मालूम
हुआ तो उन्होंने उसे क़ैसरिया पहुँचा दिया और
जहाज़ में बिठाकर तरसुस के लिए रवाना कर
दिया।

31 इस पर यहूदिया, गलील और सामरिया के
पूरे इलाक़े में फैली हुई जमात को अमनो-अमान
हासिल हुआ। रूहुल-क़ुद्स की हिमायत से उस
की तामीरो-तक़वियत हुई, वह ख़ुदा का ख़ौफ़
मानकर चलती रही और तादाद में भी बढ़ती गई।

पतरस लुद्दा और याफ़ा में

32 एक दिन जब पतरस जगह जगह सफ़र कर
रहा था तो वह लुद्दा में आबाद मुक़द्दसों के पास
भी आया। 33 वहाँ उस की मुलाक़ात एक आदमी
बनाम ऐनियास से हुई। ऐनियास मफ़लूज था।
वह आठ साल से बिस्तर से उठ न सका था।
34 पतरस ने उससे कहा, “ऐनियास, ईसा मसीह
आपको शफ़ा देता है। उठकर अपना बिस्तर समेट
लें।” ऐनियास फ़ौरन उठ खड़ा हुआ। 35 जब लुद्दा
और मैदानी इलाक़े शारून के तमाम रहनेवालों ने
उसे देखा तो उन्होंने ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू किया।

36 याफ़ा में एक औरत थी जो शागिर्द थी और
नेक काम करने और ख़ैरात देने में बहुत आगे
थी। उसका नाम तबीता (ग़ज़ाला) था। 37 उन्हीं
दिनों में वह बीमार होकर फ़ौत हो गई। लोगों ने
उसे ग़ुस्ल देकर बालाख़ाने में रख दिया। 38 लुद्दा
याफ़ा के क़रीब है, इसलिए जब शागिर्दों ने सुना
कि पतरस लुद्दा में है तो उन्होंने उसके पास
दो आदमियों को भेजकर इलतमास की, “सीधे
हमारे पास आएँ और देर न करें।” 39 पतरस
उठकर उनके साथ चला गया। वहाँ पहुँचकर लोग
उसे बालाख़ाने में ले गए। तमाम बेवाओं ने उसे
घेर लिया और रोते चिल्लाते वह सारी क़मीसें और
बाक़ी लिबास दिखाने लगीं जो तबीता ने उनके
लिए बनाए थे जब वह अभी ज़िंदा थी। 40 लेकिन
पतरस ने उन सबको कमरे से निकाल दिया और
घुटने टेककर दुआ की। फिर लाश की तरफ़
मुड़कर उसने कहा, “तबीता, उठें!” औरत ने
अपनी आँखें खोल दीं। पतरस को देखकर वह बैठ
गई। 41 पतरस ने उसका हाथ पकड़ लिया और
उठने में उस की मदद की। फिर उसने मुक़द्दसों
और बेवाओं को बुलाकर तबीता को ज़िंदा उनके
सुपुर्द किया। 42 यह वाक़िया पूरे याफ़ा में मशहूर
हुआ, और बहुत-से लोग ख़ुदावंद ईसा पर ईमान
लाए। 43 पतरस काफ़ी दिनों तक याफ़ा में रहा।
वहाँ वह चमड़ा रँगनेवाले एक आदमी के घर ठहरा
जिसका नाम शमाऊन था।

पतरस और कुरनेलियुस

10 क़ैसरिया में एक रोमी अफ़सर[a]
रहता था जिसका नाम कुरने-
लियुस था। वह उस पलटन के सौ फ़ौजियों
पर मुक़र्रर था जो इतालवी कहलाती थी।
2 कुरनेलियुस अपने पूरे घराने समेत दीनदार
और ख़ुदातरस था। वह फ़ैयाज़ी से ख़ैरात देता
और मुतवातिर दुआ में लगा रहता था। 3 एक
दिन उसने तीन बजे दोपहर के वक़्त रोया देखी।
उसमें उसने साफ़ तौर पर अल्लाह का एक
फ़रिश्ता देखा जो उसके पास आया और कहा,
“कुरनेलियुस!”

4 वह घबरा गया और उसे ग़ौर से देखते हुए
कहा, “मेरे आक़ा, फ़रमाएँ।”

फ़रिश्ते ने कहा, “तुम्हारी दुआओं और ख़ैरात
की क़ुरबानी अल्लाह के हुज़ूर पहुँच गई है और
मंज़ूर है। 5 अब कुछ आदमी याफ़ा भेज दो।
वहाँ एक आदमी बनाम शमाऊन है जो पतरस
कहलाता है। उसे बुलाकर ले आओ। 6 पतरस
एक चमड़ा रँगनेवाले का मेहमान है जिसका नाम

[a]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

शमाऊन है। उसका घर समुंदर के क़रीब वाक़े
है।”
7 ज्योंही फ़रिश्ता चला गया कुरनेलियुस ने दो
नौकरों और अपने ख़िदमतगार फ़ौजियों में से
एक ख़ुदातरस आदमी को बुलाया। 8 सब कुछ
सुनाकर उसने उन्हें याफ़ा भेज दिया।

9 अगले दिन पतरस दोपहर तक़रीबन बारह
बजे दुआ करने के लिए छत पर चढ़ गया। उस
वक़्त कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी याफ़ा शहर
के क़रीब पहुँच गए थे। 10 पतरस को भूक लगी
और वह कुछ खाना चाहता था। जब उसके लिए
खाना तैयार किया जा रहा था तो वह वज्द की
हालत में आ गया। 11 उसने देखा कि आसमान
खुल गया है और एक चीज़ ज़मीन पर उतर रही है,
कतान की बड़ी चादर जैसी जो अपने चार कोनों से
नीचे उतारी जा रही है। 12 चादर में तमाम क़िस्म
के जानवर हैं : चार पाँवों रखनेवाले, रेंगनेवाले
और परिंदे। 13 फिर एक आवाज़ उससे मुख़ातिब
हुई, “उठ, पतरस। कुछ ज़बह करके खा!”

14 पतरस ने एतराज़ किया, “हरगिज़ नहीं
ख़ुदावंद, मैंने कभी भी हराम या नापाक खाना
नहीं खाया।”

15 लेकिन यह आवाज़ दुबारा उससे हम-
कलाम हुई, “जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया
है उसे नापाक क़रार न दे।” 16 यही कुछ तीन
मरतबा हुआ, फिर चादर को अचानक आसमान
पर वापस उठा लिया गया।

17 पतरस बड़ी उलझन में पड़ गया। वह अभी
सोच रहा था कि इस रोया का क्या मतलब है
तो कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी शमाऊन के
घर का पता करके उसके गेट पर पहुँच गए।
18 आवाज़ देकर उन्होंने पूछा, “क्या शमाऊन जो
पतरस कहलाता है आपके मेहमान हैं?”

19 पतरस अभी रोया पर ग़ौर कर ही रहा था कि
रूहुल-क़ुद्स उससे हमकलाम हुआ, “शमाऊन,
तीन मर्द तेरी तलाश में हैं। 20 उठ और छत से
उतरकर उनके साथ चला जा। मत झिजकना,
क्योंकि मैं ही ने उन्हें तेरे पास भेजा है।” 21 चुनाँचे
पतरस उन आदमियों के पास गया और उनसे
कहा, “मैं वही हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं। आप क्यों
मेरे पास आए हैं?”

22 उन्होंने जवाब दिया, “हम सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़सर कुरनेलियुस के घर से आए हैं।
वह इनसाफ़परवर और ख़ुदातरस आदमी हैं।
पूरी यहूदी क़ौम इसकी तसदीक़ कर सकती है।
एक मुक़द्दस फ़रिश्ते ने उन्हें हिदायत दी कि
वह आपको अपने घर बुलाकर आपका पैग़ाम
सुनें।” 23 यह सुनकर पतरस उन्हें अंदर ले गया
और उनकी मेहमान-नवाज़ी की। अगले दिन वह
उठकर उनके साथ रवाना हुआ। याफ़ा के कुछ
भाई भी साथ गए। 24 एक दिन के बाद वह
क़ैसरिया पहुँच गया। कुरनेलियुस उनके इंतज़ार
में था। उसने अपने रिश्तेदारों और क़रीबी दोस्तों
को भी अपने घर जमा कर रखा था। 25 जब
पतरस घर में दाख़िल हुआ तो कुरनेलियुस
ने उसके सामने गिरकर उसे सिजदा किया।
26 लेकिन पतरस ने उसे उठाकर कहा, “उठें।
मैं भी इनसान ही हूँ।” 27 और उससे बातें करते
करते वह अंदर गया और देखा कि बहुत-से लोग
जमा हो गए हैं। 28 उसने उनसे कहा, “आप
जानते हैं कि किसी यहूदी के लिए किसी ग़ैरयहूदी
से रिफ़ाक़त रखना या उसके घर में जाना मना है।
लेकिन अल्लाह ने मुझे दिखाया है कि मैं किसी
को भी हराम या नापाक क़रार न दूँ। 29 इस वजह
से जब मुझे बुलाया गया तो मैं एतराज़ किए बग़ैर
चला आया। अब मुझे बता दीजिए कि आपने मुझे
क्यों बुलाया है?”

30 कुरनेलियुस ने जवाब दिया, “चार दिन की
बात है कि मैं इसी वक़्त दोपहर तीन बजे दुआ कर
रहा था। अचानक एक आदमी मेरे सामने आ खड़ा
हुआ। उसके कपड़े चमक रहे थे। 31 उसने कहा,
‘कुरनेलियुस, अल्लाह ने तुम्हारी दुआ सुन ली
और तुम्हारी ख़ैरात का ख़याल किया है। 32 अब
किसी को याफ़ा भेजकर शमाऊन को बुला लो जो
पतरस कहलाता है। वह चमड़ा रँगनेवाले शमाऊन
का मेहमान है। शमाऊन का घर समुंदर के क़रीब

वाक़े है।’ 33 यह सुनते ही मैंने अपने लोगों को
आपको बुलाने के लिए भेज दिया। अच्छा हुआ
कि आप आ गए हैं। अब हम सब अल्लाह के हुज़ूर
हाज़िर हैं ताकि वह कुछ सुनें जो रब ने आपको
हमें बताने को कहा है।”

पतरस की तक़रीर

34 फिर पतरस बोल उठा, “अब मैं समझ
गया हूँ कि अल्लाह वाक़ई जानिबदार नहीं,
35 बल्कि हर किसी को क़बूल करता है जो उसका
ख़ौफ़ मानता और रास्त काम करता है। 36 आप
अल्लाह की उस ख़ुशख़बरी से वाक़िफ़ हैं जो
उसने इसराईलियों को भेजी, यह ख़ुशख़बरी कि
ईसा मसीह के वसीले से सलामती आई है। ईसा
मसीह सबका ख़ुदावंद है। 37 आपको वह कुछ
मालूम है जो गलील से शुरू होकर यहूदिया के
पूरे इलाक़े में हुआ यानी उस बपतिस्मे के बाद
जिसकी मुनादी यहया ने की। 38 और आप जानते
हैं कि अल्लाह ने ईसा नासरी को रूहुल-क़ुद्स
और क़ुव्वत से मसह किया और कि इस पर उसने
जगह जगह जाकर नेक काम किया और इबलीस
के दबे हुए तमाम लोगों को शफ़ा दी, क्योंकि
अल्लाह उसके साथ था। 39 जो कुछ भी उसने
मुल्के-यहूद और यरूशलम में किया, उसके गवाह
हम ख़ुद हैं। गो लोगों ने उसे लकड़ी पर लटकाकर
क़त्ल कर दिया 40 लेकिन अल्लाह ने तीसरे दिन
उसे मुरदों में से ज़िंदा किया और उसे लोगों पर
ज़ाहिर किया। 41 वह पूरी क़ौम पर तो ज़ाहिर नहीं
हुआ बल्कि हम पर जिनको अल्लाह ने पहले से
चुन लिया था ताकि हम उसके गवाह हों। हमने
उसके जी उठने के बाद उसके साथ खाने-पीने
की रिफ़ाक़त भी रखी। 42 उस वक़्त उसने हमें
हुक्म दिया कि मुनादी करके क़ौम को गवाही दो
कि ईसा वही है जिसे अल्लाह ने ज़िंदों और मुरदों
पर मुंसिफ़ मुक़र्रर किया है। 43 तमाम नबी उस
की गवाही देते हैं कि जो भी उस पर ईमान लाए
उसे उसके नाम के वसीले से गुनाहों की मुआफ़ी
मिल जाएगी।”

रूहुल-क़ुद्स ग़ैरयहूदियों पर नाज़िल होता है

44 पतरस अभी यह बात कर ही रहा था कि
तमाम सुननेवालों पर रूहुल-क़ूदस नाज़िल हुआ।
45 जो यहूदी ईमानदार पतरस के साथ आए थे
वह हक्का-बक्का रह गए कि रूहुल-क़ुद्स की
नेमत ग़ैरयहूदियों पर भी उंडेली गई है, 46 क्योंकि
उन्होंने देखा कि वह ग़ैरज़बानें बोल रहे और
अल्लाह की तमजीद कर रहे हैं। तब पतरस ने
कहा, 47 “अब कौन इनको बपतिस्मा लेने से
रोक सकता है? इन्हें तो हमारी तरह रूहुल-क़ुद्स
हासिल हुआ है।” 48 और उसने हुक्म दिया कि
उन्हें ईसा मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया जाए।
इसके बाद उन्होंने पतरस से गुज़ारिश की कि कुछ
दिन हमारे पास ठहरें।

यरूशलम की जमात में पतरस की रिपोर्ट

11 यह ख़बर रसूलों और यहूदिया
के बाक़ी भाइयों तक पहुँची कि
ग़ैरयहूदियों ने भी अल्लाह का कलाम क़बूल
किया है। 2 चुनाँचे जब पतरस यरूशलम वापस
आया तो यहूदी ईमानदार उस पर एतराज़ करने
लगे, 3 “आप ग़ैरयहूदियों के घर में गए और उनके
साथ खाना भी खाया।” 4 फिर पतरस ने उनके
सामने तरतीब से सब कुछ बयान किया जो हुआ
था।

5 “मैं याफ़ा शहर में दुआ कर रहा था कि वज्द
की हालत में आकर रोया देखी। आसमान से एक
चीज़ ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर
जैसी जो अपने चारों कोनों से उतारी जा रही है।
उतरती उतरती वह मुझ तक पहुँच गई। 6 जब
मैंने ग़ौर से देखा तो पता चला कि उसमें तमाम
क़िस्म के जानवर हैं : चार पाँववाले, रेंगनेवाले
और परिंदे। 7 फिर एक आवाज़ मुझसे मुख़ातिब
हुई, ‘पतरस, उठ! कुछ ज़बह करके खा!’ 8 मैंने
एतराज़ किया, ‘हरगिज़ नहीं, ख़ुदावंद, मैंने कभी
भी हराम या नापाक खाना नहीं खाया।’ 9 लेकिन
यह आवाज़ दुबारा मुझसे हमकलाम हुई, ‘जो
कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक

क़रार न दे।’ 10 तीन मरतबा ऐसा हुआ, फिर
चादर को जानवरों समेत वापस आसमान पर उठा
लिया गया। 11 उसी वक़्त तीन आदमी उस घर
के सामने रुक गए जहाँ मैं ठहरा हुआ था। उन्हें
क़ैसरिया से मेरे पास भेजा गया था। 12 रूहुल-
क़ुद्स ने मुझे बताया कि मैं बग़ैर झिजके उनके
साथ चला जाऊँ। यह मेरे छः भाई भी मेरे साथ
गए। हम रवाना होकर उस आदमी के घर में
दाख़िल हुए जिसने मुझे बुलाया था। 13 उसने
हमें बताया कि एक फ़रिश्ता घर में उस पर
ज़ाहिर हुआ था जिसने उसे कहा था, ‘किसी को
याफ़ा भेजकर शमाऊन को बुला लो जो पतरस
कहलाता है। 14 उसके पास वह पैग़ाम है जिसके
ज़रीए तुम अपने पूरे घराने समेत नजात पाओगे।’
15 जब मैं वहाँ बोलने लगा तो रूहुल-क़ुद्स उन पर
नाज़िल हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह
शुरू में हम पर हुआ था। 16 फिर मुझे वह बात याद
आई जो ख़ुदावंद ने कही थी, ‘यहया ने तुमको
पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन तुम्हें रूहुल-
क़ुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।’ 17 अल्लाह
ने उन्हें वही नेमत दी जो उसने हमें भी दी थी जो
ख़ुदावंद ईसा मसीह पर ईमान लाए थे। तो फिर
मैं कौन था कि अल्लाह को रोकता?”

18 पतरस की यह बातें सुनकर यरूशलम
के ईमानदार एतराज़ करने से बाज़ आए और
अल्लाह की तमजीद करने लगे। उन्होंने कहा,
“तो इसका मतलब है कि अल्लाह ने ग़ैरयहूदियों
को भी तौबा करने और अबदी ज़िंदगी पाने का
मौक़ा दिया है।”

अंताकिया में जमात

19 जो ईमानदार स्तिफ़नुस की मौत के बाद
की ईज़ारसानी से बिखर गए थे वह फ़ेनीके,
क़ुबरुस और अंताकिया तक पहुँच गए। जहाँ
भी वह जाते वहाँ अल्लाह का पैग़ाम सुनाते
अलबत्ता सिर्फ़ यहूदियों को। 20 लेकिन उनमें से
कुरेन और क़ुबरुस के कुछ आदमी अंताकिया
शहर जाकर यूनानियों को भी ख़ुदावंद ईसा के
बारे में ख़ुशख़बरी सुनाने लगे। 21 ख़ुदावंद की
क़ुदरत उनके साथ थी, और बहुत-से लोगों ने
ईमान लाकर ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू किया।
22 इसकी ख़बर यरूशलम की जमात तक पहुँच
गई तो उन्होंने बरनबास को अंताकिया भेज दिया।
23 जब वह वहाँ पहुँचा और देखा कि अल्लाह के
फ़ज़ल से क्या कुछ हुआ है तो वह ख़ुश हुआ।
उसने उन सबकी हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह पूरी
लग्न से ख़ुदावंद के साथ लिपटे रहें। 24 बरनबास
नेक आदमी था जो रूहुल-क़ुद्स और ईमान से
मामूर था। चुनाँचे उस वक़्त बहुत-से लोग ख़ुदावंद
की जमात में शामिल हुए।

25 इसके बाद वह साऊल की तलाश में तरसुस
चला गया। 26 जब उसे मिला तो वह उसे
अंताकिया ले आया। वहाँ वह दोनों एक पूरे साल
तक जमात में शामिल होते और बहुत-से लोगों
को सिखाते रहे। अंताकिया पहला मक़ाम था जहाँ
ईमानदार मसीही कहलाने लगे।

27 उन दिनों कुछ नबी यरूशलम से आकर
अंताकिया पहुँच गए। 28 एक का नाम अगबुस
था। वह खड़ा हुआ और रूहुल-क़ुद्स की मारिफ़त
पेशगोई की कि रोम की पूरी ममलकत में
सख़्त काल पड़ेगा। (यह बात उस वक़्त पूरी
हुई जब शहनशाह क्लौदियुस की हुकूमत थी।)
29 अगबुस की बात सुनकर अंताकिया के शागिर्दों
ने फ़ैसला किया कि हममें से हर एक अपनी माली
गुंजाइश के मुताबिक़ कुछ दे ताकि उसे यहूदिया
में रहनेवाले भाइयों की इमदाद के लिए भेजा जा
सके। 30 उन्होंने अपने इस हदिये को बरनबास
और साऊल के सुपुर्द करके वहाँ के बुज़ुर्गों को
भेज दिया।

मज़ीद ईज़ारसानी

12 उन दिनों में बादशाह हेरोदेस
अग्रिप्पा जमात के कुछ ईमान-
दारों को गिरिफ़्तार करके उनसे बदसुलूकी करने
लगा। 2 इस सिलसिले में उसने याक़ूब रसूल
(यूहन्ना के भाई) को तलवार से क़त्ल करवाया।

3 जब उसने देखा कि यह हरकत यहूदियों को
पसंद आई है तो उसने पतरस को भी गिरिफ़्तार
कर लिया। उस वक़्त बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई
जा रही थी। 4 उसने उसे जेल में डालकर चार
दस्तों के हवाले कर दिया कि उस की पहरादारी
करें (हर दस्ते में चार फ़ौजी थे)। ख़याल था कि
ईद के बाद ही पतरस को अवाम के सामने खड़ा
करके उस की अदालत की जाए। 5 यों पतरस
क़ैदख़ाने में रहा। लेकिन ईमानदारों की जमात
लगातार उसके लिए दुआ करती रही।

पतरस की रिहाई

6 फिर अदालत का दिन क़रीब आ गया। पतरस
रात के वक़्त सो रहा था। अगले दिन हेरोदेस
उसे पेश करना चाहता था। पतरस दो फ़ौजियों
के दरमियान लेटा हुआ था जो दो ज़ंजीरों से
उसके साथ बँधे हुए थे। दीगर फ़ौजी दरवाज़े
के सामने पहरा दे रहे थे। 7 अचानक एक तेज़
रौशनी कोठड़ी में चमक उठी और रब का एक
फ़रिश्ता पतरस के सामने आ खड़ा हुआ। उसने
उसके पहलू को झटका देकर उसे जगा दिया और
कहा, "जल्दी करो! उठो!" तब पतरस की
कलाइयों पर की ज़ंजीरें गिर गईं। 8 फिर फ़रिश्ते
ने उसे बताया, "अपने कपड़े और जूते पहन
लो।" पतरस ने ऐसा ही किया। फ़रिश्ते ने कहा,
"अब अपनी चादर ओढ़कर मेरे पीछे हो लो।"
9 चुनाँचे पतरस कोठड़ी से निकलकर फ़रिश्ते के
पीछे हो लिया अगरचे उसे अब तक समझ नहीं
आई थी कि जो कुछ हो रहा है हक़ीक़ी है। उसका
ख़याल था कि मैं रोया देख रहा हूँ। 10 दोनों पहले
पहरे से गुज़र गए, फिर दूसरे से और यों शहर
में पहुँचानेवाले लोहे के गेट के पास आए। यह
ख़ुद बख़ुद खुल गया और वह दोनों निकलकर
एक गली में चलने लगे। चलते चलते फ़रिश्ते ने
अचानक पतरस को छोड़ दिया।

11 फिर पतरस होश में आ गया। उसने कहा,
"वाक़ई, ख़ुदावंद ने अपने फ़रिश्ते को मेरे पास
भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से बचाया है। अब
यहूदी क़ौम की तवक़्क़ो पूरी नहीं होगी।"

12 जब यह बात उसे समझ आई तो वह यूहन्ना
मरक़ुस की माँ मरियम के घर चला गया। वहाँ
बहुत-से अफ़राद जमा होकर दुआ कर रहे थे।
13 पतरस ने गेट खटखटाया तो एक नौकरानी
देखने के लिए आई। उसका नाम रुदी था। 14 जब
उसने पतरस की आवाज़ पहचान ली तो वह ख़ुशी
के मारे गेट को खोलने के बजाए दौड़कर अंदर
चली गई और बताया, "पतरस गेट पर खड़े हैं!"
15 हाज़िरीन ने कहा, "होश में आओ!" लेकिन
वह अपनी बात पर अड़ी रही। फिर उन्होंने कहा,
"यह उसका फ़रिश्ता होगा।"

16 अब तक पतरस बाहर खड़ा खटखटा रहा
था। चुनाँचे उन्होंने गेट को खोल दिया। पतरस
को देखकर वह हैरान रह गए। 17 लेकिन उसने
अपने हाथ से ख़ामोश रहने का इशारा किया और
उन्हें सारा वाक़िया सुनाया कि ख़ुदावंद मुझे किस
तरह जेल से निकाल लाया है। "याक़ूब और बाक़ी
भाइयों को भी यह बताना," यह कहकर वह कहीं
और चला गया।

18 अगली सुबह जेल के फ़ौजियों में बड़ी
हलचल मच गई कि पतरस का क्या हुआ है।
19 जब हेरोदेस ने उसे ढूँडा और न पाया तो उसने
पहरेदारों का बयान लेकर उन्हें सज़ाए-मौत दे दी।

इसके बाद वह यहूदिया से चला गया और
क़ैसरिया में रहने लगा।

हेरोदेस अग्रिप्पा की मौत

20 उस वक़्त वह सूर और सैदा के बाशिंदों
से निहायत नाराज़ था। इसलिए दोनों शहरों
के नुमाइंदे मिलकर सुलह की दरख़ास्त करने
के लिए उसके पास आए। वजह यह थी कि
उनकी ख़ुराक हेरोदेस के मुल्क से हासिल होती
थी। उन्होंने बादशाह के महल के इंचार्ज ब्लस्तुस
को इस पर आमादा किया कि वह उनकी मदद
करे 21 और बादशाह से मिलने का दिन मुक़र्रर
किया। जब वह दिन आया तो हेरोदेस अपना शाही

लिबास पहनकर तख़्त पर बैठ गया और एक
अलानिया तक़रीर की। 22 अवाम ने नारे लगा
लगाकर पुकारा, “यह अल्लाह की आवाज़ है,
इनसान की नहीं।” 23 वह अभी यह कह रहे थे
कि रब के फ़रिश्ते ने हेरोदेस को मारा, क्योंकि
उसने लोगों की परस्तिश क़बूल करके अल्लाह
को जलाल नहीं दिया था। वह बीमार हुआ और
कीड़ों ने उसके जिस्म को खा खाकर ख़त्म कर
दिया। इसी हालत में वह मर गया।

24 लेकिन अल्लाह का कलाम बढ़ता और
फैलता गया।

25 इतने में बरनबास और साऊल अंता-
किया का हदिया लेकर यरूशलम पहुँच चुके थे।
उन्होंने पैसे वहाँ के बुज़ुर्गों के सुपुर्द कर दिए और
फिर यूहन्ना मरक़ुस को साथ लेकर वापस चले
गए।

बरनबास और साऊल को तबलीग़ी ख़िदमत के लिए चुना जाता है

13 अंताकिया की जमात में कई नबी और
उस्ताद थे : बरनबास, शमाऊन जो
काला कहलाता था, लूकियुस कुरेनी, मनाहेम
जिसने बादशाह हेरोदेस अंतिपास के साथ
परवरिश पाई थी और साऊल। 2 एक दिन जब वह
रोज़ा रखकर ख़ुदावंद की परस्तिश कर रहे थे तो
रूहुल-क़ुद्स उनसे हमकलाम हुआ, “बरनबास
और साऊल को उस ख़ास काम के लिए अलग
करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।”

3 इस पर उन्होंने मज़ीद रोज़े रखे और दुआ की,
फिर उन पर अपने हाथ रखकर उन्हें रुख़सत कर
दिया।

क़ुबरुस में

4 यों बरनबास और साऊल को रूहुल-क़ुद्स
की तरफ़ से भेजा गया। पहले वह साहिली
शहर सलूकिया गए और वहाँ जहाज़ में बैठकर
जज़ीराए-क़ुबरुस के लिए रवाना हुए। 5 जब
वह सलमीस शहर पहुँचे तो उन्होंने यहूदियों
के इबादतख़ानों में जाकर अल्लाह का कलाम
सुनाया। यूहन्ना मरक़ुस मददगार के तौर पर
उनके साथ था।

6 पूरे जज़ीरे में से सफ़र करते करते वह पाफ़ुस
शहर तक पहुँच गए। वहाँ उनकी मुलाक़ात एक
यहूदी जादूगर से हुई जिसका नाम बर-ईसा
था। वह झूटा नबी था 7 और जज़ीरे के गवर्नर
सिरगियुस पौलुस की ख़िदमत के लिए हाज़िर
रहता था। सिरगियुस एक समझदार आदमी था।
उसने बरनबास और साऊल को अपने पास बुला
लिया क्योंकि वह अल्लाह का कलाम सुनने
का ख़ाहिशमंद था। 8 लेकिन जादूगर इलीमास
(बर-ईसा का दूसरा नाम) ने उनकी मुख़ालफ़त
करके गवर्नर को ईमान से बाज़ रखने की कोशिश
की। 9 फिर साऊल जो पौलुस भी कहलाता है
रूहुल-क़ुद्स से मामूर हुआ और ग़ौर से उस की
तरफ़ देखने लगा। 10 उसने कहा, “इबलीस के
फ़रज़ंद! तू हर क़िस्म के धोके और बदी से भरा
हुआ है और हर इनसाफ़ का दुश्मन है। क्या तू
ख़ुदावंद की सीधी राहों को बिगाड़ने की कोशिश
से बाज़ न आएगा? 11 अब ख़ुदावंद तुझे सज़ा
देगा। तू अंधा होकर कुछ देर के लिए सूरज की
रौशनी नहीं देखेगा।”

उसी लमहे धुंध और तारीकी जादूगर पर छा गई
और वह टटोल टटोलकर किसी को तलाश करने
लगा जो उस की राहनुमाई करे। 12 यह माजरा
देखकर गवर्नर ईमान लाया, क्योंकि ख़ुदावंद की
तालीम ने उसे हैरतज़दा कर दिया था।

पिसिदिया के शहर अंताकिया में मुनादी

13 फिर पौलुस और उसके साथी जहाज़ पर
सवार हुए और पाफ़ुस से रवाना होकर पिरगा
शहर पहुँच गए जो पंफ़ीलिया में है। वहाँ यूहन्ना
मरक़ुस उन्हें छोड़कर यरूशलम वापस चला गया।
14 लेकिन पौलुस और बरनबास आगे निकलकर
पिसिदिया में वाक़े शहर अंताकिया पहुँचे जहाँ
वह सबत के दिन यहूदी इबादतख़ाने में जाकर
बैठ गए। 15 तौरेत और नबियों के सहीफ़ों की

तिलावत के बाद इबादतख़ाने के राहनुमाओं ने
उन्हें कहला भेजा, “भाइयो, अगर आपके पास
लोगों के लिए कोई नसीहत की बात है तो उसे
पेश करें।” 16 पौलुस खड़ा हुआ और हाथ का
इशारा करके बोलने लगा,

“इसराईल के मर्दो और ख़ुदातरस ग़ैर-
यहूदियो, मेरी बात सुनें! 17 इस क़ौम इस-
राईल के ख़ुदा ने हमारे बापदादा को चुनकर उन्हें
मिसर में ही ताक़तवर बना दिया जहाँ वह अजनबी
थे। फिर वह उन्हें बड़ी क़ुदरत के साथ वहाँ से
निकाल लाया। 18 जब वह रेगिस्तान में फिर रहे
थे तो वह चालीस साल तक उन्हें बरदाश्त करता
रहा। 19 इसके बाद उसने मुल्के-कनान में सात
क़ौमों को तबाह करके उनकी ज़मीन इसराईल
को विरसे में दी। 20 इतने में तक़रीबन 450 साल
गुज़र गए।

यशुअ की मौत पर अल्लाह ने उन्हें समुएल नबी
के दौर तक क़ाज़ी दिए ताकि उनकी राहनुमाई
करें। 21 फिर इनसे तंग आकर उन्होंने बादशाह
माँगा, इसलिए उसने उन्हें साऊल बिन क़ीस दे
दिया जो बिनयमीन के क़बीले का था। साऊल
चालीस साल तक उनका बादशाह रहा, 22 फिर
अल्लाह ने उसे हटाकर दाऊद को तख़्त पर
बिठा दिया। दाऊद वही आदमी है जिसके बारे
में अल्लाह ने गवाही दी, ‘मैंने दाऊद बिन यस्सी
में एक ऐसा आदमी पाया है जो मेरी सोच रखता
है। जो कुछ भी मैं चाहता हूँ उसे वह करेगा।’
23 इसी बादशाह की औलाद में से ईसा निकला
जिसका वादा अल्लाह कर चुका था और जिसे
उसने इसराईल को नजात देने के लिए भेज
दिया। 24 उसके आने से पेशतर यहया बपतिस्मा
देनेवाले ने एलान किया कि इसराईल की पूरी
क़ौम को तौबा करके बपतिस्मा लेने की ज़रूरत
है। 25 अपनी ख़िदमत के इख़्तिताम पर उसने
कहा, ‘तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ? मैं वह नहीं हूँ
जो तुम समझते हो। लेकिन मेरे बाद वह आ रहा
है जिसके जूतों के तसमे मैं खोलने के लायक़ भी
नहीं हूँ।’

26 भाइयो, इब्राहीम के फ़रज़ंदो और ख़ुदा
का ख़ौफ़ माननेवाले ग़ैरयहूदियो! नजात का
पैग़ाम हमें ही भेज दिया गया है। 27 यरूशलम
के रहनेवालों और उनके राहनुमाओं ने ईसा को
न पहचाना बल्कि उसे मुजरिम ठहराया। यों
उनकी मारिफ़त नबियों की वह पेशगोइयाँ पूरी
हुईं जिनकी तिलावत हर सबत को की जाती है।
28 और अगरचे उन्हें सज़ाए-मौत देने की वजह
न मिली तो भी उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश
की कि वह उसे सज़ाए-मौत दे। 29 जब उनकी
मारिफ़त ईसा के बारे में तमाम पेशगोइयाँ पूरी
हुईं तो उन्होंने उसे सलीब से उतारकर क़ब्र में
रख दिया। 30 लेकिन अल्लाह ने उसे मुरदों में
से ज़िंदा कर दिया 31 और वह बहुत दिनों तक
अपने उन पैरोकारों पर ज़ाहिर होता रहा जो उसके
साथ गलील से यरूशलम आए थे। यह अब हमारी
क़ौम के सामने उसके गवाह हैं। 32 और अब हम
आपको यह ख़ुशख़बरी सुनाने आए हैं कि जो
वादा अल्लाह ने हमारे बापदादा के साथ किया,
33 उसे उसने ईसा को ज़िंदा करके हमारे लिए
जो उनकी औलाद हैं पूरा कर दिया है। यों दूसरे
ज़बूर में लिखा है, ‘तू मेरा फ़रज़ंद है, आज मैं
तेरा बाप बन गया हूँ।’ 34 इस हक़ीक़त का ज़िक्र
भी कलामे-मुक़द्दस में किया गया है कि अल्लाह
उसे मुरदों में से ज़िंदा करके कभी गलने-सड़ने
नहीं देगा : ‘मैं तुम्हें उन मुक़द्दस और अनमिट
मेहरबानियों से नवाज़ूँगा जिनका वादा दाऊद से
किया था।’ 35 यह बात एक और हवाले में पेश
की गई है, ‘तू अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की
नौबत तक पहुँचने नहीं देगा।’ 36 इस हवाले का
ताल्लुक़ दाऊद के साथ नहीं है, क्योंकि दाऊद
अपने ज़माने में अल्लाह की मरज़ी की ख़िदमत
करने के बाद फ़ौत होकर अपने बापदादा से
जा मिला। उस की लाश गलकर ख़त्म हो गई।
37 बल्कि यह हवाला किसी और का ज़िक्र करता
है, उसका जिसे अल्लाह ने ज़िंदा कर दिया और
जिसका जिस्म गलने-सड़ने से दोचार न हुआ।
38 भाइयो, अब मेरी यह बात जान लें, हम इसकी

मुनादी करने आए हैं कि आपको इस शख़्स ईसा
के वसीले से अपने गुनाहों की मुआफ़ी मिलती
है। मूसा की शरीअत आपको किसी तरह भी
रास्तबाज़ क़रार नहीं दे सकती थी, 39 लेकिन
अब जो भी ईसा पर ईमान लाए उसे हर लिहाज़
से रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है। 40 इसलिए
ख़बरदार! ऐसा न हो कि वह बात आप पर पूरी
उतरे जो नबियों के सहीफ़ों में लिखी है,

41 'ग़ौर करो, मज़ाक़ उड़ानेवालो!
हैरतज़दा होकर हलाक हो जाओ।
क्योंकि मैं तुम्हारे जीते-जी
एक ऐसा काम करूँगा
जिसकी जब ख़बर सुनोगे
तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा'।"

42 जब पौलुस और बरनबास इबादतख़ाने से
निकलने लगे तो लोगों ने उनसे गुज़ारिश की,
"अगले सबत हमें इन बातों के बारे में मज़ीद कुछ
बताएँ।" 43 इबादत के बाद बहुत-से यहूदी और
यहूदी ईमान के नौमुरीद पौलुस और बरनबास
के पीछे हो लिए, और दोनों ने उनसे बात करके
उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की कि अल्लाह के फ़ज़ल
पर क़ायम रहें।

44 अगले सबत के दिन तक़रीबन तमाम
शहर ख़ुदावंद का कलाम सुनने को जमा हुआ।
45 लेकिन जब यहूदियों ने हुजूम को देखा तो
वह हसद से जल गए और पौलुस की बातों
की तरदीद करके कुफ़्र बकने लगे। 46 इस पर
पौलुस और बरनबास ने उनसे साफ़ साफ़ कह
दिया, "लाज़िम था कि अल्लाह का कलाम पहले
आपको सुनाया जाए। लेकिन चूँकि आप उसे
मुस्तरद करके अपने आपको अबदी ज़िंदगी के
लायक़ नहीं समझते इसलिए हम अब ग़ैरयहूदियों
की तरफ़ रुख़ करते हैं। 47 क्योंकि ख़ुदावंद ने हमें
यही हुक्म दिया जब उसने फ़रमाया, 'मैंने तुझे
दीगर अक़वाम की रौशनी बना दी है ताकि तू मेरी
नजात को दुनिया की इंतहा तक पहुँचाए'।"

48 यह सुनकर ग़ैरयहूदी ख़ुश हुए और ख़ुदावंद
के कलाम की तमजीद करने लगे। और जितने
अबदी ज़िंदगी के लिए मुक़र्रर किए गए थे वह
ईमान लाए।

49 यों ख़ुदावंद का कलाम पूरे इलाक़े में फैल
गया। 50 फिर यहूदियों ने शहर के लीडरों और
यहूदी ईमान रखनेवाली कुछ बारसूख़ ग़ैरयहूदी
ख़वातीन को उकसाकर लोगों को पौलुस और
बरनबास को सताने पर उभारा। आख़िरकार उन्हें
शहर की सरहद्दों से निकाल दिया गया। 51 इस पर
वह उनके ख़िलाफ़ गवाही के तौर पर अपने जूतों
से गर्द झाड़कर आगे बढ़े और इकुनियुम शहर
पहुँच गए। 52 और अंताकिया के शागिर्द ख़ुशी
और रूहुल-क़ुद्स से भरे रहे।

इकुनियुम में

14 इकुनियुम में पौलुस और बर-
नबास यहूदी इबादतख़ाने में जाकर
इतने इख़्तियार से बोले कि यहूदियों और
ग़ैरयहूदियों की बड़ी तादाद ईमान ले आई।
2 लेकिन जिन यहूदियों ने ईमान लाने से इनकार
किया उन्होंने ग़ैरयहूदियों को उकसाकर भाइयों
के बारे में उनके ख़यालात ख़राब कर दिए। 3 तो
भी रसूल काफ़ी देर तक वहाँ ठहरे। उन्होंने दिलेरी
से ख़ुदावंद के बारे में तालीम दी और ख़ुदावंद ने
अपने फ़ज़ल के पैग़ाम की तसदीक़ की। उसने
उनके हाथों इलाही निशान और मोजिज़े रूनुमा
होने दिए। 4 लेकिन शहर में आबाद लोग दो गुरोहों
में बट गए। कुछ यहूदियों के हक़ में थे और कुछ
रसूलों के हक़ में।

5 फिर कुछ ग़ैरयहूदियों और यहूदियों में जोश
आ गया। उन्होंने अपने लीडरों समेत फ़ैसला
किया कि हम पौलुस और बरनबास की तज़लील
करके उन्हें संगसार करेंगे। 6 लेकिन जब रसूलों
को पता चला तो वह हिजरत करके लुकाउनिया
के शहरों लुस्तरा, दिरबे और इर्दगिर्द के इलाक़े में
7 अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते रहे।

लुस्तरा और दिरबे

8 लुस्तरा में पौलुस और बरनबास की
मुलाक़ात एक आदमी से हुई जिसके पाँवों में
ताक़त नहीं थी। वह पैदाइश ही से लँगड़ा था और
कभी भी चल-फिर न सका था। वह वहाँ बैठा
9 उनकी बातें सुन रहा था कि पौलुस ने ग़ौर से उस
की तरफ़ देखा। उसने जान लिया कि उस आदमी
में रिहाई पाने के लायक़ ईमान है। 10 इसलिए
वह ऊँची आवाज़ से बोला, "अपने पाँवों पर खड़े
हो जाएँ!" वह उछलकर खड़ा हुआ और चलने-
फिरने लगा। 11 पौलुस का यह काम देखकर
हुजूम अपनी मक़ामी ज़बान में चिल्ला उठा, "इन
आदमियों की शक्ल में देवता हमारे पास उतर
आए हैं।" 12 उन्होंने बरनबास को यूनानी देवता
ज़ियूस क़रार दिया और पौलुस को देवता हिरमेस,
क्योंकि कलाम सुनाने की ख़िदमत ज़्यादातर वह
अंजाम देता था। 13 इस पर शहर से बाहर वाक़े
ज़ियूस के मंदिर का पुजारी शहर के दरवाज़े पर
बैल और फूलों के हार ले आया और हुजूम के
साथ क़ुरबानियाँ चढ़ाने की तैयारियाँ करने लगा।

14 यह सुनकर बरनबास और साऊल रसूल
अपने कपड़ों को फाड़कर हुजूम में जा घुसे और
चिल्लाने लगे, 15 "मर्दो, यह आप क्या कर रहे
हैं? हम भी आप जैसे इनसान हैं। हम तो आपको
अल्लाह की यह ख़ुशख़बरी सुनाने आए हैं कि
आप इन बेकार चीज़ों को छोड़कर ज़िंदा ख़ुदा
की तरफ़ रुजू फ़रमाएँ जिसने आसमानो-ज़मीन,
समुंदर और जो कुछ उनमें है पैदा किया है।
16 माज़ी में उसने तमाम ग़ैरयहूदी क़ौमों को खुला
छोड़ दिया था कि वह अपनी अपनी राह पर चलें।
17 तो भी उसने ऐसी चीज़ें आपके पास रहने दी
हैं जो उस की गवाही देती हैं। उस की मेहरबानी
इससे ज़ाहिर होती है कि वह आपको बारिश
भेजकर हर मौसम की फ़सलें मुहैया करता है और
आप सेर होकर ख़ुशी से भर जाते हैं।" 18 इन
अलफ़ाज़ के बावुजूद पौलुस और बरनबास ने
बड़ी मुश्किल से हुजूम को उन्हें क़ुरबानियाँ चढ़ाने
से रोका।

19 फिर कुछ यहूदी पिसिदिया के अंता-
किया और इकुनियुम से वहाँ आए और हुजूम
को अपनी तरफ़ मायल किया। उन्होंने पौलुस
को संगसार किया और शहर से बाहर घसीटकर
ले गए। उनका ख़याल था कि वह मर गया है,
20 लेकिन जब शागिर्द उसके गिर्द जमा हुए तो
वह उठकर शहर की तरफ़ वापस चल पड़ा। अगले
दिन वह बरनबास समेत दिरबे चला गया।

शाम के अंताकिया में वापसी

21 दिरबे में उन्होंने अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाकर बहुत-से शागिर्द बनाए। फिर वह मुड़कर
लुस्तरा, इकुनियुम और पिसिदिया के अंताकिया
वापस आए। 22 हर जगह उन्होंने शागिर्दों के दिल
मज़बूत करके उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह
ईमान में साबितक़दम रहें। उन्होंने कहा, "लाज़िम
है कि हम बहुत-सी मुसीबतों में से गुज़रकर
अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हों।" 23 पौलुस
और बरनबास ने हर जमात में बुज़ुर्ग भी मुक़र्रर
किए। उन्होंने रोज़े रखकर दुआ की और उन्हें उस
ख़ुदावंद के सुपुर्द किया जिस पर वह ईमान लाए
थे।

24 यों पिसिदिया के इलाक़े में से सफ़र करते
करते वह पंफ़ीलिया पहुँचे। 25 उन्होंने पिरगा
में कलामे-मुक़द्दस सुनाया और फिर उतरकर
अत्तलिया पहुँचे। 26 वहाँ से वह जहाज़ में बैठकर
शाम के शहर अंताकिया के लिए रवाना हुए, उस
शहर के लिए जहाँ ईमानदारों ने उन्हें इस तबलीग़ी
सफ़र के लिए अल्लाह के फ़ज़ल के सुपुर्द किया
था। यों उन्होंने अपनी इस ख़िदमत को पूरा किया।

27 अंताकिया पहुँचकर उन्होंने ईमानदारों को
जमा करके उन तमाम कामों का बयान किया
जो अल्लाह ने उनके वसीले से किए थे। साथ
साथ उन्होंने यह भी बताया कि अल्लाह ने किस
तरह ग़ैरयहूदियों के लिए भी ईमान का दरवाज़ा

खोल दिया है। 28 और वह काफ़ी देर तक वहाँ के
शागिर्दों के पास ठहरे रहे।

यरूशलम में मुशावरती इजतिमा

15 उस वक़्त कुछ आदमी यहूदिया से
आकर शाम के अंताकिया में भाइयों
को यह तालीम देने लगे, “लाज़िम है कि
आपका मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ख़तना
किया जाए, वरना आप नजात नहीं पा सकेंगे।”
2 इससे उनके और बरनबास और पौलुस के
दरमियान नाइत्तफ़ाक़ी पैदा हो गई और दोनों
उनके साथ ख़ूब बहस-मुबाहसा करने लगे।
आख़िरकार जमात ने पौलुस और बरनबास को
मुक़र्रर किया कि वह चंद एक और मक़ामी
ईमानदारों के साथ यरूशलम जाएँ और वहाँ के
रसूलों और बुज़ुर्गों को यह मामला पेश करें।

3 चुनाँचे जमात ने उन्हें रवाना किया और वह
फ़ेनीके और सामरिया में से गुज़रे। रास्ते में उन्होंने
मक़ामी ईमानदारों को तफ़सील से बताया कि
ग़ैरयहूदी किस तरह ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू ला
रहे हैं। यह सुनकर तमाम भाई निहायत ख़ुश
हुए। 4 जब वह यरूशलम पहुँच गए तो जमात ने
अपने रसूलों और बुज़ुर्गों समेत उनका इस्तक़बाल
किया। फिर पौलुस और बरनबास ने सब कुछ
बयान किया जो उनकी मारिफ़त हुआ था। 5 यह
सुनकर कुछ ईमानदार खड़े हुए जो फ़रीसी फ़िरक़े
में से थे। उन्होंने कहा, “लाज़िम है कि ग़ैरयहूदियों
का ख़तना किया जाए और उन्हें हुक्म दिया जाए
कि वह मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें।”

6 रसूल और बुज़ुर्ग इस मामले पर ग़ौर करने
के लिए जमा हुए। 7 बहुत बहस-मुबाहसा के बाद
पतरस खड़ा हुआ और कहा, “भाइयो, आप
जानते हैं कि अल्लाह ने बहुत देर हुई आपमें से
मुझे चुन लिया कि ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुनाऊँ ताकि वह ईमान लाएँ। 8 और
अल्लाह ने जो दिलों को जानता है इस बात की
तसदीक़ की है, क्योंकि उसने उन्हें वही रूहुल-
क़ुद्स बख़्शा है जो उसने हमें भी दिया था। 9 उसने
हममें और उनमें कोई भी फ़रक़ न रखा बल्कि
ईमान से उनके दिलों को भी पाक कर दिया।
10 चुनाँचे आप अल्लाह को इसमें क्यों आज़मा
रहे हैं कि आप ग़ैरयहूदी शागिर्दों की गरदन पर
एक ऐसा जुआ रखना चाहते हैं जो न हम और न
हमारे बापदादा उठा सकते थे? 11 देखें, हम तो
ईमान रखते हैं कि हम सब एक ही तरीक़े यानी
ख़ुदावंद ईसा के फ़ज़ल ही से नजात पाते हैं।”

12 तमाम लोग चुप रहे तो पौलुस और बरनबास
उन्हें उन इलाही निशानों और मोजिज़ों के बारे
में बताने लगे जो अल्लाह ने उनकी मारिफ़त
ग़ैरयहूदियों के दरमियान किए थे। 13 जब उनकी
बात ख़त्म हुई तो याक़ूब ने कहा, “भाइयो,
मेरी बात सुनें! 14 शमाऊन ने बयान किया है
कि अल्लाह ने किस तरह पहला क़दम उठाकर
ग़ैरयहूदियों पर अपनी फ़िकरमंदी का इज़हार
किया और उनमें से अपने लिए एक क़ौम चुन
ली। 15 और यह बात नबियों की पेशगोइयों के
भी मुताबिक़ है। चुनाँचे लिखा है,

16 ‘इसके बाद मैं वापस आकर
दाऊद के तबाहशुदा घर को
नए सिरे से तामीर करूँगा,
मैं उसके खंडरात
दुबारा तामीर करके बहाल करूँगा
17 ताकि लोगों का बचा-खुचा हिस्सा
और वह तमाम क़ौमें
मुझे ढूँडें जिन पर मेरे नाम का ठप्पा
लगा है।
यह रब का फ़रमान है,
और वह यह करेगा भी’
18 बल्कि यह उसे अज़ल से मालूम है।

19 यही पेशे-नज़र रखकर मेरी राय यह है कि
हम उन ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह की तरफ़
रुजू कर रहे हैं ग़ैरज़रूरी तकलीफ़ न दें। 20 इसके
बजाए बेहतर यह है कि हम उन्हें लिखकर हिदायत
दें कि वह इन चीज़ों से परहेज़ करें : ऐसे खानों
से जो बुतों को पेश किए जाने से नापाक हैं,

ज़िनाकारी से, ऐसे जानवरों का गोश्त खाने से
जिन्हें गला घूँटकर मार दिया गया हो और ख़ून
खाने से। 21 क्योंकि मूसवी शरीअत की मुनादी
करनेवाले कई नसलों से हर शहर में रह रहे हैं।
जिस शहर में भी जाएँ हर सबत के दिन शरीअत
की तिलावत की जाती है।”

ग़ैरयहूदी ईमानदारों के नाम ख़त

22 फिर रसूलों और बुज़ुर्गों ने पूरी जमात समेत
फ़ैसला किया कि हम अपने में से कुछ आदमी
चुनकर पौलुस और बरनबास के हमराह शाम
के शहर अंताकिया भेज दें। दो को चुना गया
जो भाइयों में राहनुमा थे, यहूदाह बरसब्बा और
सीलास। 23 उनके हाथ उन्होंने यह ख़त भेजा,

“यरूशलम के रसूलों और बुज़ुर्गों की तरफ़ से
जो आपके भाई हैं।

अज़ीज़ ग़ैरयहूदी भाइयो जो अंताकिया, शाम
और किलिकिया में रहते हैं, अस्सलामु अलैकुम!

24 सुना है कि हममें से कुछ लोगों ने आपके
पास आकर आपको परेशान करके बेचैन कर
दिया है, हालाँकि हमने उन्हें नहीं भेजा था।
25 इसलिए हम सब इस पर मुत्तफ़िक़ हुए कि
कुछ आदमियों को चुनकर अपने प्यारे भाइयों
बरनबास और पौलुस के हमराह आपके पास
भेजें। 26 बरनबास और पौलुस ऐसे लोग हैं
जिन्होंने हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की ख़ातिर
अपनी जान ख़तरे में डाल दी है। 27 उनके साथी
यहूदाह और सीलास हैं जिनको हमने इसलिए
भेजा कि वह ज़बानी भी उन बातों की तसदीक़
करें जो हमने लिखी हैं।

28 हम और रूहुल-क़ुद्स इस पर मुत्तफ़िक़ हुए
हैं कि आप पर सिवाए इन ज़रूरी बातों के कोई
बोझ न डालें : 29 बुतों को पेश किया गया खाना
मत खाना, ख़ून मत खाना, ऐसे जानवरों का
गोश्त मत खाना जो गला घूँटकर मार दिए गए
हों। इसके अलावा ज़िनाकारी न करें। इन चीज़ों
से बाज़ रहेंगे तो अच्छा करेंगे। ख़ुदा हाफ़िज़।”

30 पौलुस, बरनबास और उनके साथी रुख़सत
होकर अंताकिया चले गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने
जमात इकट्ठी करके उसे ख़त दे दिया। 31 उसे
पढ़कर ईमानदार उसके हौसलाअफ़्ज़ा पैग़ाम पर
ख़ुश हुए। 32 यहूदाह और सीलास ने भी जो ख़ुद
नबी थे भाइयों की हौसलाअफ़्ज़ाई और मज़बूती
के लिए काफ़ी बातें कीं। 33 वह कुछ देर के लिए
वहाँ ठहरे, फिर मक़ामी भाइयों ने उन्हें सलामती
से अलविदा कहा ताकि वह भेजनेवालों के पास
वापस जा सकें। 34 [लेकिन सीलास को वहाँ
ठहरना अच्छा लगा।]

35 पौलुस और बरनबास ख़ुद कुछ और देर
अंताकिया में रहे। वहाँ वह बहुत-से और लोगों
के साथ ख़ुदावंद के कलाम की तालीम देते और
उस की मुनादी करते रहे।

पौलुस और बरनबास जुदा हो जाते हैं

36 कुछ दिनों के बाद पौलुस ने बरनबास से
कहा, “आओ, हम मुड़कर उन तमाम शहरों में
जाएँ जहाँ हमने ख़ुदावंद के कलाम की मुनादी की
है और वहाँ के भाइयों से मुलाक़ात करके उनका
हाल मालूम करें।” 37 बरनबास मुत्तफ़िक़ होकर
यूहन्ना मरक़ुस को साथ ले जाना चाहता था,
38 लेकिन पौलुस ने इसरार किया कि वह साथ न
जाए, क्योंकि यूहन्ना मरक़ुस पहले दौरे के दौरान
ही पंफ़ीलिया में उन्हें छोड़कर उनके साथ ख़िदमत
करने से बाज़ आया था। 39 इससे उनमें इतना
सख़्त इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ कि वह एक दूसरे से
जुदा हो गए। बरनबास यूहन्ना मरक़ुस को साथ
लेकर जहाज़ में बैठ गया और क़ुबरुस चला गया,
40 जबकि पौलुस ने सीलास को ख़िदमत के लिए
चुन लिया। मक़ामी भाइयों ने उन्हें ख़ुदावंद के
फ़ज़ल के सुपुर्द किया और वह रवाना हुए। 41 यों
पौलुस जमातों को मज़बूत करते करते शाम और
किलिकिया में से गुज़रा।

तीमुथियुस का चुनाव

16 चलते चलते वह दिरबे पहुँचा, फिर
लुस्तरा। वहाँ एक शागिर्द बनाम
तीमुथियुस रहता था। उस की यहूदी माँ ईमान
लाई थी जबकि बाप यूनानी था। 2 लुस्तरा और
इकुनियुम के भाइयों ने उस की अच्छी रिपोर्ट
दी, 3 इसलिए पौलुस उसे सफ़र पर अपने साथ
ले जाना चाहता था। उस इलाक़े के यहूदियों
का लिहाज़ करके उसने तीमुथियुस का ख़तना
करवाया, क्योंकि सब लोग इससे वाक़िफ़ थे
कि उसका बाप यूनानी है। 4 फिर शहर बशहर
जाकर उन्होंने मक़ामी जमातों को यरूशलम के
रसूलों और बुज़ुर्गों के वह फ़ैसले पहुँचाए जिनके
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारनी थी। 5 यों जमातें ईमान
में मज़बूत हुईं और तादाद में रोज़ बरोज़ बढ़ती
गईं।

त्रोआस में पौलुस की रोया

6 रूहुल-क़ुद्स ने उन्हें सूबा आसिया में कलामे-
मुक़द्दस की मुनादी करने से रोक लिया, इसलिए
वह फ़रूगिया और गलतिया के इलाक़े में से
गुज़रे। 7 मूसिया के क़रीब आकर उन्होंने शिमाल
की तरफ़ सूबा बिथुनिया में दाख़िल होने की
कोशिश की। लेकिन ईसा के रूह ने उन्हें वहाँ
भी जाने न दिया, 8 इसलिए वह मूसिया में से
गुज़रकर बंदरगाह त्रोआस पहुँचे। 9 वहाँ पौलुस
ने रात के वक़्त रोया देखी जिसमें शिमाली यूनान
में वाक़े सूबा मकिदुनिया का एक आदमी खड़ा
उससे इलतमास कर रहा था, "समुंदर को पार
करके मकिदुनिया आएँ और हमारी मदद करें!"
10 ज्योंही उसने यह रोया देखी हम मकिदुनिया
जाने की तैयारियाँ करने लगे। क्योंकि हमने रोया
से यह नतीजा निकाला कि अल्लाह ने हमें उस
इलाक़े के लोगों को ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
बुलाया है।

फ़िलिप्पी में लुदिया की तबदीली

11 हम त्रोआस में जहाज़ पर सवार होकर सीधे
जज़ीराए-समुतराके के लिए रवाना हुए। फिर
अगले दिन आगे निकलकर नयापुलिस पहुँचे।
12 वहाँ जहाज़ से उतरकर हम फ़िलिप्पी चले
गए, जो सूबा मकिदुनिया के उस ज़िले का सदर
शहर था और रोमी नौआबादी था। इस शहर में
हम कुछ दिन ठहरे। 13 सबत के दिन हम शहर
से निकलकर दरिया के किनारे गए, जहाँ हमारी
तवक़्क़ो थी कि यहूदी दुआ के लिए जमा होंगे।
वहाँ हम बैठकर कुछ ख़वातीन से बात करने लगे
जो इकट्ठी हुई थीं। 14 उनमें से थुआतीरा शहर की
एक औरत थी जिसका नाम लुदिया था। उसका
पेशा क़ीमती अरग़वानी रंग के कपड़े की तिजारत
था और वह अल्लाह की परस्तिश करनेवाली
ग़ैरयहूदी थी। ख़ुदावंद ने उसके दिल को खोल
दिया, और उसने पौलुस की बातों पर तवज्जुह
दी। 15 उसके और उसके घरवालों के बपतिस्मा
लेने के बाद उसने हमें अपने घर में ठहरने की
दावत दी। उसने कहा, "अगर आप समझते हैं
कि मैं वाक़ई ख़ुदावंद पर ईमान लाई हूँ तो मेरे घर
आकर ठहरें।" यों उसने हमें मजबूर किया।

फ़िलिप्पी की जेल में

16 एक दिन हम दुआ की जगह की तरफ़ जा
रहे थे कि हमारी मुलाक़ात एक लौंडी से हुई
जो एक बदरूह के ज़रीए लोगों की क़िस्मत का
हाल बताती थी। इससे वह अपने मालिकों के
लिए बहुत-से पैसे कमाती थी। 17 वह पौलुस और
हमारे पीछे पड़कर चीख़ चीख़कर कहने लगी,
"यह आदमी अल्लाह तआला के ख़ादिम हैं जो
आपको नजात की राह बताने आए हैं।" 18 यह
सिलसिला रोज़ बरोज़ जारी रहा। आख़िरकार
पौलुस तंग आकर मुड़ा और बदरूह से कहा, "मैं
तुझे ईसा मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ कि
लड़की में से निकल जा!" उसी लमहे वह निकल
गई।

19 उसके मालिकों को मालूम हुआ कि पैसे
कमाने की उम्मीद जाती रही तो वह पौलुस और
सीलास को पकड़कर चौक में बैठे इक़्तिदार
रखनेवालों के सामने घसीट ले गए। 20 उन्हें
मजिस्ट्रेटों के सामने पेश करके वह चिल्लाने लगे,
“यह आदमी हमारे शहर में हलचल पैदा कर
रहे हैं। यह यहूदी हैं 21 और ऐसे रस्मो-रिवाज
का प्रचार कर रहे हैं जिन्हें क़बूल करना और
अदा करना हम रोमियों के लिए जायज़ नहीं।”
22 हुजूम भी आ मिला और पौलुस और सीलास
के ख़िलाफ़ बातें करने लगा।

इस पर मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया कि उनके कपड़े
उतारे और उन्हें लाठी से मारा जाए। 23 उन्होंने
उनकी ख़ूब पिटाई करवाकर उन्हें क़ैदख़ाने में
डाल दिया और दारोग़े से कहा कि एहतियात से
उनकी पहरादारी करो। 24 चुनाँचे उसने उन्हें जेल
के सबसे अंदरूनी हिस्से में ले जाकर उनके पाँव
काठ में डाल दिए।

25 अब ऐसा हुआ कि पौलुस और सीलास
आधी रात के क़रीब दुआ कर रहे और अल्लाह
की तमजीद के गीत गा रहे थे और बाक़ी क़ैदी
सुन रहे थे। 26 अचानक बड़ा ज़लज़ला आया और
क़ैदख़ाने की पूरी इमारत बुनियादों तक हिल गई।
फ़ौरन तमाम दरवाज़े खुल गए और तमाम क़ैदियों
की ज़ंजीरें खुल गईं। 27 दारोग़ा जाग उठा। जब
उसने देखा कि जेल के दरवाज़े खुले हैं तो वह
अपनी तलवार निकालकर ख़ुदकुशी करने लगा,
क्योंकि ऐसा लग रहा था कि क़ैदी फ़रार हो गए
हैं। 28 लेकिन पौलुस चिल्ला उठा, “मत करें!
अपने आपको नुक़सान न पहुँचाएँ। हम सब यहीं
हैं।”

29 दारोग़े ने चराग़ मँगवा लिया और भागकर
अंदर आया। लरज़ते लरज़ते वह पौलुस और
सीलास के सामने गिर गया। 30 फिर उन्हें बाहर
ले जाकर उसने पूछा, “साहबो, मुझे नजात पाने
के लिए क्या करना है?”

31 उन्होंने जवाब दिया, “ख़ुदावंद ईसा पर
ईमान लाएँ तो आप और आपके घराने को नजात
मिलेगी।” 32 फिर उन्होंने उसे और उसके तमाम
घरवालों को ख़ुदावंद का कलाम सुनाया। 33 और
रात की उसी घड़ी दारोग़े ने उन्हें ले जाकर उनके
ज़ख़मों को धोया। इसके बाद उसका और उसके
सारे घरवालों का बपतिस्मा हुआ। 34 फिर उसने
उन्हें अपने घर में लाकर खाना खिलाया। अल्लाह
पर ईमान लाने के बाइस उसने और उसके तमाम
घरवालों ने बड़ी ख़ुशी मनाई।

35 जब दिन चढ़ा तो मजिस्ट्रेटों ने अपने
अफ़सरों को दारोग़े के पास भिजवा दिया कि वह
पौलुस और सीलास को रिहा करे।

36 चुनाँचे दारोग़े ने पौलुस को उनका पैग़ाम
पहुँचा दिया, “मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया है कि
आप और सीलास को रिहा कर दिया जाए। अब
निकलकर सलामती से चले जाएँ।”

37 लेकिन पौलुस ने एतराज़ किया। उसने
उनसे कहा, “उन्होंने हमें अवाम के सामने ही और
अदालत में पेश किए बग़ैर मारकर जेल में डाल
दिया है हालाँकि हम रोमी शहरी हैं। और अब वह
हमें चुपके से निकालना चाहते हैं? हरगिज़ नहीं!
अब वह ख़ुद आएँ और हमें बाहर ले जाएँ।”

38 अफ़सरों ने मजिस्ट्रेटों को यह ख़बर
पहुँचाई। जब उन्हें मालूम हुआ कि पौलुस और
सीलास रोमी शहरी हैं तो वह घबरा गए। 39 वह
ख़ुद उन्हें समझाने के लिए आए और जेल से
बाहर लाकर गुज़ारिश की कि शहर को छोड़ दें।
40 चुनाँचे पौलुस और सीलास जेल से निकल
आए। लेकिन पहले वह लुदिया के घर गए जहाँ
वह भाइयों से मिले और उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई
की। फिर वह चले गए।

थिस्सलुनीके में

17 अंफ़िपुलिस और अपुल्लोनिया
से होकर पौलुस और सीलास
थिस्सलुनीके शहर पहुँच गए जहाँ यहूदी
इबादतख़ाना था। 2 अपनी आदत के मुता-
बिक़ पौलुस उसमें गया और लगातार तीन सबतों
के दौरान कलामे-मुक़द्दस से दलायल दे देकर

यहूदियों को क़ायल करने की कोशिश करता
रहा। 3 उसने कलामे-मुक़द्दस की तशरीह करके
साबित किया कि मसीह का दुख उठाना और
मुरदों में से जी उठना लाज़िम था। उसने कहा,
“जिस ईसा की मैं ख़बर दे रहा हूँ, वही मसीह
है।” 4 यहूदियों में से कुछ क़ायल होकर पौलुस
और सीलास से वाबस्ता हो गए, जिनमें ख़ुदातरस
यूनानियों की बड़ी तादाद और बारसूख ख़वातीन
भी शरीक थीं।

5 यह देखकर बाक़ी यहूदी हसद करने लगे।
उन्होंने गलियों में आवारा फिरनेवाले कुछ शरीर
आदमी इकट्ठे करके जुलूस निकाला और शहर
में हलचल मचा दी। फिर यासोन के घर पर
हमला करके उन्होंने पौलुस और सीलास को
ढूँडा ताकि उन्हें अवामी इजलास के सामने पेश
करें। 6 लेकिन वह वहाँ नहीं थे, इसलिए वह
यासोन और चंद एक और ईमानदार भाइयों
को शहर के मजिस्ट्रेटों के सामने लाए। उन्होंने
चीख़कर कहा, “यह लोग पूरी दुनिया में गड़बड़
पैदा कर रहे हैं और अब यहाँ भी आ गए हैं।
7 यासोन ने उन्हें अपने घर में ठहराया है। यह सब
शहनशाह के अहकाम की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे
हैं, क्योंकि यह किसी और को बादशाह मानते हैं
जिसका नाम ईसा है।” 8 इस तरह की बातों से
उन्होंने हुजूम और मजिस्ट्रेटों में बड़ा हंगामा पैदा
किया। 9 चुनाँचे मजिस्ट्रेटों ने यासोन और दूसरों
से ज़मानत ली और फिर उन्हें छोड़ दिया।

बेरिया में

10 उसी रात भाइयों ने पौलुस और सीलास
को बेरिया भेज दिया। वहाँ पहुँचकर वह यहूदी
इबादतख़ाने में गए। 11 यह लोग थिस्सलुनीके के
यहूदियों की निसबत ज़्यादा खुले ज़हन के थे। यह
बड़े शौक़ से पौलुस और सीलास की बातें सुनते
और रोज़ बरोज़ कलामे-मुक़द्दस की तफ़तीश
करते रहे कि क्या वाक़ई ऐसा है जैसा हमें बताया
जा रहा है? 12 नतीजे में इनमें से बहुत-से यहूदी
ईमान लाए और साथ साथ बहुत-सी बारसूख
यूनानी ख़वातीन और मर्द भी। 13 लेकिन फिर
थिस्सलुनीके के यहूदियों को यह ख़बर मिली कि
पौलुस बेरिया में अल्लाह का कलाम सुना रहा
है। वह वहाँ भी पहुँचे और लोगों को उकसाकर
हलचल मचा दी। 14 इस पर भाइयों ने पौलुस को
फ़ौरन साहिल पर भेज दिया, लेकिन सीलास और
तीमुथियुस बेरिया में पीछे रह गए। 15 जो आदमी
पौलुस को साहिल तक पहुँचाने आए थे वह उसके
साथ अथेने तक गए। वहाँ वह उसे छोड़कर वापस
चले गए। उनके हाथ पौलुस ने सीलास और
तीमुथियुस को ख़बर भेजी कि जितनी जल्दी हो
सके बेरिया को छोड़कर मेरे पास आ जाएँ।

अथेने में

16 अथेने शहर में सीलास और तीमुथियुस
का इंतज़ार करते करते पौलुस बड़े जोश
में आ गया, क्योंकि उसने देखा कि पूरा
शहर बुतों से भरा हुआ है। 17 वह यहूदी
इबादतख़ाने में जाकर यहूदियों और ख़ुदा-
तरस ग़ैरयहूदियों से बहस करने लगा। साथ साथ
वह रोज़ाना चौक में भी जाकर वहाँ पर मौजूद
लोगों से गुफ़्तगू करता रहा। 18 इपिकूरी और
स्तोयकी फ़लसफ़ी[a] भी उससे बहस करने लगे।
जब पौलुस ने उन्हें ईसा और उसके जी उठने की
ख़ुशख़बरी सुनाई तो बाज़ ने पूछा, “यह बकवासी
इन बातों से क्या कहना चाहता है जो इसने इधर-
उधर से चुनकर जोड़ दी हैं?”

दूसरों ने कहा, “लगता है कि वह अजनबी
देवताओं की ख़बर दे रहा है।” 19 वह उसे
साथ लेकर शहर की मजलिसे-शूरा में गए जो
अरियोपगुस नामी पहाड़ी पर मुनअक़िद होती थी।
उन्होंने दरख़ास्त की, “क्या हमें मालूम हो सकता
है कि आप कौन-सी नई तालीम पेश कर रहे हैं?
20 आप तो हमें अजीबो-ग़रीब बातें सुना रहे हैं।
अब हम उनका सहीह मतलब जानना चाहते हैं।”
21 (बात यह थी कि अथेने के तमाम बाशिंदे शहर

[a]यानी रवाक़ियत के फ़लसफ़ी।

में रहनेवाले परदेसियों समेत अपना पूरा वक़्त
इसमें सर्फ़ करते थे कि ताज़ा ताज़ा ख़यालात
सुनें या सुनाएँ।)
22 पौलुस मजलिस में खड़ा हुआ और कहा,
“अथेने के हज़रात, मैं देखता हूँ कि आप हर
लिहाज़ से बहुत मज़हबी लोग हैं। 23 क्योंकि जब
मैं शहर में से गुज़र रहा था तो उन चीज़ों पर
ग़ौर किया जिनकी पूजा आप करते हैं। चलते
चलते मैंने एक ऐसी क़ुरबानगाह भी देखी जिस
पर लिखा था, ‘नामालूम ख़ुदा की क़ुरबानगाह।’
अब मैं आपको उस ख़ुदा की ख़बर देता हूँ जिसकी
पूजा आप करते तो हैं मगर आप उसे जानते
नहीं। 24 यह वह ख़ुदा है जिसने दुनिया और उसमें
मौजूद हर चीज़ की तख़लीक़ की। वह आसमानो-
ज़मीन का मालिक है, इसलिए वह इनसानी हाथों
के बनाए हुए मंदिरों में सुकूनत नहीं करता।
25 और इनसानी हाथ उस की ख़िदमत नहीं कर
सकते, क्योंकि उसे कोई भी चीज़ दरकार नहीं
होती। इसके बजाए वही सबको ज़िंदगी और साँस
मुहैया करके उनकी तमाम ज़रूरियात पूरी करता
है। 26 उसी ने एक शख़्स को ख़लक़ किया ताकि
दुनिया की तमाम क़ौमें उससे निकलकर पूरी
दुनिया में फैल जाएँ। उसने हर क़ौम के औक़ात
और सरहद्दें भी मुक़र्रर कीं। 27 मक़सद यह था
कि वह ख़ुदा को तलाश करें। उम्मीद यह थी कि
वह टटोल टटोलकर उसे पाएँ, अगरचे वह हममें
से किसी से दूर नहीं होता। 28 क्योंकि उसमें हम
जीते, हरकत करते और वुजूद रखते हैं। आपके
अपने कुछ शायरों ने भी फ़रमाया है, ‘हम भी
उसके फ़रज़ंद हैं।’ 29 अब चूँकि हम अल्लाह के
फ़रज़ंद हैं इसलिए हमारा उसके बारे में तसव्वुर
यह नहीं होना चाहिए कि वह सोने, चाँदी या पत्थर
का कोई मुजस्समा हो जो इनसान की महारत
और डिज़ायन से बनाया गया हो। 30 माज़ी में
ख़ुदा ने इस क़िस्म की जहालत को नज़रंदाज़
किया, लेकिन अब वह हर जगह के लोगों को
तौबा का हुक्म देता है। 31 क्योंकि उसने एक
दिन मुक़र्रर किया है जब वह इनसाफ़ से दुनिया
की अदालत करेगा। और वह यह अदालत एक
शख़्स की मारिफ़त करेगा जिसको वह मुतैयिन
कर चुका है और जिसकी तसदीक़ उसने इससे
की है कि उसने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया
है।”
32 मुरदों की क़ियामत का ज़िक्र सुनकर बाज़
ने पौलुस का मज़ाक़ उड़ाया। लेकिन बाज़ ने
कहा, “हम किसी और वक़्त इसके बारे में
आपसे मज़ीद सुनना चाहते हैं।” 33 फिर पौलुस
मजलिस से निकलकर चला गया। 34 कुछ लोग
उससे वाबस्ता होकर ईमान ले आए। उनमें से
मजलिसे-शूरा का मेंबर दियोनीसियुस था और
एक औरत बनाम दमरिस। कुछ और भी थे।

कुरिंथुस में

18 इसके बाद पौलुस अथेने को छोड़कर
कुरिंथुस शहर आया। 2 वहाँ उस
की मुलाक़ात एक यहूदी से हुई जिसका नाम
अकविला था। वह पुंतुस का रहनेवाला था और
थोड़ी देर पहले अपनी बीवी प्रिसकिल्ला समेत
इटली से आया था। वजह यह थी कि शहनशाह
क्लौदियुस ने हुक्म सादिर किया था कि तमाम
यहूदी रोम को छोड़कर चले जाएँ। उन लोगों के
पास पौलुस गया 3 और चूँकि उनका पेशा भी ख़ैमे
सिलाई करना था इसलिए वह उनके घर ठहरकर
रोज़ी कमाने लगा। 4 साथ साथ उसने हर सबत
को यहूदी इबादतख़ाने में तालीम देकर यहूदियों
और यूनानियों को क़ायल करने की कोशिश की।
5 जब सीलास और तीमुथियुस मकि-
दुनिया से आए तो पौलुस अपना पूरा वक़्त
कलाम सुनाने में सर्फ़ करने लगा। उसने यहूदियों
को गवाही दी कि ईसा कलामे-मुक़द्दस में बयान
किया गया मसीह है। 6 लेकिन जब वह उस की
मुख़ालफ़त करके उस की तज़लील करने लगे तो
उसने एहतजाज में अपने कपड़ों से गर्द झाड़कर
कहा, “आप ख़ुद अपनी हलाकत के ज़िम्मेदार
हैं, मैं बेक़ुसूर हूँ। अब से मैं ग़ैरयहूदियों के पास
जाया करूँगा।” 7 फिर वह वहाँ से निकलकर

इबादतख़ाने के साथवाले घर में गया। वहाँ तितुस यूसतुस रहता था जो यहूदी नहीं था, लेकिन ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता था। 8 और क्रिसपुस जो इबादतख़ाने का राहनुमा था अपने घराने समेत ख़ुदावंद पर ईमान लाया। कुरिंथुस के बहुत सारे और लोगों ने भी जब पौलुस की बातें सुनीं तो ईमान लाए और बपतिस्मा लिया।

9 एक रात ख़ुदावंद रोया में पौलुस से हमकलाम हुआ, "मत डर! कलाम करता जा और ख़ामोश न हो, 10 क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। कोई हमला करके तुझे नुक़सान नहीं पहुँचाएगा, क्योंकि इस शहर में मेरे बहुत-से लोग हैं।" 11 फिर पौलुस मज़ीद डेढ़ साल वहाँ ठहरकर लोगों को अल्लाह का कलाम सिखाता रहा।

12 उन दिनों में जब गल्लियो सूबा अख़या का गवर्नर था तो यहूदी मुत्तहिद होकर पौलुस के ख़िलाफ़ जमा हुए और उसे अदालत में गल्लियो के सामने लाए। 13 उन्होंने कहा, "यह आदमी लोगों को ऐसे तरीक़े से अल्लाह की इबादत करने पर उकसा रहा है जो हमारी शरीअत के ख़िलाफ़ है।"

14 पौलुस जवाब में कुछ कहने को था कि गल्लियो ख़ुद यहूदियों से मुख़ातिब हुआ, "सुनें, यहूदी मर्दो! अगर आपका इलज़ाम कोई नाइनसाफ़ी या संगीन जुर्म होता तो आपकी बात क़ाबिले-बरदाश्त होती। 15 लेकिन आपका झगड़ा मज़हबी तालीम, नामों और आपकी यहूदी शरीअत से ताल्लुक़ रखता है, इसलिए उसे ख़ुद हल करें। मैं इस मामले में फ़ैसला करने के लिए तैयार नहीं हूँ।" 16 यह कहकर उसने उन्हें अदालत से भगा दिया। 17 इस पर हुजूम ने यहूदी इबादतख़ाने के राहनुमा सोसथिनेस को पकड़कर अदालत के सामने उस की पिटाई की। लेकिन गल्लियो ने परवा न की।

अंताकिया तक वापसी का सफ़र

18 इसके बाद भी पौलुस बहुत दिन कुरिंथुस में रहा। फिर भाइयों को ख़ैरबाद कहकर वह क़रीब के शहर किंख़रिया गया जहाँ उसने किसी मन्नत के पूरे होने पर अपने सर के बाल मुँडवा दिए। इसके बाद वह प्रिसकिल्ला और अकविला के साथ जहाज़ पर सवार होकर मुल्के-शाम के लिए रवाना हुआ। 19 पहले वह इफ़िसुस पहुँचे जहाँ पौलुस ने प्रिसकिल्ला और अकविला को छोड़ दिया। वहाँ भी उसने यहूदी इबादतख़ाने में जाकर यहूदियों से बहस की। 20 उन्होंने उससे दरख़ास्त की कि मज़ीद वक़्त उनके साथ गुज़ारे, लेकिन उसने इनकार किया 21 और उन्हें ख़ैरबाद कहकर कहा, "अगर अल्लाह की मरज़ी हो तो मैं आपके पास वापस आऊँगा।" फिर वह जहाज़ पर सवार होकर इफ़िसुस से रवाना हुआ।

22 सफ़र करते करते वह क़ैसरिया पहुँच गया, जहाँ से वह यरूशलम जाकर मक़ामी जमात से मिला। इसके बाद वह अंताकिया वापस चला गया 23 जहाँ वह कुछ देर ठहरा। फिर आगे निकलकर वह गलतिया और फ़रूगिया के इलाक़े में से गुज़रते हुए वहाँ के तमाम ईमानदारों को मज़बूत करता गया।

अपुल्लोस इफ़िसुस और कुरिंथुस में

24 इतने में एक फ़सीह यहूदी जिसे कलामे-मुक़द्दस का ज़बरदस्त इल्म था इफ़िसुस पहुँच गया था। उसका नाम अपुल्लोस था। वह मिसर के शहर इस्कंदरिया का रहनेवाला था। 25 उसे ख़ुदावंद की राह के बारे में तालीम दी गई थी और वह बड़ी सरगरमी से लोगों को ईसा के बारे में सिखाता रहा। उस की यह तालीम सहीह थी अगरचे वह अभी तक सिर्फ़ यहया का बपतिस्मा जानता था। 26 इफ़िसुस के यहूदी इबादतख़ाने में वह बड़ी दिलेरी से कलाम करने लगा। यह सुनकर प्रिसकिल्ला और अकविला ने उसे एक तरफ़ ले जाकर उसके सामने अल्लाह की राह को मज़ीद तफ़सील से बयान किया। 27 अपुल्लोस सूबा अख़या जाने का ख़याल रखता था तो इफ़िसुस के भाइयों ने उस की हौसलाअफ़ज़ाई की। उन्होंने वहाँ के शागिर्दों को ख़त लिखा कि

वह उसका इस्तक़बाल करें। जब वह वहाँ पहुँचा
तो उनके लिए बड़ी मदद का बाइस बना जो
अल्लाह के फ़ज़ल से ईमान लाए थे, 28 क्योंकि
वह अलानिया मुबाहसों में ज़बरदस्त दलायल से
यहूदियों पर ग़ालिब आया और कलामे-मुक़द्दस
से साबित किया कि ईसा मसीह है।

पौलुस इफ़िसुस में

19 जब अपुल्लोस कुरिंथुस में ठहरा हुआ
था तो पौलुस एशियाए-कूचक के
अंदरूनी इलाक़े में से सफ़र करते करते साहिली
शहर इफ़िसुस में आया। वहाँ उसे कुछ शागिर्द
मिले 2 जिनसे उसने पूछा, "क्या आपको ईमान
लाते वक़्त रूहुल-क़ुद्स मिला?"
उन्होंने जवाब दिया, "नहीं, हमने तो रूहुल-
क़ुद्स का ज़िक्र तक नहीं सुना।"
3 उसने पूछा, "तो आपको कौन-सा बप-
तिस्मा दिया गया?"
उन्होंने जवाब दिया, "यहया का।"
4 पौलुस ने कहा, "यहया ने बपतिस्मा दिया
जब लोगों ने तौबा की। लेकिन उसने ख़ुद उन्हें
बताया, 'मेरे बाद आनेवाले पर ईमान लाओ,
यानी ईसा पर'।"
5 यह सुनकर उन्होंने ख़ुदावंद ईसा के नाम
पर बपतिस्मा लिया। 6 और जब पौलुस ने
अपने हाथ उन पर रखे तो उन पर रूहुल-
क़ुदस नाज़िल हुआ, और वह ग़ैरज़बानें
बोलने और नबुव्वत करने लगे। 7 इन आद-
मियों की कुल तादाद तक़रीबन बारह थी।
8 पौलुस यहूदी इबादतख़ाने में गया और तीन
महीने के दौरान यहूदियों से दिलेरी से बात करता
रहा। उनके साथ बहस करके उसने उन्हें अल्लाह
की बादशाही के बारे में क़ायल करने की कोशिश
की। 9 लेकिन कुछ अड़ गए। वह अल्लाह के ताबे
न हुए बल्कि अवाम के सामने ही अल्लाह की
राह को बुरा-भला कहने लगे। इस पर पौलुस ने
उन्हें छोड़ दिया। शागिर्दों को भी अलग करके वह
उनके साथ तुरन्नुस के लैक्चर हाल में जमा हुआ
करता था जहाँ वह रोज़ाना उन्हें तालीम देता रहा।
10 यह सिलसिला दो साल तक जारी रहा। यों
सूबा आसिया के तमाम लोगों को ख़ुदावंद का
कलाम सुनने का मौक़ा मिला, ख़ाह वह यहूदी थे
या यूनानी।

राहनुमा इमाम स्किवा के सात बेटे

11 अल्लाह ने पौलुस की मारिफ़त ग़ैर-
मामूली मोजिज़े किए, 12 यहाँ तक कि जब
रूमाल या एप्रन उसके बदन से लगाने के बाद
मरीज़ों पर रखे जाते तो उनकी बीमारियाँ जाती
रहतीं और बदरूहें निकल जातीं। 13 वहाँ कुछ
ऐसे यहूदी भी थे जो जगह जगह जाकर बदरूहें
निकालते थे। अब वह बदरूहों के बंधन में फँसे
लोगों पर ख़ुदावंद ईसा का नाम इस्तेमाल करने
की कोशिश करके कहने लगे, "मैं तुझे उस ईसा
के नाम से निकलने का हुक्म देता हूँ जिसकी
मुनादी पौलुस करता है।" 14 एक यहूदी राहनुमा
इमाम बनाम स्किवा के सात बेटे ऐसा करते थे।
15 लेकिन एक दफ़ा जब यही कोशिश कर रहे
थे तो बदरूह ने जवाब दिया, "ईसा को तो मैं
जानती हूँ और पौलुस को भी, लेकिन तुम कौन
हो?"
16 फिर वह आदमी जिसमें बदरूह थी उन पर
झपटकर सब पर ग़ालिब आ गया। उसका उन
पर इतना सख़्त हमला हुआ कि वह नंगे और
ज़ख़मी हालत में भागकर उस घर से निकल
गए। 17 इस वाक़िये की ख़बर इफ़िसुस के तमाम
रहनेवाले यहूदियों और यूनानियों में फैल गई। उन
पर ख़ौफ़ तारी हुआ और ख़ुदावंद ईसा के नाम की
ताज़ीम हुई। 18 जो ईमान लाए थे उनमें से बहुतेरों
ने आकर अलानिया अपने गुनाहों का इक़रार
किया। 19 जादूगरी करनेवालों की बड़ी तादाद ने
अपनी जादूमंत्र की किताबें इकट्ठी करके अवाम
के सामने जला दीं। पूरी किताबों का हिसाब किया
गया तो उनकी कुल रक़म चाँदी के पचास हज़ार
सिक्के थी। 20 यों ख़ुदावंद का कलाम ज़बरदस्त
तरीक़े से बढ़ता और ज़ोर पकड़ता गया।

इफ़िसुस में हंगामा

21 इन वाक़ियात के बाद पौलुस ने मकि-
दुनिया और अख़या में से गुज़रकर यरूशलम
जाने का फ़ैसला किया। उसने कहा, “इसके बाद
लाज़िम है कि मैं रोम भी जाऊँ।” 22 उसने अपने
दो मददगारों तीमुथियुस और इरास्तुस को आगे
मकिदुनिया भेज दिया जबकि वह ख़ुद मज़ीद कुछ
देर के लिए सूबा आसिया में ठहरा रहा।

23 तक़रीबन उस वक़्त अल्लाह की राह एक
शदीद हंगामे का बाइस हो गई। 24 यह यों हुआ,
इफ़िसुस में एक चाँदी की अशया बनानेवाला
रहता था जिसका नाम देमेतरियुस था। वह चाँदी
से अरतमिस देवी के मंदिर बनवाता था, और
उसके काम से दस्तकारों का कारोबार ख़ूब चलता
था। 25 अब उसने इस काम से ताल्लुक़ रखनेवाले
दीगर दस्तकारों को जमा करके उनसे कहा,
“हज़रात, आपको मालूम है कि हमारी दौलत इस
कारोबार पर मुनहसिर है। 26 आपने यह भी देख
और सुन लिया है कि इस आदमी पौलुस ने न
सिर्फ़ इफ़िसुस बल्कि तक़रीबन पूरे सूबा आसिया
में बहुत-से लोगों को भटकाकर क़ायल कर लिया
है कि हाथों के बने देवता हक़ीक़त में देवता नहीं
होते। 27 न सिर्फ़ यह ख़तरा है कि हमारे कारोबार
की बदनामी हो बल्कि यह भी कि अज़ीम देवी
अरतमिस के मंदिर का असरो-रसूख़ जाता रहेगा,
कि अरतमिस ख़ुद जिसकी पूजा सूबा आसिया
और पूरी दुनिया में की जाती है अपनी अज़मत
खो बैठे।”

28 यह सुनकर वह तैश में आकर चीख़ने-
चिल्लाने लगे, “इफ़िसियों की अरतमिस देवी
अज़ीम है!” 29 पूरे शहर में हलचल मच गई।
लोगों ने पौलुस के मकिदुनी हमसफ़र गयुस
और अरिस्तरख़ुस को पकड़ लिया और मिलकर
तमाशागाह में दौड़े आए। 30 यह देखकर पौलुस
भी अवाम के इस इजलास में जाना चाहता था,
लेकिन शागिर्दों ने उसे रोक लिया। 31 इसी तरह
उसके कुछ दोस्तों ने भी जो सूबा आसिया के
अफ़सर थे उसे ख़बर भेजकर मिन्नत की कि वह
न जाए। 32 इजलास में बड़ी अफ़रा-तफ़री थी।
कुछ यह चीख़ रहे थे, कुछ वह। ज़्यादातर लोग
जमा होने की वजह जानते भी न थे। 33 यहूदियों
ने सिकंदर को आगे कर दिया। साथ साथ हुजूम
के कुछ लोग उसे हिदायात देते रहे। उसने हाथ
से ख़ामोश हो जाने का इशारा किया ताकि वह
इजलास के सामने अपना दिफ़ा करे। 34 लेकिन
जब उन्होंने जान लिया कि वह यहूदी है तो वह
तक़रीबन दो घंटों तक चिल्लाकर नारा लगाते रहे,
“इफ़िसुस की अरतमिस देवी अज़ीम है!”

35 आख़िरकार बलदिया का चीफ़ सैक्रटरी उन्हें
ख़ामोश कराने में कामयाब हुआ। फिर उसने
कहा, “इफ़िसुस के हज़रात, किस को मालूम
नहीं कि इफ़िसुस अज़ीम अरतमिस देवी के मंदिर
का मुहाफ़िज़ है! पूरी दुनिया जानती है कि हम
उसके उस मुजस्समे के निगरान हैं जो आसमान
से गिरकर हमारे पास पहुँच गया। 36 यह हक़ीक़त
तो नाक़ाबिले-इनकार है। चुनाँचे लाज़िम है कि
आप चुप-चाप रहें और जल्दबाज़ी न करें। 37 आप
यह आदमी यहाँ लाए हैं हालाँकि न तो वह मंदिरों
को लूटनेवाले हैं, न उन्होंने देवी की बेहुरमती
की है। 38 अगर देमेतरियुस और उसके साथवाले
दस्तकारों का किसी पर इलज़ाम है तो इसके लिए
कचहरियाँ और गवर्नर होते हैं। वहाँ जाकर वह
एक दूसरे से मुक़दमा लड़ें। 39 अगर आप मज़ीद
कोई मामला पेश करना चाहते हैं तो उसे हल करने
के लिए क़ानूनी मजलिस होती है। 40 अब हम इस
ख़तरे में हैं कि आज के वाक़ियात के बाइस हम पर
फ़साद का इलज़ाम लगाया जाएगा। क्योंकि जब
हमसे पूछा जाएगा तो हम इस क़िस्म के बेतरतीब
और नाजायज़ इजतिमा का कोई जवाज़ पेश नहीं
कर सकेंगे।” 41 यह कहकर उसने इजलास को
बरख़ास्त कर दिया।

मकिदुनिया और अख़या में

20 जब शहर में अफ़रा-तफ़री ख़त्म हुई
तो पौलुस ने शागिर्दों को बुलाकर

उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की। फिर वह उन्हें ख़ैरबाद
कहकर मकिदुनिया के लिए रवाना हुआ। 2 वहाँ
पहुँचकर उसने जगह बजगह जाकर बहुत-सी
बातों से ईमानदारों की हौसलाअफ़्ज़ाई की। यों
चलते चलते वह यूनान पहुँच गया 3 जहाँ वह तीन
माह तक ठहरा। वह मुल्के-शाम के लिए जहाज़
पर सवार होनेवाला था कि पता चला कि यहूदियों
ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की है। इस पर उसने
मकिदुनिया से होकर वापस जाने का फ़ैसला
किया। 4 उसके कई हमसफ़र थे : बेरिया से पुरुस
का बेटा सोपतरुस, थिस्सलुनीके से अरिस्तरख़ुस
और सिकुंदुस, दिरबे से गयुस, तीमुथियुस और
सूबा आसिया से तुख़िकुस और त्रुफ़िमुस। 5 यह
आदमी आगे निकलकर त्रोआस चले गए जहाँ
उन्होंने हमारा इंतज़ार किया। 6 बेख़मीरी रोटी की
ईद के बाद हम फ़िलिप्पी के क़रीब जहाज़ पर
सवार हुए और पाँच दिन के बाद उनके पास
त्रोआस पहुँच गए। वहाँ हम सात दिन रहे।

त्रोआस में पौलुस की अलविदाई मीटिंग

7 इतवार को हम अशाए-रब्बानी मनाने के लिए
जमा हुए। पौलुस लोगों से बात करने लगा और
चूँकि वह अगले दिन रवाना होनेवाला था इसलिए
वह आधी रात तक बोलता रहा। 8 ऊपर की
मनज़िल में जिस कमरे में हम जमा थे वहाँ
बहुत-से चराग़ जल रहे थे। 9 एक जवान खिड़की
की दहलीज़ पर बैठा था। उसका नाम यूतिख़ुस
था। ज्यों-ज्यों पौलुस की बातें लंबी होती जा
रही थीं उस पर नींद ग़ालिब आती जा रही थी।
आख़िरकार वह गहरी नींद में तीसरी मनज़िल से
ज़मीन पर गिर गया। जब लोगों ने नीचे पहुँचकर
उसे ज़मीन पर से उठाया तो वह जान-बहक़ हो
चुका था। 10 लेकिन पौलुस उतरकर उस पर झुक
गया और उसे अपने बाज़ुओं में ले लिया। उसने
कहा, "मत घबराएँ, वह ज़िंदा है।" 11 फिर वह
वापस ऊपर आ गया, अशाए-रब्बानी मनाई और
खाना खाया। उसने अपनी बातें पौ फटने तक
जारी रखीं, फिर रवाना हुआ। 12 और उन्होंने
जवान को ज़िंदा हालत में वहाँ से लेकर बहुत
तसल्ली पाई।

त्रोआस से मीलेतुस तक

13 हम आगे निकलकर अस्सुस के लिए जहाज़
पर सवार हुए। ख़ुद पौलुस ने इंतज़ाम करवाया था
कि वह पैदल जाकर अस्सुस में हमारे जहाज़ पर
आएगा। 14 वहाँ वह हमसे मिला और हम उसे
जहाज़ पर लाकर मतुलेने पहुँचे। 15 अगले दिन
हम ख़ियुस के जज़ीरे से गुज़रे। उससे अगले दिन
हम सामुस के जज़ीरे के क़रीब आए। इसके बाद
के दिन हम मीलेतुस पहुँच गए। 16 पौलुस पहले
से फ़ैसला कर चुका था कि मैं इफ़िसुस में नहीं
ठहरूँगा बल्कि आगे निकलूँगा, क्योंकि वह जल्दी
में था। वह जहाँ तक मुमकिन था पंतिकुस्त की
ईद से पहले पहले यरूशलम पहुँचना चाहता था।

इफ़िसुस के बुज़ुर्गों के लिए पौलुस की अलविदाई तक़रीर

17 मीलेतुस से पौलुस ने इफ़िसुस की जमात
के बुज़ुर्गों को बुला लिया। 18 जब वह पहुँचे तो
उसने उनसे कहा, "आप जानते हैं कि मैं सूबा
आसिया में पहला क़दम उठाने से लेकर पूरा
वक़्त आपके साथ किस तरह रहा। 19 मैंने बड़ी
इंकिसारी से ख़ुदावंद की ख़िदमत की है। मुझे
बहुत आँसू बहाने पड़े और यहूदियों की साज़िशों
से मुझ पर बहुत आज़माइशें आईं। 20 मैंने आपके
फ़ायदे की कोई भी बात आपसे छुपाए न रखी
बल्कि आपको अलानिया और घर घर जाकर
तालीम देता रहा। 21 मैंने यहूदियों को यूनानियों
समेत गवाही दी कि उन्हें तौबा करके अल्लाह
की तरफ़ रुजू करने और हमारे ख़ुदावंद ईसा पर
ईमान लाने की ज़रूरत है। 22 और अब मैं रूहुल-
क़ुद्स से बँधा हुआ यरूशलम जा रहा हूँ। मैं नहीं
जानता कि मेरे साथ क्या कुछ होगा, 23 लेकिन
इतना मुझे मालूम है कि रूहुल-क़ुद्स मुझे शहर
बशहर इस बात से आगाह कर रहा है कि मुझे क़ैद
और मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। 24 ख़ैर,

मैं अपनी ज़िंदगी को किसी तरह भी अहम नहीं
समझता। अहम बात सिर्फ़ यह है कि मैं अपना वह
मिशन और ज़िम्मेदारी पूरी करूँ जो ख़ुदावंद ईसा
ने मेरे सुपुर्द की है। और वह ज़िम्मेदारी यह है कि
मैं लोगों को गवाही देकर यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ
कि अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से उनके लिए क्या
कुछ किया है।

25 और अब मैं जानता हूँ कि आप सब जिन्हें
मैंने अल्लाह की बादशाही का पैग़ाम सुना दिया
है मुझे इसके बाद कभी नहीं देखेंगे। 26 इसलिए
मैं आज ही आपको बताता हूँ कि अगर आपमें
से कोई भी हलाक हो जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ,
27 क्योंकि मैं आपको अल्लाह की पूरी मरज़ी
बताने से न झिजका। 28 चुनाँचे ख़बरदार रहकर
अपना और उस पूरे गल्ले का ख़याल रखना
जिस पर रूहुल-क़ुदस ने आपको मुक़र्रर किया
है। निगरानों और चरवाहों की हैसियत से अल्लाह
की जमात की ख़िदमत करें, उस जमात की
जिसे उसने अपने ही फ़रज़ंद के ख़ून से हासिल
किया है। 29 मुझे मालूम है कि मेरे जाने के
बाद वहशी भेड़िये आपमें घुस आएँगे जो गल्ले
को नहीं छोड़ेंगे। 30 आपके दरमियान से भी
आदमी उठकर सच्चाई को तोड़-मरोड़कर बयान
करेंगे ताकि शागिर्दों को अपने पीछे लगा लें।
31 इसलिए जागते रहें! यह बात ज़हन में रखें
कि मैं तीन साल के दौरान दिन-रात हर एक को
समझाने से बाज़ न आया। मेरे आँसुओं को याद
रखें जो मैंने आपके लिए बहाए हैं।

32 और अब मैं आपको अल्लाह और उसके
फ़ज़ल के कलाम के सुपुर्द करता हूँ। यही कलाम
आपकी तामीर करके आपको वह मीरास मुहैया
करने के क़ाबिल है जो अल्लाह तमाम मुक़द्दस
किए गए लोगों को देता है। 33 मैंने किसी के
भी सोने, चाँदी या कपड़ों का लालच न किया।
34 आप ख़ुद जानते हैं कि मैंने अपने इन हाथों से
काम करके न सिर्फ़ अपनी बल्कि अपने साथियों
की ज़रूरियात भी पूरी कीं। 35 अपने हर काम में
मैं आपको दिखाता रहा कि लाज़िम है कि हम
इस क़िस्म की मेहनत करके कमज़ोरों की मदद
करें। क्योंकि हमारे सामने ख़ुदावंद ईसा के यह
अलफ़ाज़ होने चाहिएँ कि देना लेने से मुबारक
है।”

36 यह सब कुछ कहकर पौलुस ने घुटने टेककर
उन सबके साथ दुआ की। 37 सब ख़ूब रोए और
उसको गले लगा लगाकर बोसे दिए। 38 उन्हें
ख़ासकर पौलुस की इस बात से तकलीफ़ हुई कि
‘आप इसके बाद मुझे कभी नहीं देखेंगे।’ फिर वह
उसके साथ जहाज़ तक गए।

पौलुस यरूशलम जाता है

21 मुश्किल से इफ़िसुस के बुज़ुर्गों से
अलग होकर हम रवाना हुए और सीधे
जज़ीराए-कोस पहुँच गए। अगले दिन हम रुदुस
आए और वहाँ से पतरा पहुँचे। 2 पतरा में फ़ेनीके
के लिए जहाज़ मिल गया तो हम उस पर सवार
होकर रवाना हुए। 3 जब क़ुबरुस दूर से नज़र
आया तो हम उसके जुनूब में से गुज़रकर शाम के
शहर सूर पहुँच गए जहाँ जहाज़ को अपना सामान
उतारना था। 4 जहाज़ से उतरकर हमने मक़ामी
शागिर्दों को तलाश किया और सात दिन उनके
साथ ठहरे। उन ईमानदारों ने रूहुल-क़ुद्स की
हिदायत से पौलुस को समझाने की कोशिश की
कि वह यरूशलम न जाए। 5 जब हम एक हफ़्ते
के बाद जहाज़ पर वापस चले गए तो पूरी जमात
बाल-बच्चों समेत हमारे साथ शहर से निकलकर
साहिल तक आई। वहीं हमने घुटने टेककर दुआ
की 6 और एक दूसरे को अलविदा कहा। फिर हम
दुबारा जहाज़ पर सवार हुए जबकि वह अपने घरों
को लौट गए।

7 सूर से अपना सफ़र जारी रखकर हम
पतुलिमयिस पहुँचे जहाँ हमने मक़ामी ईमानदारों
को सलाम किया और एक दिन उनके साथ
गुज़ारा। 8 अगले दिन हम रवाना होकर क़ैसरिया
पहुँच गए। वहाँ हम फ़िलिप्पुस के घर ठहरे। यह
वही फ़िलिप्पुस था जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी का
मुनाद था और जिसे इब्तिदाई दिनों में यरूशलम में

खाना तक़सीम करने के लिए छः और आदमियों
के साथ मुक़र्रर किया गया था। 9 उस की चार
ग़ैरशादीशुदा बेटियाँ थीं जो नबुव्वत की नेमत
रखती थीं। 10 कई दिन गुज़र गए तो यहूदिया
से एक नबी आया जिसका नाम अगबुस था।
11 जब वह हमसे मिलने आया तो उसने पौलुस
की पेटी लेकर अपने पाँवों और हाथों को बाँध
लिया और कहा, "रूहुल-क़ुद्स फ़रमाता है कि
यरूशलम में यहूदी इस पेटी के मालिक को यों
बाँधकर ग़ैरयहूदियों के हवाले करेंगे।"

12 यह सुनकर हमने मक़ामी ईमानदारों समेत
पौलुस को समझाने की ख़ूब कोशिश की कि वह
यरूशलम न जाए। 13 लेकिन उसने जवाब दिया,
"आप क्यों रोते और मेरा दिल तोड़ते हैं? देखें,
मैं ख़ुदावंद ईसा के नाम की ख़ातिर यरूशलम में
न सिर्फ़ बाँधे जाने बल्कि उसके लिए अपनी जान
तक देने को तैयार हूँ।"

14 हम उसे क़ायल न कर सके, इसलिए हम
यह कहते हुए ख़ामोश हो गए कि "ख़ुदावंद की
मरज़ी पूरी हो।"

15 इसके बाद हम तैयारियाँ करके यरू-
शलम चले गए। 16 क़ैसरिया के कुछ शागिर्द भी
हमारे साथ चले और हमें मनासोन के घर पहुँचा
दिया जहाँ हमें ठहरना था। मनासोन क़ुबरुस का
था और जमात के इब्तिदाई दिनों में ईमान लाया
था।

पौलुस याक़ूब से मिलता है

17 जब हम यरूशलम पहुँचे तो मक़ामी भाइयों
ने गरमजोशी से हमारा इस्तक़बाल किया।
18 अगले दिन पौलुस हमारे साथ याक़ूब से
मिलने गया। तमाम मक़ामी बुज़ुर्ग भी हाज़िर
हुए। 19 उन्हें सलाम करके पौलुस ने तफ़सील से
बयान किया कि अल्लाह ने उस की ख़िदमत की
मारिफ़त ग़ैरयहूदियों में क्या किया था। 20 यह
सुनकर उन्होंने अल्लाह की तमजीद की। फिर
उन्होंने कहा, "भाई, आपको मालूम है कि हज़ारों
यहूदी ईमान लाए हैं। और सब बड़ी सरगरमी से
शरीअत पर अमल करते हैं। 21 उन्हें आपके बारे में
ख़बर दी गई है कि आप ग़ैरयहूदियों के दरमियान
रहनेवाले यहूदियों को तालीम देते हैं कि वह मूसा
की शरीअत को छोड़कर न अपने बच्चों का ख़तना
करवाएँ और न हमारे रस्मो-रिवाज के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारें। 22 अब हम क्या करें? वह तो
ज़रूर सुनेंगे कि आप यहाँ आ गए हैं। 23 इसलिए
हम चाहते हैं कि आप यह करें : हमारे पास चार
मर्द हैं जिन्होंने मन्नत मानकर उसे पूरा कर लिया
है। 24 अब उन्हें साथ लेकर उनकी तहारत की
रसूमात में शरीक हो जाएँ। उनके अख़राजात भी
आप बरदाश्त करें ताकि वह अपने सरों को मुँडवा
सकें। फिर सब जान लेंगे कि जो कुछ आपके
बारे में कहा जाता है वह झूट है और कि आप
भी शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं।
25 जहाँ तक ग़ैरयहूदी ईमानदारों की बात है हम
उन्हें अपना फ़ैसला ख़त के ज़रीए भेज चुके हैं कि
वह इन चीज़ों से परहेज़ करें : बुतों को पेश किया
गया खाना, ख़ून, ऐसे जानवरों का गोश्त जिन्हें
गला घूँटकर मार दिया गया हो और ज़िनाकारी।"

26 चुनाँचे अगले दिन पौलुस उन आदमियों को
साथ लेकर उनकी तहारत की रसूमात में शरीक
हुआ। फिर वह बैतुल-मुक़द्दस में उस दिन का
एलान करने गया जब तहारत के दिन पूरे हो
जाएंगे और उन सबके लिए क़ुरबानी पेश की
जाएगी।

बैतुल-मुक़द्दस में पौलुस की गिरिफ़्तारी

27 इस रस्म के लिए मुक़र्ररा सात दिन ख़त्म
होने को थे कि सूबा आसिया के कुछ यहूदियों
ने पौलुस को बैतुल-मुक़द्दस में देखा। उन्होंने पूरे
हुजूम में हलचल मचाकर उसे पकड़ लिया 28 और
चीख़ने लगे, "इसराईल के हज़रात, हमारी मदद
करें! यह वही आदमी है जो हर जगह तमाम लोगों
को हमारी क़ौम, हमारी शरीअत और इस मक़ाम
के ख़िलाफ़ तालीम देता है। न सिर्फ़ यह बल्कि
इसने बैतुल-मुक़द्दस में ग़ैरयहूदियों को लाकर इस
मुक़द्दस जगह की बेहुरमती भी की है।" 29 (यह

आख़िरी बात उन्होंने इसलिए की क्योंकि उन्होंने
शहर में इफ़िसुस के ग़ैरयहूदी त्रुफ़िमुस को पौलुस
के साथ देखा और ख़याल किया था कि वह उसे
बैतुल-मुक़द्दस में लाया है।)
30 पूरे शहर में हंगामा बरपा हुआ और लोग
चारों तरफ़ से दौड़कर आए। पौलुस को पकड़कर
उन्होंने उसे बैतुल-मुक़द्दस से बाहर घसीट लिया।
ज्योंही वह निकल गए बैतुल-मुक़द्दस के सहन के
दरवाज़ों को बंद कर दिया गया। 31 वह उसे मार
डालने की कोशिश कर रहे थे कि रोमी पलटन
के कमाँडर को ख़बर मिल गई, “पूरे यरूशलम
में हलचल मच गई है।” 32 यह सुनते ही उसने
अपने फ़ौजियों और अफ़सरों को इकट्ठा किया
और दौड़कर उनके साथ हुजूम के पास उतर गया।
जब हुजूम ने कमाँडर और उसके फ़ौजियों को
देखा तो वह पौलुस की पिटाई करने से रुक गया।
33 कमाँडर ने नज़दीक आकर उसे गिरिफ़्तार
किया और दो ज़ंजीरों से बाँधने का हुक्म दिया।
फिर उसने पूछा, “यह कौन है? इसने क्या
किया है?” 34 हुजूम में से बाज़ कुछ चिल्लाए
और बाज़ कुछ। कमाँडर कोई यक़ीनी बात मालूम
न कर सका, क्योंकि अफ़रा-तफ़री और शोर-
शराबा बहुत था। इसलिए उसने हुक्म दिया कि
पौलुस को क़िले में ले जाया जाए। 35 वह क़िले
की सीढ़ी तक पहुँच तो गए, लेकिन फिर हुजूम
इतना बेकाबू हो गया कि फ़ौजियों को उसे अपने
कंधों पर उठाकर चलना पड़ा। 36 लोग उनके पीछे
पीछे चलते और चीख़ते-चिल्लाते रहे, “उसे मार
डालो! उसे मार डालो!”

पौलुस अपना दिफ़ा करता है

37 वह पौलुस को क़िले में ले जा रहे थे कि
उसने कमाँडर से पूछा, “क्या आपसे एक बात
करने की इजाज़त है?”
कमाँडर ने कहा, “अच्छा, आप यूनानी बोल
लेते हैं? 38 तो क्या आप वही मिसरी नहीं हैं जो
कुछ देर पहले हुकूमत के ख़िलाफ़ उठकर चार
हज़ार दहशतगरदों को रेगिस्तान में लाया था?”
39 पौलुस ने जवाब दिया, “मैं यहूदी और
किलिकिया के मरकज़ी शहर तरसुस का शहरी
हूँ। मेहरबानी करके मुझे लोगों से बात करने दें।”
40 कमाँडर मान गया और पौलुस ने सीढ़ी
पर खड़े होकर हाथ से इशारा किया। जब सब
ख़ामोश हो गए तो पौलुस अरामी ज़बान में उनसे
मुख़ातिब हुआ,

22 “भाइयो और बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें
कि मैं अपने दिफ़ा में कुछ बताऊँ।”
2 जब उन्होंने सुना कि वह अरामी ज़बान में बोल
रहा है तो वह मज़ीद ख़ामोश हो गए। पौलुस ने
अपनी बात जारी रखी।
3 “मैं यहूदी हूँ और किलिकिया के शहर
तरसुस में पैदा हुआ। लेकिन मैंने इसी शहर
यरूशलम में परवरिश पाई और जमलियेल के
ज़ेरे-निगरानी तालीम हासिल की। उन्होंने मुझे
तफ़सील और एहतियात से हमारे बापदादा की
शरीअत सिखाई। उस वक़्त मैं भी आपकी तरह
अल्लाह के लिए सरगरम था। 4 इसलिए मैंने इस
नई राह के पैरोकारों का पीछा किया और मर्दों
और ख़वातीन को गिरिफ़्तार करके जेल में डलवा
दिया यहाँ तक कि मरवा भी दिया। 5 इमामे-
आज़म और यहूदी अदालते-आलिया के मेंबरान
इस बात की तसदीक़ कर सकते हैं। उन्हीं से
मुझे दमिश्क़ में रहनेवाले यहूदी भाइयों के लिए
सिफ़ारिशी ख़त मिल गए ताकि मैं वहाँ भी जाकर
इस नए फ़िरक़े के लोगों को गिरिफ़्तार करके
सज़ा देने के लिए यरूशलम लाऊँ।

पौलुस की तबदीली का बयान

6 मैं इस मक़सद के लिए दमिश्क़ के क़रीब
पहुँच गया था कि अचानक आसमान की तरफ़
से एक तेज़ रौशनी मेरे गिर्द चमकी। 7 मैं ज़मीन
पर गिर पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, ‘साऊल,
साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?’ 8 मैंने पूछा,
‘ख़ुदावंद, आप कौन हैं?’ आवाज़ ने जवाब
दिया, ‘मैं ईसा नासरी हूँ जिसे तू सताता है।’ 9 मेरे
हमसफ़रों ने रौशनी को तो देखा, लेकिन मुझसे

मुख़ातिब होनेवाले की आवाज़ न सुनी। 10 मैंने पूछा, 'ख़ुदावंद, मैं क्या करूँ?' ख़ुदावंद ने जवाब दिया, 'उठकर दमिश्क़ में जा। वहाँ तुझे वह सारा काम बताया जाएगा जो अल्लाह तेरे ज़िम्मे लगाने का इरादा रखता है।' 11 रौशनी की तेज़ी ने मुझे अंधा कर दिया था, इसलिए मेरे साथी मेरा हाथ पकड़कर मुझे दमिश्क़ ले गए।

12 वहाँ एक आदमी रहता था जिसका नाम हननियाह था। वह शरीअत का कटर पैरोकार था और वहाँ के रहनेवाले यहूदियों में नेकनाम। 13 वह आया और मेरे पास खड़े होकर कहा, 'साऊल भाई, दुबारा बीना हो जाएँ!' उसी लमहे मैं उसे देख सका। 14 फिर उसने कहा, 'हमारे बापदादा के ख़ुदा ने आपको इस मक़सद के लिए चुन लिया है कि आप उस की मरज़ी जानकर उसके रास्त ख़ादिम को देखें और उसके अपने मुँह से उस की आवाज़ सुनें। 15 जो कुछ आपने देख और सुन लिया है उस की गवाही आप तमाम लोगों को देंगे। 16 चुनाँचे आप क्यों देर कर रहे हैं? उठें और उसके नाम में बपतिस्मा लें ताकि आपके गुनाह धुल जाएँ।'

पौलुस की ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत का बुलावा

17 जब मैं यरूशलम वापस आया तो मैं एक दिन बैतुल-मुक़द्दस में गया। वहाँ दुआ करते करते मैं वज्द की हालत में आ गया 18 और ख़ुदावंद को देखा। उसने फ़रमाया, 'जल्दी कर! यरूशलम को फ़ौरन छोड़ दे क्योंकि लोग मेरे बारे में तेरी गवाही को क़बूल नहीं करेंगे।' 19 मैंने एतराज़ किया, 'ऐ ख़ुदावंद, वह तो जानते हैं कि मैंने जगह बजगह इबादतख़ाने में जाकर तुझ पर ईमान रखनेवालों को गिरिफ़्तार किया और उनकी पिटाई करवाई। 20 और उस वक़्त भी जब तेरे शहीद स्तिफ़नुस को क़त्ल किया जा रहा था मैं साथ खड़ा था। मैं राज़ी था और उन लोगों के कपड़ों की निगरानी कर रहा था जो उसे संगसार कर रहे थे।' 21 लेकिन ख़ुदावंद ने कहा, 'जा, क्योंकि मैं तुझे दूर-दराज़ इलाक़ों में ग़ैरयहूदियों के पास भेज दूँगा'।"

22 यहाँ तक हुजूम पौलुस की बातें सुनता रहा। लेकिन अब वह चिल्ला उठे, "इसे हटा दो! इसे जान से मार दो! यह ज़िंदा रहने के लायक़ नहीं!" 23 वह चीख़ें मार मारकर अपनी चादरें उतारने और हवा में गर्द उड़ाने लगे। 24 इस पर कमाँडर ने हुक्म दिया कि पौलुस को क़िले में ले जाया जाए और कोड़े लगाकर उस की पूछ-गछ की जाए। क्योंकि वह मालूम करना चाहता था कि लोग किस वजह से पौलुस के ख़िलाफ़ यों चीख़ें मार रहे हैं। 25 जब वह उसे कोड़े लगाने के लिए लेकर जा रहे थे तो पौलुस ने साथ खड़े अफ़सर[a] से कहा, "क्या आपके लिए जायज़ है कि एक रोमी शहरी के कोड़े लगवाएँ और वह भी अदालत में पेश किए बग़ैर?"

26 अफ़सर ने जब यह सुना तो कमाँडर के पास जाकर उसे इत्तला दी, "आप क्या करने को हैं? यह आदमी तो रोमी शहरी है!"

27 कमाँडर पौलुस के पास आया और पूछा, "मुझे सहीह बताएँ, क्या आप रोमी शहरी हैं?"

पौलुस ने जवाब दिया, "जी हाँ।"

28 कमाँडर ने कहा, "मैं तो बड़ी रक़म देकर शहरी बना हूँ।"

पौलुस ने जवाब दिया, "लेकिन मैं तो पैदाइशी शहरी हूँ।"

29 यह सुनते ही वह फ़ौजी जो उस की पूछ-गछ करने को थे पीछे हट गए। कमाँडर ख़ुद घबरा गया कि मैंने एक रोमी शहरी को ज़ंजीरों में जकड़ रखा है।

पौलुस यहूदी अदालते-आलिया के सामने

30 अगले दिन कमाँडर साफ़ मालूम करना चाहता था कि यहूदी पौलुस पर क्यों इलज़ाम लगा रहे हैं। इसलिए उसने राहनुमा इमामों और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम मेंबरान का इजलास मुनअक़िद करने का हुक्म दिया। फिर

[a] सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

पौलुस को आज़ाद करके क़िले से नीचे लाया और उनके सामने खड़ा किया।

23 पौलुस ने ग़ौर से अदालते-आलिया के मेंबरान की तरफ़ देखकर कहा, "भाइयो, आज तक मैंने साफ़ ज़मीर के साथ अल्लाह के सामने ज़िंदगी गुज़ारी है।" 2 इस पर इमामे-आज़म हननियाह ने पौलुस के क़रीब खड़े लोगों से कहा कि वह उसके मुँह पर थप्पड़ मारें। 3 पौलुस ने उससे कहा, "मक्कार![a] अल्लाह तुमको ही मारेगा, क्योंकि तुम यहाँ बैठे शरीअत के मुताबिक़ मेरा फ़ैसला करना चाहते हो जबकि मुझे मारने का हुक्म देकर ख़ुद शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हो!"

4 पौलुस के क़रीब खड़े आदमियों ने कहा, "तुम अल्लाह के इमामे-आज़म को बुरा कहने की जुर्रत क्योंकर करते हो?"

5 पौलुस ने जवाब दिया, "भाइयो, मुझे मालूम न था कि वह इमामे-आज़म हैं, वरना ऐसे अलफ़ाज़ इस्तेमाल न करता। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि अपनी क़ौम के हाकिमों को बुरा-भला मत कहना।"

6 पौलुस को इल्म था कि अदालते-आलिया के कुछ लोग सदूक़ी हैं जबकि दीगर फ़रीसी हैं। इसलिए वह इजलास में पुकार उठा, "भाइयो, मैं फ़रीसी बल्कि फ़रीसी का बेटा भी हूँ। मुझे इसलिए अदालत में पेश किया गया है कि मैं मुरदों में से जी उठने की उम्मीद रखता हूँ।"

7 इस बात से फ़रीसी और सदूक़ी एक दूसरे से झगड़ने लगे और इजलास के अफ़राद दो गुरोहों में बट गए। 8 वजह यह थी कि सदूक़ी नहीं मानते कि हम जी उठेंगे। वह फ़रिश्तों और रूहों का भी इनकार करते हैं। इसके मुक़ाबले में फ़रीसी यह सब कुछ मानते हैं। 9 होते होते बड़ा शोर मच गया। फ़रीसी फ़िरक़े के कुछ आलिम खड़े होकर जोश से बहस करने लगे, "हमें इस आदमी में कोई ग़लती नज़र नहीं आती, शायद कोई रूह या फ़रिश्ता इससे हमकलाम हुआ हो।"

10 झगड़े ने इतना ज़ोर पकड़ा कि कमाँडर डर गया, क्योंकि ख़तरा था कि वह पौलुस के टुकड़े कर डालें। इसलिए उसने अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया कि वह उतरें और पौलुस को यहूदियों के बीच में से छीनकर क़िले में वापस लाएँ।

11 उसी रात ख़ुदावंद पौलुस के पास आ खड़ा हुआ और कहा, "हौसला रख, क्योंकि जिस तरह तूने यरूशलम में मेरे बारे में गवाही दी है लाज़िम है कि इसी तरह रोम शहर में भी गवाही दे।"

पौलुस के ख़िलाफ़ साज़िश

12 अगले दिन कुछ यहूदियों ने साज़िश करके क़सम खाई, "हम न तो कुछ खाएँगे, न पिएँगे जब तक पौलुस को क़त्ल न कर लें।" 13 चालीस से ज़्यादा मर्दों ने इस साज़िश में हिस्सा लिया। 14 वह राहनुमा इमामों और बुज़ुर्गों के पास गए और कहा, "हमने पक्की क़सम खाई है कि कुछ नहीं खाएँगे जब तक पौलुस को क़त्ल न कर लें। 15 अब ज़रा यहूदी अदालते-आलिया के साथ मिलकर कमाँडर से गुज़ारिश करें कि वह उसे दुबारा आपके पास लाएँ। बहाना यह पेश करें कि आप मज़ीद तफ़सील से उसके मामले का जायज़ा लेना चाहते हैं। जब उसे लाया जाएगा तो हम उसके यहाँ पहुँचने से पहले पहले उसे मार डालने के लिए तैयार होंगे।"

16 लेकिन पौलुस के भानजे को इस बात का पता चल गया। उसने क़िले में जाकर पौलुस को इत्तला दी। 17 इस पर पौलुस ने रोमी अफ़सरों[b] में से एक को बुलाकर कहा, "इस जवान को कमाँडर के पास ले जाएँ। इसके पास उनके लिए ख़बर है।" 18 अफ़सर भानजे को कमाँडर के पास ले गया और कहा, "क़ैदी पौलुस ने मुझे बुलाकर मुझसे गुज़ारिश की कि इस नौजवान को आपके पास ले आऊँ। उसके पास आपके लिए ख़बर है।"

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : सफेदी की हुई दीवार।

[b] सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

19 कमाँडर नौजवान का हाथ पकड़कर दूसरों
से अलग हो गया। फिर उसने पूछा, "क्या ख़बर
है जो आप मुझे बताना चाहते हैं?"
20 उसने जवाब दिया, "यहूदी आपसे दरख़ास्त
करने पर मुत्तफ़िक़ हो गए हैं कि आप कल
पौलुस को दुबारा यहूदी अदालते-आलिया के
सामने लाएँ। बहाना यह होगा कि वह और ज़्यादा
तफ़सील से उसके बारे में मालूमात हासिल करना
चाहते हैं। 21 लेकिन उनकी बात न मानें, क्योंकि
उनमें से चालीस से ज़्यादा आदमी उस की ताक
में बैठे हैं। उन्होंने क़सम खाई है कि हम न कुछ
खाएँगे न पिएँगे जब तक उसे क़त्ल न कर लें।
वह अभी तैयार बैठे हैं और सिर्फ़ इस इंतज़ार में
हैं कि आप उनकी बात मानें।"
22 कमाँडर ने नौजवान को रुख़सत करके
कहा, "जो कुछ आपने मुझे बता दिया है उसका
किसी से ज़िक्र न करना।"

पौलुस को गवर्नर फ़ेलिक्स के पास भेजा जाता है

23 फिर कमाँडर ने अपने अफ़सरों में से दो को
बुलाया जो सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर थे। उसने
हुक्म दिया, "दो सौ फ़ौजी, सत्तर घुड़सवार और
दो सौ नेज़ाबाज़ तैयार करें। उन्हें आज रात को
नौ बजे क़ैसरिया जाना है। 24 पौलुस के लिए
भी घोड़े तैयार रखना ताकि वह सहीह-सलामत
गवर्नर के पास पहुँचे।" 25 फिर उसने यह ख़त
लिखा,
26 "अज़ : क्लौदियुस लूसियास
मुअज़्ज़ज़ गवर्नर फ़ेलिक्स को सलाम।
27 यहूदी इस आदमी को पकड़कर क़त्ल करने
को थे। मुझे पता चला कि यह रोमी शहरी
है, इसलिए मैंने अपने दस्तों के साथ आकर
इसे निकालकर बचा लिया। 28 मैं मालूम करना
चाहता था कि वह क्यों इस पर इलज़ाम लगा
रहे हैं, इसलिए मैं उतरकर इसे उनकी अदालते-
आलिया के सामने लाया। 29 मुझे मालूम हुआ कि
उनका इलज़ाम उनकी शरीअत से ताल्लुक़ रखता
है। लेकिन इसने ऐसा कुछ नहीं किया जिसकी
बिना पर यह जेल में डालने या सज़ाए-मौत के
लायक़ हो। 30 फिर मुझे इत्तला दी गई कि इस
आदमी को क़त्ल करने की साज़िश की गई है,
इसलिए मैंने इसे फ़ौरन आपके पास भेज दिया।
मैंने इलज़ाम लगानेवालों को भी हुक्म दिया कि
वह इस पर अपना इलज़ाम आपको ही पेश करें।"
31 फ़ौजियों ने उसी रात कमाँडर का हुक्म पूरा
किया। पौलुस को साथ लेकर वह अंतीपतरिस
तक पहुँच गए। 32 अगले दिन प्यादे क़िले को
वापस चले जबकि घुड़सवारों ने पौलुस को लेकर
सफ़र जारी रखा। 33 क़ैसरिया पहुँचकर उन्होंने
पौलुस को ख़त समेत गवर्नर फ़ेलिक्स के सामने
पेश किया। 34 उसने ख़त पढ़ लिया और फिर
पौलुस से पूछा, "आप किस सूबे के हैं?" पौलुस
ने कहा, "किलिकिया का।" 35 इस पर गवर्नर
ने कहा, "मैं आपकी समाअत उस वक़्त करूँगा
जब आप पर इलज़ाम लगानेवाले पहुँचेंगे।" और
उसने हुक्म दिया कि हेरोदेस के महल में पौलुस
की पहरादारी की जाए।

पौलुस पर मुक़दमा

24 पाँच दिन के बाद इमामे-आज़म
हननियाह, कुछ यहूदी बुज़ुर्ग और एक
वकील बनाम तिरतुल्लुस क़ैसरिया आए ताकि
गवर्नर के सामने पौलुस पर अपना इलज़ाम पेश
करें। 2 पौलुस को बुलाया गया तो तिरतुल्लुस ने
फ़ेलिक्स को यहूदियों का इलज़ाम पेश किया,
"आपके ज़ेरे-हुकूमत हमें बड़ा अमनो-अमान
हासिल है, और आपकी दूरअंदेशी से इस मुल्क
में बहुत तरक़्क़ी हुई है। 3 मुअज़्ज़ज़ फ़ेलिक्स, इन
तमाम बातों के लिए हम आपके ख़ास ममनून हैं।
4 लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप मेरी बातों से हद
से ज़्यादा थक जाएँ। अर्ज़ सिर्फ़ यह है कि आप
हम पर मेहरबानी का इज़हार करके एक लमहे
के लिए हमारे मामले पर तवज्जुह दें। 5 हमने इस
आदमी को अवाम दुश्मन पाया है जो पूरी दुनिया
के यहूदियों में फ़साद पैदा करता रहता है। यह

नासरी फ़िरक़े का एक सरग़ना है 6 और हमारे बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती करने की कोशिश कर रहा था जब हमने इसे पकड़ा [ताकि अपनी शरीअत के मुताबिक़ इस पर मुक़दमा चलाएँ। 7 मगर लूसियास कमाँडर आकर इसे ज़बरदस्ती हमसे छीनकर ले गया और हुक्म दिया कि इसके मुद्दई आपके पास हाज़िर हों।] 8 इसकी पूछ-गछ करके आप ख़ुद हमारे इलज़ामात की तसदीक़ करा सकते हैं।" 9 फिर बाक़ी यहूदियों ने उस की हाँ में हाँ मिलाकर कहा कि यह वाक़ई ऐसा ही है।

पौलुस का दिफ़ा

10 गवर्नर ने इशारा किया कि पौलुस अपनी बात पेश करे। उसने जवाब में कहा,

"मैं जानता हूँ कि आप कई सालों से इस क़ौम के जज मुक़र्रर हैं, इसलिए ख़ुशी से आपको अपना दिफ़ा पेश करता हूँ। 11 आप ख़ुद मालूम कर सकते हैं कि मुझे यरूशलम गए सिर्फ़ बारह दिन हुए हैं। जाने का मक़सद इबादत में शरीक होना था। 12 वहाँ न मैंने बैतुल-मुक़द्दस में किसी से बहस-मुबाहसा किया, न शहर के किसी इबादतख़ाने में या किसी और जगह हलचल मचाई। इन लोगों ने भी मेरी कोई ऐसी हरकत नहीं देखी। 13 जो इलज़ाम यह मुझ पर लगा रहे हैं उसका कोई भी सबूत पेश नहीं कर सकते। 14 बेशक मैं तसलीम करता हूँ कि मैं उसी राह पर चलता हूँ जिसे यह बिदअत क़रार देते हैं। लेकिन मैं अपने बापदादा के ख़ुदा की परस्तिश करता हूँ। जो कुछ भी शरीअत और नबियों के सहीफ़ों में लिखा है उसे मैं मानता हूँ। 15 और मैं अल्लाह पर वही उम्मीद रखता हूँ जो यह भी रखते हैं, कि क़ियामत का एक दिन होगा जब वह रास्तबाज़ों और नारास्तों को मुरदों में से ज़िंदा कर देगा। 16 इसलिए मेरी पूरी कोशिश यही होती है कि हर वक़्त मेरा ज़मीर अल्लाह और इनसान के सामने साफ़ हो।

17 कई सालों के बाद मैं यरूशलम वापस आया। मेरे पास क़ौम के ग़रीबों के लिए ख़ैरात थी और मैं बैतुल-मुक़द्दस में क़ुर-बानियाँ भी पेश करना चाहता था। 18 मुझ पर इलज़ाम लगानेवालों ने मुझे बैतुल-मुक़द्दस में देखा जब मैं तहारत की रसूमात अदा कर रहा था। उस वक़्त न कोई हुजूम था, न फ़साद। 19 लेकिन सूबा आसिया के कुछ यहूदी वहाँ थे। अगर उन्हें मेरे ख़िलाफ़ कोई शिकायत है तो उन्हें ही यहाँ हाज़िर होकर मुझ पर इलज़ाम लगाना चाहिए। 20 या यह लोग ख़ुद बताएँ कि जब मैं यहूदी अदालते-आलिया के सामने खड़ा था तो उन्होंने मेरा क्या जुर्म मालूम किया। 21 सिर्फ़ यह एक जुर्म हो सकता है कि मैंने उस वक़्त उनके हुज़ूर पुकारकर यह बात बयान की, 'आज मुझ पर इसलिए इलज़ाम लगाया जा रहा है कि मैं ईमान रखता हूँ कि मुरदे जी उठेंगे'।"

22 फ़ेलिक्स ने जो ईसा की राह से ख़ूब वाक़िफ़ था मुक़दमा मुलतवी कर दिया। उसने कहा, "जब कमाँडर लूसियास आएँगे फिर मैं फ़ैसला दूँगा।" 23 उसने पौलुस पर मुक़र्रर अफ़सर[a] को हुक्म दिया कि वह उस की पहरादारी तो करे लेकिन उसे कुछ सहूलियात भी दे और उसके अज़ीज़ों को उससे मिलने और उस की ख़िदमत करने से न रोके।

पौलुस फ़ेलिक्स और द्रूसिल्ला के सामने

24 कुछ दिनों के बाद फ़ेलिक्स अपनी अहलिया द्रूसिल्ला के हमराह वापस आया। द्रूसिल्ला यहूदी थी। पौलुस को बुलाकर उन्होंने ईसा पर ईमान के बारे में उस की बातें सुनीं। 25 लेकिन जब रास्तबाज़ी, ज़ब्ते-नफ़स और आनेवाली अदालत के मज़ामीन छिड़ गए तो फ़ेलिक्स ने घबराकर उस की बात काटी, "फ़िलहाल काफ़ी है। अब इजाज़त है, जब मेरे पास वक़्त होगा मैं आपको बुला लूँगा।" 26 साथ साथ वह यह उम्मीद भी

[a]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

रखता था कि पौलुस रिश्वत देगा, इसलिए वह
कई बार उसे बुलाकर उससे बात करता रहा।
27 दो साल गुज़र गए तो फ़ेलिक्स की जगह
पुरकियुस फ़ेस्तुस आ गया। ताहम उसने पौलुस
को क़ैदख़ाने में छोड़ दिया, क्योंकि वह यहूदियों
के साथ रिआयत बरतना चाहता था।

पौलुस शहनशाह से अपील करता है

25 क़ैसरिया पहुँचने के तीन दिन बाद
फ़ेस्तुस यरूशलम चला गया। 2 वहाँ
राहनुमा इमामों और बाक़ी यहूदी राहनुमाओं ने
उसके सामने पौलुस पर अपने इलज़ामात पेश
किए। उन्होंने बड़े ज़ोर से 3 मिन्नत की कि
वह उनकी रिआयत करके पौलुस को यरूशलम
मुंतक़िल करे। वजह यह थी कि वह घात में
बैठकर रास्ते में पौलुस को क़त्ल करना चाहते
थे। 4 लेकिन फ़ेस्तुस ने जवाब दिया, "पौलुस को
क़ैसरिया में रखा गया है और मैं ख़ुद वहाँ जाने
को हूँ। 5 अगर उससे कोई जुर्म सरज़द हुआ है तो
आपके कुछ राहनुमा मेरे साथ वहाँ जाकर उस पर
इलज़ाम लगाएँ।"
6 फ़ेस्तुस ने मज़ीद आठ दस दिन उनके साथ
गुज़ारे, फिर क़ैसरिया चला गया। अगले दिन वह
अदालत करने के लिए बैठा और पौलुस को लाने
का हुक्म दिया। 7 जब पौलुस पहुँचा तो यरूशलम
से आए हुए यहूदी उसके इर्दगिर्द खड़े हुए और
उस पर कई संजीदा इलज़ामात लगाए, लेकिन
वह कोई भी बात साबित न कर सके। 8 पौलुस
ने अपना दिफ़ा करके कहा, "मुझसे न यहूदी
शरीअत, न बैतुल-मुक़द्दस और न शहनशाह के
ख़िलाफ़ जुर्म सरज़द हुआ है।"
9 लेकिन फ़ेस्तुस यहूदियों के साथ रि-
आयत बरतना चाहता था, इसलिए उसने पूछा,
"क्या आप यरूशलम जाकर वहाँ की अदालत में
मेरे सामने पेश किए जाने के लिए तैयार हैं?"
10 पौलुस ने जवाब दिया, "मैं शहनशाह की
रोमी अदालत में खड़ा हूँ और लाज़िम है कि यहीं
मेरा फ़ैसला किया जाए। आप भी इससे ख़ूब
वाक़िफ़ हैं कि मैंने यहूदियों से कोई नाइनसाफ़ी
नहीं की। 11 अगर मुझसे कोई ऐसा काम सरज़द
हुआ हो जो सज़ाए-मौत के लायक़ हो तो मैं मरने
से इनकार नहीं करूँगा। लेकिन अगर बेक़ुसूर हूँ तो
किसी को भी मुझे इन आदमियों के हवाले करने
का हक़ नहीं है। मैं शहनशाह से अपील करता
हूँ!"
12 यह सुनकर फ़ेस्तुस ने अपनी कौंसल से
मशवरा करके कहा, "आपने शहनशाह से अपील
की है, इसलिए आप शहनशाह ही के पास
जाएंगे।"

पौलुस अग्रिप्पा और बिरनीके के सामने

13 कुछ दिन गुज़र गए तो अग्रिप्पा बादशाह
अपनी बहन बिरनीके के साथ फ़ेस्तुस से मिलने
आया। 14 वह कई दिन वहाँ ठहरे रहे। इतने में
फ़ेस्तुस ने पौलुस के मामले पर बादशाह के
साथ बात की। उसने कहा, "यहाँ एक क़ैदी है
जिसे फ़ेलिक्स छोड़कर चला गया है। 15 जब
मैं यरूशलम गया तो राहनुमा इमामों और यहूदी
बुज़ुर्गों ने उस पर इलज़ामात लगाकर उसे मुजरिम
क़रार देने का तक़ाज़ा किया। 16 मैंने उन्हें जवाब
दिया, 'रोमी क़ानून किसी को अदालत में पेश
किए बग़ैर मुजरिम क़रार नहीं देता। लाज़िम है
कि उसे पहले इलज़ाम लगानेवालों का सामना
करने का मौक़ा दिया जाए ताकि अपना दिफ़ा कर
सके।' 17 जब उस पर इलज़ाम लगानेवाले यहाँ
पहुँचे तो मैंने ताख़ीर न की। मैंने अगले ही दिन
अदालत मुनअक़िद करके पौलुस को पेश करने
का हुक्म दिया। 18 लेकिन जब उसके मुख़ालिफ़
इलज़ाम लगाने के लिए खड़े हुए तो वह ऐसे जुर्म
नहीं थे जिनकी तवक़्क़ो मैं कर रहा था। 19 उनका
उसके साथ कोई और झगड़ा था जो उनके अपने
मज़हब और एक मुरदा आदमी बनाम ईसा से
ताल्लुक़ रखता है। इस ईसा के बारे में पौलुस
दावा करता है कि वह ज़िंदा है। 20 मैं उलझन में
पड़ गया क्योंकि मुझे मालूम नहीं था कि किस
तरह इस मामले का सहीह जायज़ा लूँ। चुनाँचे मैंने

पूछा, 'क्या आप यरूशलम जाकर वहाँ अदालत में पेश किए जाने के लिए तैयार हैं?' 21 लेकिन पौलुस ने अपील की, 'शहनशाह ही मेरा फ़ैसला करे।' फिर मैंने हुक्म दिया कि उसे उस वक़्त तक क़ैद में रखा जाए जब तक उसे शहनशाह के पास भेजने का इंतज़ाम न करवा सकूँ।"

22 अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, "मैं भी उस शख़्स को सुनना चाहता हूँ।"

उसने जवाब दिया, "कल ही आप उसको सुन लेंगे।"

23 अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम के साथ आए और बड़े फ़ौजी अफ़सरों और शहर के नामवर आदमियों के साथ दीवाने-आम में दाख़िल हुए। फ़ेस्तुस के हुक्म पर पौलुस को अंदर लाया गया। 24 फ़ेस्तुस ने कहा, "अग्रिप्पा बादशाह और तमाम ख़वातीनो-हज़रात! आप यहाँ एक आदमी को देखते हैं जिसके बारे में तमाम यहूदी ख़ाह वह यरूशलम के रहनेवाले हों, ख़ाह यहाँ के, शोर मचाकर सज़ाए-मौत का तक़ाज़ा कर रहे हैं। 25 मेरी दानिस्त में तो इसने कोई ऐसा काम नहीं किया जो सज़ाए-मौत के लायक़ हो। लेकिन इसने शहनशाह से अपील की है, इसलिए मैंने इसे रोम भेजने का फ़ैसला किया है। 26 लेकिन मैं शहनशाह को क्या लिख दूँ? क्योंकि इस पर कोई साफ़ इलज़ाम नहीं लगाया गया। इसलिए मैं इसे आप सबके सामने लाया हूँ, ख़ासकर अग्रिप्पा बादशाह आपके सामने, ताकि आप इसकी तफ़तीश करें और मैं कुछ लिख सकूँ। 27 क्योंकि मुझे बेतुकी-सी बात लग रही है कि हम एक क़ैदी को रोम भेजें जिस पर अब तक साफ़ इलज़ामात नहीं लगाए गए हैं।"

पौलुस का अग्रिप्पा के सामने दिफ़ा

26 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "आपको अपने दिफ़ा में बोलने की इजाज़त है।" पौलुस ने हाथ से इशारा करके अपने दिफ़ा में बोलने का आग़ाज़ किया,

2 "अग्रिप्पा बादशाह, मैं अपने आपको ख़ुशनसीब समझता हूँ कि आज आप ही मेरा यह दिफ़ाई बयान सुन रहे हैं जो मुझे यहूदियों के तमाम इलज़ामात के जवाब में देना पड़ रहा है। 3 ख़ासकर इसलिए कि आप यहूदियों के रस्मो-रिवाज और तनाज़ों से वाक़िफ़ हैं। मेरी अर्ज़ है कि आप सब्र से मेरी बात सुनें।

4 तमाम यहूदी जानते हैं कि मैंने जवानी से लेकर अब तक अपनी क़ौम बल्कि यरूशलम में किस तरह ज़िंदगी गुज़ारी। 5 वह मुझे बड़ी देर से जानते हैं और अगर चाहें तो इसकी गवाही भी दे सकते हैं कि मैं फ़रीसी की ज़िंदगी गुज़ारता था, हमारे मज़हब के उसी फ़िरक़े की जो सबसे कटर है। 6 और आज मेरी अदालत इस वजह से की जा रही है कि मैं उस वादे पर उम्मीद रखता हूँ जो अल्लाह ने हमारे बापदादा से किया। 7 हक़ीक़त में यह वही उम्मीद है जिसकी वजह से हमारे बारह क़बीले दिन-रात और बड़ी लग्न से अल्लाह की इबादत करते रहते हैं और जिसकी तकमील के लिए वह तड़पते हैं। तो भी ऐ बादशाह, यह लोग मुझ पर यह उम्मीद रखने का इलज़ाम लगा रहे हैं। 8 लेकिन आप सबको यह ख़याल क्यों नाक़ाबिले-यक़ीन लगता है कि अल्लाह मुरदों को ज़िंदा कर देता है?

9 पहले मैं भी समझता था कि हर मुमकिन तरीक़े से ईसा नासरी की मुख़ालफ़त करना मेरा फ़र्ज़ है। 10 और यह मैंने यरूशलम में किया भी। राहनुमा इमामों से इख़्तियार लेकर मैंने वहाँ के बहुत-से मुक़द्दसों को जेल में डलवा दिया। और जब कभी उन्हें सज़ाए-मौत देने का फ़ैसला करना था तो मैंने भी इस हक़ में वोट दिया। 11 मैं तमाम इबादतख़ानों में गया और बहुत दफ़ा उन्हें सज़ा दिलाकर ईसा के बारे में कुफ़र बकने पर मजबूर करने की कोशिश करता रहा। मैं इतने तैश में आ गया था कि उनकी ईज़ारसानी की ग़रज़ से बैरूने-मुल्क भी गया।

पौलुस अपनी तबदीली का ज़िक्र करता है

12 एक दिन मैं राहनुमा इमामों से इख़्तियार
और इजाज़तनामा लेकर दमिश्क़ जा रहा था।
13 दोपहर तक़रीबन बारह बजे मैं सड़क पर चल
रहा था कि एक रौशनी देखी जो सूरज से ज़्यादा
तेज़ थी। वह आसमान से आकर मेरे और मेरे
हमसफ़रों के गिर्दागिर्द चमकी। 14 हम सब ज़मीन
पर गिर गए और मैंने अरामी ज़बान में एक आवाज़
सुनी, ‘साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?
यों मेरे आँकुस के ख़िलाफ़ पाँव मारना तेरे लिए
ही दुश्वारी का बाइस है।’ 15 मैंने पूछा, ‘ख़ुदावंद,
आप कौन हैं?’ ख़ुदावंद ने जवाब दिया, ‘मैं ईसा
हूँ, वही जिसे तू सताता है। 16 लेकिन अब उठकर
खड़ा हो जा, क्योंकि मैं तुझे अपना ख़ादिम और
गवाह मुक़र्रर करने के लिए तुझ पर ज़ाहिर हुआ
हूँ। जो कुछ तूने देखा है उस की तुझे गवाही देनी
है और उस की भी जो मैं आइंदा तुझ पर ज़ाहिर
करूँगा। 17 मैं तुझे तेरी अपनी क़ौम से बचाए
रखूँगा और उन ग़ैरयहूदी क़ौमों से भी जिनके पास
तुझे भेजूँगा। 18 तू उनकी आँखों को खोल देगा
ताकि वह तारीकी और इबलीस के इख़्तियार से
नूर और अल्लाह की तरफ़ रुजू करें। फिर उनके
गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाएगा और वह
उनके साथ आसमानी मीरास में शरीक होंगे जो
मुझ पर ईमान लाने से मुक़द्दस किए गए हैं।’

पौलुस अपनी ख़िदमत का बयान करता है

19 ऐ अग्रिप्पा बादशाह, जब मैंने यह सुना तो
मैंने इस आसमानी रोया की नाफ़रमानी न की
20 बल्कि इस बात की मुनादी की कि लोग तौबा
करके अल्लाह की तरफ़ रुजू करें और अपने
अमल से अपनी तबदीली का इज़हार भी करें।
मैंने इसकी तबलीग़ पहले दमिश्क़ में की, फिर
यरूशलम और पूरे यहूदिया में और इसके बाद
ग़ैरयहूदी क़ौमों में भी। 21 इसी वजह से यहूदियों
ने मुझे बैतुल-मुक़द्दस में पकड़कर क़त्ल करने की
कोशिश की। 22 लेकिन अल्लाह ने आज तक मेरी
मदद की है, इसलिए मैं यहाँ खड़ा होकर छोटों
और बड़ों को अपनी गवाही दे सकता हूँ। जो कुछ
मैं सुनाता हूँ वह वही कुछ है जो मूसा और नबियों
ने कहा है, 23 कि मसीह दुख उठाकर पहला शख़्स
होगा जो मुरदों में से जी उठेगा और कि वह यों
अपनी क़ौम और ग़ैरयहूदियों के सामने अल्लाह
के नूर का प्रचार करेगा।”

24 अचानक फ़ेस्तुस पौलुस की बात काट-
कर चिल्ला उठा, “पौलुस, होश में आओ! इल्म
की ज़्यादती ने तुम्हें दीवाना कर दिया है।”

25 पौलुस ने जवाब दिया, “मुअज़्ज़ज़ फ़ेस्तुस,
मैं दीवाना नहीं हूँ। मेरी यह बातें हक़ीक़ी और
माक़ूल हैं। 26 बादशाह सलामत इनसे वाक़िफ़ हैं,
इसलिए मैं उनसे खुलकर बात कर सकता हूँ। मुझे
यक़ीन है कि यह सब कुछ उनसे छुपा नहीं रहा,
क्योंकि यह पोशीदगी में या किसी कोने में नहीं
हुआ। 27 ऐ अग्रिप्पा बादशाह, क्या आप नबियों
पर ईमान रखते हैं? बल्कि मैं जानता हूँ कि आप
उन पर ईमान रखते हैं।”

28 अग्रिप्पा ने कहा, “आप तो बड़ी जल्दी से
मुझे क़ायल करके मसीही बनाना चाहते हैं।”

29 पौलुस ने जवाब दिया, “जल्द या बदेर मैं
अल्लाह से दुआ करता हूँ कि न सिर्फ़ आप बल्कि
तमाम हाज़िरीन मेरी मानिंद बन जाएँ, सिवाए मेरी
ज़ंजीरों के।”

30 फिर बादशाह, गवर्नर, बिरनीके और बाक़ी
सब उठकर चले गए। 31 वहाँ से निकलकर
वह एक दूसरे से बात करने लगे। सब इस
पर मुत्तफ़िक़ थे कि “इस आदमी ने कुछ नहीं
किया जो सज़ाए-मौत या क़ैद के लायक़ हो।”
32 और अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, “अगर इसने
शहनशाह से अपील न की होती तो इसे रिहा
किया जा सकता था।”

पौलुस का रोम की तरफ़ सफ़र

27 जब हमारा इटली के लिए सफ़र
मुतैयिन किया गया तो पौलुस को

[a]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

चंद एक और क़ैदियों समेत एक रोमी अफ़सर[a]
के हवाले किया गया जिसका नाम यूलियुस था
जो शाही पलटन पर मुक़र्रर था। 2 अरिस्तरख़ुस
भी हमारे साथ था। वह थिस्सलुनीके शहर का
मकिदुनी आदमी था। हम अद्रमित्तियुम शहर के
एक जहाज़ पर सवार हुए जिसे सूबा आसिया की
चंद बंदरगाहों को जाना था। 3 अगले दिन हम सैदा
पहुँचे तो यूलियुस ने मेहरबानी करके पौलुस को
शहर में उसके दोस्तों के पास जाने की इजाज़त दी
ताकि वह उस की ज़रूरियात पूरी कर सकें। 4 जब
हम वहाँ से रवाना हुए तो मुख़ालिफ़ हवाओं की
वजह से जज़ीराए-क़ुबरुस और सूबा आसिया के
दरमियान से गुज़रे। 5 फिर खुले समुंदर पर चलते
चलते हम किलिकिया और पंफ़ीलिया के समुंदर
से गुज़रकर सूबा लूकिया के शहर मूरा पहुँचे।
6 वहाँ क़ैदियों पर मुक़र्रर अफ़सर को पता चला
कि इस्कंदरिया का एक मिसरी जहाज़ इटली जा
रहा है। उस पर उसने हमें सवार किया।

7 कई दिन हम आहिस्ता आहिस्ता चले और
बड़ी मुश्किल से कनिदुस के क़रीब पहुँचे। लेकिन
मुख़ालिफ़ हवा की वजह से हमने जज़ीराए-क्रेते
की तरफ़ रुख़ किया और सलमोने शहर के
क़रीब से गुज़रकर क्रेते की आड़ में सफ़र किया।
8 लेकिन वहाँ हम साहिल के साथ साथ चलते
हुए बड़ी मुश्किल से एक जगह पहुँचे जिसका नाम
'हसीन-बंदर' था। शहर लसया उसके क़रीब वाक़े
था।

9 बहुत वक़्त ज़ाया हो गया था और अब
बहरी सफ़र ख़तरनाक भी हो चुका था, क्योंकि
कफ़्फ़ारा का दिन (तक़रीबन नवंबर के शुरू में)
गुज़र चुका था। इसलिए पौलुस ने उन्हें आगाह
किया, 10 "हज़रात, मुझे पता है कि आगे जाकर
हम पर बड़ी मुसीबत आएगी। हमें जहाज़, मालो-
असबाब और जानों का नुक़सान उठाना पड़ेगा।"
11 लेकिन क़ैदियों पर मुक़र्रर रोमी अफ़सर ने उस
की बात नज़रंदाज़ करके जहाज़ के नाख़ुदा और
मालिक की बात मानी। 12 चूँकि 'हसीन-बंदर'
में जहाज़ को सर्दियों के मौसम के लिए रखना
मुश्किल था इसलिए अकसर लोग आगे फ़ेनिक्स
तक पहुँचकर सर्दियों का मौसम गुज़ारना चाहते
थे। क्योंकि फ़ेनिक्स जज़ीराए-क्रेते की अच्छी
बंदरगाह थी जो सिर्फ़ जुनूब-मग़रिब और शिमाल-
मग़रिब की तरफ़ खुली थी।

समुंदर पर तूफ़ान

13 चुनाँचे एक दिन जब जुनूब की सिम्त से
हलकी-सी हवा चलने लगी तो मल्लाहों ने सोचा
कि हमारा इरादा पूरा हो गया है। वह लंगर
उठाकर क्रेते के साहिल के साथ साथ चलने लगे।
14 लेकिन थोड़ी ही देर के बाद मौसम बदल गया
और उन पर जज़ीरे की तरफ़ से एक तूफ़ानी
हवा टूट पड़ी जो बादे-शिमाल-मशरिक़ी कहलाती
है। 15 जहाज़ हवा के क़ाबू में आ गया और हवा
की तरफ़ रुख़ न कर सका, इसलिए हमने हार
मानकर जहाज़ को हवा के साथ साथ चलने
दिया। 16 जब हम एक छोटे जज़ीरा बनाम कौदा
की आड़ में से गुज़रने लगे तो हमने बड़ी मुश्किल
से बचाव-कश्ती को जहाज़ पर उठाकर महफ़ूज़
रखा। (अब तक वह रस्से से जहाज़ के साथ
खींची जा रही थी।) 17 फिर मल्लाहों ने जहाज़
के ढाँचे को ज़्यादा मज़बूत बनाने की ख़ातिर
उसके इर्दगिर्द रस्से बाँधे। ख़ौफ़ यह था कि जहाज़
शिमाली अफ़्रीक़ा के क़रीब पड़े चोरबालू में धँस
जाए। (इन रेतों का नाम सूरतिस था।) इससे
बचने के लिए उन्होंने लंगर डाल दिया[b] ताकि
जहाज़ कुछ आहिस्ता चले। यों जहाज़ हवा के
साथ चलते चलते आगे बढ़ा। 18 अगले दिन भी
तूफ़ान जहाज़ को इतनी शिद्दत से झँझोड़ रहा था
कि मल्लाह मालो-असबाब को समुंदर में फेंकने
लगे। 19 तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों से
जहाज़ चलाने का कुछ सामान समुंदर में फेंक
दिया। 20 तूफ़ान की शिद्दत बहुत दिनों के बाद

[b] लंगर यानी छोटा लंगर जिसकी मदद से जहाज़ का रुख़ एक ही सिम्त में रखा जाता है।

भी ख़त्म न हुई। न सूरज और न सितारे नज़र
आए यहाँ तक कि आख़िरकार हमारे बचने की
हर उम्मीद जाती रही।
21 काफ़ी देर से दिल नहीं चाहता था कि खाना
खाया जाए। आख़िरकार पौलुस ने लोगों के बीच
में खड़े होकर कहा, "हज़रात, बेहतर होता कि
आप मेरी बात मानकर क्रेते से रवाना न होते।
फिर आप इस मुसीबत और ख़सारे से बच जाते।
22 लेकिन अब मैं आपको नसीहत करता हूँ कि
हौसला रखें। आपमें से एक भी नहीं मरेगा। सिर्फ़
जहाज़ तबाह हो जाएगा। 23 क्योंकि पिछली रात
एक फ़रिश्ता मेरे पास आ खड़ा हुआ, उसी ख़ुदा
का फ़रिश्ता जिसका मैं बंदा हूँ और जिसकी
इबादत मैं करता हूँ। 24 उसने कहा, 'पौलुस, मत
डर। लाज़िम है कि तुझे शहनशाह के सामने पेश
किया जाए। और अल्लाह अपनी मेहरबानी से
तेरे वास्ते तमाम हमसफ़रों की जानें भी बचाए
रखेगा।' 25 इसलिए हौसला रखें, क्योंकि मेरा
अल्लाह पर ईमान है कि ऐसा ही होगा जिस तरह
उसने फ़रमाया है। 26 लेकिन जहाज़ को किसी
जज़ीरे के साहिल पर चढ़ जाना है।"

27 तूफ़ान की चौधवीं रात जहाज़ बहीराए-
अदरिया पर बहे चला जा रहा था कि तक़रीबन
आधी रात को मल्लाहों ने महसूस किया कि
साहिल नज़दीक आ रहा है। 28 पानी की गहराई
की पैमाइश करके उन्हें मालूम हुआ कि वह 120
फ़ुट थी। थोड़ी देर के बाद उस की गहराई 90
फ़ुट हो चुकी थी। 29 वह डर गए, क्योंकि उन्होंने
अंदाज़ा लगाया कि ख़तरा है कि हम साहिल
पर पड़ी चट्टानों से टकरा जाएँ। इसलिए उन्होंने
जहाज़ के पिछले हिस्से से चार लंगर डालकर
दुआ की कि दिन जल्दी से चढ़ जाए। 30 उस
वक़्त मल्लाहों ने जहाज़ से फ़रार होने की कोशिश
की। उन्होंने यह बहाना बनाकर कि हम जहाज़ के
सामने से भी लंगर डालना चाहते हैं बचाव-कश्ती
पानी में उतरने दी। 31 इस पर पौलुस ने क़ैदियों
पर मुक़र्रर अफ़सर और फ़ौजियों से कहा, "अगर
यह आदमी जहाज़ पर न रहें तो आप सब मर
जाएंगे।" 32 चुनाँचे उन्होंने बचाव-कश्ती के रस्से
को काटकर उसे खुला छोड़ दिया।

33 पौ फटनेवाली थी कि पौलुस ने सबको
समझाया कि वह कुछ खा लें। उसने कहा,
"आपने चौदह दिन से इज़तिराब की हालत में
रहकर कुछ नहीं खाया। 34 अब मेहरबानी करके
कुछ खा लें। यह आपके बचाव के लिए ज़रूरी
है, क्योंकि आप न सिर्फ़ बच जाएंगे बल्कि
आपका एक बाल भी बीका नहीं होगा।" 35 यह
कहकर उसने कुछ रोटी ली और उन सबके
सामने अल्लाह से शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर
उसे तोड़कर खाने लगा। 36 इससे दूसरों की
हौसलाअफ़्ज़ाई हुई और उन्होंने भी कुछ खाना
खाया। 37 जहाज़ पर हम 276 अफ़राद थे।
38 जब सब सेर हो गए तो गंदुम को भी समुंदर में
फेंका गया ताकि जहाज़ और हलका हो जाए।

जहाज़ टुकड़े टुकड़े हो जाता है

39 जब दिन चढ़ गया तो मल्लाहों ने साहिली
इलाक़े को न पहचाना। लेकिन एक ख़लीज नज़र
आई जिसका साहिल अच्छा था। उन्हें ख़याल
आया कि शायद हम जहाज़ को वहाँ ख़ुश्की
पर चढ़ा सकें। 40 चुनाँचे उन्होंने लंगरों के रस्से
काटकर उन्हें समुंदर में छोड़ दिया। फिर उन्होंने
वह रस्से खोल दिए जिनसे पतवार बँधे होते थे
और सामनेवाले बादबान को चढ़ाकर हवा के ज़ोर
से साहिल की तरफ़ रुख़ किया। 41 लेकिन चलते
चलते जहाज़ एक चोरबालू से टकराकर उस पर
चढ़ गया। जहाज़ का माथा धँस गया यहाँ तक
कि वह हिल भी न सका जबकि उसका पिछला
हिस्सा मौजों की टक्करों से टुकड़े टुकड़े होने
लगा।

42 फ़ौजी क़ैदियों को क़त्ल करना चाहते थे
ताकि वह जहाज़ से तैरकर फ़रार न हो सकें।
43 लेकिन उन पर मुक़र्रर अफ़सर पौलुस को
बचाना चाहता था, इसलिए उसने उन्हें ऐसा करने
न दिया। उसने हुक्म दिया कि पहले वह सब जो
तैर सकते हैं पानी में छलाँग लगाकर किनारे तक

पहुँचें। 44 बाक़ियों को तख़्तों या जहाज़ के किसी टुकड़े को पकड़कर पहुँचना था। यों सब सहीह-सलामत साहिल तक पहुँचे।

जज़ीराए-मिलिते में

28 तूफ़ान से बचने पर हमें मालूम हुआ कि जज़ीरे का नाम मिलिते है। 2 मक़ामी लोगों ने हमें ग़ैरमामूली मेहरबानी दिखाई। उन्होंने आग जलाकर हमारा इस्तक़बाल किया, क्योंकि बारिश शुरू हो चुकी थी और ठंड थी। 3 पौलुस ने भी लकड़ी का ढेर जमा किया। लेकिन ज्योंही उसने उसे आग में फेंका एक ज़हरीला साँप आग की तपिश से भागकर निकल आया और पौलुस के हाथ से चिमटकर उसे डस लिया। 4 मक़ामी लोगों ने साँप को पौलुस के हाथ से लगे देखा तो एक दूसरे से कहने लगे, "यह आदमी ज़रूर क़ातिल होगा। गो यह समुंदर से बच गया, लेकिन इनसाफ़ की देवी इसे जीने नहीं देती।" 5 लेकिन पौलुस ने साँप को झटककर आग में फेंक दिया, और साँप का कोई बुरा असर उस पर न हुआ। 6 लोग इस इंतज़ार में रहे कि वह सूज जाए या अचानक गिर पड़े, लेकिन काफ़ी देर के बाद भी कुछ न हुआ। इस पर उन्होंने अपना ख़याल बदलकर उसे देवता क़रार दिया।

7 क़रीब ही जज़ीरे के सबसे बड़े आदमी की ज़मीनें थीं। उसका नाम पुबलियुस था। उसने अपने घर में हमारा इस्तक़बाल किया और तीन दिन तक हमारी ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की। 8 उसका बाप बीमार पड़ा था, वह बुख़ार और पेचिश के मरज़ में मुब्तला था। पौलुस उसके कमरे में गया, उसके लिए दुआ की और अपने हाथ उस पर रख दिए। इस पर मरीज़ को शफ़ा मिली। 9 जब यह हुआ तो जज़ीरे के बाक़ी तमाम मरीज़ों ने पौलुस के पास आकर शफ़ा पाई। 10 नतीजे में उन्होंने कई तरह से हमारी इज़्ज़त की। और जब रवाना होने का वक़्त आ गया तो उन्होंने हमें वह सब कुछ मुहैया किया जो सफ़र के लिए दरकार था।

जज़ीराए-मिलिते से रोम तक

11 जज़ीरे पर तीन माह गुज़र गए। फिर हम एक जहाज़ पर सवार हुए जो सर्दियों के मौसम के लिए वहाँ ठहर गया था। यह जहाज़ इस्कंदरिया का था और उसके माथे पर जुड़वाँ देवताओं 'कास्टर' और 'पोल्लुक्स' की मूरत नसब थी। हम वहाँ से रुख़सत होकर 12 सुरकूसा शहर पहुँचे। तीन दिन के बाद 13 हम वहाँ से रेगियुम शहर गए जहाँ हम सिर्फ़ एक दिन ठहरे। फिर जुनूब से हवा उठी, इसलिए हम अगले दिन पुतियोली पहुँचे। 14 इस शहर में हमारी मुलाक़ात कुछ भाइयों से हुई। उन्होंने हमें अपने पास एक हफ़ता रहने की दावत दी। यों हम रोम पहुँच गए। 15 रोम के भाइयों ने हमारे बारे में सुन रखा था, और कुछ हमारा इस्तक़बाल करने के लिए क़सबा बनाम अप्पियुस के चौक तक आए जबकि कुछ सिर्फ़ 'तीन-सराय' तक आ सके। उन्हें देखकर पौलुस ने अल्लाह का शुक्र किया और नया हौसला पाया।

रोम में

16 हमारे रोम में पहुँचने पर पौलुस को अपने किराए के मकान में रहने की इजाज़त मिली, गो एक फ़ौजी उस की पहरादारी करने के लिए उसके साथ रहा।

17 तीन दिन गुज़र गए तो पौलुस ने यहूदी राहनुमाओं को बुलाया। जब वह जमा हुए तो उसने उनसे कहा, "भाइयो, मुझे यरूशलम में गिरिफ़्तार करके रोमियों के हवाले कर दिया गया हालाँकि मैंने अपनी क़ौम या अपने बापदादा के रस्मो-रिवाज के ख़िलाफ़ कुछ नहीं किया था। 18 रोमी मेरा जायज़ा लेकर मुझे रिहा करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें मुझे सज़ाए-मौत देने का कोई सबब न मिला था। 19 लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया और यों मुझे शहनशाह से अपील करने पर मजबूर कर दिया गया, गो मेरा यह इरादा नहीं है कि मैं अपनी क़ौम पर कोई इलज़ाम लगाऊँ। 20 मैंने इसलिए आपको बुलाया ताकि आपसे

मिलूँ और गुफ़्तगू करूँ। मैं उस शख़्स की ख़ातिर इन ज़ंजीरों से जकड़ा हुआ हूँ जिसके आने की उम्मीद इसराईल रखता है।”

21 यहूदियों ने उसे जवाब दिया, “हमें यहूदिया
से आपके बारे में कोई भी ख़त नहीं मिला। और जितने भाई वहाँ से आए हैं उनमें से एक ने भी आपके बारे में न तो कोई मनफ़ी रिपोर्ट दी न कोई
बुरी बात बताई। 22 लेकिन हम आपसे सुनना
चाहते हैं कि आपके ख़यालात क्या हैं, क्योंकि हम इतना जानते हैं कि हर जगह लोग इस फ़िरक़े के ख़िलाफ़ बातें कर रहे हैं।”

23 चुनाँचे उन्होंने मिलने का एक दिन मुक़र्रर
किया। जब यहूदी दुबारा उस जगह आए जहाँ पौलुस रहता था तो उनकी तादाद बहुत ज़्यादा थी। सुबह से लेकर शाम तक उसने अल्लाह की बादशाही बयान की और उस की गवाही दी। उसने उन्हें मूसा की शरीअत और नबियों के हवालाजात पेश कर करके ईसा के बारे में क़ायल करने की
कोशिश की। 24 कुछ तो क़ायल हो गए, लेकिन
बाक़ी ईमान न लाए। 25 उनमें नाइत्तफ़ाक़ी पैदा
हुई तो वह चले गए। जब वह जाने लगे तो पौलुस ने उनसे कहा, “रूहुल-क़ुद्स ने यसायाह नबी की मारिफ़त आपके बापदादा से ठीक कहा कि

26 जा, इस क़ौम को बता,
‘तुम अपने कानों से सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।
27 क्योंकि इस क़ौम का दिल
बेहिस हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ’।”

28 पौलुस ने अपनी बात इन अलफ़ाज़ से ख़त्म
की, “अब जान लें कि अल्लाह की तरफ़ से यह नजात ग़ैरयहूदियों को भी पेश की गई है और वह सुनेंगे भी!”

29 [जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में
बहस-मुबाहसा करते हुए चले गए।]

30 पौलुस पूरे दो साल अपने किराए के घर
में रहा। जो भी उसके पास आया उसका उसने
इस्तक़बाल करके 31 दिलेरी से अल्लाह की
बादशाही की मुनादी की और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तालीम दी। और किसी ने मुदाख़लत न की।

रोमियों के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

सलाम

1 यह ख़त मसीह ईसा के ग़ुलाम पौलुस की
तरफ़ से है जिसे रसूल होने के लिए बुलाया
और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की मुनादी करने के
लिए अलग किया गया है।
2 पाक नविश्तों में दर्ज इस ख़ुशख़बरी का वादा
अल्लाह ने पहले ही अपने नबियों से कर रखा था।
3 और यह पैग़ाम उसके फ़रज़ंद ईसा के बारे में
है। इनसानी लिहाज़ से वह दाऊद की नसल से
पैदा हुआ, 4 जबकि रूहुल-क़ुद्स के लिहाज़ से
वह क़ुदरत के साथ अल्लाह का फ़रज़ंद ठहरा जब
वह मुरदों में से जी उठा। यह है हमारे ख़ुदावंद ईसा
मसीह के बारे में अल्लाह की ख़ुशख़बरी। 5 मसीह
से हमें रसूली इख़्तियार का यह फ़ज़ल हासिल
हुआ है कि हम तमाम ग़ैरयहूदियों में मुनादी करें
ताकि वह ईमान लाकर उसके ताबे हो जाएँ और
यों मसीह के नाम को जलाल मिले। 6 आप भी
उन ग़ैरयहूदियों में से हैं, जो ईसा मसीह के बुलाए
हुए हैं।
7 मैं आप सबको लिख रहा हूँ जो रोम में
अल्लाह के प्यारे हैं और मख़सूसो-मुक़द्दस होने
के लिए बुलाए गए हैं।
ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

रोम जाने की आरज़ू

8 अव्वल, मैं आप सबके लिए ईसा मसीह के
वसीले से अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ, क्योंकि
पूरी दुनिया में आपके ईमान का चर्चा हो रहा
है। 9 ख़ुदा ही मेरा गवाह है जिसकी ख़िदमत मैं
अपनी रूह में करता हूँ जब मैं उसके फ़रज़ंद के
बारे में ख़ुशख़बरी फैलाता हूँ, मैं लगातार आपको
याद करता रहता हूँ 10 और हर वक़्त अपनी
दुआओं में मिन्नत करता हूँ कि अल्लाह मुझे
आख़िरकार आपके पास आने की कामयाबी अता
करे। 11 क्योंकि मैं आपसे मिलने का आरज़ूमंद
हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे ज़रीए आपको कुछ रूहानी
बरकत मिल जाए और यों आप मज़बूत हो जाएँ।
12 यानी आने का मक़सद यह है कि मेरे ईमान से
आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई की जाए और इसी तरह
आपके ईमान से मेरा हौसला भी बढ़ जाए।
13 भाइयो, आपके इल्म में हो कि मैंने बहुत
दफ़ा आपके पास आने का इरादा किया। क्योंकि
जिस तरह दीगर ग़ैरयहूदी अक़वाम में मेरी
ख़िदमत से फल पैदा हुआ है उसी तरह आपमें
भी फल देखना चाहता हूँ। लेकिन आज तक मुझे
रोका गया है। 14 बात यह है कि यह ख़िदमत
सरंजाम देना मेरा फ़र्ज़ है, ख़ाह यूनानियों में हो
या ग़ैरयूनानियों में, ख़ाह दानाओं में हो या नादानों
में। 15 यही वजह है कि मैं आपको भी जो रोम में

रहते हैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने का मुश्ताक़
हूँ।

अल्लाह की ख़ुशख़बरी की क़ुदरत

16 मैं तो ख़ुशख़बरी के सबब से शर्माता नहीं,
क्योंकि यह अल्लाह की क़ुदरत है जो हर एक
को जो ईमान लाता है नजात देती है, पहले
यहूदियों को, फिर ग़ैरयहूदियों को। 17 क्योंकि
इस ख़ुशख़बरी में अल्लाह की ही रास्तबाज़ी
ज़ाहिर होती है, वह रास्तबाज़ी जो शुरू से आख़िर
तक ईमान पर मबनी है। यही बात कलामे-मुक़द्दस
में दर्ज है जब लिखा है, “रास्तबाज़ ईमान ही से
जीता रहेगा।”

इनसान पर अल्लाह का ग़ज़ब

18 लेकिन अल्लाह का ग़ज़ब आसमान पर से
उन तमाम बेदीन और नारास्त लोगों पर नाज़िल
होता है जो सच्चाई को अपनी नारास्ती से दबाए
रखते हैं। 19 जो कुछ अल्लाह के बारे में मालूम
हो सकता है वह तो उन पर ज़ाहिर है, हाँ अल्लाह
ने ख़ुद यह उन पर ज़ाहिर किया है। 20 क्योंकि
दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक इनसान
अल्लाह की अनदेखी फ़ितरत यानी उस की
अज़ली क़ुदरत और उलूहियत मख़लूक़ात का
मुशाहदा करने से पहचान सकता है। इसलिए
उनके पास कोई उज़्र नहीं। 21 अल्लाह को जानने
के बावुजूद उन्होंने उसे वह जलाल न दिया जो
उसका हक़ है, न उसका शुक्र अदा किया बल्कि
वह बातिल ख़यालात में पड़ गए और उनके
बेसमझ दिलों पर तारीकी छा गई। 22 वह दावा तो
करते थे कि हम दाना हैं, लेकिन अहमक़ साबित
हुए। 23 यों उन्होंने ग़ैरफ़ानी ख़ुदा को जलाल
देने के बजाए ऐसे बुतों की पूजा की जो फ़ानी
इनसान, परिंदों, चौपाइयों और रेंगनेवाले जानवरों
की सूरत में बनाए गए थे।

24 इसलिए अल्लाह ने उन्हें उन नजिस कामों में
छोड़ दिया जो उनके दिल करना चाहते थे। नतीजे
में उनके जिस्म एक दूसरे से बेहुर्मत होते रहे।
25 हाँ, उन्होंने अल्लाह के बारे में सच्चाई को रद्द
करके झूट को अपना लिया और मख़लूक़ात की
परस्तिश और ख़िदमत की, न कि ख़ालिक़ की,
जिसकी तारीफ़ अबद तक होती रहे, आमीन।

26 यही वजह है कि अल्लाह ने उन्हें
उनकी शर्मनाक शहवतों में छोड़ दिया। उनकी
ख़वातीन ने फ़ितरती जिंसी ताल्लुक़ात के बजाए
ग़ैरफ़ितरती ताल्लुक़ात रखे। 27 इसी तरह मर्द
ख़वातीन के साथ फ़ितरती ताल्लुक़ात छोड़कर
एक दूसरे की शहवत में मस्त हो गए। मर्दों ने
मर्दों के साथ बेहया हरकतें करके अपने बदनों में
अपनी इस गुमराही का मुनासिब बदला पाया।

28 और चूँकि उन्होंने अल्लाह को जानने से
इनकार कर दिया इसलिए उसने उन्हें उनकी
मकरूह सोच में छोड़ दिया। और इसलिए वह ऐसी
हरकतें करते रहते हैं जो कभी नहीं करनी चाहिएँ।
29 वह हर तरह की नारास्ती, शर, लालच और
बुराई से भरे हुए हैं। वह हसद, ख़ूनरेज़ी, झगड़े,
फ़रेब और कीनावरी से लबरेज़ हैं। वह चुग़ली
खानेवाले, 30 तोहमत लगानेवाले, अल्लाह से
नफ़रत करनेवाले, सरकश, मग़रूर, शेख़ीबाज़,
बदी को ईजाद करनेवाले, माँ-बाप के नाफ़रमान,
31 बेसमझ, बेवफ़ा, संगदिल और बेरहम हैं।
32 अगरचे वह अल्लाह का फ़रमान जानते हैं कि
ऐसा करनेवाले सज़ाए-मौत के मुस्तहिक़ हैं तो भी
वह ऐसा करते हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह ऐसा
करनेवाले दीगर लोगों को शाबाश भी देते हैं।

अल्लाह की रास्त अदालत

2 ऐ इनसान, क्या तू दूसरों को मुजरिम
ठहराता है? तू जो कोई भी हो तेरा कोई
उज़्र नहीं। क्योंकि तू ख़ुद भी वही कुछ करता
है जिसमें तू दूसरों को मुजरिम ठहराता है और
यों अपने आपको भी मुजरिम क़रार देता है।
2 अब हम जानते हैं कि ऐसे काम करनेवालों पर
अल्लाह का फ़ैसला मुंसिफ़ाना है। 3 ताहम तू
वही कुछ करता है जिसमें तू दूसरों को मुजरिम
ठहराता है। क्या तू समझता है कि ख़ुद अल्लाह

की अदालत से बच जाएगा? 4 या क्या तू उस
की वसी मेहरबानी, तहम्मुल और सब्र को हक़ीर
जानता है? क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह
की मेहरबानी तुझे तौबा तक ले जाना चाहती है?
5 लेकिन तू हटधर्म है, तू तौबा करने के लिए तैयार
नहीं और यों अपनी सज़ा में इज़ाफ़ा करता जा
रहा है, वह सज़ा जो उस दिन दी जाएगी जब
अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा, जब उस की
रास्त अदालत ज़ाहिर होगी। 6 अल्लाह हर एक
को उसके कामों का बदला देगा। 7 कुछ लोग
साबितक़दमी से नेक काम करते और जलाल,
इज़्ज़त और बक़ा के तालिब रहते हैं। उन्हें अल्लाह
अबदी ज़िंदगी अता करेगा। 8 लेकिन कुछ लोग
ख़ुदग़रज़ हैं और सच्चाई की नहीं बल्कि नारास्ती
की पैरवी करते हैं। उन पर अल्लाह का ग़ज़ब और
क़हर नाज़िल होगा। 9 मुसीबत और परेशानी हर
उस इनसान पर आएगी जो बुराई करता है, पहले
यहूदी पर, फिर यूनानी पर। 10 लेकिन जलाल,
इज़्ज़त और सलामती हर उस इनसान को हासिल
होगी जो नेकी करता है, पहले यहूदी को, फिर
यूनानी को। 11 क्योंकि अल्लाह किसी का भी
तरफ़दार नहीं।

12 ग़ैरयहूदियों के पास मूसवी शरीअत नहीं है,
इसलिए वह शरीअत के बग़ैर ही गुनाह करके
हलाक हो जाते हैं। यहूदियों के पास शरीअत है,
लेकिन वह भी नहीं बचेंगे। क्योंकि जब वह गुनाह
करते हैं तो शरीअत ही उन्हें मुजरिम ठहराती है।
13 क्योंकि अल्लाह के नज़दीक यह काफ़ी नहीं
कि हम शरीअत की बातें सुनें बल्कि वह हमें उस
वक़्त ही रास्तबाज़ क़रार देता है जब शरीअत
पर अमल भी करते हैं। 14 और गो ग़ैरयहूदियों
के पास शरीअत नहीं होती लेकिन जब भी वह
फ़ितरती तौर पर वह कुछ करते हैं जो शरीअत
फ़रमाती है तो ज़ाहिर करते हैं कि गो हमारे पास
शरीअत नहीं तो भी हम अपने आपके लिए ख़ुद
शरीअत हैं। 15 इसमें वह साबित करते हैं कि
शरीअत के तक़ाज़े उनके दिल पर लिखे हुए हैं।
उनका ज़मीर भी इसकी गवाही देता है, क्योंकि
उनके ख़यालात कभी एक दूसरे की मज़म्मत और
कभी एक दूसरे का दिफ़ा भी करते हैं। 16 ग़रज़,
मेरी ख़ुशख़बरी के मुताबिक़ हर एक को उस दिन
अपना अज्र मिलेगा जब अल्लाह ईसा मसीह की
मारिफ़त इनसानों की पोशीदा बातों की अदालत
करेगा।

यहूदी और शरीअत

17 अच्छा, तू अपने आपको यहूदी कहता है।
तू शरीअत पर इनहिसार करता और अल्लाह के
साथ अपने ताल्लुक़ पर फ़ख़र करता है। 18 तू
उस की मरज़ी को जानता है और शरीअत की
तालीम पाने के बाइस सहीह राह की पहचान
रखता है। 19 तुझे पूरा यक़ीन है, 'मैं अंधों
का क़ायद, तारीकी में बसनेवालों की रौशनी,
20 बेसमझों का मुअल्लिम और बच्चों का उस्ताद
हूँ।' एक लिहाज़ से यह दुरुस्त भी है, क्योंकि
शरीअत की सूरत में तेरे पास इल्मो-इरफ़ान और
सच्चाई मौजूद है। 21 अब बता, तू जो औरों को
सिखाता है अपने आपको क्यों नहीं सिखाता? तू
जो चोरी न करने की मुनादी करता है, ख़ुद चोरी
क्यों करता है? 22 तू जो औरों को ज़िना करने
से मना करता है, ख़ुद ज़िना क्यों करता है? तू
जो बुतों से घिन खाता है, ख़ुद मंदिरों को क्यों
लूटता है? 23 तू जो शरीअत पर फ़ख़र करता
है, क्यों इसकी ख़िलाफ़वरज़ी करके अल्लाह की
बेइज़्ज़ती करता है? 24 यह वही बात है जो
कलामे-मुक़द्दस में लिखी है, "तुम्हारे सबब से
ग़ैरयहूदियों में अल्लाह के नाम पर कुफ़र बका
जाता है।"

25 ख़तने का फ़ायदा तो उस वक़्त होता है जब
तू शरीअत पर अमल करता है। लेकिन अगर तू
उस की हुक्मअदूली करता है तो तू नामख़तून
जैसा है। 26 इसके बरअक्स अगर नामख़तून
ग़ैरयहूदी शरीअत के तक़ाज़ों को पूरा करता है तो
क्या अल्लाह उसे मख़तून यहूदी के बराबर नहीं
ठहराएगा? 27 चुनाँचे जो नामख़तून ग़ैरयहूदी
शरीअत पर अमल करते हैं वह आप यहूदियों

को मुजरिम ठहराएँगे जिनका ख़तना हुआ है और
जिनके पास शरीअत है, क्योंकि आप शरीअत पर
अमल नहीं करते। 28 आप इस बिना पर हक़ीक़ी
यहूदी नहीं हैं कि आपके वालिदैन यहूदी थे या
आपके बदन का ख़तना ज़ाहिरी तौर पर हुआ है।
29 बल्कि हक़ीक़ी यहूदी वह है जो बातिन में यहूदी
है। और हक़ीक़ी ख़तना उस वक़्त होता है जब
दिल का ख़तना हुआ है। ऐसा ख़तना शरीअत से
नहीं बल्कि रूहुल-क़ुद्स के वसीले से किया जाता
है। और ऐसे यहूदी को इनसान की तरफ़ से नहीं
बल्कि अल्लाह की तरफ़ से तारीफ़ मिलती है।

3 तो क्या यहूदी होने का या ख़तना का कोई
फ़ायदा है? 2 जी हाँ, हर तरह का! अव्वल
तो यह कि अल्लाह का कलाम उनके सुपुर्द किया
गया है। 3 अगर उनमें से बाज़ बेवफ़ा निकले तो
क्या हुआ? क्या इससे अल्लाह की वफ़ादारी भी
ख़त्म हो जाएगी? 4 कभी नहीं! लाज़िम है कि
अल्लाह सच्चा ठहरे गो हर इनसान झूटा है। यों
कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "लाज़िम है कि तू
बोलते वक़्त रास्त ठहरे और अदालत करते वक़्त
ग़ालिब आए।"

5 कोई कह सकता है, "हमारी नारास्ती का
एक अच्छा मक़सद होता है, क्योंकि इससे लोगों
पर अल्लाह की रास्ती ज़ाहिर होती है। तो क्या
अल्लाह बेइनसाफ़ नहीं होगा अगर वह अपना
ग़ज़ब हम पर नाज़िल करे?" (मैं इनसानी
ख़याल पेश कर रहा हूँ)। 6 हरगिज़ नहीं! अगर
अल्लाह रास्त न होता तो फिर वह दुनिया की
अदालत किस तरह कर सकता?

7 शायद कोई और एतराज़ करे, "अगर मेरा
झूट अल्लाह की सच्चाई को कसरत से नुमायाँ
करता है और यों उसका जलाल बढ़ता है तो
वह मुझे क्योंकर गुनाहगार क़रार दे सकता है?"
8 कुछ लोग हम पर यह कुफ़र भी बकते हैं कि
हम कहते हैं, "आओ, हम बुराई करें ताकि भलाई
निकले।" इनसाफ़ का तक़ाज़ा है कि ऐसे लोगों
को मुजरिम ठहराया जाए।

कोई रास्तबाज़ नहीं

9 अब हम क्या कहें? क्या हम यहूदी दूसरों से
बरतर हैं? बिलकुल नहीं। हम तो पहले ही यह
इलज़ाम लगा चुके हैं कि यहूदी और यूनानी सब
ही गुनाह के क़ब्ज़े में हैं। 10 कलामे-मुक़द्दस में यों
लिखा है,

"कोई नहीं जो रास्तबाज़ है,
एक भी नहीं।
11 कोई नहीं जो समझदार है,
कोई नहीं जो अल्लाह का तालिब है।
12 अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए,
सबके सब बिगड़ गए हैं।
कोई नहीं जो भलाई करता हो,
एक भी नहीं।
13 उनका गला खुली क़ब्र है,
उनकी ज़बान फ़रेब देती है।
उनके होंटों में साँप का ज़हर है।
14 उनका मुँह
लानत और कड़वाहट से भरा है।
15 उनके पाँव
ख़ून बहाने के लिए जल्दी करते हैं।
16 अपने पीछे वह तबाही-ओ-बरबादी
छोड़ जाते हैं,
17 और वह सलामती की राह नहीं जानते।
18 उनकी आँखों के सामने
ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं होता।"

19 अब हम जानते हैं कि शरीअत जो कुछ
फ़रमाती है उन्हें फ़रमाती है जिनके सुपुर्द वह
की गई है। मक़सद यह है कि हर इनसान के
बहाने ख़त्म किए जाएँ और तमाम दुनिया अल्लाह
के सामने मुजरिम ठहरे। 20 क्योंकि शरीअत
के तक़ाज़े पूरे करने से कोई भी उसके सामने
रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता, बल्कि शरीअत का
काम यह है कि हमारे अंदर गुनाहगार होने का
एहसास पैदा करे।

रास्तबाज़ होने के लिए ईमान ज़रूरी है

21 लेकिन अब अल्लाह ने हम पर एक राह का
इनकिशाफ़ किया है जिससे हम शरीअत के बग़ैर
ही उसके सामने रास्तबाज़ ठहर सकते हैं। तौरेत
और नबियों के सहीफ़े भी इसकी तसदीक़ करते
हैं। 22 राह यह है कि जब हम ईसा मसीह पर
ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार
देता है। और यह राह सबके लिए है। क्योंकि
कोई भी फ़रक़ नहीं, 23 सबने गुनाह किया, सब
अल्लाह के उस जलाल से महरूम हैं जिसका
वह तक़ाज़ा करता है, 24 और सब मुफ़्त में
अल्लाह के फ़ज़्ल ही से रास्तबाज़ ठहराए जाते
हैं, उस फ़िदिये के वसीले से जो मसीह ईसा
ने दिया। 25 क्योंकि अल्लाह ने ईसा को उसके
ख़ून के बाइस कफ़्फ़ारा का वसीला बनाकर पेश
किया, ऐसा कफ़्फ़ारा जिससे ईमान लानेवालों
को गुनाहों की मुआफ़ी मिलती है। यों अल्लाह
ने अपनी रास्ती ज़ाहिर की, पहले माज़ी में जब
वह अपने सब्रो-तहम्मुल में गुनाहों की सज़ा देने
से बाज़ रहा 26 और अब मौजूदा ज़माने में भी।
इससे वह ज़ाहिर करता है कि वह रास्त है और हर
एक को रास्तबाज़ ठहराता है जो ईसा पर ईमान
लाया है।

27 अब हमारा फ़ख़र कहाँ रहा? उसे तो ख़त्म
कर दिया गया है। किस शरीअत से? क्या
आमाल की शरीअत से? नहीं, बल्कि ईमान की
शरीअत से। 28 क्योंकि हम कहते हैं कि इनसान
को ईमान से रास्तबाज़ ठहराया जाता है, न कि
आमाल से। 29 क्या अल्लाह सिर्फ़ यहूदियों का
ख़ुदा है? ग़ैरयहूदियों का नहीं? हाँ, ग़ैरयहूदियों
का भी है। 30 क्योंकि अल्लाह एक ही है जो
मख़तून और नामख़तून दोनों को ईमान ही से
रास्तबाज़ ठहराएगा। 31 फिर क्या हम शरीअत
को ईमान से मनसूख़ करते हैं? हरगिज़ नहीं,
बल्कि हम शरीअत को क़ायम रखते हैं।

इब्राहीम ईमान से रास्तबाज़ ठहरा

4 इब्राहीम जिस्मानी लिहाज़ से हमारा बाप
था। तो रास्तबाज़ ठहरने के सिलसिले में
उसका क्या तजरबा था? 2 हम कह सकते हैं कि
अगर वह शरीअत पर अमल करने से रास्तबाज़
ठहरता तो वह अपने आप पर फ़ख़र कर सकता
था। लेकिन अल्लाह के नज़दीक उसके पास
अपने आप पर फ़ख़र करने का कोई सबब न था।
3 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "इब्राहीम
ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह
ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।" 4 जब लोग काम
करते हैं तो उनकी मज़दूरी कोई ख़ास मेहरबानी
क़रार नहीं दी जाती, बल्कि यह तो उनका हक़
बनता है। 5 लेकिन जब लोग काम नहीं करते
बल्कि अल्लाह पर ईमान रखते हैं जो बेदीनों को
रास्तबाज़ क़रार देता है तो उनका कोई हक़ नहीं
बनता। वह उनके ईमान ही की बिना पर रास्तबाज़
क़रार दिए जाते हैं। 6 दाऊद यही बात बयान
करता है जब वह उस शख़्स को मुबारक कहता है
जिसे अल्लाह बग़ैर आमाल के रास्तबाज़ ठहराता
है,

7 "मुबारक हैं वह
जिनके जरायम मुआफ़ किए गए,
जिनके गुनाह ढाँपे गए हैं।
8 मुबारक है वह
जिसका गुनाह रब हिसाब में
नहीं लाएगा।"

9 क्या यह मुबारकबादी सिर्फ़ मख़तूनों के लिए
है या नामख़तूनों के लिए भी? हम तो बयान कर
चुके हैं कि इब्राहीम ईमान की बिना पर रास्तबाज़
ठहरा। 10 उसे किस हालत में रास्तबाज़ ठहराया
गया? ख़तना कराने के बाद या पहले? ख़तने
के बाद नहीं बल्कि पहले। 11 और ख़तना का
जो निशान उसे मिला वह उस की रास्तबाज़ी की
मुहर थी, वह रास्तबाज़ी जो उसे ख़तना कराने से
पेशतर मिली, उस वक़्त जब वह ईमान लाया।
यों वह उन सबका बाप है जो बग़ैर ख़तना कराए

ईमान लाए हैं और इस बिना पर रास्तबाज़ ठहरते
हैं। 12 साथ ही वह ख़तना करानेवालों का बाप भी
है, लेकिन उनका जिनका न सिर्फ़ ख़तना हुआ है
बल्कि जो हमारे बाप इब्राहीम के उस ईमान के
नक़्शे-क़दम पर चलते हैं जो वह ख़तना कराने से
पेशतर रखता था।

अल्लाह का वादा ईमान से हासिल होता है

13 जब अल्लाह ने इब्राहीम और उस की
औलाद से वादा किया कि वह दुनिया का वारिस
होगा तो उसने यह इसलिए नहीं किया कि
इब्राहीम ने शरीअत की पैरवी की बल्कि इसलिए
कि वह ईमान लाया और यों रास्तबाज़ ठहराया
गया। 14 क्योंकि अगर वह वारिस हैं जो शरीअत
के पैरोकार हैं तो फिर ईमान बेअसर ठहरा और
अल्लाह का वादा मिट गया। 15 शरीअत अल्लाह
का ग़ज़ब ही पैदा करती है। लेकिन जहाँ कोई
शरीअत नहीं वहाँ उस की ख़िलाफ़वरज़ी भी नहीं।
16 चुनाँचे यह मीरास ईमान से मिलती है ताकि
इसकी बुनियाद अल्लाह का फ़ज़ल हो और
इसका वादा इब्राहीम की तमाम नसल के लिए हो,
न सिर्फ़ शरीअत के पैरोकारों के लिए बल्कि उनके
लिए भी जो इब्राहीम का-सा ईमान रखते हैं।
यही हम सबका बाप है। 17 यों अल्लाह कलामे-
मुक़द्दस में उससे वादा करता है, "मैंने तुझे बहुत
क़ौमों का बाप बना दिया है।" अल्लाह ही के
नज़दीक इब्राहीम हम सबका बाप है। क्योंकि
उसका ईमान उस ख़ुदा पर था जो मुरदों को
ज़िंदा करता और जिसके हुक्म पर वह कुछ पैदा
होता है जो पहले नहीं था। 18 उम्मीद की कोई
किरण दिखाई नहीं देती थी, फिर भी इब्राहीम
उम्मीद के साथ ईमान रखता रहा कि मैं ज़रूर
बहुत क़ौमों का बाप बनूँगा। और आख़िरकार ऐसा
ही हुआ, जैसा कलामे-मुक़द्दस में वादा किया
गया था कि "तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार
होगी।" 19 और इब्राहीम का ईमान कमज़ोर न
पड़ा, हालाँकि उसे मालूम था कि मैं तक़रीबन सौ
साल का हूँ और मेरा और सारा के बदन गोया
मुरदा हैं, अब बच्चे पैदा करने की उम्र सारा के
लिए गुज़र चुकी है। 20 तो भी इब्राहीम का ईमान
ख़त्म न हुआ, न उसने अल्लाह के वादे पर शक
किया बल्कि ईमान में वह मज़ीद मज़बूत हुआ
और अल्लाह को जलाल देता रहा। 21 उसे पुख़्ता
यक़ीन था कि अल्लाह अपने वादे को पूरा करने
की क़ुदरत रखता है। 22 उसके इस ईमान की
वजह से अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।
23 कलामे-मुक़द्दस में यह बात कि अल्लाह ने उसे
रास्तबाज़ क़रार दिया न सिर्फ़ उस की ख़ातिर
लिखी गई 24 बल्कि हमारी ख़ातिर भी। क्योंकि
अल्लाह हमें भी रास्तबाज़ क़रार देगा अगर हम
उस पर ईमान रखें जिसने हमारे ख़ुदावंद ईसा को
मुरदों में से ज़िंदा किया। 25 हमारी ही ख़ताओं की
वजह से उसे मौत के हवाले किया गया, और हमें
ही रास्तबाज़ क़रार देने के लिए उसे ज़िंदा किया
गया।

रास्तबाज़ी का अंजाम

5 अब चूँकि हमें ईमान से रास्तबाज़ क़रार
दिया गया है इसलिए अल्लाह के साथ
हमारी सुलह है। इस सुलह का वसीला हमारा
ख़ुदावंद ईसा मसीह है। 2 हमारे ईमान लाने पर
उसने हमें फ़ज़ल के उस मक़ाम तक पहुँचाया
जहाँ हम आज क़ायम हैं। और यों हम इस उम्मीद
पर फ़ख़र करते हैं कि हम अल्लाह के जलाल
में शरीक होंगे। 3 न सिर्फ़ यह बल्कि हम उस
वक़्त भी फ़ख़र करते हैं जब हम मुसीबतों में
फँसे होते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि मुसीबत
से साबितक़दमी पैदा होती है, 4 साबितक़दमी से
पुख़्तगी और पुख़्तगी से उम्मीद। 5 और उम्मीद
हमें शरमिंदा होने नहीं देती, क्योंकि अल्लाह ने
हमें रूहुल-क़ुद्स देकर उसके वसीले से हमारे
दिलों में अपनी मुहब्बत उंडेली है।
6 क्योंकि हम अभी कमज़ोर ही थे तो मसीह
ने हम बेदीनों की ख़ातिर अपनी जान दे दी।
7 मुश्किल से ही कोई किसी रास्तबाज़ की ख़ातिर
अपनी जान देगा। हाँ, मुमकिन है कि कोई किसी

नेकोकार के लिए अपनी जान देने की जुर्रत करे।
8 लेकिन अल्लाह ने हमसे अपनी मुहब्बत का
इज़हार यों किया कि मसीह ने उस वक़्त हमारी
ख़ातिर अपनी जान दी जब हम गुनाहगार ही थे।
9 हमें मसीह के ख़ून से रास्तबाज़ ठहराया गया
है। तो यह बात कितनी यक़ीनी है कि हम उसके
वसीले से अल्लाह के ग़ज़ब से बचेंगे। 10 हम अभी
अल्लाह के दुश्मन ही थे जब उसके फ़रज़ंद की
मौत के वसीले से हमारी उसके साथ सुलह हो
गई। तो फिर यह बात कितनी यक़ीनी है कि हम
उस की ज़िंदगी के वसीले से नजात भी पाएँगे।
11 न सिर्फ़ यह बल्कि अब हम अल्लाह पर फ़ख़र
करते हैं और यह हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के
वसीले से है, जिसने हमारी सुलह कराई है।

आदम और मसीह

12 जब आदम ने गुनाह किया तो उस एक
ही शख़्स से गुनाह दुनिया में आया। इस गुनाह
के साथ साथ मौत भी आकर सब आदमियों में
फैल गई, क्योंकि सबने गुनाह किया। 13 शरीअत
के इनकिशाफ़ से पहले गुनाह तो दुनिया में था,
लेकिन जहाँ शरीअत नहीं होती वहाँ गुनाह का
हिसाब नहीं किया जाता। 14 ताहम आदम से
लेकर मूसा तक मौत की हुकूमत जारी रही, उन
पर भी जिन्होंने आदम की-सी हुक्मअदूली न की।

अब आदम आनेवाले ईसा मसीह की तरफ़
इशारा था। 15 लेकिन इन दोनों में बड़ा फ़रक़
है। जो नेमत अल्लाह मुफ़्त में देता है वह आदम
के गुनाह से मुताबिक़त नहीं रखती। क्योंकि इस
एक शख़्स आदम की ख़िलाफ़वरज़ी से बहुत-से
लोग मौत की ज़द में आ गए, लेकिन अल्लाह का
फ़ज़ल कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है, वह मुफ़्त नेमत
जो बहुतों को उस एक शख़्स ईसा मसीह में मिली
है। 16 हाँ, अल्लाह की इस नेमत और आदम के
गुनाह में बहुत फ़रक़ है। उस एक शख़्स आदम
के गुनाह के नतीजे में हमें तो मुजरिम क़रार दिया
गया, लेकिन अल्लाह की मुफ़्त नेमत का असर
यह है कि हमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है,
गो हमसे बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं। 17 इस
एक शख़्स आदम के गुनाह के नतीजे में मौत सब
पर हुकूमत करने लगी। लेकिन इस एक शख़्स
ईसा मसीह का काम कितना ज़्यादा मुअस्सिर
था। जितने भी अल्लाह का वाफ़िर फ़ज़ल और
रास्तबाज़ी की नेमत पाते हैं वह मसीह के वसीले
से अबदी ज़िंदगी में हुकूमत करेंगे।

18 चुनाँचे जिस तरह एक ही शख़्स के गुनाह
के बाइस सब लोग मुजरिम ठहरे उसी तरह एक
ही शख़्स के रास्त अमल से वह दरवाज़ा खुल
गया जिसमें दाख़िल होकर सब लोग रास्तबाज़
ठहर सकते और ज़िंदगी पा सकते हैं। 19 जिस
तरह एक ही शख़्स की नाफ़रमानी से बहुत-से
लोग गुनाहगार बन गए, उसी तरह एक ही शख़्स
की फ़रमाँबरदारी से बहुत-से लोग रास्तबाज़ बन
जाएंगे।

20 शरीअत इसलिए दरमियान में आ गई कि
ख़िलाफ़वरज़ी बढ़ जाए। लेकिन जहाँ गुनाह
ज़्यादा हुआ वहाँ अल्लाह का फ़ज़ल इससे भी
ज़्यादा हो गया। 21 चुनाँचे जिस तरह गुनाह
मौत की सूरत में हुकूमत करता था उसी तरह
अब अल्लाह का फ़ज़ल हमें रास्तबाज़ ठहराकर
हुकूमत करता है। यों हमें अपने ख़ुदावंद ईसा
मसीह की बदौलत अबदी ज़िंदगी हासिल होती
है।

मसीह में नई ज़िंदगी

6 क्या इसका मतलब यह है कि हम गुनाह
करते रहें ताकि अल्लाह के फ़ज़ल में
इज़ाफ़ा हो? 2 हरगिज़ नहीं! हम तो मरकर गुनाह
से लाताल्लुक़ हो गए हैं। तो फिर हम किस तरह
गुनाह को अपने आप पर हुकूमत करने दे सकते
हैं? 3 या क्या आपको मालूम नहीं कि हम सब
जिन्हें बपतिस्मा दिया गया है इससे मसीह ईसा
की मौत में शामिल हो गए हैं? 4 क्योंकि बपतिस्मे
से हमें दफ़नाया गया और उस की मौत में शामिल
किया गया ताकि हम मसीह की तरह नई ज़िंदगी

गुज़ारें, जिसे बाप की जलाली क़ुदरत ने मुरदों में
से ज़िंदा किया।

5 चूँकि इस तरह हम उस की मौत में उसके
साथ पैवस्त हो गए हैं इसलिए हम उसके जी
उठने में भी उसके साथ पैवस्त होंगे। 6 क्योंकि
हम जानते हैं कि हमारा पुराना इनसान मसीह के
साथ मसलूब हो गया ताकि गुनाह के क़ब्ज़े में
यह जिस्म नेस्त हो जाए और यों हम गुनाह के
ग़ुलाम न रहें। 7 क्योंकि जो मर गया वह गुनाह
से आज़ाद हो गया है। 8 और हमारा ईमान है कि
चूँकि हम मसीह के साथ मर गए हैं इसलिए हम
उसके साथ ज़िंदा भी होंगे, 9 क्योंकि हम जानते
हैं कि मसीह मुरदों में से जी उठा है और अब
कभी नहीं मरेगा। अब मौत का उस पर कोई
इख़्तियार नहीं। 10 मरते वक़्त वह हमेशा के लिए
गुनाह की हुकूमत से निकल गया, और अब जब
वह दुबारा ज़िंदा है तो उस की ज़िंदगी अल्लाह
के लिए मख़सूस है। 11 आप भी अपने आपको
ऐसा समझें। आप भी मरकर गुनाह की हुकूमत से
निकल गए हैं और अब आपकी मसीह में ज़िंदगी
अल्लाह के लिए मख़सूस है।

12 चुनाँचे गुनाह आपके फ़ानी बदन में हुकूमत
न करे। ध्यान दें कि आप उस की बुरी ख़ाहिशात
के ताबे न हो जाएँ। 13 अपने बदन के किसी
भी अज़ु को गुनाह की ख़िदमत के लिए पेश
न करें, न उसे नारास्ती का हथियार बनने दें।
इसके बजाए अपने आपको अल्लाह की ख़िदमत
के लिए पेश करें। क्योंकि पहले आप मुरदा थे,
लेकिन अब आप ज़िंदा हो गए हैं। चुनाँचे अपने
तमाम आज़ा को अल्लाह की ख़िदमत के लिए
पेश करें और उन्हें रास्ती के हथियार बनने दें।
14 आइंदा गुनाह आप पर हुकूमत नहीं करेगा,
क्योंकि आप अपनी ज़िंदगी शरीअत के तहत नहीं
गुज़ारते बल्कि अल्लाह के फ़ज़्ल के तहत।

रास्तबाज़ी के ग़ुलाम

15 अब सवाल यह है, चूँकि हम शरीअत के
तहत नहीं बल्कि फ़ज़्ल के तहत हैं तो क्या
इसका मतलब यह है कि हमें गुनाह करने के लिए
खुला छोड़ दिया गया है? हरगिज़ नहीं! 16 क्या
आपको मालूम नहीं कि जब आप अपने आपको
किसी के ताबे करके उसके ग़ुलाम बन जाते हैं
तो आप उस मालिक के ग़ुलाम हैं जिसके ताबे
आप हैं? या तो गुनाह आपका मालिक बनकर
आपको मौत तक ले जाएगा, या फ़रमाँबरदारी
आपकी मालिकन बनकर आपको रास्तबाज़ी तक
ले जाएगी। 17 दर-हक़ीक़त आप पहले गुनाह
के ग़ुलाम थे, लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि अब
आप पूरे दिल से उसी तालीम के ताबे हो गए
हैं जो आपके सुपुर्द की गई है। 18 अब आपको
गुनाह से आज़ाद कर दिया गया है, रास्तबाज़ी
ही आपकी मालिकन बन गई है। 19 (आपकी
फ़ितरती कमज़ोरी की वजह से मैं ग़ुलामी की
यह मिसाल दे रहा हूँ ताकि आप मेरी बात समझ
पाएँ।) पहले आपने अपने आज़ा को नजासत
और बेदीनी की ग़ुलामी में दे रखा था जिसके
नतीजे में आपकी बेदीनी बढ़ती गई। लेकिन अब
आप अपने आज़ा को रास्तबाज़ी की ग़ुलामी में दे
दें ताकि आप मुक़द्दस बन जाएँ।

20 जब गुनाह आपका मालिक था तो आप
रास्तबाज़ी से आज़ाद थे। 21 और इसका नतीजा
क्या था? जो कुछ आपने उस वक़्त किया उससे
आपको आज शर्म आती है और उसका अंजाम
मौत है। 22 लेकिन अब आप गुनाह की ग़ुलामी
से आज़ाद होकर अल्लाह के ग़ुलाम बन गए
हैं, जिसके नतीजे में आप मख़सूसो-मुक़द्दस बन
जाते हैं और जिसका अंजाम अबदी ज़िंदगी है।
23 क्योंकि गुनाह का अज्र मौत है जबकि अल्लाह
हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा के वसीले से हमें अबदी
ज़िंदगी की मुफ़्त नेमत अता करता है।

शादी की मिसाल

7 भाइयो, आप तो शरीअत से वाक़िफ़
हैं। तो क्या आप नहीं जानते कि
शरीअत उस वक़्त तक इनसान पर इख़्ति-
यार रखती है जब तक वह ज़िंदा है? 2 शादी

की मिसाल लें। जब किसी औरत की शादी होती
है तो शरीअत उसका शौहर के साथ बंधन उस
वक़्त तक क़ायम रखती है जब तक शौहर ज़िंदा
है। अगर शौहर मर जाए तो फिर वह इस बंधन से
आज़ाद हो गई। 3 चुनाँचे अगर वह अपने ख़ाविंद
के जीते-जी किसी और मर्द की बीवी बन जाए
तो उसे ज़िनाकार क़रार दिया जाता है। लेकिन
अगर उसका शौहर मर जाए तो वह शरीअत से
आज़ाद हुई। अब वह किसी दूसरे मर्द की बीवी बने
तो ज़िनाकार नहीं ठहरती। 4 मेरे भाइयो, यह बात
आप पर भी सादिक़ आती है। जब आप मसीह के
बदन का हिस्सा बन गए तो आप मरकर शरीअत
के इख़्तियार से आज़ाद हो गए। अब आप उसके
साथ पैवस्त हो गए हैं जिसे मुरदों में से ज़िंदा
किया गया ताकि हम अल्लाह की ख़िदमत में फल
लाएँ। 5 क्योंकि जब हम अपनी पुरानी फ़ितरत
के तहत ज़िंदगी गुज़ारते थे तो शरीअत हमारी
गुनाहआलूदा रग़बतों को उकसाती थी। फिर यही
रग़बतें हमारे आज़ा पर असरअंदाज़ होती थीं और
नतीजे में हम ऐसा फल लाते थे जिसका अंजाम
मौत है। 6 लेकिन अब हम मरकर शरीअत के
बंधन से आज़ाद हो गए हैं। अब हम शरीअत की
पुरानी ज़िंदगी के तहत ख़िदमत नहीं करते बल्कि
रूहुल-क़ुद्स की नई ज़िंदगी के तहत।

शरीअत और गुनाह

7 क्या इसका मतलब यह है कि शरीअत ख़ुद
गुनाह है? हरगिज़ नहीं! बात तो यह है कि अगर
शरीअत मुझ पर मेरे गुनाह ज़ाहिर न करती तो
मुझे इनका कुछ पता न चलता। मसलन अगर
शरीअत न बताती, "लालच न करना" तो मुझे
दर-हक़ीक़त मालूम न होता कि लालच क्या है।
8 लेकिन गुनाह ने इस हुक्म से फ़ायदा उठाकर
मुझमें हर तरह का लालच पैदा कर दिया। इसके
बरअक्स जहाँ शरीअत नहीं होती वहाँ गुनाह मुरदा
है और ऐसा काम नहीं कर पाता। 9 एक वक़्त
था जब मैं शरीअत के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारता था।
लेकिन ज्योंही हुक्म मेरे सामने आया तो गुनाह में
जान आ गई 10 और मैं मर गया। इस तरह मालूम
हुआ कि जिस हुक्म का मक़सद मेरी ज़िंदगी
को क़ायम रखना था वही मेरी मौत का बाइस
बन गया। 11 क्योंकि गुनाह ने हुक्म से फ़ायदा
उठाकर मुझे बहकाया और हुक्म से ही मुझे मार
डाला।

12 लेकिन शरीअत ख़ुद मुक़द्दस है और इसके
अहकाम मुक़द्दस, रास्त और अच्छे हैं। 13 क्या
इसका मतलब यह है कि जो अच्छा है वही मेरे
लिए मौत का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं!
गुनाह ही ने यह किया। इस अच्छी चीज़ को
इस्तेमाल करके उसने मेरे लिए मौत पैदा कर दी
ताकि गुनाह ज़ाहिर हो जाए। यों हुक्म के ज़रीए
गुनाह की संजीदगी हद से ज़्यादा बढ़ जाती है।

हमारे अंदर की कशमकश

14 हम जानते हैं कि शरीअत रूहानी है। लेकिन
मेरी फ़ितरत इनसानी है, मुझे गुनाह की ग़ुलामी
में बेचा गया है। 15 दर-हक़ीक़त मैं नहीं समझता
कि क्या करता हूँ। क्योंकि मैं वह काम नहीं करता
जो करना चाहता हूँ बल्कि वह जिससे मुझे नफ़रत
है। 16 लेकिन अगर मैं वह करता हूँ जो नहीं करना
चाहता तो ज़ाहिर है कि मैं मुत्तफ़िक़ हूँ कि शरीअत
अच्छी है। 17 और अगर ऐसा है तो फिर मैं यह
काम ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि गुनाह जो मेरे अंदर
सुकूनत करता है। 18 मुझे मालूम है कि मेरे अंदर
यानी मेरी पुरानी फ़ितरत में कोई अच्छी चीज़
नहीं बसती। अगरचे मुझमें नेक काम करने का
इरादा तो मौजूद है लेकिन मैं उसे अमली जामा
नहीं पहना सकता। 19 जो नेक काम मैं करना
चाहता हूँ वह नहीं करता बल्कि वह बुरा काम
करता हूँ जो करना नहीं चाहता। 20 अब अगर मैं
वह काम करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो
इसका मतलब है कि मैं ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि
वह गुनाह जो मेरे अंदर बसता है।

21 चुनाँचे मुझे एक और तरह की शरीअत काम
करती हुई नज़र आती है, और वह यह है कि जब
मैं नेक काम करने का इरादा रखता हूँ तो बुराई

आ मौजूद होती है। 22 हाँ, अपने बातिन में तो
मैं ख़ुशी से अल्लाह की शरीअत को मानता हूँ।
23 लेकिन मुझे अपने आज़ा में एक और तरह की
शरीअत दिखाई देती है, ऐसी शरीअत जो मेरी
समझ की शरीअत के ख़िलाफ़ लड़कर मुझे गुनाह
की शरीअत का क़ैदी बना देती है, उस शरीअत
का जो मेरे आज़ा में मौजूद है। 24 हाय, मेरी हालत
कितनी बुरी है! मुझे इस बदन से जिसका अंजाम
मौत है कौन छुड़ाएगा? 25 ख़ुदा का शुक्र है जो
हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से यह काम
करता है।

ग़रज़ यही मेरी हालत है, मसीह के बग़ैर मैं अल्लाह की शरीअत की ख़िदमत सिर्फ़ अपनी समझ से कर सकता हूँ जबकि मेरी पुरानी फ़ितरत गुनाह की शरीअत की ग़ुलाम रहकर उसी की ख़िदमत करती है।

रूह में ज़िंदगी

8 अब जो मसीह ईसा में हैं उन्हें मुजरिम नहीं
ठहराया जाता। 2 क्योंकि रूह की शरीअत
ने जो हमें मसीह में ज़िंदगी अता करती है तुझे
गुनाह और मौत की शरीअत से आज़ाद कर
दिया है। 3 मूसवी शरीअत हमारी पुरानी फ़ितरत
की कमज़ोर हालत की वजह से हमें न बचा
सकी। इसलिए अल्लाह ने वह कुछ किया जो
शरीअत के बस में न था। उसने अपना फ़रज़ंद
भेज दिया ताकि वह गुनाहगार का-सा जिस्म
इख़्तियार करके हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा दे।
इस तरह अल्लाह ने पुरानी फ़ितरत में मौजूद
गुनाह को मुजरिम ठहराया 4 ताकि हममें शरीअत
का तक़ाज़ा पूरा हो जाए, हम जो पुरानी फ़ितरत
के मुताबिक़ नहीं बल्कि रूह के मुताबिक़ चलते
हैं। 5 जो पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में हैं वह
पुरानी सोच रखते हैं जबकि जो रूह के इख़्तियार
में हैं वह रूहानी सोच रखते हैं। 6 पुरानी फ़ितरत
की सोच का अंजाम मौत है जबकि रूह की सोच
ज़िंदगी और सलामती पैदा करती है। 7 पुरानी
फ़ितरत की सोच अल्लाह से दुश्मनी रखती है।
यह अपने आपको अल्लाह की शरीअत के ताबे
नहीं रखती, न ही ऐसा कर सकती है। 8 इसलिए
वह लोग अल्लाह को पसंद नहीं आ सकते जो
पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में हैं।

9 लेकिन आप पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में
नहीं बल्कि रूह के इख़्तियार में हैं। शर्त यह है कि
रूहुल-क़ुद्स आपमें बसा हुआ हो। अगर किसी
में मसीह का रूह नहीं तो वह मसीह का नहीं।
10 लेकिन अगर मसीह आपमें है तो फिर आपका
बदन गुनाह की वजह से मुरदा है जबकि रूहुल-
क़ुद्स आपको रास्तबाज़ ठहराने की वजह से
आपके लिए ज़िंदगी का बाइस है। 11 उसका
रूह आपमें बसता है जिसने ईसा को मुरदों में
से ज़िंदा किया। और चूँकि रूहुल-क़ुद्स आपमें
बसता है इसलिए अल्लाह इसके ज़रीए आपके
फ़ानी बदनों को भी मसीह की तरह ज़िंदा करेगा।

12 चुनाँचे मेरे भाइयो, हमारी पुरानी फ़ित-
रत का कोई हक़ न रहा कि हमें अपने मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारने पर मजबूर करे। 13 क्योंकि अगर
आप अपनी पुरानी फ़ितरत के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें तो आप हलाक हो जाएंगे। लेकिन अगर
आप रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत से अपनी पुरानी
फ़ितरत के ग़लत कामों को नेस्तो-नाबूद करें तो
फिर आप ज़िंदा रहेंगे। 14 जिसकी भी राहनुमाई
रूहुल-क़ुद्स करता है वह अल्लाह का फ़रज़ंद है।
15 क्योंकि अल्लाह ने जो रूह आपको दिया है
उसने आपको ग़ुलाम बनाकर ख़ौफ़ज़दा हालत
में नहीं रखा बल्कि आपको अल्लाह के फ़रज़ंद
बना दिया है, और उसी के ज़रीए हम पुकारकर
अल्लाह को “अब्बा” यानी “ऐ बाप” कह सकते
हैं। 16 रूहुल-क़ुद्स ख़ुद हमारी रूह के साथ
मिलकर गवाही देता है कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद
हैं। 17 और चूँकि हम उसके फ़रज़ंद हैं इसलिए
हम वारिस हैं, अल्लाह के वारिस और मसीह के
हममीरास। क्योंकि अगर हम मसीह के दुख में
शरीक हों तो उसके जलाल में भी शरीक होंगे।

आइंदा का जलाल

18 मेरे ख़याल में हमारा मौजूदा दुख उस
आनेवाले जलाल की निसबत कुछ भी नहीं जो
हम पर ज़ाहिर होगा। 19 हाँ, तमाम कायनात यह
देखने के लिए तड़पती है कि अल्लाह के फ़रज़ंद
ज़ाहिर हो जाएँ, 20 क्योंकि कायनात अल्लाह
की लानत के तहत आकर फ़ानी हो गई है। यह
उस की अपनी नहीं बल्कि अल्लाह की मरज़ी
थी जिसने उस पर यह लानत भेजी। तो भी यह
उम्मीद दिलाई गई 21 कि एक दिन कायनात को
ख़ुद उस की फ़ानी हालत की ग़ुलामी से छुड़ाया
जाएगा। उस वक़्त वह अल्लाह के फ़रज़ंदों की
जलाली आज़ादी में शरीक हो जाएगी। 22 क्योंकि
हम जानते हैं कि आज तक तमाम कायनात
कराहती और दर्दे-ज़ह में तड़पती रहती है। 23 न
सिर्फ़ कायनात बल्कि हम ख़ुद भी अंदर ही अंदर
कराहते हैं, गो हमें आनेवाले जलाल का पहला
फल रूहुल-क़ुद्स की सूरत में मिल चुका है।
हम कराहते कराहते शिद्दत से इस इंतज़ार में हैं
कि यह बात ज़ाहिर हो जाए कि हम अल्लाह
के फ़रज़ंद हैं और हमारे बदनों को नजात मिले।
24 क्योंकि नजात पाते वक़्त हमें यह उम्मीद
दिलाई गई। लेकिन अगर वह कुछ नज़र आ
चुका होता जिसकी उम्मीद हम रखते तो यह
दर-हक़ीक़त उम्मीद न होती। कौन उस की उम्मीद
रखे जो उसे नज़र आ चुका है? 25 लेकिन चूँकि
हम उस की उम्मीद रखते हैं जो अभी नज़र नहीं
आया तो लाज़िम है कि हम सब्र से उसका इंतज़ार
करें।

26 इसी तरह रूहुल-क़ुद्स भी हमारी कमज़ोर
हालत में हमारी मदद करता है, क्योंकि हम नहीं
जानते कि किस तरह मुनासिब दुआ माँगें। लेकिन
रूहुल-क़ुद्स ख़ुद नाक़ाबिले-बयान आहें भरते हुए
हमारी शफ़ाअत करता है। 27 और ख़ुदा बाप जो
तमाम दिलों की तहक़ीक़ करता है रूहुल-क़ुद्स
की सोच को जानता है, क्योंकि पाक रूह अल्लाह
की मरज़ी के मुताबिक़ मुक़द्दसीन की शफ़ाअत
करता है।

28 और हम जानते हैं कि जो अल्लाह से
मुहब्बत रखते हैं उनके लिए सब कुछ मिलकर
भलाई का बाइस बनता है, उनके लिए जो उसके
इरादे के मुताबिक़ बुलाए गए हैं। 29 क्योंकि
अल्लाह ने पहले से अपने लोगों को चुन लिया,
उसने पहले से उन्हें इसके लिए मुक़र्रर किया
कि वह उसके फ़रज़ंद के हमशक्ल बन जाएँ
और यों मसीह बहुत-से भाइयों में पहलौठा हो।
30 लेकिन जिन्हें उसने पहले से मुक़र्रर किया उन्हें
उसने बुलाया भी, जिन्हें उसने बुलाया उन्हें उसने
रास्तबाज़ भी ठहराया और जिन्हें उसने रास्तबाज़
ठहराया उन्हें उसने जलाल भी बख़्शा।

अल्लाह की मसीह में मुहब्बत

31 इन तमाम बातों के जवाब में हम क्या कहें?
अगर अल्लाह हमारे हक़ में है तो कौन हमारे
ख़िलाफ़ हो सकता है? 32 उसने अपने फ़रज़ंद
को भी दरेग़ न किया बल्कि उसे हम सबके
लिए दुश्मन के हवाले कर दिया। जिसने हमें
अपने फ़रज़ंद को दे दिया क्या वह हमें उसके
साथ सब कुछ मुफ़्त नहीं देगा? 33 अब कौन
अल्लाह के चुने हुए लोगों पर इलज़ाम लगाएगा
जब अल्लाह ख़ुद उन्हें रास्तबाज़ क़रार देता है?
34 कौन हमें मुजरिम ठहराएगा जब मसीह ईसा
ने हमारे लिए अपनी जान दी? बल्कि हमारी
ख़ातिर इससे भी ज़्यादा हुआ। उसे ज़िंदा किया
गया और वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया,
जहाँ वह हमारी शफ़ाअत करता है। 35 ग़रज़ कौन
हमें मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा? क्या
कोई मुसीबत, तंगी, ईज़ारसानी, काल, नंगापन,
ख़तरा या तलवार? 36 जैसे कलामे-मुक़द्दस में
लिखा है, "तेरी ख़ातिर हमें दिन-भर मौत का
सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होनेवाली
भेड़ों के बराबर समझते हैं।" 37 कोई बात नहीं,
क्योंकि मसीह हमारे साथ है और हमसे मुहब्बत
रखता है। उसके वसीले से हम इन सब ख़तरों

के रूबरू ज़बरदस्त फ़तह पाते हैं। 38 क्योंकि
मुझे यक़ीन है कि हमें उस की मुहब्बत से कोई
चीज़ जुदा नहीं कर सकती : न मौत और न
ज़िंदगी, न फ़रिश्ते और न हुक्मरान, न हाल और
न मुस्तक़बिल, न ताक़तें, 39 न नशेब और न
फ़राज़, न कोई और मख़लूक़ हमें अल्लाह की
उस मुहब्बत से जुदा कर सकेगी जो हमें हमारे
ख़ुदावंद मसीह ईसा में हासिल है।

अल्लाह और उस की क़ौम

9 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूट नहीं
बोलता, और मेरा ज़मीर भी रूहुल-क़ुद्स
में इसकी गवाही देता है 2 कि मैं दिल में
अपने यहूदी हमवतनों के लिए शदीद ग़म और
मुसलसल दर्द महसूस करता हूँ। 3 काश मेरे भाई
और ख़ूनी रिश्तेदार नजात पाएँ! इसके लिए मैं
ख़ुद मलऊन और मसीह से जुदा होने के लिए
भी तैयार हूँ। 4 अल्लाह ने उन्हीं को जो इसराईली
हैं अपने फ़रज़ंद बनने के लिए मुक़र्रर किया था।
उन्हीं पर उसने अपना जलाल ज़ाहिर किया, उन्हीं
के साथ अपने अहद बाँधे और उन्हीं को शरीअत
अता की। वही हक़ीक़ी इबादत और अल्लाह के
वादों के हक़दार हैं, 5 वही इब्राहीम और याक़ूब
की औलाद हैं और उन्हीं में से जिस्मानी लिहाज़ से
मसीह आया। अल्लाह की तमजीदो-तारीफ़ अबद
तक हो जो सब पर हुकूमत करता है! आमीन।

6 कहने का मतलब यह नहीं कि अल्लाह अपना
वादा पूरा न कर सका। बात यह नहीं है बल्कि
यह कि वह सब हक़ीक़ी इसराईली नहीं हैं जो
इसराईली क़ौम से हैं। 7 और सब इब्राहीम की
हक़ीक़ी औलाद नहीं हैं जो उस की नसल से हैं।
क्योंकि अल्लाह ने कलामे-मुक़द्दस में इब्राहीम
से फ़रमाया, “तेरी नसल इसहाक़ ही से क़ायम
रहेगी।” 8 चुनाँचे लाज़िम नहीं कि इब्राहीम की
तमाम फ़ितरती औलाद अल्लाह के फ़रज़ंद हों
बल्कि सिर्फ़ वही इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद
समझे जाते हैं जो अल्लाह के वादे के मुताबिक़
उसके फ़रज़ंद बन गए हैं। 9 और वादा यह था,
“मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के
बेटा होगा।”

10 लेकिन न सिर्फ़ सारा के साथ ऐसा हुआ
बल्कि इसहाक़ की बीवी रिबक़ा के साथ भी।
एक ही मर्द यानी हमारे बाप इसहाक़ से उसके
जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए। 11 लेकिन बच्चे अभी पैदा
नहीं हुए थे न उन्होंने कोई नेक या बुरा काम किया
था कि माँ को अल्लाह से एक पैग़ाम मिला। इस
पैग़ाम से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह लोगों को
अपने इरादे के मुताबिक़ चुन लेता है। 12 और
उसका यह चुनाव उनके नेक आमाल पर मबनी
नहीं होता बल्कि उसके बुलावे पर। पैग़ाम यह
था, “बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।” 13 यह भी
कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “याक़ूब मुझे प्यारा
था, जबकि एसौ से मैं मुतनफ़्फ़िर रहा।”

14 क्या इसका मतलब यह है कि अल्लाह
बेइनसाफ़ है? हरगिज़ नहीं! 15 क्योंकि उसने
मूसा से कहा, “मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ
उस पर मेहरबान होता हूँ और जिस पर रहम करना
चाहूँ उस पर रहम करता हूँ।” 16 चुनाँचे सब कुछ
अल्लाह के रहम पर ही मबनी है। इसमें इनसान
की मरज़ी या कोशिश का कोई दख़ल नहीं।
17 यों अल्लाह अपने कलाम में मिसर के बादशाह
फ़िरौन से मुख़ातिब होकर फ़रमाता है, “मैंने तुझे
इसलिए बरपा किया है कि तुझमें अपनी क़ुदरत
का इज़हार करूँ और यों तमाम दुनिया में मेरे नाम
का प्रचार किया जाए।” 18 ग़रज़, यह अल्लाह ही
की मरज़ी है कि वह किस पर रहम करे और किस
को सख़्त कर दे।

अल्लाह का ग़ज़ब और रहम

19 शायद कोई कहे, “अगर यह बात है तो
फिर अल्लाह किस तरह हम पर इलज़ाम लगा
सकता है जब हमसे ग़लतियाँ होती हैं? हम तो
उस की मरज़ी का मुक़ाबला नहीं कर सकते।”
20 यह न कहें। आप इनसान होते हुए कौन
हैं कि अल्लाह के साथ बहस-मुबाहसा करें?
क्या जिसको तश्कील दिया गया है वह तश्कील

देनेवाले से कहता है, “तूने मुझे इस तरह क्यों
बना दिया?” 21 क्या कुम्हार का हक़ नहीं है कि
गारे के एक ही लौंदे से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के बरतन
बनाए, कुछ बाइज़्ज़त इस्तेमाल के लिए और कुछ
ज़िल्लतआमेज़ इस्तेमाल के लिए? 22 यह बात
अल्लाह पर भी सादिक़ आती है। गो वह अपना
ग़ज़ब नाज़िल करना और अपनी क़ुदरत ज़ाहिर
करना चाहता था, लेकिन उसने बड़े सब्रो-तहम्मुल
से वह बरतन बरदाश्त किए जिन पर उसका ग़ज़ब
आना है और जो हलाकत के लिए तैयार किए
गए हैं। 23 उसने यह इसलिए किया ताकि अपना
जलाल कसरत से उन बरतनों पर ज़ाहिर करे जिन
पर उसका फ़ज़्ल है और जो पहले से जलाल
पाने के लिए तैयार किए गए हैं। 24 और हम
उनमें से हैं जिनको उसने चुन लिया है, न सिर्फ़
यहूदियों में से बल्कि ग़ैरयहूदियों में से भी। 25 यों
वह ग़ैरयहूदियों के नाते से होसेअ की किताब में
फ़रमाता है,

“मैं उसे ‘मेरी क़ौम’ कहूँगा
जो मेरी क़ौम न थी,
और उसे ‘मेरी प्यारी’ कहूँगा
जो मुझे प्यारी न थी।”
26 और “जहाँ उन्हें बताया गया
कि ‘तुम मेरी क़ौम नहीं’
वहाँ वह ‘ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद’
कहलाएँगे।”

27 और यसायाह नबी इसराईल के बारे में
पुकारता है, “गो इसराईली साहिल पर की रेत
जैसे बेशुमार क्यों न हों तो भी सिर्फ़ एक बचे हुए
हिस्से को नजात मिलेगी। 28 क्योंकि रब अपना
फ़रमान मुकम्मल तौर पर और तेज़ी से दुनिया में
पूरा करेगा।” 29 यसायाह ने यह बात एक और
पेशगोई में भी की, “अगर रब्बुल-अफ़वाज हमारी
कुछ औलाद ज़िंदा न छोड़ता तो हम सदूम की
तरह मिट जाते, हमारा अमूरा जैसा सत्यानास हो
जाता।”

इसराईल के लिए पौलुस की दुआ

30 इससे हम क्या कहना चाहते हैं? यह कि गो
ग़ैरयहूदी रास्तबाज़ी की तलाश में न थे तो भी उन्हें
रास्तबाज़ी हासिल हुई, ऐसी रास्तबाज़ी जो ईमान
से पैदा हुई। 31 इसके बरअक्स इसराईलियों को
यह हासिल न हुई, हालाँकि वह ऐसी शरीअत
की तलाश में रहे जो उन्हें रास्तबाज़ ठहराए।
32 इसकी क्या वजह थी? यह कि वह अपनी
तमाम कोशिशों में ईमान पर इनहिसार नहीं करते
थे बल्कि अपने नेक आमाल पर। उन्होंने राह में
पड़े पत्थर से ठोकर खाई। 33 यह बात कलामे-
मुक़द्दस में लिखी भी है,

“देखो मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ
जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चट्टान जो ठेस लगने का सबब होगी।
लेकिन जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शरमिंदा नहीं किया जाएगा।”

10 भाइयो, मेरी दिली आरज़ू और
मेरी अल्लाह से दुआ यह है कि
इसराईलियों को नजात मिले। 2 मैं इसकी
तसदीक़ कर सकता हूँ कि वह अल्लाह की ग़ैरत
रखते हैं। लेकिन इस ग़ैरत के पीछे रूहानी समझ
नहीं होती। 3 वह उस रास्तबाज़ी से नावाक़िफ़ रहे
हैं जो अल्लाह की तरफ़ से है। इसकी बजाए वह
अपनी ज़ाती रास्तबाज़ी क़ायम करने की कोशिश
करते रहे हैं। यों उन्होंने अपने आपको अल्लाह की
रास्तबाज़ी के ताबे नहीं किया। 4 क्योंकि मसीह में
शरीअत का मक़सद पूरा हो गया, हाँ वह अंजाम
तक पहुँच गई है। चुनाँचे जो भी मसीह पर ईमान
रखता है वही रास्तबाज़ ठहरता है।

सबके लिए रास्तबाज़ी

5 मूसा ने उस रास्तबाज़ी के बारे में लिखा जो
शरीअत से हासिल होती है, “जो शख़्स यों करेगा
वह जीता रहेगा।” 6 लेकिन जो रास्तबाज़ी ईमान
से हासिल होती है वह कहती है, “अपने दिल
में न कहना कि ‘कौन आसमान पर चढ़ेगा?’
(ताकि मसीह को नीचे ले आए)। 7 यह भी न

कहना कि 'कौन पाताल में उतरेगा?' (ताकि
मसीह को मुरदों में से वापस ले आए)।" 8 तो
फिर क्या करना चाहिए? ईमान की रास्तबाज़ी
फ़रमाती है, "यह कलाम तेरे क़रीब बल्कि तेरे मुँह
और दिल में मौजूद है।" कलाम से मुराद ईमान
का वह पैग़ाम है जो हम सुनाते हैं। 9 यानी यह
कि अगर तू अपने मुँह से इक़रार करे कि ईसा
ख़ुदावंद है और दिल से ईमान लाए कि अल्लाह
ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया तो तुझे नजात
मिलेगी। 10 क्योंकि जब हम दिल से ईमान लाते
हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है, और
जब हम अपने मुँह से इक़रार करते हैं तो हमें
नजात मिलती है। 11 यों कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता
है, "जो भी उस पर ईमान लाए उसे शरमिंदा नहीं
किया जाएगा।" 12 इसमें कोई फ़रक़ नहीं कि
वह यहूदी हो या ग़ैरयहूदी। क्योंकि सबका एक
ही ख़ुदावंद है, जो फ़ैयाज़ी से हर एक को देता है
जो उसे पुकारता है। 13 क्योंकि "जो भी ख़ुदावंद
का नाम लेगा नजात पाएगा।"

14 लेकिन वह किस तरह उसे पुकार सकेंगे
अगर वह उस पर कभी ईमान नहीं लाए? और
वह किस तरह उस पर ईमान ला सकते हैं अगर
उन्होंने कभी उसके बारे में सुना नहीं? और
वह किस तरह उसके बारे में सुन सकते हैं अगर
किसी ने उन्हें यह पैग़ाम सुनाया नहीं? 15 और
सुनानेवाले किस तरह दूसरों के पास जाएंगे अगर
उन्हें भेजा न गया? इसलिए कलामे-मुक़द्दस
फ़रमाता है, "उनके क़दम कितने प्यारे हैं जो
ख़ुशख़बरी सुनाते हैं।" 16 लेकिन सबने अल्लाह
की यह ख़ुशख़बरी क़बूल नहीं की। यों यसायाह
नबी फ़रमाता है, "ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर
ईमान लाया?" 17 ग़रज़, ईमान पैग़ाम सुनने से
पैदा होता है, यानी मसीह का कलाम सुनने से।

18 तो फिर सवाल यह है कि क्या इसराई-
लियों ने यह पैग़ाम नहीं सुना? उन्होंने इसे ज़रूर
सुना। कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

"उनकी आवाज़ निकल कर
पूरी दुनिया में सुनाई दी,
उनके अलफ़ाज़
दुनिया की इंतहा तक पहुँच गए।"

19 तो क्या इसराईल को इस बात की समझ न
आई? नहीं, उसे ज़रूर समझ आई। पहले मूसा
इसका जवाब देता है,

"मैं ख़ुद ही तुम्हें ग़ैरत दिलाऊँगा,
एक ऐसी क़ौम के ज़रीए
जो हक़ीक़त में क़ौम नहीं है।
एक नादान क़ौम के ज़रीए
मैं तुम्हें ग़ुस्सा दिलाऊँगा।"

20 और यसायाह नबी यह कहने की जुर्रत
करता है,

"जो मुझे तलाश नहीं करते थे
उन्हें मैंने मुझे पाने का मौक़ा दिया,
जो मेरे बारे में दरियाफ़्त नहीं करते थे
उन पर मैं ज़ाहिर हुआ।"

21 लेकिन इसराईल के बारे में
वह फ़रमाता है,

"दिन-भर मैंने अपने हाथ फैलाए रखे
ताकि एक नाफ़रमान और सरकश क़ौम
का इस्तक़बाल करूँ।"

इसराईल पर अल्लाह का रहम

11 तो क्या इसका यह मतलब है कि
अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया
है? हरगिज़ नहीं! मैं तो ख़ुद इसराईली हूँ।
इब्राहीम मेरा भी बाप है, और मैं बिनयमीन के
क़बीले का हूँ। 2 अल्लाह ने अपनी क़ौम को
पहले से चुन लिया था। वह किस तरह उसे रद्द
करेगा! क्या आपको मालूम नहीं कि कलामे-
मुक़द्दस में इलियास नबी के बारे में क्या लिखा
है? इलियास ने अल्लाह के सामने इसराईली
क़ौम की शिकायत करके कहा, 3 "ऐ रब, उन्होंने
तेरे नबियों को क़त्ल किया और तेरी क़ुरबानगाहों
को गिरा दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और
वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।" 4 इस पर
अल्लाह ने उसे क्या जवाब दिया? "मैंने अपने
लिए 7,000 मर्दों को बचा लिया है जिन्होंने अपने

घुटने बाल देवता के सामने नहीं टेके।” 5 आज भी
यही हालत है। इसराईल का एक छोटा हिस्सा बच
गया है जिसे अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से चुन लिया
है। 6 और चूँकि यह अल्लाह के फ़ज़ल से हुआ है
इसलिए यह उनकी अपनी कोशिशों से नहीं हुआ।
वरना फ़ज़ल फ़ज़ल ही न रहता।

7 ग़रज़, जिस चीज़ की तलाश में इसराईल
रहा वह पूरी क़ौम को हासिल नहीं हुई बल्कि
सिर्फ़ उसके एक चुने हुए हिस्से को। बाक़ी सबको
फ़ज़ल के बारे में बेहिस कर दिया गया, 8 जिस
तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

“आज तक अल्लाह ने उन्हें
ऐसी हालत में रखा है
कि उनकी रूह मदहोश है,
उनकी आँखें देख नहीं सकतीं
और उनके कान सुन नहीं सकते।”

9 और दाऊद फ़रमाता है,

“उनकी मेज़
उनके लिए फंदा और जाल बन जाए,
इससे वह ठोकर खाकर
अपने ग़लत कामों का मुआवज़ा पाएँ।
10 उनकी आँखें तारीक हो जाएँ
ताकि वह देख न सकें,
उनकी कमर हमेशा झुकी रहे।”

11 तो क्या अल्लाह की क़ौम ठोकर खाकर यों
गिर गई कि कभी बहाल नहीं होगी? हरगिज़
नहीं! उस की ख़ताओं की वजह से अल्लाह ने
ग़ैरयहूदियों को नजात पाने का मौक़ा दिया ताकि
इसराईली ग़ैरत खाएँ। 12 यों यहूदियों की ख़ताएँ
दुनिया के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गईं,
और उनका नुक़सान ग़ैरयहूदियों के लिए भरपूर
बरकत का बाइस बन गया। तो फिर यह बरकत
कितनी और ज़्यादा होगी जब यहूदियों की पूरी
तादाद इसमें शामिल हो जाएगी!

ग़ैरयहूदियों की नजात

13 आपको जो ग़ैरयहूदी हैं मैं यह बताता हूँ,
अल्लाह ने मुझे ग़ैरयहूदियों के लिए रसूल बनाया
है, इसलिए मैं अपनी इस ख़िदमत पर ज़ोर देता
हूँ। 14 क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरी क़ौम के लोग
यह देखकर ग़ैरत खाएँ और उनमें से कुछ बच
जाएँ। 15 जब उन्हें रद्द किया गया तो बाक़ी दुनिया
की अल्लाह के साथ सुलह हो गई। तो फिर क्या
होगा जब उन्हें दुबारा क़बूल किया जाएगा? यह
मुरदों में से जी उठने के बराबर होगा!

16 जब आप फ़सल के पहले आटे से रोटी
बनाकर अल्लाह के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करते
हैं तो बाक़ी सारा आटा भी मख़सूसो-मुक़द्दस है।
और जब दरख़्त की जड़ें मुक़द्दस हैं तो उस की
शाख़ें भी मुक़द्दस हैं। 17 ज़ैतून के दरख़्त की कुछ
शाख़ें तोड़ दी गई हैं और उनकी जगह जंगली
ज़ैतून के दरख़्त की एक शाख़ पैवंद की गई है।
आप ग़ैरयहूदी इस जंगली शाख़ से मुताबिक़त
रखते हैं। जिस तरह यह दूसरे दरख़्त की जड़ से
रस और तक़वियत पाती है उसी तरह आप भी
यहूदी क़ौम की रूहानी जड़ से तक़वियत पाते हैं।
18 चुनाँचे आपका दूसरी शाख़ों के सामने शेख़ी
मारने का हक़ नहीं। और अगर आप शेख़ी मारें
तो यह ख़याल करें कि आप जड़ को क़ायम नहीं
रखते बल्कि जड़ आपको।

19 शायद आप इस पर एतराज़ करें, “हाँ,
लेकिन दूसरी शाख़ें तोड़ी गईं ताकि मैं पैवंद किया
जाऊँ।” 20 बेशक, लेकिन याद रखें, दूसरी शाख़ें
इसलिए तोड़ी गईं कि वह ईमान नहीं रखती
थीं और आप इसलिए उनकी जगह लगे हैं कि
आप ईमान रखते हैं। चुनाँचे अपने आप पर
फ़ख़र न करें बल्कि ख़ौफ़ रखें। 21 अल्लाह ने
असली शाख़ें बचने न दीं। अगर आप इस तरह
की हरकतें करें तो क्या वह आपको छोड़ देगा?
22 यहाँ हमें अल्लाह की मेहरबानी और सख़्ती
नज़र आती है—जो गिर गए हैं उनके सिलसिले
में उस की सख़्ती, लेकिन आपके सिलसिले में
उस की मेहरबानी। और यह मेहरबानी रहेगी जब
तक आप उस की मेहरबानी से लिपटे रहेंगे।
वरना आपको भी दरख़्त से काट डाला जाएगा।
23 और अगर यहूदी अपने कुफ़र से बाज़ आएँ

तो उनकी पैवंदकारी दुबारा दरख़्त के साथ की
जाएगी, क्योंकि अल्लाह ऐसा करने पर क़ादिर
है। 24 आख़िर आप ख़ुद क़ुदरती तौर पर ज़ैतून
के जंगली दरख़्त की शाख़ थे जिसे अल्लाह ने
तोड़कर क़ुदरती क़वानीन के ख़िलाफ़ ज़ैतून के
असल दरख़्त पर लगाया। तो फिर वह कितनी
ज़्यादा आसानी से यहूदियों की तोड़ी गई शाख़ें
दुबारा उनके अपने दरख़्त में लगा देगा!

अल्लाह का रहम सब पर

25 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप एक भेद
से वाक़िफ़ हो जाएँ, क्योंकि यह आपको अपने
आपको दाना समझने से बाज़ रखेगा। भेद यह है
कि इसराईल का एक हिस्सा अल्लाह के फ़ज़ल
के बारे में बेहिस हो गया है, और उस की यह
हालत उस वक़्त तक रहेगी जब तक ग़ैरयहूदियों
की पूरी तादाद अल्लाह की बादशाही में दाख़िल
न हो जाए। 26 फिर पूरा इसराईल नजात पाएगा।
यह कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है,

“छुड़ानेवाला सिय्यून से आएगा।
वह बेदीनी को याक़ूब से हटा देगा।
27 और यह मेरा उनके साथ अहद होगा
जब मैं उनके गुनाहों को
उनसे दूर करूँगा।”

28 चूँकि यहूदी अल्लाह की ख़ुशख़बरी क़बूल
नहीं करते इसलिए वह अल्लाह के दुश्मन हैं, और
यह बात आपके लिए फ़ायदे का बाइस बन गई है।
तो भी वह अल्लाह को प्यारे हैं, इसलिए कि उसने
उनके बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब
को चुन लिया था। 29 क्योंकि जब भी अल्लाह
किसी को अपनी नेमतों से नवाज़कर बुलाता है
तो उस की यह नेमतें और बुलावे कभी नहीं मिटने
की। 30 माज़ी में ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे नहीं
थे, लेकिन अब अल्लाह ने आप पर यहूदियों की
नाफ़रमानी की वजह से रहम किया है। 31 अब
इसके उलट है कि यहूदी ख़ुद आप पर किए गए
रहम की वजह से अल्लाह के ताबे नहीं हैं, और
लाज़िम है कि अल्लाह उन पर भी रहम करे।
32 क्योंकि उसने सबको नाफ़रमानी के क़ैदी बना
दिया है ताकि सब पर रहम करे।

अल्लाह की तमजीद

33 वाह! अल्लाह की दौलत, हिकमत और
इल्म क्या ही गहरा है। कौन उसके फ़ैसलों की तह
तक पहुँच सकता है! कौन उस की राहों का खोज
लगा सकता है! 34 कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता
है,

“किसने रब की सोच को जाना?
या कौन इतना इल्म रखता है
कि वह उसे मशवरा दे?
35 क्या किसी ने कभी उसे कुछ दिया
कि उसे इसका मुआवज़ा देना पड़े?”

36 क्योंकि सब कुछ उसी ने पैदा किया है, सब
कुछ उसी के ज़रीए और उसी के जलाल के लिए
क़ायम है। उसी की तमजीद अबद तक होती रहे!
आमीन।

पूरी ज़िंदगी अल्लाह की ख़िदमत में

12 भाइयो, अल्लाह ने आप पर कितना
रहम किया है! अब ज़रूरी है कि आप
अपने बदनों को अल्लाह के लिए मख़सूस करें,
कि वह एक ऐसी ज़िंदा और मुक़द्दस क़ुरबानी बन
जाएँ जो उसे पसंद आए। ऐसा करने से आप उस
की माक़ूल इबादत करेंगे। 2 इस दुनिया के साँचे
में न ढल जाएँ बल्कि अल्लाह को आपकी सोच
की तजदीद करने दें ताकि आप वह शक्लो-सूरत
अपना सकें जो उसे पसंद है। फिर आप अल्लाह
की मरज़ी को पहचान सकेंगे, वह कुछ जो अच्छा,
पसंदीदा और कामिल है।

3 उस रहम की बिना पर जो अल्लाह ने मुझ
पर किया मैं आपमें से हर एक को हिदायत देता
हूँ कि अपनी हक़ीक़ी हैसियत को जानकर अपने
आपको इससे ज़्यादा न समझें। क्योंकि जिस
पैमाने से अल्लाह ने हर एक को ईमान बख़्शा
है उसी के मुताबिक़ वह समझदारी से अपनी
हक़ीक़ी हैसियत को जान ले। 4 हमारे एक ही

जिस्म में बहुत-से आज़ा हैं, और हर एक अज़ु का
फ़रक़ फ़रक़ काम होता है। 5 इसी तरह गो हम
बहुत हैं, लेकिन मसीह में एक ही बदन हैं, जिसमें
हर अज़ु दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है। 6 अल्लाह ने
अपने फ़ज़ल से हर एक को मुख़्तलिफ़ नेमतों से
नवाज़ा है। अगर आपकी नेमत नबुव्वत करना है
तो अपने ईमान के मुताबिक़ नबुव्वत करें। 7 अगर
आपकी नेमत ख़िदमत करना है तो ख़िदमत करें।
अगर आपकी नेमत तालीम देना है तो तालीम दें।
8 अगर आपकी नेमत हौसलाअफ़्ज़ाई करना है तो
हौसलाअफ़्ज़ाई करें। अगर आपकी नेमत दूसरों
की ज़रूरियात पूरी करना है तो ख़ुलूसदिली से
यही करें। अगर आपकी नेमत राहनुमाई करना
है तो सरगरमी से राहनुमाई करें। अगर आपकी
नेमत रहम करना है तो ख़ुशी से रहम करें।

9 आपकी मुहब्बत महज़ दिखावे की न हो। जो
कुछ बुरा है उससे नफ़रत करें और जो कुछ अच्छा
है उसके साथ लिपटे रहें। 10 आपकी एक दूसरे
के लिए बरादराना मुहब्बत सरगरम हो। एक दूसरे
की इज़्ज़त करने में आप ख़ुद पहला क़दम उठाएँ।
11 आपका जोश ढीला न पड़ जाए बल्कि रूहानी
सरगरमी से ख़ुदावंद की ख़िदमत करें। 12 उम्मीद
में ख़ुश, मुसीबत में साबितक़दम और दुआ में लगे
रहें। 13 जब मुक़द्दसीन ज़रूरतमंद हैं तो उनकी
मदद करने में शरीक हों। मेहमान-नवाज़ी में लगे
रहें।

14 जो आपको ईज़ा पहुँचाएँ उनको बरकत
दें। उन पर लानत मत करें बल्कि बरकत चाहें।
15 ख़ुशी मनानेवालों के साथ ख़ुशी मनाएँ और
रोनेवालों के साथ रोएँ। 16 एक दूसरे के साथ
अच्छे ताल्लुक़ात रखें। ऊँची सोच न रखें बल्कि
दबे हुओं से रिफ़ाक़त रखें। अपने आपको दाना
मत समझें।

17 अगर कोई आपसे बुरा सुलूक करे तो बदले
में उससे बुरा सुलूक न करना। ध्यान रखें कि
जो कुछ सबकी नज़र में अच्छा है वही अमल में
लाएँ। 18 अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करें कि
जहाँ तक मुमकिन हो सबके साथ मेल-मिलाप
रखें। 19 अज़ीज़ो, इंतक़ाम मत लें बल्कि अल्लाह
के ग़ज़ब को बदला लेने का मौक़ा दें। क्योंकि
कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "रब फ़रमाता है,
इंतक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।"
20 इसके बजाए "अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो
उसे खाना खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला।
क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सर पर जलते हुए
कोयलों का ढेर लगाएगा।" 21 अपने पर बुराई
को ग़ालिब न आने दें बल्कि भलाई से आप बुराई
पर ग़ालिब आएँ।

रिआया के फ़रायज़

13 हर शख़्स इख़्तियार रखनेवाले
हुक्मरानों के ताबे रहे, क्योंकि तमाम
इख़्तियार अल्लाह की तरफ़ से है। जो इख़्तियार
रखते हैं उन्हें अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किया
गया है। 2 चुनाँचे जो हुक्मरान की मुख़ालफ़त
करता है वह अल्लाह के फ़रमान की मुख़ालफ़त
करता और यों अपने आप पर अल्लाह की
अदालत लाता है। 3 क्योंकि हुक्मरान उनके लिए
ख़ौफ़ का बाइस नहीं होते जो सहीह काम करते
हैं बल्कि उनके लिए जो ग़लत काम करते हैं।
क्या आप हुक्मरान से ख़ौफ़ खाए बग़ैर ज़िंदगी
गुज़ारना चाहते हैं? तो फिर वह कुछ करें जो
अच्छा है तो वह आपको शाबाश देगा। 4 क्योंकि
वह अल्लाह का ख़ादिम है जो आपकी बेहतरी के
लिए ख़िदमत करता है। लेकिन अगर आप ग़लत
काम करें तो डरें, क्योंकि वह अपनी तलवार
को ख़ाहमख़ाह थामे नहीं रखता। वह अल्लाह
का ख़ादिम है और उसका ग़ज़ब ग़लत काम
करनेवाले पर नाज़िल होता है। 5 इसलिए लाज़िम
है कि आप हुकूमत के ताबे रहें, न सिर्फ़ सज़ा
से बचने के लिए बल्कि इसलिए भी कि आपके
ज़मीर पर दाग़ न लगे।

6 यही वजह है कि आप टैक्स अदा करते हैं,
क्योंकि सरकारी मुलाज़िम अल्लाह के ख़ादिम हैं
जो इस ख़िदमत को सरंजाम देने में लगे रहते हैं।
7 चुनाँचे हर एक को वह कुछ दें जो उसका हक़

है, टैक्स लेनेवाले को टैक्स और कस्टम ड्यूटी
लेनेवाले को कस्टम ड्यूटी। जिसका ख़ौफ़ रखना
आप पर फ़र्ज़ है उसका ख़ौफ़ मानें और जिसका
एहतराम करना आप पर फ़र्ज़ है उसका एहतराम
करें।

एक दूसरे के लिए फ़रायज़

8 किसी के भी क़र्ज़दार न रहें। सिर्फ़ एक क़र्ज़
है जो आप कभी नहीं उतार सकते, एक दूसरे
से मुहब्बत रखने का क़र्ज़। यह करते रहें क्योंकि
जो दूसरों से मुहब्बत रखता है उसने शरीअत के
तमाम तक़ाज़े पूरे किए हैं। 9 मसलन शरीअत में
लिखा है, "क़त्ल न करना, ज़िना न करना, चोरी
न करना, लालच न करना।" और दीगर जितने
अहकाम हैं इस एक ही हुक्म में समाए हुए हैं कि
"अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू
अपने आपसे रखता है।" 10 जो किसी से मुहब्बत
रखता है वह उससे ग़लत सुलूक नहीं करता। यों
मुहब्बत शरीअत के तमाम तक़ाज़े पूरे करती है।

11 ऐसा करना लाज़िम है, क्योंकि आप ख़ुद
इस वक़्त की अहमियत को जानते हैं कि नींद
से जाग उठने की घड़ी आ चुकी है। क्योंकि जब
हम ईमान लाए थे तो हमारी नजात इतनी क़रीब
नहीं थी जितनी कि अब है। 12 रात ढलनेवाली
है और दिन निकलनेवाला है। इसलिए आएँ, हम
तारीकी के काम गंदे कपड़ों की तरह उतारकर नूर
के हथियार बाँध लें। 13 हम शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ारें,
ऐसे लोगों की तरह जो दिन की रौशनी में चलते
हैं। इसलिए लाज़िम है कि हम इन चीज़ों से बाज़
रहें : बदमस्तों की रंगरलियों और शराबनोशी से,
ज़िनाकारी और ऐयाशी से, और झगड़े और हसद
से। 14 इसके बजाए ख़ुदावंद ईसा मसीह को पहन
लें और अपनी पुरानी फ़ितरत की परवरिश यों न
करें कि गुनाहआलूदा ख़ाहिशात बेदार हो जाएँ।

एक दूसरे को मुजरिम मत ठहराना

14 जिसका ईमान कमज़ोर है उसे क़बूल
करें, और उसके साथ बहस-मुबाहसा
न करें। 2 एक का ईमान तो उसे हर चीज़ खाने की
इजाज़त देता है जबकि कमज़ोर ईमान रखनेवाला
सिर्फ़ सब्ज़ियाँ खाता है। 3 जो सब कुछ खाता है
वह उसे हक़ीर न जाने जो यह नहीं कर सकता।
और जो यह नहीं कर सकता वह उसे मुजरिम न
ठहराए जो सब कुछ खाता है, क्योंकि अल्लाह
ने उसे क़बूल किया है। 4 आप कौन हैं कि किसी
और के ग़ुलाम का फ़ैसला करें? उसका अपना
मालिक फ़ैसला करेगा कि वह खड़ा रहे या गिर
जाए। और वह ज़रूर खड़ा रहेगा, क्योंकि ख़ुदावंद
उसे क़ायम रखने पर क़ादिर है।

5 कुछ लोग एक दिन को दूसरे दिनों की
निसबत ज़्यादा अहम क़रार देते हैं जबकि दूसरे
तमाम दिनों की अहमियत बराबर समझते हैं।
आप जो भी ख़याल रखें, हर एक उसे पूरे यक़ीन
के साथ रखे। 6 जो एक दिन को ख़ास क़रार देता
है वह इससे ख़ुदावंद की ताज़ीम करना चाहता है।
इसी तरह जो सब कुछ खाता है वह इससे ख़ुदावंद
को जलाल देना चाहता है। यह इससे ज़ाहिर होता
है कि वह इसके लिए ख़ुदा का शुक्र करता है।
लेकिन जो कुछ खानों से परहेज़ करता है वह भी
ख़ुदा का शुक्र करके इससे उस की ताज़ीम करना
चाहता है। 7 बात यह है कि हममें से कोई नहीं जो
सिर्फ़ अपने वास्ते ज़िंदगी गुज़ारता है और कोई
नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते मरता है। 8 अगर हम
ज़िंदा हैं तो इसलिए कि ख़ुदावंद को जलाल दें,
और अगर हम मरें तो इसलिए कि हम ख़ुदावंद
को जलाल दें। ग़रज़ हम ख़ुदावंद ही के हैं, ख़ाह
ज़िंदा हों या मुरदा। 9 क्योंकि मसीह इसी मक़सद
के लिए मुआ और जी उठा कि वह मुरदों और
ज़िंदों दोनों का मालिक हो। 10 तो फिर आप जो
सिर्फ़ सब्ज़ी खाते हैं अपने भाई को मुजरिम क्यों
ठहराते हैं? और आप जो सब कुछ खाते हैं अपने
भाई को हक़ीर क्यों जानते हैं? याद रखें कि एक
दिन हम सब अल्लाह के तख़्ते-अदालत के सामने
खड़े होंगे। 11 कलामे-मुक़द्दस में यही लिखा है,

रब फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम,
हर घुटना मेरे सामने झुकेगा

और हर ज़बान
अल्लाह की तमजीद करेगी।”
12 हाँ, हममें से हर एक को अल्लाह के सामने
अपनी ज़िंदगी का जवाब देना पड़ेगा।

दूसरों के लिए गिरने का बाइस न बनना

13 चुनाँचे आएँ, हम एक दूसरे को मुजरिम न
ठहराएँ। पूरे अज़्म के साथ इसका ख़याल रखें
कि आप अपने भाई के लिए ठोकर खाने या गुनाह
में गिरने का बाइस न बनें। 14 मुझे ख़ुदावंद मसीह
में इल्म और यक़ीन है कि कोई भी खाना बज़ाते-
ख़ुद नापाक नहीं है। लेकिन जो किसी खाने को
नापाक समझता है उसके लिए वह खाना नापाक
ही है। 15 अगर आप अपने भाई को अपने किसी
खाने के बाइस परेशान कर रहे हैं तो आप मुहब्बत
की रूह में ज़िंदगी नहीं गुज़ार रहे। अपने भाई
को अपने खाने से हलाक न करें। याद रखें कि
मसीह ने उसके लिए अपनी जान दी है। 16 ऐसा
न हो कि लोग उस अच्छी चीज़ पर कुफ़र बकें
जो आपको मिल गई है। 17 क्योंकि अल्लाह की
बादशाही खाने-पीने की चीज़ों पर क़ायम नहीं है
बल्कि रास्तबाज़ी, सुलह-सलामती और रूहुल-
क़ुद्स में ख़ुशी पर। 18 जो यों मसीह की ख़िदमत
करता है वह अल्लाह को पसंद और इनसानों को
मंज़ूर है।

19 चुनाँचे आएँ, हम पूरी जिद्दो-जहद के साथ
वह कुछ करने की कोशिश करें जो सुलह-
सलामती और एक दूसरे की रूहानी तामीरो-
तरक़्क़ी का बाइस है। 20 अल्लाह का काम किसी
खाने की ख़ातिर बरबाद न करें। हर खाना पाक
है, लेकिन अगर आप कुछ खाते हैं जिससे दूसरे
को ठेस लगे तो यह ग़लत है। 21 बेहतर यह है कि
न आप गोश्त खाएँ, न मै पिएँ और न कोई और
क़दम उठाएँ जिससे आपका भाई ठोकर खाए।
22 जो भी ईमान आप इस नाते से रखते हैं वह
आप और अल्लाह तक महदूद रहे। मुबारक है
वह जो किसी चीज़ को जायज़ क़रार देकर अपने
आपको मुजरिम नहीं ठहराता। 23 लेकिन जो
शक करते हुए कोई खाना खाता है उसे मुजरिम
ठहराया जाता है, क्योंकि उसका यह अमल ईमान
पर मबनी नहीं है। और जो भी अमल ईमान पर
मबनी नहीं होता वह गुनाह है।

बुर्दबारी

15 हम ताक़तवरों का फ़र्ज़ है कि
कमज़ोरों की कमज़ोरियाँ बर-
दाश्त करें। हम सिर्फ़ अपने आपको ख़ुश करने की
ख़ातिर ज़िंदगी न गुज़ारें 2 बल्कि हर एक अपने
पड़ोसी को उस की बेहतरी और रूहानी तामीरो-
तरक़्क़ी के लिए ख़ुश करे। 3 क्योंकि मसीह ने भी
ख़ुद को ख़ुश रखने के लिए ज़िंदगी नहीं गुज़ारी।
कलामे-मुक़द्दस में उसके बारे में यही लिखा है,
“जो तुझे गालियाँ देते हैं उनकी गालियाँ मुझ पर
आ गई हैं।” 4 यह सब कुछ हमें हमारी नसीहत
के लिए लिखा गया ताकि हम साबितक़दमी
और कलामे-मुक़द्दस की हौसलाअफ़्ज़ा बातों से
उम्मीद पाएँ। 5 अब साबितक़दमी और हौसला
देनेवाला ख़ुदा आपको तौफ़ीक़ दे कि आप मसीह
ईसा का नमूना अपनाकर यगांगत की रूह में एक
दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारें। 6 तब ही आप
मिलकर एक ही आवाज़ के साथ ख़ुदा, हमारे
ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप को जलाल दे सकेंगे।

ग़ैरयहूदियों के लिए ख़ुशख़बरी

7 चुनाँचे जिस तरह मसीह ने आपको क़बूल
किया है उसी तरह एक दूसरे को भी क़बूल करें
ताकि अल्लाह को जलाल मिले। 8 याद रखें कि
मसीह अल्लाह की सदाक़त का इज़हार करके
यहूदियों का ख़ादिम बना ताकि उन वादों की
तसदीक़ करे जो इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से
किए गए थे। 9 वह इसलिए भी ख़ादिम बना कि
ग़ैरयहूदी अल्लाह को उस रहम के लिए जलाल
दें जो उसने उन पर किया है। कलामे-मुक़द्दस में
यही लिखा है,

“इसलिए मैं अक़वाम में
तेरी हम्दो-सना करूँगा,

तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।”
10 यह भी लिखा है,
“ऐ दीगर क़ौमो,
उस की उम्मत के साथ ख़ुशी मनाओ!”
11 फिर लिखा है,
“ऐ तमाम अक़वाम, रब की तमजीद करो!
ऐ तमाम उम्मतो, उस की सताइश करो!”
12 और यसायाह नबी यह फ़रमाता है,
“यस्सी की जड़ से
एक कोंपल फूट निकलेगी,
एक ऐसा आदमी उठेगा
जो क़ौमों पर हुकूमत करेगा।
ग़ैरयहूदी उस पर आस रखेंगे।”
13 उम्मीद का ख़ुदा आपको ईमान रखने के
बाइस हर ख़ुशी और सलामती से मामूर करे ताकि
रूहुल-क़ुद्स की क़ुदरत से आपकी उम्मीद बढ़कर
दिल से छलक जाए।

दिलेरी से लिखने की वजह

14 मेरे भाइयो, मुझे पूरा यक़ीन है कि आप
ख़ुद भलाई से मामूर हैं, कि आप हर तरह का
इल्मो-इरफ़ान रखते हैं और एक दूसरे को नसीहत
करने के क़ाबिल भी हैं। 15 तो भी मैंने याद दिलाने
की ख़ातिर आपको कई बातें लिखने की दिलेरी
की है। क्योंकि मैं अल्लाह के फ़ज़्ल से 16 आप
ग़ैरयहूदियों के लिए मसीह ईसा का ख़ादिम
हूँ। और मैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने में
बैतुल-मुक़द्दस के इमाम की-सी ख़िदमत सरंजाम
देता हूँ ताकि आप एक ऐसी क़ुरबानी बन जाएँ
जो अल्लाह को पसंद आए और जिसे रूहुल-
क़ुद्स ने उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया
हो। 17 चुनाँचे मैं मसीह ईसा में अल्लाह के
सामने अपनी ख़िदमत पर फ़ख़र कर सकता हूँ।
18 क्योंकि मैं सिर्फ़ उस काम के बारे में बात करने
की जुर्रत करूँगा जो मसीह ने मेरी मारिफ़त किया
है और जिससे ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे हो गए
हैं। हाँ, मसीह ही ने यह काम कलाम और अमल
से, 19 इलाही निशानों और मोजिज़ों की क़ुव्वत से
और अल्लाह के रूह की क़ुदरत से सरंजाम दिया
है। यों मैंने यरूशलम से लेकर सूबा इल्लुरिकुम
तक सफ़र करते करते अल्लाह की ख़ुशख़बरी
फैलाने की ख़िदमत पूरी की है। 20 और मैं इसे
अपनी इज़्ज़त का बाइस समझा कि ख़ुशख़बरी
वहाँ सुनाऊँ जहाँ मसीह के बारे में ख़बर नहीं
पहुँची। क्योंकि मैं ऐसी बुनियाद पर तामीर नहीं
करना चाहता था जो किसी और ने डाली थी।
21 कलामे-मुक़द्दस यही फ़रमाता है,
“जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया
वह देखेंगे,
और जिन्होंने नहीं सुना
उन्हें समझ आएगी।”

पौलुस का रोम जाने का इरादा

22 यही वजह है कि मुझे इतनी दफ़ा आपके
पास आने से रोका गया है। 23 लेकिन अब मेरी
इन इलाक़ों में ख़िदमत पूरी हो चुकी है। और
चूँकि मैं इतने सालों से आपके पास आने का
आरज़ूमंद रहा हूँ 24 इसलिए अब यह ख़ाहिश
पूरी करने की उम्मीद रखता हूँ। क्योंकि मैंने स्पेन
जाने का मनसूबा बनाया है। उम्मीद है कि रास्ते
में आपसे मिलूँगा और आप आगे के सफ़र के
लिए मेरी मदद कर सकेंगे। लेकिन पहले मैं कुछ
देर के लिए आपकी रिफ़ाक़त से लुत्फ़अंदोज़
होना चाहता हूँ। 25 इस वक़्त मैं यरूशलम जा
रहा हूँ ताकि वहाँ के मुक़द्दसीन की ख़िदमत करूँ।
26 क्योंकि मकिदुनिया और अख़या की जमातों ने
यरूशलम के उन मुक़द्दसीन के लिए हदिया जमा
करने का फ़ैसला किया है जो ग़रीब हैं। 27 उन्होंने
यह ख़ुशी से किया और दरअसल यह उनका फ़र्ज़
भी है। ग़ैरयहूदी तो यहूदियों की रूहानी बरकतों
में शरीक हुए हैं, इसलिए ग़ैरयहूदियों का फ़र्ज़
है कि वह यहूदियों को भी अपनी माली बरकतों
में शरीक करके उनकी ख़िदमत करें। 28 चुनाँचे
अपना यह फ़र्ज़ अदा करने और मक़ामी भाइयों
का यह सारा फल यरूशलम के ईमानदारों तक
पहुँचाने के बाद मैं आपके पास से होता हुआ

स्पेन जाऊँगा। 29 और मैं जानता हूँ कि जब मैं
आपके पास आऊँगा तो मसीह की पूरी बरकत
लेकर आऊँगा।

30 भाइयो, मैं हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
और रूहुल-क़ुद्‌स की मुहब्बत को याद दिलाकर
आपसे मिन्नत करता हूँ कि आप मेरे लिए
अल्लाह से दुआ करें और यों मेरी रूहानी जंग
में शरीक हो जाएँ। 31 इसके लिए दुआ करें कि
मैं सूबा यहूदिया के ग़ैरईमानदारों से बचा रहूँ और
कि मेरी यरूशलम में ख़िदमत वहाँ के मुक़द्दसीन
को पसंद आए। 32 क्योंकि मैं चाहता हूँ कि जब
मैं अल्लाह की मरज़ी से आपके पास आऊँगा
तो मेरे दिल में ख़ुशी हो और हम एक दूसरे की
रिफ़ाक़त से तरो-ताज़ा हो जाएँ। 33 सलामती का
ख़ुदा आप सबके साथ हो। आमीन।

सलामो-दुआ

16 हमारी बहन फ़ीबे आपके पास आ रही
है। वह किंख़रिया शहर की जमात
में ख़ादिमा है। मैं उस की सिफ़ारिश करता हूँ
2 बल्कि ख़ुदावंद में अर्ज़ है कि आप उसका वैसे
ही इस्तक़बाल करें जैसे कि मुक़द्दसीन को करना
चाहिए। जिस मामले में भी उसे आपकी मदद की
ज़रूरत हो उसमें उसका साथ दें, क्योंकि उसने
बहुत लोगों की बल्कि मेरी भी मदद की है।

3 प्रिसकिल्ला और अकविला को मेरा
सलाम देना जो मसीह ईसा में मेरे हम-
ख़िदमत रहे हैं। 4 उन्होंने मेरे लिए अपनी जान
पर खेला। न सिर्फ़ मैं बल्कि ग़ैरयहूदियों की
जमातें उनकी एहसानमंद हैं। 5 उनके घर में जमा
होनेवाली जमात को भी मेरा सलाम देना।

मेरे अज़ीज़ दोस्त इपिनेतुस को मेरा सलाम
देना। वह सूबा आसिया में मसीह का पहला
पैरोकार यानी उस इलाक़े की फ़सल का पहला
फल था। 6 मरियम को मेरा सलाम जिसने आपके
लिए बड़ी मेहनत-मशक़्क़त की है। 7 अंदरूनीकुस
और यूनिया को मेरा सलाम। वह मेरे हमवतन हैं
और जेल में मेरे साथ वक़्त गुज़ारा है। रसूलों में
वह नुमायाँ हैसियत रखते हैं, और वह मुझसे पहले
मसीह के पीछे हो लिए थे।

8 अंपलियातुस को सलाम। वह ख़ुदावंद में
मुझे अज़ीज़ है। 9 मसीह में हमारे हमख़िदमत
उर्बानुस को सलाम और इसी तरह मेरे अज़ीज़
दोस्त इस्तख़ुस को भी। 10 अपेल्लिस को सलाम
जिसकी मसीह के साथ वफ़ादारी को आज़माया
गया है। अरिस्तुबूलुस के घरवालों को सलाम।
11 मेरे हमवतन हेरोदियोन को सलाम और इसी
तरह नरकिस्सुस के उन घरवालों को भी जो
मसीह के पीछे हो लिए हैं।

12 त्रूफ़ेना और त्रूफ़ोसा को सलाम जो ख़ुदावंद
की ख़िदमत में मेहनत-मशक़्क़त करती हैं। मेरी
अज़ीज़ बहन परसिस को सलाम जिसने ख़ुदावंद
की ख़िदमत में बड़ी मेहनत-मशक़्क़त की है।
13 हमारे ख़ुदावंद के चुने हुए भाई रूफ़ुस को
सलाम और इसी तरह उस की माँ को भी
जो मेरी माँ भी है। 14 असिंकरितुस, फ़लिगोन,
हिरमेस, पतरोबास, हिरमास और उनके साथी
भाइयों को मेरा सलाम देना। 15 फ़िलुलुगुस और
यूलिया, नेरियूस और उस की बहन, उलिं-
पास और उनके साथ तमाम मुक़द्दसीन को
सलाम।

16 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देकर सलाम
करें। मसीह की तमाम जमातों की तरफ़ से
आपको सलाम।

आख़िरी हिदायात

17 भाइयो, मैं आपको ताकीद करता हूँ कि
आप उनसे ख़बरदार रहें जो पार्टीबाज़ी और ठोकर
का बाइस बनते हैं। यह उस तालीम के ख़िलाफ़
है जो आपको दी गई है। उनसे किनारा करें
18 क्योंकि ऐसे लोग हमारे ख़ुदावंद मसीह की
ख़िदमत नहीं कर रहे बल्कि अपने पेट की।
वह अपनी मीठी और चिकनी-चुपड़ी बातों से
सादालौह लोगों के दिलों को धोका देते हैं।
19 आपकी फ़रमाँबरदारी की ख़बर सब तक पहुँच
गई है। यह देखकर मैं आपके बारे में ख़ुश हूँ।

लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप अच्छा काम करने
के लिहाज़ से दानिशमंद और बुरा काम करने
के लिहाज़ से बेक़ुसूर हों। 20 सलामती का ख़ुदा
जल्द ही इबलीस को आपके पाँवों तले कुचलवा
डालेगा।

हमारे ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल आपके साथ हो।
21 मेरा हमख़िदमत तीमुथियुस आपको सलाम
देता है, और इसी तरह मेरे हमवतन लूकियुस,
यासोन और सोसिपातरुस।

22 मैं, तिरतियुस इस ख़त का कातिब हूँ। मेरी
तरफ़ से भी ख़ुदावंद में आपको सलाम।

23 गयुस की तरफ़ से आपको सलाम। मैं
और पूरी जमात उसके मेहमान रहे हैं। शहर के
ख़ज़ानची इरास्तुस और हमारे भाई क्वारतुस भी
आपको सलाम कहते हैं। 24 [हमारे ख़ुदावंद ईसा
का फ़ज़ल आप सबके साथ होता रहे।]

आख़िरी दुआ

25 अल्लाह की तमजीद हो, जो आपको
मज़बूत करने पर क़ादिर है, क्योंकि ईसा मसीह
के बारे में उस ख़ुशख़बरी से जो मैं सुनाता हूँ और
उस भेद के इनकिशाफ़ से जो अज़ल से पोशीदा
रहा वह आपको क़ायम रख सकता है। 26 अब
इस भेद की हक़ीक़त नबियों के सहीफ़ों से ज़ाहिर
की गई है और अबदी ख़ुदा के हुक्म पर तमाम
क़ौमों को मालूम हो गई है ताकि सब ईमान लाकर
अल्लाह के ताबे हो जाएँ।

27 अल्लाह की तमजीद हो जो वाहिद
दानिशमंद है। उसी का ईसा मसीह के वसीले से
अबद तक जलाल होता रहे! आमीन।

कुरिंथियों के नाम
पौलुस रसूल का पहला ख़त

सलाम

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो
अल्लाह के इरादे से मसीह ईसा का
बुलाया हुआ रसूल है, और हमारे भाई सोसथिनेस
की तरफ़ से।
2 मैं कुरिंथुस में मौजूद अल्लाह की जमात को
लिख रहा हूँ, आपको जिन्हें मसीह ईसा में मुक़द्दस
किया गया है, जिन्हें मुक़द्दस होने के लिए बुलाया
गया है। साथ ही यह ख़त उन तमाम लोगों के नाम
भी है जो हर जगह हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का
नाम लेते हैं जो उनका और हमारा ख़ुदावंद है।
3 हमारा ख़ुदा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

शुक्र

4 मैं हमेशा आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करता
हूँ कि उसने आपको मसीह ईसा में इतना
फ़ज़ल बख़्शा है। 5 आपको उसमें हर लिहाज़
से दौलतमंद किया गया है, हर क़िस्म की
तक़रीर और इल्मो-इरफ़ान में। 6 क्योंकि मसीह
की गवाही ने आपके दरमियान ज़ोर पकड़ लिया
है, 7 इसलिए आपको हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
के ज़ुहूर का इंतज़ार करते करते किसी भी बरकत
में कमी नहीं। 8 वही आपको आख़िर तक मज़बूत
बनाए रखेगा, इसलिए आप हमारे ख़ुदावंद ईसा
मसीह की दूसरी आमद के दिन बेइलज़ाम ठहरेंगे।
9 अल्लाह पर पूरा एतमाद किया जा सकता
है जिसने आपको बुलाकर अपने फ़रज़ंद हमारे
ख़ुदावंद ईसा मसीह की रिफ़ाक़त में शरीक किया
है।

कुरिंथियों की पार्टीबाज़ी

10 भाइयो, मैं अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के
नाम में आपको ताकीद करता हूँ कि आप सब
एक ही बात कहें। आपके दरमियान पार्टीबाज़ी
नहीं बल्कि एक ही सोच और एक ही राय होनी
चाहिए। 11 क्योंकि मेरे भाइयो, आपके बारे में
मुझे ख़लोए के घरवालों से मालूम हुआ है कि
आप झगड़ों में उलझ गए हैं। 12 मतलब यह है
कि आपमें से कोई कहता है, "मैं पौलुस की पार्टी
का हूँ," कोई "मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ,"
कोई "मैं कैफ़ा की पार्टी का हूँ" और कोई कि
"मैं मसीह की पार्टी का हूँ।" 13 क्या मसीह बट
गया? क्या आपकी ख़ातिर पौलुस को सलीब पर
चढ़ाया गया? या क्या आपको पौलुस के नाम से
बपतिस्मा दिया गया?
14 ख़ुदा का शुक्र है कि मैंने आपमें से किसी
को बपतिस्मा नहीं दिया सिवाए क्रिसपुस और
गयुस के। 15 इसलिए कोई नहीं कह सकता कि
मैंने पौलुस के नाम से बपतिस्मा पाया है। 16 हाँ

मैंने स्तिफ़नास के घराने को भी बपतिस्मा दिया। लेकिन जहाँ तक मेरा ख़याल है इसके अलावा किसी और को बपतिस्मा नहीं दिया।
17 मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए रसूल बनाकर नहीं भेजा बल्कि इसलिए कि अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ। और यह काम मुझे दुनियावी हिकमत से आरास्ता तक़रीर से नहीं करना है ताकि मसीह की सलीब की ताक़त बेअसर न हो जाए।

सलीब का पैग़ाम

18 क्योंकि सलीब का पैग़ाम उनके लिए जिनका अंजाम हलाकत है बेवुक़ूफ़ी है जबकि हमारे लिए जिनका अंजाम नजात है यह अल्लाह की क़ुदरत है।
19 चुनाँचे पाक नविश्तों में लिखा है,

“मैं दानिशमंदों की दानिश को
तबाह करूँगा
और समझदारों की समझ को
रद्द करूँगा।”

20 अब दानिशमंद शख़्स कहाँ है? आलिम कहाँ है? इस जहान का मुनाज़रे का माहिर कहाँ है? क्या अल्लाह ने दुनिया की हिकमतो-दानाई को बेवुक़ूफ़ी साबित नहीं किया?

21 क्योंकि अगरचे दुनिया अल्लाह की दानाई से घिरी हुई है तो भी दुनिया ने अपनी दानाई की बदौलत अल्लाह को न पहचाना। इसलिए अल्लाह को पसंद आया कि वह सलीब के पैग़ाम की बेवुक़ूफ़ी के ज़रीए ही ईमान रखनेवालों को नजात दे।
22 यहूदी तक़ाज़ा करते हैं कि इलाही बातों की तसदीक़ इलाही निशानों से की जाए जबकि यूनानी दानाई के वसीले से इनकी तसदीक़ के ख़ाहाँ हैं।
23 इसके मुक़ाबले में हम मसीहे-मसलूब की मुनादी करते हैं। यहूदी इससे ठोकर खाकर नाराज़ हो जाते हैं जबकि ग़ैरयहूदी इसे बेवुक़ूफ़ी क़रार देते हैं।
24 लेकिन जो अल्लाह के बुलाए हुए हैं, ख़ाह वह यहूदी हों ख़ाह यूनानी, उनके लिए मसीह अल्लाह की क़ुदरत और अल्लाह की दानाई होता है।
25 क्योंकि अल्लाह की जो बात बेवुक़ूफ़ी लगती है वह इनसान की दानाई से ज़्यादा दानिशमंद है। और अल्लाह की जो बात कमज़ोर लगती है वह इनसान की ताक़त से ज़्यादा ताक़तवर है।

26 भाइयो, इस पर ग़ौर करें कि आपका क्या हाल था जब ख़ुदा ने आपको बुलाया। आपमें से कम हैं जो दुनिया के मेयार के मुताबिक़ दाना हैं, कम हैं जो ताक़तवर हैं, कम हैं जो आली ख़ानदान से हैं।
27 बल्कि जो दुनिया की निगाह में बेवुक़ूफ़ है उसे अल्लाह ने चुन लिया ताकि दानाओं को शरमिंदा करे। और जो दुनिया में कमज़ोर है उसे अल्लाह ने चुन लिया ताकि ताक़तवरों को शरमिंदा करे।
28 इसी तरह जो दुनिया के नज़दीक ज़लील और हक़ीर है उसे अल्लाह ने चुन लिया। हाँ, जो कुछ भी नहीं है उसे उसने चुन लिया ताकि उसे नेस्त करे जो बज़ाहिर कुछ है।
29 चुनाँचे कोई भी अल्लाह के सामने अपने पर फ़ख़र नहीं कर सकता।
30 यह अल्लाह की तरफ़ से है कि आप मसीह ईसा में हैं। अल्लाह की बख़्शिश से ईसा ख़ुद हमारी दानाई, हमारी रास्तबाज़ी, हमारी तक़दीस और हमारी मख़लसी बन गया है।
31 इसलिए जिस तरह कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “फ़ख़र करनेवाला ख़ुदावंद ही पर फ़ख़र करे।”

पौलुस की सादा मुनादी

2 भाइयो, मुझ पर भी ग़ौर करें। जब मैं आपके पास आया तो मैंने आपको अल्लाह का भेद मोटे मोटे अलफ़ाज़ में या फ़लसफ़ियाना हिकमत का इज़हार करते हुए न सुनाया।
2 वजह क्या थी? यह कि मैंने इरादा कर रखा था कि आपके दरमियान होते हुए मैं ईसा मसीह के सिवा और कुछ न जानूँ, ख़ासकर यह कि उसे मसलूब किया गया।
3 हाँ मैं कमज़ोरहाल, ख़ौफ़ खाते और बहुत थरथराते हुए आपके पास आया।
4 और गुफ़्तगू और मुनादी करते हुए मैंने दुनियावी हिकमत के बड़े ज़ोरदार अलफ़ाज़ की मारिफ़त आपको क़ायल करने की कोशिश न

की, बल्कि रूहुल-क़ुद्स और अल्लाह की क़ुदरत ने मेरी बातों की तसदीक़ की, 5 ताकि आपका ईमान इनसानी हिकमत पर मबनी न हो बल्कि अल्लाह की क़ुदरत पर।

ग़लत और सहीह दानाई

6 दानाई की बातें हम उस वक़्त करते हैं जब कामिल ईमान रखनेवालों के दरमियान होते हैं। लेकिन यह दानाई मौजूदा जहान की नहीं और न इस जहान के हाकिमों ही की है जो मिटनेवाले हैं। 7 बल्कि हम ख़ुदा ही की दानाई की बातें करते हैं जो भेद की सूरत में छुपी रही है। अल्लाह ने तमाम ज़मानों से पेशतर मुक़र्रर किया है कि यह दानाई हमारे जलाल का बाइस बने। 8 इस जहान के किसी भी हाकिम ने इस दानाई को न पहचाना, क्योंकि अगर वह पहचान लेते तो फिर वह हमारे जलाली ख़ुदावंद को मसलूब न करते। 9 दानाई के बारे में पाक नविश्ते भी यही कहते हैं,

“जो न किसी आँख ने देखा,
  न किसी कान ने सुना,
और न इनसान के ज़हन में आया,
उसे अल्लाह ने उनके लिए तैयार कर दिया
जो उससे मुहब्बत रखते हैं।”

10 लेकिन अल्लाह ने यही कुछ अपने रूह की मारिफ़त हम पर ज़ाहिर किया क्योंकि उसका रूह हर चीज़ का खोज लगाता है, यहाँ तक कि अल्लाह की गहराइयों का भी। 11 इनसान के बातिन से कौन वाक़िफ़ है सिवाए इनसान की रूह के जो उसके अंदर है? इसी तरह अल्लाह से ताल्लुक़ रखनेवाली बातों को कोई नहीं जानता सिवाए अल्लाह के रूह के। 12 और हमें दुनिया की रूह नहीं मिली बल्कि वह रूह जो अल्लाह की तरफ़ से है ताकि हम उस की अताकरदा बातों को जान सकें।

13 यही कुछ हम बयान करते हैं, लेकिन ऐसे अलफ़ाज़ में नहीं जो इनसानी हिकमत से हमें सिखाया गया बल्कि रूहुल-क़ुद्स से। यों हम रूहानी हक़ीक़तों की तशरीह रूहानी लोगों के लिए करते हैं। 14 जो शख़्स रूहानी नहीं है वह अल्लाह के रूह की बातों को क़बूल नहीं करता क्योंकि वह उसके नज़दीक बेवुक़ूफ़ी हैं। वह उन्हें पहचान नहीं सकता क्योंकि उनकी परख सिर्फ़ रूहानी शख़्स ही कर सकता है। 15 वही हर चीज़ परख लेता है जबकि उस की अपनी परख कोई नहीं कर सकता। 16 चुनाँचे पाक कलाम में लिखा है,

“किसने रब की सोच को जाना?
कौन उसको तालीम देगा?”
लेकिन हम मसीह की सोच रखते हैं।

कुरिंथुस की बचगाना हालत

3 भाइयो, मैं आपसे रूहानी लोगों की बातें न कर सका बल्कि सिर्फ़ जिस्मानी लोगों की। क्योंकि आप अब तक मसीह में छोटे बच्चे हैं। 2 मैंने आपको दूध पिलाया, ठोस ग़िज़ा न खिलाई, क्योंकि आप उस वक़्त इस क़ाबिल नहीं थे बल्कि अब तक नहीं हैं। 3 अभी तक आप जिस्मानी हैं, क्योंकि आपमें हसद और झगड़ा पाया जाता है। क्या इससे यह साबित नहीं होता कि आप जिस्मानी हैं और रूह के बग़ैर चलते हैं? 4 जब कोई कहता है, “मैं पौलुस की पार्टी का हूँ” और दूसरा, “मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ” तो क्या इससे यह ज़ाहिर नहीं होता कि आप रूहानी नहीं बल्कि इनसानी सोच रखते हैं?

पौलुस और अपुल्लोस की हैसियत

5 अपुल्लोस की क्या हैसियत है और पौलुस की क्या? दोनों नौकर हैं जिनके वसीले से आप ईमान लाए। और हममें से हर एक ने वही ख़िदमत अंजाम दी जो ख़ुदावंद ने उसके सुपुर्द की। 6 मैंने पौदे लगाए, अपुल्लोस पानी देता रहा, लेकिन अल्लाह ने उन्हें उगने दिया। 7 लिहाज़ा पौदा लगानेवाला और आबपाशी करनेवाला दोनों कुछ भी नहीं, बल्कि ख़ुदा ही सब कुछ है जो पौदे को फलने-फूलने देता है। 8 पौदा लगाने और पानी देनेवाला एक जैसे हैं, अलबत्ता हर एक

को उस की मेहनत के मुताबिक़ मज़दूरी मिलेगी।
9 क्योंकि हम अल्लाह के मुआविन हैं जबकि आप
अल्लाह का खेत और उस की इमारत हैं।

10 अल्लाह के उस फ़ज़्ल के मुताबिक़ जो
मुझे बख़्शा गया मैंने एक दानिशमंद ठेकेदार की
तरह बुनियाद रखी। इसके बाद कोई और उस
पर इमारत तामीर कर रहा है। लेकिन हर एक
ध्यान रखे कि वह बुनियाद पर इमारत किस तरह
बना रहा है। 11 क्योंकि बुनियाद रखी जा चुकी है
और वह है ईसा मसीह। इसके अलावा कोई भी
मज़ीद कोई बुनियाद नहीं रख सकता। 12 जो भी
इस बुनियाद पर कुछ तामीर करे वह मुख़्तलिफ़
मवाद तो इस्तेमाल कर सकता है, मसलन सोना,
चाँदी, क़ीमती पत्थर, लकड़ी, सूखी घास या
भूसा, 13 लेकिन आख़िर में हर एक का काम
ज़ाहिर हो जाएगा। क़ियामत के दिन कुछ पोशीदा
नहीं रहेगा बल्कि आग सब कुछ ज़ाहिर कर देगी।
वह साबित कर देगी कि हर किसी ने कैसा काम
किया है। 14 अगर उसका तामीरी काम न जला
जो उसने इस बुनियाद पर किया तो उसे अज्र
मिलेगा। 15 अगर उसका काम जल गया तो उसे
नुक़सान पहुँचेगा। ख़ुद तो वह बच जाएगा मगर
जलते जलते।

16 क्या आपको मालूम नहीं कि आप अल्लाह
का घर हैं, और आपमें अल्लाह का रूह सुकूनत
करता है? 17 अगर कोई अल्लाह के घर को
तबाह करे तो अल्लाह उसे तबाह करेगा, क्योंकि
अल्लाह का घर मख़सूसो-मुक़द्दस है और यह घर
आप ही हैं।

अपने बारे में शेख़ी न मारना

18 कोई अपने आपको फ़रेब न दे। अगर आपमें
से कोई समझे कि वह इस दुनिया की नज़र में
दानिशमंद है तो फिर ज़रूरी है कि वह बेवुक़ूफ़
बने ताकि वाक़ई दानिशमंद हो जाए। 19 क्योंकि
इस दुनिया की हिकमत अल्लाह की नज़र में
बेवुक़ूफ़ी है। चुनाँचे मुक़द्दस नविश्तों में लिखा
है, "वह दानिशमंदों को उनकी अपनी चालाकी
के फंदे में फँसा देता है।" 20 यह भी लिखा है,
"रब दानिशमंदों के ख़यालात को जानता है कि
वह बातिल हैं।" 21 ग़रज़ कोई किसी इनसान के
बारे में शेख़ी न मारे। सब कुछ तो आपका है।
22 पौलुस, अपुल्लोस, कैफ़ा, दुनिया, ज़िंदगी,
मौत, मौजूदा जहान के और मुस्तक़बिल के उमूर
सब कुछ आपका है। 23 लेकिन आप मसीह के हैं
और मसीह अल्लाह का है।

ख़ुदावंद के ख़ादिम और उनका काम

4 ग़रज़ लोग हमें मसीह के ख़ादिम समझें,
ऐसे निगरान जिन्हें अल्लाह के भेदों को
खोलने की ज़िम्मेदारी दी गई है। 2 अब निगरानों
का फ़र्ज़ यह है कि उन पर पूरा एतमाद किया
जा सके। 3 मुझे इस बात की ज़्यादा फ़िकर
नहीं कि आप या कोई दुनियावी अदालत मेरा
एहतसाब करे, बल्कि मैं ख़ुद भी अपना एहतसाब
नहीं करता। 4 मुझे किसी ग़लती का इल्म नहीं
है अगरचे यह बात मुझे रास्तबाज़ क़रार देने के
लिए काफ़ी नहीं है। ख़ुदावंद ख़ुद मेरा एहतसाब
करता है। 5 इसलिए वक़्त से पहले किसी बात
का फ़ैसला न करें। उस वक़्त तक इंतज़ार करें
जब तक ख़ुदावंद न आए। क्योंकि वही तारीकी
में छुपी हुई चीज़ों को रौशनी में लाएगा और
दिलों की मनसूबाबंदियों को ज़ाहिर कर देगा। उस
वक़्त अल्लाह ख़ुद हर फ़रद की मुनासिब तारीफ़
करेगा।

कुरिंथियों की शेख़ीबाज़ी

6 भाइयो, मैंने इन बातों का इतलाक़ अपने
और अपुल्लोस पर किया ताकि आप हम पर ग़ौर
करते हुए अल्लाह के कलाम की हुदूद जान लें
जिनसे तजावुज़ करना मुनासिब नहीं। फिर आप
फूलकर एक शख़्स की हिमायत करके दूसरे की
मुख़ालफ़त नहीं करेंगे। 7 क्योंकि कौन आपको
किसी दूसरे से अफ़ज़ल क़रार देता है? जो
कुछ आपके पास है क्या वह आपको मुफ़्त नहीं
मिला? और अगर मुफ़्त मिला तो इस पर शेख़ी

क्यों मारते हैं गोया कि आपने उसे अपनी मेहनत
से हासिल किया हो?
8 वाह जी वाह! आप सेर हो चुके हैं। आप
अमीर बन चुके हैं। आप हमारे बग़ैर बादशाह बन
चुके हैं। काश आप बादशाह बन चुके होते ताकि
हम भी आपके साथ हुकूमत करते! 9 इसके
बजाए मुझे लगता है कि अल्लाह ने हमारे लिए जो
उसके रसूल हैं रोमी तमाशागाह में सबसे निचला
दर्जा मुक़र्रर किया है, जो उन लोगों के लिए
मख़सूस होता है जिन्हें सज़ाए-मौत का फ़ैसला
सुनाया गया हो। हाँ, हम दुनिया, फ़रिश्तों और
इनसानों के सामने तमाशा बन गए हैं। 10 हम
तो मसीह की ख़ातिर बेवुक़ूफ़ बन गए हैं जबकि
आप मसीह में समझदार ख़याल किए जाते हैं।
हम कमज़ोर हैं जबकि आप ताक़तवर। आपकी
इज़्ज़त की जाती है जबकि हमारी बेइज़्ज़ती।
11 अब तक हमें भूक और प्यास सताती है। हम
चीथड़ों में मलबूस गोया नंगे फिरते हैं। हमें मुक्के
मारे जाते हैं। हमारी कोई मुस्तक़िल रिहाइशगाह
नहीं। 12 और बड़ी मशक़्क़त से हम अपने हाथों
से रोज़ी कमाते हैं। लान-तान करनेवालों को हम
बरकत देते हैं, ईज़ा देनेवालों को बरदाश्त करते
हैं। 13 जो हमें बुरा-भला कहते हैं उन्हें हम दुआ
देते हैं। अब तक हम दुनिया का कूड़ा-करकट और
ग़िलाज़त बने फिरते हैं।

पौलुस कुरिंथियों का रूहानी बाप है

14 मैं आपको शरमिंदा करने के लिए यह नहीं
लिख रहा, बल्कि अपने प्यारे बच्चे जानकर
समझाने की ग़रज़ से। 15 बेशक मसीह ईसा में
आपके उस्ताद तो बेशुमार हैं, लेकिन बाप कम
हैं। क्योंकि मसीह ईसा में मैं ही आपको अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाकर आपका बाप बना। 16 अब
मैं ताकीद करता हूँ कि आप मेरे नमूने पर चलें।
17 इसलिए मैंने तीमुथियुस को आपके पास भेज
दिया जो ख़ुदावंद में मेरा प्यारा और वफ़ादार बेटा
है। वह आपको मसीह ईसा में मेरी उन हिदायात
की याद दिलाएगा जो मैं हर जगह और ईमानदारों
की हर जमात में देता हूँ।
18 आपमें से बाज़ यों फूल गए हैं जैसे मैं अब
आपके पास कभी नहीं आऊँगा। 19 लेकिन अगर
ख़ुदावंद की मरज़ी हुई तो जल्द आकर मालूम
करूँगा कि क्या यह फूले हुए लोग सिर्फ़ बातें कर
रहे हैं या कि अल्लाह की क़ुदरत उनमें काम कर
रही है। 20 क्योंकि अल्लाह की बादशाही ख़ाली
बातों से ज़ाहिर नहीं होती बल्कि अल्लाह की
क़ुदरत से। 21 क्या आप चाहते हैं कि मैं छड़ी
लेकर आपके पास आऊँ या प्यार और हलीमी
की रूह में?

ज़िनाकारी

5 यह बात हमारे कानों तक पहुँची है कि
आपके दरमियान ज़िनाकारी हो रही है,
बल्कि ऐसी ज़िनाकारी जिसे ग़ैरयहूदी भी रवा
नहीं समझते। कहते हैं कि आपमें से किसी ने
अपनी सौतेली माँ[a] से शादी कर रखी है। 2 कमाल
है कि आप इस फ़ेल पर नादिम नहीं बल्कि फूले
फिर रहे हैं! क्या मुनासिब न होता कि आप दुख
महसूस करके इस बदी के मुरतकिब को अपने
दरमियान से ख़ारिज कर देते? 3 गो मैं जिस्म
के लिहाज़ से आपके पास नहीं, लेकिन रूह के
लिहाज़ से ज़रूर हूँ। और मैं उस शख़्स पर फ़तवा
इस तरह दे चुका हूँ जैसे कि मैं आपके दरमियान
मौजूद हूँ। 4 जब आप हमारे ख़ुदावंद ईसा के नाम
में जमा होंगे तो मैं रूह में आपके साथ हूँगा और
हमारे ख़ुदावंद ईसा की क़ुदरत भी। 5 उस वक़्त
ऐसे शख़्स को इबलीस के हवाले करें ताकि सिर्फ़
उसका जिस्म हलाक हो जाए, लेकिन उस की
रूह ख़ुदावंद के दिन रिहाई पाए।
6 आपका फ़ख़र करना अच्छा नहीं। क्या
आपको मालूम नहीं कि जब हम थोड़ा-सा ख़मीर
ताज़ा गुँधे हुए आटे में मिलाते हैं तो वह सारे

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : बाप की बीवी, लेकिन ग़ालिबन इससे मुराद सौतेली माँ है।

आटे को ख़मीर कर देता है? 7 अपने आपको
ख़मीर से पाक-साफ़ करके ताज़ा गुँधा हुआ आटा
बन जाएँ। दर-हक़ीक़त आप हैं भी पाक, क्योंकि
हमारा ईदे-फ़सह का लेला मसीह हमारे लिए
ज़बह हो चुका है। 8 इसलिए आइए हम पुराने
ख़मीरी आटे यानी बुराई और बदी को दूर करके
ताज़ा गुँधे हुए आटे यानी ख़ुलूस और सच्चाई की
रोटियाँ बनाकर फ़सह की ईद मनाएँ।

9 मैंने ख़त में लिखा था कि आप ज़िनाकारों
से ताल्लुक़ न रखें। 10 मेरा मतलब यह नहीं था
कि आप इस दुनिया के ज़िनाकारों से ताल्लुक़
मुंक़ते कर लें या इस दुनिया के लालचियों, लुटेरों
और बुतपरस्तों से। अगर आप ऐसा करते तो
लाज़िम होता कि आप दुनिया ही से कूच कर
जाते। 11 नहीं, मेरा मतलब यह था कि आप ऐसे
शख़्स से ताल्लुक़ न रखें जो मसीह में तो भाई
कहलाता है मगर है वह ज़िनाकार या लालची या
बुतपरस्त या गाली-गलोच करनेवाला या शराबी
या लुटेरा। ऐसे शख़्स के साथ खाना तक भी न
खाएँ।

12 मैं उन लोगों की अदालत क्यों करता फिरूँ
जो ईमानदारों की जमात से बाहर हैं? क्या
आप ख़ुद भी सिर्फ़ उनकी अदालत नहीं करते जो
जमात के अंदर हैं? 13 बाहरवालों की अदालत
तो ख़ुदा ही करेगा। कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा
है, 'शरीर को अपने दरमियान से निकाल दो।'

मुक़दमाबाज़ी

6 आपमें यह जुर्रत कैसे पैदा हुई कि जब
किसी का किसी दूसरे ईमानदार के साथ
तनाज़ा हो तो वह अपना झगड़ा बेदीनों के सामने
ले जाता है न कि मुक़द्दसों के सामने? 2 क्या आप
नहीं जानते कि मुक़द्दसीन दुनिया की अदालत
करेंगे? और अगर आप दुनिया की अदालत करेंगे
तो क्या आप इस क़ाबिल नहीं कि छोटे मोटे
झगड़ों का फ़ैसला कर सकें? 3 क्या आपको
मालूम नहीं कि हम फ़रिश्तों की अदालत करेंगे?
तो फिर क्या हम रोज़मर्रा के मामलात को नहीं
निपटा सकते? 4 और इस क़िस्म के मामलात
को फ़ैसल करने के लिए आप ऐसे लोगों को
क्यों मुक़र्रर करते हैं जो जमात की निगाह में कोई
हैसियत नहीं रखते? 5 यह बात मैं आपको शर्म
दिलाने के लिए कहता हूँ। क्या आपमें एक भी
सयाना शख़्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन
फ़ैसला करने के क़ाबिल हो? 6 लेकिन नहीं।
भाई अपने ही भाई पर मुक़दमा चलाता है और
वह भी ग़ैरईमानदारों के सामने।

7 अव्वल तो आपसे यह ग़लती हुई कि आप
एक दूसरे से मुक़दमाबाज़ी करते हैं। अगर कोई
आपसे नाइनसाफ़ी कर रहा हो तो क्या बेहतर
नहीं कि आप उसे ऐसा करने दें? और अगर कोई
आपको ठग रहा हो तो क्या यह बेहतर नहीं कि
आप उसे ठगने दें? 8 इसके बरअक्स आपका यह
हाल है कि आप ख़ुद ही नाइनसाफ़ी करते और
ठगते हैं और वह भी अपने भाइयों को। 9 क्या
आप नहीं जानते कि नाइनसाफ़ अल्लाह की
बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे? फ़रेब न खाएँ!
हरामकार, बुतपरस्त, ज़िनाकार, हमजिंसपरस्त,
लौंडेबाज़, 10 चोर, लालची, शराबी, बदज़बान,
लुटेरे, यह सब अल्लाह की बादशाही मीरास में
नहीं पाएँगे। 11 आपमें से कुछ ऐसे थे भी। लेकिन
आपको धोया गया, आपको मुक़द्दस किया गया,
आपको ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम और हमारे
ख़ुदा के रूह से रास्तबाज़ बनाया गया है।

जिस्म अल्लाह का घर है

12 मेरे लिए सब कुछ जायज़ है, लेकिन सब
कुछ मुफ़ीद नहीं। मेरे लिए सब कुछ जायज़ तो है,
लेकिन मैं किसी भी चीज़ को इजाज़त नहीं दूँगा
कि मुझ पर हुकूमत करे। 13 बेशक ख़ुराक पेट के
लिए और पेट ख़ुराक के लिए है, मगर अल्लाह
दोनों को नेस्त कर देगा। लेकिन हम इससे यह
नतीजा नहीं निकाल सकते कि जिस्म ज़िनाकारी
के लिए है। हरगिज़ नहीं! जिस्म ख़ुदावंद के लिए
है और ख़ुदावंद जिस्म के लिए। 14 अल्लाह ने

अपनी क़ुदरत से ख़ुदावंद ईसा को ज़िंदा किया
और इसी तरह वह हमें भी ज़िंदा करेगा।
15 क्या आप नहीं जानते कि आपके जिस्म
मसीह के आज़ा हैं? तो क्या मैं मसीह के
आज़ा को लेकर फ़ाहिशा के आज़ा बनाऊँ?
हरगिज़ नहीं। 16 क्या आपको मालूम नहीं कि जो
फ़ाहिशा से लिपट जाता है वह उसके साथ एक
तन हो जाता है? जैसे पाक नविश्तों में लिखा है,
“वह दोनों एक हो जाते हैं।” 17 इसके बरअक्स
जो ख़ुदावंद से लिपट जाता है वह उसके साथ
एक रूह हो जाता है।
18 ज़िनाकारी से भागें! इनसान से सरज़द
होनेवाला हर गुनाह उसके जिस्म से बाहर होता
है सिवाए ज़िना के। ज़िनाकार तो अपने ही जिस्म
का गुनाह करता है। 19 क्या आप नहीं जानते कि
आपका बदन रूहुल-क़ुद्स का घर है जो आपके
अंदर सुकूनत करता है और जो आपको अल्लाह
की तरफ़ से मिला है? आप अपने मालिक नहीं
हैं 20 क्योंकि आपको क़ीमत अदा करके ख़रीदा
गया है। अब अपने बदन से अल्लाह को जलाल
दें।

इज़दिवाजी ज़िंदगी

7 अब मैं आपके सवालात का जवाब देता
हूँ। बेशक अच्छा है कि मर्द शादी न करे।
2 लेकिन ज़िनाकारी से बचने की ख़ातिर हर
मर्द की अपनी बीवी और हर औरत का अपना
शौहर हो। 3 शौहर अपनी बीवी का हक़ अदा करे
और इसी तरह बीवी अपने शौहर का। 4 बीवी
अपने जिस्म पर इख़्तियार नहीं रखती बल्कि
उसका शौहर। इसी तरह शौहर भी अपने जिस्म
पर इख़्तियार नहीं रखता बल्कि उस की बीवी।
5 चुनाँचे एक दूसरे से जुदा न हों सिवाए इसके
कि आप दोनों बाहमी रज़ामंदी से एक वक़्त
मुक़र्रर कर लें ताकि दुआ के लिए ज़्यादा फ़ुरसत
मिल सके। लेकिन इसके बाद आप दुबारा इकट्ठे
हो जाएँ ताकि इबलीस आपके बेज़ब्त नफ़स से
फ़ायदा उठाकर आपको आज़माइश में न डाले।
6 यह मैं हुक्म के तौर पर नहीं बल्कि आपके
हालात के पेशे-नज़र रिआयतन कह रहा हूँ। 7 मैं
चाहता हूँ कि तमाम लोग मुझ जैसे ही हों। लेकिन
हर एक को अल्लाह की तरफ़ से अलग नेमत
मिली है, एक को यह नेमत, दूसरे को वह।

तलाक़ और ग़ैरईमानदार से शादी

8 मैं ग़ैरशादीशुदा अफ़राद और बेवाओं से यह
कहता हूँ कि अच्छा हो अगर आप मेरी तरह
ग़ैरशादीशुदा रहें। 9 लेकिन अगर आप अपने आप
पर क़ाबू न रख सकें तो शादी कर लें। क्योंकि
इससे पेशतर कि आपके शहवानी जज़बात
बेलगाम होने लगें बेहतर यह है कि आप शादी
कर लें।
10 शादीशुदा जोड़ों को मैं नहीं बल्कि ख़ुदावंद
हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से ताल्लुक़
मुंक़ते न करे। 11 अगर वह ऐसा कर चुकी हो तो
दूसरी शादी न करे या अपने शौहर से सुलह कर
ले। इसी तरह शौहर भी अपनी बीवी को तलाक़
न दे।
12 दीगर लोगों को ख़ुदावंद नहीं बल्कि मैं
नसीहत करता हूँ कि अगर किसी ईमानदार भाई
की बीवी ईमान नहीं लाई, लेकिन वह शौहर
के साथ रहने पर राज़ी हो तो फिर वह अपनी
बीवी को तलाक़ न दे। 13 इसी तरह अगर किसी
ईमानदार ख़ातून का शौहर ईमान नहीं लाया,
लेकिन वह बीवी के साथ रहने पर रज़ामंद हो तो
वह अपने शौहर को तलाक़ न दे। 14 क्योंकि जो
शौहर ईमान नहीं लाया उसे उस की ईमानदार
बीवी की मारिफ़त मुक़द्दस ठहराया गया है और
जो बीवी ईमान नहीं लाई उसे उसके ईमानदार
शौहर की मारिफ़त मुक़द्दस क़रार दिया गया
है। अगर ऐसा न होता तो आपके बच्चे नापाक
होते, मगर अब वह मुक़द्दस हैं। 15 लेकिन अगर
ग़ैरईमानदार शौहर या बीवी अपना ताल्लुक़ मुंक़ते
कर ले तो उसे जाने दें। ऐसी सूरत में ईमानदार
भाई या बहन इस बंधन से आज़ाद हो गए। मगर
अल्लाह ने आपको सुलह-सलामती की ज़िंदगी

गुज़ारने के लिए बुलाया है। 16 बहन, मुमकिन
है आप अपने ख़ाविंद की नजात का बाइस बन
जाएँ। या भाई, मुमकिन है आप अपनी बीवी की
नजात का बाइस बन जाएँ।

अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्ररा राह पर रहें

17 हर शख़्स उसी राह पर चले जो ख़ुदावंद ने
उसके लिए मुक़र्रर की और उस हालत में जिसमें
अल्लाह ने उसे बुलाया है। ईमानदारों की तमाम
जमातों के लिए मेरी यही हिदायत है। 18 अगर
किसी को मख़तून हालत में बुलाया गया तो
वह नामख़तून होने की कोशिश न करे। अगर
किसी को नामख़तूनी की हालत में बुलाया गया
तो वह अपना ख़तना न करवाए। 19 न ख़तना
कुछ चीज़ है और न ख़तने का न होना, बल्कि
अल्लाह के अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना
ही सब कुछ है। 20 हर शख़्स उसी हैसियत में रहे
जिसमें उसे बुलाया गया था। 21 क्या आप ग़ुलाम
थे जब ख़ुदावंद ने आपको बुलाया? यह बात
आपको परेशान न करे। अलबत्ता अगर आपको
आज़ाद होने का मौक़ा मिले तो इससे ज़रूर
फ़ायदा उठाएँ। 22 क्योंकि जो उस वक़्त ग़ुलाम
था जब ख़ुदावंद ने उसे बुलाया वह अब ख़ुदावंद
का आज़ाद किया हुआ है। इसी तरह जो आज़ाद
था जब उसे बुलाया गया वह अब मसीह का
ग़ुलाम है। 23 आपको क़ीमत देकर ख़रीदा गया
है, इसलिए इनसान के ग़ुलाम न बनें। 24 भाइयो,
हर शख़्स जिस हालत में बुलाया गया उसी में वह
अल्लाह के सामने क़ायम रहे।

ग़ैरशादीशुदा लोग

25 कुँवारियों के बारे में मुझे ख़ुदावंद की तरफ़
से कोई ख़ास हुक्म नहीं मिला। तो भी मैं जिसे
अल्लाह ने अपनी रहमत से क़ाबिले-एतमाद
बनाया है आप पर अपनी राय का इज़हार करता
हूँ।

26 मेरी दानिस्त में मौजूदा मुसीबत के पेशे-
नज़र इनसान के लिए अच्छा है कि ग़ैरशादीशुदा
रहे। 27 अगर आप किसी ख़ातून के साथ शादी के
बंधन में बँध चुके हैं तो फिर इस बंधन को तोड़ने
की कोशिश न करें। लेकिन अगर आप शादी के
बंधन में नहीं बँधे तो फिर इसके लिए कोशिश
न करें। 28 ताहम अगर आपने शादी कर ही ली
है तो आपने गुनाह नहीं किया। इसी तरह अगर
कुँवारी शादी कर चुकी है तो यह गुनाह नहीं। मगर
ऐसे लोग जिस्मानी तौर पर मुसीबत में पड़ जाएंगे
जबकि मैं आपको इससे बचाना चाहता हूँ।

29 भाइयो, मैं तो यह कहता हूँ कि वक़्त थोड़ा
है। आइंदा शादीशुदा ऐसे ज़िंदगी बसर करें जैसे
कि ग़ैरशादीशुदा हैं। 30 रोनेवाले ऐसे हों जैसे नहीं
रो रहे। ख़ुशी मनानेवाले ऐसे हों जैसे ख़ुशी नहीं
मना रहे। ख़रीदनेवाले ऐसे हों जैसे उनके पास
कुछ भी नहीं। 31 दुनिया से फ़ायदा उठानेवाले
ऐसे हों जैसे इसका कोई फ़ायदा नहीं। क्योंकि
इस दुनिया की मौजूदा शक्लो-सूरत ख़त्म होती
जा रही है।

32 मैं तो चाहता हूँ कि आप फ़िकरों से आज़ाद
रहें। ग़ैरशादीशुदा शख़्स ख़ुदावंद के मामलों की
फ़िकर में रहता है कि किस तरह उसे ख़ुश करे।
33 इसके बरअक्स शादीशुदा शख़्स दुनियावी
फ़िकर में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी
को ख़ुश करे। 34 यों वह बड़ी कशमकश में
मुब्तला रहता है। इसी तरह ग़ैरशादीशुदा ख़ातून
और कुँवारी ख़ुदावंद की फ़िकर में रहती है
कि वह जिस्मानी और रूहानी तौर पर उसके
लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हो। इसके मुक़ाबले में
शादीशुदा ख़ातून दुनियावी फ़िकर में रहती है कि
अपने ख़ाविंद को किस तरह ख़ुश करे।

35 मैं यह आप ही के फ़ायदे के लिए कहता
हूँ। मक़सद यह नहीं कि आप पर पाबंदियाँ लगाई
जाएँ बल्कि यह कि आप शराफ़त, साबितक़दमी
और यकसूई के साथ ख़ुदावंद की हुज़ूरी में चलें।

36 अगर कोई समझता है, 'मैं अपनी कुँवारी
मंगेतर से शादी न करने से उसका हक़ मार रहा
हूँ' या यह कि 'मेरी उसके लिए ख़ाहिश हद से
ज़्यादा है, इसलिए शादी होनी चाहिए' तो फिर वह

अपने इरादे को पूरा करे, यह गुनाह नहीं। वह शादी
कर ले। 37 लेकिन इसके बरअक्स अगर उसने
शादी न करने का पुख़्ता अज़्म कर लिया है और
वह मजबूर नहीं बल्कि अपने इरादे पर इख़्तियार
रखता है और उसने अपने दिल में फ़ैसला कर
लिया है कि अपनी कुँवारी लड़की को ऐसे ही रहने
दे तो उसने अच्छा किया। 38 ग़रज़ जिसने अपनी
कुँवारी मंगेतर से शादी कर ली है उसने अच्छा
किया है, लेकिन जिसने नहीं की उसने और भी
अच्छा किया है।

39 जब तक ख़ाविंद ज़िंदा है बीवी को उससे
रिश्ता तोड़ने की इजाज़त नहीं। ख़ाविंद की वफ़ात
के बाद वह आज़ाद है कि जिससे चाहे शादी
कर ले, मगर सिर्फ़ ख़ुदावंद में। 40 लेकिन मेरी
दानिस्त में अगर वह ऐसे ही रहे तो ज़्यादा मुबारक
होगी। और मैं समझता हूँ कि मुझमें भी अल्लाह
का रूह है।

बुतों की क़ुरबानियाँ

8 अब मैं बुतों की क़ुरबानी के बारे में बात
करता हूँ। हम जानते हैं कि हम सब साहबे-
इल्म हैं। इल्म इनसान के फूलने का बाइस बनता
है जबकि मुहब्बत उस की तामीर करती है। 2 जो
समझता है कि उसने कुछ जान लिया है उसने
अब तक उस तरह नहीं जाना जिस तरह उसको
जानना चाहिए। 3 लेकिन जो अल्लाह से मुहब्बत
रखता है उसे अल्लाह ने जान लिया है।

4 बुतों की क़ुरबानी खाने के ज़िम्न में हम जानते
हैं कि दुनिया में बुत कोई चीज़ नहीं और कि रब के
सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। 5 बेशक आसमानो-
ज़मीन पर कई नाम-निहाद देवता होते हैं, हाँ
दरअसल बहुतेरे देवताओं और ख़ुदावंदों की पूजा
की जाती है। 6 तो भी हम जानते हैं कि फ़क़त
एक ही ख़ुदा है, हमारा बाप जिसने सब कुछ पैदा
किया है और जिसके लिए हम ज़िंदगी गुज़ारते हैं।
और एक ही ख़ुदावंद है यानी ईसा मसीह जिसके
वसीले से सब कुछ वुजूद में आया है और जिससे
हमें ज़िंदगी हासिल है।

7 लेकिन हर किसी को इसका इल्म नहीं। बाज़
ईमानदार तो अब तक यह सोचने के आदी हैं कि
बुत का वुजूद है। इसलिए जब वह किसी बुत
की क़ुरबानी का गोश्त खाते हैं तो वह समझते
हैं कि हम ऐसा करने से उस बुत की पूजा कर
रहे हैं। यों उनका ज़मीर कमज़ोर होने की वजह
से आलूदा हो जाता है। 8 हक़ीक़त तो यह है कि
हमारा अल्लाह को पसंद आना इस बात पर मबनी
नहीं कि हम क्या खाते हैं और क्या नहीं खाते। न
परहेज़ करने से हमें कोई नुक़सान पहुँचता है और
न खा लेने से कोई फ़ायदा।

9 लेकिन ख़बरदार रहें कि आपकी यह आज़ादी
कमज़ोरों के लिए ठोकर का बाइस न बने।
10 क्योंकि अगर कोई कमज़ोरज़मीर शख़्स
आपको बुतख़ाने में खाना खाते हुए देखे तो क्या
उसे उसके ज़मीर के ख़िलाफ़ बुतों की क़ुरबानियाँ
खाने पर उभारा नहीं जाएगा? 11 इस तरह
आपका कमज़ोर भाई जिसकी ख़ातिर मसीह
क़ुरबान हुआ आपके इल्मो-इरफ़ान की वजह से
हलाक हो जाएगा। 12 जब आप इस तरह अपने
भाइयों का गुनाह करते और उनके कमज़ोर ज़मीर
को मजरूह करते हैं तो आप मसीह का ही गुनाह
करते हैं। 13 इसलिए अगर ऐसा खाना मेरे भाई
को सहीह राह से भटकाने का बाइस बने तो मैं
कभी गोश्त नहीं खाऊँगा ताकि अपने भाई की
गुमराही का बाइस न बनूँ।

रसूल का हक़

9 क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं मसीह का
रसूल नहीं? क्या मैंने ईसा को नहीं देखा
जो हमारा ख़ुदावंद है? क्या आप ख़ुदावंद में मेरी
मेहनत का फल नहीं हैं? 2 अगरचे मैं दूसरों के
नज़दीक मसीह का रसूल नहीं, लेकिन आपके
नज़दीक तो ज़रूर हूँ। ख़ुदावंद में आप ही मेरी
रिसालत पर मुहर हैं।

3 जो मेरी बाज़पुर्स करना चाहते हैं उन्हें मैं अपने
दिफ़ा में कहता हूँ, 4 क्या हमें खाने-पीने का हक़
नहीं? 5 क्या हमें हक़ नहीं कि शादी करके अपनी

बीवी को साथ लिए फिरें? दूसरे रसूल और
ख़ुदावंद के भाई और कैफ़ा तो ऐसा ही करते हैं।
6 क्या मुझे और बरनबास ही को अपनी ख़िदमत
के अज्र में कुछ पाने का हक़ नहीं? 7 कौन-सा
फ़ौजी अपने ख़र्च पर जंग लड़ता है? कौन अंगूर
का बाग़ लगाकर उसके फल से अपना हिस्सा
नहीं पाता? या कौन रेवड़ की गल्लाबानी करके
उसके दूध से अपना हिस्सा नहीं पाता?

8 क्या मैं यह फ़क़त इनसानी सोच के तहत
कह रहा हूँ? क्या शरीअत भी यही नहीं कहती?
9 तौरेत में लिखा है, "जब तू फ़सल गाहने के
लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह
बाँधकर न रखना।" क्या अल्लाह सिर्फ़ बैलों की
फ़िकर करता है 10 या वह हमारी ख़ातिर यह
फ़रमाता है? हाँ, ज़रूर हमारी ख़ातिर क्योंकि
हल चलानेवाला इस उम्मीद पर चलाता है कि
उसे कुछ मिलेगा। इसी तरह गाहनेवाला इस
उम्मीद पर गाहता है कि वह पैदावार में से अपना
हिस्सा पाएगा। 11 हमने आपके लिए रूहानी बीज
बोया है। तो क्या यह नामुनासिब है अगर हम
आपसे जिस्मानी फ़सल काटें? 12 अगर दूसरों
को आपसे अपना हिस्सा लेने का हक़ है तो क्या
हमारा उनसे ज़्यादा हक़ नहीं बनता?

लेकिन हमने इस हक़ से फ़ायदा नहीं उठाया।
हम सब कुछ बरदाश्त करते हैं ताकि मसीह की
ख़ुशख़बरी के लिए किसी भी तरह से रुकावट का
बाइस न बनें। 13 क्या आप नहीं जानते कि बैतुल-
मुक़द्दस में ख़िदमत करनेवालों की ज़रूरियात
बैतुल-मुक़द्दस ही से पूरी की जाती हैं? जो
क़ुरबानियाँ चढ़ाने के काम में मसरूफ़ रहते हैं
उन्हें क़ुरबानियों से ही हिस्सा मिलता है। 14 इसी
तरह ख़ुदावंद ने मुक़र्रर किया है कि इंजील की
ख़ुशख़बरी की मुनादी करनेवालों की ज़रूरियात
उनसे पूरी की जाएँ जो इस ख़िदमत से फ़ायदा
उठाते हैं।

15 लेकिन मैंने किसी तरह भी इससे फ़ायदा
नहीं उठाया, और न इसलिए लिखा है कि मेरे
साथ ऐसा सुलूक किया जाए। नहीं, इससे पहले
कि फ़ख़र करने का मेरा यह हक़ मुझसे छीन
लिया जाए बेहतर यह है कि मैं मर जाऊँ।
16 लेकिन अल्लाह की ख़ुशख़बरी की मुनादी
करना मेरे लिए फ़ख़र का बाइस नहीं। मैं तो यह
करने पर मजबूर हूँ। मुझ पर अफ़सोस अगर इस
ख़ुशख़बरी की मुनादी न करूँ। 17 अगर मैं यह
अपनी मरज़ी से करता तो फिर अज्र का मेरा हक़
बनता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि ख़ुदा ही ने मुझे
यह ज़िम्मेदारी दी है। 18 तो फिर मेरा अज्र क्या
है? यह कि मैं इंजील की ख़ुशख़बरी मुफ़्त सुनाऊँ
और अपने उस हक़ से फ़ायदा न उठाऊँ जो मुझे
उस की मुनादी करने से हासिल है।

19 अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर
भी मैंने अपने आपको सबका ग़ुलाम बना लिया
ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को जीत लूँ। 20 मैं
यहूदियों के दरमियान यहूदी की मानिंद बना
ताकि यहूदियों को जीत लूँ। मूसवी शरीअत के
तहत ज़िंदगी गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उनकी
मानिंद बना ताकि उन्हें जीत लूँ, गो मैं शरीअत के
मातहत नहीं। 21 मूसवी शरीअत के बग़ैर ज़िंदगी
गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उन्हीं की मानिंद बना
ताकि उन्हें जीत लूँ। इसका मतलब यह नहीं कि
मैं अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं हूँ। हक़ीक़त
में मैं मसीह की शरीअत के तहत ज़िंदगी गुज़ारता
हूँ। 22 मैं कमज़ोरों के लिए कमज़ोर बना ताकि
उन्हें जीत लूँ। सबके लिए मैं सब कुछ बना ताकि
हर मुमकिन तरीक़े से बाज़ को बचा सकूँ। 23 जो
कुछ भी करता हूँ अल्लाह की ख़ुशख़बरी के वास्ते
करता हूँ ताकि इसकी बरकात में शरीक हो जाऊँ।

24 क्या आप नहीं जानते कि स्टेडियम में दौड़ते
तो सब ही हैं, लेकिन इनाम एक ही शख़्स हासिल
करता है? चुनाँचे ऐसे दौड़ें कि आप ही जीतें।
25 खेलों में शरीक होनेवाला हर शख़्स अपने
आपको सख़्त नज़मो-ज़ब्त का पाबंद रखता है।
वह फ़ानी ताज पाने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन
हम ग़ैरफ़ानी ताज पाने के लिए। 26 चुनाँचे मैं हर
वक़्त मनज़िले-मक़सूद को पेशे-नज़र रखते हुए
दौड़ता हूँ। और मैं इसी तरह बाक्सिंग भी करता

हूँ, मैं हवा में मुक्के नहीं मारता बल्कि निशाने
को। 27 मैं अपने बदन को मारता कूटता और इसे
अपना ग़ुलाम बनाता हूँ, ऐसा न हो कि दूसरों में
मुनादी करके ख़ुद नामक़बूल ठहरूँ।

इसराईल का इबरतनाक तजरबा

10 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप
इस बात से नावाक़िफ़ रहें कि हमारे
बापदादा सब बादल के नीचे थे। वह सब समुंदर
में से गुज़रे। 2 उन सबने बादल और समुंदर में
मूसा का बपतिस्मा लिया। 3 सबने एक ही रूहानी
ख़ुराक खाई 4 और सबने एक ही रूहानी पानी
पिया। क्योंकि मसीह रूहानी चट्टान की सूरत में
उनके साथ साथ चलता रहा और वही उन सबको
पानी पिलाता रहा। 5 इसके बावुजूद उनमें से
बेशतर लोग अल्लाह को पसंद न आए, इसलिए
वह रेगिस्तान में हलाक हो गए।

6 यह सब कुछ हमारी इबरत के लिए वाक़े हुआ
ताकि हम उन लोगों की तरह बुरी चीज़ों की हवस
न करें। 7 उनमें से बाज़ की तरह बुतपरस्त न बनें,
जैसे मुक़द्दस नविश्तों में लिखा है, "लोग खाने-
पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों
में अपने दिल बहलाने लगे।" 8 हम ज़िना भी न
करें जैसे उनमें से बाज़ ने किया और नतीजे में
एक ही दिन में 23,000 अफ़राद ढेर हो गए।
9 हम ख़ुदावंद की आज़माइश भी न करें जिस
तरह उनमें से बाज़ ने की और नतीजे में साँपों
से हलाक हुए। 10 और न बुड़बुड़ाएँ जिस तरह
उनमें से बाज़ बुड़बुड़ाने लगे और नतीजे में हलाक
करनेवाले फ़रिश्ते के हाथों मारे गए।

11 यह माजरे इबरत की ख़ातिर उन पर वाक़े
हुए और हम अख़ीर ज़माने में रहनेवालों की
नसीहत के लिए लिखे गए।

12 ग़रज़ जो समझता है कि वह मज़बूती से
खड़ा है, ख़बरदार रहे कि गिर न पड़े। 13 आप
सिर्फ़ ऐसी आज़माइशों में पड़े हैं जो इनसान के
लिए आम होती हैं। और अल्लाह वफ़ादार है।
वह आपको आपकी ताक़त से ज़्यादा आज़माइश
में नहीं पड़ने देगा। जब आप आज़माइश में पड़
जाएंगे तो वह उसमें से निकलने की राह भी पैदा
कर देगा ताकि आप उसे बरदाश्त कर सकें।

अशाए-रब्बानी और बुतपरस्ती में तज़ाद

14 ग़रज़ मेरे प्यारो, बुतपरस्ती से भागें। 15 मैं
आपको समझदार जानकर बात कर रहा हूँ। आप
ख़ुद मेरी इस बात का फ़ैसला करें। 16 जब हम
अशाए-रब्बानी के मौक़े पर बरकत के प्याले को
बरकत देकर उसमें से पीते हैं तो क्या हम यों
मसीह के ख़ून में शरीक नहीं होते? और जब हम
रोटी तोड़कर खाते हैं तो क्या मसीह के बदन में
शरीक नहीं होते? 17 रोटी तो एक ही है, इसलिए
हम जो बहुत-से हैं एक ही बदन हैं, क्योंकि हम
सब एक ही रोटी में शरीक होते हैं।

18 बनी इसराईल पर ग़ौर करें। क्या बैतुल-
मुक़द्दस में क़ुरबानियाँ खानेवाले क़ुरबानगाह की
रिफ़ाक़त में शरीक नहीं होते? 19 क्या मैं यह
कहना चाहता हूँ कि बुतों के चढ़ावे की कोई
हैसियत है? या कि बुत की कोई हैसियत
है? हरगिज़ नहीं। 20 मैं यह कहता हूँ कि जो
क़ुरबानियाँ वह गुज़राँते हैं अल्लाह को नहीं बल्कि
शयातीन को गुज़राँते हैं। और मैं नहीं चाहता कि
आप शयातीन की रिफ़ाक़त में शरीक हों। 21 आप
ख़ुदावंद के प्याले और साथ ही शयातीन के प्याले
से नहीं पी सकते। आप ख़ुदावंद के रिफ़ाक़ती
खाने और साथ ही शयातीन के रिफ़ाक़ती खाने
में शरीक नहीं हो सकते। 22 या क्या हम अल्लाह
की ग़ैरत को उकसाना चाहते हैं? क्या हम उससे
ताक़तवर हैं?

दूसरों के ज़मीर का लिहाज़ करना

23 सब कुछ रवा तो है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद
नहीं। सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन सब कुछ
हमारी तामीरो-तरक़्क़ी का बाइस नहीं होता।
24 हर कोई अपने ही फ़ायदे की तलाश में न रहे
बल्कि दूसरे के।

25 बाज़ार में जो कुछ बिकता है उसे खाएँ और
अपने ज़मीर को मुतमइन करने की ख़ातिर पूछ-
गछ न करें, 26 क्योंकि "ज़मीन और जो कुछ उस
पर है रब का है।"

27 अगर कोई ग़ैरईमानदार आपकी दावत करे
और आप उस दावत को क़बूल कर लें तो आपके
सामने जो कुछ भी रखा जाए उसे खाएँ। अपने
ज़मीर के इतमीनान के लिए तफ़तीश न करें।
28 लेकिन अगर कोई आपको बता दे, "यह बुतों
का चढ़ावा है" तो फिर उस शख़्स की ख़ातिर
जिसने आपको आगाह किया है और ज़मीर की
ख़ातिर उसे न खाएँ। 29 मतलब है अपने ज़मीर
की ख़ातिर नहीं बल्कि दूसरे के ज़मीर की ख़ातिर।
क्योंकि यह किस तरह हो सकता है कि किसी
दूसरे का ज़मीर मेरी आज़ादी के बारे में फ़ैसला
करे? 30 अगर मैं ख़ुदा का शुक्र करके किसी
खाने में शरीक होता हूँ तो फिर मुझे क्यों बुरा कहा
जाए? मैं तो उसे ख़ुदा का शुक्र करके खाता हूँ।

31 चुनाँचे सब कुछ अल्लाह के जलाल की
ख़ातिर करें, ख़ाह आप खाएँ, पिएँ या और कुछ
करें। 32 किसी के लिए ठोकर का बाइस न बनें,
न यहूदियों के लिए, न यूनानियों के लिए और
न अल्लाह की जमात के लिए। 33 इसी तरह मैं
भी सबको पसंद आने की हर मुमकिन कोशिश
करता हूँ। मैं अपने ही फ़ायदे के ख़याल में नहीं
रहता बल्कि दूसरों के ताकि बहुतेरे नजात पाएँ।

11 मेरे नमूने पर चलें जिस तरह मैं मसीह
के नमूने पर चलता हूँ।

इबादत में ख़वातीन का किरदार

2 शाबाश कि आप हर तरह से मुझे याद रखते
हैं। आपने रिवायात को यों महफ़ूज़ रखा है जिस
तरह मैंने उन्हें आपके सुपुर्द किया था। 3 लेकिन मैं
आपको एक और बात से आगाह करना चाहता
हूँ। हर मर्द का सर मसीह है जबकि औरत का
सर मर्द और मसीह का सर अल्लाह है। 4 अगर
कोई मर्द सर ढाँककर दुआ या नबुव्वत करे तो वह
अपने सर की बेइज़्ज़ती करता है। 5 और अगर
कोई ख़ातून नंगे सर दुआ या नबुव्वत करे तो वह
अपने सर की बेइज़्ज़ती करती है, गोया वह सर
मुंडी है। 6 जो औरत अपने सर पर दोपट्टा नहीं
लेती वह टिंड करवाए। लेकिन अगर टिंड करवाना
या सर मुँडवाना उसके लिए बेइज़्ज़ती का बाइस
है तो फिर वह अपने सर को ज़रूर ढाँके। 7 लेकिन
मर्द के लिए लाज़िम है कि वह अपने सर को न
ढाँके क्योंकि वह अल्लाह की सूरत और जलाल
को मुनअकिस करता है। लेकिन औरत मर्द का
जलाल मुनअकिस करती है, 8 क्योंकि पहला
मर्द औरत से नहीं निकला बल्कि औरत मर्द से
निकली है। 9 मर्द को औरत के लिए ख़लक़ नहीं
किया गया बल्कि औरत को मर्द के लिए। 10 इस
वजह से औरत फ़रिश्तों को पेशे-नज़र रखकर
अपने सर पर दोपट्टा ले जो उस पर इख़्तियार का
निशान है। 11 लेकिन याद रहे कि ख़ुदावंद में न
औरत मर्द के बग़ैर कुछ है और न मर्द औरत के
बग़ैर। 12 क्योंकि अगरचे इब्तिदा में औरत मर्द से
निकली, लेकिन अब मर्द औरत ही से पैदा होता
है। और हर शै अल्लाह से निकलती है।

13 आप ख़ुद फ़ैसला करें। क्या मुनासिब है कि
कोई औरत अल्लाह के सामने नंगे सर दुआ करे?
14 क्या फ़ितरत भी यह नहीं सिखाती कि लंबे
बाल मर्द की बेइज़्ज़ती का बाइस हैं 15 जबकि
औरत के लंबे बाल उस की इज़्ज़त का मूजिब
हैं? क्योंकि बाल उसे ढाँपने के लिए दिए गए हैं।
16 लेकिन इस सिलसिले में अगर कोई झगड़ने
का शौक़ रखे तो जान ले कि न हमारा यह दस्तूर
है, न अल्लाह की जमातों का।

अशाए-रब्बानी

17 मैं आपको एक और हिदायत देता हूँ।
लेकिन इस सिलसिले में मेरे पास आपके लिए
तारीफ़ी अलफ़ाज़ नहीं, क्योंकि आपका जमा
होना आपकी बेहतरी का बाइस नहीं होता बल्कि
नुक़सान का बाइस। 18 अव्वल तो मैं सुनता हूँ
कि जब आप जमात की सूरत में इकट्ठे होते हैं
तो आपके दरमियान पार्टीबाज़ी नज़र आती है।

और किसी हद तक मुझे इसका यक़ीन भी है।
19 लाज़िम है कि आपके दरमियान मुख़्तलिफ़
पार्टियाँ नज़र आएँ ताकि आपमें से वह ज़ाहिर
हो जाएँ जो आज़माने के बाद भी सच्चे निकलें।
20 जब आप जमा होते हैं तो जो खाना आप खाते
हैं उसका अशाए-रब्बानी से कोई ताल्लुक़ नहीं
रहा। 21 क्योंकि हर शख़्स दूसरों का इंतज़ार किए
बग़ैर अपना खाना खाने लगता है। नतीजे में एक
भूका रहता है जबकि दूसरे को नशा हो जाता है।
22 ताज्जुब है! क्या खाने-पीने के लिए आपके
घर नहीं? या क्या आप अल्लाह की जमात को
हक़ीर जानकर उनको जो ख़ाली हाथ आए हैं
शरमिंदा करना चाहते हैं? मैं क्या कहूँ? क्या
आपको शाबाश दूँ? इसमें मैं आपको शाबाश
नहीं दे सकता।

23 क्योंकि जो कुछ मैंने आपके सुपुर्द किया
है वह मुझे ख़ुदावंद ही से मिला है। जिस रात
ख़ुदावंद ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया गया
उसने रोटी लेकर 24 शुक्रगुज़ारी की दुआ की और
उसे टुकड़े करके कहा, "यह मेरा बदन है जो
तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के
लिए यही किया करो।" 25 इसी तरह उसने खाने
के बाद प्याला लेकर कहा, "मै का यह प्याला
वह नया अहद है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम
किया जाता है। जब कभी इसे पियो तो मुझे याद
करने के लिए पियो।" 26 क्योंकि जब भी आप
यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो ख़ुदावंद
की मौत का एलान करते हैं, जब तक वह वापस
न आए।

27 चुनाँचे जो नालायक़ तौर पर ख़ुदावंद की
रोटी खाए और उसका प्याला पिए वह ख़ुदावंद के
बदन और ख़ून का गुनाह करता है और क़ुसूरवार
ठहरेगा। 28 हर शख़्स अपने आपको परखकर ही
इस रोटी में से खाए और प्याले में से पिए। 29 जो
रोटी खाते और प्याला पीते वक़्त ख़ुदावंद के
बदन का एहतराम नहीं करता वह अपने आप
पर अल्लाह की अदालत लाता है। 30 इसी लिए
आपके दरमियान बहुतेरे कमज़ोर और बीमार हैं
बल्कि बहुत-से मौत की नींद सो चुके हैं। 31 अगर
हम अपने आपको जाँचते तो अल्लाह की अदालत
से बचे रहते। 32 लेकिन ख़ुदावंद हमारी अदालत
करने से हमारी तरबियत करता है ताकि हम
दुनिया के साथ मुजरिम न ठहरें।

33 ग़रज़ मेरे भाइयो, जब आप खाने के लिए
जमा होते हैं तो एक दूसरे का इंतज़ार करें।
34 अगर किसी को भूक लगी हो तो वह अपने
घर में ही खाना खा ले ताकि आपका जमा
होना आपकी अदालत का बाइस न ठहरे। दीगर
हिदायात मैं आपको उस वक़्त दूँगा जब आपके
पास आऊँगा।

एक रूह और मुख़्तलिफ़ नेमतें

12 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप
रूहानी नेमतों के बारे में नावाक़िफ़
रहें। 2 आप जानते हैं कि ईमान लाने से पेशतर
आपको बार बार बहकाया और गूँगे बुतों की
तरफ़ खींचा जाता था। 3 इसी के पेशे-नज़र मैं
आपको आगाह करता हूँ कि अल्लाह के रूह की
हिदायत से बोलनेवाला कभी नहीं कहेगा, "ईसा
पर लानत।" और रूहुल-क़ुद्स की हिदायत से
बोलनेवाले के सिवा कोई नहीं कहेगा, "ईसा
ख़ुदावंद है।"

4 गो तरह तरह की नेमतें होती हैं, लेकिन
रूह एक ही है। 5 तरह तरह की ख़िदमतें होती
हैं, लेकिन ख़ुदावंद एक ही है। 6 अल्लाह अपनी
क़ुदरत का इज़हार मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से करता है,
लेकिन ख़ुदा एक ही है जो सबमें हर तरह का काम
करता है। 7 हममें से हर एक में रूहुल-क़ुद्स का
इज़हार किसी नेमत से होता है। यह नेमतें इसलिए
दी जाती हैं ताकि हम एक दूसरे की मदद करें।
8 एक को रूहुल-क़ुद्स हिकमत का कलाम अता
करता है, दूसरे को वही रूह इल्मो-इरफ़ान का
कलाम। 9 तीसरे को वही रूह पुख़्ता ईमान देता है
और चौथे को वही एक रूह शफ़ा देने की नेमतें।
10 वह एक को मोजिज़े करने की ताक़त देता है,
दूसरे को नबुव्वत करने की सलाहियत और तीसरे

को मुख़्तलिफ़ रूहों में इम्तियाज़ करने की नेमत।
एक को उससे ग़ैरज़बानें बोलने की नेमत मिलती
है और दूसरे को इनका तरजुमा करने की। 11 वही
एक रूह यह तमाम नेमतें तक़सीम करता है। और
वही फ़ैसला करता है कि किस को क्या नेमत
मिलनी है।

एक जिस्म और मुख़्तलिफ़ आज़ा

12 इनसानी जिस्म के बहुत-से आज़ा होते हैं,
लेकिन यह तमाम आज़ा एक ही बदन को तश्कील
देते हैं। मसीह का बदन भी ऐसा है। 13 ख़ाह
हम यहूदी थे या यूनानी, ग़ुलाम थे या आज़ाद,
बपतिस्मे से हम सबको एक ही रूह की मारिफ़त
एक ही बदन में शामिल किया गया है, हम सबको
एक ही रूह पिलाया गया है।

14 बदन के बहुत-से हिस्से होते हैं, न सिर्फ़
एक। 15 फ़र्ज़ करें कि पाँव कहे, “मैं हाथ नहीं हूँ
इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने
पर उसका बदन से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाएगा?
16 या फ़र्ज़ करें कि कान कहे, “मैं आँख नहीं हूँ
इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने
पर उसका बदन से नाता टूट जाएगा? 17 अगर
पूरा जिस्म आँख ही होता तो फिर सुनने की
सलाहियत कहाँ होती? अगर सारा बदन कान ही
होता तो फिर सूँघने का क्या बनता? 18 लेकिन
अल्लाह ने जिस्म के मुख़्तलिफ़ आज़ा बनाकर
हर एक को वहाँ लगाया जहाँ वह चाहता था।
19 अगर एक ही अज़ु पूरा जिस्म होता तो फिर
यह किस क़िस्म का जिस्म होता? 20 नहीं, बहुत-
से आज़ा होते हैं, लेकिन जिस्म एक ही है।

21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, “मुझे तेरी
ज़रूरत नहीं,” न सर पाँवों से कह सकता है,
“मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं।” 22 बल्कि अगर देखा
जाए तो अकसर ऐसा होता है कि जिस्म के जो
आज़ा ज़्यादा कमज़ोर लगते हैं उनकी ज़्यादा
ज़रूरत होती है। 23 वह आज़ा जिन्हें हम कम
इज़्ज़त के लायक़ समझते हैं उन्हें हम ज़्यादा
इज़्ज़त के साथ ढाँप लेते हैं, और वह आज़ा
जिन्हें हम शर्म से छुपाकर रखते हैं उन्हीं का
हम ज़्यादा एहतराम करते हैं। 24 इसके बरअक्स
हमारे इज़्ज़तदार आज़ा को इसकी ज़रूरत ही नहीं
होती कि हम उनका ख़ास एहतराम करें। लेकिन
अल्लाह ने जिस्म को इस तरह तरतीब दिया
कि उसने कमक़दर आज़ा को ज़्यादा इज़्ज़तदार
ठहराया, 25 ताकि जिस्म के आज़ा में तफ़रक़ा न
हो बल्कि वह एक दूसरे की फ़िकर करें। 26 अगर
एक अज़ु दुख में हो तो उसके साथ दीगर तमाम
आज़ा भी दुख महसूस करते हैं। अगर एक अज़ु
सरफ़राज़ हो जाए तो उसके साथ बाक़ी तमाम
आज़ा भी मसरूर होते हैं।

27 आप सब मिलकर मसीह का बदन हैं और
इनफ़िरादी तौर पर उसके मुख़्तलिफ़ आज़ा।
28 और अल्लाह ने अपनी जमात में पहले रसूल,
दूसरे नबी और तीसरे उस्ताद मुक़र्रर किए हैं। फिर
उसने ऐसे लोग भी मुक़र्रर किए हैं जो मोजिज़े
करते, शफ़ा देते, दूसरों की मदद करते, इंतज़ाम
चलाते और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ग़ैरज़बानें बोलते
हैं। 29 क्या सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं?
क्या सब उस्ताद हैं? क्या सब मोजिज़े करते हैं?
30 क्या सबको शफ़ा देने की नेमतें हासिल हैं?
क्या सब ग़ैरज़बानें बोलते हैं? क्या सब इनका
तरजुमा करते हैं? 31 लेकिन आप उन नेमतों की
तलाश में रहें जो अफ़ज़ल हैं।

अब मैं आपको इससे कहीं उम्दा राह बताता
हूँ।

मुहब्बत

13 अगर मैं इनसानों और फ़रिश्तों की
ज़बानें बोलूँ, लेकिन मुहब्बत न रखूँ
तो फिर मैं बस गूँजता हुआ घड़ियाल या
ठनठनाती हुई झाँझ ही हूँ। 2 अगर मेरी नबुव्वत
की नेमत हो और मुझे तमाम भेदों और हर इल्म
से वाक़िफ़ियत हो, साथ ही मेरा ऐसा ईमान हो
कि पहाड़ों को खिसका सकूँ, लेकिन मेरा दिल
मुहब्बत से ख़ाली हो तो मैं कुछ भी नहीं। 3 अगर
मैं अपना सारा माल ग़रीबों में तक़सीम कर दूँ

बल्कि अपना बदन जलाए जाने के लिए दे दूँ,
लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मुझे
कुछ फ़ायदा नहीं।

4 मुहब्बत सब्र से काम लेती है, मुहब्बत
मेहरबान है। न यह हसद करती है न डींगें मारती
है। यह फूलती भी नहीं। 5 मुहब्बत बदतमीज़ी
नहीं करती न अपने ही फ़ायदे की तलाश में
रहती है। यह जल्दी से ग़ुस्से में नहीं आ जाती
और दूसरों की ग़लतियों का रिकार्ड नहीं रखती।
6 यह नाइनसाफ़ी देखकर ख़ुश नहीं होती बल्कि
सच्चाई के ग़ालिब आने पर ही ख़ुशी मनाती है।
7 यह हमेशा दूसरों की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करती
है, हमेशा एतमाद करती है, हमेशा उम्मीद रखती
है, हमेशा साबितक़दम रहती है।

8 मुहब्बत कभी ख़त्म नहीं होती। इसके
मुक़ाबले में नबुव्वतें ख़त्म हो जाएँगी, ग़ैरज़बानें
जाती रहेंगी, इल्म मिट जाएगा। 9 क्योंकि इस
वक़्त हमारा इल्म नामुकम्मल है और हमारी
नबुव्वत सब कुछ ज़ाहिर नहीं करती। 10 लेकिन
जब वह कुछ आएगा जो कामिल है तो यह अधूरी
चीज़ें जाती रहेंगी।

11 जब मैं बच्चा था तो बच्चे की तरह बोलता,
बच्चे की-सी सोच रखता और बच्चे की-सी समझ
से काम लेता था। लेकिन अब मैं बालिग़ हूँ,
इसलिए मैंने बच्चे का-सा अंदाज़ छोड़ दिया है।
12 इस वक़्त हमें आईने में धुँधला-सा दिखाई
देता है, लेकिन उस वक़्त हम रूबरू देखेंगे। अब
मैं जुज़वी तौर पर जानता हूँ, लेकिन उस वक़्त
कामिल तौर से जान लूँगा, ऐसे ही जैसे अल्लाह
ने मुझे पहले से जान लिया है।

13 ग़रज़ ईमान, उम्मीद और मुहब्बत तीनों
क़ायम रहते हैं, लेकिन इनमें अफ़ज़ल मुहब्बत
है।

नबुव्वत और ग़ैरज़बानें

14 मुहब्बत का दामन थामे रखें।
लेकिन साथ ही रूहानी नेमतों
को सरगरमी से इस्तेमाल में लाएँ, ख़ु-
सूसन नबुव्वत की नेमत को। 2 ग़ैरज़बान
बोलनेवाला लोगों से नहीं बल्कि अल्लाह से
बात करता है। कोई उस की बात नहीं समझता
क्योंकि वह रूह में भेद की बातें करता है।
3 इसके बरअक्स नबुव्वत करनेवाला लोगों से
ऐसी बातें करता है जो उनकी तामीरो-तरक़्क़ी,
हौसलाअफ़्ज़ाई और तसल्ली का बाइस बनती
हैं। 4 ग़ैरज़बान बोलनेवाला अपनी तामीरो-
तरक़्क़ी करता है जबकि नबुव्वत करनेवाला
जमात की।

5 मैं चाहता हूँ कि आप सब ग़ैरज़बानें बोलें,
लेकिन इससे ज़्यादा यह ख़ाहिश रखता हूँ कि
आप नबुव्वत करें। नबुव्वत करनेवाला ग़ैरज़बानें
बोलनेवाले से अहम है। हाँ, ग़ैरज़बानें बोलनेवाला
भी अहम है बशर्तेकि अपनी ज़बान का तरजुमा
करे, क्योंकि इससे ख़ुदा की जमात की तामीरो-
तरक़्क़ी होती है।

6 भाइयो, अगर मैं आपके पास आकर
ग़ैरज़बानें बोलूँ, लेकिन मुकाशफ़े, इल्म, नबुव्वत
और तालीम की कोई बात न करूँ तो आपको क्या
फ़ायदा होगा? 7 बेजान साज़ों पर ग़ौर करने से
भी यही बात सामने आती है। अगर बाँसरी या
सरोद को किसी ख़ास सुर के मुताबिक़ न बजाया
जाए तो फिर सुननेवाले किस तरह पहचान सकेंगे
कि इन पर क्या क्या पेश किया जा रहा है?
8 इसी तरह अगर बिगुल की आवाज़ जंग के लिए
तैयार हो जाने के लिए साफ़ तौर से न बजे तो
क्या फ़ौजी कमरबस्ता हो जाएंगे? 9 अगर आप
साफ़ साफ़ बात न करें तो आपकी हालत भी
ऐसी ही होगी। फिर आपकी बात कौन समझेगा?
क्योंकि आप लोगों से नहीं बल्कि हवा से बातें
करेंगे। 10 इस दुनिया में बहुत ज़्यादा ज़बानें बोली
जाती हैं और इनमें से कोई भी नहीं जो बेमानी
हो। 11 अगर मैं किसी ज़बान से वाक़िफ़ नहीं तो
मैं उस ज़बान में बोलनेवाले के नज़दीक अजनबी
ठहरूँगा और वह मेरे नज़दीक। 12 यह उसूल आप
पर भी लागू होता है। चूँकि आप रूहानी नेमतों के
लिए तड़पते हैं तो फिर ख़ासकर उन नेमतों में

माहिर बनने की कोशिश करें जो ख़ुदा की जमात
को तामीर करती हैं।
13 चुनाँचे ग़ैरज़बान बोलनेवाला दुआ करे कि
इसका तरजुमा भी कर सके। 14 क्योंकि अगर
मैं ग़ैरज़बान में दुआ करूँ तो मेरी रूह तो दुआ
करती है मगर मेरी अक़्ल बेअमल रहती है। 15 तो
फिर क्या करूँ? मैं रूह में दुआ करूँगा, लेकिन
अक़्ल को भी इस्तेमाल करूँगा। मैं रूह में हम्दो-
सना करूँगा, लेकिन अक़्ल को भी इस्तेमाल में
लाऊँगा। 16 अगर आप सिर्फ़ रूह में हम्दो-सना
करें तो हाज़िरीन में से जो आपकी बात नहीं
समझता वह किस तरह आपकी शुक्रगुज़ारी पर
“आमीन” कह सकेगा? उसे तो आपकी बातों
की समझ ही नहीं आई। 17 बेशक आप अच्छी
तरह ख़ुदा का शुक्र कर रहे होंगे, लेकिन इससे
दूसरे शख़्स की तामीरो-तरक़्क़ी नहीं होगी।

18 मैं ख़ुदा का शुक्र करता हूँ कि आप सबकी
निसबत ज़्यादा ग़ैरज़बानों में बात करता हूँ।
19 फिर भी मैं ख़ुदा की जमात में ऐसी बातें
पेश करना चाहता हूँ जो दूसरे समझ सकें और
जिनसे वह तरबियत हासिल कर सकें। क्योंकि
ग़ैरज़बानों में बोली गई बेशुमार बातों की निसबत
पाँच तरबियत देनेवाले अलफ़ाज़ कहीं बेहतर हैं।

20 भाइयो, बच्चों जैसी सोच से बाज़ आएँ।
बुराई के लिहाज़ से तो ज़रूर बच्चे बने रहें,
लेकिन समझ में बालिग़ बन जाएँ। 21 शरीअत
में लिखा है, “रब फ़रमाता है कि मैं ग़ैरज़बानों
और अजनबियों के होंटों की मारिफ़त इस क़ौम
से बात करूँगा। लेकिन वह फिर भी मेरी नहीं
सुनेंगे।” 22 इससे ज़ाहिर होता है कि ग़ैरज़बानें
ईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होतीं
बल्कि ग़ैरईमानदारों के लिए। इसके बरअक्स
नबुव्वत ग़ैरईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान
नहीं होती बल्कि ईमानदारों के लिए।

23 अब फ़र्ज़ करें कि ईमानदार एक जगह जमा
हैं और तमाम हाज़िरीन ग़ैरज़बानें बोल रहे हैं।
इसी असना में ग़ैरज़बान को न समझनेवाले या
ग़ैरईमानदार आ शामिल होते हैं। आपको इस
हालत में देखकर क्या वह आपको दीवाना क़रार
नहीं देंगे? 24 इसके मुक़ाबले में अगर तमाम लोग
नबुव्वत कर रहे हों और कोई ग़ैरईमानदार अंदर
आए तो क्या होगा? वह सब उसे क़ायल कर
लेंगे कि गुनाहगार है और सब उसे परख लेंगे।
25 यों उसके दिल की पोशीदा बातें ज़ाहिर हो
जाएँगी, वह गिरकर अल्लाह को सिजदा करेगा
और तसलीम करेगा कि फ़िलहक़ीक़त अल्लाह
आपके दरमियान मौजूद है।

जमात में तरतीब की ज़रूरत

26 भाइयो, फिर क्या होना चाहिए? जब आप
जमा होते हैं तो हर एक के पास कोई गीत या
तालीम या मुकाशफ़ा या ग़ैरज़बान या इसका
तरजुमा हो। इन सबका मक़सद ख़ुदा की जमात
की तामीरो-तरक़्क़ी हो। 27 ग़ैरज़बान में बोलते
वक़्त सिर्फ़ दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन अशख़ास
बोलें और वह भी बारी बारी। साथ ही कोई
उनका तरजुमा भी करे। 28 अगर कोई तरजुमा
करनेवाला न हो तो ग़ैरज़बान बोलनेवाला जमात
में ख़ामोश रहे, अलबत्ता उसे अपने आपसे और
अल्लाह से बात करने की आज़ादी है। 29 नबियों
में से दो या तीन नबुव्वत करें और दूसरे उनकी
बातों की सेहत को परखें। 30 अगर इस दौरान
किसी बैठे हुए शख़्स को कोई मुकाशफ़ा मिले
तो पहला शख़्स ख़ामोश हो जाए। 31 क्योंकि
आप सब बारी बारी नबुव्वत कर सकते हैं ताकि
तमाम लोग सीखें और उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई
हो। 32 नबियों की रूहें नबियों के ताबे रहती हैं,
33 क्योंकि अल्लाह बेतरतीबी का नहीं बल्कि
सलामती का ख़ुदा है।

जैसा मुक़द्दसीन की तमाम जमातों का दस्तूर
है 34 ख़वातीन जमात में ख़ामोश रहें। उन्हें बोलने
की इजाज़त नहीं, बल्कि वह फ़रमाँबरदार रहें।
शरीअत भी यही फ़रमाती है। 35 अगर वह कुछ
सीखना चाहें तो अपने घर पर अपने शौहर से पूछ
लें, क्योंकि औरत का ख़ुदा की जमात में बोलना
शर्म की बात है।

36 क्या अल्लाह का कलाम आपमें से निकला
है, या क्या वह सिर्फ़ आप ही तक पहुँचा है?
37 अगर कोई ख़याल करे कि मैं नबी हूँ या ख़ास
रूहानी हैसियत रखता हूँ तो वह जान ले कि जो
कुछ मैं आपको लिख रहा हूँ वह ख़ुदावंद का हुक्म
है। 38 जो यह नज़रंदाज़ करता है उसे ख़ुद भी
नज़रंदाज़ किया जाएगा।

39 ग़रज़ भाइयो, नबुव्वत करने के लिए तड़पते
रहें, अलबत्ता किसी को ग़ैरज़बानें बोलने से न
रोकें। 40 लेकिन सब कुछ शायस्तगी और तरतीब
से अमल में आए।

मसीह का जी उठना

15 भाइयो, मैं आपकी तवज्जुह उस
ख़ुशख़बरी की तरफ़ दिलाता हूँ जो
मैंने आपको सुनाई, वही ख़ुशख़बरी जिसे आपने
क़बूल किया और जिस पर आप क़ायम भी हैं।
2 इसी पैग़ाम के वसीले से आपको नजात मिलती
है। शर्त यह है कि आप वह बातें ज्यों की त्यों थामे
रखें जिस तरह मैंने आप तक पहुँचाई हैं। बेशक
यह बात इस पर मुनहसिर है कि आपका ईमान
लाना बेमक़सद नहीं था।

3 क्योंकि मैंने इस पर ख़ास ज़ोर दिया कि
वही कुछ आपके सुपुर्द करूँ जो मुझे भी मिला
है। यह कि मसीह ने पाक नविश्तों के मुताबिक़
हमारे गुनाहों की ख़ातिर अपनी जान दी, 4 फिर
वह दफ़न हुआ और तीसरे दिन पाक नविश्तों के
मुताबिक़ जी उठा। 5 वह पतरस को दिखाई दिया,
फिर बारह शागिर्दों को। 6 इसके बाद वह एक ही
वक़्त पाँच सौ से ज़्यादा भाइयों पर ज़ाहिर हुआ।
उनमें से बेशतर अब तक ज़िंदा हैं अगरचे चंद एक
इंतक़ाल कर चुके हैं। 7 फिर याक़ूब ने उसे देखा,
फिर तमाम रसूलों ने।

8 और सबके बाद वह मुझ पर भी ज़ाहिर हुआ,
मुझ पर जो गोया क़बल अज़ वक़्त पैदा हुआ।
9 क्योंकि रसूलों में मेरा दर्जा सबसे छोटा है,
बल्कि मैं तो रसूल कहलाने के भी लायक़ नहीं,
इसलिए कि मैंने अल्लाह की जमात को ईज़ा
पहुँचाई। 10 लेकिन मैं जो कुछ हूँ अल्लाह के
फ़ज़्ल ही से हूँ। और जो फ़ज़्ल उसने मुझ पर
किया वह बेअसर न रहा, क्योंकि मैंने उन सबसे
ज़्यादा जाँफ़िशानी से काम किया है। अलबत्ता
यह काम मैंने ख़ुद नहीं बल्कि अल्लाह के फ़ज़्ल
ने किया है जो मेरे साथ था। 11 ख़ैर, यह काम मैंने
किया या उन्होंने, हम सब उसी पैग़ाम की मुनादी
करते हैं जिस पर आप ईमान लाए हैं।

जी उठने पर एतराज़

12 अब मुझे यह बताएँ, हम तो मुनादी करते
हैं कि मसीह मुरदों में से जी उठा है। तो फिर
आपमें से कुछ लोग कैसे कह सकते हैं कि मुरदे
जी नहीं उठते? 13 अगर मुरदे जी नहीं उठते तो
मतलब यह हुआ कि मसीह भी नहीं जी उठा।
14 और अगर मसीह जी नहीं उठा तो फिर हमारी
मुनादी अबस होती और आपका ईमान लाना भी
बेफ़ायदा होता। 15 नीज़ हम अल्लाह के बारे में
झूटे गवाह साबित होते। क्योंकि हम गवाही देते
हैं कि अल्लाह ने मसीह को ज़िंदा किया जबकि
अगर वाक़ई मुरदे नहीं जी उठते तो वह भी ज़िंदा
नहीं हुआ। 16 ग़रज़ अगर मुरदे जी नहीं उठते
तो फिर मसीह भी नहीं जी उठा। 17 और अगर
मसीह नहीं जी उठा तो आपका ईमान बेफ़ायदा
है और आप अब तक अपने गुनाहों में गिरिफ़्तार
हैं। 18 हाँ, इसके मुताबिक़ जिन्होंने मसीह में होते
हुए इंतक़ाल किया है वह सब हलाक हो गए हैं।
19 चुनाँचे अगर मसीह पर हमारी उम्मीद सिर्फ़
इसी ज़िंदगी तक महदूद है तो हम इनसानों में
सबसे ज़्यादा क़ाबिले-रहम हैं।

मसीह वाक़ई जी उठा है

20 लेकिन मसीह वाक़ई मुरदों में से जी उठा
है। वह इंतक़ाल किए हुओं की फ़सल का पहला
फल है। 21 चूँकि इनसान के वसीले से मौत
आई, इसलिए इनसान ही के वसीले से मुरदों
के जी उठने की भी राह खुली। 22 जिस तरह
सब इसलिए मरते हैं कि वह आदम के फ़रज़ंद हैं

उसी तरह सब ज़िंदा किए जाएंगे जो मसीह के हैं।
23 लेकिन जी उठने की एक तरतीब है। मसीह तो
फ़सल के पहले फल की हैसियत से जी उठ चुका
है जबकि उसके लोग उस वक़्त जी उठेंगे जब वह
वापस आएगा। 24 इसके बाद ख़ातमा होगा। तब
हर हुकूमत, इख़्तियार और क़ुव्वत को नेस्त करके
वह बादशाही को ख़ुदा बाप के हवाले कर देगा।
25 क्योंकि लाज़िम है कि मसीह उस वक़्त तक
हुकूमत करे जब तक अल्लाह तमाम दुश्मनों को
उसके पाँवों के नीचे न कर दे। 26 आख़िरी दुश्मन
जिसे नेस्त किया जाएगा मौत होगी। 27 क्योंकि
अल्लाह के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
“उसने सब कुछ उस (यानी मसीह) के पाँवों के
नीचे कर दिया।” जब कहा गया है कि सब कुछ
मसीह के मातहत कर दिया गया है, तो ज़ाहिर
है कि इसमें अल्लाह शामिल नहीं जिसने सब
कुछ मसीह के मातहत किया है। 28 जब सब कुछ
मसीह के मातहत कर दिया गया तब फ़रज़ंद ख़ुद
भी उसी के मातहत हो जाएगा जिसने सब कुछ
उसके मातहत किया। यों अल्लाह सबमें सब कुछ
होगा।

जी उठने के पेशे-नज़र ज़िंदगी गुज़ारना

29 अगर मुरदे वाक़ई जी नहीं उठते तो फिर वह
लोग क्या करेंगे जो मुरदों की ख़ातिर बपतिस्मा
लेते हैं? अगर मुरदे जी नहीं उठेंगे तो फिर वह
उनकी ख़ातिर क्यों बपतिस्मा लेते हैं? 30 और
हम भी हर वक़्त अपनी जान ख़तरे में क्यों डाले
हुए हैं? 31 भाइयो, मैं रोज़ाना मरता हूँ। यह बात
उतनी ही यक़ीनी है जितनी यह कि आप हमारे
ख़ुदावंद मसीह ईसा में मेरा फ़ख़र हैं। 32 अगर मैं
सिर्फ़ इसी ज़िंदगी की उम्मीद रखते हुए इफ़िसुस
में वहशी दरिंदों से लड़ा तो मुझे क्या फ़ायदा
हुआ? अगर मुरदे जी नहीं उठते तो इस क़ौल
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना बेहतर होगा कि
“आओ, हम खाएँ-पिएँ, क्योंकि कल तो मर ही
जाना है।”

33 फ़रेब न खाएँ, बुरी सोहबत अच्छी आदतों
को बिगाड़ देती है। 34 पूरे तौर पर होश में आएँ
और गुनाह न करें। आपमें से बाज़ ऐसे हैं जो
अल्लाह के बारे में कुछ नहीं जानते। यह बात मैं
आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ।

मुरदे किस तरह जी उठेंगे

35 शायद कोई सवाल उठाए, “मुरदे किस तरह
जी उठते हैं? और जी उठने के बाद उनका जिस्म
कैसा होगा?” 36 भई, अक़्ल से काम लें। जो
बीज आप बोते हैं वह उस वक़्त तक नहीं उगता
जब तक कि मर न जाए। 37 जो आप बोते हैं
वह वही पौदा नहीं है जो बाद में उगेगा बल्कि
महज़ एक नंगा-सा दाना है, ख़ाह गंदुम का हो
या किसी और चीज़ का। 38 लेकिन अल्लाह उसे
ऐसा जिस्म देता है जैसा वह मुनासिब समझता
है। हर क़िस्म के बीज को वह उसका ख़ास जिस्म
अता करता है।

39 तमाम जानदारों को एक जैसा जिस्म नहीं
मिला बल्कि इनसानों को और क़िस्म का,
मवेशियों को और क़िस्म का, परिंदों को और
क़िस्म का, और मछलियों को और क़िस्म का।
40 इसके अलावा आसमानी जिस्म भी हैं और
ज़मीनी जिस्म भी। आसमानी जिस्मों की शान
और है और ज़मीनी जिस्मों की शान और।
41 सूरज की शान और है, चाँद की शान और,
और सितारों की शान और, बल्कि एक सितारा
शान में दूसरे सितारे से फ़रक़ है।

42 मुरदों का जी उठना भी ऐसा ही है। जिस्म
फ़ानी हालत में बोया जाता है और लाफ़ानी हालत
में जी उठता है। 43 वह ज़लील हालत में बोया
जाता है और जलाली हालत में जी उठता है। वह
कमज़ोर हालत में बोया जाता है और क़वी हालत
में जी उठता है। 44 फ़ितरती जिस्म बोया जाता
है और रूहानी जिस्म जी उठता है। जहाँ फ़ितरती
जिस्म है वहाँ रूहानी जिस्म भी होता है। 45 पाक
नविश्तों में भी लिखा है कि पहले इनसान आदम
में जान आ गई। लेकिन आख़िरी आदम ज़िंदा

करनेवाली रूह बना। 46 रूहानी जिस्म पहले नहीं
था बल्कि फ़ितरती जिस्म, फिर रूहानी जिस्म
हुआ। 47 पहला इनसान ज़मीन की मिट्टी से बना
था, लेकिन दूसरा आसमान से आया। 48 जैसा
पहला ख़ाकी इनसान था वैसे ही दीगर ख़ाकी
इनसान भी हैं, और जैसा आसमान से आया हुआ
इनसान है वैसे ही दीगर आसमानी इनसान भी हैं।
49 यों हम इस वक़्त ख़ाकी इनसान की शक्लो-
सूरत रखते हैं जबकि हम उस वक़्त आसमानी
इनसान की शक्लो-सूरत रखेंगे।

मौत पर फ़तह

50 भाइयो, मैं यह कहना चाहता हूँ कि ख़ाकी
इनसान का मौजूदा जिस्म अल्लाह की बादशाही
को मीरास में नहीं पा सकता। जो कुछ फ़ानी है
वह लाफ़ानी चीज़ों को मीरास में नहीं पा सकता।
51 देखो मैं आपको एक भेद बताता हूँ। हम
सब वफ़ात नहीं पाएँगे, लेकिन सब ही बदल
जाएंगे। 52 और यह अचानक, आँख झपकते में,
आख़िरी बिगुल बजते ही रूनुमा होगा। क्योंकि
बिगुल बजने पर मुरदे लाफ़ानी हालत में जी उठेंगे
और हम बदल जाएंगे। 53 क्योंकि लाज़िम है कि
यह फ़ानी जिस्म बक़ा का लिबास पहन ले और
मरनेवाला जिस्म अबदी ज़िंदगी का। 54 जब इस
फ़ानी और मरनेवाले जिस्म ने बक़ा और अबदी
ज़िंदगी का लिबास पहन लिया होगा तो फिर वह
कलाम पूरा होगा जो पाक नविश्तों में लिखा है
कि

"मौत इलाही फ़तह का लुक़्मा हो गई है।
55 ऐ मौत, तेरी फ़तह कहाँ रही?
ऐ मौत, तेरा डंक कहाँ रहा?"

56 मौत का डंक गुनाह है और गुनाह शरीअत
से तक़वियत पाता है। 57 लेकिन ख़ुदा का शुक्र
है जो हमें हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से
फ़तह बख़्शता है।

58 ग़रज़, मेरे प्यारे भाइयो, मज़बूत बने रहें।
कोई चीज़ आपको डाँवाँडोल न कर दे। हमेशा
ख़ुदावंद की ख़िदमत जाँफ़िशानी से करें, यह
जानते हुए कि ख़ुदावंद के लिए आपकी मेहनत-
मशक़्क़त रायगाँ नहीं जाएगी।

यरूशलम की जमात के लिए चंदा

16 रही चंदे की बात जो यरूशलम के
मुक़द्दसीन के लिए जमा किया जा रहा
है तो उसी हिदायत पर अमल करें जो मैं गलतिया
की जमातों को दे चुका हूँ। 2 हर इतवार को आपमें
से हर कोई अपने कमाए हुए पैसों में से कुछ
इस चंदे के लिए मख़सूस करके अपने पास रख
छोड़े। फिर मेरे आने पर हदियाजात जमा करने
की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। 3 जब मैं आऊँगा तो ऐसे
अफ़राद को जो आपके नज़दीक क़ाबिले-एतमाद
हैं ख़ुतूत देकर यरूशलम भेजूँगा ताकि वह आपका
हदिया वहाँ तक पहुँचा दें। 4 अगर मुनासिब हो कि
मैं भी जाऊँ तो वह मेरे साथ जाएंगे।

5 मैं मकिदुनिया से होकर आपके पास आऊँगा
क्योंकि मकिदुनिया में से सफ़र करने का इरादा
रखता हूँ। 6 शायद आपके पास थोड़े अरसे के
लिए ठहरूँ, लेकिन यह भी मुमकिन है कि सर्दियों
का मौसम आप ही के साथ काटूँ ताकि मेरे बाद
के सफ़र के लिए आप मेरी मदद कर सकें। 7 मैं
नहीं चाहता कि इस दफ़ा मुख़तसर मुलाक़ात के
बाद चलता बनूँ, बल्कि मेरी ख़ाहिश है कि कुछ
वक़्त आपके साथ गुज़ारूँ। शर्त यह है कि ख़ुदावंद
मुझे इजाज़त दे।

8 लेकिन ईदे-पंतिकुस्त तक मैं इफ़िसुस में ही
ठहरूँगा, 9 क्योंकि यहाँ मेरे सामने मुअस्सिर काम
के लिए एक बड़ा दरवाज़ा खुल गया है और साथ
ही बहुत-से मुख़ालिफ़ भी पैदा हो गए हैं।

10 अगर तीमुथियुस आए तो इसका ख़-
याल रखें कि वह बिलाख़ौफ़ आपके पास रह
सके। मेरी तरह वह भी ख़ुदावंद के खेत में फ़सल
काट रहा है। 11 इसलिए कोई उसे हक़ीर न जाने।
उसे सलामती से सफ़र पर रवाना करें ताकि वह
मुझ तक पहुँचे, क्योंकि मैं और दीगर भाई उसके
मुंतज़िर हैं।

12 भाई अपुल्लोस की मैंने बड़ी हौसला-
अफ़्ज़ाई की है कि वह दीगर भाइयों के साथ
आपके पास आए, लेकिन अल्लाह को क़तअन
मंज़ूर न था। ताहम मौक़ा मिलने पर वह ज़रूर
आएगा।

नसीहतें और सलाम

13 जागते रहें, ईमान में साबितक़दम रहें,
मरदानगी दिखाएँ, मज़बूत बने रहें। 14 सब कुछ
मुहब्बत से करें।

15 भाइयो, मैं एक बात में आपको नसीहत
करना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि स्तिफ़-
नास का घराना अख़या का पहला फल है और
कि उन्होंने अपने आपको मुक़द्दसीन की ख़िदमत
के लिए वक़्फ़ कर रखा है। 16 आप ऐसे लोगों के
ताबे रहें और साथ ही हर उस शख़्स के जो उनके
साथ ख़िदमत के काम में जाँफ़िशानी करता है।

17 स्तिफ़नास, फ़ुरतूनातुस और अख़ीकुस के
पहुँचने पर मैं बहुत ख़ुश हुआ, क्योंकि उन्होंने
वह कमी पूरी कर दी जो आपकी ग़ैरहाज़िरी से
पैदा हुई थी। 18 उन्होंने मेरी रूह को और साथ ही
आपकी रूह को भी ताज़ा किया है। ऐसे लोगों की
क़दर करें।

19 आसिया की जमातें आपको सलाम
कहती हैं। अकविला और प्रिसकिल्ला आप-
को ख़ुदावंद में पुरजोश सलाम कहते हैं और
उनके साथ वह जमात भी जो उनके घर में जमा
होती है। 20 तमाम भाई आपको सलाम कहते हैं।
एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देते हुए सलाम कहें।

21 यह सलाम मैं यानी पौलुस अपने हाथ से
लिखता हूँ।

22 लानत उस शख़्स पर जो ख़ुदावंद से मुहब्बत
नहीं रखता।

ऐ हमारे ख़ुदावंद, आ! 23 ख़ुदावंद ईसा का
फ़ज़ल आपके साथ रहे।

24 मसीह ईसा में आप सबको मेरा प्यार।

कुरिंथियों के नाम
पौलुस रसूल का दूसरा ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो
अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का
रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ़
से भी है।
मैं कुरिंथुस में अल्लाह की जमात और सूबा
अख़या में मौजूद तमाम मुक़द्दसीन को यह लिख
रहा हूँ।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

अल्लाह की हम्दो-सना

3 हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के ख़ुदा और बाप
की तमजीद हो, जो रहम का बाप और तमाम तरह
की तसल्ली का ख़ुदा है। 4 जब भी हम मुसीबत
में फँस जाते हैं तो वह हमें तसल्ली देता है ताकि
हम औरों को भी तसल्ली दे सकें। फिर जब वह
किसी मुसीबत से दोचार होते हैं तो हम भी उनको
उसी तरह तसल्ली दे सकते हैं जिस तरह अल्लाह
ने हमें तसल्ली दी है। 5 क्योंकि जितनी कसरत
से मसीह की-सी मुसीबतें हम पर आ जाती हैं
उतनी कसरत से अल्लाह मसीह के ज़रीए हमें
तसल्ली देता है। 6 जब हम मुसीबतों से दोचार
होते हैं तो यह बात आपकी तसल्ली और नजात
का बाइस बनती है। जब हमारी तसल्ली होती
है तो यह आपकी भी तसल्ली का बाइस बनती
है। यों आप भी सब्र से वह कुछ बरदाश्त करने
के क़ाबिल बन जाते हैं जो हम बरदाश्त कर रहे
हैं। 7 चुनाँचे हमारी आपके बारे में उम्मीद पुख़्ता
रहती है। क्योंकि हम जानते हैं कि जिस तरह
आप हमारी मुसीबतों में शरीक हैं उसी तरह आप
उस तसल्ली में भी शरीक हैं जो हमें हासिल होती
है।
8 भाइयो, हम आपको उस मुसीबत से आगाह
करना चाहते हैं जिसमें हम सूबा आसिया में फँस
गए। हम पर दबाव इतना शदीद था कि उसे
बरदाश्त करना नामुमकिन-सा हो गया और हम
जान से हाथ धो बैठे। 9 हमने महसूस किया कि
हमें सज़ाए-मौत दी गई है। लेकिन यह इसलिए
हुआ ताकि हम अपने आप पर भरोसा न करें
बल्कि अल्लाह पर जो मुरदों को ज़िंदा कर देता
है। 10 उसी ने हमें ऐसी हैबतनाक मौत से बचाया
और वह आइंदा भी हमें बचाएगा। और हमने उस
पर उम्मीद रखी है कि वह हमें एक बार फिर
बचाएगा। 11 आप भी अपनी दुआओं से हमारी
मदद कर रहे हैं। यह कितनी ख़ूबसूरत बात है कि
अल्लाह बहुतों की दुआओं को सुनकर हम पर
मेहरबानी करेगा और नतीजे में बहुतेरे हमारे लिए
शुक्र करेंगे।

पौलुस के मनसूबों में तबदीली

12 यह बात हमारे लिए फ़ख़र का बाइस है
कि हमारा ज़मीर साफ़ है। क्योंकि हमने अल्लाह
के सामने सादादिली और ख़ुलूस से ज़िंदगी
गुज़ारी है, और हमने अपनी इनसानी हिकमत पर
इनहिसार नहीं किया बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल
पर। दुनिया में और ख़ासकर आपके साथ हमारा
रवैया ऐसा ही रहा है। 13 हम तो आपको ऐसी
कोई बात नहीं लिखते जो आप पढ़ या समझ
नहीं सकते। और मुझे उम्मीद है कि आपको पूरे
तौर पर समझ आएगी, 14 अगरचे आप फ़िलहाल
सब कुछ नहीं समझते। क्योंकि जब आपको सब
कुछ समझ आएगा तब आप ख़ुदावंद ईसा के दिन
हम पर उतना फ़ख़र कर सकेंगे जितना हम आप
पर।

15 चूँकि मुझे इसका पूरा यक़ीन था इसलिए
मैं पहले आपके पास आना चाहता था ताकि
आपको दुगनी बरकत मिल जाए। 16 ख़याल यह
था कि मैं आपके हाँ से होकर मकिदुनिया जाऊँ
और वहाँ से आपके पास वापस आऊँ। फिर आप
सूबा यहूदिया के सफ़र के लिए तैयारियाँ करने
में मेरी मदद करके मुझे आगे भेज सकते थे।
17 आप मुझे बताएँ कि क्या मैंने यह मनसूबा
यों ही बनाया था? क्या मैं दुनियावी लोगों की
तरह मनसूबे बना लेता हूँ जो एक ही लमहे में
"जी हाँ" और "जी नहीं" कहते हैं? 18 लेकिन
अल्लाह वफ़ादार है और वह मेरा गवाह है कि हम
आपके साथ बात करते वक़्त "नहीं" को "हाँ"
के साथ नहीं मिलाते। 19 क्योंकि अल्लाह का
फ़रज़ंद ईसा मसीह जिसकी मुनादी मैं, सीलास
और तीमुथियुस ने की वह भी ऐसा नहीं है। उसने
कभी भी "हाँ" को "नहीं" के साथ नहीं मिलाया
बल्कि उसमें अल्लाह की हतमी "जी हाँ" वुजूद
में आई। 20 क्योंकि वही अल्लाह के तमाम वादों
की "हाँ" है। इसलिए हम उसी के वसीले से
"आमीन" (जी हाँ) कहकर अल्लाह को जलाल
देते हैं। 21 और अल्लाह ख़ुद हमें और आपको
मसीह में मज़बूत कर देता है। उसी ने हमें मसह
करके मख़सूस किया है। 22 उसी ने हम पर अपनी
मुहर लगाकर ज़ाहिर किया है कि हम उस की
मिलकियत हैं और उसी ने हमें रूहुल-क़ुद्स देकर
अपने वादों का बयाना अदा किया है।

23 अगर मैं झूट बोलूँ तो अल्लाह मेरे ख़िलाफ़
गवाही दे। बात यह है कि मैं आपको बचाने के
लिए कुरिंथुस वापस न आया। 24 मतलब यह
नहीं कि हम ईमान के मामले में आप पर हुकूमत
करना चाहते हैं। नहीं, हम आपके साथ मिलकर
ख़िदमत करते हैं ताकि आप ख़ुशी से भर जाएँ,
क्योंकि आप तो ईमान की मारिफ़त क़ायम हैं।

2 चुनाँचे मैंने फ़ैसला किया कि मैं दुबारा
आपके पास नहीं आऊँगा, वरना आपको
बहुत ग़म खाना पड़ेगा। 2 क्योंकि अगर मैं आपको
दुख पहुँचाऊँ तो कौन मुझे ख़ुश करेगा? यह
वह शख़्स नहीं करेगा जिसे मैंने दुख पहुँचाया है।
3 यही वजह है कि मैंने आपको यह लिख दिया।
मैं नहीं चाहता था कि आपके पास आकर उन्हीं
लोगों से ग़म खाऊँ जिन्हें मुझे ख़ुश करना चाहिए।
क्योंकि मुझे आप सबके बारे में यक़ीन है कि
मेरी ख़ुशी आप सबकी ख़ुशी है। 4 मैंने आपको
निहायत रंजीदा और परेशान हालत में आँसू बहा
बहाकर लिख दिया। मक़सद यह नहीं था कि
आप ग़मगीन हो जाएँ बल्कि मैं चाहता था कि
आप जान लें कि मैं आपसे कितनी गहरी मुहब्बत
रखता हूँ।

मुजरिम को मुआफ़ कर दिया जाए

5 अगर किसी ने दुख पहुँचाया है तो मुझे नहीं
बल्कि किसी हद तक आप सबको (मैं ज़्यादा
सख़्ती से बात नहीं करना चाहता)। 6 लेकिन
मज़कूरा शख़्स के लिए यह काफ़ी है कि उसे
जमात के अकसर लोगों ने सज़ा दी है। 7 अब
ज़रूरी है कि आप उसे मुआफ़ करके तसल्ली
दें, वरना वह ग़म खा खाकर तबाह हो जाएगा।
8 चुनाँचे मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप
उसे अपनी मुहब्बत का एहसास दिलाएँ। 9 मैंने

यह मालूम करने के लिए आपको लिखा कि
क्या आप इमतहान में पूरे उतरेंगे और हर बात
में ताबे रहेंगे। 10 जिसे आप कुछ मुआफ़ करते
हैं उसे मैं भी मुआफ़ करता हूँ। और जो कुछ
मैंने मुआफ़ किया, अगर मुझे कुछ मुआफ़ करने
की ज़रूरत थी, वह मैंने आपकी ख़ातिर मसीह
के हुज़ूर मुआफ़ किया है 11 ताकि इबलीस हमसे
फ़ायदा न उठाए। क्योंकि हम उस की चालों से
ख़ूब वाक़िफ़ हैं।

त्रोआस में पौलुस की परेशानी

12 जब मैं मसीह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
त्रोआस गया तो ख़ुदावंद ने मेरे लिए आगे ख़िदमत
करने का एक दरवाज़ा खोल दिया। 13 लेकिन
जब मुझे अपना भाई तितुस वहाँ न मिला तो
मैं बेचैन हो गया और उन्हें ख़ैरबाद कहकर सूबा
मकिदुनिया चला गया।

मसीह में फ़तह

14 लेकिन ख़ुदा का शुक्र है! वही हमारे आगे
आगे चलता है और हम मसीह के क़ैदी बनकर उस
की फ़तह मनाते हुए उसके पीछे पीछे चलते हैं। यों
अल्लाह हमारे वसीले से हर जगह मसीह के बारे
में इल्म ख़ुशबू की तरह फैलाता है। 15 क्योंकि हम
मसीह की ख़ुशबू हैं जो अल्लाह तक पहुँचती है
और साथ साथ लोगों में भी फैलती है, नजात
पानेवालों में भी और हलाक होनेवालों में भी।
16 बाज़ लोगों के लिए हम मौत की मोहलक बू
हैं जबकि बाज़ के लिए हम ज़िंदगीबख़्श ख़ुशबू
हैं। तो कौन यह ज़िम्मेदारी निभाने के लायक़ है?
17 क्योंकि हम अकसर लोगों की तरह अल्लाह
के कलाम की तिजारत नहीं करते, बल्कि यह
जानकर कि हम अल्लाह के हुज़ूर में हैं और उसके
भेजे हुए हैं हम ख़ुलूसदिली से लोगों से बात करते
हैं।

नए अहद के ख़ादिम

3 क्या हम दुबारा अपनी ख़ूबियों का ढंडोरा
पीट रहे हैं? या क्या हम बाज़ लोगों की
मानिंद हैं जिन्हें आपको सिफ़ारिशी ख़त देने या
आपसे ऐसे ख़त लिखवाने की ज़रूरत होती है?
2 नहीं, आप तो ख़ुद हमारा ख़त हैं जो हमारे
दिलों पर लिखा हुआ है। सब इसे पहचान और
पढ़ सकते हैं। 3 यह साफ़ ज़ाहिर है कि आप
मसीह का ख़त हैं जो उसने हमारी ख़िदमत के
ज़रीए लिख दिया है। और यह ख़त स्याही से नहीं
बल्कि ज़िंदा ख़ुदा के रूह से लिखा गया, पत्थर
की तख़्तियों पर नहीं बल्कि इनसानी दिलों पर।
4 हम यह इसलिए यक़ीन से कह सकते हैं
क्योंकि हम मसीह के वसीले से अल्लाह पर
एतमाद रखते हैं। 5 हमारे अंदर तो कुछ नहीं है
जिसकी बिना पर हम दावा कर सकते कि हम यह
काम करने के लायक़ हैं। नहीं, हमारी लियाक़त
अल्लाह की तरफ़ से है। 6 उसी ने हमें नए अहद
के ख़ादिम होने के लायक़ बना दिया है। और यह
अहद लिखी हुई शरीअत पर मबनी नहीं है बल्कि
रूह पर, क्योंकि लिखी हुई शरीअत के असर से
हम मर जाते हैं जबकि रूह हमें ज़िंदा कर देता है।
7 शरीअत के हुरूफ़ पत्थर की तख़्तियों पर
कंदा किए गए और जब उसे दिया गया तो
अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हुआ। यह जलाल
इतना तेज़ था कि इसराईली मूसा के चेहरे को
लगातार देख न सके। अगर उस चीज़ का जलाल
इतना तेज़ था जो अब मनसूख़ है 8 तो क्या रूह
के निज़ाम का जलाल इससे कहीं ज़्यादा नहीं
होगा? 9 अगर पुराना निज़ाम जो हमें मुजरिम
ठहराता था जलाली था तो फिर नया निज़ाम
जो हमें रास्तबाज़ क़रार देता है कहीं ज़्यादा
जलाली होगा। 10 हाँ, पहले निज़ाम का जलाल
नए निज़ाम के ज़बरदस्त जलाल की निसबत कुछ
भी नहीं है। 11 और अगर उस पुराने निज़ाम का
जलाल बहुत था जो अब मनसूख़ है तो फिर उस

नए निज़ाम का जलाल कहीं ज़्यादा होगा जो
क़ायम रहेगा।
12 पस चूँकि हम ऐसी उम्मीद रखते हैं इसलिए
बड़ी दिलेरी से ख़िदमत करते हैं। 13 हम मूसा की
मानिंद नहीं हैं जिसने शरीअत सुनाने के इख़्तिताम
पर अपने चेहरे पर निक़ाब डाल लिया ताकि
इसराईली उसे तकते न रहें जो अब मनसूख़ है।
14 तो भी वह ज़हनी तौर पर अड़ गए, क्योंकि
आज तक जब पुराने अहदनामे की तिलावत की
जाती है तो यही निक़ाब क़ायम है। आज तक
निक़ाब को हटाया नहीं गया क्योंकि यह अहद
सिर्फ़ मसीह में मनसूख़ होता है। 15 हाँ, आज
तक जब मूसा की शरीअत पढ़ी जाती है तो यह
निक़ाब उनके दिलों पर पड़ा रहता है। 16 लेकिन
जब भी कोई ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू करता है तो
यह निक़ाब हटाया जाता है, 17 क्योंकि ख़ुदावंद
रूह है और जहाँ ख़ुदावंद का रूह है वहाँ आज़ादी
है। 18 चुनाँचे हम सब जिनके चेहरों से निक़ाब
हटाया गया है ख़ुदावंद का जलाल मुनअकिस
करते और क़दम बक़दम जलाल पाते हुए मसीह
की सूरत में बदलते जाते हैं। यह ख़ुदावंद ही का
काम है जो रूह है।

मिट्टी के बरतनों में रूहानी ख़ज़ाना

4 पस चूँकि हमें अल्लाह के रहम से यह
ख़िदमत सौंपी गई है इसलिए हम बेदिल
नहीं हो जाते। 2 हमने छुपी हुई शर्मनाक बातें
मुस्तरद कर दी हैं। न हम चालाकी से काम करते,
न अल्लाह के कलाम में तहरीफ़ करते हैं। बल्कि
हमें अपनी सिफ़ारिश की ज़रूरत भी नहीं, क्योंकि
जब हम अल्लाह के हुज़ूर लोगों पर हक़ीक़त को
ज़ाहिर करते हैं तो हमारी नेकनामी ख़ुद बख़ुद
हर एक के ज़मीर पर ज़ाहिर हो जाती है। 3 और
अगर हमारी ख़ुशख़बरी निक़ाब तले छुपी हुई
भी हो तो वह सिर्फ़ उनके लिए छुपी हुई है जो
हलाक हो रहे हैं। 4 इस जहान के शरीर ख़ुदा ने
उनके ज़हनों को अंधा कर दिया है जो ईमान नहीं
रखते। इसलिए वह अल्लाह की ख़ुशख़बरी की
जलाली रौशनी नहीं देख सकते। वह यह पैग़ाम
नहीं समझ सकते जो मसीह के जलाल के बारे
में है, उसके बारे में जो अल्लाह की सूरत है।
5 क्योंकि हम अपना प्रचार नहीं करते बल्कि ईसा
मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं कि वह ख़ुदावंद है।
अपने आपको हम ईसा की ख़ातिर आपके ख़ादिम
क़रार देते हैं। 6 क्योंकि जिस ख़ुदा ने फ़रमाया,
"अंधेरे में से रौशनी चमके," उसने हमारे दिलों में
अपनी रौशनी चमकने दी ताकि हम अल्लाह का
वह जलाल जान लें जो ईसा मसीह के चेहरे से
चमकता है।
7 लेकिन हम जिनके अंदर यह ख़ज़ाना है आम
मिट्टी के बरतनों की मानिंद हैं ताकि ज़ाहिर हो कि
यह ज़बरदस्त क़ुव्वत हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि
अल्लाह की तरफ़ से है। 8 लोग हमें चारों तरफ़
से दबाते हैं, लेकिन कोई हमें कुचलकर ख़त्म नहीं
कर सकता। हम उलझन में पड़ जाते हैं, लेकिन
उम्मीद का दामन हाथ से जाने नहीं देते। 9 लोग
हमें ईज़ा देते हैं, लेकिन हमें अकेला नहीं छोड़ा
जाता। लोगों के धक्कों से हम ज़मीन पर गिर
जाते हैं, लेकिन हम तबाह नहीं होते। 10 हर वक़्त
हम अपने बदन में ईसा की मौत लिए फिरते हैं
ताकि ईसा की ज़िंदगी भी हमारे बदन में ज़ाहिर
हो जाए। 11 क्योंकि हर वक़्त हमें ज़िंदा हालत में
ईसा की ख़ातिर मौत के हवाले कर दिया जाता है
ताकि उस की ज़िंदगी हमारे फ़ानी बदन में ज़ाहिर
हो जाए। 12 यों हममें मौत का असर काम करता
है जबकि आपमें ज़िंदगी का असर।
13 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "मैं ईमान
लाया और इसलिए बोला।" हमें ईमान का यही
रूह हासिल है इसलिए हम भी ईमान लाने की
वजह से बोलते हैं। 14 क्योंकि हम जानते हैं कि
जिसने ख़ुदावंद ईसा को मुरदों में से ज़िंदा कर
दिया है वह ईसा के साथ हमें भी ज़िंदा करके आप
लोगों समेत अपने हुज़ूर खड़ा करेगा। 15 यह सब
कुछ आपके फ़ायदे के लिए है। यों अल्लाह का
फ़ज़ल आगे बढ़ते बढ़ते मज़ीद बहुत-से लोगों तक
पहुँच रहा है और नतीजे में वह अल्लाह को जलाल

देकर शुक्रगुज़ारी की दुआओं में बहुत इज़ाफ़ा कर रहे हैं।

ईमान की ज़िंदगी

16 इसी वजह से हम बेदिल नहीं हो जाते।
बेशक ज़ाहिरी तौर पर हम ख़त्म हो रहे हैं, लेकिन
अंदर ही अंदर रोज़ बरोज़ हमारी तजदीद होती जा
रही है। 17 क्योंकि हमारी मौजूदा मुसीबत हलकी
और पल-भर की है, और वह हमारे लिए एक ऐसा
अबदी जलाल पैदा कर रही है जिसकी निसबत
मौजूदा मुसीबत कुछ भी नहीं। 18 इसलिए हम
देखी हुई चीज़ों पर ग़ौर नहीं करते बल्कि अनदेखी
चीज़ों पर। क्योंकि देखी हुई चीज़ें आरिज़ी हैं,
जबकि अनदेखी चीज़ें अबदी हैं।

5 हम तो जानते हैं कि जब हमारी दुनियावी
झोंपड़ी जिसमें हम रहते हैं गिराई जाएगी
तो अल्लाह हमें आसमान पर एक मकान देगा,
एक ऐसा अबदी घर जिसे इनसानी हाथों ने
नहीं बनाया होगा। 2 इसलिए हम इस झोंपड़ी में
कराहते हैं और आसमानी घर पहन लेने की शदीद
आरज़ू रखते हैं, 3 क्योंकि जब हम उसे पहन लेंगे
तो हम नंगे नहीं पाए जाएंगे। 4 इस झोंपड़ी में रहते
हुए हम बोझ तले कराहते हैं। क्योंकि हम अपना
फ़ानी लिबास उतारना नहीं चाहते बल्कि उस पर
आसमानी घर का लिबास पहन लेना चाहते हैं
ताकि ज़िंदगी वह कुछ निगल जाए जो फ़ानी
है। 5 अल्लाह ने ख़ुद हमें इस मक़सद के लिए
तैयार किया है और उसी ने हमें रूहुल-क़ुद्स को
आनेवाले जलाल के बैआने के तौर पर दे दिया है।

6 चुनाँचे हम हमेशा हौसला रखते हैं। हम जानते
हैं कि जब तक अपने बदन में रिहाइशपज़ीर हैं
उस वक़्त तक ख़ुदावंद के घर से दूर हैं। 7 हम
ज़ाहिरी चीज़ों पर भरोसा नहीं करते बल्कि ईमान
पर चलते हैं। 8 हाँ, हमारा हौसला बुलंद है बल्कि
हम ज़्यादा यह चाहते हैं कि अपने जिस्मानी घर से
रवाना होकर ख़ुदावंद के घर में रहें। 9 लेकिन ख़ाह
हम अपने बदन में हों या न, हम इसी कोशिश में
रहते हैं कि ख़ुदावंद को पसंद आएँ। 10 क्योंकि
लाज़िम है कि हम सब मसीह के तख़्ते-अदालत
के सामने हाज़िर हो जाएँ। वहाँ हर एक को उस
काम का अज्र मिलेगा जो उसने अपने बदन में
रहते हुए किया है, ख़ाह वह अच्छा था या बुरा।

मसीह के वसीले से हमारी अल्लाह के साथ दोस्ती

11 अब हम ख़ुदावंद के ख़ौफ़ को जानकर लोगों
को समझाने की कोशिश करते हैं। हम तो अल्लाह
के सामने पूरे तौर पर ज़ाहिर हैं। और मैं उम्मीद
रखता हूँ कि हम आपके ज़मीर के सामने भी
ज़ाहिर हैं। 12 क्या हम यह बात करके दुबारा
अपनी सिफ़ारिश कर रहे हैं? नहीं, आपको हम
पर फ़ख़र करने का मौक़ा दे रहे हैं ताकि आप
उनके जवाब में कुछ कह सकें जो ज़ाहिरी बातों
पर शेख़ी मारते और दिली बातें नज़रंदाज़ करते
हैं। 13 क्योंकि अगर हम बेख़ुद हुए तो अल्लाह की
ख़ातिर, और अगर होश में हैं तो आपकी ख़ातिर।
14 बात यह है कि मसीह की मुहब्बत हमें मजबूर
कर देती है, क्योंकि हम इस नतीजे पर पहुँच गए
हैं कि एक सबके लिए मुआ। इसका मतलब है
कि सब ही मर गए हैं। 15 और वह सबके लिए
इसलिए मुआ ताकि जो ज़िंदा हैं वह अपने लिए
न जिएँ बल्कि उसके लिए जो उनकी ख़ातिर मुआ
और फिर जी उठा।

16 इस वजह से हम अब से किसी को भी
दुनियावी निगाह से नहीं देखते। पहले तो हम
मसीह को भी इस ज़ावीए से देखते थे, लेकिन
यह वक़्त गुज़र गया है। 17 चुनाँचे जो मसीह में
है वह नया मख़लूक़ है। पुरानी ज़िंदगी जाती रही
और नई ज़िंदगी शुरू हो गई है। 18 यह सब कुछ
अल्लाह की तरफ़ से है जिसने मसीह के वसीले
से अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया है।
और उसी ने हमें मेल-मिलाप कराने की ख़िदमत
की ज़िम्मेदारी दी है। 19 इस ख़िदमत के तहत
हम यह पैग़ाम सुनाते हैं कि अल्लाह ने मसीह
के वसीले से अपने साथ दुनिया की सुलह कराई
और लोगों के गुनाहों को उनके ज़िम्मे न लगाया।

सुलह कराने का यह पैग़ाम उसने हमारे सुपुर्द कर
दिया।

20 पस हम मसीह के एलची हैं और अल्लाह
हमारे वसीले से लोगों को समझाता है। हम मसीह
के वास्ते आपसे मिन्नत करते हैं कि अल्लाह की
सुलह की पेशकश को क़बूल करें ताकि उस की
आपके साथ सुलह हो जाए। 21 मसीह बेगुनाह
था, लेकिन अल्लाह ने उसे हमारी ख़ातिर गुनाह
ठहराया ताकि हमें उसमें रास्तबाज़ क़रार दिया
जाए।

6 अल्लाह के हमख़िदमत होते हुए हम
आपसे मिन्नत करते हैं कि जो फ़ज़ल
आपको मिला है वह ज़ाया न जाए। 2 क्योंकि
अल्लाह फ़रमाता है, "क़बूलियत के वक़्त मैंने
तेरी सुनी, नजात के दिन तेरी मदद की।" सुनें!
अब क़बूलियत का वक़्त आ गया है, अब नजात
का दिन है।

3 हम किसी के लिए भी ठोकर का बाइस
नहीं बनते ताकि लोग हमारी ख़िदमत में नुक़्स
न निकाल सकें। 4 हाँ, हमें सिफ़ारिश की ज़रूरत
ही नहीं, क्योंकि अल्लाह के ख़ादिम होते हुए हम
हर हालत में अपनी नेकनामी ज़ाहिर करते हैं :
जब हम सब्र से मुसीबतें, मुश्किलात और आफ़तें
बरदाश्त करते हैं, 5 जब लोग हमें मारते और क़ैद
में डालते हैं, जब हम बेकाबू हुजूमों का सामना
करते हैं, जब हम मेहनत-मशक़्क़त करते, रात के
वक़्त जागते और भूके रहते हैं, 6 जब हम अपनी
पाकीज़गी, इल्म, सब्र और मेहरबान सुलूक का
इज़हार करते हैं, जब हम रूहुल-क़ुद्स के वसीले
से हक़ीक़ी मुहब्बत रखते, 7 सच्ची बातें करते और
अल्लाह की क़ुदरत से लोगों की ख़िदमत करते
हैं। हम अपनी नेकनामी इसमें भी ज़ाहिर करते हैं
कि हम दोनों हाथों से रास्तबाज़ी के हथियार थामे
रखते हैं। 8 हम अपनी ख़िदमत जारी रखते हैं, चाहे
लोग हमारी इज़्ज़त करें चाहे बेइज़्ज़ती, चाहे वह
हमारी बुरी रिपोर्ट दें चाहे अच्छी। अगरचे हमारी
ख़िदमत सच्ची है, लेकिन लोग हमें दग़ाबाज़
क़रार देते हैं। 9 अगरचे लोग हमें जानते हैं तो
भी हमें नज़रंदाज़ किया जाता है। हम मरते मरते
ज़िंदा रहते हैं और लोग हमें मार मारकर क़त्ल नहीं
कर सकते। 10 हम ग़म खा खाकर हर वक़्त ख़ुश
रहते हैं, हम ग़रीब हालत में बहुतों को दौलतमंद
बना देते हैं। हमारे पास कुछ नहीं है, तो भी हमें
सब कुछ हासिल है।

11 कुरिंथुस के अज़ीज़ो, हमने खुलकर आपसे
बात की है, हमारा दिल आपके लिए कुशादा हो
गया है। 12 जो जगह हमने दिल में आपको दी है
वह अब तक कम नहीं हुई। लेकिन आपके दिलों में
हमारे लिए कोई जगह नहीं रही। 13 अब मैं आपसे
जो मेरे बच्चे हैं दरख़ास्त करता हूँ कि जवाब में हमें
भी अपने दिलों में जगह दें।

ग़ैरमसीही असरात से ख़बरदार

14 ग़ैरईमानदारों के साथ मिलकर एक जुए तले
ज़िंदगी न गुज़ारें, क्योंकि रास्ती का नारास्ती से
क्या वास्ता है? या रौशनी तारीकी के साथ
क्या ताल्लुक़ रख सकती है? 15 मसीह और
इबलीस के दरमियान क्या मुताबिक़त हो सकती
है? ईमानदार का ग़ैरईमानदार के साथ क्या
वास्ता है? 16 अल्लाह के मक़दिस और बुतों में
क्या इत्तफ़ाक़ हो सकता है? हम तो ज़िंदा ख़ुदा
का घर हैं। अल्लाह ने यों फ़रमाया है,

"मैं उनके दरमियान सुकूनत करूँगा
और उनमें फिरूँगा।
मैं उनका ख़ुदा हूँगा,
और वह मेरी क़ौम होंगे।"
17 चुनाँचे रब फ़रमाता है,
"इसलिए उनमें से निकल आओ
और उनसे अलग हो जाओ।
किसी नापाक चीज़ को न छूना,
तो फिर मैं तुम्हें क़बूल करूँगा।
18 मैं तुम्हारा बाप हूँगा
और तुम मेरे बेटे-बेटियाँ होगे,
रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है।"

7 मेरे अज़ीज़ो, यह तमाम वादे हमसे किए
गए हैं। इसलिए आएँ, हम अपने आपको

हर उस चीज़ से पाक-साफ़ करें जो जिस्म और
रूह को आलूदा कर देती है। और हम ख़ुदा के
ख़ौफ़ में मुकम्मल तौर पर मुक़द्दस बनने के लिए
कोशाँ रहें।

पौलुस की ख़ुशी

2 हमें अपने दिल में जगह दें। न हमने किसी से
नाइनसाफ़ी की, न किसी को बिगाड़ा या उससे
ग़लत फ़ायदा उठाया। 3 मैं यह बात आपको
मुजरिम ठहराने के लिए नहीं कह रहा। मैं आपको
पहले बता चुका हूँ कि आप हमें इतने अज़ीज़ हैं
कि हम आपके साथ मरने और जीने के लिए तैयार
हैं। 4 इसलिए मैं आपसे खुलकर बात करता हूँ
और मैं आप पर बड़ा फ़ख़र भी करता हूँ। इस
नाते से मुझे पूरी तसल्ली है, और हमारी तमाम
मुसीबतों के बावुजूद मेरी ख़ुशी की इंतहा नहीं।

5 क्योंकि जब हम मकिदुनिया पहुँचे तो हम
जिस्म के लिहाज़ से आराम न कर सके। मुसीबतों
ने हमें हर तरफ़ से घेर लिया। दूसरों की तरफ़
से झगड़ों से और दिल में तरह तरह के डर से
निपटना पड़ा। 6 लेकिन अल्लाह ने जो दबे हुओं
को तसल्ली बख़्शता है तितुस के आने से हमारी
हौसलाअफ़्ज़ाई की। 7 हमारा हौसला न सिर्फ़
उसके आने से बढ़ गया बल्कि उन हौसलाअफ़्ज़ा
बातों से भी जिनसे आपने उसे तसल्ली दी। उसने
हमें आपकी आरज़ू, आपकी आहो-ज़ारी और मेरे
लिए आपकी सरगरमी के बारे में रिपोर्ट दी। यह
सुनकर मेरी ख़ुशी मज़ीद बढ़ गई।

8 क्योंकि अगरचे मैंने आपको अपने ख़त से
दुख पहुँचाया तो भी मैं पछताता नहीं। पहले
तो मैं ख़त लिखने से पछताया, लेकिन अब मैं
देखता हूँ कि जो दुख उसने आपको पहुँचाया
वह सिर्फ़ आरिज़ी था 9 और उसने आपको तौबा
तक पहुँचाया। यह सुनकर मैं अब ख़ुशी मनाता
हूँ, इसलिए नहीं कि आपको दुख उठाना पड़ा
है बल्कि इसलिए कि इस दुख ने आपको तौबा
तक पहुँचाया। अल्लाह ने यह दुख अपनी मरज़ी
पूरी कराने के लिए इस्तेमाल किया, इसलिए
आपको हमारी तरफ़ से कोई नुक़सान न पहुँचा।
10 क्योंकि जो दुख अल्लाह अपनी मरज़ी पूरी
कराने के लिए इस्तेमाल करता है उससे तौबा
पैदा होती है और उसका अंजाम नजात है। इसमें
पछताने की गुंजाइश ही नहीं। इसके बरअक्स
दुनियावी दुख का अंजाम मौत है। 11 आप ख़ुद
देखें कि अल्लाह के इस दुख ने आपमें क्या
पैदा किया है : कितनी संजीदगी, अपना दिफ़ा
करने का कितना जोश, ग़लत हरकतों पर कितना
ग़ुस्सा, कितना ख़ौफ़, कितनी चाहत, कितनी
सरगरमी। आप सज़ा देने के लिए कितने तैयार
थे! आपने हर लिहाज़ से साबित किया है कि
आप इस मामले में बेक़ुसूर हैं।

12 ग़रज़, अगरचे मैंने आपको लिखा, लेकिन
मक़सद यह नहीं था कि ग़लत हरकतें करनेवाले
के बारे में लिखूँ या उसके बारे में जिसके साथ
ग़लत काम किया गया। नहीं, मक़सद यह था कि
अल्लाह के हुज़ूर आप पर ज़ाहिर हो जाए कि आप
हमारे लिए कितने सरगरम हैं। 13 यही वजह है कि
हमारा हौसला बढ़ गया है।

लेकिन न सिर्फ़ हमारी हौसलाअफ़्ज़ाई हुई है
बल्कि हम यह देखकर बेइंतहा ख़ुश हुए कि तितुस
कितना ख़ुश था। वह क्यों ख़ुश था? इसलिए कि
उस की रूह आप सबसे तरो-ताज़ा हुई। 14 उसके
सामने मैंने आप पर फ़ख़र किया था, और मैं
शरमिंदा नहीं हुआ क्योंकि यह बात दुरुस्त साबित
हुई है। जिस तरह हमने आपको हमेशा सच्ची
बातें बताई हैं उसी तरह तितुस के सामने आप
पर हमारा फ़ख़र भी दुरुस्त निकला। 15 आप
उसे निहायत अज़ीज़ हैं क्योंकि वह आप सबकी
फ़रमाँबरदारी याद करता है, कि आपने डरते और
काँपते हुए उसे ख़ुशआमदीद कहा। 16 मैं ख़ुश हूँ
कि मैं हर लिहाज़ से आप पर एतमाद कर सकता
हूँ।

यहूदिया के ग़रीबों के लिए हदिया

8 भाइयो, हम आपकी तवज्जुह उस फ़ज़ल
की तरफ़ दिलाना चाहते हैं जो अल्लाह ने

सूबा मकिदुनिया की जमातों पर किया। 2 जिस
मुसीबत में वह फँसे हुए हैं उससे उनकी सख़्त
आज़माइश हुई। तो भी उनकी बेइंतहा ख़ुशी और
शदीद ग़ुरबत का नतीजा यह निकला कि उन्होंने
बड़ी फ़ैयाज़दिली से हदिया दिया। 3 मैं गवाह हूँ
कि जितना वह दे सके उतना उन्होंने दे दिया बल्कि
इससे भी ज़्यादा। अपनी ही तरफ़ से 4 उन्होंने बड़े
ज़ोर से हमसे मिन्नत की कि हमें भी यहूदिया
के मुक़द्दसीन की ख़िदमत करने का मौक़ा दें,
हम भी देने के फ़ज़्ल में शरीक होना चाहते हैं।
5 और उन्होंने हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा किया!
अल्लाह की मरज़ी से उनका पहला क़दम यह
था कि उन्होंने अपने आपको ख़ुदावंद के लिए
मख़सूस किया। उनका दूसरा क़दम यह था कि
उन्होंने अपने आपको हमारे लिए मख़सूस किया।
6 इस पर हमने तितुस की हौसलाअफ़्ज़ाई की
कि वह आपके पास भी हदिया जमा करने का
वह सिलसिला अंजाम तक पहुँचाए जो उसने
शुरू किया था। 7 आपके पास सब कुछ कसरत
से पाया जाता है, ख़ाह ईमान हो, ख़ाह कलाम,
इल्म, मुकम्मल सरगरमी या हमसे मुहब्बत हो।
अब इस बात का ख़याल रखें कि आप यह हदिया
देने में भी अपनी कसीर दौलत का इज़हार करें।

8 मेरी तरफ़ से यह कोई हुक्म नहीं है। लेकिन
दूसरों की सरगरमी के पेशे-नज़र मैं आपकी भी
मुहब्बत परख रहा हूँ कि वह कितनी हक़ीक़ी है।
9 आप तो जानते हैं कि हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
ने आप पर कैसा फ़ज़्ल किया है, कि अगरचे वह
दौलतमंद था तो भी वह आपकी ख़ातिर ग़रीब बन
गया ताकि आप उस की ग़ुरबत से दौलतमंद बन
जाएँ।

10 इस मामले में मेरा मशवरा सुनें, क्योंकि वह
आपके लिए मुफ़ीद साबित होगा। पिछले साल
आप पहली जमात थे जो न सिर्फ़ हदिया देने
लगी बल्कि इसे देना भी चाहती थी। 11 अब उसे
तकमील तक पहुँचाएँ जो आपने शुरू कर रखा है।
देने का जो शौक़ आप रखते हैं वह अमल में लाया
जाए। उतना दें जितना आप दे सकें। 12 क्योंकि
अगर आप देने का शौक़ रखते हैं तो फिर अल्लाह
आपका हदिया उस बिना पर क़बूल करेगा जो
आप दे सकते हैं, उस बिना पर नहीं जो आप नहीं
दे सकते।

13 कहने का मतलब यह नहीं कि दूसरों को
आराम दिलाने के बाइस आप ख़ुद मुसीबत में पड़
जाएँ। बात सिर्फ़ यह है कि लोगों के हालात कुछ
बराबर होने चाहिएँ। 14 इस वक़्त तो आपके पास
बहुत है और आप उनकी ज़रूरत पूरी कर सकते
हैं। बाद में किसी वक़्त जब उनके पास बहुत होगा
तो वह आपकी ज़रूरत भी पूरी कर सकेंगे। यों
आपके हालात कुछ बराबर रहेंगे, 15 जिस तरह
कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है, "जिसने ज़्यादा
जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन
जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी
था।"

तितुस और उसके साथी

16 ख़ुदा का शुक्र है जिसने तितुस के दिल में
वही जोश पैदा किया है जो मैं आपके लिए रखता
हूँ। 17 जब हमने उस की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि
वह आपके पास जाए तो वह न सिर्फ़ इसके
लिए तैयार हुआ बल्कि बड़ा सरगरम होकर ख़ुद
बख़ुद आपके पास जाने के लिए रवाना हुआ।
18 हमने उसके साथ उस भाई को भेज दिया
जिसकी ख़िदमत की तारीफ़ तमाम जमातें करती
हैं, क्योंकि उसे अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने की
नेमत मिली है। 19 उसे न सिर्फ़ आपके पास जाना
है बल्कि जमातों ने उसे मुक़र्रर किया है कि जब
हम हदिये को यरूशलम ले जाएंगे तो वह हमारे
साथ जाए। यों हम यह ख़िदमत अदा करते वक़्त
ख़ुदावंद को जलाल देंगे और अपनी सरगरमी का
इज़हार करेंगे।

20 क्योंकि उस बड़े हदिये के पेशे-नज़र जो हम
ले जाएंगे हम इससे बचना चाहते हैं कि किसी
को हम पर शक करने का मौक़ा मिले। 21 हमारी
पूरी कोशिश यह है कि वही कुछ करें जो न सिर्फ़

ख़ुदावंद की नज़र में दुरुस्त है बल्कि इनसान की
नज़र में भी।
22 उनके साथ हमने एक और भाई को भी
भेज दिया जिसकी सरगरमी हमने कई मौक़ों
पर परखी है। अब वह मज़ीद सरगरम हो गया
है, क्योंकि वह आप पर बड़ा एतमाद करता है।
23 जहाँ तक तितुस का ताल्लुक़ है, वह मेरा साथी
और हमख़िदमत है। और जो भाई उसके साथ
हैं उन्हें जमातों ने भेजा है। वह मसीह के लिए
इज़्ज़त का बाइस हैं। 24 उन पर अपनी मुहब्बत
का इज़हार करके यह ज़ाहिर करें कि हम आप
पर क्यों फ़ख़र करते हैं। फिर यह बात ख़ुदा की
दीगर जमातों को भी नज़र आएगी।

मुक़द्दसीन की मदद

9 असल में इसकी ज़रूरत नहीं कि मैं
आपको उस काम के बारे में लिखूँ जो हमें
यहूदिया के मुक़द्दसीन की ख़िदमत में करना है।
2 क्योंकि मैं आपकी गरमजोशी जानता हूँ, और
मैं मकिदुनिया के ईमानदारों के सामने आप पर
फ़ख़र करता रहा हूँ कि “अख़या के लोग पिछले
साल से देने के लिए तैयार थे।” यों आपकी
सरगरमी ने ज़्यादातर लोगों को ख़ुद देने के लिए
उभारा। 3 अब मैंने इन भाइयों को भेज दिया है
ताकि हमारा आप पर फ़ख़र बेबुनियाद न निकले
बल्कि जिस तरह मैंने कहा था आप तैयार रहें।
4 ऐसा न हो कि जब मैं मकिदुनिया के कुछ
भाइयों को साथ लेकर आपके पास पहुँचूँगा तो
आप तैयार न हूँ। उस वक़्त मैं, बल्कि आप भी
शरमिंदा होंगे कि मैंने आप पर इतना एतमाद
किया है। 5 इसलिए मैंने इस बात पर ज़ोर देना
ज़रूरी समझा कि भाई पहले ही आपके पास
आकर उस हदिये का इंतज़ाम करें जिसका वादा
आपने किया है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरे आने
तक यह हदिया जमा किया गया हो और ऐसा न
लगे जैसा इसे मुश्किल से आपसे निकालना पड़ा।
इसके बजाए आपकी सख़ावत ज़ाहिर हो जाए।
6 याद रहे कि जो शख़्स बीज को बचा बचाकर
बोता है उस की फ़सल भी उतनी कम होगी।
लेकिन जो बहुत बीज बोता है उस की फ़सल भी
बहुत ज़्यादा होगी। 7 हर एक उतना दे जितना देने
के लिए उसने पहले अपने दिल में ठहरा लिया
है। वह इसमें तकलीफ़ या मजबूरी महसूस न
करे, क्योंकि अल्लाह उससे मुहब्बत रखता है जो
ख़ुशी से देता है। 8 और अल्लाह इस क़ाबिल है
कि आपको आपकी ज़रूरियात से कहीं ज़्यादा
दे। फिर आपके पास हर वक़्त और हर लिहाज़
से काफ़ी होगा बल्कि इतना ज़्यादा कि आप हर
क़िस्म का नेक काम कर सकेंगे। 9 चुनाँचे कलामे-
मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “उसने फ़ैयाज़ी
से ज़रूरतमंदों में ख़ैरात बिखेर दी, उस की
रास्तबाज़ी हमेशा तक क़ायम रहेगी।” 10 ख़ुदा
ही बीज बोनेवाले को बीज मुहैया करता और
उसे खाने के लिए रोटी देता है। और वह आपको
भी बीज देकर उसमें इज़ाफ़ा करेगा और आपकी
रास्तबाज़ी की फ़सल उगने देगा। 11 हाँ, वह
आपको हर लिहाज़ से दौलतमंद बना देगा और
आप हर मौक़े पर फ़ैयाज़ी से दे सकेंगे। चुनाँचे
जब हम आपका हदिया उनके पास ले जाएंगे
जो ज़रूरतमंद हैं तो वह ख़ुदा का शुक्र करेंगे।
12 यों आप न सिर्फ़ मुक़द्दसीन की ज़रूरियात
पूरी करेंगे बल्कि वह आपकी इस ख़िदमत से
इतने मुतअस्सिर हो जाएंगे कि वह बड़े जोश
से ख़ुदा का भी शुक्रिया अदा करेंगे। 13 आपकी
ख़िदमत के नतीजे में वह अल्लाह को जलाल देंगे।
क्योंकि आपकी उन पर और तमाम ईमानदारों
पर सख़ावत का इज़हार साबित करेगा कि आप
मसीह की ख़ुशख़बरी न सिर्फ़ तसलीम करते हैं
बल्कि उसके ताबे भी रहते हैं। 14 और जब वह
आपके लिए दुआ करेंगे तो आपके आरज़ूमंद
रहेंगे, इसलिए कि अल्लाह ने आपको कितना
बड़ा फ़ज़्ल दे दिया है। 15 अल्लाह का उस की
नाक़ाबिले-बयान बख़्शिश के लिए शुक्र हो!

पौलुस अपनी ख़िदमत का दिफ़ा करता है

10 मैं आपसे अपील करता हूँ, मैं पौलुस
जिसके बारे में कहा जाता है कि मैं
आपके रूबरू आजिज़ होता हूँ और सिर्फ़ आपसे
दूर होकर दिलेर होता हूँ। मसीह की हलीमी और
नरमी के नाम में 2 मैं आपसे मिन्नत करता हूँ
कि मुझे आपके पास आकर इतनी दिलेरी से
उन लोगों से निपटना न पड़े जो समझते हैं कि
हमारा चाल-चलन दुनियावी है। क्योंकि फ़िलहाल
ऐसा लगता है कि इसकी ज़रूरत होगी। 3 बेशक
हम इनसान ही हैं, लेकिन हम दुनिया की तरह
जंग नहीं लड़ते। 4 और जो हथियार हम इस जंग
में इस्तेमाल करते हैं वह इस दुनिया के नहीं हैं,
बल्कि उन्हें अल्लाह की तरफ़ से क़िले ढा देने की
क़ुव्वत हासिल है। इनसे हम ग़लत ख़यालात के
ढाँचे 5 और हर ऊँची चीज़ ढा देते हैं जो अल्लाह
के इल्मो-इरफ़ान के ख़िलाफ़ खड़ी हो जाती है।
और हम हर ख़याल को क़ैद करके मसीह के ताबे
कर देते हैं। 6 हाँ, आपके पूरे तौर पर ताबे हो जाने
पर हम हर नाफ़रमानी की सज़ा देने के लिए तैयार
होंगे।

7 आप सिर्फ़ ज़ाहिरी बातों पर ग़ौर कर रहे हैं।
अगर किसी को इस बात का एतमाद हो कि वह
मसीह का है तो वह इसका भी ख़याल करे कि
हम भी उसी की तरह मसीह के हैं। 8 क्योंकि
अगर मैं उस इख़्तियार पर मज़ीद फ़ख़र भी करूँ
जो ख़ुदावंद ने हमें दिया है तो भी मैं शरमिंदा
नहीं हूँगा। ग़ौर करें कि उसने हमें आपको ढा देने
का नहीं बल्कि आपकी रूहानी तामीर करने का
इख़्तियार दिया है। 9 मैं नहीं चाहता कि ऐसा लगे
जैसे मैं आपको अपने ख़तों से डराने की कोशिश
कर रहा हूँ। 10 क्योंकि बाज़ कहते हैं, "पौलुस के
ख़त ज़ोरदार और ज़बरदस्त हैं, लेकिन जब वह
ख़ुद हाज़िर होता है तो वह कमज़ोर और उसके
बोलने का तर्ज़ हिक़ारतआमेज़ है।" 11 ऐसे लोग
इस बात का ख़याल करें कि जो बातें हम आपसे
दूर होते हुए अपने ख़तों में पेश करते हैं उन्हीं बातों
पर हम अमल करेंगे जब आपके पास आएँगे।

12 हम तो अपने आपको उनमें शुमार नहीं करते
जो अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते
रहते हैं, न अपना उनके साथ मुवाज़ना करते हैं।
वह कितने बेसमझ हैं जब वह अपने आपको
मेयार बनाकर उसी पर अपने आपको जाँचते
हैं और अपना मुवाज़ना अपने आपसे करते हैं।
13 लेकिन हम मुनासिब हद से ज़्यादा फ़ख़र नहीं
करेंगे बल्कि सिर्फ़ उस हद तक जो अल्लाह ने
हमारे लिए मुक़र्रर किया है। और आप भी इस हद
के अंदर आ जाते हैं। 14 इसमें हम मुनासिब हद से
ज़्यादा फ़ख़र नहीं कर रहे, क्योंकि हम तो मसीह
की ख़ुशख़बरी लेकर आप तक पहुँच गए हैं। अगर
ऐसा न होता तो फिर और बात होती। 15 हम ऐसे
काम पर फ़ख़र नहीं करते जो दूसरों की मेहनत से
सरंजाम दिया गया है। इसमें भी हम मुनासिब हद्दों
के अंदर रहते हैं, बल्कि हम यह उम्मीद रखते हैं
कि आपका ईमान बढ़ जाए और यों हमारी क़दरो-
क़ीमत भी अल्लाह की मुक़र्ररा हद तक बढ़ जाए।
ख़ुदा करे कि आपमें हमारा यह काम इतना बढ़
जाए 16 कि हम अल्लाह की ख़ुशख़बरी आपसे
आगे जाकर भी सुना सकें। क्योंकि हम उस काम
पर फ़ख़र नहीं करना चाहते जिसे दूसरे कर चुके
हैं।

17 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "फ़ख़र
करनेवाला ख़ुदावंद ही पर फ़ख़र करे।" 18 जब
लोग अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते
हैं तो इसमें क्या है! इससे वह सहीह साबित
नहीं होते, बल्कि अहम बात यह है कि ख़ुदावंद
ही इसकी तसदीक़ करे।

पौलुस और झूटे रसूल

11 ख़ुदा करे कि जब मैं अपनी हमाक़त
का कुछ इज़हार करता हूँ तो आप
मुझे बरदाश्त करें। हाँ, ज़रूर मुझे बरदाश्त करें,
2 क्योंकि मैं आपके लिए अल्लाह की-सी ग़ैरत
रखता हूँ। मैंने आपका रिश्ता एक ही मर्द के

साथ बाँधा, और मैं आपको पाकदामन कुँवारी की
हैसियत से उस मर्द मसीह के हुज़ूर पेश करना
चाहता था। 3 लेकिन अफ़सोस, मुझे डर है कि
आप हव्वा की तरह गुनाह में गिर जाएंगे, कि
जिस तरह साँप ने अपनी चालाकी से हव्वा को
धोका दिया उसी तरह आपकी सोच भी बिगड़
जाएगी और वह ख़ुलूसदिली और पाक लग्न ख़त्म
हो जाएगी जो आप मसीह के लिए महसूस करते
हैं। 4 क्योंकि आप ख़ुशी से हर एक को बरदाश्त
करते हैं जो आपके पास आकर एक फ़रक़ क़िस्म
का ईसा पेश करता है, एक ऐसा ईसा जो हमने
आपको पेश नहीं किया था। और आप एक ऐसी
रूह और ऐसी "ख़ुशख़बरी" क़बूल करते हैं जो
उस रूह और ख़ुशख़बरी से बिलकुल फ़रक़ है जो
आपको हमसे मिली थी।

5 मेरा नहीं ख़याल कि मैं इन नाम-निहाद
'ख़ास' रसूलों की निसबत कम हूँ। 6 हो सकता
है कि मैं बोलने में माहिर नहीं हूँ, लेकिन यह मेरे
इल्म के बारे में नहीं कहा जा सकता। यह हमने
आपको साफ़ साफ़ और हर लिहाज़ से दिखाया
है।

7 मैंने अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
आपसे कोई भी मुआवज़ा न लिया। यों मैंने अपने
आपको नीचा कर दिया ताकि आपको सरफ़राज़
कर दिया जाए। क्या इसमें मुझसे ग़लती हुई?
8 जब मैं आपकी ख़िदमत कर रहा था तो मुझे
ख़ुदा की दीगर जमातों से पैसे मिल रहे थे, यानी
आपकी मदद करने के लिए मैं उन्हें लूट रहा था।
9 और जब मैं आपके पास था और ज़रूरतमंद था
तो मैं किसी पर बोझ न बना, क्योंकि जो भाई
मकिदुनिया से आए उन्होंने मेरी ज़रूरियात पूरी
कीं। माज़ी में मैं आप पर बोझ न बना और आइंदा
भी नहीं बनूँगा। 10 मसीह की उस सच्चाई की
क़सम जो मेरे अंदर है, अख़या के पूरे सूबे में कोई
मुझे इस पर फ़ख़र करने से नहीं रोकेगा। 11 मैं यह
क्यों कह रहा हूँ? इसलिए कि मैं आपसे मुहब्बत
नहीं रखता? ख़ुदा ही जानता है कि मैं आपसे
मुहब्बत रखता हूँ।

12 और जो कुछ मैं अब कर रहा हूँ वही करता
रहूँगा, ताकि मैं नाम-निहाद रसूलों को वह मौक़ा
न दूँ जो वह ढूँड रहे हैं। क्योंकि यही उनका
मक़सद है कि वह फ़ख़र करके यह कह सकें कि
वह हम जैसे हैं। 13 ऐसे लोग तो झूटे रसूल हैं,
धोकेबाज़ मज़दूर जिन्होंने मसीह के रसूलों का
रूप धार लिया है। 14 और क्या अजब, क्योंकि
इबलीस भी नूर के फ़रिश्ते का रूप धारकर घुमता-
फिरता है। 15 तो फिर यह बड़ी बात नहीं कि
उसके चेले रास्तबाज़ी के ख़ादिम का रूप धारकर
घुमते-फिरते हैं। उनका अंजाम उनके आमाल के
मुताबिक़ ही होगा।

रसूल होने की वजह से पौलुस की ईज़ारसानी

16 मैं दुबारा कहता हूँ कि कोई मुझे अहमक़ न
समझे। लेकिन अगर आप यह सोचें भी तो कम
अज़ कम मुझे अहमक़ की हैसियत से क़बूल करें
ताकि मैं भी थोड़ा-बहुत अपने आप पर फ़ख़र
करूँ। 17 असल में जो कुछ मैं अब बयान कर
रहा हूँ वह ख़ुदावंद को पसंद नहीं है, बल्कि मैं
अहमक़ की तरह बात कर रहा हूँ। 18 लेकिन
चूँकि इतने लोग जिस्मानी तौर पर फ़ख़र कर रहे
हैं इसलिए मैं भी फ़ख़र करूँगा। 19 बेशक आप
ख़ुद इतने दानिशमंद हैं कि आप अहमक़ों को
ख़ुशी से बरदाश्त करते हैं। 20 हाँ, बल्कि आप
यह भी बरदाश्त करते हैं जब लोग आपको ग़ुलाम
बनाते, आपको लूटते, आपसे ग़लत फ़ायदा
उठाते, नख़रे करते और आपको थप्पड़ मारते हैं।
21 यह कहकर मुझे शर्म आती है कि हम इतने
कमज़ोर थे कि हम ऐसा न कर सके।

लेकिन अगर कोई किसी बात पर फ़ख़र करने
की जुरत करे (मैं अहमक़ की-सी बात कर रहा
हूँ) तो मैं भी उतनी ही जुरत करूँगा। 22 क्या वह
इबरानी हैं? मैं भी हूँ। क्या वह इसराईली हैं?
मैं भी हूँ। क्या वह इब्राहीम की औलाद हैं? मैं
भी हूँ। 23 क्या वह मसीह के ख़ादिम हैं? (अब
तो मैं गोया बेख़ुद हो गया हूँ कि इस तरह की

बातें कर रहा हूँ!) मैं उनसे ज़्यादा मसीह की
ख़िदमत करता हूँ। मैंने उनसे कहीं ज़्यादा मेहनत-
मशक़्क़त की, ज़्यादा दफ़ा जेल में रहा, मेरे ज़्यादा
सख़्ती से कोड़े लगाए गए और मैं बार बार मरने
के ख़तरों में रहा हूँ। 24 मुझे यहूदियों से पाँच दफ़ा
39 कोड़ों की सज़ा मिली है। 25 तीन दफ़ा रोमियों
ने मुझे लाठी से मारा। एक बार मुझे संगसार
किया गया। जब मैं समुंदर में सफ़र कर रहा था
तो तीन मरतबा मेरा जहाज़ तबाह हुआ। हाँ, एक
दफ़ा मुझे जहाज़ के तबाह होने पर एक पूरी रात
और दिन समुंदर में गुज़ारना पड़ा। 26 मेरे बेशुमार
सफ़रों के दौरान मुझे कई तरह के ख़तरों का
सामना करना पड़ा, दरियाओं और डाकुओं का
ख़तरा, अपने हमवतनों और ग़ैरयहूदियों के हमलों
का ख़तरा। जहाँ भी मैं गया हूँ वहाँ यह ख़तरे
मौजूद रहे, ख़ाह मैं शहर में था, ख़ाह ग़ैरआबाद
इलाक़े में या समुंदर में। झूटे भाइयों की तरफ़
से भी ख़तरे रहे हैं। 27 मैंने जाँफ़िशानी से सख़्त
मेहनत-मशक़्क़त की है और कई रात जागता रहा
हूँ, मैं भूका और प्यासा रहा हूँ, मैंने बहुत रोज़े रखे
हैं। मुझे सर्दी और नंगेपन का तजरबा हुआ है।
28 और यह उन फ़िकरों के अलावा है जो मैं ख़ुदा
की तमाम जमातों के लिए महसूस करता हूँ और
जो मुझे दबाती रहती हैं। 29 जब कोई कमज़ोर है
तो मैं अपने आपको भी कमज़ोर महसूस करता
हूँ। जब किसी को ग़लत राह पर लाया जाता है
तो मैं उसके लिए शदीद रंजिश महसूस करता हूँ।

30 अगर मुझे फ़ख़र करना पड़े तो मैं उन चीज़ों
पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत ज़ाहिर
करती हैं। 31 हमारा ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा का
बाप (उस की हम्दो-सना अबद तक हो) जानता
है कि मैं झूट नहीं बोल रहा। 32 जब मैं दमिश्क़
शहर में था तो बादशाह अरितास के गवर्नर ने शहर
के तमाम दरवाज़ों पर अपने पहरेदार मुक़र्रर किए
ताकि वह मुझे गिरिफ़्तार करें। 33 लेकिन शहर
की फ़सील में एक दरीचा था, और मुझे एक टोकरे
में रखकर वहाँ से उतारा गया। यों मैं उसके हाथों
से बच निकला।

पौलुस पर कई बातों का इनकिशाफ़

12 लाज़िम है कि मैं कुछ और फ़ख़र
करूँ। अगरचे इसका कोई फ़ायदा
नहीं, लेकिन अब मैं उन रोयाओं और
इनकिशाफ़ात का ज़िक्र करूँगा जो ख़ुदावंद ने
मुझ पर ज़ाहिर किए। 2 मैं मसीह में एक आदमी
को जानता हूँ जिसे चौदह साल हुए छीनकर तीसरे
आसमान तक पहुँचाया गया। मुझे नहीं पता कि
उसे यह तजरबा जिस्म में या इसके बाहर हुआ।
ख़ुदा जानता है। 3 हाँ, ख़ुदा ही जानता है कि वह
जिस्म में था या नहीं। लेकिन यह मैं जानता हूँ
4 कि उसे छीनकर फ़िर्दौस में लाया गया जहाँ
उसने नाक़ाबिले-बयान बातें सुनीं, ऐसी बातें
जिनका ज़िक्र करना इनसान के लिए रवा नहीं।
5 इस क़िस्म के आदमी पर मैं फ़ख़र करूँगा,
लेकिन अपने आप पर नहीं। मैं सिर्फ़ उन बातों
पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत को
ज़ाहिर करती हैं। 6 अगर मैं फ़ख़र करना चाहता
तो इसमें अहमक़ न होता, क्योंकि मैं हक़ीक़त
बयान करता। लेकिन मैं यह नहीं करूँगा, क्योंकि
मैं चाहता हूँ कि सबकी मेरे बारे में राय सिर्फ़ उस
पर मुनहसिर हो जो मैं करता या बयान करता हूँ।
कोई मुझे इससे ज़्यादा न समझे।

7 लेकिन मुझे इन आला इनकिशाफ़ात की
वजह से एक काँटा चुभो दिया गया, एक
तकलीफ़देह चीज़ जो मेरे जिस्म में धँसी रहती
है ताकि मैं फूल न जाऊँ। इबलीस का यह पैग़ंबर
मेरे मुक्के मारता रहता है ताकि मैं मग़रूर न हो
जाऊँ। 8 तीन बार मैंने ख़ुदावंद से इल्तिजा की
कि वह इसे मुझसे दूर करे। 9 लेकिन उसने मुझे
यही जवाब दिया, "मेरा फ़ज़्ल तेरे लिए काफ़ी है,
क्योंकि मेरी क़ुदरत का पूरा इज़हार तेरी कमज़ोर
हालत ही में होता है।" इसलिए मैं मज़ीद ख़ुशी से
अपनी कमज़ोरियों पर फ़ख़र करूँगा ताकि मसीह
की क़ुदरत मुझ पर ठहरी रहे। 10 यही वजह है
कि मैं मसीह की ख़ातिर कमज़ोरियों, गालियों,
मजबूरियों, ईज़ारसानियों और परेशानियों में ख़ुश

हूँ, क्योंकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ तब ही मैं ताक़तवर होता हूँ।

पौलुस की कुरिंथियों के लिए फ़िकर

11 मैं बेवुक़ूफ़ बन गया हूँ, लेकिन आपने मुझे मजबूर कर दिया है। चाहिए था कि आप ही दूसरों के सामने मेरे हक़ में बात करते। क्योंकि बेशक मैं कुछ भी नहीं हूँ, लेकिन इन नाम-निहाद ख़ास रसूलों के मुक़ाबले में मैं किसी भी लिहाज़ से कम
नहीं हूँ। 12 जो मुतअद्दिद इलाही निशान, मोजिज़े और ज़बरदस्त काम मेरे वसीले से हुए वह साबित करते हैं कि मैं रसूल हूँ। हाँ, वह बड़ी साबितक़दमी
से आपके दरमियान किए गए। 13 जो ख़िदमत
मैंने आपके दरमियान की, क्या वह ख़ुदा की दीगर जमातों में मेरी ख़िदमत की निसबत कम थी? हरगिज़ नहीं! इसमें फ़रक़ सिर्फ़ यह था कि मैं आपके लिए माली बोझ न बना। मुझे मुआफ़ करें अगर मुझसे इसमें ग़लती हुई है।

14 अब मैं तीसरी बार आपके पास आने के लिए तैयार हूँ। इस मरतबा भी मैं आपके लिए बोझ का बाइस नहीं बनूँगा, क्योंकि मैं आपका माल नहीं बल्कि आप ही को चाहता हूँ। आख़िर बच्चों को माँ-बाप की मदद के लिए माल जमा नहीं करना चाहिए बल्कि माँ-बाप को बच्चों के
लिए। 15 मैं तो बड़ी ख़ुशी से आपके लिए हर ख़र्चा
उठा लूँगा बल्कि अपने आपको भी ख़र्च कर दूँगा। क्या आप मुझे कम प्यार करेंगे अगर मैं आपसे ज़्यादा मुहब्बत रखूँ?

16 ठीक है, मैं आपके लिए बोझ न बना। लेकिन बाज़ सोचते हैं कि मैं चालाक हूँ और आपको धोके से अपने जाल में फँसा लिया।
17 किस तरह? जिन लोगों को मैंने आपके पास भेजा क्या मैंने उनमें से किसी के ज़रीए
आपसे ग़लत फ़ायदा उठाया? 18 मैंने तितुस की
हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह आपके पास जाए और दूसरे भाई को भी साथ भेज दिया। क्या तितुस ने आपसे ग़लत फ़ायदा उठाया? हरगिज़ नहीं! क्योंकि हम दोनों एक ही रूह में एक ही राह पर चलते हैं।

19 आप काफ़ी देर से सोच रहे होंगे कि हम आपके सामने अपना दिफ़ा कर रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि हम मसीह में होते हुए अल्लाह के हुज़ूर ही यह कुछ बयान कर रहे हैं। और मेरे अज़ीज़ो, जो कुछ भी हम करते हैं हम आपकी
तामीर करने के लिए करते हैं। 20 मुझे डर है कि
जब मैं आऊँगा तो न आपकी हालत मुझे पसंद आएगी, न मेरी हालत आपको। मुझे डर है कि आपमें झगड़ा, हसद, ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, बुहतान, गपबाज़ी, ग़ुरूर और बेतरतीबी पाई जाएगी।
21 हाँ, मुझे डर है कि अगली दफ़ा जब आऊँगा
तो अल्लाह मुझे आपके सामने नीचा दिखाएगा, और मैं उन बहुतों के लिए ग़म खाऊँगा जिन्होंने माज़ी में गुनाह करके अब तक अपनी नापाकी, ज़िनाकारी और ऐयाशी से तौबा नहीं की।

आख़िरी तंबीह और सलाम

13 अब मैं तीसरी दफ़ा आपके पास आ रहा हूँ। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ लाज़िम है कि हर इलज़ाम की तसदीक़ दो या
तीन गवाहों से की जाए। 2 जब मैं दूसरी दफ़ा
आपके पास आया था तो मैंने पहले से आपको आगाह किया था। अब मैं आपसे दूर यह बात दुबारा कहता हूँ कि जब मैं वापस आऊँगा तो न वह बचेंगे जिन्होंने पहले गुनाह किया था न दीगर
लोग। 3 जो भी सबूत आप माँग रहे हैं कि मसीह
मेरे ज़रीए बोलता है वह मैं आपको दूँगा। आपके साथ सुलूक में मसीह कमज़ोर नहीं है। नहीं, वह आपके दरमियान ही अपनी क़ुव्वत का इज़हार
करता है। 4 क्योंकि अगरचे उसे कमज़ोर हालत
में मसलूब किया गया, लेकिन अब वह अल्लाह की क़ुदरत से ज़िंदा है। इसी तरह हम भी उसमें कमज़ोर हैं, लेकिन अल्लाह की क़ुदरत से हम आपकी ख़िदमत करते वक़्त उसके साथ ज़िंदा हैं।

5 अपने आपको जाँचकर मालूम करें कि क्या
आपका ईमान क़ायम है? ख़ुद अपने आपको
परखें। क्या आप नहीं जानते कि ईसा मसीह
आपमें है? अगर नहीं तो इसका मतलब होता कि
आपका ईमान नामक़बूल साबित होता। 6 लेकिन
मुझे उम्मीद है कि आप इतना पहचान लेंगे कि
जहाँ तक हमारा ताल्लुक़ है हम नामक़बूल साबित
नहीं हुए हैं। 7 हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि
आपसे कोई ग़लती न हो जाए। बात यह नहीं
कि लोगों के सामने हम सहीह निकलें बल्कि यह
कि आप सहीह काम करें, चाहे लोग हमें ख़ुद
नाकाम क्यों न क़रार दें। 8 क्योंकि हम हक़ीक़त
के ख़िलाफ़ खड़े नहीं हो सकते बल्कि सिर्फ़ उसके
हक़ में। 9 हम ख़ुश हैं जब आप ताक़तवर हैं गो हम
ख़ुद कमज़ोर हैं। और हमारी दुआ यह है कि आप
कामिल हो जाएँ। 10 यही वजह है कि मैं आपसे
दूर रहकर लिखता हूँ। फिर जब मैं आऊँगा तो
मुझे अपना इख़्तियार इस्तेमाल करके आप पर
सख़्ती नहीं करनी पड़ेगी। क्योंकि ख़ुदावंद ने मुझे
यह इख़्तियार आपको ढा देने के लिए नहीं बल्कि
आपको तामीर करने के लिए दिया है।

11 भाइयो, आख़िर में मैं आपको सलाम कहता
हूँ। सुधर जाएँ, एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई
करें, एक ही सोच रखें और सुलह-सलामती के
साथ ज़िंदगी गुज़ारें। फिर मुहब्बत और सलामती
का ख़ुदा आपके साथ होगा।

12 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देना। तमाम
मुक़द्दसीन आपको सलाम कहते हैं।

13 ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल, अल्लाह
की मुहब्बत और रूहुल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त आप
सबके साथ होती रहे।

गलतियों के नाम

पौलुस रसूल का ख़त

1 यह ख़त पौलुस रसूल की तरफ़ से है। मुझे
न किसी गुरोह ने मुक़र्रर किया न किसी
शख़्स ने बल्कि ईसा मसीह और ख़ुदा बाप ने
जिसने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। 2 तमाम
भाई भी जो मेरे साथ हैं गलतिया की जमातों को
सलाम कहते हैं।

3 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

4 मसीह वही है जिसने अपने आपको हमारे
गुनाहों की ख़ातिर क़ुरबान कर दिया और यों हमें
इस मौजूदा शरीर जहान से बचा लिया है, क्योंकि
यह अल्लाह हमारे बाप की मरज़ी थी। 5 उसी का
जलाल अबद तक होता रहे! आमीन।

एक ही ख़ुशख़बरी

6 मैं हैरान हूँ! आप इतनी जल्दी से उसे तर्क
कर रहे हैं जिसने मसीह के फ़ज़्ल से आपको
बुलाया। और अब आप एक फ़रक़ क़िस्म की
"ख़ुशख़बरी" के पीछे लग गए हैं। 7 असल में
यह अल्लाह की ख़ुशख़बरी है नहीं। बस कुछ लोग
आपको उलझन में डालकर मसीह की ख़ुशख़बरी
में तबदीली लाना चाहते हैं। 8 हमने तो असली
ख़ुशख़बरी सुनाई और जो इससे फ़रक़ पैग़ाम
सुनाता है उस पर लानत, ख़ाह हम ख़ुद ऐसा
करें ख़ाह आसमान से कोई फ़रिश्ता उतरकर यह
ग़लत पैग़ाम सुनाए। 9 हम यह पहले बयान कर
चुके हैं और अब मैं दुबारा कहता हूँ कि अगर
कोई आपको ऐसी "ख़ुशख़बरी" सुनाए जो उससे
फ़रक़ है जिसे आपने क़बूल किया है तो उस पर
लानत!

10 क्या मैं इसमें यह कोशिश कर रहा हूँ कि
लोग मुझे क़बूल करें? हरगिज़ नहीं! मैं चाहता हूँ
कि अल्लाह मुझे क़बूल करे। क्या मेरी कोशिश
यह है कि मैं लोगों को पसंद आऊँ? अगर मैं अब
तक ऐसा करता तो मसीह का ख़ादिम न होता।

पौलुस किस तरह रसूल बन गया

11 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि
जो ख़ुशख़बरी मैंने सुनाई वह इनसान की तरफ़
से नहीं है। 12 न मुझे यह पैग़ाम किसी इनसान से
मिला, न यह मुझे किसी ने सिखाया है बल्कि ईसा
मसीह ने ख़ुद मुझ पर यह पैग़ाम ज़ाहिर किया।

13 आपने तो ख़ुद सुन लिया है कि मैं उस वक़्त
किस तरह ज़िंदगी गुज़ारता था जब यहूदी मज़हब
का पैरोकार था। उस वक़्त मैंने कितने जोश और
शिद्दत से अल्लाह की जमात को ईज़ा पहुँचाई।
मेरी पूरी कोशिश यह थी कि यह जमात ख़त्म हो
जाए। 14 यहूदी मज़हब के लिहाज़ से मैं अकसर
दीगर हमउम्र यहूदियों पर सबक़त ले गया था। हाँ,

मैं अपने बापदादा की रिवायतों की पैरवी में हद
से ज़्यादा सरगरम था।
15 लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से मुझे पैदा
होने से पेशतर ही चुनकर अपनी ख़िदमत करने
के लिए बुलाया। और जब उसने अपनी मरज़ी
से 16 अपने फ़रज़ंद को मुझ पर ज़ाहिर किया
ताकि मैं उसके बारे में ग़ैरयहूदियों को ख़ुशख़बरी
सुनाऊँ तो मैंने किसी भी शख़्स से मशवरा न
लिया। 17 उस वक़्त मैं यरूशलम भी न गया ताकि
उनसे मिलूँ जो मुझसे पहले रसूल थे बल्कि मैं
सीधा अरब चला गया और बाद में दमिश्क़ वापस
आया। 18 इसके तीन साल बाद ही मैं पतरस से
शनासा होने के लिए यरूशलम गया। वहाँ मैं पंद्रह
दिन उसके साथ रहा। 19 इसके अलावा मैंने सिर्फ़
ख़ुदावंद के भाई याक़ूब को देखा, किसी और
रसूल को नहीं।
20 जो कुछ मैं लिख रहा हूँ अल्लाह गवाह है
कि वह सहीह है। मैं झूट नहीं बोल रहा।
21 बाद में मैं मुल्के-शाम और किलिकिया चला
गया। 22 उस वक़्त सूबा यहूदिया में मसीह की
जमातें मुझे नहीं जानती थीं। 23 उन तक सिर्फ़
यह ख़बर पहुँची थी कि जो आदमी पहले हमें
ईज़ा पहुँचा रहा था वह अब ख़ुद उस ईमान की
ख़ुशख़बरी सुनाता है जिसे वह पहले ख़त्म करना
चाहता था। 24 यह सुनकर उन्होंने मेरी वजह से
अल्लाह की तमजीद की।

पौलुस और दीगर रसूल

2 चौदह साल के बाद मैं दुबारा यरू-
शलम गया। इस दफ़ा बरनबास साथ था।
मैं तितुस को भी साथ लेकर गया। 2 मैं एक
मुकाशफ़े की वजह से गया जो अल्लाह ने मुझ
पर ज़ाहिर किया था। मेरी अलहदगी में उनके साथ
मीटिंग हुई जो असरो-रसूख़ रखते हैं। इसमें मैंने
उन्हें वह ख़ुशख़बरी पेश की जो मैं ग़ैरयहूदियों
को सुनाता हूँ। मैं नहीं चाहता था कि जो दौड़ मैं
दौड़ रहा हूँ या माज़ी में दौड़ा था वह आख़िरकार
बेफ़ायदा निकले। 3 उस वक़्त वह यहाँ तक मेरे
हक़ में थे कि उन्होंने तितुस को भी अपना
ख़तना करवाने पर मजबूर नहीं किया, अगरचे
वह ग़ैरयहूदी है। 4 और चंद यही चाहते थे। लेकिन
यह झूटे भाई थे जो चुपके से अंदर घुस आए थे
ताकि जासूस बनकर हमारी उस आज़ादी के बारे
में मालूमात हासिल कर लें जो हमें मसीह में मिली
है। यह हमें ग़ुलाम बनाना चाहते थे, 5 लेकिन
हमने लमहा-भर उनकी बात न मानी और न उनके
ताबे हुए ताकि अल्लाह की ख़ुशख़बरी की सच्चाई
आपके दरमियान क़ायम रहे।
6 और जो राहनुमा समझे जाते थे उन्होंने मेरी
बात में कोई इज़ाफ़ा न किया। (असल में मुझे
कोई परवा नहीं कि उनका असरो-रसूख़ था कि
नहीं। अल्लाह तो इनसान की ज़ाहिरी हालत का
लिहाज़ नहीं करता।) 7 बहरहाल उन्होंने देखा
कि अल्लाह ने मुझे ग़ैरयहूदियों को मसीह की
ख़ुशख़बरी सुनाने की ज़िम्मेदारी दी थी, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह उसने पतरस को यहूदियों
को यह पैग़ाम सुनाने की ज़िम्मेदारी दी थी।
8 क्योंकि जो काम अल्लाह यहूदियों के रसूल
पतरस की ख़िदमत के वसीले से कर रहा था
वही काम वह मेरे वसीले से भी कर रहा था, जो
ग़ैरयहूदियों का रसूल हूँ। 9 याक़ूब, पतरस और
यूहन्ना को जमात के सतून माना जाता था। जब
उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने इस नाते से
मुझे ख़ास फ़ज़ल दिया है तो उन्होंने मुझसे और
बरनबास से दहना हाथ मिलाकर इसका इज़हार
किया कि वह हमारे साथ हैं। यों हम मुत्तफ़िक़ हुए
कि बरनबास और मैं ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत करेंगे
और वह यहूदियों में। 10 उन्होंने सिर्फ़ एक बात पर
ज़ोर दिया कि हम ज़रूरतमंदों को याद रखें, वही
बात जिसे मैं हमेशा करने के लिए कोशाँ रहा हूँ।

अंताकिया में पौलुस पतरस को मलामत करता है

11 लेकिन जब पतरस अंताकिया शहर आया
तो मैंने रूबरू उस की मुख़ालफ़त की, क्योंकि वह
अपने रवय्ये के सबब से मुजरिम ठहरा। 12 जब

वह आया तो पहले वह ग़ैरयहूदी ईमानदारों के
साथ खाना खाता रहा। लेकिन फिर याक़ूब के
कुछ अज़ीज़ आए। उसी वक़्त पतरस पीछे हटकर
ग़ैरयहूदियों से अलग हुआ, क्योंकि वह उनसे
डरता था जो ग़ैरयहूदियों का ख़तना करवाने के
हक़ में थे। 13 बाक़ी यहूदी भी इस रियाकारी में
शामिल हुए, यहाँ तक कि बरनबास को भी उनकी
रियाकारी से बहकाया गया। 14 जब मैंने देखा कि
वह उस सीधी राह पर नहीं चल रहे हैं जो अल्लाह
की ख़ुशख़बरी की सच्चाई पर मबनी है तो मैंने
सबके सामने पतरस से कहा, "आप यहूदी हैं।
लेकिन आप ग़ैरयहूदी की तरह ज़िंदगी गुज़ार रहे
हैं, यहूदी की तरह नहीं। तो फिर यह कैसी बात है
कि आप ग़ैरयहूदियों को यहूदी रिवायात की पैरवी
करने पर मजबूर कर रहे हैं?"

सब ईमान से नजात पाते हैं

15 बेशक हम पैदाइशी यहूदी हैं और 'ग़ैरयहूदी
गुनाहगार' नहीं हैं। 16 लेकिन हम जानते हैं कि
इनसान को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़
नहीं ठहराया जाता बल्कि ईसा मसीह पर ईमान
लाने से। हम भी मसीह ईसा पर ईमान लाए हैं
ताकि हमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाए, शरीअत
की पैरवी करने से नहीं बल्कि मसीह पर ईमान
लाने से। क्योंकि शरीअत की पैरवी करने से
किसी को भी रास्तबाज़ क़रार नहीं दिया जाएगा।
17 लेकिन अगर मसीह में रास्तबाज़ ठहरने की
कोशिश करते करते हम ख़ुद गुनाहगार साबित
हो जाएँ तो क्या इसका मतलब यह है कि मसीह
गुनाह का ख़ादिम है? हरगिज़ नहीं! 18 अगर
मैं शरीअत के उस निज़ाम को दुबारा तामीर करूँ
जो मैंने ढा दिया तो फिर मैं ज़ाहिर करता हूँ कि
मैं मुजरिम हूँ। 19 क्योंकि जहाँ तक शरीअत का
ताल्लुक़ है मैं मुरदा हूँ। मुझे शरीअत ही से मारा
गया है ताकि अल्लाह के लिए जी सकूँ। मुझे
मसीह के साथ मसलूब किया गया 20 और यों
मैं ख़ुद ज़िंदा न रहा बल्कि मसीह मुझमें ज़िंदा
है। अब जो ज़िंदगी मैं इस जिस्म में गुज़ारता
हूँ वह अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान लाने से
गुज़ारता हूँ। उसी ने मुझसे मुहब्बत रखकर मेरे
लिए अपनी जान दी। 21 मैं अल्लाह का फ़ज़ल रद्द
करने से इनकार करता हूँ। क्योंकि अगर किसी
को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहराया
जा सकता तो इसका मतलब यह होता कि मसीह
का मरना अबस था।

शरीअत या ईमान

3 नासमझ गलतियो! किसने आप पर जादू
कर दिया? आपकी आँखों के सामने ही
ईसा मसीह और उस की सलीबी मौत को साफ़
साफ़ पेश किया गया। 2 मुझे एक बात बताएँ,
क्या आपको शरीअत की पैरवी करने से रूहुल-
क़ुद्स मिला? हरगिज़ नहीं! वह आपको उस
वक़्त मिला जब आप मसीह के बारे में पैग़ाम
सुनकर उस पर ईमान लाए। 3 क्या आप इतने
बेसमझ हैं? आपकी रूहानी ज़िंदगी रूहुल-क़ुद्स
के वसीले से शुरू हुई। तो अब आप यह काम
अपनी इनसानी कोशिशों से किस तरह तकमील
तक पहुँचाना चाहते हैं? 4 आपको कई तरह के
तजरबे हासिल हुए हैं। क्या यह सब बेफ़ायदा थे?
यक़ीनन यह बेफ़ायदा नहीं थे। 5 क्या अल्लाह
इसलिए आपको अपना रूह देता और आपके
दरमियान मोजिज़े करता है कि आप शरीअत की
पैरवी करते हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि इसलिए कि
आप मसीह के बारे में पैग़ाम सुनकर ईमान लाए
हैं।

6 इब्राहीम की मिसाल लें। उसने अल्लाह पर
भरोसा किया और इस बिना पर अल्लाह ने उसे
रास्तबाज़ क़रार दिया। 7 तो फिर आपको जान
लेना चाहिए कि इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद वह
लोग हैं जो ईमान रखते हैं। 8 कलामे-मुक़द्दस ने
इस बात की पेशगोई की कि अल्लाह ग़ैरयहूदियों
को ईमान के ज़रीए रास्तबाज़ क़रार देगा। यों
उसने इब्राहीम को यह ख़ुशख़बरी सुनाई, "तमाम
क़ौमें तुझसे बरकत पाएँगी।" 9 इब्राहीम ईमान
लाया, इसलिए उसे बरकत मिली। इसी तरह

सबको ईमान लाने पर इब्राहीम की-सी बरकत
मिलती है।
10 लेकिन जो भी इस पर तकिया करते हैं
कि हमें शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़
क़रार दिया जाएगा उन पर अल्लाह की लानत
है। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “हर एक
पर लानत जो शरीअत की किताब की तमाम बातें
क़ायम न रखे, न इन पर अमल करे।” 11 यह बात
तो साफ़ है कि अल्लाह किसी को भी शरीअत की
पैरवी करने की बिना पर रास्तबाज़ नहीं ठहराता,
क्योंकि कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ रास्तबाज़
ईमान ही से जीता रहेगा। 12 ईमान की यह राह
शरीअत की राह से बिलकुल फ़रक़ है जो कहती
है, “जो यों करेगा वह जीता रहेगा।”
13 लेकिन मसीह ने हमारा फ़िद्या देकर हमें
शरीअत की लानत से आज़ाद कर दिया है। यह
उसने इस तरह किया कि वह हमारी ख़ातिर ख़ुद
लानत बना। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
“जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है उस पर
अल्लाह की लानत है।” 14 इसका मक़सद यह
था कि जो बरकत इब्राहीम को हासिल हुई वह
मसीह के वसीले से ग़ैरयहूदियों को भी मिले और
यों हम ईमान लाकर वादा किया हुआ रूह पाएँ।

शरीअत और वादा

15 भाइयो, इनसानी ज़िंदगी की एक मि-
साल लें। जब दो पार्टियाँ किसी मामले में
मुत्तफ़िक़ होकर मुआहदा करती हैं तो कोई इस
मुआहदे को मनसूख़ या इसमें इज़ाफ़ा नहीं कर
सकता। 16 अब ग़ौर करें कि अल्लाह ने अपने वादे
इब्राहीम और उस की औलाद से ही किए। लेकिन
जो लफ़्ज़ इबरानी में औलाद के लिए इस्तेमाल
हुआ है इससे मुराद बहुत-से अफ़राद नहीं बल्कि
एक फ़रद है और वह है मसीह। 17 कहने से मुराद
यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम से अहद बाँधकर
उसे क़ायम रखने का वादा किया। शरीअत जो
430 साल के बाद दी गई इस अहद को रद्द
करके अल्लाह का वादा मनसूख़ नहीं कर सकती।
18 क्योंकि अगर इब्राहीम की मीरास शरीअत की
पैरवी करने से मिलती तो फिर वह अल्लाह के
वादे पर मुनहसिर न होती। लेकिन ऐसा नहीं था।
अल्लाह ने इसे अपने वादे की बिना पर इब्राहीम
को दे दिया।
19 तो फिर शरीअत का क्या मक़सद था? उसे
इसलिए वादे के अलावा दिया गया ताकि लोगों
के गुनाहों को ज़ाहिर करे। और उसे उस वक़्त तक
क़ायम रहना था जब तक इब्राहीम की वह औलाद
न आ जाती जिससे वादा किया गया था। अल्लाह
ने अपनी शरीअत फ़रिश्तों के वसीले से मूसा को
दे दी जो अल्लाह और लोगों के बीच में दरमियानी
रहा। 20 अब दरमियानी उस वक़्त ज़रूरी होता है
जब एक से ज़्यादा पार्टियों में इत्तफ़ाक़ कराने की
ज़रूरत है। लेकिन अल्लाह जो एक ही है उसने
दरमियानी इस्तेमाल न किया जब उसने इब्राहीम
से वादा किया।

शरीअत का मक़सद

21 तो क्या इसका मतलब यह है कि शरीअत
अल्लाह के वादों के ख़िलाफ़ है? हरगिज़ नहीं!
अगर इनसान को ऐसी शरीअत मिली होती जो
ज़िंदगी दिला सकती तो फिर सब उस की पैरवी
करने से रास्तबाज़ ठहरते। 22 लेकिन कलामे-
मुक़द्दस फ़रमाता है कि पूरी दुनिया गुनाह के
क़ब्ज़े में है। चुनाँचे हमें अल्लाह का वादा सिर्फ़
ईसा मसीह पर ईमान लाने से हासिल होता है।
23 इससे पहले कि ईमान की यह राह दस्तयाब
हुई शरीअत ने हमें क़ैद करके महफ़ूज़ रखा था।
इस क़ैद में हम उस वक़्त तक रहे जब तक ईमान
की राह ज़ाहिर नहीं हुई थी। 24 यों शरीअत को
हमारी तरबियत करने की ज़िम्मेदारी दी गई। उसे
हमें मसीह तक पहुँचाना था ताकि हमें ईमान से
रास्तबाज़ क़रार दिया जाए। 25 अब चूँकि ईमान
की राह आ गई है इसलिए हम शरीअत की
तरबियत के तहत नहीं रहे।
26 क्योंकि मसीह ईसा पर ईमान लाने से आप
सब अल्लाह के फ़रज़ंद बन गए हैं। 27 आपमें से

जितनों को मसीह में बपतिस्मा दिया गया उन्होंने
मसीह को पहन लिया। 28 अब न यहूदी रहा न
ग़ैरयहूदी, न ग़ुलाम रहा न आज़ाद, न मर्द रहा न
औरत। मसीह ईसा में आप सबके सब एक हैं।
29 शर्त यह है कि आप मसीह के हों। तब आप
इब्राहीम की औलाद और उन चीज़ों के वारिस हैं
जिनका वादा अल्लाह ने किया है।

4 देखें, जो बेटा अपने बाप की मिल-
कियत का वारिस है वह उस वक़्त तक
ग़ुलामों से फ़रक़ नहीं जब तक वह बालिग़ न
हो, हालाँकि वह पूरी मिलकियत का मालिक
है। 2 बाप की तरफ़ से मुक़र्रर की हुई उम्र तक
दूसरे उस की देख-भाल करते और उस की
मिलकियत सँभालते हैं। 3 इसी तरह हम भी जब
बच्चे थे दुनिया की कुव्वतों के ग़ुलाम थे। 4 लेकिन
जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो अल्लाह ने अपने
फ़रज़ंद को भेज दिया। एक औरत से पैदा होकर
वह शरीअत के ताबे हुआ 5 ताकि फ़िद्या देकर हमें
जो शरीअत के ताबे थे आज़ाद कर दे। यों हमें
अल्लाह के फ़रज़ंद होने का मरतबा मिला है।

6 अब चूँकि आप उसके फ़रज़ंद हैं इसलिए
अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद के रूह को हमारे दिलों
में भेज दिया, वह रूह जो "अब्बा" यानी "ऐ
बाप" कहकर पुकारता रहता है। 7 ग़रज़ अब आप
ग़ुलाम न रहे बल्कि बेटे की हैसियत रखते हैं। और
बेटा होने का यह मतलब है कि अल्लाह ने आपको
वारिस भी बना दिया है।

पौलुस की गलतियों के लिए फ़िकर

8 माज़ी में जब आप अल्लाह को नहीं जानते
थे तो आप उनके ग़ुलाम थे जो हक़ीक़त में ख़ुदा
नहीं हैं। 9 लेकिन अब आप अल्लाह को जानते हैं,
बल्कि अब अल्लाह ने आपको जान लिया है। तो
फिर आप मुड़कर इन कमज़ोर और घटिया उसूलों
की तरफ़ क्यों वापस जाने लगे हैं? क्या आप
दुबारा इनकी ग़ुलामी में आना चाहते हैं? 10 आप
बड़ी फ़िकरमंदी से ख़ास दिन, माह, मौसम और
साल मनाते हैं। 11 मुझे आपके बारे में डर है, कहीं
मेरी आप पर मेहनत-मशक़्क़त ज़ाया न जाए।

12 भाइयो, मैं आपसे इल्तिजा करता हूँ कि
मेरी मानिंद बन जाएँ, क्योंकि मैं तो आपकी
मानिंद बन गया हूँ। आपने मेरे साथ कोई ग़लत
सुलूक नहीं किया। 13 आपको मालूम है कि जब
मैंने पहली दफ़ा आपको अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाई तो इसकी वजह मेरे जिस्म की कमज़ोर
हालत थी। 14 लेकिन अगरचे मेरी यह हालत
आपके लिए आज़माइश का बाइस थी तो भी
आपने मुझे हक़ीर न जाना, न मुझे नीच समझा,
बल्कि आपने मुझे यों ख़ुशआमदीद कहा जैसा कि
मैं अल्लाह का कोई फ़रिश्ता या मसीह ईसा ख़ुद
हूँ। 15 उस वक़्त आप इतने ख़ुश थे! अब क्या
हुआ है? मैं गवाह हूँ, उस वक़्त अगर आपको
मौक़ा मिलता तो आप अपनी आँखें निकालकर
मुझे दे देते। 16 तो क्या अब मैं आपको हक़ीक़त
बताने की वजह से आपका दुश्मन बन गया हूँ?

17 वह दूसरे लोग आपकी दोस्ती पाने की पूरी
जिद्दो-जहद कर रहे हैं, लेकिन उनकी नीयत साफ़
नहीं है। बस वह आपको मुझसे जुदा करना चाहते
हैं ताकि आप उन्हीं के हक़ में जिद्दो-जहद करते
रहें। 18 जब लोग आपकी दोस्ती पाने की जिद्दो-
जहद करते हैं तो यह है तो ठीक, लेकिन इसका
मक़सद अच्छा होना चाहिए। हाँ, सहीह जिद्दो-
जहद हर वक़्त अच्छी होती है, न सिर्फ़ इस
वक़्त जब मैं आपके दरमियान हूँ। 19 मेरे प्यारे
बच्चो! अब मैं दुबारा आपको जन्म देने का-सा
दर्द महसूस कर रहा हूँ और उस वक़्त तक करता
रहूँगा जब तक मसीह आपमें सूरत न पकड़े।
20 काश मैं उस वक़्त आपके पास होता ताकि
फ़रक़ अंदाज़ में आपसे बात कर सकता, क्योंकि
मैं आपके सबब से बड़ी उलझन में हूँ!

हाजिरा और सारा की मिसाल

21 आप जो शरीअत के ताबे रहना चाहते हैं
मुझे एक बात बताएँ, क्या आप वह बात नहीं
सुनते जो शरीअत कहती है? 22 वह कहती है कि

इब्राहीम के दो बेटे थे। एक लौंडी का बेटा था, एक
आज़ाद औरत का। 23 लौंडी के बेटे की पैदाइश
हसबे-मामूल थी, लेकिन आज़ाद औरत के बेटे
की पैदाइश ग़ैरमामूली थी, क्योंकि उसमें अल्लाह
का वादा पूरा हुआ। 24 जब यह किनायतन समझा
जाए तो यह दो ख़वातीन अल्लाह के दो अहदों की
नुमाइंदगी करती हैं। पहली ख़ातून हाजिरा सीना
पहाड़ पर बँधे हुए अहद की नुमाइंदगी करती है,
और जो बच्चे उससे पैदा होते हैं वह ग़ुलामी के
लिए मुक़र्रर हैं। 25 हाजिरा जो अरब में वाक़े पहाड़
सीना की अलामत है मौजूदा शहर यरूशलम
से मुताबिक़त रखती है। वह और उसके तमाम
बच्चे ग़ुलामी में ज़िंदगी गुज़ारते हैं। 26 लेकिन
आसमानी यरूशलम आज़ाद है और वही हमारी
माँ है। 27 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

"ख़ुश हो जा, तू जो बेऔलाद है,
जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती।
बुलंद आवाज़ से शादियाना बजा,
तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ।
क्योंकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे
शादीशुदा औरत के बच्चों से ज़्यादा हैं।"

28 भाइयो, आप इसहाक़ की तरह अल्लाह
के वादे के फ़रज़ंद हैं। 29 उस वक़्त इसमाईल
ने जो हसबे-मामूल पैदा हुआ था इसहाक़ को
सताया जो रूहुल-क़ुद्स की क़ुदरत से पैदा हुआ
था। आज भी ऐसा ही है। 30 लेकिन कलामे-
मुक़द्दस में क्या फ़रमाया गया है? "इस लौंडी
और इसके बेटे को घर से निकाल दें, क्योंकि
वह आज़ाद औरत के बेटे के साथ विरसा नहीं
पाएगा।" 31 ग़रज़ भाइयो, हम लौंडी के फ़रज़ंद
नहीं हैं बल्कि आज़ाद औरत के।

अपनी आज़ादी महफ़ूज़ रखें

5 मसीह ने हमें आज़ाद रहने के लिए ही
आज़ाद किया है। तो अब क़ायम रहें और
दुबारा अपने गले में ग़ुलामी का जुआ डालने न दें।
2 सुनें! मैं पौलुस आपको बताता हूँ कि
अगर आप अपना ख़तना करवाएँ तो आप-
को मसीह का कोई फ़ायदा नहीं होगा। 3 मैं एक
बार फिर इस बात की तसदीक़ करता हूँ कि
जिसने भी अपना ख़तना करवाया उसका फ़र्ज़
है कि वह पूरी शरीअत की पैरवी करे। 4 आप जो
शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ बनना चाहते
हैं आपका मसीह के साथ कोई वास्ता न रहा।
हाँ, आप अल्लाह के फ़ज़ल से दूर हो गए हैं।
5 लेकिन हमें एक फ़रक़ उम्मीद दिलाई गई है।
उम्मीद यह है कि ख़ुदा ही हमें रास्तबाज़ क़रार
देता है। चुनाँचे हम रूहुल-क़ुद्स के बाइस ईमान
रखकर इसी रास्तबाज़ी के लिए तड़पते रहते हैं।
6 क्योंकि जब हम मसीह ईसा में होते हैं तो ख़तना
करवाने या न करवाने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता।
फ़रक़ सिर्फ़ उस ईमान से पड़ता है जो मुहब्बत
करने से ज़ाहिर होता है।

7 आप ईमान की दौड़ में अच्छी तरक़्क़ी कर
रहे थे! तो फिर किसने आपको सच्चाई की पैरवी
करने से रोक लिया? 8 किसने आपको उभारा?
अल्लाह तो नहीं था जो आपको बुलाता है। 9 देखें,
थोड़ा-सा ख़मीर तमाम गुँधे हुए आटे को ख़मीर
कर देता है। 10 मुझे ख़ुदावंद में आप पर इतना
एतमाद है कि आप यही सोच रखते हैं। जो भी
आपमें अफ़रा-तफ़री पैदा कर रहा है उसे सज़ा
मिलेगी।

11 भाइयो, जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मैं
यह पैग़ाम देता कि अब तक ख़तना करवाने की
ज़रूरत है तो मेरी ईज़ारसानी क्यों हो रही होती?
अगर ऐसा होता तो लोग मसीह के मसलूब होने
के बारे में सुनकर ठोकर न खाते। 12 बेहतर है कि
आपको परेशान करनेवाले न सिर्फ़ अपना ख़तना
करवाएँ बल्कि ख़ोजे बन जाएँ।

13 भाइयो, आपको आज़ाद होने के लिए
बुलाया गया है। लेकिन ख़बरदार रहें कि इस
आज़ादी से आपकी गुनाहआलूदा फ़ितरत को
अमल में आने का मौक़ा न मिले। इसके बजाए
मुहब्बत की रूह में एक दूसरे की ख़िदमत करें।
14 क्योंकि पूरी शरीअत एक ही हुक्म में समाई हुई
है, "अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू

अपने आपसे रखता है।” 15 अगर आप एक दूसरे को काटते और फाड़ते हैं तो ख़बरदार! ऐसा न हो कि आप एक दूसरे को ख़त्म करके सबके सब तबाह हो जाएँ।

रूहुल-क़ुद्स और इनसानी फ़ितरत

16 मैं तो यह कहता हूँ कि रूहुल-क़ुद्स में ज़िंदगी गुज़ारें। फिर आप अपनी पुरानी फ़ितरत की ख़ाहिशात पूरी नहीं करेंगे। 17 क्योंकि जो कुछ हमारी पुरानी फ़ितरत चाहती है वह उसके ख़िलाफ़ है जो रूह चाहता है, और जो कुछ रूह चाहता है वह उसके ख़िलाफ़ है जो हमारी पुरानी फ़ितरत चाहती है। यह दोनों एक दूसरे के दुश्मन हैं, इसलिए आप वह कुछ नहीं कर पाते जो आप करना चाहते हैं। 18 लेकिन जब रूहुल-क़ुद्स आपकी राहनुमाई करता है तो आप शरीअत के ताबे नहीं होते।

19 जो काम पुरानी फ़ितरत करती है वह साफ़ ज़ाहिर होता है। मसलन ज़िनाकारी, नापाकी, ऐयाशी, 20 बुतपरस्ती, जादूगरी, दुश्मनी, झगड़ा, हसद, ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, अनबन, पार्टीबाज़ी, 21 जलन, नशाबाज़ी, रंगरलियाँ वग़ैरा। मैं पहले भी आपको आगाह कर चुका हूँ, लेकिन अब एक बार फिर कहता हूँ कि जो इस तरह की ज़िंदगी गुज़ारते हैं वह अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे।

22 रूहुल-क़ुद्स का फल फ़रक़ है। वह मुहब्बत, ख़ुशी, सुलह-सलामती, सब्र, मेहरबानी, नेकी, वफ़ादारी, 23 नरमी और ज़ब्ते-नफ़्स पैदा करता है। शरीअत ऐसी चीज़ों के ख़िलाफ़ नहीं होती। 24 और जो मसीह ईसा के हैं उन्होंने अपनी पुरानी फ़ितरत को उस की रग़बतों और बुरी ख़ाहिशों समेत मसलूब कर दिया है। 25 चूँकि हम रूह में ज़िंदगी गुज़ारते हैं इसलिए आएँ, हम क़दम बक़दम उसके मुताबिक़ चलते भी रहें। 26 न हम मग़रूर हों, न एक दूसरे को मुश्तइल करें या एक दूसरे से हसद करें।

एक दूसरे के बोझ उठाना

6 भाइयो, अगर कोई किसी गुनाह में फँस जाए तो आप जो रूहानी हैं उसे नरमदिली से बहाल करें। लेकिन अपना भी ख़याल रखें, ऐसा न हो कि आप भी आज़माइश में फँस जाएँ। 2 बोझ उठाने में एक दूसरे की मदद करें, क्योंकि इस तरह आप मसीह की शरीअत पूरी करेंगे। 3 जो समझता है कि मैं कुछ हूँ अगरचे वह हक़ीक़त में कुछ भी नहीं है तो वह अपने आपको फ़रेब दे रहा है। 4 हर एक अपना ज़ाती अमल परखे। फिर ही उसे अपने आप पर फ़ख़र का मौक़ा होगा और उसे किसी दूसरे से अपना मुवाज़ना करने की ज़रूरत न होगी। 5 क्योंकि हर एक को अपना ज़ाती बोझ उठाना होता है।

6 जिसे कलामे-मुक़द्दस की तालीम दी जाती है उसका फ़र्ज़ है कि वह अपने उस्ताद को अपनी तमाम अच्छी चीज़ों में शरीक करे।

7 फ़रेब मत खाना, अल्लाह इनसान को अपना मज़ाक़ उड़ाने नहीं देता। जो कुछ भी इनसान बोता है उसी की फ़सल वह काटेगा। 8 जो अपनी पुरानी फ़ितरत के खेत में बीज बोए वह हलाकत की फ़सल काटेगा। और जो रूहुल-क़ुद्स के खेत में बीज बोए वह अबदी ज़िंदगी की फ़सल काटेगा। 9 चुनाँचे हम नेक काम करने में बेदिल न हो जाएँ, क्योंकि हम मुक़र्ररा वक़्त पर ज़रूर फ़सल की कटाई करेंगे। शर्त सिर्फ़ यह है कि हम हथियार न डालें। 10 इसलिए आएँ, जितना वक़्त रह गया है सबके साथ नेकी करें, ख़ासकर उनके साथ जो ईमान में हमारे भाई और बहनें हैं।

आख़िरी आगाही और सलाम

11 देखें, मैं बड़े बड़े हुरूफ़ के साथ अपने हाथ से आपको लिख रहा हूँ। 12 यह लोग जो दुनिया के सामने इज़्ज़त हासिल करना चाहते हैं आपको ख़तना करवाने पर मजबूर करना चाहते हैं। मक़सद उनका सिर्फ़ एक ही है, कि वह उस ईज़ारसानी से बचे रहें जो तब पैदा होती है जब हम मसीह की सलीबी मौत की तालीम देते हैं।

13 बात यह है कि जो अपना ख़तना कराते हैं वह
ख़ुद शरीअत की पैरवी नहीं करते। तो भी यह
चाहते हैं कि आप अपना ख़तना करवाएँ ताकि
आपके जिस्म की हालत पर वह फ़ख़र कर सकें।
14 लेकिन ख़ुदा करे कि मैं सिर्फ़ हमारे ख़ुदावंद
ईसा मसीह की सलीब ही पर फ़ख़र करूँ। क्योंकि
उस की सलीब से दुनिया मेरे लिए मसलूब हुई
है और मैं दुनिया के लिए। **15** ख़तना करवाने
या न करवाने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता बल्कि
फ़रक़ उस वक़्त पड़ता है जब अल्लाह किसी
को नए सिरे से ख़लक़ करता है। **16** जो भी इस
उसूल पर अमल करते हैं उन्हें सलामती और रहम
हासिल होता रहे, उन्हें भी और अल्लाह की क़ौम
इसराईल को भी।

17 आइंदा कोई मुझे तकलीफ़ न दे, क्योंकि मेरे
जिस्म पर ज़ख़मों के निशान ज़ाहिर करते हैं कि
मैं ईसा का ग़ुलाम हूँ।

18 भाइयो, हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का
फ़ज़ल आपकी रूह के साथ होता रहे। आमीन।

इफ़िसियों के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है।

मैं इफ़िसुस शहर के मुक़द्दसीन को लिख रहा हूँ, उन्हें जो मसीह ईसा में ईमानदार हैं।

2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शें।

मसीह में रूहानी बरकतें

3 ख़ुदा हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप की हम्दो-सना हो! क्योंकि मसीह में उसने हमें आसमान पर हर रूहानी बरकत से नवाज़ा है।
4 दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर ही उसने मसीह में हमें चुन लिया ताकि हम मुक़द्दस और बेऐब हालत में उसके सामने ज़िंदगी गुज़ारें।

यह कितनी अज़ीम मुहब्बत थी! 5 पहले ही से उसने फ़ैसला कर लिया कि वह हमें मसीह में अपने बेटे-बेटियाँ बना लेगा। यही उस की मरज़ी और ख़ुशी थी 6 ताकि हम उसके जलाली फ़ज़ल की तमजीद करें, उस मुफ़्त नेमत के लिए जो उसने हमें अपने प्यारे फ़रज़ंद में दे दी। 7 क्योंकि उसने मसीह के ख़ून से हमारा फ़िद्या देकर हमें आज़ाद और हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। अल्लाह का यह फ़ज़ल कितना वसी है 8 जो उसने कसरत से हमें अता किया है।

अपनी पूरी हिकमत और दानाई का इज़हार करके 9 अल्लाह ने हम पर अपनी पोशीदा मरज़ी ज़ाहिर कर दी, यानी वह मनसूबा जो उसे पसंद था और जो उसने मसीह में पहले से बना रखा था।
10 मनसूबा यह है कि जब मुक़र्ररा वक़्त आएगा तो अल्लाह मसीह में तमाम कायनात को जमा कर देगा। उस वक़्त सब कुछ मिलकर मसीह के तहत हो जाएगा, ख़ाह वह आसमान पर हो या ज़मीन पर।

11 मसीह में हम आसमानी बादशाही के वारिस भी बन गए हैं। अल्लाह ने पहले से हमें इसके लिए मुक़र्रर किया, क्योंकि वह सब कुछ यों सरंजाम देता है कि उस की मरज़ी का इरादा पूरा हो जाए।
12 और वह चाहता है कि हम उसके जलाल की सताइश का बाइस बनें, हम जिन्होंने पहले से मसीह पर उम्मीद रखी।

13 आप भी मसीह में हैं, क्योंकि आप सच्चाई का कलाम और अपनी नजात की ख़ुशख़बरी सुनकर ईमान लाए। और अल्लाह ने आप पर भी रूहुल-क़ुद्स की मुहर लगा दी जिसका वादा उसने किया था। 14 रूहुल-क़ुद्स हमारी मीरास का बयाना है। वह हमें यह ज़मानत देता है कि अल्लाह हमारा जो उस की मिलकियत हैं फ़िद्या देकर हमें पूरी मख़लसी तक पहुँचाएगा। क्योंकि

हमारी ज़िंदगी का मक़सद यह है कि उसके
जलाल की सताइश की जाए।

पौलुस की दुआ

15 भाइयो, मैं ख़ुदावंद ईसा पर आपके ईमान
और आपकी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे
में सुनकर 16 आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करने से
बाज़ नहीं आता बल्कि आपको अपनी दुआओं में
याद करता रहता हूँ। 17 मेरी ख़ास दुआ यह है कि
हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का ख़ुदा और जलाली
बाप आपको दानाई और मुकाशफ़ा की रूह दे
ताकि आप उसे बेहतर तौर पर जान सकें। 18 वह
करे कि आपके दिलों की आँखें रौशन हो जाएँ।
क्योंकि फिर ही आप जान लेंगे कि यह कैसी
उम्मीद है जिसके लिए उसने आपको बुलाया
है, कि यह जलाली मीरास कैसी दौलत है जो
मुक़द्दसीन को हासिल है, 19 और कि हम ईमान
रखनेवालों पर उस की क़ुदरत का इज़हार कितना
ज़बरदस्त है। यह वही बेहद क़ुदरत है 20 जिससे
उसने मसीह को मुरदों में से ज़िंदा करके आसमान
पर अपने दहने हाथ बिठाया। 21 वहाँ मसीह हर
हुक्मरान, इख़्तियार, क़ुव्वत, हुकूमत, हाँ हर नाम
से कहीं सरफ़राज़ है, ख़ाह इस दुनिया में हो
या आनेवाली दुनिया में। 22 अल्लाह ने सब कुछ
उसके पाँवों के नीचे करके उसे सबका सर बना
दिया। यह उसने अपनी जमात की ख़ातिर किया
23 जो मसीह का बदन है और जिसे मसीह से पूरी
मामूरी हासिल होती है यानी उससे जो हर तरह
से सब कुछ मामूर कर देता है।

मौत से ज़िंदगी तक

2 आप भी अपनी ख़ताओं और गुनाहों
की वजह से रूहानी तौर पर मुरदा थे।
2 क्योंकि पहले आप इनमें फँसे हुए इस दुनिया
के तौर-तरीक़ों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते थे।
आप हवा की कुव्वतों के सरदार के ताबे थे, उस
रूह के जो इस वक़्त उनमें सरगरमे-अमल है जो
अल्लाह के नाफ़रमान हैं। 3 पहले तो हम भी सब
उनमें ज़िंदगी गुज़ारते थे। हम भी अपनी पुरानी
फ़ितरत की शहवतें, मरज़ी और सोच पूरी करने
की कोशिश करते रहे। दूसरों की तरह हम पर भी
फ़ितरी तौर पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होना
था।

4 लेकिन अल्लाह का रहम इतना वसी है और
वह इतनी शिद्दत से हमसे मुहब्बत रखता है 5 कि
अगरचे हम अपने गुनाहों में मुरदा थे तो भी उसने
हमें मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया। हाँ, आपको
अल्लाह के फ़ज़्ल ही से नजात मिली है। 6 जब
हम मसीह ईसा पर ईमान लाए तो उसने हमें
मसीह के साथ ज़िंदा करके आसमान पर बिठा
दिया। 7 ईसा मसीह में हम पर मेहरबानी करने
से अल्लाह आनेवाले ज़मानों में अपने फ़ज़्ल की
ला-महदूद दौलत दिखाना चाहता था। 8 क्योंकि
यह उसका फ़ज़्ल ही है कि आपको ईमान लाने
पर नजात मिली है। यह आपकी तरफ़ से नहीं है
बल्कि अल्लाह की बख़्शिश है। 9 और यह नजात
हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली,
इसलिए कोई अपने आप पर फ़ख़र नहीं कर
सकता। 10 हाँ, हम उसी की मख़लूक़ हैं जिन्हें
उसने मसीह में नेक काम करने के लिए ख़लक़
किया है। और यह काम उसने पहले से हमारे लिए
तैयार कर रखे हैं, क्योंकि वह चाहता है कि हम
उन्हें सरंजाम देते हुए ज़िंदगी गुज़ारें।

मसीह में एक

11 यह बात ज़हन में रखें कि माज़ी में आप
क्या थे। यहूदी सिर्फ़ अपने लिए लफ़्ज़ मख़तून
इस्तेमाल करते थे अगरचे वह अपना ख़तना सिर्फ़
इनसानी हाथों से करवाते हैं। आपको जो ग़ैरयहूदी
हैं वह नामख़तून क़रार देते थे। 12 उस वक़्त आप
मसीह के बग़ैर ही चलते थे। आप इसराईल क़ौम
के शहरी न बन सके और जो वादे अल्लाह ने
अहदों के ज़रीए अपनी क़ौम से किए थे वह
आपके लिए नहीं थे। इस दुनिया में आपकी कोई
उम्मीद नहीं थी, आप अल्लाह के बग़ैर ही ज़िंदगी
गुज़ारते थे। 13 लेकिन अब आप मसीह में हैं।

पहले आप दूर थे, लेकिन अब आपको मसीह के
ख़ून के वसीले से क़रीब लाया गया है। 14 क्योंकि
मसीह हमारी सुलह है और उसी ने यहूदियों और
ग़ैरयहूदियों को मिलाकर एक क़ौम बना दिया
है। अपने जिस्म को क़ुरबान करके उसने वह
दीवार गिरा दी जिसने उन्हें अलग करके एक
दूसरे के दुश्मन बना रखा था। 15 उसने शरीअत
को उसके अहकाम और ज़वाबित समेत मनसूख
कर दिया ताकि दोनों गुरोहों को मिलाकर एक
नया इनसान ख़लक़ करे, ऐसा इनसान जो उसमें
एक हो और सुलह-सलामती के साथ ज़िंदगी
गुज़ारे। 16 अपनी सलीबी मौत से उसने दोनों
गुरोहों को एक बदन में मिलाकर उनकी अल्लाह
के साथ सुलह कराई। हाँ, उसने अपने आपमें यह
दुश्मनी ख़त्म कर दी। 17 उसने आकर दोनों गुरोहों
को सुलह-सलामती की ख़ुशख़बरी सुनाई, आप
ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह से दूर थे और आप
यहूदियों को भी जो उसके क़रीब थे। 18 अब हम
दोनों मसीह के ज़रीए एक ही रूह में बाप के हुज़ूर
आ सकते हैं।

19 नतीजे में अब आप परदेसी और अज-
नबी नहीं रहे बल्कि मुक़द्दसीन के हमवतन और
अल्लाह के घराने के हैं। 20 आपको रसूलों और
नबियों की बुनियाद पर तामीर किया गया है
जिसके कोने का बुनियादी पत्थर मसीह ईसा ख़ुद
है। 21 उसमें पूरी इमारत जुड़ जाती और बढ़ती
बढ़ती ख़ुदावंद में अल्लाह का मुक़द्दस घर बन
जाती है। 22 दूसरों के साथ साथ उसमें आपकी
भी तामीर हो रही है ताकि आप रूह में अल्लाह
की सुकूनतगाह बन जाएँ।

पौलुस की ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत

3 इस वजह से मैं पौलुस जो आप ग़ैरयहूदियों
की ख़ातिर मसीह ईसा का क़ैदी हूँ अल्लाह
से दुआ करता हूँ। 2 आपने तो सुन लिया है
कि मुझे आपमें अल्लाह के फ़ज़ल का इंतज़ाम
चलाने[a] की ख़ास ज़िम्मेदारी दी गई है। 3 जिस
तरह मैंने पहले ही मुख़तसर तौर पर लिखा है,
अल्लाह ने ख़ुद मुझ पर यह राज़ ज़ाहिर कर
दिया। 4 जब आप वह पढ़ेंगे जो मैंने लिखा तो
आप जान लेंगे कि मुझे मसीह के राज़ के बारे
में क्या क्या समझ आई है। 5 गुज़रे ज़मानों में
अल्लाह ने यह बात ज़ाहिर नहीं की, लेकिन अब
उसने इसे रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए अपने मुक़द्दस
रसूलों और नबियों पर ज़ाहिर कर दिया। 6 और
अल्लाह का राज़ यह है कि उस की ख़ुशख़बरी
के ज़रीए ग़ैरयहूदी इसराईल के साथ आसमानी
बादशाही के वारिस, एक ही बदन के आज़ा और
उसी वादे में शरीक हैं जो अल्लाह ने मसीह ईसा
में किया है।

7 मैं अल्लाह के मुफ़्त फ़ज़ल और उस की
क़ुदरत के इज़हार से ख़ुशख़बरी का ख़ादिम बन
गया। 8 अगरचे मैं अल्लाह के तमाम मुक़द्दसीन
से कमतर हूँ तो भी उसने मुझे यह फ़ज़ल बख़्शा
कि मैं ग़ैरयहूदियों को उस ला-महदूद दौलत की
ख़ुशख़बरी सुनाऊँ जो मसीह में दस्तयाब है।
9 यही मेरी ज़िम्मेदारी बन गई कि मैं सब पर उस
राज़ का इंतज़ाम ज़ाहिर करूँ जो गुज़रे ज़मानों
में सब चीज़ों के ख़ालिक़ ख़ुदा में पोशीदा रहा।
10 क्योंकि अल्लाह चाहता था कि अब मसीह
की जमात ही आसमानी हुक्मरानों और क़ुव्वतों
को अल्लाह की वसी हिकमत के बारे में इल्म
पहुँचाए। 11 यही उसका अज़ली मनसूबा था जो
उसने हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा के वसीले से
तकमील तक पहुँचाया। 12 उसमें और उस पर
ईमान रखकर हम पूरी आज़ादी और एतमाद के
साथ अल्लाह के हुज़ूर आ सकते हैं। 13 इसलिए
मेरी आपसे गुज़ारिश है कि आप मेरी मुसीबतें
देखकर बेदिल न हो जाएँ। यह मैं आपकी ख़ातिर
बरदाश्त कर रहा हूँ, और यह आपकी इज़्ज़त का
बाइस हैं।

[a] यानी ख़ुशख़बरी सुनाने।

मसीह की मुहब्बत

14 इस वजह से मैं बाप के हुज़ूर अपने
घुटने टेकता हूँ, 15 उस बाप के सामने जिससे
आसमानो-ज़मीन का हर ख़ानदान नामज़द है।
16 मेरी दुआ है कि वह अपने जलाल की दौलत
के मुवाफ़िक़ यह बख़्शे कि आप उसके रूह के
वसीले से बातिनी तौर पर ज़बरदस्त तक़वियत
पाएँ, 17 कि मसीह ईमान के ज़रीए आपके दिलों
में सुकूनत करे। हाँ, मेरी दुआ है कि आप मुहब्बत
में जड़ पकड़ें और इस बुनियाद पर ज़िंदगी यों
गुज़ारें 18 कि आप बाक़ी तमाम मुक़द्दसीन के
साथ यह समझने के क़ाबिल बन जाएँ कि मसीह
की मुहब्बत कितनी चौड़ी, कितनी लंबी, कितनी
ऊँची और कितनी गहरी है। 19 ख़ुदा करे कि आप
मसीह की यह मुहब्बत जान लें जो हर इल्म से
कहीं अफ़ज़ल है और यों अल्लाह की पूरी मामूरी
से भर जाएँ।

20 अल्लाह की तमजीद हो जो अपनी उस
क़ुदरत के मुवाफ़िक़ जो हममें काम कर रही है
ऐसा ज़बरदस्त काम कर सकता है जो हमारी हर
सोच और दुआ से कहीं बाहर है। 21 हाँ, मसीह
ईसा और उस की जमात में अल्लाह की तमजीद
पुश्त-दर-पुश्त और अज़ल से अबद तक होती रहे।
आमीन।

बदन की यगांगत

4 चुनाँचे मैं जो ख़ुदावंद में क़ैदी हूँ आपको
ताकीद करता हूँ कि उस ज़िंदगी के
मुताबिक़ चलें जिसके लिए ख़ुदा ने आपको
बुलाया है। 2 हर वक़्त हलीम और नरमदिल रहें,
सब्र से काम लें और एक दूसरे से मुहब्बत रखकर
उसे बरदाश्त करें। 3 सुलह-सलामती के बंधन में
रहकर रूह की यगांगत क़ायम रखने की पूरी
कोशिश करें। 4 एक ही बदन और एक ही रूह है।
यों आपको भी एक ही उम्मीद के लिए बुलाया
गया। 5 एक ख़ुदावंद, एक ईमान, एक बपतिस्मा
है। 6 एक ख़ुदा है, जो सबका वाहिद बाप है। वह
सबका मालिक है, सबके ज़रीए काम करता है
और सबमें मौजूद है।

7 अब हम सबको अल्लाह का फ़ज़्ल बख़्शा
गया। लेकिन मसीह हर एक को मुख़्तलिफ़ पैमाने
से यह फ़ज़्ल अता करता है। 8 इसलिए कलामे-
मुक़द्दस फ़रमाता है, "उसने बुलंदी पर चढ़कर
क़ैदियों का हुजूम गिरिफ़्तार कर लिया और
आदमियों को तोहफ़े दिए।" 9 अब ग़ौर करें कि
चढ़ने का ज़िक्र किया गया है। इसका मतलब
है कि पहले वह ज़मीन की गहराइयों में उतरा।
10 जो उतरा वह वही है जो तमाम आसमानों से
ऊँचा चढ़ गया ताकि तमाम कायनात को अपने
आपसे मामूर करे। 11 उसी ने अपनी जमात को
तरह तरह के ख़ादिमों से नवाज़ा। बाज़ रसूल,
बाज़ नबी, बाज़ मुबश्शिर, बाज़ चरवाहे और बाज़
उस्ताद हैं। 12 इनका मक़सद यह है कि मुक़द्दसीन
को ख़िदमत करने के लिए तैयार किया जाए और
यों मसीह के बदन की तामीरो-तरक़्क़ी हो जाए।
13 इस तरीक़े से हम सब ईमान और अल्लाह
के फ़रज़ंद की पहचान में एक होकर बालिग़
हो जाएंगे, और हम मिलकर मसीह की मामूरी
और बलूग़त को मुनअकिस करेंगे। 14 फिर हम
बच्चे नहीं रहेंगे, और तालीम के हर एक झोंके
से उछलते फिरते नहीं रहेंगे जब लोग अपनी
चालाकी और धोकेबाज़ी से हमें अपने जालों में
फँसाने की कोशिश करेंगे। 15 इसके बजाए हम
मुहब्बत की रूह में सच्ची बात करके हर लिहाज़
से मसीह की तरफ़ बढ़ते जाएंगे जो हमारा सर
है। 16 वही नसों के ज़रीए पूरे बदन के मुख़्तलिफ़
हिस्सों को एक दूसरे के साथ जोड़कर मुत्तहिद
कर देता है। हर हिस्सा अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़
काम करता है, और यों पूरा बदन मुहब्बत की रूह
में बढ़ता और अपनी तामीर करता रहता है।

मसीह में नई ज़िंदगी

17 पस मैं ख़ुदावंद के नाम में आपको आगाह
करता हूँ कि अब से ग़ैरईमानदारों की तरह ज़िंदगी
न गुज़ारें जिनकी सोच बेकार है 18 और जिनकी

समझ अंधेरे की गिरिफ़्त में है। उनका उस ज़िंदगी
में कोई हिस्सा नहीं जो अल्लाह देता है, क्योंकि
वह जाहिल हैं और उनके दिल सख़्त हो गए हैं।
19 बेहिस होकर उन्होंने अपने आपको ऐयाशी के
हवाले कर दिया। यों वह न बुझनेवाली प्यास के
साथ हर क़िस्म की नापाक हरकतें करते हैं।
20 लेकिन आपने मसीह को यों नहीं जाना।
21 आपने तो उसके बारे में सुन लिया है, और
उसमें होकर आपको वह सच्चाई सिखाई गई
जो ईसा में है। 22 चुनाँचे अपने पुराने इनसान
को उसके पुराने चाल-चलन समेत उतार देना,
क्योंकि वह अपनी धोकेबाज़ शहवतों से बिगड़ता
जा रहा है। 23 अल्लाह को आपकी सोच की
तजदीद करने दें 24 और नए इनसान को पहन लें
जो यों बनाया गया है कि वह हक़ीक़ी रास्तबाज़ी
और क़ुद्दूसियत में अल्लाह के मुशाबेह है।
25 इसलिए हर शख़्स झूट से बाज़ रहकर दूसरों
से सच बात करे, क्योंकि हम सब एक ही बदन
के आज़ा हैं। 26 ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत
करना। आपका ग़ुस्सा सूरज के ग़ुरूब होने तक
ठंडा हो जाए, 27 वरना आप इबलीस को अपनी
ज़िंदगी में काम करने का मौक़ा देंगे। 28 चोर
अब से चोरी न करे बल्कि ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त
करके अपने हाथों से अच्छा काम करे। हाँ, वह
इतना कमाए कि ज़रूरतमंदों को भी कुछ दे सके।
29 कोई भी बुरी बात आपके मुँह से न निकले
बल्कि सिर्फ़ ऐसी बातें जो दूसरों की ज़रूरियात
के मुताबिक़ उनकी तामीर करें। यों सुननेवालों
को बरकत मिलेगी। 30 अल्लाह के मुक़द्दस रूह
को दुख न पहुँचाना, क्योंकि उसी से अल्लाह
ने आप पर मुहर लगाकर यह ज़मानत दे दी है
कि आप उसी के हैं और नजात के दिन बच
जाएंगे। 31 तमाम तरह की तलख़ी, तैश, ग़ुस्से,
शोर-शराबा, गाली-गलोच बल्कि हर क़िस्म के बुरे
रवय्ये से बाज़ आएँ। 32 एक दूसरे पर मेहरबान
और रहमदिल हों और एक दूसरे को यों मुआफ़
करें जिस तरह अल्लाह ने आपको भी मसीह में
मुआफ़ कर दिया है।

रौशनी में ज़िंदगी गुज़ारना

5 चूँकि आप अल्लाह के प्यारे बच्चे हैं
इसलिए उसके नमूने पर चलें। 2 मुहब्बत
की रूह में ज़िंदगी यों गुज़ारें जैसे मसीह ने
गुज़ारी। क्योंकि उसने हमसे मुहब्बत रखकर
अपने आपको हमारे लिए अल्लाह के हुज़ूर
क़ुरबान कर दिया और यों ऐसी क़ुरबानी बन गया
जिसकी ख़ुशबू अल्लाह को पसंद आई।
3 आपके दरमियान ज़िनाकारी, हर तरह की
नापाकी या लालच का ज़िक्र तक न हो, क्योंकि
यह अल्लाह के मुक़द्दसीन के लिए मुनासिब नहीं
है। 4 इसी तरह शर्मनाक, अहमक़ाना या गंदी
बातें भी ठीक नहीं। इनकी जगह शुक्रगुज़ारी होनी
चाहिए। 5 क्योंकि यक़ीन जानें कि ज़िनाकार,
नापाक या लालची मसीह और अल्लाह की
बादशाही में मीरास नहीं पाएँगे (लालच तो एक
क़िस्म की बुतपरस्ती है)।
6 कोई आपको बेमानी अलफ़ाज़ से धोका न
दे। ऐसी ही बातों की वजह से अल्लाह का
ग़ज़ब उन पर जो नाफ़रमान हैं नाज़िल होता है।
7 चुनाँचे उनमें शरीक न हो जाएँ जो यह करते हैं।
8 क्योंकि पहले आप तारीकी थे, लेकिन अब आप
ख़ुदावंद में रौशनी हैं। रौशनी के फ़रज़ंद की तरह
ज़िंदगी गुज़ारें, 9 क्योंकि रौशनी का फल हर तरह
की भलाई, रास्तबाज़ी और सच्चाई है। 10 और
मालूम करते रहें कि ख़ुदावंद को क्या कुछ पसंद
है। 11 तारीकी के बेफल कामों में हिस्सा न लें
बल्कि उन्हें रौशनी में लाएँ। 12 क्योंकि जो कुछ
यह लोग पोशीदगी में करते हैं उसका ज़िक्र करना
भी शर्म की बात है। 13 लेकिन सब कुछ बेनिक़ाब
हो जाता है जब उसे रौशनी में लाया जाता है।
14 क्योंकि जो रौशनी में लाया जाता है वह रौशन
हो जाता है। इसलिए कहा जाता है,

“ऐ सोनेवाले, जाग उठ!
मुरदों में से जी उठ,
तो मसीह तुझ पर चमकेगा।”

15 चुनाँचे बड़ी एहतियात से इस पर ध्यान दें
कि आप ज़िंदगी किस तरह गुज़ारते हैं—बेसमझ
या समझदार लोगों की तरह। 16 हर मौक़े से पूरा
फ़ायदा उठाएँ, क्योंकि दिन बुरे हैं। 17 इसलिए
अहमक़ न बनें बल्कि ख़ुदावंद की मरज़ी को
समझें।

18 शराब में मत्वाले न हो जाएँ, क्योंकि इसका
अंजाम ऐयाशी है। इसके बजाए रूहुल-क़ुद्स
से मामूर होते जाएँ। 19 ज़बूरों, हम्दो-सना और
रूहानी गीतों से एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई
करें। अपने दिलों में ख़ुदावंद के लिए गीत गाएँ
और नग़मासराई करें। 20 हाँ, हर वक़्त हमारे
ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम में हर चीज़ के लिए
ख़ुदा बाप का शुक्र करें।

मियाँ-बीवी का ताल्लुक़

21 मसीह के ख़ौफ़ में एक दूसरे के ताबे रहें।
22 बीवियो, जिस तरह आप ख़ुदावंद के ताबे हैं
उसी तरह अपने शौहर के ताबे भी रहें। 23 क्योंकि
शौहर वैसे ही अपनी बीवी का सर है जैसे मसीह
अपनी जमात का। हाँ, जमात मसीह का बदन
है जिसे उसने नजात दी है। 24 अब जिस तरह
जमात मसीह के ताबे है उसी तरह बीवियाँ भी
अपने शौहरों के ताबे रहें।

25 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह मसीह ने अपनी
जमात से मुहब्बत रखकर अपने आपको उसके
लिए क़ुरबान किया 26 ताकि उसे अल्लाह के
लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करे। उसने उसे कलामे-
पाक से धोकर पाक-साफ़ कर दिया 27 ताकि
अपने आपको एक ऐसी जमात पेश करे जो
जलाली, मुक़द्दस और बेइलज़ाम हो, जिसमें न
कोई दाग़ हो, न कोई झुर्री, न किसी और क़िस्म
का नुक़्स। 28 शौहरों का फ़र्ज़ है कि वह अपनी
बीवियों से ऐसी ही मुहब्बत रखें। हाँ, वह उनसे
वैसी मुहब्बत रखें जैसी अपने जिस्म से रखते हैं।
क्योंकि जो अपनी बीवी से मुहब्बत रखता है वह
अपने आपसे ही मुहब्बत रखता है। 29 आख़िर
कोई भी अपने जिस्म से नफ़रत नहीं करता
बल्कि उसे ख़ुराक मुहैया करता और पालता
है। मसीह भी अपनी जमात के लिए यही कुछ
करता है। 30 क्योंकि हम उसके बदन के आज़ा
हैं। 31 कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है, “इसलिए
मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के
साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते
हैं।” 32 यह राज़ बहुत गहरा है। मैं तो उसका
इतलाक़ मसीह और उस की जमात पर करता
हूँ। 33 लेकिन इसका इतलाक़ आप पर भी है।
हर शौहर अपनी बीवी से इस तरह मुहब्बत रखे
जिस तरह वह अपने आपसे रखता है। और हर
बीवी अपने शौहर की इज़्ज़त करे।

बच्चों और वालिदैन का ताल्लुक़

6 बच्चो, ख़ुदावंद में अपने माँ-बाप के ताबे
रहें, क्योंकि यही रास्तबाज़ी का तक़ाज़ा
है। 2 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “अपने बाप
और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।” यह पहला
हुक्म है जिसके साथ एक वादा भी किया गया
है, 3 “फिर तू ख़ुशहाल और ज़मीन पर देर तक
जीता रहेगा।”

4 ऐ वालिदो, अपने बच्चों से ऐसा सुलूक मत
करें कि वह ग़ुस्से हो जाएँ बल्कि उन्हें ख़ुदावंद की
तरफ़ से तरबियत और हिदायत देकर पालें।

ग़ुलाम और मालिक

5 ग़ुलामो, डरते और काँपते हुए अपने इनसानी
मालिकों के ताबे रहें। ख़ुलूसदिली से उनकी
ख़िदमत यों करें जैसे मसीह की। 6 न सिर्फ़ उनके
सामने ही और उन्हें ख़ुश रखने के लिए ख़िदमत
करें बल्कि मसीह के ग़ुलामों की हैसियत से जो
पूरी लग्न से अल्लाह की मरज़ी पूरी करना चाहते
हैं। 7 ख़ुशी से ख़िदमत करें, इस तरह जैसा कि
आप न सिर्फ़ इनसानों की बल्कि ख़ुदावंद की
ख़िदमत कर रहे हों। 8 आप तो जानते हैं कि जो
भी अच्छा काम हमने किया उसका अज्र ख़ुदावंद
देगा, ख़ाह हम ग़ुलाम हों या आज़ाद।

9 और मालिको, आप भी अपने ग़ुलामों से ऐसा
ही सुलूक करें। उन्हें धमकियाँ न दें। आपको तो
मालूम है कि आसमान पर आपका भी मालिक है
और कि वह जानिबदार नहीं होता।

रूहानी ज़िराबकतर

10 एक आख़िरी बात, ख़ुदावंद और उस
की ज़बरदस्त क़ुव्वत में ताक़तवर बन जाएँ।
11 अल्लाह का पूरा ज़िराबकतर पहन लें ताकि
इबलीस की चालों का सामना कर सकें।
12 क्योंकि हमारी जंग इनसान के साथ नहीं है
बल्कि हुक्मरानों और इख़्तियारवालों के साथ,
इस तारीक दुनिया के हाकिमों के साथ और
आसमानी दुनिया की शैतानी कुव्वतों के साथ है।
13 चुनाँचे अल्लाह का पूरा ज़िराबकतर पहन लें
ताकि आप मुसीबत के दिन इबलीस के हमलों का
सामना कर सकें बल्कि सब कुछ सरंजाम देने के
बाद क़ायम रह सकें।

14 अब यों खड़े हो जाएँ कि आपकी कमर में
सच्चाई का पटका बँधा हुआ हो, आपके सीने पर
रास्तबाज़ी का सीनाबंद लगा हो 15 और आपके
पाँवों में ऐसे जूते हों जो सुलह-सलामती की
ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए तैयार रहें। 16 इसके
अलावा ईमान की ढाल भी उठाए रखें, क्योंकि
इससे आप इबलीस के जलते हुए तीर बुझा सकते
हैं। 17 अपने सर पर नजात का ख़ोद पहनकर
हाथ में रूह की तलवार जो अल्लाह का कलाम
है थामे रखें। 18 और हर मौक़े पर रूह में हर
तरह की दुआ और मिन्नत करते रहें। जागते और
साबितक़दमी से तमाम मुक़द्दसीन के लिए दुआ
करते रहें। 19 मेरे लिए भी दुआ करें कि जब भी
मैं अपना मुँह खोलूँ अल्लाह मुझे ऐसे अलफ़ाज़
अता करे कि पूरी दिलेरी से उस की ख़ुशख़बरी
का राज़ सुना सकूँ। 20 क्योंकि मैं इसी पैग़ाम की
ख़ातिर क़ैदी, हाँ ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ मसीह
का एलची हूँ। दुआ करें कि मैं मसीह में उतनी
दिलेरी से यह पैग़ाम सुनाऊँ जितना मुझे करना
चाहिए।

आख़िरी सलाम

21 आप मेरे हाल और काम के बारे में भी
जानना चाहेंगे। ख़ुदावंद में हमारा अज़ीज़ भाई
और वफ़ादार ख़ादिम तुख़िकुस आपको यह सब
कुछ बता देगा। 22 मैंने उसे इसी लिए आपके पास
भेज दिया कि आपको हमारे हाल का पता चले
और आपको तसल्ली मिले।

23 ख़ुदा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आप
भाइयों को सलामती और ईमान के साथ मुहब्बत
अता करें। 24 अल्लाह का फ़ज़ल उन सबके साथ
हो जो अनमिट मुहब्बत के साथ हमारे ख़ुदावंद
ईसा मसीह को प्यार करते हैं।

फ़िलिप्पियों के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

सलाम

1 यह ख़त मसीह ईसा के ग़ुलामों पौलुस और तीमुथियुस की तरफ़ से है।

मैं फ़िलिप्पी में मौजूद उन तमाम लोगों को लिख रहा हूँ जिन्हें अल्लाह ने मसीह ईसा के ज़रीए मख़सूसो-मुक़द्दस किया है। मैं उनके बुज़ुर्गों और ख़ादिमों को भी लिख रहा हूँ।

2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

जमात के लिए शुक्रो-दुआ

3 जब भी मैं आपको याद करता हूँ तो अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ। 4 आपके लिए तमाम दुआओं में मैं हमेशा ख़ुशी से दुआ करता हूँ,
5 इसलिए कि आप पहले दिन से लेकर आज तक अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने में मेरे शरीक रहे हैं। 6 और मुझे यक़ीन है कि अल्लाह जिसने आपमें यह अच्छा काम शुरू किया है इसे उस दिन तकमील तक पहुँचाएगा जब मसीह ईसा वापस आएगा। 7 और मुनासिब है कि आप सबके बारे में मेरा यही ख़याल हो, क्योंकि आप मुझे अज़ीज़ रखते हैं। हाँ, जब मुझे जेल में डाला गया या मैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी का दिफ़ा या उस की तसदीक़ कर रहा था तो आप भी मेरे इस ख़ास फ़ज़ल में शरीक हुए। 8 अल्लाह मेरा गवाह है कि मैं कितनी शिद्दत से आप सबका आरज़ूमंद हूँ। हाँ, मैं मसीह की-सी दिली शफ़क़त के साथ आपका ख़ाहिशमंद हूँ।

9 और मेरी दुआ है कि आपकी मुहब्बत में इल्मो-इरफ़ान और हर तरह की रूहानी बसीरत का यहाँ तक इज़ाफ़ा हो जाए कि वह बढ़ती बढ़ती दिल से छलक उठे। 10 क्योंकि यह ज़रूरी है ताकि आप वह बातें क़बूल करें जो बुनियादी अहमियत की हामिल हैं और आप मसीह की आमद तक बेलौस और बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारें। 11 और यों आप उस रास्तबाज़ी के फल से भरे रहेंगे जो आपको ईसा मसीह के वसीले से हासिल होती है। फिर आप अपनी ज़िंदगी से अल्लाह को जलाल देंगे और उस की तमजीद करेंगे।

हर एक को मालूम हो जाए कि मसीह कौन है

12 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि यह बात आपके इल्म में हो कि जो कुछ भी मुझ पर गुज़रा है वह हक़ीक़त में अल्लाह की ख़ुशख़बरी के फैलाव

का बाइस बन गया है। 13 क्योंकि प्रैटोरियुम[a] के तमाम अफ़राद और बाक़ी सबको मालूम हो गया है कि मैं मसीह की ख़ातिर क़ैदी हूँ। 14 और मेरे क़ैद में होने की वजह से ख़ुदावंद में ज़्यादातर भाइयों का एतमाद इतना बढ़ गया है कि वह मज़ीद दिलेरी के साथ बिलाख़ौफ़ अल्लाह का कलाम सुनाते हैं।

15 बेशक बाज़ तो हसद और मुख़ालफ़त के बाइस मसीह की मुनादी कर रहे हैं, लेकिन बाक़ियों की नीयत अच्छी है, 16 क्योंकि वह जानते हैं कि मैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी के दिफ़ा की वजह से यहाँ पड़ा हूँ। इसलिए वह मुहब्बत की रूह में तबलीग़ करते हैं। 17 इसके मुक़ाबले में दूसरे ख़ुलूसदिली से मसीह के बारे में पैग़ाम नहीं सुनाते बल्कि ख़ुदग़रज़ी से। यह समझते हैं कि हम इस तरह पौलुस की गिरिफ़्तारी को मज़ीद तकलीफ़देह बना सकते हैं।

18 लेकिन इससे क्या फ़रक़ पड़ता है! अहम बात तो यह है कि मसीह की मुनादी हर तरह से की जा रही है, ख़ाह मुनाद की नीयत पुरख़ुलूस हो या न। और इस वजह से मैं ख़ुश हूँ। और ख़ुश रहूँगा भी, 19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह मेरे लिए रिहाई का बाइस बनेगा, इसलिए कि आप मेरे लिए दुआ कर रहे हैं और ईसा मसीह का रूह मेरी हिमायत कर रहा है। 20 हाँ, यह मेरी पूरी तवक़्क़ो और उम्मीद है। मैं यह भी जानता हूँ कि मुझे किसी भी बात में शरमिंदा नहीं किया जाएगा बल्कि जैसा माज़ी में हमेशा हुआ अब भी मुझे बड़ी दिलेरी से मसीह को जलाल देने का फ़ज़ल मिलेगा, ख़ाह मैं ज़िंदा रहूँ या मर जाऊँ। 21 क्योंकि मेरे लिए मसीह ज़िंदगी है और मौत नफ़ा का बाइस। 22 अगर मैं ज़िंदा रहूँ तो इसका फ़ायदा यह होगा कि मैं मेहनत करके मज़ीद फल ला सकूँगा। चुनाँचे मैं नहीं कह सकता कि क्या बेहतर है। 23 मैं बड़ी कशमकश में रहता हूँ। एक तरफ़ मैं कूच करके मसीह के पास होने की आरज़ू रखता हूँ, क्योंकि यह मेरे लिए सबसे बेहतर होता। 24 लेकिन दूसरी तरफ़ ज़्यादा ज़रूरी यह है कि मैं आपकी ख़ातिर ज़िंदा रहूँ। 25 और चूँकि मुझे इस ज़रूरत का यक़ीन है, इसलिए मैं जानता हूँ कि मैं ज़िंदा रहकर दुबारा आप सबके साथ रहूँगा ताकि आप तरक़्क़ी करें और ईमान में ख़ुश रहें। 26 हाँ, मेरे आपके पास वापस आने से आप मेरे सबब से मसीह ईसा पर हद से ज़्यादा फ़ख़र करेंगे।

27 लेकिन आप हर सूरत में मसीह की ख़ुशख़बरी और आसमान के शहरियों के लायक़ ज़िंदगी गुज़ारें। फिर ख़ाह मैं आकर आपको देखूँ, ख़ाह ग़ैरमौजूदगी में आपके बारे में सुनूँ, मुझे मालूम होगा कि आप एक रूह में क़ायम हैं, आप मिलकर यकदिली से उस ईमान के लिए जाँफ़िशानी कर रहे हैं जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी से पैदा हुआ है, 28 और आप किसी सूरत में अपने मुख़ालिफ़ों से दहशत नहीं खाते। यह उनके लिए एक निशान होगा कि वह हलाक हो जाएंगे जबकि आपको नजात हासिल होगी, और वह भी अल्लाह से। 29 क्योंकि आपको न सिर्फ़ मसीह पर ईमान लाने का फ़ज़ल हासिल हुआ है बल्कि उस की ख़ातिर दुख उठाने का भी। 30 आप भी उस मुक़ाबले में जाँफ़िशानी कर रहे हैं जिसमें आपने मुझे देखा है और जिसके बारे में आपने अब सुन लिया है कि मैं अब तक उसमें मसरूफ़ हूँ।

यगांगत की ज़रूरत

2 क्या आपके दरमियान मसीह में हौसलाअफ़ज़ाई, मुहब्बत की तसल्ली, रूहुल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त, नरमदिली और रहमत पाई जाती है? 2 अगर ऐसा है तो मेरी ख़ुशी इसमें पूरी करें कि आप एक जैसी सोच रखें और एक

[a] गवर्नर का सरकारी महल प्रैटोरियुम कहलाता था। यहाँ इसका मतलब शाहनशाह के पहरेदारों के क्वार्टर भी हो सकता है।

जैसी मुहब्बत रखें, एक जान और एक ज़हन हो
जाएँ। 3 ख़ुदग़रज़ न हों, न बातिल इज़्ज़त के पीछे
पड़ें बल्कि फ़रोतनी से दूसरों को अपने से बेहतर
समझें। 4 हर एक न सिर्फ़ अपना फ़ायदा सोचे
बल्कि दूसरों का भी।

मसीह की राहे-सलीब

5 वही सोच रखें जो मसीह ईसा की भी थी।
6 वह जो अल्लाह की सूरत पर था
नहीं समझता था
कि मेरा अल्लाह के बराबर होना
कोई ऐसी चीज़ है
जिसके साथ ज़बरदस्ती चिमटे रहने
की ज़रूरत है।
7 नहीं, उसने अपने आपको
इससे महरूम करके
ग़ुलाम की सूरत अपनाई
और इनसानों की मानिंद बन गया।
शक्लो-सूरत में वह इनसान पाया गया।
8 उसने अपने आपको पस्त कर दिया
और मौत तक ताबे रहा,
बल्कि सलीबी मौत तक।
9 इसलिए अल्लाह ने
उसे सबसे आला मक़ाम पर
सरफ़राज़ कर दिया
और उसे वह नाम बख़्शा
जो हर नाम से आला है,
10 ताकि ईसा के इस नाम के सामने
हर घुटना झुके,
ख़ाह वह घुटना आसमान पर,
ज़मीन पर या इसके नीचे हो,
11 और हर ज़बान तसलीम करे
कि ईसा मसीह ख़ुदावंद है।
यों ख़ुदा बाप को जलाल दिया जाएगा।

रूहानी तरक़्क़ी का राज़

12 मेरे अज़ीज़ो, जब मैं आपके पास था
तो आप हमेशा फ़रमाँबरदार रहे। अब जब मैं
ग़ैरहाज़िर हूँ तो इसकी कहीं ज़्यादा ज़रूरत है।
चुनाँचे डरते और काँपते हुए जाँफ़िशानी करते
रहें ताकि आपकी नजात तकमील तक पहुँचे।
13 क्योंकि ख़ुदा ही आपमें वह कुछ करने की
ख़ाहिश पैदा करता है जो उसे पसंद है, और वही
आपको यह पूरा करने की ताक़त देता है।
14 सब कुछ बुड़बुड़ाए और बहस-मुबाहसा
किए बग़ैर करें 15 ताकि आप बेइलज़ाम और
पाक होकर अल्लाह के बेदाग़ फ़रज़ंद साबित हो
जाएँ, ऐसे लोग जो एक टेढ़ी और उलटी नसल
के दरमियान ही आसमान के सितारों की तरह
चमकते-दमकते 16 और ज़िंदगी का कलाम थामे
रखते हैं। फिर मैं मसीह की आमद के दिन फ़ख़र
कर सकूँगा कि न मैं रायगाँ दौड़ा, न बेफ़ायदा
जिद्दो-जहद की।
17 देखें, जो ख़िदमत आप ईमान से सरंजाम
दे रहे हैं वह एक ऐसी क़ुरबानी है जो अल्लाह
को पसंद है। ख़ुदा करे कि जो दुख मैं उठा रहा
हूँ वह मै की उस नज़र की मानिंद हो जो बैतुल-
मुक़द्दस में क़ुरबानी पर उंडेली जाती है। अगर मेरी
नज़र वाक़ई आपकी क़ुरबानी यों मुकम्मल करे
तो मैं ख़ुश हूँ और आपके साथ ख़ुशी मनाता हूँ।
18 आप भी इसी वजह से ख़ुश हों और मेरे साथ
ख़ुशी मनाएँ।

तीमुथियुस और इपफ़्रुदितुस को फ़िलिप्पियों के पास भेजा जाएगा

19 मुझे उम्मीद है कि अगर ख़ुदावंद ईसा ने
चाहा तो मैं जल्द ही तीमुथियुस को आपके पास
भेज दूँगा ताकि आपके बारे में ख़बर पाकर मेरा
हौसला भी बढ़ जाए। 20 क्योंकि मेरे पास कोई
और नहीं जिसकी सोच बिलकुल मेरी जैसी है
और जो इतनी ख़ुलूसदिली से आपकी फ़िकर
करे। 21 दूसरे सब अपने मफ़ाद की तलाश में
रहते हैं और वह कुछ नज़रंदाज़ करते हैं जो ईसा
मसीह का काम बढ़ाता है। 22 लेकिन आपको तो
मालूम है कि तीमुथियुस क़ाबिले-एतमाद साबित
हुआ, कि उसने मेरा बेटा बनकर मेरे साथ अल्लाह

की ख़ुशख़बरी फैलाने की ख़िदमत सरंजाम दी।
23 चुनाँचे उम्मीद है कि ज्योंही मुझे पता चले कि
मेरा क्या बनेगा मैं उसे आपके पास भेज दूँगा।
24 और मेरा ख़ुदावंद में ईमान है कि मैं भी जल्द
ही आपके पास आऊँगा।

25 लेकिन मैंने ज़रूरी समझा कि इतने में
इपफ़्रुदितुस को आपके पास वापस भेज दूँ जिसे
आपने क़ासिद के तौर पर मेरी ज़रूरियात पूरी
करने के लिए मेरे पास भेज दिया था। वह
मेरा सच्चा भाई, हमख़िदमत और साथी सिपाही
साबित हुआ। 26 मैं उसे इसलिए भेज रहा हूँ
क्योंकि वह आप सबका निहायत आरज़ूमंद है
और इसलिए बेचैन है कि आपको उसके बीमार
होने की ख़बर मिल गई थी। 27 और वह था भी
बीमार बल्कि मरने को था। लेकिन अल्लाह ने
उस पर रहम किया, और न सिर्फ़ उस पर बल्कि
मुझ पर भी ताकि मेरे दुख में इज़ाफ़ा न हो जाए।
28 इसलिए मैं उसे और जल्दी से आपके पास
भेजूँगा ताकि आप उसे देखकर ख़ुश हो जाएँ और
मेरी परेशानी भी दूर हो जाए। 29 चुनाँचे ख़ुदावंद
में बड़ी ख़ुशी से उसका इस्तक़बाल करें। उस जैसे
लोगों की इज़्ज़त करें, 30 क्योंकि वह मसीह के
काम के बाइस मरने की नौबत तक पहुँच गया
था। उसने अपनी जान ख़तरे में डाल दी ताकि
आपकी जगह मेरी वह ख़िदमत करे जो आप न
कर सके।

अल्लाह में ख़ुशी

3 मेरे भाइयो, जो कुछ भी हो, ख़ुदावंद में
ख़ुश रहें। मैं आपको यह बात बताते रहने
से कभी थकता नहीं, क्योंकि ऐसा करने से आप
महफ़ूज़ रहते हैं।

यहूदियों से ख़बरदार

2 कुत्तों से ख़बरदार! उन शरीर मज़दूरों से
होशियार रहना जो जिस्म की काँट-छाँट यानी
ख़तना करवाते हैं। 3 क्योंकि हम ही हक़ीक़ी
ख़तना के पैरोकार हैं, हम ही हैं जो अल्लाह के रूह
में परस्तिश करते, मसीह ईसा पर फ़ख़र करते
और इनसानी ख़ूबियों पर भरोसा नहीं करते।

पौलुस की शख़्सी गवाही

4 बात यह नहीं कि मेरा अपनी इनसानी ख़ूबियों
पर भरोसा करने का कोई जवाज़ न होता। जब
दूसरे अपनी इनसानी ख़ूबियों पर फ़ख़र करते हैं
तो मैं उनकी निसबत ज़्यादा कर सकता हूँ। 5 मेरा
ख़तना हुआ जब मैं अभी आठ दिन का बच्चा था।
मैं इसराईल क़ौम के क़बीले बिनयमीन का हूँ,
ऐसा इबरानी जिसके वालिदैन भी इबरानी थे। मैं
फ़रीसियों का मेंबर था जो यहूदी शरीअत के कटर
पैरोकार हैं। 6 मैं इतना सरगरम था कि मसीह
की जमातों को ईज़ा पहुँचाई। हाँ, मैं शरीअत पर
अमल करने में रास्तबाज़ और बेइलज़ाम था।

हक़ीक़ी फ़ायदा

7 उस वक़्त यह सब कुछ मेरे नज़दीक नफ़ा
का बाइस था, लेकिन अब मैं इसे मसीह में होने
के बाइस नुक़सान ही समझता हूँ। 8 हाँ, बल्कि
मैं सब कुछ इस अज़ीमतरीन बात के सबब से
नुक़सान समझता हूँ कि मैं अपने ख़ुदावंद मसीह
ईसा को जानता हूँ। उसी की ख़ातिर मुझे तमाम
चीज़ों का नुक़सान पहुँचा है। मैं उन्हें कूड़ा ही
समझता हूँ ताकि मसीह को हासिल करूँ 9 और
उसमें पाया जाऊँ। लेकिन मैं इस नौबत तक
अपनी उस रास्तबाज़ी के ज़रीए नहीं पहुँच सकता
जो शरीअत के ताबे रहने से हासिल होती है।
इसके लिए वह रास्तबाज़ी ज़रूरी है जो मसीह पर
ईमान लाने से मिलती है, जो अल्लाह की तरफ़ से
है और जो ईमान पर मबनी होती है। 10 हाँ, मैं सब
कुछ कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह को, उसके
जी उठने की क़ुदरत और उसके दुखों में शरीक
होने का फ़ज़ल जान लूँ। यों मैं उस की मौत का
हमशक्ल बनता जा रहा हूँ, 11 इस उम्मीद में कि
मैं किसी न किसी तरह मुरदों में से जी उठने की
नौबत तक पहुँचूँगा।

इनाम हासिल करने के लिए दौड़ें

12 मतलब यह नहीं कि मैं यह सब कुछ हासिल
कर चुका या कामिल हो चुका हूँ। लेकिन मैं
मनज़िले-मक़सूद की तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ
ताकि वह कुछ पकड़ लूँ जिसके लिए मसीह ईसा
ने मुझे पकड़ लिया है। 13 भाइयो, में अपने बारे
में यह ख़याल नहीं करता कि मैं इसे हासिल कर
चुका हूँ। लेकिन मैं इस एक ही बात पर ध्यान देता
हूँ, जो कुछ मेरे पीछे है वह मैं भूलकर सख़्त तगो-
दौ के साथ उस तरफ़ बढ़ता हूँ जो आगे पड़ा है।
14 मैं सीधा मनज़िले-मक़सूद की तरफ़ दौड़ा हुआ
जाता हूँ ताकि वह इनाम हासिल करूँ जिसके
लिए अल्लाह ने मुझे मसीह ईसा में आसमान पर
बुलाया है।

मसीह में पुख़्ता होना

15 चुनाँचे हममें से जितने कामिल हैं आएँ, हम
ऐसी सोच रखें। और अगर आप किसी बात में
फ़रक़ सोचते हैं तो अल्लाह आप पर यह भी
ज़ाहिर करेगा। 16 जो भी हो, जिस मरहले तक
हम पहुँच गए हैं आएँ, हम उसके मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें।

17 भाइयो, मिलकर मेरे नक़्शे-क़दम पर चलें।
और उन पर ख़ूब ध्यान दें जो हमारे नमूने पर चलते
हैं। 18 क्योंकि जिस तरह मैंने आपको कई बार
बताया है और अब रो रोकर बता रहा हूँ, बहुत-
से लोग अपने चाल-चलन से ज़ाहिर करते हैं कि
वह मसीह की सलीब के दुश्मन हैं। 19 ऐसे लोगों
का अंजाम हलाकत है। खाने-पीने की पाबंदियाँ
और ख़तने पर फ़ख़र उनका ख़ुदा बन गया है।[a]
हाँ, वह सिर्फ़ दुनियावी सोच रखते हैं। 20 लेकिन
हम आसमान के शहरी हैं, और हम शिद्दत से इस
इंतज़ार में हैं कि हमारा नजातदहिंदा और ख़ुदावंद
ईसा मसीह वहीं से आए। 21 उस वक़्त वह हमारे
पस्तहाल बदनों को बदलकर अपने जलाली बदन
के हमशक्ल बना देगा। और यह वह उस क़ुव्वत
के ज़रीए करेगा जिससे वह तमाम चीज़ें अपने
ताबे कर सकता है।

हिदायात

4 चुनाँचे मेरे प्यारे भाइयो, जिनका आरज़ूमंद
मैं हूँ और जो मेरी मुसर्रत का बाइस
और मेरा ताज हैं, ख़ुदावंद में साबितक़दम रहें।
अज़ीज़ो, 2 मैं युवदिया और सुंतुख़े से अपील
करता हूँ कि वह ख़ुदावंद में एक जैसी सोच रखें।
3 हाँ मेरे हमख़िदमत भाई, मेरी आपसे गुज़ारिश
है कि आप उनकी मदद करें। क्योंकि वह अल्लाह
की ख़ुशख़बरी फैलाने की जिद्दो-जहद में मेरे साथ
ख़िदमत करती रही हैं, उस मुक़ाबले में जिसमें
क्लेमेंस और मेरे वह बाक़ी मददगार भी शरीक थे
जिनके नाम किताबे-हयात में दर्ज हैं।

4 हर वक़्त ख़ुदावंद में ख़ुशी मनाएँ। एक बार
फिर कहता हूँ, ख़ुशी मनाएँ।

5 आपकी नरमदिली तमाम लोगों पर ज़ाहिर
हो। याद रखें कि ख़ुदावंद आने को है। 6 अपनी
किसी भी फ़िकर में उलझकर परेशान न हो जाएँ
बल्कि हर हालत में दुआ और इल्तिजा करके
अपनी दरख़ास्तें अल्लाह के सामने पेश करें।
ध्यान रखें कि आप यह शुक्रगुज़ारी की रूह में
करें। 7 फिर अल्लाह की सलामती जो समझ से
बाहर है आपके दिलों और ख़यालात को मसीह
ईसा में महफ़ूज़ रखेगी।

8 भाइयो, एक आख़िरी बात, जो कुछ सच्चा
है, जो कुछ शरीफ़ है, जो कुछ रास्त है, जो कुछ
मुक़द्दस है, जो कुछ पसंदीदा है, जो कुछ उम्दा है,
ग़रज़, अगर कोई अख़लाक़ी या क़ाबिले-तारीफ़
बात हो तो उसका ख़याल रखें। 9 जो कुछ आपने
मेरे वसीले से सीख लिया, हासिल कर लिया, सुन
लिया या देख लिया है उस पर अमल करें। फिर
सलामती का ख़ुदा आपके साथ होगा।

---

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : उनका पेट और उनका अपनी शर्म पर फ़ख़र उनका ख़ुदा बन गया है।

जमात की माली इमदाद के लिए शुक्रिया

10 मैं ख़ुदावंद में निहायत ही ख़ुश हुआ कि अब
आख़िरकार आपकी मेरे लिए फ़िकरमंदी दुबारा
जाग उठी है। हाँ, मुझे पता है कि आप पहले
भी फ़िकरमंद थे, लेकिन आपको इसका इज़हार
करने का मौक़ा नहीं मिला था। 11 मैं यह अपनी
किसी ज़रूरत की वजह से नहीं कह रहा, क्योंकि
मैंने हर हालत में ख़ुश रहने का राज़ सीख लिया
है। 12 मुझे दबाए जाने का तजरबा हुआ है और
हर चीज़ कसरत से मुयस्सर होने का भी। मुझे
हर हालत से ख़ूब वाक़िफ़ किया गया है, सेर
होने से और भूका रहने से भी, हर चीज़ कसरत
से मुयस्सर होने से और ज़रूरतमंद होने से भी।
13 मसीह में मैं सब कुछ करने के क़ाबिल हूँ,
क्योंकि वही मुझे तक़वियत देता रहता है।

14 तो भी अच्छा था कि आप मेरी मुसीबत में
शरीक हुए। 15 आप जो फ़िलिप्पी के रहनेवाले हैं
ख़ुद जानते हैं कि उस वक़्त जब मसीह की मुनादी
का काम आपके इलाक़े में शुरू हुआ था और मैं
सूबा मकिदुनिया से निकल आया था तो सिर्फ़
आपकी जमात पूरे हिसाब-किताब के साथ पैसे
देकर मेरी ख़िदमत में शरीक हुई। 16 उस वक़्त भी
जब मैं थिस्सलुनीके शहर में था आपने कई बार
मेरी ज़रूरियात पूरी करने के लिए कुछ भेज दिया।
17 कहने का मतलब यह नहीं कि मैं आपसे कुछ
पाना चाहता हूँ, बल्कि मेरी शदीद ख़ाहिश यह है
कि आपके देने से आप ही को अल्लाह से कसरत
का सूद मिल जाए। 18 यही मेरी रसीद है। मैंने पूरी
रक़म वसूल पाई है बल्कि अब मेरे पास ज़रूरत
से ज़्यादा है। जब से मुझे इपफ़्रुदितुस के हाथ
आपका हदिया मिल गया है मेरे पास बहुत कुछ
है। यह ख़ुशबूदार और क़ाबिले-क़बूल क़ुरबानी
अल्लाह को पसंदीदा है। 19 जवाब में मेरा ख़ुदा
अपनी उस जलाली दौलत के मुवाफ़िक़ जो मसीह
ईसा में है आपकी तमाम ज़रूरियात पूरी करे।
20 अल्लाह हमारे बाप का जलाल अज़ल से अबद
तक हो। आमीन।

सलाम और बरकत

21 तमाम मक़ामी मुक़द्दसीन को मसीह ईसा में
मेरा सलाम देना। जो भाई मेरे साथ हैं वह आपको
सलाम कहते हैं। 22 यहाँ के तमाम मुक़द्दसीन
आपको सलाम कहते हैं, ख़ासकर शहनशाह के
घराने के भाई और बहनें। 23 ख़ुदावंद ईसा मसीह
का फ़ज़ल आपकी रूह के साथ रहे। आमीन।

कुलुस्सियों के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह
की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है।
साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ़ से भी है।
2 मैं कुलुस्से शहर के मुक़द्दस भाइयों को लिख
रहा हूँ जो मसीह पर ईमान लाए हैं :
ख़ुदा हमारा बाप आपको फ़ज़्ल और सलामती
बख़्शे।

शुक्रगुज़ारी की दुआ

3 जब हम आपके लिए दुआ करते हैं तो हर
वक़्त ख़ुदा अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप
का शुक्र करते हैं, 4 क्योंकि हमने आपके मसीह
ईसा पर ईमान और आपकी तमाम मुक़द्दसीन
से मुहब्बत के बारे में सुन लिया है। 5 आपका
यह ईमान और मुहब्बत वह कुछ ज़ाहिर करते हैं
जिसकी आप उम्मीद रखते हैं और जो आसमान
पर आपके लिए महफ़ूज़ रखा गया है। और आपने
यह उम्मीद उस वक़्त से रखी है जब से आपने
पहली मरतबा सच्चाई का कलाम यानी अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनी। 6 यह पैग़ाम जो आपके
पास पहुँच गया पूरी दुनिया में फल ला रहा और
बढ़ रहा है, बिलकुल उसी तरह जिस तरह यह
आपमें भी उस दिन से काम कर रहा है जब
आपने पहली बार इसे सुनकर अल्लाह के फ़ज़्ल
की पूरी हक़ीक़त समझ ली। 7 आपने हमारे
अज़ीज़ हमख़िदमत इपफ़्रास से इस ख़ुशख़बरी
की तालीम पा ली थी। मसीह का यह वफ़ादार
ख़ादिम हमारी जगह आपकी ख़िदमत कर रहा
है। 8 उसी ने हमें आपकी उस मुहब्बत के बारे में
बताया जो रूहुल-क़ुद्स ने आपके दिलों में डाल
दी है।

9 इस वजह से हम आपके लिए दुआ करने
से बाज़ नहीं आए बल्कि यह माँगते रहते हैं कि
अल्लाह आपको हर रूहानी हिकमत और समझ
से नवाज़कर अपनी मरज़ी के इल्म से भर दे।
10 क्योंकि फिर ही आप अपनी ज़िंदगी ख़ुदावंद
के लायक़ गुज़ार सकेंगे और हर तरह से उसे
पसंद आएँगे। हाँ, आप हर क़िस्म का अच्छा काम
करके फल लाएँगे और अल्लाह के इल्मो-इरफ़ान
में तरक़्क़ी करेंगे। 11 और आप उस की जलाली
क़ुदरत से मिलनेवाली हर क़िस्म की क़ुव्वत से
तक़वियत पाकर हर वक़्त साबितक़दमी और सब्र
से चल सकेंगे। आप ख़ुशी से 12 बाप का शुक्र
करेंगे जिसने आपको उस मीरास में हिस्सा लेने
के लायक़ बना दिया जो उसके रौशनी में रहनेवाले
मुक़द्दसीन को हासिल है। 13 क्योंकि वही हमें
तारीकी के इख़्तियार से रिहाई देकर अपने प्यारे
फ़रज़ंद की बादशाही में लाया, 14 उस वाहिद
शख़्स के इख़्तियार में जिसने हमारा फ़िद्या देकर
हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया।

मसीह की शख़्सियत और काम

15 अल्लाह को देखा नहीं जा सकता, लेकिन
हम मसीह को देख सकते हैं जो अल्लाह की
सूरत और कायनात का पहलौठा है। 16 क्योंकि
अल्लाह ने उसी में सब कुछ ख़लक़ किया, ख़ाह
आसमान पर हो या ज़मीन पर, आँखों को नज़र
आए या न, ख़ाह शाही तख़्त, क़ुव्वतें, हुक्मरान या
इख़्तियारवाले हूँ। सब कुछ मसीह के ज़रीए और
उसी के लिए ख़लक़ हुआ। 17 वही सब चीज़ों से
पहले है और उसी में सब कुछ क़ायम रहता है।
18 और वह बदन यानी अपनी जमात का सर भी
है। वही इब्तिदा है, और चूँकि पहले वही मुरदों
में से जी उठा इसलिए वही उनमें से पहलौठा भी
है ताकि वह सब बातों में अव्वल हो। 19 क्योंकि
अल्लाह को पसंद आया कि मसीह में उस की पूरी
मामूरी सुकूनत करे 20 और वह मसीह के ज़रीए
सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले, ख़ाह वह
ज़मीन की हूँ ख़ाह आसमान की। क्योंकि उसने
मसीह के सलीब पर बहाए गए ख़ून के वसीले से
सुलह-सलामती क़ायम की।

21 आप भी पहले अल्लाह के सामने अजनबी
थे और दुश्मन की-सी सोच रखकर बुरे काम
करते थे। 22 लेकिन अब उसने मसीह के इनसानी
बदन की मौत से आपके साथ सुलह कर ली है
ताकि वह आपको मुक़द्दस, बेदाग़ और बेइलज़ाम
हालत में अपने हुज़ूर खड़ा करे। 23 बेशक अब
ज़रूरी है कि आप ईमान में क़ायम रहें, कि आप
ठोस बुनियाद पर मज़बूती से खड़े रहें और उस
ख़ुशख़बरी की उम्मीद से हट न जाएँ जो आपने
सुन ली है। यह वही पैग़ाम है जिसकी मुनादी
दुनिया में हर मख़लूक़ के सामने कर दी गई है
और जिसका ख़ादिम मैं पौलुस बन गया हूँ।

जमात के ख़ादिम की हैसियत से पौलुस की ख़िदमत

24 अब मैं उन दुखों के बाइस ख़ुशी मनाता हूँ जो
मैं आपकी ख़ातिर उठा रहा हूँ। क्योंकि मैं अपने
जिस्म में मसीह के बदन यानी उस की जमात
की ख़ातिर मसीह की मुसीबतों की वह कमियाँ
पूरी कर रहा हूँ जो अब तक रह गई हैं। 25 हाँ,
अल्लाह ने मुझे अपनी जमात का ख़ादिम बनाकर
यह ज़िम्मेदारी दी कि मैं आपको अल्लाह का पूरा
कलाम सुना दूँ, 26 वह राज़ जो अज़ल से तमाम
गुज़री नसलों से पोशीदा रहा था लेकिन अब
मुक़द्दसीन पर ज़ाहिर किया गया है। 27 क्योंकि
अल्लाह चाहता था कि वह जान लें कि ग़ैरयहूदियों
में यह राज़ कितना बेशक़ीमत और जलाली है।
और यह राज़ है क्या? यह कि मसीह आपमें
है। वही आपमें है जिसके बाइस हम अल्लाह
के जलाल में शरीक होने की उम्मीद रखते हैं।
28 यों हम सबको मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं।
हर मुमकिना हिकमत से हम उन्हें समझाते और
तालीम देते हैं ताकि हर एक को मसीह में कामिल
हालत में अल्लाह के हुज़ूर पेश करें। 29 यही
मक़सद पूरा करने के लिए मैं सख़्त मेहनत करता
हूँ। हाँ, मैं पूरी जिद्दो-जहद करके मसीह की उस
क़ुव्वत का सहारा लेता हूँ जो बड़े ज़ोर से मेरे अंदर
काम कर रही है।

2 मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि मैं
आपके लिए किस क़दर जाँफ़िशानी कर
रहा हूँ—आपके लिए, लौदीकियावालों के लिए
और उन तमाम ईमानदारों के लिए भी जिनकी
मेरे साथ मुलाक़ात नहीं हुई। 2 मेरी कोशिश यह
है कि उनकी दिली हौसलाअफ़्ज़ाई की जाए और
वह मुहब्बत में एक हो जाएँ, कि उन्हें वह ठोस
एतमाद हासिल हो जाए जो पूरी समझ से पैदा
होता है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह अल्लाह का
राज़ जान लें। राज़ क्या है? मसीह ख़ुद। 3 उसी
में हिकमत और इल्मो-इरफ़ान के तमाम ख़ज़ाने
पोशीदा हैं।

4 ग़रज़ ख़बरदार रहें कि कोई आपको बज़ाहिर
सहीह और मीठे मीठे अलफ़ाज़ से धोका न दे।
5 क्योंकि गो मैं जिस्म के लिहाज़ से हाज़िर नहीं
हूँ, लेकिन रूह में मैं आपके साथ हूँ। और मैं यह
देखकर ख़ुश हूँ कि आप कितनी मुनज़्ज़म ज़िंदगी

गुज़ारते हैं, कि आपका मसीह पर ईमान कितना
पुख़्ता है।

मसीह में ज़िंदगी

6 आपने ईसा मसीह को ख़ुदावंद के तौर पर
क़बूल कर लिया है। अब उसमें ज़िंदगी गुज़ारें।
7 उसमें जड़ पकड़ें, उस पर अपनी ज़िंदगी तामीर
करें, उस ईमान में मज़बूत रहें जिसकी आपको
तालीम दी गई है और शुक्रगुज़ारी से लबरेज़ हो
जाएँ।

8 मुहतात रहें कि कोई आपको फ़ल-
सफ़ियाना और महज़ फ़रेब देनेवाली बातों से
अपने जाल में न फँसा ले। ऐसी बातों का
सरचश्मा मसीह नहीं बल्कि इनसानी रिवायतें
और इस दुनिया की क़ुव्वतें हैं। **9** क्योंकि मसीह
में उलूहियत की सारी मामूरी मुजस्सम होकर
सुकूनत करती है। **10** और आपको जो मसीह में
हैं उस की मामूरी में शरीक कर दिया गया है। वही
हर हुक्मरान और इख़्तियारवाले का सर है।

11 उसमें आते वक़्त आपका ख़तना भी
करवाया गया। लेकिन यह ख़तना इनसानी हाथों
से नहीं किया गया बल्कि मसीह के वसीले
से। उस वक़्त आपकी पुरानी फ़ितरत उतार दी
गई, **12** आपको बपतिस्मा देकर मसीह के साथ
दफ़नाया गया और आपको ईमान से ज़िंदा कर
दिया गया। क्योंकि आप अल्लाह की क़ुदरत पर
ईमान लाए थे, उसी क़ुदरत पर जिसने मसीह को
मुरदों में से ज़िंदा कर दिया था। **13** पहले आप
अपने गुनाहों और नामख़तून जिस्मानी हालत
के सबब से मुरदा थे, लेकिन अब अल्लाह ने
आपको मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया है। उसने
हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है।
14 हमारे क़र्ज़ की जो रसीद अपनी शरायत की
बिना पर हमारे ख़िलाफ़ थी उसे उसने मनसूख़
कर दिया। हाँ, उसने हमसे दूर करके उसे कीलों
से सलीब पर जड़ दिया। **15** उसने हुक्मरानों और
इख़्तियारवालों से उनका असला छीनकर सबके
सामने उनकी रुसवाई की। हाँ, मसीह की सलीबी
मौत से वह अल्लाह के क़ैदी बन गए और उन्हें
फ़तह के जुलूस में उसके पीछे पीछे चलना पड़ा।

16 चुनाँचे कोई आपको इस वजह से मुजरिम
न ठहराए कि आप क्या क्या खाते-पीते या कौन
कौन-सी ईदें मनाते हैं। इसी तरह कोई आपकी
अदालत न करे अगर आप हिलाल की ईद या
सबत का दिन नहीं मनाते। **17** यह चीज़ें तो सिर्फ़
आनेवाली हक़ीक़त का साया ही हैं जबकि यह
हक़ीक़त ख़ुद मसीह में पाई जाती है। **18** ऐसे लोग
आपको मुजरिम न ठहराएँ जो ज़ाहिरी फ़रोतनी
और फ़रिश्तों की पूजा पर इसरार करते हैं। बड़ी
तफ़सील से अपनी रोयाओं में देखी हुई बातें बयान
करते करते उनके ग़ैररूहानी ज़हन ख़ाहमख़ाह
फूल जाते हैं। **19** यों उन्होंने मसीह के साथ लगे
रहना छोड़ दिया अगरचे वह बदन का सर है। वही
जोड़ों और पट्ठों के ज़रीए पूरे बदन को सहारा देकर
उसके मुख़्तलिफ़ हिस्सों को जोड़ देता है। यों पूरा
बदन अल्लाह की मदद से तरक़्क़ी करता जाता
है।

मसीह के साथ मरना और ज़िंदगी गुज़ारना

20 आप तो मसीह के साथ मरकर दुनिया की
क़ुव्वतों से आज़ाद हो गए हैं। अगर ऐसा है तो
आप ज़िंदगी ऐसे क्यों गुज़ारते हैं जैसे कि आप
अभी तक इस दुनिया की मिलकियत हैं? आप
क्यों इसके अहकाम के ताबे रहते हैं? **21** मसलन
“इसे हाथ न लगाना, वह न चखना, यह न
छूना।” **22** इन तमाम चीज़ों का मक़सद तो यह
है कि इस्तेमाल होकर ख़त्म हो जाएँ। यह सिर्फ़
इनसानी अहकाम और तालीमात हैं। **23** बेशक
यह अहकाम जो घड़े हुए मज़हबी फ़रायज़, नाम-
निहाद फ़रोतनी और जिस्म के सख़्त दबाव का
तक़ाज़ा करते हैं हिकमत पर मबनी तो लगते हैं,
लेकिन यह बेकार हैं और सिर्फ़ जिस्म ही की
ख़ाहिशात पूरी करते हैं।

3 आपको मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया
गया है, इसलिए वह कुछ तलाश करें जो
आसमान पर है जहाँ मसीह अल्लाह के दहने हाथ

बैठा है। 2 दुनियावी चीज़ों को अपने ख़यालों का
मरकज़ न बनाएँ बल्कि आसमानी चीज़ों को।
3 क्योंकि आप मर गए हैं और अब आपकी ज़िंदगी
मसीह के साथ अल्लाह में पोशीदा है। 4 मसीह ही
आपकी ज़िंदगी है। जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो
आप भी उसके साथ ज़ाहिर होकर उसके जलाल
में शरीक हो जाएंगे।

पुरानी और नई ज़िंदगी

5 चुनाँचे उन दुनियावी चीज़ों को मार डालें जो
आपके अंदर काम कर रही हैं : ज़िनाकारी,
नापाकी, शहवतपरस्ती, बुरी ख़ाहिशात और
लालच (लालच तो एक क़िस्म की बुतपरस्ती है)।
6 अल्लाह का ग़ज़ब ऐसी ही बातों की वजह से
नाज़िल होगा। 7 एक वक़्त था जब आप भी इनके
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते थे, जब आपकी ज़िंदगी
इनके क़ाबू में थी।

8 लेकिन अब वक़्त आ गया है कि आप यह सब
कुछ यानी ग़ुस्सा, तैश, बदसुलूकी, बुहतान और
गंदी ज़बान ख़स्ताहाल कपड़े की तरह उतारकर
फेंक दें। 9 एक दूसरे से बात करते वक़्त झूट
मत बोलना, क्योंकि आपने अपनी पुरानी फ़ितरत
उस की हरकतों समेत उतार दी है। 10 साथ साथ
आपने नई फ़ितरत पहन ली है, वह फ़ितरत
जिसकी तजदीद हमारा ख़ालिक़ अपनी सूरत पर
करता जा रहा है ताकि आप उसे और बेहतर तौर
पर जान लें। 11 जहाँ यह काम हो रहा है वहाँ लोगों
में कोई फ़रक़ नहीं है, ख़ाह कोई ग़ैरयहूदी हो या
यहूदी, मख़तून हो या नामख़तून, ग़ैरयूनानी हो या
स्कूती,[a] ग़ुलाम हो या आज़ाद। कोई फ़रक़ नहीं
पड़ता, सिर्फ़ मसीह ही सब कुछ और सबमें है।

12 अल्लाह ने आपको चुनकर अपने लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया है। वह आपसे
मुहब्बत रखता है। इसलिए अब तरस, नेकी,
फ़रोतनी, नरमदिली और सब्र को पहन लें।
13 एक दूसरे को बरदाश्त करें, और अगर आपकी
किसी से शिकायत हो तो उसे मुआफ़ कर दें।
हाँ, यों मुआफ़ करें जिस तरह ख़ुदावंद ने आपको
मुआफ़ कर दिया है। 14 इनके अलावा मुहब्बत
भी पहन लें जो सब कुछ बाँधकर कामिलियत
की तरफ़ ले जाती है। 15 मसीह की सलामती
आपके दिलों में हुकूमत करे। क्योंकि अल्लाह
ने आपको इसी सलामती की ज़िंदगी गुज़ारने के
लिए बुलाकर एक बदन में शामिल कर दिया है।
शुक्रगुज़ार भी रहें। 16 आपकी ज़िंदगी में मसीह
के कलाम की पूरी दौलत घर कर जाए। एक
दूसरे को हर तरह की हिकमत से तालीम देते और
समझाते रहें। साथ साथ अपने दिलों में अल्लाह
के लिए शुक्रगुज़ारी के साथ ज़बूर, हम्दो-सना
और रूहानी गीत गाते रहें। 17 और जो कुछ भी
आप करें ख़ाह ज़बानी हो या अमली वह ख़ुदावंद
ईसा का नाम लेकर करें। हर काम में उसी के
वसीले से ख़ुदा बाप का शुक्र करें।

नई ज़िंदगी में ताल्लुक़ात कैसे हूँ

18 बीवियो, अपने शौहर के ताबे रहें, क्योंकि
जो ख़ुदावंद में है उसके लिए यही मुनासिब है।

19 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें।
उनसे तलख़मिज़ाजी से पेश न आएँ।

20 बच्चो, हर बात में अपने माँ-बाप के ताबे रहें,
क्योंकि यही ख़ुदावंद को पसंद है।

21 वालिदो, अपने बच्चों को मुश्तइल न करें,
वरना वह बेदिल हो जाएंगे।

22 ग़ुलामो, हर बात में अपने दुनियावी मालिकों
के ताबे रहें। न सिर्फ़ उनके सामने ही और
उन्हें ख़ुश रखने के लिए ख़िदमत करें बल्कि
ख़ुलूसदिली और ख़ुदावंद का ख़ौफ़ मानकर काम
करें। 23 जो कुछ भी आप करते हैं उसे पूरी लग्न
के साथ करें, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़
इनसानों की बल्कि ख़ुदावंद की ख़िदमत कर रहे
हूँ। 24 आप तो जानते हैं कि ख़ुदावंद आपको
इसके मुआवज़े में वह मीरास देगा जिसका वादा
उसने किया है। हक़ीक़त में आप ख़ुदावंद मसीह
की ही ख़िदमत कर रहे हैं। 25 लेकिन जो ग़लत

[a] एक क़बीला जो ज़लील समझा जाता था।

काम करे उसे अपनी ग़लतियों का मुआवज़ा भी मिलेगा। अल्लाह तो किसी की भी जानिबदारी नहीं करता।

4 मालिको, अपने ग़ुलामों के साथ मुंसिफ़ाना और जायज़ सुलूक करें। आप तो जानते हैं कि आसमान पर आपका भी मालिक है।

हिदायात

2 दुआ में लगे रहें। और दुआ करते वक़्त शुक्रगुज़ारी के साथ जागते रहें। 3 साथ साथ हमारे लिए भी दुआ करें ताकि अल्लाह हमारे लिए कलाम सुनाने का दरवाज़ा खोले और हम मसीह का राज़ पेश कर सकें। आख़िर मैं इसी राज़ की वजह से क़ैद में हूँ। 4 दुआ करें कि मैं इसे यों पेश करूँ जिस तरह करना चाहिए, कि इसे साफ़ समझा जा सके।

5 जो अब तक ईमान न लाए हों उनके साथ दानिशमंदाना सुलूक करें। इस सिलसिले में हर मौक़े से फ़ायदा उठाएँ। 6 आपकी गुफ़्तगू हर वक़्त मेहरबान हो, ऐसी कि मज़ा आए और आप हर एक को मुनासिब जवाब दे सकें।

आख़िरी सलामो-दुआ

7 जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है हमारा अज़ीज़ भाई तुख़िकुस आपको सब कुछ बता देगा। वह एक वफ़ादार ख़ादिम और ख़ुदावंद में हमख़िदमत रहा है। 8 मैंने उसे ख़ासकर इसलिए आपके पास भेज दिया ताकि आपको हमारा हाल मालूम हो जाए और वह आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करे। 9 वह हमारे वफ़ादार और अज़ीज़ भाई उनेसिमुस के साथ आपके पास आ रहा है, वही जो आपकी जमात से है। दोनों आपको वह सब कुछ सुना देंगे जो यहाँ हो रहा है।

10 अरिस्तरख़ुस जो मेरे साथ क़ैद में है आपको सलाम कहता है और इसी तरह बरनबास का कज़न[a] मरक़ुस भी। (आपको उसके बारे में हिदायात दी गई हैं। जब वह आपके पास आए तो उसे ख़ुशआमदीद कहना।) 11 ईसा जो यूसतुस कहलाता है भी आपको सलाम कहता है। उनमें से जो मेरे साथ अल्लाह की बादशाही में ख़िदमत कर रहे हैं सिर्फ़ यह तीन मर्द यहूदी हैं। और यह मेरे लिए तसल्ली का बाइस रहे हैं।

12 मसीह ईसा का ख़ादिम इपफ़्रास भी जो आपकी जमात से है सलाम कहता है। वह हर वक़्त बड़ी जिद्दो-जहद के साथ आपके लिए दुआ करता है। उस की ख़ास दुआ यह है कि आप मज़बूती के साथ खड़े रहें, कि आप बालिग़ मसीही बनकर हर बात में अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ चलें। 13 मैं ख़ुद इसकी तसदीक़ कर सकता हूँ कि उसने आपके लिए सख़्त मेहनत की है बल्कि लौदीकिया और हियरापुलिस की जमातों के लिए भी। 14 हमारे अज़ीज़ डाक्टर लूक़ा और देमास आपको सलाम कहते हैं।

15 मेरा सलाम लौदीकिया की जमात को देना और इसी तरह नुंफ़ास को उस जमात समेत जो उसके घर में जमा होती है। 16 यह पढ़ने के बाद ध्यान दें कि लौदीकिया की जमात में भी यह ख़त पढ़ा जाए और आप लौदीकिया का ख़त भी पढ़ें। 17 अरख़िप्पुस को बता देना, ख़बरदार कि आप वह ख़िदमत तकमील तक पहुँचाएँ जो आपको ख़ुदावंद में सौंपी गई है।

18 मैं अपने हाथ से यह अलफ़ाज़ लिख रहा हूँ। मेरी यानी पौलुस की तरफ़ से सलाम। मेरी ज़ंजीरें मत भूलना! अल्लाह का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

---

[a] यूनानी लफ़्ज़ से ज़ाहिर नहीं होता कि मरक़ुस चचा, मामूँ, फूफी या ख़ाला का लड़का है।

थिस्सलुनीकियों के नाम
पौलुस रसूल का पहला ख़त

1 यह ख़त पौलुस, सिलवानुस और
तीमुथियुस की तरफ़ से है।
हम थिस्सलुनीकियों की जमात को लिख रहे
हैं, उन्हें जो ख़ुदा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
पर ईमान लाए हैं।
अल्लाह आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शे।

थिस्सलुनीकियों की ज़िंदगी और ईमान

2 हम हर वक़्त आप सबके लिए ख़ुदा का
शुक्र करते और अपनी दुआओं में आपको याद
करते रहते हैं। 3 हमें अपने ख़ुदा बाप के हुज़ूर
ख़ासकर आपका अमल, मेहनत-मशक़्क़त और
साबितक़दमी याद आती रहती है। आप अपना
ईमान कितनी अच्छी तरह अमल में लाए, आपने
मुहब्बत की रूह में कितनी मेहनत-मशक़्क़त की
और आपने कितनी साबितक़दमी दिखाई, ऐसी
साबितक़दमी जो सिर्फ़ हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
पर उम्मीद ही दिला सकती है। 4 भाइयो, अल्लाह
आपसे मुहब्बत रखता है, और हमें पूरा इल्म है कि
उसने आपको वाक़ई चुन लिया है। 5 क्योंकि जब
हमने अल्लाह की ख़ुशख़बरी आप तक पहुँचाई तो
न सिर्फ़ बातें करके बल्कि क़ुव्वत के साथ, रूहुल-
क़ुदस में और पूरे एतमाद के साथ। आप जानते
हैं कि जब हम आपके पास थे तो हमने किस
तरह की ज़िंदगी गुज़ारी। जो कुछ हमने किया वह
आपकी ख़ातिर किया। 6 उस वक़्त आप हमारे
और ख़ुदावंद के नमूने पर चलने लगे। अगरचे
आप बड़ी मुसीबत में पड़ गए तो भी आपने हमारे
पैग़ाम को उस ख़ुशी के साथ क़बूल किया जो
सिर्फ़ रूहुल-क़ुद्स दे सकता है। 7 यों आप सूबा
मकिदुनिया और सूबा अख़या के तमाम ईमानदारों
के लिए नमूना बन गए। 8 ख़ुदावंद के पैग़ाम की
आवाज़ आपमें से निकलकर न सिर्फ़ मकिदुनिया
और अख़या में सुनाई दी, बल्कि यह ख़बर कि
आप अल्लाह पर ईमान रखते हैं हर जगह तक
पहुँच गई है। नतीजे में हमें कुछ कहने की ज़रूरत
नहीं रही, 9 क्योंकि लोग हर जगह बात कर रहे हैं
कि आपने हमें किस तरह ख़ुशआमदीद कहा है,
कि आपने किस तरह बुतों से मुँह फेरकर अल्लाह
की तरफ़ रुजू किया ताकि ज़िंदा और हक़ीक़ी
ख़ुदा की ख़िदमत करें। 10 लोग यह भी कह रहे
हैं कि अब आप इस इंतज़ार में हैं कि अल्लाह का
फ़रज़ंद आसमान पर से आए यानी ईसा जिसे
अल्लाह ने मुरदों में से ज़िंदा कर दिया और जो
हमें आनेवाले ग़ज़ब से बचाएगा।

थिस्सलुनीके में पौलुस का काम

2 भाइयो, आप जानते हैं कि हमारा आपके
पास आना बेफ़ायदा न हुआ। 2 आप उस
दुख से भी वाक़िफ़ हैं जो हमें आपके पास आने

से पहले सहना पड़ा, कि फ़िलिप्पी शहर में
हमारे साथ कितनी बदसुलूकी हुई थी। तो भी
हमने अपने ख़ुदा की मदद से आपको उस की
ख़ुशख़बरी सुनाने की जुर्रत की हालाँकि बहुत
मुख़ालफ़त का सामना करना पड़ा। 3 क्योंकि
जब हम आपको उभारते हैं तो इसके पीछे न
तो कोई ग़लत नीयत होती है, न कोई नापाक
मक़सद या चालाकी। 4 नहीं, अल्लाह ने ख़ुद
हमें जाँचकर इस लायक़ समझा कि हम उस की
ख़ुशख़बरी सुनाने की ज़िम्मेदारी सँभालें। इसी
बिना पर हम बोलते हैं, इनसानों को ख़ुश रखने
के लिए नहीं बल्कि अल्लाह को जो हमारे दिलों
को परखता है। 5 आपको भी मालूम है कि हमने न
ख़ुशामद से काम लिया, न हम पसे-परदा लालची
थे—अल्लाह हमारा गवाह है! 6 हम इस मक़सद
से काम नहीं कर रहे थे कि लोग हमारी इज़्ज़त
करें, ख़ाह आप हों या दीगर लोग। 7 मसीह के
रसूलों की हैसियत से हम आपके लिए माली बोझ
बन सकते थे, लेकिन हम आपके दरमियान होते
हुए नरमदिल रहे, ऐसी माँ की तरह जो अपने
छोटे बच्चों की परवरिश करती है। 8 हमारी आपके
लिए चाहत इतनी शदीद थी कि हम आपको न
सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशख़बरी की बरकत में शरीक
करने को तैयार थे बल्कि अपनी ज़िंदगियों में भी।
हाँ, आप हमें इतने अज़ीज़ थे! 9 भाइयो, बेशक
आपको याद है कि हमने कितनी सख़्त मेहनत-
मशक़्क़त की। दिन-रात हम काम करते रहे ताकि
अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते वक़्त किसी पर
बोझ न बनें।

10 आप और अल्लाह हमारे गवाह हैं कि आप
ईमान लानेवालों के साथ हमारा सुलूक कितना
मुक़द्दस, रास्त और बेइलज़ाम था। 11 क्योंकि
आप जानते हैं कि हमने आपमें से हर एक से
ऐसा सुलूक किया जैसा बाप अपने बच्चों के साथ
करता है। 12 हम आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करते,
आपको तसल्ली देते और आपको समझाते रहे
कि आप अल्लाह के लायक़ ज़िंदगी गुज़ारें,
क्योंकि वह आपको अपनी बादशाही और जलाल
में हिस्सा लेने के लिए बुलाता है।

13 एक और वजह है कि हम हर वक़्त ख़ुदा का
शुक्र करते हैं। जब हमने आप तक अल्लाह का
पैग़ाम पहुँचाया तो आपने उसे सुनकर यों क़बूल
किया जैसा यह हक़ीक़त में है यानी अल्लाह का
कलाम जो इनसानों की तरफ़ से नहीं है और जो
आप ईमानदारों में काम कर रहा है। 14 भाइयो, न
सिर्फ़ यह बल्कि आप यहूदिया में अल्लाह की उन
जमातों के नमूने पर चल पड़े जो मसीह ईसा में
हैं। क्योंकि आपको अपने हमवतनों के हाथों वह
कुछ सहना पड़ा जो उन्हें पहले ही अपने हमवतन
यहूदियों से सहना पड़ा था। 15 हाँ, यहूदियों ने न
सिर्फ़ ख़ुदावंद ईसा और नबियों को क़त्ल किया
बल्कि हमें भी अपने बीच में से निकाल दिया।
यह लोग अल्लाह को पसंद नहीं आते और तमाम
लोगों के ख़िलाफ़ होकर 16 हमें इससे रोकने की
कोशिश करते हैं कि ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुनाएँ, ऐसा न हो कि वह नजात पाएँ।
यों वह हर वक़्त अपने गुनाहों का प्याला किनारे
तक भरते जा रहे हैं। लेकिन अल्लाह का पूरा
ग़ज़ब उन पर नाज़िल हो चुका है।

पौलुस की उनसे दुबारा मिलने की ख़ाहिश

17 भाइयो, जब हमें कुछ देर के लिए आपसे
अलग कर दिया गया (गो हम दिल से आपके
साथ रहे) तो हमने बड़ी आरज़ू से आपसे मिलने
की पूरी कोशिश की। 18 क्योंकि हम आपके पास
आना चाहते थे। हाँ, मैं पौलुस ने बार बार आने की
कोशिश की, लेकिन इबलीस ने हमें रोक लिया।
19 आख़िर आप ही हमारी उम्मीद और ख़ुशी का
बाइस हैं। आप ही हमारा इनाम और हमारा ताज
हैं जिस पर हम अपने ख़ुदावंद ईसा के हुज़ूर फ़ख़र
करेंगे जब वह आएगा। 20 हाँ, आप हमारा जलाल
और ख़ुशी हैं।

3 आख़िरकार हम यह हालत मज़ीद बरदाश्त
न कर सके। हमने फ़ैसला किया कि
अकेले ही अथेने में रहकर 2 तीमुथियुस को भेज

देंगे जो हमारा भाई और मसीह की ख़ुशख़बरी
फैलाने में हमारे साथ अल्लाह की ख़िदमत करता
है। हमने उसे भेज दिया ताकि वह आपको मज़बूत
करे और ईमान में आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करे
3 ताकि कोई इन मुसीबतों से बेचैन न हो जाए।
क्योंकि आप ख़ुद जानते हैं कि इनका सामना
करना हमारे लिए अल्लाह की मरज़ी है। 4 बल्कि
जब हम आपके पास थे तो हमने इसकी पेशगोई
की कि हमें मुसीबत बरदाश्त करनी पड़ेगी। और
ऐसा ही हुआ जैसा कि आप ख़ूब जानते हैं। 5 यही
वजह थी कि मैंने तीमुथियुस को भेज दिया। मैं
यह हालात बरदाश्त न कर सका, इसलिए मैंने
उसे आपके ईमान को मालूम करने के लिए भेज
दिया। ऐसा न हो कि आज़मानेवाले ने आपको यों
आज़माइश में डाल दिया हो कि हमारी आप पर
मेहनत ज़ाया जाए।

6 लेकिन अब तीमुथियुस लौट आया है, और
वह आपके ईमान और मुहब्बत के बारे में अच्छी
ख़बर लेकर आया है। उसने हमें बताया कि आप
हमें बहुत याद करते हैं और हमसे उतना ही मिलने
के आरज़ूमंद हैं जितना कि हम आप से। 7 भाइयो,
आप और आपके ईमान के बारे में यह सुनकर
हमारी हौसलाअफ़्ज़ाई हुई, हालाँकि हम ख़ुद
तरह तरह के दबाव और मुसीबतों में फँसे हुए हैं।
8 अब हमारी जान में जान आ गई है, क्योंकि आप
मज़बूती से ख़ुदावंद में क़ायम हैं। 9 हम आपकी
वजह से अल्लाह के कितने शुक्रगुज़ार हैं! यह
ख़ुशी नाक़ाबिले-बयान है जो हम आपकी वजह
से अल्लाह के हुज़ूर महसूस करते हैं। 10 दिन-रात
हम बड़ी संजीदगी से दुआ करते रहते हैं कि आपसे
दुबारा मिलकर वह कमियाँ पूरी करें जो आपके
ईमान में अब तक रह गई हैं।

11 अब हमारा ख़ुदा और बाप ख़ुद और हमारा
ख़ुदावंद ईसा रास्ता खोले ताकि हम आप तक
पहुँच सकें। 12 ख़ुदावंद करे कि आपकी एक दूसरे
और दीगर तमाम लोगों से मुहब्बत इतनी बढ़ जाए
कि वह यों दिल से छलक उठे जिस तरह आपके
लिए हमारी मुहब्बत भी छलक रही है। 13 क्योंकि
इस तरह अल्लाह आपके दिलों को मज़बूत करेगा
और आप उस वक़्त हमारे ख़ुदा और बाप के हुज़ूर
बेइलज़ाम और मुक़द्दस साबित होंगे जब हमारा
ख़ुदावंद ईसा अपने तमाम मुक़द्दसीन के साथ
आएगा। आमीन।

अल्लाह को पसंदीदा ज़िंदगी

4 भाइयो, एक आख़िरी बात, आपने हमसे
सीख लिया था कि हमारी ज़िंदगी किस
तरह होनी चाहिए ताकि वह अल्लाह को पसंद
आए। और आप इसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते
भी हैं। अब हम ख़ुदावंद ईसा में आपसे दरख़ास्त
और आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करते हैं कि आप
इसमें मज़ीद तरक़्क़ी करते जाएँ। 2 आप तो उन
हिदायात से वाक़िफ़ हैं जो हमने आपको ख़ुदावंद
ईसा के वसीले से दी थीं। 3 क्योंकि अल्लाह की
मरज़ी है कि आप उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस
हों, कि आप ज़िनाकारी से बाज़ रहें। 4 हर एक
अपने बदन पर यों क़ाबू पाना सीख ले कि वह
मुक़द्दस और शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ार सके। 5 वह
ग़ैरईमानदारों की तरह जो अल्लाह से नावाक़िफ़
हैं शहवतपरस्ती का शिकार न हो। 6 इस मामले
में कोई अपने भाई का गुनाह न करे, न उससे
ग़लत फ़ायदा उठाए। ख़ुदावंद ऐसे गुनाहों की
सज़ा देता है। हम यह सब कुछ बता चुके और
आपको आगाह कर चुके हैं। 7 क्योंकि अल्लाह
ने हमें नापाक ज़िंदगी गुज़ारने के लिए नहीं
बुलाया बल्कि मख़सूसो-मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारने
के लिए। 8 इसलिए जो यह हिदायात रद्द करता है
वह इनसान को नहीं बल्कि अल्लाह को रद्द करता
है जो आपको अपना मुक़द्दस रूह दे देता है।

9 यह लिखने की ज़रूरत नहीं कि आप दूसरे
ईमानदारों से मुहब्बत रखें। अल्लाह ने ख़ुद
आपको एक दूसरे से मुहब्बत रखना सिखाया
है। 10 और हक़ीक़तन आप मकिदुनिया के तमाम
भाइयों से ऐसी ही मुहब्बत रखते हैं। तो भी
भाइयो, हम आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करना
चाहते हैं कि आप इसमें मज़ीद तरक़्क़ी करते

जाएँ। 11 अपनी इज़्ज़त इसमें बरक़रार रखें कि
आप सुकून से ज़िंदगी गुज़ारें, अपने फ़रायज़ अदा
करें और अपने हाथों से काम करें, जिस तरह
हमने आपको कह दिया था। 12 जब आप ऐसा
करेंगे तो ग़ैरईमानदार आपकी क़दर करेंगे और
आप किसी भी चीज़ के मुहताज नहीं रहेंगे।

ख़ुदावंद की आमद

13 भाइयो, हम चाहते हैं कि आप उनके बारे में
हक़ीक़त जान लें जो सो गए हैं ताकि आप दूसरों
की तरह जिनकी कोई उम्मीद नहीं मातम न करें।
14 हमारा ईमान है कि ईसा मर गया और दुबारा
जी उठा, इसलिए हमारा यह भी ईमान है कि जब
ईसा वापस आएगा तो अल्लाह उसके साथ उन
ईमानदारों को भी वापस लाएगा जो मौत की नींद
सो गए हैं।

15 जो कुछ हम अब आपको बता रहे हैं वह
ख़ुदावंद की तालीम है। ख़ुदावंद की आमद पर
हम जो ज़िंदा होंगे सोए हुए लोगों से पहले
ख़ुदावंद से नहीं मिलेंगे। 16 उस वक़्त ऊँची
आवाज़ से हुक्म दिया जाएगा, फ़रिश्ताए-आज़म
की आवाज़ सुनाई देगी, अल्लाह का तुरम बजेगा
और ख़ुदावंद ख़ुद आसमान पर से उतर आएगा।
तब पहले वह जी उठेंगे जो मसीह में मर गए थे।
17 इनके बाद ही हमें जो ज़िंदा होंगे बादलों पर
उठा लिया जाएगा ताकि हवा में ख़ुदावंद से मिलें।
फिर हम हमेशा ख़ुदावंद के साथ रहेंगे। 18 चुनाँचे
इन अलफ़ाज़ से एक दूसरे को तसल्ली दिया करें।

ख़ुदावंद की आमद के लिए तैयार रहना

5 भाइयो, इसकी ज़रूरत नहीं कि हम
आपको लिखें कि यह सब कुछ कब और
किस मौक़े पर होगा। 2 क्योंकि आप ख़ुद ख़ूब
जानते हैं कि ख़ुदावंद का दिन यों आएगा जिस
तरह चोर रात के वक़्त घर में घुस आता है।
3 जब लोग कहेंगे, "अब अमनो-अमान है," तो
हलाकत अचानक ही उन पर आन पड़ेगी। वह इस
तरह मुसीबत में पड़ जाएंगे जिस तरह वह औरत
जिसका बच्चा पैदा हो रहा है। वह हरगिज़ नहीं
बच सकेंगे। 4 लेकिन आप भाइयो तारीकी की
गिरिफ़्त में नहीं हैं, इसलिए यह दिन चोर की तरह
आप पर ग़ालिब नहीं आना चाहिए। 5 क्योंकि
आप सब रौशनी और दिन के फ़रज़ंद हैं। हमारा
रात या तारीकी से कोई वास्ता नहीं। 6 ग़रज़ आएँ,
हम दूसरों की मानिंद न हों जो सोए हुए हैं बल्कि
जागते रहें, होशमंद रहें। 7 क्योंकि रात के वक़्त ही
लोग सो जाते हैं, रात के वक़्त ही लोग नशे में धुत
हो जाते हैं। 8 लेकिन चूँकि हम दिन के हैं इसलिए
आएँ हम होश में रहें। लाज़िम है कि हम ईमान
और मुहब्बत को ज़िरा-बकतर के तौर पर और
नजात की उम्मीद को ख़ोद के तौर पर पहन लें।
9 क्योंकि अल्लाह ने हमें इसलिए नहीं चुना कि
हम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे बल्कि इसलिए
कि हम अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से
नजात पाएँ। 10 उसने हमारी ख़ातिर अपनी जान
दे दी ताकि हम उसके साथ जिएँ, ख़ाह हम उस
की आमद के दिन मुरदा हों या ज़िंदा। 11 इसलिए
एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई और तामीर करते
रहें, जैसा कि आप कर भी रहे हैं।

आख़िरी हिदायात और सलाम

12 भाइयो, हमारी दरख़ास्त है कि आप उनकी
क़दर करें जो आपके दरमियान सख़्त मेहनत
करके ख़ुदावंद में आपकी राहनुमाई और हिदायत
करते हैं। 13 उनकी ख़िदमत को सामने रखकर
प्यार से उनकी बड़ी इज़्ज़त करें। और एक दूसरे
के साथ मेल-मिलाप से ज़िंदगी गुज़ारें।

14 भाइयो, हम इस पर ज़ोर देना चाहते हैं कि
उन्हें समझाएँ जो बेक़ायदा ज़िंदगी गुज़ारते हैं,
उन्हें तसल्ली दें जो जल्दी से मायूस हो जाते
हैं, कमज़ोरों का ख़याल रखें और सबको सब्र से
बरदाश्त करें। 15 इस पर ध्यान दें कि कोई किसी
से बुराई के बदले बुराई न करे बल्कि आप हर
वक़्त एक दूसरे और तमाम लोगों के साथ नेक
काम करने में लगे रहें।

16 हर वक़्त ख़ुश रहें, 17 बिलानाग़ा दुआ करें,
18 और हर हालत में ख़ुदा का शुक्र करें। क्योंकि जब आप मसीह में हैं तो अल्लाह यही कुछ आपसे चाहता है।

19 रूहुल-क़ुद्स को मत बुझाएँ। 20 नबुव्वतों की तहक़ीर न करें। 21 सब कुछ परखकर वह थामे रखें जो अच्छा है, 22 और हर क़िस्म की बुराई से बाज़ रहें।

23 अल्लाह ख़ुद जो सलामती का ख़ुदा है आपको पूरे तौर पर मख़सूसो-मुक़द्दस करे। वह करे कि आप पूरे तौर पर रूह, जान और बदन समेत उस वक़्त तक महफ़ूज़ और बेइलज़ाम रहें जब तक हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह वापस नहीं आ जाता। 24 जो आपको बुलाता है वह वफ़ादार है और वह ऐसा करेगा भी।

25 भाइयो, हमारे लिए दुआ करें।

26 तमाम भाइयों को हमारी तरफ़ से बोसा देना।

27 ख़ुदावंद के हुज़ूर मैं आपको ताकीद करता हूँ कि यह ख़त तमाम भाइयों के सामने पढ़ा जाए।

28 हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

थिस्सलुनीकियों के नाम

पौलुस रसूल का दूसरा ख़त

1 यह ख़त पौलुस, सिलवानुस और
तीमुथियुस की तरफ़ से है।
हम थिस्सलुनीकियों की जमात को लिख रहे
हैं, उन्हें जो अल्लाह हमारे बाप और ख़ुदावंद ईसा
मसीह पर ईमान लाए हैं।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शें।

मसीह की आमद पर अदालत

3 भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आपके
लिए ख़ुदा का शुक्र करें। हाँ, यह मौज़ूँ है, क्योंकि
आपका ईमान हैरतअंगेज़ तरक़्क़ी कर रहा है
और आप सबकी एक दूसरे से मुहब्बत बढ़ रही
है। 4 यही वजह है कि हम अल्लाह की दीगर
जमातों में आप पर फ़ख़र करते हैं। हाँ, हम
फ़ख़र करते हैं कि आप इन दिनों में कितनी
साबितक़दमी और ईमान दिखा रहे हैं हालाँकि
आप बहुत ईज़ारसानियाँ और मुसीबतें बरदाश्त
कर रहे हैं।
5 यह सब कुछ साबित करता है कि अल्लाह
की अदालत रास्त है, और नतीजे में आप उस की
बादशाही के लायक़ ठहरेंगे, जिसके लिए आप
अब दुख उठा रहे हैं। 6 अल्लाह वही कुछ करेगा
जो रास्त है। वह उन्हें मुसीबतों में डाल देगा जो
आपको मुसीबत में डाल रहे हैं, 7 और आपको जो
मुसीबत में हैं हमारे समेत आराम देगा। वह यह
उस वक़्त करेगा जब ख़ुदावंद ईसा अपने क़वी
फ़रिश्तों के साथ आसमान पर से आकर ज़ाहिर
होगा 8 और भड़कती हुई आग में उन्हें सज़ा देगा
जो न अल्लाह को जानते हैं, न हमारे ख़ुदावंद
ईसा की ख़ुशख़बरी के ताबे हैं। 9 ऐसे लोग अबदी
हलाकत की सज़ा पाएँगे, वह हमेशा तक ख़ुदावंद
की हुज़ूरी और उस की जलाली क़ुदरत से दूर हो
जाएंगे। 10 लेकिन उस दिन ख़ुदावंद इसलिए भी
आएगा कि अपने मुक़द्दसीन में जलाल पाए और
तमाम ईमानदारों में हैरत का बाइस हो। आप भी
उनमें शामिल होंगे, क्योंकि आप उस पर ईमान
लाए जिसकी गवाही हमने आपको दी।
11 यह पेशे-नज़र रखकर हम लगातार आपके
लिए दुआ करते हैं। हमारा ख़ुदा आपको उस
बुलावे के लायक़ ठहराए जिसके लिए आपको
बुलाया गया है। और वह अपनी क़ुदरत से आपकी
नेकी करने की हर ख़ाहिश और आपके ईमान
का हर काम तकमील तक पहुँचाए। 12 क्योंकि
इस तरह ही हमारे ख़ुदावंद ईसा का नाम आपमें
जलाल पाएगा और आप भी उसमें जलाल पाएँगे,
उस फ़ज़ल के मुताबिक़ जो हमारे ख़ुदा और
ख़ुदावंद ईसा मसीह ने आपको दिया है।

बेदीनी का आदमी

2 भाइयो, यह सवाल उठा है कि हमारे
ख़ुदावंद ईसा मसीह की आमद कैसी
होगी? हम किस तरह उसके साथ जमा हो
जाएंगे? इस नाते से हमारी आपसे दरख़ास्त
है 2 कि जब लोग कहते हैं कि ख़ुदावंद का दिन
आ चुका है तो आप जल्दी से बेचैन या परेशान
न हो जाएँ। उनकी बात न मानें, चाहे वह यह
दावा भी करें कि उनके पास हमारी तरफ़ से कोई
नबुव्वत, पैग़ाम या ख़त है। 3 कोई भी आपको
किसी भी चाल से फ़रेब न दे, क्योंकि यह दिन उस
वक़्त तक नहीं आएगा जब तक आख़िरी बग़ावत
पेश न आए और “बेदीनी का आदमी” ज़ाहिर
न हो जाए, वह जिसका अंजाम हलाकत होगा।
4 वह हर एक की मुख़ालफ़त करेगा जो ख़ुदा और
माबूद कहलाता है और अपने आपको उन सबसे
बड़ा ठहराएगा। हाँ, वह अल्लाह के घर में बैठकर
एलान करेगा, “मैं अल्लाह हूँ।”

5 क्या आपको याद नहीं कि मैं आपको यह
बताता रहा जब अभी आपके पास था? 6 और
अब आप जानते हैं कि क्या कुछ उसे रोक रहा
है ताकि वह अपने मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर हो
जाए। 7 क्योंकि यह पुरअसरार बेदीनी अब भी
असर कर रही है। लेकिन यह उस वक़्त तक
ज़ाहिर नहीं होगी जब तक वह शख़्स हट न जाए
जो अब तक उसे रोक रहा है। 8 फिर ही “बेदीनी
का आदमी” ज़ाहिर होगा। लेकिन जब ख़ुदावंद
ईसा आएगा तो वह उसे अपने मुँह की फूँक से
मार डालेगा, ज़ाहिर होने पर ही वह उसे हलाक
कर देगा। 9 “बेदीनी के आदमी” में इबलीस काम
करेगा। जब वह आएगा तो हर क़िस्म की ताक़त
का इज़हार करेगा। वह झूटे निशान और मोजिज़े
पेश करेगा। 10 यों वह उन्हें हर तरह के शरीर
फ़रेब में फँसाएगा जो हलाक होनेवाले हैं। लोग
इसलिए हलाक हो जाएंगे कि उन्होंने सच्चाई से
मुहब्बत करने से इनकार किया, वरना वह बच
जाते। 11 इस वजह से अल्लाह उन्हें बुरी तरह से
फ़रेब में फँसने देता है ताकि वह इस झूट पर ईमान
लाएँ। 12 नतीजे में सब जो सच्चाई पर ईमान न
लाए बल्कि नारास्ती से लुत्फ़अंदोज़ हुए मुजरिम
ठहरेंगे।

आपको नजात के लिए चुन लिया गया है

13 मेरे भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त
आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करें जिन्हें ख़ुदावंद
प्यार करता है। क्योंकि अल्लाह ने आपको शुरू
ही से नजात पाने के लिए चुन लिया, ऐसी
नजात के लिए जो रूहुल-क़ुद्स से पाकीज़गी
पाकर सच्चाई पर ईमान लाने से हासिल होती है।
14 अल्लाह ने आपको उस वक़्त यह नजात पाने
के लिए बुला लिया जब हमने आपको उस की
ख़ुशख़बरी सुनाई। और अब आप हमारे ख़ुदावंद
ईसा मसीह के जलाल में शरीक हो सकते हैं।
15 भाइयो, इसलिए साबितक़दम रहें और उन
रिवायात को थामे रखें जो हमने आपको सिखाई
हैं, ख़ाह ज़बानी या ख़त के ज़रीए।

16 हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह ख़ुद और ख़ुदा
हमारा बाप जिसने हमसे मुहब्बत रखी और अपने
फ़ज़ल से हमें अबदी तसल्ली और ठोस उम्मीद
बख़्शी 17 आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करे और यों
मज़बूत करे कि आप हमेशा वह कुछ बोलें और
करें जो अच्छा है।

हमारे लिए दुआ करना

3 भाइयो, एक आख़िरी बात, हमारे लिए
दुआ करें कि ख़ुदावंद का पैग़ाम जल्दी से
फैल जाए और इज़्ज़त पाए, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह आपके दरमियान हुआ। 2 इसके लिए
भी दुआ करें कि अल्लाह हमें ग़लत और शरीर
लोगों से बचाए रखे, क्योंकि सब तो ईमान नहीं
रखते।

3 लेकिन ख़ुदावंद वफ़ादार है, और वही आपको
मज़बूत करके इबलीस से महफ़ूज़ रखेगा। 4 हम
ख़ुदावंद में आप पर एतमाद रखते हैं कि आप वह

कुछ कर रहे हैं बल्कि करते रहेंगे जो हमने आपको
करने को कहा था।
5 ख़ुदावंद आपके दिलों को अल्लाह की
मुहब्बत और मसीह की साबितक़दमी की तरफ़
मायल करता रहे।

काम करने का फ़र्ज़

6 भाइयो, अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम
में हम आपको हुक्म देते हैं कि हर उस भाई
से किनारा करें जो बेक़ायदा चलता और जो
हमसे पाई हुई रिवायत के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं
गुज़ारता। 7 आप ख़ुद जानते हैं कि आपको किस
तरह हमारे नमूने पर चलना चाहिए। जब हम
आपके पास थे तो हमारी ज़िंदगी में बेतरतीबी
नहीं पाई जाती थी। 8 हमने किसी का खाना भी
पैसे दिए बग़ैर न खाया, बल्कि दिन-रात सख़्त
मेहनत-मशक़्क़त करते रहे ताकि आपमें से किसी
के लिए बोझ न बनें। 9 बात यह नहीं कि हमें
आपसे मुआवज़ा मिलने का हक़ नहीं था। नहीं,
हमने ऐसा किया ताकि हम आपके लिए अच्छा
नमूना बनें और आप इस नमूने पर चलें। 10 जब
हम अभी आपके पास थे तो हमने आपको हुक्म
दिया, "जो काम नहीं करना चाहता वह खाना भी
न खाए।"

11 अब हमें यह ख़बर मिली है कि आपमें से
बाज़ बेक़ायदा ज़िंदगी गुज़ारते हैं। वह काम नहीं
करते बल्कि दूसरों के कामों में ख़ाहमख़ाह दख़ल
देते हैं। 12 ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम में हम ऐसे
लोगों को हुक्म देते और समझाते हैं कि आराम
से काम करके अपनी रोज़ी कमाएँ।
13 भाइयो, आप भलाई करने से कभी हिम्मत
न हारें। 14 अगर कोई इस ख़त में दर्ज हमारी
हिदायत पर अमल न करे तो उससे ताल्लुक़ न
रखना ताकि उसे शर्म आए। 15 लेकिन उसे दुश्मन
मत समझना बल्कि उसे भाई जानकर समझाना।

आख़िरी अलफ़ाज़

16 ख़ुदावंद ख़ुद जो सलामती का सरचश्मा
है आपको हर वक़्त और हर तरह से सलामती
बख़्शे। ख़ुदावंद आप सबके साथ हो।
17 मैं, पौलुस अपने हाथ से यह लिख रहा हूँ।
मेरी तरफ़ से सलाम। मैं इसी तरीक़े से अपने हर
ख़त पर दस्तख़त करता और इसी तरह लिखता
हूँ।
18 हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आप
सबके साथ रहे।

तीमुथियुस के नाम
पौलुस रसूल का पहला ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो हमारे नजातदहिंदा अल्लाह और हमारी उम्मीद मसीह ईसा के हुक्म पर मसीह ईसा का रसूल है।
2 मैं तीमुथियुस को लिख रहा हूँ जो ईमान में मेरा सच्चा बेटा है।

ख़ुदा बाप और हमारा ख़ुदावंद मसीह ईसा आपको फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करें।

ग़लत तालीम से ख़बरदार

3 मैंने आपको मकिदुनिया जाते वक़्त नसीहत की थी कि इफ़िसुस में रहें ताकि आप वहाँ के कुछ लोगों को ग़लत तालीम देने से रोकें। 4 उन्हें फ़रज़ी कहानियों और ख़त्म न होनेवाले नसबनामे के पीछे न लगने दें। इनसे महज़ बहस-मुबाहसा पैदा होता है और अल्लाह का नजातबख़्श मनसूबा पूरा नहीं होता। क्योंकि यह मनसूबा सिर्फ़ ईमान से तकमील तक पहुँचता है। 5 मेरी इस हिदायत का मक़सद यह है कि मुहब्बत उभर आए, ऐसी मुहब्बत जो ख़ालिस दिल, साफ़ ज़मीर और बेरिया ईमान से पैदा होती है। 6 कुछ लोग इन चीज़ों से भटककर बेमानी बातों में गुम हो गए हैं। 7 यह शरीअत के उस्ताद बनना चाहते हैं, लेकिन उन्हें उन बातों की समझ नहीं आती जो वह कर रहे हैं और जिन पर वह इतने एतमाद से इसरार कर रहे हैं।

8 लेकिन हम तो जानते हैं कि शरीअत अच्छी है बशर्तेकि इसे सहीह तौर पर इस्तेमाल किया जाए। 9 और याद रहे कि यह रास्तबाज़ों के लिए नहीं दी गई। क्योंकि यह उनके लिए है जो बग़ैर शरीअत के और सरकश ज़िंदगी गुज़ारते हैं, जो बेदीन और गुनाहगार हैं, जो मुक़द्दस और रूहानी बातों से ख़ाली हैं, जो अपने माँ-बाप के क़ातिल हैं, जो ख़ूनी, 10 ज़िनाकार, हमजिंसपरस्त और ग़ुलामों के ताजिर हैं, जो झूट बोलते, झूटी क़सम खाते और मज़ीद बहुत कुछ करते हैं जो सेहतबख़्श तालीम के ख़िलाफ़ है। 11 और सेहतबख़्श तालीम क्या है? वह जो मुबारक ख़ुदा की उस जलाली ख़ुशख़बरी में पाई जाती है जो मेरे सुपुर्द की गई है।

अल्लाह के रहम के लिए शुक्रगुज़ारी

12 मैं अपने ख़ुदावंद मसीह ईसा का शुक्र करता हूँ जिसने मेरी तक़वियत की है। मैं उसका शुक्र करता हूँ कि उसने मुझे वफ़ादार समझकर ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किया। 13 गो मैं पहले कुफ़र बकनेवाला और गुस्ताख़ आदमी था, जो लोगों को ईज़ा देता था, लेकिन अल्लाह ने मुझ पर रहम किया। क्योंकि उस वक़्त मैं ईमान नहीं लाया था और इसलिए नहीं जानता था कि क्या कर रहा हूँ। 14 हाँ, हमारे ख़ुदावंद ने मुझ पर

अपना फ़ज़ल कसरत से उंडेल दिया और मुझे
वह ईमान और मुहब्बत अता की जो हमें मसीह
ईसा में होते हुए मिलती है। 15 हम इस क़ाबिले-
क़बूल बात पर पूरा भरोसा रख सकते हैं कि
मसीह ईसा गुनाहगारों को नजात देने के लिए
इस दुनिया में आया। उनमें से मैं सबसे बड़ा
गुनाहगार हूँ, 16 लेकिन यही वजह है कि अल्लाह
ने मुझ पर रहम किया। क्योंकि वह चाहता था
कि मसीह ईसा मुझमें जो अव्वल गुनाहगार हूँ
अपना वसी सब्र ज़ाहिर करे और मैं यों उनके लिए
नमूना बन जाऊँ जो उस पर ईमान लाकर अबदी
ज़िंदगी पानेवाले हैं। 17 हाँ, हमारे अज़ली-ओ-
अबदी शहनशाह की हमेशा तक इज़्ज़तो-जलाल
हो! वही लाफ़ानी, अनदेखा और वाहिद ख़ुदा है।
आमीन।

18 तीमुथियुस मेरे बेटे, मैं आपको यह हिदायत
उन पेशगोइयों के मुताबिक़ देता हूँ जो पहले
आपके बारे में की गई थीं। क्योंकि मैं चाहता हूँ
कि आप इनकी पैरवी करके अच्छी तरह लड़ सकें
19 और ईमान और साफ़ ज़मीर के साथ ज़िंदगी
गुज़ार सकें। क्योंकि बाज़ ने यह बातें रद्द कर दी हैं
और नतीजे में उनके ईमान का बेड़ा ग़रक़ हो गया।
20 हुमिनयुस और सिकंदर भी इनमें शामिल हैं।
अब मैंने इन्हें इबलीस के हवाले कर दिया है ताकि
वह कुफ़्र बकने से बाज़ आना सीखें।

जमात की परस्तिश

2 पहले मैं इस पर ज़ोर देना चाहता
हूँ कि आप सबके लिए दरख़ास्तें,
दुआएँ, सिफारिशें और शुक्रगुज़ारियाँ पेश करें,
2 बादशाहों और इख़्तियारवालों के लिए भी
ताकि हम आराम और सुकून से ख़ुदातरस और
शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ार सकें। 3 यह अच्छा और
हमारे नजातदहिंदा अल्लाह को पसंदीदा है। 4 हाँ,
वह चाहता है कि तमाम इनसान नजात पाकर
सच्चाई को जान लें। 5 क्योंकि एक ही ख़ुदा
है और अल्लाह और इनसान के बीच में एक
ही दरमियानी है यानी मसीह ईसा, वह इनसान
6 जिसने अपने आपको फ़िद्या के तौर पर सबके
लिए दे दिया ताकि वह मख़लसी पाएँ। यों उसने
मुक़र्ररा वक़्त पर गवाही दी 7 और यह गवाही
सुनाने के लिए मुझे मुनाद, रसूल और ग़ैरयहूदियों
का उस्ताद मुक़र्रर किया ताकि उन्हें ईमान और
सच्चाई का पैग़ाम सुनाऊँ। मैं झूट नहीं बोल रहा
बल्कि सच कह रहा हूँ।

8 अब मैं चाहता हूँ कि हर मक़ामी जमात
के मर्द मुक़द्दस हाथ उठाकर दुआ करें। वह
ग़ुस्से या बहस-मुबाहसा की हालत में ऐसा न
करें। 9 इसी तरह मैं चाहता हूँ कि ख़वातीन
मुनासिब कपड़े पहनकर शराफ़त और शायस्तगी
से अपने आपको आरास्ता करें। वह गुँधे हुए बाल,
सोना, मोती या हद से ज़्यादा महँगे कपड़ों से
अपने आपको आरास्ता न करें 10 बल्कि नेक
कामों से। क्योंकि यही ऐसी ख़वातीन के लिए
मुनासिब है जो ख़ुदातरस होने का दावा करती
हैं। 11 ख़ातून ख़ामोशी से और पूरी फ़रमाँबरदारी
के साथ सीखे। 12 मैं ख़वातीन को तालीम देने
या आदमियों पर हुकूमत करने की इजाज़त नहीं
देता। वह ख़ामोश रहें। 13 क्योंकि पहले आदम
को तश्कील दिया गया, फिर हव्वा को। 14 और
आदम ने इबलीस से धोका न खाया बल्कि
हव्वा ने, जिसका नतीजा गुनाह था। 15 लेकिन
ख़वातीन बच्चे जन्म देने से नजात पाएँगी। शर्त
यह है कि वह समझ के साथ ईमान, मुहब्बत और
मुक़द्दस हालत में ज़िंदगी गुज़ारती रहें।

ख़ुदा की जमात के निगरान

3 यह बात यक़ीनी है कि जो जमात का
निगरान बनना चाहता है वह एक अच्छी
ज़िम्मेदारी की आरज़ू रखता है। 2 लाज़िम है कि
निगरान बेइलज़ाम हो। उस की एक ही बीवी
हो। वह होशमंद, समझदार,[a] शरीफ़, मेहमान-

[a]यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्ते-नफ़स का उनसुर भी पाया जाता है।

नवाज़ और तालीम देने के क़ाबिल हो। 3 वह
शराबी न हो, न लड़ाका बल्कि नरमदिल और
अमनपसंद। वह पैसों का लालच करनेवाला न
हो। 4 लाज़िम है कि वह अपने ख़ानदान को अच्छी
तरह सँभाल सके और कि उसके बच्चे शराफ़त
के साथ उस की बात मानें। 5 क्योंकि अगर वह
अपना ख़ानदान न सँभाल सके तो वह किस तरह
अल्लाह की जमात की देख-भाल कर सकेगा?
6 वह नौमुरीद न हो वरना ख़तरा है कि वह फूलकर
इबलीस के जाल में उलझ जाए और यों उस की
अदालत की जाए। 7 लाज़िम है कि जमात से
बाहर के लोग उस की अच्छी गवाही दे सकें, ऐसा
न हो कि वह बदनाम होकर इबलीस के फंदे में
फँस जाए।

जमात के मददगार

8 इसी तरह जमात के मददगार भी शरीफ़ हों।
वह रियाकार न हों, न हद से ज़्यादा मै पिएँ। वह
लालची भी न हों। 9 लाज़िम है कि वह साफ़
ज़मीर रखकर ईमान की पुरअसरार सच्चाइयाँ
महफ़ूज़ रखें। 10 यह भी ज़रूरी है कि उन्हें पहले
परखा जाए। अगर वह इसके बाद बेइलज़ाम
निकलें तो फिर वह ख़िदमत करें। 11 उनकी
बीवियाँ भी शरीफ़ हों। वह बुहतान लगानेवाली
न हों बल्कि होशमंद और हर बात में वफ़ादार।
12 मददगार की एक ही बीवी हो। लाज़िम है कि
वह अपने बच्चों और ख़ानदान को अच्छी तरह
सँभाल सके। 13 जो मददगार अच्छी तरह अपनी
ख़िदमत सँभालते हैं उनकी हैसियत बढ़ जाएगी
और मसीह ईसा पर उनका ईमान इतना पुख़्ता हो
जाएगा कि वह बड़े एतमाद के साथ ज़िंदगी गुज़ार
सकेंगे।

एक अज़ीम भेद

14 अगरचे मैं जल्द आपके पास आने की
उम्मीद रखता हूँ तो भी आपको यह ख़त लिख
रहा हूँ। 15 लेकिन अगर देर भी लगे तो यह पढ़कर
आपको मालूम होगा कि अल्लाह के घराने में
हमारा बरताव कैसा होना चाहिए। अल्लाह का
घराना क्या है? ज़िंदा ख़ुदा की जमात, जो
सच्चाई का सतून और बुनियाद है। 16 यक़ीनन
हमारे ईमान का भेद अज़ीम है।

वह जिस्म में ज़ाहिर हुआ,
रूह में रास्तबाज़ ठहरा
और फ़रिश्तों को दिखाई दिया।
उस की ग़ैरयहूदियों में मुनादी की गई,
उस पर दुनिया में ईमान लाया गया
और उसे आसमान के जलाल में
उठा लिया गया।

झूटे उस्ताद

4 रूहुल-क़ुद्स साफ़ फ़रमाता है कि आख़िरी
दिनों में कुछ ईमान से हटकर फ़रेबदेह रूहों
और शैतानी तालीमात की पैरवी करेंगे। 2 ऐसी
तालीमात झूट बोलनेवालों की रियाकार बातों से
आती हैं, जिनके ज़मीर पर इबलीस ने अपना
निशान लगाकर ज़ाहिर कर दिया है कि यह उसके
अपने हैं। 3 यह शादी करने की इजाज़त नहीं देते
और लोगों को कहते हैं कि वह मुख़्तलिफ़ खाने
की चीज़ों से परहेज़ करें। लेकिन अल्लाह ने यह
चीज़ें इसलिए बनाई हैं कि जो ईमान रखते हैं और
सच्चाई से वाक़िफ़ हैं इन्हें शुक्रगुज़ारी के साथ
खाएँ। 4 जो कुछ भी अल्लाह ने ख़लक़ किया है
वह अच्छा है, और हमें उसे रद्द नहीं करना चाहिए
बल्कि ख़ुदा का शुक्र करके उसे खा लेना चाहिए।
5 क्योंकि उसे अल्लाह के कलाम और दुआ से
मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया है।

मसीह ईसा का अच्छा ख़ादिम

6 अगर आप भाइयों को यह तालीम दें तो
आप मसीह ईसा के अच्छे ख़ादिम होंगे। फिर
यह साबित हो जाएगा कि आपको ईमान और
उस अच्छी तालीम की सच्चाइयों में तरबियत दी
गई है जिसकी पैरवी आप करते रहे हैं। 7 लेकिन
दादी-अम्माँ की इन बेमानी फ़रज़ी कहानियों से
बाज़ रहें। इनकी बजाए ऐसी तरबियत हासिल

करें जिससे आपकी रूहानी ज़िंदगी मज़बूत हो
जाए। 8 क्योंकि जिस्म की तरबियत का थोड़ा ही
फ़ायदा है, लेकिन रूहानी तरबियत हर लिहाज़
से मुफ़ीद है, इसलिए कि अगर हम इस क़िस्म
की तरबियत हासिल करें तो हमसे हाल और
मुस्तक़बिल में ज़िंदगी पाने का वादा किया गया
है। 9 यह बात क़ाबिले-एतमाद है और इसे पूरे तौर
पर क़बूल करना चाहिए। 10 यही वजह है कि हम
मेहनत-मशक़्क़त और जाँफ़िशानी करते रहते हैं,
क्योंकि हमने अपनी उम्मीद ज़िंदा ख़ुदा पर रखी है
जो तमाम इनसानों का नजातदहिंदा है, ख़ासकर
ईमान रखनेवालों का।

11 लोगों को यह हिदायात दें और सिखाएँ।
12 कोई भी आपको इसलिए हक़ीर न जाने कि
आप जवान हैं। लेकिन ज़रूरी है कि आप कलाम
में, चाल-चलन में, मुहब्बत में, ईमान में और
पाकीज़गी में ईमानदारों के लिए नमूना बन जाएँ।
13 जब तक मैं नहीं आता इस पर ख़ास ध्यान दें
कि जमात में बाक़ायदगी से कलाम की तिलावत
की जाए, लोगों को नसीहत की जाए और
उन्हें तालीम दी जाए। 14 अपनी उस नेमत को
नज़रंदाज़ न करें जो आपको उस वक़्त पेशगोई
के ज़रीए मिली जब बुज़ुर्गों ने आप पर अपने
हाथ रखे। 15 इन बातों को फ़रोग़ दें और इनके
पीछे लगे रहें ताकि आपकी तरक़्क़ी सबको नज़र
आए। 16 अपना और तालीम का ख़ास ख़याल
रखें। इनमें साबितक़दम रहें, क्योंकि ऐसा करने
से आप अपने आपको और अपने सुननेवालों को
बचा लेंगे।

ईमानदारों से सुलूक

5 बुज़ुर्ग भाइयों को सख़्ती से न डाँटना
बल्कि उन्हें यों समझाना जिस तरह कि
वह आपके बाप हों। इसी तरह जवान आदमियों
को यों समझाना जैसे वह आपके भाई हों, 2 बुज़ुर्ग
बहनों को यों जैसे वह आपकी माएँ हों और जवान
ख़वातीन को तमाम पाकीज़गी के साथ यों जैसे
वह आपकी बहनें हों।

3 उन बेवाओं की मदद करके उनकी इज़्ज़त करें
जो वाक़ई ज़रूरतमंद हैं। 4 अगर किसी बेवा के
बच्चे या पोते-नवासे हों तो उस की मदद करना
उन्हीं का फ़र्ज़ है। हाँ, वह सीखें कि ख़ुदातरस
होने का पहला फ़र्ज़ यह है कि हम अपने घरवालों
की फ़िकर करें और यों अपने माँ-बाप, दादा-दादी
और नाना-नानी को वह कुछ वापस करें जो हमें
उनसे मिला है, क्योंकि ऐसा अमल अल्लाह को
पसंद है। 5 जो औरत वाक़ई ज़रूरतमंद बेवा और
तनहा रह गई है वह अपनी उम्मीद अल्लाह पर
रखकर दिन-रात अपनी इल्तिजाओं और दुआओं
में लगी रहती है। 6 लेकिन जो बेवा ऐशो-इशरत में
ज़िंदगी गुज़ारती है वह ज़िंदा हालत में ही मुरदा है।
7 यह हिदायात लोगों तक पहुँचाएँ ताकि उन पर
इलज़ाम न लगाया जा सके। 8 क्योंकि अगर कोई
अपनों और ख़ासकर अपने घरवालों की फ़िकर न
करे तो उसने अपने ईमान का इनकार कर दिया।
ऐसा शख़्स ग़ैरईमानदारों से बदतर है।

9 जिस बेवा की उम्र 60 साल से कम है उसे
बेवाओं की फ़हरिस्त में दर्ज न किया जाए। शर्त
यह भी है कि जब उसका शौहर ज़िंदा था तो वह
उस की वफ़ादार रही हो 10 और कि लोग उसके
नेक कामों की अच्छी गवाही दे सकें, मसलन क्या
उसने अपने बच्चों को अच्छी तरह पाला है? क्या
उसने मेहमान-नवाज़ी की और मुक़द्दसीन के पाँव
धोकर उनकी ख़िदमत की है? क्या वह मुसीबत
में फँसे हुओं की मदद करती रही है? क्या वह हर
नेक काम के लिए कोशाँ रही है?

11 लेकिन जवान बेवाएँ इस फ़हरिस्त में
शामिल मत करना, क्योंकि जब उनकी जिस्मानी
ख़ाहिशात उन पर ग़ालिब आती हैं तो वह मसीह
से दूर होकर शादी करना चाहती हैं। 12 यों वह
अपना पहला ईमान छोड़कर मुजरिम ठहरती हैं।
13 इसके अलावा वह सुस्त होने और इधर-उधर
घरों में फिरने की आदी बन जाती हैं। न सिर्फ़ यह
बल्कि वह बातूनी भी बन जाती हैं और दूसरों के
मामलात में दख़ल देकर नामुनासिब बातें करती
हैं। 14 इसलिए मैं चाहता हूँ कि जवान बेवाएँ

दुबारा शादी करके बच्चों को जन्म दें और अपने
घरों को सँभालें। फिर वह दुश्मन को बदगोई करने
का मौक़ा नहीं देंगी। 15 क्योंकि बाज़ तो सहीह
राह से हटकर इबलीस के पीछे लग चुकी हैं।
16 लेकिन जिस ईमानदार औरत के ख़ानदान में
बेवाएँ हैं उसका फ़र्ज़ है कि वह उनकी मदद करे
ताकि वह ख़ुदा की जमात के लिए बोझ न बनें।
वरना जमात उन बेवाओं की सहीह मदद नहीं कर
सकेगी जो वाक़ई ज़रूरतमंद हैं।

17 जो बुज़ुर्ग जमात को अच्छी तरह सँभालते
हैं उन्हें दुगनी इज़्ज़त के लायक़ समझा जाए[a] मैं
ख़ासकर उनकी बात कर रहा हूँ जो पाक कलाम
सुनाने और तालीम देने में मेहनत-मशक़्क़त
करते हैं।। 18 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता
है, "जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल
चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।"
यह भी लिखा है, "मज़दूर अपनी मज़दूरी का
हक़दार है।" 19 जब किसी बुज़ुर्ग पर इलज़ाम
लगाया जाए तो यह बात सिर्फ़ इस सूरत में मानें
कि दो या इससे ज़्यादा गवाह इसकी तसदीक़
करें। 20 लेकिन जिन्होंने वाक़ई गुनाह किया हो
उन्हें पूरी जमात के सामने समझाएँ ताकि दूसरे
ऐसी हरकतें करने से डर जाएँ।

21 अल्लाह और मसीह ईसा और उसके चुनीदा
फ़रिश्तों के सामने मैं संजीदगी से ताकीद करता
हूँ कि इन हिदायात की यों पैरवी करें कि आप
किसी मामले से सहीह तौर पर वाक़िफ़ होने से
पेशतर फ़ैसला न करें, न जानिबदारी का शिकार
हो जाएँ। 22 जल्दी से किसी पर हाथ रखकर उसे
किसी ख़िदमत के लिए मख़सूस मत करना, न
दूसरों के गुनाहों में शरीक होना। अपने आपको
पाक रखें।

23 चूँकि आप अकसर बीमार रहते हैं इसलिए
अपने मेदे का लिहाज़ करके न सिर्फ़ पानी ही
पिया करें बल्कि साथ साथ कुछ मै भी इस्तेमाल
करें।

24 कुछ लोगों के गुनाह साफ़ साफ़ नज़र आते
हैं, और वह उनसे पहले ही अदालत के तख़्त
के सामने आ पहुँचते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी
हैं जिनके गुनाह गोया उनके पीछे चलकर बाद
में ज़ाहिर होते हैं। 25 इसी तरह कुछ लोगों के
अच्छे काम साफ़ नज़र आते हैं जबकि बाज़ के
अच्छे काम अभी नज़र नहीं आते। लेकिन यह भी
पोशीदा नहीं रहेंगे बल्कि किसी वक़्त ज़ाहिर हो
जाएंगे।

6 जो भी ग़ुलामी के जुए में हैं वह अपने
मालिकों को पूरी इज़्ज़त के लायक़ समझें
ताकि लोग अल्लाह के नाम और हमारी तालीम
पर कुफ़्र न बकें। 2 जब मालिक ईमान लाते हैं
तो ग़ुलामों को उनकी इसलिए कम इज़्ज़त नहीं
करना चाहिए कि वह अब मसीह में भाई हैं। बल्कि
वह उनकी और ज़्यादा ख़िदमत करें, क्योंकि अब
जो उनकी अच्छी ख़िदमत से फ़ायदा उठा रहे हैं
वह ईमानदार और अज़ीज़ हैं।

ग़लत तालीम और हक़ीक़ी दौलत

लाज़िम है कि आप लोगों को इन बातों की
तालीम दें और इसमें उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई करें।
3 जो भी इससे फ़रक़ तालीम देकर हमारे ख़ुदावंद
ईसा मसीह के सेहतबख़्श अलफ़ाज़ और इस
ख़ुदातरस ज़िंदगी की तालीम से वाबस्ता नहीं
रहता 4 वह ख़ुदपसंदी से फूला हुआ है और
कुछ नहीं समझता। ऐसा शख़्स बहस-मुबाहसा
करने और ख़ाली बातों पर झगड़ने में ग़ैरसेहतमंद
दिलचस्पी लेता है। नतीजे में हसद, झगड़े, कुफ़्र
और बदगुमानी पैदा होती है। 5 यह लोग आपस में
झगड़ने की वजह से हमेशा कुढ़ते रहते हैं। उनके
ज़हन बिगड़ गए हैं और सच्चाई उनसे छीन ली
गई है। हाँ, यह समझते हैं कि ख़ुदातरस ज़िंदगी
गुज़ारने से माली नफ़ा हासिल किया जा सकता
है।

[a] यहाँ मतलब है कि उनकी इज़्ज़त ख़ासकर माली लिहाज़
से की जाए।

6 ख़ुदातरस ज़िंदगी वाक़ई बहुत नफ़ा का
बाइस है, लेकिन शर्त यह है कि इनसान को जो
कुछ भी मिल जाए वह उस पर इकतिफ़ा करे।
7 हम दुनिया में अपने साथ क्या लाए? कुछ नहीं!
तो हम दुनिया से निकलते वक़्त क्या कुछ साथ
ले जा सकेंगे? कुछ भी नहीं! 8 चुनाँचे अगर
हमारे पास ख़ुराक और लिबास हो तो यह हमारे
लिए काफ़ी होना चाहिए। 9 जो अमीर बनने के
ख़ाहाँ रहते हैं वह कई तरह की आज़माइशों और
फंदों में फँस जाते हैं। बहुत-सी नासमझ और
नुक़सानदेह ख़ाहिशात उन्हें हलाकत और तबाही
में ग़रक़ हो जाने देती हैं। 10 क्योंकि पैसों का
लालच हर ग़लत काम का सरचश्मा है। कई लोगों
ने इसी लालच के बाइस ईमान से भटककर अपने
आपको बहुत अज़ियत पहुँचाई है।

शख़्सी हिदायात

11 लेकिन आप जो अल्लाह के बंदे हैं इन
चीज़ों से भागते रहें। इनकी बजाए रास्तबाज़ी,
ख़ुदातरसी, ईमान, मुहब्बत, साबितक़दमी और
नरमदिली के पीछे लगे रहें। 12 ईमान की अच्छी
कुश्ती लड़ें। अबदी ज़िंदगी से ख़ूब लिपट जाएँ,
क्योंकि अल्लाह ने आपको यही ज़िंदगी पाने के
लिए बुलाया, और आपने अपनी तरफ़ से बहुत-
से गवाहों के सामने इस बात का इक़रार भी
किया। 13 मेरे दो गवाह हैं, अल्लाह जो सब कुछ
ज़िंदा रखता है और मसीह ईसा जिसने पुंतियुस
पीलातुस के सामने अपने ईमान की अच्छी गवाही
दी। इन्हीं के सामने मैं आपको कहता हूँ कि
14 यह हुक्म यों पूरा करें कि आप पर न दाग़
लगे, न इलज़ाम। और इस हुक्म पर उस दिन
तक अमल करते रहें जब तक हमारा ख़ुदावंद ईसा
मसीह ज़ाहिर नहीं हो जाता। 15 क्योंकि अल्लाह
मसीह को मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर करेगा। हाँ,
जो मुबारक और वाहिद हुक्मरान, बादशाहों का
बादशाह और मालिकों का मालिक है वह उसे
मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर करेगा। 16 सिर्फ़ वही
लाफ़ानी है, वही ऐसी रौशनी में रहता है जिसके
क़रीब कोई नहीं आ सकता। न किसी इनसान ने
उसे कभी देखा, न वह उसे देख सकता है। उस
की इज़्ज़त और क़ुदरत अबद तक रहे। आमीन।

17 जो मौजूदा दुनिया में अमीर हैं उन्हें समझाएँ
कि वह मग़रूर न हों, न दौलत जैसी ग़ैरयक़ीनी
चीज़ पर उम्मीद रखें। इसकी बजाए वह अल्लाह
पर उम्मीद रखें जो हमें फ़ैयाज़ी से सब कुछ मुहैया
करता है ताकि हम उससे लुत्फ़अंदोज़ हो जाएँ।
18 यह पेशे-नज़र रखकर अमीर नेक काम करें
और भलाई करने में ही अमीर हों। वह ख़ुशी से
दूसरों को देने और अपनी दौलत में शरीक करने
के लिए तैयार हों। 19 यों वह अपने लिए एक
अच्छा ख़ज़ाना जमा करेंगे यानी आनेवाले जहान
के लिए एक ठोस बुनियाद जिस पर खड़े होकर
वह हक़ीक़ी ज़िंदगी पा सकेंगे।

20 तीमुथियुस बेटे, जो कुछ आपके हवाले
किया गया है उसे महफ़ूज़ रखें। दुनियावी बकवास
और उन मुतज़ाद ख़यालात से कतराते रहें जिन्हें
ग़लती से इल्म का नाम दिया गया है। 21 कुछ तो
इस इल्म के माहिर होने का दावा करके ईमान की
सहीह राह से हट गए हैं।

अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

तीमुथियुस के नाम
पौलुस रसूल का दूसरा ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह
की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है ताकि
उस वादा की हुई ज़िंदगी का पैग़ाम सुनाए जो हमें
मसीह ईसा में हासिल होती है।
2 मैं अपने प्यारे बेटे तीमुथियुस को लिख रहा
हूँ।

ख़ुदा बाप और हमारा ख़ुदावंद मसीह ईसा
आपको फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करें।

शुक्रगुज़ारी और हौसलाअफ़्ज़ाई

3 मैं आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करता हूँ
जिसकी ख़िदमत मैं अपने बापदादा की तरह साफ़
ज़मीर से करता हूँ। दिन-रात मैं लगातार आपको
अपनी दुआओं में याद रखता हूँ। 4 मुझे आपके
आँसू याद आते हैं, और मैं आपसे मिलने का
आरज़ूमंद हूँ ताकि ख़ुशी से भर जाऊँ। 5 मुझे
ख़ासकर आपका मुख़लिस ईमान याद है जो
पहले आपकी नानी लूइस और माँ यूनीके रखती
थीं। और मुझे यक़ीन है कि आप भी यही ईमान
रखते हैं। 6 यही वजह है कि मैं आपको एक बात
याद दिलाता हूँ। अल्लाह ने आपको उस वक़्त
एक नेमत से नवाज़ा जब मैंने आप पर हाथ
रखे। आपको उस नेमत की आग को नए सिरे
से भड़काने की ज़रूरत है। 7 क्योंकि जिस रूह से
अल्लाह ने हमें नवाज़ा है वह हमें बुज़दिल नहीं
बनाता बल्कि हमें क़ुव्वत, मुहब्बत और नज़मो-
ज़ब्त दिलाता है।
8 इसलिए हमारे ख़ुदावंद के बारे में गवाही देने
से न शर्माएँ, न मुझसे जो मसीह की ख़ातिर क़ैदी
हूँ। इसके बजाए मेरे साथ अल्लाह की क़ुव्वत से
मदद लेकर उस की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर दुख
उठाएँ। 9 क्योंकि उसने हमें नजात देकर मुक़द्दस
ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुलाया। और यह चीज़ें
हमें अपनी मेहनत से नहीं मिलीं बल्कि अल्लाह
के इरादे और फ़ज़ल से। यह फ़ज़ल ज़मानों
की इब्तिदा से पहले हमें मसीह में दिया गया
10 लेकिन अब हमारे नजातदहिंदा मसीह ईसा की
आमद से ज़ाहिर हुआ। मसीह ही ने मौत को नेस्त
कर दिया। उसी ने अपनी ख़ुशख़बरी के ज़रीए
लाफ़ानी ज़िंदगी रौशनी में लाकर हम पर ज़ाहिर
कर दी है।
11 अल्लाह ने मुझे यही ख़ुशख़बरी सुनाने के
लिए मुनाद, रसूल और उस्ताद मुक़र्रर किया है।
12 इसी वजह से मैं दुख उठा रहा हूँ। तो भी मैं
शर्माता नहीं, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ जिस पर
में ईमान लाया हूँ, और मुझे पूरा यक़ीन है कि जो
कुछ मैंने उसके हवाले कर दिया है उसे वह अपनी
आमद के दिन तक महफ़ूज़ रखने के क़ाबिल है।
13 उन सेहतबख़्श बातों के मुताबिक़ चलते रहें
जो आपने मुझसे सुन ली हैं, और यों ईमान और

मुहब्बत के साथ मसीह ईसा में ज़िंदगी गुज़ारें।
14 जो बेशक़ीमत चीज़ आपके हवाले कर दी गई
है उसे रूहुल-क़ुद्स की मदद से जो हममें सुकूनत
करता है महफ़ूज़ रखें।

15 आपको मालूम है कि सूबा आसिया में
तमाम लोगों ने मुझे तर्क कर दिया है। इनमें
फ़ूगिलुस और हिरमुगिनेस भी शामिल हैं।
16 ख़ुदावंद उनेसिफ़ुरुस के घराने पर रहम करे,
क्योंकि उसने कई दफ़ा मुझे तरो-ताज़ा किया।
हाँ, वह इससे कभी न शर्माया कि मैं क़ैदी
हूँ। 17 बल्कि जब वह रोम शहर पहुँचा तो बड़ी
कोशिशों से मेरा खोज लगाकर मुझे मिला।
18 ख़ुदावंद करे कि वह क़ियामत के दिन ख़ुदावंद
से रहम पाए। आप ख़ुद बेहतर जानते हैं कि उसने
इफ़िसुस में कितनी ख़िदमत की।

मसीह ईसा का वफ़ादार सिपाही

2 लेकिन आप, मेरे बेटे, उस फ़ज़्ल से
तक़वियत पाएँ जो आपको मसीह ईसा में
मिल गया है। 2 जो कुछ आपने बहुत गवाहों की
मौजूदगी में मुझसे सुना है उसे मोतबर लोगों के
सुपुर्द करें। यह ऐसे लोग हों जो औरों को सिखाने
के क़ाबिल हों।

3 मसीह ईसा के अच्छे सिपाही की तरह हमारे
साथ दुख उठाते रहें। 4 जिस सिपाही की ड्यूटी है
वह आम रिआया के मामलात में फँसने से बाज़
रहता है, क्योंकि वह अपने अफ़सर को पसंद
आना चाहता है। 5 इसी तरह खेल के मुक़ाबले
में हिस्सा लेनेवाले को सिर्फ़ इस सूरत में इनाम
मिल सकता है कि वह क़वायद के मुताबिक़ ही
मुक़ाबला करे। 6 और लाज़िम है कि फ़सल की
कटाई के वक़्त पहले उसको फ़सल का हिस्सा
मिले जिसने खेत में मेहनत की है। 7 उस पर ध्यान
देना जो मैं आपको बता रहा हूँ, क्योंकि ख़ुदावंद
आपको इन तमाम बातों की समझ अता करेगा।

8 मसीह ईसा को याद रखें, जो दाऊद की
औलाद में से है और जिसे मुरदों में से ज़िंदा
कर दिया गया। यही मेरी ख़ुशख़बरी है 9 जिसकी
ख़ातिर मैं दुख उठा रहा हूँ, यहाँ तक कि मुझे
आम मुजरिम की तरह ज़ंजीरों से बाँधा गया है।
लेकिन अल्लाह का कलाम ज़ंजीरों से बाँधा नहीं
जा सकता। 10 इसलिए मैं सब कुछ अल्लाह के
चुने हुए लोगों की ख़ातिर बरदाश्त करता हूँ ताकि
वह भी नजात पाएँ—वह नजात जो मसीह ईसा
से मिलती है और जो अबदी जलाल का बाइस
बनती है। 11 यह क़ौल क़ाबिले-एतमाद है,

अगर हम उसके साथ मर गए
तो हम उसके साथ जिएँगे भी।
12 अगर हम बरदाश्त करते रहें
तो हम उसके साथ हुकूमत भी करेंगे।
अगर हम उसे जानने से इनकार करें
तो वह भी हमें जानने से इनकार करेगा।
13 अगर हम बेवफ़ा निकलें
तो भी वह वफ़ादार रहेगा।
क्योंकि वह अपना इनकार
नहीं कर सकता।

क़ाबिले-क़बूल ख़िदमतगुज़ार

14 लोगों को इन बातों की याद दिलाते रहें
और उन्हें संजीदगी से अल्लाह के हुज़ूर समझाएँ
कि वह बाल की खाल उतारकर एक दूसरे से
न झगड़ें। यह बेफ़ायदा है बल्कि सुननेवालों को
बिगाड़ देता है। 15 अपने आपको अल्लाह के
सामने यों पेश करने की पूरी कोशिश करें कि
आप मक़बूल साबित हों, कि आप ऐसा मज़दूर
निकलें जिसे अपने काम से शर्माने की ज़रूरत न
हो बल्कि जो सहीह तौर पर अल्लाह का सच्चा
कलाम पेश करे। 16 दुनियावी बकवास से बाज़
रहें। क्योंकि जितना यह लोग इसमें फँस जाएंगे
उतना ही बेदीनी का असर बढ़ेगा 17 और उनकी
तालीम कैंसर की तरह फैल जाएगी। इन लोगों
में हुमिनयुस और फ़िलेतुस भी शामिल हैं 18 जो
सच्चाई से हट गए हैं। यह दावा करते हैं कि
मुरदों के जी उठने का अमल हो चुका है और यों
बाज़ एक का ईमान तबाह हो गया है। 19 लेकिन
अल्लाह की ठोस बुनियाद क़ायम रहती है और

उस पर इन दो बातों की मुहर लगी है, “ख़ुदावंद
ने अपने लोगों को जान लिया है” और “जो भी
समझे कि मैं ख़ुदावंद का पैरोकार हूँ वह नारास्ती
से बाज़ रहे।”
20 बड़े घरों में न सिर्फ़ सोने और चाँदी के
बरतन होते हैं बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी।
यानी कुछ शरीफ़ कामों के लिए इस्तेमाल होते हैं
और कुछ कमक़दर कामों के लिए। 21 अगर कोई
अपने आपको इन बुरी चीज़ों से पाक-साफ़ करे
तो वह शरीफ़ कामों के लिए इस्तेमाल होनेवाला
बरतन होगा। वह मख़सूसो-मुक़द्दस, मालिक के
लिए मुफ़ीद और हर नेक काम के लिए तैयार
होगा। 22 जवानी की बुरी ख़ाहिशात से भागकर
रास्तबाज़ी, ईमान, मुहब्बत और सुलह-सलामती
के पीछे लगे रहें। और यह उनके साथ मिलकर करें
जो ख़ुलूसदिली से ख़ुदावंद की परस्तिश करते हैं।
23 हमाक़त और जहालत की बहसों से किनारा
करें। आप तो जानते हैं कि इनसे सिर्फ़ झगड़े
पैदा होते हैं। 24 लाज़िम है कि ख़ुदावंद का ख़ादिम
न झगड़े बल्कि हर एक से मेहरबानी का सुलूक
करे। वह तालीम देने के क़ाबिल हो और सब्र
से ग़लत सुलूक बरदाश्त करे। 25 जो मुख़ालफ़त
करते हैं उन्हें वह नरमदिली से तरबियत दे, क्योंकि
हो सकता है कि अल्लाह उन्हें तौबा करने की
तौफ़ीक़ दे और वह सच्चाई को जान लें, 26 होश
में आएँ और इबलीस के फंदे से बच निकलें।
क्योंकि इबलीस ने उन्हें क़ैद कर लिया है ताकि
वह उस की मरज़ी पूरी करें।

आख़िरी दिन

3 लेकिन यह बात जान लें कि आख़िरी
दिनों में हौलनाक लमहे आएँगे। 2 लोग
ख़ुदपसंद और पैसों के लालची होंगे। वह
शेख़ीबाज़, मग़रूर, कुफ़र बकनेवाले, माँ-बाप
के नाफ़रमान, नाशुकरे, बेदीन 3 और मुहब्बत
से ख़ाली होंगे। वह सुलह करने के लिए तैयार
नहीं होंगे, दूसरों पर तोहमत लगाएँगे, ऐयाश
और वहशी होंगे और भलाई से नफ़रत रखेंगे।
4 वह नमकहराम, ग़ैरमुहतात और ग़ुरूर से फूले
हुए होंगे। अल्लाह से मुहब्बत रखने के बजाए
उन्हें ऐशो-इशरत प्यारी होगी। 5 वह बज़ाहिर
ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारेंगे, लेकिन हक़ीक़ी
ख़ुदातरस ज़िंदगी की क़ुव्वत का इनकार करेंगे।
ऐसों से किनारा करें। 6 उनमें से कुछ लोग घरों
में घुसकर कमज़ोर ख़वातीन को अपने जाल में
फँसा लेते हैं, ऐसी ख़वातीन को जो अपने गुनाहों
तले दबी हुई हैं और जिन्हें कई तरह की शहवतें
चलाती हैं। 7 गो यह हर वक़्त तालीम हासिल
करती रहती हैं तो भी सच्चाई को जानने तक
कभी नहीं पहुँच सकतीं। 8 जिस तरह यन्नेस और
यंबरेस मूसा की मुख़ालफ़त करते थे उसी तरह
यह लोग भी सच्चाई की मुख़ालफ़त करते हैं।
इनका ज़हन बिगड़ा हुआ है और इनका ईमान
नामक़बूल निकला। 9 लेकिन यह ज़्यादा तरक़्क़ी
नहीं करेंगे क्योंकि इनकी हमाक़त सब पर ज़ाहिर
हो जाएगी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह यन्नेस
और यंबरेस के साथ भी हुआ।

आख़िरी हिदायात

10 लेकिन आप हर लिहाज़ से मेरे शागिर्द
रहे हैं, चाल-चलन में, इरादे में, ईमान में,
सब्र में, मुहब्बत में, साबितक़दमी में, 11 ईज़ा-
रसानियों में और दुखों में। अंताकिया, इकु-
नियुम और लुस्तरा में मेरे साथ क्या कुछ न
हुआ! वहाँ मुझे कितनी सख़्त ईज़ारसानियों
का सामना करना पड़ा। लेकिन ख़ुदावंद ने मुझे
इन सबसे रिहाई दी। 12 बात यह है कि सब जो
मसीह ईसा में ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारना चाहते
हैं उन्हें सताया जाएगा। 13 साथ साथ शरीर और
धोकेबाज़ लोग अपने ग़लत कामों में तरक़्क़ी
करते जाएंगे। वह दूसरों को ग़लत राह पर ले
जाएंगे और उन्हें ख़ुद भी ग़लत राह पर लाया
जाएगा। 14 लेकिन आप ख़ुद उस पर क़ायम रहें
जो आपने सीख लिया और जिस पर आपको
यक़ीन आया है। क्योंकि आप अपने उस्तादों
को जानते हैं 15 और आप बचपन से मुक़द्दस

सहीफ़ों से वाक़िफ़ हैं। अल्लाह का यह कलाम
आपको वह हिकमत अता कर सकता है जो
मसीह ईसा पर ईमान लाने से नजात तक पहुँचाती
है। 16 क्योंकि हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से
वुजूद में आया है और तालीम देने, मलामत करने,
इसलाह करने और रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने
की तरबियत देने के लिए मुफ़ीद है। 17 कलामे-
मुक़द्दस का मक़सद यही है कि अल्लाह का बंदा
हर लिहाज़ से क़ाबिल और हर नेक काम के लिए
तैयार हो।

4 मैं अल्लाह और मसीह ईसा के सामने जो
ज़िंदों और मुरदों की अदालत करेगा और
उस की आमद और बादशाही की याद दिलाकर
संजीदगी से इसकी ताकीद करता हूँ, 2 कि वक़्त
बेवक़्त कलामे-मुक़द्दस की मुनादी करने के लिए
तैयार रहें। बड़े सब्र से ईमानदारों को तालीम
देकर उन्हें समझाएँ, मलामत करें और उनकी
हौसलाअफ़्ज़ाई भी करें। 3 क्योंकि एक वक़्त
आएगा जब लोग सेहतबख़्श तालीम बरदाश्त नहीं
करेंगे बल्कि अपने पास अपनी बुरी ख़ाहिशात से
मुताबिक़त रखनेवाले उस्तादों का ढेर लगा लेंगे।
यह उस्ताद उन्हें सिर्फ़ दिल बहलानेवाली बातें
सुनाएँगे, सिर्फ़ वह कुछ जो वह सुनना चाहते हैं।
4 वह सच्चाई को सुनने से बाज़ आकर फ़रज़ी
कहानियों के पीछे पड़ जाएंगे। 5 लेकिन आप ख़ुद
हर हालत में होश में रहें। दुख को बरदाश्त करें,
अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते रहें और अपनी
ख़िदमत के तमाम फ़रायज़ अदा करें।

6 जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, वह वक़्त आ चुका
है कि मुझे मै की नज़र की तरह क़ुरबानगाह पर
उंडेला जाए। मेरे कूच का वक़्त आ गया है। 7 मैंने
अच्छी कुश्ती लड़ी है, मैं दौड़ के इख़्तिताम तक
पहुँच गया हूँ, मैंने ईमान को महफ़ूज़ रखा है।
8 और अब एक इनाम तैयार पड़ा है, रास्तबाज़ी
का वह ताज जो ख़ुदावंद हमारा रास्त मुंसिफ़ मुझे
अपनी आमद के दिन देगा। और न सिर्फ़ मुझे
बल्कि उन सबको जो उस की आमद के आरज़ूमंद
रहे हैं।

कुछ शख़्सी बातें

9 मेरे पास आने में जल्दी करें। 10 क्योंकि
देमास ने इस दुनिया को प्यार करके मुझे छोड़
दिया है। वह थिस्सलुनीके चला गया। क्रेसकेंस
गलतिया और तितुस दल्मतिया चले गए हैं।
11 सिर्फ़ लूक़ा मेरे पास है। मरक़ुस को अपने साथ
ले आना, क्योंकि वह ख़िदमत के लिए मुफ़ीद
साबित होगा। 12 तुख़िकुस को मैंने इफ़िसुस भेज
दिया है। 13 आते वक़्त मेरा वह कोट अपने साथ
ले आएँ जो मैं त्रोआस में करपुस के पास छोड़
आया था। मेरी किताबें भी ले आएँ, ख़ासकर
चरमी काग़ज़वाली।

14 सिकंदर लोहार ने मुझे बहुत नुक़सान
पहुँचाया है। ख़ुदावंद उसे उसके काम का बदला
देगा। 15 उससे मुहतात रहें क्योंकि उसने बड़ी
शिद्दत से हमारी बातों की मुख़ालफ़त की।

16 जब मुझे पहली दफ़ा अपने दिफ़ा के लिए
अदालत में पेश किया गया तो सबने मुझे तर्क कर
दिया। अल्लाह उनसे इस बात का हिसाब न ले
बल्कि इसे नज़रंदाज़ कर दे। 17 लेकिन ख़ुदावंद
मेरे साथ था। उसी ने मुझे तक़वियत दी, क्योंकि
उस की मरज़ी थी कि मेरे वसीले से उसका पूरा
पैग़ाम सुनाया जाए और तमाम ग़ैरयहूदी उसे सुनें।
यों अल्लाह ने मुझे शेरबबर के मुँह से निकालकर
बचा लिया। 18 और आगे भी ख़ुदावंद मुझे हर
शरीर हमले से बचाएगा और अपनी आसमानी
बादशाही में लाकर नजात देगा। उसका जलाल
अज़ल से अबद तक होता रहे। आमीन।

आख़िरी सलाम

19 प्रिसकिल्ला, अकविला और उनेसि-
फ़ुरुस के घराने को हमारा सलाम कहना।
20 इरास्तुस कुरिंथुस में रहा, और मुझे त्रुफ़िमुस
को मीलेतुस में छोड़ना पड़ा, क्योंकि वह बीमार
था। 21 जल्दी करें ताकि सर्दियों के मौसम से
पहले यहाँ पहुँचें।

यूबूलुस, पूदेंस, लीनुस, क्लौदिया और तमाम
भाई आपको सलाम कहते हैं।

22 ख़ुदावंद आपकी रूह के साथ हो। अल्लाह
का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

तितुस के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह
का ख़ादिम और ईसा मसीह का रसूल है।
मुझे चुनकर भेजा गया ताकि मैं ईमान लाने
और ख़ुदातरस ज़िंदगी की सच्चाई जान लेने
में अल्लाह के चुने हुए लोगों की मदद करूँ।
2 क्योंकि उससे उन्हें अबदी ज़िंदगी की उम्मीद
दिलाई जाती है, ऐसी ज़िंदगी की जिसका वादा
अल्लाह ने दुनिया के ज़मानों से पेशतर ही किया
था। और वह झूट नहीं बोलता। 3 अपने मुक़र्ररा
वक़्त पर अल्लाह ने अपने कलाम का एलान
करके उसे ज़ाहिर कर दिया। यही एलान मेरे
सुपुर्द किया गया है और मैं इसे हमारे नजातदहिंदा
अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ सुनाता हूँ।
4 मैं तितुस को लिख रहा हूँ जो हमारे मुश्तरका
ईमान के मुताबिक़ मेरा हक़ीक़ी बेटा है।
ख़ुदा बाप और हमारा नजातदहिंदा मसीह ईसा
आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

क्रेते में तितुस की ख़िदमत

5 मैंने आपको क्रेते में इसलिए छोड़ा था कि
आप वह कमियाँ दुरुस्त करें जो अब तक रह
गई थीं। यह भी एक मक़सद था कि आप हर
शहर की जमात में बुज़ुर्ग मुक़र्रर करें, जिस तरह
मैंने आपको कहा था। 6 बुज़ुर्ग बेइलज़ाम हो। उस
की सिर्फ़ एक बीवी हो। उसके बच्चे ईमानदार
हों और लोग उन पर ऐयाश या सरकश होने
का इलज़ाम न लगा सकें। 7 निगरान को तो
अल्लाह का घराना सँभालने की ज़िम्मेदारी दी
गई है, इसलिए लाज़िम है कि वह बेइलज़ाम
हो। वह ख़ुदसर, ग़ुसीला, शराबी, लड़ाका या
लालची न हो। 8 इसके बजाए वह मेहमान-नवाज़
हो और सब अच्छी चीज़ों से प्यार करनेवाला
हो। वह समझदार, रास्तबाज़ और मुक़द्दस हो।
वह अपने आप पर क़ाबू रख सके। 9 वह उस
कलाम के साथ लिपटा रहे जो क़ाबिले-एतमाद
और हमारी तालीम के मुताबिक़ है। क्योंकि
इस तरह ही वह सेहतबख़्श तालीम देकर दूसरों
की हौसलाअफ़्ज़ाई कर सकेगा और मुख़ालफ़त
करनेवालों को समझा भी सकेगा।
10 बात यह है कि बहुत-से ऐसे लोग हैं जो
सरकश हैं, जो फ़ज़ूल बातें करके दूसरों को धोका
देते हैं। यह बात ख़ासकर उन पर सादिक़ आती है
जो यहूदियों में से हैं। 11 लाज़िम है कि उन्हें चुप
करा दिया जाए, क्योंकि यह लालच में आकर कई
लोगों के पूरे घर अपनी ग़लत तालीम से ख़राब
कर रहे हैं। 12 उनके अपने एक नबी ने कहा है,
“क्रेते के बाशिंदे हमेशा झूट बोलनेवाले, वहशी
जानवर और सुस्त पेटू होते हैं।” 13 उस की यह
गवाही दुरुस्त है। इस वजह से लाज़िम है कि
आप उन्हें सख़्ती से समझाएँ ताकि उनका ईमान

सेहतमंद रहे 14 और वह यहूदी फ़रज़ी कहानियों या उन इनसानों के अहकाम पर ध्यान न दें जो सच्चाई से हट गए हैं। 15 जो लोग पाक-साफ़ हैं उनके लिए सब कुछ पाक है। लेकिन जो नापाक और ईमान से ख़ाली हैं उनके लिए कुछ भी पाक नहीं होता बल्कि उनका ज़हन और उनका ज़मीर दोनों नापाक हो गए हैं। 16 यह अल्लाह को जानने का दावा तो करते हैं, लेकिन उनकी हरकतें इस बात का इनकार करती हैं। यह घिनौने, नाफ़रमान और कोई भी अच्छा काम करने के क़ाबिल नहीं हैं।

सेहतबख़्श तालीम

2 लेकिन आप वह कुछ सुनाएँ जो सेहतबख़्श तालीम से मुताबिक़त रखता है। 2 बुज़ुर्ग मर्दों को बता देना कि वह होशमंद, शरीफ़ और समझदार हों। उनका ईमान, मुहब्बत और साबितक़दमी सेहतमंद हों।

3 इसी तरह बुज़ुर्ग ख़वातीन को हिदायत देना कि वह मुक़द्दसीन की-सी ज़िंदगी गुज़ारें। न वह तोहमत लगाएँ न शराब की ग़ुलाम हों। इसके बजाए वह अच्छी तालीम देने के लायक़ हों 4 ताकि वह जवान औरतों को समझदार ज़िंदगी गुज़ारने की तरबियत दे सकें, कि वह अपने शौहरों और बच्चों से मुहब्बत रखें, 5 कि वह समझदार[a] और मुक़द्दस हों, कि वह घर के फ़रायज़ अदा करने में लगी रहें, कि वह नेक हों, कि वह अपने शौहरों के ताबे रहें। अगर वह ऐसी ज़िंदगी गुज़ारें तो वह दूसरों को अल्लाह के कलाम पर कुफ़्र बकने का मौक़ा फ़राहम नहीं करेंगी।

6 इसी तरह जवान आदमियों की हौसला-अफ़्ज़ाई करें कि वह हर लिहाज़ से समझदार ज़िंदगी गुज़ारें। 7 आप ख़ुद नेक काम करने में उनके लिए नमूना बनें। तालीम देते वक़्त आपकी ख़ुलूसदिली, शराफ़त 8 और अलफ़ाज़ की बेइलज़ाम सेहत साफ़ नज़र आए। फिर आपके मुख़ालिफ़ शरमिंदा हो जाएंगे, क्योंकि वह हमारे बारे में कोई बुरी बात नहीं कह सकेंगे।

9 ग़ुलामों को कह देना कि वह हर लिहाज़ से अपने मालिकों के ताबे रहें। वह उन्हें पसंद आएँ, बहस-मुबाहसा किए बग़ैर उनकी बात मानें 10 और उनकी चीज़ें चोरी न करें बल्कि साबित करें कि उन पर हर तरह का एतमाद किया जा सकता है। क्योंकि इस तरीक़े से वह हमारे नजातदहिंदा अल्लाह के बारे में तालीम को हर तरह से दिलकश बना देंगे।

11 क्योंकि अल्लाह का नजातबख़्श फ़ज़्ल तमाम इनसानों पर ज़ाहिर हुआ है। 12 और यह फ़ज़्ल हमें तरबियत देकर इस क़ाबिल बना देता है कि हम बेदीनी और दुनियावी ख़ाहिशात का इनकार करके इस दुनिया में समझदार, रास्तबाज़ और ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ार सकें। 13 साथ साथ यह तरबियत उस मुबारक दिन का इंतज़ार करने में हमारी मदद करती है जिसकी उम्मीद हम रखते हैं और जब हमारे अज़ीम ख़ुदा और नजातदहिंदा ईसा मसीह का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा। 14 क्योंकि मसीह ने हमारे लिए अपनी जान दे दी ताकि फ़िद्या देकर हमें हर तरह की बेदीनी से छुड़ाकर अपने लिए एक पाक और मख़सूस क़ौम बनाए जो नेक काम करने में सरगरम हो।

15 इन्हीं बातों की तालीम देकर पूरे इख़्तियार के साथ लोगों को समझाएँ और उनकी इसलाह करें। कोई भी आपको हक़ीर न जाने।

3 उन्हें याद दिलाना कि वह हुक्मरानों और इख़्तियारवालों के ताबे और फ़रमाँबरदार रहें। वह हर नेक काम करने के लिए तैयार रहें, 2 किसी पर तोहमत न लगाएँ, अमनपसंद और नरमदिल हों और तमाम लोगों के साथ नरममिज़ाजी से पेश आएँ। 3 क्योंकि एक वक़्त था जब हम भी नासमझ, नाफ़रमान और सहीह राह से भटके हुए थे। उस वक़्त हम कई तरह की

[a] यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्ते-नफ़स का उनसुर भी पाया जाता है।

शहवतों और ग़लत ख़ाहिशों की ग़ुलामी में थे।
हम बुरे कामों और हसद करने में ज़िंदगी गुज़ारते
थे। दूसरे हमसे नफ़रत करते थे और हम भी उनसे
नफ़रत करते थे। 4 लेकिन जब हमारे नजातदहिंदा
अल्लाह की मेहरबानी और मुहब्बत ज़ाहिर हुई
5 तो उसने हमें बचाया। यह नहीं कि हमने रास्त
काम करने के बाइस नजात हासिल की बल्कि
उसके रहम ही ने हमें रूहुल-क़ुद्स के वसीले से
बचाया जिसने हमें धोकर नए सिरे से जन्म दिया
और नई ज़िंदगी अता की। 6 अल्लाह ने अपने इस
रूह को बड़ी फ़ैयाज़ी से हमारे नजातदहिंदा ईसा
मसीह के वसीले से हम पर उंडेल दिया 7 ताकि
हमें उसके फ़ज़ल से रास्तबाज़ क़रार दिया जाए
और हम उस अबदी ज़िंदगी के वारिस बन जाएँ
जिसकी उम्मीद हम रखते हैं। 8 इस बात पर पूरा
एतमाद किया जा सकता है।

मैं चाहता हूँ कि आप इन बातों पर ख़ास ज़ोर
दें ताकि जो अल्लाह पर ईमान लाए हैं वह ध्यान
से नेक काम करने में लगे रहें। यह बातें सबके
लिए अच्छी और मुफ़ीद हैं। 9 लेकिन बेहूदा बहसों,
नसबनामों, झगड़ों और शरीअत के बारे में तनाज़ों
से बाज़ रहें, क्योंकि ऐसा करना बेफ़ायदा और
फ़ज़ूल है। 10 जो शख़्स पार्टीबाज़ है उसे दो बार
समझाएँ। अगर वह इसके बाद भी न माने तो
उसे रिफ़ाक़त से ख़ारिज करें। 11 क्योंकि आपको
पता होगा कि ऐसा शख़्स ग़लत राह पर है और
गुनाह में फँसा हुआ होता है। उसने अपनी हरकतों
से अपने आपको मुजरिम ठहराया है।

आख़िरी हिदायात

12 जब मैं अरतिमास या तुख़िकुस को आपके
पास भेज दूँगा तो मेरे पास आने में जल्दी करें।
मैं नीकुपुलिस शहर में हूँ, क्योंकि मैंने फ़ैसला
कर लिया है कि सर्दियों का मौसम यहाँ गुज़ारूँ।
13 जब ज़ेनास वकील और अपुल्लोस सफ़र
की तैयारियाँ कर रहे हैं तो उनकी मदद करें।
ख़याल रखें कि उनकी हर ज़रूरत पूरी की जाए।
14 लाज़िम है कि हमारे लोग नेक काम करने में
लगे रहना सीखें, ख़ासकर जहाँ बहुत ज़रूरत है,
ऐसा न हो कि आख़िरकार वह बेफल निकलें।
15 सब जो मेरे साथ हैं आपको सलाम कहते हैं।
उन्हें मेरा सलाम देना जो ईमान में हमसे मुहब्बत
रखते हैं।

अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ होता रहे।

फ़िलेमोन के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

1 यह ख़त मसीह ईसा के क़ैदी पौलुस और
तीमुथियुस की तरफ़ से है।
मैं अपने अज़ीज़ दोस्त और हमख़िदमत
फ़िलेमोन को लिख रहा हूँ 2 और साथ
साथ अपनी बहन अफ़िया, अपने हमसिपाह
अरख़िप्पुस और उस जमात को जो आपके घर
में जमा होती है।
3 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

फ़िलेमोन की मुहब्बत और ईमान

4 जब भी मैं दुआ करता हूँ तो आपको याद
करके अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ। 5 क्योंकि
मुझे ख़ुदावंद ईसा के बारे में आपके ईमान और
आपकी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत की ख़बर
मिलती रहती है। 6 मेरी दुआ है कि आपकी जो
रिफ़ाक़त ईमान से पैदा हुई है वह आपमें यों ज़ोर
पकड़े कि आपको बेहतर तौर पर हर उस अच्छी
चीज़ की समझ आए जो हमें मसीह में हासिल है।
7 भाई, आपकी मुहब्बत देखकर मुझे बड़ी ख़ुशी
और तसल्ली हुई है, क्योंकि आपने मुक़द्दसीन के
दिलों को तरो-ताज़ा कर दिया है।

उनेसिमुस की सिफ़ारिश

8 इस वजह से मैं मसीह में इतनी दिलेरी
महसूस करता हूँ कि आपको वह कुछ करने का
हुक्म दूँ जो अब मुनासिब है। 9 तो भी मैं ऐसा नहीं
करना चाहता बल्कि मुहब्बत की बिना पर आपसे
अपील ही करता हूँ। गो मैं पौलुस मसीह ईसा का
एलची बल्कि अब उसका क़ैदी भी हूँ 10 तो भी
मिन्नत करके अपने बेटे उनेसिमुस की सिफ़ारिश
करता हूँ। क्योंकि मेरे क़ैद में होते हुए वह मेरा
बेटा बन गया। 11 पहले तो वह आपके काम नहीं
आ सकता था, लेकिन अब वह आपके लिए और
मेरे लिए काफ़ी मुफ़ीद साबित हुआ है।[a]
12 अब मैं इसको गोया अपनी जान को आपके
पास वापस भेज रहा हूँ। 13 असल में मैं उसे
अपने पास रखना चाहता था ताकि जब तक मैं
ख़ुशख़बरी की ख़ातिर क़ैद में हूँ वह आपकी जगह
मेरी ख़िदमत करे। 14 लेकिन मैं आपकी इजाज़त
के बग़ैर कुछ नहीं करना चाहता था। क्योंकि मैं
चाहता हूँ कि जो भी मेहरबानी आप करेंगे वह
आप मजबूर होकर न करें बल्कि ख़ुशी से।
15 हो सकता है कि उनेसिमुस इसलिए कुछ
देर के लिए आपसे जुदा हो गया कि वह आपको
हमेशा के लिए दुबारा मिल जाए। 16 क्योंकि अब
वह न सिर्फ़ ग़ुलाम है बल्कि ग़ुलाम से कहीं

[a] उनेसिमुस का मतलब कारामद, फ़ायदामंद है।

ज़्यादा। अब वह एक अज़ीज़ भाई है जो मुझे
ख़ास अज़ीज़ है। लेकिन वह आपको कहीं ज़्यादा
अज़ीज़ होगा, ग़ुलाम की हैसियत से भी और
ख़ुदावंद में भाई की हैसियत से भी।

17 ग़रज़, अगर आप मुझे अपना साथी समझें
तो उसे यों ख़ुशआमदीद कहें जैसे मैं ख़ुद
आकर हाज़िर होता। 18 अगर उसने आपको कोई
नुक़सान पहुँचाया या आपका क़र्ज़दार हुआ तो मैं
इसका मुआवज़ा देने के लिए तैयार हूँ। 19 यहाँ
मैं पौलुस अपने ही हाथ से इस बात की तसदीक़
करता हूँ : मैं इसका मुआवज़ा दूँगा अगरचे मुझे
आपको याद दिलाने की ज़रूरत नहीं कि आप
ख़ुद मेरे क़र्ज़दार हैं। क्योंकि मेरा क़र्ज़ जो आप
पर है वह आप ख़ुद हैं। 20 चुनाँचे मेरे भाई, मुझ
पर यह मेहरबानी करें कि मुझे ख़ुदावंद में आपसे
कुछ फ़ायदा मिले। मसीह में मेरी जान को ताज़ा
करें।

21 मैं आपकी फ़रमाँबरदारी पर एतबार करके
आपको यह लिख रहा हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ
कि आप न सिर्फ़ मेरी सुनेंगे बल्कि इससे कहीं
ज़्यादा मेरे लिए करेंगे। 22 एक और गुज़ारिश भी
है, मेरे लिए एक कमरा तैयार करें, क्योंकि मुझे
उम्मीद है कि आपकी दुआओं के जवाब में मुझे
आपको वापस दिया जाएगा।

आख़िरी सलाम

23 इपफ़्रास जो मसीह ईसा में मेरे साथ क़ैदी है
आपको सलाम कहता है। 24 इसी तरह मरक़ुस,
अरिस्तरख़ुस, देमास और लूक़ा भी आपको
सलाम कहते हैं।

25 ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल आप सबके साथ
होता रहे।

इबरानियों के नाम ख़त

अल्लाह का अपने फ़रज़ंद के ज़रीए कलाम

1 माज़ी में अल्लाह मुख़्तलिफ़ मौक़ों
पर और कई तरीक़ों से हमारे बाप-
दादा से हमकलाम हुआ। उस वक़्त उसने यह
नबियों के वसीले से किया 2 लेकिन इन आख़िरी
दिनों में वह अपने फ़रज़ंद के वसीले से हमसे
हमकलाम हुआ, उसी के वसीले से जिसे उसने
सब चीज़ों का वारिस बना दिया और जिसके
वसीले से उसने कायनात को भी ख़लक़ किया।
3 फ़रज़ंद अल्लाह का शानदार जलाल मुनअकिस
करता और उस की ज़ात की ऐन शबीह[a] है। वह
अपने क़वी कलाम से सब कुछ सँभाले रखता है।
जब वह दुनिया में था तो उसने हमारे लिए गुनाहों
से पाक-साफ़ हो जाने का इंतज़ाम क़ायम किया।
इसके बाद वह आसमान पर क़ादिरे-मुतलक़ के
दहने हाथ जा बैठा।

अल्लाह के फ़रज़ंद की अज़मत

4 फ़रज़ंद फ़रिश्तों से कहीं अज़ीम है, इतना
जितना उसका मीरास में पाया हुआ नाम उनके
नामों से अज़ीम है। 5 क्योंकि अल्लाह ने किस
फ़रिश्ते से कभी कहा,

“तू मेरा फ़रज़ंद है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।”

यह भी उसने किसी फ़रिश्ते के बारे में कभी
नहीं कहा,

“मैं उसका बाप हूँगा
और वह मेरा फ़रज़ंद होगा।”

6 और जब अल्लाह अपने पहलौठे फ़रज़ंद को
आसमानी दुनिया में लाता है तो वह फ़रमाता है,

“अल्लाह के तमाम फ़रिश्ते
उस की परस्तिश करें।”

7 फ़रिश्तों के बारे में वह फ़रमाता है,

“वह अपने फ़रिश्तों को हवाएँ
और अपने ख़ादिमों को आग के शोले
बना देता है।”

8 लेकिन फ़रज़ंद के बारे में वह कहता है,

“ऐ ख़ुदा, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक
क़ायमो-दायम रहेगा,
और इनसाफ़ का शाही असा
तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।
9 तूने रास्तबाज़ी से मुहब्बत
और बेदीनी से नफ़रत की,
इसलिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे
ख़ुशी के तेल से मसह करके
तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा
सरफ़राज़ कर दिया।”

10 वह यह भी फ़रमाता है,

“ऐ रब, तूने इब्तिदा में
दुनिया की बुनियाद रखी,
और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।

---
[a] या नक़्श।

11 यह तो तबाह हो जाएंगे,
लेकिन तू क़ायम रहेगा।
यह सब लिबास की तरह घिस-फट जाएंगे
12 और तू इन्हें चादर की तरह लपेटेगा,
पुराने कपड़े की तरह यह बदले जाएंगे।
लेकिन तू वही का वही रहता है,
और तेरी ज़िंदगी कभी ख़त्म नहीं होती।”
13 अल्लाह ने कभी भी अपने किसी फ़-
रिश्ते से यह बात न कही,
“मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।”
14 फिर फ़रिश्ते क्या हैं? वह तो सब
ख़िदमतगुज़ार रूहें हैं जिन्हें अल्लाह उनकी
ख़िदमत करने के लिए भेज देता है जिन्हें मीरास
में नजात पानी है।

नजात की अज़मत

2 इसलिए लाज़िम है कि हम और ज़्यादा
ध्यान से कलामे-मुक़द्दस की उन बातों पर
ग़ौर करें जो हमने सुन ली हैं। ऐसा न हो कि
हम समुंदर पर बेकाबू कश्ती की तरह बेमक़सद
इधर-उधर फिरें। 2 जो कलाम फ़रिश्तों ने इनसान
तक पहुँचाया वह तो अनमिट रहा, और जिससे
भी कोई ख़ता या नाफ़रमानी हुई उसे उस की
मुनासिब सज़ा मिली। 3 तो फिर हम किस तरह
अल्लाह के ग़ज़ब से बच सकेंगे अगर हम मसीह
की इतनी अज़ीम नजात को नज़रंदाज़ करें?
पहले ख़ुदावंद ने ख़ुद इस नजात का एलान किया,
और फिर ऐसे लोगों ने हमारे पास आकर इसकी
तसदीक़ की जिन्होंने उसे सुन लिया था। 4 साथ
साथ अल्लाह ने इस बात की इस तरह तसदीक़
भी की कि उसने अपनी मरज़ी के मुताबिक़
इलाही निशान, मोजिज़े और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के
ज़ोरदार काम दिखाए और रूहुल-क़ुद्स की नेमतें
लोगों में तक़सीम कीं।

मसीह का नजातबख़्श काम

5 अब ऐसा है कि अल्लाह ने मज़कूरा
आनेवाली दुनिया को फ़रिश्तों के ताबे नहीं किया।
6 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में किसी ने कहीं यह
गवाही दी है,
“इनसान कौन है कि तू उसे याद करे
या आदमज़ाद कि तू उसका ख़याल रखे?
7 तूने उसे थोड़ी देर के लिए
फ़रिश्तों से कम कर दिया,
तूने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज
पहनाकर
8 सब कुछ उसके पाँवों के नीचे
कर दिया।”
जब लिखा है कि सब कुछ उसके पाँवों तले
कर दिया गया तो इसका मतलब है कि कोई
चीज़ न रही जो उसके ताबे नहीं है। बेशक हमें
हाल में यह बात नज़र नहीं आती कि सब कुछ
उसके ताबे है, 9 लेकिन हम उसे ज़रूर देखते हैं
जो “थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम” था यानी
ईसा को जिसे उस की मौत तक के दुख की वजह
से “जलाल और इज़्ज़त का ताज” पहनाया गया
है। हाँ, अल्लाह के फ़ज़ल से उसने सबकी ख़ातिर
मौत बरदाश्त की। 10 क्योंकि यही मुनासिब था
कि अल्लाह जिसके लिए और जिसके वसीले से
सब कुछ है यों बहुत-से बेटों को अपने जलाल में
शरीक करे कि वह उनकी नजात के बानी ईसा
को दुख उठाने से कामिलियत तक पहुँचाए।
11 ईसा और वह जिन्हें वह मख़सूसो-मुक़द्दस
कर देता है दोनों का एक ही बाप है। यही वजह है
कि ईसा यह कहने से नहीं शर्माता कि मुक़द्दसीन
मेरे भाई हैं। 12 मसलन वह अल्लाह से कहता है,
“मैं अपने भाइयों के सामने
तेरे नाम का एलान करूँगा,
जमात के दरमियान ही
तेरी मद्हसराई करूँगा।”

13 वह यह भी कहता है, “मैं उस पर भरोसा
रखूँगा।” और फिर “मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे
जो अल्लाह ने मुझे दिए हैं।”
14 अब चूँकि यह बच्चे गोश्त-पोस्त और ख़ून
के इनसान हैं इसलिए ईसा ख़ुद उनकी मानिंद
बन गया और उनकी इनसानी फ़ितरत में शरीक
हुआ। क्योंकि इस तरह ही वह अपनी मौत से मौत
के मालिक इबलीस को तबाह कर सका, 15 और
इस तरह ही वह उन्हें छुड़ा सका जो मौत से डरने
की वजह से ज़िंदगी-भर ग़ुलामी में थे। 16 ज़ाहिर
है कि जिनकी मदद वह करता है वह फ़रिश्ते
नहीं हैं बल्कि इब्राहीम की औलाद। 17 इसलिए
लाज़िम था कि वह हर लिहाज़ से अपने भाइयों
की मानिंद बन जाए। सिर्फ़ इससे उसका यह
मक़सद पूरा हो सका कि वह अल्लाह के हुज़ूर
एक रहीम और वफ़ादार इमामे-आज़म बनकर
लोगों के गुनाहों का कफ़्फ़ारा दे सके। 18 और
अब वह उनकी मदद कर सकता है जो आज़माइश
में उलझे हुए हैं, क्योंकि उस की भी आज़माइश
हुई और उसने ख़ुद दुख उठाया है।

ईसा मूसा से बड़ा है

3 मुक़द्दस भाइयो, जो मेरे साथ अल्लाह के
बुलाए हुए हैं! ईसा पर ग़ौरो-ख़ौज़ करते
रहें जो अल्लाह का पैग़ंबर और इमामे-आज़म है
और जिसका हम इक़रार करते हैं। 2 ईसा अल्लाह
का वफ़ादार रहा जब उसने उसे यह काम करने
के लिए मुक़र्रर किया, बिलकुल उसी तरह जिस
तरह मूसा भी वफ़ादार रहा जब अल्लाह का पूरा
घर उसके सुपुर्द किया गया। 3 अब जो किसी घर
को तामीर करता है उसे घर की निसबत ज़्यादा
इज़्ज़त हासिल होती है। इसी तरह ईसा मूसा की
निसबत ज़्यादा इज़्ज़त के लायक़ है। 4 क्योंकि हर
घर को किसी न किसी ने बनाया होता है, जबकि
अल्लाह ने सब कुछ बनाया है। 5 मूसा तो अल्लाह
के पूरे घर में ख़िदमत करते वक़्त वफ़ादार रहा,
लेकिन मुलाज़िम की हैसियत से ताकि कलामे-
मुक़द्दस की आनेवाली बातों की गवाही देता रहे।
6 मसीह फ़रक़ है। उसे फ़रज़ंद की हैसियत से
अल्लाह के घर पर इख़्तियार है और इसी में वह
वफ़ादार है। हम उसका घर हैं बशर्तेकि हम अपनी
दिलेरी और वह उम्मीद क़ायम रखें जिस पर हम
फ़ख़र करते हैं।

अल्लाह की क़ौम के लिए सुकून

7 चुनाँचे जिस तरह रूहुल-क़ुद्स फ़रमाता है,
“अगर तुम आज
अल्लाह की आवाज़ सुनो
8 तो अपने दिलों को सख़्त न करो
जिस तरह बग़ावत के दिन हुआ,
जब तुम्हारे बापदादा ने
रेगिस्तान में मुझे आज़माया।
9 वहाँ उन्होंने मुझे आज़माया और जाँचा,
हालाँकि उन्होंने चालीस साल के दौरान
मेरे काम देख लिए थे।
10 इसलिए मुझे उस नसल पर ग़ुस्सा आया
और मैं बोला,
‘उनके दिल हमेशा सहीह राह से
हट जाते हैं
और वह मेरी राहें नहीं जानते।’
11 अपने ग़ज़ब में मैंने क़सम खाई,
‘यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता’।”
12 भाइयो, ख़बरदार रहें ताकि आपमें से किसी
का दिल बुराई और कुफ़र से भरकर ज़िंदा ख़ुदा
से बरगश्ता न हो जाए। 13 इसके बजाए जब तक
अल्लाह का यह फ़रमान क़ायम है रोज़ाना एक
दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें ताकि आपमें से
कोई भी गुनाह के फ़रेब में आकर सख़्तदिल न
हो। 14 बात यह है कि हम मसीह के शरीके-कार
बन गए हैं। लेकिन इस शर्त पर कि हम आख़िर
तक वह एतमाद मज़बूती से क़ायम रखें जो हम
आग़ाज़ में रखते थे।
15 मज़कूरा कलाम में लिखा है,
“अगर तुम आज
अल्लाह की आवाज़ सुनो,

तो अपने दिलों को सख़्त न करो
जिस तरह बग़ावत के दिन हुआ।”
16 यह कौन थे जो अल्लाह की आवाज़ सुनकर
बाग़ी हो गए? वह सब जिन्हें मूसा मिसर से
निकालकर बाहर लाया। 17 और यह कौन थे
जिनसे अल्लाह चालीस साल के दौरान नाराज़
रहा? यह वही थे जिन्होंने गुनाह किया और
जो रेगिस्तान में मरकर वहीं पड़े रहे। 18 अल्लाह
ने किनकी बाबत क़सम खाई कि “यह कभी
भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें
सुकून देता”? ज़ाहिर है उनकी बाबत जिन्होंने
नाफ़रमानी की थी। 19 चुनाँचे हम देखते हैं कि
वह ईमान न रखने की वजह से मुल्क में दाख़िल
न हो सके।

4 देखें, अब तक अल्लाह का यह वादा
क़ायम है, और अब तक हम सुकून के
मुल्क में दाख़िल हो सकते हैं। इसलिए आएँ,
हम ख़बरदार रहें। ऐसा न हो कि आपमें से कोई
पीछे रहकर उसमें दाख़िल न होने पाए। 2 क्योंकि
हमें भी उनकी तरह एक ख़ुशख़बरी सुनाई गई।
लेकिन यह पैग़ाम उनके लिए बेफ़ायदा था,
क्योंकि वह उसे सुनकर ईमान न लाए। 3 उनकी
निसबत हम जो ईमान लाए हैं सुकून के इस मुल्क
में दाख़िल हो सकते हैं।

ग़रज़, यह ऐसा ही है जिस तरह अल्लाह ने
फ़रमाया,

“अपने ग़ज़ब में मैंने क़सम खाई,
‘यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता’।”

अब ग़ौर करें कि उसने यह कहा अगरचे
उसका काम दुनिया की तख़लीक़ पर इख़्तिताम
तक पहुँच गया था। 4 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में
सातवें दिन के बारे में लिखा है, “सातवें दिन
अल्लाह का सारा काम तकमील तक पहुँच गया।
इससे फ़ारिग़ होकर उसने आराम किया।” 5 अब
इसका मुक़ाबला मज़कूरा आयत से करें,

“यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।”

6 जिन्होंने पहले अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनी
उन्हें नाफ़रमान होने की वजह से यह सुकून न
मिला। तो भी यह बात क़ायम रही कि कुछ तो
सुकून के इस मुल्क में दाख़िल हो जाएंगे। 7 यह
मद्दे-नज़र रखकर अल्लाह ने एक और दिन मुक़र्रर
किया, मज़कूरा “आज” का दिन। कई सालों के
बाद ही उसने दाऊद की मारिफ़त वह बात की
जिस पर हम ग़ौर कर रहे हैं,

“अगर तुम आज
अल्लाह की आवाज़ सुनो
तो अपने दिलों को सख़्त न करो।”

8 जब यशुअ उन्हें मुल्के-कनान में लाया तब
उसने इसराईलियों को यह सुकून न दिया, वरना
अल्लाह इसके बाद के किसी और दिन का
ज़िक्र न करता। 9 चुनाँचे अल्लाह की क़ौम के
लिए एक ख़ास सुकून बाक़ी रह गया है, ऐसा
सुकून जो अल्लाह के सातवें दिन आराम करने
से मुताबिक़त रखता है। 10 क्योंकि जो भी वह
सुकून पाता है जिसका वादा अल्लाह ने किया
वह अल्लाह की तरह अपने कामों से फ़ारिग़
होकर आराम करेगा। 11 इसलिए आएँ, हम इस
सुकून में दाख़िल होने की पूरी कोशिश करें ताकि
हममें से कोई भी बापदादा के नाफ़रमान नमूने पर
चलकर गुनाह में न गिर जाए।

12 क्योंकि अल्लाह का कलाम ज़िंदा,
मुअस्सिर और हर दोधारी तलवार से ज़्यादा तेज़
है। वह इनसान में से गुज़रकर उस की जान रूह से
और उसके जोड़ों को गूदे से अलग कर लेता है।
वही दिल के ख़यालात और सोच को जाँचकर उन
पर फ़ैसला करने के क़ाबिल है। 13 कोई मख़लूक़
भी अल्लाह की नज़र से नहीं छुप सकती। उस
की आँखों के सामने जिसके जवाबदेह हम होते
हैं सब कुछ अयाँ और बेनिक़ाब है।

ईसा हमारा इमामे-आज़म है

14 ग़रज़ आएँ, हम उस ईमान से लिपटे रहें
जिसका इक़रार हम करते हैं। क्योंकि हमारा ऐसा
अज़ीम इमामे-आज़म है जो आसमानों में से गुज़र

गया यानी ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद। 15 और वह
ऐसा इमामे-आज़म नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों
को देखकर हमदर्दी न दिखाए बल्कि अगरचे वह
बेगुनाह रहा तो भी हमारी तरह उसे हर क़िस्म
की आज़माइश का सामना करना पड़ा। 16 अब
आएँ, हम पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के तख़्त
के सामने हाज़िर हो जाएँ जहाँ फ़ज़ल पाया जाता
है। क्योंकि वहीं हम वह रहम और फ़ज़ल पाएँगे
जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद कर सकता है।

5 अब इनसानों में से चुने गए इमामे-आज़म
को इसलिए मुक़र्रर किया जाता है कि वह
उनकी ख़ातिर अल्लाह की ख़िदमत करे, ताकि
वह गुनाहों के लिए नज़राने और क़ुरबानियाँ पेश
करे। 2 वह जाहिल और आवारा लोगों के साथ
नरम सुलूक रख सकता है, क्योंकि वह ख़ुद कई
तरह की कमज़ोरियों की गिरिफ़्त में होता है।
3 यही वजह है कि उसे न सिर्फ़ क़ौम के गुनाहों के
लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी क़ुरबानियाँ
चढ़ानी पड़ती हैं। 4 और कोई अपनी मरज़ी से
इमामे-आज़म का पुरवक़ार ओहदा नहीं अपना
सकता बल्कि लाज़िम है कि अल्लाह उसे हारून
की तरह बुलाकर मुक़र्रर करे।

5 इसी तरह मसीह ने भी अपनी मरज़ी
से इमामे-आज़म का पुरवक़ार ओहदा नहीं
अपनाया। इसके बजाए अल्लाह ने उससे कहा,

“तू मेरा फ़रज़ंद है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।”
6 कहीं और वह फ़रमाता है,
“तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।”

7 जब ईसा इस दुनिया में था तो उसने ज़ोर ज़ोर
से पुकारकर और आँसू बहा बहाकर उसे दुआएँ
और इल्तिजाएँ पेश कीं[a] जो उसे मौत से बचा
सकता था। और अल्लाह ने उस की सुनी, क्योंकि
वह ख़ुदा का ख़ौफ़ रखता था। 8 वह अल्लाह
का फ़रज़ंद तो था, तो भी उसने दुख उठाने से
फ़रमाँबरदारी सीखी। 9 जब वह कामिलियत तक
पहुँच गया तो वह उन सबकी अबदी नजात का
सरचश्मा बन गया जो उस की सुनते हैं। 10 उस
वक़्त अल्लाह ने उसे इमामे-आज़म भी मुतैयिन
किया, ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।

ईमान तर्क करने की बाबत आगाही

11 इसके बारे में हम मज़ीद बहुत कुछ कह
सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इसकी तशरीह
कर सकते हैं, क्योंकि आप सुनने में सुस्त हैं।
12 असल में इतना वक़्त गुज़र गया है कि अब
आपको ख़ुद उस्ताद होना चाहिए। अफ़सोस कि
ऐसा नहीं है बल्कि आपको इसकी ज़रूरत है कि
कोई आपके पास आकर आपको अल्लाह के
कलाम की बुनियादी सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए।
आप अब तक ठोस खाना नहीं खा सकते बल्कि
आपको दूध की ज़रूरत है। 13 जो दूध ही पी
सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह
रास्तबाज़ी की तालीम से नावाक़िफ़ है। 14 इसके
मुक़ाबले में ठोस खाना बालिग़ों के लिए है
जिन्होंने अपनी बलूग़त के बाइस अपनी रूहानी
बसारत को इतनी तरबियत दी है कि वह भलाई
और बुराई में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

6 इसलिए आएँ, हम मसीह के बारे में
बुनियादी तालीम को छोड़कर बलूग़त की
तरफ़ आगे बढ़ें। क्योंकि ऐसी बातें दोहराने
की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए जिनसे ईमान
की बुनियाद रखी जाती है, मसलन मौत तक
पहुँचानेवाले काम से तौबा, 2 बपतिस्मा क्या है,
किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुरदों के जी
उठने और अबदी सज़ा पाने की तालीम। 3 चुनाँचे
अल्लाह की मरज़ी हुई तो हम यह छोड़कर आगे
बढ़ेंगे।

4 नामुमकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा
तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्होंने अपना ईमान
तर्क कर दिया हो। उन्हें तो एक बार अल्लाह

[a] यानी इमाम की हैसियत से उसने यह दुआएँ और
इल्तिजाएँ क़ुरबानी के तौर पर पेश कीं।

के नूर में लाया गया था, उन्होंने आसमान की
नेमत चख ली थी, वह रूहुल-क़ुद्स में शरीक
हुए, 5 उन्होंने अल्लाह के कलाम की भलाई और
आनेवाले ज़माने की क़ुव्वतों का तजरबा किया
था। 6 और फिर उन्होंने अपना ईमान तर्क कर
दिया! ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा
तक पहुँचाना नामुमकिन है। क्योंकि ऐसा करने से
वह अल्लाह के फ़रज़ंद को दुबारा मसलूब करके
उसे लान-तान का निशाना बना देते हैं।

7 अल्लाह उस ज़मीन को बरकत देता है जो
अपने पर बार बार पड़नेवाली बारिश को जज़्ब
करके ऐसी फ़सल पैदा करती है जो खेतीबाड़ी
करनेवाले के लिए मुफ़ीद हो। 8 लेकिन अगर वह
सिर्फ़ ख़ारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करे तो वह
बेकार है और इस ख़तरे में है कि उस पर लानत
भेजी जाए। अजामे-कार उस पर का सब कुछ
जलाया जाएगा।

9 अज़ीज़ो, गो हम इस तरह की बातें कर रहे
हैं तो भी हमारा एतमाद यह है कि आपको वह
बेहतरीन बरकतें हासिल हैं जो नजात से मिलती
हैं। 10 क्योंकि अल्लाह बेइनसाफ़ नहीं है। वह
आपका काम और वह मुहब्बत नहीं भूलेगा जो
आपने उसका नाम लेकर ज़ाहिर की जब आपने
मुक़द्दसीन की ख़िदमत की बल्कि आज तक कर
रहे हैं। 11 लेकिन हमारी बड़ी ख़ाहिश यह है कि
आपमें से हर एक इसी सरगरमी का इज़हार
आख़िर तक करता रहे ताकि जिन बातों की
उम्मीद आप रखते हैं वह वाक़ई पूरी हो जाएँ।
12 हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि
यह कि आप उनके नमूने पर चलें जो ईमान और
सब्र से वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिसका वादा
अल्लाह ने किया है।

अल्लाह का यक़ीनी वादा

13 जब अल्लाह ने क़सम खाकर इब्राहीम से
वादा किया तो उसने अपनी ही क़सम खाकर यह
वादा किया। क्योंकि कोई और नहीं था जो उससे
बड़ा था जिसकी क़सम वह खा सकता। 14 उस
वक़्त उसने कहा, "मैं ज़रूर तुझे बहुत बरकत
दूँगा, और मैं यक़ीनन तुझे कसरत की औलाद
दूँगा।" 15 इस पर इब्राहीम ने सब्र से इंतज़ार
करके वह कुछ पाया जिसका वादा किया गया
था। 16 क़सम खाते वक़्त लोग उस की क़सम
खाते हैं जो उनसे बड़ा होता है। इस तरह से
क़सम में बयानकरदा बात की तसदीक़ बहस-
मुबाहसा की हर गुंजाइश को ख़त्म कर देती है।
17 अल्लाह ने भी क़सम खाकर अपने वादे की
तसदीक़ की। क्योंकि वह अपने वादे के वारिसों
पर साफ़ ज़ाहिर करना चाहता था कि उसका
इरादा कभी नहीं बदलेगा। 18 ग़रज़, यह दो बातें
क़ायम रही हैं, अल्लाह का वादा और उस की
क़सम। वह इन्हें न तो बदल सकता न इनके बारे
में झूट बोल सकता है। यों हम जिन्होंने उसके
पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली पाकर उस उम्मीद
को मज़बूती से थामे रख सकते हैं जो हमें पेश
की गई है। 19 क्योंकि यह उम्मीद हमारी जान
के लिए मज़बूत लंगर है। और यह आसमानी
बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे में
से गुज़रकर उसमें दाख़िल होती है। 20 वहीं ईसा
हमारे आगे आगे जाकर हमारी ख़ातिर दाख़िल
हुआ है। यों वह मलिके-सिद्क़ की मानिंद हमेशा
के लिए इमामे-आज़म बन गया है।

मलिके-सिद्क़

7 यह मलिके-सिद्क़, सालिम का बाद-
शाह और अल्लाह तआला का इमाम था।
जब इब्राहीम चार बादशाहों को शिकस्त देने के
बाद वापस आ रहा था तो मलिके-सिद्क़ उससे
मिला और उसे बरकत दी। 2 इस पर इब्राहीम ने
उसे तमाम लूट के माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया।
अब मलिके-सिद्क़ का मतलब "रास्तबाज़ी का
बादशाह" है। दूसरे, "सालिम का बादशाह" का
मतलब "सलामती का बादशाह" है। 3 न उसका
बाप या माँ है, न कोई नसबनामा। उस की ज़िंदगी
का न तो आग़ाज़ है, न इख़्तिताम। अल्लाह के
फ़रज़ंद की तरह वह अबद तक इमाम रहता है।

4 ग़ौर करें कि वह कितना अज़ीम था। हमारे बापदादा इब्राहीम ने उसे लूटे हुए माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। **5** अब शरीअत तलब करती है कि लावी की वह औलाद जो इमाम बन जाती है क़ौम यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ हिस्सा ले, हालाँकि उनके भाई इब्राहीम की औलाद हैं। **6** लेकिन मलिके-सिद्क़ लावी की औलाद में से नहीं था। तो भी उसने इब्राहीम से दसवाँ हिस्सा लेकर उसे बरकत दी जिससे अल्लाह ने वादा किया था। **7** इसमें कोई शक नहीं कि कमहैसियत शख़्स को उससे बरकत मिलती है जो ज़्यादा हैसियत का हो। **8** जहाँ लावी इमामों का ताल्लुक़ है फ़ानी इनसान दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन मलिके-सिद्क़ के मामले में यह हिस्सा उसको मिला जिसके बारे में गवाही दी गई है कि वह ज़िंदा रहता है। **9** यह भी कहा जा सकता है कि जब इब्राहीम ने माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया तो लावी ने उसके ज़रीए भी यह हिस्सा दिया, हालाँकि वह ख़ुद दसवाँ हिस्सा लेता है। **10** क्योंकि गो लावी उस वक़्त पैदा नहीं हुआ था तो भी वह एक तरह से इब्राहीम के जिस्म में मौजूद था जब मलिके-सिद्क़ उससे मिला।

11 अगर लावी की कहानत (जिस पर शरीअत मबनी थी) कामिलियत पैदा कर सकती तो फिर एक और क़िस्म के इमाम की क्या ज़रूरत होती, उस की जो हारून जैसा न हो बल्कि मलिके-सिद्क़ जैसा? **12** क्योंकि जब भी कहानत बदल जाती है तो लाज़िम है कि शरीअत में भी तबदीली आए। **13** और हमारा ख़ुदावंद जिसके बारे में यह बयान किया गया है वह एक फ़रक़ क़बीले का फ़रद था। उसके क़बीले के किसी भी फ़रद ने इमाम की ख़िदमत अदा नहीं की। **14** क्योंकि साफ़ मालूम है कि ख़ुदावंद मसीह यहूदाह क़बीले का फ़रद था, और मूसा ने इस क़बीले को इमामों की ख़िदमत में शामिल न किया।

मलिके-सिद्क़ जैसा एक और इमाम

15 मामला मज़ीद साफ़ हो जाता है। एक फ़रक़ इमाम ज़ाहिर हुआ है जो मलिके-सिद्क़ जैसा है। **16** वह लावी के क़बीले का फ़रद होने से इमाम न बना जिस तरह शरीअत तक़ाज़ा करती थी, बल्कि वह लाफ़ानी ज़िंदगी की क़ुव्वत ही से इमाम बन गया। **17** क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है,

“तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।”

18 यों पुराने हुक्म को मनसूख़ कर दिया जाता है, क्योंकि वह कमज़ोर और बेकार था **19** (मूसा की शरीअत तो किसी चीज़ को कामिल नहीं बना सकती थी) और अब एक बेहतर उम्मीद मुहैया की गई है जिससे हम अल्लाह के क़रीब आ जाते हैं।

20 और यह नया निज़ाम अल्लाह की क़सम से क़ायम हुआ। ऐसी कोई क़सम न खाई गई जब दूसरे इमाम बने। **21** लेकिन ईसा एक क़सम के ज़रीए इमाम बन गया जब अल्लाह ने फ़रमाया,

“रब ने क़सम खाई है
और इससे पछताएगा नहीं,
‘तू अबद तक इमाम है’।”

22 इस क़सम की वजह से ईसा एक बेहतर अहद की ज़मानत देता है।

23 एक और फ़रक़, पुराने निज़ाम में बहुत-से इमाम थे, क्योंकि मौत ने हर एक की ख़िदमत महदूद किए रखी। **24** लेकिन चूँकि ईसा अबद तक ज़िंदा है इसलिए उस की कहानत कभी भी ख़त्म नहीं होगी। **25** यों वह उन्हें अबदी नजात दे सकता है जो उसके वसीले से अल्लाह के पास आते हैं, क्योंकि वह अबद तक ज़िंदा है और उनकी शफ़ाअत करता रहता है।

26 हमें ऐसे ही इमामे-आज़म की ज़रूरत थी। हाँ, ऐसा इमाम जो मुक़द्दस, बेक़ुसूर, बेदाग़, गुनाहगारों से अलग और आसमानों से बुलंद हुआ है। **27** उसे दूसरे इमामों की तरह इसकी ज़रूरत

नहीं कि हर रोज़ क़ुरबानियाँ पेश करे, पहले अपने
लिए फिर क़ौम के लिए। बल्कि उसने अपने
आपको पेश करके अपनी इस क़ुरबानी से उनके
गुनाहों को एक बार सदा के लिए मिटा दिया।
28 मूसवी शरीअत ऐसे लोगों को इमामे-आज़म
मुक़र्रर करती है जो कमज़ोर हैं। लेकिन शरीअत
के बाद अल्लाह की क़सम फ़रज़ंद को इमामे-
आज़म मुक़र्रर करती है, और यह फ़रज़ंद अबद
तक कामिल है।

ईसा हमारा इमामे-आज़म

8 जो कुछ हम कह रहे हैं उस की मरकज़ी
बात यह है, हमारा एक ऐसा इमामे-आज़म
है जो आसमान पर जलाली ख़ुदा के तख़्त के
दहने हाथ बैठा है। 2 वहाँ वह मक़दिस में ख़िदमत
करता है, उस हक़ीक़ी मुलाक़ात के ख़ैमे में जिसे
इनसानी हाथों ने खड़ा नहीं किया बल्कि रब ने।

3 हर इमामे-आज़म को नज़राने और
क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए मुक़र्रर किया जाता
है। इसलिए लाज़िम है कि हमारे इमामे-आज़म के
पास भी कुछ हो जो वह पेश कर सके। 4 अगर यह
दुनिया में होता तो इमामे-आज़म न होता, क्योंकि
यहाँ इमाम तो हैं जो शरीअत के मतलूबा नज़राने
पेश करते हैं। 5 जिस मक़दिस में वह ख़िदमत
करते हैं वह उस मक़दिस की सिर्फ़ नक़ली सूरत
और साया है जो आसमान पर है। यही वजह है
कि अल्लाह ने मूसा को मुलाक़ात का ख़ैमा बनाने
से पहले आगाह करके यह कहा, "ग़ौर कर कि
सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए
जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।" 6 लेकिन
जो ख़िदमत ईसा को मिल गई है वह दुनिया के
इमामों की ख़िदमत से कहीं बेहतर है, उतनी
बेहतर जितना वह अहद जिसका दरमियानी ईसा
है पुराने अहद से बेहतर है। क्योंकि यह अहद
बेहतर वादों की बुनियाद पर बाँधा गया।

7 अगर पहला अहद बेइलज़ाम होता तो फिर
नए अहद की ज़रूरत न होती। 8 लेकिन अल्लाह
को अपनी क़ौम पर इलज़ाम लगाना पड़ा। उसने
कहा,

"रब का फ़रमान है, ऐसे दिन आ रहे हैं
जब मैं इसराईल के घराने
और यहूदाह के घराने से
एक नया अहद बाँधूँगा।
9 यह उस अहद की मानिंद नहीं होगा
जो मैंने उनके बापदादा के साथ
उस दिन बाँधा था
जब मैं उनका हाथ पकड़कर
उन्हें मिसर से निकाल लाया।
क्योंकि वह उस अहद के वफ़ादार न रहे
जो मैंने उनसे बाँधा था।
नतीजे में मेरी उनके लिए फ़िकर न रही।
10 ख़ुदावंद फ़रमाता है कि
जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद
उनसे बाँधूँगा
उसके तहत मैं अपनी शरीअत
उनके ज़हनों में डालकर
उनके दिलों पर कंदा करूँगा।
तब मैं ही उनका ख़ुदा हूँगा,
और वह मेरी क़ौम होंगे।
11 उस वक़्त से इसकी ज़रूरत नहीं रहेगी
कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को
तालीम देकर कहे,
'रब को जान लो।'
क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक
सब मुझे जानेंगे,
12 क्योंकि मैं उनका क़ुसूर मुआफ़ करूँगा
और आइंदा उनके गुनाहों को
याद नहीं करूँगा।"

13 इन अलफ़ाज़ में अल्लाह एक नए अहद का
ज़िक्र करता है और यों पुराने अहद को मतरूक
क़रार देता है। और जो मतरूक और पुराना है
उसका अंजाम क़रीब ही है।

दुनियावी और आसमानी इबादत

9 जब पहला अहद बाँधा गया तो इबादत
करने के लिए हिदायात दी गईं। ज़मीन
पर एक मक़दिस भी बनाया गया, 2 एक ख़ैमा
जिसके पहले कमरे में शमादान, मेज़ और उस
पर पड़ी मख़सूस की गई रोटियाँ थीं। उसका नाम
“मुक़द्दस कमरा” था। 3 उसके पीछे एक और
कमरा था जिसका नाम “मुक़द्दसतरीन कमरा”
था। पहले और दूसरे कमरे के दरमियान वाक़े
दरवाज़े पर परदा लगा था। 4 इस पिछले कमरे में
बख़ूर जलाने के लिए सोने की क़ुरबानगाह और
अहद का संदूक़ था। अहद के संदूक़ पर सोना
मँढा हुआ था और उसमें तीन चीज़ें थीं : सोने
का मरतबान जिसमें मन भरा था, हारून का वह
असा जिससे कोंपलें फूट निकली थीं और पत्थर
की वह दो तख़्तियाँ जिन पर अहद के अहकाम
लिखे थे। 5 संदूक़ पर इलाही जलाल के दो करूबी
फ़रिश्ते लगे थे जो संदूक़ के ढकने को साया देते थे
जिसका नाम “कफ़्फ़ारा का ढकना” था। लेकिन
इस जगह पर हम सब कुछ मज़ीद तफ़सील से
बयान नहीं करना चाहते।

6 यह चीज़ें इसी तरतीब से रखी जाती हैं। जब
इमाम अपनी ख़िदमत के फ़रायज़ अदा करते
हैं तो बाक़ायदगी से पहले कमरे में जाते हैं।
7 लेकिन सिर्फ़ इमामे-आज़म ही दूसरे कमरे में
दाख़िल होता है, और वह भी साल में सिर्फ़ एक
दफ़ा। जब भी वह जाता है वह अपने साथ ख़ून
लेकर जाता है जिसे वह अपने और क़ौम के
लिए पेश करता है ताकि वह गुनाह मिट जाएँ
जो लोगों ने ग़ैरइरादी तौर पर किए होते हैं।
8 इससे रूहुल-क़ुद्स दिखाता है कि मुक़द्दसतरीन
कमरे तक रसाई उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं की
गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में था।
9 यह मजाज़न मौजूदा ज़माने की तरफ़ इशारा
है। इसका मतलब यह है कि जो नज़राने और
क़ुरबानियाँ पेश की जा रही हैं वह परस्तार के
ज़मीर को पाक-साफ़ करके कामिल नहीं बना
सकतीं। 10 क्योंकि इनका ताल्लुक़ सिर्फ़ खाने-
पीनेवाली चीज़ों और ग़ुस्ल की मुख़्तलिफ़ रस्मों
से होता है, ऐसी ज़ाहिरी हिदायात जो सिर्फ़ नए
निज़ाम के आने तक लागू हैं।

11 लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी
चीज़ों का इमामे-आज़म जो अब हासिल हुई हैं।
जिस ख़ैमे में वह ख़िदमत करता है वह कहीं ज़्यादा
अज़ीम और कामिल है। यह ख़ैमा इनसानी हाथों
से नहीं बनाया गया यानी यह इस कायनात का
हिस्सा नहीं है। 12 जब मसीह एक बार सदा के
लिए ख़ैमे के मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हुआ
तो उसने क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए बकरों
और बछड़ों का ख़ून इस्तेमाल न किया। इसके
बजाए उसने अपना ही ख़ून पेश किया और यों
हमारे लिए अबदी नजात हासिल की। 13 पुराने
निज़ाम में बैल-बकरों का ख़ून और जवान गाय
की राख नापाक लोगों पर छिड़के जाते थे ताकि
उनके जिस्म पाक-साफ़ हो जाएँ। 14 अगर इन
चीज़ों का यह असर था तो फिर मसीह के ख़ून
का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अज़ली रूह के
ज़रीए उसने अपने आपको बेदाग़ क़ुरबानी के तौर
पर पेश किया। यों उसका ख़ून हमारे ज़मीर को
मौत तक पहुँचानेवाले कामों से पाक-साफ़ करता
है ताकि हम ज़िंदा ख़ुदा की ख़िदमत कर सकें।

15 यही वजह है कि मसीह एक नए अहद का
दरमियानी है। मक़सद यह था कि जितने लोगों
को अल्लाह ने बुलाया है उन्हें अल्लाह की मौऊदा
और अबदी मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इसलिए
मुमकिन हुआ है कि मसीह ने मरकर फ़िद्या दिया
ताकि लोग उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उनसे
उस वक़्त सरज़द हुए जब वह पहले अहद के तहत
थे।

16 जहाँ वसियत है वहाँ ज़रूरी है कि वसियत
करनेवाले की मौत की तसदीक़ की जाए।
17 क्योंकि जब तक वसियत करनेवाला ज़िंदा हो
वसियत बेअसर होती है। इसका असर वसियत
करनेवाले की मौत ही से शुरू होता है। 18 यही
वजह है कि पहला अहद बाँधते वक़्त भी ख़ून

इस्तेमाल हुआ। 19 क्योंकि पूरी क़ौम को शरीअत
का हर हुक्म सुनाने के बाद मूसा ने बछड़ों का
ख़ून पानी से मिलाकर उसे ज़ूफ़े के गुच्छे और
क़िरमिज़ी रंग के धागे के ज़रीए शरीअत की
किताब और पूरी क़ौम पर छिड़का। 20 उसने
कहा, "यह ख़ून उस अहद की तसदीक़ करता
है जिसकी पैरवी करने का हुक्म अल्लाह ने
तुम्हें दिया है।" 21 इसी तरह मूसा ने यह ख़ून
मुलाक़ात के ख़ैमे और इबादत के तमाम सामान
पर छिड़का। 22 न सिर्फ़ यह बल्कि शरीअत
तक़ाज़ा करती है कि तक़रीबन हर चीज़ को ख़ून
ही से पाक-साफ़ किया जाए बल्कि अल्लाह के
हुज़ूर ख़ून पेश किए बग़ैर मुआफ़ी मिल ही नहीं
सकती।

मसीह की क़ुरबानी गुनाहों को मिटा देती है

23 ग़रज़, लाज़िम था कि यह चीज़ें जो
आसमान की असली चीज़ों की नक़ली सूरतें हैं
पाक-साफ़ की जाएँ। लेकिन आसमानी चीज़ें ख़ुद
ऐसी क़ुरबानियों का मुतालबा करती हैं जो इनसे
कहीं बेहतर हों। 24 क्योंकि मसीह सिर्फ़ इनसानी
हाथों से बने मक़दिस में दाख़िल नहीं हुआ जो
असली मक़दिस की सिर्फ़ नक़ली सूरत थी बल्कि
वह आसमान में ही दाख़िल हुआ ताकि अब
से हमारी ख़ातिर अल्लाह के सामने हाज़िर हो।
25 दुनिया का इमामे-आज़म तो सालाना किसी
और (यानी जानवर) का ख़ून लेकर मुक़द्दसतरीन
कमरे में दाख़िल होता है। लेकिन मसीह इसलिए
आसमान में दाख़िल न हुआ कि वह अपने आपको
बार बार क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 26 अगर
ऐसा होता तो उसे दुनिया की तख़लीक़ से लेकर
आज तक बहुत दफ़ा दुख सहना पड़ता। लेकिन
ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानों के इख़्तिताम
पर एक ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि
अपने आपको क़ुरबान करने से गुनाह को दूर
करे। 27 एक बार मरना और अल्लाह की अदालत
में हाज़िर होना हर इनसान के लिए मुक़र्रर है।
28 इसी तरह मसीह को भी एक ही बार बहुतों के
गुनाहों को उठाकर ले जाने के लिए क़ुरबान किया
गया। दूसरी बार जब वह ज़ाहिर होगा तो गुनाहों
को दूर करने के लिए ज़ाहिर नहीं होगा बल्कि उन्हें
नजात देने के लिए जो शिद्दत से उसका इंतज़ार
कर रहे हैं।

10 मूसवी शरीअत आनेवाली अच्छी और
असली चीज़ों की सिर्फ़ नक़ली सूरत
और साया है। यह उन चीज़ों की असली शक्ल
नहीं है। इसलिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं
कर सकती जो साल बसाल और बार बार अल्लाह
के हुज़ूर आकर वही क़ुरबानियाँ पेश करते रहते
हैं। 2 अगर वह कामिल कर सकती तो क़ुरबानियाँ
पेश करने की ज़रूरत न रहती। क्योंकि इस सूरत
में परस्तार एक बार सदा के लिए पाक-साफ़
हो जाते और उन्हें गुनाहगार होने का शऊर न
रहता। 3 लेकिन इसके बजाए यह क़ुरबानियाँ
साल बसाल लोगों को उनके गुनाहों की याद
दिलाती हैं। 4 क्योंकि मुमकिन ही नहीं कि बैल-
बकरों का ख़ून गुनाहों को दूर करे।

5 इसलिए मसीह दुनिया में आते वक़्त अल्लाह
से कहता है,

"तू क़ुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था
लेकिन तूने मेरे लिए
एक जिस्म तैयार किया।
6 भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ
और गुनाह की क़ुरबानियाँ
तुझे पसंद नहीं थीं।
7 फिर मैं बोल उठा,
'ऐ ख़ुदा, मैं हाज़िर हूँ
ताकि तेरी मरज़ी पूरी करूँ,
जिस तरह मेरे बारे में
कलामे-मुक़द्दस में[a] लिखा है'।"

8 पहले मसीह कहता है, "न तू क़ुरबा-
नियाँ, नज़रें, भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ या गुनाह
की क़ुरबानियाँ चाहता था, न उन्हें पसंद करता

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : किताब के तूमार में।

था” गो शरीअत इन्हें पेश करने का मुतालबा
करती है। 9 फिर वह फ़रमाता है, “मैं हाज़िर
हूँ ताकि तेरी मरज़ी पूरी करूँ।” यों वह पहला
निज़ाम ख़त्म करके उस की जगह दूसरा निज़ाम
क़ायम करता है। 10 और उस की मरज़ी पूरी हो
जाने से हमें ईसा मसीह के बदन के वसीले से
मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया है। क्योंकि उसे एक
ही बार सदा के लिए हमारे लिए क़ुरबान किया
गया।

11 हर इमाम रोज़ बरोज़ मक़दिस में खड़ा
अपनी ख़िदमत के फ़रायज़ अदा करता है।
रोज़ाना और बार बार वह वही क़ुरबानियाँ पेश
करता रहता है जो कभी भी गुनाहों को दूर नहीं
कर सकतीं। 12 लेकिन मसीह ने गुनाहों को दूर
करने के लिए एक ही क़ुरबानी पेश की, एक ऐसी
क़ुरबानी जिसका असर सदा के लिए रहेगा। फिर
वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया। 13 वहीं वह
अब इंतज़ार करता है जब तक अल्लाह उसके
दुश्मनों को उसके पाँवों की चौकी न बना दे।
14 यों उसने एक ही क़ुरबानी से उन्हें सदा के लिए
कामिल बना दिया है जिन्हें मुक़द्दस किया जा रहा
है।

15 रूहुल-क़ुद्स भी हमें इसके बारे में गवाही
देता है। पहले वह कहता है,

16 “रब फ़रमाता है कि
जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद
उनसे बाँधूँगा
उसके तहत मैं अपनी शरीअत
उनके दिलों में डालकर
उनके ज़हनों पर कंदा करूँगा।”

17 फिर वह कहता है, “उस वक़्त से मैं उनके
गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।”
18 और जहाँ इन गुनाहों की मुआफ़ी हुई है वहाँ
गुनाहों को दूर करने की क़ुरबानियों की ज़रूरत ही
नहीं रही।

आएँ, हम अल्लाह के हुज़ूर आएँ

19 चुनाँचे भाइयो, अब हम ईसा के ख़ून के
वसीले से पूरे एतमाद के साथ मुक़द्दसतरीन
कमरे में दाख़िल हो सकते हैं। 20 अपने बदन
की क़ुरबानी से ईसा ने उस कमरे के परदे में
से गुज़रने का एक नया और ज़िंदगीबख़्श रास्ता
खोल दिया। 21 हमारा एक अज़ीम इमामे-आज़म
है जो अल्लाह के घर पर मुक़र्रर है। 22 इसलिए
आएँ, हम ख़ुलूसदिली और ईमान के पूरे एतमाद
के साथ अल्लाह के हुज़ूर आएँ। क्योंकि हमारे
दिलों पर मसीह का ख़ून छिड़का गया है ताकि
हमारे मुजरिम ज़मीर साफ़ हो जाएँ। नीज़, हमारे
बदनों को पाक-साफ़ पानी से धोया गया है।
23 आएँ, हम मज़बूती से उस उम्मीद को थामे
रखें जिसका इक़रार हम करते हैं। हम डाँवाँडोल
न हो जाएँ, क्योंकि जिसने इस उम्मीद का वादा
किया है वह वफ़ादार है। 24 और आएँ, हम इस
पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को किस तरह
मुहब्बत दिखाने और नेक काम करने पर उभार
सकें। 25 हम बाहम जमा होने से बाज़ न आएँ,
जिस तरह बाज़ की आदत बन गई है। इसके
बजाए हम एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें,
ख़ासकर यह बात मद्दे-नज़र रखकर कि ख़ुदावंद
का दिन क़रीब आ रहा है।

26 ख़बरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के
बाद भी जान-बूझकर गुनाह करते रहें तो मसीह
की क़ुरबानी इन गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी।
27 फिर सिर्फ़ अल्लाह की अदालत की हौलनाक
तवक़्क़ो बाक़ी रहेगी, उस भड़कती हुई आग
की जो अल्लाह के मुख़ालिफ़ों को भस्म कर
डालेगी। 28 जो मूसा की शरीअत रद्द करता है
उस पर रहम नहीं किया जा सकता बल्कि अगर
दो या इससे ज़ायद लोग इस जुर्म की गवाही दें
तो उसे सज़ाए-मौत दी जाए। 29 तो फिर क्या
ख़याल है, वह कितनी सख़्त सज़ा के लायक़ होगा
जिसने अल्लाह के फ़रज़ंद को पाँवों तले रौंदा?
जिसने अहद का वह ख़ून हक़ीर जाना जिससे उसे

मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया था? और जिसने
फ़ज़ल के रूह की बेइज़्ज़ती की? 30 क्योंकि हम
उसे जानते हैं जिसने फ़रमाया, “इंतक़ाम लेना
मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” उसने यह
भी कहा, “रब अपनी क़ौम का इनसाफ़ करेगा।”
31 यह एक हौलनाक बात है अगर ज़िंदा ख़ुदा हमें
सज़ा देने के लिए पकड़े।

32 ईमान के पहले दिन याद करें जब
अल्लाह ने आपको रौशन कर दिया था।
उस वक़्त के सख़्त मुक़ाबले में आपको
कई तरह का दुख सहना पड़ा, लेकिन
आप साबितक़दम रहे। 33 कभी कभी आप-
की बेइज़्ज़ती और अवाम के सामने ही ईज़ारसानी
होती थी, कभी कभी आप उनके साथी थे जिनसे
ऐसा सुलूक हो रहा था। 34 जिन्हें जेल में डाला
गया आप उनके दुख में शरीक हुए और जब
आपका मालो-मता लूटा गया तो आपने यह बात
ख़ुशी से बरदाश्त की। क्योंकि आप जानते थे कि
वह माल हमसे नहीं छीन लिया गया जो पहले की
निसबत कहीं बेहतर है और हर सूरत में क़ायम
रहेगा। 35 चुनाँचे अपने इस एतमाद को हाथ से
जाने न दें क्योंकि इसका बड़ा अज्र मिलेगा।
36 लेकिन इसके लिए आपको साबितक़दमी की
ज़रूरत है ताकि आप अल्लाह की मरज़ी पूरी कर
सकें और यों आपको वह कुछ मिल जाए जिसका
वादा उसने किया है। 37 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस
यह फ़रमाता है,

“थोड़ी ही देर बाक़ी है
तो आनेवाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।
38 लेकिन मेरा रास्तबाज़
ईमान ही से जीता रहेगा,
और अगर वह पीछे हट जाए
तो मैं उससे ख़ुश नहीं हूँगा।”

39 लेकिन हम उनमें से नहीं हैं जो पीछे हटकर
तबाह हो जाएंगे बल्कि हम उनमें से हैं जो ईमान
रखकर नजात पाते हैं।

ईमान

11 ईमान क्या है? यह कि हम उसमें
क़ायम रहें जिस पर हम उम्मीद रखते
हैं और कि हम उसका यक़ीन रखें जो हम नहीं
देख सकते। 2 ईमान ही से पुराने ज़मानों के लोगों
को अल्लाह की क़बूलियत हासिल हुई।

3 ईमान के ज़रीए हम जान लेते हैं कि कायनात
को अल्लाह के कलाम से ख़लक़ किया गया, कि
जो कुछ हम देख सकते हैं नज़र आनेवाली चीज़ों
से नहीं बना।

4 यह ईमान का काम था कि हाबील ने अल्लाह
को एक ऐसी क़ुरबानी पेश की जो क़ाबील की
क़ुरबानी से बेहतर थी। इस ईमान की बिना पर
अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ ठहराकर उस की अच्छी
गवाही दी, जब उसने उस की क़ुरबानियों को
क़बूल किया। और ईमान के ज़रीए वह अब तक
बोलता रहता है हालाँकि वह मुरदा है। 5 यह ईमान
का काम था कि हनूक न मरा बल्कि ज़िंदा हालत
में आसमान पर उठाया गया। कोई भी उसे ढूँडकर
पा न सका क्योंकि अल्लाह उसे आसमान पर
उठा ले गया था। वजह यह थी कि उठाए जाने से
पहले उसे यह गवाही मिली कि वह अल्लाह को
पसंद आया। 6 और ईमान रखे बग़ैर हम अल्लाह
को पसंद नहीं आ सकते। क्योंकि लाज़िम है कि
अल्लाह के हुज़ूर आनेवाला ईमान रखे कि वह है
और कि वह उन्हें अज्र देता है जो उसके तालिब
हैं।

7 यह ईमान का काम था कि नूह ने अल्लाह
की सुनी जब उसने उसे आनेवाली बातों के बारे
में आगाह किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी
देखने में नहीं आई थीं। नूह ने ख़ुदा का ख़ौफ़
मानकर एक कश्ती बनाई ताकि उसका ख़ानदान
बच जाए। यों उसने अपने ईमान के ज़रीए दुनिया
को मुजरिम क़रार दिया और उस रास्तबाज़ी का
वारिस बन गया जो ईमान से हासिल होती है।

8 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने
अल्लाह की सुनी जब उसने उसे बुलाकर कहा

कि वह एक ऐसे मुल्क में जाए जो उसे बाद
में मीरास में मिलेगा। हाँ, वह अपने मुल्क को
छोड़कर रवाना हुआ, हालाँकि उसे मालूम न था
कि वह कहाँ जा रहा है। 9 ईमान के ज़रीए वह
वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की हैसियत से
रहने लगा। वह ख़ैमों में रहता था और इसी तरह
इसहाक़ और याक़ूब भी जो उसके साथ उसी वादे
के वारिस थे। 10 क्योंकि इब्राहीम उस शहर के
इंतज़ार में था जिसकी मज़बूत बुनियाद है और
जिसका नक़्शा बनाने और तामीर करनेवाला ख़ुद
अल्लाह है।

11 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम बाप
बनने के क़ाबिल हो गया, हालाँकि वह बुढ़ापे की
वजह से बाप नहीं बन सकता था। इसी तरह सारा
भी बच्चे जन्म नहीं दे सकती थी। लेकिन इब्राहीम
समझता था कि अल्लाह जिसने वादा किया है
वफ़ादार है। 12 गो इब्राहीम तक़रीबन मर चुका
था तो भी उसी एक शख़्स से बेशुमार औलाद
निकली, तादाद में आसमान पर के सितारों और
साहिल पर की रेत के ज़र्रों के बराबर।

13 यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर
गए। उन्हें वह कुछ न मिला जिसका वादा किया
गया था। उन्होंने उसे सिर्फ़ दूर ही से देखकर
ख़ुशआमदीद[a] कहा। और उन्होंने तसलीम किया
कि हम ज़मीन पर[b] सिर्फ़ मेहमान और आरिज़ी
तौर पर रहनेवाले अजनबी हैं। 14 जो इस क़िस्म
की बातें करते हैं वह ज़ाहिर करते हैं कि हम अब
तक अपने वतन की तलाश में हैं। 15 अगर उनके
ज़हन में वह मुल्क होता जिससे वह निकल आए
थे तो वह अब भी वापस जा सकते थे। 16 इसके
बजाए वह एक बेहतर मुल्क यानी एक आसमानी
मुल्क की आरज़ू कर रहे थे। इसलिए अल्लाह
उनका ख़ुदा कहलाने से नहीं शर्माता, क्योंकि
उसने उनके लिए एक शहर तैयार किया है।

17 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने उस
वक़्त इसहाक़ को क़ुरबानी के तौर पर पेश किया
जब अल्लाह ने उसे आज़माया। हाँ, वह अपने
इकलौते बेटे को क़ुरबान करने के लिए तैयार
था अगरचे उसे अल्लाह के वादे मिल गए थे
18 कि "तेरी नसल इसहाक़ ही से क़ायम रहेगी।"
19 इब्राहीम ने सोचा, "अल्लाह मुरदों को भी
ज़िंदा कर सकता है," और मजाज़न उसे वाक़ई
इसहाक़ मुरदों में से वापस मिल गया।

20 यह ईमान का काम था कि इसहाक़ ने
आनेवाली चीज़ों के लिहाज़ से याक़ूब और एसौ
को बरकत दी।

21 यह ईमान का काम था कि याक़ूब ने मरते
वक़्त यूसुफ़ के दोनों बेटों को बरकत दी और
अपनी लाठी के सिरे पर टेक लगाकर अल्लाह
को सिजदा किया।

22 यह ईमान का काम था कि यूसुफ़ ने मरते
वक़्त यह पेशगोई की कि इसराईली मिसर से
निकलेंगे बल्कि यह भी कहा कि निकलते वक़्त
मेरी हड्डियाँ भी अपने साथ ले जाओ।

23 यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ-
बाप ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए
रखा, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह ख़ूबसूरत है।
वह बादशाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करने से
न डरे।

24 यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान
चढ़कर इनकार किया कि उसे फ़िरौन की बेटी
का बेटा ठहराया जाए। 25 आरिज़ी तौर पर गुनाह
से लुत्फ़अंदोज़ होने के बजाए उसने अल्लाह की
क़ौम के साथ बदसुलूकी का निशाना बनने को
तरजीह दी। 26 वह समझा कि जब मेरी मसीह
की ख़ातिर रुसवाई की जाती है तो यह मिसर के
तमाम ख़ज़ानों से ज़्यादा क़ीमती है, क्योंकि उस
की आँखें आनेवाले अज्र पर लगी रहीं।

27 यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह
के ग़ुस्से से डरे बग़ैर मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि
वह गोया अनदेखे ख़ुदा को मुसलसल अपनी
आँखों के सामने रखता रहा। 28 यह ईमान का

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : सलामी दी। सलाम देकर इज़्ज़त का इज़हार किया। सल्यूट किया।

[b] ज़मीन पर या मुल्क (यानी कनान) में।

काम था कि उसने फ़सह की ईद मनाकर हुक्म
दिया कि ख़ून को चौखटों पर लगाया जाए ताकि
हलाक करनेवाला फ़रिश्ता उनके पहलौठे बेटों को
न छुए।

29 यह ईमान का काम था कि इसराईली बहरे-
क़ुलज़ुम में से यों गुज़र सके जैसे कि यह ख़ुश्क
ज़मीन थी। जब मिसरियों ने यह करने की कोशिश
की तो वह डूब गए।

30 यह ईमान का काम था कि सात दिन तक
यरीहू शहर की फ़सील के गिर्द चक्कर लगाने के
बाद पूरी दीवार गिर गई। **31** यह भी ईमान का
काम था कि राहब फ़ाहिशा अपने शहर के बाक़ी
नाफ़रमान बाशिंदों के साथ हलाक न हुई, क्योंकि
उसने इसराईली जासूसों को सलामती के साथ
ख़ुशआमदीद कहा था।

32 मैं मज़ीद क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना
वक़्त नहीं कि मैं जिदाऊन, बरक़, समसून,
इफ़ताह, दाऊद, समुएल और नबियों के बारे में
सुनाता रहूँ। **33** यह सब ईमान के सबब से ही
कामयाब रहे। वह बादशाहियों पर ग़ालिब आए
और इनसाफ़ करते रहे। उन्हें अल्लाह के वादे
हासिल हुए। उन्होंने शेरबबरों के मुँह बंद कर दिए
34 और आग के भड़कते शोलों को बुझा दिया।
वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह कमज़ोर
थे लेकिन उन्हें क़ुव्वत हासिल हुई। जब जंग छिड़
गई तो वह इतने ताक़तवर साबित हुए कि उन्होंने
ग़ैरमुल्की लशकरों को शिकस्त दी। **35** ईमान
रखने के बाइस ख़वातीन को उनके मुरदा अज़ीज़
ज़िंदा हालत में वापस मिले।

लेकिन ऐसे भी थे जिन्हें तशद्दुद बरदाश्त करना
पड़ा और जिन्होंने आज़ाद हो जाने से इनकार
किया ताकि उन्हें एक बेहतर चीज़ यानी जी उठने
का तजरबा हासिल हो जाए। **36** बाज़ को लान-
तान और कोड़ों बल्कि ज़ंजीरों और क़ैद का भी
सामना करना पड़ा। **37** उन्हें संगसार किया गया,
उन्हें आरे से चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला
गया। बाज़ को भेड़-बकरियों की खालों में घूमना
फिरना पड़ा। ज़रूरतमंद हालत में उन्हें दबाया और
उन पर ज़ुल्म किया जाता रहा। **38** दुनिया उनके
लायक़ नहीं थी! वह वीरान जगहों में, पहाड़ों पर,
ग़ारों और गढ़ों में आवारा फिरते रहे।

39 इन सबको ईमान की वजह से अच्छी गवाही
मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ
जिसका वादा अल्लाह ने किया था। **40** क्योंकि
उसने हमारे लिए एक ऐसा मनसूबा बनाया था
जो कहीं बेहतर है। वह चाहता था कि यह लोग
हमारे बग़ैर कामिलियत तक न पहुँचें।

अल्लाह हमारा बाप

12 ग़रज़, हम गवाहों के इतने बड़े लशकर
से घेरे रहते हैं! इसलिए आएँ, हम
सब कुछ उतारें जो हमारे लिए रुकावट का बाइस
बन गया है, हर गुनाह को जो हमें आसानी से
उलझा लेता है। आएँ, हम साबितक़दमी से उस
दौड़ में दौड़ते रहें जो हमारे लिए मुक़र्रर की गई
है। **2** और दौड़ते हुए हम ईसा को तकते रहें,
उसे जो ईमान का बानी भी है और उसे तकमील
तक पहुँचानेवाला भी। याद रहे कि गो वह ख़ुशी
हासिल कर सकता था तो भी उसने सलीबी मौत
की शर्मनाक बेइज़्ज़ती की परवा न की बल्कि उसे
बरदाश्त किया। और अब वह अल्लाह के तख़्त के
दहने हाथ जा बैठा है!

3 उस पर ध्यान दें जिसने गुनाहगारों की इतनी
मुख़ालफ़त बरदाश्त की। फिर आप थकते थकते
बेदिल नहीं हो जाएंगे। **4** देखें, आप गुनाह से लड़े
तो हैं, लेकिन अभी तक आपको जान देने तक
इसकी मुख़ालफ़त नहीं करनी पड़ी। **5** क्या आप
कलामे-मुक़द्दस की यह हौसलाअफ़्ज़ा बात भूल
गए हैं जो आपको अल्लाह के फ़रज़ंद ठहराकर
बयान करती है,

“मेरे बेटे, रब की तरबियत को
हक़ीर मत जान,
जब वह तुझे डाँटे तो न बेदिल हो।
6 क्योंकि जो रब को प्यारा है
उस की वह तादीब करता है,
वह हर एक को सज़ा देता है

जिसे उसने बेटे के तौर पर
क़बूल किया है।”

7 अपनी मुसीबतों को इलाही तरबियत समझकर बरदाश्त करें। इसमें अल्लाह आपसे बेटों का-सा सुलूक कर रहा है। क्या कभी कोई बेटा था जिसकी उसके बाप ने तरबियत न की?
8 अगर आपकी तरबियत सबकी तरह न की जाती तो इसका मतलब यह होता कि आप अल्लाह के हक़ीक़ी फ़रज़ंद न होते बल्कि नाजायज़ औलाद।
9 देखें, जब हमारे इनसानी बाप ने हमारी तरबियत की तो हमने उस की इज़्ज़त की। अगर ऐसा है तो कितना ज़्यादा ज़रूरी है कि हम अपने रूहानी बाप के ताबे होकर ज़िंदगी पाएँ। 10 हमारे इनसानी
बापों ने हमें अपनी समझ के मुताबिक़ थोड़ी देर के लिए तरबियत दी। लेकिन अल्लाह हमारी ऐसी तरबियत करता है जो फ़ायदे का बाइस है और जिससे हम उस की क़ुद्दूसियत में शरीक होने के क़ाबिल हो जाते हैं। 11 जब हमारी तरबियत
की जाती है तो उस वक़्त हम ख़ुशी महसूस नहीं करते बल्कि ग़म। लेकिन जिनकी तरबियत इस तरह होती है वह बाद में रास्तबाज़ी और सलामती की फ़सल काटते हैं।

हिदायात

12 चुनाँचे अपने थकेहारे बाज़ुओं और कमज़ोर
घुटनों को मज़बूत करें। 13 अपने रास्ते चलने के
क़ाबिल बना दें ताकि जो अज़ु लँगड़ा है उसका जोड़ उतर न जाए[a] बल्कि शफ़ा पाए।

14 सबके साथ मिलकर सुलह-सलामती और क़ुद्दूसियत के लिए जिद्दो-जहद करते रहें, क्योंकि जो मुक़द्दस नहीं है वह ख़ुदावंद को कभी नहीं
देखेगा। 15 इस पर ध्यान देना कि कोई अल्लाह के फ़ज़्ल से महरूम न रहे। ऐसा न हो कि कोई कड़वी जड़ फूट निकले और बढ़कर तकलीफ़ का बाइस बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे।
16 ध्यान दें कि कोई भी ज़िनाकार या एसौ जैसा दुनियावी शख़्स न हो जिसने एक ही खाने के एवज़ अपने वह मौरूसी हुक़ूक़ बेच डाले जो उसे
बड़े बेटे की हैसियत से हासिल थे। 17 आपको भी
मालूम है कि बाद में जब वह यह बरकत विरासत में पाना चाहता था तो उसे रद्द किया गया। उस वक़्त उसे तौबा का मौक़ा न मिला हालाँकि उसने आँसू बहा बहाकर यह बरकत हासिल करने की कोशिश की।

18 आप उस तरह अल्लाह के हुज़ूर नहीं आए जिस तरह इसराईली जब वह सीना पहाड़ पर पहुँचे, उस पहाड़ के पास जिसे छुआ जा सकता था। वहाँ आग भड़क रही थी, अंधेरा ही अंधेरा
था और आँधी चल रही थी। 19 जब नरसिंगे की
आवाज़ सुनाई दी और अल्लाह उनसे हमकलाम हुआ तो सुननेवालों ने उससे इल्तिजा की कि
हमें मज़ीद कोई बात न बता। 20 क्योंकि वह यह
हुक्म बरदाश्त नहीं कर सकते थे कि “अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छू ले तो उसे संगसार करना
है।” 21 यह मंज़र इतना हैबतनाक था कि मूसा ने
कहा, “मैं ख़ौफ़ के मारे काँप रहा हूँ।”

22 नहीं, आप सिय्यून पहाड़ के पास आ गए हैं, यानी ज़िंदा ख़ुदा के शहर आसमानी यरूशलम के पास। आप बेशुमार फ़रिश्तों और जशन मनानेवाली जमात के पास आ गए हैं,
23 उन पहलौठों की जमात के पास जिनके नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं। आप तमाम इनसानों के मुंसिफ़ अल्लाह के पास आ गए हैं और कामिल किए गए रास्तबाज़ों की रूहों के
पास। 24 नीज़ आप नए अहद के दरमियानी ईसा
के पास आ गए हैं और उस छिड़काए गए ख़ून के पास जो हाबील के ख़ून की तरह बदला लेने की बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआफ़ी देता है जो कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है।

25 चुनाँचे ख़बरदार रहें कि आप उस की सुनने से इनकार न करें जो इस वक़्त आपसे हमकलाम हो रहा है। क्योंकि अगर इसराईली न बचे जब

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : जो लँगड़ा है वह भटक न जाए।

उन्होंने दुनियावी पैग़ंबर मूसा की सुनने से इनकार
किया तो फिर हम किस तरह बचेंगे अगर हम
उस की सुनने से इनकार करें जो आसमान से
हमसे हमकलाम होता है। 26 जब अल्लाह सीना
पहाड़ पर से बोल उठा तो ज़मीन काँप गई, लेकिन
अब उसने वादा किया है, "एक बार फिर मैं न
सिर्फ़ ज़मीन को हिला दूँगा बल्कि आसमान को
भी।" 27 "एक बार फिर" के अलफ़ाज़ इस तरफ़
इशारा करते हैं कि ख़लक़ की गई चीज़ों को
हिलाकर दूर किया जाएगा और नतीजे में सिर्फ़
वह चीज़ें क़ायम रहेंगी जिन्हें हिलाया नहीं जा
सकता।

28 चुनाँचे आएँ, हम शुक्रगुज़ार हों। क्योंकि
हमें एक ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे
हिलाया नहीं जा सकता। हाँ, हम शुक्रगुज़ारी
की इस रूह में एहतराम और ख़ौफ़ के साथ
अल्लाह की पसंदीदा परस्तिश करें, 29 क्योंकि
हमारा ख़ुदा हक़ीक़तन भस्म कर देनेवाली आग
है।

हम अल्लाह को किस तरह पसंद आएँ

13 एक दूसरे से भाइयों की-सी मुहब्बत
रखते रहें। 2 मेहमान-नवाज़ी मत
भूलना, क्योंकि ऐसा करने से बाज़ ने नादानिस्ता
तौर पर फ़रिश्तों की मेहमान-नवाज़ी की है। 3 जो
क़ैद में हैं, उन्हें यों याद रखना जैसे आप ख़ुद उनके
साथ क़ैद में हों। और जिनके साथ बदसुलूकी
हो रही है उन्हें यों याद रखना जैसे आपसे यह
बदसुलूकी हो रही हो।

4 लाज़िम है कि सबके सब इज़दिवाजी ज़िंदगी
का एहतराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे
के वफ़ादार रहें, क्योंकि अल्लाह ज़िनाकारों और
शादी का बंधन तोड़नेवालों की अदालत करेगा।

5 आपकी ज़िंदगी पैसों के लालच से आज़ाद
हो। उसी पर इकतिफ़ा करें जो आपके पास है,
क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है, "मैं तुझे कभी
नहीं छोड़ूँगा, मैं तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।"
6 इसलिए हम एतमाद से कह सकते हैं,

"रब मेरी मदद करनेवाला है,
इसलिए मैं नहीं डरूँगा।
इनसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?"

7 अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्होंने
आपको अल्लाह का कलाम सुनाया। इस पर
ग़ौर करें कि उनके चाल-चलन से कितनी भलाई
पैदा हुई है, और उनके ईमान के नमूने पर चलें।
8 ईसा मसीह माज़ी में, आज और अबद तक
यकसाँ है। 9 तरह तरह की और बेगाना तालीमात
आपको इधर-उधर न भटकाएँ। आप तो अल्लाह
के फ़ज़ल से तक़वियत पाते हैं और इससे नहीं कि
आप मुख़्तलिफ़ खानों से परहेज़ करते हैं। इसमें
कोई ख़ास फ़ायदा नहीं है।

10 हमारे पास एक ऐसी क़ुरबानगाह है जिसकी
क़ुरबानी खाना मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत
करनेवालों के लिए मना है। 11 क्योंकि गो इमामे-
आज़म जानवरों का ख़ून गुनाह की क़ुरबानी के
तौर पर मुक़द्दसतरीन कमरे में ले जाता है, लेकिन
उनकी लाशों को ख़ैमागाह के बाहर जलाया जाता
है। 12 इस वजह से ईसा को भी शहर के बाहर
सलीबी मौत सहनी पड़ी ताकि क़ौम को अपने
ख़ून से मख़सूसो-मुक़द्दस करे। 13 इसलिए आएँ,
हम ख़ैमागाह से निकलकर उसके पास जाएँ और
उस की बेइज़्ज़ती में शरीक हो जाएँ। 14 क्योंकि
यहाँ हमारा कोई क़ायम रहनेवाला शहर नहीं है
बल्कि हम आनेवाले शहर की शदीद आरज़ू रखते
हैं। 15 चुनाँचे आएँ, हम ईसा के वसीले से अल्लाह
को हम्दो-सना की क़ुरबानी पेश करें, यानी हमारे
होंटों से उसके नाम की तारीफ़ करनेवाला फल
निकले। 16 नीज़, भलाई करना और दूसरों को
अपनी बरकात में शरीक करना मत भूलना,
क्योंकि ऐसी क़ुरबानियाँ अल्लाह को पसंद हैं।

17 अपने राहनुमाओं की सुनें और उनकी बात
मानें। क्योंकि वह आपकी देख-भाल करते करते
जागते रहते हैं, और इसमें वह अल्लाह के सामने
जवाबदेह हैं। उनकी बात मानें ताकि वह ख़ुशी
से अपनी ख़िदमत सरंजाम दें। वरना वह कराहते

कराहते अपनी ज़िम्मेदारी निभाएँगे, और यह आपके लिए मुफ़ीद नहीं होगा।

18 हमारे लिए दुआ करें, गो हमें यक़ीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज़ से अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने के ख़ाहिशमंद हैं।

19 मैं ख़ासकर इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप दुआ करें कि अल्लाह मुझे आपके पास जल्द वापस आने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

आख़िरी दुआ

20 अब सलामती का ख़ुदा जो अबदी अहद
के ख़ून से हमारे ख़ुदावंद और भेड़ों के अज़ीम
चरवाहे ईसा को मुरदों में से वापस लाया 21 वह
आपको हर अच्छी चीज़ से नवाज़े ताकि आप उस की मरज़ी पूरी कर सकें। और वह ईसा मसीह के ज़रीए हममें वह कुछ पैदा करे जो उसे पसंद आए। उसका जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे! आमीन।

आख़िरी अलफ़ाज़

22 भाइयो, मेहरबानी करके नसीहत की इन
बातों पर संजीदगी से ग़ौर करें, क्योंकि मैंने
आपको सिर्फ़ चंद अलफ़ाज़ लिखे हैं। 23 यह
बात आपके इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह जल्दी पहुँचे तो उसे साथ लेकर आपसे मिलने आऊँगा।

24 अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुक़द्दसीन को मेरा सलाम कहना। इटली के ईमानदार आपको सलाम कहते हैं।

25 अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

याक़ूब का आम ख़त

1 यह ख़त अल्लाह और ख़ुदावंद ईसा मसीह
के ख़ादिम याक़ूब की तरफ़ से है।
ग़ैरयहूदी क़ौमों में बिखरे हुए बारह इसराईली
क़बीलों को सलाम।

ईमान और हिकमत

2 मेरे भाइयो, जब आपको तरह तरह की
आज़माइशों का सामना करना पड़े तो अपने
आपको ख़ुशक़िसमत समझें, 3 क्योंकि आप
जानते हैं कि आपके ईमान के आज़माए
जाने से साबितक़दमी पैदा होती है। 4 चुनाँचे
साबितक़दमी को बढ़ने दें, क्योंकि जब वह
तकमील तक पहुँचेगी तो आप बालिग़ और
कामिल बन जाएंगे, और आपमें कोई भी कमी
नहीं पाई जाएगी। 5 लेकिन अगर आपमें से किसी
में हिकमत की कमी हो तो अल्लाह से माँगे जो
सबको फ़ैयाज़ी से और बग़ैर झिड़की दिए देता है।
वह ज़रूर आपको हिकमत देगा। 6 लेकिन अपनी
गुज़ारिश ईमान के साथ पेश करें और शक न
करें, क्योंकि शक करनेवाला समुंदर की मौज
की मानिंद होता है जो हवा से इधर-उधर उछलती
बहती जाती है। 7 ऐसा शख़्स न समझे कि मुझे
ख़ुदावंद से कुछ मिलेगा, 8 क्योंकि वह दोदिला
और अपने हर काम में ग़ैरमुस्तक़िलमिज़ाज है।

ग़ुरबत और दौलत

9 पस्तहाल भाई मसीह में अपने ऊँचे मरतबे
पर फ़ख़र करे 10 जबकि दौलतमंद शख़्स अपने
अदना मरतबे पर फ़ख़र करे, क्योंकि वह जंगली
फूल की तरह जल्द ही जाता रहेगा। 11 जब सूरज
तुलू होता है तो उस की झुलसा देनेवाली धूप में
पौदा मुरझा जाता, उसका फूल गिर जाता और
उस की तमाम ख़ूबसूरती ख़त्म हो जाती है। उस
तरह दौलतमंद शख़्स भी काम करते करते मुरझा
जाएगा।

आज़माइश

12 मुबारक है वह जो आज़माइश के वक़्त
साबितक़दम रहता है, क्योंकि क़ायम रहने पर
उसे ज़िंदगी का वह ताज मिलेगा जिसका वादा
अल्लाह ने उनसे किया है जो उससे मुहब्बत
रखते हैं। 13 आज़माइश के वक़्त कोई न कहे
कि अल्लाह मुझे आज़माइश में फँसा रहा है। न
तो अल्लाह को बुराई से आज़माइश में फँसाया
जा सकता है, न वह किसी को फँसाता है।
14 बल्कि हर एक की अपनी बुरी ख़ाहिशात उसे
खींचकर और उकसाकर आज़माइश में फँसा देती
हैं। 15 फिर यह ख़ाहिशात हामिला होकर गुनाह
को जन्म देती हैं और गुनाह बालिग़ होकर मौत
को जन्म देता है।

16 मेरे अज़ीज़ भाइयो, फ़रेब मत खाना!
17 हर अच्छी नेमत और हर अच्छा तोह्फ़ा

आसमान से नाज़िल होता है, नूरों के बाप से,
जिसमें न कभी तबदीली आती है, न बदलते हुए
सायों की-सी हालत पाई जाती है। 18 उसी ने
अपनी मरज़ी से हमें सच्चाई के कलाम के वसीले
से पैदा किया। यों हम एक तरह से उस की तमाम
मख़लूक़ात का पहला फल हैं।

सुनना काफ़ी नहीं है

19 मेरे अज़ीज़ भाइयो, इसका ख़याल रखना,
हर शख़्स सुनने में तेज़ हो, लेकिन बोलने और
ग़ुस्सा करने में धीमा। 20 क्योंकि इनसान का
ग़ुस्सा वह रास्तबाज़ी पैदा नहीं करता जो अल्लाह
चाहता है। 21 चुनाँचे अपनी ज़िंदगी की गंदी
आदतें और शरीर चाल-चलन दूर करके हलीमी
से कलामे-मुक़द्दस का वह बीज क़बूल करें जो
आपके अंदर बोया गया है, क्योंकि यही आपको
नजात दे सकता है।

22 कलामे-मुक़द्दस को न सिर्फ़ सुनें बल्कि उस
पर अमल भी करें, वरना आप अपने आपको
फ़रेब देंगे। 23 जो कलाम को सुनकर उस पर
अमल नहीं करता वह उस आदमी की मानिंद
है जो आईने में अपने चेहरे पर नज़र डालता है।
24 अपने आपको देखकर वह चला जाता है और
फ़ौरन भूल जाता है कि मैंने क्या कुछ देखा।
25 इसकी निसबत वह मुबारक है जो आज़ाद
करनेवाली कामिल शरीअत में ग़ौर से नज़र
डालकर उसमें क़ायम रहता है और उसे सुनने के
बाद नहीं भूलता बल्कि उस पर अमल करता है।

26 क्या आप अपने आपको दीनदार स-
मझते हैं? अगर आप अपनी ज़बान पर क़ाबू
नहीं रख सकते तो आप अपने आपको फ़रेब
देते हैं। फिर आपकी दीनदारी का इज़हार बेकार
है। 27 ख़ुदा बाप की नज़र में दीनदारी का पाक
और बेदाग़ इज़हार यह है, यतीमों और बेवाओं
की देख-भाल करना जब वह मुसीबत में हों और
अपने आपको दुनिया की आलूदगी से बचाए
रखना।

तास्सुब से ख़बरदार

2 मेरे भाइयो, लाज़िम है कि आप जो हमारे
जलाली ख़ुदावंद ईसा मसीह पर ईमान
रखते हैं जानिबदारी न दिखाएँ। 2 फ़र्ज़ करें कि
एक आदमी सोने की अंगूठी और शानदार कपड़े
पहने हुए आपकी जमात में आ जाए और साथ
साथ एक ग़रीब आदमी भी मैले-कुचैले कपड़े
पहने हुए अंदर आए। 3 और आप शानदार कपड़े
पहने हुए आदमी पर ख़ास ध्यान देकर उससे
कहें, “यहाँ इस अच्छी कुरसी पर तशरीफ़ रखें,”
लेकिन ग़रीब आदमी को कहें, “वहाँ खड़ा हो
जा” या “आ, मेरे पाँवों के पास फ़र्श पर बैठ
जा।” 4 क्या आप ऐसा करने से मुजरिमाना
ख़यालातवाले मुंसिफ़ नहीं साबित हुए? क्योंकि
आपने लोगों में नारवा फ़रक़ किया है।

5 मेरे अज़ीज़ भाइयो, सुनें! क्या अल्लाह ने
उन्हें नहीं चुना जो दुनिया की नज़र में ग़रीब हैं
ताकि वह ईमान में दौलतमंद हो जाएँ? यही
लोग वह बादशाही मीरास में पाएँगे जिसका वादा
अल्लाह ने उनसे किया है जो उसे प्यार करते
हैं। 6 लेकिन आपने ज़रूरतमंदों की बेइज़्ज़ती की
है। ज़रा सोच लें, वह कौन हैं जो आपको दबाते
और अदालत में घसीटकर ले जाते हैं? क्या यह
दौलतमंद ही नहीं हैं? 7 वही तो ईसा पर कुफ़्र
बकते हैं, उस अज़ीम नाम पर जिसके पैरोकार
आप बन गए हैं।

8 अल्लाह चाहता है कि आप कलामे-मुक़द्दस
में मज़कूर शाही शरीअत पूरी करें, “अपने पड़ोसी
से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे
रखता है।” 9 चुनाँचे जब आप जानिबदारी दिखाते
हैं तो गुनाह करते हैं और शरीअत आपको मुजरिम
ठहराती है। 10 मत भूलना कि जिसने शरीअत
का सिर्फ़ एक हुक्म तोड़ा है वह पूरी शरीअत का
क़ुसूरवार ठहरता है। 11 क्योंकि जिसने फ़रमाया,
“ज़िना न करना” उसने यह भी कहा, “क़त्ल
न करना।” हो सकता है कि आपने ज़िना तो
न किया हो, लेकिन किसी को क़त्ल किया हो।

तो भी आप उस एक जुर्म की वजह से पूरी
शरीअत तोड़ने के मुजरिम बन गए हैं। 12 चुनाँचे
जो कुछ भी आप कहते और करते हैं याद रखें
कि आज़ाद करनेवाली शरीअत आपकी अदालत
करेगी। 13 क्योंकि अल्लाह अदालत करते वक़्त
उस पर रहम नहीं करेगा जिसने ख़ुद रहम नहीं
दिखाया। लेकिन रहम अदालत पर ग़ालिब आ
जाता है। जब आप रहम करेंगे तो अल्लाह आप
पर रहम करेगा।

ईमान नेक कामों के बग़ैर मुरदा है

14 मेरे भाइयो, अगर कोई ईमान रखने का दावा
करे, लेकिन उसके मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारे
तो उसका क्या फ़ायदा है? क्या ऐसा ईमान
उसे नजात दिला सकता है? 15 फ़र्ज़ करें कि
कोई भाई या बहन कपड़ों और रोज़मर्रा रोटी की
ज़रूरतमंद हो। 16 यह देखकर आपमें से कोई
उससे कहे, "अच्छा जी, ख़ुदा हाफ़िज़। गरम
कपड़े पहनो और जी भरकर खाना खाओ।"
लेकिन वह ख़ुद यह ज़रूरियात पूरी करने में मदद
न करे। क्या इसका कोई फ़ायदा है? 17 ग़रज़,
महज़ ईमान काफ़ी नहीं। अगर वह नेक कामों से
अमल में न लाया जाए तो वह मुरदा है।

18 हो सकता है कोई एतराज़ करे, "एक शख़्स
के पास तो ईमान होता है, दूसरे के पास नेक
काम।" आएँ, मुझे दिखाएँ कि आप नेक कामों
के बग़ैर किस तरह ईमान रख सकते हैं। यह तो
नामुमकिन है। लेकिन मैं ज़रूर आपको अपने नेक
कामों से दिखा सकता हूँ कि मैं ईमान रखता हूँ।
19 अच्छा, आप कहते हैं, "हम ईमान रखते हैं कि
एक ही ख़ुदा है।" शाबाश, यह बिलकुल सहीह
है। शयातीन भी यह ईमान रखते हैं, गो वह यह
जानकर ख़ौफ़ के मारे थरथराते हैं। 20 होश में
आएँ! क्या आप नहीं समझते कि नेक आमाल के
बग़ैर ईमान बेकार है? 21 हमारे बाप इब्राहीम पर
ग़ौर करें। वह तो इसी वजह से रास्तबाज़ ठहराया
गया कि उसने अपने बेटे इसहाक़ को क़ुरबानगाह
पर पेश किया। 22 आप ख़ुद देख सकते हैं कि
उसका ईमान और नेक काम मिलकर अमल
कर रहे थे। उसका ईमान तो उससे मुकम्मल
हुआ जो कुछ उसने किया 23 और इस तरह ही
कलामे-मुक़द्दस की यह बात पूरी हुई, "इब्राहीम
ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह
ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।" इसी वजह से वह
"अल्लाह का दोस्त" कहलाया। 24 यों आप ख़ुद
देख सकते हैं कि इनसान अपने नेक आमाल की
बिना पर रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है, न कि
सिर्फ़ ईमान रखने की वजह से।

25 राहब फ़ाहिशा की मिसाल भी लें। उसे भी
अपने कामों की बिना पर रास्तबाज़ क़रार दिया
गया जब उसने इसराईली जासूसों की मेहमान-
नवाज़ी की और उन्हें शहर से निकलने का दूसरा
रास्ता दिखाकर बचाया।

26 ग़रज़, जिस तरह बदन रूह के बग़ैर मुरदा है
उसी तरह ईमान भी नेक आमाल के बग़ैर मुरदा
है।

ज़बान

3 मेरे भाइयो, आपमें से ज़्यादा उस्ताद न
बनें। आपको मालूम है कि हम उस्तादों
की ज़्यादा सख़्ती से अदालत की जाएगी। 2 हम
सबसे तो कई तरह की ग़लतियाँ सरज़द होती
हैं। लेकिन जिस शख़्स से बोलने में कभी ग़लती
नहीं होती वह कामिल है और अपने पूरे बदन
को क़ाबू में रखने के क़ाबिल है। 3 हम घोड़े के
मुँह में लगाम का दहाना रख देते हैं ताकि वह
हमारे हुक्म पर चले, और इस तरह हम अपनी
मरज़ी से उसका पूरा जिस्म चला लेते हैं। 4 या
बादबानी जहाज़ की मिसाल लें। जितना भी बड़ा
वह हो और जितनी भी तेज़ हवा चलती हो नाख़ुदा
एक छोटी-सी पतवार के ज़रीए उसका रुख़ ठीक
रखता है। यों ही वह उसे अपनी मरज़ी से चला
लेता है। 5 इसी तरह ज़बान एक छोटा-सा अज़ु
है, लेकिन वह बड़ी बड़ी बातें करती है।

देखें, एक बड़े जंगल को भस्म करने के लिए
एक ही चिंगारी काफ़ी होती है। 6 ज़बान भी आग

की मानिंद है। बदन के दीगर आज़ा के दरमियान रहकर उसमें नारास्ती की पूरी दुनिया पाई जाती है। वह पूरे बदन को आलूदा कर देती है, हाँ इनसान की पूरी ज़िंदगी को आग लगा देती है, क्योंकि वह ख़ुद जहन्नुम की आग से सुलगाई गई है। 7 देखें, इनसान हर क़िस्म के जानवरों पर क़ाबू पा लेता है और उसने ऐसा किया भी है, ख़ाह जंगली जानवर हों या परिंदे, रेंगनेवाले हों या समुंदरी जानवर। 8 लेकिन ज़बान पर कोई क़ाबू नहीं पा सकता, इस बेताब और शरीर चीज़ पर जो मोहलक ज़हर से लबालब भरी है। 9 ज़बान से हम अपने ख़ुदावंद और बाप की सताइश भी करते हैं और दूसरों पर लानत भी भेजते हैं, जिन्हें अल्लाह की सूरत पर बनाया गया है। 10 एक ही मुँह से सताइश और लानत निकलती है। मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए। 11 यह कैसे हो सकता है कि एक ही चश्मे से मीठा और कड़वा पानी फूट निकले। 12 मेरे भाइयो, क्या अंजीर के दरख़्त पर ज़ैतून लग सकते हैं या अंगूर की बेल पर अंजीर? हरगिज़ नहीं! इसी तरह नमकीन चश्मे से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

आसमान से हिकमत

13 क्या आपमें से कोई दाना और समझदार है? वह यह बात अपने अच्छे चाल-चलन से ज़ाहिर करे, हिकमत से पैदा होनेवाली हलीमी के नेक कामों से। 14 लेकिन ख़बरदार! अगर आप दिल में हसद की कड़वाहट और ख़ुदग़रज़ी पाल रहे हैं तो इस पर शेख़ी मत मारना, न सच्चाई के ख़िलाफ़ झूट बोलें। 15 ऐसा फ़ख़र आसमान की तरफ़ से नहीं है, बल्कि दुनियावी, ग़ैररूहानी और इबलीस से है। 16 क्योंकि जहाँ हसद और ख़ुदग़रज़ी है वहाँ फ़साद और हर शरीर काम पाया जाता है। 17 आसमान की हिकमत फ़रक़ है। अव्वल तो वह पाक और मुक़द्दस है। नीज़ वह अमनपसंद, नरमदिल, फ़रमाँबरदार, रहम और अच्छे फल से भरी हुई, ग़ैरजानिबदार और ख़ुलूसदिल है। 18 और जो सुलह कराते हैं उनके लिए रास्तबाज़ी का फल सलामती से बोया जाता है।

दुनिया से दोस्ती

4 यह लड़ाइयाँ और झगड़े जो आपके दरमियान हैं कहाँ से आते हैं? क्या इनका सरचश्मा वह बुरी ख़ाहिशात नहीं जो आपके आज़ा में लड़ती रहती हैं? 2 आप किसी चीज़ की ख़ाहिश रखते हैं, लेकिन उसे हासिल नहीं कर सकते। आप क़त्ल और हसद करते हैं, लेकिन जो कुछ आप चाहते हैं वह पा नहीं सकते। आप झगड़ते और लड़ते हैं। तो भी आपके पास कुछ नहीं है, क्योंकि आप अल्लाह से माँगते नहीं। 3 और जब आप माँगते हैं तो आपको कुछ नहीं मिलता। वजह यह है कि आप ग़लत नीयत से माँगते हैं। आप इससे अपनी ख़ुदग़रज़ ख़ाहिशात पूरी करना चाहते हैं। 4 बेवफ़ा लोगो! क्या आपको नहीं मालूम कि दुनिया का दोस्त अल्लाह का दुश्मन होता है? जो दुनिया का दोस्त बनना चाहता है वह अल्लाह का दुश्मन बन जाता है। 5 या क्या आप समझते हैं कि कलामे-मुक़द्दस की यह बात बेतुकी-सी है कि अल्लाह ग़ैरत से उस रूह का आरज़ूमंद है जिसको उसने हमारे अंदर सुकूनत करने दिया? 6 लेकिन वह हमें इससे कहीं ज़्यादा फ़ज़ल बख़्शता है। कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है, "अल्लाह मग़रूरों का मुक़ाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है।"

7 ग़रज़, अल्लाह के ताबे हो जाएँ। इबलीस का मुक़ाबला करें तो वह भाग जाएगा। 8 अल्लाह के क़रीब आ जाएँ तो वह आपके क़रीब आएगा। गुनाहगारो, अपने हाथों को पाक-साफ़ करें। दोदिलो, अपने दिलों को मख़सूसो-मुक़द्दस करें। 9 अफ़सोस करें, मातम करें, ख़ूब रोएँ। आपकी हँसी मातम में बदल जाए और आपकी ख़ुशी मायूसी में। 10 अपने आपको ख़ुदावंद के सामने नीचा करें तो वह आपको सरफ़राज़ करेगा।

एक दूसरे का मुंसिफ़ मत बनना

11 भाइयो, एक दूसरे पर तोहमत मत लगाना।
जो अपने भाई पर तोहमत लगाता या उसे मुजरिम
ठहराता है वह शरीअत पर तोहमत लगाता है
और शरीअत को मुजरिम ठहराता है। और जब
आप शरीअत पर तोहमत लगाते हैं तो आप उसके
पैरोकार नहीं रहते बल्कि उसके मुंसिफ़ बन गए
हैं। 12 शरीअत देनेवाला और मुंसिफ़ सिर्फ़ एक ही
है और वह है अल्लाह जो नजात देने और हलाक
करने के क़ाबिल है। तो फिर आप कौन हैं जो
अपने आपको मुंसिफ़ समझकर अपने पड़ोसी को
मुजरिम ठहरा रहे हैं!

शेख़ी मत मारना

13 और अब मेरी बात सुनें, आप जो कहते हैं,
“आज या कल हम फ़ुलाँ फ़ुलाँ शहर में जाएंगे।
वहाँ हम एक साल ठहरकर कारोबार करके पैसे
कमाएँगे।” 14 देखें, आप यह भी नहीं जानते कि
कल क्या होगा। आपकी ज़िंदगी चीज़ ही किया
है! आप भाप ही हैं जो थोड़ी देर के लिए नज़र
आती, फिर ग़ायब हो जाती है। 15 बल्कि आपको
यह कहना चाहिए, “अगर ख़ुदावंद की मरज़ी हुई
तो हम जिएँगे और यह या वह करेंगे।” 16 लेकिन
फ़िलहाल आप शेख़ी मारकर अपने ग़ुरूर का
इज़हार करते हैं। इस क़िस्म की तमाम शेख़ीबाज़ी
बुरी है।

17 चुनाँचे जो जानता है कि उसे क्या क्या नेक
काम करना है, लेकिन फिर भी कुछ नहीं करता
वह गुनाह करता है।

दौलतमंदो, ख़बरदार!

5 दौलतमंदो, अब मेरी बात सुनें! ख़ूब रोएँ
और गिर्याओ-ज़ारी करें, क्योंकि आप पर
मुसीबत आनेवाली है। 2 आपकी दौलत सड़ गई
है और कीड़े आपके शानदार कपड़े खा गए हैं।
3 आपके सोने और चाँदी को ज़ंग लग गया है।
और उनकी ज़ंगआलूदा हालत आपके ख़िलाफ़
गवाही देगी और आपके जिस्मों को आग की तरह
खा जाएगी। क्योंकि आपने इन आख़िरी दिनों में
अपने लिए ख़ज़ाने जमा कर लिए हैं। 4 देखें, जो
मज़दूरी आपने फ़सल की कटाई करनेवालों से
बाज़ रखी है वह आपके ख़िलाफ़ चिल्ला रही है।
और आपकी फ़सल जमा करनेवालों की चीख़ें
आसमानी लशकरों के रब के कानों तक पहुँच
गई हैं। 5 आपने दुनिया में ऐयाशी और ऐशो-
इशरत की ज़िंदगी गुज़ारी है। ज़बह के दिन आपने
अपने आपको मोटा-ताज़ा कर दिया है। 6 आपने
रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराकर क़त्ल किया है,
और उसने आपका मुक़ाबला नहीं किया।

सब्र और दुआ

7 भाइयो, अब सब्र से ख़ुदावंद की आमद के
इंतज़ार में रहें। किसान पर ग़ौर करें जो इस
इंतज़ार में रहता है कि ज़मीन अपनी क़ीमती
फ़सल पैदा करे। वह कितने सब्र से ख़रीफ़ और
बहार की बारिशों का इंतज़ार करता है! 8 आप
भी सब्र करें और अपने दिलों को मज़बूत रखें,
क्योंकि ख़ुदावंद की आमद क़रीब आ गई है।

9 भाइयो, एक दूसरे पर मत बुड़बुड़ाना, वरना
आपकी अदालत की जाएगी। मुंसिफ़ तो दरवाज़े
पर खड़ा है। 10 भाइयो, उन नबियों के नमूने पर
चलें जिन्होंने रब के नाम में कलाम पेश करके सब्र
से दुख उठाया। 11 देखें, हम उन्हें मुबारक कहते हैं
जो सब्र से दुख बरदाश्त करते थे। आपने अय्यूब
की साबितक़दमी के बारे में सुना है और यह भी
देख लिया कि रब ने आख़िर में क्या कुछ किया,
क्योंकि रब बहुत मेहरबान और रहीम है।

12 मेरे भाइयो, सबसे बढ़कर यह कि आप
क़सम न खाएँ, न आसमान की क़सम, न ज़मीन
की, न किसी और चीज़ की। जब आप “हाँ”
कहना चाहते हैं तो बस “हाँ” ही काफ़ी है। और
अगर इनकार करना चाहें तो बस “नहीं” कहना
काफ़ी है, वरना आप मुजरिम ठहरेंगे।

13 क्या आपमें से कोई मुसीबत में फँसा हुआ
है? वह दुआ करे। क्या कोई ख़ुश है? वह
सताइश के गीत गाए। 14 क्या आपमें से कोई

बीमार है? वह जमात के बुज़ुर्गों को बुलाए ताकि
वह आकर उसके लिए दुआ करें और ख़ुदावंद के
नाम में उस पर तेल मलें। 15 फिर ईमान से की गई
दुआ मरीज़ को बचाएगी और ख़ुदावंद उसे उठा
खड़ा करेगा। और अगर उसने गुनाह किया हो तो
उसे मुआफ़ किया जाएगा। 16 चुनाँचे एक दूसरे
के सामने अपने गुनाहों का इक़रार करें और एक
दूसरे के लिए दुआ करें ताकि आप शफ़ा पाएँ।
रास्त शख़्स की मुअस्सिर दुआ से बहुत कुछ हो
सकता है। 17 इलियास हम जैसा इनसान था।
लेकिन जब उसने ज़ोर से दुआ की कि बारिश न
हो तो साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई। 18 फिर
उसने दुबारा दुआ की तो आसमान ने बारिश अता
की और ज़मीन ने अपनी फ़सलें पैदा कीं।

19 मेरे भाइयो, अगर आपमें से कोई सच्चाई से
भटक जाए और कोई उसे सहीह राह पर वापस
लाए 20 तो यक़ीन जानें, जो किसी गुनाहगार को
उस की ग़लत राह से वापस लाता है वह उस की
जान को मौत से बचाएगा और गुनाहों की बड़ी
तादाद को छुपा देगा।

पतरस का पहला ख़त

1 यह ख़त ईसा मसीह के रसूल पतरस की तरफ़ से है।

मैं अल्लाह के चुने हुओं को लिख रहा हूँ, दुनिया के उन मेहमानों को जो पुंतुस, गलतिया, कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया के सूबों
में बिखरे हुए हैं। 2 ख़ुदा बाप ने आपको बहुत देर पहले जानकर चुन लिया और उसके रूह ने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया। नतीजे में आप ईसा मसीह के ताबे और उसके छिड़काए गए ख़ून से पाक-साफ़ हो गए हैं।

अल्लाह आपको भरपूर फ़ज़ल और सलामती बख़्शे।

ज़िंदा उम्मीद

3 ख़ुदा हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप की तारीफ़ हो! अपने अज़ीम रहम से उसने ईसा मसीह को ज़िंदा करने के वसीले से हमें नए सिरे से पैदा किया है। इससे हमें एक ज़िंदा
उम्मीद मिली है, 4 एक ऐसी मीरास जो कभी नहीं सड़ेगी, कभी नहीं नापाक हो जाएगी और कभी नहीं मुरझाएगी। क्योंकि यह आसमान पर
आपके लिए महफ़ूज़ रखी गई है। 5 और अल्लाह आपके ईमान के ज़रीए अपनी क़ुदरत से आपकी उस वक़्त तक हिफ़ाज़त करता रहेगा जब तक आपको नजात न मिल जाए, वह नजात जो आख़िरत के दिन सब पर ज़ाहिर होने के लिए तैयार है।

6 उस वक़्त आप ख़ुशी मनाएँगे, गो फ़िलहाल आपको थोड़ी देर के लिए तरह तरह की आज़माइशों का सामना करके ग़म खाना पड़ता है
7 ताकि आपका ईमान असली साबित हो जाए। क्योंकि जिस तरह आग सोने को आज़माकर ख़ालिस बना देती है उसी तरह आपका ईमान भी आज़माया जा रहा है, हालाँकि यह फ़ानी सोने से कहीं ज़्यादा क़ीमती है। क्योंकि अल्लाह चाहता है कि आपको उस दिन तारीफ़, जलाल और इज़्ज़त मिल जाए जब ईसा मसीह ज़ाहिर होगा।
8 उसी को आप प्यार करते हैं अगरचे आपने उसे देखा नहीं, और उसी पर आप ईमान रखते हैं गो वह आपको इस वक़्त नज़र नहीं आता। हाँ, आप दिल में नाक़ाबिले-बयान और जलाली ख़ुशी
मनाएँगे, 9 जब आप वह कुछ पाएँगे जो ईमान की मनज़िले-मक़सूद है यानी अपनी जानों की नजात।

10 नबी इसी नजात की तलाश और तफ़तीश में लगे रहे, और उन्होंने उस फ़ज़ल की पेशगोई
की जो अल्लाह आपको देनेवाला था। 11 उन्होंने मालूम करने की कोशिश की कि मसीह का रूह जो उनमें था किस वक़्त या किन हालात के बारे में बात कर रहा था जब उसने मसीह के दुख
और बाद के जलाल की पेशगोई की। 12 उन पर इतना ज़ाहिर किया गया कि उनकी यह पेशगोइयाँ उनके अपने लिए नहीं थीं, बल्कि आपके लिए। और अब यह सब कुछ आपको उन्हीं के वसीले

से पेश किया गया है जिन्होंने आसमान से भेजे गए रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए आपको अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई है। यह ऐसी बातें हैं जिन पर फ़रिश्ते भी नज़र डालने के आरज़ूमंद हैं।

मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारना

13 चुनाँचे ज़हनी तौर पर कमरबस्ता हो जाएँ।
होशमंदी से अपनी पूरी उम्मीद उस फ़ज़ल पर
रखें जो आपको ईसा मसीह के ज़ुहूर पर बख़्शा
जाएगा। 14 आप अल्लाह के ताबेफ़रमान फ़रज़ंद
हैं, इसलिए उन बुरी ख़ाहिशात को अपनी ज़िंदगी
में जगह न दें जो आप जाहिल होते वक़्त रखते थे।
वरना वह आपकी ज़िंदगी को अपने साँचे में ढाल
लेंगी। 15 इसके बजाए अल्लाह की मानिंद बनें
जिसने आपको बुलाया है। जिस तरह वह क़ुद्दूस
है उसी तरह आप भी हर वक़्त मुक़द्दस ज़िंदगी
गुज़ारें। 16 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
"अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस रखो क्योंकि
मैं मुक़द्दस हूँ।"

17 और याद रखें कि आसमानी बाप जिससे
आप दुआ करते हैं जानिबदारी नहीं करता बल्कि
आपके अमल के मुताबिक़ आपका फ़ैसला
करेगा। चुनाँचे जब तक आप इस दुनिया के
मेहमान रहेंगे ख़ुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारें।
18 क्योंकि आप ख़ुद जानते हैं कि आपको
बापदादा की बेमानी ज़िंदगी से छुड़ाने के लिए
क्या फ़िद्या दिया गया। यह सोने या चाँदी जैसी
फ़ानी चीज़ नहीं थी 19 बल्कि मसीह का क़ीमती
ख़ून था। उसी को बेनुक़्स और बेदाग़ लेले की
हैसियत से हमारे लिए क़ुरबान किया गया।
20 उसे दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर चुना गया,
लेकिन इन आख़िरी दिनों में आपकी ख़ातिर
ज़ाहिर किया गया। 21 और उसके वसीले से आप
अल्लाह पर ईमान रखते हैं जिसने उसे मुरदों में से
ज़िंदा करके इज़्ज़तो-जलाल दिया ताकि आपका
ईमान और उम्मीद अल्लाह पर हो।

22 सच्चाई के ताबे हो जाने से आपको
मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया गया और आप-
के दिलों में भाइयों के लिए बेरिया मुहब्बत डाली
गई है। चुनाँचे अब एक दूसरे को ख़ुलूसदिली और
लग्न से प्यार करते रहें। 23 क्योंकि आपकी नए
सिरे से पैदाइश हुई है। और यह किसी फ़ानी बीज
का फल नहीं है बल्कि अल्लाह के लाफ़ानी, ज़िंदा
और क़ायम रहनेवाले कलाम का फल है। 24 यों
कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है,

"तमाम इनसान घास ही हैं,
उनकी तमाम शानो-शौकत
जंगली फूल की मानिंद है।
घास तो मुरझा जाती और फूल
गिर जाता है,
25 लेकिन रब का कलाम
अबद तक क़ायम रहता है।"

मज़कूरा कलाम अल्लाह की ख़ुशख़बरी है जो आपको सुनाई गई है।

ज़िंदा पत्थर और मुक़द्दस क़ौम

2 चुनाँचे अपनी ज़िंदगी से तमाम तरह की
बुराई, धोकेबाज़ी, रियाकारी, हसद और
बुहतान निकालें। 2 चूँकि आप नौमौलूद बच्चे हैं
इसलिए ख़ालिस रूहानी दूध पीने के आरज़ूमंद
रहें, क्योंकि इसे पीने से ही आप बढ़ते बढ़ते
नजात की नौबत तक पहुँचेंगे। 3 जिन्होंने ख़ुदावंद
की भलाई का तजरबा किया है उनके लिए ऐसा
करना ज़रूरी है।

4 ख़ुदावंद के पास आएँ, उस ज़िंदा पत्थर के
पास जिसे इनसानों ने रद्द किया है, लेकिन जो
अल्लाह के नज़दीक चुनीदा और क़ीमती है।
5 और आप भी ज़िंदा पत्थर हैं जिनको अल्लाह
अपने रूहानी मक़दिस को तामीर करने के लिए
इस्तेमाल कर रहा है। न सिर्फ़ यह बल्कि आप
उसके मख़सूसो-मुक़द्दस इमाम हैं। ईसा मसीह के
वसीले से आप ऐसी रूहानी क़ुरबानियाँ पेश कर
रहे हैं जो अल्लाह को पसंद हैं। 6 क्योंकि कलामे-
मुक़द्दस फ़रमाता है,

"देखो, मैं सिय्यून में एक पत्थर
रख देता हूँ,

कोने का एक चुनीदा और क़ीमती पत्थर।
जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शरमिंदा नहीं किया जाएगा।”
7 यह पत्थर आपके नज़दीक जो ईमान रखते हैं
बेशक़ीमत है। लेकिन जो ईमान नहीं लाए उन्होंने
उसे रद्द किया।
“जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने
रद्द किया
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।”
8 नीज़ वह एक ऐसा पत्थर है
“जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चट्टान जो ठेस लगने
का सबब होगी।”
वह इसलिए ठोकर खाते हैं क्योंकि वह कलामे-
मुक़द्दस के ताबे नहीं होते। यही कुछ अल्लाह की
उनके लिए मरज़ी थी।
9 लेकिन आप अल्लाह की चुनी हुई नसल
हैं, आप आसमानी बादशाह के इमाम और
उस की मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम हैं। आप उस
की मिलकियत बन गए हैं ताकि अल्लाह के
क़वी कामों का एलान करें, क्योंकि वह आपको
तारीकी से अपनी हैरतअंगेज़ रौशनी में लाया है।
10 एक वक़्त था जब आप उस की क़ौम नहीं थे,
लेकिन अब आप अल्लाह की क़ौम हैं। पहले आप
पर रहम नहीं हुआ था, लेकिन अब अल्लाह ने
आप पर अपने रहम का इज़हार किया है।

अल्लाह के ख़ादिम

11 अज़ीज़ो, आप इस दुनिया में अजनबी और
मेहमान हैं। इसलिए मैं आपको ताकीद करता
हूँ कि आप जिस्मानी ख़ाहिशात का इनकार
करें। क्योंकि यह आपकी जान से लड़ती हैं।
12 ग़ैरईमानदारों के दरमियान रहते हुए इतनी
अच्छी ज़िंदगी गुज़ारें कि गो वह आप पर ग़लत
काम करने की तोहमत भी लगाएँ तो भी उन्हें
आपके नेक काम नज़र आएँ और उन्हें अल्लाह
की आमद के दिन उस की तमजीद करनी पड़े।
13 ख़ुदावंद की ख़ातिर हर इनसानी इख़्ति-
यार के ताबे रहें, ख़ाह बादशाह हो जो सबसे
आला इख़्तियार रखनेवाला है, 14 ख़ाह उसके
वज़ीर जिन्हें उसने इसलिए मुक़र्रर किया है कि वह
ग़लत काम करनेवालों को सज़ा और अच्छा काम
करनेवालों को शाबाश दें। 15 क्योंकि अल्लाह की
मरज़ी है कि आप अच्छा काम करने से नासमझ
लोगों की जाहिल बातों को बंद करें। 16 आप
आज़ाद हैं, इसलिए आज़ादाना ज़िंदगी गुज़ारें।
लेकिन अपनी आज़ादी को ग़लत काम छुपाने
के लिए इस्तेमाल न करें, क्योंकि आप अल्लाह
के ख़ादिम हैं। 17 हर एक का मुनासिब एहतराम
करें, अपने बहन-भाइयों से मुहब्बत रखें, ख़ुदा का
ख़ौफ़ मानें, बादशाह का एहतराम करें।

मसीह के दुख का नमूना

18 ऐ ग़ुलामो, हर लिहाज़ से अपने मा-
लिकों का एहतराम करके उनके ताबे रहें। और
यह सुलूक न सिर्फ़ उनके साथ हो जो नेक और
नरमदिल हैं बल्कि उनके साथ भी जो ज़ालिम
हैं। 19 क्योंकि अगर कोई अल्लाह की मरज़ी का
ख़याल करके बेइनसाफ़ तकलीफ़ का ग़म सब्र
से बरदाश्त करे तो यह अल्लाह का फ़ज़ल है।
20 बेशक इसमें फ़ख़र की कोई बात नहीं अगर
आप सब्र से पिटाई की वह सज़ा बरदाश्त करें
जो आपको ग़लत काम करने की वजह से मिली
हो। लेकिन अगर आपको अच्छा काम करने की
वजह से दुख सहना पड़े और आप यह सज़ा सब्र
से बरदाश्त करें तो यह अल्लाह का फ़ज़ल है।
21 आपको इसी के लिए बुलाया गया है। क्योंकि
मसीह ने आपकी ख़ातिर दुख सहने में आपके
लिए एक नमूना छोड़ा है। और वह चाहता है
कि आप उसके नक़्शे-क़दम पर चलें। 22 उसने
तो कोई गुनाह न किया, और न कोई फ़रेब की
बात उसके मुँह से निकली। 23 जब लोगों ने उसे
गालियाँ दीं तो उसने जवाब में गालियाँ न दीं।
जब उसे दुख सहना पड़ा तो उसने किसी को
धमकी न दी बल्कि उसने अपने आपको अल्लाह

के हवाले कर दिया जो इनसाफ़ से अदालत
करता है। 24 मसीह ख़ुद अपने बदन पर हमारे
गुनाहों को सलीब पर ले गया ताकि हम गुनाहों
के एतबार से मर जाएँ और यों हमारा गुनाह से
ताल्लुक़ ख़त्म हो जाए। अब वह चाहता है कि हम
रास्तबाज़ी की ज़िंदगी गुज़ारें। क्योंकि आपको
उसी के ज़ख़मों के वसीले से शफ़ा मिली है।
25 पहले आप आवारा भेड़ों की तरह आवारा फिर
रहे थे, लेकिन अब आप अपनी जानों के चरवाहे
और निगरान के पास लौट आए हैं।

बीवी और शौहर

3 इसी तरह आप बीवियों को भी अपने अपने
शौहर के ताबे रहना है। क्योंकि इस तरह
वह जो ईमान नहीं रखते अपनी बीवी के चाल-
चलन से जीते जा सकते हैं। कुछ कहने की ज़रूरत
नहीं रहेगी 2 क्योंकि वह देखेंगे कि आप कितनी
पाकीज़गी से ख़ुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारती
हैं। 3 इसकी फ़िकर मत करना कि आप ज़ाहिरी
तौर पर आरास्ता हों, मसलन खास तौर-तरीक़ों
से गुँधे हुए बालों से या सोने के ज़ेवर और शानदार
लिबास पहनने से। 4 इसके बजाए इसकी फ़िकर
करें कि आपकी बातिनी शख़्सियत आरास्ता हो।
क्योंकि जो रूह नरमदिली और सुकून के लाफ़ानी
ज़ेवरों से सजी हुई है वही अल्लाह के नज़दीक
बेशक़ीमत है। 5 माज़ी में अल्लाह पर उम्मीद
रखनेवाली मुक़द्दस ख़वातीन भी इसी तरह अपना
सिंगार किया करती थीं। यों वह अपने शौहरों
के ताबे रहीं, 6 सारा की तरह जो अपने शौहर
इब्राहीम को आक़ा कहकर उस की मानती थी।
आप तो सारा की बेटियाँ बन गई हैं। चुनाँचे नेक
काम करें और किसी भी चीज़ से न डरें, ख़ाह वह
कितनी ही डरावनी क्यों न हो।

7 इस तरह लाज़िम है कि आप जो शौहर हैं
समझ के साथ अपनी बीवियों के साथ ज़िंदगी
गुज़ारें, यह जानकर कि यह आपकी निसबत
कमज़ोर हैं। उनकी इज़्ज़त करें, क्योंकि यह भी
आपके साथ ज़िंदगी के फ़ज़ल की वारिस हैं। ऐसा
न हो कि इसमें बेपरवाई करने से आपकी दुआइया
ज़िंदगी में रुकावट पैदा हो जाए।

नेक ज़िंदगी गुज़ारने की वजह से दुख

8 आख़िर में एक और बात, आप सब एक ही
सोच रखें और एक दूसरे से ताल्लुक़ात में हमदर्दी,
प्यार, रहम और हलीमी का इज़हार करें। 9 किसी
के ग़लत काम के जवाब में ग़लत काम मत करना,
न किसी की गालियों के जवाब में गाली देना।
इसके बजाए जवाब में ऐसे शख़्स को बरकत दें,
क्योंकि अल्लाह ने आपको भी इसलिए बुलाया
है कि आप उस की बरकत विरासत में पाएँ।
10 कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है,

“कौन मज़े से ज़िंदगी गुज़ारना
और अच्छे दिन देखना चाहता है?
वह अपनी ज़बान को
 शरीर बातें करने से रोके
और अपने होंटों को झूट बोलने से।
11 वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे,
सुलह-सलामती का तालिब होकर
उसके पीछे लगा रहे।
12 क्योंकि रब की आँखें
 रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं,
और उसके कान
 उनकी दुआओं की तरफ़ मायल हैं।
लेकिन रब का चेहरा उनके ख़िलाफ़ है
जो ग़लत काम करते हैं।”

13 अगर आप नेक काम करने में सरगरम हों
तो कौन आपको नुक़सान पहुँचाएगा? 14 लेकिन
अगर आपको रास्त काम करने की वजह से
दुख भी उठाना पड़े तो आप मुबारक हैं।
उनकी धमकियों से मत डरना और मत घबराना
15 बल्कि अपने दिलों में ख़ुदावंद मसीह को
मख़सूसो-मुक़द्दस जानें। और जो भी आपसे
आपकी मसीह पर उम्मीद के बारे में पूछे हर
वक़्त उसे जवाब देने के लिए तैयार रहें। लेकिन
नरमदिली से और ख़ुदा के ख़ौफ़ के साथ जवाब
दें। 16 साथ साथ आपका ज़मीर साफ़ हो। फिर

जो लोग आपके मसीह में अच्छे चाल-चलन के
बारे में ग़लत बातें कर रहे हैं उन्हें अपनी तोहमत
पर शर्म आएगी। 17 याद रहे कि ग़लत काम
करने की वजह से दुख सहने की निसबत बेहतर
यह है कि हम नेक काम करने की वजह से
तकलीफ़ उठाएँ, बशर्तेकि यह अल्लाह की मरज़ी
हो। 18 क्योंकि मसीह ने हमारे गुनाहों को मिटाने
की ख़ातिर एक बार सदा के लिए मौत सही। हाँ,
जो रास्तबाज़ है उसने यह नारास्तों के लिए किया
ताकि आपको अल्लाह के पास पहुँचाए। उसे
बदन के एतबार से सज़ाए-मौत दी गई, लेकिन
रूह के एतबार से उसे ज़िंदा कर दिया गया।
19 इस रूह के ज़रीए उसने जाकर क़ैदी रूहों को
पैग़ाम दिया। 20 यह उनकी रूहें थीं जो उन दिनों
में नाफ़रमान थे जब नूह अपनी कश्ती बना रहा
था। उस वक़्त अल्लाह सब्र से इंतज़ार करता
रहा, लेकिन आख़िरकार सिर्फ़ चंद एक लोग यानी
आठ अफ़राद पानी में से गुज़रकर बच निकले।
21 यह पानी उस बपतिस्मे की तरफ़ इशारा है जो
इस वक़्त आपको नजात दिलाता है। इससे जिस्म
की गंदगी दूर नहीं की जाती बल्कि बपतिस्मा
लेते वक़्त हम अल्लाह से अर्ज़ करते हैं कि वह
हमारा ज़मीर पाक-साफ़ कर दे। फिर यह आपको
ईसा मसीह के जी उठने से नजात दिलाता है।
22 अब मसीह आसमान पर जाकर अल्लाह के
दहने हाथ बैठ गया है जहाँ फ़रिश्ते, इख़्तियारवाले
और क़ुव्वतें उसके ताबे हैं।

तबदीलशुदा ज़िंदगियाँ

4 अब चूँकि मसीह ने जिस्मानी तौर पर
दुख उठाया इसलिए आप भी अपने
आपको उस की-सी सोच से लैस करें। क्योंकि
जिसने मसीह की ख़ातिर जिस्मानी तौर पर दुख
सह लिया है उसने गुनाह से निपट लिया है।
2 नतीजे में वह ज़मीन पर अपनी बाक़ी ज़िंदगी
इनसान की बुरी ख़ाहिशात पूरी करने में नहीं
गुज़ारेगा बल्कि अल्लाह की मरज़ी पूरी करने में।
3 माज़ी में आपने काफ़ी वक़्त वह कुछ करने
में गुज़ारा जो ग़ैरईमानदार पसंद करते हैं यानी
ऐयाशी, शहवतपरस्ती, नशाबाज़ी, शराबनोशी,
रंगरलियों, नाच-रंग और घिनौनी बुतपरस्ती में।
4 अब आपके ग़ैरईमानदार दोस्त ताज्जुब करते हैं
कि आप उनके साथ मिलकर ऐयाशी के इस तेज़
धारे में छलाँग नहीं लगाते। इसलिए वह आप पर
कुफ़र बकते हैं। 5 लेकिन उन्हें अल्लाह को जवाब
देना पड़ेगा जो ज़िंदों और मुरदों की अदालत करने
के लिए तैयार खड़ा है। 6 यही वजह है कि अल्लाह
की ख़ुशख़बरी उन्हें भी सुनाई गई जो अब मुरदा
हैं। मक़सद यह था कि वह अल्लाह के सामने रूह
में ज़िंदगी गुज़ार सकें अगरचे इनसानी लिहाज़ से
उनके जिस्म की अदालत की गई है।

अपनी नेमतों से एक दूसरे की ख़िदमत करें

7 तमाम चीज़ों का ख़ातमा क़रीब आ गया है।
चुनाँचे दुआ करने के लिए चुस्त और होशमंद
रहें। 8 सबसे ज़रूरी बात यह है कि आप एक
दूसरे से लगातार मुहब्बत रखें, क्योंकि मुहब्बत
गुनाहों की बड़ी तादाद पर परदा डाल देती है।
9 बुड़बुड़ाए बग़ैर एक दूसरे की मेहमान-नवाज़ी
करें। 10 अल्लाह अपना फ़ज़ल मुख़्तलिफ़ नेमतों
से ज़ाहिर करता है। फ़ज़ल का यह इंतज़ाम
वफ़ादारी से चलाते हुए एक दूसरे की ख़िदमत
करें, हर एक उस नेमत से जो उसे मिली है।
11 अगर कोई बोले तो अल्लाह के-से अलफ़ाज़
के साथ बोले। अगर कोई ख़िदमत करे तो उस
ताक़त के ज़रीए जो अल्लाह उसे मुहैया करता है,
क्योंकि इस तरह ही अल्लाह को ईसा मसीह के
वसीले से जलाल दिया जाएगा। अज़ल से अबद
तक जलाल और क़ुदरत उसी की हो! आमीन।

आपकी मुसीबत ग़ैरमामूली नहीं है

12 अज़ीज़ो, ईज़ारसानी की उस आग पर
ताज्जुब न करें जो आपको आज़माने के लिए
आप पर आन पड़ी है। यह मत सोचना कि मेरे
साथ कैसी ग़ैरमामूली बात हो रही है। 13 बल्कि
ख़ुशी मनाएँ कि आप मसीह के दुखों में शरीक

हो रहे हैं। क्योंकि फिर आप उस वक़्त भी ख़ुशी
मनाएँगे जब मसीह का जलाल ज़ाहिर होगा।
14 अगर लोग इसलिए आपकी बेइज़्ज़ती करते हैं
कि आप मसीह के पैरोकार हैं तो आप मुबारक हैं।
क्योंकि इसका मतलब है कि अल्लाह का जलाली
रूह आप पर ठहरा हुआ है। 15 अगर आपमें से
किसी को दुख उठाना पड़े तो यह इसलिए नहीं
होना चाहिए कि आप क़ातिल, चोर, मुजरिम या
फ़सादी हैं। 16 लेकिन अगर आपको मसीह के
पैरोकार होने की वजह से दुख उठाना पड़े तो न
शर्माएँ बल्कि मसीह के नाम में अल्लाह की हम्दो-
सना करें।

17 क्योंकि अब वक़्त आ गया है कि अल्लाह
की अदालत शुरू हो जाए, और पहले उसके
घरवालों की अदालत की जाएगी। अगर ऐसा है
तो फिर इसका अंजाम उनके लिए क्या होगा जो
अल्लाह की ख़ुशख़बरी के ताबे नहीं हैं? 18 और
अगर रास्तबाज़ मुश्किल से बचेंगे तो फिर बेदीन
और गुनाहगार का क्या होगा? 19 चुनाँचे जो
अल्लाह की मरज़ी से दुख उठा रहे हैं वह नेक काम
करने से बाज़ न आएँ बल्कि अपनी जानों को उसी
के हवाले करें जो उनका वफ़ादार ख़ालिक़ है।

अल्लाह का गल्ला

5 अब मैं आपको जो जमातों के बुज़ुर्ग हैं
नसीहत करना चाहता हूँ। मैं ख़ुद भी बुज़ुर्ग
हूँ बल्कि मसीह के दुखों का गवाह भी हूँ, और
मैं आपके साथ उस आनेवाले जलाल में शरीक
हो जाऊँगा जो ज़ाहिर हो जाएगा। इस हैसियत
से मैं आपसे अपील करता हूँ, 2 गल्लाबान होते
हुए अल्लाह के उस गल्ले की देख-भाल करें जो
आपके सुपुर्द किया गया है। यह ख़िदमत मजबूरन
न करें बल्कि ख़ुशी से, क्योंकि यह अल्लाह
की मरज़ी है। लालच के बग़ैर पूरी लग्न से यह
ख़िदमत सरंजाम दें। 3 जिन्हें आपके सुपुर्द किया
गया है उन पर हुकूमत मत करना बल्कि गल्ले के
लिए अच्छा नमूना बनें। 4 फिर जब हमारा सरदार
गल्लाबान ज़ाहिर होगा तो आपको जलाल का
ग़ैरफ़ानी ताज मिलेगा।

5 इसी तरह लाज़िम है कि आप जो जवान हैं
बुज़ुर्गों के ताबे रहें। सब इंकिसारी का लिबास
पहनकर एक दूसरे की ख़िदमत करें, क्योंकि
अल्लाह मग़रूरों का मुक़ाबला करता लेकिन
फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है। 6 चुनाँचे अल्लाह
के क़ादिर हाथ के नीचे झुक जाएँ ताकि वह मौज़ूँ
वक़्त पर आपको सरफ़राज़ करे। 7 अपनी तमाम
परेशानियाँ उस पर डाल दें, क्योंकि वह आपकी
फ़िकर करता है।

8 होशमंद रहें, जागते रहें। आपका दुश्मन
इबलीस गरजते हुए शेरबबर की तरह घुमता-
फिरता और किसी को हड़प कर लेने की तलाश
में रहता है। 9 ईमान में मज़बूत रहकर उसका
मुक़ाबला करें। आपको तो मालूम है कि पूरी
दुनिया में आपके भाई इसी क़िस्म का दुख उठा
रहे हैं। 10 लेकिन आपको ज़्यादा देर के लिए दुख
उठाना नहीं पड़ेगा। क्योंकि हर तरह के फ़ज़्ल
का ख़ुदा जिसने आपको मसीह में अपने अबदी
जलाल में शरीक होने के लिए बुलाया है वह
ख़ुद आपको कामिलियत तक पहुँचाएगा, मज़बूत
बनाएगा, तक़वियत देगा और एक ठोस बुनियाद
पर खड़ा करेगा। 11 अबद तक क़ुदरत उसी को
हासिल रहे। आमीन।

आख़िरी सलाम

12 मैं आपको यह मुख़तसर ख़त सिल-
वानुस की मदद से लिख रहा हूँ जिसे मैं
वफ़ादार भाई समझता हूँ। मैं इससे आपकी
हौसलाअफ़्ज़ाई और इसकी तसदीक़ करना
चाहता हूँ कि यही अल्लाह का हक़ीक़ी फ़ज़्ल
है। इस पर क़ायम रहें।

13 बाबल में जो जमात अल्लाह ने आपकी
तरह चुनी है वह आपको सलाम कहती है, और
इसी तरह मेरा बेटा मरक़ुस भी। 14 एक दूसरे को
मुहब्बत का बोसा देना।

आप सबकी जो मसीह में हैं सलामती हो।

पतरस का दूसरा ख़त

1 यह ख़त ईसा मसीह के ख़ादिम और रसूल
शमाऊन पतरस की तरफ़ से है।
मैं उन सबको लिख रहा हूँ जिन्हें हमारे ख़ुदा
और नजातदहिंदा ईसा मसीह की रास्तबाज़ी के
वसीले से वही बेशक़ीमत ईमान बख़्शा गया है जो
हमें भी मिला।
2 ख़ुदा करे कि आप उसे और हमारे ख़ुदावंद
ईसा को जानने में तरक़्क़ी करते करते कसरत से
फ़ज़ल और सलामती पाते जाएँ।

अल्लाह का बुलावा

3 अल्लाह ने अपनी इलाही क़ुदरत से हमें वह
सब कुछ अता किया है जो ख़ुदातरस ज़िंदगी
गुज़ारने के लिए ज़रूरी है। और हमें यह उसे जान
लेने से हासिल हुआ है। क्योंकि उसने हमें अपने
ज़ाती जलाल और क़ुदरत के ज़रीए बुलाया है।
4 इस जलाल और क़ुदरत से उसने हमें वह अज़ीम
और बेशक़ीमत चीज़ें दी हैं जिनका वादा उसने
किया था। क्योंकि वह चाहता था कि आप इनसे
दुनिया की बुरी ख़ाहिशात से पैदा होनेवाले फ़साद
से बचकर उस की इलाही ज़ात में शरीक हो
जाएँ। 5 यह सब कुछ पेशे-नज़र रखकर पूरी लग्न
से कोशिश करें कि आपके ईमान से अख़लाक़
पैदा हो जाए, अख़लाक़ से इल्म, 6 इल्म
से ज़ब्ते-नफ़स, ज़ब्ते-नफ़स से साबितक़दमी,
साबितक़दमी से ख़ुदातरस ज़िंदगी, 7 ख़ुदातरस
ज़िंदगी से बरादराना शफ़क़त और बरादराना
शफ़क़त से सबके लिए मुहब्बत। 8 क्योंकि
जितना ही आप इन ख़ूबियों में बढ़ते जाएंगे उतना
ही यह आपको इससे महफ़ूज़ रखेंगी कि आप
हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह को जानने में सुस्त और
बेफल रहें। 9 लेकिन जिसमें यह ख़ूबियाँ नहीं हैं
उस की नज़र इतनी कमज़ोर है कि वह अंधा है।
वह भूल गया है कि उसे उसके गुज़रे गुनाहों से
पाक-साफ़ किया गया है।
10 चुनाँचे भाइयो, मज़ीद लग्न से अपने
बुलावे और चुनाव की तसदीक़ करने में कोशाँ
रहें। क्योंकि यह करने से आप गिर जाने से
बचेंगे 11 और अल्लाह बड़ी ख़ुशी से आपको
हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिंदा ईसा मसीह की
बादशाही में दाख़िल होने की इजाज़त देगा।
12 इसलिए मैं हमेशा आपको इन बातों की
याद दिलाता रहूँगा, हालाँकि आप इनसे वाक़िफ़
हैं और मज़बूती से उस सच्चाई पर क़ायम हैं
जो आपको मिली है। 13 बल्कि मैं अपना फ़र्ज़
समझता हूँ कि जितनी और देर मैं जिस्म की
इस झोंपड़ी में रहता हूँ आपको इन बातों की
याद दिलाने से उभारता रहूँ। 14 क्योंकि मुझे
मालूम है कि अब मेरी यह झोंपड़ी जल्द ही ढा दी
जाएगी। हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह ने भी मुझ पर
यह ज़ाहिर किया था। 15 लेकिन मैं पूरी कोशिश
करूँगा कि मेरे कूच कर जाने के बाद भी आप हर
वक़्त इन बातों को याद रख सकें।

मसीह के जलाल के गवाह

16 क्योंकि जब हमने आपको अपने और
आपके ख़ुदावंद मसीह की क़ुदरत और आमद के
बारे में बताया तो हम चालाकी से घड़े क़िस्से-
कहानियों पर इनहिसार नहीं कर रहे थे बल्कि
हमने यह गवाहों की हैसियत से बताया। क्योंकि
हमने अपनी ही आँखों से उस की अज़मत
देखी थी। 17 हम मौजूद थे जब उसे ख़ुदा बाप
से इज़्ज़तो-जलाल मिला, जब एक आवाज़ ने
अल्लाह की पुरजलाल शान से आकर कहा, “यह
मेरा प्यारा फ़रज़ंद है जिससे मैं ख़ुश हूँ।” 18 जब
हम उसके साथ मुक़द्दस पहाड़ पर थे तो हमने ख़ुद
यह आवाज़ आसमान से आती सुनी।

19 इस तजरबे की बिना पर हमारा नबियों
के पैग़ाम पर एतमाद ज़्यादा मज़बूत है। आप
अच्छा करेंगे अगर इस पर ख़ूब ध्यान दें। क्योंकि
यह किसी तारीक जगह में रौशनी की मानिंद है
जो उस वक़्त तक चमकती रहेगी जब तक पौ
फटकर सुबह का सितारा आपके दिलों में तुलू न
हो जाए। 20 सबसे बढ़कर आपको यह समझने
की ज़रूरत है कि कलामे-मुक़द्दस की कोई भी
पेशगोई नबी की अपनी ही तफ़सीर से पैदा नहीं
होती। 21 क्योंकि कोई भी पेशगोई कभी भी
इनसान की तहरीक से वुजूद में नहीं आई बल्कि
पेशगोई करते वक़्त इनसानों ने रूहुल-क़ुद्स से
तहरीक पाकर अल्लाह की तरफ़ से बात की।

झूटे उस्ताद

2 लेकिन जिस तरह माज़ी में इसराईल क़ौम
में झूटे नबी भी थे, उसी तरह आपमें से
भी झूटे उस्ताद खड़े हो जाएंगे। यह ख़ुदा की
जमातों में मोहलक तालीमात फैलाएँगे बल्कि
अपने मालिक को जानने से इनकार भी करेंगे
जिसने उन्हें ख़रीद लिया था। ऐसी हरकतों से यह
जल्द ही अपने आप पर हलाकत लाएँगे। 2 बहुत-
से लोग उनकी ऐयाश हरकतों की पैरवी करेंगे,
और इस वजह से दूसरे सच्चाई की राह पर कुफ़र
बकेंगे। 3 लालच के सबब से यह उस्ताद आपको
फ़रज़ी कहानियाँ सुनाकर आपकी लूट-खसोट
करेंगे। लेकिन अल्लाह ने बड़ी देर से उन्हें मुजरिम
ठहराया, और उसका फ़ैसला सुस्तरफ़्तार नहीं
है। हाँ, उनका मुंसिफ़ ऊँघ नहीं रहा बल्कि उन्हें
हलाक करने के लिए तैयार खड़ा है।

4 देखें, अल्लाह ने उन फ़रिश्तों को बचने न
दिया जिन्होंने गुनाह किया बल्कि उन्हें तारीकी
की ज़ंजीरों में बाँधकर जहन्नुम में डाल दिया जहाँ
वह अदालत के दिन तक महफ़ूज़ रहेंगे। 5 इसी
तरह उसने क़दीम दुनिया को बचने न दिया बल्कि
उसके बेदीन बाशिंदों पर सैलाब को आने दिया।
उसने सिर्फ़ रास्तबाज़ी के पैग़ंबर नूह को सात
और जानों समेत बचाया। 6 और उसने सदूम और
अमूरा के शहरों को मुजरिम क़रार देकर राख कर
दिया। यों अल्लाह ने उन्हें इबरत बनाकर दिखाया
कि बेदीनों के साथ क्या कुछ किया जाएगा।
7 साथ साथ उसने लूत को बचाया जो रास्तबाज़
था और बेउसूल लोगों के गंदे चाल-चलन देख
देखकर पिसता रहा। 8 क्योंकि यह रास्तबाज़
आदमी उनके दरमियान बसता था, और उस की
रास्तबाज़ जान रोज़ बरोज़ उनकी शरीर हरकतें
देख और सुनकर सख़्त अज़ाब में फँसी रही। 9 यों
ज़ाहिर है कि रब दीनदार लोगों को आज़माइश
से बचाना और बेदीनों को अदालत के दिन तक
सज़ा के तहत रखना जानता है, 10 ख़ासकर उन्हें
जो अपने जिस्म की गंदी ख़ाहिशात के पीछे लगे
रहते और ख़ुदावंद के इख़्तियार को हक़ीर जानते
हैं।

यह लोग गुस्ताख़ और मग़रूर हैं और जलाली
हस्तियों पर कुफ़र बकने से नहीं डरते। 11 इसके
मुक़ाबले में फ़रिश्ते भी जो कहीं ज़्यादा ताक़तवर
और क़वी हैं रब के हुज़ूर ऐसी हस्तियों पर बुहतान
और इलज़ामात लगाने की जुर्रत नहीं करते।
12 लेकिन यह झूटे उस्ताद बेअक़्ल जानवरों की
मानिंद हैं, जो फ़ितरी तौर पर इसलिए पैदा हुए
हैं कि उन्हें पकड़ा और ख़त्म किया जाए। जो
कुछ वह नहीं समझते उस पर वह कुफ़र बकते
हैं। और जंगली जानवरों की तरह वह भी हलाक

हो जाएंगे। 13 यों जो नुक़सान उन्होंने दूसरों को
पहुँचाया वही उन्हें ख़ुद भुगतना पड़ेगा। उनके
नज़दीक लुत्फ़ उठाने से मुराद यह है कि दिन
के वक़्त खुलकर ऐश करें। वह दाग़ और धब्बे
हैं जो आपकी ज़ियाफ़तों में शरीक होकर अपनी
दग़ाबाज़ियों की रंगरलियाँ मनाते हैं। 14 उनकी
आँखें हर वक़्त किसी बदकार औरत से ज़िना
करने की तलाश में रहती हैं और गुनाह करने से
कभी नहीं रुकतीं। वह कमज़ोर लोगों को ग़लत
काम करने के लिए उकसाते और लालच करने
में माहिर हैं। उन पर अल्लाह की लानत! 15 वह
सहीह राह से हटकर आवारा फिर रहे और बिलाम
बिन बओर के नक़्शे-क़दम पर चल रहे हैं, क्योंकि
बिलाम ने पैसों के लालच में ग़लत काम किया।
16 लेकिन गधी ने उसे इस गुनाह के सबब से
डाँटा। इस जानवर ने जो बोलने के क़ाबिल नहीं
था इनसान की-सी आवाज़ में बात की और नबी
को उस की दीवानगी से रोक दिया।

17 यह लोग सूखे हुए चश्मे और आँधी से
धकेले हुए बादल हैं। इनकी तक़दीर अंधेरे का
तारीकतरीन हिस्सा है। 18 यह मग़रूर बातें करते
हैं जिनके पीछे कुछ नहीं है और ग़ैरअख़लाक़ी
जिस्मानी शहवतों से ऐसे लोगों को उकसाते हैं
जो हाल ही में धोके की ज़िंदगी गुज़ारनेवालों में
से बच निकले हैं। 19 यह उन्हें आज़ाद करने का
वादा करते हैं जबकि ख़ुद बदकारी के ग़ुलाम हैं।
क्योंकि इनसान उसी का ग़ुलाम है जो उस पर
ग़ालिब आ गया है। 20 और जो हमारे ख़ुदावंद
और नजातदहिंदा ईसा मसीह को जान लेने से इस
दुनिया की आलूदगी से बच निकलते हैं, लेकिन
बाद में एक बार फिर इसमें फँसकर मग़लूब हो
जाते हैं उनका अंजाम पहले की निसबत ज़्यादा
बुरा हो जाता है। 21 हाँ, जिन लोगों ने रास्तबाज़ी
की राह को जान लिया, लेकिन बाद में उस
मुक़द्दस हुक्म से मुँह फेर लिया जो उनके हवाले
किया गया था, उनके लिए बेहतर होता कि वह
इस राह से कभी वाक़िफ़ न होते। 22 उन पर यह
मुहावरा सादिक़ आता है कि "कुत्ता अपनी क़ै
के पास वापस आ जाता है।" और यह भी कि
"सुअरनी नहाने के बाद दुबारा कीचड़ में लोटने
लगती है।"

ख़ुदावंद की आमद का वादा

3 अज़ीज़ो, यह अब दूसरा ख़त है जो मैंने
आपको लिख दिया है। दोनों ख़तों में
मैंने कई बातों की याद दिलाकर आपके ज़हनों
में पाक सोच उभारने की कोशिश की। 2 मैं
चाहता हूँ कि आप वह कुछ याद रखें जिसकी
पेशगोई मुक़द्दस नबियों ने की थी और साथ साथ
हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिंदा का वह हुक्म भी
जो आपको अपने रसूलों की मारिफ़त मिला।
3 अव्वल आपको यह बात समझने की ज़रूरत
है कि इन आख़िरी दिनों में ऐसे लोग आएँगे जो
मज़ाक़ उड़ाकर अपनी शहवतों के क़ब्ज़े में रहेंगे।
4 वह पूछेंगे, "ईसा ने आने का वादा तो किया,
लेकिन वह कहाँ है? हमारे बापदादा तो मर चुके
हैं, और दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक
सब कुछ वैसे का वैसा ही है।" 5 लेकिन यह लोग
नज़रंदाज़ करते हैं कि क़दीम ज़माने में अल्लाह के
हुक्म पर आसमानों की तख़लीक़ हुई और ज़मीन
पानी में से और पानी के ज़रीए वुजूद में आई।
6 इसी पानी के ज़रीए क़दीम ज़माने की दुनिया पर
सैलाब आया और सब कुछ तबाह हुआ। 7 और
अल्लाह के इसी हुक्म ने मौजूदा आसमान और
ज़मीन को आग के लिए महफ़ूज़ कर रखा है,
उस दिन के लिए जब बेदीन लोगों की अदालत
की जाएगी और वह हलाक हो जाएंगे।

8 लेकिन मेरे अज़ीज़ो, एक बात आपसे
पोशीदा न रहे। ख़ुदावंद के नज़दीक एक दिन
हज़ार साल के बराबर है और हज़ार साल एक
दिन के बराबर। 9 ख़ुदावंद अपना वादा पूरा करने
में देर नहीं करता जिस तरह कुछ लोग समझते
हैं बल्कि वह तो आपकी ख़ातिर सब्र कर रहा है।
क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई हलाक हो जाए
बल्कि यह कि सब तौबा की नौबत तक पहुँचें।

10 लेकिन ख़ुदावंद का दिन चोर की तरह
आएगा। आसमान बड़े शोर के साथ ख़त्म हो
जाएंगे, अजराम-फ़लकी आग में पिघल जाएंगे
और ज़मीन उसके कामों समेत ज़ाहिर होकर
अदालत में पेश की जाएगी। 11 अब सोचें,
अगर सब कुछ इस तरह ख़त्म हो जाएगा तो
फिर आप किस क़िस्म के लोग होने चाहिएँ?
आपको मुक़द्दस और ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारते
हुए 12 अल्लाह के दिन की राह देखनी चाहिए।
हाँ, आपको यह कोशिश करनी चाहिए कि वह
दिन जल्दी आए जब आसमान जल जाएंगे
और अजराम-फ़लकी आग में पिघल जाएंगे।
13 लेकिन हम उन नए आसमानों और नई ज़मीन
के इंतज़ार में हैं जिनका वादा अल्लाह ने किया
है। और वहाँ रास्ती सुकूनत करेगी।

14 चुनाँचे अज़ीज़ो, चूँकि आप इस इंतज़ार में
हैं इसलिए पूरी लग्न के साथ कोशाँ रहें कि आप
अल्लाह के नज़दीक बेदाग़ और बेइलज़ाम ठहरें
और आपकी उसके साथ सुलह हो। 15 याद रखें
कि हमारे ख़ुदावंद का सब्र लोगों को नजात पाने
का मौक़ा देता है। हमारे अज़ीज़ भाई पौलुस ने
भी उस हिकमत के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उसे
अता की है आपको यही कुछ लिखा है। 16 वह
यही कुछ अपने तमाम ख़तों में लिखता है जब
वह इस मज़मून का ज़िक्र करता है। उसके ख़तों
में कुछ ऐसी बातें हैं जो समझने में मुश्किल हैं और
जिन्हें जाहिल और कमज़ोर लोग तोड़-मरोड़कर
बयान करते हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह
बाक़ी सहीफ़ों के साथ भी करते हैं। लेकिन इससे
वह अपने आपको ही हलाक कर रहे हैं।

17 मेरे अज़ीज़ो, मैं आपको वक़्त से पहले इन
बातों से आगाह कर रहा हूँ। इसलिए ख़बरदार
रहें ताकि बेउसूल लोगों की ग़लत सोच आपको
बहकाकर आपको महफ़ूज़ मक़ाम से हटा न दे।
18 इसके बजाए हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिंदा
ईसा मसीह के फ़ज़ल और इल्म में तरक़्क़ी करते
रहें। उसे अब और अबद तक जलाल हासिल होता
रहे! आमीन।

यूहन्ना का पहला ख़त

ज़िंदगी का कलाम

1 हम आपको उस की मुनादी करते हैं जो
इब्तिदा से था, जिसे हमने अपने कानों से
सुना, अपनी आँखों से देखा, जिसका मुशाहदा
हमने किया और जिसे हमने अपने हाथों से
छुआ। वही ज़िंदगी का कलाम है। 2 वह जो ख़ुद
ज़िंदगी था ज़ाहिर हुआ, हमने उसे देखा। और अब
हम गवाही देकर आपको उस अबदी ज़िंदगी की
मुनादी करते हैं जो ख़ुदा बाप के पास थी और हम
पर ज़ाहिर हुई है। 3 हम आपको वह कुछ सुनाते
हैं जो हमने ख़ुद देख और सुन लिया है ताकि
आप भी हमारी रिफ़ाक़त में शरीक हो जाएँ। और
हमारी रिफ़ाक़त ख़ुदा बाप और उसके फ़रज़ंद
ईसा मसीह के साथ है। 4 हम यह इसलिए लिख
रहे हैं ताकि हमारी ख़ुशी पूरी हो जाए।

अल्लाह नूर है

5 जो पैग़ाम हमने उससे सुना और आपको
सुना रहे हैं वह यह है, अल्लाह नूर है और उसमें
तारीकी है ही नहीं। 6 जब हम तारीकी में चलते हुए
अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त रखने का दावा करते
हैं तो हम झूट बोल रहे और सच्चाई के मुताबिक़
ज़िंदगी नहीं गुज़ार रहे। 7 लेकिन जब हम नूर में
चलते हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह अल्लाह
नूर में है, तो फिर हम एक दूसरे के साथ रिफ़ाक़त
रखते हैं और उसके फ़रज़ंद ईसा का ख़ून हमें
तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ कर देता है।

8 अगर हम गुनाह से पाक होने का दावा करें
तो हम अपने आपको फ़रेब देते हैं और हममें
सच्चाई नहीं है। 9 लेकिन अगर हम अपने गुनाहों
का इक़रार करें तो वह वफ़ादार और रास्त साबित
होगा। वह हमारे गुनाहों को मुआफ़ करके हमें
तमाम नारास्ती से पाक-साफ़ करेगा। 10 अगर
हम दावा करें कि हमने गुनाह नहीं किया तो हम
उसे झूटा क़रार देते हैं और उसका कलाम हमारे
अंदर नहीं है।

मसीह हमारी शफ़ाअत करता है

2 मेरे बच्चो, मैं आपको यह इसलिए लिख
रहा हूँ कि आप गुनाह न करें। लेकिन अगर
कोई गुनाह करे तो एक है जो ख़ुदा बाप के सामने
हमारी शफ़ाअत करता है, ईसा मसीह जो रास्त
है। 2 वही हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा देनेवाली
क़ुरबानी है, और न सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि
पूरी दुनिया के गुनाहों का भी।

3 इससे हमें पता चलता है कि हमने उसे जान
लिया है, जब हम उसके अहकाम पर अमल करते
हैं। 4 जो कहता है, “मैं उसे जानता हूँ” लेकिन
उसके अहकाम पर अमल नहीं करता वह झूटा है
और सच्चाई उसमें नहीं है। 5 लेकिन जो उसके
कलाम की पैरवी करता है उसमें अल्लाह की
मुहब्बत हक़ीक़तन तकमील तक पहुँच गई है।
इससे हमें पता चलता है कि हम उसमें हैं। 6 जो
कहता है कि वह उसमें क़ायम है उसके लिए

लाज़िम है कि वह यों चले जिस तरह ईसा चलता
था।

एक नया हुक्म

7 अज़ीज़ो, मैं आपको कोई नया हुक्म नहीं
लिख रहा, बल्कि वही पुराना हुक्म जो आपको
शुरू से मिला है। यह पुराना हुक्म वही पैग़ाम है
जो आपने सुन लिया है। 8 लेकिन दूसरी तरफ़ से
यह हुक्म नया भी है, और इसकी सच्चाई मसीह
और आपमें ज़ाहिर हुई है। क्योंकि तारीकी ख़त्म
होनेवाली है और हक़ीक़ी रौशनी चमकने लग गई
है।

9 जो नूर में होने का दावा करके अपने भाई से
नफ़रत करता है वह अब तक तारीकी में है। 10 जो
अपने भाई से मुहब्बत रखता है वह नूर में रहता
है और उसमें कोई भी चीज़ नहीं पाई जाती जो
ठोकर का बाइस बन सके। 11 लेकिन जो अपने
भाई से नफ़रत करता है वह तारीकी ही में है और
अंधेरे में चलता-फिरता है। उसको यह नहीं मालूम
कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि तारीकी ने उसे
अंधा कर रखा है।

12 प्यारे बच्चो, मैं आपको इसलिए लिख रहा
हूँ कि आपके गुनाहों को उसके नाम की ख़ातिर
मुआफ़ कर दिया गया है। 13 वालिदो, मैं आपको
इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने उसे जान लिया
है जो इब्तिदा ही से है। जवान मर्दो, मैं आपको
इसलिए लिख रहा हूँ कि आप इबलीस पर ग़ालिब
आ गए हैं। बच्चो, मैं आपको इसलिए लिख रहा
हूँ कि आपने बाप को जान लिया है। 14 वालिदो,
मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने उसे
जान लिया है जो इब्तिदा ही से है। जवान मर्दो,
मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप मज़बूत
हैं। अल्लाह का कलाम आपमें बसता है और आप
इबलीस पर ग़ालिब आ गए हैं।

15 दुनिया को प्यार मत करना, न किसी चीज़
को जो दुनिया में है। अगर कोई दुनिया को प्यार
करे तो ख़ुदा बाप की मुहब्बत उसमें नहीं है।
16 क्योंकि जो भी चीज़ दुनिया में है वह बाप की
तरफ़ से नहीं बल्कि दुनिया की तरफ़ से है, ख़्वाह
वह जिस्म की बुरी ख़ाहिशात, आँखों का लालच
या अपनी मिलकियत पर फ़ख़र हो। 17 दुनिया
और उस की वह चीज़ें जो इनसान चाहता है ख़त्म
हो रही हैं, लेकिन जो अल्लाह की मरज़ी पूरी
करता है वह अबद तक जीता रहेगा।

मसीह का दुश्मन

18 बच्चो, अब आख़िरी घड़ी आ पहुँची है।
आपने ख़ुद सुन लिया है कि मुख़ालिफ़े-मसीह आ
रहा है, और हक़ीक़तन बहुत-से ऐसे मुख़ालिफ़े-
मसीह आ चुके हैं। इससे हमें पता चलता है कि
आख़िरी घड़ी आ गई है। 19 यह लोग हममें से
निकले तो हैं, लेकिन हक़ीक़त में हममें से नहीं
थे। क्योंकि अगर वह हममें से होते तो वह हमारे
साथ ही रहते। लेकिन हमें छोड़ने से ज़ाहिर हुआ
कि सब हममें से नहीं हैं।

20 लेकिन आप फ़रक़ हैं। आपको उससे जो
क़ुद्दूस है रूह का मसह मिल गया है, और आप
पूरी सच्चाई को जानते हैं। 21 मैं आपको इसलिए
नहीं लिख रहा कि आप सच्चाई को नहीं जानते
बल्कि इसलिए कि आप सच्चाई जानते हैं और
कि कोई भी झूट सच्चाई की तरफ़ से नहीं आ
सकता।

22 कौन झूटा है? वह जो ईसा के मसीह
होने का इनकार करता है। मुख़ालिफ़े-मसीह ऐसा
शख़्स है। वह बाप और फ़रज़ंद का इनकार करता
है। 23 जो फ़रज़ंद का इनकार करता है उसके पास
बाप भी नहीं है, और जो फ़रज़ंद का इक़रार करता
है उसके पास बाप भी है।

24 चुनाँचे लाज़िम है कि जो कुछ आपने इब्तिदा
से सुना वह आपमें रहे। अगर वह आपमें रहे तो
आप भी फ़रज़ंद और बाप में रहेंगे। 25 और जो
वादा उसने हमसे किया है वह है अबदी ज़िंदगी।

26 मैं आपको यह उनके बारे में लिख रहा हूँ
जो आपको सहीह राह से हटाने की कोशिश कर
रहे हैं। 27 लेकिन आपको उससे रूह का मसह
मिल गया है। वह आपके अंदर बसता है, इसलिए

आपको इसकी ज़रूरत ही नहीं कि कोई आपको
तालीम दे। क्योंकि मसीह का रूह आपको सब
बातों के बारे में तालीम देता है और जो कुछ भी
वह सिखाता है वह सच है, झूट नहीं। चुनाँचे जिस
तरह उसने आपको तालीम दी है, उसी तरह मसीह
में रहें।

28 और अब प्यारे बच्चो, उसमें क़ायम रहें
ताकि उसके ज़ाहिर होने पर हम पूरे एतमाद के
साथ उसके सामने खड़े हो सकें और उस की
आमद पर शरमिंदा न होना पड़े। 29 अगर आप
जानते हैं कि मसीह रास्तबाज़ है तो आप यह
भी जानते हैं कि जो भी रास्त काम करता है वह
अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया
है।

अल्लाह के फ़रज़ंद

3 ध्यान दें कि बाप ने हमसे कितनी मुहब्बत
की है, यहाँ तक कि हम अल्लाह के
फ़रज़ंद कहलाते हैं। और हम वाक़ई हैं भी।
इसलिए दुनिया हमें नहीं जानती। वह तो उसे
भी नहीं जानती। 2 अज़ीज़ो, अब हम अल्लाह के
फ़रज़ंद हैं, और जो कुछ हम होंगे वह अभी तक
ज़ाहिर नहीं हुआ है। लेकिन इतना हम जानते हैं
कि जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो हम उस की
मानिंद होंगे। क्योंकि हम उसका मुशाहदा वैसे ही
करेंगे जैसा वह है। 3 जो भी मसीह में यह उम्मीद
रखता है वह अपने आपको पाक-साफ़ रखता है,
वैसे ही जैसा मसीह ख़ुद है।

4 जो गुनाह करता है वह शरीअत की
ख़िलाफ़वरज़ी करता है। हाँ, गुनाह शरीअत की
ख़िलाफ़वरज़ी ही है। 5 लेकिन आप जानते हैं कि
ईसा हमारे गुनाहों को उठा ले जाने के लिए ज़ाहिर
हुआ। और उसमें गुनाह नहीं है। 6 जो उसमें क़ायम
रहता है वह गुनाह नहीं करता। और जो गुनाह
करता रहता है न तो उसने उसे देखा है, न उसे
जाना है।

7 प्यारे बच्चो, किसी को इजाज़त न दें कि वह
आपको सहीह राह से हटा दे। जो रास्त काम
करता है वह रास्तबाज़, हाँ मसीह जैसा रास्तबाज़
है। 8 जो गुनाह करता है वह इबलीस से है, क्योंकि
इबलीस शुरू ही से गुनाह करता आया है। अल्लाह
का फ़रज़ंद इसी लिए ज़ाहिर हुआ कि इबलीस का
काम तबाह करे।

9 जो भी अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद
बन गया है वह गुनाह नहीं करेगा, क्योंकि अल्लाह
की फ़ितरत उसमें रहती है। वह गुनाह कर ही
नहीं सकता क्योंकि वह अल्लाह से पैदा होकर
उसका फ़रज़ंद बन गया है। 10 इससे पता चलता
है कि अल्लाह के फ़रज़ंद कौन हैं और इबलीस
के फ़रज़ंद कौन : जो रास्त काम नहीं करता, न
अपने भाई से मुहब्बत रखता है, वह अल्लाह का
फ़रज़ंद नहीं है।

एक दूसरे से मुहब्बत रखना

11 क्योंकि यही वह पैग़ाम है जो आपने शुरू से
सुन रखा है, कि हमें एक दूसरे से मुहब्बत रखना
है। 12 क़ाबील की तरह न हों, जो इबलीस का
था और जिसने अपने भाई को क़त्ल किया। और
उसने उसको क़त्ल क्यों किया? इसलिए कि
उसका काम बुरा था जबकि भाई का काम रास्त
था।

13 चुनाँचे भाइयो, जब दुनिया आपसे नफ़रत
करती है तो हैरान न हो जाएँ। 14 हम तो जानते
हैं कि हम मौत से निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल
हो गए हैं। हम यह इसलिए जानते हैं कि हम
अपने भाइयों से मुहब्बत रखते हैं। जो मुहब्बत
नहीं रखता वह अब तक मौत की हालत में है।
15 जो भी अपने भाई से नफ़रत रखता है वह
क़ातिल है। और आप जानते हैं कि जो क़ातिल
है उसमें अबदी ज़िंदगी नहीं रहती। 16 इससे ही
हमने मुहब्बत को जाना है कि मसीह ने हमारी
ख़ातिर अपनी जान दे दी। और हमारा भी फ़र्ज़
यही है कि अपने भाइयों की ख़ातिर अपनी जान
दें। 17 अगर किसी के माली हालात ठीक हों और
वह अपने भाई की ज़रूरतमंद हालत को देखकर
रहम न करे तो उसमें अल्लाह की मुहब्बत किस

तरह क़ायम रह सकती है? 18 प्यारे बच्चो, आएँ हम अलफ़ाज़ और बातों से मुहब्बत का इज़हार न करें बल्कि हमारी मुहब्बत अमली और हक़ीक़ी हो।

अल्लाह के हुज़ूर पूरा एतमाद

19 ग़रज़ इससे हम जान लेते हैं कि हम सच्चाई की तरफ़ से हैं, और यों ही हम अपने दिल को तसल्ली दे सकते हैं 20 जब वह हमें मुजरिम ठहराता है। क्योंकि अल्लाह हमारे दिल से बड़ा है और सब कुछ जानता है। 21 और अज़ीज़ो, जब हमारा दिल हमें मुजरिम नहीं ठहराता तो हम पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आ सकते हैं 22 और वह कुछ पाते हैं जो उससे माँगते हैं। क्योंकि हम उसके अहकाम पर चलते हैं और वही कुछ करते हैं जो उसे पसंद है। 23 और उसका यह हुक्म है कि हम उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह के नाम पर ईमान लाकर एक दूसरे से मुहब्बत रखें, जिस तरह मसीह ने हमें हुक्म दिया था। 24 जो अल्लाह के अहकाम के ताबे रहता है वह अल्लाह में बसता है और अल्लाह उसमें। हम किस तरह जान लेते हैं कि वह हममें बसता है? उस रूह के वसीले से जो उसने हमें दिया है।

हक़ीक़ी और झूटी रूह

4 अज़ीज़ो, हर एक रूह का यक़ीन मत करना बल्कि रूहों को परखकर मालूम करें कि वह अल्लाह से हैं या नहीं, क्योंकि मुतअद्दिद झूटे नबी दुनिया में निकले हैं। 2 इससे आप अल्लाह के रूह को पहचान लेते हैं : जो भी रूह इसका एतराफ़ करती है कि ईसा मसीह मुजस्सम होकर आया है वह अल्लाह से है। 3 लेकिन जो भी रूह ईसा के बारे में यह तसलीम न करे वह अल्लाह से नहीं है। यह मुख़ालिफ़े-मसीह की रूह है जिसके बारे में आपको ख़बर मिली कि वह आनेवाला है बल्कि इस वक़्त दुनिया में आ चुका है।

4 लेकिन आप प्यारे बच्चो, अल्लाह से हैं और उन पर ग़ालिब आ गए हैं। क्योंकि जो आपमें है वह उससे बड़ा है जो दुनिया में है। 5 यह लोग दुनिया से हैं और इसलिए दुनिया की बातें करते हैं और दुनिया उनकी सुनती है। 6 हम तो अल्लाह से हैं और जो अल्लाह को जानता है वह हमारी सुनता है। लेकिन जो अल्लाह से नहीं है वह हमारी नहीं सुनता। यों हम सच्चाई की रूह और फ़रेब देनेवाली रूह में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

अल्लाह मुहब्बत है

7 अज़ीज़ो, आएँ हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें। क्योंकि मुहब्बत अल्लाह की तरफ़ से है, और जो मुहब्बत रखता है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है और अल्लाह को जानता है। 8 जो मुहब्बत नहीं रखता वह अल्लाह को नहीं जानता, क्योंकि अल्लाह मुहब्बत है। 9 इसमें अल्लाह की मुहब्बत हमारे दरमियान ज़ाहिर हुई कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को दुनिया में भेज दिया ताकि हम उसके ज़रीए जिएँ। 10 यही मुहब्बत है, यह नहीं कि हमने अल्लाह से मुहब्बत की बल्कि यह कि उसने हमसे मुहब्बत करके अपने फ़रज़ंद को भेज दिया ताकि वह हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए कफ़्फ़ारा दे।

11 अज़ीज़ो, चूँकि अल्लाह ने हमें इतना प्यार किया इसलिए लाज़िम है कि हम भी एक दूसरे को प्यार करें। 12 किसी ने भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन जब हम एक दूसरे को प्यार करते हैं तो अल्लाह हमारे अंदर बसता है और उस की मुहब्बत हमारे अंदर तकमील पाती है।

13 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम उसमें रहते हैं और वह हममें? इस तरह कि उसने हमें अपना रूह बख़्श दिया है। 14 और हमने यह बात देख ली और इसकी गवाही देते हैं कि ख़ुदा बाप ने अपने फ़रज़ंद को दुनिया का नजातदहिंदा बनने के लिए भेज दिया है। 15 अगर कोई इक़रार करे कि ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद है तो अल्लाह उसमें रहता है और वह अल्लाह में। 16 और ख़ुद हमने

वह मुहब्बत जान ली है और उस पर ईमान लाए
हैं जो अल्लाह हमसे रखता है।
अल्लाह मुहब्बत ही है। जो भी मुहब्बत में
क़ायम रहता है वह अल्लाह में रहता है और
अल्लाह उसमें। 17 इसी तरह मुहब्बत हमारे
दरमियान तकमील तक पहुँचती है, और यों हम
अदालत के दिन पूरे एतमाद के साथ खड़े हो
सकेंगे, क्योंकि जैसे वह है वैसे ही हम भी इस
दुनिया में हैं। 18 मुहब्बत में ख़ौफ़ नहीं होता बल्कि
कामिल मुहब्बत ख़ौफ़ को भगा देती है, क्योंकि
ख़ौफ़ के पीछे सज़ा का डर है। जो डरता है उस
की मुहब्बत तकमील तक नहीं पहुँची।
19 हम इसलिए मुहब्बत रखते हैं कि अल्लाह ने
पहले हमसे मुहब्बत रखी। 20 अगर कोई कहे, "मैं
अल्लाह से मुहब्बत रखता हूँ" लेकिन अपने भाई
से नफ़रत करे तो वह झूटा है। क्योंकि जो अपने
भाई से जिसे उसने देखा है मुहब्बत नहीं रखता
वह किस तरह अल्लाह से मुहब्बत रख सकता है
जिसे उसने नहीं देखा? 21 जो हुक्म मसीह ने हमें
दिया है वह यह है, जो अल्लाह से मुहब्बत रखता
है वह अपने भाई से भी मुहब्बत रखे।

दुनिया पर हमारी फ़तह

5 जो भी ईमान रखता है कि ईसा ही मसीह है
वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद
बन गया है। और जो बाप से मुहब्बत रखता है
वह उसके फ़रज़ंद से भी मुहब्बत रखता है। 2 हम
किस तरह जान लेते हैं कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद
से मुहब्बत रखते हैं? इससे कि हम अल्लाह
से मुहब्बत रखते और उसके अहकाम पर अमल
करते हैं। 3 क्योंकि अल्लाह से मुहब्बत से मुराद
यह है कि हम उसके अहकाम पर अमल करें।
और उसके अहकाम हमारे लिए बोझ का बाइस
नहीं हैं, 4 क्योंकि जो भी अल्लाह से पैदा होकर
उसका फ़रज़ंद बन गया है वह दुनिया पर ग़ालिब
आ जाता है। और हम यह फ़तह अपने ईमान
के ज़रीए पाते हैं। 5 कौन दुनिया पर ग़ालिब आ
सकता है? सिर्फ़ वह जो ईमान रखता है कि ईसा
अल्लाह का फ़रज़ंद है।

ईसा मसीह के बारे में गवाही

6 ईसा मसीह वह है जो अपने बपतिस्मे के पानी
और अपनी मौत के ख़ून के ज़रीए ज़ाहिर हुआ,
न सिर्फ़ पानी के ज़रीए बल्कि पानी और ख़ून
दोनों ही के ज़रीए। और रूहुल-क़ुद्स जो सच्चाई
है इसकी गवाही देता है। 7 क्योंकि इसके तीन
गवाह हैं, 8 रूहुल-क़ुद्स, पानी और ख़ून। और
तीनों एक ही बात की तसदीक़ करते हैं। 9 हम
तो इनसान की गवाही क़बूल करते हैं, लेकिन
अल्लाह की गवाही इससे कहीं अफ़ज़ल है। और
अल्लाह की गवाही यह है कि उसने अपने फ़रज़ंद
की तसदीक़ की है। 10 जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर
ईमान रखता है उसके दिल में यह गवाही है। और
जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखता उसने उसे झूटा
क़रार दिया है। क्योंकि उसने वह गवाही न मानी
जो अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद के बारे में दी। 11 और
गवाही यह है, अल्लाह ने हमें अबदी ज़िंदगी अता
की है, और यह ज़िंदगी उसके फ़रज़ंद में है।
12 जिसके पास फ़रज़ंद है उसके पास ज़िंदगी
है, और जिसके पास अल्लाह का फ़रज़ंद नहीं
है उसके पास ज़िंदगी भी नहीं है।

अबदी ज़िंदगी

13 मैं आपको जो अल्लाह के फ़रज़ंद के नाम
पर ईमान रखते हैं इसलिए लिख रहा हूँ कि आप
जान लें कि आपको अबदी ज़िंदगी हासिल है।
14 हमारा अल्लाह पर यह एतमाद है कि जब भी
हम उस की मरज़ी के मुताबिक़ कुछ माँगते हैं तो
वह हमारी सुनता है। 15 और चूँकि हम जानते हैं
कि जब माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है इसलिए
हम यह इल्म भी रखते हैं कि हमें वह कुछ हासिल
भी है जो हमने उससे माँगा था।
16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते
देखे जिसका अंजाम मौत न हो तो वह दुआ
करे, और अल्लाह उसे ज़िंदगी अता करेगा। मैं

उन गुनाहों की बात कर रहा हूँ जिनका अंजाम मौत नहीं। लेकिन एक ऐसा गुनाह भी है जिसका अंजाम मौत है। मैं नहीं कह रहा कि ऐसे शख़्स के लिए दुआ की जाए जिससे ऐसा गुनाह सरज़द हुआ हो।
17 हर नारास्त हरकत गुनाह है, लेकिन हर गुनाह का अंजाम मौत नहीं होता।

18 हम जानते हैं कि जो अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है वह गुनाह करता नहीं रहता, क्योंकि अल्लाह का फ़रज़ंद ऐसे शख़्स को महफ़ूज़ रखता है और इबलीस उसे नुक़सान नहीं पहुँचा सकता।

19 हम जानते हैं कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं और कि तमाम दुनिया इबलीस के क़ब्ज़े में है।

20 हम जानते हैं कि अल्लाह का फ़रज़ंद आ गया है और हमें समझ अता की है ताकि हम उसे जान लें जो हक़ीक़ी है। और हम उसमें हैं जो हक़ीक़ी है यानी उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह में। वही हक़ीक़ी ख़ुदा और अबदी ज़िंदगी है।

21 प्यारे बच्चो, अपने आपको बुतों से महफ़ूज़ रखें!

यूहन्ना का दूसरा ख़त

1 यह ख़त बुज़ुर्ग यूहन्ना की तरफ़ से है।
मैं चुनीदा ख़ातून और उसके बच्चों को लिख रहा
हूँ जिन्हें मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ, और न सिर्फ़
मैं बल्कि सब जो सच्चाई को जानते हैं। 2 क्योंकि
सच्चाई हममें रहती है और अबद तक हमारे साथ
रहेगी।

3 ख़ुदा बाप और बाप का फ़रज़ंद ईसा मसीह
हमें फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करे। और
यह चीज़ें सच्चाई और मुहब्बत की रूह में हमें
हासिल हों।

सच्चाई और मुहब्बत

4 मैं निहायत ही ख़ुश हुआ कि मैंने आपके बच्चों
में से बाज़ ऐसे पाए जो उसी तरह सच्चाई में चलते
हैं जिस तरह ख़ुदा बाप ने हमें हुक्म दिया था।
5 और अब अज़ीज़ ख़ातून, मैं आपसे दरख़ास्त
करता हूँ कि आएँ, हम सब एक दूसरे से मुहब्बत
रखें। यह कोई नया हुक्म नहीं है जो मैं आपको
लिख रहा हूँ बल्कि वही जो हमें शुरू ही से मिला
है। 6 मुहब्बत का मतलब यह है कि हम उसके
अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें। जिस तरह
आपने शुरू ही से सुना है, उसका हुक्म यह है कि
आप मुहब्बत की रूह में चलें।

7 क्योंकि बहुत-से ऐसे लोग दुनिया में निकल
खड़े हुए हैं जो आपको सहीह राह से हटाने की
कोशिश में लगे रहते हैं। यह लोग नहीं मानते कि
ईसा मसीह मुजस्सम होकर आया है। हर ऐसा
शख़्स फ़रेब देनेवाला और मुख़ालिफ़े-मसीह है।
8 चुनाँचे ख़बरदार रहें। ऐसा न हो कि आपने जो
कुछ मेहनत करके हासिल किया है वह जाता रहे
बल्कि ख़ुदा करे कि आपको इसका पूरा अज्र मिल
जाए।

9 जो भी मसीह की तालीम पर क़ायम नहीं
रहता बल्कि इससे आगे निकल जाता है उसके
पास अल्लाह नहीं। जो मसीह की तालीम पर
क़ायम रहता है उसके पास बाप भी है और फ़रज़ंद
भी। 10 चुनाँचे अगर कोई आपके पास आकर यह
तालीम पेश नहीं करता तो न उसे अपने घरों में
आने दें, न उसको सलाम करें। 11 क्योंकि जो
उसके लिए सलामती की दुआ करता है वह उसके
शरीर कामों में शरीक हो जाता है।

आख़िरी बातें

12 मैं आपको बहुत कुछ बताना चाहता हूँ,
लेकिन काग़ज़ और स्याही के ज़रीए नहीं। इसके
बजाए मैं आपसे मिलने और आपके रूबरू बात
करने की उम्मीद रखता हूँ। फिर हमारी ख़ुशी
मुकम्मल हो जाएगी।

13 आपकी चुनीदा बहन के बच्चे आपको
सलाम कहते हैं।

यूहन्ना का तीसरा ख़त

1 यह ख़त बुज़ुर्ग यूहन्ना की तरफ़ से है।
मैं अपने अज़ीज़ गयुस को लिख रहा हूँ जिसे मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ।

2 मेरे अज़ीज़, मेरी दुआ है कि आपका हाल हर तरह से ठीक हो और आप जिस्मानी तौर पर उतने ही तनदुरुस्त हों जितने आप रूहानी लिहाज़ से हैं।
3 क्योंकि मैं निहायत ख़ुश हुआ जब भाइयों ने आकर गवाही दी कि आप किस तरह सच्चाई के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं। और यक़ीनन आप हमेशा सच्चाई के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं।
4 जब मैं सुनता हूँ कि मेरे बच्चे सच्चाई के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं तो यह मेरे लिए सबसे ज़्यादा ख़ुशी का बाइस होता है।

गयुस की तारीफ़

5 मेरे अज़ीज़, जो कुछ आप भाइयों के लिए कर रहे हैं उसमें आप वफ़ादारी दिखा रहे हैं, हालाँकि वह आपके जाननेवाले नहीं हैं।
6 उन्होंने ख़ुदा की जमात के सामने ही आपकी मुहब्बत की गवाही दी है। मेहरबानी करके उनकी सफ़र के लिए यों मदद करें कि अल्लाह ख़ुश हो।
7 क्योंकि वह मसीह के नाम की ख़ातिर सफ़र के लिए निकले हैं और ग़ैरईमानदारों से मदद नहीं लेते।
8 चुनाँचे यह हमारा फ़र्ज़ है कि हम ऐसे लोगों की मेहमान-नवाज़ी करें, क्योंकि यों हम भी सच्चाई के हमख़िदमत बन जाते हैं।

दियुतरिफ़ेस और देमेतरियुस

9 मैंने तो जमात को कुछ लिख दिया था, लेकिन दियुतरिफ़ेस जो उनमें अव्वल होने की ख़ाहिश रखता है हमें क़बूल नहीं करता।
10 चुनाँचे मैं जब आऊँगा तो उसे उन बुरी हरकतों की याद दिलाऊँगा जो वह कर रहा है, क्योंकि वह हमारे ख़िलाफ़ बुरी बातें बक रहा है। और न सिर्फ़ यह बल्कि वह भाइयों को ख़ुशआमदीद कहने से भी इनकार करता है। जब दूसरे यह करना चाहते हैं तो वह उन्हें रोककर जमात से निकाल देता है।

11 मेरे अज़ीज़, जो बुरा है उस की नक़्ल मत करना बल्कि उस की करना जो अच्छा है। जो अच्छा काम करता है वह अल्लाह से है। लेकिन जो बुरा काम करता है उसने अल्लाह को नहीं देखा।

12 सब लोग देमेतरियुस की अच्छी गवाही देते हैं बल्कि सच्चाई ख़ुद भी उस की अच्छी गवाही देती है। हम भी इसके गवाह हैं, और आप जानते हैं कि हमारी गवाही सच्ची है।

आख़िरी सलाम

13 मुझे आपको बहुत कुछ लिखना था, लेकिन यह ऐसी बातें हैं जो मैं क़लम और स्याही के ज़रीए आपको नहीं बता सकता।
14 मैं जल्द ही आपसे मिलने की उम्मीद रखता हूँ। फिर हम रूबरू बात करेंगे।

15 सलामती आपके साथ होती रहे। यहाँ के दोस्त आपको सलाम कहते हैं। वहाँ के
हर दोस्त को शख़्सी तौर पर हमारा सलाम दें।

यहूदाह का आम ख़त

1 यह ख़त ईसा मसीह के ख़ादिम और याक़ूब
के भाई यहूदाह की तरफ़ से है।
मैं उन्हें लिख रहा हूँ जिन्हें बुलाया गया है, जो
ख़ुदा बाप में प्यारे हैं और ईसा मसीह के लिए
महफ़ूज़ रखे गए हैं।
2 अल्लाह आपको रहम, सलामती और
मुहब्बत कसरत से अता करे।

झूटे उस्ताद

3 अज़ीज़ो, गो मैं आपको उस नजात के बारे में
लिखने का बड़ा शौक़ रखता हूँ जिसमें हम सब
शरीक हैं, लेकिन अब मैं आपको एक और बात
के बारे में लिखना चाहता हूँ। मैं इसमें आपको
नसीहत करने की ज़रूरत महसूस करता हूँ कि
आप उस ईमान की ख़ातिर जिद्दो-जहद करें जो
एक ही बार सदा के लिए मुक़द्दसीन के सुपुर्द
कर दिया गया है। 4 क्योंकि कुछ लोग आपके
दरमियान घुस आए हैं जिन्हें बहुत अरसा पहले
मुजरिम ठहराया जा चुका है। उनके बारे में यह
लिखा गया है कि वह बेदीन हैं जो हमारे ख़ुदा के
फ़ज़ल को तोड़-मरोड़कर ऐयाशी का बाइस बना
देते हैं और हमारे वाहिद आक़ा और ख़ुदावंद ईसा
मसीह का इनकार करते हैं।
5 गो आप यह सब कुछ जानते हैं, फिर भी मैं
आपको इसकी याद दिलाना चाहता हूँ कि अगरचे
ख़ुदावंद ने अपनी क़ौम को मिसर से निकालकर
बचा लिया था तो भी उसने बाद में उन्हें हलाक
कर दिया जो ईमान नहीं रखते थे। 6 उन फ़रिश्तों
को याद करें जो उस दायराए-इख़्तियार के अंदर
न रहे जो अल्लाह ने उनके लिए मुक़र्रर किया था
बल्कि जिन्होंने अपनी रिहाइशगाह को तर्क कर
दिया। उन्हें उसने तारीकी में महफ़ूज़ रखा है जहाँ
वह अबदी ज़ंजीरों में जकड़े हुए रोज़े-अज़ीम की
अदालत का इंतज़ार कर रहे हैं। 7 सदूम, अमूरा
और उनके इर्दगिर्द के शहरों को भी मत भूलना,
जिनके बाशिंदे इन फ़रिश्तों की तरह ज़िनाकारी
और ग़ैरफ़ितरी सोहबत के पीछे पड़े रहे। यह लोग
अबदी आग की सज़ा भुगतते हुए सबके लिए एक
इबरतनाक मिसाल हैं।
8 तो भी इन लोगों ने उनका-सा रवैया अपना
लिया है। अपने ख़ाबों की बिना पर वह अपने
बदनों को आलूदा कर लेते, ख़ुदावंद का इख़्तियार
रद्द करते और जलाली हस्तियों पर कुफ़्र बकते
हैं। 9 इनके मुक़ाबले में सरदार फ़रिश्ते मीकाएल
के रवय्ये पर ग़ौर करें। जब वह इबलीस से झगड़ते
वक़्त मूसा की लाश के बारे में बहस-मुबाहसा
कर रहा था तो उसने इबलीस पर कुफ़्र बकने
का फ़ैसला करने की जुर्रत न की बल्कि सिर्फ़
इतना ही कहा, “रब आपको डाँटे!” 10 लेकिन
यह लोग हर ऐसी बात के बारे में कुफ़्र बकते हैं
जो उनकी समझ में नहीं आती। और जो कुछ
वह फ़ितरी तौर पर बेसमझ जानवरों की तरह
समझते हैं वही उन्हें तबाह कर देता है। 11 उन
पर अफ़सोस! उन्होंने क़ाबील की राह इख़्तियार

की है। पैसों के लालच में उन्होंने अपने आपको पूरे तौर पर उस ग़लती के हवाले कर दिया है जो बिलाम ने की। वह क़ोरह की तरह बाग़ी होकर हलाक हुए हैं। 12 जब यह लोग ख़ुदावंद की मुहब्बत को याद करनेवाले रिफ़ाक़ती खानों में शरीक होते हैं तो रिफ़ाक़त के लिए धब्बे बन जाते हैं। यह डरे बग़ैर खाना खा खाकर उससे महज़ूज़ होते हैं। यह ऐसे चरवाहे हैं जो सिर्फ़ अपनी गल्लाबानी करते हैं। यह ऐसे बादल हैं जो हवाओं के ज़ोर से चलते तो हैं लेकिन बरसते नहीं। यह सर्दियों के मौसम में ऐसे दरख़्तों की मानिंद हैं जो दो लिहाज़ से मुरदा हैं। वह फल नहीं लाते और जड़ से उखड़े हुए हैं। 13 यह समुंदर की बेकाबू लहरों की मानिंद हैं जो अपनी शर्मनाक हरकतों की झाग उछालती हैं। यह आवारा सितारे हैं जिनके लिए अल्लाह ने सबसे गहरी तारीकी में एक दायमी जगह मख़सूस की है।

14 आदम के बाद सातवें आदमी हनूक ने इन लोगों के बारे में यह पेशगोई की, "देखो, ख़ुदावंद अपने बेशुमार मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ 15 सबकी अदालत करने आएगा। वह उन्हें उन तमाम बेदीन हरकतों के सबब से मुजरिम ठहराएगा जो उनसे सरज़द हुई हैं और उन तमाम सख़्त बातों की वजह से जो बेदीन गुनाहगारों ने उसके ख़िलाफ़ की हैं।"

16 यह लोग बुड़बुड़ाते और शिकायत करते रहते हैं। यह सिर्फ़ अपनी ज़ाती ख़ाहिशात पूरी करने के लिए ज़िंदगी गुज़ारते हैं। यह अपने बारे में शेख़ी मारते और अपने फ़ायदे के लिए दूसरों की ख़ुशामद करते हैं।

आगाही और हिदायात

17 लेकिन आप मेरे अज़ीज़ो, वह कुछ याद रखें जिसकी पेशगोई हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के रसूलों ने की थी। 18 उन्होंने आपसे कहा था, "आख़िरी दिनों में मज़ाक़ उड़ानेवाले होंगे जो अपनी बेदीन ख़ाहिशात पूरी करने के लिए ही ज़िंदगी गुज़ारेंगे।" 19 यह वह हैं जो पार्टीबाज़ी करते, जो दुनियावी सोच रखते हैं और जिनके पास रूहुल-क़ुद्स नहीं है। 20 लेकिन आप मेरे अज़ीज़ो, अपने आपको अपने मुक़द्दसतरीन ईमान की बुनियाद पर तामीर करें और रूहुल-क़ुद्स में दुआ करें। 21 अपने आपको अल्लाह की मुहब्बत में क़ायम रखें और इस इंतज़ार में रहें कि हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का रहम आपको अबदी ज़िंदगी तक पहुँचाए।

22 उन पर रहम करें जो शक में पड़े हैं। 23 बाज़ को आग में से छीनकर बचाएँ और बाज़ पर रहम करें, लेकिन ख़ौफ़ के साथ। बल्कि उस शख़्स के लिबास से भी नफ़रत करें जो अपनी हरकतों से गुनाह से आलूदा हो गया है।

सताइश की दुआ

24 उस की तमजीद हो जो आपको ठोकर खाने से महफ़ूज़ रख सकता है और आपको अपने जलाल के सामने बेदाग़ और बड़ी ख़ुशी से मामूर करके खड़ा कर सकता है। 25 उस वाहिद ख़ुदा यानी हमारे नजातदहिंदा का जलाल हो। हाँ, हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से उसे जलाल, अज़मत, क़ुदरत और इख़्तियार अज़ल से अब भी हो और अबद तक रहे। आमीन।

यूहन्ना आरिफ़ का मुकाशफ़ा

1 यह ईसा मसीह की तरफ़ से मुका-
शफ़ा है जो अल्लाह ने उसे अता किया
ताकि वह अपने ख़ादिमों को वह कुछ दिखाए
जिसे जल्द ही पेश आना है। उसने अपने फ़रिश्ते
को भेजकर यह मुकाशफ़ा अपने ख़ादिम यूहन्ना
तक पहुँचा दिया। 2 और जो कुछ भी यूहन्ना
ने देखा है उस की गवाही उसने दी है, ख़ाह
अल्लाह का कलाम हो या ईसा मसीह की गवाही।
3 मुबारक है वह जो इस नबुव्वत की तिलावत
करता है। हाँ, मुबारक हैं वह जो सुनकर अपने
दिलों में इस किताब में दर्ज बातें महफ़ूज़ रखते
हैं, क्योंकि यह जल्द ही पूरी हो जाएँगी।

सात जमातों को सलाम

4 यह ख़त यूहन्ना की तरफ़ से सूबा आसिया
की सात जमातों के लिए है।

आपको अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़ल और
सलामती हासिल रहे, उस की तरफ़ से जो है, जो
था और जो आनेवाला है, उन सात रूहों की तरफ़
से जो उसके तख़्त के सामने होती हैं, 5 और ईसा
मसीह की तरफ़ से यानी उससे जो इन बातों का
वफ़ादार गवाह, मुरदों में से पहला जी उठनेवाला
और दुनिया के बादशाहों का सरदार है।

उस की तमजीद हो जो हमें प्यार करता है,
जिसने अपने ख़ून से हमें हमारे गुनाहों से ख़लासी
बख़्शी है 6 और जिसने हमें शाही इख़्तियार देकर
अपने ख़ुदा और बाप के इमाम बना दिया है। उसे
अज़ल से अबद तक जलाल और क़ुदरत हासिल
रहे! आमीन।

7 देखें, वह बादलों के साथ आ रहा है। हर एक
उसे देखेगा, वह भी जिन्होंने उसे छेदा था। और
दुनिया की तमाम क़ौमें उसे देखकर आहो-ज़ारी
करेंगी। हाँ, ऐसा ही हो! आमीन।

8 रब ख़ुदा फ़रमाता है, “मैं अव्वल और आख़िर
हूँ, वह जो है, जो था और जो आनेवाला है, यानी
क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा।”

मसीह की रोया

9 मैं यूहन्ना आपका भाई और शरीके-हाल हूँ।
मुझ पर भी आपकी तरह ज़ुल्म किया जा रहा
है। मैं आपके साथ अल्लाह की बादशाही में
शरीक हूँ और ईसा में आपके साथ साबितक़दम
रहता हूँ। मुझे अल्लाह का कलाम सुनाने और
ईसा के बारे में गवाही देने की वजह से इस
जज़ीरे में जो पतमुस कहलाता है छोड़ दिया गया।
10 रब के दिन यानी इतवार को मैं रूहुल-क़ुद्स
की गिरिफ़्त में आ गया और मैंने अपने पीछे
तुरम की-सी एक ऊँची आवाज़ सुनी। 11 उसने
कहा, “जो कुछ तू देख रहा है उसे एक किताब
में लिखकर उन सात जमातों को भेज देना जो
इफ़िसुस, स्मुरना, पिर्गमुन, थुआतीरा, सरदीस,
फ़िलदिलफ़िया और लौदीकिया में हैं।”

12 मैंने बोलनेवाले को देखने के लिए अपने
पीछे नज़र डाली तो सोने के सात शमादान देखे।
13 इन शमादानों के दरमियान कोई खड़ा था जो
इब्ने-आदम की मानिंद था। उसने पाँवों तक का
लंबा चोग़ा पहन रखा था और सीने पर सोने का
सीनाबंद बाँधा हुआ था। 14 उसका सर और बाल
ऊन या बर्फ़ जैसे सफ़ेद थे और उस की आँखें
आग के शोले की मानिंद थीं। 15 उसके पाँव भट्टे में
दमकते पीतल की मानिंद थे और उस की आवाज़
आबशार के शोर जैसी थी। 16 अपने दहने हाथ में
उसने सात सितारे थाम रखे थे और उसके मुँह
से एक तेज़ और दोधारी तलवार निकल रही थी।
उसका चेहरा पूरे ज़ोर से चमकनेवाले सूरज की
तरह चमक रहा था। 17 उसे देखते ही मैं उसके
पाँवों में गिर गया। मैं मुरदा-सा था। फिर उसने
अपना दहना हाथ मुझ पर रखकर कहा, “मत
डर। मैं अव्वल और आख़िर हूँ। 18 मैं वह हूँ जो
ज़िंदा है। मैं तो मर गया था लेकिन अब देख, मैं
अबद तक ज़िंदा हूँ। और मौत और पाताल की
कुंजियाँ मेरे हाथ में हैं। 19 चुनाँचे जो कुछ तूने
देखा है, जो अभी है और जो आइंदा होगा उसे
लिख दे। 20 मेरे दहने हाथ में सात सितारों और
सात शमादानों का पोशीदा मतलब यह है : यह
सात सितारे आसिया की सात जमातों के फ़रिश्ते
हैं, और यह सात शमादान यह सात जमातें हैं।

इफ़िसुस के लिए पैग़ाम

2 इफ़िसुस में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को
यह लिख देना :
यह उसका फ़रमान है जो अपने दहने हाथ
में सात सितारे थामे रखता और सोने के सात
शमादानों के दरमियान चलता-फिरता है। 2 मैं तेरे
कामों को जानता हूँ, तेरी सख़्त मेहनत और तेरी
साबितक़दमी को। मैं जानता हूँ कि तू बुरे लोगों
को बरदाश्त नहीं कर सकता, कि तूने उनकी
पड़ताल की है जो रसूल होने का दावा करते
हैं, हालाँकि वह रसूल नहीं हैं। तुझे तो पता चल
गया है कि वह झूटे थे। 3 तू मेरे नाम की ख़ातिर
साबितक़दम रहा और बरदाश्त करते करते थका
नहीं। 4 लेकिन मुझे तुझसे यह शिकायत है, तू
मुझे उस तरह प्यार नहीं करता जिस तरह पहले
करता था। 5 अब ख़याल कर कि तू कहाँ से गिर
गया है। तौबा करके वह कुछ कर जो तू पहले
करता था, वरना मैं आकर तेरे शमादान को उस
की जगह से हटा दूँगा। 6 लेकिन यह बात तेरे हक़
में है, तू मेरी तरह नीकुलियों के कामों से नफ़रत
करता है।

7 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स
जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे मैं ज़िंदगी के दरख़्त
का फल खाने को दूँगा, उस दरख़्त का फल जो
अल्लाह के फ़िर्दौस में है।

स्मुरना के लिए पैग़ाम

8 स्मुरना में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह
लिख देना : यह उसका फ़रमान है जो अव्वल
और आख़िर है, जो मर गया था और दुबारा ज़िंदा
हुआ। 9 मैं तेरी मुसीबत और ग़ुरबत को जानता हूँ।
लेकिन हक़ीक़त में तू दौलतमंद है। मैं उन लोगों
के बुहतान से वाक़िफ़ हूँ जो कहते हैं कि वह यहूदी
हैं हालाँकि हैं नहीं। असल में वह इबलीस की
जमात हैं। 10 जो कुछ तुझे झेलना पड़ेगा उससे
मत डरना। देख, इबलीस तुझे आज़माने के लिए
तुममें से बाज़ को जेल में डाल देगा, और दस दिन
तक तुझे ईज़ा पहुँचाई जाएगी। मौत तक वफ़ादार
रह तो मैं तुझे ज़िंदगी का ताज दूँगा।

11 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-
क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे दूसरी मौत से नुक़सान
नहीं पहुँचेगा।

पिर्गमुन के लिए पैग़ाम

12 पिर्गमुन में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह
लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जिसके पास दोधारी तेज़
तलवार है। 13 मैं जानता हूँ कि तू कहाँ रहता

है, वहाँ जहाँ इबलीस का तख़्त है। ताहम तू मेरे
नाम का वफ़ादार रहा है। तूने उन दिनों में भी
मुझ पर ईमान रखने का इनकार न किया जब
मेरा वफ़ादार गवाह अंतिपास तुम्हारे पास शहीद
हुआ, वहाँ जहाँ इबलीस बसता है। 14 लेकिन
मुझे तुझसे कई बातों की शिकायत है। तेरे पास
ऐसे लोग हैं जो बिलाम की तालीम की पैरवी
करते हैं। क्योंकि बिलाम ने बलक़ को सिखाया
कि वह किस तरह इसराईलियों को गुनाह करने
पर उकसा सकता है यानी बुतों को पेश की गई
क़ुरबानियाँ खाने और ज़िना करने से। 15 इसी
तरह तेरे पास भी ऐसे लोग हैं, जो नीकुलियों
की तालीम की पैरवी करते हैं। 16 अब तौबा कर!
वरना मैं जल्द ही तेरे पास आकर अपने मुँह की
तलवार से उनके साथ लड़ूँगा।

17 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-
क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे मैं पोशीदा मन में से
दूँगा। मैं उसे एक सफ़ेद पत्थर भी दूँगा जिस पर
एक नया नाम लिखा होगा, ऐसा नाम जो सिर्फ़
मिलनेवाले को मालूम होगा।

थुआतीरा के लिए पैग़ाम

18 थुआतीरा में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को
यह लिख देना :

यह अल्लाह के फ़रज़ंद का फ़रमान है जिसकी
आँखें आग के शोलों और पाँव दमकते पीतल
की मानिंद हैं। 19 मैं तेरे कामों को जानता हूँ
यानी तेरी मुहब्बत और ईमान, तेरी ख़िदमत और
साबितक़दमी, और यह कि इस वक़्त तू पहले की
निसबत कहीं ज़्यादा कर रहा है। 20 लेकिन मुझे
तुझसे यह शिकायत है, तू उस औरत ईज़बिल
को जो अपने आपको नबिया कहती है काम
करने देता है, हालाँकि यह अपनी तालीम से
मेरे ख़ादिमों को सहीह राह से दूर करके उन्हें
ज़िना करने और बुतों को पेश की गई क़ुरबानियाँ
खाने पर उकसाती है। 21 मैंने उसे काफ़ी देर से
तौबा करने का मौक़ा दिया है, लेकिन वह इसके
लिए तैयार नहीं है। 22 चुनाँचे मैं उसे यों मारूँगा
कि वह बिस्तर पर पड़ी रहेगी। और अगर वह
जो उसके साथ ज़िना कर रहे हैं अपनी ग़लत
हरकतों से तौबा न करें तो मैं उन्हें शदीद मुसीबत
में फँसाऊँगा। 23 हाँ, मैं उसके फ़रज़ंदों को मार
डालूँगा। फिर तमाम जमातें जान लेंगी कि मैं ही
ज़हनों और दिलों को परखता हूँ, और मैं ही तुममें
से हर एक को उसके कामों का बदला दूँगा।

24 लेकिन थुआतीरा की जमात के ऐसे लोग
भी हैं जो इस तालीम की पैरवी नहीं करते, और
जिन्होंने वह कुछ नहीं जाना जिसे इन लोगों ने
‘इबलीस के गहरे भेद’ का नाम दिया है। तुम्हें
मैं बताता हूँ कि मैं तुम पर कोई और बोझ नहीं
डालूँगा। 25 लेकिन इतना ज़रूर करो कि जो कुछ
तुम्हारे पास है उसे मेरे आने तक मज़बूती से
थामे रखना। 26 जो ग़ालिब आएगा और आख़िर
तक मेरे कामों पर क़ायम रहेगा उसे मैं क़ौमों पर
इख़्तियार दूँगा। 27 हाँ, वह लोहे के शाही असा से
उन पर हुकूमत करेगा, उन्हें मिट्टी के बरतनों की
तरह फोड़ डालेगा। 28 यानी उसे वही इख़्तियार
मिलेगा जो मुझे भी अपने बाप से मिला है। ऐसे
शख़्स को मैं सुबह का सितारा भी दूँगा।

29 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-
क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

सरदीस के लिए पैग़ाम

3 सरदीस में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को
यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो अल्लाह की सात
रूहों और सात सितारों को अपने हाथ में थामे
रखता है। मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू ज़िंदा
तो कहलाता है लेकिन है मुरदा। 2 जाग उठ! जो
बाक़ी रह गया है और मरनेवाला है उसे मज़बूत
कर। क्योंकि मैंने तेरे काम अपने ख़ुदा की नज़र
में मुकम्मल नहीं पाए। 3 चुनाँचे जो कुछ तुझे
मिला है और जो तूने सुना है उसे याद रखना।
उसे महफ़ूज़ रख और तौबा कर। अगर तू बेदार
न हो तो मैं चोर की तरह आऊँगा और तुझे

मालूम नहीं होगा कि मैं कब तुझ पर आन पड़ूँगा।
4 लेकिन सरदीस में तेरे कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने
अपने लिबास आलूदा नहीं किए। वह सफ़ेद कपड़े
पहने हुए मेरे साथ चलें-फिरेंगे, क्योंकि वह इसके
लायक़ हैं। 5 जो ग़ालिब आएगा वह भी उनकी
तरह सफ़ेद कपड़े पहने हुए फिरेगा। मैं उसका
नाम किताबे-हयात से नहीं मिटाऊँगा बल्कि अपने
बाप और उसके फ़रिश्तों के सामने इक़रार करूँगा
कि यह मेरा है।

6 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स
जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

फ़िलदिलफ़िया के लिए पैग़ाम

7 फ़िलदिलफ़िया में मौजूद जमात के फ़रिश्ते
को यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो क़ुद्दूस और सच्चा है,
जिसके हाथ में दाऊद की चाबी है। जो कुछ वह
खोलता है उसे कोई बंद नहीं कर सकता, और
जो कुछ वह बंद कर देता है उसे कोई खोल नहीं
सकता। 8 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। देख, मैंने
तेरे सामने एक ऐसा दरवाज़ा खोल रखा है जिसे
कोई बंद नहीं कर सकता। मुझे मालूम है कि तेरी
ताक़त कम है। लेकिन तूने मेरे कलाम को महफ़ूज़
रखा है और मेरे नाम का इनकार नहीं किया।
9 देख, जहाँ तक उनका ताल्लुक़ है जो इबलीस
की जमात से हैं, वह जो यहूदी होने का दावा करते
हैं हालाँकि वह झूट बोलते हैं, मैं उन्हें तेरे पास
आने दूँगा, उन्हें तेरे पाँवों में झुककर यह तसलीम
करने पर मजबूर करूँगा कि मैंने तुझे प्यार किया
है। 10 तूने मेरा साबितक़दम रहने का हुक्म पूरा
किया, इसलिए मैं तुझे आज़माइश की उस घड़ी
से बचाए रखूँगा जो पूरी दुनिया पर आकर उसमें
बसनेवालों को आज़माएगी।

11 मैं जल्द आ रहा हूँ। जो कुछ तेरे पास है उसे
मज़बूती से थामे रखना ताकि कोई तुझसे तेरा
ताज छीन न ले। 12 जो ग़ालिब आएगा उसे मैं
अपने ख़ुदा के घर में सतून बनाऊँगा, ऐसा सतून
जो उसे कभी नहीं छोड़ेगा। मैं उस पर अपने ख़ुदा
का नाम और अपने ख़ुदा के शहर का नाम लिख
दूँगा, उस नए यरूशलम का नाम जो मेरे ख़ुदा के
हाँ से उतरनेवाला है। हाँ, मैं उस पर अपना नया
नाम भी लिख दूँगा।

13 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-
क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

लौदीकिया के लिए पैग़ाम

14 लौदीकिया में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को
यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो आमीन है, वह
जो वफ़ादार और सच्चा गवाह और अल्लाह की
कायनात का मंबा है। 15 मैं तेरे कामों को जानता
हूँ। तू न तो सर्द है, न गरम। काश तू इनमें से
एक होता! 16 लेकिन चूँकि तू नीमगरम है, न
गरम, न सर्द, इसलिए मैं तुझे क़ै करके अपने मुँह
से निकाल फेंकूँगा। 17 तू कहता है, 'मैं अमीर हूँ,
मैंने बहुत दौलत हासिल कर ली है और मुझे किसी
भी चीज़ की ज़रूरत नहीं।' और तू नहीं जानता
कि तू असल में बदबख़्त, क़ाबिले-रहम, ग़रीब,
अंधा और नंगा है। 18 मैं तुझे मशवरा देता हूँ कि
मुझसे आग में ख़ालिस किया गया सोना ख़रीद
ले। तब ही तू दौलतमंद बनेगा। और मुझसे सफ़ेद
लिबास ख़रीद ले जिसको पहनने से तेरे नंगेपन
की शर्म ज़ाहिर नहीं होगी। इसके अलावा मुझसे
आँखों में लगाने के लिए मरहम ख़रीद ले ताकि
तू देख सके। 19 जिनको मैं प्यार करता हूँ उनकी
मैं सज़ा देकर तरबियत करता हूँ। अब संजीदा हो
जा और तौबा कर। 20 देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा
खटखटा रहा हूँ। अगर कोई मेरी आवाज़ सुनकर
दरवाज़ा खोले तो मैं अंदर आकर उसके साथ
खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ। 21 जो ग़ालिब
आए उसे मैं अपने साथ अपने तख़्त पर बैठने का
हक़ दूँगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मैं ख़ुद
भी ग़ालिब आकर अपने बाप के साथ उसके तख़्त
पर बैठ गया।

22 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-
क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।"

आसमान पर अल्लाह की परस्तिश

4 इसके बाद मैंने देखा कि आसमान में एक
दरवाज़ा खुला हुआ है और तुरम की-सी
आवाज़ ने जो मैंने पहले सुनी थी कहा, "इधर
ऊपर आ। फिर मैं तुझे वह कुछ दिखाऊँगा जिसे
इसके बाद पेश आना है।" 2 तब रूहुल-क़ुद्स
ने मुझे फ़ौरन अपनी गिरिफ़्त में ले लिया। वहाँ
आसमान पर एक तख़्त था जिस पर कोई बैठा
था। 3 और बैठनेवाला देखने में यशब और अक़ीक़
से मुताबिक़त रखता था। तख़्त के इर्दगिर्द क़ौसे-
क़ुज़ह थी जो देखने में ज़ुमुर्रद की मानिंद थी।
4 यह तख़्त 24 तख़्तों से घिरा हुआ था जिन पर
24 बुज़ुर्ग बैठे थे। बुज़ुर्गों के लिबास सफ़ेद थे और
हर एक के सर पर सोने का ताज था। 5 दरमियानी
तख़्त से बिजली की चमकें, आवाज़ें और बादल
की गरजें निकल रही थीं। और तख़्त के सामने
सात मशालें जल रही थीं। यह अल्लाह की सात
रूहें हैं। 6 तख़्त के सामने शीशे का-सा समुंदर भी
था जो बिल्लौर से मुताबिक़त रखता था।

बीच में तख़्त के इर्दगिर्द चार जानदार थे
जिनके जिस्मों पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं,
सामनेवाले हिस्से पर भी और पीछेवाले हिस्से पर
भी। 7 पहला जानदार शेरबबर जैसा था, दूसरा
बैल जैसा, तीसरे का इनसान जैसा चेहरा था और
चौथा उड़ते हुए उक़ाब की मानिंद था। 8 इन चार
जानदारों में से हर एक के छः पर थे और जिस्म
पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं, बाहर भी और
अंदर भी। दिन-रात वह बिलानाग़ा कहते रहते हैं,

"क़ुद्दूस, क़ुद्दूस, क़ुद्दूस
है रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा,
जो था, जो है और जो आनेवाला है।"

9 यों यह जानदार उस की तमजीद, इज़्ज़त
और शुक्र करते हैं जो तख़्त पर बैठा है और अबद
तक ज़िंदा है। जब भी वह यह करते हैं 10 तो 24
बुज़ुर्ग तख़्त पर बैठनेवाले के सामने मुँह के बल
होकर उसे सिजदा करते हैं जो अज़ल से अबद
तक ज़िंदा है। साथ साथ वह अपने सोने के ताज
तख़्त के सामने रखकर कहते हैं,

11 "ऐ रब हमारे ख़ुदा,
तू जलाल, इज़्ज़त और क़ुदरत
के लायक़ है।
क्योंकि तूने सब कुछ ख़लक़ किया।
तमाम चीज़ें तेरी ही मरज़ी से थीं
और पैदा हुईं।"

सात मुहरोंवाला तूमार

5 फिर मैंने तख़्त पर बैठनेवाले के दहने हाथ
में एक तूमार देखा जिस पर दोनों तरफ़
लिखा हुआ था और जिस पर सात मुहरें लगी
थीं। 2 और मैंने एक ताक़तवर फ़रिश्ता देखा
जिसने ऊँची आवाज़ से एलान किया, "कौन
मुहरों को तोड़कर तूमार को खोलने के लायक़
है?" 3 लेकिन न आसमान पर, न ज़मीन पर
और न ज़मीन के नीचे कोई था जो तूमार को
खोलकर उसमें नज़र डाल सकता। 4 मैं ख़ूब रो
पड़ा, क्योंकि कोई इस लायक़ न पाया गया कि
वह तूमार को खोलकर उसमें नज़र डाल सकता।
5 लेकिन बुज़ुर्गों में से एक ने मुझसे कहा, "मत
रो। देख, यहूदाह क़बीले के शेरबबर और दाऊद
की जड़ ने फ़तह पाई है, और वही तूमार की सात
मुहरों को खोल सकता है।"

6 फिर मैंने एक लेला देखा जो तख़्त के
दरमियान खड़ा था। वह चार जानदारों और बुज़ुर्गों
से घिरा हुआ था और यों लगता था कि उसे ज़बह
किया गया हो। उसके सात सींग और सात आँखें
थीं। इनसे मुराद अल्लाह की वह सात रूहें हैं जिन्हें
दुनिया की हर जगह भेजा गया है। 7 लेले ने आकर
तख़्त पर बैठनेवाले के दहने हाथ से तूमार को ले
लिया। 8 और लेते वक़्त चार जानदार और 24
बुज़ुर्ग लेले के सामने मुँह के बल गिर गए। हर
एक के पास एक सरोद और बख़ूर से भरे सोने
के प्याले थे। इनसे मुराद मुक़द्दसीन की दुआएँ हैं।
9 साथ साथ वह एक नया गीत गाने लगे,

"तू तूमार को लेकर

उस की मुहरों को खोलने के लायक़ है।
क्योंकि तुझे ज़बह किया गया,
और अपने ख़ून से
तूने लोगों को हर क़बीले,
हर अहले-ज़बान,
हर मिल्लत और हर क़ौम से
अल्लाह के लिए ख़रीद लिया है।
10 तूने उन्हें शाही इख़्तियार देकर
हमारे ख़ुदा के इमाम बना दिया है।
और वह दुनिया में हुकूमत करेंगे।”
11 मैंने दुबारा देखा तो बेशुमार फ़रिश्तों की
आवाज़ सुनी। वह तख़्त, चार जानदारों और
बुज़ुर्गों के इर्दगिर्द खड़े 12 ऊँची आवाज़ से कह
रहे थे,
“लायक़ है वह लेला
जो ज़बह किया गया है।
वह क़ुदरत, दौलत, हिकमत और ताक़त,
इज़्ज़त, जलाल और सताइश पाने
के लायक़ है।”
13 फिर मैंने आसमान पर, ज़मीन पर, ज़मीन
के नीचे और समुंदर की हर मख़लूक़ की आवाज़ें
सुनीं। हाँ, कायनात की सब मख़लूक़ात यह गा
रहे थे,
“तख़्त पर बैठनेवाले और लेले
की सताइश और इज़्ज़त,
जलाल और क़ुदरत
अज़ल से अबद तक रहे।”
14 चार जानदारों ने जवाब में “आमीन” कहा,
और बुज़ुर्गों ने गिरकर सिजदा किया।

मुहरें तोड़ी जाती हैं

6 फिर मैंने देखा, लेले ने सात मुहरों में से
पहली मुहर को खोला। इस पर मैंने चार
जानदारों में से एक को जिसकी आवाज़ कड़कते
बादलों की मानिंद थी यह कहते हुए सुना, “आ!”
2 मेरे देखते देखते एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया।
उसके सवार के हाथ में कमान थी, और उसे एक
ताज दिया गया। यों वह फ़ातेह की हैसियत से
और फ़तह पाने के लिए वहाँ से निकला।
3 लेले ने दूसरी मुहर खोली तो मैंने दूसरे
जानदार को कहते हुए सुना कि “आ!” 4 इस पर
एक और घोड़ा निकला जो आग जैसा सुर्ख़ था।
उसके सवार को दुनिया से सुलह-सलामती छीनने
का इख़्तियार दिया गया ताकि लोग एक दूसरे को
क़त्ल करें। उसे एक बड़ी तलवार पकड़ाई गई।
5 लेले ने तीसरी मुहर खोली तो मैंने तीसरे
जानदार को कहते हुए सुना कि “आ!” मेरे देखते
देखते एक काला घोड़ा नज़र आया। उसके सवार
के हाथ में तराज़ू था। 6 और मैंने चारों जानदारों
में से गोया एक आवाज़ सुनी जिसने कहा,
“एक दिन की मज़दूरी के लिए एक किलोग्राम
गंदुम, और एक दिन की मज़दूरी के लिए तीन
किलोग्राम जौ। लेकिन तेल और मै को नुक़सान
मत पहुँचाना।”
7 लेले ने चौथी मुहर खोली तो मैंने चौथे
जानदार को कहते सुना कि “आ!” 8 मेरे देखते
देखते एक घोड़ा नज़र आया जिसका रंग हलका
पीला-सा था। उसके सवार का नाम मौत था,
और पाताल उसके पीछे पीछे चल रही थी। उन्हें
ज़मीन का चौथा हिस्सा क़त्ल करने का इख़्तियार
दिया गया, ख़ाह तलवार, काल, मोहलक वबा या
वहशी जानवरों के ज़रीए से हो।
9 लेले ने पाँचवीं मुहर खोली तो मैंने क़ुरबानगाह
के नीचे उनकी रूहें देखीं जो अल्लाह के कलाम
और अपनी गवाही क़ायम रखने की वजह से
शहीद हो गए थे। 10 उन्होंने ऊँची आवाज़ से
चिल्लाकर कहा, “ऐ क़ादिरे-मुतलक़, क़ुद्दूस और
सच्चे रब, कितनी देर और लगेगी? तू कब तक
ज़मीन के बाशिंदों की अदालत करके हमारे शहीद
होने का इंतक़ाम न लेगा?” 11 तब उनमें से हर
एक को एक सफ़ेद लिबास दिया गया, और उन्हें
समझाया गया कि “मज़ीद थोड़ी देर आराम करो,
क्योंकि पहले तुम्हारे हमख़िदमत भाइयों में से
उतनों को शहीद हो जाना है जितनों के लिए यह
मुक़र्रर है।”

12 लेले ने छटी मुहर खोली तो मैंने एक
शदीद ज़लज़ला देखा। सूरज बकरी के बालों से
बने टाट की मानिंद काला हो गया, पूरा चाँद
ख़ून जैसा नज़र आने लगा 13 और आसमान
के सितारे ज़मीन पर यों गिर गए जिस तरह
अंजीर के दरख़्त पर लगे आख़िरी अंजीर तेज़
हवा के झोंकों से गिर जाते हैं। 14 आसमान तूमार
की तरह जब उसे लपेटकर बंद किया जाता
है पीछे हट गया। और हर पहाड़ और जज़ीरा
अपनी अपनी जगह से खिसक गया। 15 फिर
ज़मीन के बादशाह, शहज़ादे, जरनैल, अमीर,
असरो-रसूख़वाले, ग़ुलाम और आज़ाद सबके सब
ग़ारों में और पहाड़ी चट्टानों के दरमियान छुप
गए। 16 उन्होंने चिल्लाकर पहाड़ों और चट्टानों से
मिन्नत की, "हम पर गिरकर हमें तख़्त पर बैठे
हुए के चेहरे और लेले के ग़ज़ब से छुपा लो।
17 क्योंकि उनके ग़ज़ब का अज़ीम दिन आ गया
है, और कौन क़ायम रह सकता है?"

इसराईल के 1,44,000 चुने हुए अफ़राद

7 इसके बाद मैंने चार फ़रिश्तों को ज़मीन
के चार कोनों पर खड़े देखा। वह ज़मीन
की चार हवाओं को चलने से रोक रहे थे ताकि
न ज़मीन पर, न समुंदर या किसी दरख़्त पर
कोई हवा चले। 2 फिर मैंने एक और फ़रिश्ता
मशरिक़ से चढ़ते हुए देखा जिसके पास ज़िंदा
ख़ुदा की मुहर थी। उसने ऊँची आवाज़ से उन
चार फ़रिश्तों से बात की जिन्हें ज़मीन और समुंदर
को नुक़सान पहुँचाने का इख़्तियार दिया गया था।
उसने कहा, 3 "ज़मीन, समुंदर या दरख़्तों को उस
वक़्त तक नुक़सान मत पहुँचाना जब तक हम
अपने ख़ुदा के ख़ादिमों के माथों पर मुहर न लगा
लें।" 4 और मैंने सुना कि जिन पर मुहर लगाई
गई थी वह 1,44,000 अफ़राद थे और वह
इसराईल के हर एक क़बीले से थे : 5 12,000
यहूदाह से, 12,000 रूबिन से, 12,000 जद
से, 6 12,000 आशर से, 12,000 नफ़ताली
से, 12,000 मनस्सी से, 7 12,000 शमाऊन
से, 12,000 लावी से, 12,000 इशकार से,
8 12,000 ज़बूलून से, 12,000 यूसुफ़ से और
12,000 बिनयमीन से।

अल्लाह के हुज़ूर एक बड़ा हुजूम

9 इसके बाद मैंने एक हुजूम देखा जो इतना
बड़ा था कि उसे गिना नहीं जा सकता था।
उसमें हर मिल्लत, हर क़बीले, हर क़ौम और
हर ज़बान के अफ़राद सफ़ेद लिबास पहने हुए
तख़्त और लेले के सामने खड़े थे। उनके हाथों
में खजूर की डालियाँ थीं। 10 और वह ऊँची
आवाज़ से चिल्ला चिल्लाकर कह रहे थे, "नजात
तख़्त पर बैठे हुए हमारे ख़ुदा और लेले की
तरफ़ से है।" 11 तमाम फ़रिश्ते तख़्त, बुज़ुर्गों
और चार जानदारों के इर्दगिर्द खड़े थे। उन्होंने
तख़्त के सामने गिरकर अल्लाह को सिजदा
किया 12 और कहा, "आमीन! हमारे ख़ुदा की
अज़ल से अबद तक सताइश, जलाल, हिकमत,
शुक्रगुज़ारी, इज़्ज़त, क़ुदरत और ताक़त हासिल
रहे। आमीन!"

13 बुज़ुर्गों में से एक ने मुझसे पूछा, "सफ़ेद
लिबास पहने हुए यह लोग कौन हैं और कहाँ से
आए हैं?"

14 मैंने जवाब दिया, "मेरे आक़ा, आप ही
जानते हैं।"

उसने कहा, "यह वही हैं जो बड़ी ईज़ारसानी
से निकलकर आए हैं। उन्होंने अपने लिबास लेले
के ख़ून में धोकर सफ़ेद कर लिए हैं। 15 इसलिए
वह अल्लाह के तख़्त के सामने खड़े हैं और
दिन-रात उसके घर में उस की ख़िदमत करते
हैं। और तख़्त पर बैठा हुआ उनको पनाह देगा।
16 इसके बाद न कभी भूक उन्हें सताएगी न
प्यास। न धूप, न किसी और क़िस्म की तपती
गरमी उन्हें झुलसाएगी। 17 क्योंकि जो लेला तख़्त
के दरमियान बैठा है वह उनकी गल्लाबानी करेगा
और उन्हें ज़िंदगी के चश्मों के पास ले जाएगा।
और अल्लाह उनकी आँखों से तमाम आँसू पोंछ
डालेगा।"

सातवीं मुहर

8 जब लेले ने सातवीं मुहर खोली तो
आसमान पर ख़ामोशी छा गई। यह
ख़ामोशी तक़रीबन आधे घंटे तक रही। 2 फिर मैंने
अल्लाह के सामने खड़े सात फ़रिश्तों को देखा।
उन्हें सात तुरम दिए गए।
3 एक और फ़रिश्ता जिसके पास सोने का
बख़ूरदान था आकर क़ुरबानगाह के पास खड़ा
हो गया। उसे बहुत-सा बख़ूर दिया गया ताकि
वह उसे मुक़द्दसीन की दुआओं के साथ तख़्त
के सामने की सोने की क़ुरबानगाह पर पेश करे।
4 बख़ूर का धुआँ मुक़द्दसीन की दुआओं के साथ
फ़रिश्ते के हाथ से उठते उठते अल्लाह के सामने
पहुँचा। 5 फिर फ़रिश्ते ने बख़ूरदान को लिया और
उसे क़ुरबानगाह की आग से भरकर ज़मीन पर
फेंक दिया। तब कड़कती और गरजती आवाज़ें
सुनाई दीं, बिजली चमकने लगी और ज़लज़ला
आ गया।

तुरमों का असर

6 फिर जिन सात फ़रिश्तों के पास सात तुरम
थे वह उन्हें बजाने के लिए तैयार हुए।
7 पहले फ़रिश्ते ने अपने तुरम को बजा दिया।
इस पर ओले और ख़ून के साथ मिलाई गई आग
पैदा होकर ज़मीन पर बरसाई गई। इससे ज़मीन
का तीसरा हिस्सा, दरख़्तों का तीसरा हिस्सा और
तमाम हरी घास भस्म हो गई।
8 फिर दूसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक
मारी। इस पर जलती हुई एक बड़ी पहाड़नुमा
चीज़ को समुंदर में फेंका गया। समुंदर का तीसरा
हिस्सा ख़ून में बदल गया, 9 समुंदर में मौजूद ज़िंदा
मख़लूक़ात का तीसरा हिस्सा हलाक और बहरी
जहाज़ों का तीसरा हिस्सा तबाह हो गया।
10 फिर तीसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक
मारी। इस पर मशाल की तरह भड़कता हुआ
एक बड़ा सितारा आसमान से दरियाओं के तीसरे
हिस्से और पानी के चश्मों पर गिर गया। 11 इस
सितारे का नाम अफ़संतीन था और इससे पानी
का तीसरा हिस्सा अफ़संतीन जैसा कड़वा हो
गया। बहुत-से लोग यह कड़वा पानी पीने से मर
गए।
12 फिर चौथे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक
मारी। इस पर सूरज का तीसरा हिस्सा, चाँद का
तीसरा हिस्सा और सितारों का तीसरा हिस्सा
रौशनी से महरूम हो गया। दिन का तीसरा हिस्सा
रौशनी से महरूम हुआ और इसी तरह रात का
तीसरा हिस्सा भी।
13 फिर देखते देखते मैंने एक उक़ाब को सुना
जिसने मेरे सर के ऊपर ही बुलंदियों पर उड़ते हुए
ऊँची आवाज़ से पुकारा, “अफ़सोस! अफ़सोस!
ज़मीन के बाशिंदों पर अफ़सोस! क्योंकि तीन
फ़रिश्तों के तुरमों की आवाज़ें अभी बाक़ी हैं।”
9 फिर पाँचवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक
मारी। इस पर मैंने एक सितारा देखा जो
आसमान से ज़मीन पर गिर गया था। इस सितारे
को अथाह गढ़े के रास्ते की चाबी दी गई। 2 उसने
अथाह गढ़े का रास्ता खोल दिया तो उससे धुआँ
निकलकर ऊपर आया, यों जैसे धुआँ किसी बड़े
भट्टे से निकलता है। सूरज और चाँद अथाह गढ़े
के इस धुएँ से तारीक हो गए। 3 और धुएँ में से
टिड्डियाँ निकलकर ज़मीन पर उतर आईं। उन्हें
ज़मीन के बिछुओं जैसा इख़्तियार दिया गया।
4 उन्हें बताया गया, “न ज़मीन की घास, न किसी
पौदे या दरख़्त को नुक़सान पहुँचाओ बल्कि सिर्फ़
उन लोगों को जिनके माथों पर अल्लाह की मुहर
नहीं लगी है।” 5 टिड्डियों को इन लोगों को मार
डालने का इख़्तियार न दिया गया बल्कि उन्हें
बताया गया कि वह पाँच महीनों तक इनको
अज़ियत दें। और यह अज़ियत उस तकलीफ़ की
मानिंद है जो तब पैदा होती है जब बिच्छू किसी
को डंक मारता है। 6 उन पाँच महीनों के दौरान
लोग मौत की तलाश में रहेंगे, लेकिन उसे पाएँगे
नहीं। वह मर जाने की शदीद आरज़ू करेंगे, लेकिन
मौत उनसे भागकर दूर रहेगी।
7 टिड्डियों की शक्लो-सूरत जंग के लिए तैयार
घोड़ों की मानिंद थी। उनके सरों पर सोने के ताजों

जैसी चीज़ें थीं और उनके चेहरे इनसानों के चेहरों
की मानिंद थे। 8 उनके बाल ख़वातीन के बालों की
मानिंद और उनके दाँत शेरबबर के दाँतों जैसे थे।
9 यों लगा जैसे उनके सीनों पर लोहे के-से ज़िरा-
बकतर लगे हुए थे, और उनके परों की आवाज़
बेशुमार रथों और घोड़ों के शोर जैसी थी जब वह
मुख़ालिफ़ पर झपट रहे होते हों। 10 उनकी दुम पर
बिच्छू का-सा डंक लगा था और उन्हें इन्हीं दुमों
से लोगों को पाँच महीनों तक नुक़सान पहुँचाने
का इख़्तियार था। 11 उनका बादशाह अथाह गढ़े
का फ़रिश्ता है जिसका इबरानी नाम अबद्दोन और
यूनानी नाम अपुल्लियोन (हलाकू) है।

12 यों पहला अफ़सोस गुज़र गया, लेकिन
इसके बाद दो मज़ीद अफ़सोस होनेवाले हैं।

13 छटे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस
पर मैंने एक आवाज़ सुनी जो अल्लाह के सामने
वाक़े सोने की क़ुरबानगाह के चार कोनों पर लगे
सींगों से आई। 14 इस आवाज़ ने छटा तुरम पकड़े
हुए फ़रिश्ते से कहा, "उन चार फ़रिश्तों को खुला
छोड़ देना जो बड़े दरिया बनाम फ़ुरात के पास
बँधे हुए हैं।" 15 इन चार फ़रिश्तों को इसी महीने
के इसी दिन के इसी घंटे के लिए तैयार किया
गया था। अब इन्हें खुला छोड़ दिया गया ताकि
वह इनसानों का तीसरा हिस्सा मार डालें। 16 मुझे
बताया गया कि घोड़ों पर सवार फ़ौजी बीस करोड़
थे। 17 रोया में घोड़े और सवार यों नज़र आए :
सीनों पर लगे ज़िरा-बकतर आग जैसे सुर्ख़, नीले
और गंधक जैसे पीले थे। घोड़ों के सर शेरबबर
के सरों से मुताबिक़त रखते थे और उनके मुँह से
आग, धुआँ और गंधक निकलती थी। 18 आग,
धुएँ और गंधक की इन तीन बलाओं से इनसानों
का तीसरा हिस्सा हलाक हुआ। 19 हर घोड़े की
ताक़त उसके मुँह और दुम में थी, क्योंकि उनकी
दुमें साँप की मानिंद थीं जिनके सर नुक़सान
पहुँचाते थे।

20 जो इन बलाओं से हलाक नहीं हुए थे बल्कि
अभी बाक़ी थे उन्होंने फिर भी अपने हाथों के
कामों से तौबा न की। वह बदरूहों और सोने,
चाँदी, पीतल, पत्थर और लकड़ी के बुतों की पूजा
से बाज़ न आए हालाँकि ऐसी चीज़ें न तो देख
सकती हैं, न सुनने या चलने के क़ाबिल होती हैं।
21 वह क़त्लो-ग़ारत, जादूगरी, ज़िनाकारी और
चोरियों से भी तौबा करके बाज़ न आए।

फ़रिश्ता और छोटा तूमार

10 फिर मैंने एक और ताक़तवर फ़रिश्ता
देखा। वह बादल ओढ़े हुए आसमान
से उतर रहा था और उसके सर के ऊपर क़ौसे-
क़ुज़ह थी। उसका चेहरा सूरज जैसा था और
उसके पाँव आग के सतून जैसे। 2 उसके हाथ
में एक छोटा तूमार था जो खुला था। अपने एक
पाँव को उसने समुंदर पर रख दिया और दूसरे
को ज़मीन पर। 3 फिर वह ऊँची आवाज़ से पुकार
उठा। ऐसे लगा जैसे शेरबबर गरज रहा है। इस
पर कड़क की सात आवाज़ें बोलने लगीं। 4 उनके
बोलने पर मैं उनकी बातें लिखने को था कि एक
आवाज़ ने कहा, "कड़क की सात आवाज़ों की
बातों पर मुहर लगा और उन्हें मत लिखना।"

5 फिर उस फ़रिश्ते ने जिसे मैंने समुंदर और
ज़मीन पर खड़ा देखा अपने दहने हाथ को
आसमान की तरफ़ उठाकर 6 अल्लाह के नाम
की क़सम खाई, उसके नाम की जो अज़ल से
अबद तक ज़िंदा है और जिसने आसमानों, ज़मीन
और समुंदर को उन तमाम चीज़ों समेत ख़लक़
किया जो उनमें हैं। फ़रिश्ते ने कहा, "अब देर नहीं
होगी। 7 जब सातवाँ फ़रिश्ता अपने तुरम में फूँक
मारने को होगा तब अल्लाह का भेद जो उसने
अपने नबुव्वत करनेवाले ख़ादिमों को बताया था
तकमील तक पहुँचेगा।"

8 फिर जो आवाज़ आसमान से सुनाई दी थी
उसने एक बार फिर मुझसे बात की, "जा, वह
तूमार ले लेना जो समुंदर और ज़मीन पर खड़े
फ़रिश्ते के हाथ में खुला पड़ा है।"

9 चुनाँचे मैंने फ़रिश्ते के पास जाकर उससे
गुज़ारिश की कि वह मुझे छोटा तूमार दे। उसने
मुझसे कहा, "इसे ले और खा ले। यह तेरे मुँह

में शहद की तरह मीठा लगेगा, लेकिन तेरे मेदे में
कड़वाहट पैदा करेगा।”
10 मैंने छोटे तूमार को फ़रिश्ते के हाथ से लेकर
उसे खा लिया। मेरे मुँह में तो वह शहद की तरह
मीठा लग रहा था, लेकिन मेदे में जाकर उसने
कड़वाहट पैदा कर दी। 11 फिर मुझे बताया गया,
“लाज़िम है कि तू बहुत उम्मतों, क़ौमों, ज़बानों
और बादशाहों के बारे में मज़ीद नबुव्वत करे।”

दो गवाह

11 मुझे गज़ की तरह का सरकंडा दिया
गया और बताया गया, “जा, अल्लाह
के घर और क़ुरबानगाह की पैमाइश कर। उसमें
परस्तारों की तादाद भी गिन। 2 लेकिन बैरूनी
सहन को छोड़ दे। उसे मत नाप, क्योंकि उसे
ग़ैरईमानदारों को दिया गया है जो मुक़द्दस शहर
को 42 महीनों तक कुचलते रहेंगे। 3 और मैं
अपने दो गवाहों को इख़्तियार दूँगा, और वह टाट
ओढ़कर 1,260 दिनों के दौरान नबुव्वत करेंगे।”
4 यह दो गवाह ज़ैतून के वह दो दरख़्त और वह
दो शमादान हैं जो दुनिया के आक़ा के सामने खड़े
हैं। 5 अगर कोई उन्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे तो
उनके मुँह में से आग निकलकर उनके दुश्मनों को
भस्म कर देती है। जो भी उन्हें नुक़सान पहुँचाना
चाहे उसे इस तरह मरना पड़ता है। 6 इन गवाहों
को आसमान को बंद रखने का इख़्तियार है ताकि
जितना वक़्त वह नबुव्वत करें बारिश न हो। उन्हें
पानी को ख़ून में बदलने और ज़मीन को हर क़िस्म
की अज़ियत पहुँचाने का इख़्तियार भी है। और
वह जितनी दफ़ा जी चाहे यह कर सकते हैं।
7 उनकी गवाही का मुक़र्ररा वक़्त पूरा होने पर
अथाह गढ़े में से निकलनेवाला हैवान उनसे जंग
करना शुरू करेगा और उन पर ग़ालिब आकर
उन्हें मार डालेगा। 8 उनकी लाशें उस बड़े शहर
की सड़क पर पड़ी रहेंगी जिसका अलामती
नाम सदूम और मिसर है। वहाँ उनका आक़ा
भी मसलूब हुआ था। 9 और साढ़े तीन दिनों
के दौरान हर उम्मत, क़बीले, ज़बान और क़ौम
के लोग इन लाशों को घूरकर देखेंगे और इन्हें
दफ़न करने नहीं देंगे। 10 ज़मीन के बाशिंदे उनकी
वजह से मसरूर होंगे और ख़ुशी मनाकर एक
दूसरे को तोह्फ़े भेजेंगे, क्योंकि इन दो नबियों ने
ज़मीन पर रहनेवालों को काफ़ी ईज़ा पहुँचाई थी।
11 लेकिन इन साढ़े तीन दिनों के बाद अल्लाह
ने उनमें ज़िंदगी का दम फूँक दिया, और वह
अपने पाँवों पर खड़े हुए। जो उन्हें देख रहे थे वह
सख़्त दहशतज़दा हुए। 12 फिर उन्होंने आसमान
से एक ऊँची आवाज़ सुनी जिसने उनसे कहा,
“यहाँ ऊपर आओ!” और उनके दुश्मनों के
देखते देखते दोनों एक बादल में आसमान पर चले
गए। 13 उसी वक़्त एक शदीद ज़लज़ला आया
और शहर का दसवाँ हिस्सा गिरकर तबाह हो
गया। 7,000 अफ़राद उस की ज़द में आकर मर
गए। बचे हुए लोगों में दहशत फैल गई और वह
आसमान के ख़ुदा को जलाल देने लगे।
14 दूसरा अफ़सोस गुज़र गया, लेकिन अब
तीसरा अफ़सोस जल्द होनेवाला है।

सातवाँ तुरम

15 सातवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी।
इस पर आसमान पर से ऊँची आवाज़ें सुनाई दें जो
कह रही थीं, “ज़मीन की बादशाही हमारे आक़ा
और उसके मसीह की हो गई है। वही अज़ल से
अबद तक हुकूमत करेगा।” 16 और अल्लाह के
तख़्त के सामने बैठे 24 बुज़ुर्गों ने गिरकर अल्लाह
को सिजदा किया 17 और कहा, “ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़ ख़ुदा, हम तेरा शुक्र करते हैं, तू जो है और
जो था। क्योंकि तू अपनी अज़ीम क़ुदरत को काम
में लाकर हुकूमत करने लगा है। 18 क़ौमें ग़ुस्से में
आईं तो तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ। अब मुरदों की
अदालत करने और अपने ख़ादिमों को अज्र देने
का वक़्त आ गया है। हाँ, तेरे नबियों, मुक़द्दसीन
और तेरा ख़ौफ़ माननेवालों को अज्र मिलेगा, ख़ाह
वह छोटे हों या बड़े। अब वह वक़्त भी आ गया है
कि ज़मीन को तबाह करनेवालों को तबाह किया
जाए।”

19 आसमान पर अल्लाह के घर को खोला गया
और उसमें उसके अहद का संदूक़ नज़र आया।
बिजली चमकने लगी, शोर मच गया, बादल
गरजने और बड़े बड़े ओले पड़ने लगे।

ख़ातून और अज़दहा

12 फिर आसमान पर एक अज़ीम निशान
ज़ाहिर हुआ, एक ख़ातून जिसका
लिबास सूरज था। उसके पाँवों तले चाँद और सर
पर बारह सितारों का ताज था। 2 उसका पाँव भारी
था, और जन्म देने के शदीद दर्द में मुब्तला होने
की वजह से वह चिल्ला रही थी।

3 फिर आसमान पर एक और निशान नज़र
आया, एक बड़ा और आग जैसा सुर्ख़ अज़दहा।
उसके सात सर और दस सींग थे, और हर सर पर
एक ताज था। 4 उस की दुम ने सितारों के तीसरे
हिस्से को आसमान पर से उतारकर ज़मीन पर
फेंक दिया। फिर अज़दहा जन्म देनेवाली ख़ातून
के सामने खड़ा हुआ ताकि उस बच्चे को जन्म लेते
ही हड़प कर ले। 5 ख़ातून के बेटा पैदा हुआ, वह
बच्चा जो लोहे के शाही असा से क़ौमों पर हुकूमत
करेगा। और ख़ातून के इस बच्चे को छीनकर
अल्लाह और उसके तख़्त के सामने लाया गया।
6 ख़ातून ख़ुद रेगिस्तान में हिजरत करके एक ऐसी
जगह पहुँच गई जो अल्लाह ने उसके लिए तैयार
कर रखी थी, ताकि वहाँ 1,260 दिन तक उस
की परवरिश की जाए।

7 फिर आसमान पर जंग छिड़ गई। मीकाएल
और उसके फ़रिश्ते अज़दहे से लड़े। अज़दहा
और उसके फ़रिश्ते उनसे लड़ते रहे, 8 लेकिन वह
ग़ालिब न आ सके बल्कि आसमान पर अपने
मक़ाम से महरूम हो गए। 9 बड़े अज़दहे को
निकाल दिया गया, उस क़दीम अज़दहे को जो
इबलीस या शैतान कहलाता है और जो पूरी
दुनिया को गुमराह कर देता है। उसे उसके फ़रिश्तों
समेत ज़मीन पर फेंका गया।

10 फिर आसमान पर एक ऊँची आवाज़ सुनाई
दी, “अब हमारे ख़ुदा की नजात, क़ुदरत और
बादशाही आ गई है, अब उसके मसीह का
इख़्तियार आ गया है। क्योंकि हमारे भाइयों
और बहनों पर इलज़ाम लगानेवाला जो दिन-रात
अल्लाह के हुज़ूर उन पर इलज़ाम लगाता रहता
था उसे ज़मीन पर फेंका गया है। 11 ईमानदार
लेले के ख़ून और अपनी गवाही सुनाने के ज़रीए
ही उस पर ग़ालिब आए हैं। उन्होंने अपनी जान
अज़ीज़ न रखी बल्कि उसे देने तक तैयार थे।
12 चुनाँचे ख़ुशी मनाओ, ऐ आसमानो! ख़ुशी
मनाओ, उनमें बसनेवालो! लेकिन ज़मीन और
समुंदर पर अफ़सोस! क्योंकि इबलीस तुम पर
उतर आया है। वह बड़े ग़ुस्से में है, क्योंकि वह
जानता है कि अब उसके पास वक़्त कम है।”

13 जब अज़दहे ने देखा कि उसे ज़मीन पर गिरा
दिया गया है तो वह उस ख़ातून के पीछे पड़ गया
जिसने बच्चे को जन्म दिया था। 14 लेकिन ख़ातून
को बड़े उक़ाब के-से दो पर दिए गए ताकि वह
उड़कर रेगिस्तान में उस जगह पहुँचे जो उसके
लिए तैयार की गई थी और जहाँ वह साढ़े तीन
साल तक अज़दहे की पहुँच से महफ़ूज़ रहकर
परवरिश पाएगी। 15 इस पर अज़दहे ने अपने मुँह
से पानी निकालकर दरिया की सूरत में ख़ातून
के पीछे पीछे बहा दिया ताकि उसे बहा ले जाए।
16 लेकिन ज़मीन ने ख़ातून की मदद करके अपना
मुँह खोल दिया और उस दरिया को निगल लिया
जो अज़दहे ने अपने मुँह से निकाल दिया था।
17 फिर अज़दहे को ख़ातून पर ग़ुस्सा आया, और
वह उस की बाक़ी औलाद से जंग करने के लिए
चला गया। (ख़ातून की औलाद वह हैं जो अल्लाह
के अहकाम पूरे करके ईसा की गवाही को क़ायम
रखते हैं)। 18 और अज़दहा समुंदर के साहिल पर
खड़ा हो गया।

दो हैवान

13 फिर मैंने देखा कि समुंदर में से एक
हैवान निकल रहा है। उसके दस सींग
और सात सर थे। हर सींग पर एक ताज और हर
सर पर कुफ़र का एक नाम था। 2 यह हैवान चीते

की मानिंद था। लेकिन उसके रीछ के-से पाँव और
शेरबबर का-सा मुँह था। अज़दहे ने इस हैवान को
अपनी क़ुव्वत, अपना तख़्त और बड़ा इख़्तियार
दे दिया। 3 लगता था कि हैवान के सरों में से
एक पर लाइलाज ज़ख़म लगा है। लेकिन इस
ज़ख़म को शफ़ा दी गई। पूरी दुनिया यह देखकर
हैरतज़दा हुई और हैवान के पीछे लग गई। 4 लोगों
ने अज़दहे को सिजदा किया, क्योंकि उसी ने
हैवान को इख़्तियार दिया था। और उन्होंने यह
कहकर हैवान को भी सिजदा किया, "कौन इस
हैवान की मानिंद है? कौन इससे लड़ सकता
है?"

5 इस हैवान को बड़ी बड़ी बातें और कुफ़र बकने
का इख़्तियार दिया गया। और उसे यह करने का
इख़्तियार 42 महीने के लिए मिल गया। 6 यों वह
अपना मुँह खोलकर अल्लाह, उसके नाम, उस
की सुकूनतगाह और आसमान के बाशिंदों पर
कुफ़र बकने लगा। 7 उसे मुक़द्दसीन से जंग करके
उन पर फ़तह पाने का इख़्तियार भी दिया गया।
और उसे हर क़बीले, हर उम्मत, हर ज़बान और
हर क़ौम पर इख़्तियार दिया गया। 8 ज़मीन के
तमाम बाशिंदे इस हैवान को सिजदा करेंगे यानी
वह सब जिनके नाम दुनिया की इब्तिदा से लेले
की किताबे-हयात में दर्ज नहीं हैं, उस लेले की
किताब में जो ज़बह किया गया है।

9 जो सुन सकता है वह सुन ले! 10 अगर
किसी को क़ैदी बनना है तो वह क़ैदी ही बनेगा।
अगर किसी को तलवार की ज़द में आकर
मरना है तो वह ऐसे ही मरेगा। अब मुक़द्दसीन
को साबितक़दमी और वफ़ादार ईमान की ख़ास
ज़रूरत है।

11 फिर मैंने एक और हैवान को देखा। वह
ज़मीन में से निकल रहा था। उसके लेले के-
से दो सींग थे, लेकिन उसके बोलने का अंदाज़
अज़दहे का-सा था। 12 उसने पहले हैवान का पूरा
इख़्तियार उस की ख़ातिर इस्तेमाल करके ज़मीन
और उसके बाशिंदों को पहले हैवान को सिजदा
करने पर उकसाया, यानी उस हैवान को जिसका
लाइलाज ज़ख़म भर गया था। 13 और उसने बड़े
मोजिज़ाना निशान दिखाए, यहाँ तक कि उसने
लोगों के देखते देखते आसमान से ज़मीन पर
आग नाज़िल होने दी। 14 यों उसे पहले हैवान की
ख़ातिर मोजिज़ाना निशान दिखाने का इख़्तियार
दिया गया, और इनके ज़रीए उसने ज़मीन के
बाशिंदों को सहीह राह से बहकाया। उसने उन्हें
कहा कि वह उस हैवान की ताज़ीम में एक
मुजस्समा बना दें जो तलवार से ज़ख़मी होने के
बावुजूद दुबारा ज़िंदा हुआ था। 15 फिर उसे पहले
हैवान के मुजस्समे में जान डालने का इख़्तियार
दिया गया ताकि मुजस्समा बोल सके और उन्हें
क़त्ल करवा सके जो उसे सिजदा करने से इनकार
करते थे। 16 उसने यह भी करवाया कि हर एक के
दहने हाथ या माथे पर एक ख़ास निशान लगाया
जाए, ख़ाह वह छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या
ग़रीब, आज़ाद हो या ग़ुलाम। 17 सिर्फ़ वह शख़्स
कुछ ख़रीद या बेच सकता था जिस पर यह निशान
लगा था। यह निशान हैवान का नाम या उसके
नाम का नंबर था।

18 यहाँ हिकमत की ज़रूरत है। जो समझदार
है वह हैवान के नंबर का हिसाब करे, क्योंकि यह
एक मर्द का नंबर है। उसका नंबर 666 है।

लेला और उस की क़ौम

14 फिर मैंने देखा कि लेला मेरे सामने ही
सिय्यून के पहाड़ पर खड़ा है। उसके
साथ 1,44,000 अफ़राद खड़े थे जिनके माथों
पर उसका और उसके बाप का नाम लिखा था।
2 और मैंने आसमान से एक ऐसी आवाज़ सुनी
जो किसी बड़े आबशार और गरजते बादलों की
ऊँची कड़क की मानिंद थी। यह उस आवाज़ की
मानिंद थी जो सरोद बजानेवाले अपने साज़ों से
निकालते हैं। 3 यह 1,44,000 अफ़राद तख़्त,
चार जानदारों और बुज़ुर्गों के सामने खड़े एक नया
गीत गा रहे थे, एक ऐसा गीत जो सिर्फ़ वही सीख
सके जिन्हें लेले ने ज़मीन से ख़रीद लिया था।
4 यह वह मर्द हैं जिन्होंने अपने आपको ख़वातीन

के साथ आलूदा नहीं किया, क्योंकि वह कुँवारे
हैं। जहाँ भी लेला जाता है वहाँ वह भी जाते हैं।
उन्हें बाक़ी इनसानों में से फ़सल के पहले फल
की हैसियत से अल्लाह और लेले के लिए ख़रीदा
गया है। 5 उनके मुँह से कभी झूट नहीं निकला
बल्कि वह बेइलज़ाम हैं।

तीन फ़रिश्ते

6 फिर मैंने एक और फ़रिश्ता देखा। वह मेरे
सर के ऊपर ही हवा में उड़ रहा था। उसके पास
अल्लाह की अबदी ख़ुशख़बरी थी ताकि वह उसे
ज़मीन के बाशिंदों यानी हर क़ौम, क़बीले, अहले-
ज़बान और उम्मत को सुनाए। 7 उसने ऊँची
आवाज़ से कहा, "ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर उसे
जलाल दो, क्योंकि उस की अदालत का वक़्त
आ गया है। उसे सिजदा करो जिसने आसमानों,
ज़मीन, समुंदर और पानी के चश्मों को ख़लक़
किया है।"

8 एक दूसरे फ़रिश्ते ने पहले के पीछे पीछे
चलते हुए कहा, "वह गिर गया है! हाँ, अज़ीम
बाबल गिर गया है, जिसने तमाम क़ौमों को अपनी
हरामकारी और मस्ती की मै पिलाई है।"

9 इन दो फ़रिश्तों के पीछे एक तीसरा फ़रिश्ता
चल रहा था। उसने ऊँची आवाज़ से कहा, "जो
भी हैवान और उसके मुजस्समे को सिजदा करे
और जिसे भी उसका निशान अपने माथे या हाथ
पर मिल जाए 10 वह अल्लाह के ग़ज़ब की मै से
पिएगा, ऐसी मै जो मिलावट के बग़ैर ही अल्लाह
के ग़ज़ब के प्याले में डाली गई है। मुक़द्दस
फ़रिश्तों और लेले के हुज़ूर उसे आग और गंधक
का अज़ाब सहना पड़ेगा। 11 और इन लोगों को
सतानेवाली यह आग जलती रहेगी, इसका धुआँ
अबद तक चढ़ता रहेगा। जो हैवान और उसके
मुजस्समे को सिजदा करते हैं या जिन्होंने उसके
नाम का निशान लिया है वह न दिन, न रात को
आराम पाएँगे।"

12 यहाँ मुक़द्दसीन को साबितक़दम रहने की
ज़रूरत है, उन्हें जो अल्लाह के अहकाम पूरे करते
और ईसा के वफ़ादार रहते हैं।

13 फिर मैंने आसमान से एक आवाज़ यह
कहती हुई सुनी, "लिख, मुबारक हैं वह मुरदे जो
अब से ख़ुदावंद में वफ़ात पाते हैं।"

"जी हाँ," रूह फ़रमाता है, "वह अपनी
मेहनत-मशक़्क़त से आराम पाएँगे, क्योंकि उनके
नेक काम उनके पीछे होकर उनके साथ चलेंगे।"

ज़मीन पर फ़सल की कटाई

14 फिर मैंने एक सफ़ेद बादल देखा, और उस
पर कोई बैठा था जो इब्ने-आदम की मानिंद था।
उसके सर पर सोने का ताज और हाथ में तेज़
दराँती थी। 15 एक और फ़रिश्ता अल्लाह के घर
से निकलकर ऊँची आवाज़ से पुकारकर उससे
मुख़ातिब हुआ जो बादल पर बैठा था, "अपनी
दराँती लेकर फ़सल की कटाई कर! क्योंकि
फ़सल काटने का वक़्त आ गया है और ज़मीन
पर की फ़सल पक गई है।" 16 चुनाँचे बादल पर
बैठनेवाले ने अपनी दराँती ज़मीन पर चलाई और
ज़मीन की फ़सल की कटाई हुई।

17 इसके बाद एक और फ़रिश्ता अल्लाह के
उस घर से निकल आया जो आसमान पर है, और
उसके पास भी तेज़ दराँती थी।

18 फिर एक तीसरा फ़रिश्ता आया। उसे आग
पर इख़्तियार था। वह क़ुरबानगाह से आया और
ऊँची आवाज़ से पुकारकर तेज़ दराँती पकड़े हुए
फ़रिश्ते से मुख़ातिब हुआ, "अपनी तेज़ दराँती
लेकर ज़मीन की अंगूर की बेल से अंगूर के गुच्छे
जमा कर, क्योंकि उसके अंगूर पक गए हैं।"
19 फ़रिश्ते ने ज़मीन पर अपनी दराँती चलाई,
उसके अंगूर जमा किए और उन्हें अल्लाह के ग़ज़ब
के उस बड़े हौज़ में फेंक दिया जिसमें अंगूर का
रस निकाला जाता है। 20 यह हौज़ शहर से बाहर
वाक़े था। उसमें पड़े अंगूरों को इतना रौंदा गया
कि हौज़ में से ख़ून बह निकला। ख़ून का यह
सैलाब 300 किलोमीटर दूर तक पहुँच गया और

वह इतना ज़्यादा था कि घोड़ों की लगामों तक पहुँच गया।

आख़िरी बलाओं के फ़रिश्ते

15 फिर मैंने आसमान पर एक और इलाही निशान देखा, जो अज़ीम और हैरतअंगेज़ था। सात फ़रिश्ते सात आख़िरी बलाएँ अपने पास रखकर खड़े थे। इनसे अल्लाह का ग़ज़ब तकमील तक पहुँच गया।

2 मैंने शीशे का-सा एक समुंदर भी देखा जिसमें
आग मिलाई गई थी। इस समुंदर के पास वह खड़े थे जो हैवान, उसके मुजस्समे और उसके नाम के नंबर पर ग़ालिब आ गए थे। वह अल्लाह के दिए
हुए सरोद पकड़े 3 अल्लाह के ख़ादिम मूसा और
लेले का गीत गा रहे थे,

“ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा,
तेरे काम कितने अज़ीम और
हैरतअंगेज़ हैं।
ऐ ज़मानों के बादशाह,
तेरी राहें कितनी रास्त और सच्ची हैं।
4 ऐ रब, कौन तेरा ख़ौफ़ नहीं मानेगा?
कौन तेरे नाम को जलाल नहीं देगा?
क्योंकि तू ही क़ुद्दूस है।
तमाम क़ौमें आकर तेरे हुज़ूर
सिजदा करेंगी,
क्योंकि तेरे रास्त काम ज़ाहिर हो गए हैं।”

5 इसके बाद मैंने देखा कि अल्लाह के घर यानी
आसमान पर के शरीअत के ख़ैमे को[a] खोल
दिया गया। 6 अल्लाह के घर से वह सात फ़रिश्ते
निकल आए जिनके पास सात बलाएँ थीं। उनके कतान के कपड़े साफ़-सुथरे और चमक रहे थे। यह कपड़े सीनों पर सोने के कमरबंद से बँधे हुए
थे। 7 फिर चार जानदारों में से एक ने इन सात
फ़रिश्तों को सोने के सात प्याले दिए। यह प्याले उस ख़ुदा के ग़ज़ब से भरे हुए थे जो अज़ल से
अबद तक ज़िंदा है। 8 उस वक़्त अल्लाह का घर
उसके जलाल और क़ुदरत से पैदा होनेवाले धुएँ से भर गया। और जब तक सात फ़रिश्तों की सात बलाएँ तकमील तक न पहुँचीं उस वक़्त तक कोई भी अल्लाह के घर में दाख़िल न हो सका।

अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले

16 फिर मैंने एक ऊँची आवाज़ सुनी जिसने अल्लाह के घर में से सात फ़रिश्तों से कहा, “जाओ, अल्लाह के ग़ज़ब से भरे सात प्यालों को ज़मीन पर उंडेल दो।”

2 पहले फ़रिश्ते ने जाकर अपना प्याला ज़मीन
पर उंडेल दिया। इस पर उन लोगों के जिस्मों पर भद्दे और तकलीफ़देह फोड़े निकल आए जिन पर हैवान का निशान था और जो उसके मुजस्समे को सिजदा करते थे।

3 दूसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला समुंदर पर
उंडेल दिया। इस पर समुंदर का पानी लाश के-से ख़ून में बदल गया, और उसमें हर ज़िंदा मख़लूक़ मर गई।

4 तीसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला दरियाओं और
पानी के चश्मों पर उंडेल दिया तो उनका पानी ख़ून
बन गया। 5 फिर मैंने पानियों पर मुक़र्रर फ़रिश्ते
को यह कहते सुना, “तू यह फ़ैसला करने में रास्त
है, तू जो है और जो था, तू जो क़ुद्दूस है। 6 चूँकि
उन्होंने तेरे मुक़द्दसीन और नबियों की ख़ूनरेज़ी की है, इसलिए तूने उन्हें वह कुछ दे दिया जिसके
लायक़ वह हैं। तूने उन्हें ख़ून पिला दिया।” 7 फिर
मैंने क़ुरबानगाह को यह जवाब देते सुना, “हाँ, ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा, हक़ीक़तन तेरे फ़ैसले सच्चे और रास्त हैं।”

8 चौथे फ़रिश्ते ने अपना प्याला सूरज पर उंडेल
दिया। इस पर सूरज को लोगों को आग से
झुलसाने का इख़्तियार दिया गया। 9 लोग शदीद
तपिश से झुलस गए, और उन्होंने अल्लाह के नाम पर कुफ़र बका जिसे इन बलाओं पर इख़्तियार था। उन्होंने तौबा करने और उसे जलाल देने से इनकार किया।

[a] यानी मुलाक़ात के ख़ैमे को।

10 पाँचवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हैवान के
तख़्त पर उंडेल दिया। इस पर उस की बादशाही
में अंधेरा छा गया। लोग अज़ियत के मारे अपनी
ज़बानें काटते रहे। 11 उन्होंने अपनी तकलीफ़ों
और फोड़ों की वजह से आसमान पर कुफ़र बका
और अपने कामों से इनकार न किया।

12 छटे फ़रिश्ते ने अपना प्याला बड़े दरिया
फ़ुरात पर उंडेल दिया। इस पर उसका पानी
सूख गया ताकि मशरिक़ के बादशाहों के लिए
रास्ता तैयार हो जाए। 13 फिर मैंने तीन बदरूहें
देखीं जो मेंढकों की मानिंद थीं। वह अज़दहे के
मुँह, हैवान के मुँह और झूटे नबी के मुँह में से
निकल आईं। 14 यह मेंढक शयातीन की रूहें हैं
जो मोजिज़े दिखाती हैं और निकलकर पूरी दुनिया
के बादशाहों के पास जाती हैं ताकि उन्हें अल्लाह
क़ादिरे-मुतलक़ के अज़ीम दिन पर जंग के लिए
इकट्ठा करें।

15 "देखो, मैं चोर की तरह आऊँगा। मुबारक है
वह जो जागता रहता और अपने कपड़े पहने हुए
रहता है ताकि उसे नंगी हालत में चलना न पड़े
और लोग उस की शर्मगाह न देखें।"

16 फिर उन्होंने बादशाहों को उस जगह पर
इकट्ठा किया जिसका नाम इबरानी ज़बान में
हर्मजिद्दोन है।

17 सातवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हवा में
उंडेल दिया। इस पर अल्लाह के घर में तख़्त
की तरफ़ से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी जिसने
कहा, "अब काम तकमील तक पहुँच गया है!"
18 बिजलियाँ चमकने लगीं, शोर मच गया, बादल
गरजने लगे और एक शदीद ज़लज़ला आया।
इस क़िस्म का ज़लज़ला ज़मीन पर इनसान की
तख़लीक़ से लेकर आज तक नहीं आया, इतना
सख़्त ज़लज़ला कि 19 अज़ीम शहर तीन हिस्सों
में बट गया और क़ौमों के शहर तबाह हो गए।
अल्लाह ने अज़ीम बाबल को याद करके उसे
अपने सख़्त ग़ज़ब की मै से भरा प्याला पिला
दिया। 20 तमाम जज़ीरे ग़ायब हो गए और पहाड़
कहीं नज़र न आए। 21 लोगों पर आसमान से मन
मन-भर के बड़े बड़े ओले गिर गए। और लोगों ने
ओलों की बला की वजह से अल्लाह पर कुफ़र
बका, क्योंकि यह बला निहायत सख़्त थी।

मशहूर कसबी

17 फिर सात प्याले अपने पास
रखनेवाले इन सात फ़रिश्तों में से
एक मेरे पास आया। उसने कहा, "आ, मैं तुझे
उस बड़ी कसबी की सज़ा दिखा दूँ जो गहरे पानी
के पास बैठी है। 2 ज़मीन के बादशाहों ने उसके
साथ ज़िना किया। हाँ, उस की ज़िनाकारी की मै
से ज़मीन के बाशिंदे मस्त हो गए।"

3 फिर फ़रिश्ता मुझे रूह में एक रेगिस्तान में
ले गया। वहाँ मैंने एक औरत को देखा। वह एक
क़िरमिज़ी रंग के हैवान पर सवार थी जिसके पूरे
जिस्म पर कुफ़र के नाम लिखे थे और जिसके
सात सर और दस सींग थे। 4 यह औरत अरग़वानी
और क़िरमिज़ी रंग के कपड़े पहने और सोने,
बेशक़ीमत जवाहिर और मोतियों से सजी हुई थी।
उसके हाथ में सोने का एक प्याला था जो घिनौनी
चीज़ों और उस की ज़िनाकारी की गंदगी से भरा
हुआ था। 5 उसके माथे पर यह नाम लिखा था,
जो एक भेद है, "अज़ीम बाबल, कसबियों और
ज़मीन की घिनौनी चीज़ों की माँ।" 6 और मैंने
देखा कि यह औरत उन मुक़द्दसीन के ख़ून से मस्त
हो गई थी जिन्होंने ईसा की गवाही दी थी।

उसे देखकर मैं निहायत हैरान हुआ। 7 फ़रिश्ते
ने मुझसे पूछा, "तू क्यों हैरान है? मैं तुझ पर
औरत और उस हैवान का भेद खोल दूँगा जिस
पर औरत सवार है और जिसके सात सर और
दस सींग हैं। 8 जिस हैवान को तूने देखा वह पहले
था, इस वक़्त नहीं है और दुबारा अथाह गढ़े में से
निकलकर हलाकत की तरफ़ बढ़ेगा। ज़मीन के
जिन बाशिंदों के नाम दुनिया की तख़लीक़ से ही
किताबे-हयात में दर्ज नहीं हैं वह हैवान को देखकर
हैरतज़दा हो जाएंगे। क्योंकि वह पहले था, इस
वक़्त नहीं है लेकिन दुबारा आएगा।

9 यहाँ समझदार ज़हन की ज़रूरत है। सात सरों
से मुराद सात पहाड़ हैं जिन पर यह औरत बैठी
है। यह सात बादशाहों की नुमाइंदगी भी करते
हैं। 10 इनमें से पाँच गिर गए हैं, छटा मौजूद है
और सातवाँ अभी आनेवाला है। लेकिन जब वह
आएगा तो उसे थोड़ी देर के लिए रहना है। 11 जो
हैवान पहले था और इस वक़्त नहीं है वह आठवाँ
बादशाह है, गो वह सात बादशाहों में से भी एक
है। वह हलाकत की तरफ़ बढ़ रहा है।

12 जो दस सींग तूने देखे वह दस बादशाह हैं
जिन्हें अभी कोई बादशाही नहीं मिली। लेकिन
उन्हें घंटे-भर के लिए हैवान के साथ बादशाह का
इख़्तियार मिलेगा। 13 यह एक ही सोच रखकर
अपनी ताक़त और इख़्तियार हैवान को दे देंगे और
लेले से जंग करेंगे, 14 लेकिन लेला अपने बुलाए
गए, चुने हुए और वफ़ादार पैरोकारों के साथ उन
पर ग़ालिब आएगा, क्योंकि वह रब्बों का रब और
बादशाहों का बादशाह है।"

15 फिर फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, "जिस पानी के
पास तूने कसबी को बैठी देखा वह उम्मतें, हुजूम,
क़ौमें और ज़बानें है। 16 जो हैवान और दस सींग
तूने देखे वह कसबी से नफ़रत करेंगे। वह उसे
वीरान करके नंगा छोड़ देंगे और उसका गोश्त
खाकर उसे भस्म करेंगे। 17 क्योंकि अल्लाह ने
उनके दिलों में यह डाल दिया है कि वह उसका
मक़सद पूरा करें और उस वक़्त तक हुकूमत करने
का अपना इख़्तियार हैवान के सुपुर्द कर दें जब
तक अल्लाह के फ़रमान तकमील तक न पहुँच
जाएँ।

18 जिस औरत को तूने देखा वह वही बड़ा शहर
है जो ज़मीन के बादशाहों पर हुकूमत करता है।"

बाबल शहर की शिकस्त

18 इसके बाद मैंने एक और फ़रिश्ता
देखा जो आसमान पर से उतर रहा
था। उसे बहुत इख़्तियार हासिल था और ज़मीन
उसके जलाल से रौशन हो गई। 2 उसने ऊँची
आवाज़ से पुकारकर कहा, "वह गिर गई है!
हाँ, अज़ीम कसबी बाबल गिर गई है! अब वह
शयातीन का घर और हर बदरूह का बसेरा बन
गई है, हर नापाक और घिनौने परिंदे का बसेरा।
3 क्योंकि तमाम क़ौमों ने उस की हरामकारी
और मस्ती की मै पी ली है। ज़मीन के बादशाहों
ने उसके साथ ज़िना किया और ज़मीन के
सौदागर उस की बेलगाम ऐयाशी से अमीर हो
गए हैं।" 4 फिर मैंने एक और आवाज़ सुनी। उसने
आसमान की तरफ़ से कहा,

"ऐ मेरी क़ौम, उसमें से निकल आ,
ताकि तुम उसके गुनाहों में
शरीक न हो जाओ
और उस की बलाएँ तुम पर न आएँ।
5 क्योंकि उसके गुनाह आसमान तक
पहुँच गए हैं,
और अल्लाह उनकी बदियों को
याद करता है।
6 उसके साथ वही सुलूक करो
जो उसने तुम्हारे साथ किया है।
जो कुछ उसने किया है
उसका दुगना बदला उसे देना।
जो शराब उसने दूसरों को
पिलाने के लिए तैयार की है
उसका दुगना बदला उसे दे देना।
7 उसे उतनी ही अज़ियत और ग़म
पहुँचा दो
जितना उसने अपने आपको
शानदार बनाया और ऐयाशी की।
क्योंकि अपने दिल में वह कहती है,
'मैं यहाँ अपने तख़्त पर रानी हूँ।
न मैं बेवा हूँ, न मैं कभी मातम करूँगी।'
8 इस वजह से एक दिन यह बलाएँ
यानी मौत, मातम और काल
उस पर आन पड़ेंगी।
वह भस्म हो जाएगी,
क्योंकि उस की अदालत करनेवाला
रब ख़ुदा क़वी है।"

9 और ज़मीन के जिन बादशाहों ने उसके साथ
ज़िना और ऐयाशी की वह उसके जलने का धुआँ
देखकर रो पड़ेंगे और आहो-ज़ारी करेंगे। 10 वह
उस की अज़ियत को देखकर ख़ौफ़ खाएँगे और
दूर दूर खड़े होकर कहेंगे, “अफ़सोस! तुझ पर
अफ़सोस, ऐ अज़ीम और ताक़तवर शहर बाबल!
एक ही घंटे के अंदर अंदर अल्लाह की अदालत
तुझ पर आ गई है।”

11 ज़मीन के सौदागर भी उसे देखकर रो पड़ेंगे
और आहो-ज़ारी करेंगे, क्योंकि कोई नहीं रहा
होगा जो उनका माल ख़रीदे : 12 उनका सोना,
चाँदी, बेशक़ीमत जवाहिर, मोती, बारीक कतान,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का कपड़ा, रेशम,
हर क़िस्म की ख़ुशबूदार लकड़ी, हाथीदाँत की
हर चीज़ और क़ीमती लकड़ी, पीतल, लोहे और
संगे-मरमर की हर चीज़, 13 दारचीनी, मसाला,
अगरबत्ती, मुर, बख़ूर, मै, ज़ैतून का तेल,
बेहतरीन मैदा, गंदुम, गाय-बैल, भेड़ें, घोड़े, रथ
और ग़ुलाम यानी इनसान। 14 सौदागर उससे
कहेंगे, “जो फल तू चाहती थी वह तुझसे दूर
हो गया है। तेरी तमाम दौलत और शानो-शौकत
ग़ायब हो गई है और आइंदा कभी भी तेरे पास
पाई नहीं जाएगी।” 15 जो सौदागर उसे यह चीज़ें
फ़रोख़्त करने से दौलतमंद हुए वह उस की
अज़ियत देखकर ख़ौफ़ के मारे दूर दूर खड़े हो
जाएंगे। वह रो रोकर मातम करेंगे 16 और कहेंगे,
“हाय! तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, ऐ
ख़ातून जो पहले बारीक कतान, अरग़वानी और
क़िरमिज़ी रंग के कपड़े पहने फिरती थी और जो
सोने, क़ीमती जवाहिर और मोतियों से सजी हुई
थी। 17 एक ही घंटे के अंदर अंदर सारी दौलत
तबाह हो गई है!”

हर बहरी जहाज़ का कप्तान, हर समुंदरी
मुसाफ़िर, हर मल्लाह और वह तमाम लोग जो
समुंदर पर सफ़र करने से अपनी रोज़ी कमाते हैं
वह सब दूर दूर खड़े हो जाएंगे। 18 उसके जलने
का धुआँ देखकर वह कहेंगे, “क्या कभी कोई
इतना अज़ीम शहर था?” 19 वह अपने सरों पर
ख़ाक डाल लेंगे और चिल्ला चिल्लाकर रोएँगे और
आहो-ज़ारी करेंगे। वह कहेंगे, “हाय! तुझ पर
अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, जिसकी दौलत से
तमाम बहरी जहाज़ों के मालिक अमीर हुए। एक
ही घंटे के अंदर अंदर वह वीरान हो गया है।”

20 ऐ आसमान, उसे देखकर ख़ुशी मना!
ऐ मुक़द्दसो, रसूलो और नबियो,
  ख़ुशी मनाओ!
क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारी ख़ातिर
  उस की अदालत की है।

21 फिर एक ताक़तवर फ़रिश्ते ने बड़ी चक्की
के पाट की मानिंद एक बड़े पत्थर को उठाकर
समुंदर में फेंक दिया। उसने कहा, “अज़ीम शहर
बाबल को इतनी ही ज़बरदस्ती से पटक दिया
जाएगा। बाद में उसे कहीं नहीं पाया जाएगा।
22 अब से न मौसीक़ारों की आवाज़ें तुझमें कभी
सुनाई देंगी, न सरोद, बाँसरी या तुरम बजानेवालों
की। अब से किसी भी काम का कारीगर तुझमें
पाया नहीं जाएगा। हाँ, चक्की की आवाज़ हमेशा
के लिए बंद हो जाएगी। 23 अब से चराग़ तुझे
रौशन नहीं करेगा, दुलहन-दूल्हे की आवाज़ तुझमें
सुनाई नहीं देगी। हाय, तेरे सौदागर दुनिया के बड़े
बड़े अफ़सर थे, और तेरी जादूगरी से तमाम क़ौमों
को बहकाया गया।”

24 हाँ, बाबल में नबियों, मुक़द्दसीन और उन
तमाम लोगों का ख़ून पाया गया है जो ज़मीन पर
शहीद हो गए हैं।

19 इसके बाद मैंने आसमान पर एक बड़े
हुजूम की-सी आवाज़ सुनी जिसने
कहा, “अल्लाह की तमजीद हो! नजात, जलाल
और क़ुदरत हमारे ख़ुदा को हासिल है। 2 क्योंकि
उस की अदालतें सच्ची और रास्त हैं। उसने
उस बड़ी कसबी को मुजरिम ठहराया है जिसने
ज़मीन को अपनी ज़िनाकारी से बिगाड़ दिया।
उसने उससे अपने ख़ादिमों की क़त्लो-ग़ारत का
बदला ले लिया है।” 3 और वह दुबारा बोल उठे,
“अल्लाह की तमजीद हो! इस शहर का धुआँ
अबद तक चढ़ता रहता है।” 4 चौबीस बुज़ुर्गों और

चार जानदारों ने गिरकर तख़्त पर बैठे अल्लाह को
सिजदा किया। उन्होंने कहा, “आमीन, अल्लाह
की तमजीद हो।”

लेले की ज़ियाफ़त

5 फिर तख़्त की तरफ़ से एक आवाज़ सुनाई
दी। उसने कहा, “ऐ उसके तमाम ख़ादिमो,
हमारे ख़ुदा की तमजीद करो। ऐ उसका ख़ौफ़
माननेवालो, ख़ाह बड़े हो या छोटे उस की सताइश
करो।” 6 फिर मैंने एक बड़े हुजूम की-सी आवाज़
सुनी, जो बड़ी आबशार के शोर और गरजते
बादलों की कड़क की मानिंद थी। इन लोगों ने
कहा, “अल्लाह की तमजीद हो! क्योंकि हमारा
रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा तख़्तनशीन हो गया है।
7 आओ, हम मसरूर हों, ख़ुशी मनाएँ और उसे
जलाल दें, क्योंकि लेले की शादी का वक़्त आ
गया है। उस की दुलहन ने अपने आपको तैयार
कर लिया है, 8 और उसे पहनने के लिए बारीक
कतान का चमकता और पाक-साफ़ लिबास दे
दिया गया।” (बारीक कतान से मुराद मुक़द्दसीन
के रास्त काम हैं।)

9 फिर फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “लिख, मुबारक
हैं वह जिन्हें लेले की शादी की ज़ियाफ़त के लिए
दावत मिल गई है।” उसने मज़ीद कहा, “यह
अल्लाह के सच्चे अलफ़ाज़ हैं।”

10 इस पर मैं उसे सिजदा करने के लिए
उसके पाँवों में गिर गया। लेकिन उसने मुझसे
कहा, “ऐसा मत कर! मैं भी तेरा और तेरे उन
भाइयों का हमख़िदमत हूँ जो ईसा की गवाही देने
पर क़ायम हैं। सिर्फ़ अल्लाह को सिजदा कर।
क्योंकि जो ईसा के बारे में गवाही देता है वह यह
नबुव्वत की रूह में करता है।”

सफ़ेद घोड़े का सवार

11 फिर मैंने आसमान को खुला देखा। एक
सफ़ेद घोड़ा नज़र आया जिसके सवार का नाम
“वफ़ादार और सच्चा” है, क्योंकि वह इनसाफ़
से अदालत और जंग करता है। 12 उस की आँखें
भड़कते शोले की मानिंद हैं और उसके सर पर
बहुत-से ताज हैं। उस पर एक नाम लिखा है जिसे
सिर्फ़ वही जानता है, कोई और उसे नहीं जानता।
13 वह एक लिबास से मुलब्बस था जिसे ख़ून
में डुबोया गया था। उसका नाम “अल्लाह का
कलाम” है। 14 आसमान की फ़ौजें उसके पीछे
पीछे चल रही थीं। सब सफ़ेद घोड़ों पर सवार
थे और बारीक कतान के चमकते और पाक-
साफ़ कपड़े पहने हुए थे। 15 उसके मुँह से एक
तेज़ तलवार निकलती है जिससे वह क़ौमों को
मार देगा। वह लोहे के शाही असा से उन पर
हुकूमत करेगा। हाँ, वह अंगूर का रस निकालने
के हौज़ में उन्हें कुचल डालेगा। यह हौज़ क्या
है? अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ का सख़्त ग़ज़ब।
16 उसके लिबास और रान पर यह नाम लिखा है,
“बादशाहों का बादशाह और रब्बों का रब।”

17 फिर मैंने एक फ़रिश्ता सूरज पर खड़ा देखा।
उसने ऊँची आवाज़ से पुकारकर उन तमाम परिंदों
से जो मेरे सर पर मँडला रहे थे कहा, “आओ,
अल्लाह की बड़ी ज़ियाफ़त के लिए जमा हो
जाओ। 18 फिर तुम बादशाहों, जरनैलों, बड़े बड़े
अफ़सरों, घोड़ों और उनके सवारों का गोश्त
खाओगे, हाँ तमाम लोगों का गोश्त, ख़ाह आज़ाद
हों या ग़ुलाम, छोटे हों या बड़े।”

19 फिर मैंने हैवान और बादशाहों को उनकी
फ़ौजों समेत देखा। वह घोड़े पर “अल्लाह का
कलाम” नामी सवार और उस की फ़ौज से जंग
करने के लिए जमा हुए थे। 20 लेकिन हैवान
को गिरिफ़्तार किया गया। उसके साथ उस झूटे
नबी को भी गिरिफ़्तार किया गया जिसने हैवान
की ख़ातिर मोजिज़ाना निशान दिखाए थे। इन
मोजिज़ों के वसीले से उसने उनको फ़रेब दिया
था जिन्हें हैवान का निशान मिल गया था और जो
उसके मुजस्समे को सिजदा करते थे। दोनों को
जलती हुई गंधक की शोलाख़ेज़ झील में फेंका
गया। 21 बाक़ी लोगों को उस तलवार से मार
डाला गया जो घोड़े पर सवार के मुँह से निकलती

थी। और तमाम परिंदे लाशों का गोश्त खाकर सेर हो गए।

हज़ार साल का दौर

20 फिर मैंने एक फ़रिश्ता देखा जो आसमान से उतर रहा था। उसके हाथ में अथाह गढ़े की चाबी और एक भारी ज़ंजीर थी। 2 उसने अज़दहे यानी क़दीम साँप को जो शैतान या इबलीस कहलाता है पकड़कर हज़ार साल के लिए बाँध लिया। 3 उसने उसे अथाह गढ़े में फेंककर ताला लगा दिया और उस पर मुहर लगा दी ताकि वह हज़ार साल तक क़ौमों को गुमराह न कर सके। उसके बाद ज़रूरी है कि उसे थोड़ी देर के लिए आज़ाद कर दिया जाए।

4 फिर मैंने तख़्त देखे जिन पर वह बैठे थे जिन्हें अदालत करने का इख़्तियार दिया गया था। और मैंने उनकी रूहें देखीं जिन्हें ईसा के बारे में गवाही देने और जिनका अल्लाह का कलाम पेश करने की वजह से सर क़लम किया गया था। उन्होंने हैवान या उसके मुजस्समे को सिजदा नहीं किया था, न उसका निशान अपने माथों या हाथों पर लगवाया था। अब यह लोग ज़िंदा हुए और हज़ार साल तक मसीह के साथ हुकूमत करते रहे। 5 (बाक़ी मुरदे हज़ार साल के इख़्तिताम पर ही ज़िंदा हुए)। यह पहली क़ियामत है। 6 मुबारक और मुक़द्दस हैं वह जो इस पहली क़ियामत में शरीक हैं। इन पर दूसरी मौत का कोई इख़्तियार नहीं है बल्कि यह अल्लाह और मसीह के इमाम होकर हज़ार साल तक उसके साथ हुकूमत करेंगे।

इबलीस की शिकस्त

7 हज़ार साल गुज़र जाने के बाद इबलीस को उस की क़ैद से आज़ाद कर दिया जाएगा। 8 तब वह निकलकर ज़मीन के चारों कोनों में मौजूद क़ौमों बनाम जूज और माजूज को बहकाएगा और उन्हें जंग करने के लिए जमा करेगा। लड़नेवालों की तादाद साहिल पर की रेत के ज़र्रों जैसी बेशुमार होगी। 9 उन्होंने ज़मीन पर फैलकर मुक़द्दसीन की लशकरगाह को घेर लिया, यानी उस शहर को जिसे अल्लाह प्यार करता है। लेकिन आग ने आसमान से नाज़िल होकर उन्हें हड़प कर लिया। 10 और इबलीस को जिसने उनको फ़रेब दिया था जलती हुई गंधक की झील में फेंका गया, वहाँ जहाँ हैवान और झूटे नबी को पहले फेंका गया था। उस जगह पर उन्हें दिन-रात बल्कि अबद तक अज़ाब सहना पड़ेगा।

आख़िरी अदालत

11 फिर मैंने एक बड़ा सफ़ेद तख़्त देखा और उसे जो उस पर बैठा है। आसमानो-ज़मीन उसके हुज़ूर से भागकर ग़ायब हो गए। 12 और मैंने तमाम मुरदों को तख़्त के सामने खड़े देखा, ख़ाह वह छोटे थे या बड़े। किताबें खोली गईं। फिर एक और किताब को खोल दिया गया जो किताबे-हयात थी। मुरदों का उसके मुताबिक़ फ़ैसला किया गया जो कुछ उन्होंने किया था और जो किताबों में दर्ज था। 13 समुंदर ने उन तमाम मुरदों को पेश कर दिया जो उसमें थे, और मौत और पाताल ने भी उन मुरदों को पेश कर दिया जो उनमें थे। चुनाँचे हर शख़्स का उसके मुताबिक़ फ़ैसला किया गया जो उसने किया था। 14 फिर मौत और पाताल को जलती हुई झील में फेंका गया। यह झील दूसरी मौत है। 15 जिस किसी का नाम किताबे-हयात में दर्ज नहीं था उसे जलती हुई झील में फेंका गया।

नया आसमान और नई ज़मीन

21 फिर मैंने एक नया आसमान और एक नई ज़मीन देखी। क्योंकि पहला आसमान और पहली ज़मीन ख़त्म हो गए थे और समुंदर भी नेस्त था। 2 मैंने नए यरूशलम को भी देखा। यह मुक़द्दस शहर दुलहन की सूरत में अल्लाह के पास से आसमान पर से उतर रहा था। और यह दुलहन अपने दूल्हे के लिए तैयार और सजी हुई थी। 3 मैंने एक आवाज़ सुनी जिसने तख़्त पर से कहा, “अब अल्लाह की सुकूनतगाह

इनसानों के दरमियान है। वह उनके साथ सुकूनत
करेगा और वह उस की क़ौम होंगे। अल्लाह ख़ुद
उनका ख़ुदा होगा। 4 वह उनकी आँखों से तमाम
आँसू पोंछ डालेगा। अब से न मौत होगी न मातम,
न रोना होगा न दर्द, क्योंकि जो भी पहले था वह
जाता रहा है।”

5 जो तख़्त पर बैठा था उसने कहा, “मैं सब
कुछ नए सिरे से बना रहा हूँ।” उसने यह भी
कहा, “यह लिख दे, क्योंकि यह अलफ़ाज़
क़ाबिले-एतमाद और सच्चे हैं।” 6 फिर उसने
कहा, “काम मुकम्मल हो गया है! मैं अलिफ़
और ये, अव्वल और आख़िर हूँ। जो प्यासा है
उसे मैं ज़िंदगी के चश्मे से मुफ़्त पानी पिलाऊँगा।
7 जो ग़ालिब आएगा वह यह सब कुछ विरासत में
पाएगा। मैं उसका ख़ुदा हूँगा और वह मेरा फ़रज़ंद
होगा। 8 लेकिन बुज़दिलों, ग़ैरईमानदारों, घिनौनों,
क़ातिलों, ज़िनाकारों, जादूगरों, बुतपरस्तों और
तमाम झूटे लोगों का अंजाम जलती हुई गंधक
की शोलाख़ेज़ झील है। यह दूसरी मौत है।”

नया यरूशलम

9 जिन सात फ़रिश्तों के पास सात आख़िरी
बलाओं से भरे प्याले थे उनमें से एक ने मेरे पास
आकर कहा, “आ, मैं तुझे दुलहन यानी लेले की
बीवी दिखाऊँ।” 10 वह मुझे रूह में उठाकर एक
बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ से उसने
मुझे मुक़द्दस शहर यरूशलम दिखाया जो अल्लाह
की तरफ़ से आसमान पर से उतर रहा था। 11 उसे
अल्लाह का जलाल हासिल था और वह अनमोल
जौहर बल्कि बिल्लौर जैसे साफ़-शफ़्फ़ाफ़ यशब
की तरह चमक रहा था। 12 उस की बड़ी और ऊँची
फ़सील में बारह दरवाज़े थे, और हर दरवाज़े पर
एक फ़रिश्ता खड़ा था। दरवाज़ों पर इसराईल के
बारह क़बीलों के नाम लिखे थे। 13 तीन दरवाज़े
मशरिक़ की तरफ़ थे, तीन शिमाल की तरफ़,
तीन जुनूब की तरफ़ और तीन मग़रिब की तरफ़।
14 शहर की फ़सील की बारह बुनियादें थीं जिन
पर लेले के बारह रसूलों के नाम लिखे थे। 15 जिस
फ़रिश्ते ने मुझसे बात की थी उसके पास सोने
का गज़ था ताकि शहर, उसके दरवाज़ों और उस
की फ़सील की पैमाइश करे। 16 शहर चौकोर
था। उस की लंबाई उतनी ही थी जितनी उस
की चौड़ाई। फ़रिश्ते ने गज़ से शहर की पैमाइश
की तो पता चला कि उस की लंबाई, चौड़ाई
और ऊँचाई 2,400 किलोमीटर है। 17 जब उसने
फ़सील की पैमाइश की तो चौड़ाई 60 मीटर थी
यानी उस पैमाने के हिसाब से जो वह इस्तेमाल
कर रहा था। 18 फ़सील यशब की थी जबकि शहर
ख़ालिस सोने का था, यानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ शीशे
जैसे सोने का। 19 शहर की बुनियादें हर क़िस्म के
क़ीमती जवाहिर से सजी हुई थीं : पहली यशब[a]
से, दूसरी संगे-लाजवर्द[b] से, तीसरी संगे-यमानी[c]
से, चौथी ज़ुमुर्रद से, 20 पाँचवीं संगे-सुलेमानी[d]
से, छटी अक़ीक़े-अहमर[e] से, सातवीं ज़बरजद[f]
से, आठवीं आबे-बहर[g] से, नव्वीं पुखराज[h] से,
दसवीं अक़ीक़े-सब्ज़[i] से, ग्यारहवीं नीले रंग के
ज़रक़ोन[j] से और बारहवीं याक़ूते-अरग़वानी[k] से।
21 बारह दरवाज़े बारह मोती थे और हर दरवाज़ा
एक मोती का था। शहर की बड़ी सड़क ख़ालिस
सोने की थी, यानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ शीशे जैसे
सोने की।

22 मैंने शहर में अल्लाह का घर न देखा, क्योंकि
रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा और लेला ही उसका
मक़दिस हैं। 23 शहर को सूरज या चाँद की ज़रूरत

[a] jasper
[b] lapis lazuli
[c] chalcedony
[d] sardonyx। यानी संगे-सुलेमानी की एक क़िस्म जिसमें नारंजी और सफ़ेद अक़ीक़ के परत यके बाद दीगरे होते हैं।
[e] carnelian
[f] peridot
[g] beryl
[h] topaz
[i] chrysoprase
[j] यूनानी लफ़्ज़ कुछ मुबहम-सा है।
[k] amethyst

नहीं जो उसे रौशन करे, क्योंकि अल्लाह का
जलाल उसे रौशन कर देता है और लेला उसका
चराग़ है। 24 क़ौमें उस की रौशनी में चलेंगी, और
ज़मीन के बादशाह अपनी शानो-शौकत उसमें
लाएँगे। 25 उसके दरवाज़े किसी भी दिन बंद नहीं
होंगे क्योंकि वहाँ कभी भी रात का वक़्त नहीं
आएगा। 26 क़ौमों की शानो-शौकत उसमें लाई
जाएगी। 27 कोई नापाक चीज़ उसमें दाख़िल नहीं
होगी, न वह जो घिनौनी हरकतें करता और झूट
बोलता है। सिर्फ़ वह दाख़िल होंगे जिनके नाम
लेले की किताबे-हयात में दर्ज हैं।

मुकाशफ़ा

22 फिर फ़रिश्ते ने मुझे ज़िंदगी के पानी
का दरिया दिखाया। वह बिल्लौर
जैसा साफ़-शफ़्फ़ाफ़ था और अल्लाह और लेले
के तख़्त से निकल कर 2 शहर की बड़ी सड़क के
बीच में से बह रहा था। दरिया के दोनों किनारों पर
ज़िंदगी का दरख़्त था। यह दरख़्त साल में बारह
दफ़ा फल लाता था, हर महीने में एक बार। और
दरख़्त के पत्ते क़ौमों की शफ़ा के लिए इस्तेमाल
होते थे। 3 वहाँ कोई भी मलऊन चीज़ नहीं होगी।

अल्लाह और लेले का तख़्त शहर में होंगे और
उसके ख़ादिम उस की ख़िदमत करेंगे। 4 वह
उसका चेहरा देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों
पर होगा। 5 वहाँ रात नहीं होगी और उन्हें किसी
चराग़ या सूरज की रौशनी की ज़रूरत नहीं होगी,
क्योंकि रब ख़ुदा उन्हें रौशनी देगा। वहाँ वह अबद
तक हुकूमत करेंगे।

ईसा की आमद

6 फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, "यह बातें क़ाबिले-
एतमाद और सच्ची हैं। रब ने जो नबियों की रूहों
का ख़ुदा है अपने फ़रिश्ते को भेज दिया ताकि
अपने ख़ादिमों को वह कुछ दिखाए जो जल्द
होनेवाला है।"

7 ईसा फ़रमाता है, "देखो, मैं जल्द आऊँगा।
मुबारक है वह जो इस किताब की पेशगोइयों के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता है।"

8 मैं यूहन्ना ने ख़ुद यह कुछ सुना और देखा
है। और उसे सुनने और देखने के बाद मैं उस
फ़रिश्ते के पाँवों में गिर गया जिसने मुझे यह
दिखाया था और उसे सिजदा करना चाहता था।
9 लेकिन उसने मुझसे कहा, "ऐसा मत कर! मैं
भी उसी का ख़ादिम हूँ जिसका तू, तेरे भाई नबी
और किताब की पैरवी करनेवाले हैं। ख़ुदा ही
को सिजदा कर!" 10 फिर उसने मझे बताया,
"इस किताब की पेशगोइयों पर मुहर मत लगाना,
क्योंकि वक़्त क़रीब आ गया है। 11 जो ग़लत
काम कर रहा है वह ग़लत काम करता रहे। जो
घिनौना है वह घिनौना होता जाए। जो रास्तबाज़
है वह रास्तबाज़ी करता रहे। जो मुक़द्दस है वह
मुक़द्दस होता जाए।"

12 ईसा फ़रमाता है, "देखो, मैं जल्द आने
को हूँ। मैं अज्र लेकर आऊँगा और मैं हर एक
को उसके कामों के मुवाफ़िक़ अज्र दूँगा। 13 मैं
अलिफ़ और ये, अव्वल और आख़िर, इब्तिदा
और इंतहा हूँ।"

14 मुबारक हैं वह जो अपने लिबास को धोते
हैं। क्योंकि वह ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने
और दरवाज़ों के ज़रीए शहर में दाख़िल होने का
हक़ रखते हैं। 15 लेकिन बाक़ी सब शहर के बाहर
रहेंगे। कुत्ते, ज़िनाकार, क़ातिल, बुतपरस्त और
तमाम वह लोग जो झूट को प्यार करते और उस
पर अमल करते हैं सबके सब बाहर रहेंगे।

16 "मैं ईसा ने अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे पास
भेजा है ताकि वह जमातों के लिए तुम्हें इन बातों
की गवाही दे। मैं दाऊद की जड़ और औलाद हूँ,
मैं ही चमकता हुआ सुबह का सितारा हूँ।"

17 रूह और दुलहन कहती हैं, "आ!"

हर सुननेवाला भी यही कहे, "आ!"

जो प्यासा हो वह आए और जो चाहे वह ज़िंदगी
का पानी मुफ़्त ले ले।

ख़ुलासा

18 मैं, यूहन्ना हर एक को जो इस किताब की
पेशगोइयाँ सुनता है आगाह करता हूँ, अगर कोई
इस किताब में किसी भी बात का इज़ाफ़ा करे
तो अल्लाह उस की ज़िंदगी में उन बलाओं का
इज़ाफ़ा करेगा जो इस किताब में बयान की गई
हैं। 19 और अगर कोई नबुव्वत की इस किताब से
बातें निकाले तो अल्लाह उससे किताब में मज़कूर
ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने और मुक़द्दस
शहर में रहने का हक़ छीन लेगा।

20 जो इन बातों की गवाही देता है वह फ़रमाता
है, "जी हाँ! मैं जल्द ही आने को हूँ।" "आमीन!
ऐ ख़ुदावंद ईसा आ!"

21 ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल सबके साथ रहे।